Fatawa Rizvia With verification and translation of Arabic phrases Imam Ahmad Raza Barelvi (may his secret be sanctified) 11 Raza Foundation Jamia Nizamia Rizvia Inside Lohari Gate Lahore, 8 Pakistan (54000)

फतावा रिज़विया तख़रीज और अरबी इबारतों के अनुवाद के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दसा सिर्रहू) 11 रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रिज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा लाहौर, 8 पाकिस्तान (54000)

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ ۱۱ رضا

فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Volume Eleven Fatawa Rizvia

Contents 4 ..... Summary List
5 ..... Symbols
6 ..... Foreword
6 ..... Eleventh Volume
8 ..... List of Topics
74 ..... List of Subsidiary Issues
110 ..... Book of Marriage
110 ..... (Description of Marriage)
122 ..... Treatise
122 ..... Ubab-ul-Anwar li-Nikah bi-Mujarrad-il-Iqrar 1307 AH 122 ..... (A wave of lights in describing that marriage is not established based on mere acknowledgment)
142 ..... Treatise
142 ..... Mahi-ud-Dalalah fi Ankihat-il-Hind wa Banjalah 1317 AH 142 ..... (Eliminator of negligence regarding marriages in Bengal and India)
316 ..... Chapter of Prohibited Degrees
316 ..... (Description of Prohibited Degrees) 361 ..... Hibat-un-Nisa fi Tahqquq-il-Musaharah biz-Zina 1315 AH 361 ..... (Exalted research on proving the prohibition of affinity through adultery)
382 ..... Izalat-ul-Aar bi-Hajar-il-Kara'im 'an Kilab-in-Nar 1316 AH 382 ..... (Saving noble women from disgrace by not giving them in marriage to the dogs of hell)
498 ..... Treatise
498 ..... Al-Jali-ul-Hasan fi Hurmat-i-Waladi Akh-il-Laban 1320 AH

ग्यारहवां खंड फ़तावा रज़विया

विषय-सूची (Contents) 4 .....
संक्षिप्त सूची 5 ..... संकेत (रमज़)
6 ..... प्रस्तावना
6 ..... ग्यारहवां खंड
8 ..... विषयों की सूची
74 ..... सहायक विषयों की सूची
110 ..... निकाह की किताब (किताबुन निकाह) 110 ..... (निकाह का विवरण)
122 ..... शोध पत्र (रिसाला)
122 ..... उबाब-उल-अनवार लि-निकाह बि-मुजर्रद-इल-इक़रार १३०७ हि. 122 ..... (सिर्फ इक़रार के आधार पर निकाह न होने के विवरण में प्रकाश की लहर)
142 ..... शोध पत्र (रिसाला)
142 ..... माही-उद-दलाला फ़ी अन्किहत-इल-हिंद व बंजाला १३१७ हि. 142 ..... (बंगाल और भारत में निकाहों के बारे में लापरवाही को मिटाने वाला)
316 ..... निषिद्ध रिश्तों का अध्याय (बाब-उल-मुहर्रमात) 316 ..... (निषिद्ध रिश्तों का विवरण) 361 ..... हिबत-उन-निसा फ़ी तहक़्क़ुक़-इल-मुसाहरा बिज़-ज़िना १३१५ हि.
361 ..... (व्यभिचार से मुसाहरा की पवित्रता के प्रमाण में उत्कृष्ट शोध) 382 .....
इज़ालत-उल-आर बि-हजर-इल-कराइम अन किलाब-इन-नार १३१६ हि.
382 ..... (प्रतिष्ठित महिलाओं को नरक के कुत्तों के साथ विवाह न कराकर उन्हें अपमान से बचाना)
498 ..... शोध पत्र (रिसाला)

498 ..... अल-जली-उल-हसन फ़ी हुरमत-ए-वलद-ए-अख़-इल-लबन १३२० हि.

पृष्ठ 1 का 741

جلد یازدہم فتاوی رضویہ

Contents 4 ..... اجمالی

فہرست 5 ..... رموز

6 ..... پیش لفظ

6 ..... گیارہویں جلد

8 ..... فہرست مضامین

74 ..... فہرست ضمنی مسائل

110 ..... کتاب النکاح

110 ..... (نکاح کا بیان)

122 ..... رسالہ

122 ..... عباب الانوار لانکاح بمجرد الاقرار

۱۳۰۷ھ 122 ..... (محض اقرار کی بنیاد پر

نکاح نہ ہونے کے بیان میں انوار کی موج)

142 ..... رسالہ

142 ..... ماحی الضلالۃ فی انکحۃ الھند

وبنجالہ ۱۳۱۷ھ 142 ..... (بنگال اور

ہندوستان میں نکاحوں کے بارے میں کوتاہی کو مٹانے والا)

316 ..... باب المحرمات

316 ..... (محرمات کا بیان)

361 ..... هبة النساء فی تحقق المصاهرة بالزنا

۱۳۱۵ھ 361 ..... (زنا سے حرمت

مصاہرہ کے ثبوت میں تحقیق جلیل) 382 .....

ازالة العار بحجر الكرائم عن كلاب النار ۱۳۱٦ھ

382 ..... (معزز خواتین کو جہنم کے کتوں

کے نکاح میں نہ دیتے ہوئے انہیں رسوائی سے بچانا)

498 ..... رسالہ

498 ..... الجلی الحسن فی حرمة ولد اخي اللبن

۱۳۲۰ھ

Volume 11 Fatawa Razawiya

498 ..... (Excellent and clear explanation regarding the prohibition of marriage between the children of the breastfed and the children of the wet nurse) Chapter on the Guardian (Bab al-
Wali) 534
534 ..... (Explanation regarding the Guardian) Tajweez al-Radd 'an Tazweej al-Ab'ad (1315
AH) ..... 600 600 ..... (The ruling on a distant guardian performing a marriage in the absence of the nearest guardian) Chapter on Compatibility in Marriage (Bab al-Kafa'at fi al-
Nikah) 707
707 ..... (Description of compatibility in relation to marriage)

भाग 11 फ़तावा रज़विया

498 ..... (दुग्धपान करने वाली संतान और दुग्धपान कराने वाली की संतान के बीच निकाह की हुरमत (निषेध) का उत्तम और स्पष्ट वर्णन) अध्याय: वली (अभिभावक) 534
534 ..... (वली का वर्णन) तजवीज़-उर-रद्द अन तज़वीज-उल-अबअद (1315 हिजरी) .....
600 600 ..... (करीबी वली की अनुपस्थिति में दूर के वली द्वारा निकाह पढ़ाने का हुक्म) अध्याय: निकाह में कुफ़ू (समानता) 707
707 ..... (निकाह के सिलसिले में कुफ़ू का वर्णन)

पृष्ठ 741 में से 2

جلد یازدہم فتاوی رضویہ

498 ..... (اولادِ رضیع اور اولادِ مرضعہ کے درمیان حرمتِ نکاح کا عمدہ اور روشن بیان) باب الولی .....
534 534 ..... (ولی کا بیان) تجویز الرد عن تزویج الابعد (1315ھ) 600
600 ..... (ولی اقرب کی غیبت میں ولی ابعد کے نکاح پڑھانے کا حکم) باب الکفائۃ فی النکاح .....
707 707 ..... (نکاح کے سلسلہ میں کفو کا بیان)

صفحہ 2 از 741

Fatawa Rizvia Volume Eleven

Fatawa Rizvia With references and translation of Arabic phrases

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified) Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia

www.dawateislami.net

Inside Lohari Gate, Lahore Number 8 Pakistan (54000)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 1 of 739

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

फ़तावा रज़विया अरबी वाक्यांशों के संदर्भ और अनुवाद के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (उनका रहस्य पवित्र हो) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया

www.dawateislami.net

लोहारी गेट के अंदर, लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000)

दावत-ए-इस्लामी की आई.टी. मज्लिस

पृष्ठ 1 का 739

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

www.dawateislami.net

اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 1 of 739

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

"Whomever Allah intends good for, He grants him understanding of religion." (Hadith) Al-Ataya al-Nabawiyyah fi al-Fatawa al-Ridawiyyah (Prophetic Gifts in the Ridawi Fatwas) With citation and translation of Arabic passages

Volume 11

The magnificent jurisprudential encyclopedia of the 14th century, containing rare research. Imam Ahmad Raza Bareilvi (May Allah sanctify his secret) 1272 AH — 1340 AH 1856 AD — 1921 AD

Raza Foundation, Jamia Nizamia Ridawiyya Inside Lohari Gate, Lahore (8), Pakistan (54000) Phone: 7657312

Page 2 of 739

खण्ड 11 फ़तावा-ए-रज़विया

"अल्लाह जिसके साथ भलाई करना चाहता है, उसे दीन (धर्म) की गहरी समझ अता फ़रमाता है।" (हदीस) अल-अताया अन-नबविया फिल फ़तावा अर-रज़विया (रज़वी फ़तवों में नबवी अताएँ) अरबी इबारतों की तख़रीज (संदर्भ) और अनुवाद के साथ

खण्ड 11

चौदहवीं सदी का एक महान फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय) विश्वकोश, जो नादिर (दुर्लभ) शोधों पर आधारित है। इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उनकी पवित्रता बनाए रखे) १२७२ हिजरी — १३४० हिजरी १८५६ ईस्वी — १९२१ ईस्वी

रज़ा फ़ाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर (८), पाकिस्तान (५४०००) फ़ोन: ७६५७३१२

पृष्ठ २ / ७३९

جلد یازدہم فتاویٰ رضویہ

مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُفَقِّھْہُ فِي الدِّیْنِ (الحدیث) اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃُ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃِ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

جلد یازدہم

تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلو پیڈیا امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ ----- ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء ----- ۱۹۲۱ء

رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ، لاہور (۸)، پاکستان (۵۴۰۰۰) فون: ۷۶۵۷۳۱۲

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

(All rights reserved by the publisher)

Book Name: Fatawa Razawiyya Volume 11 Author: Shaykh-ul-Islam Imam Ahmad Raza Qadri Barelwi (May Allah have mercy on him) Translation of Arabic Passages: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Foreword: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Index Arrangement: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Verification and Correction: Maulana Nazir Ahmad Saeedi Under Supervision and Patronage: Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi, Secretary General, Tanzim-ul-Madaris Ahle-Sunnat, Pakistan Calligraphy: Muhammad Sharif Gul, Karial Kalan (Gujranwala) Pasting: _ *Pages: 736 Publication: Muharram-ul-Haram 1418 AH / May 1997 AD Press:* _ Publisher: Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore Price: __

Available at: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore 765772, 0300/9415300 * Maktaba Ahle-Sunnat, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore * Shabbir Brothers, 40-B, Urdu Bazaar, Lahore

Page 3 of 739

खंड ग्यारहवाँ फ़तावा रज़विया

(सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं)

पुस्तक का नाम: फ़तावा रज़विया खंड 11 लेखक: शेख-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैह) अरबी इबारतों का अनुवाद: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर प्रस्तावना: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर अनुक्रमणिका व्यवस्था: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर प्रमाणीकरण एवं संशोधन: मौलाना नज़ीर अहमद सईदी प्रबंधन एवं संरक्षण: मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल कय्यूम हज़ारवी, महासचिव, तंज़ीम-उल-मदारिस अहले-सुन्नत, पाकिस्तान सुलेख (कैलीग्राफी): मुहम्मद शरीफ़ गुल, कड़ियाल कलां (गुजरानवाला) पेस्टिंग: _ पृष्ठ*: 736* प्रकाशन तिथि*:* मुहर्रम-उल-हराम *1418* हिजरी */* मई *1997* ईस्वी प्रेस*:* _ प्रकाशक: रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर मूल्य: __

मिलने के पते: * रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर 765772, 0300/9415300 * मकतबा अहले-सुन्नत, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर * ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशंस, गंज बख्श रोड, लाहौर * शब्बीर ब्रदर्स, 40-बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर

جلد یازدہم فتاویٰ رضویہ

(جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں)

نام کتاب: فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم تصنیف: شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ترجمہ عربی عبارات: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور پیش لفظ: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور ترتیب فہرست: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور تخریج و تصحیح: مولانا نذیر احمد سعیدی باہتمام و سرپرستی: مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس اہلسنت، پاکستان کتابت: محمد شریف گل، کڑیال کلاں (گوجرانوالا) پیسٹنگ: _ صفحات: *736* اشاعت: محرم الحرام *1418*ھ/ مئی *1997*ء مطبع: _ ناشر: رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور قیمت: __

ملنے کے پتے: * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور 765772 ، 0300/9415300 * مکتبہ اہلسنت، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور * شبیر برادرز، 40 بی، اردو بازار، لاہور

Fatawa Razawiya Volume 11

Brief Table of Contents

Foreword ---------- 5 Book of Marriage ---------- 109 Chapter of Prohibited Relations ---------- 311 Chapter of the Guardian ---------- 521 Chapter of Compatibility ---------- 688

List of Treatises o Ubab al-Anwar ---------- 121 o Mahi ad-Dalalah ---------- 141 o Hibat an-Nisa ---------- 353 o Izalat al-Aar ---------- 373 o Al-Jali al-Hasan ---------- 487 o Tajwiz ar-Radd ---------- 585

Page 4 of 739

फतावा रज़विया खंड 11

संक्षिप्त सूची

प्रस्तावना ---------- 5 निकाह की पुस्तक (किताब-उन-निकाह) ---------- 109 वर्जित संबंधों का अध्याय (बाब-उल-मुहर्रमात) ---------- 311 अभिभावक का अध्याय (बाब-उल-वली) ---------- 521 समानता/योग्यता का अध्याय (बाब-उल-कफ़ात) ---------- 688

पत्रिकाओं की सूची • उबाब-उल-अनवार ---------- 121 • माही अद-दलालाह ---------- 141 • हिबत-उन-निसा ---------- 353 • इज़ालत-उल-आर ---------- 373 • अल-जली अल-हसन ---------- 487 • तजवीज़-उर-रद्द ---------- 585

पृष्ठ 4 / 739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

اجمالی فہرست

پیش لفظ ---------- ۵ کتاب النکاح

---------- ۱۰۹ باب المحرمات

---------- ۳۱۱ باب الولی

---------- ۵۲۱ باب الکفاءۃ

---------- ۶۸۸

فہرست رسائل o عباب الانوار ---------- ۱۲۱ o ماحی الضلالۃ

---------- ۱۴۱ o ہبۃ النساء

---------- ۳۵۳ o ازالۃ العار

---------- ۳۷۳ o الجلی الحسن

---------- ۴۸۷ o تجویز الرد

---------- ۵۸۵

صفحہ 4 از 739

Volume 11 Fatawa-e-Razvia

Symbols

Muhaq: Allama Kamal-ud-Din ibn Humam, author of Fath-ul-Qadir. H: Allama Muhammad Ibrahim ibn Muhammad al-Halabi, author of Ghunyat-ul-Mustamli. Sh: Allama Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami, author of Radd-ul-Muhtar. T: Allama Sayyid Ahmad al-Tahtawi, author of Hashiya al-Durr al-Mukhtar and Hashiya Maraqi al-Falah. Al-Durr: Al-Durr al-Mukhtar, Allama Muhammad Ala-ud-Din al-Haskafi. Al-Durar: Al-Durar Sharh al-Ghurar, Mulla Khusraw Allama Muhammad bin Faramuz. Bahr: Al-Bahr al-Ra'iq, Allama Zayn-ud-Din ibn Nujaym. Hindiya: Fatawa-e-Alamgiri, Group of Hanafi Scholars. Nahr: Al-Nahr al-Fa'iq, Siraj-ud-Din Umar bin Tamim. Fath: Fath-ul-Qadir, Allama Kamal-ud-Din ibn Humam. Ghunyah: Ghunyat-ul-Mustamli, Allama Muhammad Ibrahim ibn Muhammad al-Halabi. Hilyah: Hilyat-ul-Mahalli, Ibn Amir al-Hajj.

Page 5 of 739

खंड 11 फतावा-ए-रज़विया

प्रतीक

मुहक: अल्लामा कमाल-उद-दीन इब्न हुमाम, 'फतह-उल-क़दीर' के लेखक। ह: अल्लामा मुहम्मद इब्राहिम इब्न मुहम्मद अल-हलबी, 'ग़ुनियात-उल-मुस्तमली' के लेखक। श: अल्लामा मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी, 'रद-उल-मुह्तार' के लेखक। त: अल्लामा सय्यद अहमद अल-तह़तावी, 'हाशिया अल-दुर अल-मुख्तार' और 'हाशिया मराक़ी अल-फ़लाह' के लेखक। अल-दुर: 'अल-दुर अल-मुख्तार', अल्लामा मुहम्मद अला-उद-दीन अल-हस़कफी। अल-दुरर: 'अल-दुरर शरह़ अल-ग़ुरर', मुल्ला खुसरौ अल्लामा मुहम्मद बिन फ़रामूज़। बह्र: 'अल-बह्र अल-राइक़', अल्लामा ज़ैन-उद-दीन इब्न नुजैम। हिन्दिया: 'फ़तावा-ए-आलमगीरी', हनफी विद्वानों का समूह। नहर: 'अल-नहर अल-फ़ाइक़', सिराज-उद-दीन उमर बिन तमीम। फतह: 'फतह-उल-क़दीर', अल्लामा कमाल-उद-दीन इब्न हुमाम। ग़ुनिया: 'ग़ुनियात-उल-मुस्तमली', अल्लामा मुहम्मद इब्राहिम इब्न मुहम्मद अल-हलबी। ह़िलिया: 'ह़िलियात-उल-मह़ल्ली', इब्न अमीर अल-ह़ाज।

पृष्ठ 5 / 739

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

رموز

محق: علامہ کمال الدین ابن ہمام صاحب فتح القدیر ح: علامہ محمد ابراہیم بن محمد الحلبی صاحب غنیۃ المستملی ش: علامہ محمد امین ابن عابدین الشامی صاحب ردالمحتار ط: علامہ سید احمد الطحطاوی صاحب حاشیہ الدرالمختار وحاشیہ مراقی الفلاح الدر: الدرالمختار، علامہ محمد علاء الدین الحصکفی الدرر: الدرر شرح الغرر، ملا خسرو علامہ محمد بن فراموز بحر: البحر الرائق، علامہ زین الدین ابن نجیم ہندیہ: فتاوٰی عالمگیری، جماعت علمائے احناف نہر: النہر الفائق، سراج الدین عمر بن تمیم فتح: فتح القدیر، علامہ کمال الدین ابن ہمام غنیہ: غنیۃ المستملی، علامہ محمد ابراہیم بن محمد الحلبی حلیہ: حلیۃ المحلی، ابن امیر الحاج

Volume 11 Fatawa Razawiyya

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Preface All praise is for Allah. The institution named 'Raza Foundation', established a few years ago at Darul Uloom Jamia Nizamia Razawiyya Lahore to bring the scientific treasures and jurisprudential stores of Ala Hazrat Imam-ul-Muslimeen Maulana Shah Ahmad Raza Khan Barelvi (may Allah have mercy on him) to light in a modern way according to contemporary requirements, is moving towards its goal with extreme speed, passing through the evolutionary stages of the proposed plan. Ten beautiful volumes consisting of Kitab al-Taharah, Kitab al-Salah, Kitab al-Jana'iz, Kitab al-Zakah, Kitab al-Sawm, and Kitab al-Hajj have reached you. Now, by the grace of Allah Almighty and the kindness of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), the eleventh volume is being presented.

Eleventh Volume This volume contains answers to 459 questions from the beginning of the old Volume 5 of Fatawa Razawiyya to the end of the Chapter of Kafa'ah (Equality). The translation of Arabic and Persian passages in this volume has been done by this humble, error-prone writer (may he be forgiven) with the success granted by Allah Almighty and His grace. A treatise concerning the prohibition of marriage with the children of a foster-brother, entitled "Al-Jali al-Hasan fi Hurmat Walad Akhi al-Laban," has been included in the current volume, which was not previously included in Fatawa Razawiyya. Furthermore, a detailed list of the contents of the treatises included in it has also been prepared by the writer for the benefit of the readers. In addition to numerous secondary issues and benefits, the following four topics are discussed in this volume: (1) Kitab al-Nikah (Book of Marriage) (2) Bab al-Muharramat (Chapter of Prohibited Relations) (3) Bab al-Wali (Chapter of Guardians) (4) Bab al-Kafa'ah (Chapter of Equality)

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

प्रस्तावना (पेश लफ्ज़) अल्हम्दुलिल्लाह, आला हज़रत इमाम-उल-मुस्लिमीन मौलाना शाह अहमद रज़ा खाँ बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि के इल्मी ख़ज़ानों और फ़िक़्ही ज़ख़ीरों को आधुनिक तरीक़े से समकालीन आवश्यकताओं के अनुसार प्रकाश में लाने के लिए दारुल उलूम जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर में 'रज़ा फाउंडेशन' के नाम से जो संस्था कुछ साल पहले स्थापित की गई थी, वह प्रस्तावित योजना के विकास के चरणों से गुज़रते हुए अत्यंत तीव्र गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। किताबुत तहारत, किताबुस सलात, किताबुल जनाइज़, किताबुज़ ज़कात, किताबुस सौम और किताबुल हज पर आधारित दस सुंदर जिल्दें आप तक पहुँच चुकी हैं, अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इनायत से ग्यारहवीं जिल्द पेश की जा रही है।

ग्यारहवीं जिल्द यह जिल्द फ़तावा रज़विया क़दीम जिल्द पाँचवीं के आरंभ से बाबुल कफ़ाअत के अंत तक 459 सवालों के जवाबों पर आधारित है। इस जिल्द के अरबी और फ़ारसी इबारतों का अनुवाद अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और उसके फ़ज़्ल से इस ख़ताकार लेखक (अल्लाह उसे माफ़ करे) ने किया है। दूध-शरीक (रज़ाई) भाई की औलाद के साथ निकाह की हुरमत (निषेध) से संबंधित रिसाला "अल-जली अल-हसन फ़ी हुरमत वलद अख़ी अल-लबन" को वर्तमान जिल्द में शामिल किया गया है, जो पहले फ़तावा रज़विया में शामिल नहीं था। इसके अलावा इसमें शामिल रिसालों की विस्तृत सूची भी लेखक ने पाठकों के लाभ के लिए तैयार की है। अनेक उप-मुद्दों और लाभों के अतिरिक्त इस जिल्द में निम्नलिखित चार विषयों पर चर्चा की गई है: (1) किताबुन निकाह (2) बाबुल मुहर्रमात (3) बाबुल वली (4) बाबुल कफ़ाअत

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیش لفظ الحمد للہ اعلیٰ حضرت امام المسلمین مولانا شاہ احمد رضا خاں بریلوی رحمۃ اللہ علیہ کے خزائن علمیہ و ذخائر فقہیہ کو جدید انداز میں عصر حاضر کے تقاضوں کے مطابق منظر عام پر لانے کے لئے دارالعلوم جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور میں رضا فاؤنڈیشن کے نام سے جو ادارہ چند سال قبل قائم ہوا تھا وہ انتہائی برق رفتاری کے ساتھ مجوزہ منصوبہ کے ارتقائی مراحل کو طے کرتے ہوئے اپنے ہدف کی طرف بڑھ رہا ہے۔ کتاب الطہارۃ، کتاب الصلوۃ، کتاب الجنائز، کتاب الزکوۃ، کتاب الصوم اور کتاب الحج پر مشتمل دس خوبصورت جلدیں آپ تک پہنچ چکی ہیں، اب بفضلہ تعالی جلّ مجدہ و بعنایت رسولِ اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم گیارہویں جلد پیش کی جارہی ہے۔

گیارہویں جلد یہ جلد فتاویٰ رضویہ قدیم جلد پنجم کے آغاز سے باب الکفائۃ کے آخر تک ۴۵۹ سوالوں کے جوابات پر مشتمل ہے۔ اس جلد کی عربی و فارسی عبارات کا ترجمہ بتوفیق اللہ تعالی و بفضلہ اس راقم پُر تقصیر عفی عنہ نے کیا ہے۔ رضاعی بھائی کی اولاد کے ساتھ حرمت نکاح سے متعلق رسالہ "الجلی الحسن فی حرمۃ ولد اخی اللبن" پیش نظر جلد میں شامل کیا گیا ہے جو پہلے فتاویٰ رضویہ میں شامل نہیں تھا۔ علاوہ ازیں اس میں شامل رسائل کے مندرجات کی مفصل فہرست بھی راقم نے افادہ قارئین کے لئے تیار کر دی ہے۔ متعدد ضمنی مسائل و فوائد کے علاوہ اس جلد میں مندرجہ ذیل چار عنوانات زیر بحث لائے گئے ہیں: (۱) کتاب النکاح (۲) باب المحرمات (۳) باب الولی (۴) باب الکفائۃ

Volume Eleven Fatawa Rizvia

In addition to the following topics, this volume also includes the following six treatises containing extremely precise and valuable research and investigations:

(1) 'Ubab al-Anwar an la Nikah bi-Mujarrad al-Iqrar (1307 AH) Whether a marriage is solemnized merely by a man and woman calling each other husband and wife in the presence of witnesses or not.

(2) Mahi al-Dalalah fi Ankihah al-Hind wa Banjalah (1317 AH) Regarding the custom of seeking permission for marriage from women in India and Bengal.

(3) Hibat al-Nisa fi Tahqiq al-Musaharah bi-al-Zina (1315 AH) Statement of the Sharia ruling regarding one who commits adultery with their mother-in-law.

(4) Izalat al-Ar bi-Hajar al-Kara'im 'an Kilab al-Nar (1315 AH) A detailed explanation of whether marriage with a non-conformist (Ghayr-Muqallid) Wahhabi is permissible or prohibited.

(5) Al-Jali al-Hasan fi Hurmah Walad Akhi al-Laban (1330 AH) An excellent and clear explanation of the prohibition of marriage with the children of a foster brother.

(6) Tajwiz al-Radd 'an Tazwij al-Ab'ad (1315 AH) The Sharia ruling on a distant guardian (Wali al-Ab'ad) performing a marriage in the absence of the closest guardian (Wali al-Aqrab).

Hafiz Abdul Sattar Saidi Director of Education, Jamia Rizvia Lahore

Muharram al-Haram 1418 AH May 1997 AD

Page 7 of 739

जिल्द ग्यारहवीं फतावा रज़विया

निम्नलिखित विषयों के अलावा, इस जिल्द में अत्यंत सूक्ष्म और मूल्यवान शोध और जांच-पड़ताल पर आधारित निम्नलिखित छह शोध-पत्र भी शामिल हैं:

(१) उबाबुल अनवार अन ला निकाह बि मुजर्रदिल इकरार (१३०७ हिजरी) गवाहों की उपस्थिति में केवल एक-दूसरे को पति-पत्नी कह देने से निकाह संपन्न होता है या नहीं।

(२) माहियुद दलालाह फी अनकिहतिल हिंद व बंगाला (१३१७ हिजरी) भारत और बंगाल में स्त्री से निकाह की अनुमति लेने की रस्म के संबंध में।

(३) हिबतुन निसा फी तहक़ीक़िल मुसाहरा बिज़ ज़िना (१३१५ हिजरी) सास के साथ व्यभिचार करने वाले के बारे में शरीयत के हुक्म का बयान।

(४) इज़ालातुल आर बि हज़्रिल कराइम अन किला बिन नार (१३१५ हिजरी) गैर-मुक़ल्लिद वहाबी से निकाह जायज़ है या निषिद्ध, इसका विस्तृत वर्णन।

(५) अल जलीयुल हसन फी हुरमति वलदि अख़िल लबन (१३३० हिजरी) दूध-भाई (रज़ाई भाई) की संतानों के साथ निकाह की हुरमत (निषेध) का उत्तम और स्पष्ट वर्णन।

(६) तज्वीज़ुर रद अन तज़्वीजिल अबअद (१३१५ हिजरी) वली-ए-अक़रब (निकटतम अभिभावक) की अनुपस्थिति में वली-ए-अबअद (दूर के अभिभावक) द्वारा निकाह करने का शरई हुक्म।

हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी नाज़िम-ए-तालिमात, जामिया रज़विया लाहौर

मुहर्रमुल हराम १४१८ हिजरी मई १९९७ ई.

पेज 7 का 739

جلد یازدہم فتاویٰ رضویہ

مندرجہ ذیل عنوانات کے علاوہ انتہائی دقیق اور گراں قدر تحقیقات و تدقیقات پر مشتمل مندرجہ ذیل چھ رسائل بھی اس جلد میں شامل ہیں:

(۱) عباب الانوار ان لا نکاح بمجرد الاقرار (۱۳۰۷ھ) شاہدین کی موجودگی میں مرد اور عورت کے فقط ایک دوسرے کو شوہر و بیوی کہہ دینے سے نکاح منعقد ہو جاتا ہے یا نہیں۔

(۲) ماحی الضلالة فی انکحة الہند وبنجالة (۱۳۱۷ھ) ہند و بنگال میں عورت سے اجازت نکاح لینے کی رسم کے متعلق۔

(۳) ہبة النساء فی تحقق المصاهرة بالزناء (۱۳۱۵ھ) ساس سے زنا کرنے والے کے بارے میں شرعی حکم کا بیان۔

(۴) ازالة العار بحجر الکرائم عن کلاب النار (۱۳۱۵ھ) غیر مقلد وہابی سے نکاح جائز ہے یا ممنوع، اس کا تفصیلی بیان۔

(۵) الجلی الحسن فی حرمة ولد اخی اللبن (۱۳۳۰ھ) رضاعی بھائی کی اولاد کے ساتھ حرمت نکاح کا عمدہ اور روشن بیان۔

(۶) تجویز الرد عن تزویج الابعد (۱۳۱۵ھ) ولی اقرب کی عدم موجودگی میں ولی ابعد کے نکاح کر دینے کا شرعی حکم

حافظ عبد الستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ رضویہ لاہور

محرم الحرام ۱۴۱۸ھ مئی ۱۹۹۷ء

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Table of Contents

Book of Marriage

- Ruling on performing a marriage where there is singing, dancing, and musical instruments. (Page 109)
- Dancing and most musical instruments are forbidden (haram) but not disbelief (kufr), and the person watching or listening is a sinner (fasiq). (Page 109)
- Satan sometimes deceives through the guise of good deeds. (Page 109)
- Enjoining good and forbidding evil are fundamental aspects of Islam, but misplaced severity and prejudice are sins, a trait common among Wahhabis. (Page 109)
- There is a boundary for enjoining good and forbidding evil; exceeding it constitutes an evil act. (Page 110)
- What would be the ruling if one of the spouses entered the contract believing dancing to be lawful? (Page 110)
- Under what circumstances can one person act as the guardian (mutawalli) for both proposal and acceptance in a marriage, and when can they not? A detailed explanation of all rulings, scholarly differences, and authoritative corrections from leading Imams on this matter. (Page 110)
- There is no compulsory guardianship (walayat-e-ijbar) over an adult female. (Page 110)
- The bride must be clearly identified/distinguishable in the presence of witnesses. (Page 112)
- If the woman is present in the marriage ceremony wearing a veil, it is sufficient to point towards her for identification. (Page 112)
- In the absence of the woman, she must be described such that witnesses can identify her. If her name is enough, then the name suffices. If not, then her father's name is required, and if still not clear, the grandfather's name as well. (Page 112)
- If describing the relationship is enough for identification, then that is sufficient. (Page 112)
- If a woman is alone in a room and witnesses hear her speech, even if they cannot see her, the marriage contract is valid. (Page 113)

- Qadi Khan stated that Imam Khassaf is eminent in knowledge and it is permissible to follow his opinion. (Page 113)

फ़तावा रज़विया, भाग 11

विषय-सूची

निकाह की पुस्तक (किताब-उन-निकाह)

- जहाँ नाच-गाना और बाजे हों वहाँ निकाह का हुक्म। (पृष्ठ 109)
- नाच और अधिकतर बाजे हराम हैं, कुफ़्र नहीं, और देखने-सुनने वाला फासिक (पापी) है। (पृष्ठ 109)
- शैतान कभी नेक कामों के बहाने से गुमराह करता है। (पृष्ठ 109)
- नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना इस्लाम के मामले हैं, लेकिन बेवजह की सख्ती और पक्षपात गुनाह है और यह वहाबियों में बहुत अधिक है। (पृष्ठ 109)
- नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने की एक सीमा है, जिससे आगे बढ़ना स्वयं एक बुरा काम (मुनकर) है। (पृष्ठ 110)
- यदि दूल्हा-दुल्हन में से किसी का यह मानना हो कि निकाह में नाच हलाल है, तो क्या हुक्म होगा? (पृष्ठ 110)
- एक व्यक्ति किस स्थिति में निकाह के दोनों पक्षों (ईजाब और क़बूल) के लिए मुतवल्ली (संरक्षक) हो सकता है और किस स्थिति में नहीं? इस मसले पर विद्वानों के सभी हुक्म, मतभेद और इमामों के स्पष्टीकरणों का पूर्ण विवरण। (पृष्ठ 110)
- वयस्क महिला पर जबरदस्ती का कोई अधिकार (विलायत-ए-इजबार) नहीं है। (पृष्ठ 110)
- गवाहों के सामने दुल्हन की स्पष्ट पहचान होना आवश्यक है। (पृष्ठ 112)
- यदि निकाह की सभा में महिला पर्दा डालकर उपस्थित हो, तो उसकी ओर इशारा करना पर्याप्त है। (पृष्ठ 112)
- महिला की अनुपस्थिति में उसका इतना वर्णन आवश्यक है जिससे गवाह उसे पहचान सकें। यदि केवल नाम से पहचान हो जाए तो नाम काफी है, अन्यथा पिता का नाम, और यदि वह भी काफी न हो तो दादा तक का नाम चाहिए। (पृष्ठ 112)
- यदि रिश्ते का वर्णन पहचान के लिए काफी हो, तो उतना ही पर्याप्त है। (पृष्ठ 112)
- यदि महिला घर में अकेली हो और गवाह उसकी बातचीत सुनें, भले ही उसे न देखें, तो निकाह हो जाएगा। (पृष्ठ 113)

- काज़ी खान ने कहा कि इमाम खसाफ ज्ञान में बहुत बड़े हैं, उनका अनुसरण करना जायज़ है। (पृष्ठ 113)

पृष्ठ 8 का 739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

فہرست مضامین

کتاب النکاح

- ناچ رنگ، باجے گاجے جہاں ہوں وہاں نکاح کا حکم۔ ۱۰۹
- ناچ اور اکثر باجے حرام ہیں کفر نہیں اور دیکھنے سننے والا فاسق ہے۔ ۱۰۹
- شیطان کبھی حسنات کے حیلہ سے اغوا کرتا ہے۔ ۱۰۹
- امر بالمعروف و نہی عن المنکر امور اسلام سے ہیں مگر بے محل تشدد و تعصب گناہ ہے اور یہ بلا وہابیہ میں بہت زیادہ ہے۔ ۱۰۹
- امر بالمعروف و نہی عن المنکر کے لئے ایک حد ہے کہ اس سے تجاوز ارتکابِ منکر ہے۔ ۱۱۰
- زوجین سے اگر کسی کا یہ عقد ہو کہ ناچ حلال ہے تو کیا حکم ہو سکے گا۔ ۱۱۰
- ایک شخص دونوں طرف نکاح یعنی ایجاب و قبول کا کس حالت میں کیسے متولی ہو سکتا ہے اور کس صورت میں نہیں۔ اس مسئلہ کے متعلق تمام احکام و خلافیات علمائے کرام و تصحیحات ائمہ اعلام کا ایضاح تام۔ ۱۱۰
- بالغہ پر ولایت اجبار نہیں۔ ۱۱۰
- گواہوں کے سامنے منکوحہ کا متمیز ہونا ضروری ہے۔ ۱۱۲
- اگر مجلس نکاح میں عورت نقاب ڈالے حاضر ہو تو اس کی طرف اشارہ کافی ہے۔ ۱۱۲

- بحالت غیبت زن اس کی اتنی تعریف لازم جس سے گواہ اس کی تمیز کرلیں، اگر صرف اس کے نام سے تو اس کا نام کافی، ورنہ باپ کا نام، اور یہ بھی کافی نہ ہو تو دادا تک کا نام درکار۔ ۱۱۲
- اگر بیان رشتہ کفایت کرے تو اسی قدر کافی۔ ۱۱۲
- مکان میں اگر عورت تنہا ہو اور شاہد اس کی گفتگو سنیں اگرچہ اسے نہ دیکھیں نکاح ہوجائے گا۔ ۱۱۳
- قاضی خاں نے کہا کہ امام خصاف علم میں بڑے ہیں ان کی اقتدا جائز ہے۔ ۱۱۳

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Page	Ruling
112	If a distant guardian (wali ab'ad) performs the marriage of a minor girl without the permission of the closest guardian (wali aqrab), or of an adult woman without her specific permission, then in both these cases he will be considered 'fuzuli' (acting without authority).
112	One who is 'fuzuli' from any side cannot be the person responsible for both conditions of marriage, i.e., proposal (ijab) and acceptance (qabul), even if he mentions the words of proposal and acceptance separately. And if he performs the contract alone, it will be void according to both parties, such that it won't become effective even after the permission of the guardian or the adult woman.
117	If after marriage it becomes known that the woman is incapable of sexual intercourse due to some defect, the marriage is valid and there is no right to annulment.
117	There is no option of defect (khiyar-e-ayb) in marriage.
117	Seclusion (khalwat) is equivalent to intercourse; through it also the full dower (mahr) becomes obligatory, provided there is no hindrance to intercourse.
118	

Page	Ruling
123	Mere declaration of being married is not actually a marriage; i.e., if proposal and acceptance did not take place before witnesses, that woman is not lawful for him even if he says 'she is my wife'.
123	By a false declaration of divorce, divorce will occur legally (qaza'an) but not in the sight of Allah (ind-Allah).
124	A husband gave one divorce; someone asked 'how many divorces did you give?', he said 'three'. Then religiously (diyanatan) it is one and legally (qaza'an) it is three.
125	A false declaration of sale is not a sale.
126	If a false declaration of property was made for someone, that property will not become the ownership of the one it was declared for.
127	

Page	Ruling
	A man and a woman who live in a house as husband and wife and are known as husband and wife shall be considered husband and wife.
121	Treatise: Azab al-Anwar regarding the fact that marriage does not occur by mere declaration.
121	If a woman says 'this is my husband' and a man says 'this is my wife', will marriage occur by this alone when said before witnesses?
122	One who sees a man and a woman living together like husband and wife in a house and having marital intimacy, even if he did not witness the marriage contract, it is permissible for him to testify to their being husband and wife, and it is forbidden to have bad suspicions about them. Legally, all rulings of husband and wife will be established for them.

Page	Ruling
	The judge's ruling removes disagreement, and just as it is enforced externally/legally, it is also enforced internally/ spiritually.
128	There is an obvious difference between reporting/informing (akhbar) and enacting/ creating (insha).
128	In marriage, seriousness and jest are equal. If a man and woman do proposal and acceptance jokingly or under duress, marriage will be contracted even if there was no intention of marriage in the heart.
128	If someone said 'anti taliq' (you are divorced) without intention, divorce will occur.
128	And if by 'anti taliq' he intended 'release from bonds' or informing of a previous divorce, whether he had given divorce before or not, in any case, in these situations, religiously (diyanatan) divorce will not occur.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

पृष्ठ	मसला
११२	यदि वली अक़रब (निकटतम अभिभावक) के होते हुए वली अबअद (दूर का अभिभावक) बिना अनुमति के नाबालिग लड़की का निकाह कर दे, या बालिग लड़की की विशेष अनुमति के बिना उसका निकाह कर दे, तो दोनों स्थितियों में वह 'फ़ुज़ूली' (बिना अधिकार के काम करने वाला) माना जाएगा।
११२	जो किसी पक्ष से फ़ुज़ूली हो, वह निकाह की दोनों शर्तों, अर्थात ईजाब और क़बूल का ज़िम्मेदार नहीं हो सकता, भले ही वह ईजाब और क़बूल के शब्दों को अलग-अलग कहे। और यदि वह अकेला ही निकाह का अनुबंध कर लेता है, तो दोनों पक्षों के अनुसार वह निकाह बातिल (शून्य) होगा, जो वली या बालिग स्त्री की अनुमति के बाद भी प्रभावी नहीं होगा।
११७	निकाह के बाद पता चला कि स्त्री किसी दोष के कारण संभोग के योग्य नहीं है, तो निकाह हो गया, निरस्त करने का अधिकार प्राप्त नहीं है।
११७	निकाह में दोष का विकल्प (खियार-ए-ऐब) नहीं है।
११७	ख़लवत (एकांतवास) संभोग के समान है; इससे भी पूरा मेहर वाजिब हो जाता है, बशर्ते संभोग में कोई बाधा न हो।

पृष्ठ	मसला
१२३	केवल वैवाहिक स्थिति की घोषणा करना वास्तव में निकाह नहीं है; अर्थात यदि गवाहों के सामने ईजाब व क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) नहीं हुए, तो वह स्त्री उसके लिए हलाल नहीं है, भले ही वह कहता हो कि यह मेरी पत्नी है।
१२३	तलाक की झूठी घोषणा से कानूनी तौर पर (क़ज़ाअन) तलाक हो जाएगा, लेकिन अल्लाह की नज़रों में (अिंदल्लाह) नहीं होगा।
१२४	पति ने एक तलाक दिया था; किसी ने पूछा कि तूने कितने तलाक दिए हैं, उसने कहा 'तीन'। तो धार्मिक रूप से (दियानतन) यह एक है और कानूनी रूप से (क़ज़ाअन) तीन।
१२५	बिक्री की झूठी घोषणा बिक्री नहीं है।
१२६	यदि किसी के लिए संपत्ति की गलत घोषणा की गई, तो वह संपत्ति उस

पृष्ठ	मसला
११८	जो पुरुष और स्त्री एक घर में पति-पत्नी के रूप में रहते हैं और पति-पत्नी के रूप में प्रसिद्ध हैं, वे पति-पत्नी माने जाएंगे।
१२१	रिसाला: अज़ब अल-अनवार इस विषय पर कि केवल घोषणा से निकाह नहीं होता।
१२१	स्त्री कहे 'यह मेरा पति है', पुरुष कहे 'यह मेरी पत्नी है', क्या केवल गवाहों के सामने ऐसा कहने से निकाह हो जाएगा?
१२२	जो पुरुष और स्त्री को पति-पत्नी की तरह एक घर में रहते और वैवाहिक आत्मीयता रखते देखे, भले ही उसने निकाह का अनुबंध न देखा हो, उसके लिए उनके पति-पत्नी होने की गवाही देना जायज़ है और उन पर बुरा संदेह करना हराम है। कानूनी तौर पर उनके लिए पति-पत्नी के सभी नियम लागू होंगे।
१२७	काज़ी (न्यायाधीश) का आदेश मतभेद को दूर करता है, और जिस तरह यह ज़ाहिरी तौर पर प्रभावी होता है, वैसे ही बातिनी तौर पर भी।
१२८	सूचना देने (अख़बार) और रचना/सृजन करने (इन्शा) में स्पष्ट अंतर है।
१२८	निकाह में गंभीरता और मज़ाक बराबर हैं। यदि पुरुष और स्त्री मज़ाक में या दबाव में ईजाब और क़बूल करें, तो निकाह हो जाएगा, भले ही दिल में निकाह का इरादा न हो।
१२८	यदि बिना किसी इरादे के 'अंति तालिक़' (तुझे तलाक है) कहा, तो तलाक हो जाएगा।
१२८	और यदि 'अंति तालिक़' से बंधन से मुक्ति या पिछले तलाक की सूचना देने का इरादा किया, चाहे पहले तलाक दिया हो या न दिया हो, बहरहाल इन स्थितियों में धार्मिक रूप से (दियानतन) तलाक नहीं होगा।

पृष्ठ ७३९ का ९

صفحہ	مسئلہ	صفحہ	مسئلہ
۱۱۲	ولی اقرب کے ہوتے ولی ابعد بے اجازت اقرب نابالغہ سے اور بے اجازت خاص بالغہ ، بالغہ سے اگر نکاح کرے گا تو ان دونوں صورتوں میں وہ فضولی ہوگا۔	۱۲۳	مجرد اقرار زوجیت حقیقۃً نکاح نہیں یعنی اگر گواہوں کے سامنے ایجاب وقبول نہ ہوئے ہوں تو وہ عورت اس کے لئے حلال نہیں اگرچہ کہتا ہو کہ یہ میری زوجہ ہے۔
۱۱۲	جو کسی طرف سے فضولی ہو وہ نکاح کی دونوں شرطوں ایجاب وقبول کا متولی نہیں ہوسکتا اگرچہ ایجاب وقبول کی عبارتیں علیحدہ علیحدہ ذکر کرے اور اگر تنہا عقد کرلے گا تو طرفین کے نزدیک نکاح باطل ہوگا کہ بعد اجازت ولی یا بالغہ بھی نافذ نہ ہوگا۔	۱۲۳	طلاق کے جھوٹے اقرار سے قضاءً طلاق ہو جائیگی عنداللہ نہ ہوگی۔
۱۱۷	بعد نکاح علم ہوا کہ عورت کسی عیب سے قابل جماع نہیں تو نکاح ہوگیا حق فسخ حاصل نہیں۔	۱۲۴	شوہر نے ایک طلاق دی تھی کسی نے پوچھا کہ تو نے کتنی طلاقیں دی ہیں ، اس نے کہا تین ، تو دیانۃً ایک ہے اور قضاءً تین۔

صفحہ	مسئلہ
۱۱۷	نکاح میں خیار عیب نہیں۔
۱۱۷	خلوت بمنزلہ وطی ہے اس سے بھی پورا مہر لازم ہوجاتا ہے جبکہ مانع وطی کوئی امر موجود نہ ہو۔
۱۱۸	جو عورت ومرد ایک مکان میں بطور زن و شوہر رہتے اور زن وشوہر مشہور ہوں وہ زوج وزوجہ تصور کئے جائیں گے۔
۱۲۱	رسالہ عذب الانوار ان لانکاح بمجرد الاقرار۔
۱۲۱	عورت کہے یہ میرا شوہر ہے، مرد کہے یہ میری بی بی ہے، کیا فقط اس سے نکاح ہوجائے گا جبکہ شاہدین کے سامنے کہیں۔
۱۲۲	جومرد وزن کو مثل زن وشوہر ایک مکان میں رہتے اور باہم انبساط زن وشوئی رکھتے دیکھے اس نے اگرچہ عقد نکاح کا معائنہ نہ کیا ہو اسے ان کے زوج وزوجہ ہونے پر گواہی دینا جائز اور ان پر گمان بد کرنا حرام ہے اور قضاء ان کے لئے زوج وزوجہ کے تمام احکام ثابت ہوں گے۔

صفحہ	مسئلہ
۱۲۵	بیع کا جھوٹا اقرار بیع نہیں۔
۱۲۶	کسی کے لئے مال کا غلط اقرار کیا تو وہ مال مقرلہ کی ملکیت نہ ہوگا۔
۱۲۷	حکم قاضی رافع خلاف ہے اور قضاء جس طرح ظاہراً نافذ ہوتی ہے یونہی باطناً بھی۔
۱۲۸	اخبار وانشاء میں بداہۃً تباین ہے۔
۱۲۸	نکاح میں جد وہزل برابر ہیں اگرزن ومرد بطور ہزل یا باکراہ ایجاب وقبول کریں نکاح منعقد ہوجائے گا اگرچہ دل میں ارادہ نکاح نہ ہو۔
۱۲۸	اگر بے نیت انت طالق کہا طلاق ہو جائے گی

مسئلہ	مسئلہ صفحہ	صفحہ
اور اگر انت طالق سے طلاق عن الوثاق یا طلاق سابق سے خبر دینے کی نیت کی خواہ پہلے طلاق دے چکا ہو یا نہ دی ہو ، بہر حال ان صورتوں میں دیانۃً طلاق نہ ہوگی۔	۱۲۸	

Fatawa Rizwia Volume Eleven

Page	Right Column Content	Case No.	Left Column Content	Page
132	Settlement is referred back to the nearest Sharia contracts.	128	Metaphors (Kinayat) require intention.	132
132	If a man claims marriage to a woman and she denies it, then she gives him some wealth to settle so that he withdraws his claim, it is permissible. In the claimant's view, it will take the meaning of Khula, but the jurists said that taking this wealth will not be lawful for him before Allah Almighty if he is false in his claim.	129	Reasoning is the proof for interpretation.	132
132	Settlement on part of a debt is valid, and there will also be exoneration from the claim of the remainder; that is, only legally (qada'an) and not religiously (diyanatan). Therefore, if he finds an opportunity, it will be permissible for him to take the remainder.	129	The one whose proof is stronger is more deserving of interpretation.	132
134	Marriage will be valid with words that carry the possibility of both reporting (akhbar) and enacting (insha'), with the intention of enacting, provided the witnesses know that the intention is to enact the contract.	129	Practice is upon what the majority follows.	134
135		130		135

Page	Right Column Content	Case No.	Left Column Content	Page
	If a man says to a woman "You are not my wife" and he intended divorce by it, then divorce will occur, and it will be interpreted as: you are not my wife because I have already given you a divorce.		The phrases "alayh al-fatwa" and "bihi yufta" are more emphatic than the word "fatwa".	
135	If someone says to his wife, "I have not married her," and intends divorce by it, then divorce will not occur because this is pure falsehood, the correction of which is impossible.	130	What the core texts (mutoon) agree upon is excellent and the inclination is towards it.	135
137	Great success in [reconciling] the choice of Imam Faqih al-Nafs and the correction by common Imams.	130	If a man claims marriage to a woman and she denies it, then the man gives her something to settle on the condition that she admits the marriage; if she then admits it, this admission is valid and the property becomes mandatory. If this admission was in front of witnesses, then if the woman denies it again, the judge will not listen to her denial.	137
		131	If a person claims a sale and the defendant admits it to avoid an oath or to escape the humiliation of the court, then the sale will be legally established and the rulings, such as the obligation of delivery, the necessity of pre-emption, etc., will be applied. But if this claimant is a liar, what is he taking into his house? In reality, he is taking fire.	

फ़तावा रज़विया ग्यारहवीं जिल्द

पृष्ठ	दायां स्तंभ विषय-वस्तु	प्रकरण सं.	बायां स्तंभ विषय-वस्तु	पृष्ठ
१३२	सुलह (समझौता) निकटतम शरई अनुबंधों की ओर संदर्भित की जाती है।	१२८	किनायात (इशारे) नीयत के मोहताज हैं।	१३२
१३२	यदि कोई पुरुष किसी स्त्री पर विवाह का दावा करे और स्त्री इनकार करे, फिर वह स्त्री उसे कुछ धन देकर इस पर सुलह कर ले कि वह उस दावे से हट जाए, तो यह जायज़ है। यह दावेदार की नज़र में 'खुलअ' के अर्थ में हो जाएगा, लेकिन फ़ुक़्हा (न्यायविदों) ने फ़रमाया कि यदि वह अपने दावे में झूठा है तो उसके लिए उस धन को लेना अल्लाह तआला के सामने हलाल नहीं होगा।	१२९	दलील की वजह बताना ही तावील (व्याख्या) है।	१३२
१३२	ऋण के कुछ हिस्से पर सुलह सही है और शेष दावे से मुक्ति भी हो जाएगी; यानी केवल कानूनी तौर पर (क़ज़ान), धार्मिक तौर पर (दयानतन) नहीं। इसलिए यदि उसे अवसर मिले, तो उसके लिए शेष हिस्सा लेना जायज़ होगा।	१२९	जिसकी दलील अधिक प्रबल हो, वह तावील (व्याख्या) का अधिक पात्र है।	१३२
१३४	ऐसे शब्दों से जिनमें सूचना और कार्यन्वयन दोनों की संभावना हो, विवाह कार्यन्वयन (इंशा) की नीयत से सही होगा, बशर्ते कि गवाहों को पता हो	१२९	अमल उसी पर है जिस पर बहुमत है।	१३४

पृष्ठ	दायां स्तंभ विषय-वस्तु	प्रकरण सं.	बायां स्तंभ विषय-वस्तु	पृष्ठ
	कि उद्देश्य निकाह का अनुबंध करना है।			
१३५	पुरुष ने स्त्री से कहा 'तू मेरी बीवी नहीं' और इससे उसने तलाक की नीयत की, तो तलाक हो जाएगा और इसका अर्थ यह निकाला जाएगा कि 'तू मेरी बीवी नहीं क्योंकि मैं तुझे तलाक दे चुका हूँ'।	१३०	'अलैह अल-फ़तवा' और 'बिही युफ़्ता' शब्द फ़तवा शब्द से अधिक प्रभावशाली हैं।	१३५
१३५	यदि कोई अपनी पत्नी के लिए कहे 'मैंने उससे विवाह नहीं किया' और इससे तलाक की नीयत करे, तो तलाक नहीं होगा क्योंकि यह पूरी तरह से झूठ है, जिसका सुधार असंभव है।	१३०	जिस पर मूल ग्रंथ (मुतून) हों, वही श्रेष्ठ है और उसी की ओर झुकाव होता है।	१३५
१३७	इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स की पसंद और आम इमामों के सुधारों के बीच महान समन्वय।	१३०	यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री पर विवाह का दावा करे और स्त्री इनकार कर दे, फिर वह व्यक्ति उसे कुछ देकर इस बात पर सुलह कर ले कि वह इस विवाह को स्वीकार करे। अब स्त्री ने स्वीकार कर लिया, तो यह स्वीकृति वैध है और धन अनिवार्य होगा। यदि यह स्वीकृति गवाहों के सामने हुई हो, तो अब यदि स्त्री फिर से इनकार करेगी, तो न्यायाधीश (क़ाज़ी) उसका यह इनकार नहीं सुनेगा।	१३७
		१३१	यदि कोई व्यक्ति किसी बिक्री (बय) का दावा करे और प्रतिवादी कसम से बचने या अदालत के अपमान से बचने के लिए	

पृष्ठ दायां स्तंभ विषय-वस्तु	प्रकरण सं.	बायां स्तंभ विषय-वस्तु	पृष्ठ
		स्वीकार कर ले, तो बिक्री कानूनी रूप से सिद्ध हो जाएगी और सुपुर्दगी की अनिवार्यता, शुफ़आ (पूर्व-क्रय अधिकार) आदि के नियम लागू होंगे। लेकिन यदि यह दावेदार झूठा है, तो वह अपने घर क्या ले जा रहा है? वास्तव में वह आग ले जा रहा है।	
पृष्ठ १०/७३९			

صفحہ	دائیں کالم کا متن	شمار	بائیں کالم کا متن	صفحہ
۱۳۲	صلح اقرب عقود شرعیہ کی طرف راجع کی جاتی ہے۔	۱۲۸	کنایات محتاج نیت ہیں۔	۱۳۲
۱۳۲	اگر کوئی مرد کسی عورت پر نکاح کا دعوی کرے اور عورت منکر ہو پھر وہ عورت اسے کچھ مال دے کر اس پر صلح کرے کہ وہ اس دعوی سے باز آجائے تو جائز اور یہ مدعی کے زعم میں معنی خلع میں ہو جائے گا مگر فقہاء نے فرمایا کہ اسے اس مال کا اخذ فیما بینہ و بین اللہ تعالیٰ حلال نہ ہوگا جبکہ وہ اپنے دعوی میں مبطل ہے۔	۱۲۹	تعلیل دلیل تاویل ہے۔	۱۳۲
۱۳۲	بعض دین پر صلح صحیح ہے اور باقی کے دعوی سے براءت بھی ہو جائے گی یعنی فقط قضاءً نہ دیانتاً اسی لئے اگر وہ موقع پائے گا تو اسے باقی کا لے لینا جائز ہوگا۔	۱۲۹	جس کی دلیل اقوی ہو وہ تاویل کا زیادہ مستحق ہے۔	۱۳۲

صفحہ	دائیں کالم کا متن	شمار	بائیں کالم کا متن	صفحہ
۱۳۴	ایسے الفاظ سے جن میں اخبار وانشاء دونوں کا احتمال ہو، بہ نیت انشاء نکاح صحیح ہوگا جبکہ شہود کو علم ہو کہ مقصود انشاء عقد ہے۔	۱۲۹	عمل اسی پر جس پر اکثریت ہے۔	۱۳۴
۱۳۵	مرد نے عورت سے کہا تو میری بی بی نہیں اور اس سے اس نے طلاق کی نیت کی تو طلاق ہو جائے گی اور اس کے یہ معنی ٹھہریں گے کہ تو میری بی بی نہیں اس لئے کہ میں تجھے طلاق دے چکا ہوں۔	۱۳۰	علیہ الفتوی اور بہ یفتی الفاظ فتوی سے آکد ہیں۔	۱۳۵
۱۳۵	اگر کوئی اپنی بی بی کو کہے میں نے اس سے نکاح نہیں کیا اور اس سے نیت طلاق کی کرے تو طلاق نہ ہوگی کہ یہ کذب محض ہے جس کی تصحیح ناممکن ہے۔	۱۳۰	جس پر متون ہوں وہی عمدہ ہے اور اسی کی طرف جھکاؤ ہوتا ہے۔	۱۳۵
۱۳۷	امام فقیہ النفس کے مختار اور عام ائمہ کی تصحیح میں توفیق جلیل۔	۱۳۰	اگر کوئی شخص کسی عورت پر نکاح کا دعوی کرے اور عورت انکار کر دے پھر وہ شخص اس کو کچھ دے کر اس سے اس بات پر صلح کرلے کہ وہ	۱۳۷

صفحہ	دائیں کالم کا متن شمار	بائیں کالم کا متن صفحہ
		اس نکاح کا اقرار کرے ، اب عورت نے اقرار کرلیا تو یہ اقرار جائز اور مال لازم ہوگا۔ اگر یہ اقرار شہود کے سامنے ہوا ہو اب اگر عورت پھر انکار کرے گی تو قاضی اس کا یہ انکار نہ سنے گا۔
	۱۳۱	اگر کوئی شخص کسی بیع کا دعوی کرے اور مدعا علیہ قسم سے بچنے یا کچہری کی ذلت سے گریز کرنے کے سبب اقرار کر لے تو بیع قضاءً ثابت ہو جائینگی اور احکام، وجوب تسلیم ولزوم شفعہ وغیرہ جاری ہوں گے لیکن یہ مدعی کاذب وہ گھر کیا لے گا درحقیقت آگ لے گا۔

Fatawa Razawiya, Volume 11

- 138: It is not necessary for witnesses to understand the literal meanings of the words of proposal and acceptance (Ijab and Qabul); it is sufficient that they understand a marriage (Nikah) is taking place.
- 138: The difference between a virgin (Bikr) and a non-virgin (Sayyiba) is only regarding silence: a virgin's silence constitutes consent, while a non-virgin's does not.
- 140: Contemporaneity between the state and the just nature [of witnesses] is necessary.
- 139: If a proxy's proxy conducts the marriage in the presence of the first proxy and he approves it, the marriage becomes effective, unlike in matters of divorce and manumission.
- 140: Mentioning the dower (Mahr) is not a condition for the validity of a marriage, as marriage can take place without mentioning the dower, and even on the condition of its absence.
- 150: The marriage proxy is merely an intermediary; the rights of the marriage return to the principal (Muwakkil).
- 141: Treatise: Mahi al-Dalal fi Ankihat al-Hind wa Bengal (Eraser of Misguidance regarding Marriages in India and Bengal).
- 150: A proxy for paying Zakat can appoint another proxy without the principal's permission.
- 141: Detailed rulings regarding the prevalent customs in India and Bengal, where permission is sought for someone, the marriage officiant is someone else, or the woman does not give permission due to shyness and the women sitting near her say "yes" on her behalf, etc.
- 151: A proxy for collecting debt can appoint a family member as a proxy without the principal's permission.
- 143: A maiden's silence is considered permission only for the closest guardian (Wali), not for a distant one.
- 151: If the principal has fixed the price for the proxy, he can appoint another as a proxy without the principal's permission.
- 143: As long as a marriage proxy is not fully authorized or explicitly permitted to delegate, he cannot appoint another proxy.
- 151: The pure Sharia prefers ease and facility over hardship and severity.

- 143: In buying and selling, if the contract is made in the presence of the first proxy, it is permissible; however, it is not permissible in disputes, litigation, marriage, divorce, etc.
- 151: Where there are several narrations, scholars should lean toward that which saves Muslims from hardship.
- 145: In the presence of a correct narration from primary sources, all other narrations are dismissed.
- 153: An account of the difficulties in the prevalent methods of marriage and three ways to avoid them.
- 145: An unauthorized marriage (Nikah-e-Fuzuli) depends on subsequent permission; considering it inherently void is incorrect.
- 153: Permission does not apply to that which has been revoked or rejected.
- 145: Just as permission for marriage can be verbal, it can also be through action or circumstantial evidence; with some examples.
- 153: If clear disbelief (Kufr) was committed before marriage and the marriage was conducted without repentance, the marriage is void and the offspring are illegitimate (Walad-ul-Zina).

फतावा रज़विया, जिल्द 11

- 138: गवाहों के लिए ईजाब और क़बूल के शब्दों के शाब्दिक अर्थ को समझना आवश्यक नहीं है, इतना ही काफी है कि वे समझें कि निकाह हो रहा है।
- 138: कुंवारी (बिक्र) और गैर-कुंवारी (सैयबा) के बीच का अंतर केवल चुप्पी के बारे में है, कि कुंवारी की चुप्पी अनुमति है, गैर-कुंवारी की नहीं।
- 140: [गवाह के] हाल और आदिल होने में तुलनात्मकता (मुकारनत) आवश्यक है।
- 139: वकील का वकील यदि पहले वकील के सामने निकाह पढ़ा दे और वह उसे स्वीकार कर ले तो निकाह प्रभावी हो जाएगा, इसके विपरीत तलाक और गुलामी से मुक्ति के मामले में ऐसा नहीं है।
- 140: निकाह की वैधता के लिए मेहर का उल्लेख करना शर्त नहीं है, क्योंकि निकाह बिना मेहर के उल्लेख के भी हो जाता है, बल्कि मेहर न होने की शर्त पर भी हो जाता है।
- 150: निकाह का वकील केवल एक दूत है, निकाह के अधिकार मुवक्किल की ओर लौटते हैं।
- 141: रिसाला माही अल-दलाल फि अनकिहत अल-हिंद व बंगाल।
- 150: ज़कात देने का वकील मुवक्किल की अनुमति के बिना किसी और को वकील बना सकता है।
- 141: भारत और बंगाल में जो तरीके प्रचलित हैं, जिनमें अनुमति किसी और के लिए ली जाती है, निकाह पढ़ाने वाला कोई और होता है, या महिला शर्म के कारण अनुमति नहीं देती है, बल्कि पास बैठने वाली महिलाएं उसकी ओर से "हूँ" कर देती हैं आदि, इस बारे में विस्तृत नियम।
- 151: ऋण वसूल करने का वकील मुवक्किल की अनुमति के बिना अपने परिवार के सदस्य को वकील बना सकता है।
- 143: कुंवारी की चुप्पी केवल निकटतम वली (अभिभावक) के लिए अनुमति मानी जाती है, दूर के वली के लिए नहीं।
- 151: यदि मुवक्किल ने वकील के लिए मूल्य तय कर दिया है, तो वह मुवक्किल की अनुमति के बिना किसी दूसरे को वकील बना सकता है।
- 143: जब तक निकाह का वकील पूर्णतः अधिकृत न हो या स्पष्ट रूप से उसे अधिकार न दिया गया हो, वह किसी और को वकील नहीं बना सकता।

- 151: पावन शरीयत सुगमता और आसानी को पसंद करती है, न कि तंगी और सख्ती को।
- 143: खरीद-बिक्री में यदि पहले वकील के सामने अनुबंध किया जाए तो जायज़ है, लेकिन विवाद, मांग, निकाह और तलाक आदि में जायज़ नहीं।
- 151: जहाँ कई रिवायतें हों, वहाँ उलेमाओं को उस ओर झुकना चाहिए जिससे मुसलमानों को तंगी से बचाया जा सके।
- 145: सिद्धांतों की सही रिवायत के मौजूद होने पर, उसके अलावा अन्य सभी रिवायतें निरस्त हो जाती हैं।
- 153: निकाह के प्रचलित तरीकों में जो कठिनाइयाँ हैं उनका वर्णन और उनसे बचने के तीन तरीके।
- 145: निकाह-ए-फ़ुज़ूली (अनधिकृत निकाह) अनुमति पर निर्भर करता है, इसे पूरी तरह से अमान्य (बातिल) समझना गलत है।
- 153: रद्द या अस्वीकृत अनुमति प्रभावी नहीं होती।
- 145: निकाह की अनुमति जिस प्रकार शब्दों से होती है, उसी प्रकार कर्म और परिस्थिति (दलालत-ए-हाल) से भी होती है, और इसके कुछ उदाहरण।
- 153: निकाह से पहले यदि स्पष्ट रूप से कुफ़्र (अविश्वास) किया और बिना पश्चाताप के निकाह किया तो निकाह बातिल है और संतान अवैध (वलद-उल-ज़िना) होगी।

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

- ۱۳۸: شہود کا الفاظ ایجاب وقبول کے لفظی معنی سمجھنا ضرور نہیں، اتنا ضرور ہے کہ نکاح ہونا سمجھیں۔
- ۱۳۸: بکر وشیب کا فرق صرف دربارہ سکوت ہے کہ بکر کا سکوت اذن ہے شیب کا نہیں۔
- ۱۴۰: حال اور عادل میں مقارنت ضروری ہے۔
- ۱۳۹: وکیل کا وکیل اگر وکیل اول کے سامنے پڑھا دے اور وہ جائز کر دے تو نکاح نافذ ہو جائیگا، بخلاف طلاق وعتاق کے۔
- ۱۴۰: صحت نکاح کیلئے ذکر مہر شرط نہیں کہ نکاح بے ذکر مہر بلکہ بشرط عدم مہر بھی نکاح ہو جاتا ہے۔
- ۱۵۰: وکیل نکاح معبر محض ہے حقوق نکاح موکل کی طرف راجع ہوتے ہیں۔
- ۱۴۱: رسالہ ماحی الضلال فی انکحہ الھند وبنگالہ۔
- ۱۵۰: ادائے زکوۃ کا وکیل بغیر اذنِ موکل دوسرے کو وکیل کر سکتا ہے۔
- ۱۴۱: ہندوستان وبنگالہ میں جو طریقے رائج ہیں کہ اجازت کسی کے لئے لی جاتی ہے نکاح خواں کوئی ہوتا ہے یا سرے سے عورت شرم کے سبب اجازت دیتی ہی نہیں پاس بیٹھنے والیاں اس کی طرف سے "ہوں" کر دیتی ہیں وغیرہ وغیرہ اس بارے میں تفصیلی احکام۔
- ۱۵۱: دین وصول کرنے کا وکیل بغیر اذنِ موکل اپنے عیال کو وکیل کر سکتا ہے۔
- ۱۴۳: سکوت دوشیزہ سے صرف ولی اقرب کے لئے اجازت ہوتی ہے ولی ابعد کے لئے نہیں ہو سکتی۔

- ۱۵۱: موکل اگر وکیل کے لئے ثمن کی تعیین کر دے تو وہ بلا اجازت موکل دوسرے کو وکیل بنا سکتا ہے۔
- ۱۴۳: جب تک وکیل بالنکاح ماذون مطلق یا بصراحت دوسرے کو وکیل کر دینے کا مجاز نہ ہو اور کو وکیل نہیں کر سکتا۔
- ۱۵۱: شریعتِ مطہرہ رفق و تیسیر کو پسند فرماتی ہے نہ کہ تضییق و تشدید کو۔
- ۱۴۳: بیع وشراء اگر وکیلِ اول کے سامنے عقد کرے تو جائز ہے اور خصومت، تقاضی، نکاح اور طلاق وغیرہ میں جائز نہیں۔
- ۱۵۱: جہاں چند روایات ہوں وہاں علماء کو ادھر جھکنا چاہئے جس میں مسلمان تنگی سے بچیں۔
- ۱۴۵: اصول کی صحیح روایت کے ہوتے ہوئے اس کے ماسوا تمام روایات ساقط ہو جاتی ہیں۔
- ۱۵۳: نکاح کے طرقِ رائجہ میں جو دقتیں ہیں ان کا بیان اور ان سے بچنے کے تین طریقے۔
- ۱۴۵: نکاح فضولی اجازت پر موقوف ہوتا ہے اسے باطل جاننا باطل ہے۔
- ۱۵۳: اجازتِ مفسوخ و مردود کو لاحق نہیں ہوتی۔
- ۱۴۵: اجازتِ نکاح جس طرح قول سے ہوتی ہے یونہی فعل اور دلالتِ حال سے بھی، اور اس کی چند مثالیں۔
- ۱۵۳: قبلِ نکاح اگر کفر صریح کیا اور بے توبہ نکاح کیا تو نکاح باطل اور اولاد ولد الزنا۔

Fatawa-e-Razvia Volume 11

153 | After marriage, if one of the spouses (God forbid) becomes an apostate, any children born from subsequent intercourse will be illegitimate. | 163 | Proposal and acceptance cannot remain suspended for an absent party; rather, it will become void. 153 | On the utterance of words of disbelief for which the speaker is not declared an infidel, the command for renewal of Islam and renewal of marriage will surely apply, but the children will not be illegitimate. | 163 | To appoint someone as a proxy (Tawkeel) is to make them one's deputy in a permissible action. 155 | Inquiry (Istifham) and contract (Aqd) are two distinct types of creative speech (Insha). | 164 | Mere expression of consent is not a proxy appointment (Tawkeel). 155 | A context/ indication is necessary for metaphorical use (Majaz). | 164 | If someone says to another "I wish you had married me to so-and-so" and they do, then this is an unauthorized (Fazuli) marriage. 155 | Zaid said to Amr, "Have you given your daughter in marriage to me?" He replied, "I have given." What will be the ruling? | 164 | If a person says, "Whichever woman I marry is divorced," then tells someone, "I wish you would marry me to such-and-such a woman," and they do, then he will not be a breaker of oath, and divorce will not occur because he did not perform the marriage himself. 155 | It was said to the father of a minor girl, "Give your daughter in my marriage." He replied, "I have given." What will be the ruling? | 164 | An inquiry made at the time of intent for verification serves the meaning of a command. 159 | If in a betrothal gathering it is said "Have you given your daughter to me or so-and-so?" and he says "I have given," it will be a betrothal, but in a marriage gathering, it will be a marriage. | 165 | If one says to someone "Marry me" or says to a woman "Become my wife, marry me," is this proxy appointment (Tawkeel) or a proposal (Ijab)? 161 | An unauthorized contract (Aqd-e-Fazuli) is not merely futile and unacceptable, but rather it remains suspended upon the permission of the authorized person. | 166 | If a marriage proxy says to a girl's father, "Give your daughter to so-and-so," and he says "I have gifted her to him," the marriage will not take place until the proxy says "I have accepted." 163 | In proposal and acceptance, if one said "gave" and "did," the marriage is solemnized even if "I gave" and "I accepted" were not explicitly said. | 166 | Every contract in which proxy appointment is valid, if performed by an unauthorized person (Fazuli), will remain suspended upon permission; if ratified, it becomes effective, and if rejected, it becomes void, except for purchase (Shira), as it does not depend on permission. 163 | Unity of the gathering is necessary for proposal and acceptance. | |

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 11

153 | निकाह के बाद अगर मियां-बीवी में से कोई (अल्लाह न करे) मुर्तद (धर्मत्यागी) हो जाए, तो उसके बाद के संभोग से जो संतान होगी, वह अवैध (हरामी) होगी। | 163 | प्रस्ताव और स्वीकृति (ईजाब-ओ-क़ुबूल) अनुपस्थित व्यक्ति के लिए स्थगित नहीं रह सकते, बल्कि निरस्त (बातिल) हो जाएंगे। 153 | कुफ़्र के ऐसे शब्दों के उच्चारण पर जिनके कारण वक्ता को काफ़िर न कहा जाए, इस्लाम और निकाह के नवीनीकरण (तजदीद) का आदेश अनिवार्य होगा, लेकिन संतान अवैध नहीं होगी। | 163 | तोकील (प्रतिनिधि बनाना) किसी को किसी वैध कार्य में अपना प्रतिनिधि (नाइब) बनाना है। 155 | पूछताछ (इस्तफ़हाम) और अनुबंध (अक़्द), 'इन्शा' (रचनात्मक भाषण) के दो अलग-अलग प्रकार हैं। | 164 | केवल सहमति व्यक्त करना प्रतिनिधि बनाना (तोकील) नहीं है। 155 | रूपक (मजाज़) के लिए संदर्भ/संकेत की आवश्यकता होती है। | 164 | कोई किसी से कहे "काश तुम मेरा निकाह फ़लां से कर देते" और वह कर दे, तो यह निकाह-ए-फ़ज़ूली (अनधिकृत निकाह) होगा। 155 | ज़ैद ने अम्र से कहा "तूने अपनी बेटी मेरे निकाह में दी", उसने कहा "दे दी", तो क्या हुक्म होगा? | 164 | यदि कोई व्यक्ति कहे कि "जिस स्त्री से मैं विवाह करूँगा उसे तलाक़ है", फिर किसी व्यक्ति से कहे कि "काश तुम फ़लां स्त्री से मेरा विवाह कर देते", और वह कर दे, तो वह शपथ भंग करने वाला नहीं होगा और तलाक़ नहीं होगी क्योंकि उसने स्वयं विवाह नहीं किया। 155 | एक नाबालिग लड़की के पिता से कहा गया, "तुम अपनी लड़की मेरे विवाह में दे दो", उसने कहा "दे दी", तो क्या हुक्म होगा? | 164 | इरादे के समय किया गया पूछताछ (इस्तफ़हाम) आदेश (अम्र) का अर्थ देता है। 159 | सगाई की सभा में यदि कहा जाए "तुमने अपनी बेटी मुझे या फ़लां को दी?" और वह कहे "दे दी", तो वह सगाई होगी, और निकाह की सभा में वह निकाह माना जाएगा। | 165 | किसी से कहे "मेरा निकाह करा दे" या स्त्री से कहे "मेरी पत्नी बन जा, मुझसे निकाह कर ले", तो यह तोकील (प्रतिनिधि बनाना) है या ईजाब (प्रस्ताव)? 161 | अनधिकृत अनुबंध (अक़्द-ए-फ़ज़ूली) केवल व्यर्थ और अस्वीकार्य नहीं है, बल्कि वह अधिकारी की अनुमति पर निर्भर होता है। | 166 | निकाह का वकील लड़की के पिता से कहे "अपनी बेटी फ़लां को दे दो", और वह कहे "मैंने उसे उपहार (हिबा) दी", तो निकाह तब तक नहीं होगा जब तक वकील "मैंने स्वीकार किया" न कहे। 163 | ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) में "दिया" और "किया" कहा गया, तो निकाह हो गया चाहे "मैंने दिया" और "मैंने स्वीकार किया" न कहा हो। | 166 | हर वह अनुबंध जिसमें तोकील (प्रतिनिधि बनाना) सही है, यदि कोई अनधिकृत व्यक्ति (फ़ज़ूली) उसे करेगा तो वह अनुमति पर

स्थगित रहेगा; यदि वह उसे प्रभावी कर देगा तो प्रभावी हो जाएगा और यदि अस्वीकार कर देगा तो निरस्त हो जाएगा, सिवाय ख़रीदारी (शिरा) के कि यह अनुमति पर निर्भर नहीं होता। 163 | ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के लिए एक ही सभा (इत्तेहाद-ए-मजालिस) का होना अनिवार्य है। | |

पृष्ठ 12 / 739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

۱۵۳ | نکاح کے بعد اگر زوجین میں سے کوئی معاذ اللہ مرتد ہو گیا تو اس کے بعد کے جماع سے جو اولاد ہوگی وہ حرامی ہو گی۔ | ۱۶۳ | ایجاب قبول غائب پر موقوف نہیں رہ سکتا بلکہ باطل ہو جائے گا۔ ۱۵۳ | ایسے کلمات کفر کے صدور پر جن سے قائل کو کافر نہ کہیں، تجدید اسلام و تجدید نکاح کا حکم ضرور ہوگا، مگر اولاد ولد زنا نہ ہو گی۔ | ۱۶۳ | توکیل کسی کو کسی تصرف جائز معلوم میں اپنا نائب بنانا ہے۔ ۱۵۵ | استفہام اور عقد اقسام انشاء میں سے دو متبائن قسمیں ہیں۔ | ۱۶۴ | محض اظہار رضا توکیل نہیں۔ ۱۵۵ | مجاز کے لئے قرینہ کی حاجت ہوتی ہے۔ | ۱۶۴ | کوئی کسی سے کہے کاش تو میرا نکاح فلاں سے کر دیتا اور وہ کر دے تو یہ نکاح فضولی ہو گا۔ ۱۵۵ | زید نے عمرو سے کہا تو نے اپنی بیٹی میرے نکاح میں دی، اس نے کہا دی، تو کیا حکم ہوگا۔ | ۱۶۴ | اگر کوئی شخص کہے کہ جس عورت سے میں نکاح کروں اسے طلاق، پھر کسی شخص سے کہا کہ کاش تو فلاں عورت سے میرا نکاح کر دے۔ اس نے کر دیا تو حانث نہ ہو گا اور طلاق واقع نہ ہوگی کہ اس نے خود نکاح نہیں کیا۔ ۱۵۵ | نا بالغہ کے باپ سے کہا کہ تو اپنی لڑکی میرے نکاح میں دے دے، اس نے کہا دی، تو کیا حکم ہوگا۔ | ۱۶۴ | استفہام ہنگام ارادہ تحقیق مفید معنی امر ہوتا ہے۔ ۱۵۹ | مجلس منگنی میں اگر کہا تو نے اپنی بیٹی مجھے یا فلاں کو دی، اس نے کہا دی، تو منگنی ہوگی اور مجلس نکاح میں تو نکاح۔ | ۱۶۵ | کسی سے کہے میرا نکاح کر دے یا عورت سے کہے تو میری بی بی ہو جا، مجھ سے نکاح کر لے تو یہ توکیل ہے یا ایجاب۔ ۱۶۱ | عقد فضولی محض فضول و نامقبول نہیں بلکہ اجازت صاحب اجازت پر موقوف ہوتا ہے۔ | ۱۶۶ | وکیل بال نکاح لڑکی کے باپ سے کہے تو اپنی بیٹی فلاں کو دے دے اور وہ کہے میں نے اسے ہبہ کی، نکاح نہ ہو گا جب تک وکیل "قبول کی میں نے" نہ کہے۔

۱۶۳ | ایجاب و قبول میں دیا اور کیا کہا، نکاح ہو گیا اگرچہ میں نے دی میں نے قبول کیا نہ کہا۔ | ۱۶۶ | ہر وہ عقد جس میں توکیل صحیح ہے اگر وہ فضولی کرے گا تو اجازت پر موقوف رہے گا، نافذ کر دے گا تو نافذ ہو جائے گا اور رد کر دے گا تو رد ہو جائے گا مگر شراء کہ یہ اجازت پر موقوف نہیں ہوتا۔ ۱۶۳ | ایجاب و قبول کے لئے اتحاد مجلس ضرور ہے۔ | |

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Ref	Topic	Ref	Topic	Page
168	From the speech of the contracting parties, what comes first is the proposal (Ijab) and what comes later is the acceptance (Qabul).	168	It is not necessary for an agent (wakil) to be Muslim and adult; a non-Muslim or a wise minor can also be an agent.	172
168	If a slave marries without his master's permission and the master, upon hearing about it, orders a divorce, then this order of divorce will be considered as permission for that suspended marriage.	168	Agency (wakalat) of an apostate (murtad) is permissible.	172
169	If an unauthorized person (fuzuli) performs a marriage with a suitable match (kufu) and the woman remains silent after hearing about it, this silence can be considered permission; however, it will be rejected by expressing dislike.	169	If at the time of appointment the agent was a Muslim and then became an apostate, the agency will not be void unless he goes to Dar-ul-Harb (land of war).	172
169	Suitability (kufu) means that in religion, lineage, profession, or conduct, the man should not be so inferior to the woman that his marriage brings shame to the woman's guardians.	169	An insane person or an unintelligent child cannot be an agent.	172
170	If a woman is alone in a house and a man says before male witnesses, "I	170	Adulthood and freedom are not conditions for the validity of agency.	172

Ref	Topic	Ref	Topic	Page
	have married the woman who is in this house," and the woman says, "I have accepted," the marriage is valid even if the witnesses did not see the woman.			
170	A woman being in a veil (purdah) does not change the gathering (majlis) just by itself.	170	If an apostate or an adult, claiming guardianship (wilayat), performs the marriage of his son, daughter, brother, sister, or any female minor, in what situation will it be purely void?	173
171	If a woman is present in the marriage assembly wearing a face-veil (niqab), it is not necessary for the witnesses to identify her.	171	Ruling on getting a marriage solemnized by an apostate.	173
171	Immediate acceptance is not necessary if the gathering (majlis) does not change.	171	An apostate cannot be a guardian (wali) for anyone, and a minor is also not fit for guardianship.	173
171	A wise minor who commits disbelief (kufr) or, after becoming aware of disbelief, likes it, is a disbelieving apostate.	171	If an unauthorized person (fuzuli) enters into a contract for which there is no granter of permission, then that contract is purely void.	173
171	Being pleased with disbelief is also disbelief.	171	A father said, "I will buy a house, then I will perform the marriage." The husband said, "Perform the marriage first, then I will buy it." The father performed the marriage and sent off the bride. The woman made no condition. The house also remained unknown. Was this marriage without conditions or conditional? And is the husband's	173

Ref	Topic	Ref	Topic	Page
			conditional acknowledgment void or not, and is this marriage intact or what?	
172	One should not seek help from a polytheist, especially in religious matters.	172	One thousand rupees and some gift were fixed as dower (mahr) and the gift was not given, then 'mahr al-mithl' (proper dower) will be mandatory. Even if the gift was unknown, once it came into existence, the ignorance (jahalat) was removed.	174
172	If a minor or a disbeliever facilitates the proposal and acceptance, the marriage will be valid, and even if they are acting as an agent and perform the proposal or acceptance themselves.			

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

संदर्भ	विषय	संदर्भ	विषय	पृष्ठ
168	अनुबंध करने वालों की बातों में जो पहले हो वह ईजाब (प्रस्ताव) है और जो बाद में हो वह कुबूल (स्वीकृति) है।	168	वकील का मुस्लिम और बालिग होना ज़रूरी नहीं है, गैर-मुस्लिम और समझदार नाबालिग भी वकील हो सकता है।	172
168	बिना मालिक की इजाज़त के गुलाम निकाह कर ले और मालिक को खबर होने पर वह तलाक का हुक्म दे, तो तलाक का यह हुक्म उस मौकूफ (निलंबित) निकाह की इजाज़त माना जाएगा।	168	मुर्तद (धर्मत्यागी) की वकालत जायज़ है।	172
169	फुज़ूली (बिना अधिकार वाला व्यक्ति) अगर कुफ़ु(समानता) में निकाह कर दे और औरत खबर पाकर खामोश रहे, तो यह खामोशी इजाज़त मानी जा सकती है और नफरत ज़ाहिर करने से रद्द हो जाएगा।	169	अगर वकालत सौंपते समय वकील मुसलमान हो और फिर मुर्तद हो जाए, तो वकालत तब तक बातिल (अमान्य) नहीं होगी जब तक वह दार-उल-हरब न चला जाए।	172
169	कुफु का मतलब यह है कि दीन, वंश, पेशा या चाल-चलन आदि में मर्द औरत से इतना कम न हो कि उससे निकाह करना दुल्हन के वलियों	169	पागल और नासमझ बच्चा वकील नहीं हो सकता।	172

संदर्भ	विषय	संदर्भ	विषय	पृष्ठ
	(अभिभावकों) के लिए शर्म की बात हो।			
170	घर में औरत अकेली हो और मर्द गवाहों के सामने कहे कि "मैंने इस घर में जो औरत है उससे निकाह किया", और औरत कहे "मैंने कुबूल किया", तो निकाह हो गया चाहे गवाहों ने औरत को न देखा हो।	170	बालिग होना और आज़ाद होना वकालत की वैधता के लिए शर्त नहीं है।	172
170	औरत का पर्दे में होना महज़ इससे मजलिस (सभा) नहीं बदलती।	170	मुर्तद या बालिग अगर विलायत (अभिभावकत्व) के दावे के साथ अपने बेटे, बेटी, भाई, बहन या किसी नाबालिग लड़की का निकाह पढ़ाए, तो किस स्थिति में वह पूरी तरह बातिल होगा?	173
171	अगर औरत निकाह की मजलिस में नकाब पहनकर हाज़िर हो, तो गवाहों के लिए उसे पहचानना ज़रूरी नहीं है।	171	मुर्तद से निकाह पढ़वाने का हुक्म।	173
171	अगर मजलिस न बदले तो फौरन कुबूल करना ज़रूरी नहीं है।	171	मुर्तद किसी का वली (अभिभावक) नहीं हो सकता और नाबालिग भी विलायत के योग्य नहीं है।	173
171	समझदार नाबालिग जो कुफ्र (अविश्वास) करे या कुफ्र की जानकारी मिलने पर उसे पसंद करे, वह काफिर मुर्तद है।	171	फुज़ूली अगर कोई ऐसा अनुबंध (निकाह) करे जिसका कोई अनुमति देने वाला न हो, तो वह अनुबंध पूरी तरह बातिल है।	173
171	कुफ्र पर राज़ी होना भी कुफ्र है।	171	बाप ने कहा कि "मकान खरीद कर दूँगा, फिर निकाह करूँगा"। शौहर ने कहा "पहले निकाह कर दो, फिर खरीद दूँगा"। बाप ने निकाह और	173

संदर्भ	विषय	पृष्ठ
	रुख़सती कर दी, औरत ने कोई शर्त नहीं रखी, मकान भी अज्ञात रहा, तो क्या यह निकाह बिना शर्त के हुआ या शर्त पर आधारित (मुअल्लक) था और क्या शौहर का शर्त पर आधारित इकरार बातिल है या नहीं और क्या यह निकाह सही है या कैसा।	
172	मुशरिक (बहुदेववादी) से मदद नहीं लेनी चाहिए, खासकर दीनी मामलात में।	172
172	नाबालिग या काफिर ईजाब और कुबूल कराए तो निकाह हो जाएगा, और अगर वे वकील हों और खुद ईजाब या कुबूल करें तब भी।	172
	एक हज़ार रुपये और कुछ तोहफा मेहर तय हुआ और तोहफा नहीं दिया गया, तो मेहर-ए-मिसल (उचित मेहर) वाजिब होगा। तोहफा चाहे अज्ञात था लेकिन जब वह वजूद में आ गया तो उसकी अज्ञानता खत्म हो गई।	174

पृष्ठ 13/739

نمبر شمار	متن	نمبر شمار	متن	صفحہ
۱۶۸	عاقدین کے کلام سے جو مقدم ہو وہ ایجاب ہے اور جو مؤخر وہ قبول۔	۱۶۸	وکیل کا مسلم و بالغ ہونا ضروری نہیں، غیر مسلم و نابالغ سمجھدار بھی وکیل ہو سکتا ہے۔	۱۷۲
۱۶۸	بے اذن آقا غلام نکاح کرلے اور مولیٰ خبر پا کر طلاق کا حکم دے تو یہ حکم طلاق اس نکاح موقوف کی اجازت ہوگا۔	۱۶۸	مرتد کی وکالت جائز ہے۔	۱۷۲
۱۶۹	فضولی اگر کفو سے نکاح کر دے اور عورت خبر پا کر خاموش ہو رہے تو یہ سکوت اجازت ہو سکے گا اور اظہار نفرت سے رد ہو جائے گا۔	۱۶۹	اگر وقت توکیل وکیل مسلمان ہو پھر مرتد ہو جائے تو وکالت باطل نہ ہوگی جب تک دار الحرب میں نہ چلا جائے۔	۱۷۲
۱۶۹	کفو یہ ہے کہ دین یا نسب یا پیشے یا چال چلن وغیرہ میں مرد عورت سے اتنا کم نہ ہو کہ	۱۶۹	مجنون اور نا سمجھ بچہ وکیل نہیں ہو سکتا۔	۱۷۲

نمبر شمار	متن	نمبر شمار	متن	صفحہ
	اس سے نکاح اولیائے مخطوبہ کے لئے عار ہو۔			
	گھر میں عورت تنہا ہو مرد شاہدوں کے سامنے کہے کہ میں نے اس گھر میں جو		بلوغ و حریت صحت وکالت کے لئے شرط	
۱۷۰	عورت ہے اس سے نکاح کیا، عورت کہے میں نے قبول کیا، نکاح ہو گیا اگرچہ شاہد عورت کو نہ دیکھیں۔	۱۷۰	نہیں۔	۱۷۲
۱۷۰	عورت پردے میں ہو محض اس سے مجلس نہیں بدلتی۔	۱۷۰	مرتد یا بالغ اگر بزعم ولایت اپنے بیٹے بیٹی یا بہن بھائی یا کسی نابالغہ کا نکاح پڑھائے تو کس صورت میں باطل محض ہوگا۔	۱۷۳
۱۷۱	اگر عورت مجلس نکاح میں نقاب ڈالے حاضر ہو تو شاہدوں کا اسے پہچاننا ضرور نہیں۔	۱۷۱	مرتد سے نکاح پڑھوانے کا حکم۔	۱۷۳
۱۷۱	قبول فوراً ضرور نہیں اگر مجلس نہ بدلے۔	۱۷۱	مرتد کسی کا ولی نہیں ہو سکتا اور نابالغ بھی صالح ولایت نہیں۔	۱۷۳
۱۷۱		۱۷۱		۱۷۳

نمبر شمار	متن	نمبر شمار	متن صفحہ
	نابالغ عاقل کہ کفر کرے یا کفر پر مطلع ہو کر اسے پسند کرے تو کافر مرتد ہے۔		فضولی اگر کوئی ایسا عقد کرے جس کے لئے کوئی اجازت دہندہ نہ ہو تو وہ عقد باطل محض ہے۔
۱۷۱	رضا بالکفر بھی کفر ہے۔	۱۷۱	باپ نے کہا مکان خرید دوں گا تو نکاح کروں گا۔ شوہر نے کہا پہلے نکاح کر دو پھر خرید دوں گا۔ باپ نے نکاح ورخصت کر دی، عورت نے کوئی شرط نہ کی، مکان بھی مجہول رہا، یہ نکاح بے شرط ہوا یا معلق اور شوہر کا اقرار معلق بالشرط باطل ہے یا نہیں اور یہ نکاح بے خلل ہے یا کیسا۔
۱۷۲	مشرک سے استعانت نہ چاہئے خصوصاً امور دینیہ میں۔	۱۷۲	ایک ہزار روپیہ اور کچھ ہدیہ دینا مہر قرار پایا اور ہدیہ نہ دیا تو مہر مثل لازم ہوگا۔ ہدیہ اگر چہ مجہول تھا مگر جب وجود میں آگیا تو جہالت جاتی رہی۔
۱۷۲	نابالغ یا کافر ایجاب و قبول کرائے نکاح ہو جائیگا اور اگر وکیل ہو اور خود ایجاب یا قبول کرے جب بھی۔		

Fatawa Rizvia - Volume 11

Page	Page	Subject	Page
178	175	Someone rented out his house and then sold the same house to someone else. Now the buyer collects the rent but has promised the seller that when you return the price to me, I will return the house and deduct the rent money from the price. The seller brought the price money to the buyer and asked to deduct the rent money from it. If the buyer does so as promised, it is better; otherwise, he cannot be forced.	178
A corrupt condition (Shart-e-Fasid) before the contract is not attached to the contract even in financial exchanges.	175		
178	175	A corrupt condition that occurs before the contract does not invalidate any contract.	175
180	175	The confession or denial of a minor is nothing; the permission of his guardian is required.	Marriage does not become invalid due to corrupt conditions; the conditions themselves become void.
180	175	If a mature woman cries while permission is being sought verbally, this is a rejection.	Contracts are of three types.

Page	Page	Subject	Page
180	175	What things are needed for marriage?	Sale, lease, and division, etc., become invalid due to corrupt conditions.
181	176	There is no need for a Qazi (judge) for marriage.	Fulfilling a promise is beloved, and not fulfilling it is undesirable and disliked.
181	176	If the guardian of a minor boy says (so-and-so) has given his girl in marriage to my so-and-so boy, and the guardian of the minor girl says yes, I have given, will the marriage take place or not?	A declaration (Iqrar) is not capable of being conditional on a condition.
181	177	The text of Durr-e-Mukhtar 'Kaza Ana Mutazawwijuka wa Ji'tuka Khatiban etc.', can engagement be marriage through this or not, if not then what does it mean?	In the terminology of Fiqh, informing about a proven right is called 'Iqrar' (declaration/ confession).
182	177	In our language, the past tense coupled with a specific word is to inform of an event that has occurred, not for the creation and initiation of a non-occurring matter.	Making a promise conditional on a condition is permissible.
	177	Force cannot be applied for fulfilling a promise; the Qazi cannot compel. A promise that is conditional, its fulfillment is religiously obligatory (Diyanatan), but according to one saying, in guarantee (Kafalat) and 'Bai-ul-Wafa' (sale with a	

Page	Page Subject	Page
	right of redemption), force can be applied for the fulfillment of the promise.	

फ़तावा रज़विया - खंड ११

पृष्ठ	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१७८	१७५	किसी ने अपना मकान किराए पर दे दिया था, फिर उसी मकान को किसी और के हाथ बेच दिया। अब खरीदार किराया वसूल करता है लेकिन उसने विक्रेता से वादा किया है कि जब तुम मुझे कीमत वापस करोगे तो मैं मकान वापस कर दूंगा और किराए के पैसे कीमत से काट लूंगा। विक्रेता खरीदार के पास कीमत के पैसे लाया और उसमें से किराए के पैसे काटने को कहा। अगर खरीदार वादे के मुताबिक ऐसा करता है तो बेहतर है, वर्ना उस पर जबरदस्ती नहीं की जा सकती।	१७८
अनुबंध से पहले भ्रष्ट शर्त (शर्त-ए-फ़ासिद) वित्तीय विनिमय में भी अनुबंध से जुड़ी नहीं होती।	१७५		
१७८	१७५	जो भ्रष्ट शर्त अनुबंध से पहले हो, उससे कोई अनुबंध भ्रष्ट नहीं होता।	१७५
१८०	१७५	नाबालिग का स्वीकार या इनकार कुछ नहीं है, उसके वली (अभिभावक) की अनुमति आवश्यक है।	भ्रष्ट शर्तों से निकाह (विवाह) भ्रष्ट नहीं होता, बल्कि वे शर्तें स्वयं शून्य हो जाती हैं।

पृष्ठ	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१८०	१७५	यदि बालिग लड़की आवाज़ से अनुमति लेते समय रो दे, तो यह इनकार है।	अनुबंध तीन प्रकार के होते हैं।
१८०	१७५	निकाह के लिए किन बातों की आवश्यकता है?	बिक्री, पट्टा और विभाजन आदि भ्रष्ट शर्तों से भ्रष्ट हो जाते हैं।
१८१	१७६	निकाह के लिए काजी की आवश्यकता नहीं है।	वादा पूरा करना पसंदीदा है और पूरा न करना नापसंद और मकरूह है।
१८१	१७६	नाबालिग लड़के का वली कहे कि (फलां) ने अपनी लड़की मेरे फलां लड़के के निकाह में दे दी है और नाबालिग लड़की का वली कहे हाँ मैंने दे दी, तो इससे निकाह होगा या नहीं।	स्वीकारोक्ति (इकरार) शर्त के साथ जुड़े होने की क्षमता नहीं रखती।
१८१	१७७	दुर्रे मुख्तार का पाठ 'कज़ा अना मुतज़व्विजुका व जिअतुका खातिबन आदि', क्या इससे मंगनी निकाह हो सकती है या नहीं, यदि नहीं तो इसका क्या अर्थ है?	फ़िक़्ह (इस्लामी कानून) की शब्दावली में किसी सिद्ध अधिकार की सूचना देने को 'इकरार' (स्वीकारोक्ति/घोषणा) कहते हैं।
१८२	१७७	हमारी भाषा में भूतकाल का रूप (Past Tense) किसी विशेष शब्द के साथ जुड़ी हुई घटना की सूचना देने के लिए है, न कि किसी न हुई बात को बनाने या शुरू करने के लिए।	वादे को शर्त से जोड़ना जायज़ है।
	१७७	वादा पूरा करने पर जबरदस्ती नहीं की जा सकती, काजी मजबूर नहीं कर सकता। वह वादा जो किसी शर्त पर निर्भर हो, उसे पूरा करना धार्मिक रूप से (दियानतन) अनिवार्य है, लेकिन एक मत के अनुसार	

पृष्ठ	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
		जमानत (कफ़ालत) और 'बय-उल-वफ़ा' (पुनर्खरीद के अधिकार वाली बिक्री) में वादा पूरा करने पर जबरदस्ती की जा सकती है।	

पृष्ठ ७३९ में से १४

صفحہ	صفحہ	مضمون	صفحہ
		کسی نے اپنا مکان کرایہ پر دے دیا تھا پھر اسی مکان کو کسی اور کے ہاتھ بیچ دیا اب مشتری کرایہ وصول کرتا ہے مگر بائع سے وعدہ کرلیا ہے کہ جب تو ثمن مجھے واپس کرے گا تو مکان واپس کردوں گا اور کرایہ کے روپے ثمن سے مجرا دوں گا، مشتری کے پاس بائع ثمن کے روپے لایا اور کرایہ کے روپے اس میں سے مجرا کرنے کو کہتا ہے، اگر مشتری حسب وعدہ ایسا کرے تو بہتر ہے ورنہ اس پر جبر نہیں کیا جاسکتا۔	۱۷۸
۱۷۸	۱۷۵		
		شرط فاسد قبل العقد مبادلات مالیہ میں بھی ملتحق بالعقد نہیں ہوتی۔	۱۷۵
۱۷۸	۱۷۵	شرط فاسد جو عقد سے پہلے ہو اس سے کوئی عقد فاسد نہیں ہوتا۔	۱۷۵
۱۸۰	۱۷۵	نابالغ کا اقرار وانکار کچھ نہیں اجازت اس کے ولی کی درکار۔	شروط فاسدہ سے نکاح نہیں

صفحہ	مضمون	صفحہ
		فاسد ہوتا خود وہی باطل ہوتی ہیں۔
۱۷۵	بالغہ اگر آواز سے اجازت لیتے وقت روئے تو یہ رّد ہے۔	۱۸۰ عقود تین قسم کے ہیں۔
		بیع واجارہ وقسمت وغیرہ
۱۷۵	نکاح کے لئے کن باتوں کی حاجت ہے۔	۱۸۰ شروط فاسدہ سے فاسد ہوتے ہیں۔
		ایفائے وعدہ محبوب ہے اور
۱۷۶	نکاح کے لئے قاضی کی حاجت نہیں۔	۱۸۱ پورا نہ کرنا ناپسندیدہ اور مکروہ ہے۔
۱۷۶	ولی صغیر کہے (فلاں) نے اپنی لڑکی میرے فلاں لڑکے کے نکاح میں دے دی ہے اور ولی صغیرہ کہے ہاں میں نے دے دی، اس سے نکاح ہو گا یا نہیں۔	۱۸۱ اقرار تعلیق بالشرط کی صلاحیت نہیں رکھتا۔

صفحہ	مضمون	صفحہ صفحہ
اصطلاح فقہ میں کسی حق ثابت کی خبر دینے کو اقرار کہتے ہیں۔	درمختار کی عبارت کذا انا متزوجک وجئتك خاطباً الخ اس سے منگنی نکاح ہوسکتی ہے یا نہیں ، اگر نہیں تو اس کا کیا مطلب۔	۱۸۱ ۱۷۷
وعدے کی تعلیق بالشرط جائز ہے۔	ہماری زبان میں صیغہ ماضی مقرون بہ لفظ خاص امر واقع شدہ سے خبر دینے کے لئے ہے ، نہ امر غیر واقع کے انشاء وایجاد کے لئے۔	۱۸۲ ۱۷۷
	ایفائے وعدہ پر جبر نہیں قاضی مجبور نہیں کرسکتا، وہ وعدہ جو معلق ہو اس کی وفا دیانۃً لازم ہے ، مگر ایک قول میں کفالت اور بیع الوفاء میں وفائے وعدہ پر جبر کرسکتا ہے۔	۱۷۷

Fatawa Rizvia | Volume 11

Page Number	Topic / Description	Reference Number	Topic / Description
188	Informing about the occurrence of marriage is completely distinct and ineffective for the initiation of a contract.	182	When a transgressor (fasiq) and dishonest person is not trustworthy and does not care about what is forbidden (haram) and permissible (halal) himself, then what hope is there for caution for others?
188	Marriage is an affirmation, and acknowledgment is an expression.	182	It is recommended (mustahab) for a marriage to be announced, to have a sermon before the proposal and acceptance, to take place in a mosque, to happen on a Friday, and for the marriage officiant to be a practicing scholar.
189	Expression is contrary to acknowledgment.	182	In this era of ignorance and corruption, if knowledgeable people are not present at the gathering, there is a severe risk of disruption occurring in the marriage.
190	'Nikah' and 'Tazweej' are two explicit words for the marriage contract, while giving, gifting, charity, etc., are metaphorical.	183	If the marriage officiant whispers the words of proposal into the groom's ear so that no one else hears, the marriage will not be valid.
190	Marriage also occurs with these words when witnesses understand it to be a marriage and it is known from context that marriage is intended.	183	The presence of two free and sane adult men, or one free and sane adult man and two free and sane adult women, as witnesses who hear the

Page Number	Topic / Description	Reference Number	Topic / Description
			proposal and acceptance simultaneously is a condition for marriage.
190	If a man says to a father, "You have given your girl to me," and he replies, "I have given," if this conversation was for engagement, then it's an engagement; if for marriage, then it's a marriage.	183	Having an ignorant person officiate a marriage is strictly contrary to what is best (khilaf-e-awla).
190	Nikah (marriage) is a contract, and engagement is a promise.	184	The leadership (imamat) of an ignorant person is contrary to what is best.
190	There is a distinction between a contract and a promise.	184	The business partnership (mudarabah) with an ignorant person is contrary to what is best.
190	Considering engagement as marriage is self-evidently void and unanimously incorrect.	184	If the witnesses deny the marriage afterwards, will it be necessary to perform the marriage again or not?
191	Does "Hal Ataytaneeha" (Have you given her to me?) in a marriage gathering facilitate a contract, and in a promise gathering, seek a promise?	187	Witnesses are a condition at the start of marriage, meaning it won't be convened without them; they are not a condition for its continuation, meaning it's not necessary for witnesses to remain for the marriage to persist.
192	In ambiguous words, the basis is context.	187	Ruling on marriage with the condition of giving a divorce after one month.
192		188	If a marriage is performed for one year, one month, or a

Page Number	Topic / Description	Reference Number	Topic / Description
	It is not necessary for the marriage officiant and witnesses to be sighted.		hundred years, the marriage will not be valid; this is a form of Mut'ah (temporary marriage).
192	The person performing the contract should be religious, pious, and acquainted with the issues of marriage.	188	Mut'ah and temporary (muwaqqat) marriage are void, even if the period is unknown or long.

पृष्ठ संख्या	विषय / विवरण	संदर्भ संख्या	विषय / विवरण
188	निकाह के होने की खबर देना अनुबंध (अक़्द) की शुरुआत से बिल्कुल अलग और अप्रभावी है।	182	जब एक अन्यायी और बेईमान व्यक्ति खुद हराम और हलाल की परवाह नहीं करता, तो दूसरों के लिए सावधानी की क्या उम्मीद की जा सकती है।
188	निकाह साबित करना है और इकरार (स्वीकृति) उसे ज़ाहिर करना है।	182	निकाह का ऐलान के साथ होना, ईजाब-ओ-क़ुबूल से पहले खुतबा पढ़ना, मस्जिद में होना, जुमे के दिन होना और निकाह पढ़ाने वाले का एक अमल करने वाला विद्वान होना मुस्तहब है।
189	इज़हार (प्रकट करना) इकरार (स्वीकृति) के विपरीत है।	182	अज्ञानता और भ्रष्टाचार के इस दौर में, यदि विद्वान लोग सभा में उपस्थित न हों, तो निकाह में गंभीर बाधा उत्पन्न होने की आशंका है।
190	निकाह और तज़वीज ये दो शब्द निकाह के अनुबंध में स्पष्ट हैं, जबकि 'अता' (देना), 'हिबा' (उपहार) और 'सदक़ा' आदि रूपक (इशारे) हैं।	183	यदि निकाह पढ़ाने वाला ईजाब के शब्द दूल्हे के कान में इस तरह कहे कि कोई और न सुन सके तो निकाह नहीं होगा।
190	इन शब्दों से भी निकाह हो जाता है बशर्ते कि गवाह उसे निकाह समझें और संदर्भ से यह ज्ञात हो कि इससे निकाह ही अभिप्रेत है।	183	गवाह के तौर पर दो आज़ाद और समझदार पुरुषों, या एक आज़ाद और समझदार पुरुष और दो आज़ाद और समझदार महिलाओं की उपस्थिति अनिवार्य है, जो ईजाब और क़ुबूल को एक साथ सुनें।
190		183	

पृष्ठ संख्या	विषय / विवरण	संदर्भ संख्या	विषय / विवरण
	यदि किसी ने पिता से कहा, "तुमने अपनी लड़की मुझे दी," और उसने कहा, "दी," तो यदि यह मंगनी की बातचीत थी तो मंगनी हुई और यदि निकाह की थी तो निकाह।		एक अज्ञानी व्यक्ति द्वारा निकाह पढ़ाना पूरी तरह से अनुचित (खिलाफ़-ए-अव्ला) है।
190	निकाह एक अनुबंध है और मंगनी एक वादा है।	184	एक अज्ञानी व्यक्ति का नेतृत्व (इमामत) अनुचित है।
190	अनुबंध और वादे के बीच अंतर है।	184	एक अज्ञानी व्यक्ति के साथ व्यापारिक साझेदारी (मुज़ारबत) अनुचित है।
190	मंगनी को निकाह मानना स्पष्ट रूप से गलत और सर्वसम्मति से त्रुटिपूर्ण है।	184	यदि निकाह के बाद गवाह मुकर जाएं तो क्या निकाह दोबारा करना अनिवार्य होगा या नहीं?
191	क्या निकाह की मजलिस में "हल अतैतनीहा" अनुबंध के लिए उपयोगी है और वादे की मजलिस में वादा मांगना है?	187	निकाह की शुरुआत में गवाह अनिवार्य हैं, यानी उनके बिना निकाह संपन्न नहीं होगा; निकाह के बने रहने के लिए गवाह अनिवार्य नहीं हैं, यानी गवाहों का जीवित रहना निकाह के बने रहने के लिए ज़रूरी नहीं है।
192	संदिग्ध शब्दों में आधार संदर्भ (करीना) पर होता है।	187	इस शर्त पर निकाह का आदेश कि एक महीने बाद तलाक दे दूँगा।
192	निकाह पढ़ाने वाले और गवाहों का दृष्टिहीन न होना ज़रूरी नहीं है।	188	यदि एक साल, एक महीने या सौ साल के लिए निकाह किया गया, तो निकाह नहीं होगा; यह मुता (अस्थायी विवाह) का एक रूप है।
192	अनुबंध करने वाला धार्मिक, परहेजगार और निकाह के मसलों से वाकिफ होना चाहिए।	188	मुता और अस्थायी निकाह बातिल (अमान्य) है, भले ही अवधि अज्ञात हो या लंबी।

صفحہ نمبر	موضوع / تفصیل	حوالہ نمبر	موضوع / تفصیل
۱۸۸	وقوع نکاح سے خبر دینا انشاء عقد سے بالکل مبائن و غیر مؤثر ہے۔	۱۸۲	فاسق بد دیانت قابلِ اعتماد جب وہ خود حرام و حلال کی پروا نہیں کرتا تو اوروں کے لئے احتیاط کی کیا اُمید۔
۱۸۸	نکاح اثبات اور اقرار اظہار ہے۔	۱۸۲	نکاح باعلان ہونا اور ایجاب و قبول سے پہلے خطبہ اور مسجد میں نکاح ہونا اور جمعہ کے دن ہونا اور نکاح خواں عالم با عمل ہونا مستحب ہے۔
۱۸۹	اظہار اقرار کے مغائر ہے۔	۱۸۲	اس زمانہ جہل و فساد میں اگر اہل علم حاضر جلسہ نہ ہوں تو نکاح میں سخت خلل واقع ہونے کا اندیشہ ہے۔
۱۹۰	نکاح و تزویج یہ دو لفظ عقد نکاح میں صریح ہیں اور عطاء و ہبہ و صدقہ وغیرہ کنایہ۔	۱۸۳	نکاح خواں کلمات ایجاب دُولہا کے کان میں کہے کہ کوئی نہ سنے تو نکاح نہ ہوگا۔
۱۹۰	ان الفاظ سے بھی نکاح ہو جاتا ہے جبکہ گواہ نکاح ہونا سمجھیں اور	۱۸۳	نکاح دو آزاد و مکلف مردوں یا ایک آزاد و مکلف مرد اور دو آزاد مکلف عورتوں کا

صفحہ نمبر	موضوع / تفصیل	حوالہ نمبر	موضوع / تفصیل
	قرینہ سے یہ معلوم ہو کہ ان سے نکاح مراد ہے۔		بطور گواہ موجود ہونا شرط ہے جو ایجاب و قبول کو بیک وقت سُنیں۔
۱۹۰	باپ سے کہا تو نے اپنی لڑکی مجھے دی اس نے کہا دی، اگر یہ منگنی کے لئے گفتگو ہو تو منگنی ہوئی اور نکاح کے لئے تو نکاح۔	۱۸۳	جاہل کی نکاح خوانی قطعاً خلافِ اولیٰ ہے۔
۱۹۰	نکاح عقد ہے اور منگنی وعدہ ہے۔	۱۸۴	جاہل کی امامت خلافِ اولیٰ ہے۔
۱۹۰	عقد و وعد میں تباین ہے۔	۱۸۴	جاہل کی مضاربت خلافِ اولیٰ ہے۔
۱۹۰	منگنی کو نکاح ٹھہرانا بدہۃً باطل اور اجماعاً غلط ہے۔	۱۸۴	بعد نکاح اگر شہود انکار کر جائیں تو نکاح دوبارہ کرنا لازم ہوگا یا نہیں۔
۱۹۱	ھل اعطیتنیھا مجلس عقد میں مفید عقد اور جلسہ وعد میں طلب وعد ہے۔	۱۸۷	شہود ابتدائے نکاح میں شرط ہیں یعنی بے ان کے منعقد نہ ہوگا، بقاء میں شرط نہیں یعنی شاہدوں کا بقاء نکاح کے لئے باقی رہنا ضروری نہیں۔
۱۹۲	الفاظِ محتملہ میں مدار قرینہ پر ہے۔	۱۸۷	اس شرط پر نکاح کا حکم کہ ایک ماہ بعد طلاق دے دوں گا۔
۱۹۲		۱۸۸	

صفحہ نمبر	موضوع / تفصیل
	نکاح خواں اور شہود کا بینا ہونا ضروری نہیں۔
۱۹۲	عقد کرنے والا دیندار متقی مسائلِ نکاح سے واقف ہونا چاہئے۔

حوالہ نمبر	موضوع / تفصیل
	ایک برس یا ایک ماہ یا سو برس تک کے لئے نکاح کیا تو نکاح نہ ہوگا، یہ متعہ کی صورت ہے۔
۱۸۸	نکاح متعہ و مؤقت اگرچہ مدت مجہولہ یا طویلہ ہو باطل ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

Subject	Page	Subject	Page
Ruling on the marriage and dowry of a woman who only has a urinary outlet and no signs of masculinity or femininity, only breasts are visible.	192	Setting the price of one based on the price of another is prohibited.	197
A flaw in solitude causes the dowry not to be emphasized/ confirmed.	193	Amr said, "I gave you my daughter." Zaid replied, "Good, we accept it. You accepted my proposal and gave your word, so I was satisfied." Did marriage occur with this or not?	197
A physical impediment being a hindrance is by no means contrary to the validity of marriage.	193	Sending a marriage proposal to someone's fiancée is disliked and an act of indecency.	197
The option of defect has no role in marriage.	193	For the person whose hand was asked to turn back on their word, and after giving their word to the first suitor, intending to marry another is blameworthy, wrong, and liable to accountability.	197
By the breasts becoming apparent, an ambiguous hermaphrodite is known to be a woman, and the ambiguity is resolved.	193	If an engagement is broken for a valid Sharia reason and a marriage with someone else is performed, there is no harm.	197
If a courtesan lives in a house with her acquaintance and observes hijab from strangers, will she be considered a wife by virtue of living together?	194	It is the responsibility of the father to do what is best for the children.	199
A free, sane, adult, chaste Muslim who accuses someone of adultery,	195	A person is neither immune from changing their opinion nor immune	199

Subject	Page	Subject	Page
if they do not present four just witnesses, they shall be given 80 lashes and their testimony shall be rejected forever.		from not being informed about certain interests at any time.	
If three witnesses testify to witnessing adultery and there is no fourth, the punishment for false accusation (Hadd-e-Qazf) becomes mandatory on those witnesses.	195	He who swears an oath on something then sees something else as better should do what he sees as better and pay expiation for the oath.	199
Is the marriage of an impotent person (Inneen) valid or not?	195	A person who is afflicted with two calamities should adopt the lighter and easier one of them.	200
In the case of impotence, arbitration (Tahkeem), i.e., appointing an arbitrator (Panch), is permissible because it is not a 'hadd' punishment that cannot be implemented without a ruler, nor is it 'qisas' or 'diyat' for which a ruler is needed. And it is permissible for the arbitrator to grant separation upon the wife's request according to the conditions.	196	Hind's father did not approve of her marriage to Zaid who was an equal (kufu). In the absence of Hind's father, through silence and weeping and with the consent of the mother and grandmother, Zaid declared the marriage. Hind clearly stated that without her father's consent, she did not accept this marriage before nor does she now. What is the ruling?	200
The manner of separation between an impotent person and his wife.	196	For the purpose of compelling Hind and her father, obtaining a witness for Hind's acknowledgement of the marriage's validity and taking leave from the court with the intention of taking her home to perform the marriage - how is that? And how will the forced marriage be after taking her home?	200

फ़तावा रज़विया खंड 11

विषय	पृष्ठ
ऐसी स्त्री से विवाह और मेहर का हुक्म जिसका केवल मूत्र मार्ग हो और पुरुषत्व या स्त्रीत्व का कोई लक्षण न हो, केवल स्तन दिखाई देते हों।	१९२
एकांत (खलवत) में दोष मेहर के पुख्ता न होने का कारण बनता है।	१९३
किसी भौतिक बाधा का होना विवाह की वैधता के विरुद्ध नहीं है।	१९३
दोष का विकल्प (खियार-ए-ऐब) का विवाह में कोई दखल नहीं है।	१९३
स्तन प्रकट होने से संदिग्ध उभयलिंगी (खुंसा मुश्किल) का स्त्री होना ज्ञात होता है और संदेह दूर हो जाता है।	१९३
यदि कोई वेश्या अपने परिचित के साथ घर में रहे और परायों से पर्दा करे, तो क्या साथ रहने के कारण वह पत्नी मानी जाएगी?	१९४
	१९५
एक के दर पर दूसरे का दर तय करना वर्जित है।	१९७
अम्र ने कहा "मैंने अपनी बेटी आपको दी", ज़ैद ने कहा "बेहतर है, हमें स्वीकार है। आपने मेरा प्रस्ताव स्वीकार किया और ज़बान दी तो मेरी तसल्ली हो गई।" क्या इससे विवाह हुआ या नहीं?	१९७
किसी की मंगेतर को विवाह का प्रस्ताव भेजना नापसंद (मकरूह) और नीचता का कार्य है।	१९७
जिसका हाथ मांगा गया हो उसका अपनी बात से पलट जाना, और पहले प्रस्ताव रखने वाले को ज़बान देकर दूसरे से विवाह का इरादा करना निंदनीय और गलत है और जवाबदेही के योग्य है।	१९७
यदि किसी शरीयत के आधार पर सगाई तोड़कर दूसरे से विवाह कर दिया जाए, तो कोई बुराई नहीं है।	१९७
पिता का यह कर्तव्य है कि वह वह करे जो संतानों के हित में सबसे अच्छा हो।	१९९
	१९९

विषय	पृष्ठ
एक स्वतंत्र, बुद्धिमान, वयस्क, पवित्र मुस्लिम पर व्यभिचार का आरोप लगाने वाला, यदि वह चार न्यायप्रिय गवाह पेश न करे, तो उसे ८० कोड़े मारे जाएंगे और उसकी गवाही हमेशा के लिए खारिज कर दी जाएगी।	
यदि तीन गवाह व्यभिचार देखने की गवाही दें और चौथा न हो, तो उन गवाहों पर झूठे आरोप की सज़ा (हद-ए-क़ज़्फ़) अनिवार्य हो जाती है।	१९५
नपुंसक (इन्नीन) का विवाह वैध है या नहीं?	१९५
नपुंसकता के मामले में मध्यस्थता (तहरीम) यानी पंच नियुक्त करना जायज़ है क्योंकि यह वह 'हद' नहीं है जिसे शासक के बिना लागू नहीं किया जा सके और न ही यह 'किसास' या 'दियत' है जिसके लिए शासक की आवश्यकता होती है। और शर्तों के अनुसार पत्नी की मांग पर पंच के लिए अलगाव (तफ़रीक) करा देना जायज़ है।	१९६
नपुंसक और उसकी पत्नी के बीच अलगाव का तरीका।	१९६
मनुष्य न तो अपनी राय बदलने से सुरक्षित है और न ही किसी समय कुछ हितों की जानकारी न होने से सुरक्षित है।	
जिसने किसी बात पर शपथ खाई फिर उसे दूसरे को उससे बेहतर पाया, तो उसे वह करना चाहिए जिसे वह बेहतर देख रहा है और शपथ का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) देना चाहिए।	१९९
जो व्यक्ति दो मुसीबतों में फंसा हो, उसे उनमें से हल्की और आसान को अपनाना चाहिए।	२००
हिंदा के पिता को ज़ैद कुफ़ू से विवाह स्वीकार नहीं था। ज़ैद ने हिंदा के पिता की अनुपस्थिति में, माँ और नानी की सहमति से, चुप्पी और रोने के साथ विवाह का दावा किया। हिंदा ने साफ कह दिया कि पिता की सहमति के बिना मुझे न यह विवाह पहले मंज़ूर था और न अब है। तो क्या हुक्म है?	२००
हिंदा और उसके पिता को मजबूर करने के लिए विवाह की वैधता के लिए हिंदा की स्वीकारोक्ति की गवाही और इस विचार से अदालत से छुट्टी दिला देना कि घर ले जाकर विवाह कर लेंगे, कैसा है? और घर	२००

ले जाकर जो ज़बरदस्ती विवाह होगा वह कैसा होगा?

पृष्ठ १६ / ७३९

عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
ایسی عورت سے نکاح و مہر کا حکم جس کے صرف مخرج بول ہو اور کوئی علامت مردی و زنی کی نہ ہو صرف پستان ظاہر ہوں۔	۱۹۲	ایک کے نرخ پر دوسرے کا نرخ کرنا ممنوع ہے۔	۱۹۷
فساد خلوت عدم تا کد مہر کا باعث ہے۔	۱۹۳	عمرو نے کہا میں نے اپنی لڑکی آپ کو دی، زید نے کہا بہتر ہم کو منظور ہے آپ نے میرے خطبہ کو منظور کیا اور زبان دی تو میری تسکین ہوگئی اس سے نکاح ہوا یا نہیں۔	۱۹۷
امر حسی کا عائق ہونا ہر گز منافی جواز نکاح نہیں۔	۱۹۳	کسی کی منگیتر کو پیغام نکاح دینا مکروہ اور ارتکاب شناعت ہے۔	۱۹۷
خیار عیب کو نکاح میں کچھ دخل نہیں۔	۱۹۳	مخطوب منہ کا اپنے اقرار سے پھر نا اور خاطب اول کو زبان دے کر دوسرے سے قصد تزویج مذموم و بیجا قابل مواخذہ ہے۔	۱۹۷
	۱۹۳	اگر کسی عذر شرعی سے منگنی کرکے دوسرے سے نکاح کر دے تو قباحت نہیں۔	۱۹۷

عنوان صفحہ	
پستان ظاہر ہونے سے خنثی مشکل کا عورت ہونا معلوم ہوتا اور اشکال دفع ہو جاتا ہے۔	
کوئی طوائف اپنے آشنا کے ساتھ گھر میں رہے اور غیروں سے پردہ کرے تو کیا وہ ہم خانہ رہنے سے زوجہ متصور ہوگی۔	۱۹۴
مسلمان حر عاقل بالغ عفیف پر زنا کی تہمت لگانے والا اگر چار گواہ عادل پیش نہ کرے تو اسے ۸۰ کوڑے لگائے جائیں گے اور ہمیشہ کے لئے وہ مردود الشہادۃ ہوگا۔	۱۹۵
اگر تین گواہ معائنہ زنا کی گواہی دیں اور چوتھا نہ ہو تو ان گواہوں پر حد قذف لازم آتی ہے۔	۱۹۵
عنین (نامرد) کا نکاح درست ہے یا نہیں۔	۱۹۵
	۱۹۶

عنوان صفحہ	
ذمہ پدر لازم کہ وہ کرے جو اولاد کے حق میں بہتر ہو۔	۱۹۹
آدمی نہ تبدل رائے سے محفوظ نہ کسی وقت بعض مصالح پر نہ اطلاع پانے سے مامون۔	۱۹۹
جس نے کسی بات پر قسم کھائی پھر اس نے غیر کو اس سے بہتر جانا تو اسے چاہئے کہ جس کو بہتر دیکھ رہا ہے وہی کام کرے اور قسم کا کفارہ دے دے۔	۱۹۹
جو شخص دو مصیبتوں میں مبتلا ہو اسے ان میں سے اخف واھون کو اپنانا چاہئے۔	۲۰۰
	۲۰۰

عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
عنین میں تحکیم یعنی پنچ بنا لینا جائز ہے کہ وہ حد نہیں جس کا نفاذ بغیر حاکم کے نہ ہوسکے اور نہ قود ہے نہ دیت جن کے لئے حاکم کی حاجت ہوتی ہے اور پنچ کو حسب شرائط بطالب زوجہ تفریق کردینا جائز ہے۔		والد ہندہ کو زید کفو سے نکاح منظور نہ تھا زید نے بغیبت والد ہندہ بہ سکوت و گریہ برضائے مادر و نانی نکاح ظاہر کیا، ہندہ نے صاف کہہ دیا کہ مجھے بے رضائے والد نہ یہ نکاح پہلے منظور تھا نہ اب ہے تو کیا حکم ہے۔ ہندہ اور اس کے والد کو مجبور کرنے کیلئے جواز نکاح کے لئے اقرار ہندہ کی شہادت اور کچہری سے رخصت کرا لینا اس خیال سے کہ گھر لے جاکر نکاح کرلیں گے کیسا ہے اور گھر لے جاکر جو نکاح بالجبر ہوگا کیسا ہو گا۔	۲۰۰
عنین اور اس کی زوجہ میں تفریق کی صورت۔	۱۹۶		

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

Row 1 Left: 200 - In a case of doubt regarding suckling (breastfeeding) where a woman first says she nursed a child and later denies it, what will be the ruling of fatwa and what will be the instruction for piety (taqwa) in this situation? Right: 204 - Causing harm to a Muslim is causing harm to Allah and His Messenger (May He be exalted and glorified and may Allah grant him peace and blessings).

Row 2 Left: 201 - False testimony is among the greatest of major sins and is equivalent to idol worship. Right: 204 - Assisting in oppression and sin is like oppression itself, it is forbidden, and it makes one deserving of punishment.

Row 3 Left: 202 - A person who gives false testimony becomes deserving of Hellfire before even moving from their spot. Right: 204 - Whoever goes with an oppressor to help him, knowing that he is an oppressor, has left the fold of Islam.

Row 4 Left: 202 - The curse of Allah Almighty is upon the oppressors. Right: 204 - In our school of thought (Madhab), the statement of one woman is not sufficient to prove suckling (breastfeeding); however, it is recommended (mustahab) to avoid it as a precaution.

Row 5 Left: 202 - There are three registers (of deeds): from one, Allah will forgive nothing; the second He does not care about; and from the third He will leave nothing out. Right: 204 - Committing a Makruh Tanzihi (mildly disliked act) is not a sin.

Row 6 Left: 202 - Allah Almighty will not forgive disbelief (Kufr). Right: 205 - Preserving life is an obligation more important than every other obligation.

Row 7 Left: 202 - The oppression that servants (humans) inflict upon each other will surely be recompensed. Right: 205 - Shariah and sound intellect do not require committing a great gravity (grave sin) to save a minor thing.

Row 8 Left: 202 - Marriage under coercion and compulsion (Jabr-o-Ikrah) takes place, but doing so is an act of oppression. Right: 205 - Scholars say that our era is not an era for avoiding doubts (in specific legal contexts).

Row 9 Left: 203 - Contracts that are rescindable (voidable), such as sale and lease, if entered into through coercion and compulsion, shall be rescinded. Right: 205 - Whoever is killed while protecting their life, property, religion, or family is a martyr.

Row 10 Left: 203 - Non-rescindable contracts such as divorce (Talaq), manumission (Ataq), marriage (Nikah), Tadbir, and Istila, etc., if done under compulsion, remain binding. Right: 206 - If Zaid and Hindah perform proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul) in front of witnesses in such a way that the witnesses have no hearing or knowledge of the marriage at all, and Zaid denies the marriage, and before a Shariah judge, the witnesses also express their ignorance, then did this marriage take place or not, and will the Shariah judge grant the dowry (Mahr) or not?

Row 11 Left: 203 - It is not permissible to take even a Muslim's walking stick without their consent. Right: 207 - Through doubt of marriage (Shubha-e-Nikah), the prescribed punishment (Hadd) is waived and the contract is established.

जिल्द याज़दहुम फ़तावा रज़विया

पंक्ति 1 बाएँ 200 - जहाँ रज़ाअत (स्तनपान) का संदेह हो कि पहले औरत कहे कि मैंने इसे दूध पिलाया है, अब कहे कि नहीं पिलाया है, तो इस सूरत में फ़तवा क्या होगा और तक़वा (परहेज़गारी) का क्या हुक्म होगा। दाएँ 204 - मुसलमान को ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचाना अल्लाह और रसूल (जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को ईज़ा देना है।

पंक्ति 2 बाएँ 201 - झूठी गवाही अकबर कबाईर (बड़े गुनाहों) में से है और बुत पूजने के बराबर है। दाएँ 204 - ज़ुल्म व गुनाह पर मदद करना ज़ुल्म की तरह ज़ुल्म और हराम है और अज़ाब (सज़ा) का हक़दार होना है।

पंक्ति 3 बाएँ 202 - झूठी गवाही देने वाला अपनी जगह से हटने से पहले ही जहन्नम की आग का हक़दार हो जाता है। दाएँ 204 - जो किसी ज़ालिम की मदद करने के लिए उसके साथ चला जबकि वह जानता है कि यह ज़ालिम है, तो वह इस्लाम से निकल गया।

पंक्ति 4 बाएँ 202 - ज़ालिमों पर अल्लाह तआला की लानत है। दाएँ 204 - हमारे मज़हब में एक औरत का बयान रज़ाअत (स्तनपान) के सबूत के लिए काफ़ी नहीं है, इससे एहतियातन बचना मुस्तहब (पसंदीदा) है।

पंक्ति 5 बाएँ 202 - दफ़्तर (अमलनामे) तीन हैं: एक में से अल्लाह तआला कुछ न बख्शेगा, दूसरे की उसे परवाह नहीं, और तीसरे में से कुछ न छोड़ेगा। दाएँ 204 - मकरूह तंज़ीही का इर्तेकाब (करना) गुनाह नहीं है।

पंक्ति 6 बाएँ 202 - अल्लाह तआला कुफ़्र को नहीं बख्शेगा। दाएँ 205 - जान बचाना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है।

पंक्ति 7 बाएँ 202 - बंदों का आपस में एक दूसरे पर जो ज़ुल्म है, उसका बदला ज़रूर होना है। दाएँ 205 - शरीअत और अक़्ल-ए-सलीम का यह तकाज़ा नहीं कि हल्की चीज़ को बचाने के लिए बहुत बड़े गुनाह (थक़्ल-ए-अज़ीम) का इर्तेकाब किया जाए।

पंक्ति 8 बाएँ 202 - ज़बरदस्ती (जब्र-ओ-इराह) से निकाह हो जाता है मगर ऐसा करना ज़ुल्म है। दाएँ 205 - उलेमा फ़रमाते हैं कि हमारा ज़माना संदेहों से बचने (इज्तिनाब-ए-शुबहात) का ज़माना नहीं है।

पंक्ति 9 बाएँ 203 - जो अक़्द (अनुबंध) क़ाबिल-ए-फ़स्ख़ (रद्द होने योग्य) हैं जैसे खरीद-बिक्री और किराएदारी, अगर ये ज़बरदस्ती से हों तो फ़स्ख़ (रद्द) कर दिए जाएँगे। दाएँ 205 - जो अपनी जान-माल, दीन-मज़हब और अहल-ओ-अयाल (परिवार) की हिफ़ाज़त में मारा जाए, वह शहीद है।

पंक्ति 10 बाएँ 203 - नाक़ाबिल-ए-फ़स्ख़ अक़ूद जैसे तलाक़, अताक़ (ग़ुलाम आज़ाद करना), निकाह, तदबीर और इस्तीला वग़ैराह अगर ज़बरदस्ती से हों तो लाज़िम (मान्य) हैं। दाएँ 206 - ज़ैद और हिन्दह अगर गवाहों के सामने आपस में ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) इस तरह करें कि गवाहों को निकाह के बारे में बिल्कुल पता न चले, और ज़ैद निकाह से इंकार कर दे और हाकिम-ए-शरा (धार्मिक न्यायाधीश) के सामने गवाह भी अपनी अज्ञानता ज़ाहिर करें, तो क्या यह निकाह मुनअक़िद (संपन्न) हुआ या नहीं और हाकिम-ए-शरा महर दिलाएगा या नहीं?

पंक्ति 11 बाएँ 203 - मुसलमान की लाठी भी उसकी मरज़ी के बग़ैर लेना जायज़ नहीं है। दाएँ 207 - शुभ-ए-निकाह (निकाह के संदेह) से सज़ा (हद्द) ख़त्म हो जाती है और निकाह साबित हो जाता है।

पृष्ठ 17 का 739

جلد یازدہم فتاوی رضویہ

Row 1 Left: ۲۰۰ - شبہ رضاعت جہاں ہو کہ پہلے عورت کہے کہ میں نے اسے دودھ پلایا ہے اب کہے کہ نہیں پلایا ہے تو اس صورت میں فتوی کیا ہوگا اور تقوی کا کیا حکم ہوگا۔ Right: ۲۰۴ - مسلمان کو ایذاء پہنچانا اللہ اور رسول جل و علا و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ایذاء دینا ہے۔

Row 2 Left: ۲۰۱ - جھوٹی گواہی اکبر کبائر اور بُت پوجنے کے برابر ہے۔ Right: ۲۰۴ - ظلم و گناہ پر اعانت کرنا ظلم کی مثل ظلم و حرام اور استحقاق عذاب میں مبتلا ہونا ہے۔

Row 3 Left: ۲۰۲ - جھوٹی گواہی دینے والا وہاں سے ہٹنے سے قبل مستحق نار ہو جاتا ہے۔ Right: ۲۰۴ - جو کسی ظالم کے ساتھ اس کی مدد کرنے کے لئے چلا حالانکہ وہ جانتا ہے کہ یہ ظالم ہے تو وہ اسلام سے نکل گیا۔

Row 4 Left: ۲۰۲ - ظالموں پر اللہ تعالیٰ کی لعنت ہے۔ Right: ۲۰۴ - ہمارے مذہب میں ایک عورت کا بیان ثبوت رضاعت کے لئے کافی نہیں، اس سے احتیاطاً بچنا مستحب ہے۔

Row 5 Left: ۲۰۲ - دفتر تین ہیں، ایک میں سے اللہ تعالیٰ کچھ نہ بخشے گا، دوسرے کی اسے پروا نہیں، اور تیسرے میں سے کچھ نہ چھوڑے گا۔ Right: ۲۰۴ - مکروہ تنزیہی کا ارتکاب معصیت نہیں۔

Row 6 Left: ۲۰۲ - اللہ تعالیٰ کفر کو نہیں بخشے گا۔ Right: ۲۰۵ - جان کا رکھنا ہر فرض سے اہم فرض ہے۔

Row 7 Left: ۲۰۲ - بندوں کا آپس میں ایک دوسرے پر جو ظلم ہے اس کا بدلہ ضرور ہونا ہے۔ Right: ۲۰۵ - شریعت و عقل سلیم کا یہ تقاضا نہیں کہ ہلکی شئی کو بچانے کے لئے ثقل عظیم کا ارتکاب کیا جائے۔

Row 8 Left: ۲۰۲ - نکاح بجبر واکراہ ہو جاتا ہے مگر ایسا کرنا ظلم ہے۔ Right: ۲۰۵ - علماء فرماتے ہیں ہمارا زمانہ اجتناب شبہات کا زمانہ نہیں۔

Row 9 Left: ۲۰۳ - جو عقد قابل فسخ ہیں جیسے بیع واجارہ اگر یہ جبر واکراہ سے ہوں تو فسخ کر دیا جائیگا۔ Right: ۲۰۵ - جو اپنے جان و مال، دین و مذہب اور اہل و عیال کی حفاظت میں مارا جائے وہ شہید ہے۔

Row 10 Left: ۲۰۳ - نا قابل فسخ عقود جیسے طلاق، عتاق، نکاح، تدبیر اور استیلاء وغیرہ اگر اکراہ سے ہوں تو لازم ہیں۔ Right: ۲۰۶ - زید و ہندہ اگر گواہوں کے سامنے باہم ایجاب و قبول ایسا کریں کہ گواہوں کو مطلقاً سماعت و علم نکاح نہ ہو اور زید نکاح سے منکر ہو جائے اور حاکم شرع کے روبرو شاہد بھی اپنی لاعلمی ظاہر کریں تو یہ نکاح منعقد ہوا یا نہیں اور حاکم شرع مہر دلائے گا یا نہیں۔

Row 11 Left: ۲۰۳ - مسلمان کی لاٹھی بھی اس کی مرضی کے بغیر لینی جائز نہیں۔ Right: ۲۰۷ - شبہ نکاح سے حد ساقط اور عقد ثابت ہو جاتا ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Page	Subject
213	If a marriage was contracted on the condition that I will divorce after three or four months, then it is not mandatory to give a divorce.
213	Marriage does not become void due to invalid conditions, rather the invalid conditions themselves become void.
213	What is required for the establishment and validity of a secret marriage if an adult female marries herself before witnesses without the guardian's consent?
214	If an adult female marries within her social status (Kufu) without the guardian's consent, it will be valid; if outside the social status, it will not be.
215	How much wealth is required for financial equality (Kafa'at)?
216	Marriage cannot be performed based solely on the testimony of women, similarly with the testimony of slaves and children.
216	What is the ruling if the witnesses remain silent at the time of the contract, and is it necessary for the witnesses to recognize the bride's nose?
217	Is accepting three times a condition or just once? And if, out of nervousness, one says it in three different ways—sometimes 'it is accepted', sometimes
707	Is it permissible to use a plural word for Allah out of respect, as Allah, Glory be to Him, says?
707	Asking the groom, "Do you accept, is it desired or not?"
707	Is it necessary for the adult contracting parties to recite the Kalima and the brief and detailed attributes of faith before the contract?
208	Renewal of faith is absolute goodness.
208	Assuming a possibility to be a probability is a bad assumption.
208	Without attaining a probability, there is no ruling of necessity.
208	The contracting parties are adults, the boy's guardian wants a four-month delay. Is it a sin to grant this delay or not?
209	Negligence should not be shown in marriage, in prayer, or in the funeral prayer.

Page	Subject
	'accepted', sometimes 'I accepted'—then what is the ruling?
218	Is the marriage valid or not if the representative (Wakil) or witness is a non-conformist (Ghair-Muqallid) or a Wahhabi?
218	It is rare for the misguidance of non-conformists not to reach the limit of disbelief (Kufr).
218	Since the Rashidiya sect emerged, the state of conformist Wahhabis has also become like the Ismailis.
218	It is permissible to make an apostate (Murtad) a representative.
218	Socializing with an apostate is forbidden.
218	If the people nominated for testimony in a marriage were both apostate Wahhabis, but there are other people in the assembly of the contract who can be witnesses, then the marriage will be correct.
209	Does marriage occur with only the word 'acceptance' (Qabul) or not?
210	Mere appointment of a representative is completed by the proposal alone; it does not depend on acceptance, though it can be voided by rejection.
211	It is an agreed-upon principle of reason and tradition that the answer is contained within the question.
211	If someone said to a woman, "Give yourself into my marriage," and she said, "I hear and obey," the marriage is performed.
213	In contracts, meanings are considered, even in marriage.
213	Mutual confirmation by the man and woman establishes marriage; if they lied, it is adultery and the children are illegitimate.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

सफ़ा	मज़मून
२१३	अगर इस शर्त पर निकाह किया कि तीन चार माह बाद तलाक़ दे दूँगा तो तलाक़ देना लाज़िम नहीं।
२१३	शुरूते फ़ासिदह से निकाह बातिल नहीं होता बल्कि ख़ुद शुरूते फ़ासिदह बातिल हो जाती हैं।
२१३	बे रज़ाए वली अगर बालिग़ा बतौर ख़ुद शुहूद के सामने ख़ुफ़िया निकाह कर ले उसके इनेक़ाद व सेहत के लिये क्या दरकार।
२१४	बालिग़ा बे रज़ाए वली अगर कुफ़ू से निकाह करले तो हो जाएगा और ग़ैर कुफ़ू से नहीं होगा।
२१५	माल में किफ़ायत के लिये कितना माल दरकार है।
२१६	सिर्फ़ औरतों की शहादत से निकाह नहीं हो सकता, यूँही ग़ुलामों और बच्चों की शहादत से।
२१६	वक़्त अक़द शाहिदीन ख़ामोश रहें तो क्या हुक्म है और क्या शाहिदों का नाक को पहचानना ज़रूर है।
२१७	क्या तीन बार क़बूल शर्त है या एक बार, और घबराहट से तीन बार तीन तरह कहे कभी क़बूल है कभी क़बूल किया कभी क़बिल्तु, तो क्या हुक्म है।
७०७	ताज़ीमन जमा का लफ़्ज़ ख़ुदा की शान में बोलना जाइज़ है या नहीं जैसे अल्लाह जल्ल शानुहू यूँ फ़रमाते हैं।
७०७	नौशा से कहना तुमने क़बूल की, चाहिये या नहीं।
७०७	आक़िदीन बालिग़ीन को क़ब्ल अज़ अक़द कलमे और सिफ़ते ईमान मुजमल व मुफ़स्सल पढ़ाना ज़रूर है या नहीं।
२०८	तज्दीदे ईमान खैर महज़ है।
२०८	मुहतमिल को मज़्नून ठहरा लेना सू-ए-ज़न्न है।
२०८	बे हुसूले ज़न्न हुक्म ज़रूरत नहीं।
२०८	आक़िदीन बालिग़ हैं पिसर का वली चार माह की मोहलत चाहता है अगर मोहलत दी जाए तो ये गुनाह है या नहीं।
२०९	निकाह में और नमाज़ में और नमाज़े जनाज़ा में सहल अंगारी न करनी चाहिये।

सफ़ा मज़मून

२१८ निकाह में वकील या शाहिद ग़ैर मुक़ल्लिद या वहाबी है तो निकाह दुरुस्त होगा या नहीं।

२१८ ग़ैर मुक़ल्लिदों की ज़लालत का हद कुफ़्र तक पहुँचा हुआ न होना नादिर है।

२१८ जब से ताइफ़ा रशीदिया पैदा हुआ मुक़ल्लिद वहाबियों का हाल भी कड़ा इस्माइलियों जैसा हो गया।

२१८ मुर्तद को वकील बनाना जाइज़ है।

२१८ मुर्तद से मेल जोल हराम है।

२१८ जो लोग निकाह में गवाही के लिये नामज़द हुए अगर वो दोनों मुर्तद वहाबी थे मगर मजलिसे अक़द में और लोग भी हैं जो गवाह हो सकते हैं तो निकाह सही हो जाएगा।

सफ़ा १८ अज़ ७३९

सफ़ा मज़मून

२०९ फ़क़त लफ़्ज़ क़बूल से निकाह होता है या नहीं।

२१० तौकीले मुजर्रद ईजाब से तमाम हो जाती है क़बूल पर मौक़ूफ़ नहीं होती अगरचे रद्द कर देने से रद्द हो जाती है।

२११ अक़्ल व नक़्ल का क़ाएदा इज्माईया है कि सवाल, जवाब में माआद होता है।

२११ अगर किसी ने औरत से कहा अपने नफ़्स को मेरी ज़ौजीयत में दे, उसने कहा बिस-सम्ए वत-ताअत निकाह हो गया।

२१३ उक़ूद में मआनी का एतबार है यहाँ तक कि निकाह में भी।

२१३ तसादुके मर्द व ज़न मुस्बित निकाह है अगर झूठ कहा तो ज़िना और औलाद वलदुज़-ज़िना।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

صفحہ	مضمون
۲۱۳	اگر اس شرط پر نکاح کیا کہ تین چار ماہ بعد طلاق دے دوں گا تو طلاق دینا لازم نہیں۔
۲۱۳	شروطِ فاسدہ سے نکاح باطل نہیں ہوتا بلکہ خود شروطِ فاسدہ باطل ہو جاتی ہیں۔
۲۱۳	بے رضائے ولی اگر بالغہ بطور خود شہود کے سامنے خفیہ نکاح کر لے اس کے انعقاد و صحت کیلئے کیا درکار۔
۲۱۴	بالغہ بے رضائے ولی اگر کفو سے نکاح کرلے تو ہو جائیگا اور غیر کفو سے نہیں ہو گا۔
۲۱۵	مال میں کفائت کے لئے کتنا مال درکار ہے۔
۲۱۶	صرف عورتوں کی شہادت سے نکاح نہیں ہو سکتا، یو نہی غلاموں اور بچوں کی شہادت سے۔
۲۱۶	وقت عقد شاہدین خاموش رہیں تو کیا حکم ہے اور کیا شاہدوں کا ناک کو پہچاننا ضرور ہے۔

مضمون	صفحہ
تعظیماً جمع کا لفظ خدا کی شان میں بولنا جائز ہے یا نہیں جیسے اللہ جل شانہ یوں فرماتے ہیں۔	۷۰۷
نوشہ سے کہنا تم نے قبول کی، چاہئے یا نہیں ۔	۷۰۷
عاقدین بالغین کو قبل از عقد کلمے اور صفتِ ایمان مجمل و مفصل پڑھانا ضرور ہے یا نہیں ۔	۷۰۷
تجدیدِ ایمان خیر محض ہے۔	۲۰۸
محتمل کو مظنون ٹھہرالینا سوئے ظن ہے۔	۲۰۸
بے حصولِ ظن حکم ضرورت نہیں۔	۲۰۸

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	کیا تین بار قبول شرط ہے یا ایک بار، اور		عاقدین بالغ ہیں پسر کا ولی چار
۲۱۷	گھبراہٹ سے تین بار تین طرح کہے کبھی قبول	۲۰۹	ماہ کی مہلت چاہتا ہے اگر مہلت
	ہے کبھی قبول کیا کبھی قبلت، تو کیا حکم ہے۔		دی جائے تو یہ گناہ ہے یا نہیں۔
۲۱۸	نکاح میں وکیل یا شاہد غیر مقلد یا وہابی ہے تو		نکاح میں اور نماز میں اور نماز
	نکاح درست ہوگا یا نہیں۔	۲۰۹	جنازہ میں سہل انگاری نہ کرنی
۲۱۸	غیر مقلدوں کی ضلالت کا حد کفر تک پہنچا ہوا		چاہئے۔
	نہ ہونا نادر ہے۔		فقط لفظ قبول سے نکاح ہوتا ہے یا
۲۱۸	جب سے طائفہ رشیدیہ پیدا ہوا مقلد وہابیوں کا حال	۲۱۰	نہیں۔
	بھی کڑا اسماعیلیوں جیسا ہو گیا۔		توکیلِ مجرد ایجاب سے تمام ہو
۲۱۸	مرتد کو وکیل بنانا جائز ہے۔		جاتی ہے قبول پر موقوف نہیں
		۲۱۱	ہوتی اگرچہ رد کر دینے سے رد
			ہو جاتی ہے۔
			عقل و نقل کا قاعدہ اجماعیہ ہے
		۲۱۱	کہ سوال، جواب میں معاد ہوتا
			ہے۔
			اگر کسی نے عورت سے کہا
		۲۱۱	اپنے نفس کو میری زوجیت میں
			دے، اس نے کہا بالسمع والطاعة
			نکاح ہو گیا۔

صفحہ	مضمون
۲۱۸	مرتد سے میل جول حرام ہے۔
۲۱۸	جو لوگ نکاح میں گواہی کے لئے نامزد ہوئے اگر وہ دونوں مرتد وہابی تھے مگر مجلس عقد میں اور لوگ بھی ہیں جو گواہ ہو سکتے ہیں تو نکاح صحیح ہو جائے گا۔

صفحہ	مضمون
۲۱۳	عقود میں معانی کا اعتبار ہے یہاں تک کہ نکاح میں بھی۔
۲۱۳	تصادق مرد و زن مثبت نکاح ہے اگر جھوٹ کہا تو زنا اور اولاد ولدالزنا۔

Fatawa Rizvia Volume 11

- 219: Testimony of an apostate is not valid. | Why can't people go beyond this 80-degree latitude? - 221
- 219: If a man and woman perform Ijab and Qubul (marriage proposal and acceptance) privately without informing anyone, will this marriage be valid or not? | No settlement is known beyond seventy degrees latitude. - 221
- 219: If a non-conformist (Ghair Muqallid) woman performs a marriage ceremony according to Sharia, will it be valid or not? | The duration of day and night at the North and South Poles and the reason for it. - 221
- 219: Difference between getting a marriage ceremony performed by a Ghair Muqallid and a Hindu polytheist. | Difference between metaphorical, customary, and Sharia-based day/dawn. - 221
- 219: According to authentic Hadiths and jurisprudential clarifications, a ruling of disbelief (Kufr) is mandatory upon Ghair Muqallids for hundreds of reasons. | When and how do the moon and stars rise and set at the North and South Poles, and for how long will they remain risen and set? - 221
- 219: Among Ghair Muqallids, many are openly deniers of the essentials of religion and are definitely disbelievers by consensus. | One who does not have the strength to fast should feed one poor person for each fast. - 221
- 220: If someone, knowing about the misguidance of the Wahhabis, invited them for a marriage ceremony considering them respected and blessed, then after repentance and renewal of Islam, renewal of marriage is mandatory. | What should one do who can neither fast nor afford the ransom (Fidya)? - 222
- 220: Two twin girls joined from the waist to the buttocks with a single anus, while other organs are separate; how can their marriage take place? | Is it sunnah to recite the marriage sermon (Khutbah) standing up or sitting down, and in what manner? - 222
- 220: Those who find no path to marriage should remain chaste until Allah makes them independent through His grace. | Standing is absolutely better during the sermon. - 222
- 221: Marriage is a cause for preventing wandering eyes and misconduct. | The sermon delivered while mounted, like the sermon of Arafah, there the standing of the mount stands in place of the standing of the rider. - 222
- 221: Fasting breaks carnal desires. | Optional sermons are also established as being performed while sitting. - 222

- 221: One who has the capacity for marriage should marry, and one who cannot should fast. | There is no harm in reciting marriage sermons while sitting. - 222
- 221: What is the ruling regarding fasting at ninety degrees latitude? | If a woman and a man say the words of Ijab and Qubul in a foreign language without knowing the meaning, and the witnesses also do not know the meaning of those words, will the marriage be solemnized or not? - 222

फ़तावा-ए-रज़विया ग्यारहवीं जिल्द

- २१९: मुर्तद (धर्मत्यागी) की गवाही विश्वसनीय नहीं है। | ८० डिग्री अक्षांश से आगे लोगों का गुज़र क्यों नहीं हो सकता। - २२१
- २१९: यदि स्त्री और पुरुष आपस में ईजाब और क़ुबूल (विवाह प्रस्ताव और स्वीकृति) कर लें और किसी को सूचना न हो, तो यह निकाह सही होगा या नहीं। | सत्तर डिग्री के आगे आबादी का पता नहीं। - २२१
- २१९: यदि कोई गैर-मुक़ल्लिद (परंपरा न मानने वाली) स्त्री शरीयत के अनुसार निकाह पढ़ाए तो निकाह होगा या नहीं। | उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में दिन और रात की अवधि और उसका कारण। - २२१
- २१९: गैर-मुक़ल्लिद और हिंदू मुशरिक (बहुदेववादी) से निकाह पढ़वाने में अंतर। | नहार (दिन) के प्रतीकात्मक, प्रथागत और शरीयत आधारित भेदों में अंतर। - २२१
- २१९: गैर-मुक़ल्लिदों पर सैंकड़ों कारणों से सही हदीसों और फिकह के स्पष्टीकरणों के अनुसार कुफ्र (अविश्वास) का हुक्म अनिवार्य है। | उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में चंद्रमा और नक्षत्रों का उदय कब-कब और किस-किस तरह होता है और कैसे-कैसे अस्त, और कब तक उदय रहेंगे और कब तक अस्त। - २२१
- २१९: गैर-मुक़ल्लिदों में से बहुत से खुलेआम धर्म की अनिवार्यताओं के मुनकिर (इनकारी) हैं और निश्चित रूप से सर्वसम्मति से काफ़िर हैं। | जो रोज़ा रखने की शक्ति न रखे, वह हर रोज़े के बदले एक गरीब को खाना खिलाए। - २२१
- २२०: वहाबियों की गुमराहियों की जानकारी होते हुए भी यदि किसी ने उन्हें सम्मानित और पवित्र समझकर निकाह पढ़ाने के लिए बुलाया है, तो पश्चाताप और नए सिरे से इस्लाम स्वीकार करने के बाद निकाह को दोहराना अनिवार्य है। | जो न रोज़ा रख सके और न फ़िद्या (दंड स्वरूप दान) देने में सक्षम हो, वह क्या करे। - २२२
- २२०: दो जुड़वां लड़कियां कमर से कूल्हे तक जुड़ी हुई हैं, मलद्वार एक है, बाकी अंग अलग-अलग हैं, उनका निकाह किस तरह हो सकता है। | निकाह का खुतबा खड़े होकर पढ़ा जाए या बैठकर, किस तरह सुन्नत के अनुरूप है। - २२२
- २२०: जिन्हें निकाह का साधन न मिले, वे संयम बरतें जब तक कि अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह से आत्मनिर्भर न कर दे। | खुतबे में पूर्णतः खड़ा होना ही श्रेष्ठ है। - २२२

- २२१: निकाह बुरी नज़र और व्यभिचार से रोकने का कारण है। | जो खुतबा सवारी पर होता है जैसे खुतबा-ए-अराफ़ा, वहाँ सवारी का खड़ा होना सवार के खड़े होने के समान है। - २२२
- २२१: रोज़े काम-वासना को खत्म करने वाले हैं। | नफली (स्वैच्छिक) खुतबे बैठकर देना भी प्रमाणित है। - २२२
- २२१: जिसे निकाह की सामर्थ्य हो वह निकाह करे और जो न कर सके वह रोज़ा रखे। | निकाह का खुतबा बैठकर पढ़ने में कोई बुराई नहीं है। - २२२
- २२१: अक्षांश ९० डिग्री में रोज़े से संबंधित क्या नियम है। | यदि स्त्री और पुरुष किसी विदेशी भाषा के ईजाब और क़बूल के शब्दों को बिना अर्थ समझे कहें और गवाह भी उन शब्दों का अर्थ न जानते हों, तो निकाह होगा या नहीं। - २२२

पृष्ठ १९ का ७३९

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

- ۲۱۹: مرتد کی گواہی معتبر نہیں۔ | اسی ۸۰ درجہ عرض سے آگے لوگوں کا گزر کیوں نہیں ہو سکتا۔ - ۲۲۱
- ۲۱۹: عورت مرد اگر باہم ایجاب و قبول کرلیں اور کسی کو اطلاع نہ ہو تو یہ نکاح درست ہو گا یا نہیں۔ | ستر درجہ کے آگے آبادی کا پتا نہیں۔ - ۲۲۱
- ۲۱۹: اگر کوئی عورت غیر مقلد بموجب شرع نکاح پڑھائے تو نکاح ہوگا یا نہیں۔ | قطب شمالی اور قطب جنوبی میں روز وشب کی مقدار اور اس کی وجہ۔ - ۲۲۱
- ۲۱۹: غیر مقلد اور ہندو مشرک سے نکاح پڑھوانے میں فرق۔ | نہار تشبیہی و عرفی و شرعی کا فرق۔ - ۲۲۱
- ۲۱۹: غیر مقلدوں پر صدہا وجوہ سے بحکم احادیث صحیحہ و تصریحات فقیہہ حکم کفر لازم ہے۔ | قطبین شمالی و جنوبی میں قمر و کواکب کا طلوع کب کب کس کس طرح ہوتا ہے اور کیسے کیسے غروب، اور کب تک طالع رہیں گے اور کب تک غارب۔ - ۲۲۱
- ۲۱۹: غیر مقلدین میں بہت سے کھلم کھلا ضروریاتِ دین کے منکر اور قطعاً اجماعاً کافر ہیں۔ | جو روزے کی طاقت نہ رکھے وہ ہر روزے کے بدلے ایک مسکین کو کھانا دے۔ - ۲۲۱
- ۲۲۰: وہابیہ کی گمراہیوں پر مطلع ہوتے ہوئے اگر کسی نے ان کو معظم و متبرک سمجھ کر نکاح خوانی کے لئے بلایا ہے تو بعد توبہ و تجدید اسلام تجدید نکاح لازم ہے۔ | جو نہ روزہ رکھ سکے نہ فدیہ دینے پر قادر ہو وہ کیا کرے۔ - ۲۲۲

- ۲۲۰: دو لڑکیاں توام کمر سے سرین تک جڑی ہوئی ہیں مبرز ایک ہے، باقی اعضاء الگ الگ ہیں، ان کا نکاح کس طرح ہو سکتا ہے۔ | خطبہ نکاح کھڑے ہو کر پڑھا جائے یا بیٹھ کر، کس طرح مسنون ہے۔ - ۲۲۲
- ۲۲۰: جو نکاح کی طرف راہ نہ پائیں وہ بچے رہیں یہاں تک اللہ تعالیٰ انہیں اپنے فضل سے بے پرواہ کر دے۔ | خطبہ میں مطلقاً قیام افضل ہے۔ - ۲۲۲
- ۲۲۱: نکاح پریشان نظری و بدکاری سے روکنے کا سبب ہے۔ | جو خطبہ سواری پر ہوتا ہے جیسے خطبہ عرفہ وہاں قیام مرکب قائم مقام قیام راکب ہے۔ - ۲۲۲
- ۲۲۱: روزے شہوتِ نفسانی کو توڑنے والے ہیں۔ | خطباتِ نافلہ بیٹھ کر بھی ثابت ہیں۔ - ۲۲۲
- ۲۲۱: جسے نکاح کی طاقت ہو وہ نکاح کرے اور جو نہ کر سکتا ہو وہ روزہ رکھے۔ | خطباتِ نکاح بیٹھ کر پڑھنے میں مضائقہ نہیں۔ - ۲۲۲
- ۲۲۱: عرض تسعین میں روزہ سے متعلق کیا حکم ہے۔ | اگر زن و مرد کسی غیر زبان کے الفاظ ایجاب و قبول بے معنی الفاظ جانے کہیں اور گواہ بھی ان الفاظ کے معنی نہ جانیں تو نکاح منعقد ہوگا یا نہیں۔ - ۲۲۲

Volume Eleven, Fatawa Razawiyya

[227] Generally, a person is not aware of the intended meanings of words in a foreign language. [223] Doubt regarding Fatawa Qazi Khan, Zahiriya, Durr-e-Mukhtar, and Radd al-Muhtar, and its answer. [228] In Dar al-Islam, ignorance is considered among the acquired impediments. [225] The conceptual meaning of a word is divided into lexical, Sharia, customary, literal, and metaphorical; whereas the ruling of a word is termed as purpose, objective, end, intent, fruit, etc. Both are referred to as meaning, content, and even subject matter, although some types of the former have specific linguistic coinage. [228] Divorce occurs in a state of intoxication. [226] Hazal (joking) is the opposite of Jadd (seriousness). [228] If someone becomes a Muslim in Dar al-Harb and has not yet migrated to Dar al-Islam, the Islamic laws are not binding upon them, as ignorance is an excuse for them. [226] Hazal is playfulness, meaning intending something other than its original subject matter. [228] If one performs Tayammum and prays in a populated area without searching for water, the prayer will not be valid if water was available there. [226] Jadd means intending the original subject matter of a thing. [229] An unconsummated wife is completely released from marriage with one divorce and can marry whomever she wishes without waiting for Iddat; being unaware of the ruling here is not an excuse. [226] Difference between Hazal (jesting) and Majaz (metaphor). [229] If someone who doesn't know Persian or Arabic is taught divorce words in those languages without being told the meanings, and says them to a woman out of ignorance, divorce will not occur in the sight of Allah. [226] A woman said "Zawwajtu nafsi minka bi-alf" (I married myself to you for a thousand) and the man said "Qabiltu" (I accepted). Both were completely unfamiliar with Arabic but knew summarily that these words are for marriage contract; by consensus of scholars, the marriage is valid. [229] Ignorance of language is not a deficiency. [227] If people unfamiliar with Arabic said "Ba'tu, Ishtaraytu" with the intention of buying and selling, knowing these are words of sale contract, then the sale will definitely take place. [230] Divorce given in jest and fun is valid both legally (qada'an) and religiously (diyanatan). [227] The use of words with the intention of their ruling after knowing the ruling is evidence of mutual consent. [231] If a man teaches and makes a woman say words through which Khula occurs in exchange for dower and maintenance during Iddat, so that she is no longer entitled to them, and she performs Khula this way, the Khula will not be valid. [227] Sale through mutual delivery (Bai al-Ta'ati) is concluded in both precious and trivial items; jurists consider the predominant suspicion of a thing as the thing itself.

खंड ग्यारह, फतावा रज़विया

[२२७] आम तौर पर, एक व्यक्ति विदेशी भाषा के शब्दों के इच्छित अर्थों से अवगत नहीं होता है। [२२३] फतावा काज़ी खान, ज़हीरिया, दुर्रे मुख्तार और रद-उल-मुह्तार के बारे में शंका और उसका उत्तर। [२२८] दारुल इस्लाम में, अज्ञानता अर्जित बाधाओं में से मानी जाती है। [२२५] शब्द का वैचारिक अर्थ शाब्दिक, शरीयत, प्रथागत, शाब्दिक और रूपक में विभाजित है; जबकि एक शब्द के नियम को उद्देश्य, ध्येय, अंत, इरादा, फल आदि कहा जाता है। दोनों को अर्थ, विषय-वस्तु और यहाँ तक कि विषय-सामग्री के रूप में संदर्भित किया जाता है, हालाँकि पूर्व के कुछ प्रकारों में विशिष्ट भाषाई रचना होती है। [२२८] नशे की हालत में तलाक हो जाता है। [२२६] हज़ल (मज़ाक) जद्द (गंभीरता) का विलोम है। [२२८] यदि कोई दारुल हर्ब में मुसलमान हो जाता है और अभी तक दारुल इस्लाम में प्रवास नहीं किया है, तो इस्लामी कानून उन पर बाध्यकारी नहीं हैं, क्योंकि उनके लिए अज्ञानता एक बहाना है। [२२६] हज़ल खेल है, जिसका अर्थ है उसके मूल विषय के अलावा कुछ और इरादा करना। [२२८] यदि कोई आबादी वाले क्षेत्र में पानी की खोज किए बिना तयम्मुम करता है और नमाज़ पढ़ता है, तो नमाज़ मान्य नहीं होगी यदि वहाँ पानी उपलब्ध था। [२२६] जद्द का अर्थ है किसी चीज़ के मूल विषय का इरादा करना। [२२९] एक बिना संसर्ग वाली पत्नी एक तलाक के साथ विवाह से पूरी तरह मुक्त हो जाती है और इद्दत की प्रतीक्षा किए बिना जिससे चाहे विवाह कर सकती है; यहाँ नियम से अनभिज्ञ होना कोई बहाना नहीं है। [२२६] हज़ल (मज़ाक) और मजाज़ (रूपक) के बीच अंतर। [२२९] यदि फारसी या अरबी न जानने वाले को बिना अर्थ बताए उन भाषाओं में तलाक के शब्द सिखाए गए, और उसने अज्ञानता वश किसी महिला से वे शब्द कहे, तो अल्लाह की दृष्टि में तलाक नहीं होगा। [२२६] एक महिला ने कहा "ज़व्वजतु नफ़्सी मिन्का बि-अल्फ़" (मैंने एक हज़ार के बदले खुद को तुमसे ब्याह दिया) और पुरुष ने कहा "क़बिल्तु" (मैंने स्वीकार किया)। दोनों अरबी से पूरी तरह अपरिचित थे लेकिन संक्षेप में जानते थे कि ये शब्द निकाह के लिए हैं; विद्वानों की सहमति से निकाह हो गया। [२२९] भाषा की अज्ञानता कोई कमी नहीं है। [२२७] यदि अरबी से अपरिचित लोगों ने खरीद और बिक्री के इरादे से "बअ्तु, इशतरैतु" कहा, यह जानते हुए कि ये बिक्री अनुबंध के शब्द हैं, तो बिक्री निश्चित रूप से हो जाएगी। [२३०] मज़ाक और दिल्लगी में दिया गया तलाक कानूनी (क़ज़ाअन) और धार्मिक (दियानतन) दोनों तरह से लागू हो जाता है। [२२७] नियम जानने के बाद नियम के इरादे से शब्दों का प्रयोग आपसी सहमति का प्रमाण है। [२३१] यदि पुरुष ने महिला को ऐसे शब्द सिखाए और कहलवाए जिससे मेहर और इद्दत के खर्च के बदले खुला (विवाह विच्छेद) हो जाए,

ताकि वह उनकी हकदार न रहे, और महिला ने इस तरह खुला किया, तो खुला मान्य नहीं होगा। [२२७] कीमती और मामूली वस्तुओं में आपसी लेन-देन (बैअतुल ताअती) के माध्यम से बिक्री संपन्न हो जाती है; फकीह किसी चीज़ के प्रबल संदेह को स्वयं वही चीज़ मानते हैं।

पृष्ठ २० / ७३९

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

۲۲۷ غالب یہی ہے کہ آدمی الفاظِ زبانِ غیر مفہوم کے مقاصد پر بھی مطلع نہیں ہوتا۔ ۲۲۳ فتاویٰ قاضی خاں و ظہیریہ و درمختار وردالمحتار پر شبہ اور اس کا جواب۔ ۲۲۸ دارالاسلام میں جہل عوارضِ مکتسبہ میں سے ہے۔ ۲۲۵ مفہوم لفظ، لغوی، شرعی، عرفی، حقیقی اور مجازی کی طرف مقسوم ہوتا ہے جبکہ حکم لفظ، غرض، غایت، مقصود اور ثمرہ وغیرہ سے موسوم ہوتا ہے اور ان دونوں پر لفظ کے معنی، مضمون حتی کہ موضوع لہ کا بھی اطلاق آتا ہے اگرچہ اول کے بعض اقسام میں وضع نوعی ہے۔ ۲۲۸ نشہ میں طلاق ہو جاتی ہے۔ ۲۲۶ ہزل، جد کی ضد ہے۔ ۲۲۸ کوئی شخص دارالحرب میں مسلمان ہوا ابھی دارالاسلام کی طرف ہجرت نہیں کی تو اس پر شرائع اسلامیہ کا لزوم نہیں کہ اس کے لئے جہل عذر ہے۔ ۲۲۶ ہزل لعب ہے یعنی شئے سے اس کے غیر موضوع لہ کا ارادہ کرنا۔ ۲۲۸ آبادی میں پانی تلاش کئے بغیر تیمم کرکے نماز پڑھ لی، اگر وہاں پانی تھا تو نماز نہ ہوگی۔ ۲۲۶ جد یہ ہے کہ شئے سے اس کے موضوع لہ کا ارادہ کیا جائے۔ ۲۲۹ غیر مدخولہ ایک طلاق سے مطلقاً نکاح سے باہر ہو جاتی ہے اور بغیر عدت جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے اور اس جگہ مسئلہ سے ناواقف ہونا عذر نہیں۔ ۲۲۶ ہزل اور مجاز میں فرق۔ ۲۲۹ فارسی یا عربی نہ جاننے والے کو کسی نے الفاظ طلاق فارسی یا عربی میں سکھا دئے اور معنی نہ بتائے اس نے یہ الفاظ لاعلمی سے عورت کے لئے کہے تو عند اللہ طلاق نہ ہوگی۔ ۲۲۶ عورت نے کہا زوجت نفسی منک بالف، اور مرد نے کہا قبلت۔ اور دونوں زبان عربی سے محض ناآشنا تھے مگر اتنا اجمالاً معلوم تھا کہ یہ الفاظ عقد، نکاح کے لئے کہے جاتے ہیں تو باتفاق علماء نکاح ہو گیا۔ ۲۲۹ جہل باللسان تقصیر نہیں۔ ۲۲۷ اگر ناآشنایانِ عربی نے بعتُ اشتریت بقصد بیع و شرا کہا اور جانتے تھے کہ یہ الفاظ عقد بیع کے ہیں تو ضرور بیع ہو جائے گی۔ ۲۳۰ مذاق اور دل

لگی میں طلاق دینے سے قضاءً اور دیانۃً ہر طرح طلاق واقع ہو جاتی ہے۔ ۲۲۷ بعد علم حکم بقصد حکم الفاظ کا تحاور دلیلِ مراضاۃ ہے۔ ۲۳۱ اگر عورت کو مرد نے ایسے الفاظ سکھائے اور کہلوائے جس سے مہر و نفقہ عدت کے بدلے خلع ہو جائے کہ عورت مہر و نفقہ عدت کی بھی مستحق نہ رہے اور عورت یوں خلع کرے تو خلع صحیح نہ ہوگا۔ ۲۲۷ نفیس و خسیس میں بیع بالتعاطی منعقد ہو جاتی ہے فقہاء مظنہ غالبہ شئی کو قائم مقام شئی کرتے ہیں۔

- Those who make a transgressor (Fasiq) their Imam are sinners. | Ref: 233 | Page: 240
- It is not mandatory for marriage witnesses to repeat the exact words they heard from the parties, or use synonyms, or translate them. Their statement that 'so-and-so married so-and-so' is sufficient. | Ref: 233 | Page: 240
- There is a fear of an evil end (death without faith) upon changing one's religion. | Ref: 235 | Page: 240
- Marriage with a prostitute is permissible even if she has not repented. | Ref: 235 | Page: 240
- Marriage with Rawafiz (Shias) is void. | Ref: 235 | Page: 241
- If a woman commits foul acts and the husband does not stop her despite having the power, he is a 'dayyous' (cuckold). | Ref: 235 | Page: 241
- Committing a haram act makes one neither an infidel nor excluded from the Hanafi school. | Ref: 235 | Page: 241
- The noble verse 'The adulteress shall not be married except by an adulterer or a polytheist' is either abrogated in ruling or marriage here refers to intercourse. | Ref: 235 | Page: 241
- Is marriage permissible before Friday prayers or not? | Ref: 235 | Page: 241
- At the time of marriage, will the word of the girl's guardian be accepted or that of the girl? | Ref: 235 | Page: 241
- Marriage with one's own legal slave-girl is void. | Ref: 235 | Page: 242
- What are the essential and mandatory words in a marriage? | Ref: 235 | Page: 242
- What is the difference between a free woman (Khawas) and a slave-girl (Kaneez)? | Ref: 236 | Page: 242
- The legal order of priority for marriage guardians (Awliya). | Ref: 236 | Page: 242
- Marriage with another's slave-girl is permissible with their permission. | Ref: 236 | Page: 242
- The marriage sermon is a Sunnah and reciting the Kalimas is a good practice. | Ref: 236 | Page: 242
- Legally, lineage is from the father; if he is noble, the son is also noble. | Ref: 236 | Page: 242

- Proof from the Great Quran that Mut'a (temporary marriage) is forbidden. | Ref: 236 | Page: 242
- Children born to a slave-girl have valid lineage and are entitled to inheritance. | Ref: 237 | Page: 242
- What is the ruling on marrying a prostitute? | Ref: 237 | Page: 242
- Taking money to arrange a marriage is forbidden, and that money is a bribe. | Ref: 237 | Page: 243
- A permissible act that causes strife and hatred and leads to division becomes impermissible. | Ref: 237 | Page: 243
- If witnesses said 'Sa'adat-un-Nisa alias Raziyya' to the marriage officiant instead of 'Hayat-un-Nisa alias Raziyya', did the marriage take place or not? | Ref: 237 | Page: 243
- Questions and answers regarding the second marriage of a widow. | Ref: 237 | Page: 243
- An authorized representative for marriage is not a general representative. | Ref: 238 | Page: 243
- A woman is mute and the status of her husband is unknown (whether he is alive or dead); what is the ruling on her marriage? | Ref: 238 | Page: 243
- A person has two daughters: elder Ayesha and younger Fatima. During the marriage of the elder, if 'Fatima' was said instead of 'Ayesha', then the contract with Fatima will take place. If he said 'I am marrying off my elder daughter [Fatima]', it will not be for anyone because his elder daughter is not Fatima, and intention or witness recognition is not beneficial here. | Ref: 239 | Page: 243
- Does someone who has performed Mut'a remain a Hanafi or not? | Ref: 239 | Page: 243
- Leading prayers by an open transgressor (Fasiq-e-mu'allin) is prohibited; praying behind him is a sin and repeating the prayer is mandatory. | Ref: 239

फतावा रज़विया | जिल्द ग्यारहवीं

- फासिक (खुले तौर पर गुनाह करने वाले) को इमाम बनाने वाले गुनहगार हैं। | संदर्भ: 233 | पृष्ठ: 240
- निकाह के गवाहों पर यह लाज़िम नहीं कि वे उन्हीं शब्दों को दोहराएं जो उन्होंने पक्षकारों से सुने हों, या उनके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करें, या उनका अनुवाद करें। उनका यह कहना पर्याप्त है कि 'फलां ने फलां से निकाह किया'। | संदर्भ: 233 | पृष्ठ: 240
- धर्म परिवर्तन पर बुरा अंत (ईमान के बिना मृत्यु) होने की आशंका है। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 240
- बदचलन औरत से निकाह जाइज़ है, भले ही उसने तौबा न की हो। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 240
- रवाफ़िज़ (शियाओं) से निकाह बातिल (अमान्य) है। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 241
- यदि कोई स्त्री घृणित कार्य करती है और पति शक्ति होने के बावजूद उसे नहीं रोकता, तो वह 'दय्यूत' (ककल्ड) है। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 241
- हराम कार्य करने से कोई न तो काफ़िर होता है और न ही हनफी संप्रदाय से बाहर होता है। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 241
- पवित्र आयत 'व्यभिचारिणी से केवल व्यभिचारी या बहुदेववादी ही निकाह करेगा' या तो आदेश में निरस्त है या यहाँ निकाह का अर्थ संभोग है। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 241
- जुमे की नमाज़ से पहले निकह जाइज़ है या नहीं? | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 241
- निकाह के समय लड़की के संरक्षक की बात मानी जाएगी या लड़की की? | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 241
- अपनी शरई कनीज़ (दासी) से निकाह बातिल है। | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 242
- निकाह में कौन से शब्द ज़रूरी और अनिवार्य हैं? | संदर्भ: 235 | पृष्ठ: 242
- स्वतंत्र स्त्रियों और कनीज़ों में क्या अंतर है? | संदर्भ: 236 | पृष्ठ: 242
- निकाह के संरक्षकों (औलिया) का शरई क्रम। | संदर्भ: 236 | पृष्ठ: 242
- दूसरे की कनीज़ से उसकी अनुमति के साथ निकाह जाइज़ है। | संदर्भ: 236 | पृष्ठ: 242
- निकाह का खुतबा सुन्नत है और कलमा पढ़ाना एक अच्छी बात है। | संदर्भ: 236 | पृष्ठ: 242
- शरई तौर पर वंश पिता से होता है; यदि वह कुलीन है, तो पुत्र भी कुलीन है। | संदर्भ: 236 | पृष्ठ: 242

- कुरआन-ए-अज़ीम से मुतआ (अस्थायी निकाह) के हराम होने का प्रमाण। | संदर्भ: 236 | पृष्ठ: 242
- कनीज़ से पैदा हुई संतान वैध वंश वाली और विरासत की हकदार है। | संदर्भ: 237 | पृष्ठ: 242
- वेश्या से निकाह करने का क्या हुक्म है? | संदर्भ: 237 | पृष्ठ: 242
- कुछ लेकर निकाह करवा देना हराम है और वह रुपया रिश्वत है। | संदर्भ: 237 | पृष्ठ: 243
- वह जाइज़ बात जिससे फितना (अशांति) और घृणा पैदा हो और आपस में फूट पड़े, नाजाइज़ हो जाती है। | संदर्भ: 237 | पृष्ठ: 243
- यदि गवाहों ने निकाह पढ़ाने वाले से 'हयात-उन-निसा उर्फ रज़िया' के बजाय 'सआदत-उन-निसा उर्फ रज़िया' कहा, तो निकाह हुआ या नहीं? | संदर्भ: 237 | पृष्ठ: 243
- विधवा के दूसरे निकाह से संबंधित सवाल-जवाब। | संदर्भ: 237 | पृष्ठ: 243
- निकाह के लिए अधिकृत प्रतिनिधि एक सामान्य प्रतिनिधि नहीं होता। | संदर्भ: 238 | पृष्ठ: 243
- औरत गूँगी है और उसके पति की स्थिति ज्ञात नहीं कि वह जीवित है या मर गया; उसके निकाह का क्या हुक्म है? | संदर्भ: 238 | पृष्ठ: 243
- एक व्यक्ति की दो लड़कियाँ हैं: बड़ी आयशा और छोटी फ़ातिमा। बड़ी के निकाह के समय 'आयशा' के बजाय 'फ़ातिमा' कहा, तो फ़ातिमा से निकाह हो जाएगा; और अगर कहा 'मैं अपनी बड़ी लड़की का निकाह करता हूँ [फ़ातिमा]', तो किसी से नहीं होगा क्योंकि उसकी बड़ी लड़की फ़ातिमा नहीं है, और यहाँ नीयत या गवाहों की पहचान लाभप्रद नहीं। | संदर्भ: 239 | पृष्ठ: 243
- जिसने मुतआ कर लिया हो, वह हनफी रहा या नहीं? | संदर्भ: 239 | पृष्ठ: 243
- फासिक़-ए-मुअल्लीन (खुले गुनहगार) की इमामत वर्जित है; उसके पीछे नमाज़ गुनाह है और उसे दोहराना वाजिब है। | संदर्भ: 239

पृष्ठ 21 कुल 739

- فاسق کو امام بنانے والے گناہگار ہیں۔ | ۲۳۳ | ۲۴۰
- گواہانِ نکاح پر یہ لازم نہیں کہ وہ ان ہی الفاظ کا اعادہ کریں جو متعاقدین سے انہوں نے سنے ہوں یا یہ کہ ان کے مترادف الفاظ کریں یا ان الفاظ کا ترجمہ بیان کریں بلکہ ان کا یہ بیان کافی ہے کہ فلاں نے فلاں سے نکاح کیا۔ | ۲۳۳ | ۲۴۰
- تبدیل مذہب پر سوء خاتمہ کا اندیشہ ہے۔ | ۲۳۵ | ۲۴۰
- زنِ فاحشہ سے نکاح جائز ہے اگرچہ تائب نہ ہوئی ہو۔ | ۲۳۵ | ۲۴۰
- روافض سے نکاح باطل ہے۔ | ۲۳۵ | ۲۴۱
- عورت افعالِ خبیثہ کا ارتکاب کرے اور شوہر بقدرِ قدرت انسداد نہ کرے تو دیوث ہے۔ | ۲۳۵ | ۲۴۱
- ارتکابِ حرام سے نہ کافر ہوتا ہے نہ حنفیت سے خارج۔ | ۲۳۵ | ۲۴۱
- آیت کریمہ الزانیۃ لا ینکحھا الا زان او مشرک منسوخ الحکم ہے یا نکاح سے مراد یہاں جماع ہے۔ | ۲۳۵ | ۲۴۱
- جمعہ کی نماز سے پہلے نکاح جائز ہوتا ہے یا نہیں۔ | ۲۳۵ | ۲۴۱
- وقتِ نکاح لڑکی کے ولی کی بات قبول کی جائیگی یا لڑکی کی۔ | ۲۳۵ | ۲۴۱
- اپنی کنیز شرعی سے نکاح باطل ہے۔ | ۲۳۵ | ۲۴۲
- نکاح میں ضروری الفاظ اور لازمی کیا کیا ہیں۔ | ۲۳۵ | ۲۴۲
- خواص و کنیز میں کیا فرق ہے۔ | ۲۳۶ | ۲۴۲
- اولیاءِ نکاح کی شرعی ترتیب۔ | ۲۳۶ | ۲۴۲

- دوسرے کی کنیز سے اس کی اجازت سے نکاح جائز ہے۔ | ۲۳۶ | ۲۴۲
- نکاح کا خطبہ سنت اور کلمے پڑھانا ایک اچھی بات ہے۔ | ۲۳۶ | ۲۴۲
- شرعاً نسب باپ سے ہے وہ شریف ہے تو بیٹا بھی شریف۔ | ۲۳۶ | ۲۴۲
- متعہ حرام ہونے کا قرآن عظیم سے ثبوت۔ | ۲۳۶ | ۲۴۲
- کنیز سے جو اولاد ہو صحیح النسب اور ترکہ کی مستحق ہے۔ | ۲۳۷ | ۲۴۲
- رنڈی سے نکاح کا کیا حکم ہے۔ | ۲۳۷ | ۲۴۲
- کچھ لے کر نکاح کر دینا حرام اور وہ روپیہ رشوت ہے۔ | ۲۳۷ | ۲۴۳
- وہ جائز بات جس سے فتنہ و نفرت پیدا ہو اور آپس میں پھوٹ پڑے ناجائز ہو جاتی ہے۔ | ۲۳۷ | ۲۴۳
- حیات النساء عرف رضیہ کی بجائے گواہوں نے نکاح خواں سے سعادت النساء عرف رضیہ کہا تو نکاح منعقد ہوا یا نہیں۔ | ۲۳۷ | ۲۴۳
- بیوہ کے نکاحِ ثانی کے متعلق سوال و جواب۔ | ۲۳۷ | ۲۴۳
- وکیل بالنکاح مجاز تو وکیل نہیں۔ | ۲۳۸ | ۲۴۳
- عورت گونگی ہے اور اس کے شوہر کا حال معلوم نہیں کہ زندہ ہے یا مر گیا اس سے نکاح کا کیا حکم ہے۔ | ۲۳۸ | ۲۴۳
- ایک شخص کی دو لڑکیاں ہیں بڑی عائشہ اور چھوٹی فاطمہ ، بڑی کے نکاح میں وقت عقد بجائے عائشہ فاطمہ کہا تو فاطمہ سے عقد ہو جائے گا اور یہ کہا کہ میں اپنی بڑی لڑکی کا نکاح کرتا ہوں تو کسی سے نہ ہوگا کہ اس کی بڑی لڑکی فاطمہ نہیں اور نیت و معرفت شہود یہاں کچھ نافع نہیں۔ | ۲۳۹ | ۲۴۳
- جس نے متعہ کر لیا ہو وہ حنفی رہا یا نہیں۔ | ۲۳۹ | ۲۴۳
- فاسق معلن کی امامت ممنوع، اس کے پیچھے نماز گناہ اور پھیرنی واجب ہے۔ | ۲۳۹

Fatawa Razawiyyah | Volume 11

- Page 247: Can a marriage be solemnized between Sunnis and Rawafid (Shias)? If a girl becomes a Rafidiyah (Shia) after some days, does the marriage remain valid or not? (Left Column)
- Page 244: From which side should the wakeel (agent) and witnesses be? (Right Column)
- Page 248: A man's apostasy (leaving Islam) immediately annuls the marriage by consensus. (Left Column)
- Page 244: The Shari'i Dinar was four and a half mashas of gold. (Right Column)
- Page 244: The Dinars of Sultans were not fixed but varied. (Right Column)
- Page 248: A woman's apostasy doesn't annul the marriage, but intimacy with her is forbidden for the husband until she reverts to Islam. (Left Column)
- Page 245: The minimum mahr (dowry) is ten silver dirhams; there is no maximum limit. (Right Column)
- Page 248: A woman claims three years after marriage that she was forced by her mother and deceived by the husband regarding his family; can she claim annulment? (Left Column)
- Page 245: The mahr of Hazrat Batool Zahra (R.A) was four hundred silver mithqals. (Right Column)
- Page 248: Compulsion does not prevent the validity of marriage. (Left Column)
- Page 245: The mahr for most Pure Wives (Mothers of the Believers) was five hundred dirhams. (Right Column)
- Page 248: A father performed the marriage of an adult daughter without her permission and she has moved to the husband's home; what is the ruling? (Left Column)
- Page 246: There are two narrations regarding the mahr of Hazrat Umm Habiba (R.A). (Right Column)
- Page 248: A woman has several names; if one was used during the marriage contract, did the marriage take place? (Left Column)
- Page 246: Zaid registered a marriage with a woman named Hinda without her knowledge; she later fled upon hearing about it from her mother. The Qazi ruled in favor of Zaid. Is this marriage valid? (Right Column)
- Page 249: If Hinda daughter of Zaid was mistakenly called Hinda daughter of Bakr, did the marriage take place? (Left Column)
- Page 248: Marriage cannot take place with only one witness. (Left Column)

- Page 250: Zaid forced his sister-in-law into marriage by taking her crying as consent. Did the marriage take place? (Left Column)
- Page 247: Ruling on marrying someone else after being engaged. (Right Column)
- Page 252: A father says he has given his daughter's hand to someone's adult son, and the boy's father accepts; did the marriage take place? (Bottom Column)

फ़तावा रज़विया | जिल्द 11

- पृष्ठ 247: क्या सुन्नी और रवाफ़िज़ (शिया) के बीच विवाह संपन्न हो सकता है? यदि विवाह के कुछ दिनों बाद लड़की राफ़िज़िया हो जाए, तो क्या निकाह रहेगा या नहीं? (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 244: वकील और गवाह किस तरफ के होने चाहिए? (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: आम सहमति (इज़मा) के अनुसार पुरुष का धर्मत्याग (ارتداد) तत्काल निकाह को रद्द कर देता है। (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 244: शरई दीनार साढ़े चार माशा सोने का था। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 244: सुल्तानों के दीनार निश्चित नहीं थे, वे अलग-अलग थे। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: स्त्री के धर्मत्यागी होने से निकाह रद्द नहीं होता, लेकिन जब तक वह वापस इस्लाम न लाए, पति के लिए उससे संभोग वर्जित है। (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 245: महर की न्यूनतम राशि दस चांदी के दिरहम है; अधिकतम के लिए कोई सीमा नहीं है। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: एक महिला निकाह के3 साल बाद दावा करती है कि उसे उसकी माँ ने मजबूर किया था और पति ने उसे धोखा दिया; क्या वह निकाह रद्द करने का दावा कर सकती है? (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 245: हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ि.) का महर चार सौ मिस्क़ाल चांदी था। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: मजबूरी निकाह की वैधता में बाधक नहीं होती। (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 245: अधिकांश उम्महातुल मोमिनीन (पवित्र पत्नियों) का महर पाँच सौ दिरहम था। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: पिता ने बिना सहमति के अपनी वयस्क बेटी का निकाह कर दिया और वह विदा भी हो गई; अब क्या हुक्म है? (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 246: हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) के महर के बारे में दो रिवायतें हैं। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: एक महिला के कई नाम हैं; यदि निकाह के समय एक का उपयोग किया गया, तो क्या निकाह हुआ? (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 246: ज़ैद ने हिंदा नाम की महिला के साथ उसकी जानकारी के बिना निकाह पंजीकृत कराया; बाद में वह भाग गई। काज़ी ने ज़ैद के पक्ष में फैसला दिया। क्या यह निकाह सही है? (दायाँ कॉलम)

- पृष्ठ 249: यदि हिंदा बिन्ते ज़ैद को गलती से हिंदा बिन्ते बक्र कहा गया, तो क्या निकाह हुआ? (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 248: केवल एक गवाह के साथ निकाह नहीं हो सकता। (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 250: ज़ैद ने अपनी भाभी के रोने को इजाज़त मानकर उसे निकाह के लिए मजबूर किया। क्या निकाह हुआ? (बायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 247: मंगनी के बाद किसी और से निकाह करने का हुक्म। (दायाँ कॉलम)
- पृष्ठ 252: पिता अपनी बेटी का रिश्ता दूसरे के वयस्क बेटे को देता है, और वह स्वीकार कर लिया जाता है; क्या निकाह संपन्न हुआ? (निचला कॉलम)

- ۲۴۷: اہل سنت وروافض میں باہم نکاح منعقد ہوسکتا ہے یا نہیں۔ اور اگر کچھ روز بعد لڑکی رافضیہ ہوجائے تو نکاح رہے گا یا نہیں۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۴: وکیل کس طرف کا ہونا چاہئے اور شاہد کس طرف کے۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۸: مرد کا ارتداد بالاجماع فسخ نکاح فی الحال ہے۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۴: دینار شرعی ساڑھے چار ماشے سونے کا تھا۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۴: سلاطین کے دینار کوئی معین نہیں مختلف تھے۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۸: عورت کے مرتد ہونے سے نکاح فسخ نہیں ہوتا مگر مرد کو اس سے قربت حرام ہو گئی جب تک اسلام نہ لائے۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۵: مہر کا اقل درجہ دس درہم چاندی ہے۔ اور اکثر کے لئے کوئی حد نہیں۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۸: عورت نکاح کے تین سال بعد کہتی ہے کہ میں اپنی والدہ کے سبب مجبور تھی اب اس کے بعد میں خود مختار ہوں، شوہر نے دھوکا دیا کہ اس کے بیوی بچے نہیں ہیں، نکاح میری لاعلمی میں ہوا، کیا اس صورت میں اسے فسخ نکاح کا دعویٰ پہنچتا ہے۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۵: مہر حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا چار سو مثقال چاندی تھا۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۸: مجبوری مانع جواز نکاح نہیں ہوتی۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۵: مہر اکثر ازواج مطہرات پانچ سو درہم تھا۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۸: باپ نے بالغہ کا نکاح بے اس سے اجازت لئے کردیا اور رخصت بھی ہو گئی اب کیا حکم ہے۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۶: حضرت ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مہر میں دو روایتیں ہیں۔ (دایاں کالم)

- ۲۴۸: عورت کے چند نام ہیں، ایک وقت عقد لیا گیا تو نکاح ہوا یا نہیں۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۶: ہندہ بازاری عورت ہے، زید نے بلاعلم واطلاع ہندہ قاضی کے سیاہہ میں اپنا ہندہ سے نکاح درج کرا دیا پھر جب مادرِ ہندہ کو اطلاع ہوئی اس نے ہندہ سے اپنا زیور کپڑا مانگا کہ تیرا نکاح ہو گیا ہے، ہندہ نے کہا تم کہتی ہو کہ نکاح ہو گیا ہے تو جو کچھ ہونا تھا ہو گیا ہندہ زید کے یہاں سے فرار ہو گئی، زید نے طلب زوجہ کا دعویٰ دائر کیا قاضی نے اس کا دعویٰ ڈگری کیا تو یہ نکاح درست ہو گیا یا نہیں۔ (دایاں کالم)
- ۲۴۹: ہندہ بنت زید کو ہندہ بنت بکر کہا گیا نکاح ہوا یا نہیں۔ (بایاں کالم)
- ۲۴۸: ایک گواہ سے نکاح نہیں ہوسکتا۔ (بایاں کالم)
- ۲۵۰: زید نے اپنی بھاوج سے بجبر اذنِ نکاح چاہا وہ انکار کرتی رہی پھر رونا شروع کیا، رونے کو اذن ٹھہرا کر نکاح کر لیا، نکاح ہوا یا نہیں (بایاں کالم)
- ۲۴۷: منگنی کے بعد دوسرے سے نکاح کا حکم۔ (دایاں کالم)
- ۲۵۲: باپ نے کہا میں نے اپنی فلاں لڑکی کا ناطہ تمہارے فلاں بالغ سے کردیا والدِ پسر نے قبول کیا تو نکاح ہوا یا نہیں۔ (نیچے کا کالم)

Fatawa Rizvia Volume 11

Page	Question / Statement	Question / Statement	Page
254	A Sayyid converted a Chamar woman to Islam and married her; is he a sinner or not, and how is it to sever ties with him and expel him from the community?	Zaid is in the profession of advocacy and is a Qazi, so what is the ruling?	256
254	Kafa'at (compatibility) is not a condition for an adult male.	Declaring a married woman as unmarried and causing separation between spouses is a major sin (Kabira).	257
254	A father wrote a letter to his brother saying, "Arrange the engagement or marriage of my minor daughter wherever you wish." He performed her marriage and her maternal uncle accepted on behalf of the minor, and witnesses say they heard the letter themselves; now the father denies it, what is the ruling?	What is the ruling on marriage with someone who resembles the Wahhabis?	257
254	If 'Ijab' and 'Qabul' (proposal and acceptance) are conducted by minors, is the marriage valid or not?	A person claimed to be from Laharpur, but it was later proven he was from Hargam, and there was a difference in names; the girl says her marriage was with Abdur Rahman bin Kallu and the Qazi says the same, but the witnesses say Lal Muhammad bin Mannu and the agent says Lal Muhammad bin Kallu, in this case, who is she married to?	258
255	If there is acceptance from both sides, what is the ruling on the marriage?	Is 'Tan Bakhshi' (surrender of self) a valid thing or marriage?	258

Page	Question / Statement	Question / Statement	Page
255	What is the method of Sunnah marriage?	A person said during a public prayer meeting, "I have given my daughter to so-and-so," did marriage occur from this or not?	259
255	If the guardian is capable of reciting the Sunnah sermon or performing 'Ijab' and 'Qabul', then how is it to have someone else perform 'Ijab' and 'Qabul'?	Reciting a sermon or mentioning the dowry (Mahr) is not a condition for marriage.	259
255	How is it to give or take a fee for the marriage officiant?	Intention is not a condition in marriage conducted with explicit words.	259
255	If the fee is not used for personal expenses but spent on charitable work, what is the ruling?	Unless the guardian explicitly permits marriage to an incompatible person (Ghair-Kufu) knowing they are incompatible before the marriage, the marriage is absolutely void.	260
255	The groom's uncle or brother-in-law comes to place the turban on his head, no one else can do it, and they don't do it without taking money; if the money is less, they insist; how is this giving and taking according to Sharia, and how is it to consider it an obligatory right and to insist on it?	Marriage is not invalid at any age, even for a child born on the same day.	261
255	What is the definition of Walima and what is its duration?	Marriage of an unborn child in the womb cannot take place.	261
256	If Walima is not done with the intention of Sunnah but for fame and name, what is the ruling?	No one has guardianship over a fetus.	261

फतावा रज़विया जिल्द ११ (ग्यारहवीं)

पृष्ठ	प्रश्न / कथन	प्रश्न / कथन	पृष्ठ
२५४	एक सैय्यद ने एक चमारी को मुसलमान करके निकाह कर लिया तो वह गुनहगार हुआ या नहीं और उससे संबंध विच्छेद और बिरादरी से निकालना कैसा है।	ज़ैद वकालत का पेशा करता है और काज़ी है तो क्या हुक्म है।	२५६
२५४	बालिग़ मर्द के लिए कफ़ाअत (बराबरी) शर्त नहीं।	विवाहिता को अविवाहिता ठहराना और पति-पत्नी में अलगाव करना कबीरा (बड़ा गुनाह) है।	२५७
२५४	बाप ने भाई को खत लिखा कि मेरी नाबालिग बेटी का नाता या निकाह जहाँ तुम्हारी मर्ज़ी हो कर दो, उसने उसका निकाह कर दिया और नाबालिग की जानिब से उसके मामू ने क़ुबूल किया और गवाह कहते हैं कि वह खत हमने खुद सुना है, अब बाप इनकार कर रहा है तो क्या हुक्म है।	जो वहाबिया से मिलता-जुलता हो उसके यहाँ शादी-ब्याह का क्या हुक्म है।	२५७
२५४	ईजाब व क़ुबूल नाबालिगों से कराया जाए तो निकाह हो गया या नहीं।	एक शख़्स ने ज़ाहिर यह किया कि वह लहरपुर का है और फिर साबित हुआ कि वह हरगाम का है और नाम में अंतर हुआ; लड़की कहती है कि मेरा निकाह अब्दुल रहमान बिन कल्लू से हुआ और काज़ी भी यही कहता है मगर गवाह लाल मुहम्मद बिन मन्नू बताते हैं और वकील लाल मुहम्मद बिन कल्लू, इस सूरत में निकाह किससे हुआ।	२५८
२५५		तन-बख़्शी कोई चीज़ मान्य है या निकाह।	२५८

पृष्ठ	प्रश्न / कथन	प्रश्न / कथन	पृष्ठ
	दोनों तरफ से कुबूलियत हो तो निकाह का क्या हुक्म है।		
२५५	निकाह-ए-मसनून (सुन्नत के अनुसार निकाह) का क्या तरीका है।	एक शख्स ने दुआ-ए-खैर के जलसा-ए-आम में कह दिया कि मैंने अपनी लड़की फलां को दी, इससे निकाह हुआ या नहीं।	२५९
२५५	अगर वली खुतबा-ए-मसनून पढ़े या ईजाब व कुबूल पर सक्षम हो तो गैर से ईजाब व कुबूल कराना कैसा है।	खुतबा पढ़ा जाना या महर का ज़िक्र निकाह की शर्त नहीं।	२५९
२५५	निकाह पढ़ाने वाले को उजरत (पारिश्रमिक) लेना-देना कैसा है।	स्पष्ट शब्दों में किए गए निकाह में नियत शर्त नहीं।	२५९
२५५	अगर उजरत अपने खर्च में न लाए बल्कि नेक काम में खर्च करे तो क्या हुक्म है।	जब तक वली निकाह से पहले किसी गैर-कुफ़ू (बराबरी का न होना) को गैर-कुफ़ू जानकर स्पष्ट रूप से अनुमति न दे, निकाह पूर्णतः अमान्य है।	२६०
२५५	दूल्हे के सर पर पगड़ी रखने के लिए उसके फूफा या बहनोई आते हैं, दूसरा कोई नहीं रख सकता और वे बिना पैसे लिए नहीं रखते, पैसा कम होने पर ज़िद करते हैं; यह लेना-देना शरीयत के अनुसार कैसा है और इसे ज़रूरी हक मानना और ज़िद करना कैसा है।	निकाह किसी भी उम्र में नाजायज़ नहीं यहाँ तक कि उसी दिन के जन्मे बच्चे का भी।	२६१
२५५	वलीमा की परिभाषा क्या है और उसकी अवधि कितने दिनों तक है।	गर्भ में पल रहे बच्चे का निकाह नहीं हो सकता।	२६१
२५६	अगर वलीमा सुन्नत की नियत से न करके केवल दिखावे के लिए करे तो क्या हुक्म है।	भ्रूण पर किसी की विलायत (अभिभावकता) नहीं होती।	२६१

पृष्ठ २३ कुल ७३९ में से

صفحہ	سوال / بیان
۲۵۴	ایک سید نے ایک چماری کو مسلمان کرکے نکاح کرلیا تو وہ گنہگار ہوا یا نہیں اور اس سے ترک موالات اور برادری سے نکالنا کیسا ہے۔
۲۵۴	بالغ مرد کے لئے کفاءت شرط نہیں۔
۲۵۴	باپ نے برادر کو خط لکھا کہ میری دختر نابالغہ کا ناتہ یا نکاح جہاں تمہاری مرضی ہو کردو، اس نے اس کا نکاح کردیا اور نابالغ کی جانب سے اس کے ماموں نے قبول کیا اور گواہ کہتے ہیں کہ وہ خط ہم نے خود سنا ہے اب باپ منکر ہے تو کیا حکم ہے۔
۲۵۴	ایجاب و قبول نابالغین سے کرایا جائے ہے اور پھر ثابت ہوا کہ وہ ہر گام کا ہے اور تو نکاح ہوگیا یا نہیں۔
۲۵۶	زید پیشہ وکالت کرتا ہے اور قاضی ہے تو کیا حکم ہے۔
۲۵۷	منکوحہ کو غیر منکوحہ ٹھہرانا اور زوجین میں تفریق کرنا کبیرہ ہے۔
۲۵۷	جو وہابیہ سے ملتا جلتا ہو اس کے یہاں شادی بیاہ کا کیا حکم ہے۔
۲۵۸	ایک شخص نے ظاہر یہ کیا کہ لہر پور کا نام میں اختلاف ہوا، لڑکی کہتی ہے کہ میرا نکاح عبد الرحمن بن کلو سے ہوا اور قاضی

صفحہ	سوال / بیان
	دونوں طرف سے قبولیت ہو تو نکاح کا
۲۵۵	کیا حکم ہے۔
۲۵۵	نکاح مسنون کا کیا طریقہ ہے۔
	اگر ولی خطبہ مسنونہ پڑھے یا ایجاب
۲۵۵	و قبول پر قادر ہو تو غیر سے ایجاب و
	قبول کرانا کیسا ہے۔
۲۵۵	نکاح خواں کو اجرت لینا دینا کیسا ہے۔
	اگر اجرت اپنے صرف میں نہ لائے
۲۵۵	کار خیر میں صرف کرے تو کیا حکم
	ہے۔
	نوشہ کے سر پر پگڑی رکھنے کے
	لئے اس کے پھوپھا یا بہنوئی آتے ہیں
۲۵۵	دوسرا نہیں رکھ سکتا اور وہ بے روپیہ
	لئے نہیں رکھتے روپیہ کم ہوتا ہے تو

سوال / بیان	صفحہ
بھی یہی کہتا ہے مگر گواہ لعل محمد بن	
منوں بتاتے ہیں اور وکیل لعل محمد بن کلو،	
اس صورت میں نکاح کس سے ہوا۔	
تن بخشی کوئی چیز معتبر ہے یا نکاح۔	۲۵۸
ایک شخص نے دعائے خیر جلسہ عام میں	
کہہ دی کہ میں نے اپنی لڑکی فلاں کو دی،	۲۵۹
اس سے نکاح ہوا یا نہیں۔	
خطبہ پڑھا جانا یا ذکر مہر شرط نکاح نہیں۔	۲۵۹
نکاح بالفاظ صریحہ میں نیت شرط نہیں۔	۲۵۹
جب تک ولی پیش از نکاح غیر کفو کو غیر	
کفو جان کر بصراحت اجازت نہ دے نکاح	۲۶۰
باطل محض ہے۔	
نکاح کسی عمر میں ناجائز نہیں یہاں تک کہ	
اسی دن کے بچے کا۔	۲۶۱

صفحہ	سوال / بیان
	اصرار کرتے ہیں یہ لینا دینا شرعاً کیسا ہے اور اسے ضروری حق جاننا اور اصرار کرنا کیسا ہے۔
۲۵۵	ولیمہ کی تعریف کیا ہے اور اس کی مدت کے روز تک ہے۔
۲۵۶	اگر ولیمہ بخیال سنت نہ کرے بلکہ برائے نام آوری تو کیا حکم ہے۔

سوال / بیان صفحہ	
پیٹ کے بچے کا نکاح نہیں ہوسکتا۔	۲۶۱
جنین پر کسی کی ولایت نہیں۔	۲۶۱

Fatawa Rizvia Volume Eleven

Page	Subject / Question	Answer / Subject	Page
261	How to marry two twin girls whose hip bones are joined?	Is marriage prohibited in Muharram and Safar or not?	265
261	To distress the Shari'ah by establishing false and baseless things is severe absurdity.	It is permissible for Zaid's stepdaughter (Rabiba) to marry his real brother.	265
261	A question about a topic of marriage.	Marriage within the Iddah period is void and forbidden.	266
261	The mother performed the marriage in the absence of the guardian (Wali), and upon his return, he is angry; what is the ruling?	If the one performing the marriage within Iddah did so knowing it's forbidden, he is a severe sinner and a pimp for adultery, but his own marriage is not invalidated.	266
262	What is the meaning of the phrase in Durr al-Mukhtar: "And he chose in al-Multaqa as long as he does not wait for the equal suitor..." etc.?	One who performs a marriage during Iddah considering it lawful is out of the fold of Islam, and his own marriage is also invalidated.	266
262	In the engagement assembly, the marriage officiant said to Amr, the father of Hindah, in front of witnesses: "Have you given your daughter to Zaid, the son of Bakr?" He said: "I have given." Then he said to Bakr: "Have you accepted Hindah, the daughter of Amr, for your son Zaid?" He said: "I have accepted." Did the marriage of Hindah take place through this offer and acceptance, or was it a promise of marriage?	It is not permissible to make the person who performs the marriage of a woman in Iddah (Mu'tadda) an Imam.	266

Page	Subject / Question	Answer / Subject	Page
263	Fiqh (jurisprudence) is not just the name of looking at a text from a book and understanding a literal translation; rather, the perception of the objective of Shari'ah and observing the conditions of cities and servants is the greatest pillar of Fiqh.	If someone intentionally participated in the marriage of a woman in Iddah and knew the marriage was forbidden, he is a sinner; if he considered it lawful, he is out of Islam.	266
263	One who does not recognize the people of his time is ignorant.	It is obligatory for the man and woman who marry within Iddah to separate immediately, otherwise, the community should strictly ostracize them, and completely stop talking, sitting, and interacting with them.	267
264	What is the ruling if an adulterer marries during pregnancy?	How is the marriage with the wife of the stepson?	267
264	Zaid told the proxy (Wakil) to perform his daughter's marriage for 10,000 rupees and two Dinars; the proxy said 10,000 Dirhams at the time of the contract; did the marriage take place or not?	Hindah's mother married her to Bakr without Hindah's consent; Hindah did not approve and married Zaid; what is the ruling?	267
265	How is the marriage with a woman who wanders outside or a prostitute?	One party is Sunni and the other follows the Shi'a Imami way; is intermarriage between them permissible in Shari'ah or not?	268

फ़तावा रिज़विया खंड ग्यारह

पृष्ठ	विषय / प्रश्न	उत्तर / विषय	पृष्ठ
261	दो जुड़वां लड़कियां जिनकी कूल्हे की हड्डियां जुड़ी हुई हैं, उनकी शादी कैसे की जाए?	मुहर्रम और सफ़र में निकाह मना है या नहीं?	265
261	झूठ और निराधार बात स्थापित करके शरीयत को तकलीफ़ देना घोर मूर्खता है।	ज़ैद की रबीबा (सौतेली बेटी) का निकाह उसके सगे भाई से जायज़ है।	265
261	निकाह के बारे में एक विषय पर सवाल।	इद्दत के अंदर निकाह बातिल और हराम है।	266
261	माँ ने वली की अनुपस्थिति में निकाह करा दिया और वह वापस आकर नाराज़ है, तो क्या हुक्म है?	इद्दत के भीतर निकाह पढ़ाने वाले ने अगर इसे हराम जानकर पढ़ाया, तो वह घोर पापी और ज़िना का दलाल है, लेकिन उसका अपना निकाह नहीं टूटा।	266
262	और दुर्र-ए-मुख़्तार की इबारत "वख़्तारा फ़िल मुल्तका मालम यंतज़िरुल कुफ़ुवल ख़ातिब..." आदि का क्या मतलब है?	इद्दत के दौरान निकाह को हलाल जानकर पढ़ाने वाला इस्लाम से बाहर है और उसका अपना निकाह भी चला गया।	266
262	निकाह की महफ़िल में निकाह कराने वाले ने गवाहों के सामने हिंदा के बाप अम्र से कहा कि तूने अपनी लड़की बक्र के लड़के ज़ैद को दी, उसने कहा दी, फिर बक्र से कहा तूने अम्र की लड़की हिंदा अपने लड़के ज़ैद के लिए स्वीकार की, उसने कहा स्वीकार की, तो क्या इस ईजाब और क़ुबूल से हिंदा का निकाह हुआ या निकाह का वादा हुआ?	मोतदा (इद्दत वाली) का निकाह पढ़ाने वाले को इमाम बनाना जायज़ नहीं।	266
263			266

पृष्ठ	विषय / प्रश्न	उत्तर / विषय	पृष्ठ
	तफ़क़्क़ुह (दीनी समझ) केवल किताब से इबारत देख लेने और शाब्दिक अनुवाद समझ लेने का नाम नहीं है, बल्कि शरीयत के मक़सद का बोध और शहरों और बंदों की स्थितियों पर नज़र तफ़क़्क़ुह का सबसे बड़ा स्तंभ है।	मोतदा के निकाह में जानबूझकर शामिल होने वाले ने अगर उस निकाह को हराम माना तो पापी है और अगर हलाल माना तो इस्लाम से बाहर हो गया।	
263	जिसे अपने ज़माने के लोगों की पहचान नहीं, वह जाहिल है।	इद्दत के भीतर निकाह करने वाले मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है कि तुरंत अलग हो जाएं, वरना बिरादरी वाले उन दोनों को कतई बिरादरी से निकाल दें, उनसे बातचीत और उठना-बैठना सब अचानक बंद कर दें।	267
264	ज़ानी ने गर्भावस्था की स्थिति में निकाह किया तो क्या हुक्म है?	पत्नी के बेटे की बीवी से निकाह कैसा है?	267
264	ज़ैद ने वकील से कहा कि मेरी लड़की का निकाह 10 हज़ार रुपये और दो दीनार के बदले कर दो, वकील ने निकाह के समय 10 हज़ार दिरहम कहे, निकाह हुआ या नहीं?	हिंदा की माँ ने उसकी सहमति के बिना उसका निकाह बक्र से कर दिया, हिंदा ने इसे स्वीकार नहीं किया और अपना निकाह ज़ैद से कर लिया, तो क्या हुक्म है?	267
265	बाहर घूमने वाली या वेश्या से निकाह कैसा है?	दो पक्षों में से एक सुन्नी संप्रदाय का है और दूसरा शिया इमामिया तरीक़ा रखता है; क्या उनके बीच शरीयत के अनुसार विवाह जायज़ है या नहीं?	268

صفحہ	مضمون / سوال	جواب / مضمون	صفحہ
۲۶۱	دو توام لڑکیوں کے کولھوں کی ہڈیاں جڑی ہوئی ہیں ان کی شادی کیسے کی جائے۔	محرم اور صفر میں نکاح منع ہے یا نہیں۔	۲۶۵
۲۶۱	جھوٹ اور بے اصل بات قائم کر کے شریعت کو تکلیف دینی سخت بیہودگی ہے۔	زید کی ربیبہ کا نکاح اس کے سگے بھائی سے جائز ہے۔	۲۶۵
۲۶۱	ایک مضمون نکاح کے بارے میں سوال۔	عدت کے اندر نکاح باطل وحرام ہے۔	۲۶۶
۲۶۱	والدہ نے ولی کی غیبت میں نکاح پڑھا دیا اور وہ واپس آکر اس سے ناراض ہے تو کیا حکم ہے۔	عدت کے اندر نکاح پڑھانے والے نے اگر حرام جانکر پڑھایا تو سخت گنہگار اور زنا کا دلال ہے مگر اس کا اپنا نکاح نہ گیا۔	۲۶۶
۲۶۲	اور عبارت درمختار "واختار فی الملتقی مالم ینتظر الکفوالخاطب جوابہ "الخ کا کیا مطلب ہے۔	دوران عدت نکاح کو حلال جان کر پڑھانے والا اسلام سے خارج اور اس کا اپنا نکاح بھی گیا۔	۲۶۶
۲۶۲	مجلس خطبہ میں نکاح نے روبرو گواہان کے ہندہ کے باپ عمرو سے کہا تو نے اپنی لڑکی بکر کے لڑکے زید کو دی، اس نے کہا دی، پھر	معتدہ کا نکاح پڑھانے والے کو امام بنانا جائز نہیں۔	۲۶۶

صفحہ	مضمون / سوال	جواب / مضمون	صفحہ
		بکر کو کہا تو نے عمرو کی لڑکی ہندہ اپنے لڑکے زید کے واسطے قبول کی، اس نے کہا قبول کی، تو اس ایجاب اور قبول سے ہندہ کا نکاح ہوا یا وعدہ نکاح ہوا۔	
۲۶۳	تفقہ فقط کتاب سے عبارت دیکھ لینے اور لفظی ترجمہ سمجھ لینے کا نام نہیں بلکہ مقصد شرع کا ادراک اور احوال بلاد و عباد پر نظر رکن اعظم تفقہ ہے۔	معتدہ کے نکاح میں دانستہ شریک ہونیوالے نے اگر اس نکاح کو حرام جانا تو گنہگار ہے اور اگر حلال جانا تو اسلام سے خارج ہو گیا۔	۲۶۶
۲۶۳	جسے اہل زمانہ کی پہچان نہیں وہ جاہل ہے۔	عدت کے اندر نکاح کرنے والے مرد وزن پر فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں ورنہ برادری والے ان دونوں کو قطعاً برادری سے خارج کر دیں، ان سے بول چال نشست وبرخاست سب یک لخت ترک کر دیں۔	۲۶۷
۲۶۴	زانی نے بحالت حمل نکاح کیا تو کیا حکم ہے۔	زوجہ کے بیٹے کی بی بی سے نکاح کیسا ہے۔	۲۶۷
۲۶۴			۲۶۷

صفحہ مضمون / سوال		جواب / مضمون	صفحہ
	زید نے وکیل سے کہا کہ میری لڑکی کا عقد بعوض ۱۰ ہزار روپے اور دو دینار کردو، وکیل نے بوقت عقد دس ۱۰ ہزار درہم کہے ، نکاح ہوا یا نہیں۔	ہندہ کی ماں نے اس کا نکاح بے رضامندی ہندہ بکر سے کیا، ہندہ نے اسے منظور نہ کیا اور اپنا نکاح زید سے کرلیا تو کیا حکم ہے۔	
۲۶۵	باہر پھرنے والی یا طوائف سے نکاح کیسا ہے۔	احد الفریقین سنی المذہب دوسرا شیعہ امامیہ طریق رکھتا ہے ان کے درمیان شرعاً مناکحت جائز ہے یا نہیں۔	۲۶۸

Volume 11 | Fatawa Razawiyya

Page	Topic / Ruling	Topic / Ruling	Page
269	If a woman is given a clear (Ba'in) divorce but not three, then there is no need for Halala.	Is the verse "Wa Uhilla Lakum Ma Wara'a Dhalikum" an abrogation of the Hadith "Do not marry a woman while being married to her paternal aunt..." etc.?	272
269	If a husband and wife have been alone together in a private place, then the full dowry (Mehr) becomes payable.	The Hadith "Do not marry a woman while being married to her paternal or maternal aunt" is a well-known authentic (Sahih) Hadith and it does not contradict the Quran.	272
269	The waiting period (Iddat) for a woman becomes mandatory from the day of divorce.	The Hadith "Do not marry a woman while being married to her paternal or maternal aunt" is an explanation of the Quranic verse "And that you join two sisters," meaning that every relationship of prohibited degree (Mahramiyat) is intended by sisterhood.	272
269	If a divorce occurred before the husband and wife were alone in a private place, then half of the dowry is waived.	The hadith "My words do not abrogate the words of Allah" is completely baseless.	273
269	If a non-consummated woman is divorced, there is no waiting period (Iddat) for her at all.	The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was given the Quran and something like the Quran.	273
269	The statement "Even if the Kaaba were here, I would not bow my head" is a word of disbelief (Kufr); repentance and renewal of Islam are mandatory for the one who says it.	What the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) has made forbidden is just like what Allah Almighty has made forbidden.	273
269			273

Page	Topic / Ruling
	Zaid said to Bakr, "I have come to ask for your daughter for my son." He accepted, and Zaid presented jewelry and clothes. After the distribution of sweets, the woman came and went to the suitor's house. Did the marriage take place or not?
270	Marriage with a step-mother-in-law is permissible.
271	Marriage with the daughter of one's mother's maternal aunt is permissible.
271	How is marriage with the daughter of one's own 'Saadhu' (wife's sister's husband)?
271	Zaid practiced 'jam' bayn al-ukhtayn' (simultaneous marriage with two sisters); what is the status of the wives and children, and are they entitled to inheritance or not?

Topic / Ruling	Page
Allah's command to the Muslims is: take what the Messenger gives you and refrain from what he forbids you.	
While a girl was still a minor, her mother sent her to the house of the father of the boy she was engaged to. He had the marriage performed at his house. Now, after reaching puberty, the mother had the girl married a second time, and the woman is also agreeable to it. Which marriage is valid?	274
A minor who has an agnate male relative (asaba) is the guardian for their marriage; the mother does not have the authority to arrange it in his presence.	274
A girl reaches puberty at [number] years.	274

पृष्ठ	विषय / नियम	विषय / नियम	पृष्ठ
269	यदि किसी महिला को बाइन तलाक़ (स्पष्ट विच्छेद) हो जाए लेकिन तीन न हों, तो हलाला की आवश्यकता नहीं है।	क्या आयत "व उहिल्ल लकुम मा वराअ ज़ालिकुम" हदीस "ला तन्किहुल मरअता अला अम्तिहा..." आदि की नासिख (रद्द करने वाली) है?	272
269	यदि पति-पत्नी एक निजी स्थान पर अकेले रह चुके हों, तो पूरा महर (स्त्रीधन) देय हो जाता है।	हदीस "किसी महिला से उसकी फूफी या उसकी मौसी के साथ रहते हुए विवाह न करें" एक प्रसिद्ध सहीह हदीस है और यह कुरान के विरुद्ध नहीं है।	272
269	महिला पर तलाक़ के दिन से इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य हो जाती है।	हदीस "किसी महिला से उसकी फूफी या उसकी मौसी के साथ रहते हुए विवाह न करें" आयत "और यह कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो" की व्याख्या है, जिसका अर्थ है कि 'बहन के रिश्ते' से हर वह रिश्ता मुराद है जिससे निकाह हराम (निषिद्ध) है।	272
269	यदि पति-पत्नी के अकेले रहने से पहले ही तलाक़ हो गया, तो आधा महर माफ़ हो गया।	हदीस "मेरी बात अल्लाह की बात को मन्सूह (रद्द) नहीं करती" पूरी तरह से निराधार है।	273
269	यदि ऐसी महिला को तलाक़ दिया जाए जिसके साथ सहवास न हुआ हो, तो उस पर कोई इद्दत नहीं है।	नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरान और कुरान जैसी एक और चीज़ (सुन्नत) दी गई है।	273
269	यह कहना कि "चाहे यहाँ काबा ही क्यों न आ जाए, मैं सिर नहीं झुकाऊँगा" कुफ़्र (अविश्वास) का शब्द है; ऐसा	अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो हराम किया है, वह वैसा ही है जैसा अल्लाह ने हराम किया है।	273

पृष्ठ	विषय / नियम	विषय / नियम	पृष्ठ
	कहने वाले पर तौबा और नए सिरे से इस्लाम स्वीकार करना अनिवार्य है।		
269	ज़ैद ने बक्र से कहा, "मैं आपके पुत्र के लिए आपकी पुत्री का हाथ माँगने आया हूँ।" उसने स्वीकार कर लिया, और ज़ैद ने आभूषण और कपड़े पेश किए। मिठाई बाँटने के बाद लड़की दूल्हे के घर आने-जाने लगी। क्या निकाह हुआ या नहीं?	मुसलमानों के लिए अल्लाह का हुक्म है कि रसूल तुम्हें जो कुछ दें उसे ले लो और जिससे मना करें उससे रुक जाओ।	273
270	सौतेली सास से निकाह जायज़ है।	लड़की के नाबालिग होने की स्थिति में उसकी माँ ने उस लड़के के पिता को बुलाकर जिसके साथ उसका रिश्ता तय हो चुका था, लड़की को विदा (रुख़सत) कर दिया। उसने अपने घर पर निकाह पढ़वाया। अब बालिग होने के बाद माँ ने लड़की का दूसरा निकाह कर दिया जिससे लड़की भी सहमत है। कौन सा निकाह सही हुआ?	274
271	माँ की ख़ाला (मौसी) की बेटी से निकाह जायज़ है।	जिस नाबालिग का कोई अस्बा (रक्त संबंधी पुरुष) हो, वह उसके निकाह का वली (संरक्षक) है; उसके रहते माँ को निकाह कराने का अधिकार नहीं है।	274
271	अपने सगे साढ़ू (पत्नी की बहन का पति) की लड़की से निकाह कैसा है?	लड़की [संख्या] वर्ष में बालिग होती है।	274
271	ज़ैद ने दो सगी बहनों को एक साथ निकाह में रखा तो पत्नियाँ कैसी हैं और औलाद कैसी है, क्या वे विरासत पाने के हकदार हैं या नहीं?		

صفحہ	مسئلہ / عنوان
۲۶۹	اگر عورت کو طلاق بائن ہو جائے مگر تین نہ ہوں تو حلالہ کی حاجت نہیں۔
۲۶۹	زن وشوہر کی اگر ایک مکان تنہا میں یکجائی ہو چکی ہے۔ تو کل مہر واجب الادا ہو گیا۔
۲۶۹	عورت پر روز طلاق سے عدت لازم ہوتی ہے۔
۲۶۹	ایک مکان میں زن و شوہر کی تنہائی نہیں ہوئی تھی کہ طلاق ہو گئی تو نصف مہر ساقط ہو گیا۔
۲۶۹	غیر مدخولہ کو طلاق دی جائے تو اس پر عدت اصلاً نہیں۔
۲۶۹	

صفحہ	مسئلہ / عنوان
۲۷۲	حدیث "لاتنکح المرأۃ علی عمتھا" الخ کی آیہ کریمہ "واحل لکم ماوراء ذلکم" ناسخ ہے یا نہیں۔
۲۷۲	حدیث "لا تنکح المرأۃ علی عمتھا ولا علی خالتھا" حدیث صحیح مشہور ہے اور وہ مخالف قرآن نہیں۔
۲۷۲	حدیث "لا تنکح المرأۃ علی عمتھا ولا علی خالتھا" آیہ کریمہ "وان تجمعوا بین الاختین" کی تفسیر ہے کہ اختیت سے ہر علاقہ محرمیت مراد ہے۔
۲۷۳	حدیث "کلامی لا ینسخ کلام اللہ" محض بے اصل ہے۔
۲۷۳	نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو قرآن اور قرآن کی مثل اور عطا کیا گیا ہے۔
۲۷۳	

صفحہ	مسئلہ / عنوان	مسئلہ / عنوان صفحہ
	یہ کلمہ کہ "اگر ادھر کعبہ بھی ہو جائے تو سر نہ جھکاؤں گا" کلمہ کفر ہے ایسا کہنے والے پر توبہ اور تجدید اسلام لازم ہے۔	رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا حرام کیا ہوا ایسا ہی ہے جیسا اللہ تعالیٰ کا حرام کیا ہوا۔
	زید نے بکر سے کہا کہ میں آپ کی دختر کو اپنے پسر کے واسطے مانگنے والا آیا ہوں اس نے قبول کیا	مسلمانوں کو اللہ تعالیٰ کا حکم ہے کہ جو کچھ
۲۶۹	اور زیورات اور کپڑے زید نے حاضر کئے تقسیم شیرینی کے بعد عورت خاطب کے یہاں آئی گئی نکاح ہوا یا نہیں۔	۲۷۳ تمہیں رسول عطا فرمائیں اس کو لو اور جس سے منع فرمائیں اس سے باز رہو۔
		بحالت نابالغی لڑکی کی ماں نے جس لڑکے سے نسبت ہو چکی تھی اس کے باپ کو بلا کر لڑکی کو رخصت کر دیا اس نے اپنے
۲۷۰	سوتیلی ساس سے نکاح جائز ہے۔	۲۷۴ مکان پر نکاح پڑھوایا اب بلوغ کے بعد ماں نے لڑکی کا دوسرا نکاح کر دیا جس سے عورت بھی راضی ہے، کون سا نکاح صحیح ہوا۔
۲۷۱		۲۷۴

صفحہ	مسئلہ / عنوان
	ماں کی خالہ کی بیٹی سے نکاح جائز ہے۔
۲۷۱	اپنے حقیقی ساڑھو کی لڑکی سے نکاح کیسا ہے۔
۲۷۱	زید نے جمع بین الاختین کیا تو بیویاں کیسی ہیں اور اولاد کیسی ہے، ترکہ پانے کی مستحق ہیں یا نہیں۔

صفحہ	مسئلہ / عنوان
	جس نابالغ کا کوئی عصبہ ہو وہ اس کے نکاح کا ولی ہے اس کے ہوتے ہوئے ماں کو کرانے کا اختیار نہیں۔
۲۷۴	لڑکی کے برس میں بالغ ہوتی ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

| 282 | A non-conformist (Ghair-Muqallid) is not a Shafi'i, but rather from the people of innovation, base desires, and Hellfire. | 282 | It is in the Hadith that they will be resurrected as adulterers and adulteresses on the Day of Judgment. | 283 | | 282 | In this era, whoever is outside the four schools of jurisprudence (Hanafi, Shafi'i, Hanbali, and Maliki) is an innovator and destined for Hellfire. | 282 | If the son of Zaid put the breast of Amr's wife in his mouth while she was four or five months pregnant with her first child, and it was unknown if milk existed at that time, would this boy's marriage with Amr's daughter be valid or not? | 284 | | 282 | If an adult Shafi'i woman marries a Hanafi of equal status without her guardian's permission, the marriage will be binding. | 282 | For proof of suckling (Rada'at), it is necessary to know that a drop of milk reached the child's stomach through the mouth or nose; suckling is not established merely by pressing the breast. | 284 | | 282 | Is it necessary to consider status in setting the dowry (Mahr)? And will a marriage be valid if the dowry exceeds the status? | 282 | There is no set period for milk production; due to strong temperament and abundance of blood, a virgin can also produce milk. | 284 | | 283 | A marriage to a poor man with even a high dowry will be valid, provided it is considered a debt and there is an intention to pay. | 283 | Hindah's stepfather performed her marriage when she was a minor. Now Hindah is an adult and says she will annul this marriage; what is the ruling? | 285 | | 283 | A severe lash for the accursed Wahhabis that reliance is on Allah Almighty and His Messenger (peace and blessings be upon him). | 283 | What is the ruling on having a marriage performed by another Muslim instead of a Qazi? | 286 | | 283 | The necks of the Wahhabis were cut by the Sword of Allah; it is stated in the Holy Quran: "They are satisfied with what Allah and His Messenger have given." | 283 | Marriage with the husband's nephew after the husband's death and the completion of the waiting period (Iddah) is permissible. | 287 | | 283 | The Noble Furqan (Quran) stated: "Now Allah and His Messenger give to us from His bounty." | 283 | Marrying with the intention of divorcing after a certain period is not problematic. | 287 | | 283 | Hadrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) strictly forbade fixing a high dowry in a sermon, so a woman recited the noble verse: "and you have given one of them a heap of gold (qintar)." Upon this, he immediately retracted his refusal. | 283 | Giving divorce without any reason or cause is forbidden. | 287 | | 283 | It is impermissible to fix a dowry without the intention to pay it. | 283 | A marriage whose validity depends on someone's permission will be cancelled upon their expression of

displeasure. | 288 | | | | Intercourse in a suspended marriage (Nikah Mauqoof) is forbidden before permission. | 288 |

फ़तावा रज़विया जिल्द ११

| २८२ | गैर मुक़ल्लिद शाफ़ई नहीं बल्कि अहले बिदअत व हवा व अहले नार हैं। | २८२ | हदीस में है कि वे हश्र में ज़ानी व ज़ानिया उठाए जाएंगे। | २८३ | | २८२ | इस ज़माने में जो मज़ाहिब-ए-अरबा (हनफ़ी, शाफ़ई, हम्बली और मालकी) से ख़ारिज है वह बिदअती व नारी है। | २८२ | अगर पिसर-ए-ज़ैद ने ज़ौजा-ए-अम्र की छाती जबकि वह चार पाँच माह की हामिला थी और हमल भी पहला था मुँह में ले ली उस वक़्त दूध होना मालूम नहीं तो इस लड़के का अम्र की लड़की से निकाह होगा या नहीं। | २८४ | | २८२ | अगर बालिग़ा शाफ़ईया बे-इज़्न-ए-वली किसी हनफ़ी कुफ़्व से निकाह करे तो निकाह लाज़िम होगा। | २८२ | सुबूत-ए-रज़ाअत के लिए ज़रूरी है कि जौफ़-ए-सबी (बच्चे के पेट) में दूध का क़तरा मुँह या नाक के रास्ते जाना मालूम हो महज़ छाती दबाने से रज़ाअत साबित न होगी। | २८४ | | २८२ | महर में हैसियत का लिहाज़ ज़रूरी है या नहीं, और हैसियत से ज़ायद महर पर जो निकाह हो वह निकाह होगा या नहीं। | २८२ | दूध उतरने के लिए कोई मुद्दत नहीं, क़ुव्वत-ए-मिज़ाज व कसरत-ए-ख़ून से कुँवारी को दूध उतर सकता है। | २८४ | | २८३ | मुफ़लिस से कितने ही कसीर महर पर निकाह हो जाएगा मगर यह ज़रूर है कि उसे दैन (क़र्ज़) जानें और अदा की नियत हो। | २८३ | हिन्दह नाबालिग़ा का निकाह उसके सौतेले बाप ने किया अब हिन्दह बालिग़ा है कहती है मैं इस निकाह को फ़स्ख़ कराऊँगी, क्या हुक्म है। | २८५ | | २८३ | सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को वहाबिया मलऊना पर शदीद ताज़ियाना कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर भरोसा है। | २८३ | निकाह क़ाज़ी से न पढ़वाना दूसरे मुसलमान से पढ़वाना कैसा है। | २८६ | | २८३ | सैफ़ुल्लाह से वहाबियों की गर्दन उड़ गई क़ुरान मजीद में फ़रमाया कि अल्लाह व रसूल के देने पर राज़ी हूँ। | २८३ | शौहर के भतीजे से बाद वफ़ात-ए-शौहर व इन्क़िज़ा-ए-अद्दत निकाह जायज़ है। | २८७ | | २८३ | फ़ुरक़ान-ए-हमीद ने इरशाद किया कि अब हमें देते हैं अल्लाह और उसका रसूल अपने फ़ज़ल से। | २८३ | इस इरादे पर निकाह कि मैं इतनी मुद्दत बाद तलाक़ दे दूँगा हर्ज नहीं। | २८७ | | २८३ | हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुत्बे में महर-ए-कसीर बाँधने पर इंकार-ए-शदीद फ़रमाया तो एक ख़ातून ने आयह-ए-करीमा "وَاٰتَيْتُمْ اِحْدٰهُنَّ قِنْطَارًا" तिलावत की जिस पर आप ने फ़ौरन अपने इंकार से रुजू फ़रमा लिया। | २८३ | बिला वजह बे-सबब तलाक़ देना मना है। | २८७ | | २८३ | यह नाजायज़ है कि मह, बाँधे और अदा की नियत न हो। | २८३ | निकाह जिसकी इजाज़त पर मौक़ूफ़

हो उससे नाराज़गी ज़ाहिर करते ही निकाह मौक़ूफ़ रद्द हो जाएगा। | २८८ | | | | | निकाह मौक़ूफ़ में क़बल-ए-इजाज़त वती (सम्भोग) हराम है। | २८८ |

पृष्ठ २७ का ७३९

| ۲۸۲ | غیر مقلد شافعی نہیں بلکہ اہل بدعت و ہوا واہلِ نار ہیں۔ | ۲۸۲ | حدیث میں ہے کہ وہ حشر میں زانی وزانیہ اٹھائے جائیں گے۔ | ۲۸۳ | | ۲۸۲ | اس زمانے میں جو مذاہب اربعہ (حنفی، شافعی، حنبلی اور مالکی) سے خارج ہے وہ بدعتی و ناری ہے۔ | ۲۸۲ | اگر پسرِ زید نے زوجہ عمرو کی چھاتی جبکہ وہ چار پانچ ماہ کی حاملہ تھی اور حمل بھی پہلا تھا منہ میں لے لی اس وقت دودھ ہونا معلوم نہیں تو اس لڑکے کا عمرو کی لڑکی سے نکاح ہوگا یا نہیں۔ | ۲۸۴ | | ۲۸۲ | اگر بالغہ شافعیہ بے اذنِ ولی کسی حنفی کفو سے نکاح کرے تو نکاح لازم ہو گا۔ | ۲۸۲ | ثبوتِ رضاعت کے لئے ضروری ہے کہ جوفِ صبی میں دودھ کا قطرہ منہ یا ناک کے راستے جانا معلوم ہو محض چھاتی دبانے سے رضاعت ثابت نہ ہو گی۔ | ۲۸۴ | | ۲۸۲ | مہر میں حیثیت کا لحاظ ضروری ہے یا نہیں، اور حیثیت سے زائد مہر پر جو نکاح ہو وہ نکاح ہو گا یا نہیں ۔ | ۲۸۲ | دودھ اترنے کے لئے کوئی مدت نہیں قوتِ مزاج و کثرتِ خون سے کنواری کو دودھ اتر سکتا ہے۔ | ۲۸۴ | | ۲۸۳ | مفلس سے کتنے ہی کثیر مہر پر نکاح ہو ہو جائیگا مگر یہ ضرور ہے کہ اسے دین جانیں اور ادا کی نیت ہو۔ | ۲۸۳ | ہندہ نابالغہ کا نکاح اس کے سوتیلے باپ نے کیا اب ہندہ بالغہ ہے کہتی ہے میں اس نکاح کو فسخ کراؤں گی، کیا حکم ہے۔ | ۲۸۵ | | ۲۸۳ | صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو وہابیہ ملعونہ پر شدید تازیانہ کہ اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر بھروسا ہے۔ | ۲۸۳ | نکاح قاضی سے نہ پڑھوانا دوسرے مسلمان سے پڑھوانا کیسا ہے۔ | ۲۸۶ | | ۲۸۳ | سیف اللہ سے وہابیوں کی گردن اڑ گئی قرآن مجید میں فرمایا کہ اللہ ورسول کے دینے پر راضی ہوں۔ | ۲۸۳ | شوہر کے بھتیجے سے بعد وفات شوہر و انقضائے عدت نکاح جائز ہے۔ | ۲۸۷ | | ۲۸۳ | فرقانِ حمید نے ارشاد کیا کہ اب ہمیں دیتے ہیں

اللہ اور اس کا رسول اپنے فضل سے۔ | ۲۸۳ | اس ارادہ پر نکاح کہ میں اتنی مدت بعد طلاق دیدوں گا حرج نہیں۔ | ۲۸۷ | | ۲۸۳ | حضرت فاروقِ اعظم رضی اللہ عنہ نے خطبہ میں مہرِ کثیر باندھنے پر انکار شدید فرمایا تو ایک خاتون نے آیہ کریمہ "وَاٰتَيْتُمْ اِحْدٰهُنَّ قِنْطَارًا" تلاوت کی جس پر آپ نے فوراً اپنے انکار سے رجوع فرمالیا۔ | ۲۸۳ | بلا وجہ بے سبب طلاق دینا منع ہے۔ | ۲۸۷ | | ۲۸۳ | یہ ناجائز ہے کہ مہر باندھے اور ادا کی نیت نہ ہو۔ | ۲۸۳ | نکاح جس کی اجازت پر موقوف ہو اس سے ناراضگی ظاہر کرتے ہی نکاح موقوف رَد ہوجائے گا۔ | ۲۸۸ | | | | نکاح موقوف میں قبل اجازت وطی حرام ہے۔ | ۲۸۸ |

Fatawa Razawiya | Volume 11

(Page 293): Marriage to a minor girl cannot be considered valid even if it is with her consent. | (Page 288): Zaid committed adultery with the paternal aunt of Hind before marrying Hind. Then he married Hind. What is the ruling? (Page 292): Ruling on adultery, marriage, and intimacy during pregnancy. | (Page 288): Allah Almighty accepts the repentance of His servants and forgives their sins. (Page 292): If three divorces are given to a non-consummated wife in one word, it becomes Mughallazah (irrevocable); and if given in separate words, it does not become Mughallazah. | (Page 289): Committing adultery with a woman does not make her niece (brother's or sister's daughter) unlawful, nor does it affect their marriage. (Page 292): What is the ruling if a widow's marriage takes place inadvertently during the iddah (waiting period)? | (Page 289): It is prohibited for both a paternal aunt and her niece to be in the marriage of one person; in fact, after divorcing one, marrying the other during her iddah is also prohibited. (Page 292): Is marriage with Jeth (husband's elder brother) correct or not? | (Page 290): Marriage cannot take place by performing the proposal and acceptance before only one man. (Page 295): If the proposal (Ijab) is for an undetermined person, the marriage will not take place; if it is for a determined person, it will be valid. | (Page 291): Sajjad's marriage was with Abdul Ghaffar's sister, and his sister was married to Sajjad. Zaitoon, sister of Abdul Ghaffar, eloped before departure (rukhsati). Therefore, Sajjad does not allow his sister Mauloodan to depart, saying that due to the lack of the condition of exchange marriage (nikah-e-badal) and breach of promise, it has become void. Is this correct? (Page 295): In an engagement ceremony, if the words specific to proposal and acceptance are uttered, then marriage will occur; if the words are ambiguous, then not. Consideration will be given to the ceremony as just an engagement. | (Page 291): Marriage is not invalidated by a corrupt condition. (Page 296): After the engagement, the girl's father refused; the girl is an adult. The boy's father made the girl flee from her maternal home, brought her, and performed the marriage at his place. What is the ruling? | (Page 291): There is no need for another person to solemnize the marriage; a man and a woman can perform the proposal and acceptance themselves in the presence of witnesses. (Page 296): Giving pain to a Muslim without justification is equivalent to giving pain to Allah and His Messenger. | (Page 292): If a woman does not have a guardian (wali), she is independent to marry whoever she wants; and if she has a guardian, she is independent to marry in her kufu (equal status). (Page 296): According to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), marriage without a

guardian is void. | (Page 292): A Qazi (judge) is not a condition for marriage; a person may have the marriage solemnized by whoever he wishes. (Page 297): Zaid was not consenting to the marriage with Hind; instead of "I accept" (qubool), he said "I am under duress" (bijabr). Did the marriage take place or not? | (Page 293): A Qazi has no legal powers over marriage, nor is he entitled to a fee if someone else solemnized the marriage.

(पृष्ठ २९३): एक नाबालिग लड़की से शादी वैध नहीं मानी जा सकती चाहे वह उसकी सहमति से ही क्यों न हो। | (पृष्ठ २८८): ज़ैद ने हिंद से निकाह करने से पहले उसकी बुआ (पिता की बहन) के साथ व्यभिचार (ज़िना) किया, फिर हिंद से निकाह कर लिया। इसका क्या हुक्म है? (पृष्ठ २९२): गर्भावस्था की स्थिति में व्यभिचार, निकाह और निकटता का हुक्म। | (पृष्ठ २८८): अल्लाह तआला अपने बंदों की तौबा कबूल फरमाता है और गुनाहों से दरगुज़र करता है। (पृष्ठ २९२): अगर ग़ैर-मदख़ूला (जिसके साथ सहवास न हुआ हो) बीवी को एक ही लफ़्ज़ में तीन तलाकें दे दी जाएं तो वह मुग़ल्ल्ज़ा (अंतिम तलाक) हो जाती हैं, और अगर अलग-अलग अल्फाज़ में दी जाएं तो मुग़ल्ल्ज़ा नहीं होतीं। | (पृष्ठ २८९): किसी औरत से ज़िना करना उसकी भतीजी या भांजी को हराम नहीं करता और न ही उनके निकाह में कोई खलल आता है। (पृष्ठ २९२): अगर बेवा (विधवा) का निकाह इद्दत के अंदर भूलवश हो जाए तो क्या हुक्म है? | (पृष्ठ २८९): फूफी और भतीजी दोनों का एक ही व्यक्ति के निकाह में होना हराम है, बल्कि एक को तलाक देने के बाद उसकी इद्दत में दूसरी से निकाह करना भी हराम है। (पृष्ठ २९२): जेठ से निकाह दुरुस्त है या नहीं। | (पृष्ठ २९०): सिर्फ एक मर्द के सामने ईजाब ओ क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कर लेने से निकाह नहीं हो सकता। (पृष्ठ २९५): अगर ईजाब (प्रस्ताव) किसी गैर-मुतअय्यन (अनिश्चित) के लिए हो तो निकाह नहीं होगा, और अगर मुतअय्यन के लिए हो तो सही होगा। | (पृष्ठ २९१): सज्जाद का निकाह अब्दुल गफ्फार की बहन से हुआ और उसकी बहन का निकाह सज्जाद से हुआ। जैतून (अब्दुल गफ्फार की बहन) रुख़सती से पहले फरार हो गई, इसलिए सज्जाद अपनी बहन मौलूदन को रुख़सत नहीं करता और कहता है कि शर्त-ए-निकाह बदलैन (अदला-बदली का निकाह) और वादा खिलाफी की वजह से निकाह बातिल (अमान्य) हो गया। क्या यह सही है? (पृष्ठ २९५): मंगनी की महफ़िल में अगर वे अल्फ़ाज़ कहे जाएं जो ईजाब ओ क़बूल के लिए मुतअय्यन हैं, तो निकाह हो जाएगा, और अगर अल्फ़ाज़ दुविधापूर्ण (मुतरद्दिद) हों तो नहीं। महफ़िल के एतबार से वह मंगनी ही मानी जाएगी। | (पृष्ठ २९१): निकाह शर्त-ए-फासिद (गलत शर्त) से फासिद नहीं होता। (पृष्ठ २९६): मंगनी के बाद लड़की के वालिद ने इनकार कर दिया, लड़की बालिग है। लड़के के वालिद ने लड़की को उसके मायके से फरार कराया और अपने यहाँ लाकर निकाह कर दिया। इसका क्या हुक्म है? | (पृष्ठ २९१): निकाह पढ़ाने के लिए किसी दूसरे शख़्स की ज़रूरत नहीं, गवाहों की मौजूदगी में मर्द और औरत खुद ही ईजाब ओ क़बूल कर सकते हैं। (पृष्ठ २९६): किसी मुसलमान को नाहक तकलीफ देना अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ देने के

बराबर है। | (पृष्ठ २९२): औरत अगर वली (अभिभावक) न रखती हो तो मुख्तार (स्वतंत्र) है जिससे चाहे अपना निकाह करे, और अगर वली रखती हो तो कुफ़ू(समान स्तर) में करने में मुख्तार है। (पृष्ठ २९६): इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक बगैर वली के निकाह बातिल है। | (पृष्ठ २९२): काज़ी निकाह की कोई शर्त नहीं है, आदमी जिससे चाहे निकाह पढ़वाए। (पृष्ठ २९७): ज़ैद हिंद से निकाह पर राज़ी न था, "क़बूल" की जगह उसने "ब-जब्र" (मजबूरी में) हूँ कहा। क्या निकाह हुआ या नहीं? | (पृष्ठ २९३): काज़ी के निकाह के बारे में शरअन कोई अख्तियारात नहीं हैं, और न ही वह मज़दूरी का मुस्तहिक है जबकि निकाह किसी और ने पढ़ाया हो।

पृष्ठ 28/739

۲۹۳ | نابالغہ سے شادی اگر چہ اس کی رضا سے ہو اجازت نہیں ٹھہر سکتی۔ | ۲۸۸ | زید ہندہ سے نکاح کرنے سے پہلے اس کی پھوپھی سے زنا کرتا رہا پھر ہندہ سے نکاح ہوا کیا حکم ہے۔ ۲۹۲ | عورت سے بحالت حمل زنا، نکاح و قربت کا حکم۔ | ۲۸۸ | اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کی توبہ قبول فرماتا اور گناہوں سے درگزر کرتا ہے۔ ۲۹۲ | غیر مدخولہ بہا کو اگر ایک لفظ میں تین طلاقیں دے مغلظہ ہو جاتی ہے اور اگر متفرق لفظوں سے دے تو مغلظہ نہیں ہوتی۔ | ۲۸۹ | کسی عورت سے زنا کرنا اس کی بھتیجی یا بھانجی کو حرام نہیں کرتا نہ ان کے نکاح میں کوئی خلل آتا ہے۔ ۲۹۲ | بیوہ کا نکاح عدت کے اندر سہواً ہو تو کیا حکم ہے۔ | ۲۸۹ | پھوپھی اور بھتیجی دونوں کا ایک شخص کے نکاح میں ہونا حرام بلکہ بعد از طلاق ایک کی عدت میں بھی دوسری سے نکاح حرام ہے۔ ۲۹۲ | جیٹھ سے نکاح درست ہے یا نہیں۔ | ۲۹۰ | صرف ایک مرد کے سامنے ایجاب وقبول کر لینے سے نکاح نہیں ہوسکتا۔ ۲۹۵ | ایجاب اگر نامتعین کے لئے ہو تو نکاح نہ ہوگا اور متعین کے لئے ہو تو صحیح ہوگا۔ | ۲۹۱ | سجاد کا نکاح عبد الغفار کی ہمشیرہ اور اس کا سجاد کی ہمشیرہ سے ہوا زیتون ہمشیرہ عبد الغفار رخصت سے پہلے فرار ہوگئی اس لئے سجاد اپنی ہمشیرہ مولودن کو رخصت نہیں کرتا کہتا ہے بوجہ فقدان شرط نکاح بدلین و شرط عہد شکنی باطل ہوگیا کیا یہ صحیح ہے۔ ۲۹۵ | جلسہ منگنی میں اگر وہ الفاظ جو ایجاب وقبول کے لئے متعین ہیں کہے تو نکاح ہوگا اور اگر الفاظ متردد ہیں تو نہیں۔ اعتبار جلسہ سے منگنی ہی ہوگی۔ | ۲۹۱ | نکاح شرط فاسد سے فاسد نہیں ہوتا۔ ۲۹۶ | منگنی کے بعد لڑکی کے والد نے انکار کیا لڑکی بالغہ ہے لڑکے کا والد لڑکی کو میکے سے فرار کر کے لے گیا اور اپنے یہاں نکاح کر لیا، کیا حکم ہے۔ | ۲۹۱ | نکاح پڑھانے کیلئے دوسرے شخص کی ضرورت نہیں،

گواہوں کی موجودگی میں مرد وزن خود ہی ایجاب وقبول کرسکتے ہیں۔ ۲۹۶ | کسی مسلمان کو ناحق ایذا دینا اللہ ورسول کو ایذا دینے کے مترادف ہے۔ | ۲۹۲ | عورت اگر ولی نہ رکھتی ہو مختار ہے جس سے چاہے اپنا نکاح کرے، اور اگر ولی رکھتی ہو تو کفو سے کرنے میں مختار ہے۔ ۲۹۶ | امام شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے نزدیک بغیر ولی کے نکاح باطل ہے۔ | ۲۹۲ | قاضی کوئی شرط نکاح نہیں آدمی جس سے چاہے نکاح پڑھوائے۔ ۲۹۷ | زید ہندہ سے نکاح پر رضا مند نہ تھا "بجبر" ہوں "بجائے "قبول" کہا نکاح ہوا یا نہیں۔ | ۲۹۳ | قاضی نکاح کے شرعاً کچھ اختیارات نہیں، نہ وہ اجرت کا مستحق جبکہ نکاح دوسرے نے پڑھایا ہو۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

Page	Question / Subject	Serial No.	Question / Subject	Page
300	The Qadis of marriage ceremonies belong to the tribe of "Names you have named, you and your fathers, for which Allah has sent down no authority".	297	A woman told a man to marry her during her 'iddah period, otherwise she would commit haraam. He tried to reason with her but she didn't listen, so he married her under compulsion. What is the ruling?	
301	An uncle performed the marriage of a minor girl. Now, after reaching puberty, she says, "Your character is bad, I will break the marriage." What is the ruling?	297	Allah made two, three, and four wives lawful for men. Why is this ruling not the same for women?	
301	Some say that in exchange for mahr (dowry), such and such rupees or dinars in current currency, excluding maintenance and nothing else, or besides them along with some other thing... which wording should be used? Does saying "excluding maintenance" mean the husband is responsible or not? Does including "besides" or "with" mean maintenance is part of mahr or not?	297	A non-believing woman married after embracing Islam and is pregnant from that marriage. Did the marriage take place or not? Zaid says it didn't, and the marriages of the witnesses and attendees were also broken. He presents a passage from 'Majmu'a Khani'.	
302	If a marriage is performed on the condition that there will be no mahr, still mahr will be Sharia-mandatory and 'Mahr-e-Mithl' (proper dower) will have to be given.	298	Habitually skipping Jumu'ah and congregational prayers without a Sharia excuse causes 'fisq' (wickedness), disqualifies one from being just, and is a reason to reject testimony.	
305		298		

Page	Question / Subject	Serial No.	Question / Subject	Page
	If a marriage is performed on the condition that no maintenance will be mandatory, it will still be mandatory in its situation of obligation.		Meaning of the Hadith "There is no marriage except with a guardian and two just witnesses".	
305	Relinquishment before obligation is futile.	298	Prohibition is not contrary to validity.	
305	After marriage and the bride's departure (rukhsati), the father-in-law now says, "Write on a stamp paper that I will never take the girl to my hometown, otherwise I will not allow her departure now." Can a father-in-law do this?	299	Is there a difference between Khitba (engagement) and Nikah (marriage)? What is the meaning of the Hadith "Proposing over the proposal of one's brother is forbidden"? Is it correct to use this to argue that engagement constitutes marriage?	
305	Prohibition in the Great Quran against harming women and causing them hardship.	299	And is the statement from 'Binaya' "Because Khitba is marriage" correct?	
305	Saying of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) that in Islam there is neither harming nor being harmed.	300	What is the meaning of the statement in 'Ayni' "And from him regarding the man who drinks alcohol..." up to his saying "Al-Saruoji said: these two are false statements"? What does "huma" (these two) refer to?	

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

पृष्ठ	प्रश्न / विषय	क्रम संख्या	प्रश्न / विषय	पृष्ठ
300	निकाह ख्वानी के क़ाज़ी "अस्माउ समैतुमुहा अंतुम व आबाउकुम मा अन्ज़लल्लाहु बिहा मिन सुल्तान" के कबीले से हैं।	297	एक औरत ने एक शख्स से कहा कि इद्दत के ज़माने में मुझसे निकाह कर लो वरना मैं हराम कराऊंगी। उसने बहुत समझाया, न मानी मजबूरन निकाह कर लिया, क्या हुक्म है?	
301	चाचा ने नाबालिग का निकाह किया, अब वह बालिग होने के बाद कहती है कि तेरे चाल-चलन खराब हैं मैं निकाह तोड़ दूंगी, क्या हुक्म है?	297	खुदा ने मर्दों को दो-दो, तीन-तीन, चार-चार औरतें हलाल फ़रमाईं, औरत के लिए यही हुक्म क्यों नहीं रहा?	
301	कुछ लोग यूँ कहते हैं कि महर के बदले इतने रुपये, इतने दीनार जो मौजूदा सिक्का है, सिवाय रोटी-कपड़े (नान-नफ़का) के और कुछ नहीं, या उनके अलावा और कुछ... कौन सी इबारत इस्तेमाल की जाए, और सिवाय नान-नफ़का कहने से शौहर के ज़िम्मे नान-नफ़का हुआ या नहीं, इसी तरह 'अलावा' कहने और 'मअ' (साथ) कहने से नान-नफ़का महर में शामिल होगा या नहीं।	297	एक काफ़िरा औरत ने इस्लाम लाने के बाद निकाह किया, वह उस निकाह से गर्भवती भी है। निकाह हुआ या नहीं? ज़ैद कहता है कि यह निकाह नहीं हुआ और गवाहों व हाज़िरीन-ए-मजलिस का निकाह भी टूट गया। वह 'मजमुआ खानी' की इबारत पेश करता है।	
302	अगर इस शर्त पर निकाह किया जाए कि महर कुछ न होगा, तब भी महर शरीअत के अनुसार लाज़िम होगा और 'महर-ए-मिस्ल' देना पड़ेगा।	298	बिना किसी शरई उज़्र (बहाने) के जुमा और जमाअत छोड़ने की आदत फिस्क (गुनाह) का कारण है, जिससे इंसान की गवाही रद्द हो	

पृष्ठ	प्रश्न / विषय	क्रम संख्या	प्रश्न / विषय	पृष्ठ
			जाती है और वह इंसाफ के काबिल नहीं रहता।	
305	अगर इस शर्त पर निकाह किया जाए कि नान-नफ़का कुछ वाजिब न होगा, तब भी वह अपनी वाजिब होने की सूरत में ज़रूर वाजिब होगा।	298	हदीस "ला निकाह इल्ला बिवली व शाहिदै अदल" (वली और दो आदिल गवाहों के बिना निकाह नहीं होता) का मतलब।	
305	वाजिब होने से पहले छोड़ देना (इस्कात) बेकार है।	298	मनाही सेहत (वैधता) के विरोधाभासी नहीं है।	
305	निकाह और रुख़्सती के बाद अब ससुर कहता है कि एक स्टाम्प लिख कर दो कि मैं लड़की को कभी अपने वतन नहीं ले जाऊंगा वरना मैं अब रुख़्सत नहीं करूँगा, क्या ससुर ऐसा कर सकता है?	299	खुतबा (मंगनी) और निकाह में फर्क है या नहीं और हदीस "तहरुमुल खुतबा अला खुतबते अखीह" (अपने भाई के पैगाम पर पैगाम देना हराम है) का क्या मतलब है और इससे मंगनी के निकाह होने पर दलील देना सही है या नहीं?	
305	औरतों को नुकसान पहुँचाने और उन पर तंगी करने की कुरआन मजीद में मनाही।	299	और क्या 'बिनाया' की इबारत "क्योंकि खुतबा निकाह ही है" सही है?	
305	रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद है कि इस्लाम में न खुद नुकसान उठाना है और न दूसरे को नुकसान पहुँचाना है।	300	'ऐनी' की इबारत "और उससे उस आदमी के बारे में जो शराब पीता है..." उनके इस कहने तक "सरूजी ने कहा: ये दोनों बातिल कौल हैं" का मतलब क्या है और "हुमा" (ये दोनों) से क्या मुराद है?	

صفحہ	مضمون	نمبر شمار	مضمون صفحہ
			ایک عورت نے ایک شخص سے کہا کہ زمانہ عدت میں مجھ سے نکاح کرلو ورنہ میں حرام کراؤں گی اس نے بہت سمجھایا نہ مانی مجبورا نکاح کرلیا، کیا حکم ہے۔
۳۰۰	نکاح خوانی کے قاضی "اسماء سمیتموھا انتم و اباؤکم ما انزل اللہ بھا من سلطن" کے قبیلہ سے ہیں۔	۲۹۷	
۳۰۱	چچانے نابالغہ کا نکاح کیا اب وہ بعدِ بلوغ کہتی ہے کہ تیرے چال چلن خراب ہیں میں نکاح توڑ دوں گی، کیا حکم ہے۔	۲۹۷	خدا نے مردوں کو دو دو تین تین چار چار عورتیں حلال فرمائیں، عورت کے لئے یہی حکم کیوں نہیں رہا۔
۳۰۱	بعض تو یوں کہتے ہیں کہ بعوض مہر اتنے روپے اتنے دینار سکہ رائج الوقت سوائے نان نفقہ کے اور کوئی بجائے سوا علاوہ اور کوئی بجائے ان کے مع اور کوئی پیچ نکاح تمہارے کے آئی اور	۲۹۷	کافرہ سے بعد اسلام نکاح کیا وہ نکاح سے حاملہ بھی ہے، نکاح ہوا ہے یا نہیں، زید کہتا ہے یہ نکاح نہ ہوا

صفحہ	مضمون	نمبر شمار	مضمون صفحہ
	دی میں نے کہتے ہیں اور بعض صرف آئی اور بعض صرف دی کہتے ہیں، کون سی عبارت استعمال ہو، اور سوا نان نفقہ کہنے سے شوہر کے ذمہ نان نفقہ ہوا یا نہیں، یو نہی علاوہ کہنے میں اور مع کہنے سے نان نفقہ مہر میں شامل ہوگا یا نہیں۔		اور شاہدین و حاضرین محفل کا نکاح بھی ٹوٹ گیا، مجموعہ خانی کی عبارت پیش کرتا ہے۔
۳۰۲	اگر اس شرط پر نکاح کیا جائے کہ مہر کچھ نہ ہوگا جب بھی مہر شرعاً لازم ہوگا مہرِ مثل دینا آئے گا۔	۲۹۸	بلا عذر شرعی ترکِ جمعہ و جماعت کی عادت موجبِ فسق، مسقط عدالت اور وجہ ردِ شہادت ہے۔
۳۰۵	اگر اس شرط پر نکاح کیا جائے کہ نان و نفقہ کچھ واجب نہ ہوگا جب بھی اپنی صورت وجوب میں ضرور واجب ہوگا۔	۲۹۸	مطلبِ حدیث "لا نکاح الا بولی وشاہدی عدل"۔
۳۰۵	قبل وجوب اسقاط مہمل ہے۔	۲۹۸	نہی منافی صحت نہیں۔
۳۰۵	نکاح و رخصت کے بعد اب خسر کہتا ہے کہ ایک اسٹامپ لکھو کہ میں لڑکی کو کبھی اپنے وطن نہ لیجاؤں گا ورنہ میں اب رخصت نہ کروں گا، کیا خسر ایسا کر سکتا ہے۔	۲۹۹	خطبہ (منگنی) و نکاح میں فرق ہے یا نہیں اور حدیث "تحرم الخطبة على خطبة اخیہ" کا کیا مطلب ہے اور

صفحہ	مضمون	نمبر شمار	مضمون	صفحہ
			اس سے منگنی کے نکاح ہونے پر استدلال صحیح ہے یا نہیں اور کیا بنایہ کی عبارت "لان الخطبة التزوج" صحیح ہے۔ عینی کی عبارت "وعنه في الرجل يشرب الشراب الى قولہ قال السروجی وھما قولان باطلان" کا مطلب کیا ہے "ھما" کا مرجع کیا ہے۔	
۳۰۵	عورتوں کو ضرر پہنچانے اور ان پر تنگی کرنے کی قرآن عظیم سے ممانعت۔	۲۹۹		
۳۰۵	رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ اسلام میں نہ ضرر ہے نہ ضرر رسانی۔	۳۰۰		

Fatawa Rizwia Volume 11

- Who is Saruji, how is he? (306)
- It is prohibited to propose to one's Muslim brother's fiancée. (308)
- Negation of absolute prohibition does not prove absolute permissibility. (309)
- The contradiction of a universal negative cannot be a universal affirmative. (309)
- Zaid appointed Bakr as an agent for the marriage of his adult daughter and wrote to him to marry her to Amr for a dower of twenty-one thousand rupees. He did so and informed Zaid. The adult daughter was aware of all this. Zaid informed her that the marriage had taken place, and she accepted it. What is the ruling? (309)
- Subsequent permission is like prior representation (agency). (309)

Chapter of Prohibitions (Bab al-Muharramat) - Hindah breastfed her grandson Zaid. Can Zaid marry Hindah's granddaughter? (311) - Ruling on marrying a step-mother-in-law. (312) - Step-mother is not included in the word 'mothers'. (312) - After "Forbidden to you are your mothers", "And do not marry those whom your fathers married" was said for this reason. (312) - Step-mother's mother and her daughter/sister are permissible. (312) - The husband hasn't given a divorce but wants to divorce after taking some wealth. Ruling on marriage with such a woman without divorce and ruling on giving a divorce after taking something. (323) - A woman does not leave the marriage bond just by leaving the house without her husband's permission. (313)

- The marriage knot is in the man's hand. (313)
- She does not fall out of marriage even due to immorality and wickedness. (313)
- Ruling on marrying a real sister-in-law or a sister-in-law through relationship during the wife's lifetime. (314)
- Is marriage with a nephew's wife or a niece's wife permissible or not? (315)
- He raised his sister-in-law's daughter for marriage with his son. His wife and son died. Is the marriage of the caregiver with that girl permissible? (315)
- Merely with the intention that "I will marry this girl to my son," that girl does not become forbidden for the father. (315)
- A step-daughter becomes forbidden to the husband only when he has had intercourse with the mother. (316)
- Ruling on marrying off one's married daughter to others after taking money without obtaining a divorce. (316)

- It is permissible for a father to marry a woman's daughter and for the son to marry that woman. (316)
- A father's mother-in-law is permissible as long as she is not his own grandmother. (317)
- A daughter-in-law's daughter is permissible as long as she is not his own granddaughter. (317)
- A woman is not divorced due to marriage or adultery with her sister-in-law, nor does intercourse with the wife become forbidden because of adultery or just marriage with the sister-in-law. (317)
- If intercourse occurred with a sister-in-law after marriage or by mistake, then intimacy with the wife is not allowed until the waiting period (Iddah) has passed. It will be permissible after Iddah. (317)
- A woman states that her son-in-law, with corrupt intentions, came to her bed and started pressing her feet forcefully, stroked her abdomen, and tried to untie her waistband, having already untied his own. She separated from him with great difficulty. The son-in-law denies it. Does the daughter's marriage remain intact or not? (318)

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

- सरूजी कौन हैं, कैसे हैं। ३०६
- अपने मुसलमान भाई की मंगेतर को निकाह का पैगाम देना मना है। ३०८
- पूर्ण निषेध का नकार पूर्ण अनुमति का प्रमाण नहीं होता। ३०९
- सार्वभौमिक नकारात्मक (सलिबा कुलिया) का विलोम सार्वभौमिक सकारात्मक (मोजिबा कुलिया) नहीं हो सकता। ३०९
- ज़ैद ने अपनी बालिग बेटी के निकाह के लिए बक्र को वकील बनाया और लिखा कि इक्कीस हज़ार रुपये मेहर पर अम्र से उसका निकाह कर दे। उसने कर दिया और ज़ैद को सूचित किया। बालिग बेटी को इस सब की जानकारी थी। ज़ैद ने उसे निकाह हो जाने की सूचना दी तो उसने स्वीकार कर लिया, क्या हुक्म है? ३०९
- बाद में दी गई अनुमति पहले दिए गए प्रतिनिधित्व (एजेंसी) की तरह ही है। ३०९

वर्जित लोगों का अध्याय (बाब अल-मुहर्रमात) - हिन्दा ने अपने पोते ज़ैद को दूध पिलाया। क्या ज़ैद का निकाह हिन्दा की नवासी (नाती) से हो सकता है? ३११ - सौतेली सास से निकाह का हुक्म। ३१२ - सौतेली माँ 'माताओं' शब्द में शामिल नहीं है। ३१२ - "तुम पर तुम्हारी माताएँ हराम की गईं" के बाद "और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे पिताओं ने निकाह किया" इसी लिए कहा गया। ३१२ - सौतेली माँ की माँ और उसकी बेटी बहन जायज़ हैं। ३१२ - पति ने तलाक नहीं दिया है, कुछ धन लेकर तलाक देना चाहता है। ऐसी औरत से बिना तलाक के निकाह का हुक्म और कुछ लेकर तलाक देने का हुक्म। ३२३ - औरत पति की अनुमति के बिना घर से निकलने पर निकाह से बाहर नहीं होती। ३१३

- निकाह की गिरह मर्द के हाथ में है। ३१३
- अनैतिकता और पाप (फ़िस्क ओ फुजूर) के कारण भी निकाह खत्म नहीं होता। ३१३
- पत्नी के जीवनकाल में सगी साली या रिश्ते की साली से निकाह का हुक्म। ३१४
- भतीज बहू या भांज बहू से निकाह जायज़ है या नहीं। ३१५
- साली की लड़की को अपने लड़के के साथ निकाह के लिए पाला। उसकी बीवी और लड़का मर गए। क्या पालने वाले का उस लड़की से निकाह जायज़ है? ३१५

- केवल इस नियत से कि "मैं इस लड़की का निकाह अपने लड़के से करूँगा," वह लड़की पिता पर हराम नहीं हो जाती। ३१५
- सौतेली बेटी पति पर तब हराम होती है जब उसने उसकी माँ के साथ सहवास किया हो। ३१६
- बिना तलाक लिए पैसे लेकर अपनी विवाहित बेटी का दूसरों से निकाह कराने का हुक्म। ३१६
- पिता का औरत की बेटी से और बेटे का उस औरत से निकाह जायज़ है। ३१६
- पिता की सास जायज़ है बशर्ते वह उसकी अपनी नानी न हो। ३१७
- बहू की बेटी जायज़ है बशर्ते वह उसकी अपनी पोती न हो। ३१७
- साली से निकाह या व्यभिचार (ज़िना) से औरत तलाकशुदा नहीं होती, और न ही साली से ज़िना या केवल निकाह की वजह से पत्नी से सहवास वर्जित होता है। ३१७
- अगर निकाह के बाद या धोखे में साली से संभोग हुआ, तो जब तक इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) न बीत जाए, पत्नी के साथ निकटता जायज़ नहीं है। इद्दत के बाद जायज़ होगी। ३१७
- एक महिला का बयान है कि उसके दामाद ने दुर्भावनापूर्ण इरादे से उसके बिस्तर पर आकर ज़बरदस्ती पैर दबाना शुरू कर दिया, पेट पर हाथ फेरा, नाड़ा खोलना चाहा, अपना पहले ही खोल चुका था। बड़ी मुश्किल से उसने उसे अलग किया। दामाद इनकार करता है। क्या बेटी का निकाह बना रहा या नहीं? ३१८

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

- سروجی کون ہیں، کیسے ہیں۔ ۳۰۶
- اپنے مسلمان بھائی کی منگیتر کو پیغام دینا ممنوع ہے۔ ۳۰۸
- تحریم مطلق کی نفی سے حل مطلق کا اثبات نہیں ہوتا۔ ۳۰۹
- سالبہ کلیہ کی نقیض موجبہ کلیہ نہیں ہو سکتی۔ ۳۰۹
- زید نے اپنی بالغہ لڑکی کے نکاح کا وکیل بکر کو کیا اور لکھ بھیجا کہ اکیس ہزار روپے مہر پر عمرو سے اس کا نکاح کر دو اس نے کر دیا اور زید کو اطلاع دے دی بالغہ کو اس سب کی اطلاع تھی زید نے اسے نکاح ہو جانے کی خبر دی تو اس نے قبول کر لیا، کیا حکم ہے۔ ۳۰۹
- اجازت لاحقہ مثل وکالت سابقہ کے ہے۔ ۳۰۹

باب المحرمات - ہندہ نے اپنے ابن الابن زید کو دودھ پلایا ہندہ کی نواسی سے زید کا نکاح ہو سکتا ہے۔ ۳۱۱ - سوتیلی خوشدامن سے نکاح کا حکم۔ ۳۱۲ - سوتیلی ماں لفظ امہات میں داخل نہیں۔ ۳۱۲ - "حرمت علیکم أمھتکم" کے بعد "ولا تنکحوا ما نکح أباؤکم" اسی لئے فرمایا۔ ۳۱۲ - سوتیلی ماں کی ماں اور اس کی بیٹی بہن حلال ہیں۔ ۳۱۲ - شوہر نے طلاق نہیں دی ہے کچھ مال لے کر طلاق دینا چاہتا ہے ایسی عورت سے بے طلاق نکاح کا حکم اور کچھ لے کر طلاق دینے کا حکم۔ ۳۲۳ - عورت بے اذنِ شوہر گھر سے نکلے اس سے نکاح سے نہیں نکلتی۔ ۳۱۳

- نکاح کی گرہ مرد کے ہاتھ ہے۔ ۳۱۳
- فسق وفجور کے سبب بھی نکاح سے باہر نہیں ہوتی۔ ۳۱۳
- زوجہ کی زندگی میں حقیقی سالی یا رشتہ کی سالی سے نکاح کا حکم۔ ۳۱۴

- بھتیج بہو یا بھانج بہو سے نکاح جائز ہے یا نہیں۔ ۳۱۵
- سالی کی لڑکی کو اپنے لڑکے کے ساتھ نکاح کیلئے پرورش کیا اپنی بی بی اور لڑکا مر گیا اس لڑکی سے پرورش کنندہ کا نکاح جائز ہے۔ ۳۱۵
- فقط اس نیت سے کہ اس لڑکی سے اپنے لڑکے کا نکاح کروں گا وہ لڑکی باپ پر حرام نہیں ہوتی۔ ۳۱۵
- منکوحہ کی بیٹی اس وقت شوہر پر حرام ہوتی ہے جب منکوحہ سے ہم بستر بھی ہوا ہو۔ ۳۱۶
- بے طلاق ہوئے روپیہ لے کر اپنی منکوحہ دختر کے دوسروں سے نکاح کا حکم۔ ۳۱۶
- باپ کا عورت کی بیٹی اور بیٹے کا اس عورت سے نکاح جائز ہے۔ ۳۱۶
- باپ کی ساس حلال ہے جبکہ اپنی نانی نہ ہو۔ ۳۱۷
- بہو کی بیٹی حلال ہے جبکہ اپنی پوتی نہ ہو۔ ۳۱۷
- سالی سے نکاح یا زنا سے عورت مطلقہ نہیں ہوتی نہ سالی سے زنا یا فقط نکاح کے سبب عورت سے جماع حرام۔ ۳۱۷
- سالی سے بعد نکاح یا دھوکے میں وطی کی تو جب تک عدت نہ گزرے زوجہ سے قربت جائز نہیں بعد عدت جائز ہو گی۔ ۳۱۷
- عورت کا بیان ہے کہ اس کے داماد نے بارادہ فاسدہ میری چارپائی پر آ کر زبردستی پاؤں دابنا شروع کر دیئے اور شکم پر ہاتھ پھیرا، کمر بند کھولنا چاہا اپنا پہلے کھول لیا تھا، نہایت دشواری سے اسے علیحدہ کیا، داماد منکر ہے، لڑکی کا نکاح رہا یا نہیں۔ ۳۱۸

Fatwa-e-Razviya Volume 11

319 | Touching any part of the wedded wife's mother with lust does not invalidate the marriage, but the wife becomes permanently prohibited (haram) and it is obligatory to leave her. | 325 | Is a female disciple (muridah) prohibited or lawful for the spiritual guide (pir), and were the purified wives of the Prophet (SAW) his disciples or not? 319 | The meaning of touching in a state of lust. | 325 | By consensus of scholars, Umm al-Mu'minin Khadija al-Kubra was the first to be honored with spiritual initiation (iradat). 320 | Touching will be considered valid if it is on a bare body or a thin barrier, otherwise not, even if there is immense lust. | 326 | The esteemed Shaykhayn Abu Bakr and Umar (RA) were the most excellent and complete disciples of the Messenger of Allah (SAW). It is said: "There is no king like Mustafa (SAW), no master (pir) like him, and no disciple (murid) like Siddiq." 320 | For prohibition after touching or looking with lust, it is also a condition that ejaculation does not occur. | 327 | Teaching religious knowledge to one's wife from the Quran and Hadith and guiding her to act upon it is obligatory and a work of great reward. 323 | The testimony of a single woman alone is not admissible; the marriage is definitely established. | 328 | Is the marriage of a Sunni man with the daughter of a Rafidi (Shia) valid or not, and is the offspring entitled to the father's inheritance or not? 323 | If the pregnancy is legitimate, marriage cannot be performed with someone else before delivery; marriage is valid with the husband from whom this pregnancy originated, provided there was no irrevocable divorce (Talaq-e-Mughallaza). | 328 | Some blasphemous beliefs of the Rafidis. 324 | If the pregnancy is from adultery, she can marry the adulterer or someone else as she wishes; the difference is that the adulterer can have intimacy without waiting for delivery, while someone else will be prohibited from intimacy until delivery and shall not touch her. | 329 | Can an illegitimate woman marry a Sunni man or not, and will there be any flaw in her biological children or not? 324 | Zaid and Hindah had an illicit relationship. Hindah's daughter Salma was married off to Zaid by her uncle, presenting her as his own daughter, but the consummation hasn't happened. Now it's revealed Salma is Hindah's daughter. What is the ruling on this marriage, and can Zaid marry Hindah afterwards or not? | 329 | A man impregnated a woman, and after knowing about the pregnancy, the woman wants to keep it secret. Is the marriage contract (nikah) during pregnancy valid or not? | | 330 | Is it permissible or not to unite two sisters in marriage who share the same mother but have different fathers?

फ़तवा-ए-रज़विया खंड 11

319 | विवाहित पत्नी की माँ के किसी भी हिस्से को कामुकता (शहवत) के साथ छूने से निकाह समाप्त नहीं होता, लेकिन पत्नी हमेशा के लिए हराम हो जाती है और उसे छोड़ देना अनिवार्य (वाजिब) है। | 325 | मुरीदा (शिष्या) पीर के लिए हराम है या हलाल, और अज़वाज-ए-मुतहहरात (पैगंबर साहब की पत्नियाँ) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुरीद थीं या नहीं? 319 | कामुकता की स्थिति में छूने का अर्थ। | 325 | विद्वानों की सहमति से सबसे पहले उम्मुल मोमिनीन खदीजा अल-कुबरा इरादत (दीक्षा) के सम्मान से सम्मानित हुईं। 320 | नग्न शरीर या किसी पतली रुकावट पर छूना मान्य होगा, अन्यथा नहीं, भले ही हज़ारों कामुकता हो। | 326 | हज़रात शेख़ैन अबू बक्र और उमर (रज़िअल्लाहु अन्हुमा) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सबसे श्रेष्ठ और पूर्ण मुरीद थे। फरमाते हैं: "मुस्तफा (सल्ल.) जैसा कोई राजा नहीं, कोई पीर नहीं, और सिद्दीक़ जैसा कोई मुरीद नहीं।" 320 | कामुकता के साथ छूने या देखने के बाद हुरमत (निषेध) के लिए वीर्यपात (इंजाल) न होना भी एक शर्त है। | 327 | कुरान और हदीस से पत्नी को दीन का ज्ञान सिखाना और उस पर अमल करने का मार्गदर्शन करना अनिवार्य है और बड़े पुण्य का काम है। 323 | अकेले एक महिला का बयान सुनने योग्य नहीं है, निकाह निश्चित रूप से स्थापित है। | 328 | सुन्नी पुरुष का राफ़ज़ी (शिया) की बेटी से निकाह सही है या नहीं और क्या संतान पिता के उत्तराधिकार की पात्र है या नहीं? 323 | यदि गर्भ वैध है, तो प्रसव से पहले किसी अन्य से निकाह नहीं हो सकता; पति जिससे यह गर्भ है, उससे निकाह जायज़ है बशर्ते कि तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (अटल तलाक़) न हुआ हो। | 328 | राफ़ज़ियों के कुछ कुफ़्र (ईशनिंदा) वाले अकीदे (विश्वास)। 324 | यदि गर्भ व्यभिचार (ज़िना) से है, तो वह व्यभिचारी या किसी अन्य जिससे चाहे निकाह कर सकती है, अंतर इतना है कि व्यभिचारी प्रसव के बिना भी शारीरिक संबंध बना सकेगा और गैर-व्यभिचारी प्रसव तक निषिद्ध रहेगा, हाथ नहीं लगाएगा। | 329 | हरामी (अवैध संतान) महिला का निकाह सुन्नी पुरुष से होगा या नहीं और क्या उसकी जैविक संतान में कोई कमी होगी या नहीं? 324 | ज़ैद और हिंदा के बीच अवैध संबंध थे। हिंदा की बेटी सलमा का निकाह उसके चाचा ने अपनी बेटी बताकर ज़ैद से कर दिया, लेकिन अभी विदाई नहीं हुई है। अब पता चला कि सलमा हिंदा की बेटी है। अब इस निकाह का क्या हुक्म है और क्या इसके बाद ज़ैद हिंदा से निकाह कर सकता है या नहीं? | 329 | एक व्यक्ति से एक महिला गर्भवती हुई और गर्भावस्था का पता चलने के बाद वह महिला चाहती है कि राज फाश न हो। क्या

गर्भ के दौरान निकाह (अक़्द) सही होगा या नहीं? | | 330 | ऐसी दो बहनों को निकाह में एक साथ रखना जिनकी माँ एक हो लेकिन पिता अलग हों, जायज़ है या नहीं?

पृष्ठ 31 का 739

فتاویٰ رضویہ جلد یاردہم

۳۱۹ | منکوحہ کی ماں کے کسی حصہ کو بشہوت چھونے سے نکاح زائل نہیں ہوتا مگر منکوحہ ہمیشہ کو حرام ہو جاتی ہے اور اسے چھوڑ دینا واجب۔ | ۳۲۵ | مریدہ پیر پر حرام ہے یا حلال، اور ازواج مطہرات حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی مریدات تھیں یا نہیں۔ ۳۱۹ | مس بحالتِ شہوت کا مطلب۔ | ۳۲۵ | باتفاق علماء سب سے پہلے ام المؤمنین خدیجہ الکبریٰ شرفِ ارادات سے مشرف ہوئیں۔ ۳۲۰ | مس برہنہ جسم یا کسی باریک حائل پر ہوگا تو معتبر ہے ورنہ نہیں اگرچہ ہزار شہوت ہو۔ | ۳۲۶ | حضرات شیخین ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سب سے افضل و اکمل مرید تھے۔ فرماتے ہیں: تاجداں ست نہ ہچو مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پیرے بود نہ ہچو صدیق مریدے۔ ۳۲۰ | مس و نظر بشہوت کے بعد حرمت کے لیے انزال نہ ہونا بھی شرط ہے۔ | ۳۲۷ | قرآن و حدیث سے بی بی کو علمِ دین سکھانا اور اس پر عمل کی ہدایت کرنا لازم اور بڑے اجر کا کام ہے۔ ۳۲۳ | تنہا ایک عورت کا بیان قابلِ سماعت نہیں نکاح یقیناً قائم ہے۔ | ۳۲۸ | نکاح سُنی با دختر رافضی صحیح ہے یا نہیں اور اولاد مستحق ترکہ پدری ہے یا نہیں۔ ۳۲۳ | حمل حلال کا ہو تو قبل از وضعِ غیر سے نکاح نہیں ہو سکتا، شوہر سے جس کا یہ حمل ہے نکاح جائز ہے بشرطیکہ طلاق مغلظہ نہ ہو۔ | ۳۲۸ | روافض کے بعض عقائد کفریہ۔ ۳۲۴ | زنا کا حمل ہو تو زانی و غیر زانی جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے، فرق اتنا ہے کہ زانی بے وضعِ حمل قربت کر سکے گا اور غیر زانی تا وضع ممنوع رہے گا، ہاتھ نہ لگائے گا۔ | ۳۲۹ | حرامی عورت کا نکاح سنی مرد سے ہوگا یا نہیں اور اس کی بطنی اولاد میں کچھ نقصان واقع ہوگا یا نہیں۔ ۳۲۴ | زید و ہندہ میں ناجائز تعلق تھا سلمیٰ بنت ہندہ کو اس کے چچا نے اپنی بیٹی بتا کر زید سے نکاح کر دیا مگر رخصت نہیں ہوئی ہے اب

معلوم ہوا کہ سلمیٰ ہندہ کی بیٹی ہے، اب اس نکاح کا کیا حکم ہے اور اس کے بعد زید ہندہ سے نکاح کر سکتا ہے یا نہیں۔ | ۳۲۹ | ایک شخص کا حمل ایک عورت کو رہا اور بعد معلوم ہونے حمل کے وہ عورت چاہتی ہے کہ راز فاش نہ ہو مابین حمل عقد درست ہو گا یا نہیں۔ | | ۳۳۰ | ایسی دو بہنوں کو نکاح میں جمع کرنا جن کی ماں ایک باپ دو ہوں جائز ہے یا نہیں۔

Fatawa Razawiya, Volume 11

Page 330: If a man marries two sisters one after the other, the second marriage will be invalid (fasid). Separation is mandatory. If separation occurs after consummation, the lesser amount between the specified dower (Mahr-e-Musamma) and the customary dower (Mahr-e-Mithl) will be due. The woman must observe the waiting period (iddah), offspring will be of legitimate lineage, and intercourse with the first sister remains prohibited until the second sister's iddah is completed. Page 334: For the proof of adultery (zina), the testimony of women or the testimony of only two men is absolutely not admissible. Page 331: If a woman's husband is missing and both husband and wife are Hanafi, how long should the woman wait before contracting another marriage? Page 334: If two men testify to someone's act of adultery and two testify to their confession of it, the legal punishment (Hadd) will not be applied. If three men testify to the act of adultery and one to the confession, then the punishment for false accusation (Hadd-e-Qadhf) will be applied to the three witnesses. Page 332: Marriage with a paternal or maternal aunt (uncle's wife) is permissible. Page 335: A confession made outside a court of law (Dar al-Qadha) does not establish a positive proof of adultery. Page 332: Ruling on marriage with the daughter of a step-grandfather. Page 335: A confession of adultery does not remain established once it is retracted. Page 333: Zaid confessed to committing adultery with his sister-in-law and then denied it. Testimony regarding his confession was given before a judge. Does this testimony of confession establish the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharat), and will Hindah, Zaid's wife, become forbidden for him or not? Page 336: To establish the prohibition of affinity (musaharat), proof of actual adultery is not fundamentally required; a mere confession of adultery is sufficient. Page 334: If the confession was: "I had committed adultery with her mother before marrying her," what is the ruling? Page 336: Even if a confession is made once in jest or joke that he committed adultery with his mother-in-law, the prohibition of affinity is established. Subsequent denials, even a million times over, will not be heard. Page 334: Although testimony regarding a confession may not be sufficient to establish the act of adultery itself, it is positive proof of the confession having been made. Page 336: If someone is asked, "What did you do with your wife's mother?" and he says, "I had intercourse with her," then the prohibition of affinity is established even if he later claims he was lying. Page 334: If two men or two women and one person who is an object of the accusation (maqdhuf) testify to a confession of adultery, the punishment for false accusation (Hadd-e-Qadhf) should not be applied to the accuser

and the witnesses. Page 336: A marriage was contracted with a woman on the condition of virginity, but she was found to be a non-virgin (thayyib). The woman claims, "Your father took my virginity." If the husband confirms her claim, the prohibition of affinity will be established. Page 334: What is established through clear evidence (bayyinah) is established as strongly as if it were witnessed through direct observation (mu'ayinah). Page 337: Committing adultery with a woman's mother before marrying the woman, and vice-versa, are both identical in establishing perpetual prohibition (Hurmat-e-Abadiya), although in one case the prohibition precedes the marriage and in the other, it occurs after.

फतावा रज़विया, जिल्द 11

पृष्ठ 330: यदि कोई व्यक्ति दो बहनों से एक के बाद एक निकाह करता है, तो बाद वाला निकाह फासिद (अवैध) होगा। उनसे अलग होना अनिवार्य है। यदि सहवास के बाद अलगाव होता है, तो महर-ए-मुसम्मा (तयशुदा महर) और महर-ए-मिस्ल (प्रचलित महर) में से जो कम होगा, वह देना होगा। औरत पर इद्दत अनिवार्य है, संतान वैध मानी जाएगी, और दूसरी की इद्दत पूरी होने तक पहली से सहवास हराम होगा। पृष्ठ 334: व्यभिचार (ज़िना) सिद्ध करने में महिलाओं की गवाही या केवल दो पुरुषों की गवाही किसी भी हाल में मान्य नहीं है। पृष्ठ 331: यदि किसी महिला का पति लापता हो और पति-पत्नी दोनों हनफी हों, तो महिला दूसरे निकाह के लिए कितने समय तक प्रतीक्षा करे? पृष्ठ 334: यदि दो पुरुष किसी के व्यभिचार पर और दो उसके व्यभिचार के स्वीकारोक्ति (इकरार) पर गवाही दें, तो कानूनी सजा (हद) नहीं दी जाएगी। यदि तीन पुरुषों ने व्यभिचार पर और एक ने इकरार-ए-ज़िना पर गवाही दी, तो उन तीन गवाहों पर झूठे आरोप की सजा (हद-ए-कज़फ़) लगेगी। पृष्ठ 332: चाची से निकाह करना जायज़ (वैध) है। पृष्ठ 335: न्यायालय (दारुल-क़ज़ा) के बाहर किया गया स्वीकारोक्ति व्यभिचार को सिद्ध नहीं करता। पृष्ठ 332: सौतेले नाना की बेटी से निकाह का नियम। पृष्ठ 335: व्यभिचार का स्वीकार करने के बाद उससे मुकर जाने पर व्यभिचार सिद्ध नहीं रहता। पृष्ठ 333: ज़ैद ने अपनी साली के साथ व्यभिचार का इकरार किया और फिर मुकर गया। काज़ी के सामने उसके इकरार पर गवाही दी गई। क्या इस गवाही से हुरमत-ए-मुसाहरत (ससुराली संबंधों के कारण निषेध) सिद्ध होगी, और क्या उसकी पत्नी हिंदा उस पर हराम हो जाएगी? पृष्ठ 336: मुसाहरत (निषेध) सिद्ध करने के लिए व्यभिचार के प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता नहीं है; केवल व्यभिचार की स्वीकारोक्ति ही पर्याप्त है। पृष्ठ 334: यदि इकरार यह था कि 'मैंने निकाह से पहले उसकी माँ के साथ व्यभिचार किया था', तो इसका क्या नियम है? पृष्ठ 336: यदि कोई व्यक्ति मज़ाक में भी एक बार स्वीकार कर ले कि उसने अपनी सास के साथ व्यभिचार किया है, तो हुरमत-ए-मुसाहरत सिद्ध हो जाती है। इसके बाद वह लाखों बार भी इनकार करे, उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। पृष्ठ 334: यद्यपि स्वीकारोक्ति की गवाही व्यभिचार सिद्ध करने के लिए पर्याप्त न हो, फिर भी यह इस बात का सकारात्मक प्रमाण है कि स्वीकारोक्ति की गई थी। पृष्ठ 336: यदि किसी से पूछा जाए कि 'तुमने अपनी पत्नी की माँ के साथ क्या किया?' और वह कहे कि 'मैंने उसके साथ संभोग किया', तो हुरमत-ए-मुसाहरत सिद्ध हो जाएगी, भले ही वह बाद में कहे कि वह झूठ बोल रहा था। पृष्ठ 334: यदि दो पुरुष या दो महिलाएँ और एक वह व्यक्ति जिस पर व्यभिचार का आरोप है,

स्वीकारोक्ति पर गवाही दें, तो आरोप लगाने वाले और गवाहों पर झूठे आरोप की सजा (हद-ए-कज़फ़) नहीं लगानी चाहिए। पृष्ठ 336: कुंवारी होने की शर्त पर एक महिला से निकाह किया गया लेकिन वह कुंवारी नहीं निकली। महिला दावा करती है, 'तुम्हारे पिता ने मेरा कौमार्य भंग किया है।' यदि पति इसके दावे की पुष्टि कर दे, तो हुरमत सिद्ध हो जाएगी। पृष्ठ 334: स्पष्ट प्रमाण (बय्यिना) से जो सिद्ध होता है, वह उतना ही सशक्त है जितना कि प्रत्यक्ष दर्शन (मुआइना) से सिद्ध होना। पृष्ठ 337: निकाह से पहले पत्नी की माँ के साथ व्यभिचार करना और इसका विपरीत, दोनों ही स्थाई निषेध (हुरमत-ए-अबदिया) सिद्ध करने में समान हैं, चाहे निषेध निकाह से पहले हुआ हो या बाद में।

पृष्ठ 739 में से 32

فتاویٰ رضویہ، جلد یاز دہم

۳۳۰: دو بہنوں سے آگے پیچھے نکاح کیا پچھلی کا فاسد ہوگا، اس سے مفارقت واجب ہے اگر بعد دخول مفارقت کرے گا تو مہر مسمّٰی و مہر مثل میں سے جو کم ہو گا وہ لازم ہوگا، عورت پر عدت واجب، اولاد صحیح النسب، اور اسکی عدت گزرنے تک پہلی سے وطی حرام ہوگی۔ ۳۳۴: اثبات زنا میں شہادت زنان و شہادت دو مرد ہر گز مسموع نہیں۔ ۳۳۱: جس کا شوہر مفقود ہو اور مرد و عورت دونوں حنفی ہوں تو عورت دوسرے نکاح کے لئے کس مدت تک انتظار کرے۔ ۳۳۴: اگر دو مرد کسی کے زنا پر اور دو اس کے اقرارِ زنا پر شہادت دیں تو حد نہیں لگائی جائے گی اور اگر تین مردوں نے زنا اور ایک نے اقرارِ زنا پر شہادت دی تو تین شہود پر حد قذف لگے گی۔ ۳۳۲: چچی سے نکاح درست ہے۔ ۳۳۵: دارالقضاء سے باہر کا اقرارِ مثبتِ زنا نہیں ہوتا۔ ۳۳۲: سوتیلے نانا کی دختر سے نکاح کا حکم۔ ۳۳۵: اقرار بالزنا بعد رجوع مثبتِ زنا نہیں رہتا۔ ۳۳۳: زید نے اپنی سالی سے زنا کا اقرار کیا پھر انکار، اس کے اقرار زنا پر قاضی کے سامنے شہادت گزری، اس شہادت اقرارِ زنا سے حرمتِ مصاہرت ثابت ہو گی یا نہیں، اور ہندہ زوجہ زید اس پر حرام ہوگی یا کیا۔ ۳۳۶: اثبات مصاہرت کے لئے ثبوت زنا کی اصلاً حاجت نہیں مجرد اقرار زنا کافی ہے۔ ۳۳۴: اگر اقراریہ کیا ہو کہ میں نے اس کی ماں سے قبل اس کے نکاح کے زنا کیا تھا تو کیا حکم ہے۔ ۳۳۶: اگرچہ ہزل ومذاق میں ایک بار اقرار کیا کہ اس نے ساس سے زنا کیا حرمتِ مصاہرت ثابت ہو گئی پھر لاکھ انکار کرے مسموع نہ ہوگا۔ ۳۳۴: شہادتِ اقرار اگر چہ مثبتِ زنا ہونے کی صلاحیت نہ رکھے مگر مثبتِ اقرار ہے۔ ۳۳۶: اگر کسی سے کہا گیا کہ تو نے اپنی بیوی کی ماں سے کیا کیا، اس نے کہا میں نے اس سے جماع کیا، تو حرمتِ مصاہرت ثابت ہو گئی اگرچہ وہ کہے کہ میں نے جھوٹ کہا۔ ۳۳۴: اگر دو مرد یا دو عورتیں اور ایک مقذوف بالزنا کے

اقرارِ زنا پر شہادت دیں تو قاذف اور شہود پر حد قذف نہ لگائی جائے۔ ۳۳۶: عورت سے بشرطِ بکارت نکاح کیا اور اسے ثیب پایا۔ عورت کہتی ہے تیرے باپ نے بکارت کا ازالہ کیا ہے، اگر شوہر نے اس کی تصدیق کر دی تو حرمتِ ثابت ہو جائے گی۔ ۳۳۴: بینہ سے جو ثابت ہو وہ ایسا ہی ثابت ہوتا ہے جیسے معائنہ سے۔ ۳۳۷: زنا بما در زن پیش از نکاح زن اور اس کا عکس دونوں ثبوتِ حرمتِ ابدیہ میں یکساں ہیں اگرچہ ایک صورت میں حرمتِ سابقہ اور دوسری صورت میں طاریہ ہے۔

Fatawa Rizwia Volume 11

337: Zaid had a free woman in marriage, then he married a slave girl. How was this marriage, and if the slave girl's dowry is Zaid's responsibility, how much will it be, and will the slave girl and her children receive Zaid's inheritance or not? 340: A man is held by his own confession.

338: Marrying a free woman over a slave girl is permissible, but the reverse is impermissible. 340: After marriage, he confessed that before marriage he had committed adultery with the mother of the wedded woman, so the prohibition was established, but it will have no effect on the woman's right; if consummation has occurred, the full stipulated dowry will be obligatory, otherwise half.

338: By consensus, inheritance does not occur in invalid (fasid) and void (batil) marriages. 341: A proof is deficient if accepted from one side and rejected from the other.

338: In an invalid marriage, after intercourse, the lesser of the stipulated dowry and the customary dowry (mahr al-mithl) will be mandatory. 341: To the extent that a confession is harmful to the confessor, it is taken into account, and whatever is an accusation against another will be rejected.

338: Any child born six months after intercourse in an invalid marriage is, by consensus, of legitimate lineage and entitled to inheritance. 341: He married someone's slave girl, and before consummation, she kissed the husband's son. The husband says the kiss was with lust, and the owner denies it; then prohibition is established and giving half dowry is obligatory.

338: If a woman's cheek is kissed with a look of lust, all her children become permanently forbidden for him. 342: After the death of a real maternal aunt (who was a stepmother), her husband can enter into marriage with her niece (his stepdaughter).

339: If they unknowingly marry, it is obligatory for both parties to annul it; and if the husband does not agree to annul, the woman herself can annul. 342: Hind drank Zainab's milk; for Hind's son, Zainab's daughter is forbidden.

339: A kiss on the lips will, willy-nilly, be considered with a look of lust; even if he claims a hundred thousand times that he did not take it with lust, it will not be accepted. And according to Imam Muhammad bin al-Humam, the same applies to a

kiss on the cheek. 342: Someone, mistaking her for his wife, held his sister or mother-in-law's hand with lust; was there any disruption in the marriage or not, and in what case did the woman become forbidden for him?

339: A person committed adultery with a woman and her daughter; now, after repenting from adultery, is marriage with her permissible or not? 343: Zaid married his daughter to Bakr, then without investigation declaring Bakr impotent, married that girl to Khalid; what is the ruling on this marriage and the children?

340: Laila and Salma are foster sisters. Zaid married Laila. Is it permissible for Zaid's son, Amr, to marry Salma?

फ़तावा रज़विया जिल्द ११

३३७: ज़ैद के निकाह में आज़ाद औरत थी, फिर उसने दासी (कनीज़) से निकाह किया। यह निकाह कैसा हुआ, और यदि दासी का महर ज़ैद के ज़िम्मे है, तो कितना होगा, और क्या दासी और उसकी संतान ज़ैद की विरासत पाएँगे या नहीं? ३४०: मनुष्य अपने ही इक़रार (स्वीकृति) से पकड़ा जाता है।

३३८: दासी पर आज़ाद औरत का निकाह जायज़ है, लेकिन इसका उल्टा नाजायज़ है। ३४०: निकाह के बाद इक़रार किया कि निकाह से पहले उसने विवाहिता की माँ के साथ व्यभिचार किया था, तो हुरमत (प्रतिबंध) सिद्ध हो गई, लेकिन औरत के अधिकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा; यदि संभोग हो चुका है तो पूरा तयशुदा महर अनिवार्य होगा, अन्यथा आधा।

३३८: सर्वसम्मति (इज्मा) से फ़ासिद (दोषपूर्ण) और बातिल (शून्य) निकाह में उत्तराधिकार लागू नहीं होता। ३४१: वह दलील अपूर्ण (हुज्जत-ए-कासिरा) है जो एक पक्ष से स्वीकार्य और दूसरे पक्ष से अस्वीकार्य हो।

३३८: निकाह-ए-फ़ासिद में संभोग के बाद तयशुदा महर और महर-ए-मिसल (प्रचलित महर) में से जो कम हो, वह अनिवार्य होगा। ३४१: जहाँ तक स्वीकारोक्ति करने वाले के लिए इक़रार हानिकारक है, वह स्वीकार्य है, और जो दूसरे पर आरोप है, वह अस्वीकार कर दिया जाएगा।

३३८: निकाह-ए-फ़ासिद में संभोग के समय से छह महीने बाद जो संतान पैदा हुई, वह सर्वसम्मति से वैध (साबित-उल-नसब) और विरासत की पात्र है। ३४१: किसी की दासी से निकाह किया और संभोग से पहले उसने पति के पुत्र का चुंबन लिया। पति कहता है कि चुंबन कामवासना (शहवत) के साथ था और स्वामी (मौली) इनकार करता है; तो हुरमत सिद्ध हो गई और आधा महर देना अनिवार्य होगा।

३३८: यदि किसी औरत के गाल का कामुकता भरी नज़रों से चुंबन लिया गया, तो उसकी सारी संतान उस पर हमेशा के लिए हराम (वर्जित) हो गई। ३४२: सगी मौसी (जो सौतेली माँ थी) की मृत्यु के बाद, उसका पति उसकी भांजी (सौतेली बेटी) से निकाह कर सकता है।

३३९: यदि अज्ञानतावश निकाह कर लिया जाए, तो दोनों पक्षों पर अनिवार्य है कि उसे निरस्त कर दें; और यदि पति निरस्त करने पर सहमत न हो, तो औरत स्वयं निरस्त कर सकती है। ३४२: हिंद ने ज़ैनब का दूध पिया; हिंद के बेटे के लिए ज़ैनब की बेटी हराम है।

३३९: होठों का चुंबन चाहे-अनचाहे कामवासना की दृष्टि से ही माना जाएगा; भले ही वह लाखों बार दावा करे कि उसने कामवासना से नहीं लिया था, उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। और इमाम मुहम्मद बिन अल-हुमाम के अनुसार गाल पर चुंबन का भी यही हाल है। ३४२: किसी ने अपनी पत्नी के धोखे में अपनी बहन या सास का हाथ कामवासना के साथ पकड़ा; क्या निकाह में कोई बाधा आई या नहीं, और किस स्थिति में वह औरत उस पर हराम हो गई।

३३९: एक व्यक्ति ने एक स्त्री और उसकी पुत्री के साथ व्यभिचार किया; अब व्यभिचार से तौबा (पश्चाताप) करने के बाद उससे निकाह जायज़ है या नहीं? ३४३: ज़ैद ने बक्र के साथ अपनी बेटी का निकाह किया, फिर बिना जाँच-पड़ताल के बक्र को नपुंसक ठहराकर उस लड़की का निकाह खालिद से कर दिया; इस निकाह और संतान का क्या हुक्म है।

३४०: लैला और सलमा दूध-शरीक (रज़ाई) बहनें हैं। ज़ैद ने लैला से निकाह किया है। क्या ज़ैद के पुत्र अम्र का सलमा से निकाह जायज़ है?

पृष्ठ ३३ का ७३९

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

۳۳۷: زید کے نکاح میں حرہ تھی پھر کنیز سے نکاح کیا، یہ نکاح کیسا ہوا، اور کنیز کا مہر ذمہ زید ہوگا تو کس قدر اور کنیز اور اولاد کنیز ترکہ زید پائیں گے یا نہیں۔ ۳۴۰: مرد اپنے اقرار سے پکڑا جاتا ہے۔

۳۳۸: لونڈی پر حرہ کا نکاح جائز ہے مگر اس کا عکس ناجائز ہے۔ ۳۴۰: نکاح کے بعد اقرار کیا کہ قبل نکاح منکوحہ کی ماں سے زنا کیا تھا تو حرمت ثابت ہوگئی مگر عورت کے حق پر کوئی اثر نہ پڑے گا، اگر دخول کرچکا ہے تو پورا مہر مسمیٰ واجب ہوگا ورنہ نصف۔

۳۳۸: اجماعاً نکاح فاسد و باطل میں توارث جاری نہیں ہوتا۔ ۳۴۱: حجت قاصرہ من جتۃ مقبول اور من جتۃ مردود ہوتی ہے۔

۳۳۸: نکاح فاسد میں بعد وطی مہر مسمیٰ و مہر مثل میں سے اقل لازم ہوگا۔ ۳۴۱: جہاں تک مقر پر اقرار کا ضرر ہے ماخوذ اور جتنا دوسرے پر الزام ہے منبوذ ہوگا۔

۳۳۸: جو اولاد نکاح فاسد میں وقت وطی سے چھ مہینے بعد پیدا ہوئی بالاجماع ثابت النسب اور مستحق ارث ہے۔ ۳۴۱: کسی کی کنیز سے نکاح کیا اور قبل دخول اس نے پسر شوہر کا بوسہ لیا، شوہر کہتا ہے کہ بوسہ بشہوت تھا اور مولیٰ انکار کرتا ہے تو حرمت ثابت ہوگئی اور نصف مہر دینا واجب ہوگا۔

۳۳۸: اگر عورت کا بوسہ رخسار بنظر شہوت لیا عورت کی ساری اولاد اس پر حرام ابدی ہوگئی۔ ۳۴۲: حقیقی خالہ سوتیلی ماں کے مرنے کے بعد اس کا شوہر اس کی بھانجی سوتیلی لڑکی سے عقد کرسکتا ہے۔

۳۳۹: نادانستہ اگر نکاح کرلیں تو طرفین پر واجب کہ فسخ کردیں اور شوہر فسخ پر راضی نہ ہو تو عورت خود فسخ کرسکتی ہے۔ ۳۴۲: ہندہ نے زینب کا دودھ پیا ہندہ کے بیٹے پر زینب کی دختر حرام ہے۔

۳۳۹: بوسہ لب خواہی نخواہی بنظر شہوت ٹھہرے گا لا کھ ادعا کرے کہ میں نے بشہوت نہ لیا تھا قبول نہ ہوگا اور امام محمد بن الہمام کے نزدیک بوسہ رخسار میں ایسا ہی ہے۔ ۳۴۲: کسی نے زوجہ کے دھوکے میں ہمشیرہ یا خوشدامن کا بشہوت ہاتھ پکڑا نکاح میں کچھ خلل ہوا یا نہیں اور کس صورت میں عورت اس پر حرام ہوگئی۔

۳۳۹: ایک شخص نے ایک عورت اور اس کی بیٹی سے زنا کیا، اب زنا سے توبہ کرکے اس سے نکاح جائز ہے یا نہیں۔ ۳۴۳: زید نے بکر کے ساتھ اپنی دختر کا نکاح کیا پھر بے تحقیق بکر کو نامرد ٹھہرا کر خالد سے اس لڑکی کا نکاح کردیا اس نکاح اور اولاد کا کیا حکم ہے۔

۳۴۰: لیلیٰ و سلمیٰ رضاعی بہنیں ہیں زید نے لیلیٰ سے نکاح کیا ہے زید کے پسر عمرو کا نکاح سلمیٰ سے جائز ہے۔

Fatawa Ridawiyya - Volume 11

Page	Content (Left Column)	Page	Content (Right Column)
343	Is marriage with a teacher's daughter permissible or not?	350	On the occasion of the Battle of Tabuk, some companions performed mut'ah, so the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) expressed displeasure and explained its prohibition.
343	How is the marriage of a teacher with a female student?	351	Ruling on marriage with a younger sister-in-law (brother's wife).
343	Is a nephew's marriage with his uncle's wife permissible if she is not among the prohibited degrees?	351	Treatise: Hibat al-Nisa' fi Tahqiq al-Musaharah bi'l-Zina (Statement on the proof of prohibition of affinity through adultery).
344	The issue of a missing woman.	352	If one commits adultery with his mother-in-law, his wife becomes forbidden for him forever, even if the wife does not know about it.
345	Mention of the types and rulings of the Rawafid (Shia) and some of their blasphemous beliefs.	354	Exegesis of the verse: "and your step-daughters under your guardianship."
346	Is it permissible or forbidden to combine marriage between a woman and her niece's daughter?	354	The prohibition of the daughter of a woman with whom marriage has been consummated is proven from the Quran.
346	It is forbidden to combine two women in one marriage such that if either were assumed to be male, marriage to the other would be unlawful.	354	In the Quranic verse, the description "who are under your guardianship" is not, by consensus, a condition for prohibition.
347	Zaid married Hindah; Hasan and Hussain were born. Then, after Hindah, he married Hafsa. Hafsa	354	The description "your women", meaning those with whom marriage is consummated being

Page	Content (Left Column)	Page	Content (Right Column)
	breastfed Hussain's son Bakr along with her daughter Zubaydah. Is Bakr's marriage to Zahida bint Hasan permissible or not?		wives, is also by consensus not a condition for prohibition.
348	A niece, even if she is a step-niece, is definitively forbidden for an uncle.	354	If both mother and daughter are a person's legal concubines, it is forbidden to have sexual intercourse with both of them.
349	Statement on the prohibition of Mut'ah (temporary marriage) from Hadith and Quran.	354	Female slaves are not included in "your wives" and their daughters are not included in "your step-daughters."
350	Allah Almighty has forbidden Mut'ah until the Day of Resurrection.	354	Marriage with a woman is neither the cause nor part of the cause for the prohibition of her daughter.
350	The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade Mut'ah and donkey meat on the day of the Battle of Khaybar.	354	Sexual intercourse with the mother is the cause of prohibition for the daughter, and this is also definitively proven in the case of an adulteress.
350	Mut'ah existed in the early days of Islam, then it became forbidden upon the revelation of its prohibition in the Quran.	354	Exegesis of the noble verse: "and the wives of your sons who are from your loins."
		355	What is meant by "mothers of your wives."

फ़तावा रज़विया - जिल्द ११

पृष्ठ	विषय (बायां कॉलम)	पृष्ठ	विषय (दायां कॉलम)
३४३	उस्ताद की बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं।	३५०	ग़ज़व-ए-तबूक के मौक़े पर कुछ सहाबा ने मुत'अह किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नाराज़गी का इज़हार करते हुए इसकी हुरमत (निषेध) को बयान फ़रमाया।
३४३	शागिर्द औरत से उस्ताद का निकाह कैसा है।	३५१	छोटी भावज (भाई की पत्नी) से निकाह का हुक्म।
३४३	भतीजे का निकाह चाचा की बीवी से जायज़ है या नहीं जबकि वह मुहारिम (निषिद्ध श्रेणी) में से न हो।	३५१	रिसाला: हिबतुल निसा फ़ी तहक़ीकुल मुसाहरत बिल ज़िना (ज़िना से हुरमत-ए-मुसाहरत के सुबूत का बयान)।
३४४	मसला ज़न-ए-मफ़क़ूद (लापता महिला)।	३५२	सास से ज़िना करे तो बीवी हमेशा के लिए हराम है अगरचे बीवी को इसका इल्म न हो।
३४५	रवाफ़िज़ (शिया) के अक़्साम व अहकाम और उनके बाज़ अक़ाइद-ए-कुफ़रिया का ज़िक्र।	३५४	"वरबाएबुकुमुल्लती फ़ी हुजूरेकुम" आयत की तफ़्सीर (व्याख्या)।
३४६	औरत और उसकी भतीजी की बेटी के दरमियान निकाह जमा करना हलाल है या हराम।	३५४	ज़न-ए-मदख़ूला (जिसके साथ निकाह मुकम्मल हुआ हो) की बेटी की हुरमत क़ुरआन से साबित है।
३४६	ऐसी दो औरतों को एक निकाह में जमा करना हराम है जिनमें से जिस किसी को मर्द फ़र्ज़ करें तो दूसरी से उसका निकाह ना-जायज़ हो।	३५४	आयत-ए-क़ुरआनी में वस्फ़ "अल्लती फ़ी हुजूरेकुम" बिल-इज्मा (सर्वसम्मति से) हुरमत की शर्त नहीं है।
३४७		३५४	

पृष्ठ	विषय (बायां कॉलम)	पृष्ठ	विषय (दायां कॉलम)
	ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया, हिंदा से हसन और हुसैन पैदा हुए। फिर हिंदा के बाद हफ़्सा से निकाह किया। हफ़्सा ने अपनी बेटी ज़ुबैदा के साथ हुसैन के बेटे बक्र को दूध पिलाया, तो बक्र का निकाह ज़ाहिदा बिन्त-ए-हसन से जायज़ है या नहीं।		वस्फ़-ए-निसाअकुम यानी मदख़ूलात का ज़ौजा होना भी बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) हुरमत की शर्त नहीं है।
३४८	भतीजी अगरचे सौतेली हो, चाचा पर हराम-ए-क़तई (निश्चित रूप से निषिद्ध) है।	३५४	माँ-बेटी दोनों अगर एक शख़्स की शरीअत सम्मत लौंडियाँ हों तो उन्हें जमाअ (सहवास) में जमा करना हराम है।
३४९	हुरमत-ए-मुत'अह का बयान अहादीस व क़ुरआन से।	३५४	कनीज़ें (लौंडियाँ) "निसाअकुम" में और उनकी बेटियाँ "रबाएबकुम" में दाख़िल नहीं।
३५०	अल्लाह तआला ने ता-क़ियाम-ए-क़यामत मुत'अह हराम फ़रमाया।	३५४	किसी औरत से निकाह उसकी दुख़्तर (बेटी) की तहरीम (निषेध) के लिए न तो इल्लत (कारण) है और न ही जुज़्व-ए-इल्लत।
३५०	रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ग़ज़व-ए-ख़ैबर के रोज़ मुत'अह और गधे के गोश्त से मना फ़रमा दिया।	३५४	माँ से सोहबत दुख़्तर के लिए इल्लत-ए-तहरीम है और यह क़तअन मज़नियह (व्यभिचारिणी) में भी साबित है।
३५०	मुत'अह इब्तिदा-ए-इस्लाम में था फिर क़ुरआन में इसकी हुरमत नाज़िल होने से यह हराम हो गया।	३५४	आयत-ए-करीमा "व ह़लाइलु अब्नाएकुमुल्लज़ीना मिन अस्लाबेकुम" की तफ़्सीर।
		३५५	"उम्माहातु निसाएकुम" से क्या मुराद है।

صفحہ مضمون (بایاں کالم)		صفحہ مضمون (دایاں کالم)	
			غزوہ تبوک کے موقع پر کچھ صحابہ نے متعہ کیا تو رسول اللہ
۳۴۳	استاذ کی بیٹی سے نکاح جائز ہے یا نہیں۔	۳۵۰	صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ناراضگی کا اظہار کرتے ہوئے اس کی حرمت کو بیان فرمایا۔
۳۴۳	شاگرد عورت سے استاذ کا نکاح کیسا ہے۔	۳۵۱	چھوٹی بھاوج سے نکاح کا حکم۔
۳۴۳	بھتیجے کا نکاح چچا کی بیوی سے جائز ہے یا نہیں جبکہ وہ محارم میں سے نہ ہو۔	۳۵۱	رسالہ ہبۃ النساء فی تحقق المصاھرۃ بالزنا (زنا سے حرمت مصاہرت کے ثبوت کا بیان)
۳۴۴	مسئلہ زن مفقود۔	۳۵۲	ساس سے زنا کرے تو بیوی ہمیشہ کے لئے حرام ہے اگرچہ بیوی کو اس کا علم نہ ہو۔
۳۴۵	روافض کے اقسام و احکام اور ان کے بعض عقائد کفریہ کا ذکر۔	۳۵۴	"وربائبکم اللتی فی حجورکم" الآیۃ کی تفسیر۔
۳۴۶	جمع کرنا درمیان عورت اور اس کی بھتیجی کی بیٹی کے حلال ہے یا حرام۔	۳۵۴	زن مدخولہ کی بیٹی کی حرمت قرآن سے ثابت ہے۔

صفحہ مضمون (بایاں کالم)		صفحہ مضمون (دایاں کالم)	
ایسی دو عورتوں کو ایک نکاح میں جمع کرنا		آیت قرآنی میں وصف "اللتی فی	
۳۴۶ حرام ہے جن میں سے جس کسی کو مرد فرض	۳۵۴	حجورکم" بالاجماع شرط حرمت	
کریں تو دوسری سے اس کا نکاح ناجائز ہو۔		نہیں۔	
زید نے ہندہ سے نکاح کیا، ہندہ سے حسن و			
حسین پیدا ہوئے پھر بعد ہندہ حفصہ سے نکاح		وصف نساءکم یعنی مدخولات کا	
۳۴۷ کیا حفصہ نے اپنی بیٹی زبیدہ کے ساتھ حسین	۳۵۴	زوجہ ہونا بھی بالاتفاق شرط حرمت	
کے بیٹے بکر کو دودھ پلایا تو بکر کا نکاح		نہیں۔	
زاہدہ بنت حسن سے جائز ہے یا نہیں۔			
بھتیجی اگرچہ سوتیلی ہو چچا پر حرام قطعی		ماں بیٹی دونوں اگر ایک شخص کی	
۳۴۸ ہے۔	۳۵۴	شرعی کنیزیں ہوں تو انہیں جماع	
		میں جمع کرنا حرام ہے۔	
		کنیزیں "نسائکم" میں اور ان کی	
۳۴۹ حرمت متعہ کا بیان از احادیث و قرآن۔	۳۵۴	بیٹیاں "ربائبکم" میں داخل نہیں۔	
		کسی عورت سے نکاح اس کی دختر	
۳۵۰ اللہ تعالیٰ نے تا قیام قیامت متعہ حرام فرمایا۔	۳۵۴	کی تحریم کیلئے نہ تو علت ہے اور	
		نہ ہی جزوِ علت۔	
رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے غزوہ		ماں سے صحبت دختر کے لئے علتِ	
۳۵۰ خیبر کے روز متعہ اور گدھے کے گوشت	۳۵۴	تحریم ہے اور یہ قطعاً مزنیہ میں	
سے منع فرما دیا۔		بھی ثابت ہے۔	

صفحہ مضمون (بایاں کالم)

۳۵۰ متعہ ابتدائے اسلام میں تھا پھر قرآن میں اس کی حرمت نازل ہونے سے یہ حرام ہو گیا۔

صفحہ مضمون (دایاں کالم)

۳۵۴ آیت کریمہ "وحلائل ابنائکم الذین من اصلابکم" کی تفسیر۔

۳۵۵ "امہات نسائکم" سے کیا مراد ہے۔

Fatawa-e-Razvia Volume 11

- What is the meaning of 'Nikah' in the verse "And do not marry those [women] whom your fathers married"? | 355
- Description of the chain of narrators for the mentioned Hadith. | 357
- The responsibility of providing proof for specification lies with the claimant of specification. | 355
- Uthman Al-Waqqasi narrates fabricated reports from reliable sources. | 358
- Consummation, even in a forbidden manner, becomes a cause of prohibition for the daughter of the woman cohabited with. | 355
- Ishaq bin Abi Farwah is criticized and his narrations are abandoned (matrook). | 358
- Those cases in which consummation occurred with a woman for whom it was not lawful, yet that consummation made the daughter of the woman forbidden. | 355
- Imam Yahya bin Ma'in said: Farwah is a liar. | 359
- For the prohibition of the daughter, neither marriage is a condition nor is it necessary for the cohabitation to be in a lawful manner; rather, the basis of prohibition is solely the cohabitation. | 355
- There are two individuals named Ishaq bin Abi Farwah. | 359
- Is 'Nikah' literal in the sense of cohabitation or is it a commonly recognized metaphor? | 356
- First is Ishaq bin Abdullah bin Abi Farwah, a Successor (Tabi'i), contemporary and student of Imam Zuhri, featured in the works of Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah; he is the one whose narrations are abandoned, and about whom Imam Bukhari said, "they abandoned him". | 359
- Precaution is Shari'i obligatory regarding matters of the private parts. | 356
- Imam Ahmad bin Hanbal said: It is not lawful to narrate from Ishaq bin Abi Farwah. | 359
- The original status of private parts is prohibition; until lawfulness is established, the ruling will be based on prohibition. | 356
- The year of death for the mentioned Ishaq bin Abi Farwah is 136 AH or 144 AH. | 360
- There is no difference between different forms of affinity (musaharat). | 356
- Second is Ishaq bin Muhammad Ismail bin Abdullah bin Abi Farwah, a teacher of Imam Bukhari, passed away in 326 AH; he is not abandoned at all. | 361

- The Hadith "The forbidden does not make the lawful forbidden" is extremely weak, unacceptable as evidence, and discarded. | 356
- Although Ibn Hibban mentioned Ishaq bin Muhammad bin Ismail among reliable narrators and Abu Hatim etc. called him truthful, he is also not free from criticism. | 361
- According to Imam Ahmad, it is neither a saying of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) nor of the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her), but rather a saying of some judge from Iraq. | 357
- Regarding the mentioned Ishaq, Imam Nasai said: Not reliable. Al-Daraqutni said: Weak. And Imam Abu Dawood said: Severely weak. | 361
- Uthman bin Abdur Rahman Al-Waqqasi, the grandson of Amr bin Sa'd (the killer of Hazrat Imam Hussain, may Allah be pleased with him), is abandoned, weak, and a liar. | 357
- Regarding Abdullah, the teacher of the mentioned Ishaq, Yahya bin Saeed al-Qattan said he is weak in terms of memory. And Imam Nasai said: He is not strong. | 362

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 11

- आयत "और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे पिताओं ने निकाह किया" में निकाह का क्या अर्थ है? | 355
- उक्त हदीस की सनद (वर्णन श्रृंखला) का विवरण। | 357
- विशिष्टता (तख्सीस) के लिए प्रमाण प्रस्तुत करना तख्सीस का दावा करने वाले की जिम्मेदारी है। | 355
- उस्मान अल-वाक्कासी विश्वसनीय स्रोतों से मनगढ़ंत खबरें सुनाता है। | 358
- हराम तरीके से भी संभोग उस महिला की बेटी के लिए निषेध (हुरमत) का कारण बनता है जिसके साथ संभोग किया गया हो। | 355
- इसहाक बिन अबी फरवा आलोचना का पात्र है और त्यागा हुआ (मतरूक) है। | 358
- वे स्थितियाँ जिनमें ऐसी महिला के साथ संभोग किया गया जो उसके लिए वैध नहीं थी, फिर भी इस संभोग से उस महिला की बेटी हराम हो गई। | 355
- इमाम यह्या बिन मुईन ने कहा: फरवा बहुत बड़ा झूठा है। | 359
- बेटी के हराम होने के लिए न निकाह शर्त है और न ही संभोग का वैध होना आवश्यक है, बल्कि निषेध का आधार केवल संभोग है। | 355
- इसहाक बिन अबी फरवा नाम के दो व्यक्ति हैं। | 359
- निकाह शब्द संभोग के अर्थ में वास्तविक है या एक प्रसिद्ध रूपक (मिज़ाज-ए-मुआरफ़)। | 356
- पहले इसहाक बिन अब्दुल्ला बिन अबी फरवा हैं, जो ताबेई, इमाम ज़ुहरी के समकालीन और छात्र हैं, तथा अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा के वर्णनकर्ता हैं; यही त्यागे हुए (मतरूक) हैं और इन्हीं के बारे में इमाम बुखारी ने कहा "उन्होंने उसे छोड़ दिया"। | 359
- गुप्त अंगों (फर्ज) के मामले में शरीयत के अनुसार सावधानी बरतना अनिवार्य (वाजिब) है। | 356
- इमाम अहमद बिन हंबल ने कहा: इसहाक बिन अबी फरवा से रिवायत करना जायज़ नहीं है। | 359
- गुप्त अंगों का मूल हुक्म निषेध (हुरमत) है; जब तक उसकी वैधता सिद्ध न हो जाए, निषेध का ही हुक्म रहेगा। | 356

- उल्लेखित इसहाक बिन अबी फरवा की मृत्यु का वर्ष 136 हिजरी या 144 हिजरी है। | 360
- अलग-अलग तरह के मुसाहरत (ससुराली रिश्तों) में कोई अंतर नहीं है। | 356
- दूसरे इसहाक बिन मुहम्मद इस्माइल बिन अब्दुल्ला बिन अबी फरवा हैं, जो इमाम बुखारी के उस्ताद हैं, उन्होंने 326 हिजरी में वफात पाई; वह बिल्कुल भी त्यागे हुए नहीं हैं। | 361
- हदीस "हराम हलाल को हराम नहीं करता" बहुत कमज़ोर, दलील के लिए अयोग्य और रद्द है। | 356
- हालाँकि इब्न हिब्बान ने इसहाक बिन मुहम्मद बिन इस्माइल का उल्लेख विश्वसनीय वर्णनकर्ताओं में किया है और अबू हातिम आदि ने उन्हें सच्चा कहा है, फिर भी वह आलोचना से मुक्त नहीं हैं। | 361
- इमाम अहमद के अनुसार, यह न तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का फरमान है और न ही उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) का, बल्कि इराक के किसी काज़ी का कथन है। | 357
- उल्लेखित इसहाक के बारे में इमाम नसाई ने कहा: विश्वसनीय नहीं है। दारकुतनी ने कहा: कमज़ोर है। और इमाम अबू दाऊद ने कहा: अत्यंत कमज़ोर है। | 361
- उस्मान बिन अब्दुर्रहमान वाक्कासी, हज़रत इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कातिल अम्र बिन साद का पोता, त्यागा हुआ, कमज़ोर और झूठा है। | 357
- उल्लेखित इसहाक के शेख अब्दुल्ला के बारे में यह्या बिन सईद क़त्तान ने कहा कि याददाश्त के मामले में वह कमज़ोर हैं। और इमाम नसाई ने कहा: वह मज़बूत नहीं हैं। | 362

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

- "ولاتنکحوا مانیح آباؤکم من النساء" میں نکاح کا کیا معنی ہے۔ | ۳۵۵ | حدیث مذکور کی سند کا بیان۔ | ۳۵۷
- تخصیص کی دلیل پیش کرنا مدعی تخصیص کے ذمہ ہے۔ | ۳۵۵ | عثمان و قاصی ثقات سے موضوع خبریں روایت کرتا ہے۔ | ۳۵۸
- دخول حرام طور پر بھی تو موطوہ کی دختر کے لئے موجبِ تحریم ہوجاتا ہے۔ | ۳۵۵ | اسحاق بن ابی فروہ متکلم فیہ اور متروک ہے۔ | ۳۵۸
- وہ صورتیں جن میں ایسی عورت سے دخول کیا جو اس کیلئے حلال نہیں مگر اس دخول سے موطوہ کی دختر حرام ہوگئی۔ | ۳۵۵ | امام یحییٰ بن معین نے فرمایا: فروہ کذاب ہے۔ | ۳۵۹
- تحریمِ دختر کے لئے نہ نکاح شرط نہ وطی کا بروجہِ حلال ہونا لازم بلکہ مناطِ حرمت صرف وطی ہے۔ | ۳۵۵ | اسحاق بن ابی فروہ دو ہیں۔ | ۳۵۹
- نکاح معنی وطی میں حقیقت ہے یا مجاز متعارف۔ | ۳۵۶ | اول اسحاق بن عبداللہ بن ابی فروہ تابعی معاصر و تلمیذ امام زہری رجال ابو داؤد ترمذی وابن ماجہ سے ہے، یہی متروک ہے اور اسی کو امام بخاری نے "ترکوہ" فرمایا۔ | ۳۵۹
- امر فرج میں شرعاً احتیاط واجب ہے۔ | ۳۵۶ | امام احمد بن حنبل نے فرمایا: اسحاق بن ابی فروہ سے روایت حلال نہیں۔ | ۳۵۹
- اصل فرج میں حرمت ہے جب تک حل ثابت نہ ہو حرمت ہی پر حکم ہوگا۔ | ۳۵۶ | اسحاق بن ابی فروہ مذکور کا سن وصال ۱۳۶ھ یا ۱۴۴ھ ہے۔ | ۳۶۰

- مصاہرت مصاہرت میں فرق نہیں۔ | ۳۵۶ | دوم اسحاق بن محمد اسمعیل بن عبداللہ بن ابی فروہ امام بخاری کے استاذ ہیں ۳۲۶ ھ میں وصال فرمایا، یہ ہرگز متروک نہیں۔ | ۳۶۱
- حدیث "لا یحرم الحرام الحلال" سخت ضعیف و نا قابل احتجاج وساقط ہے۔ | ۳۵۶ | اسحاق بن محمد بن اسمعیل کو اگر چہ ابن حبان نے ثقات میں ذکر کیا اور ابو حاتم وغیرہ نے صدوق کہا، البتہ کلام سے خالی یہ بھی نہیں ہیں۔ | ۳۶۱
- بقول امام احمد نہ ارشاد رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور نہ اُم المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا بلکہ عراق کے کسی قاضی کا قول ہے۔ | ۳۵۷ | اسحاق مذکور کے بارے میں امام نسائی نے کہا: ثقہ نہیں۔ دار قطنی نے کہا: ضعیف ہیں۔ اور امام ابو داؤد نے کہا: سخت ضعیف ہیں۔ | ۳۶۱
- عثمان بن عبدالرحمن و قاصی، حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قاتل عمرو بن سعد کا پوتا متروک ضعیف اور جھوٹا ہے۔ | ۳۵۷ | اسحاق مذکور کے شیخ عبداللہ کے بارے میں یحییٰ بن سعید قطان نے فرمایا کہ حافظہ کی رو سے ضعیف ہیں۔ اور امام نسائی نے کہا: قوی نہیں ہیں۔ | ۳۶۲

Page	Left Column Content	Page	Right Column Content
364	Even if the weakness of this hadith's chain of narration is ignored, it is certainly not correct in its apparent meaning.	363	On the Day of Judgment, Allah Almighty will not look with mercy upon the one who looks at the private parts of a woman and her daughter.
365	If wine or urine is added to a small amount of water or rose water, that water and rose water will become forbidden (haram).	363	Both the wife and the mother-in-law become forbidden (haram) for the person who commits adultery with his mother-in-law.
365	There are several examples where a forbidden thing makes a lawful thing forbidden.	363	In the case of Hurmat-e-Musaharah, it is obligatory for the man and woman to separate, but the marriage itself is not automatically annulled until the husband abandons her. Until the waiting period ('iddah) after abandonment has passed, the woman cannot marry anyone else.
365	Necessarily, there is no choice but interpretation of the mentioned hadith, as "the forbidden insofar as it is forbidden does not make the lawful forbidden."	363	If the husband has sexual intercourse after Hurmat-e-Musaharah but before abandonment, it is forbidden (haram) but not adultery (zina), and the children born from this intercourse will be legitimate because the marriage still exists.
365	If any pure thing which is forbidden gets mixed with something lawful in such a way that they cannot be distinguished, the lawful thing itself does not become forbidden; rather, it remains in its original state.	363	The difference between divorce (talaq) and abandonment (mutarkah).

Page	Left Column Content	Page	Right Column Content
365	Consuming a mixture of lawful and forbidden things is impermissible because, due to the mixing, its consumption cannot be free from the forbidden.	363	Marriage is not revoked by Hurmat-e-Musaharah or Hurmat-e-Riza'at, but rather it becomes invalid (fasid).
365	Even in this weak hadith, there is no argument for the opponents of our school of thought.	364	If the husband had intercourse before separation despite Hurmat-e-Musaharah, the legal punishment (hadd) will not be mandatory for him.
366	A few hadiths supporting our school of thought.	364	Despite Hurmat-e-Musaharah, if the husband did not leave and continued to have intercourse, the resulting children will be heirs of both the mother and the father. However, the husband and wife will not inherit from each other.
366	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: It is not permissible for a daughter to be aware of what her mother was aware of.	364	Children born from adultery (zina) also inherit from their mother.
367	It is mentioned in a hadith that for the person who looks at the private parts of any woman with lust, that woman's mother and daughter become forbidden (haram) for him.	364	Regarding an apostate (murtad) man and woman, the Shariah ruling is that they cannot marry any Muslim man or woman, nor a non-Muslim (kaffir) man or woman, nor an apostate man or woman, whether they share the same religion or a different one. In short, they cannot marry anyone in the entire world.
-	The person who looks at the private parts of both a woman and her daughter is cursed.	364	-

पृष्ठ	बायाँ कॉलम विषय-वस्तु	पृष्ठ	दायाँ कॉलम विषय-वस्तु
३६४	अगर इस हदीस की सनद की कमज़ोरी से कतई नज़र भी की जाए, तो भी यह अपने ज़ाहिर पर यकीनन सही नहीं है।	३६३	औरत और उसकी बेटी की शर्मगाह को देखने वाले पर क़यामत के दिन अल्लाह तआला रहमत की नज़र नहीं करेगा।
३६५	थोड़े पानी या गुलाब में शराब या पेशाब डाल दें तो वह पानी और गुलाब हराम हो जाएंगे।	३६३	सास से ज़िना करने वाले पर औरत और सास दोनों हराम हो जाती हैं।
३६५	कई मिसालें जहाँ हराम चीज़ हलाल को हराम कर देती है।	३६३	हुरमत-ए-मुसाहरत की सूरत में मर्द और औरत को अलग हो जाना फ़र्ज़ है, मगर निकاح। खुद-ब-खुद खत्म नहीं होता जब तक शौहर मुतारका (त्याग) न करे, और मुतारका के बाद इद्दत गुज़रे बिना औरत किसी दूसरे से निकाह नहीं कर सकती।
३६५	लाज़मी तौर पर मज़कूरा हदीस की तावील (व्याख्या) के सिवा कोई चारा नहीं कि "हराम अपनी ज़ात में हलाल को हराम नहीं करता"।	३६३	हुरमत-ए-मुसाहरत के बाद मुतारका से पहले अगर शौهر सोहबत (वति) करे तो वह हराम है मगर ज़िना नहीं, और इस सोहबत से पैदा होने वाली औलाद सही-उल-नसब (वैध) होगी क्योंकि निकाह बाकी है।
३६५	अगर कोई पाक चीज़ जो कि हराम हो किसी हलाल में इस तरह मिल जाए कि फर्क करना नामुमकिन हो, तो वह हलाल खुद हराम नहीं हो जाता बल्कि अपनी हालत पर कायम रहता है।	३६३	तलाक और मुतारका में फर्क।
३६५		३६३	

पृष्ठ	बायाँ कॉलम विषय-वस्तु	पृष्ठ	दायाँ कॉलम विषय-वस्तु
	हलाल और हराम के मिश्रण का सेवन इसलिए नाजायज़ है क्योंकि मेल होने के कारण उसका सेवन हराम से खाली नहीं हो सकता।		हुरमत-ए-मुसाहरत और हुरमत-ए-रज़ाअत (दूध का रिश्ता) से निकाह खत्म नहीं होता बल्कि फासिद (अवैध) हो जाता है।
३६५	इस ज़ईफ़ (कमज़ोर) हदीस में भी हमारे मज़हब के विरोधियों के लिए कोई दलील नहीं है।	३६४	हुरमत-ए-मुसाहरत के बावजूद तफ़रीक़ (अलग होने) से पहले अगर शौहर ने सोहबत की तो उस पर हद्द (सज़ा) लाज़िम न होगी।
३६६	हमारे मज़हब का समर्थन करने वाली कुछ हदीसें।	३६४	हुरमत-ए-मुसाहरत के बावजूद अगर शौहर ने उसे नहीं छोड़ा और सोहबत करता रहा, तो पैदा होने वाली औलाद माँ और बाप दोनों की वारिस बनेगी, लेकिन पति-पत्नी आपस में एक-दूसरे के वारिस नहीं होंगे।
३६६	हुज़ूर-ए-अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि यह जायज़ नहीं है कि बेटी उस चीज़ से वाकिफ हो जिससे उसकी माँ वाकिफ थी।	३६४	ज़िना से पैदा होने वाली औलाद भी अपनी माँ की विरासत पाती है।
३६७	हदीस में है कि जो शख्स किसी औरत की शर्मगाह को शहवत (कामुकता) से देखे, उस पर उस औरत की माँ और बेटी हराम हैं।	३६४	मुर्तद और मुर्तदा (धर्म त्यागी) के बारे में शरई हुक्म यही है कि उनका निकाह न किसी मुस्लिम पुरुष या महिला से हो सकता है, न काफ़िर पुरुष या महिला से, न मुर्तद पुरुष या महिला से, चाहे वे एक ही धर्म के हों या अलग, संक्षेप में पूरी दुनिया में किसी से भी नहीं हो सकता।
-	जो शख्स किसी औरत और उसकी बेटी दोनों की शर्मगाह को देखे वह मलऊन (अभिशप्त) है।	३६४	-

صفحہ بائیں کالم کے مندرجات		صفحہ دائیں کالم کے مندرجات
اگر اس حدیث کے ضعفِ سند سے ۳۶۴ قطع نظر بھی کی جائے تو بھی یہ اپنے ظاہر پر یقیناً صحیح نہیں ۔	۳۶۳	عورت اور اس کی دختر کی فرج کو دیکھنے والے پر روزِ قیامت اللہ تعالیٰ نظرِ رحمت نہ کرے۔
قلیل پانی یا گلاب میں شراب یا ۳۶۵ پیشاب ڈال دیں تو وہ پانی اور گلاب حرام ہو جائیں گے۔	۳۶۳	ساس سے زنا کرنے والے پر عورت اور ساس دونوں حرام ہو جاتی ہیں۔
۳۶۵ متعدد مثالیں جہاں حرام شئی حلال کو حرام کر دیتی ہے۔	۳۶۳	حرمتِ مصاہرہ کی صورت میں مرد و زن کو جدا ہو جانا فرض ہے مگر خود بخود نکاح زائل نہیں ہوتا جب تک شوہر متارکہ نہ کرے، اور بعد متارکہ عدت نہ گزر جائے عورت کسی دوسرے سے نکاح نہیں کر سکتی۔
۳۶۵ لاجرم حدیثِ مذکور میں تاویل سے چارہ نہیں کہ حرام من حیث ہو حرام حلال کو حرام نہیں کرتا۔	۳۶۳	حرمتِ مصاہرہ کے بعد متارکہ سے قبل اگر شوہر وطی کرے تو حرام ہے مگر زنا نہیں اور اس وطی سے پیدا ہونے والی اولاد صحیح النسب ہو گی کیونکہ نکاح باقی ہے۔
۳۶۵	۳۶۳	طلاق اور متارکہ میں فرق۔

صفحہ بائیں کالم کے مندرجات		صفحہ دائیں کالم کے مندرجات
اگر کوئی طاہر شئی جو کہ حرام ہو کسی حلال میں اس طرح مل جائے کہ تمیز ناممکن ہو تو وہ حلال خود حرام نہیں ہو جاتا بلکہ اپنی حالت پر قائم رہتا ہے۔		
حلال و حرام کے مخلوط کا تناول		
۳۶۵ اس لئے ناجائز ہے کہ بوجہ اختلاط اس کا تناول حرام سے خالی نہیں ہو سکتا۔	۳۶۳	حرمتِ مصاہرہ اور حرمتِ رضاعت سے نکاح مرتفع نہیں بلکہ فاسد ہو جاتا ہے۔
۳۶۵ اس حدیثِ ضعیف میں بھی ہمارے مذہب کے مخالفین کے لئے اصلاً حجت نہیں۔	۳۶۴	حرمتِ مصاہرہ کے باوجود تفریق سے قبل اگر شوہر نے وطی کی تو اس پر حد لازم نہ ہو گی۔
		حرمتِ مصاہرہ کے باوجود اگر خاوند نے نہ چھوڑا اور وطی کرتا رہا تو پیدا ہونے والی
۳۶۶ ہمارے مذہب کی مؤید چند احادیث۔	۳۶۴	اولاد ماں اور باپ دونوں کی وارث بنے گی تاہم زن و شوہر آپس میں ایک دوسرے کے وارث نہیں ہوں گے۔
۳۶۶ حضورِ اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ یہ جائز نہیں	۳۶۴	اولادِ زنا بھی اپنی ماں کی میراث پاتی ہے۔

صفحہ بائیں کالم کے مندرجات		صفحہ دائیں کالم کے مندرجات
ہے کہ بیٹی کی اس شئی پر مطلع ہو جس چیز پر اس کی ماں مطلع تھی۔		
حدیث میں ہے جو شخص کسی عورت کی فرج کو شہوت سے دیکھے اس پر اس عورت کی ماں اور بیٹی حرام ہے۔	۳۶۷	درباره مرتد و مرتده حکمِ شرعی یہی ہے کہ ان کا نکاح نہ کسی مسلم و مسلمہ سے ہو سکتا ہے نہ کافر و کافرہ سے نہ مرتد و مرتده ان کے ہم مذہب خواہ مخالف مذہب سے غرض تمام جہان میں کسی سے نہیں ہو سکتا۔
جو شخص کسی عورت اور اس کی بیٹی دونوں کی فرج کو دیکھے وہ ملعون ہے۔	۳۶۴	۳۶۴

Fatawa Rizvia, Volume 11

Topic	Page
What is the ruling on marrying Shias and other misguided sects?	367
Spousal relationship is a great bond that inevitably creates intimacy, love, and affection.	368
Friendship and love with a person of a misguided sect is unlawful; it causes harm to faith.	368
A person will be resurrected with the one they love.	368
A person follows the religion of his close friend, so one should consider whom they choose as a friend.	368
To marry a woman from a misguided sect with the thought that "we will convert her to Sunni" is pure folly.	368
Love makes a person blind and deaf.	368
Hearts turn and thoughts change in no time.	369
Giving one's daughter in marriage to a person of a misguided sect is like extreme wrath and deadly poison.	369
Marriage of a Sunni Hanafi woman to a non-conformist (Ghair-Muqallid) Wahhabi is prohibited, unlawful, and a sin.	373
Many beliefs of contemporary non-conformists are blasphemous and deviant.	373
It is proven in the best manner that non-conformists are misguided and follow an evil sect.	373
Eating, drinking, and intermarrying with people of misguided sects is prohibited.	373
One who maintains intimacy and friendship with innovators (Bid'atis) is deprived of the light and sweetness of faith.	373
In this era, whoever deviates from these four schools of thought (Madhhabs) is an innovator and destined for Hell.	374
If a non-conformist holds blasphemous beliefs, then marriage to him is purely void and adultery.	374
A Muslim woman's marriage to a disbeliever (Kafir) is fundamentally invalid.	374
Even if a non-conformist does not hold blasphemous beliefs, marriage to him is forbidden	374

Topic	Page
Women have immense love for their husbands.	369
Women are more tender-hearted.	369
Women are deficient in intellect and religion.	370
If someone intentionally or mistakenly committed adultery with their foster mother-in-law or foster sister-in-law, will the marriage remain intact or not?	370
Intercourse, or even preparatory acts of intercourse without ejaculation, with the wife's foster mother, maternal grandmother, or paternal grandmother—whether done intentionally, by mistake, or under coercion—renders the wife eternally forbidden to the husband.	371
Treatise: "Izalat al-Ar bi-Hajr al-Kara'im 'an Kilab al-Nar" (Protecting noble women from disgrace by not marrying them to the dogs of Hell (misguided ones)).	373
according to the command of the Quran and Hadith.	
Fatwa of the scholars of Patna.	374
Fatwa of the scholars of Bihar.	375
Fatwa of the scholars of Badaun.	376
In reality, the marriage of a Sunni Hanafi woman to a non-conformist Wahhabi is either purely void and adultery according to Sharia, or prohibited and a sin.	377
Whether Wahhabi or Rafidi, whoever holds clear and definitive blasphemous beliefs, then by the consensus of Muslims, marriage with them is absolutely and certainly void and nothing but adultery.	377

फतावा रज़विया, जिल्द 11

विषय	पृष्ठ
शिया और अन्य गुमराह संप्रदायों से शादी करना कैसा है?	३६७
वैवाहिक रिश्ता वह महान बंधन है जो अनिवार्य रूप से लगाव, प्रेम और स्नेह पैदा करता है।	३६८
गुमराह संप्रदाय के व्यक्ति से दोस्ती और प्यार नाजायज है, इससे दीन को नुकसान पहुँचता है।	३६८
व्यक्ति का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह प्रेम करता है।	३६८
आदमी अपने खास दोस्त के दीन पर होता है, तो विचार करें कि वह किससे दोस्ती करता है।	३६८
गुमराह संप्रदाय की महिला से इस विचार के साथ निकाह करना कि "हम उसे सुन्नी बना लेंगे", कोरी मूर्खता है।	३६८
प्यार में इंसान अंधा और बहरा हो जाता है।	३६८
दिल पलटने और विचार बदलने में देर नहीं लगती।	३६९
सुन्नी हनफी महिला का निकाह गैर-मुकल्लिद वहाबी से करना वर्जित, नाजायज और गुनाह है।	३७३
वर्तमान समय के गैर-मुकल्लिदों के कई अकीदे कुफ़्रिया और गुमराह करने वाले हैं।	३७३
गैर-मुकल्लिदों का गुमराह और बुरे धर्म वाला होना सर्वोत्तम तरीके से प्रमाणित है।	३७३
गुमराह लोगों के साथ खाना-पीना और शादी-ब्याह करना मना है।	३७३
बिदअतियों से लगाव और दोस्ती रखने वाला ईमान के नूर और मिठास से महरूम हो जाता है।	३७३
जो इस ज़माने में इन चारों संप्रदायों (मज़हबों) से बाहर हो, वह बिदअती और दोज़खी (नरकगामी) है।	३७४
अगर गैर-मुकल्लिद कुफ़्रिया अकीदा रखता हो, तो उससे निकाह महज बातिल (अवैध) और ज़िना (व्यभिचार) है।	३७४
मुसलमान महिला का काफ़िर से निकाह मूल रूप से सही नहीं है।	३७४
	३७४

विषय	पृष्ठ
गुमराह को अपनी बेटी देना सख्त कहर और जानलेवा ज़हर के समान है।	
औरतों को अपने पतियों से अगाध प्रेम होता है।	३६९
औरतें अधिक कोमल हृदय वाली होती हैं।	३६९
औरतें अक्ल और दीन (धर्म) में अधूरी होती हैं।	३७०
यदि किसी ने अपनी रज़ाई (दूध-शरीक) सास या रज़ाई साली से जानबूझकर या अनजाने में ज़िना किया, तो निकाह बाकी रहेगा या नहीं?	३७०
पत्नी की रज़ाई माँ, नानी या दादी के साथ संभोग, या संभोग के प्रारंभिक कार्य भी (बिना वीर्यपात के), चाहे जानबूझकर, गलती से या ज़बरदस्ती किए गए हों, पत्नी को पति पर हमेशा के लिए हराम (वर्जित) कर देते हैं।	३७१
रिसाला: "इज़ालत अल-आर बि-हज्र अल-करइम अन किलाब अल-नार" (प्रतिष्ठित महिलाओं को जहन्नुम के कुत्तों (गुमराहों) के निकाह में न देकर शर्मिंदगी से बचाना)।	३७३
गैर-मुकल्लिद कुफ़्रिया अकीदा न भी रखता हो, तब भी उससे निकाह आयत और हदीस के हुक्म से मना है।	
पटना के उलेमा का फतवा।	३७४
बिहार के उलेमा का फतवा।	३७५
बदायूँ के उलेमा का फतवा।	३७६
वास्तव में सुन्नी हनफी महिला का निकाह गैर-मुकल्लिद वहाबी से या तो शरीयत के अनुसार महज बातिल और ज़िना है या वर्जित और गुनाह।	३७७
वहाबी हो या राफ़िज़ी, जिसका धार्मिक विश्वास निश्चित रूप से कुफ़्रिया हो, तो उससे निकाह मुसलमानों की आम सहमति से निश्चित रूप से महज बातिल और केवल ज़िना है।	३७७

موضوع	صفحہ
شیعہ وغیرہ بد مذہبوں سے شادی کرنا کیسا ہے۔	۳۶۷
زوجیت وہ عظیم رشتہ ہے جو خواہ مخواہی انس و محبت والفت پیدا کرتا ہے۔	۳۶۸
بد مذہب سے دوستی و محبت ناجائز ہے، اس سے دین کو نقصان پہنچتا ہے۔	۳۶۸
آدمی کا حشر اسی کے ساتھ ہو گا جس سے محبت رکھتا ہے۔	۳۶۸
آدمی اپنے خالص دوست کے دین پر ہوتا ہے تو غور کرے کہ کس سے دوستی کرتا ہے۔	۳۶۸
بد مذہب عورت سے نکاح میں یہ خیال کہ ہم اس کو سنی کر لیں گے محض حماقت ہے۔	۳۶۸
محبت میں آدمی اندھا بہرا ہو جاتا ہے۔	۳۶۸
سنیہ حنفیہ کا نکاح غیر مقلد وہابی سے کرنا ممنوع و ناجائز اور گناہ ہے۔	۳۷۳
غیر مقلدین زماں کے بہت عقائد کفریہ وضلالیہ ہیں۔	۳۷۳
غیر مقلدوں کا گمراہ وبد مذہب ہونا بروجہ احسن ثابت ہے۔	۳۷۳
بد مذہبوں سے کھانا پینا اور بیاہ شادی کرنا ممنوع ہے۔	۳۷۳
بدعتیوں سے انس اور دوستی کرنے والا ایمان کے نور اور حلاوت سے محروم ہو جاتا ہے۔	۳۷۳
جو اس زمانے میں ان چاروں مذہبوں سے خارج ہو وہ بدعتی اور دوزخی ہے۔	۳۷۴
	۳۷۴

موضوع	صفحہ
دل پلٹتے اور خیال بدلتے کچھ دیر نہیں لگتی۔	۳۶۹
بد مذہب کو اپنی بیٹی دینا تو سخت قہر اور زہر قاتل ہے۔	۳۶۹
عورتوں کو شوہروں سے بے پناہ محبت ہوتی ہے۔	۳۶۹
عورتیں زیادہ نرم دل ہوتی ہیں۔	۳۶۹
عورتیں ناقصات العقل والدین ہیں۔	۳۷۰
اگر کسی نے اپنی رضاعی ساس یا رضاعی سالی سے زنا کیا عمداً یا سہواً، تو نکاح باقی رہے گا یا نہیں۔	۳۷۰
زوجہ کی رضاعی ماں، نانی، دادی سے وطی بلکہ دواعی وطی بھی جبکہ انزال نہ ہو دانستہ	۳۷۱
اگر غیر مقلد عقیدہ کفریہ رکھتا ہو تو اس سے نکاح محض باطل اور زنا ہے۔	
مسلمان عورت کا کافر سے نکاح اصلاً صحیح نہیں۔	۳۷۴
غیر مقلد عقیدہ کفریہ نہ بھی رکھتا ہو تب بھی اس سے نکاح بحکم آیت و حدیث منع ہے۔	۳۷۴
فتویٰ علماء پٹنہ	۳۷۴
فتویٰ علماء بہار	۳۷۵
فتویٰ علماء بدایوں	۳۷۶
فی الواقع سنیہ حنفیہ خاتون کا نکاح غیر مقلد وہابی سے یا تو شرعاً محض باطل وزنا ہے یا ممنوع و گناہ۔	۳۷۷
وہابی ہو یا رافضی جو مذہب عقائد کفریہ قطعیہ رکھتا ہو تو اس سے	۳۷۷

موضوع	صفحہ
یا شبہ یا جبر واکراہ سے، جس طرح بھی ہوں عورت کو شوہر پر حرام ابدی کر دیتے ہیں۔ رسالہ ازالۃ العار بحجر الکرائم عن کلاب النار (معزز خواتین کو جہنم کے کتوں (بد مذہبوں) کے نکاح میں نہ دے کر شرمندگی سے بچانا)	۳۷۳

صفحہ 37 از 739

موضوع	صفحہ
نکاح باجماع مسلمین بالقطع والیقین باطل محض و زنا صرف ہے۔	

Volume Eleven | Fatawa Razawiyya

477 | A few examples of definitive blasphemous beliefs. | 478 | According to the Wahhabi sect, for the matter of Taqlid alone, the religious leaders, perfect scholars, and gnostic saints of eleven hundred years are all declared polytheists. 477 | The ruling for those among claimants of Islam who hold blasphemous beliefs is like that of an apostate. | 478 | Names of the Imams who strictly emphasized personal Taqlid and declared its opposition as rejected, heinous, and false. 477 | The marriage of an apostate man or woman cannot take place with any woman or man, Muslim or infidel, apostate or original, in the whole world. | 479 | The creed of the majority of noble Imams and eminent jurists is correct, reliable, and what fatwa is given upon: whoever believes a single Muslim to be an infidel, he himself becomes an infidel. 478 | One who considers the elders of Wahhabism and the mujtahids of Rafidites as leaders, Imams, or Muslims is an infidel. | 480 | It is in the Hadith that whoever calls a reciter of the Kalima an infidel, this calamity will surely fall upon one of them. 478 | Just as denying the essentials of religion is infidelity, similarly, not considering its denier an infidel is also infidelity. | 480 | Whoever calls someone an infidel or identifies them as an enemy of God, and they are not so, then his statement will return to himself. 478 | One who doubts the infidelity and punishment of a denier of the essentials of religion is an infidel by the consensus of scholars. | 480 | By the command of both Hadith and Jurisprudence, the ruling of infidelity becomes mandatory for the one who declares a Muslim to be an infidel. 478 | In the false beliefs of the deviant sects, there are many necessary blasphemies. | 480 | Allama Shami included Wahhabis among the Kharijites. 478 | Names of two booklets containing a complete and sufficient explanation of Wahhabi beliefs. | 480 | It is mandatory to call the Kharijites infidels on the basis that they call everyone except their coreligionists infidels. 478 | To call following Imams (Taqlid) polytheism and to call followers polytheists is a well-known famous misguided belief of non-followers (Ghair-Muqallids). | 480 | Wahhabis are atheists and irreligious as they declare Muslims to be infidels. 478 | To repeatedly issue rulings of polytheism on minor matters related to Prophets and Saints, and even on prohibited, disliked, or even permissible and recommended acts, is the specific core principle of Wahhabism. | 481 | According to the unrefined sect of Wahhabism, not only the blessed Ummah but even the noble Prophets, the exalted Angels, and even the luminous Presence (peace and blessings of Allah be upon him), and even the Lord of Honor (Mighty and Majestic is He) Himself are not safe from polytheism. 478 | The summary of Wahhabi

belief is that whoever is not a Wahhabi is a polytheist. | 481 | Uttering blasphemies oneself, or being pleased with blasphemies, or not considering them bad, or accepting a correct meaning for them, all have the same ruling.

जिल्द याज़दहम | फ़तावा रज़विया

477 | क़तई कुफ़्रिया अक़ाइद (निश्चित ईशनिंदापूर्ण मान्यताओं) के कुछ उदाहरण। | 478 | वहाबियों के मज़हब पर सिर्फ़ मसला-ए-तक़लीद में ग्यारह सौ साल के आइम्मा-ए-दीन, उलमा-ए-कामिलीन और औलिया-ए-आरिफ़ीन सब मुशरिक (बहुदेववादी) क़रार पाते हैं। 477 | इस्लाम के दावेदारों में जो कुफ़्रिया अक़ाइद रखें उनका हुक्म मुर्तद (धर्मत्यागी) जैसा है। | 478 | तक़लीद-ए-शख़्सी की सख़्त शदीद ताकीद फ़रमाने और इसके ख़िलाफ़ को مُنکر (अस्वीकार्य) व शनीअ व बातिल क़रार देने वाले आइम्मा के नाम। 477 | मुर्तद मर्द ख़्वाह औरत का निकाह तमाम आलम में किसी औरत व मर्द मुस्लिम या काफ़िर मुर्तद या असली से नहीं हो सकता। | 479 | जमहूर आइम्मा-ए-किराम व फ़ुक़हा-ए-आलाम का मज़हब सहीह व मोतमिद व मुफ़्ती-बे यही है कि जो किसी एक मुसलमान को काफ़िर एतक़ाद करे वह ख़ुद काफ़िर है। 478 | कुबरा-ए-वहाबिया और मुजतहिदीन-ए-रवाफ़िज़ को पेशवा व इमाम या मुसलमान समझने वाला काफ़िर है। | 480 | हदीस में है कि जो किसी कलमा-गो को काफ़िर कहे उनमें से एक पर यह बला ज़रूर पड़ेगी। 478 | जिस तरह ज़रूरियात-ए-दीन का इंकार कुफ़्र है उसी तरह उनके मुनकिर को काफ़िर न जानना भी कुफ़्र है। | 480 | जो किसी को कुफ़्र पर पुकारे या ख़ुदा का दुश्मन बताए और वह ऐसा न हो तो उसका क़ौल उसी पर पलट आएगा। 478 | ज़रूरियात-ए-दीन के मुनकिर के कुफ़्र व अज़ाब में शक करने वाला बा-इज्मा-ए-उलमा काफ़िर है। | 480 | हदीस व फ़िक़्ह दोनों के हुक्म से मुसलमान की तकफ़ीर करने वाले पर हुक्म-ए-कुफ़्र लाज़िम आता है। 478 | तवायफ़-ए-ज़ाल्ला (भटके हुए समूहों) के अक़ाइद-ए-बातिला में कुफ़्रियात-ए-लुज़ूमिया ब-कसरत हैं। | 480 | अल्लामा शामी ने वहाबियों को ख़वारिज में दाख़िल फ़रमाया। 478 | अक़ाइद-ए-वहाबिया के शाफ़ी व वाफ़ी बयान पर मुश्तमिल दो रसालों का नाम। | 480 | ख़वारिज को काफ़िर कहना वाजिब है इस बिना पर कि वह अपने हम-मज़हब के सिवा सब को काफ़िर कहते हैं। 478 | तक़लीद-ए-आइम्मा को शिर्क और मुक़ल्लिदों को मुशरिक कहना ग़ैर-मुक़ल्लिदों का मशहूर मारूफ़ अक़ीदा-ए-ज़लालत (गुमराही का अक़ीदा) है। | 480 | वहाबी मुलहिद व बे-दीन हैं कि मुसलमानों की तकफ़ीर करते हैं। 478 | मुआमलात-ए-अंबिया व औलिया से मुताल्लिक़ अदना-अदना बातों पर ममनूअ व मकरूह बल्कि मुबाहात व मुस्तहबात पर जा-ब-जा हुक्म-ए-शिर्क लगा देना ख़ास असल उसूल-ए-वहाबियत है। | 481 | वहाबिया के मज़हब-ए-ना-मज़हब पर न सिर्फ़ उम्मत-ए-मर्हूम बल्कि अंबिया-ए-किराम व मलायका-ए-इज़ाम व ख़ुद हुज़ूर पुर-नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हत्ता कि ख़ुद रब्बुल-

इज़्ज़त जल्ला व अला तक कोई भी शिर्क से महफ़ूज़ नहीं। 478 | वहाबियों का ख़ुलासा-ए-एतक़ादिया है कि जो वहाबी न हो मुशरिक है। | 481 | ख़ुद कुफ़्रियात बकना या कुफ़्रियात पर राज़ी होना या उन्हें बुरा न जानना या उनके लिए मा'नी सहीह मानना सब का एक ही हुक्म है।

पृष्ठ 38 / 739

۴۷۷ | عقائد کفریہ قطعیہ کی چند مثالیں۔ | ۴۷۸ | وہابیوں کے مذہب پر صرف مسئلہ تقلید میں گیارہ سو برس کے ائمہ دین، علماء کاملین اور اولیاء عارفین سب مشرک قرار پاتے ہیں۔ ۴۷۷ | مدعیان اسلام میں جو عقائد کفریہ رکھیں ان کا حکم مثل مرتد ہے۔ | ۴۷۸ | تقلید شخصی کی سخت شدید تاکید فرمانے اور اس کے خلاف کو منکر و شنیع و باطل قرار دینے والے ائمہ کے نام۔ ۴۷۷ | مرتد مرد خواہ عورت کا نکاح تمام عالم میں کسی عورت و مرد مسلم یا کافر مرتد یا اصلی سے نہیں ہوسکتا۔ | ۴۷۹ | جمہور ائمہ کرام و فقہائے اعلام کا مذہب صحیح و معتمد و مفتی بہ یہی ہے جو کسی ایک مسلمان کو کافر اعتقاد کرے وہ خود کافر ہے۔ ۴۷۸ | کبرائے وہابیہ اور مجتہدین روافض کو پیشوا و امام یا مسلمان سمجھنے والا کافر ہے۔ | ۴۸۰ | حدیث میں ہے کہ جو کسی کلمہ گو کو کافر کہے ان میں سے ایک پر یہ بلا ضرور پڑے گی۔ ۴۷۸ | جس طرح ضروریات دین کا انکار کفر ہے اسی طرح ان کے منکر کو کافر نہ جاننا بھی کفر ہے۔ | ۴۸۰ | جو کسی کو کفر پر پکارے یا خدا کا دشمن بتائے اور وہ ایسا نہ ہو تو اس کا قول اسی پر پلٹ آئے گا۔ ۴۷۸ | ضروریات دین کے منکر کے کفر و عذاب میں شک کرنے والا باجماع علماء کافر ہے۔ | ۴۸۰ | حدیث و فقہ دونوں کے حکم سے مسلمان کی تکفیر کرنے والے پر حکم کفر لازم آتا ہے۔ ۴۷۸ | طوائف ضالہ کے عقائد باطلہ میں کفریات لزومیہ بکثرت ہیں | ۴۸۰ | علامہ شامی نے وہابیوں کو خوارج میں داخل فرمایا۔ ۴۷۸ | عقائد وہابیہ کے شافی و وافی بیان پر مشتمل دو رسالوں کا نام۔ | ۴۸۰ | خوارج کو کافر کہنا واجب ہے اس بناء پر کہ وہ اپنے ہم مذہب کے سوا سب کو کافر کہتے ہیں۔ ۴۷۸ | تقلید ائمہ کو شرک اور مقلدوں کو مشرک کہنا غیر مقلدوں کا مشہور معروف عقیدہ ضلالت ہے۔ | ۴۸۰ | وہابی ملحد وبے دین ہیں کہ مسلمانوں کی تکفیر

کرتے ہیں۔ ۴۷۸ | معاملات انبیاء و اولیاء سے متعلق ادنیٰ ادنیٰ باتوں پر ممنوع و مکروہ بلکہ مباحات و مستحبات پر جابجا حکم شرک لگا دینا خاص اصل اصول وہابیت ہے۔ | ۴۸۱ | وہابیہ کے مذہب نامہذب پر نہ صرف امت مرحومہ بلکہ انبیاء کرام و ملائکہ عظام و خود حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حتی کہ خود رب العزۃ جل وعلا تک کوئی بھی شرک سے محفوظ نہیں۔ ۴۷۸ | وہابیوں کا خلاصہ اعتقادیہ ہے کہ جو وہابی نہ ہو مشرک ہے۔ | ۴۸۱ | خود کفریات بکنا یا کفریات پر راضی ہونا یا انہیں برا نہ جاننا یا ان کے لئے معنی صحیح ماننا سب کا ایک ہی حکم ہے۔

Volume 11 Fatawa Rizvia

386: If a Wahhabi does not deny any necessity of religion and does not call any denier of a religious necessity a Muslim, then as a precaution, they will not be called an infidel (kaafir). This same precaution that prevents excommunication also prevents [declaring a] marriage invalid. 386: Ruling on the sale of opium and hashish. 386: What kind of Sharia is it where precaution is taken regarding the tongue but recklessness is shown regarding the private parts? 386: These two applications of 'jawaz' (permissibility) (in the sense of validity and lawfulness) are widespread, and there are other applications besides them. 386: In jurisprudential rulings, actual occurrences are considered, not improbable possibilities. 386: The application of 'jawaz' is also sometimes used in the sense of 'nafadh' (enforcement/execution). (Footnote) 387: A person of bad sect (heretic) cannot be a compatible match (kufu) for a Sunni daughter of a Sunni. 387: Enforcement (nafadh) is more specific in one sense than lawfulness (hall) and validity (sihhat), meaning sometimes there will be enforcement but not lawfulness or validity, and sometimes there will be lawfulness and validity but not enforcement. (Footnote) 387: Answer to the doubt: if marriage with People of the Book (Ahl-e-Kitab) is permissible, why is it not permissible with a non-conformist (Ghair-Muqallid)? 387: Permissibility (jawaz) sometimes comes in the sense of obligation (luzoom). 388: What are the meanings of marriage with People of the Book? 388: The relationship between obligation (luzoom) and validity & enforcement (sihhat-o-nafadh) is one of absolute generality and specificity. 388: How can the analogy of a woman to a man be correct? 388: The relationship between obligation (luzoom) and lawfulness (hall) is one of generality and specificity in one aspect. 388: The pure Shariah considered the marriage of a Muslim woman to a scripturalist (Kitabi) as adultery, but considered the marriage of a Muslim man to a scriptural woman as valid. What is the reason for this difference? 388: In the noble verse 'And lawful to you is what is beyond that,' 'hall' (lawful) means the absence of prohibition of intercourse, which is not incompatible with sin. 389: For a woman, the compatibility (kafaat) of the man is considered by consensus (ijma), but for an adult man, the woman's compatibility is of no account. 389: Permissibility (jawaz) in the sense of validity is not incompatible with impermissibility in the sense of prohibition and sin. 389: Lowliness of origin (dana'at-e-farash) does not become a reason for settled anger. 389: Rustaghfani is a reliable Imam in words and deeds; if on the Day of Judgment we are seized for acting upon his narration, we will hold onto his hem, saying we acted upon his instruction. 390: In the terminology of jurisprudence,

'jawaz' is used in two senses: one in the sense of validity (sihhat), which is more commonly used in contracts, and second in the sense of lawfulness (hall), which is more prevalent in actions. 390: Arguments for the prohibition of marrying a Sunni woman to people of bad sects. 390: Sale at the time of the Friday Adhan will be valid, even though it is prohibited and a sin. 390: First Proof 390: Validity necessitates lawfulness, but lawfulness does not necessitate validity. 390: If Satan makes you forget, then after remembering, do not sit with the wrongdoers.

खंड 11 फतवा रज़विया

386: यदि कोई वहाबी धर्म की किसी अनिवार्य बात का इनकार नहीं करता और न ही किसी अनिवार्य बात का इनकार करने वाले को मुसलमान कहता है, तो उसे सावधानी के तौर पर काफ़िर नहीं कहा जाएगा, और यही सावधानी जो कुफ़्र के फतवे से रोकती है, निकाह के निषेध से भी रोकती है। 386: अफीम और हशीश की बिक्री का हुक्म। 386: यह कैसी शरीयत है कि ज़बान के मामले में सावधानी बरती जाए और शर्मगाह के बारे में असावधानी बरती जाए। 386: 'जवाज़' (अनुमति) के ये दोनों अनुप्रयोग (वैधता और हलाल होने के अर्थ में) प्रचलित हैं और इनके अलावा कुछ अन्य अनुप्रयोग भी हैं। 386: न्यायशास्त्रीय आदेशों में वास्तविक घटनाओं का ध्यान रखा जाता है, न कि अघटित संभावनाओं का। 386: 'जवाज़' का अनुप्रयोग कभी-कभी 'नफ़ाज़' (कार्यान्वयन) के अर्थ में भी होता है। (हाशिया) 387: कुमार्गी (बद-मजहब) किसी सुन्नी की सुन्नी बेटी का 'कुफ़ु' (समान जोड़) नहीं हो सकता। 387: 'नफ़ाज़' (कार्यान्वयन), 'हल' (वैधता) और 'सेहत' (सटीकता) से एक मायने में अधिक विशिष्ट है, यानी कभी कार्यान्वयन होगा पर वैधता और सटीकता नहीं होगी, और कभी वैधता और सटीकता होगी पर कार्यान्वयन नहीं होगा। (हाशिया) 387: इस शंका का उत्तर कि जब अहले-किताब (किताब वाले) से विवाह जायज़ है, तो गैर-मुक़ल्लिद से क्यों जायज़ नहीं है। 387: 'जवाज़' कभी-कभी 'लुज़ूम' (अनिवार्यता) के अर्थ में आता है। 388: अहले-किताब से विवाह करने का क्या अर्थ है? 388: अनिवार्यता (लुज़ूम) और सटीकता व कार्यान्वयन (सेहत-ओ-नफ़ाज़) के बीच पूर्ण सामान्यता और विशिष्टता का संबंध है। 388: औरत की तुलना मर्द से कैसे सही हो सकती है। 388: अनिवार्यता (लुज़ूम) और वैधता (हल) के बीच एक पहलू से सामान्यता और विशिष्टता का संबंध है। 388: पवित्र शरीयत ने एक मुस्लिम महिला का निकाह किसी किताबी (किताब वाले) के साथ व्यभिचार माना है, जबकि मुस्लिम पुरुष का किताबी महिला के साथ निकाह सही माना है। इस अंतर का क्या कारण है? 388: पवित्र आयत 'वा-उहिल्ला लकुम मा-वरा-अ ज़ालिकुम' में 'हल' (वैध) का अर्थ संभोग के निषेध का न होना है, जो गुनाह के विरोधाभासी नहीं है। 389: स्त्री के लिए पुरुष की 'कफ़ाअत' (बराबरी) पर सर्वसम्मति (इज्मा) से ध्यान दिया जाता है, लेकिन वयस्क पुरुष के लिए स्त्री की बराबरी का कोई महत्व नहीं है। 389: सटीकता (सेहत) के अर्थ में 'जवाज़' (अनुमति), निषेध और पाप के अर्थ में 'अदम-ए-जवाज़' के विरोधाभासी नहीं है। 389: वंश की नीचता (दनाअत-ए-फ़राश) स्थाई क्रोध का कारण नहीं बनती। 389: रुस्तग़फ़नी कथनी और करनी में भरोसेमंद इमाम हैं; यदि क़यामत के दिन उनकी रिवायत पर अमल करने के कारण हमारी पकड़ हुई, तो हम उनका पल्ला

पकड़ेंगे कि हमने उनके निर्देश पर अमल किया था। 390: न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) की शब्दावली में 'जवाज़' दो अर्थों में प्रयुक्त होता है: एक सटीकता (सेहत) के अर्थ में, जो अनुबंधों में अधिक प्रचलित है, और दूसरा वैधता (हिल्लत) के अर्थ में, जो कार्यों में अधिक प्रचलित है। 390: कुमार्गियों (बद-मजहबों) के साथ सुन्नी महिला के विवाह के निषेध पर प्रमाण। 390: जुमे की अज़ान के समय बिक्री (क्रय-विक्रय) वैध होगी, हालांकि यह वर्जित और पाप है। 390: पहला प्रमाण 390: सटीकता (सेहत) से वैधता (हल) अनिवार्य होती है, लेकिन वैधता से सटीकता अनिवार्य नहीं होती। 390: यदि शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिमों (अत्याचारियों) के पास मत बैठो।

۳۸۶: جو وہابی کسی ضروری دین کا منکر نہ ہو اور نہ ہی کسی ضروری دین کے منکر کو مسلمان کہتا ہو تو اس کو برائے احتیاط کافر نہ کہیں گے، اور یہی احتیاط جو مانع تکفیر ہے مانع نکاح بھی ہے۔ ۳۸۶: افیون و حشیش کی بیع کا حکم۔ ۳۸۶: یہ کون سی شرع ہے کہ زبان کے باب میں احتیاط کیجئے اور فرج کے بارے میں بے احتیاطی۔ ۳۸۶: جواز کے یہ دونوں اطلاق (بمعنی صحت وحلت) تو شائع و ذائع ہیں اور ان کے سوا کچھ اور اطلاقات بھی ہیں۔ ۳۸۶: احکام فقہیہ میں واقعات ہی کا لحاظ ہوتا ہے نہ کہ احتمالات غیر واقعہ کا۔ ۳۸۶: جواز کا اطلاق کبھی نفاذ کے معنیٰ پر بھی ہوتا ہے۔ (حاشیہ) ۳۸۷: بد مذہب کسی سنیہ بنت سنی کا کفو نہیں ہو سکتا۔ ۳۸۷: نفاذ اخص من وجہ ہے حل اور صحت سے یعنی کبھی نفاذ ہوگا حل اور صحت نہیں ہوں گے اور کبھی حل وصحت ہوں گے نفاذ نہ ہوگا۔ (حاشیہ) ۳۸۷: اس شبہ کا جواب کہ جب اہل کتاب سے مناکحت جائز ہے تو غیر مقلد سے کیوں جائز نہیں۔ ۳۸۷: جواز کبھی لزوم کے معنیٰ کے لئے آتا ہے۔ ۳۸۸: اہل کتاب سے مناکحت کے کیا معنیٰ ہیں۔ ۳۸۸: لزوم اور صحت و نفاذ میں نسبت عموم و خصوص مطلق کی ہے۔ ۳۸۸: عورت کا مرد پر قیاس کیونکر صحیح ہو سکتا ہے۔ ۳۸۸: لزوم اور حل میں نسبت عموم و خصوص من وجہ کی ہے۔ ۳۸۸: شرع مطہر نے کتابی سے مسلمہ کا نکاح زنا مانا اور مسلم کا کتابیہ سے صحیح جانا، وجہ فرق کیا ہے۔ ۳۸۸: آیہ کریمہ "واحل لکم ماوراء ذالکم" میں حل بمعنی عدم حرمت وطی ہے جو گناہ کے منافی نہیں۔ ۳۸۹: عورت کے لئے کفاءت مرد بالاجماع ملحوظ ہے اور مرد بالغ کے حق میں کفاءت زن کا کچھ اعتبار نہیں۔ ۳۸۹: جواز بمعنی صحت، عدم جواز بمعنی ممانعت و اثم کے منافی نہیں۔ ۳۸۹: دناءت فراش وجہ غیظ مستقرش نہیں ہوتی۔ ۳۸۹: رستغفنی امام معتمد ہیں قول و فعل میں اگر روز قیامت ان کی روایت پر عمل میں ہم

سے گرفت ہوئی تو ہم ان کا دامن پکڑیں گے کہ ہم نے ان کے ارشاد پر عمل کیا۔ ۳۹۰: عرف فقہ میں جواز دو معنیٰ پر مستعمل ہے ایک بمعنی صحت اور عقود میں یہی زیادہ متعارف ہے، دوسرا بمعنی حلت اور افعال میں یہی زیادہ مروج ہے۔ ۳۹۰: بد مذہبوں سے سنیہ کی تزویج ممنوع ہونے پر دلائل۔ ۳۹۰: اذانِ جمعہ کے وقت بیع صحیح ہوگی اگرچہ ممنوع و گناہ ہے۔ ۳۹۰: دلیل اول ۳۹۰: صحت تو حل کو لازم ہے مگر حل صحت کو لازم نہیں۔ ۳۹۰: اگر شیطان تجھے بھلا دے تو یاد آنے پر ظالموں کے پاس مت بیٹھ۔

Fatawa Rizvia Volume 11

- (390) It is forbidden to voluntarily go to a place where evil exists and it cannot be denounced.
- (390) Second Proof
- (391) The Quran is witness that marriage is such a great bond that, whether desired or not, it creates mutual intimacy, love, affection, and kindness between them, and Hadith is a witness that what a husband has in a woman's heart, no one else has.
- (391) Love for a misbeliever (innovator) is a deadly poison.
- (391) He who befriends misbelievers is, according to the decree of the Quran, among them.
- (391) A person will be resurrected with those they love.
- (391) Third Proof.
- (391) Do not throw yourselves into destruction with your own hands.
- (391) Misbelief is actual destruction.
- (392) The influence of company, especially bad company, is proven by authentic Ahadith and experiences; there are five supporting points for this.
- (392) First Supporter: Five Hadith.
- (392) Parables and proverbs of good and bad companions.
- (392) Run away from the misguided and keep them away from you, lest they mislead you or throw you into tribulation.
- (392) Judge a companion by his companions.
- (393) Run away from a bad companion, for you will be known by them.
- (393) No other thing indicates another as much as one companion indicates the other.
- (393) Second Supporter: The husband being a ruler over the wife.
- (393) Third Supporter: The abundance of the element of acceptance and passivity in women.
- (393) Fourth Supporter: Women being deficient in intellect and religion.
- (393) Fifth Supporter: A husband's love in a wife's heart.
- (393) It is in the Hadith that love makes one blind and deaf.
- (393) A person follows the religion of his friend, so be careful who you befriend.
- (394) It doesn't take long for hearts to turn and thoughts to change.
- (394) The heart (qalb) is called so because it keeps turning (munqalib).

- (394) The pure Shariah, while forbidding something, also declares its precursors and invitations as forbidden.
- (394) It is a recognized maxim that the precursor to a forbidden act is also forbidden.
- (395) Just as adultery is forbidden, going near an adulterer is also forbidden.
- (395) It is not necessary for a cause to always lead to the result.
- (395) Fourth Proof.
- (395) Men are rulers and dominant over women.
- (395) The greatest right over a woman is that of her husband.

फ़तावा रिज़विया खंड 11

- (390) अपनी इच्छा से ऐसी जगह जाना हराम है जहाँ बुराई हो और उसे रोकना मुमकिन न हो।
- (390) दूसरी दलील।
- (391) कुरआन गवाह है कि वैवाहिक संबंध वह महान रिश्ता है जो चाहे-अनचाहे आपस में लगाव, प्रेम, स्नेह और दया पैदा करता है और हदीस गवाह है कि औरत के दिल में जो मकाम शौहर का होता है, वह किसी और का नहीं होता।
- (391) बद-मज़हब (कुधर्मी) की मुहब्बत जानलेवा ज़हर है।
- (391) बद-मज़हबों से दोस्ती करने वाला कुरआन के हुक्म के मुताबिक़ उन्हीं में से है।
- (391) आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह मुहब्बत रखता है।
- (391) तीसरी दलील।
- (391) अपने हाथों खुद को हलाकत (विनाश) में न डालो।
- (391) बद-मज़हबी ही असली हलाकत है।
- (392) सोहबत (संगति), ख़ास तौर पर बुरी सोहबत का असर पड़ जाना सही हदीसों और तजुर्बों से साबित है, इसके लिए पाँच ताईदी बातें (मुअय्यदात) हैं।
- (392) पहली ताईद: पाँच हदीसें।
- (392) अच्छे और बुरे साथी की मिसाल और कहावत।
- (392) गुमराहों से दूर भागो और उन्हें अपने से दूर करो, कहीं वे तुम्हें बहका न दें, कहीं वे तुम्हें फितने में न डाल दें।
- (392) साथी को उसके साथी से आंको।
- (393) बुरे साथी से दूर भाग कि तू उसी के साथ मशहूर होगा।
- (393) एक साथी जितना दूसरे के बारे में बताता है, उतना कोई और चीज़ दूसरी चीज़ के बारे में नहीं बताती।
- (393) दूसरी ताईद: शौहर का औरत पर हाकिम होना।
- (393) तीसरी ताईद: औरत में कुबूल करने और मुतासिर होने के मादा की ज़्यादती।
- (393) चौथी ताईद: औरतों का अक्ल और दीन में नाकिस होना।
- (393) पाँचवीं ताईद: औरत के दिल में शौहर की मुहब्बत।

- (393) हदीस में है कि मुहब्बत अंधा और बहरा कर देती है।
- (393) आदमी अपने महबूब (दोस्त) के दीन पर होता है, तो देख-भाल कर दोस्ती किया करो।
- (394) दिल पलटने और ख्याल बदलने में देर नहीं लगती।
- (394) दिल (क़ल्ब) को कहते ही इसीलिए हैं कि वह पलटता (मुनक़लिब) रहता है।
- (394) शरीअते मुतहरा जिस चीज़ को हराम फरमाती है, उसके मुक़द्दमे और दावत (उकसावे) को भी हराम बताती है।
- (394) मशहूर कहावत है कि हराम काम का मुक़द्दमा (प्रस्तावना) भी हराम है।
- (395) जिस तरह ज़िना हराम हुआ, ज़िना करने वाले के पास जाना भी हराम हुआ।
- (395) दावत (उकसावे) के लिए हमेशा नतीजे तक पहुँचना ज़रूरी नहीं।
- (395) चौथी दलील।
- (395) मर्द औरतों पर हाकिम और हावी हैं।
- (395) औरत पर सबसे बढ़कर हक़ उसके शौहर का है।

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

- (390) اپنے اختیار سے ایسی جگہ جانا حرام ہے جہاں منکر ہو اور انکار نہ ہوسکے۔
- (390) دلیل دوم
- (391) قرآن گواہ ہے کہ زن وشوئی وہ عظیم رشتہ ہے کہ خواہی نخواہی باہم انس و محبت والفت ورافت پیدا کرتا ہے اور حدیث شاہد ہے کہ عورت کے دل میں جو بات شوہر کی ہوتی ہے کسی کی نہیں ہوتی۔
- (391) بد مذہب کی محبت سم قاتل ہے۔
- (391) بد مذہبوں سے دوستی کرنے والا بحکم قرآن انہی میں سے ہے۔
- (391) آدمی کا حشر اسی کے ساتھ ہوگا جس سے وہ محبت رکھتا ہے۔
- (391) دلیل سوم۔
- (391) اپنے ہاتھوں ہلاکت میں نہ پڑو۔
- (391) بد مذہبی ہلاک حقیقی ہے۔
- (392) صحبت خصوصاً بد کا اثر پڑ جانا احادیث و تجارب صحیحہ سے ثابت ہے اس کے لئے پانچ مؤیدات۔
- (392) پہلا مؤید پانچ حدیثیں۔
- (392) اچھے، برے ہمنشیں کی تمثیل وکہاوت۔
- (392) گمراہوں سے دور بھاگو اور انہیں اپنے سے دور کرو کہیں وہ تمہیں بہک نہ دیں کہیں وہ تمہیں فتنے میں نہ ڈال دیں۔
- (392) مصاحب پر مصاحب کو قیاس کرو۔

- (393) برے ہمنشیں سے دور بھاگ کہ تو اسی کے ساتھ مشہور ہوگا۔
- (393) ایک ہمنشیں جس قدر دوسرے پر دلالت کرتا ہے اس قدر کوئی اور شئے دوسری شئے پر دلالت نہیں کرتی۔
- (393) دوسرا مؤید : شوہر کا عورت پر حاکم ہونا۔
- (393) تیسرا مؤید : عورت میں مادہ قبول وانفعال کی کثرت۔
- (393) چوتھا مؤید : عورتوں کا ناقصات العقل والدین ہونا۔
- (393) پانچواں مؤید : عورت کے دل میں شوہر کی محبت۔
- (393) حدیث میں ہے کہ محبت اندھا اور بہرا کردیتی ہے۔
- (393) آدمی اپنے محبوب کے دین پر ہوتا ہے تو دیکھ بھال کر دوستی کیا کرو۔
- (394) دل پلٹتے اور خیال بدلتے دیر نہیں لگتی۔
- (394) قلب کہتے ہی اسی لئے ہیں کہ وہ منقلب ہوتا ہے۔
- (394) شرع مطہر جس چیز کو حرام فرماتی ہے اس کے لئے مقدمہ اور داعی کو بھی حرام بتاتی ہے۔
- (394) مقولہ مسلمہ ہے کہ مقدمۃ الحرام حرام۔
- (395) جس طرح زنا حرام ہوا زنا کے پاس جانا بھی حرام ہوا۔
- (395) داعی کے لئے مفضی بالدوام ہونا ضرور نہیں۔
- (395) دلیل چہارم۔
- (395) مرد عورتوں پر حاکم ومسلط ہیں۔
- (395) عورت پر سب سے بڑھ کر حق اس کے شوہر کا ہے۔

Fatawa Razawiyya - Volume 11

Text	Ref	Text	Page
If prostration to other than God were permissible, a woman would be commanded to prostrate to her husband.	395	Marriage with a Kitabiyah (woman of the People of the Book) without necessity is disliked (Makruh).	400
Honoring a person of bad belief (heretic) is forbidden (Haram).	396	Marriage with a Kitabiyah Harbiyah (from a hostile territory) is prohibited and a sin upon investigation.	400
Whoever honors a person of bad belief has assisted in demolishing Islam.	396	Differences between man and woman in several aspects.	402
A transgressor (Fasiq) is legally obligated to be abased, and honoring him is impermissible.	396	Wahhabis have neither fear of God nor shame before creation.	403
Fifth Proof.	397	Sunnism and Wahhabism are clearly distinct, therefore the union of a Sunni and a Wahhabi is impossible.	403
Do not call a hypocrite 'leader' (Sardar), for if he is your leader, then indeed you have displeased your Lord, the Mighty and Sublime.	397	A Wahhabi becoming Sunni is as impossible as night becoming day or a Christian becoming a believer.	403
Sixth Proof.	398	Method of testing a person of doubtful state who denies being a Wahhabi.	404
A woman who becomes the wife of a person of bad belief is like one who has come under the control of a dog.	399	Eight gates of the Paradise of Sunnah which are guides of truth and righteousness.	405
	399		405

Text	Ref	Text	Page
One who takes back a gift is like a dog that vomits and then eats it again.		Zaid is Sunni and Hindah is Shia, they got married; is cohabitation legally permissible for them or not, and what is the ruling for the children?	
A person of bad belief is a dog, rather worse than a dog.	399	Zaid married the daughter of his biological sister's daughter by the decree of a scholar; how is this marriage and what is the ruling for that scholar?	406
People of bad belief are the dogs of the inhabitants of Hell.	399	Zaid married his wife's biological sister during his wife's lifetime, and after the second marriage, before valid seclusion (Khalwat Sahiha) or after seclusion, he divorced the first one; what is the ruling in both these cases?	410
People of bad belief are worse than all humans and worse than all animals.	400	When the wedded wife becomes eternally forbidden due to adultery with the mother-in-law, does veiling (Purdah) also become obligatory, or does she become like unmarriageable kin (Mahram) such that seeing, touching, and staying alone in a house is permissible?	410
Seventh Proof.	400	The issue of a missing woman (Zan-e-Mafqood).	412
With which Kitabiyah is marriage permissible?	400	Sayyid-Sayyid, Sheikh-Sheikh, Pathan-Pathan; in these communities, if there is an elder brother's daughter and a younger brother's son, is marriage permissible or not?	413

फतावा रज़विया - जिल्द 11

पाठ	संदर्भ	पाठ	पृष्ठ
अगर अल्लाह के सिवा किसी और को सजदा करना जायज़ होता, तो औरत को हुक्म दिया जाता कि वह अपने शौहर को सजदा करे।	३९५	किताबिया (अहले किताब की औरत) से बिना ज़रूरत निकाह मकरूह है।	४००
बद मज़हब (गुमराह) की ताज़ीम हराम है।	३९६	किताबिया हरबिया (दुश्मन मुल्क की औरत) से निकाह तहकीक के मुताबिक मना और गुनाह है।	४००
जिसने किसी बद मज़हब की इज़्ज़त की, उसने इस्लाम को ढा देने में मदद की।	३९६	मर्द और औरत में कई वजहों से फर्क।	४०२
फासिक शरीयत की नज़र में अपमान का हकदार है और उसकी ताज़ीम नाजायज़ है।	३९६	वहाबियों को न खुदा का खौफ है न मखलूक (सृष्टि) से हया।	४०३
दलील पंचम।	३९७	सुन्नियत और वहाबियत एक दूसरे के बिल्कुल उलट हैं, इसलिए सुन्नी और वहाबी का मेल नामुमकिन है।	४०३
मुनाफिक को सरदार कहकर मत पुकारो, क्योंकि अगर वह तुम्हारा सरदार है तो बेशक तुमने अपने रब अज़-व-जल्ल को नाराज़ किया है।	३९७	किसी वहाबी का सुन्नी होना वैसा ही नामुमकिन है जैसे रात का दिन होना या ईसाई का मोमिन होना।	४०३
दलील शशम (छठी)।	३९८	संदिग्ध स्थिति वाले वहाबियत का इंकार करने वाले को परखने का तरीका।	४०४
जो औरत किसी बद मज़हब की बीवी बनी, वह ऐसी ही है जैसे किसी कुत्ते के कब्ज़े में आ गई हो।	३९९	सुन्नत की जन्नत के आठ दरवाज़े जो हक और सच्चाई के रहनुमा हैं।	४०५

पाठ	संदर्भ	पाठ	पृष्ठ
अपनी दी हुई चीज़ वापस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता कय (उल्टी) करके उसे फिर चाट लेता है।	३९९	ज़ैद सुन्नी और हिन्दा शिया है, उनका निकाह हो गया है; क्या उनके लिए शरीयत के अनुसार सोहबत (सहवास) जायज़ है या नहीं, और औलाद का क्या हुक्म होगा?	४०५
बद मज़हब कुत्ता है बल्कि कुत्ते से भी बदतर है।	३९९	ज़ैद ने एक आलिम के कहने पर अपनी सगी बहन की नातिन से निकाह किया; यह निकाह कैसा है और उस आलिम का क्या हुक्म है?	४०६
बद मज़हब लोग जहन्नमियों के कुत्ते हैं।	३९९	ज़ैद ने अपनी बीवी के रहते हुए उसकी सगी बहन से निकाह किया और दूसरे निकाह के बाद खुलवत-ए-सहीहा (एकांत) से पहले या बाद में पहली को तलाक दे दी; इन दोनों सूरतों में क्या हुक्म है?	४१०
बद मज़हब लोग सब इंसानों से बदतर और सब जानवरों से बदतर हैं।	४००	सास के साथ ज़िना की वजह से जब निकाह वाली बीवी हमेशा के लिए हराम हो जाए, तो क्या उससे पर्दा भी फर्ज़ हो जाता है या वह महरमों की तरह हो जाती है कि देखना, छूना और अकेले मकान में रहना जायज़ हो?	४१०
दलील सप्तम (सातवीं)।	४००	गुमशुदा औरत (ज़न-ए-मफकूद) का मसला।	४१२
किस किताबिया से निकाह जायज़ है?	४००	सैयद-सैयद, शेख-शेख, पठान-पठान; इन कौमों में बड़े भाई की लड़की और छोटे भाई का लड़का हो तो निकाह जायज़ है या नहीं?	४१३

متن حوالہ		متن صفحہ	
اگر غیر خدا کو سجدہ روا ہوتا تو عورت کو حکم ہوتا کہ وہ اپنے شوہر کو سجدہ کرے۔	۳۹۵	کتابیہ سے بے ضرورت نکاح مکروہ ہے۔	۴۰۰
بد مذہب کی تعظیم حرام ہے۔	۳۹۶	کتابیہ حربیہ سے نکاح عند التحقیق ممنوع و گناہ ہے۔	۴۰۰
جس نے کسی بد مذہب کی توقیر کی اس نے اسلام کو ڈھادینے میں مدد کی۔	۳۹۶	مرد اور عورت میں کئی وجوہ سے فرق۔	۴۰۲
فاسق شرعاً واجب الاہانہ ہے اور اس کی تعظیم ناجائز ہے۔	۳۹۶	وہابیوں کو نہ خوف خدا ہے نہ خلق سے حیا۔	۴۰۳
دلیل پنجم۔	۳۹۷	سنیت و وہابیت سے صاف مباین ہے لہٰذا سنی و وہابی کا اجتماع ناممکن ہے۔	۴۰۳
منافق کو سردار کہہ کر مت پکارو کہ اگر وہ تمہارا سردار ہے تو بے شک تم نے اپنے رب عزوجل کو ناراض کیا ہے۔	۳۹۷	کسی وہابی کا سنی ہونا ایسے ہی محال ہے جیسے رات کا دن ہونا یا نصرانی کا مومن ہونا۔	۴۰۳

متن حوالہ		متن صفحہ	
دلیل ششم۔ جو عورت کسی بد مذہب کی جورو بنی وہ ایسی ہی ہے جیسے کسی کتے کے تصرف میں آئی۔	۳۹۸	مشتبہ الحال منکر وہابیت کو پرکھنے کا طریقہ۔	۴۰۴
اپنی دی ہوئی چیز پھیرنے والا ایسا ہے جیسے کتا قے کر کے اسے پھر کھالیتا ہے۔	۳۹۹	جنت سنت کے آٹھ باب جو ہادی حق و صواب ہیں۔	۴۰۵
بد مذہب کتا ہے بلکہ کتے سے بھی بدتر ہے۔	۳۹۹	زید سنی اور ہندہ شیعہ ہے ان کا نکاح ہوگیا ہے انہیں شرعاً ہمبستری جائز ہے یا نہیں، نیز اولاد کا کیا حکم ہوگا۔	۴۰۵
بد مذہب لوگ دوزخیوں کے کتے ہیں۔	۳۹۹	زید نے حقیقی بہن کی لڑکی کی لڑکی سے بحکم ایک عالم کے نکاح کیا، یہ نکاح کیسا ہے اور اس عالم کا کیا حکم ہے۔	۴۰۶
بد مذہب لوگ سب آدمیوں سے بدتر اور سب جانوروں سے بدتر ہیں۔	۴۰۰	زید نے اپنی بی بی کی زندگی میں اس کی خواہر حقیقی سے نکاح کیا اور دوسری سے نکاح کے بعد قبل خلوت صحیحہ یا بعد خلوت پہلی کو طلاق دے دی، ان دونوں صورتوں میں کیا حکم ہے۔	۴۱۰
		ساس سے زنا کے باعث جبکہ منکوحہ حرام ابدی ہو جائے تو اس سے پردہ بھی فرض ہو جاتا ہے یا وہ مثل محارم ہو جاتی ہے کہ دیکھنا چھونا تنہا مکان میں رہنا جائز ہے۔	۴۱۰

متن حوالہ		متن صفحہ	
دلیل ہفتم۔	۴۰۰	مسئلہ زن مفقود۔	۴۱۲
کون سی کتابیہ سے نکاح جائز ہے۔	۴۰۰	سید سید، شیخ شیخ، پٹھان پٹھان ان قوموں میں بڑے بھائی کی لڑکی اور چھوٹے بھائی کا لڑکا ہو تو نکاح جائز ہے یا نہیں۔	۴۱۳

- Zaid and Amr are real paternal cousins. What is the ruling regarding the marriage of one with the daughter of the other? And what is the ruling for non-real (cousins)? [413] | Three persons will never enter Paradise: the cuckold (dayyooth), a woman who adopts masculine traits, and the alcoholic. [416]
- Is marriage between brothers and sisters permissible, except for blood and foster siblings? [413] | Zaid committed 'Jam' Bayn al-Ukhtayn' (combining two sisters in marriage). Despite being forbidden, he did not comply. Consequently, Muslims avoided him; some supported him. Sharia-wise, is this avoidance justified or not? What is the ruling on eating, drinking, greeting, and talking with Zaid and his associates, and which woman is lawful for Zaid? [417]
- What is the ruling regarding marriage with the daughter of a non-real grandfather? [413] | What is the ruling for a Sunni giving his daughter in marriage to a Rafidi? And what is the ruling if a Sunni does so despite it being impermissible? [417]
- Paternal aunts, maternal aunts, sisters, and all women who are mahrams of a woman—marrying their husbands during their lifetime is forbidden for that woman. However, they do not become mahrams for her; the ruling for veiling (purdah) from them is the same as for strangers. [414] | What was the cause of kinship between Sunnis and Rafidis from the time of the predecessors until now? Did the scholars of that time not pay attention to this, or is there a difference between the Shias of that time and the Rafidis of today? [417]
- According to Sharia, the husband of a paternal aunt, husband of a maternal aunt, brother-in-law, husband of the elder brother, husband of the younger brother, and the sons of paternal and maternal uncles and aunts, as well as a stranger on the road, all fall under the same ruling. In fact, more caution is necessary with them. [415] | Initiating greetings (salam) with a known open sinner (fasiq-e-mu'allan) is disliked (makruh), as it is with an old joker, a liar, a frivolous person, one who hurls insults, one who stares or peeps at stranger women, a singer, a pigeon-fancier, etc. [418]
- Is it permissible for a Sunni to give his daughter in marriage to a Rafidi Tabarrai who slanders (qadhif) Hazrat Siddiqa (may Allah be pleased with her)? And what is the ruling if one does so despite it being impermissible? [415] | One who sits, eats, and drinks with a perpetrator of forbidden acts (haram) is like them. [419]

- One who slanders Hazrat Siddiqa (may Allah be pleased with her) is a cursed infidel (kaafir mal'oon). Whoever does not consider such a person an infidel is himself an infidel. [416] | The ill-effects (nahusat) of sin also affect others besides the doer. [419]
- He who marries his daughter or sister to a slanderer or an apostate is a 'dayyooth' (cuckold). [416] | Considering a non-prophet superior to a prophet is disbelief (kufr). [420]
- Allah will not look with mercy upon three types of people on the Day of Judgment: one who is disobedient to parents, a woman who resembles men, and the 'dayyooth'. [416] | Whoever considers the Great Quran as incomplete is an infidel. [420]
- | | Finding a Muslim among today's Rafidis is as difficult as finding a white-colored crow. [420]

- ज़ैद और अम्र सगे चचेरे भाई हैं। एक की दूसरे की बेटी से निकाह का क्या हुक्म है और गैर-सगे में क्या हुक्म है? [४१३] | तीन व्यक्ति जन्नत में कभी नहीं जाएंगे: दय्यूथ (वह पुरुष जो अपने परिवार की महिलाओं की अनैतिकता पर मूकदर्शक रहे), मर्दाना वेशभूषा वाली औरत और शराबी। [४१६]
- क्या सगे भाई-बहनों (खूनी और दूध के रिश्तों को छोड़कर) के बीच निकाह जायज़ है या नहीं? [४१३] | ज़ैद ने 'जमा बैन अल-उख़्तैन' (दो सगी बहनों से एक साथ निकाह) किया। मना करने के बावजूद वह नहीं माना। इस पर मुसलमानों ने उससे दूरी बना ली; कुछ ने उसका साथ दिया। शरीयत की दृष्टि से यह दूरी बनाना सही है या नहीं? और ज़ैद और उसके साथियों के साथ खाने-पीने, सलाम-कलाम का क्या हुक्म है, और ज़ैद के लिए कौन सी औरत हलाल है? [४१७]
- गैर-सगे दादा की बेटी से निकाह का क्या हुक्म है? [४१३] | सुन्नी का अपनी बेटी को राफ़ज़ी के निकाह में देना कैसा है और सुन्नी नाजायज़ होने के बावजूद दे तो क्या हुक्म है? [४१७]
- फूफी, खाला, बहन और इसी तरह वे सभी महिलाएं जो किसी महिला की मेहरम हैं—उनके जीवनकाल में उनके पतियों से उस महिला का निकाह हराम है। लेकिन वे उसके मेहरम नहीं हो जाते; उनके साथ पर्दा करने का वही हुक्म है जो किसी अजनबी के साथ है। [४१४] | पूर्वजों के समय से लेकर अब तक सुन्नियों और राफ़ज़ियों के बीच रिश्तेदारी का क्या कारण रहा? क्या उस समय के उलेमा ने इस ओर ध्यान नहीं दिया, या उस समय के शियाओं और आज के राफ़ज़ियों में कोई अंतर है? [४१७]
- शरीयत के अनुसार फूफा, खालू, बहनोई, जेठ, देवर और चचा, फूफी, खाला, मामा के बेटे और रास्ते में चलने वाले अजनबी—सबके लिए एक ही हुक्म है, बल्कि उनसे ज़्यादा सावधानी बरतना ज़रूरी है। [४१५] | खुले तौर पर गुनाह करने वाले (फासिक़-ए-मुअल्लन) को सलाम करने की पहल करना मकरूह है। इसी तरह बूढ़ा मज़ाकिया, झूठा, व्यर्थ बातें करने वाला, गालियां बकने वाला, अजनबी औरतों को घूरने और ताक-झांक करने वाला, गायक और कबूतरबाज़ आदि। [४१८]
- क्या सुन्नी को अपनी बेटी का निकाह हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) पर तोहमत लगाने वाले (क़ाज़िफ़) राफ़ज़ी तबर्रई से करना जायज़ है? और नाजायज़ होने के बावजूद भी

कोई ऐसा करे तो क्या हुक्म है? [४१५] | हराम काम करने वाले के साथ बैठने-उठने और खाने-पीने वाला भी उसी के समान है। [४१९]

- हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) पर तोहमत लगाने वाला काफ़िर और मलऊन है। जो उसे काफ़िर न समझे, वह स्वयं काफ़िर है। [४१६] | गुनाह की मनहूसियत (अशुभता) कर्ता के अलावा दूसरों पर भी होती है। [४१९]
- जो व्यक्ति अपनी बेटी या बहन का निकाह किसी तोहमत लगाने वाले या धर्मत्यागी (मुरतद) से करता है, वह दय्यूथ है। [४१६] | किसी गैर-नबी को नबी से श्रेष्ठ मानना कुफ़्र है। [४२०]
- अल्लाह तआला क़यामत के दिन तीन व्यक्तियों पर रहमत की नज़र नहीं फरमाएगा: माता-पिता का नाफ़रमान, पुरुषों के समान वेशभूषा धारण करने वाली स्त्री और दय्यूथ। [४१६] | जो क़ुरान-ए-अज़ीम को अधूरा (नाक़िस) माने, वह काफ़िर है। [४२०]
- | | आज के राफ़ज़ियों में किसी मुसलमान का मिलना उतना ही कठिन है जितना कौवों में सफ़ेद रंग का कौवा मिलना। [४२०]

पृष्ठ ७३९ में से ४२

- زید وعمر و حقیقی چچا زاد بھائی ہیں ایک کا دوسرے کی دختر سے نکاح کیسا ہے اور غیر حقیقی میں کیا حکم ہے۔ | ۴۱۳ | تین شخص جنت میں کبھی نہ جائیں گے ، دیوث، مردانی وضع کی عورت اور شرابی۔ | ۴۱۶
- آپس میں بھائی اور بہنوں سوائے نسبی اور رضاعی کے نکاح جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۱۳ | زید نے جمع بین الاختین کیا با وجود منع کرنے کے نہ مانا اس پر مسلمانوں نے اس سے اجتناب کیا بعض نے اس کا ساتھ دیا تو شرعاً یہ اجتناب حق ہے یا نہیں اور زید اور اس کے ہمراہیوں کے ساتھ کھانے پینے، سلام کلام کا کیا حکم ہے، اور زید پر کون سی عورت حلال ہے۔ | ۴۱۷
- غیر حقیقی دادا کی دختر سے نکاح کا کیا حکم ہے۔ | ۴۱۳ | سنی کو اپنی دختر رافضی کے نکاح میں دینا کیسا ہے اور سنی با وجود نا جائز کے دے تو کیا حکم ہے۔ | ۴۱۷
- پھو پھی خالہ بہن اسی طرح جتنی عورات عورت کے محارم ہیں ان کی زندگی میں ان کے شوہروں سے عورت کا نکاح اگر چہ حرام ہے مگر وہ عورت کے محارم نہیں ہو جاتے ان سے پردہ کا وہی حکم ہے جو اجنبی سے۔ | ۴۱۴ | زمانہ سلف سے اس وقت سنی اور رافضی کے درمیان قرابت کا کیا باعث ، آیا اس وقت میں علماء نے اس طرف توجہ نہیں فرمائی یا اس وقت کے شیعہ اور اب کے روافض میں کچھ فرق ہے۔ | ۴۱۷
- شرعاً پھوپھا، خالو، بہنوئی اور جیٹھ، دیور اور چچا، پھوپھی، خالہ، ماموں کے بیٹوں اور راہ چلتے اجنبی سب کا ایک حکم ہے بلکہ ان سے زیادہ احتیاط لازم۔ | ۴۱۵ | فاسق معلن سے

ابتداء بالسلام مکروہ ہے یونہی بوڑھا مذاقی، کذاب ، لاغی، گالیاں بکنے والا ، اجنبی عورتوں کو گھور نے اور تاک جھانک کرنے والا، گانے والا اور کبوتر باز وغیرہ۔ | ۴۱۸

- سنی کو اپنی دختر رافضی تبرائی قاذف حضرت صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے نکاح میں دینا جائز ہے یا نہیں، اور باوجود نا جائز کے بھی ایسا کرے تو کیا حکم ہے۔ | ۴۱۵ | مرتکب حرام کے ساتھ اٹھنے بیٹھنے اور کھانے پینے والا بھی اسی کی مثل ہے۔ | ۴۱۹
- حضرت صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا قاذف کافر ملعون ہے جو اسے کافر نہ جانے خود کافر ہے۔ | ۴۱۶ | گناہ کی نحوست فاعل کے غیر پر بھی ہوتی ہے۔ | ۴۱۹
- جو شخص اپنی دختر یا خواہر کا نکاح قاذف یا مرتد سے کرے وہ دیوث ہے | ۴۱۶ | غیر نبی کو نبی سے افضل ماننا کفر ہے۔ | ۴۲۰
- اللہ تعالیٰ قیامت کے دن تین شخصوں پر نظر رحمت نہیں فرمائے گا، ماں باپ کا نافرمان، مردوں سے مشابہت رکھنے والی عورت اور دیوث۔ | ۴۱۶ | جو قرآن عظیم کو ناقص مانے کافر ہے۔ | ۴۲۰
- | | آج کل کے رافضیوں میں کوئی مسلمان ملنا ایسا ہی مشکل ہے جیسا کوئوں میں سپید رنگ والا۔ | ۴۲۰

Volume 11 | Fatawa Razawiyya

Marriage with Rafidis is absolutely forbidden and is pure adultery. | 420 | The issue of joining two sisters in marriage. | 422 Whoever gives his sister or daughter to Rafidis is a cuckold (dayyooth). | 420 | Immediately after the death of the wife, marriage with her niece (sister's or brother's daughter) is permissible. | 423 Cursing the two Sheikhs (Abu Bakr and Umar), may Allah be pleased with them, is absolute disbelief according to the noble jurists. | 420 | Zaid performed a girl's marriage and went abroad, leaving the son-in-law, the girl, and his wife at home. Returning after six months, he found the woman pregnant. Investigation revealed it was from the son-in-law. Did the girl remain in the son-in-law's marriage? Is divorce needed? Is dower obligatory? Did the wife remain Zaid's after childbirth? Can his wife marry the son-in-law? | 423 Giving a daughter to a misguided and irreligious person is religiously sinful and prohibited. | 420 | Is marriage with the step-father's brother permissible or not? | 424 The difference between Rafidis of the earlier era and the current era. | 421 | Zaid's in-laws became angry for some reason and called his wife. Zaid's parents said they'd send her back once anger subsided. The wife went to a ceremony in Mukan Bajir, where her father-in-law's men forcibly took her. Now they claim Zaid divorced her and want to remarry her elsewhere. What is the ruling on this marriage and intercourse with the second husband? | 425 A woman married another person after divorce before 'iddah passed. Now angry with the second husband, she and her heirs claim the marriage was invalid due to being during 'iddah. What is the ruling on her marriage to a third person? | 421 | Whoever spoils a woman (against her husband) is not from the group of the Messenger of Allah (PBUH) according to Hadith. | 425 A marriage occurring within 'iddah due to ignorance of 'iddah can be annulled by either party in front of the other. | 422 | Breaking a woman away from her husband to marry her to another is the most severe and foulest oppression. | 426 There is no difference between separation (mutarakah) and annulment (faskh), this is the truth; Allama Maqdisi confirmed this. | 422 | False testimony is equated to idol worship. | 426 Can the foster sister of Zaid's biological sister marry Zaid? | 422 | A false witness's feet won't move from their place before Allah makes Hellfire mandatory for him. | 426

राफ़िज़ियों के साथ निकाह कतई हराम और शुद्ध ज़िना (व्यभिचार) है। | ४२० | दो बहनों को एक साथ निकाह में रखने का मसला। | ४२२ जो अपनी बहन या बेटी राफ़िज़ियों को दे वह दय्यूत है। | ४२० | पत्नी के निधन के बाद उसकी भांजी या भतीजी से तुरंत निकाह जायज़ है। | ४२३ हज़रत शेख़ैन (अबू बक्र और उमर) रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर तबरा (गाली-गलौज) करना फुकाहा-ए-किराम के नज़दीक मुतलक कुफ़्र है। | ४२० | ज़ैद लड़की का निकाह करके बाहर चला गया, दामाद, लड़की और अपनी बीवी को घर पर छोड़ गया, छह महीने बाद वापस आया तो औरत को गर्भवती पाया, जांच के बाद पता चला कि वह दामाद से गर्भवती है। तो लड़की दामाद के निकाह में रही या नहीं। तलाक़ की ज़रूरत है या नहीं। महर लाज़िम है या नहीं। और पत्नी प्रसव के बाद ज़ैद की रही या नहीं, और दामाद के निकाह में उसकी पत्नी आ सकती है या नहीं। | ४२३ गुमराह और बेदीन को बेटी देना शरई तौर पर गुनाह और मना है। | ४२० | सौतेले बाप के भाई से निकाह जायज़ है या नहीं। | ४२४ पहले दौर और मौजूदा दौर के राफ़िज़ियों में अंतर। | ४२१ | ज़ैद से उसके ससुर और सास किसी कारण से नाराज़ हुए, ज़ैद की पत्नी को बुलाया, ज़ैद के माता-पिता ने कहा जब नाराज़गी दूर हो जाएगी तो भेज देंगे, ज़ैद की पत्नी मकां बज़र में किसी समारोह में गई वहाँ से ज़ैद के ससुर के आदमी ज़बरदस्ती उसे ले गए अब बुलाने पर कहते हैं कि ज़ैद ने तलाक़ दे दी है दूसरी जगह निकाह कर देना चाहते हैं इस निकाह और दूसरे शौहर से हमबिस्तरी का क्या हुक्म है। | ४२५ औरत ने तलाक़ के बाद इद्दत गुज़रने से पहले दूसरे से निकाह कर लिया, अब दूसरे शौहर से नाराज़ है वह और उसके वारिस कहते हैं कि निकाह इद्दत के अंदर हुआ था इसलिए जायज़ न हुआ, अब तीसरे व्यक्ति से उसके निकाह का क्या हुक्म है। | ४२१ | जो किसी औरत को उसके शौहर से बिगाड़ दे, हदीस के अनुसार वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गिरोह से नहीं है। | ४२५ इद्दत के अंदर जो निकाह इद्दत के इल्म न होने के कारण हुआ उसका निरसन (फ़स्ख़) मर्द और औरत दोनों में से हर एक दूसरे के सामने कर सकता है। | ४२२ | औरत को अपने शौहर से तुड़वा कर दूसरे के निकाह में करा देना अत्यंत और निकृष्टतम ज़ुल्म है। | ४२६ मुतारकः(अलगाव) और फ़स्ख़ में कोई अंतर नहीं यही सत्य है, अल्लामा मक़दिसी ने इस पर ज़ोर दिया है। | ४२२ | झूठी गवाही बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) के बराबर की गई है। | ४२६ क्या ज़ैद की सगी बहन की रज़ाई (दूध शरीक) बहन ज़ैद के निकाह में आ सकती है। | ४२२ | झूठे गवाह के कदम अपनी जगह से हटने नहीं पाएंगे कि अल्लाह तआला उस पर जहन्नुम का अज़ाब वाजिब कर देगा। | ४२६

পৃষ্ঠ ৪৩/৭৩৯

رافضیوں کے ساتھ مناکحت حرام قطعی اور زنائے خالص ہے۔ | ۴۲۰ | مسئلہ جمع بین الاختین۔ | ۴۲۲ جو اپنی بہن یا بیٹی رافضیوں کے دے وہ دیوث ہے۔ | ۴۲۰ | بعد انتقال زوجہ اس کی بھانجی بھتیجی سے فوراً نکاح جائز ہے۔ | ۴۲۳ حضرات شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر تبرا فقہاء کرام کے نزدیک مطلقاً کفر ہے۔ | ۴۲۰ | زید لڑکی کا نکاح کرکے باہر چلا گیا، داماد اور لڑکی اور اپنی بی بی کو مکان پر چھوڑ گیا، چھ ماہ بعد واپس آیا تو عورت کو حاملہ پایا، بعد تحقیق معلوم ہوا کہ داماد سے حاملہ ہے۔ تو لڑکی داماد کے نکاح میں رہی یا نہیں۔ طلاق کی ضرورت ہے یا نہیں۔ مہر لازم ہے یا نہیں۔ اور زوجہ بعد وضع حمل زید کی رہی یا نہیں، اور داماد کے نکاح میں اس کی زوجہ آسکتی ہے یا نہیں۔ | ۴۲۳ گمراہ و بد دین کو بیٹی دینا شرعاً گناہ و ممنوع ہے۔ | ۴۲۰ | سوتیلے باپ کے بھائی سے نکاح جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۲۴ پہلے دور اور موجودہ دور کے رافضیوں میں فرق۔ | ۴۲۱ | زید سے اس کے خسر و خوشدامن کسی سبب ناراض ہوئے زوجہ زید کو بلایا زید کے ماں باپ نے کہا جب ناراضی دور ہوجائے گی بھیج دیں گے، زوجہ زید مکاں بجر پر کسی تقریب میں گئی وہاں سے خسر زید کے آدمی زبر دستی اسے لے گئے اب بلانے سے کہتے ہیں کہ زید نے طلاق دے دی ہے دوسری جگہ نکاح کر دینا چاہتے ہیں اس نکاح اور شوہر ثانی سے وطی کا کیا حکم ہے۔ | ۴۲۵ عورت نے بعد طلاق عدت گزرنے سے پہلے دوسرے سے عقد کر لیا اب شوہر ثانی سے ناراض ہے وہ اور اس کے ورثاء کہتے ہیں کہ نکاح عدت کے اندر ہوا تھا اس لئے جائز نہ ہوا اب شخص ثالث سے اس کے نکاح کا کیا حکم ہے۔ | ۴۲۱ | جو کسی عورت کو اس سے بگاڑ دے بحکم حدیث وہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے گروہ سے نہیں۔ | ۴۲۵ عدت کے اندر جو نکاح بوجہ عدم علم عدت ہوا اس کا فسخ مرد و عورت دونوں میں

سے ہر ایک دوسرے کے سامنے کر سکتا ہے۔ | ۴۲۲ | عورت کو اپنے شوہر سے توڑ کر دوسرے کے نکاح میں کرا دینا اشد واخبث ظلم ہے۔ | ۴۲۶ متارکہ اور فسخ میں کوئی فرق نہیں یہی حق ہے، علامہ مقدسی نے اس پر جزم فرمایا۔ | ۴۲۲ | جھوٹی گواہی بت پوجنے کے برابر کی گئی ہے۔ | ۴۲۶ کیا زید کی حقیقی بہن کی رضاعی بہن زید کے نکاح میں آ سکتی ہے۔ | ۴۲۲ | جھوٹے گواہ کے قدم اپنی جگہ سے ہٹنے نہیں پائیں گے کہ اللہ تعالیٰ اس پر عذاب جہنم واجب کر دے گا۔ | ۴۲۶

Fatwa Razawiya, Volume 11

- Zaid is an Imam of a mosque; he practiced 'Jam' bayn al-ukhtayn' (combining two sisters in marriage). Upon objection, he claimed it is permissible according to Imam Shafi'i. What is the ruling on making him Imam and praying behind him? | 446 | Hurting parents is one of the gravest major sins. | 444
- Zaid had two wives. From the first wife, Amr, and from the second, Bakr, Khalid, and Waleed. Amr's son is Saeed; Saeed's daughter is Laila; Laila's daughter is Salma. Is Salma forbidden (haram) or permissible (halal) for Amr's step-brothers? | 447 | One who is afflicted with two calamities should choose the lesser of the two. | 444
- A woman became pregnant through adultery during her waiting period ('iddah). Now, after the 'iddah period, the adulterer wants to marry her. Is it permissible or not? And what is the ruling on intercourse before childbirth? | 449 | Those who consider the Sharia ruling false and the issues of disbelievers as correct are clear disbelievers and apostates. Socializing with them is forbidden. | 444
- Is marriage between the children of two real brothers or paternal uncles' children valid? If it is halal, then what about someone who doesn't accept it and says, 'Even though this is a Sharia matter, we don't practice it; it has never happened in our community since the time of our ancestors.' What is the ruling on socializing with such people and praying behind them? If parents are unhappy with opposing them, should one obey parents or Sharia? | 430 | There is no obedience to anyone in disobedience to Allah. | 444
- Hadrat Imam Abdullah Mahd (may Allah be pleased with him) was the first person in the world whose parents were both Fatimi; that is why he is called Mahd. After his passing, his pure wife Hadrat Fatima Sughra (may Allah be pleased with her) kept a tent over his grave for a year. | 431 | Obedience to parents regarding socializing with apostates is impermissible. | 444
- Proof of building domes over shrines. | 431 | Jurists declare one a disbeliever (kafir) if they consider any matter of the disbelievers good. For example, if someone says not talking while eating is a good trait of the Magians, or refraining from intercourse during menstruation is a good custom of the Magians, they become a kafir. | 445
- 'Al-Sabt' is a verbal noun and its meaning is 'veneration of Saturday'. | 433 | If someone tells another, 'the Sharia ruling is thus,' and they reply, 'I act according

to my custom, not Sharia,' then according to some scholars, they become a kafir. | 445

- 'Do not lean towards the wrongdoers, lest the Fire touch you.' | 433 | What is the ruling on marrying the daughter of a real nephew? | 445
- Praying behind an open sinner (fasiq mu'lin) is 'Makruh Tahrimi' (prohibitively disliked), and making him an Imam is a sin. | 433 | The issue of a Sunni man marrying a Rafidi (Shia) woman. | 536

- ज़ैद एक मस्जिद का इमाम है, उसने दो बहनों को एक साथ निकाह में रखा (जमे बैनुल अखतैन किया)। आपत्ति करने पर उसने कहा कि यह इमाम शाफ़ई के यहाँ जायज़ है। उसे इमाम बनाना और उसके पीछे नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है? | ४४६ | माता-पिता को कष्ट देना सबसे बड़े गुनाहों (कबायेर) में से है। | ४४४
- ज़ैद की दो पत्नियाँ थीं। पहली पत्नी से अम्र और दूसरी से बक्र, खालिद और वलीद हुए। अम्र का बेटा सईद, सईद की बेटी लैला, लैला की बेटी सलमा। क्या यह सलमा अम्र के सौतेले भाइयों के लिए हराम है या हलाल? | ४४७ | जो व्यक्ति दो बलाओं (मुसीबतों) में फंसा हो, उसे चाहिए कि उनमें से हल्की को चुने। | ४४४
- इद्दत के दौरान एक महिला व्यभिचार से गर्भवती हो गई। अब इद्दत के दिन बीतने के बाद व्यभिचारी उससे निकाह करना चाहता है, क्या यह जायज़ है या नहीं? और प्रसव से पहले संभोग का क्या हुक्म है? | ४४९ | शरीयत के हुक्म को गलत और काफ़िरों के मसले को सही मानने वाले स्पष्ट काफ़िर और धर्मत्यागी (मुरतद) हैं। उनसे मेल-जोल हराम है। | ४४४
- क्या दो सगे भाइयों या ताया या चचा के बच्चों का आपस में निकाह सही है या नहीं? अगर हलाल है तो जो इसे न माने और कहे कि भले ही यह शरीयत का मसला है लेकिन हम इस पर अमल नहीं करते, हमारे खानदान में बाप-दादा के ज़माने से ऐसा कभी नहीं हुआ, ऐसे लोगों से मेल-जोल और उनके पीछे नमाज़ का क्या हुक्म है? अगर इनके विरोध में माता-पिता नाराज़ हों तो माता-पिता की बात मानी जाए या शरीयत की? | ४३० | अल्लाह तआला की अवज्ञा में किसी की आज्ञाकारिता नहीं। | ४४४
- हज़रत इमाम अब्दुल्लाह महज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) दुनिया के पहले व्यक्ति थे जिनके माता-पिता दोनों फ़ातिमी थे, इसीलिए आपको महज़ कहा जाता है। आपके देहांत के बाद आपकी पवित्र पत्नी हज़रत फ़ातिमा सुग़रा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने आपकी क़ब्र पर एक साल तक खेमा लगाए रखा। | ४३१ | धर्मत्यागियों से मेल-जोल के मामले में माता-पिता की आज्ञा मानना नाजायज़ है। | ४४४
- मज़ारों पर गुंबद बनाने का प्रमाण। | ४३१ | जो व्यक्ति काफ़िरों की किसी बात को अच्छा समझे, फ़ुक़हा (धर्मशास्त्री) उसे काफ़िर करार देते हैं। यहाँ तक कि अगर कोई कहे कि भोजन

के समय चुप रहना मजूसियों की अच्छी बात है या मासिक धर्म के दौरान संभोग न करना मजूसियों की अच्छी रस्म है, तो वह काफ़िर हो जाएगा। | ४४५

- 'अस-सब्त' एक स्रोत (मस्दर) है और इसका अर्थ है 'शनिवार का सम्मान'। | ४३३ | अगर कोई किसी से कहे कि शरीयत का हुक्म यह है और वह जवाब में कहे कि मैं तो अपनी रस्म के मुताबिक काम करता हूँ, शरीयत से नहीं, तो कुछ विद्वानों के अनुसार वह काफ़िर हो जाएगा। | ४४५
- 'ज़ालिमों की ओर मत झुको वरना तुम्हें जहन्नम की आग छुएगी।' | ४३३ | सगे भांजे की बेटी से निकाह का क्या हुक्म है। | ४४५
- खुले गुनहगार (फ़ासिक़ मुअ़लिन) के पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी है और उसे इमाम बनाना गुनाह है। | ४३३ | सुन्नी मर्द का राफ़ज़ी (शिया) औरत से निकाह का मसला। | ५३६

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

- زید ایک مسجد کا امام ہے اس نے جمع بین الاختین کیا، اعتراض پر کہا یہ امام شافعی کے یہاں جائز ہے، اسے امام بنانا اور اس کے پیچھے نماز کا کیا حکم ہے۔ | ۴۴۶ | ایذاء والدین اشد کبائر ہے۔ | ۴۴۴
- زید کی دو زوجہ تھیں، زوجہ اولی سے عمرو اور ثانیہ سے بکر خالد ولید، عمرو کا بیٹا سعید سعید کی دختر لیلی، لیلی کی دختر سلمی یہ سلمی عمرو کے سوتیلے بھائیوں پر حرام ہے یا حلال۔ | ۴۴۷ | جو دو بلاؤں میں مبتلی ہو اسے چاہئے کہ ان میں سے ہلکی کو اختیار کرے۔ | ۴۴۴
- عدت کے اندر عورت زنا سے حاملہ ہوئی، اب زانی بعد مرور ایام عدت نکاح چاہتا ہے جائز ہے یا نہیں۔ اور وطی قبل وضع کا کیا حکم ہے۔ | ۴۴۹ | حکم شرع کو باطل اور مسئلہ کفار کو صحیح ماننے والے صریح کفار ومرتدین ہیں ان سے میل جول حرام ہے۔ | ۴۴۴
- دو حقیقی یا تایا یا چچازاد بھائیوں کی اولاد کا آپس میں نکاح درست ہے یا نہیں، حلال ہے تو جواسے نہ مانے اور کہے کہ گویہ مسئلہ شرع کا ہے لیکن ہم اس پر عمل نہیں کرتے، ہماری برادری میں باپ دادا سے کبھی ایسا نہیں ہوا، ایسے لوگوں سے میل جول اور ان کے پیچھے نماز کا کیا حکم، اگر ان کی مخالفت میں ماں باپ ناراض ہوں تو والدین کی اطاعت کرے یا شرع کی۔ | ۴۳۰ | اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں کسی کی اطاعت نہیں۔ | ۴۴۴
- حضرت امام عبداللہ محض رضی اللہ تعالیٰ عنہ دنیا میں پہلے شخص تھے جن کے ماں باپ دونوں فاطمی ہیں اسی لئے آپ کو محض کہا جاتا ہے آپ کے وصال کے بعد آپ کی قبر پر

ایک سال تک آپ کی زوجہ مطہرہ حضرت فاطمہ صغری رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے خیمہ بنائے رکھا۔ | ۴۳۱ | مرتدین سے میل جول کے بارے میں والدین کی اطاعت ناجائز ہے۔ | ۴۴۴

- مزارات پر قبہ بنانے کا ثبوت۔ | ۴۳۱ | جو کسی امر کفار کو اچھا جانے فقہاء اس کی تکفیر کرتے ہیں یہاں تک اگر یوں کہے کہ وقت طعام ترک کلام مجوسیوں کی اچھی بات ہے یا ترک مجامعت بحالت حیض مجوسیوں کی اچھی رسم ہے تو کافر ہو جائے۔ | ۴۴۵
- السبت مصدر ہے اور اس کا معنی ہے تعظیم السبت۔ | ۴۳۳ | اگر کوئی کسی کو کہے کہ حکم شرع یوں ہے وہ جواب میں کہے کہ میں تو اپنی رسم کے مطابق کام کرتا ہوں شرع سے نہیں۔ تو بعض علماء کے نزدیک کافر ہو جائے گا۔ | ۴۴۵
- ظالموں کی طرف میل مت کرو ورنہ تمہیں جہنم کی آگ چھوئے گی۔ | ۴۳۳ | حقیقی بھانجہ کی بیٹی سے نکاح کا کیا حکم۔ | ۴۴۵
- فاسق معلن کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے اور اسے امام بنانا گناہ ہے۔ | ۴۳۳ | مسئلہ نکاح زن رافضیہ با سنی۔ | ۵۳۶

Fatawa Razwiya, Volume 11

Page	Subject
437	Ruling on marriage with a step-maternal aunt.
437	If one has intercourse with a mother-in-law or sister-in-law, does the wife become excluded from marriage, and is there 'iddah for her or not?
437	Is it permissible to bring two such women into marriage at the same time who, if one were considered a man, would fall under prohibited categories?
438	A mother-in-law married her deceased minor daughter's husband; what is the ruling?
438	Ruling on marriage with a step-son's wife.
439	Marriage with a stepmother is prohibited.
439	A person performs a marriage during 'iddah and interprets "yatarabbasna" [they shall wait] as only avoiding intercourse; what is the ruling?
441	
444	If a marriage has occurred as fasid (irregular), the woman alone possesses the right of annulment.
445	Hind had an illicit relationship with Zaid, then she married off her widowed daughter without the daughter's consent to someone other than Zaid; after divorce, can her marriage to another person take place or not?
445	For proof of prohibition by affinity (musaharat), it is necessary for the female to be 'mushtahat' (at the age of desire).
446	Meaning of "The presence of desire from one of them is sufficient."
446	For prohibition by affinity, it is necessary for both to be desirer and desired; presence of desire at the time of touching etc. from one is enough.
446	How is marriage with the daughter of a niece (brother's/sister's daughter) or nephew (brother's/sister's son)?
447	A Sunni man had a Shia formula read for marriage with a Rafizi woman; the marriage did not occur according to the Sunni way; both remained in their religions; what is the status of the offspring?
447	

Page	Subject
	How is marriage with a prostitute? If permissible, is it after repentance or without repentance?
441	Four inherited interpretations are recorded for the noble verse "The fornicatress shall not be married except by a fornicator or a polytheist."
443	Before formal abandonment and separation among prohibited degrees in an unconsummated marriage, is another person's marriage [to the woman] valid or not?
443	Who is a Sharia judge? Who here has the right of annulment and separation?
444	A second abandonment or separation is necessary; if the husband does not perform abandonment, what should be done?
444	In an Islamic state, a Muslim ruler is a deputy of the Sharia, provided he is not a Wahhabi, Rafizi, Qadiani, etc.
	Declaring Rafizis as infidels is mandatory due to their cursed beliefs like 'raj'at' (the return of the dead to the world).
448	Marriage of a pregnant woman is permissible.
448	How should the marriage of a 'Bora' person be conducted?
448	Issue regarding a woman whose husband's whereabouts are unknown (mafqud-ul-khabar).
449	Investigation into the difference between abandonment (matarka) and annulment (faskh).
451	Ruling on marriage with the granddaughter of a paternal uncle.

फतावी रज़विया, जिल्द 11

पृष्ठ	विषय
437	सौतेली खाला से निकाह का हुक्म।
437	सास या साली से सोहबत (संभोग) करे तो क्या औरत निकाह से बाहर हो जाती है और उसकी इद्दत है या नहीं।
437	ऐसी दो औरतों का एक ही समय में निकाह में लाना कि यदि एक को पुरुष मान लिया जाए तो वे हराम रिश्तों (महरमात) के दायरे में आ जाएँ दुरुस्त है या नहीं।
438	सास ने अपनी नाबालिग बेटी के मर जाने के बाद उसके पति से निकाह किया, क्या हुक्म है।
438	सौतेले बेटे की पत्नी से निकाह का हुक्म।
439	सौतेली माँ से निकाह हराम है।
439	एक व्यक्ति इद्दत के दौरान निकाह करा देता है और "यतरब्बसन" (वे प्रतीक्षा
444	यदि निकाह फासिद (अनियमित) हुआ हो, तो अकेले औरत को फ़स्ख (रद्द करने) का अधिकार है।
445	हिंदा ने ज़ैद के साथ अवैध संबंध रखे, फिर उसने अपनी विधवा बेटी का निकाह बेटी की मर्ज़ी के बिना ज़ैद के अलावा किसी और से कर दिया; तलाक़ के बाद अब उसका निकाह दूसरे से हो सकता है या नहीं।
445	हुरमत-ए-मुसाहरत (निकाह द्वारा होने वाली निषेधता) के प्रमाण के लिए 'मुश्तहात' (इच्छा की आयु) होना ज़रूरी है।
446	"दोनों में से किसी एक में इच्छा का होना पर्याप्त है" का अर्थ।
446	हुरमत-ए-मुसाहरत के लिए दोनों का इच्छुक और वांछनीय होना ज़रूरी है; छूने आदि के समय एक की ओर से भी इच्छा की मौजूदगी काफी है।
446	भतीजी, भांजी, भतीजे या भांजे की बेटी से निकाह कैसा है।
447	एक सुन्नी ने राफ़ज़ी महिला से शिया पद्धति से निकाह कराया, सुन्नी पद्धति से निकाह नहीं

पृष्ठ	विषय
	करें) का अर्थ केवल संभोग से बचने पर लगाता है, उसका क्या हुक्म है।
441	वेश्या से निकाह कैसा है। जायज़ है तो तौबा (पश्चाताप) के बाद या बिना तौबा के।
441	आयत-ए-करीमा "ज़ानिया से कोई निकाह न करे सिवाए ज़ानी या मुशरिक के" में चार तफ़सीरें (व्याख्याएं) वर्णित हैं।
443	गैर-मदखूला (जिसके साथ संभोग न हुआ हो) हराम रिश्तों के बीच मतारका (परित्याग) और तफ़रीक (अलगाव) से पहले, दूसरे व्यक्ति से निकाह दुरुस्त है या नहीं।
443	शरई काज़ी कौन है? यहाँ फ़स्ख (विच्छेद) और तफ़रीक का अधिकार किसके पास है।
444	मतारका या दूसरी तफ़रीक ज़रूरी है और यदि पति मतारका नहीं करता तो क्या किया जाए।
444	इस्लामी रियासत में मुस्लिम शासक शरीयत का प्रतिनिधि है, बशर्ते कि वह वहाबी, राफ़ज़ी, क़ादियानी आदि न हो।
447	राफ़ज़ियों को उनके मलयून (शापित) अक़ीदों, जैसे कि मृतकों का दुनिया में लौटना (रजअत), के कारण काफ़िर ठहराना अनिवार्य है।
448	गर्भवती महिला का निकाह जायज़ है।
448	बोरा व्यक्ति का निकाह किस तरह किया जाए।
448	उस महिला का मसला जिसका पति लापता हो (मफ़क़ूद-उल-ख़बर)।
449	मतारका (परित्याग) और फ़स्ख (विच्छेद) के बीच अंतर का शोध।
451	चाचा की पोती से निकाह का हुक्म।

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

صفحہ	مضمون
۴۳۷	سوتیلی خالہ سے نکاح کا حکم۔
۴۳۷	ساس یا سالی سے صحبت کرے تو کیا عورت نکاح سے باہر ہو جاتی ہے اور اس کی عدت ہے یا نہیں۔
۴۳۷	ایسی دو عورتوں کا ایک وقت میں نکاح میں لانا کہ ایک کو مرد قرار دیں تو صورتِ محرمات میں آجائیں درست ہے یا نہیں۔
۴۳۸	ساس نے اپنی نابالغہ لڑکی کے مر جانے کے بعد اس کے شوہر سے نکاح کیا، کیا حکم ہے۔
۴۳۸	سوتیلے بیٹے کی بی بی سے نکاح کا حکم۔
۴۴۴	نکاح اگر فاسد واقع ہوا ہو تو تنہا عورت حقِ فسخ رکھتی ہے۔
۴۴۵	ہندہ نے زید سے ناجائز تعلق رکھا پھر اپنی بیوہ دختر کا نکاح بے رضا مندی دختر بغیر زید سے کر دیا ہے طلاق اب اس کا نکاح دوسرے سے ہو سکتا ہے یا نہیں۔
۴۴۵	ثبوتِ حرمتِ مصاہرت کے لئے مشتہاۃ ہونا ضروری ہے۔
۴۴۶	"وجودالشھوۃ من احدھما یکفی" کے معنی۔
۴۴۶	حرمتِ مصاہرت کے لئے دونوں کا مشتہی و مشتہاۃ ہونا ضروری ہے وجودِ شہوت وقتِ مس وغیرہ ایک سے کافی ہے۔

صفحہ	مضمون
۴۳۹	سوتیلی ماں سے نکاح حرام ہے۔
۴۳۹	ایک شخص عدت میں نکاح پڑھوا دیتا ہے اور "یتربصن" کو صرف جماع سے بچنے پر حمل کرتا ہے اس کا کیا حکم ہے۔
۴۴۱	رنڈی سے نکاح کیسا ہے۔ جائز ہے تو بعدِ توبہ یا بے توبہ۔
۴۴۱	آیۂ کریمہ "الزانیة لاینکحها الا زان اومشرک" میں چار تاویلیں ماثور ہیں۔
۴۴۳	قبلِ متارکہ و تفریق بین المحارم غیر مدخولہ سے دوسرے کا نکاح درست ہے یا نہیں۔
۴۴۳	قاضیِ شرع کون ہے۔ یہاں کون حقِ فسخ و تفریق رکھتا ہے۔
۴۴۴	متارکہ یا تفریقِ ثانیہ ضرور ہے اور ناکح متارکہ نہیں کرتا تو کیا کیا جائے۔
۴۴۶	بھتیجی، بھانجی، بھتیجے، بھانجے کی لڑکی سے نکاح کیسا ہے۔
۴۴۷	سنی نے رافضیہ سے بطور شیعہ صیغہ پڑھایا بطریقِ اہلسنت نکاح نہ ہوا دونوں اپنے مذہب پر قائم رہے اولاد کیسی ہوئی۔
۴۴۷	روافض کی تکفیر بوجہ ان کے عقائد ملعونہ مثل رجعت اموات بدنیا واجب ہے۔
۴۴۸	حاملہ عورت کا نکاح جائز ہے۔
۴۴۸	بورے آدمی کا نکاح کس طرح کیا جائے۔
۴۴۸	مسئلہ زنِ مفقود الخبر۔
۴۴۹	تحقیق الفرق بین المتارکۃ والفسخ۔

صفحہ مضمون		صفحہ مضمون	
	اسلامی ریاست میں مسلمان حاکم		
۴۴۴	نائبِ شرع ہے بشرطیکہ وہابی، رافضی، قادیانی وغیرہ نہ ہو۔	۴۵۱	چچاکی نواسی سے نکاح کا حکم۔

451 | Ruling on marriage with stepmother's sister. | Marriage with niece (sister's daughter) is forbidden. | 457 452 | Father-in-law committed adultery with daughter-in-law, does the son's marriage remain or not? If the daughter-in-law claims adultery and the father-in-law denies, what will be the ruling? If both confess, then what? And if it is proven by testimony, then what, and what kind of testimony? | Marriage with a Tabarrai Rafizi (a specific sect) is absolutely void. | 457 452 | Merely a woman's statement is nothing for the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharat) as long as the husband does not confirm it. | Zaid's mother-in-law says he committed adultery with her; two witnesses saw the adultery. Zaid fled saying, 'My unconsummated wife is forbidden to me, give her to whoever you want.' What is the ruling in this situation? | 458 453 | One's own testimony regarding their own action is not acceptable. | Faqeere drank Bia's milk along with Hafeezan. Then Fahmeen was born to Bia. How is Faqeere's marriage with Fahmeen? | 460 453 | Ruling on marriage with great-grandfather's great-granddaughter, grandfather's niece's daughter, or paternal cousin's daughter. | Can Fahmeen marry someone else without a divorce? Is marriage with the wife's maternal or paternal aunt permissible after the wife's death or not? | 460 454 | The wife of someone who has sexual intercourse with his mother-in-law becomes forbidden to him forever. | How is the marriage with a daughter-in-law after the son's divorce or death? | 461 454 | Ruling on marriage with the wife's maternal aunt while being married to the wife. | Ruling on marriage with the daughter of one's own brother's daughter. | 461 454 | Marriage with the granddaughter of a half-sister (from father's side) is forbidden. | Zaid's granddaughter is from the first wife, and the boy is from the second wife. Can their marriage take place or not? | 462 454 | Ruling on marriage with the daughter of the woman one married, from her first husband. | Bakr drank the milk of Zaid's wife's first child. After three children, Zaid had a daughter. What is the ruling on Bakr's marriage with that girl? | 463 454 | If one divorces his wife and the waiting period (Iddah) passes, he can marry her paternal half-sister. | Adultery with a sister-in-law (wife's sister) is forbidden, but it does not make the wife forbidden. | 463 455 | Issue of marriage during the waiting period (Iddah). | Zaid married and had intercourse with Hindah, a minor, then divorced her. Hindah then married Amr and had a daughter with Amr. Is this girl forbidden for Zaid or not? | 464 456 | It is forbidden to bring the wife's maternal aunt into marriage; leave her immediately. And it is also forbidden to touch the wife until the waiting period (Iddah) passes. | Does mere

marriage with the mother make the daughter forbidden or not? Similarly, does the daughter make the mother forbidden? Is sexual intercourse a condition for prohibition in both cases or not, and is puberty a condition or not? | 464

४५१ | सौतेली माँ की बहन से निकाह का हुक्म। | भांजी से निकाह हराम है। | ४५७ ४५२ | ससुर ने बहू से ज़िना (व्यभिचार) किया, बेटे का निकाह रहा या नहीं? बहू ज़िना का दावा करे और ससुर मुनकिर (इनकारी) हो तो क्या हुक्म होगा? और अगर दोनों इकरार करते हों तो क्या? और अगर शहादत (गवाही) से साबित हो तो क्या, और शहादत कैसी हो? | तबर्राई राफ़िज़ी के साथ निकाह बिल्कुल बातिल (अमान्य) है। | ४५७ ४५२ | महज़ औरत का बयान हुरमत-ए-मुसाहरत (निकटता के कारण निषेध) के लिए कोई चीज़ नहीं जब तक शौहर तस्दीक़ (पुष्टि) न करे। | ज़ैद की सास कहती है कि उसने मुझसे ज़िना किया, दो गवाहों ने ज़िना करते देखा, ज़ैद यह कहकर फ़रार हो गया कि मेरी औरत ग़ैर-मदखूला (जिससे सहवास न हुआ हो) मुझ पर हराम है, जिसे चाहे दे दे। इस सूरत में क्या हुक्म है? | ४५८ ४५३ | अपने फ़ेल (कार्य) पर खुद अपनी शहादत क़बूल नहीं। | फ़क़ीरे ने बिया का दूध हफ़ीज़न के साथ पिया, फिर बिया के फ़हमीन हुई, फ़क़ीरे का निकाह फ़हमीन से कैसा है? | ४६० ४५३ | परदादा की परपोती, दादा की भांजी की बेटी, चचेरी बच्ची से निकाह का हुक्म। | फ़हमीन बग़ैर तलाक़ किसी दूसरे से निकाह कर सकती है? ज़ौजा (पत्नी) के मरने के बाद उसकी खाला (मौसी) या फूफी से निकाह जायज़ है या नहीं? | ४६० ४५४ | खुशदामन (सास) से वती (सहवास) करने वाले की बीवी उस पर हमेशा के लिए हराम हो जाती है। | बहू से बेटे की तलाक़ या मौत के बाद निकाह कैसा है? | ४६१ ४५४ | ज़ौजा की खाला (पत्नी की मौसी) से ज़ौजा के रहते हुए निकाह का हुक्म। | अपने भाई की बेटी की बेटी (पोती) से निकाह का हुक्म। | ४६१ ४५४ | अलाती बहन (सौतेली बहन) की पोती से निकाह हराम है। | ज़ैद की नवासी पहली ज़ौजा से है और लड़का दूसरी ज़ौजा से, क्या उनका निकाह हो सकता है या नहीं? | ४६२ ४५४ | जिस औरत से निकाह किया था उसकी बेटी (पहले शौहर से) के निकाह का हुक्म। | बक्र ने ज़ैद की बीवी की पहली औलाद पर दूध पिया, तीन औलादों के बाद ज़ैद की जो लड़की हुई, उस लड़की के बक्र के साथ निकाह का हुक्म। | ४६३ ४५५ | ज़ौजा को तलाक़ दे और इद्दत गुज़र जाए तो उसकी अलाती बहन से निकाह कर सकता है। | साली से ज़िना हराम है मगर वह औरत (पत्नी) को हराम नहीं करती। | ४६४ ४५७ | इद्दत में निकाह का मसला। | ज़ैद ने हिंदा नाबालिग़ा से निकाह और जिमा (सहवास) किया फिर तलाक़ दे दी, हिंदा ने फिर अम्र से निकाह किया, अम्र से उसकी लड़की हुई, क्या यह लड़की ज़ैद पर हराम है या नहीं? | ४६४ ४५६ | ज़ौजा की खाला को निकाह में लाना हराम है फ़ौरन छोड़ दे, और जब तक इद्दत न गुज़रे ज़ौजा को हाथ लगाना भी हराम है। | माँ से महज़ निकाह बेटी

को हराम करता है या नहीं? इसी तरह बेटी से माँ को? क्या दोनों में वती (सहवास) हुरमत की शर्त है या नहीं और बुलूग़ (वयस्कता) शर्त है या नहीं? | ४६४

पृष्ठ ४६ का ७३९

۴۵۱ | سوتیلی ماں کی بہن سے نکاح کا حکم۔ | بھانجی سے نکاح حرام ہے۔ | ۴۵۷ ۴۵۲ | خسر نے بہو سے زنا کیا بیٹے کا نکاح رہا یا نہیں۔ بہو دعویٰ زنا کرے خسر منکر ہو تو کیا حکم ہو گا۔ اور دونوں اقرار کرتے ہوں تو کیا اور اگر شہادت سے ثابت ہو تو کیا، اور شہادت کیسی ہو۔ | تبرائی رافضی کے ساتھ نکاح باطل محض ہے۔ | ۴۵۷ ۴۵۲ | محض عورت کا بیان حرمتِ مصاہرت کے لئے کوئی چیز نہیں جب تک شوہر تصدیق نہ کرے۔ | زید کی ساس کہتی ہے اس نے مجھ سے زنا کیا، دو گواہوں نے زنا کرتے دیکھا، زید یہ کہہ کر فرار ہو گیا کہ میری عورت غیر مدخولہ مجھ پر حرام ہے جس کو چاہے دے دے۔ اس صورت میں کیا حکم ہے۔ | ۴۵۸ ۴۵۳ | اپنے فعل پر خود اپنی شہادت مقبول نہیں۔ | فقیرے نے بیا کا دودھ حفیظن کے ساتھ پیا پھر بیا کے فہمین ہوئی فقیرے کا نکاح فہمین سے کیسا ہے۔ | ۴۶۰ ۴۵۳ | پر دادا کی پر نواسی، دادا کی بھانجی کی بیٹی، چچیری بچی سے نکاح کا حکم۔ | فہمین بے طلاق کسی دوسرے سے نکاح کرسکتی ہے۔ زوجہ کے مرنے کے بعد اس کی خالہ یا پھوپھی سے نکاح جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۶۰ ۴۵۴ | خوشدامن سے وطی کرنے والے کی بیوی اس پر ہمیشہ کے لئے حرام ہو جاتی ہے۔ | بہو سے بعد طلاق یا موت پسر نکاح کیسا ہے۔ | ۴۶۱ ۴۵۴ | زوجہ کی خالہ سے زوجہ کے ہوتے ہوئے نکاح کا حکم۔ | حکم نکاح با دختر دخترِ برادرِ خود۔ | ۴۶۱ ۴۵۴ | علاقی بہن کی پوتی سے نکاح حرام ہے۔ | زید کی نواسی زوجہ اولیٰ سے اور لڑکا زوجہ ثانیہ سے ہے ان کا عقد ہو سکتا ہے یا نہیں۔ | ۴۶۲ ۴۵۴ | جس عورت سے نکاح کیا تھا اس کی دختر شوہر اول سے نکاح کا حکم۔ | بکر نے زید کی بی بی کا پہلی اولاد پر دودھ پیا تین اولادوں کے بعد زید کی جو لڑکی ہوئی اس لڑکی کے بکر کے نکاح کا حکم۔ | ۴۶۳ ۴۵۴ | زوجہ کو طلاق دے اور عدت گزر

جائے تو اس کی علاقی بہن سے نکاح کر سکتا ہے۔ | سالی سے زنا حرام ہے مگر وہ عورت کو حرام نہیں کرتی۔ | ۴۶۳ ۴۵۵ | مسئلہ نکاح در عدت۔ | زید نے ہندہ نابالغہ سے نکاح و جماع کیا پھر طلاق دے دی، ہندہ نے پھر عمرو سے نکاح کیا، عمرو سے اس کے لڑکی ہوئی، یہ لڑکی زید پر حرام ہے یا نہیں۔ | ۴۶۴ ۴۵۶ | زوجہ کی خالہ کو نکاح میں لانا حرام ہے فوراً چھوڑ دے، اور جب تک عدت نہ گزرے زوجہ کو ہاتھ لگانا بھی حرام ہے۔ | ماں سے محض نکاح بیٹی کو حرام کرتا ہے یا نہیں۔ یونہی بیٹی سے ماں کو دونوں میں وطی شرطِ حرمت ہے یا نہیں اور بلوغ شرط ہے یا نہیں۔ | ۴۶۴

Fatawa Ridawiyya Volume 11

468 | Marriage with maternal and paternal aunts-in-law (mami and chachi) is permissible. | 463 | Two persons stated that the boy's father and the girl's mother have illicit relations. The girl's father asked them to swear on the Holy Quran; they refused and left. No proof was found. What is the ruling? | 468

468 | Four types of women are forbidden through blood lineage. | 464 | The Maulana was asked if he would come to perform the marriage. He said, "I will not come, so who will?" He did not come at the time of marriage and said, "Whoever performs their marriage, his wife will be divorced." | 468

469 | A woman claimed that "Your father committed adultery with me," upon which the husband divorced her. Three months have passed. Now the woman says, "You had slandered me, so I said something wrong." Can marriage be performed with the woman again? | 465 | Same question with a change in manner. | 469

469 | Wandering women live unveiled and move around openly, for whom adultery is also proven, or abortions were performed, or is the marriage of a prostitute without Istibra-e-Rahm (waiting period to clear the womb) permissible or not? | 466 | Can the son of the maternal uncle from Zaid's in-laws' side marry Zaid's daughter or not? | 469

470 | A father-in-law committed adultery with his daughter-in-law. The daughter-in-law confesses; the father-in-law neither confesses nor denies. When told he committed a very severe sin, he says, "It was an error, what should be done?" What is the ruling? Can the woman take her dower (Mahr)? | 466 | Refutation of the fatwa of some Bengalis regarding marriage with the foster granddaughter of one's own real brother. | 470

477 | If a father-in-law committed adultery with his daughter-in-law, can she remain with her husband? | 467 | Marriage with a brother's foster granddaughter is ignorance, misguidance, and a fabrication against Sharia. | 477

477 | With which female relatives is marriage permissible and with which is it forbidden? | 467 | Marriage with a brother's granddaughter is like marriage with one's own sister. Whether the granddaughter is biological or foster, this marriage is categorically forbidden according to the Quran, Hadith, and Consensus (Ijma). Attributing this to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) or any other Imam of the Muslims is pure error. | 477

477 | A boy and his father testify, "We are Sunnis, and if you consider us Shias, then for your satisfaction, make us Sunnis." Their fellow countrymen Shias say they are Sunnis. Local Muslims say they have always seen them practicing the Shia religion, and some Muslims testify that these boys are not Shias but they say nothing about their father. What is the ruling? | 468 | Those who give a fatwa permitting marriage with a brother's foster granddaughter are not scholars but are a thousand degrees worse than the ignorant. | 477

|

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

468 | ममानी और चची से निकाह जायज़ है। | 463 | दो व्यक्तियों ने कहा कि लड़के का पिता और लड़की की माँ नाजायज़ संबंध रखते हैं। लड़की के पिता ने कुरान शरीफ़ उठाने को कहा, उन्होंने इनकार किया और चले गए। कोई सबूत नहीं मिला, क्या हुक्म है? | 468

468 | वंशानुगत (نسبی) रिश्तों में चार प्रकार की महिलाएँ हराम (वर्जित) हैं। | 464 | मौलाना साहब से पूछा गया कि क्या आप निकाह पढ़ाने आएंगे? उन्होंने कहा, "मैं नहीं आऊंगा, तो कौन आएगा?" निकाह के समय वह नहीं आए और कहा, "जो कोई उनका निकाह पढ़ाएगा, उसकी पत्नी को तलाक हो जाएगा।" | 468

469 | एक महिला ने दावा किया कि "तुम्हारे पिता ने मेरे साथ ज़िना (व्यभिचार) किया," जिस पर पति ने तलाक दे दिया। तीन महीने बीत गए। अब महिला कहती है कि "तुमने मुझ पर आरोप लगाया था इसलिए मैंने गलत बात कही थी।" क्या उस महिला से दोबारा निकाह हो सकता है? | 465 | यही सवाल अलग अंदाज़ में। | 469

469 | आवारा महिलाएँ बिना पर्दे के रहती हैं और खुलेआम घूमती फिरती हैं, जिनसे ज़िना भी साबित हो चुका हो, गर्भपात कराया गया हो, या एक वेश्या का निकाह 'इस्तिबरा-ए-रहम' (गर्भ शुद्धि की अवधि) के बिना जायज़ है या नहीं? | 466 | क्या ज़ैद के ससुराल के रिश्ते के मामा के लड़के और ज़ैद की लड़की का निकाह हो सकता है या नहीं? | 469

470 | ससुर ने बहू के साथ ज़िना किया, बहू ने इकरार किया, ससुर न इकरार करता है न इनकार। जब यह कहा जाता है कि तुमने बहुत बड़ा गुनाह किया है, तो वह कहता है कि भूल हो गई, क्या करें? क्या हुक्म है? क्या महिला मेहर ले सकती है या नहीं? | 466 | अपने सगे भाई की रज़ाई (दूध की रिश्ते वाली) नवासी से निकाह के बारे में कुछ बंगालियों के फ़तवे का खंडन। | 470

477 | अगर ससुर ने बहू के साथ ज़िना किया, तो क्या वह पति के पास रह सकती है? | 467 | भाई की रज़ाई नवासी से निकाह अज्ञानता, गुमराह और शरीयत पर मिथ्यारोप (इफ़्तरा) है। | 477

477 | रिश्तेदारों में किन-किन महिलाओं से निकाह जायज़ है और किनसे नाजायज़? | 467 | भाई की नवासी से निकाह वैसा ही है जैसे अपनी बहन से। चाहे नवासी वंशानुगत हो या रज़ाई, यह निकाह

कुरान, हदीस और इज्मा की दृष्टि से निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है। इसे इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) या मुसलमानों के किसी अन्य इमाम की ओर जोड़ना सरासर गलती है। | 477

477 | लड़का और उसका पिता गवाही देते हैं कि हम सुन्नी हैं और अगर आप हमें शिया समझते हैं तो हमारी संतुष्टि के लिए हमें सुन्नी बना लें। उनके देशवासी शिया कहते हैं कि वे सुन्नी हैं। यहाँ के मुसलमान कहते हैं कि हमने उन्हें हमेशा शिया मज़हब का पालन करते देखा है और कुछ मुसलमान गवाही देते हैं कि ये लड़के शिया नहीं हैं और उनके पिता के बारे में हम कुछ नहीं कहते। क्या हुक्म है? | 468 | भाई की रज़ाई नवासी से निकाह के जायज़ होने का फ़तवा देने वाले आलिम नहीं बल्कि जाहिलों से हज़ार गुना बदतर हैं। | 477

|

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

۴۶۸ | ممانی اور چچی سے نکاح جائز ہے۔ | ۴۶۳ | دو شخصوں نے کہا کہ لڑکے کا باپ اور لڑکی کی ماں ناجائز تعلقات رکھتے ہیں لڑکی کے باپ نے قرآن شریف اٹھانے کو کہا، انکار کیا اور چلے گئے ثبوت نہ ہوا، کیا حکم ہے۔ | ۴۶۸

۴۶۸ | نسبی رشتوں سے چار قسم کی عورتیں حرام ہیں۔ | ۴۶۴ | مولانا صاحب سے پوچھا، نکاح پڑھانے آئیں گے کہا: میں نہیں آؤں گا تو کون آئے گا۔ وقتِ نکاح نہیں آئے اور کہا: جو کوئی ان کا نکاح پڑھائے گا اس کی عورت کو طلاق ہو جائے گی۔ | ۴۶۸

۴۶۹ | عورت نے دعویٰ کیا کہ تیرے باپ نے مجھ سے زنا کیا، اس پر شوہر نے طلاق دے دی، تین مہینے ہوگئے، اب عورت کہتی ہے تم نے مجھ پر تہمت رکھی تھی اس لئے غلط بات کہی، آیا عورت سے پھر نکاح ہوسکتا ہے۔ | ۴۶۵ | یہی سوال انداز بدل کر۔ | ۴۶۹

۴۶۹ | آوارہ عورتیں بے پردہ رہتی کھلے بندوں چلتی پھرتی ہیں جن سے زنا بھی ثابت ہوا حمل گرائے گئے ہوں یا طوائف کا نکاح بے استبراء رحم جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۶۶ | زید کی سسرال کے رشتہ کے ماموں کے لڑکے اور زید کی لڑکی کا نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں۔ | ۴۶۹

۴۷۰ | خسر نے بہو سے زنا کیا، بہو کو اقرار ہے، خسر نہ اقرار کرتا ہے نہ انکار، جب یہ کہا جاتا ہے کہ تو نے بہت سخت گناہ کیا تو کہتا ہے خطا ہوئی، کیا کریں، کیا حکم ہے، عورت مہر لے سکتی ہے یا نہیں۔ | ۴۶۶ | اپنے حقیقی بھائی کی رضاعی بیٹی کی بیٹی سے نکاح کے بارے میں بعض بنگالیوں کے فتوے کا رد۔ | ۴۷۰

۴۷۷ | خسر نے بہو سے زنا کیا تو کیا وہ شوہر کے پاس رہ سکتی ہے۔ | ۴۶۷ | بھائی کی رضاعی نواسی سے نکاح جہالت، گمراہی اور شریعت پر افتراء ہے۔ | ۴۷۷

۴۷۷ | رشتہ داروں کی کن کن عورتوں سے نکاح جائز ہے اور کن سے ناجائز۔ | ۴۶۷ | بھائی کی نواسی سے نکاح ایسا ہے جیسے اپنی بہن سے۔ چاہے نواسی نسبی ہو یا رضاعی، اور یہ نکاح قرآن، حدیث اور اجماع کی رو سے حرامِ قطعی ہے۔ اس کی نسبت امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ یا کسی اور امام المسلمین کی طرف کرنا خطائے محض ہے۔ | ۴۷۷

۴۷۷ | لڑکا اور اس کا باپ شہادت دلاتے ہیں کہ ہم سنی ہیں اور ہمیں شیعہ جانتے ہو تو اطمینان کے لئے ہمیں سنی کرلو، ان کے ہم وطن شیعہ کہتے ہیں کہ یہ سنی ہیں، یہاں کے مسلمان کہتے ہیں کہ انھیں ہم نے ہمیشہ شیعہ مذہب کا برتاؤ کرتے دیکھا اور بعض مسلمان شہادت دیتے ہیں کہ یہ لڑکے شیعہ نہیں ہیں اور ان کے والد کے بارے میں ہم کچھ نہیں کہتے، کیا حکم ہے۔ | ۴۶۸ | بھائی کی رضاعی نواسی سے جوازِ نکاح کا فتوی دینے والے عالم نہیں بلکہ جاہلوں سے ہزار درجہ بدتر ہیں۔ | ۴۷۷

|

493 | The leader of the non-conformists (Ghair-Muqallideen), Nazir Hussain, endorsed a wrong fatwa of a Wahhabi-minded cleric, and upon being apprehended by Ala Hazrat, he recanted. He wrote another fatwa to refute the first one, presenting an excuse that was worse than the sin itself. | 489 | The foster-child's wife is prohibited (haram) for the husband of the foster-mother (Murzi'ah). 493 | Daring the fire of Hell is an essential characteristic of non-conformism (Ghair-Muqallidi). | 490 | The daughters and granddaughters of a foster-child are prohibited for the foster-mother's husband and his sons. 493 | He who shows more audacity in issuing fatwas, shows more audacity towards the fire (of Hell). | 490 | A foster-uncle is also an uncle; there is no need for hijab from him. 494 | Allah the Almighty makes them taste the consequences of opposing the Imams. | 490 | Explanation of the term 'foster-uncle' (Raza'i Chacha). 494 | Molvi Lutf-ur-Rahman Bardwani of Calcutta, addressing scholars worldwide regarding the permissibility of marrying prohibited kin (Maharim), published a long Arabic question. In response, Ala Hazrat wrote a treatise based on proofs and texts titled "Naqd al-Bayan li-Hurmat Ibnat Akhi al-Labban". | 490 | The daughter of the mother's foster-son is a niece and a Mahram. 494 | Three texts regarding the prohibition of marriage between the offspring of the foster-child and the foster-mother. | 491 | Just as the offspring of the foster-child are considered grandchildren of the foster-mother by definitive consensus (ijma' qat'i), so too, according to the consensus of the four Imams and all jurists, they are the grandchildren of the foster-mother's husband. 494 | Those who are prohibited through lineage (nasab) are also prohibited through fosterage (radha'at). | 491 | The general rule of foster relationships is that four types of women become prohibited through it. 496 | The uncle of the noble Prophet (peace be upon him), Hazrat Hamza (may Allah be pleased with him), is also the foster-brother of the Prophet. | 491 | The daughters of a foster-brother and foster-sister are strictly prohibited, just like biological nieces. 496 | The daughter of a foster-brother is prohibited. | 492 | Brotherhood is a reciprocal relationship that is established equally from both sides. 497 | Hazrat Abu Salma (may Allah be pleased with him) is the foster-brother of the Prophet (peace be upon him) because Thuwaybah nursed both of them. | 492 | It is impossible for Zaid to be Amr's brother and Amr not to be Zaid's brother. 497 | Regarding marriages, the prohibition based on fosterage and lineage is the same. | 492 | Discussion on the verse from Sharh al-Wiqayah: "From the side of the milk-giver, all become kin, but from the side of the suckling, only the spouses and

descendants." 498 | All offspring of the foster-mother are prohibited for all offspring of the foster-child. | 493 | A severe mistake by the author of Umdat al-Ri'ayah in explaining the meaning of the aforementioned verse.

फतावा रज़विया | जिल्द 11

४९३ | गैर-मुक़ल्लिदों के नेता नज़ीर हुसैन ने एक वहाबी विचार वाले मौलवी के गलत फतवे पर मुहर लगा दी और आला हज़रत की ओर से पकड़े जाने पर उससे रुजू किया (पीछे हट गए)। दूसरा फतवा पहले के खंडन में लिखा और गुनाह से बुरा बहाना पेश किया। | ४८९ | रज़ीअ (दूध पीने वाला बच्चा) की पत्नी मुरज़िआ (दूध पिलाने वाली) के पति पर हराम है। ४९३ | नरक की आग पर साहस गैर-मुक़ल्लिदी के लिए अनिवार्य है। | ४९० | रज़ीअ की बेटियाँ और पोतियाँ मुरज़िआ के पति और उसके बेटों पर हराम हैं। ४९३ | जो फतवे पर अधिक साहस करता है, वह आग पर अधिक साहस करता है। | ४९० | दूध का चाचा भी चाचा है, उनसे पर्दे की आवश्यकता नहीं। ४९४ | अल्लाह तआला इमामों के विरोध का स्वाद चखाता है। | ४९० | रज़ाई (दूध शरीक) चाचा की व्याख्या। ४९४ | कलकत्ता के मौलवी लुत्फुर्रहमान बरदवानी ने महरमों से निकाह के औचित्य के बारे में दुनिया भर के उलेमाओं को संबोधित करते हुए एक लंबा अरबी सवाल छपवाया, जिसके जवाब में आला हज़रत ने दलीलों और नसूस (धर्मग्रंथों) पर आधारित एक शोधपत्र "नक़्द अल-बयान लि-हुरमत इब्नत अखी अल-लब्बान" लिखा। | ४९० | माँ के रज़ाई बेटे की बेटी, भतीजी और महरम है। ४९४ | रज़ीअ और मुरज़िआ की संतानों के बीच निकाह के हराम होने पर तीन दलीलें। | ४९१ | रज़ीअ की संतान जिस प्रकार मुरज़िआ की पोता-पोती, नवासा-नवासी इजमा-ए-कतई (निश्चित आम सहमति) से है, वैसे ही चारों इमामों और समस्त फकीहों के इजमा से वे मुरज़िआ के पति के भी पोते और नवासे हैं। ४९४ | जो वंश (नसब) से हराम है, वह रज़ाअत (दूध का रिश्ता) से भी हराम है। | ४९१ | दूध के रिश्तों का सामान्य नियम यह है कि इससे चार प्रकार की महिलाएँ हराम हो जाती हैं। ४९६ | हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर के रज़ाई भाई भी हैं। | ४९१ | रज़ाई भाई-बहन की बेटियाँ सगी भांजी और सगी भतीजी की तरह हराम-ए-कतई (पूर्णतः वर्जित) हैं। ४९६ | रज़ाई भाई की बेटी हराम है। | ४९२ | भाईचारा एक पारस्परिक रिश्ता है जो दोनों ओर से समान रूप से स्थापित होता है। ४९७ | हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई हैं क्योंकि दोनों को सुवैबा ने दूध पिलाया था। | ४९२ | यह असंभव है कि ज़ैद तो अम्र का भाई हो और अम्र ज़ैद का भाई न हो। ४९७ | निकाहों के मामले में दूध और वंश की हुरमत एक जैसी है। | ४९२ | शरह वकाया के शेर "अज़ जानिब-ए-शीर देह हमह ख्वेश शवंद, व अज़ जानिब-ए-शीर ख्वारह ज़ौजैन व फुरु" पर चर्चा।

४९८ | रज़ीअ की समस्त संतान पर मुरज़िआ की समस्त संतान हराम है। | ४९३ | उक्त शेर का अर्थ बताने में साहिब-ए-उम्दतुल रियाया की गंभीर गलती।

۴۹۳ | غیر مقلدوں کے پیشوا نذیر حسین نے ایک وہابی خیال مولوی کے غلط فتوی پر مہر تصدیق لگادی اور اعلیحضرت کی طرف سے گرفت پر اس سے رجوع کیا دوسرا فتوی اس پہلے کے رد میں لکھا اور عذر گناہ بد تر از گناہ پیش کیا۔ | ۴۸۹ | رفیع کی بیوی مرضعہ کے شوہر پر حرام ہے۔ ۴۹۳ | آتش جہنم پر جرات غیر مقلدی کے لئے لازم بین ہے۔ | ۴۹۰ | رفیع کی بیٹیاں اور نواسیاں مرضعہ کے شوہر اور اس کے بیٹوں پر حرام ہیں۔ ۴۹۳ | جو فتوی پر زیادہ جرات کرتا ہے وہ آگ پر زیادہ جرات کرتا ہے۔ | ۴۹۰ | دودھ کا چچا بھی چچا ہے ان سے پردہ کی حاجت نہیں۔ ۴۹۴ | اللہ تعالیٰ ائمہ کے مقابلے کا مزہ چکھاتا ہے۔ | ۴۹۰ | رضاعی چچا کی تفسیر۔ ۴۹۴ | کلکتہ کے مولوی لطف الرحمن بردوانی نے محارم سے نکاح کے جواز کے بارے میں جہاں بھر کے علماء کو مخاطب کرتے ہوئے ایک طویل عربی سوال چھپوایا جس کے جواب میں اعلیحضرت نے دلائل و نصوص پر مشتمل ایک رسالہ "نقد البیان لحرمۃ ابنۃ اخی اللبان" تحریر فرمایا۔ | ۴۹۰ | ماں کے رضاعی بیٹے کی بیٹی، بھتیجی اور محرم ہے۔ ۴۹۴ | رفیع و مرضعہ کی اولادوں کے درمیان نکاح کے حرام ہونے پر تئیں نصوص۔ | ۴۹۱ | اولاد رفیع جس طرح مرضعہ کی پوتا پوتی، نواسا نواسی باجماع قطعی ہے یونہی باجماع ائمہ اربعہ وجملہ فقہا وہ شوہر مرضعہ کے بھی پوتے ہیں اور نواسے ہیں۔ ۴۹۴ | جو نسب سے حرام ہے وہ رضاعت سے بھی حرام ہے۔ | ۴۹۱ | دودھ کے رشتوں کا قاعدہ کلیہ یہ کہ اس سے چار قسم کی عورتیں حرام ہوتی ہیں۔ ۴۹۶ | حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے چچا حضرت حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضور پر نور کے رضاعی بھائی بھی ہیں۔ | ۴۹۱ | رضاعی بھائی بہن کی بیٹیاں نسبی بھانجی اور نسبی بھتیجی کی طرح حرام قطعی ہے۔ ۴۹۶ | رضاعی بھائی کی بیٹی حرام ہے۔ | ۴۹۲ |

اخوت رشتہ متکررہ ہے کہ دونوں طرف سے یکساں قائم ہوتا ہے۔ ۴۹۷ | حضرت ابو سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے رضاعی بھائی ہیں کیونکہ دونوں کو ثویبہ نے دودھ پلایا۔ | ۴۹۲ | یہ محال ہے کہ زید تو عمرو کا بھائی ہو اور عمر و زید کا بھائی نہ ہو۔ ۴۹۷ | نکاحوں کے بارے میں دودھ اور نسب کی حرمت ایک سی ہے۔ | ۴۹۲ | شرح وقایہ کے شعر "از جانب شیر دہ ہمہ خویش شوند، واز جانب شیر خوارہ زوجان و فروع" پر بحث۔ ۴۹۸ | رفیع کی تمام اولاد پر مرضعہ کی تمام اولاد حرام ہے۔ | ۴۹۳ | شعر مذکور کا مطلب بیان کرنے میں صاحب عمدۃ الرعایہ کی شدید غلطی۔

506 | A son of one sister can marry the daughter of another sister. | 499 | Fine explanation of the mentioned poem by the author. 506 | If one married their son to their sister-in-law's (Sali) daughter, is it permissible to marry the sister-in-law or not? | 499 | The real cause of prohibition is 'juz'iyyat' (being a part/fragment). 506 | Zaid's son placed his erect penis in his stepmother's hand without any cloth covering, kissed her many times, tried to penetrate twice but couldn't, once Hind got away after effort, once he separated due to someone's voice; Hind never felt lust, what is the ruling? | 499 | 'Juz'iyyat' is apparent in lineage and not legally valid in nursing (radha'at). 507 | Is a marriage contract with a minor daughter of a Mirzai permissible or not? The Mirzai has died, and the daughter is completely unaware of her father's religion. | 499 | The reference of being a spouse (zawjiyyat) is also towards 'juz'iyyat'. 508 | Mirzais are apostates (murtad). | 499 | There are two forms of the relationship of 'juz'iyyat' between two persons. 508 | An apostate, whether male or female, cannot marry anyone in the world. | 500 | There are four forms of prohibition due to the relationship of 'juz'iyyat'. 508 | After reaching the age of reason and discernment, the apostasy or Islam of a minor is valid. | 500 | From the side of the nursling (shir-khwara), two relationships are established causing prohibition: spousehood and being a branch (fur'iyyat). 508 | Apostate people teach blasphemous beliefs to their children in early childhood. | 500 | There are five forms from the side of the wet-nurse (shir-dih) and two from the side of the nursling, and details of the meaning of 'khwaish shound' (becoming kin) in each form. 508 | Keeping close kinship with those of bad religions often leads to fitna (upheaval) and corruption of faith. | 501 | Refutation of an opposing fatwa based on five reasons. 508 | Ruling on marriage and relations with non-conformists (Ghair-Muqallid). | 503 | Commendations and endorsements from the noble scholars. 508 | Socializing with non-conformists is forbidden, and marrying them is impermissible. | 505 | A boy heard that his father committed adultery with his wife. In anger, he beat his wife and divorced her. The wife filed for dowry (mahr) and won the case. The husband's lawyer says the divorce was given in anger so it didn't happen, while the wife's lawyer says it did. Who is truthful? 509 | Wahabism is apostasy, and an apostate's marriage to anyone is not valid. | 506 | Zaid used to joke with his maternal aunt-in-law (mamani) Jamila with lust and once even kissed her. Now Zaid's father wants to marry Jamila's daughter Sughra. What is the ruling? | | 505 | Ruling on joking with maternal aunt-in-law (mamani) and brother's wife (bhawaj).

फतावा रज़विया | जिल्द 11

506 | एक बहन का लड़का दूसरी बहन की बेटी से निकाह कर सकता है। | 499 | लेखक द्वारा उल्लिखित कविता की सूक्ष्म व्याख्या। 506 | साली की बेटी से अपने बेटे का निकाह किया तो साली से अपना निकाह जायज़ है या नहीं। | 499 | हुरमत (निषिद्धता) का वास्तविक कारण 'जुज़इयत' (अंश होना) है। 506 | ज़ैद के बेटे ने अपनी सौतेली माँ के हाथ में अपना ज़िक्र (लिंग) उत्तेजित अवस्था में बिना किसी कपड़े के दे दिया, कई बार चूमा, दो बार प्रवेश की कोशिश की लेकिन प्रवेश न कर सका, एक बार हिन्दा कोशिश करके निकल गई, एक बार किसी की आवाज़ के कारण अलग हो गया, हिन्दा को कभी कामुकता महसूस नहीं हुई, क्या हुक्म है। | 499 | 'जुज़इयत' वंश (नसब) में ज़ाहिर है और रज़ाअत (स्तनपान) में शरीअत के अनुसार मान्य नहीं। 507 | मिर्ज़ाई की नाबालिग बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं। मिर्ज़ाई मर गया है, बेटी अपने धर्म से बिल्कुल अनभिज्ञ है। | 499 | ज़ौजियत (पति-पत्नी का संबंध) का संदर्भ भी 'जुज़इयत' की ओर है। 508 | मिर्ज़ाई मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं। | 499 | दो व्यक्तियों के बीच 'जुज़इयत' के संबंध के दो रूप हैं। 508 | मुर्तद मर्द हो या औरत, उसका पूरी दुनिया में किसी से निकाह नहीं हो सकता। | 500 | 'जुज़इयत' के संबंध से हुरमत में चार रूप हैं। 508 | अक्ल और तमीज़ (समझ) के बाद नाबालिग का इर्तदाद (धर्मत्याग) या इस्लाम सही है। | 500 | दूध पीने वाले (शीर ख्वारा) की ओर से दो संबंध सिद्ध होते हैं जो हुरमत का कारण बनते हैं, ज़ौजियत और फुरइयत। 508 | मुर्तद लोग बहुत बचपन में अपनी औलाद को कुफ़रिया (अधर्मी) अक़ायदे सिखाते हैं। | 500 | दूध पिलाने वाली की ओर से पाँच और दूध पीने वाले की ओर से दो रूप हैं, और हर रूप में 'ख्वेश शुवंद' (रिश्तेदार हो जाना) के अर्थ का विवरण। 508 | कुधर्मियों (बद मज़हबों) से निकटता रखना अक्सर फितना और मज़हब की खराबी का कारण बनता है। | 501 | पाँच कारणों से विरोधी फ़तवे का खंडन। 508 | गैर-मुक़ल्लिदों से निकाह और संबंधों का हुक्म। | 503 | विद्वानों (उलमा-ए-किराम) की प्रशस्तियाँ और समर्थन। 508 | गैर-मुक़ल्लिदों से मेल-जोल हराम है और उनसे वैवाहिक संबंध नाजायज़ हैं। | 505 | लड़के ने सुना कि पिता ने उसकी पत्नी से व्यभिचार किया है, इस पर गुस्से में पत्नी को मारा और तलाक दे दिया। पत्नी ने मेहर का दावा किया और जीत गई। पति का वकील कहता है तलाक गुस्से में दी गई इसलिए नहीं हुई, और पत्नी का वकील कहता है हो गई, कौन सच्चा है? 509 | वहाबियत इर्तदाद है और मुर्तद का निकाह किसी से भी जायज़ नहीं। | 506 | ज़ैद अपनी ममानी (मामी) जमीला से कामुकता के साथ

मज़ाक करता था और उसका बोसा (चुंबन) भी लिया था। अब ज़ैद का पिता जमीला की बेटी सुग़रा से अपना निकाह करना चाहता है, क्या हुक्म है? | | 505 | ममानी और भावज से मज़ाक का हुक्म।

۵۰۶ | ایک بہن کا لڑکا دوسری کی دختر سے نکاح کر سکتا ہے۔ | ۴۹۹ | مصنف کی طرف سے شعر مذکور کی نفیس شرح۔ ۵۰۶ | سالی کی دختر سے اپنے بیٹے کا نکاح کیا تو سالی سے اپنا نکاح جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۹۹ | اصل علت حرمت جزئیت ہے۔ ۵۰۶ | زید کے بیٹے نے اپنی سوتیلی ماں کے ہاتھ میں اپنا ذکر منتشر بے حجاب کسی کپڑے وغیرہ کے دیدیا کئی بار بوسہ لیا، دو بار دخول کی کوشش کی مگر دخول نہ کرسکا، ایک بار ہندہ کو شش کر کے نکل گئی ایک بار کسی کے آواز کے سبب علیحدہ ہو گیا، ہندہ کو شہوت کبھی نہ تھی، کیا حکم ہے۔ | ۴۹۹ | جزئیت نسب میں ظاہر اور رضاعت میں شرعاً معتبر نہیں۔ ۵۰۷ | مرزائی کی نابالغہ دختر سے عقد جائز ہے یا نہیں۔ مرزائی مرگیا ہے، دختر اپنے مذہب سے بالکل ناواقف ہے۔ | ۴۹۹ | زوجیت کا مرجع بھی جانب جزئیت ہے۔ ۵۰۸ | مرزائی مرتد ہیں۔ | ۴۹۹ | دو شخصوں میں علاقہ جزئیت کی دو صورتیں ہیں۔ ۵۰۸ | مرتد مرد ہو یا عورت اس کا جہاں بھر میں کسی سے نکاح نہیں ہو سکتا۔ | ۵۰۰ | علاقہ جزئیت سے حرمت میں چار صورتیں ہیں۔ ۵۰۸ | عقل و تمیز کے بعد نابالغ کا ارتداد اسلام صحیح ہے۔ | ۵۰۰ | جانب شیر خوارہ سے دو علاقے ثابت و باعث حرمت ہیں، زوجیت و فرعیت۔ ۵۰۸ | مرتد لوگ بہت بچپن میں اپنی اولاد کو عقائد کفریہ سکھاتے ہیں۔ | ۵۰۰ | شیر دہ کی جانب سے پانچ اور شیر خوارہ کی جانب سے دو صورتیں ہیں، اور ہر صورت میں "خویش شوند" کے معنی کی تفصیل۔ ۵۰۸ | بد مذہبوں سے قرابت قریبہ رکھنا بارہا منجر بہ فتنہ و فساد مذہب ہوتا ہے۔ | ۵۰۱ | فتویٰ خلاف کا پانچ وجوہ سے رد۔ ۵۰۸ | غیر مقلدوں سے نکاح اور تعلقات کا حکم۔ | ۵۰۳ | تقریظات و تائیدات علماء کرام، ۵۰۸ | غیر مقلدوں سے میل جول حرام اور ان سے مناکحت ناجائز ہے۔ | ۵۰۵ | لڑکے نے سنا کہ باپ نے اس کی بی بی سے زنا

کیا اس پر غصہ میں بی بی کو مارا اور طلاق دے دی زوجہ نے مہر کی نالش کر دی ڈگری ہوگئی، وکیل زوج کہتا ہے طلاق غصہ میں دی اس لئے نہیں ہوئی اور وکیل زوجہ کہتا ہے ہو گئی، کون سچا ہے۔ ۵۰۹ | وہابیت ارتداد ہے اور مرتد کا نکاح کسی سے بھی جائز نہیں۔ | ۵۰۶ | زید اپنی ممانی جمیلہ سے مذاق کرتا بشہوت اس کا کبھی بوسہ بھی لیا تھا اب زید کا باپ جمیلہ کی لڑکی صغریٰ سے اپنا نکاح کرنا چاہتا ہے کیا حکم ہے۔ | | ۵۰۵ | ممانی اور بھاوج سے مذاق کا حکم۔

Fatawa Rizvia | Volume 11

Topic	Page	Topic	Page
A pregnant widow claims that this pregnancy is from her son-in-law. What is the ruling for the wedded son-in-law?	509	Taking a fine is forbidden, and spending a forbidden thing in a mosque is forbidden.	514
Zaid's wife has been missing for several years; can Zaid now marry her biological sister or not?	509	Asking Deobandis for a fatwa and acting upon it is forbidden.	514
Ruling on the waiting period (Iddah) for a missing person's spouse.	510	Calling Deobandis 'Maulana' or 'Noor Allah Marqadahu' (May Allah illuminate his grave) is forbidden.	514
In jurisprudence (Fiqh), it is annexed with 'preponderant opinion'.	510	One who is aware of the cursed sayings of the Deobandis and doubts their disbelief (kufr) is himself a disbeliever.	514
Can the grandson of one brother marry the daughter of another brother or not?	510	Ruling regarding those who believe a Qadiani to be a Mujaddid, Mahdi, Promised Messiah, or Prophet.	514
Zaid shared nursing (drank milk) of Zainab along with Hind; ruling on Zaid's marriage with Zainab's third daughter.	510	Is the marriage of such a person with any Muslim or non-Muslim woman of his own faith valid or not? If not valid, can that woman marry someone else without divorce and Iddah?	514
It is possible for a father to marry one of two biological sisters and for the son to marry the other.	510	Universal rule of components (Juz'iyat).	516
Ruling on the marriage of a Muslim man or woman with a Buddhist, Jain, Hindu, atheist, etc.	510	Ruling on marrying an elder brother's wife (sister-in-law) and who are the women with whom marriage is forbidden?	517
A Muslim man can marry a non-Muslim woman from the 'People of the Book' (Kitabiyyah).	511	Causes of prohibition are multiple, of which twelve are mentioned briefly.	517

Topic	Page	Topic	Page
Animals slaughtered by the 'People of the Book' are lawful for Muslims.	511	Ruling on the marriage of a girl whose brother's nursing milk was shared once or twice by a girl while she was sleeping. And what is the ruling if discovered after marriage?	518
Adultery with a daughter-in-law does not cause divorce but she becomes forbidden to the son. In which case is the proof of prohibition not established?	512	Ruling on marrying a step-uncle.	519
Will there be a difference between adultery and the precursors to adultery with intent?	513	Ruling on the marriage of a man with the daughter of a woman with whom he had intercourse while she was still a minor (learning stage).	519
Investigation (Tahari) is among Sharia proofs.	513	For 'Hurmat-e-Musaharat' (prohibition by marriage), at least 'Murahaqat' (near puberty) is required.	520
If investigation leads to the truth of a sinner's (fasiq) statement, it is reliable.	513		

फ़तावा रिज़विया | जिल्द 11

विषय	पृष्ठ
एक विधवा गर्भवती का कहना है कि यह गर्भ उसके दामाद का है, अब विवाहित दामाद के लिए क्या हुक्म है?	509
ज़ैद की पत्नी कई साल से लापता है; क्या ज़ैद अब उसकी सगी बहन से निकाह कर सकता है या नहीं?	509
लापता व्यक्ति की पत्नी की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) का हुक्म।	510
फ़िक़्ह में 'ग़लबा-ए-ज़न्न' (प्रबल धारणा) से संलग्न है।	510
क्या एक भाई का पोता दूसरे भाई की बेटी से निकाह कर सकता है या नहीं?	510
ज़ैद ने ज़ैनब का दूध हिंद के साथ पिया; ज़ैनब की तीसरी बेटी के साथ ज़ैद के निकाह का हुक्म।	510
दो सगी बहनों में से एक से पिता और दूसरी से बेटे का निकाह हो सकता है।	510
मुस्लिम पुरुष या महिला का बौद्ध, जैन, हिंदू, नास्तिक आदि से निकाह का हुक्म।	510
	511
जुर्माना लेना हराम है और हराम चीज़ को मस्जिद में खर्च करना हराम है।	514
देवबंदियों से फ़तवा पूछना और उस पर अमल करना हराम है।	514
देवबंदियों को 'मौलाना' या 'नूरुल्लाह मरक़दहु' कहना हराम है।	514
देवबंदियों के शापित कथनों से अवगत होने के बाद उनके कुफ़्र (अविश्वास) में संदेह करने वाला स्वयं काफ़िर है।	514
क़ादियानी को मुजद्दिद, मेहदी, मसीह मौऊद, पैगंबर मानने वालों का हुक्म।	514
ऐसे व्यक्ति का निकाह किसी मुस्लिम या गैर-मुस्लिम महिला से जो उसके धर्म की हो, सही है या नहीं? यदि सही नहीं है, तो क्या वह महिला बिना तलाक़ और इद्दत के किसी और से निकाह कर सकती है?	514
जुज़इयत (घटकों) का व्यापक नियम।	516
बड़ी भाभी से निकाह का हुक्म और वे कौन सी महिलाएँ हैं जिनसे निकाह हराम है?	517
	517

विषय	पृष्ठ
मुस्लिम पुरुष अहले-किताब (किताबी) महिला से निकाह कर सकता है।	
किताबियों का ज़बीहा मुसलमानों के लिए हलाल है।	511
बहू के साथ व्यभिचार (ज़िना) से तलाक़ नहीं होता लेकिन वह बेटे पर हराम हो जाती है। और किस स्थिति में हराम होने का सबूत नहीं मिलता?	512
ज़िना और ज़िना के इरादे वाले कार्यों में अंतर होगा या नहीं?	513
तहरी (अनुसंधान) शरीयत के प्रमाणों में से है।	513
यदि किसी फ़ासिक़ (पापी) की बात की सच्चाई पर तहरी की जाए, तो वह विश्वसनीय है।	513
हराम (निषिद्ध) होने के कई कारण हैं, जिनमें से बारह का संक्षिप्त उल्लेख।	
उस लड़की के निकाह का हुक्म जिसके भाई का दूध एक लड़की ने सोते हुए एक या दो बार पी लिया। और यदि निकाह के बाद पता चले तो क्या हुक्म है?	518
सौतेले चाचा से निकाह का हुक्म।	519
उस महिला की बेटी से निकाह का हुक्म, जिसके साथ किसी ने उसके अवयस्क होने के दौरान संभोग किया था।	519
हुरमत-ए-मुसाहरत के लिए कम से कम 'मुराहक़त' (यौवन के करीब होना) आवश्यक है।	520

موضوع	صفحہ
ایک بیوہ حاملہ کا کہنا ہے کہ یہ حمل اس کے داماد کا ہے اب منکوحہ داماد کا کیا حکم ہے۔	۵۰۹
زوجہ زید کئی سال سے لاپتہ ہے اب اس کی حقیقی بہن سے زید نکاح کر سکتا ہے یا نہیں۔	۵۰۹
حکم عدت مفقودہ۔	۵۱۰
فقہ میں ظنِ غالب سے ملحق ہے۔	۵۱۰
ایک بھائی کا پوتا دوسرے بھائی کی لڑکی سے نکاح کر سکتا ہے یا نہیں۔	۵۱۰
زید نے زینب کا دودھ ہندہ کے ساتھ پیا زینب کی تیسری لڑکی سے زید کے نکاح کا حکم۔	۵۱۰
جرمانہ لینا حرام ہے اور حرام شے مسجد میں صرف کرنا حرام ہے۔	۵۱۴
دیوبندیوں سے فتویٰ پوچھنا اور اس پر عمل کرنا حرام ہے۔	۵۱۴
دیوبندیوں کو مولانا یا نور اللہ مرقدہ کہنا حرام ہے۔	۵۱۴
دیوبندیوں کے اقوالِ ملعونہ پر مطلع ہو کر ان کے کفر میں شک کرنے والا کافر ہے۔	۵۱۴
قادیانی کو مجدد، مہدی، مسیح موعود، پیغمبر ماننے والے کا حکم۔	۵۱۴
ایسے کا نکاح کسی مسلمہ یا غیر مسلمہ اس کی ہم مذہب عورت سے درست ہے یا نہیں۔ درست نہیں تو بے طلاق و عدت وہ عورت کسی دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے یا نہیں۔	۵۱۴

موضوع	صفحہ
دو حقیقی بہنوں میں سے ایک سے باپ اور دوسری سے بیٹے کا نکاح ہو سکتا ہے۔	۵۱۰
مسلمان مرد یا عورت کے بدھ جین ہندو دہریہ وغیرہ سے نکاح کا حکم۔	۵۱۰
مسلمان مرد کافرہ کتابیہ سے نکاح کر سکتا ہے۔	۵۱۱
کتابیوں کا ذبیحہ مسلمانوں کے لئے حلال ہے۔	۵۱۱
بہو کے ساتھ زنا سے طلاق نہیں ہوتی بیٹے پر حرام ہو جاتی ہے اور کس صورت میں ثبوت حرمت نہیں۔	۵۱۲
زنا و دواعی زنا نیت زنا میں فرق ہو گا یا نہیں۔	۵۱۳
جزئیت کا قاعدہ کلیہ۔	۵۱۶
بڑی بھاوج سے نکاح کا حکم اور جن عورتوں سے نکاح حرام ہے وہ کون کون ہیں۔	۵۱۷
حرمت کے اسباب متعدد ہیں جن میں سے بارہ کا اجمالی ذکر۔	۵۱۷
جس عورت کا سوتے میں لڑکی نے ایک بار یا دو بار دودھ پی لیا اس کے بھائی سے لڑکی کے نکاح کا حکم۔ اور نکاح کے بعد معلوم ہوا تو کیا حکم ہے۔	۵۱۸
سوتیلے چچا سے نکاح کا حکم۔	۵۱۹
بحالتِ نابالغی عورت کے سکھانے سے عورت کے ساتھ جس نے صحبت کی اب اس عورت کی لڑکی سے اس کے نکاح کا حکم۔	۵۱۹

موضوع	صفحہ
تحری دلائل شرعیہ میں سے ہے۔	۵۱۳
قولِ فاسق کے صدق پر اگر تحری ہو تو وہ معتبر ہے۔	۵۱۳
حرمت مصاہرت کے لئے کم از کم مراہقت درکار ہے۔	۵۲۰

Volume Eleven | Fatawa Rizvia

Chapter on the Guardian (Bab-ul-Wali)

Page 524 | A father gave permission to his adult son to marry off his minor daughter and then went 7-8 'kos' (distance) away. The marriage and the bride's departure took place. The father returned, and the fourth-day ceremony took place in his presence. For 7-8 years, she continued to visit her in-laws. Now he says he is not pleased. What is the ruling on marriage in this case, and does the father or the minor girl have the right to annulment after reaching puberty?

Page 521 | The guardian of a minor orphaned girl is only her mother, as the uncle has been disconnected for forty years. In such a situation, what is the status of a marriage performed without the permission of both the mother and uncle and in their absence?

Page 524 | Marriage performed by the father and grandfather is binding even if there is gross deception (Ghabn-e-Fahish) in the dowry and it is with a non-equal (non-Kufu).

Page 521 | When there is no grandfather or adult brother, the uncle is the guardian; the mother has no authority in the presence of the uncle.

Page 524 | Bakr, the father of minor Laila, gave permission to his adult son Khalid to marry her to Amr (who is Kufu). Khalid went 20 'kos' away. Khalid hurriedly married Laila to Zaid, who is also from the same community. The father returned, became angry on hearing news of the marriage, and did not allow the daughter to go to her in-laws again. Now, for seven years, Laila has been an adult. As soon as she reached puberty, she refused this marriage. What is the ruling?

Page 521 | Being separated from the father does not nullify Sharia guardianship.

Page 526 | A marriage by an unauthorized person (Fazuli) is not effective without permission.

Page 521 | Sin is not a reason to nullify guardianship.

Page 527 | If the nearest guardian is absent with a prolonged absence (Ghaibat-e-Munqatia), the right of guardianship transfers to the more distant guardian.

Page 522 | Annulment is not an obstacle to guardianship.

Page 527 | Regarding prolonged absence, there are two correct opinions. The more preferred and the choice of most scholars for fatwa, which is better and more consistent with jurisprudence, is that if waiting for the guardian or his opinion would cause the loss of a suitable suitor (Kufu Khatib).

Page 522 | A marriage by an unauthorized person depends on the guardian's permission; if he approves, it becomes valid; if he rejects, it is void.

Page 528 | How is it for guardians to perform the marriage of minor boys and girls, and can they annul it after reaching puberty or not?

Page 522 | If a guardian other than the father or grandfather marries them to a non-equal or makes a gross reduction in dowry, the marriage is not valid.

Page 528 | Marriage performed by the father is binding, meaning the offspring do not have the right of annulment.

Page 523 | In being 'Kufu' (equal), which matters are considered?

Page 529 | Hindah, an adult widow, wants to marry someone whom her parents do not approve of. If she does, will the marriage be valid or not?

Page 523 | One who is unable to pay the prompt dowry (Mahr-e-Mu'ajjal) and maintenance is not a 'Kufu' for a woman capable of intercourse.

Page 530 | A maternal uncle married his minor niece to his son; there was no other guardian. If the daughter, some time after reaching puberty and having prior knowledge of the marriage, refuses the marriage, what is the ruling?

Page 52 of 739

ज़िल्द ग्याहरवीं | फतावा रजविया

अभिभावक का अध्याय (बाब-उल-वली)

पृष्ठ 524 | एक पिता ने अपनी नाबालिग बेटी के निकाह की अनुमति अपने जवान बेटे को देकर सात-आठ कोस दूर चला गया। निकाह और विदाई हो गई। पिता वापस आया, और चौथी की रस्म उसके सामने हुई। सात-आठ साल तक वह ससुराल आती-जाती रही। अब वह कहता है कि मैं राजी नहीं हूँ। इस स्थिति में निकाह का क्या हुक्म है और क्या पिता या नाबालिग लड़की को बालिग होने के बाद निकाह रद्द करने का अधिकार है या नहीं?

पृष्ठ 521 | एक नाबालिग अनाथ लड़की की संरक्षिका केवल उसकी माँ है, चाचा चालीस साल से अलग-थलग है। ऐसी स्थिति में माँ और चाचा दोनों की अनुमति के बिना और उनकी अनुपस्थिति में हुए निकाह का क्या दर्जा है?

पृष्ठ 524 | पिता और दादा द्वारा किया गया निकाह अनिवार्य (लाज़िम) हो जाता है, भले ही महर में भारी धोखा (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) हो और निकाह गैर-कुफ़ू (असमान) में हो।

पृष्ठ 521 | जब दादा या जवान भाई न हो, तो चाचा अभिभावक (वली) है; चाचा की उपस्थिति में माँ को कोई अधिकार नहीं है।

पृष्ठ 524 | लैला जो कि नाबालिग है, उसके पिता बक्र ने उसके निकाह की अनुमति अम्र (जो कि कुफ़ू है) के साथ करने के लिए अपने जवान बेटे खालिद को दी और बीस कोस दूर चला गया। खालिद ने ज़ैद के साथ, जो उसी बिरादरी का है, लैला का निकाह जल्दी में कर दिया। पिता वापस आया, निकाह की खबर सुनकर नाराज़ हुआ, और बेटी को फिर ससुराल नहीं जाने दिया। अब सात साल से लैला बालिग है, बालिग होते ही उसने इस निकाह से इनकार कर दिया, क्या हुक्म है?

पृष्ठ 521 | पिता से अलग होना शरीयत के अनुसार अभिभावकत्व (विलायत) को समाप्त नहीं करता।

पृष्ठ 526 | बिना अनुमति के किसी अनधिकृत व्यक्ति (फ़ज़ूली) द्वारा किया गया निकाह प्रभावी नहीं होता।

पृष्ठ 521 | पाप अभिभावकत्व को समाप्त करने वाला नहीं है।

पृष्ठ 527 | यदि निकटतम अभिभावक लंबे समय तक अनुपस्थित (ग़ैबत-ए-मुनक़तिया) हो, तो अभिभावकत्व का अधिकार दूर के अभिभावक की ओर स्थानांतरित हो जाता है।

पृष्ठ 522 | निकाह का रद्द होना अभिभावकत्व के लिए बाधक नहीं है।

पृष्ठ 527 | लंबी अनुपस्थिति (ग़ैबत-ए-मुनक़तिया) के संबंध में दो मत अधिक सही हैं। अधिकांश विद्वानों का पसंदीदा और फतवे के लिए चुना गया मत, जो न्यायशास्त्र के अनुसार अधिक उपयुक्त है, यह है कि यदि अभिभावक या उसकी राय का इंतज़ार किया जाए तो उपयुक्त रिश्ता (कुफ़ू खातिब) हाथ से निकल जाएगा।

पृष्ठ 522 | अनधिकृत व्यक्ति (फ़ज़ूली) का निकाह अभिभावक की अनुमति पर निर्भर होता है; यदि वह अनुमति दे दे तो सही हो जाता है, और यदि वह अस्वीकार कर दे तो बातिल (अमान्य)।

पृष्ठ 528 | नाबालिग लड़के और नाबालिग लड़की का निकाह उनके अभिभावक करें तो कैसा है और बालिग होने के बाद क्या वे इसे रद्द कर सकते हैं या नहीं?

पृष्ठ 522 | यदि पिता और दादा के अलावा कोई और अभिभावक किसी गैर (गैर-कुफ़ू) से निकाह कर दे या महर में भारी कमी कर दे, तो निकाह सही नहीं है।

पृष्ठ 528 | पिता द्वारा किया गया निकाह अनिवार्य है, यानी संतान को इसे रद्द करने का अधिकार नहीं होता।

पृष्ठ 523 | 'कुफ़ू' (बराबर का) होने में किन बातों का ध्यान रखा जाता है?

पृष्ठ 529 | हिंदा जो कि बालिग विधवा है, ऐसे व्यक्ति से निकाह करना चाहती है जिससे निकाह पर उसके माता-पिता राजी नहीं हैं। यदि वह निकाह करेगी तो निकाह होगा या नहीं?

पृष्ठ 523 | जो व्यक्ति तुरंत महर (महर-ए-मुअज्जल) देने और भरण-पोषण करने में असमर्थ हो, वह संभोग में सक्षम महिला का कुफ़ू (योग्य जीवनसाथी) नहीं है।

पृष्ठ 530 | एक मामा ने अपनी नाबालिग भांजी का निकाह अपने बेटे से कर दिया; कोई और अभिभावक नहीं था। यदि लड़की बालिग होने के बाद, जबकि बालिग हुए कुछ समय बीत चुका हो और उसे निकाह का पहले से पता हो, निकाह से इनकार करे तो क्या हुक्म है?

पृष्ठ 52 का 739

باب الولی

۵۲۴ | باپ نابالغہ کے نکاح کی اجازت اپنے جوان بیٹے کو دے کر سات آٹھ کوس پر چلا گیا نکاح ورخصت ہو گئی باپ آیا چوتھی کی رخصت اس کے سامنے ہوئی سات آٹھ برس برابر آتی جاتی رہی اب کہتا ہے کہ میں راضی نہیں اس صورت میں نکاح کا حکم اور یہ کہ باپ یا صغیرہ کو بعد بلوغ حق فسخ ہے یا نہیں۔

۵۲۱ | نابالغہ یتیمہ کی کفیل صرف ماں ہے چچا چالیس سال سے بے تعلق ہے۔ ایسی حالت میں ماں اور چچا دونوں کی بے اجازت اور ان کی عدم موجودگی میں جو نکاح ہوا کیسا ہے۔

۵۲۴ | باپ اور دادا کا کیا ہوا نکاح لازم ہو جاتا ہے اگر چہ مہر میں غبن فاحش اور غیر کفو میں ہو۔

۵۲۱ | جب دادا یا جوان بھائی نہ ہو تو چچا ولی ہے، چچا کے سامنے ماں کو اختیار نہیں۔

۵۲۴ | لیلیٰ نابالغہ کا باپ بکر اس کے نکاح کی عمر و کفو کے ساتھ کرنے کے کی اجازت اپنے جوان بیٹے خالد کو دے کر بیس کوس چلا گیا خالد نے زید کے ساتھ کہ وہ بھی برادری ہی کا ہے لیلیٰ کا نکاح جلدی کر کے کر دیا ، باپ آیا خبر نکاح سن کر ناراض ہوا، دختر کو پھر سسرال نہ جانے دیا، اب سات برس سے لیلیٰ بالغ ہے اس نے بالغہ ہوتے ہی اس نکاح سے انکار کر دیا، کیا حکم ہے۔

۵۲۱ | باپ سے جدا ہونا ولایت شرعیہ کو ساقط نہیں کرتا۔

۵۲۶ | نکاح فضولی بے اجازت نافذ نہیں ہوتا۔

۵۲۱ | گناہ مسقط ولایت نہیں۔

۵۲۷ | ولی اقرب اگر غائب بغیبت منقطعہ ہو تو حق ولایت ولی ابعد کی طرف منتقل ہو جاتا ہے۔

۵۲۲ | فسخ مانع ولایت نہیں۔

۵۲۷ | غیبت منقطعہ میں دو قول اصح ہیں ارجح اور اکثر مشائخ کا مختار للفتوی احسن واشبہ بالفقہ یہ کہ اگر ولی یا اس کی رائے کا انتظار کیا جائے تو کفو خاطب فوت ہو جائے گا۔

۵۲۲ | نکاح فضولی اجازت ولی پر موقوف ہوتا ہے جائز کر دے تو جائز ہو جاتا ہے، رد کر دے باطل۔

۵۲۸ | نابالغ ونابالغہ کا نکاح جوان کے اولیاء کریں کیسا ہے اور بعد بلوغ وہ اسے فسخ کر سکتے ہیں یا نہیں۔

۵۲۲ | باپ دادا کے سوا اور ولی اگر غیر سے نکاح کر دے یا مہر میں کمی فاحش کر دے تو نکاح صحیح نہیں۔

۵۲۸ | باپ کا کیا ہوا نکاح لازم ہے یعنی اولاد کو فسخ کا اختیار نہیں ہوتا۔

۵۲۳ | کفو ہونے میں کن امور کا اعتبار ہے۔

۵۲۹ | ہندہ بالغہ بیوہ ایسے شخص سے نکاح کرنا چاہتی ہے جس سے نکاح پر اس کے والدین راضی نہیں، اگر کرے گی تو نکاح ہو گا یا نہیں۔

۵۲۳ | جو مہر معجل اور نفقہ سے عاجز ہو وہ قابل جماع عورت کا کفو نہیں۔

۵۳۰ | ماموں نے نابالغہ ہمشیرہ زادی کا نکاح اپنے لڑکے سے کیا، کوئی اور ولی نہیں، دختر بعد بلوغ جبکہ بلوغ کو کچھ زمانہ گزر جائے اور اسے نکاح کا پہلے سے علم ہو نکاح سے انکار کرے تو کیا حکم ہے۔

531 | Severe warning for the one who spoils a woman against her husband. | 539 | Among male paternal relatives, the one who is foremost in inheritance is the guardian for marriage. 532 | The father of a minor girl was in Gwalior, the mother is deceased. The maternal grandfather, without consulting the father, wants to marry the minor girl to a Rafidi. When the father found out, he was angry and forbade it. In such a situation, what is the ruling if the marriage takes place? | 539 | The guardian for marriage is 'Asaba bi-nafsihi' (agnatic male relative) according to the order of inheritance and exclusion. 533 | A transgressor (fasiq) is not a peer for a virtuous woman, nor is a transgressing woman (fasiqa) the daughter of a virtuous man. | 539 | If there is no 'Asaba bi-nafsihi', then the mother obtains the guardianship for marriage. 533 | Hindah, an adult virgin, was married off by her guardian to Zaid with his permission. Hindah knew about it; she neither gave verbal permission nor refused. How was this marriage? | 540 | If a distant relative performs the marriage while a closer guardian is present, it will depend on the closer guardian's permission. 544 | It is Sunnah to seek permission from an adult woman before marriage. | 541 | A prostitute repented and married a Muslim; the maternal grandmother says, "I am the guardian, marriage without my permission is not valid." 544 | The silence of a virgin is also considered permission when the closer guardian or his sent representative seeks permission for marriage to someone whom the woman recognizes. | 542 | The sale of a carcass, blood, or a free person is absolutely void as they are not subjects for sale because they are not wealth. 545 | An unauthorized (fuzuli) marriage is rejected by verbal or practical rejection and becomes valid by verbal, practical, or silent permission. | 542 | Ownership and right of disposal are not obtained through a void contract. 545 | Definitions and examples of verbal rejection, practical rejection, and verbal, practical, and silent permission. | 542 | The marriage of a free, legally responsible woman is executed even without a guardian. 548 | Performing marriage without seeking permission is against the Sunnah but not a sin. | 542 | A minor was married with the father's permission. After reaching puberty, the minor dislikes it; what is the ruling? 548 | How is the marriage of a minor girl under the mother's guardianship while uncles etc. are present, especially if the girl is unhappy after reaching puberty? | 543 | The situation in which a marriage performed by the father for a minor is also not valid. 549 | If any male paternal relative is present, the mother does not have the authority for marriage guardianship. | 544 | Zaid married his minor daughter to Amr. Later, Amr became

involved in transgression and debauchery. Hindah, upon becoming an adult, considers this marriage invalid; what is the ruling?

531 | औरत को शौहर से बिगाड़ने वाले पर सख़्त चेतावनी। | 539 | दादा पक्ष के पुरुषों में जो विरासत के मामले में पहले आता है, वही निकाह का वली (अभिभावक) होता है। 532 | नाबालिग बच्ची का बाप ग्वालियर में था, माँ मर चुकी है। नाना पिता से परामर्श किए बिना नाबालिग का निकाह एक राफ़ज़ी से कराना चाहता है, पिता को पता चला तो वह नाराज़ हुआ और मना किया। ऐसी स्थिति में यदि निकाह हो जाए तो क्या हुक्म है? | 539 | निकाह का वली विरासत और हज्ब (बाधा) के क्रम के अनुसार 'असबा बनफसिही' (पुरुष रक्त संबंधी) होता है। 533 | फ़ासिक़ (पापी) न नेक औरत के लिए कुफ़ू (बराबर) है और न ही फ़ासिक़ा (पापिनी) नेक मर्द की बेटी के लिए। | 539 | यदि 'असबा बनफसिही' न हो, तो माँ को निकाह की विलायत (अभिभावकत्व) प्राप्त होती है। 533 | हिंदा बालिग कुंवारी का निकाह उसके वली ने अपनी अनुमति से ज़ैद के साथ कर दिया, हिंदा को इसका पता था; उसने न ज़बान से इजाज़त दी और न ही इंकार किया। यह निकाह कैसा हुआ? | 540 | करीबी वली की मौजूदगी में अगर दूर का वली निकाह करा दे, तो वह करीबी वली की इजाज़त पर निर्भर होगा। 544 | बालिग औरत से निकाह से पहले अनुमति लेना सुन्नत है। | 541 | एक तवायफ़ ने तौबा करके एक मुसलमान से निकाह कर लिया, नानी कहती है कि मैं वली हूँ, मेरी इजाज़त के बिना निकाह जायज़ नहीं। 544 | कुंवारी लड़की की खामोशी भी अनुमति है जब करीबी वली या उसका भेजा हुआ वकील उससे ऐसे व्यक्ति के साथ निकाह की अनुमति ले जिसे वह औरत पहचानती हो। | 542 | मृत जानवर, खून और आज़ाद इंसान की बिक्री पूरी तरह अमान्य (बातिल) है क्योंकि वे बिक्री का विषय ही नहीं हैं क्योंकि वे माल नहीं हैं। 545 | फ़ुज़ूली (अनधिकृत) निकाह को ज़बानी या व्यावहारिक रूप से रद्द करने से वह रद्द हो जाता है और ज़बानी, व्यावहारिक या मौन सहमति से जायज़। | 542 | अमान्य (बातिल) अनुबंध से मालिकाना हक़ या उपभोग का अधिकार प्राप्त नहीं होता। 545 | ज़बानी रद्द, व्यावहारिक रद्द, और ज़बानी, व्यावहारिक व मौन अनुमति की परिभाषा और उदाहरण। | 542 | एक आज़ाद और समझदार औरत का निकाह वली के बिना भी लागू हो जाता है। 548 | बिना अनुमति लिए निकाह कर देना सुन्नत के विरुद्ध है, गुनाह नहीं। | 542 | पिता की अनुमति से नाबालिग का निकाह हुआ। बालिग होने के बाद लड़की उसे नापसंद करती है, क्या हुक्म है? 548 | चाचा आदि की मौजूदगी में माँ के अभिभावकत्व में नाबालिग का निकाह कैसा है, जबकि बालिग होने के बाद लड़की नाराज़ भी है? | 543 | वह स्थिति जिसमें पिता द्वारा कराया गया नाबालिग का निकाह भी सही नहीं होता। 549 | यदि दादा पक्ष के पुरुषों में से कोई मौजूद हो, तो माँ

को निकाह का वली बनने का अधिकार नहीं होता। | 544 | ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह अम्र से कर दिया, फिर अम्र बुराइयों और पापों में पड़ गया। हिंदा बालिग होकर इस शादी को नाजायज़ मानती है; क्या हुक्म है?

531 | عورت کو شوہر سے بگاڑنے والے پر وعید شدید۔ | 539 | جدی مردوں میں جو درباب وراثت مقدم ہو وہی ولی نکاح ہوتا ہے۔ 532 | نابالغہ کا باپ گوالیار میں تھا، ماں مر چکی ہے۔ نانا بے مشورہ والد نابالغہ اس کا نکاح ایک رافضی سے چاہتا ہے، باپ کو اطلاع ہوئی تو وہ ناراض ہوا اور ممانعت کی ایسی صورت میں اگر نکاح ہو تو کیا حکم ہے۔ | 539 | ولی نکاح عصبہ بنفسہ ہوتا ہے مطابق ترتیب وراثت وحجب۔ 533 | فاسق نہ صالحہ کا کفو ہے نہ فاسقہ بنت صالح کا۔ | 539 | عصبہ بنفسہ نہ ہو تو ماں کو ولایت نکاح حاصل ہوتی ہے۔ 533 | ہندہ بالغہ باکرہ کا نکاح اس کے ولی نے اپنی اجازت سے زید کے ساتھ کردیا، ہندہ کو اس کا علم تھا، ہندہ نے اپنی زبان سے اجازت نہ دی نہ انکار کیا، یہ نکاح کیسا ہوا۔ | 540 | ولی اقرب کے ہوتے ہوئے ابعد نکاح پڑھادے تو وہ اقرب کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ 544 | بالغہ سے پیش از نکاح اذن لینا مسنون ہے۔ | 541 | طوائف نے توبہ کرکے ایک مسلمان سے نکاح کرلیا نانہہ کہتی ہے کہ میں ولی ہوں بے میری اجازت نکاح جائز نہیں۔ 544 | زن دوشیزہ کا سکوت بھی اذن ہے جبکہ ولی اقرب یا اس کا وکیل فرستادہ اس سے ایسے سے نکاح کا اذن لے جسے عورت پہچانتی ہو۔ | 542 | مردار، خون اور حر کی بیع باطل محض ہے کہ محل بیع ہی نہیں کیونکہ مال نہیں۔ 545 | نکاح فضولی قولاً یا فعلاً رد کردینے سے رد ہوجاتا ہے اور اجازت قولی یا فعلی یا سکوتی سے جائز۔ | 542 | عقد باطل سے ملک تصرف حاصل نہیں ہوتی۔ 545 | رد قولی، رد فعلی، اجازت قولی، فعلی، سکوتی کی تعریف اور مثالیں۔ | 542 | حرہ مکلفہ کا نکاح بغیر ولی کے نافذ ہوجاتا ہے۔ 548 | بے اذن لئے نکاح کردینا خلاف سنت ہے گناہ نہیں۔ | 542 | نابالغہ کا باجازت والد نکاح ہوا بعد بلوغ نابالغہ ناپسند کرتی ہے، کیا حکم ہے۔ 548 | نابالغہ کا نکاح بولایت مادر جبکہ چچا

وغیرہ موجود ہوں کیسا ہے اور بعد بلوغ لڑکی ناراض بھی ہے۔ | 543 | وہ صورت جس میں باپ کا کیا ہوا نکاح نابالغہ بھی صحیح نہیں۔ 549 | جدی مردوں میں سے اگر کوئی موجود ہو تو ماں کو ولایت نکاح نہیں ہوتی۔ | 544 | زید نے اپنی نابالغہ دختر کا عقد عمرو سے کردیا پھر عمرو فسق وفجور میں مبتلا ہوگیا، ہندہ بالغہ ہوکر اس تزویج کو ناجائز رکھتی ہے کیا حکم ہے۔

Fatawa Razawiya - Volume 11

Serial No.	Content	Content	Serial No.
542	Compatibility (Kafa'at) is considered at the time of the marriage contract. If it ceases to exist after the contract, it is not detrimental.	The maternal uncle, in consultation with the mother and in the absence of the father, uncle, brother, and grandfather, performed the marriage. If the girl did not accept it after reaching puberty, does that marriage remain valid or not?	544
545	Seeking permission from an adult female for marriage is mandatory.	It will not be annulled simply by the woman's disapproval. For annulment, it is necessary to file a claim in the Qadhi's (judge's) court so that the Qadhi may annul it.	545
545	The father of a minor girl is missing; her adult brother and mother performed the marriage. Did it take place or not?	Maternal aunts married off minor girls to their own sons in the absence of the paternal uncle. What is the ruling?	545
545	The mother performed the marriage of a minor girl despite the minor's refusal and the father being alive. Did it take place or not?	Detail of the ranks of some guardians: a maternal aunt is in the sixth rank of guardianship compared to a real paternal uncle.	545

Serial No.	Content	Content	Serial No.
546	For 'Ghaybat Munqati'ah' (absolute absence), it is not necessary for the person to be untraceable; rather, if it's known where the guardian is, but waiting for him to arrive or for his opinion would mean losing an available suitable match (Kufu), this is also considered absolute absence.	The mother married the girl to Zaid in the father's absence. The father was satisfied but said, "Do not go ahead until he gets a job." What is the ruling?	546
547	In the absence of the caretaker, his wife married off Hindah. When he returned, he was not satisfied. What is the ruling?	If the parents of a minor are wealthy, the minor will also be considered wealthy.	547
549	One who has no blood-relation guardian, their guardian is the Shar'i Qadhi; the marriage will be subject to his permission. Where there is no Shar'i Qadhi, like in most of India, it will be subject to the permission of the local scholars or a jurist authorized to give fatwas.	If the husband himself is completely poor, he will still be considered a suitable match (Kufu) based on the wealth of his parents, even if he is an adult, provided that his expenses are borne by his parents.	549
550	If there are a sister, maternal grandmother, and maternal grandfather, who will have the right of guardianship for marriage?	If an adult woman marries a suitable match (Kufu) without the guardian's permission for less than the equivalent dowry (Mahr-e-Mithl), the guardian has the right to object; either the husband must complete the dowry, or the judge should separate them.	550
551	The maternal grandfather does not have the right of guardianship for marriage ahead of the maternal grandmother.	If a paternal uncle, by his own guardianship, while the girl is with her maternal grandmother, marries her to his minor son, then this marriage will be valid.	551

Serial No.	Content	Content	Serial No.
551	An apostate (Murtad) has no guardianship over anyone, even if he claims to be a Muslim.	One who is absent by absolute absence (Ghaybat-e-Munqati'ah) no longer remains a guardian; this is the correct view.	558

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

क्रम संख्या	विषय-वस्तु	विषय-वस्तु	क्रम संख्या
542	निकाह के समय कुफ़ू (बराबरी) का होना ज़रूरी है। अगर निकाह के बाद यह ख़त्म हो जाए, तो निकाह पर असर नहीं पड़ता।	मामा ने माँ की सलाह से, पिता, चाचा, भाई और दादा की अनुपस्थिति में निकाह कर दिया। लड़की ने बालिग होने के बाद उसे स्वीकार नहीं किया, तो क्या वह निकाह बरकरार रहा या नहीं?	544
545	बालिग महिला से निकाह के लिए अनुमति माँगना ज़रूरी है।	केवल महिला की अस्वीकृति से निकाह ख़त्म नहीं होगा। इसके लिए क़ाज़ी की अदालत में दावा करना ज़रूरी है ताकि क़ाज़ी उसे रद्द (मंसूख़) करे।	545
545	नाबालिग लड़की का पिता लापता है; उसके बालिग भाई और माँ ने निकाह किया, वह हुआ या नहीं?	मौसियों (ख़ालाओं) ने चाचा की अनुपस्थिति में अपने बेटों से नाबालिग लड़कियों का निकाह कर दिया, इसका क्या हुक्म है?	545
545	माँ ने नाबालिग का निकाह, नाबालिग के इनकार और पिता के जीवित होने के बावजूद कर दिया, वह हुआ या नहीं?	कुछ संरक्षकों (वलियों) के दर्जों का विवरण: सगे चाचा के मुकाबले संरक्षण में मौसी छठे दर्जे पर है।	545
546	'ग़ैबत-ए-मुन्क़तिया' (पूर्ण अनुपस्थिति) के लिए लापता होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि अगर यह पता हो कि वली फ़लां जगह है, लेकिन उसके आने या उसकी राय जानने के इंतज़ार में योग्य वर (कुफ़ू) हाथ से	माँ ने पिता की अनुपस्थिति में लड़की का निकाह ज़ैद से कर दिया। पिता इस पर राज़ी तो था लेकिन उसने कहा था कि 'जब तक वह नौकरी पेशा न हो जाए, तब तक मत करना'। इसका क्या हुक्म है?	546

क्रम संख्या	विषय-वस्तु	विषय-वस्तु	क्रम संख्या
	निकल जाए, तो यह भी 'ग़ैबत-ए-मुन्क़तिया' है।		
547	पालन-पोषण करने वाले की अनुपस्थिति में उसकी पत्नी ने हिंदह का निकाह कर दिया, जब वह आया तो राज़ी नहीं हुआ। क्या हुक्म है?	अगर नाबालिग के माता-पिता धनी हों, तो उसे भी धनी माना जाएगा।	547
549	जिसका कोई ख़ून का संरक्षक (वली) न हो, उसका वली शरई क़ाज़ी है; निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। जहाँ शरई क़ाज़ी न हो, जैसे भारत के अधिकांश क्षेत्रों में, वहाँ के विद्वानों या मुफ़्ती की अनुमति पर निर्भर होगा।	अगर पति ख़ुद निर्धन हो, तो वह अपने माता-पिता की संपन्नता के आधार पर कुफ़ू (योग्य) माना जाएगा, भले ही वह बालिग हो, बशर्ते कि उसके ख़र्च उसके माता-पिता उठाते हों।	549
550	अगर बहन, नानी और नाना हों, तो निकाह का संरक्षण (विलायत) किसे प्राप्त होगा?	अगर बालिग महिला वली की अनुमति के बिना किसी कुफ़ू (बराबर वाले) से महर-ए-मिसल (उचित मेहर) से कम पर निकाह करे, तो वली को आपत्ति का अधिकार है; या तो पति महर-ए-मिसल पूरा करे या क़ाज़ी निकाह तोड़ दे।	550
551	नानी की मौजूदगी में नाना को निकाह का संरक्षण प्राप्त नहीं है।	चाचा ने अपने संरक्षण से, जबकि लड़की नानी के पास थी, अपने नाबालिग बेटे से उसका निकाह कर दिया, तो यह निकाह सही होगा।	551
551	मुर्तद (धर्मत्यागी) को किसी पर संरक्षण हासिल नहीं है, भले ही वह इस्लाम का दावा करता हो।	जो 'ग़ैबत-ए-मुन्क़तिया' के कारण ग़ायब हो, वह उस समय तक वली नहीं रहता, यही सही बात है।	558

نمبر شمار	مندرجات	نمبر شمار	مندرجات
۵۴۲	اعتبار کفاءت وقت عقد ہے۔ بعد عقد اگر زائل بھی ہو جائے تو مفسد نہیں۔	۵۴۴	ماموں نے ماں کے مشورے سے بحالت عدم موجودگی والد اور چچا اور برادر اور دادا نکاح کر دیا لڑکی نے بعد بلوغ منظور نہ کیا تو وہ نکاح رہا یا نہیں۔
۵۴۵	استیذان از بالغہ نکاح کے لئے ضرور ہے۔	۵۴۵	عورت کے نامنظور کرنے سے فسخ نہ ہوگا۔ فسخ کے لئے ضروری ہے کہ قاضی کے یہاں دعویٰ کرے تو قاضی فسخ کرے۔
۵۴۵	نابالغہ کا باپ مفقود الخبر ہے، بھائی بالغ ہے نکاح اس بھائی اور ماں نے کیا، ہوا یا نہیں۔	۵۴۵	خالاؤں نے چچا کی غیبت میں اپنے لڑکوں سے نابالغہ لڑکیوں کا عقد کر لیا، کیا حکم ہے۔
۵۴۵	نابالغہ کا نکاح ماں نے باوجود انکار نابالغہ وحیات والد کر دیا، ہوا یا نہیں۔	۵۴۵	درجات بعض اولیا کی تفصیل خالہ سگے چچا سے ولایت میں چھٹیوں درجہ میں ہے۔

نمبر شمار	مندرجات
	غیبت منقطعہ کے لئے مفقود الخبر ہونا ضروری نہیں بلکہ اگر معلوم ہو کہ ولی فلاں
۵۴۶	جگہ ہے اس کے آنے یا اس کی رائے سے اطلاع پانے میں کفو حاضر فوت ہوگا۔ یہ بھی غیبت منقطعہ ہے۔
۵۴۷	پرورش کرنے والے کی عدم موجودگی میں اسی کی بی بی نے ہندہ کا نکاح کر دیا، وہ آیا تو راضی نہ ہوا۔ کیا حکم ہے۔
۵۴۹	جس کا کوئی ولی نسبانہ ہو اس کا ولی قاضی شرع ہے، نکاح اس کی اجازت پر موقوف رہے گا۔ جہاں قاضی شرع نہ ہو جیسے اکثر دیار ہندوستان وہاں علمائے اہل ہر بلد صاحب فتویٰ فقیہ کی اجازت پر موقوف ہوگا۔
۵۵۰	ہمشیرہ اور نانی نانا ہوں تو ولایت نکاح کسے حاصل ہوگی۔

نمبر شمار	مندرجات
۵۴۶	ماں نے لڑکی کا نکاح باپ کی عدم موجودگی میں زید سے کردیا جس سے وہ راضی تو تھا مگر یہ کہتا تھا کہ جب تک نوکر نہ ہونا کرنا۔ کیا حکم ہے۔
۵۴۷	نابالغ کے والدین غنی ہوں تو وہ بھی غنی مانا جائیگا۔
۵۴۹	شوہر اگر خود محض نادار ہو تو وہ اپنے ماں باپ کے غنی سے کفو ٹھہرے گا اگر چہ بالغ ہو جبکہ اس کے مصارف اس کے ماں باپ تحمل کرتے ہوں۔
۵۵۰	اگر بالغہ بے اذن ولی کفو سے مہر مثل سے کم پر نکاح کرے تو ولی کو حق اعتراض ہے یا شوہر مہر مثل پورا کرے یا قاضی تفریق کر دے۔

نمبر شمار	مندرجات	نمبر شمار	مندرجات
			چچا بولایت خود ایسی حالت میں کہ
۵۵۱	نانی کے آگے نانا کو ولایت نکاح نہیں۔	۵۵۱	لڑکی نانی کے پاس ہو اپنے پسر نابالغ سے اس کا نکاح کر دے تو یہ نکاح درست ہوگا۔
۵۵۱	مرتد کو کسی پر ولایت نہیں اگرچہ دعویٰ اسلام رکھتا ہو۔	۵۵۸	جو غائب بغیبت منقطعہ ہو وہ اس وقت تک ولی نہیں رہتا یہی صحیح ہے۔

Fatawa Razawiya Volume 11

Page	Subject/Question	Subject/Question	Page
559	An uncle married off his niece to a sick man while hiding it from the mother. What is the ruling?	It is a doubt that averts 'Hadd' (prescribed punishment).	562
559	Minor Zaid was married to adult Mahmooda with his aunt's permission. Zaid died four months after the marriage. Did this marriage happen or not? Is the dower (Mahr) payable or not? If yes, how much?	There is no 'Hadd' on a child.	562
560	A boy reaches puberty through nocturnal emission and ejaculation, and a girl through nocturnal emission, menstruation, and pregnancy.	A maternal uncle married off a minor girl under his own guardianship. Now, after reaching puberty, the girl rejects it. At the time she reached puberty, she called two or four people and declared, "I have now reached puberty and I annul this marriage, I also waive the dower debt." The husband does not clarify, and the news of the annulment should be given to the Qazi so the Qazi can effect separation, and in this kingdom, there are no judicial matters, etc.	563
560	A boy can reach puberty at a minimum of twelve years and a girl at a minimum of nine years, while both reach it at a maximum of fifteen years.	The Qazi cannot effect separation in the absence of the husband; rather, his presence is necessary at the time of separation.	563
561	Dower becomes mandatory due to intercourse, valid privacy (Khalwat Sahiha), or	High Courts and other English courts are not Sharia judicial courts (Dar-ul-Qaza); therefore, marriages annulled by these officials will not be considered annulled.	563

Page	Subject/Question	Subject/Question	Page
	the death of one of the spouses.		
561	In a suspended (mawquf) marriage, if death occurs before permission, it becomes void.	A Muslim 'Panch' (arbitrator/committee) can effect separation in the presence of the husband.	564
561	The silence of the guardian is not considered permission, even if he is present at the marriage ceremony, as long as he has not performed any act that indicates permission.	In all matters except 'Hudud', 'Qisas' (retaliation), and 'Diyat' (blood money) on the 'Aqila', the decision of a 'Panch' is like the decision of a Qazi.	564
562	The marriage of a minor with an adult woman was suspended, and he forcibly had intercourse with that adult woman; then 'Mahr Mithl' (standard dower) will be mandatory. If he had intercourse with the woman's consent, then nothing will be mandatory.	In an Islamic state, a Muslim Qazi who is not specific to that city and is not restricted to a particular school of thought for judgment can also effect separation even if the plaintiff and defendant are not from there.	564
562	A suspended marriage does not make intercourse or even looking (at each other) permissible before permission. However, if forced intercourse occurred, 'Mahr Mithl' is mandatory; otherwise, nothing.	Zaid and Hinda, both minors, were married under their fathers' guardianship. Zaid became blind, and Hinda's father died. Hinda's mother and uncle refuse the 'Rukhsati' (departure). What is the ruling?	564

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

पृष्ठ	विषय / प्रश्न	विषय / प्रश्न	पृष्ठ
५५९	चाचा ने भतीजी का निकाह माँ से छुपा कर एक बीमार व्यक्ति से कर दिया, तो क्या हुक्म है?	यह 'हद्द' (सज़ा) को टालने वाला संदेह है।	५६२
५५९	नाबालिग ज़ैद का निकाह उसकी बुआ की अनुमति से बालिग़ा महमूदा से हुआ। ज़ैद निकाह के चार महीने बाद मर गया, यह निकाह हुआ या नहीं? मेहर (दहेज राशि) देय है या नहीं? यदि है, तो कितनी?	बच्चे पर कोई 'हद्द' नहीं है।	५६२
५६०	लड़का स्वप्नदोष और वीर्यपात से, और लड़की स्वप्नदोष, मासिक धर्म और गर्भावस्था से बालिग़ होती है।	मामा ने नाबालिग लड़की का निकाह स्वयं के संरक्षण (विलायत) में कर दिया। अब बालिग़ होने के बाद लड़की इसे अस्वीकार करती है और जिस समय वह बालिग़ हुई, उसने दो-चार लोगों को बुलाकर घोषित किया कि मैं अब बालिग़ हो गई हूँ और इस निकाह को रद्द करती हूँ, मेहर का क़र्ज़ भी माफ़ करती हूँ। पति सफ़ाई नहीं देता और रद्द होने की सूचना क़ाज़ी को देनी चाहिए ताकि क़ाज़ी विच्छेद (तफ़रीक़) कर दे, और इस सल्तनत में न्यायिक मामले नहीं हैं आदि।	५६३
५६०	लड़का कम से कम बारह वर्ष की आयु में बालिग़ हो सकता है और लड़की कम से कम नौ वर्ष की आयु में, जबकि दोनों अधिकतम पंद्रह वर्ष में।	पति की अनुपस्थिति में क़ाज़ी विच्छेद नहीं कर सकता, बल्कि विच्छेद के समय उसकी उपस्थिति आवश्यक है।	५६३

पृष्ठ	विषय / प्रश्न	विषय / प्रश्न	पृष्ठ
५६१	मेहर का अनिवार्य होना संभोग (वती), खलवत-ए-सहीहा (एकांतवास) या जीवनसाथी में से किसी एक की मृत्यु से होता है।	हाई कोर्ट और अन्य अंग्रेज़ी अदालतें शरीयत के अनुसार न्यायपीठ (दारुल-क़ज़ा) नहीं हैं, इसलिए इन अधिकारियों द्वारा रद्द किए गए निकाह रद्द नहीं माने जाएंगे।	५६३
५६१	निलंबित (मौक़ूफ़) निकाह में यदि अनुमति से पूर्व मृत्यु हो जाए, तो वह रद्द (बातिल) हो जाता है।	मुस्लिम पंच पति की उपस्थिति में विच्छेद कर सकते हैं।	५६४
५६१	वली (संरक्षक) की चुप्पी अनुमति नहीं है, भले ही वह निकाह की सभा में मौजूद हो, जब तक कि उसने ऐसा कोई कार्य न किया हो जो अनुमति को दर्शाता हो।	हदूद, क़िसास (बदला) और आक़िला पर दियत (रक्त मूल्य) के अलावा सभी मामलों में पंच का निर्णय क़ाज़ी के निर्णय की तरह है।	५६४
५६२	नाबालिग का बालिग़ा से निकाह निलंबित था और उसने उस बालिग़ा से ज़बरदस्ती संभोग किया, तो 'मेहर-ए-मिसल' अनिवार्य होगा। और यदि स्त्री की सहमति से संभोग किया, तो कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा।	इस्लामी राज्य में जो मुस्लिम क़ाज़ी ऐसा हो जो उस विशेष शहर के लिए न हो और न ही किसी विशेष धर्म/पंथ पर न्याय करने के लिए बाध्य हो, तो वह भी विच्छेद कर सकता है भले ही वादी और प्रतिवादी वहाँ के न हों।	५६४
५६२	निलंबित निकाह अनुमति से पहले संभोग को हलाल नहीं करता, यहाँ तक कि दृष्टि को भी नहीं। फिर भी यदि	नाबालिग ज़ैद और हिंदा का निकाह पिताओं के संरक्षण में हुआ। ज़ैद अंधा हो गया, हिंदा के पिता की मृत्यु हो गई, हिंदा की माँ और चाचा विदाई (रुख़्सती) से इनकार करते हैं, क्या हुक्म है?	५६४

पृष्ठ	विषय / प्रश्न	विषय / प्रश्न	पृष्ठ
	ज़बरदस्ती संभोग किया गया तो मेहर-ए-मिसल अनिवार्य है, अन्यथा कुछ नहीं।		
पृष्ठ ७३९ में से ५५			

صفحہ	مضمون/سوال
۵۵۹	چچانے بھتیجی کا عقد ماں سے چھپا کر ایک بیمار سے کر دیا تو کیا حکم ہے۔
۵۵۹	زید نابالغ کا نکاح باجازت اس کی پھوپھی کے محمودہ بالغہ سے ہوا۔ زید نکاح کے چار ماہ بعد مر گیا، یہ نکاح ہوا یا نہیں مہر واجب الادا ہے یا نہیں۔ ہے تو کس قدر۔
۵۶۰	لڑکا احتلام وانزال اور لڑکی احتلام وحیض وحمل سے بالغ ہوتی ہے۔

مضمون/سوال	صفحہ
شبہ دافع حد ہے۔	۵۶۲
بچے پر حد نہیں۔	۵۶۲
ماموں نے نابالغہ کا نکاح بولایت خود کر دیا اب بعد بلوغ لڑکی نا منظور کرتی ہے اور جس وقت بالغ ہوئی دو چار آدمیوں کو بلا کر اظہار کیا کہ میں اب بالغہ ہوئی اس نکاح کو فسخ کیا، دین مہر بھی معاف کرے دیتی ہے، شوہر صفائی نہیں کرتا اور فسخ کی خبر قاضی کو کرنا قاضی کو تفریق کرنا چاہئے اور اس سلطنت میں قضایا نہیں الخ۔	۵۶۳

صفحہ	مضمون/سوال
	لڑکا کم از کم بارہ برس کی عمر میں بالغ ہو سکتا ہے اور
۵۶۰	لڑکی کم از کم نو برس کی عمر میں جبکہ دونوں زیادہ سے زیادہ پندرہ برس میں۔
	مہر کا لزوم وطی، خلوت
۵۶۱	صحیحہ یا احد الزوجین کی موت سے ہوتا ہے۔
	نکاح موقوف میں اجازت سے
۵۶۱	قبل موت واقع ہو جائے تو باطل ہو جاتا ہے۔
	سکوت ولی اجازت نہیں
۵۶۱	اگرچہ جلسہ نکاح میں موجود ہو جبکہ کوئی ایسا فعل نہ کیا ہو جو اجازت پر دال ہو۔
	نابالغ کا بالغہ سے نکاح
۵۶۲	موقوف ہوا اور وہ اس بالغہ سے جبراً وطی کرے تو مہر مثل لازم ہو گا، اور اگر

صفحہ	مضمون/سوال
۵۶۳	زوج کی عدم موجودگی میں قاضی تفریق نہیں کر سکتا بلکہ بوقت تفریق اس کی حاضری ضروری ہے۔
۵۶۳	ہائی کورٹ وغیرہ انگریزی کچہریاں شرعی دارالقضا نہیں لہذا ان حکام کے فسخ کئے نکاح فسخ نہ ہو گا۔
۵۶۴	مسلمان پنچ شوہر کی موجودگی میں تفریق کر سکتا ہے۔
۵۶۴	حدود، قصاص اور عاقلہ پر دیت کے علاوہ تمام معاملات میں پنچ کا فیصلہ مثل فیصلہ قاضی ہے۔
۵۶۴	ریاست اسلامی میں جو مسلمان قاضی ایسا ہو جو خاص اس شہر کے لئے نہ ہو نہ کسی مذہب خاص پر قضا کے لئے مقید ہو تو وہ بھی تفریق کر سکتا ہے اگر مدعی اور مدعاعلیہ وہاں کے نہ ہوں۔

صفحہ	مضمون/سوال	صفحہ	مضمون/سوال
	عورت کی رضا سے وطی کرے تو کچھ لازم نہ ہو گا۔		
	نکاح موقوف قبل از اجازت وطی کو حلال نہیں کرتا بلکہ		زید و ہندہ نابالغوں کا نکاح بولایت پدران ہوا زید نابینا
۵۶۲	نظر کو بھی تاہم جبراً وطی کی تو مہر مثل لازم ورنہ کچھ نہیں۔	۵۶۴	ہو گیا، ہندہ کا باپ مر گیا، ہندہ کی ماں اور چچا رخصت سے انکار کرتے ہیں، کیا حکم ہے۔

Fatwa Razawiyya, Volume 11

Page 56 of 739

Case No.	Question / Details	Case No.	Fatwa / Ruling
570	Hindah, a minor who has no guardian except her mother, was married to Khalid, also a minor, with her own permission and her mother's consent. The acceptance (Qabul) was performed by the minor. Later, Hindah did not want to go to Khalid's home but went after being admonished by a manager. She stayed there for four years. Now she is expressing displeasure again and wants to marry elsewhere. Consummation has not taken place. What is the ruling?	565	When there is no sane adult male from the lineage of the grandfather or great-grandfather, the guardianship (Wilayah) belongs to the mother. While the mother is present, the paternal aunt has no authority. A marriage conducted by the paternal aunt in such a case was dependent on the mother's permission; since the mother rejected it, it is annulled.
571	Zaid performed the marriage of Hindah, a virgin, in the absence of her mother who was 12 'Kos' (approx. 24 miles) away. He claimed the mother and grandmother's consent and Hindah's silence and crying were indicators of	566	Mahmoodah's father did not want her to marry Hamid. Mahmoodah's mother and the whole family conducted the marriage in the absence of the father, who was about 12-13 'Kos' away. Mahmoodah is an adult. Before the marriage, her peer was sent to find out her will. Mahmoodah said she heartily accepted. At the time of marriage, the proxy and witnesses went to Mahmoodah for permission and returned. Then it was known that they only

Case No.	Question / Details	Case No.	Fatwa / Ruling
	her agreement. Now he says Hindah herself accepted clearly. The proxy (Wakil) and witnesses testified according to Zaid's statement. Hindah says she never accepted, neither then nor now. What is the ruling?		obtained consent from Mahmoodah's mother. They went again; Mahmoodah was busy in prayer. After finishing, when asked, she remained silent. Her mother said, "Yes, she accepts." When asked again, she lowered her head. Asked once more, she placed both hands over her face and bowed even more. Asked yet again, Mahmoodah remained in a state of silence. The proxy and witnesses returned and the marriage was performed. At night, Mahmoodah's father arrived and created an uproar. In the morning, it was said that Mahmoodah's mother claims Mahmoodah did not accept the marriage and she was praying at the time of seeking permission. The mother had earlier said Mahmoodah accepted. The father kept saying the marriage didn't happen due to her being busy in prayer. Then the father wanted a separation. Mahmoodah wrote a note to her father saying the word 'divorce' should never come up. In such a case, has this marriage taken place or not?
574	Silence is not considered consent when permission is sought by a stranger or even a distant guardian.		
574	Contradiction in matters that are hidden or ambiguous is acceptable and forgiven.		
574	If someone says "this girl is my foster sister (Radhiya)" and then admits it was a mistake,		

Case No.	Question / Details	Case No.	Fatwa / Ruling
	he will be believed, and marriage with her will be permissible as long as he does not remain firm on his initial confession.		

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

पृष्ठ 56 का 739

केस नंबर	प्रश्न / विवरण	केस नंबर	फ़तवा / हुक्म
570	हिंदा, एक नाबालिग लड़की, जिसका माँ के अलावा कोई वली (संरक्षक) नहीं है, उसका निकाह हिंदा की अनुमति और उसकी माँ की सहमति से खालिद (नाबालिग) के साथ हुआ। स्वीकृति (क़बूल) नाबालिग से करवाई गई। बाद में हिंदा खालिद के घर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन एक प्रबंधक की डांट के बाद चली गई। वह वहां चार साल रही। अब वह फिर से नाराजगी जता रही है और दूसरी जगह निकाह करना चाहती है। संभोग (हम्बस्तरी) नहीं हुई है। क्या हुक्म है?	565	जब दादा या परदादा की संतान में से कोई बुद्धिमान वयस्क पुरुष न हो, तो विलायत (संरक्षण) माँ के पास होती है। माँ की उपस्थिति में बुआ का कोई अधिकार नहीं है। ऐसी स्थिति में बुआ द्वारा कराया गया निकाह माँ की अनुमति पर निर्भर था; माँ ने उसे अस्वीकार कर दिया, इसलिए वह रद्द हो गया।
571	ज़ैद ने हिंदा (कुंवारी) का निकाह उसकी माँ की अनुपस्थिति में किया जो 12	566	महमूदा के पिता को उसका निकाह हामिद के साथ करना मंज़ूर नहीं था। महमूदा की माँ और पूरे परिवार ने पिता की अनुपस्थिति में निकाह करा दिया, जो लगभग 12-13 कोस

केस नंबर	प्रश्न / विवरण	केस नंबर	फ़तवा / हुक्म
			दूर थे। महमूदा वयस्क है। निकाह से पहले, उसकी इच्छा जानने के लिए उसकी हमउम्र को भेजा गया। महमूदा ने कहा कि मुझे दिल से मंज़ूर है। निकाह के समय, वकील और गवाह अनुमति लेने के लिए महमूदा के पास गए और लौटे। फिर पता चला कि उन्होंने केवल महमूदा की माँ से सहमति प्राप्त की थी। वे फिर गए; महमूदा नमाज़ में व्यस्त थी। नमाज़ पूरी होने के बाद जब पूछा गया तो वह चुप रही। उसकी माँ ने कहा, "हाँ, मंज़ूर है।" दोबारा महमूदा से पूछा गया, तो उसने सिर झुका लिया। फिर पूछा गया तो उसने दोनों हाथ मुँह पर रख लिए और और अधिक झुक गई। फिर पूछा गया तो महमूदा की वही चुप्पी और खामोशी की स्थिति रही। वकील और गवाह लौटे और निकाह हो गया। रात में महमूदा के पिता आए और शोर-शराबा किया। सुबह कहा गया कि महमूदा की माँ कहती है कि महमूदा को यह निकाह मंज़ूर नहीं था और अनुमति के समय वह नमाज़ पढ़ रही थी। माँ ने पहले कहा था कि महमूदा ने कहा कि मुझे मंज़ूर है। महमूदा के पिता यही कहते रहे कि नमाज़ में व्यस्त होने के कारण निकाह नहीं हुआ। फिर पिता ने अलगाव चाहा। महमूदा ने अपने पिता को एक पर्ची लिखी कि 'तलाक़' शब्द हरगिज़ बीच में नहीं आना चाहिए। ऐसी स्थिति में यह निकाह हुआ या नहीं?
	कोस दूर थी। उसने दावा किया कि माँ, नानी की रज़ामंदी और हिंदा की चुप्पी व रोना उसकी सहमति के सूचक थे। अब वह कहता है कि हिंदा ने स्वयं स्पष्ट रूप से स्वीकार किया। ज़ैद के बयान के अनुसार वकील और गवाहों ने गवाही दी। हिंदा कहती है कि मैंने कभी मंज़ूर नहीं किया था, न अब है। क्या हुक्म है?		
574	अजनबी या यहाँ तक कि दूर के वली द्वारा अनुमति मांगे जाने पर चुप्पी को अनुमति नहीं माना जाता।		
574			

केस नंबर	प्रश्न / विवरण	केस नंबर	फ़तवा / हुक्म
	अस्पष्ट या छिपे हुए मामलों में विरोधाभास स्वीकार्य और क्षम्य है।		
574	अगर कोई व्यक्ति कहे कि "यह मेरी रज़िया (दूध-शरीक बहन) है", फिर अपनी गलती स्वीकार कर ले, तो उसे सच्चा माना जाएगा और उसके साथ निकाह जायज़ होगा जब तक कि वह अपने पहले के इक़रार पर कायम न रहे।		

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

صفحہ 739 کا 56

نمبر شمار	سوال / تفصیل	نمبر شمار	فتاویٰ / حکم
۵۷۰	ہندہ نابالغہ جس کا کوئی ولی سوائے ماں کے نہیں اس کا نکاح باجازت نابالغہ برضامندی والدہ خالد نابالغ کے ہوا۔ قبول نابالغ سے کرایا گیا۔ پھر ہندہ نے خالد کے یہاں جانا نہ چاہا، پیش کار کی تنبیہ سے رخصت ہوئی، چار برس وہیں رہی، اب پھر ناراضی ظاہر کرتی ہے، اور دوسری جگہ نکاح	۵۶۵	جب دادا پر دادا کی اولاد سے کوئی عاقل بالغ مرد نہ ہو تو ولایت ماں کو ہے۔ ماں کے ہوتے ہوئے پھو پھی کوئی چیز نہیں۔ پھوپھی کا کیا ہوا نکاح اس صورت میں ماں کی اجازت پر موقوف تھا، ماں نے رد کر دیا رد ہو گیا۔

نمبر شمار	سوال / تفصیل	نمبر شمار	فتاویٰ / حکم
	چاہتی ہے ہمبستری نہیں ہوئی ، کیا حکم ہے۔		
	زید نے ہندہ باکرہ کا نکاح بغیبت والدہ ہندہ جو بارہ کوس پر تھا برضامندی مادر و نانی و بسکوت و گریہ ہندہ اپنے ساتھ ہونا ظاہر کیا		پدر محمودہ کو حامد کے ساتھ نکاح کرنا منظور نہ تھا، مادر محمودہ اور تمام خاندان نے بغیبت پدر محمودہ کہ بارہ تیرہ کوس پر تھا منعقد کیا، محمودہ بالغہ ہے قبل از وقت نکاح اس کی ایک ہم عمر کو اس کی مرضی معلوم کرنے کے لئے بھیجا، محمودہ نے کہا مجھے بدل منظور ہے وقت نکاح وکیل و گواہ اذن لینے محمودہ کے پاس جا کر واپس آئے، پھر معلوم ہوا کہ انھوں نے صرف مادر محمودہ سے رضامندی حاصل کی ہے۔ پھر گئے، محمودہ نماز میں مشغول تھی، بعد فراغ اس سے پوچھا وہ خاموش رہی، مادر محمودہ نے کہا ہاں منظور ہے، دوبارہ محمودہ سے کہا، وہ سرنگوں ہو گئی، پھر پوچھا تو وہ دونوں ہاتھ منہ پر رکھ کر اور زیادہ جھکی، پھر پوچھا محمودہ کی وہی حالت سکوت و خاموشی رہی، وکیل و گواہ لوٹے اور نکاح ہو گیا، شب میں محمودہ کا والد آگیا اور شور و غل برپا کیا، صبح کو کہا کہ مادر محمودہ یہ کہتی ہے کہ محمودہ کو یہ نکاح منظور نہ تھا اور وقت استیذان محمودہ نماز پڑھ رہی تھی مادر محمودہ
۵۷۱	اب کہتا ہے کہ ہندہ نے بصراحت خود قبول کیا وکیل و گواہان نے حسب بیان زید شہادت دی، ہندہ کہتی ہے کہ میں نے ہرگز منظور نہ کیا تھا، نہ اب ہے، کیا حکم ہے۔	۵۶۶	

نمبر شمار	سوال / تفصیل	نمبر شمار	فتاویٰ / حکم
	نے کہا کہ محمودہ نے کہا تھا کہ مجھ کو منظور ہے۔ والد محمودہ یہی کہتا رہا کہ بوجہ مشغولی نماز نکاح نہ ہوا۔ پھر باپ نے چاہا کہ علیحدگی ہو جائے۔ محمودہ نے ایک رقعہ اپنے والد کو لکھا کہ لفظ طلاق ہرگز درمیان میں نہ آنے پائے ، ایسی صورت میں یہ نکاح ہوا یا نہیں۔		
۵۷۴	استیذان اجنبی بلکہ ولی بعید پر سکوت اذن نہیں۔		
۵۷۴	محل خفاء میں تناقض مقبول و عفو ہے۔		
۵۷۴	اگر کوئی شخص کہے یہ میری رضیعہ ہے۔ پھر خطا کا اعتراف کرے تو سچا مانا جائے گا اور اسے اس کے ساتھ نکاح جائز ہو گا جبکہ اپنے اقرار پر ثابت نہ رہے۔		

Volume 11 | Fatawa Razawiyya

- 574 | In the dispute between spouses regarding the rejection or permission of a suspended marriage, if the husband's statement is proven by the testimony of a sufficient and just witness, it is accepted; otherwise, the woman's statement with an oath will be considered reliable.
- 586 | Which interpretation among the interpretations of 'Ghaybat' (absence) is reliable.
- 578 | A father's displeasure does not interfere with the validity and execution of a marriage if the woman is free, sane, and adult, and the husband is compatible (Kufu).
- 590 | Question Three.
- 578 | A father married off his daughter at the age of four; after reaching puberty, the girl does not like or accept it. A detailed answer to this.
- 590 | Who is meant by the distant guardian (Wali-e-Ab'ad)? An agnate relative (Asbah) or an absolute heir, even if from the maternal relatives (Zawi al-Arham)? If an agnate relative is meant, then what is the answer to the Hadith in Muwatta Imam Muhammad that the Mother of the Believers, Aisha (may Allah be pleased with her), married off her niece, the daughter of Abdur Rahman bin Abi Bakr (may Allah be pleased with them), to Abdullah bin Zubair? An aunt is from the maternal relatives.
- 579 | If a father performs the marriage of a minor, it becomes absolutely binding, except in two cases where even the father's performed marriage is not valid.
- 592 | Question Four.
- 581 | In Darul Islam, a marriage by a guardian is not free from [the requirement of] a limit or dower (uqr).
- 592 | What is the ruling if a distant guardian performs a marriage outside the community/tribe?
- 581 | An uncle married off his minor niece; upon reaching puberty, the girl says, 'I am not married to this person and I will not be.' Is the marriage annulled this way or not?
- 593 | All the best scenarios for the absence of the nearest guardian (Wali-e-Aqrab) and the rule for their rulings.
- 583 | A mother performed the marriage of a minor daughter herself despite the presence of a real paternal uncle's son. What is the ruling for this?

- 593 | The contract entered into by an unauthorized person (Fuzuli), if there is someone who can validate it, will remain suspended upon their permission, otherwise it will be void.
- 585 | Treatise: 'Tajwiz al-Radd 'an Tazwij al-Ab'ad' (The legal ruling on a distant guardian performing a marriage in the presence of the nearest guardian).
- 594 | In the state of definitive absence (Ghaybat-e-Munqati'ah) of the nearest guardian, the guardian will be the one next in rank. In a state of absence, he is not a guardian; if he performs a marriage in a foreign land, it will not be valid.
- 585 | Answer to five questions.
- 596 | The father and grandfather were on a journey; another guardian performed the marriage. Upon their return, they should have the right to object.
- 585 | Question One.
- 597 | Question Five.
- 585 | If a distant guardian performs a marriage during the absence of the nearest guardian, can the nearest guardian annul it or not?
- 597 | Zaid went on a journey of more than a hundred 'kos' (miles). Zaid wrote to his mother, 'Do not marry off my daughter without my permission; I will return and marry her to my nephew.' However, without inquiring, the mother married her off to Khalid, the son of Zaid's paternal aunt, who was present. Can Zaid upon his return, or can the minor, annul the marriage with Khalid or not?
- 586 | Question Two.

- ५७४ | स्थगित विवाह (निकाह-ए-मौकूफ़) को रद्द करने या उसकी अनुमति में पति-पत्नी के बीच मतभेद हो, तो यदि पति का कथन दो न्यायप्रिय गवाहों की गवाही से सिद्ध हो जाए तो वह मान्य होगा, अन्यथा शपथ के साथ स्त्री का कथन विश्वसनीय माना जाएगा।
- ५८६ | 'ग़ैबत' (अनुपस्थिति) की व्याख्याओं में से कौन सी व्याख्या विश्वसनीय है।
- ५७८ | पिता की नाराज़गी विवाह की वैधता और निष्पादन में बाधा नहीं डालती, बशर्ते कि स्त्री स्वतंत्र, समझदार और वयस्क हो और पति समान स्तर (कुफ़ू) का हो।
- ५९० | तीसरा प्रश्न।
- ५७८ | पिता ने लड़की का विवाह चार वर्ष की आयु में कर दिया, वयस्क होने के बाद लड़की को यह पसंद और स्वीकार नहीं है। इसका विस्तृत उत्तर।
- ५९० | दूर के अभिभावक (वली-ए-अबअद) से क्या तात्पर्य है, कोई पितृपक्षीय सम्बन्धी (असबा) या पूर्ण उत्तराधिकारी, चाहे वह मातृपक्षीय सम्बन्धियों (ज़वी अल-अरहाम) में से ही क्यों न हो? यदि पितृपक्षीय सम्बन्धी तात्पर्य है, तो मुवत्ता इमाम मोहम्मद की उस हदीस का क्या उत्तर है कि उम्मुल मोमिनीन आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अपनी भतीजी, अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की पुत्री का निकाह अब्दुल्लाह बिन जुबैर से कर दिया? बुआ तो मातृपक्षीय सम्बन्धियों में से है।
- ५७९ | यदि पिता किसी अवयस्क का विवाह कर देता है, तो वह पूर्णतः अनिवार्य हो जाता है, सिवाय दो स्थितियों के जिनमें पिता द्वारा किया गया विवाह भी मान्य नहीं होता।
- ५९२ | चौथा प्रश्न।
- ५८१ | दारुल इस्लाम में अभिभावक द्वारा किया गया विवाह दंड (हद) या मेहर (उक्र) से मुक्त नहीं होता।
- ५९२ | यदि दूर के अभिभावक ने बिरादरी के बाहर विवाह कर दिया, तो क्या हुक्म होगा?
- ५८१ | चाचा ने अपनी अवयस्क भतीजी का विवाह कर दिया; वयस्क होने पर लड़की कहती है कि मेरा विवाह इस व्यक्ति के साथ नहीं है और न ही मैं करूँगी, क्या निकाह इस तरह निरस्त हो गया या नहीं?
- ५९३ | निकटतम अभिभावक (वली-ए-अक़रब) की अनुपस्थिति की सभी श्रेष्ठ स्थितियाँ और उनके निर्णयों का नियम।

- ५८३ | माँ ने अपने सगे ताया के पुत्र के होते हुए स्वयं ही अपनी अवयस्क पुत्री का निकाह कर दिया, तो इसका क्या हुक्म है?
- ५९३ | किसी अनधिकृत व्यक्ति (फ़ुज़ूली) द्वारा किया गया अनुबंध, यदि कोई ऐसा है जो इसे मान्य कर सके तो यह उसकी अनुमति पर स्थगित रहेगा, अन्यथा अमान्य (बातिल) होगा।
- ५८५ | रिसाला: 'तजवीज़ अल-रद्द अन तज़वीज अल-अबअद' (निकटतम अभिभावक की उपस्थिति में दूर के अभिभावक द्वारा विवाह करने का शरीयत सम्मत हुक्म)।
- ५९४ | निकटतम अभिभावक की पूर्ण अनुपस्थिति (ग़ैबत-ए-मुनक़तिया) की स्थिति में, वह अभिभावक होगा जो पद में उसके बाद हो। अनुपस्थिति की स्थिति में वह अभिभावक नहीं है; यदि वह परदेस में निकाह कर देगा तो वह मान्य नहीं होगा।
- ५८५ | पाँच प्रश्नों का उत्तर।
- ५९६ | पिता और दादा यात्रा पर थे; किसी अन्य अभिभावक ने निकाह कर दिया। उनकी वापसी पर उन्हें आपत्ति करने का अधिकार होना चाहिए।
- ५८५ | पहला प्रश्न।
- ५९७ | पाँचवाँ प्रश्न।
- ५८५ | यदि दूर का अभिभावक, निकटतम अभिभावक की अनुपस्थिति में निकाह कर दे, तो क्या निकटतम अभिभावक उसे निरस्त कर सकता है या नहीं?
- ५९७ | ज़ैद सौ कोस से अधिक की यात्रा पर गया है। ज़ैद ने अपनी माँ को लिखा कि मेरी बेटी का निकाह मेरी अनुमति के बिना न करना; मैं वापस आकर उसे अपने भतीजे से व्याहूँगा। किन्तु, माँ ने बिना पूछे ही, ज़ैद की बुआ के बेटे ख़ालिद से, जो उपस्थित था, निकाह कर दिया। क्या ज़ैद वापस आने पर, या क्या अवयस्क लड़की, ख़ालिद के साथ निकाह को निरस्त कर सकती है या नहीं?
- ५८६ | दूसरा प्रश्न।

पृष्ठ ७३९ में से ५७

- ۵۷۴ | رد واجازت نکاح موقوف میں اختلاف زوجین ہو تو اگر شہادت عادل کافیہ سے زوج کا قول ثابت ہو تو وہ ورنہ قسم کے ساتھ عورت کا قول معتبر ہوگا۔
- ۵۸۶ | غیبت کی تفاسیر سے کون سی تفسیر معتمد علیہ ہے۔
- ۵۷۸ | باپ کی ناراضگی صحت ونفاذ نکاح میں خلل انداز نہیں جبکہ عورت حرہ عاقلہ بالغہ ہو اور زوج کفو ہو۔
- ۵۹۰ | سوال سوم۔
- ۵۷۸ | باپ نے لڑکی کا چار سال کی عمر میں نکاح کر دیا، بعد بلوغ لڑکی کو پسند و قبول نہیں۔ اس کا مفصل جواب۔
- ۵۹۰ | ولی ابعد سے کون مراد ہے عصبہ یا مطلق وارث۔ گو ذوی الارحام سے ہو۔ اگر عصبہ مراد ہے تو موطا امام محمد کی حدیث ام المؤمنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کہ انھوں نے اپنی بھتیجی بنت عبدالرحمن بن ابی بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا نکاح عبداللہ بن زبیر سے کر دیا، اس کا کیا جواب ہے۔ پھوپھی تو ذوی الارحام سے ہے۔
- ۵۷۹ | نابالغ کا نکاح اگر باپ کردے تو مطلقاً لازم ہو جاتا ہے مگر دو صورتوں میں باپ کا کیا ہوا نکاح بھی جائز نہیں ہوتا۔
- ۵۹۲ | سوال چہارم۔
- ۵۸۱ | دارالاسلام میں ولی حد یا عقر سے خالی نہیں ہوتی۔
- ۵۹۲ | ولی ابعد نے اگر غیر برادری میں نکاح کر دیا تو کیا حکم ہوگا۔

- ۵۸۱ | چچا نے نابالغہ بھتیجی کا نکاح کردیا بلوغ پر لڑکی کہتی ہے کہ میرا نکاح اس شخص کے ساتھ نہیں اور نہ کروں گی، نکاح یوں فسخ ہو گیا یا نہیں۔
- ۵۹۳ | ولی اقرب کے غائب ہونے کی کل بہتر صورتیں اور ان کے حکم کا ضابطہ۔
- ۵۸۳ | ماں نے نابالغہ کا نکاح حقیقی تایا زاد بھائی کے ہوتے خود کردیا تو اس کا کیا حکم ہے۔
- ۵۹۳ | فضولی نے جو عقد کیا اگر کوئی ایسا ہے جو اسے جائز کر سکے تو اس کی اجازت پر موقوف رہے گا ورنہ باطل ہوگا۔
- ۵۸۵ | رسالہ تجویز الرد عن تزویج الابعد (ولی اقرب کی موجودگی میں ولی ابعد کے نکاح کر دینے کا شرعی حکم)
- ۵۹۴ | بحالت غیبت منقطعہ ولی اقرب ولی وہ ہوگا جو مرتبہ میں اس کے بعد ہو بحالت غیبت ولی نہیں وہ اگر پردیس میں نکاح کر دے گا نہ ہوگا۔
- ۵۸۵ | پانچ سوالوں کا جواب۔
- ۵۹۶ | باپ دادا سفر میں تھے دوسرے ولی نے نکاح کر دیا واپسی پر انھیں حق اعتراض ہونا چاہئے۔
- ۵۸۵ | سوال اول۔
- ۵۹۷ | سوال پنجم۔
- ۵۸۵ | ولی ابعد بغیبت ولی اقرب اگر نکاح کر دے تو ولی اقرب اسے فسخ کر سکتا ہے یا نہیں۔
- ۵۹۷ | زید سو کوس سے زائد سفر پر گیا ہے زید نے اپنی والدہ کو لکھا کہ میری دختر کا نکاح بے میری اجازت کے نہ کرنا میں واپس آکر اپنے برادر زادے سے کروں گا مگر والدہ

نے بے دریافت کئے زید اور اس کے پھوپھی زاد بھائی خالد کے جو موجود تھا نکاح کر دیا زید بعد واپسی یا خالد نابالغہ کا نکاح فسخ کر سکتا ہے یا نہیں۔

- ۵۸۶ | سوال دوم۔

Index Page	Summary	Ref. No.	Case Detail / Ruling
609	The son of the father's paternal aunt is from the distant kindred (Dhawul Arham), and the grandmother has priority over them by consensus.	597	Zaid betrothed his minor daughter to Amr. Zaid died. The girl turned thirteen, but no signs of puberty were apparent. In her absence, Zaid's father, assuming she was of age, married her to Bakr. No signs of puberty have appeared yet. What is the ruling?
610	The mother has priority over the grandmother.	597	A father married his minor daughter to someone from his own tribe. When the husband asked for her departure, the father refused. A lawsuit followed, and the father responded that the son-in-law is impotent and sings and plays music among eunuchs. He stated that if doctors declare him a man, then he has no objection. While a criminal case was pending, the girl's father filed a civil suit to annul the marriage, claiming the man is impotent, has adopted shameful habits from eunuchs, and is no longer part of the community. If these allegations are proven, will the marriage be annulled?
610	When does a distant guardian have the authority for marriage in the absence of the closer guardian?	598	Suitability (Kafa'at) is considered at the time of the contract. If he was suitable then but later became an open sinner and profligate, the marriage cannot be annulled.
611	Securing suitability (Kufu) is an extremely important and significant matter in Sharia.	598	For separation from an impotent man (Inneen), a claim from an adult woman is necessary. The Judge (Qazi) will grant separation upon her request. If she is a minor, her puberty will be awaited, as she might accept an impotent or castrated man upon reaching maturity.

Index Page	Summary	Ref. No.	Case Detail / Ruling
612	The wisdom behind the explanation of guardianship for marriage over a minor.	598	If a woman finds her husband to be impotent, the Qazi will give him a one-year lunar respite (for medical treatment).
612	Three conditions for a distant guardian to obtain authority.	600	Through the Qazi's separation, the woman becomes divorced (Ba'inah).
612	According to the reliable school of thought, for prolonged absence (Ghaybat Munqati'ah), travel is not a condition, nor is being outside the city.	602	A maternal uncle married off an adult woman who had no other guardians without her permission. What is the ruling?
612	If the closer guardian is absent due to prolonged absence and thus a distant guardian performs the marriage, it is valid. Now, if the closer guardian returns, he cannot void it, even though authority returns to him upon his return.	602	A stepfather married off an adult woman without her permission and without consulting her mother. How is this?
	An exquisite warning from the author.	607	

इंडेक्स पेज	सारांश	सन्दर्भ संख्या	मामला विवरण / नियम
609	पिता की बुआ का बेटा ज़विल अरहाम (दूर के रिश्तेदार) में से है और दादी उन पर सर्वसम्मति से प्रधान है।	597	ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी की मंगनी अम्र से कर दी। ज़ैद की मौत हो गई, लड़की तेरह साल की हो गई लेकिन यौवन का कोई संकेत नहीं दिखा। ज़ैद के पिता ने लड़की की अनुपस्थिति में उसे वयस्क मानकर उसका निकाह बक्र से कर दिया। अभी तक यौवन का कोई लक्षण प्रकट नहीं हुआ है। क्या हुक्म है?
610	माँ, दादी पर प्रधान है।	597	एक पिता ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह अपनी ही बिरादरी के एक व्यक्ति से किया। जब पति ने विदाई माँगी तो पिता ने मना कर दिया। मुकदमा हुआ, तो जवाब दिया गया कि दामाद नपुंसक है और हिजड़ों के बीच नाचता-गाता है। उसने कहा कि यदि डॉक्टर उसे पुरुष प्रमाणित कर दें तो उसे कोई आपत्ति नहीं होगी। जब एक आपराधिक मामला चल रहा था, लड़की के पिता ने निकाह रद्द करने के लिए दीवानी मुकदमा दायर किया, यह दावा करते हुए कि वह नपुंसक है, उसने हिजड़ों के कार्यों से शर्मनाक स्थिति पैदा कर ली है और अब वह बिरादरी का हिस्सा नहीं है। यदि ये आरोप सिद्ध हो जाते हैं, तो क्या निकाह रद्द कर दिया जाएगा?
610	निकटतम अभिभावक की अनुपस्थिति में दूर के	598	निकाह के समय कुफ़ू (योग्यता) का विचार किया जाता है। यदि वह उस समय योग्य था लेकिन बाद

इंडेक्स पेज	सारांश	सन्दर्भ संख्या	मामला विवरण / नियम
	अभिभावक को निकाह कराने का अधिकार कब मिलता है?		में प्रकट रूप से पापी और दुराचारी हो गया, तो निकाह रद्द नहीं किया जा सकता।
611	शरीयत में कुफ़ू (योग्यता) सुनिश्चित करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गंभीर विषय है।	598	नपुंसक (इन्नीन) पति से अलगाव के लिए वयस्क महिला का दावा आवश्यक है। काज़ी उसकी मांग पर अलगाव कराएगा। यदि वह नाबालिग है, तो उसके वयस्क होने की प्रतीक्षा की जाएगी, क्योंकि संभव है कि वयस्क होने पर वह नपुंसक या कटे हुए अंग (मजबूब) वाले व्यक्ति के साथ रहने को तैयार हो जाए।
612	नाबालिग के निकाह के अभिभावकत्व की व्याख्या के पीछे का ज्ञान।	598	यदि किसी स्त्री ने अपने पति को नपुंसक पाया, तो काज़ी पति को इलाज के लिए एक चंद्र वर्ष की मोहलत देगा।
612	दूर के अभिभावक के लिए अभिभावकत्व प्राप्त करने की तीन शर्तें।	600	काज़ी द्वारा अलगाव कराए जाने से स्त्री 'बाइना' (तलाकशुदा) हो जाती है।
612	विश्वसनीय मत के अनुसार, 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (लंबी अनुपस्थिति) में यात्रा तो दूर, शहर से बाहर होना भी शर्त नहीं है।	602	एक मामा ने एक वयस्क महिला का निकाह, जिसका कोई अन्य अभिभावक मौजूद नहीं था, उसकी अनुमति के बिना कर दिया। क्या हुक्म है?
612	यदि निकटतम अभिभावक लंबी अनुपस्थिति के कारण ग़ायब है और इस कारण दूर के अभिभावक ने निकाह कर दिया, तो वह प्रभावी हो गया। अब यदि निकटतम	602	एक सौतेले पिता ने एक वयस्क महिला का निकाह उसकी अनुमति के बिना और उसकी माँ से परामर्श किए बिना कर दिया। यह कैसा है?

इंडेक्स पेज	सारांश	सन्दर्भ संख्या	मामला विवरण / नियम
	अभिभावक वापस आता है, तो वह इसे रद्द नहीं कर सकता, हालाँकि उसके लौटने पर अभिभावकत्व पुनः उसे ही प्राप्त हो जाता है।		
	लेखक की ओर से एक उत्तम चेतावनी।	607	

صفحہ نمبر	خلاصہ	نمبر شمار	تفصیل واقعہ / حکم
۶۰۹	ابن عمۃ الاب ذوی الارحام سے ہے اور دادی ان پر بالاتفاق مقدم۔	۵۹۷	زید نے اپنی دختر نابالغہ کی منگنی عمرو سے کردی زید مرگیا لڑکی تیرہ سال کی ہوئی مگر علامت بلوغ کوئی ظاہر نہ تھی زید کے باپ نے لڑکی کی عدم موجودگی میں بخیال بلوغ اس کا عقد بکر سے کردیا کوئی نشانی بلوغ کی ابھی ظاہر نہیں۔ کیا حکم ہے۔
۶۱۰	ماں دادی پر مقدم۔	۵۹۷	باپ نے نابالغہ کا نکاح اپنے ہم قوم سے کیا۔ شوہر نے رخصت چاہی تو انکار کیا، نالش ہوئی تو جواب دیا کہ داماد نامرد ہے ہجڑوں میں گاتا بجاتا ہے اگر ڈاکٹر اسے مرد بتائیں تو عذر نہیں۔ ابھی فوجداری میں مقدمہ دائر تھا کہ لڑکی کے باپ نے دیوانی میں دعوی فسخ نکاح کر دیا کہ وہ نامرد ہے ہجڑوں کے افعال سے حالت شرمناک کر لی ہے میری برادری کا نہ رہا۔ اگر یہ الزام ثابت ہوں تو کیا نکاح فسخ کیا جائے گا۔
۶۱۰	ولی ابعد کو بحالت غیبت اقرب کب اختیار تزویج ہوتا ہے۔	۵۹۸	کفاءت کا اعتبار وقت عقد ہے اس وقت کفو تھا بعد میں فاسق معلن وفاجر ہوگیا تو نکاح فسخ نہیں کر سکتا۔

صفحہ نمبر	خلاصہ	نمبر شمار	تفصیل واقعہ / حکم
			عنین سے تفریق کے لئے عورت بالغہ کا دعوی ضرور ہے قاضی اس کی طلب پر تفریق کرے گا۔ اگر
۶۱۱	احراز کفو شرع میں سخت مہم و مہتم بالشان ہے۔	۵۹۸	صغیرہ ہوگی تو اس کے بلوغ کا انتظار کیا جائے گا کیونکہ ممکن ہے وہ بالغہ ہو کر عنین یا مجبوب سے راضی ہو۔
۶۱۲	نابالغ پر تشریح ولایت تزویج کی حکمت۔	۵۹۸	عورت نے شوہر کو عنین پایا تو قاضی شوہر کو ایک سال قمری کی مہلت (بغرض علاج) دے گا۔
۶۱۲	ابعد کے لئے حصول ولایت کی تین شرطیں۔	۶۰۰	قاضی کی تفریق سے عورت بائنہ ہو جاتی ہے۔
۶۱۲	مذہب معتمد پر غیبت منقطعہ میں سفر درکنار شہر سے باہر ہونا بھی شرط نہیں۔	۶۰۲	ماموں نے بالغہ کا نکاح جس کے اور اولیاء موجود نہیں بے استیذان بالغہ کر دیا، کیا حکم ہے۔
۶۱۲	ولی اقرب غائب بغیبت منقطعہ اس لئے ولی ابعد نے نکاح کیا تو وہ نافذ ہو گیا، اب اگر ولی اقرب واپس آئے تو اسے رد نہیں کر سکتا اگرچہ اس کے واپس آنے پر	۶۰۲	سوتیلے باپ نے بے اذن بالغہ اور بے مشورہ والدہ بالغہ کا نکاح کردیا، کیسا ہے۔

صفحہ نمبر	خلاصہ نمبر شمار	تفصیل واقعہ / حکم
		ولایت اس کی جانب عود کر آتی ہے۔
	۶۰۷	تنبیہ نفیس از مصنف۔

612 **The uncle of a mature girl (Baligha) sought her permission in the presence of her brother. Considering her silence as permission, he performed her marriage. Consummation (Khalwat-e-Sahiha) also took place between the couple. How is this marriage valid?**

614 A real uncle, for the sake of livelihood and through trickery, without the knowledge and consent of the mother and paternal half-uncle, married Hindu (a girl) to his son. Hindu is mature, her age is more than fourteen years. Upon hearing the news of the marriage, she rejected it. What is the ruling?

618 During the marriage ceremony, a dispute arose over the dower (Mehr). Zaid left the assembly. Amr, in a state of anger, said to the Muezzin, "Marry my daughter to Bakr." Bakr was present in the assembly. The Muezzin only recited three words and conducted the proposal and acceptance (Ijab-o-Qubul). There were no representatives (Wakal) or witnesses. Nor was the amount of dower told to Bakr; it was said it would be like her mother's dower. The girl is mature, but permission

613 **If a minor performs a marriage or sells or buys something, it will remain suspended upon permission. If he becomes a mature adult (Baligh) before permission, will it then depend on his own permission?** 622

615 A person wrote to someone from a journey to perform the engagement of his minor daughter with a certain minor boy. After the engagement, that person became the guardian (Wali) himself and performed the marriage. Upon hearing the news, the father was happy and did not refuse. What is the ruling? 623

618 A statement is not attributed to one who remains silent. 624

The uncle of a mature girl (Baligha) sought her permission in the presence of her brother. Considering her silence
612 **as permission, he performed her marriage. Consummation (Khalwat-e-Sahiha) also took place between the couple. How is this marriage valid?**

was not taken from her. What is the ruling?

Is the paternal half-brother of a girl a valid guardian (Wali) against the mother and maternal uncles? If the paternal half-
619 brother marries a mature girl into a non-equivalent (Ghair-Kufu) family without the permission of the mother and maternal uncles, what is the ruling?

A father died after performing his daughter's engagement. In the absence of the mother, some people forcibly put this mature daughter into a house. The mother filed a lawsuit. During the lawsuit,
620 it was revealed that the deceased's brother, who is from a different father, performed the marriage of the daughter without the daughter's and mother's permission. What is the ruling?

Hindu, the mother, married off Razia to Hamid while she was still a minor, but did not send her away (Rukhsati). Four years later, Razia has now become mature.
621 During this time, Khalid took another woman. Khalid's character and behavior are unpleasant to Razia and Hindu; they have a complete hatred for him and do not want any relation with him. She

If a minor performs a marriage or sells or buys something, it will remain suspended upon
613 **permission. If he becomes a mature adult (Baligh) before permission, will it then depend on his own permission?** 622

Hindu, a widow, married a noble person from her family. Amr, Bakr, and Khalid
619 expelled her and her mother from the community and harassed them because of this. What is the ruling? 624

Harassing a Muslim without cause is forbidden (Haraam), for according to the Hadith, it is harassing the Prophet,
620 and harassing the Prophet is harassing Allah (Exalted is He), and peace and blessings of Allah be upon him. 625

The girl is ten years old. Among the mother, maternal grandmother, and
621 paternal uncle, who has the authority over her marriage? There is also a brother who is twelve years old. 625

The uncle of a mature girl (Baligha) sought her permission in the presence of her brother. Considering her silence as permission, he performed her marriage. Consummation (Khalwat-e-Sahiha) also took place between the couple. How is this marriage valid?

612

refuses and wants a divorce (Khula). What should Razia do to sever ties with Khalid? And will this marriage be considered a 'Fuzuli' (unauthorized) contract or not?

If a minor performs a marriage or sells or buys something, it will remain suspended upon permission. If he becomes a mature adult (Baligh) before permission, will it then depend on his own permission?

613

622

बालिग लड़की के भाई की मौजूदगी में चाचा ने उससे अनुमति मांगी। उसकी चुप्पी को अनुमति
612 **मानकर उसका निकाह कर दिया। दंपति के बीच 'खलवत-ए-सहीहा' भी हो गई। यह निकाह कैसा है?**

एक सगे चाचा ने, जीविका के लाभ के विचार से और चालाकी से, माँ और सौतेले चाचा की जानकारी और सहमति के बिना, हिंदू(लड़की) का
614 निकाह अपने बेटे से कर दिया। हिंदू बालिग है, उसकी उम्र चौदह साल से अधिक है। निकाह की खबर सुनकर उसने इसे अस्वीकार कर दिया। क्या हुक्म है?

निकाह के समय मेहर (स्त्रीधन) पर विवाद हुआ, ज़ैद सभा से उठ गया। अम्र ने गुस्से में मुअज़्ज़िन से कहा, "मेरी लड़की का निकाह बक्र से कर दो।" बक्र सभा में मौजूद था। मुअज़्ज़िन ने केवल तीन
618 शब्द पढ़कर ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) करा दिया। कोई वकील या गवाह नहीं था, न ही बक्र को मेहर की राशि बताई गई; यह कहा गया कि लड़की की माँ के मेहर जैसा होगा।

यदि किसी नाबालिग ने निकाह किया या कुछ बेचा या खरीदा, तो वह अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह
613 **अनुमति से पहले बालिग हो गया, तो क्या वह उसकी अपनी अनुमति पर निर्भर होगा?**

एक व्यक्ति ने यात्रा से किसी को पत्र लिखा कि मेरी नाबालिग बेटी की सगाई फलां नाबालिग लड़के से कर दो। सगाई के
615 बाद उस व्यक्ति ने स्वयं वली (अभिभावक) बनकर निकाह कर दिया। खबर सुनकर पिता खुश हुआ और इनकार नहीं किया। क्या हुक्म है?

618 चुप रहने वाले की ओर किसी कथन का श्रेय नहीं दिया जाता।

622

623

624

बालिग लड़की के भाई की मौजूदगी में चाचा ने उससे अनुमति मांगी। उसकी चुप्पी को अनुमति
612 **मानकर उसका निकाह कर दिया। दंपति के बीच 'खलवत-ए-सहीहा' भी हो गई। यह निकाह कैसा है?**

लड़की बालिग है, उससे अनुमति नहीं ली गई। क्या हुक्म है?

क्या लड़की का सौतेला भाई, माँ और मामा के मुक़ाबले में वली (अभिभावक) हो सकता है? यदि
619 सौतेला भाई माँ और मामा की अनुमति के बिना बालिग लड़की का निकाह 'ग़ैर-कुफ़ू' (असमान परिवार) में कर दे, तो क्या हुक्म है?

एक पिता अपनी बेटी की सगाई करके मर गया। माँ की अनुपस्थिति में कुछ लोगों ने जबरन इस बालिग बेटी को एक घर में डाल दिया। माँ ने
620 मुकदमा दायर किया। मुकदमे के दौरान पता चला कि मृतक के भाई ने, जो दूसरे पिता से है, बेटी और माँ की अनुमति के बिना निकाह कर दिया। क्या हुक्म है?

माँ हिंदू ने रज़िया का निकाह उसके नाबालिग होने की स्थिति में हामिद से कर दिया, लेकिन रुख़सती
621 नहीं की थी। चार साल बाद अब रज़िया बालिग हो गई है। इस बीच खालिद ने दूसरी औरत रख ली है।

यदि किसी नाबालिग ने निकाह किया या कुछ बेचा या खरीदा, तो वह अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह
613 **अनुमति से पहले बालिग हो गया, तो क्या वह उसकी अपनी अनुमति पर निर्भर होगा?** 622

हिंदू, एक विधवा ने अपने खानदान के एक शरीफ़ व्यक्ति से निकाह कर लिया। अम्र, बक्र
619 और खालिद ने इस पर उसे 624
और उसकी माँ को बिरादरी से निकाल दिया और उन्हें सताया। क्या हुक्म है?

बिना किसी कारण के मुसलमान को सताना हराम है, क्योंकि हदीस के अनुसार यह
620 रसूल को सताना है, और रसूल 625
को सताना अल्लाह (अज़-व-जल) को सताना है, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

लड़की दस साल की है। माँ, नानी और चाचा में से किसके
621 पास उसके निकाह का 625

612 **बालिग लड़की के भाई की मौजूदगी में चाचा ने उससे अनुमति मांगी। उसकी चुप्पी को अनुमति मानकर उसका निकाह कर दिया। दंपति के बीच 'खलवत-ए-सहीहा' भी हो गई। यह निकाह कैसा है?**

खालिद का आचरण और व्यवहार रज़िया और हिंदू को नागवार है; उन्हें उससे सख्त नफरत है और वे उससे कोई संबंध नहीं रखना चाहतीं। वह इनकार करती है और खुला (तलाक) चाहती है। रज़िया खालिद से संबंध तोड़ने के लिए क्या करे? और क्या यह निकाह 'फुज़ूली' (अनधिकृत) अनुबंध माना जाएगा या नहीं?

613 **यदि किसी नाबालिग ने निकाह किया या कुछ बेचा या खरीदा, तो वह अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह अनुमति से पहले बालिग हो गया, तो क्या वह उसकी अपनी अनुमति पर निर्भर होगा?**

622

अधिकार है? एक भाई भी है जो बारह साल का है।

بالغہ کے بھائی کے ہوتے چچا نے بالغہ سے استیذان کیا اس کی خاموشی کو اذن قرار دے کر اس کا نکاح کر دیا، زوجین میں خلوت صحیحہ بھی ہوئی ، یہ نکاح کیسا ہوا۔

۶۱۲

حقیقی چچا نے بخیال نفع معاش براہِ چالاکی بے علم و رضامندی مادر و عم علاتی ہندہ کا عقد اپنے بیٹے سے کر لیا۔ ہندہ بالغہ ہے اس کی عمر زائد از چودہ سال ہے۔ اس نے خبر نکاح سن کر نا منظور کیا، کیا حکم ہے۔

۶۱۴

نابالغ نے نکاح کیا یا کچھ بیچا یا خریدا اجازت پر موقوف رہے گا اگر قبل اجازت ولی بالغ ہو گیا تو خود اس کی اجازت پر موقوف ہو گیا۔

۶۱۳

ایک شخص نے کسی کو سفر سے لکھا کہ میری نابالغہ لڑکی کی منگنی فلاں نابالغ لڑکے سے کرنا، اس نے بعد منگنی خود ولی بن کر نکاح کر دیا والد خبر سن کر خوش ہوا انکار نہ کیا، کیا حکم ہے۔

۶۱۵

ہنگامِ نکاح خوانی مہر پر حجت ہوئی، زید مجلس سے اٹھ گیا، عمرو نے بحالت غصہ موذن سے کہا تم میری لڑکی کا نکاح بکر سے کر دو بکر مجلس نکاح میں موجود تھا موذن نے صرف تین کلمے پڑھا کر ایجاب و قبول کرا دیا کوئی وکیل و گواہ ساکت کی طرف قول منسوب نہیں کیا جاتا۔

۶۱۸

۶۲۲

۶۲۳

۶۲۴

نابالغ نے نکاح کیا یا کچھ

بالغہ کے بھائی کے ہوتے چچا نے بالغہ سے **بیچا یا خریدا اجازت پر**

استیذان کیا اس کی خاموشی کو اذن قرار دے کر **موقوف رہے گا اگر قبل**

۶۱۲ **اس کا نکاح کر دیا، زوجین میں خلوت صحیحہ** ۶۱۳ **اجازت ولی بالغ ہو گیا تو** ۶۲۲

بھی ہوئی ، یہ نکاح کیسا ہوا۔ **خود اس کی اجازت پر**

موقوف ہو گیا۔

نہیں ہوا نہ مہر کی تعداد بکر کو بتائی یہ کہا کہ

مثل لڑکی کی ماں کے مہر باندھ لڑکی بالغ ہے اس

سے اجازت نہ لی گئی۔ کیا حکم ہے۔

ہندہ بیوہ نے اپنا عقد ایک

لڑکی کا علاتی بھائی ماں اور ماموں کے مقابل شریف اپنے خاندانی سے کر

ولی جائز ہے یا نہیں بے اجازت برادر علاتی ماں لیا، عمرو بکر خالد نے اس

۶۱۹ اور ماموں بالغہ لڑکی کا نکاح غیر کفو سے کر ۶۱۹ پر اسے اور اس کی ماں کو ۶۲۴

دیں، تو کیا حکم ہے۔ برادری سے نکال دیا ایذادی،

کیا حکم ہے۔

باپ دختر کی منگنی کر کے فوت ہو گیا بغیبت

والدہ دختر چند اشخاص نے بجبر اس دختر بالغہ ناحق ایذاء مسلم حرام کہ

بحکم حدیث وہ ایذارسول ہے

۶۲۰ کو ایک گھر میں کر دیا، ماں نے دعوی دائر کیا ۶۲۰ اور ایذا رسول ایذاء اللہ ہے ۶۲۵

جب دعوی ہوا کہ متوفی کے بھائی نے جو جل جلالہ وصلی اللہ تعالیٰ

علیہ وسلم۔

نابالغ نے نکاح کیا یا کچھ

بالغہ کے بھائی کے ہوتے چچا نے بالغہ سے **بیچا یا خریدا اجازت پر**

استیذان کیا اس کی خاموشی کو اذن قرار دے کر **موقوف رہے گا اگر قبل**

۶۱۲ ۶۱۳ ۶۲۲

اس کا نکاح کر دیا، زوجین میں خلوت صحیحہ **اجازت ولی بالغ ہو گیا تو**

بھی ہوئی ، یہ نکاح کیسا ہوا۔ **خود اس کی اجازت پر**

موقوف ہو گیا۔

دوسرے باپ سے ہے بے اجازت دختر و والدہ

دختر نکاح کر دیا کیا حکم ہے۔

ہندہ ماں نے رضیہ کا بحالت نابالغی حامد سے عقد

کر دیا رخصت نہ کی تھی چار سال بعد اب رضیہ

بالغہ ہوئی اس عرصہ میں خالد نے دوسری لڑکی دس سال کی ہے ماں

عورت کو رکھ لیا خالد کی وضع واطوار چال چلن نانی چچا میں کسی کو اس

۶۲۱ ۶۲۱ ۶۲۵

رضیہ اور ہندہ کو ناگوار ہیں کمال نفرت ہے خالد کے نکاح کا اختیار ہے ایک

سے تعلق نہیں چاہتی انکار کرتی ہے اور خلع بھائی بھی دوازدہ سالہ ہے۔

چاہتی ہے رضیہ کیا کرے جو خالد سے قطع تعلق

ہو۔ اور یہ عقد عقد فضولی قرار پائے گا یا نہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

625: Khalid married his minor daughter to Rahim Bakhsh, an adult. Now, due to discord, the daughter, who is now an adult, wants the marriage to be annulled. Is this possible according to Sharia? | Keep women where you live, to the best of your ability. | 629

626: Hinda is the adult daughter of Bakr. Neither Zaid (his half-brother) nor anyone else explicitly sought her consent before marriage, nor was she explicitly informed after. However, witnesses knew everything externally, and she performed all ceremonies without ever expressing dissatisfaction, nor does she express it now; rather, she seems happy. What is the ruling? | Do not harm women by putting them in hardship. | 629

627: The guardian married off an adult virgin girl, and she was informed of the marriage by the guardian's messenger or another just person. She remained silent upon hearing it. Is this silence considered consent? | Leaving a woman suspended (neither married nor free) is prohibited by the command of the Quran. | 629

627: Bakr proposed a marriage between his son Khalid and Sa'ida, daughter of Zaid. Zaid refused. Bakr incited Zaid's wife, Hinda. She caused such a stir that Zaid, under pressure and fear of district authorities, thinking it would resolve the issue, agreed and married Sa'ida without her permission. Khalid and Sa'ida have never met. After the marriage, Khalid went to London and indulged in vice. He doesn't look after Sa'ida, doesn't return, and his father Bakr doesn't support her expenses. Is Sa'ida authorized or not to break the marriage performed by her father not voluntarily but under duress? How long should she wait for Khalid? | According to the Hadith, Islam is free from harm and reciprocating harm. | 629

628: If a guardian performs a marriage under compulsion and coercion, it will be valid. | The father of minor Hinda died. Her mother authorized her step-sister, who had raised her like her own child since childhood, to marry her off. The step-sister performed the marriage. At the time of marriage, Hinda's uncles and brothers were not present, but they were aware. What is the ruling? | 629

629: It is mandatory to treat women well according to the command of the Quran. | A girl's father invited a boy from Delhi to Bhopal for marriage. The wedding party arrived, the date was set. The girl was at her maternal uncle's. When the father went to get her, the uncle refused to send her. Out of shame, the father committed suicide

by consuming poison; his written permission exists. The girl is a minor. Her uncle agrees to the marriage. Can the marriage be held with only the uncle's permission without informing the daughter? | 630

फतावा रज़विया जिल्द ११ (ग्यारहवीं)

६२५: खालिद ने अपनी नाबालिग लड़की का निकाह रहीम बख्श बालिग से कर दिया, अब झगड़े की वजह से बालिग बेटी चाहती है कि निकाह रद्द हो जाए, क्या शरीअत में यह मुमकिन है? | औरतों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार वहीं रखो जहाँ तुम स्वयं रहते हो। | ६२९

६२६: हिंदह बक्र की बालिग बेटी है। निकाह से पहले ज़ैद (जो उसका सौतेला भाई है) या किसी और ने स्पष्ट रूप से उसकी राय नहीं ली और न ही निकाह के बाद उसे स्पष्ट रूप से सूचित किया। गवाहों को बाहरी तौर पर सब बातें मालूम थीं और उसने सभी रस्में निभाईं। उसने कभी भी असंतोष प्रकट नहीं किया और न ही अब करती है, बल्कि वह खुश लग रही है। क्या हुक्म है? | औरतों को नुकसान न पहुँचाओ कि उन्हें तंगी में डाल दो। | ६२९

६२७: वली (संरक्षक) ने एक बालिग कुंवारी लड़की का निकाह कर दिया और वली के संदेशवाहक या किसी अन्य न्यायप्रिय व्यक्ति ने उसे निकाह की खबर दी। वह सुनकर खामोश रही, तो क्या यह चुप्पी सहमति मानी जाएगी? | औरत को मुअल्लक़ा (अधर में) छोड़ना कुरान के हुक्म से मना है। | ६२९

६२७: बक्र ने अपने लड़के खालिद का निकाह ज़ैद की बेटी सईदा से करना चाहा। ज़ैद राज़ी नहीं हुआ। बक्र ने ज़ैद की पत्नी हिंदह को भड़काया। हिंदह ने इतना फसाद मचाया कि ज़ैद ने मजबूरी में और जिला अधिकारियों के डर से, यह सोचकर कि सारा फसाद खत्म हो जाएगा, मंजूरी दे दी और सईदा की अनुमति के बिना उसका निकाह कर दिया। खालिद और सईदा की आज तक मुलाकात नहीं हुई। निकाह के बाद खालिद लंदन चला गया और वहाँ गलत कामों में पड़ गया। वह सईदा की कोई खबर नहीं लेता, न वहाँ से आता है और न ही उसका बाप बक्र उसके खर्च का जिम्मा लेता है। ऐसी सूरत में क्या सईदा अपने बाप द्वारा मजबूरी और डर में किए गए निकाह को तोड़ने के लिए अधिकृत है या नहीं? खालिद का कब तक इंतज़ार किया जाएगा? | हदीस के अनुसार, इस्लाम नुकसान पहुँचाने और नुकसान के बदले नुकसान पहुँचाने से पाक है। | ६२९

६२८: वली अगर जबरदस्ती और दबाव में निकाह कर दे तो निकाह हो जाएगा। | नाबालिग हिंदह का बाप मर गया। माँ ने उसकी सौतेली बहन को, जिसने उसे बचपन से औलाद की तरह पाला था, उसके निकाह की इजाज़त दे दी। सौतेली बहन ने निकाह कर दिया। निकाह के समय हिंदह के चाचा और भाई मौजूद नहीं थे, लेकिन उन्हें खबर थी। क्या हुक्म है? | ६२९

६२९: कुरान के हुक्म के अनुसार औरतों के साथ अच्छा बर्ताव करना अनिवार्य है। | एक लड़की के पिता ने दिल्ली से एक लड़के को भोपाल निकाह के लिए बुलाया। बारात पहुँची, निकाह की तारीख तय हुई। लड़की मामा के यहाँ थी। बाप लेने गया, लेकिन ऐन वक्त पर मामा ने भेजने से मना कर दिया। बाप ने शर्म से ज़हर खाकर खुदकुशी कर ली; उसकी लिखित अनुमति मौजूद है। लड़की नाबालिग है। उसका चाचा निकाह के लिए राज़ी है। क्या सिर्फ चाचा की अनुमति से बिना बेटी को सूचित किए निकाह हो सकता है? | ६३०

पेज ६० ऑफ़ ७३९

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

۶۲۵: خالد نے اپنی نابالغہ لڑکی کا نکاح رحیم بخش بالغ سے کردیا اب بوجہ فساد دختر بالغہ چاہتی ہے کہ نکاح فسخ ہو جائے، کیا شرعاً یہ ممکن ہے۔ | عورتوں کو مقدور بھر وہاں رکھو جہاں خود رہو۔ | ۶۲۹

۶۲۶: ہندہ بکر بالغہ ہے اس سے قبل نکاح زید برادر علاقی یا کسی نے صراحۃً استمزاج نہیں لیا اور نہ بعد نکاح صراحۃً اسے خبر دی گواہ اسے خارجی طریقہ سے سب باتیں معلوم تھیں اور تمام رسمیں اس نے کیں کسی وقت اظہار نارضامندی نہ ہوا اور نہ اب تک ظاہر کرتی ہے بلکہ خوش معلوم ہوتی ہے، کیا حکم ہے۔ | عورتوں کو ضرر نہ پہنچاؤ کہ ان پر تنگی کرو۔ | ۶۲۹

۶۲۷: ولی نے بالغہ کا نکاح کردیا اور باکرہ کو ولی کے قاصد یا کسی اور عادل نے نکاح کی خبر دی وہ سن کر خاموش رہی تو یہ سکوت اذن ہے۔ | عورت کو معلقہ کرنا بحکم قرآن ممنوع ہے۔ | ۶۲۹

۶۲۷: بکر نے اپنے لڑکے خالد کی نسبت سعیدہ دختر زید سے چاہی، زید کو منظور نہ ہوئی، بکر نے ہندہ زوجہ زید کو برہم کردیا، ہندہ نے اس قدر فساد مچایا کہ زید نے بمجبوری بخوف حکام ضلع بخیال اس کے کہ رفع جملہ فساد ہو جائے گا منظور کرلیا اور سعیدہ سے بے اذن لئے اس کا نکاح کردیا، خالد وسعیدہ سے آج تک ملاقات نہ ہوئی، بعد نکاح خالد لندن چلا گیا، وہاں فسق وفجور میں مبتلا ہوا۔ وہ کسی قسم کی خبر گیری سعیدہ کی نہیں کرتا۔ نہ وہاں سے آتا ہے، نہ اس کا باپ بکر اس کے خرچہ کی کفالت کرتا ہے۔ ایسی صورت میں سعیدہ مجاز ہے یا نہیں کہ اپنے باپ کے کئے نکاح کو جو بخوشی نہیں بلکہ بمجبوری و بخوف حکام وبامید رفع خرخشہ کیا تھا اور رفع

خرخشہ ہوا بھی نہیں توڑے خالد کا کب تک انتظار کیا جائے گا۔ | بحکم حدیث اسلام ضرر وضرر سے پاک ہے۔ | ۶۲۹

۶۲۸: ولی اگر بحالت جبر واکراہ نکاح کردے ہو جائیگا۔ | ہندہ نابالغہ کا باپ مر گیا، ماں نے اس کی سوتیلی بہن کو جس نے اسے بچپن سے اولاد کی طرح پالا تھا اس کے نکاح کی اجازت دے دی، سوتیلی بہن نے نکاح کردیا، وقت نکاح ہندہ کے چچا اور بھائی موجود نہ تھے مگر انہیں علم تھا، کیا حکم ہے۔ | ۶۲۹

۶۲۹: عورتوں سے بحکم قرآن نیک برتاؤ کرنا لازم۔ | لڑکی کے باپ نے لڑکے کو دہلی سے بھوپال برائے عقد بلایا، برات پہنچی، تاریخ عقد مقرر ہوئی، لڑکی ماموں کے یہاں تھی، باپ لینے گیا، عین وقت پر ماموں نے بھیجنے سے انکار کردیا، باپ شرم سے زہر کھا کر مر گیا، اس کی تحریر اجازت موجود ہے۔ لڑکی نابالغہ ہے۔ اسی کا چچا عقد پر رضامند ہے۔ کیا چچا کی محض اجازت سے بے اطلاع دختر نکاح ہو سکتا ہے۔ | ۶۳۰

Fatawa Razawiyya | Volume 11

636 | A widow married a man who had two sons from his first wife. They had a daughter. After the second husband's death, the widow married a third husband. The third husband married off the minor daughter to a minor boy. Initially, while arranging the match, the two sons of the second husband were also consulted, but they were not present at the time of the marriage. Now, both of them agree to this marriage. What is the ruling? | 633 | Annulment due to lack of compatibility (Kafa'ah) can only take place in the court of a Qazi (Judge).

636 | Zaid, the father of minor Hindah, was deceived by Bakr into believing that Khalid belonged to the same community. Zaid married her to Khalid. After moving to the husband's home, it was discovered that Khalid is of illegitimate birth and from a lowly community. The minor girl does not recognize him as her husband nor has she ever visited him. She annulled the marriage contract that was drawn up upon reaching puberty. What is the ruling? | 634 | After their mother's death, the girls grew up to adulthood under their maternal grandfather's care. The father is in his hometown and does not provide any support for the girls. When the grandfather arranges marriages, the father obstructs them and does not spend anything himself due to being miserly. Can the grandfather act as the guardian (Wali) and perform the marriage?

637 | Considering someone to be pious and believing they do not use intoxicants, a person married off his daughter to him. Later it was discovered that he is an addict. After reaching puberty, the girl said she is not happy with this marriage. What is the ruling? | 634 | The minor's father passed away. Her legal heirs are present but they refuse to act as guardians (Wali). Can the minor's mother, who has remarried, or her second husband, become the guardian or not?

637 | He married off his daughter to someone thinking he was of original free status (Hur-e-Asli), but he turned out to be a freed slave. Then this marriage will be void by consensus. | 635 | Zaid had a daughter with Hindah. Then Zaid divorced Hindah. The daughter stayed with Hindah. Hindah married Bakr. When the daughter was about 9 years old, Bakr and Hindah married her off. The person she was married to is completely ignorant of Islam, does not fast, and does not pray. Now the daughter is fifteen years old; she observes prayer and fasting and is educated. She does not want to live with him. Her original guardian is alive and did not grant permission for the marriage. What is the ruling?

638 | Lack of compatibility due to sinfulness (Fisq) etc. - there is no difference in types of sinfulness. | 635 | A girl is 13-14 years old. Her father neither provides food and clothing nor takes her with him. He was reasoned with many times but he paid no heed. The maternal uncle said either you marry the girl off or relinquish your claim. He did not respond. When the uncle wanted to arrange the marriage, the man sent a notice to his father-in-law saying do not marry the girl off otherwise we will file a lawsuit. What is the ruling?

| If the separation is initiated by the woman, it is annulment (Faskh); if initiated by the man, it is divorce (Talaq), and a judicial decree is a condition for all cases. | 635 |

636 | एक विधवा ने जिससे निकाह किया, उसके पहली पत्नी से दो लड़के थे। उनसे एक बेटी हुई। दूसरे पति की मृत्यु के बाद विधवा ने तीसरा पति किया और तीसरे पति ने उस नाबालिग बेटी का निकाह एक नाबालिग लड़के से कर दिया। शुरुआत में रिश्ता तय करते समय दूसरे पति के दोनों लड़कों से भी मशविरा लिया गया था, लेकिन निकाह के समय वे दोनों नहीं थे। अब वे दोनों इस निकाह से सहमत हैं। क्या हुक्म है? | 633 | कफ़ाअत (बराबरी) न होने के कारण निकाह का निरस्तीकरण (फ़स्ख़) केवल क़ाज़ी की अदालत में ही हो सकता है।

636 | हंदा (नाबालिग) के पिता ज़ैद को बक्र ने धोखा दिया कि ख़ालिद उसकी बिरादरी का है। ज़ैद ने ख़ालिद से निकाह कर दिया। विदाई के बाद पता चला कि ख़ालिद अवैध संतान है और नीच बिरादरी से है। नाबालिग उसे अपना शौहर नहीं मानती और न ही उसके पास कभी गई। बालिग होने पर उसने उस निकाह के समझौते को रद्द कर दिया। क्या हुक्म है? | 634 | माँ की मृत्यु के बाद लड़कियाँ अपने नाना के संरक्षण में रहकर बालिग हुईं। पिता अपने वतन में है और लड़कियों की किसी प्रकार की सहायता नहीं करता। नाना जब शादियों का प्रबंध करते हैं तो पिता बाधा डालता है और कंजूसी के कारण स्वयं भी खर्च नहीं करता। क्या नाना वली (अभिभावक) बनकर निकाह कर सकता है?

637 | किसी को नेक समझकर कि वह नशीली चीज़ों का सेवन नहीं करता, अपनी बेटी का निकाह उससे कर दिया। बाद में पता चला कि वह आदी है। लड़की ने बालिग होने के बाद कह दिया कि वह इस निकाह से खुश नहीं है। क्या हुक्म है? | 634 | नाबालिग लड़की का पिता मर गया। उसके शरई वारिस मौजूद हैं लेकिन वे वली बनने से इनकार करते हैं। नाबालिग की माँ, जिसने दूसरा विवाह कर लिया है, या उसका दूसरा पति वली बन सकते हैं या नहीं?

637 | अपनी बेटी का निकाह किसी से यह समझकर कर दिया कि वह मूल रूप से आज़ाद (हुर-ए-अस्ली) है, जबकि वह आज़ाद किया हुआ गुलाम था। तो सर्वसम्मति से यह निकाह बातिल (अमान्य) होगा। | 635 | ज़ैद और हंदा की एक बेटी हुई, फिर ज़ैद ने हंदा को तलाक़ दे दी। बेटी हंदा के पास रही। हंदा ने बक्र से निकाह कर लिया। जब बेटी लगभग 9 साल की हुई तो बक्र और हंदा ने उसका निकाह कर दिया। जिससे निकाह किया वह इस्लाम से बिल्कुल अनभिज्ञ है, न रोज़ा रखता है न नमाज़ पढ़ता है। अब बेटी पंद्रह साल की है, नमाज़-रोज़े की पाबंद और शिक्षित है। वह उसके पास

नहीं रहना चाहती। उसका असली वली जीवित है और उसने निकाह की अनुमति नहीं दी थी। क्या हुक्म है?

638 | फिसक़ (पाप) आदि के कारण कफ़ाअत की कमी - फिसक़ के प्रकारों में कोई अंतर नहीं है। | 635 | लड़की 13-14 साल की है। उसका पिता न तो उसे भोजन-वस्त्र देता है और न ही अपने साथ ले जाता है। उसे कई बार समझाया गया पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। मामा ने कहा कि या तो तुम लड़की की शादी करो वरना अपना दावा छोड़ दो। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। जब मामा ने विवाह करना चाहा तो उस व्यक्ति ने अपने ससुर को नोटिस भेजा कि लड़की की शादी मत करना अन्यथा हम मुकदमा करेंगे। क्या हुक्म है?

| यदि विच्छेद स्त्री की ओर से हो तो वह फ़स्ख़ (निरस्तीकरण) है, और यदि पुरुष की ओर से हो तो तलाक़ है, और इन सभी के लिए न्यायिक डिक्री अनिवार्य शर्त है। | 635 |

पृष्ठ 61 का 739

۶۳۶ | بیوہ نے جس سے نکاح کیا اس کے دو لڑکے زوجہ اولیٰ سے ہیں، ایک دختر اس سے ہوئی، شوہر ثانی کے انتقال کے بعد بیوہ نے تیسرا خاوند کیا اور شوہر سوم نے اس دختر نابالغہ کا نکاح ایک نابالغ سے کر دیا، ابتداءً قرار داد نسبت میں شوہر دوم کے دونوں لڑکوں کا بھی مشورہ تھا مگر وقت نکاح یہ دونوں نہ تھے، اب یہ دونوں اس نکاح سے رضامند ہیں۔ کیا حکم ہے۔ |

۶۳۳ | فسخ بوجہ کفاءۃ قاضی ہی کے یہاں ہو سکتا ہے۔

۶۳۶ | زید پدر ہندہ نابالغہ کو بکر نے فریب دیا کہ خالد اس کا ہم قوم ہے زید نے خالد سے عقد کر دیا رخصت ہوئی تو معلوم ہوا کہ خالد ولدالحرام ذلیل قوم ہے صغیرہ اسے اپنا شوہر نہیں جانتی نہ اس کے پاس آئی گئی معاہدہ نکاح جو مرتب ہوا تھا بوقتِ بلوغ اس نے فسخ کر دیا کیا حکم ہے۔ |

۶۳۴ | لڑکیاں بعد موت والدہ اپنے نانا کے زیرِ پرورش رہ کر بالغہ ہوئیں والد اپنے وطن میں ہے لڑکیوں کی کسی قسم کی امداد نہیں کرتا۔ نانا شادیوں کا انتظام کرتا ہے تو والد مانع ہوتا ہے اور خود بوجہ صرف نہیں کرتا، کیا نانا ولی ہو کر نکاح کر سکتا ہے۔

۶۳۷ | کسی کو صالح جان کر کہ یہ نشہ کی چیز نہیں استعمال کرتا اس سے اپنی بیٹی کا عقد کر دیا پھر معلوم ہوا کہ وہ عادی ہے لڑکی نے بعدِ بلوغ کہہ دیا کہ میں اس نکاح سے راضی نہیں، کیا حکم ہے۔ | ۶۳۴ | نابالغہ کا باپ فوت ہو گیا اس کے شرعی وارث موجود ہیں مگر ولی بننے سے انکار کرتے ہیں، نابالغہ کی ماں جس نے عقدِ ثانی کر لیا ہے وہ یا اس کا شوہر ثانی ولی بن سکتے ہیں یا نہیں۔

۶۳۷ | اپنی بیٹی کسی کے نکاح میں اسے حر اصلی جان کر دی اور وہ تھا آزاد شدہ۔ تو یہ نکاح بالاتفاق باطل ہوگا۔ | ۶۳۵ | زید کے ہندہ سے ایک دختر ہوئی پھر زید نے ہندہ کو طلاق دے دی دختر ہندہ کے پاس رہی ہندہ نے بکر سے نکاح کر لیا جب دختر تقریباً ۹ سال کی ہوئی تو بکر و ہندہ نے اس کا نکاح کر دیا جس سے نکاح کیا وہ اسلام سے بالکل ناواقف ہے نہ روزہ رکھتا ہے نہ نماز پڑھتا ہے اب دختر پندرہ سال کی ہے نماز روزے کی پابند پڑھی لکھی ہے وہ اس کے یہاں رہنا نہیں چاہتی ولی اصلی زندہ ہے اس نے اجازتِ نکاح نہیں دی، کیا حکم ہے۔

۶۳۸ | عدمِ کفاءۃ بوجہ فسق وغیرہ فسق میں کوئی فرق نہیں۔ | ۶۳۵ | لڑکی ۱۳۔۱۴ سالہ ہے اس کا باپ نہ تو کھانا کپڑا دیتا ہے نہ لے جاتا ہے، بہت کچھ اسے کئی دفعہ سمجھایا مگر کوئی خیال نہ کیا۔ ماموں نے کہا یا تو تم لڑکی کی شادی کرو نہیں کرتے تو لا دعویٰ ہو جاؤ جواب نہ دیا ماموں نے جب چاہا کہ شادی کردی جائے تو اس شخص نے اپنے خسر کو نوٹس دیا کہ تم لڑکی کی شادی نہ کرنا ورنہ ہم دعویٰ کریں گے۔ کیا حکم ہے۔

| فرقت عورت کی طرف سے ہو تو فسخ، مرد کی طرف سے ہو تو طلاق ہے اور قضاء سب کے لئے شرط ہے۔ | ۶۳۵ |

A widow named Hind had illicit relations with Amr. Upon hearing this, Hind's uncle, Bakr, forcibly married her to his son, Zaid, without Hind's consent. The proxy sought Hind's permission, and out of fear for her life, she gave consent. After a few months, finding an opportunity, she fled to
641 **Amr's place. Hind testified under oath that she never accepted it at all; she only agreed due to the threats of death from Bakr and others. Then people locked her and Zaid in a house where valid privacy (Khalwat Sahihah) also occurred under duress. Is such a marriage valid? Will a divorce be necessary or not?**

642 If a guardian sets a dower (mahr) and the minor, upon reaching puberty, is not satisfied with that dower and refuses it, what will be the ruling?

643 Zaid died. He has a brother who has been separated for a long time and had no connection with the deceased. Zaid's daughter, who is nearing puberty, is about to get married. Her stepmother, who raised her, sought help regarding the marriage. He (the brother) said he would not participate in this marriage nor had any involvement, saying they should do as they please. There are

After the father's death, the mother betrothed a minor girl somewhere. Some jewelry and clothes were given to the girl. The betrothed family, in their own estimation, considered it a marriage. After two or three years, the betrothed party demanded the wedding. The mother refused, so
646 **they broke the engagement and took back the gifts. After the mother's death, they claim they didn't break the engagement. Under the ruling of "Wa Lahumal Khiyar fi Ghayril Abi wal Jaddi" (they have the option in marriages contracted by someone other than the father and grandfather), can the girl annul it?**

647 Where there is no Qadi (Islamic judge), can an annulment be obtained from the most learned scholars of the city?

647 The girl is fourteen years old. The father wrote a letter to her mother saying, "Do as you wish, you have the authority." In the father's absence, can the mother perform the marriage?

A widow named Hind had illicit relations with Amr. Upon hearing this, Hind's uncle, Bakr, forcibly married her to his son, Zaid, without Hind's consent. The proxy sought Hind's permission, and out of fear for her life, she gave consent. After a few months, finding an opportunity, she fled to Amr's place. Hind testified under oath that she never accepted it at all; she only agreed due to the threats of death from Bakr and others. Then people locked her and Zaid in a house where valid privacy (Khalwat Sahihah) also occurred under duress. Is such a marriage valid? Will a divorce be necessary or not?

two stepbrothers of the girl present, who are sixteen years old. What is the ruling?

The parents died; the maternal grandmother raised the girl. At eight or nine years of age, the grandmother married the girl to her grandson (the girl's cousin). The girl's biological brothers were not present at the time. When Hind (the girl) had her first menstruation, she went with her grandmother to a house in their neighborhood and stated before two men and three women: "I am not satisfied with the person my grandmother married me to; I cannot spend my life with him." Does this marriage remain or not? Hind has

After the father's death, the mother betrothed a minor girl somewhere. Some jewelry and clothes were given to the girl. The betrothed family, in their own estimation, considered it a marriage. After two or three years, the betrothed party demanded the wedding. The mother refused, so they broke the engagement and took back the gifts. After the mother's death, they claim they didn't break the engagement. Under the ruling of "Wa Lahumal Khiyar fi Ghayril Abi wal Jaddi" (they have the option in marriages contracted by someone other than the father and grandfather), can the girl annul it?

Zaid disinherited the children of his first wife. He had a daughter from his third wife. He died after betrothing her to Bakr. When the girl was ten years old, her mother, acting as her guardian, married her to Bakr. The disinherited son of the first wife claims he is the guardian (Wali) and wants her to marry elsewhere. What is the ruling?

A widow named Hind had illicit relations with Amr. Upon hearing this, Hind's uncle, Bakr, forcibly married her to his son, Zaid, without Hind's consent. The proxy sought Hind's permission, and out of fear for her life, she gave consent. After a few months, finding an opportunity, she fled to

641 **Amr's place. Hind testified under oath that she never accepted it at all; she only agreed due to the threats of death from Bakr and others. Then people locked her and Zaid in a house where valid privacy (Khalwat Sahihah) also occurred under duress. Is such a marriage valid? Will a divorce be necessary or not?**

entered into a second marriage contract. What is the ruling?

After the father's death, the mother betrothed a minor girl somewhere. Some jewelry and clothes were given to the girl. The betrothed family, in their own estimation, considered it a marriage. After two or three years, the betrothed party demanded the wedding. The mother refused, so

646 **they broke the engagement and took back the gifts. After the mother's death, they claim they didn't break the engagement. Under the ruling of "Wa Lahumal Khiyar fi Ghayril Abi wal Jaddi" (they have the option in marriages contracted by someone other than the father and grandfather), can the girl annul it?**

641 **हिंदा नाम की एक विधवा के अमर के साथ अवैध संबंध हो गए। हिंदा के चाचा बक्र ने यह खबर पाकर ज़बरदस्ती हिंदा का निकाह अपने बेटे ज़ैद से बिना हिंदा की मर्ज़ी के कर दिया। वकील ने हिंदा से इजाज़त चाही, तो जान के डर से हिंदा ने इजाज़त दे दी। दो-चार महीने बाद मौका पाकर वह अमर के यहाँ भाग आई। हिंदा ने शपथपूर्वक बयान दिया कि मुझे यह कतई मंज़ूर न था, बक्र वगैरह के डर से जो जान से मार देने की धमकी थी, मैंने इकरार किया था। फिर लोगों ने मुझे और ज़ैद को एक घर में बंद कर दिया जहाँ ज़बरदस्ती खलवत-ए-सहीहा (एकांतवास) भी हुआ। क्या ऐसा निकाह जायज़ है? क्या तलाक़ की ज़रूरत होगी या नहीं?**

642 वली (अभिभावक) जो मह्र तय करे, नाबालिग बालिग होने के बाद उस मह्र से राज़ी न हो और इनकार करे तो क्या हुक्म होगा?

643 ज़ैद की मौत हो गई। उसका एक भाई है जो काफी समय से अलग है और मृतक से उसका कोई संबंध नहीं था। ज़ैद की लड़की जो बालिग होने के करीब है, उसकी शादी होने वाली है। उसकी सौतेली माँ जिसने उसका पालन-पोषण किया, उसने शादी के संबंध में मदद चाही। उसने (भाई ने) कहा कि

646 **पिता की मृत्यु के बाद माँ ने एक नाबालिग लड़की का कहीं नाता (सगाई) कर दिया। लड़की को कुछ ज़ेवर और कपड़े पहनाए गए। नाता (सगाई) करने वाले अपने ज़ेहन में इसे निकाह समझते हैं। दो-तीन साल बाद मंगनी वालों ने शादी का तक़ाज़ा किया। माँ ने मना कर दिया, तो उन्होंने नाता तोड़ दिया और चढ़ावा (उपहार) वापस ले लिया। लड़की की माँ की मृत्यु के बाद वे कहते हैं कि हमने नाता नहीं तोड़ा। क्या "ولهما الخيار فى غير الاب والجد" (पिता और दादा के अलावा दूसरों के द्वारा कराए गए निकाह में उन्हें विकल्प है) के हुक्म के तहत लड़की को फस्ख़ (निरस्त करने) का अधिकार है?**

647 जहाँ काज़ी न हो, क्या वहाँ शहर के सबसे बड़े आलिमों से फस्ख़ (निकाह निरस्त) कराया जा सकता है?

647 लड़की चौदह साल की है, बाप ने उसकी माँ को खत लिखा कि जैसे चाहो करो, तुम्हें अधिकार है। क्या बाप की अनुपस्थिति में माँ निकाह कर सकती है?

641 **हिंदा नाम की एक विधवा के अमर के साथ अवैध संबंध हो गए। हिंदा के चाचा बक्र ने यह खबर पाकर ज़बरदस्ती हिंदा का निकाह अपने बेटे ज़ैद से बिना हिंदा की मर्ज़ी के कर दिया। वकील ने हिंदा से इजाज़त चाही, तो जान के डर से हिंदा ने इजाज़त दे दी। दो-चार महीने बाद मौका पाकर वह अमर के यहाँ भाग आई। हिंदा ने शपथपूर्वक बयान दिया कि मुझे यह कतई मंज़ूर न था, बक्र वगैरह के डर से जो जान से मार देने की धमकी थी, मैंने इकरार किया था। फिर लोगों ने मुझे और ज़ैद को एक घर में बंद कर दिया जहाँ ज़बरदस्ती खलवत-ए-सहीहा (एकांतवास) भी हुआ। क्या ऐसा निकाह जायज़ है? क्या तलाक़ की ज़रूरत होगी या नहीं?**

मैं इस शादी में शामिल नहीं हूँगा, न मेरा कोई वास्ता है, जहाँ चाहें करें। लड़की के दो सौतेले भाई जो सोलह साल के हैं, मौजूद हैं। क्या हुक्म है?

645 माँ-बाप मर गए; नानी ने परवरिश की। आठ-नौ साल की उम्र में नानी ने लड़की का निकाह अपने नवासे (लड़की के चचेरे भाई) के साथ कर दिया। लड़की के सगे भाई उस समय मौजूद नहीं थे। हिंदा को जब पहली बार मासिक धर्म हुआ, तो वह अपनी नानी के साथ अपने मोहल्ले के एक घर में आई और दो पुरुषों और तीन महिलाओं के सामने कहा: "जिसके साथ मेरी नानी ने मेरी शादी

646 **पिता की मृत्यु के बाद माँ ने एक नाबालिग लड़की का कहीं नाता (सगाई) कर दिया। लड़की को कुछ ज़ेवर और कपड़े पहनाए गए। नाता (सगाई) करने वाले अपने ज़ेहन में इसे निकाह समझते हैं। दो-तीन साल बाद मंगनी वालों ने शादी का तक़ाज़ा किया। माँ ने मना कर दिया, तो उन्होंने नाता तोड़ दिया और चढ़ावा (उपहार) वापस ले लिया। लड़की की माँ की मृत्यु के बाद वे कहते हैं कि हमने नाता नहीं तोड़ा। क्या "ولهما الخيار فى غير الاب والجد" (पिता और दादा के अलावा दूसरों के द्वारा कराए गए निकाह में उन्हें विकल्प है) के हुक्म के तहत लड़की को फस्ख़ (निरस्त करने) का अधिकार है?**

ज़ैद ने अपनी पहली बीवी के बच्चों को बेदखल कर दिया। तीसरी बीवी से उसकी एक बेटी है। उसने बक्र से उसकी मंगनी तय की और मर गया। लड़की जब दस
648 साल की थी, तो माँ ने खुद वली (अभिभावक) बनकर बक्र से उसकी शादी कर दी। पहली बीवी का बेदखल किया हुआ बेटा कहता है कि मैं वली हूँ और

641 **हिंदा नाम की एक विधवा के अमर के साथ अवैध संबंध हो गए। हिंदा के चाचा बक्र ने यह खबर पाकर ज़बरदस्ती हिंदा का निकाह अपने बेटे ज़ैद से बिना हिंदा की मर्ज़ी के कर दिया। वकील ने हिंदा से इजाज़त चाही, तो जान के डर से हिंदा ने इजाज़त दे दी। दो-चार महीने बाद मौका पाकर वह अमर के यहाँ भाग आई। हिंदा ने शपथपूर्वक बयान दिया कि मुझे यह कतई मंज़ूर न था, बक्र वगैरह के डर से जो जान से मार देने की धमकी थी, मैंने इकरार किया था। फिर लोगों ने मुझे और ज़ैद को एक घर में बंद कर दिया जहाँ ज़बरदस्ती खलवत-ए-सहीहा (एकांतवास) भी हुआ। क्या ऐसा निकाह जायज़ है? क्या तलाक़ की ज़रूरत होगी या नहीं?**

की थी, मैं उससे राज़ी नहीं हूँ; मैं उसके साथ अपनी उम्र बसर नहीं कर सकती।" क्या यह निकाह रहा या नहीं? हिंदा ने दूसरा निकाह कर लिया है, क्या हुक्म है?

646 **पिता की मृत्यु के बाद माँ ने एक नाबालिग लड़की का कहीं नाता (सगाई) कर दिया। लड़की को कुछ ज़ेवर और कपड़े पहनाए गए। नाता (सगाई) करने वाले अपने ज़ेहन में इसे निकाह समझते हैं। दो-तीन साल बाद मंगनी वालों ने शादी का तक़ाज़ा किया। माँ ने मना कर दिया, तो उन्होंने नाता तोड़ दिया और चढ़ावा (उपहार) वापस ले लिया। लड़की की माँ की मृत्यु के बाद वे कहते हैं कि हमने नाता नहीं तोड़ा। क्या "ولهما الخيار فى غير الاب والجد" (पिता और दादा के अलावा दूसरों के द्वारा कराए गए निकाह में उन्हें विकल्प है) के हुक्म के तहत लड़की को फस्ख़ (निरस्त करने) का अधिकार है?**

दूसरी जगह शादी करना चाहता है। क्या हुक्म है?

ہندہ بیوہ کا عمرو سے ناجائز تعلقات ہوا ہندہ کے چچا بکر نے یہ خبر پاکر بزور اپنے لڑکے زید سے بے رضامندی ہندہ ہندہ کا نکاح کردیا، وکیل نے ہندہ سے اجازت چاہی، بخوف جان ہندہ نے اذن دیا، دو چار ماہ بعد موقع پاکر عمرو کے یہاں بھاگ آئی، ہندہ نے حلفا بیان کیا کہ مجھے ہرگز ہرگز منظور نہ تھا بکر وغیرہ کے جبر سے جو دھمکی ہلاکت کی تھی اقبال کیا پھر مجھے اور زید کو لوگوں نے ایک مکان میں بند کردیا خلوت صحیحہ بھی بجبر ہوئی، کیا ایسا نکاح جائز ہے۔ طلاق کی حاجت ہوگی یا نہیں۔

۶۴۱

ولی جو مہر باندھے نابالغ بعد بلوغ اس مہر سے راضی نہ ہو انکار کرے تو کیا حکم ہوگا۔

۶۴۲

زید مر گیا اس کا ایک بھائی جو مدت دراز سے علیحدہ ہے کسی قسم کا کوئی تعلق مرحوم سے نہیں رکھتا تھا زید کی لڑکی جو قریب بلوغ ہے اس کی شادی ہونے والی ہے لڑکی

۶۴۳

بعد وفات کے پدر ماں نے نابالغہ کا کہیں ناتا کردیا لڑکی کو کسی قدر زیور اور کپڑا چڑھایا گیا، ناتے والے اپنے زعم میں اسے نکاح سمجھتے ہیں دو تین سال بعد منگنی والوں نے شادی کا تقاضا کیا، ماں نے انکار کردیا، انھوں نے ناتا توڑ دیا اور چڑھاوہ واپس لے لیا، لڑکی کی ماں کے مرنے کے بعد کہتے ہیں ہم نے ناتا نہیں توڑا۔ کیا بحکم "ولهما الخيار في غير الاب والجد" لڑکی کو فسخ ہے۔

۶۴۶

جہاں قاضی نہ ہو کیا وہاں اعلم علمائے اہل بلد سے فسخ کرالیا جائے۔

۶۴۷

لڑکی چودہ سال کی ہے، باپ نے اس کی ماں کو خط لکھا کہ جس طرح چاہو کرو تمہیں اختیار ہے کیا باپ کی

۶۴۷

ہندہ بیوہ کا عمرو سے ناجائز تعلقات ہوا ہندہ کے چچا بکر نے یہ خبر پاکر بزور اپنے لڑکے زید سے بے رضامندی ہندہ ہندہ کا نکاح کردیا، وکیل نے ہندہ سے اجازت چاہی، بخوف جان ہندہ نے اذن دیا، دو چار ماہ بعد موقع پاکر عمرو کے یہاں بھاگ آئی، ہندہ نے حلفا بیان کیا کہ مجھے ہرگز ہرگز منظور نہ تھا بکر وغیرہ کے جبر سے جو دھمکی ہلاکت کی تھی اقبال کیا پھر مجھے اور زید کو لوگوں نے ایک مکان میں بند کردیا خلوت صحیحہ بھی بجبر ہوئی، کیا ایسا نکاح جائز ہے۔ طلاق کی حاجت ہوگی یا نہیں۔

۶۴۱

کی سوتیلی ماں جس نے اس کی پرورش کی ہے شادی کے متعلق مدد چاہی اس نے کہا کہ میں اس شادی میں شریک نہ ہوں گا، نہ مجھے کوئی واسطہ، جہاں چاہیں کریں، لڑکی کے دو سوتیلے بھائی جن کی عمر سولہ سال ہے موجود ہیں، کیا حکم ہے۔

۶۴۵

ماں باپ مرگئے نانی نے پرورش کیا آٹھ نو سال کی عمر میں نانی نے لڑکی کا نکاح

بعد وفات کے پدر ماں نے نابالغہ کا کہیں ناتا کردیا لڑکی کو کسی قدر زیور اور کپڑا چڑھایا گیا، ناتے والے اپنے زعم میں اسے نکاح سمجھتے ہیں دو تین سال بعد منگنی والوں نے شادی

۶۴۶

کا تقاضا کیا، ماں نے انکار کردیا، انھوں نے ناتا توڑ دیا اور چڑھاوہ واپس لے لیا، لڑکی کی ماں کے مرنے کے بعد کہتے ہیں ہم نے ناتا نہیں توڑا۔ کیا بحکم "ولهما الخيار في غير الاب والجد" لڑکی کو فسخ ہے۔

عدم موجودگی میں ماں نکاح کرسکتی ہے۔

۶۴۸

زید نے اپنی پہلی بی بی کے بچوں کو عاق کردیا، تیسری بی بی سے دختر

ہندہ بیوہ کا عمرو سے ناجائز تعلقات ہوا ہندہ کے چچا بکر نے یہ خبر پاکر بزور اپنے لڑکے زید سے بے رضامندی ہندہ ہندہ کا نکاح کردیا، وکیل نے ہندہ سے اجازت چاہی، بخوف جان ہندہ نے اذن دیا، دو چار ماہ بعد موقع پاکر عمرو کے یہاں بھاگ آئی، ہندہ نے حلفا بیان

۶۴۱

کیا کہ مجھے ہرگز ہرگز منظور نہ تھا بکر وغیرہ کے جبر سے جو دھمکی ہلاکت کی تھی اقبال کیا پھر مجھے اور زید کو لوگوں نے ایک مکان میں بند کردیا خلوت صحیحہ بھی بجبر ہوئی، کیا ایسا نکاح جائز ہے۔ طلاق کی حاجت ہوگی یا نہیں۔

نواسے کے ساتھ کردیا، دختر کے حقیقی بھائی موقع پر موجود نہ تھے ہندہ کو جب پہلی بار حیض ہوا وہ مع اپنی نانی کے اپنے محلے کے ایک گھر میں آئی اور دو مرد تین عورتوں کے سامنے کہا جس کے ساتھ میری نانی نے میری شادی کی تھی میں اس سے رضامند نہیں ہوں اس کے ساتھ اپنی عمر بسر نہیں کرسکتی، یہ

بعد وفات کے پدر ماں نے نابالغہ کا کہیں ناتا کردیا لڑکی کو کسی قدر زیور اور کپڑا چڑھایا گیا، ناتے والے اپنے زعم میں اسے نکاح سمجھتے ہیں دو تین سال بعد منگنی والوں نے شادی

۶۴۶

کا تقاضا کیا، ماں نے انکار کردیا، انھوں نے ناتا توڑ دیا اور چڑھاوہ واپس لے لیا، لڑکی کی ماں کے مرنے کے بعد کہتے ہیں ہم نے ناتا نہیں توڑا۔ کیا بحکم "ولهما الخيار في غير الاب والجد" لڑکی کو فسخ ہے۔

ہے، اس کی بکر سے نسبت کرکے فوت ہوگیا، لڑکی دس سال کی تھی ماں نے بولایت خود بکر سے شادی کردی، پہلی بی بی کا عاق لڑکا کہتا ہے میں ولی ہوں، دوسری جگہ شادی کرنا چاہتا ہے، کیا حکم ہے۔

ہندہ بیوہ کا عمرو سے ناجائز تعلقات ہوا ہندہ کے چچا بکر نے یہ خبر پاکر بزور اپنے لڑکے زید سے بے رضامندی ہندہ ہندہ کا نکاح کردیا، وکیل نے ہندہ سے اجازت چاہی، بخوف جان ہندہ نے اذن دیا، دو چار ماہ بعد موقع پاکر عمرو کے یہاں بھاگ آئی، ہندہ نے حلفا بیان

۶۴۱ **کیا کہ مجھے ہرگز ہرگز منظور نہ تھا بکر وغیرہ کے جبر سے جو دھمکی ہلاکت کی تھی اقبال کیا پھر مجھے اور زید کو لوگوں نے ایک مکان میں بند کردیا خلوت صحیحہ بھی بجبر ہوئی، کیا ایسا نکاح جائز ہے۔ طلاق کی حاجت ہوگی یا نہیں۔**

نکاح رہا یا نہیں۔ ہندہ نے دوسرا عقد کرلیا، کیا حکم ہے۔

بعد وفات کے پدر ماں نے نابالغہ کا کہیں ناتا کردیا لڑکی کو کسی قدر زیور اور کپڑا چڑھایا گیا، ناتے والے اپنے زعم میں اسے نکاح سمجھتے ہیں دو تین سال بعد منگنی والوں نے شادی

۶۴۶ **کا تقاضا کیا، ماں نے انکار کردیا، انھوں نے ناتا توڑ دیا اور چڑھاوہ واپس لے لیا، لڑکی کی ماں کے مرنے کے بعد کہتے ہیں ہم نے ناتا نہیں توڑا۔ کیا بحکم "ولهما الخيار في غير الاب والجد" لڑکی کو فسخ ہے۔**

Fatawa-e-Razvia Volume 11

648: Disinheriting (Aaq karna) is not recognized in Sharia, nor does it invalidate guardianship (Wilayat).

649: A grandfather married off his minor granddaughter Hindah, daughter of Zaid, to a family boy named Bakr without informing Zaid. Is this marriage valid or not? Who can annul this marriage and within what timeframe? [Page 651]

649: A widow married her minor daughter to her own nephew. The girl states: "Before the marriage, my sister mentioned the idea of my marriage to Aziz-ul-Hasan several times in my presence. I strictly refused. My refusal was known to Aziz-ul-Hasan, my mother, sisters, and others. At the time of the Nikah, when my consent was sought, out of shyness I could not refuse loudly in the assembly, but I shook my head in refusal and did not say 'yes' or 'no' which could be taken as consent. My sisters, mother, and aunt started shouting that it was done. I was not consenting then, nor am I now. What is the ruling?" [Page 651]

If Hindah is an adult, having lived in her husband's house and then returning to her father's house with him where Bakr stayed for some time, is this marriage valid or not? (3) If Hindah was a minor, and when Zaid's acquaintances asked how the marriage happened without his permission, Zaid said, "We had given permission to perform the marriage and just inform us," is this consent valid? (4) Bakr came to Zaid's house alone and stayed. Zaid took him to many gatherings and markets. When asked, he said, "He is my son-in-law." When Bakr went for a job, correspondence continued. Later, when he became missing (Mafqood-ul-Khabar), Zaid said, "We did not approve of the marriage with Bakr; it happened and we accepted it under compulsion." Now, considering all events, is the marriage valid? If Zaid denies the content of point 3, does not deny point 4, accepts point 1, and then after four or five years annuls the marriage and performs another marriage for Hindah, what is the ruling? Is it a sin to maintain social ties with Zaid? If Hindah did not go to Bakr's house after Rukhsati, nor did Bakr come with her to Zaid's house, but Bakr himself came to Zaid's house and stayed, and Zaid told his acquaintances, "This is my son-in-law," and introduced him to everyone, what is the ruling?

650: A paternal uncle, exercising his right of guardianship, married off Hindah knowing she was a minor, in the absence of Hindah and her mother, to Zaid, who was also a minor. Five years later, Zaid, now an adult, wants to take her home (Rukhsati). Hindah's mother claims that Hindah was an adult at the time of the marriage and

therefore she is not allowing the Rukhsati. The mother's statement has been verified. What is the ruling?

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 11

648: आक़ (बेदखल) करना शरीयत में कोई चीज़ नहीं है, और न ही इससे विलायत (संरक्षण का अधिकार) समाप्त होता है।

649: एक दादा ने अपनी नाबालिग पोती हिंदा (ज़ैद की बेटी) का निकाह ज़ैद को सूचित किए बिना अपने खानदान के एक लड़के बक्र से कर दिया। क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? इस निकाह को कौन और कितने समय तक रद्द (फ़स्ख़) कर सकता है? [पृष्ठ 651]

649: एक विधवा ने अपनी नाबालिग लड़की का निकाह अपने भांजे से कर दिया। लड़की का बयान है: "निकाह से पहले मेरी बहन ने मेरे सामने कई बार अज़ीज़-उल-हसन से मेरे निकाह का ज़िक्र किया, मैंने साफ़ इनकार कर दिया। मेरे इनकार की बात अज़ीज़-उल-हसन और मेरी माँ, बहनों आदि सभी को पता थी। निकाह के समय जब मुझसे अनुमति (इज़्न) ली गई, तो शर्म की वजह से मैं भरी महफ़िल में ज़ोर से इनकार नहीं कर सकी, लेकिन मैंने इनकार में सिर हिलाया और 'हाँ' नहीं कहा। मेरी बहनों, माँ और मौसी ने शोर मचा दिया कि 'हो गया, हो गया'। मैं उस समय भी राज़ी नहीं थी और न ही अब हूँ। क्या हुक्म है?" [पृष्ठ 651]

यदि हिंदा बालिग हो और वह अपने पति के घर रही हो और उसके साथ अपने पिता के घर आई हो और बक्र कुछ समय वहाँ रहा हो, तो क्या इस स्थिति में निकाह सही है? (3) यदि हिंदा नाबालिग हो और जब ज़ैद के परिचितों ने उससे पूछा कि तुम्हारी अनुमति के बिना निकाह कैसे हो गया, तो ज़ैद ने कहा कि हमने अनुमति दे दी थी कि आप निकाह कर दें और हमें बस सूचित कर दें, तो क्या इस स्थिति में अनुमति सही हुई? (4) बक्र अकेला ज़ैद के यहाँ आया और रहा। ज़ैद उसे अक्सर सभाओं और बाज़ार में साथ ले गया। पूछने पर कहा कि मेरा दामाद है। जब बक्र नौकरी पर चला गया तो पत्र-व्यवहार भी रहा। फिर जब वह लापता (मफ़्क़ूद-उल-ख़बर) हो गया तो ज़ैद ने कहा कि हमें बक्र के साथ निकाह मंज़ूर नहीं था, हो गया था तो मजबूरी में मान लिया था। अब सभी घटनाओं को देखते हुए क्या निकाह सही हो गया या नहीं? यदि ज़ैद नंबर 3 की बात से इनकार करे और नंबर 4 से इनकार न करे, नंबर 1 को स्वीकार करता हो, और फिर चार-पाँच साल बाद निकाह रद्द करके हिंदा का दूसरा निकाह कर दिया हो, तो क्या हुक्म है? क्या ज़ैद के साथ मेल-जोल रखना गुनाह है या नहीं? यदि हिंदा रुख़्सती होकर बक्र के यहाँ न गई हो और न ही बक्र उसके साथ ज़ैद के यहाँ आया हो,

लेकिन बक्र खुद ज़ैद के घर आया, रहा और ज़ैद ने अपने मिलने वालों से कहा हो कि यह मेरा दामाद है और सबसे मिलवाया हो, तो क्या हुक्म है?

650: सगे चाचा ने अपनी विलायत (संरक्षण) के अधिकार से हिंदा को नाबालिग जानते हुए, हिंदा और उसकी माँ की अनुपस्थिति में, नाबालिग ज़ैद से निकाह कर दिया। पाँच साल बाद ज़ैद बालिग होकर रुख़्सती चाहता है। हिंदा की माँ का दावा है कि निकाह के समय हिंदा बालिग थी, इसलिए वह रुख़्सती नहीं करने दे रही है। माँ के बयान की पुष्टि कर ली गई है। क्या हुक्म है?

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

۶۴۸: عاق کرنا شرعاً کوئی چیز نہیں، نہ اس سے ولایت زائل ہو۔

۶۴۹: نانا نے اپنی نواسی ہندہ نابالغہ دختر زید کا عقد اپنے خاندانی لڑکے بکر سے بے اطلاع زید کیا جائز ہوا یا نہیں اس عقد کو کون اور کتنے عرصے تک فسخ کر سکتا ہے۔ (صفحہ ۶۵۱)

۶۴۹: بیوہ نے اپنی نابالغہ لڑکی کا خود عقد اپنے بھانجے سے کر دیا، لڑکی کا بیان ہے کہ میرے سامنے عقد سے پہلے چند بار میری ہمشیرہ نے عزیز الحسن سے میرے نکاح ہونے کا ذکر کیا، میں نے قطعی انکار کیا، میرے انکار کی خبر عزیز الحسن اور میری ماں بہنوں وغیرہ سب کو ہوئی، اب بوقت نکاح جب مجھ سے اذن لیا گیا میں بوجہ شرم بآواز بلند مجمع میں انکار نہ کر سکی، مگر انکاری سر ہلایا اور اوں ہوں نہ کہا جو انکار تھا میری بہنوں ماں اور خالہ نے غل شور مچادیا کہ ہو گیا ہو گیا، میں نہ رضامند تھی نہ اب ہوں۔ کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۶۵۱)

ہندہ اگر بالغہ ہو تو جبکہ وہ اپنے شوہر کے گھر رہی اور اس کے ہمراہ اپنے والد کے گھر آئی اور بکر چندے مقیم رہا اس صورت میں یہ عقد درست ہوا یا نہیں (۳) ہندہ درصورتیکہ نابالغہ ہو جبکہ زید کے ملنے والوں نے اس سے پوچھا کہ تم یہاں رہے اور تمہاری بے اجازت وہاں نکاح ہو گیا، یہ کیونکر ہوا، تو زید نے کہا کہ ہم اجازت دے آئے تھے کہ آپ عقد کر دیں اور ہمیں صرف اطلاع کر دیں، اس صورت میں اجازت صحیح ہوئی یا نہیں (۴) بکر زید کے یہاں تنہا آیا اور قیام کیا زید اسے اکثر مجالس اور بازار میں ہمراہ لے گیا، دریافت پر کہا کہ میرا داماد ہے۔ جب بکر ملازمت پر چلا گیا تو خط و کتابت بھی رہی پھر جب وہ مفقود الخبر ہو گیا تو زید نے کہا ہمیں بکر کے ساتھ عقد منظور نہ تھا ہو گیا تھا تو جبرا قہراً منظور کیا، اب سب واقعات سے عقد صحیح ہو گیا یا نہیں۔

زید نمبر ۳ کے مضمون سے منکر ہو اور نمبر ۴ کا انکار نہ کرتا ہو نمبر ۱ کو تسلیم کرتا ہو پھر بھی چار پانچ سال کے بعد نکاح فسخ کر کے ہندہ کا دوسرا عقد کر دیا، کیا حکم ہے زید کے ساتھ ربط ضبط میل جول رکھنا گناہ ہے یا نہیں۔ اگر ہندہ رخصت ہو کر بکر کے یہاں نہ گئی ہو نہ اس کے ساتھ بکر زید کے یہاں آیا ہو لیکن بکر خود زید کے مکان پر آیا قیام کیا ہو زید نے اپنے ملنے والوں سے کہا ہو کہ یہ میرا داماد ہے سب کو کھلایا ہو تو کیا حکم ہے۔

۶۵۰: حقیقی چچا نے بولایت خود ہندہ کو نابالغہ جانتے ہوئے بدم موجودگی ہندہ و مادر ہندہ زید نابالغ سے نکاح کر دیا، پانچ سال بعد زید بالغ ہو کر رخصت کرانا چاہتا ہے، مادر ہندہ کا دعویٰ ہے کہ وقت نکاح ہندہ بالغہ تھی اس لئے رخصت نہیں کرتی، مادر ہندہ کے بیان کی تصدیق کر لی گئی۔ کیا حکم ہے۔

Fatawa Razawiya Volume 11

563 Zaid married a minor girl to a minor boy. The boy's father set a condition that if Hindah is an adult then I will marry my son to her, otherwise not. Zaid declared that she has become an adult. I have the right to annul the marriage for the parents. What is the ruling?

654 Zaid was severely ill. His brother took permission to marry Zaid's minor daughter to his own son. Zaid died three days later. The boy is not an equal because he is from a lowly woman. Did the marriage take place or not?

655 Zaid is the son of a pious, Sufi scholar, a prosperous and God-fearing scholar, and the grandson of an ascetic, secluded dervish. Zainab, Zaid's daughter, is very virtuous, simple and stays away from prohibited things. Zaid had not married her off as he was looking for a pious scholar. Amr, who is in no way an equal to Zaid and Zainab, came and deceived him by saying "I am a scholar, I am this wealthy, I am like this and like that." And he married Zainab. After learning the truth, Zaid and Zainab are extremely repulsed by him. Neither does Zainab want to go nor does Zaid want to send her. Amr is by no means an equal to Zainab in terms of wealth and religiosity. It is stated in Durr-e-Mukhtar: "In case of non-equality,

659 If a divorced woman, of her own accord and without the guardian's consent, marries a non-equal (non-kufu) without performing halala and has intercourse, it will not count as halala because this marriage itself is invalid.

659 Similarly, even if the guardian had given permission, but before the marriage, it was not known to the guardian that the groom was a non-equal (ghair kufu), then the marriage will not be valid.

660 Permission was sought from the guardian for marriage with a non-equal; he remained silent. The woman got married. The marriage is not valid, even if the guardian gives explicit permission afterwards.

the fatwa is given for its absolute impermissibility, and this is the chosen opinion for fatwas." In the questioned scenario, regardless of whether privacy (khalwat) occurred or not, can a ruling of marriage invalidity be given based on the aforementioned text? If not, do Zainab and her guardians have the right to annulment or not?

658 An immoral person (fasiq), even if not public about it, cannot be an equal (kufu) for a virtuous woman or a daughter of virtuous people.

658 A poor needy person who has no profession is not even an equal for a poor woman.

660 A boy and a girl were married while they were minors. Now the boy or his heirs have no information about the girl. The girl is knowledgeable in three types of learning, while the boy is completely ignorant. The girl now says we will divorce the first husband and perform a second marriage. What is the command?

ज़ैद ने एक नाबालिग लड़की का निकाह एक नाबालिग लड़के से कर दिया। लड़के के पिता ने यह शर्त रखी थी कि अगर हिंदा बालिग है तभी मैं अपने लड़के से उसका निकाह करूँगा
563 वरना नहीं। ज़ैद ने इकरार किया कि वह बालिग हो गई है। माता-पिता के निकाह के फ़स्ख (रद्द करने) का मुझे हक है। क्या हुक्म है?

ज़ैद गंभीर बीमारी की हालत में था। उसके भाई ने ज़ैद की नाबालिग बेटी के निकाह की अनुमति अपने बेटे के साथ ले
654 ली। ज़ैद तीन दिन बाद मर गया। लड़का कुफ़ू (बराबर का) नहीं है क्योंकि वह एक नीच स्त्री की संतान है। निकाह हुआ या नहीं?

ज़ैद एक मुत्तक़ी सूफ़ी विद्वान और खुशहाल धर्मनिष्ठ विद्वान का बेटा है, और एक तपस्वी एकांतवासी दरवेश का पोता है। ज़ैद की बेटी ज़ैनब बहुत नेक, सीधी-सादी और वर्जित चीज़ों से बहुत दूर रहने वाली है। ज़ैद ने उसकी शादी नहीं की थी क्योंकि वह किसी मुत्तक़ी विद्वान की तलाश में था। अम्र, जो
655 किसी भी तरह ज़ैद और ज़ैनब के बराबर (कुफ़ू) नहीं है, आया और उसने उन्हें यह कहकर धोखा दिया कि "मैं विद्वान हूँ, इतना धनवान हूँ, ऐसा हूँ, वैसा हूँ।" और उसने ज़ैनब से निकाह कर लिया। सच्चाई जानने के बाद ज़ैद और ज़ैनब उससे बहुत नफरत करते हैं। न तो ज़ैनब जाना चाहती है और

यदि कोई तलाकशुदा महिला अपनी मर्जी से और संरक्षक (वली) की अनुमति के बिना, हलाला
659 किए बिना किसी गैर-कुफ़ू (असमान) से निकाह और सहवास करती है, तो हलाला नहीं होगा क्योंकि यह निकाह होगा ही नहीं।

इसी तरह, भले ही संरक्षक ने अनुमति दे दी हो, लेकिन निकाह से
659 पहले संरक्षक को लड़के का गैर-कुफ़ू (असमान) होना मालूम न हो, तो निकाह नहीं होगा।

गैर-कुफ़ू (असमान) के साथ निकाह के लिए संरक्षक से अनुमति मांगी गई, वह खामोश रहा।
660 महिला ने निकाह कर लिया, निकाह नहीं हुआ। भले ही बाद में संरक्षक स्पष्ट रूप से अनुमति दे दे।

न ही ज़ैद उसे भेजना चाहता है। अम्र धन और धार्मिकता के मामले में ज़ैनब का बराबर बिल्कुल नहीं है। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में लिखा है: "असमानता (गैर-कुफ़ू) के मामले में निकाह की बिल्कुल अनुमति न होने का फ़तवा दिया जाता है और फ़तवों के लिए यही राय चुनी गई है।" पूछे गए मामले में एकांत (खलवत) हुआ हो या न हुआ हो, उक्त इबारत के अनुसार निकाह अमान्य होने का हुक्म दिया जा सकता है या नहीं? यदि नहीं, तो ज़ैनब और उसके संरक्षकों को निकाह रद्द करने का अधिकार है या नहीं?

एक फ़ासिक़ (अधर्मी), भले ही उसके पाप सार्वजनिक न हों,
658 एक नेक महिला या नेक लोगों की बेटी के लिए कुफ़ू (बराबर का) नहीं हो सकता।

एक गरीब ज़रूरतमंद व्यक्ति जिसके पास कोई पेशा या हुनर
658 नहीं है, वह एक गरीब महिला के लिए भी कुफ़ू (बराबर का) नहीं है।

एक लड़के और लड़की का निकाह नाबालिग की हालत में हुआ था। अब लड़का या उसके वारिस लड़की के बारे में किसी तरह की जानकारी नहीं
660 रखते। लड़की तीन प्रकार की विद्याओं से वाकिफ है और लड़का पूरी तरह अनपढ़ है। लड़की अब कहती है कि हम पहले पति को तलाक देकर दूसरा निकाह करेंगे। क्या धार्मिक निर्देश है?

مطلقہ بطور خود بلا رضائے ولی اگر کفو سے بغیر حلالہ نکاح و ہمبستری کرے حلالہ نہ ہوگا کہ یہ نکاح ہو گا ہی نہیں۔

زید نے نابالغہ کا عقد نابالغ سے کردیا نابالغ کے باپ نے یہ شرط کرلی تھی کہ اگر ہندہ بالغہ ہے تب میں اپنے لڑکے سے اس کا نکاح کروں گا ورنہ نہیں، زید نے اقرار کیا کہ وہ بالغہ ہوگئی۔ والدین کے نکاح کے فسخ کا مجھے حق ہے۔ کیا حکم ہے۔

۵۶۳ ۶۵۹

یونہی اگر ولی نے بھی اجازت دے دی ہو مگر ولی کو پیش از نکاح اس کا غیر کفو ہونا معلوم نہ ہو تو نکاح نہ ہوگا۔

زید شدت مرض میں تھا اس کے بھائی نے اس کی نابالغہ دختر کے عقد کی اپنے لڑکے کے ساتھ اجازت لے لی، زید تین دن بعد مر گیا، لڑکا کفو نہیں کہ ذلیل عورت سے ہے۔ نکاح ہوا یا نہیں۔

۶۵۴ ۶۵۹

غیر کفو کے ساتھ نکاح کی ولی سے اجازت طلب کی وہ ساکت رہا، عورت نے کر لیا، نکاح نہ ہوا۔ اگرچہ بعد کو ولی بصراحت اجازت دے دے۔

زید متقی صوفی عالم خوش حال متورع عالم کا بیٹا زاہد عزلت گزیں درویش کا پوتا ہے، زینب دختر زید بہت نیک اور سیدھی اور ممنوعات سے بہت محترز ہے زید نے اس کی شادی نہ کی تھی کسی عالم متقی کی تلاش میں تھا عمرو جو کسی طرح زید وزینب کا کفو نہیں آیا، اور اس نے اسے دھوکا دیا کہ میں عالم ہوں اتنا مالدار ہوں، ایسا ہوں، ویسا ہوں۔ اور زینب سے نکاح کر لیا، بعد علم حقیقت حال زید

۶۵۵ ۶۶۰

وزینب اس سے سخت متنفر ہیں۔ نہ زینب جانا چاہتی ہے نہ زید بھیجنا چاہتا ہے، عمرو مالا ودیانتا زینب کا ہرگز کفو نہیں، اور در مختار میں ہے: "یفتی فی غیر الکفوء بعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتاویٰ" صورت مستفسرہ میں خلوت ہوئی ہو یا نہ ہوئی ہو عبارت مذکورہ کے بموجب بطلان نکاح کا حکم ہوسکتا ہے یا نہیں۔ اگر نہیں تو زینب اور اس کے اولیاء کو حق فسخ حاصل ہے یا نہیں۔

لڑکے لڑکی کا بحالت نابالغی نکاح ہوا تھا اب لڑکا یا اس کے وارث لڑکی کی خبر کسی قسم کی نہیں رکھتے۔ لڑکی تین طرح کے علم سے واقف ہے اور لڑکا نرا جاہل، لڑکی اب کہتی ہے ہم اول شوہر کو طلاق دے کر نکاح ثانی کریں گے، کیا ارشاد ہے۔

۶۶۰ فاسق اگرچہ غیر معلن ہو صالحہ یا بنت صلحاء کا کفو نہیں ہوسکتا۔

۶۵۸

۶۵۸ فقیر محتاج جو ذی حرفہ نہ ہو وہ فقیرہ کا کفو بھی نہیں۔

صفحہ 739 میں سے 64

جلد یازدہم (Volume 11) Fatawa Razawiyya

661: Hinda was a minor. Her father Zaid was a thousand miles away. Her mother and uncle Bakr obtained the father's written permission (falsely) and, after informing the city Mufti, married her to Khalid themselves. When Zaid returned home, Khalid hosted a banquet for him. Zaid expressed his consent for the marriage during the banquet and maintained son-in-law and father-in-law relations with Khalid for months. Now Zaid denies it in a letter. What is the ruling?

663: While the lawsuit was ongoing, children were born and died within a few days. Is the right of objection for the guardians still valid or not? (Page 663 top right)

662: Zaid married off his niece during her childhood. Upon reaching puberty, she immediately refused the marriage and going to the husband's house. Does the marriage still hold or not? Can she marry elsewhere or not? Is the dower mandatory or not?

662: A man passed away, leaving a wife, two minor daughters, and a father. Who will be the guardian (wali) of the daughters? (Page 662 top right)

662: A widow had a daughter from her first husband. Her second husband, through extreme coercion, severity, and constant reprimands, obtained the widow's permission to marry her six-year-old daughter to his son. The girl's paternal uncle, paternal grandfather, and paternal cousin were not present at the time of the contract (nikah) nor were they informed. Upon reaching puberty, as soon as she was told, she immediately cried out that she did not accept going to that husband, that she would never go. She did not allow even a minute to pass. What is the ruling?

662: A person married a step-aunt. That girl, at the age of two, was given to another boy by her parents in the presence of witnesses. However, the second marriage which occurs at the time of departure (rukhsati) was still pending. What is the ruling? (Page 662 middle right)

663: It is mentioned in 'Durr-e-Mukhtar': "The guardian has the right to object in case of non-equivalence as long as she hasn't given birth, so that the child is not lost." In Tahtawi, Abu Hatim, Binaya, Hashiya Shilbi, and Hindiyya, based on Zahir al-Riwaya, the guardian's right of objection is stated to remain even after birth. And according to the report of Imam Hasan, which is the preferred view for fatwa, the marriage is void from the beginning. From this, it is known that childbirth does not waive the right of the guardians. Will the claim for separation be valid "even if she gave birth"?

663: Can a virgin girl, without the consent of her parents, appoint a stranger as her guardian (wali) for her marriage or not? (Page 663 bottom right)

664: Some scholars say that declaring the marriage of Alawi women (descendants of the Prophet) without the consent of the guardians to be void is the Shia creed. They rely on this passage from Binaya: "And in Al-Basit, the Shia are of the opinion that the marriage of Alawi women to non-Alawis is prohibited even with mutual consent. Surooji said these are two false opinions." Which two opinions are meant by these "two false opinions"?

664: A judge (qazi) who knows that the girl's parents are alive, can he appoint a stranger as a guardian and perform the girl's marriage without asking them? If not, what is the ruling for such a judge? (Page 664 right)

फतावा रज़विया, खंड ग्यारहवां

६६१: हिन्दा नाबालिग थी, उसके पिता ज़ैद एक हज़ार मील दूर थे। माँ और चाचा बक्र ने पिता की लिखित अनुमति (झूठ बोलकर) प्राप्त की और शहर के मुफ़्ती को बताकर स्वयं खालिद के साथ उसका निकाह कर दिया। जब ज़ैद घर आया, तो खालिद ने उसके लिए दावत आयोजित की। ज़ैद ने दावत की महफ़िल में निकाह पर अपनी सहमति व्यक्त की और महीनों तक खालिद के साथ दामाद और ससुर के संबंध बनाए रखे। अब ज़ैद एक पत्र के माध्यम से निकाह से इनकार कर रहा है। क्या आदेश है?

६६३: जब मुक़दमा चल ही रहा था, तब बच्चे पैदा हुए और कुछ ही दिनों में मर गए। क्या अब भी अभिभावकों के लिए आपत्ति का अधिकार मान्य है या नहीं? (पृष्ठ ६६३ ऊपर दाएँ)

६६२: ज़ैद ने अपनी भतीजी का निकाह उसके बचपन के दौरान कर दिया। बालिग होने पर, उसने तुरंत निकाह और पति के घर जाने से इनकार कर दिया। क्या निकाह अभी भी वैध है या नहीं? क्या वह दूसरी जगह शादी कर सकती है या नहीं? क्या महर देना अनिवार्य है या नहीं?

६६२: एक व्यक्ति का निधन हो गया, जो एक पत्नी, दो नाबालिग बेटियों और एक पिता को छोड़ गया। बेटियों का अभिभावक (वली) कौन होगा? (पृष्ठ ६६२ ऊपर दाएँ)

६६२: एक विधवा की अपने पहले पति से एक बेटी थी। उसके दूसरे पति ने अत्यधिक ज़ोर-ज़बरदस्ती, कठोरता और निरंतर फटकार के माध्यम से, विधवा से उसकी छह साल की बेटी का निकाह अपने बेटे के साथ करने की अनुमति प्राप्त कर ली। निकाह के समय लड़की के चाचा, दादा और चचेरे भाई उपस्थित नहीं थे और न ही उन्हें सूचित किया गया था। बालिग होने पर, जैसे ही उसे बताया गया, वह तुरंत चिल्ला उठी कि उसे उस पति के पास जाना स्वीकार नहीं है, कि वह कभी नहीं जाएगी। उसने एक मिनट भी बीतने नहीं दिया। क्या आदेश है?

६६२: एक व्यक्ति ने अपनी सौतेली खाला (मौसी) से निकाह किया। उस लड़की को दो साल की उम्र में उसके माता-पिता ने गवाहों की उपस्थिति में दूसरे लड़के को दे दिया था। हालाँकि, विदाई (रुक्सती) के समय होने वाला दूसरा निकाह अभी बाकी था। क्या आदेश है? (पृष्ठ ६६२ मध्य दाएँ)

६६३: 'दुर्रे मुख्तार' में उल्लेख है: "अभिभावक को गैर-बराबरी की स्थिति में आपत्ति करने का अधिकार है जब तक कि बच्चा पैदा न हो जाए, ताकि बच्चा बर्बाद न हो जाए।" तहतावी, अबू हातिम,

बिनाया, हाशिया शिल्बी और हिन्दिया में, ज़ाहिर अल-रिवाया के आधार पर, अभिभावक का आपत्ति का अधिकार जन्म के बाद भी रहना बताया गया है। और इमाम हसन की रिपोर्ट के अनुसार, जिस पर फतवा दिया जाता है, निकाह शुरू से ही शून्य है। इससे ज्ञात होता है कि बच्चे का जन्म अभिभावकों के अधिकार को समाप्त नहीं करता है। क्या अलगाव का दावा वैध होगा "भले ही उसने जन्म दिया हो"?

६६३: क्या एक कुंवारी लड़की, अपने माता-पिता की सहमति के बिना, किसी अजनबी को अपने निकाह के लिए अपना वली (अभिभावक) नियुक्त कर सकती है या नहीं? (पृष्ठ ६६३ नीचे दाएँ)

६६४: कुछ विद्वान कहते हैं कि अभिभावकों की सहमति के बिना अलवी महिलाओं (पैगंबर के वंशज) के विवाह को अमान्य घोषित करना शिया पंथ है। वे बिनाया के इस उद्धरण पर भरोसा करते हैं: "और अल-बसीत में, शियाओं की राय है कि अलवी महिलाओं का गैर-अलवियों के साथ विवाह आपसी सहमति के बावजूद निषिद्ध है। सरूजी ने कहा कि ये दो झूठी राय हैं।" इन "दो झूठी राय" से किन दो रायों का मतलब है?

६६४: एक न्यायाधीश (काज़ी) जो जानता है कि लड़की के माता-पिता जीवित हैं, क्या वह माता-पिता से पूछे बिना किसी अजनबी को अभिभावक नियुक्त कर सकता है और लड़की का निकाह कर सकता है? यदि नहीं, तो ऐसे काज़ी के लिए क्या आदेश है? (पृष्ठ ६६४ दाएँ)

पृष्ठ ७३९ का ६५

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

۶۶۱: ہندہ نابالغہ کا باپ زید ہزار میل پر تھا، ماں اور چچا بکر نے ہندہ کے باپ کی تحریری اجازت حاصل کر کے مفتیِ شہر کو بتا کر خود نکاح خالد سے کر دیا، جب زید مکان میں آیا تو خالد نے اس کی دعوت کی، زید نے جلسہ دعوت میں نکاح کی رضامندی ظاہر کی، مہینوں رسوم دامادی و خسروی خالد کے ساتھ رکھے، اب زید خط سے انکار کرتا ہے، کیا حکم ہے۔

۶۶۳: مقدمہ ہوتے ہوتے اولاد پیدا ہو گئی اور چند روز میں مرگئی تو اب بھی حق اعتراض للاولیاء ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۶۶۳ اوپر دائیں)

۶۶۲: زید نے بھتیجی کا نکاح نابالغی میں کر دیا، جس وقت وہ بالغ ہوئی اسی وقت نکاح اور شوہر کے گھر جانے سے انکار کیا، نکاح باقی رہا یا نہیں؟ دوسری جگہ ہو سکتا ہے یا نہیں۔ مہر لازم ہوا یا نہیں۔

۶۶۲: ایک شخص فوت ہوا، بی بی اور دو نابالغ لڑکیاں اور باپ کو چھوڑا، دختران کا ولی کون ہوگا۔ (صفحہ ۶۶۲ اوپر دائیں)

۶۶۲: بیوہ کے ایک دختر شوہرِ اول سے تھی شوہرِ ثانی نے بصد سختی و تشدد ہزار زجر و توبیخ بیوہ سے اپنے لڑکے کے ساتھ اس کی چھ سالہ دختر کے عقد کا اذن لے کر جزیہ نکاح کر دیا، لڑکی کا چچا زاد چچا اور پچازاد بھائی وقتِ عقد موجود نہ تھے انھیں اطلاع نہ ہوئی لڑکی بعد بلوغ جب اظہار ہوا فوراً پکار اٹھی کہ مجھے اس شوہر کے یہاں جانا منظور نہیں ہرگز نہیں جاؤں گی، منٹ بھر بھی پورا نہ ہونے دیا کیا حکم ہے۔

۶۶۲: سوتیلی خالہ سے ایک شخص نے نکاح کیا وہ لڑکی کی دو سال سے اس کے والدین نے روبرو گواہوں کے دوسرے لڑکے کو دی ہے مگر رخصت کے وقت جو نکاح ثانی ہوتا ہے وہ باقی تھا کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۶۶۲ وسط دائیں)

۶۶۳: در مختار میں ہے "ولولی الاعتراض في غير الكفو مالم تلد لئلا يضيع الولد" طحطاوی، ابو حاتم وبنایہ وحاشیہ شلبی وہندیہ میں بعد ولایت بھی بر بنائے ظاہر الروایہ ولی کو اعتراض کا حق بتایا اور امام حسن کی روایت مفتی بہا پر ابتداء ہی سے بطلان نکاح کا حکم ہے، اس سے معلوم ہوا کہ ولادت حق اولیاء کی مسقط نہیں۔ کیا ثبوت تفریق کا دعوی صحیح ہوگا "وان ولدت"۔

۶۶۳: کنواری لڑکی بے رضائے والدین غیر شخص کو اپنے نکاح کا ولی بنا سکتی ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۶۶۳ نیچے دائیں)

۶۶۴: بعض مولوی کہتے ہیں علویات کا نکاح مع تراضی اولیاء بے تراضی باطل کہنا شیعہ کا مذہب ہے بنایہ کی اس عبارت سے مستند ہیں "وفي البسيط ذهب الشيعة الى ان نكاح العلويات ممتنع على غيرهم مع التراضي قال السروجي وهما قولان باطلان" ان "قولان باطلان" سے کون سے دو قول مراد ہیں۔

۶۶۴: قاضی جسے علم ہو کہ اس لڑکی کے والدین زندہ ہیں وہ والدین کے بے پوچھے کسی غیر شخص کو ولی مقرر کر کے لڑکی کا نکاح کر سکتا ہے یا نہیں۔ اگر نہیں تو ایسے قاضی کے لئے کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۶۶۴ دائیں)

Fatawa Razawiyya Volume 11

667: If a girl remains silent due to shyness and modesty, and the female relatives around her say that the girl agrees. In such a case, will the marriage be valid or not, and will her silent consent be considered as a substitute for proposal and acceptance (Ijab-o-Qubool)?

668: A girl is an adult orphan. Her mother arranged her marriage while her paternal uncles were not present at the marriage. What is the ruling?

669: "An orphan girl reached fifteen years of age. Her mother married her off with her consent, but her guardians were not present at the marriage gathering, nor were they consulted on this matter. Is the marriage valid?"

670: The mother and brothers of an adult girl told a matchmaker (Mirasi) to arrange a marriage within a certain tribe and not elsewhere. The matchmaker took a bribe and arranged it elsewhere. Upon finding out, they sent a refusal, and the brother himself went to forbid it. However, the other party did not listen. The matchmaker set a date and brought the wedding party, which included notable people. The girl's mother and brothers continued to refuse. The notables gathered more people from the surroundings and pressured them. They framed the brothers in a fraud case. In desperation, they said to wait. When they went to get permission from the adult girl, she refused. The girl was forcibly silenced and taken to the wedding chamber. Even then, the girl said, "This is not my marriage." She still persists in her refusal. What is the ruling?

671: An adult Shia girl married a Sunni without her parents' permission. Her parents want to annul the marriage, saying that valid privacy (Khalwat-e-Sahiha) has not occurred, so they have the right to annulment. Also, the marriage was not with an equal (Kufu). The marriage official (Vakil) admits to the marriage but says he did not hear the girl's voice for proposal and acceptance. Witnesses also state they did not hear her voice. Before the marriage, the girl declared before witnesses, "I have adopted the Sunni Hanafi sect." What is the ruling?

672: The father of an adult Sunni girl wants to marry her to a Rafidhi (Shia). When forbidden, he says it is permissible. In this situation, can the girl go to her maternal grandfather so that he may marry her to a Sunni?

673: In the absence of the real paternal uncle, the mother married off a minor girl with the permission of a cousin (paternal uncle's son). The uncle is angry. Only the contract has taken place. If it is invalid, can she be married to someone else?

674: Adult Hindah daughter of Zaid married an equal (Kufu) without Zaid's permission. Zaid, being unhappy, brought Hindah back from Bakr's house through a trick. A year later, he married Hindah to Amr. Is the second marriage valid or not? What is the ruling regarding children born to Amr? What is the ruling for Zaid? Can Zaid be an Imam (prayer leader)?

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

667: यदि कोई लड़की शर्म और हया के कारण चुप रहे, और उसके आसपास मौजूद महिला रिश्तेदार कहें कि लड़की को यह मंजूर है। तो क्या निकाह जायज़ होगा या नहीं, और क्या उसकी चुप्पी को ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के स्थान पर माना जाएगा या नहीं?

668: एक बालिग यतीम लड़की है। उसकी माँ ने उसका निकाह कर दिया जबकि उसके चाचा ताया निकाह के समय उपस्थित नहीं थे। इसका क्या हुक्म है?

669: "एक यतीम लड़की पंद्रह वर्ष की आयु की हो गई। उसकी माँ ने उसकी सहमति से उसका निकाह कर दिया, लेकिन उसके वली (संरक्षक) निकाह की मजलिस में मौजूद नहीं थे और न ही इस बारे में उनसे सलाह ली गई। क्या निकाह जायज़ है?"

670: एक बालिग लड़की की माँ और भाइयों ने मीरासी (बिचौलिए) से कहा कि किसी निश्चित कबीले में रिश्ता कराओ, कहीं और न करना। मीरासी ने रिश्वत लेकर दूसरी जगह रिश्ता तय कर दिया। पता चलने पर उन्होंने मना कर दिया और भाई ने खुद जाकर भी मना किया। मगर वे लोग नहीं माने। मीरासी ने अपनी ओर से दिन तय करके बारात बुला ली, जिसमें रईस लोग भी थे। लड़की की माँ और भाई लगातार मना करते रहे। रईसों ने आसपास के और रईसों को इकट्ठा करके दबाव डाला। भाइयों को एक जालसाजी के मुकदमे में फंसा दिया। वे मजबूर होकर बोले ठहरो। जब बालिग लड़की से अनुमति लेने गए तो उसने मना कर दिया। लड़की को ज़बरदस्ती खामोश कर दिया गया और उसे बारात के साथ भेज दिया गया। उस वक्त भी लड़की ने कहा कि मेरा निकाह ही नहीं हुआ है। वह अब तक इनकार पर अड़ी है। क्या हुक्म है?

671: एक बालिग शिया लड़की ने अपने माता-पिता की अनुमति के बिना एक सुन्नी से निकाह कर लिया। उसके माता-पिता निकाह रद्द करना चाहते हैं, उनका कहना है कि खलवत-ए-सहीहा (पूर्ण एकांत) नहीं हुआ है, इसलिए हमें रद्द करने का अधिकार है। साथ ही, निकाह कुफ़ू (बराबर के स्तर) में नहीं हुआ है। निकाह का वकील निकाह को स्वीकार करता है लेकिन कहता है कि उसने लड़की के ईजाब-ओ-क़ुबूल की आवाज़ नहीं सुनी। गवाह भी आवाज़ न सुनने की गवाही देते हैं। लड़की ने निकाह से पहले गवाहों के सामने स्वीकार किया था कि "मैं सुन्नी हनफी मज़हब अपना चुकी हूँ।" क्या हुक्म है?

672: एक बालिग सुन्नी लड़की का पिता उसका निकाह एक राफ़ज़ी (शिया) से करना चाहता है। मना करने पर वह कहता है कि यह जायज़ है। क्या इस स्थिति में लड़की अपने नाना के पास जा सकती है ताकि वह उसका निकाह किसी सुन्नी से कर दें?

673: सगे चाचा की अनुपस्थिति में माँ ने एक नाबालिग लड़की का निकाह चचेरे भाई (चाचा के बेटे) की अनुमति से कर दिया। चाचा नाराज़ हैं। अभी सिर्फ निकाह हुआ है। यदि यह नाजायज़ है, तो क्या उसका निकाह किसी दूसरे के साथ हो सकता है या नहीं?

674: बालिग हिन्दा बिन्ते ज़ैद ने ज़ैद की अनुमति के बिना एक कुफ़ू से निकाह कर लिया। ज़ैद ने नाखुश होकर चालाकी से हिन्दा को बक्र के घर से वापस ले आया। एक साल बाद उसने हिन्दा का निकाह अम्र से कर दिया। क्या दूसरा निकाह सही हुआ या नहीं? अम्र से जो संतान पैदा हुई है उसका क्या हुक्म है? ज़ैद के लिए क्या हुक्म है? क्या ज़ैद इमाम बन सकता है या नहीं?

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

٦٦٧: لڑکی بوجہ شرم و حجاب ساکت رہے تو عزیز و قریب عورتیں جو اس کے گرد ہوں وہ کہہ دیں ہاں لڑکی کو منظور ہے۔ تو نکاح جائز ہوگا یا نہیں اور اس کا اقرار سکوتی قائم مقام ایجاب و قبول ہوگا یا نہیں۔

٦٦٨: لڑکی بالغہ یتیم ہے ماں نے اس کا نکاح کیا چچا تائے اس کے نکاح میں موجود نہ تھے، کیا حکم ہے۔

٦٦٩: "یتیمة بلغت من عمرها خمسة عشر سنین زوجتها امها برضاها لکن لم یحضروا مجلس النکاح اولیاؤها وما استشیروا في هذا الباب هل جاز النکاح"۔

٦٧٠: بالغہ کے ماں بھائیوں نے میراثی سے کہا فلاں قبیلہ میں رشتہ کراؤ کسی دوسری جگہ نہ کرنا، میراثی رشوت لے کر دوسری جگہ کر آیا۔ معلوم ہونے پر انکار کر بھیجا اور بھائی خود بھی جا کر منع کر آئے، مگر وہ لوگ نہ مانے، میراثی نے اپنی طرف سے دن مقرر کر کے برات منگائی، اس میں رؤسا بھی تھے، لڑکی کی ماں اور بھائی برابر انکار کرتے رہے۔ رؤسا نے گرد و نواح کے اور رؤسا جمع کر کے زور ڈالا، بھائیوں کو ایک مقدمہ میں جعلسازی میں پھانس دیا وہ عاجز آ کر بولے ٹھہرا دو، جب بالغہ سے اذن لینے گئے اس نے انکار کردیا، لڑکی کو جبراً خاموش کر دیا اور بھٹی میں بٹھا لے گئے، اس وقت بھی لڑکی نے کہا میرا نکاح ہی نہیں ہے۔ اب تک انکار پر مصر ہے، کیا حکم ہے۔

٦٧١: بالغہ شیعہ لڑکی نے بے اجازت والدین سنی سے نکاح کر دیا، اس کے والدین نکاح فسخ کرانا چاہتے ہیں کہتے ہیں کہ خلوت صحیحہ نہیں ہوئی اس لئے ہمیں اختیار فسخ حاصل ہے۔ نیز

نکاح کفو سے نہیں ہوا اس لئے بھی۔ وکیل نکاح نکاح کا تو مقر ہے مگر کہتا ہے کہ لڑکی کے ایجاب و قبول کی آواز نہیں سنی گواہ آواز سننا بھی بیان کرتے ہیں لڑکی نے گواہان کے سامنے نکاح سے پہلے اقرار کیا میں سنت جماعت حنفی مذہب اختیار کر چکی ہوں، کیا حکم ہے۔

٦٧٢: سنیہ بالغہ لڑکی کا نکاح اس کا باپ رافضی سے کرنا چاہتا ہے، منع کرنے پر کہتا ہے جائز ہے، کیا لڑکی اس صورت میں نانا کو مل سکتی ہے کہ وہ سنی سے نکاح کر دے۔

٦٧٣: ماں نے حقیقی چچا کی عدم موجودگی میں نابالغہ کا چچیرے چچا کی اجازت سے نکاح کر دیا، چچا ناراض ہے صرف عقد ہوا ہے اگر ناجائز ہو تو دوسرے کے ساتھ ہو سکتا ہے یا نہیں-

٦٧٤: بالغہ ہندہ بنت زید نے بے اجازت زید کفو سے نکاح کر لیا، زید نے ناخوش ہو کر بکر کے مکان سے ہندہ کو حیلہ کر کے لے آیا ایک سال بعد عمرو سے ہندہ کا نکاح کر دیا، دوسرا نکاح صحیح ہوا یا نہیں۔ عمرو سے جو اولاد ہو اس کا کیا حکم ہے، زید کے لئے کیا حکم ہے، زید امام ہو سکتا ہے یا نہیں۔

675: An adult woman was happy with a well-off, educated young man for herself. Zaid, the father of the adult woman, was not happy with him. The father forcibly performed her marriage with someone the woman did not agree with, and several men forcibly caught her and brought her to the groom's place. Is this marriage valid or not? What is the ruling regarding praying behind Zaid?

678: A father promised his twelve-year-old daughter's marriage to a minor boy. In the presence of the community, he took sweets and clothes for the girl from the boy and declared that he would perform the marriage on a certain date. Then he fell ill and went home, leaving his daughter. The boy continued to bear her expenses. Six months passed, letters were sent but no reply came; it is unknown if he is alive or dead. The mother was not initially willing, but when the boy said, "If you won't perform the marriage, return the items I gave for the engagement," she then agreed. The girl knows her own good and bad, and she is also willing. What is the ruling?

676: Parents performed an adult girl's marriage with a person. Her uncle went to get her consent; the girl remained silent. Upon repeated insistence, she still did not respond. The uncle slapped her, and the girl began to cry. The uncle came out and had the marriage performed. What is the ruling? The girl is not willing upon reaching her husband's home.

679: After her father's death, Rafiq Begum's uncle married her to his own son. As soon as the minor girl became an adult, she declared that she did not accept this marriage and annulled it. Notice was sent to the minor husband and his father; the notice came back. Rafiq Begum filed a lawsuit in civil court. Before a decision could be reached, Rafiq Begum passed away. In such a situation, will the marriage be considered valid, and will the husband receive her inheritance or not?

677: An adult woman married herself to an equal (Kufu) without the guardian's (Wali) permission. Is it valid or not? If the guardian annuls it and forcibly marries her to a wealthy person without a divorce or Khula, who will bear the sin and how is this act categorized?

680: During his father's lifetime, a person, without the father's consent, performed the marriage of his minor sister in exchange for another marriage (Badl-e-Bazu). The father, upon learning of it, rejected it. After some time, he agreed and accepted the

exchange marriage for his own son, but then rejected it again. Was the marriage annulled by the first rejection or not?

677: Can customary practice (Urf) prevail over the laws of the Sharia in any circumstance?

681: A minor girl had no relatives from her father's or grandfather's side; she only had an old mother. People from the community began marrying the old woman's daughter off without her consent. At the time of the marriage, the old woman was crying in another room. Is this marriage valid?

677: Will the false oath of the guardian (Wali) be credible against the woman (Hindah), or will the statement of the woman be accepted?

६७५: एक बालिग लड़की ऐसे व्यक्ति से शादी के लिए राज़ी थी जो ख़ुशहाल और पढ़ा-लिखा जवान था। जैद, जो लड़की का बाप है, इस पर राज़ी नहीं था। बाप ने ज़बरदस्ती उसका निकाह ऐसे व्यक्ति से करा दिया जिससे वह राज़ी नहीं थी, और ज़बरदस्ती कुछ आदमियों ने उसे पकड़ कर शौहर के यहाँ पहुँचा दिया। क्या यह निकाह सही हुआ? जैद के पीछे नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है?

६७८: एक बाप ने अपनी बारह साल की लड़की के निकाह का वादा एक नाबालिग लड़के से किया। बिरादरी के लोगों के सामने लड़के से मिठाई और कपड़े लड़की के लिए लिए और इकरार किया कि फ़लाँ तारीख़ को निकाह कर दूँगा। फिर वह बीमार होकर घर चला गया और अपनी बेटी को छोड़ गया, जिसका ख़र्च लड़का उठाता रहा। छह महीने बीत गए, ख़त भेजे गए पर कोई जवाब नहीं आया, पता नहीं कि वह ज़िंदा है या मर गया। माँ पहले राज़ी नहीं थी, लेकिन जब लड़के ने कहा कि अगर तुम निकाह नहीं करतीं तो जो सामान मैंने सगाई में दिया है वह वापस कर दो, इस पर वह राज़ी हो गई। लड़की अपना भला-बुरा जानती है और वह भी राज़ी है। क्या हुक्म है?

६७६: माँ-बाप ने एक बालिग लड़की का निकाह एक व्यक्ति से कर दिया। मामा इजाज़त लेने गया तो लड़की ख़ामोश रही। दोबारा इसरार करने पर भी कोई जवाब नहीं दिया। मामा ने उसे थप्पड़ मारा और लड़की रोने लगी। मामा ने बाहर आकर निकाह पढ़वा दिया। क्या हुक्म है? लड़की ससुराल पहुँच कर भी राज़ी नहीं है।

६७९: रफ़ीक़ बेगम के वालिद की वफ़ात के बाद उसके चचा ने उसका निकाह अपने बेटे से कर दिया। बालिग होते ही लड़की ने एलान कर दिया कि उसे यह निकाह मंज़ूर नहीं है और इसे फ़स्ख़ (रद्द) कर दिया। नाबालिग शौहर और उसके बाप को नोटिस के ज़रिये सूचना दी गई, नोटिस वापस आ गया। रफ़ीक़ बेगम ने दीवानी अदालत में मुक़दमा दायर कर दिया। अभी फ़ैसला नहीं हुआ था कि रफ़ीक़ बेगम का इंतक़ाल हो गया। ऐसी सूरत में क्या वह निकाह बरक़रार माना जाएगा और शौहर को विरासत मिलेगी या नहीं?

६७७: एक बालिग लड़की ने वली (अभिभावक) की इजाज़त के बिना अपना निकाह कुफ़ू (समान स्तर के व्यक्ति) में कर लिया, क्या यह जायज़ है या नहीं? अगर वली उसे फ़स्ख़ करके बिना तलाक़ या ख़ुला के ज़बरदस्ती किसी दौलतमंद से उसका निकाह कर दे, तो गुनाहगार कौन होगा और यह काम कैसा है?

६८०: एक व्यक्ति ने अपने बाप की ज़िंदगी में, उसकी मर्ज़ी के बिना, अपनी नाबालिग बहन का निकाह बदले के निकाह (बदले-बाज़ू) के तौर पर कर दिया। बाप ने ख़बर मिलने पर इसे नकार दिया। कुछ समय बाद वह राज़ी हो गया और बदले की लड़की का निकाह अपने बेटे से कर लिया, लेकिन फिर से इनकार कर दिया। क्या पहले इनकार से निकाह बातिल (रद्द) हो गया या नहीं?

६७७: क्या उर्फ़(आम रिवाज) किसी भी हाल में शरीअत के क़ानून पर हावी हो सकता है?

६८१: एक नाबालिग लड़की जिसके बाप या दादा के खानदान में कोई नहीं था, सिर्फ़ उसकी एक बूढ़ी माँ थी। बिरादरी वालों ने बूढ़ी माँ की मर्ज़ी के बिना लड़की का निकाह करना शुरू कर दिया। निकाह के वक़्त माँ दूसरे कमरे में रो रही थी। क्या यह निकाह सही हुआ?

६७७: वली (अभिभावक) की झूठी क़सम लड़की के मुक़ाबले में मानी जाएगी या लड़की की बात?

पेज ६७ ऑफ़ ७३९

۶۷۵: بالغہ ایسے شخص سے جواس کی ذات کا خوش حال پڑھا لکھا جوان تھا پر راضی تھی زید بالغہ کا باپ اس سے راضی نہ تھا بالغہ جس سے راضی نہ تھی زبردستی اس کا نکاح کرا دیا اور زبردستی چند آدمی پکڑ کر اس کے یہاں پہنچا آئے یہ نکاح درست ہوا نہیں، زید کے پیچھے نماز کا حکم ہے۔

۶۷۸: باپ نے اپنی بارہ برس کی لڑکی کے عقد کا ایک نابالغ سے وعدہ کیا اور برادری کے لوگوں کے سامنے مٹھائی اور کپڑا لڑکی کے واسطے لڑکے سے لے لیا اور اقرار کیا کہ فلاں تاریخ نکاح کر دوں گا پھر بیمار ہو کر مکان چلا گیا، بیٹی بی بی کو چھوڑ گیا جس کا بار لڑکا اٹھاتا رہا، چھ مہینے ہو گئے خط بھیجے جواب نہ آیا، جانے زندہ ہے یا مر گیا، ماں پہلے راضی نہ تھی مگر جب لڑکے نے کہا تم نکاح نہیں کرتیں تو میں نے جواب تک صرف کیا وہ دے دو، اس پر راضی ہوئی، لڑکی اپنا بھلا برا جانتی ہے وہ بھی راضی ہے، کیا حکم ہے۔

۶۷۶: بالغہ کا نکاح والدین نے ایک شخص کے ساتھ کیا ماموں اذن لینے گیا لڑکی خاموش رہی، دوبارہ اصرار کرنے پر جواب نہ دیا، ماموں نے طمانچہ مارا لڑکی رونے لگی ماموں نے باہر آکر نکاح پڑھوا دیا کیا حکم ہے لڑکی جانے پر رضامند نہیں ہے۔

۶۷۹: رفیق بیگم کا نکاح بعد موت والد چچانے اپنے پسر سے کر دیا، نابالغہ نے بالغ ہوتے ہی اعلان کر دیا کہ اس نکاح کو نامنظور کرکے فسخ کر دیا، ذریعہ نوٹس شوہر نابالغ اور اس کے باپ کو اطلاع کردی نوٹس واپس آیا رفیق بیگم نے دیوانی میں نالش دائر کردی، ہنوز فیصلہ نہیں ہوا تھا

کہ رفیق بیگم فوت ہوگئی ایسی صورت میں وہ نکاح برقرار تصور ہوگا اور شوہر کو ترکہ پہنچے گا یا نہیں۔

۶۷۷: بالغہ نے بے اجازت ولی اپنا عقد کفو سے کر لیا جائز ہوا یا نہیں ولی فسخ کرکے بے طلاق یا خلع کسی مالدار سے جبراً کردے تو وبال کس پر ہوگا اور یہ فعل کیسا ہوگا۔

۶۸۰: شخصے بمیانِ حیاتِ پدر خود بلارضا مندی روے نکاح خواہر صغیرہ بمعاوضہ بازو بجائے کردہ پدرش بعد خبر یافتن انکار کرد، وبعد چند مدت راضی شد باز و معاوضہ را در نکاح پسر خود گرفت باز انکار کرد، آیا از انکارِ اول نکاح باطل شد یا نہ۔

۶۷۷: کیا رواج عرف عام قانون شرع شریف پر کسی حالت میں مرجح ہوسکتا ہے۔

۶۸۱: نابالغہ جس کے باپ دادا کی شاخ میں کوئی نہ تھا صرف اس کی ایک بڑھیا ماں ہے، برادری والے بلارضا مندی بڑھیا کی لڑکی کی شادی کرنے لگے، نکاح کے وقت بڑھیا دوسری کوٹھری میں روتی رہی، تو کیا یہ نکاح صحیح ہوا۔

۶۷۷: ولی کا جھوٹا حلف ہندہ کے مقابلہ میں معتبر ہوگا یا ہندہ کا قول۔

Fatawa Ridawiyya - Volume Eleven

Ref	Question / Topic
683	If Zaid, for some reason, cannot attend to perform his marriage and appoints his spiritual brother (Pir Bhai) as his guardian (Wali), can that guardian perform the marriage or not?
683	At what age is a girl's marriage valid and at what age is it invalid? At what age, according to Shariah, is the age of puberty? At what age is marriage valid when there is no absolute legal representative (Wakil-e-Mutlaq)?
683	A man who has been separated from his wife for fourteen years. The woman was three months pregnant (at the time of separation). A girl was born from this pregnancy. The girl stayed with her mother for 14 years. The father provided no support. The girl has reached puberty. She married of her own will and with her mother's permission. The father was not present. The marriage was within the same community. What is the ruling on this marriage?
684	
685	What are the conditions and signs of puberty?
686	Zaid, during his illness, entrusted his daughter to her maternal uncle. The girl was fifteen years old. The father died. The paternal grandfather is present. After some time, the girl's grandfather married her off to a suitable match (Kufu). When the girl heard about it, she said, "I do not accept it." Is the marriage valid or not?
	Chapter on Suitability (Bab al-Kafa'ah)
688	

Ref	Question / Topic
	A maternal uncle married off a minor girl himself. When her consanguine (step) brothers found out, they called their step-sister back from her husband's house. Now they want to marry her to someone respectable. What is the ruling?
685	Hindah is being raised by her maternal grandfather. Her father is completely uninvolved. In such a situation, if the grandfather performs the marriage contract, will it be valid or not? The girl is thirteen years old.

Ref	Question / Topic
	Hindah is an adult from a noble family. Amr, her paternal uncle, is her legal guardian (Wali-e-Shar'i). In Amr's absence, Hindah's mother, with Hindah's permission but without informing Amr, married her to Zaid, who is of a lower status and not a suitable match (Ghair-Kufu). When Amr found out, thinking the marriage was already done, he accepted it for the sake of reconciliation and sent Hindah off. With Hindah's consent, consummation also occurred. Now, having returned to her parents' home, she does not want to go back to her husband or submit to him until the prompt dowry (Mahr-e-Mu'ajjal) is paid. What is the ruling? Is Hindah a recalcitrant wife (Nashizah) or not? Does she have the right to refuse to go to Zaid or to restrain herself from him?
690	Zaid came from another city and presented himself as a Sunni and a Sayyid. Amr Sheikh Ansari married his daughter Laila, who was twelve or thirteen years old, to him, being deceived by Zaid's statement. The girl and her father are all Ahl-e-Sunnat. Before the send-off (Rukhsat) could happen, Zaid left and it is unknown if he is alive or dead. Now it has been discovered that he was a Rafidhi (Shia) and besides that, a drunkard and a gambler. Laila and her father are very upset. Laila, who is now fourteen or fifteen years old, now wants to marry somewhere else. What is the ruling?

सं.	प्रश्न / विषय
683	ज़ैद किसी वजह से अपना निकाह पढ़ाने न जा सके और अपने पीर भाई को अपना वली बना ले, तो वली निकाह पढ़ा सकता है या नहीं।
683	कितनी उम्र में लड़की का निकाह जायज़ और कितनी उम्र में नाजायज़, शरियत के हुक्म के अनुसार बालिग होने की उम्र क्या है, कितनी उम्र में निकाह जायज़ होता है जबकि उसका कोई हक़ीक़ी वकील-ए-मुतलक़ न हो।
683	जो अपनी बीवी से चौदह साल से जुदा हो, औरत तीन महीने की हामिला (गर्भवती) हो, इसी हमल से लड़की पैदा हो, लड़की १४ साल तक माँ के पास रही हो, बाप ने किसी किस्म की इमदाद न दी हो, लड़की बालिग हो गई हो, लड़की ने अपनी खुशी से और वालिदा की इजाज़त से निकाह कर लिया हो, बाप मौजूद न हो, निकाह हम-कौम (अपनी बिरादरी) में किया हो, इस निकाह का क्या हुक्म होगा।
685	बुलूग़ (वयस्कता) की क्या-क्या शरायत (शर्तें) और निशानियाँ हैं।
686	ज़ैद ने अपनी बीमारी में लड़की को उसके मामू के सुपुर्द किया। लड़की पन्द्रह बरस की थी, बाप मर गया, दादा मौजूद है, लड़की के दादा ने कुछ दिन बाद कहीं कुफू(बराबर का मेल) से निकाह कर दिया, जब लड़की ने सुना तो कहा हमें मंजूर नहीं, निकाह जायज़ रहा या नहीं।
	बाबुल कफ़ाअत (बराबरी का अध्याय)

सं.	प्रश्न / विषय
684	मामू ने नाबालिग का खुद निकाह कर दिया। उसके अल्लाती (सौतेले) भाइयों को जब खबर हुई तो उन्होंने सौतेली बहन को शौहर के मकान से बुला लिया। अब यह चाहते हैं कि किसी मोहज्ज़ज़ (सम्मानित) से उसका निकाह करें, क्या हुक्म है।
685	हिन्दा नाना के ज़ेर-ए-परवरिश (देखरेख में) है, बाप महज़ बे-तअल्लुक़ है, ऐसी हालत में नाना अक़्द (निकाह) कर दे तो जायज़ होगा या नहीं, लड़की तेरह साल की है।
688	हिन्दा बालिगा शरीफ़ ज़ादी का अमर चचा वली-ए-शरई है। मादर-ए-हिन्दा ने अमर की ग़ैबत में बा-इज़न-ए-हिन्दा (हिन्दा की अनुमति से) बे-इत्तला-ए-अमर उसका निकाह ज़ैद कम-क़ौम ग़ैर-कुफ़ू से कर दिया। जब अमर को पता चला, इस ख्याल से कि निकाह तो हो ही गया, मलिहतन (सुलह के लिए) मंजूर कर लिया और हिन्दा की रुख़सती कर दी। रज़ामंदी-ए-हिन्दा से वती (सहवास) भी हुई। अब मायके आकर ता-अदाय-ए-महर-ए-मुअज्जल (तुरंत देय मेहर की अदायगी तक) शौहर के घर जाना या उसे अपने नफ़्स पर कुदरत देना (सहवास की अनुमति देना) नहीं चाहती। क्या हुक्म है, हिन्दा नाशिज़ा (अवज्ञाकारी पत्नी) है या नहीं, उसे ज़ैद के यहाँ न जाने, अपने नफ़्स को रोकने का अख्तियार है या नहीं।
690	ज़ैद ने ग़ैर शहर से आकर अपने आप को सुन्नी और सैय्यद ज़ाहिर किया। अमर शेख अंसारी ने अपनी दुख़्तर (बेटी) लैला जो बारह तेरह साल की है, ज़ैद के बयान से धोखा खाकर उसे ब्याह दी। लड़की और उसका बाप सब अहले सुन्नत हैं। रुख़सती न होने पाई थी कि ज़ैद चला गया और खबर नहीं कि ज़िंदा है या मर गया। अब दरयाफ़्त हुआ (पता चला) तो वो राफ़्ज़ी (शिया) निकला और शराबख़ोरी, जुआ-बाज़ी के अलावा (और भी ऐब थे), लैला और उसका बाप सख़्त नाराज़ हैं। लैला जिसकी उम्र चौदह पन्द्रह साल है, अब दूसरी जगह अपना अक़्द करना चाहती है, क्या हुक्म है।

| ۶۸۳ | زید کسی وجہ سے اپنا نکاح پڑھانے نہ جائے اپنے پیر بھائی کو اپنا ولی بنالے تو ولی نکاح پڑھا سکتا ہے یا نہیں۔ | ۶۸۵ | بلوغ کی کیا کیا شرائط اور نشانیاں ہیں۔ | | ۶۸۳ | کتنی عمر میں لڑکی کا نکاح جائز اور کتنی عمر میں ناجائز، سن بلوغ بحکم شرعی کتنی عمر میں ہوتا ہے، کتنی عمر میں نکاح جائز ہوتا ہے جبکہ اس کا کوئی حقیقی وکیل مطلق نہ ہو۔ | ۶۸۶ | زید نے اپنی بیماری میں لڑکی کو اس کے ماموں کے سپرد کیا لڑکی پندرہ برس کی تھی، باپ مر گیا، دادا موجود ہے، لڑکی کے دادا نے کچھ دن بعد کہیں کفو سے نکاح کر دیا، جب لڑکی نے سنا تو کہا ہمیں منظور نہیں، نکاح جائز رہا یا نہیں۔ | | ۶۸۳ | جو اپنی بیوی سے چودہ سال سے جدا ہو عورت تین ماہ کی حاملہ ہو اسی حمل سے لڑکی پیدا ہو لڑکی ۱۴ سال تک ماں کے پاس رہی ہو باپ نے کسی قسم کی امداد نہ دی ہو لڑکی بالغ ہو گئی ہو لڑکی نے اپنی خوشی کی اور والدہ کی اجازت سے نکاح کر لیا ہو باپ موجود نہ ہو نکاح ہم قوم سے کیا ہو، اس نکاح کا کیا حکم ہوگا۔ | | **باب الکفاءۃ** | | ۶۸۴ | ماموں نے نا بالغہ کا خود نکاح کر دیا اس کے علاقی بھائیوں کو جب خبر ہوئی تو انہوں نے سوتیلی بہن کو شوہر کے مکان سے بلالیا اب یہ چاہتے ہیں کہ کسی معزز سے اس کا نکاح کریں، کیا حکم ہے۔ | ۶۸۸ | ہندہ بالغہ شریف زادی کا عمرو چچا ولی شرعی ہے مادر ہندہ نے غیبت عمرو میں باذنِ ہندہ بے اطلاع عمرو اس کا نکاح زید کم قوم غیر کفو سے کر دیا جب عمرو مطلع ہوا اس خیال سے کہ نکاح تو ہو ہی گیا مصلحتاً منظور کر لیا اور ہندہ کی رخصت کردی برضائے ہندہ وطی بھی ہوئی اب میکے آکر تادائے مہر معجل شوہر کے جانا یا اسے اپنے نفس پر قدرت دینا نہیں چاہتی، کیا حکم ہے، ہندہ ناشزہ ہے یا نہیں، اسے زید کے یہاں نہ جانے اپنے نفس کے روکنے کا اختیار ہے یا نہیں۔ | | ۶۸۵ | ہندہ نانا کے زیر پرورش ہے، باپ

محض بے تعلق ہے ایسی حالت میں نانا عقد کردے تو جائز ہوگا یا نہیں، لڑکی تیرہ سال کی ہے، |

۶۹۰ | زید نے غیر شہر سے آکر اپنے آپ کو سنی اور سید ظاہر کیا عمرو شیخ انصاری نے اپنی دختر لیلی جو بارہ تیرہ سال کی ہے بیان زید سے دھوکا کھا کر اسے بیاہ دی لڑکی اور اس کا باپ سب اہلسنت ہیں رخصت نہ ہونے پائی تھی کہ زید چلا گیا اور خبر نہیں کہ زندہ ہے یا مر گیا، اب دریافت ہوا تو وہ رافضی نکلا اور شراب خوری قمار بازی علاوہ، لیلی اور اس کا باپ سخت ناراض ہے، لیلی جس کی عمر چودہ پندہ سال ہے اب دوسری جگہ اپنا عقد کرنا چاہتی ہے، کیا حکم ہے۔ |

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Page | No. | Ruling / Question 704 | 291 | One who believes in the addition or subtraction of a single word, a single letter, or a single dot in the Holy Quran is certainly a disbeliever and an apostate. (Related question): Hindah was married as a minor. When she reached the age of discernment, it was found that the husband lacked masculinity, was deaf, and behaved like a hermaphrodite dancer. Hindah's mother, feeling ashamed, refuses the departure (ruksat). The daughter does not like the husband. What is the ruling?

710 | 291 | To claim that a non-prophet is superior to a prophet is disbelief (kufr). (Related question): Amr deceived Hindah's heirs by representing Zaid, a stranger staying at his house, as a Sayyid and arranged Hindah's marriage with him. Later it was found out he is a weaver. Hindah's heirs feel great shame. Therefore, is it permissible to annul the marriage or not?

712 | 291 | One who doubts the disbelief of a definitive disbeliever is also a disbeliever. (Related question): Is a non-Arab scholar a suitable match (kufu) for a Sayyid lady or not?

712 | 696 | A son of a prostitute, upon reaching maturity, accepted Islam. Is it permissible for a person who has always been a Muslim to marry his minor daughter to him? (Ruling): A religious, pious non-Arab scholar is a suitable match for a Sayyid lady.

712 | 697 | Zaid married his adult daughter to Amr. At the time of marriage, Amr was suspected of being a Rafidi (Shia), so he was questioned. He denied it, claimed to be a Sunni, and reassured them of his being a Sunni. With Hindah's permission, the marriage took place. After the wedding, in the month of Muharram, Amr's being a Rafidi became evident. Since then, Zaid has kept Layla back. What is the ruling? (Ruling): A non-Arab scholar is a suitable match for an ignorant Arab because the nobility of knowledge is stronger and more exalted.

712 | 698 | One with deviant beliefs (fasiq i'tiqadi) is worse than one who commits sins (fasiq 'amali). (Ruling): A poor scholar is a suitable match for a wealthy ignorant person.

712 | 700 | He married his niece to his brother-in-law. He is involved in all prohibitions: drinking, gambling, adultery, theft, and suffers from venereal diseases. The mother-in-law and others are pious; they felt great humiliation and shame

because of him. Was this marriage valid or not? (Ruling): A non-Qurayshi scholar is a suitable match for an ignorant Qurayshi or Alawi.

713 | 701 | A paternal uncle married a Sayyid girl aged 7 years to a Pathan without informing her father. What is the ruling? (Statement): A scholar of religion is seven ranks higher than common believers, with a journey of five hundred years between each rank.

713 | 702 | Zaid deceived Hindah, a Sayyid girl, by concealing his lineage, his own and his father's name, and that his mother was an illegitimate concubine. He claimed to be a Sheikh or a Sayyid and owner of property. Upon discovery, Hindah is displeased and wants annulment. What is the ruling? (Statement): Only a religious and pious scholar is truly a scholar.

--- | 703 | Is the marriage between a Pathan boy and a Sayyid girl permissible or not?

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

पृष्ठ | सं. | आदेश / प्रश्न 704 | 291 | जो पवित्र कुरान में एक शब्द, एक अक्षर या एक बिंदु की कमी या वृद्धि का कायल है, वह निश्चित रूप से काफ़िर (अविश्वासी) और मुर्तद (धर्मत्यागी) है। (संबंधित प्रश्न): हिंदा का निकाह नाबालिग अवस्था में हुआ। जब वह समझदार हुई, तो पाया गया कि पति पौरुषहीन, बहरा है और हिजड़ों की तरह नाचता है। हिंदा की माँ अपमानित महसूस करते हुए रुखसती (विदाई) से इनकार कर रही है। बेटी पति को पसंद नहीं करती, क्या हुक्म है?

710 | 291 | किसी गैर-नबी को नबी से श्रेष्ठ कहना कुफ्र (अविश्वास) है। (संबंधित प्रश्न): अम्र ने हिंदा के वारिसों को यह कह कर धोखा दिया कि ज़ैद, जो उसके घर पर रहने वाला एक अजनबी था, वह सैयद है और हिंदा का निकाह उससे करा दिया। बाद में पता चला कि वह जुलाहा (नूरबाफ) है। हिंदा के वारिसों को इससे बहुत शर्मिंदगी हुई। अतः क्या निकाह रद्द करना जायज़ है या नहीं?

712 | 291 | निश्चित काफ़िर के कुफ्र में संदेह करने वाला भी काफ़िर है। (संबंधित प्रश्न): क्या एक गैर-अरब विद्वान (आलिम) एक सैयद महिला के लिए उपयुक्त मिलान (कुफ़ु) है या नहीं?

712 | 696 | एक वेश्या का बेटा जब वयस्क हुआ तो उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। जो पहले से ही मुसलमान है, क्या उसके लिए अपनी नाबालिग बेटी का निकाह उसके साथ करना जायज़ है या नहीं? (आदेश): एक धार्मिक और धर्मपरायण गैर-अरब विद्वान सैयद महिला के लिए उपयुक्त मिलान है।

712 | 697 | ज़ैद ने अपनी बालिग (वयस्क) बेटी का निकाह अम्र से किया। निकाह के समय अम्र के राफ़ज़ी (शिया) होने का संदेह था, इसलिए उससे पूछा गया। उसने इनकार किया और खुद को सुन्नी बताया और सुन्नी होने का आश्वासन दिया। हिंदा की सहमति से निकाह हो गया। विदाई के बाद मुहर्रम में अम्र का राफ़ज़ी होना ज़ाहिर हुआ। तब से ज़ैद ने लैला को रोक रखा है, क्या हुक्म है? (आदेश): गैर-अरब विद्वान अज्ञानी अरब के लिए उपयुक्त मिलान है क्योंकि ज्ञान की श्रेष्ठता अधिक प्रबल और उच्च है।

712 | 698 | गलत विश्वास रखने वाला पापी (फासिक एतिकादी), कर्म से पापी (फासिक अमली) से भी बदतर है। (आदेश): एक निर्धन विद्वान एक धनी अज्ञानी व्यक्ति के लिए उपयुक्त मिलान है।

712 | 700 | भतीजी का निकाह अपने साले से कर दिया, वह शराबखोरी, जुआ, व्यभिचार और चोरी जैसे सभी निषिद्ध कार्यों में संलिप्त है, और यौन रोगों से पीड़ित है। सास आदि नेक लोग हैं; उन्हें उससे बहुत अपमान और लज्जा हुई। क्या यह निकाह जायज़ हुआ या नहीं? (आदेश): एक गैर-कुरैशी विद्वान एक अज्ञानी कुरैशी या अलवी के लिए उपयुक्त मिलान है।

713 | 701 | सैयद ज़ादी का निकाह उसके चाचा ने ७ साल की उम्र में पिता को सूचित किए बिना एक पठान से कर दिया। क्या हुक्म है? (कथन): दीन का विद्वान आम मोमिनों से सात दर्जे ऊंचा है, और हर दर्जे के बीच पांच सौ साल का रास्ता है।

713 | 702 | ज़ैद ने हिंदा (सैयद ज़ादी) को अपनी जाति और पिता का नाम छिपाकर धोखा दिया, और यह भी कि उसकी माँ एक अवैध दासी थी। खुद को शेख या सैयद और संपत्ति का मालिक बताकर हिंदा से निकाह कर लिया। पता चलने पर हिंदा नाराज है और निकाह रद्द (फस्ख) चाहती है। क्या हुक्म है? (कथन): एक धार्मिक और परोपकारी विद्वान ही वास्तव में विद्वान है।

--- | 703 | पठान के लड़के और सैयद की लड़की का निकाह जायज़ है या नहीं?

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

صفحہ | نمبر | حکم / مسئلہ ۷۰۴ | ۲۹۱ | قرآن مجید میں جو ایک لفظ، ایک حرف اور ایک نقطے کی کمی بیشی کا قائل ہے یقیناً کافر مرتد ہے۔ (متعلقہ مسئلہ): ہندہ کا بجر نابالغ سے نکاح ہوا جب وہ سن تمیز کو پہنچا تو مردی سے خارج اور بہرا بہی ہیز رقص رقص کرتا، والدہ ہندہ اس سے عار پاکر رخصت سے منکر ہے، دختر شوہر کو پسند نہیں کرتی، کیا حکم ہے۔

۷۱۰ | ۲۹۱ | غیر نبی کو نبی سے افضل کہنا کفر ہے۔ (متعلقہ مسئلہ): عمرو نے ہندہ کے وارثوں کو دھوکا دیا کہ زید اجنبی جو اس کے مکان پر مقیم تھا اسے سید بتایا اور ہندہ کا اس سے نکاح کرا دیا، پھر معلوم ہوا کہ نور باف ہے، ہندہ کے ورثا کو اس سے بہت عار ہے لہٰذا نکاح فسخ کرنا جائز ہے یا نہیں۔

۷۱۲ | ۲۹۱ | قطعی کافر کے کفر میں شک کرنے والا بھی کافر ہے۔ (متعلقہ مسئلہ): العالم العجمي كفو للسيدة ام لا۔

۷۱۲ | ۶۹۶ | زن بازاری کا لڑکا جب بالغ ہوا تو اس نے اسلام قبول کیا پہلے سے جو مسلمان ہے اسے اپنی صغیرہ کا نکاح اس کے ساتھ کردینا جائز ہے یا نہیں۔ (حکم): دیندار متدین عجمی عالم سیدہ کا کفو ہے۔

۷۱۲ | ۶۹۷ | زید نے اپنی دختر بالغہ کا نکاح عمرو سے کیا۔ وقت نکاح عمرو پر رافضی ہونے کا شبہ ہوا تھا اس لئے اس سے دریافت کیا اس نے انکار کیا اور اپنے آپ کو سنی بتایا اور اپنے سنی ہونے کا اطمینان دلایا باذن ہندہ نکاح ہو گیا، رخصت کے بعد محرم میں عمرو کا رافضی ہونا

ظاہر ہوا جب سے زید نے لیلی کو روک لیا، کیا حکم ہے۔ (حکم): عجمی عالم عربی جاہل کا کفو ہے کیونکہ شرفِ علم اقویٰ اور بلند و بالا ہے۔

۷۱۲ | ۶۹۸ | فاسق اعتقادی فاسق عملی سے بدتر ہے۔ (حکم): عالم فقیر جاہل غنی کا کفو ہے۔

۷۱۲ | ۷۰۰ | بھتیجی کا نکاح اپنے سالے سے کر دیا وہ جملہ منہیات شراب خوری، جوئے بازی، زنا کاری، چوری کا مرتکب ہے، سوزاک آتشک میں مبتلا ہے، خوشدامن وغیرہ صالحین سے ہیں انہیں اس سے بہت ذلت و عار ہوئی، یہ نکاح جائز ہوا یا نہیں۔ (حکم): غیر قرشی عالم جاہل قرشی و علوی کا کفو ہے۔

۷۱۳ | ۷۰۱ | سید زادی کا نکاح چچا نے بعمر ۷ سال بے اطلاع اس کے والد کے پٹھان سے کر دیا، کیا حکم ہے۔ (ارشاد): عالم دین عام مومنین سے سات درجے بلند ہے، ہر درجوں کے درمیان پانچ سو برس کی راہ ہے۔

۷۱۳ | ۷۰۲ | زید نے ولیہ ہندہ سید زادی کو دھوکا دے کر اپنی قوم اپنا اور اپنے باپ کا نام چھپا کر نیز اپنی ماں کا کنیز غیر شرعی ہونا اپنے آپ کو شیخ یا سید ڈھائی بسوہ کا مالک بتا کر ہندہ سے نکاح کر لیا معلوم ہونے پر ہندہ ناراضمند ہے فسخ چاہتی ہے کیا حکم ہے۔ (ارشاد): دین دار متدین عالم ہی درحقیقت عالم ہے۔

--- | ۷۰۳ | پٹھان کے لڑکے اور سید کی لڑکی کا نکاح جائز ہے یا نہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

Page 70 of 739

Ref No.	Text (Right Column)	Ref No.	Text (Left Column)
714	Hinda married off her minor daughter to Khalid, an unequal match (non-kufw), in ignorance. After the wife reached puberty and it became known that the husband was not an equal match, there was discord between the spouses, and Hinda is also displeased. The daughter wants a separation, but Khalid is not giving a divorce. What is the ruling?	718	The educated misguided are worse than the ignorant, for compound ignorance is a severe affliction, and whoever is afflicted by it becomes extremely disgraced and humiliated in both worlds.
714	Zaid was a Thakur and, after becoming a Muslim, wants to marry. After embracing Islam, in which community will he be counted? With a girl of which community can he marry? According to Sharia, which community does he have a right to? Will Zaid's current offspring belong to the mother's community or the father's caste? Does baseness and nobility depend on community according to Sharia or not?	719	Adherents of bad religions are the dogs of Hell.
714	The 'wala' (legal relationship of patronage) of a person belongs to the one at whose hands he became Muslim.	721	Adherents of bad religions are worse than all creatures.
715	'Wala' is a relationship like the relationship of lineage.	721	Weavers, tanners, cobblers, and barbers, and similar professionals who are known for their low professions, even if they are scholars, they cannot be equal matches (kufw) for nobles.
716		723	

Ref No.	Text (Right Column)
	Khalid kept Hinda, a married woman. Several children were born to Zaid and Hinda. Zaid wants to marry off a girl; people say they are illegitimate. What is the ruling?
716	Meaning of the Hadith "The child of adultery is the worst of the three."
717	Meaning of the Hadith "The offspring of adultery shall not enter Paradise."
717	Zaid, a pious Siddiqui, married his minor daughter to Khalid upon Amr's word that Khalid was an equal match (kufw). After marriage, it was discovered that prostitution had always been practiced in Khalid's house; most members of his family promote adultery and their offspring are of that sort. But now Khalid, hearing from people, has married off his sisters. Was the minor's marriage to Khalid valid and binding? Does Zaid have the right to annulment or not?

Ref No.	Text (Left Column)
	In our lands, Sayyid women do not feel shame in marrying Pathan or Mughal scholars. Yes, if those from low professions become scholars, the shame (of their profession) still does not vanish.
724	If a scholar comes from low-ranking professionals and has left his profession for so long that people have forgotten it, and respect for that person has entered hearts and greatness in eyes, and now the daughters of nobles do not feel shame (in marrying him), then he too can be an equal match (kufw).
725	Ruling on the marriage of Sayyid women to Pathans, Mughals, etc., non-Sayyids.
726	Someone says that a Sayyid woman, i.e., from the family of the Prophet, is accessible to everyone. Someone asked, even if a sweeper becomes a Muslim? He replied, there is no harm. What is the ruling?

फतावा रज़विया जिल्द 11

पेज 70 / 739

रिफ. नं.	पाठ (दायां कॉलम)	रिफ. नं.	पाठ (बायां कॉलम)
714	हिंदा ने नाबालिग बेटी का निकाह खालिद (गैर-कुफ़्व/असमान) से अनजाने में कर दिया। बीवी के बालिग होने और शौहर के गैर-कुफ़्व होने का पता चलने के बाद मियाँ-बीवी में अनबन है और हिंदा भी नाराज़ है। बेटी जुदाई चाहती है लेकिन खालिद तलाक नहीं दे रहा। क्या हुक्म है?	718	गुमराह पढ़ा-लिखा जाहिलों से बदतर है क्योंकि जह्ल-ए-मुरक्कब (दोहरा अज्ञान) एक सख्त बुरी बला है और इसमें मुब्तला (ग्रस्त) होने वाला दोनों जहानों में सख्त ज़लील व हक़ीर (अपमानित) होता है।
714	ज़ैद ठाकुर था, मुसलमान होकर निकाह करना चाहता है। इस्लाम के बाद उसका शुमार (गिनती) किस कौम में होगा? वह किस कौम की लड़की से निकाह कर सकता है? शरीअत के अनुसार उसका किस कौम पर हक़ है? ज़ैद की अब की औलाद माँ की कौम पर होगी या बाप की ज़ात पर? शरीअत में रज़ालत (नीचता) और शराफत (बड़प्पन) कौम पर निर्भर है या नहीं?	719	बद-मज़हब (भटके हुए लोग) जहन्नुम के कुत्ते हैं।
714	जो शख्स जिसके हाथ पर मुसलमान हुआ, उसकी 'वला' (संरक्षण का अधिकार) उसी के लिए है।	721	बद-मज़हब तमाम मख्लूक (सृष्टि) से बदतर हैं।
715	'वला' एक रिश्ता है जैसे नसब (वंश) का रिश्ता।	721	जुलाहे, चमड़ा पकाने वाले, मोची और नाई और उनके जैसे नीचे पेशे वाले जो अपने ज़लील पेशों के लिए जाने जाते हैं, अगर ये आलिम (विद्वान) भी हों तब भी

रिफ. नं.	पाठ (दायां कॉलम)	रिफ. नं.	पाठ (बायां कॉलम)
			शराफत (कुलीनों) के कुफ़्व (बराबर) नहीं हो सकते।
716	हिंदा, जो खालिद की मनकूहा (विवाहित) थी, को ज़ैद ने रख लिया। ज़ैद और हिंदा से कई औलादें हुईं। ज़ैद लड़की की शादी करना चाहता है; लोग कहते हैं कि वे हरामी (अवैध) हैं। क्या हुक्म है?	723	हमारे शहरों में सैयदानियां (सैयद महिलाएं) पठान या मुगल आलिमों से निकाह में शर्म महसूस नहीं करतीं। हाँ, निचले पेशे वाले अगर आलिम भी हों, तब भी शर्म ज़ाइल (खत्म) नहीं होती।
716	हदीस "वल्द-उज़-ज़िना शर्रुस सलासा" (ज़िना की औलाद तीनों में सबसे बुरी है) का मतलब।	724	अगर नीचे दर्जे के पेशेवरों में से कोई आलिम हो जाए और वह अपने पेशे को इतने समय से छोड़ चुका हो कि लोग उसे भूल गए हों और दिलों में उस व्यक्ति की इज़्ज़त और आँखों में अज़मत (महानता) पैदा हो गई हो, और अब उससे शरीफों की बेटियों को शर्म न आती हो, तो वह भी कुफ़्व (बराबर) हो सकेगा।
717	हदीस "फरखुज़ ज़िना ला यदखुलुल जन्नत" (ज़िना की संतान जन्नत में दाखिल नहीं होगी) का मतलब।	725	सैयदानियों का पठान या मुगल वगैरह गैर-सैयद से निकाह का हुक्म।
717	ज़ैद सिद्दीकी मुत्तकी (परहेजगार) है। उसने अम्र के कहने पर कि खालिद तुम्हारा कुफ़्व (बराबर) है, अपनी नाबालिग बेटी का निकाह खालिद के साथ कर दिया। निकाह के बाद पता चला कि खालिद के यहाँ हमेशा से हरामकारी (वेश्यावृत्ति) का पेशा जारी	726	एक शख्स कहता है कि सैयद यानी आल-ए-नबी (स.अ.व.) की बेटी हर किसी को मिल सकती है। किसी ने पूछा, क्या अगर कोई झाड़ू लगाने वाला मुसलमान हो

रिफ. नं.	पाठ (दायां कॉलम)	रिफ. नं.	पाठ (बायां कॉलम)
	है; उसके खानदान के अक्सर लोग ज़िनाकारी कराते हैं और उनकी औलाद भी वैसी ही है। मगर अब खालिद ने लोगों के कहने-सुनने से अपनी बहनों का निकाह कर दिया। क्या नाबालिग का खालिद से निकाह जायज़ और लाज़िम (अनिवार्य) हुआ? क्या ज़ैद को फस्ख (रद्द करने) का हक है या नहीं?		जाए, उसे भी? जवाब दिया, कोई हर्ज नहीं। क्या हुक्म है?

| ۷۱۸ | گمراہ پڑھا لکھا جاہلوں سے بدتر ہے کہ جہل مرکب سخت بری بلا ہے اور اس میں مبتلا ہونے والا دونوں جہانوں میں سخت ذلیل و حقیر ہوتا ہے۔ | ۷۱۴ | ہندہ نے نابالغہ دختر کا نکاح خالد غیر کفو سے لاعلمی میں کر دیا، بعد بلوغ زوجہ و علم غیر کفو ہونے زوج کے زوجین میں نااتفاقی ہے اور ہندہ بھی ناراض ہے، دختر مفارقت چاہتی خالد طلاق نہیں دیتا۔ کیا حکم ہے۔ | | ۷۱۹ | بد مذہب اہل جہنم کے کتے ہیں۔ | ۷۱۴ | زید ٹھاکر تھا مسلمان ہو کر نکاح چاہتا ہے، بعد اسلام کس قوم میں شمار ہوگا، کس قوم کی لڑکی کے ساتھ وہ نکاح کرسکتا ہے، شرعاً کس قوم پر استحقاق ہے، زید کی اب کی اولاد ماں کی قوم پر ہوگی یا باپ کی ذات پر، رذالت اور شرافت شرعاً قوم پر منحصر ہے یا نہیں ۔ | | ۷۲۱ | بد مذہب تمام مخلوق سے بدتر ہیں۔ | ۷۱۴ | جو شخص جس کے ہاتھ پر مسلمان ہوا اس کی ولاء اسی کے لئے ہے۔ | | ۷۲۱ | جولاہے اور کھال پکانے والے اور موچی اور نائی انکے مثل ذیل پیشہ ور جو اپنے ذلیل پیشوں کے ساتھ معروف ہوں اگر یہ عالم ہوں جب بھی شرفاء کے کفو نہیں ہو سکتے۔ | ۷۱۵ | ولاء ایک رشتہ ہے مثل رشتہ نسب کے۔ | | ۷۲۳ | ہمارے بلاد میں سیدانیاں پٹھان یا مغل عالم سے عار نہیں کرتیں، ہاں ذیل پیشہ والے وہ اگر عالم ہوں جب بھی عار زائل نہیں ہوتی۔ | ۷۱۶ | ہندہ منکوحہ خالد کو زید نے رکھ لیا، زید کے ہندہ سے کئی اولادیں ہوئیں، زید لڑکی کی شادی کرنا چاہتا ہے، لوگ کہتے ہیں حرامی ہیں، کیا حکم ہے۔ | | ۷۲۴ | اگر ذیل پیشہ وروں سے کوئی عالم ہو اور وہ اپنے پیشہ کو اتنی مدت سے چھوڑ چکا ہو کہ لوگ اسے بھول گئے ہوں اور قلوب میں اس شخص کی وقعت اور نگاہوں میں عظمت ہو گئی ہو اب اس سے شرفاء کی بیٹیوں کو عار نہ ہو تو یہ بھی کفو ہو

سکے گا۔ | ۷۱۶ | حدیث "ولد الزنا شر الثلاثة" کا مطلب۔ | | ۷۲۵ | سیدانیوں سے پٹھان یا مغل وغیرہ غیر سید کے نکاح کا حکم۔ | ۷۱۷ | حدیث "فرخ الزنا لا یدخل الجنة" کا مطلب۔ | | ۷۲۶ | ایک شخص کہتا ہے کہ سید یعنی آل نبی کی دختر ہر ایک کو پہنچ سکتی ہے، کسی نے کہا اگر جاروب کش مسلمان ہو جائے اسے بھی، جواب دیا کچھ مضائقہ نہیں، کیا حکم ہے۔ | ۷۱۷ | زید صدیقی متقی ہے اس نے عمرو کے کہنے سے کہ خالد تیرا کفو ہے اپنی دختر نابالغہ کا نکاح خالد کے ساتھ کر دیا، بعد نکاح معلوم ہوا کہ خالد کے یہاں ہمیشہ سے پیشہ حرامکاری جاری ہے اس کے خاندان کے اکثر لوگ زنا کاری کراتے اور ایسی ہی ان کی اولاد ہے مگر اب خالد نے لوگوں کے کہنے سننے سے اپنی بہنوں کا نکاح کر دیا، کیا نابالغہ کا نکاح خالد سے جائز ولازم ہوا، زید کو حق فسخ ہے یا نہیں۔ |

Fatawa Rizvia, Volume 11

Page 71 of 739

728 | Zaid is illegitimate but a religious Muslim; can legitimate children marry his children or not? | Hazrat Ali (Karam Allahu Ta'ala Wajhah al-Karim) married his daughter Sayyida Umm Kulthum, who was from the pure womb of Hazrat Batul Zahra (Radi Allahu Ta'ala Anha), to the Commander of the Faithful, Hazrat Umar Faruq al-Azam (Radi Allahu Ta'ala Anhu). | 730

728 | Compatibility (Kafa'at) in marriage is reliable, and the basis of compatibility is on custom (Urf). | A girl has reached puberty, an equal match (Kufu) is not found, but non-equal matches are available—those with less status or those with more status than the girl's father, but not of good lineage; which of these should she be married to, or should an equal match be awaited? | 730

728 | A person raised a minor orphan girl of Sayyid descent and married her to a Pathan while she was still a minor, without even informing her brother. The girl is now an adult and the husband is missing (Mafqud al-Khabar); can she marry elsewhere? | Only being of lower financial status is not a barrier to compatibility. | 731

729 | Zaid divorced his wedded wife, and his minor daughter remained with the divorcee; Zaid went on a journey and left a warning that her marriage should not be against his opinion. The mother married her to a non-equal match (Ghayr Kufu) against Zaid's opinion; is it valid or invalid? | If the father is noble and the mother was a courtesan who repented and came into the father's marriage, then there is no stain on the lineage of the children. | 731

730 | A non-Sayyid married a Sayyida; people call him an infidel (Kafir). What is the ruling regarding those who call him a Kafir? | Hindah was convinced that Mahmud was of noble birth from both sides and was her equal match (Kufu); Hindah was married to him. Later it was proven that he is not her Kufu, and Hindah and her relatives feel disgraced, and Hindah's father is also angry; can this marriage be annulled or not, or should the marriage be considered annulled already? | 731

730 | If an adult Sayyida—whether virgin, widow, or divorcee—marries a non-Sayyid, will it be valid or not? | Some of the Quraish are equal matches (Kufu) for others. | 732

730 | A non-Sayyid married a Sayyida; will the children be Sayyids or not? | If a mother marries off her minor daughter without the father's permission to a non-equal match (Ghayr Kufu), what is the ruling? And if the mother was also deceived by someone claiming to be noble when they were of very low lineage, in such a case is the marriage annulled or not? Can parents marry her to another person of noble lineage without a divorce? | 732

730 | Those who call someone a Kafir for marrying a Sayyid woman need to renew their Islam (Tajdid-e-Islam). | Another similar question and its answer. | 733

फतावा रजविया, जिल्द 11

पेज 71/739

728 | ज़ैद हरामी है मगर मुसलमान दीनदार है, उसकी औलाद से हलाली अपनी औलाद का निकाह कर सकते हैं या नहीं? | हज़रत अली (करम अल्लाहू तआला वजहुल करीम) ने अपनी साहबज़ादी सैयदा उम्मे कुलसुम को, जो हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ी अल्लाहू तआला अन्हा) के पाक बतन से थीं, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ी अल्लाहू तआला अन्हु) के निकाह में दीं। | 730

728 | निकाह में कफ़ाअत (बराबरी) मोतबर है और कफ़ाअत का दारोमदार उर्फ़(प्रथा) पर है। | लड़की बालिग़ हो गई, कुफ़ू (बराबर का रिश्ता) मिलता नहीं, ग़ैर कुफ़ू मिलते हैं—कम हैसियत वाले या लड़की के बाप से ज़ायद हैसियत रखने वाले, मगर ज़ात के अच्छे नहीं, इनमें से किससे निकाह किया जाए या कुफ़ू का इंतज़ार किया जाए? | 730

728 | एक शख़्स ने एक यतीमा नाबालिग़ा सैयद ज़ादी पाली, नाबालिग़ी की हालत में पठान से उसका निकाह कर दिया, नाबालिग़ा के भाई को इत्तिला भी न दी। लड़की बालिग़ है और शौहर मफ़क़ूदुल ख़बर (लापता) हो गया, क्या वह दूसरी जगह निकाह कर सकती है? | सिर्फ़ माली हैसियत में कम होना कफ़ाअत में बाधक नहीं है। | 731

729 | ज़ैद ने अपनी बीवी को तलाक़ दी और उसकी नाबालिग़ा बेटी तलाक़शुदा माँ के पास रही; ज़ैद सफ़र पर चला गया और हिदायत दे गया कि ख़बरदार उसका निकाह मेरी राय के ख़िलाफ़ न हो। माँ ने ज़ैद की राय के ख़िलाफ़ ग़ैर कुफ़ू से निकाह कर दिया; जायज़ हुआ या नाजायज़? | बाप शरीफ़ हो और माँ तवायफ़ जो तौबा करके उसके बाप के निकाह में आई हो, तो उससे औलाद के नसब (वंश) पर कोई आंच नहीं आती। | 731

730 | सैयदा से ग़ैर-सैयद ने निकाह किया, इस पर लोग उसे काफ़िर कहते हैं, काफ़िर कहने वालों का क्या हुक्म है? | हिन्दा को यह यक़ीन दिलाकर कि महमूद नजीबुल तरफ़ैन (दोनों तरफ़ से शरीफ़) तेरा कुफ़ू है, हिन्दा का उससे निकाह कर दिया गया। बाद में साबित हुआ कि वह कुफ़ू नहीं है, और हिन्दा और उसके अज़ीज़ इसे अपनी रुसवाई समझते हैं, हिन्दा का बाप भी नाराज़ है; क्या यह निकाह फ़स्ख़ (रद्द) हो सकता है या नहीं, या निकाह फ़स्ख़ ही माना जाए? | 731

730 | सैयदा बालिग़ा बाकिरा (कुंवारी) या सय्यिबा (विधवा) या मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) अगर ग़ैर-सैयद से निकाह करे तो जायज़ होगा या नहीं? | क़ुरैश के कुछ लोग दूसरों के लिए कुफ़ू (बराबर) हैं। | 732

730 | ग़ैर-सैयद ने सैयदा से निकाह किया, औलाद सैयद होगी या नहीं? | नाबालिग़ा का निकाह उसके पिता की अनुमति के बिना किसी ग़ैर कुफ़ू से उसकी माँ कर दे, तो क्या हुक्म है? और अगर माँ को भी धोखा दिया गया हो कि किसी ने अपने आप को शरीफ़ बताया हो और वह निहायत नीच ज़ात का हो, इस सूरत में निकाह फ़स्ख़ होता है या नहीं? क्या माता-पिता बिना तलाक़ के दूसरे शरीफ़ुन्नसब (कुलीन) से निकाह कर सकते हैं? | 732

730 | सैयद से निकाह करने वाले को काफ़िर कहने वालों को तजदीद-ए-इस्लाम (ईमान का नवीनीकरण) करना चाहिए। | एक इसी तरह का और सवाल और उसका जवाब। | 733

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

صفحہ 71 از 739

728 | زید حرامی مگر مسلمان دیندار ہے، اس کی اولاد سے حلالی اپنی اولاد کا عقد کرسکتے ہیں یا نہیں۔ | حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم نے اپنی صاحبزادی سیدہ ام کلثوم کہ بطنِ پاک حضرت بتول زہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے تھیں امیر المومنین حضرت عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نکاح میں دیں۔ | 730

728 | نکاح میں کفاءت معتبر اور کفاءت کا مدار عرف پر ہے۔ | لڑکی بالغہ ہوگئی، کفو ملتا نہیں، غیر کفو ملتے ہیں کم حیثیت یا لڑکی کے باپ سے زائد حیثیت رکھنے والے، مگر ذات کے اچھے نہیں، ان میں سے کس سے نکاح کیا جائے یا کفو کا انتظار کیا جائے۔ | 730

728 | ایک شخص نے ایک یتیمہ نابالغہ سید زادی پالی، بحالتِ نابالغی پٹھان سے اس کا عقد کردیا، نابالغہ کے بھائی کو اطلاع بھی نہ دی لڑکی بالغہ ہے اور زوج مفقود الخبر ہوگیا، وہ اپنا دوسری جگہ نکاح کرسکتی ہے۔ | فقط مالی حیثیت میں کم ہونا مانع کفاءت نہیں۔ | 731

729 | زید نے منکوحہ کو طلاق دی اور اس کی نابالغہ دختر مطلقہ کے پاس رہی، زید سفر کرگیا اور متنبہ کرگیا کہ خبردار اس کا نکاح میری رائے کے خلاف نہ ہو۔ ماں نے زید کے خلاف رائے غیر کفو سے نکاح کردیا، جائز ہوا یا ناجائز۔ | باپ شریف ہو اور ماں طوائف جو توبہ کر کے اس کے باپ کے نکاح میں آئی ہو تو اس سے اولاد کے نسب پر کوئی حرف نہیں آتا۔ | 731

730 | سیدہ سے غیر سید نے نکاح کیا اس پر لوگ اسے کافر کہتے ہیں، کافر کہنے والوں کا کیا حکم ہے۔ | ہندہ کو یہ یقین دلا کر کہ محمود نجیب الطرفین تیرا کفو ہے ہندہ کا اس سے نکاح

کردیا، بعد کو ثابت ہوا کہ وہ کفو نہیں، ہندہ اور اس کے عزیز عار سمجھتے ہیں، ہندہ کا باپ بھی ناراض ہے، یہ نکاح فسخ ہوسکتا ہے یا نہیں، یا نکاح فسخ ہی مانا جائے۔ | 731

730 | سیدہ بالغہ باکرہ یا ثیبہ یا مطلقہ اگر غیر سید سے نکاح کرے تو جائز ہوگا یا نہیں۔ | قریش بعض ان کے کفو ہیں بعض کے۔ | 732

730 | غیر سید نے سیدہ سے نکاح کیا، اولاد سید ہوگی یا نہیں۔ | نابالغہ کا عقد بے اجازت اس کے والد کے کسی غیر کفو سے اس کی ماں کردے، تو کیا حکم ہے، اور اگر ماں کو بھی دھوکا دیا گیا ہو کہ اپنے آپ کو کسی نے شریف بتایا ہو اور وہ ہو نہایت پچ ذات، اس صورت میں نکاح فسخ ہوتا ہے یا نہیں، بے طلاق والدین دوسرے شریف النسب سے نکاح کرسکتے ہیں۔ | 732

730 | سید سے نکاح کرنے والے کو کافر کہنے والوں کو تجدید اسلام چاہئے۔ | ایک اسی طرح کا اور سوال اور اس کا جواب۔ | 733

Fatawa Ridawiyya Volume 11

734 Muhammad Yahya passed away, leaving behind heirs: his father Shah Abdul Karim, his brother Muhammad Zakariya, daughter Musammat Mahmooda Bibi from the first wife, and daughter Razia Bibi from the second wife, among others. Shah Abdul Karim, as the legal guardian, married off Mahmooda to the son of a maternal relative of Maulvi Muhammad Yahya and subsequently passed away. At the time of his death, he summoned Hafiz Muhammad Zakariya and others and made a will, stating: "I, as the lawful guardian, hereby perform the marriage contract of Razia, who is one and a half years old, with your son Abdus Salam." Now, her mother and maternal grandfather wish to marry her elsewhere to someone who is not a 'Kufu' (an equal match). What is the ruling on this?

734 मोहम्मद यहया का निधन हो गया, उन्होंने अपने पीछे वारिसों में अपने पिता शाह अब्दुल करीम, भाई मोहम्मद ज़करिया, पहली पत्नी से बेटी मुसम्मात महमूद बीबी और दूसरी पत्नी से बेटी रज़िया बीबी आदि छोड़े। शाह अब्दुल करीम साहब ने अपनी संरक्षकता (विलायत) में महमूद का निकाह मौलवी मोहम्मद यहया के ननिहाल के एक रिश्तेदार के बेटे से कर दिया और फिर उनका निधन हो गया। मृत्यु के समय उन्होंने हाफ़िज़ मोहम्मद ज़करिया आदि को बुलाकर वसीयत की कि रज़िया, जिसकी उम्र डेढ़ साल है, उसका निकाह मैं अपने जायज़ वली होने के नाते तुम्हारे बेटे अब्दुल सलाम के साथ करता हूँ। अब उसकी माँ और नाना किसी दूसरी जगह, जो 'कुफ़ू' (बराबर का स्तर) नहीं है, उसका निकाह करना चाहते हैं। इस बारे में क्या हुक्म है?

۷۳۴ محمد یحییٰ فوت ہوا انہوں نے اپنے باپ شاہ عبدالکریم اور بھائی محمد زکریا اور دختر مسماۃ محمودہ بی بی از زوجہ اولٰی دختر راضیہ بی بی از ثانیہ وغیرہ ورثاء چھوڑے، شاہ عبدالکریم صاحب بولایت خود محمودہ کا نکاح مولوی محمد یحییٰ کے نانہالی رشتہ دار کے فرزند سے کرکے انتقال کر گئے وقتِ انتقال حافظ محمد زکریا وغیرہ کو بلا کر وصیت کی کہ رضیہ جس کی عمر ڈیڑھ سال ہے اس کا عقد تمہارے بیٹے عبدالسلام کے ساتھ بولایت جائز اپنے کئے دیتا ہوں ماں اور نانا دوسری جگہ غیر کفو سے اب اس کا عقد کیا چاہتے ہیں کیا حکم ہے۔

Fatawa Razvia Volume 11

List of Supplementary Issues

Category: Tayammum - Performed prayer with Tayammum without searching for water in a populated area; if water was present there, the prayer will not be valid. (Page: 228) - It is not permissible to make someone who solemnizes the marriage of a woman in her waiting period (iddah) an Imam. (Page: 466) - Zaid is an Imam of a mosque. He practiced 'Jam' bayn al-ukhtayn' (combining two sisters in marriage). Upon objection, he claimed it's permissible according to Imam Shafi'i. What is the ruling on making him Imam and praying behind him? (Page: 466)

Category: Imamat (Leadership in Prayer) - Praying behind an open sinner is 'Makruh Tahrimi' (severely disliked) and making him an Imam is a sin. (Page: 443) - The Imamat of an ignorant person is contrary to the best practice. (Page: 190) - Adult Hinda, daughter of Zaid, married an equal match (Kufu) without Zaid's permission. Zaid, being unhappy, brought Hinda from Bakr's house through a ruse. After a year, he married her off to Amr. Is the second marriage valid or not? What is the ruling on children born to Amr? What is the ruling for Zaid? Can Zaid be an Imam or not? (Page: 674) - Imamat of an open sinner is forbidden; praying behind him is a sin and repeating the prayer is mandatory. (Page: 239) - An adult girl agreed to marry a well-off, educated young man of her choice. Her father, Zaid, was not satisfied. He forcibly married her to someone she didn't like and forcibly sent her to his place with some men. Is this marriage valid or not? What is the ruling on praying behind Zaid? (Page: 675) - Those who appoint a sinner as an Imam are sinners. (Page: 240)

Page 74 of 739 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तवा-ए-रज़विया जिल्द 11

सहायक मसलों की सूची

श्रेणी: तयम्मुम - आबादी में पानी की तलाश किए बिना तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, अगर वहाँ पानी था तो नमाज़ नहीं होगी। (पृष्ठ: 228) - इद्दत वाली महिला का निकाह कराने वाले को इमाम बनाना जायज़ नहीं है। (पृष्ठ: 466) - ज़ैद एक मस्जिद का इमाम है, उसने 'जमा बैन अल-उख़्तैन' (दो सगी बहनों से एक साथ विवाह) किया, आपत्ति पर कहा कि यह इमाम शाफ़ई के यहाँ जायज़ है। उसे इमाम बनाने और उसके पीछे नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है? (पृष्ठ: 466)

श्रेणी: इमामत (नमाज़ का नेतृत्व) - फ़ासिक़ मो'लिन (खुलेआम गुनाह करने वाला) के पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है और उसे इमाम बनाना गुनाह है। (पृष्ठ: 443) - जाहिल की इमामत अफ़ज़ल के खिलाफ है। (पृष्ठ: 190) - बालिग हिंदा बिंत ज़ैद ने ज़ैद की इजाज़त के बिना एक कुफ़ू (बराबरी के जोड़े) से निकाह कर लिया। ज़ैद नाख़ुश होकर हिंदा को हीले (बहाने) से बकर के घर से ले आया और एक साल बाद अम्र से हिंदा का निकाह कर दिया। क्या दूसरा निकाह सही हुआ या नहीं? अम्र से जो संतान हो उसका क्या हुक्म है, ज़ैद के लिए क्या हुक्म है, ज़ैद इमाम हो सकता है या नहीं? (पृष्ठ: 674) - फ़ासिक़ मो'लिन की इमामत मना है, उसके पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह है और उसे दोहराना वाजिब है। (पृष्ठ: 239) - बालिग लड़की एक ऐसे व्यक्ति से निकाह के लिए राज़ी थी जो उसकी पसंद का खुशहाल, पढ़ा-लिखा और जवान था। ज़ैद, लड़की का बाप, उससे राज़ी नहीं था। उसने बालिग बेटी का निकाह ज़बरदस्ती उस व्यक्ति से कर दिया जिससे वह राज़ी नहीं थी और ज़बरदस्ती कुछ लोगों के साथ उसे उसके यहाँ पहुँचा दिया। क्या यह निकाह सही हुआ या नहीं? ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़ने का क्या हुक्म है? (पृष्ठ: 675) - फ़ासिक़ को इमाम बनाने वाले गुनाहगार हैं। (पृष्ठ: 240)

पृष्ठ 74 का 739 आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

فہرست ضمنی مسائل

تیمم: - آبادی میں پانی تلاش کئے بغیر تیمم کرکے نماز پڑھ لی، اگر وہاں پانی تھا تو نماز نہ ہوگی۔ (صفحہ: ۲۲۸) - معتدہ کا نکاح پڑھانے والے کو امام بنانا جائز نہیں۔ (صفحہ: ۴۶۶) - زید ایک مسجد کا امام ہے اس نے جمع بین الاختین کیا، اعتراض پر کہا یہ امام شافعی کے یہاں جائز ہے، اسے امام بنانا اور اس کے پیچھے نماز کا کیا حکم ہے۔ (صفحہ: ۴۶۶)

امامت: - فاسق معلن کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے اور اسے امام بنانا گناہ ہے۔ (صفحہ: ۴۴۳) - جاہل کی امامت خلاف اولٰی ہے۔ (صفحہ: ۱۹۰) - بالغہ ہندہ بنت زید نے بے اجازت زید کفو سے نکاح کرلیا، زید ناخوش ہو کر بکر کے مکان سے ہندہ کو حیلہ کر کے لے آیا ایک سال بعد عمرو سے ہندہ کا نکاح کر دیا، دوسرا نکاح صحیح ہوا یا نہیں۔ عمرو سے جو اولاد ہو اس کا کیا حکم ہے، زید کے لئے کیا حکم ہے، زید امام ہو سکتا ہے یا نہیں۔ (صفحہ: ۶۷۴) - فاسق معلن کی امامت ممنوع، اس کے پیچھے نماز گناہ اور پھیرنی واجب ہے۔ (صفحہ: ۲۳۹) - بالغہ ایسے شخص سے جو اس کی ذات کا خوش حال پڑھا لکھا جوان تھا پر راضی تھی زید بالغہ کا باپ اس سے راضی نہ تھا بالغہ جس سے راضی نہ تھی زبردستی اس کے ساتھ اس کا نکاح کر دیا اور زبردستی چند آدمی پکڑ کر اس کے یہاں پہنچا آئے یہ نکاح درست ہوا یا نہیں، زید کے پیچھے نماز کا کیا حکم ہے۔ (صفحہ: ۶۷۵) - فاسق کو امام بنانے والے گناہگار ہیں۔ (صفحہ: ۲۴۰)

Fatawa Rizvia Volume 11

Page	Description	Subject / Reference
140	Mentioning mahr (dowry) is not a condition for the validity of marriage; marriage is valid even without mention of mahr or even with the condition of its absence.	Funerals
176	If a thousand rupees and some gift were fixed as mahr but the gift was not given, then 'Mahr-ul-Mithl' (equivalent dowry) will be mandatory.	431 Proof for building a dome over shrines.
193	Irregularity of seclusion (fasad-e-khalwat) causes the lack of emphasis on mahr.	Sermon
238	The minimum amount of mahr is ten silver dirhams, and there is no upper limit for the maximum.	222 How is the marriage sermon sunnah: standing or sitting?
269	If the husband and wife have been alone together in a secluded place, the full mahr becomes payable.	222 Standing during the sermon is generally superior.
269	If divorce occurs before the couple has been in seclusion, then half of the mahr is waived.	222 For a sermon delivered while riding, like at Arafah, the mount's standing replaces the rider's standing.
280	If after marriage it's discovered that the woman has leprosy, is she entitled to mahr or not, and can wedding expenses be recovered from her parents?	222 Voluntary sermons are also proven to be delivered while sitting.
282	Is it necessary to consider financial status in mahr or not?	222 There is no harm in delivering marriage sermons while sitting.
283	Marriage of a poor person is valid even with a large mahr, provided they consider it a debt and intend to pay it.	Fasting
298	If marriage is contracted on the condition of no mahr, mahr will still be legally mandatory, and Mahr-ul-Mithl must be given.	221 Fasts break carnal desires.

Page	Description	Subject / Reference
338	If after marriage it's confessed that adultery was committed with the wife's mother before marriage, prohibition is established, but it won't affect the woman's right; if consummation has occurred, full agreed mahr is due, otherwise half.	221 One who can afford marriage should marry, and one who cannot should fast.
341	In an irregular marriage (nikah fasid), after intercourse, the lesser of agreed mahr and Mahr-ul-Mithl will be mandatory.	221 Ruling on fasting in the latitudes of ninety degrees.
561	Mahr becomes mandatory through intercourse, valid seclusion (khalwat sahihah), or the death of one of the spouses.	Mahr (Dowry)
	Seclusion is equivalent to intercourse; through it also full mahr becomes mandatory, provided there is no hindrance to intercourse.	117

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

पृष्ठ	विवरण	विषय / संदर्भ
140	निकाह की वैधता के लिए महर का उल्लेख करना शर्त नहीं है; निकाह बिना महर के उल्लेख के या यहाँ तक कि महर न होने की शर्त पर भी हो जाता है।	जनाइज़ (जनाज़ा)
176	एक हज़ार रुपये और कुछ उपहार महर तय हुआ और उपहार नहीं दिया गया, तो 'महर-उल-मिस्ल' (समान महर) अनिवार्य होगा।	431 मज़ारों पर गुंबद बनाने का प्रमाण।
193	एकांत की अनियमता (फ़साद-ए-खलवत) महर की अपुष्टि का कारण बनती है।	ख़ुत्बा
238	महर की न्यूनतम राशि दस चांदी के दिरहम है। और अधिकतम के लिए कोई सीमा नहीं है।	222 निकाह का ख़ुत्बा खड़े होकर पढ़ा जाए या बैठकर, किस तरह सुन्नत है?
269	यदि पति-पत्नी एक अकेले स्थान पर एकांत में मिल चुके हैं, तो पूरा महर देय हो गया।	222 ख़ुत्बे में सामान्यतः खड़ा रहना श्रेष्ठ है।
269	यदि एक घर में पति-पत्नी का एकांत नहीं हुआ था और तलाक हो गया, तो आधा महर समाप्त हो गया।	222 जो ख़ुत्बा सवारी पर होता है जैसे अराफ़ा का ख़ुत्बा, वहाँ सवारी का खड़ा होना सवार के खड़े होने के स्थान पर है।
280	निकाह के बाद पता चला कि महिला को कोढ़ है, तो क्या वह महर की हकदार है या नहीं, और क्या शादी का खर्च उसके माता-पिता से लिया जा सकता है या नहीं।	222 नफ़्ल ख़ुत्बे बैठकर भी साबित हैं।
282	क्या महर में हैसियत का ध्यान रखना ज़रूरी है या नहीं?	222 निकाह के ख़ुत्बे बैठकर पढ़ने में कोई हर्ज नहीं।
283		रोज़ा

पृष्ठ	विवरण	विषय / संदर्भ
	एक निर्धन व्यक्ति से भी कितने ही अधिक महर पर निकाह हो जाएगा, लेकिन यह आवश्यक है कि उसे ऋण समझें और भुगतान करने की नीयत हो।	
298	यदि इस शर्त पर निकाह किया जाए कि महर कुछ नहीं होगा, तब भी महर शरीयत के अनुसार अनिवार्य होगा, 'महर-उल-मिस्ल' देना होगा।	221 रोज़े कामुक इच्छाओं को तोड़ने वाले हैं।
338	यदि निकाह के बाद स्वीकार किया कि निकाह से पहले पत्नी की माँ के साथ व्यभिचार किया था, तो हुरमत (निषेध) सिद्ध हो गई, लेकिन महिला के अधिकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा; यदि संभोग हो चुका है तो पूरा 'महर-ए-मुसम्मा' अनिवार्य होगा, अन्यथा आधा।	221 जिसे निकाह की शक्ति हो वह निकाह करे और जो न कर सके वह रोज़ा रखे।
341	निकाह-ए-फासिद (अनियमित निकाह) में संभोग के बाद 'महर-ए-मुसम्मा' और 'महर-उल-मिस्ल' में से जो कम हो, वह अनिवार्य होगा।	221 नब्बे डिग्री अक्षांश में रोज़े से संबंधित क्या हुक्म है।
561	महर का अनिवार्य होना संभोग, खलवत-ए-सहीहा (वैध एकांत) या पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु से होता है।	महर
	खलवत (एकांत) संभोग के समान है, इससे भी पूरा महर अनिवार्य हो जाता है बशर्ते कि संभोग में कोई बाधा न हो।	117

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

صفحہ تفصیل		عنوان / حوالہ
۱۴۰	صحت نکاح کیلئے ذکر مہر شرط نہیں کہ نکاح بے ذکر مہر بلکہ بشرط عدم مہر بھی نکاح ہو جاتا ہے۔	جنائز
۱۷۶	ایک ہزار روپیہ اور کچھ ہدیہ دینا مہر قرار پایا اور ہدیہ نہ دیا تو مہر مثل لازم ہوگا۔	۴۳۱ مزارات پر قبہ بنانے کا ثبوت۔
۱۹۳	فساد خلوت عدم تاکید مہر کا باعث ہے۔	خطبہ
۲۳۸	مہر کا اقل درجہ دس درہم چاندی ہے۔ اور اکثر کے لئے کوئی حد نہیں۔	۲۲۲ خطبہ نکاح کھڑے ہو کر پڑھا جائے یا بیٹھ کر، کس طرح مسنون ہے۔
۲۶۹	زن و شوہر کی اگر ایک مکان تنہا میں یکجائی ہو چکی ہے۔ تو کل مہر واجب الادا ہو گیا۔	۲۲۲ خطبہ میں مطلقاً قیام افضل ہے۔
۲۶۹	ایک مکان میں زن و شوہر کی تنہائی نہیں ہوئی تھی کہ طلاق ہو گئی تو نصف مہر ساقط ہو گیا۔	۲۲۲ جو خطبہ سواری پر ہوتا ہے جیسے خطبہ عرفہ وہاں قیام مرکب قائم مقام قیام راکب ہے۔
۲۸۰		۲۲۲ خطبات نافلہ بیٹھ کر بھی ثابت ہیں۔

صفحہ تفصیل		عنوان / حوالہ
	نکاح کے بعد معلوم ہوا کہ عورت کو برص ہے تو وہ مہر کی مستحق ہے یا نہیں اور شادی کا صرفہ اس کے والدین سے لیا جا سکتا ہے یا نہیں۔	
۲۸۲	مہر میں حیثیت کا لحاظ ضروری ہے یا نہیں۔	۲۲۲ خطبات نکاح بیٹھ کر پڑھنے میں مضائقہ نہیں۔
۲۸۳	مفلس سے کتنے ہی کثیر مہر پر نکاح ہو جائے گا مگر یہ ضرور ہے کہ اسے دین جانیں اور ادا کی نیت ہو۔	روزہ
۲۹۸	اگر اس شرط پر نکاح کیا جائے کہ مہر کچھ نہ ہوگا جب بھی مہر شرعاً لازم ہو گا مہر مثل دینا آئے گا۔	۲۲۱ روزے شہوت نفسانی کو توڑنے والے ہیں۔
۳۳۸	نکاح کے بعد اقرار کیا کہ قبل نکاح منکوحہ کی ماں سے زنا کیا تھا تو حرمت ثابت ہو گئی مگر عورت کے حق پر کوئی اثر نہ پڑے گا، اگر دخول کر چکا ہے تو پورا مہر مسمّٰی واجب ہو گا ورنہ نصف۔	۲۲۱ جسے نکاح کی طاقت ہو وہ نکاح کرے اور جو نہ کر سکتا ہو وہ روزہ رکھے۔
۳۴۱	نکاح فاسد میں بعد وطی مہر مسمّٰی و مہر مثل میں سے اقل لازم ہوگا۔	۲۲۱ عرض تسعین میں روزہ سے متعلق کیا حکم ہے۔
۵۶۱	مہر کا لزوم وطی، خلوت صحیحہ یا احد الزوجین کی موت سے ہوتا ہے۔	مہر

صفحہ تفصیل **عنوان / حوالہ**

خلوت بمنزلہ وطی ہے اس سے بھی پورا مہر لازم ہو جاتا

ہے جبکہ مانع وطی کوئی امر موجود نہ ہو۔

Volume 11 Fatawa Razawiyyah

If the marriage of a minor boy with an adult girl is suspended (pending permission) and he commits forced intercourse with her, then 'Mahr-e-Mithl' (equitable dower) will be mandatory. If he has intercourse with the woman's consent, nothing will be mandatory. | 562 | What is the Shariah ruling on Walimah (wedding feast) and how is the person who abandons it? | 278

Suspended marriage does not make intercourse lawful before permission, nor even looking. However, if forced intercourse occurs, Mahr-e-Mithl is mandatory, otherwise nothing. | 562 | In places where people do not perform Walimah after marriage but instead serve food on the first day of marriage according to custom, what is the Shariah ruling for them? | 278

During the marriage ceremony, an argument occurred over the dower. Zaid left the gathering. In a state of anger, Amr told the Muazzin to marry his daughter to Bakr. Bakr was present in the ceremony. The Muazzin recited only three words and conducted the 'Ijab-o-Qabul' (offer and acceptance). There was no representative (Wakil) or witness. The amount of dower was not told to Bakr; it was only said that the dower is fixed like that of the girl's mother. The girl is an adult, but no permission was taken from her. What is the ruling? | 618 | Walimah is among the Sunnah and recommended acts; its abandoner is not a sinner. | 278

If a guardian fixes the dower and the minor boy, upon reaching adulthood, is not satisfied with that dower and refuses it, what will be the ruling? | 642 | **Suckling (Raza'at)** |

Hindah, an adult girl of noble birth, has Amr, her paternal uncle, as her legal guardian. Hindah's mother, in the absence of Amr and with Hindah's permission but without informing Amr, married her to Zaid, who is of a lower caste and not an equal (ghair-kafu). When Amr became aware, thinking that the marriage had already occurred, he accepted it for the sake of expedience and sent Hindah off. With Hindah's consent, intercourse also took place. Now, having returned to her parents' home, she does not want to go back to her husband or give him control over herself until the 'Mahr-e-Mu'ajjal' (prompt dower) is paid. What is the ruling? Is Hindah a 'Nashizah' (rebellious wife) or not? Does she have the right to stop herself from going to Zaid's place? | 688 | Where there is a doubt about suckling, such as if a woman first says she breastfed him and now says she didn't, what will be the fatwa in this case and what is the ruling of piety? | 200

Walimah | | In our school of thought, the statement of one woman is not sufficient for the proof of suckling; avoiding it as a precaution is recommended. | 202

What is the definition of Walimah and how many days is its duration? | 255 | Bakr has drunk the milk of Saleem's mother. How is the marriage of Bakr's daughter with Saleem? | 278

If someone does not perform Walimah with the intention of following the Sunnah but for fame and show, what is the ruling? | 256 | |

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

अगर एक नाबालिग लड़के का एक बालिग लड़की से निकाह मौक़ूफ़ (अनुमति पर आधारित) हुआ और उसने उस बालिग लड़की के साथ ज़बरदस्ती सोहबत की, तो 'महरे मिस्ल' (उचित दहेज) अनिवार्य होगा। और अगर औरत की रज़ामंदी से सोहबत की, तो कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा। | ५६२ | वलीमा (विवाह भोज) का शरीअत के अनुसार क्या हुक्म है और जो इसे छोड़ दे वह कैसा है? | २७८

मौक़ूफ़ निकाह अनुमति से पहले सोहबत को हलाल नहीं करता, यहाँ तक कि देखने को भी नहीं। फिर भी, अगर ज़बरदस्ती सोहबत की गई, तो महरे मिस्ल अनिवार्य है, अन्यथा कुछ नहीं। | ५६२ | जहाँ लोग निकाह के बाद वलीमा नहीं करते, बल्कि निकाह के पहले दिन ही रीति-रिवाज़ के अनुसार खाना खिला देते हैं, उनके लिए शरीअत का क्या हुक्म है? | २७८

निकाह के समय महर पर बहस हुई, ज़ैद महफ़िल से उठ गया। गुस्से की हालत में अम्र ने मुअज़्ज़िन से कहा कि मेरी बेटी का निकाह बक्र से कर दो। बक्र निकाह की महफ़िल में मौजूद था। मुअज़्ज़िन ने सिर्फ तीन कलिमे पढ़ाकर 'ईजाब-ओ-क़बूल' (प्रस्ताव और स्वीकृति) करा दिया। कोई वकील या गवाह नहीं था और न ही बक्र को महर की राशि बताई गई; सिर्फ यह कहा गया कि लड़की की माँ के महर जैसा महर बांधा गया है। लड़की बालिग है, लेकिन उससे अनुमति नहीं ली गई। क्या हुक्म है? | ६१८ | वलीमा सुन्नते मुस्तहब है, इसके छोड़ने वाले गुनहगार नहीं हैं। | २७८

अगर वली (अभिभावक) महर बांध दे और नाबालिग बालिग होने के बाद उस महर से संतुष्ट न हो और इनकार कर दे, तो क्या हुक्म होगा? | ६४२ | **रज़ाअत (दुग्धपान)** |

हिन्दा एक बालिग कुलीन लड़की है, अम्र उसका चचा और शरीई वली है। हिन्दा की माँ ने अम्र की अनुपस्थिति में और हिन्दा की अनुमति से, लेकिन अम्र को सूचित किए बिना, उसका निकाह ज़ैद से कर दिया जो कम कौम का और गैर-कफ़ू (असमान) है। जब अम्र को पता चला, तो इस विचार से कि निकाह तो हो ही गया है, उसने समझदारी दिखाते हुए इसे स्वीकार कर लिया और हिन्दा को विदा कर दिया। हिन्दा की सहमति से सोहबत भी हुई। अब मायके आकर वह महरे मुअज्जल (तत्काल दहेज) की अदायगी तक शौहर के पास जाने या खुद पर उसे अधिकार देने को तैयार नहीं है। क्या हुक्म है? क्या हिन्दा नाशिज़ह (विद्रोही पत्नी) है या नहीं? क्या उसे ज़ैद के यहाँ न जाने के लिए खुद को रोकने का अधिकार है या नहीं? | ६८८ | जहाँ रज़ाअत का संदेह हो, जैसे कि पहले एक औरत कहे

कि मैंने उसे दूध पिलाया है और अब कहे कि नहीं पिलाया है, तो इस स्थिति में फ़तवा क्या होगा और तक़वा (परहेज़गारी) का क्या हुक्म होगा? | २००

वलीमा | | हमारे मज़हब में रज़ाअत के प्रमाण के लिए एक औरत का बयान पर्याप्त नहीं है, एहतियात के तौर पर इससे बचना मुस्तहब है। | २०२

वलीमा की परिभाषा क्या है और इसकी अवधि कितने दिनों तक है? | २५५ | बक्र ने सलीम की माँ का दूध पिया है, तो सलीम से बक्र की बेटी का निकाह कैसा है? | २७८

अगर कोई सुन्नत की नीयत से नहीं बल्कि नाम और शौहरत के लिए वलीमा करे, तो क्या हुक्म है? | २५६ | |

نابالغ کا بالغہ سے نکاح موقوف ہوا اور وہ اس بالغہ سے جبرا وطی کرے تو مہر مثل لازم ہوگا ، اور اگر عورت کی رضا سے وطی کرے تو کچھ لازم نہ ہوگا۔ | ۵۶۲ | ولیمہ کا شرعی حکم کیا ہے اور اس کا تارک کیسا ہے۔ | ۲۷۸

نکاح موقوف قبل از اجازت وطی کو حلال نہیں کرتا بلکہ نظر کو بھی، تاہم جبراً وطی کی تو مہر مثل لازم ورنہ کچھ نہیں۔ | ۵۶۲ | جہاں لوگ بعد نکاح ولیمہ نہیں کرتے بلکہ پہلے نکاح کے اول روز حسبِ رواج کھانا کھلا دیتے ہیں ان کا حکم شرعی کیا ہے۔ | ۲۷۸

ہنگام نکاح خوانی مہر پر حجت ہوئی، زید مجلس سے اٹھ گیا، عمرو نے بحالت غصہ موذن سے کہا تم میری لڑکی کا نکاح بکر سے کر دو بکر مجلس نکاح میں موجود تھا موذن نے صرف تین کلمے پڑھا کر ایجاب و قبول کرا دیا کوئی وکیل و گواہ نہیں ہوا نہ مہر کی تعداد بکر کو بتائی یہ کہا کہ مثل لڑکی کی ماں کے مہر باندھا لڑکی بالغ ہے اس سے اجازت نہ لی گئی۔ کیا حکم ہے۔ | ۶۱۸ | ولیمہ سنن مستحبہ سے ہے اس کے تارک گنہگار نہیں۔ | ۲۷۸

ولی جو مہر باندھے نابالغ بعد بلوغ اس مہر سے راضی نہ ہو انکار کرے تو کیا حکم ہوگا۔ | ۶۴۲ | **رضاعت** |

ہندہ بالغہ شریف زادی کا عمرو چچا ولی شرعی ہے مادر ہندہ نے غیبت عمرو میں باذن ہندہ بے اطلاع عمرو اس کا نکاح زید کم قوم غیر کفو سے کر دیا جب عمرو مطلع ہوا اس خیال سے کہ نکاح تو ہو ہی گیا مصلحتاً منظور کر لیا اور ہندہ کی رخصت کر دی برضائے ہندہ وطی بھی ہوئی اب میکے آکر تادائے مہر معجل شوہر کے جانا یا اسے اپنے نفس پر قدرت دینا نہیں چاہتی، کیا

حکم ہے، ہندہ ناشزہ ہے یا نہیں، اسے زید کے یہاں نہ جانے اپنے نفس کے روکنے کا اختیار ہے یا نہیں۔ | ۶۸۸ | شبہ رضاعت جہاں ہو کہ پہلے عورت کہے کہ میں نے اسے دودھ پلایا ہے اب کہے کہ نہیں پلایا ہے تو اس صورت میں فتوی کیا ہوگا اور تقوی کا کیا حکم ہوگا۔ | ۲۰۰

ولیمہ | | ہمارے مذہب میں ایک عورت کا بیان ثبوتِ رضاعت کے لئے کافی نہیں، اس سے احتیاطاً بچنا مستحب ہے۔ | ۲۰۲

ولیمہ کی تعریف کیا ہے اور اس کی مدت کے روز تک ہے۔ | ۲۵۵ | بکر نے سلیم کی ماں کا دودھ پیا ہے تو سلیم سے بکر کی لڑکی کا نکاح کیسا ہے۔ | ۲۷۸

اگر ولیمہ بخیالِ سنت نہ کرے بلکہ برائے نام آوری تو کیا حکم ہے۔ | ۲۵۶ | |

Fatawa Razawiyya - Volume 11

Bakr drank the milk of Zaid's wife before her first child. What is the ruling on Bakr's marriage to the girl born to Zaid after three children?	464	Zaid is the foster brother of Bakr. What is the ruling on the marriage of Zaid's younger brother to Bakr's younger sister?	479
Refutation of a fatwa by some Bengalis regarding marriage with one's biological brother's foster daughter.	470	If Zaid's son took Amr's wife's breast in his mouth but it's unknown if milk was present, can that boy marry Amr's daughter or not?	482
Marriage with a brother's foster granddaughter is ignorance, misguidance, and slander against Sharia.	477	For the proof of fosterage (radha'at), it is necessary to know that a drop of milk entered the infant's stomach via mouth or nose. Just pressing the breast does not establish fosterage.	482
The man to whom the milk is attributed is the foster father; his children are the foster child's siblings, his brothers are the foster child's paternal uncles, and his sisters are the foster child's paternal aunts, while the foster child's children are like that man's grandchildren.	478	There is no fixed duration for milk production; due to strong temperament and abundance of blood, a virgin can also lactate.	482
Three textual proofs (nasoos) on the prohibition of marriage between the children of the foster child and the foster mother.	491	Hindah breastfed her grandson Zaid. Can Zaid marry Hindah's granddaughter?	311
A foster brother's daughter is forbidden.	492	Hindah drank Zainab's milk. Zainab's daughter is forbidden for Hindah's son.	339
All descendants of the foster child are forbidden for all descendants of the foster mother.	493	Laila and Salma are foster sisters. Zaid married Laila. Is it permissible for Zaid's son, Amr, to marry Salma?	440

The wife of the foster child is forbidden for the husband of the foster mother.	493	Zaid married Hindah, they had Hasan and Husain. Then after Hindah, he married Hafsa. Hafsa breastfed Husain's son Bakr along with her own daughter. Is Bakr's marriage to Zahida bint Hasan permissible or not?	447
The foster daughters and granddaughters are forbidden for the foster mother's husband and his sons.	493	Can the foster sister of Zaid's biological sister be married to Zaid?	442
A foster uncle is also an uncle; there is no need for hijab from them.	493	Faqeeray drank Beeba's milk along with Hafeezan. Then Beeba had Fehmeen. What is the ruling on Faqeeray's marriage to Fehmeen?	460

बक्र ने जैद की पत्नी का पहली संतान के समय दूध पिया, तीन संतानों के बाद जैद की जो लड़की हुई उस लड़की से बक्र के निकाह का हुक्म।	464	जैद बक्र का रज़ाई भाई है, जैद के छोटे भाई का निकाह बक्र की छोटी बहन से कैसा है।	479
अपने सगे भाई की रज़ाई बेटी से निकाह के बारे में कुछ बंगालियों के फतवे का खंडन।	470	अगर जैद के बेटे ने अम्र की पत्नी का स्तन मुंह में ले लिया और उस समय दूध होना ज्ञात नहीं, तो क्या उस लड़के का अम्र की लड़की से निकाह होगा या नहीं।	482
भाई की रज़ाई नवासी से निकाह अज्ञानता, गुमराह और शरीयत पर आरोप है।	477	रज़ाअत (दुग्धपान संबंध) की पुष्टि के लिए आवश्यक है कि दूध की एक बूंद शिशु के पेट में मुंह या नाक के रास्ते जाने का पता हो। केवल स्तन दबाने से रज़ाअत साबित नहीं होगी।	482
जिस पुरुष की ओर दूध का श्रेय दिया जाता है वह रज़ाअत का पिता है, उसकी संतानें रज़ाअत की भाई-बहन, उसके भाई रज़ाअत के चाचा और उसकी बहनें रज़ाअत की बुआएं होंगी, जबकि रज़ाअत की संतान उस पुरुष की पोते-पोतियां होंगी।	478	दूध उतरने के लिए कोई निश्चित अवधि नहीं है; मिजाज की तीव्रता और रक्त की अधिकता से कुंवारी को भी दूध उतर सकता है।	482
रज़ाअत और मुरज़िया (दूध पिलाने वाली) की संतानों के बीच निकाह के हराम होने पर तीन प्रमाण।	491	हिंदा ने अपने पोते जैद को दूध पिलाया, क्या जैद का निकाह हिंदा की नवासी से हो सकता है।	311
रज़ाई भाई की बेटी हराम है।	492	हिंदा ने ज़ैनब का दूध पिया, हिंदा के बेटे पर ज़ैनब की बेटी हराम है।	339
	493		440

रज़ाअत की पूरी संतान पर मुरज़िया की पूरी संतान हराम है।		लैला और सलमा रज़ाई बहनें हैं। जैद ने लैला से निकाह किया। क्या जैद के बेटे अम्र का सलमा से निकाह जायज़ है।		
रज़ाअत की पत्नी मुरज़िया के पति पर हराम है।	493	जैद ने हिंदा से निकाह किया, हसन और हुसैन पैदा हुए। फिर हिंदा के बाद हफ्सा से निकाह किया, हफ्सा ने अपनी बेटी के साथ हुसैन के बेटे बक्र को दूध पिलाया, तो क्या बक्र का ज़ाहिदा बिंत हसन से निकाह जायज़ है या नहीं?	447	
रज़ाअत की बेटियां और नवासियां मुरज़िया के पति और उसके बेटों पर हराम हैं।	493	क्या जैद की सगी बहन की रज़ाई बहन का निकाह जैद से हो सकता है?	442	
रज़ाई चाचा भी चाचा है, उनसे परदा करने की ज़रूरत नहीं।	493	फकीरे ने बीबा का दूध हफीज़न के साथ पिया, फिर बीबा के फहमीन हुई, फकीरे का निकाह फहमीन से कैसा है।	460	

بکر نے زید کی بی بی کا پہلی اولاد پر دودھ پیا تین اولادوں کے بعد زید کی جو لڑکی ہوئی اس لڑکی سے بکر کے نکاح کا حکم۔ ۴۶۴

اپنے حقیقی بھائی کی رضاعی بیٹی سے نکاح کے بارے میں بعض بنگالیوں کے فتوے کا رد۔ ۴۷۰

بھائی کی رضاعی نواسی سے نکاح جہالت، گمراہی اور شریعت پر افتراء ہے۔ ۴۷۷

زید بکر کا رضاعی بھائی ہے، زید کے چھوٹے بھائی کا نکاح بکر کی چھوٹی بہن سے کیسا ہے۔ ۴۷۹

اگر پسر زید نے زوجہ عمرو کی چھاتی تھامنہ میں لے لی اس وقت دودھ ہونا معلوم نہیں تو اس لڑکے کا عمرو کی لڑکی سے نکاح ہو گا یا نہیں۔ ۴۸۲

ثبوت رضاعت کے لئے ضروری ہے کہ جوف صبی میں دودھ کا قطرہ منہ یا ناک کے راستے جانا معلوم ہو محض چھاتی دبانے سے رضاعت ثابت نہ ہوگی۔ ۴۸۲

جس مرد کی طرف دودھ منسوب ہے وہ رضع کا باپ، اس کی اولاد رضع کے بھائی بہن، اس کے بھائی رضع کے چچے ۴۷۸ اور اس کی بہنیں رضع کی پھوپھیاں ہوں گی جبکہ رضع کی اولاد اس مرد کی اولاد ہوگی۔

رضع و مرضعہ کی اولادوں کے درمیان ۴۹۱ نکاح کے حرام ہونے پر تین نصوص۔

رضاعی بھائی کی بیٹی حرام ہے۔ ۴۹۲

رضع کی تمام اولاد پر مرضعہ کی تمام ۴۹۳ اولاد حرام ہے۔

رضع کی بیوی مرضعہ کے شوہر پر حرام ۴۹۳ ہے۔

دودھ اترنے کے لئے کوئی مدت نہیں قوت مزاج و کثرت خون سے کنواری کو دودھ ۴۸۲ اتر سکتا ہے۔

ہندہ نے اپنے ابن الابن زید کو دودھ پلایا ہندہ کی نواسی سے زید کا نکاح ہو سکتا ۳۱۱ ہے۔

ہندہ نے زینب کا دودھ پیا ہندہ کے بیٹے پر ۳۳۹ زینب کی دختر حرام ہے۔

لیلیٰ و سلمیٰ رضاعی بہنیں ہیں زید نے لیلیٰ سے نکاح کیا ہے زید کے پسر عمرو کا ۴۴۰ نکاح سلمیٰ سے جائز ہے۔

زید نے ہندہ سے نکاح کیا، ہندہ سے حسن و حسین پیدا ہوئے پھر بعد ہندہ حفصہ سے نکاح کیا، حفصہ نے اپنی بیٹی کے ساتھ ۴۴۷ حسین کے بیٹے بکر کو دودھ پلایا تو بکر کا نکاح زاہدہ بنت حسن سے جائز ہے یا نہیں،

کیا زید کی حقیقی بہن کی رضاعی بہن زید
۴۴۲ کے نکاح میں آسکتی ہے۔

فقیرے نے بیبا کا دودھ حفیظن کے ساتھ پیا
پھر بیبا کے فہمین ہوئی فقیرے کا نکاح ۴۶۰
فہمین سے کیسا ہے۔

رضع کی بیٹیاں اور نواسیاں مرضعہ کے
۴۹۳ شوہر اور اس کے بیٹوں پر حرام ہیں۔

دودھ کا چچا بھی چچا ہے ان سے پردہ کی
۴۹۳ حاجت نہیں۔

Volume 11 Fatawa Razawiya

493 | Explanation of the foster-paternal uncle. | 493 | Divorce will occur judicially (qaza'an) due to a false admission of divorce, but it will not be so in the sight of Allah. | 123 493 | The daughter of the mother's foster son is a niece and a Mahram (prohibited for marriage). | 493 | A husband had given one divorce; someone asked how many divorces he had given, he said three. Religiously (internally) it is one, but judicially it is three. | 124 493 | Just as the foster offspring are paternal/maternal grandchildren of the wet-nurse by definitive consensus, similarly by the consensus of the four Imams and all jurists, they are also grandchildren of the wet-nurse's husband. | 493 | If 'Anti Taaliq' (You are divorced) is said without intention, divorce will still take place. | 128 494 | The general rule for foster relationships is that four types of women become prohibited through it. | 494 | And if from 'Anti Taaliq', the intention was 'freedom from bond' or giving news of a previous divorce (whether he had already given it or not), in all these cases, religiously the divorce will not occur. | 128 510 | Zaid drank Zainab's milk along with Hindah; the ruling regarding Zaid's marriage to Zainab's third daughter. | 510 | A man said to a woman, 'You are not my wife,' and by this, he intended divorce, then divorce will take place. This would mean: 'You are not my wife because I have already divorced you.' | 135 Chapter: Dealing with Women (Ishrat-un-Nisa) | | | If someone says to his wife, 'I did not marry her,' and intends divorce by this, then divorce will not take place because this is a sheer lie, the correction of which is impossible. | 135 629 | It is obligatory to treat women well according to the command of the Quran. | 629 | If a person says, 'Whichever woman I marry is divorced,' and then says to another person, 'I wish you could arrange my marriage with such-and-such woman,' and that person does so, he will not be a breaker of oath and divorce will not occur because he did not perform the marriage himself. | 164 629 | Keep women where you yourselves live, according to your means. | 629 | If a marriage was performed on the condition that 'I will divorce after three or four months,' then giving divorce is not mandatory. | 213 629 | Do not harm women by making things difficult for them. | 629 | Divorce occurs even in a state of intoxication. | 228 629 | Leaving a woman in suspense (Ma'allaqa) is prohibited according to the command of the Quran. | 629 | If someone who doesn't know Persian or Arabic was taught the words of divorce in Persian or Arabic without being told the meaning, and he said these words for a woman out of ignorance, then in the sight of Allah, divorce will not occur. | 229 Topic: Divorce | | | |

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

493 | रज़ाई (दूध का रिश्ता) चचा की व्याख्या। | 493 | तलाक के झूठे इक़रार से क़ानूनी तौर पर (क़ज़ाअन) तलाक हो जाएगी, अल्लाह के नज़दीक नहीं होगी। | 123 493 | माँ के रज़ाई बेटे की बेटी, भतीजी और महरम है। | 493 | पति ने एक तलाक दी थी, किसी ने पूछा कि तुमने कितनी तलाकें दी हैं, उसने कहा तीन, तो दीयानतन (धार्मिक रूप से) एक है और क़ज़ाअन (न्यायिक रूप से) तीन। | 124 493 | जिस तरह रज़ाई औलाद दाई की पोता-पोती, नवासा-नवासी कतई इज्मा से है, वैसे ही चारों इमामों और तमाम फ़क़ीहों के इज्मा से वे दाई के पति के भी पोते और नवासे हैं। | 493 | अगर बिना नियत के'अंति तालिक़' (तू तलाकशुदा है) कहा तो तलाक हो जाएगी। | 128 494 | दूध के रिश्तों का सामान्य नियम यह है कि इससे चार प्रकार की औरतें हराम हो जाती हैं। | 494 | और अगर 'अंति तालिक़' से बंधन से मुक्ति या पिछली तलाक की खबर देने की नियत की, चाहे पहले तलाक दे चुका हो या न दी हो, बहरहाल इन सूरतों में दीयानतन तलाक न होगी। | 128 510 | ज़ैद ने हंदह के साथ ज़ैनब का दूध पिया; ज़ैनब की तीसरी लड़की से ज़ैद के निकाह का हुक्म। | 510 | मर्द ने औरत से कहा 'तू मेरी बीवी नहीं' और इससे उसने तलाक की नियत की तो तलाक हो जाएगी और इसका मतलब यह होगा कि 'तू मेरी बीवी नहीं क्योंकि मैं तुझे तलाक दे चुका हूँ।' | 135 अध्याय: औरतों के साथ व्यवहार (इशरत-उन-निसा) | | | अगर कोई अपनी बीवी से कहे 'मैंने इससे निकाह नहीं किया' और इससे तलाक की नियत करे तो तलाक नहीं होगी क्योंकि यह सरासर झूठ है जिसकी तसहीह (सुधार) मुमकिन नहीं। | 135 629 | औरतों से क़ुरआन के हुक्म के अनुसार नेक बर्ताव करना लाज़िम है। | 629 | अगर कोई व्यक्ति कहे 'जिस औरत से मैं निकाह करूँ उसे तलाक,' फिर किसी व्यक्ति से कहा 'काश तुम फ़लाँ औरत से मेरा निकाह करा दो,' उसने कर दिया तो वह हनिस (शपथ तोड़ने वाला) नहीं होगा और तलाक वाक़े नहीं होगी क्योंकि उसने खुद निकाह नहीं किया। | 164 629 | औरतों को हैसियत के मुताबिक वहीं रखो जहाँ खुद रहो। | 629 | अगर इस शर्त पर निकाह किया कि तीन-चार महीने बाद तलाक दे दूँगा, तो तलाक देना लाज़िम नहीं। | 213 629 | औरतों को नुकसान न पहुँचाओ कि उन पर तंगी करो। | 629 | नशे में तलाक हो जाती है। | 228 629 | औरत को मुअल्लक़ा (अधर में लटका हुआ) छोड़ना क़ुरआन के हुक्म से मना है। | 629 | फ़ारसी या अरबी न जानने वाले को किसी ने तलाक के शब्द फ़ारसी या अरबी में सिखाए और अर्थ नहीं बताया, उसने ये शब्द अनजाने में औरत के लिए कहे तो अल्लाह के नज़दीक तलाक नहीं होगी। | 229 विषय: तलाक | | | |

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

۴۹۳ | رضاعی چچا کی تفسیر۔ | ۴۹۳ | طلاق کے جھوٹے اقرار سے قضائً طلاق ہو جائیگی عند اللہ نہ ہوگی۔ | ۱۲۳ ۴۹۳ | ماں کے رضاعی بیٹے کی بیٹی ، بھتیجی اور محرم ہے۔ | ۴۹۳ | شوہر نے ایک طلاق دی تھی کسی نے پوچھا کہ تو نے کتنی طلاقیں دی ہیں ، اس نے کہا تین ، تو دیانتاً ایک ہے اور قضائً تین | ۱۲۴ ۴۹۳ | اولاد رضع جس طرح مرضعہ کی پوتا پوتی ، نواسا نواسی باجماع قطعی ہے یونہی باجماع ائمہ اربعہ و جملہ فقہاء وہ شوہر مرضعہ کے بھی پوتے ہیں اور نواسے ہیں۔ | ۴۹۳ | اگر بے نیت "انت طالق" کہا طلاق ہو جائے گی | ۱۲۸ ۴۹۴ | دودھ کے رشتوں کا قاعدہ کلیہ یہ ہے کہ اس سے چار قسم کی عورتیں حرام ہوتی ہیں۔ | ۴۹۴ | اور اگر "انت طالق" سے "طالق عن الوثاق" یا طلاق سابق سے خبر دینے کی نیت کی خواہ پہلے طلاق دے چکا ہو یا نہ دی ہو، بہر حال ان صورتوں میں دیانتاً طلاق نہ ہوگی۔ | ۱۲۸ ۵۱۰ | زید نے زینب کا دودھ ہندہ کے ساتھ پیا زینب کی تیسری لڑکی سے زید کے نکاح کا حکم۔ | ۵۱۰ | مرد نے عورت سے کہا تو میری بی بی نہیں اور اس سے اس نے طلاق کی نیت کی تو طلاق ہو جائے گی اور اس کے یہ معنی ٹھہریں گے کہ تو میری بی بی نہیں اس لئے کہ میں تجھے طلاق دے چکا ہوں۔ | ۱۳۵ عشرۃ النساء | | | اگر کوئی اپنی بی بی کو کہے میں نے اس سے نکاح نہیں کیا اور اس سے نیت طلاق کی کرے تو طلاق نہ ہوگی کہ یہ کذب محض ہے جس کی تصحیح نا ممکن ہے۔ | ۱۳۵ ۶۲۹ | عورتوں سے بحکم قرآن نیک برتاؤ کرنا لازم۔ | ۶۲۹ | اگر کوئی شخص کہے کہ جس عورت سے میں نکاح کروں اسے طلاق، پھر کسی شخص سے کہا کہ کاش تو فلاں عورت سے میرا نکاح کردے۔ اس نے کردیا تو حانث نہ ہوگا اور طلاق واقع نہ ہوگی کہ اس نے خود نکاح نہیں کیا۔ | ۱۶۴ ۶۲۹ | عورتوں کو مقدور بھر وہاں رکھو جہاں خود رہو۔ | ۶۲۹

| اگر اس شرط پر نکاح کیا کہ تین چار ماہ بعد طلاق دے دوں گا تو طلاق دینا لازم نہیں۔ | ۲۱۳ | ۶۲۹ | عورتوں کو ضرر نہ پہنچاؤ کہ ان پر تنگی کرو۔ | ۶۲۹ | نشہ میں طلاق ہو جاتی ہے۔ | ۲۲۸ ۶۲۹ | عورت کو معلقہ کرنا بحکم قرآن ممنوع ہے۔ | ۶۲۹ | فارسی یا عربی نہ جاننے والے کو کسی نے الفاظ طلاق فارسی یا عربی میں سکھائے اور معنی نہ بتائے اس نے یہ الفاظ لاعلمی سے عورت کے لئے کہے تو عند اللہ طلاق نہ ہوگی۔ | ۲۲۹ طلاق | | | |

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Divorce given in jest or fun is valid both legally and religiously in every way.

230 Khula (Divorce initiated by wife)

Giving divorce without any reason or cause is prohibited.

287 If a man taught and made a woman say such words that result in Khula in exchange for dower and maintenance during the waiting period (iddat), so that the woman is no longer entitled to dower and maintenance, and the woman performs Khula in this manner, then the Khula will not be valid.

If three divorces are given in one word to a woman with whom marriage has not been consummated, it becomes irrevocable (mughallazah). If given in separate words, it does not become irrevocable.

289 Hinda, the mother, married off Razia to Hamid while she was a minor, but she was not sent to live with him. After four years, Razia has now reached puberty. During this time, Khalid took another woman; Khalid's lifestyle, habits, and character are disagreeable to Razia and Hinda. There is complete hatred, and she doesn't want any connection with Khalid, refuses him, and wants Khula. What should Razia do to sever ties with Khalid? And will this marriage be considered an 'unauthorized contract' (aqd-e-fuzuli) or not?

The husband has not given a divorce but wants to give divorce after taking some money. Ruling on marriage without divorce for such a woman and ruling on giving divorce after taking something.

323 **Innin (Impotence)**

A woman leaving the house without the husband's permission does not end the marriage.

313 Is the marriage of an 'Innin' (impotent man) valid or not?

317

Divorce given in jest or fun is valid both legally and religiously in every way.

Marriage with a sister-in-law (wife's sister) or adultery does not result in the wife being divorced.

A boy heard that his father committed adultery with his wife. In anger, he beat his wife and divorced her. The wife filed a lawsuit for dower and a decree was issued. The husband's lawyer says the divorce was given in anger so it didn't happen, while the wife's lawyer says it did. Who is truthful?

A boy and girl were married as minors. Now the boy or his heirs have no information about the girl. The girl is knowledgeable in three fields while the boy is completely ignorant. The girl now says we will first divorce the husband and then remarry, what is the instruction?

230 Khula (Divorce initiated by wife)

It is permissible to appoint arbitrators (tahkeem/panch) in cases of impotence.

505 The procedure for separation between an 'Innin' and his wife.

A father married off his minor daughter to someone of the same community. When the husband asked for her to be sent to him, the father refused. A lawsuit was filed, and the reply was that the son-in-law is impotent, sings and plays music among eunuchs. If doctors declare
660 him a man, there is no objection. While a criminal case was pending, the girl's father filed a civil suit for annulment of marriage, claiming he is impotent and has made his condition shameful by acts with eunuchs, and is no longer part of my community. If these allegations are proven, will the marriage be annulled?

फ़तावा रज़विया, खंड 11

मज़ाक और दिल्लगी में तलाक देने से कानूनी और धार्मिक रूप से हर तरह से तलाक हो जाता है।

230 खुला

बिना किसी कारण के तलाक देना मना है।

287 यदि किसी पुरुष ने स्त्री को ऐसे शब्द सिखाए और कहलवाए जिससे मेहर और इद्दत के गुज़ारे के बदले 'खुला' हो जाए, ताकि स्त्री मेहर और इद्दत के गुज़ारे की भी हकदार न रहे, और स्त्री इस तरह खुला करे, तो वह खुला सही नहीं होगा।

यदि गैर-मदखूला (जिसके साथ विवाह संपन्न न हुआ हो) स्त्री को एक ही शब्द में तीन तलाक दिए जाएँ तो वह मुग़ल्ज़ह (अटल) हो जाता है, और यदि अलग-अलग शब्दों में दिए जाएँ तो मुग़ल्ज़ह नहीं होता।

289 हंदा माँ ने रज़िया का नाबालिग़ी की स्थिति में हामिद से निकाह कर दिया, लेकिन उसे विदा नहीं किया था। चार साल बाद अब रज़िया बालिग़ हुई है। इस बीच खालिद ने दूसरी औरत रख ली। खालिद के तौर-तरीके और चाल-चलन रज़िया और हंदा को नापसंद हैं। खालिद से उसे सख्त नफरत है और वह उससे कोई संबंध नहीं चाहती, मना करती है और खुला चाहती है। रज़िया खालिद से संबंध तोड़ने के लिए क्या करे? और क्या यह निकाह 'अक़्द-ए-फुज़ूली' (अनधिकृत अनुबंध) माना जाएगा या नहीं?

पति ने तलाक नहीं दिया है, बल्कि कुछ धन लेकर तलाक देना चाहता है। ऐसी स्त्री के लिए बिना तलाक के निकाह का हुक्म और कुछ लेकर तलाक देने का हुक्म।

323 **उन्नीन (नपुंसकता)**

313 क्या 'उन्नीन' (नपुंसक) का निकाह सही है या नहीं?

मज़ाक और दिल्लगी में तलाक देने से कानूनी और धार्मिक रूप से हर तरह से तलाक हो जाता है।

230 खुला

पति की अनुमति के बिना घर से निकलने पर औरत निकाह से बाहर नहीं होती।

साली से निकाह या ज़िना (व्यभिचार) से पत्नी तलाकशुदा नहीं होती।

317 नपुंसकता के मामलों में 'तहमीक' यानी पंच नियुक्त करना जायज़ है।

लड़के ने सुना कि उसके बाप ने उसकी पत्नी के साथ ज़िना किया। इस पर गुस्से में उसने पत्नी को मारा और तलाक दे दिया। पत्नी ने मेहर का दावा किया और डिक्री हो गई। पति का वकील कहता है कि तलाक गुस्से में दिया गया था इसलिए नहीं हुआ, जबकि पत्नी का वकील कहता है कि हो गया। कौन सच्चा है?

505 'उन्नीन' और उसकी पत्नी के बीच अलगाव की स्थिति।

लड़के और लड़की का निकाह नाबालिग़ी में हुआ था। अब लड़का या उसके वारिस लड़की की कोई खबर नहीं रखते। लड़की तीन तरह के ज्ञान से परिचित है और लड़का निरा जाहिल है। लड़की अब कहती है कि हम पहले पति को तलाक

660 पिता ने अपनी नाबालिग़ बेटी का निकाह अपनी ही बिरादरी के व्यक्ति से किया। पति ने विदाई चाही तो पिता ने मना कर दिया। मुक़दमा हुआ तो जवाब दिया कि दामाद नपुंसक है और हिजड़ों के साथ नाचता-गाता है। अगर डॉक्टर उसे पुरुष बता दें तो कोई आपत्ति नहीं। अभी फौजदारी मामला चल ही रहा था कि लड़की के पिता ने दीवानी अदालत में निकाह रद्द करने का दावा कर दिया कि वह नपुंसक है और हिजड़ों के साथ रहकर

मज़ाक और दिल्लगी में तलाक देने से कानूनी और धार्मिक रूप से हर तरह से तलाक हो जाता है।

230 खुला

देंगे और फिर दूसरा निकाह करेंगे, इस पर क्या मार्गदर्शन है?

अपनी हालत शर्मनाक बना ली है, वह मेरी बिरादरी का नहीं रहा। यदि ये आरोप सिद्ध हो जाएँ तो क्या निकाह रद्द कर दिया जाएगा?

पृष्ठ 79 / 739

فتاویٰ رضویہ ، جلد یاز دہم

مذاق اور دل لگی میں طلاق دینے

سے قضاءً اور دیانۃً ہر طرح طلاق ۲۳۰ خلع

واقع ہو جاتی ہے۔

بلا وجہ بے سبب طلاق دینا منع ہے۔ ۲۸۷

اگر عورت کو مرد نے ایسے الفاظ سکھائے اور کہلوائے جس سے مہر و نفقہ عدت کے بدلے خلع ہو جائے کہ عورت مہر و نفقہ عدت کی بھی مستحق نہ رہے اور عورت یوں خلع کرے تو خلع صحیح نہ ہو گا۔

غیر مدخولہ بہا کو اگر ایک لفظ میں تین طلاقیں دے مغلظہ ہو جاتی ہے ۲۸۹

ہندہ ماں نے رضیہ کا بحالت نابالغی حامد سے عقد کر دیا رخصت نہ کی تھی چار سال بعد اب رضیہ بالغہ ہوئی اس عرصہ میں خالد نے دوسری عورت کو رکھ لیا خالد کی وضع و اطوار چال چلن رضیہ اور ہندہ کو ناگوار ہیں کمال نفرت ہے خالد سے تعلق نہیں چاہتی

اور اگر متفرق لفظوں سے دے تو مغلظہ نہیں ہوتی۔

انکار کرتی ہے اور خلع چاہتی ہے رضیہ کیا کرے جو خالد سے قطع تعلق ہو۔ اور یہ عقد عقد فضولی قرار پائے گا یا نہیں۔

شوہر نے طلاق نہیں دی ہے کچھ

مال لے کر طلاق دینا چاہتا ہے ۳۲۳ **عنین**

ایسی عورت سے بے طلاق نکاح کا

مذاق اور دل لگی میں طلاق دینے

سے قضاءً اور دیانۃً ہر طرح طلاق ۲۳۰ خلع

واقع ہو جاتی ہے۔

حکم اور کچھ لے کر طلاق دینے کا

حکم۔

عورت بے اذن شوہر گھر سے

نکلے اس سے نکاح سے نہیں ۳۱۳ عنین (نامرد) کا نکاح درست ہے یا نہیں۔

نکلتی۔

سالی سے نکاح یا زنا سے عورت

مطلقہ نہیں ہوتی۔ ۳۱۷ عنین میں تحکیم یعنی پنچ بنا لینا جائز ہے۔

لڑکے نے سنا کہ باپ نے اس کی

بی بی سے زنا کیا اس پر غصہ میں

بی بی کو مارا اور طلاق دے دی

زوجہ نے مہر کی نالش کر دی

ڈگری ہو گئی، وکیل زوج کہتا ہے ۵۰۵ عنین اور اس کی زوجہ میں تفریق کی صورت۔

طلاق غصہ میں دی اس لئے نہیں

ہوئی اور وکیل زوجہ کہتا ہے ہو

گئی، کون سچا ہے۔

لڑکے لڑکی کا بحالت نابالغی نکاح باپ نے نابالغہ کا نکاح اپنے ہم قوم سے کیا۔ شوہر نے

ہوا تھا اب لڑکا یا اس کے وارث ۶۶۰ رخصت چاہی تو انکار کیا، نالش ہوئی تو جواب دیا کہ

مذاق اور دل لگی میں طلاق دینے

سے قضاءً اور دیانۃً ہر طرح طلاق ۲۳۰ خلع

واقع ہو جاتی ہے۔

لڑکی کی خبر کسی قسم کی نہیں رکھتے۔ لڑکی تین طرح کے علم سے واقف ہے اور لڑکا نرا جاہل، لڑکی اب کہتی ہے ہم اول شوہر کو طلاق دے کر نکاح ثانی کریں گے، کیا ارشاد ہے۔

داماد نامرد ہے ہجڑوں میں گاتا بجاتا ہے اگر ڈاکٹر اسے مرد بتائیں تو عذر نہیں۔ ابھی فوجداری میں مقدمہ دائر تھا کہ لڑکی کے باپ نے دیوانی میں دعویٰ فسخ نکاح کر دیا کہ وہ نامرد ہے ہجڑوں کے افعال سے حالت شرمناک کر لی ہے میری برادری کا نہ رہا۔ اگر یہ الزام ثابت ہوں تو کیا نکاح فسخ کیا جائے گا۔

سفحہ 79 / 739

611 | For separation due to impotence (unayn), a claim from the adult wife is necessary; the judge will separate upon her request. If she is a minor, her puberty will be awaited, as she might accept the impotent husband after reaching adulthood. | 341 | Children born six months after the time of intercourse in an irregular (fasid) marriage are of established lineage and entitled to inheritance by consensus. 612 | If a woman finds her husband to be impotent, the judge shall grant the husband a one-lunar-year grace period (for treatment). | 365 | If after the prohibition due to affinity (hurmat-e-musaharah), the husband has intercourse before separation, it is forbidden but not adultery (zina), and children born from this intercourse will be of sound lineage because the marriage remains. **Mafqood (Missing Person)** | 331 | If a husband is missing and both husband and wife are Hanafi, how long should the woman wait before remarrying? | 447 | A Sunni man performed a Shia-style marriage contract (sigha) with a Shia woman; according to the Ahl-e-Sunnat, the marriage did not take place. If both remain on their respective faiths, what is the status of the children? Mas'ala: Missing wife. | 447 | Zaid kept Khalid's married wife, Hindah, as his own; Hindah had several children with Zaid. Zaid wants to marry off a daughter, but people say they are illegitimate; what is the ruling? 412 & 448 | Mas'ala: Missing wife whose whereabouts are unknown. | 730 | If a non-Sayyid marries a Sayyidah, will the offspring be Sayyid or not? | | 731 | If the father is noble (sharif) and the mother was a prostitute who repented and entered into marriage with the father, there is no blemish on the lineage of the children born to them. **Iddah (Waiting Period)** | **Nafaqah (Maintenance)** 269 | The waiting period (iddah) becomes mandatory for a woman from the day of divorce. | 298 | If a marriage is contracted on the condition that no maintenance shall be due, it will still necessarily be due in its prescribed circumstances. 269 | If a woman is divorced before consummation, no waiting period (iddah) is required at all. | **Fidya (Ransom) Nasab (Lineage)** | | | 221 | One who lacks the strength to fast should feed one poor person for each missed fast. 242 | Legally, lineage is from the father; if he is noble, the son is also noble. | |

६११ | नपुंसकता (उनैन) के आधार पर अलगाव के लिए वयस्क पत्नी का दावा अनिवार्य है; न्यायाधीश उसके अनुरोध पर अलगाव करेगा। यदि वह नाबालिग है, तो उसके वयस्क होने की प्रतीक्षा की जाएगी, क्योंकि संभव है कि वयस्क होने के बाद वह नपुंसक पति को स्वीकार कर ले। | ३४१ | जो संतान अनियमित (फ़ासिद) निकाह में संभोग के समय से छह महीने बाद पैदा हुई हो, वह सर्वसम्मति से वैध वंश की मानी जाएगी और उत्तराधिकार की हकदार होगी। ६१२ | यदि किसी महिला को अपना पति नपुंसक मिलता है, तो न्यायाधीश पति को (उपचार के लिए) एक चंद्र वर्ष की मोहलत देगा। | ३६५ | वैवाहिक संबंधों (हुर्मत-ए-मुसाहरह) के कारण प्रतिबंध के बाद, यदि पति अलगाव से पहले संभोग करता है, तो यह वर्जित है लेकिन व्यभिचार (ज़िना) नहीं, और इस संभोग से पैदा होने वाली संतान वैध वंश की होगी क्योंकि निकाह बरकरार है। **मफ़क़ूद (लापता)** | ३३१ | जिसका पति लापता हो और पति-पत्नी दोनों हनफी हों, तो महिला दूसरे विवाह के लिए कितने समय तक प्रतीक्षा करे? | ४४७ | एक सुन्नी ने एक शिया महिला से शिया रीति (सीग़ा) के अनुसार निकाह किया; अहले सुन्नत के अनुसार निकाह नहीं हुआ। यदि दोनों अपने-अपने धर्म पर कायम रहें, तो संतान कैसी होगी? मसला: लापता महिला। | ४४७ | ज़ैद ने खालिद की विवाहित पत्नी हिंदा को अपने पास रख लिया, हिंदा से ज़ैद को कई संतानें हुईं। ज़ैद अपनी बेटी की शादी करना चाहता है, लोग कहते हैं कि वे नाजायज हैं, क्या हुक्म है? ४१२ और ४४८ | मसला: लापता-उल-खबर महिला। | ७३० | यदि किसी गैर-सैयद ने सैयदा से निकाह किया, तो संतान सैयद होगी या नहीं? | | ७३१ | यदि पिता शरीफ (कुलीन) हो और माँ तवायफ हो जिसने तौबा करके उसके पिता से निकाह किया हो, तो उनसे पैदा होने वाली संतान के वंश पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। **इद्दत (प्रतीक्षा अवधि)** | **नफ़क़ा (भरण-पोषण)** २६९ | महिला पर तलाक के दिन से इद्दत अनिवार्य हो जाती है। | २९८ | यदि इस शर्त पर निकाह किया जाए कि कोई नान-नफ़क़ा (खर्चा) वाजिब नहीं होगा, तब भी वह अपनी अनिवार्य परिस्थितियों में अवश्य वाजिब होगा। २६९ | यदि गैर-मधकूला (जिसके साथ संभोग न हुआ हो) को तलाक दिया जाए, तो उस पर इद्दत बिल्कुल नहीं है। | **फ़िदिया (बदला) नसब (वंश)** | | | २२१ | जो रोज़ा रखने की शक्ति न रखता हो, वह हर रोज़े के बदले एक गरीब (मिस्कीन) को खाना खिलाए। २४२ | शरीयत के अनुसार वंश पिता से है, यदि वह शरीफ है तो बेटा भी शरीफ है। | |

۶۱۱ | عنین سے تفریق کے لئے عورت بالغہ کا دعوی ضرور ہے قاضی اس کی طلب پر تفریق کرے گا۔ اگر صغیرہ ہوگی تو اس کے بلوغ کا انتظار کیا جائے گا کیونکہ ممکن ہے وہ بالغہ ہو کر عنین یا محبوب سے راضی ہو۔ | ۳۴۱ | جو اولاد نکاح فاسد میں وقت وطی سے چھ مہینے بعد پیدا ہوئی بالاجمع ثابت النسب اور مستحق ارث ہے۔ ۶۱۲ | عورت نے شوہر کو عنین پایا تو قاضی شوہر کو ایک سال قمری کی مہلت (بغرض علاج) دے گا۔ | ۳۶۵ | حرمت مصاہرہ کے بعد متارکہ سے قبل اگر شوہر وطی کرے تو حرام ہے مگر زنا نہیں اور اس وطی سے پیدا ہونے والی اولاد صحیح النسب ہوگی کیونکہ نکاح باقی ہے۔ **مفقود** | ۳۳۱ | جس کا شوہر مفقود ہو اور مرد و عورت دونوں حنفی ہوں تو عورت دوسرے نکاح کے لئے کس مدت تک انتظار کرے۔ | ۴۴۷ | سنی نے رافضیہ سے بطور شیعہ صیغہ پڑھایا بطریق اہلسنت نکاح نہ ہوا دونوں اپنے مذہب پر قائم رہے اولاد کیسی ہوئی۔ مسئلہ زن مفقود۔ | ۴۴۷ | ہندہ منکوحہ خالد کو زید نے رکھ لیا، زید کے ہندہ سے کئی اولادیں ہوئیں، زید لڑکی کی شادی کرنا چاہتا ہے، لوگ کہتے ہیں حرامی ہیں، کیا حکم ہے۔ ۴۱۲ و ۴۴۸ | مسئلہ زن مفقود الخبر۔ | ۷۳۰ | غیر سید نے سیدہ سے نکاح کیا، اولاد سید ہوگی یا نہیں۔ | | ۷۳۱ | باپ شریف ہو اور ماں طوائف جو توبہ کرکے اس کے باپ کے نکاح میں آئی ہو تو اس سے اولاد کے نسب پر کوئی حرف نہیں آتا۔ **عدت** | **نفقہ** ۲۶۹ | عورت پر روز طلاق سے عدت لازم ہوتی ہے۔ | ۲۹۸ | اگر اس شرط پر نکاح کیا جائے کہ نان و نفقہ کچھ واجب نہ ہوگا جب بھی اپنی صورت وجوب میں ضرور واجب ہوگا۔ ۲۶۹ | غیر مدخولہ کو طلاق دی جائے تو اس پر عدت اصلاً نہیں۔ | **فدیہ نسب** | | ۲۲۱ | جو روزے کی طاقت نہ رکھے

وہ ہر روزے کے بدل ایک مسکین کو کھانا دے۔ ۲۴۲ | شرعاً نسب باپ سے ہے وہ شریف ہے تو بیٹا بھی شریف۔ | |

Fatawa-e-Razvia | Volume 11

Page 81 of 739

- 222 | What should a person do who is neither able to fast nor capable of giving fidiya (expiation)? | 203
- | Contracts that are subject to annulment, such as sale and lease, if made under compulsion and duress, shall be annulled. | 203
- Hermaphrodite | |
- | Irrevocable contracts like divorce, manumission, marriage, tadbir (emancipation after owner's death), and istila (taking possession) etc., if done under duress, are binding. | 203
- The ruling on marriage and dower for a woman who only has a urinary outlet and no signs of male or female organs except for visible breasts. | 192 | If the guardian conducts the marriage under compulsion and duress, it will be valid. | 628
- The appearance of breasts reveals a problematic hermaphrodite to be female, and the ambiguity is removed. | 193 | Interpretation |
- Fetus | | The Quranic verse "The adulteress, none shall marry her but an adulterer or a polytheist" is abrogated in ruling, or marriage here refers to intercourse. | 235
- There is no guardianship over a fetus. | 261 | The Hadith "A woman should not be married along with her paternal or maternal aunt" is an interpretation of the verse "and that you join two sisters in marriage," meaning every relation of kinship through 'akhiyyat' (brotherhood/sisterhood) is intended. | 472
- Wala (Allegiance) | | A stepmother is not included in the word "mothers". | 312
- The wala of a person belongs to the one at whose hands he became a Muslim. | 721 | After "Prohibited to you are your mothers," "And marry not those women whom your fathers married" was said for this reason. | 312
- Wala is a relationship like the relationship of lineage. | 721 | Interpretation of the verse "and your step-daughters under your guardianship". | 354
- Compulsion | | In the Quranic verse, the description "under your guardianship" is not a condition for prohibition by consensus. | 354
- There is no compulsion on fulfilling a promise, i.e., a judge cannot force it; a promise that is contingent is religiously binding, but in one opinion, compulsion can be applied for fulfillment of promise in bailment and 'Bai-al-Wafa'. | 771 |

Female slaves are not included in "your women" and their daughters are not included in "your step-daughters". | 354

- Marriage under compulsion and duress takes place, but doing so is an injustice. | 202 | Interpretation of the verse "and the wives of your sons who are from your loins". | 354

फ़तावा-ए-रज़विया | जिल्द 11

पेज 81 of 739

- २४२ | वह क्या करे जो न रोज़ा रख सके और न ही फिदिया (हर्जाना) देने में सक्षम हो? | २०३
- | जो अनुबंध (अक़्द) रद्द किए जा सकते हैं जैसे कि खरीद-बिक्री और पट्टा (इजारा), यदि वे ज़बरदस्ती और दबाव में किए गए हों तो उन्हें रद्द कर दिया जाएगा। | २०३
- उभयलिंगी (ख़ुनसा) | |
- | वे अनुबंध जिन्हें रद्द नहीं किया जा सकता जैसे तलाक़, गुलामी से मुक्ति (अताक़), निकाह, तदबीर और इस्तिला आदि, यदि वे दबाव में भी किए गए हों तो वे अनिवार्य (लाज़िम) हैं। | २०३
- ऐसी महिला से निकाह और मेहर का हुक्म जिसके पास केवल पेशाब का मार्ग हो और कोई पुरुष या महिला अंग का चिन्ह न हो, सिवाय इसके कि स्तन दिखाई दें। | १९२ | यदि वली (संरक्षक) ज़बरदस्ती और दबाव की स्थिति में निकाह कर दे, तो वह हो जाएगा। | ४२८
- स्तनों के दिखाई देने से एक मुश्किल उभयलिंगी का महिला होना स्पष्ट हो जाता है और संशय दूर हो जाता है। | १९३ | व्याख्या |
- भ्रूण (जनीन) | | आयत-ए-करीमा "व्यभिचारी महिला से केवल व्यभिचारी पुरुष या मुशरिक ही निकाह करता है" का हुक्म निरस्त हो चुका है, या यहाँ निकाह से तात्पर्य संभोग है। | २३५
- भ्रूण पर किसी का अधिकार (विलायत) नहीं है। | २४१ | हदीस "किसी महिला से उसकी बुआ या मौसी की मौजूदगी में निकाह न किया जाए" आयत-ए-करीमा "और यह कि तुम दो बहनों को एक साथ निकाह में न रखो" की व्याख्या है कि 'अख़ियत' (भाईचारे/बहनचारे) से हर प्रकार का महरम का रिश्ता अभिप्रेत है। | ४५२
- विला (वफादारी/संरक्षण) | | सौतेली माँ "अम्माहात" (माताओं) शब्द में शामिल नहीं है। | ३१२
- जो व्यक्ति जिसके हाथ पर मुसलमान हुआ, उसकी विला उसी के लिए है। | ७२१ | "तुम पर तुम्हारी माताएँ हराम की गई हैं" के बाद "और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे पिताओं ने निकाह किया" इसीलिए फरमाया गया। | ३१२
- विला भी नस्बी (रक्त) रिश्ते के समान एक रिश्ता है। | ७२१ | आयत "और तुम्हारी सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारी गोद में हैं" की व्याख्या। | ३५४

- दबाव (इकराह) | | कुरान की आयत में "जो तुम्हारी गोद में हैं" शब्द का वर्णन आम सहमति (इजमा) के अनुसार हराम होने के लिए शर्त नहीं है। | ३७४
- वादे को पूरा करने पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है, यानी काज़ी मजबूर नहीं कर सकता। वह वादा जो किसी चीज़ पर निर्भर हो, उसका धार्मिक रूप से (दियानतन) पालन करना आवश्यक है, लेकिन एक मत के अनुसार कफ़ालत और बै-अल-वफ़ा में वादा पूरा करने पर ज़बरदस्ती की जा सकती है। | ७४१ | दासी महिलाएँ"तुम्हारी औरतों" में और उनकी बेटियाँ "तुम्हारी सौतेली बेटियों" में शामिल नहीं हैं। | ३७४
- ज़बरदस्ती और दबाव में भी निकाह हो जाता है, लेकिन ऐसा करना ज़ुल्म (अन्याय) है। | २०२ | आयत-ए-करीमा "और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुम्हारी अपनी नस्ल से हैं" की व्याख्या। | ३७४

• ۲۲۲ | جو روزہ نہ رکھ سکے نہ فدیہ دینے پر قادر ہو وہ کیا کرے۔ | ۲۰۳
• | جو عقد قابلِ فسخ ہیں جیسے بیع واجارہ اگر یہ جبر واکراہ سے ہوں تو فسخ کر دیا جائیگا۔ | ۲۰۳
• خُنثیٰ | |
• | ناقابل فسخ عقود جیسے طلاق، عتاق، نکاح، تدبیر اور استیلاء وغیرہ اگر اکراہ سے ہوں تو لازم ہیں۔ | ۲۰۳
• ایسی عورت سے نکاح و مہر کا حکم جس کے صرف مخرج بول ہو اور کوئی مردی و زنی کی علامت نہ ہو صرف پستان ظاہر ہوں۔ | ۱۹۲ | ولی اگر بحالت جبر واکراہ نکاح کردے ہو جائیگا۔ | ۶۲۸
• پستان ظاہر ہونے سے خنثی مشکل کا عورت ہونا معلوم ہوتا اور اشکال دفع ہو جاتا ہے۔ | ۱۹۳ | تفسیر |
• جنین | | آیت کریمہ "الزانیة لا ینکحها الا زان اومشرک" منسوخ الحکم ہے یا نکاح سے مراد یہاں جماع ہے۔ | ۲۳۵
• جنین پر کسی کی ولایت نہیں۔ | ۲۶۱ | حدیث "لا تنکح المرأة علی عمتها ولا علی خالتها" آیہ کریمہ "وان تجمعوا بین الاختین" کی تفسیر ہے کہ اخیّت سے ہر علاقہ محرمیت مراد ہے۔ | ۴۷۲
• ولاء | | سوتیلی ماں لفظ امہات میں داخل نہیں۔ | ۳۱۲

- جو شخص جس کے ہاتھ پر مسلمان ہوا اس کی ولاء اسی کے لئے ہے۔ | ۷۲۱ | "حرمت علیکم أمھتکم" کے بعد "ولا تنکحوا مانکح أباؤکم" اسی لئے فرمایا۔ | ۳۱۲
- ولاء ایک رشتہ ہے مثل رشتہ نسب کے۔ | ۷۲۱ | "وربائبکم التی فی حجورکم" الآیۃ کی تفسیر۔ | ۳۵۴
- اکراہ | | آیت قرآنی میں وصف "التی فی حجورکم" بالاجماع شرط حرمت نہیں۔ | ۳۵۴
- ایفائے وعدہ پر جبر نہیں یعنی قاضی مجبور نہیں کرسکتا، وہ وعدہ جو معلق ہوا اس کی وفا دیانۃً لازم ہے، مگر ایک قول میں کفالت اور بیع الوفاء میں وفائے وعدہ پر جبر کر سکتا ہے۔ | ۷۷۱ | کنیزیں "نساءکم" میں اور ان کی بیٹیاں "ربائبکم" میں داخل نہیں۔ | ۳۵۴
- نکاح بجبر واکراہ ہو جاتا ہے مگر ایسا کرنا ظلم ہے۔ | ۲۰۲ | آیت کریمہ "وحلائل ابنائکم الذین من اصلابکم" کی تفسیر۔ | ۳۵۴

- Page 355: What is meant by "Ummahatu nisa'ikum" (Mothers of your women)?
- Page 357: The Hadith "The forbidden does not make the permissible forbidden" is extremely weak, unreliable for argumentation, and discarded.
- Page 355: What is the meaning of 'Nikah' in the verse "And do not marry those [women] whom your fathers married"?
- Page 357: According to Imam Ahmad, this is neither the instruction of the Prophet (SAW) nor of the Mothers of the Believers (RA), but rather a saying of some judge of Iraq.
- Page 388: In the noble verse "And lawful for you are [all others] beyond these," 'halal' (lawful) means the absence of prohibition of intercourse, which is not incompatible with sin.
- Page 357: Statement regarding the chain of the aforementioned Hadith.
- Page 441: Four transmitted interpretations regarding the noble verse "The fornicatress shall not be married except by a fornicator or a polytheist."
- Page 363: Even if the weakness of this Hadith's chain is set aside, it is certainly not correct in its literal sense.
- **Hadith Benefits/Notes**:
- Page 363: Inevitably, there is no choice but to interpret the mentioned Hadith, for the forbidden, by virtue of being forbidden, does not make the permissible forbidden.
- Page 272: Does the noble verse "And lawful for you are [all others] beyond these" abrogate the Hadith "A woman should not be married along with her paternal aunt" etc., or not?
- Page 364: Even in this weak Hadith, there is no proof at all for the opponents of our school of thought.
- Page 272: The Hadith "A woman should not be married along with her paternal aunt or along with her maternal aunt" is a well-known authentic Hadith and it is not contrary to the Quran.
- Page 364: A few Hadiths supporting our school of thought.
- Page 273: The Hadith "My speech does not abrogate the speech of Allah" is purely baseless.
- Page 483: The Hadith "Allah has forbidden through suckling what He has forbidden through lineage" is famous and has been accepted by scholars since early Islam until now.

- Page 305: Meaning of the Hadith "There is no marriage except with a guardian and two just witnesses."
- Page 590: Who is meant by 'distant guardian' - agnate (asabah) or someone like an heir, even if from 'dhawi al-arham'? If 'asabah' is meant, then what is the answer to the Hadith in Muwatta Imam Muhammad where Mother of the Believers Aisha (RA) married off her niece, daughter of Abdur Rahman bin Abi Bakr (RA), to Abdullah bin Zubair? A paternal aunt is from 'dhawi al-arham'.
- Page 305: Is there a difference between khitbah (engagement) and nikah, what is the meaning of the Hadith "A proposal should not be made over the proposal of his brother," and is the deduction from it that engagement constitutes marriage correct or not?

- पृष्ठ ३५७: "उमहातु निसाइक़ुम" (तुम्हारी स्त्रियों की माताएँ) से क्या अभिप्राय है?
- पृष्ठ ३५७: हदीस "हराम चीज़ हलाल को हराम नहीं करती" अत्यंत कमज़ोर, तर्क के लिए अनुपयुक्त और त्याज्य है।
- पृष्ठ ३५७: आयत "और उन स्त्रियों से विवाह न करो जिनसे तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया था" में निकाह का क्या अर्थ है?
- पृष्ठ ३५७: इमाम अहमद के अनुसार, यह न तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का निर्देश है और न ही उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) का, बल्कि इराक़ के किसी काज़ी का कथन है।
- पृष्ठ ३८८: आयत "और इनके अतिरिक्त अन्य सभी तुम्हारे लिए हलाल हैं" में 'हलाल' का अर्थ संभोग की निषेधता का न होना है, जो पाप के विपरीत नहीं है।
- पृष्ठ ३५७: उपर्युक्त हदीस की सनद (शृंखला) का विवरण।
- पृष्ठ ४४१: आयत "व्यभिचारिणी से केवल व्यभिचारी या बहुदेववादी ही विवाह करता है" के संबंध में चार पारंपरिक व्याख्याएँ मौजूद हैं।
- पृष्ठ ३६३: यदि इस हदीस की सनद की कमज़ोरी को नज़रअंदाज़ भी कर दिया जाए, तो भी यह अपने शाब्दिक अर्थ में निश्चित रूप से सही नहीं है।
- **हदीस के लाभ/नोट्स**:
- पृष्ठ ३६३: अनिवार्य रूप से, उल्लेखित हदीस की व्याख्या करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि हराम होने के नाते हराम चीज़ हलाल को हराम नहीं बनाती।
- पृष्ठ २७२: क्या आयत "और इनके अतिरिक्त अन्य सभी तुम्हारे लिए हलाल हैं" हदीस "किसी स्त्री से उसकी बुआ के साथ विवाह न किया जाए" आदि को निरस्त करती है या नहीं?
- पृष्ठ ३६४: इस कमज़ोर हदीस में भी हमारे संप्रदाय के विरोधियों के लिए कोई प्रमाण नहीं है।
- पृष्ठ २७२: हदीस "किसी स्त्री से उसकी बुआ या उसकी मौसी के साथ विवाह न किया जाए" एक प्रसिद्ध प्रामाणिक हदीस है और यह कुरान के विपरीत नहीं है।
- पृष्ठ ३६४: हमारे संप्रदाय के समर्थन में कुछ हदीसें।
- पृष्ठ २७३: हदीस "मेरी बात अल्लाह की बात को निरस्त नहीं करती" पूरी तरह से निराधार है।

- पृष्ठ ४८३: हदीस "अल्लाह ने दूध के रिश्ते से वही हराम किया है जो उसने वंश के रिश्ते से हराम किया है" प्रसिद्ध है और इस्लाम के आरंभ से अब तक विद्वानों द्वारा स्वीकार की गई है।
- पृष्ठ ५०५: हदीस "अभिभावक और दो न्यायप्रिय गवाहों के बिना कोई निकाह नहीं" का अर्थ।
- पृष्ठ ५१०: 'दूर के अभिभावक' से क्या तात्पर्य है - असबा (पितृवंशीय) या उत्तराधिकारी जैसा, भले ही वह 'ज़वी अल-अरहाम' से हो? यदि असबा का अर्थ है, तो मुवत्ता इमाम मुहम्मद की उस हदीस का क्या उत्तर है जिसमें उम्मुल मोमिनीन आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अपनी भतीजी, अब्दुर रहमान बिन अबी बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की बेटी का निकाह अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर से कर दिया था? बुआ 'ज़वी अल-अरहाम' में से होती है।
- पृष्ठ ५०५: क्या खुतबा (मंगनी) और निकाह में कोई अंतर है, हदीस "अपने भाई के प्रस्ताव पर प्रस्ताव न दिया जाए" का क्या अर्थ है, और क्या इससे यह निष्कर्ष निकालना सही है कि मंगनी ही निकाह है या नहीं?

पृष्ठ ८२ का ७३९

- ۳۵۵: "امہات نسائکم" سے کیا مراد ہے۔
- ۳۵۷: حدیث "لایحرم الحرام الحلال" سخت ضعیف و نا قابل احتجاج وساقط ہے۔
- ۳۵۵: "ولا تنکحوا مانکح آباؤکم من النساء" میں نکاح کا کیا معنی ہے۔
- ۳۵۷: بقول امام احمد نہ ارشاد رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور نہ اثرام المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا بلکہ عراق کے کسی قاضی کا قول ہے۔
- ۳۸۸: آیہ کریمہ "واحل لکم ماوراء ذالکم" میں حل بمعنی عدم حرمت وطی ہے جو گناہ کے منافی نہیں۔
- ۳۵۷: حدیث مذکورہ بالا کی سند کا بیان۔
- ۴۴۱: آیہ کریمہ "الزانیة لا ینکحها الا زان اومشرک" میں چار تاویلیں ماثور ہیں۔
- ۳۶۳: اگر اس حدیث کے ضعفِ سند سے قطع نظر بھی کی جائے تو بھی یہ اپنے ظاہر پر یقیناً صحیح نہیں۔
- **فوائد حدیثیہ:**
- ۳۶۳: لاجرم حدیث مذکور میں تاویل سے چارہ نہیں کہ حرام من حیث ھو حرام حلال کو حرام نہیں کرتا۔
- ۲۷۲: حدیث "لا تنکح المرأة علی عمتها" الخ کی آیہ کریمہ "واحل لکم ماوراء ذالکم" ناسخ ہے یا نہیں۔
- ۳۶۴: اس حدیث ضعیف میں بھی ہمارے مذہب کے مخالفین کے لئے اصلاً حجت نہیں۔

- ۲۷۲: حدیث "لا تنکح المرأة علی عمتها ولاعلی خالتها" حدیث صحیح مشہور ہے اور وہ مخالف قرآن نہیں۔
- ۳۶۴: ہمارے مذہب کی مؤید چند احادیث۔
- ۲۷۳: حدیث "کلامي لا ینسخ کلام الله" محض بے اصل ہے۔
- ۴۸۳: "ان الله حرم من الرضاع ماحرم من النسب" حدیث مشہور اور صدرِ اسلام سے اس وقت تک علماء میں متلقی بالقبول ہے۔
- ۳۰۵: مطلب حدیث "لا نکاح الا بولی و شاهدی عدل"۔
- ۵۹۰: ولی ابعد سے کون مراد ہے عصبہ یا مثل وارث۔ گو ذوی الارحام سے ہو۔ اگر عصبہ مراد ہے تو موطائے امام محمد کی حدیث ام المومنین عائشہ رضی الله تعالیٰ عنہا کہ انہوں نے اپنی بھتیجی بنت عبد الرحمن بن ابی بکر رضی الله تعالیٰ عنہم کا نکاح عبد الله بن زبیر سے کردیا، اس کا کیا جواب ہے۔ پھوپھی تو ذوی الارحام سے ہے۔
- ۳۰۵: خطبہ (منگنی) و نکاح میں فرق ہے یا نہیں اور حدیث "تحرم الخطبة علی خطبة اخیه" کا کیا مطلب ہے اور اس سے منگنی کے نکاح ہونے پر استدلال صحیح ہے یا نہیں

Fatawa Rizvia | Volume 11

Subject	Ref. No.	Page
Meaning of the Hadith "The child of adultery is the worst of the three".	723	361
Regarding the mentioned Ishaq, Imam Nasai said: "Not trustworthy". Darqutni said: "Weak". And Imam Abu Dawood said: "Severely weak".		
Meaning of the Hadith "The offspring of adultery shall not enter Paradise".	724	362
Regarding the teacher of the mentioned Ishaq, Abdullah, Yahya ibn Sa'id al-Qattan said that he is weak in terms of memory. And Imam Nasai said: "He is not strong".		
Asma-ur-Rijal (Biographies of Narrators)		483
Ibn Ulayya is a Muhaddith, not a Mujtahid.		
Uthman ibn Abd al-Rahman al-Waqasi, the grandson of Amr ibn Sa'd (the killer of Imam Hussain RA), is abandoned (matruk), weak, and a liar.	357	128
Fawaid Usuliyah (Principles' Benefits)		
Uthman al-Waqasi narrates fabricated (mawdu') reports from trustworthy narrators.	358	128
Metaphors (kinayat) require intention.	358	129
Ishaq ibn Abi Farwah is criticized (mutakallam fih) and abandoned (matruk).	358	129
Reasoning (ta'leel) is the proof for interpretation (ta'weel).	359	129
Imam Yahya ibn Ma'in said: "Farwah is a liar (kazzab)".	359	145
He whose proof is stronger (aqwa) is more deserving of interpretation.	359	145
There are two Ishaq ibn Abi Farwahs. When a sound narration of a principle (usul) exists, all other narrations fall away.	359	175
The first is Ishaq ibn Abdullah ibn Abi Farwah, a Tabi'i contemporary and student of Imam Zuhri, appearing in the books of Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah; he is the abandoned one, and Imam Bukhari said about him "Tarakuhu" (they abandoned him).	359	175
A corrupt condition (shart fasid) before the contract in financial exchanges (mubadalat maliya) does not attach to the contract.		

Subject	Ref. No.	Page
Imam Ahmad ibn Hanbal said: Narration from Ishaq ibn Abi Farwah is not permissible.	359	175
A corrupt condition that exists before a contract does not invalidate any contract.		
The year of death of the aforementioned Ishaq ibn Abi Farwah is 136 AH or 144 AH.	360	176
A confession (iqrar) does not have the capacity for suspension on a condition (ta'liq bi al-shart).		
The second is Ishaq ibn Muhammad Isma'il ibn Abdullah ibn Abi Farwah, who was a teacher of Imam Bukhari and passed away in 326 AH; he is by no means abandoned.	361	182
Informing of a marriage occurrence is completely distinct and ineffective compared to the initiation (insha) of a contract.		
Although Ibn Hibban mentioned Ishaq ibn Muhammad ibn Isma'il among the trustworthy (thiqat) and Abu Hatim etc. called him truthful (saduq), he is also not free from criticism.	361	182
Marriage is establishment (ithbat), and confession (iqrar) is manifestation (izhar).		

विषय	नंबर	पृष्ठ
हदीस "वल्द अल-ज़िना शर्र अल-सलासा" का अर्थ।	७२३	३६१
उपर्युक्त इसहाक के बारे में इमाम नसाई ने कहा: विश्वसनीय नहीं। दारकुतनी ने कहा: कमज़ोर (ज़ईफ़) हैं। और इमाम अबू दाऊद ने कहा: अत्यधिक कमज़ोर हैं।		
हदीस "फ़र्ख़ अल-ज़िना ला यदखुलुल जन्नत" का अर्थ।	७२४	३६२
उपर्युक्त इसहाक के शेख अब्दुल्ला के बारे में यह्या बिन सईद कत्तान ने फ़रमाया कि स्मरण शक्ति की दृष्टि से कमज़ोर हैं। और इमाम नसाई ने कहा: शक्तिशाली (क़वी) नहीं हैं।		
अस्मा-उर-रिजाल (वर्णनकर्ताओं के नाम)		४८३
इब्न उलय्या एक मुहद्दिस हैं, मुजतहिद नहीं हैं।		
उस्मान बिन अब्दुर्रहमान वक्कासी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कातिल अम्र बिन साद का पोता है, वह परित्यक्त (मतरूक), कमज़ोर और झूठा है।	३५७	१२८
फ़वाइद-ए-उसूलीया (सिद्धांतों के लाभ)		
उस्मान वक्कासी विश्वसनीय लोगों से गढ़ी हुई (मौज़ू) खबरें रिवायत करता है।	३५८	१२८
किनायात (इशारे) नीयत (इरादे) के मोहताज होते हैं।	३५८	१२९
इसहाक बिन अबी फ़रवाह आलोचना के घेरे में (मुतअल्लम फ़ीह) और परित्यक्त (मतरूक) है।	३५८	१२९
तालील (तर्क) तावील (व्याख्या) का प्रमाण है।	३५९	१२९
इमाम यह्या बिन मईन ने फ़रमाया: फ़रवाह कज़्ज़ाब (बड़ा झूठा) है।	३५९	१४५
जिसकी दलील अधिक पुख्ता (अक़वी) हो, वह तावील का अधिक हकदार है।	३५९	१४५
इसहाक बिन अबी फ़रवाह दो व्यक्ति हैं। जब मूल (उलूस) की सही रिवायत मौजूद हो, तो उसके अलावा शेष सभी रिवायतें खारिज हो जाती हैं।	३५९	१७५
पहले इसहाक बिन अब्दुल्ला बिन अबी फ़रवाह हैं जो ताबेई, इमाम ज़ुहरी के समकालीन और उनके शिष्य हैं; अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजह की रिवायतों में शामिल हैं।	३५९	१७५

विषय	नंबर पृष्ठ
यही मतरूक है और इसी के बारे में इमाम बुखारी ने "तरकूह" (लोगों ने उसे छोड़ दिया) कहा।	
वित्तीय विनिमय (मुबादलात-ए-मालिया) में भी अनुबंध (अक़्द) से पहले की भ्रष्ट शर्त अनुबंध के साथ नहीं जुड़ती।	
इमाम अहमद बिन हंबल ने फ़रमाया: इसहाक बिन अबी फ़रवाह से रिवायत हलाल (वैध) नहीं।	३५९ १७५
भ्रष्ट शर्त जो अनुबंध से पहले हो, उससे कोई अनुबंध भ्रष्ट (फ़ासिद) नहीं होता।	
उपर्युक्त इसहाक बिन अबी फ़रवाह की मृत्यु का वर्ष १३६ हिजरी या १४४ हिजरी है।	३६० १७६
इक़रार (स्वीकृति) किसी शर्त पर निलंबन (तअलीक़) की योग्यता नहीं रखता।	
दूसरे इसहाक बिन मुहम्मद इस्माईल बिन अब्दुल्ला बिन अबी फ़रवाह हैं जो इमाम बुखारी के उस्ताद हैं; ३२६ हिजरी में उनका देहांत हुआ। वह कदापि मतरूक नहीं हैं।	३६१ १८२
निकाह होने की सूचना देना, अनुबंध की स्थापना (इन्शा-ए-अक़्द) से बिल्कुल अलग और प्रभावहीन है।	
हालांकि इब्न हिब्बान ने इसहाक बिन मुहम्मद बिन इस्माईल का ज़िक्र विश्वसनीय लोगों (सिकात) में किया और अबू हातिम आदि ने उन्हें "सदूक" (सच्चा) कहा, फिर भी वह भी आलोचना से मुक्त नहीं हैं।	३६१ १८२
निकाह सिद्धि (इसबात) है और इक़रार इज़हार (प्रकटीकरण) है।	

पृष्ठ ८३ (७३९ में से)

مضمون نمبر صفحہ

حدیث "ولد الزنا شر الثلاثہ" کا مطلب۔ ۷۲۳ ۳۶۱

اسحاق مذکور کے بارے میں امام نسائی نے کہا: ثقہ نہیں۔ دار قطنی نے کہا: ضعیف ہیں۔ اور امام ابو داؤد نے کہا: سخت ضعیف ہیں۔

حدیث "فرخ الزنا لا یدخل الجنۃ" کا مطلب۔ ۷۲۴ ۳۶۲

اسحاق مذکور کے شیخ عبد اللہ کے بارے میں یحییٰ بن سعید قطان نے فرمایا کہ حافظہ کی رو سے ضعیف ہیں۔ اور امام نسائی نے کہا: قوی نہیں ہیں۔

اسماء الرجال ۴۸۳

ابن علیہ ایک محدث ہیں مجتہد نہیں ہیں۔

عثمان بن عبد الرحمن وقاصی حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قاتل عمرو بن سعد کا پوتا متروک ضعیف اور جھوٹا ہے۔ ۳۵۷ ۱۲۸

فوائد اصولیہ

عثمان وقاصی ثقات سے موضوع خبریں روایت کرتا ہے۔ ۳۵۸ ۱۲۸

کنایات محتاج نیت ہیں۔ ۳۵۸ ۱۲۹

اسحاق بن ابی فروہ متکلم فیہ اور متروک ہے۔ ۳۵۸ ۱۲۹

تعلیل دلیل تعویل ہے۔ ۳۵۹ ۱۲۹

امام یحییٰ بن معین نے فرمایا: فروہ کذاب ہے۔ ۳۵۹ ۱۴۵

مضمون نمبر صفحہ

جس کی دلیل اقوی ہو وہ تعویل کا زیادہ مستحق ہے۔ ۳۵۹ ۱۴۵

اسحاق بن ابی فروہ دو ہیں۔ اصول کی صحیح روایت کے ہوتے ہوئے اس کے ماسوا
۳۵۹ ۱۷۵
تمام روایات ساقط ہو جاتی ہیں۔

اول اسحاق بن عبد اللہ بن ابی فروہ تابعی معاصر و تلمیذ امام زہری رجال ابوداؤد و

ترمذی وابن ماجہ سے ہے، یہی متروک ہے اور اسی کو امام بخاری نے "ترکوہ" ۳۵۹ ۱۷۵

فرمایا۔

شرط فاسد قبل العقد مبادلات مالیہ میں بھی ملتحق بالعقد نہیں ہوتی۔

امام احمد بن حنبل نے فرمایا: اسحاق بن ابی فروہ سے روایت حلال نہیں۔ ۳۵۹ ۱۷۵

شرط فاسد جو عقد سے پہلے ہو اس سے کوئی عقد فاسد نہیں ہوتا۔

اسحاق بن ابی فروہ مذکور کا سن وصال ۱۳۶ھ یا ۱۴۴ھ ہے۔ ۳۶۰ ۱۷۶

اقرار تعلیق بالشرط کی صلاحیت نہیں رکھتا۔

دوم اسحاق بن محمد اسمعیل بن عبد اللہ بن ابی فروہ امام بخاری کے استاذ ہیں ۳۲۶ھ
۳۶۱ ۱۸۲
میں وصال فرمایا، یہ ہرگز متروک نہیں۔

وقوع نکاح سے خبر دینا انشاء عقد سے بالکل مبائن و غیر موثر ہے۔

اسحاق بن محمد بن اسمعیل کو اگرچہ ابن حبان نے ثقات میں ذکر کیا اور ابو حاتم
۳۶۱ ۱۸۲
وغیرہ نے صدوق کہا، البتہ کلام سے خالی یہ بھی نہیں ہیں۔

نکاح اثبات اور اقرار اظہار ہے۔

Page Number	Ref. No.	Topic Description	Ref. No.	Page Number
463	182	Consumption of a mixture of halal and haram is impermissible because due to the mixing, its consumption cannot be free from the consumption of haram.	Expression is contrary to acknowledgement.	
484	211	How can the analogy of a woman to a man be correct?	The consensual rule of reason and transmission is that the response is corresponding to the question.	
484	213	The Pure Shariah considered the marriage of a Muslim woman to a person of the Book (Kitabi) as adultery, but considered the marriage of a Muslim man to a woman of the Book (Kitabiyah) as valid; what is the reason for this difference?	Marriage does not become void due to invalid conditions; rather, the invalid conditions themselves become void.	
485	226	Compatibility (Kafa'at) for a woman in a man is considered by consensus, but for an adult man, the compatibility of the woman holds no weight.	Jest (Hazal) is the opposite of seriousness (Jadd).	
485	226	Meanness of bed (low social status of spouse) does not become a reason for settled resentment (Ghayz-e-Mustaqir).	Jest (Hazal) is play, meaning intending for something other than its original purpose.	

Page Number	Ref. No.	Topic Description	Ref. No.	Page Number
485	227	Validity (Sehat) necessitates permissibility (Hill), but permissibility does not necessitate validity.	Using words after knowing the ruling with the intention of the ruling is proof of mutual agreement.	
489	228	Permissibility in the sense of validity is not inconsistent with impermissibility in the sense of prohibition and sin.	In Dar al-Islam, ignorance is among the acquired impediments.	
492	228	Whatever the Pure Shariah declares haram, it also declares its precursors and inducements haram.	If someone becomes a Muslim in the Abode of War (Dar al-Harb) and has not yet migrated to the Abode of Islam (Dar al-Islam), the laws of Islam are not binding on him because ignorance is an excuse for him.	
494	298	It is an accepted maxim that "the precursor to haram is haram."	Dropping (a claim) before it becomes obligatory is futile.	
495	305	It is not necessary for an inducer to be permanently leading to the result.	Prohibition is not inconsistent with validity.	
434	309	Whoever is afflicted with two calamities should choose the lighter of the two.	The negation of absolute prohibition does not establish absolute permissibility.	
483	338	Disagreement from a non-established consensus is not detrimental.	A deficient proof is accepted from one perspective and rejected from another.	
483	355	The Zahiriyyah are innovators; their disagreement in a consensus carries no weight because an innovator is part of the "community of call" (Ummat-	The burden of providing proof for a specification lies on the one claiming the specification.	

Page Number	Ref. No.	Topic Description	Ref. No.	Page Number
		e-Dawat) and not the "community of acceptance" (Ummat-e-Ijabah).		
483	355	A ruling contrary to the well-known Sunnah is not implemented.	If entrance occurs even in a haram manner, it becomes a cause of prohibition for the daughter of the woman with whom intercourse occurred.	
484	363	Any ruling that is contrary to the Book, the well-known Sunnah, and Consensus (Ijma) is rejected.	If a pure thing which is haram is mixed into a halal thing in such a way that differentiation is impossible, the halal itself does not become haram, but remains on its state of permissibility.	

पृष्ठ संख्या	संदर्भ संख्या	विषय विवरण	संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या
463	182	हलाल और हराम के मिश्रण का सेवन इसलिए नाजायज है क्योंकि मिश्रण के कारण इसका सेवन हराम के सेवन से मुक्त नहीं हो सकता।	इज़हार इकरार के विपरीत है।	
484	211	स्त्री की तुलना पुरुष से कैसे सही हो सकती है?	बुद्धि और परंपरा (अक्ल व नक्ल) का सर्वसम्मत नियम है कि उत्तर प्रश्न के अनुरूप होता है।	
484	213	पवित्र शरीअत ने एक मुस्लिम महिला का एक किताबी (अहले किताब) से विवाह को व्यभिचार माना है, जबकि एक मुस्लिम पुरुष का किताबी महिला से विवाह को सही माना है; इस अंतर का क्या कारण है?	अमान्य शर्तों (शुरूत फासिदा) के कारण विवाह अमान्य नहीं होता, बल्कि अमान्य शर्तें स्वयं अमान्य हो जाती हैं।	
485	226	स्त्री के लिए पुरुष में योग्यता (कफ़ाअत) सर्वसम्मति से आवश्यक मानी गई है, लेकिन वयस्क पुरुष के मामले में स्त्री की योग्यता का कोई महत्व नहीं है।	परिहास (हज़ल), गंभीरता (जद्द) का विलोम है।	
485	226	बिस्तर की हीनता (जीवनसाथी का निम्न सामाजिक स्तर) स्थायी क्रोध (ग़ैज़-ए-मुस्तकिर) का कारण नहीं होती।	परिहास (हज़ल) खेल है, अर्थात किसी चीज़ से उसके मूल उद्देश्य के अलावा कुछ और इरादा करना।	
485	227			

पृष्ठ संख्या	संदर्भ संख्या	विषय विवरण	संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या
		वैधता (सेहत) से अनुमति (हिल) अनिवार्य होती है, लेकिन अनुमति से वैधता अनिवार्य नहीं होती।	आदेश जानने के बाद आदेश के इरादे से शब्दों का प्रयोग आपसी सहमति का प्रमाण है।	
489	228	वैधता के अर्थ में अनुज्ञेयता (जवाज़), निषेध और पाप के अर्थ में गैर-अनुज्ञेयता के विपरीत नहीं है।	दारुल इस्लाम में अज्ञानता अर्जित बाधाओं (अवारिज़-ए-मुकतसबा) में से है।	
492	228	पवित्र शरीअत जिस चीज़ को हराम करती है, उसके लिए वह भूमिका (मुकद्दमा) और प्रोत्साहन (दाई) को भी हराम बताती है।	यदि कोई व्यक्ति दारुल हरब में मुसलमान हुआ और अभी तक दारुल इस्लाम की ओर हिजरत नहीं की, तो उस पर इस्लामी शरीयत का पालन अनिवार्य नहीं है क्योंकि उसके लिए अज्ञानता एक बहाना (उज़्र) है।	
494	298	यह एक स्वीकृत कहावत है कि "हराम की भूमिका हराम है"।	दायित्व (वजूब) से पहले त्याग (इस्क़ात) व्यर्थ है।	
495	305	प्रोत्साहन देने वाले (दाई) के लिए हमेशा परिणाम तक ले जाना आवश्यक नहीं है।	निषेध (नहीं) वैधता (सेहत) के प्रतिकूल नहीं है।	
434	309	जो दो विपत्तियों में फंसा हो, उसे चाहिए कि वह उनमें से हल्की को चुने।	पूर्ण निषेध (तहरीम-ए-मुतलक) के नकार से पूर्ण अनुमति (हिल-ए-मुतलक) सिद्ध नहीं होती।	
483	338	अपुष्ट सर्वसम्मति (इज्मा) से असहमति हानिकारक नहीं है।	अपर्याप्त प्रमाण एक दृष्टि से स्वीकार्य और दूसरी दृष्टि से अस्वीकार्य होता है।	
483	355	ज़ाहिरिया नवप्रवर्तनक (मुबत्तदी) हैं; सर्वसम्मति में उनके विरोध का कोई महत्व नहीं है क्योंकि नवप्रवर्तनक	विशिष्टता (तख़सीस) का प्रमाण प्रस्तुत करना विशिष्टता का दावा करने वाले का दायित्व है।	

पृष्ठ संख्या	संदर्भ संख्या	विषय विवरण	संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या
		'उम्मत-ए-दावत' हैं, 'उम्मत-ए-इजाबत' नहीं।		
483	355	प्रसिद्ध सुन्नत के विरुद्ध कोई आदेश लागू नहीं होता।	यदि प्रवेश (यौन संबंध) हराम तरीके से भी हो, तो वह उस महिला की पुत्री के लिए निषेध (तहरीम) का कारण बन जाता है।	
484	363	जो आदेश कुरान, प्रसिद्ध सुन्नत और सर्वसम्मति (इज्मा) के विरुद्ध हो, वह अस्वीकार्य है।	यदि कोई पवित्र वस्तु जो हराम हो, किसी हलाल में इस तरह मिल जाए कि अंतर करना असंभव हो, तो वह हलाल स्वयं हराम नहीं हो जाता, बल्कि अपनी वैधता पर कायम रहता है।	

صفحہ نمبر	شمارہ	موضوع	شمارہ	صفحہ نمبر
۴۶۳	۱۸۲	حلال و حرام کے مخلوط کا تناول اس لئے ناجائز ہے کہ بوجہ اختلاط اس کا تناول، تناول حرام سے خالی نہیں ہو سکتا۔	اظہار اقرار کے مغائر ہے۔	
۴۸۴	۲۱۱	عورت کا مرد پر قیاس کیو نکر صحیح ہو سکتا ہے۔	عقل و نقل کا قاعدہ اجماعیہ ہے کہ سوال جواب میں معاد ہوتا ہے۔	
۴۸۴	۲۱۳	شرع مطہر نے کتابی سے مسلمہ کا نکاح زنا مانا اور مسلم کا کتابیہ سے صحیح جانا ، وجہ فرق کیا ہے۔	شروط فاسدہ سے نکاح باطل نہیں ہوتا بلکہ خود شروط فاسدہ باطل ہو جاتی ہیں۔	
۴۸۵	۲۲۶	عورت کے لئے کفاءت مرد بالا جماع ملحوظ ہے اور مرد بالغ کے حق میں کفاءت زن کا کچھ اعتبار نہیں۔	ہزل، جد کی ضد ہے۔	
۴۸۵	۲۲۶			

صفحہ نمبر	شمارہ	موضوع	شمارہ	صفحہ نمبر
		دناءت فراش وجہ غیظ مستقر ش نہیں ہوتی۔	ہزل لعب ہے یعنی شے سے اس کے غیر موضوع لہ کا ارادہ کرنا۔	
۴۸۵	۲۲۷	صحت تو حل کو لازم ہے مگر حل صحت کو لازم نہیں۔	بعد علم حکم بقصد حکم الفاظ تحاور دلیل مراضاۃ ہے۔	
۴۸۹	۲۲۸	جواز بمعنی صحت، عدم جواز بمعنی ممانعت واثم کے منافی نہیں۔	دار الاسلام میں جہل عوارضِ مکتسبہ میں سے ہے۔	
۴۹۲	۲۲۸	شرع مطہر جس چیز کو حرام فرماتی ہے اس کے لئے مقدمہ اور داعی کو بھی حرام بتاتی ہے۔	کوئی شخص دار الحرب میں مسلمان ہوا ابھی دار الاسلام کی طرف ہجرت نہیں کی تو اس پر شرائع اسلامیہ کا لزوم نہیں کہ اس کے لئے جہل عذر ہے۔	
۴۹۴	۲۹۸	مقولہ مسلمہ ہے کہ مقدمۃ الحرام حرام ۔	قبل وجوب اسقاط مہمل ہے۔	
۴۹۵	۳۰۵	داعی کے لئے مفضی بالدوام ہونا ضرور نہیں ۔	نہی منافی صحت نہیں۔	
۴۳۴	۳۰۹	جو دو بلاؤں میں مبتلا ہو اسے چاہئے کہ ان میں سے ہلکی کو اختیار کرے۔	تحریم مطلق کی نفی سے حل مطلق کا اثبات نہیں ہوتا۔	

صفحہ نمبر	شمارہ	موضوع	صفحہ نمبر	شمارہ
۴۸۳	۳۳۸	خلافِ منقد د اجماع میں قادح نہیں -	حجت قاصرہ من جہۃ مقبول اور من جہۃ مردود ہوتی ہے۔	
۴۸۳	۳۵۵	ظاہر یہ مبتدع ہیں اجماع میں ان کے خلاف کا کچھ اعتبار نہیں کہ تخصیص کی دلیل پیش کرنا مدعیِ متبدع امت دعوت ہیں امت اجابت تخصیص کے ذمہ ہے۔		
۴۸۳	۳۵۵	سنت مشہورہ کے خلاف حکم نافذ نہیں ہوتا۔	نہیں۔ دخول حرام طور پر بھی ہو تو موطوہ کی دختر کے لئے موجب تحریم ہو جاتا ہے۔	
۴۸۴	۳۶۳	جو حکم کتاب وسنت مشہورہ اور اجماع کے خلاف ہو وہ مردود ہے۔	اگر کوئی طاہر شئی جو کہ حرام ہو کسی حلال میں اس طرح مل جائے کہ تمیز ناممکن ہو تو وہ حلال خود حرام نہیں ہو جاتا بلکہ اپنی حلت پر قائم رہتا ہے۔	

Fatawa Razwiya - Volume 11

Ref No.	Ruling Part 1	Ruling Part 2	Ref
145 491	What is prohibited by lineage is also prohibited by breastfeeding.	Marriage by an unauthorized person (Fuzuli) depends on permission; to consider it void is invalid.	145
145 496	The relationship of brotherhood is a reciprocal one as it is established equally from both sides.	Permission for marriage, just as it is through speech, is similarly through action and circumstantial evidence, along with a few examples.	145
148 499	The root cause of prohibition is partiality (part-ship).	The difference between a virgin and a non-virgin is only regarding silence: a virgin's silence is permission, a non-virgin's is not.	148
153 499	Partiality is evident in lineage and legally recognized in breastfeeding.	Permission does not apply to that which is rescinded and rejected.	153
161 499	There are two forms of partiality relationship between two individuals.	A contract by an unauthorized person is not purely futile or unacceptable, but depends on the permission of the one whose permission is required.	161
168 500	There are four forms of prohibition due to the partiality relationship.	In the speech of the contracting parties, what comes first is the proposal (Ijab) and what comes after is the acceptance (Qabul).	168
175 513	Deliberation (Tahari) is among the Sharia proofs.	Marriage is not invalidated by corrupt conditions, though the conditions themselves are void.	175
175 513	If deliberation (Tahari) occurs based on the truthfulness of a transgressor (fasiq), it is valid.	Sale, lease, division, etc., become corrupt due to corrupt conditions.	175
177 521	Sin does not drop guardianship (wilayat).	Making a promise conditional upon a requirement is permissible.	177
180 522			180

Ref No.	Ruling Part 1	Ruling Part 2	Ref
	Rescission does not prevent guardianship.	The affirmation or denial of a minor means nothing; the permission of their guardian is required.	
180 624	A statement is not attributed to one who is silent.	If a mature woman cries while being asked for permission aloud, this is a refusal.	180
183 698	A transgressor in belief (fasiq-e-i'tiqadi) is worse than a transgressor in action (fasiq-e-amali).	'Nikah' and 'Tazwij' - these two words are explicit for the marriage contract, while gift, donation, charity, etc., are metaphorical.	183
184 717	Excellence in knowledge is greater than excellence in lineage.	Marriage is a contract and engagement is a promise.	184
188 717	The honor of knowledge is stronger and more exalted.	It is not necessary for the one performing the marriage or the witnesses to be sighted.	188
191	**Jurisprudential Benefits:**	Witnesses are a condition at the start of marriage, meaning it won't be valid without them; they are not a condition for its continuation, i.e., it is not necessary for witnesses to remain for the marriage to persist.	191
110	There is no compulsory guardianship (wilayat-e-ijbar) over a mature woman.		

फ़तावा-ए-रज़विया - ग्यारहवाँ खंड

संदर्भ	नंबर	निर्देश भाग १	निर्देश भाग २	संदर्भ
145	491	जो नसब (वंश) से हराम है, वह रज़ाअत (दूध पीने) से भी हराम है।	निकाह-ए-फ़ुज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति द्वारा किया गया) अनुमति पर निर्भर होता है, इसे बातिल (अमान्य) समझना बातिल है।	145
145	496	भाईचारे का रिश्ता पारस्परिक है क्योंकि यह दोनों तरफ से समान रूप से स्थापित होता है।	निकाह की अनुमति जिस तरह वचन से होती है, वैसे ही क्रिया और परिस्थिति के संकेतों से भी, और इसकी कुछ उदाहरण।	145
148	499	हुरमत (निषेध) का मूल कारण जुज़इयत (अंश होना) है।	कुंवारी और गैर-कुंवारी के बीच अंतर केवल चुप्पी के बारे में है: कुंवारी की चुप्पी अनुमति है, गैर-कुंवारी की नहीं।	148
153	499	जुज़इयत नसब में स्पष्ट है और रज़ाअत में शरीयत के अनुसार मान्य है।	अनुमति उस पर लागू नहीं होती जो निरस्त और अस्वीकृत हो चुकी हो।	153
161	499	दो व्यक्तियों के बीच जुज़इयत के संबंध के दो रूप हैं।	फ़ुज़ूली अनुबंध पूरी तरह व्यर्थ या अस्वीकार्य नहीं है बल्कि अधिकार रखने वाले की अनुमति पर निर्भर करता है।	161
168	500	जुज़इयत के संबंध से हुरमत के चार रूप हैं।	अनुबंध करने वालों की बातचीत में जो पहले हो वह ईजाब (प्रस्ताव) है और जो बाद में हो वह क़बूल (स्वीकृति)।	168
175	513	तहरी (विचार-विमर्श) शरीयत के प्रमाणों में से है।	दोषपूर्ण शर्तों से निकाह फ़ासिद (अमान्य) नहीं होता, वे शर्तें स्वयं बातिल होती हैं।	175
175	513	यदि किसी फ़ासिक़ (पापी) की सच्चाई पर तहरी हो, तो वह मान्य है।	बिक्री, पट्टा, बँटवारा आदि दोषपूर्ण शर्तों के कारण फ़ासिद हो जाते हैं।	175
177	521		किसी वादे को शर्त के साथ जोड़ना जायज़ है।	177

संदर्भ नंबर		निर्देश भाग १	निर्देश भाग २	संदर्भ
		गुनाह विलायत (अभिभावकत्व) को समाप्त नहीं करता।		
180	522	फ़स्ख़ (निरस्तीकरण) विलायत में बाधक नहीं है।	नाबालिग की स्वीकारोक्ति या इनकार का कोई मूल्य नहीं; उसके अभिभावक की अनुमति की आवश्यकता है।	180
180	624	चुप रहने वाले की ओर किसी कथन को नहीं जोड़ा जाता।	वयस्क महिला (बालिग़ा) यदि अनुमति माँगने पर ज़ोर से रो दे, तो यह इनकार है।	180
183	698	वैचारिक पापी (फ़ासिक़-ए-एतिकादी) व्यावहारिक पापी (फ़ासिक़-ए-अमली) से बुरा है।	'निकाह' और 'तज़वीज' - ये दो शब्द निकाह के अनुबंध में स्पष्ट (सरीह) हैं, जबकि दान, उपहार, सदक़ा आदि प्रतीकात्मक (किनाया) हैं।	183
184	717	ज्ञान की श्रेष्ठता नसब (वंश) की श्रेष्ठता से अधिक है।	निकाह एक अनुबंध (अक़्द) है और सगाई एक वादा है।	184
188	717	ज्ञान का सम्मान अधिक शक्तिशाली और श्रेष्ठ है।	निकाह पढ़ाने वाले और गवाहों का आँखों वाला (दृष्टिहीन न होना) ज़रूरी नहीं है।	188
191		**फ़िक़ही लाभ:**	निकाह की शुरुआत में गवाह शर्त हैं यानी उनके बिना निकाह नहीं होगा; निकाह के बने रहने में शर्त नहीं यानी गवाहों का निकाह के जारी रहने के लिए शेष रहना ज़रूरी नहीं।	191
	110	बालिग़ा (वयस्क महिला) पर विलायत-ए-इज्बार (ज़बरदस्ती का अधिकार) नहीं है।		

۱۴۵ | ۴۹۱ | جو نسب سے حرام ہے وہ رضاعت سے بھی حرام ہے۔ | نکاح فضولی اجازت پر موقوف ہوتا ہے اسے باطل جاننا باطل ہے۔ | ۱۴۵ ۱۴۵ | ۴۹۶ | اخوت رشتہ منکرہ ہے کہ دونوں طرف سے یکساں قائم ہوتا ہے۔ | اجازت نکاح جس طرح قول سے ہوتی ہے یونہی فعل اور دلالتِ حال سے بھی، اور اس کی چند مثالیں۔ | ۱۴۵ ۱۴۸ | ۴۹۹ | اصلِ علت حرمت جزئیت ہے۔ | بکر و ثیب کا فرق صرف درباره سکوت ہے کہ بکر کا سکوت اذن ہے ثیب کا نہیں۔ | ۱۴۸ ۱۵۳ | ۴۹۹ | جزئیت نسب میں ظاہر اور رضاعت میں شرعاً معتبر ہے۔ | اجازتِ مفسوخ و مردود کو لاحق نہیں ہوتی۔ | ۱۵۳ ۱۶۱ | ۴۹۹ | دو شخصوں میں علاقہ جزئیت کی دو صورتیں ہیں۔ | عقد فضولی محض فضول اور نامقبول نہیں بلکہ اجازت صاحب اجازت پر موقوف ہوتا ہے۔ | ۱۶۱ ۱۶۸ | ۵۰۰ | علاقہ جزئیت سے حرمت میں چار صورتیں ہیں۔ | عاقدین کے کلام سے جو مقدم ہو وہ ایجاب ہے اور جو مؤخر ہو وہ قبول۔ | ۱۶۸ ۱۷۵ | ۵۱۳ | تحری دلائل شرعیہ میں سے ہے۔ | شروطِ فاسدہ سے نکاح فاسد نہیں ہوتا خود وہی باطل ہوتی ہیں۔ | ۱۷۵ ۱۷۵ | ۵۱۳ | قول فاسق کے صدق پر اگر تحری واقع ہو تو وہ معتبر ہے۔ | بیع و اجارہ و قسمت وغیرہ شروطِ فاسدہ سے فاسد ہوتے ہیں۔ | ۱۷۵ ۱۷۷ | ۵۲۱ | گناہ مسقط ولایت نہیں۔ | وعدے کی تعلیق بالشرط جائز ہے۔ | ۱۷۷ ۱۸۰ | ۵۲۲ | فسخ مانع ولایت نہیں۔ | نابالغ کا اقرار و انکار کچھ نہیں اجازت اس کے ولی کی درکار۔ | ۱۸۰ ۱۸۰ | ۶۲۴ | ساکت کی طرف قول منسوب نہیں کیا جاتا۔ | بالغہ اگر آواز سے اجازت لیتے وقت روئے تو یہ رد ہے۔ | ۱۸۰ ۱۸۳ | ۶۹۸ | فاسق اعتقادی فاسق عملی سے بدتر ہے۔ | نکاح و تزویج یہ دو لفظ عقد نکاح میں صریح ہیں اور عطا و ہبہ و صدقہ وغیرہ کنایہ۔ | ۱۸۳ ۱۸۴ | ۷۱۷ | فضل نسب سے فضل علم زائد ہے۔ |

نکاح عقد ہے اور منگنی وعدہ ہے۔ | ۱۸۴ ۱۸۸ | ۷۱۷ | شرف علم اقوی اور بلند و بالا ہے۔ | نکاح خواں اور شہود کا بینا ہونا ضروری نہیں۔ | ۱۸۸ ۱۹۱ | | فوائد فقہیہ | شہود ابتدائے نکاح میں شرط ہیں یعنی بے ان کے منعقد نہ ہوگا، بقا میں شرط نہیں یعنی شاہدوں کا بقائے نکاح کے لئے باقی رہنا ضروری نہیں۔ | ۱۹۱ | ۱۱۰ | بالغہ پر ولایت اجبار نہیں۔ | |

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Page	Topic	Page	Topic	Page
296	Committing a Makruh Tanzihi (mildly disliked act) is not a sin.	204	A Qazi is not a condition for marriage; a person can have their marriage performed by whomever they wish.	296
297	Preserving life is the most important obligation of all.	205	Shariah-wise, a Qazi has no authority over marriage, nor is he entitled to a fee if the marriage was performed by someone else.	297
297	It is not a requirement of Shariah or sound reason to commit a major offense to save something trivial.	205	Qazis who perform marriage ceremonies are from the tribe of "names you and your fathers have invented for which Allah has sent down no authority."	297
301	In contracts, meanings are considered, even in marriage.	213	God made two, three, or four women lawful for men; why was this command not the same for women?	301
313	The essence is that the intended meaning of a thing should be based on its original context.	226	The knot of marriage is in the man's hand.	313
352	The difference between jest and metaphor.	226	Marrying a woman is neither a cause nor a partial cause for the prohibition (tahrīm) of her daughter.	352
352	Ignorance of the language is not a deficiency.	229	Intercourse with the mother is a cause for the prohibition of the daughter, and this is absolutely established even in the case of adultery.	352
355		244		355

Page	Topic	Page	Topic	Page
	A man's apostasy, by consensus, is an immediate annulment of marriage.		Scenarios where intercourse with a woman who was not lawful for him resulted in her daughter becoming prohibited.	
355	A woman's apostasy does not annul the marriage, but intimacy with her is forbidden to the man until she returns to Islam.	245	For the prohibition of the daughter, neither marriage is a condition, nor is it necessary for the intercourse to be lawful; rather, the basis of prohibition is solely the intercourse.	355
356	Compulsion does not prevent the validity of marriage.	245	Whether marriage (Nikah) is literal or a well-known metaphor in the sense of intercourse.	356
356	Jurisprudence is not merely looking at book passages and understanding literal translations; rather, understanding the objective of Shariah and observing the conditions of lands and people is the greatest pillar of jurisprudence.	263	In matters of the private parts, caution is Shariah-wise mandatory.	356
356	At what age does a girl reach puberty?	274	The default state for private parts is prohibition; unless lawfulness is established, the ruling will be based on prohibition.	356
356	Who is considered "unfit" (ghair-kufu) in Shariah.	280	There is no difference between one affinity (musaharah) and another.	356
365	Who is called "unfit" in common parlance.	280	The difference between divorce (talaq) and separation (mutarakah).	365
365		295		365

Page	Topic	Page	Topic	Page
	A marriage does not become invalid due to an invalid condition.		Marriage is not nullified by the prohibition of affinity or fosterage; rather, it becomes invalid (fasid).	

फ़तावा रज़विया, खंड 11

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
296	मकरूह तंज़ीही (हल्का नापसंद कार्य) करना पाप नहीं है।	204	काज़ी निकाह की कोई शर्त नहीं है; व्यक्ति जिससे चाहे निकाह पढ़ा सकता है।	296
297	जान बचाना हर फ़र्ज़ से महत्वपूर्ण फ़र्ज़ है।	205	शरीअत के अनुसार निकाह पर काज़ी का कोई अधिकार नहीं है, और न ही वह पारिश्रमिक का हकदार है यदि निकाह किसी और ने पढ़ाया हो।	297
297	शरीअत और सही बुद्धि की यह मांग नहीं है कि एक तुच्छ चीज़ को बचाने के लिए एक बहुत बड़े पाप का सहारा लिया जाए।	205	निकाह पढ़ाने वाले काज़ी उन लोगों में से हैं जिन्होंने वे नाम गढ़े हैं जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं भेजा।	297
301	अनुबंधों में अर्थों का महत्व है, यहाँ तक कि निकाह में भी।	213	ईश्वर ने पुरुषों के लिए दो-दो, तीन-तीन, चार-चार महिलाएं हलाल (वैध) की हैं, महिलाओं के लिए यही आदेश क्यों नहीं हुआ?	301
313	सार यह है कि किसी चीज़ से उसके मूल विषय का इरादा किया जाए।	226	निकाह की गाँठ पुरुष के हाथ में है।	313
352	मज़ाक (हज़ल) और रूपक (मजाज़) में अंतर।	226	किसी महिला से निकाह उसकी पुत्री की वर्जना (तहरीम) के लिए न तो कारण है और न ही कारण का हिस्सा।	352
352	भाषा का अज्ञान कोई कमी नहीं है।	229	माँ के साथ संभोग पुत्री के लिए वर्जना का कारण है और यह स्पष्ट	352

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
			रूप से व्यभिचार के मामले में भी सिद्ध है।	
355	पुरुष का धर्मत्याग, सर्वसम्मति से निकाह का तत्काल निरस्तीकरण है।	244	वे स्थितियाँ जिनमें ऐसी महिला के साथ प्रवेश किया गया जो उसके लिए वैध नहीं थी, लेकिन उस प्रवेश से उस महिला की पुत्री हराम (वर्जित) हो गई।	355
355	महिला के धर्मत्याग से निकाह निरस्त नहीं होता, लेकिन जब तक वह इस्लाम न ले आए, पुरुष के लिए उसके साथ घनिष्ठता हराम है।	245	पुत्री की वर्जना के लिए न तो निकाह शर्त है और न ही संभोग का वैध होना आवश्यक है, बल्कि वर्जना का मुख्य आधार केवल संभोग है।	355
356	मजबूरी निकाह की वैधता में बाधक नहीं होती।	245	संभोग के अर्थ में निकाह शब्द हकीकत (वास्तविक) है या मजाज़-ए-मुआरिफ (प्रचलित रूपक)।	356
356	तफक्कुह (धर्मशास्त्र का ज्ञान) केवल किताब से इबारत देख लेने और शाब्दिक अनुवाद समझ लेने का नाम नहीं है, बल्कि शरीअत के उद्देश्य को समझना और देशों और लोगों की स्थितियों पर नज़र रखना तफक्कुह का सबसे बड़ा स्तंभ है।	263	गुप्तांगों के मामले में शरीअत के अनुसार सावधानी बरतना अनिवार्य है।	356
356	लड़की किस उम्र में बालिग (वयस्क) होती है।	274	गुप्तांगों का मूल वर्जना है; जब तक वैधता सिद्ध न हो जाए, वर्जना का ही आदेश होगा।	356
356	शरीअत में गैर-कुफ़ू (अयोग्य) किसे कहते हैं।	280	एक वैवाहिक संबंध (मुसाहरत) और दूसरे में कोई अंतर नहीं है।	356

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
365	आम बोलचाल में गैर-कुफ़ू किसे कहते हैं।	280	तलाक और मुतारका (अलगाव) में अंतर।	365
365	निकाह किसी गलत शर्त के कारण अमान्य नहीं होता।	295	निकाह मुसाहरत या रज़ाअत (दूध का रिश्ता) की वर्जना से समाप्त नहीं होता, बल्कि फ़ासिद (त्रुटिपूर्ण) हो जाता है।	365

صفحہ	عنوان صفحہ
۲۹۶	مکروہ تنزیہی کا ارتکاب معصیت نہیں۔ ۲۰۴
۲۹۷	جان کا رکھنا ہر فرض سے اہم فرض ہے۔ ۲۰۵
۲۹۷	شریعت و عقل سلیم کا یہ تقاضا نہیں کہ ہلکی شئی کو بچانے کے لئے ثقل عظیم کا ارتکاب کیا جائے۔ ۲۰۵
۳۰۱	عقود میں معانی کا اعتبار ہے یہاں تک کہ نکاح میں بھی۔ ۲۱۳
۳۱۳	جذ یہ ہے کہ شئے سے اس کے موضوع لہ کا ارادہ کیا جائے۔ ۲۲۶
۳۵۲	ہزل اور مجاز میں فرق۔ ۲۲۶
۲۹۶	قاضی کوئی شرطِ نکاح نہیں آدمی جس سے چاہے نکاح پڑھوائے۔
۲۹۷	قاضی نکاح کے شرعاً کچھ اختیارات نہیں، نہ وہ اجرت کا مستحق جبکہ نکاح دوسرے نے پڑھایا ہو۔
۲۹۷	نکاح خوانی کے قاضی "اسماء سمیتوھانتم و اباؤکم ما انزل اللہ بہامن سلطن" کے قبیلہ سے ہیں۔
۳۰۱	خدا نے مردوں کو دو دو تین تین چار چار عورتیں حلال فرمائیں، عورت کے لئے یہی حکم کیوں نہیں ہوا۔
۳۱۳	نکاح کی گرہ مرد کے ہاتھ ہے۔
۳۵۲	

صفحہ	عنوان صفحہ	صفحہ	عنوان صفحہ
			کسی عورت سے نکاح اس کی دختر کی تحریم کیلئے نہ تو علت ہے اور نہ ہی جزء علت۔
۳۵۲	جہل باللسان تقصیر نہیں۔	۲۲۹	ماں سے صحبت دختر کے لئے علت تحریم ہے اور یہ قطعاً مزنیہ میں بھی ثابت ہے۔
۳۵۵	مرد کا ارتداد بالاجماع فسخ نکاح فی الحال ہے۔	۲۴۴	وہ صورتیں جن میں ایسی عورت سے دخول کیا جو اس کیلئے حلال نہیں مگر اس دخول سے موطوہ کی دختر حرام ہو گئی۔
۳۵۵	عورت کے مرتد ہونے سے نکاح فسخ نہیں ہوتا مگر مرد کو اس سے قربت حرام ہو گئی جب تک اسلام نہ لائے۔	۲۴۵	تحریم دختر کے لئے نہ نکاح شرط نہ وطی کا بروجہ حلال ہونا لازم بلکہ مناطِ حرمت صرف وطی ہے۔
۳۵۶	مجبوری مانع جواز نکاح نہیں ہوتی۔	۲۴۵	نکاح معنی وطی میں حقیقت ہے یا مجاز متعارف۔
۳۵۶	تفقہ فقط کتاب سے عبارت دیکھ لینے اور لفظی ترجمہ سمجھ لینے کا نام نہیں بلکہ مقصد شرع کا ادراک اور احوال بلاد و عباد پر نظر رکن اعظم تفقہ ہے۔	۲۶۳	امر فرج میں شرعاً احتیاط واجب ہے۔

صفحہ	عنوان صفحہ	صفحہ	عنوان صفحہ
			اصل فرج میں حرمت ہے جب تک
۳۵۶	لڑکی کے برس میں بالغ ہوتی ہے۔	۲۷۴	حل ثابت نہ ہو حرمت ہی پر حکم ہوگا۔
۳۵۶	شرع میں غیر کفو کسے کہتے ہیں۔	۲۸۰	مصاہرت مصاہرت میں فرق نہیں۔
۳۶۵	عوام کے محاورہ میں غیر کفو کسے کہتے ہیں۔	۲۸۰	طلاق اور متارکہ میں فرق۔
			حرمت مصاہرت اور حرمتِ
۳۶۵	نکاح شرط فاسد سے فاسد نہیں ہوتا۔	۲۹۵	رضاعت سے نکاح مرتفع نہیں بلکہ فاسد ہو جاتا ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

Title	Page	Title	Page
In Jurisprudential rulings, only actual events are considered, not unrealistic possibilities.	482	If the nearer guardian (wali aqrab) is absent in a remote location (ghaibat-e-munqati'ah), the right of guardianship shifts to the distant guardian (wali ab'ad).	527
A person of a wrong creed (bad mazhab) cannot be a suitable match (kufu) for a Sunni daughter of a Sunni.	483	In remote absence, there are two opinions: the sounder and preferred view of most masters, which is best and most similar to jurisprudence, is that if the guardian or his opinion is awaited, the suitable match (kufu) will be lost.	527
Answer to the doubt: if marriage with people of the book is permissible, why is it not permissible with a non-conformist (Ghair Muqallid)?	484	A transgressor (fasiq) is not a suitable match for a righteous woman (salihah), nor for a transgressing daughter of a righteous man.	533
What is the meaning of marriage with the people of the book?	484	Definition and examples of verbal rejection, physical rejection, verbal permission, physical permission, and silent permission.	535
There is no difference between separation (mutarakah) and annulment (fasakh); this is the truth, and Allama Maqdisi was firm on this.	422	The consideration of compatibility (kafaat) is at the time of the contract. If it is lost after the contract, it is not destructive.	544
The issue of combining two sisters in marriage (Jam' baynal Ukhtayn).	422	A boy reaches maturity through nocturnal emission and ejaculation, and a girl through nocturnal emission, menstruation, and pregnancy.	560
For the establishment of the prohibition of affinity (hurmat-	445	A boy can reach maturity at a minimum age of twelve years and a girl at a	560

Title	Page	Title	Page
e-musaharat), the female must be desirable (mushtahat).		minimum of nine years, while both reach it at a maximum of fifteen years.	
Meaning of "The presence of desire in one of them is sufficient" (Wujud-ush-shahwati min ahadihima yakfi).	446	Silence upon seeking permission (istizan) from a stranger or even a distant guardian is not consent.	572
For the prohibition of affinity, it is necessary for both to be desiring and desirable; the presence of desire at the time of touch etc. in one is sufficient.	446	Which of the interpretations of "absence" (ghaybat) is relied upon.	586
Investigation of the difference between separation (mutarakah) and annulment (fasakh).	449	The father's paternal aunt's son is among the distant kindred (dhawi al-arham), and the grandmother is unanimously preferred over them.	597
In jurisprudence, it is attached to overwhelming probability (zann-e-ghalib).	510	Mother is preferred over grandmother.	597
The universal rule of partiality (juz'iyyat).	516	Securing a suitable match (kufu) in Sharia is a very important and significant matter.	598
There are multiple causes for prohibition; a brief mention of twelve of them.	517	The wisdom behind explaining the guardianship of marriage over a minor.	598
At least nearing puberty (murahiqat) is required for the prohibition of affinity.	520	Three conditions for the distant guardian to obtain guardianship.	600
A marriage performed by a meddler (nikah-e-fuzuli) without permission is not effective.	526		

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

शीर्षक	पृष्ठ
फिकही अहकाम में केवल वास्तविक घटनाओं का ही लिहाज होता है, अवास्तविक संभावनाओं का नहीं।	४८२
कुमार्गी (बद मज़हब) किसी सुन्नी की सुन्नी बेटी का कुफ़ू(योग्य वर) नहीं हो सकता।	४८३
इस संदेह का उत्तर कि जब अहले किताब से निकाह जायज़ है तो गैर-मुक़ल्लिद से क्यों जायज़ नहीं।	४८४
अहले किताब से निकाह के क्या अर्थ हैं।	४८४
मुतारकः(त्याग) और फ़स्ख़ (निरस्तीकरण) में कोई अंतर नहीं है, यही सत्य है, अल्लामा मक़्दसी ने इस पर दृढ़ता व्यक्त की है।	४२२
दो बहनों को निकाह में एक साथ रखने (जमा बैनुल उख़्तैन) का मसला।	४२२
हुरमते मुसाहरत (ससुराली रिश्तों की हुरमत) साबित होने के लिए मुश्तहात (आकर्षक) होना ज़रूरी है।	४४५
यदि वली-ए-अक़रब (निकटतम संरक्षक) ग़ैबते मुनक़तआ (दूर प्रवास) में हो, तो विलायत का अधिकार वली-ए-अबअद की ओर स्थानांतरित हो जाता है।	५२७
ग़ैबते मुनक़तआ में दो कथन सबसे सही हैं, अधिकांश उलेमा का पसंदीदा और फिकह के अनुरूप यही है कि यदि वली या उसकी राय की प्रतीक्षा की जाए तो कुफ़ू हाथ से निकल जाएगा।	५२७
फासिक (दुराचारी) न नेक महिला का कुफ़ू है और न ही फासिका किसी नेक व्यक्ति की बेटी का कुफ़ू है।	५३३
मौखिक अस्वीकृति, क्रियात्मक अस्वीकृति, मौखिक अनुमति, क्रियात्मक अनुमति और मौन अनुमति की परिभाषा और उदाहरण।	५३५
कुफ़ू(समानता) का विचार निकाह के समय किया जाता है। निकाह के बाद यदि वह समाप्त भी हो जाए तो निकाह भ्रष्ट नहीं होता।	५४४
लड़का स्वप्नदोष और वीर्यपात से, और लड़की स्वप्नदोष, मासिक धर्म और गर्भावस्था से वयस्क होती है।	५६०
लड़का कम से कम बारह वर्ष की आयु में और लड़की कम से कम नौ वर्ष की आयु में वयस्क हो सकते हैं, जबकि दोनों अधिकतम पंद्रह वर्ष में।	५६०

शीर्षक	पृष्ठ	शीर्षक	पृष्ठ
"वजूदुश शहवति मिन अहदिहिमा यकफी" (दोनों में से किसी एक में शहवत का होना पर्याप्त है) के अर्थ।	४४६	किसी अजनबी या दूर के वली से अनुमति मांगते समय मौन रहना अनुमति नहीं है।	५७२
हुरमते मुसाहरत के लिए दोनों का मुश्तही और मुश्तहात होना ज़रूरी है, छूते समय आदि किसी एक में शहवत का होना काफी है।	४४६	'ग़ैबत' की व्याख्याओं में से कौन सी व्याख्या विश्वसनीय है।	५८६
मुतारकः और फ़स्ख़ के बीच अंतर की तहक़ीक़।	४४९	पिता की बुआ का बेटा ज़वी-अल-अर्हाम (रक्त संबंधी) में से है और दादी सर्वसम्मति से उन पर प्रधान है।	५९७
फिकह में इसे ग़ालिब गुमान (ज़न्ने ग़ालिब) के साथ जोड़ा जाता है।	५१०	माँ दादी पर प्रधान है।	५९७
जुज़इयत (अंशता) का व्यापक नियम।	५१६	शरीयत में उपयुक्त कुफू की सुरक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गंभीर मामला है।	५९८
हुरमत के कई कारण हैं जिनमें से बारह का संक्षिप्त विवरण।	५१७	नाबालिग पर निकाह की विलायत की व्याख्या की हिकमत (बुद्धिमत्ता)।	५९८
हुरमते मुसाहरत के लिए कम से कम मुराहिक़त (यौवन के करीब होना) आवश्यक है।	५२०	दूर के संरक्षक (वली-ए-अबअ१) के लिए विलायत प्राप्त करने की तीन शर्तें।	६००
फ़ुज़ूली का निकाह (बिना अनुमति का निकाह) अनुमति के बिना लागू नहीं होता।	५२६		

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
احکام فقہیہ میں واقعات ہی کا لحاظ ہوتا ہے نہ کہ احتمالات غیر واقعیہ کا۔	۴۸۲	ولی اقرب اگر غائب بغیبت منقطعہ ہو تو حق ولایت ولی ابعد کی طرف منتقل ہو جاتا ہے۔	۵۲۷
بد مذہب کسی سنیہ بنت سنی کا کفو نہیں ہوسکتا۔	۴۸۳	غیبت منقطعہ میں دو قول اصح ہیں اریح اور اکثر مشائخ کا مختار للفتویٰ احسن واشبہ بالفقہ یہ کہ اگر ولی یا اس کی رائے کا انتظار کیا جائے تو کفو خائب فوت ہو جائے گا۔	۵۲۷
اس شبہ کا جواب کہ جب اہل کتاب سے مناکحت جائز ہے تو غیر مقلد سے کیوں جائز نہیں۔	۴۸۴	فاسق نہ صالحہ کا کفو ہے نہ فاسقہ بنت صالح کا۔	۵۳۳
اہل کتاب سے مناکحت کے کیا معنی ہیں۔	۴۸۴	ردِ قولی، ردِ فعلی، اجازتِ قولی، فعلی، سکوتی کی تعریف اور مثالیں۔	۵۳۵
متار کہ اور فسخ میں کوئی فرق نہیں یہی حق ہے، علامہ مقدسی نے اس پر جزم فرمایا۔	۴۲۲	اعتبار کفاءت وقت عقد ہے۔ بعد عقد اگر زائل بھی ہو جائے تو مفسد نہیں۔	۵۴۴
مسئلہ جمع بین الاختین۔	۴۲۲		۵۶۰

عنوان	صفحہ
ثبوت حرمت مصاہرت کے لئے مشتہاۃ ہونا ضروری ہے۔	۴۴۵
"وجود الشہوۃ من احد ہما یکفی" کے معنی۔	۴۴۶
حرمت مصاہرت کے لئے دونوں کا مشتہی و مشتہاۃ ہونا ضروری ہے	۴۴۶
وجود شہوت وقت مس وغیرہ ایک سے کافی ہے۔	
تحقیق الفرق بین المتارکۃ والفسخ۔	۴۴۹
فقہ میں ظن غالب سے ملحق ہے۔	۵۱۰
جزئیت کا قاعدہ کلیہ۔	۵۱۶
	۵۱۷
لڑکا احتلام وانزال اور لڑکی احتلام و حیض و حمل سے بالغ ہوتی ہے۔	
لڑکا کم از کم بارہ برس کی عمر میں بالغ ہو سکتا ہے اور لڑکی کم از کم نو برس کی عمر میں جبکہ دونوں زیادہ سے زیادہ پندرہ برس میں۔	۵۶۰
استیذان اجنبی بلکہ ولی بعید پر سکوت اذن نہیں۔	۵۷۲
غیبت کی تفاسیر سے کون سی تفسیر معتمد علیہ ہے۔	۵۸۶
ابن عمۃ الاب ذوی الارحام سے ہے اور دادی ان پر بالاتفاق مقدم۔	۵۹۷
ماں دادی پر مقدم۔	۵۹۷
احرازِ کفو شرع میں سخت مہم و مہتم بالشان ہے۔	۵۹۸
نابالغ پر تشریحِ ولایت تزویج کی حکمت۔	۵۹۸

عنوان	صفحہ
حرمت کے اسباب متعدد ہیں جن میں سے بارہ کا اجمالی ذکر۔	۵۲۰
حرمت مصاہرت کے لئے کم از کم مراہقت درکار ہے۔	۵۲۶
نکاح فضولی بے اجازت نافذ نہیں ہوتا۔	۶۰۰
ابعد کے لئے حصول ولایت کی تین شرطیں۔	

Fatawa Razawiyya, Volume 11

610: Compatibility (Kafa'at) is considered at the time of the contract; if he was compatible at that time but later became an open sinner and profligate, the marriage cannot be annulled. 130: The one on which there are original texts is best, and there is a tendency toward it.

629: Disinheriting (Aaq) is nothing in Shariah, nor does guardianship cease because of it. 151: The pure Shariah likes ease and facilitation, not constriction and severity.

658: A needy poor person who is not a craftsman is not even compatible for a poor woman. 151: Where there are several narrations, the scholars should lean toward that in which Muslims avoid hardship.

659: If a divorced woman, of her own accord and without the consent of her guardian, marries a compatible person without 'halala' and has intercourse, 'halala' will not occur because this marriage will not even exist. 184: To consider engagement as marriage is a false innovation and consensus-wise wrong.

683: At what age is a girl's marriage permissible and at what age is it impermissible? At what age does puberty occur according to Shariah law? 187: "Hal a'taytaniha" (Did you give her to me?) in a marriage ceremony is effective for the contract, and in a promise gathering, it is for seeking a promise.

683: At what age is marriage permissible when there is no absolute real guardian? 187: In ambiguous words, the basis is on circumstantial evidence.

685: What are the conditions and signs of puberty? 205: Scholars say that our time is not the time of avoiding doubts.

712: A religious, practicing non-Arab scholar is compatible for a Sayyida. 208: To consider something probable as certain is a bad suspicion.

712: A non-Arab scholar is compatible for an ignorant Arab. 208: Ruling is not a necessity without obtaining a strong presumption (Zann).

712: A poor scholar is compatible for a wealthy ignorant person. 213: Mutual confirmation by man and woman establishes marriage; if they lied, it is adultery and children are illegitimate.

712: A non-Qurayshi scholar is compatible for an ignorant Qurayshi or Alawi. 227: Jurists place the strong probability of a thing in place of the thing itself.

731: Merely being lower in financial status is not an obstacle to compatibility. 228: The predominant view is that a person is not even aware of the objectives of the words of an uncomprehended language.

IFTA AND THE CUSTOM OF THE MUFTI 129: Action is on what the majority follows. 263: One who does not recognize the people of the age is ignorant.

(blank): 385: In the custom of jurisprudence, 'permissibility' (jawaz) is used in two senses: one in the sense of validity, which is more common in contracts; the second in the sense of lawfulness, which is more prevalent in actions.

130: Words like 'Alayhil Fatwa' and 'Bihi Yufta' are more emphatic than the word 'Fatwa'. 406: Zaid married the daughter's daughter of his real sister by the order of a scholar; how is this marriage and what is the ruling on that scholar?

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

610: कफ़ाअत (बराबरी) का एतबार निकाह के वक़्त है, अगर उस वक़्त बराबर था और बाद में खुला गुनहगार और बदकार हो गया तो निकाह ख़त्म नहीं किया जा सकता। 130: जिस पर मूल ग्रंथ (मतून) हों वही श्रेष्ठ है और उसी की तरफ झुकाव होता है।

629: 'आक़' करना (बेदखल करना) शरीयत में कुछ नहीं है, और न ही इससे विलायत (संरक्षण) ख़त्म होती है। 151: शरीअत-ए-मुतहरा आसानी और नरमी को पसंद करती है, न कि तंगी और सख्ती को।

658: एक ज़रूरतमंद गरीब जो किसी पेशे से जुड़ा न हो, वह गरीब औरत के लिए भी बराबर (कफ़ू) नहीं है। 151: जहाँ कई रिवायतें हों, वहाँ उलेमा को उस तरफ झुकना चाहिए जिसमें मुसलमान तंगी से बच सकें।

659: अगर कोई तलाक़शुदा औरत अपनी मर्ज़ी से वली की इजाज़त के बिना, हलाला के बगैर किसी बराबर (कफ़ू) वाले से निकाह और सोहबत करे, तो हलाला नहीं होगा क्योंकि यह निकाह होगा ही नहीं। 184: मंगनी को निकाह मानना बातिल बिदअत है और इजमाई तौर पर गलत है।

683: कितनी उम्र में लड़की का निकाह जायज़ है और कितनी में नाजायज़? शरीअत के मुताबिक़ बालिग़ होने की उम्र क्या है? 187: निकाह की मजलिस में "हल अतैतनीहा" (क्या तुमने वह मुझे दी?) निकाह के लिए मुफ़ाद है और वादे की मजलिस में वादे की मांग है।

683: निकाह कितनी उम्र में जायज़ होता है जबकि उसका कोई हक़ीक़ी वकील (संरक्षक) न हो? 187: संदिग्ध शब्दों में दारोमदार परिस्थिति के साक्ष्य (क़रीना) पर होता है।

685: बालिग़ होने की शर्तें और निशानियाँ क्या हैं? 205: उलेमा फ़रमाते हैं कि हमारा ज़माना संदेहों से बचने का ज़माना नहीं है।

712: दीनदार और परहेज़गार अजमी (ग़ैर-अरब) आलिम, सैयदा के लिए कफ़ू (बराबर) है। 208: किसी संभावित चीज़ को यक़ीनी मान लेना 'सू-ए-ज़न' (बुरा संदेह) है।

712: अजमी आलिम, अनपढ़ अरब के लिए कफ़ू है। 208: मज़बूत गुमान (ज़न्न) हासिल किए बिना हुक्म देना ज़रूरी नहीं।

712: गरीब आलिम, अमीर जाहिल के लिए कफ़ू है। 213: स्त्री और पुरुष की आपसी पुष्टि निकाह को साबित करती है; अगर उन्होंने झूठ बोला तो यह ज़िना है और संतान अवैध होगी।

712: ग़ैर-कुरैशी आलिम, अनपढ़ कुरैशी या अलवी के लिए कफ़ू है। 227: फ़क़ीह (विधिवेत्ता) किसी चीज़ की प्रबल संभावना को उस चीज़ के बराबर मानते हैं।

731: सिर्फ़ माली हैसियत का कम होना कफ़ाअत (बराबरी) में रुकावट नहीं है। 228: प्रबल विचार यही है कि आदमी अनजानी भाषा के शब्दों के उद्देश्यों से वाकिफ़ नहीं होता।

इफ़्ता और मुफ़्ती की रस्म 129: अमल उसी पर होगा जिस पर बहुमत है। 263: जो अपने ज़माने के लोगों को नहीं पहचानता, वह जाहिल है।

(खाली): 385: फ़िक़्ह के मुहावरे में 'जवाज़' दो अर्थों में इस्तेमाल होता है: एक 'सेहत' (वैधता) के अर्थ में, जो अनुबंधों (अक़ूद) में अधिक प्रचलित है; दूसरा 'हिल्लत' (जायज़ होने) के अर्थ में, जो कार्यों (अफ़आल) में अधिक प्रचलित है।

130: 'अलैहिल फ़तवा' और 'बिही युफ़्ता' जैसे शब्द 'फ़तवा' शब्द से अधिक प्रभावशाली हैं। 406: ज़ैद ने एक आलिम के हुक्म से अपनी सगी बहन की नातिन (लड़की की लड़की) से निकाह किया; यह निकाह कैसा है और उस आलिम के लिए क्या हुक्म है?

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

610: کفاءت کا اعتبار وقتِ عقد ہے اس وقت کفو تھا بعد میں فاسق معلن وفاجر ہو گیا تو نکاح فسخ نہیں کر سکتا۔ 130: جس پر متون ہوں وہی عمدہ ہے اور اسی کی طرف جھکاؤ ہوتا ہے۔

629: عاق کرنا شرعاً کوئی چیز نہیں ، نہ اس سے ولایت زائل ہو ۔ 151: شریعت مطہرہ رفق و تیسیر کو پسند فرماتی ہے نہ کہ تضییق و تشدد کو۔

658: فقیر محتاج جو ذی حرفہ نہ ہو وہ فقیرہ کا کفو بھی نہیں۔ 151: جہاں چند روایات ہوں وہاں علماء کو ادھر جھکنا چاہئے جس میں مسلمان تنگی سے بچیں۔

659: مطلقہ بطور خود بلا رضائے ولی اگر کفو سے بغیر حلالہ نکاح و ہمبستری کرے حلالہ نہ ہو گا کہ یہ نکاح ہو گا ہی نہیں۔ 184: منگنی کو نکاح ٹھہرانا بدعتِ باطل اور اجماعاً غلط ہے۔

683: کتنی عمر میں لڑکی کا نکاح جائز اور کتنی عمر میں ناجائز، سنِ بلوغ بحکم شرعی کتنی عمر میں ہوتا ہے۔ 187: "ھل اعطیتنیھا" مجلس عقد میں مفید عقد اور جلسہ وعد میں طلب وعد ہے۔

683: کتنی عمر میں نکاح جائز ہوتا ہے جبکہ اس کا کوئی حقیقی وکیل مطلق نہ ہو۔ 187: الفاظ محتملہ میں مدار قرینہ پر ہے۔

685: بلوغ کی کیا کیا شرائط اور نشانیاں ہیں۔ 205: علماء فرماتے ہیں ہمارا زمانہ اجتنابِ شبہات کا زمانہ نہیں۔

712: دیندار متدین عجمی عالم سیدہ کا کفو ہے۔ 208: محتمل کو مظنون ٹھہرالینا سوئے ظن ہے۔

712: عجمی عالم عربی جاہل کا کفو ہے۔ 208: بے حصولِ ظن حکم ضرورت نہیں۔

712: عالم فقیر جاہل غنی کا کفو ہے۔ 213: تصادقِ مرد و زن مثبتِ نکاح ہے اگر جھوٹ کہا تو زنا اور اولاد ولد الزنا۔

712: غیر قرشی عالم جاہل قرشی و علوی کا کفو ہے۔ 227: فقہاء مظنّہِ غالبہِ شئی کو قائم مقامِ شئی کرتے ہیں۔

731: فقط مالی حیثیت میں کم ہونا مانعِ کفاءۃ نہیں۔ 228: غالب یہی ہے کہ آدمی الفاظِ زبان غیر مفہوم کے مقاصد پر بھی مطلع نہیں ہوتا۔

افتاء ورسم المفتی 129: عمل اسی پر جس پر اکثریت ہے۔ 263: جسے اہل زمانہ کی پہچان نہیں وہ جاہل ہے۔

(خالی): 385: عرفِ فقہ میں جواز دو معنی میں مستعمل ہے ایک بمعنی صحت اور عقود میں یہی زیادہ متعارف ہے، دوسرا بمعنی حلت اور افعال میں یہی زیادہ مروج ہے۔

130: علیہ الفتویٰ اور بہ یفتی الفاظ فتویٰ سے آکد ہیں۔ 406: زید نے حقیقی بہن کی لڑکی کی لڑکی سے بحکم ایک عالم کے نکاح کیا، یہ نکاح کیسا ہے اور اس عالم کا کیا حکم ہے۔

Fatawa Razawiya Volume 11

- 477 | A scholar who gives a fatwa allowing marriage with a brother's foster granddaughter is not a scholar but is a thousand times worse than the ignorant. | There is no difference in lack of compatibility (Kafa'at) due to sin (fisq) etc. | 635
- 477 | The angels of the heavens and earth curse the one who gives a fatwa without knowledge. | If the separation is from the woman's side, it is annulment (faskh); if from the man's side, it is divorce (talaq), and a judicial decree (qadha) is a condition for all. | 645
- 477 | The Hadith states: people will take the ignorant as leaders and ask them questions; they will give fatwas without knowledge, thus going astray themselves and leading others astray. | A sinner (fasiq), even if not open about it, cannot be a match (kufu) for a virtuous woman or the daughter of virtuous people. | 658
- 482 | Citing another school of thought becomes a heavy burden for a specific purpose. | Weavers, tanners, cobblers, and barbers—such lowly professionals who are well-known for their lowly trades—even if they are scholars, still cannot be matches for noble people. | 715
- 482 | Ruling and giving fatwa based on a weak and retracted opinion is ignorance and a violation of consensus (ijma). | In our lands, Syeda women do not find it shameful to marry a Pathan or Mughal scholar; however, if they are from lowly professions, even if they are scholars, the shame is not removed. | 715
- 485 | It is not permissible for a follower (muqallid) to rule against their Imam. | If someone from a lowly profession becomes a scholar and has left their profession for so long that people have forgotten it, and that person gains status and respect in hearts, and now there is no shame for the daughters of noble people to marry him, then he can become a match (kufu). | 715
- 490 | One who is most daring in giving fatwas is most daring regarding hellfire. | The ruling on marriage between Syeda women and non-Syeds like Pathans or Mughals etc. | 716
- 514 | It is forbidden (haram) to ask for a fatwa from Deobandis and to act upon it. | Whether vileness and nobility are religiously dependent on the nation/tribe or not. | 719

- 547 | Contradiction in hidden places is acceptable and pardoned. | Compatibility (Kafa'at) is reliable in marriage and it depends on custom ('urf). | 728
- 593 | All better scenarios of the absence of the nearest guardian (Wali-e-Aqrab) and the rules governing them. | Some Quraysh are matches for others, and some are not. | 732
- 602 | According to the reliable opinion, for 'discontinued absence' (Ghaybat-e-Munqati'ah), traveling is not a condition, nor is being outside the city. | |

फ़तावा रज़विया ग्यारहवीं जिल्द

- 477 | भाई की रज़ाई (दूध शरीक) पोती से निकाह का जवाज़ देने वाले आलिम नहीं बल्कि जाहिलों से हज़ार दर्जा बदतर हैं। | फ़िस्क़ (पाप) वग़ैरा की वजह से कफ़ाअत (बराबरी) न होने में कोई फ़र्क़ नहीं। | 635
- 477 | जिस किसी ने बग़ैर इल्म के फ़तवा दिया, उस पर ज़मीन व आसमान के फ़रिश्ते लानत करते हैं। | फ़ुरक़त (जुदाई) औरत की तरफ़ से हो तो फ़स्ख़ (निरस्त), मर्द की तरफ़ से हो तो तलाक़ है और क़ज़ा (अदालती फ़ैसला) सब के लिए शर्त है। | 645
- 477 | हदीस में है कि लोग जाहिलों को रहनुमा बनाकर उनसे सवाल करेंगे तो वे बग़ैर इल्म के फ़तवा देकर खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। | फ़ासिक़ (पापी) चाहे वह खुल्लम-खुल्ला न हो, किसी नेक औरत या नेक लोगों की बेटी का कुफ़ू (बराबरी का) नहीं हो सकता। | 658
- 482 | दूसरे मज़हब की नकल किसी ग़रज़ से बोझ बन जाती है। | जुलाहे, चमड़ा पकाने वाले, मोची और नाई जैसे ज़लील पेशावर जो अपने ज़लील पेशों के साथ मशहूर हों, अगरचे वे आलिम हों तब भी शरीफ़ों के कुफ़ू नहीं हो सकते। | 715
- 482 | कमज़ोर और वापस लिए गए क़ौल पर हुक्म और फ़तवा देना जहल (अज्ञानता) और इज्मा (आम सहमति) का उल्लंघन है। | हमारे शहरों में सैयदज़ादियां पठान या मुग़ल आलिम से (निकाह करने में) शर्म महसूस नहीं करतीं, हाँ ज़लील पेशावर लोग अगर आलिम भी हों तब भी शर्म ख़त्म नहीं होती। | 715
- 485 | मुक़ल्लिद (अनुसरणकर्ता) के लिए अपने इमाम के ख़िलाफ़ हुक्म देना जायज़ नहीं है। | अगर ज़लील पेशावर लोगों में से कोई आलिम हो और उसने अपने पेशे को इतने लंबे समय से छोड़ दिया हो कि लोग उसे भूल गए हों और दिलों में उस व्यक्ति की इज़्ज़त और निगाहों में अज़मत हो गई हो, अब इससे शरीफ़ों की बेटियों को कोई शर्म न हो, तो यह भी कुफ़ू हो सकेगा। | 715
- 490 | जो फ़तवा देने पर ज़्यादा जुर्रत करता है, वह आग (जहन्नुम) पर ज़्यादा जुर्रत करता है। | सैयदज़ादियों का पठान या मुग़ल वग़ैरा ग़ैर-सैयद के निकाह का हुक्म। | 716
- 514 | देवबंदियों से फ़तवा पूछना और उस पर अमल करना हराम है। | रज़ालत (नीचता) और शराफ़त (कुलीनता) शरई तौर पर क़ौम पर निर्भर है या नहीं। | 719

- 547 | छिपने की जगह में विरोधाभास स्वीकार्य और क्षम्य है। | निकाह में कफ़ाअत का एतबार है और कफ़ाअत का मदार (आधार) उर्फ़(प्रचलन) पर है। | 728
- 593 | वली-ए-अक़रब (निकटतम संरक्षक) के ग़ायब होने की तमाम बेहतर सूरतें और उनके हुक्म का ज़ाबता (नियम)। | क़ुरैश के कुछ लोग आपस में एक-दूसरे के कुफ़ू हैं और कुछ नहीं। | 732
- 602 | मोअतमद मज़हब के अनुसार ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ (दूर की अनुपस्थिति) में सफ़र तो दरकिनार, शहर से बाहर होना भी शर्त नहीं। | |

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

- ۴۷۷ | بھائی کی رضاعی نواسی سے جواز نکاح کا فتوی دینے والے عالم نہیں بلکہ جاہلوں سے ہزار درجہ بد تر ہیں۔ | عدم کفاءت بوجہ فسق وغیرہ فسق میں کوئی فرق نہیں۔ | ۶۳۵
- ۴۷۷ | جس نے بغیر علم کے فتوی دیا اس پر زمین و آسمان کے فرشتے لعنت کرتے ہیں۔ | فرقت عورت کی طرف سے ہو تو فسخ، مرد کی طرف سے ہو تو طلاق ہے اور قضاء سب کے لئے شرط ہے۔ | ۶۴۵
- ۴۷۷ | حدیث میں ہے لوگ جاہلوں کو رہنما بنا کر ان سے سوال کریں گے تو وہ بغیر علم کے فتوی دے کر خود بھی گمراہ ہوں گے اور دوسروں کو بھی گمراہ کریں گے۔ | فاسق اگرچہ غیر معلن ہو صالحہ یا بنت صلحاء کا کفو نہیں ہوسکتا۔ | ۶۵۸
- ۴۸۲ | نقل مذہب غیر میں بارہ الغرض ہو جاتی ہے۔ | جولا ہے اور کھال پکانے والے اور موچی اور نائی انکے مثل ذلیل پیشہ ور جو اپنے ذلیل پیشوں کے ساتھ معروف ہوں اگرچہ عالم ہوں جب بھی شرفاء کے کفو نہیں ہوسکتے۔ | ۷۱۵
- ۴۸۲ | قول ضعیف و مرجوع پر حکم و فتوی جہل و خرق اجماع ہے۔ | ہمارے بلاد میں سیدانیاں پٹھان یا مغل عالم سے عار نہیں کرتیں، ہاں ذلیل پیشہ والے وہ اگر عالم ہوں جب بھی عار زائل نہیں ہوتی۔ | ۷۱۵
- ۴۸۵ | مقلد کو اپنے امام کے خلاف حکم جائز نہیں۔ | اگر ذلیل پیشہ وروں سے کوئی عالم ہو اور وہ اپنے پیشہ کو اتنی مدت سے چھوڑ چکا ہو کہ لوگ اسے بھول گئے ہوں اور قلوب میں اس شخص کی وقعت اور نگاہوں میں عظمت ہو گئی ہو اب اس سے شرفاء کی بیٹیوں کو عار نہ ہو تو یہ بھی کفو ہو سکے گا۔ | ۷۱۵

• ۴۹۰ | جو فتوی پر زیادہ جرات کرتا ہے وہ آگ پر زیادہ جرات کرتا ہے۔ | سیدانیوں سے پٹھان یا مغل وغیرہ غیر سید کے نکاح کا حکم۔ | ۷۱۶
• ۵۱۴ | دیوبندیوں سے فتوی پوچھنا اور اس پر عمل کرنا حرام ہے۔ | رذالت اور شرافت شرعاً قوم پر منحصر ہے یا نہیں۔ | ۷۱۹
• ۵۴۷ | محل خفاء میں تناقض مقبول و عفو ہے۔ | نکاح میں کفاءۃ معتبر اور کفاءۃ کا مدار عرف پر ہے۔ | ۷۲۸
• ۵۹۳ | ولی اقرب کے غائب ہونے کی کل بہتر صورتیں اور ان کے حکم کا ضابطہ۔ | قریش بعض ان کے کفو ہیں بعض کے۔ | ۷۳۲
• ۶۰۲ | مذہب معتمد پر غیبت منقطعہ میں سفر در کنار شہر سے باہر ہونا بھی شرط نہیں۔ | |

Fatawa Razawiya - Volume 11

Beliefs and Theology

- If explicit disbelief (Kufr) was committed before marriage and marriage was performed without repentance, the marriage is void and the offspring are illegitimate (Walad-uz-Zina). (153) | Committing a forbidden act (Haram) does not make one a disbeliever (Kafir) nor does it expel one from the Hanafi school. (241)
- Can a marriage be contracted between Sunnis and Rawafidh (Shias) or not? (244)
- If after marriage, either of the spouses (God forbid) becomes an apostate, any children born from subsequent intercourse will be illegitimate. (153) | And if after a few days the girl becomes a Rafidhi (Shia), will the marriage remain intact or not? (244)
- Upon the utterance of words of disbelief for which the speaker is not labeled a disbeliever, the command for renewal of Islam and renewal of marriage will definitely be given, but offspring will be illegitimate. (153) | One who performs a marriage during the waiting period (Iddah) considering it lawful is expelled from Islam and his own marriage is also void. (266)
- A sane minor who commits disbelief or is aware of disbelief and likes it, is a disbeliever and an apostate. (171) | One who deliberately participates in the marriage of a woman in her waiting period (Iddah), if he knew it was forbidden, he is a sinner; if he considered it lawful, he is expelled from Islam. (266)
- Approval of disbelief is also disbelief. (171) | The statement "Even if the Kaaba were in that direction, I would not bow my head" is a word of disbelief; repentance and renewal of Islam are mandatory for the one who says it. (269)
- Assistance should not be sought from a polytheist, especially in religious matters. (172) | A severe lash for the accursed Wahhabis by the Companion (RA) that trust is upon Allah Almighty and His Messenger (Peace and blessings of Allah be upon him). (283)
- Allah Almighty will not forgive disbelief (Kufr). (202) | The necks of the Wahhabis were struck by the sword of Allah; it is stated in the Holy Quran: "I am pleased with what Allah and His Messenger gave." (283)
- Is it permissible to use plural terms for God's glory out of respect, as in "Allah Jalla Shaanuhu says thus"? (207) | The Holy Quran (Furqan Hameed) has stated: "Now Allah and His Messenger give to us from Their bounty." (283)

- Renewal of faith (Tajdid-e-Iman) is pure goodness. (208) | Allah Almighty accepts the repentance of His servants and forgives sins. (294)
- If someone, despite being aware of the misguidance of the Wahhabis, invited them for a marriage ceremony considering them venerable and blessed, then after repentance and renewal of Islam, renewal of marriage is mandatory. (220)

फतावा रज़विया - जिल्द 11

अक़ीदे और कलाम (आस्था और धर्मशास्त्र)

- निकाह से पहले अगर स्पष्ट कुफ़्र (कफ़्र) किया और बिना तौबा के निकाह किया तो निकाह बातिल (अमान्य) है और संतान वलद-उज़्-ज़िना (अवैध) होगी। (153) | हराम काम करने से न कोई काफ़िर होता है और न ही हनफियत से खारिज (बाहर) होता है। (241)
- क्या अहले सुन्नत और रवाफिज़ (शियाओं) के बीच निकाह हो सकता है या नहीं? (244)
- निकाह के बाद अगर मियां-बीवी में से कोई (अल्लाह न करे) मुर्तद (धर्मत्यागी) हो जाए, तो उसके बाद के सहवास से जो संतान होगी वह हराम की होगी। (153) | और अगर कुछ दिनों बाद लड़की राफ़ज़िया हो जाए तो निकाह रहेगा या नहीं। (244)
- कुफ़्र के ऐसे शब्द बोलने पर जिनसे बोलने वाले को काफिर न कहें, इस्लाम के नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) और निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) का हुक्म ज़रूर होगा, मगर संतान वलद-उज़्-ज़िना होगी। (153) | इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान निकाह को जायज़ समझकर पढ़ाने वाला इस्लाम से बाहर है और उसका अपना निकाह भी चला गया। (266)
- समझदार नाबालिग जो कुफ़्र करे या कुफ़्र को जानकर उसे पसंद करे, तो वह काफिर और मुर्तद है। (171) | मुअत्तदा (इद्दत वाली महिला) के निकाह में जानबूझकर शामिल होने वाले ने अगर उस निकाह को हराम जाना तो गुनहगार है और अगर हलाल जाना तो इस्लाम से खारिज हो गया। (266)
- कुफ़्र से राजी होना भी कुफ़्र है। (171) | यह वाक्य कि "अगर इधर काबा भी हो जाए तो सिर नहीं झुकाऊंगा" कुफ़्र का शब्द है, ऐसा कहने वाले पर तौबा और तजदीद-ए-इस्लाम अनिवार्य है। (269)
- मुशरिक (बहुदेववादी) से मदद नहीं लेनी चाहिए, विशेष रूप से धार्मिक मामलों में। (172) | सहाबी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का वहाबियों पर कड़ा प्रहार कि भरोसा अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर है। (283)
- अल्लाह तआला कुफ़्र को माफ नहीं करेगा। (202) | सैफुल्लाह से वहाबियों की गर्दनें उड़ गईं, कुरान मजीद में फरमाया कि मैं अल्लाह और रसूल के देने पर राजी हूं। (283)

- सम्मान के तौर पर खुदा की शान में बहुवचन शब्द बोलना जायज़ है या नहीं, जैसे "अल्लाह जल्ल शानुहू" यूं फरमाते हैं। (207) | फुरकान-ए-हमीद (कुरान) ने इरशाद फरमाया कि अब हमें अल्लाह और उसका रसूल अपने फज़्ल (कृपा) से देते हैं। (283)
- ईमान का नवीनीकरण (तजदीद-ए-ईमान) सरासर भलाई है। (208) | अल्लाह तआला अपने बंदों की तौबा कबूल फरमाता है और गुनाहों को माफ करता है। (294)
- वहाबियों की गुमराहियों को जानते हुए अगर किसी ने उन्हें सम्मानित और बरकत वाला समझकर निकाह पढ़ाने के लिए बुलाया है, तो तौबा और तजदीद-ए-इस्लाम के बाद तजदीद-ए-निकाह अनिवार्य है। (220)

पृष्ठ 90/739

فتاوٰی رضویہ - جلد یازدہم

عقائد وکلام

- قبل نکاح اگر کفر صریح کیا اور بے توبہ نکاح کیا تو نکاح باطل اور اولاد ولد الزنا۔ (۱۵۳) | ار تکاب حرام سے نہ کافر ہوتا ہے نہ حنفیت سے خارج۔ (۲۴۱)
- اہلسنت و روافض میں باہم نکاح منعقد ہو سکتا ہے یا نہیں۔ (۲۴۴)
- نکاح کے بعد اگر زوجین میں سے کوئی معاذ اللہ مرتد ہو گیا تو اس کے بعد کے جماع سے جو اولاد ہو گی وہ حرامی ہو گی۔ (۱۵۳) | اور اگر کچھ روز بعد لڑکی رافضیہ ہو جائے تو نکاح رہے گا یا نہیں۔ (۲۴۴)
- ایسے کلمات کفر کے صدور پر جن سے قائل کو کافر نہ کہیں، تجدید اسلام و تجدید نکاح کا حکم ضرور ہو گا، مگر اولاد ولد زنانہ ہو گی۔ (۱۵۳) | دوران عدت نکاح کو حلال جان کر پڑھانے والا اسلام سے خارج اور اس کا اپنا نکاح بھی گیا۔ (۲۶۶)
- نابالغ عاقل کہ کفر کرے یا کفر پر مطلع ہو کر اسے پسند کرے تو کافر مرتد ہے۔ (۱۷۱) | معتدہ کے نکاح میں دانستہ شریک ہونیوالے نے اگر اس نکاح کو حرام جانا تو گنہگار ہے اور اگر حلال جانا تو اسلام سے خارج ہو گیا۔ (۲۶۶)
- رضا بالکفر بھی کفر ہے۔ (۱۷۱) | یہ کلمہ کہ "اگر ادھر کعبہ بھی ہو جائے تو سر نہ جھکاؤں گا" کلمہ کفر ہے ایسا کہنے والے پر توبہ اور تجدید اسلام لازم ہے۔ (۲۶۹)
- مشرک سے استعانت نہ چاہئے خصوصاً امور دینیہ میں۔ (۱۷۲) | صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وہابیہ ملاعنہ پر شدید تازیانہ کہ اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر بھروسا ہے۔ (۲۸۳)

- اللہ تعالیٰ کفر کو نہیں بخشے گا۔ (۲۰۲) | سیف اللہ سے وہابیوں کی گردن اڑ گئی قرآن مجید میں فرمایا کہ اللہ ورسول کے دینے پر راضی ہوں۔ (۲۸۳)
- تعظیماً جمع کا لفظ خدا کی شان میں بولنا جائز ہے یا نہیں جیسے اللہ جل شانہ یوں فرماتے ہیں۔ (۲۰۷) | فرقان حمید نے ارشاد کیا کہ اب ہمیں دیتے ہیں اللہ اور اس کا رسول اپنے فضل سے۔ (۲۸۳)
- تجدید ایمان خیر محض ہے۔ (۲۰۸) | اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کی توبہ قبول فرماتا اور گناہوں سے درگزر کرتا ہے۔ (۲۹۴)
- وہابیہ کی گمراہیوں پر مطلع ہوتے ہوئے اگر کسی نے ان کو معظم و متبرک سمجھ کر نکاح خوانی کے لئے بلایا ہے تو بعد توبہ و تجدید اسلام تجدید نکاح لازم ہے۔ (۲۲۰)

Fatawa Razawiyya Volume 11

(328) Some blasphemous beliefs of Rafidis. | (378) Just as denying the essentials of religion is disbelief, not considering those who deny them as disbelievers is also disbelief. (345) Mention of the types and rulings of Rafidis and some of their blasphemous beliefs. | (378) According to the consensus of scholars, anyone who doubts the disbelief and punishment of someone who denies the essentials of religion is a disbeliever. (368) A person becomes blind and deaf in love. | (378) There are many inherent blasphemies in the false beliefs of stray sects. (369) It doesn't take long for the heart to turn and thoughts to change. | (379) The correct, relied-upon, and fatwa-issued position of the majority of noble Imams and eminent jurists is that whoever believes a single Muslim to be a disbeliever becomes a disbeliever himself. (369) Giving one's daughter to a heretic (follower of a bad religion) is severe wrath and deadly poison. | (380) It is in the Hadith that whoever calls a reciter of the Kalima (Muslim) a disbeliever, this calamity will surely fall on one of them. (373) One who keeps company and friendship with innovators is deprived of the light and sweetness of faith. | (380) Whoever calls someone a disbeliever or calls them an enemy of God, and they are not so, then his words will return upon himself. (374) Whoever falls outside these four schools of thought in this era is an innovator and destined for Hell. | (380) By the ruling of both Hadith and Jurisprudence, the ruling of disbelief becomes mandatory for the one who labels a Muslim as a disbeliever. (374) If a Ghair-Muqallid (non-conformist) holds blasphemous beliefs, then marriage with them is pure nullity and adultery. | (381) Uttering blasphemies ourselves, being pleased with them, not considering them bad, or accepting a "correct" meaning for them, all have the same ruling. (374) The marriage of a Muslim woman to a disbeliever is not valid at all. | (382) If a Wahhabi does not deny any necessity of religion nor calls any denier of religious necessities a Muslim, then for the sake of caution he will not be called a disbeliever; and this same caution which prevents takfir (labeling as a disbeliever) also prevents marriage. (374) Even if a Ghair-Muqallid does not hold blasphemous beliefs, marriage with them is prohibited by the ruling of Verse and Hadith. | (382) What kind of Sharia is this where you exercise caution regarding the tongue (speech) but show no caution regarding the private parts (marriage/chastity)? (377) A few examples of definitive blasphemous beliefs. | (391) The love of a heretic is deadly poison. (377) Those claimants of Islam who hold blasphemous beliefs, their ruling is like that of an apostate. | (391) Heresy is true destruction. (378) One who considers the elders of the Wahhabis and the mujtahids

of the Rafidis as leaders, imams, or Muslims is a disbeliever. | (392) Honoring a heretic is forbidden.

फतावा रज़विया खंड 11

(328) राफ़िज़ियों के कुछ कुफ़्रिया अक़ाइद। | (378) जिस तरह दीन की ज़रूरतों का इंकार कुफ़्र है, उसी तरह उनके इंकार करने वाले को काफ़िर न जानना भी कुफ़्र है। (345) राफ़िज़ियों की क़िस्मों और अहकाम और उनके कुछ कुफ़्रिया अक़ाइद का ज़िक्र। | (378) दीन की ज़रूरतों के मुनकिर (इंकार करने वाले) के कुफ़्र और अज़ाब में शक करने वाला, उलमा के इज्मा (सहमति) के अनुसार काफ़िर है। (368) मोहब्बत में आदमी अंधा और बहरा हो जाता है। | (378) गुमराह फिरक़ों के बातिल अक़ाइद में कुफ़्रिया बातें बहुत ज़्यादा हैं। (369) दिल पलटने और ख़्याल बदलने में देर नहीं लगती। | (379) जमहूर आइम्मा-ए-किराम और फ़ुक़हा-ए-आज़ाम का सही, मोतमद (भरोसेमंद) और मुफ़्ती-बिह मज़हब यही है कि जो किसी एक मुसलमान को काफ़िर माने, वह ख़ुद काफ़िर है। (369) बद-मज़हब को अपनी बेटी देना सख्त कहर और ज़हरे-क़ातिल (जानलेवा ज़हर) है। | (380) हदीस में है कि जो किसी कलमा गो (मुसलमान) को काफ़िर कहे, उनमें से एक पर यह बला ज़रूर पड़ेगी। (373) बदअतियों से मेल-जोल और दोस्ती करने वाला ईमान के नूर और मिठास से महरूम हो जाता है। | (380) जो किसी को कुफ़्र के साथ पुकारे या ख़ुदा का दुश्मन बताए और वह ऐसा न हो, तो उसकी बात उसी पर पलट आएगी। (374) जो इस ज़माने में इन चारों मज़हबों से बाहर हो, वह बदअती और जहन्नमी है। | (380) हदीस और फिक़ह दोनों के हुक्म से, मुसलमान की तक़फ़ीर (काफ़िर कहना) करने वाले पर कुफ़्र का हुक्म लाज़िम आता है। (374) अगर ग़ैर-मुक़ल्लिद कुफ़्रिया अक़ीदा रखता हो, तो उससे निकाह सरासर बातिल (अमान्य) और ज़िना (व्यभिचार) है। | (381) ख़ुद कुफ़्रिया बातें बकना, उन पर राजी होना, उन्हें बुरा न समझना या उनके लिए सही अर्थ तलाशना, सबका एक ही हुक्म है। (374) मुसलमान औरत का काफ़िर से निकाह बिल्कुल सही नहीं है। | (382) जो वहाबी किसी ज़रूरी-ए-दीन का मुनकिर न हो और न ही किसी ज़रूरी-ए-दीन के मुनकिर को मुसलमान कहता हो, तो उसे एहतियात के तौर पर काफ़िर नहीं कहेंगे, और यही एहतियात जो तक़फ़ीर से रोकती है, निकाह से भी रोकती है। (374) ग़ैर-मुक़ल्लिद कुफ़्रिया अक़ीदा न भी रखता हो, तब भी उससे निकाह आयत और हदीस के हुक्म से मना है। | (382) यह कौन सी शरीअत है कि ज़ुबान के मामले में एहतियात बरतें और शर्मगाह के मामले में लापरवाही। (377) क़तई कुफ़्रिया अक़ाइद की चंद मिसालें। | (391) बद-मज़हब की मोहब्बत ज़हरे-क़ातिल है। (377) इस्लाम के दावेदार जो कुफ़्रिया अक़ाइद रखें, उनका हुक्म मुर्तद (धर्मत्यागी) जैसा है। | (391) बद-मज़हबी असली हलाकत (विनाश) है। (378) वहाबियों के बड़ों और राफ़िज़ियों के मुजतहिदों को

पेशवा और इमाम या मुसलमान समझने वाला काफ़िर है। | (392) बद-मज़हब की ताज़ीम (सम्मान) हराम है।

पृष्ठ 91/739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

(۳۲۸) روافض کے بعض عقائد کفریہ۔ | (۳۷۸) جس طرح ضروریات دین کا انکار کفر ہے اسی طرح ان کے منکر کو کافر نہ جاننا بھی کفر ہے۔ (۳۴۵) روافض کے اقسام واحکام اور ان کے بعض عقائد کفریہ کا ذکر۔ | (۳۷۸) ضروریات دین کے منکر کے کفر و عذاب میں شک کرنے والا باجماع علماء کافر ہے۔ (۳۶۸) محبت میں آدمی اندھا بہرا ہو جاتا ہے۔ | (۳۷۸) طوائف ضالہ کے عقائد باطلہ میں کفریات لزومیہ بکثرت ہیں۔ (۳۶۹) دل پلٹنے اور خیال بدلنے کچھ دیر نہیں لگتی۔ | (۳۷۹) جمہور ائمہ کرام و فقہائے اعلام کا مذہب صحیح و معتمد و مفتی بہ یہی ہے جو کسی ایک مسلمان کو کافر اعتقاد کرے وہ خود کافر ہے۔ (۳۶۹) بد مذہب کو اپنی بیٹی دینا تو سخت قہر اور زہر قاتل ہے۔ | (۳۸۰) حدیث میں ہے کہ جو کسی کلمہ گو کو کافر کہے ان میں سے ایک پر یہ بلا ضرور پڑے گی۔ (۳۷۳) بدعتیوں سے انس اور دوستی کرنے والا ایمان کے نور اور حلاوت سے محروم ہو جاتا ہے۔ | (۳۸۰) جو کسی کو کفر پر پکارے یا خدا کا دشمن بتائے اور وہ ایسا نہ ہو تو اس کا قول اسی پر پلٹ آئے گا۔ (۳۷۴) جو اس زمانے میں ان چاروں مذہبوں سے خارج ہو وہ بدعتی اور دوزخی ہے۔ | (۳۸۰) حدیث و فقہ دونوں کے حکم سے مسلمان کی تکفیر کرنے والے پر حکم کفر لازم آتا ہے۔ (۳۷۴) اگر غیر مقلد عقیدہ کفریہ رکھتا ہو تو اس سے نکاح محض باطل اور زنا ہے۔ | (۳۸۱) خود کفریات بکنایات پر راضی ہونا یا انہیں برا نہ جاننا یا ان کے لئے معنی صحیح ماننا سب کا ایک ہی حکم ہے۔ (۳۷۴) مسلمان عورت کا کافر سے نکاح اصلاً صحیح نہیں۔ | (۳۸۲) جو وہابی کسی ضروری دین کا منکر نہ ہو اور نہ ہی کسی ضروری دین کے منکر کو مسلمان کہتا ہو تو اس کو برائے احتیاط کافر نہ کہیں گے، اور یہی احتیاط جو مانع تکفیر ہے مانع نکاح بھی ہے۔ (۳۷۴) غیر مقلد عقیدہ کفریہ نہ بھی رکھتا ہو تب بھی اس سے

نکاح بحکم آیت وحدیث منع ہے۔ | (۳۸۲) یہ کون سی شرع ہے کہ زبان کے باب میں احتیاط کیجئے اور فرج کے بارے میں بے احتیاطی۔ (۳۷۷) عقائد کفریہ قطعیہ کی چند مثالیں۔ | (۳۹۱) بد مذہب کی محبت سم قاتل ہے۔ (۳۷۷) مدعیان اسلام میں جو عقائد کفریہ رکھیں ان کا حکم مثل مرتد ہے۔ | (۳۹۱) بد مذہبی ہلاک حقیقی ہے۔ (۳۷۸) کبرائے وہابیہ اور مجتہدین روافض کو پیشوا وامام یا مسلمان سمجھنے والا کافر ہے۔ | (۳۹۲) بد مذہب کی تعظیم حرام ہے۔

Fatawa-e-Razvia, Volume 11

Page	Topic	Page	Topic
496	One who honors a person of a wrong creed has helped in demolishing Islam.	434	Those who consider the command of Shari'ah as false and the views of disbelievers as correct are clear disbelievers and apostates; socializing with them is forbidden.
496	A transgressor is legally deserving of humiliation and his honoring is impermissible.	434	There is no obedience to anyone in the disobedience of Allah Almighty.
497	Do not call a hypocrite 'leader', for if he is your leader, then indeed you have displeased your Lord, Almighty.	437	Obedience to parents regarding socializing with apostates is impermissible.
399	A person of a wrong creed is a dog, rather worse than a dog.	435	If someone considers any act of disbelievers as good, the jurists declare him a disbeliever. For instance, if one says 'not talking while eating is a good habit of the Magians' or 'avoiding intercourse during menstruation is a good custom of the Magians', he becomes a disbeliever.
399	People of a wrong creed are the dogs of the dwellers of Hell.	435	If someone is told 'the Shari'ah ruling is this' and he replies 'I work according to my custom, not Shari'ah', then according to some scholars, he becomes a disbeliever.
416	The slanderer of Hazrat Siddiqa (Aisha) RA is a cursed disbeliever; whoever does not consider him a disbeliever is himself a disbeliever.	479	The Zahiri sect is opposed to the four Imams and all Mujtahideen. Considering their leader Dawood al-Zahiri as being from the Ahl-us-Sunnah is ignorance and foolishness; he is by no means from the Ahl-us-Sunnah.
416		480	

Page	Topic
	A person who marries his daughter or sister to a slanderer or an apostate is a 'Dayyuth' (cuckold).
416	Allah Almighty will not look with mercy upon three persons on the Day of Judgment: one who is disobedient to parents, a woman who imitates men, and a Dayyuth.
416	Three persons will never enter Paradise: a Dayyuth, a woman with a masculine appearance, and a drunkard.
420	Considering a non-prophet superior to a prophet is disbelief (Kufr).
420	He who believes the Great Quran to be incomplete is a disbeliever.
420	Insulting (Tabarra) the Two Sheikhs (Abu Bakr and Umar) RA is absolute disbelief according to the jurists.

Page	Topic
	No consideration is given to the opposition of the Zahiri sect. Taqlid (imitation) of any of them is not permissible. Zahiris are deprived of intellect as they reject clear analogy (Qiyas Jali).
508	The apostasy and acceptance of Islam of a minor after reaching the age of discernment is valid.
508	Apostate people teach blasphemous beliefs to their children in early childhood.
691	To say that a non-prophet is superior to a prophet is disbelief.
691	One who doubts the disbelief of a definitive disbeliever is also a disbeliever.
717	A person says that a 'Syed' girl (from the Prophet's lineage) can be married to anyone. Someone asked 'even if a scavenger becomes Muslim, can he also marry her?', he replied 'there is no harm in it'. What is the ruling?

फ़तवा-ए-रज़विया, जिल्द 11

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
496	जिसने किसी बदमज़हब (विधर्मी) का सम्मान किया, उसने इस्लाम को ढहाने में मदद की।	434	शरीयत के हुक्म को बातिल और काफ़िरों के मसले को सही मानने वाले स्पष्ट काफ़िर और मुर्तद हैं, उनसे मेल-जोल हराम है।
496	फ़ासिक (पापी) शरीयत के अनुसार अपमान का पात्र है और उसका सम्मान करना नाजायज़ है।	434	अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में किसी की आज्ञा मानना जायज़ नहीं।
497	मुनाफ़िक (पाखंडी) को 'सरदार' कहकर मत पुकारो, क्योंकि यदि वह तुम्हारा सरदार है, तो निश्चय ही तुमने अपने रब अज़्ज़वजल को नाराज़ किया है।	437	मुर्तदों से मेल-जोल के बारे में माता-पिता की आज्ञा मानना नाजायज़ है।
399	बदमज़हब कुत्ता है, बल्कि कुत्ते से भी बदतर है।	435	जो किसी काफ़िरों के कार्य को अच्छा समझे, फ़ुक़हा उसे काफ़िर करार देते हैं। यहाँ तक कि यदि कोई कहे कि 'भोजन के समय बात न करना मजूसी (अग्निपूजकों) की अच्छी बात है' या 'मासिक धर्म की स्थिति में संभोग छोड़ना मजूसी की अच्छी रस्म है', तो वह काफ़िर हो जाएगा।
399	बदमज़हब लोग दोज़ख़ियों (नरकवासियों) के कुत्ते हैं।	435	यदि कोई किसी से कहे कि शरीयत का हुक्म यह है और वह जवाब में कहे कि 'मैं तो अपनी रस्म के अनुसार काम करता हूँ, शरीयत से नहीं', तो कुछ विद्वानों के अनुसार वह काफ़िर हो जाएगा।
416	हज़रत सिद्दीक़ा (आयशा) रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाने वाला लानती काफ़िर है; जो	479	फ़िरक़ा-ए-ज़ाहिरिया चारों इमामों और सभी मुजतहिदीन का विरोधी है। उनके इमाम दाऊद

पृष्ठ	विषय
	उसे काफ़िर न समझे वह स्वयं काफ़िर है।
416	जो व्यक्ति अपनी पुत्री या बहन का निकाह तोहमत लगाने वाले या मुर्तद (धर्मत्यागी) से करे, वह 'दय्यूष' (अधम) है।
416	अल्लाह तआला क़यामत के दिन तीन व्यक्तियों पर रहमत की नज़र नहीं फरमाएगा: माता-पिता का नाफ़रमान, पुरुषों के समान वेशभूषा वाली स्त्री और दय्यूष।
416	तीन व्यक्ति जन्नत में कभी नहीं जाएंगे: दय्यूष, मर्दाना बनावट वाली स्त्री और शराबी।
420	गैर-नबी को नबी से श्रेष्ठ मानना कुफ़्र (अविश्वास) है।
420	जो क़ुरान-ए-अज़ीम को अधूरा माने, वह काफ़िर है।
420	फ़ुक़हा-ए-किराम (धर्मशास्त्रियों) के अनुसार हज़रत शैख़ैन (अबू बक्र और उमर) रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर तबर्रा (गाली-गलौज) करना पूर्णतः काफ़िर है।

पृष्ठ	विषय
	ज़ाहिरी को अहल-ए-सुन्नत में समझना अज्ञानता और मूर्खता है, वे हरगिज़ अहल-ए-सुन्नत नहीं हैं।
480	फ़िरक़ा-ए-ज़ाहिरिया के विरोध का कोई महत्व नहीं। उनमें से किसी की तक़लीद (अनुकरण) जायज़ नहीं, ज़ाहिरिया विवेकहीन हैं क्योंकि वे 'क़यास-ए-जली' (स्पष्ट अनुमान) के मुनकिर (अस्वीकारी) हैं।
508	समझ आने के बाद नाबालिग का इर्तदाद (धर्मत्याग) और इस्लाम मान्य है।
508	मुर्तद लोग बचपन में ही अपनी संतान को कुफ़्रिया (ईश-निंदात्मक) अक़ीदे सिखाते हैं।
691	गैर-नबी को नबी से श्रेष्ठ कहना कुफ़्र है।
691	निश्चित काफ़िर के कुफ़्र में संदेह करने वाला भी काफ़िर है।
717	एक व्यक्ति कहता है कि सैयद यानी आले-नबी की बेटी हर किसी को मिल सकती है, किसी ने कहा 'क्या झाड़ू देने वाला (भंगी) मुसलमान हो जाए उसे भी?', उसने जवाब दिया 'कोई हर्ज नहीं', क्या हुक्म है?

فتاویٰ رضویہ، جلد یاز دہم

صفحہ	عنوان
۴۹۶	جس نے کسی بدمذہب کی توقیر کی اس نے اسلام کو ڈھا دینے میں مدد کی۔
۴۹۶	فاسق شرعاً واجب الاہانت ہے اور اس کی تعظیم ناجائز ہے۔
۴۹۷	منافق کو سردار کہہ کر مت پکارو کہ اگر وہ تمہارا سردار ہے تو بے شک تم نے اپنے رب عزوجل کو ناراض کیا ہے۔
۳۹۹	بدمذہب کتا ہے بلکہ کتے سے بھی بدتر ہے ۔
۳۹۹	بدمذہب لوگ دوزخیوں کے کتے ہیں۔

صفحہ	عنوان
۴۳۴	حکم شرع کو باطل اور مسئلہ کفار کو صحیح ماننے والے صریح کفار و مرتدین ہیں ان سے میل جول حرام ہے۔
۴۳۴	اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں کسی کی اطاعت نہیں۔
۴۳۷	مرتدین سے میل جول کے بارے میں والدین کی اطاعت ناجائز ہے۔
۴۳۵	جو کسی امر کفار کو اچھا جانے فقہاء اس کی تکفیر کرتے ہیں یہاں تک اگر یوں کہے کہ وقت طعام ترک کلام مجوسیوں کی اچھی بات ہے یا ترک مجامعت بحالت حیض مجوسیوں کی اچھی رسم ہے تو کافر ہو جائے۔
۴۳۵	اگر کوئی کسی کو کہے کہ حکم شرع یوں ہے وہ جواب میں کہے کہ میں تو اپنی رسم کے مطابق

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
			کام کرتا ہوں شرع سے نہیں۔ تو بعض علماء کے نزدیک کافر ہو جائے گا۔
	حضرت صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ		فرقہ ظاہریہ مخالف ائمہ اربعہ و تمام مجتہدین
۴۱۶	عنہا کا قاذف کافر ملعون ہے جو اسے کافر نہ جانے خود کافر ہے۔	۴۷۹	ہے ان کے امام داؤد ظاہری کو اہل سنت سے جاننا جہل و سفاہت ہے وہ ہرگز اہلسنت نہیں۔
	جو شخص اپنی دختر یا خواہر کا		فرقہ ظاہریہ کی مخالفت کا کچھ اعتبار نہیں۔ نہ
۴۱۶	نکاح قاذف یا مرتد سے کرے وہ دیوث ہے	۴۸۰	ان میں سے کسی کی تقلید جائز، ظاہریہ مسلوب العقل ہیں کہ قیاس جلی کے منکر ہیں۔
	اللہ تعالیٰ قیامت کے دن تین شخصوں پر نظر رحمت نہیں		
۴۱۶	فرمائے گا، ماں باپ کا نافرمان، مردوں سے مشابہت رکھنے والی عورت اور دیوث۔	۵۰۸	عقل و تمیز کے بعد نابالغ کا ارتداد و اسلام صحیح ہے۔
	تین شخص جنت میں کبھی نہ		
۴۱۶	جائیں گے، دیوث، مردانی وضع کی عورت اور شرابی۔	۵۰۸	مرتد لوگ بہت بچپن میں اپنی اولاد کو عقائد کفریہ سکھاتے ہیں۔
۴۲۰	غیر نبی کو نبی سے افضل ماننا کفر ہے۔	۶۹۱	غیر نبی کو نبی سے افضل کہنا کفر ہے۔
۴۲۰		۶۹۱	

صفحہ	عنوان
	جو قرآن عظیم کو ناقص مانے کافر ہے۔
۴۲۰	حضرات شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر تبر الفقہاء کرام کے نزدیک مطلقاً کافر ہے۔
۷۱۷	قطعی کافر کے کفر میں شک کرنے والا بھی کافر ہے۔
	ایک شخص کہتا ہے کہ سید یعنی آل نبی کی دختر ہر ایک کو پہنچ سکتی ہے، کسی نے کہا اگر جاروب کش مسلمان ہو جائے اسے بھی، جواب دیا کچھ مضائقہ نہیں، کیا حکم ہے۔

Fatawa Rizvia, Volume 11

Topic	Page	Content	Ref. No
Those who call a person who marries a Sayyid an infidel need to renew their Islam.	730	In this age, whoever is outside the four schools of thought (Hanafi, Shafi'i, Hanbali, and Maliki) is an innovator and destined for hellfire.	282
Rejection of the followers of deviant religions.		The contemporary non-conformists (Ghair Muqallidin) hold many blasphemous and misguided beliefs.	473
Whether marriage is valid if the representative (wakil) or witness is a non-conformist or Wahhabi.	218	The fact that non-conformists are misguided and followers of deviant religions is proven in the best manner.	473
It is rare for the misguidance of non-conformists not to reach the limit of disbelief (kufr).	218	Eating, drinking, and intermarrying with followers of deviant religions is prohibited.	473
Since the emergence of the Rashidi sect, the condition of the conformist Wahhabis has become like that of extremist Ismailis.	218	In reality, the marriage of a Sunni Hanafi woman with a non-conformist Wahhabi is either purely invalid and adultery according to Sharia or prohibited and a sin.	477
Whether marriage will be valid if a woman conducts a non-conformist marriage according to Sharia.	219	Whether it be a Wahhabi or a Rafidi (Shia) who holds definitive blasphemous beliefs, marriage with them is absolutely and certainly void and nothing but adultery by consensus of Muslims.	477
Difference between having a non-conformist or a Hindu polytheist perform the marriage ceremony.	219	Names of two treatises containing a thorough and sufficient explanation of Wahhabi beliefs.	478
By the ruling of authentic Hadiths and jurisprudential clarifications, the ruling of	219	Calling the following (taqlid) of Imams 'shirk' (polytheism) and calling those who follow them 'mushriks'	478

Topic	Page	Content	Ref. No
disbelief (kufr) is mandatory for non-conformists for hundreds of reasons.		(polytheists) is a well-known misguided belief of non-conformists.	
Many among the non-conformists are openly deniers of the essentials of faith and are definitively infidels by consensus.	219	Imposing a Sharia ruling on minor matters related to Prophets and Saints, and even on prohibited, disliked, or even permissible and recommended acts, is the core fundamental of Wahhabism.	478
Marriage with Rafidis (Shias) is void.	441	The essence of Wahhabi belief is that anyone who is not a Wahhabi is a polytheist.	478
Non-conformists are not Shafi'is; rather, they are people of innovation, passion, and fire.	482	According to the Wahhabi religion, on the issue of 'taqlid' (imitation) alone, the Imams of the religion, perfect scholars, and gnostic saints of the past eleven hundred years are all considered polytheists.	478

फ़तावा रज़विया, खंड ११

विषय	पृष्ठ	विवरण	संदर्भ संख्या
सैयद से निकाह करने वाले को काफ़िर कहने वालों को इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) करना चाहिए।	730	इस समय में जो चार मज़हबों (हनाफ़ी, शाफ़ई, हनबली और मालकी) से बाहर है, वह बिदअती और दोज़खी (नारी) है।	282
बद-मज़हबों का खंडन।		आधुनिक ग़ैर-मुक़ल्लिदीन के बहुत से अक़ीदे कुफ़्रिया और गुमराह करने वाले हैं।	473
निकाह में वकील या गवाह ग़ैर-मुक़ल्लिद या वहाबी हो तो निकाह सही होगा या नहीं।	218	ग़ैर-मुक़ल्लिदों का गुमराह और बद-मज़हब होना बेहतरीन तरीक़े से साबित है।	473
ग़ैर-मुक़ल्लिदों की गुमराही का कुफ़्र की हद तक न पहुँचना दुर्लभ है।	218	बद-मज़हबों के साथ खाना-पीना और विवाह करना वर्जित (ममनू) है।	473
जब से रशीदिया संप्रदाय पैदा हुआ है, मुक़ल्लिद वहाबियों का हाल भी कट्टर इस्माइलियों जैसा हो गया है।	218	वास्तव में एक सुन्नी हनफी महिला का निकाह ग़ैर-मुक़ल्लिद वहाबी से या तो शरीअत के अनुसार पूरी तरह से बातिल (अवैध) और ज़िना (व्यभिचार) है या वर्जित और गुनाह है।	477
अगर कोई महिला शरीअत के अनुसार ग़ैर-मुक़ल्लिद निकाह पढ़ाए तो निकाह होगा या नहीं।	219	वहाबी हो या राफ़ज़ी जो निश्चित रूप से कुफ़्रिया अक़ीदे रखता हो, उससे निकाह मुसलमानों की सहमति (इज्मा) से निश्चित रूप से बातिल और केवल ज़िना है।	477
ग़ैर-मुक़ल्लिद और हिंदू मुशरिक से निकाह करवाने में अंतर।	219	वहाबी अक़ीदों के विस्तृत और पर्याप्त वर्णन वाले दो लेखों (रिसालों) के नाम।	478
सैकड़ों कारणों से सही हदीसों और फ़िक़ही स्पष्टीकरणों के अनुसार ग़ैर-	219	इमामों की तक़लीद को शिर्क कहना और मुक़ल्लिदों को मुशरिक कहना ग़ैर-	478

विषय	पृष्ठ	विवरण	संदर्भ संख्या
मुक़ल्लिदों पर कुफ़्र का हुक्म अनिवार्य है।		मुक़ल्लिदों का प्रसिद्ध और गुमराह करने वाला अक़ीदा है।	
ग़ैर-मुक़ल्लिदीन में बहुत से खुले तौर पर दीन की अनिवार्यताओं (ज़रूरियात-ए-दीन) के मुनकिर हैं और निश्चित रूप से इज्मा के अनुसार काफ़िर हैं।	219	अंबिया और औलिया से संबंधित छोटी-छोटी बातों पर, यहाँ तक कि मनाही, मकरूह, मुबाह और मुस्तहबात पर भी शरीअत का हुक्म लगा देना वहाबियत का मुख्य सिद्धांत है।	478
राफ़ज़ियों से निकाह बातिल है।	441	वहाबियों के विश्वास का सारांश यह है कि जो वहाबी नहीं है, वह मुशरिक है।	478
ग़ैर-मुक़ल्लिद शाफ़ई नहीं हैं, बल्कि वे बिदअती और दोज़खी हैं।	482	वहाबियों के मज़हब के अनुसार केवल तक़लीद के मसले पर ग्यारह सौ वर्षों के अइम्मा-ए-दीन, कामिल उलेमा और आरिफ़ औलिया सभी मुशरिक ठहराए जाते हैं।	478

موضوع	صفحہ
سید سے نکاح کرنے والے کو کافر کہنے والوں کو تجدید اسلام چاہئے -	۷۳۰
رد بد مذہباں	
نکاح میں وکیل یا شاہد غیر مقلد یا وہابی ہے تو نکاح درست ہوگا یا نہیں۔	۲۱۸
غیر مقلدوں کی ضلالت کا حد کفر تک پہنچا ہوا نہ ہونا نادر ہے۔	۲۱۸
جب سے طائفہ رشید یہ پیدا ہوا مقلد وہابیوں کا حال بھی کٹر اسماعیلیوں جیسا ہو گیا۔	۲۱۸
	۲۱۹

مضمون	نمبر شمار
اس زمانے میں جو مذاہب اربعہ (حنفی، شافعی، حنبلی اور مالکی) سے خارج ہے وہ بدعتی و ناری ہے۔	۲۸۲
غیر مقلدین زماں کے بہت عقائد کفریہ وضلالیہ ہیں۔	۴۷۳
غیر مقلدوں کا گمراہ وبد مذہب ہونا بروجہ احسن ثابت ہے۔	۴۷۳
بد مذہبوں سے کھانا پینا اور بیاہ شادی کرنا ممنوع ہے۔	۴۷۳
فی الواقع سنیہ حنفیہ خاتون کا نکاح غیر مقلد وہابی سے یا تو شرعاً محض باطل وزنا ہے یا ممنوع وگناہ۔	۴۷۷
	۴۷۷

موضوع	صفحہ
اگر کوئی عورت غیر مقلد بموجب شرع نکاح پڑھائے تو نکاح ہوگا یا نہیں۔	۲۱۹
غیر مقلد اور ہندو مشرک سے نکاح پڑھوانے میں فرق۔	۲۱۹
غیر مقلدوں پر صد ہاوجہ سے بحکم احادیث صحیحہ و تصریحات فقہیہ حکم کفر لازم ہے۔	۲۱۹
غیر مقلدین میں بہت سے لھم کھلا ضروریات دین کے منکر اور قطعاً اجماعاً کافر ہیں۔	۲۱۹
روافض سے نکاح باطل ہے۔	۴۴۱
غیر مقلد شافعی نہیں بلکہ اہل بدعت وہوا واہل نار ہیں۔	۴۸۲

مضمون	نمبر شمار
وہابی ہو یا رافضی جو بد مذہب عقائد کفریہ قطعیہ رکھتا ہو تو اس سے نکاح باجماع مسلمین بالقطع والیقین باطل محض و زنا صرف ہے۔	
عقائد وہابیہ کے شافی ووافی بیان پر مشتمل دو رسالوں کا نام۔	۴۷۸
تقلید ائمہ کو شرک اور مقلدوں کو مشرک کہنا غیر مقلدوں کا مشہور معروف عقیدہ ضلالت ہے۔	۴۷۸
معاملات انبیاء واولیاء سے متعلق ادنیٰ ادنیٰ باتوں پر ممنوع ومکروہ بلکہ مباحات ومستحبات پر جابجا حکم شرعی لگا دینا خاص اصل الاصول وہابیت ہے۔	۴۷۸
وہابیوں کا خلاصہ اعتقادیہ ہے کہ جو وہابی نہ ہو مشرک ہے۔	۴۷۸
وہابیوں کے مذہب پر صرف مسئلہ تقلید میں گیارہ سو برس کے ائمہ دین، علماء کاملین اور اولیاء عارفین سب مشرک قرار پاتے ہیں۔	۴۷۸

Allama Shami has included Wahhabis among the Khawarij. (480) | Finding a Muslim among today's Rafidis is as difficult as finding a white crow. (420) It is obligatory to call Khawarij infidels because they call everyone infidels except their own co-religionists. (480) | Marriage with Rafidis is absolutely forbidden and pure adultery. (420) Wahhabis are heretics and irreligious because they brand Muslims as infidels. (480) | He who gives his sister or daughter to Rafidis is a cuckold. (420) According to the uncivilized creed of Wahhabism, not only the blessed Ummah but also the noble Prophets, the great angels, and even the Holy Prophet himself (peace be upon him), and even the Lord of Honor Himself, are not safe from polytheism. (481) | Difference between the Rafidis of the first era and the present era. (421) Arguments for the prohibition of marriage between a Sunni woman and heretics. (490) | Declaring the Rawafid (Shia) as infidels is obligatory due to their cursed beliefs like the return of the dead to the world. (447) The woman who becomes the wife of a heretic is like one who has fallen under the control of a dog. (499) | Audacity towards the fire of Hell is an evident necessity for non-conformism (Ghair Muqallidi). (490) Wahhabis have neither fear of God nor shame before people. (503) | Mirzais are apostates. (508) Sunnism is clearly distinct from Wahhabism, therefore the union of a Sunni and a Wahhabi is impossible. (503) | An apostate, whether man or woman, cannot marry anyone in the whole world. (508) For a Wahhabi to become a Sunni is as impossible as night becoming day or a Christian becoming a believer. (503) | Maintaining close relations with heretics often leads to strife and corruption of faith. (508) Method to test a suspected denier of Wahhabism. (504) | Ruling on marriage and relations with non-conformists. (508) How is it to give a Sunni daughter in marriage to a Rafidi, and what is the ruling if a Sunni does so despite it being unlawful? (517) | Socializing with non-conformists is forbidden and marriage with them is unlawful. (508) What was the cause of relations between Sunnis and Rafidis since the time of the predecessors? Did the scholars of that time not pay attention to this, or is there some difference between the Shiites of that time and the Rawafid of today? (517) | Wahhabism is apostasy and the marriage of an apostate is not permissible with anyone. (509) Blasphemies of the Rawafid. (520) | It is forbidden to say 'May Allah illuminate his grave' (Noor Allah Marqadahu) for Deobandis. (514)

अल्लामा शामी ने वहाबियों को ख्वारिज में शामिल किया है। (480) | आज के राफ़ज़ियों में किसी मुसलमान को पाना उतना ही कठिन है जितना कौवों में सफेद रंग वाला। (420) ख्वारिज को काफिर कहना वाजिब है इस आधार पर कि वे अपने सह-धर्मियों के अलावा सबको काफिर कहते हैं। (480) | राफ़ज़ियों के साथ निकाह करना बिल्कुल हराम और शुद्ध व्यभिचार है। (420) वहाबी नास्तिक और अधर्मी हैं कि वे मुसलमानों को काफिर करार देते हैं। (480) | जो अपनी बहन या बेटी राफ़ज़ियों को दे, वह दयूस (दलाल) है। (420) वहाबियों के असभ्य पंथ के अनुसार न केवल उम्मत, बल्कि नबी, महान फरिश्ते और स्वयं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, यहाँ तक कि स्वयं अल्लाह तआला तक शिर्क(बहुदेववाद) से सुरक्षित नहीं हैं। (481) | पहले दौर और वर्तमान दौर के राफ़ज़ियों में अंतर। (421) बद-मज़हबों (विधर्मियों) से सुन्नी महिला के निकाह के निषेध पर दलीलें। (490) | राफ़ज़ियों को उनके शापित अकीदों जैसे मृतकों की दुनिया में वापसी (रजत) के कारण काफिर कहना वाजिब है। (447) जो महिला किसी विधर्मी की पत्नी बनी, वह वैसी ही है जैसे कुत्ते के वश में आ गई हो। (499) | जहन्नुम की आग पर जुर्रत करना गैर-मुक़ल्लिदी के लिए स्पष्ट रूप से अनिवार्य है। (490) वहाबियों को न ईश्वर का भय है और न ही लोगों से लज्जा। (503) | मिर्ज़ाई धर्मत्यागी (मुर्तद) हैं। (508) सुन्नीयत वहाबियत से स्पष्ट रूप से भिन्न है, इसलिए सुन्नी और वहाबी का मेल असंभव है। (503) | धर्मत्यागी चाहे पुरुष हो या स्त्री, उसका पूरी दुनिया में किसी से भी निकाह नहीं हो सकता। (508) किसी वहाबी का सुन्नी होना वैसा ही असंभव है जैसे रात का दिन होना या ईसाई का मोमिन होना। (503) | विधर्मियों से करीबी रिश्ते रखना अक्सर फसाद और धर्म के बिगाड़ का कारण बनता है। (508) संदिग्ध वहाबियत के इनकार करने वाले को परखने का तरीका। (504) | गैर-मुक़ल्लिदों से निकाह और संबंधों का हुक्म। (508) सुन्नी द्वारा अपनी बेटी को राफ़ज़ी के निकाह में देना कैसा है, और यदि सुन्नी नाजायज होने के बावजूद दे दे तो क्या हुक्म है? (517) | गैर-मुक़ल्लिदों से मेल-जोल हराम है और उनसे निकाह नाजायज है। (508) सल्फ़ (पूर्वजों) के समय से उस समय के सुन्नी और राफ़ज़ी के बीच संबंध का क्या कारण था, क्या उस समय के विद्वानों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया या उस समय के शिया और आज के राफ़ज़ियों में कुछ अंतर है? (517) | वहाबियत धर्मत्याग है और धर्मत्यागी का निकाह किसी के साथ भी जायज़ नहीं है। (509) राफ़ज़ियों के कुफ्र (ईश-निंदा)। (520) | देवबंदियों के लिए 'मौलाना नूर अल्लाह मर्कदहु' कहना हराम है। (514)

علامہ شامی نے وہابیوں کو خوارج میں داخل فرمایا۔ (۴۸۰) | آج کل کے رافضیوں میں کوئی مسلمان ملنا ایسا ہی مشکل ہے جیسا کوؤں میں سپید رنگ والا۔ (۴۲۰) خوارج کو کافر کہنا واجب ہے اس بناء پر کہ وہ اپنے ہم مذہب کے سوا سب کو کافر کہتے ہیں۔ (۴۸۰) | رافضیوں کے ساتھ مناکحت حرام قطعی اور زنائے خالص ہے۔ (۴۲۰) وہابی ملحد وبے دین ہیں کہ مسلمانوں کی تکفیر کرتے ہیں۔ (۴۸۰) | جو اپنی بہن یا بیٹی رافضیوں کو دے وہ دیوث ہے۔ (۴۲۰) وہابیہ کے مذہب نا مہذب پر نہ صرف امت مرحومہ بلکہ انبیاء کرام و ملائکہ عظام و خود حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حتیٰ کہ خود رب العزۃ جل وعلا تک کوئی بھی شرک سے محفوظ نہیں۔ (۴۸۱) | پہلے دور اور موجودہ دور کے رافضیوں میں فرق۔ (۴۲۱) بد مذہبوں سے سنیہ کی تزویج ممنوع ہونے پر دلائل۔ (۴۹۰) | روافض کی تکفیر بوجہ ان کے عقائد ملعونہ مثل رجعت اموات بدنیا واجب ہے۔ (۴۴۷) جو عورت کسی بد مذہب کی جو رو بنی وہ ایسی ہی ہے جیسے کتے کے تصرف میں آئی۔ (۴۹۹) | آتش جہنم پر جرات غیر مقلدی کے لئے لازم بین ہے۔ (۴۹۰) وہابیوں کو نہ خوفِ خدا ہے نہ خلق سے حیا۔ (۵۰۳) | مرزائی مرتد ہیں۔ (۵۰۸) سنیت وہابیت سے صاف مباین ہے لہٰذا سنی ووہابی کا اجتماع ناممکن ہے۔ (۵۰۳) | مرتد مرد ہو یا عورت اس کا جہاں بھر میں کسی سے نکاح نہیں ہو سکتا۔ (۵۰۸) کسی وہابی کا سنی ہونا ایسے ہی محال ہے جیسے رات کا دن ہونا یا نصرانی کا مومن ہونا۔ (۵۰۳) | بد مذہبوں سے قرابت قریبہ رکھنا بارہا منجر بہ فتنہ و فساد مذہب ہوتا ہے۔ (۵۰۸) مشتبہ الحال منکر وہابیت کو پرکھنے کا طریقہ۔ (۵۰۴) | غیر مقلدوں سے نکاح اور تعلقات کا حکم۔ (۵۰۸) سنی کو اپنی دختر رافضی کے نکاح میں دینا کیسا ہے اور سنی باوجود ناجائز کے دے تو کیا حکم ہے۔ (۵۱۷) | غیر مقلدوں سے میل جول حرام اور ان سے

مناکحت جائز ہے۔ (۵۰۸) زمانہ سلف سے اس وقت سنی اور رافضی کے درمیان قرابت کا کیا باعث ، آیا اس وقت میں علماء نے اس طرف توجہ نہیں فرمائی یا اس وقت کے شیعہ اور اب کے روافض میں کچھ فرق ہے۔ (۵۱۷) | وہابیت ارتداد ہے اور مرتد کا نکاح کسی سے بھی جائز نہیں۔ (۵۰۹) کفریات روافض۔ (۵۲۰) | دیو بندیوں کو مولانا نور اللہ مرقدہ کہنا حرام ہے۔ (۵۱۴)

551 | One who, after becoming aware of the cursed sayings of Deobandis, doubts their disbelief (kufr) is himself an infidel (kafir). | 514 | An apostate (murtad) has no guardianship over anyone, even if they claim to follow Islam. 691 | The ruling on those who believe a Qadiani to be a renewer (mujaddid), Mahdi, promised Messiah, or prophet. | 513 | One who believes in any addition or omission of even a single word, letter, or dot in the Holy Quran is certainly an infidel apostate. Zaid married his adult daughter to Amr. At the time of marriage, there was a suspicion of Amr being a Rafidi (Shiite), so he was asked. He denied it, claimed to be Sunni, and provided assurance of being a Sunni. The marriage took place with the permission of Hindah. After the departure (rukhsat), it became clear in the month of Muharram that Amr was a Rafidi. Since then, Zaid has held back Laila. What is the ruling? | 697 | Buyu' (Sales) 125 | Adherents of false religions are the dogs of Hell. | 714 | A false acknowledgment of a sale is not a sale. 197 | Adherents of false religions are the worst of all creation. | 714 | It is forbidden to fix a price based on another person's price. 227 | Siyar (International Law/Conduct) | If those unfamiliar with Arabic said "bi'tu ishtaraitu" (I sold, I bought) with the intention of buying and selling, and they knew these are the words for a sales contract, then the sale will certainly be concluded. 227 | If an apostate or an adult, in an assembly of knowledge, performs the marriage of their son, daughter, sister, brother, or any minor, in what case will it be absolutely void? | 731 | A sale by mutual conduct (hand-to-hand exchange without words) is concluded for both precious and cheap items. 385 | Regarding an apostate (male) and apostate (female), the Shariah ruling is that their marriage cannot be with any Muslim (male or female), nor with any infidel (male or female), nor with any apostate (male or female) of their own or different religion; in short, it cannot be with anyone in the entire world. | 467 | A sale at the time of the Friday Adhan (call to prayer) will be valid, although it is prohibited and a sin. 386 | The marriage of an apostate man or woman cannot take place with any man or woman in the whole world, whether Muslim, infidel, apostate, or original (non-Muslim). | 773 | Ruling on the sale of opium and hashish. 542 | Marriage with a female from the people of the book from a hostile territory (harbiyya) is, upon investigation, prohibited and a sin. | 400 | The sale of a carcass (carrion), blood, or a free person is absolutely void because it is not a subject of sale as it is not considered property (maal). 622 | To attribute the permissibility of adultery with a woman from a hostile territory (harbiyya) in a land of war (Dar al-Harb) to Imam al-Azam Abu Hanifa is

completely false. | 482 | If a minor enters into a marriage or sells or buys something, it will be dependent on permission. If the minor reaches adulthood before the guardian's permission, it will depend on their own permission.

551 | जो देवबंदियों के कुफ़्र भरे कथनों से परिचित होने के बाद भी उनके काफिर होने में संदेह करता है, वह खुद भी काफिर है। | 514 | एक धर्मत्यागी (मुरतद) का किसी पर कोई अधिकार (विलायत) नहीं होता, भले ही वह इस्लाम का दावा करता हो। 691 | कादियानी को मुजद्दिद, महदी, मसीह मौऊद या पैगंबर मानने वालों का हुक्म। | 513 | कुरान मजीद में जो एक शब्द, एक अक्षर या एक नुक्ते की कमी या अधिकता का कायल (विश्वास रखने वाला) है, वह निश्चित रूप से काफिर और मुरतद है। ज़ैद ने अपनी बालिग बेटी का निकाह अम्र से किया। निकाह के समय अम्र के राफ़ज़ी (शिया) होने का संदेह हुआ था, इसलिए उससे पूछा गया। उसने इनकार किया और खुद को सुन्नी बताया और अपने सुन्नी होने का आश्वासन दिया। हिंदा की अनुमति से निकाह हो गया। रुखसती के बाद मुहर्रम में अम्र का राफ़ज़ी होना ज़ाहिर हुआ। तब से ज़ैद ने लैला को रोक लिया है, क्या हुक्म है। | 697 | बुयू' (क्रय-विक्रय) 125 | बदमजहब (गलत धर्म वाले) जहन्नम के कुत्ते हैं। | 714 | बिक्री का झूठा इकरारनामा बिक्री नहीं है। 197 | बदमजहब तमाम सृष्टि में सबसे बुरे हैं। | 714 | एक की दर (कीमत) पर दूसरे की दर तय करना वर्जित है। 227 | सियर (अंतर्राष्ट्रीय कानून/आचरण) | अगर अरबी से अपरिचित लोगों ने खरीद-फरोख्त के इरादे से "बि'तु इशतरैतु" (मैंने बेचा, मैंने खरीदा) कहा और वे जानते थे कि ये शब्द बिक्री के अनुबंध के हैं, तो बिक्री निश्चित रूप से हो जाएगी। 227 | अगर कोई मुरतद या बालिग, इल्म की महफ़िल में अपने बेटे, बेटी, बहन, भाई या किसी नाबालिग का निकाह पढ़ाए तो किस स्थिति में वह पूरी तरह से बातिल (अमान्य) होगा? | 731 | कीमती और सस्ती चीजों में आपसी व्यवहार (बिना बोले लेनदेन) से बिक्री संपन्न हो जाती है। 385 | मुरतद और मुरतदा (धर्मत्यागी पुरुष और महिला) के बारे में शरीयत का हुक्म यही है कि उनका निकाह न किसी मुस्लिम (पुरुष या महिला) से हो सकता है, न काफिर (पुरुष या महिला) से, न ही अपने या किसी अन्य धर्म के मुरतद से; संक्षेप में, पूरी दुनिया में किसी से नहीं हो सकता। | 467 | जुमे की अज़ान के समय की गई बिक्री वैध होगी, हालांकि यह वर्जित और गुनाह है। 386 | मुरतद पुरुष हो या महिला, उसका निकाह पूरी दुनिया में किसी भी पुरुष या महिला, चाहे मुस्लिम हो, काफिर हो, मुरतद हो या असली (गैर-मुस्लिम), से नहीं हो सकता। | 773 | अफीम और हशीश की बिक्री का हुक्म। 542 | जांच के बाद, शत्रु देश की किताबिया (किताब वाली महिला) से निकाह वर्जित और गुनाह है। | 400 | मृत जानवर (मुर्दार), खून और एक स्वतंत्र व्यक्ति की बिक्री पूरी तरह से बातिल (अमान्य) है क्योंकि वह बिक्री का पात्र ही नहीं है, क्योंकि वह माल नहीं है। 622 | दारुल

हर्ब (युद्ध क्षेत्र) में हरबिया (शत्रु महिला) के साथ व्यभिचार की वैधता को इमाम-ए-आज़म अबू हनीफा की ओर मंसूब करना सरासर गलत और बातिल है। | 482 | अगर किसी नाबालिग ने निकाह किया या कुछ बेचा या खरीदा, तो वह अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह वली (अभिभावक) की अनुमति से पहले बालिग हो जाता है, तो वह खुद उसकी अपनी अनुमति पर निर्भर रहेगा।

पृष्ठ 95/739

۵۵۱ | دیوبندیوں کے اقوال ملعونہ پر مطلع ہو کر ان کے کفر میں شک کرنے والا کافر ہے۔ | ۵۱۴ | مرتد کو کسی پر ولایت نہیں اگرچہ دعویٰ اسلام رکھتا ہو۔ ۶۹۱ | قادیانی کو مجدد ، مہدی، مسیح موعود، پیغمبر ماننے والے کا حکم۔ | ۵۱۳ | قرآن مجید میں جو ایک لفظ ، ایک حرف اور ایک نقطے کی کمی بیشی کا قائل ہے یقیناً کافر مرتد ہے۔ زید نے اپنی دختر بالغہ کا نکاح عمرو سے کیا۔ وقت نکاح عمرو پر رافضی ہونے کا شبہ ہوا تھا اس لئے اس سے دریافت کیا اس نے انکار کیا اور اپنے آپ کو سنی بتایا اور اپنے سنی ہونے کا اطمینان دلایا باذن ہندہ نکاح ہو گیا ، رخصت کے بعد محرم میں عمرو کا رافضی ہونا ظاہر ہوا جب سے زید نے لیلیٰ کو روک لیا ، کیا حکم ہے۔ | ۶۹۷ | بیوع ۱۲۵ | بد مذہب اہل جہنم کے کتے ہیں۔ | ۷۱۴ | بیچ کا جھوٹا اقرار بیع نہیں۔ ۱۹۷ | بد مذہب تمام مخلوق سے بدتر ہیں۔ | ۷۱۴ | ایک کے نرخ پر دوسرے کا نرخ کرنا ممنوع ہے۔ ۲۲۷ | سیر | اگر نا آشنایانِ عربی نے "بعتُ اشتریت" بقصد بیع و شرا کہا اور جانتے تھے کہ یہ الفاظ عقدِ بیع کے ہیں تو ضرور بیع ہو جائے گی۔ ۲۲۷ | مرتد یا بالغ اگر بزم علم ولایت اپنے بیٹے بیٹی یا بہن بھائی یا کسی نابالغہ کا نکاح پڑھائے تو کس صورت میں باطل محض ہو گا۔ | ۷۳۱ | نفیس و خسیس میں بیع بالتعاطی منعقد ہو جاتی ہے۔ ۳۸۵ | درباره مرتد و مرتده حکم شرعی یہی ہے کہ ان کا نکاح نہ کسی مسلم و مسلمہ سے ہو سکتا ہے نہ کافر و کافرہ سے نہ مرتد و مرتدہ ان کے ہم مذہب خواہ مخالف مذہب سے غرض تمام جہان میں کسی سے نہیں ہو سکتا۔ | ۴۶۷ | اذانِ جمعہ کے وقت بیع صحیح ہو گی اگرچہ ممنوع و گناہ ہے۔ ۳۸۶ | مرتد مرد خواہ عورت کا نکاح تمام عالم میں کسی عورت و مرد مسلم یا کافر مرتد یا اصلی سے نہیں ہو سکتا۔ | ۷۷۳ | افیون و حشیش کی بیع کا حکم۔ ۵۴۲ | کتابیہ حربیہ سے نکاح عند التحقیق ممنوع و گناہ

ہے۔ | ۴۰۰ | مردار، خون اور حر کی بیع باطل محض ہے کہ محلِ بیع ہی نہیں کیونکہ مال نہیں۔ ۶۲۲ | دارالحرب میں حربیہ سے زنا کی تحلیل کو امام اعظم ابوحنیفہ کی طرف منسوب کرنا محض باطل ہے۔ | ۴۸۲ | نابالغ نے نکاح کیا یا کچھ بیچا یا خرید ا اجازت پر موقوف رہے گا اگر قبل اجازت ولی بالغ ہو گیا تو خود اس کی اجازت پر موقوف رہے گا۔

Volume 11 | Fatawa Rizvia

Section	Subject Description	Ref No.	Subject Description	Ref No.
Khiyar (Option)			False testimony is among the greatest sins and equivalent to idol worship.	201
	There is no 'Khiyar-e-Aib' (option of defect) in marriage.	117	A false witness becomes deserving of hellfire before leaving the spot.	202
	'Khiyar-e-Aib' has no role in marriage.	193	Marriage cannot be established by the testimony of only women, nor by the testimony of slaves and children.	216
Da'wa (Claim)			The testimony of an apostate is not valid.	219
	If a person claims a sale and the defendant confesses it to avoid taking an oath or the humiliation of court, the sale will be legally established. Rules like obligation of delivery, pre-emption (Shufa), etc., will apply. However, if the claimant is lying, what he takes is in reality fire.	131	Testimony of confession, even if it doesn't have the capacity to prove adultery, is still a positive confession.	334
	A woman, three years after marriage, says she was forced by her mother and is now independent. The husband deceived her by saying he had no wife or children. The marriage happened without her knowledge. Can she claim	245	What is proven through evidence (Bayyinah) is as established as if it were seen with one's own eyes.	334

Section	Subject Description	Ref No.	Subject Description	Ref No.
	annulment of marriage (Faskh-e-Nikah)?			
	A father passed away after betrothing his daughter. In the absence of the mother, some people forcibly married off the adult daughter. The mother filed a claim. In response, it was claimed that the deceased's half-brother (from a different father) performed the marriage without the permission of the daughter and her mother. What is the ruling?	620	In proving adultery, the testimony of women and the testimony of (only) two men is not admissible at all.	334
Shahadat (Testimony)			A boy and his father testify that they are Sunni and say, "If you consider us Shia, then for your satisfaction, make us Sunni." Their fellow countrymen who are Shia say they are Sunni. Local Muslims say they have always seen them practicing Shia religion. Some Muslims testify that these boys are not Shia but say nothing about their father. What is the ruling?	468
	It is not necessary for witnesses to understand the literal meaning of the words of 'Ijab-o-Qabul' (proposal and acceptance). It is enough that they understand a marriage is taking place.	138		

विभाग	विषय विवरण	सन्दर्भ संख्या	विषय विवरण	सन्दर्भ संख्या
ख़ियार (विकल्प)			झूठी गवाही सबसे बड़े गुनाहों में से है और मूर्ति पूजा के बराबर है।	201
	निकाह में 'खियार-ए-ऐब' (दोष का विकल्प) नहीं है।	117	झूठी गवाही देने वाला उस स्थान से हटने से पहले ही नरक का पात्र हो जाता है।	202
	निकाह में 'खियार-ए-ऐब' का कोई दखल नहीं है।	193	केवल महिलाओं की गवाही से निकाह नहीं हो सकता, न ही गुलामों और बच्चों की गवाही से।	216
दावा			धर्मत्यागी (मुरतद) की गवाही मान्य नहीं है।	219
	अगर कोई व्यक्ति किसी बिक्री (बय) का दावा करे और प्रतिवादी कसम से बचने या अदालत के अपमान से बचने के लिए स्वीकार कर ले, तो बिक्री कानूनी तौर पर साबित हो जाएगी। इसके नियम, जैसे सुपुर्दगी की अनिवार्यता, शुफ़ा आदि लागू होंगे। लेकिन अगर दावा करने वाला झूठा है, तो वह जो घर ले जाएगा वह वास्तव में आग होगा।	131	इकबालिया गवाही, भले ही उसमें व्यभिचार (ज़िना) साबित करने की क्षमता न हो, फिर भी वह एक पुष्ट स्वीकारोक्ति है।	334
	एक महिला निकाह के तीन साल बाद कहती है कि मैं अपनी माँ के	245		334

विभाग	विषय विवरण	सन्दर्भ संख्या	विषय विवरण	सन्दर्भ संख्या
	कारण मजबूर थी, अब मैं स्वतंत्र हूँ। पति ने धोखा दिया कि उसकी कोई पत्नी या बच्चे नहीं हैं, निकाह मेरी अज्ञानता में हुआ। क्या इस स्थिति में उसे निकाह रद्द करने (फ़स्ख़-ए-निकाह) का दावा करने का अधिकार है?		जो सुबूतों (बय्यिनाह) से साबित होता है, वह वैसा ही साबित होता है जैसे आँखों से देखा गया हो।	
	पिता अपनी बेटी की सगाई करके मर गया। माँ की अनुपस्थिति में कुछ लोगों ने उस वयस्क बेटी का जबरन निकाह कर दिया। माँ ने दावा दायर किया। जवाब में दावा हुआ कि मृतक के भाई ने, जो दूसरे पिता से है, बेटी और माँ की अनुमति के बिना निकाह कर दिया। क्या हुक्म है?	620	व्यभिचार (ज़िना) साबित करने में महिलाओं की गवाही और (केवल) दो पुरुषों की गवाही बिल्कुल मान्य नहीं है।	334
शहादत (गवाही)			लड़का और उसका पिता गवाही देते हैं कि हम सुन्नी हैं और कहते हैं, "अगर तुम हमें शिया समझते हो, तो अपने इत्मीनान के लिए हमें सुन्नी कर लो।" उनके हमवतन शिया कहते हैं कि ये सुन्नी हैं। यहाँ के मुसलमान कहते हैं कि हमने इन्हें हमेशा शिया मज़हब पर अमल करते देखा है और कुछ मुसलमान गवाही देते हैं कि ये	468

विभाग	विषय विवरण	सन्दर्भ संख्या	विषय विवरण	सन्दर्भ संख्या
			लड़के शिया नहीं हैं और उनके पिता के बारे में कुछ नहीं कहते। क्या हुक्म है?	
	गवाहों के लिए 'ईजाब-ओ-क़ुबूल' के शब्दों का शाब्दिक अर्थ समझना ज़रूरी नहीं है। इतना ज़रूरी है कि वे यह समझें कि निकाह हो रहा है।	138		

خیار

نکاح میں خیار عیب نہیں۔ ۱۱۷

خیار عیب کو نکاح میں کچھ دخل نہیں۔ ۱۹۳

دعوی

اگر کوئی شخص کسی بیع کا دعوی کرے اور مدعا علیہ قسم سے بچنے یا کچہری کی ذلت سے گریز کرنے کے سبب اقرار کرلے تو بیع قضاءً ثابت ہو جائیگی اور احکام، وجوب تسلیم ولزوم شفعہ وغیرہ جاری ہوں گے لیکن یہ مدعی کا ذب وہ گھر کیا لے گا درحقیقت آگ لے گا۔ ۱۳۱

جھوٹی گواہی اکبر کبائر اور بت پوجنے کے برابر ہے۔ ۲۰۱

جھوٹی گواہی دینے والا وہاں سے ہٹنے سے قبل مستحق نار ہو جاتا ہے۔ ۲۰۲

صرف عورتوں کی شہادت سے نکاح نہیں ہوسکتا، یونہی غلاموں اور بچوں کی شہادت سے۔ ۲۱۶

مرتد کی گواہی معتبر نہیں۔ ۲۱۹

شہادت اقرار اگرچہ ثبت زنا ہونے کی صلاحیت نہ رکھے مگر مثبت اقرار ہے۔ ۳۳۴

جھوٹی گواہی اکبر کبائر اور بت پوجنے کے
خیار ۲۰۱
برابر ہے۔

عورت نکاح کے تین سال بعد کہتی
ہے کہ میں اپنی والدہ کے سبب
مجبور تھی اب اس کے بعد خود
مختار ہوں، شوہر نے دھوکا دیا کہ
اس کے بیوی بچے نہیں ہیں، نکاح
میری لاعلمی میں ہوا، کیا اس
صورت میں اسے فسخِ نکاح کا
دعوی پہنچتا ہے۔
باپ دختر کی منگنی کر کے فوت
ہو گیا بغیبت والدہ دختر چند
اشخاص نے بجبر اس دختر بالغہ
کو ایک گھر میں کر دیا، ماں نے
دعوی دائر کیا جواب میں دعوی
ہوا کہ متوفی کے بھائی نے جو
دوسرے باپ سے ہے بے اجازت
دختر و والدہ دختر نکاح کر دیا کیا
حکم ہے۔

۲۴۵ ۶۲۰

بینہ سے جو ثابت ہو وہ ایسا ہی ثابت ہوتا
ہے جیسے معائنہ سے۔ ۳۳۴

اثبات زنا میں شہادت زنان و شہادت دو مرد
بہر گز مسموع نہیں۔ ۳۳۴

شہادت ۴۶۸

جھوٹی گواہی اکبر کبائر اور بت پوجنے کے

خیار ۲۰۱

برابر ہے۔

لڑکا اور اس کا باپ شہادت دلاتے ہیں کہ ہم

سنی ہیں اور ہمیں شیعہ جانتے ہو تو

اطمینان کے لئے ہمیں سنی کر لو، ان کے

ہم وطن شیعہ کہتے ہیں کہ یہ سنی ہیں، یہاں

کے مسلمان کہتے ہیں کہ انھیں ہم نے ہمیشہ

شیعہ مذہب کا برتاؤ کرتے دیکھا اور بعض

مسلمان شہادت دیتے ہیں کہ یہ لڑکے شیعہ

نہیں ہیں اور ان کے والد کے بارے میں ہم

کچھ نہیں کہتے، کیا حکم ہے۔

شہود کا الفاظ ایجاب و قبول کے

لفظی معنی سمجھنا ضرور نہیں،

۱۳۸

اتنا ضرور ہے کہ نکاح ہونا

سمجھیں۔

- 468: A Muslim panch (arbitrator) can grant a separation in the presence of the husband. | Page: 564
- Two persons claimed that the boy's father and the girl's mother have illicit relations. The girl's father asked them to swear on the Holy Quran; they refused and left. No proof was established. What is the ruling?

Judgement (Qadha)

- In all matters except for Hudood (fixed punishments), Qisas (retaliation), and Diyat (blood money) on the Aqila (clan), the decision of a panch is like the decision of a judge (Qadhi). | Page: 564
- 127: In an Islamic state, a Muslim judge who is not assigned specifically to one city, nor restricted to a specific school of thought for judgement, can also grant a separation if the plaintiff and defendant are not from that city. | Page: 562
- The ruling of a judge removes disagreement, and a judicial decree is implemented both outwardly and inwardly. | Page: 562
- 443: Annulment (faskh) due to [lack of] compatibility (Kafa’at) can only occur in the court of a judge. | Page: 636
- 444: Where there is no judge, can annulment be performed by the most learned scholar of the town? | Page: 647
- Who is a Shari'a judge? Who has the right to grant annulment and separation here? In an Islamic state, a Muslim ruler is a deputy of Shari'a, provided they are not Wahhabi, Rafizi, Qadiani, etc.
- 485: Can a judge, who knows that the girl's parents are alive, appoint someone else as a guardian (Wali) and perform her marriage without asking the parents? If not, what is the ruling for such a judge? | Page: 667
- If a Mujtahid judge gives a ruling against his own opinion in a matter open to interpretation (Mujtahid fih), it will not be implemented.
- One who has no blood guardian, their guardian is the Shari'a judge; marriage will depend on his permission. Where there is no Shari'a judge, as in most parts of India, it will depend on the permission of the most learned scholar of the town who is a Mufti and jurist (Faqih).

- 563: Mere admission of spousehood is not actual marriage; i.e., if offer and acceptance (Ijab-o-Qabul) did not take place before witnesses, the woman is not lawful for him even if he claims she is his wife. | Page: 123
- A judge cannot grant a separation in the absence of the husband; rather, his presence is necessary at the time of separation.
- 563: If someone falsely admits to owning property in favor of someone else, that property will not become the ownership of the person in whose favor admission was made (Muqarr-lahu). | Page: 126
- High courts and other English courts are not Shari'a courts of justice; therefore, marriages annulled by these officials will not be considered annulled.
- If a person claims marriage with a woman and the woman denies it, and then the person gives her something to settle and she agrees to admit the marriage. Once the woman admits it, this admission is valid and the money becomes mandatory. If this admission was made before witnesses and she denies it again, the judge will not entertain her denial. | Page: 130

फतावा रज़विया | जिल्द 11

- 468: मुस्लिम पंच पति की उपस्थिति में अलगाव करा सकता है। | पृष्ठ: 564
- दो व्यक्तियों ने कहा कि लड़के के पिता और लड़की की माँ के अवैध संबंध हैं। लड़की के पिता ने उन्हें पवित्र कुरान की शपथ लेने को कहा, उन्होंने इनकार कर दिया और चले गए। कोई प्रमाण सिद्ध नहीं हुआ। क्या आदेश है?

न्याय (क़ज़ा)

- हुदूद (नियत दंड), क़िसास (प्रतिशोध) और आक़िला पर दियत (रक्त मूल्य) के अलावा सभी मामलों में पंच का निर्णय काज़ी (न्यायाधीश) के निर्णय की तरह होता है। | पृष्ठ: 564
- 127: एक इस्लामी राज्य में, एक मुस्लिम न्यायाधीश जो विशेष रूप से एक शहर के लिए नियुक्त नहीं है, और न ही न्याय के लिए किसी विशिष्ट विचारधारा तक सीमित है, वह भी अलगाव करा सकता है यदि वादी और प्रतिवादी वहाँ के न हों। | पृष्ठ: 562
- काज़ी का आदेश विवाद को समाप्त करता है, और न्यायिक निर्णय जिस तरह बाहरी तौर पर लागू होता है, वैसे ही आंतरिक तौर पर भी। | पृष्ठ: 562
- 443: कफ़ाअत (योग्यता) की कमी के कारण विवाह विच्छेद केवल काज़ी के यहाँ हो सकता है। | पृष्ठ: 636
- 444: जहाँ काज़ी न हो, क्या वहाँ शहर के सबसे बड़े विद्वान से विवाह विच्छेद कराया जा सकता है? | पृष्ठ: 647
- शरीअत का काज़ी कौन है? यहाँ विवाह विच्छेद और अलगाव का अधिकार किसके पास है? इस्लामी राज्य में मुस्लिम शासक शरीअत का प्रतिनिधि है, बशर्ते वह वहाबी, राफ़ज़ी, क़ादियानी आदि न हो।
- 485: क्या एक काज़ी, जिसे पता हो कि लड़की के माता-पिता जीवित हैं, माता-पिता से पूछे बिना किसी अन्य व्यक्ति को वली (अभिभावक) नियुक्त करके लड़की का निकाह कर सकता है या नहीं? यदि नहीं, तो ऐसे काज़ी के लिए क्या आदेश है? | पृष्ठ: 667
- यदि एक मुज्तहिद काज़ी अपनी राय के विरुद्ध किसी विवादास्पद मामले (मुज्तहिद फ़ीह) में आदेश देता है, तो वह प्रभावी नहीं होगा।

- जिसका कोई रक्त संबंधी वली न हो, उसका वली शरीअत का काज़ी है; निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। जहाँ शरीअत का काज़ी न हो, जैसे भारत के अधिकांश क्षेत्रों में, वहाँ शहर के सबसे बड़े विद्वान, मुफ़्ती और फ़क़ीह (विधिवेत्ता) की अनुमति पर निर्भर होगा।

स्वीकृति (इक़रार) | 549

- 563: केवल वैवाहिक संबंधों की स्वीकृति वास्तव में निकाह नहीं है; यानी यदि गवाहों के सामने ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) नहीं हुआ हो, तो वह स्त्री उसके लिए वैध नहीं है, भले ही वह कहता रहे कि वह उसकी पत्नी है। | पृष्ठ: 123
- पति की अनुपस्थिति में काज़ी अलगाव नहीं करा सकता, बल्कि अलगाव के समय उसका उपस्थित होना अनिवार्य है।
- 563: यदि किसी ने किसी और के पक्ष में संपत्ति की झूठी स्वीकृति दी, तो वह संपत्ति उस व्यक्ति (मुक़र-लहू) की मिल्कियत नहीं होगी। | पृष्ठ: 126
- हाई कोर्ट और अन्य अंग्रेज़ी अदालतें शरीअत के दारुल-क़ज़ा (न्यायालय) नहीं हैं; अतः इन अधिकारियों द्वारा किए गए निकाह विच्छेद मान्य नहीं होंगे।
- यदि कोई व्यक्ति किसी महिला पर निकाह का दावा करे और महिला इनकार कर दे, फिर वह व्यक्ति उसे कुछ देकर समझौता कर ले कि वह निकाह स्वीकार कर ले। अब यदि महिला ने स्वीकार कर लिया, तो यह स्वीकृति वैध है और धन अनिवार्य होगा। यदि यह स्वीकृति गवाहों के सामने हुई हो, और अब महिला फिर से इनकार करे, तो काज़ी उसका यह इनकार नहीं सुनेगा। | पृष्ठ: 130

पृष्ठ 739 का 97

فتاویٰ رضویہ | جلد یازدہم

- ۴۶۸: مسلمان پنچ شوہر کی موجودگی میں تفریق کر سکتا ہے۔ | صفحہ: ۵۶۴
- دو شخصوں نے کہا کہ لڑکے کا باپ اور لڑکی کی ماں ناجائز تعلقات رکھتے ہیں لڑکی کے باپ نے قرآن شریف اٹھانے کو کہا، انکار کیا اور چلے گئے ثبوت نہ ہوا، کیا حکم ہے۔

قضاء

- حدود، قصاص اور عاقلہ پر دیت کے علاوہ تمام معاملات میں پنچ کا فیصلہ مثل فیصلہ قاضی ہے۔ | صفحہ: ۵۶۴
- ۱۲۷: ریاست اسلامی میں جو مسلمان قاضی ایسا ہو جو خاص اس شہر کے لئے نہ ہو نہ کسی مذہب خاص پر قضاء کے لئے مقید ہو تو وہ بھی تفریق کرسکتا ہے اگر مدعی اور مدعاعلیہ وہاں کے نہ ہوں۔ | صفحہ: ۵۶۲
- حکم قاضی رافع خلاف ہے اور قضاء جس طرح ظاہراً نافذ ہوتی ہے یونہی باطناً بھی۔ | صفحہ: ۵۶۲
- ۴۴۳: فسخ بوجہ کفاءت قاضی ہی کے یہاں ہوسکتا ہے۔ | صفحہ: ۶۳۶
- ۴۴۴: جہاں قاضی نہ ہو کیا وہاں اعلم علمائے اہل بلد سے فسخ کرالیا جائے۔ | صفحہ: ۶۴۷
- قاضی شرع کون ہے۔ یہاں کون حق فسخ و تفریق رکھتا ہے۔ اسلامی ریاست میں مسلمان حاکم نائب شرع ہے بشرطیکہ وہابی، رافضی، قادیانی وغیرہ نہ ہو۔

- ۴۸۵: قاضی جسے علم ہو کہ اس لڑکی کے والدین زندہ ہیں وہ والدین کے بے پوچھے کسی غیر شخص کو ولی مقرر کرکے لڑکی کا نکاح کرسکتا ہے یا نہیں۔ اگر نہیں تو ایسے قاضی کے لئے کیا حکم ہے۔ | صفحہ: ۶۶۷
- قاضی مجتہد، مجتہد فیہ میں اپنی رائے کے خلاف اگر حکم کرے گا تو نافذ نہ ہوگا۔
- جس کا کوئی ولی نسبی نہ ہو اس کا ولی قاضی شرع ہے، نکاح اس کی اجازت پر موقوف رہے گا۔ جہاں قاضی شرع نہ ہو جیسے اکثر دیار ہندوستان وہاں اعلم علمائے اہل بلد صاحب فتویٰ فقیہ کی اجازت پر موقوف ہوگا۔

اقرار | ۵۴۹

- ۵۶۳: مجرد اقرار زوجیت حقیقۃً نکاح نہیں یعنی اگر گواہوں کے سامنے ایجاب وقبول نہ ہوئے ہوں تو وہ عورت اس کے لئے حلال نہیں اگرچہ کہتا ہو کہ یہ میری زوجہ ہے۔ | صفحہ: ۱۲۳
- زوج کی عدم موجودگی میں قاضی تفریق نہیں کرسکتا بلکہ بوقت تفریق اس کی حاضری ضروری ہے۔
- ۵۶۳: کسی کے لئے مال کا غلط اقرار کیا تو وہ مال مقرلہ کی ملک نہ ہوگا۔ | صفحہ: ۱۲۶
- ہائی کورٹ وغیرہ انگریزی کچہریاں شرعی دارالقضا نہیں لہٰذا ان حکام کے فسخ کئے نکاح فسخ نہ ہوگا۔
- اگر کوئی شخص کسی عورت پر نکاح کا دعویٰ کرے اور عورت انکار کردے پھر وہ شخص اس کو کچھ دے کر اس سے اس بات پر صلح کرلے کہ وہ اس نکاح کا اقرار کرے، اب عورت نے اقرار کرلیا تو یہ اقرار جائز اور مال لازم ہوگا۔ اگر یہ اقرار شہود کے سامنے ہوا ہو اب اگر عورت پھر انکار کرے گی تو قاضی اس کا یہ انکار نہ سنے گا۔ | صفحہ: ۱۳۰

Fatawa Razawiyya Volume 11

Page	Subject/Issue	Ref No.	Ruling/Explanation
338	In the terminology of jurisprudence (fiqh), giving news of a proven right of someone is called confession (iqrar).	177	As far as the harm of the confession falls on the confessing person, it will be accepted, and whatever is an accusation against another will be rejected.
574	Zaid confessed to adultery with his sister-in-law and then denied it. Testimony regarding his confession of adultery was presented before the judge. Did this testimony of the confession of adultery establish the prohibition of affinity (hurmat-e-musaharat), and did Zaid's wife, Hindah, become forbidden to him?	333	If a person says, 'This is my foster sister (radia)', and then admits it was a mistake, he will be believed, and marriage with her will be permissible as long as he does not remain firm on his initial confession.
	What is the ruling if a confession is made that 'I committed adultery with her mother before her marriage'?	334	Settlement (Sulh)
132	A confession made outside the court of law (Dar al-Qada) does not prove adultery.	335	Settlement is referred back to the closest Sharia contracts.

Page	Subject/Issue	Ref No.	Ruling/Explanation
			If a man claims to be married to a woman and the woman denies it, and then she gives him some wealth to settle so he drops the claim, it is permissible. In the claimant's view,
132	A confession of adultery does not remain proof of adultery after retracting it.	335	this would be in the sense of 'Khul' (divorce initiated by the wife). However, the jurists have said that taking this wealth will not be lawful for him in the eyes of Allah if he is false in his claim.
			Settlement on part of a debt is valid, and there will also be exoneration from the claim for the remainder; this
132	For establishing the prohibition of affinity (musaharat), there is fundamentally no need for proof of adultery; a mere confession is sufficient.	335	is only legally (qada'an), not religiously/morally (diyanatan). Therefore, if he finds an opportunity, it will be permissible for him to take the remainder.
			If one receives some amount from a fixed allowance and relinquishes a right in favor of another, and the
178	Even if a confession is made once in jest or joke that he committed adultery with his mother-in-law, the prohibition of affinity (hurmat-e-musaharat) is established; then even a million denials will not be heard.	336	other promises him that 'if you return my money, I will return your fixed allowance,' it will not be obligatory for him to return it.
	If someone was asked, 'What did you do with your wife's mother?' and he said, 'I had intercourse with her,' then the prohibition of affinity is established, even if he later says he lied.	336	Hiring/Leasing (Ijarah)
	A man is held accountable by his own confession.	337	

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

पृष्ठ	विषय/मसला	संदर्भ सं.	हुक्म/स्पष्टीकरण
338	न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) की शब्दावली में, किसी के सिद्ध अधिकार की सूचना देने को इकरार (स्वीकारोक्ति) कहा जाता है।	177	जहाँ तक इकरार का नुक़सान इकरार करने वाले पर पड़ता है, उसे स्वीकार किया जाएगा और जहाँ तक यह दूसरे पर आरोप है, उसे खारिज कर दिया जाएगा।
574	जैद ने अपनी साली के साथ व्यभिचार (ज़िना) का इकरार किया, फिर इनकार कर दिया। न्यायाधीश (काजी) के सामने उसके ज़िना के इकरार पर गवाही दी गई। क्या ज़िना के इकरार की इस गवाही से वैवाहिक निषेध (हुर्मत-ए-मुसाहरत) सिद्ध हो गया, और क्या जैद की पत्नी हिन्दा उस पर हराम हो गई?	333	यदि कोई व्यक्ति कहता है, 'यह मेरी दूध-बहन (रज़िआ) है', और फिर स्वीकार करता है कि यह एक गलती थी, तो उसे सच्चा माना जाएगा और उसके साथ निकाह करना जायज होगा, जब तक कि वह अपने पहले इकरार पर कायम न रहे।
132	यदि यह इकरार किया गया हो कि 'मैंने उसके निकाह से पहले उसकी माँ के साथ ज़िना किया था', तो क्या हुक्म है?	334	सुलह (समझौता)
132	अदालत (दारुल-क़ज़ा) के बाहर किया गया इकरार ज़िना को सिद्ध नहीं करता।	335	सुलह को निकटतम शरीयत अनुबंधों (अक़ूद-ए-शरईया) की ओर संदर्भित किया जाता है।
132	ज़िना का इकरार, उससे पीछे हटने (रुजू) के बाद ज़िना का सबूत नहीं रहता।	335	यदि कोई पुरुष किसी स्त्री पर निकाह का दावा करे और स्त्री इनकार कर दे, फिर वह स्त्री उसे कुछ माल देकर इस बात पर सुलह करे कि वह उस दावे से पीछे हट जाए, तो यह जायज है और यह दावेदार की नज़र में 'ख़ुला' के अर्थ में होगा। लेकिन फ़क़ीहों (न्यायविदों)

पृष्ठ	विषय/मसला	संदर्भ सं.	हुक्म/स्पष्टीकरण
			ने फरमाया है कि उसके लिए वह माल लेना अल्लाह की नज़र में हलाल नहीं होगा, यदि वह अपने दावे में झूठा है।
132	मुसाहरत (वैवाहिक निषेध) सिद्ध करने के लिए ज़िना के प्रमाण की मौलिक रूप से आवश्यकता नहीं है; मात्र इकरार ही पर्याप्त है।	335	ऋण के कुछ हिस्से पर सुलह सही है और शेष दावे से बरी होना भी हो जाएगा; यानी केवल अदालती तौर पर (क़ज़ा-अन), धार्मिक तौर पर नहीं (दियानत-अन)। इसलिए यदि उसे अवसर मिलता है, तो उसके लिए शेष राशि को ले लेना जायज होगा।
178	भले ही मज़ाक या दिल्लगी में एक बार इकरार कर लिया कि उसने अपनी सास के साथ ज़िना किया, तो हुर्मत-ए-मुसाहरत सिद्ध हो गई; फिर चाहे वह लाख बार इनकार करे, उसकी सुनवाई नहीं होगी।	336	यदि कोई व्यक्ति किसी निर्धारित वजीफे(भत्ते) से कुछ राशि लेकर दूसरे के पक्ष में अपने अधिकार से मुक्त हो जाता है, और दूसरा उससे वादा करता है कि 'यदि तुम मेरा यह रुपया वापस कर दोगे, तो मैं तुम्हारा यह निर्धारित वजीफ़ा लौटा दूँगा', तो उसके लिए इसे लौटाना अनिवार्य नहीं होगा।
	यदि किसी से पूछा गया कि 'तुमने अपनी पत्नी की माँ के साथ क्या किया?' और उसने कहा, 'मैंने उसके साथ संभोग (जिमा) किया', तो हुर्मत-ए-मुसाहरत सिद्ध हो गई, भले ही वह बाद में कहे कि मैंने झूठ बोला था।	336	इजारा (किराया या पट्टा)
	मनुष्य अपने स्वयं के इकरार (स्वीकारोक्ति) से पकड़ा जाता है।	337	

صفحہ	مسئلہ/مضمون	نمبر شمار	حکم/وضاحت
۳۳۸	اصطلاح فقہ میں کسی کا حق ثابت کی خبر دینے کو اقرار کہتے ہیں۔ زید نے اپنی سالی سے زنا کا اقرار کیا پھر انکار، اس کے اقرار زنا پر قاضی کے سامنے شہادت گزری،	۱۷۷	جہاں تک مقر پر اقرار کا ضرر ہے ماخوذ اور جتنا دوسرے پر الزام ہے منبوذ ہوگا۔
۵۷۴	اس شہادت اقرار زنا سے حرمت مصاہرت ثابت ہو گئی یا نہیں، اور ہندہ زوجہ زید اس پر حرام ہو گئی یا کیا۔	۳۳۳	اگر کوئی شخص کہے یہ میری رضیعہ ہے۔ پھر خطا کا اعتراف کرے تو سچا مانا جائے گا اور اسے اس کے ساتھ نکاح جائز ہوگا جبکہ اپنے اقرار پر ثابت نہ رہے۔
	اگر اقراریہ کیا ہو کہ میں نے اس کی ماں سے قبل اس کے نکاح کے زنا کیا تھا تو کیا حکم ہے۔	۳۳۴	صلح
۱۳۲	دارالقضاء سے باہر کا اقرار مثبت زنا نہیں ہوتا۔	۳۳۵	صلح اقرب عقود شرعیہ کی طرف راجع کی جاتی ہے۔
۱۳۲		۳۳۵	

صفحہ	مسئلہ/مضمون	نمبر شمار	حکم/وضاحت
			اگر کوئی مرد کسی عورت پر نکاح کا دعویٰ کرے اور عورت منکر ہو پھر وہ عورت اسے کچھ مال دے کر اس پر صلح کرے کہ وہ اس
	اقرار بالزنا بعد رجوع مثبت زنا نہیں رہتا۔		دعویٰ سے باز آجائے تو جائز اور یہ مدعی کے زعم میں معنی خلع میں ہو جائے گا مگر فقہاء نے فرمایا کہ اسے اس مال کا اخذ فیما بینہ و بین اللہ تعالی حلال نہ ہوگا جبکہ وہ اپنے دعویٰ میں مبطل ہے۔
۱۳۲	اثبات مصاہرت کے لئے ثبوت زنا کی اصلاً حاجت نہیں مجرد اقرار کافی ہے۔	۳۳۵	بعض دین پر صلح صحیح ہے اور باقی کے دعویٰ سے براءت بھی ہو جائے گی یعنی فقط قضاءً نہ دیانۃً اسی لئے اگر وہ موقع پائے گا تو اسے باقی کا لے لینا جائز ہوگا۔
۱۷۸	اگرچہ ہزل و مذاق میں ایک بار اقرار کیا کہ اس نے ساس سے زنا کیا حرمت مصاہرت ثابت ہو گئی پھر لاکھ انکار کرے مسموع نہ ہوگا۔	۳۳۶	کسی وظیفہ مقررہ سے کچھ رقم لے کر دوسرے کے حق میں فارغ ہو جائے اور دوسرا اس سے وعدہ کرے کہ اگر میرا یہ روپیہ تو واپس کردے گا تو تیرا یہ وظیفہ مقررہ لوٹا دوں گا، اس سے اس پر لوٹانا واجب نہ ہوگا۔
		۳۳۶	اجارہ

صفحہ مسئلہ/مضمون	نمبر حکم/وضاحت شمار
اگر کسی سے کہا گیا کہ تو نے اپنی بیوی کی ماں سے کیا کیا، اس نے کہا میں نے اس سے جماع کیا، تو حرمت مصاہرت ثابت ہو گئی اگرچہ وہ کہے کہ میں نے جھوٹ کہا۔	
مرد اپنے اقرار سے پکڑا جاتا ہے۔	۳۳۷

Fatawa Rizwia Volume Eleven

- If someone had rented out their house, then sold that same house to someone else, now the buyer collects the rent but has promised the seller that when you return the price to me, I will return the house and set off the rent money from the price; the seller brings the price money to the buyer and asks for the rent money to be set off from it; if the buyer does so as per the promise, it is better, otherwise he cannot be forced. (178) | If the principal fixes the price for the agent, the agent can appoint another as an agent without the principal's permission. (151)
- How is it to give or take a fee for the marriage officiant? (255) | Agency (Tawkil) is to appoint someone as one's representative in a known permissible disposal. (163)
- If the fee is not used for personal expenses but spent on a charitable deed, what is the ruling? (255) | Mere expression of consent is not agency. (163)
- The paternal uncle or brother-in-law of the groom comes to place a turban on his head, no one else can do it, and they do not do it without taking money; if the money is low, they insist; how is this giving and taking according to Sharia and how is it to consider it a necessary right and insist on it? (255) | It is not necessary for an agent to be a Muslim and an adult; a wise non-Muslim and a minor can also be an agent. (172)
- **Advocacy (Wakalat)** | The agency of an apostate is permissible. (172)
- As long as an agent for marriage is not absolutely authorized or explicitly permitted to appoint another agent, he cannot do so. (143) | If at the time of agency the agent is a Muslim and then becomes an apostate, the agency will not become void until he goes to Dar al-Harb (hostile territory). (172)
- In buying and selling, if a contract is made in front of the first agent, it is permissible; however, it is not permissible in litigation, demand, marriage, divorce, etc. (143) | An insane person or an unintelligent child cannot be an agent. (172)
- If the sub-agent recites the contract in front of the first agent and the latter approves it, the marriage will be enacted, unlike in divorce and manumission. (149) | Adulthood and freedom (not being a slave) are not conditions for the validity of agency. (172)

- An agent for marriage is merely a messenger; the rights of marriage return to the principal. (150) | Agency is completed by mere offer; it is not dependent on acceptance, although it is revoked by rejection. (210)
- The agent for paying Zakat can appoint another as agent without the principal's permission. (150) | It is permissible to make an apostate an agent. (218)
- The agent for collecting a debt can appoint his family as agents without the principal's permission. (151)

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

- किसी ने अपना मकान किराए पर दिया था फिर उसी मकान को किसी और के हाथ बेच दिया अब खरीदार किराया वसूल करता है मगर विक्रेता से वादा किया है कि जब तू कीमत मुझे वापस करेगा तो मकान वापस कर दूँगा और किराए के रुपये कीमत से काट लूँगा, खरीदार के पास विक्रेता कीमत के रुपये लाया और किराए के रुपये इसमें से काटने को कहता है, अगर खरीदार वादे के अनुसार ऐसा करे तो बेहतर है वर्ना उस पर ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती। (१७८) | मुवक्किल अगर वकील के लिए कीमत निर्धारित कर दे तो वह बिना इजाज़त मुवक्किल दूसरे को वकील बना सकता है। (१५१)
- निकाह पढ़वाने वाले को उजरत (पारिश्रमिक) लेना देना कैसा है। (२५५) | तौकील किसी को किसी ज्ञात जायज़ तसर्रुफ़ (कार्य) में अपना प्रतिनिधि बनाना है। (१६३)
- अगर उजरत अपने खर्च में न लाए कार-ए-खैर (नेक काम) में खर्च करे तो क्या हुक्म है। (२५५) | महज़ इज़हार-ए-रज़ा तौकील नहीं। (१६३)
- दूल्हे के सिर पर पगड़ी रखने के लिए उसके फूफा या बहनोई आते हैं दूसरा नहीं रख सकता और वे बिना रुपये लिए नहीं रखते रुपये कम होते हैं तो इसरार (हठ) करते हैं यह लेना देना शरअन कैसा है और इसे ज़रूरी हक जानना और इसरार करना कैसा है। (२५५) | वकील का मुस्लिम और बालिग होना ज़रूरी नहीं, गैर-मुस्लिम और ना-बालिग समझदार भी वकील हो सकता है। (१७२)
- **वकालत** | मुरतद की वकालत जायज़ है। (१७२)
- जब तक निकाह का वकील पूर्ण रूप से अधिकृत न हो या स्पष्ट रूप से दूसरे को वकील बना देने का हक़ न हो, वह वकील नहीं बना सकता। (१४३) | अगर वकालत के समय वकील मुसलमान हो फिर मुरतद हो जाए तो वकालत बातिल नहीं होगी जब तक दारुल-हरब में न चला जाए। (१७२)
- खरीद-ओ-फरोख्त अगर पहले वकील के सामने अनुबंध करे तो जायज़ है और मुक़दमेबाज़ी, मांग, निकाह और तलाक़ वगैरह में जायज़ नहीं। (१४३) | मजनून (पागल) और नासमझ बच्चा वकील नहीं हो सकता। (१७२)

- वकील का वकील अगर पहले वकील के सामने निकाह पढ़ा दे और वह जायज़ कर दे तो निकाह प्रभावी हो जाएगा, इसके विपरीत तलाक़ और गुलामी से आज़ादी में ऐसा नहीं। (१४९) | बुलूग़त (वयस्कता) और हुर्रियत (स्वतंत्रता) सेहत-ए-वकालत के लिए शर्त नहीं। (१७२)
- निकाह का वकील केवल माध्यम है निकाह के अधिकार मुवक्किल की ओर लौटते हैं। (१५०) | तौकील केवल ईजाब (प्रस्ताव) से पूरी हो जाती है क़बूल (स्वीकृति) पर निर्भर नहीं होती हालांकि रद्द कर देने से रद्द हो जाती है। (२१०)
- ज़कात अदा करने का वकील मुवक्किल की इजाज़त के बिना दूसरे को वकील बना सकता है। (१५०) | मुरतद को वकील बनाना जायज़ है। (२१८)
- कर्ज़ वसूल करने का वकील मुवक्किल की इजाज़त के बिना अपने बाल-बच्चों को वकील बना सकता है। (१५१)

- کسی نے اپنا مکان کرایہ پر دے دیا تھا پھر اسی مکان کو کسی اور کے ہاتھ بیچ دیا اب مشتری کرایہ وصول کرتا ہے مگر بائع سے وعدہ کرلیا ہے کہ جب تو ثمن مجھے واپس کرے گا تو مکان واپس کردوں گا اور کرایہ کے روپے ثمن سے مجرا دوں گا، مشتری کے پاس بائع ثمن کے روپے لایا اور کرایہ کے روپے اس میں سے مجرا کرنے کو کہتا ہے، اگر مشتری حسب وعدہ ایسا کرے تو بہتر ہے ورنہ اس پر جبر نہیں کیا جاسکتا۔ (۱۷۸) | مؤکل اگر وکیل کے لئے ثمن کی تعیین کردے تو وہ بلا اجازت مؤکل دوسرے کو وکیل بنا سکتا ہے۔ (۱۵۱)
- نکاح خواں کو اجرت لینا دینا کیسا ہے۔ (۲۵۵) | توکیل کسی کو کسی تصرف جائز معلوم میں اپنا نائب بنانا ہے۔ (۱۶۳)
- اگر اجرت اپنے صرف میں نہ لائے کار خیر میں صرف کرے تو کیا حکم ہے۔ (۲۵۵) | محض اظہار رضا توکیل نہیں۔ (۱۶۳)
- نوشہ کے سر پر پگڑی رکھنے کے لئے اس کے پھوپھا یا بہنوئی آتے ہیں دوسرا نہیں رکھ سکتا اور وہ بے روپیہ لئے نہیں رکھتے روپیہ کم ہوتا ہے تو اصرار کرتے ہیں یہ لینا دینا شرعاً کیسا ہے اور اسے ضروری حق جاننا اور اصرار کرنا کیسا ہے۔ (۲۵۵) | وکیل کا مسلم وبالغ ہونا ضروری نہیں، غیر مسلم ونابالغ سمجھدار بھی وکیل ہوسکتا ہے۔ (۱۷۲)
- **وکالت** | مرتد کی وکالت جائز ہے۔ (۱۷۲)
- جب تک وکیل بال نکاح ماذون مطلق یا بصراحت دوسرے کو وکیل کردینے کا مجاز نہ ہو اور وکیل نہیں کر سکتا۔ (۱۴۳) | اگر وقت توکیل وکیل مسلمان ہو پھر مرتد ہو جائے تو وکالت باطل نہ ہوگی جب تک دارالحرب میں نہ چلا جائے۔ (۱۷۲)

- بیع و شراء اگر وکیل اول کے سامنے عقد کرے تو جائز ہے اور خصومت، تقاضی، نکاح اور طلاق وغیرہ میں جائز نہیں۔ (۱۴۳) | مجنون اور ناسجھ بچہ وکیل نہیں ہوسکتا۔ (۱۷۲)
- وکیل کا وکیل اگر وکیل اول کے سامنے پڑھادے اور وہ جائز کردے تو نکاح نافذ ہو جائیگا بخلاف طلاق وعتاق کے۔ (۱۴۹) | بلوغ و حریت صحت وکالت کے لئے شرط نہیں۔ (۱۷۲)
- وکیل نکاح معبر محض ہے حقوق نکاح مؤکل کی طرف راجع ہوتے ہیں۔ (۱۵۰) | توکیل مجرد ایجاب سے تمام ہوجاتی ہے قبول پر موقوف نہیں ہوتی اگر چہ رد کردینے سے رد ہو جاتی ہے۔ (۲۱۰)
- ادائے زکوٰۃ کا وکیل بغیر اذن مؤکل دوسرے کو وکیل کرسکتا ہے۔ (۱۵۰) | مرتد کو وکیل بنانا جائز ہے۔ (۲۱۸)
- دین وصول کرنے کا وکیل بغیر اذن موکل اپنے عیال کو وکیل کرسکتا ہے۔ (۱۵۱)

Page	Topic
223	The agent for marriage is authorized, but not the representative.
	Hudood-o-Tazir (Legal Punishments and Discretionary Punishments)
195	If a person accuses a free, sane, adult, chaste Muslim of adultery and fails to produce four just witnesses, they shall be lashed 80 times and their testimony shall be rejected forever.
195	If three witnesses testify to witnessing adultery and there is no fourth, the punishment for false accusation (Hadd-e-Qadhf) is mandatory for those witnesses.
207	Doubt regarding marriage waives the legal punishment (Hadd) and the contract is established.
332	If two men or two women and one person accused of adultery testify to an admission of adultery, the punishment (Hadd) for false accusation shall not be applied to the accuser and witnesses.
332	If two men testify to someone's adultery and two others testify to their admission of adultery, the legal punishment (Hadd) will not be applied.
332	If three men testify to adultery and one testifies to an admission of adultery, then the punishment for false
562	No legal punishment (Hadd) on a child.
581	In Dar-ul-Islam (Islamic territory), intercourse is not without Hadd or Aqir (compensation).
195	**Oath (Qasam)**
199	One who takes an oath regarding something and then finds a better alternative, should do what is better and offer expiation for the oath.
677	Will a guardian's false oath be reliable against Hind or Hind's statement?
332	**Ethics (Akhlaq)**
392	The effect of company, especially bad company, is proven by Hadiths and authentic experiences; there are five supporting points for this.
392	Parables and proverbs regarding good and bad companions.

Page	Topic
	accusation (Hadd-e-Qadhf) will be applied to the three witnesses.
365	If the husband has intercourse before separation despite the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharah), the legal punishment (Hadd) will not be mandatory for him.
482	Attributing the permissibility of temporary marriage (Mut'ah) to Imam Malik is incorrect; Imam Malik enforces the punishment for adultery on those who practice it.
482	According to Hanifa and other Imams, temporary marriage (Mut'ah) is forbidden, but they do not enforce the punishment for adultery (Hadd-e-Zina) on it.
512	Taking fines is forbidden, and spending a forbidden thing in a mosque is forbidden.
562	Doubt averts legal punishment (Hadd).

Page	Topic
392	Run away from the misguided and keep them away from you, lest they mislead you or put you into trial (Fitna).
392	Judge a companion by their companion.
393	Run away from bad company, for you will be known by them.
393	Nothing indicates another thing as much as one companion indicates another.
393	The Hadith says that love makes one blind and deaf.

पृष्ठ	विषय
२२३	निकाह के लिए वकील अधिकृत है, प्रतिनिधि नहीं।
	हुदूद-ओ-तज़ीर (सजाएं और ताज़ीरात)
१९५	मुसलमान स्वतंत्र, बुद्धिमान, वयस्क, पवित्र व्यक्ति पर ज़िना का आरोप लगाने वाला यदि चार न्यायप्रिय गवाह पेश न करे, तो उसे ८० कोड़े लगाए जाएंगे और उसकी गवाही हमेशा के लिए खारिज कर दी जाएगी।
१९५	यदि तीन गवाह ज़िना को देखने की गवाही दें और चौथा न हो, तो उन गवाहों पर मिथ्या आरोप की सज़ा (हद्द-ए-क़ज़्फ़) अनिवार्य है।
२०७	निकाह के संदेह से हद्द (सज़ा) समाप्त हो जाती है और अनुबंध स्थापित हो जाता है।
३३२	यदि दो पुरुष या दो महिलाएँ और ज़िना का एक आरोपी ज़िना के इकरार पर गवाही दें, तो आरोप लगाने वाले और गवाहों पर हद्द-ए-क़ज़्फ़ नहीं लगाई जाएगी।
३३२	यदि दो पुरुष किसी के ज़िना पर और दो उसके ज़िना के इकरार पर गवाही दें, तो हद्द नहीं लगाई जाएगी।
३३२	

पृष्ठ	विषय
५६२	बच्चे पर कोई सज़ा (हद्द) नहीं है।
५८१	दार-उल-इस्लाम में संभोग हद्द या अक़िर (मुआवज़ा) से खाली नहीं होता।
१९५	**शपथ (क़सम)**
१९९	जिसने किसी बात पर शपथ ली और फिर उसके अलावा किसी और बात को बेहतर पाया, तो उसे वह करना चाहिए जिसे वह बेहतर देख रहा है और अपनी शपथ का कफ़ारा (प्रायश्चित) देना चाहिए।
६७७	वली (संरक्षक) की झूठी शपथ हिंद के विरुद्ध विश्वसनीय होगी या हिंद का कथन।
३३२	**नैतिकता (अख़्लाक़)**
३९२	संगति का प्रभाव, विशेष रूप से बुरी संगति का, हदीसों और सही अनुभवों से सिद्ध है; इसके लिए पाँच सहायक प्रमाण हैं।
३९२	

पृष्ठ	विषय
	यदि तीन पुरुषों ने ज़िना पर और एक ने ज़िना के इकरार पर गवाही दी, तो तीन गवाहों पर हद्द-ए-क़ज़्फ़ लगेगी।
३६५	हुरमत-ए-मुसाहरत के बावजूद अलगाव से पहले यदि पति ने संभोग किया, तो उस पर हद्द अनिवार्य नहीं होगी।
४८२	इमाम मालिक की ओर मुता (अस्थायी विवाह) की वैधता का श्रेय देना सही नहीं है, इमाम मालिक मुता करने वाले पर ज़िना की सज़ा लागू करते हैं।
४८२	हनीफा और अन्य इमामों के अनुसार मुता हराम है, लेकिन वे इस पर ज़िना की सज़ा लागू नहीं करते।
५१२	जुर्माना लेना हराम है और मस्जिद में हराम चीज़ खर्च करना हराम है।
५६२	संदेह सज़ा (हद्द) को टालने वाला है।

पृष्ठ	विषय
	अच्छे और बुरे साथियों के उदाहरण और कहावतें।
३९२	गुमराह लोगों से दूर भागो और उन्हें अपने से दूर करो, कहीं वे तुम्हें गुमराह न कर दें या तुम्हें फितने (परीक्षा) में न डाल दें।
३९२	साथी के आधार पर साथी का अनुमान लगाओ।
३९३	बुरे साथी से दूर भागो क्योंकि तुम उसी के साथ प्रसिद्ध होगे।
३९३	जितना एक साथी दूसरे को दर्शाता है, उतना कोई और चीज़ दूसरी चीज़ को नहीं दर्शाती।
३९३	हदीस में है कि प्रेम अंधा और बहरा कर देता है।

صفحہ موضوع

۲۲۳ و وکیل بالنکاح مجاز تو وکیل نہیں۔

حدود و تعزیر

مسلمان حر عاقل بالغ عفیف پر زنا کی تہمت لگانے والا اگر چار گواہ عادل پیش

۱۹۵ نہ کرے تو اسے اسی ۸۰ کوڑے لگائے جائیں گے اور ہمیشہ کے لئے وہ مردود الشہادۃ ہوگا۔

اگر تین گواہ معائنہ زنا کی گواہی دیں اور

۱۹۵ چوتھا نہ ہو تو ان گواہوں پر حد قذف لازم آتی ہے۔

شبہ نکاح سے حد ساقط اور عقد ثابت ہو

۲۰۷ جاتا ہے۔

۳۳۲

صفحہ موضوع

۵۶۲ بچے پر حد نہیں۔

۵۸۱ دارالاسلام میں وطی حد یا عقر سے خالی نہیں ہوتی۔

۱۹۵ **قسم**

جس نے کسی بات پر قسم کھائی پھر اس

۱۹۹ نے غیر کو اس سے بہتر جانا تو اسے چاہئے کہ جس کو بہتر دیکھ رہا ہے وہی کام کرے اور قسم کا کفارہ دے دے۔

ولی کا جھوٹا حلف ہندہ کے مقابلہ میں

۶۷۷ معتبر ہوگا یا ہندہ کا قول۔

۳۳۲ **اخلاق**

صفحہ	موضوع
	اگر دو مرد یا دو عورتیں اور ایک مقذوف بالزنا کے اقرار زنا پر شہادت دیں تو قاذف اور شہود پر حد قذف نہ لگائی جائے۔
۳۳۲	اگر دو مرد کسی کے زنا پر اور دو اس کے اقرار زنا پر شہادت دیں تو حد نہیں لگائی جائے گی۔
۳۳۲	تین مردوں نے زنا اور ایک نے اقرار زنا پر شہادت دی تو تین مشہود پر حد قذف لگے گی۔
۳۶۵	حرمت مصاہرہ کے باوجود تفریق سے قبل اگر شوہر نے وطی کی تو اس پر حد لازم نہ ہوگی۔
۴۸۲	امام مالک کی طرف حلت متعہ کی نسبت کرنا صحیح نہیں ، امام مالک متعہ کرنے والے پر حد زنا نافذ کرتے ہیں۔
۴۸۲	حنیفہ و دیگر ائمہ کے نزدیک متعہ حرام ہے مگر وہ اس پر حد زنا نافذ نہیں کرتے۔
۵۱۲	جرمانہ لینا حرام ہے اور حرام شے مسجد میں صرف کرنا حرام ہے۔

صفحہ	موضوع
۳۹۲	صحبت خصوصاً بد کا اثر پڑجانا احادیث و تجارب صحیحہ سے ثابت ہے اس کے لئے پانچ مؤیدات۔
۳۹۲	اچھے برے ہمنشین کی تمثیل و کہاوت۔
۳۹۲	گمراہوں سے دور بھاگو اور انہیں اپنے سے دور کرو کہیں وہ تمہیں بہکانہ دیں کہیں وہ تمہیں فتنے میں نہ ڈال دیں۔
۳۹۲	مصاحب پر مصاحب کو قیاس کرو۔
۳۹۳	برے ہمنشین سے دور بھاگ کہ تو اسی کے ساتھ مشہور ہوگا۔
۳۹۳	

۵۶۲ شبہ دافع حد ہے۔

ایک ہمنشین جس قدر دوسرے پر دلالت
کرتا ہے اس قدر کوئی اور شے دوسری
شے پر دلالت نہیں کرتی۔
حدیث میں ہے کہ محبت اندھا اور بہرا
۳۹۳ کر دیتی ہے۔

Fatawa Rizwia Volume Eleven

[Right Column Entries] 393 | A person follows the religion of his beloved, so be careful who you make friends with. 433 | Do not lean towards the oppressors, lest the fire of Hell touch you.

[Heading] Virtues and Praises 113 | Qazi Khan said that Imam Khassaf is great in knowledge, and following him is permissible. 205 | Whoever is killed while protecting his life, property, religion, or family is a martyr. 273 | The Prophet (peace be upon him) was given the Quran and something like it. 273 | What the Messenger of Allah (peace be upon him) has made forbidden is just like what Allah Almighty has made forbidden. 273 | Muslims are commanded by Allah Almighty to take whatever the Messenger gives them and abstain from whatever he forbids. 326 | By consensus of scholars, Umm-ul-Momineen Khadija al-Kubra was the first to be honored with the privilege of following. 326 | The Shaykhayn (Abu Bakr and Umar, may Allah be pleased with them) were the most superior and perfect disciples of the Messenger (peace be upon him). The saints say: "Neither was there a crown like Mustafa (PBUH) as a guide, nor a disciple like Siddiq." 389 | Rustaghni is a reliable Imam in word and deed. If we are held accountable on the Day of Judgment for acting on his narration, we will hold onto his mantle, for we acted upon his command. 405 | The eight gates of Paradise are the guide to truth and correctness.

[Left Column Entries] 490 | Allah Almighty makes one taste the bitterness of opposing the Imams. 713 | A religious scholar is seven degrees higher than ordinary believers; between each two degrees is a five-hundred-year journey. 713 | Truly, only a pious, religious scholar is a scholar.

[Heading] Rights of People 199 | It is mandatory for a father to do what is best for his children. 202 | Oppression by people against each other must be compensated. 203 | It is not permissible to take even a Muslim's walking stick without his consent. 299 | Prohibition in the Great Quran against harming women and causing them hardship. 300 | The Prophet (peace be upon him) said there is neither harm nor causing harm in Islam. 395 | Men are rulers and dominant over women. 395 | The greatest right over a woman is that of her husband. 395 | If prostration to anyone other than God were allowed, a woman would have been ordered to prostrate to her husband.

Page 101 of 739

फ़तावा रिज़विया खंड ग्यारह

[दाहिने कॉलम की प्रविष्टियाँ] 393 | व्यक्ति अपने प्रिय के धर्म पर होता है, इसलिए सावधानी से मित्रता करें। 433 | अत्याचारियों की ओर मत झुकें, अन्यथा नरक की आग आपको छुएगी।

[शीर्षक] गुण और प्रशंसा (फ़ज़ाइल-ओ-मुनाकिब) 113 | क़ाज़ी ख़ान ने कहा कि इमाम ख़साफ़ ज्ञान में बड़े हैं, उनका अनुसरण करना जायज़ है। 205 | जो अपने जीवन, संपत्ति, धर्म और परिवार की रक्षा करते हुए मारा जाए, वह शहीद है। 273 | नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कुरान और कुरान के समान वस्तु दी गई है। 273 | अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जो कुछ हराम किया है, वह वैसा ही है जैसा अल्लाह तआला ने हराम किया है। 273 | मुसलमानों को अल्लाह तआला का आदेश है कि रसूल जो कुछ तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे वे मना करें उससे रुक जाओ। 326 | विद्वानों की सहमति से, सबसे पहले उम्मुल मोमिनीन खदीजा अल-कुबरा को अनुकरण के सौभाग्य से सम्मानित किया गया। 326 | हज़रत शैख़ैन (अबू बक्र और उमर, रज़ियल्लाहु अन्हुमा) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सबसे श्रेष्ठ और पूर्ण शिष्य थे। औलिया कहते हैं: "न तो मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जैसा कोई पीर (गुरु) था और न ही सिद्दीक़ जैसा कोई मुरीद (शिष्य)।" 389 | रुस्तगनी कथनी और करनी में विश्वसनीय इमाम हैं। यदि न्याय के दिन उनकी रिवायत (वर्णन) पर अमल करने के कारण हमारी पकड़ हुई, तो हम उनका पल्ला पकड़ेंगे क्योंकि हमने उनके आदेश पर अमल किया। 405 | जन्नत और सुन्नत के आठ द्वार सत्य और शुद्धता के मार्गदर्शक हैं।

[बाएं कॉलम की प्रविष्टियाँ] 490 | अल्लाह तआला इमामों के विरोध का स्वाद चखाता है। 713 | एक धार्मिक विद्वान आम मोमिनों से सात दर्जे ऊँचा है; प्रत्येक दो दर्जों के बीच पाँच सौ वर्षों की यात्रा का अंतर है। 713 | वास्तव में, केवल परहेज़गार धार्मिक विद्वान ही सच्चा विद्वान है।

[शीर्षक] लोगों के अधिकार (हुकूक़-उल-इबाद) 199 | पिता का यह कर्तव्य है कि वह वह करे जो संतानों के हित में सबसे अच्छा हो। 202 | बंदों का एक-दूसरे पर जो अत्याचार है, उसका बदला अवश्य होना है। 203 | किसी मुसलमान की लाठी भी उसकी सहमति के बिना लेना जायज़ नहीं है। 299 | कुरान ए करीम में महिलाओं को नुकसान पहुँचाने और उन पर तंगी करने की मनाही है। 300 | अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद है कि इस्लाम में न तो नुकसान पहुँचाना है और न ही नुकसान उठाना। 395 | पुरुष महिलाओं पर शासक और वर्चस्व रखने वाले

हैं। 395 | एक महिला पर सबसे बड़ा अधिकार उसके पति का है। 395 | यदि ईश्वर के अलावा किसी और को सज्दा करना जायज़ होता, तो महिला को आदेश दिया जाता कि वह अपने पति को सज्दा करे।

पृष्ठ 101 / 739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

[دائیں کالم کے اندراجات] ۳۹۳ | آدمی اپنے محبوب کے دین پر ہوتا ہے تو دیکھ بھال کر دوستی کیا کرو۔ ۴۳۳ | ظالموں کی طرف میل مت کرو ورنہ تمہیں جہنم کی آگ چھوئے گی۔

[عنوان] فضائل و مناقب ۱۱۳ | قاضی خاں نے کہا کہ امام خصاف علم میں بڑے ہیں ان کی اقتدا جائز ہے۔ ۲۰۵ | جو اپنے جان و مال، دین و مذہب اور اہل و عیال کی حفاظت میں مارا جائے وہ شہید ہے۔ ۲۷۳ | نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو قرآن اور قرآن کی مثل اور عطا کیا گیا ہے۔ ۲۷۳ | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا حرام کیا ہوا ایسا ہی ہے جیسا اللہ تعالیٰ کا حرام کیا ہوا۔ ۲۷۳ | مسلمانوں کو اللہ تعالیٰ کا حکم ہے کہ جو کچھ تمہیں رسول عطا فرمائیں اس کو لو اور جس سے منع فرمائیں اس سے باز رہو۔ ۳۲۶ | باتفاق علماء سب سے پہلے ام المؤمنین خدیجہ الکبریٰ شرف ارادات سے مشرف ہوئیں۔ ۳۲۶ | حضرات شیخین ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سب سے افضل و اکمل مرید تھے۔ اولیاء فرماتے ہیں: تاجاں ست نہ ہمچو مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پیرے بود نہ ہمچو صدیق مریدے۔ ۳۸۹ | رستغنی امام معتمد ہیں قول و فعل میں اگر روز قیامت ان کی روایت پر عمل میں ہم سے گرفت ہوئی تو ہم ان کا دامن پکڑیں گے کہ ہم نے ان کے ارشاد پر عمل کیا۔ ۴۰۵ | جنت سنت کے آٹھ باب جو ہادی حق و صواب ہیں۔

[بائیں کالم کے اندراجات] ۴۹۰ | اللہ تعالیٰ ائمہ کے مقابلے کا مزہ چکھاتا ہے۔ ۷۱۳ | عالم دین عام مومنین سے سات درجے بلند ہے، ہر دو درجوں کے درمیان پانچ سو برس کی راہ ہے۔ ۷۱۳ | دین دار متدین عالم ہی در حقیقت عالم ہے۔

[عنوان] حقوق العباد ۱۹۹ | ذمہ پدر لازم کہ وہ کرے جو اولاد کے حق میں بہتر ہو۔ ۲۰۲ | بندوں کا آپس میں ایک دوسرے پر جو ظلم ہے اس کا بدلہ ضرور ہونا ہے۔ ۲۰۳ | مسلمان کی لاٹھی بھی اس کی مرضی کے بغیر لینی جائز نہیں۔ ۲۹۹ | عورتوں کو ضرر پہنچانے اور ان پر تنگی کرنے کی قرآن عظیم سے ممانعت۔ ۳۰۰ | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ اسلام میں نہ ضرر ہے نہ ضرر رسانی۔ ۳۹۵ | مرد عورتوں پر حاکم و مسلط ہیں۔ ۳۹۵ | عورت پر سب سے بڑھ کر حق اس کے شوہر کا ہے۔ ۳۹۵ | اگر غیر خدا کو سجدہ روا ہوتا تو عورت کو حکم ہوتا کہ وہ اپنے شوہر کو سجدہ کرے۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

- Hurting parents is among the most severe major sins. (Page 434)
- Unjustly hurting a Muslim is forbidden, as per the Hadith it is hurting the Prophet, and hurting the Prophet is hurting Allah, the Glorious, and peace and blessings be upon him. (Page 625)

Prohibition and Permissibility - The ruling on performing a marriage (Nikah) where there is dancing, singing, and music. (Page 109) - Dancing and most musical instruments are forbidden (Haram) but not disbelief (Kufr); one who watches or listens to them is a sinner (Fasiq). (Page 109) - Enjoining good and forbidding evil are matters of Islam, but misplaced severity and prejudice are sins, and this calamity is very prevalent among the Wahhabis. (Page 109) - There is a limit to enjoining good and forbidding evil; exceeding it is committing a wrong. (Page 110) - What would be the ruling if one of the spouses believes that dancing is permissible? (Page 110) - The ruling on having an apostate perform the marriage ceremony. (Page 173) - Fulfilling a promise is beloved, and not fulfilling it is disliked and reprehensible (Makruh). (Page 176) - The person performing the marriage contract should be religious, pious, and well-versed in the matters of Nikah. (Page 188) - A dishonest sinner is not trustworthy; when he does not care for the forbidden and permissible himself, what hope is there for caution towards others. (Page 188)

- It is desirable (Mustahabb) for a marriage to be announced, to have a sermon before the proposal and acceptance, to take place in a mosque, to be on a Friday, and for the marriage officiant to be a practicing scholar. (Page 188)
- An ignorant person performing the marriage ceremony is absolutely against the preferred way. (Page 190)
- Engaging in a business partnership (Mudarabah) with an ignorant person is against the preferred way. (Page 190)
- Proposing marriage to someone who is already engaged is reprehensible (Makruh) and an act of vileness. (Page 197)
- Backing out of a commitment after agreeing to a proposal and giving word to the first suitor only to intend marriage to another is blameworthy, improper, and deserves accountability. (Page 197)
- If one breaks an engagement due to a legitimate Sharia excuse and marries another, there is no harm. (Page 197)

- A person afflicted with two calamities should choose the lighter and easier of the two. (Page 200)
- Saying to the groom, "Have you accepted her?", is it necessary or not? (Page 207)
- Is it necessary to have adult contracting parties recite the Kalimas and the general and detailed descriptions of faith before the contract? (Page 207)
- The contracting parties are adults, but the boy's guardian wants a four-month delay; is it a sin if time is granted or not? (Page 208)
- Negligence should not be shown in marriage, prayers, and funeral prayers. (Page 209)
- Socializing with an apostate is forbidden. (Page 218)
- Marrying a promiscuous woman is permissible even if she hasn't repented. (Page 235)

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

- माता-पिता को कष्ट पहुँचाना सबसे गंभीर बड़े पापों में से एक है। (पृष्ठ ४३४)
- किसी मुसलमान को अन्यायपूर्ण कष्ट पहुँचाना हराम है क्योंकि हदीस के अनुसार वह रसूल को कष्ट पहुँचाना है, और रसूल को कष्ट पहुँचाना अल्लाह को कष्ट पहुँचाना है, जो महान है, और उस पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो। (पृष्ठ ६२५)

वर्जना और अनुमति (हज़्र-ओ-इबाहत) - जहाँ नाच-गाना और वाद्य यंत्र हों, वहाँ निकाह का हुक्म। (पृष्ठ १०९) - नाच और अधिकांश वाद्य यंत्र हराम हैं, कुफ़्र नहीं; और देखने-सुनने वाला फासिक (पापी) है। (पृष्ठ १०९) - भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना इस्लाम के मामले हैं, लेकिन अनुचित सख्ती और पक्षपात पाप है, और यह विपत्ति वहाबियों में बहुत अधिक है। (पृष्ठ १०९) - भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने की एक सीमा है, जिससे आगे बढ़ना स्वयं बुराई का उल्लंघन है। (पृष्ठ ११०) - यदि पति-पत्नी में से किसी का यह मानना हो कि नाच हलाल है, तो क्या हुक्म होगा? (पृष्ठ ११०) - मुरतद (धर्मत्यागी) से निकाह पढ़ाने का हुक्म। (पृष्ठ १७३) - वादा पूरा करना प्रिय है और उसे पूरा न करना नापसंद और मकरूह है। (पृष्ठ १७६) - निकाह का अनुबंध (अक़्द) करने वाले को धार्मिक, परहेज़गार और निकाह के मामलों से वाकिफ होना चाहिए। (पृष्ठ १८८) - एक बेईमान फासिक भरोसेमंद नहीं है; जब वह खुद हराम और हलाल की परवाह नहीं करता, तो दूसरों के लिए सावधानी की क्या उम्मीद की जा सकती है। (पृष्ठ १८८)

- निकाह का ऐलान होना, इजाब-ओ-क़ुबूल से पहले खुतबा होना, मस्जिद में निकाह होना, जुमे के दिन होना और निकाह पढ़ाने वाले का अमल करने वाला आलिम होना मुस्तहब (पसंदीदा) है। (पृष्ठ १८८)
- अनपढ़ (जाहिल) का निकाह पढ़ाना बिल्कुल औला के खिलाफ (नापसंदीदा) है। (पृष्ठ १९०)
- जाहिल के साथ मुज़ारबत (व्यापारिक साझेदारी) करना औला के खिलाफ है। (पृष्ठ १९०)
- किसी की मंगेतर को निकाह का पैगाम देना मकरूह और नीचता का काम है। (पृष्ठ १९७)
- जिससे मंगनी की बात हो चुकी हो, उसका अपने इकरार से फिरना और पहले मंगनी करने वाले को ज़बान देकर दूसरे से निकाह का इरादा करना निंदनीय और अनुचित है और जवाबदेही के योग्य है। (पृष्ठ १९७)

- यदि किसी शरई उज़्र (धार्मिक कारण) से मंगनी तोड़कर दूसरे से निकाह कर दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं। (पृष्ठ १९७)
- जो व्यक्ति दो मुसीबतों में फंसा हो, उसे उनमें से हल्की और आसान को अपनाना चाहिए। (पृष्ठ २००)
- दूल्हे से यह कहना "तुमने कुबूल की", यह कहना चाहिए या नहीं। (पृष्ठ २०७)
- निकाह से पहले बालिग दूल्हा-दुल्हन को कलमे और ईमान-ए-मुज्मल व मुफस्सल पढ़ाना ज़रूरी है या नहीं। (पृष्ठ २०७)
- दूल्हा-दुल्हन बालिग हैं, लड़के का वली चार महीने की मोहलत चाहता है; यदि मोहलत दी जाए तो यह गुनाह है या नहीं। (पृष्ठ २०८)
- निकाह, नमाज़ और नमाज़-ए-जनाज़ा में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। (पृष्ठ २०९)
- मुरतद (धर्मत्यागी) से मेल-जोल हराम है। (पृष्ठ २१८)
- व्यभिचारी स्त्री से निकाह जायज़ है, भले ही उसने तौबा न की हो। (पृष्ठ २३५)

पृष्ठ १०२/७३९

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

- ایذاء والدین اشد کبائر ہے۔ (صفحہ ۴۳۴)
- ناحق ایذاء مسلم حرام کہ بحکم حدیث وہ ایذاء رسول ہے اور ایذاء رسول ایذاء اللہ ہے جل جلالہ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔ (صفحہ ۶۲۵)

حظر و اباحت - ناچ رنگ، باجے گاجے جہاں ہوں وہاں نکاح کا حکم۔ (صفحہ ۱۰۹) - ناچ اور اکثر باجے حرام ہیں کفر نہیں اور دیکھنے سننے والا فاسق ہے۔ (صفحہ ۱۰۹) - امر بالمعروف و نہی عن المنکر امور اسلام سے ہیں مگر بے محل تشدد و تعصب گناہ ہے اور یہ بلا وہابیہ میں بہت زیادہ ہے۔ (صفحہ ۱۰۹) - امر بالمعروف و نہی عن المنکر کے لئے ایک حد ہے کہ اس سے تجاوز ارتکاب منکر ہے۔ (صفحہ ۱۱۰) - زوجین سے اگر کسی کا یہ عقیدہ ہو کہ ناچ حلال ہے تو کیا حکم ہو سکے گا۔ (صفحہ ۱۱۰) - مرتد سے نکاح پڑھوانے کا حکم۔ (صفحہ ۱۷۳) - ایفائے وعدہ محبوب ہے اور پورا نہ کرنا ناپسندیدہ اور مکروہ ہے۔ (صفحہ ۱۷۶) - عقد کرنے والا دیندار متقی مسائل نکاح سے واقف ہونا چاہئے۔ (صفحہ ۱۸۸) - فاسق بددیانت قابل اعتماد نہیں جب وہ خود حرام و حلال کی پروا نہیں کرتا تو اوروں کے لئے احتیاط کی کیا اُمید۔ (صفحہ ۱۸۸)

- نکاح باعلان ہونا اور ایجاب و قبول سے پہلے خطبہ اور مسجد میں نکاح ہونا اور جمعہ کے دن ہونا اور نکاح خواں عالم باعمل ہونا مستحب ہے۔ (صفحہ ۱۸۸)
- جاہل کی نکاح خوانی قطعاً خلاف اولیٰ ہے۔ (صفحہ ۱۹۰)
- جاہل کی مضاربت خلاف اولیٰ ہے۔ (صفحہ ۱۹۰)
- کسی کی منگیتر کو پیغام نکاح دینا مکروہ اور ارتکاب شناعت ہے۔ (صفحہ ۱۹۷)

- مخطوب منہ کا اپنے اقرار سے پھرنا اور خاطب اول کو زبان دے کر دوسرے سے قصد تزویج مذموم و بیجا قابل مواخذہ ہے۔ (صفحہ ۱۹۷)
- اگر کسی عذر شرعی سے منگنی کر کے دوسرے سے نکاح کر دے تو قباحت نہیں۔ (صفحہ ۱۹۷)
- جو شخص دو مصیبتوں میں مبتلا ہے اسے ان میں سے اخف واہون کو اپنانا چاہئے۔ (صفحہ ۲۰۰)
- نوشہ سے کہنا تم نے قبول کی، چاہئے یا نہیں۔ (صفحہ ۲۰۷)
- عاقدین بالغین کو قبل از عقد کلمے اور صفت ایمان مجمل و مفصل پڑھانا ضرور ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۲۰۷)
- عاقدین بالغ ہیں پسر کا ولی چار ماہ کی مہلت چاہتا ہے اگر مہلت دی جائے تو یہ گناہ ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۲۰۸)
- نکاح میں اور نماز میں اور نماز جنازہ میں سہل انگاری نہ کرنی چاہئے۔ (صفحہ ۲۰۹)
- مرتد سے میل جول حرام ہے۔ (صفحہ ۲۱۸)
- زن فاحشہ سے نکاح جائز ہے اگرچہ تائب نہ ہوئی ہو۔ (صفحہ ۲۳۵)

Fatawa Razawiya, Volume 11

278 | They marry off their girl for one or two thousand rupees to a peer or non-peer. How is this marriage and what about that money? | 367 | How is it to marry Shias and other heretics? 281 | If a Shafi'i performs a marriage correctly according to the Hanafi school, there is no harm. | 368 | Friendship and love with a heretic are prohibited; it harms the faith. 288 | Intercourse before permission in a suspended marriage is forbidden. | 368 | A person's resurrection will be with whom they love. 288 | The ruling on marriage and intimacy with a woman who conceived through adultery. | 368 | A person follows the religion of his close friend, so consider whom you take as a friend. 290 | Is marriage with a brother-in-law (husband's elder brother) valid or not? | 368 | Marrying a heretic woman with the thought that "we will make her Sunni" is sheer folly. 304 | Habitually skipping Friday prayers and congregational prayers without a Sharia-compliant excuse causes wickedness (fisq), disqualifies one as a witness, and is grounds for rejecting testimony. | 373 | Marrying a Sunni Hanafi woman to a non-muqallid Wahhabi is forbidden, illegal, and a sin. 327 | Teaching religious knowledge to the wife from the Quran and Hadith and guiding her to act upon it is necessary and a source of great reward. | 390 | If Satan makes you forget, do not sit with wrongdoers once you remember. 329 | Will the marriage of an illegitimate woman with a Sunni man take place or not? And will there be any defect in the children born from her? | 390 | It is forbidden to voluntarily go to a place where there is wrongdoing (munkar) and it cannot be denounced. 332 | A kiss on the lips will inevitably be considered with lust; if one claims they didn't do it with lust, it won't be accepted. According to Imam Muhammad bin Al-Hammam, a kiss on the cheek is the same. | 400 | With which Kitabiyah (Woman of the Book) is marriage permissible? 333 | Is marriage with a teacher's daughter permissible or not? | 400 | Marriage with a Kitabiyah without necessity is disliked (makruh). 333 | How is the marriage of a teacher with a female student? | 415 | Is it permissible for a Sunni to give his daughter in marriage to a Rafidi, Tabarrai, slanderer of Lady Siddiqa (رضی اللہ تعالیٰ عنہا), or not; and if they do so despite it being illegal, what is the ruling? 349 | Explanation of the prohibition of Mut'ah (temporary marriage) from Hadith and Quran. | 418 | Initiating greetings (salam) with an open sinner is disliked; similarly with an old joker, a liar, a frivolous person, one who hurls insults, one who stares at and peeps at stranger women, a singer, a pigeon flyer, etc. 350 | Allah Almighty has made Mut'ah forbidden until the Day of Resurrection. | -

फतवा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

278 | अपनी लड़की के लिए एक या दो हज़ार रुपये लेकर कुफ़ु या ग़ैर-कुफ़ु से निकाह कर देते हैं, यह निकाह कैसा है और वह रक़म कैसी। | 367 | शिया और अन्य विधर्मियों से शादी करना कैसा है। 281 | शाफ़ई हनफ़ी मज़हब पर सही तरीक़े से निकाह पढ़ाए तो कोई हर्ज नहीं। | 368 | विधर्मी से दोस्ती और मुहब्बत नाजायज़ है, इससे दीन को नुक़सान पहुँचता है। 288 | निकाह-ए-मौक़ूफ़ में इजाज़त से पहले संभोग हराम है। | 368 | आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह मुहब्बत रखता है। 288 | व्यभिचार से गर्भवती महिला से निकाह और क़ुरबत का हुक्म। | 368 | आदमी अपने सच्चे दोस्त के दीन पर होता है, तो ग़ौर करे कि किससे दोस्ती करता है। 290 | जेठ से निकाह दुरुस्त है या नहीं। | 368 | विधर्मी औरत से निकाह में यह ख़याल कि हम उसे सुन्नी बना लेंगे, महज़ बेवक़ूफ़ी है। 304 | बिना किसी शरी'ई उज़्र के जुमा और जमाअत छोड़ने की आदत फ़िस्क़ का कारण है, अदालत को ख़त्म करती है और गवाही रद्द करने की वजह है। | 373 | सुन्नी हनफ़ी औरत का निकाह ग़ैर-मुक़ल्लिद वहाबी से करना मना और नाजायज़ है और गुनाह है। 327 | क़ुरआन और हदीस से पत्नी को दीन का इल्म सिखाना और उस पर अमल की हिदायत करना ज़रूरी और बड़े अज्र का काम है। | 390 | अगर शैतान तुझे भुला दे तो याद आने पर ज़ालिमों के पास मत बैठ। 329 | क्या किसी हरामज़ादी औरत का निकाह सुन्नी मर्द से होगा या नहीं। और क्या उसकी कोख से पैदा होने वाली औलाद में कोई नुक़सान होगा या नहीं। | 390 | अपनी इच्छा से ऐसी जगह जाना हराम है जहाँ बुराई हो और उसका विरोध न हो सके। 332 | होठों का बोसा अनिवार्य रूप से कामुकता (शहवत) के साथ माना जाएगा; यदि कोई दावा करता है कि मैंने इसे शहवत के साथ नहीं लिया था, तो स्वीकार नहीं किया जाएगा। इमाम मोहम्मद बिन अल-हम्माम के अनुसार गाल का बोसा भी ऐसा ही है। | 400 | किस किताबिया से निकाह जायज़ है। 333 | उस्ताद की बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं। | 400 | किताबिया से बिना ज़रूरत निकाह मकरूह है। 333 | शागिर्द औरत से उस्ताद का निकाह कैसा है। | 415 | सुन्नी को अपनी बेटी का निकाह राफ़ज़ी, तबर्राई, हज़रत सिद्दीक़ा (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) पर तोहमत लगाने वाले के साथ करना जायज़ है या नहीं, और नाजायज़ होने के बावजूद ऐसा करे तो क्या हुक्म है। 349 | अहादीस और क़ुरआन से मुत'आ (अस्थायी विवाह) की हुरमत का बयान। | 418 | खुले तौर पर गुनाह करने वाले (फ़ासिक़ मुअल्लन) को सलाम करने में पहल करना मकरूह है; इसी तरह बूढ़ा मज़ाक़िया, झूठा, व्यर्थ बातें करने वाला, गालियाँ बकने वाला, अजनबी औरतों को घूरने और ताँक-झाँक करने वाला,

गाने वाला और कबूतरबाज़ वग़ैरह। 350 | अल्लाह तआला ने क़यामत तक मुत'आ हराम फ़रमाया। | -

पृष्ठ 104 / 739

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

۲۷۸ | اپنی لڑکی کا ہزار دو ہزار روپیہ لے کر کفو یا غیر کفو سے نکاح کر دیتے ہیں، یہ نکاح کیسا ہے اور وہ رقم کیسی۔ | ۳۶۷ | شیعہ وغیرہ بد مذہبوں سے شادی کرنا کیسا ہے۔ ۲۸۱ | شافعی حنفی مذہب پر صحیح طور پر نکاح پڑھائے تو کچھ حرج نہیں۔ | ۳۶۸ | بد مذہب سے دوستی و محبت ناجائز ہے، اس سے دین کو نقصان پہنچتا ہے۔ ۲۸۸ | نکاح موقوف میں قبل اجازت وطی حرام ہے۔ | ۳۶۸ | آدمی کا حشر اسی کے ساتھ ہوگا جس سے محبت رکھتا ہے۔ ۲۸۸ | عورت سے بحالت حمل زنا، نکاح و قربت کا حکم۔ | ۳۶۸ | آدمی اپنے خالص دوست کے دین پر ہوتا ہے تو غور کرے کہ کس سے دوستی کرتا ہے۔ ۲۹۰ | جیٹھ سے نکاح درست ہے یا نہیں۔ | ۳۶۸ | بد مذہب عورت سے نکاح میں یہ خیال کہ ہم اس کو سنی کر لیں گے محض حماقت ہے۔ ۳۰۴ | بلاعذر شرعی ترک جمعہ وجماعت کی عادت موجب فسق، مسقط عدالت اور وجہ رد شہادت ہے۔ | ۳۷۳ | سنیہ حنفیہ کا نکاح غیر مقلد وہابی سے کرنا ممنوع و ناجائز اور گناہ ہے۔ ۳۲۷ | قرآن و حدیث سے بی بی کو علم دین سکھانا اور اس پر عمل کی ہدایت کرنا لازم اور بڑے اجر کا کام ہے۔ | ۳۹۰ | اگر شیطان تجھے بھلا دے تو یاد آنے پر ظالموں کے پاس مت بیٹھ۔ ۳۲۹ | حرامی عورت کا نکاح سنی مرد سے ہوگا یا نہیں اور اس کی بطنی اولاد میں کچھ نقصان واقع ہوگا یا نہیں | ۳۹۰ | اپنے اختیار سے ایسی جگہ جانا حرام ہے جہاں منکر ہو اور انکار نہ ہو سکے۔ ۳۳۲ | بوسہ لب خواہی نخواہی بنظر شہوت ٹھہرے گا لا محالہ ادعا کرے کہ میں نے بشہوت نہ لیا تھا قبول نہ ہوگا اور امام محمد بن الہمام کے نزدیک بوسہ رخسار میں ایسا ہی ہے۔ | ۴۰۰ | کون سی کتابیہ سے نکاح جائز ہے۔ ۳۳۳ | استاذ کی بیٹی سے نکاح جائز ہے یا نہیں۔ | ۴۰۰ | کتابیہ سے بے ضرورت نکاح مکروہ ہے۔ ۳۳۳ | شاگرد عورت سے استاذ کا نکاح کیسا

ہے۔ | ۴۱۵ | سنی کو اپنی دختر رافضی تبرائی قاذف حضرت صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے نکاح میں دینا جائز ہے یا نہیں، اور باوجود ناجائز کے بھی ایسا کرے تو کیا حکم ہے۔ ۳۴۹ | حرمت متعہ کا بیان از احادیث و قرآن۔ | ۴۱۸ | فاسق معلن سے ابتداء بالسلام مکروہ ہے یونہی بوڑھا مذاقی، کذاب، لاغی، گالیاں بکنے والا، اجنبی عورتوں کو گھورنے اور تاک جھانک کرنے والا، گانے والا اور کبوتر باز وغیرہ۔ ۳۵۰ | اللہ تعالیٰ نے تاقیام قیامت متعہ حرام فرمایا۔ | -

Fatawa Rizvia Volume 11

Rulings / Issues	Page	Exhortation and Warning	Page
One who sits, eats, and drinks with a perpetrator of forbidden acts is like them.	419	Exhortation and Warning	
Giving a daughter in marriage to a misguided and irreligious person is a sin and forbidden in Sharia.	420	The curse of Allah Almighty is upon the oppressors.	202
The issue of marriage of a Sunni man with a Rafidah woman.	536	There are three registers: from one, Allah Almighty will forgive nothing; the second, He does not care about; and from the third, He will leave nothing.	202
Marriage with a Tabarrai Rafidah is absolutely void.	457	Causing pain to a Muslim is causing pain to Allah and the Messenger (peace and blessings be upon him).	202
Is marriage without 'Istibra' (waiting period) permissible for stray women who live without a veil, roam around openly, for whom adultery is proven, who have had abortions, or for a prostitute?	466	Assisting in oppression and sin is like oppression itself, forbidden, and leads to deserving punishment.	202
Attributing the permissibility of eating crows to Imam Abu Hanifa is false.	482	He who walked with an oppressor to help him, knowing that he is an oppressor, has left the fold of Islam.	202
The ruling on joking with one's maternal aunt (mami) and sister-in-law (bhawaj).	506	Marriage is a means to prevent wandering eyes and immorality.	221
Is marriage with the minor daughter of a Mirza'i permissible or not? The Mirza'i has died, and the daughter is completely unaware of his religion.	507	There is a fear of an evil end upon changing one's religion.	220

Rulings / Issues	Page	Exhortation and Warning	Page
Ruling on the marriage of a Muslim man or woman with a Buddhist, Jain, Hindu, atheist, etc.	510	Causing distress to the Sharia by establishing lies and baseless claims is severe absurdity.	261
A Muslim man can marry a non-believer from the People of the Book (Kitabiyya).	511	It is impermissible to fix a dower (Mahr) with no intention of paying it.	283
The slaughtered meat of the People of the Book is lawful for Muslims.	511	It is in the Hadith that they will be raised as adulterers and adulteresses on the Day of Resurrection.	283
According to the Hadith, Islam is free from harm and reciprocating harm.	629	Causing unjust harm to a Muslim is equivalent to causing harm to Allah and the Messenger.	292
Zaid is illegitimate but a religious Muslim; can legitimate persons marry their children to his children or not?	728	He who looks at the private parts of both a woman and her daughter is cursed.	364
A non-Sayyid married a Sayyidah woman, people call him a kafir for this, what is the ruling on those who call him a kafir?	730		

मसले / अहकाम	सफ़्हा	तरगीब व तरहीब (प्रोत्साहन और चेतावनी)	सफ़्हा
हराम (निषिद्ध कार्य) करने वाले के साथ उठने-बैठने और खाने-पीने वाला भी उसी के समान है।	419	तरगीब व तरहीब	
गुमराह और अधर्मी को बेटी देना शरीयत की दृष्टि से गुनाह और वर्जित है।	420	ज़ालिमों (अत्याचारियों) पर अल्लाह तआला की लानत है।	202
सुन्नी पुरुष का राफ़ज़ी महिला से निकाह का मसला।	536	दफ़्तर तीन हैं: एक में से अल्लाह तआला कुछ नहीं बख्शेगा, दूसरे की उसे परवाह नहीं, और तीसरे में से कुछ नहीं छोड़ेगा।	202
तबर्राई राफ़ज़ी के साथ निकाह सरासर बातिल (अमान्य) है।	457	किसी मुसलमान को तकलीफ़ पहुँचाना अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तकलीफ़ पहुँचाना है।	202
आवारा औरतें जो बेपर्दा रहती हैं और खुलेआम घूमती-फिरती हैं, जिनसे ज़िना (व्यभिचार) भी साबित हुआ हो, गर्भपात कराया गया हो, या किसी वेश्या का निकाह बिना इस्तिबरा-ए-रहम (गर्भ की शुद्धि की प्रतीक्षा अवधि) के जायज़ है या नहीं?	466	ज़ुल्म और गुनाह पर मदद करना ज़ुल्म के समान ज़ुल्म व हराम है और अज़ाब (दंड) का पात्र बनना है।	202
कौवे के हलाल होने का संबंध इमाम अबू हनीफा की ओर करना बातिल (झूठ) है।	482	जो किसी ज़ालिम के साथ उसकी मदद करने के लिए चला, जबकि वह जानता है कि यह ज़ालिम है, तो वह इस्लाम से निकल गया।	202
	506		221

मसले / अहकाम	सफ़्हा
ममानी और भाभी (भावज) से मज़ाक करने का हुक्म।	
मिर्ज़ाई की नाबालिग बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं? मिर्ज़ाई मर चुका है, और बेटी अपने धर्म से बिल्कुल अनभिज्ञ है।	507
मुसलमान पुरुष या स्त्री के बौद्ध, जैन, हिंदू और नास्तिक (दह्रिया) आदि से निकाह का हुक्म।	510
मुसलमान पुरुष काफ़िरा किताबिया (ईसाई या यहूदी स्त्री) से निकाह कर सकता है।	511
किताबियों (अहले किताब) का ज़बीहा (ज़बह किया हुआ जानवर) मुसलमानों के लिए हलाल है।	511
हदीस के हुक्म से इस्लाम नुकसान पहुँचाने और नुकसान के बदले नुकसान पहुँचाने से पाक है।	629
ज़ैद अवैध संतान (हरामी) है लेकिन धार्मिक मुसलमान है, उसकी संतान से वैध संतान (हलाली) वाले अपनी संतान का निकाह कर सकते हैं या नहीं?	728
एक गैर-सैय्यद ने सैय्यदा स्त्री से निकाह किया, इस पर लोग उसे काफ़िर कहते हैं, काफ़िर कहने वालों के लिए क्या हुक्म है?	730

तरगीब व तरहीब (प्रोत्साहन और चेतावनी)	सफ़्हा
निकाह बुरी नज़र और बदकारी से रोकने का ज़रिया है।	
धर्म परिवर्तन पर बुरे अंत (सू-ए-खातिमा) की आशंका है।	220
झूठ और निराधार बात को स्थापित करके शरीयत को तकलीफ़ देना घोर मूर्खता है।	261
यह नाजायज़ है कि महर तय किया जाए और उसे अदा करने की नीयत न हो।	283
हदीस में है कि वे हश्र (क़यामत) के दिन ज़िना करने वालों के रूप में उठाए जाएंगे।	283
किसी मुसलमान को नाहक तकलीफ़ देना अल्लाह और रसूल को तकलीफ़ देने के बराबर है।	292
जो व्यक्ति किसी औरत और उसकी बेटी दोनों के गुप्त अंगों को देखे, वह शापित (मलऊन) है।	364

सफ़्हा 739 का 105

مسائل / احکام	صفحہ
مرتکبِ حرام کے ساتھ اٹھنے بیٹھنے اور کھانے پینے والا بھی اسی کی مثل ہے۔	۴۱۹
گمراہ و بددین کو بیٹی دینا شرعاً گناہ و ممنوع ہے۔	۴۲۰
مسئلہ نکاح زنِ رافضیہ باسنی۔	۵۳۶
تبرائی رافضی کے ساتھ نکاح باطل محض ہے۔	۴۵۷
آوارہ عورتیں جو بے پردہ رہتی کھلے بندوں چلتی پھرتی ہیں جن سے زنا بھی ثابت ہوا حمل گرائے گئے ہوں یا طوائف کا نکاح بے استبراء رحم جائز ہے یا نہیں۔	۴۶۶
	۴۸۲

ترغیب و ترہیب	صفحہ
ترغیب و ترہیب	۲۰۲
ظالموں پر اللہ تعالیٰ کی لعنت ہے۔	۲۰۲
دفتر تین ہیں، ایک میں سے اللہ تعالیٰ کچھ نہ بخشے گا، دوسرے کی اسے پروا نہیں، اور تیسرے میں سے کچھ نہ چھوڑے گا۔	۲۰۲
مسلمان کو ایذاء پہنچانا اللہ اور رسول جل و علا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ایذاء دینا ہے۔	۲۰۲
ظلم و گناہ پر اعانت کرنا ظلم کی مثل ظلم و حرام اور استحقاقِ عذاب میں مبتلا ہونا ہے۔	۲۰۲
	۲۰۲

مسائل / احکام	صفحہ
حلتِ غراب کی نسبت امام ابو حنیفہ کی طرف کرنا باطل ہے۔	
ممانی اور بھاوج سے مذاق کا حکم۔	۵۰۶
مرزائی کی نابالغہ دختر سے عقد جائز ہے یا نہیں۔ مرزائی مرگیا ہے، دختر اپنے مذہب سے بالکل ناواقف ہے۔	۵۰۷
مسلمان مرد یا عورت کے بدھ جین ہندو و دہریہ وغیرہ سے نکاح کا حکم۔	۵۱۰
مسلمان مرد کافرہ کتابیہ سے نکاح کر سکتا ہے۔	۵۱۱
کتابیوں کا ذبیحہ مسلمانوں کے لئے حلال ہے۔	۵۱۱
بحکمِ حدیث اسلام ضرر و ضرار سے پاک ہے۔	۶۲۹

ترغیب و ترہیب	صفحہ
جو کسی ظالم کے ساتھ اس کی مدد کرنے کے لئے چلا حالانکہ وہ جانتا ہے کہ یہ ظالم ہے تو وہ اسلام سے نکل گیا۔	
نکاح پریشان نظری و بدکاری سے روکنے کا سبب ہے۔	۲۲۱
تبدیلِ مذہب پر سوءِ خاتمہ کا اندیشہ ہے۔	۲۲۰
جھوٹ اور بے اصل بات قائم کر کے شریعت کو تکلیف دینی سخت بیہودگی ہے۔	۲۶۱
یہ ناجائز ہے کہ مہر باندھے اور ادا کی نیت نہ ہو۔	۲۸۳
حدیث میں ہے کہ وہ حشر میں زانی وزانیہ اٹھائے جائیں گے۔	۲۸۳
کسی مسلمان کو ناحق ایذاء دینا اللہ و رسول کو ایذاء دینے کے مترادف ہے۔	۲۹۲

مسائل / احکام صفحہ

زید حرامی مگر مسلمان دیندار ہے، اس کی اولاد سے حلالی اپنی اولاد کا عقد کر سکتے ہیں یا نہیں۔ ۷۲۸

سیدہ سے غیر سید نے نکاح کیا اس پر لوگ اسے کافر کہتے ہیں، کافر کہنے والوں کا کیا حکم ہے۔ ۷۳۰

ترغیب و ترہیب صفحہ

جو شخص کسی عورت اور اس کی بیٹی دونوں کی فرج کو دیکھے وہ ملعون ہے۔ ۳۶۴

Page	Subject / Ruling
363	On the Day of Resurrection, Allah Almighty will not look with mercy upon the person who looks at the private parts of a woman and her daughter.
391	According to the command of the Quran, whoever befriends those of bad faith is one of them.
391	A person will be resurrected with the one they love.
419	The ill omen of a sin also affects someone other than the doer.
425	Anyone who ruins a woman's relationship with her husband is not from the group of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), according to the Hadith.
426	To break a woman's marriage with her husband and marry her to another is the most severe and wicked oppression.
426	False testimony is considered equivalent to idol worship.
328	Is the marriage of a Sunni with the daughter of a Rafidi valid or not, and are the children entitled to the father's inheritance or not?
421	Broadly speaking, inheritance does not apply in corrupt (fasid) and void (batil) marriages.
366	Despite the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharat), if the husband did not separate and continued cohabitation, the resulting children will inherit from both mother and father; however, the husband and wife will not inherit from each other.
366	Even illegitimate children inherit the property of their mother.
425	**Calculation (Hisaab)**
248	The Shariah Dinar was four and a half mashas of gold.
248	The dowry of Hazrat Batul Zahra (may Allah be pleased with her) was four

Page	Subject / Ruling
426	A false witness's feet will not move from their spot before Allah Almighty makes the punishment of Hell mandatory for them.
531	Severe warning for one who ruins a woman's relationship with her husband.
713	A misguided educated person is worse than an ignorant one, for compound ignorance is a terrible calamity, and whoever is afflicted by it is severely disgraced in both worlds.
	Gift (Hiba)
399	One who takes back a gift is like a dog that vomits and then eats it again.
	Obligations (Inheritance - Faraiz)
442	Children born of a bondwoman are of legitimate lineage and entitled to inheritance.

Page	Subject / Ruling
	hundred mithqal of silver, which equals 160 rupees weight by local calculations.
248	The dowry of most of the Pure Wives was five hundred dirhams, which equals 140 rupees weight by local calculations.
531	**Logic (Mantiq)**
309	The contradiction of a universal negative proposition cannot be a universal affirmative proposition.
387	Enforcement is more specific than permissibility and validity in one respect, meaning sometimes there will be enforcement but no permissibility/ validity, and vice versa.
388	Necessity sometimes has a relationship of general and specific absolute with validity and enforcement.
388	Necessity and permissibility have a relationship of general and specific in one respect. (Footnote)

पृष्ठ	विषय / नियम
363	क़यामत के दिन अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहमत की नज़र नहीं फ़रमाएगा जो औरत और उसकी बेटी की शर्मगाह को देखे।
391	क़ुरआन के हुक्म के मुताबिक़ बद-मज़हबों से दोस्ती करने वाला उन्हीं में से है।
391	आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह मोहब्बत रखता है।
419	गुनाह की नहूसत करने वाले के अलावा दूसरे पर भी होती है।
425	हदीस के हुक्म के मुताबिक़ जो किसी औरत को (उसके शौहर से) बिगाड़ दे, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के गिरोह से नहीं।
426	औरत को उसके शौहर से तुड़वाकर दूसरे के निकाह में करवा देना बहुत बड़ा और बदतरीन ज़ुल्म है।
426	झूठी गवाही बुत-परस्ती के बराबर गिनी गई है।
328	सुन्नी का राफ़िज़ी की बेटी से निकाह सही है या नहीं और औलाद बाप के तरके(विरासत) की हक़दार है या नहीं।
421	इज़्माली तौर पर निकाह-ए-फ़ासिदा और बातिला में विरासत का हुक्म जारी नहीं होता।
366	हुरमत-ए-मुसाहरत के बावजूद अगर शौहर ने न छोड़ा और वती (संभोग) करता रहा तो पैदा होने वाली औलाद माँ और बाप दोनों की वारिस बनेगी, अलबत्ता मियाँ-बीवी आपस में एक-दूसरे के वारिस नहीं होंगे।
366	ज़िना (व्यभिचार) की औलाद भी अपनी माँ की मीरास (विरासत) पाती है।
425	**हिसाब (गणित)**
248	शरीअत का दीनार साढ़े चार माशे सोने का था।
248	हज़रत बतूल ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का मेहर चार सौ मिस्क़ाल चाँदी था। जो यहाँ के हिसाब से 160 रुपये भर होता है।

पृष्ठ	विषय / नियम
426	झूठे गवाह के क़दम अपनी जगह से हटने नहीं पाएंगे कि अल्लाह तआला उस पर जहन्नम का अज़ाब वाजिब कर देगा।
531	औरत को शौहर से बिगाड़ने वाले पर सख़्त चेतावनी।
713	गुमराह पढ़ा-लिखा जाहिलों से बदतर है क्योंकि जहल-ए-मुरक्कब सख़्त बुरी बला है और इसमें मुब्तला होने वाला दोनों जहाँ में सख़्त ज़लील और ख़्वार होता है।
	हिबा (उपहार)
399	अपनी दी हुई चीज़ वापस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता क़ै(उल्टी) करके उसे फिर चाट लेता है।
	फ़राएज़ (विरासत के क़ानून)
442	कनीज़ से जो औलाद हो वह सही-उल-नसब और विरासत की हक़दार है।
248	अक्सर अज़वाज-ए-मुतहहरात का मेहर पाँच सौ दिरहम था। जो यहाँ के हिसाब से 140 रुपये भर होता है।
531	**मंतिक़ (तर्कशास्त्र)**
309	सालिबा-ए-कुल्लिया की नक़ीज़ मूजिबा-ए-कुल्लिया नहीं हो सकती।
387	नफ़ाज़ (लागू होना) हिल्लत और सेहत से 'अख़स मिन वज्ह' है यानी कभी नफ़ाज़ होगा हिल्लत और सेहत नहीं होंगे और कभी हिल्लत और सेहत होंगे नफ़ाज़ नहीं होगा।
388	लुज़ूम (अनिवार्यता) की सेहत और नफ़ाज़ में कभी निस्बत 'उमूम-ओ-खुसूस-ए-मुतलक़' की है।
388	लुज़ूम और हिल्लत में निस्बत 'उमूम-ओ-खुसूस मिन वज्ह' की है। (हाशिया)

صفحہ	مضمون / حکم
۳۶۳	عورت اور اس کی دختر کی فرج کو دیکھنے والے پر روزِ قیامت اللہ تعالیٰ نظرِ رحمت نہ کرے۔
۳۹۱	بد مذہبوں سے دوستی کرنے والا بحکمِ قرآن انہی میں سے ہے۔
۳۹۱	آدمی کا حشر اسی کے ساتھ ہو گا جس سے وہ محبت رکھتا ہے۔
۴۱۹	گناہ کی نحوست فاعل کے غیر پر بھی ہوتی ہے۔
۴۲۵	جو کسی عورت کو اس سے بگاڑ دے بحکمِ حدیث وہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے گروہ سے نہیں۔

صفحہ	مضمون / حکم
۳۲۸	نکاحِ سُنّی با دخترِ رافضی صحیح ہے یا نہیں اور اولاد مستحقِ ترکہ پدری ہے یا نہیں۔
۴۲۱	اجمالاً نکاحِ فاسدہ و باطلہ میں توارث جاری نہیں ہوتا۔
۳۶۶	حرمتِ مصاہرت کے باوجود اگر خاوند نے نہ چھوڑا اور وطی کرتا رہا تو پیدا ہونے والی اولاد ماں اور باپ دونوں کی وارث بنے گی تاہم زن و شوہر آپس میں ایک دوسرے کے وارث نہیں ہوں گے۔
۳۶۶	اولادِ زنا بھی اپنی ماں کی میراث پاتی ہے۔
۴۲۵	**حساب**

صفحہ	مضمون / حکم
۴۲۶	عورت کو اپنے شوہر سے توڑ کر دوسرے کے نکاح میں کرا دینا اشد و اخبث ظلم ہے۔
۴۲۶	جھوٹی گواہی بت پوجنے کے برابر گنی گئی ہے۔
۴۲۶	جھوٹے گواہ کے قدم اپنی جگہ سے ہٹنے نہیں پائیں گے کہ اللہ تعالیٰ اس پر عذابِ جہنم واجب کردے گا۔
۵۳۱	عورت کو شوہر سے بگاڑنے والے پر وعیدِ شدید۔
۷۱۳	گمراہ پڑھا لکھا جاہلوں سے بدتر ہے کہ جہلِ مرکب سخت بری بلا ہے اور اس میں مبتلا ہونے والا دونوں جہانوں میں سخت ذلیل و حقیر ہوتا ہے۔
ہبہ	

صفحہ	مضمون / حکم
۲۴۸	دینارِ شرعی ساڑھے چار ماشے سونے کا تھا۔
۲۴۸	مہر حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا چار سو مثقال چاندی تھا۔ جو یہاں کے حساب سے ایک سو ساٹھ روپے بھر ہوتا ہے۔
۲۴۸	مہر اکثر ازواجِ مطہرات پانچ سو درہم تھا۔ جو یہاں کے ایک سو چالیس روپے بھر ہوتا ہے۔
۵۳۱	**منطق**
۳۰۹	سالبہ کلیہ کی نقیض موجبہ کلیہ نہیں ہو سکتی۔
۳۸۷	نفاذِ اخص من وجہ ہے حل اور صحت سے یعنی کبھی نفاذ ہو گا حل اور صحت نہیں ہوں

صفحہ	مضمون / حکم	صفحہ	مضمون / حکم
			گے اور کبھی حل و صحت ہوں گے نفاذ نہ ہوگا۔
۳۹۹	اپنی دی ہوئی چیز پھیرنے والا ایسا ہے جیسے کتا قے کر کے اسے پھر کھا لیتا ہے۔	۳۸۸	لزوم کبھی صحت و نفاذ میں نسبت عموم و خصوص مطلق کی ہے۔
		۳۸۸	لزوم اور حل میں نسبت عموم و خصوص من وجہ کی ہے۔ (حاشیہ)
	فرائض	۳۸۸	
۴۴۲	کنیز سے جو اولاد ہو صحیح النسب اور ترکہ کی مستحق ہے۔		

Volume 11 | Fatawa Razawiyya

Eloquence (Balaaghat)

There is a need for context (qareena) for a metaphor (majaaz). 155

Interrogation at the time of intent for verification serves the useful meaning of a command. 164

Language/Dictionary (Lughat)

In our language, the past tense combined with a specific word is for reporting a past occurrence, not for the initiation or creation of a non-occurring command. 182

Permissibility (Jawaz), as these two applications (meaning validity and lawfulness) are common and widespread, and there are other applications besides these. 386

The application of permissibility sometimes also means enforcement (nafaz). (Footnote) 386

Permissibility sometimes comes with the meaning of necessity (luzoom). 387

The heart (qalb) is called qalb precisely because it fluctuates (munqalib). 393

"Al-Sabt" is an infinitive, and its meaning is the honoring of the Sabbath. 433

Why can't people pass beyond the 80th degree of latitude? **221**

No sign of population beyond seventy degrees. 221

The duration of day and night at the North and South Poles and its reason. 221

The difference between amazing (ta'ajjibi) day and conventional/legal day. 221

How and when does the moon and stars rise and set at the North and South Poles, and for how long will they remain risen or set? 221

History and Biography (Tarikh-o-Tazkira)

The dinars of the sultans were not fixed; they varied. 448

The dowry (mahr) of Hazrat Batul Zahra (Radi Allahu Anha) was four hundred mithqals of silver. 448

The dowry of most of the Pure Wives (Azwaj-e-Mutahhirat) was five hundred dirhams. 448

There are two narrations regarding the dowry of Hazrat Umm Habiba (Radi Allahu Anha). 448

Eloquence (Balaaghat)	**Why can't people pass beyond the 80th degree of latitude?**	**221**
Grammar (Nahw)	When Hazrat Farooq-e-Azam (Radi Allahu Anhu) strongly forbade fixing excessive dowries in a sermon, a woman recited the noble verse: "And if you have given one of them a heap of gold...", upon which he immediately retracted his objection.	483
Simultaneity (muqaranat) between the state (haal) and the operator ('aamil) is necessary.	140 Who are the Sarujis and how are they?	506
Astronomy (Hay'at)	On the day of the Battle of Khaybar, the Messenger of Allah (Sallallahu Alayhi Wa Sallam) forbade temporary marriage (mut'ah) and the meat of domestic donkeys.	550

वाक्पटुता (बलाग़त)

रूपक (मजाज़) के लिए संदर्भ (करीना) की आवश्यकता होती है। 155

सत्यापन के उद्देश्य से किया गया प्रश्नवाचक वाक्य आदेश का उपयोगी अर्थ देता है। 164

भाषा/कोश (लुग़त)

हमारी भाषा में, एक विशिष्ट शब्द के साथ जुड़ा भूतकाल क्रिया रूप एक घटित घटना की सूचना देने के लिए है, न कि किसी अनकही आज्ञा की रचना या निर्माण के लिए। 182

जवाज़ (अनुमति), क्योंकि ये दोनों अनुप्रयोग (वैधता और हलाल होने के अर्थ में) तो प्रसिद्ध और व्यापक हैं, और इनके अलावा कुछ अन्य अनुप्रयोग भी हैं। 386

जवाज़ का अनुप्रयोग कभी कार्यान्वयन (नफ़ाज़) के अर्थ में भी होता है। (फुटनोट) 386

जवाज़ कभी आवश्यकता (लज़ूम) के अर्थ में आता है। 387

393

80 डिग्री अक्षांश से आगे लोगों का गुजरना संभव क्यों नहीं है? 221

सत्तर डिग्री के आगे आबादी का कोई पता नहीं। 221

उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में दिन-रात की अवधि और उसका कारण। 221

आश्चर्यजनक (ताज्जुबी) दिन और प्रथागत/शरिया दिन में अंतर। 221

उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर चंद्रमा और नक्षत्रों का उदय कब और कैसे होता है, और वे कैसे अस्त होते हैं, और वे कब तक उदित रहेंगे और कब तक अस्त। 221

इतिहास और जीवनी (तारीख-ओ-तज़किरा)

सुल्तानों के दीनार निश्चित नहीं थे, वे भिन्न थे। 448

हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का मेहर चार सौ मिस्क़ाल चाँदी था। 448

448

वाक्पटुता (बलाग़त)

हृदय (क़ल्ब) को क़ल्ब इसीलिए कहा जाता है क्योंकि वह बदलता (मुनक़लिब) रहता है। 433

"अस-सब्त" एक कृदंत (मस्दर) है और इसका अर्थ है सब्त का सम्मान।

व्याकरण (नह्व)

हाल और आमिल में सह-अस्तित्व (मुक़ारनत) आवश्यक है। 140

खगोल विज्ञान/आकृति (हैयात)

80 डिग्री अक्षांश से आगे लोगों का गुजरना संभव क्यों नहीं है? **221**

अधिकांश पवित्र पत्नियों (अज़वाज-ए-मुतह्हरात) का मेहर पाँच सौ दिरहम था।

हज़रत उम्म हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के मेहर के बारे में दो रिवायतें हैं। 448

हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने खुतबे में अत्यधिक मेहर बाँधने पर कड़ा विरोध जताया, तो एक महिला ने आयत-ए-करीमा "व आतैतुम इहदाहुन्ना क़िन्तारन..." की तिलावत की, जिस पर आपने तुरंत अपने विरोध को वापस ले लिया। 483

सरूजी कौन हैं, कैसे हैं। 506

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खैबर के युद्ध के दिन मुतअ (अस्थायी विवाह) और पालतू गधों के मांस से मना फरमा दिया। 550

بلاغت

مجاز کے لئے قرینہ کی حاجت ہوتی ہے۔ ۱۵۵

استفہام ہنگام ارادہ تحقیق مفید معنی امر ہوتا ہے۔ ۱۶۴

لغت

ہماری زبان میں صیغہ ماضی مقرون بہ لفظ خاص امر واقع شدہ سے خبر دینے کے لئے ہے، نہ امر غیر واقع کے انشاء و ایجاد کے لئے۔ ۱۸۲

جواز کہ یہ دونوں اطلاق (بمعنی صحت وحلت) تو شائع وذائع ہیں اور ان کے سوا کچھ اور اطلاقات بھی ہیں۔ ۳۸۶

اسی ۸۰ درجہ عرض سے آگے لوگوں کا گزر کیوں نہیں ہو سکتا۔ ۲۲۱

ستر درجہ کے آگے آبادی کا پتا نہیں۔ ۲۲۱

قطب شمالی اور قطب جنوبی میں روز و شب کی مقدار اور اس کی وجہ۔ ۲۲۱

نہار تعجیبی اور عرفی و شرعی کا فرق۔ ۲۲۱

قطبین شمالی و جنوبی میں قمر و کواکب کا طلوع کب کب کس کس طرح ہوتا ہے اور کیسے کیسے غروب، اور کب تک طالع رہیں گے اور کب تک غارب۔ ۲۲۱

تاریخ و تذکرہ

سلاطین کے دینار کوئی معین نہیں مختلف تھے۔ ۴۴۸ ۳۸۶

اسی ۸۰ درجہ عرض سے آگے لوگوں کا گزر

بلاغت ۲۲۱ **کیوں نہیں ہو سکتا۔**

جواز کا اطلاق کبھی نفاذ کے معنی

پر بھی ہوتا ہے۔ (حاشیہ)

جواز کبھی لزوم کے معنی کے لئے مہر حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا چار

۳۸۷ آتا ہے۔ ۴۴۸ سو مثقال چاندی تھا۔

قلب کو قلب کہتے ہی اسی لئے ہیں

۳۹۳ کہ وہ منقلب ہوتا ہے۔ مہر اکثر ازواج مطہرات پانچ سو درہم تھا۔ ۴۴۸

السبت مصدر ہے اور اس کا معنی حضرت ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مہر میں

۴۳۳ ہے تعظیم السبت۔ ۴۴۸ دو روایتیں ہیں۔

حضرت فاروقِ اعظم رضی اللہ عنہ نے خطبہ میں

مہر کثیر باندھنے پر انکار شدید فرمایا تو ایک

نحو خاتون نے آیہ کریمہ "وَاٰتَیْتُمُ احْدٰھُنَّ قِنْطَارًا" تلاوت ۴۸۳

کی جس پر آپ نے فوراً اپنے انکار سے رجوع

فرمالیا۔

حال اور عامل میں مقارنت ضروری

۱۴۰ ہے۔ سروجی کون ہیں، کیسے ہیں۔ ۵۰۶

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے غزوہ

ہیئت خیبر کے روز متعہ اور گدھے کے گوشت سے ۵۵۰

منع فرمادیا۔

- Mut'ah was in the early days of Islam, then its prohibition was revealed in the Quran and it became haram. [350] | Hazrat Ali (Karam Allah Ta'ala Wajhahu al-Karim) gave his daughter, Sayyida Umm Kulthum, who was born from the pure womb of Hazrat Batool Zahra (Radi Allahu Anha), in marriage to Amir al-Mu'minin Hazrat Umar Farooq-e-Azam (Radi Allahu Anhu). [730]
- On the occasion of the Battle of Tabuk, some companions performed mut'ah, so the Messenger of Allah (Sallallahu Alaihi Wasallam) expressed displeasure and stated its prohibition. [350] | Miscellaneous
- Names of the Imams who strictly emphasized taqlid-e-shakhsi (following a specific school of thought) and declared opposition to it as reprehensible, heinous, and void. [478] | Satan sometimes abducts people through the ruse of good deeds. [109]
- Hazrat Imam Abdullah Mahz (Radi Allahu Anhu) was the first person in the world whose parents were both Fatimi; that is why he is called 'Mahz'. After his passing, his pure wife, Hazrat Fatima Sughra (Radi Allahu Anha), kept a tent over his grave for a year. [431] | There is a clear disparity between news (akhbar) and composition/creation (insha). [128]
- Nazir Hussain, the leader of the non-followers (Ghair-Muqallids), put a seal of confirmation on a wrong fatwa of a Wahhabi-minded Maulvi. When held accountable by Ala Hazrat, he recanted. A second fatwa was written in refutation of the first one, presenting an excuse for sin worse than the sin itself. [489] | Interrogation (istifham) and contract ('aqd) are two disparate types among the categories of composition (insha). [155]
- Maulvi Lutf-ur-Rahman Bardwan of Calcutta got a long Arabic question printed, addressing scholars worldwide regarding the permissibility of marriage with mahrams (close relatives). In response, Ala Hazrat wrote a treatise "Naqd al-Bayan li-Hurmat Ibnat Akhi al-Labban" based on evidence and texts. [490] | There is a disparity between a contract ('aqd) and a promise (wa'd). [184]
- Hazrat Hamza (Radi Allahu Anhu), the uncle of the Holy Prophet (Sallallahu Alaihi Wasallam), is also a foster brother of the Holy Prophet. [491] | Man is neither safe from a change of opinion nor secure from being uninformed about certain interests at any time. [199]

- Hazrat Abu Salma (Radi Allahu Anhu) is a foster brother of the Messenger of Allah (Sallallahu Alaihi Wasallam) because Thuwaybah breastfed both of them. [492]

- मुत्'आ इस्लाम की शुरुआत में था, फिर कुरान में इसकी हुरमत (प्रतिबंध) नाज़िल होने से यह हराम हो गया। [३५०] | हज़रत अली (करम अल्लाह तआला वजहु-उल-करीम) ने अपनी साहबज़ादी सैयदा उम्म कुलसूम, जो हज़रत बतुल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पाक पेट से थीं, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के निकाह में दीं। [७३०]
- ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर कुछ सहाबा ने मुत्'आ किया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने नाराज़गी का इज़हार करते हुए इसकी हुरमत को बयान फ़रमाया। [३५०] | मुतफ़र्रक़ात (विविध)
- तक़लीदे शख़्सी की सख़्त शदीद ताकीद फ़रमाने और इसके ख़िलाफ़ को मुनकर-ओ-शनी-ओ-बातिल क़रार देने वाले अइम्मा के नाम। [४७८] | शैतान कभी हसनात (नेक कामों) के हीले से अग़वा करता है। [१०९]
- हज़रत इमाम अब्दुल्लाह महज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) दुनिया में पहले शख़्स थे जिनके माँ-बाप दोनों फ़ातिमी हैं, इसीलिए आप को 'महज़' कहा जाता है। आपके विसाल के बाद आपकी क़ब्र पर एक साल तक आपकी ज़ौजा-ए-मुतहरा हज़रत फ़ातिमा सुग़रा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने ख़ैमा बनाए रखा। [४३१] | अख़बार और इन्शा में स्पष्ट अंतर (तबाईन) है। [१२८]
- ग़ैर-मुक़ल्लिदों के पेशवा नज़ीर हुसैन ने एक वहाबी ख़याल मौलवी के ग़लत फ़तवे पर मोहरे तस्दीक़ लगा दी और आला हज़रत की तरफ़ से पकड़ होने पर इससे रुजू किया। दूसरा फ़तवा इसी पहले के रद्द में लिखा गया और उज़्रे-गुनाह बदतर अज़ गुनाह (गुनाह का बहाना गुनाह से बुरा) पेश किया। [४८९] | इस्तिफ़हाम (पूछताछ) और अक़्द (अनुबंध), इन्शा के प्रकारों में से दो अलग-अलग (मुतबईन) क़िस्में हैं। [१५५]
- कलकत्ता के मौलवी लुत्फ़ुर्रहमान बरदवानी ने महारिम से निकाह की अनुमति के बारे में दुनिया भर के उलेमा को संबोधित करते हुए एक लंबा अरबी सवाल छपवाया। जिसके जवाब में आला हज़रत ने दलीलों और ग्रंथों पर आधारित एक लेख "नक़्दुल बयान लि-हुरमति इबनति अख़ील लब्बान" लिखा। [४९०] | अक़्द (अनुबंध) और व'अद (वादे) में अंतर है। [१८४]

- हुज़ूरे अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चचा हज़रत हमज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) हुज़ूरे पुरनूर के रज़ाई भाई (दूध के रिश्ते से भाई) भी हैं। [४९१] | आदमी न तो अपनी राय बदलने से सुरक्षित है और न ही किसी समय कुछ हितों की जानकारी न होने से सुरक्षित। [१९९]
- हज़रत अबू सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हु) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रज़ाई भाई हैं क्योंकि सुवैबा ने दोनों को दूध पिलाया था। [४९२]

- متعہ ابتدائے اسلام میں تھا پھر قرآن میں اس کی حرمت نازل ہونے سے یہ حرام ہو گیا۔ [۳۵۰] | حضرت علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم نے اپنی صاحبزادی سیدہ ام کلثوم کہ بطن پاک حضرت بتول زہراء رضی اللہ تعالٰی عنہا سے تھیں امیر المومنین حضرت عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نکاح میں دیں۔ [۷۳۰]
- غزوہ تبوک کے موقع پر کچھ صحابہ نے متعہ کیا تو رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ناراضگی کا اظہار کرتے ہوئے اس کی حرمت کو بیان فرمایا۔ [۳۵۰] | متفرقات
- تقلید شخصی کی سخت شدید تاکید فرمانے اور اس کے خلاف کو منکر و شنیع و باطل قرار دینے والے ائمہ کے نام۔ [۴۷۸] | شیطان کبھی حسنات کے حیلہ سے اغوا کرتا ہے۔ [۱۰۹]
- حضرت امام عبداللہ محض رضی اللہ تعالٰی عنہ دنیا میں پہلے شخص تھے جن کے ماں باپ دونوں فاطمی ہیں اسی لئے آپ کو محض کہا جاتا ہے آپ کے وصال کے بعد آپ کی قبر پر ایک سال تک آپ کی زوجہ مطہرہ حضرت فاطمہ صغرٰی رضی اللہ تعالٰی عنہا نے خیمہ بنائے رکھا۔ [۴۳۱] | اخبار و انشاء میں بداہتہ تباین ہے۔ [۱۲۸]
- غیر مقلدوں کے پیشوا نذیر حسین نے ایک وہابی خیال مولوی کے غلط فتوٰی پر مہر تصدیق لگا دی اور اعلیحضرت کی طرف سے گرفت پر اس سے رجوع کیا دوسرا فتوٰی اسی پہلے کے رد میں لکھا گیا اور عذر گناہ بدتر از گناہ پیش کیا۔ [۴۸۹] | استفہام اور عقد اقسام انشاء میں سے دو متباین قسمیں ہیں۔ [۱۵۵]
- کلکتہ کے مولوی لطف الرحمن بردوان نے محارم سے نکاح کے جواز کے بارے میں جہاں بھر کے علماء کو مخاطب کرتے ہوئے ایک طویل عربی سوال چھپوایا جس کے جواب میں

اعلیحضرت نے دلائل و نصوص پر مشتمل ایک رسالہ "نقد البیان لحرمۃ ابنۃ اخی اللبان" تحریر فرمایا۔ [۴۹۰] | عقد و وعد میں تباین ہے۔ [۱۸۴]

- حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے چچا حضرت حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضور پر نور کے رضاعی بھائی بھی ہیں۔ [۴۹۱] | آدمی نہ تبدل رائے سے محفوظ نہ کسی وقت بعض مصالح پر نہ اطلاع پانے سے مامون۔ [۱۹۹]
- حضرت ابو سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے رضاعی بھائی ہیں کیونکہ دونوں کو ثویبہ نے دودھ پلایا۔ [۴۹۲]

Fatawa-e-Razvia Volume 11

469 | The concept of a word is divided into literal, legal, conventional, real, and metaphorical, whereas the ruling of a word is known as its purpose, aim, objective, fruit, etc. The meaning, subject matter, and even the established meaning (maudu' lahu) of the word apply to both, although in some types of the former, there is a specific designation. 225 | Women have immense love for their husbands. | 369 What is the difference between special (free) women and slave women? | 369 242 | Women are more soft-hearted. | 369 305 | Women are deficient in intellect and religion. | 370 What is the meaning of Ayni's phrase "And on his authority regarding the man who drinks the beverage... until his statement: Al-Saruji said: They are two statements of invalidity"? What is the referent (marja') of "huma" (the two)? | 370 325 | Differences between men and women in several respects. | 402 Is it permissible or forbidden for a female disciple to meet her Pir, and were the pure wives of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) his disciples or not? | 402 363 | Discussion on the verse from Sharh al-Wiqayah: "From the side of the nursing mother all become relatives, and from the side of the nursing child only he and his descendants." | 497 Several examples where a forbidden thing makes a lawful thing forbidden. | 497 368 | The severe mistake of the author of 'Umdat-ur-Ri'ayah' in explaining the meaning of the aforementioned verse. | 498 Marriage is that great relationship which inevitably creates intimacy, love, and affection. | 498 Statement regarding the minimum age of puberty (murahaqat) for boys and girls. | 520

फतावा रज़विया जिल्द 11

469 | लफ़्ज़ (शब्द) का मफ़हूम (अर्थ), लुग़वी (शाब्दिक), शरी (कानूनी), उरफ़ी (पारंपरिक), हक़ीक़ी (वास्तविक) और मजाज़ी (लाक्षणिक) की ओर विभाजित होता है, जबकि शब्द का हुक्म (आदेश), ग़रज़ (प्रयोजन), ग़ायत (लक्ष्य), मक़सूद (उद्देश्य) और समरा (परिणाम) आदि के रूप में जाना जाता है। शब्द का अर्थ, विषय, और यहाँ तक कि उसके लिए निर्धारित अर्थ (मौज़ू लहू) दोनों पर लागू होते हैं, हालांकि पूर्व के कुछ प्रकारों में एक विशिष्ट पदनाम होता है। 225 | महिलाओं को अपने पतियों से अगाध प्रेम होता है। | 369 ख़ास और कनीज़ (दासी) में क्या अंतर है? | 369 242 | महिलाएँ अधिक कोमल हृदय वाली होती हैं। | 369 305 | महिलाएँ बुद्धि और धर्म में अपूर्ण हैं। | 370 ऐनी की इबारत "व अनहु फ़िर रजुली यशरबुश शराबा... उनके कथन तक: अल-सरूजी ने कहा: वे अमान्यता के दो कथन हैं" का क्या अर्थ है? "हुमा" (उन दोनों) का संदर्भ (मर्जा) क्या है? | 370 325 | पुरुष और महिला के बीच कई कारणों से अंतर। | 402 मुरीदा (शिष्या) का पीर के पास जाना हराम (वर्जित) है या हलाल (वैध), और क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक पत्नियाँ उनकी मुरीदा थीं या नहीं? | 402 363 | शरह अल-वक़ाया के इस शेर पर चर्चा: "स्तनपान कराने वाली की ओर से सभी रिश्तेदार बन जाते हैं, और स्तनपान करने वाले की ओर से केवल वह और उसकी संतानें।" | 497 अनेक उदाहरण जहाँ एक हराम वस्तु हलाल वस्तु को हराम कर देती है। | 497 368 | उपरोक्त शेर का अर्थ बताने में 'उम्दतुल रियाया' के लेखक की गंभीर गलती। | 498 वैवाहिक संबंध वह महान रिश्ता है जो अनिवार्य रूप से आत्मीयता, प्रेम और स्नेह पैदा करता है। | 498 लड़कों और लड़कियों के लिए यौवनारंभ (मुराहिक़त) की न्यूनतम आयु के संबंध में विवरण। | 520

فتاویٰ رضویہ جلد یازدھم

۴۶۹ | مفہوم لفظ، لغوی، شرعی، عرفی، حقیقی اور مجازی کی طرف منقسم ہوتا ہے جبکہ حکم لفظ، غرض، غایت، مقصود اور ثمرہ وغیرہ سے موسوم ہوتا ہے اور ان دونوں پر لفظ کے معنی، مضمون حتی کہ موضوع لہ کا بھی اطلاق آتا ہے اگر چہ اول کے بعض اقسام میں وضع نوعی ہے۔ ۲۲۵ | عورتوں کو شوہروں سے بے پناہ محبت ہوتی ہے۔ | ۳۶۹ خواص و کنیز میں کیا فرق ہے۔ | ۳۶۹ ۲۴۲ | عورتیں زیادہ نرم دل ہوتی ہیں۔ | ۳۶۹ ۳۰۵ | عورتیں ناقصات العقل والدین ہیں۔ | ۳۷۰ عینی کی عبارت "وعنه في الرجل يشرب الشراب الى قوله قال السروجی وهما قولان بطلان" کا مطلب کیا ہے "هما" کا مرجع کیا ہے؟ | ۳۷۰ ۳۲۵ | مرد اور عورت میں کئی وجوہ سے فرق۔ | ۴۰۲ مریدہ پیر پر حرام ہے یا حلال، اور ازواج مطہرات حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی مریدات تھیں یا نہیں۔ | ۴۰۲ ۳۶۳ | شرح وقایہ کے شعر "از جانب شیر دہ ہمہ خویش شوند، و از جانب شیر خوارہ زوج و فروع" پر بحث۔ | ۴۹۷ متعدد مثالیں جہاں حرام شئی حلال کو حرام کر دیتی ہے۔ | ۴۹۷ ۳۶۸ | شعر مذکور کا مطلب بیان کرنے میں صاحب عمدۃ الرعایہ کی شدید غلطی۔ | ۴۹۸ زوجیت وہ عظیم رشتہ ہے جو خواہی نخواہی انس و محبت و الفت پیدا کرتا ہے۔ | ۴۹۸ پسر و دختر کے لئے اقل عمر مراہقت کا بیان۔ | ۵۲۰

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Kitab-un-Nikah (Statement regarding Marriage)

Problem 1: Does a marriage take place in a wedding where dancing, musical instruments, and other Sharia-prohibited activities occur, or not? Please explain and be rewarded.

The Answer:

There is no doubt that this dancing and most musical instruments are forbidden according to Sharia, and the person committing the act of watching or listening to them is a transgressor (fasiq) and a sinner. However, it is not an act of disbelief (kufr) such that the marriage itself would be invalid. In the pure Sharia, marriage is established simply by a man and a woman performing the offer and acceptance (ijab-o-qabul) while two witnesses hear and understand them. It being free from any Sharia-prohibited element is not a condition for the validity of the marriage. One of the worst ways Satan misleads is to destroy a person through the pretense of good deeds. 'Commanding the good and forbidding the evil' is an excellent hallmark of being a Muslim. In this noble work, many people do not respect the limits set by God and maintain such severity and prejudice that their own sin becomes much greater than the sin of those ignorant ones for whom they were trying to be compassionate advisors. This affliction is very common among the Wahabi gentlemen; they label minor matters as disbelief (kufr), polytheism (shirk), and misguided innovation (bid'at-e-zalalat) that supposedly interferes with the core of faith, and they have absolutely no regard or consideration for Islam and Muslims in their hearts. Similarly, this speaker was also stopping others from dancing and singing but committed a sin even more severe than that, namely, slandering the pure Sharia—God forbid. According to him, it would be necessary to consider most common Indian Muslim men and women as adulterers and adultresses, God forbid, and their offspring as illegitimate, whereas Allah the Exalted says:

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम

किताबुन निकाह (निकाह का बयान)

मसाला १: जिस शादी में नाच और बाजा वगैरह शरीयत में वर्जित कार्य होते हों, वहाँ निकाह हो जाता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब:

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह नाच और अधिकांश वाद्ययंत्र शरीयत के अनुसार हराम (वर्जित) हैं और इन्हें देखने और सुनने का दोषी व्यक्ति फ़ासिक़ और गुनहगार है, लेकिन यह कुफ़्र नहीं है कि निकाह ही न हो। पवित्र शरीयत में निकाह केवल इसी से हो जाता है कि पुरुष और स्त्री ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) करें और दो गवाह उन्हें सुनते और समझते हों। निकाह की वैधता के लिए उसका किसी शरई मनाही से मुक्त होना शर्त नहीं है। शैतान के गुमराह करने के तरीकों में से एक बुरा तरीका यह भी है कि वह आदमी को नेक कामों के बहाने तबाह कर देता है। 'अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर' (भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना) मुसलमान होने का एक बेहतरीन तमगा है। इस नेक काम में बहुत से लोग ईश्वर की सीमाओं का ध्यान नहीं रखते और कठोरता तथा कट्टरता को इस हद तक निभाते हैं कि उनका अपना गुनाह उन अज्ञानियों के गुनाह से कहीं अधिक हो जाता है जिनके लिए वे हितैषी उपदेशक बने थे। और यह बला वहाबी सज्जनों में बहुत अधिक है; वे ज़रा-ज़रा सी बात को कुफ़्र, शिर्क और बिदअत-ए-ज़लालत (गुमराह करने वाली ईजाद) कह देते हैं जो ईमान की बुनियाद में बाधा डालती है, और वे अपने दिलों में इस्लाम और मुसलमानों का ज़रा भी सम्मान और लिहाज़ नहीं रखते। इसी तरह, यह वक्ता भी दूसरों को नाच-गाने से रोक रहा था, लेकिन स्वयं उससे भी बड़ा गुनाह किया, यानी पवित्र शरीयत पर तोहमत लगा दी, अल्लाह की पनाह। उसके अनुसार, यह आवश्यक हो जाएगा कि भारत के अधिकांश आम मुसलमान पुरुषों और महिलाओं को, अल्लाह की पनाह, व्यभिचारी और व्यभिचारिणी माना जाए और उनकी संतान को अवैध ठहराया जाए, जबकि अल्लाह सुब्हानहु व तआला फरमाता है:

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

بسم اللہ الرحمن الرحیم

کتاب النکاح (نکاح کا بیان)

مسئلہ ۱: جس شادی میں رقص اور باجا وغیرہ ممنوعات شرعیہ ہوں وہاں نکاح ہو جاتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب:

اس میں شک نہیں کہ یہ ناچ اور اکثر باجے شرعاً حرام ہیں اور ان کے دیکھنے سننے کا مرتکب فاسق و گنہگار، مگر کفر نہیں کہ نکاح ہی نہ ہو، شرع مطہر میں نکاح صرف اس سے ہو جاتا ہے کہ مرد وزن ایجاب و قبول کریں اور دو گواہ سنتے سمجھتے ہوں، باقی اس کا کسی ممنوع شرعی پر مشتمل نہ ہونا شرط نہیں۔ شیطان کے طرق اغوا سے ایک بدتر طریقہ یہ بھی ہے کہ آدمی کو حسنات کے حیلہ سے ہلاک کرتا ہے۔ امر بالمعروف و نہی عن المنکر عمدہ تمغائے مسلمانی ہے۔ اس نیک کام میں بہت لوگ حدود خداوندی کا خیال نہیں رکھتے اور تشدد و تعصب کو یہاں تک نباہتے ہیں کہ ان کا گناہ ان جاہلوں کے گناہ سے بدرجہا زائد ہو جاتا ہے جن کے لیے یہ ناصح مشفق بنے تھے، اور یہ بلا حضرات وہابیہ میں بہت ہے ذرا ذرا سی بات کو کفر ، شرک ، بدعت ضلالت مخل اصل ایمان کہہ دیتے ہیں اور مطلق پاس و لحاظ اسلام و مسلمین دل میں نہیں لاتے۔ اسی طرح یہ قائل بھی اوروں کو ناچ گانے سے روکتا تھا اور خود اس سے اشد گناہ یعنی شریعت مطہرہ پر افتراء کیا معاذ اللہ اس پر لازم کہ اہل ہند اکثر عوام مسلمین مرد و زن کو معاذ اللہ زانی و زانیہ اور ان کی اولاد کو ولد الزنا ٹھہرائے حالانکہ حق سبحانہ و تعالیٰ فرماتا ہے :

Volume Eleven Fatawa Razawiya

[Box 1] Left Column: Allah admonishes you that you should never return to the like of it, if you are believers. (1) Right Column: Allah Almighty forbids you from ever doing such a thing again, provided you are believers. (T)

In short, there is a limit set for 'enjoining good and forbidding evil' (Amr bil Ma'ruf wa Nahi 'an al-Munkar) as well; exceeding it makes a person themselves a forsaker of good and a committer of evil.

[Box 2] Left Column: And whoever oversteps the limits of Allah has certainly wronged his own soul. (2) Right Column: Whoever transgressed the limits of Allah has indeed oppressed his own soul. (T)

Yes, if any of the bride or groom has this belief and religion that the dance of prostitutes is permissible and allowed, then there is room for this command. And Allah Almighty knows best.

Issue 2: From the Old City, 12 Safar al-Muzaffar 1307 AH In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. What do the scholars say (may Allah be pleased with them all) regarding a situation where a single person takes charge of both sides of a marriage? When he is the principal (asil) on one side and the guardian (wali) on the other side, with a proposal (ijab) that stands in place of acceptance (qabul). For example, if a paternal cousin says in front of witnesses, "I have married my paternal cousin so-and-so to myself." (Like a paternal cousin saying: I married my paternal cousin, the girl so-and-so, with myself. T) Is this valid and effective? And is this validity and effectiveness based on the consensus (ijma) of the Hanafi scholars (may Allah have mercy on them)? Clarify and be rewarded.

The Answer: In the questioned case, if the paternal cousin's daughter is a minor and there is no closer guardian (wali) present than this paternal cousin, or if she is an adult and the paternal cousin has obtained special permission from her to marry him, regardless of whether there is a closer guardian for her or not— "for this is proxy (wakala) and not compulsory guardianship (wilaya mujbira) over an adult woman" (i.e., this is representation and not forced guardianship over an adult. T). According to the three Imams (may Allah Almighty be pleased with them), this person who is the principal on one side and the guardian or proxy on the other side can take charge of both parties of the marriage, contrary to Imam Zufar (may Allah Almighty have mercy on him). (Imam Zufar disagreed with this. T) It is stated in al-Hidayah:

[Box 3] Left Column: It is permissible for a paternal cousin to marry his paternal cousin's daughter to himself. (3) Right Column: It is permissible for a paternal cousin to marry his paternal cousin's daughter to himself. (T)

---

1. Al-Quran 24/17
2. Al-Quran 65/1
3. Al-Hidayah, chapter on Agency in Marriage, Al-Maktaba al-Arabiyya Karachi 2/302

ग्यारहवाँ खंड फ़तावा रज़विया

[बॉक्स 1] बायाँ कॉलम: अल्लाह तुम्हें नसीहत देता है कि यदि तुम ईमान वाले हो तो फिर कभी ऐसा न करना। (1) दायाँ कॉलम: अल्लाह तआला तुम्हें दोबारा कभी इस तरह करने से मना फरमाता है बशर्ते कि तुम मोमिन हो। (त)

सारांश यह है कि 'भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने' (अम्र बिल मारूफ व नही अनिल मुनकर) की भी एक सीमा निर्धारित है; उससे आगे बढ़ना व्यक्ति को स्वयं भलाई छोड़ने वाला और बुराई करने वाला बना देता है।

[बॉक्स 2] बायाँ कॉलम: और जो अल्लाह की सीमाओं को लांघता है, उसने वास्तव में अपने आप पर जुल्म किया। (2) दायाँ कॉलम: जिसने अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन किया, उसने अपने आप पर जुल्म किया। (त)

हाँ, यदि दूल्हा या दुल्हन में से किसी का यह अकीदा (विश्वास) और धर्म हो कि वेश्याओं का यह नाच हलाल और जायज़ है, तो वहाँ इस हुक्म की गुंजाइश है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २: पुराने शहर से, १२ सफर अल-मुजफ्फर १३०७ हिजरी बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। विद्वानों का क्या कहना है (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) इस स्थिति में जब एक ही व्यक्ति निकाह के दोनों पक्षों का कार्यभार संभाले? जबकि वह एक तरफ से 'असील' (मूल व्यक्ति) हो और दूसरी तरफ से 'वली' (अभिभावक) हो, ऐसे प्रस्ताव (ईजाब) के साथ जो स्वीकृति (क़ुबूल) के स्थान पर हो। जैसे चचेरा भाई गवाहों के सामने कहे, "मैंने अपने चाचा की बेटी फ़लाँ का निकाह अपने साथ किया।" (जैसे चचा ज़ाद कहे कि मैंने अपनी चचा ज़ाद फ़लाँ लड़की का अपने साथ निकाह किया। त) क्या यह जायज़ और प्रभावी है? और क्या यह जायज़ और प्रभावी होना हनफी विद्वानों (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) की सर्वसम्मति (इज्मा) पर आधारित है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: पूछे गए मसले में यदि चचेरी बहन नाबालिग है और इस चचेरे भाई से निकटतम कोई वली मौजूद नहीं है, या यदि वह बालिग है और चचेरे भाई ने उससे विशेष रूप से अपने साथ निकाह करने की अनुमति ले ली है, चाहे उसके लिए कोई और निकटतम वली हो या न हो— "क्योंकि यह वकालत है, बालिग स्त्री पर जबरदस्ती वाला अधिकार (विलायते मुजबिरा) नहीं है" (तो यह वकालत है बालिग पर जबरी विलायत नहीं है। त)। तीन इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार यह व्यक्ति जो एक पक्ष से असील है और दूसरे पक्ष से वली या वकील है, निकाह के दोनों पक्षों का कार्यभार संभाल

सकता है, इमाम ज़ुफ़र (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) के विचार के विपरीत। (इमाम ज़ुफ़र ने इससे असहमति जताई है। त) हिदाया में है:

[बॉक्स 3] बायाँ कॉलम: चचेरे भाई के लिए जायज़ है कि वह अपने चाचा की बेटी का निकाह अपने साथ कर ले। (3) दायाँ कॉलम: चचा ज़ाद को जायज़ है कि वह चचा ज़ाद लड़की का अपने साथ निकाह कर ले। (त)

---

1. अल-क़ुरआन २४/ १७
2. अल-क़ुरआन ६५/ १
3. अल-हिदाया, वकालत निकाह का अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची २/ ३०२

Left Column [Box 1]: یَعِظُکُمُ اللّٰہُ اَنْ تَعُوْدُوا لِمِثْلِہٖ اَبَدًا اِنْ کُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۔ (1) Right Column: اللہ تعالٰی تمہیں نصیحت فرماتا ہے کہ ایسی بات کبھی دوبارہ نہ کرنا اگر تم مومن ہو۔ (ت)

غرض امر بالمعروف و نہی عن المنکر کی بھی ایک حد مقرر ہے کہ اس سے تجاوز آدمی کو خود تارک معروف و ارتکاب منکر میں مبتلا کر دیتا ہے۔

Left Column [Box 2]: وَ مَنْ یَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰہِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَہٗ ط (2) Right Column: جس نے اللہ کی حدوں سے تجاوز کیا اس نے اپنے نفس پر ظلم کیا۔ (ت)

ہاں اگر دولہا دلہن میں سے کسی کا یہ عقیدہ و مذہب ہو کہ رنڈیوں کا یہ ناچ حلال و مباح ہے تو وہاں اس حکم کی گنجائش ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲: از شہر کہنہ ۱۲ صفر المظفر ۱۳۰۷ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم ما قولھم رضی اللہ تعالی عنھم اجمعین اس صورت میں کہ شخص واحد کا متولی ہونا دونوں طرفوں نکاح کا جبکہ وہ اصیل ایک طرف سے ہو اور ولی دوسری طرف سے ہو ساتھ ایسے ایجاب کے کہ قائم مقام قبول ہے۔ جیسے ابن العم نے سامنے گواہوں کے کہا "زوجت بنت عمی فلانۃ من نفسی" (جیسے چچا زاد کہے کہ میں نے اپنی چچا زاد فلاں لڑکی کا اپنے ساتھ نکاح کیا۔ ت) جائز و نافذ ہے یا نہیں۔ اور یہ جواز و نفاذ باجماع علمائے حنفیہ رحمہم اللہ تعالٰی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مسئولہ میں اگر بنت عم نابالغہ ہے اور اس ابن عم سے اقرب اس کا کوئی ولی حاضر نہیں، یا بالغہ ہے اور ابن عم نے خاص اپنے ساتھ نکاح کرنے کا اس سے اذن لے لیا ہے

عام ازیں کہ اس کے لیے اور ولی اقرب ہو یا نہ ہو" فان هذه وكالة ولا ولاية مجبرة على البالغة" (تو یہ وکالت ہے بالغہ پر جبری ولایت نہیں ہے۔ت) ائمہ ثلثہ رضوان اللہ تعالٰی علیہم کے نزدیک یہ شخص کہ ایک جانب سے اصیل دوسری طرف سے ولی یا وکیل ہے طرفین نکاح کا متولی ہوسکتا ہے خلافا للامام زفر رحمہ اللہ تعالٰی (امام زفر رحمہ اللہ تعالٰی علیہ نے اس سے اختلاف کیا ہے۔ت)

ہدایہ میں ہے:

[Box 3] Left Column: يجوز لابن العم ان يزوج بنت عمه من نفسه (3) Right Column:

چچا زاد کو جائز ہے کہ وہ چچا زاد لڑکی کا اپنے ساتھ نکاح کر لے۔ (ت)

---

1. القرآن ۲۴/ ۱۷
2. القرآن ۶۵/ ۱
3. الهداية فصل في الوكالة بالنكاح المكتبة العربية كراچی ۲/ ۳۰۲

Fatawa Rizwia, Volume 11

In Fath al-Qadir, it is stated:

Shaikh-ul-Islam Khawahar Zadah said: This is when he mentions words in which he is the principal (Asil). But if he mentions words in which he is a deputy (Na'ib), then it is not sufficient. So if he said "I married so-and-so," it is sufficient. But if he said "I married her to myself," it is not sufficient because he is a deputy in that. The wording of al-Hidayah, which we mentioned earlier, is explicit in denying this condition, and its denial is also stated in at-Tajnis as well, with reference to Gharib ar-Riwayah and al-Fatawa al-Sughra, etc.

Shaikh-ul-Islam Khawahar Zadah has said that this will be permissible when he expresses being the principal, i.e., says "I have entered into marriage," but if he expresses being a deputy and says "I have performed the marriage," then it is not sufficient. So, if he said "I have married so-and-so woman," then it is sufficient, and if he said like this, "I have performed the marriage of so-and-so woman with myself," then it will not be sufficient because in saying this, he is a deputy. And the passage of Hidayah that we have just mentioned is explicit in denying this condition, and in Tajnis also, its denial is explicitly stated with reference to Gharib al-Riwayah and Fatawa Sughra, etc. (T)

I say (I say - T) that in authoritative books like Ad-Durr etc., this same view has been declared as relied-upon. And Al-Bahr etc. have manifested the opposite view as weak. (T)

However, it is necessary for the bride to be distinguishable before the witnesses.

Even if she is present wearing a veil, pointing towards her is sufficient, although it is more cautious to uncover the face.

To the extent that if that woman is present in the gathering wearing a veil, then pointing towards her in the marriage is sufficient, although more caution lies in her revealing her face. (T)

So, in case of absence, if just "daughter of my paternal uncle" or "so-and-so" or "daughter of my paternal uncle so-and-so" or similar words are used by which the witnesses can distinguish her, then that much is sufficient, otherwise mentioning the father and grandfather, i.e., "so-and-so daughter of so-and-so son of so-and-so," is necessary.

Contrary to Imam al-Khassaf, al-Muntaqa by Imam al-Hakim al-Shahid, and Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi.

Imam Khassaf, and in al-Muntaqa, Imam Hakim Shahid and Imam Shams al-A'immah Sarakhsi have given a view contrary to this. (T)

---

[1] Fath al-Qadir, section on agency in marriage, Maktaba Nuria Rizvia, Sukkur, 3/197

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

फ़त्हुल क़दीर में है:

शेख़ुल इस्लाम ख़्वाहर ज़ादा ने कहा है: यह उस वक़्त जाइज़ होगा जब वह अपने असील (मूल पक्ष) होने को ताबीर करे। लेकिन अगर उसने नायब (प्रतिनिधि) होने को ताबीर किया तो यह काफ़ी नहीं। पस अगर उसने कहा "मैंने फ़लां से निकाह कर लिया" तो काफ़ी है, और अगर उसने कहा "मैंने उसका निकाह अपने साथ कर दिया" तो काफ़ी नहीं क्योंकि वह इसमें नायब है। और हिदाया की इबारत, जिसका हमने अभी ज़िक्र किया, इस शर्त की नफ़ी (नकारने) में साफ़ है और तजनीस में भी इसकी नफ़ी पर तसरीह (स्पष्टीकरण), ग़रीबुर रिवायत और फ़तावा सुग़रा के हवाले से की गई है, इत्यादि।

शेख़ुल इस्लाम ख़्वाहर ज़ादा ने कहा है कि यह उस वक़्त जाइज़ होगा जब वह अपने असील होने को ताबीर करे, यानी "मैंने निकाह कर लिया" कहे, लेकिन अगर उसने नायब होने को ताबीर किया और "निकाह कर दिया" कहा तो यह काफ़ी नहीं, पस अगर उसने "फ़लां औरत से निकाह कर लिया" कहा, तो वह काफ़ी है और अगर यूँ कहा कि "मैंने फ़लां औरत का अपने साथ निकाह कर दिया" तो काफ़ी न होगा क्योंकि इस कहने में वह नायब है। और हिदाया की वह इबारत जो अभी हमने ज़िक्र की है वह इस बात की नफ़ी में सरीह (स्पष्ट) है और तजनीस में भी इसकी नफ़ी पर तसरीह, ग़रीबुर रिवायत और फ़तावा सुग़रा के हवाले से की गई है। (त)

क़ुलत (मैं कहता हूँ - त) कि दुर वगैरह मोअतबरा (प्रमाणित) किताबों में इसी को मोअतमद अलैह (विश्वसनीय) क़रार दिया गया है। और बहर वगैरह ने इसके ख़िलाफ़ को ज़ईफ़ (कमज़ोर) ज़ाहिर किया है। (त)

अलबत्ता गवाहों के सामने दुल्हन का पहचाना जाना ज़रूरी है।

यहाँ तक कि अगर वह औरत नक़ाब पहने मज्लिस में हाज़िर हो तो निकाह में उसकी तरफ़ इशारा काफ़ी है, अगरचे ज़्यादा एहतियात इसमें है कि वह चेहरा खुला रखे।

हत्ता कि अगर वह औरत नक़ाब पहने मज्लिस में हाज़िर हो तो निकाह में उसकी तरफ़ इशारा काफ़ी है अगरचे ज़्यादा एहतियात इसमें है कि वह चेहरा खुला रखे। (त)

पस अगर ग़ैर-मौजूदगी की हालत में सिर्फ़'चाचा की बेटी' या 'फ़लां' या 'फ़लां की बेटी' या उनके समान किसी शब्द से गवाह उसे पहचान लें तो इतना काफ़ी है, वरना बाप और दादा का नाम यानी 'फ़लां की बेटी फ़लां बिन फ़लां' कहना ज़रूरी है।

इसके विपरीत इमाम ख़स्साफ़, और मुन्तक़ा में इमाम हाकिम शहीद और इमाम शम्सुल अइम्मा सरख़सी का मत है।

इमाम ख़स्साफ़ ने और मुन्तक़ी में इमाम हाकिम शहीद और इमाम शम्सुल अइम्मा सरख़सी ने इसके ख़िलाफ़ राय दी है। (त)

---

[1] फ़त्हुल क़दीर, फ़स्ल फ़िल वकाला बिल-निकाह, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/197

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

فتح القدیر میں ہے:

قال شیخ الاسلام خواہر زادہ ہٰذا اذا ذکر لفظاً ہو اصیل فیہ اما اذا ذکر لفظاً ہو نائب فیہ فلایکفی، فان قال تزوجت فلانۃ کفی وان قال زوجتہا من نفسی لایکفی لانہ نائب فیہ وعبارۃ الہدایۃ وہی ماذکرناہ انفاً صریحۃ فی نفی ہٰذا الاشتراط وصرح بنفیہ فی التجنیس ایضاً، فی علامۃ غریب الروایۃ والفتاوٰی الصغرٰی الخ۔

شیخ الاسلام خواہر زادہ نے کہا ہے کہ یہ اس وقت جائز ہوگا جب وہ اپنے اصیل ہونے کو تعبیر کرے، یعنی "میں نے نکاح کرلیا" کہے، لیکن اگر اس نے نائب ہونے کو تعبیر کیا اور "نکاح کردیا" کہا تو یہ کافی نہیں، پس اگر اس نے "فلاں عورت سے نکاح کرلیا" کہا، تو وہ کافی ہے اور اگر یوں کہا کہ "میں نے فلاں عورت کا اپنے ساتھ نکاح کردیا" تو کافی نہ ہوگا کیونکہ اس کہنے میں وہ نائب ہے۔ اور ہدایہ کی وہ عبارت جو ابھی ہم نے ذکر کی ہے وہ اس بات کی نفی میں صریح ہے اور تجنیس میں بھی اس کی نفی پر تصریح، غریب الروایۃ اور فتاوٰی صغرٰی کے حوالے سے کی ہے الخ (ت)

قلت (میں کہتا ہوں۔ ت) کہ دُر وغیرہ معتبرہ کتب میں اسی کو معتمد علیہ قرار دیا ہے۔ اور بحر وغیرہ نے اس کے خلاف کو ضعیف ظاہر کیا ہے۔ (ت)

البتہ مشہود کے سامنے منکوحہ کا متمیز ہوجانا ضرور ہے۔

حتی لوکان حاضرۃ متنقبۃ کفت الإشارۃ وان کان الاحوط کشف الوجہ۔

حتی کہ اگر وہ عورت نقاب پہنے مجلس میں حاضر ہو تو نکاح میں اس کی طرف اشارہ کافی ہے اگرچہ زیادہ احتیاط اس میں ہے کہ وہ چہرہ کھلا رکھے۔ (ت)

پس اگر بحالتِ غیبت صرف بنتِ عمّی یا فلانۃ یا بنتِ عمّی فلانۃ یا ان کے مثل جس لفظ سے شہود اسے متمیز کرلیں تو اس قدر کافی ، ورنہ ذکرِ اب وجد یعنی فلانۃ بنتِ فلاں بن فلاں کہنا ضروری ہے۔

خلافا للامام الخصاف ومنتقٰی الامام الحاکم الشھید والامام شمس الائمۃ السرخسی۔

امام خصاف نے اور منتقی میں امام حاکم شہید اور امام شمس الائمہ سرخسی نے اس کے خلاف قول کیا ہے۔ (ت)

---

[1] فتح القدیر فصل فی الوکالۃ بالنکاح المکتبۃ النوریۃ الرضویۃ سکھر ۳/۱۹۷

Fatawa Ridawiyyah Volume 11

It is stated in Radd al-Muhtar:

In Al-Bahr [it is stated]: Identification of the bride must be clear to the witnesses so that no ambiguity or ignorance remains. Thus, if she is present in the gathering wearing a veil, pointing towards her is sufficient for the marriage, although it is more cautious to keep her face uncovered. If those present in the gathering cannot see her person but can hear her voice from a room, if she is alone in the room, the marriage is valid. If there is another woman with her, it is not valid because the ambiguity remains. If the woman is not present and her voice cannot be heard, and a representative (wakil) is conducting the marriage on her behalf, then if the witnesses know the woman, mentioning her name is sufficient, provided the witnesses know that the representative refers to that specific woman. If the witnesses do not recognize her, then it is necessary to mention the names of the woman, her father, and her grandfather. Imam Khassaf has allowed it even without mentioning names; for example, if a woman makes the groom her representative in front of witnesses, the groom can say, "I have married my principal (muwakkilah) to myself in the presence of these witnesses," or "I have married to myself the woman who gave me authority over her marriage." In this way, according to Imam Khassaf's view, the marriage will be valid. Imam Qadi Khan said that Khassaf holds a high station in knowledge and it is permissible to follow him. Al-Hakim al-Shahid mentioned in Al-Muntaqa as Khassaf said. I say, and in Al-Tatarkhaniyyah...

Page 114 of 739

फ़तावा रज़विया खंड 11

रद अल-मुह्तार में उल्लेख है:

अल-बहर में है कि गवाहों के सामने दुल्हन की पहचान स्पष्ट होनी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार की अज्ञानता या अस्पष्टता न रहे। अत; यदि वह सभा में नकाब पहनकर उपस्थित है, तो निकाह में उसकी ओर इशारा करना पर्याप्त है, हालांकि चेहरा खुला रखना अधिक सावधानी (एहतियात) वाला है। यदि सभा के लोग उस महिला के व्यक्तित्व को नहीं देख पा रहे हैं और कमरे के भीतर से उसकी आवाज़ सुन रहे हैं, यदि वह कमरे में अकेली है, तो निकाह जायज़ है। यदि उसके साथ कमरे में कोई और महिला भी है, तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि अज्ञानता बनी रहती है। और यदि वह महिला सभा में मौजूद नहीं है और उसकी आवाज़ भी नहीं सुनी जा सकती, और उसकी ओर से उसका वकील निकाह कर रहा है, तो यदि गवाह उस महिला को जानते हैं, तो निकाह में महिला का नाम लेना पर्याप्त है, बशर्ते गवाहों को पता हो कि वकील का तात्पर्य उसी महिला से है। और यदि गवाह उसे नहीं पहचानते हैं, तो महिला, उसके पिता और दादा का नाम लेना आवश्यक है। और इमाम खसाफ ने नाम लिए बिना भी इसे जायज़ कहा है; उदाहरण के लिए, यदि किसी महिला ने गवाहों के सामने दूल्हे को अपना वकील बनाया हो, तो दूल्हा कह सकता है, "मैंने इन गवाहों की मौजूदगी में अपनी मुवक्किला का निकाह अपने साथ कर लिया है," या कह दे कि "जिस महिला ने मुझे अपने निकाह का अधिकार दिया है, मैंने उसका निकाह अपने साथ कर लिया है।" इस तरह भी इमाम खसाफ के कथन के अनुसार निकाह सही होगा। इमाम काज़ी ख़ान ने कहा कि ज्ञान के क्षेत्र में खसाफ का बहुत ऊंचा स्थान है, उनका अनुसरण करना जायज़ है। अल-हाकिम अल-शाहिद ने अल-मुंतक़ा में वैसा ही उल्लेख किया है जैसा खसाफ ने कहा। मैं कहता हूँ, और अल-ततारखानिया में...

पृष्ठ 114 का 739

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

رد المحتار میں ہے:

بحر میں ہے کہ گواہوں کے نزدیک منکوحہ کا ممتاز ہونا ضروری ہے تاکہ کسی قسم کی جہالت ولا علمی نہ رہے، پس اگر مجلس میں نقاب پہن کر حاضر ہو تو نکاح میں اس کی طرف اشارہ کافی ہے اگرچہ چہرہ کھلا رکھنے میں احتیاط ہے۔ اگر مجلس والے اس عورت کی شخصیت کو نہ دیکھ پائیں اور کمرے میں سے اس کی آواز سن رہے ہوں اگر وہ کمرے میں اکیلی ہو تو نکاح جائز ہے اور اگر اس کے ساتھ کمرے میں کوئی عورت بھی ہو تو جائز نہیں ،کیونکہ لاعلمی باقی ہے۔ اور اگر وہ عورت مجلس میں موجود نہیں اور اس کی آواز بھی سنی نہیں جاسکتی اس کی طرف سے اس کا نکاح وکیل کر رہا ہو تو اگر گواہ اس عورت کو جانتے ہیں تو نکاح میں عورت کا نام ذکر کر دینا کافی ہے جبکہ گواہوں کو علم ہو کہ وکیل کی مراد وہی عورت ہے۔ اور اگر گواہ اس کو نہ پہچانتے ہوں تو عورت، اس کے والد اور دادا کا نام ذکر کرنا ضروری ہے۔ اور امام خصاف نے نام ذکر کئے بغیر بھی جائز کہا ہے مثلاً ایک عورت نے نکاح کرنے والے کو گواہوں کے سامنے اپنا وکیل بنایا ہو تو اس سے نکاح کرنے والا یوں کہہ دے کہ میں نے ان گواہوں کی موجودگی میں اپنی مؤکلہ کا نکاح اپنے ساتھ کر دیا یا یوں کہہ دے کہ جس عورت نے مجھے اپنے نکاح کا اختیار دیا ہے میں نے اس کا نکاح اپنے ساتھ کر دیا، تو اس طرح بھی امام خصاف کے قول پر نکاح صحیح ہوگا، امام قاضی خاں نے فرمایا کہ خصاف کا علم میں بڑا مقام ہے اس کی بات پر اقتداء جائز ہے اور ذکر الحاکم الشہید فی المنتقی کما قال الخصاف اہ قلت وفی التتارخانیۃ۔

صفحہ 114 از 739

[Section 1] (Arabic): From Al-Mudmarat, it is stated that the first opinion is correct and the fatwa is based on it. Similarly, it is mentioned in Al-Bahr in the chapter of the Agent (Wakil) and the Uncommissioned Agent (Fuduli) that the chosen opinion in the school of thought is contrary to what Al-Khassaf said, even though Al-Khassaf is a prominent scholar. This concludes the summary from Radd al-Muhtar. (Urdu): Action is permissible. And Hakim al-Shahid also mentioned a saying like Al-Khassaf's in Al-Muntaqa. I say, and in Tatar-Khaniya it is mentioned with reference to Al-Mudmarat that the first saying is correct and the fatwa is upon it. In Al-Bahr, in the section on Fuduli and Wakil, it has similarly been declared as the preferred view in the school of thought, which is contrary to Al-Khassaf's saying, even though Al-Khassaf holds a high academic position. Here ends the summary of the text from Radd al-Muhtar.

[Section 2] (Arabic): I say: Whatever was attributed in Al-Bahr to Imam Qadi Khan, Qadi Khan only narrated it from Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi. As for himself, he gave precedence to its invalidity, and it is known that he presents first what he relies upon. (Urdu): I say: (Translator's note) Whatever was attributed in Al-Bahr to Imam Qadi Khan, Qadi Khan narrated it from Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi, but his own stance is its invalidity, which he mentioned first, and it is a known fact that he mentions his reliable source first. (T)

[Main Body] And if a closer guardian is present for a minor paternal cousin (female) "i.e., not absent on a long journey" (T) or if permission was not taken from an adult female specifically for marriage with himself, even if she gave general permission for marriage, then in these cases, this paternal cousin will be a Fuduli (uncommissioned agent) from one side. And for someone who is a Fuduli from any side, "to undertake both parts of the marriage contract" is not permissible even if he performs the offer and acceptance in two separate statements. This is the truth and the correct view, contrary to what was understood from some books (T). To the extent that his single-handed contract is sheer nullity according to Imam Azam and Imam Muhammad (may Allah be pleased with them), such that it will not be effective even after the permission of the guardian or the adult female.

[Section 3] (Arabic): Contrary to Imam al-Thani (Abu Yusuf) who considered it suspended (mawqūf); so if the one who has the authority to permit allows it, it becomes valid, otherwise not. (Urdu): Imam al-Thani (i.e., Imam Yusuf) has contrary

to this declared this marriage as suspended (mawqūf), such that if the person with authority allows it, it will be valid, otherwise not. (T)

It is mentioned in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

---

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/272.

फतावा रज़विया | ग्यारहवीं जिल्द

[अनुभाग 1] (अरबी): मुज़मरात से उद्धृत है कि पहला मत सही है और फतवा उसी पर है। इसी तरह अल-बह्र में 'वकील' और 'फज़ूली' (अनधिकृत व्यक्ति) के अध्याय में कहा गया है कि संप्रदाय (मज़हब) में चुना हुआ मत खसाफ के कहे के विरुद्ध है, भले ही खसाफ एक बड़े विद्वान हों। यहाँ रद अल-मुहतार की इबारत का सारांश समाप्त हुआ। (उर्दू): कार्य जायज़ है। और हाकिम शहीद ने भी मुंतका में खसाफ जैसा ही कथन किया है। मैं कहता हूँ, और तातार-खानिया में मुज़मरात के संदर्भ में है कि पहला कथन सही है और फतवा उसी पर है। अल-बह्र में, फज़ूली और वकील के खंड में, इसी तरह इसे मज़हब में पसंदीदा घोषित किया गया है, जो खसाफ के कथन के विपरीत है, भले ही खसाफ का एक बड़ा शैक्षणिक स्थान है। यहाँ रद अल-मुहतार के सारांश का अंत हुआ।

[अनुभाग 2] (अरबी): मैं कहता हूँ: अल-बह्र में इमाम काज़ी खाँ की ओर जो कुछ भी श्रेय दिया गया है, काज़ी खाँ ने उसे केवल इमाम शम्सुल अइम्मा सरख्सी से उद्धृत किया है। जहाँ तक उनकी अपनी बात है, उन्होंने इसकी अमान्यता को प्राथमिकता दी है, और यह ज्ञात है कि वे पहले उसे ही प्रस्तुत करते हैं जिस पर वे भरोसा करते हैं। (उर्दू): मैं कहता हूँ: (अनुवादक की टिप्पणी) अल-बह्र में जो कुछ इमाम काज़ी खाँ की ओर मंसूब किया गया है, उसे काज़ी खाँ ने इमाम शम्सुल अइम्मा सरख्सी से नक़ल किया है, लेकिन स्वयं उनका अपना रुख अदम-ए-सेहत (अमान्यता) है जिसे उन्होंने पहले ज़िक्र किया है, और यह एक ज्ञात तथ्य है कि वे पहले अपने विश्वसनीय स्रोत का उल्लेख करते हैं। (त)

[मुख्य भाग] और यदि नाबालिग चचेरी बहन के लिए करीबी वली (अभिभावक) मौजूद है "अर्थात लंबी यात्रा पर गायब न हो" (त) या यदि बालिग स्त्री से विशेष रूप से स्वयं के साथ निकाह करने की अनुमति नहीं ली गई, भले ही उसने निकाह के लिए सामान्य अनुमति दी हो, तो इन स्थितियों में यह चचेरा भाई एक पक्ष से 'फज़ूली' (अनधिकृत एजेंट) होगा। और जो किसी भी पक्ष से फज़ूली हो, उसके लिए "निकाह के दोनों पक्षों (प्रस्ताव और स्वीकृति) को स्वयं अंजाम देना" जायज़ नहीं है, भले ही वह ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) दो अलग-अलग वाक्यों में अदा करे। यही सत्य और सही मत है, उन बातों के विपरीत जो कुछ किताबों से समझी गई हैं। (त) यहाँ तक कि अकेले उसका निकाह का अनुबंध कर लेना इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) के अनुसार पूर्णतः शून्य (बातिल) है, यहाँ तक कि इसके बाद वली या बालिग स्त्री की अनुमति से भी यह प्रभावी नहीं होगा।

[अनुभाग 3] (अरबी): इमाम अल-थानी (अबू यूसुफ) के विपरीत, जिन्होंने इसे निलंबित (मौक़ूफ़) माना है; अतः यदि अनुमति देने का अधिकार रखने वाला इसे अनुमति दे दे, तो यह मान्य होगा, अन्यथा नहीं। (उर्दू): इमाम-ए-सانی। (अर्थात इमाम यूसुफ) ने इसके विपरीत इस निकाह को मौक़ूफ़ (निलंबित) करार दिया है कि यदि अनुमति का अधिकारी इसे जायज़ करार दे तो जायज़ होगा वरना नहीं। (त)

तनवीरुल अबसार और दुर्रे मुख्तार में है:

---

1. रद अल-मुहतार, किताबुन निकाह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/272.

[باکس 1] (عربی): عن المضمرات ان الاول ھو الصحیح وعلیه الفتوی وکذا قال فی البحر فی فصل الوکیل والفضولی ان المختار فی المذھب خلاف ماقاله الخصاف وان کان الخصاف کبیرا اھ مافی ردالمحتار ملخصاً۔ (اردو): عمل جائز ہے۔ اور حاکم شہید نے بھی منتقیٰ میں خصاف جیسا قول کیا ہے اھ قلت اور تاتارخانیہ میں مضمرات کے حوالے سے ہے کہ پہلا قول صحیح ہے اور اسی پر فتویٰ ہے۔ بحر میں فضولی اور وکیل کی فصل میں یونہی اس کو مذہب میں مختار قرار دیا ہے جو کہ خصاف کے قول کے خلاف ہے اگرچہ خصاف کا بڑا علمی مقام ہے اھ یہاں رد المحتار کی عبارت کا خلاصہ ختم ہوا۔

[باکس 2] (عربی): اقول: وما عزا فی البحر للامام قاضیخان فانما نقله قاضی خان عن الامام شمس الائمة السرخسی اما ھو بنفسه فقد قدم عدم الصحة ومعلوم انه انما یقدم ما یعتمده۔ (اردو): اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) بحر میں جو کچھ امام قاضی خاں کی طرف منسوب کیا اس کو قاضی خاں نے امام شمس الائمہ سرخسی سے نقل کیا ہے لیکن خود ان کا موقف عدم صحت ہے جس کو انھوں نے پہلے ذکر کیا ہے اور یہ بات معلوم شدہ ہے کہ وہ اپنے معتمد علیہ کو پہلے ذکر کرتے ہیں۔(ت)

[مرکزی عبارت] اور اگر بنتِ عم نابالغہ کے لیے ولی اقرب موجود ہے "ای غیر غائب بغیبة منقطعة" (یعنی لمبے سفر پر غائب نہ ہو ت) یا بالغہ سے خاص اپنے ساتھ نکاح کر لینے کا اذن نہ لیا اگرچہ اس نے مطلق تزویج کا اذن دیا ہو، تو ان صورتوں میں یہ ابن العم ایک جانب سے فضولی ہوگا اور جو کسی طرف سے فضولی ہو اُس کے لیے "تولی شطری النکاح" جائز نہیں اگرچہ ایجاب و قبول دو عبارتوں جداگانہ میں ادا کرے ھو الحق الصواب خلاف لما فھم من بعض الکتب (یہ حق اور صحیح ہے بعض کتب سے جو سمجھا گیا ہے وہ اس کے خلاف ہے۔ت) یہاں تک کہ تنہا اس کا

عقد کر لینا امام اعظم وامام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے نزدیک باطل محض ہے کہ اس کے بعد اجازت ولی یا بالغہ سے بھی نافذ نہ ہوگا۔

[باکس 3] (عربی): خلافاً للامام الثانی حیث جعله من الموقوف فان اجاز من له الاجازة جاز والّا لا۔

(اردو): امامِ ثانی (یعنی امام یوسف) نے اس کے خلاف اس نکاح کو موقوف قرار دیا ہے کہ اگر صاحب اجازت اس کو جائز قرار دے تو جائز ہوگا ورنہ نہیں۔ (ت)

تنویر الابصار و در مختار میں ہے:

---

1. رد المحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۷۲

Fatawa Rizvia, Volume 11

A person who is the guardian (wali) of both sides in a marriage contract will not be considered an unauthorized agent (fazooli) on either side, even if they perform the offer (ijab) and acceptance (qubool) through two separate statements. This is the preferred (rajih) opinion. (Summarized)

In Radd al-Muhtar, it is stated: If a person is a 'fazooli' (unauthorized agent) from both sides, or 'fazooli' from one side and a principal (asil), agent (wakil), or guardian (wali) from the other side, then in these four scenarios, the marriage will not be suspended (mawquf) but will be void (batil) according to Imam Azam and Imam Muhammad. Imam Abu Yusuf disagrees, stating that it will be suspended, just as if one 'fazooli' offers and another 'fazooli' accepts, it is suspended by consensus. The statement that 'even if it is performed through two separate statements' contradicts what is written in some commentaries of Hidaya and the commentary of al-Kafi, which claim that if performed through two statements, the marriage will be suspended by consensus. This has been refuted in al-Fath because the truth is contrary to it, and such a condition does not exist in the words of the scholars of the school of thought. (Summarized)

In Tanwir, it is stated: A paternal cousin is allowed to marry his minor (non-pubescent) paternal cousin to himself.

Footnotes: 1. Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Kafa'at, Mujtabai Press Delhi, 1/196. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'at, Section on the Agent and Unauthorized Agent in Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/326. 3. Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Kafa'at, Mujtabai Press Delhi, 1/196.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 11

वह व्यक्ति जो निकाह के दोनों पक्षों का वली (अभिभावक) हो, वह किसी भी पक्ष से फज़ूली (अनधिकृत एजेंट) नहीं माना जाएगा, भले ही वह ईजाब (प्रस्ताव) और कुबूल (स्वीकृति) दो अलग-अलग कथनों के माध्यम से करे। यह अधिक विश्वसनीय (राजिह) मत है। (संक्षिप्त)

रद्द अल-मुह्तार में लिखा है: यदि कोई व्यक्ति दोनों पक्षों से फज़ूली हो, या एक पक्ष से फज़ूली और दूसरे पक्ष से असील (स्वयं), वकील या वली हो, तो इन चारों स्थितियों में निकाह स्थगित (मवक़ूफ़) नहीं होगा बल्कि इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद के अनुसार शून्य (बातिल) होगा। इमाम अबू यूसुफ इससे असहमत हैं, उनके अनुसार यह स्थगित होगा, ठीक वैसे ही जैसे एक फज़ूली के ईजाब को दूसरा फज़ूली स्वीकार कर ले तो सर्वसम्मति से वह स्थगित होता है। यह कथन कि 'चाहे दो कथनों के माध्यम से ईजाब और कुबूल करे', हिदाया के कुछ हाशिये और काफ़ी की शराह (व्याख्या) में दी गई उस बात के विरुद्ध है जिसमें कहा गया है कि यदि दो कथनों में अदा किया जाए तो निकाह सर्वसम्मति से स्थगित होगा। फ़तह में इसे खारिज कर दिया गया है क्योंकि सत्य इसके विपरीत है और इस शर्त का मज़हब के विद्वानों की बातों में कोई अस्तित्व नहीं है। (संक्षिप्त)

तन्वीर में लिखा है: चचेरे भाई के लिए यह जायज़ है कि वह अपनी नाबालिग चचेरी बहन का निकाह खुद अपने साथ कर ले।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-कफाअत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/196। 2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-कफाअत, मतलब फिल वकील वल फज़ूली फिन निकाह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/326। 3. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-कफाअत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/196।

पृष्ठ 116/739

جو شخص دونوں جانب سے نکاح کا ولی ہو وہ کسی جانب سے بھی فضولی نہ قرار پائے گا اگرچہ وہ ایجاب و قبول دو کلاموں سے ادا کرے، یہ راجح قول ہے ملخصا اھ (ت)

رد المحتار میں ہے: اذا کان فضولیا منھما اومن احدھما ومن الآخر اصیلااووکیلااولیا ففی ھذہ الاربع لایتوقف بل یبطل عندھما خلافا للثانی حیث قال یتوقف علی قبول الغائب کما یتوقف اتفاقا لوقبل عنہ فضولی آخر قولہ وان تکلم بکلامین خلافا لما فی حواشی الھدایۃ وشرح الکافی من انہ لوتکلم بکلامین یتوقف اتفاقا وردہ فی الفتح بان الحق خلافہ ولاوجود لھذا القید فی کلام اصحاب المذھب اھ مختصراً۔

اگر کوئی شخص دونوں جانب سے فضولی ہو یا ایک جانب سے فضولی اور دوسری جانب سے اصیل ہو یا وکیل یا ولی ہو تو ان چاروں صورتوں میں نکاح موقوف نہ ہوگا بلکہ امام اعظم اور امام محمد کے نزدیک باطل ہوگا، امام یوسف اس کے خلاف ہیں ان کے نزدیک یہ موقوف ہوگا جس طرح ایک فضولی کی طرف سے ایجاب کو دوسرا فضولی قبول کرلے تو بالاتفاق موقوف ہوتا ہے، قولہ (اس کا قول) کہ اگرچہ دو کلاموں سے ایجاب و قبول کرے، یہ خلاف ہے اس کے جو ہدایہ کے بعض حواشی اور کافی کی شرح میں ہے کہ اگر دو کلاموں سے اس نے ادا کیا تو بالاتفاق نکاح موقوف ہوگا، اس کو فتح میں رد کر دیا گیا ہے کیونکہ حق اس کے خلاف ہے اور اس قید کا اصحاب مذہب میں کوئی وجود نہیں ہے اھ مختصراً (ت)

تنویر میں ہے: لابن العم ان یزوج بنت عمہ الصغیرۃ من نفسہ چچا زاد کو جائز ہے کہ وہ اپنی چچا زاد نابالغہ کا خود اپنے ساتھ نکاح کرلے۔ (ت)

1 درمختار شرح تنوير الابصار باب الكفاءة مطبع مجتبائى دہلى ۱۹۶/۱ 2 ردالمحتار باب الكفاءة مطلب فى الوكيل والفضولى فى النكاح داراحياء التراث العربى بيروت ۳۲۶/۲ 3 درمختار شرح تنوير الابصار باب الكفاءة مطبع مجتبائى دہلى ۱۹۶/۱

Volume 11 Fatawa Razawiya

It is mentioned in Shami: "And it is not hidden that what is meant is where there is no guardian closer than him."[1] And it is evident that this means there should be no other guardian more closely related than him. (T)

In Sharh 'Allai it is written: "If the more distant relative performed the marriage while the closer one was present, it depends on his [the closer one's] permission."[2] If a distant guardian performs the marriage of a minor despite the presence of a closer guardian, then this will be dependent on the permission of the closer guardian. (T) I say: Thus it conveys that the more distant one in the presence of the closer one is a *Fuduli* (unauthorized person), so if he assumes both sides [of the contract], it is void. I say: The meaning of this discourse is that in the presence of a closer guardian, a distant guardian will be considered a *Fuduli*. Therefore, if the distant guardian, in this situation, acts as the guardian for both sides and performs the marriage, the marriage will be void. (T)

In the same book: "So if she is an adult, then seeking permission is necessary (before the contract) such that if he marries her without seeking permission and she remains silent or expresses consent, it is not permissible according to them both (because he assumed both sides of the marriage and he is a *Fuduli* from her side, so it did not remain suspended according to them both, rather it is void), and Abu Yusuf said it is permissible."[3] – additional text from the footnote of Shami. If the girl is an adult, it is necessary to take permission from her (before marriage), to the extent that if an unauthorized person (*Fuduli*) married her himself without permission, and the girl remained silent or expressed consent after the marriage, then according to the views of Imam Azam and Imam Muhammad, the marriage will not be valid. Because in the presence of the adult girl, he is a *Fuduli* from her own side, therefore according to both Imams, this marriage will not be suspended but will be void. And according to the view of Imam Abu Yusuf, it is permissible. This additional text is from the footnote of Shami. (T)

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'ah, discussion on the Agent and the Fuduli etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/327. [2] Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Delhi, 1/194. [3] Durr al-Mukhtar, Chapter of Kafa'ah, Mujtabai Delhi, 1/196; Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/327.

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

शामी में है: "और यह छिपा नहीं है कि इसका अर्थ यह है जहाँ उससे निकट कोई वली (अभिभावक) न हो।"[1] और ज़ाहिर है कि इससे मुराद यह है कि उससे ज़्यादा क़रीब कोई और वली न हो। (त)

शरह अलाई में है: "अगर निकटतम वली की मौजूदगी में दूर के वली ने निकाह कराया, तो यह उसकी इजाज़त पर निर्भर होगा।"[2] अगर दूर के वली ने क़रीबी वली की मौजूदगी के बावजूद नाबालिग़ा का निकाह किया तो यह क़रीबी वली की इजाज़त पर निर्भर (मवक़ूफ़) होगा। (त) मैं कहता हूँ: तो इसने यह बताया कि क़रीबी की मौजूदगी में दूर वाला 'फ़ुज़ूली' (अनाधिकृत) है, इसलिए अगर वह दोनों पक्षों का कार्यभार संभाले तो निकाह बातिल (अमान्य) है। अक़ूल: इस कलाम का अर्थ यह है कि क़रीबी वली की मौजूदगी में दूर का वली, 'फ़ुज़ूली' माना जाएगा। लिहाज़ा अगर दूर वाला इस स्थिति में दोनों तरफ़ से वली बनकर निकाह करे तो निकाह बातिल होगा। (त)

इसी में है: "तो अगर लड़की बालिग़ा हो तो (निकाह से पहले) उससे इजाज़त लेना ज़रूरी है, यहाँ तक कि अगर किसी 'फ़ुज़ूली' ने उससे ख़ुद बिना इजाज़त निकाह कर लिया और लड़की खामोश रही या निकाह के बाद रज़ामंदी ज़ाहिर की, तो उन दोनों (इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक यह जायज़ नहीं (क्योंकि उसने निकाह के दोनों पक्षों को संभाला है और वह उसकी तरफ़ से 'फ़ुज़ूली' है, इसलिए उन दोनों के नज़दीक यह मवक़ूफ़ नहीं रहा बल्कि बातिल हो गया), और अबू यूसुफ़ ने कहा कि जायज़ है।"[3] – शामी के हाशिये से अतिरिक्त इबारत। अगर लड़की बालिग़ा हो तो उससे इजाज़त लेना ज़रूरी है (निकाह से पहले), यहाँ तक कि अगर किसी 'फ़ुज़ूली' ने उससे ख़ुद निकाह बिना इजाज़त कर लिया और लड़की खामोश रही या निकाह के बाद उसने रज़ामंदी ज़ाहिर की तो इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद के क़ौल पर निकाह जायज़ न होगा क्योंकि यह बालिग़ा की मौजूदगी में ख़ुद उसकी तरफ़ से 'फ़ुज़ूली' है, लिहाज़ा दोनों इमामों के नज़दीक यह निकाह मवक़ूफ़ न होगा बल्कि बातिल होगा, और इमाम अबू यूसुफ़ के क़ौल पर जायज़ है। अतिरिक्त इबारत हाशियह शामी की है। (त)

[1] रद-उल-मुहतार, बाब-अल-कफ़ाअह, मतलब फिल वकील वल फ़ुज़ूली आदि, दार इह्या-अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 2/327 [2] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-अल-वली, मुज्तबाई दिल्ली 1/194 [3] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-अल-कफ़ाअह, मुज्तबाई दिल्ली 1/196, रद-उल-मुहतार, बाब-अल-कफ़ाअह, दार इह्या-अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 2/327

شامی میں ہے: ولا یخفی ان المراد حیث لا ولی اقرب منه ۔[1] اور ظاہر ہے کہ اس سے مراد یہ ہے کہ اس سے زیادہ قریب کوئی اور ولی نہ ہو۔ (ت)

شرح علائی میں ہے: لوزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازته اه ۔[2] اگر بعید ولی نے اقرب کی موجودگی کے باوجود نابالغہ کا نکاح کیا تو یہ اقرب ولی کی اجازت پر موقوف ہوگا اھ (ت)

اقول: فأفاد ان الابعد عند حضور الاقرب فضولی فأذا تولی الشطرین بطل۔ اقول: اس کلام کا مفاد یہ ہے کہ اقرب کی موجودگی میں بعید ولی، فضولی قرار پائے گا۔ لہذا اگر بعید اس صورت میں دونوں جانب سے ولی بن کر نکاح کرے تو نکاح باطل ہوگا (ت)

اسی میں ہے: فلو کبیرة فلابد من الاستیذان ان(قبل العقد اه ش) حتی لو تزوجها بلا استیذان فسکتت اوافصحت بالرضی لا یجوز عندهما(لانه تولی طرفی النکاح وهو فضولی من جانبها فلم یتوقف عندهما بل بطل اه ش) و قال ابو یوسف یجوز اه مزیدا من حاشیة الشامی۔[3] اگر لڑکی بالغہ ہو تو اس سے اجازت لینا ضروری ہے (قبل از نکاح اھ ش) حتی کہ اگر فضولی نے اس سے خود نکاح بغیر اجازت کرلیا اور لڑکی خاموش رہی یا نکاح کے بعد اس نے رضامندی ظاہر کی تو امام اعظم اور امام محمد کے قول پر نکاح جائز نہ ہوگا کیونکہ یہ بالغہ کی موجودگی میں خود اس کی طرف سے فضولی ہے لہذا دونوں اماموں کے نزدیک یہ نکاح موقوف نہ ہوگا بلکہ باطل ہوگا اھ ش، اور امام ابو یوسف کے قول پر جائز ہے۔ اضافی عبارت حاشیہ شامی کی ہے۔ (ت)

[1] ردالمحتار باب الكفاءة مطلب في الوكيل والفضولى الخ داراحياء التراث العربى بيروت ٢/ ٣٢٧ [2] درمختار باب الولى مجتبائى دہلى ١/ ١٩٤ [3] درمختار باب الكفاءة مجتبائى دہلى ١/ ١٩٦، ردالمحتار باب الكفاءة داراحياء التراث العربي بيروت ٢/ ٣٢٧

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

In Fath al-Qadeer, it is mentioned: "If she authorized him to marry her off in general, and he married her to himself, it is not permissible." Urdu version: If an adult female told someone to arrange her marriage without specifying anyone, in this case, if that person marries her to himself, it will not be valid. (T)

Praise be to Allah, the ruling on the matter has become detailed and clear. The general case of the question, i.e., "one person handling both sides of the marriage contract," and the specific words, i.e., "I have married my cousin so-and-so to myself" (becoming the guardian for both sides of the marriage and the specific words being that I married my cousin to myself. T) - the rulings, differences of opinion among scholars, and corrections by the Imams, etc., concerning all necessary aspects of this topic have attained full clarity and complete illumination. This much is sufficient, and there is no need for further detail. And Allah Almighty knows best.

Problem 3: What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say regarding this case? There is a woman who has no signs [of gender] except the urinary outlet. Her marriage was performed with Zaid. After the marriage, this fact became known. Now, is her marriage valid or not? Clarify and you shall be rewarded.

The Answer: In the questioned case, that marriage is valid, and half the dower (Mahr) is obligatory upon Zaid.

In Fatawa al-Imam Qazi Khan: "The option of defect (Khiyar al-'Ayb), which is the right of annulment due to a defect, is not established in marriage according to us. Therefore, a woman is not rejected due to any defect." In Al-Durr al-Mukhtar: "Privacy (Khalwah) without any obstacle is like sexual intercourse in terms of confirming the dower (Mahr)." This is concluded in brief and summary. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Fath al-Qadeer, Chapter on Agency in Marriage, Al-Maktaba al-Nuriyya al-Razawiyya, Sukkur, 3/197
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Options Relating to Marriage, Nawal Kishore, Lucknow, 1/187
3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai, Delhi, 1/98-99

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

फ़तहुल क़दीर में है: "वक़्लतहु अन युज़व्विजहा मुतलक़न फ़ इन्नहू लौ ज़व्वजहा मिन नफ़्सिही ला यजूसु-1" अगर एक बालिग महिला ने किसी से कहा कि मेरा निकाह कर दे और कोई शर्त नहीं लगाई, तो इस सूरत में अगर उस शख़्स ने उसका निकाह ख़ुद अपने साथ कर लिया, तो वह जाइज़ नहीं होगा। (त)

अल्हम्दुलिल्लाह, मसले का हुक्म तफ़्सीली तौर पर स्पष्ट हो गया है। सवाल की सूरत यानी "तवल्लल वाहिदु तरफ़यिन निकाह" और जुज़ई अलफ़ाज़ यानी "ज़व्वजतु बिन्ता अम्मी फुलानता मिन नफ़्सी" (निकाह की दोनों जानिब से एक ही शख़्स का वली बनना और जुज़ई अलफ़ाज़ कि मैंने अपनी चचेरी बहन का निकाह अपने साथ कर लिया। त) - इन दोनों से संबंधित अहकाम, उलमा के इख़्तिलाफ़ात और इमामों की तसहीह वग़ैरा मुक़ाम के ज़रूरी उमूर पूरी तरह साफ़ और वाज़ेह हो गए हैं। इतना ही काफ़ी है और ज़्यादा तफ़्सील की ज़रूरत नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३: उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस बारे में क्या फ़रमाते हैं? एक औरत है जिसकी पेशाब के रास्ते के अलावा कोई और (जनानी) निशानी नहीं है और उसका निकाह ज़ैद से हो गया है। निकाह के बाद यह बात पता चली। अब क्या उसका निकाह दुरुस्त है या नहीं? बयान फ़रमाएं सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: सूरते मस्ऊला में वह निकाह सही है और आधा मेहर ज़ैद के ज़िम्मे लाज़िम है।

फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ां में है: "ख़ियार-ए-ऐब, जो कि ऐब की वजह से हक़-ए-फ़स्ख़ का नाम है, हमारे नज़दीक निकाह में साबित नहीं होता। लिहाज़ा किसी ऐब की बुनियाद पर औरत का निकाह रद्द नहीं होगा।" दुर्र-ए-मुख़्तार में है: "निकाह के बाद ख़लवत (एकांत) सोहबत (संभोग) की तरह मेहर लाज़िम कर देती है, बशर्ते कि ख़लवत के दौरान कोई रुकावट न हो।" (मुख़्तसरन व मुलख़ख़सन)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1. फ़तहुल क़दीर, फ़स्ल फ़िल वकाला बिल निकाह, अल-मकतबा अन-नूरिया अर-रज़विया, सुक्कुर, 3/197
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ां, फ़स्ल फ़िल ख़ियारात अल्लती ततअल्लकु बिल निकाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/187

3. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल मेहर, मुज्तबाई, दिल्ली, 1/98-99

पेज 118 ऑफ़ 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

فتح القدیر میں ہے: وکلتہ ان یزوجھا مطلقا فانہ لو زوجھا من نفسہ لایجوز-1 اگر بالغہ نے کسی کو کہا کہ میرا نکاح کردے اور کوئی تخصیص نہ کی اس صورت میں اگر اس شخص نے اس کا نکاح خود اپنے ساتھ کرلیا تو جائز نہ ہوگا۔ (ت)

الحمد للہ حکم مسئلہ مفصل و منقح ہوگیا اور سوال کی صورت کلیہ یعنی "تولی الواحد طرفی النکاح" اور الفاظ جزئیہ یعنی "زوجت بنت عمی فلانۃ من نفسی" (نکاح کی دونوں جانب سے ایک ہی شخص کا ولی بننا اور جزئیہ کے الفاظ کہ میں نے چچا زاد کا نکاح اپنے ساتھ کرلیا۔ ت) دونوں کے متعلق احکام وخلافیات علمائے کرام و تصحیحات ائمہ وغیرہا ضروریات متعلقہ مقام سب نے وضوح تام وانجلاءِ تمام پایا اسی قدر بس ہے اور زیادہ تفصیل کی حاجت نہیں، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳: علمائے دین اور مفتیانِ شرع متین بیچ اس مقدمہ کے کیا فرماتے ہیں ایک عورت ہے کہ اس کے علامت سوائے مخرج بول کے اور نہیں ہے اور نکاح اس کا زید سے ہوگیا ہے، بعد نکاح ہونے کے یہ حال معلوم ہوا ، اب اس کا نکاح درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مسئولہ میں وہ نکاح صحیح اور نصف مہر ذمہ زید لازم،

في فتاوی الامام قاضی خان، خیار العیب وھو حق الفسخ بسبب العیب عندنا لایثبت فی النکاح فلا ترد المرأۃ بعیب ما2 فتاوٰی قاضی خاں میں ہے خیارِ عیب جو کہ عیب کی وجہ سے حق فسخ کا نام ہے، ہمارے نزدیک یہ نکاح میں ثابت نہیں ہوتا، لہٰذا کسی عیب کی بنا پر عورت کا نکاح رد نہ ہوگا۔

وفي الدرالمختار الخلوة بلا مانع کالوطی فی تأکد المهر انتهی3 مختصراً و ملخصاً، واللہ تعالیٰ اعلم۔

در مختار میں ہے کہ نکاح کے بعد خلوت وطی کی طرح مہر لازم کردیتی ہے بشرطیکہ خلوت کے دوران کوئی مانع نہ ہو اھ مختصراً و ملخصاً واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

1. فتح القدیر فصل فی الوکالۃ بالنکاح المکتبۃ النوریۃ الرضویہ سکھر ۳/ ۱۹۷
2. فتاوٰی قاضیخاں فصل فی الخیارات التي تتعلق بالنکاح نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۸۷
3. درمختار باب المهر مجتبائی دہلی ۱/ ۹۸-۹۹

Fatawa Rizvia, Volume 11

Question 4: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid and Hindah have lived together in a house for nineteen or twenty years without formality as husband and wife. Zaid provides her with clothing and manages all household affairs for her just like the women of the brotherhood/community. She visits the family on occasions of weddings and funerals, and she is famously known as Zaid's wife. Zaid is a righteous man, and his appearance does not give rise to any suspicion of immorality. Will this man and woman be considered husband and wife? And will the marriage be established by the testimony of those who were not present at the marriage ceremony but are aware of this state of affairs? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the described situation, that man and woman will be considered husband and wife to the extent that individuals who are aware of this state can testify to their being husband and wife. It is stated in Al-Hidayah:

[Arabic Text]: "And similarly, if one sees a person presiding over a court session with litigants appearing before him, it is permissible for him to testify that he is a judge. Likewise, if he sees a man and a woman living in a house, each being at ease with the other as spouses are." [1] [Urdu Translation]: And similarly, if someone saw a person in a court session and saw different parties coming and going to him for decisions, it is permissible for him to testify to that person being a judge. And similarly, if he saw a man and a woman in a room behaving with each other like husband and wife.

[Arabic Text]: "And in Al-Khulasa: As for marriage, if someone sees a man visiting a woman and hears from people that so-and-so is the wife of so-and-so, it is permissible for him to testify that she is his wife, even if he did not witness the marriage contract." [2] [Urdu Translation]: And in Al-Khulasa, it is stated regarding the proof of marriage that if someone saw a man coming and going to a woman and also heard from people that this man and woman are husband and wife to each other, it is permissible for the witness to testify to that woman being the wife of that man, even though he did not see the gathering of their marriage contract.

[Arabic Text]: "And in Fatawa Qadikhan: If someone sees a man and a woman living in a house and being at ease with each other as spouses are, it is permissible for him to testify to their marriage." [3] [Urdu Translation]: And in Fatawa Qadikhan, it is stated that if someone saw a man and a woman living in a house and found them to be

without formality with each other like husband and wife, it is permissible for him to give testimony of the marriage of those two. (T)

[1] Hidayah, Kitab al-Shahadat, Matba' Yusufi, Lucknow, 3/158 [2] Khulasat al-Fatawa, Kitab al-Shahadat, Chapter 1, Maktaba Habibiya, Quetta, 2/52 [3] Fatawa Qadikhan, Chapter on Testimony regarding Marriage, Naval Kishore, Lucknow, 1/185

फतावा रिज़विया, जिल्द 11

मस्अला 4: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद और हिन्दा उन्नीस-बीस साल से एक ही मकान में बे-तकल्लुफ़ मियाँ-बीवी की तरह रहते हैं, और ज़ैद उसे लिबास और घर के तमाम मामलों में बिरादरी की औरतों की तरह रखता है, ख़ानदान में शादी और ग़मी के मौकों पर उसका आना-जाना रहता है, और वह ज़ैद की बीवी के तौर पर मशहूर थी, और ज़ैद एक नेक इंसान था, उसके किरदार पर बदकारी का कोई शक नहीं होता, क्या यह मर्द और औरत पति-पत्नी माने जाएंगे? और जो लोग निकाह की मजलिस में मौजूद नहीं थे लेकिन इस हाल से वाकिफ़ हैं, क्या उनकी गवाही से निकाह साबित होगा या नहीं? बयान फ़रमाएं, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: पूछी गई सूरत में, वे मर्द और औरत पति-पत्नी तसव्वुर किए जाएंगे यहाँ तक कि जो लोग इस हाल से वाकिफ़ हैं वे उनके पति-पत्नी होने पर गवाही दे सकते हैं। हिदाया में है:

[अरबी इबारत]: "और इसी तरह, अगर किसी ने एक व्यक्ति को अदालत की सभा में बैठे देखा और उसके पास फ़ैसले के लिए अलग-अलग पक्षों को आते-जाते देखा, तो उसके लिए यह जायज़ है कि वह उस व्यक्ति के क़ाज़ी होने की गवाही दे। और इसी तरह अगर उसने किसी मर्द और औरत को एक ही घर में पति-पत्नी की तरह एक-दूसरे के साथ सहज व्यवहार करते देखा।" [1] [उर्दू तर्जुमा]: और ऐसे ही अगर किसी ने एक शख़्स को मजलिस-ए-क़ज़ा पर देखा और उसके यहाँ फ़ैसले के लिए मुख़्तलिफ़ फ़रीक़ों का आना-जाना देखा तो उसको जायज़ है कि वह शख़्स के क़ाज़ी होने की गवाही दे, और ऐसे ही अगर किसी मर्द व औरत को एक कमरे में ख़ावन्द बीवी की तरह एक दूसरे के साथ बर्ताव करते देखा।

[अरबी इबारत]: "और 'अल-ख़ुलासा' में है: निकाह के बारे में, अगर किसी ने एक व्यक्ति को औरत के पास आते-जाते देखा और लोगों से सुना कि फ़लाँ औरत फ़लाँ की बीवी है, तो उसके लिए यह मुमकिन है कि वह गवाही दे कि वह उसकी बीवी है, भले ही उसने निकाह का अनुबंध (अक़्द) न देखा हो।" [2] [उर्दू तर्जुमा]: और 'ख़ुलासा' में है कि निकाह के सुबूत में अगर किसी ने एक शख़्स को औरत के यहाँ आते जाते देखा और लोगों से भी सुना कि ये मर्द औरत आपस में ख़ावन्द बीवी हैं तो देखने सुनने वाले को जायज़ है कि वह उस औरत के उस मर्द की बीवी होने की शहादत दे अगरचे उसने उनके निकाह की मजलिस न देखी हो।

[अरबी इबारत]: "और 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ' में है: अगर कोई मर्द और औरत को एक मकान में रहते और एक-दूसरे के साथ पति-पत्नी की तरह सहज व्यवहार करते देखे, तो उसके लिए उनके निकाह की गवाही देना जायज़ है।" [3] [उर्दू तर्जुमा]: और 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ' में है कि अगर किसी ने मर्द व औरत को एक मकान में रहते देखा और उनको आपस में मियाँ बीवी की तरह बे-तकल्लुफ़ पाया तो उसके लिए उन दोनों के निकाह की शहादत देना जायज़ है। (त)

[1] हिदाया, किताबुश शहादात, मतबा यूसुफ़ी, लखनऊ, 3/158 [2] ख़ुलासतुल फ़तावा, किताबुश शहादात, फ़स्ल अव्वल, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/52 [3] फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ, फ़स्ल फ़िश शहादा अलल निकाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/185

पेज 119/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۴ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید وہندہ انیس بیس برس ایک مکان میں بے تکلف بطور زن و شوہر رہتے، اور زید لباس اور جملہ امور خانہ داری میں اسے مثل زنانِ برادری رکھتا، خاندان میں آمد و رفت اس کی بتقریب شادی و غمی رہتی، اور زوجہ زید مشہور تھی، اور زید مردِ پارسا تھا، اس کی وضع پر گمان بدکاری نہیں ہوتا، آیا مرد و زن زوج و زوجہ تصور کئے جائیں گے؟ اور جو لوگ جلسہ نکاح میں موجود نہ تھے مگر اس حال سے واقف ہیں ان کی گواہی سے نکاح ثابت ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مسئولہ میں وہ مرد و زن، زوج و زوجہ تصور کئے جائیں گے یہاں تک کہ جو اشخاص اس حال سے واقف ہیں ان کے زوج و زوجہ ہونے پر گواہی دے سکتے ہیں، ہدایہ میں ہے:

[جدول] [کالم ۱: عربی عبارات] وكذالك لورأى انساناً جلس مجلس القضاء يدخل عليه الخصوم حل له ان يشهد على كونه قاضياً وكذا اذا رأى رجلاً وامرأة يسكنان بيتاً ينبسط كل واحد منهما الى الآخر انبساط الازواج ۱ وفي الخلاصة واما النكاح اذا رأى رجلاً يدخل على امرأة وسمع من الناس ان فلانة زوجة فلان وسعه ان يشهد انها زوجته وان لم يعاين عقد النكاح ۲ وفی فتاوی قاضیخان ولو رأى رجلاً وامرأة يسكنان في منزله وينبسط كل واحد منهما على صاحبه كما يكون بين الازواج حل له ان يشهد على نكاحهما ۳۔

[کالم ۲: اردو ترجمہ] اور ایسے ہی اگر کسی نے ایک شخص کو مجلسِ قضاء پر دیکھا اور اس کے ہاں فیصلے کے لیے مختلف فریقوں کا آنا جانا دیکھا تو اس کو جائز ہے کہ وہ شخص کے

قاضی ہونے کی گواہی دے، اور ایسے ہی اگر کسی مرد و عورت کو ایک کمرے میں خاوند بیوی کی طرح ایک دوسرے کے ساتھ برتاؤ کرتے دیکھا، اور خلاصہ میں ہے کہ نکاح کے ثبوت میں اگر کسی نے ایک شخص کو عورت کے ہاں آتے جاتے دیکھا اور لوگوں سے بھی سنا کہ یہ مرد عورت آپس میں خاوند بیوی ہیں تو دیکھنے سننے والے کو جائز ہے کہ وہ اس عورت کے اس مرد کی بیوی ہونے کی شہادت دے اگرچہ اس نے ان کے نکاح کی مجلس نہ دیکھی ہو، اور فتاوٰی قاضی خاں میں ہے کہ اگر کسی نے مرد و عورت کو ایک مکان میں رہتے دیکھا اور ان کو آپس میں میاں بیوی کی طرح بے تکلف پایا تو اس کے لیے ان دونوں کے نکاح کی شہادت دینا جائز ہے۔ (ت)

---

1 ہدایہ کتاب الشہادۃ مطبع یوسفی لکھنو ۳/ ۱۵۸ 2 خلاصۃ الفتاوی کتاب الشہادۃ الفصل الاول مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۲/ ۵۲ 3 فتاوی قاضی خاں فصل فی الشہادۃ علی النکاح نولکشور لکھنو ۱/ ۱۸۵

Fatawa-e-Razvia Volume 11

And if witnesses state them to be husband and wife and say, "We were not present at the marriage ceremony, but this matter is well-known," then their testimony is legally (shari'ah-wise) acceptable and the marriage will be established. It is in Durr-e-Mukhtar:

Rather, it is reported in Al-Azmiyyah from Al-Khaniyyah that the meaning of the two interpretations is that they both say: "We testify because we heard from the people." However, if they say: "We did not witness that, but it has become well-known among us," it is permissible in all [cases], and the commentator of Al-Wahbaniyyah and others have declared it correct. And Allah Almighty knows best.

Rather, it is narrated from Khaniyah in Azmiyah that the witnesses, while explaining, say that we heard from the people. But even if it is said that we did not see the marriage taking place but it is famous among our people that (they both are husband and wife), then in all situations the testimony will be correct. The commentator of Wahbaniyah etc. has declared this statement correct. And Allah Almighty knows best.

(T)

1 Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Shahadat, Mujtabai Press Delhi, 2/93.

फतावा रज़विया जिल्द 11

और अगर गवाह उन्हें पति-पत्नी बताएं और कहें कि हम निकाह की महफ़िल में नहीं थे लेकिन यह बात मशहूर है, तो उनकी गवाही शरीयत के अनुसार स्वीकार्य है और निकाह साबित हो जाएगा। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

बल्कि 'अल-अज़मिया' में 'अल-ख़ानिया' से नक़ल है कि दो व्याख्याओं का अर्थ यह है कि वे दोनों कहें: "हमने गवाही दी क्योंकि हमने लोगों से सुना।" लेकिन अगर उन्होंने यह भी कहा: "हमने वह नहीं देखा, लेकिन यह हमारे बीच प्रसिद्ध है," तो यह सभी (स्थितियों) में जायज़ है, और अल-वहबानिया के व्याख्याकार और अन्य ने इसे सही माना है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

बल्कि अज़मिया में ख़ानिया से नक़ल है कि गवाह तफ़्सीर (व्याख्या) करते हुए कहें कि हमने लोगों से सुना है। लेकिन अगर यूँ भी कह दिया कि हमने निकाह होते नहीं देखा लेकिन हमारे यहाँ लोगों में मशहूर है कि (दोनों मियाँ-बीवी हैं) तो तमाम सूरतों में शहादत दुरुस्त होगी। इस क़ौल को शारेह वहबानिया वग़ैरह ने सही क़रार दिया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(त)

1 दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुश शहादात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/93

पेज 120 का 739

اور گواہ اگر انھیں زوج زوجہ بیان کریں اور کہیں ہم جلسہ نکاح میں نہ تھے لیکن یہ امر مشہور ہے تو ان کی گواہی شرعاً مقبول ہے اور نکاح ثابت ہو جائے گا۔ در مختار میں ہے:

بل في العزمية عن الخانية معنى التفسيران يقولا شهدنا لانا سمعنا من الناس اما لو قالا لم نعاين ذلك ولكنه اشتهر عندنا جازت في الكل وصححه شارح الوهبانية وغيره - والله تعالى اعلم-

بلکہ عزمیہ میں خانیہ سے منقول ہے کہ گواہ تفسیر کرتے ہوئے کہیں کہ ہم نے لوگوں سے سنا ہے۔ لیکن اگر یوں بھی کہہ دیا کہ ہم نے نکاح ہوتے نہیں دیکھا لیکن ہمارے ہاں لوگوں میں مشہور ہے کہ (دونوں میاں بیوی ہیں) تو تمام صورتوں میں شہادت درست ہوگی۔ اس قول کو شارح وہبانیہ وغیرہ نے صحیح قرار دیا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

(ت)

1 درمختار کتاب الشہادات مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۹۳

Volume 11 | Fatawa Ridawiyya

Treatise

Ubab-ul-Anwar an la Nikah bi-Mujarrad-il-Iqrar (1307 AH) (Waves of light regarding the non-establishment of marriage solely based on acknowledgment)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Problem 605: From Punjab, Ferozepur Sadar Bazaar, Jamia Mosque, sent by Maulvi Fazal-ur-Rehman Sahib, 4 Jumada al-Ula 1307 AH.

From the humble Muhammad Fazal-ur-Rehman, to the presence of his eminence, the manifestation of religious sciences and the source of worldly blessings, Hazrat Maulana, endowed with excellence and perfection, our master Maulana Muhammad Ahmed Raza Khan Sahib, the scholar of Bareilly, may his powerful grace endure. Assalamu Alaikum!

Question (1): Zaid married Hindah, who had repented of her heinous and vile act, by going to another district so that no one would interfere or hinder this good deed. When the people of that district inquired of them, "Has your marriage taken place?", they replied, "Our marriage took place for this much dower (Mehr)". Is this form of marriage valid?

(2): If Zaid acknowledged that "she is my wife" and Hindah stated that "he is my husband", and these statements were made solely before witnesses; do these words establish the marriage? In this scenario, there was no mention of dower. After coordinating and reconciling the narrations, please grant a reply adorned with a seal and signature for the sake of Allah, so that no ignorant person has any room for doubt in the future. Peace be upon you and respect.

Page 122 of 739

खंड 11 | फ़तावा रज़विया

रिसाला (लघुग्रंथ)

उबाब-उल-अनवार अन ला निकाह बि-मुजर्रद-इल-इकरार (1307 हिजरी) (केवल स्वीकारोक्ति के आधार पर निकाह न होने के वर्णन में प्रकाश की लहरें)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

मसला 605: पंजाब, फिरोज़पुर सदर बाज़ार, जामा मस्जिद से, प्रेषक मौलवी फ़ज़लुर्रहमान साहब, 4 जमादी-उल-उला 1307 हिजरी।

फकीर मुहम्मद फ़ज़लुर्रहमान की ओर से, धार्मिक विज्ञान के प्रकटीकरण और सांसारिक अनुग्रह के स्रोत, उत्कृष्टता और पूर्णता से सुसज्जित हज़रत मौलाना, हमारे प्रथम आदरणीय मौलवी मुहम्मद अहमद रज़ा खान साहब, फ़ाज़िल-ए-बरेलवी, अल्लाह उनकी कृपा बनाए रखे। अस्सलामु अलैकुम!

सवाल (1): ज़ैद ने हंदाह से निकाह किया, जिसने अपने घृणित और बुरे कृत्य से तौबा (पश्चाताप) कर ली थी। वे दूसरे जिले में जाकर निकाह किया ताकि कोई इस नेक काम में बाधा न डाले। जब उस जिले के लोगों ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हारा निकाह हो गया है? तो उन्होंने उत्तर दिया कि इतने मेहर (स्त्रीधन) पर हमारा निकाह हुआ है। क्या निकाह का यह रूप सही है?

(2): यदि ज़ैद ने इकरार (स्वीकार) किया कि "यह मेरी पत्नी है" और हंदाह ने बयान दिया कि "यह मेरा पति है", और यह बात केवल गवाहों के सामने कही गई; क्या इन शब्दों से निकाह संपन्न हो जाता है? इस स्थिति में मेहर का ज़िक्र नहीं आया। हदीसों और रिवायतों के समन्वय और सामंजस्य के बाद, कृपया अल्लाह के लिए मुहर और हस्ताक्षर के साथ उत्तर प्रदान करें ताकि भविष्य में किसी अज्ञानी के पास कोई गुंजाइश न रहे। वस्सलाम मअल इकराम।

पृष्ठ 122/739

جلد یاز دہم | فتاویٰ رضویہ

رسالہ

عُبَابُ الْاَنْوَارِ اَنْ لَّا نِکَاحَ بِمُجَرَّدِ الْاِقْرَارِ ۱۳۰۷ھ (محض اقرار کی بنیاد پر نکاح نہ ہونے کے بیان میں انوار کی موج)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۶۰۵: از پنجاب فیروز پور صدر بازار مسجد جامع مرسلہ مولوی فضل الرحمن صاحب ۴ جمادی الاولی ۱۳۰۷ھ

از فقیر محمد فضل الرحمن بخدمت حضرت فیض درجت مظہر علوم دینی و مصدر فیوض دنیوی جناب مولانا بالفضل والاکمال اولنا جناب مولوی محمد احمد رضا خان صاحب فاضل بریلوی دام فیضہ القوی السلام علیکم !

سوال (۱) زید نے ہندہ سے جو اپنے فعلِ شنیع قبیح سے تائب ہوئی، غیر ضلع میں جا کر نکاح کیا تا کہ کوئی مخل اور مانع اس کار خیر کا نہ ہو، اہل ضلع نے جب ان سے استفسار کیا کہ تمہارا نکاح ہوا ہے ؟ تو انھوں نے یہ پاسخ دیا کہ اس قدر مہر پر ہمارا نکاح ہوا ہے، آیا یہ صورتِ نکاح صحیح ہے؟

(۲) اگر زید نے اقرار کیا کہ یہ میری بی بی ہے اور ہندہ نے بیان کیا کہ یہ میرا خاوند ہے یہ قیل و قال محض شہود میں بیان کی گئی، کیا ان الفاظ سے انعقادِ نکاح ہو جاتا ہے، اس صورت میں ذکرِ مہر نہیں آیا، بعد توفیق و تطبیق روایات کے جواب مزین بمہر و دستخط فرما کر للہ عطا فرمایا جائے تاکہ آئندہ کسی جاہل کو مجالِ باقی نہ رہے والسلام مع الاکرام۔

Fatawa Razawiya, Volume 11

The Answer: [Arabic: Praise be to You, O Lord of lords! Send blessings upon the Beloved who turns (towards You) along with his family and companions, and guide us to truth and correctness. Amen, O our God, the Bestower!] All praise is for You alone, O Lord who nourishes all! Shower mercy upon the most turning Beloved and send peace upon him along with his family and companions, and guide us upon truth and correctness, Amen, O our Allah, the Bestower! (t)

You were kind, peace be upon you and the mercy of Allah. Indeed, this matter is worthy of deep consideration and reflection. So I say: and success is by Allah and through Him is reaching the peak of investigation. (So I say with the guidance of Allah the Almighty and reaching the heights of investigation is with His help. t) There is no doubt that in a judicial ruling, marriage is established by the mutual affirmation of the man and woman. That is, when they both confess that they are husband and wife or that marriage has taken place between them, or other words that convey this meaning, then undoubtedly they will be considered husband and wife, and legally all rulings of marriage will be established. Rather, in the view of people, even a lesser matter is sufficient for the proof of marriage: when a man and woman are seen living in a house like husband and wife and sharing the intimacy of a married couple, then thinking ill of them is forbidden, and it is permissible to testify to them being husband and wife, even if the marriage contract itself was not witnessed.

[Arabic: It is explicitly stated in al-Hidayah, al-Hindiyyah, and others; and in Qurrat al-Uyun from al-Durar: "Whoever sees a man and a woman between whom there is the intimacy of spouses, he may testify that she is his wife."] In al-Hidayah, al-Hindiyyah, etc., and Qurrat al-Uyun from Durar, it is mentioned in all these books that whoever sees a man and woman interacting freely like husband and wife, it is permissible for him to testify that the woman is the man's wife. (t)

Similarly, hearsay (general repute) is also sufficient for established marriage among listeners. That is, when their being husband and wife is well-known among people, they shall be considered as such, and testimony to their marriage will be valid even if the confession was not heard directly from their own mouths.

[Arabic: As mentioned in al-Durr al-Mukhtar and common books of jurisprudence.] As it is in Durr-e-Mukhtar and general books and...

[Footnote 1: Qurrat 'Uyun al-Akhyar, Kitab al-Shahadat, Mustafa al-Babi Egypt, 1/71.]
Page 123 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

जवाब: [अरबी पाठ: सब प्रशंसा तेरे लिए है, ऐ रब्बों के रब्ब! मुड़कर आने वाले महबूब पर उनकी आल और असहाब के साथ दुरूद भेज, और हमें हक़ और दुरस्त रास्ते की हिदायत दे। आमीन, ऐ हमारे खुदा, अता करने वाले!] तमाम जहानों को पालने वाले ऐ रब! तेरे लिए ही तमाम हम्द है, सबसे ज़्यादा रुजू फ़रमाने वाले महबूब पर रहमत न्योछावर फ़रमा और उस पर उसकी आल और असहाब के साथ सलामती नाज़िल फ़रमा, और हमारी हक़ और सवाब पर रहनुमाई फ़रमा, आमीन, ऐ अता करने वाले हमारे अल्लाह तआला! (त)

आपने करम फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह। वाकई यह मसला गहरे गौर-ओ-फ़िक्र के लायक है। तो मैं कहता हूँ: और कामयाबी अल्लाह की तौफ़ीक़ से है और तहक़ीक़ की बुलंदी तक पहुँचना उसी की मदद से है। (तो मैं कहता हूँ अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से और तहक़ीक़ की बुलंदी तक पहुँचना उसी की मदद से है। त) इसमें कोई शक नहीं कि अदालती हुक्म में निकाह मर्द और औरत के आपसी इक़रार से साबित हो जाता है। यानी जब वे दोनों इक़रार करें कि हम मियाँ-बीवी हैं या आपस में निकाह हो गया है या ऐसे अन्य शब्द जो इस अर्थ को बताते हों, तो निःसंदेह उन्हें मियाँ-बीवी माना जाएगा और कानूनी तौर पर निकाह के तमाम नियम साबित होंगे। बल्कि लोगों के नज़दीक निकाह के सबूत के लिए इससे भी कम बात काफ़ी है: जब किसी मर्द और औरत को मियाँ-बीवी की तरह एक ही मकान में रहते और मियाँ-बीवी जैसा मेल-जोल रखते देखा जाए, तो उनके बारे में बुरा सोचना हराम है, और उनके मियाँ-बीवी होने पर गवाही देना जायज़ है, भले ही निकाह होते हुए न देखा हो।

[अरबी पाठ: हिदाया, हिन्दिया और अन्य में इसका स्पष्ट उल्लेख है; और 'कुर्रतुल उयून' में 'दुरर' के हवाले से: "जो किसी मर्द और औरत को देखे कि उनके बीच पति-पत्नी जैसा बर्ताव है, तो वह गवाही दे सकता है कि वह उसकी पत्नी है।"] हिदाया, हिन्दिया और अन्य किताबों में और 'कुर्रतुल उयून' में 'दुरर' से, इन सब किताबों में है कि जिसने मर्द और औरत को मियाँ-बीवी की तरह बेतकल्लुफ़ मामलात करते देखा, उसके लिए जायज़ है कि वह उस औरत के मर्द की बीवी होने की गवाही दे। (त)

इसी तरह लोगों के बीच मशहूर होना भी सुनने वालों के नज़दीक निकाह साबित करने के लिए काफ़ी होता है। यानी जब उनका मियाँ-बीवी होना लोगों में मशहूर हो, तो उन्हें यही समझा जाएगा, और निकाह पर गवाही देना सही होगा भले ही खुद उनकी ज़बान से इक़रार न सुना हो।

[अरबी पाठ: जैसा कि 'दुर्रे मुख्तार' और आम किताबों में है।] जैसा कि 'दुर्रे मुख्तार' और आम किताबों में और...

[पाद-टिप्पणी 1: कुर्रतुल उयूनुल अख़्यार, किताबुश शहादात, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/71] पृष्ठ 123 (739 में से)

فتاوٰی رضویہ (جلد یازدہم)

الجواب: لك الحمد رب الارباب صل علی الحبیب الاواب مع الال والاصحاب واھدنا الحق والصواب امین الھنا الوھاب۔ تمام کو پالنے والے اے رب! تیرے لیے ہی تمام حمد ہے، سب سے زیادہ رجوع فرمانے والے محبوب پر رحمت نچھاور فرما اور اس پر مع اس کی آل واصحاب سلامتی نازل فرما اور ہماری حق وصواب پر رہنمائی فرما، آمین، اے عطا کرنے والے ہمارے اللہ تعالٰی! (ت)

کرم فرمایا السلام علیکم ورحمۃ اللہ واقعی یہ مسئلہ قابل امعانِ انظار واعمالِ افکار ہے، فأقول: وباللہ التوفیق و بہ الوصول الی اوج التحقیق (پس میں کہتا ہوں اللہ تعالٰی کی توفیق سے اور تحقیق کی بلندی تک پہنچنا اسی کی مدد سے ہے۔ت) اس میں شک نہیں کہ حکمِ قضا میں نکاح تصادقِ مرد و زن سے ثابت ہوجاتا ہے یعنی جب وہ دونوں اقرار کریں کہ ہم زوج وزوجہ ہیں یا باہم نکاح ہوگیا ہے یا اور الفاظ جو اس معنی کو مودی ہوں تو بلاشبہ انھیں زوج وزوجہ جانیں گے اور قضاءً تمام احکامِ زوجیت ثابت ہوں گے بلکہ عند الناس اس سے بھی کمتر امر ثبوتِ نکاح کو کافی ہے جب مرد وزن کو دیکھے مثلِ زن وشو ایک مکان میں رہتے اور باہم انبساطِ زن وشوئی رکھتے ہیں تو ان پر بد گمانی حرام، اور ان کے زوج وزوجہ ہونے پر گواہی دینی جائز، اگرچہ عقدِ نکاح کا معائنہ نہ کیا ہو،

نص علیه فی الھدایه والھندیة وغیرھما وفی قرة العیون عن الدرر ویشھد من رأی رجلا وامرأة بینھما انبساط الازواج انھا عرسه -1- ہدایہ، ہندیہ وغیرہما اور قرۃ العیون میں درر سے، ان سب کتب میں ہے کہ جس نے مرد و عورت کو خاوند بیوی کی طرح بے تکلف معاملات کرتے دیکھا اس کو جائز ہے کہ مرد کے لیے اس عورت کے بیوی ہونے کی شہادت دے۔ (ت)

اسی طرح تسامع بھی سامعین کے نزدیک اثباتِ نکاح کو بس ہوتا ہے یعنی جب ان کا زوج وزوجہ ہونا لوگوں میں مشہور ہو تو انھیں یہی سمجھا جائے گا، اور زوجیت پر شہادت روا ہوگی اگرچہ خود ان کی زبان سے اقرار نہ سنا ہو۔

کما فی الدر المختار وعامۃ الاسفار و جیسا کہ درمختار اور عام کتب میں اور

1 قرۃ عیون الاخیار کتاب الشہادات مصطفی البابی مصر ۱/ ۷۱ صفحہ 123 از 739

[Arabic Box Text]: In Qurrat al-Uyun from al-Imadiyyah: Testimony based on fame and widespread report is permissible in marriage. Thus, if a person sees a man visiting a woman and hears from people that so-and-so is the wife of so-and-so, he is permitted to testify that she is his wife even if he did not witness the marriage contract. (1) [Urdu Translation of Box]: In Qurrat al-Uyun, it is quoted from Imadiyyah that in the matter of marriage, testimony is permissible based on public reputation without detailed investigation. For instance, if a person sees a man visiting a woman and finds out from the people that this woman is the man's wife, it is permissible for him to testify regarding this woman being that man's wife, even if he did not see the marriage taking place. (T)

Therefore, their mutual confirmation [of marriage] is even more grounds for establishing marriage. [Arabic Box Text]: In al-Shamiyyah from Abu al-Su'ud from al-Allamah al-Hanuti: They explicitly stated that marriage is established by mutual confirmation, and what is meant by it is that the judge establishes it based on that and rules by it. (2) Summarized. [Urdu Translation of Box]: In Fatawa Shami, it is narrated from Abu al-Su'ud from Allamah Hanuti that the jurists have explicitly stated that marriage will be established by the mutual confirmation of the man and woman as husband and wife. This means that the judge will declare this marriage established and enforce it. Summarized. (T)

Therefore, in such a situation, it is mandatory that they be considered husband and wife. Anyone who unnecessarily denies them and treats them with suspicion will be a perpetrator of a categorical prohibition. Despite this, the judicial ruling (Qada) is one thing and the matter of religious conscience (Diyanat) is another. If they are truly truthful in their declaration and report, meaning that in reality marriage has taken place between them, then in the sight of Allah, they are also husband and wife. Otherwise, by mere utterance of these words when they are spoken as a report, marriage will not be contracted; they will remain strangers to each other as before. The matters and actions which marriage establishes as halal will not be established or permissible for them in terms of religious conscience at all, because according to this premise, these words were not a contract or an initiation, but merely a false report; and a false report is religiously void and ineffective. I say: Scholars explicitly state that if a husband made a confession of divorce saying "I have divorced her" while in reality he had not, then it would be a judicial divorce (Qada'an), but religiously (Diyanatan) it would not be a divorce at all, because his statement was not

the act of divorcing, but rather giving a false report of a non-existent divorce. It is mentioned in the commentary of Allamah Tahtawi:

1. Qurrat 'Uyun al-Akhyar, Kitab al-Shahadat, Dar al-Kitab al-Arabiyyah al-Kubra, Egypt, 1/71
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 2/265

[अरबी बॉक्स पाठ]: 'कुर्रतुल उयून' में 'इमादिय्या' से उद्धृत है: निकाह के मामले में प्रसिद्धि और आम चर्चा के आधार पर गवाही देना जायज़ है। यहाँ तक कि अगर कोई व्यक्ति किसी पुरुष को किसी स्त्री के यहाँ आते-जाते देखे और लोगों से सुने कि फलां स्त्री फलां पुरुष की पत्नी है, तो उसके लिए यह जायज़ है कि वह उस स्त्री के बारे में उस पुरुष की पत्नी होने की गवाही दे, भले ही उसने निकाह का अनुबंध होते हुए न देखा हो। (1) [उर्दू अनुवाद बॉक्स]: 'कुर्रतुल उयून' में इमादिय्या से मनकूल है कि निकाह के मामले में शोहरत (प्रसिद्धि) की बिना पर बिना तहक़ीक़ (जांच) के शहादत (गवाही) जायज़ है, यहाँ तक कि एक शख़्स को एक औरत के यहाँ आते-जाते देखा और लोगों से मालूम हुआ कि यह औरत उस शख़्स की बीवी है, तो उसको जायज़ है कि वह उस औरत के बारे में उस शख़्स की बीवी होने की शहादत दे, अगरचे उसने निकाह न देखा हो। (त)

तो उनका आपस में तसादुक़ (एक-दूसरे की पुष्टि करना) निकाह साबित करने के लिए और भी अधिक प्राथमिक है। [अरबी बॉक्स पाठ]: 'शामिया' में अबू सऊद से, उन्होंने अल्लामा हनूती से उल्लेख किया है: उन्होंने स्पष्ट किया है कि निकाह आपसी पुष्टि (तसादुक़) से साबित हो जाता है, और इसका अर्थ यह है कि क़ाज़ी इसके आधार पर इसे साबित करेगा और फैसला देगा। (2) संक्षेपित। [उर्दू अनुवाद बॉक्स]: 'फतावा शामी' में है, अबू सऊद की अल्लामा हनूती से रिवायत है कि फुक़्हा-ए-किराम ने तसरीह (स्पष्ट) की है कि मर्द और औरत की आपस में मियाँ-बीवी होने की तस्दीक़ (पुष्टि) से निकाह साबित हो जाएगा। इससे मुराद यह है कि क़ाज़ी इस निकाह को साबित करार देगा और उसे नाफ़िज़ रखेगा (लागू करेगा)। संक्षेपित। (त)

अतः ऐसी सूरत में वाजिब है कि उन्हें ज़ौज-ओ-ज़ौजाह (पति-पत्नी) ही तसव्वुर किया जाएगा। जो व्यक्ति बिला वजह उनकी तकज़ीब (झुठलाना) करेगा और बदगुमानी (बुरी धारणा) के साथ पेश आएगा, वह मुर्तकिब-ए-हराम-ए-क़तई (घोर पाप का अपराधी) होगा। इसके साथ ही, हुक्म-ए-क़ज़ा और है और अम्र-ए-दियानत और चीज़। अगर वे अपने इज़हार और अख़बार में हक़ीक़तन सच्चे हों, यानी वाक़ई में उनके बीच निकाह हो चुका है, तो खुदा के नज़दीक भी वे मियाँ-बीवी हैं। वर्ना महज़ इन अल्फ़ाज़ से, जबकि वे बतौर-ए-अख़बार (सूचना के रूप में) बयान में आए हों, निकाह मुनअक़िद (संपन्न) न होगा; वे बदस्तूर अजनबी-ओ-अजनबिया (एक-दूसरे के लिए गैर) रहेंगे। निकाह जिन उमूर-ओ-अफ़आल (कार्यों और व्यवहारों) को साबित और हलाल करता है, दियानतन (धार्मिक रूप से) उनके लिए असलन (बिल्कुल) साबित और रवा (जायज़) न होंगे, क्योंकि इस तक़दीर पर ये अल्फ़ाज़

कोई अक़्द (अनुबंध) और इंशा न थे, महज़ झूठी ख़बर थी; और झूठी ख़बर दियानतन बातिल और बेअसर है। मैं कहता हूँ: उलेमा तसरीह फ़रमाते हैं कि अगर शौहर ने इक़रार-ए-तलाक़ किया कि 'मैं उसे तलाक़ दे चुका हूँ' और वाक़ई में नहीं दी थी, तो वह क़ज़ाअन तलाक़ हो गई, मगर दियानतन हरगिज़ न होगी, क्योंकि उसका यह क़ौल तलाक़ देना न था बल्कि तलाक़-ए-ग़ैर-वाक़े की झूठी ख़बर देना था। हाशिया अल्लामा तहतावी में है:

1. कुर्रत उयून अल-अख़्यार, किताबुश शहादात, दारुल किताबुल अरबिया अल-कुबरा, मिस्र, 1/71
2. रद अल-मुह्तार, किताबुन निकाह, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, 2/265

पृष्ठ 124 / 739

[Arabic Box]: في قرة العيون عن العمادية كذا تجوز الشهادة بالشهرة والتسامح في النكاح حتى لو رأى رجلا يدخل على امرأة وسمع من الناس ان فلانة زوجة فلان وسعه ان يشهد انها زوجته وان لم يعاين عقد النكاح $\{1^\}$۔ [Urdu Translation]: قرۃ العیون میں عمادیہ سے منقول کہ نکاح کے معاملہ میں شہرت کی بنا پر بغیر تحقیق شہادت جائز ہے حتی کہ ایک شخص کو ایک عورت کے ہاں آتے جاتے دیکھا اور لوگوں سے معلوم ہوا کہ یہ عورت اس شخص کی بیوی ہے تو اس کو جائز ہے کہ وہ اس عورت کے بارے میں اس شخص کی بیوی ہونے کی شہادت دے اگرچہ اس نے نکاح نہ دیکھا ہو۔ (ت)

توان کا باہم تصادق بدرجہ اولی مثبت نکاح، [Arabic Box]: في الشامية عن ابي السعود عن العلامة الحانوتی صرحوا بأن النكاح يثبت بالتصادق والمراد منه ان القاضي يثبته به ويحكم به $\{2^\}$ اه ملخصاً۔ [Urdu Translation]: فتاوی شامی میں ہے ابی سعود کی علامہ حانونی سے روایت ہے کہ فقہائے کرام نے تصریح کی ہے کہ مرد وعورت کی آپس میں خاوند بیوی ہونے کی تصدیق سے نکاح ثابت ہوجائے گا اس سے مراد یہ ہے کہ قاضی اس نکاح کو ثابت قرار دے گا اور اس کو نافذ رکھے گا اھ ملخصاً (ت)

پس ایسی صورت میں واجب ہے کہ انہیں زوج وزوجہ ہی تصور کیا جائے گا جو خواہی نخواہی ان کی تکذیب کرے گا اور بدگمانی کے ساتھ پیش آئے گا مرتکب حرام قطعی ہوگا بایں ہمہ حکم قضا اور ہے اور امر دیانت اور چیز، اگر وہ اپنے اظہار واخبار میں حقیقۃً سچے ہوں یعنی واقع میں ان کے باہم نکاح ہو لیا ہے تو عند اللہ بھی زوج وزوجہ ہیں ورنہ مجرد ان الفاظ سے جبکہ بطور اخبار بیان میں آئے ہوں نکاح منعقد نہ ہوگا وہ بدستور اجنبی واجنبیہ رہیں گے، نکاح جن امور وافعال کو

ثابت وحلال کرتا ہے دیانۃً ان کے لیے اصلاً ثابت ور روا نہ ہوں گے کہ اس تقدیر پر یہ الفاظ کوئی عقد وانشاء نہ تھے محض جھوٹی خبر تھی اور جھوٹی خبر دیانۃً باطل و بے اثر، اقول: علماء تصریح فرماتے ہیں اگر شوہر نے اقرار طلاق کیا کہ میں اسے طلاق دے چکا ہوں اور واقع میں نہ دی تھی تو وہ قضاءً طلاق ہو گئی مگر دیانۃً ہر گز نہ ہوگی کہ اس کا یہ قول طلاق دینا نہ تھا بلکہ طلاق غیر واقع کی جھوٹی خبر دینا تھا، حاشیہ علامہ طحطاوی میں ہے:

${1^}$ قرة عيون الاخيار كتاب الشهادات دار الكتاب العربية الكبرى مصر ۱/ ۷۱ ${2^}$

ردالمحتار كتاب النكاح دار احياء التراث العربي ۲/ ۲۶۵

Fatawa Razawiyya Volume 11

Falsely declaring a divorce results in a legal divorce (Qaza-an) but not religiously (Diyanat-an). (T)

It is mentioned in Fatawa Khairiyyah: A man gave one revocable (Raj'i) divorce to his wife with whom marriage was consummated. When asked how many divorces he gave, he falsely replied "three". Religiously (near Allah), only the one revocable divorce he gave has occurred. Thus, religiously, he has the right to revoke the divorce during the waiting period (Iddah). (Summary) (T)

When a divorce does not occur near Allah through a declaration contrary to reality, then a marriage will certainly not be established in the same way. Divorce is a cause for the prohibition of the private part (sexual relations), while marriage is a cause for its permissibility. In matters of the private part, great caution is necessary. Therefore, scholars of the texts, commentaries, and fatwas explicitly state that a mere declaration by a man and woman does not establish a marriage. This is firmly stated in "Waqayah", "Nuqayah", "Islah", and "Multaqa", all of which are major reliable texts of the school of thought. Books like "Al-Bayhaqi" and "Fatawa Ahl-e-Samarqand" etc., have also restricted themselves to this. It is stated as the chosen (Mukhtar) position in "Sharh Jassas", "Mukhtar al-Nawazil", "Fatawa Khulasa", "Khizanat al-Muftin", "Mukhtar al-Fatawa", "Idah al-Islah", and "Jami' al-Rumuz". "Tanwir al-Absar" and "Durr al-Mukhtar" prioritized this, indicating the weakness of the opposing view. It is termed "Sahih" (correct) in "Fatawa Zahiriyyah" and "Fatawa Alamgiriyyah". "Jawahir al-Akhlati" combined both terms of fatwa, i.e., "Mukhtar" and "Sahih", and added a third, more emphasized and stronger term: "Alayhi al-Fatwa" (the fatwa is based on this). The statements of Allamah Hanuti and Sayyid Abu al-Sa'ud have already been mentioned. Other summarized texts are as follows: In "Waqayah al-Riwayah" and "Mukhtasar al-Waqayah" it says: Marriage is not established by them saying before witnesses "we are husband and wife" (T). In "Sharh Nuqayah Qahustani" it says: According to the chosen opinion, marriage is not established (T). Texts and commentaries by Allamah Ibn Kamal Wazir.

1. Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/106.
2. Fatawa Khairiyyah, Book of Divorce, Topic: He divorced his wife one revocable divorce, etc., Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/38.

3. Nuqayah Mukhtasar al-Waqayah, Book of Marriage, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 51.
4. Jami' al-Rumuz, Book of Marriage, Maktabah al-Islamiyyah Gunbad Qamus Iran, 1/245.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

तलाक का झूठा इकरार काज़ी के यहाँ तलाक माना जाएगा, अल्लाह के नज़दीक नहीं। (त)

फ़तावा खैरिया में है: एक व्यक्ति ने अपनी मदखूला (जिससे सहवास हो चुका हो) पत्नी को एक रजई (वापसी योग्य) तलाक दी। उससे पूछा गया कि तूने अपनी पत्नी को कितनी तलाकें दी हैं? जवाब में उसने झूठ बोलते हुए कहा कि मैंने तीन तलाकें दी हैं। तो अल्लाह के नज़दीक एक ही रजई तलाक होगी जो उसने दी है। लिहाज़ा अल्लाह के नज़दीक उसे इद्दत के दौरान रुजू (वापसी) का हक़ है। संक्षेप में। (त)

तो जब वास्तविकता के विपरीत इकरार से अल्लाह के नज़दीक तलाक नहीं होती, तो निकाह तो और भी प्रथम दृष्टया (बदरजा-ए-औला) स्थापित नहीं होगा। तलाक शर्मगाह की हुरमत (पाबंदी) का कारण है और निकाह उसकी हिल्लत (जायज़ होने) का कारण है, और शर्मगाह के मामले में बड़ी सावधानी ज़रूरी है। इसलिए मूल ग्रंथों (मतून), व्याख्याओं (शरुह) और फतवों के विद्वान स्पष्ट करते हैं कि स्त्री और पुरुष के केवल इकरार से निकाह कदापि स्थापित नहीं होता। इसी पर "वकाया", "नकाया", "इस्लाह" और "मुल्तक़ा" में, जो सभी पंथ के महान प्रामाणिक ग्रंथ हैं, दृढ़ता से कहा गया है। इसी पर "अल-बैहक़ी" और "फ़तावा-ए-अहल-ए-समरकंद" आदि किताबों ने स्वयं को सीमित रखा है। इसी को "शरह जस्सास", "मुख़्तार अल-नवाज़िल", "फ़तावा-ए-खुलासा", "ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीं", "मुख़्तार अल-फ़तावा", "ईज़ाद अल-इस्लाह" और "जामे अल-रुमूज़" में पसंदीदा (मुख़्तार) मत बताया गया है। इसी को "तन्वीर अल-अबसार" और "दुर्रे मुख़्तार" में पहले रखकर विरोधी पक्ष की कमज़ोरी की ओर संकेत किया गया है। इसी को "फ़तावा ज़हीरिया" और "फ़तावा आलमगीरिया" में सही कहा गया है। इसी पर "जवाहर अल-अख़लाती" में इन दोनों फतवा शब्दों यानी मुख़्तार और सही को जमा करके तीसरा अधिक पुख्ता और मजबूत शब्द "अलैहि अल-फ़तवा" जोड़ा गया है। अल्लामा हनूती और सैयद अबू अल-सऊद की इबारतें अभी गुज़रीं, बाकी सारांशित ग्रंथ ये हैं: "वकाया अल-रिवाया" और "मुख़्तसर अल-वकाया" में है: गवाहों के सामने स्त्री-पुरुष का यह कहना कि हम पति-पत्नी हैं, से निकाह नहीं होगा (त)। "शरह नकाया क़ुहिस्तानी" में है: पसंदीदा मत के अनुसार निकाह स्थापित नहीं होता (त)। अल्लामा इब्ने कमाल वज़ीर के मूल ग्रंथ और व्याख्याएं।

1. हाशियत अल-तहतावी अल दुर्रे मुख़्तार, किताब अल-तलाक, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 2/106.

2. फ़तावा खैरिया, किताब अल-तलाक, विषय: उसने अपनी पत्नी को एक रजई तलाक दी आदि, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 1/38.
3. नकाया मुख़्तसर अल-वकाया, किताब अल-निकाह, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृष्ठ 51.
4. जामे अल-रुमूज़, किताब अल-निकाह, मकतबा अल-इस्लामिया गुंबद कामूस ईरान, 1/245.

पृष्ठ 125 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الاقرار بالطلاق کاذباً یقع بہ الطلاق قضاءً لادیانۃ - طلاق کا جھوٹا اقرار قاضی کے ہاں طلاق قرار پائے گا عند اللہ نہیں۔ (ت)

فتاوٰی خیریہ میں ہے: رجل طلق زوجتہ المدخولۃ واحدۃ رجعیۃ فسئل کیف طلقت زوجتك فقال ثلثا کاذبا لا یقع فی الدیانۃ الاما کان اوقعہ من الواحدۃ الرجعیۃ فیملك مراجعتھا فی العدۃ والحال ھذہ اھ ملخصاً۔ ایک شخص نے اپنی مدخولہ بیوی کو ایک رجعی طلاق دی تو اس سے پوچھا گیا کہ تو نے اپنی بیوی کو کتنی طلاقیں دی ہیں، جواب میں اس نے جھوٹ بولتے ہوئے کہا کہ میں نے تین طلاقیں دی ہیں۔ تو عند اللہ ایک ہی رجعی طلاق ہوگی جو اس نے دی ہے تو عند اللہ اس کو عدت کے دوران رجوع کا حق ہے۔ اھ ملخصاً۔ (ت)

تو جب اقرار خلافِ واقع سے عنداللہ طلاق واقع نہیں ہوتی، نکاح بدرجہ اولٰی منعقد نہ ہوگا طلاق سببِ تحریم فرج ہے اور نکاح سببِ تحلیل اور امر فرج میں احتیاط جلیل، ولہٰذا علماءِ متون وشروح وفتاوٰی میں تصریح فرماتے ہیں کہ مجرد اقرار مرد وزن سے نکاح ہر گز منعقد نہیں ہوتا، اسی پر "وقایہ" و "نقایہ" و "اصلاح" و "ملتقٰی" میں کہ سب اعاظم متون معتبرہ مذہب سے ہیں جزم میں فرمایا، اسی پر کتب "البیہقی" و "فتاوائے اہل سمرقند" وغیرہما میں اقتصار کیا، اسی کو "شرح جصاص" و "مختار النوازل" و "فتاوائے خلاصہ" و "خزانیۃ المفتین" و "مختار الفتاوٰی" و "ایضاح الاصلاح" و "جامع الرموز" میں مذہب مختار بتایا، اسی کو "تنویر الابصار" و "در مختار" میں مقدم رکھ کر ضعفِ مخالف کی طرف اشارہ فرمایا، اسی کو "فتاوٰی ظہیریہ" و "فتاوٰی عالمگیریہ" میں صحیح کہا، اسی پر "جواہر الاخلاطی" میں ان دونوں لفظِ فتوٰی یعنی مختار وصحیح کو جمع کرکے تیسرا لفظِ آکد واقوٰی علیہ الفتوٰی اور زائد کیا، علامہ "حانوتی" وسید "ابوالسعود" کی

عبارتیں ابھی گزریں باقی نصوص بالتلخیص یہ ہیں وقایۃ الروایہ ومختصر الوقایہ میں ہے: لا ینعقد بقولہا عند الشہود مازن وشوئیم (گواہوں کے سامنے مرد وعورت کا یہ کہنا کہ ہم بیوی خاوند ہیں، نکاح نہ ہوگا، ت) شرح نقایہ قہستانی میں ہے: لاینعقد علی المختار (مذہبِ مختار پر نکاح منعقد نہیں ہوتا۔ ت) متن و شروح علامہ ابن کمال وزیر

1 حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۲/۱۰۶ 2 فتاوی خیریہ کتاب الطلاق مطلب طلق زوجتہ واحدۃ رجعیۃ الخ دارالمعرفۃ بیروت ۱/۳۸ 3 نقایہ مختصر الوقایہ کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۱ 4 جامع الرموز کتاب النکاح مکتبہ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/۲۴۵

Fatawa Rizvia, Volume 11

In it is: [Arabic Text]: The marriage is not concluded by their saying 'Mazan wa Shu'eem' because marriage is an establishment (ithbat) and this is a declaration (izhar), and declaration is other than establishment. It was mentioned in Al-Takhyir and it is stated in Mukhtarat al-Nawazil that this is the preferred opinion. Urdu Translation: Marriage will not be concluded when they said that 'we are husband and wife', because marriage is the name for establishing a contract, and this acknowledgement of the man and woman is a declaration, and declaration is not establishment. They have mentioned this in Takhyir and it is in Mukhtarat al-Nawazil that this is the chosen school of thought. (T)

In the text of Allama Ibrahim Halabi it is stated: [Arabic Text]: If they both said before witnesses 'Mazan wa Shu'eem', it [marriage] is not concluded. Urdu Translation: If they said before witnesses that 'we are husband and wife', then marriage will not be concluded by this. (T)

In Khaniyah it is stated: [Arabic Text]: Al-Bayhaqi (may Allah Almighty have mercy on him) mentioned in his book: A man and a woman between whom there is no marriage agreed to acknowledge marriage, so they acknowledged it; it does not bind them. He said: Because acknowledgement is news about a previous matter, and it did not precede. Similarly in sale, if they acknowledge a sale that did not exist and then permit it, it is not permitted.

In the same it is stated: [Arabic Text]: It is mentioned in Al-Nawazil: A man and a woman acknowledged before witnesses in Persian 'Mazan wa Shu'eem', the marriage between them is not concluded. Similarly, if he says to a woman 'this [is my wife]'... Urdu Translation: It is mentioned in Nawazil that a man and a woman made this acknowledgement in Persian before witnesses that "we are husband and wife", then marriage will not be concluded by this. Similarly if a man [says to a woman...]

1. Idah wa Islah
2. Multaqa al-Abhur, Kitab an-Nikah, Muassasat ar-Risalah, Beirut 1/238
3. Fatawa Khairiyyah, Kitab an-Nikah, Nawal Kishore, Lucknow 1/139

Page 126 of 739

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 11

में है: निकाह़ मुनअ़क़िद (संपन्न) न होगा जब उन्होंने कहा कि हम बीवी-खा़विन्द हैं, क्योंकि निकाह़, मुआ़मला (अनुबंध) को क़ायम करने का नाम है और मर्द व औरत का यह इक़रार, इज़हार (प्रकटीकरण) है और इज़हार, इस़बात (स्थापना) नहीं है। इसको उन्होंने 'तख़यीर' में ज़िक्र किया है और 'मुख़्तारातुल नवाज़िल' में है कि यही मुख़्तार (चुना हुआ) मज़हब है। (त)

मतन अ़ल्लामा इब्राहीम हलबी में है: अगर उन्होंने गवाहों के सामने कहा कि हम बीवी-खा़विन्द हैं तो इससे निकाह़ मुनअ़क़िद न होगा। (त)

ख़ानिया में है: बैहक़ी रह़मतुल्लाहि तआ़ला ने अपनी किताब में ज़िक्र किया है कि किसी मर्द व औरत में पहले निकाह़ नहीं है, अब उन्होंने बिल-इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) निकाह़ का इक़रार कर लिया तो इस इक़रार से निकाह़ न होगा क्योंकि इक़रार पहले साबित शुदा चीज़ की ख़बर होती है जबकि इक़रार से क़ब्ल (पहले) उनका निकाह़ नहीं था, इसी तरह ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त का मुआ़मला है कि दो फ़रीक़ों (पक्षों) ने बयअ़ (विक्रय) का इक़रार किया हालांकि पहले बयअ़ न थी तो इस इक़रार से बयअ़ मुनअ़क़िद न होगी। (त)

उसी में है: नवाज़िल में मज़कूर है कि मर्द व औरत ने गवाहों के सामने यह इक़रार फ़ारसी में किया कि "हम बीवी-खा़विन्द हैं" तो इससे निकाह़ मुनअ़क़िद न होगा। इसी तरह अगर मर्द ने...

1. ईज़ाह़ व इस़लाह़
2. मुल्तक़ल अबह़ुर किताबुन निकाह़ मुअ़स्ससतुर रिसाला बैरूत 238/1
3. फ़तावा ख़ैरिया किताबुन निकाह़ नवलकिशोर लखनऊ 139/1

पृष्ठ 126 / 739

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

میں ہے: لا بقولہما مآزن وشوئیم لان النکاح اثبات وھذا اظہار والاظہار غیر الاثبات ذکرہ فی التخییر وقال فی مختارات النوازل ھو المختار[1]۔ نکاح منعقد نہ ہوگا جب انھوں نے کہا کہ ہم بیوی خاوند ہیں، کیونکہ نکاح، معاملہ کو قائم کرنے کا نام ہے اور مرد و عورت کا یہ اقرار، اظہار ہے اور اظہار اثبات نہیں ہے اس کو انھوں نے تخییر میں ذکر کیا ہے اور مختارات النوازل میں ہے کہ یہی مختار مذہب ہے۔(ت)

متن علامہ ابراہیم حلبی میں ہے: لو قالا عند الشھود مآزن وشوئیم لا ینعقد[2]۔ اگر انھوں نے گواہوں کے سامنے کہا کہ ہم بیوی خاوند ہیں تو اس سے نکاح منعقد نہ ہو گا۔ (ت)

خانیہ میں ہے: ذکر البیہقی رحمہ اللہ تعالٰی فی کتابہ رجل و امرأۃ لیس بینھما نکاح اتفقا ان یقرا بالنکاح فاقرا لم یلزمھما قال لان الاقرار اخبار عن امر متقدم ولم یتقدم وکذالك فی البیع اذا اقرا ببیع لم یکن ثم اجاز لم یجز[3]۔ بیہقی رحمہ اللہ تعالٰی نے اپنی کتاب میں ذکر کیا ہے کہ کسی مرد و عورت میں پہلے نکاح نہیں ہے اب انھوں نے بالاتفاق نکاح کا اقرار کر لیا تو اس اقرار سے نکاح نہ ہوگا کیونکہ اقرار پہلے ثابت شدہ چیز کی خبر ہوتی ہے جبکہ اقرار سے قبل ان کا نکاح نہیں تھا، اس طرح خرید و فروخت کا معاملہ ہے کہ دو فریقوں نے بیع کا اقرار کیا حالانکہ پہلے بیع نہ تھی تو اس اقرار سے بیع منعقد نہ ہو گی۔ (ت)

اسی میں ہے: ذکر فی النوازل رجل و امرأۃ اقرابین یدی الشھود بالفارسیۃ مآزن وشوئیم لا ینعقد النکاح بینھما وکذا لو قال لامرأۃ ھذہ نواز میں مذکور ہے کہ مرد و عورت نے گواہوں کے سامنے یہ اقرار فارسی میں کیا کہ "ہم بیوی خاوند ہیں" تو اس سے نکاح منعقد نہ ہوگا۔ اسی طرح اگر مرد نے

[1] ایضاح واصلاح [2] ملتقی الابحر کتاب النکاح موسسة الرسالة بیروت ۲۳۸/۱ [3] فتاویٰ خیریہ کتاب النکاح نولکشور لکھنو ۱۳۹/۱

Fatawa Razviya, Volume 11

[Arabic]: "She is my wife" and she said "This is my husband," marriage is not established. [Urdu]: It was said about a woman that she is my wife, and that woman also said that he is my husband, so marriage will not be established by this. (T)

In Fatawa of Imam Allama Husayn bin Muhammad Sam’ani, it is written: [Arabic]: "They acknowledged marriage before witnesses, so he said 'she is my wife' and she said 'he is my husband', it is not established, and this is the preferred view because marriage is establishment ('Ithbat') and acknowledgement ('Iqrar') is disclosure ('Idh-har') not establishment. Therefore, if one falsely acknowledges property for another, ownership is not proven. (Summary). And if a man said 'this is my wife' and the woman said 'this is my husband' in the presence of witnesses, marriage is not established because acknowledgement is news about a preceding matter, and here it is not preceded (by marriage)." (Summary) [Urdu]: A man and a woman said before witnesses that they are husband and wife, then marriage will not take place; this is the preferred view, because marriage is the name for establishment, and acknowledgement is not establishment but disclosure. This is why if someone falsely acknowledged their property for another, ownership would not be established for the other. (Summary). If a man said regarding a woman 'this is my wife' and the woman said 'this is my husband', then through this acknowledgement before witnesses, marriage will not take place because acknowledgement is news about a thing already existing, whereas here marriage is not present. (Fatawa Samarqand). (T)

In the text of Maula Ghazzi and the commentary of Muhaqqiq Alaa'i, it is written: [Arabic]: "Marriage is not established by acknowledgement according to the preferred view. Summary: 'She is my wife'; acknowledgement is a disclosure of what is established, and it is not an initiation ('Insha'), etc. and its completion will follow." [Urdu]: Marriage will not take place by mere acknowledgement according to the preferred view. Summary: Just as a person says 'this is my woman', then marriage will not take place by this acknowledgement because acknowledgement is the name for the disclosure of an established thing and it is not initiation, etc. This will come in full later. (T)

Fatawa Hindiyyah quoted the passage until "this is the preferred view (T)", then wrote: [Arabic/Persian]: "If he said 'This woman is mine' [In zan-e-man ast] in the

presence of witnesses..." [Urdu]: If someone said in the presence of witnesses that 'this is my wife'.

---

1. Fatawa Khaniya, Kitab-un-Nikah, Nawal Kishore Lucknow, 1/149
2. Khizanat-ul-Muftiyeen, Kitab-un-Nikah, Manuscript, 1/76
3. Durr-e-Mukhtar, Kitab-un-Nikah, Matba' Mujtabai Delhi, 1/185 Page 127 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[अरबी]: "वह मेरी पत्नी है" और उसने कहा "यह मेरे पति हैं," निकाह नहीं होता। [उर्दू]: एक महिला के बारे में कहा गया कि यह मेरी पत्नी है और उस महिला ने भी कहा कि यह मेरे पति हैं, तो इससे निकाह सम्पन्न नहीं होगा। (त)

इमाम अल्लामा हुसैन बिन मुहम्मद समानी के फ़तावा में है: [अरबी]: "उन्होंने गवाहों के सामने निकाह का इकरार किया, पुरुष ने कहा 'वह मेरी पत्नी है' और महिला ने कहा 'यह मेरे पति हैं', तो निकाह नहीं होगा, और यही पसंदीदा राय है क्योंकि निकाह 'इसबात' (स्थापित करने) का नाम है और 'इकरार' (स्वीकृति) 'इज़हार' (प्रकट करना) है न कि इसबात। इसी कारण, यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के लिए अपनी संपत्ति की झूठी स्वीकृति देता है, तो स्वामित्व सिद्ध नहीं होता है। (सारांश)। और यदि किसी पुरुष ने गवाहों की उपस्थिति में कहा 'यह मेरी पत्नी है' और महिला ने कहा 'यह मेरे पति हैं', तो निकाह नहीं होता क्योंकि इकरार पूर्ववर्ती मामले की सूचना है, और यहाँ निकाह पहले से मौजूद नहीं है।" (सारांश) [उर्दू]: स्त्री और पुरुष ने गवाहों के सामने कहा कि हम पति-पत्नी हैं तो निकाह नहीं होगा; यही मुख़्तार (पसंदीदा राय) है, क्योंकि निकाह इसबात का नाम है, और इकरार इसबात नहीं बल्कि इज़हार होता है। यही कारण है कि अगर किसी ने किसी दूसरे के लिए अपने माल का झूठा इकरार किया तो दूसरे के लिए मिल्कियत साबित नहीं होगी। (सारांश)। अगर किसी पुरुष ने किसी महिला के बारे में कहा कि यह मेरी पत्नी है और महिला ने कहा यह मेरे पति हैं, तो गवाहों के सामने इस इकरार से निकाह नहीं होगा क्योंकि इकरार पहले से मौजूद चीज़ के बारे में ख़बर होती है जबकि यहाँ निकाह मौजूद नहीं है। (फ़तावा समरकंद)। (त)

मौला ग़ज़्ज़ी के मूल पाठ और मुहाक़्क़िक़ अलाई की शरह (व्याख्या) में है: [अरबी]: "पसंदीदा राय के अनुसार केवल इकरार से निकाह सम्पन्न नहीं होता है। सारांश: 'वह मेरी पत्नी है'; इकरार पहले से स्थापित तथ्य का प्रकटीकरण है, यह कोई नई रचना ('इन्शा') नहीं है, इत्यादि। इसकी पूर्ण व्याख्या आगे आएगी।" [उर्दू]: केवल इकरार से निकाह नहीं होगा मुख़्तार कौल (राय) पर। सारांश: जैसा कि कोई व्यक्ति कहे कि यह मेरी औरत है, तो इस इकरार से निकाह नहीं होगा क्योंकि इकरार स्थापित चीज़ के इज़हार का नाम है और यह इन्शा नहीं होता इत्यादि। यह पूरी बात आगे आएगी। (त)

फ़तावा हिन्दिया में इबारत 'यही मुख़्तार है (त)' तक नक़ल की गई, फिर लिखा: [अरबी/फारसी]: "यदि उसने गवाहों के सामने कहा 'यह औरत मेरी है' [इन ज़न-ए-मन अस्त]..." [उर्दू]: अगर किसी ने गवाहों के सामने कहा कि 'यह मेरी पत्नी है'।

---

1. फ़तावा खानिया, किताब-उन-निकाह, नवल किशोर लखनऊ, 1/149
2. खज़ानत-उल-मुफ़्तीन, किताब-उन-निकाह, हस्तलिखित प्रति, 1/76
3. दुर्रे मुख़्तार, किताब-उन-निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/185 पृष्ठ 127/739

امرأتی وقالت هي هذا زوجي لا یکون نکاحاً۔ ایک عورت کے بارے میں کہا کہ یہ میری بیوی ہے اور اس عورت نے بھی کہا کہ یہ میرا خاوند ہے تو اس سے نکاح منعقد نہ ہوگا۔ (ت)

فتاوٰی امام علامہ حسین بن محمد سمعانی میں ہے: اقرّا بالنکاح بین یدی الشهود فقال مازن وشوئیم لا ینعقد هو المختار لان النکاح اثبات والاظهار غیر الاثبات ولهذا لو اقر بالمال لانسان کاذباً لایصیر ملکاً خ (یعنی الخلاصة) ولو قال الرجل هذه امرأتی وقالت المرأة هذا زوجي بمحضر من الشهود لا یکون نکاحاً لان الاقرار اخبار عن امر متقدم ولم یتقدم (س) (ای فتاوٰی اهل سمرقند)۔ (ملخصاً) مرد و عورت نے گواہوں کے سامنے کہا کہ ہم بیوی خاوند ہیں تو نکاح نہ ہوگا، یہی مختار ہے، کیونکہ نکاح اثبات کا نام ہے، اور اقرار اثبات نہیں ہوتا بلکہ اظہار ہوتا ہے، یہی وجہ ہے کہ اگر کسی نے کسی دوسرے کے لیے اپنے مال کا جھوٹا اقرار کیا تو دوسرے کے لیے ملکیت ثابت نہ ہوگی، خ (یعنی خلاصہ) اگر کسی مرد نے کسی عورت کے متعلق کہا یہ میری بیوی ہے اور عورت نے کہا یہ میرا خاوند ہے، تو گواہوں کے سامنے اس اقرار سے نکاح نہ ہوگا کیونکہ اقرار پہلے سے موجود چیز کے بارے میں خبر ہوتی ہے جبکہ یہاں نکاح موجود نہیں ہے، س (فتاوٰی سمرقند)۔ (ت)

متن مولی غزی و شرح محقق علائی میں ہے: لا ینعقد بالاقرار علی المختار خلاصة هی امرأتی الاقرار اظهار لما هو ثابت ولیس بانشاء الخ وسیأتی تمامہ۔ محض اقرار سے نکاح نہ ہوگا مختار قول پر، خلاصہ۔ جیسا کہ کوئی شخص کہے کہ یہ میری عورت ہے، تو اس اقرار سے نکاح نہ ہوگا کیونکہ اقرار ثابت شدہ چیز کے اظہار کا نام ہے اور یہ انشاء نہیں ہوتا الخ یہ مکمل آئندہ آئے گا۔ (ت)

فتاوٰی ہندیہ میں عبارت خلاصہ ھو المختار (یہی مختار ہے ت) تک نقل کی، پھر لکھا: لو قال این زن من ست بمحضر من الشھود اگر کسی نے گواہوں کے سامنے کہا یہ میری بیوی ہے

---

1 فتاوٰی خانیہ کتاب النکاح نولکشور لکھنو ۱/۱۴۹ 2 خزانۃ المفتین کتاب النکاح قلمی نسخہ ۱/۷۶

3 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۵ Page 127 of 739

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

And the woman said, "This is my husband," while there was no previous marriage between them. The scholars differ on this, but the correct view is that it does not constitute a marriage. This is mentioned in Al-Zahiriyya. In the commentary of Al-Jassas, the preferred view is that it is contracted if a judge rules it to be a marriage, or if witnesses ask them, "Have you made this a marriage?" and they reply "Yes," then it is contracted in this way. This is mentioned in Mukhtar al-Fatawa. (Ends)

(T) I say: (I say-T) The reason for the contraction of marriage in the case of a judge's ruling is that the judge's command resolves disagreement, and the ruling is effective both outwardly and inwardly. In the second case, the reason for contraction is that the answer incorporates the question; since the question mentions establishing it as a marriage, the answer also implies establishment, thus creating the marriage, as stated in Al-Fath, Al-Durr, and others. (T)

It is stated in the Fatawa of Allama Burhan al-Din bin Abi Bakr bin Muhammad Al-Ikhlati Al-Husayni: If both parties acknowledge marriage before witnesses by saying, "We are husband and wife," it will not be contracted; this is the selected view. If a man says in the presence of witnesses, "This is my wife," and the woman says, "This man is my husband," while there was no previous marriage between them, it will not be contracted. This is the correct view and the fatwa is based on it. (T)

1. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Chapter Two, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/271.
2. Jawahir al-Ikhlati, Kitab al-Nikah, Section on words by which marriage is contracted, Manuscript p. 48.

और औरत ने कहा कि "यह मेरा पति है", जबकि उनके बीच पहले कोई निकाह नहीं था। इस बारे में विद्वानों (मशायिख) में मतभेद है, लेकिन सही राय यह है कि निकाह नहीं होगा, ज़हीरिया में इसी प्रकार है। और जस्सास की व्याख्या में है कि यदि काज़ी (न्यायाधीश) ने निकाह का फैसला दे दिया, या गवाहों ने उन दोनों से कहा कि "क्या तुमने इसे निकाह बना लिया है?" और उन्होंने उत्तर में "हाँ" कहा, तो इस प्रकार निकाह संपन्न हो जाएगा, मुख़्तार अल-फ़तावा में ऐसा ही है। (समाप्त)

(त) मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ-त) काज़ी के फैसले की स्थिति में निकाह संपन्न होने का कारण यह है कि काज़ी का आदेश मतभेद को समाप्त कर देता है और फैसला बाह्य और आंतरिक दोनों रूप से प्रभावी होता है। दूसरी स्थिति में संपन्न होने का कारण यह है कि उत्तर में प्रश्न समाहित होता है; चूंकि प्रश्न में निकाह बनाने का उल्लेख है, इसलिए उत्तर में भी निकाह बनाने के उल्लेख से निकाह का निर्माण (इन्शा) हो गया, जैसा कि अल-फ़तह और अल-दुर्र आदि में है। (त)

अल्लामा बुरहानुद्दीन बिन अबी बक्र बिन मोहम्मद इख्लाती हुसैनी के फतावा में है: यदि दोनों ने गवाहों के सामने स्वीकार किया कि "हम पति-पत्नी हैं", तो इससे निकाह नहीं होगा, यही चुनी हुई राय है। यदि किसी पुरुष ने गवाहों की उपस्थिति में कहा, "यह मेरी पत्नी है" और औरत ने कहा, "यह व्यक्ति मेरा पति है", जबकि उनके बीच पहले कोई निकाह नहीं था, तो निकाह संपन्न नहीं होगा। यही सही राय है और इसी पर फतवा है। (त)

1. फतावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, अध्याय दो, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/271.
2. जवाहर इख्लाती, किताबुन निकाह, निकाह संपन्न करने वाले शब्दों का अनुभाग, हस्तलिखित प्रति पृष्ठ 48.

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

اور عورت نے کہا کہ یہ میرا خاوند ہے حالانکہ ان کا پہلے نکاح نہیں تھا، تو اس میں مشائخ کا اختلاف ہے جبکہ صحیح یہی ہے کہ نکاح نہ ہوگا، ظہیریہ میں اسی طرح ہے۔ اور جصاص کی شرح میں ہے کہ اگر قاضی نے نکاح کا فیصلہ دیا یا مرد و عورت کو گواہوں نے کہا کہ تم نے ان الفاظ کو نکاح بنا دیا تو انھوں نے جواب میں ہاں کہہ دیا تو مختار یہ ہے کہ نکاح منعقد ہو جائیگا، مختار الفتاوی میں ایسے ہی ہے۔ اھ

(ت) اقول: (میں کہتا ہوں-ت) قاضی کے فیصلے کی صورت میں نکاح ہو جانے کی وجہ یہ ہے کہ حکم قاضی رافع خلاف ہے اور قضا ظاہراً اور باطناً نافذ ہوتی ہے اور دوسری صورت میں انعقاد کی وجہ سے کہ جواب، سوال پر مشتمل ہوتا ہے تو سوال میں نکاح بنانے کا ذکر ہے تو جواب میں بھی بنانے کے ذکر سے نکاح کا انشاء ہو گیا، جیسا کہ فتح اور دُر وغیرہ میں ہے۔ (ت)

فتاوی علامہ برہان الدین بن ابی بکر بن محمد اخلاطی حسینی میں ہے: دونوں نے گواہوں کے سامنے اقرار کیا کہ ہم بیوی خاوند ہیں تو اس سے نکاح نہ ہوگا یہی مختار ہے مرد نے گواہوں کے سامنے کہا یہ میری بیوی ہے اور عورت نے بھی گواہوں کے سامنے کہا یہ میرا خاوند ہے تو اس سے نکاح نہ ہوگا جبکہ پہلے نکاح نہ تھا یہی صحیح ہے اور اس پر فتوٰی ہے۔ (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۷۱ 2 جواہر اخلاطی کتاب النکاح فصل فیما ینعقد النکاح من الالفاظ قلمی نسخہ ص ۴۸

In short, the distinction between news ('akhbar') and creation ('insha') is self-evident; thus, the intention of news is a contradictory intention, and a contradictory intention negates the contract.

I say: (By my discourse), the doubt that could arise has been dispelled—the doubt being that marriage is among those matters where jest and seriousness are equal, hence it does not require intention or will, to the extent that if a man and a woman utter the words of offer and acceptance jestingly or under duress, the marriage is contracted. Thus, the basis is merely the verbal utterance even in the absence of intention (therefore, in the case of a confession of marriage, it should be valid). The reason for dispelling this doubt is that the absence of intention is one thing, and the intention of a word that could potentially mean something other than the marriage contract is another; there is a great difference between the two. Matters that occur without intention become valid in the first case, i.e., in the case of absence of intention. But they do not become valid if there is an intention for something contradictory. You see that if the word 'talaq' (divorce) is spoken without intention, divorce occurs; but if the same word 'talaq' is spoken while intending another meaning, for example, if 'talaq' is meant as 'untying what is bound', or if by saying 'you are divorced' one intends a true or false report or narration of a previous divorce, then religiously, i.e., in the sight of God, divorce will not occur, as the jurists have clearly stated. Memorize this difference because this research is worthy of acceptance. Although this remained somewhat hidden from some great personalities, this statement concerns explicit words; however, metaphorical words are in any case dependent on intention, just as the difference between explicit and metaphorical exists in divorce and manumission. (T)

And there is no doubt that apparently the common folk might not even know the intention of 'insha' (creating a contract) from these words; rather, the meaning that immediately comes to their mind, which is 'akhbar' (reporting), will be their aim and purpose. Listeners too, upon hearing them, will understand the same. So when in reality no marriage had occurred before this, how can these erroneous questions, answers, and reports make them husband and wife in the sight of God?

This is among those things that are irrational and do not deserve to be accepted.

फ़तावा रज़विया खंड 11

संक्षेप में, समाचार ('अख़बार') और निर्माण ('इंशा') के बीच का अंतर स्वयंसिद्ध है; इस प्रकार, समाचार का इरादा एक विरोधाभासी इरादा है, और विरोधाभासी इरादा अनुबंध को नकारता है।

मैं कहता हूँ: (मेरे इस प्रवचन से), उस संदेह का निवारण हो गया है जो उत्पन्न हो सकता था—संदेह यह कि निकाह (विवाह) उन मामलों में से है जहाँ मज़ाक और गंभीरता बराबर हैं, इसलिए इसमें इरादे या इच्छा की आवश्यकता नहीं होती, यहाँ तक कि यदि एक पुरुष और एक स्त्री मज़ाक में या दबाव में प्रस्ताव और स्वीकृति के शब्द बोल देते हैं, तो निकाह हो जाता है। अतः आधार केवल शब्दों का उच्चारण है भले ही इरादा न हो (अतः निकाह के इक़रार की स्थिति में उसे सही होना चाहिए)। इस संदेह के निवारण का कारण यह है कि इरादे की अनुपस्थिति और निकाह के विरुद्ध किसी संभावित शब्द का इरादा करना अलग-अलग बातें हैं; इन दोनों में बड़ा अंतर है। वे मामले जो इरादे के बिना हो जाते हैं, वे पहली स्थिति में, यानी इरादे की अनुपस्थिति में मान्य हो जाते हैं। लेकिन वे किसी विरोधाभासी चीज़ के इरादे से मान्य नहीं होते। आप देखें कि यदि 'तलाक़' शब्द बिना किसी इरादे के बोला जाए, तो तलाक़ हो जाता है; लेकिन अगर वही शब्द 'तलाक़' बोलकर किसी अन्य अर्थ का इरादा किया जाए, उदाहरण के लिए, यदि 'तलाक़' का अर्थ 'बँधे हुए को खोलना' लिया जाए, या 'तुम तलाक़शुदा हो' कहकर पिछली दी हुई तलाक़ की सच्ची या झूठी सूचना या कहानी सुनाने का इरादा किया जाए, तो धार्मिक रूप से, यानी ईश्वर के समक्ष, तलाक़ नहीं होगा, जैसा कि न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। इस अंतर को सुरक्षित रखें क्योंकि यह शोध स्वीकार किए जाने योग्य है। हालाँकि यह कुछ बड़ी हस्तियों से कुछ हद तक छिपा रहा, फिर भी यह कथन स्पष्ट शब्दों के बारे में है; लेकिन रूपक (किनाया) शब्द हर हाल में इरादे पर निर्भर करते हैं, जैसा कि तलाक़ और दास-मुक्ति (इताक़) में स्पष्ट और रूपक का अंतर मौजूद है। (त)

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्पष्ट रूप से आम लोग इन शब्दों से 'इंशा' (अनुबंध बनाने) के इरादे को जानते भी नहीं होंगे; बल्कि उनके मन में जो अर्थ तुरंत आता है, यानी 'अख़ٻ' (सूचना देना), वही उनका उद्देश्य और मंशा होगी। सुनने वाले भी उन्हें सुनकर यही समझेंगे। तो जब वास्तव में इससे पहले कोई निकाह नहीं हुआ था, तो केवल ये गलत सवाल-जवाब और खबरें उन्हें अल्लाह के नज़दीक पति-पत्नी कैसे बना सकती हैं?

यह उन चीजों में से है जो तर्कहीन हैं और स्वीकार किए जाने योग्य नहीं हैं।

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

بالجملہ اخبار و انشاء کا تباین بدیہی تو ارادہ اخبار ارادہ منافی اور ارادہ منافی عقد کا نافی۔

اقول: وبتقریری ھذا اندفع ماعسی ان یتوھم من ان النکاح مما یستوی فیہ الھزل والجد فلایحتاج الی نیۃ وقصد حتی لو تکلما بالایجاب والقبول ھازلین اومکرھین ینعقد فکان المناط مجرد التلفظ وان عدم القصد وذلك لان بوناً بیناً بین عدم القصد وقصد العدم بإرادۃ شیئ آخر غیرہ مما یحتملہ اللفظ ومالایحتاج الی القصد یصح مع الاول دون الآخر الا تری انہ لوقال انت طالق ولم ینوشیئاً طلقت وان نوی الطلاق عن الوثاق اوالاخبار عن طلاق سابق صادقاً او کاذباً لم تطلق دیانۃ کما نصوا علیہ اتقن ھذا فانہ ھو التحقیق الحقیق بالقبول وان خفی بعضہ علی بعض الفحول، علی ان ھذا انما ھو فی اللفظ الصریح اما الکنایات فلا شك فی توقفھا علی النیۃ کما فی الطلاق والعتاق۔

اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) میری اس تقریر سے اس شبہ کا ازالہ ہوگیا جس میں کہا گیا کہ نکاح تو ان امور میں سے ہے جن میں مذاق اور قصد برابر ہیں لہذا اس میں قصد اور ارادہ کی ضرورت نہیں حتی کہ جب مرد و عورت نے ایجاب قبول کے کلمات بول دیئے اگرچہ مذاق یا جبر سے کہے ہوں تو نکاح ہوجائے گا اس کی صحت کے لیے صرف الفاظ کی ادائیگی کافی ہے اگرچہ قصد نہ بھی ہو (لہذا بصورت اقرار نکاح صحیح ہونا چاہئے) اس شبہ کے ازالہ کی وجہ یہ ہے کہ قصد نہ ہونا اور بات ہے اور نکاح کے خلاف کسی محتمل لفظ کا قصد کرنا اور بات ہے، ان دونوں میں بڑا فرق ہے، وہ امور جو قصد کے بغیر ہوجاتے ہیں وہ پہلی صورت یعنی قصد نہ ہونے کی صورت میں صحیح ہوجاتے ہیں۔ مگر کسی مخالف چیز کے قصد سے وہ صحیح نہیں ہوتے۔ آپ دیکھئے کہ طلاق کا لفظ بغیر ارادہ کے بولا جائے تو طلاق ہو جاتی ہے لیکن اگر یہی لفظ طلاق بول کر کسی

دوسرے معنی کا ارادہ کیا جائے مثلاً طلاق بول کر باندھے ہوئے کو کھولنا مراد لیا جائے یا انت طالق کہہ کر پہلی دی ہوئی طلاق کو سچی یا جھوٹی خبر اور حکایت کا قصد وارادہ کیا جائے تو دیا نۃً یعنی عنداللہ طلاق نہ ہوگی جیسا کہ فقہاء کرام نے اس کو واضح بیان کیا ہے۔ اس فرق کو محفوظ کرو کیونکہ یہ تحقیق قابل قبول ہے۔ اگرچہ یہ قدرے بعض بڑی شخصیات پر مخفی رہا ہے، تاہم یہ بیان صریح الفاظ کے متعلق ہے لیکن کنایہ کے الفاظ بہر حال نیت کے محتاج ہیں، جیسا کہ طلاق وعتاق میں صریح و کنایہ کا فرق موجود ہے۔(ت)

اور شک نہیں کہ ظاہراً عوام ان الفاظ سے ارادہ انشاء کو جانتے بھی نہ ہوں گے بلکہ جوان کا مفہوم متبادر ہے یعنی اخبار وہی ان کا مراد و مقصود ہوگا اور سامعین بھی انہیں سن کر یہی سمجھیں گے تو جبکہ واقع میں اس سے پہلے نکاح نہ ہوا تو صرف یہ سوال وجواب واخیار غلط کیونکر انہیں عنداللہ زوج وزوجہ بنا سکتے ہیں،

هذا مما لا یعقل ولا یستاهل ان یقبل | یہ غیر معقول ہے اور قبول کر لینے کے قابل نہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic Text Column] I say: By the praise of Allah, the weakness of what was narrated in 'At-Tanwir' and 'Ad-Durr' from 'Adh-Dhakirah' has become manifest, after we have previously established the non-occurrence [of marriage] by acknowledgment based on the chosen opinion, as you have heard where it was said following it: "And it was said that if it (the acknowledgment) is in the presence of witnesses, it is valid, and the acknowledgment is considered as a legal creation (insha), and it is the most correct (Asah), Adh-Dhakirah." 1 End of quote. Know, firstly, that the two noble researchers [may Allah Almighty have mercy on them] have pointed out its weakness in several ways. As for the author [of Ad-Durr], by placing the first opinion [non-occurrence] first and expressing the second with 'it was said' (qeela). As for the writer [of At-Tanwir], by confirming both matters and providing reasoning for the first; for providing a reason is a proof of reliance, as stated in 'Al-Uqud ad-Durriyyah' and others. So understand. Secondly, if you ponder over what we have presented to you, the aspects of its weakness will not be hidden from you. For what has preceded in my speech and the words of the noble scholars regarding the non-occurrence [of marriage] by acknowledgment contains irrefutable and undeniable proofs. There is no doubt that the one with stronger evidence is more worthy of reliance. And thirdly, because of the numerous preferences (tarjihat) mentioned for it, and it is established that action should be upon what the majority agrees on...

[Urdu Text Column] I say: By the grace of Allah Almighty, the weakness of what was narrated in 'Tannwir' and 'Durr' from 'Dhakirah' has become clear, where they declared the acknowledgment of marriage as marriage according to the chosen opinion, as you heard. And after that, it was said (that some have said that if this acknowledgment is in the presence of witnesses, the marriage is valid and they declared the acknowledgment as insha [new contract] and termed it as the most correct based on Dhakirah). Firstly, reflect that the two honorable researchers (Shami and Tahtawi, may Allah have mercy on them) pointed towards its weakness for several reasons. Indeed, the author (of Ad-Durr) mentioned the first opinion, i.e., non-occurrence, first and the second with "it was said" (qeela). Although the author of Dhakirah mentioned both opinions, he provided the reason and proof only for the first, which is a sign of it being reliable, as this principle is mentioned in 'Uqud ad-Durriyyah' etc. Reflect. Secondly, if you have considered the aspects of weakness I explained, they are sufficient to clarify the weakness of this narration. For example, firstly, the words mentioned by me and other noble scholars that marriage does not

occur by acknowledgment, and the arguments presented for it are irrefutable. Without doubt, the heavier arguments will be more reliable. Thirdly, because many preferences (tarjihat) have been mentioned for it, and it is an established fact that action is taken upon what the majority agrees on...

1 Durr al-Mukhtar, Kitab an-Nikah, Mujtabai Delhi, 1/86-185.

फ़तावा रज़विया खंड 11

[अरबी पाठ स्तंभ] मैं कहता हूँ: अल्लाह की प्रशंसा से, 'अत-तन्वीर' और 'अद-दुर्र' में 'अज़-ज़खीरा' से जो उद्धृत किया गया है, उसकी कमज़ोरी स्पष्ट हो गई है, जब हमने पहले ही चुनिंदा मत के अनुसार स्वीकृति (इकरार) द्वारा निकाह के न होने को स्थापित कर दिया था, जैसा कि आपने सुना है जहाँ इसके बाद कहा गया: "और यह कहा गया कि यदि यह (स्वीकृति) गवाहों की उपस्थिति में हो, तो यह मान्य है, और स्वीकृति को एक कानूनी रचना (इंशा) माना गया है, और यह सबसे सही (असहा) है, अज़-ज़खीरा।" 1 उद्धरण समाप्त। सबसे पहले यह जान लें कि दोनों महान शोधकर्ताओं [अल्लाह उन पर दया करे] ने कई तरीकों से इसकी कमज़ोरी की ओर इशारा किया है। जहाँ तक लेखक [अद-दुर्र के] का प्रश्न है, उन्होंने पहले मत [निकाह न होना] को पहले रखकर और दूसरे को 'कहा गया' (क़ीला) के साथ व्यक्त किया है। और जहाँ तक संकलनकर्ता [अत-तन्वीर के] का प्रश्न है, उन्होंने दोनों बातों की पुष्टि की और पहले के लिए तर्क दिया; क्योंकि तर्क देना भरोसे का प्रमाण है, जैसा कि 'अल-उक़ूद अद-दुर्रिह' और अन्य में कहा गया है। अतः समझें। दूसरा, यदि आप हमारे द्वारा प्रस्तुत बातों पर विचार करेंगे, तो इसकी कमज़ोरी के पहलू आपसे छिपे नहीं रहेंगे। क्योंकि मेरे शब्दों और प्रतिष्ठित विद्वानों के वचनों में स्वीकृति द्वारा निकाह न होने के संबंध में जो प्रमाण दिए गए हैं, वे अकाट्य और अडिग हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रबल साक्ष्य वाला मत ही भरोसे के योग्य है। और तीसरा, क्योंकि इसके लिए कई प्राथमिकताओं (तरजीहात) का उल्लेख किया गया है, और यह स्थापित है कि कार्य उसी पर होना चाहिए जिस पर बहुमत सहमत हो...

[उर्दू पाठ स्तंभ] मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला की कृपा से, 'तन्वीर' और 'दुर्र' में 'ज़खीरा' से जो उद्धृत किया गया है, उसकी कमज़ोरी स्पष्ट हो गई है, जहाँ उन्होंने निकाह की स्वीकृति को पसंदीदा मत के अनुसार निकाह घोषित किया था, जैसा कि आपने सुना। और उसके बाद यह कहा गया (कि कुछ लोगों ने कहा है कि यदि यह स्वीकृति गवाहों के सामने हो तो निकाह सही है और उन्होंने स्वीकृति को 'इंशा' [नया अनुबंध] घोषित किया और ज़खीरा के हवाले से इसे 'असहा' कहा)। सबसे पहले विचार करें कि दो माननीय शोधकर्ताओं (शामी और तहतावी, अल्लाह उन पर दया करे) ने कई कारणों से इसकी कमज़ोरी की ओर इशारा किया है। वास्तव में, लेखक (अद-दुर्र के) ने पहले मत, यानी निकाह न होने को पहले उल्लेख किया और दूसरे को "क़ीला" (कहा गया) के साथ। हालाँकि ज़खीरा के लेखक ने दोनों मतों का उल्लेख किया, लेकिन उन्होंने केवल पहले के लिए कारण और प्रमाण दिए, जो इसके विश्वसनीय होने का संकेत है, जैसा कि यह सिद्धांत 'उक़ूद अद-दुर्रिह' आदि में

वर्णित है। विचार करें। दूसरा, यदि आपने मेरे द्वारा बताई गई कमज़ोरी के पहलुओं पर विचार किया है, तो वे इस वर्णन की कमज़ोरी को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं। उदाहरण के लिए, पहला यह कि मेरे और अन्य प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा बताए गए शब्द कि स्वीकृति से निकाह नहीं होता, और इसके लिए दिए गए तर्क अकाट्य हैं। निस्संदेह, जो तर्क भारी होंगे वे अधिक विश्वसनीय होंगे। तीसरा, क्योंकि इसके लिए कई प्राथमिकताएँ(तरजीहात) बताई गई हैं, और यह एक स्थापित तथ्य है कि कार्य उसी पर किया जाता है जिस पर बहुमत सहमत हो...

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/86-185।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

[عربی متن کا کالم] اقول: فقد بان بحمد اللہ ضعف مانقل فی التنویر والدر عن الذخیرۃ بعد ماقد منا عدم الانعقاد بالاقرار علی المختار کما سمعت حیث قال عقیبہ وقیل ان کان بمحضر من الشھود صح وجعل الاقرار انشاء وھو الاصح ذخیرۃ ۱ اھ فاعلم اولا ان المولیین المحققین رحمھما اللہ تعالی قد اشارا الی تضعیف ھذا بوجوہ، اما المصنف فبتقدیمہ الاول وتعبیرہ ھذا بقیل واما المؤلف فبتقریرہ علی الامرین وتعلیلہ للاول فان التعلیل دلیل التعویل کما نص علیہ في العقود الدریۃ وغیرھا فافھم، وثانیا ان تاملت ما القینا علیک فوجوہ ضعفہ لا تخفی لدیک ط فلہما تقدم فی کلامی وکلمات العلماء الکرام علی عدم الانعقاد بالاقرار من دلائل لاترد ولا ترام ولا شک ان الاقوی دلیلا احق تعویلا و اما ثانیا فلما لہ من کثرۃ الترجیحات وقد تقرر ان العمل بما علیہ الاکثر

[اردو متن کا کالم] اقول: بحمد اللہ تعالیٰ تنویر اور دُرّ میں جو ذخیرہ سے نقل کیا گیا جہاں انہوں نے اقرارِ نکاح کو مختار قول کے مطابق نکاح قرار دیا جیسا کہ تو نے سنا اور اس کے بعد یہ کہا (کہ بعض نے کہا ہے کہ یہ اقرار گواہوں کے سامنے ہو تو نکاح صحیح ہے اور اقرار کو انہوں نے انشاء قرار دیا ہے اور ذخیرہ کے حوالے سے اس کو اصح کہا) اس نقل کا ضعف واضح ہو گیا تو غور کرو اولاً اس لیے کہ (شامی اور طحطاوی رحمہما اللہ دونوں قابلِ احترام حضرات نے اس کے ضعف پر کئی وجوہ سے اشارہ فرمایا، اور بیشک مصنف (صاحب درّ) نے پہلے قول یعنی عدمِ انعقاد کو پہلے ذکر اور دوسرے کو "قیل" کے ساتھ ذکر کیا ہے اور مؤلف یعنی صاحب ذخیرہ نے اگرچہ دونوں قولوں کو ذکر کیا لیکن وجہ اور دلیل صرف پہلے قول کی ذکر کی جو کہ قابلِ اعتماد ہونے کی دلیل ہے جیسا کہ یہ قاعدہ عقود الدریہ وغیرہ میں بیان ہے، غور کرو _ دوسرا اس لیے کہ میں نے جو وجوہ ضعف آپ کو بیان کئے ہیں اگر آپ نے غور کیا ہو تو اس نقل کے ضعف کو

واضح کرنے کے لیے کافی ہیں مثلاً اول یہ کہ میں نے اور دیگر علماء کرام نے جو کلمات ذکر کئے ہیں کہ اقرار سے نکاح نہیں ہوتا اور اس پر جو دلائل پیش کئے گئے وہ ناقابلِ تردید ہیں اور بلاشک و شبہ جو دلائل وزنی ہوں گے وہ زیادہ قابلِ اعتماد ہونگے ثانیاً اس لیے کہ اس پر کثیر ترجیحات ذکر کی گئی ہیں اور یہ بات مسلمہ ہے کہ جس پر اکثریت ہو وہ عمل کے لیے

1 درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱/۸۶-۱۸۵

Fatawa Razawiya, Volume 11

As mentioned in 'Al-Uqud' and others. Thirdly, because that which possesses a stronger sign of being a fatwa (legal opinion) is firmer and weightier in strength and significance. Thus, the jurists have explicitly stated that the terms "upon it is the fatwa" (alayhi al-fatwa) and "by it, the fatwa is given" (bihi yufta) are the most established terms in the chapter of fatwa. Fourthly, because one must refer to what the basic texts (mutun) consider reliable, as they are the mainstay and upon them is the reliance. These four matters have been clarified previously. Fifthly, for what you will soon hear, as the master, Imam Burhan al-Din Mahmud bin al-Sadr al-Sa'id Taj al-Din Ahmad (may their secrets be sanctified), in his 'Dhakhirah', revealed for us the source of his preference. This was based on a case mentioned by the editor of the school of thought, Imam Muhammad (may Allah Almighty be pleased with him), in 'Sulh al-Asl': A man claimed marriage to a woman, and she denied it. So, he settled with her for a hundred [rupees] on the condition that she would confess to this. Thus, she confessed. This confession is valid, and the money is binding. From this, the master Burhan [al-Din] inferred that Imam Muhammad permitted marriage based on confession. He knew that this is not valid except in the presence of witnesses, so he branched [a ruling] upon it.

[1]Radd al-Muhtar, referring to Sulh al-Asl, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 2/26-265. Page 131 of 739

फ़तावा रज़विया, खंड 11

जैसा कि 'अल-उक़ूद' और अन्य में है। तीसरा, इसलिए कि जिसमें फ़तवा का सशक्त चिन्ह पाया जाए, वह शक्ति और महत्व के लिहाज़ से पुख़्ता और वज़नदार होता है। चुनाँचे, फ़ुक़हा-ए-किराम ने इस पर स्पष्ट किया है कि "अलैहि अल-फ़तवा" और "बिही युफ़्ता" फ़तवा के अध्याय में सबसे अधिक पुख़्ता शब्द हैं। चौथा, इसलिए कि मूल ग्रंथों (मुतून) को जिसे विश्वसनीय माना जाए, उसी की ओर लौटना होता है; ये चारों बातें पहले स्पष्ट हो चुकी हैं। पाँचवाँ, जैसा कि आप अभी सुनेंगे कि इमाम बुरहान अल-दीन महमूद बिन अल-सद्र अल-सईद ताज अल-दीन अहमद (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे) ने अपने 'ज़ख़ीरा' में, जिसे हमारे लिए अपने पसंदीदा मामलों का स्रोत बताया है, उसकी बुनियाद मज़हब के संपादक इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) द्वारा बताए गए एक मसले पर है, जिसे उन्होंने 'असल' यानी 'मबसूत' के"बाब अल-सुल्ह" में वर्णन किया है। वह यह कि एक व्यक्ति ने एक महिला के बारे में दावा किया कि वह उसकी विवाहिता है, जबकि महिला निकाह से इनकार कर रही थी। तो उसने महिला से सौ रुपये के बदले सुलह करके उससे निकाह का इकरार (कबूलनामा) करा लिया; तो महिला का इकरार मान्य होगा और माल (रुपये) अनिवार्य हो जाएगा। इससे सम्मानित बुरहान अल-दीन को यह आभास हुआ कि इमाम मुहम्मद ने महिला के इकरार से निकाह को जायज़ ठहराया है और अल्लामा बुरहान अल-दीन ने विश्वास कर लिया कि यह इकरार गवाहों की उपस्थिति में हुआ होगा तो ही सही होगा।

[1]रद्द अल-मुह्तार, सुल्ह अल-अस्ल के हवाले से, किताब अल-निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, 2/26-265। पृष्ठ 739 का 131

جلد یاز دہم فتاوی رضویه

كما في العقود وغيرها و اما ثالثا فلان ماله من علامة الافتاء اشد قوة واعظم وقعة مما لهذا فقد نصوا ان عليه الفتوى وبه يفتى، اكد ما يكون من الفاظ الفتوى و اما رابعاً فلان ما عليه المتون وهى العمدة واليها الركون فهذه والاربعة فقد ظهرت من قبل، و اما خامساً فلما تسمع انفاً قد اظهر لنا المولى الامام برهان الدين محمود بن الصدر السعيد تاج الدين احمد قدس سرهما فى ذخيرته مأخذ خيرته اذ بنى ذلك انه ذكر محرر المذهب محمد رضي الله تعالى عنه فى صلح الاصل ادعى رجل على امرأة نكاحاً فجحدت فصالحها بمائة على ان تقر بهذا فاقرت فهذا الاقرار جائز والمال لازم اه فطن المولى البرهان ان محمداً اجاز النكاح بالاقرار وقد علم ان هذا لا يصح الا بمحضر من الشهود ففرع عليه

قابلِ قبول ہے جیسا کہ عقود وغیرہ میں ہے ثالثاً اس لیے کہ جس میں فتویٰ کی قوی علامت پائی جائے وہ قوت اور وقعت کے لحاظ سے پختہ اور وزنی ہوتا ہے، چنانچہ فقہاء کرام نے اس پر تصریح کی ہے "علیہ الفتویٰ" اور "بہ یفتی" کے الفاظ فتویٰ کے باب میں سب سے زیادہ پختہ الفاظ ہیں۔ رابعاً اس لیے کہ کتبِ متون جس کو معتمد علیہ قرار دیں اس کی طرف ہی رجوع کرنا ہوتا ہے، یہ چاروں امور پہلے واضح ہو چکے ہیں، خامساً اس لیے جو آپ ابھی سنیں گے کہ امام برہان الدین محمود بن الصدر السعید تاج الدین احمد قدس سرہما نے اپنے ذخیرہ میں جس کو اپنے پسندیدہ امور کا ماخذ ہمارے لیے ظاہر کیا ہے اس کی بنیاد محرر مذہب امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ذکر کردہ مسئلہ پر ہے جس کو انہوں نے اصل یعنی مبسوط کے "باب الصلح" میں بیان کیا ہے وہ یہ کہ ایک شخص نے ایک عورت کے بارے میں دعویٰ بیان کیا کہ یہ میری منکوحہ ہے جبکہ عورت نکاح سے انکاری ہے تو اس نے عورت سے سو روپے کے بدلے صلح کر کے اس سے نکاح کا اقرار کرا لیا تو عورت کا اقرار جائز اور مال لازم ہو جائے گا اھ اس سے محترم

برہان الدین کو گمان ہوا کہ امام محمد نے عورت کے اقرار سے نکاح کو جائز قرار دیا اور علامہ برہان الدین نے یقین کر لیا کہ یہ اقرار گواہوں کی موجودگی میں ہوا تو صحیح ہوگا۔

[1]رد المحتار بحوالہ صلح الاصل کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی ۲۶/۲ - ۲۶۵ Page 131 of 739

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

[Left Column - Arabic Original] Indeed, the most correct view is validity if witnesses are present. This weak slave (may the Kind Lord be kind to him) says: Who am I to speak before this glorious Imam (may his beautiful secret be sanctified)? However, the abundance of corrections by the Imams and their certainty on the other side embolden me to say: And through Allah is success. There is no impact on what is in the original [text] by this section, for Muhammad only permitted the acknowledgment and made the payment obligatory. It merely results in the validity of settlement and the cessation of dispute, such that if the woman returns to denial after that, the judge would not hear her. Whereas, if settlement were not permitted, payment would not be obligatory and the woman would remain in her denial. This is the sum of the validity and invalidity of settlement as is not hidden. And where is this from the actual formation of the contract between them and their Lord, the All-Knowing, the All-Aware, Blessed and Exalted is He? Have they not explicitly stated that the compensation is not wholesome (halal) for him if he is a liar? Even if a man claims against another the sale of a house, for example, and he [the defendant] acknowledges it to ransom himself from an oath or to flee from the humiliation of kneeling before the judge, the sale is established legally, and rulings of mandatory delivery, pre-emption, and others apply. However, this lying claimant only takes a coal of fire. Then the two reconcilers...

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] That is why, following this, they established the clarification that the most correct view is that if witnesses are present, the marriage will be valid through acknowledgment. As for this weak servant (may Allah the Almighty be kind to him), who am I to speak before this great Imam? But the frequency of corrections and the resolve of the honorable Imams are against it, which gives me the courage to speak, and success is from Allah the Almighty. The statement in the original text has no connection with this discussion, because Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) only declared acknowledgment permissible and made the payment mandatory, the benefit of which is only the validity of settlement and ending the dispute, so much so that if the woman denies again after that, the judge will not hear her case. But if the settlement is not accepted as valid, then the payment will not be mandatory and the woman's denial will persist. The outcome of the validity or invalidity of settlement is only this, as is clear. It has no connection with the actual conclusion of the marriage in the eyes of Allah. Have the jurists not explicitly stated that in such a case, if the claimant is

lying, the compensation is not wholesome for him? If a person makes a false claim against another regarding the sale of his house, and the defendant acknowledges the sale to avoid taking an oath or to escape the disgrace of appearing before a judge, then in this case the sale will be legally established. Rulings such as giving possession of the house and pre-emption etc., will be implemented. Despite this, what the lying claimant receives is a coal of Hell for him. Then the two reconcilers...

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

[बायां कॉलम - अरबी मूल] वास्तव में, सबसे सही विचार यह है कि यदि गवाह उपस्थित हों तो वैधता है। यह कमजोर दास (दयालु प्रभु उस पर दया करें) कहता है: मैं इस महान इमाम (उनकी सुंदर पवित्रता बनी रहे) के सामने बोलने वाला कौन हूँ? हालाँकि, इमामों के सुधारों की बहुतायत और दूसरी तरफ उनकी निश्चितता मुझे यह कहने के लिए प्रोत्साहित करती है: और अल्लाह के माध्यम से ही सफलता है। इस खंड से मूल [पाठ] में जो कुछ भी है उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि मुहम्मद ने केवल स्वीकारोक्ति की अनुमति दी और धन के भुगतान को अनिवार्य बना दिया। यह केवल समझौते की वैधता और विवाद की समाप्ति का परिणाम देता है, जैसे कि यदि महिला उसके बाद फिर से इनकार करती है, तो न्यायाधीश उसकी सुनवाई नहीं करेगा। जबकि, यदि समझौते की अनुमति नहीं दी गई होती, तो भुगतान अनिवार्य नहीं होता और महिला अपने इनकार पर अडिग रहती। समझौते की वैधता और अमान्यता का सारांश यही है जैसा कि छिपा नहीं है। और यह उनके और उनके रब, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, धन्य और महान के बीच वास्तव में अनुबंध के गठन से कहाँ संबंधित है? क्या उन्होंने स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा है कि यदि वह झूठ बोल रहा है तो उसके लिए मुआवजा वैध (हलाल) नहीं है? भले ही कोई व्यक्ति दूसरे के खिलाफ उदाहरण के लिए घर की बिक्री का दावा करता है, और वह [प्रतिवादी] शपथ से खुद को छुड़ाने के लिए या न्यायाधीश के सामने घुटने टेकने के अपमान से बचने के लिए इसे स्वीकार कर लेता है, तो बिक्री कानूनी रूप से स्थापित हो जाती है, और अनिवार्य वितरण, पूर्व-क्रय (शुफा), और अन्य नियम लागू होते हैं। हालाँकि, यह झूठ बोलने वाला दावेदार केवल आग का कोयला लेता है। फिर दो सुलह करने वाले...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] इसीलिए, इसके बाद, उन्होंने यह स्पष्टीकरण स्थापित किया कि सबसे सही बात यह है कि यदि गवाह मौजूद हों तो स्वीकारोक्ति से निकाह सही होगा। जहाँ तक इस कमजोर सेवक (अल्लाह सर्वशक्तिमान उस पर दया करे) का सवाल है, मैं इस महान इमाम के सामने बोलने वाला कौन हूँ? लेकिन सुधारों की आवृत्ति और माननीय इमामों का संकल्प इसके विरुद्ध है, जो मुझे बोलने का साहस देता है, और सफलता अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर से है। मूल पाठ के कथन का इस चर्चा से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि इमाम मुहम्मद (अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे) ने केवल स्वीकारोक्ति को जायज़ ठहराया और धन को अनिवार्य किया, जिसका लाभ केवल सुलह की वैधता और झगड़े को खत्म करना है, यहाँ तक कि यदि महिला इसके बाद फिर से इनकार करती है, तो न्यायाधीश उसकी सुनवाई नहीं करेगा। लेकिन यदि सुलह को जायज़ न माना

जाए, तो धन अनिवार्य नहीं होगा और महिला का इनकार बना रहेगा। सुलह की वैधता या अमान्यता का परिणाम केवल यही है, जैसा कि स्पष्ट है। वास्तव में अल्लाह की नज़र में निकाह के संपन्न होने से इसका कोई संबंध नहीं है। क्या न्यायविदों (फ़ुकहा) ने स्पष्ट नहीं किया है कि ऐसी स्थिति में, यदि दावेदार झूठा है, तो मुआवजा उसके लिए जायज़ नहीं है? यदि कोई व्यक्ति दूसरे के विरुद्ध उसके घर की बिक्री का झूठा दावा करता है, और प्रतिवादी शपथ लेने से बचने के लिए या न्यायाधीश के सामने पेशी की रुसवाई से बचने के लिए बिक्री स्वीकार कर लेता है, तो इस स्थिति में कानूनी रूप से बिक्री सिद्ध हो जाएगी। घर का कब्ज़ा देने और शुफा आदि जैसे नियम लागू होंगे। इसके बावजूद, झूठे दावेदार को जो मिलता है वह उसके लिए जहन्नुम (नरक) का अंगारा है। फिर दो सुलह करने वालों ने...

पृष्ठ 132/739

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

ان الاصح الصحة لو الشهود حضورا، قال العبد الضعيف لطف بہ المولی اللطيف وای شيئ اكون انا حتی اتكلم بين يدی ہٰذا الامام الجليل قدس سره الجميل ولكن كثرة تصحيحات الائمہ وجزمهم فی الجانب الآخر بما تجرؤنی ان اقول: وبالله التوفيق لامساس لما فی الاصل بہٰذا الفصل فان محمدا انما اجاز الاقرار والزم المال فانما افاد جواز الصلح و انقطاع الجدال بحيث لو عادت المرأة بعد ذلك الی الجحود لم يسمعه القاضی امالو لم يجز الصلح لم يلزم المال واقرت المرأة علی انكارها هذا هو حاصل جواز الصلح وعدم جوازه كما لا يخفی واين ہٰذا من انعقاد العقد في الواقع فيمابينهم وبين ربهم العليم الخبير تبارك وتعالی اليس قد صرحوا انه لا يطيب له البدل ان كان كاذبا ولو ادعی رجل علی اخر بيع دار مثلا فاقر به افتداءً عن يمينه اوفراً را عن ذل الجثو بين يدی القاضی ثبت البيع قضاء وجرت الاحكام من وجوب التسليم ولزوم الشفعة وغير ذلك لكن ہٰذا المدعی الكاذب انما يأخذ جمرة نار ثم السران المصالحين

اسی لیے انہوں نے اس کے بعد یہ تفریح قائم کی کہ اصح بات یہ ہے کہ گواہ موجود ہو تو اقرار سے نکاح صحیح ہوگا، یہ عبد ضعیف (اللہ تعالیٰ مہربان اس پر مہربانی فرمائے) میں کون ہوں جو اس عظیم امام کے سامنے بات کروں لیکن تصحیح کی کثرت اور ائمہ کرام کا جزم اس کے خلاف ہے جس کی وجہ سے مجھے جرات ہو رہی ہے کہ میں بات کروں اور توفیق اللہ تعالیٰ سے ہے۔ اصل کے بیان کا اس بحث سے کوئی تعلق نہیں ہے، کیونکہ امام محمد رحمتہ اللہ تعالیٰ نے صرف اقرار کو جائز اور مال کو لازم فرمایا ہے جس کا مفاد صرف صلح کا جواز اور جھگڑا ختم کرنا ہے حتیٰ کہ اگر عورت اس کے بعد دوبارہ انکار کرے تو قاضی اس کی سماعت نہیں کرے گا لیکن اگر صلح کو جائز نہ مانا جائے تو مال لازم نہیں ہوگا اور عورت کا انکار باقی رہے گا، صلح کے

جواز اور عدم جواز کا حاصل صرف یہی ہے جیسا کہ واضح ہے، اس کا فی الواقع عنداللہ نکاح کے منعقد ہونے سے کوئی تعلق نہیں ہے، کیا ایسی صورت میں مدعی کے جھوٹا ہونے پر معاوضہ کے اس کے لیے طیب نہ ہونے پر فقہاء نے تصریح نہیں کی، ایک شخص دوسرے کے خلاف اس کے مکان کی فروختگی کا جھوٹا دعویٰ کرے اور مدعی علیہ قسم سے بچنے کے لیے فروختگی کا اقرار کر لے یا قاضی کے ہاں پیشی کی رسوائی سے بچتے ہوئے اقرار کر لے تو اس صورت قضاء بیع ثابت ہو جائے گی اور اس پر مکان کا قبضہ دینا اور شفعہ وغیرہ جیسے احکام جاری ہوں گے اس کے باوجود جھوٹے مدعی کی وصولی اس کے لیے جہنم کا انگارہ ہے، پھر دو صلح کرنے والوں نے

Fatawa Razawiyya, Volume Eleven

[Arabic Text Block] They intended a contract of settlement (sulh), and it can only be conceived by referring it back to one of the legal contracts of Sharia. Therefore, it is necessary to interpret it based on the contract most similar to it, out of the necessity to validate the speech and end the dispute. However, here—meaning in the matter we are discussing—they did not intend a contract; rather, they provided a false report. Although a lie may be accepted by people, it is never validated before Allah. Thus, the difference became clear and the ambiguity was removed, praise be to Allah. It is stated in al-Hidaya: If a man claims marriage with a woman while she denies it, and she settles by giving wealth in exchange so that he drops the claim, it is permissible. It will be interpreted in the sense of Khula (divorce initiated by the wife) because it is possible to validate it as Khula from his side based on his claim, and from her side as a payment to end the litigation. They said: It is not lawful (halal) for him to take [this compensation] in what is between him and Allah Almighty if he is false in his claim. [1] End. It is stated in al-Kifaya: This is general for all types of settlement. [2] End. In al-Durr al-Mukhtar, it is quoted from al-Quhistani: As for a settlement for a portion of a debt, it is valid and [the debtor] is absolved from the claim of the remainder, i.e., legally (qada’an) not religiously (diyanatan). Therefore, if [the creditor] finds an opportunity for it, he may take it. [3] End.

[Urdu Text Block] When a commitment to settlement (sulh) is made, the demand of wisdom is that this agreement be interpreted as the closest form of a legal contract (aqd) in Sharia, so that the words of both parties can be validated and their dispute can be ended. However, in the issue under our discussion, the man and the woman did not enter into any contract; rather, both gave a false report. Although lies can influence people, they cannot be effective before Allah. Thus, the difference became clear and the ambiguity was removed, praise be to Allah. It is stated in al-Hidaya: If a man claims marriage with a woman while she denies it, and she settles by giving wealth in exchange so that he drops the claim, it is permissible. It will be interpreted in the sense of Khula (divorce initiated by the wife) because it is possible to validate it as Khula from his side based on his claim, and from her side as a payment to end the litigation. Despite this, the jurists have stated here that if the man is a liar, it is not lawful (halal) for him to take compensation from the woman. End. And it is stated in al-Kifaya that this includes every type of settlement. End. In al-Durr al-Mukhtar, it is quoted from al-Quhistani that if a settlement is reached for a portion of a debt, it is permissible and [the debtor] will be legally absolved of the remaining debt in terms

of court judgment (qada'an) but not religiously (diyanatan), meaning he will not be absolved before Allah. Therefore, if the creditor finds an opportunity, he should recover the rest. End.

Footnotes: 1. Al-Hidaya, Kitab al-Sulh, Yusufi Press, Lucknow, 3/24 2. Al-Kifaya with Fath al-Qadir, Kitab al-Sulh, Nuriyya Razawiyya, Sukkur, 7/389 3. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Sulh, Mujtabai Press, Delhi, 2/124

फतावा रज़विया, खंड ग्यारह

[अरबी पाठ ब्लॉक] वे सुलह का एक अनुबंध करना चाहते थे, और इसे केवल शरीयत के कानूनी अनुबंधों में से एक के साथ जोड़कर ही समझा जा सकता है। इसलिए, भाषण को मान्य करने और विवाद को समाप्त करने की आवश्यकता के कारण इसे इसके सबसे समान अनुबंध पर आधारित मानना आवश्यक है। हालाँकि, यहाँ - अर्थात उस मामले में जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं - उनका इरादा किसी अनुबंध का नहीं था; बल्कि उन्होंने एक झूठी रिपोर्ट दी। हालाँकि झूठ लोगों द्वारा स्वीकार किया जा सकता है, लेकिन अल्लाह के सामने वह कभी मान्य नहीं होता। इस प्रकार, अंतर स्पष्ट हो गया और संशय दूर हो गया, अल्लाह की स्तुति हो। 'हिदाया' में कहा गया है: यदि कोई पुरुष किसी महिला से निकाह का दावा करता है जबकि वह इनकार करती है, और वह दावा छोड़ने के लिए धन देकर सुलह करती है, तो यह जायज़ है। इसे 'खुला' (पत्नी द्वारा पहल किया गया तलाक) के अर्थ में लिया जाएगा क्योंकि उसके दावे के आधार पर उसके पक्ष से इसे 'खुला' के रूप में मान्य करना संभव है, और उसके पक्ष से इसे मुकदमेबाजी को समाप्त करने के लिए भुगतान माना जाएगा। उन्होंने कहा: यदि वह अपने दावे में झूठा है, तो अल्लाह सर्वशक्तिमान और उसके बीच के मामले में उसके लिए [यह मुआवजा] लेना हलाल (वैध) नहीं है। [1] समाप्त। 'किफ़ाया' में कहा गया है: यह सभी प्रकार के सुलह के लिए सामान्य है। [2] समाप्त। 'दुर्रुल मुख्तार' में कुहिस्तानी के हवाले से कहा गया है: ऋण के एक हिस्से के लिए सुलह के संबंध में, यह मान्य है और [ऋणी] शेष ऋण के दावे से बरी हो जाता है, अर्थात कानूनी रूप से (क़ज़ाअन) न कि धार्मिक रूप से (दियानतन)। इसलिए, यदि [लेनदार] को इसके लिए अवसर मिलता है, तो वह इसे ले सकता है। [3] समाप्त।

[उर्दू पाठ ब्लॉक] जब सुलह (समझौते) का वादा किया जाता है, तो बुद्धिमानी की माँग यह है कि इस समझौते को शरिया के किसी कानूनी अनुबंध (अक़्द) के निकटतम रूप में माना जाए, ताकि दोनों पक्षों की बातों को मान्य बनाया जा सके और उनके विवाद को समाप्त किया जा सके। हालाँकि, यहाँ हमारे विचाराधीन मामले में, पुरुष और महिला ने कोई अनुबंध नहीं किया; बल्कि दोनों ने एक झूठी रिपोर्ट दी। यद्यपि झूठ लोगों को प्रभावित कर सकता है, लेकिन अल्लाह के सामने वह प्रभावी नहीं हो सकता। इस प्रकार, अंतर स्पष्ट हो गया और संशय दूर हो गया, अल्लाह की स्तुति हो। 'हिदाया' में कहा गया है: यदि कोई पुरुष किसी महिला से निकाह का दावा करता है जबकि वह इनकार करती है, और वह दावा छोड़ने के लिए धन देकर सुलह करती है, तो यह जायज़ है। इसे 'खुला' (पत्नी द्वारा पहल किया गया तलाक) के अर्थ में लिया जाएगा क्योंकि उसके दावे के आधार पर उसके पक्ष से इसे

'खुला' के रूप में मान्य करना संभव है, और उसके पक्ष से इसे मुकदमेबाजी को समाप्त करने के लिए भुगतान माना जाएगा। इसके बावजूद, फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने यहाँ कहा है कि यदि वह पुरुष झूठा है, तो उसके लिए महिला से मुआवजा लेना हलाल (वैध) नहीं है। समाप्त। और 'किफ़ाया' में कहा गया है कि इसमें हर प्रकार की सुलह शामिल है। समाप्त। 'दुर्रुल मुख्तार' में कुहिस्तानी के हवाले से कहा गया है कि यदि ऋण के कुछ हिस्से पर सुलह हो जाती है, तो यह जायज़ है और [ऋणी] अदालत के फैसले (क़ज़ाअन) के मामले में शेष ऋण से बरी हो जाएगा, लेकिन धार्मिक रूप से (दियानतन) नहीं, यानी अल्लाह के सामने वह बरी नहीं होगा। इसलिए, यदि लेनदार को अवसर मिले, तो उसे शेष राशि वसूल करनी चाहिए। समाप्त।

पादलेख: 1. हिदाया, किताबुल सुलह, यूसुफी प्रेस, लखनऊ, 3/24 2. किफ़ाया मा फतहुल क़दीर, किताबुल सुलह, नूरिय्या रज़विय्या, सक्कर, 7/389 3. दुर्रुल मुख्तार, किताबुल सुलह, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/124

पृष्ठ 133 / 739

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

[Arabic Column] ارادا عقد الصلح وھو انما یصور بارجاعه الی عقد من العقود الشرعیة فلابد من حمله علی اشبه عقد به ضرورة تصحیح الکلام وقطع الخصام اما ھھنا اعنی فیما نحن فیه فلم یریدا عقدا وانما اخبرا خبرا کذبا والکذب وان یرج علی الناس فلا یصحح عند الله اصلا فوضح الفرق وزال الاشتباه والحمد لله، قال في الھدایة اذا ادعی رجل علی امرأة نکاحا وھی تجحد فصالحته علی مال بدلته حتی یترك الدعوی جاز وکان في معنی الخلع لانه امکن تصحیحه خلعا في جانبه بناء علی زعمه وفی جانبھا بذلا للمال لدفع الخصومة قالوا ولا یحل له ان یأخذ فیما بینه وبین الله تعالی اذا کان مبطلا في دعواہ[1] اھ قال في الکفایة ھذا عام في جمیع انواع الصلح[2] اھ وفی الدرالمختار عن القھستاني اما الصلح علی بعض الدین فیصح ویبرأ عن دعوی الباقی ای قضاء لا دیانة ولذا لو ظفر به اخذہ[3] اھ

[Urdu Column] جب صلح کا عہد کر لیا تو حکمت کا تقاضا ہے کہ اس معاہدہ کو کسی شرعی عقد کی صورت دینے کے لیے اس کے قریب ترین عقد پر محمول کیا جائے تاکہ ان دونوں کی کلام کو صحیح بنایا جائے اور ان کے جھگڑے کو ختم کیا جاسکے، لیکن یہاں ہمارے زیرِ بحث مسئلہ میں تو مرد و عورت نے کوئی عقد نہیں کیا بلکہ دونوں نے جھوٹی خبر دی، جھوٹ اگرچہ لوگوں پر اثر انداز ہو جاتا ہے لیکن عند اللہ موثر نہیں ہوسکتا، پس فرق واضح اور اشتباہ ختم ہوا، للہ الحمد، ہدایہ میں فرمایا اگر کسی مرد نے کسی عورت پر اس سے نکاح کا دعوی کیا جبکہ عورت انکاری ہے اور دعوی کو ختم کرنے کے لیے مال دے کر صلح کرتی ہے تو یہ صلح جائز ہے، اور اس صلح کو خلع کے معنی پر محمول کیا جائیگا کیونکہ مرد کی طرف سے اس کے دعوی کی بنا پر اس معاوضہ کی وصولی کو خلع قرار دینا صحیح ہے اور عورت کی طرف مال کی ادائیگی جھگڑے کو ختم کرنے کی کارروائی تصور کیا جائیگا، اس کے باوجود فقہاء کرام نے یہاں فرمایا

کہ اگر وہ مرد جھوٹا ہے تو اس کو عورت سے معاوضہ لینا حلال نہیں ہے اھ اور کفایہ میں کہا کہ یہ ہر قسم کی صلح کو شامل ہے اھ در مختار میں قہستانی سے منقول ہے کہ قرض کے کچھ حصے پر صلح ہو جائے تو جائز ہے اور باقی قرض سے قضاءً بری ہو جائے گا دیانتاً یعنی عند اللہ بری نہ ہوگا اسی لیے اگر قرضخواہ کو موقع ملے تو باقی کو وصول کرے اھ،

[Footnotes] 1 ہدایہ کتاب الصلح مطبع یوسفی لکھنو ۳/ ۲۴ 2 کفایہ مع فتح القدیر کتاب الصلح نوریہ رضویہ سکھر ۷ / ۳۸۹ 3 در مختار کتاب الصلح مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۱۲۴

Fatawa Razawiyya - Volume 11

In Al-Shamiya, quoting Al-Maqdisi from Al-Muhit regarding a case of a thousand [dinars/dirhams]: if a person pays a thousand to a creditor, but the creditor denies receiving it, and then the debtor settles for one hundred, it is valid [judicially], but it is not religiously permissible for the creditor to take it. (1) Mentioning all the narrations here would be lengthy. It is stated in Al-Hidaya that the principle is that reconciliation (Sulh) must be interpreted as being closest to contracts and most similar to them, as a precaution to validate the contractor's action as much as possible. (2) From what I have conveyed to you, the answer to Mawla Al-Burhan's stance is achieved through three points: First, referring the settlement to those contracts is a necessary estimation and conceptualization for legal validity, which must not be exceeded. Second, these contracts are established through those words within the context of settlement; many things are established implicitly but not explicitly. Do you not see that the statement 'Manumit this slave of yours on my behalf for a thousand' implies a purchase, even though a sale is not explicitly contracted using the word 'manumission'? Third, these contracts are only estimated judicially and do not affect the religious status.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Sulh, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 7/754. 2. Al-Hidaya, Kitab al-Sulh, Matba' Yusufi, Lucknow, 3/246.

Page 134 of 739

फ़तावा रज़विया - भाग 11

अल-शामिया में अल-मक़दसी के हवाले से अल-मुहीत से एक हज़ार के निर्णय के बारे में वर्णित है: यदि किसी ने ऋणदाता को एक हज़ार दिए, लेकिन ऋणदाता इसकी प्राप्ति से इनकार करता है, और ऋणी सौ पर समझौता कर लेता है, तो यह [न्यायिक रूप से] सही है, लेकिन ऋणदाता के लिए इसे धार्मिक रूप से (दीयानतन) लेना हलाल नहीं है। (1) यहाँ सभी उद्धरणों का उल्लेख करना बहुत लंबा हो जाएगा। अल-हिदाया में कहा गया है कि सिद्धांत यह है कि सुलह (समझौते) को अनुबंधों के सबसे निकट और उनके सबसे समान होने के रूप में समझा जाना चाहिए, ताकि अनुबंधकर्ता की कार्रवाई को यथासंभव वैध बनाया जा सके। (2) जो मैंने आपको बताया है, उससे मौला अल-बुरहान के तर्क का उत्तर तीन बिंदुओं में प्राप्त होता है: पहला, समझौते को उन अनुबंधों के रूप में संदर्भित करना कानूनी वैधता के लिए एक आवश्यक अनुमान और चित्रण है, जिससे आगे नहीं बढ़ना चाहिए। दूसरा, ये अनुबंध समझौते के संदर्भ में उन शब्दों के माध्यम से स्थापित होते हैं; कई चीज़ें परोक्ष (ज़िम्रन) रूप से स्थापित होती हैं लेकिन प्रत्यक्ष (क़स्दन) रूप से नहीं। क्या आप नहीं देखते कि यह कथन 'अपने इस दास को मेरी ओर से एक हज़ार के बदले आज़ाद कर दो' में एक खरीद निहित है, हालाँकि 'आज़ादी' शब्द का उपयोग करके स्पष्ट रूप से बिक्री का अनुबंध नहीं किया गया है? तीसरा, ये अनुबंध केवल न्यायिक रूप से अनुमानित हैं और धार्मिक स्थिति को प्रभावित नहीं करते हैं।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-सुलह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 7/754। 2. अल-हिदाया, किताब अल-सुलह, मतबा युसुफी, लखनऊ, 3/246।

पृष्ठ 134 / 739

وفی الشامیۃ عن المقدسی عن المحیط قضاء الالف | اور فتاویٰ شامی میں ہے مقدسی کے حوالے سے محیط سے فانکر الطالب فصالحہ بمائۃ صح ولایحل لہ اخذھا | منقول ہے کہ اگر کسی نے قرض خواہ کو ہزار دیا مگر دیانۃ ۱ اھ، وسرد النقول فی ذاک یطول، وقال فی | قرضخواہ وصولی سے منکر ہے تو مقروض نے ایک صد پر الہدیۃ الاصل ان الصلح یجب حملہ علی اقرب | صلح کرلی تو صحیح ہے لیکن قرض خواہ کو دیانۃً لینا حلال نہیں العقود الیہ واشبھھا بہ احتیاطاً لتصحیح تصرف | ہے اھ ، یہاں تمام نقول کو ذکر کرنا باعث طوالت ہوگا، العاقد ما امکن ۲ اھ فبما اسمعتک یتحصل الجواب | ہدایہ میں فرمایا کہ قاعدہ یہ ہے کہ صلح کرنے والے کے عن تمسک المولی البرھان بثلثۃ اوجہ الاول ارجاع | تصرف کو صحیح قرار دینے کے لیے صلح کے قریب ترین کسی الصلح الی تلک العقود تقدیر وتصویر ضروری | عقد پر محمول کرنا ضروری ہے تاکہ حتی الامکان اس کے عقد فلایتعدی الثانی انما تثبت ھذہ العقود بتلک | کو صحیح بنایا جاسکے اھ، میں نے جو کچھ بیان کیا ہے اس سے الالفاظ فی ضمن الصلح وکم من شیئ یثبت ضمناً | مولانا برہان الدین کی دلیل کے تین جواب ہوئے پہلا یہ ولایثبت قصدا الاتری ان قولہ اعتق عبدک ھذا | کہ اس صلح کو عقود کی طرف راجع کرنا صرف فرضی صورت عنی بالف یتضمن الابتیاع مع انہ لایعقد قصدا | ہے جو کہ ایک ضرورت کے لیے ہے اس ضرورت کے بغیر بلفظ الاعتاق، الثالث ان ھذہ العقود انما تقدر | تجاوز کرنا درست نہیں ، دوسرا یہ کہ ان عقود کا ثبوت صلح قضاء ولاتؤثر فی الدیانۃ | کے الفاظ میں ضمناً ہوتا ہے جبکہ بہت سے امور ضمناً تو ثابت ہوتے ہیں لیکن مقصوداً ثابت نہیں ہوتے ، آپ غور کریں کہ جب کوئی کہتا ہے کہ تو اپنے غلام کو میری طرف سے ایک

ہزار کے بدلے آزاد کردے تو یہاں ضمناً بیع ہو جاتی ہے، جبکہ "آزاد کردے" کے لفظ سے قصداً بیع منعقد نہیں ہوتی ، تیسرا یہ کہ یہ عقود صلح کے ضمن میں صرف قضاءً نافذ ہوتے ہیں ،

حواشی: 1 رد المحتار کتاب الصلح داراحیاء التراث العربي بیروت ۷/۷۵۴ 2 ہدایہ کتاب الصلح مطبع یوسفی لکھنؤ ۲۴۶/۳

صفحہ 134 / 739

(Arabic Text)

If it were invalid, and we do not deny that through their confession marriage is established legally (qada'an), the discussion is only regarding religious validity (diyanatan). If the intention of Imam al-Burhan is legal validity, one may find support for it in his saying—may Allah perfume his grave—making confession as initiation (insha') where he did not say it was initiation. What specifies it is basing the matter on the wording of the 'Asl' (Al-Mabsut), for as you know, it only provides for legal validity. This is a truth in which there is no doubt, and there is no harm in resorting to it to validate the speech of this Imam and to achieve harmony between him and other prominent Imams. Even if it is far from the apparent meaning of the text, otherwise there is no doubt that the truth is with these noble experts. And Allah Almighty knows best the reality of the matter in every quest. Praise be to Allah our Lord, the Guide, Possessor of Majesty and Honor.

(Urdu Translation)

If reconciliation is based on lies, it is not religiously effective, and we also admit that through confession by a man and a woman, marriage is established legally (qada'an) before a judge, while our discussion is about religious validity (diyanatan) i.e., before Allah. So, if Imam Burhan al-Din's intention is that marriage is only established legally, while his speech leans towards this side because he made confession equivalent to 'insha' (initiation) and did not say it *is* insha, and then he based his argument on the text of 'Asl' i.e., Al-Mabsut, from which only legal validity is proven, if this is his aim, then it is correct and true, in which there is no room for doubt. And if this aim is referred to in order to make the great Imam's speech correct, then there is no harm, even though this aim seems far from the apparent meaning of his speech. However, this creates agreement between his words and those of other noble Imams. And if his aforementioned aim is not this, then there is no doubt that the words of other Imams are correct in comparison to his, and in every goal, Allah Almighty knows the reality best. All praise is due to Allah, the Guide, the Possessor of Majesty and Honor. (T)

Yes, if the man and woman said words that were not specific for reporting past events—for example, the man said 'This is my wife', the woman said 'This is my husband', or the man said 'I am her husband', the woman said 'I am his wife', and both intended to perform the marriage contract with these words, meaning none of

them intended to report [past news], and they both intentionally spoke 'insha' (initiatory words)—then indeed these words will be considered a marriage contract. Because when there is no intention of reporting, then these words are not 'confessions' (iqrar), and when they are not specific for past reporting, they are capable of intending 'insha'. So they intended 'insha' with valid words, and this much investigation is sufficient for proposal (ijab) and acceptance (qabul). This is contrary to those words that do not bear any meaning other than reporting the past, for example, they say to each other 'our marriage has taken place', for this is now specific to reporting and separate from 'insha'.

(अरबी पाठ)

यदि यह अमान्य होता, और हम इस बात से इनकार नहीं करते कि उनके इक़रार (स्वीकारोक्ति) से निकाह कानूनी तौर पर (क़ज़ाईं) स्थापित हो जाता है, तो बातचीत केवल धार्मिक वैधता (दियानतन) के संबंध में है। यदि इमाम अल-बुरहान का इरादा कानूनी वैधता है, तो उनके कथन में इसके लिए समर्थन पाया जा सकता है—अल्लाह उनकी कब्र को सुगंधित करे—इक़रार को इंशा (आरंभ) के रूप में पेश करना जहाँ उन्होंने यह नहीं कहा कि यह इंशा ही है। इसे जो चीज़ विशिष्ट बनाती है वह है मामले को 'अस्ल' (अल-मब्सूत) की इबारत पर आधारित करना, क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, यह केवल कानूनी वैधता प्रदान करता है। यह एक ऐसा सत्य है जिसमें कोई संदेह नहीं है, और इस इमाम के शब्दों को मान्य करने और उनके और अन्य प्रमुख इमामों के बीच सद्भाव प्राप्त करने के लिए इसका सहारा लेने में कोई बुराई नहीं है। भले ही यह पाठ के प्रत्यक्ष अर्थ से दूर हो, अन्यथा इसमें कोई संदेह नहीं है कि सत्य इन नेक विशेषज्ञों के साथ है। और अल्लाह तआला हर खोज में मामले की वास्तविकता को सबसे अच्छी तरह जानता है। अल्लाह हमारे रब, मार्गदर्शक, जलाल और इकराम के मालिक के लिए सभी प्रशंसाएँ हैं।

(उर्दू अनुवाद)

यदि सुलह झूठ पर आधारित हो, तो धार्मिक रूप से प्रभावी नहीं होती, और हम यह भी स्वीकार करते हैं कि एक पुरुष और महिला द्वारा स्वीकारोक्ति से काज़ी के पास कानूनी रूप से (क़ज़ाईं) निकाह हो जाता है, जबकि हमारी चर्चा धार्मिक वैधता (दियानती) यानी अल्लाह के सामने के बारे में है। तो, यदि इमाम बुरहानुद्दीन का इरादा यह है कि निकाह केवल कानूनी रूप से हो जाता है, जबकि उनकी बात इस ओर झुकती है क्योंकि उन्होंने इक़रार को इंशा (आरंभ) बनाया है और यह नहीं कहा कि वह इंशा है, और फिर उन्होंने अपनी बात का आधार 'अस्ल' यानी मब्सूत की इबारत को बनाया है जिससे केवल कानूनी वैधता सिद्ध होती है, यदि उनका यही उद्देश्य है, तो यह सही और सत्य है, जिसमें किसी संदेह की गुंजाइश नहीं है। और यदि इस महान इमाम के शब्दों को सही बनाने के लिए इस उद्देश्य की ओर संकेत किया जाए, तो कोई हर्ज नहीं है, हालांकि उनके शब्दों के प्रत्यक्ष अर्थ से यह उद्देश्य दूर प्रतीत होता है। फिर भी, इससे उनके और अन्य महान इमामों के शब्दों में सहमति पैदा हो जाती है। और यदि उनका उपरोक्त उद्देश्य न हो, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके मुक़ाबले में अन्य इमामों की बात सत्य है, और हर उद्देश्य में अल्लाह तआला ही वास्तविकता को बेहतर जानने वाला है। अल्लाह तआला,

(अरबी पाठ)

(उर्दू अनुवाद)

मार्गदर्शन देने वाले, जलाल और इकराम वाले के लिए सभी प्रशंसाएँ हैं। (त)

हाँ, यदि पुरुष और महिला ने वे शब्द कहे जो पिछली घटनाओं की रिपोर्ट करने के लिए विशिष्ट नहीं थे—उदाहरण के लिए, पुरुष ने कहा 'यह मेरी पत्नी है', महिला ने कहा 'यह मेरा पति है', या पुरुष ने कहा 'मैं उसका पति हूँ', महिला ने कहा 'मैं उसकी पत्नी हूँ', और दोनों ने इन शब्दों से निकाह का अनुबंध करने का इरादा किया, यानी उनमें से किसी का इरादा खबर देना नहीं था, और दोनों ने जानबूझकर 'इंशा' (आरंभिक शब्द) कहे—तो निस्संदेह ये शब्द निकाह का अनुबंध माने जाएंगे। क्योंकि जब खबर देने का इरादा नहीं है, तो ये शब्द 'इक़रार' नहीं हैं, और जब वे पिछली खबर के लिए विशिष्ट नहीं हैं, तो वे 'इंशा' के इरादे के लिए सक्षम हैं। तो उन्होंने सक्षम शब्दों के साथ 'इंशा' का इरादा किया, और ईजाब व क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के लिए इतनी ही जाँच पर्याप्त है। इसके विपरीत उन शब्दों के जो अतीत की रिपोर्ट के अलावा कोई और अर्थ नहीं रखते, उदाहरण के लिए, वे आपस में कहें 'हमारा निकाह हो चुका है', क्योंकि अब यह रिपोर्टिंग के लिए विशिष्ट है और 'इंशा' से भिन्न है।

पृष्ठ 135 का 739

| اذا کان مبطلا ونحن لاننکران باقرار هما یثبت النکاح قضاء وانما الکلام فی الدیانة فان کان مراد الامام البرهان هو الصحة قضاء وقد یستأنس له بقوله عطر الله مرقده جعل الاقرار انشاء حیث لم یقل کان انشاء ویعینه بناؤه الامر علی عبارة الاصل فانها کما علمت لا تفید الا الجواز قضاء فهذا حق لامریة فیه ولاغرو فی المصیر الیه تصحیحاً لکلام هذا الامام وتحصیلا للوفاق بینه وبین غیره من الائمة الاعلام وان کان فیه بعد بالنظر الی ظاهر الکلام والافلاشك ان الحق مع هؤلاء الجهابذة الکرام والله تعالی اعلم بحقیقة الامر فی کل مرام والحمد لله مولینا الهادی ذی الجلال والاکرام۔ | صلح جھوٹ پر مبنی ہو تو دیانتاً نافذ نہیں ہوتے، اور یہ بات ہم بھی تسلیم کرتے ہیں کہ مرد و عورت کے قاضی کے ہاں اقرار سے قضاءً نکاح ہو جاتا ہے جبکہ ہماری گفتگو دیانت یعنی عنداللہ کے بارے میں ہے، تو اگر امام برہان الدین کی مراد یہ ہو کہ صرف قضاءً نکاح ہو جاتا ہے جبکہ ان کا کلام اس طرف مائل ہوتا ہے کیونکہ انہوں نے اقرار کو انشاء بنایا ہے اور یہ نہیں فرمایا کہ وہ انشاء ہے اور پھر انہوں نے اپنی بات کا مدار اصل یعنی مبسوط کی عبارت کو بنایا ہے جس سے صرف قضاءً جواز ثابت ہے اگر ان کا یہی مقصد ہے تو بجا اور حق ہے جس میں کسی شبہ کی گنجائش نہیں ہے اور اگر اس عظیم امام کے کلام کو درست بنانے کے لیے اس مقصد کی طرف راجع کیا جائے تو کوئی حرج نہیں ہے اگرچہ ان کے ظاہر کلام سے یہ مقصد بعید نظر آتا ہے تاہم اس سے ان کے اور دیگر ائمہ کرام کے کلام میں موافقت پیدا ہو جاتی ہے اور اگر ان کا مذکورہ مقصد نہ ہو تو پھر اس میں کوئی شک نہیں کہ ان کے مقابلہ میں دیگر ائمہ کا کلام حق ہے اور ہر مقصد میں اللہ تعالٰی ہی حقیقت کو بہتر جاننے والا ہے، اللہ تعالٰی رہنمائی فرمانے والے کے لیے تمام تعریفیں ہیں۔(ت)

|

ہاں اگر مرد و زن نے وہ الفاظ کہے جو امر ماضی سے خبر دینے کے لیے متعین نہ تھے مثلاً مرد نے کہا یہ میری زوجہ ہے، عورت بولی یہ میرا شوہر ہے، یا مرد نے کہا میں اس کا خاوند ہوں، عورت بولی میں اس کی جورو ہوں، اور دونوں نے ان الفاظ سے عقد نکاح کرنے کی نیت کی یعنی ان میں کسی کا قصد اخبار نہ تھا دونوں نے بالارادہ انشاء کہے تو بیشک یہ الفاظ عقد نکاح ٹھہریں گے کہ جب قصد اخبار نہیں تو یہ لفظ اقرار نہیں اور جب اخبار ماضی کے لیے متعین نہیں تو ارادہ انشاء کے صالح ہیں تو انھوں نے الفاظ صالحہ سے قصد انشاء کیا اور اسی قدر تحقیق ایجاب و قبول کے لیے بس ہے۔ بخلاف ان الفاظ کے جو اخبار الماضی کے سوا دوسرے معنی کے محتمل نہ ہوں مثلاً کہیں باہم ہمارا نکاح ہو چکا ہے کہ اب اخبار میں متعین اور انشاء سے مباین،

Fatawa Rizvia (Volume 11)

I say (Aqool): By the grace of Allah Almighty, the explanation I have provided is necessarily the intended meaning of the statement of the great Imam, the jurist of the soul, Qadi Khan (may Allah Almighty have mercy on him). Where, after citing the reports of Bayhaqi and Nawazil in accordance with what we previously explained, he stated that it is appropriate to give a detailed answer: if a man and a woman confessed to a marriage in the past despite no contract existing between them, marriage will not be established through this confession. However, if the woman said in her confession, 'this is my husband' and the man said, 'this is my wife', this will be considered an admission of marriage, and within their admission, a marriage contract (ijab) will occur. This is unlike an admission regarding a past marriage contract, because that is pure falsehood. The summary of this detail is as Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) stated: if a person says to his wife, 'You are not my wife,' intending divorce, the divorce takes place. It is as if the person said, 'You are not my wife because I have divorced you.' But if he said to his wife, 'I did not marry you,' intending divorce by this statement, the divorce will not occur because this is such a lie for which no justification can be made. It is quoted in Radd al-Muhtar from Al-Fath that this detail is the truth.

1 Fatawa Qadi Khan, Book of Marriage, Chapter 1, Naval Kishore, Lucknow, 1/149 2 Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Chapter 1, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/266

अक़ूल (मैं कहता हूँ): अल्लाह तआला की तौफीक से मैंने जो व्याख्या की है, वह महान इमाम, फकीह-उल-नफ़्स काज़ी खान (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) के कथन का भी अनिवार्य रूप से यही अर्थ है। जहाँ उन्होंने बैहकी और नवाज़िल के बयानों को हमारे द्वारा पहले बताए गए विवरण के अनुसार उद्धृत करने के बाद स्पष्ट करते हुए फरमाया कि उचित है कि उत्तर विस्तार से दिया जाए: यदि पुरुष और महिला ने पूर्व में निकाह न होने के बावजूद पूर्व में निकाह होने का स्वीकार (इकरार) किया, तो इस स्वीकार से निकाह नहीं होगा। और यदि महिला ने स्वीकार में यूँ कहा कि 'यह मेरा पति है' और पुरुष ने यूँ कहा कि 'यह मेरी पत्नी है', तो यह निकाह का स्वीकार माना जाएगा और उनके स्वीकार के अंतर्गत निकाह का ईजाब (प्रस्ताव) संपन्न हो जाएगा। इसके विपरीत जब पूर्व के निकाह के बारे में स्वीकार हो, क्योंकि वह शुद्ध रूप से झूठ है। इस विवरण का सार वैसा ही है जैसा इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया कि यदि किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा कि 'तू मेरी पत्नी नहीं है' और उसकी नियत तलाक की हो, तो तलाक हो जाएगा, मानो उस व्यक्ति ने यूँ कहा हो कि 'तू मेरी पत्नी नहीं है क्योंकि मैंने तुझे तलाक दे दिया है'। और यदि उसने पत्नी से यूँ कहा कि 'मैंने तुझसे निकाह नहीं किया' और इस कथन से उसने तलाक की नियत की हो, तो तलाक नहीं होगा क्योंकि यह ऐसा झूठ है जिसकी कोई सफाई नहीं दी जा सकती। रद-उल-मुह्तार में फ़तह से उद्धृत किया गया है कि यही विवरण सत्य है।

1 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताबुन निकाह, अल-फ़स्ल-उल-अव्वल, नवल किशोर, लखनऊ, 1/149 2 रद-उल-मुह्तार, किताबुन निकाह, अल-फ़स्ल-उल-अव्वल, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/266

اقول: هذا الذی قررته بتوفیق الله تعالی یجب ان یکون هو المراد من قوله الامام الاجل فقیه النفس قاضیخاں رحمه الله تعالی حیث افاد بعد ما اثر عن البیهقی والنوازل ماسلفنا۔ قال مولانا رضی الله تعالی عنه ینبغی ان یکون الجواب علی التفصیل ان اقرا بعقد ماض ولم یکن بینهما عقد لایکون نکاحا وان اقرت المرأة انه زوجها واقر الرجل انها امرأته یکون ذلك نکاحا۔ ویتضمن اقرارهما بذلك انشاء النکاح بینهما بخلاف ما اذا اقرا بعقد لم یکن لان ذلك کذب محض وهو کما قال ابوحنیفة رضی الله تعالی عنه اذا قال الرجل لامرأته لست لی بامرأة ونوی به الطلاق یقع ویجعل کأنه قال لست لی بامرأة لانی قد طلقتك ولو قال لم اکن تزوجتها ونوی به الطلاق لا یقع لان ذلك کذب محض لا یمکن تصحیحه 1 اه قال فی الفتح علی مانقل عنه فی ردالمحتار ان الحق هذا التفصیل 2 اه

اقول: میں نے اللہ تعالیٰ کی توفیق سے جو تقریر کی ہے امام اجل فقیہ النفس قاضی خاں کے قول کا بھی لازمی طور پر یہی مقصد ہے جہاں انہوں نے بیہقی اور نواز ل کے قول کو ہمارے بیان کردہ کے مطابق نقل کرنے کے بعد افادہ کرتے ہوئے فرمایا کہ مناسب ہے کہ جواب میں تفصیل سے کام لیا جائے کہ مرد و عورت نے ماضی میں نکاح نہ ہونے کے باوجود ماضی میں نکاح ہونے کا اقرار کیا تو اس اقرار سے نکاح نہ ہوگا، اور اگر عورت نے اقرار میں یوں کہا کہ یہ میرا خاوند ہے اور مرد نے یوں کہا کہ یہ میری بیوی ہے تو یہ اقرار نکاح قرار پائے گا اور ان کے اقرار کے ضمن میں نکاح ایجاب ہو جائیگا۔ بخلاف جبکہ ماضی کے نکاح کے بارے میں اقرار ہو، کیونکہ وہ محض جھوٹ ہے۔ اس تفصیل کا ماحاصل ایسے ہے جیسا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ اگر کسی شخص نے اپنی بیوی کو کہا کہ تو میری بیوی نہیں ہے اور اس نے طلاق کی نیت کی ہو تو طلاق ہو جائے گی گویا اس شخص نے یوں کہا کہ تو میری بیوی نہیں کیونکہ میں

نے تجھے طلاق دے دی ہے، اور اگر اس نے بیوی کو یوں کہا کہ میں نے تجھ سے نکاح نہیں کیا اس قول سے اس نے طلاق کی نیت کی ہو تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ یہ ایسا جھوٹ ہے جس کی توجیہ نہیں ہو سکتی اھ ردالمحتار میں فتح سے نقل کیا گیا ہے کہ یہی تفصیل حق ہے اھ، اس

1 فتاویٰ قاضی خاں کتاب النکاح الفصل الاول نولکشور لکھنو ۱/۱۴۹ 2 ردالمحتار کتاب النکاح الفصل الاول داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۶

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Arabic Column] The meaning is only based on what we have explained, and it is not intended that if the word is not specified for reporting the past, the contract would be valid even if they intended it as a report. How so, when it would then be nothing but a pure lie? A testimony for you in this regard is what was cited from the issue of divorce: for if he said, 'You are not my wife,' and did not intend by it the initiation of divorce, but rather they intended a false report, it would definitely not occur. This is because it does not occur with explicit words in that case as we mentioned, so how about metaphors? Do you not see that he himself restricted the issue by saying 'and he intended divorce'? Thus, it is said here 'and they intended marriage.' This is what I have arrived at as you have understood. Then, by the success granted by the Lord, Glorified and Exalted is He, I saw that Allama Abd al-Ali Barjandi cited in the commentary of al-Niqayah the words of the Imam, a jurist of the soul, according to the meaning, and expressed it with the very same thing that I understood, and praise be to Allah. This is its text in al-Zahiriyya: If he said in the presence of witnesses, 'This woman is mine,' and she said, 'This is my husband,' the scholars differed on it, and the correct view is that it is not concluded. And in Fatawa Qazi Khan: This would only not be a marriage if they said that by way of reporting a past contract and there was no contract between them, however...

[Urdu Column] The purpose of the detail is the same as what we have stated, and it does not mean that when the word of acknowledgement is not specified for a report of the past, then despite being a report, the marriage contract will be valid. How can this be when the man and woman have merely used a lie? Its witness is also that Imam Qazikhan presented the issue of divorce as a witness on this statement, that if someone said to his wife that you are not my wife and he did not intend the initiation of divorce but only meant a lie, then divorce will definitely not occur. Because when divorce does not happen with clear words in this situation, then how can divorce happen by metaphor, as we have already stated. You must have noticed that they restricted this issue with the intention of divorce (if the said word is spoken with the intention of divorce, then divorce will happen, otherwise not). Similarly, in a false acknowledgement of marriage, if both intended marriage, then marriage will occur, otherwise not. This is what I understood and what I adopted. Then, by the grace of Allah Almighty, I saw Allama Abd al-Ali Barjandi, that he cited Imam Qazi Khan's text by meaning in the commentary of Niqayah and gave it the same interpretation that I understood, and all praise is for Allah Almighty. This same text is in Zahiriyya, that if a

person said in the presence of people to a woman that 'this is my wife', and the woman said 'this is my husband', then there is a difference of opinion among the scholars in this, and in Fatawa Qazikhan it is that in this case, marriage will not occur when the man and...

फ़तावा रज़विया, खंड 11

[अरबी कॉलम] अर्थ केवल उसी पर आधारित है जो हमने स्पष्ट किया है, और इसका उद्देश्य यह नहीं है कि यदि अतीत की जानकारी देने के लिए शब्द निर्दिष्ट नहीं है, तो अनुबंध वैध होगा भले ही उन्होंने इसे एक रिपोर्ट के रूप में इरादा किया हो। ऐसा कैसे, जब यह शुद्ध झूठ के अलावा और कुछ नहीं होगा? इस संबंध में आपके लिए एक गवाही वह है जो तलाक़ के मुद्दे से उद्धृत की गई थी: यदि उसने अपनी पत्नी से कहा, 'तुम मेरी पत्नी नहीं हो,' और उसका इरादा इसके द्वारा तलाक़ की शुरुआत करना नहीं था, बल्कि उन्होंने एक झूठी रिपोर्ट का इरादा किया था, तो यह निश्चित रूप से घटित नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि जैसा कि हमने उल्लेख किया है, उस मामले में स्पष्ट शब्दों के साथ ऐसा नहीं होता है, तो रूपकों (किनाया) के बारे में क्या? क्या आप नहीं देखते कि उन्होंने स्वयं 'और उसने तलाक़ का इरादा किया' कहकर इस मुद्दे को प्रतिबंधित कर दिया? इस प्रकार, यहाँ कहा जाता है 'और उन्होंने निकाह का इरादा किया।' यह वही है जहाँ मैं पहुँचा हूँ जैसा कि आप समझ गए हैं। फिर, स्वामी, जो महिमामय और उच्च है, द्वारा दी गई सफलता से, मैंने देखा कि अल्लामा अब्द अल-अली बरजन्दी ने अल-निक़ाया की व्याख्या में इमाम के शब्दों को अर्थ के अनुसार उद्धृत किया, और इसे उसी चीज़ के साथ व्यक्त किया जो मैंने समझी थी, और अल्लाह की प्रशंसा हो। यह अल-ज़हीरिय्या में इसका पाठ है: यदि उसने गवाहों की उपस्थिति में कहा, 'यह महिला मेरी है,' और उसने कहा, 'यह मेरा पति है,' तो विद्वानों ने इस पर मतभेद किया, और सही विचार यह है कि यह संपन्न नहीं हुआ। और फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में: यह केवल तभी निकाह नहीं होगा जब उन्होंने अतीत के अनुबंध की रिपोर्टिंग के माध्यम से ऐसा कहा हो और उनके बीच कोई अनुबंध न हो, हालांकि...

[उर्दू कॉलम] विस्तार का उद्देश्य वही है जो हमने बयान किया है और इससे यह मुराद नहीं कि जब इकरार का लफ्ज़ माज़ी (अतीत) की खबर के लिए मुतअय्यन (निर्दिष्ट) न हो तो खबर के बावजूद अक़्द-ए-निकाह (निकाह का अनुबंध) सही होगा। यह कैसे हो सकता है जबकि मर्द और औरत ने महज़ झूठ से काम लिया है? इसका शाहिद (गवाह) यह भी है कि इमाम क़ाज़ीख़ान ने इस बयान पर तलाक़ के मसले को बतौर शाहिद पेश फ़रमाया कि अगर किसी ने अपनी बीवी को कहा कि 'तू मेरी बीवी नहीं है' और उसने इंशा-ए-तलाक़ (तलाक़ की शुरुआत) का इरादा न किया बल्कि सिर्फ झूठ मुराद लिया तो कतई तलाक़ न होगी क्योंकि इस सूरत में सरीह (स्पष्ट) लफ्ज़ से जब तलाक़ नहीं होती तो किनाया (रूपक) से कैसे तलाक़ हो सकती है जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं। आपने गौर फ़रमाया होगा कि उन्होंने इस मसले को तलाक़ की नियत से मुकय्यद (सीमित) किया है (मज़कूरा

लफ्ज़ तलाक़ की नियत से कहे तो तलाक़ होगी वरना नहीं)। इसी तरह झूठे इकरार-ए-निकाह में भी दोनों ने निकाह की नियत की हो तो निकाह होगा वरना नहीं, यह जिसको मैंने समझा वही मैंने अख्तियार किया है। फिर मैंने अल्लाह तआला की तौफीक से अल्लामा अब्दुल अली बरजन्दी को देखा कि उन्होंने निक़ाया की शरह (व्याख्या) में इमाम क़ाज़ी खान की इबारत को बिल-मानी (अर्थ के अनुसार) नक़्ल किया और इसकी वही ताबीर (व्याख्या) की जो मैंने समझी, और अल्लाह तआला के लिए ही तमाम हम्द (प्रशंसा) है। यही ज़हीरिय्या की इबारत है कि अगर एक शख्स ने लोगों की मौजूदगी में एक औरत को कहा कि 'यह मेरी बीवी है', और औरत ने कहा 'यह मेरा खाविंद है' तो इसमें मशाईख का इख्तिलाफ़ (मतभेद) है, और फ़तावा क़ाज़ीख़ान में है कि इस सूरत में निकाह न होगा जब मर्द व...

فتاویٰ رضویہ ، جلد یاز دہم

[Arabic Column] فانما المعنى على مابينا و ليس المراد ان اللفظ اذا لم يتعين للاخبار عن الماضي صح العقد وان نويا به الاخبار كيف و انه لا يكون ح الامحض كذب ويشهد لك بذلك ما استشهد به من مسئلة الطلاق فانه ان قال لست لی بأمرأة ولم ينوبه انشاء الطلاق وانما قصدا الاخبار الكاذب لم يقع قطعاً فانه لا يقع عند ذلك بالتصريح كما قدمنا فكيف بالكنايات الا ترى انه بنفسه قيد المسئلة بقوله و نوى الطلاق فكذا يقال ههنا ونويا النكاح هذا ما صرت اليه لما وعيت ثم بتوفيق المولى سبحانه و تعالى رأيت العلامة عبد العلى برجندى نقل فى شرح النقاية كلام الامام فقيه النفس بالمعنى وعبر عنه بعين ما فهمته ، والله الحمد. وهذا نصه فى الظهيرية لو قال بمحضر من الشهود اين زن من است فقالت ايس شوئى من ست اختلف المشائخ فيه والصحيح انه لا ينعقد وفي فتاوى قاضى خان انما لا يكون هذا نكاحا اذا قالا ذلك على سبيل الاخبار عن عقد ماض ولم يكن بينهما عقد اما

[Urdu Column] تفصیل کا مقصد وہی ہے جو ہم نے بیان کیا اور اس سے یہ مراد نہیں کہ جب اقرار کا لفظ ماضی کی خبر کیلئے متعین نہ ہو تو خبر کے باوجود عقد نکاح صحیح ہوگا، یہ کیسے ہوسکتا ہے جبکہ مرد و عورت نے محض جھوٹ سے کام لیا ہے، اس کا شاہد یہ بھی ہے کہ امام قاضیخان نے اس بیان پر طلاق کے مسئلہ کو بطور شاہد پیش فرمایا کہ اگر کسی نے اپنی بیوی کو کہا کہ تو میری بیوی نہیں ہے اور اس نے انشاء طلاق کا ارادہ نہ کیا بلکہ صرف جھوٹ مراد لیا تو قطعاً طلاق نہ ہوگی کیونکہ اس صورت میں صریح لفظ سے جب طلاق نہیں ہوتی تو کنایہ سے کیسے طلاق ہوسکتی ہے جیسا کہ ہم پہلے بیان کر چکے ہیں آپ نے غور فرمایا ہوگا کہ انھوں نے اس مسئلہ کو طلاق کی نیت سے مقید کیا ہے (مذکورہ لفظ طلاق کی نیت سے کہے تو طلاق ہوگی ورنہ نہیں) اسی طرح جھوٹے اقرار نکاح میں بھی دونوں نے نکاح کی نیت کی ہو تو

نکاح ہوگا ورنہ نہیں، یہ جس کو میں نے سمجھا وہی میں نے اختیار کیا ہے، پھر میں نے اللہ تعالیٰ کی توفیق سے علامہ عبدالعلی برجندی کو دیکھا کہ انھوں نے نقایہ کی شرح میں امام قاضی خان کی عبارت کو بالمعنی نقل کیا اور اس کی وہی تعبیر کی جو میں نے سمجھی، اور اللہ تعالیٰ کے لیے ہی تمام حمد ہے، یہی ظہیریہ کی عبارت ہے کہ اگر ایک شخص نے لوگوں کی موجودگی میں ایک عورت کو کہا کہ یہ میری بیوی ہے، اور عورت نے کہا یہ میرا خاوند ہے تو اس میں مشائخ کا اختلاف ہے، اور فتاوی قاضیخان میں ہے کہ اس صورت میں نکاح نہ ہوگا جب مرد و

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

If she confessed that he is her husband and he confessed that she is his wife, and they intended by that the initiation of marriage, then it is a marriage. [Footnote 1: Al-Hidayah]. So praise be to Allah for the good understanding. Urdu Translation: If a woman has falsely spoken about a past contract, but if they intended the initiation of marriage by it, then this marriage will be contracted. Praise be to Allah for the good understanding. I say: From what I have established, it has become clear to you that what the virtuous jurist master chose and what the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq al-al-Itlaq) said is the truth. It does not at all contradict what the generality of the leading scholars have authenticated. Rather, it is the very thing they relied upon. For they only authenticated that marriage is not contracted by mere admission (iqrar), as admission is for the purpose of reporting (akhbar). In such a case, the jurist has explicitly stated the lack of contraction. However, if they both said it with the intention of initiation (insha'), then it is not considered admission in any way, for admission is reporting, not initiation. Thus, the two statements agree, and the authentications support the correctness of what I have issued a fatwa on. If the words of 'Al-Dhakheerah' are understood as we have mentioned before, then harmony is achieved among all statements; otherwise, you must hold fast with your teeth to what I have written. Urdu Translation: I say: From my discourse, it has become clear to you that whatever Imam Qadhi Khan and the Absolute Researcher have said is the truth and it is not at all against the authentication of the general noble Imams because those noble Imams have made the same authentication that marriage will not be contracted by mere admission (iqrar) because admission is the name for news about the past, which is why Imam Qadhi Khan has explicitly stated that marriage does not occur. But if a man and a woman made an admission with the intention of contracting marriage, i.e., initiating marriage, then it will not be in the sense of reporting (akhbar) but initiation, whereas admission actually means news. So according to the words of the jurists and the Imam, all authentications have converged on my fatwa. And if the text of 'Al-Dhakheerah' is taken in the same sense that I mentioned earlier, then there will be agreement in all statements too, otherwise adopt my writing firmly. (T)

I say: Now a controversial issue will arise here. Just as in the marriage of a Muslim at the time of offer (ijab) and acceptance (qabul), the presence of two men or one man and two women who are sane, mature, free, and in a Muslim's marriage, the presence of specific Muslims with those qualities is by consensus, and their hearing

the speech of the contracting parties simultaneously is a condition and necessary according to the majority on the victorious school of thought. The question is whether it is also a condition for them to understand the speech of the contracting parties or not? For example, if a man and a woman performed offer and acceptance in Arabic before two Indians (Hindis) and they did not understand, would this marriage be void or valid? Two statements from the noble scholars have been reported on this. Al-Allamah al-Zayla'i in 'Al-Tabyin' asserted the first view, and Imam Zayla'i in 'Al-Tabyin' and the Absolute Researcher...

1. Sharh al-Niqayah by al-Birjandi, Book of Marriage, Nawal Kishore Lucknow 2/374. Page 138 of 739

फ़तावा रज़विया, खंड 11

यदि उसने स्वीकार किया कि वह उसका पति है और उसने स्वीकार किया कि वह उसकी पत्नी है और उनका इरादा इससे निकाह शुरू करना था, तो यह निकाह है। [फुटनोट 1: अल-हिदाया]। तो अच्छी समझ के लिए अल्लाह की प्रशंसा हो। उर्दू अनुवाद: यदि किसी महिला ने अतीत के अनुबंध के बारे में झूठी खबर दी है, और यदि उन्होंने इससे निकाह शुरू करने का इरादा किया है, तो यह निकाह संपन्न होगा। अच्छी समझ के लिए अल्लाह की प्रशंसा हो। मैं कहता हूँ: जो मैंने स्थापित किया है उससे आपके लिए स्पष्ट हो गया है कि जो गुणवान न्यायविद (फक़ीह) स्वामी ने चुना और जो पूर्ण शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़ अल-इतलाक़) ने कहा, वही सत्य है। यह सामान्य अग्रणी विद्वानों द्वारा प्रमाणित बात के बिल्कुल भी विपरीत नहीं है। बल्कि, यह वही चीज़ है जिस पर उन्होंने भरोसा किया। क्योंकि उन्होंने केवल यह प्रमाणित किया कि विवाह मात्र स्वीकृति (इक़रार) से संपन्न नहीं होता है, क्योंकि स्वीकृति रिपोर्टिंग (अखबार) के उद्देश्य से होती है। ऐसे मामले में, न्यायविद ने स्पष्ट रूप से अनुबंध न होने की बात कही है। हालाँकि, यदि उन दोनों ने इसे आरंभ (इंशा) के इरादे से कहा, तो इसे किसी भी तरह से स्वीकृति नहीं माना जाएगा, क्योंकि स्वीकृति रिपोर्टिंग है, आरंभ नहीं। इस प्रकार, दो कथन सहमत होते हैं, और प्रमाणीकरण मेरे द्वारा जारी किए गए फतवे की शुद्धता का समर्थन करते हैं। यदि 'अल-ज़खीरा' के शब्दों को उसी तरह समझा जाता है जैसा हमने पहले उल्लेख किया है, तो सभी कथनों में सामंजस्य स्थापित हो जाता है; अन्यथा, आपको मेरे द्वारा लिखे गए लेखन को दाँतों से मज़बूती से पकड़ना चाहिए। उर्दू अनुवाद: मैं कहता हूँ: मेरे प्रवचन से आपके लिए यह स्पष्ट हो गया है कि इमाम क़ाज़ी खान और मुत्लक़ शोधकर्ता ने जो कुछ भी कहा है वह सच है और यह सामान्य प्रतिष्ठित इमामों के प्रमाणीकरण के बिल्कुल भी खिलाफ नहीं है क्योंकि उन प्रतिष्ठित इमामों ने वही प्रमाणीकरण किया है कि मात्र स्वीकृति (इक़रार) से निकाह संपन्न नहीं होगा क्योंकि स्वीकृति अतीत की खबर का नाम है, यही कारण है कि इमाम क़ाज़ी खान ने स्पष्ट रूप से कहा है कि निकाह नहीं होता है। लेकिन अगर एक पुरुष और एक महिला ने निकाह करने यानी निकाह शुरू करने के इरादे से स्वीकृति दी, तो यह रिपोर्टिंग (अखबार) के अर्थ में नहीं बल्कि आरंभ (इंशा) के अर्थ में होगा, जबकि स्वीकृति का वास्तव में अर्थ खबर है। तो न्यायविदों और इमाम के शब्दों के अनुसार, सभी प्रमाणीकरण मेरे फतवे पर एकत्रित हो गए हैं। और यदि 'अल-ज़खीरा' के पाठ को उसी अर्थ में लिया जाए जिसका मैंने पहले उल्लेख किया है, तो सभी कथनों में भी सहमति होगी, अन्यथा मेरे लेखन को दृढ़ता से अपनाएं। (त)

मैं कहता हूँ: अब यहाँ एक विवादास्पद मुद्दा उठेगा। जिस प्रकार एक मुस्लिम के निकाह में प्रस्ताव (ईजाब) और स्वीकृति (क़बूल) के समय दो पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं का उपस्थित होना, जो बुद्धिमान, वयस्क, स्वतंत्र हों, और एक मुस्लिम के निकाह में, उन गुणों वाले विशिष्ट मुसलमानों की उपस्थिति सर्वसम्मति से अनिवार्य है, और बहुमत के अनुसार विजयी पंथ पर अनुबंध करने वाले पक्षों के भाषण को एक साथ सुनना शर्त और आवश्यक है। प्रश्न यह है कि क्या उनके लिए अनुबंध करने वाले पक्षों के भाषण को समझना भी शर्त है या नहीं? उदाहरण के लिए, यदि एक पुरुष और एक महिला ने दो हिंदुओं के सामने अरबी में प्रस्ताव और स्वीकृति दी और वे नहीं समझे, तो क्या यह निकाह अमान्य होगा या मान्य? इस पर महान विद्वानों के दो कथन बताए गए हैं। अल्लामा अल-ज़ैलई ने 'अल-तबीन' में पहले मत की पुष्टि की है, और इमाम ज़ैलई ने 'अल-तबीन' में और पूर्ण शोधकर्ता ने...

1. शरह अल-निकाया अल-बिरजंदी, निकाह की किताब, नवल किशोर लखनऊ 2/374। पृष्ठ 138 का 739

اذا اقرت انه زوجهاو اقرانها زوجته وارادا بذلك انشاء النكاح فهو نكاح ۱ اه فحمد لله على حسن التفهم، عورت نے جھوٹی خبر کے طور پر ماضی میں عقد کے بارے میں کہا ہو، اور اگر انھوں نے اس سے انشاءِ نکاح کا ارادہ کیا تو یہ نکاح منعقد ہوگا، اچھے فہم پر اللہ تعالٰی کی حمد ہے،

اقول: وبما قررت ظهر لك ان هذا الذی اختاره المولی فقیہ النفس وقال المحقق علی الاطلاق انه الحق لا یخالف ماصححه عامة الائمة اصلا بل هو عین ما اعتمدوه فانهم انما صححوا ان النکاح لا ینعقد بالاقرار والاقرار انما یکون عند قصد الاخبار وح قد نص الفقیه علی عدم الانعقاد اما اذا قالاه مریدین به الانشاء لم یکن ذلك من الاقرار فی شئ فان الاقرار هوالاخبار دون الانشاء فتوافق القولان وتظافرت التصحیحات علی صحة ما افتیت به فان حمل کلام الذخیرة علی ما اسلفنا حصل التوفیق في الاقوال جمیعا والافعلیکم بما حررت عضواعلیه بالنواجذ۔ اقول: میری تقریر سے آپ پر واضح ہو گیا کہ جو کچھ امام قاضیخان اور محقق علی الاطلاق نے فرمایا وہی حق ہے اور وہ عام ائمہ کرام کی تصحیح کے ہر گز خلاف نہیں ہے کیونکہ ان ائمہ کرام نے یہی تصحیح کی ہے کہ صرف اقرار سے نکاح منعقد نہ ہوگا کیونکہ اقرار ماضی کے بارے میں خبر کا نام ہے جس وجہ سے امام قاضی خان نے نکاح نہ ہونے کی تصریح کی ہے لیکن اگر مرد و عورت نے نکاح منعقد کرنے یعنی انشاءِ نکاح کے ارادے سے اقرار کیا تو یہ بمعنی اخبار نہ ہوگا بلکہ انشاء ہوگا جبکہ اقرار حقیقتاً خبر کو کہتے ہیں پس فقہاء اور امام کے قول کے موافق اور تمام تصحیحات میرے فتوے پر مجتمع ہو گئیں اور اگر ذخیرہ کی عبارت کو اسی معنی میں لیا جائے جو میں نے پہلے ذکر کیا تو اس سے تمام اقوال میں بھی موافقت ہو جائے گی ورنہ میری تحریر کو مضبوطی سے اپناؤ۔ (ت)

اقول: اب یہاں ایک مسئلہ خلافیہ وارد ہوگا جس طرح نکاح مسلم میں وقت ایجاب وقبول دو مردوں یا ایک مرد دو عورتوں عاقل بالغ آزاد اور نکاح مسلم میں انھیں اوصاف کے خاص مسلمین کا حاضر ہونا بالا تفاق اور ان کا کلام عاقدین معاً سننا عندالجمہور علی المذہب المنصور شرط وضرور ہے آیا یوں ہی ان کا کلام عاقدین سمجھنا بھی شرط ہے یا نہیں۔ مثلاً اگر دو ہندیوں کے سامنے مرد وزن نے عربی میں ایجاب و قبول کرلیا وہ نہ سمجھے ، آیا یہ نکاح فاسد ہوگا یا صحیح، علمائے کرام کے اس میں دونوں قول منقول ہوئے،

جزم بالا ول العلامة الزيلعي فی التبيين و امام زیلعی نے تبیین میں اور محقق علی الاطلاق نے

1 شرح النقاية للبرجندی كتاب النكاح نولكشور لكهنؤ ۲/ ۳۷۴ Page 138 of 739

Volume 11 Fatawa Rizvia

[Table Content] [Left Column - Arabic] The absolute researcher (Al-Muhaqqiq al-Ala al-Itlaq) in 'Al-Fath' and Al-Mawla al-Ghazzi in the text of 'Al-Tanwir' have asserted the first [view], and it was authenticated in 'Al-Jawharah'. It is stated in 'Al-Dhakharah', 'Al-Zahiriyah', 'Khizanat al-Muftin', 'Al-Siraj al-Wahhaj', the commentary on 'Al-Niqayah' by Al-Quhistani and Al-Birjandi, 'Majma al-Anhur', and 'Al-Hindiyyah' that this is the manifest (Zahir) view. Similarly, the jurist (Faqih al-Nafs) chose it in 'Al-Khaniyyah' and weakened the opposing view. 'Al-Dhakharah', followed by 'Al-Bahr', then 'Al-Durr', and 'Majma al-Anhur' stated that this is indeed the [official] school's position. Conversely, 'Al-Fatawa' asserted the second [view], and similarly Al-Baqali mentioned it. In 'Al-Khulasah' and 'Jawahir al-Akhlati', it is stated that it is the most correct (Asah). In 'Al-Majma al-Anhur', citing 'Al-Nisab', it says the fatwa is based on it. The condition of 'understanding' (fahm) was not mentioned in 'Mukhtasar al-Quduri', 'Al-Wiqayah', 'Al-Niqayah', 'Al-Kanz', 'Al-Islah', 'Al-Idah', and 'Al-Multaqi', even though both views are narrated from the pivot of the school, Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), as mentioned in 'Al-Fath'.

[Right Column - Urdu Translation] In 'Al-Fath', the first view was asserted, and Al-Ghazzi mentioned it in the text of 'Tanwir', and it was authenticated in 'Jawharah'. Al-Dhakharah, Al-Zahiriyah, Khizanat al-Muftin, Siraj al-Wahhaj, Al-Quhistani, and Al-Birjandi stated in their commentaries, and in Majma al-Anhur and Al-Hindiyyah, that this is the manifest view. Similarly, Qadi Khan chose it in 'Al-Khaniyyah' and termed the opposing view as weak. Al-Dhakharah, Al-Bahr, Al-Durr, and Majma al-Anhur said this is indeed the school's position. Conversely, the second [correct] view was asserted in 'Al-Fatawa' and Al-Baqali mentioned it in the same way. In 'Al-Khulasah' and 'Jawahir al-Akhlati', it is stated as the manifest view. In 'Majma al-Anhur', citing 'Al-Nisab', it says the fatwa is based on it. The condition of 'understanding' was not mentioned in Mukhtasar al-Quduri, Wiqayah, Niqayah, Kanz, Islah, Idah, and Multaqi, even though both these views are narrated from the pivot of the school, Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), as mentioned in 'Al-Fath'. (T)

And the refined reconciliation is that it is not necessary to understand the meanings of the words, but it is necessary to understand that a marriage contract is taking place.

Footnotes: 1. Sharh al-Niqayah for al-Birjandi, Kitab al-Nikah, Nawal Kishore Lucknow 2/4; Majma al-Anhur, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 1/321. 2.

Majma al-Anhur, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 1/321. 3. Jawahir al-Akhlati, Kitab al-Nikah, manuscript page 47. 4. Majma al-Anhur Sharh Multaqi al-Abhur, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 1/321.

खंड ११ फ़तावा रज़विया

[तालिका सामग्री] [बायां कॉलम - अरबी] 'अल-फ़तह' में अल-मुहक्किक अल-मुतलक़ और 'अत-तन्वीर' के मूल पाठ में अल-मौला अल-ग़ज़ी ने पहले [विचार] पर दृढ़ता व्यक्त की है, और 'अल-जौहरा' में इसकी पुष्टि की गई है। 'अद-दखीरा', 'अज़-ज़हीरिया', 'ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन', 'अत-सिराजुल वहाज', अल-कुहिस्तानी और अल-बिरजंदी द्वारा 'अन-निक़ाया' की व्याख्या, 'मजमा अल-अन्हुर' और 'अल-हिन्दिया' में कहा गया है कि यही ज़ाहिर (प्रकट) है। इसी तरह फ़क़ीह-ए-नफ़्स ने 'अल-ख़ानिया' में इसे चुना है और इसके विपरीत को कमज़ोर बताया है। 'अद-दख़ीरा', फिर 'अल-बहर', फिर 'अद-दुर्र' और 'मजमा अल-अन्हुर' ने कहा है कि यही मत (मज़हब) है। इसके विपरीत, 'अल-फ़तावा' में दूसरे [विचार] पर दृढ़ता व्यक्त की गई है, और इसी तरह अल-बक़ाली ने इसका उल्लेख किया है। 'अल-ख़ुलासा' और 'जवाहर अल-अख़लाती' में कहा गया है कि यह सबसे सही (असह) है। 'मजमा अल-अन्हुर' में 'अन-निसब' के हवाले से कहा गया है कि इसी पर फ़तवा है। 'मुख्तसर अल-क़ुदूरी', 'अल-विक़ाया', 'अन-निक़ाया', 'अल-कन्ज़', 'अल-इस्लाह', 'अल-ईज़ाह' और 'अल-मुल्तक़ी' में 'समझने' (फ़हम) की शर्त का उल्लेख नहीं किया गया है, जबकि ये दोनों विचार मज़हब के आधार इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से वर्णित हैं, जैसा कि 'अल-फ़तह' में उल्लेख किया गया है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] फ़तह में पहले पर मज़बूत राय दी गई है और ग़ज़ी ने तन्वीर के मूल पाठ में ज़िक्र किया और जौहरा में इसकी पुष्टि की। दखीरा, ज़हीरिया, खज़ाना अल-मुफ़्तीन, सिराज अल-वहाज, क़ुहिस्तानी और बिरजंदी ने अपनी व्याख्याओं, मजमा अल-अन्हुर और हिन्दिया में फ़रमाया कि यह ज़ाहिर है, और इसी तरह क़ाज़ी ख़ान ने ख़ानिया में इसे पसंद किया और इसके विपरीत को कमज़ोर कहा है। और दखीरा, बहर, दुर्र, मजमा अल-अन्हुर ने कहा कि यही मज़हब है, और दूसरे (सही) पर मज़बूत राय का इज़हार फ़तावा में किया और इस तरह इसे बक़ाली ने ज़िक्र किया। और ख़ुलासा और जवाहर अल-अख़लाती में कहा कि यह ज़ाहिर है। और मजमा अल-अन्हुर में निसब के हवाले से कहा कि इस पर फ़तवा है, और मुख्तसर अल-क़ुदूरी, विक़ाया, निक़ाया, कन्ज़, इस्लाह, ईज़ाह और मुल्तक़ी में फ़हम (समझ) की शर्त का ज़िक्र नहीं किया गया जबकि ये दोनों क़ौल मज़हब के आधार इमाम मुहम्मद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित हैं, जैसा कि फ़तह में उल्लेखित है। (त)

और सूक्ष्म समाधान यह है कि शब्दों के अर्थ समझना आवश्यक नहीं है, बल्कि यह समझना आवश्यक है कि निकाह का अनुबंध (अक़द) हो रहा है।

पाद टिप्पणियाँ: 1. शरह अन-निक़ाया लिल-बिरजंदी, किताबुन निकाह, नवल किशोर लखनऊ 4/2; मजमा अल-अन्हुर, किताबुन निकाह, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 1/321। 2. मजमा अल-अन्हुर, किताबुन निकाह, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 1/321। 3. जवाहर अल-अख़लाती, किताबुन निकाह, हस्तलिखित प्रति पृष्ठ 47। 4. मजमा अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ी अल-अबहुर, किताबुन निकाह, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 1/321।

[جدول کا مواد] [بایاں کالم - عربی] المحقق على الاطلاق في الفتح والمولى الغزي في متن التنوير وصححه في الجوهرة وقال في الذخيرة والظهيرية وخزانة المفتين والسراج الوهاج وشرح النقاية للقهستاني والبرجندى ومجمع الانهر والهندية انه الظاهر وكذا اختاره فقيه النفس في الخانية وضعف خلافه قال الذخيرة ثم البحر ثم الدر ومجمع الانهر فكان هو المذهب، وجزم بالثاني في الفتاوى وكذا ذكره البقالي وقال في الخلاصة وجواهر الاخلاطي انه الاصح، وفي مجمع الانهر عن النصاب عليه الفتوى ولم يتعرض لقيد الفهم في مختصر القدورى والوقاية والنقاية والكنز والاصلاح والايضاح والملتقى وكلاهما رواية عن مدار المذهب محمد رضى الله تعالى عنه لما في الفتح۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] فتح میں پہلے پر جزم کیا ہے اور غزی نے تنویر کے متن میں ذکر کیا اور جوہرہ میں اس کی تصحیح کی۔ ذخیرہ، ظہیریہ، خزانہ المفتین، سراج الوہاج، قہستانی اور بر جندی نے اپنی شرحوں، مجمع الانہر اور ہندیہ میں فرمایا کہ یہ ظاہر ہے، اور یونہی قاضی خان نے خانیہ میں اس کو پسندیدہ قرار دیا اور اس کے خلاف کو ضعیف کہا ہے۔ اور ذخیرہ، بحر، در، مجمع الانہر نے کہا کہ یہی مذہب ہے، اور دوسرے (صحیح) پر جزم کا اظہار فتاوٰی میں کیا اور یوں اس کو بقالی نے ذکر کیا۔ اور خلاصہ اور جواہر الاخلاطی میں کہا کہ یہ ظاہر ہے۔ اور مجمع الانہر میں نصاب کے حوالے سے کہا کہ اس پر فتوٰی ہے، اور مختصر القدوری، وقایہ، نقایہ، کنز، اصلاح، ایضاح اور ملتقٰی میں فہم کی قید کو ذکر نہیں کیا جبکہ یہ دونوں قول مدار مذہب امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی ہیں، جیسا کہ فتح میں مذکور ہے۔ (ت)

اور توفیق نفیس یہ ہے کہ معنی الفاظ سمجھنا ضروری نہیں مگر اس قدر سمجھنا ضرور ہے کہ یہ عقد نکاح ہو رہا ہے۔

حواشی: 1 شرح النقاية للبرجندی کتاب النکاح نولکشور لکهنؤ ۴/۲، مجمع الانهر کتاب النکاح دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۲۱/۱ 2 مجمع الانهر کتاب النکاح دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۲۱/۱ 3 جواهر اخلاطی کتاب النکاح قلمی نسخہ ص ۴۷ 4 مجمع الانهر شرح ملتقی الابحر کتاب النکاح دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۲۱/۱

I say: This idea occurred to me, then I later found it mentioned by Al-Allamah Mustafa al-Rahmati in Al-Durr, and it is stated in Radd al-Muhtar: Al-Rahmati harmonized the view requiring understanding with the view not requiring it by saying that where understanding is a condition, it means understanding that a marriage contract is taking place. Where the condition of understanding is negated, it means understanding the literal meaning of the words spoken during the contract, provided that the fact that a marriage is occurring is understood. As you can see, this is a very good harmonization.

I say: Whoever knows the jurisprudence and wisdom behind the requirement of witnesses in a marriage contract will find this harmonization perfect. For whoever knows that this is a marriage has witnessed the contract, even if they do not know the specific translation of the words. But whoever does not understand [that it is a marriage] is as if they haven't heard, and whoever hasn't heard is as if they were not present. Through my explanation, it becomes clear to you that mentioning the presence [of witnesses], or hearing, or both along with understanding, all lead to the same result upon scrutiny. And Allah Almighty is the Grantor of success. (T)

Therefore, in the matter at hand, while the man and woman intend the initiation of marriage with those words, it is also necessary that two witnesses also understand their conversation as a marriage contract, whether through circumstantial evidence or by being informed by the contracting parties themselves. Otherwise, if all those present considered it merely as news, then "understanding it as marriage" would not hold true, and the marriage would not be valid.

---

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/274. Page 140 of 739

मैं कहता हूँ: यह विचार मेरे मन में आया, फिर बाद में मुझे यह बात अल्लामा मुस्तफा रहमती के यहाँ अल-दुर्र (हाशिया अल-दुर्र) में मिली। और रद-उल-मुहतार में कहा गया है: अल्लामा रहमती ने समझ की शर्त वाले मत और समझ की शर्त न होने वाले मत के बीच इस तरह सामंजस्य बिठाया है कि— जहाँ समझ की शर्त का मत है, उससे तात्पर्य यह समझना है कि निकाह हो रहा है। और जहाँ समझ की शर्त का निषेध है, उससे निकाह के समय बोले जाने वाले शब्दों के अर्थ की समझ का निषेध है, बशर्ते कि यह समझ लिया गया हो कि निकाह हो रहा है। जैसा कि आप देख रहे हैं, यह एक बहुत अच्छा सामंजस्य है।

मैं कहता हूँ: जिसे निकाह के अनुबंध में गवाहों की उपस्थिति की शर्त के पीछे का न्यायशास्त्र और हिकमत (बुद्धिमत्ता) पता है, वह इस सामंजस्य की पुष्टि करेगा। क्योंकि गवाहों में से जिसने यह जान लिया कि यह निकाह है, तो वह निकाह का गवाह है, भले ही उसने शब्दों का अनुवाद न समझा हो। और जिसे निकाह की समझ ही नहीं हुई, मानो उसने सुना ही नहीं, और जिसने नहीं सुना, मानो वह निकाह की सभा में उपस्थित ही नहीं था। मेरी इस व्याख्या से यह स्पष्ट हो गया कि निकाह की वैधता के लिए केवल गवाहों की उपस्थिति, या गवाहों की उपस्थिति और सुनना, या इन दोनों के साथ समझ का उल्लेख करना, वास्तव में इन सभी का उद्देश्य एक ही है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला ही तौफीक देने वाला है। (त)

अतः विचाराधीन मामले में, जब पुरुष और महिला उन शब्दों से निकाह शुरू करने का इरादा रखते हैं, तो इसके साथ यह भी आवश्यक है कि दो गवाह भी उनकी बातचीत को निकाह का अनुबंध समझें, चाहे वह परिस्थितियों के माध्यम से हो या स्वयं अनुबंध करने वालों द्वारा सूचित किए जाने से। अन्यथा, यदि उपस्थित सभी लोगों ने इसे केवल समाचार माना, तो "इसे निकाह समझना" सच नहीं होगा और निकाह मान्य नहीं होगा।

---

1. रद-उल-मुहतार, किताब-उन-निकाह, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/274। पृष्ठ 739 में से 140

اقول: وقد کان سنح لی ھذا ثم رأیتہ للعلامۃ مصطفی الرحمتی لمحصی الدر وقال فی ردالمحتار ووفق الرحمتی یحمل القول بالاشتراط علی اشتراط فھم انہ عقد نکاح والقول بعدمہ علی عدم اشتراط فھم معانی الالفاظ بعد فھم ان المراد عقد النکاح اھوھو کما تری حسن جدا۔ اقول : مجھے یہ واضح ہوا، پھر اس کے بعد مجھے یہ بات درّ کے محشی علامہ مصطفٰی رحمتی کے ہاں مل گئی۔ اور رد المحتار میں فرمایا کہ علامہ رحمتی نے فہم کی شرط والے قول اور فہم کی شرط نہ ہونے والے قول میں یوں تطبیق دی ہے ___ کہ جہاں فہم کی شرط کا قول ہے اس سے مراد نکاح ہونے کا فہم ہے اور جہاں فہم کی شرط کی نفی ہے اس سے نکاح کے وقت بولے جانے والے الفاظ کے فہم کی نفی مراد ہے بشرطیکہ نکاح ہونا سمجھا گیا ہو ۔ اھ آپ دیکھ رہے ہیں کہ یہ بہت اچھی تطبیق ہے۔ اقول: ومن علم الفقہ والحکمۃ فی اشتراط الشھادۃ فی عقد النکاح اتقن بھذا التوفیق فان من علم ان ھذا نکاح فقد شھد العقد وان لم یقف علی خصوص ترجمۃ الالفاظ ومن لم یفھم فکأن لم یسمع ومن لم یسمع فکأن لم یحضر و بتقریری ھذا یتضح لك ان الاجتزاء بذکر الحضور اوبہ وبالسماع اوذکرھما مع الفھم کل یودی مودی واحدا عند التدقیق واللہ ولی التوفیق۔ اقول: جس کو عقدِ نکاح میں گواہوں کے موجود ہونے کی شرط کی حکمت معلوم ہے وہ اس تطبیق کی توثیق کرے گا کیونکہ جس نے گواہوں میں سے یہ معلوم کر لیا کہ یہ نکاح ہے تو نکاح کا گواہ اگر چہ اس نے الفاظ کا ترجمہ نہ سمجھا، اور جس کو نکاح کا فہم نہ ہوا گویا اس نے سنا ہی نہیں اور جس نے نہ سنا گویا وہ مجلسِ نکاح میں حاضر نہ ہوا۔ میری اس تقریر سے واضح ہو گیا کہ نکاح کے جواز میں صرف گواہوں کا حاضر ہونا، یا گواہوں کی حاضری اور سماع، یا ان دونوں کے ساتھ فہم کا ذکر حقیقتاً ان سب کا مقصد ایک ہی ہے، اور اللہ سبحانہ تعالٰی توفیق کا مالک ہے۔ (ت)

پس مسئلہ دائرہ میں جبکہ مرد وزن ان الفاظ سے قصدِ انشاء کریں اس کے ساتھ یہ بھی ضرور کہ دو شاہد بھی ان کی اس گفتگو کو عقدِ نکاح سمجھیں خواہ بذریعہ قرائن یا خود عاقدین کے مطلع کر رکھنے سے ورنہ اگر سب حضار نے اسے محض اخبار جانا تو " فاہمین انہ نکاح" صادق نہ آیا اور نکاح صحیح نہ ہوا۔

---

1. ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۷۴/۲ Page 140 of 739

Volume 11 | Fatawa Razawiya

Table Content: Left Column (Arabic): "This is what I said based on legal understanding, then I saw it in 'Radd al-Muhtar'. It said that the result of what is in 'Al-Fath' and its summary is that in the metaphors of marriage, intention along with circumstantial evidence, or the confirmation of the proposer by the acceptor, and the understanding of the witnesses of what they are being informed of is necessary. End. Thus, the objective has become clear, and praise be to Allah, the Master of bounties. I say: It is appropriate that the notification should be before the contract as I indicated, so that they (the witnesses) gather the conditions of testimony at the time of the contract. Do you not see that 'comprehending' in their speech is a present state (hal), and the concurrence of the state and its agent is necessary. And Allah Almighty knows best. All this is what has been poured into the heart of this poor one by the grace of the All-Powerful, and the Lord Almighty, when He wills, joins the ignorant helpless one with the expert aware one. Praise be to Allah for the good success and inspiration of verification, and peace and blessings be upon the master of the worlds, Muhammad, and his family and companions all together."

Right Column (Urdu): "I said this based on my own understanding, then I saw in 'Radd al-Muhtar' that they said: the summary and essence of 'Al-Fath' is that in the metaphors of marriage, intention along with circumstantial evidence, or the confirmation of the proposer by the acceptor, and the understanding of the witnesses of what they are meant to understand or being informed of them is necessary. End. Thus, the objective became clear, and praise be to Allah, the Owner of bounties. I say: It is appropriate to inform the witnesses about the marriage beforehand so that they can fulfill the conditions of testimony at the time of the marriage. As I have indicated, did you not see that the jurists have designated the 'understanding' of the witnesses as a 'state' (hal), while it is necessary for the state and its agent to be concurrent. And Allah Almighty knows best. All this was bestowed upon the heart of this poor one by the grace of the All-Powerful Lord; when Allah Almighty wills, He joins the ignorant helpless one with the expert aware one. All praises are for Allah for granting good success and for the inspiration of research, peace and blessings be upon Muhammad, peace be upon him, the master of the worlds, and upon his family and companions, Ameen! (T)"

Main Text Below Table: Then, in the condition where the conclusion of marriage is ordained, there is no need to mention the dowry (Mahr), because marriage is valid and concluded even without mentioning it, rather even by mentioning the non-

existence of dowry, as they have explicitly stated. (As they have made clear about this. T) And Allah, Glorified and Exalted, knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

---

[1] Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/269

तालिका सामग्री: बायां स्तंभ (अरबी): "यह वही है जो मैंने कानूनी समझ के आधार पर कहा था, फिर मैंने इसे 'रद अल-मुह्तार' में देखा। उन्होंने कहा कि 'अल-फतह' में जो कुछ है उसका परिणाम और सारांश यह है कि निकाह के रूपकों (कनाया) में इरादे के साथ-साथ परिस्थितिगत साक्ष्य, या स्वीकार करने वाले द्वारा प्रस्तावक की पुष्टि, और गवाहों द्वारा उस बात की समझ होना जिसे उन्हें सूचित किया जा रहा है, आवश्यक है। समाप्त। इस प्रकार, उद्देश्य स्पष्ट हो गया है, और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो उपकार करने वाला है। मैं कहता हूँ: यह उचित है कि अधिसूचना अनुबंध से पहले होनी चाहिए जैसा कि मैंने संकेत दिया है, ताकि वे (गवाह) अनुबंध के समय गवाही की शर्तों को पूरा कर सकें। क्या आप नहीं देखते कि उनके भाषण में 'समझना' एक वर्तमान स्थिति (हाल) है, और स्थिति और उसके कर्ता का एक साथ होना आवश्यक है। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है। यह सब कुछ इस गरीब के दिल पर सर्वशक्तिमान की कृपा से बरसाया गया है, और भगवान सर्वशक्तिमान, जब वह चाहता है, तो अज्ञानी असहाय को विशेषज्ञ जागरूक से जोड़ देता है। अच्छी सफलता और सत्यापन की प्रेरणा के लिए अल्लाह की प्रशंसा है, और दुनिया के स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद हो।"

दायां स्तंभ (उर्दू): "यह मैंने अपनी समझ से कहा था फिर मैंने 'रद अल-मुह्तार' में देखा, उन्होंने फ़रमाया कि 'फ़तह' का सारांश और निचोड़ यह है कि निकाह के कनायात (संकेतों) में इरादे के साथ कोई संकेत, या स्वीकार करने वाले का प्रस्ताव करने वाले की तस्दीक (पुष्टि) करना और गवाहों का उद्देश्य समझना या उन्हें बताया जाना ज़रूरी है। अतः उद्देश्य स्पष्ट हो गया और अल्लाह तआला, इनाम के मालिक के लिए प्रशंसा है। मैं कहता हूँ: गवाहों को निकाह के बारे में पहले बताना उचित है ताकि वे निकाह के समय गवाही की शर्तों को पूरा कर सकें। जैसा कि मैंने संकेत दिया है, क्या आपने नहीं देखा कि फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने गवाहों के समझने को 'हाल' (वर्तमान स्थिति) माना है, जबकि हाल और उसके करने वाले (आमलि) का एक साथ होना ज़रूरी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। यह सब कुछ इस फ़क़ीर के दिल पर मौला तआला क़ादिर के फ़ैज़ से इल्हाम (प्रेरणा) हुआ, जब अल्लाह तआला चाहता है तो वह अज्ञानी मजबूर को विशेषज्ञ जानकार से मिला देता है। अल्लाह तआला के लिए सब तारीफ़ें हैं उसकी अच्छी तौफ़ीक़ देने और तहक़ीक़ (शोध) के इल्हाम पर, मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, जो तमाम दुनिया के सरदार हैं, उन पर दरूद-ओ-सलाम और उनकी आल (संतानों) और असहाब (साथियों) पर, आमीन! (त)"

तालिका के नीचे का मुख्य पाठ: फिर जिस स्थिति में निकाह के संपन्न होने का आदेश हो, वहाँ मेहर (दहेज) का उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि निकाह बिना उल्लेख के भी, बल्कि मेहर की अनुपस्थिति के उल्लेख के साथ भी सही और संपन्न हो जाता है, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है। (जैसा कि उन्होंने इस पर स्पष्टता दी है। त) और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और उत्तम है।

---

[1] रद अल-मुह्तार, किताब अन-निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/269

جدول کا متن: بایاں کالم (عربی): هذا ما قلته تفقهًا ثم رأيت في رد المحتار، قال حاصل ما في الفتح وملخصه انه لابد في كنايات النكاح من النية مع قرينة او تصديق القابل للموجب وفهم الشهود المراد اعلامهم به اه فأتضح المرام والحمد لله ولی الانعام، اقول: وينبغی ان يكون الاعلام قبل العقد كما اشرت اليه ليكونا جامعی شرائط الشهادة عند العقد الاتری ان فاهمين في كلامهم حال ولا بد من مقارنة الحال والعامل والله تعالی اعلم هذا كله مما أفاض علی قلب الفقير بفيض القدير والمولی تعالی اذا شاء الحق الجاهل العاجز بالماهر الخبير والحمد لله علی حسن التوفيق والهام التحقيق والصلوة والسلام علی سيد العالمين محمد وآله وصحبه اجمعين۔

داہنا کالم (اردو): یہ میں نے اپنی سمجھ سے کہا پھر میں نے ردالمحتار میں دیکھا انھوں نے فرمایا کہ فتح کا ماحاصل اور خلاصہ یہ ہے کہ کنایات نکاح میں نیت مع قرینہ، یا قبول کرنے والے کا ایجاب کرنے والے کی تصدیق کرنا اور گواہوں کا مراد سمجھنا یا ان کو بتایا جانا ضروری ہے اھ پس مقصد واضح ہوگیا اور اللہ تعالٰی مالک انعام کے لیے تعریف ہے اقول: گواہوں کو نکاح کے بارے میں پہلے بتانا مناسب ہے تاکہ وہ نکاح کے وقت شہادت کی شرائط پوری کرسکیں۔ جیسا کہ میں نے اشارہ کیا ہے، کیا آپ نے دیکھا نہیں کہ فقہاء نے گواہوں کے فاہم ہونے کو حال قرار دیا ہے جبکہ حال اور اس کے عامل کا مقارن ہونا ضروری ہے اور اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے۔ یہ سب کچھ اس فقیر کے قلب پر فیضان ہوا مولٰی تعالٰی قادر کے فیض سے، جب اللہ تعالٰی چاہے تو وہ جاہل عاجز کو ماہر خبیر سے ملحق کردیتا ہے اور اللہ تعالٰی کے لیے سب تعریفیں ہیں اس کے اچھی توفیق دینے پر اور تحقیق کے الہام پر، محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سید العالمین پر صلوۃ وسلام اور ان کی آل واصحاب پر، آمین ! (ت)

جدول کے نیچے کی تحریر: پھر جس حالت میں انعقاد نکاح کا حکم ہو ذکر مہر کی کوئی حاجت نہیں کہ نکاح بے ذکر بلکہ بذکر عدم مہر بھی صحیح و منعقد ہے کما نصوا علیه (جیسا کہ اس پر انھوں نے تصریح کی ہے۔ت) واللہ سبحانه وتعالی اعلم وعلمه تعالیٰ اتم واحکم۔

---

[1] ردالمحتار کتاب النکاح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۹

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

Epistle Māḥī al-Ḍalālah fī Ankiḥat al-Hind wa Banjālah 1317 AH (The Eradicator of Misguidance regarding Marriages in India and Bengal)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Issue 7: 12 Jumada al-Ula 1317 Hijri. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this issue: in these times, the marriages that take place, where a person is designated as a proxy (wakil) by a non-guardian (wali) of the woman (Hindah), and two other people are appointed as witnesses with him to seek the woman's permission for marriage. That person, pushing through the crowd of women, goes and sits near the woman and says these words, "Appoint me as your proxy for your marriage." That poor woman, due to the customs of this land and modesty, rarely speaks; often other women prompt her, but she does not respond, and some just weep a little or give a sign like "hmm". Afterward, the proxy comes out with both witnesses and sits in front of the groom. On the right side of the groom sits another person who claims to be a judge (Qazi) and whose profession is shoemaking, tailoring, or weaving... Those who came as proxy along with the witnesses, after greeting the Qazi, sat in front of the groom. The Qazi turned to the proxy and asked, "Where have you come from?" In response, the proxy stated that the daughter of so-and-so has appointed me as her proxy for her marriage...

Page 142 of 739

खंड ग्यारह फतावा रज़विया

रिसाला (लघु पुस्तिका) माही अद-दलाला फी अनकिहत अल-हिन्द व बंजाला १३१७ हिजरी (बंगाल और भारत में निकाहों के संबंध में कोताही को मिटाने वाला)

बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम

मसअला ७: १२ जमादी अल-उला १३१७ हिजरी धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसअले में क्या फरमाते हैं कि वर्तमान समय में जो निकाह होते हैं, जिनमें एक व्यक्ति को लड़की (हिन्दा) के गैर-वली द्वारा वकील बनाया जाता है और दो अन्य व्यक्तियों को गवाही के लिए उसके साथ लड़की से निकाह की अनुमति लेने के लिए भेजा जाता है। वह व्यक्ति महिलाओं की भीड़ में रास्ता बनाते हुए लड़की के पास जाकर बैठता है और ये शब्द कहता है कि "तुम मुझे अपने निकाह के लिए वकील नियुक्त कर दो।" वह बेचारी इस देश के रिवाज और शर्म के कारण कब बोलती है; अक्सर अन्य महिलाएँ उसे समझाती हैं लेकिन वह जवाब नहीं देती, और कुछ थोड़ा रोती हैं या "हूँ" का इशारा कर देती हैं। बाद में वकील साहब दोनों गवाहों के साथ बाहर तशरीफ लाकर दूल्हे के सामने बैठते हैं और दूल्हे की दाईं ओर एक और व्यक्ति बैठता है जो काजी होने का दावा करता है और जिसका पेशा जूता सिलना, दर्जी या बुनकर का है... जो वकील साहब गवाहों के साथ आए थे, उन्होंने काजी साहब को सलाम किया और दूल्हे के सामने बैठ गए। काजी साहब ने वकील साहब की ओर मुखातिब होकर पूछा कि "आपका आना कहाँ से हुआ?" वकील साहब ने जवाब में कहा कि फलां की बेटी ने मुझे अपने निकाह के लिए वकील मुकर्रर (नियुक्त) करके..

पेज १४२ ऑफ ७३९

جلد یازدہم فتاویٰ رضویہ

رسالہ ماحی الضلالۃ فی انکحۃ الھند وبنجالہ ۱۳۱۷ھ (بنگال اور ہندوستان میں نکاحوں کے بارے میں کوتاہی کو مٹانے والا)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۷: ۱۲ جمادی الاولیٰ ۱۳۱۷ھجریہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ فی زمانہ جو کہ عقد ہوتے ہیں کہ ایک شخص غیر کو ولی ہندہ نے وکیل قرار دے کر اور دو شخص اور ہمراہ اس کے واسطے گواہی کے مقرر کر کے واسطے اجازت لینے نکاح کے ہندہ کے پاس بھیجے وہ شخص کسی کا سر اور کسی کا پاؤں کچلتا ہوا ہنگامہ مستورات میں جا کر قریب ہندہ کے بیٹھا اور یہ کلمات کہے کہ تو مجھ کو واسطے عقد اپنے کے وکیل کر دے وہ بے چاری باعث رواج اس ملک اور شرم کے کب گویا ہوتی ہے اکثر مستورات اس کو فہمائش کرتی ہیں مگر وہ نہیں جواب دیتی اور بعض بعض کچھ گریہ یا "ہوں" کا اشارہ کر دیتی ہیں۔ بعد کو وکیل صاحب باہر تشریف مع دونوں گواہوں کے لاکر، دولہا کے روبرو آکر بیٹھتے ہیں اور داہنے دولہا کے ایک شخص اور، کہ دعویٰ قضا کا رکھتے ہیں اور پیشہ کفش دوزی یا خیاطی یا نوربافی کا کرتے ہیں وہ بھی بیٹھتے ہیں---- جو کہ وکیل صاحب مع گواہوں کے تشریف لائے تھے وہ قاضی صاحب سے سلام علیک کر کے روبرو دولہا کے بیٹھ گئے، قاضی صاحب نے وکیل صاحب کی طرف متوجہ ہو کر فرمایا کہ آپ کا آنا کہاں سے ہوا، وکیل صاحب نے جواب اس کے، ارشاد کیا کہ دختر فلاں نے واسطے عقد اپنے کے مجھ کو وکیل مقرر کر کے

Fatawa Razawiyya Volume 11

...sent it, and these two individuals are witnesses of my agency (wakalat). Perform her marriage (nikah) with this groom. After the discussion regarding the marriage contract and the determination of the dower (mahr) in the amount of one lakh rupees and twenty red dinars, excluding maintenance (nan-nafqah), the Qazi turned towards the groom. Thinking [of a custom], he untied the 'kangna' (ceremonial bracelet) tied on the groom's hand, set it aside, turned the 'sehra' (bridal garland) back, and wrapped it on the turban's tail (shimla). He then uttered these words: "I have given in marriage to you the daughter of so-and-so person, through the agency of so-and-so person and with so-and-so person as witness, in exchange for this much dower excluding maintenance. Have you accepted?" He (the groom) replied, "I have accepted." Afterwards, the representative (wakil) along with the witnesses left, and the Qazi also departed after taking his fee for performing the marriage along with two plates of pilaf. The groom tied the 'kangna' back on his hand. Did this marriage happen correctly or not? Is the offspring born from it legitimate or illegitimate?

Zaid's opinion is that the marriage is invalid and the offspring is illegitimate. He claims the sign of illegitimacy is that offspring from such marriages often commit acts like adultery, wine drinking, gambling, or sodomy; they commit unbecoming acts, fight with parents, and have no regard for elders. Such acts supposedly never come from righteous and legitimate offspring.

Amr's opinion is that there is no defect in this marriage, nor can the offspring be illegitimate, because this custom has existed since ancient times. If it were so, all of God's creation would be illegitimate. Is Zaid's opinion correct or Amr's?

Zaid further says that even if there is no 'kangna', and the marriage is done either personally (asalatan), by guardianship (wilayatan), or through an agent (wakil) who performed the proposal and acceptance (ijab wa qubul), but afterwards words of disbelief (kufr) were uttered by either party (husband or wife) without realizing they are words of disbelief, the marriage is still void. Any offspring born before repentance and a new marriage contract would also be illegitimate. Provide a ruling and you shall be rewarded by Allah.

The Answer: It is evident that consent is taken from a woman only when she is sane and an adult. Indeed, the consent of a sane adult woman is legally valid in Sharia, and indeed the silence of a virgin (dushiza) also constitutes consent.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "A virgin girl's consent must be sought regarding herself, and her silence is her consent." (Narrated by Ahmad and the Six [canonical books])	**The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Permission should be sought from a virgin girl regarding herself, and in response to the permission, silence of a virgin is [her consent]."**

1 Sahih Muslim, Chapter on seeking permission from a previously married woman for marriage by speech and from a virgin by silence, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/554.

फतावा रज़विया खंड 11

...भेजा है और मेरी वकालत के ये दोनों व्यक्ति गवाह हैं, आप उसका निकाह इस दूल्हे के साथ कर दीजिये। निकाह की बातचीत तय होने और महर की राशि एक लाख रुपये और बीस लाल दीनार (भरण-पोषण के अलावा) निर्धारित होने के बाद, काज़ी साहब दूल्हे की ओर मुड़े। उन्होंने सोचा [एक प्रथा के बारे में], दूल्हे के हाथ में बँधे 'कंगना' (अनुष्ठानिक कंगन) को खोलकर अलग रख दिया, सेहरे को वापस मोड़कर पगड़ी के पल्ले (शिमला) पर लपेट दिया और ये शब्द कहे: "फलां व्यक्ति की बेटी को, फलां व्यक्ति की वकालत के माध्यम से और फलां व्यक्ति की गवाही के साथ, भरण-पोषण के अतिरिक्त इतने महर के बदले में तुम्हारे निकाह में दे दिया। क्या तुमने स्वीकार किया?" उसने (दूल्हे ने) कहा, "मैंने स्वीकार किया।" इसके बाद वकील साहब गवाहों के साथ चले गए, और काज़ी साहब भी निकाह पढ़ाने का अपना हक और दो रकाबी (प्लेट) पुलाव लेकर चले गए। दूल्हे ने वह कंगना फिर से अपने हाथ में बाँध लिया। क्या यह निकाह सही हुआ या नहीं? और जो संतान हुई वह हराम (अवैध) है या हलाल (वैध)?

ज़ैद का मत यह है कि निकाह सही नहीं हुआ और जो संतान हुई वह हरामी (अवैध) है। हराम और हलाल की पहचान यह है कि जो संतान ऐसे निकाहों से होती है, उनसे अक्सर ऐसे कार्य होते हैं जैसे व्यभिचार, मदिरापान, जुआ या अप्राकृतिक कृत्य। वे अशोभनीय कार्य करते हैं या माता-पिता से झगड़ते हैं और बुज़ुर्गों का लिहाज नहीं करते। ये कार्य नेक और हलाल संतान से कभी नहीं होंगे।

अम्र का मत यह है कि इस निकाह में कोई बुराई नहीं है और न ही संतान हराम हो सकती है क्योंकि यह रस्म पुराने समय से चली आ रही है। अगर ऐसा होता तो खुदा की सारी मखलूक हरामी हो जाती। क्या ज़ैद का मत सही है या अम्र का?

और ज़ैद का यह भी कहना है कि मान लीजिए कि कंगना भी नहीं है और निकाह भी असलतन (स्वयं), विलायतन (अभिभावक द्वारा) या जो वकील है उसी ने ईजाब व क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कराया, और उसके बाद दोनों पक्षों (पति या पत्नी) में से किसी से कुफ्र (अविश्वास) के शब्द निकले और उन्हें पहचान नहीं है कि ये कुफ्र के शब्द हैं, तब भी निकाह खत्म हो जाएगा। और तौबा करने और फिर से ईजाब व क़ुबूल करने से पहले जो संतान होगी, वह भी हरामी होगी। अल्लाह के वास्ते हुक्म बताएं और पुण्य कमाएं।

उत्तर: स्पष्ट है कि महिला से अनुमति तभी ली जाती है जब वह समझदार और बालिग (वयस्क) हो, और बेशक समझदार बालिग महिला की अनुमति शरीयत में मान्य है, और बेशक एक कुंवारी लड़की की खामोशी भी अनुमति है।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "एक कुंवारी लड़की से उसकी स्वयं के बारे में अनुमति मांगी जानी चाहिए, और उसकी खामोशी ही उसकी अनुमति है।" (अहमद और छह [प्रमुख हदीस पुस्तकों] द्वारा वर्णित)	**अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "कुंवारी लड़की से उसकी स्वयं के बारे में अनुमति ली जाए और अनुमति के उत्तर में कुंवारी की खामोशी [उसकी अनुमति है]।"**

1 सहीह मुस्लिम, निकाह में तलाकशुदा या विधवा से बोलकर और कुंवारी से खामोशी के जरिए अनुमति लेने का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/554

पृष्ठ 143/739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

بھیجا ہے اور میری وکالت کے یہ دونوں اشخاص گواہ ہیں آپ اس کا عقد نوشہ ہذا کے ساتھ کر دیجئے ۔ قاضی صاحب نے بعد طے ہونے گفتگو عقد اور تعین مہر مبلغ ایک لاکھ روپے اور بیس دینار سرخ سوائے نان نفقہ کے نوشہ کی طرف متوجہ ہو کر خیال کیا کہ کنگنہ جو ہاتھ میں دولہا کے بندھا تھا وہ کھول کر علیحدہ رکھ دیا اور سہرا کولوٹ کر شملہ پر لپیٹ دیا اور یہ کلمات فرمائے کہ فلاں شخص کی دختر کو بو کالت فلاں شخص اور بہ گواہی فلاں شخص کے بالعوض اس قدر مہر سوائے نان نفقہ کے بیچ نکاح تیرے کے دی میں نے، قبول کی تونے، اس نے کہا قبول کی میں نے۔ بعد کو وکیل صاحب مع گواہوں کے چلے گئے، اور قاضی صاحب بھی اپنا حق نکاح خوانی مع دور کابی پلاؤ کے لے کر تشریف لے گئے ۔ دولہا نے وہ کنگنہ پھر اپنے ہاتھ میں باندھ لیا۔ آیا یہ نکاح درست ہوا یا نہیں؟ اور جو کہ اولاد ہوئی وہ حرام کی ہوئی یا حلال کی ہوئی؟

اور قول زید کا یہ ہے کہ نکاح درست نہیں ہوا اور جو کہ اولاد ہوئی وہ حرامی ہوئی اور شناخت حرام اور حلال کی یہ ہے کہ جو اولاد ایسے نکاحوں سے ہوتی ہے ان سے اکثر یہ فعل سرزد ہوتے ہیں جیسے زنا یا شراب خوری یا قمار بازی یا لواطت، سو اس کے جو فعل ناشائستہ ہیں وہ سرزد ہوتے ہیں یا کہ والدین سے جنگ جدال کرنا اور بزرگ کا لحاظ پاس نہ کرنا۔ یہ فعل اولاد صالح اور حلال سے ہر گز عمل میں نہیں آئیں گے۔

اور قول عمرو کا یہ ہے کہ کچھ اس نکاح میں قباحت نہیں اور نہ اولاد حرام ہو سکتی ہے کیونکہ قدیم سے یہی رسم چلی آئی ۔ اگر ایسا ہو تو سب مخلوق خدا حرامی ہو گئی ، آیا قول زید کا درست ہے یا عمرو کا؟

اور قول زید کا یہ ہے کہ بالفرض کنگنہ بھی نہیں ہے اور نکاح بھی اصالۃً یا ولایۃً یا کہ جو وکیل ہے اسی نے ایجاب قبول کرایا اور بعد اس کے کلمات کفر کے طرفین سے خواہ شوہر یا عورت سے سرزد ہوئے اور ان کی تمیز نہیں ہے کہ یہ کلمات کفر ہیں جب بھی نکاح جاتا رہے گا اور جو قبل از توبہ اور سر نو ایجاب قبول کرنے کے اولاد ہو گی وہ بھی حرامی ہو گی ۔ بینوا توجروا من اللہ ۔

الجواب: ظاہر ہے کہ عورت سے اذن جبھی لیا جاتا ہے کہ عاقلہ بالغہ ہو ، اور بیشک عاقلہ بالغہ کا اذن شرعاً معتبر اور بیشک دوشیزہ کا سکوت بھی اذن۔

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم البکر تستأذن فی نفسہا واذنہا صماتہا ۱ رواہ احمد والستۃ

رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: باکرہ لڑکی سے اس کی ذات کے بارے میں اجازت لی جائے اور اجازت کے جواب میں خاموشی باکرہ کی

1 صحیح مسلم باب استیذان الثیب فی النکاح بالنطق والبکر بالسکوت قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۵۴

Volume 11 Fatawa Razawiyya

[Top Box Left]: ...except for Bukhari from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). [Top Box Right]: Permission will be granted. Imam Ahmad and the authors of the Sahah Sittah (Six Authentic Books of Hadith), except for Bukhari, narrated this from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). (T)

[Middle Box Left]: "If someone other than the closest guardian asks for her permission, such as a stranger or a distant guardian, her silence is not considered, etc." [Middle Box Right]: But this is only when the closest guardian takes permission from her; otherwise, mere silence will not be considered as permission. It is stated in Durr-e-Mukhtar: "If someone other than the closest guardian, for example, a stranger or a distant guardian, seeks permission from a virgin girl, then her silence is not considered valid consent here, etc." (T)

And indeed, most people who are appointed as proxies (vakeel) are strangers or distant guardians. In such a situation, if they took permission and the maiden remained silent, then the agency (wakalah) for them was not established at all. However, if she clearly said "Yes," or if she remained silent upon the closest guardian taking permission, then the agency would be established for him. But a proxy for marriage (Vakeel-un-Nikah) has only the legal authority to perform the marriage himself, not to permit someone else to perform it, unless he is an absolute authorized representative or is explicitly permitted to appoint another proxy. Without this, if he had someone else perform it, then according to the correct school of thought, the marriage would be without permission, even if the contract took place in his presence.

[Bottom Box Left]: In Radd al-Muhtar, from Allama Rahmati, from Allama Hamawi, from the words of Imam Muhammad in Al-Asl: Indeed, the direct action of a sub-proxy in the presence of the original proxy in marriage is not like the direct action of the original proxy himself, unlike in sales, etc. "I say: The text of Al-Ghamz from Al-Walwalijiyya is as follows: If someone appointed a man as a proxy, and that proxy appointed another, and the second one acted in the presence of the first, then if it was buying and selling, it is permissible. Other than buying and selling, such as litigation, demands, marriage, divorce, and the like..."

[Bottom Box Right]: In Radd al-Muhtar, Allama Rahmati has quoted the words of Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) mentioned in Al-Asl (Mabsut) via Allama Hamawi, that in marriage, the action of a sub-proxy in the presence of the

proxy himself is not considered valid; the matter of sales is contrary to this. I say: I state that Al-Ghamz has quoted from Al-Walwalijiyya thus: If someone made someone their proxy, and if the second proxy acted in the presence of the first proxy, then in such a case, if it is a matter of buying and selling, it is permissible. And besides that, other matters like judicial demands, marriage, etc.

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/300.

जिल्द 11 फ़तावा रज़विया

[शीर्ष बॉक्स बायां]: ...सिवाय बुखारी के इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से। [शीर्ष बॉक्स दायां]: अनुमति होगी। इमाम अहमद ने और बुखारी के अलावा सहाह सित्तह (छह प्रामाणिक हदीस पुस्तकें) में इसे इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया गया है। (त)

[मध्य बॉक्स बायां]: "अगर निकटतम अभिभावक के अलावा कोई और उससे अनुमति मांगता है, जैसे कि कोई अजनबी या दूर का अभिभावक, तो उसकी चुप्पी का कोई महत्व नहीं है, इत्यादि।" [मध्य बॉक्स दायां]: लेकिन यह केवल तभी है जब निकटतम अभिभावक (वली अक़रब) उससे अनुमति लेता है; अन्यथा, मात्र चुप्पी अनुमति नहीं मानी जाएगी। दुर्र-ए-मुख्तार में है: "अगर एक कुंवारी लड़की से निकटतम अभिभावक के अलावा कोई और, उदाहरण के लिए एक अजनबी या दूर का अभिभावक, अनुमति मांगता है, तो यहाँ कुंवारी की चुप्पी सहमति के रूप में मान्य नहीं है, इत्यादि।" (त)

और वास्तव में, अधिकांश लोग जिन्हें वकील (प्रतिनिधि) नियुक्त किया जाता है, वे अजनबी या दूर के अभिभावक होते हैं। ऐसी स्थिति में, यदि उन्होंने अनुमति ली और युवती चुप रही, तो उनके लिए वकालत (एजेंसी) बिल्कुल साबित नहीं हुई। और अगर उसने साफ तौर पर "हाँ" कह दिया या निकटतम अभिभावक द्वारा अनुमति लेने पर वह चुप रही, तो उसके लिए वकालत हासिल हो गई। लेकिन निकाह के वकील (वकील-उन-निकाह) को शरई तौर पर केवल इतना अधिकार है कि वह खुद निकाह पढ़ाए, न कि किसी दूसरे को पढ़ाने की अनुमति दे, जब तक कि वह पूर्णतः अधिकृत (माज़ून-ए-मुतलक़) न हो या उसे स्पष्ट रूप से दूसरे को वकील बनाने की अनुमति न दी गई हो। इसके बिना, यदि उसने किसी दूसरे से निकाह पढ़वाया, तो सही मज़हब के अनुसार निकाह बिना अनुमति के होगा, भले ही निकाह का अनुबंध उसके सामने ही हुआ हो।

[निचला बॉक्स बायां]: रद अल-मुह्तार में अल्लामा रहमती से, अल्लामा हमवी से, अल-अस्ल में इमाम मुहम्मद के शब्दों से: "निकाह में वकील के सामने उप-वकील की सीधी कार्रवाई, स्वयं वकील की सीधी कार्रवाई की तरह नहीं है, बिक्री आदि के विपरीत। मैं कहता हूँ: अल-वल्वालिजिया से अल-ग़मज़ का पाठ इस प्रकार है: यदि किसी ने एक व्यक्ति को वकील बनाया, और उस वकील ने किसी अन्य को वकील बनाया, और दूसरे ने पहले की उपस्थिति में कार्य किया, तो यदि वह खरीद-बिक्री

थी, तो यह जायज़ है। खरीद-बिक्री के अलावा अन्य मामले जैसे मुकदमेबाजी, मांग, निकाह, तलाक, और इसी तरह..."

[निचला बॉक्स दायां]: रद अल-मुह्तार में अल्लामा रहमती ने अल्लामा हमवी के हवाले से 'असल' (मबसूत) में वर्णित इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) का कथन उद्धृत किया है कि निकाह में स्वयं वकील की उपस्थिति में उप-वकील की बात मान्य नहीं है, बिक्री का मामला इसके विपरीत है। अक़ूल: मैं कहता हूँ कि ग़मज़ ने वल्वालिजिया से इस प्रकार उद्धृत किया है कि यदि किसी ने किसी को अपना वकील बनाया और यदि दूसरे वकील ने पहले वकील की उपस्थिति में कार्य किया, तो ऐसी स्थिति में यदि खरीद-बिक्री का मामला हो तो वह जायज़ है। और इसके अलावा अन्य मामले जैसे अदालती मांग, निकाह, इत्यादि।

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192।
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/300।

पृष्ठ 144 / 739

جلد یازدہم فتاوی رضویہ

[بایاں ڈبہ]: الا البخاری عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما۔ [دایاں ڈبہ]: اجازت ہوگی۔ امام احمد نے اور صحاح ستہ میں ماسوائے بخاری کے اس کو ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے۔(ت)

[بایاں ڈبہ]: فان استاذنها غیر الاقرب کا جنبی او ولی بعید فلا عبرۃ لسکونها الخ۔ [دایاں ڈبہ]: مگر یہ اسی وقت ہے جبکہ ولی اقرب اس سے اذن لے ورنہ مجرد خاموشی اذن نہ ٹھہرے گی۔ درمختار میں ہے: اگر باکرہ سے ولی اقرب کا غیر مثلاً کوئی اجنبی یا ولی بعید اجازت طلب کرے تو یہاں باکرہ کی خاموشی رضا میں معتبر نہیں الخ۔(ت)

اور بیشک اکثر لوگ جو وکیل کئے جاتے ہیں اجنبی یا ولی بعید ہوتے ہیں تو ایسی حالت میں اگر انہوں نے اذن لے لیا اور دوشیزہ نے سکوت کیا تو سرے سے انہیں کے لیے وکالت ثابت نہ ہوئی اور اگر اس نے صاف "ہوں" کہہ دیا یا ولی اقرب کے اذن لینے پر سکوت کیا تو اس کے لیے وکالت حاصل ہو گئی مگر وکیل بالنکاح کو شرعاً اتنا اختیار ہے کہ خود نکاح پڑھائے نہ کہ دوسرے کو پڑھانے کی اجازت دے جب تک ماذون مطلق یا صراحتہً دوسرے کو وکیل کرنے کا مجاز نہ ہو بغیر اس کے اگر اس نے دوسرے سے پڑھوایا تو صحیح مذہب پر نکاح بلا اذن ہوگا اگرچہ عقد اس کے سامنے ہی واقع ہو،

[بایاں ڈبہ]: في ردالمحتار عن العلامة الرحمتی عن العلامة الحموی عن کلام الامام محمد فی الاصل ان مباشرة وکیل الوکیل بحضرة الوکیل فی النکاح لا تکون کمبا شرة الوکیل بنفسه بخلافه في البیع الخ "اقول: نص الغمز عن الولوالجیة هکذا لو وکل رجلا فوکل الوکیل غیره وفعل الثاني بحضرة الاول فان

كان بيعا وشراء يجوز وما عدا البيع والشراء من الخصومة والتقاضى والنكاح والطلاق وغير ذلك

[دایاں ڈبہ]: ردالمحتار میں علامہ رحمتی نے علامہ حموی کے حوالے سے اصل (مبسوط) میں ذکر شدہ امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کا کلام نقل کیا ہے کہ نکاح میں خود وکیل کی موجودگی میں وکیل کی بات معتبر نہیں ہے، بیع کا معاملہ اس کے برخلاف ہے، اقول: میں کہتا ہوں کہ غمز نے ولوالجیہ سے یوں نقل کیا ہے کہ اگر کسی نے کسی کو اپنا وکیل بنایا اور اگر دوسرے وکیل نے پہلے وکیل کی موجودگی میں عمل کیا تو ایسی صورت میں اگر بیع و شراء کا معاملہ ہو تو جائز ہے اور اس کے علاوہ دیگر امور مثلاً عدالتی مطالبہ، نکاح،

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۲ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۳۰۰

Fatawa Rizvia - Volume 11

Issam mentioned in his compendium that it is permissible, and Muhammad mentioned in 'Al-Asl' that it is not permissible. For he said: 'If the second one acts in the presence of the first one, it is not permissible except in buying and selling, and this is the correct view,' ended summarily. Since this is the import of 'Al-Asl' and it has been followed by a correction, the disagreement is settled, the rare report has vanished, and what is in 'Al-Khaniyah' is discarded. So how about what is in 'Al-Qunyah', even if Allama Al-Tahtawi supported it and the author of 'Al-Bahr' left it in 'Al-Bahr' and Al-Muhaqqiq Al-Alai in 'Al-Durr' while finding it problematic? There is no wonder, for their words, may Allah have mercy on them, testify that they were not aware of the text of 'Al-Asl' at that time, as they did not grasp it even slightly nor did they even catch a whiff of it. But the wonder is with the seal of the investigators, Allama Al-Shami, may his secret be sanctified, who cited the words of 'Al-Asl' but then only sought to support the lack of permissibility, intending lack of enforceability, because the contract is an unauthorized contract (fuduli). It is as if he limited himself to quoting Allama Mustafa. Had he referred to 'Al-Ghamz', he would have seen Imam Al-Walwaliji's correction of the text of 'Al-Asl' and it is known that...

[Right Column Translation]: Whether it be divorce etc., Issam mentioned in his compendium that in these matters too, his action is permissible. And Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) mentioned in 'Al-Asl' that this is not permissible. Thus he said that if a second agent performs an action in the presence of the first agent, it is not permissible except in buying and selling, and this is the correct view (summary). When this is the import of 'Al-Asl' (Al-Mabsut) and it has been corrected in this context, then the disagreement is over and the rare report is proven weak and the statement in 'Al-Khaniyah' falls away. So what is the status of the statement in 'Al-Qunyah' now? Although Allama Tahtawi supported it and then Allama Bahr declared it problematic in 'Al-Bahr' and Muhaqqiq Alai in 'Al-Durr', and it is not unlikely that these gentlemen did not come across the statement of 'Al-Asl', as is evident from their words, that they have not even touched the subject matter of 'Al-Asl'. But there is wonder regarding Allama Shami (may Allah Almighty have mercy on him), that despite mentioning the statement of 'Al-Asl', he did not offer any objection other than expressing the lack of permissibility, even though they do not desire its implementation because this contract by the second agent in marriage is a 'Fuduli' (unauthorized) contract. It seems that Allama Shami considered the citation of Allama

Mustafa as sufficient, and if he had turned towards 'Al-Ghamz', he would have seen Imam Walwaliji's validation of the text of 'Al-Asl'.

---

1. Ghamz 'Uyun al-Basair, Commentary on al-Ashbah wa al-Nazair, Book of Agency, Idarat al-Quran wa al-'Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 2/11.

इसाम ने अपने मुख्तसर (सार) में उल्लेख किया है कि यह जायज़ है, और इमाम मुहम्मद (रह.) ने 'अल-असल' में उल्लेख किया है कि यह जायज़ नहीं है। उन्होंने फरमाया: 'यदि दूसरा वकील पहले वकील की उपस्थिति में कार्य करे, तो खरीद-फरोख्त के अलावा अन्य मामलों में यह जायज़ नहीं है, और यही सही मत है।' (सारांश समाप्त)। जब 'अल-असल' का अर्थ यही है और इसके साथ ही इसकी पुष्टि भी कर दी गई है, तो मतभेद समाप्त हो गया और दुर्लभ रिवायत कमज़ोर साबित हो गई और 'खनिया' का बयान गिर गया। तो अब 'कुनिया' के बयान की क्या हैसियत है, भले ही अल्लामा तहतावी ने इसका समर्थन किया हो और अल्लामा बहर ने इसे 'बहर' में और मुहक्किक अलाई ने 'दुर्र' में आपत्तिजनक करार दिया हो? और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इन हज़रात ने शायद 'अल-असल' के बयान को नहीं देखा होगा, जैसा कि उनके कलाम से स्पष्ट हो रहा है कि उन्होंने 'अल-असल' की विषय-वस्तु को छुआ तक नहीं है। लेकिन अल्लामा शामी (रह.) के बारे में आश्चर्य है कि उन्होंने 'अल-असल' के बयान का उल्लेख करने के बावजूद, इसे जायज़ न बताने के अलावा और कुछ नहीं कहा, जबकि वह इसके लागू होने के पक्ष में नहीं हैं क्योंकि निकाह में दूसरे वकील का यह अनुबंध 'अक्दे फुज़ूली' (अनधिकृत अनुबंध) है। ऐसा लगता है कि अल्लामा शामी ने अल्लामा मुस्तफ़ा के उद्धरण को पर्याप्त समझा, और यदि वे 'ग़मज़' की ओर रुजू करते, तो वे इमाम वलवाल्जी द्वारा 'अल-असल' की इबारत को सही करार देना देख लेते।

[दायां कॉलम अनुवाद]: तलाक़ वगैरह हों तो इसाम ने अपनी मुख्तसर में ज़िक्र किया है कि इन उमूर में भी उसका अमल जाइज़ है। और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला ने असल में ज़िक्र किया है कि यह जाइज़ नहीं है तो यूँ फ़रमाया कि अगर दूसरा वकील पहले वकील की मौजूदगी में अमल करे तो बैअ ओ शिरा (खरीद-बिक्री) के इलावा में जाइज़ नहीं है, और यही सही है (अह मुख़्तसन)। जब असल (मब्सूत) का मुफ़ाद यही है और इसी ज़िम्न में उसकी तसहीह (सुधार) कर दी गई है तो उसका ख़िलाफ़ ख़त्म और नादिर रिवायत कमज़ोर साबित हो गई और खानिया का बयान साक़ित हो गया। तो अब कुनिया के बयान की क्या हैसियत है अगरचे अल्लामा तहतावी ने इसकी ताईद की है और फिर उसको अल्लामा बहर ने बहर में और मोहक्किक़ अलाई ने दुर में बाअसे इशकाल (आपत्ति का कारण) क़रार दिया है और कोई बईद नहीं इन हज़रात ने असल के बयान पर इत्तेला न पाई हो जैसा कि इन हज़रात के कलाम से अयाँ हो रहा है, कि उन्होंने असल के मज़मून को छुआ तक नहीं है। लेकिन अल्लामा शामी रहमतुल्लाह तआला अलैहि के बारे में तअज्जुब है कि उन्होंने असल के बयान

को ज़िक्र करने के बावजूद अदम-ए-जवाज़ के इज़हार के इलावा कुछ तअअरुज़ न फ़रमाया हालांकि वो इसके निफ़ाज़ के ख़्वाहान नहीं हैं क्योंकि दूसरे वकील का निकाह में ये अक्द-ए-फ़ुज़ूली है, मालूम होता है कि अल्लामा शामी ने अल्लामा मुस्तफ़ा की नक़ल को काफ़ी समझा और अगर वो ग़मज़ की तरफ़ रुजू करते तो इमाम वलवाल्जी का असल की इबारत को सही क़रार देना देख लेते।

---

1. ग़मज़ उयून अल-बसायर शरह अल-अशबाह व अल-नज़ायर, किताब अल-वकालाह, इदारात अल-कुरआन व अल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 2/11।

فتاوی رضویه - جلد یازدہم

ذكر عصام فی مختصره انه یجوز، وذكر محمد في الاصل انه لایجوز فأنه قال اذا فعل الثاني بحضرة الاول لم یجز الا فی البیع والشراء وهو الصحیح اهـ ملخصا، فأذا كان هذا هو مفاد الاصل وقد ذیل با لتصحیح فأنقطع الخلاف واضمحلت الروایة النادرة وسقط ما فی الخانیة، فكیف بما في القنیة وان ایده العلامة الطحطاوی وتركه علامة البحر في البحر والمحقق العلائی فی الدر مستشكلا ولا غرو فقد شهدت كلماتهم رحمهم الله تعالی انهم لم یطلعوا اذ ذاك علی كلام الاصل، اصلا حیث لم یلموا به الماما ولا شبوا منه اشماما، ولكن العجب من خاتمة المحققین العلامة الشامی قدس سره السامی حیث اورد كلام الاصل ثم لم یسمح الاباستظهار عدم الجواز مریدا عدم النفاذ، اذ العقد عقد فضولی فكأنه اقتصر علی النقل عن العلامة مصطفی ولوراجع الغمز لرای تصحیح الامام الولوالجی لما فی الاصل ومعلوم ان

طلاق وغیرہ ہوں تو عصام نے اپنی مختصر میں ذکر کیا ہے کہ ان امور میں بھی اس کا عمل جائز ہے اور امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے اصل میں ذکر کیا ہے کہ یہ جائز نہیں ہے تو یوں فرمایا کہ اگر دوسرا وکیل پہلے وکیل کی موجودگی میں عمل کرے تو بیع وشراء کے علاوہ میں جائز نہیں ہے، اور یہی صحیح ہے اھ ملخصا، جب اصل (مبسوط) کا مفاد یہی ہے اور اسی ضمن میں اس کی تصحیح کردی گئی ہے تو اس کا خلاف ختم اور نادر روایت کمزور ثابت ہو گئی اور خانیہ کا بیان ساقط ہو گیا۔ تو اب قنیہ کے بیان کی کیا حیثیت ہے اگرچہ علامہ طحطاوی نے اس کی تائید کی ہے اور پھر اس کو علامہ بحر نے بحر میں اور محقق علائی نے در میں باعثِ اشکال قرار دیا ہے اور کوئی بعید نہیں ان حضرات نے اصل کے بیان پر اطلاع نہ پائی ہو جیسا کہ ان حضرات کے کلام سے عیاں ہو رہا ہے، کہ انھوں نے اصل کے مضمون کو چھوا تک نہیں ہے لیکن علامہ شامی

رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے بارے میں تعجب ہے کہ انھوں نے اصل کے بیان کو ذکر کرنے کے باوجود عدم جواز کے اظہار کے علاوہ کچھ تعرض نہ فرمایا حالانکہ وہ اس کے نفاذ کے خواہاں نہیں ہیں کیونکہ دوسرے وکیل کا نکاح میں یہ عقد فضولی ہے، معلوم ہوتا ہے کہ علامہ شامی نے علامہ مصطفیٰ کی نقل کو کافی سمجھا اور اگر وہ غمز کی طرف رجوع کرتے تو امام ولوالجی کا اصل کی عبارت کو صحیح قرار دینا دیکھ لیتے

---

1 غمزعیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر کتاب الوکالۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱۱/۲

Fatawa Rizvia Volume Eleven

When the narration of principles is verified, all other narrations fall away. Thus, the path was certainty rather than mere appearances, and Allah is the grantor of success. (T)

Because it is an accepted fact that when the narrations of the fundamental principles are authenticated, all other narrations are considered void. Therefore, it was appropriate for Allamah Shami to bring his certainty into the discourse instead of just expressing [a view], and Allah Almighty alone is the Master of success. (T)

In any case, according to the dominant view, these marriages are 'fuzuli' (unauthorized) marriages. Considering fuzuli marriage void in the Hanafi school of thought is pure ignorance and futile. Rather, by the consensus of the Hanafi Imams (may Allah be pleased with them), it becomes contracted but remains dependent on the consent of the principal (who in this case is the woman whose marriage was conducted by a non-agent without her permission). If she grants permission, it becomes effective; if she rejects it, it becomes void.

As is the rule for all unauthorized actions (tasarrufat al-fuzuli) according to us, as explicitly stated in most books of the school of thought.

As is the ruling for all unauthorized dealings according to us, as is explicitly mentioned in all books of the school of thought. (T)

It is mentioned in Alamgiri:

It is not permissible for anyone, be it a father or a ruler, to contract a marriage for a sane adult woman without her permission, whether she is a virgin or non-virgin. If they do so, the marriage is suspended upon her consent. If she consents, it is valid; if she rejects it, it is void. This is also stated in Al-Siraj al-Wahhaj.

A marriage conducted by a father or a ruler against the will of a sane adult woman will not be valid without her permission, whether she is a virgin or non-virgin. If it happens, it will be dependent on her consent. If she declares it valid, it will be valid; otherwise, if she rejects it, that marriage will become void. It is thus in Siraj Wahhaj. (T)

Then, just as consent is given through speech, for example, a woman, upon hearing the news of the marriage, says 'I have validated it', or 'I gave permission', or 'I am pleased', or 'It is acceptable to me', or 'It was done well', or 'May God bless it', and

other similar words of satisfaction (besides all those words which denote satisfaction. T). Similarly, it is also inferred from such actions or states through which consent is understood. For example, the woman asks for her dower (Mahr), or demands cash, or accepts congratulations, or laughs or smiles happily upon hearing the news of the marriage, or sends her trousseau to the husband's house, or accepts the dower sent by him, or allows him to engage in intercourse, kissing, embracing, or touching without compulsion or coercion, or lets him come into privacy with her in a secluded house, or his...

---

1. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter Four on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/287.

फ़तावा रिज़विया खंड ग्यारह

जब सिद्धांतों की रिवायत सही हो जाए, तो उसके अलावा सभी रिवायतें गिर जाती हैं। इसलिए रास्ता निश्चितता का था न कि केवल प्रदर्शन का, और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। (त)

क्योंकि यह एक मानी हुई बात है कि जब मूल सिद्धांतों की रिवायतों की पुष्टि हो जाती है, तो बाकी सभी रिवायतें अमान्य मानी जाती हैं। इसलिए यह उचित था कि अल्लामा शामी केवल अपनी बात ज़ाहिर करने के बजाय अपने दृढ़ विश्वास (जज़्म) को बातचीत में लाते, और अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ (सफलता) का मालिक है। (त)

बहरहाल, राजिह (प्रबल) मत के अनुसार ये निकाह 'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' (अनधिकृत विवाह) होते हैं, और हनफ़ी मत में निकाह-ए-फ़ुज़ूली को बातिल (अमान्य) समझना सरासर अज्ञानता और फ़ुज़ूल बात है। बल्कि हनफ़ी इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति से यह निकाह संपन्न हो जाता है और 'असील' (अर्थात यहाँ वह औरत जिसके लिए उसकी अनुमति के बिना किसी गैर-वकील ने निकाह कर दिया) की अनुमति पर निर्भर रहता है। यदि वह अनुमति दे देती है, तो यह प्रभावी हो जाता है और यदि वह अस्वीकार कर देती है, तो बातिल (रद्द) हो जाता है।

जैसा कि हमारे यहाँ फ़ुज़ूली के सभी कार्यों (तसर्रुफ़ात) का हुक्म है, जैसा कि मज़हब की अधिकांश किताबों में स्पष्ट किया गया है।

जैसा कि हमारे यहाँ फ़ुज़ूली के सभी लेन-देन का हुक्म है, जिसका उल्लेख मज़हब की सभी किताबों में है। (त)

आलमगीरी में है:

किसी वयस्क समझदार महिला के लिए किसी का भी, चाहे पिता हो या शासक, उसकी अनुमति के बिना निकाह करना जायज़ नहीं है, चाहे वह कुंवारी हो या विवाहित। यदि ऐसा किया जाता है, तो निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। यदि वह इसे स्वीकार कर लेती है, तो यह जायज़ है; और यदि वह इसे अस्वीकार कर देती है, तो यह बातिल (अमान्य) है। सिराज अल-वहाज में भी ऐसा ही है।

एक समझदार वयस्क महिला की इच्छा के विरुद्ध पिता या शासक द्वारा किया गया निकाह उसकी अनुमति के बिना मान्य नहीं होगा, चाहे वह वयस्क समझदार महिला कुंवारी हो या विधवा/तलाकशुदा। यदि ऐसा होता है, तो यह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। यदि वह इसे वैध मानती है,

तो यह जायज़ होगा, अन्यथा यदि वह इसे अस्वीकार करती है, तो वह निकाह बातिल हो जाएगा, सिराज वहाज में इसी प्रकार है। (त)

फिर, जैसे सहमति बोलकर दी जाती है, उदाहरण के लिए, एक महिला निकाह की खबर सुनकर कहती है 'मैंने इसे जायज़ किया' या 'अनुमति दी' या 'राज़ी हुई' या 'मुझे स्वीकार है' या 'अच्छा किया' या 'ईश्वर इसे मुबारक करे' आदि संतोष के शब्द (इसके अलावा वे सभी शब्द जो संतोष व्यक्त करते हैं। त)। इसी तरह, यह उन कार्यों या स्थितियों से भी अवगत हो जाती है जिनसे सहमति समझी जाती है। उदाहरण के लिए, महिला अपना मेहर माँगे, या नकद की माँग करे, या बधाई स्वीकार करे, या निकाह की खबर सुनकर खुशी से हँसे या मुस्कुराए, या अपना जहेज़ शौहर के घर भिजवाए, या उसके द्वारा भेजा गया मेहर ले ले, या उसे बिना किसी जबरदस्ती के अपने साथ संभोग, चुंबन या स्पर्श करने दे, या उसे अकेले मकान में अपने साथ एकांत में आने दे, या उसके..

---

1. फ़तावा हिंदिया, निकाह की किताब, संरक्षकों पर चौथा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/287।

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

روایة الاصول اذا صحت سقطت کل روایة سواها فکان السبیل الجزم دون مجرد الاستظهار، واللہ ولی التوفیق۔

کیونکہ یہ بات مسلمہ ہے کہ جب اصول کی روایات کی تصحیح ہو جائے تو باقی تمام روایات ساقط قرار پاتی ہیں اس لیے مناسب تھا کہ علامہ شامی صرف اظہار کی بجائے اپنے جزم کو کلام میں لاتے ، اور اللہ تعالٰی ہی توفیق کا مالک ہے۔ (ت)

بہر حال مذہبِ راجح پر یہ نکاح نکاحِ فضولی ہوتے ہیں اور نکاحِ فضولی کو مذہب حنفی میں باطل جاننا محض جہالت و فضولی بلکہ باجماع ائمہ حنفیہ رضی اللہ تعالٰی عنہم منعقد ہو جاتا ہے اور اجازتِ اصیل پر (کہ یہاں وہ عورت ہے جس کے لیے بے اذن اس کا نکاح غیر وکیل نے کر دیا) موقوف رہتا ہے اگر وہ اجازت دے نافذ ہو جائے اور رد کر دے تو باطل۔

کما ھو حکم تصرفات الفضولی جمیعاً عندنا کما صرح بہ فی عامة کتب المذہب۔

جیسا کہ فضولی کے تمام تصرفات کا ہمارے ہاں حکم ہے جس کی تمام کتبِ مذہب میں تصریح ہے۔ (ت)

عالمگیری میں ہے:

لا یجوز نکاح احد علی بالغة صحیحة العقل من اب اوسلطان بغیر اذنها بکر اکانت اوثیباً فان فعل ذلك فالنکاح موقوف علی اجازتها فان اجازته جاز وان ردته بطل کذا في السراج الوهاج 1۔

عاقلہ بالغہ کی مرضی کے خلاف باپ یا حاکم کا کیا ہوا نکاح اس کی اجازت کے بغیر جائز نہیں ہوگا خواہ وہ عاقلہ بالغہ باکرہ ہو یا ثیبہ۔ اگر ایسا ہو تو اس کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ وہ جائز قرار دے تو جائز ہوگا ورنہ اگر رد کر دے تو وہ نکاح باطل ہو جائے گا، سراج وہاج میں یوں ہی ہے۔ (ت)

پھر اجازت جس طرح قول سے ہوتی ہے مثلاً عورت خبرِ نکاح سن کر کہے میں نے جائز کیا یا اجازت دی یا راضی ہوئی یا مجھے قبول ہے یا اچھا کیا یا خدا مبارک کرے الی غیر ذلك من الفاظ الرضا (علاوہ ازیں تمام وہ الفاظ جو رضا پر دلالت کرتے ہیں۔ت) یوں ہی اس فعل یا حال سے بھی آگاہ ہو جاتی ہے جس سے رضامندی سمجھی جائے مثلاً عورت اپنا مہر مانگے یا نقد طلب کرے یا مبارکباد لے یا خبرِ نکاح سن کر خوشی سے ہنسے یا مسکرائے یا اپنا جہیز شوہر کے گھر بھجوائے یا اس کا بھیجا ہوا مہر لے لے یا اسے بلا جبر و اکراہ اپنے ساتھ جماع یا بوس و کنار و مساس کرنے دے یا تنہا مکان میں اپنے ساتھ خلوت میں آنے دے یا اس کے

---

1 فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۸۷

...becomes busy in service while she did not used to serve him before the marriage. "And the like of every action that indicates consent" (And similarly all such actions that indicate consent. -T) In all these cases, the marriage which was suspended will become valid, effective, and binding. It is in Al-Alamgiri.

Just as her consent is realized by words, such as her saying 'I am pleased', 'I accepted', 'you did well', 'you were correct', 'may Allah bless you' or 'us', and the like; it is also realized by indication, such as demanding her dower (Mahr), her maintenance (Nafaqah), allowing sexual intercourse, and accepting congratulations and laughing with joy without mockery. Thus in At-Tabyin.

Just as consent is established for a sane, adult woman through words like 'I am pleased', 'I accepted', 'you did well', 'you were correct', 'May Allah Almighty bless you' or 'bless us'; similarly, consent will be established by indication through these actions, for example, demanding Mahr, demanding maintenance, giving permission for intercourse, accepting congratulations, laughing with joy, etc., as it is in At-Tabyin. (T)

In the same is:

If she smiles, it is consent. This is the correct view of the school of thought (Madhab), as mentioned by Shams al-A'imma al-Halwani. This is also in Al-Muhit.

If she smiles with joy, then it is consent; this is the correct school of thought. Shams al-A'imma al-Halwani has mentioned it as it is in Al-Muhit. (T)

In Khania it is:

Consent is by tongue or action that indicates consent, such as allowing intercourse, demanding Mahr, and receiving Mahr without accepting a gift. And similarly in the case of a boy.

Consent is both verbal and by action; this is in those matters which indicate consent. Such as permission for intercourse, demanding Mahr, receiving the Mahr, as opposed to accepting a gift, as this would not be consent for marriage. It is the same for a boy. (T)

In Hashiya Tahtawi, under the statement of Durr al-Mukhtar, "Accepting congratulations and laughing in joy or the like" (Accepting congratulations, laughing

in joy, etc. -T), it is: "Like her action of carrying her trousseau to the husband's house" (Like the girl's trousseau belongings...

---

1. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter 4 on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/289
2. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter 4 on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/287
3. Fatawa Qadhi Khan, Section on the Conditions of Marriage, Naval Kishore Lucknow, 1/158
4. Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Chapter of the Guardian, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/42

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...वह सेवा के काम में लग जाए, जबकि निकाह से पहले वह उसकी सेवा नहीं करती थी। 'और इसी प्रकार का हर वह कार्य जो सहमति का संकेत देता हो' (और इसी तरह के तमाम वो अफ़आल जो रज़ामंदी पर दलालत करते हैं। -त) इन सब सूरतों में वो निकाह जो मुवक्क़फ़ (स्थगित) था, जायज़, नाफ़िज़ और लाज़िम हो जाएगा। आलमगिरी में है।

जैसे उसकी रज़ामंदी ज़ुबान से साबित होती है जैसे कि उसका ये कहना 'मैं राज़ी हूँ', 'मैंने कुबूल किया', 'तूने अच्छा किया', 'तूने दुरुस्त किया'। 'अल्लाह तआला तुझे बरकत दे' या 'हमें बरकत दे', इसी तरह इन अफ़आल (कार्यों) से भी इशारतन रज़ामंदी साबित होगी मसलन मेहर तलब करना, नफ़क़ा तलब करना, सोहबत (संभोग) की इजाज़त देना, मुबारकबाद कुबूल करना, खुशी से हँसना वगैरह, जैसा कि तबीय्यीन में है।

जैसा कि, मैं राज़ी हूँ, मैंने कुबूल किया, तूने अच्छा किया, तूने दुरुस्त किया। अल्लाह तआला तुझे बरकत दे या हमें बरकत दे जैसे अल्फाज़ से आकिला बालिगा की रज़ामंदी साबित होती है, यूँ ही इन अफ़आल से दलालतन रज़ा साबित होगी मसलन मेहर तलब करना, नफ़क़ा तलब करना, वती की इजाज़त देना, मुबारकबाद, कुबूल करना, खुशी से हँसना वगैरह, जैसा कि तबीय्यीन में है। (त)

उसी में है:

अगर वह मुस्कराए तो वह रज़ामंदी है, यही मज़हब का सही कौल है, जिसे शम्सुल आइम्मा हलवानी ने ज़िक्र किया, इसी तरह मुहीत में है।

अगर वह खुशी से तबस्सुम (मुस्कान) करे तो वह रज़ा है, यही सही मज़हब है। इसको शम्सुल आइम्मा हलवानी ने ज़िक्र किया जैसा कि मुहीत में है। (त)

खनिया में है:

रज़ामंदी ज़ुबान से या ऐसे काम से होती है जो रज़ामंदी पर दलालत करे, जैसे वती (संभोग) की इजाज़त देना, मेहर तलब करना और मेहर कुबूल करना बगैर हदीया (उपहार) कुबूल किए। और ऐसा ही लड़के के हक में है।

रज़ा ज़ुबानी और अमल दोनों तरह होती है, ये उन उमूर (बातों) में है जो रज़ा पर दलालत करें। जैसे वती की इजाज़त, मेहर तलब करना, मेहर को वसूल कर लेना, इसके बरक्स हदीया कुबूल

जैसे उसकी रज़ामंदी ज़ुबान से साबित होती है जैसे कि उसका ये कहना 'मैं राज़ी हूँ', 'मैंने कुबूल किया', 'तूने अच्छा किया', 'तूने दुरुस्त किया'। 'अल्लाह तआला तुझे बरकत दे' या 'हमें बरकत दे', इसी तरह इन अफ़आल (कार्यों) से भी इशारतन रज़ामंदी साबित होगी मसलन मेहर तलब करना, नफ़क़ा तलब करना, सोहबत (संभोग) की इजाज़त देना, मुबारकबाद कुबूल करना, खुशी से हँसना वगैरह, जैसा कि तबीय्यीन में है।

जैसा कि, मैं राज़ी हूँ, मैंने कुबूल किया, तूने अच्छा किया, तूने दुरुस्त किया। अल्लाह तआला तुझे बरकत दे या हमें बरकत दे जैसे अल्फाज़ से आकिला बालिगा की रज़ामंदी साबित होती है, यूँ ही इन अफ़आल से दलालतन रज़ा साबित होगी मसलन मेहर तलब करना, नफ़क़ा तलब करना, वती की इजाज़त देना, मुबारकबाद, कुबूल करना, खुशी से हँसना वगैरह, जैसा कि तबीय्यीन में है। (त)

करने के कि ये निकाह पर रज़ामंदी न होगी, लड़के के बारे में भी ऐसा ही है। (त)

हाशिया तहतावी में 'दुर्रे मुख़्तार' के इस कौल के तहत 'मुबारकबाद कुबूल करना और खुशी में हँसना वगैरह' (मुबारकबाद कुबूल करना, हँसना खुशी में वगैरह। -त) लिखा है: 'जैसे लड़की का जहेज़ का सामान शौहर के घर ले जाना' (जैसे लड़की का जहेज़ के सामान...

---

1. फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, चौथा बाब वलियों के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/289
2. फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, चौथा बाब वलियों के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/287
3. फ़तावा काज़ी ख़ान, निकाह की शर्तों वाला हिस्सा, नवल किशोर लखनऊ, 1/158
4. हाशिया तहतावी अलल दुर्रिल मुख़्तार, किताबुन निकाह, बाबुल वली, दारुल मआरिफ़त बेरूत, 2/42

کام خدمت میں مشغول ہو جبکہ نکاح سے پہلے اس کی خدمت نہ کیا کرتی ہو۔ ونحو ذلك من كل فعل يدل على الرضا (اور یونہی اس قسم کے تمام وہ افعال جو رضا مندی پر دلالت کرتے ہیں۔ ت) ان سب صورتوں میں وہ نکاح کہ موقوف تھا جائز و نافذ ولازم ہو جائے گا۔ عالمگیری میں ہے۔

كما يتحقق رضاها بالقول كقولها رضيت وقبلت واحسنت واصبت وبارك الله لك اولناونحوه يتحقق بالدلالة كطلب مهرها ونفقتها وتمكينها من الوطی وقبول التهنئة والضحك بالسرور من غير استهزاء كذا في التبيين1۔

جیسا کہ، میں راضی ہوں، میں نے قبول کیا، تو نے اچھا کیا، تو نے درست کیا۔ اللہ تعالٰی تجھے برکت دے یا ہمیں برکت دے جیسے الفاظ سے عاقلہ بالغہ کی رضا مندی ثابت ہوتی ہے یوں ہی ان افعال سے دلالتہً رضا ثابت ہوگی مثلاً مہر طلب کرنا، نفقہ طلب کرنا، وطی کی اجازت دینا، مبارکباد، قبول کرنا، خوشی سے ہنسنا وغیرہ، جیسا کہ تبیین میں ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

وان تبسمت فهو رضا هو الصحيح من المذهب ذكره شمس الائمة الحلواني كذا في المحيط2۔

اگر وہ خوشی سے تبسم کرے تو وہ رضا ہے، یہی صحیح مذہب ہے۔ اس کو شمس الائمہ حلوانی نے ذکر کیا جیسا کہ محیط میں ہے۔ (ت)

خانیہ میں ہے:

الرضا باللسان او الفعل الذی يدل على الرضا نحوا لتمكين من الوطی وطلب

رضا زبانی اور عمل دونوں طرح ہوتی ہے یہ ان امور میں ہے جو رضا پر دلالت کریں۔ جیسے وطی کی اجازت، مہر

كما يتحقق رضاها بالقول كقولها رضيت وقبلت واحسنت واصبت وبارك الله لك اولناونحوه يتحقق بالدلالة كطلب مهرها ونفقتها وتمكينها من الوطی وقبول التهنئة والضحك بالسرور من غير استهزاء كذا في التبيين1.

جیسا کہ، میں راضی ہوں، میں نے قبول کیا، تو نے اچھا کیا، تو نے درست کیا۔ اللہ تعالٰی تجھے برکت دے یا ہمیں برکت دے جیسے الفاظ سے عاقلہ بالغہ کی رضا مندی ثابت ہوتی ہے یوں ہی ان افعال سے دلالتہً رضا ثابت ہوگی مثلاً مہر طلب کرنا، نفقہ طلب کرنا، وطی کی اجازت دینا، مبارکباد، قبول کرنا، خوشی سے ہنسنا وغیرہ، جیسا کہ تبیین میں ہے۔ (ت)

المهر وقبول المهر دون قبول الهدية وكذا في حق الغلام3.

طلب کرنا، مہر کو وصول کرلینا، بخلاف ہدیہ قبول کرنے کے کہ یہ نکاح پر رضا مندی نہ ہوگی، لڑکے کے بارے میں بھی ایسا ہی ہے۔ (ت)

حاشیہ طحطاویہ میں زیر قول در مختار وقبول التهنئة والضحك سرور او نحو ذلک (مبارک باد قبول کرنا، ہنسنا خوشی میں وغیرہ۔ ت) ہے کامرها بحمل جهازها الی بیت الزوج4 (جیسے لڑکی کا جہیز کے سامان

---

1 فتاوٰی ہندیہ کتاب النکاح الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۹/۱ 2 فتاوٰی ہندیہ کتاب النکاح الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۷/۱ 3 فتاوٰی قاضی خان فصل فی شرائط النکاح نولکشور لکھنؤ ۱۵۸/۱ 4 حاشیہ طحطاوی علی الدر المختار کتاب النکاح باب الولی دار المعرفة بیروت ۴۲/۲

...to ask to move her to the husband's place. (T) It is stated in Radd al-Muhtar:

[In al-Bahr, quoted from az-Zahiriyyah: If he is in seclusion with her with her consent, does this count as an authorization? There is no recorded narration for this issue, but in my view, this is an authorization. End. In al-Bazzaziyyah, it is mentioned that apparently, it would be an authorization. End of the excerpt from Shami. I say: Here, I have further added touching, embracing, and kissing because when seclusion with consent is a sign of consent, then these acts are even more fitting and worthy to be evidence of consent, as is apparent. (T)]

In the Hashiyatain (commentaries) of Allama Tahtawi and Shami, it is stated:

[Regarding the author's statement "unlike her serving him", meaning if she used to serve him before. In al-Bahr, from al-Muhit and az-Zahiriyyah: If she ate from his food or served him as she used to, then this is not indicative of consent. End. (T)]

In our lands, among the common people, especially the noble and particularly the wealthy, although these things mostly do not occur on the wedding night, nor for a period thereafter. Touching, kissing, and intercourse that occur on that night are often accompanied by extreme expressions of dislike and hatred, causing difficulty in considering them evidence of consent. However, there is no doubt that allowing the husband to come near her in a secluded house on the wedding night, and no effect resulting from this seclusion other than shyness, definitely happens. This much is sufficient for the marriage to become effective, and this matter certainly occurs before intercourse. So, intercourse occurred after the implementation and binding of the marriage, and the children were legitimate. Rather, if the objectives of the purified Sharia and the conditions of our lands are kept in mind with a precise jurisprudential eye, then allowing the husband the power of intercourse on the first night is also truly consent.

---

1. Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/301
2. Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut; Hashiya at-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/32

...उसे पति के घर भेजने के लिए कहना। (त) रद-उल-मुहतार में है:

[अल-बहर में अज़-ज़हीरिया से उद्धृत है: यदि वह उसकी सहमति से उसके साथ एकांत (खलवत) में रहे, तो क्या यह अनुमति माना जाएगा? इस मुद्दे पर कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन मेरे विचार में यह अनुमति है। इह. अल-बज़ाज़िया में है कि प्रत्यक्ष रूप से यह अनुमति होगी। इह शामी का अंश समाप्त। मैं कहता हूँ: यहाँ मैंने स्पर्श करना, गले लगना और चूमना और जोड़ दिया है क्योंकि जब सहमति से एकांतवास रज़ा (सहमति) का संकेत है, तो ये कार्य रज़ा के प्रमाण होने में और भी अधिक उपयुक्त और योग्य हैं, जैसा कि स्पष्ट है। (त)]

अल्लामा तहतावी और शामी की हाशियात (टीकाओं) में है:

[लेखक के कथन "उसकी सेवा करने के विपरीत" का अर्थ है कि यदि वह पहले से ही उसकी सेवा करती थी। अल-बहर में अल-मुहीत और अज़-ज़हीरिया से उद्धृत है: यदि उसने उसका भोजन खाया या उसकी वैसी ही सेवा की जैसी वह पहले करती थी, तो यह सहमति का प्रमाण नहीं होगा। इह (त)]

हमारे क्षेत्रों में आम लोगों, विशेष रूप से शरीफ़ों और विशेष रूप से अमीरों में, हालाँकि ये बातें अक्सर सुहागरात में, बल्कि उसके बाद एक अवधि तक घटित नहीं होतीं। उस रात जो चुंबन, आलिंगन, स्पर्श और संभोग होता है, वे अक्सर नापसंदगी और घृणा की तीव्र अभिव्यक्ति के साथ होते हैं, जिसके कारण उन्हें रज़ा (सहमति) का प्रमाण मानने में कठिनाई होती है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि सुहागरात में पति को एकांत कमरे में अपने पास आने देना, और इस एकांत पर शर्म के अलावा कोई प्रभाव न पड़ना निश्चित रूप से होता है। निकाह प्रभावी होने के लिए इतना ही पर्याप्त है, और यह संभोग से पहले निश्चित रूप से होता है। तो संभोग निकाह के लागू होने और अनिवार्य होने के बाद हुआ और संतान हलाल (वैध) हुई। बल्कि, यदि शरीयत-ए-मुतह्हरा के उद्देश्यों और अपने क्षेत्रों की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सूक्ष्म न्यायशास्त्रीय दृष्टि से काम लिया जाए, तो पहली रात पति को संभोग की शक्ति देना भी वास्तव में रज़ा (सहमति) है।

---

1. रद-उल-मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/३०१
2. रद-उल-मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत; हाशिया अत-तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-निकाह, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत, २/३२

کو خاوند کے ہاں منتقل کرنے کا کہنا۔ ت) ردالمحتار میں ہے :

[فی البحر عن الظھیریة لوخلاھا برضاھا ھل یکون اجازة لاروایة لھذہ المسئلة وعندی ان ھذا اجازة اھ۔ فی البزازیة الظاھر انہ اجازة اھ۔ ما فی الشامیة ۲۲ اقول: ومن ھھنا زدات المس والتعانق والتقبیل لان الخلوة برضاھا لما کانت امارة الرضا فھذہ الافعال اجد ر واحری کما لا یخفی۔] | [بحر میں ظہیر یہ سے منقول ہے کہ لڑکی کی رضامندی سے وہ شخص خلوت کرلے تو کیا یہ لڑکی کی طرف سے نکاح کو جائز قرار دینا ہے یا نہیں تو اس مسئلہ کی روایت نہیں ہے اور میرے نزدیک یہ اجازت ہے اھ، بزازیہ میں ہے کہ ظاہر یہی ہے کہ یہ اجازت ہوگی اھ شامی کی عبارت ختم ہوئی۔ اقول: یہاں پر میں نے چھونا، معانقہ، بوسہ کو مزید بڑھایا کیونکہ جب خلوت رضا کی دلیل ہے تو یہ امور رضا پر دلیل ہونے میں زیادہ واضح ہیں جیسا کہ ظاہر ہے۔ (ت)]

حاشیتین علامہ طحطاوی و شامی میں ہے :

[قولہ بخلاف خدمتہ ای ان کانت تخدمہ من قبل ففی البحر عن المحیط والظھیریة ولوأکلت من طعامہ او خدمتہ کما کانت فلیس برضی دلالة ۲ اھ] | [ماتن کے قول "لڑکی کا خدمت کرنا" اس کے خلاف ہے یعنی اگر لڑکی نکاح سے پہلے اس شخص کی خادمہ تھی تو اس بارے میں بحر، محیط اور ظہیریہ سے منقول ہے کہ اگر لڑکی نے اس شخص کا کھانا کھایا یا اس کی خدمت کی تو یہ رضا پر دلیل نہ ہوگی اھ (ت)]

ہمارے بلاد میں عام لوگوں خصوصاً شریفوں خصوصاً اغنیاء میں اگرچہ یہ اکثر باتیں شب زفاف بلکہ مدت تک اس کے بعد بھی واقع نہیں ہوتیں۔ اور بوس و کنار و مساس و جماع جو اس شب

ہوتے ہیں غالباً نہایت اظہار کراہت و نفرت کے ساتھ ہوتے ہیں جن کے باعث انھیں دلیل رضا ٹھہرانے میں دقت ہے مگر اس میں شبہ نہیں کہ شوہر کو شب زفاف تنہا مکان میں اپنے پاس آنے دینا اور اس خلوت پر سوا شرم کے کوئی اثر مترتب نہ ہونا یقیناً ہوتا ہے نکاح نافذ ہو جانے کے لیے اسی قدر بس ہے اور یہ امر قطعاً پیش از جماع واقع ہوتا ہے تو جماع بعد نفاذ ولزوم نکاح واقع ہوا اور اولاد حلال ہوئی ۲۳ بلکہ اگر مقاصد شرع مطہرہ اور اپنے بلاد کے حالات کو پیش نظر رکھ کر نگاہِ دقیق فقہی سے کام لیجئے تو شب اول شوہر کو اپنے ساتھ جماع پر قدرت دینا بھی حقیقۃً رضا ہے

---

1 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۱/۲ 2 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت،/، حاشیہ الطحطاوی علی الدر المختار کتاب النکاح دارالمعرفۃ بیروت ۳۲/۲

Fatawa Rizwia, Volume 11

Although outwardly there may be a thousand expressions of aversion, as everyone knows what such dislikes are like, the reality would be revealed if one were to imagine a stranger in place of this man with whom she was not married. At that time, would she content herself with such apparent dislikes and eventually allow sexual intercourse? Never! So it is clearly proven that all these matters in reality arise from the acceptance of the marriage. Rather, even being ready to depart for the husband's house before that, even if accompanied by intense weeping and wailing due to separation from relatives and her familiar home, is fairly a proof of consent. If she did not like him as her husband and considered him a stranger, she would never have left for her wedding night to his house. Furthermore, even before that, where the custom of 'Arsi Mushaf' i.e., 'Jalwa' (first meeting) exists, provided the woman has not come before him previously, it is also a proof of acceptance. For if she considered him a non-mahram (stranger), she would never agree to show her face. Similarly, customs like 'opening the fist' etc., which happen even before the 'Jalwa', can be considered as indications and signs. In all these matters, a virgin (bikr) and a non-virgin (thayyiba) are the same; the only difference is in the issue of silence. Other indications are equal for both. It is stated in Tabyin al-Haqa'iq:

[Boxed Text] Arabic: There is no difference between them regarding the condition of seeking permission and consent, and the consent of both can be explicit or indicative. However, the silence of a virgin is considered consent due to her modesty, unlike a non-virgin. Urdu translation: The case for both a virgin and a non-virgin is equal regarding seeking permission and obtaining consent. Yes, there is only a difference regarding silence at the time of seeking permission, that a virgin's silence is evidence of consent due to her modesty, but not for a non-virgin. (T)

In short, once a general rule has been established from Sharia that any act which proves a woman's consent to the marriage constitutes permission and authorization, and upon careful analysis and fairness, when comparing this person with a stranger, these matters emerge as evidence of consent and acceptance. Then, no one would deny the validity of the marriage except the ignorant. Moreover, when this method of marriage is generally prevalent in our lands and it is known that the 'wakil' (representative) will not perform the ceremony himself but will have someone else do it, then it can be said that within the permission given, permission to authorize another has also been customarily granted. For 'What is customary is as if stipulated,' as per established legal and jurisprudential principles (meaning established

customary matters will be valid even without being mentioned. T). And when the 'wakil' has permission, he certainly has the choice to perform it himself or authorize someone else. In al-Ashbah: 'A representative cannot appoint a sub-representative except with permission or a general mandate...' (In al-Ashbah it is stated that no representative can appoint his own deputy without the principal's permission...)

1. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Guardians and Peers, Al-Matba'ah al-Kubra al-Amiriyyah, Egypt, 2/119.
2. Al-Ashbah wa al-Nazair, Book of Representation, Idarat al-Qur'an wa al-'Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 2/6.

हालाँकि ज़ाहिर तौर पर हज़ारों घृणा की अभिव्यक्तियाँ हों, जैसा कि सभी जानते हैं कि ये अरुचियाँ कैसी होती हैं, वास्तविकता तब स्पष्ट होगी यदि इस व्यक्ति के स्थान पर किसी अजनबी की कल्पना की जाए जिससे उसका विवाह न हुआ हो। क्या उस समय भी वह ऐसी ज़ाहिरी अरुचियों पर संतोष करके अंततः संभोग की अनुमति दे देती? कभी नहीं! तो यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि ये सभी मामले वास्तव में विवाह की स्वीकृति से उत्पन्न होते हैं। बल्कि, उससे पहले ही पति के घर विदा होकर जाना, भले ही रिश्तेदारों और चिर-परिचित घर से बिछड़ने के कारण अत्यंत विलाप के साथ हो, निष्पक्ष रूप से सहमति का प्रमाण है। यदि वह उसे अपना पति होना पसंद न करती और अजनबी समझती, तो वह सुहागरात के लिए विदा होकर उसके यहाँ कभी न जाती। इसके अलावा, उससे भी पहले जहाँ 'आरसी मुसहफ़' यानी 'जल्वा' की रस्म है, बशर्ते महिला पहले उसके सामने न आई हो, वह भी स्वीकृति का प्रमाण है। क्योंकि यदि वह उसे अजनबी मर्द समझती, तो वह कभी चेहरा दिखाने पर सहमत न होती। इसी तरह 'मुट्ठी खुलवाने' आदि की रस्में भी, जो जल्वा से भी पहले होती हैं, संकेत और लक्षण मानी जा सकती हैं। इन सभी मामलों में कुंवारी (बिक्र) और गैर-कुंवारी (थैय्यिबा) समान हैं; केवल चुप्पी के मसले में अंतर है। बाकी संकेत दोनों के लिए बराबर हैं। तबीन अल-हक़ाएक़ में है:

[बॉक्स किया हुआ पाठ] अरबी: इजाज़त माँगने और सहमति की शर्त में उन दोनों के बीच कोई अंतर नहीं है, और उन दोनों की सहमति कभी स्पष्ट हो सकती है और कभी सांकेतिक। सिवाय इसके कि कुंवारी की चुप्पी उसकी लज्जा के कारण सहमति है, थैय्यिबा के लिए नहीं। उर्दू अनुवाद: कुंवारी और थैय्यिबा दोनों का मामला इजाज़त तलब करने और सहमति प्राप्त करने में समान है। हाँ, केवल इजाज़त माँगने के अवसर पर चुप्पी के बारे में अंतर है कि कुंवारी की चुप्पी उसकी हया के कारण सहमति का प्रमाण है, लेकिन थैय्यिबा के लिए नहीं। (त)

संक्षेप में, जब शरिया से यह सामान्य नियम ज्ञात हो गया कि जिस कार्य से उस विवाह पर स्त्री की सहमति सिद्ध हो, वह इजाज़त और अनुमति है, और शोध एवं निष्पक्षता की दृष्टि से जब इस व्यक्ति और अजनबी मर्द के साथ तुलना करते हैं, तो ये मामले सहमति और स्वीकृति का प्रमाण बनकर निकलते हैं। तो निकाह के प्रभावी होने से कोई इनकार नहीं करेगा सिवाय अज्ञानी के। बल्कि जब निकाह का यह तरीका हमारे देशों में आमतौर पर प्रचलित और ज्ञात है कि वक़ील स्वयं नहीं पढ़ाएगा बल्कि दूसरे से पढ़वाएगा, तो कह सकते हैं कि दी गई अनुमति में दूसरे को अनुमति देने की भी

प्रथागत अनुमति मिल गई। क्योंकि 'जो प्रथागत है वह शर्त के समान है', जैसा कि स्थापित कानूनी और न्यायशास्त्र के सिद्धांतों में है (अर्थात प्रथा में तयशुदा मामले बिना उल्लेख के भी मान्य होंगे। त)। और जब वक़ील को अनुमति है, तो उसे निश्चित रूप से अधिकार है कि वह स्वयं पढ़ाए या दूसरे को इजाज़त दे। अल-अशबाह में है: 'कोई वक़ील अनुमति या सामान्य अधिकार के बिना अपना उप-वक़ील नियुक्त नहीं कर सकता...' (अशबाह में है कि कोई वक़ील अपना नायब वक़ील मुवक्किल की अनुमति के बिना...)

1. तबीन अल-हक़ाएक़, बाब अल-औलिया वल-अकफ़ा, अल-मतबा अल-कुबरा अल-अमीरिया, मिस्र, 2/119.
2. अल-अशबाह वल-नज़ायर, किताब अल-वक़ाला, इदारातुल क़ुरआन वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 2/6.

اگرچہ بظاہر ہزار اظہار تنفر کے ساتھ ہوں کہ یہ کراہتیں جیسی ہوتی ہیں سب کو معلوم ہے حقیقۃً حال یوں منکشف ہو کہ اس مرد کی جگہ کسی اجنبی کو فرض کیجئے جس سے اس کا نکاح نہ کیا گیا اس وقت بھی ایسی ہی ظاہر کراہتوں پر قناعت کرکے بالآخر جماع پر قدرت دے دے گی، حاشا وکلا، تو صاف ثابت ہوا کہ یہ سب امور حقیقۃً قبولِ نکاح سے ناشی ہوتے ۲ بلکہ اس سے پہلے رخصت ہو کر جانا بھی اگر چہ بوجہ مفارقت اعزہ و خانہ مالوفہ نہایت گریہ و بکا کے ساتھ ہو انصافاً دلیل رضا ہے کہ اگر اسے اپنا شوہر ہونا پسند نہ کرتی اجنبی جانتی ہر گز زفاف کے لیے رخصت ہو کر اس کے یہاں نہ جاتی ۵ بلکہ اس سے بھی پہلے آرسی مصحف یعنی جلوہ کی رسم جہاں ہے بشرطیکہ عورت پہلے سے اس کے سامنے نہ آتی ہو وہ بھی دلیل قبول ہے کہ اگر غیر مرد سمجھتی زنہار منہ دکھانے پر راضی نہ ہوتی ۲۶ اسی طرح مٹھی کھلوانے وغیرہ کی رسمیں بھی کہ جلوہ سے بھی پیشتر ہوتی ہیں دلالت وعلامت قرار پاسکتی ہیں اور ان تمام باتوں میں بکر وثیب یکساں ہیں کہ ان میں صرف مسئلہ سکوت میں فرق ہے باقی دلالتیں دونوں برابر ہیں تبیین الحقائق میں ہے:

[باکس شدہ عبارت] لا فرق بینهما في اشتراط الاستئذان والرضا وان رضا هما قد یکون صریحاً وقد یکون دلالة غیر ان سکوت البکر رضا لدلالة لحیائها دون الثیب ۱- باکرہ اور ثیبہ دونوں کا معاملہ اجازت طلب کرنے اور رضا حاصل کرنے میں مساوی ہے ہاں صرف اجازت کے موقعہ پر سکوت کے بارے میں فرق ہے کہ باکرہ کا سکوت اس کے حیاء کی وجہ سے رضا کی دلیل ہے مگر ثیبہ کے لیے نہیں۔ (ت)

غرض جب شرع سے قاعدہ کلیہ معلوم ہو لیا کہ جس فعل سے اس نکاح پر عورت کی رضا ثابت ہو اذن و اجازت ہے اور بنظر تحقیق وانصاف جب اس شخص اور مرد اجنبی کے ساتھ موازنہ کرتے ہیں تو یہ امور دلیل رضا و قبول نکلتے ہیں تو نفاذ نکاح کا انکار نہ کرے گا مگر جاہل بلکہ جب یہ طریقہ نکاح ہمارے بلاد میں عام طور پر رائج اور معلوم ہے کہ وکیل خود نہ پڑھائے گا ۲ بلکہ دوسرے سے پڑھوائے گا تو کہہ سکتے ہیں کہ ضمن اذن میں دوسرے کو اذن دینے کا بھی عرفاً اذن مل گیا فان المعروف کالمشروط کما ھو من القواعد المقررۃ والفقھیۃ (جیسا کہ فقہی قواعد میں ہے کہ معروف مشروط کی طرح ہے (یعنی عرف میں مقررہ امور بغیر ذکر بھی معتبر ہوں گے۔ ت) اور وکیل کو جب اذن تو وکیل کو بیشک اسے اختیار ہے کہ خود پڑھائے یا دوسرے کو اجازت دے فی الاشباہ لایوکل الوکیل الا باذن او تعمیم ۲الخ (اشباہ میں ہے کہ کوئی وکیل اپنا نائب وکیل مؤکل کی اجازت کے بغیر نہیں بنا سکتا...)

۱ تبیین الحقائق باب الاولیاء والاکفاء المطبعۃ الکبری الامیریۃ مصر ۲/۱۱۹ ۲ الاشباہ والنظائر کتاب الوکالۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۲/۶

Fatawa Razawiya, Volume 11

...cannot make without permission or general authority. (T) According to this estimation, this marriage became effective and binding from the beginning, so there was no original need for these investigations in its criticism. But this can only be said if the fame of this method of marriage is so common that even virgin girls are aware of it and know that the representative (wakil) will not conduct the ceremony himself but will have someone else do it.

"Otherwise, it would not be known among them, so it would not be treated as a condition in their right. Reflect and refer to the issue of bread prices, etc., in the city." (T)

All this is on the assumption that the original representative, after the marriage, did not say any word that would count as permission for this marriage; otherwise, it would become valid by his own authorization, even if he had no original permission to appoint a sub-representative.

In *Al-Ashbah*: "If a representative appoints [another] without permission or general authorization, and then authorizes what his representative did, it becomes effective, except for divorce and manumission." [1] It is in *Al-Ashbah* that if a representative, without obtaining the constituent's (muwakkil) permission or general authority, appointed another representative on his own, and the first representative declared the action of the second representative as valid, then this action will be effective, except for divorce and manumission, in which it will not be effective. (T)

In *Hamwi* it is stated: "And likewise if a stranger acted for the representative and the first [representative] authorized it." [2] Similarly, if a stranger performed the act for the representative, and the representative declared it valid. (T)

In short, in every way, there is no doubt about these marriages being effective and binding before consummation, so the offspring are definitely legitimate. [28] Even if, for the sake of argument, we set aside these matters and assume, for the sake of argument, that they are void and nothing actually happens from these matters, nonetheless, since the general Muslims in these lands are afflicted with this, the way was to act upon the narration which Imam 'Isam chose in his text, and which Imam Faqih al-Nafs Qazi Khan affirmed in his *Fatawa*, and Zahidi in *Qunyah*, and Allama Sayyidi Ahmad Tahtawi supported. That is, when the representative for marriage

permits another to conduct the marriage, and he conducts it in his presence, then the marriage becomes valid and effective, even if the representative...

---

[1] Al-Ashbah wal-Naza'ir, Book of Agency, Idarat al-Qur'an wal-Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 2/110-111 [2] Ghamz 'Uyun al-Basa'ir Sharh Al-Ashbah wal-Naza'ir, Book of Agency, Idarat al-Qur'an wal-Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 2/11

फ़तावा रज़विया, खंड 11

...अनुमति या सामान्य अधिकार के बिना नहीं बना सकता। (त) इस आधार पर यह निकाह शुरू से ही प्रभावी और अनिवार्य हो गया, जिसकी आलोचना में इन सूक्ष्मताओं की मूल रूप से कोई आवश्यकता नहीं रही। लेकिन यह तभी कहा जा सकता है जब निकाह के इस तरीके की प्रसिद्धि इतनी आम हो कि कुंवारी लड़कियां भी इससे परिचित हों और जानती हों कि वकील (प्रतिनिधि) स्वयं निकाह नहीं पढ़ाएगा बल्कि किसी और से पढ़वाएगा।

"अन्यथा, यह उनके बीच प्रसिद्ध नहीं होगा, इसलिए उनके अधिकार में इसे शर्त के रूप में नहीं माना जाएगा। विचार करें और शहर में रोटी के भाव आदि के मसले की ओर रुख करें।" (त)

यह सब उस स्थिति में है जब मूल वकील ने निकाह के बाद कोई ऐसा शब्द नहीं कहा जो इस निकाह की अनुमति माना जाए; अन्यथा, उसके स्वयं के जायज़ करने से ही यह जायज़ हो जाएगा, भले ही उसे मूल रूप से उप-प्रतिनिधि नियुक्त करने की अनुमति न हो।

'अल-अशबाह' में है: "यदि वकील ने अनुमति या सामान्य अधिकार के बिना किसी को नियुक्त किया और फिर अपने प्रतिनिधि द्वारा किए गए कार्य को जायज़ ठहरा दिया, तो वह प्रभावी हो जाएगा, सिवाय तलाक और दास-मुक्ति (इताक़) के।" [1] 'अशबाह' में है कि यदि मुवक्किल (नियोक्ता) की अनुमति या सामान्य अधिकार प्राप्त किए बिना वकील ने स्वयं दूसरा वकील बना लिया, तो दूसरे वकील के कार्य को पहले वकील ने जायज़ करार दिया, तो यह कार्य प्रभावी हो जाएगा, सिवाय तलाक और इताक़ के कि उनमें यह प्रभावी नहीं होगा। (त)

'हमवी' में है: "और इसी तरह यदि किसी अजनबी ने वकील के लिए कार्य किया और पहले [वकील] ने उसे जायज़ ठहराया।" [2] इसी तरह यदि वकील के लिए किसी अजनबी ने कार्य किया तो वकील ने उसे जायज़ करार दिया। (त)

संक्षेप में, हर तरह से संभोग से पहले इन निकाहों के प्रभावी और अनिवार्य होने में कोई संदेह नहीं है, अतः संतान निश्चित रूप से वैध है। [28] और मान लीजिए, इन बातों से हटकर और अमान्य मानते हुए भी यह मान लें कि वास्तव में इन कार्यों से कुछ नहीं होता, फिर भी जब इन देशों के आम मुसलमान इसमें फंसे हुए हैं, तो रास्ता यह था कि उस रिवायत पर अमल किया जाए जिसे इमाम इसाम ने अपने पाठ में चुना और इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स क़ाज़ी खाँ ने अपने फ़तावा में और ज़ाहिदी ने 'कुनियाह' में इस पर दृढ़ता व्यक्त की और अल्लामा सैयदी अहमद तहतावी ने इसका समर्थन

किया। यानी, जब निकाह का वकील दूसरे को निकाह पढ़ाने की अनुमति दे और वह उसके सामने निकाह पढ़ा दे, तो निकाह जायज़ और प्रभावी हो जाएगा, भले ही वकील को...

---

[1] अल-अशबाह वल-नज़ायर, किताबुल-वकालत, इदारतुल क़ुरआन वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 2/110-11 [2] ग़म्ज़ उयूनुल बसायर शरह अल-अशबाह वल-नज़ायर, किताबुल-वकालत, इदारतुल क़ुरआन वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 2/11

पृष्ठ 150/739

اجازت یا عمومی اختیار کے بغیر نہیں بنا سکتا ہے۔ ت) اس تقدیر پر یہ نکاح سرے سے نافذ ولازم واقع ہوا جس کی تنقید میں ان تدقیقات کی اصلاً حاجت نہ رہی مگر یہ جب ہی کہہ سکیں گے کہ اس طریقہ نکاح کی شہرت ایسی عام ہو کہ کنواری لڑکیاں بھی اس سے واقف ہوں اور جانتی ہوں کہ وکیل خود نہ پڑھائے گا دوسرے سے پڑھوائے گا۔

والالم یکن معروفاً عندھن فلایجعل کالمشروط فی حقھن تأمل وراجع مسئلۃ سعرالخبز وغیرہ فی البلد۔ ورنہ یہ لڑکیوں کے ہاں معروف نہیں ہوگا اس لیے ان کے حق میں مشروط کی طرح نہ ہوگا، غور کرو اور شہر میں روٹی کے بھاؤ وغیرہ کے مسئلہ کی طرف رجوع کرو۔ (ت)

یہ سب اس تقدیر پر ہے کہ وکیل اصلی نے بعد نکاح کوئی کلمہ ایسا نہ کہا جو اس نکاح کی اجازت ٹھہرے ورنہ خود اسی کے جائز کرنے سے جائز ہو جائے گا اگرچہ اسے اذن توکیل اصلاً نہ ہو۔

فی الاشباہ الوکیل اذا وکل بغیر اذن وتعمیم واجاز مافعلہ وکیلہ نفذ الا الطلاق والعتاق ۱۔ اشباہ میں ہے کہ اگر موکل کی اجازت کے بغیر یا عمومی اختیار حاصل کئے بغیر وکیل نے از خود دوسرا وکیل بنا لیا تو دوسرے وکیل کے لیے عمل کو پہلے وکیل نے جائز قرار دیا تو یہ عمل نافذ ہو جائے گا ماسوائے طلاق اور عتاق کہ ان میں نافذ نہ ہو گا۔ (ت)

حموی میں ہے : وکذا الوعقد اجنبی فاجاز الاول ۲۔ یوں ہی اگر وکیل کے لیے کسی اجنبی نے عمل کیا تو وکیل نے اسے جائز قرار دیا۔ (ت)

غرض ہر طرح پیش از جماع ان نکاحوں کے نافذ اور لازم ہونے میں شبہ نہیں تو اولاد قطعاً اولاد حلال اور ۲۸ بالفرض ان باتوں سے قطع نظر کیجئے اور بتقدیر باطل ہی مان لیجئے کہ اصلاً ان

امور سے کچھ واقع نہیں ہوتا تاہم جب ان بلاد میں عام مسلمین کو اس میں ابتلا ہے تو راہ یہ تھی کہ اس روایت پر عمل کریں جسے امام عصام نے اپنے متن میں اختیار فرمایا اور امام فقیہ النفس قاضی خاں نے اپنے فتاویٰ اور زاہدی نے قنیہ میں اس پر جزم کیا اور علامہ سیدی احمد طحطاوی نے اس کی تائید کی یعنی وکیل بالنکاح جب دوسرے کو نکاح پڑھانے کی اجازت دے اور وہ اس کے سامنے پڑھا دے تو نکاح جائز و نافذ ہو جائے گا اگرچہ وکیل کو

---

۱ الاشباہ والنظائر کتاب الوکالۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۲ / ۱۱۰-۱۰ ۲ غمز عیون البصائر شرح اشباہ والنظائر کتاب الوکالۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱۱/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

...there should be no permission for appointing a sub-agent.

As for the narration of Isam, you have heard it, but Imam Faqih al-Nafs (Qadi Khan) said in the chapter on agency in 'Khaniyah': If an agent for marriage appoints someone else as an agent, it is not permissible for him. However, if he does so and the second agent performs the marriage in the presence of the first, it will be valid[1]. But in 'Quniyah', as quoted in 'Durr [al-Mukhtar]', it says: If the agent sought permission from the girl and she remained silent, and he then appointed someone he named to marry her off, it is valid if she knows the husband and the dower, as in 'Quniyah'. Al-Bahr raised an objection to this, stating that an agent cannot appoint another agent without permission, so the logical consequence should be non-validity, or this case is an exception[2]. Tahtawi said: His statement 'the logical consequence is non-validity' could be countered by saying that the agent in marriage is merely an intermediary and communicator. Even if there are multiple agents, the rights return only to the principal. Therefore, their multiplicity is not harmful, especially when the husband and dower are known. This is supported by what the author and commentator mentioned in the chapter on agency where they said: An agent cannot appoint another except by permission of his principal, unless he was commissioned to pay Zakat and he appointed another.

[1] Fatawa Qadi Khan, Book of Agency, Section on Agency for Marriage, Naval Kishore Lucknow, 3/580. [2] Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/192.

फतावा रज़विया जिल्द 11

...एजेंट (वकील) बनाने की अनुमति न हो।

जहाँ तक इसाम के कथन का संबंध है, आपने उसे सुन लिया, लेकिन इमाम फ़कीह अल-नफ़्स (काजी खान) ने 'खनिया' के वकालत अध्याय में कहा है: यदि विवाह के एक वकील ने किसी दूसरे को वकील बनाया, तो यह उसके लिए जायज़ नहीं है। और यदि उसने बना लिया और दूसरे ने पहले की उपस्थिति में निकाह कर दिया, तो वह जायज़ होगा[1]। लेकिन 'कुनिया' के हवाले से 'दुर' में है कि: यदि वकील ने लड़की से अनुमति लेनी चाही और वह खामोश रही, और वकील ने किसी ऐसे व्यक्ति को नामित किया जिसका नाम उसने लिया था ताकि वह उस लड़की का निकाह करे, तो यदि लड़की को पति का नाम और महर (स्त्रीधन) मालूम हो जाए, तो उस दूसरे वकील द्वारा किया गया निकाह जायज़ होगा। जैसा कि 'कुनिया' में है। 'अल-बह्र' में इस पर आपत्ति की गई है कि एक वकील स्वयं दूसरा वकील नहीं बना सकता, इसलिए इसका परिणाम गैर-जायज़ होना चाहिए, या फिर इसे एक अपवाद माना जाए[2]। इस पर तहतावी ने कहा: उनका यह कहना कि 'परिणाम गैर-जायज़ होना चाहिए', इसके प्रत्युत्तर में यह कहा जा सकता है कि विवाह का वकील केवल एक दूत और माध्यम होता है। यदि वकील कई भी हों, तो अधिकार केवल मूल व्यक्ति (मोअक्किल) की ओर ही लौटते हैं। अतः उनका अधिक होना कोई हानिकारक नहीं है, विशेष रूप से जब लड़की को पति और महर का ज्ञान हो। इसकी पुष्टि लेखक और टीकाकार के उस कथन से होती है जो उन्होंने वकालत की चर्चा में किया है जहाँ उन्होंने कहा: एक वकील बिना अनुमति के किसी और को वकील नहीं बना सकता, सिवाय इसके कि उसे ज़कात देने के लिए नियुक्त किया गया हो और उसने किसी दूसरे को वकील बना दिया हो।

[1] फतावा काजी खान, किताब अल-वकालत, निकाह में वकालत का खंड, नवल किशोर लखनऊ, 3/580। [2] दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-निकाह, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/192।

पेज 151 ऑफ 739

اذن توکیل نہ ہو۔

لیکن عصام کی روایت توآپ نے سن لی مگر امام فقیہ النفس (قاضی خاں) توانھوں نے خانیہ کے باب وکالت میں فرمایا کہ نکاح کے وکیل نے اگر کسی کو وکیل بنایا تو یہ اس کو جائز نہیں، اور بنالیا تو دوسرے نے اگر پہلے کی موجودگی میں نکاح کیا تو جائز ہوگا ۔ہ ۱ مگر قنیہ، تو در میں ہے کہ اگر وکیل نے لڑکی سے اذن لینا چاہا تو لڑکی خاموش رہی اور وکیل نے دوسرے شخص کو نامزد کیا تاکہ وہ اس لڑکی کا نکاح کرے تو لڑکی کو اگر زوج کا نام اور مہر معلوم ہو جائے تو اس دوسرے وکیل کا کیا ہوا نکاح جائز ہوگا۔ جیسا کہ قنیہ میں ہے اس پر بحر میں اشکال کیا کہ وکیل از خود دوسرا وکیل نہیں بنا سکتا، لہٰذا اس بنا پر دوسرے کا نکاح صحیح نہیں ہونا چاہئے، یا یہ صورت مستثنیٰ قرار دی جائے اھ ، اس پر طحطاوی نے فرمایا کہ اس کا قول، عدم جواز چاہئے، اس پر یوں کہا جاسکتا ہے کہ نکاح کا وکیل صرف سفیر اور معبر ہوتا ہے، وہ اگر متعدد بھی ہوں تو حقوق صرف موکل کی طرف رائج ہوتے ہیں، تو یہ زیادہ بھی ہوں تو کوئی مضر نہیں خصوصاً جبکہ لڑکی کو خاوند اور مہر کا علم ہوجائے، اس کی تائید مصنف اور شارح کے اس بیان سے ہوتی ہے جو انھوں نے وکالت کی بحث میں ذکر کیا ہے جہاں پر انھوں نے

۱ ۔ہ فتاوٰی قاضی خاں کتاب الوکالۃ فصل فی التوکیل بالنکاح نولکشور لکھنؤ ۳/۵۸۰ ۲ ۔ہ درمختار کتاب النکاح باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲

Fatawa Rizwia - Volume 11

(Arabic side): The agent for receiving a debt, if he appoints someone from his household, and also when the price is fixed by the principal for the agent, then appointing [a sub-agent] is permissible without permission because the objective is achieved. Thus, in our current case, this reason appears, and it is like the last case due to the commonality of the purpose being determined in each, so it will be an exception. Thus, the second answer in the commentary (Sharh) is determined, so reflect upon it. 1 End from what is in Tahtawi.

(Urdu side): It was stated that an agent cannot make another person an agent without permission. However, when an agent appoints someone to give Zakat, or an agent for collecting a debt appoints a member of his household, or when the principal has fixed the price for the agent and then he appoints another person as an agent, this agency will be permissible without permission because the objective is met through it. In our current matter as well, this same reason has appeared, and it is like the final issue where the common reason is the determination of the objective. Therefore, this will be considered an exception, and the second answer of the commentator (Sharh) will be determined. Reflect on this. (End of Tahtawi's statement. T)

And if silence occurs when someone other than the closest relative (non-aqrab) seeks permission, there is a narration of Imam Karkhi (may Allah have mercy on him) present that silence is sufficient in absolute terms.

(Arabic side): In Radd al-Muhtar, under the phrase: "If someone other than the closest relative seeks her permission, then no account is taken of her silence, etc.", and from al-Karkhi: "Her silence is sufficient." Fath. 2

(Urdu side): In Radd al-Muhtar, under "If a person other than the closest relative obtains permission from a girl, then in this case the silence of the girl is not considered, etc.", it is stated: In a narration from Imam Karkhi, it is mentioned that her silence is sufficient for consent. Fath. (T)

An expert in the objectives of Sharia knows well that the pure Sharia provides ease and facilitation, and not, God forbid, constriction and severity. Therefore, wherever such difficulties occurred, the noble scholars leaned towards those narrations based

on which Muslims could avoid hardship. In Radd al-Muhtar, the Book of Punishments (Kitab al-Hudood), it is stated:

(Arabic side): It is contrary to the reality, a great hardship because it necessitates declaring the Ummah as sinners. 3	**(Urdu side): This is against what is prevalent among the people and is a very great hardship because it leads to holding the entire Ummah as sinners. (T)**

Footnotes: 1. Hashiyah al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Chapter of the Guardian, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/29-30. 2. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/301. 3. Radd al-Muhtar, Book of Punishments, Chapter on those who have intercourse with a woman presented to him, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/155.

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 11

(अरबी पक्ष): ऋण प्राप्त करने वाला वकील, यदि वह अपने परिवार के किसी सदस्य को नियुक्त करता है, और जब मुवक्किल द्वारा वकील के लिए मूल्य तय कर दिया गया हो, तो बिना अनुमति के वकील बनाना जायज़ है क्योंकि उद्देश्य प्राप्त हो जाता है। अतः हमारे इस मसले में यही कारण प्रकट होता है, और यह पिछले मसले की तरह है क्योंकि उनमें उद्देश्य का निर्धारण ही सामान्य कारण है, इसलिए यह एक अपवाद होगा। इस प्रकार, व्याख्या (शराह) में दूसरा उत्तर निर्धारित हो गया है, अतः विचार करें। 1 तहतावी में जो है वहां से समाप्त।

(उर्दू पक्ष): फ़रमाया गया कि एक वकील बिना अनुमति के दूसरे को वकील नहीं बना सकता। परन्तु, जब किसी वकील ने ज़कात देने के लिए किसी को नियुक्त किया, या ऋण वसूल करने के मामले में अपने परिवार के सदस्य को वकील बनाया, या जब मुवक्किल ने वकील के लिए मूल्य तय कर दिया और उसके बाद उसने किसी दूसरे को वकील बनाया, तो बिना अनुमति के यह वकालत जायज़ होगी क्योंकि इससे उद्देश्य पूरा हो जाता है। हमारे इस मामले में भी यही कारण सामने आया है और यह अंतिम मसले जैसा ही है कि उनमें सामान्य कारण उद्देश्य का निर्धारण है। इसलिए इसे अपवाद माना जाएगा और टीकाकार का दूसरा उत्तर निर्धारित हो जाएगा। इस पर विचार करें। (तहतावी का बयान खत्म हुआ। त)

और यदि निकटतम अभिभावक के अलावा किसी अन्य द्वारा अनुमति मांगे जाने पर चुप्पी छाई रहती है, तो इमाम कर्ख़ी (रहमतुल्लाहि अलैहि) की एक रिवायत मौजूद है कि पूर्णतः चुप्पी पर्याप्त है।

(अरबी पक्ष): रद्दुल मुहतार में, इस कथन के तहत: "यदि निकटतम के अलावा कोई अन्य उससे अनुमति मांगता है, तो उसकी चुप्पी का कोई महत्व नहीं है, इत्यादि", और कर्ख़ी से: "उसकी चुप्पी पर्याप्त है।" फ़तह। 2

(उर्दू पक्ष): रद्दुल मुहतार में "लड़की से अनुमति प्राप्त करे कोई गैर-अक़रब व्यक्ति, तो इस स्थिति में लड़की की चुप्पी का कोई महत्व नहीं है, इत्यादि" के तहत फ़रमाया: इमाम कर्ख़ी की एक रिवायत में है कि उसकी चुप्पी सहमति के लिए पर्याप्त है। फ़तह। (त)

शरीयत के उद्देश्यों का मर्मज्ञ अच्छी तरह जानता है कि पवित्र शरीयत नरमी और सुगमता प्रदान करती है, न कि, अल्लाह न करे, तंगी और कड़ाई। इसीलिए जहाँ भी ऐसी कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई हैं,

विद्वानों ने उन रिवायतों का सहारा लिया है जिनसे मुसलमानों को कठिनाई से बचाया जा सके। रद्दुल मुहतार की 'किताबुल हुदूद' में है:

(अरबी पक्ष): यह वास्तविकता के विपरीत है, एक बड़ी कठिनाई है क्योंकि इससे उम्मत को गुनहगार ठहराना अनिवार्य हो जाता है। 3	**(उर्दू पक्ष): यह लोगों में प्रचलित रिवाजों के खिलाफ है और बहुत बड़ी कठिनाई है क्योंकि इससे पूरी उम्मत को अपराधी ठहराना ज़रूरी हो जाता है। (त)**

पादलेख: 1. हाशिया अल-तहतावी अलद-दुर अल-मुख्तार, किताबुन निकाह, बाबुल वली, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 2/29-30। 2. रद्दुल मुहतार, किताबुन निकाह, बाबुल वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/301। 3. रद्दुल मुहतार, किताबुल हुदूद, मत़लब फीमन वती मन ज़ुफ़फ़त इलैहि, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/155।

पृष्ठ 152 का 739

والوكيل بقبض الدين اذا وكل من فى عياله والا عند تقدير الثمن من الموكل للوكيل فيجوز التوكيل بلا اجازة لحصول المقصود اھ ففى مسئلتنا هذه تظهر هذه العلة وهى كالمسئلة الاخيرة بجامع التعيين فى كل فتكون مستثناة فتعين الجواب الثانى فى الشرح فتأمل ١ اھ ما فى ط

فرمایا کہ وکیل بغیر اجازت دوسرا وکیل نہیں بنا سکتا مگر جب کسی وکیل نے زکوۃ دینے کے لئے کسی کو اور قرض وصول کرنے میں وکیل نے اپنے عیال کو اور وکیل کے لیے موکل کی طرف سے ثمن طے کر دینے کے بعد کسی دوسرے کو وکیل بنایا تو بلا اجازت یہ وکالت جائز ہو گی کیونکہ اس سے مقصد پورا ہو جاتا ہے اھ تو ہمارے اس مسئلہ میں بھی یہی علت ظاہر ہوئی اور یہ آخری مسئلہ کی طرح ہے کہ ان میں جامع علت مقصد کی تعیین ہے اس لیے یہ مستثنی قرار پائے گا، اور شارح کا جواب ثانی متعین ہو جائے گا، غور کر۔ طحطاوی کا بیان ختم ہوا۔ (ت)

اور اگر بحالت استیذان غیر اقرب سکوت ہوا تو روایت امام کرخی رحمہ اللہ تعالٰی موجود کہ مطلقا سکوت کافی ہے۔

في ردالمحتار تحت قوله استأذنها غير الاقرب فلاعبرة لسكوتها الخ وعن الكرخى يكفى سكوتها فتح اھ ٢۔

ردالمحتار میں "لڑکی سے اجازت حاصل کرے کوئی غیر اقرب شخص، تو اس صورت میں لڑکی کے سکوت کا اعتبار نہیں الخ" کے تحت فرمایا، امام کرخی سے ایک روایت میں ہے کہ اس کا سکوت رضا مندی کے لیے کافی ہے فتح اھ (ت)

مقاصد شرع سے ماہر خوب جانتا ہے کہ شریعت مطہرہ رفق و تیسیر فرماتی ہے نہ معاذ اللہ تضییق و تشدید، ولذا جہاں ایسی دقتیں واقع ہوئیں علمائے کرام انہیں روایات کی طرف جھکے ہیں جن کی بناء پر مسلمان تنگی سے بچیں۔ ردالمحتار کی کتاب الحدود میں ہے:

ھو خلاف الواقع حرج عظیم یہ لوگوں میں مروج کے خلاف ہے اور بہت بڑا حرج ہے کیونکہ لانہ یلزم منہ تأثیم الامۃ ۳۔ اس سے پوری امت کو گنہگار ٹھہرانا لازم آتا ہے۔ (ت)

۱ حاشیہ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب النکاح باب الولی دار المعرفۃ بیروت ۲/۳۰-۲۹ ۲ ردالمحتار کتاب النکاح باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۰۱ ۳ ردالمحتار کتاب الحدود مطلب فیمن وطی من زفت الیہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/۱۵۵

Volume 11 - Fatawa Razawiyya

It is mentioned in the same (source's) Book of Prohibition (Al-Hazr): "This is a great leniency for the people of this age so that they do not end up being considered involved in immorality and disobedience." (T)

It is mentioned in the same (source's) Book of Sales (Al-Buyu'): "The fulfillment of necessity in our time is clear, especially in cities like Damascus, Syria. Due to the dominance of ignorance among people, they cannot be compelled to free themselves through any of the mentioned methods. While it might be possible to bind some individuals, it is not possible for the general public, as preventing the masses from their habits causes them hardship. And when a matter becomes constrained, it becomes a cause for expansion. Let it not remain hidden that the reason for deviating from the apparent narration is this very thing, as can be known from our treatise titled 'Nashr al-Urf fi Bina' al-Ahkam ala al-Urf' (Spreading the Custom in Basing Rulings on Custom). So, one should refer to it." Ended, summarized. (T)

Thus, it has become clear that if saving Muslims from these severe calamities depended only on the narration of Isam and Karkhi, then the basis of work should have been upon them, rather than on the correct, famous, and reliable schools of thought. Certainly, these marriages are valid and effective. Then, to forcefully label the general Muslim men and women here—the pure and righteous servants of God—as (God forbid) adulterers, adulteresses, and illegitimate children; no one would make such a filthy dare except one who is severely godless.

"Allah admonishes you lest you repeat the like of it forever, if you are believers."

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Chapter on Clothing, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/225.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Buyu', Topic on selling fruits and crops etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/39.
3. Al-Quran, 24/17.

जिल्द ग्यारहवीं - फ़तावा रज़विया

उसी की किताब अल-हज़र में है: "यह इस ज़माने के लोगों के लिए बड़ी रियायत है ताकि वे पाप और अवज्ञा में शामिल न ठहराए जाएँ।" (त)

उसी की किताब अल-बुयूअ (बिक्री की पुस्तक) में है: "हमारे ज़माने में ज़रूरत का पूरा होना साफ़ ज़ाहिर है, विशेष रूप से सीरिया में दमिश्क जैसे शहरों के लिए, क्योंकि लोगों पर अज्ञानता के छा जाने की वजह से उन्हें बताए गए तरीक़ों में से किसी एक तरीक़े से परहेज़ करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। हालाँकि कुछ व्यक्तियों के लिए यह संभव हो सकता है, लेकिन आम लोगों के लिए यह संभव नहीं है, जबकि आम जनता को उनकी आदतों से रोकना उनके लिए कठिनाई का कारण है। और जहाँ मामला तंग हो जाता है, वहाँ गुंजाइश पैदा हो जाती है। यह बात छिपी नहीं रहनी चाहिए कि 'ज़ाहिर रिवायत' से हटने का कारण यही चीज़ है, जैसा कि हमारे रिसाले 'नश्रुल उर्फ़ फ़ी बिनाइल अहकाम अलल उर्फ़ से जाना जा सकता है। इसलिए उसी की ओर ध्यान देना चाहिए।" समाप्त, सारांश में। (त)

अतः यह स्पष्ट हो गया कि यदि मुसलमानों को इन भीषण विपत्तियों से बचाना केवल इसाम और करख़ी की रिवायत पर ही निर्भर होता, तो उन्हीं के आधार पर कार्य किया जाना चाहिए था, न कि प्रसिद्ध और विश्वसनीय सही संप्रदायों के आधार पर। निश्चित रूप से ये निकाह वैध और प्रभावी हैं। फिर ज़बरदस्ती यहाँ के आम मुसलमान पुरुषों और महिलाओं को—जो ईश्वर के पवित्र और नेक बंदे हैं—अल्लाह न करे, व्यभिचारी, व्यभिचारिणी और हरामज़ादा घोषित किया जाए? ऐसी अपवित्र धृष्टता कोई अत्यंत ईश्वर से न डरने वाला ही करेगा।

"अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि यदि तुम ईमान रखते हो तो फिर कभी ऐसा न कहना।"

1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-हज़र वल इबाहत, दारे एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 5/225
2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-बुयूअ, फल और फसल बेचने का विषय, दारे एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 4/39
3. अल-क़ुरआन, 24/17

पृष्ठ 153/739

اسی کی کتاب الحظر میں ہے: ھو الرفق باھل ھذا الزمان لئلا یقعوا فی الفسق والعصیان[1]۔ یہ بات موجودہ زمانہ کے لوگوں کے لیے بڑی رعایت ہے تاکہ وہ فسق و گناہ میں مبتلا نہ قرار پائیں۔ (ت)

اسی کی کتاب البیوع میں ہے: لایخفی تحقق الضرورۃ فی زماننا ولاسیما فی مثل دمشق الشام، فانہ لغلبۃ الجھل علی الناس لایمکن الزامھم بالتخلص باحد الطرق المذکورۃ وان امکن ذلک بالنسبۃ الی بعض افراد الناس لایمکن بالنسبۃ الی عامتھم وفی نزعھم عن عادتھم حرج وما ضاق الامر الا اتسع ولایخفی ان ھذا مسوغ للعدول عن طاھر الروایۃ کما یعلم من رسالتنا المسماۃ نشر العرف فی بناء بعض الاحکام علی العرف فراجعھا[2] اھ ملخصا۔ ہمارے زمانہ میں اس ضرورت کا پایا جانا واضح ہے خصوصاً شام میں دمشق جیسے شہر کے لیے کیونکہ لوگوں میں جہالت کے غلبہ کی وجہ سے ان کو مذکورہ طریقوں میں سے کسی طریقہ سے باز رہنے کا پابند نہیں کیا جاسکتا، اگرچہ بعض لوگوں کو پابند بنانا ممکن ہے مگر عام لوگوں کے لیے یہ ممکن نہیں ہے جبکہ عوام کو ان کی عادت سے منع کرنا ان کے لیے تنگی کا باعث ہے، اور جہاں معاملہ تنگ ہوتا ہے تو وہ وسعت کا باعث ہوتا ہے، اور یہ بات مخفی نہ رہے کہ ظاہر روایت سے اختلاف کی وجہ یہی چیز ہوتی ہے جیسا کہ ہمارے رسالہ "نشر العرف فی بناء الاحکام علی العرف" سے معلوم کیا جاسکتا ہے، تو اس کی طرف متوجہ ہونا چاہئے، اھ، ملخصاً۔ (ت)

پس روشن ہو گیا کہ اگر روایت عصام و کرخی ہی پر مسلمانوں کا ان سخت آفتوں سے بچانا منحصر ہوتا تو انھیں پر بنائے کار چاہئے تھی نہ کہ مذاہب صحیحہ مشہورہ معتمدہ پر بالیقین یہ نکاح جائز و نافذ ہوں پھر بزور زبان یہاں کے عام مسلمان مردوں، مسلمان عورتوں، خدا کے

پاکیزہ بندوں، ستھری بندیوں کو معاذ اللہ زانی و زانیہ و اولادالزنا قرار دیا جائے، ایسی ناپاک جرات نہ کرے گا مگر سخت نا خدا ترس۔

يَعِظُكُمُ اللهُ أَن تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ [3] ۔ اللہ تمھیں نصیحت فرماتا ہے کہ پھر ایسا نہ کہنا اگر ایمان رکھتے ہو۔

1. رد المحتار كتاب الحظر و الاباحة فصل في اللبس دار احياء التراث العربی بيروت ۲۲۵/۵
2. رد المحتار كتاب البيوع مطلب في بيع الثمر و الزرع الخ دار احياء التراث العربی بيروت ۳۹/۴
3. القرآن ۲۴/۱۷

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

And his remaining nonsensical talk about the distinction between legitimate and illegitimate offspring being like this and like that are words very similar to madness which, due to the severity of horrors, are not worthy of an answer. However, it is certainly true that there is an imprudence in this method of marriage due to which there is a possibility of falling into some difficulties. Muslims should be guided to refrain from it; they should choose one of three things:

Firstly, the best is that the one through whom the marriage is intended to be performed should seek permission from the woman specifically in his name. And it should always be kept in mind in every method that the one seeking permission should either be the closest guardian (wali aqrab), his agent (wakeel), or a messenger (rasool), or they should make the woman explicitly say "Yes" (Hoon). Do not rely on mere silence. And the practice heard among some foolish ignorant people, where one of the women sitting nearby says "Yes" to ward off evil from the bride's head, should be stopped.

Secondly, if they want to designate the agency (wakalat) in another person's name, then let it be so: just as they ask for the bride's permission for agency, they should also seek the power of attorney from her. That is, they should say, "Have you appointed so-and-so son of so-and-so son of so-and-so as your agent for marriage with so-and-so son of so-and-so son of so-and-so at such-and-such a dower (mahr), and given him the authority to either perform it himself or appoint another as his deputy?" The bride should say "Yes" (Hoon).

Thirdly, if even this is not done and another person performs the marriage in front of the agent, then once he has finished, the agent should immediately say with his own tongue, "I have authorized this marriage." He should not delay in saying this, lest before he authorizes it, the news of the marriage reaches the bride and her peers, as per current custom, tease her a bit, and she, out of her ignorance, says something that causes this marriage—which was an unauthorized marriage (nikah fuzuli)—to be rejected. Then even if the agent, or the bride herself, tries to authorize it, it will not be valid. Because permission does not attach to that which is annulled (mafsookh) (Since the subsequent permission for an annulled marriage is not beneficial. T). Contrary to these three forms which are completely free from fear and doubt.

As for Zaid mentioning bangles (kangnay) etc., they are merely futile as these rituals are not disbelief (kufr) such that marriage cannot occur because of them. Yes, God

forbid (Ma'adh Allah), if the man or woman committed explicit disbelief before marriage and their marriage was performed without repentance and Islam, then the marriage is definitely void, and the children born from it will be illegitimate (walad-uz-zina). Similarly, if after marriage one of them, God forbid, becomes an apostate and children are born from intercourse after that, they will also be illegitimate. Apart from this, those words on which fatwas etc. write a ruling of disbelief against research, and those words in which even a weak, retracted narration appears even in the school of another Imam as non-disbelief, the ruling for committing them should be as if to renew Islam and marriage, but the children are not illegitimate.

और उनकी बाकी बेतुकी बातें कि वैध और अवैध संतान के बीच का भेद ऐसा और वैसा है, पागलपन से बहुत मिलते-जुलते शब्द हैं, जो भयावहता की तीव्रता के कारण उत्तर देने के योग्य नहीं हैं। हालाँकि, यह निश्चित रूप से सच है कि विवाह की इस पद्धति में एक असावधानी है जिसके कारण कुछ कठिनाइयों में पड़ने की संभावना है। मुसलमानों को इससे बचने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए; उन्हें तीन बातों में से एक को चुनना चाहिए:

पहला, सबसे अच्छा यह है कि जिसके माध्यम से विवाह कराने का इरादा है, वह विशेष रूप से अपने नाम पर महिला से अनुमति मांगे। और हर पद्धति में हमेशा यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि अनुमति मांगने वाला या तो निकटतम अभिभावक (वली अक़रब), उसका एजेंट (वकील), या एक संदेशवाहक (रसूल) हो, या वे महिला से स्पष्ट रूप से "हाँ" (हूँ) कहलाएं। केवल चुप्पी पर भरोसा न करें। और कुछ मूर्ख अज्ञानी लोगों में सुनी जाने वाली प्रथा, जहाँ दुल्हन के सिर से बला टालने के लिए पास बैठी महिलाओं में से कोई "हाँ" कह देती है, उसे रोका जाना चाहिए।

दूसरा, यदि वे किसी दूसरे व्यक्ति के नाम पर एजेंसी (वकालत) नामित करना चाहते हैं, तो ऐसा ही हो: जिस तरह वे दुल्हन से एजेंसी के लिए अनुमति मांगते हैं, वैसे ही उन्हें उससे पावर ऑफ अटॉर्नी (अधिकार) भी मांगना चाहिए। यानी, उन्हें कहना चाहिए, "क्या आपने फलां के पुत्र फलां के पुत्र फलां को फलां के पुत्र फलां के पुत्र फलां के साथ इतनी मेहर पर अपने निकाह का वकील नियुक्त किया है और उसे अधिकार दिया है कि वह चाहे तो स्वयं पढ़ाए या दूसरे को अपना प्रतिनिधि बनाए?" दुल्हन को कहना चाहिए "हूँ" (हाँ)।

तीसरा, यदि यह भी न हो और दूसरे ही व्यक्ति ने वकील के सामने निकाह पढ़ाया, तो जब वह पढ़ा चुके, तो वकील तुरंत अपनी ज़बान से इतना कह दे कि "मैंने इस निकाह को जायज़ (स्वीकार) किया।" और इसे कहने में देरी न करे, कहीं ऐसा न हो कि उसके जायज़ करने से पहले दुल्हन तक निकाह की खबर पहुँचे और उसकी हमउम्र सहेलियां वर्तमान प्रथा के अनुसार उसे कुछ छेड़ें और वह अपनी अज्ञानता से कोई ऐसी बात कह दे जिससे यह निकाह—जो अब तक 'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' (अनधिकृत विवाह) था—रद्द हो जाए। फिर वकील तो वकील, खुद दुल्हन के जायज़ करने से भी जायज़ न होगा। क्योंकि 'अनुमति रद्द की गई चीज़ पर लागू नहीं होती' (चूँकि रद्द किए गए निकाह के

लिए बाद की अनुमति लाभकारी नहीं होती। ट)। इन तीनों रूपों के विपरीत जो पूरी तरह से डर और संदेह से मुक्त हैं।

रहा ज़ैद का कंगना आदि का उल्लेख करना, तो वे केवल व्यर्थ हैं क्योंकि ये रस्में कुफ़्र (अविश्वास) तो नहीं हैं जिनके कारण निकाह न हो। हाँ, खुदा न करे (मआज़ अल्लाह), यदि पुरुष या स्त्री ने निकाह से पहले स्पष्ट कुफ़्र किया था और बिना तौबा और इस्लाम के उनका निकाह किया गया, तो निश्चित रूप से निकाह बातिल (अमान्य) है, और उससे जो संतान होगी वह 'वलद-उल-ज़िना' (अवैध) होगी। इसी तरह यदि निकाह के बाद उनमें से कोई, खुदा न करे, मुर्तद (धर्मत्यागी) हो गया और उसके बाद के संभोग से संतान हुई, तो वह भी हरामी (अवैध) होगी। इसके अलावा वे शब्द जिन पर फ़तवे आदि शोध के विपरीत कुफ़्र का हुक्म लिख देते हैं, और वे शब्द जिनमें कोई कमज़ोर, वापस ली गई रिवायत (कथन) भी यदि किसी अन्य इमाम के मज़हब में कुफ़्र न होने के रूप में सामने आए, तो उनके करने से गोया इस्लाम और निकाह के नवीनीकरण (तजदीद) का हुक्म दें, लेकिन संतान अवैध नहीं है।

पृष्ठ 154 / 739

اور اس کے باقی ہذیانات کہ ولد حلال و حرام کی تمیز چنیں و چناں ہے کلمات جنوں سے بہت مشابہ جو بشدت اہوال قابل جواب نہیں البتہ اس قدر ضرور ہے کہ اس طریقہ نکاح میں ایک بے احتیاطی ہے جس کے باعث بعض دقتوں میں پڑنے کا احتمال تو اہل اسلام کو ہدایت چاہئے کہ اس سے باز آئیں، تین باتوں سے ایک اختیار کریں:

اولاً سب سے بہتر یہ ہے کہ جس سے نکاح پڑھوانا منظور ہے عورت سے خاص اسی کے نام اذن طلب کریں اور ہمیشہ ہر طریقہ میں ملحوظ خاطر رہے کہ اذن لینے والا یا تو ولی اقرب یا اس کا وکیل یا رسول ہو یا عورت سے صراحتًا "ہوں" کہلوالیں، مجرد سکوت پر قناعت نہ کریں، اور بعض احمق جاہلوں میں جو بدستور سنا گیا ہے کہ دلہن کے سر سے بلا ٹالنے کو پاس بیٹھنے والیوں میں سے کوئی "ہوں" کہہ دیتی ہے اس کا انسداد کریں۔

ثانیاً وکالت دوسرے ہی کے نام کرنا چاہیں تو یوں سہی کہ جس طرح دلہن سے اس کی وکالت کا اذن مانگیں یونہی اسے اختیار تو کیل دینا بھی طلب کریں یعنی کہیں تو نے فلاں بن فلاں بن فلاں کو فلاں بن فلاں بن فلاں کے ساتھ اس قدر مہر پر اپنے نکاح کا وکیل کیا اور اسے اختیار دیا کہ چاہے خود پڑھائے یا دوسرے کو اپنا نائب بنائے، دلہن کہے "ہوں"

ثالثاً اگر یہ بھی نہ ہو اور دوسرے ہی شخص نے وکیل کے سامنے نکاح پڑھایا تو جب وہ پڑھا چکے وکیل فوراً اپنی زبان سے اتنا کہہ دے کہ میں نے اس نکاح کو جائز کیا۔ اور اس کہنے میں تاخیر نہ کرے کہ مبادا اس کے جائز کرنے سے دلہن کو خبر نکاح پہنچے اور اس کی ہم عمریں حسب عادت زمانہ اسے کچھ چھیڑیں اور وہ اپنی جہالت سے کوئی ایسی بات کہہ بیٹھے جس سے

یہ نکاح کہ اب نکاح فضولی تھا رد ہو جائے پھر وکیل تو وکیل خود دلہن کے جائز کئے بھی جائز نہ ہوگا فان الاجازۃ لا تلحق المفسوخ (کیونکہ فسخ شدہ نکاح کو بعد کی اجازت مفید نہیں ہے۔ت) بخلاف ان تینوں شکلوں کے کہ بالکل اندیشہ و دغدغہ سے پاک ہیں۔

رہا زید کا کنگنے وغیرہ کو ذکر کرنا، وہ محض فضول کہ آخر یہ رسمیں کفر تو نہیں جن کے باعث نکاح نہ ہو۔ ہاں معاذ اللہ اگر مرد یا عورت نے پیش از نکاح کفر صریح کا ارتکاب کیا تھا اور بے توبہ واسلام ان کا نکاح کیا گیا تو قطعاً نکاح باطل، اور اس سے جو اولاد ہو ہوگی ولد الزنا، اس طرح اگر بعد نکاح ان میں کوئی معاذ اللہ مرتد ہو گیا اور اس کے بعد کے جماع سے اولاد ہوئی تو وہ بھی حرامی ہوگی، اس کے سوا وہ کلمات جن پر فتاوٰی و غیر ہمیں خلاف تحقیق حکم کفر لکھ دیتے ہیں اور وہ کلمات جن میں کوئی ضعیف مرجوع روایت بھی اگرچہ اور کسی امام کے مذہب میں عدم کفر کی نکل آئے ان کے ارتکاب سے گویا تجدید اسلام و نکاح کا حکم دیں مگر اولاد اولاد زنا نہیں۔

Fatawa-e-Razvia Volume 11

[Arabic Box Text]: In Durr al-Mukhtar etc., it is stated: That which is unanimously considered disbelief (kufr), its commission invalidates one's deeds and marriage, and subsequent children will be illegitimate (born of adultery). Regarding matters where there is disagreement about them being disbelief, the decree is to repent, seek forgiveness, and renew the marriage. And Allah, Glory be to Him, knows best. (T)

Problem 8: From Rampur Afghanan, Farangyan Mahal, via Mulla Zarif, sent by Maulvi Aleem-ud-Din Sahib Chaigami on 25 Jumada al-Ula 1318 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this: in this country of Bengal, since ancient times, it has been a custom among the common people and even many elite, that after the proposal and agreement of the guardians of both parties and before the formal proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul), the bride-to-be (Makhtuba) is brought to the house after hosting the wedding guests. There, they conduct the marriage in such a way that with the permission of several adult guardians of the marrying parties and several elders of the assembly, one person is designated as the representative (Wakil) of the bride for that assembly. Two or three or four witnesses are sent with this representative from the groom's gathering to the bride, who is seated nearby behind a curtain. Now, this representative, in the presence of the witnesses, seeks acceptance from the bride in this manner: "O Fatima, daughter of Zaid! Have you accepted Bakr, son of Khalid, into your marriage for such-and-such dowry (Mahr) which will be obligatory upon him?" Then Fatima says in a loud voice, "I have accepted," or she just says "Accepted." The witnesses also hear this acceptance from the bride. Then the representative returns to the gathering of the suitor with his witnesses. The Qazi (judge/officiator) who is sitting with the groom to perform the marriage asks the representative, "Who are you?" The representative replies, "I am the representative of the bride, Fatima." The Qazi asks, "What do you know?" He submits, "Fatima, daughter of Zaid, has accepted Bakr, son of Khalid, into her marriage, and I have facilitated this acceptance." Then the Qazi asks, "Do you have any witnesses?" The representative points towards his witnesses and states that these people are present as witnesses. Then the Qazi turns towards those witnesses and questions each witness individually, and the witnesses describe what they heard, i.e., that Fatima accepted Bakr. Now, when the Qazi finishes hearing the testimonies, then, either taught by the Qazi or by himself, the said representative [accepts Bakr...]

[Footnote]: 1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Bab al-Murtad, Mujtabai Press, Delhi, 1/359. Page 155 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

[अरबी बॉक्स पाठ]: 'दुर्रे मुख्तार' आदि में है: जो चीज़ सर्वसम्मति से कुफ़्र (अविश्वास) हो, उसके करने से कर्म और निकाह (विवाह) रद्द हो जाता है और उसके बाद की संतान अवैध (ज़िना की औलाद) होगी। और जिस चीज़ के कुफ़्र होने में मतभेद हो, उसके करने पर तौबा, अस्तगफ़ार (क्षमा याचना) और निकाह के नवीनीकरण का आदेश दिया जाएगा। और अल्लाह, वह महान है, बेहतर जानता है। (त)

मसला 8: रामपुर अफ़ग़ानां, फ़िरंगी महल से, मुल्ला ज़रीफ़ के माध्यम से, मौलवी अलीमुद्दीन साहब चायगामी द्वारा प्रेषित, 25 जुमादा अल-उला 1318 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस बारे में क्या कहते हैं कि बंगाल के इस देश में प्राचीन काल से ही आम जनता और यहाँ तक कि कई विशिष्ट लोगों के बीच यह प्रथा रही है कि मंगनी और दोनों पक्षों के अभिभावकों की सहमति के बाद और इजाब-ओ-क़बूल (औपचारिक प्रस्ताव और स्वीकृति) से पहले, बरातियों की दावत के बाद मख़तूबा (दुल्हन) को घर लाया जाता है। वहाँ वे इस तरह निकाह कराते हैं कि निकाह करने वालों के कई वयस्क अभिभावकों और सभा के कई बुज़ुर्गों की अनुमति से, एक व्यक्ति को उस सभा के लिए दुल्हन का वकील (प्रतिनिधि) नियुक्त किया जाता है। दो या तीन-चार गवाहों को इस वकील के साथ दूल्हे की सभा से दुल्हन के पास भेजा जाता है जो पास ही पर्दे के पीछे बैठी होती है। अब यह वकील गवाहों के साथ दुल्हन के पास जाकर इस तरह स्वीकृति मांगता है: "हे फ़ातिमा, ज़ैद की बेटी! क्या तूने बक्र, जो ख़ालिद का पुत्र है, को इतने महर (स्त्रीधन) पर जो उस पर देय होगा, अपने निकाह में स्वीकार किया?" तो फ़ातिमा ऊँची आवाज़ में कहती है कि "मैंने स्वीकार किया", या केवल "क़बूल किया" (स्वीकार किया) कह देती है, और दुल्हन की इस स्वीकृति को गवाहों ने भी सुन लिया होता है। फिर वह वकील अपने गवाहों के साथ दूल्हे की सभा में वापस आता है। निकाह कराने के लिए दूल्हे के पास बैठा काज़ी (विवाह कराने वाला) उस वकील से पूछता है कि "तुम कौन हो?" तो वह वकील उत्तर देता है कि "मैं दुल्हन फ़ातिमा का वकील हूँ।" काज़ी पूछता है, "तुम क्या जानते हो?" वह निवेदन करता है कि "ज़ैद की बेटी फ़ातिमा ने ख़ालिद के बेटे बक्र को अपने निकाह में स्वीकार किया है और मैंने यह स्वीकार करवाया है।" फिर काज़ी पूछता है कि "क्या तुम्हारा कोई गवाह भी है?" तो वकील अपने गवाहों की ओर इशारा करते हुए कहता है कि "ये लोग गवाह के रूप में मौजूद हैं।" फिर काज़ी उन गवाहों की ओर मुड़कर हर एक गवाह से अलग-अलग सवाल करता है और गवाह लोग जो सुना होता है वह बताते हैं, यानी फ़ातिमा ने बक्र को स्वीकार किया। अब जब काज़ी

गवाही सुनने से फ़ारिग (निवृत्त) हो जाता है, तो काज़ी के सिखाने पर या खुद ही वह वकील बक्र को स्वीकार...

[पादलेख]: 1 दुर्रे मुख्तार, किताब अल-जिहाद, बाब अल-मुरतद, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/359। पृष्ठ 155 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

فی الدر المختار وغیرہ مایکون کفرا اتفاقا یبطل العمل والنکاح واولادہ اولاد زنا ومافیہ خلاف یؤمر بالتوبۃ والاستغفار وتجدید النکاح ۱ اھ ، واللہ سبحٰنہ وتعالٰی اعلم۔ در مختار وغیرہ میں ہے جو چیز بالاتفاق کفر ہو اس کے ارتکاب سے عمل اور نکاح باطل ہو جاتا ہے اور اس کے بعد کی اولاد، ولد زنا ہوگی اور جس چیز کے کفر میں اختلاف ہو اس کے ارتکاب پر توبہ و استغفار اور تجدید نکاح کا حکم ہوگا اھ ، واللہ سبحٰنہ وتعالی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۸: از رامپور افغاناں فرنگن محل بزریعہ ملا ظریف مرسلہ مولوی علیم الدین صاحب چائگامی ۲۵ جمادی الاولی ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس باب میں کہ اس ملک بنگالہ میں زمانہ قدیم سے درمیانِ عوام بلکہ اکثر خواص کے بھی یہی دستور ہے کہ بعد خواستگاری اور قول اقرارِ مرتبیان طرفین اور قبل ایجاب و قبول کے مخطوبہ کو بعد ضیافت براتیان کے مکان میں لاکر اس طور پر نکاح کراتے ہیں کہ چند مرتبیان عاقدین بالغین و چند بزرگان مجلس کی اجازت سے ایک شخص کو اس مجلس والے وکیل مخطوبہ قرار دے کر اور دو گواہ یا تین چار گواہ کو اس وکیل کے ساتھ کرکے دولہا کی مجلس سے مخطوبہ کے پاس جو قریب پردہ کے اندر بیٹھی ہوئی ہے روانہ کرتے ہیں اب یہ وکیل مخطوبہ کے قریب گواہوں کے ساتھ جاکر مخطوبہ سے اس طرح قبول کراتا ہے کہ اے فاطمہ ، زید کی بیٹی ! تو نے بکر کو جو خالد کا پسر ہے اس قدر مہر پر جو اس کے اوپر واجب الادا ہوگا اپنی زوجیت میں قبول کیا، تو فاطمہ بآواز بلند کہتی ہے کہ میں نے قبول کیا ، یا فقط "قبول کیا" کہہ دیا، اور اس قبول مخطوبہ کو گواہان نے بھی سن لیا اب پھر وہ وکیل خاطب کی مجلس میں اپنے گواہان کے ساتھ حاضر ہوتا ہے تو جو قاضی عقد کرانے کو دولہا کے پاس بیٹھا ہے وہ اس وکیل سے سوال کرتا ہے کہ تو کون

ہے ، تو وہ وکیل جواب دیتا ہے کہ میں فاطمہ مخطوبہ کا وکیل ہوں، تو قاضی دریافت کرتا ہے کہ تو کیا جانتا ہے تو وہ عرض کرتا ہے کہ فاطمہ دخترِ زید نے بکر پسر خالد کو اپنی زوجیت میں قبول کیا ہے اور میں نے قبول کرایا ہے ، پھر قاضی سوال کرتا ہے کہ تمہارا کوئی گواہ بھی ہے تو وکیل اپنے گواہوں کی طرف اشارہ کرکے بیان کرتا ہے کہ یہ لوگ گواہ موجود ہیں تو قاضی پھر ان گواہوں کی طرف متوجہ ہو کر ہر ایک گواہ سے الگ الگ سوال کرتا ہے اور گواہ لوگ اپنی سماعت بیان کرتے ہیں یعنی فاطمہ نے بکر کو قبول کیا ، اب جب قاضی کو سماعت شہادت سے فراغت ہوئی تو بہ تعلیم قاضی یا خود وکیل مذکور بکر کو قبول

1 درمختار کتاب الجہاد باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۳۵۹/۱ Page 155 of 739

Fatawa Rizvia, Volume 11

[The Qazi] asks: "Have you accepted Fatima, the daughter of [So-and-so], with such an amount (for example, a hundred or a thousand rupees) as dower upon yourself?" or "Accepted?". Then Bakr confesses, "I have accepted Hindah," or just says "Accepted" or "Qabiltu" (I accepted). Then the Qazi, after reciting the sermon etc., concludes the marriage assembly. Now, in the mentioned case, has the marriage of Fatima and Bakr been solemnized or not? According to the first premise, some scholars have a doubt that the mentioned representative (vakeel) was neither appointed by the suitor (khatib) nor by the sought bride (makhtuba), even though both are adults. How can the marriage of an adult occur without the permission of the contracting parties? And according to the second premise, thousands of people would be deemed illegitimate. What will this mentioned offer and acceptance be considered? Will the mentioned marriage be considered completely non-existent? Is it excluded from being an unauthorized (fuduli) marriage? Explain and be rewarded.

Answer: In this matter, providing a clear answer and attaining the correct path with the grace of Almighty Allah requires deep insight and precise thought.

I say: And with Allah is the success. The investigation of the matter is that the mentioned mediator, whom the common people designate as the representative (vakeel) of the bride, addresses both the suitor and the bride in the form of an interrogation, even if the interrogative particle is implied. Since interrogation (istifham) and contracting ('aqd) are two distinct types of creative speech (insha), where the reality of questioning is intended and understood, that speech cannot be considered an offer (ijab) or acceptance (qabul). Yes, if it is an interrogation in form but intended as the establishment of a contract in meaning, then an offer or a delegation of power (tawkeel) can be conceived. However, this requires the presence of a contextual clue (qarina), as is the requirement for every figurative expression (majaz). Therefore, the scholars say: if Zaid said to Amr, "You have given your daughter to me in marriage," and he replied "Given" or "Yes," the marriage will not take place until Zaid says in response, "I have accepted." It is stated in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
If a man said to another, "You have married your daughter to me," and the other said "I have	If one person said to another, "You have married your daughter to me," and the other replied by saying "I have married her" or said "Yes," the

(Arabic Text)

married [her]" or said "Yes" in response to him, it would not be a marriage until the offeror says afterwards, "I accepted," because "You have married [her] to me" is an inquiry and not a contract, unlike "Marry me [to her]," because that is an appointment of agency.

(Urdu Translation)

marriage will not occur until the one making the offer says afterwards, "I have accepted." This is because the first person's statement, "You have married your daughter to me," is merely seeking information and is not a marriage contract. Conversely, if the first person had said, "Marry your daughter to me," then the second person would have become his representative (vakeel), and the marriage would be completed by him saying, "I have married her." (T)

1. Durr al-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Book of Marriage, Mujtabai Press, Delhi, 1/187.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[निकाह पढ़ाने वाला] पूछता है कि क्या आपने फ़ातिमा बिन्त [नाम] को इतनी (उदाहरण के तौर पर सौ या हज़ार रुपये) मेहर अपने ज़िम्मे लेकर स्वीकार किया या "क़बिल्तु" (मैंने स्वीकार किया) कहा? फिर बक्र इकरार करता है कि मैंने हिन्द को स्वीकार किया या सिर्फ़"स्वीकार किया" या "क़बिल्तु" कह दिया। फिर क़ाज़ी खुतबा आदि पढ़कर निकाह की महफ़िल समाप्त कर देता है। अब, उपरोक्त स्थिति में फ़ातिमा और बक्र का निकाह संपन्न हुआ या नहीं? पहली स्थिति में, कुछ विद्वानों को यह संदेह है कि उक्त प्रतिनिधि (वकील) न तो दूल्हे (खा़तिब) की ओर से नियुक्त किया गया था और न ही दुल्हन (मख़्तूबा) की ओर से, जबकि दोनों वयस्क (बालिग़) हैं। और वयस्क का निकाह अनुबंध करने वालों की अनुमति के बिना कैसे हो सकता है? और दूसरी स्थिति में, हज़ारों लोग नाजायज़ (हरामज़ादे) करार पाएंगे। और इस उल्लेखित प्रस्ताव (ईजाब) और स्वीकृति (क़बूल) को क्या माना जाएगा? क्या उक्त निकाह पूरी तरह से शून्य (मअदूम) माना जाएगा? क्या यह 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत) निकाह की श्रेणी से बाहर है? बयान फरमाएँ और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: इस मामले में स्पष्ट उत्तर और अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से सही समाधान तक पहुँचना गहरी दृष्टि और सूक्ष्म सोच का मोहताज है।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है। मामले की तहक़ीक़ यह है कि उक्त मध्यस्थ (सफ़ीर), जिसे आम लोग दुल्हन का प्रतिनिधि (वकील) कहते हैं, दूल्हे और दुल्हन दोनों को प्रश्न के रूप में संबोधित करता है, भले ही प्रश्नवाचक शब्द अंतर्निहित (मुक़द्दर) हो। और प्रश्न (इस्तिफ़हाम) और अनुबंध (अक़्द) रचना (इनशा) के दो अलग-अलग प्रकार हैं। इसलिए जहाँ प्रश्न की वास्तविकता अभिप्रेत और समझी जाती है, वहाँ उस बात को प्रस्ताव (ईजाब) या स्वीकृति (क़बूल) नहीं माना जा सकता। हाँ, यदि वह स्वरूप में प्रश्न हो लेकिन अर्थ में अनुबंध को स्थापित करना हो, तो उसे ईजाब या प्रतिनिधित्व (तौकील) माना जा सकता है, लेकिन इसके लिए एक प्रासंगिक सुराग (क़रीना) की उपस्थिति आवश्यक है, जैसा कि सभी लाक्षणिक प्रयोगों (मजाज़) का स्वभाव है। इसीलिए विद्वान कहते हैं: यदि ज़ैद ने अम्र से कहा कि "तुमने अपनी बेटी मेरे निकाह में दी", उसने कहा "दी" या "हाँ", तो निकाह नहीं होगा जब तक कि ज़ैद इसके जवाब में "मैंने स्वीकार किया" न कहे। तनवीरुल अबसार और दुर्रे मुख़्तार में है:

(अरबी पाठ)

अगर किसी आदमी ने दूसरे से कहा 'तूने अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर दिया', और दूसरे ने जवाब में कहा 'मैंने निकाह कर दिया' या कहा 'हाँ', तो यह निकाह नहीं होगा जब तक कि प्रस्ताव करने वाला उसके बाद यह न कह दे 'मैंने स्वीकार किया', क्योंकि 'तूने मेरा निकाह कर दिया' जानकारी लेना है, निकाह का अनुबंध नहीं है, इसके विपरीत 'मेरा निकाह कर दे' कहना प्रतिनिधित्व (वकील बनाना) है।

(उर्दू अनुवाद)

यदि एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा कि तुमने अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर दिया, दूसरे ने जवाब में कहा कि निकाह कर दिया, या "हाँ" कह दिया तो निकाह नहीं होगा जब तक कि ईजाब (प्रस्ताव) करने वाला बाद में यह न कहे कि मैंने स्वीकार किया, क्योंकि पहले का यह कहना कि तुमने अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर दिया, यह केवल जानकारी प्राप्त करना है निकाह का अनुबंध नहीं है, इसके विपरीत अगर पहला यह कहता कि तू मेरा निकाह कर दे, तो इससे दूसरा प्रतिनिधि (वकील) बन जाता और उसका "निकाह कर दिया" कहने से निकाह हो जाता। (त)

1. दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीरुल अबसार, किताबुन निकाह, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/187।

पृष्ठ 156 / 739

کراتا ہے کہ تو نے فاطمہ دختر کو اس قدر (سو روپے یا ہزار مثلاً) مہر اپنے ذمہ لے کر قبول کیا یا "قبلت" تو بکر اقرار کرتا ہے کہ میں نے ہندہ کو قبول کیا یا فقط قبول کیا یا "قبلت" کہہ دیا پھر قاضی خطبہ وغیرہ پڑھ کر مجلس عقد ختم کردیتا ہے تو اب صورتِ مذکورہ میں فاطمہ اور بکر کا نکاح منعقد ہوا یا نہیں، بر تقدیر اول بعض علماء کو یہ شبہ ہے کہ یہ وکیل مذکور نہ تو خاطب کی طرف سے مقرر ہوا نہ مخطوبہ کی طرف سے، حالانکہ یہ دونوں بالغ ہیں اور بالغ کا نکاح بلا اذن عاقدین کیونکر ہوسکتا ہے، اور بر تقدیر ثانی ہزاروں آدمی حرامزادے قرار پاتے ہیں، اور یہ ایجاب و قبول مذکور کیا قرار پائیں گے، کیا نکاح مذکور بالکل معدوم قرار دیا جائے گا۔ کیا نکاح فضولی سے خارج ہو گیا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اس مسئلہ میں ابانت جواب اور بتوفیقہ تعالٰی اصابت صواب محتاجِ نظر غائر و فکرِ دقیق۔

فاقول: وباللہ التوفیق تحقیقِ مقام یہ ہے کہ سفیرِ مذکور جسے وہ عوام وکیلِ مخطوبہ ٹھہراتے ہیں اس کا مخطوبہ و خاطب دونوں سے خطاب مذکور بصورتِ استفہام ہے اگرچہ حرف استفہام مقدر ہے اور استفہام و عقد اقسامِ انشاء سے دو قسم متبائن ہیں تو جہاں حقیقتِ استفہام مقصود و مفہوم ہو وہ کلام ایجاب یا قبول نہیں قرار پاسکتا ہاں اگر صورۃً استفہام اور معنیً تحقیقِ عقد مستفاد ہو تو ایجاب یا توکیل متصور ہوگا مگر اس کے لیے قیام قرینہ درکار کما ھو شانِ کل مجاز (جیسا کہ ہر مجاز کا تقاضا ہے۔ ت) و لہٰذا علماء فرماتے ہیں اگر زید نے عمرو سے کہا تو نے اپنی بیٹی میرے نکاح میں دی اس نے کہا "دی" یا "ہاں" نکاح نہ ہوگا جب تک زید اس کے جواب میں "میں نے قبول کی" نہ کہے، تنویر الابصار و در مختار میں ہے:

| لو قال رجل لأخر زوجتنی ابنتك فقال الآخر زوجت او قال نعم مجیباً له لم یکن نکاحاً مالم یقل الموجب بعده قبلت لان زوجتنی استخبار ولیس بعقد بخلاف زوجنی لانه توکیل ۱۔ | اگر ایک شخص نے دوسرے سے کہا کہ تو نے اپنی بیٹی مجھے نکاح کردی، دوسرے نے جواب میں کہا کہ نکاح کردی، یا "ہاں" کہہ دیا تو نکاح نہ ہوگا جب تک ایجاب کرنے والا بعد میں یہ نہ کہے کہ میں نے قبول کی، کیونکہ پہلے کا یہ کہنا کہ تو نے اپنی بیٹی مجھے نکاح کردی، یہ صرف طلبِ خبر ہے عقدِ نکاح نہیں ہے، اس کے برخلاف اگر پہلا یہ کہتا کہ تو مجھے نکاح کردے، تو اس سے دوسرا وکیل بن جاتا اور اس کا "نکاح کردی" کہنے سے نکاح ہو جاتا۔ (ت) |

1 درمختار شرح تنویرالابصار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۷

Fatawa Razawiya, Volume 11

It is stated in Khulasa and Khizanat-ul-Muftiyyin: "A person said to another, 'Give your daughter so-and-so to me as a wife,' so the second person replied, 'I have given.' In this case, if the girl is a minor, the marriage (Nikah) will be solemnized without the first person saying 'I have accepted' (Qabiltu). But if the first person said, 'You have given her to me,' then the second person saying 'I have given' will not constitute a marriage until the first says 'I have accepted,' etc."

In Fatawa Imam Qazi Khan and Hindiyyah, from Imam Abu Bakr Muhammad bin Aqeel al-Fadhl: "When a person says to a girl's father, 'You have married your daughter to me,' and the father replies 'I have married' or 'Yes,' the marriage does not take place unless the man says afterwards 'I have accepted.' This is because 'you married me' is an inquiry/information seeking and not a contract of marriage. In contrast, if the first person says, 'Marry your daughter to me,' it acts as a proxy (Tawkīl) and the marriage occurs. Summarized."

Also in Khaniyah: "A person said to another in Persian, 'Dukhtar khwaish ra mara dadi' (You gave me your daughter), he replied 'Dadam' (I gave). This is not a marriage."

Likewise, in many reliable books, this is the rule for a statement intended as an inquiry. "Indeed, the application is only with regard to the reality." In discourse, the application is according to the literal/real meaning.

---

1. Khulasa-tul-Fatawa, Kitab-un-Nikah, Maktaba Habibiya, Quetta, 2/4; Khizanat-ul-Muftiyyin, Kitab-un-Nikah, Manuscript, 1/6/7.
2. Fatawa Qazi Khan, Kitab-un-Nikah, Nawal Kishore, Lucknow, 1/149.
3. Fatawa Qazi Khan, Kitab-un-Nikah, Nawal Kishore, Lucknow, 1/149.

फतावा रजविया, ग्यारहवीं जिल्द

'खुलासा' और 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में है: "एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, 'अपनी फलां लड़की मुझे पत्नी के रूप में दे दो,' तो दूसरे ने कहा, 'मैंने दी।' इस स्थिति में यदि वह लड़की नाबालिग हो, तो पहले के 'कबलतु' (मैंने स्वीकार किया) कहे बिना निकाह हो जाएगा। और यदि पहले ने यह कहा कि 'तूने मुझे दी है,' तो दूसरे के'दे दी' कहने से निकाह नहीं होगा जब तक पहला 'मैंने स्वीकार किया' न कहे। (त)"

'फतावा इमाम क़ाज़ी खान' और 'हिन्दिया' में इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन अक़ील अल-फ़ज़ल से है: "जब एक व्यक्ति ने लड़की के पिता से कहा कि 'तूने अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर दिया,' तो दूसरे ने जवाब में कहा 'मैंने निकाह कर दिया' या 'हाँ' कहा, तो निकाह नहीं होगा जब तक कि बाद में पहला व्यक्ति 'मैंने स्वीकार किया' न कह दे, क्योंकि 'तूने निकाह किया' का शब्द सूचना प्राप्त करने के लिए है और निकाह का अनुबंध (अक़द) नहीं है। इसके विपरीत यदि पहला यह कहता है कि 'तू मेरा निकाह कर दे,' तो वकील बनाने (तौकील) के तौर पर निकाह हो जाता है। (संक्षेप में) (त)"

'खानिया' में भी है: "एक व्यक्ति ने दूसरे से फ़ारसी में कहा कि 'तूने अपनी लड़की मुझे दी,' तो जवाब में दूसरे ने कहा 'दे दी,' तो निकाह नहीं होगा। (त)"

इसी तरह कई विश्वसनीय किताबों में है, यह वास्तव में पूछताछ का नियम है: "प्रयोग केवल वास्तविकता के विचार से होता है।" कलाम में प्रयोग वास्तविक अर्थ के लिहाज़ से होता है।

---

1. खुलासा-तुल-फतावा, किताब-उन-निकाह, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/4; ख़ज़ानत-उल-मुफ्तीन, किताब-उन-निकाह, पांडुलिपि, 1/6/7।
2. फतावा क़ाज़ी ख़ान, किताब-उन-निकाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/149।
3. फतावा क़ाज़ी ख़ान, किताब-उन-निकाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/149।

पृष्ठ 157 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

خلاصہ وخزانۃ المفتین میں ہے: رجل قال لاخر دختر خویش فلانہ مرادہ بزنی فقال دادم وھی صغیرۃ ینعقد النکاح وان لم یقل الزوج قبلت ولو قال دادی لا یجوز اذا قال دادم مالم یقل الزوج پذیرفتم الخ۔ ایک شخص نے دوسرے کو کہا تو اپنی فلاں لڑکی مجھے بیوی کے طور دے دے، تو دوسرے نے کہا میں نے دی، اس صورت میں اگر وہ لڑکی نابالغہ ہو تو پہلے کے "قبلت" (میں نے قبول کی) کہے بغیر نکاح ہو جائے گا۔ اور پہلے نے یہ کہا کہ تو نے مجھے دی ہے تو دوسرے کے "دے دی" کہنے سے نکاح نہ ہوگا جب تک پہلا "میں نے قبول کی" نہ کہے الخ (ت)

فتاوٰی امام قاضی خان وبہندیہ میں امام ابوبکر محمد بن عقیل الفضل سے ہے: اذا قال لاب البنت زوجتنی ابنتک فقال زوجت او قال نعم لایکون نکاحا الا ان یقول لہ الرجل بعد ذلك قبلت لان زوجتنی استخبار ولیس بعقد بخلاف قولہ زوجنی لانہ توکیل اہ باختصار۔ جب ایک شخص نے لڑکی کے باپ کو کہا کہ تو نے اپنی بیٹی مجھے نکاح کردی، تو دوسرے نے جواب میں کہا میں نے نکاح کردی یا "ہاں" کہا تو نکاح نہ ہوگا مگر یہ کہ بعد میں پہلا شخص "میں نے قبول کی" کہہ دے تو نکاح ہو جائیگا کیونکہ "تو نے نکاح کی" کا لفظ خبر کے حصول کے لیے ہے اور عقد نکاح نہیں ہے، اس کے بخلاف اگر پہلا یوں کہتا ہے کہ "تو مجھے نکاح کر دے" تو بطور توکیل نکاح ہو جاتا ہے اہ اختصاراً (ت)

نیز خانیہ میں ہے: رجل قال لغیرہ بالفارسیۃ دختر خویش را مرادادی فقال دادم لایکون نکاحا۔ ایک شخص نے دوسرے کو فارسی میں کہا کہ تو نے اپنی لڑکی مجھے دی، تو جواب میں دوسرے نے کہا دے دی، تو نکاح نہ ہوگا۔ (ت)

اسی طرح کتب معتبرہ کثیرہ میں ہے، یہ اصل استفہام کا حکم ہے، فالاطلاق انما ھو بالنظر الی الحقیقۃ کلام میں اطلاق حقیقی معنی کے لحاظ سے ہوتا ہے

---

1 خلاصۃ الفتاویٰ کتاب النکاح مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۲/ ۴، خزانہ المفتین کتاب النکاح قلمی نسخہ ۶/۱/۷ 2 فتاویٰ قاضی خاں کتاب النکاح نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۴۹ 3 فتاویٰ قاضی خاں کتاب النکاح نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۴۹

“However, if it is used generally, then it is restricted in reality to when the actual intent (confirmation of contract) is not meant.” And if it is made general, then to take the real meaning, the condition of not intending the metaphorical meaning (confirmation of contract) will definitely be necessary. (T)

These same scholars clarify that at the time of intending the confirmation of the contract, it is complete. It is mentioned in Fatawa Zahiriya and Khizanat al-Muftin: “If someone says in Persian, ‘Did you give me your daughter?’ and the other says, ‘I gave,’ the marriage is not contracted because this is an inquiry and a request, so he does not become an agent unless he intended confirmation by it rather than just a query.”[1] If one person says to another in Persian, “Have you given your daughter to me?” and the second says “Given,” then the marriage will not be contracted because the first person's speech is a request for information and a request for a promise; therefore, from this speech, the second person cannot become a representative (wakil) of the first. However, if the first intended the confirmation of the contract (metaphorical meaning) from his speech, then the marriage will occur. If the real meaning of interrogation is an inquiry, engagement, and information-seeking, then marriage will not take place. (T)

In Wajeez of Imam Kardari, it says: “He said to him: Give your daughter so-and-so to me. He said: I gave, and she is a minor. It is contracted even if he did not say ‘I accepted’ because it is appointing an agent. But if he said: Did you give her to me? No, [it is not contracted] unless he said ‘I gave’ and the husband said ‘I accepted,’ or unless by ‘did you give’ he intended confirmation.”[2] One person said to another, “Give your daughter such-and-such to me,” then the second said in reply, “I have given.” If the girl is a minor, the marriage will occur even if the first person did not say “I have accepted” afterwards, because saying “Give your daughter” is making the other a representative. But if the first said, “Have you given her to me?” then the marriage will not occur except in the case where the second said “I gave” and the first said “I accepted” in response. Yes, if the first intended confirmation of the contract by the word “dadi” (gave) instead of an interrogation. (T)

Note: “Meaning, keeping the speech general, inclusive of both the literal and metaphorical. In short, restricting speech to its literal meaning necessitates generality in indication, and making speech general (including literal and metaphorical) necessitates the restriction of non-permissibility; so understand. 12

from him, may he be forgiven. (M/T)” Meaning, keeping the speech general such that it includes both the literal and metaphorical. In short, restricting speech to its literal meaning necessitates generality in indication, and making speech general (including literal and metaphorical) necessitates the restriction of non-permissibility; reflect on this. 12 from him, may he be forgiven (T)

1. Khizanat al-Muftin, Book of Marriage, Manuscript 1/76.
2. Fatawa Bazaziya on the margins of Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Nurani Kutub Khana Peshawar 2/110.

"परन्तु यदि इसे सामान्य रखा जाए, तो वास्तविकता में यह तब प्रतिबंधित है जब वास्तविक अभिप्राय (अनुबंध की पुष्टि) अभिप्रेत न हो।" और यदि इसे सामान्य कर दिया जाए तो वास्तविक अर्थ लेने के लिए रूपक अर्थ (अनुबंध की पुष्टि) के अभिप्रेत न होने की शर्त अवश्य होगी। (त)

यही विद्वान स्पष्ट करते हैं कि अनुबंध की पुष्टि के इरादे के समय यह पूर्ण है। फ़तावा ज़हीरिया और ख़ज़ाना अल-मुफ़्तीं में है: "यदि कोई फ़ारसी में कहे, 'क्या आपने अपनी बेटी मुझे दी?' और दूसरा कहे, 'दी,' तो निकाह संपन्न नहीं होगा क्योंकि यह पूछताछ और अनुरोध है, इसलिए वह तब तक प्रतिनिधि नहीं बनता जब तक कि उसने इससे केवल पूछताछ के बजाय पुष्टि का इरादा न किया हो।"[1] यदि एक ने दूसरे से फ़ारसी में कहा कि "तूने अपनी लड़की मुझे दी," और दूसरे ने कहा "दी" तो निकाह संपन्न नहीं होगा क्योंकि यह पहले का भाषण सूचना की माँग और वादे की माँग है, इसलिए इस भाषण से दूसरा पहले का प्रतिनिधि (वकील) नहीं हो सकेगा। मगर यदि पहले ने अपने भाषण से अनुबंध की पुष्टि (रूपक अर्थ) का इरादा किया हो तो निकाह हो जाएगा, और यदि प्रश्नवाचक का वास्तविक अर्थ पूछताछ, मंगनी और जानकारी लेना हो तो निकाह नहीं होगा। (त)

इमाम करदरी की वजीज़ में है: "उसने उससे कहा: अपनी फ़लाँ बेटी मुझे दे दो। उसने कहा: मैंने दे दी, और वह नाबालिग है। निकाह संपन्न हो गया भले ही उसने 'मैंने स्वीकार किया' न कहा हो क्योंकि यह प्रतिनिधि नियुक्त करना है। परन्तु यदि उसने कहा: क्या तूने उसे मुझे दिया? तो नहीं, [संपन्न नहीं होगा] जब तक कि उसने 'मैंने दे दी' न कहा हो और पति ने 'मैंने स्वीकार किया' न कहा हो, या जब तक 'क्या तूने दी' से उसने पुष्टि का इरादा न किया हो।"[2] एक ने दूसरे से कहा कि "अपनी फ़लाँ लड़की मुझे दे," तो दूसरे ने जवाब में कहा "मैंने दी," तो यदि लड़की नाबालिग हो तो निकाह हो जाएगा चाहे पहले ने इसके बाद "मैंने स्वीकार की" न कहा हो क्योंकि "अपनी लड़की दे" कहना दूसरे को प्रतिनिधि बनाना है। और यदि पहले ने यह कहा हो कि "तूने मुझे दी" तो फिर निकाह नहीं होगा सिवाय उस स्थिति के जब दूसरे ने "मैंने दी" कहा और पहले ने उसके जवाब में "मैंने स्वीकार की" कहा हो। हाँ, यदि पहले ने "दादी" (दी) शब्द से प्रश्न के बजाय अनुबंध की पुष्टि का इरादा किया हो। (त)

नोट: "अर्थात् भाषण को सामान्य रखना, वास्तविक और रूपक दोनों को शामिल करना। संक्षेप में यह कि भाषण को वास्तविकता तक सीमित करना संकेत में व्यापकता चाहता है, और भाषण को

सामान्य करना (वास्तविकता और रूपक को शामिल करना) अपात्रता के प्रतिबंध को चाहता है; समझो। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म/त)" अर्थात् भाषण को सामान्य रखना ताकि इसमें वास्तविक और रूपक दोनों शामिल हों। संक्षेप में यह कि भाषण को वास्तविकता तक सीमित करना संकेत में व्यापकता चाहता है, और भाषण को सामान्य करना (वास्तविकता और रूपक को शामिल करना) अपात्रता के प्रतिबंध को चाहता है; इस पर विचार करो। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

1. ख़ज़ाना अल-मुफ़्तीं, निकाह की किताब, पांडुलिपि 1/76.
2. फ़तावा बज़ज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिए पर, निकाह की किताब, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 2/110.

पृष्ठ 158/739

امالو اطلقت عـ فھی مقیدۃ حقیقۃ بما اذالم یرد بہ التحقیق- اور اگر عام کر دیا جائے تو پھر اس وقت حقیقی معنیٰ مراد لینے کے لیے مجازی معنیٰ (تحقیق عقد) مراد نہ ہونے کی قید ضرور ہوگی۔ (ت)

یہی علماء تصریح فرماتے ہیں کہ ہنگام ارادہ تحقیق عقد تام ہے۔ فتاوٰی ظہیریہ و خزانہ المفتین میں ہے: لو قال بالفارسیۃ دختر خویش مرا دادی فقال دادم لا ینعقد النکاح لان ھذا استخبار واستبعاد فلا یصیر وکیلا الا اذا اراد بہ التحقیق دون الاستیلام ۱۔ اگر ایک نے دوسرے سے فارسی میں کہا کہ تو نے اپنی لڑکی مجھے دی، تو دوسرے نے کہا "دی" تو نکاح منعقد نہ ہوگا کیونکہ یہ پہلے کا کلام، طلب خبر ہے اور طلب وعدہ ہے لہٰذا اس کلام سے دوسرا پہلے وکیل نہ ہو سکے گا۔ مگر یہ کہ پہلے نے اپنی کلام سے تحقیق عقد (مجازی معنیٰ) مراد لیا ہو تو نکاح ہو جائے گا اور استفہام کا حقیقی معنی استفسار اور منگنی و استخبار ہو تو نکاح نہ ہوگا۔ (ت)

وجیز امام کردری میں ہے: قال لہ دختر خود فلانہ را بمن دہ فقال دادم وھی صغیرۃ انعقد وان لم یقل قبلت لانہ توکیل ولو قال بمن دادی لا، الا اذا قال دادم وقال الزوج پذیرفتم، الا اذا اراد بدادی التحقیق ۲۔ ایک نے دوسرے سے کہا کہ اپنی فلاں لڑکی مجھے دے، تو دوسرے نے جواب میں کہا میں نے دی، تو نابالغہ لڑکی ہو تو نکاح ہو جائیگا اگرچہ پہلے نے اس کے بعد "میں نے قبول کی" نہ کہا ہو کیونکہ "اپنی لڑکی دے" کہنا دوسرے کو وکیل بنانا ہے، اور اگر پہلے نے یہ کہا ہو کہ "تونے مجھے دی" تو پھر نکاح نہ ہوگا مگر اس صورت میں جب دوسرے نے "میں نے دی" کہا اور پہلے نے اس کے جواب "میں نے قبول کی" کہا ہو، ہاں اگر پہلے نے دادی کے لفظ سے استفہام کی بجائے تحقیق عقد مراد لی ہو۔ (ت)

عـ : ای جعلت الکلام مطلقا شاملا للحقیقة والمجاز و بالجملة فالتقیید موجب للاطلاق والاطلاق موجب للتقیید فافهم ۱۲ منہ غفر لہ۔ (م) یعنی کلام کو اطلاق پر رکھ کر عام کر دیا جائے یوں کہ حقیقت اور مجاز دونوں کو شامل ہو۔ خلاصہ یہ کہ کلام کو حقیقت سے مقید کرنا، دلالت میں اطلاق کو چاہتا ہے، اور کلام کو عام کرنا (حقیقت و مجاز کو شامل کرنا) عدم جواز کی قید کو چاہتا ہے، غور کرو۔ ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

۱۔ خزانہ المفتین کتاب النکاح قلمی نسخہ ۱/۷۶ ۲۔ فتاوٰی بزازیہ علی ھامش فتاوٰی ہندیہ کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۱۱۰

Fatawa Rizwia Volume 11

In Al-Muhit and Al-Hindiyya, it is stated: Marriage is not contracted unless the suitor says "I have accepted" after the girl's father's response, except if by his saying "You gave me your daughter" he intended confirmation (tahqiq) and not just an inquiry/ proposal (sawm) etc. (T)

In Dhakhirat al-'Uqba, it is stated: His saying "You gave" is an inquiry for information, so agency (tawkil) is not established by it. Yes, if by his saying "You gave" he meant confirmation rather than a proposal, the marriage is contracted even if the suitor does not say "I have accepted" afterwards etc. (T)

This is the context for this branch from Dhakhira and Hindiyya: It was said to a woman, "Did you make yourself my wife?" She replied, "I did." The marriage is contracted. Similarly, if someone said to a woman, "Did you make yourself my wife?" and she said, "I made [myself so]," the marriage is contracted (T).

And from this branch of Al-Muhit and Al-Hindiyya: Najm al-Din was asked about someone who said to a woman, "Did you give yourself to me as a wife for a thousand dirhams of dower?" She replied, "To hear is to obey." He said: The marriage is contracted. But if the woman said, "I am grateful," it is not contracted because the first...

---

1 Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Chapter 2, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/271 2 Dhakhira 'Uqba, Kitab al-Nikah, Nawal Kishore Kanpur, 2/177 3 Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Chapter 2, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/271

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मुहीत और हिन्दिया में है: निकाह तब तक नहीं होता जब तक सगाई पूछने वाला लड़की के पिता के जवाब के बाद "मैंने स्वीकार किया" न कहे, सिवाय इसके कि उसके यह कहने से कि "आपने मुझे अपनी लड़की दी" का मतलब सगाई नहीं बल्कि तहक़ीक़ (पुष्टि) हो आदि (त)।

ज़ख़ीरतुल उक़बा में है: उसका यह कहना "आपने दी" यह सूचना की मांग है, इससे वकालत (तोकील) साबित नहीं होगी। हाँ, अगर "आपने दी" से मतलब सगाई के बजाय तहक़ीक़ हो तो निकाह हो जाएगा चाहे बाद में यह कहने वाला "मैंने स्वीकार किया" न कहे आदि (त)।

यही स्थान है ज़ख़ीरा और हिन्दिया की इस शाखा का: यदि किसी महिला से कहा गया कि "क्या तुमने खुद को मेरी पत्नी बना दिया?" तो महिला ने कहा "मैंने कर दिया", तो निकाह संपन्न हो जाएगा। और इसी तरह अगर किसी ने महिला से कहा कि "क्या तुमने खुद को मेरी पत्नी बना दिया?", तो महिला ने कहा "मैंने बना दिया", तो निकाह हो जाएगा (त)।

और मुहीत व हिन्दिया की इस शाखा का: नज्मउद्दीन से सवाल किया गया कि जिस व्यक्ति ने किसी महिला से कहा कि "क्या तुमने एक हजार मेहर के बदले खुद को मेरी पत्नी बना दिया?" तो महिला ने जवाब में कहा "सुना और आज्ञा मानी", तो उन्होंने फरमाया: निकाह संपन्न हो गया, और अगर महिला ने कहा "मैं आभारी हूँ", तो निकाह संपन्न नहीं होगा क्योंकि पहला...

---

1 फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, बाब 2, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/271 2 ज़ख़ीरा उक़बा, किताबुन निकाह, नवल किशोर कानपुर, 2/177 3 फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, बाब 2, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/271

पृष्ठ 159/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

محیط و ہندیہ میں ہے: لاینعقد النکاح مالم یقل الخاطب پذیر فتم الا اذا اراد بقول دادی التحقیق دون السوم 1 الخ۔ منگنی پوچھنے والا جب تک لڑکی کے باپ کے جواب کے بعد "میں نے قبول کی" نہ کہے گا نکاح نہ ہوگا، مگر یہ کہ اس کے اس کہنے "مجھے تو نے اپنی لڑکی دی" سے مراد منگنی نہ ہو بلکہ تحقیق مراد ہے الخ (ت)

ذخیرہ العقبٰی میں ہے: قولہ دادی استخبار فلا یثبت التوکیل بہ نعم اذا ارید بقولہ دادی التحقیق دون السوم ینعقد النکاح وان لم یقل الخاطب پذیر فتم الخ 2۔ ایک کا کہنا "تو نے دی" یہ طلبِ خبر ہے اس سے توکیل ثابت نہ ہوگی، ہاں اگر "تو نے دی" سے مراد منگنی کی بجائے تحقیق ہو تو نکاح ہوجائے گا اگرچہ بعد میں یہ کہنے والا "میں نے قبول کی" نہ کہے الخ (ت)

یہی محل ہے اس فرع ذخیرہ و ہندیہ کا: قیل لامرأۃ خویش رازن من کردی فقلت کردم ینعقد النکاح وکذا لو قال خویش رازن من گردانیدی فقالت گردانیدم 3۔ اگر کسی عورت کو یہ کہا گیا تو نے اپنے کو میری بیوی کردیا تو عورت نے کہا "میں نے کردیا" تو نکاح منعقد ہوجائے گا، اور یونہی اگر کسی نے عورت کو کہا تو نے اپنے کو میری بیوی بنادیا، تو عورت نے کہا "میں نے بنادیا" تو نکاح ہوجائے گا (ت)

اور اس فرع محیط و ہندیہ کا: سئل نجم الدین عمن قال لامرأۃ خویشتن را بھزار درم بمن بزنی دادی فقالت بالسمع والطاعۃ قال ینعقد النکاح ولو قالت سپاس دارم لاینعقد لان الاول نجم الدین سے سوال کیا گیا کہ جس نے کسی عورت کو کہا کہ تو نے اپنے کو ہزار مہر کے بدلے میری بیوی کردیا تو عورت نے جواب میں کہا "سنا اور اطاعت کی" تو انھوں نے فرمایا: نکاح منعقد ہوگیا، اور اگر عورت

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور 1 / 271 2 ذخیرہ عقبیٰ کتاب النکاح نولکشور کانپور 2/ 177 3 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور 1 / 271

Fatawa Razawiyya Volume 11

Response and the second is a promise[1]. She said in response "I like it", then marriage will not be concluded because the first answer is acceptance and the second is just a promise. (T)

Necessarily, the final decision was that the meaning and what is inferred depend on the circumstances and indicators of usage. Zaid said, "You gave your daughter to me," and Amr said, "I gave." If the gathering was for engagement, it resulted in engagement; and if it was for marriage, then marriage occurred. In Durr al-Mukhtar it is stated:

And similarly (i.e., in it being an offer) his saying: "I am marrying you" or "I have come as a suitor," due to the lack of bargaining in marriage. Or "Did you give her to me?" if the gathering was for marriage then it is marriage, and if it was for a promise then it is a promise[2].

Similarly, among the words of offer are these: "I want to marry you" or "I have come to propose for marriage" or "Did you give me your girl?" In these cases, if the gathering is for marriage, it will be ruled as marriage; and if this gathering is for engagement, it will be ruled as engagement, because bargaining does not take place in marriage (it is only either engagement or marriage). (T)

In Sharh Mukhtasar al-Tahawi by al-Isijabi, then Sharh al-Quduri by al-Zahidi, then al-Anqirawiyyah and Waqi'at al-Muftiyyin it is stated:

He said to him, "Did you give her to me?" He replied, "I gave." If the gathering was for a promise, it's a promise; and if it was for a marriage contract, then it's a marriage[3].

One said to another, "You have given your girl to me," so the other said, "I have given." If this gathering is for marriage, marriage will occur, and if it's an engagement gathering, it will be engagement. (T)

In Fath al-Qadir and Radd al-Muhtar it is stated:

Since we knew that the consideration from the Sharia's perspective in the establishment of the contract and the necessity of its ruling is the aspect of consent, we extended its ruling to every word that yields that [meaning] without equal possibility of the contrary. Therefore we said: if one says using the imperfect tense with hamza [first-person singular], "I marry you," and she says, "I married myself [to you]," it is concluded.

When we realized that Sharia has considered the aspect of consent in the conclusion of marriage and the obligation of this ruling, we extended the ruling of marriage to such words that can provide the benefit of expressing consent, provided they do not equally hold the possibility of opposing consent. Therefore, we said that if someone used the first-person singular imperfect tense and said, "I marry you," and in response, the woman said, "I performed my marriage [to you]," then the marriage will take place. If someone used the second-person singular imperfect tense and said...

[1] Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter Two, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/271 [2] Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Delhi, 1/185 [3] Fatawa Anqirawiyya, Book of Marriage, Dar al-Isha'at al-Arabiyya, Kandahar Afghanistan, 1/33

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

जवाब और दूसरा वादा है[1]। उसने जवाब में कहा "मुझे पसंद है", तो निकाह नहीं होगा क्योंकि पहला जवाब स्वीकृति है और दूसरा केवल एक वादा है। (त)

निश्चित रूप से निर्णायक फैसला यह हुआ कि अर्थ और अर्थ ग्रहण करना परिस्थितियों और संकेतों के उपयोग पर निर्भर है। ज़ैद ने कहा "तुमने अपनी बेटी मुझे दी," और अम्र ने कह दिया, यदि सभा सगाई (मंगनी) की थी तो सगाई हुई और अगर निकाह की थी तो निकाह हो गया। दुर्रे मुख़्तार में है:

और इसी तरह (यानी ईजाब होने में उसका यह कहना) "मैं तुमसे निकाह कर रहा हूँ" या "मैं रिश्ता मांगने आया हूँ" निकाह में सौदेबाज़ी न होने के कारण। या "क्या तुमने उसे मुझे दे दिया?" अगर सभा निकाह के लिए थी तो निकाह है और अगर वादे के लिए थी तो वादा है[2]।

इसी तरह ईजाब के शब्दों में ये भी हैं "मैं तुमसे निकाह करना चाहता हूँ" या "मैं निकाह का संदेश देने के लिए आया हूँ" या "क्या तुमने मुझे अपनी लड़की दी", इन स्थितियों में अगर सभा निकाह की है तो निकाह माना जाएगा और अगर यह सभा मंगनी की हो तो मंगनी मानी जाएगी, क्योंकि निकाह में मोलभाव नहीं होता (सिर्फ मंगनी या निकाह होता है)। (त)

अल-इसीजीबी द्वारा 'शरह मुख्तसर अल-तहावी', फिर अल-ज़ाहिदी द्वारा 'शरह अल-क़ुदूरी', फिर 'अल-अंकारविया' और 'वाक़िआत अल-मुफ़्तीयीन' में है:

उसने उससे कहा: "क्या तुमने उसे मुझे दिया?" उसने कहा: "मैंने दे दिया।" यदि सभा वादे के लिए थी तो वादा है और अगर निकाह के अनुबंध के लिए थी तो निकाह है[3]।

एक ने दूसरे से कहा "तुमने अपनी लड़की मुझे दी है" तो दूसरे ने कहा "मैंने दी," तो अगर यह सभा निकाह की हो तो निकाह होगा और मंगनी की सभा हो तो मंगनी होगी। (त)

फ़तह अल-क़दीर और रद अल-मुह्तार में है:

जब हमने जाना कि शरीयत के अनुसार अनुबंध के संपन्न होने और उसके आदेश की अनिवार्यता में रज़ामंदी के पक्ष का विचार किया गया है, तो हमने इसके आदेश को हर उस शब्द तक विस्तारित कर दिया जो दूसरे पक्ष के समान संभावना के बिना इसका [रज़ामंदी का] लाभ देता हो। तो हमने कहा: यदि कोई हमज़ा वाले मुज़ारे (उत्तम पुरुष एकवचन) के साथ कहे, 'मैं तुमसे निकाह करता हूँ,' और वह कहे, 'मैंने स्वयं का निकाह किया,' तो वह संपन्न हो गया।

जब हमें पता चला कि निकाह के संपन्न होने और इस नियम के अनिवार्य होने में शरीयत ने रज़ामंदी वाले पहलू का लिहाज़ किया है। तो हमने उस पर निकाह के नियम को ऐसे शब्दों तक फैला दिया जो रज़ामंदी के इज़हार का फ़ायदा दे सकते हैं बशर्ते कि ये रज़ामंदी के खिलाफ का समान रूप से संभावना न रखते हों, इसलिए हमने यह कहा कि अगर किसी ने मुज़ारे वाहिद मुतकल्लिम का सीग़ा इस्तेमाल करते हुए यूँ कहा "मैं तुमसे निकाह करता हूँ" तो औरत ने उसके जवाब में कहा "मैंने अपना निकाह किया" तो निकाह हो जाएगा अगर किसी ने मुज़ारे वाहिद मुख़ातब के सीग़ा को इस्तेमाल किया और यूँ कहा

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, दूसरा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/271 [2] दुर्रे मुख़्तार, किताबुन निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/185 [3] फ़तावा अंकारविया, किताबुन निकाह, दारुल इशाअत अल-अरबिया, कंधार अफ़गानिस्तान, 1/33

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

اجابۃ والثانی وعد[1]۔ نے جواب میں یوں کہا"پسند کرتی ہوں" تو نکاح نہ ہوگا کیونکہ پہلا جواب قبولیت ہے اور دوسرا صرف وعدہ ہے۔(ت)

لاجرم قول فیصل یہ قرار پایا کہ مدار کا مفہوم ومستفاد بنظر احوال وقرائن استعمال پر ہے۔ زید نے کہا تو نے اپنی بیٹی مجھے دی، عمر و نے کہادی، اگر مجلس منگنی کی تھی منگنی ہوئی اور نکاح کی تھی تو نکاح ہو گیا۔ درمختار میں ہے :

و کذا (ای فی کونہ ایجابا قولہ) انا متزوجک او جئتک خاطبا لعدم جریان المساومۃ فی النکاح اوھل اعطیتنیھا ان کان المجلس للنکاح فنکاح وان للوعد فوعد[2]۔

یوں ہی الفاظ ایجاب میں سے یہ بھی ہیں "میں تجھ سے نکاح کرنا چاہتا ہوں" یا "میں پیغام نکاح دینے کے لیے آیا ہوں" یا " کیا تو نے مجھے اپنی لڑکی دی"، ان صورتوں میں اگر مجلس نکاح ہے تو نکاح قرار پائے گا اور اگر یہ مجلس منگنی ہو تو منگنی قرار پائے گی، کیونکہ نکاح میں بھاؤ جاری نہیں ہوتا (صرف منگنی یا نکاح ہوتا ہے) (ت)

شرح مختصر الطحاوی للاسیجابی پھر شرح قدوری للزاھدی پھر انقرویہ و واقعات المفتیین میں ہے :

قال لہ ھل اعطیتنیھا فقال اعطیت فان کان المجلس للوعد فوعد وان کان لعقد النکاح فنکاح[3]۔

ایک نے دوسرے کو کہا تو نے اپنی لڑکی مجھے دی ہے تو دوسرے نے کہا میں نے دی، تو اگر یہ مجلس نکاح ہو تو نکاح ہو گا اور مجلس منگنی ہو تو منگنی ہوگی (ت)

فتح القدیر و ردالمحتار میں ہے:

لما علمنا ان الملاحظۃ من جھۃ الشرع فی ثبوت الانعقاد ولزوم حکمہ جانب الرضی عدینا حکمہ الی کل لفظ یفید ذلک بلا احتمال مسا و للطرف الآخر فقلنا لو قال بالمضارع ذی الھمزۃ اتزوجک فقالت زوجت نفسی انعقد و

جب ہمیں معلوم ہوا کہ نکاح کے منعقد ہونے اور اس حکم کے لازم ہونے میں شریعت نے رضا والے پہلو کا لحاظ کیا ہے۔ تو ہم نے اس پر نکاح کے حکم کو ایسے الفاظ تک پھیلا دیا جو رضا کے اظہار کا فائدہ دے سکتے ہیں بشرطیکہ یہ رضا کے خلاف کا مساوی طور پر احتمال نہ رکھتے ہوں، اس لیے ہم نے یہ کہا کہ اگر کسی نے مضارع واحد متکلم کا صیغہ استعمال کرتے ہوئے یوں کہا "میں تجھ سے نکاح کرتا ہوں" تو عورت نے اس کے جواب میں کہا "میں نے اپنا نکاح کیا" تو نکاح ہو جائے گا اگر کسی نے مضارع واحد مخاطب کے صیغہ کو استعمال کیا اور یوں کہا

[1] فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۷۱ [2] درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۵ [3] فتاوی انقرویہ کتاب النکاح دارالاشاعۃ العربیہ قندھار افغانستان ۱/ ۳۳

Volume 11 Fatawa Rizvia

[Arabic Text]: Regarding a proposal starting with 'Taa' (e.g., 'Will you marry your daughter to me?'), if the response is 'I have done so' and there is no intention of deferral, marriage is contracted because these words carry the possibility of consent. This is unlike the first case where a person does not inform about a promise regarding themselves. Since bargaining is not applicable to marriage, the intention is to establish it immediately. Thus, marriage is contracted not because the words were originally coined for immediate creation of a contract, but because they were used for the purpose of establishing it and deriving consent. We even say that if one explicitly uses the interrogative form, the context will be considered. It is mentioned in the commentary of Al-Tahawi: If one says, 'Did you give her to me?' and the other replies, 'I have given,' if the gathering was for engagement, it is an engagement; if it was for marriage, it is a marriage. 1 End.

[Urdu Column]: "Will you marry your daughter to me?" In response, the second person said, "I have done so." When there is no intention of a promise, these words also contain the possibility of consent, therefore the marriage will take place. On the contrary, in the first case, there is no possibility of a promise because the speaker himself does not give news of a promise about his own person using the future tense. When this is the case, the intention in this scenario is to establish the marriage immediately, so the marriage will take place at that time. This is because bargaining cannot be intended with the mentioned words in marriage. Thus, the conclusion of marriage with such words is not because these words are specifically for marriage, but because they were used to achieve the objective and they express consent. We would even say that if someone explicitly meant an inquiry with these words, then the current situation would be taken into account. It is stated in the commentary of Al-Tahawi that if someone asked another, "Have you given your daughter to me?" and the other replied, "I have given," then in this case, if the gathering is for engagement, it will be engagement, and if it is a marriage gathering, it will be marriage. (T)

Through this elegant research, the statements are harmonized, the ruling is organized, and the complete discussion on the issue of inquiry is in our marginal notes on Radd al-Muhtar (and the full discourse on the issue of inquiry is in our annotations on Radd al-Muhtar. T). Now that this principle is clarified, let's move to the inquired case: the aforementioned person leaves the suitor's gathering and goes to the woman being wooed, whereas before this, he neither took permission from the suitor nor from the woman. And both are adults such that in their matter, the

permission of a third party is nothing. So, what relation does this have to agency (wakalat)? It is certainly a purely unauthorized act (fuzuli), but our noble Imams (may Allah be pleased with them)...

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/264

[अरबी पाठ]: 'ता' से शुरू होने वाले प्रस्ताव के बारे में (जैसे, 'क्या आप अपनी बेटी का निकाह मुझसे करेंगे?'), यदि उत्तर 'मैंने कर दिया' है और टालने का कोई इरादा नहीं है, तो निकाह हो जाता है क्योंकि इन शब्दों में सहमति की संभावना होती है। यह पहले मामले के विपरीत है जहाँ व्यक्ति अपने बारे में वादे की सूचना नहीं देता है। चूंकि निकाह में सौदेबाजी लागू नहीं होती है, इसलिए इरादा इसे तुरंत स्थापित करना होता है। इस प्रकार, निकाह इसलिए नहीं होता कि शब्द मूल रूप से अनुबंध के तत्काल निर्माण के लिए गढ़े गए थे, बल्कि इसलिए कि उनका उपयोग इसे स्थापित करने और सहमति प्राप्त करने के उद्देश्य से किया गया था। हम यहाँ तक कहते हैं कि यदि कोई स्पष्ट रूप से प्रश्नवाचक रूप का उपयोग करता है, तो संदर्भ पर विचार किया जाएगा। अल-तहावी की व्याख्या में उल्लेख किया गया है: यदि कोई कहता है, 'क्या आपने उसे मुझे दे दिया है?' और दूसरा उत्तर देता है, 'मैंने दे दिया है,' यदि सभा सगाई के लिए थी, तो यह एक सगाई है; यदि यह निकाह के लिए थी, तो यह एक निकाह है। 1 समाप्त।

[उर्दू कॉलम]: "क्या तू अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर देगा?" जवाब में दूसरे ने कहा "मैंने कर दिया"। जब उसका इरादा वादे का न हो, तो ये शब्द भी चूँकि रज़ामंदी की संभावना रखते हैं इसलिए निकाह हो जाएगा। इसके विपरीत पहली सूरत में वादे की संभावना नहीं है क्योंकि बोलने वाला खुद मुज़ारे (भविष्य काल) के शब्द से अपनी ज़ात के बारे में वादे की खबर नहीं देता। जब यह मामला है तो इस सूरत में हाल के समय में निकाह को कायम करना मक्सूद है तो उसी समय निकाह हो जाएगा, क्योंकि निकाह में उक्त शब्दों से मोलभाव तो मुराद नहीं हो सकता। तो ऐसे शब्दों से निकाह का होना इसलिए नहीं कि ये शब्द निकाह के लिए बनाए गए हैं बल्कि इसलिए कि इन शब्दों का उपयोग मक्सद हासिल करने की गरज से किया गया और उनसे रज़ामंदी का इज़हार भी होता है। यहाँ तक कि हम यह कहेंगे कि अगर किसी ने इन शब्दों से साफ़ तौर पर सवाल मुराद लिया तो फिर हाल का एतबार किया जाएगा। तहावी की शरह (व्याख्या) में फ़रमाया कि अगर किसी ने दूसरे से कहा: "क्या तूने अपनी बेटी मुझे दी है?" तो दूसरे ने जवाब में कहा कि "मैंने दी है", तो इस सूरत में अगर मजलिस सगाई की हो तो यह सगाई होगी और अगर यह निकाह की मजलिस हो तो निकाह होगा। (त)

इस शानदार शोध से इबारतें (वाक्य) एक हो गईं और हुक्म व्यवस्थित हो गया। और सवाल के मसले पर पूरी चर्चा रद अल-मुह्तार पर हमारे हाशिये (नोट्स) में है (और सवालिया मसले पर मुकम्मल कलाम रद अल-मुह्तार पर हमारे हाशिये में है। त)। जब यह असल साफ़ हो गई तो अब पूछे गए मामले की तरफ चलें: ज़िक्र किया गया व्यक्ति ख़ातिब (प्रस्तावक) की मजलिस से उठकर मख़तूबा (जिसके लिए निकाह का पैगाम भेजा गया हो) के पास जाता है, जबकि इससे पहले न ख़ातिब से इजाज़त ली न मख़तूबा से। और वो दोनों बालिग हैं कि उनके मामले में दूसरे की इजाज़त कोई चीज़ नहीं है। तो इसे वकालत से क्या लेना-देना, यकीनन यह महज़ फ़ज़ूली (बिना अधिकार के किया गया काम) होता है, लेकिन हमारे अइम्मा-ए-किराम (महान इमामों) रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम...

1 रद अल-मुह्तार, किताब अल-निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/264

पृष्ठ 161/739

في المبدوء بالتاء تزوجنی بنتك فقال فعلت عند عدم قصد الاستبعاد لانه یتحقق فیه هذا الاحتمال بخلاف الاول لانه لایستخبر نفسه عن الوعد و اذکان کذالك والنکاح مما لایجری فیه المساومة کان للتحقیق فی الحال فانعقد به لابعتبار وضعه للانشاء بل باعتبار استعماله فی غرض تحقیقه و استفادة الرضی منه حتی قلنا لو صرح بالاستفهام اعتبر فهم الحال ، قال فی شرح الطحاوی لوقال هل اعطیتنیها فقال اعطیت ان کان المجلس للوعد فوعد وان کان للعقد فنکاح ۱ اهـ

"تو اپنی بیٹی مجھ سے نکاح کر دے گا " تو جواب میں دوسرے نے کہا " میں نے کر دیا " جب اس سے وعدہ کا ارادہ نہ ہو تو یہ الفاظ بھی چونکہ رضا مندی کا احتمال رکھتے ہیں اس لیے نکاح ہو جائے گا، اس کے بخلاف پہلی صورت میں وعدہ کا احتمال نہیں کیونکہ خود متکلم مضارع کے صیغہ سے اپنی ذات کے بارے میں وعدہ کی خبر نہیں دیتا، جب یہ معاملہ ہے تو اس صورت میں فی الحال نکاح کو قائم کرنا مقصود ہے تو اسی وقت نکاح ہو جائے گا، کیونکہ نکاح میں مذکورہ الفاظ سے بھاؤ تو مراد نہیں ہو سکتا، تو ایسے الفاظ سے نکاح کا انعقاد اس لیے نہیں کہ یہ الفاظ نکاح کے لیے وضع ہیں بلکہ اس لیے کہ ان الفاظ کا استعمال مقصد کو حاصل کرنے کی غرض سے کیا گیا اور ان سے رضا مندی کا اظہار بھی ہوتا ہے۔ حتی کہ ہم یہ کہیں گے اگر کسی نے ان الفاظ سے صراحتاً استفہام مراد لیا تو پھر حال کا اعتبار کیا جائے گا، طحاوی کی شرح میں فرمایا کہ اگر کسی نے دوسرے کو کہا : " کیا تو نے اپنی بیٹی مجھے دی ہے " تو دوسرے نے جواب میں کہا کہ " میں نے دی ہے " تو اس صورت میں اگر مجلس منگنی ہو تو یہ منگنی ہوگی اور یہ مجلس نکاح ہو تو نکاح ہو گا اھ (ت)

اس تحقیق انیق سے عبارات ملتئم ہو گئیں اور حکم منتظم و تمام الکلام علی مسئلہ الاستفہام فیما علقناہ علی رد المحتار (اور مسئلہ استفہام پر مکمل کلام ردالمحتار پر ہمارے حاشیہ میں ہے۔ت)

جب یہ اصل منقح ہوئی اب صورت مستفسرہ کی طرف چلئے ، شخص مذکور کہ مجلس خاطب سے اٹھ کر مخطوبہ کے پاس جاتا ہے جبکہ اس سے پہلے نہ خاطب سے اذن لیا نہ مخطوبہ سے، اور وہ دونوں بالغ ہیں کہ ان کے معاملہ میں غیر کا اذن کوئی چیز نہیں تو اسے وکالت سے کیا علاقہ ، یقیناً فضولی محض ہوتا ہے مگر ہمارے ائمہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہ

۱ ردالمحتار کتاب النکاح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۴

Page Title: Fatawa Razawiyya, Volume 11

...In their view, the contract of an unauthorized agent (Fuzuli) is not merely futile and unacceptable; rather, it becomes concluded and depends on the authorization of the authorized person, as the jurists have explicitly stated in all books. (T) Thus, if it was intended and understood from this speech that the Fuzuli says to the proposed woman that the contract is verified, then there was no doubt in the conclusion of the marriage at that time. His speech was the proposal (Ijab) and the proposed woman's answer was the acceptance (Qabul). The contract was concluded conditionally (mawqufan). After that, when the aforementioned Fuzuli or another person informed the suitor of this and he expressed acceptance, this was explicitly the implementation of that conditional contract and the marriage became complete and effective. "I have accepted" and "Accepted" are both equal because when "Accepted" is said in response to "Have you accepted?", its clear meaning is "I have accepted," for the question is repeated in the answer. (T) It is mentioned in 'Zakhira' and 'Hindiyyah':

Arabic/Persian Source	Urdu Translation
It was said to a woman: "Did you give yourself to so-and-so as a wife?" She said, "I gave." It was said to the husband: "Did you accept?" He said, "Accepted." The marriage is concluded even if the woman did not say "I gave myself" and the husband did not say "I accepted."	If a woman is told, "Have you made yourself the wife of so-and-so?" and the woman said in reply, "Made," and the husband was told, "Have you accepted?" and he said, "It is accepted," then the marriage will take place even if the woman and the man have not said "I have accepted" or "I have given my marriage." (T)

It is mentioned in 'Islah wa Idah':

Arabic Source	Urdu Translation
Their words "gave" and "accepted" after "did you give?" and "did you accept?" are proposal and acceptance due to custom, because the answer to such speech is sometimes mentioned with the suffix 'm' (first person) and sometimes without it, like "sold" and "bought" in trade.	Saying only "gave" or "accepted" after the words "you gave" or "you accepted" is proposal and acceptance based on custom, because the first-person form is not necessary in response to such speech. For example, in sales, only the words "bought and sold" are used. (T)

I say: When in Persian "gave" (dad) and "I gave" (dadam), and "accepted" (paziruft) and "I accepted" (paziruftam) have the same ruling, then in Urdu, it is so with greater

reason. Because in Persian, the third-person past tense and the first-person past tense...

1. Fatawa Hindiyyah, Book of Marriage, Chapter Two, Nurani Kutub Khana Peshawar 1/271
2. Islah wa Idah

शीर्षक: फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

...उनके निकट फ़ुज़ूली (अनधिकृत एजेंट) का अनुबंध केवल व्यर्थ और अस्वीकार्य नहीं है, बल्कि वह संपन्न हो जाता है और सक्षम अधिकारी की अनुमति पर निर्भर रहता है, जैसा कि न्यायविदों ने सभी पुस्तकों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। (त) अतः, यदि इस बातचीत से यह समझा और चाहा गया था कि यह फ़ुज़ूली उस महिला से कहता है जिसे निकाह का प्रस्ताव दिया गया है कि अनुबंध प्रमाणित हो गया, तो उस समय निकाह संपन्न होने में कोई संदेह नहीं था। उसकी बात प्रस्ताव (ईजाब) थी और उस महिला का उत्तर स्वीकृति (क़बूल)। अनुबंध सशर्त संपन्न हो गया। इसके बाद, जब उपरोक्त फ़ुज़ूली या किसी अन्य व्यक्ति ने प्रार्थी (दूल्हे) को इसकी सूचना दी और उसने स्वीकृति व्यक्त की, तो यह स्पष्ट रूप से उस सशर्त अनुबंध का कार्यान्वयन था और निकाह पूर्ण और प्रभावी हो गया। "मैंने क़बूल किया" और "क़बूल किया" दोनों समान हैं क्योंकि जब "क्या तुमने क़बूल किया?" के उत्तर में "क़बूल किया" कहा जाता है, तो उसका स्पष्ट अर्थ यही होता है कि "मैंने क़बूल किया," क्योंकि उत्तर में प्रश्न का दोहराव मान्य होता है। (त) ज़ख़ीरा और हिन्दिया में है:

अरबी/फ़ारसी स्रोत	उर्दू अनुवाद
एक महिला से कहा गया: "क्या तुमने स्वयं को अमुक की पत्नी के रूप में दे दिया?" उसने कहा, "दे दिया।" पति से कहा गया: "क्या तुमने स्वीकार किया?" उसने कहा, "स्वीकार किया।" निकाह संपन्न हो गया भले ही महिला ने "मैंने दिया" और पति ने "मैंने स्वीकार किया" न कहा हो।	यदि किसी महिला से कहा जाए कि "तुमने स्वयं को फ़लाँ की पत्नी बना दिया?" तो महिला ने उत्तर में कहा "बना दिया", फिर पति से कहा गया "क्या तुमने स्वीकार किया?" उसने कहा "स्वीकार है", तो निकाह हो जाएगा चाहे महिला और पुरुष ने "मैंने स्वीकार किया" या "मैंने अपना निकाह दिया" न कहा हो। (त)

'इस्लाह व ईज़ाह' में है:

अरबी स्रोत	उर्दू अनुवाद
"तुमने दिया", "तुमने स्वीकार किया" के बाद उनके शब्द "दिया" और "स्वीकार किया" प्रथा (उर्फ़) के कारण प्रस्ताव और स्वीकृति हैं, क्योंकि ऐसी बातचीत के उत्तर में कभी-कभी 'मीम' (उत्तम	"तुमने दी, तुमने क़बूल की" शब्दों के बाद केवल "दी", "क़बूल की" कहना प्रथा के आधार पर ईजाब और क़बूल है, क्योंकि ऐसी बातचीत के उत्तर में वक्ता (मुतकल्लिम) का रूप आवश्यक

अरबी स्रोत	उर्दू अनुवाद
पुरुष प्रत्यय) के साथ और कभी-कभी उसके बिना उल्लेख किया जाता है, जैसे व्यापार में "बेचा" और "ख़रीदा"।	नहीं है। जैसे व्यापार में केवल "ख़रीद व फ़रोख़्त" शब्द का उपयोग किया जाता है। (त)

मैं कहता हूँ: जब फ़ारसी में 'दाद' (दिया) और 'दादम' (मैंने दिया) और 'पज़ीरुफ़्त' (स्वीकार किया) और 'पज़ीरुफ़्तम' (मैंने स्वीकार किया) का एक ही नियम है, तो उर्दू में यह प्राथमिकता के आधार पर (ब-दर्जा-ए-औला) होगा। क्योंकि फ़ारसी में भूतकाल का अन्य पुरुष (ग़ायब) और उत्तम पुरुष (मुतकल्लिम) का रूप...

1. फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, बाब दोयम, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/271
2. इस्लाह व ईज़ाह

کے نزدیک عقد فضولی محض فضول و نامقبول نہیں بلکہ منعقد ہو جاتا ہے اور اجازت صاحب اجازت پر موقوف رہتا ہے کما نصوا علیه في الکتب قاطبة (جیسا کہ فقہاء نے تمام کتابوں میں اس پر نص کی ہے۔ت) پس اگر اس کلام سے کہ یہ فضولی مخطوبہ سے کہتا ہے تحقیق عقد مراد و مفہوم ہوتی تو اس وقت انعقاد نکاح میں شبہ نہ تھا اس کا کلام ایجاب ہوا اور مخطوبہ کا جواب قبول۔ عقد موقوفاً منعقد ہو گیا۔ اس کے بعد جب فضولی مذکورہ خواہ دوسرے شخص نے خاطب کو اس کی خبر دی اور اس نے اظہار قبول کیا، یہ صراحۃً اس عقد موقوف کی تنفیذ ہوئی اور نکاح تام و نافذ ہو گیا، "قبول کیا میں نے" اور "قبول کیا" دونوں یکساں ہیں کہ جب "تو نے قبول کیا" کے جواب میں "قبول کیا" کہا تو اس کے صاف یہی معنی ہوئے کہ "میں نے قبول کیا" لان السؤال معاد في الجواب (کیونکہ جواب میں سوال کا اعادہ معتبر ہوتا ہے۔ ت) ذخیرہ وہندیہ میں ہے:

فارسی/عربی اصل	**اردو ترجمہ**
قیل لامرأة خویشتن را بفلان بزنے دادی فقالت داد و قیل للزوج پذیرفتی فقال پذیرفت ینعقد النکاح وان لم تقل المرأة دادم والزوج پذیرفتم۔	اگر کسی عورت کو کہا کہ "تو نے اپنے کو فلاں کی بیوی بنا دیا" تو عورت نے جواب میں کہا "بنا دیا" تو خاوند کو کہا گیا "تو نے قبول کیا" اس نے کہا "قبول ہے" تو نکاح ہو جائیگا اگرچہ عورت اور مرد نے "میں نے قبول کیا" یا "میں نے اپنا نکاح دیا" نہ کہا ہو۔ (ت)

اصلاح و ایضاح میں ہے:

عربی اصل	اردو ترجمہ
قولهما داد پذیرفت بعد دادی و پذیرفتی جواب و قبول لمكان العرف فان جواب مثل هذا الكلام قد يذكر بالميم وبدونه كفروخت و خريد في البيع۔	"تونے دی، تو نے قبول کی" کے الفاظ کے بعد صرف "دی" "قبول کی" کہنا عرف کی بنا پر ایجاب و قبول ہے، کیونکہ ایسی کلام کے جواب میں متکلم کا صیغہ ضروری نہیں ہے۔ جیسے بیع میں صرف "خرید و فروخت" کا لفظ استعمال کر لیا جاتا ہے۔ (ت)

اقول: جب فارسی میں داد و دادم و پذیرفت و پذیرفتم کا ایک حکم ہے تو اردو میں بدرجہ اولیٰ فان صيغة الماضي بالفارسية للغائب کیونکہ فارسی میں ماضی غائب اور متکلم کا صیغہ

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۷۱ 2 اصلاح وایضاح

Vol 11 Fatawa Razawiyya

[Arabic Column Text:] Unlike other languages, in our language [Urdu], the past tense form is a single form for the third person (absent), second person (present), and first person (speaker) altogether. The difference is only created by pronouns or by mentioning the noun. Don't you see that the Persians say 'O kard' [he did], 'Tu kardi' [you did], and 'Man kardam' [I did]? Whereas we say for all of them: 'He did' (us ne kiya), 'You did' (tu ne kiya), 'I did' (main ne kiya). Similarly, in the intransitive verb (al-fi'l al-lazim), 'He came' (woh aya), 'You came' (tu aya), 'I came' (main aya). In it, the difference is only between singular, plural, masculine, and feminine. So for the intransitive verb, there are four forms: 'Aya' (came-masculine), 'Ayi' (came-feminine) for singular masculine and feminine, and 'Aaye' and 'Aayin' for the plural forms respectively. Likewise, in the transitive verb, there is only one form for all, which is 'Kiya' (did), for example, regardless of whether you attribute it to him (us), them (unhon), you (tu), or us (hum), for masculine or feminine, singular or plural. There is absolutely no difference between the third, second, and first person in either of them. Through this, the invalidity of the claim of those who believe that the proposer's statement 'Accepted' (qabul ki) without 'I' (main ne) does not establish the marriage due to lack of specification of the accepter, is made clear.

[Urdu Column Text:] ...is separate, whereas in our language, the past tense forms for third person, second person, and first person are the same, which only creates a difference through the change of pronoun or noun. You see that Persians use separate forms 'O kard', 'Tu kardi', and 'Man kardam' for each, while we all just say "kiya" (did): he accepted (us ne qabul kiya), you did (tu ne kiya), I did (main ne kiya). Similarly, in our language, there is also only one form of the verb that shows the difference between third, second, and first person by adding pronouns, for example, he came (woh aya), you came (tu aya), I came (main aya). However, in terms of singular, plural, masculine, and feminine, there are four forms for intransitive verbs: 'aya' and 'ayi' for singular masculine and feminine, and 'aaye' and 'aayin' for plural masculine and feminine. For transitive verbs, there is only one form, and that is 'kiya' (did); even with that, by adding pronouns, the difference between singular/plural and masculine/feminine with the third, second, and first person is made, for example: he did, you did, I did. In short, in Urdu, there is no difference in the verb form itself for intransitive and transitive verbs for third, second, and first person without pronouns. This discussion clarifies that some people's opinion is wrong, who think that for the person giving the marriage proposal, it is not sufficient for the second person to just

say "accepted" (qabul ki) in response to "I gave" (main ne di), unless they mention "I" (main ne) with it, because the one accepting is not specified. Therefore, it is necessary to say "I accepted" (main ne qabul ki). (The reason for this being wrong is that in Urdu, there is no difference in form for third, second, and first person). (T)

[Bottom Paragraph:] However, from the aforementioned premise of the question, it appears that the conversation of the unauthorized agent (fuzuli) with the woman proposed to (makhtuba) is not with the intention of creating the contract (insha-e-aqd), nor is that assembly considered a marriage contract assembly. Rather, in his own estimation, he considers it a gathering for seeking permission from Hinda, and regards this conversation as seeking authorization (stizan), and they designate the assembly of the contract to be the one when he returns from there and addresses the proposer.

[अरबी कॉलम का पाठ:] अन्य भाषाओं के विपरीत, हमारी भाषा [उर्दू] में भूतकाल का रूप अन्य पुरुष (ग़ाइब), मध्यम पुरुष (हाज़िर) और उत्तम पुरुष (मुतकल्लिम) तीनों के लिए एक ही है। अंतर केवल सर्वनामों या संज्ञा के उल्लेख द्वारा उत्पन्न होता है। क्या आप नहीं देखते कि फ़ारसी बोलने वाले 'ओ कर्द' [उसने किया], 'तू कर्दी' [तूने किया] और 'मन कर्दम' [मैंने किया] कहते हैं? जबकि हम उन सभी के लिए कहते हैं: 'उसने किया', 'तूने किया', 'मैंने किया'। इसी तरह अकर्मक क्रिया (फ़ेल लाज़िम) में 'वह आया', 'तू आया', 'मैं आया'। इसमें केवल एकवचन, बहुवचन, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के बीच अंतर होता है। अकर्मक क्रिया के लिए चार रूप हैं: एकवचन पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए 'आया' और 'आई', और बहुवचन के लिए क्रमशः'आए' और 'आईं'। इसी प्रकार, सकर्मक क्रिया में सभी के लिए केवल एक ही रूप है, जो कि 'किया' है, उदाहरण के लिए, चाहे आप इसे 'उसने', 'उन्होंने', 'तू' या 'हमने' के साथ जोड़ें, पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग, एकवचन हो या बहुवचन। इनमें से किसी में भी अन्य, मध्यम और उत्तम पुरुष के बीच कोई अंतर नहीं है। इससे उन लोगों के दावे की निरर्थकता स्पष्ट हो जाती है जो मानते हैं कि 'मैंने' (मैं ने) के बिना प्रस्तावक का 'कुबूल की' (स्वीकार किया) कहना निकाह को स्थापित नहीं करता क्योंकि स्वीकार करने वाले का निर्धारण नहीं हुआ है।

[उर्दू कॉलम का पाठ:] ...अलग है, जबकि हमारी भाषा में भूतकाल के अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष का एक ही रूप है, जो केवल सर्वनाम या संज्ञा के परिवर्तन से अंतर पैदा करता है। आप देखें कि फ़ारसी वाले प्रत्येक के लिए अलग रूप 'ओ कर्द', 'तू कर्दी' और 'मन कर्दम' का उपयोग करते हैं, जबकि हम सभी सिर्फ़"किया" कहते हैं: उसने स्वीकार किया, तूने किया, मैंने किया। इसी प्रकार हमारी भाषा में क्रिया का भी एक ही रूप है जो सर्वनाम लगाने से अन्य, मध्यम और उत्तम पुरुष का अंतर प्रकट करता है, जैसे वह आया, तू आया, मैं आया। हालाँकि, एकवचन, बहुवचन, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के संदर्भ में अकर्मक क्रिया के चार रूप हैं: एकवचन पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए 'आया' और 'आई', और बहुवचन पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए 'आए' और 'आईं'। सकर्मक क्रिया का केवल एक रूप है, और वह है 'किया'; उसके साथ भी सर्वनाम लगाकर एकवचन/बहुवचन और पुल्लिंग/स्त्रीलिंग के साथ अन्य, मध्यम और उत्तम पुरुष का अंतर किया जाता है, जैसे: उसने किया, तूने किया, मैंने किया। संक्षेप में, उर्दू में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के लिए सर्वनाम के बिना अन्य, मध्यम और उत्तम पुरुष के क्रिया रूप में कोई अंतर नहीं है। इस चर्चा से स्पष्ट हो गया कि कुछ लोगों का विचार गलत है, जो सोचते हैं कि निकाह का प्रस्ताव देने वाले व्यक्ति के'मैंने दी'

के उत्तर में दूसरे व्यक्ति का केवल 'कुबूल की' कहना पर्याप्त नहीं है, जब तक कि वह साथ में 'मैंने' न कहे, क्योंकि स्वीकार करने वाले का निर्धारण नहीं होता। इसलिए 'मैंने कुबूल की' कहना आवश्यक है। (इसके गलत होने का कारण यह है कि उर्दू में अन्य, मध्यम और उत्तम पुरुष के लिए रूप में कोई अंतर नहीं है)। (त)

[नीचे का अनुच्छेद:] लेकिन प्रश्न के उपर्युक्त आधार से यह स्पष्ट है कि बिचौलिए (फ़ुज़ूली) का मंगेतर (मख़तूबह) से वह संवाद निकाह के अनुबंध (अक़्द) के इरादे से नहीं होता, न ही वह सभा निकाह की अनुबंध सभा समझी जाती है। बल्कि, वह अपने विचार में इसे हिंदा से अनुमति माँगने की सभा समझते हैं और इस बातचीत को अनुमति माँगना (इस्तिज़ान) मानते हैं, और वे निकाह की सभा उस सभा को मानते हैं जब वह वहां से वापस आकर प्रस्तावक को संबोधित करता है।

पृष्ठ 163/739

[عربی کالم کا متن:] غیرھا للمتکلم بخلاف لساننا فانما ھی صیغۃ واحدۃ للغائب والحاضر والمتکلم جمیعا وانما یفرق بالضمائر او ذکر الظاھر الاتری ان الفرس تقول اوکرد وتوکردی ومن کردم ونحن نقول فی الکل اس نے کیا، تو نے کیا، میں نے کیا ومن کذالک فی الفعل اللازم وہ آیا تو آیا میں آیا و انما یفرق فیہ بین الواحد والجمع والمذکر والمؤنث فصیغہ فی اللازم اربع آیا آئی لوا حد المذکر والمؤنث وآئی آئے آئیں للجمعین کذالك وفی المتعدی صیغۃ واحدۃ للکل وھو کیا مثلاً سواء اسندتہ الی اس او انھوں او تو او ہم للذکر اوالذکور او الاثنی او الاناث اولھم ذکرانا او اناثاً ولا فرق بین الغائب والحاضر والمتکلم في شیئ منھما اصلاً بہ تبین بطلان زعم من یزعم ان قول الخاطب قبول کی بدون میں نے لا ینعقد بہ النکاح لعدم تعین القابل ۔

[اردو کالم کا متن:] علیحدہ ہے جبکہ ہماری زبان میں ماضی غائب، حاضر اور متکلم کا ایک ہی صیغہ ہے جو صرف ضمیر یا اسم ظاہر کی تبدیلی میں فرق پیدا کرتا ہے، آپ دیکھیں کہ فارسی والے او کرد، تو کردی اور من کردم، ہر ایک کے لیے علیحدہ صیغہ استعمال کرتے ہیں، جبکہ ہم سب کے لیے صرف "کیا" کہتے ہیں، اس نے قبول کیا، تو نے کیا، میں نے کیا، اور یوں ہی ہماری زبان میں فعل کا بھی ایک ہی صیغہ ہے جو ضمیر لگانے سے غائب، حاضر اور متکلم کا فرق ظاہر کرتا ہے مثلاً وہ آیا، تو آیا، میں آیا، البتہ واحد و جمع اور مذکر ومؤنث کے لحاظ سے لازم کے چار صیغے ہیں، آیا، آئی واحد مؤنث ومذکر کے لیے آئے اور آئیں جمع مذکر ومؤنث کے لیے ہیں، اور فعل متعدی کا صرف ایک صیغہ ہے، اور یہ، کیا، ہے اس کو بھی ضمیر لگا کر واحد مذکر و مؤنث، جمع مذکر و مؤنث کے ساتھ غائب، حاضر متکلم کا فرق کیا جاتا ہے مثلاً اس نے کیا، تو نے کیا، میں نے کیا، غرضیکہ اردو میں فعل لازم اور متعدی کے لیے غائب، حاضر اور

متکلم کا ضمیروں کے بغیر کوئی فرق نہیں ہے، اس بحث سے واضح ہو گیا کہ بعض کا خیال غلط ہے کہ شادی کا پیغام دینے والے پہلے شخص کا دوسرے کے "میں نے دی" کے جواب میں صرف "قبول کی" کہنا کافی نہیں جب تک اس کے ساتھ "میں نے" ذکر نہ کرے کیونکہ اس سے قبول کرنے والے کا تعین نہیں ہوتا لہذا "میں نے قبول کی" کہنا ضروری ہے (اس خیال کے غلط ہونے کی وجہ یہ ہے کہ اردو میں غائب، حاضر متکلم کے لیے صیغہ کا فرق نہیں ہے)۔ (ت)

[نیچے والا پیراگراف:] مگر تقدیر مذکور سوال سے ظاہر یہ ہے کہ فضولی کا مخطوبہ سے وہ کلام بقصد انشائے عقد نہیں ہوتا، نہ وہ مجلس مجلس عقد سمجھی جاتی ہے بلکہ اسے اپنے زعم میں ہندہ سے طلب اذن کی مجلس سمجھتے اور اس گفتگو کو استیذان جانتے اور مجلس عقد مجلس کو قرار دیتے ہیں جب یہ وہاں سے واپس آکر خاطب سے خطاب کرتا ہے

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Therefore, he returns to the Qazi who is sitting with the groom to conduct the marriage contract, and upon his question, represents himself as the agent (wakeel) of the bride and informs him of her acceptance, i.e., consent. From these clear indications, it is evident that the gathering of the bride was not the gathering of the marriage contract (majlis-e-aqd), and at the very least, it is obvious that the intention for a contract was not manifest. This is sufficient to show that the metaphorical meaning cannot be intended.

| (Arabic) Because a metaphor requires an indication (qarinah) that makes the speaker's intention clear. Where there is no such indication to favor its side, its intention is not valid, as you learned from the saying of the Muhaqqiq 'absolutely, without equal probability for the other side.' Since the matter is as we have described, it is not correct to take the interrogation as a realization [of a contract] as you know. | (Urdu Translation) Because a metaphor is in need of an indication by which the speaker's intention can become clear. So, where there is no such indication that can clarify the intended meaning, that metaphorical meaning cannot be taken as the intention, as is clearly known from the saying of the Muhaqqiq-e-Ala-al-Itlaq "without there being an equal possibility [of another meaning]". Since the matter is as we have stated, it will not be correct to take the metaphorical meaning of interrogation, i.e., the confirmation of the contract, without an indication, as you have understood. (T) |

Now, if you consider the bride's statement as a pillar of the contract, i.e., offer and acceptance, then it is purely void because the acceptance of this offer would take place in another gathering of the suitor, and no offer can remain pending for acceptance outside the gathering.

| (Arabic) As they have specified in general books, and in 'Al-Nahr' and 'Al-Durr' [it states that] from the conditions of offer and acceptance is the unity of the session. In 'Al-Tanwir' and its commentary, [it states that] an offer does not depend on the acceptance of someone absent from the session in all contracts including marriage, sale, and others. Rather, the offer becomes void and does not receive subsequent authorization, by consensus. | (Urdu Translation) Just as the noble jurists have clearly stated in general books. It is in 'Nahr' and 'Durr' that for offer and acceptance to be valid, the unity of the session is necessary. And in 'Tanwir' and both its commentaries, it is stated that an offer will not be dependent on the acceptance of

an absent person from the session; this is the ruling for all contracts, marriage, sale, etc., that by consensus, the offer becomes void and subsequent permission does not apply to it. (T) |

And if they establish it as a proxy (tawkeel), there is no way for that either. Proxying is to make someone else one's deputy in a known permissible disposal. There was absolutely no mention of deputation (inabat) either in the speech of the mentioned person or in the speech of the bride. So, its sum total was only that the bride expressed her consent to her marriage with Zaid for a certain dowry in his presence; this was not a proxying.

[1] Durr-ul-Mukhtar, Kitab-un-Nikah, Mujtabai Press, Delhi, 1/186 [2] Durr-ul-Mukhtar and Sharh Tanwir-ul-Absar, Bab-ul-Kafa'ah, Mujtabai Press, Delhi, 1/196

फ़तावा रज़विया, खंड 11

इसलिए, वह पलटकर उस क़ाज़ी के पास जाता है जो निक़ाह कराने के लिए दूल्हे के पास बैठा है और उसके सवाल पर खुद को दुल्हन का वकील ज़ाहिर करता है और उसकी स्वीकृति यानी रज़ा की ख़बर देता है। इन स्पष्ट संकेतों से यह ज़ाहिर है कि दुल्हन की सभा निक़ाह की सभा (मजलिस-ए-अक़्द) नहीं थी, और कम से कम इतना तो प्रत्यक्ष है कि निक़ाह का इरादा ज़ाहिर नहीं था। लाक्षणिक अर्थ मुराद न होने के लिए इतना ही काफ़ी है।

| (अरबी) क्योंकि लाक्षणिक अर्थ (मजाज़) एक ऐसे संकेत (क़रीना) का मोहताज है जिससे वक्ता का इरादा स्पष्ट हो सके। तो जहाँ ऐसा कोई संकेत न हो जो उस पक्ष को प्राथमिकता दे सके, वहाँ उसका इरादा मान्य नहीं होता, जैसा कि आपने मुहाक़्क़िक़ के इस कथन से जाना: "बिना किसी समान संभावना के दूसरी तरफ़"। और जब मामला वैसा ही है जैसा हमने वर्णन किया, तो पूछताछ (इस्तफ़हाम) को निक़ाह की पुष्टि (तहक़ीक़) मानना सही नहीं होगा जैसा कि आप जानते हैं। | (उर्दू अनुवाद) क्योंकि मजाज़ (लाक्षणिक अर्थ) ऐसे क़रीने (संकेत) का मोहताज है जिससे मुतकिल्लिम (वक्ता) का इरादा स्पष्ट हो सके। तो जहाँ ऐसा क़रीना न हो जो मुराद को स्पष्ट कर सके, वहाँ उस मजाज़ी अर्थ को मुराद नहीं लिया जा सकता, जैसा कि मुहाक़्क़िक़ अली-अल-इतलाक़ के कथन "बिना किसी बराबर की संभावना के न हो" से साफ़ मालूम हुआ। जब मामला वही है जो हमने बयान किया है, तो इस्तफ़हाम (पूछताछ) का मजाज़ी अर्थ, यानी बग़ैर क़रीने के अक़्द (अनुबंध) की पुष्टि मुराद लेना सही न होगा, जैसा कि आपने समझ लिया। (त) |

अब दुल्हन के कथन को अक़्द (अनुबंध) का एक स्तंभ यानी ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) मान लीजिए, तो यह पूरी तरह से बातिल (अमान्य) है, क्योंकि इस ईजाब की स्वीकृति दूल्हे की दूसरी सभा में होगी, और कोई भी ईजाब सभा के बाहर स्वीकृति पर रुका नहीं रह सकता।

| (अरबी) जैसा कि उन्होंने आम किताबों में स्पष्ट किया है, और 'अन-नहर' और 'अद-दुर्र में है कि ईजाब-ओ-क़बूल की शर्तों में से सभा का एक होना (इत्तेहाद-ए-मजलिस) है। और 'अत-तन्वीर' और उसकी व्याख्या में है कि ईजाब सभा से अनुपस्थित व्यक्ति की स्वीकृति पर निर्भर नहीं करता, निक़ाह, क्रय-विक्रय और अन्य सभी अनुबंधों में। बल्कि ईजाब बातिल हो जाता है और सर्वसम्मति से बाद में दी गई अनुमति उस पर लागू नहीं होती। | (उर्दू अनुवाद) जैसा कि फ़ुक़्हा-ए-किराम (श्रेष्ठ न्यायविदों) ने आम किताबों में इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) कर दी है। 'नहर' और 'दुर्र' में है कि

ईजाब-ओ-क़बूल के मोतबर (मान्य) होने में मजलिस का इत्तेहाद (एक होना) ज़रूरी है, और 'तन्वीर' और उसकी दोनों शरहों (व्याख्याओं) में है कि ईजाब मजलिस से किसी ग़ायब शख़्स के क़बूल करने पर मौक़ूफ़ (निर्भर) न होगा, तमाम अक़ूद (अनुबंधों), निक़ाह और बैअ (बिक्री) वग़ैरह का यही हुक्म है कि ईजाब बिल-इत्तेफ़ाक़ बातिल हो जाता है और उसको इजाज़त लाहिक़ (लागू) नहीं होती। (त) |

और अगर इसे वकील बनाना (तौकील) मान लें, तो उसकी तरफ़ भी कोई रास्ता नहीं है। वकील बनाना किसी दूसरे को किसी ज्ञात जायज़ कार्य में अपना प्रतिनिधि (नायब) बनाना है। प्रतिनिधित्व (इनाबत) का मूल रूप से न तो उस व्यक्ति के शब्दों में कोई उल्लेख था और न ही दुल्हन के शब्दों में। तो इसका कुल परिणाम केवल इतना हुआ कि दुल्हन ने उसके सामने ज़ैद के साथ इतने महर पर अपने निक़ाह की रज़ा ज़ाहिर की; यह तौकील नहीं हुई।

[1] दुर्रे मुख़्तार, किताबुन निक़ाह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/ 186 [2] दुर्रे मुख़्तार व शरह तन्वीरुल अबसार, बाबुल कफ़ाअत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/ 196

والہذا پلٹ کر قاضی کے پاس جاتا ہے جو عقد کرانے کو دولھا کے پاس بیٹھا ہے اور اس کے سوال پر اپنے آپ کو وکیل مخطوبہ ظاہر کرتا ہے اور اس کے قبول یعنی رضا سے خبر دیتا ہے، ان قرائن واضحہ سے مجلس مخطوبہ کا مجلس عقد نہ ہونا ظاہر، اور لا اقل اتنا تو بدیہی کہ ارادہ عقد ظاہر نہیں، معنی مجاز مراد نہ ہوسکنے کو اس قدر بس ہے۔

عربی

فان المجاز مفتقر الی قرینة تظهر ارادته فحیث لا قرینة ترجح جانبه لا تصح ارادته کما علمت من قول المحقق علی الاطلاق بلا احتمال مسا وللطرف الاخر واذا کان الامر ما وصفنا لم یصح جعل الاستفهام تحقیقا کما دریت۔

اردو

کیونکہ مجاز ایسے قرینے کا محتاج ہے جس سے متکلم کا ارادہ واضح ہوسکے۔ تو جہاں ایسا قرینہ نہ ہو جو مراد کو واضح کرسکے وہاں اس معنی مجازی کو مراد نہیں لیا جاسکتا، جیسا کہ محقق علی الاطلاق کے قول "بغیر کسی مساوی احتمال کے نہ ہو" سے واضح معلوم ہوا، جب معاملہ یہ ہے جو ہم نے بیان کیا ہے تو استفہام کا مجازی معنی، تحقیق عقد قرینہ کے بغیر مراد لینا درست نہ ہوگا، جیسا کہ آپ نے سمجھ لیا۔ (ت)

اب قول مخطوبہ کو ایک رکن عقد یعنی ایجاب و قبول قرار دیجئے تو باطل محض ہے کہ اس ایجاب کا قبول جاکر دوسری مجلس خاطب میں ہوگا اور کوئی ایجاب مجلس سے باہر قبول پر موقوف نہیں رہ سکتا۔

عربی	اردو
كما نصوا عليه في عامة الكتب وفي النهر والدر من شرائط الايجاب والقبول اتحاد المجلس [1] وفي التنوير وشرحه لا يتوقف الايجاب على قبول غائب عن المجلس في سائر العقود من نكاح وبيع وغيرهما بل يبطل الايجاب ولا تلحقه الاجازة اتفاقا [2]۔	جیسا کہ فقہاء کرام نے عام کتب میں اس کی تصریح کردی ہے۔ نہر اور در میں ہے کہ ایجاب و قبول کے معتبر ہونے میں مجلس کا اتحاد ضروری ہے، اور تنویر اور اس کی دونوں شرحوں میں ہے کہ ایجاب مجلس سے کسی غائب شخص کے قبول کرنے پر موقوف نہ ہوگا، تمام عقود، نکاح و بیع و غیر ہما کا یہی حکم ہے کہ ایجاب بالا تفاق باطل ہوجاتا ہے اور اس کو اجازت لاحق نہیں ہوتی۔ (ت)

اور اگر توکیل ٹھہرائیں تو اس کی طرف بھی راہ نہیں، تو کیل دوسرے کو کسی تصرف جائز معلوم میں اپنا نائب بنانا ہے انابت کا اصلا کوئی ذکر نہ کلام شخص مذکور میں تھا نہ کلام مخطوبہ میں، تو اس کا حاصل صرف اس قدر ہوا کہ مخطوبہ نے اس کے سامنے زید کے ساتھ اس قدر مہر پر اپنے نکاح کی رضا ظاہر کی، یہ تو کیل نہ ہوئی۔

[1] درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۶ [2] درمختار و شرح تنویر الابصار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۶

It is stated in Tanwir al-Absar:

[Arabic: هو اقامة الغير مقام نفسه فى تصرف جائز معلوم[1]] | It means to appoint someone else in one's place for a known permissible action. (T)

Scholars state: Zaid said to Amr, "I wish you would perform my marriage with such-and-such a woman!" He did so. This marriage was an unauthorized marriage (Nikah Fuduli), even though here there was an explicit request for assistance from Amr. How can mere words like "Are you satisfied with marrying such-and-such?" and the response "Yes" constitute a power of attorney (Tawkil)? It is stated in Fatawa Khairiyyah:

[Arabic: سئل فى رجل قال كل امرأة اتزوجها فهى طالق ثم قال بمجلس لرجل ليتك تزوجنى فلانة هل اذا زوجه يحنث ام لا اجاب لا يحنث لانه لم يتزوج بل زوج والمزوج فضولى بلاشک والحال هذه[2] الخ۔] | A question was asked about a person who had said: "Every woman I marry is divorced," then in a gathering he said to a man, "I wish you would perform my marriage to such-and-such a woman." That man then performed his marriage with that woman. Would he then be a breaker of oath (hanith), i.e., will the woman be divorced or not? They replied that divorce would not occur because he did not perform the marriage himself, rather an unauthorized person (fuduli) performed it, and this is undoubtedly the situation, etc. (T)

In summary, whatever actions were taken until that time went to waste and were futile. Now, regarding the address of the aforementioned person to the suitor after returning from there, the intention here is certainly the formalization of the marriage contract. In their assumption, the proposal gathering was a gathering for delegating authority (tawkil). Now that he has come as an agent (wakil) in his own estimation and performs the contract in this marriage gathering, this inquiry is realistically an offer (Ijab), and the groom saying "I accept" is the acceptance (Qabul).

[3]I say: And with Allah is the guidance. The investigation of the matter is that an inquiry made at the time of intending confirmation conveys the meaning of a command.

[Arabic: قال الله تعالىٰ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ[3] ای انتهوا] | Allah Almighty said: "Will you then desist?" (Quran 5:91). By this is meant...

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Book of Agency, Mujtabai Press, Delhi, 2/103.
2. Fatawa Khairiyyah, Book of Marriage, Chapter on Unauthorized Marriage, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/72.
3. Tafsir al-Jalalayn, under the verse "So will you desist?", Asah al-Matabi, Delhi, p. 106.

जिल्द ग्यारहवीं (جلد یازدہم) | फ़तावा रज़विया (فتاویٰ رضویہ)

'तनवीरुल अबसार' में है:

[अरबी: هو اقامة الغير مقام نفسه فى تصرف جائز معلوم[1]] | वह यह कि किसी दूसरे को किसी ज्ञात जायज़ कार्य में अपना प्रतिनिधि बनाना। (त)

विद्वान फरमाते हैं: ज़ैद ने अम्र से कहा "काश! तुम मेरा निकाह फलां औरत से कर देते!" उसने कर दिया। यह निकाह 'निकाह-ए-फुज़ूली' (अनधिकृत निकाह) हुआ, हालांकि यहाँ अम्र से स्पष्ट रूप से सहायता माँगी गई थी। केवल इतना कहना कि "क्या तुम फलां से निकाह पर राज़ी हो?" और उसका "हाँ" कहना, वकालत (तौकील) कैसे हो सकती है? 'फ़तावा खैरिय्या' में है:

[अरबी: سئل فى رجل قال كل امرأة اتزوجها فهى طالق ثم قال بمجلس لرجل ليتك تزوجنى فلانة هل اذا زوجه يحنث ام لا اجاب لا يحنث لانه لم يتزوج بل زوج والمزوج فضولى بلاشک والحال هذه[2] الخ۔] | ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने कहा हो कि "मैं जिस भी औरत से निकाह करूँ उसे तलाक़ है", फिर उस व्यक्ति ने किसी सभा में एक आदमी से कहा "काश तुम फलां औरत से मेरा निकाह कर देते", तो उस आदमी ने उसका निकाह उस औरत से कर दिया। तो क्या वह शपथ भंग (हानिस) होगा, यानी उस औरत को तलाक़ हो जाएगी या नहीं? तो उन्होंने जवाब दिया कि तलाक़ नहीं होगी क्योंकि उसने खुद निकाह नहीं किया बल्कि उसका निकाह एक अन्य व्यक्ति (फुज़ूली) ने किया है और निःसंदेह मामला यही है, आदि। (त)

कुल मिलाकर, उस समय तक जो कार्रवाई हुई वह व्यर्थ और बेमानी रही। अब रहा वहां से वापसी के बाद उक्त व्यक्ति का संबोधन, यहाँ निश्चित रूप से निकाह की पुष्टि ही उद्देश्य है। उनके विचार में सगाई की महफिल वकालत देने की महफिल थी। अब जबकि वह अपनी नज़रों में वकील बनकर आया और इस निकाह की महफिल में निकाह करता है, तो यह पूछताछ वास्तव में ईजाब (प्रस्ताव) हुई और दूल्हे का "कुबूल किया" कहना कुबूल (स्वीकृति) हुआ।

[3]मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से ही सफलता है। मामले की तहकीकात यह है कि तहकीक के इरादे के समय किया गया प्रश्न आदेश का अर्थ देता है।

[अरबी: قال الله تعالىٰ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ[3] ای انتهوا] | अल्लाह तआला ने फरमाया: "तो क्या तुम बाज़ आओगे?" इससे मुराद यह है...

1. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, किताबुल वकाला, मतबा मुज्तबाई दिल्ली १०३/२
2. फ़तावा खैरिय्या, किताबुन निकाह, फ़स्ल फ़ी निकाहिल फुज़ूली, दारुल मारिफ़ा बेरूत १/७२
3. तफ़सीर जलालाइन, आयत 'फ़हल अंतुम मुंतहून' के नीचे, असहुल मताबे दिल्ली, पृ. १०६

पृष्ठ १६५ / ७३९

تنویرالابصار میں ہے:

ھو اقامۃ الغیر مقام نفسہ فی تصرف جائز معلوم[1] | وہ یہ کہ غیر کو کسی تصرف جائز معلوم میں اپنے قائم مقام بنانا۔ (ت)

علماء فرماتے ہیں زید و عمرو سے کہا کاش! تو میرا نکاح فلاں عورت سے کردیتا، اس نے کردیا، یہ نکاح، نکاح فضولی ہوا، حالانکہ یہاں صراحۃً عمرو سے استعانت تھی تو مجرد اس قدر کہ اس نے کہا تو فلاں سے نکاح پر راضی ہے؟ اس نے کہا "ہوں" کیونکر توکیل ہوسکتی ہے۔ فتاویٰ خیریہ میں ہے:

سئل فی رجل قال کل امرأۃ اتزوجھا فھی طالق ثم قال بمجلس لرجل لیتك تزوجنی فلانۃ ھل اذا زوجہ یحنث ام لا اجاب لا یحنث لانہ لم یتزوج بل زوج والمزوج فضولی بلاشک والحال ھذہ[2] الخ۔ | ایسے شخص کے بارے میں سوال کیا گیا جس نے کہا ہو کہ جس عورت سے بھی نکاح کروں اس کو طلاق ہے، پھر اس شخص نے کسی مجلس میں ایک آدمی کو کہا کاش تو فلاں عورت سے میرا نکاح کردے، تو اس آدمی نے اس کا نکاح اس عورت سے کردیا، تو کیا حانث ہوگا یعنی اس عورت کو طلاق ہوجائے گی یا نہیں؟ تو انہوں نے جواب دیا کہ طلاق نہ ہوگی کیونکہ اس نے خود نکاح نہیں کیا بلکہ اس کا نکاح ایک غیر شخص (فضولی) نے کیا ہے اور بلاشک معاملہ یہی ہے الخ (ت)

بالجملہ اس وقت تک کی جو کارروائی تھی لغو و فضول گئی، اب رہا وہاں سے واپسی کے بعد شخص مذکور کا خاطب سے خطاب، یہاں ضرور تحقیق عقد ہی مقصود ہے کہ ان کے زعم میں

مجلس مخطوبہ مجلس توکیل تھی اب کہ یہ اپنے نزدیک وکیل بن کر آیا اس مجلس عقد میں عقد کرتا ہے تو یہ استفہام حقیقۃً ایجاب ہوا اور زوج کا کہنا قبول کیا قبول۔

[3]اقول: وباللہ التوفیق، تحقیق مقام یہ ہے کہ استفہام ہنگام ارادہ تحقیق مفید معنی امر ہوتا ہے

قال اللہ تعالیٰ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ای انتھوا[3] | اللہ تعالیٰ نے فرمایا: کیا تم باز آؤ گے؟ اس سے مراد یہ ہے

---

1. درمختار شرح تنویر الابصار کتاب الوکالۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۰۳/۲
2. فتاویٰ خیریہ کتاب النکاح فصل فی نکاح الفضولی دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۷۲
3. تفسیر جلالین تحت الآیۃ فھل انتم منتھون اصح المطابع دہلی ص ۱۰۶

Fatawa Rizvia, Volume 11

And Allah the Almighty said: "Will you be patient? And your Lord is ever-seeing" (1), meaning 'be patient'. This means desist/refrain. And Allah the Almighty's decree is: "Will you be patient? And your Lord is All-Seeing." From this it is meant, 'be patient'.

And the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Will you leave my companion alone for me?" meaning 'leave him alone'. (2) And the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Will you leave me regarding my companion?" It means that you should leave him alone.

So "did you accept?" means "accept", and regarding a command (imperative), although our scholars differed whether it is a delegation of power (tawkeel) or an offer (ijab).

In 'Al-Durr al-Mukhtar': "Marry me to you" or "Marry yourself to me" or "Be my wife" are not words of offer (ijab) but an implicit delegation (tawkeel). Some said it is an offer, and this view was preferred in 'Al-Bahr' (abbreviated). In 'Radd al-Muhtar' it is stated that 'Al-Hidayah' and 'Al-Majma' followed the first view, and it was attributed to the researchers in 'Al-Fath'. Regarding the second view, 'Al-Kanz' stated it is apparent, but 'Al-Durar' objected that it is contrary to the scholars' statements. The response in 'Al-Bahr' and 'Al-Nahr' is that it was explicitly stated in 'Al-Khulasah' and 'Al-Khaniyah'. In 'Al-Khaniyah' it is mentioned that the word of command in marriage is an offer (ijab), and similarly in 'Khul' (divorce at the instance of the wife), divorce, guarantee, and gift. In 'Al-Fath' it is said this is better, etc.

And on the view of delegation (tawkeel), a difficulty arises here in the conclusion of the marriage as to who is this person who is delegating the suitor, a proxy for marriage...

1. Tafsir Jalalayn, under the verse 'Will you be patient and your Lord is ever-seeing', Asah al-Matabi', Karachi, p. 402.
2. Sahih Bukhari, Chapter on the Virtue of Abu Bakr, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/517.
3. Al-Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai, Delhi, 1/185.
4. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/263.

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द (भाग 11)

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब सब देखने वाला है" (1), यानी सब्र करो। इसका मतलब यह है कि बाज़ आओ। और अल्लाह तआला का इरशाद है: "क्या तुम सब्र करोगे? और तेरा रब तआला बसीर (देखने वाला) है।" इससे मुराद यह है कि सब्र करो।

और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "क्या तुम मेरे लिए मेरे साथी को छोड़ दोगे?" यानी छोड़ दो। (2) और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "क्या तुम मुझे मेरे साहब के बारे में छोड़ोगे?" इससे मुराद यह है कि तुम छोड़ दो।

तो "तूने क़बूल किया?" का अर्थ है "क़बूल कर", और 'अम्र' (आदेश) में हालाँकि हमारे उलेमा (विद्वान) के बीच मतभेद है कि वह 'तौकील' (वकील बनाना) है या 'ईजाब' (प्रस्ताव)।

'दुर्रे मुख़्तार' में है: "मेरा निकाह कर दे", "ऐ औरत तू अपना निकाह मुझसे कर", या उसे कहा "तू मेरी बीवी हो जा", तो ये शब्द 'ईजाब' नहीं होंगे बल्कि परोक्ष रूप से 'तौकील' होगी। कुछ ने कहा कि यह 'ईजाब' है, और 'बहर' में इसे प्राथमिकता दी गई है। 'रद-उल-मुहतार' में है कि 'हिदाया' और 'मजमा' में पहले विचार को अपनाया गया है और 'फ़तह' में इसे शोधकर्ताओं की ओर श्रेय दिया गया है। दूसरे विचार पर 'कंज' ने इसे स्पष्ट कहा है, और 'दुरर' में इस पर आपत्ति की गई है कि यह विद्वानों के कथनों के विरुद्ध है। 'बहर' और 'नहर' में इसका उत्तर यह दिया गया कि 'खुलासा' और 'खानिया' में इस पर स्पष्टीकरण दिया गया है। 'खानिया' में कहा गया कि निकाह में आदेश का शब्द 'ईजाब' होता है, और इसी तरह 'खुल' (स्त्री की ओर से तलाक़), तलाक़, कफ़ाला (गारंटी) और हिबा (उपहार) में भी 'ईजाब' है। 'फ़तह' में कहा गया कि यह बेहतर है, आदि।

और 'तौकील' के विचार पर यहाँ निकाह संपन्न होने में कठिनाई होती कि यह व्यक्ति प्रस्ताव देने वाले को वकील बनाने वाला कौन है, निकाह का वकील...

1. तफ़सीर जलालेन, आयत के तहत: 'क्या तुम सब्र करोगे और तुम्हारा रब देखने वाला है', असह उल-मताबे, कराची, पृ. 402.
2. सहीह बुखारी, बाब फ़ज़ल-ए-अबू बक्र आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/517.
3. दुर्रे मुख़्तार, किताब-उन-निकाह, मुजतबाई, दिल्ली, 1/185.
4. रद-उल-मुहतार, किताब-उन-निकाह, दार इह्या-उत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/263.

فتاوٰی رضویہ ، جلد یازدہم

وقال تعالٰی اَتَصْبِرُوْنَ وَ کَانَ رَبُّکَ بَصِیْرًا ای اصبروا ۱ یہ ہے کہ باز آؤ۔ اور اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے : کیا تم صبر کرو گے ۔ اور تیرا رب تعالٰی بصیر ہے ، اس سے مراد یہ ہے کہ صبر کرو ،

وقال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ھل انتم تارکوالی صاحبی ای اترکوا۔ ۲ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا : کیا تم مجھے میرے صاحب کے بارے میں چھوڑو گے؟ اس سے مراد یہ ہے کہ تم چھوڑ دو (ت)

تو "تونے قبول کیا"؟ بمعنی "قبول کر" ہے، اور امر میں اگرچہ ہمارے علما مختلف ہوئے کہ وہ تو کیل ہے یا ایجاب۔

فی الدر المختار زوجنی او زوجینی نفسك اوكوني امرأتی لیس بایجاب بل توكیل ضمنی وقیل ایجاب ورجحه فی البحر ۳ اه مختصرا وفی ردالمحتار مشی علی الاول فی الهدایة والمجمع ونسبه فی الفتح الی المحققین وعلی الثانی ظاهر الكنز واعترضه فی الدرر بأنه مخالف لكلامهم واجاب في البحر والنهر بأنه صرح به فی الخلاصة والخانیة قال فی الخانیة ولفظة الامر فی النكاح ایجاب وكذا في الخلع والطلاق والكفالة والهبة اهـ قال في الفتح وهو الحسن ۴ الخ۔ درمختار میں ہے : تو میرا نکاح کردے، اے عورت تو میرا نکاح کر ، یا اس کو کہا تو میری بیوی ہو جا ، تو یہ کلمات ایجاب نہ ہوں گے بلکہ ضمناً تو کیل ہوگی، بعض نے کہا کہ یہ ایجاب ہے ، اور بحر میں اس کو ترجیح دی ہے اھ مختصراً ، اور ردالمحتار میں ہے کہ ہدایہ اور مجمع میں پہلے قول کو اپنایا ہے اور اس کو فتح میں محققین کی طرف منسوب کیا ہے اور دوسرے پر کنز نے ظاہر کہا ہے، اور اس پر درر میں اعتراض کیا ہے کہ یہ علماء کے قول کے مخالف ہے ، اور اس کا جواب بحر اور نہر میں یہ دیا

گیا کہ خلاصہ اور خانیہ میں اس پر تصریح کی ہے، اور خانیہ میں فرمایا کہ امر کا لفظ نکاح میں ایجاب ہوتا ہے اور خلع ، طلاق ، کفالہ اور ہبہ میں بھی ایجاب ہے ، اور فتح میں فرمایا کہ یہ احسن ہے الخ (ت)

اور قولِ تو کیل پر یہاں انعقادِ نکاح میں دقت ہوتی کہ یہ شخص خاطب کو وکیل کرنے والا کون ، نکاح کا وکیل

۱ تفسیر جلالین تحت الآیۃ اتصبرون وکان ربك بصیرا اصح المطابع کراچی ص ۴۰۲ ۲ صحیح بخاری باب فضل ابی بکر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۵۱۷ ۳ درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۵ ۴ ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۶۳

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

...by marriage, he cannot make someone else a representative (Wakeel) at all, let alone as an unauthorized agent (Fuduli). In "Al-Khulasa": If the representative for marriage says, "Give your daughter to so-and-so," and the father replies, "I have given her," the marriage is not concluded until the representative afterwards says, "I have accepted her for so-and-so." This is because the representative does not have the power to delegate the representation (Tawkil) [1]. It seems to me that an objector might say: Perhaps "does not conclude" here means "is not effective." For if he does not have the power [to delegate], it would be an unauthorized representation. So what? Don't you see that an unauthorized person (Fuduli) does not have the power to marry [others], yet if he does perform a marriage, the marriage occurs, albeit in a suspended state (Mawquf)? Thus, it should follow that through his delegating, representation is obtained, even if its effectiveness depends on the approval of the one who has the authority to approve it. It is stated in "Al-Bahr" regarding sales: It is apparent from their (the jurists') detailed rulings that for every matter in which representation is valid, if an unauthorized person performs it, it remains suspended, except for purchasing with a condition [2]. It is well-known that delegating representation is among the matters in which representation is valid. Therefore, it is apparent that it should be concluded in a suspended state. If total non-existence is intended as long as the representative does not say "I have accepted," then the correct and clear explanation is what the most learned scholar Ali Al-Maqdisi stated.

[Summary in Urdu column on the right:] The summary is that if a representative tells someone to give his daughter to so-and-so, and the father replies "I have given her," the marriage will not be concluded until the representative says "I have accepted her for so-and-so." This is because a representative cannot independently appoint another representative. It seems to me that an objector could argue that since a marriage representative cannot appoint another representative, the second person would be considered an unauthorized agent (Fuduli), and an unauthorized agent's contract is not effective, although it is still a contract. So here, "will not be concluded" means "will not be effective." Do you not know that despite an unauthorized person not having the authority to perform a marriage, if he does so, its effectiveness remains suspended? So here too, the representative's delegation would be suspended and become effective with the permission of the authorized person. In the chapter on sales in "Al-Bahr," it is mentioned that it is evident from the details provided by the jurists that in matters where representation is permissible, if an

unauthorized person performs them, these matters will remain suspended, except for conditional purchasing. So it is clear that appointing a representative is also among those matters where representation is permissible. Thus, it becomes clear that here too, the unauthorized action would be validly suspended, if instead of waiting for the representative's acceptance, the father says "I have given"...

[Footnotes:] 1. Khulasa-tul-Fatawa, Kitab-un-Nikah, Maktaba Habibiya Quetta, 2/30. 2. Al-Bahr-ur-Ra'iq, Fasl fi Bai' al-Fuduli, H.M. Saeed Company Karachi, 6/151.

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

...निकाह के मामले में, वह किसी दूसरे को वकील (प्रतिनिधि) बना ही नहीं सकता, तो फुज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति) की बात ही क्या है। "अल-खुलासा" में है: यदि निकाह का वकील कहे, "अपनी बेटी अमुक को दे दो," और पिता उत्तर दे, "मैंने दे दी," तो निकाह तब तक संपन्न नहीं होगा जब तक कि वकील उसके बाद यह न कहे, "मैंने अमुक के लिए स्वीकार की।" क्योंकि वकील के पास वकालत सौंपने (तौकील) का अधिकार नहीं होता [1]। मुझे ऐसा लगता है कि कोई आपत्ति करने वाला यह कह सकता है: शायद यहाँ "संपन्न नहीं होगा" का अर्थ "प्रभावी नहीं होगा" है। क्योंकि यदि उसके पास अधिकार नहीं है, तो यह एक अनधिकृत वकालत (तौकीले फुज़ूली) होगी। तो क्या हुआ? क्या आप नहीं देखते कि एक अनधिकृत व्यक्ति (फुज़ूली) के पास निकाह कराने का अधिकार नहीं होता, फिर भी यदि वह निकाह करा देता है, तो निकाह हो जाता है, भले ही वह स्थगित (मौकूफ़) स्थिति में हो? इसी तरह, उसके द्वारा वकालत सौंपने से वकालत प्राप्त हो जानी चाहिए, भले ही उसका प्रभावी होना उस व्यक्ति की स्वीकृति पर निर्भर हो जिसके पास अधिकार है। "अल-बहर" में खरीद-बिक्री के अध्याय में कहा गया है: न्यायविदों (फ़ुक़हा) के विवरणों से यह स्पष्ट है कि जिन कार्यों में वकालत मान्य है, यदि कोई अनधिकृत व्यक्ति उन्हें स्वयं करता है, तो वे कार्य स्थगित रहेंगे, सिवाय किसी शर्त के साथ खरीदारी के[2]। यह सर्वविदित है कि वकालत सौंपना भी उन कार्यों में से है जिनमें वकालत मान्य है। अत; यह स्पष्ट है कि यह स्थगित स्थिति में संपन्न होना चाहिए। और यदि इसका अर्थ पूरी तरह से अस्तित्वहीन होना है जब तक कि वकील "मैंने स्वीकार किया" न कह दे, तो सही और स्पष्ट स्पष्टीकरण वह है जो परम विद्वान अली अल-मक़दिसी ने दिया है।

[दाहिने कॉलम में उर्दू सारांश का अनुवाद:] सारांश यह है कि यदि एक वकील किसी से कहता है कि अपनी लड़की अमुक को दे दो, और पिता जवाब में कहता है "मैंने दे दी," तो जब तक वकील उसके बाद "मैंने अमुक के लिए स्वीकार की" नहीं कहता, निकाह संपन्न नहीं होगा। क्योंकि वकील स्वयं दूसरे को वकील नहीं बना सकता। मुझे महसूस होता है कि इस पर कोई आपत्ति करने वाला यह आपत्ति कर सकता है कि जब निकाह का वकील दूसरे को वकील नहीं बना सकता, तो दूसरा व्यक्ति फुज़ूली (अनधिकृत) माना जाएगा, और फुज़ूली का अनुबंध प्रभावी नहीं होता, हालांकि अनुबंध की सीमा तक हो जाता है। तो यहाँ "संपन्न नहीं होगा" का अर्थ "प्रभावी नहीं होगा" है। क्या आपको मालूम नहीं कि फुज़ूली को निकाह कर देने का अधिकार न होने के बावजूद अगर वह निकाह कर दे, तो उसका प्रभाव स्थगित रहता है? तो यहाँ भी वकील की वकालत स्थगित होकर अधिकार रखने वाले

की अनुमति से प्रभावी हो जाएगी। "अल-बहर" के खरीद-बिक्री अनुभाग में कहा गया है कि फ़ुक़हा-ए-किराम के विवरणों से ज़ाहिर है कि वे मामले जिनमें वकालत जायज़ है, अगर उन मामलों को फ़ुज़ूली स्वयं अंजाम दे, तो ये मामले स्थगित रहेंगे, सिवाय किसी शर्त के साथ खरीद के। तो ज़ाहिर है कि वकील बनाना भी उन मामलों में से है जिनमें वकालत जायज़ है। तो ज़ाहिर हुआ यहाँ भी फ़ुज़ूली का हस्तक्षेप जायज़ होना स्थगित होगा, यदि वकील की स्वीकृति के बिना पिता के"दे दी" कहने से...

[पाद लेख:] १. खुलासत-उल-फ़तावा, किताब-उन-निकाह, मकतबा हबीबिया क्वेटा, ३०/२ २. अल-बहर-उर-राइक़, फ़स्ल फ़ी बै-अल-फ़ुज़ूली, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १५१/६

पृष्ठ १६७/७३९

بالنکاح تو دوسرے کو وکیل کر سکتا ہی نہیں، فضولی کیا چیز ہے، فی الخلاصۃ لو قال الوکیل بالنکاح ھب ابنتک لفلان فقال الاب وھبت لا ینعقد النکاح مالم یقل الوکیل بعدہ قبلت لان الوکیل لا یملک التوکیل ۱ اھ وان کان یتراءی لی ان لقائل ان یقول لعل لا ینعقد فیہ بمعنی لا ینفذ فانہ ان لم یملک کان توکیلا فضولی فکان ماذا الا تری ان الفضولی لا یملک التزویج ولو زوج لحصل الزواج ولو موقوفا فکذا ینبغی ان تحصل بتوکیلہ الوکالۃ وان توقف نفاذہ علی تنفیذ من لہ التنفیذ قال فی البحر من البیوع الظاھر من فروعھم ان کل ما صح التوکیل بہ فانہ اذا باشرہ الفضولی یتوقف الا الشراء بشرطہ ۲ اھ و معلوم ان التوکیل مما یصح بہ التوکیل فالظاھر الانعقاد موقوفا و ان ارید عدمہ اصلا مالم یقل الوکیل قبلت فالتعلیل الصحیح الواضح ما افاد العلامۃ الفھامۃ علی المقدسی

[دائیں کالم کا خلاصہ:] خلاصہ یہ ہے اگر وکیل نے کسی کو کہا کہ تو اپنی لڑکی فلاں کو دے، تو باپ نے جواب میں "میں نے دی" کہا، تو جب تک اس کے بعد وکیل "میں نے فلاں کے لیے قبول کی" نہ کہے نکاح منعقد نہ ہوگا۔ کہ وکیل از خود دوسرے کو وکیل نہیں بنا سکتا اھ، مجھے محسوس ہوتا ہے کہ اس پر کوئی معترض یہ اعتراض کر سکتا ہے کہ جب نکاح کا وکیل دوسرے کو وکیل نہیں بنا سکتا تو دوسرا فضولی قرار پائے گا، اور فضولی کا عقد نافذ نہیں ہوتا اگرچہ عقد کی حد تک ہو جاتا ہے تو یہاں "منعقد نہ ہوگا" کا معنی "نافذ نہ ہوگا" ہے۔ کیا آپ کو معلوم نہیں کہ فضولی کو نکاح کر دینے کا اختیار نہ ہونے کے باوجود اگر وہ نکاح کر دے تو اس کا نفاذ موقوف رہتا ہے تو یہاں بھی وکیل کی توکیل موقوف ہو کر نافذ کرنے والے کی اجازت سے نافذ ہو جائے گی، بحر کے بیوع میں کہا ہے کہ فقہاء کرام کے بیان کردہ جزئیات سے ظاہر ہے کہ وہ امور جن میں توکیل جائز ہے اگر ان امور کو فضولی از خود سرانجام دے تو یہ امور موقوف رہیں گے

ماسوائے کسی شرط کے ساتھ خرید کے اھ، تو ظاہر ہے کہ وکیل بنانا بھی ان امور میں سے ہے جن میں توکیل جائز ہے، تو ظاہر ہوا یہاں بھی فضولی کا تصرف جائز ہونا موقوف ہوگا، اگر وکیل کی قبولیت کے بغیر باپ کے "دے دی" کہنے سے--

۱ خلاصۃ الفتاوی کتاب النکاح مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۳۰/۲ ۲ البحر الرائق فصل فی بیع الفضولی ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۵۱/۶

[Top Column - Arabic Side]: Indeed, the statement of the agent, "Give your daughter to so-and-so," is apparent in being a request. And it is for the future; the present state and realization are not intended by it. The contract is not completed through it, unlike [saying] "Marry me to your daughter for such-and-such [amount]" after the engagement sermon and similar situations. For that is apparent in realization and affirmation, which is the meaning of the proposal (Ijab) (1). End of quote. This is specified in Al-Bahr from Az-Zahiriyyah: If someone says, "Give your daughter to my son," and he replies, "I have given," it is not valid as long as the father of the minor does not say, "I have accepted." (2) End of quote. Thus, there is no room here for the claim that the father does not possess the right of authorization.

[Top Column - Urdu Side]: If the intention is that no marriage takes place at all, then its clear reason is what Allama Maqdisi has stated: the agent's saying to the girl's father, "Give your so-and-so to [him]," is a command and a request, which is a future tense form, and immediate realization is not intended. Therefore, the contract will not be complete. Contrary to this is the case where the man himself says, "Marry your girl to me." Here, after the engagement etc., this speech is apparent in affirmation and realization, and this is what constitutes the proposal (Ijab). In Bahr, citing Zahiriyyah, this same reason is specified, stating: if one says, "Give your daughter to my son," and the other says, "I have given," then the marriage will not be valid at that time. Instead, it will be necessary for the boy's father to say after that, "I have accepted." Thus, it is not correct to think about the boy's father that he is not authorized to act as an agent (vakeel). (T)

[Spanning Text]: However, the jurisprudential view is that this command is unanimously beneficial for the proposal (Ijab) and is free from these difficulties.

[Bottom Column - Arabic Side]: For it is a command for acceptance, and "acceptance" (qabul) is mentioned while meaning "consent" (rida). This is the interpretation in the mention of the Fuduli (unauthorized agent) for the betrothed girl due to their lack of intention, because that process is for ascertaining her consent without completing the contract, as we have mentioned previously. And by it is intended one of the two pillars of the contract, which is what is intended here, as the intent is the realization of the contract. This acceptance exists except following the proposal (Ijab) in Radd al-Muhtar.

[Bottom Column - Urdu Side]: Because this is a request to accept, and in the response, "acceptance" means consent. And if an unauthorized person (Fuduli) requests marriage for a girl to someone, then here too this is the objective, because the purpose of this proceeding is only to obtain the girl's consent, not to complete the marriage, as we have stated before. And where this is said in the marriage assembly, it refers to a pillar of the marriage, as in the issue under discussion, i.e., acceptance.

[Footnotes]: 1. Radd al-Muhtar, citing Allama al-Maqdisi, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/264. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Nikah, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/82.

[ऊपरी कॉलम - अरबी पक्ष]: बेशक, प्रतिनिधि (वकील) का यह कहना कि "अपनी बेटी फ़लाँ को दे दो" स्पष्ट रूप से एक अनुरोध है। और यह भविष्य के लिए है; इससे वर्तमान स्थिति और वास्तविकता का उद्देश्य नहीं है। इसके माध्यम से निकाह (अनुबंध) पूरा नहीं होता, इसके विपरीत "अपनी बेटी का निकाह मुझसे इतने [मेहर] में कर दो" कहना, सगाई के खुतबे आदि के बाद, वास्तविकता और पुष्टि में स्पष्ट है, जो कि 'ईजाब' (प्रस्ताव) का अर्थ है। (1) उद्धरण समाप्त। 'अल-बहर' में 'ज़हीरिय्या' के हवाले से इसे निर्दिष्ट किया गया है: यदि कोई कहता है, "अपनी बेटी मेरे बेटे को दे दो," और वह उत्तर देता है, "मैंने दे दी," तो यह तब तक मान्य नहीं है जब तक कि नाबालिग का पिता यह न कहे, "मैंने स्वीकार किया।" (2) उद्धरण समाप्त। अतः, यहाँ इस दावे के लिए कोई गुंजाइश नहीं है कि पिता को अधिकार देने (वक़ालत) का अधिकार नहीं है।

[ऊपरी कॉलम - उर्दू पक्ष]: यदि बिल्कुल निकाह न होना ही उद्देश्य हो, तो इसका स्पष्ट कारण वह है जिसे अल्लामा मक़दिसी ने बयान किया है कि वकील का लड़की के बाप को "अपनी फलाँ को दे दे" कहना एक आदेश और अनुरोध है जो भविष्य का काल है और वर्तमान में वास्तविकता का उद्देश्य नहीं है, इसलिए अनुबंध पूर्ण नहीं होगा। इसके विपरीत वह स्थिति है जिसमें स्वयं पुरुष ने कहा कि "तू अपनी लड़की का निकाह मुझसे कर दे" तो यहाँ सगाई आदि के बाद, यह बात पुष्टि और वास्तविकता में स्पष्ट है और यही ईजाब (प्रस्ताव) होता है। 'बहर' में 'ज़हीरिय्या' से उद्धरण में इसी कारण को निर्धारित करते हुए कहा गया है कि यदि एक ने कहा कि "अपनी बेटी मेरे बेटे को दे दो" और दूसरे ने कहा "मैंने दे दी" तो उस समय निकाह सही नहीं होगा बल्कि लड़के के बाप को इसके बाद "मैंने स्वीकार किया" कहना अनिवार्य होगा। अतः यहाँ लड़के के बाप के बारे में यह सोचना सही नहीं है कि वह वकील बनाने का मालिक नहीं है। (त)

[मध्य पाठ]: मगर फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय) दृष्टि यह है कि यह आदेश सर्वसम्मति से 'ईजाब' (प्रस्ताव) के लिए लाभकारी है और इन कठिनाइयों से मुक्त है।

[निचला कॉलम - अरबी पक्ष]: क्योंकि यह स्वीकार करने का एक आदेश है, और 'क़बूल' (स्वीकृति) शब्द का प्रयोग 'रज़ा' (सहमति) के अर्थ में किया जाता है। 'फुज़ूली' (अनधिकृत व्यक्ति) के उल्लेख में मंगनी वाली लड़की के लिए यही अर्थ लिया जाता है क्योंकि उनका उद्देश्य निकाह पूरा करना नहीं बल्कि केवल उसकी सहमति जानना होता है जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है। और इससे

निकाह के दो स्तंभों में से एक स्तंभ मुराद होता है, जो कि यहाँ भी अभीष्ट है क्योंकि यहाँ उद्देश्य निकाह को वास्तविकता देना है। और यह स्वीकृति 'ईजाब' (प्रस्ताव) के बाद ही होती है जैसा कि 'रद्द अल-मुह्तार' में है।

[निचला कॉलम - उर्दू पक्ष]: क्योंकि यह स्वीकार करने का अनुरोध होता है और उत्तर में स्वीकृति से अभिप्राय सहमति होती है, और फ़ुज़ूली व्यक्ति यदि लड़की को किसी के लिए निकाह का अनुरोध करे तो यहाँ भी यही उद्देश्य होता है क्योंकि इस कार्यवाही का उद्देश्य केवल लड़की की सहमति प्राप्त करना होता है न कि निकाह को पूर्ण करना, जैसा कि हमने पहले बयान किया है, और जहाँ निकाह की सभा में यह बात कही जाए तो उससे निकाह का एक स्तंभ मुराद होता है जैसा कि विचाराधीन मामले में है, यानी स्वीकृति।

[पाद लेख]: 1. रद्द अल-मुह्तार, अल्लामा अल-मक़दिसी के हवाले से, किताब अल-निकाह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/264। 2. अल-बहर अल-राइक़, किताब अल-निकाह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/82।

पृष्ठ 168 / 739

[اوپری کالم - عربی حصہ]: ان قول الوکیل ھب ابنتك لفلان ظاھر في الطلب وانه مستقبل لم یرد به الحال والتحقق لم یتم به العقد بخلاف زوجنی بنتك بکذا بعد الخطبة ونحوھا فانه ظاھر في التحقق والاثبات الذی ھو معنی الایجاب ۱۸ اھ ویعینه عیناما في البحر عن الظھیریة لوقال ھب ابنتك لابني فقال وھبت لم یصح مالم یقل ابو الصغیر قبلت ۲۸ اھ فلا مساغ ھھنا لزعم ان الاب لا یملك التوکیل۔

[اوپری کالم - اردو حصہ]: بالکل نکاح نہ ہونا مراد ہو تو پھر اس کی واضح وجہ وہ ہے جس کو علامہ مقدسی نے بیان فرمایا ہے کہ وکیل کا لڑکی کے باپ کو "اپنی فلاں کو دے" کہنا امر اور طلب ہے جو کہ مستقبل کا صیغہ ہے اور فی الحال تحقق مراد نہیں، لہذا عقد تام نہ ہوگا، اس کے خلاف ہے وہ صورت جس میں خود مرد نے کہا کہ "تو اپنی لڑکی مجھے نکاح کردے" تو یہاں منگنی وغیرہ کے بعد، یہ کلام اثبات و تحقق میں ظاہر ہے اور یہی ایجاب ہوتا ہے اھ بحر میں ظہیریہ سے نقل میں اسی وجہ کو معین کرتے ہوئے کہا کہ اگر ایک نے کہا کہ "تو اپنی بیٹی میرے بیٹے کو دے" دوسرے نے کہا "میں نے دی" تو اس وقت نکاح صحیح نہ گا بلکہ لڑکے کے باپ کو اس کے بعد "میں نے قبول کی" کہنا ضروری ہوگا اھ تو یہاں لڑکے کے باپ کے بارے میں یہ خیال کرنا درست نہیں کہ یہ وکیل بنانے کا مالک نہیں ہے (ت)

[درمیانی عبارت]: مگر نظر فقہی حاکم ہے کہ یہ امر بالاتفاق مفید ایجاب اور ان دقتوں سے بر کراں ہو،

[نچلا کالم - عربی حصہ]: فانه امر بالقبول والقبول یطلق ویراد به الرضا وھو المحمل فی قول الفضولی المذکور للمخطوبة لعدم ارادتھم اذ ذلك الاستبانة رضاھا من دون تتمیم العقد کما قدمنا، ویراد

به احد رکنی العقد وھو المراد ھھنا حیث المراد تحقیق العقد وھذا القبول وجود لہ الا تلو الایجاب في رد المحتار

[نچلا کالم - اردو حصہ]: کیونکہ یہ قبول کرنے کی درخواست ہوتی ہے اور جواب میں قبول سے مراد رضامندی ہوتی ہے، اور فضولی شخص اگر لڑکی کو کسی کے لیے نکاح کی درخواست کرے تو یہاں بھی یہی مقصد ہوتا ہے کیونکہ اس کارروائی کا مقصد صرف لڑکی کی رضا حاصل کرنا ہوتا ہے نہ کہ نکاح مکمل کرنا ہوتا ہے جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا ہے، اور جہاں مجلس نکاح میں یہ بات کہی جائے تو اس سے نکاح کا ایک رکن مراد ہوتا ہے جیسا کہ زیر بحث مسئلہ میں ہے، قبول کا

[حواشی]: 1 رد المحتار بحوالہ العلامۃ المقدسی کتاب النکاح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۴/۲ 2 البحر الرائق کتاب النکاح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۲/۳

[Arabic]: He indicated that what is presented first from the speech of the contracting parties is a proposal (Ijab), whether the one presenting it is the husband or the wife, and the latter is an acceptance (Qabul). [Urdu]: The word here is in response to the proposal. In Radd al-Muhtar[1], it is indicated that the speech of the first of the two contracting parties will be called Ijab (proposal) and the speech of the second will be called Qabul (acceptance), whether the first speech is from the man or the woman.

[Arabic]: Referring to al-Minah, the precedence of acceptance is not conceivable, etc. So, the command for acceptance includes a proposal by way of implication (iqtida'), like one saying "manumit your slave for me for a thousand," which implicitly includes a sale. Similarly, if a slave marries without permission of his master, and the master says to him "give her a revocable divorce," it is an authorization for the suspended (mawquf) marriage, as in al-Durr al-Mukhtar[2], because revocable divorce (talaq raj'i) is only after a valid marriage. So, the command for it is authorization by implication, as in Radd al-Muhtar[3]. This is what appeared to me and it is a clear appearance. If you refuse, then the statement about the proposal is preferred and corrected by the statement of al-Fath "it is better," as you know.

[Urdu]: Now, regarding the statement in al-Minah that "Acceptance cannot be conceived first," etc., the request for acceptance implicitly contains a proposal by way of implication. For example, if someone says, "Manumit your slave on my behalf for a thousand," this statement implicitly contains a sale (i.e., sell to me and then manumit). Similarly, if a slave marries without his master's permission and the master says to him, "Give her a revocable divorce," this command of the master is a validation of the suspended marriage, as stated in al-Durr al-Mukhtar. This is because a revocable divorce can only occur after a valid marriage. Therefore, the command for a revocable divorce will be considered as permission for the marriage, as in Radd al-Muhtar. This has become very clear to me. And even if this statement is not acceptable, the saying of al-Fath about the proposal statement that "this is better" will serve as a point of preference and correction, as you already know. (T)

In any case, there is no doubt about the conclusion of the marriage here, but since the mentioned person was an unauthorized agent (fuzuli), it remained dependent on the permission of the betrothed woman (makhtuba). Now, if after the occurrence of the marriage, she becomes aware of it, and before any word or action providing evidence of rejection or annulment is issued from her, permission is obtained

through word, deed, or silence, then the marriage becomes valid, complete, and effective. Verbal permission is, for example, the betrothed woman saying "I am pleased," "I accept," or "You did well, Al-hamdu lillah." And active permission is, for example, meeting the husband in private (khalwat) without compulsion.

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/263.
2. Durr al-Mukhtar, Bab Nikah al-Raqiq, Mujtaba'i, Delhi, 1/202.
3. Radd al-Muhtar, Bab Nikah al-Raqiq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/373.

[अरबी]: उन्होंने संकेत दिया कि अनुबंधकर्ताओं के भाषणों में से जो पहले आता है वह ईजाब (प्रस्ताव) है, चाहे पहले आने वाला पति का भाषण हो या पत्नी का, और बाद वाला क़ुबूल (स्वीकृति) है। [उर्दू]: यहाँ यह शब्द 'ईजाब' के उत्तर में है। रद अल-मुह्तार[1] में यह संकेत दिया गया है कि दोनों पक्षों (अनुबंधकर्ताओं) में से पहले का भाषण 'ईजाब' कहलाएगा और दूसरे का 'क़ुबूल', चाहे पहला भाषण पुरुष का हो या महिला का।

[अरबी]: अल-मिनाह के संदर्भ में, क़ुबूल की प्राथमिकता संभव नहीं है आदि। तो क़ुबूल का आदेश निहितार्थ (इक़्तिज़ा) के माध्यम से ईजाब को शामिल करता है, जैसे कोई कहता है "मेरे लिए एक हज़ार में अपना गुलाम आज़ाद करो," जिसमें बिक्री शामिल है। इसी तरह, यदि कोई गुलाम अपने स्वामी की अनुमति के बिना विवाह करता है, और स्वामी कहता है "उसे रजई तलाक दे दो," तो यह अल-दुर अल-मुख्तार[2] के अनुसार निलंबित (मौक़ूफ़) विवाह के लिए एक प्राधिकरण है, क्योंकि रजई तलाक केवल एक वैध विवाह के बाद होता है। तो इसके लिए आदेश रद अल-मुह्तार[3] के अनुसार निहितार्थ द्वारा प्राधिकरण है। यह वही है जो मुझे प्रतीत हुआ और यह एक स्पष्ट स्वरूप है। यदि आप मना करते हैं, तो ईजाब का कथन अल-फ़तह के कथन "यह बेहतर है" द्वारा पसंदीदा और सही है जैसा कि आप जानते हैं।

[उर्दू]: अब, 'अल-मिनाह' के इस कथन पर कि "क़ुबूल का पहले आना कल्पनीय नहीं है" आदि, क़ुबूल करने का अनुरोध निहित रूप से 'ईजाब' पर आधारित है। जैसे कि कोई कहे, "मेरी ओर से एक हज़ार के बदले अपने गुलाम को आज़ाद कर दो," तो यह कथन परोक्ष रूप से बिक्री (यानी मुझे बेच दो और फिर आज़ाद करो) को शामिल करता है। इसी तरह, यदि कोई गुलाम अपने मालिक की अनुमति के बिना निकाह करता है और मालिक उससे कहता है, "तुम रजई तलाक दे दो," तो मालिक का यह कहना उस 'मौक़ूफ़ निकाह' को वैध ठहराना है, जैसा कि 'दुर्र अल-मुख्तार' में है। क्योंकि रजई तलाक केवल वैध निकाह के बाद ही हो सकता है। इसलिए रजई तलाक का आदेश निकाह की अनुमति माना जाएगा, जैसा कि 'रद अल-मुह्तार' में है। यह मुझे बिल्कुल स्पष्ट हो गया है। और यदि यह कथन स्वीकार्य न भी हो, तो ईजाब वाले कथन के बारे में 'फ़तह' का यह कहना कि "यह बेहतर है," इसके लिए प्राथमिकता और सुधार का आधार बनेगा, जैसा कि आप जान चुके हैं। (त)

बहरहाल, यहाँ आकर इस निकाह के संपन्न होने में कोई संदेह नहीं है, लेकिन चूँकि उक्त व्यक्ति 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत एजेंट) था, इसलिए यह मख़्तूब (मंगेतर महिला) की अनुमति पर निर्भर रहा। अब यदि निकाह होने के बाद उसे इसकी खबर मिले और इससे पहले कि मख़्तूब की ओर से अस्वीकृति या निरस्तीकरण का कोई शब्द या कार्य सामने आए, बोलकर, कर के या खामोशी के माध्यम से अनुमति प्राप्त हो जाए, तो निकाह सही, पूर्ण और प्रभावी हो गया। मौखिक अनुमति यह है कि उदाहरण के लिए मख़्तूब कहे, "मैं राज़ी हूँ," "मुझे मंज़ूर है" या "अच्छा किया, अल-हम्दु लिल्लाह।" और व्यावहारिक अनुमति यह है कि उदाहरण के लिए बिना किसी दबाव के पति के साथ एकांत (ख़लवत) में मिलना।

1. रद अल-मुह्तार, किताब अन-निकाह, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/263.
2. दुर्र अल-मुख्तार, बाब निकाह अर-रक़ीक़, मुजतबाई, दिल्ली, 1/202.
3. रद अल-मुह्तार, बाब निकाह अर-रक़ीक़, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/373.

पृष्ठ 169 / 739

اشار الی ان المقدم من کلام العاقدین ایجاب سواء کان المتقدم کلام الزوج او کلام الزوجۃ و المتأخر قبول، لفظ یہاں پر ایجاب کا جواب ہوتا ہے، ردالمحتار1 میں یہ اشارہ دیا کہ عاقدین میں سے پہلے کا کلام ایجاب اور دوسرے کا قبول کہلائے گا، خواہ مرد کا پہلا کلام ہو یا عورت کا۔

ح عن المنح فلا یتصور تقدیم القبول الخ فالامر بالقبول یتضمن الایجاب علی جھۃ الاقتضاء کقولہ اعتق عبدك عنی بالف یتضمن البیع کذلك و کما ان العبد لوتزوج بلاذن مولاہ فقول المولی لہ طلقھا رجعیۃ اجازۃ للنکاح الموقوف کما فی الدرالمختار2 لان الطلاق الرجعي لایکون الا بعد النکاح الصحیح فکان الامر بہ اجازۃ اقتضاء کما فی ردالمحتار3 ھذا ما ظھر لی وھو ظاہر جلی و ان ابیت فالقول بالایجاب مرجح مصحح بقول الفتح ھو احسن کما علمت۔ اب منح کے قول کہ "قبول پہلے متصور نہیں ہوسکتا" الخ تو اس پر قبول کرنے کی درخواست اقتضاءً ایجاب پر مشتمل ہے جیسا کہ کوئی کہے کہ تو میری طرف سے ایک ہزار کے بدلے میں اپنا غلام آزاد کر دے، تو یہ قول ضمناً بیع پر مشتمل ہے (یعنی مجھے فروخت اور پھر آزاد کر) اور جیسا کہ کوئی غلام اپنے مالک کی اجازت کے بغیر نکاح کرے تو اس پر مالک اس کو کہے "تو رجعی طلاق دے" تو مالک کا یہ کہنا موقوف نکاح کو جائز قرار دینا ہے جیسا کہ در مختار میں ہے، کیونکہ رجعی طلاق نکاح کے بعد ہی ہو سکتی ہے لہٰذا رجعی طلاق کا حکم، نکاح کی اجازت متصور ہوگا، جیسا کہ ردالمحتار میں ہے، یہ مجھے بالکل واضح معلوم ہوا ہے، اور اگر یہ قول قابلِ قبول نہ بھی ہو تو ایجاب والے قول کے بارے میں فتح کا یہ کہنا کہ "یہ احسن ہے" اس کے لیے ترجیح اور تصحیح قرار پائے گا جیسا کہ آپ جان چکے ہیں۔ (ت)

بہر کیف یہاں آ کر اس نکاح کے منعقد ہو جانے میں شبہ نہیں مگر از آنجا شخص مذکور فضولی تھا اجازت مخطوبہ پر موقوف رہا، اب اگر بعد وقوع نکاح اس کی خبر پا کر قبل اس کے کہ مخطوبہ سے کوئی قول یا فعل دلیلِ رد و ابطال صادر ہو قولاً یا فعلاً یا سکوتاً اجازت پائی گئی تو نکاح صحیح و تام و نافذ ہو گیا۔ اجازت قولی یہ کہ مثلاً مخطوبہ کہے میں راضی ہوئی مجھے منظور ہے یا اچھا کیا الحمد للہ، اور فعلی یہ کہ مثلاً بے جبر و اکراہ شوہر کو خلوت

1 ردالمحتار کتاب النکاح دار احیاء التراث العربي بیروت ۲ / ۲۶۳ 2 در مختار باب نکاح الرقیق مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۲ 3 ردالمحتار باب نکاح الرقیق دار احیاء التراث العربي بیروت ۱ / ۳۷۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

...let him come to her, or she demands the dower (Mahr) or cash from him, or any other action that serves as evidence of consent. And silent consent is that the guardian himself, or his messenger, or a trustworthy, pious person whose uprightness is known and established, or two persons of unknown state (whose transgression is not known), informs the betrothed woman of the marriage, and she knows the husband, and he is a suitable match (Kufu) for her, meaning he does not lack in religion, lineage, profession, or conduct such that the marriage would be a cause of shame for the woman's guardians. In this case, if the woman remains silent after hearing this news, then this silence will be considered as permission. *And we have explained all this in detail in our Fatwas (T).* In short, this current situation is not free from difficulty, especially if an expression of dislike occurs after hearing the news, as is common among most virgin daughters in the lands of India. In such a case, the marriage will be clearly rejected, and it cannot become valid even if the woman later permits it. Therefore, a change in this method is necessary and appropriate. Either the intermediary person should first obtain permission and proxy from the suitor and then go to the woman, and whatever he says to her should be with the intent of finalizing the contract, so that the marriage becomes complete and binding upon her saying that much. Or, he should not say those words to the woman but instead obtain permission and proxy for himself, like "You have appointed me as your proxy to marry you to so-and-so, son of so-and-so, for this much dower." The woman says "Yes." Then, that person returns and says to the suitor, "I have given so-and-so, daughter of so-and-so, to you in marriage for this much dower, do you accept?" The suitor says "Yes." Or, if they wish to keep the same words, then they should not consider the initial conversation with the woman as a session for appointing a proxy and seeking consent, but rather consider it the marriage assembly (Majlis-e-Aqd) itself. The mentioned person should say those words to the woman with the intention of finalizing the contract, so that the marriage is contracted there and then, and the subsequent acceptance by the suitor is considered its execution. All this detail mentioned is for the case where the woman is sitting so far from the suitor's gathering that her speech is not heard by those present, or she leaves after saying "I accept" before the conversation reaches the suitor. Or, if after the woman has said "I accept," the suitor stands up and then it is conveyed to him. In these cases, the session (Majlis) will change, or the witnesses will not hear the speech of both simultaneously. However, if she is sitting close enough

that the people in the suitor's gathering heard her say "I accept," and both the suitor and the woman are still sitting as they were when it was conveyed to the suitor and he accepted, and at least two men or one man and two women among those present heard and understood the speech of both in a single session simultaneously, then there is absolutely no doubt about the validity and completeness of the marriage. In this case, the intermediary person will be merely superfluous and unnecessary, and the speech of the suitor and the woman themselves will constitute the offer and acceptance (Ijab-o-Qabul).

And that is what we have presented from Al-Islah wal-Idah. We have already mentioned this from Islah, Idah, Dhakhira, and...

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...उसे अपने पास आने दे या उससे मेहर या नकद की माँग करे, या कोई ऐसा कार्य करे जो रज़ामंदी (सहमति) का प्रमाण हो। और खामोश रज़ामंदी यह है कि खुद वली (अभिभावक) या उसका दूत, या एक विश्वसनीय परहेज़गार व्यक्ति जिसकी सत्यनिष्ठा ज्ञात और स्थापित हो, या दो ऐसे व्यक्ति जिनकी स्थिति अज्ञात हो (जिनका अनाचार ज्ञात न हो), मख़तूबा (मंगेतर महिला) को निकाह की सूचना दें, और वह शौहर (पति) को पहचानती हो, और वह उसका 'कुफ़ू' (समान) भी हो, अर्थात दीन (धर्म), वंश, पेशा या आचरण आदि में ऐसी कमी न रखता हो कि उससे निकाह मख़तूबा के अभिभावकों के लिए लज्जा का कारण हो। इस स्थिति में, यदि मख़तूबा यह खबर सुनकर खामोश रहे, तो इस खामोशी को भी अनुमति समझा जाएगा। और हमने इस बारे में अपने फ़तवों में विस्तार से चर्चा की है। *(त)* संक्षेप में, यह वर्तमान स्थिति कठिनाई से खाली नहीं है, विशेष रूप से तब जब खबर सुनने के बाद नफरत का इजहार हो, जैसा कि भारत के शहरों में अक्सर कुंवारी कन्याओं का चलन है। ऐसी स्थिति में निकाह स्पष्ट रूप से रद्द हो जाएगा, फिर मख़तूबा के जायज़ करने से भी वह जायज़ नहीं हो सकता। इसलिए इस तरीके का बदलाव ही वाजिब और उचित है। या तो मध्यस्थ व्यक्ति पहले खातिब (वर) से अनुमति और वकालत प्राप्त करके जाए और वहां जो बात मख़तूबा से कहे, उससे निकाह के अनुबंध (अक़्द) की जांच और पुष्टि का उद्देश्य रखे, ताकि मख़तूबा के साथ उतनी ही बातचीत पर निकाह पूर्ण और लागू हो जाए। या मख़तूबा से ये शब्द न कहे, बल्कि अपने लिए अनुमति और वकालत ले ले कि "तुमने मुझे फ़लां के पुत्र फ़लां के साथ इतने मेहर पर अपना निकाह करने के लिए वकील नियुक्त किया।" मख़तूबा कहे "हाँ"। फिर वहां से आकर वही व्यक्ति खुद खातिब से कहे कि "मैंने फ़लां की पुत्री फ़लां को इतने मेहर पर तुम्हारे निकाह में दिया, क्या तुमने स्वीकार किया?" खातिब कहे "हाँ"। या यदि वे इन्हीं शब्दों को रखना चाहें, तो मख़तूबा से जो पहली बातचीत की जाती है, उसे केवल वकालत नियुक्त करने और अनुमति मांगने की सभा न समझें, बल्कि उसे ही निकाह की सभा (मज्लिस-ए-अक़्द) समझें। और उक्त व्यक्ति उन शब्दों को निकाह के अनुबंध के उद्देश्य से ही मख़तूबा से कहे, ताकि निकाह वहीं संपन्न हो जाए और फिर खातिब की स्वीकृति को उसका निष्पादन (तनफ़िज़) माना जाए। यह सारा विवरण जो ऊपर बताया गया, उस स्थिति के लिए है जब मख़तूबा खातिब की सभा से इतनी दूर बैठी हो कि उसकी बात यहाँ वाले न सुन सकें या वह "मैंने स्वीकार किया" कहकर उठ जाए और उसके बाद खातिब तक बात पहुंचे। या जब मख़तूबा "मैंने स्वीकार किया" कह ले तो उसके बाद खातिब खड़ा हो जाए और फिर उसे बताया

जाए। इन स्थितियों में सभा बदल जाएगी या गवाह उन दोनों की बातें एक साथ नहीं सुन पाएंगे। और यदि वह इतनी करीब बैठी है कि खातिब की सभा के लोगों ने उसका "स्वीकार किया" कहना सुना, और अभी खातिब और मख़तूबा वैसे ही बैठे हैं कि खातिब को आकर बताया गया और उसने स्वीकार कर लिया, और एक ही सभा में दोनों की बात उपस्थित लोगों में से कम से कम दो पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं ने एक साथ सुनी और समझी, तो निकाह की वैधता और पूर्णता में बिल्कुल भी संदेह नहीं है। अब यह बीच का व्यक्ति केवल व्यर्थ और फालतू होगा, और खातिब और मख़तूबा की अपनी बात ही ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) मानी जाएगी।

और यही हमने अल-इस्लाह वल-ईज़ाह से प्रस्तुत किया है। इसे हम पहले इस्लाह, ईज़ाह, जखीरा और...

पेज 170/739

میں اپنے پاس آنے دے یا اس سے مہر یا نقد طلب کرے یا اور کوئی فعل کہ دلیل رضا ہو، اور سکوتی یہ کہ خود ولی یا اس کا رسول یا ایک ثقہ پرہیزگار جس کی عدالت معلوم متحق ہو یا دو مستور الحال جن کا فسق معلوم نہ ہو مخطوبہ کو نکاح کی اطلاع دیں اور وہ شوہر کو پہچانتی ہو اور وہ اس کا کفو بھی ہو یعنی دین یا نسب یا پیشے یا چال چلن وغیرہ میں ایسی کمی نہ رکھتا ہو کہ اس سے نکاح اولیاء مخطوبہ کے لیے عار ہو، اس صورت میں مخطوبہ یہ خبر سن کر خاموش ہو رہے تو یہ سکوت بھی اجازت سمجھا جائے گا وقد فصلنا القول فی کل ذلک فی فتاوٰنا (اس تمام بحث کو ہم اپنے فتاوٰی میں بیان کر چکے ہیں۔ت) بالجملہ یہ صورت رائجہ دقت سے خالی نہیں خصوصاً بعد استماع خبر اظہار نفرت واقع ہو جیسا کہ بلادِ ہندوستان میں اکثر دختران دوشیزہ کا معمول ہے جب تو نکاح صاف رد ہو جائے گا کہ پھر مخطوبہ کے جائز کئے بھی جائز نہیں ہو سکتا لہٰذا اس طریقے کی تبدیلی ہی واجب و مناسب ہے یا تو شخص متوسط پہلے خاطب سے اذن و وکالت حاصل کر کے جائے اور وہاں جو کلام مخطوبہ سے کہتا ہے اس سے تحقیق عقد مقصود رکھے کہ مخطوبہ سے اسی قدر گفتگو پر نکاح تام و نافذ ہو جائے، یا مخطوبہ سے یہ الفاظ نہ کہے بلکہ اپنے لیے اذن و وکالت لے کہ تو نے فلاں ابن فلاں کے ساتھ اتنے مہر پر اپنا نکاح کرنے کے لیے مجھے وکیل کیا۔ مخطوبہ کہے ہاں، پھر وہاں سے آکر خود یہی شخص خاطب سے کہے میں نے فلاں بِنْتِ فلاں کو اتنے مہر پر تیرے نکاح میں دیا تو نے قبول کیا، خاطب کہے ہاں، یا یہی الفاظ رکھنا چاہیں تو اول ہی مخطوبہ سے جو گفتگو کی جاتی ہے اسے مجلسِ توکیل و طلبِ رضانہ سمجھیں بلکہ اسی کو مجلسِ عقد سمجھیں، اور شخص مذکور وہ الفاظ بقصد تحقیق عقد ہی مخطوبہ سے کہے کہ نکاح وہیں منعقد ہو جائے پھر خاطب کا قبول اس کی تنفیذ قرار پائے۔ یہ سب تفصیل

کہ مذکور ہوئی اس صورت میں ہے کہ مخطوبہ جلسہ خاطب سے اتنی دور بیٹھی ہو کہ اس کا کلام یہاں والے نہ سنیں یا وہ قبول کیا کہہ کر اٹھ جائے اس کے بعد خاطب سے گفتگو آئے یا جب مخطوبہ نے قبول کیا کہہ لیا اس کے بعد خاطب اٹھ کھڑا ہو پھر اس سے کہا گیا کہ ان صورتوں میں مجلس متبدل ہوگی یا شہود ان دونوں کا کلام معا نہ سنیں گے اور اگر وہ اس قدر بیٹھی ہے کہ اہل جلسہ خاطب نے اس کا قبول کیا، کہنا سنا اور ابھی خاطب و مخطوبہ ویسے ہی بیٹھے ہیں کہ خاطب سے آکر بیان کیا گیا اور اس نے قبول کیا کہا کہ مجلسِ واحد میں دونوں کا کہنا حاضرین میں کم از کم دو مردوں یا ایک مرد دو عورتوں نے معا سنا اور سمجھا تو نکاح کی صحت و تمامی میں اصلاً کلام نہیں، اب یہ بیچ کا شخص محض لغو و فضولی ہوگا اور خاطب و مخطوبہ ہی کا کلام ایجاب و قبول ہوگا

وذلک ما قدمنا عن الاصلاح والایضاح اس کو ہم پہلے اصلاح، ایضاح، ذخیرہ اور

It has been quoted from 'Al-Dhakhira' and 'Al-Hindiriyya' that if someone says to a woman, "Did you give (yourself in marriage) to so-and-so?" and the woman says "Dad" (gave) instead of "Dadam" (I gave), then the man is asked, "Did you accept?" and he says "Accepted" instead of "I have accepted," the marriage will be valid. It is stated in 'Al-Wiqaya' and its commentary by Sadr al-Sharia that when a woman is asked, "Have you given yourself to so-and-so to be his wife?" and the woman says only "Given," and then the husband is asked, "Did you accept?" and he also says only "Accepted," the marriage is valid. This is similar to a sale/purchase transaction where if the seller is asked, "Did you sell?" and he replies "Sold" instead of "I have sold," and then the same question and answer occur with the buyer, the sale becomes valid. (t)

It has been quoted from 'Hindiriyya' that if someone asks a woman, "Did you give yourself in marriage to so-and-so?" then the woman says "Dad" instead of "Dadam", then that person asks the man, "Did you accept?" and he says just "Accepted" instead of "I have accepted", the marriage will be valid. In 'Wiqaya' and its commentary by Sadr al-Sharia, it says that when a woman is told, "Have you given yourself to so-and-so to be his wife," the woman says just "Given," and then the husband is asked, "Did you accept?", and he also says just "Accepted," the marriage is valid. Just as in a sale, if the seller is asked, "Did you sell?", and he says "Sold" in response and does not say "I have sold," then the same question and answer are conducted with the buyer, the sale is completed. (t)

And a woman being behind a veil (purdah) does not necessitate a change of assembly (majlis), nor can it interfere with the validity of the marriage, as long as the bride-to-be is known to the two witnesses either by sight or by name.

In 'Al-Hindiriyya' from 'Al-Dhakhira' from the Fatwas of Abu Al-Layth: A man said to a group, "Bear witness that I have married this woman who is in this house." The woman said, "I accepted." The witnesses heard her statement but did not see her person. If she was alone in the house, the marriage is valid. I say: This shows that the veil does not change the assembly, rather it is only conditioned that she be...

In 'Hindiriyya' from 'Dhakhira' and they cited from the Fatwas of Abu Al-Layth that a person told people to be witnesses that I have married the woman present in this room and the woman replied from inside that "I accepted." The witnesses heard this talk of the woman and did not see the woman. If the woman was alone in that room, the marriage will be valid. I say (the author): A veil does not change the assembly/venue; the only condition is that she be...

^1 Fatawa Hindiriyya, Book of Marriage, Chapter 2, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/271 ^2 Sharh Wiqaya, Book of Marriage, Chapter 2, Mujtabai Delhi, 2/7 ^3 Fatawa Hindiriyya, Book of Marriage, Chapter 1, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/268

'अद-ज़खीरा' और 'अल-हिंदिया' से उद्धृत किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति किसी महिला से कहे, "क्या आपने फलां व्यक्ति से अपना निकाह किया?" और महिला ने 'दादम' (मैंने दिया) के बजाय 'दाद' (दिया) कहा, फिर उस व्यक्ति ने पुरुष से कहा, "क्या तुमने स्वीकार किया?" और उसने "मैंने स्वीकार किया" के बजाय केवल "स्वीकार किया" कहा, तो निकाह सही होगा। 'अल-विक़ाया' और सद्र अल-शरिया द्वारा इसकी व्याख्या में कहा गया है कि जब महिला से कहा जाए कि "क्या तुमने फलां को पत्नी होना दिया?" और महिला ने केवल "दिया" कहा और फिर पति से कहा गया कि "क्या तुमने स्वीकार किया?", तो उसने भी केवल "स्वीकार किया" कहा, तो निकाह सही है। यह खरीद-बिक्री के मामले के समान है जहाँ यदि विक्रेता से कहा जाए कि "क्या तुमने बेचा?" और वह जवाब में "बेचा" कहे, फिर खरीदार के साथ भी यही सवाल-जवाब हो, तो बिक्री हो जाएगी। (त)

हंदिया से उद्धृत किया गया है कि अगर कोई व्यक्ति महिला से पूछे कि क्या तुमने फलां को अपना निकाह दिया? तो औरत ने दादम की जगह दाद कहा, फिर उस व्यक्ति ने मर्द से कहा कि क्या तुमने कबूल की? तो उसने "मैंने कबूल की" की जगह सिर्फ"कबूल की" कहा तो निकाह सही होगा, वक़ाया और उसकी शरह सद्र अल-शरिया में है कि जब औरत को कहा जाए कि तूने फलां को बीवी होना दिया, तो औरत ने सिर्फ"दिया" कहा और फिर खाविन्द को कहा गया तूने कबूल की, तो उसने भी सिर्फ"कबूल की" कहा तो निकाह सही है जैसा कि बेच की सूरत में बाये को कहा गया कि तूने बेची, तो उसने जवाब में "बेची" कहा हो और "मैंने बेची" न कहा, फिर खरीदार के साथ भी यही सवाल ओ जवाब हो तो बेच हो जाएगी। (त)

और महिला का पर्दे में होना सभा (मजलिस) के बदलने का कारण नहीं बनता, न ही यह निकाह की वैधता में बाधा डाल सकता है, बशर्ते कि दुल्हन दो गवाहों को व्यक्तिगत रूप से या नाम से ज्ञात हो।

'अल-हिंदिया' में 'अद-ज़खीरा' से और उन्होंने अबू अल-लैथ के फ़तावा के हवाले से उल्लेख किया: एक व्यक्ति ने लोगों से कहा, "गवाह बनो कि मैंने इस घर में मौजूद इस महिला से विवाह किया है।" महिला ने कहा, "मैंने स्वीकार किया।" गवाहों ने उसका बयान सुना लेकिन उसका व्यक्ति (चेहरा) नहीं देखा। यदि वह घर में अकेली थी, तो विवाह वैध है। मैं कहता हूँ: इससे पता चलता है कि पर्दा सभा को नहीं बदलता, बल्कि केवल यह शर्त है कि वह...

हंदिया में ज़खीरा से और उन्होंने फ़तावा अबी अल-लैथ के हवाले से ज़िक्र किया कि एक शख्स ने लोगों को कहा कि गवाह हो जाओ कि मैंने इस कमरे में मौजूद औरत से निकाह किया और औरत ने अंदर से जवाब दिया कि "मैंने कबूल किया" गवाहों ने औरत की ये बात सुन ली और औरत को देखा नहीं, अगर औरत इस कमरे में अकेली थी तो निकाह हो जाएगा। मैं (लेखक) कहता हूँ: पर्दा मजलिस को तब्दील नहीं करता, सिर्फ शर्त ये है कि वहां...

^1 फ़तावा हंदिया, निकाह की किताब, अध्याय 2, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/271 ^2 शरह वक़ाया, निकाह की किताब, अध्याय 2, मुज्तबाई दिल्ली, 2/7 ^3 फ़तावा हंदिया, निकाह की किताब, अध्याय 1, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/268

والذخیرة والهندیه من قول قائل للمرأة دادی فقالت داد ثم للزوج پذیر فتی فقال پذیرفت ۱ وفي الوقایة وشرحها لصدر الشریعة اذا قیل للمرأة خویشتن را بزنی فلاں دادی فقالت داد ثم قیل للزوج پذیر فتی فقالت پذیرفت بحذف المیم یصح النکاح کبیع وشراء ای اذا قیل للبائع فروختی فقال فروخت ثم قیل للمشتری خرید فقال خرید یصح البیع ۲ اھ

ہندیہ سے نقل کر چکے ہیں کہ اگر کوئی شخص عورت کو کہے کہ تو نے فلاں کو اپنا نکاح دیا؟ تو عورت نے دادم کی بجائے داد کہا، پھر اس شخص نے مرد کو کہا کہ تو نے قبول کی؟ تو اس نے "میں نے قبول کی" کے بجائے صرف "قبول کی" کہا تو نکاح صحیح ہو گا، وقایہ اور اس کی شرح صدر الشریعہ میں ہے کہ جب عورت کو کہا جائے کہ تو نے فلاں کو بیوی ہونا دیا، تو عورت نے صرف "دیا" کہا اور پھر خاوند کو کہا گیا تو نے قبول کی، تو اس نے بھی صرف "قبول کی" کہا تو نکاح صحیح ہے جیسا کہ بیع کی صورت میں بائع کو کہا گیا کہ تو نے بیچی، تو اس نے جواب میں "بیچی" کہا ہو اور "میں نے بیچی" نہ کہا، پھر خریدار کے ساتھ بھی یہی سوال و جواب ہو تو بیع ہو جائے گی اھ (ت)

اور عورت کا پردے میں ہونا تغایر مجلس کا مقتضی نہیں، نہ صحت نکاح میں مخل ہو سکے جبکہ مخطوبہ دو شاہدوں کو عیناً یا تسمیۃً معلوم ہو۔

فی الہندیة عن الذخیرة عن فتاوی ابی اللیث، رجل قال لقوم اشہدوا انی تزوجتہ ہذہ المراة التی فی ہذا البیت فقالت المراة قبلت فسمع الشہود مقالتہا ولم یروا شخصہا فان کانت فی البیت وحدہا جاز النکاح ۳ الخ قلت فافا دان الحجاب لایغیر المجلس وانما اشترط کونہا

ہندیہ میں ذخیرہ سے اور انھوں نے فتاوی ابی اللیث کے حوالے سے ذکر کیا کہ ایک شخص نے لوگوں کو کہا کہ گواہ ہو جاؤ کہ میں نے اس کمرہ میں موجود عورت سے نکاح کیا اور عورت نے اندر سے جواب دیا کہ "میں نے قبول کیا" گواہوں نے عورت کی یہ بات سن لی اور عورت کو دیکھا نہیں، اگر عورت اس کمرہ میں اکیلی تھی تو نکاح ہو جائے گا الخ قلت (تو میں کہتا ہوں) حجاب مجلس کو تبدیل نہیں کرتا، صرف شرط یہ ہے کہ وہاں

۱ فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۷۱ ۲ شرح وقایہ کتاب النکاح الباب الثانی مجتبائی دہلی ۲/۷ ۳ فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۶۸

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Alone, because he did not name her. The identification of an absent person in case of ambiguity is only by naming. In Al-Hindiyya, it is also narrated from Muhit al-Sarakhsi that if she is present but veiled and the witnesses do not know her, the marriage is valid, and this is correct. -1	**If the woman is alone because the man did not mention her name, while in case of doubt, an absent woman is identified by her name. And in Al-Hindiyya, it is also narrated from Muhit al-Sarakhsi that if she is present in the gathering wearing a veil and the witnesses do not know her name, then too the marriage will be valid. This is correct. (T)**

Similarly, a pause in the acceptance of the suitor, that the mentioned person got up from there and came here and had a conversation with the Qazi, testimonies were taken, after which the suitor was told and he accepted, it is not harmful as long as the gathering (Majlis) has not changed. Immediate acceptance is not a necessary condition. In Radd al-Muhtar, it is narrated from Al-Bahr: "As for immediacy, it is not of its conditions"[2] (In Radd al-Muhtar, it is narrated from Al-Bahr but immediacy is not a necessary condition. Ah-T). And Allah Almighty knows best.

Problem 9: Sent by Hazrat Noor-ul-Aarifeen, may his clear shadow last, from Sitapur, Thompson Ganj, 18 Rabi al-Awwal Sharif 1309 AH. Submitted to the scholars of profound knowledge: For example, a boy whose age is thirteen or fourteen years and is a minor, takes the women of his house to a Hindu fair and the women of his house perform Hindu worship rituals; if such a boy performs someone's marriage, is it valid or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If in reality the women of his place worship other than God, meaning truly worshipping another which is true polytheism (shirk) (not just some ignorant customs or acts of ignorance that do not exceed the limit of sin and transgression, though extremists may label them as shirk and worship of others), and he is aware of this true shirk and is pleased with it, then he himself is a disbeliever (kafir) and an apostate (murtad). For "Satisfaction with disbelief is disbelief" (Because being pleased with disbelief is also disbelief. T). In this estimation, a marriage should never be performed by him, as even sitting near an apostate is religiously reprehensible. Allah Almighty says: "Then sit not, after remembrance, with the wrongdoing people."[3]

— Allah Almighty said: After remembering, do not sit in the company of the unjust people. (T)

1. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter 1, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/268.
2. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/266.
3. Quran, 6:68.

वह अकेली है क्योंकि उसने उसका नाम नहीं लिया। संदेह की स्थिति में अनुपस्थित व्यक्ति की पहचान केवल नामकरण से होती है। अल-हिंदिया में मुहीत अल-सरख़सी से यह भी वर्णित है कि यदि वह सभा में उपस्थित है लेकिन नकाबपोश है और गवाह उसे नहीं जानते हैं, तो भी विवाह वैध होगा, और यही सही है। - 1

औरत अकेली हो क्योंकि मर्द ने उसका नाम ज़िक्र नहीं किया जबकि संदेह की स्थिति में अनुपस्थित औरत की पहचान उसके नाम से होती है। और हिंदिया में मुहीत अल-सरख़सी से यह भी वर्णित है कि अगर वह नकाब ओढ़कर सभा में उपस्थित हो और गवाह नाम न जानते हों, तो भी निकाह जायज़ होगा। यही सही है। (त)

इसी तरह, प्रस्तावक की स्वीकृति में अंतराल, कि उक्त व्यक्ति वहां से उठकर यहां आया और काजी के साथ बातचीत हुई, गवाहियां ली गईं, जिसके बाद प्रस्तावक से कहा गया और उसने स्वीकार किया, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है जब तक कि सभा (मजलिस) न बदली हो। तुरंत स्वीकृति एक आवश्यक शर्त नहीं है। रद अल-मुह्तार में अल-बहर से वर्णित है: "जहाँ तक तत्परता का संबंध है, यह इसकी शर्तों में से नहीं है"[2] (रद अल-मुह्तार में अल-बहर से उद्धृत है लेकिन तुरंत होना एक आवश्यक शर्त नहीं है। अह-त)। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

मसला 9: हज़रत नूर-उल-आरिफ़ीन, उनका साया बना रहे, द्वारा सीतापुर, थॉमसन गंज से प्रेषित, 18 रबी अल-अव्वल शरीफ़ 1309 हिजरी। गहरे ज्ञान के विद्वानों की सेवा में निवेदन है: उदाहरण के लिए, एक लड़का जिसकी उम्र तेरह या चौदह वर्ष है और वह नाबालिग है, अपने घर की महिलाओं को हिंदू मेले में ले जाता है और उसके घर की महिलाएं हिंदू पूजा की रस्म निभाती हैं; क्या ऐसा लड़का अगर किसी का निकाह पढ़ाए तो वह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएं।

जवाब: यदि वास्तव में उसके यहाँ की महिलाएँ ईश्वर के अलावा किसी और की पूजा करती हैं, यानी वास्तव में दूसरे की पूजा करना जो कि सच्चा शिर्क(बहुदेववाद) है (न कि केवल कुछ अज्ञानता की रस्में या अज्ञानता के कार्य जो पाप और उल्लंघन की सीमा से अधिक नहीं हैं, भले ही चरमपंथी उन्हें शिर्क और दूसरों की पूजा कहें), और वह इस वास्तविक शिर्क से अवगत है और उससे प्रसन्न है, तो वह स्वयं काफ़िर और धर्मत्यागी (मुर्तद) है। क्योंकि "कुफ्र पर रजामंदी भी कुफ्र है" (क्योंकि कुफ्र पर खुश होना भी कुफ्र है। त)। इस आकलन पर, उससे कभी भी निकाह नहीं पढ़वाना चाहिए, क्योंकि

धर्मत्यागी के पास बैठना भी धार्मिक रूप से निंदनीय है। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा है: "याद आने के बाद अत्याचारी लोगों की मजलिस में न बैठो।"[3] — अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फ़रमाया: याद आने पर ज़ालिम लोगों की मजलिस में मत बैठो। (त)

1. फ़तावा हिंदिया, किताब-उन-निकाह, बाब-ए-अव्वल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/268।
2. रद अल-मुह्तार, किताब-उन-निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/266।
3. कुरान, 6:68।

وحدها لانه لم یسمها و تعریف الغائب عند الاحتمال انما یکون بالتسمیة وفی الهندیة ایضاً عن محیط السرخسی ان کانت حاضرة متنقبة و لا یعرفها الشهود جاز النکاح وهو الصحیح- 1

عورت اکیلی ہو کیونکہ مرد نے اس کا نام ذکر نہیں کیا جبکہ شبہ کی صورت میں عورت غائبانہ کی پہچان اس کے نام سے ہوتی ہے اور ہندیہ میں محیط سرخسی سے بھی منقول ہے کہ اگر وہ نقاب اوڑھے مجلس میں حاضر ہو اور گواہ نام نہ جانتے ہوں تو بھی نکاح جائز ہوگا۔ یہی صحیح ہے۔ (ت)

اسی طرح قبول خاطب میں اپنا وقفہ کہ شخص مذکور وہاں سے اٹھ کر یہاں آیا اور قاضی سے وہ گفتگو ہوئی ، گواہیاں لی گئیں ، اس کے بعد خاطب سے کہا گیا تو اس نے قبول کیا کچھ مضر نہیں جبکہ مجلس متبدل نہ ہو کہ قبول فوراً ہونا ضرور نہیں فی ردالمحتار عن البحر اما الفور فلیس من شرطہ 2 (ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے لیکن فوراً ہونا ضروری شرط نہیں اھ-ت) واللہ تعالٰی اعلم ۔

مسئلہ 9: مرسلہ حضرت نور العارفین دام ظلہم المبین از سیتا پور تامسن گنج 18 ربیع الاول شریف 1309 ھ بخدمت عالمان تبحر التماس ہے مثلاً کوئی لڑکا کہ عمر اس کی تیرہ چودہ برس کی ہے اور نابالغ ہے اپنے گھر کے عورت کو لے کر میلہ ہنود میں جاتا ہے اور عورتیں اس کے گھر کی، پرستش رسم ہنود کی کرتی ہیں، ایسا لڑکا اگر کسی کا نکاح پڑھائے تو جائز ہے یا نہیں ؟ بینوا توجروا ۔

الجواب: اگر فی الواقع اس کے یہاں کی عورت غیر خدا کو پوجتی ہیں یعنی حقیقۃً دوسرے کی عبادت کہ شرک حقیقی ہے (نہ صرف وہ بعض رسوم جاہلیت یا افعال جہالت کہ حد فسق و گناہ سے متجاوز نہیں، گو اہل تشدد انھیں بنام شرک و پرستش غیر تعبیر کریں) اور وہ اس شرک حقیقی پر مطلع اور اس پر راضی ہے تو خود کافر و مرتد ہے فان الرضا بالکفر کفر (کیونکہ کفر پر رضا بھی کفر ہے۔ ت) اس تقدیر پر اس سے نکاح پڑھوانا ہرگز نہ چاہئے کہ مرتد کے پاس تک بیٹھنا شرعاً معیوب ہے۔ قال تعالیٰ فلا تقعد بعد الذکری مع القوم الظالمین 3 - اللہ تعالیٰ نے فرمایا : یاد آنے پر ظالم لوگوں کی مجلس میں مت بیٹھو۔ (ت)

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور 1/ 268 2 ردالمحتار کتاب النکاح دار احیاء التراث العربی بیروت 2/ 266 3 القرآن 6/ 68

Fatawa Razawiyya Volume 11

...not that help should be sought from him in specific religious and Sharia matters.

Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) said: "We do not seek help from a polytheist." (1) - Reported by Ahmad, Abu Dawood, and Ibn Majah on the authority of Umm al-Mu'minin al-Siddiqah (may Allah be pleased with her) with an authentic (sahih) chain of narration. (T)

However, if he conducts the marriage ceremony, the marriage will be valid because if he is only making them repeat the words of offer and acceptance (Ijab-o-Qubool), and the ones speaking are the contracting parties themselves, or their guardians or representatives, then it is obvious that he has no connection to the contract itself. Therefore, his disbelief (Kufr) or Islam, or his being an adult or minor, can have no effect on the contract. Even if he were the representative (wakil) who himself performs the offer or acceptance, being a Muslim or being an adult is not a condition for the validity of the representation; being sane (Aaqil) is required, which he is. It is stated in Al-Hindiyya:

"The representation (wakalat) of an apostate is permissible, such as if a Muslim makes an apostate his representative. Likewise, if he was a Muslim at the time of appointment and then apostatized, his representation remains valid unless he flees to the Abode of War (Dar al-Harb), in which case his representation becomes void. This is also stated in Al-Badai'." (2)

A Muslim appointed an apostate as a representative; the representation of the apostate will be valid. Similarly, if a Muslim was appointed as a representative and then that representative became an apostate, his representation will remain, but if he flees to the Abode of War, then his representation will become void. It is the same in Al-Badai'. (T)

In the same book, it is stated:

"The representation of an insane person or a child who lacks understanding is not valid. However, being an adult or being a free person are not conditions for the validity of representation." (3)

The representation of an insane person or a child without understanding is not valid. However, being an adult and being a free person are not conditions for representation. (T)

Similarly, if he performed the marriage ceremony for a man or woman, adult or child, without being appointed as a representative, and a Sharia guardian (Wali) of that minor is present—even if it is a religious judge authorized to perform marriages or the Sultan of Islam—even then the marriage is validly contracted. This is because, in this scenario, he acted as an unauthorized agent (Fuzuli), and according to us, the contract made by an unauthorized agent is not void; it remains suspended until approval is given.

1. Sunan Abi Dawood, Kitab al-Jihad, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 19/2.
2. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Wakalah, Chapter One, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 562/3.
3. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Wakalah, Chapter One, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 562/3.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

... न कि विशिष्ट धार्मिक और शरिया मामलों में उससे सहायता ली जाए।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "हम मुशरिक (बहुदेववादी) से सहायता नहीं लेते।" (1) - अहमद, अबू दाऊद और इब्न माजा ने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से सहीह सनद के साथ रिवायत किया है। (त)

परंतु यदि वह निकाह पढ़ाता है, तो निकाह सही हो जाएगा क्योंकि यदि वह केवल ईजाब और क़ुबूल के शब्द कहलवाने वाला है, और कहने वाले स्वयं अनुबंधकर्ता (आकिदैन) या उनके वली (अभिभावक) या वकील हैं, तो स्पष्ट है कि उसका अनुबंध से कोई संबंध नहीं है। अतः उसके कुफ्र (अविश्वास) या इस्लाम, या उसके बालिग (वयस्क) होने या न होने का अनुबंध पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? और यदि वह वकील भी हो कि स्वयं ही ईजाब या क़ुबूल करे, तब भी वकालत की वैधता के लिए इस्लाम या बालिग होना शर्त नहीं है, अपितु आकिल (विवेकशील) होना आवश्यक है, जो कि वह है। 'अल-हिन्दिया' में है:

"एक मुर्तद (धर्मत्यागी) की वकालत जायज़ है, जैसे कि किसी मुसलमान ने किसी मुर्तद को अपना वकील बनाया हो। इसी प्रकार यदि वह नियुक्ति के समय मुसलमान था और फिर मुर्तद हो गया, तो उसकी वकालत बनी रहेगी, जब तक कि वह दारुल हरब (युद्ध क्षेत्र) न भाग जाए, ऐसी स्थिति में उसकी वकालत बातिल (अमान्य) हो जाएगी। इसी प्रकार 'अल-बदाइ' में भी है।" (2)

मुसलमान ने किसी मुर्तद को वकील बनाया, तो मुर्तद की वकालत जायज़ होगी, और इसी तरह किसी मुसलमान को वकील बनाया गया और फिर वह वकील मुर्तद हो गया, तो उसकी वकालत बाकी रहेगी, लेकिन यदि वह दारुल हरब भाग जाए तो उसकी वकालत बातिल हो जाएगी। 'बदाइ' में भी ऐसा ही है। (त)

उसी में है:

"पागल और उस नासमझ बच्चे की वकालत सही नहीं है जिसमें समझ न हो। तथापि बालिग होना और आज़ाद होना वकालत की वैधता के लिए शर्त नहीं है।" (3)

पागल और नासमझ बच्चे की वकालत सही नहीं है, फिर भी बालिग होना और आज़ाद होना वकालत के लिए शर्त नहीं है। (त)

इसी प्रकार यदि उसने बिना वकील नियुक्त हुए किसी बालिग या नाबालिग पुरुष या महिला का निकाह पढ़ा दिया और उस नाबालिग का कोई शरई वली (धार्मिक अभिभावक) मौजूद है—चाहे वह विवाह कराने के लिए अधिकृत हाकिम-ए-शरा (धार्मिक न्यायाधीश) हो या इस्लाम का सुल्तान—तब भी निकाह सही और संपन्न हो गया। क्योंकि इस स्थिति में वह 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत एजेंट) के रूप में कार्य कर रहा था, और हमारे अनुसार फ़ुज़ूली द्वारा किया गया अनुबंध बातिल नहीं होता, बल्कि वह अनुमति मिलने तक स्थगित (मोकूफ़) रहता है।

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-जिहाद, आफताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 19/2।
2. फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-वकालाह, अध्याय एक, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 562/3।
3. फ़तावा हिन्दिया, किताब अल-वकालाह, अध्याय एक, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 562/3।

نہ کہ خاص دینی شرعی کام میں اس سے مدد لینا۔

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم انا لا نستعین بمشرک ۱۔ اخرجہ احمد وابوداؤد و ابن ماجۃ عن ام المومنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالی عنہا بسند صحیح۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: ہم مشرک سے مدد لینا ناپسند کرتے ہیں، اس کو صحیح سند کے ساتھ حضرت ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے احمد، ابو داؤد اور ابن ماجہ نے روایت کیا ہے۔ (ت)

مگر پڑھا ئے گا تو نکاح صحیح ہو جائے گا کہ اگر وہ صرف الفاظ ایجاب و قبول کہلوانے والا ہے، کہنے والے خود عاقدین یا ان کے اولیاء یا وکلاء جب تو ظاہر کہ اسے عقد سے کوئی علاقہ نہیں، تو اس کے کفر و اسلام یا بلوغ یا عدم بلوغ سے عقد پر کیا اثر ہو سکتا ہے اور اگر وکیل بھی ہو کہ خود ہی ایجاب یا قبول کرے گا تا ہم صحتِ وکالت کے لیے اسلام خواہ بلوغ شرط نہیں، عاقل ہونا درکار، وہ حاصل ہے، ہندیہ میں ہے:

تجوز وکالۃ المرتد بان وکل مسلم مرتدا وکذا لوکان مسلما وقت التوکیل ثم ارتد فھو علی وکالتہ الا ان یلحق بدار الحرب فتبطل وکالتہ کذا في البدائع ۲۔ مسلمان نے کسی مرتد کو وکیل بنایا مرتد کی وکالت جائز ہوگی، اور یوں ہی کسی مسلمان کو وکیل بنایا پھر وہ وکیل مرتد ہو گیا تو اس کی وکالت باقی رہے گی مگر وہ دارالحرب بھاگ جائے تو پھر اس کی وکالت باطل ہو جائے گی، بدائع میں اسی طرح ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

لا تصح وكالة المجنون والصبي الذي لا يعقل واما البلوغ والحرية فليسا بشرط لصحة الوكالة ۳۔ مجنون اور ناسمجھ بچے کی وکالت صحیح نہیں ہے تاہم بالغ ہونا اور آزاد ہونا وکالت کے لیے شرط نہیں ہے۔ (ت)

اسی طرح اگر بے توکیل کسی مرد یا عورت بالغ و بالغہ خواہ صبی و صبیہ کا نکاح اس نے پڑھا دیا اور اس نابالغ کا کوئی ولی شرعی موجود ہے اگر چہ حاکم شرع ماذون بالتزویج یا سلطان اسلام ہی سہی، جب بھی صحیح و منعقد ہو گیا کہ اس تقدیر پر یہ فضولی تھا اور فضولی کا عقد ہمارے نزدیک باطل نہیں اجازت پر موقوف رہتا ہے

۱ سنن ابی داؤد کتاب الجہاد آفتاب عالم پریس لاہور ۲ ۱۹/۲ فتاوٰی ہندیہ کتاب الوکالۃ الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۳ ۵۶۲/۳ فتاوٰی ہندیہ کتاب الوکالۃ الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۵۶۲/۳

Fatawa Rizwia Volume 11

So, if a marriage is solemnized without valid Sharia permission, if the person (male or female) is an adult, then it depends on their own consent; otherwise, it depends on the consent of their mentioned guardian (Wali). If they approve it, it becomes valid.

Indeed, subsequent ratification is like prior authorization. Since authorization was valid for this, so is ratification. (T)

Subsequent permission is also like prior agency (wakalat). When there is capacity in agency, then subsequent permission is also the same. (T)

And if rejected, it becomes void, as is the nature of an unauthorized contract (Fuzuli). And if the actions of these women do not reach the limit of disbelief (kufr), but they are not pleased with it, then while they are Muslims, there is fundamentally no harm in getting the marriage solemnized by him in the mentioned scenarios. Yes, if an apostate (murtad) or a minor child solemnizes the marriage of their son, daughter, brother, sister, or any other minor, even under the assumption of guardianship, while their Muslim father, adult Muslim brother, uncle, or any other legal guardian is present—even if the ruler of Islam or a Sharia-appointed judge is present—then in this case, the marriage will be absolutely void. This is because an apostate or a minor is not fit for guardianship, so the contract becomes an unauthorized one (Fuzuli), occurring in circumstances where there is no one legally authorized to give consent.

Every contract issued by an unauthorized person (Fuzuli) and having no one to ratify it is void, as stated in Al-Durr and others. In Al-Hindiyyah, it is stated that a minor has no guardianship, as mentioned in Al-Hawi. Nor does an apostate have authority over anyone—not over a Muslim, nor a non-believer, nor over another apostate like himself. This is also stated in Al-Bada'i (summarized). And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best.

Every contract of an unauthorized person (Fuzuli) for which there is no one to validate it is void, as found in Al-Durr etc. In Hindiyyah, it is stated that a minor does not possess guardianship, as in Al-Hawi. Neither does an apostate have guardianship over a Muslim or a non-believer, nor over an apostate like himself. It is mentioned similarly in Bada'i (summarized). And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best. (T)

From Kathore, District Surat, sent by Maulana Muhammad Abdul Haq Sahab. 22 Rajab 1309 AH.

Issue 10: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia—may Allah increase their honor and greatness—say regarding this matter: Subhan Khan betrothed his sane, adult daughter named Amina Bibi to Nuruddin, an adult, without any conditions or agreements. When only a few days remained for the marriage, he asked Nuruddin to buy a house in the name of the betrothed woman.

---

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Buyu', Chapter on Fuzuli, Matba' Mujtabai Delhi, 2/31 2 Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Nikah, Chapter 4 on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/284

तो जिसका निकाह वैध शरई अनुमति के बिना उसने पढ़ाया, यदि वह स्वयं वयस्क (पुरुष या महिला) है, तो यह उनकी स्वयं की अनुमति पर निर्भर करेगा; अन्यथा उनके उल्लेखित अभिभावक (वली) की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया, तो यह वैध हो जाएगा।

वास्तव में, बाद की पुष्टि पूर्व प्राधिकरण की तरह है। चूंकि इसके लिए प्राधिकरण वैध था, वैसे ही बाद की पुष्टि भी वैध है। (त)

बाद की अनुमति भी पहले की वकालत की तरह है। जब वकालत में यह योग्यता है, तो बाद वाली अनुमति भी वैसी ही है। (त)

और यदि अस्वीकार कर दिया, तो वह 'अक़्द-ए-फ़ज़ूली' (अनधिकृत अनुबंध) की स्थिति के अनुसार बातिल (अमान्य) हो जाएगा। और यदि इन महिलाओं के कार्य कुफ़्र (अविश्वास) की सीमा तक नहीं हैं, परंतु वे इससे प्रसन्न नहीं हैं, तो जब तक वे मुसलमान हैं, वर्णित स्थितियों में उनसे निकाह पढ़वाने में मूल रूप से कोई हर्ज नहीं है। हाँ, यदि कोई मुर्तद (धर्मत्यागी) या नाबालिग बच्चा अपने बेटे, बेटी, बहन, भाई या किसी अन्य नाबालिग का निकाह, अभिभावक होने के दावे के साथ पढ़ाता है, जबकि उनका मुसलमान पिता या वयस्क मुसलमान भाई, चाचा या कोई अन्य शरई अभिभावक मौजूद हो—यहाँ तक कि इस्लाम का सुल्तान या उसकी ओर से नियुक्त कोई काजी भी मौजूद हो—तो इस स्थिति में यह निकाह पूरी तरह बातिल होगा। क्योंकि मुर्तद या नाबालिग अभिभावक होने के योग्य नहीं है, इसलिए यह अनुबंध 'अक़्द-ए-फ़ज़ूली' बन गया, और ऐसी स्थिति में हुआ जहाँ शरियत के अनुसार इसकी अनुमति देने वाला कोई नहीं है।

अनधिकृत व्यक्ति (फ़ज़ूली) द्वारा किया गया प्रत्येक अनुबंध जिसका कोई पुष्टिकर्ता न हो, बातिल है, जैसा कि अद-दुर्र और अन्य में है। अल-हिंदिया में है कि नाबालिग के पास कोई अभिभावकत्व (विलायत) नहीं है, जैसा कि अल-हावी में है। और न ही मुर्तद का किसी पर अधिकार है—न मुसलमान पर, न काफिर पर, और न ही अपने जैसे किसी मुर्तद पर। बदाइ' में भी ऐसा ही उल्लेख है (संक्षेप में)। और अल्लाह सुभानहु व ता'आला सबसे बेहतर जानता है।

फ़ज़ूली का हर वह अनुबंध जिसे कोई वैध करने वाला न हो, वह बातिल होता है जैसा कि 'दुर्र' आदि में है। और हिंदिया में है कि नाबालिग को विलायत हासिल नहीं जैसा कि 'हावी' में है। और न ही मुर्तद को मुस्लिम और काफिर पर और न ही उसे अपने जैसे मुर्तद पर विलायत हासिल है। बदाइ' में भी ऐसा ही है (संक्षेप में)। और अल्लाह सुभानहु व ता'आला सबसे बेहतर जानता है। (त)

कठोर, जिला सूरत से, मौलवी मुहम्मद अब्दुल हक साहब द्वारा प्रेषित। 22 रजब 1309 हिजरी।

प्रश्न 10: धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरिया के मुफ्ती—अल्लाह उनके सम्मान और महानता में वृद्धि करे—इस मामले के बारे में क्या कहते हैं: सुभान खान ने अपनी समझदार, वयस्क बेटी अमीना बीबी की सगाई नूरुद्दीन, जो वयस्क और समझदार है, के साथ बिना किसी शर्त या वादे के कर दी। जब निकाह में कुछ ही दिन बचे थे, तो उन्होंने नूरुद्दीन से कहा कि मंगनी की गई महिला के नाम पर एक मकान खरीद दो।

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल बुयू, फ़स्ल फ़िल फ़ुज़ूली, मतबा' मुज्तबाई दिल्ली, 2/31 2 फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, चौथा अध्याय वलियों के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/284

تو جس کا نکاح بے اجازت معتبرہ شرعیہ اس نے پڑھایا اگر وہ خود بالغ یا بالغہ ہے تو خود اس کے ورنہ اس کے ولی مذکور کی اجازت پر موقوف رہے گا اگر اس نے جائز رکھا جائز ہو جائے گا۔

فان الاجازۃ اللاحقۃ کالوکالۃ السابقۃ وقد کان یصلح لھذہ فکذا لتلك۔ (ت)

بعد کی اجازت بھی پہلے کی وکالت کی طرح ہے جب وکالت میں یہ صلاحیت ہے تو بعد والی اجازت بھی ایسی ہی ہے۔

اور رد کر دیا تو باطل کما ھو شان عقد الفضولی (جیسا کہ عقد فضولی کا مقام ہے ت) اور اگر ان عورات کے افعال حد کفر تک نہیں یا ہیں مگر یہ ان پر راضی نہیں جب تو مسلمان ہے، صُوَرِ مذکورہ میں اس سے نکاح پڑھوانے میں اصلاً مضائقہ نہیں، ہاں اگر کوئی مرتد یا صبی نا بالغ اپنے بیٹے بیٹی، بہن بھائی، خواہ کسی اور نابالغ نابالغہ کا نکاح اگر چہ بزعم ولایت پڑھائے اور ان کا مسلمان باپ یا جوان مسلمان بھائی، چچا، خواہ کوئی اور ولی شرعی مرتد عورت یہاں تک کہ وہاں سلطانِ اسلام یا اس کی طرف سے کوئی حاکم شرع ماذون بالا نکاح بھی ہو تو البتہ اس صورت میں یہ نکاح باطل محض ہوگا کہ مرتد یا نابالغ صالح ولایت نہیں تو عقد عقدِ فضولی ہوا، اور ایسی حالت میں صدور پایا کہ شرعاً اس کا کوئی اجازت دینے والا نہیں،

وكل عقد صدر من فضولي ولا مجيز له فضولی کا ہر وہ عقد جس کو کوئی جائز کرنے والا نہ فهو باطل كما في الدر وغيره وفی الهندية ہو تو وہ باطل ہوتا ہے جیسا کہ در وغیرہ میں ہے، اور لا ولاية لصغير كذا في الحاوی ولا للمرتد ہندیہ میں ہے کہ نابالغ کو ولایت حاصل نہیں جیسا کہ علی احد لا علی مسلم ولا علی کافر ولا حاوی میں ہے اور نہ مرتد کو مسلم و کافر پر اور نہ ہی علی مرتد مثله كذا في البدائع (ملخصاً) اس کو اپنے جیسے مرتد پر ولایت ہے، بدائع میں واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ ایسے ہی ہے (ملخصاً) واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم (ت)

از کٹھور ضلع سورت مرسلہ مولوی محمد عبدالحق صاحب ۲۲ رجب ۱۳۰۹ھ

مسئلہ ۱۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین زادھم اللہ تعالٰی شرفاً و تعظیماً لد یہ، اس مسئلہ میں کہ سبحان خان نے اپنی دختر عاقلہ بالغہ مسماۃ امینہ بی بی کا خطبہ یعنی منگنی نور الدین عاقل بالغ سے بے کسی شرط و اقرار کے کردی، جب نکاح کے چند روز رہے نور الدین سے کہا کہ مخطوبہ کے نام ایک مکان خرید دو

---

1 در مختار کتاب البیوع فصل في الفضولی مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۳۱ 2 فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الباب الرابع في الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۴

...to perform the marriage, otherwise I will not for three years. He said, first perform the marriage, then after six months when possible I will buy a house. Subhan Khan agreed and after five or six days the marriage was performed, and the bride was sent the next day. The husband and wife stayed together for two or three months. Now Subhan Khan has kept her with him and says the marriage is invalid due to the house condition, even though the woman did not set any condition of a house etc. at the time of authorizing the marriage or before it, except for a dowry of 160 rupees, nor did she speak about it after the marriage. The house is also undefined as there is no specification of whether it's solid-built or semi-built. Nooruddin's promise was also conditional, that if the marriage is performed first, he will buy it later. So, was this marriage without any condition, or conditional with a valid condition, or with an invalid condition? Is the aforementioned promise of Nooruddin, being conditional, void or not? In any case, according to Sharia, is there any flaw in this marriage, and is it obligatory to make him provide a house? Give a satisfactory answer according to the Hanafi school from authentic books used among great scholars and honorable jurists. May Allah reward you abundantly.

The Answer: The mentioned marriage is valid and without any flaw, and the suspicion of invalidity is purely false and baseless. Firstly: From the statement of the question, it is clear that giving a house was a condition for the early performance of marriage in Subhan Khan's words; eventually that also did not remain, nor was it a condition within the marriage contract itself. Secondly: Even if accepted, the husband's obligation to provide wealth for the wife is according to the requirements of the marriage contract, not against it. "And the like does not invalidate a sale, so how could it invalidate a marriage?" (A sale is not invalidated this way, let alone a marriage). Even if it was actually mentioned as a dower or condition in the contract itself, it would not have caused any flaw at all, nor would the uncertainty of the house cause any harm. In the case of fulfillment, it would become specific and no longer remain undefined, and in the case of non-fulfillment, it would result in the obligation of 'Mahr-e-Mithl' (customary dowry).

[Arabic Box Text]: As researched by the scholarly investigator Al-Shami, may his secret be sanctified, in Radd al-Muhtar. He said: It has been explicitly stated in Al-Nahr that in Al-Mabsut, after mentioning the statement of Muhammad (Imam), if a person marries her for a thousand and for her honor, or that he gives her a gift, then she is entitled to her customary dowry (Mahr al-Mithl) which shall not be less than the

thousand. He said: This issue... [Urdu Box Text]: As the investigator Shami, may his noble secret be sanctified, while researching in Radd al-Muhtar, stated that it is clarified in Al-Nahr that in Al-Mabsut, after quoting the statement of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), it is said: If a person marries a woman on the condition of a thousand and honor, or a thousand and a gift, then her dowry will be 'Mahr-e-Mithl' which should not be less than a thousand. Allamah Shami...

...निकाह कर दूँगा वरना तीन साल तक नहीं करूँगा। उसने कहा पहले तुम निकाह कर दो तो छह महीने के बाद हाथ पहुँचने पर मैं मकान खरीद दूँगा। सुभान खां राज़ी हो गया और पांच-छह दिन बाद निकाह करके दूसरे दिन रुख़्सती कर दी। दो-तीन महीने तक पति-पत्नी साथ रहे, अब सुभान खां ने उसे अपने यहाँ रोक रखा है और कहता है कि मकान की शर्त के कारण निकाह फ़ासिद (अमान्य) हो गया, हालाँकि औरत ने निकाह के लिए वकील नियुक्त करते समय या उससे पहले 160 रुपये मेहर के अलावा मकान आदि की कोई शर्त नहीं रखी थी, न ही रुख़्सती के बाद कोई बात की। मकान भी अनिश्चित है क्योंकि पक्के या कच्चे मकान का कोई स्पष्ट विवरण नहीं है। नूरुद्दीन का इकरार भी शर्तिया था कि पहले निकाह कर दो तो बाद में खरीद दूँगा। तो क्या यह निकाह बिना शर्त हुआ या शर्त के साथ सही है या शर्त-ए-फ़ासिद के साथ? और नूरुद्दीन का उक्त इकरार जो शर्तिया है, वह बातिल (शून्य) है या नहीं? किसी भी स्थिति में शरीयत के अनुसार इस निकाह में कोई दोष है और नूरुद्दीन से मकान दिलवाना वाजिब है या नहीं? महान विद्वानों और सम्मानित न्यायविदों के बीच प्रचलित प्रामाणिक हनफ़ी पुस्तकों से एक संतोषजनक उत्तर दें। अल्लाह आपको भरपूर प्रतिफल दे।

उत्तर: उक्त निकाह सही और दोषरहित है, और इसे फ़ासिद (अमान्य) समझना पूर्णतः निराधार और गलत है। पहला: सवाल के विवरण से स्पष्ट है कि सुभान खां की बातों में मकान देना निकाह जल्दी करने की एक शर्त थी; अंततः वह भी नहीं रही, और न ही यह निकाह के भीतर की कोई शर्त थी। दूसरा: यदि स्वीकार भी कर लिया जाए, तो पति पर पत्नी के लिए धन का दायित्व निकाह के अनुबंध की आवश्यकताओं के अनुरूप है, न कि इसके विरुद्ध। "और इसके जैसा (सौदा) बिक्री को फ़ासिद नहीं करता, तो निकाह को कैसे फ़ासिद करेगा?" (इस तरह से बिक्री फ़ासिद नहीं होती, निकाह तो दूर की बात है)। यदि वास्तव में इसे मेहर और शर्त के रूप में अनुबंध के समय ही उल्लेख किया जाता, तब भी इससे कोई दोष नहीं आता और न ही मकान की अनिश्चितता से कोई नुकसान होता। शर्त पूरी होने की स्थिति में वह स्वतः निर्धारित हो जाता और अनिश्चित नहीं रहता, और शर्त पूरी न होने पर 'मेहर-ए-मिसल' (प्रचलित मेहर) देना अनिवार्य होता।

[अरबी बॉक्स]: जैसा कि विद्वान अन्वेषक अल-शामी ने रद अल-मुहतार में शोध किया है। उन्होंने कहा: अन-नहर में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अल-मबसूत में इमाम मुहम्मद के कथन को उद्धृत करने के बाद कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति किसी महिला से एक हज़ार और उसके सम्मान पर, या उसे उपहार देने की शर्त पर निकाह करता है, तो वह मेहर-ए-मिसल की हकदार है जो एक हज़ार

से कम नहीं होगा। उन्होंने कहा: यह मसला... [उर्दू बॉक्स]: जैसा कि अन्वेषक शामी ने रद अल-मुहतार में शोध करते हुए कहा कि अन-नहर में स्पष्ट है कि अल-मबसूत में इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कथन को उद्धृत करने के बाद कहा गया है कि यदि किसी व्यक्ति ने औरत से एक हज़ार और सम्मान पर या एक हज़ार और उपहार देने की शर्त पर निकाह किया, तो उसका मेहर, मेहर-ए-मिसल होगा जो एक हज़ार से कम न हो। अल्लामा शामी...

पृष्ठ 175/739

تو نکاح کردوں ورنہ تین برس نہ کروں گا، اس نے کہا پہلے تم نکاح کر دو تو برس چھ مہینے کے بعد ہاتھ پہنچنے سے میں مکان خرید دوں گا۔ سبحان خاں راضی ہوگیا اور پانچ چھ دن بعد نکاح کرکے دوسرے دن وداع کر دی، دو تین مہینے تک زن و شو ہمبستر رہے، اب سبحان خاں نے اپنہ کو اپنے یہاں روک رکھا ہے اور کہتا ہے نکاح بوجہ شرط مکان فاسد ہوا حالانکہ عورت نے وقت توکیل بالنکاح یا اس سے پہلے سوا ایک سو ساٹھ روپے مہر کے کوئی شرط مکان وغیرہ کی نہ کی، نہ بعد وداع کوئی گفتگو زبان پر لائی اور مکان بھی مجمول ہے کہ پختہ و خام کی کوئی تصریح نہ ہوئی، نور الدین کا اقرار بھی معلق تھا کہ پہلے نکاح کر دو تو بعد کو خرید دوں گا، پس یہ نکاح بلاشط ہوا یا معلق بالشرط صحیح یا بالشرط الفاسد، اور اقرار مذکور نور الدین معلق بالشرط ہے اور اقرار معلق بالشرط باطل ہے یا نہیں، بہر تقدیر شرعاً اس نکاح میں کوئی خلل نور الدین سے مکان دلوانا واجب ہے یا نہیں؟ بینوا بیانًا شافیاً للمذھب الحنفی من الکتب المعتبرۃ المتداولۃ بین العلماء العظام والفقھاء الکرام توجروا اجرکم اللہ تعالیٰ اجرا وافیا۔

الجواب: نکاح مذکور صحیح و بے خلل، اور گمان فساد محض باطل و پرزل۔ اولاً: تقریر سوال سے واضح کہ مکان دینا کلام سبحان خاں میں شرط تعجیل نکاح تھا بالآخر وہ بھی نہ رہی نہ شرط فی النکاح۔ ثانیاً: علی التسلیم زوج پر ایجاب مال للزوج مقتضیات عقد نکاح سے ہے نہ اس کے خلاف "ومثلہ لا یفسد البیع فکیف بالنکاح" (اس طرح سے بیع فاسد نہیں ہوتی چہ جائیکہ نکاح فاسد کرے۔ ت) اگر واقعی مہر و شرط بھی نہ صرف برو جہ وعدہ اس قرارداد کا ذکر خود اصل عقد میں آتا تا ہم اصلاً خلل نہ لاتا نہ جہالت مکان سے کوئی نقصان آتا، کہ وہ بحالت ایفا بالشرط خود متعین ہو کر مجمول نہ رہتا اور بے ایفا الزام مہر مثل ہوتا۔

[عربی باکس]: كما حققه المولى المحقق الشامی قدس سره السامي في رد المحتار، قال فقد صرح في النهر بأنه في المبسوط بعد ان ذكر عبارة محمد لوتزوجها على الف و كرامتها اويهدى لها هدية فلها مهر مثلها لاينقص عن الالف قال هذه المسألة [اردو باکس]: جیسا کہ محقق شامی قدس سرہ السامی نے ردالمحتار میں اس کی تحقیق کرتے ہوئے فرمایا کہ نہر میں تصریح ہے کہ مبسوط میں امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ کی عبارت نقل کرنے کے بعد فرمایا اگر کسی شخص نے عورت سے ہزار اور اعزاز پر یا ہزار اور ہدیہ دینے کے شرط پر نکاح کیا تو اس کا مہر مثل ہوگا جو ہزار سے کم نہ ہو، علامہ شامی نے

Fatawa Razawiyyah Volume 11

Arabic Text	Urdu Explanation
...on two accounts: if he honors her and gives her a gift, then for her is the named [dower], otherwise it is the proper dower (mahr al-mithl). And in Al-Badai', if he stipulates something unknown along with the named [dower], such as if he marries her for a thousand dirhams and that he will give her a gift, then if he does not fulfill the gift, the full proper dower becomes mandatory. The ignorance of the gift and the honor is removed after their existence. In summary, and its completion is therein.	It was stated that there are two forms of this issue: if he gave some honor or gift according to the promise, then the fixed dower will be one thousand only, otherwise it will be the proper dower. It is stated in Badai' that if any unknown thing is mentioned along with the fixed dower, for example, it was said that one thousand dirhams and some gift will be given. So, if the promise of the gift was not fulfilled, then the full proper dower will be mandatory. The ignorance of the gift and honor will end after giving it. In summary, the complete discussion is in Radd al-Muhtar. (T)

Thirdly: Even assuming it to be a void condition (shart-e-fasid), it is evident that no mention of it was made at the time of the contract; it was merely a conversation prior to the contract which became the cause for marriage, not something incorporated into the marriage contract. And a mentioned condition prior to the contract in financial exchanges is also not considered attached to the contract as long as they do not agree upon the convention at the time of the contract (until the husband and wife mutually agree on a reduction, the dower mentioned at the time of marriage will remain mandatory for the husband. T), let alone in matters like marriage. It is stated in Jami' al-Fusulayn:

Arabic Text	Urdu Explanation
If he stipulated a void condition before the contract then they contracted, the contract is not void.	If any void condition was mentioned before marriage, then the subsequent marriage will not be void. (T)

Fourthly: Even if it were accepted that the condition was indeed within the marriage and was void, and remained considered and incorporated in the contract itself, marriage is not among those contracts that can become void due to void conditions; rather, that condition itself becomes void and the marriage remains valid and

without defect, and the remedy for the ignorance of the exchange is the proper dower. It is stated in Khulasa:

Arabic Text	Urdu Explanation
In the commentary of Al-Tahawi, contracts are of three types: a contract related to the valid condition, which is the mention of the exchange, and the void condition voids it, like sale, lease, partition, and settlement for property; and a contract not related to the valid condition nor the void condition...	In the commentary of Al-Tahawi, it is stated that contracts are of three types: one in which a valid condition is effective, for example, the mention of exchange, and a void condition is also effective, meaning it makes it void, like the contract of sale, lease, partition, settlement for property; and the second is that in which no condition, whether valid or void, is effective, like marriage, khul'.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Dower, Topic: Marrying for ten dirhams and a garment, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/349
2. Jami' al-Fusulayn, Chapter Eighteen on Sale of Wafa, etc., Islami Kutub Khana, Karachi, 1/23

अरबी पाठ

...दो तरह से: यदि वह उसका सम्मान करता है और उसे उपहार देता है, तो उसके लिए नामित [मेहर] है, अन्यथा यह मेहर-ए-मिसल (उचित मेहर) है। और अल-बदाइ' में, यदि वह नामित के साथ किसी अज्ञात चीज़ की शर्त रखता है, जैसे कि यदि वह उससे एक हज़ार दिरहम पर शादी करता है और वह उसे उपहार देगा, तो यदि वह उपहार पूरा नहीं करता है, तो पूरा मेहर-ए-मिसल अनिवार्य हो जाता है। उपहार और सम्मान की अज्ञानता उनके अस्तित्व के बाद दूर हो जाती है। संक्षेप में, और इसकी पूर्णता उसी में है।

उर्दू व्याख्या

फरमाया कि इस मसले की दो सूरतें हैं: अगर उसने वादे के मुताबिक कोई एजाज़ (सम्मान) या हदिया (उपहार) दिया तो फिर मुक़र्ररा मेहर हज़ार ही होगा, वर्ना मेहर-ए-मिसल होगा। 'बदाइ' में है कि अगर मुक़र्ररा मेहर के साथ कोई मजहूल (अज्ञात) चीज़ ज़िक्र की गई, मसलन यूँ कहा कि एक हज़ार दिरहम और कोई हदिया दूँगा। तो अगर हदिये का वादा पूरा न किया गया तो पूरा मेहर-ए-मिसल वाजिब होगा। हदिया और एजाज़ देने के बाद इसकी जहालत (अज्ञानता) खत्म हो जाएगी। सारांश में, मुकम्मल बहस 'रद्दुल मुहतार' में है। (T)

तीसरा: बफ़र्ज़-ए-बातिल (गलत धारणा पर आधारित) इसे शर्त-ए-फ़ासिद (अमान्य शर्त) भी मान लें, फिर भी ज़ाहिर है कि निकाह (अनुबंध) के समय इसका कोई ज़िक्र नहीं हुआ; वह सिर्फ निकाह से पहले की एक बातचीत थी जो निकाह का कारण बनी, न कि निकाह के अनुबंध में शामिल थी। और माली लेन-देन में अनुबंध से पहले की शर्त भी अनुबंध का हिस्सा नहीं मानी जाती जब तक कि अनुबंध के समय दोनों पक्ष उस पर सहमत न हों (पति-पत्नी जब तक किसी कमी पर मुत्तफ़िक़ा तौर पर राज़ी न होंगे, उस वक्त तक शौहर पर निकाह के वक्त ज़िक्र शुदा मेहर लाज़िम रहेगा। T), फिर निकाह जैसे मामलात में तो सवाल ही नहीं उठता। 'जामे उल फ़ुसूलैन' में है:

अरबी पाठ

यदि उसने अनुबंध से पहले एक अमान्य शर्त रखी और फिर उन्होंने अनुबंध किया, तो अनुबंध अमान्य नहीं होता।

उर्दू व्याख्या

अगर निकाह से पहले कोई फ़ासिद शर्त ज़िक्र की गई हो, तो उसके बाद का निकाह बातिल नहीं होगा। (T)

चौथा: इल्तेहाक़ भी सही, यानी मान लीजिए कि वह शर्त निकाह में ही थी और फ़ासिद भी थी और निकाह के अनुबंध में उसका ध्यान भी रखा गया, तो भी निकाह उन अनुबंधों में से नहीं है जो फ़ासिद शर्तों से फ़ासिद हो सकें, बल्कि वह शर्त ही खुद फ़ासिद होती है और निकाह सही और बे-खलल रहता है, और बदले की अज्ञानता का इलाज मेहर-ए-मिसल है। 'खुलासा' में है:

अरबी पाठ

तहावी की व्याख्या में, अनुबंध तीन प्रकार के होते हैं: एक अनुबंध जो वैध शर्त से संबंधित है, जो कि बदले का उल्लेख है, और अमान्य शर्त इसे अमान्य कर देती है, जैसे बिक्री, पट्टा, विभाजन, और संपत्ति के लिए समझौता; और एक अनुबंध जो न तो वैध शर्त से संबंधित है और न ही अमान्य शर्त से...

उर्दू व्याख्या

'शरह अल-तहावी' में है कि अनुबंध तीन किस्म के हैं: एक वह जिसमें जायज़ शर्त मुअस्सिर (प्रभावी) हो मसलन बदल का ज़िक्र, और फ़ासिद शर्त भी मुअस्सिर हो यानी उसको फ़ासिद कर दे, जैसे अक़द-ए-इजारा, बय, तक्सीम, माल पर सुलह; और दूसरा वह कि जिसमें कोई शर्त ख्वाह जायज़ हो या फ़ासिद मुअस्सिर न हो, जैसे निकाह, खुलअ।

1. रद्दुल मुहतार, बाबुल मेहर, मतलब तज़व्वुजहा अला अशरत दरहिम व सौब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/349
2. जामे उल फ़ुसूलैन, अल-फ़स्ल अल-सामिन अश्शार फ़ी बय अल-वफ़ा इल्ख़, इस्लामी कुतुब खाना, कराची, 1/23

पृष्ठ 176 / 739

| علی وجھین ان اکرمھا واھدی لھا ھدیۃ فلھا المسمی والافمھر المثل اھ وفی البدائع لو شرط مع المسمی شیئا مجھولا کأن تزوجھا علی الف درھم وان یھدی لھا ھدیۃ فاذا لم یف بالھدیۃ یجب تمام مھر المثل اھ وجھالۃ الھدیۃ والا کرام ترتفع بعد وجودھا اھ ملخصا، وتمامہ فیہ۔ | فرمایا کہ اس مسئلہ کی دو صورتیں ہیں، اگر اس نے وعدہ کے مطابق کوئی اعزاز یا ہدیہ دیا تو پھر مہر مقررہ ہزار ہی ہو گا ورنہ مہر مثل ہو گا، اھ ، بدائع میں ہے کہ اگر مقررہ مہر کے ساتھ کوئی مجہول شیئ ذکر کی مثلا یوں کہا کہ ایک ہزار درہم اور کوئی ہدیہ دے گا۔ تو اگر ہدیہ کا وعدہ پورا نہ کیا تو پورا مہر مثل واجب ہو گا اھ ، ہدیہ اور اعزاز یہ دینے کے بعد اس کی جہالت ختم ہو جائے گی اھ ملخصا، مکمل بحث ردالمحتار میں ہے۔ (ت) |

ثالثاً: بفرض باطل اسے شرطِ فاسد بھی مانیے تاہم پر ظاہر کہ وقت عقد اس کا کوئی ذکر نہ ہوا وہ صرف ایک گفتگو پیش از عقد تھی جس کا طے ہونا باعث علی التزوج ہوانہ کہ مأخوذ فی الترویج اور شرط مذکور قبل العقد مبادلات مالیہ میں بھی ملتحق بالعقد نہیں ہوتی مالم یتفقا علی المواضعۃ علیہ حین العقد (میاں بیوی جب تک کسی پر متفقہ طور پر راضی نہ ہوں گے اس وقت تک خاوند پر نکاح کے وقت ذکر شدہ مہر لازم رہے گا ت) نہ کہ امثال نکاح میں، جامع الفصولین میں ہے:

| لو شرط شرطا فاسدا قبل العقد ثم عقدا لم یبطل العقد۔ | اگر نکاح سے پہلے کوئی فاسد شرط ذکر کی ہو تو اس کے بعد کا نکاح باطل نہ ہوگا۔ (ت) |

رابعاً: التحاق بھی سہی یعنی مان لیجئے کہ وہ شرط فی النکاح ہی تھی اور فاسد بھی تھی اور نفسِ عقد میں ملحوظ اور ماخوذ بھی رہی تو نکاح ان عقود میں نہیں کہ شروطِ فاسدہ سے فاسد ہو سکے

بلکہ وہ شرط ہی خود فاسد ہوتی اور نکاح صحیح وبے خلل رہتا ہے اور جہالتِ بدل کا علاج مہر مثل ہے۔ خلاصہ میں ہے:

| فی شرح الطحاوی العقود ثلاثۃ عقد یتعلق بالجائز من الشرط وھو ذکر البدل والفاسد من الشرط یفسدہ کالبیع والاجارۃ والقسمۃ والصلح عن مال وعقد لایتعلق بالجائز من الشرط والفاسد من الشرط...

| شرح الطحاوی میں ہے کہ عقد تین قسم پر ہیں، ایک وہ کہ جس میں جائز شرط موثر ہو مثلاً بدل کا ذکر، اور فاسد شرط بھی موثر ہو یعنی اس کو فاسد کر دے، جیسے عقد اجارہ بیع، تقسیم، مال پر صلح، اور دوسرا وہ کہ اس میں کوئی شرط خواہ جائز ہو یا فاسد موثر نہ ہو، جیسے نکاح، خلع، |

1 ردالمحتار باب المھر مطلب تزوجھا علی عشرۃ دراھم و ثوب دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۴۹/۲ 2 جامع الفصولین الفصل الثامن عشر فی بیع الوفاء الخ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

[Arabic Box Column] ...not invalidated by it, such as marriage (Nikah), Khul' (divorce initiated by the wife), settlement for intentional murder, and manumission for wealth. These contracts are valid without mentioning the consideration (Badal) and are permissible even with an unknown consideration, etc. In the 'Ziyadat' of Qazi Imam Fakhr al-Din, it is stated that contracts whose completion depends on acceptance are of three types. One type is invalidated by a corrupt condition (shart fasid) and ignorance of the consideration; these are financial exchanges like sales (bay') and leases (ijara). Another type is not invalidated by a corrupt condition nor by ignorance of the consideration; these are contracts where property is exchanged for something that is not property, such as marriage and Khul'. (Summary ends).

[Urdu Box Column] Settlement for intentional murder and manumission for wealth; these contracts are valid without specifying a consideration and are also permissible with an unknown consideration, etc. In the 'Ziyadat' of Qazi Imam Fakhr al-Din, it is stated that contracts that are completed merely by acceptance are of three types. One is those which a corrupt condition and ignorance of consideration make invalid, and these are financial contracts such as sale and lease etc. Second are those which a corrupt condition and ignorance of consideration do not make invalid, such as contracts in which wealth is exchanged for something other than wealth, for example, marriage and Khul'. (Summary ends).

[Main Body Text in Urdu] This reason was sufficient and complete in explaining the ruling of marriage. However, the questioner's request for a full answer necessitated mentioning the previous reasons. Success is from Allah. In summary, regarding the situation enquired about, considering the marriage invalid is severe and meaningless ignorance. As for the house, it is clear from the text of the question that it was not accepted as Mahr (dowry). The contracting parties did not consider it a replacement for the intimacy (badal-e-bid'u). Rather, it was a promise from Nur al-Din at the request of Subhan Khan, upon which agreement was reached, and the marriage took place with a separate specified Mahr. In this situation, giving the house is certainly a matter of noble character; fulfilling a promise is religiously beloved, and breaking a promise is disliked and offensive. Therefore, Nur al-Din should, provided he has the means (as he specified in the original promise), buy a house for Aminah. Although a confession (iqrar) cannot be made contingent on a condition, Sayyiduna Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) states in 'Kitab al-Iqrar' of the 'Mabsut':

'Making a confession contingent on a condition is void.' (Translating the Arabic: Making a confession dependent on a condition is invalid). It is stated in 'Al-Khulasa':

[Arabic Bottom Box] The matters that are invalidated by corrupt conditions and whose suspension on a condition is not valid are thirteen: Sale, partition, lease (up to his statement)...

[Urdu Bottom Box] Those matters that are invalidated by a corrupt condition and their suspension on any condition is not valid, the number of such matters is thirteen; among them are sale, partition, lease...

[Footnotes] 1. Khulasa al-Fatawa, Chapter 5 on Sale regarding conditions, Habibia Library, Quetta, 3/52 & 51. 2. Mabsut of Imam Muhammad.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[अरबी बॉक्स कॉलम] ...इससे बातिल (अमान्य) नहीं होता जैसे निकाह, खुला, जानबूझकर की गई हत्या पर समझौता और माल के बदले गुलामी से मुक्ति। ये अनुबंध बदले (बदल) का उल्लेख किए बिना भी मान्य होते हैं और अज्ञात बदले पर भी जायज़ होते हैं, आदि। काज़ी इमाम फखर अल-दीन की 'ज़ियादात' में है कि वे अनुबंध जो केवल स्वीकार कर लेने से पूरे हो जाते हैं, उनकी तीन किस्में हैं। एक वह जिन्हें भ्रष्ट शर्त (शर्त-ए-फासिद) और बदले की अज्ञानता बातिल कर देती है, और ये माली अनुबंध हैं जैसे बिक्री (बै') और पट्टा (इजारा) आदि। दूसरी वह जिन्हें भ्रष्ट शर्त और बदले की अज्ञानता बातिल नहीं करती, जैसे वे अनुबंध जिनमें गैर-माल के बदले माल हो, उदाहरण के लिए निकाह और खुला। (संक्षिप्त)।

[उर्दू बॉक्स कॉलम] क़त्ल-ए-अमद (जानबूझकर हत्या) पर सुलह और अताक अला-अल-माल (मुक्ति के बदले धन); ये अनुबंध बदले को निर्धारित किए बिना भी मान्य होते हैं और अज्ञात बदले पर भी जायज़ होते हैं, आदि। क़ाज़ी इमाम फखर अल-दीन की 'ज़ियादात' में है कि वे अनुबंध जो केवल स्वीकार कर लेने से पूरे हो जाते हैं, उनकी तीन किस्में हैं: एक वे जिन्हें भ्रष्ट शर्त और बदले की अनभिज्ञता भ्रष्ट कर देती है, और ये वित्तीय अनुबंध हैं जैसे बिक्री और पट्टा आदि; दूसरे वे जिन्हें भ्रष्ट शर्त और बदले की अनभिज्ञता भ्रष्ट नहीं करती, जैसे वे अनुबंध जिनमें गैर-संपत्ति के बदले संपत्ति दी जाए, जैसे निकाह और खुला। (संक्षिप्त)।

[मुख्य उर्दू पाठ] निकाह के हुक्म के बयान में यही कारण पर्याप्त और पूर्ण था, लेकिन प्रश्नकर्ता की पूर्ण उत्तर की मांग ने पिछले कारणों के उल्लेख पर मजबूर किया। और सफलता अल्लाह की ओर से है। संक्षेप में, पूछी गई स्थिति में निकाह को फासिद (अमान्य) समझना घोर अज्ञानता और अर्थहीन है। जहाँ तक घर की बात है, सवाल के विवरण से स्पष्ट है कि उसे मेहर के रूप में स्वीकार नहीं किया गया था। अनुबंध करने वालों ने उसे 'बदल-ए-बज़' (शारीरिक संबंध का बदला) के रूप में नहीं माना, बल्कि नूर अल-दीन की ओर से सुभान खान के अनुरोध पर एक वादा था जिस पर सहमति हुई और निकाह एक अलग निश्चित मेहर पर हुआ। इस स्थिति में घर देना निश्चित रूप से नेक अख़लाक़ में से है; वादा पूरा करना शरीयत में पसंदीदा है और वादा खिलाफी नापसंद और मकरूह है। इसलिए नूर अल-दीन को भी चाहिए कि सामर्थ्य होने पर (जैसा कि उसने मूल वादे में स्पष्ट किया है) अमीना को एक घर खरीद कर दे। हालांकि इक़रार (स्वीकृति) शर्त पर लटकाए जाने (तअलीक़) की क्षमता नहीं

रखता, सैय्यदना इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) 'मबसूत' की 'किताब अल-इक़रार' में फरमाते हैं: "तअलीक़ अल-इक़रार बि-शर्त बातिल" (इक़रार को शर्त से जोड़ना बातिल है)। 'खुलासा' में है:

[निचला अरबी बॉक्स] वे मामले जो भ्रष्ट शर्तों से बातिल हो जाते हैं और उन्हें शर्त पर लटकाना सही नहीं है, उनकी संख्या तेरह है: बिक्री, विभाजन, पट्टा (उनके कथन तक)...

[निचला उर्दू बॉक्स] वे मामले जो भ्रष्ट शर्त से बातिल हो जाते हैं और उनकी किसी शर्त से तअलीक़ भी सही नहीं होती, ऐसे मामलों की संख्या तेरह है, उनमें बिक्री, विभाजन, पट्टा (शामिल हैं),

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. खुलासा अल-फ़तावा, अध्याय 5, बिक्री में शर्तों के बारे में, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 3/52 और 51। 2. मबसूत इमाम मुहम्मद।

पृष्ठ 177 (739 में से)

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدھم

[Arabic Box Column] لا یبطله کالنکاح والخلع والصلح عن دم العمد والعتق عن مال فهذه العقود تصح بغیر ذکر البدل وتجوز بالبدل المجهول الخ وفی زیادات القاضی الامام فخر الدین العقود التی یتعلق تمامها بالقبول اقسام ثلثة قسم یبطله الشرط الفاسد وجهالة البدل وهی مبادلة المال کالبیع والاجارة وقسم لا یبطله الشرط الفاسد ولا جهالة البدل وهو معاوضة المال بما لیس بمال کالنکاح والخلع اه ملخصا

[Urdu Box Column] قتل عمد پر صلح اور عتق علی المال، یہ عقود بدل کو متعین کئے بغیر بھی صحیح ہوتے ہیں اور بدل مجہول پر بھی جائز ہوتے ہیں الخ، قاضی امام فخر الدین کی زیادات میں ہے کہ وہ عقود جو صرف قبول کر لینے سے مکمل ہو جاتے ہیں ان کی تین قسمیں ہیں ایک وہ کہ جن کو فاسد شرط اور بدل کی جہالت فاسد کر دیتی ہے اور یہ مالی عقود ہیں جیسے بیع اور اجارہ وغیرہ، دوسری وہ جن کو فاسد شرط اور جہالت بدل فاسد نہیں کرتی، جیسے وہ عقود جن میں غیر مال کے بدلے مال ہو، مثلا نکاح اور خلع اھ ملخصا (ت)

[Main Body Text in Urdu] بیان حکم نکاح میں یہی وجہ کافی و وافی تھی مگر اسد سائل کا استیفائے جواب ذکر وجوہ سابقہ پر حامل ہوا، وباللہ التوفیق، بالجملہ صورت مستفسرہ میں نکاح کو فاسد خیال کرنا سخت جہالت بے معنی ہے، رہا مکان تقریر سوال سے ظاہر ہے کہ وہ بطور مہر نہ مانا گیا۔ نہ عاقدین نے اسے بدل بضع قرار دینے پر لحاظ کیا بلکہ نور الدین کی طرف سے بدرخواست سبحان خان ایک وعدہ تھا جس پر رضامندی ہو کر تزویج ایک جدا مہر مسمیٰ پر واقع ہوئی اس صورت میں وہ مکان دینا بیشک مکارم اخلاق سے ہے اور ایفاے وعدہ شرعا محبوب اور خلف وعدہ ناپسند و مکروہ۔ تو نور الدین کو بھی چاہئے کہ بشرط دسترس (جس کی تصریح وہ اصل

وعدہ کر چکا ہے) امینہ کو ایک مکان خرید دے، اقرار اگرچہ تعلیق بالشرط کی صلاحیت نہیں رکھتا، سیدنا امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ مبسوط کی کتاب الاقرار میں فرماتے ہیں: تعلیق الاقرار بالشرط باطل (اقرار کو شرط سے معلق کرنا باطل ہے۔ت) خلاصہ میں ہے:

[Arabic Bottom Box] التي تبطل بالشروط الفاسدة ولا يصح تعليقها بالشرط ثلثة عشر البيع والقسمة والاجارة (الى قوله)

[Urdu Bottom Box] وہ امور جو فاسد شرط سے باطل ہو جاتے ہیں اور ان کی کسی شرط سے تعلیق بھی صحیح نہیں ہوتی، ایسے امور کی تعداد تیرہ ہے، ان میں بیع، تقسیم، اجارہ،

[Footnotes] 1 خلاصۃ الفتاوی الفصل الخامس فی البیع اذا کان فیہ شرط مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۵۲/۳ و ۵۱ 2 مبسوط امام محمد

Fatawa Rizvia, Volume Eleven

(Arabic) **(Urdu)**

And acknowledgment 1- And it is an acknowledgment too. (T)

But it is clear that this is not a technical legal acknowledgment,

(Arabic)

For it is the reporting of an existing right against him, this is the research according to me, or this is reporting from one aspect and immediate initiation from another aspect as many have expressed.

(Urdu)

Because it is reporting a pre-existing right, this is the research point according to me, or it is reporting from one aspect and initiation of fulfillment from another aspect, as many scholars have stated. (T)

Rather, it is a promise, and making a promise conditional on a condition is permissible; in fact, some scholars say that a promise becomes obligatory upon being made conditional. It is in Al-Ashbah:

(Arabic)

In Al-Qunya: He promised to come to him but did not, he is not sinning nor is the promise binding unless it is conditional, as in the suretyship of Al-Bazzaziya and Bay' al-Wafa as mentioned by Az-Zayla'i 2-

(Urdu)

In Qunya it is: A person promised that I will come, then he did not come, he will not be a sinner, and only that promise is binding which is conditional on some condition, as it is in the discussion of suretyship in Bazzaziya, and Bay' al-Wafa is also this type of promise as Imam Zayla'i mentioned. (T)

In Wajiz al-Kardari it is:

(Arabic)

Promises, by taking the form of conditionality, become binding 3-

(Urdu)

Those promises in which conditionality is mentioned, they become binding. (T)

So apparently, from the absolute terms of the mentioned texts, in the case at hand also, for Nur al-Din who had made a conditional promise on the occasion of marriage and the condition of precedence was fulfilled, the obligation of fulfillment can be inferred in case of accessibility. But after encompassing the words of the Imams, deep reflection reveals that even if this obligation exists, it is religious (diyanatan); there is no legal (qaza'an) compulsion on fulfilling a promise.

(Arabic)

Except in suretyship and in Bay' al-Wafa according to one opinion, and we have mentioned the reason for both in what we annotated on Radd al-Muhtar.

(Urdu)

Only in suretyship and Bay' al-Wafa, according to one saying, fulfillment is binding, the reason for which we have mentioned in the margins of Radd al-Muhtar at both these places. (T)

1. Khulasat al-Fatawa, Chapter Five on Sale, Maktaba Habibiya Quetta, 3/52, 55
2. Al-Ashbah wa an-Nazair, Book of Prohibition and Permission, Idarat al-Quran wal-Ulum al-Islamiyya Karachi, 2/110
3. Fatawa Bazzaziya on the margins of Al-Hindiya, Book of Suretyship, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/6

फ़तावा रज़विया, खंड ग्यारहवाँ

(अरबी) **(उर्दू)**

और इक़रार 1- और इक़रार भी है। (त)

मगर यह स्पष्ट है कि यह इक़रार तकनीकी कानूनी इक़रार नहीं है,

(अरबी)

क्योंकि यह उस पर विद्यमान अधिकार की सूचना देना है, मेरे अनुसार यही शोध है, या यह एक पक्ष से सूचना है और दूसरे पक्ष से तत्काल क्रियान्वयन है जैसा कि कई लोगों ने कहा है।

(उर्दू)

क्योंकि वह पहले से मौजूद अधिकार से खबर देना है, मेरे नज़दीक यही शोधपूर्ण बात है, या एक पक्ष से खबर और एक पक्ष से पूरा करने की शुरुआत है जैसा कि बहुत से विद्वानों ने बयान किया है। (त)

बल्कि यह एक वादा है और वादे को किसी शर्त के साथ जोड़ना जायज़ है बल्कि कुछ विद्वान कहते हैं कि वादा शर्त के साथ जुड़कर अनिवार्य (वाजिब) हो जाता है, अश्बाह में है:

(अरबी)

क़ुनिया में है: उसने वादा किया कि वह उसके पास आएगा लेकिन नहीं आया, वह पापी नहीं होगा और वादा तब तक अनिवार्य नहीं होता जब तक कि वह सशर्त न हो, जैसा कि बज़ज़िया की कफ़ालत (ज़मानत) की चर्चा में और बै-अल-वफ़ा में है जैसा कि ज़ैलई ने उल्लेख किया है 2-

(उर्दू)

क़ुनिया में है एक व्यक्ति ने वादा किया कि मैं आऊँगा, तो वह नहीं आया, गुनहगार नहीं होगा, और वादा सिर्फ वही अनिवार्य होता है जो किसी शर्त से जुड़ा हो, जैसा कि बज़ज़िया की कफ़ालत की बहस में है, और बै-अल-वफ़ा भी वादे की यही किस्म है जैसा कि इमाम ज़ैलई ने ज़िक्र फ़रमाया। (त)

वजीज़ करदरी में है:

(अरबी)

वादे, सशर्तता का रूप धारण करने से, अनिवार्य हो जाते हैं 3-

(उर्दू)

जिन वादों में शर्त का ज़िक्र किया जाए वे अनिवार्य होते हैं। (त)

तो ज़ाहिर तौर पर उपरोक्त इबारतों के व्यापक अर्थ से विचाराधीन स्थिति में भी नूरुद्दीन के लिए, जिसने निकाह के समय सशर्त वादा किया था और पहले की शर्त पूरी हो गई थी, पहुँच होने की स्थिति

में वादे को पूरा करने की अनिवार्यता का निष्कर्ष निकाला जा सकता है। लेकिन इमामों के शब्दों का पूर्ण अवलोकन करने के बाद गहरी दृष्टि स्पष्ट करती है कि यह अनिवार्यता यदि है भी तो धार्मिक (दयानतन) है, अदालत (क़ज़ान) वादे को पूरा करने पर मजबूर नहीं कर सकती।

(अरबी)

सिवाय कफ़ालत (ज़मानत) में और एक कथन के अनुसार बै-अल-वफ़ा में, और हमने उन दोनों के बारे में कारण रद-उल-मुहतार पर अपनी टिप्पणी में बता दिया है।

(उर्दू)

सिर्फ कफ़ालत और बै-अल-वफ़ा में एक कथन के अनुसार वादा पूरा करना अनिवार्य है जिसकी वजह हमने इन दोनों स्थानों पर रद-उल-मुहतार के हाशिया में ज़िक्र कर दी है। (त)

1. खुलासातुल फ़तावा, पाँचवाँ अध्याय - खरीद-बिक्री में, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 3/52, 55
2. अल-अश्बाह व अन-नज़ाइर, किताबुल हज़र वल इबाहत, इदारातुल क़ुरआन वल उलूमल इस्लामिया कराची, 2/110
3. फ़तावा बज़ज़िया, अल-हिंदिया के हाशिये पर, किताबुल कफ़ालत, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 3/6

पृष्ठ 178 / 739

فتاوی رضویہ ، جلد یازدہم

والاقرار 1- اور اقرار بھی ہے۔ (ت)

مگر پر ظاہر کہ یہ اقرار مصطلح فقہی نہیں،

فانه اخبار من حق كائن عليه هذا هو التحقيق عندی او هذا اخبار من وجه وانشاء منجز من وجه كما لهج به كثيرون۔

کیونکہ وہ پہلے سے موجود حق سے خبر دینا ہے، میرے نزدیک یہی تحقیق بات ہے، یا من وجہ خبر اور من وجہ پورا کرنے کا انشاء ہے جیسا کہ بہت سے علماء نے بیان کیا ہے۔ (ت)

بلکہ وعدہ ہے اور وعدے کی تعلیق بالشرط جائز بلکہ بعض علماء فرماتے ہیں وعدہ تعلیق پاکر واجب ہو جاتا ہے، اشباہ میں ہے:

في القنية وعد ان يأتيه فلم يأته لا يأثم ولا يلزم الوعد الا اذ اكان معلقاً كما في كفالة البزازيه وبيع الوفاء كما ذكره الزيلعي 2-

قنیہ میں ہے ایک شخص نے وعدہ کیا کہ میں آؤں گا، تو وہ نہ آیا، گنہگار نہ ہوگا، اور وعدہ صرف وہی لازم ہوتا ہے جو کسی شرط سے معلق ہو، جیسا کہ بزازیہ کی کفالت کی بحث میں ہے، اور بیع الوفاء بھی وعدہ کی یہی قسم ہے جیسا کہ امام زیلعی نے ذکر فرمایا۔ (ت)

وجیز کردری میں ہے:

المواعيد باكتساء صور التعليق تكون لازمة 3-

جن وعدوں میں تعلیق ذکر کی جائے وہ لازم ہوتے ہیں۔ (ت)

تو ظاہر اطلاق عبارات مذکورہ سے صورت دائرہ میں بھی نورالدین پر جس نے وعدہ معلقہ بتقدی نکاح کیا تھا اور شرط تقدیم متحقق ہوئی بحال دسترس وجوب وفا مستفاد ہو سکتا ہے مگر بعد احاطہ کلمات ائمہ نظر غائر استظہار کرتی ہے کہ یہ وجوب ہو بھی تو دیانۃ ہے قضاء وفائے وعدہ پر جبر نہیں ۔

الا في الكفالة وفي بيع الوفاء على قول وقد ذكرنا الوجه فيهما فيما علقنا على رد المحتار۔

صرف کفالت اور بیع الوفاء میں ایک قول کے مطابق وفا لازم ہے جس کی وجہ ہم نے ان دونوں مقام پر رد المحتار کے حاشیہ میں ذکر کر دی ہے۔ (ت)

1. خلاصۃ الفتاوٰی الفصل الخامس فی البیع مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۳/۵۲،۵۵
2. الاشباہ والنظائر کتاب الحظر والاباحۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۲/۱۱۰
3. فتاوٰی بزازیہ علی ھامش ہندیہ کتاب الکفالۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۶/۳

Fatawa Razawiya, Volume 11

Imam Faqih-ul-Nafs Fakhruddin states in 'Khaniyah':

[Arabic Text]: A man rented out his house for one dirham every month and handed it over, then he sold it to someone else. The buyer used to take the house rent from this tenant, and a long time passed. The buyer had promised the seller that if he returned the price to him, he would return his house and account for what he had received from the tenant towards the price of the house. So the seller came with the dirhams and wanted to make the rent part of the price. They said: the seller does not have the right to make that part of the price, and what the buyer said to the seller was a promise, so it is not legally binding to fulfill that. If he fulfills his promise, it is good; otherwise, there is nothing against him. [Summarized]

[Urdu Translation]: A person rented out his house for one dirham per month, then he sold that house to someone else. The buyer continued to collect rent from the tenant for a period of time. The buyer had promised the seller that when you return the price of the house, I will return the house to you and will deduct the collected rent from the house's price. After some time, the seller came and returned the price of the house to the buyer and wanted to deduct the rent amount. Regarding this, the jurists said that the seller does not have the authority to count or deduct the rent amount from the price. The promise made by the buyer was just a promise, the fulfillment of which is not legally binding upon the buyer. However, if the buyer fulfills the promise on his own, it is good; otherwise, it is not legally binding on him. [Summarized (T)]

In 'Hindiyyah', citing 'Zahiriyyah', the same case from 'Khaniyah' is mentioned:

[Arabic Text]: If he fulfills his promise, it is good; otherwise, the fulfillment of promises is not binding.

[Urdu Translation]: If he fulfills his promise, it is good; otherwise, the fulfillment of promises is not binding. (T)

In 'Khairiyyah' it is:

[Arabic Text]: A question was asked about a man who had a duty (stipend-based post) which he vacated for another in exchange for compensation, and the judge appointed him due to his eligibility. The one for whom it was vacated vowed to the one who vacated it that if he returned to him the equivalent of what was paid, he would vacate it for him. So is...

[Urdu Translation]: A person was assigned a duty (stipend-based job) by a judge based on his merit. He handed over that job to someone else in exchange for compensation, and the judge also approved it. While the second person...

---

1. Fatawa Qadi Khan, Kitab al-Ijarat, Chapter on Long-term Leasing, Naval Kishore, Lucknow, 3/423.
2. Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Ijarat, Seventh Chapter, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 4/427.

फतवा रज़विया, खंड 11

इमाम फ़क़ीह-उल-नफ़्स फखरुद्दीन 'खानिया' में फरमाते हैं:

[अरबी पाठ]: एक व्यक्ति ने अपना घर प्रति माह एक दिरहम पर किराए पर दिया और उसे सौंप दिया, फिर उसने उसे किसी और को बेच दिया। खरीदार इस किरायेदार से घर का किराया लेता था, और काफी समय बीत गया। खरीदार ने विक्रेता से वादा किया था कि यदि वह उसे कीमत लौटा देता है, तो वह उसका घर वापस कर देगा और किरायेदार से जो कुछ उसे प्राप्त हुआ है उसे घर की कीमत में जोड़ देगा। अतः विक्रेता दिरहम लेकर आया और किराये को कीमत का हिस्सा बनाना चाहा। उन्होंने कहा: विक्रेता को इसे कीमत का हिस्सा बनाने का अधिकार नहीं है, और खरीदार ने विक्रेता से जो कहा वह एक वादा था, इसलिए उसे पूरा करना कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है। यदि वह अपना वादा पूरा करता है, तो यह अच्छा है; अन्यथा, उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं है। [संक्षेपित]

[उर्दू अनुवाद]: एक व्यक्ति ने अपना घर प्रति माह एक दिरहम किराये पर दिया, फिर उसने वह घर किसी और को बेच दिया और अब खरीदार एक समय तक किरायेदार से किराया वसूलता रहा। जबकि खरीदार ने विक्रेता से वादा किया था कि जब आप घर की कीमत वापस कर देंगे, तो मैं घर आपको वापस कर दूँगा और प्राप्त किराये को घर की कीमत से घटा दूँगा। अब कुछ समय बाद विक्रेता आया और खरीदार को घर की कीमत वापस कर दी और किराये की राशि घटाना चाहा। इस पर फ़ुक़्हा (विधिवेत्ताओं) ने फरमाया कि विक्रेता को किराये की राशि को कीमत में गिनने या घटाने का अधिकार नहीं है। खरीदार ने जो वादा किया था वह केवल एक वादा था, जिसका पालन करना खरीदार पर कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है। हाँ, यदि खरीदार स्वयं अपना वादा पूरा कर दे तो बेहतर है, अन्यथा उस पर कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है। [संक्षेपित (त)]

'हिन्दिया' में 'ज़हीरिया' के हवाले से 'खानिया' का यही मामला इस प्रकार है:

[अरबी पाठ]: यदि वह अपना वादा पूरा कर दे तो बेहतर है, अन्यथा वादों को पूरा करना अनिवार्य नहीं है।

[उर्दू अनुवाद]: अगर वह वादा पूरा कर दे तो बेहतर है वरना वादों की वफ़ा लाज़िम नहीं है। (त)

'खैरिया' में है:

[अरबी पाठ]: एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सवाल पूछा गया जिसका एक पद (वज़ीफ़ा) था जिसे उसने मुआवजे के बदले दूसरे के लिए खाली कर दिया, और काज़ी ने उसकी योग्यता के कारण उसे नियुक्त कर दिया। जिसके लिए पद खाली किया गया था उसने खाली करने वाले से यह वादा किया कि यदि वह उसे भुगतान की गई राशि के बराबर राशि लौटा देता है, तो वह उसके लिए पद खाली कर देगा। तो क्या...

[उर्दू अनुवाद]: एक व्यक्ति को काज़ी ने उसकी योग्यता के आधार पर वज़ीफ़ा (पद) निर्धारित करके एक काम सौंपा। उसने मुआवज़े के बदले वह काम किसी दूसरे को सौंप दिया और काज़ी ने भी उसे स्वीकार कर लिया। जबकि दूसरे...

---

1. फतवा काज़ी ख़ान, किताब अल-इजारत, लंबी अवधि के किराये पर अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 3/423.
2. फतवा हिन्दिया, किताब अल-इजारत, सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 4/427.

पृष्ठ 179/739

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

امام فقیہ النفس فخر الدین خانیہ میں فرماتے ہیں:

رجل اجر داره كل شهر بدرهم وسلم ثم باعها من غيره وكان المشترى ياخذ اجرة الدار من هذا المستأجر ومضى على ذلك زمان وكان المشترى وعد البائع انه اذارد عليه الثمن يرد داره ويحتسب ما قبض من المستأجر من ثمن الدار فجاء البائع بالدراهم واراد ان يجعل الاجر محسوبا من الثمن قالوا ليس للبائع ان يجعل ذلك من الثمن وما قال المشترى للبائع كان وعداً فلا يلزم الوفاء بذلك حكماً فان نجز وعده كان حسناً والا فلا شئ عليه اه ملخصاً۔

ایک شخص نے اپنا مکان ہر ماہ فی درہم کرایہ پر دیا پھر اس نے وہ مکان اس کے غیر کو فروخت کردیا اور اب کرایہ دار سے یہ مشتری کرایہ ایک زمانہ تک وصول کرتا رہا جبکہ مشتری نے بائع سے یہ وعدہ کر رکھا تھا کہ جب آپ مکان کی قیمت واپس کردیں گے تو میں مکان واپس آپ کو دے دوں گا اور قیمت میں سے وصول شدہ کرایہ آپ کو منہا کر دوں گا، اب ایک مدت بعد بائع نے آکر مشتری کو مکان کی قیمت واپس کردی اور اس نے کرایہ کی رقم میں منہا کرنا چاہی تو اس پر فقہا کرام نے فرمایا کہ بائع کو کرایہ کی رقم قیمت میں شمار کرنے منہا کرنے کا اختیار نہیں، اور مشتری نے جو یہ وعدہ کیا تھا وہ وعدہ تھا جس کی وفا مشتری پر لازم نہیں ہے ، ہاں اگر مشتری اپنے طور پر وعدہ کو پورا کردے تو بہتر ہے ورنہ اس پر حکماً لازم نہیں ہے اھ ملخصاً (ت)

ہندیہ میں ظہیر یہ سے اسی صورت خانیہ میں ہے:

ان انجز وعده كان حسناً والا فلا يلزمه الوفاء بالمواعيد۔

اگر وہ وعدہ پورا کردے تو بہتر ہے ورنہ وعدوں کی وفا لازم نہیں ہے۔ (ت)

خیریہ میں ہے:

سئل في رجل له وظيفة فرغ منها لاخر بعوض وقرره القاضى لاهليته ونذر المفروغ له للفارغ اذارد اليه نظير المدفوع يفرغ له فهل

ایک شخص کو قاضی نے اس کی اہلیت کی بناء پر وظیفہ مقرر کرکے ایک کام سپرد کیا تو اس نے ایک معاوضہ کے بدلے وہ کام آگے ایک دوسرے کے سپرد کر دیا اور قاضی نے بھی اس کو منظور کرلیا جبکہ دوسرے

---

1 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الاجارات فصل فی الاجارة الطويلة نولكشور لكهنو ۳/ ۴۲۳ 2 فتاویٰ ہندیہ کتاب الاجارة الباب السابع نورانی کتب خانہ پشاور ۴/ ۴۲۷

Volume 11

Fatawa Ridawiyyah

It is not legally binding to fulfill. He replied: Fulfillment is not required for what was vowed, as a vow's fulfillment is only necessary under certain conditions, which are absent here. Even if we assume its conditions were met, a judge does not rule against the vower to fulfill it, as they (jurists) have all explicitly stated. Summarized, so understand and do not hasten.

A person had made a pact that if the first appointed person returns to me what was received from me, I will step down from this work in their favor. In answer to the question whether it is religiously necessary for this second person to adhere to their pact, it was said: Fulfilling a pact is not mandatory because fulfillment of a pact is not obligatory without certain conditions which are missing here; hence, a judge will not rule for the mandatory fulfillment of the pact by the person who made it. (T)

In Qurrat al-Uyun it says:

My master and father (may Allah Almighty have mercy on him) said: Fulfilling a promise is not legally binding.[2]

My master and father said that legally, fulfillment of a promise is not mandatory. (T)

Similarly, it is in other books, and the complete investigation of the matter is according to what Allah Almighty has shown us in our aforementioned commentary. (And the complete investigation of the issue by the grace of Allah is in our mentioned footnote. T). In any case, there is no room for a judicial obligation here, so Aminah has no right to demand it forcefully, nor can the ruler forcibly grant the house. In *Khairiyyah* it is:

This is if it was mentioned by way of being part of the dower (Mahr), but if it was mentioned as a promise, then it is not binding at all, unless the husband donates it voluntarily.[3]

This is when the husband has declared it as part of the mahr; if it was mentioned as a promise, it is not mandatory at all, though if given as a gift, it is correct. (T)

Yes, if it is known that it was also part of the dower and the contracting parties considered it during the contract, then the ruling is as mentioned above: if he gives the house, the remaining named mahr remains mandatory as before; otherwise, the "Mahr-e-Mithl" (equivalent mahr) which should not be less than the named amount,

as we have previously quoted from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) (as we have from Imam Muhammad...)

---

[1] *Fatawa Khairiyyah*, Kitab al-Waqf, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/157-158. [2] *Qurrat al-Uyun*, Kitab al-Aariyah, Dar al-Kutub al-Arabiyyah al-Kubra Egypt, 2/300. [3] *Fatawa Khairiyyah*, Kitab al-Nikah, Bab al-Mahr, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/30.

जिल्द ग्यारहवीं

फ़तावा रिज़विया

इसे पूरा करना शरीयत के अनुसार अनिवार्य नहीं है। उन्होंने उत्तर दिया: जो मन्नत मानी गई उसे पूरा करना अनिवार्य नहीं है, क्योंकि मन्नत को पूरा करना कुछ शर्तों के अधीन है जो यहाँ नहीं पाई जातीं। और यदि हम यह मान भी लें कि इसकी शर्तें पूरी थीं, तो भी काज़ी मन्नत मानने वाले के विरुद्ध उसे पूरा करने का निर्णय नहीं देता, जैसा कि सभी (फ़ुक़हा) ने स्पष्ट रूप से कहा है। संक्षिप्त, अतः समझें और जल्दबाजी न करें।

एक व्यक्ति ने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि पहला निर्धारित व्यक्ति मुझसे प्राप्त की गई राशि के बराबर मुझे वापस कर दे, तो मैं उसके पक्ष में इस काम से पीछे हट जाऊँगा। इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या इस दूसरे व्यक्ति के लिए अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना शरीयत के अनुसार आवश्यक है, उत्तर दिया गया कि प्रतिज्ञा को पूरा करना अनिवार्य नहीं है क्योंकि प्रतिज्ञा का पालन कुछ शर्तों के बिना अनिवार्य नहीं होता जो यहाँ गायब हैं; अतः काज़ी प्रतिज्ञा करने वाले व्यक्ति पर प्रतिज्ञा पूर्ति की अनिवार्यता का फैसला नहीं सुनाएगा। (त)

'कुर्रतुल उयून' में है:

मेरे आका और पिता (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने कहा: वादे को पूरा करना शरीयत के अनुसार अनिवार्य नहीं है।[2]

मेरे आका और पिता साहब ने फ़रमाया कि शरीयत के अनुसार वादे को पूरा करना अनिवार्य नहीं है। (त)

इसी प्रकार अन्य पुस्तकों में भी है, और मसले की पूर्ण जाँच अल्लाह तआला के मार्गदर्शन के अनुसार हमारे उपर्युक्त हाशिये (कमेंटरी) में है। (और अल्लाह की तौफीक से मसले की पूरी तहकीकात हमारे उक्त हाशिये में है। त)। बहरहाल यहाँ न्यायिक अनिवार्यता (इजाबे क़ज़ा) की कोई गुंजाइश नहीं है, इसलिए न तो अमीना इस पर ज़बरदस्ती मांग कर सकती है और न ही हाकिम (शासक) ज़बरदस्ती मकान दिला सकता है। 'खैरिया' में है:

यह तब है जब इसे महर के तौर पर ज़िक्र किया गया हो, और यदि इसे वादे के रूप में ज़िक्र किया

यह तब है जब पति ने इसे महर में शामिल करार दिया हो, और अगर वादे के तौर पर

गया हो तो यह पूरी तरह से अनिवार्य नहीं है, जब तक कि पति स्वेच्छा से इसे दान न कर दे।[3]

ज़िक्र हो तो बिल्कुल अनिवार्य नहीं है, हाँ अगर उपहार के तौर पर दे दे तो सही है। (त)

हाँ, अगर पता चले कि वह भी महर का ही हिस्सा था और निकाह करने वालों की नज़र निकाह के समय इसकी ओर थी, तो हुक्म वही है जो ऊपर गुज़रा कि अगर मकान देगा तो बाकी तयशुदा महर (महरे मुसम्मा) भी पहले की तरह लाज़िम रहेगा वरना महरे मिस्ल (बराबर का महर) जो इस तयशुदा राशि से कम न हो, जैसा कि हमने इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के हवाले से पहले बयान किया है (जैसा कि इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से हमने...

---

१ फ़तावा खैरिया, किताबुल वक़्फ़, दारुल मारिफ़ा बेरूत, १/१५७-१५८ २ कुर्रतुल उयून, किताबुल आरिया, दारुल कुतुबुल अरबीयतुल कुबरा मिस्र, २/३०० ३ फ़तावा खैरिया, किताबुल निकाह, बाबुल महर, दारुल मारिफ़ा बेरूत, १/३०

पृष्ठ १८० का ७३९

جلد یازدہم

فتاویٰ رضویہ

لا یلزم الوفاء به شرعاً اجاب لا یلزم الوفاء بما نذر اذ النذر لا یلزم الوفاء به الا بشروط و هي متخلفة فی هذا ولو فرضنا اجتماع شرائطه فالقاضی لا یقضی به علی الناذر کما صرحوا به قاطبة ۱ اه ملخصاً فافهم ولا تعجل۔

شخص نے یہ عہد کیا تھا کہ اگر پہلے مقررہ شخص مجھ سے وصول کردہ کے برابر مجھے واپس کر دے تو میں اس کے حق میں اس کام سے دستبردار ہو جاؤں گا۔ اس سوال کے جواب میں کہ اس دوسرے شخص پر اپنے عہد کی پابندی ضروری شرعاً ہے تو جواب میں فرمایا کہ عہد کی وفا لازم نہیں ہے کیونکہ عہد کی وفا چند شرطوں کے بغیر لازم نہیں جو یہاں مفقود ہیں، چنانچہ قاضی عہد کرنے والے شخص پر ایفائے عہد کے لزوم کا فیصلہ نہیں کرے گا۔ (ت)

قرۃ العیون میں ہے:

قال سیدي الوالد رحمه الله تعالی لا یلزم الوفاء بالوعد شرعاً ۲

میرے آقا والد صاحب نے فرمایا کہ شرعاً وعدہ کی وفا لازم نہیں ہے۔ (ت)

اسی طرح اور کتب میں ہے و تمام تحقیق المسألۃ حسب مارا نا اللہ تعالٰی فی تعلیقنا المذکور (اور مسئلہ کی پوری تحقیق بتوفیق الٰہی ہمارے مذکورہ حاشیہ میں ہے۔ ت) بہر حال یہاں ایجاب قضاء کی گنجائش نہیں تو نہ امینہ کو اس پر مطالبہ جبری پہنچتا ہے نہ حاکم جبراً مکان دلا سکتا ہے، خیر یہ میں ہے:

هذا اذا ذکر علی سبیل انه من المهر وان یہ تب ہے جب خاوند نے اس کو مہر میں سے قرار دیا ہو،

ذکر علی سبیل العدة فهو غیر لازم اور اگر وعدہ کے طور پر ذکر ہو تو بالکل لازم نہیں ہاں

بالکلیة الا ان یتبرع الزوج ۳ - اگر بطور عطیہ دے دے تو درست ہے۔ (ت)

ہاں اگر معلوم ہو کہ وہ بھی علی جثۃ المہر مشروط اور عاقدین کو عقد میں اس کی طرف لحاظ تھا تو حکم وہی ہے جو اوپر گزرا کہ اگر مکان دے گا تو باقی مہر مسمیٰ بھی بدستور لازم ورنہ مہر مثل کہ اس مقدار مسمیٰ سے کم نہ ہو کما اسلفنا عن الامام محمد رحمه الله تعالٰی (جیسا کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے ہم نے

---

1 فتاویٰ خیر یہ کتاب الوقف دار المعرفۃ بیروت ۱/۱۵۸-۱۵۷ 2 قرۃ العیون کتاب العاریۃ دار الکتب العربیہ الکبری مصر ۲/۳۰۰ 3 فتاویٰ خیر یہ کتاب النکاح باب المهر دار المعرفۃ بیروت ۱/۳۰

Fatawa Rizvia, Volume 11

...has been narrated before. (T) And Allah Almighty knows best.

Question 11: 23 Rabi al-Akhir 1311 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Mst. Hindah was willing to marry Zaid. An oppressor forced her, without Hindah's consent and without the consent of the guardians, to enter into a contract with Amr by fixing a fictional dower. At the time of the proposal and acceptance, Mst. Hindah was lamenting, crying out, and protesting her refusal. Considering her protests, lamentations, and cries as consent, they had the groom perform the proposal and acceptance, announced the marriage, and distributed sweets. Is such a marriage valid or invalid in the view of righteous scholars? If it is valid or invalid, please write down the evidence along with verses and hadiths. Clarify and be rewarded.

The Answer: In the situation asked, if Hindah was a minor, her refusal or consent meant nothing; permission had to be taken from her guardian. If she was an adult, although at the time of seeking permission, her refusal—or rather, according to the correct school of thought, even crying with voice and lamentation—is sufficient to reject the seeking of permission, but the one performing this much marriage did not have valid agency. In any case, this marriage was 'fuzuli' (unauthorized), meaning in the case of Hindah's adulthood, it depended on her or her guardian's permission due to her. If after the marriage, when the news reaches her, it is rejected, it will be void; if permission is given, it will become valid.

(Arabic Text) **(Urdu Translation)**

In *Radd al-Muhtar*, it is narrated from *al-Dhakhirah* that some said: if the girl's crying is in the form of screaming and shouting, then it is a refusal, otherwise it is consent, and this is the preferred view and the fatwa is on it. The complete discussion is in *Radd al-Muhtar*. And in *Durr al-Mukhtar*: if permission was sought for a girl to marry a specific person and she refused, then later she was married to that same person and she remained silent, the marriage will be valid according to the most correct opinion. And Allah Almighty knows best.

(T)

Question 12: From Pilibhit, Mohalla Bashir Khan, near the house of Madina Shah, sent by Nizamuddin, 29 Ramadan 1311 AH. What do the scholars of religion say in this matter, that is marriage valid with acceptance or something else? And the Qazi's...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Guardians, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/299.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardians, Matba Mujtabai, Delhi, 1/192.

...पहले नक़ल कर दिया गया है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 11: 23 रबी उल आख़िर 1311 हिजरी दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मुसम्मात हिंदा, ज़ैद से रज़ामंद थी और एक ज़ालिम ने हिंदा की रज़ामंदी के बिना और वलियों की रज़ामंदी के बग़ैर अम्र से फ़र्ज़ी महर मुक़र्रर करके ईजाब-ओ-क़ुबूल कराया और ईजाब के वक़्त मुसम्मात हिंदा आह-ओ-ज़ारी और फ़रियाद-ओ-वावैला करके इंकार कर रही थी। मुसम्मात के इस इंकार, आह-ओ-ज़ारी और शोर-ओ-वावैला को इज़्न (अनुमति) क़रार देकर दूल्हे से ईजाब-ओ-क़ुबूल करा के निकाह मशहूर कर दिया और शीरीनी तक़सीम कर दी। क्या ऐसा निकाह हक़्क़ानी उलमा के नज़दीक जाइज़ है या नाजाइज़? अगर जाइज़ या नाजाइज़ हो तो आयात और हदीस के साथ दलीलें तहरीर फ़रमाएं। बयान फ़रमाएं सवाब पायें।

अल-जवाब: पूछी गई सूरत में अगर हिंदा नाबलिग़ थी, तो उसका इंकार या इक़रार कोई चीज़ न था, उसके वली (संरक्षक) से इजाज़त लेनी थी। और अगर वह बालिग़ थी, तो अगरचे इजाज़त लेते वक़्त उसका इंकार, बल्कि सही मज़हब पर सिर्फ़ आवाज़ और फ़रियाद के साथ रोना ही इज़्न (अनुमति) मांगने के रद्द के लिए काफ़ी है, मगर इस निकाह को अंजाम देने वाले की वकालत सही न हुई। बहरहाल यह निकाह 'फ़ुज़ूली' हुआ कि हिंदा के बालिग़ होने की सूरत में, ख़ुद उसकी वजह से उसके वली की इजाज़त पर मौक़ूफ़ रहा। अगर निकाह के बाद जब ख़बर पहुँचे और रद्द किया जाए तो रद्द हो जाएगा और अगर इजाज़त दी जाए तो जाइज़ हो जाएगा।

(अरबी पाठ) **(उर्दू अनुवाद)**

'रद्द उल मुहतार' में 'अज़-ज़ख़ीरा' से नक़ल है कि कुछ ने कहा है कि अगर लड़की का रोना चीख़-पुकार के तौर पर हो तो यह निकाह से इंकार होगा, वरना वह रज़ा (सहमति) है और यही दुरुस्त है और इसी पर फ़तवा है। मुकम्मल बहस 'रद्द उल मुहतार' में है। और 'दुर्रे मुख़्तार' में है: अगर लड़की से किसी ख़ास शख़्स के साथ निकाह की इजाज़त माँगी गई और उसने इंकार कर दिया, फिर उसके बाद उसी शख़्स से उसका निकाह कर दिया गया और लड़की खामोश रही, तो सबसे सही क़ौल के मुताबिक़ निकाह सही होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(त)

मसला 12: पीलीभीत, मोहल्ला बशीर ख़ाँ, मदीना शाह के घर के पास से मुर्सला निज़ामुद्दीन, 29 रमज़ान 1311 हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि निकाह क़ुबूलियत से जाइज़ है या कोई और बात? और क़ाज़ी का...

---

1. रद्द उल मुहतार, बाब अल-वली, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/299।
2. दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/192।

पृष्ठ 181/739

پہلے نقل کر دیا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۱: ۲۳ ربیع الآخر ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ رضا مند زید کو تھی اور جابر نے جبر کیا بلا رضامندی ہندہ اور بغیر رضامندی ولیوں کے عمرو سے فرضی مہر مقرر کرکے ایجاب و قبول کرایا اور وقت ایجاب کے مسماۃ آہ و زاری اور فریاد واویلا انکار کرتی تھی ، مسماۃ کے اس انکار آہ و زاری شور واویلا کو اذن قرار دے کر دولہا سے ایجاب قبول کرا کے نکاح مشہور کر کے شیرینی تقسیم کر دی، ایسا نکاح نزدیک علمائے حقانی جائز ہے یا ناجائز؟ اگر نا جائز ہو یا جائز ہو تو ادلہ مع آیات اور حدیث کے تحریر فرمائیے، بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں اگر ہندہ نابالغہ تھی جب تو اس کا انکار اقرار کوئی چیز نہ تھا اس کے ولی سے اجازت لینی تھی اور اگر بالغہ تھی تو اگر چہ اذن لیتے وقت اس کا انکار بلکہ صحیح مذہب پر صرف آواز اور فریاد سے رونا ہی ردِ استیذان کے لئے کافی ہو مگر اس کا حامل اس قدر نکاح کرنے والے کی وکالت صحیح نہ ہوئی، بہرحال یہ نکاح فضولی ہوا کہ در صورتِ بلوغ ہندہ خود اس کی وجہ سے اس کے ولی کی اجازت پر موقوف رہا، اگر بعدِ نکاح جب خبر نکاح پہنچے رد کیا جائے گا رد ہو جائے گا اور اجازت دی جائیگی تو جائز ہو جائے گا۔

| فی ردالمحتار عن الذخیرۃ بعضھم قالو ان کان مع الصیاح والصوت فھو رد والافھو رضی وھو الاوجہ وعلیہ الفتوی اھ تمامہ فیہ فی الدرالمختار لواستأذنھا فی معین فردت ثم زوجھا منہ فسکتت صح فی الاصح واللہ تعالٰی اعلم۔ | ردالمحتار میں ذخیرہ سے منقول ہے کہ بعض نے کہا ہے کہ اگر لڑکی کا رونا چیخ و پکار کے طور پر ہو تو یہ نکاح سے انکار ہوگا ورنہ وہ رضا ہے اور یہی

درست ہے اور اسی پر فتوی ہے اھ، اور پوری بحث ردالمختار میں ہے، اور در مختار میں ہے کہ اگر لڑکی سے معین شخص کے ساتھ نکاح کی اجازت طلب کی تو لڑکی نے انکار کردیا۔ اس کے بعد پھر اس کا نکاح اسی شخص سے کیا اور لڑکی خاموش رہی تو نکاح صحیح ہوگا اصح قول میں واللہ تعالٰی اعلم |

(ت)

مسئلہ ۱۲: از پیلی بھیت محلہ بشیر خاں متصل مکان مدینہ شاہ مرسلہ نظام الدین ۲۹ رمضان ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نکاح قبولیت سے جائز ہے یا کوئی اور بات؟ اور قاضی کا

۱۔ ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۹ ۲۔ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲

Volume 11 Fatawa Razawiyya

Is it necessary or not? Please explain, may you be rewarded.

The Answer: For marriage (Nikah), only the proposal (Ijab) and acceptance (Qabul) from the man and woman are required. Additionally, it is necessary for two men or one man and two women to hear and understand in that same session that a marriage is taking place. Only this much is required; there is no need for a Qazi (judge) etc. beyond this.

[Arabic Text]: In al-Durr al-Mukhtar: Marriage is contracted by proposal and acceptance, with the condition of the presence of two free male witnesses, or one free male and two free female witnesses who are sane, adult, and heard both of them [the parties] together according to the most correct view, understanding that it is a marriage according to the school of thought [Madhhab]. Al-Bahr. (Summarized), And Allah Almighty knows best.

[Urdu Explanation]: It is stated in Durr al-Mukhtar that if a proposal and acceptance between a boy and a girl is heard in a single session in the presence of two men or one man and two women, who are sane, adult, and free, the marriage will be valid provided the witnesses understood it to be a marriage. This is the school of thought. Bahr, summarized. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 13: From Madras, Mohalla Chak Mandi, Maseet-e-Makkah, sent by Maulana Abdul Razzaq Sahib, Imam of the Mosque. 1st Muharram al-Haram 1312 AH.

What do the scholars of the manifest religion and the jurists of the firm Shariah (may Allah increase their numbers) say about this? A person named 'Amr invited his community for an engagement party and brought those items which are nowadays given from the groom's side, like a saree, a bodice (angiya), jewelry etc. The community members asked the guardian (Wali) why we were called. He replied that Mr. Abdullah has given his girl named Hindah to my son named Zaid. But since I intended for this matter to be established publicly before witnesses, I have troubled you. Similarly, the guardian of the minor girl was asked, "Did you give your daughter Hindah to Zaid?" He said, "Yes, I have given her, and that is the reason for troubling you." In such a situation, was the marriage of the minor boy and minor girl contracted or not? And as mentioned in Durr al-Mukhtar, Book of Marriage:

[Arabic Text]: And likewise 'I am married to you' and 'I have come to you as a suitor' because bargaining does not take place in marriage. 2

[Urdu Explanation]: And similarly, "I marry you" and "I have come to bring you a message of marriage" because marriage is not about haggling over price. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Delhi, 1/86-185. 2 Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Delhi, 1/86-185.

जिल्द 11 फ़तावा रज़विया

होना ज़रूरी है या नहीं? बयान फ़रमाएं सवाब पाएं।

जवाब: निकाह के लिए फ़क़त मर्द और औरत का ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) चाहिए और दो मर्द या एक मर्द और दो औरतों का उसी जलसे में ईजाब-ओ-क़ुबूल को सुनना और समझना कि यह निकाह हो रहा है, बस इसी क़दर दरकार (आवश्यक) है, इस से ज़्यादा क़ाज़ी वग़ैरह की हाजत (ज़रूरत) नहीं।

[अरबी इबारत]: 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: निकाह ईजाब और क़ुबूल से मुनअक़िद होता है, इस शर्त के साथ कि दो आज़ाद मर्द गवाह या एक आज़ाद मर्द और दो आज़ाद औरतें मौजूद हों जो अक़्लमंद, बालिग हों और उन्होंने एक ही मजलिस में दोनों के क़ौल (प्रस्ताव और स्वीकृति) को सबसे सही राय के मुताबिक़ साथ सुना हो, और वे समझते हों कि यह मज़हब के अनुसार निकाह है। अल-बह्र। (संक्षेप में), और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू तशरीह]: दुर्र-ए-मुख्तार में है कि दो मर्दों या एक मर्द और दो औरतों की मौजूदगी में जो कि आक़िल, बालिग और आज़ाद हों और उन्होंने लड़केलड़की का ईजाब-ओ-क़ुबूल एक मजलिस में सुना हो तो निकाह हो जाएगा बशर्ते कि उन गवाहों ने इस को निकाह समझा हो, मज़हब यही है। बह्र, संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 13: मद्रास, मोहल्ला चक मंडी, मसीत-ए-मक्का से, मुरसला मौलवी अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहब, इमाम मस्जिद। 1 मुहर्रम अल-हराम 1312 हिजरी।

दीन-ए-मुबीन के उलमा और शरीयत-ए-मतीन के मुफ़्तियान (अल्लाह उनकी तादाद बढ़ाए) क्या फ़रमाते हैं? एक शख़्स 'अम्र' ने अपनी बिरादरी को सगाई की दावत दी और वे सामान जो आजकल दूल्हे की तरफ़ से दिए जाते हैं, मसलन साड़ी, अंगिया, ज़ेवर वग़ैरह पेश किए। बिरादरी वालों ने वली (अभिभावक) से पूछा कि हमें बुलाने की क्या वजह थी? तो उसने जवाब दिया कि अब्दुल्लाह साहब ने अपनी लड़की मुसम्मात 'हिंदाह' मेरे लड़के मुसम्मात 'ज़ैद' को दे दी है। लेकिन चूँकि मेरा मक़सद यह था कि यह बात गवाहों के सामने पुख़्ता हो जाए, इसलिए मैंने आप को ज़हमत दी। इसी तरह नाबालिग लड़की के वली से दरयाफ़्त किया गया कि क्या तुमने अपनी लड़की मुसम्मात 'हिंदाह' 'ज़ैद' को दे दी है? उसने कहा, "हाँ, मैंने दे दी है और आपकी तकलीफ़-दही की यही वजह है।" ऐसी सूरत

में नाबालिग लड़के और नाबालिग लड़की का निकाह मुनअक़िद हुआ या नहीं? और जो दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुन निकाह में दर्ज है:

[अरबी इबारत]: और इसी तरह 'मैंने तुझसे निकाह किया' और 'मैं तेरे पास निकाह का पैग़ाम लेकर आया हूँ' क्योंकि निकाह में मोल-भाव नहीं होता। 2

[उर्दू तशरीह]: और यूँ ही कि "तुझसे निकाह करता हूँ" और "मैं तुझे निकाह का पैग़ाम देने आया हूँ" क्योंकि निकाह भाव चुकाना (सौदाबाज़ी) नहीं होता। (त)

1 दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुन निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/86-185. 2 दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुन निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/86-185.

पृष्ठ 182 का 739

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

ہو نا ضروری ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب نکاح کے لیے فقط مرد و عورت کا ایجاب و قبول چاہئے اور دو مرد یا ایک مرد دو عورتوں کا اسی جلسہ میں ایجاب و قبول کو سننا اور سمجھنا کہ یہ نکاح ہو رہا ہے، بس اسی قدر درکار ہے، اس سے زیادہ قاضی وغیرہ کی حاجت نہیں۔

في الدرالمختار ینعقد بایجاب وقبول وشرط حضور شاھدین حرین ا وحر وحرتین مکلفین سامعین قولھما معاً علی الاصح فاھمین انه نکاح علی المذھب بحر ۱ اه ملخصاً، واللہ تعالیٰ اعلم۔ در مختار میں ہے کہ دو مردوں یا ایک مرد دو عورتوں کی موجودگی میں جو کہ عاقل بالغ اور حر ہوں اور انھوں نے لڑکے لڑکی کا ایجاب و قبول ایک مجلس میں سنا ہو تو نکاح ہو جائیگا بشر طیکہ ان گواہوں نے اس کو نکاح سمجھا ہو ، مذہب یہی ہے ، بحر ، اھ ملخصاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۳: از مدراس محلہ چک منڈی مسیت مکہ مرسلہ مولوی عبدالرزاق صاحب امام مسجد غرہ محرم الحرام ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مبین و مفتیانِ شرع متین کثر ھم اللہ تعالیٰ، ایک شخص عمرو نے اپنی برادری کو دعوت منگنی کی دے دی اور وہ اسباب جو فی زمانہ مادر ولہا کی جانب سے دئے جاتے ہیں، مثلاً ساڑھی اور انگیا اور زیور وغیرہ حاضر کیا، اہل برادری نے ولی سے باز پرس کی کہ ہم طلبی کی کیا وجہ تھی، تو اس نے جواب دیا کہ عبداللہ صاحب نے اپنی لڑکی مسمیٰ بہ ہندہ میرے لڑکے مسمیٰ بہ زید کو دے دی ہے لیکن چونکہ مجھے یہ مقصود تھا کہ یہ بات علی رؤس الاشہاد متحقق ہو جائے لہٰذا میں نے آپ کو تکلیف دی ہے علی ہذا القیاس ولی صغیرہ سے دریافت کیا گیا کیا تم نے اپنی لڑکی مسمیٰ بہ ہندہ زید کو دی ہے۔؟ اس نے کہا ہاں میں

نے دی ہے اور آپ کی تکلیف دہی کی یہی وجہ ہے، تو ایسی صورت میں نکاح صغیر و صغیرہ منعقد ہوا یا نہیں؟ اور جو در مختار کتاب النکاح میں مذکور ہے:

وکذا انا متزوجك وجئتك خاطباً لعدم جریان المساومة في النکاح 2۔ اور یوں ہی کہ تجھ سے نکاح کرتا ہوں اور میں تجھے نکاح کا پیغام دینے آیا ہوں کیونکہ نکاح بھاؤ چکانا نہیں ہوتا۔(ت)

۱ درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱/۸۶-۱۸۵ ۲ درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱/۸۶-۱۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 11

Question: Can a marriage engagement be formed from this quoted text? If so, that is the intention; otherwise, what does this text mean?

Answer: From a review of the scholars' pronouncements, it is clear that the words mentioned in the question are not sufficient for the solemnization of marriage at all. The statements of both Umar and Abdullah are explicitly reports (akhbar), as in our language, the past tense form coupled with specific words is meant to inform about a fact that has already occurred, not to initiate or create something that has not yet happened. Furthermore, Umar's statement is not an initial remark; it is a response to the community's inquiry about the reason for their summons. It is evident that the answer to such an inquiry would be a report, not a creative offer (insha-e-ijab). Likewise, the context of Abdullah's statement—stating "yes, I have given [her], and this is the reason for your trouble"—clearly reinforces the same meaning of reporting and explaining the reason for the gathering, as is not hidden from those who understand the nuances of speech (T). There is no doubt that reporting the occurrence of a marriage is entirely distinct from and ineffective for the creation of a contract. If judged by appearances, then according to the rectifications of the majority of Imams and the preferred opinions, reporting is not the creation of a contract...

Arabic Text

As we have verified this by the grace of Allah Almighty in our treatise "Abab al-Anwar in la nikaha bi-mujarrad al-iqrar" from our fatwas; and here we shall limit ourselves to referring to some fatwa statements, descending to the first method. (T)

In Jawahir al-Akhlati:

Acknowledgement of marriage in the presence of witnesses is not solemnized according to the preferred view. Some said it is solemnized, but the first view is correct and the fatwa is based on it.

Urdu Translation

As we have verified this by the grace of Allah Almighty in our treatise "Abab al-Anwar in la nikaha bi-mujarrad al-iqrar" from our fatwas; and here we shall limit ourselves to referring to some fatwa statements, descending to the first method. (T)

If a man and woman acknowledge [the marriage] in the presence of witnesses, it is not solemnized according to the preferred view. Some said it is solemnized, but the first view is correct and the fatwa is based on it. (T)

Arabic Text	Urdu Translation
In Islah wa Idah:	
Marriage is establishment (ithbat), while this is declaration (izhar). And declaration is...	Acknowledgment is the name for declaration (izhar), whereas marriage is the name for establishment (ithbat).

[1] Jawahir al-Akhlati, Kitab al-Nikah, Manuscript, p. 48.

फ़तवा रज़विया खंड 11

प्रश्न: क्या इस उद्धृत कथन से सगाई या निकाह हो सकता है? यदि हो सकता है तो यही उद्देश्य है; अन्यथा इस कथन का क्या अर्थ है?

उत्तर: विद्वानों के कथनों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट है कि प्रश्न में वर्णित शब्द निकाह के होने के लिए बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं हैं। उमर और अब्दुल्ला दोनों के कथन स्पष्ट रूप से समाचार (अखबार) हैं, क्योंकि हमारी भाषा में शब्दों के साथ भूतकाल का रूप किसी घटित हो चुकी घटना की सूचना देने के लिए होता है, न कि किसी ऐसी चीज़ को शुरू करने या बनाने के लिए जो अभी तक नहीं हुई है। इसके अलावा, उमर का कथन कोई प्रारंभिक बात नहीं है; यह बिरादरी के लोगों द्वारा बुलावे का कारण पूछे जाने पर दिया गया उत्तर है। यह स्पष्ट है कि इस तरह के सवाल का जवाब एक सूचना होगी, न कि निकाह का प्रस्ताव (इन्शा-ए-ईजाब)। इसी प्रकार अब्दुल्ला के कथन का संदर्भ भी—कि "हाँ, दे दी है, और आपके कष्ट का यही कारण है"—स्पष्ट रूप से सूचना देने और एकत्र होने का कारण बताने के उसी अर्थ पर बल दे रहा है, जैसा कि भाषा की शैलियों को जानने वालों से छिपा नहीं है। (त) और इसमें कोई संदेह नहीं है कि निकाह होने की सूचना देना, निकाह का अनुबंध करने से बिल्कुल अलग और अप्रभावी है। यदि ज़ाहिरी तौर पर कहा जाए, तो अधिकांश इमामों के सुधारों और चुनिंदा रायों के अनुसार, सूचना देना अनुबंध करना नहीं है...

अरबी पाठ

जैसा कि हमने अल्लाह तआला की तौफीक से अपने रिसाले "अबाबुल अनवार इन्ना ला निकाहा बिमुजर्रदिल इकरार" में इसे सिद्ध किया है, और यहाँ हम केवल फतवे के कुछ कथनों की ओर संकेत करेंगे, पहले तरीके पर। (त)

उर्दू अनुवाद

जैसा कि हमने अल्लाह तआला की तौफीक से अपने रिसाले "अबाबुल अनवार इन्ना ला निकाहा बिमुजर्रदिल इकरार" में इसे सिद्ध किया है, और यहाँ हम केवल फतवे के कुछ कथनों की ओर संकेत करेंगे, पहले तरीके पर। (त)

जवाहरुल अख्लाती में है:

गवाहों की उपस्थिति में निकाह का इकरार करने से निकाह नहीं होता, यही मुख्तार (पसंदीदा) राय है। और कहा गया कि हो जाता है, लेकिन पहला सही है और फतवा उसी पर है।

यदि गवाहों की उपस्थिति में पुरुष और महिला ने इकरार किया, तो पसंदीदा राय के अनुसार निकाह नहीं होगा। कुछ ने कहा कि हो जाएगा,

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
	लेकिन पहला क़ौल सही है और फतवा उसी पर है। (त)

इस्लाह व ईज़ाह में है:

निकाह इत्बात (स्थापित करना) है और यह इज़हार (प्रकट करना) है, और इज़हार...	इकरार इज़हार का नाम है, जबकि निकाह इत्बात का नाम है।

[1] जवाहरुल अख्लाती, किताबुन निकाह, हस्तलिखित प्रति, पृष्ठ 48.

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

آیا اس عبارت منقولہ سے منگنی نکاح ہو سکتی ہے؟ اگر ہو سکتی ہے تو فھو المراد والا اس عبارت کا کیا مطلب؟

الجواب: ارشاداتِ علمائے کرام میں نظر سے واضح کہ کلماتِ مذکورہ فی السوال انعقادِ نکاح کے لیے اصلاً کافی نہیں، عمر و عبداللہ دونوں کے کلام صراحۃً اخبار ہیں کہ ہماری زبان میں صیغہ ماضی مقرون بلفظ ہے خاص امر واقع شدہ سے خبر دینے کے لیے ہے نہ امر غیر واقع کے انشاء و ایجاد کو، پھر کلامِ عمرو سخنِ ابتدائی نہیں، اہل برادری کے اس باز پرس کا جواب ہے کہ ہماری طلبی کی کیا وجہ تھی، پُر ظاہر کہ اس سوال کا جواب اخبار ہو گا۔ نہ کہ انشائے ایجاب یوں ہی کلام عبداللہ کا سیاق بھی کہ ہاں دی ہے، اور آپ کی تکلیف دہی کی یہی وجہ ہے صاف صاف اسی معنی اخبار و بیانِ وجہِ جمع کی تاکید کر رہا ہے کما لا یخفی علی العارف با سالیب الکلام (جیسا کہ کلام کے اسلوب کو سمجھنے والے پر مخفی نہیں۔ت) اور شک نہیں کہ وقوعِ نکاح سے خبر دینا انشائے عقد سے بالکل مبائن و غیر موثر ہے، اگر بنظرِ ظاہر کہئے تو حسبِ تصحیحاتِ جمہور ائمہ و اختیارات خبر دینا انشائے مذہب مندیل باگد الفاظ اور نظر وثیق لیجئے تو امثال مقام میں بالاجماع بلانزاع،

عربی عبارت	اردو ترجمہ
كما حققنا ذلك بتوفيق الله تعالى في رسالتنا "عباب الانوار ان لانكاح بمجرد الاقرار" من	جیسا کہ ہم نے اس کو اللہ تعالیٰ کی توفیق سے اپنے رسالہ "عباب الانوار ان لانکاح بمجرد الاقرار" میں محقق کیا ہے اور یہاں ہم صرف فتوٰی کی بعض

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فتاؤنا و لنقتصر ھھنا علی الاشارۃ الی بعض عبارات الافتاء تنزلاً الی الطریقۃ الاولی۔ (ت)	عبارات کی طرف اشارہ کرینگے، پہلے طریقہ پر۔ (ت)

جواہر الاخلاطی میں ہے:

اقرا بالنکاح بین یدی الشھود لا ینعقد ھو المختار وقیل ینعقد والاول ھو الصحیح وعلیہ الفتوی 1۔	مرد و عورت نے گواہوں کی موجودگی میں اقرار کیا تو اس سے مختار قول کے مطابق نکاح منعقد نہ ہوگا، اور بعض نے کہا کہ ہو جائے گا۔ لیکن پہلا قول صحیح اور اسی پر فتوی ہے۔ (ت)

اصلاح وایضاح میں ہے:

النکاح اثبات وھذا اظھار والاظھار	اقرار اظہار کا نام ہے جبکہ نکاح اثبات کا نام ہے

[1] جواہر الاخلاطی کتاب النکاح قلمی نسخہ ص ۴۸

Fatawa Ridawiyya Volume 11

(Arabic): Mentioning it and establishing it are different. It was mentioned in Al-Takhyir, and it is said in Mukhtarat al-Nawazil that this is the chosen view.[1]

(Urdu): And expression (izhar) and establishment (isbat) are two different things; it has been mentioned in 'Takhyir', and in 'Mukhtarat al-Nawazil' it is said that this is the chosen one. (T)

It is in Hindiyya: 'The correct view is that it will not be a marriage, just as it is in Al-Zahiriyya.'[2] (The correct view is that marriage will not take place, just as mentioned in Zahiriyya. - T) It is in Wajeez al-Kardari: 'It is not concluded according to the chosen correct view.'[3] (According to the chosen and correct opinion, marriage will not be concluded. - T) Moreover, terms like 'giving', 'granting', or 'gifting' (hiba) are not explicit (sarih) terms for marriage; they are metaphorical (kinaya) and can imply both a contract ('aqd) and a promise (wa'da). Even upon engagement, it is commonly said in prevailing custom that 'so-and-so gave his daughter to so-and-so.' Therefore, scholars explicitly state that if these words are spoken with the intention of a proposal (khitba), they will be considered a proposal; if they occur during a gathering for a contract, they will be considered a promise. It is in Durr al-Mukhtar:

(Arabic): The words 'Tazwij' and 'Nikah' are explicit, and everything else is a metaphor. It includes every word formulated for the transfer of ownership of a complete essence in the present, like gift (hiba), transfer of ownership (tamlik), charity (sadaqah), and grant ('atiyyah), on the condition of intention or circumstantial evidence, and the witnesses' understanding of the purpose.[4] (Extracted summary)

(Urdu): In marriage, the words "Tazwij" and "Nikah" are explicit. All others besides these are metaphors (Kinaya), and for metaphors, those words are used which are for the transfer of ownership of some complete thing at that time, for example, the words Hiba, Sadaqah, Atiyyah, and Tamlik, when used with the intention of marriage or there is circumstantial evidence for it and from this, the witnesses can also understand the purpose. (End of excerpt summarized) (T)

It is in Khaniyya:

(Arabic): When he said to the father of the girl, 'Gift your daughter to me,' and he replied, 'I have gifted her,' then the first person said, 'I have accepted.'
They (the jurists) said: if this statement from the suitor was by way of proposal, and from the father also by way of acceptance [of the proposal] and not by way of a contract...

(Urdu): When a boy said to a girl's father, "Did you gift your daughter to me?" The father replied in response, "I have gifted." After that, the first person said, "I have accepted." The noble jurists stated that if the suitor and the father said the aforementioned...

---

1. Correction and Clarification.
2. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/271.
3. Fatawa Bazzaziyya on the margin of Hindiyya, Kitab al-Nikah, Nurani Kutub Khana Peshawar, 4/109.
4. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Delhi, 1/186.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

(अरबी): इसे उल्लेख करना और साबित करना अलग है। इसे तख़य्यिर में उल्लेख किया गया है, और मुख़्तारातुल नवाज़िल में कहा गया है कि यही पसंदीदा है।[1]

(उर्दू): और इज़हार (प्रकटीकरण) व इसबात (पुष्टि) दो अलग-अलग चीज़ें हैं, इसे 'तख़य्यिर' में ज़िक्र किया गया है, और 'मुख़्तारातुल नवाज़िल' में कहा गया है कि यही मुख़्तार (चुना हुआ) है। (त)

हिंदिया में है: 'सही यही है कि निकाह नहीं होगा जैसा कि ज़हीरिया में है।'[2] (सही यही है कि निकाह नहीं होगा जैसा कि ज़हीरिया में है, - त) वजीज़ करदरी में है: 'मुख़्तार और सही क़ौल के मुताबिक़ निकाह मुनअक़िद (संपन्न) न होगा।'[3] (मुख़्तार और सही क़ौल के मुताबिक़ निकाह संपन्न नहीं होगा - त) इसके अलावा देना, अता, हिबा, ये शब्द स्वयं निकाह में सरीह (स्पष्ट) नहीं हैं बल्कि किनाया (सांकेतिक) हैं और अक़्द (अनुबंध) व वादा दोनों की संभावना रखते हैं। मंगनी होने पर भी आम बोलचाल में कहा जाता है कि 'फलां ने अपनी बेटी फलां को दी'। लिहाज़ा, उलेमा स्पष्ट करते हैं कि यदि ये शब्द खुतबा (प्रस्ताव) की नीयत से कहे जाएं तो खुतबा ही ठहरेंगे; यदि मजलिस-ए-अक़्द में हों तो वादा ही माने जाएंगे। दुर्रे मुख़्तार में है:

(अरबी): निकाह में लफ़्ज़ 'तज़वीज' और 'निकाह' सरीह (स्पष्ट) हैं और इनके अलावा बाकी सब किनाया (सांकेतिक) हैं। और किनाया के लिए वे तमाम शब्द हैं जो उस समय किसी पूर्ण चीज़ के स्वामित्व (तमलीक) के लिए हों, जैसे हिबा, सदक़ा, अता और तमलीक के शब्द जब निकाह की नीयत से इस्तेमाल हों या इस पर कोई संकेत मौजूद हो और इससे गवाह भी मक़सद को समझ सकें।[4] (संक्षिप्त संकलन)

(उर्दू): निकाह में लफ़्ज़ "तज़वीज" और "निकाह" सरीह हैं। इनके अलावा बाक़ी सब किनाया हैं, और किनाया के लिए वे तमाम अल्फ़ाज़ हैं जो बरवक़्त किसी कामिल चीज़ की तमलीक के लिए हों, मसलन हिबा, सदक़ा, अतिया और तमलीक के अल्फ़ाज़ जब निकाह की नीयत से इस्तेमाल हों या इस पर क़रीना (संकेत) मौजूद हो और इस से गवाह भी मक़सद को समझ सकें। (त)

ख़ानिया में है:

(अरबी): जब किसी ने लड़की के पिता से कहा, 'अपनी बेटी मुझे हिबा (उपहार) कर दें,' और उसने उत्तर दिया, 'मैंने हिबा कर दी,' फिर पहले व्यक्ति ने कहा, 'मैंने स्वीकार किया।' उन्होंने (फ़क़ीहों ने) कहा: यदि सुपुर्दगी करने वाले का यह कथन प्रस्ताव के तौर पर था, और पिता की ओर से भी उत्तर के तौर पर था न कि अनुबंध के तौर पर...	**(उर्दू): जब एक लड़के ने लड़की के बाप को कहा कि आप ने अपनी लड़की मुझे हिबा की तो बाप ने जवाब में कहा कि मैंने हिबा की, इस के बाद पहले ने कहा मैं ने क़बूल की, फ़ुक़हा-ए-किराम ने फ़रमाया अगर मंगनी करने वाले और बाप ने मज़कूरा...**

---

1. सुधार और स्पष्टीकरण।
2. फ़तावा हिंदिया किताबुन निकाह नूरानी कुतुब खाना पेशावर 271/1.
3. फ़तावा बज़ाज़िया ब-हाशिया हिंदिया किताबुन निकाह नूरानी कुतुब खाना पेशावर 109/4.
4. दुर्रे मुख़्तार किताबुन निकाह मुज्तबाई दिल्ली 186/1.

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

غیر الاثبات ذکرہ فی التخییر وقال فی مختارات النوازل ہو المختار[1]۔

اور اظہار و اثبات دو مختلف چیزیں ہیں، اس کو تخییر میں ذکر کیا ہے، اور مختارات النوازل میں کہا کہ یہی مختار ہے۔ (ت)

ہندیہ میں ہے: الصحیح انہ لایکون نکاحاً کذا فی الظھیریہ[2] (صحیح یہی ہے کہ نکاح نہ ہوگا جیسا کہ ظہیریہ میں ہے،ت) وجیز کردری میں ہے: لاینعقد فی المختار الصحیح[3] (مختار اور صحیح قول کے مطابق نکاح منعقد نہ ہوگا۔ ت) علاوہ بریں دینا، عطا، ہبہ، یہ الفاظ خود ہی نکاح میں صریح نہیں کنایہ ہیں اور عقد و وعد دونوں کو محتمل، منگنی ہونے پر بھی عرف شائع میں کہا جاتا ہے کہ فلاں نے اپنی بیٹی فلاں کو دی، ولہذا علماء تصریح فرماتے ہیں کہ یہ الفاظ بہ نیت خطبہ کہے جائیں تو خطبہ ہی ٹھہرے گا مجلس وعقد میں صادر ہوں تو وعدہ ہی قرار پائے گا۔ در مختار میں ہے:

لفظ تزویج ونکاح صریح و ماعداہما کنایۃ و ھو کل لفظ وضع لتملیک عین کاملۃ فی الحال کھبۃ و تملیک و صدقۃ و عطیۃ بشرط نیۃ او قرینۃ وفھم الشھود المقصود[4] اھ ملتقطاً۔

نکاح میں لفظ "تزویج" اور "نکاح" صریح ہیں۔ ان کے علاوہ باقی سب کنایہ ہیں، اور کنایہ کے لئے وہ تمام الفاظ ہیں جو بوقت کسی کامل چیز کی تملیک کے لیے ہوں، مثلاً ہبہ، صدقہ، عطیہ اور تملیک کے الفاظ جب نکاح کی نیت سے استعمال ہوں یا اس پر قرینہ موجود ہو اور اس سے گواہ بھی مقصد کو سمجھ سکیں اھ ملتقطا (ت)

خانیہ میں ہے:

اذا قال لاب البنت وهبت ابنتک منی فقال وهبت فقال قبلت قالوا ان کان هذا القول من الخاطب علی وجه الخطبة ومن الاب ایضا علی وجه الاجابة لا علی وجه العقد

جب ایک لڑکے نے لڑکی کے باپ کو کہا کہ آپ نے اپنی لڑکی مجھے ہبہ کی تو باپ نے جواب میں کہا کہ میں نے ہبہ کی، اس کے بعد پہلے نے کہا میں نے قبول کی، فقہاء کرام نے فرمایا اگر منگنی کرنے والے اور باپ نے مذکورہ

---

1 اصلاح وایضاح 2 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۲۷۱/۱ 3 فتاویٰ بزازیہ علی ہامش ہندیہ کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۱۰۹/۴ 4 در مختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱۸۶/۱

Fatawa Rizvia Volume 11

[Arabic: لم یکن نکاحاً اھ ملخصاً] [Urdu: If words were used as a proposal (mangni) and its answer, and the intention was not the contract of marriage, then marriage will not occur. Abridged (T)]

In Sharh Tahawi, then Mujtaba, then the collection of Allama Anqaravi and Waqi'at of Allama Qadri Effendi, etc., it is stated:

[Arabic: قال له ھل اعطیتنیھا فقال اعطیت فان کان المجلس للوعد فوعد وان کان لعقد النکاح فنکاح] [Urdu: Someone said to a girl's father, "Did you give me the girl?" The father said, "I gave." If it was in a marriage gathering, it will be a marriage, and if it was an engagement gathering, it will be an engagement. (T)]

It is evident from the question that this gathering was for an engagement only, and no clear indication was found to specify these words for initiating a contract. Therefore, it will be considered an engagement, not a marriage. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

Answer to the second question: Marriage is a contract and engagement is a promise of a contract, and the difference between promise and contract is self-evident. So, to consider engagement as marriage is fundamentally invalid and summarily wrong. The distinction between contract and promise by scholars has just passed; citing their clear texts is self-evident reasoning. The non-occurrence of marriage from "coming as a suitor" is not because it is a marriage sermon (khutba), but because the mentioned words themselves are settled as words of contract, provided the intention and context are established. As you have learned that other than the words 'Tazwij' and 'Nikah', the rest are metaphors (kinayah) which require intention and context. Therefore, scholars include them among the words of offer (ijab). In Wajeez al-Kardari, it is stated:

[Arabic: کتاب النکاح تسعة عشر فصلا الاول في الآلة کل لفظ یفید ملك الرقبة انعقد به کقوله بعت و تزوجت و انکحت و ملکتك ووھبت وتصدقت وجئتك خاطبا وجعلت نفسی لك] [Urdu: In the Book of Marriage, there are nineteen sections. The first is about instruments: every word that is useful for ownership of the essence, marriage will be contracted by it. Like: I sold, I did marriage, I made you owner, I gifted, I gave charity, I have come to take the proposal, I gave my self to you. (T)]

In Khulasah and Khizanat al-Muftin, it is stated:

[Arabic: ينعقد بقول تزوجت و انكحت و ملكتك] [Urdu: Marriage is contracted with these words: I have [contracted] marriage...]

1. Fatawa Qazi Khan, Book of Marriage, Chapter 1, Naval Kishore, Lucknow, 1/150
2. Fatawa Anqaraviyyah, Book of Marriage, Dar al-Isha'at al-Arabiyyah, Kandahar, Afghanistan, 1/33
3. Fatawa Bazzaziyyah on the margin of Fatawa Hindiyyah, Book of Marriage, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 4/108

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

[अरबी: لم یکن نکاحاً اھ ملخصاً] [उर्दू: यदि शब्द मंगनी (सगाई) और उसके जवाब के रूप में उपयोग किए गए हों और निकाह का इरादा न हो, तो निकाह नहीं होगा। संक्षिप्त (T)]

शरह तहावी, फिर मुजतबा, फिर अल्लामा अनक़रवी के संग्रह और अल्लामा क़दरी अफ़ंदी के वाक़ियात आदि में है:

[अरबी: قال له هل اعطيتنيها فقال اعطيت فان كان المجلس للوعد فوعد وان كان لعقد النكاح فنكاح] [उर्दू: किसी ने लड़की के पिता से कहा, "क्या तूने मुझे लड़की दी?" पिता ने कहा, "दी," तो निकाह की सभा में निकाह और मंगनी की सभा हो तो मंगनी होगी। (T)]

सवाल से ज़ाहिर है कि यह सभा मंगनी की ही थी और कोई स्पष्ट संकेत ऐसा नहीं पाया गया जो इन शब्दों को निकाह के अनुबंध के लिए निर्धारित करे, तो इस तरह भी यह मंगनी ही ठहरेगी, निकाह नहीं। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

दूसरे सवाल का जवाब: निकाह एक अनुबंध (contract) है और मंगनी अनुबंध का वादा है, और वादे और अनुबंध के बीच का अंतर स्पष्ट है। तो मंगनी को निकाह मानना बुनियादी तौर पर बातिल (अमान्य) और सारासर गलत है। अभी विद्वानों के शब्दों से अनुबंध और वादे का अंतर गुज़रा है; उनके स्पष्ट ग्रंथों का उल्लेख स्वयं में एक प्रमाण है। "रिश्ता लेने आना" से निकाह न होना इस वजह से नहीं है कि वह निकाह का खुतबा है, बल्कि इसलिए कि उल्लेखित शब्द स्वयं अनुबंध के शब्द ही करार पाए हैं, यानी जब नियत और संकेत सिद्ध हो जाएं। जैसा कि आपने जान लिया कि 'तज़्वीज' और 'निकाह' के शब्दों के अलावा बाकी सब किनाया (अप्रत्यक्ष शब्द) हैं जो नियत और संकेत के मोहताज हैं। इसलिए विद्वान उन्हें ईजाब (प्रस्ताव) के शब्दों के साथ शुमार करते हैं। वजीज़ करदरी में है:

[अरबी: كتاب النكاح تسعة عشر فصلا الاول في الآلة كل لفظ يفيد ملك الرقبة انعقد به كقوله بعت و تزوجت و انكحت و ملكتك ووهبت وتصدقت وجئتك خاطبا وجعلت نفسى لك] [उर्दू: निकाह की किताब में उन्नीस हिस्से हैं, पहली आल्हा में वे हर शब्द जो मलकीयत के लिए उपयोगी हों, उससे निकाह संपन्न होगा, जैसे मैंने बेचा, निकाह कर दिया, तुझे मालिक बनाया, हिबा किया, सदक़ा किया, मैं रिश्ता लेने आया हूँ, मैंने अपना नफ़्स तुझे दिया। (T)]

खुलासा और खिज़ानतुल मुफ़्तीन में है:

[अरबी: ينعقد بقول تزوجت و انكحت و ملكتك] [उर्दू: निकाह संपन्न हो जाता है इन शब्दों से: मैंने निकाह...]

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, निकाह की किताब, पहला अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/150
2. फ़तावा अनक़रविया, निकाह की किताब, दारुल इशाअतुल अरबिया, कंधार, अफ़गानिस्तान, 1/33
3. फ़तावा बज़ज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, निकाह की किताब, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 4/108

पृष्ठ 185 का 739

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

[عربی: لم یکن نکاحاً اھ ملخصاً] [اردو: الفاظ منگنی اور اس کے جواب کے طور پر استعمال کئے اور عقد نکاح مقصود نہ ہو تو نکاح نہ ہوگا اھ ملخصاً (ت)]

شرح طحاوی پھر مجتبی پھر مجموعہ علامہ انقروی و واقعات علامہ قدری افندی و غیر ہا میں ہے :

[عربی: قال لہ ھل اعطیتنیھا فقال اعطیت فان کان المجلس للوعد فوعد وان کان لعقد النکاح فنکاح 2-] [اردو: کسی نے لڑکی کے باپ کو کہا تو نے مجھے لڑکی دی، تو باپ نے کہا دی، تو مجلس نکاح میں نکاح اور منگنی کی مجلس ہو تو منگنی ہوگی۔ (ت)]

سوال سے ظاہر کہ یہ مجلس منگنی ہی کی تھی اور کوئی قرینہ واضحہ ایسانہ پایا گیا جو ان الفاظ کو انشائے عقد کے لیے متعین کرے تو یوں بھی منگنی ہی ٹھہرے گی نہ نکاح، واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

جواب سوال دوم : نکاح عقد ہے اور منگنی وعد عقد و وعد کا تباین بدیہی، تو منگنی کو نکاح ٹھہرانا بدایۃً باطل اور اجمالاً غلط، ابھی کلمات علماء سے عقد و وعد کا تفرقہ گزرا، اس کے نصوص کے نقل بد یہی پر استدلال ہے جھٹک خاطبا سے انعقاد نکاح نہ اس وجہ سے ہے کہ خطبہ عقد ہو بلکہ الفاظ مذکورہ خود الفاظ عقد ہی قرار پائے ہیں یعنی جبکہ نیت و قرینہ متحقق ہو لما علمت ان ماعدا التزویج والنکاح کنایۃ تفتقر الیھما (جیسا کہ آپ نے معلوم کرلیا کہ تزویج اور نکاح کے الفاظ کے علاوہ باقی کنایہ ہیں جو کہ نیت اور قرینہ کے محتاج ہیں۔ ت) و لہذا علماء انھیں الفاظ ایجاب کے ساتھ شمار فرماتے ہیں، وجیز کردری میں ہے :

[عربی: كتاب النكاح تسعة عشر فصلا الاول في الآلة كل لفظ يفيد ملك الرقبة انعقد به كقوله بعت و تزوجت و انكحت و ملكتك ووهبت وتصدقت وجئتك خاطبا وجعلت نفسی لك 3.] [اردو: كتاب النكاح میں انیس بخشیں ہیں، پہلی آلہ میں وہ ہر لفظ جو رقبہ کی ملکیت کے لیے مفید ہو اس سے نکاح منعقد ہوگا، جیسے میں نے فروخت کیا، نکاح کردیا، تجھے مالک بنایا، ہبہ کیا۔ صدقہ کیا، میں رشتہ لینے آیا ہوں، میں نے اپنا نفس تجھے دیا۔ (ت)]

خلاصہ و خزانۃ المفتین میں ہے :

[عربی: ينعقد بقول تزوجت و انكحت و ملكتك] [اردو: نکاح منعقد ہو جاتا ہے ان الفاظ سے : میں نے نکاح...]

1 فتاوی قاضی خاں کتاب النکاح الفصل الاول نولکشور لکھنؤ ۱۵۰/۱ 2 فتاوی انقرویہ کتاب النکاح دارالاشاعۃ العربیۃ قندھار افغانستان ۳۳/۱ 3 فتاوی بزازیہ علی ہامش فتاوی ہندیہ کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۱۰۸/۴

Fatawa Razawiya, Volume Eleven

“And I gave, and I gave charity, and I came to you as a suitor, and I made myself yours, and I sold.” 1 - [Meaning: I have given, made you the owner, gifted, given charity, I have come to seek a marriage proposal, I have given myself to you, sold.] (T)

3 I say: And with Allah is success. The jurisprudence in this is that “I came to you as a suitor” (I have come to seek a proposal. -T) is not information from some introductory sermon, but rather the creation of a request and marriage, and the creation of a request is the very attainment of the matter, so “I came to you as a suitor” is in the sense of “marry me.” Therefore, in Bazzaziyya, both were given the same ruling.

“Where he said a man came and said, ‘Marry me to your daughter’ or ‘I came to you as a suitor’ or ‘I came to you so you may marry me to your daughter,’ and he (the father) said, ‘I have married her to you,’ then the marriage is established and binding, and the suitor has no right not to accept.” 2 - As they mentioned that a man came and said, ‘Marry your daughter to me’ or ‘I have come to you seeking a proposal’ or ‘I have come so that you may marry your daughter to me,’ then the father said, ‘I have married her,’ then with these words, the marriage will become mandatory, now there is no room for the one seeking the proposal not to accept. (T)

And the word “marry me” is among the words that effect a contract.

“Whether as appointing a proxy or as an offer, according to the difference of two opinions, and the first 5- is more apparent to me as we explained in what we annotated on the margin of Radd al-Muhtar.” So similarly, “I came to you as a suitor.” Whether it is by appointing a proxy or as an offer according to the difference between the two opinions, and the first, meaning appointing a proxy, is more apparent to me, as we have explained it in the marginal notes of Radd al-Muhtar, so in the same way, I have come to you for a proposal. (T)

In short, the word “khutba” (sermon/proposal) with an explanatory genitive, after the verification of intention and the presence of context, is among the words of the contract, not the words of “khutba” with a lam-based genitive, meaning those words which are legally considered a sermon, not those words which are explicitly informative and far from the meaning of “insha” (creation of a contract), as is not hidden from a person of understanding (as is not hidden from people of sense. -T). As for the lack of negotiation in marriage, 3 I say: And with Allah is success. Its origin itself is that customarily marriage...

Note: See it along with what I mention in 12 from it. (M)

1 Khulasa al-Fatawa, Book of Marriage, Maktaba Habibiya, Kansi Road, Quetta, 2/2 2 Fatawa Bazzaziyya on the margin of Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 3/111

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

"और मैंने दिया, मैंने दान दिया, मैं आपके पास एक प्रस्तावक के रूप में आया, मैंने खुद को आपका बना दिया, और मैंने बेच दिया।" 1- [अर्थ: मैंने दे दिया, आपको मालिक बना दिया, उपहार दिया, दान दिया, मैं विवाह प्रस्ताव मांगने आया हूँ, मैंने अपना आप आपको दे दिया, बेच दिया।] (त)

3 मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से। इसमें फ़िक़्ह (धर्मशास्त्र) यह है कि "मैं प्रस्तावक बनकर आया हूँ" (मैं रिश्ता लेने आया हूँ। -त) किसी परिचयात्मक उपदेश (ख़ुतबा) की सूचना नहीं है, बल्कि एक अनुरोध और विवाह की रचना है, और अनुरोध की रचना ही मामले की प्राप्ति है, इसलिए "मैं प्रस्तावक बनकर आया हूँ" का अर्थ है "मुझसे शादी करो"। इसलिए, बज़ाज़िया में दोनों के लिए एक ही नियम रखा गया है।

"जहाँ उन्होंने कहा कि एक आदमी आया और कहा, 'अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दो' या 'मैं प्रस्तावक बनकर आया हूँ' या 'मैं आपके पास आया हूँ ताकि आप अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें,' और उसने (पिता ने) कहा, 'मैंने उसकी शादी आपसे कर दी,' तो विवाह स्थापित और अनिवार्य हो जाता है, और प्रस्तावक को अस्वीकार करने का कोई अधिकार नहीं है।" 2- जैसा कि उन्होंने उल्लेख किया है कि एक आदमी आया और उसने कहा, 'अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर दो' या 'मैं आपके पास रिश्ता मांगने आया हूँ' या 'मैं इसलिए आया हूँ कि आप अपनी बेटी का निकाह मुझसे कर दें,' तो पिता ने कहा, 'मैंने निकाह कर दिया,' तो इन शब्दों से निकाह अनिवार्य हो जाएगा, अब रिश्ता मांगने वाले के पास स्वीकार न करने की कोई गुंजाइश नहीं है। (त)

और "ज़ौजनी" (मुझसे निकाह कर दो) शब्द अनुबंध (निकाह) के प्रभावी शब्दों में से है।

"चाहे वकील नियुक्त करने के रूप में या प्रस्ताव (ईजाब) के रूप में, दो मतों के मतभेद के अनुसार, और पहला 5- मेरे लिए अधिक स्पष्ट है जैसा कि हमने रद अल-मुह्तार के हाशिए पर जो लिखा है उसमें स्पष्ट किया है।" तो इसी तरह "मैं प्रस्तावक बनकर आया हूँ"। चाहे वह दो मतों के मतभेद के अनुसार वकील बनाने के तौर पर हो या ईजाब (प्रस्ताव) के तौर पर, और पहला यानी वकील बनाना मेरे नज़दीक अधिक ज़ाहिर (स्पष्ट) है, जैसा कि हमने रद अल-मुह्तार के हाशिए पर बयान किया है, तो उसी तरह, मैं आपके पास रिश्ता लेने आया हूँ। (त)

संक्षेप में, ख़ुतबा शब्द, इरादे के सत्यापन और संदर्भ की उपस्थिति के बाद, अनुबंध (निकाह) के शब्दों में से है, न कि 'लामी' संबंध वाले ख़ुतबा के शब्दों में से, यानी वे शब्द जो कानूनी रूप से ख़ुतबा

माने जाते हैं, न कि वे शब्द जो स्पष्ट रूप से जानकारीपूर्ण हों और अनुबंध रचना (इंशा) के अर्थ से बहुत दूर हों, जैसा कि समझदार व्यक्ति से छिपा नहीं है (जैसा कि समझदार लोगों पर छिपा नहीं है। -त)। जहाँ तक निकाह में सौदेबाजी (मुसावमत) के न होने का सवाल है, 3 मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से। इसका मूल कारण यही है कि आमतौर पर निकाह...

नोट: इसे उसके साथ देखें जो मैं इसके12वें भाग में उल्लेख करूँगा। (म)

1 खुलासा अल-फ़तावा, किताबुन निकाह, मकतबा हबीबिया, कांसी रोड, क्वेटा, 2/2 2 फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिए पर, किताबुन निकाह, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 3/111

पेज 186/739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

و وھبت وتصدقت وجئتك خاطباً وجعلت نفسي لك وبعت 1- کر دیا، تجھے مالک بنا دیا، ہبہ کیا، صدقہ کیا، میں رشتہ لینے آیا ہوں، میں نے اپنا نفس تجھے دیا، فروخت کیا۔ (ت)

3 اقول: وباللہ التوفیق فقہ اس میں یہ ہے کہ جئتك خاطبا (میں رشتہ لینے آیا ہوں ۔ت) کسی خطبہ مقدمہ سے اخبار نہیں بلکہ انشائے طلب وتزویج ہے اور انشائے طلب عین حاصل امر، تو جئتك خاطبا بمعنی زوجنی ہے۔ و لہذا بزازیہ میں ان دونوں کا ایک حکم رکھا۔

حیث قال جاء رجل فقال زوجنی بنتك ا وجئتك خاطبا وجئتك تزوجنی بنتك فقال زوجتك فالنکاح واقع لازم ولیس للخاطب ان لایقبل 2- جیسا کہ انھوں نے ذکر کیا کہ ایک آدمی نے آ کر کہا کہ تواپنی بیٹی مجھے نکاح کردے یا میں آپ کے پاس رشتہ لینے آیا ہوں، یا، میں اس لیے آیا ہوں کہ آپ مجھے اپنی بیٹی بیاہ دیں، تو باپ نے کہا میں نے بیاہ دی، تو ان الفاظ سے لازمی نکاح ہوجائے گا، اب رشتہ طلب کرنے والے کو قبول نہ کرنے کی کوئی گنجائش نہیں۔ (ت)

اور "زوجنی" الفاظ مفید عقد سے ہے

توکیلا او ایجابا علی اختلاف قولین والاولی ٥- اظھر عندی کما بیناہ فیما علقناہ علی ھامش ردالمحتار تو اسی طرح جئتك خاطباً۔ وکیل بناتے ہوئے یا ایجاب کے طور پر دونوں اقوال کے اختلاف پر، اور پہلا یعنی وکیل بناتے ہوئے میرے نزدیک اظہر ہے، جیسا کہ ہم نے اس کو ردالمحتار کے حاشیہ پر بیان کیا ہے تو اسی طرح، میں تیرے پاس رشتہ لینے آیا ہوں۔ (ت)

بالجملہ لفظ خطبہ باضافت بیانیہ بعد تحقق نیت و قیام قرینہ الفاظ عقد سے ہے نہ الفاظ خطبہ باضافت لامیہ یعنی وہ الفاظ کہ شرعا خطبہ قرار پائیں نہ کہ وہ الفاظ کہ صراحتہ اخبار ہوں اور معنی انشاء

سے منزلوں دور کما لایخفی علی ذي شعور (جیسا کہ اہل شعور پر مخفی نہیں‌ت) رہا نکاح میں عدم جریان مساومت 3 اقول: وباللہ التوفیق اس کا منشاء خود یہی ہے کہ عادۃ نکاح

عـہ: انظرہ مع ما اذکرہ 12 منہ (م)

1 خلاصۃ الفتاوی کتاب النکاح مکتبہ حبیبیہ کانسی روڈ کوئٹہ ۲/۲ 2 فتاوی بزازیہ علی ہامش فتاوی ہندیہ کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۳/۱۱۱

Fatawa Razawiya, Volume 11

Engagement and other preliminaries occur beforehand. After these, the words spoken in the marriage assembly cannot be interpreted as negotiation (bargaining), unlike in a sale where such preliminaries do not exist, nor is there a specific assembly indicating the intent of the contract. In Fath al-Qadir, then al-Bahr al-Ra'iq, and then in Radd al-Muhtar, it is stated:

[Table Row 1] Arabic: Marriage does not involve negotiation (bargaining) because it does not occur except after preliminaries and consultations; thus it is for confirmation, unlike a sale. Urdu: Marriage does not involve bargaining because it occurs after several preliminaries and back-and-forth communication. Thus, metaphorical words at this stage are for the realization of the marriage. This is contrary to a sale. (T)

The verification of the matter is that if the meaning of the mentioned statement in the question is that such words, after the establishment of an indication of intent—such as a marriage gathering after a sermon and the reading of the sermon, etc.—will be directed towards the contract due to apparent evidence, rather than towards negotiation (as there is no room for negotiation here), then it is undoubtedly correct. And this is the intended meaning.

[Table Row 2] Arabic: Do you not see that the discussion is regarding metaphorical speech, and it (marriage) is not contracted by it except when there is a surrounding indication (context), as you have known. Urdu: You are seeing that this discussion is regarding metaphorical language, and marriage will not be contracted through them without context, as you have already learned. (T)

However, based on this, not every engagement or the mentioned words of 'Amr and Abdullah can be considered a marriage, as we have explained (T). If the meaning is taken to be that whatever words are exchanged between the suitor and the one being sued will inevitably constitute a marriage, even if they potentially mean negotiation, request, or promise and lack a specific indication of intent for the contract, then this is purely false. This is never the intention of the scholars. Scholars clearly state that the possibility of negotiation and seeking (meaning the possibility of it being a request and a promise in that situation) prevents the contraction of marriage. From Khizanat al-Muftin, referring to the Fatawa of Imam Zahir al-Din al-Marghinani:

[Table Row 3] Arabic: If someone said in Persian, "Did you give your daughter to me?" and he replied, "I gave (dadam)," the marriage is not contracted because this is an inquiry and a request for a promise. Thus, he does not become a proxy unless he intended the realization [of marriage] rather than a mere request/promise. Urdu: If one said in Persian, "You gave your daughter to me," and the other replied "dadam" (I gave), the marriage would not be realized without intent, because these words are actually for acquiring information and taking a promise, hence the other will not become a proxy. (T)

In al-Hindiyyah, from al-Muhit, it is stated:

---

1. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/264.
2. Khizanat al-Muftin, Book of Marriage, Manuscript (Unpublished), 1/7.

सगाई और अन्य प्रारंभिक प्रक्रियाएं पहले ही हो चुकी होती हैं। इनके बाद विवाह सभा के शब्दों को मोल-भाव (मसावमत) पर नहीं लिया जा सकता, इसके विपरीत खरीद-बिक्री में ऐसा कोई पूर्वगामी मामला नहीं होता, न ही उसके लिए कोई ऐसी सभा होती है जो अनुबंध के इरादे का संकेत दे। फ़तह अल-क़दीर, फिर अल-बह्र अल-रईक़, और फिर रद्द अल-मुह्तार में है:

[तालिका पंक्ति 1] अरबी: निकाह में मोल-भाव नहीं होता क्योंकि यह प्रारंभिक चरणों और परामर्श के बाद ही होता है; इसलिए यह पुष्टि के लिए है, बिक्री के विपरीत। उर्दू: निकाह में मोल-भाव नहीं होता क्योंकि निकाह कई प्रारंभिक चरणों और बातचीत के बाद होता है, तो इस अवसर पर सांकेतिक शब्द निकाह की पुष्टि के लिए होते हैं। खरीद-बिक्री के विपरीत। (त)

मामले का शोध यह है कि यदि प्रश्न में उल्लेखित कथन का अर्थ यह है कि इस तरह के शब्द, इरादे के संकेत के स्थापित होने के बाद (जैसे उपदेश और उपदेश पढ़ने के बाद विवाह सभा आदि), स्पष्ट साक्ष्य के आधार पर अनुबंध (निकाह) की ओर माने जाएंगे, न कि मोल-भाव की ओर—क्योंकि यहाँ मोल-भाव की कोई गुंजाइश नहीं है—तो यह निस्संदेह सही है। और यही अर्थ अभिप्रेत है।

[तालिका पंक्ति 2] अरबी: क्या आप नहीं देखते कि चर्चा सांकेतिक भाषा (किनाया) के बारे में है, और इसके द्वारा अनुबंध तब तक नहीं होता जब तक कि कोई संकेत (करीना) मौजूद न हो, जैसा कि आप जान चुके हैं। उर्दू: आप देख रहे हैं कि यह चर्चा सांकेतिक शब्दों (किनाया) के बारे में है और उनके द्वारा निकाह तब तक नहीं होता जब तक कि कोई संकेत मौजूद न हो, जैसा कि आप जान चुके हैं। (त)

लेकिन इस आधार पर हर सगाई या 'अम्र और अब्दुल्ला के बताए गए शब्दों को निकाह नहीं माना जा सकता, जैसा कि हम स्पष्ट कर चुके हैं (त)। और यदि इसका यह अर्थ लिया जाए कि प्रस्तावक और जिसके सामने प्रस्ताव रखा गया है, उनके बीच जो भी शब्द बोले जाएंगे, वे अनिवार्य रूप से निकाह माने जाएंगे, भले ही वे मोल-भाव, अनुरोध या वादे की संभावना रखते हों और अनुबंध के इरादे के निश्चित संकेत से रहित हों, तो यह पूरी तरह से गलत है। विद्वानों का यह अर्थ कभी नहीं होता। विद्वान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि मोल-भाव और माँग की संभावना (अर्थात उस स्थिति में अनुरोध और वादे की संभावना होना) निकाह के होने में बाधा है। खिज़ानतुल मुफ़्तीन में इमाम ज़हीर अल-दीन अल-मर्ग़ीनानी के फ़तवों के हवाले से है:

[तालिका पंक्ति 3] अरबी: यदि किसी ने फ़ारसी में कहा, "क्या तुमने अपनी बेटी मुझे दी?" और उसने उत्तर दिया, "दी (दादम)," तो निकाह संपन्न नहीं होता क्योंकि यह पूछताछ और वादा मांगना है। अतः, वह तब तक वकील नहीं बनता जब तक कि उसने निकाह की पुष्टि का इरादा न किया हो, न कि केवल वादे का। उर्दू: यदि एक ने फ़ारसी में कहा कि तुमने अपनी बेटी मुझे दी, तो दूसरे ने जवाब में "दादम" कहा तो इससे बिना इरादा निकाह सिद्ध नहीं होगा, क्योंकि ये शब्द वास्तव में खबर प्राप्त करने और वादा लेने के लिए होते हैं इसलिए दूसरा वकील नहीं बनेगा। (त)

हिंदिया में मुहीत से है:

---

1. रद्द अल-मुह्तार, किताबुन निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/264।
2. खिज़ानतुल मुफ़्तीन, किताबुन निकाह, हस्तलिखित प्रति (अप्रकाशित), 1/7।

पृष्ठ 187/739

سے پہلے منگنی وغیرہ مقدمات ہو چکتے ہیں تو ان کے بعد الفاظ مجلس عقد کو مساومت پر حمل نہیں کر سکتے بخلاف بیع کہ نہ وہاں ایسا تقدم، نہ اس کے لیے کوئی مجلس قرینہ قصد عقد، فتح القدیر پھر بحر الرائق پھر ردالمحتار میں ہے :

[پہلا خانہ] عربی: النکاح لایدخل المساومة لانه لایکون الا بعد مقدمات ومراجعات فکان للتحقیق بخلاف البیع[1]۔ اردو: نکاح میں بھاؤ لگانا نہیں ہوتا کیونکہ نکاح کئی مقدمات اور آمدورفت کے بعد ہوا کرتا ہے تو کنایہ الفاظ اس موقعہ پر نکاح کے تحقق کے لیے ہوتے ہیں۔ بخلاف بیع کے۔ (ت)

تحقیق مقام یہ ہے کہ عبارت مذکورہ سوال کے معنی اگر یہ ٹھہریں کہ امثال الفاظ بعد قیام قرینہ قصد مثل جلسہ نکاح بعد خطبہ و قرأت خطبہ و غیر ہما بحکم دلالت ظاہرہ جانب عقد متصرف ہوں گے نہ کہ سوئے مساومت کہ یہاں کوئی محل مساومت نہیں ، تو بیشک صحیح ہے۔ اور یہی معنی مقصود و مراد۔

[دوسرا خانہ] عربی: الاتری ان الکلام فی الکنایة ولاانعقاد بها الاعند قیام القرینة کما علمت۔ اردو: آپ دیکھ رہے ہیں کہ یہ گفتگو کنایہ کے بارے میں ہے اور ان میں قرینہ کے بغیر نکاح منعقد نہ ہوگا جیسا کہ آپ معلوم کر چکے ہیں۔ (ت)

مگر اس بنا پر ہر منگنی یا الفاظ مذکورہ عمرو و عبداللہ کو نکاح نہیں ٹھہرا سکتے کما بینا (جیسا کہ ہم بیان کر چکے ہیں۔ ت) اور اگر یہ معنی لیں کہ جو کچھ الفاظ خاطب و مخطوب الیہ میں جاری ہوں خواہی نخواہی نکاح ٹھہریں گے اگر چہ معنی مساومت و طلب و عد کو محتمل اور قرینہ معینہ قصد عقد سے عاری تو محض باطل، نہ ہر گز یہ مراد علماء، علماء صاف تصریحات فرماتے

ہیں کہ احتمال مساومت و استیعاد یعنی صورت واقعہ میں معنی استیام و طلب و عد کا احتمال ہونا مانع انعقاد نکاح ہے۔ خزانہ المفتین برموز فتاوی امام ظہیر الدین مرغینانی سے ہے :

[تیسرا خانہ] عربی: لو قال بالفارسیة دختر خویش مرادادی فقال دادم لاینعقد النکاح لان ھذا استخبار واستیعاد فلا یصیر وکیلا الا اذا اراد بہ التحقیق دون الاستیام[2]۔ اردو: اگر ایک نے فارسی میں کہا کہ تونے اپنی بیٹی مجھے دی، تو دوسرے نے جواب میں "دادم" کہا تو اس سے بغیر ارادہ نکاح متحقق نہ ہوگا، کیونکہ یہ الفاظ حقیقتاً خبر معلوم کرنے اور وعدہ لینے کے لیے ہوتے ہیں اس لیے دوسرا وکیل نہ بنے گا۔ (ت)

ہندیہ میں محیط سے ہے :

---

1 ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۶۴/۲ 2 خزانة المفتین کتاب النکاح قلمی نسخہ (غیر مطبوعہ) ۷/۱

Volume 11 - Fatawa Razawiyya

(Arabic): When someone said to another, "Your daughter is my intent," and the other replied, "I have given her," the marriage is solemnized even if the suitor does not say "I have accepted." However, if the first person said, "Give me [your daughter]," and the other replied "I have given," then marriage is not solemnized unless the first person subsequently says "I have accepted." Unless by saying "I have given," he meant the actualization of marriage rather than just a negotiation.[1]

(Urdu): When one said to another, "Give me your daughter." Then the second said, "Given." Through this, the marriage will be solemnized even if the first one hasn't yet said "I accepted." And if the first one said "You gave me your daughter," and the second replied "I gave," then until the first one says "I accepted" after that, the marriage will not be solemnized. Yes, if in this case, the second person by saying "I gave" meant the actualization of marriage and did not mean expressing desire and will, then the marriage will be solemnized. (T)

Similarly, it is in Bazaziya... In Radd al-Muhtar, it is quoted from the commentary of Allama Maqdisi:

(Arabic): Solemnization only depends on acceptance in the father's or agent's saying "Give your daughter in gift to so-and-so, or to my son, or grant her," for example. This is because it is outwardly a request and refers to the future, not intending the present or actualization. Thus, the contract is not completed. This is contrary to "Marry your daughter to me for such-and-such" after a proposal and the like, as it is outwardly for actualization and affirmation, which is the meaning of offer (Ijab).[2]

(Urdu): The boy's father or agent said to the girl's father, "Gift or grant your daughter to so-and-so or to my son." In this case, the solemnization of marriage will depend on the boy's father or agent's acceptance after the girl's father has given. Because these words are outwardly for a request, which involves the future. Realization and the present state are not intended; therefore, the contract will not be complete. In contrast, if it was said, "Marry your daughter to me," and this was said after fixing the dower and engagement, then these words are clear in realization and affirmation, which is called 'Ijab' (offer). (T)

It has passed from Sharh al-Tahawi that "Hal A’taytaniha" (Did you grant me your daughter? - T) is effective for a contract in a marriage assembly. In a meeting of promise, it is a request for a promise. In short, in ambiguous words, the basis is the context. Furthermore, the mentioned words by Amr and Abdullah are abandoned in both bargaining and realization and are specific to reporting, so they have no connection with these either, as is not hidden (T). And Allah Almighty knows best.

[1] Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter Two on what solemnizes marriage, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/271. [2] Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Chapter Two on what solemnizes marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/264.

(अरबी): जब किसी ने दूसरे से कहा, "आपकी बेटी मेरा उद्देश्य है," और दूसरे ने उत्तर दिया, "मैंने दे दिया," तो निकाह संपन्न हो जाता है, भले ही विवाह के इच्छुक ने "मैंने स्वीकार किया" न कहा हो। हालाँकि, यदि पहले व्यक्ति ने कहा, "मुझे [अपनी बेटी] दो," और दूसरे ने उत्तर दिया "मैंने दे दिया," तो निकाह तब तक संपन्न नहीं होता जब तक कि पहला व्यक्ति बाद में "मैंने स्वीकार किया" न कह दे। जब तक कि "मैंने दे दिया" कहने से उसका अर्थ केवल बातचीत के बजाय निकाह का वास्तविक निष्पादन न हो।[1]

(उर्दू/अनुवाद): जब दूसरे से कहा गया कि अपनी लड़की मुझे दे। तो दूसरे ने कहा "दी" तो उससे निकाह हो जाएगा चाहे पहले ने "मैंने कबूल की" न कहा हो। और अगर पहले ने कहा "तूने बेटी मुझे दी" तो दूसरे ने जवाब में कहा "मैंने दी" तो जब तक पहला इसके बाद "मैंने कबूल की" न कहे निकाह नहीं होगा। हाँ, अगर इस सूरत में दूसरे ने "मैंने दी" से मुराद निकाह का पूरा होना लिया हो और सिर्फ अपनी इच्छा ज़ाहिर करना मुराद न हो, तो निकाह हो जाएगा। (त)

इसी प्रकार, यह बज़ाज़िया में है... रद अल-मुह्तार में, यह अल्लामा मक़दीसी की शरह से उद्धृत है:

(अरबी): निकाह का संपन्न होना केवल पिता या एजेंट के यह कहने पर स्वीकृति पर निर्भर करता है कि "अपनी बेटी अमुक को, या मेरे बेटे को उपहार में दे दो, या उसे प्रदान करो," उदाहरण के लिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह बाहरी रूप से एक अनुरोध है और भविष्य को संदर्भित करता है, वर्तमान या निष्पादन का इरादा नहीं रखता है। इस प्रकार, अनुबंध पूरा नहीं हुआ है। यह "मेरे साथ अपनी बेटी का विवाह इतने-इतने के लिए करो" के विपरीत है, प्रस्ताव और इसी तरह के बाद, क्योंकि यह बाहरी रूप से निष्पादन और पुष्टि के लिए है, जो प्रस्ताव (ईजाब) का अर्थ है।[2]

(उर्दू/अनुवाद): लड़के के पिता या वकील ने लड़की के पिता से कहा कि अपनी बेटी फ़लाँ को या मेरे लड़के को हिबा (उपहार) कर या अता कर, तो इसमें निकाह का होना लड़की के पिता के दे देने के बाद लड़के के पिता या वकील के कबूल कर लेने पर निर्भर रहेगा, क्योंकि ये शब्द ज़ाहिर तौर पर माँग (रिक्वेस्ट) के लिए होते हैं जिसमें भविष्य की बात होती है। निकाह का होना और वर्तमान स्थिति मुराद नहीं होती, इसलिए निकाह पूरा नहीं होगा। इसके विपरीत अगर यह कहा हो कि "अपनी बेटी का मुझसे निकाह कर दे" और यह कहना मेहर तय होने और मंगनी के बाद हो तो ये शब्द निकाह होने और पुष्टि के लिए साफ़ हैं जिसे 'ईजाब' (प्रस्ताव) कहा जाता है। (त)

शरह अल-तहावी से गुज़रा है कि "हल आतैतनीहा" (क्या तुमने अपनी बेटी मुझे प्रदान की? - त) निकाह की सभा में अनुबंध के लिए प्रभावी है। वादे की बैठक में, यह वादे का अनुरोध है। संक्षेप में, संदिग्ध शब्दों में, आधार संदर्भ (context) है। इसके अलावा, अम्र और अब्दुल्ला द्वारा उल्लिखित शब्द सौदेबाजी और निष्पादन दोनों में त्याग दिए गए हैं और रिपोर्टिंग के लिए विशिष्ट हैं, इसलिए उनका इनके साथ कोई संबंध नहीं है, जैसा कि छिपा नहीं है (त)। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

[1] फतावा हिन्दिया, निकाह की किताब, दूसरा अध्याय उन चीजों पर जिनसे निकाह होता है, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/271। [2] रद अल-मुह्तार, निकाह की किताब, दूसरा अध्याय उन चीजों पर जिनसे निकाह होता है, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 2/264।

पृष्ठ १८८ / ७३९

اذ قال لغیرہ دختر خویش مرادہ ، فقال دادم ، ینعقد النکاح وان لم یقل الخاطب پذیر فتم . ولو قال مراد ادی فقال دادم ، لا ینعقد النکاح مالم یقل الخاطب پذیر فتم الا اذا اراد بقولہ دادی التحقیق دون السوم۔ 1

جب دوسرے کو کہا کہ تو اپنی لڑکی مجھے دے۔ تو دوسرے نے کہا "دی" تو اس سے نکاح منعقد ہو جائے گا اگرچہ پہلے "میں نے قبول کی" نہ کہے اور اگر پہلے نے کہا "تو نے بیٹی مجھے دی" تو دوسرے نے جواب میں کہا "میں نے دی" تو جب تک پہلا اس کے بعد "میں نے قبول کی" نہ کہے نکاح منعقد نہ ہو گا۔ ہاں اگر اس صورت میں دوسرے نے "میں نے دی" سے مراد نکاح کا تحقق لیا اور خواہش اور مرضی کا اظہار مراد نہ لیا تو نکاح ہو جائے گا۔ (ت)

اسی طرح بزازیہ میں ہے--- ردالمحتار میں شرح علامہ مقدسی سے نقل فرمایا:

انما توقف الانعقاد على القبول في قول الاب ا والوکیل هب ابنتك لفلان اولابنی او اعطها مثلا لانه ظاهر فی الطلب وانه مستقبل لم یرد به الحال والتحقق فلم یتم به العقد بخلاف زوجنی بنتك بکذا بعد الخطبة ونحوها فأنه ظاهر في التحقق والاثبات الذی هو معنی الایجاب۔ 2

لڑکے کے باپ یا وکیل نے لڑکی کے باپ کو کہا کہ تو اپنی بیٹی فلاں کو یا میرے لڑکے کو ہبہ کریا عطا کر، تو اس میں نکاح کا انعقاد لڑکی کے باپ کے دے دینے کے بعد لڑکے کے باپ یا وکیل کے قبول کر لینے پر موقوف رہے گا، کیونکہ یہ الفاظ ظاہر طور پر طلب کے لیے ہوتے ہیں جس میں مستقبل ہوتا ہے۔ تحقق اور حال مراد نہیں ہوتا، لہذا عقد تام نہ ہو گا، اس کے بر خلاف اگر یہ کہا ہو کہ "تو اپنی بیٹی مجھے بیاہ دے" اور یہ کہنا مہر طے کرنے اور منگنی کے بعد ہو تو یہ الفاظ تحقق اور اثبات میں ظاہر ہیں جو کہ ایجاب کہلاتا ہے۔ (ت)

شرح طحاوی سے گزرا کہ هل اعطیتنیها (کیا تو نے بیٹی مجھے عطا کی۔ ت) مجلس عقد میں مفید عقد ہے اور جلسہ وعد میں طلب وعد بالجملہ الفاظ محتملہ میں مدار قرینہ پر ہے۔ پھر الفاظ مذکورہ عمر و و عبداللہ تو مساومت و تحقیق دونوں سے مہجور اور خاص اخبار میں متعین ہیں تو انھیں سے بھی کچھ علاقہ نہیں کما لا یخفی (جیسا کہ مخفی نہیں ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

1 فتاوٰی ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی فیما ینعقد النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۷۱ 2 ردالمحتار کتاب النکاح الباب الثانی فیما ینعقد النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۶۴

Question 14, 15: From the country of Assam, district Jorhat, post office Katangi, place Sarai-bhi, sent by Syed Muhammad Safa-ud-din Sahib on 11th Rabi-ul-Awwal Sharif 1312 AH. What do the scholars of the religion say on these matters:

First Question: A blind scholar and learned person, who also had a guardian with him, performed a marriage ceremony. Is the marriage valid or not?

Answer: It is undoubtedly valid because eyes have no role in performing a marriage. In fact, when he is a scholar, then he is most suitable and preferable. Even if the witnesses of the marriage themselves, without whom the marriage is not valid at all, are blind, it doesn't matter.

[Arabic Box: As explicitly stated in core texts like Al-Kanz, Al-Wiqayah, Al-Islah, Al-Mukhtar, Al-Hidayah, Al-Multaqa, Al-Tanwir, and others.] | [Urdu Side Text: As stated in texts like Kanz, Wiqayah, Islah, Mukhtar, Hidayah, Multaqa, and Tanwir etc., explicit clarification is present. (T)]

So why is the eyesight of the one performing the marriage necessary, when he himself is not even mandatory for the marriage? The proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul) of the contracting parties themselves is sufficient. And Allah Almighty knows best.

Second Question: If the blind person is not a scholar and no guardian was present, and he performed the marriage in this state, is it valid or not? Clarify and be rewarded.

Answer: It is still valid as long as he recites it correctly. Lack of sight or lack of a guardian does not hinder the performance of the marriage. However, being ignorant can be a hindrance, because if he is unaware of the rules of marriage, it is possible he might perform it in a way that makes the marriage invalid, and the couple, out of ignorance, might remain unaware of it. God forbid, they could spend their whole lives in sin. Therefore, great caution is necessary in marriage. The one conducting the contract should be religious, pious, and well-versed in the rules of marriage, because there was fear of an unintentional error from an ignorant person. A transgressor or dishonest person cannot be trusted; when he himself does not care about what is lawful and unlawful, what hope is there for his caution regarding others? It is stated in Bahr-ur-Ra'iq, Dur-e-Mukhtar, Fath-ul-Ma'in, etc.:

[Arabic Box: "And the wording is from Dur: It is recommended to announce it and precede it with a sermon."] | [Urdu Side Text: The words are from Dur: Announcement of marriage, and a sermon before it.]

---

1. Dur-e-Mukhtar Sharh Tanwir-ul-Absar, Book of Marriage, Matba' Mujtabai Delhi 1/187

फ़तावा रिज़विया | ग्यारहवीं जिल्द

मसला १४, १५: मुल्क असम, जिला जोरहाट, डाकखाना कटंगा, स्थान सराय-भी, प्रेषित सैयद मुहम्मद सफ़ाउद्दीन साहब, ११ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३१२ हिजरी। दीन के उलेमा इन मसलों पर क्या फ़रमाते हैं:

पहला सवाल: एक दृष्टिहीन (अंधा) आलिम और फ़ाज़िल शख्स, जिसके पास एक निगहबान (देखभाल करने वाला) भी मौजूद था, उसने निकाह पढ़ाया। क्या निकाह जायज़ है या नहीं?

जवाब: निस्संदेह जायज़ है क्योंकि निकाह पढ़ाने में आँखों का क्या काम? बल्कि जब वह आलिम है तो वही सबसे उपयुक्त और बेहतर है। यहाँ तक कि निकाह के गवाह, जिनके बिना निकाह बिल्कुल सही नहीं होता, अगर वे भी अंधे हों तो कोई हर्ज नहीं।

[अरबी बॉक्स: जैसा कि मुतून (मूल ग्रन्थों) जैसे अल-कन्ज़, अल-विकाया, अल-इसलाह, अल-मुख्तार, अल-हिदाया, अल-मुल्ताक़ा, अत-तन्वीर आदि में स्पष्ट किया गया है।] | [उर्दू पार्श्व पाठ: जैसा कि कन्ज़, विकाया, इसलाह, मुख्तार, हिदाया, मुल्ताक़ा और तन्वीर आदि मुतून में इस पर स्पष्टीकरण मौजूद है। (त)]

तो निकाह पढ़ाने वाले की आँखों की रौशनी क्या ज़रूरी, कि वह खुद ही निकाह के लिए ज़रूरी नहीं, निकाह करने वालों का आपस में ईजाब और क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) ही काफ़ी है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

दूसरा सवाल: अगर दृष्टिहीन व्यक्ति आलिम न हो और कोई निगहबान भी मौजूद न हो, उस स्थिति में उसने निकाह पढ़ाया, तो क्या यह जायज़ है या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: अब भी जायज़ है बशर्ते कि वह सही पढ़ाए। दृष्टिहीनता या निगहबान का न होना निकाह पढ़ाने में बाधक नहीं है। हाँ, जाहिल (अज्ञानी) होना बाधक हो सकता है, क्योंकि जब वह निकाह के मसलों से वाकिफ़ नहीं है तो संभव है कि वह ऐसा कर दे जिससे निकाह सही न हो और पति-पत्नी भी अज्ञानता के कारण उससे बेखबर रहें। अल्लाह न करे कि वे पूरी उम्र हराम (पाप) में लिप्त रहें। इसलिए निकाह में बहुत सावधानी ज़रूरी है। निकाह का अक़्द (अनुबंध) कराने वाला दीनदार, परहेज़गार और निकाह के मसलों का जानकार हो, क्योंकि जाहिल से अनजाने में गलती होने का डर था। फासिक़ और बेईमान पर भरोसा नहीं किया जा सकता; जब उसे खुद हलाल और हराम की

परवाह नहीं, तो दूसरों के लिए उसकी सावधानी की क्या उम्मीद की जा सकती है। बहर-उर-राइक़, दुर-ए-मुख़्तार, फ़तह-उल-मुईन आदि में है:

[अरबी बॉक्स: "और ये शब्द दुर के हैं: निकाह का ऐलान करना और उससे पहले खुत्बा (भाषण) देना मुस्तहब (पसंदीदा) है।"] | [उर्दू पार्श्व पाठ: दुर के शब्द हैं, निकाह का ऐलान, उससे पहले खुत्बा।]

---

1. दुर-ए-मुख़्तार शरह तनवीर-उल-अबसार, किताब-उल-निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८७

पृष्ठ ७३९ में से १८९

مسئلہ ۱۴، ۱۵: از ملک آسام ضلع جور ہاٹ ڈاکخانہ کٹنگا مقام سرائے بھی مرسلہ سید محمد صفاء الدین صاحب ۱۱ ربیع الاول شریف ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں :

سوال اول: ایک عدیم البصر عالم و فاضل اور ایک نگہبان بھی اس کے پاس موجود تھا اس نے نکاح پڑھایا، نکاح جائز ہے یا نہ؟

الجواب: بلا شبہ جائز ہے کہ نکاح پڑھانے میں آنکھوں کا کیا کام، بلکہ جب وہ عالم ہے تو وہی انسب و اولیٰ، خود گواہان نکاح جن کے بغیر نکاح اصلاً صحیح نہیں اگر نابینا ہوں کچھ مضائقہ نہیں۔

[Arabic Box: کما نص علیہ فی المتون کالکنز والوقایۃ والاصلاح والمختار والھدایۃ والملتقی والتنویر وغیرھا] | [Urdu Side Text: جیسا کہ کنز، وقایہ، اصلاح، مختار، ہدایہ، ملتقی اور تنویر وغیرہ متون میں اس پر تصریح موجود ہے۔ (ت)]

تو نکاح پڑھانے والے کی بینائی کیا ضرور کہ وہ خود ہی نکاح کے لیے ضروری نہیں، عاقدین کا آپ ایجاب و قبول کافی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

سوال دوم: اگر عدیم البصر عالم نہ ہو اور نگہبان بھی موجود نہ ہو اس صورت میں اس نے نکاح پڑھایا، آیا جائز ہے یا نہ؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اب بھی جائز ہے جبکہ ٹھیک پڑھائے، بے نگاہی یا بے نگاہ بانی کچھ نکاح پڑھانے میں مخل نہیں، ہاں جاہل ہونا مخل ہو سکتا ہے کہ جب مسائل نکاح سے آگاہ نہیں تو ممکن کہ وہ صورت کر دے جس سے نکاح صحیح نہ ہو اور زوجین بھی بوجہ جہل اس سے غافل رہیں تو معاذ

اللہ عمر بھر حرام میں مبتلا ہوں، لہٰذا نکاح میں بہت احتیاط لازم، عقد کرنے والا دیندار، متقی، مسائل نکاح سے واقف ہو کہ جاہل سے نادانستہ وقوع مخل کا اندیشہ تھا، فاسق بد دیانت پر اعتماد نہیں، جب وہ خود حلال و حرام کی پروانہیں رکھتا تو اوروں کے لیے احتیاط کی کیا امید، بحر الرائق و در مختار و فتح اللہ المعین وغیرہما میں ہے:

[Arabic Box: واللفظ للدریندب اعلانہ وتقدیم خطبۃ] | [Urdu Side Text: دُر کے الفاظ ہیں، نکاح کا اعلان، اس سے پہلے خطبہ۔]

---

1 در مختار شرح تنویر الابصار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

It is commendable (Mustahabb) for the marriage contract (Nikah) to take place in a mosque, on a Friday, and to be performed by a person of integrity (Rashid), i.e., a person of knowledge and action, etc. (T)[1]

36 I say: Rashid comprises both knowledge and action. (T). In this era of ignorance and corruption, a common practice is that if knowledgeable people are not present at the gathering, there is a serious risk of severe flaw occurring in the marriage contract. For example, the authority (Wakala) for marriage was obtained from the bride for Zaid, but it was not specified that he also has the authority to appoint another person as a representative (Wakil). Now, Zaid, who is legally authorized only to perform the marriage himself, does not perform it. Instead, another person acting as a Qadi is sitting outside; Zaid approaches him and says, "Such and such woman has appointed me as her representative for her marriage." Two witnesses testify to this. Zaid then steps aside. Now, the Qadi performs the marriage. This marriage has not taken place at all because neither did the woman herself perform the proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul), nor did her authorized representative; rather, an unauthorized third person did it. Firstly, the representative informing the Qadi of his representation is not equivalent to appointing the Qadi as a representative on his behalf. Even if it were so, according to the correct legal school of thought, a representative for marriage does not have the authority to appoint another representative without the permission of the principal (Muwakkil).

In Al-Durr, quoted from Al-Bahr: "The representative (i.e., in marriage) is not permitted to appoint another without permission."[2] In the chapter of agency (Wakala) in Ghamz al-Uyun, quoted from Al-Walwalijiyya: "If someone appointed a man as a representative for marriage, and that representative appointed someone else, Muhammad (Imam Muhammad) mentioned in Al-Asl (i.e., Al-Mabsut) that it is not permissible. He said that if the second person performed the act in the presence of the first, it is not valid, and this is the correct view."[3] Abridged. (T)

So, this marriage became an unauthorized contract (Nikah Fuduli) and remained dependent on the consent of the adult woman. If, upon hearing the news, she shows dislike and aversion—as often happens with young virgin daughters when everything is ruined—then that marriage is completely void (Batil) and cannot be validated even by future consent.

[1] Ad-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/185 [2] Ad-Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/192 [3] Ghamz 'Uyun al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa'n-Naza'ir, Kitab al-Wakala, Idara-tul-Qur'an, Karachi, 12/411

फ़तावा रज़विया, भाग 11

मस्जिद में होना, जुमे का दिन होना और निकाह करने वाला रशीद यानी ज्ञान और कर्म वाला व्यक्ति होना मुस्तहब (सराहनीय) है, आदि। (त)[1]

३६ मैं कहता हूँ: रशीद ज्ञान और कर्म दोनों को समाहित करता है। (त) अज्ञानता और भ्रष्टाचार के इस युग में अक्सर वह स्थिति प्रचलित है कि यदि विद्वान सभा में उपस्थित न हों तो निकाह में भारी गड़बड़ी होने की आशंका रहती है। उदाहरण के लिए, ज़ैद के लिए दुल्हन से निकाह की वकालत ली गई, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि उसे किसी दूसरे को वकील (प्रतिनिधि) नियुक्त करने का भी अधिकार है। अब ज़ैद, जो कानूनी रूप से केवल निकाह पढ़ाने का पात्र था, वह स्वयं निकाह नहीं पढ़ाता, बल्कि बाहर बैठे किसी काज़ी के पास जाकर कहता है, "फलां महिला ने मुझे अपने निकाह का वकील नियुक्त किया है।" दो गवाह गवाही देते हैं, ज़ैद अलग हो जाता है। अब काज़ी ने निकाह पढ़ाया। यह निकाह बिल्कुल नहीं हुआ क्योंकि न तो महिला ने स्वयं ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) किया और न ही उसके अधिकृत वकील ने; बल्कि एक अजनबी व्यक्ति ने किया। पहली बात तो यह कि वकील का काज़ी को अपनी वकालत की सूचना देना उसे अपनी ओर से वकील बनाना नहीं है। और यदि हो भी, तो सही मज़हब (विचारधारा) में निकाह के वकील को मुवक्किल (मुख्य पक्ष) की अनुमति के बिना दूसरे को वकील बनाने का अधिकार नहीं है।

अद-दुर्र में अल-बह्र के हवाले से: "निकाह के वकील को यह जायज़ नहीं है कि वह बिना अनुमति के किसी दूसरे को वकील बनाए।"[2] ग़म्ज़ अल-उयून की वकालत की चर्चा में वलवालिजिया से उद्धृत है कि यदि किसी ने किसी को निकाह का वकील बनाया और वकील ने स्वयं किसी दूसरे को वकील बना लिया, तो इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने अल-अस्ल यानी मब्सूत में उल्लेख किया है कि यह जायज़ नहीं है। उन्होंने फरमाया कि पहले की उपस्थिति में दूसरे वकील ने कार्यवाही की तो वह जायज़ नहीं होगी, यही सही है। संक्षेप में। (त)[3]

तो यह निकाह 'निकाह-ए-फज़ूली' (अनधिकृत निकाह) हुआ और बालिग महिला की अनुमति पर निर्भर रहा। यदि खबर मिलने पर उसने अरुचि या नफरत व्यक्त की—जैसा कि अक्सर कुंवारी लड़कियों के साथ होता है जब सब कुछ खराब हो जाता है—तो अब वह निकाह पूरी तरह से शून्य (बातिल) हो गया और भविष्य की अनुमति से भी जायज़ नहीं हो सकता।

[1] दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८५ [2] दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१९२ [3] ग़म्ज़ उयून अल-बसार शरह अल-अशबाह वन-नज़ायर, किताबुल वकाला, इदारातुल कुरान कराची, १२/४११

पृष्ठ १९०/७३९

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

وکونہ فی مسجد یوم جمعۃ بعقد رشید الخ ۱۔ مسجد میں ہونا، جمعہ کا دن ہونا اور نکاح کرنیوالا صاحبِ رشد یعنی صاحبِ علم و عمل ہونا مستحب ہے الخ۔ (ت)

۳۶ اقول: الرشد ینتظم العلم والعمل (رشد علم اور عمل دونوں کو جامع ہے۔ ت) اس زمانہ جہل و فساد میں اکثر وہ صورت رائج ہے کہ اگر اہل علم حاضر جلسہ نہ ہوں تو نکاح میں سخت خلل واقع ہونے کا اندیشہ ہے یعنی دلہن سے زید کے لیے صرف وکالت نکاح لی، یہ تصریح نہ کرائی کہ اسے دوسرے کو وکیل کر دینے کا بھی اختیار ہے۔ اب زید وکیل جو شرعاً صرف نکاح پڑھانے کا مجاز ہوا وہ خود نہیں پڑھاتا بلکہ قاضی کوئی اور صاحب باہر بیٹھے ہیں ان سے آکر کہتا ہے مجھے فلاں عورت نے اپنے نکاح کا وکیل کیا، دو گواہ گواہی دیتے ہیں، وہ تو اتنا کہہ کر الگ ہو گیا، اب قاضی جی نے نکاح پڑھایا، یہ نکاح ہر گز نہ ہوا کہ نہ خود عورت نے ایجاب و قبول کیا نہ اس کے وکیل ماذون نے بلکہ ایک اجنبی شخص نے کہ اول تو وکیل کا اپنی وکالت سے خبر دینا اس قاضی کو اپنی طرف سے وکیل کرنا نہیں، اور ہو بھی تو صحیح مذہب میں وکیل نکاح کو دوسرے کے وکیل کرنے کا بے اذن موکل اختیار نہیں۔

فی الدر عن البحر لیس للوکیل (ای فی النکاح) ان یوکل بلا اذن ۲ وفی وکالۃ غمز العیون عن الولو الجیہ لو وکل رجلا فی نکاح فوکل الوکیل غیرہ ذکرہ محمد فی الاصل انہ لایجوز فانہ قال اذا فعل الثانی بحضرۃ الاول لم یجز و ھو الصحیح ۳ اھ ملخصا۔ نکاح کے وکیل کو جائز نہیں کہ وہ بغیر اجازت اس میں کسی دوسرے کو وکیل بنائے، یہ بحر کے حوالے سے دُر میں مذکور ہے اھ غمز العیون کی وکالت کی بحث میں ولو الجیہ سے منقول ہے کہ اگر ایک نے کسی کو نکاح کا وکیل بنایا

تو وکیل نے کسی دوسرے کو از خود وکیل بنالیا تو امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے اصل یعنی مبسوط میں ذکر کیا کہ یہ جائز نہیں، انھوں نے فرمایا کہ پہلے کی موجودگی میں دوسرے وکیل نے کارروائی کی تو جائز نہیں ہوگی، یہی صحیح ہے اھ ملخصاً (ت)

تو یہ نکاح نکاح فضولی ہوا اور اجازت زن بالغہ پر موقوف رہا، اگر خبر پر نفرت و کراہت ظاہر کی، جیسا کہ اکثر دختران دوشیزہ سے ایسا ہی واقع ہوتا ہے، جب توڑ پھوڑ سے کھال بھی گئی، اب وہ نکاح یکسر باطل ہو گیا کہ آئندہ اجازت سے بھی جائز نہیں ہو سکتا۔

۱ درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۵ ۲ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ ۳ غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر کتاب الوکالۃ ادارۃ القرآن کراچی ۱۲/۴۱۱

In al-Durr al-Mukhtar: If the news (of marriage) reached her and she rejected it, then later she said 'I agree', it is not permissible because it was nullified by the rejection. Therefore, they considered it recommended to renew (the marriage contract) at the time of the wedding procession, because the predominant case is the expression of aversion upon suddenly hearing the news. 1

It is stated in Durr-e-Mukhtar that if a girl received news of her marriage and she refused, and then later she said she was willing, the previously rejected marriage would not be valid because it had become void due to her refusal. For this reason, the honorable jurists have stated that in such a situation, it is better to perform the marriage again at the time of the wedding departure, because the expression of dislike happens upon the sudden news of marriage (therefore, the first refusal was due to aversion). (T)

Similarly, it has been observed in some marriages that the marriage officiant whispers the words of proposal (ijab) into the groom's ear such that none of the attendees hear it. According to the correct school of thought, marriage does not occur in this way, as it is a condition that both the words of proposal and acceptance be heard by the gathered witnesses in a single session.

In al-Durr: And the condition is the presence of two free male witnesses or one free man and two free women, legally responsible (mukallaf), hearing their (the couple's) words together, according to the more correct opinion. 2

It is in Durr that in marriage, two sane, adult, free men or one man and two women must be present in the gathering as witnesses and hear the speech of both parties of the marriage. This has been established as a condition according to the correct opinion. (T)

The cause of these things is that same ignorance and unawareness, and there is a risk of twenty more errors besides these, of which only scholars are aware, or those blessed people who have a complete desire for the service and company of scholars and the investigation of religious matters from them. In short, it is absolutely contrary to what is best for an ignorant person to officiate a marriage, just as is his leading the prayer (imamat) or being a business partner (mudarabat), because the fear of disruption and corruption that exists there is also present in marriage, as is not hidden (kama la yakhfa). (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 16: From Jorhat, Assam province, High School, sent by Mian Muhammad Ali Sahib, 3 Shaban 1312 AH. What is your verdict, may Allah Almighty have mercy on you, on this matter: if Zaid married a woman in front of two foreign witnesses, then after those two witnesses left, Zaid made his marriage public, and the woman also admits to the marriage with Zaid, and those two aforementioned witnesses went to another country and before a scholar there, and in their own country before a Qazi, both...

---

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Bab al-Wali, Mujtabai Press Delhi, 1/192. 2 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Press Delhi, 1/186. Page 191 of 739

अल-दुर्र अल-मुख्तार में: यदि (निकाह की) खबर उस तक पहुँची और उसने अस्वीकार कर दिया, फिर बाद में कहा 'मैं सहमत हूँ', तो यह स्वीकार्य नहीं है क्योंकि अस्वीकृति से यह शून्य हो गया था। इसलिए, उन्होंने विदाई के समय (निकाह का) नवीनीकरण करना बेहतर माना है, क्योंकि अचानक खबर सुनने पर अरुचि व्यक्त करना प्रबल होता है। १

दुर्रे मुख्तार में है कि लड़की को निकाह की खबर मिली तो उसने इनकार कर दिया, फिर बाद में उसने कहा कि मैं राज़ी हूँ, तो पहले रद्द किया गया निकाह उससे मान्य नहीं होगा क्योंकि वह इनकार करने के कारण बाटल (शून्य) हो चुका है। इसी कारण से फ़ुक़हा-ए-किराम (धर्मशास्त्रियों) ने फ़रमाया कि ऐसी स्थिति में विदाई के समय दोबारा निकाह करना बेहतर होगा क्योंकि अचानक निकाह की खबर पर नफरत (अरुचि) का इज़हार होता है (इसलिए पहला इनकार नफरत के कारण हुआ)। (त)

इसी तरह कुछ निकाहों में यह देखा गया है कि निकाह पढ़ाने वाले ने दूल्हे के कान में ईजाब (प्रस्ताव) के शब्द कहे कि उपस्थित लोगों में से किसी ने नहीं सुना। सही मज़हब में इस तरह निकाह नहीं होता, क्योंकि शर्त यह है कि एक ही मजलिस (सभा) में मौजूद गवाह ईजाब और क़ुबूल (प्रस्वीकृति) दोनों के शब्द सुनें।

दुर्र में है: और शर्त दो स्वतंत्र पुरुष गवाहों या एक स्वतंत्र पुरुष और दो स्वतंत्र महिलाओं की उपस्थिति है, जो विवेकशील (मुकल्लफ) हों, और दोनों (पक्षों) की बात एक साथ सुनें, सबसे सही मत के अनुसार। २

दुर्र में है कि निकाह में दो अक्लमंद, बालिग, स्वतंत्र पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएं गवाह के रूप में सभा में मौजूद होकर निकाह के दोनों पक्षों की बात सुनें, यह शर्त सही कथन के अनुसार निर्धारित की गई है। (त)

इन बातों का मुख्य कारण वही अज्ञानता और अनभिज्ञता है और इनके अलावा बीस और गलतियों की आशंका है जिनसे केवल विद्वान ही अवगत होते हैं या वे नेक तौफीक वाले जिन्हें विद्वानों की सेवा और संगति और उनसे धार्मिक मसलों की तहकीकात का पूरा शौक है। संक्षेप में, अज्ञानी व्यक्ति का निकाह पढ़ाना पूरी तरह से श्रेष्ठता के विरुद्ध (खिलाफ़-ए-औला) है, जिस तरह उसकी इमामत या मुदारबत कि जो बिगाड़ और फसाद का डर वहाँ है, वही निकाह में भी है, जैसा कि छिपा नहीं है (कमा ला यखफ़ा)। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १६: जोरहाट, प्रांत असम, हाई स्कूल से, भेजने वाले मियां मोहम्मद अली साहब, ३ शाबान १३१२ हिजरी। आप क्या फ़रमाते हैं, अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए, इस मसले में कि यदि ज़ैद ने एक औरत से दो विदेशी (गैर-मुल्की) गवाहों के सामने निकाह किया, फिर उन दोनों गवाहों के जाने के बाद ज़ैद ने अपने निकाह को ज़ाहिर किया और वह औरत भी ज़ैद के साथ निकाह होने को स्वीकार करती है, और वे दोनों वर्णित गवाह एक दूसरे देश में जाकर एक विद्वान के सामने और अपने देश में जाकर क़ाज़ी के सामने दोनों...

---

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१९२. 2 दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८६. पृष्ठ १९१ का ७३९

درِ مختار میں ہے کہ لڑکی کو نکاح کی اطلاع ملی تو انکار

فی الدرالمختار لو بلغها فردت ثم کردیا پھر بعد میں اس نے کہا میں راضی ہوں، تو پہلے رد شدہ

قالت رضیت لم یجز لبطلانه بالرد نکاح اس سے جائز نہ ہوگا کیونکہ وہ انکار کرنے کی وجہ

ولذا استحسنواالتجدید عند الزفاف سے باطل ہوچکا ہے۔ اسی وجہ سے فقہاء کرام نے فرمایا کہ

لان الغالب اظهار النفرة عند فجأة ایسی صورت میں رخصتی کے وقت دوبارہ نکاح کرنا بہتر ہوگا

السماع ۱۔ کیونکہ اچانک نکاح کی خبر پر نفرت کا اظہار ہوتا ہے (اس

لیے پہلا انکار نفرت کی وجہ سے ہوا) (ت)

یونہی بعض نکاحوں میں مشاہدہ ہوا ہے کہ نکاح خواں نے کلمات ایجاب دولہا کے کان میں کہے کہ حاضرین میں کسی نے نہ سنے صحیح مذہب میں یوں نکاح نہیں ہوتا کہ مجلس واحد میں معادو گواہوں کا دونوں الفاظ ایجاب و قبول سننا شرط ہے۔

فی الدر وشرط حضور شاهدین دُرِّ میں ہے کہ نکاح میں دو عاقل بالغ حر مرد یا ایک مرد اور دو

حرین او حر وحرتین مکلفین عورتیں گواہ کے طور پر مجلس میں موجود ہو کر نکاح کے

سامعین قولهما معا علی الاصح دونوں فریقوں کا کلام سنیں، یہ شرط قرار دیا گیا ہے صحیح قول

۲۔ کے مطابق۔ (ت)

ان باتوں کا منشا وہی جہل و ناواقفی ہے اور ان کے سوا اور بیس اغلاط کا اندیشہ ہے جن سے علماء ہی آگاہ ہوتے ہیں یا وہ نیک توفیق والے جنھیں علماء کی خدمت و صحبت اور ان سے مسائل دینیہ کی تحقیقات کا شوق کامل ہے غرض جاہل کی نکاح خوانی قطعاً خلاف اولی ہے جس طرح

اس کی امامت یا مضاربت کہ جو اندیشہ خلل و فساد وہاں ہے وہی نکاح میں بھی، کما لا یخفی (جیسا کہ مخفی نہیں۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶: از جورہاٹ ملک آسام ہائی اسکول مرسلہ میاں محمد علی صاحب ۳ شعبان ۱۳۱۲ھ ماقولکم رحمکم اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے آپ کا کیا فرمان ہے) اس مسئلہ میں کہ اگر زید نے ایک عورت سے دو گواہ غیر ملکی کے سامنے نکاح کیا پھر زید نے وہ دونوں گواہ جانے کے بعد اپنے نکاح کو ظاہر کیا اور عورت بھی نکاح ہونے پر زید کے مقر ہے اور وہ دونوں گواہان مذکوران ایک غیر ملک میں جا کر ایک عالم سے اور اپنے ملک میں جا کر قاضی کے روبرو دونوں

---

1 درمختار کتاب النکاح باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ 2 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۶ صفحہ 191 کا 739

Fatawa Ridawiyyah Volume 11

Question: Witnesses testified to Zaid's marriage at a certain place. Two letters with seals and signatures from both locations regarding the witness testimony were sent to a scholar and a reputable person in Zaid's country. After a year, one of those two witnesses came and testified to Zaid's marriage in front of three or four people. Ten to twelve days later, he denied Zaid's marriage in front of a group. There is no dispute or conflict between Zaid and the lady. Zaid openly states before everyone that she is his wife, and the lady says Zaid is her husband. Their behavior also reflects that of a husband and wife, and both acknowledge the marriage. According to the Shariah, is Zaid's marriage valid and enforced? Is remarriage necessary? In the case of remarriage, would any punishment (hadd) apply to them (husband and wife)? Please provide a correct answer with evidence and reasoning. What is the ruling if both witnesses deny the marriage? State and be rewarded.

The Answer: In the mentioned situation, they are husband and wife; their marriage is valid and established. There is absolutely no need for remarriage, even if both witnesses deny it.

For witnesses are a condition for the beginning of a marriage, not for its continuation. (T)	Witnesses are a condition at the start of a marriage; it is not a condition for its survival. (T)

When both acknowledge the marriage—he calls her his wife and she calls him her husband—then there is no room for anyone to object. Rather, this mutual acknowledgement is sufficient for the proof of marriage, even if no witness provides testimony.

In Radd al-Muhtar, they clarified that marriage is established by mutual confirmation (1). In Al-Hidayah: it is permissible for him to testify if he sees a man and a woman living in a house and each being informal with the other as spouses are (2), end of summary. And Allah, Glorified be He, knows best, and His	(In Radd al-Muhtar, it is stated that scholars have clarified that marriage is established by mutual confirmation. T). Furthermore, their living together as husband and wife is another proof of marriage, so much so that all those who are aware of this situation are permitted to testify that they are husband and wife. In Al-Hidayah, it is stated that when a man and a woman live together in a house like husband and wife and are informal with each other like a married couple, it

knowledge, may His Majesty be glorified, is most complete and most perfect.

is permissible for an observer to testify to their marriage, end of summary. And Allah, Glorified be He, knows best, and His knowledge, may His Majesty be glorified, is most complete and most perfect. (T)

1. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/265.
2. Al-Hidayah, Book of Witnessing, Matba' Yusufi, Lucknow, 3/158.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

प्रश्न: ज़ैद के निकाह होने की गवाही कुछ लोगों ने दी है और दोनों जगहों से मुहर और दस्तखत के साथ दो पत्र ज़ैद के देश के एक विद्वान और एक विश्वसनीय व्यक्ति के पास भेजे गए। फिर एक साल बाद उन दोनों गवाहों में से एक गवाह ने आकर तीन-चार लोगों के सामने ज़ैद के निकाह की गवाही दी। उसके दस-बारह दिन बाद उसने एक समूह के सामने ज़ैद के निकाह से इंकार कर दिया। ज़ैद और उसकी पत्नी के बीच कोई झगड़ा या विवाद नहीं है। ज़ैद भी सबके सामने कहता है कि वह मेरी पत्नी है और पत्नी कहती है कि ज़ैद मेरा पति है। उनके तौर-तरीके भी पति-पत्नी जैसे ही पाए जाते हैं, और दोनों ही निकाह स्वीकार करते हैं। शरीयत के अनुसार ज़ैद का निकाह सही और मान्य हुआ या नहीं? और क्या दोबारा निकाह करना ज़रूरी होगा? दोबारा निकाह की स्थिति में क्या उन दोनों (पति-पत्नी) पर कोई दंड (हद) लागू होगा? कृपया प्रमाण और तर्क के साथ सही उत्तर दें। यदि दोनों गवाह निकाह से इंकार कर दें तो ऐसी स्थिति में क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: पूछे गए मामले में वे दोनों पति-पत्नी हैं, उनका निकाह सही और साबित है। दोबारा निकाह की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, भले ही दोनों गवाह इंकार कर दें।

क्योंकि गवाह निकाह की शुरुआत के लिए शर्त हैं, उसके बने रहने के लिए नहीं। (त)

गवाहों का होना निकाह की शुरुआत में शर्त है, उसके बने रहने के लिए शर्त नहीं। (त)

जब दोनों आपस में निकाह स्वीकार करते हैं, वह उसे अपनी पत्नी और वह उसे अपना पति बताती है, तो किसी को भी आपत्ति की कोई गुंजाइश नहीं है। बल्कि उनका यह आपसी इकरार ही निकाह के सबूत के लिए पर्याप्त है, भले ही कोई गवाह गवाही न दे।

'रद्द अल-मुह्तार' में उन्होंने स्पष्ट किया है कि निकाह आपसी पुष्टि (तस्दीक़) से साबित होता है (1)। 'हिदाया' में: उसके लिए गवाही देना जायज़ है यदि वह एक पुरुष और स्त्री को घर में रहते हुए देखता है और उनमें से प्रत्येक दूसरे के साथ पति-पत्नी की तरह बेतकल्लुफ़ है (2), संक्षेप में। और अल्लाह सुब्हानहू व

('रद्द अल-मुह्तार' में है कि विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि एक-दूसरे की पुष्टि से निकाह साबित हो जाता है। त) फिर उनका पति-पत्नी की तरह साथ रहना निकाह का दूसरा प्रमाण है, यहाँ तक कि जितने लोग इस स्थिति से वाकिफ हैं, उन सभी के लिए उनके पति-पत्नी होने की गवाही देना जायज़ है। 'हिदाया' में है कि जब कोई पुरुष और स्त्री आपस में पति-पत्नी की तरह घर में रहें और दोनों आपस में पति-पत्नी की तरह बेतकल्लुफ़ हों, तो देखने वाले के

ताला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है।

लिए उनके निकाह की गवाही देना जायज़ है, संक्षेप में। और अल्लाह सुब्हानहू व ताला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है। (त)

1. रद्द अल-मुह्तार, किताबुन निकाह, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/265।
2. हिदाया, किताबुश शहादा, मतबा यूसुफी, लखनऊ, 3/158।

पृष्ठ 192/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ: جگہ نکاح ہونے زید کی گواہی دئے ہیں اور دونوں جگہ سے دو خط مع مہر و دستخط کے اور صورت گواہی ان دونوں گواہوں کے زید کے نکاح ہونے کا ثبوت زید کے ملک کے ایک عالم اور ایک معتبر آدمی کے پاس ارسال کیا پھر ایک برس کے بعد ان دونوں گواہوں سے ایک گواہ آکر پہلے تین چار آدمی کے روبرو نکاح ہونے زید کی گواہی دی تھی بعدہ دس بارہ روز کے بعد ایک جماعت کے روبرو انکار نکاح زید کا کیا، زید اور بی بی کے درمیان میں کوئی جھگڑا اور تنازع نہیں ہے، زید بھی خاص و عام کے روبرو کہتا ہے کہ وہ میری بی بی ہے اور بی بی کہتی ہے کہ زید میرا شوہر ہے، اور حال چال بھی دونوں کے خاوند اور جورو ہونے کے پائے جاتے ہیں، اور مقر نکاح جانبین ہے۔ از روئے شرع شریف کے زید کا نکاح درست اور نافذ ہوا یا نہیں؟ اور نکاح دوبارہ کرنا لازم آئے گا یا نہ؟ اور صورت نکاح دوبارہ میں حد ان دونوں کے اوپر یعنی زوج زوجہ کے اوپر لازم ہوگا یا نہیں؟ مع دلیل وبرہان کے جواب باصواب فرمائیں، اگر دونوں گواہ انکار نکاح کا ہو جائیں تو اس صورت میں کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں وہ دونوں زوج وزوجہ ہیں، ان کا نکاح صحیح و ثابت ہے، دوبارہ نکاح کی اصلاً حاجت نہیں، اگرچہ دونوں گواہ انکار کر جائیں۔

فان الشھود شرط النکاح فی الابتداء دون البقاء۔ گواہوں کا ہونا نکاح کی ابتداء میں شرط ہے اس کے بقاء کے لیے شرط نہیں۔ (ت)

جبکہ دونوں باہم مقر نکاح ہیں، یہ اسے اپنی بی بی وہ اسے اپنا شوہر بتاتی ہے تو کسی کو اعتراض کی ہر گز گنجائش نہیں بلکہ ان کا صرف یہ باہمی اقرار ہی ثبوت نکاح کے لیے کافی ہے اگرچہ کوئی گواہ گواہی نہ دے،

فی ردالمحتار صرحوا ان النکاح یثبت بالتصادق (1) فی الھدایۃ حل لہ ان یشھد اذ رأی رجلا وامرأۃ یسکنان بیتا وینبسط کل واحد منھما الی الآخر انبساط الازواج (2) اھ ملخصاً۔ واللہ سبحانہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

(رد المحتار میں ہے کہ علماء نے تصریح کی ہے کہ ایک دوسرے کی تصدیق سے نکاح ثابت ہو جاتا ہے۔ ت) پھر ان کا باہم زن و شو کی طرح رہنا دوسرا مثبت نکاح ہے یہاں تک کہ جتنے لوگ اس حال سے واقف ہیں سب کو ان کے زوج وزوجہ ہونے پر گواہی دینی جائز ہے۔ ہدایت میں ہے جب کوئی مرد و عورت آپس میں خاوند بیوی کی طرح گھر میں رہیں اور دونوں آپس میں میاں بیوی کی طرح بے تکلف ہوں تو دیکھنے والے کو ان کے نکاح کی شہادت دینا جائز ہے اھ ملخصاً، واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم و احکم۔ (ت)

1. ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۵
2. ہدایہ کتاب الشھادۃ مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/۱۵۸

Volume 11 | Fatawa Razawiyya

Issue 17: 15 Sha'ban 1312 AH What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say on this matter: Zaid married Hindah on the condition that he would divorce her after one month. And he kept this matter in his heart, or he stated it to Hindah, so did this marriage become valid or not? Explain and be rewarded. The Answer: The marriage is valid whether he intended it in his heart or made it a condition in the contract, because stipulating divorce itself is evidence of the intention for a permanent marriage. However, if he makes the contract saying "I married you for one month or one year or a hundred years," then the marriage will not be valid because limiting a marriage to a certain time is the form of mut'ah (temporary marriage), and mut'ah is purely forbidden and adultery. In Dur-re-Mukhtar it is stated:

[Arabic Quote]: بطل نكاح متعة وموقت وان جهلت المدة لو طالت في الاصح وليس منه مالو نكحها على ان يطلقها بعد شهر اونوى مكثه معها مدة معينة۔ 1 [Urdu Translation in text]: Marriage as mut'ah or marriage for a fixed term, whether the term is long or unknown, is invalid in the correct school of thought. And if the marriage was done on the condition that "I will divorce after one month," or if at that time he had intended a fixed term in his heart, it would not be invalid. (T)

In Radd-ul-Muhtar it is stated: [Arabic Quote]: لان اشتراط القاطع يدل على انعقاده مؤبدا وبطل الشرط بحر 2- واللہ تعالی اعلم۔ [Urdu Translation in text]: Because the condition of a terminating factor (divorce) in a marriage indicates that it was contracted as permanent, and the condition becomes void. Bahr. And Allah Almighty knows best.

Issue 18: What do the scholars of religion say on this matter: Zaid's wedded wife shows no signs of masculinity or femininity, she has only one outlet through which urine comes, but her breasts are like those of women. In this case, is this marriage valid or not? And if Zaid divorces her, is the payment of dower (mahr) mandatory upon Zaid or not? Explain and be rewarded. The Answer: In the case questioned, the marriage is valid, and half of the dower is payable by Zaid after divorce, because although Zaid's wedded wife...

1 Dur-re-Mukhtar, Book of Marriage, Chapter on Prohibited Persons, Mujtabai Delhi, 1/190 2 Radd-ul-Muhtar, Book of Marriage, Chapter on Prohibited Persons, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/294

जिल्द याज़दहुम | फ़तावा रज़विया

मसला 17: 15 शाबान 1312 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरह मतीन इस मसले में कि ज़ैद ने हिंदा से इस शर्त पर निकाह किया कि एक महीने के बाद तलाक़ दे दूँगा। और इस बात को अपने दिल में रखा, या ये कि हिंदा से बयान किया, तो क्या यह निकाह सही हुआ या नहीं? बयान कीजिए और सवाब पाइए। अल-जवाब: निकाह सही है चाहे दिल में यह इरादा रखा हो या निकाह के वक़्त इसकी शर्त कर ली हो, क्योंकि तलाक़ की शर्त करना ही स्थायी निकाह (निकाह-ए-दाइम) के इरादे पर दलील है। हाँ, अगर निकाह यूँ करे कि "मैंने तुझसे एक महीने या एक साल या सौ साल के लिए निकाह किया" तो निकाह सही न होगा क्योंकि निकाह को एक समय तक सीमित कर देना मुतअ की सूरत है और मुतअ सरासर हराम और ज़िना है, दुर्रे मुख़्तार में है:

[अरबी उद्धरण]: بطل نكاح متعة وموقت وان جهلت المدة لو طالت في الاصح وليس منه مالو نكحها على ان يطلقها بعد شهر اونوى مكثه معها مدة معينة۔ १ [पाठ में उर्दू अनुवाद]: मुतअ के तौर पर निकाह या निर्धारित समय के लिए निकाह, चाहे समय लंबा हो या अज्ञात, सही मज़हब में यह निकाह बातिल (अवैध) है। और अगर इस शर्त पर निकाह किया कि 'एक माह बाद तलाक़ दे दूँगा', या उस वक़्त दिल में निर्धारित समय की नीयत थी, तो बातिल न होगा। (त)

रद्दुल मुहतार में है: [अरबी उद्धरण]: لان اشتراط القاطع يدل على انعقاده مؤبدا وبطل الشرط بحر २- واللہ تعالی اعلم۔ [पाठ में उर्दू अनुवाद]: इसलिए कि निकाह में तलाक़ की शर्त इस बात पर दलालत करती है कि निकाह स्थायी (दाइमी) है और शर्त बातिल होगी। बहर। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 18: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद की ब्याही हुई (मनकूहा) में मर्द या औरत होने की कोई निशानी नहीं है, सिर्फ़ एक रास्ता है जिससे पेशाब आता है, मगर स्तन महिलाओं जैसे हैं। इस सूरत में यह निकाह सही है या नहीं? और अगर ज़ैद उसे तलाक़ दे तो महर की अदायगी ज़ैद के ज़िम्मे लाज़िम है या नहीं? बयान कीजिए और सवाब पाइए। अल-जवाब: पूछी गई सूरत में निकाह सही है और तलाक़ के बाद आधा महर ज़ैद के ज़िम्मे वाजिबुल अदा है, क्योंकि ज़ैद की ब्याही हुई हालांकि...

1 दुर्रे मुख़्तार, किताबुन निकाह, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मुज्तबाई दिल्ली, 1/190 2 रद्दुल मुहतार, किताबुन निकाह, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/294

مسئلہ ۱۷: ۱۵ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے بایں شرط نکاح کیا کہ بعد ایک ماہ کے طلاق دے دوں گا۔ اور اس امر کو اپنے دل میں رکھا، یا یہ کہ ہندہ سے بیان کیا، تو آیا یہ نکاح صحیح ہوا یا نہیں؟۔ بینوا توجروا۔ الجواب: نکاح صحیح ہے خواہ دل میں یہ قصد رکھا خواہ عقد میں اس کی شرط کرلی کہ طلاق کا شرط کرنا ہی ارادہ نکاحِ دائم پر دلیل ہے، ہاں اگر یوں عقد کرے کہ میں نے تجھ سے ایک مہینہ یا ایک برس یا سو برس کے لیے نکاح کیا تو نکاح نہ ہوگا کہ ایک وقت تک نکاح کو محدود کردینا صورتِ متعہ ہے اور متعہ محض حرام اور زنا، در مختار میں ہے:

بطل نکاح متعة وموقت وان جهلت المدة لو طالت في الاصح وليس منه مالو نكحها على ان يطلقها بعد شهر اونوى مكثه معها مدة معينة۔ ۱ | متعہ کے طور پر نکاح یا مقررہ مدت کے لیے نکاح خواہ مدت لمبی ہو یا مدت مجہول ہو تو صحیح مذہب میں یہ نکاح باطل ہے، اور اگر اس شرط پر نکاح کیا کہ ایک ماہ بعد طلاق دے دوں گا، یا اس وقت دل میں مقررہ مدت کی نیت کی تھی تو باطل نہ ہوگا۔(ت)

ردالمحتار میں ہے: لان اشتراط القاطع يدل على انعقاده مؤبدا وبطل الشرط بحر ۲- والله تعالى اعلم۔ | اس لیے کہ نکاح میں طلاق کی شرط دلالت کرتی ہے کہ یہ نکاح دائمی ہے اور شرط باطل ہوگی، بحر۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ منکوحہ زید میں کوئی علامتِ مردی وزنی سے نہیں صرف ایک مخرج ہے جس سے بول آتا ہے، مگر پستان اس کے مثل زنان ہیں، اس

صورت میں یہ نکاح صحیح ہے یا نہیں؟ اور اگر زید اسے طلاق دے تو ادائے مہر ذمہ زید لازم ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: صورتِ مسئولہ میں نکاح صحیح ہے اور نصف مہر بعد طلاق ذمہ زید پر واجب الادا کہ منکوحہ زید اگرچہ

۱ درمختار کتاب النکاح فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۱۹۰ ۲ ردالمحتار کتاب النکاح فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۴

Prior to puberty, due to the disappearance of both signs, it was of the type of ambiguous intersex (Khuntha Mushkil), but after puberty, its breasts appeared like a woman's breasts, so the ambiguity was removed and it was revealed to be a woman. Now, undoubtedly, this marriage has taken place in its proper place and all the conditions for validity are present, and there are no legal impediments at all. However, the lack of consummation (khalwat-e-fasida) is a cause for the confirmation of the dower (Mahr), and 'khayar-e-ayb' (option to rescind due to defect) has no role in the marriage so that Zaid could dissolve the marriage because of it and be absolved of the full dower, rather no physical impediment exists at all.

Arabic Text	**Urdu Translation/Explanation**
In *Tanwir al-Absar*, from the Book of Intersex (Khuntha): He/she is one who has both a vulva and a penis, or one who is devoid of both testicles. If breasts appear for him/her, then it is a woman. [End with summary].	In the discussion of intersex in *Tanwir al-Absar*, it is stated that an intersex person is one who has both a penis and a vulva, or lacks testicles. So if breasts appear, she will be declared a woman. The text of *Tanwir* ends, summary.
In *al-Durr al-Mukhtar*, regarding Marriage: According to the jurists, it is a contract that grants the ownership of enjoyment, i.e., the lawfulness of a man's enjoyment of a woman as long as there is no legal impediment preventing her marriage. [End].	In the discussion of marriage in *Durr al-Mukhtar*, it is stated that according to the jurists, marriage is a contract that makes a man the owner of intercourse with a woman, provided there is no legal impediment to it.
And in it, from the Chapter of Dower: Valid privacy (*Khalwa*) without a physical impediment, like *ratq* (fleshiness), which with two *fathas* means fusion, and *qarn* with *sukun* means bone, and *aqal* with two *fathas* means a gland, such that intercourse is	And in the chapter of dower of the same book, it says that when privacy is attained without any physical impediment, its ruling in making the dower mandatory is like intercourse. Physical impediments in privacy include *ratq* (with 'r' and 't' having *fatha*), which means the protrusion of flesh in the private parts, and like *qarn* with *sukun* on 'r', which means bone, and *aqal*, with *fatha* on

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
intolerable, is like intercourse in confirming the dower. [End summary].	'a' and 'q', which means a gland, i.e., bone or gland in the private parts grows in such a way that it becomes an impediment to intercourse. [End summary].
And in it from that chapter: Half of it [dower] is mandatory upon divorce before intercourse or privacy. [End]. And in *Fatawa al-Imam Qadi Khan*: and *ratq*...	In the same chapter of *Durr al-Mukhtar* it says: Half dower will be mandatory when [divorce occurs] before privacy or intercourse...

1. *Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Kitab al-Khuntha, Mujtabai Delhi, 341/2
2. *Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Kitab al-Nikah, Mujtabai Delhi, 185/1
3. *Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Bab al-Mahr, Mujtabai Delhi, 199/1
4. *Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Bab al-Mahr, Mujtabai Delhi, 198/1

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

बुलूग़ (यौवन) से पहले दोनों निशान न होने के कारण यह 'खुन्सा मुश्किल' की श्रेणी में था, लेकिन बुलूग़ के बाद इसके स्तन औरतों जैसे निकल आए, जिससे दुविधा दूर हो गई और यह महिला सिद्ध हुई। अब निस्संदेह यह निकाह अपने सही स्थान पर हुआ है और सेहत की तमाम शर्तें मौजूद हैं और कोई शरई रुकावट बिल्कुल भी नहीं है। हालाँकि, ख़लवत-ए-फ़ासिदा (बिना संभोग के एकांत) महर की पुष्टि का कारण है, और निकाह में 'खियार-ए-ऐब' (दोष के कारण निकाह रद्द करने का अधिकार) की कोई भूमिका नहीं है कि ज़ैद इसके कारण निकाह रद्द कर सके और पूरे महर की ज़िम्मेदारी से बच जाए, बल्कि कोई शारीरिक रुकावट (मानी-ए-हिस्सी) बिल्कुल भी मौजूद नहीं है।

अरबी मूल पाठ

तनवीरुल अबसार के'किताबुल खुन्सा' में है: खुन्सा वह है जिसके पास योनि और लिंग दोनों हों, या जिसके पास अंडकोष न हों। अगर उसके स्तन निकल आएँ तो वह औरत है। [सारांश के साथ समाप्त]।

अद्दुर्रुल मुख्तार में निकाह के बारे में है: फ़ुक़हा के नज़दीक निकाह ऐसा अक़्द (अनुबंध) है जो मुतआ (भोग) के मालिकाना हक़ का फ़ायदा देता है, यानी मर्द के लिए औरत से लुत्फ़ उठाना जायज़ करता है जब तक कि निकाह में कोई शरई रुकावट न हो। [समाप्त]।

और उसी में महर के अध्याय में है: बिना किसी शारीरिक बाधा (मानी-ए-हिस्सी) के सही एकांत (ख़लवत), जैसे रत्क़ (दो फ़त्हों के साथ) जिसका अर्थ है मांस का जुड़ जाना, और क़र्न (सुकून के साथ) जिसका

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

तनवीरुल अबसार की खुन्सा की चर्चा में है कि खुन्सा वह है जिसके लिंग और योनि दोनों हों या अंडकोष न हों, तो अगर उसके स्तन ज़ाहिर हो जाएँ तो वह औरत मानी जाएगी। तनवीर की इबारत ख़त्म हुई, तलख़ीसन।

दुर्र-ए-मुख्तार में निकाह की बहस में है कि फ़ुक़हा-ए-किराम के यहाँ निकाह ऐसा अनुबंध है जो मर्द को औरत से संभोग का मालिक बना देता है, जबकि उससे कोई शरई रुकावट न हो।

और उसी के महर के बाब (अध्याय) में है कि जब ख़लवत बिना किसी शारीरिक बाधा के हासिल हो जाए, तो महर को लाज़िम करने में उसका हुक्म संभोग की तरह है। ख़लवत में शारीरिक बाधा जैसे रत्क़ (रा और ता के साथ) जिसका अर्थ शर्मगाह में मांस का उभर आना

अरबी मूल पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
अर्थ है हड्डी, और अक़्ल (दो फ़त्हों के साथ) जिसका अर्थ है ग्रंथि, जिसमें संभोग असहनीय हो, महर को पक्का करने में संभोग की तरह ही है। [सारांश समाप्त]।	है, और जैसे क़र्न सुकून-ए-रा के साथ, जिसका अर्थ हड्डी है, और अक़्ल, ऐन और क़ाफ़ पर फ़त्ह के साथ, जिसका अर्थ ग्रंथि है, यानी शर्मगाह में हड्डी या ग्रंथि इस तरह बढ़ जाए कि संभोग के लिए रुकावट बन जाए। [सारांश समाप्त]।
और उसी बाब में है: संभोग या ख़लवत से पहले तलाक़ पर आधा महर लाज़िम है। [समाप्त]। और फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ां में है: और रक़्क़...	दुर्र-ए-मुख्तार के इसी बाब में है कि आधा महर लाज़िम होगा जब ख़लवत या संभोग से पहले...

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, किताबुल खुन्सा, मुजतबाई दिल्ली, 341/2
2. दुर्र-ए-मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, किताबुल निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 185/1
3. दुर्र-ए-मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल महर, मुजतबाई दिल्ली, 199/1
4. दुर्र-ए-मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल महर, मुजतबाई दिल्ली, 198/1

पृष्ठ 194 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

قبل از بلوغ بوجہ انتفائے ہر دو علامت از قبیل خنثٰی مشکل تھی مگر جب بعد بلوغ اس کی پستانیں مثل پستان زن ظاہر ہوئیں تو اشکال زائل اور اس کا عورت ہونا منکشف ہوگیا، اب بلا شبہ یہ نکاح اپنے محل میں واقع اور حل استمتاع کو شرعاً مفید کہ شرائط صحت سب موجود ہیں اور موانع شرعیہ بالکل مفقود، البتہ فساد خلوت عدم تأکدِ مہر کا باعث ہے، اور خیارِ عیب کو نکاح میں دخل نہیں تاکہ زید بوجہ اس کے فسخ نکاح کرسکے اور کل مہر اس کے ذمہ سے ساقط ہو جائے، رہا امر حسی کا عائق ہونا وہ ہر گز منافی جواز نہیں۔

عربی عبارت

فی تنویر الابصار من کتاب الخنثٰی ھو ذو فرج و ذکر او من عری عن الانثیین فان ظھر لہ ثدی فامرأۃ انتہٰی مع التلخیص۔

وفی الدرالمختار من النکاح ھو عند الفقھاء عقد یفید ملک المتعۃ ای حل استمتاع الرجل من امرأۃ لم یمنع من نکاحھا مانع شرعی انتہٰی۔

اردو ترجمہ و تشریح

تنویر الابصار کی خنثٰی کی بحث میں ہے کہ خنثٰی وہ ہے کہ جس کا ذکر اور فرج دونوں ہوں یا خصیتین نہ ہوں، تو اگر اس کے پستان ظاہر ہو جائیں تو عورت قرار پائے گی، تنویر کی عبارت ختم ہوئی، تلخیصاً۔

درمختار میں نکاح کی بحث میں ہے فقہاء کرام کے ہاں نکاح ایسا عقد ہے جو مرد کو عورت سے جماع کا مالک بنا دیتا ہے جبکہ اس سے کوئی شرعی مانع نہ ہوا

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
وفیہ من باب المهر الخلوة بلا مانع حسی کرتق بفتحتین التلاحم و قرن بالسکون عظم و عقل بفتحتین غدة لا یطاق فیہ الجماع کالوطی فی تأکد المهر انتہٰی ملخصاً۔	اور اسی کے مہر کے باب میں ہے کہ جب خلوت بغیر کسی حسی مانع کے حاصل ہو جائے تو اس کا حکم مہر کو لازم کرنے میں جماع کی طرح ہے، خلوت میں حسی مانع جیسے رتق (راء اور تاء کے ساتھ) جس کا معنی شرمگاہ میں گوشت کا اُبھر جانا، اور جیسے قرن بسکون راء، جس کا معنی ہڈی اور عقل، ع اور ق پر فتح، جس کا معنی غدود ہے یعنی ہڈی اور غدود شرمگاہ میں اس طرح بڑھ جائے کہ جماع کے لیے مانع بن جائے اھ ملخصاً
وفیہ من ذلک الباب ویجب نصفہ بطلاق قبل و طی او خلوة انتہٰی و فی فتاوی الامام قاضی خاں و الرتق۔	درمختار کے اسی باب میں ہے کہ نصف مہر لازم ہوگا جب خلوت یا جماع سے [پہلے طلاق ہو]

---

1. درمختار شرح تنویر الابصار کتاب الخنثیٰ مجتبائی دہلی ۳۴۱/۲
2. درمختار شرح تنویر الابصار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱۸۵/۱
3. درمختار شرح تنویر الابصار باب المہر مجتبائی دہلی ۱۹۹/۱
4. درمختار شرح تنویر الابصار باب المہر مجتبائی دہلی ۱۹۸/۱

Fatawa Rizvia Volume Eleven

[Boxed Content] [Arabic Text] It prevents 'Khalwa' (privacy) because it prevents sexual intercourse. In the chapter on divorce in 'Al-Asl' (Mabsut), it is mentioned that 'Iddah' (waiting period) is obligatory for a woman with 'Ratq' (a physical condition),[1] and she is entitled to half the dowry. This is the end of it. In the same work, in the chapter on options in marriage, it states that the 'option of defect' (Khiyar al-Ayb), which is the right to annulment due to a defect, is not established in marriage according to us. Therefore, a woman cannot be returned due to any defect. Imam Shafi'i said that one can return due to 'Qarn' and 'Ratq' and annul the marriage. If it is returned or annulled before consummation,[2] the entire dowry is forfeited; otherwise, the full customary dowry (Mahr al-Mithl) is the woman's right, as is the ruling for annulment. This is the end, summarized. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation] (If) divorce is given before (consummation), it is in 'Fatawa Qazi Khan' that 'Ratq' (a physical obstruction) prevents 'Khalwa' because it prevents intercourse. In the discussion of divorce in 'Al-Asl' (Mabsut), it is stated that 'Iddah' is obligatory for a woman with 'Ratq' and she will receive half the dowry. In the discussion of marriage options in 'Al-Asl', it is mentioned that the 'option of defect', which is the right of annulment due to a defect, is not established in the matter of marriage among us. Therefore, a woman will not be returned due to any defect. Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) stated that a man has the right to annulment due to the defects of 'Qarn' or 'Ratq'. Thus, if he returns or annuls it before the actual consummation, the entire dowry will be forfeited; otherwise, the woman has the right to the full customary dowry, as is the ruling for annulment. Summaried. And Allah Almighty knows best. (T)

Question 19: What do the scholars of religion say regarding this matter: if a woman who is a courtesan lives with a male acquaintance in seclusion (Pardah), according to the custom of debaucheries where they keep her in seclusion for the purpose of keeping her beneficial and preventing her from turning to other men, will that woman be considered a wife according to Shariah or not? And if she is considered a wife, is there any period fixed for such cohabitation or not? And if there is, how long is that period? Provide a clear ruling, and may you be rewarded.

The Answer: In the case questioned, the seclusion of this courtesan only from those with whom there is a possibility of a liaison is not credible. Such seclusion cannot be evidence of the proof of marriage. However, if that man and woman live like husband

and wife, and those who are familiar with their domestic circumstances consider them husband and wife, then they will be declared husband and wife according to Shariah, not as an adulterer and adulteress. Attributing fornication to a Muslim without Shariah proof is never permissible; the level of caution the Lawgiver (Shar'i) has exercised in this matter, in other dealings...

---

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Khalwa, Naval Kishore Lucknow, 1/181
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Options Related to Marriage, Naval Kishore Lucknow, 1/178

फ़तावा रिज़विया खंड ग्यारह

[बॉक्स सामग्री] [अरबी पाठ] यह 'खलवत' (एकांत) को रोकता है क्योंकि यह संभोग को रोकता है। 'अल-अस्ल' (मबसूत) में तलाक के अध्याय में उल्लेख किया गया है कि 'रतक़' (एक शारीरिक स्थिति) वाली महिला के लिए 'इद्दत' (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है,[1] और वह आधे मेहर (दहेज) की हकदार है। यह इसका अंत है। उसी कृति में, विवाह में विकल्पों के अध्याय में कहा गया है कि 'दोष का विकल्प' (खियार अल-ऐब), जो दोष के कारण निरस्तीकरण का अधिकार है, हमारे अनुसार विवाह में स्थापित नहीं है। इसलिए, किसी भी दोष के कारण महिला को वापस नहीं किया जा सकता है। इमाम शाफई ने कहा कि 'क़र्न' और 'रतक़' के कारण वापस किया जा सकता है और विवाह को रद्द किया जा सकता है। यदि संभोग से पहले वापस या रद्द कर दिया जाता है,[2] तो पूरा मेहर समाप्त हो जाता है; अन्यथा, पूरा प्रथागत मेहर (मेहर अल-मिसल) महिला का अधिकार है, जैसा कि निरस्तीकरण का नियम है। यह सारांश के साथ समाप्त होता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद] (यदि) तलाक पहले दी गई हो, 'फ़तावा क़ाज़ी खान' में है कि 'रतक़', खलवत के लिए बाधक है क्योंकि यह संभोग के लिए बाधक है। और 'अस्ल' (मबसूत) में तलाक की चर्चा में है कि 'रतक़' वाली औरत पर इद्दत वाजिब है और उसे आधा मेहर मिलेगा। और 'अस्ल' में निकाह के विकल्पों की चर्चा में है कि 'खियार-ए-ऐब' जिसे ऐब की वजह से फ़स्ख (निरस्त) करने का हक़ कहते हैं, हमारे यहाँ निकाह के मामले में साबित नहीं है। इसलिए किसी ऐब की वजह से औरत को वापस नहीं किया जाएगा। इमाम शाफई ने फरमाया कि 'क़र्न' और 'रतक़' वाले ऐब की वजह से मर्द को फ़स्ख का अधिकार है। अतः यदि वास्तविक संभोग से पहले वापस या फ़स्ख कर दे, तो सारा मेहर साक़ित (समाप्त) हो जाएगा; अन्यथा औरत पूरे मेहर-ए-मिसल की हकदार है जैसा कि फ़स्ख का नियम है। सारांशतः। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

प्रश्न 19: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: यदि कोई महिला जो एक तवायफ (वेश्या) है, किसी पुरुष परिचित के साथ पर्दे में रहती है, विलासिता के रिवाज के अनुसार, जहाँ उसे दूसरे पुरुषों की ओर मुड़ने से रोकने और उसे उपयोगी रखने के उद्देश्य से पर्दे में रखा जाता है, क्या उस महिला को शरीयत के अनुसार पत्नी माना जाएगा या नहीं? और यदि उसे पत्नी माना जाता है, तो ऐसे सहवास के लिए कोई अवधि निर्धारित है या नहीं? और यदि है, तो वह अवधि कितनी है? स्पष्ट नियम प्रदान करें, और आपको प्रतिफल मिले।

उत्तर: पूछे गए मामले में, इस तवायफ का केवल उन लोगों से पर्दा, जिनके साथ मेल-मिलाप की संभावना है, विश्वसनीय नहीं है। ऐसा पर्दा निकाह (विवाह) के प्रमाण का सबूत नहीं हो सकता। हालाँकि, यदि वह पुरुष और महिला पति-पत्नी की तरह रहते हैं, और जो लोग उनकी घरेलू परिस्थितियों से परिचित हैं वे उन्हें पति-पत्नी मानते हैं, तो उन्हें शरीयत के अनुसार पति-पत्नी घोषित किया जाएगा, न कि ज़ानी (व्यभिचारी) और ज़ानिया (व्यभिचारिणी)। बिना शरई सबूत के किसी मुसलमान पर बदकारी (व्यभिचार) का आरोप लगाना हरगिज़ जायज़ नहीं है; शरीअत देने वाले ने इस मामले में जितनी सावधानी बरती है, दूसरे मामलों में...

---

1. फ़तावा क़ाज़ी खान, खलवत पर अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/181
2. फ़तावा क़ाज़ी खान, निकाह से संबंधित विकल्पों पर अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/178

पृष्ठ 195/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

[Boxed Content] یمنع الخلوۃ لانہ یمنع الجماع وذکر في طلاق الاصل ان العدۃ یجب علی الرتقاء ای فلھا نصف المھر [1] انتھی وفیھا من فصل خیارات النکاح ومنھا خیار العیب وھو حق الفسخ بسبب العیب عندنا لایثبت في النکاح فلاترد المرأۃ بعیب ما و قال الشافعي لہ ان یرد بالقرن والرتق و یفسخ النکاح فان رد قبل الدخول [2] یسقط کل المھر والامھر المثل کما ھو حکم الفسخ انتھی مع التلخیص۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

قبل طلاق دی ہو اھ فتاوی قاضی خاں میں ہے کہ رتق، خلوت کے لئے مانع ہے کیونکہ یہ جماع کے لئے مانع ہے، اور اصل (مبسوط) کی بحث طلاق کے بیان میں ہے کہ رتقا عورت پر عدت واجب ہے اور اس کے لئے نصف مہر ہو گا اھ اور اصل کی بحث اختیارات نکاح میں ہے کہ خیار عیب جس کو عیب کی وجہ سے حق فسخ کہتے ہیں، ہمارے ہاں نکاح کے باب میں ثابت نہیں، لہذا کسی عیب کی وجہ سے عورت کو رد نہیں کیا جائے گا۔ اور امام شافعی نے فرمایا کہ قرن اور رتق والے عیب کی وجہ سے مرد کو فسخ کا اختیار ہے پس اگر قبل از خود دخول رد یا فسخ کر دے تو تمام مہر ساقط ہو جائے گا ورنہ پورا مہر مثل عورت کا حق ہے جیسا کہ فسخ کا حکم ہے اھ ملخصا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کوئی عورت طوائف کسی مرد آشنا کے ساتھ پردہ میں حسب دستور عیاشیوں کے جو بغرض مفید رکھنے اور نہ ملتفت ہونے اس کے ساتھ دوسرے مرد کے، پردہ میں رکھتے ہیں ہم خانہ رہی ہو، وہ عورت شرعا زوجہ تصور کی جائے گی یا نہیں؟ اور اگر زوجہ تصور کی جائے گی تو ایسے ہم خانہ رہنے کے واسطے کوئی مدت مقرر ہے یا نہیں؟ اور ہے تو کس قدر مدت ہے؟ بینوا توجروا الجواب: صورت مسئولہ میں

پردہ اس طوائف کا صرف ان لوگوں سے جن سے احتمال موافقت کا ہو معتبر بہ نہیں ، ایسا پردہ ثبوت نکاح کی دلیل نہیں ہو سکتا، البتہ اگر وہ مرد وزن مثل زوج وزوجہ رہتے، اور جو لوگ ان کے حالات خانگی سے واقف ہیں انھیں زوج و زوجہ تصور کرتے ہوں تو شرعا زوج و زوجہ قرار پائیں گے نہ کہ زانی و زانیہ کہ مسلمان کی طرف بدکاری کی نسبت بے ثبوت شرعی ہر گز جائز نہیں، شارع نے جس قدر احتیاط اس بارے میں فرمائی دوسرے معاملہ

---

1 فتاوی قاضی خاں فصل في الخلوة نولكشور لكهنؤ ١ / ١٨١ 2 فتاوی قاضی خاں فصل فی الخيارات التي تتعلق بالنكاح نولكشور لكهنؤ ١ / ١٧٨

Fatawa Razvia Volume 11

...[The rule for] a good opinion does not apply here and calling the slanderer a liar is necessary. He (Allah), Exalted is His Name, said: 'Why did they not produce four witnesses against it?' [Quran 24:13] (If they do not bring four witnesses, etc.). And He says: 'And why did you not, when you heard it, say...' [Quran 24:16] (And why don't you say when you hear it, etc.). If any free, sane, adult, chaste Muslim is accused of adultery and it is not proven by four witnesses, then upon the demand of the accused, the accuser is lashed eighty times and their testimony is never accepted again. Allah the Almighty says: 'And those who accuse [chaste women]...' [Quran 24:4] (And those who level accusations, etc.). Similarly, if three witnesses testify to witnessing adultery and there is no fourth, then the punishment for false accusation (Qadhf) is mandatory for those witnesses.

In *Al-Fatawa al-Hindiyyah*: If fewer than four—one, two, or three—testify to adultery, their testimony is not accepted and the witnesses are punished with the prescribed punishment for slander (Qadhf).	**It is in *Fatawa Hindiyyah* that if fewer than four—i.e., one, two, or three—witnesses testify to adultery, then their testimony will not be accepted and the witnesses will be subject to the punishment for slander (Qadhf). End (T)**

Thus, in such a case, even if witnesses to the actual marriage ceremony are not present, Sharia decrees the marriage valid. Sharia has not fixed any time period for this; instead, in the absence of witnesses to the ceremony, the basis for proof is public knowledge and fame. And Allah the Almighty knows best.

Problem 20: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say in this matter: Hind was married to Zaid. On the wedding night, Zaid did not approach her at all and stayed separate, and Zaid did not have intercourse with Hind. Later, it was found out that Zaid is impotent. Hind also got Zaid treated for impotence for a long time, but no intercourse occurred. Now Hind lives at her parents' house, and Zaid, due to his impotence, wants to kill Hind. In this situation, is Hind's marriage to Zaid valid or not? And can Hind marry another person or not? Whatever the ruling of Sharia is, let it be enacted. Clarify and be rewarded.

The Answer: Hind's marriage to Zaid is valid.

Because the absence of impotence is not among the conditions for its [the marriage's] validity. If it were so, there would have been no need for what they mentioned in the chapter on the impotent regarding filing a case and...

Because not being impotent is not a condition for the validity of the marriage. If it were so, then in the case of an impotent person, there would be no need to present the case before a Qazi and for the Qazi to grant a grace period...

---

1. Al-Quran 24:13
2. Al-Quran 24:16
3. Al-Quran 24:4
4. *Fatawa Hindiyyah*, Book of Punishments, Chapter Five on Testifying to Adultery, etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/52-151.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...यहाँ हुस्ने ज़न (अच्छा सोचना) वाजिब नहीं और तोहमत लगाने वाले को झुठलाना लाज़िम है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "वे इस पर चार गवाह क्यों न लाए?" [अल-क़ुरआन 24:13] (इस पर अगर वे चार गवाह पेश न करें...)। और इरशाद होता है: "और तुमने इसे सुनते ही क्यों न कह दिया..." [अल-क़ुरआन 24:16] (और क्यों नहीं तुम कहते जब तुम इसे सुनते हो...)। अगर कोई मुसलमान किसी आज़ाद, अक़लमंद, बालिग़ और पाकबाज़ मुसलमान पर ज़िना (व्यभिचार) की तोहमत लगाए और चार गवाहों से इसे साबित न कर सके तो मुक़ज़ूफ़ (जिस पर तोहमत लगी) के तलब करने पर उसे अस्सी कोड़े मारे जाते हैं और उसकी गवाही कभी क़बूल नहीं की जाती। अल्लाह तआला का इरशाद है: "और वे लोग जो तोहमत लगाते हैं..." [अल-क़ुरआन 24:4] (और वे लोग जो तोहमत लगाते हैं...)। इसी तरह अगर तीन गवाह ज़िना के मुआयने की गवाही दें और चौथा न हो, तो उन गवाहों पर 'हद-ए-क़ज़फ़' (तोहमत की सज़ा) लाज़िम आती है।

अल-फ़तावा अल-हिन्दिया में है: यदि चार से कम—यानी एक, दो या तीन—ज़िना की गवाही दें, तो उनकी गवाही क़बूल नहीं की जाएगी और गवाहों पर 'हद-ए-क़ज़फ़' लागू की जाएगी।

फ़तावा हिन्दिया में है कि अगर चार से कम—यानी एक या दो या तीन—गवाह ज़िना की गवाही दें तो उनकी शहादत क़बूल न होगी और गवाहों पर हद-ए-क़ज़फ़ होगी। अत् (त)

लिहाज़ा ऐसी सूरत में चाहे निकाह के मुआयने के गवाह मौजूद न हों, शरीअत निकाह का हुक्म दे देती है। शरीअत ने इस मामले के लिए कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं की है, बल्कि मुआयने के गवाहों की अदम मौजूदगी में सुबूत का मदार (आधार) शोहरत और फैलने पर है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 20: उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा का निकाह ज़ैद के साथ हुआ और ज़ैद शब-ए-ज़फ़ाफ़ (सुहागरात) में बिल्कुल मुख़ातिब न हुआ और अलग रहा, और ज़ैद ने हिन्दा से सोहबत (संभोग) नहीं की। बाद में पता चला कि ज़ैद नामर्द है। हिन्दा ने एक लंबे अरसे तक ज़ैद के नामर्दी का इलाज भी कराया लेकिन सोहबत की सूरत पैदा न हुई। अब हिन्दा अपने वालिदैन के यहाँ रहती है और ज़ैद अपनी नामर्दी की वजह से चाहता है कि हिन्दा को जान से मार डाले। इस सूरत में हिन्दा का निकाह ज़ैद से दुरुस्त हुआ या नहीं? और क्या

हिन्दा किसी दूसरे शख़्स से निकाह कर सकती है या नहीं? जैसा शरीअत का हुक्म हो वैसा बताया जाए। बयान कीजिए, सवाब पाइए।

अल-जवाब (उत्तर): हिन्दा का ज़ैद से निकाह दुरुस्त है।

क्योंकि नामर्दी का न होना निकाह की सेहत (वैधता) के लिए शर्त नहीं है। अगर ऐसा होता तो 'बाब-उल-इन्नीन' (नामर्द के अध्याय) में काज़ी के सामने मुक़दमा ले जाने और मोहलत माँगने की ज़रूरत न होती और...

क्योंकि निकाह के दुरुस्त होने के लिए नामर्द न होना शर्त नहीं है, और अगर यह बात होती तो फिर नामर्द के सिलसिले में क़ाज़ी के यहाँ पेश करने और क़ाज़ी की मोहलत...

---

1. अल-क़ुरआन 24:13
2. अल-क़ुरआन 24:16
3. अल-क़ुरआन 24:4
4. फ़तावा हिन्दिया, किताबुल हुदूद, बाबुल ख़ामिस फ़िश शहादते अलल ज़िना वग़ैरह, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 2/52-151.

میں نہ آئی یہاں حسن ظن واجب اور تکذیب قاذف لازم، قال عزاسمہ لَوْلَا جَاءُو عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۱ الآیۃ (اس پر اگر وہ چار گواہ پیش نہ کریں ، الآیہ ت) اور ارشاد ہوتا ہے: - وَ لَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ ۲ الآیۃ (اور کیوں نہیں تم کہتے جب تم اسے سنتے ہو، الآیہ ت) اگر کوئی مسلمان حر عاقل بالغ عفیف کی طرف نسبت زنا کرے اور چار گواہوں سے ثابت نہ کردے تو بعد طلب مقذوف کے اسے اسی کوڑے مارے جاتے ہیں اور گواہی اس کی کبھی قبول نہیں ہوتی، قال اللہ تعالٰی : وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ ۳ الآیۃ (اور وہ لوگ جو تہمت لگاتے ہیں الآیہ ت) اسی طرح اگر تین گواہ معائنہ زنا کی گواہی دیں اور چوتھا نہ ہو تو ان گواہوں پر قذف لازم آتی ہے،

فی الفتاوی الھندیۃ ان یشھد علی الزنا اقل من اربعۃ بأن شھد واحد أواثنان أوثلثہ لا تقبل الشھادۃ ویحد الشاھد حد القذف ٤ اھ

فتاوٰی ہندیہ میں ہے کہ اگر چار سے کم ایک یادو یا تین گواہ زنا کی گواہی دیں تو ان کی شہادت قبول نہ ہوگی اور گواہوں پر حد قذف ہوگی اھ (ت)

پس ایسی صورت میں گو گواہان معائنہ نکاح موجود نہ ہوں شرع حکم نکاح کا فرمادیتی ہے اور اس امر کے لیے شرع شریف میں کوئی مدت مقرر نہ فرمائی بلکہ بحالت عدم شہود معائنہ مدار ثبوت انبساط و شہرت پر ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا نکاح زید کے ساتھ ہوا اور زید شب زفاف میں بالکل مخاطب نہ ہوا اور جا پر علیحدہ رہا اور باہم صحبت زید نے ہندہ سے نہیں کی، بعدہ معلوم ہوا کہ زید نامرد ہے اور ہندہ نے زید کا عنین ہونے کا بھی ایک عرصہ تک علاج کیا لیکن صورت صحبت ظہور میں نہ آئی، اب ہندہ اپنے والدین کے یہاں رہتی

ہے اور زید سبب نامردی کے چاہتا ہے کہ ہندہ کو جان سے مار ڈالے، اس صورت میں نکاح ہندہ کا زید سے درست ہوا یا نہیں؟ اور ہندہ دوسرے شخص سے نکاح کر سکتی ہے یا نہیں۔؟ جیسا کہ حکم شرع شریف کا ہو ویسا کیا جائے، بینوا توجروا۔

الجواب: نکاح ہندہ کا زید سے درست ہے،

اذلیس عدم العنۃ من شرائط صحتہ کیونکہ نکاح کے درست ہونے کے لیے نامرد نہ ہونا شرط

ولوکان کذلك لما احتیج الی ماذکروہ نہیں ہے، اور اگر یہ بات ہوتی تو پھر نامرد کے سلسلہ

من باب العنین من المرافعۃ و میں قاضی کے ہاں پیش کرنے اور قاضی کا مہلت

---

1 القرآن ۱۳/۲۴ 2 القرآن ۱۶/۲۴ 3 القرآن ۴/۲۴ 4 فتاویٰ ہندیہ کتاب الحدود الباب الخامس في الشهادة على الزنا الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۵۲/۲-۱۵۱

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

Postponement, demand, and separation; and this is very clear.	**The jurists would not have needed to mention matters like giving time, the woman's demand, and then separation by the Qadi, as this point is absolutely clear. (T)**

It is not permissible at all for Hinda to marry another person without obtaining a divorce. If she does, the second marriage will be absolutely void, and intimacy with the second husband will be pure adultery, and refuge is sought with Allah Almighty.

And that is due to the continuation of the marriage bond as we mentioned, so the impotent and others are equal in it.	**The impermissibility of a second marriage is for the protection of the first marriage, as we have mentioned. Therefore, in this matter, the impotent and the potent man are equal. (T)**

Yes, the way to resolution is for Zaid and Hinda to appoint a learned person as an arbitrator in their matter.

In 'Al-Khayriyyah', it is valid to appoint an arbitrator in the case of an impotent person because it is not a case of Hudud, Qisas, or Diyah on the 'Aaqilah, and they have the authority to separate at the wife's request. End quote.	**So in Fatawa Khayriyyah, it is stated that appointing an arbitrator in the issue of impotence is correct because this is not an issue of Hudud (prescribed punishments), Qisas (retaliation), or Diyah (blood money) on the 'Aaqilah (kinship group). It is permissible for the arbitrators to effect separation upon the demand of the woman. End quote (T).**

Hinda should file a claim of her husband's impotence before him and seek separation on this basis. When his being impotent is proven before the arbitrator through Shariah methods—one of which, for example, is Zaid's confession—then, in view of the details mentioned in Fiqh (jurisprudence), let a one-year grace period be given to Zaid. During this entire year, the husband and wife shall remain apart. If Hinda goes away somewhere for some days, those days shall not be counted in the year. When a full year has passed in this manner and Zaid is unable to perform with Hinda, then at that time, upon Hinda's request, separation shall be effected between Zaid and Hinda. Now, after the 'Iddah (waiting period), Hinda will have the choice to marry.

And everything we have mentioned is detailed in 'Al-Durr al-Mukhtar', 'Radd al-Muhtar', 'Al-Fatawa al-Khayriyyah', and other books of Fiqh. And Allah Almighty knows best.

Whatever we have mentioned, its details are present in Durr al-Mukhtar, Radd al-Muhtar, Fatawa Khayriyyah, and other books. (T)

Problem 21: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, along with a few companions, went to Amr's place to propose for his daughter. Amr expressed his willingness to marry his daughter to him and spoke with those who had come to negotiate...

[1] Fatawa Khayriyyah, Chapter of Arbitration, Dar al-Ma'rifah, Beirut 12/2 Page 197 of 739

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

मोहलत देना, माँग और अलगाव; और यह बिल्कुल स्पष्ट है।

फ़क़ीहों (धर्मशास्त्रियों) को मोहलत देने, औरत की माँग और फिर क़ाज़ी द्वारा अलगाव जैसे मामलों का उल्लेख करने की ज़रूरत नहीं पड़ती, जबकि यह बात बिल्कुल साफ़ है। (त)

हिंदा के लिए हरगिज़ जायज़ नहीं कि तलाक़ हासिल किए बिना किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह कर ले। अगर वह ऐसा करती है, तो दूसरा निकाह बिल्कुल बातिल (अमान्य) होगा और दूसरे शौहर के साथ क़ुरबत (निकटता) विशुद्ध ज़िना (व्यभिचार) होगी, अल्लाह तआला की पनाह।

और यह निकाह के बंधन (इस्मत) के बाक़ी रहने के कारण है जैसा कि हमने उल्लेख किया है, इसलिए नामर्द और अन्य इसमें बराबर हैं।

दूसरे निकाह की नामंज़ूरी पहले निकाह की सुरक्षा के लिए होती है जैसा कि हमने ज़िक्र किया है, लिहाज़ा इस मामले में नामर्द और मर्द बराबर हैं। (त)

हाँ, समाधान की सूरत यह है कि ज़ैद और हिंदा अपने मामले में किसी जानकार (इल्म वाले) को पंच (मध्यस्थ) नियुक्त करें।

'अल-खैरिया' में है कि नामर्द के मसले में पंच बनाना सही है क्योंकि यह हुद्दूद, क़िसास या आक़िला पर दियत का मसला नहीं है, और उन्हें पत्नी की माँग पर अलग करने का अधिकार है।

तो फ़तावा खैरिया में है कि नामर्द के मसले में पंच बनाना इसलिए सही है क्योंकि यह हद (नियत सज़ा), क़िसास (बदला) और आक़िला पर दियत (खून का मुआवज़ा) का मसला नहीं है, पंचों के लिए औरत की माँग पर अलगाव करना जायज़ है। (त)

हिंदा उसके सामने शौहर की नामर्दी का दावा करे और इस आधार पर अलगाव चाहे। जब पंच के नज़दीक उसका नामर्द होना शरीयत के तरीक़ों से साबित हो जाए—जिनमें से एक तरीक़ा मसलन ज़ैद का इक़रार (स्वीकृति) है—तो फ़िक़्ह में वर्णित विवरणों के अनुसार ज़ैद को साल भर की मोहलत दे। इस पूरे साल में मियाँ-बीवी बेकार (अलग) रहें। अगर कुछ दिनों के लिए हिंदा कहीं चली जाएगी, तो वे दिन साल में नहीं गिने जाएँगे। जब इस तरह पूरा साल गुज़र जाए और ज़ैद हिंदा पर कुदरत न पाए (सक्षम न हो), तो उस वक़्त हिंदा की माँग पर ज़ैद और हिंदा के बीच अलगाव कर दिया जाए। अब इद्दत के बाद हिंदा को निकाह का अधिकार होगा।

और जो कुछ हमने उल्लेख किया है वह 'अल-दुर्र अल-मुख्तार', 'रद्द अल-मुह्तार', 'अल-फ़तावा अल-खैरिया' और फ़िक़्ह की अन्य पुस्तकों में विस्तार से वर्णित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

जो कुछ हमने ज़िक्र किया है, उसका विवरण दुर्र-ए-मुख्तार, रद्दुल-मुह्तार और फ़तावा खैरिया आदि किताबों में मौजूद है। (त)

मसला २१: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद कुछ साथियों के साथ अम्र के यहाँ उसकी बेटी का रिश्ता माँगने गया। अम्र ने उसके साथ बेटी की शादी करने पर रज़ामंदी ज़ाहिर की और बात करने वालों से...

[1] फ़तावा खैरिया, बाबूत्तहकीम, दारुल मआरिफ़ा बैरूत 12/2 पेज 197 ऑफ़ 739

التأجيل والطلب والتفريق وهذا واضح جدا۔ **دینا، عورت کا مطالبہ، اور پھر قاضی کی تفریق وغیرہ امور ذکر کرنے کی فقہاء کو ضرورت پیش نہ آتی، جبکہ یہ بات بالکل واضح ہے۔ (ت)**

ہندہ کو ہرگز روا نہیں کہ بغیر حصول طلاق دوسرے شخص سے نکاح کرلے، اگر کرے گی نکاح ثانی باطل محض ہوگا اور شوہر ثانی سے قربت زنائے خالص، والعیاذ باللہ تعالٰی۔

وذلك لبقاء العصمة كما ذكرنا فالعنين وغيره فيها سواء۔ **دوسرے نکاح کا عدم جواز پہلے نکاح کے تحفظ کے لئے ہوتا ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا ہے، پس اس معاملہ میں نامرد اور مرد برابر ہیں۔ (ت)**

ہاں صورت خلاص یہ ہے کہ زید و ہندہ اپنے معاملہ میں کسی ذی علم کو پنچ کریں۔

ففي الخيريه يصح التحكيم فی مسئلۃ العنين لانه ليس بحد ولاقود ولادية على العاقلة ولهم ان يفرقوا بطلب الزوجة اھ **تو فتاوٰی خیر یہ میں ہے نامرد کے مسئلہ میں حکم بنانا اس لیے درست ہے کہ یہ حد، قصاص اور عاقلہ پر دیت کا مسئلہ نہیں ہے، حکم حضرات کے لیے عورت کے مطالبہ پر تفریق کرنا جائز ہے اھ (ت)**

ہندہ اس کے حضور عنت شوہر کا دعوٰی کرے اور اس بناء پر تفریق چاہے پنچ کے نزدیک جب اس کا عنین ہونا بطریق شرعیہ کہ ان میں سے ایک طریقہ مثلاً اقرار زید ہے ثابت ہو جائے گا تو بملاحظہ تفاصیل مذکورہ فی الفقہ سال بھر کی زید کو مہلت دے اور اس تمام برس میں زن و شو بیکار ہیں، اگر کچھ دنوں کو ہندہ کہیں چلی جائیگی وہ دن سال میں معدود نہ ہوں گے، جب اس

طرح سال کامل گزر جائے اور زید ہندہ پر قدرت نہ پائے تو اس وقت بطلب ہندہ زید و ہندہ میں تفریق کردی جائے، اب بعد عدت ہندہ کو اختیار نکاح ہوگا۔

وکل ماذکرنا مفصل فی الدرالمختار وردالمحتار والفتاوی الخیریہ وغیرھا من الکتب الفقھیۃ واللہ تعالی اعلم۔

جو کچھ ہم نے ذکر کیا ہے اس کی تفصیل در مختار، ردالمحتار اور فتاوٰی خیر یہ وغیرہ کتب میں موجود ہے۔ (ت)

مسئلہ ۲۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید مع چند ہمراہیوں کے عمرو کے یہاں اس کی دختر کو پیام دینے گیا عمرو نے اس کے ساتھ شادی دختر کر دینے پر رضا ظاہر کی اور گفتگو کرنے والوں سے

[1] فتاوٰی خیر یہ باب التحکیم دارالمعرفۃ بیروت ۱۲/۲ Page 197 of 739

Addressing him, he said, "I have given my daughter to you." At this, Zaid said, "Fine, it is acceptable to us. Since you have accepted my proposal and given your word, I am content." In short, the matter was settled in every way and both parties were satisfied. Now, Amr wants to marry that daughter to another person. Is this permissible for him or not? And without Zaid's withdrawal or objection, would the marriage of this daughter to another person be valid or not? And since Amr said, "I have given my daughter to you," and Zaid replied, "Fine, it is accepted and approved," did this constitute a clear offer and acceptance (Ijab-o-Qabul) resulting in a marriage contract or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the described scenario, although the one asked (father) retracting his promise and intending to marry [the daughter] to someone else after giving his word to the first proposer is religiously reprehensible, improper, and subject to accountability, as Allah the Almighty says: "Indeed, the covenant will be questioned." [1] (Accountability will be sought for promises. - T). And just as there is accountability for the one being asked, similarly, that second proposer who sent a proposal for a woman already engaged to another is religiously guilty of a foul act.

It is authentically narrated that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade bargaining over a brother's bargain and proposing over a brother's proposal.	There is an authentic Hadith that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade bargaining over a brother's transaction and proposing over a brother's engagement. (T)

However, despite this, if the person being asked does not marry his daughter to the first proposer and marries her to someone else instead, this marriage will be legally valid and correct according to Sharia. There is no need for the first proposer's withdrawal or objection because the conversation that took place between the proposer and the father was merely a proposal from one side and a mere promise from the other, not a contract of offer and acceptance. Therefore, the girl had not yet entered the bond of marriage (Nikah) with the first proposer, such that her marriage to another would be considered invalid.

In 'Al-Uqud al-Durriyya', it was asked: when Zaid's representative proposed to Amr's adult daughter for Zaid in the	In 'Al-Uqud al-Durriyya', a question was asked: when Zaid's representative sought the hand of Amr's adult daughter for Zaid

presence of people, the father replied, "My daughter's dower (Mahr) is such-and-such. If you agree, then fine, otherwise not." On this, the proposer agreed and paid the father...	in the presence of people, the girl's father replied, "My daughter's dower is such-and-such. If you are satisfied, it is fine, otherwise not." At this, the proposer agreed and...

[1] Al-Quran 17/34 [2] Sahih Muslim, Chapter: Prohibition of Proposing Over a Brother's Proposal, etc., Qadeemi Kutub Khana, Aram Bagh, Karachi, 1/454

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

संबोधित करते हुए कहा, "मैंने अपनी बेटी तुम्हें दे दी," जिस पर ज़ैद ने कहा, "बेहतर, हमें मंज़ूर है जब आपने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और ज़बान दे दी, तो मुझे तसल्ली हो गई।" संक्षेप में, मामला हर तरह से तय पा गया और दोनों पक्ष संतुष्ट हो गए। अब, अम्र उस बेटी का निकाह दूसरे व्यक्ति से करना चाहता है। क्या उसके लिए ऐसा करना जायज़ है या नहीं? और ज़ैद के छोड़े या एतराज़ किए बिना, क्या उस लड़की का निकाह दूसरे व्यक्ति से सही होगा या नहीं? और चूंकि अम्र ने कहा था, "मैंने अपनी लड़की तुम्हें दी," और ज़ैद ने इसके जवाब में कहा, "बेहतर, कुबूल व मंज़ूर है," तो क्या यह साफ़ तौर पर ईजाब-ओ-कुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) होकर निकाह हो गया या नहीं? बयान फरमाएं आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, हालांकि अपनी बात से पीछे हटना और पहले प्रस्तावक को ज़बान देकर दूसरे से निकाह का इरादा करना शरीयत के अनुसार निंदनीय, अनुचित और जवाबदेही के योग्य है, जैसा कि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फ़रमाया है: "निश्चय ही वादे (वचन) के बारे में पूछा जाएगा।" [1] (वादे के बारे में सवाल किया जाएगा। - त)। और जिस तरह प्रस्तावक (पिता) पर जवाबदेही है, उसी तरह वह दूसरा प्रस्तावक जिसने पहले से मंगनी हुई स्त्री को निकाह का संदेश भेजा, शरीयत की दृष्टि में घृणित कार्य का अपराधी है।

यह सहीह तौर पर प्रमाणित है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भाई के सौदे पर सौदा करने और भाई की मंगनी पर मंगनी करने से मना फ़रमाया है।

सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भाई के सौदे पर सौदे और भाई की मंगनी पर मंगनी से मना फ़रमाया है। (त)

लेकिन इसके बावजूद, यदि वह व्यक्ति अपनी बेटी का निकाह पहले प्रस्तावक से न करके किसी और से कर देता है, तो यह निकाह शरीयत के अनुसार सही और दुरुस्त हो जाएगा। इसमें पहले प्रस्तावक के छोड़ने या एतराज़ की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जो बातचीत प्रस्तावक और पिता के बीच हुई थी, वह प्रस्तावक की ओर से केवल एक प्रस्ताव (ख़िताब) था और पिता की ओर से मात्र एक वादा था, न कि ईजाब-ओ-कुबूल का अनुबंध। अत; वह लड़की अभी तक पहले प्रस्तावक के निकाह के बंधन में नहीं आई थी, जिसके कारण दूसरे से उसका निकाह अवैध ठहराया जा सके।

'अल-उक़ूद अद-दुर्रिह' में पूछा गया: जब ज़ैद के वकील ने लोगों की मौजूदगी में ज़ैद के लिए अम्र की बालिग़ बेटी का हाथ माँगा, तो पिता ने जवाब दिया, "मेरी बेटी का मह्र इतना है, अगर आप सहमत हैं तो ठीक है वर्ना नहीं।" इस पर प्रस्तावक सहमत हो गया और पिता को भुगतान किया...

'अल-उक़ूद अद-दुर्रिह' में सवाल किया गया कि जब ज़ैद के वकील ने अम्र की बालिग़ लड़की के बारे में लोगों की मौजूदगी में ज़ैद के लिए मंगनी की, तो लड़की के बाप ने जवाब में कहा, "मेरी लड़की का इतना मह्र है, अगर आप राजी हैं तो बेहतर वर्ना नहीं," इस पर मंगनी करने वाला राजी हो गया और...

[1] अल-क़ुरआन 17/34 [2] सहीह मुस्लिम, बाब: भाई की मंगनी पर मंगनी करना हराम है, आदि। क़दीमी कुतुब ख़ाना, आराम बाग़, कराची, 1/454

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

مخاطب ہو کر کہا میں نے اپنی لڑکی آپ کو دی، اس پر زید نے کہا بہتر ہم کو منظور ہے جب آپ نے میرا خطبہ کو منظور کیا اور زبان دی تو میری تسکین ہو گئی غرض ہمہ وجوہ قرار پا گئی اور طرفین کا اطمینان ہو گیا اب عمر واس دختر کا نکاح دوسرے شخص سے کرنا چاہتا ہے یہ اسے جائز ہے یا نہیں اور بغیر ترک یا اعتراض زید کے دوسرے شخص سے اس دختر کا نکاح صحیح ہو گا یا نہیں اور جبکہ عمرو نے کہا میں نے اپنی لڑکی آپ کو دی اور زید نے اس کے جواب میں کہا بہتر قبول و منظور ہے تو یہ صاف ایجاب و قبول ہو کر نکاح منعقد ہو گیا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر چہ مخطوب منہ کا اپنے اقرار سے پھر نا اور خاطب اول کو زبان دے کر دوسرے سے قصد تزویج کرنا شرعاً مذموم و بے جا و قابل مواخذہ ہے، قال تبارک وتعالٰی: اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْؤُولاً [1] (عہد کے بارے میں سوال کیا جائے گا۔ ت) اور جس طرح مخطوب منہ پر مواخذہ ہے اسی طرح وہ دوسرا خاطب جس نے مخطوبہ غیر پر پیام دیا شرعاً مرتکب شناعت ہے،

وقد صح ان النبي صلى الله تعالى عليه وسلم نهى عن السوم على سوم اخيه والخطبة على خطبة اخيه۔

صحیح حدیث میں ہے کہ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے بھائی کے سودے پر سودے اور بھائی کی منگنی پر منگنی سے منع فرمایا۔ (ت)

مگر با اینہمہ اگر مخطوب منہ اپنی لڑکی کا خاطب اول سے نکاح نہ کرے اور غیر سے تزویج کر دے یہ نکاح شرعاً صحیح و درست ہو جائے گا اور ترک و اعتراض خاطب اول کی کچھ حاجت نہیں کہ وہ گفتگو جواب تک خاطب و مخطوب منہ کے درمیان آئی اس کی طرف سے مجرد خطبہ

تھی اور اس کی جانب سے محض وعدہ، نہ عقد ایجاب و قبول، پس مخطوبہ ہنوز خاطب کی عصمت نکاح میں نہ داخل ہوئی جس کے سبب غیر سے اس کی تزویج ناروا ٹھہر ے،

في العقود الدرية سئل فيما اذا خطب وكيل زيد ابنة عمرو لبالغة لزيد بمحضر من الناس فاجابه الاب الى ذلك قائلا ان مهر ابنتى كذا ان رضيت فبها والا فلا فرضى الخاطب ودفع للاب

عقود الدرية میں سوال کیا گیا کہ جب زید کے وکیل عمرو کے لیے منگنی کی تو لڑکی کے باپ نے جواب میں کہا کہ میری لڑکی کا اتنا مہر ہے اگر آپ راضی ہیں تو بہتر ورنہ نہیں، اس پر منگنی والا راضی ہو گیا اور

[1] القرآن ۱۷ / ۳۴ [2] صحیح مسلم باب یحرم الخطبة علی خطبه اخیه الخ قدیمی کتب خانہ آرام باغ کراچی ۱ / ۴۵۴

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

(Arabic Text): He gave some jewelry and clothes to the girl's father for his daughter, but the girl did not agree to the engagement and rejected it. Is it permissible for her to do so? And will the engagement not be considered as a marriage contract at all? Answer: Since a Sharia marriage contract through proper offer and acceptance (Ijab and Qabul) did not take place between them, the engagement will not be considered a marriage contract at all. - (Urdu Text): He gave some jewelry to the girl's father and clothes to the girl. Then the girl refused to consent to the engagement and rejected it. In this situation, does the girl have the right to reject it? And will this engagement not stand in place of marriage? Answer: Legally (Sharia), a marriage with offer and acceptance did not occur, and this engagement will not stand in place of marriage.

And this phrase, "I have given the girl to you," although it is among the metaphors for marriage, it is considered a contract in a marriage assembly (Majlis-e-Aqd), but only a promise in a meeting for promise/engagement (Majlis-e-Wa'd).

(Arabic Text): In Radd al-Muhtar, from Fath al-Qadir, citing the commentary of at-Tahawi: If someone says, "Did you give her to me?" and he replies, "I gave her," then if the assembly was for a promise, it's a promise; if it was for a contract, it's a marriage. This was affirmed by Allama al-'Ala'i, al-Fadil ar-Rahmati, Sayyid at-Tahtawi, and others, may Allah Almighty have mercy on them. - (Urdu Text): It is quoted in Radd al-Muhtar from Fath al-Qadir, citing at-Tahawi's commentary, that if someone said to another, "You gave me the girl," and in response he said, "I gave her," then if the conversation is in a marriage assembly, it is marriage; and if it is in an assembly of promise (engagement), it will be an engagement. This has been established by Allama al-'Ala'i, al-Fadil ar-Rahmati, Sayyid at-Tahtawi, and others, may Allah Almighty have mercy on them. (T)

From the above, it is clear that the gathering was not a marriage assembly. The suitor's visit at that time with a few companions was merely to settle matters, obtain a promise, and secure consent. Therefore, the words of the girl's father will also be construed as a promise, not as a contract. This is so clear that even from the suitor's own words, it is evident that he too understood those words as an acknowledgment of marriage and an expression of consent and acceptance of the proposal, not as an offer and marriage. For he said in response: "Fine, it is acceptable to us; when you accepted my proposal and gave your word (zuban di), my heart was at ease." Every common person knows that in our language "giving one's word" refers to a promise

for some work, not to its performance or issuance. If Zaid asked Amr for some rupees...

---

1. 'Uqud ad-Durriyya 'ala Tanqih al-Hamidiyya, Issues published from the chapters on marriage, Haji Abdul Ghaffar and Sons, Book Traders, Qandahar, 1/311.
2. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/264.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

(अरबी पाठ): उसने लड़की के पिता को कुछ गहने और लड़की को कपड़े दिए, लेकिन लड़की सगाई के लिए सहमत नहीं हुई और उसे ठुकरा दिया। क्या उसे ऐसा करने की अनुमति है? और क्या सगाई को बिल्कुल भी विवाह अनुबंध के स्थान पर नहीं माना जाएगा? उत्तर: चूंकि उनके बीच शरीयत के अनुसार ईजाब और क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के साथ विवाह अनुबंध नहीं हुआ, इसलिए सगाई को बिल्कुल भी विवाह अनुबंध के स्थान पर नहीं माना जाएगा। - (उर्दू पाठ): उसने लड़की के पिता को कुछ गहने दिए और लड़की को कपड़े पहनाए, फिर लड़की ने सगाई पर सहमति से इनकार कर दिया और सगाई को ठुकरा दिया। इस स्थिति में क्या लड़की को ठुकराने का अधिकार है? और क्या यह सगाई विवाह के स्थान पर नहीं होगी? उत्तर: शरीयत के अनुसार, यह ईजाब और क़बूल के साथ विवाह नहीं हुआ और यह सगाई विवाह के स्थान पर नहीं होगी।

और यह शब्द कि "मैंने लड़की आपको दे दी," हालांकि निकाह के रूपकों (किनयात) में से है, लेकिन निकाह की सभा (मजलिस-ए-अक़द) में यह निकाह माना जाता है और वादे की सभा (मजलिस-ए-वाअद) में वादा।

(अरबी पाठ): रद्द-उल-मुहतार में फ़तह-उल-क़दीर के हवाले से तहावी की शरह (व्याख्या) से उद्धृत है: यदि किसी ने दूसरे से कहा कि "क्या आपने वह मुझे दी?" और उसने उत्तर दिया "मैंने दी", तो यदि सभा वादे के लिए थी तो वह वादा है, और यदि अनुबंध के लिए थी तो वह निकाह है। इसे अल्लामा अल-'अलाय, अल-फ़ाज़िल अर-रहमती, सैय्यद अत-तहावी और अन्य लोगों ने स्थापित किया है, अल्लाह उन पर दया करे। - (उर्दू पाठ): रद्द-उल-मुहतार में फ़तह-उल-क़दीर के हवाले से तहावी की व्याख्या से उद्धृत है कि यदि किसी ने दूसरे से कहा कि "तूने लड़की मुझे दी," जवाब में उसने कहा कि "मैंने दी," तो यदि बात निकाह की सभा में है तो निकाह है और यदि वादे (सगाई) की सभा है तो सगाई होगी। इसे अल्लामा अलाई, फ़ाज़िल रहमती, सैय्यद तहावी आदि ने साबित रखा है। (त)

ऊपर से स्पष्ट हुआ कि वह सभा निकाह की सभा नहीं थी और मांगने वाले (खातिब) का उस समय कुछ साथियों के साथ जाना बात तय करने, वादा लेने और सहमति प्राप्त करने के लिए ही था। तो लड़की के पिता के वे शब्द भी वादे पर ही आधारित माने जाएंगे, अनुबंध (अक़द) पर नहीं। यहाँ तक कि खुद मांगने वाले के कथन से स्पष्ट है कि उसने भी उन शब्दों को निकाह का इकरार और सगाई

की स्वीकृति ही समझा, न कि ईजाब और निकाह। क्योंकि उसने उत्तर में कहा: "बेहतर है, हमें मंजूर है; जब आपने मेरी सगाई को मंजूर किया और ज़बान दी (वादा किया) तो मुझे तसल्ली हो गई।" और हर आम आदमी जानता है कि हमारी भाषा में "ज़बान देना" किसी काम के वादे को कहते हैं, न कि उसके होने या करने को। ज़ैद ने अगर अम्र से कुछ रुपये माँगे...

---

1. उक़ूद अल-दुर्रिया अला तनक़ीह अल-हामिदिया, निकाह के अध्यायों से प्रकाशित मुद्दे, हाजी अब्दुल गफ्फार और पुत्र, पुस्तक व्यापारी, कंदहार, 1/311।
2. रद्द-उल-मुहतार, निकाह की किताब, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/264।

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

شیئا من الحلی والبسہ لابنتہ فلم ترض البنت بالخطبہ و ردتھا فھل یسوغ لھا ذلك ولا تکون الخطبۃ واقعۃ موقع عقد النکاح اصلا الجواب حیث لم یجر بینھما عقد نکاح شرعی بایجاب وقبول شرعیین لاتکون الخطبۃ واقعۃ موقع عقد النکاح اصلا۔ اس نے لڑکی کے باپ کو کچھ زیور دئے اور لڑکی کو کپڑا پہنایا تو لڑکی نے منگنی پر رضامندی سے انکار کردیا اور منگنی کو رد کر دیا تو اس صورت میں کیا لڑکی کو رد کا اختیار ہے اور کیا یہ منگنی نکاح کے قائم مقام نہ ہوگی؟ جواب: شرعی طور پر یہ قبول و ایجاب کے ساتھ نکاح نہ ہوا اور یہ منگنی نکاح کے قائم مقام نہ ہوگی۔

اور یہ لفظ کہ میں نے لڑکی آپ کو دی ہر چند کنایات تزویج سے ہے مگر مجلس عقد میں عقد قرار پاتا ہے اور مجلس وعد میں وعد۔

فی ردالمحتار عن فتح القدیر عن شرح الطحاوی لوقال اعطیتنیھا فقال اعطیت ان کان المجلس للوعد فوعدوان کان للعقد فنکاح اھ واقرہ العلامۃ العلائی والفاضل الرحمتی والسید الطحطاوی و غیرھم رحمھم اللہ تعالی۔ ردالمحتار میں فتح القدیر کے حوالے سے طحاوی کی شرح سے منقول ہے کہ اگر کسی نے دوسرے کو کہا کہ تو نے لڑکی مجھے دی، جواب میں اس نے کہا کہ میں نے دی، تو اگر بات مجلس نکاح میں ہے تو نکاح ہے اور وعد (منگنی) کی مجلس ہے تو منگنی ہوگی اھ اس کو علامہ علائی، فاضل رحمتی، سید طحطاوی وغیرہ ہم رحمہم اللہ تعالیٰ نے ثابت رکھا۔ (ت)

اوپر ظاہر ہوا کہ وہ مجلس مجلس نکاح نہ تھی اور خاطب کا اس وقت مع چند ہمراہیوں کے جانا بات ٹھہرانے اور وعدہ لینے اور رضامندی حاصل کرنے ہی کے طور پر تھا تو پدر مخطوبہ کے وہ الفاظ بھی وعدہ ہی پر محمول ہوں گے نہ عقد پر، یہاں تک کہ خود خاطب کے کلام سے واضح

و روشن کہ وہ بھی ان کلمات کو اقرار نکاح واظہار رضا و قبول خطبہ ہی سمجھا نہ ایجاب و تزویج کہ اس نے جواب میں کہا: بہتر ہم کو منظور ہے، جب آپ نے میرے خطبہ کو منظور کیا اور زبان دی تو میری تسکین ہوگئی اور ہر عامی جانتا ہے کہ ہماری زبان میں زبان دینا کسی کام کے وعدہ کو کہتے ہیں نہ کہ اس کے ایقاع واصدار کو، زید نے اگر عمرو سے کچھ روپے مانگے

---

1. عقود الدریہ علی تنقیح حامدیہ مسائل منشورہ من ابواب النکاح حاجی عبدالغفار و پسران تاجران کتب قندھار ۱/۳۱۱
2. ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۴

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

And if he gives it, it would not be said that 'Amr has already given his word; yes, if he does not give and has promised to give, then using these words would be correct. Thus, it is proven that the speech from the girl's side (Makhtub minhu) was merely a response and not the word of 'Ijab' (offer), and 'Shattan bainahuma' (there is a great difference between them - T). This was one reason for the non-occurrence of marriage, and from here the second reason is also evident: when the speech of the suitor called out publicly such that the core of the response from the girl's side was not understood as an initiation of a marriage contract, but rather merely as an acknowledgment and promise. Now, his saying "Better, it is accepted by us" was also not by way of acceptance and marriage, but rather an expression of his happiness at her response. So, even if in reality those words from the girl's side were considered an 'Ijab' (offer), they are still missing [the essential elements]. And the final sentence "You gave your word, so I am satisfied" clarifies the intended meaning present, because of which the first word cannot be considered an explicit acceptance by nullifying the words and intention. Besides this, some other reasons can also arise which indicate the non-conclusion of the marriage.

[Arabic]: As it is not hidden from an expert jurist, and what we have mentioned is sufficient for the intelligent person. [Urdu]: Just as it is not hidden from an expert jurist, and what we have mentioned is enough for a scholar's clarification. (T)

In short, neither were the words of the girl's side capable of being an 'Ijab' (offer), nor was acceptance obtained from the suitor's side. The girl did not enter the bond of marriage with the suitor, nor is her marriage to someone else improper or void. As for the sin upon the girl's side, it only exists if they turned away from the marriage with the first suitor without reason or due to some worldly grudge. If, in reality, some acceptable excuse arose and they saw a religious harm in this marriage, and considered the second suitor better for the daughter's rights, then the Pure Shariah does not at all make it obligatory upon them to bear a religious prohibition or knowingly do wrong for the daughter just to keep their word. A complete consideration of good and bad is necessary and obligatory for a father. Man is neither protected nor immune from changing his mind, nor safe from not being informed of some benefits at any time. This was merely an acknowledgment; our Master, the Mercy for the Worlds (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him), has commanded us regarding oaths that if you swear an oath about

something and then it occurs to you that doing the opposite is better according to Shariah, then act upon that better course and give expiation for the oath.

[Arabic]: For Imam Ahmad and Muslim in his Sahih and Tirmidhi narrated from Abu Huraira (may Allah the Almighty be pleased with him) from the Prophet (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him) that he said: "Whoever takes an oath and then sees something else as better than it, let him do what is better and expiate for his oath." 1 [Urdu]: Imam Ahmad and Imam Muslim in their Sahih and Imam Tirmidhi narrated from Abu Huraira (may Allah the Almighty be pleased with him) that the Holy Prophet (may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him) said: "Whoever took an oath and found something contrary to it better, let him adopt what is better and give expiation for his oath." (T)

1 Sahih Muslim, Chapter on the Recommendation for Whoever Takes an Oath and Then Sees Something Else as Better, etc., Qadimi Kutub Khana, Peshawar, 2/28. Page 200 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

और अगर वह दे दे, तो यह नहीं कहा जाएगा कि अम्र जुबान दे चुका है; हाँ, अगर वह न दे और देने का वादा कर लिया हो, तो इन शब्दों का प्रयोग सही होगा। अत; यह सिद्ध हो गया कि कन्या पक्ष (मख़तूब मुनहु) का वह कथन केवल एक उत्तर था न कि 'ईजाब' (प्रस्ताव) का शब्द, और 'शत्तान बैनहुमा' (दोनों में अंतर है। - त)। निकाह न होने का एक कारण तो यह हुआ और यहीं से दूसरा कारण भी स्पष्ट है कि जब वर पक्ष का पुकारकर बोलना ऐसा था कि कन्या पक्ष के उत्तर के सार को निकाह के अनुबंध की पहल नहीं समझा गया, बल्कि केवल स्वीकारोक्ति और वादा समझा गया। तो अब उनका यह कहना भी कि "बेहतर हमें मंज़ूर है" स्वीकार करने और विवाह के तरीके से नहीं था, बल्कि उनके उत्तर पर अपनी ख़ुशी व्यक्त करना था। तो अगर वास्तव में कन्या पक्ष के वे शब्द 'ईजाब' (प्रस्ताव) ही ठहरें, तब भी वे अनुपस्थित हैं। और अंतिम वाक्य "आपने जुबान दी तो मेरी तसल्ली हो गई" वर्तमान उद्देश्य को स्पष्ट करता है, जिसके कारण पहले शब्द को शब्दों और मंशा को रद्द करके स्पष्ट स्वीकृति नहीं माना जा सकता। इसके अलावा कुछ अन्य कारण भी उत्पन्न हो सकते हैं जो निकाह के संपन्न न होने का संकेत देते हैं।

[अरबी]: जैसा कि एक विशेषज्ञ न्यायविद्(फ़क़ीह) से छिपा नहीं है, और जो हमने उल्लेख किया है वह बुद्धिमान व्यक्ति के लिए पर्याप्त है। [उर्दू]: जैसा कि विशेषज्ञ फ़क़ीह पर छिपा नहीं है, और जो हमने ज़िक्र कर दिया है वह आलिम को स्पष्टता के लिए काफ़ी है। (त)

संक्षेप में, न तो कन्या पक्ष के शब्द 'ईजाब' के योग्य थे और न ही वर पक्ष की ओर से स्वीकृति प्राप्त हुई। न तो कन्या वर के निकाह के बंधन में आई, और न ही किसी अन्य से विवाह अनुचित या शून्य है। जहाँ तक कन्या पक्ष पर पाप की बात है, वह भी उसी समय है जब उन्होंने बिना किसी कारण के या किसी सांसारिक द्वेष के कारण पहले वर से विवाह करने से इनकार किया हो। और यदि वास्तव में कोई स्वीकार्य बहाना सामने आया और उन्होंने इस निकाह में कोई धार्मिक हर्ज समझा और दूसरे वर को बेटी के हक़ में बेहतर माना, तो पवित्र शरीअत उन पर यह कभी अनिवार्य नहीं करती कि वे अपनी जुबान निभाने के लिए किसी धार्मिक निषेध को सहन करें या जानबूझकर बेटी के हक में बुरा करें। अच्छे और बुरे पर पूर्ण दृष्टि रखना पिता की जिम्मेदारी और अनिवार्य है। और मनुष्य न तो अपनी राय बदलने से सुरक्षित है, न ही किसी समय कुछ हितों की जानकारी न होने से सुरक्षित है। यह तो केवल एक स्वीकारोक्ति थी; हमारे आका रहमतुल-लिल-आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) ने तो कसम के बारे में हमें आदेश दिया है कि यदि तुम किसी बात पर कसम खा लो और फिर तुम्हें लगे कि शरीअत के अनुसार इसका विपरीत करना बेहतर है, तो उस बेहतरी पर अमल करो और कसम का कफ़्फ़ारा दे दो।

[अरबी]: इमाम अहमद और मुस्लिम ने अपनी सहीह में और तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसने कोई कसम खाई और फिर उसने उसके अलावा किसी और चीज़ को बेहतर पाया, तो उसे वह करना चाहिए जो बेहतर है और अपनी कसम का कफ़ारा देना चाहिए।" 1 [उर्दू]: इमाम अहमद और इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में और इमाम तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसने कोई कसम खाई और उसने उस कसम के खिलाफ को बेहतर जाना, तो वह बेहतर को अपना ले और अपनी कसम का कफ़्फ़ारा दे।" (त)

1 सहीह मुस्लिम, बाब: जिसने कसम खाई और फिर उसके अलावा किसी और चीज़ को बेहतर पाया, इत्यादि, क़दीمی कुतुब खाना, पेशावर, 2/28. पृष्ठ 200 / 739

اور اس نے دے دے تو یہ نہ کہا جائے گا کہ عمر و زبان دے چکا، ہاں نہ دے اور دینے کا وعدہ کر لیا تو یہ لفظ بولنا صحیح ہو گا، پس ثابت ہو گیا کہ مخطوب منہ کا وہ کلام محض اجابت تھانہ کہ لفظ ایجاب و شتان بینھم (دونوں میں فرق ہے۔ ت) ایک وجہ تو عدم نکاح کی یہ ہوئی اور یہیں سے دوسری وجہ بھی ظاہر ہے کہ جب کلام خاطب بالعلی ندامنادی کہ وہ سخن مخطوب منہ کا محصل اقدام العقد نہ سمجھا تھا بلکہ محض اقرار و وعدہ جانا تو اب اس کا یہ کہنا بھی کہ "بہتر ہم کو منظور" بر سبیل قبول و تزویج نہ تھا بلکہ اس کی اجابت پر اپنی خوشی کا اظہار تھا تو اگر فی الواقع مخطوبہ منہ کے وہ الفاظ ایجاب ہی ٹھہریں تاہم مفقود ہے اور جملہ اخیرہ کہ "آپ نے زبان دی تو میری تسکین ہو گئی" مفسر مراد موجود جس کے سبب لفظ اول صریح قبول ٹھہرا کر الفاظ اور نیت کا الغا نہیں کر سکتے اور اس کے سوا بعض وجوہ اور بھی پیدا ہو سکتے ہیں جو عدم انعقاد نکاح پر دلالت کریں۔

کما لا یخفی علی ماھر الفقیہ وفیما ذکرنا کفایۃ للنبیہ جیسا کہ مخفی نہیں، ماہر فقیہ پر، اور ہم نے جو ذکر کر دیا ہے وہ عالم کو وضاحت کے لئے کافی ہے۔ (ت)

بالجملہ نہ الفاظ مخطوب الیہ ایجاب کے قابل نہ جانب خاطب سے قبول حاصل، نہ مخطوبہ حبالہ نکاح خاطب میں داخل، نہ غیر سے تزویج ناروا و باطل، رہا مخطوب منہ پر گناہ، وہ بھی اسی وقت تک ہے کہ اس نے بلا وجہ یا کسی رنجش دنیوی کے سبب تزویج خاطب اول سے اعراض کیا ہو، اور اگر در حقیقت کوئی عذر مقبول پیدا ہوا اور اس نکاح میں اس نے حرج شرعی سمجھا اور خاطب ثانی کو حق دختر میں بہتر جانا تو شرع مطہر ہرگز اس پر دلیل لازم نہیں کرتی کہ تو اپنی زبان پالنے کے لئے محذور شرعی گوارا یا دیدہ و دانستہ بیٹی کے حق میں برا کر، نیک و بد پر

کامل نظر ذمہ پدر واجب و ضرور، اور آدمی نہ تبدیل رائے سے محفوظ و مصون، نہ کسی وقت بعض مصالح پر نہ اطلاع پانے پر مامون، یہ تو صرف اقرار ہی تھا، ہمارے حضور رحمۃ للعالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تو درباره قسم ہمیں حکم دیا ہے کہ اگر تم کسی بات پر قسم کھا بیٹھو پھر خیال میں آئے کہ اس کا خلاف شرعاً بہتر ہے تو اس بہتری پر عمل کرو اور قسم کا کفارہ دے دو۔

فقد اخرج الامام احمد ومسلم في صحیحہ والترمذی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من حلف علی یمین فرای غیرھا خیرا منھا فلیأت الذی ہو خیر ولیکفر عن یمینہ 1۔ امام احمد نے اور امام مسلم نے اپنی صحیح میں اور امام ترمذی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے کوئی قسم کھائی اور اس نے اس قسم کے خلاف کو بہتر جانا تو بہتر کو اپنا لے اور اپنی قسم کا کفارہ دے۔ (ت)

1 صحیح مسلم باب ندب من حلف یمینا فرای غیرھا خیرا منھا الخ قدیمی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۸

Therefore, it is obligatory upon the father of the betrothed to fear God and consider what is most conciliatory and appropriate. He is under the demand of two requirements: fulfilling a promise and preventing mischief. Then, if there is no Sharia prohibition in the first suitor, he should act upon the first; otherwise, he should adhere to the second. "Whoever is afflicted with two calamities should choose the lighter of the two" (Whoever is involved in two trials should choose the easier one - T). And Allah, the Glorious and Exalted, knows best, and His knowledge is most complete and most wise.

Issue 22: What do the scholars of religion say regarding this matter: The father of the adult Hinda did not and does not approve of her marriage with Zaid, who is from a compatible family (Kufu). In the absence of Hinda's father, who was at his own place just twelve 'kos' (a unit of distance) away, Zaid, based on Hinda's silence and weeping and with the consent of Hinda's mother and grandmother, declared the marriage based on the advocacy and testimony of three close relatives. Hinda is saying that she did not approve of this marriage without the consent of her father, neither before nor now. In such a situation, to compel Hinda's father or Hinda, Zaid's side, thinking the marriage valid, gave a statement and testimony that Hinda had confessed verbally, and after the 'rukhsati' (departure of the bride), through a court or however possible, intended to go home and uphold the marriage. In such a case, by what means can the guardianship of Hinda, which is with her father, be taken? Will it be termed as 'ghasb' (usurpation) or what sin? And what should be said regarding the subsequent marriage that he would perform by taking the said daughter home and forcing her? And what sin would Zaid and others be guilty of, or nothing at all? Suppose that according to the judgment, due to the quorum of witnesses, the marriage is valid. But when Hinda's father did not approve before and does not now, and Hinda was saying that she did not approve of this marriage without her father's consent before or now, in such a situation, what should be said regarding Zaid and others? How is it to force Hinda's father or Hinda against their will? If it is impermissible, then of what sin is the one committing 'ghasb' or other sins guilty, and the witness, agent (wakil), and helper, of what sin are they guilty? And what should be said regarding the future marriage which he would perform by force after taking her home? And here there is also a suspicion of 'rada'at' (fosterage by breastfeeding), although there is doubt in it as Hinda's grandmother and Hinda had said earlier that she had breastfed Zaid during the nursing period, but afterwards

they are ready to say under oath that she did not. In such a case, what does caution (ihtiyat) and piety (taqwa) demand? Even if the marriage is not impermissible, caution and piety demand that it should not be done. If it has happened, should it be abandoned, or what? If caution is an obstacle, then in not letting go of this caution, the extent to which Hinda's father is risking his life and suffering worldly losses, becoming homeless, is it included in religious matters and reward? And if his life is lost due to this shock or in opposition, i.e., at the time Zaid wants to forcibly take her or perform any coercive act, will the term 'martyr' (shaheed) be applied or what? And also related to this, this issue is sought to be inquired: that Zaid and others say that when the marriage is Sharia-legal due to lack of proof of fosterage, then renew the marriage, even if caution and piety are obstacles. And Hinda's father says that when caution and piety are obstacles, why should we do it? So in such a case, the question is: does Zaid's aforementioned statement prove that he considers caution and piety a trivial thing, or does something else come out of it? Secondly, Zaid, who stops Hinda's father from caution and piety...

इसलिए, मंगेतर के पिता पर अनिवार्य है कि वह खुदा से डरे और जो सबसे सुलहकारी और उपयुक्त हो उस पर विचार करे। वह दो मांगों के अधीन है: वादे को पूरा करना और बिगाड़ को रोकना। फिर, यदि पहले सुझाव में कोई शरई रुकावट न हो, तो पहले पर अमल करे, अन्यथा दूसरे पर कायम रहे। "जो व्यक्ति दो मुसीबतों में फंस जाए, उसे उनमें से आसान को चुनना चाहिए" (जो दो परीक्षाओं में हो, वह आसान रास्ता चुने - त)। और अल्लाह सुभानहु व ता'आला सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे हिकमत वाला है।

मसला 22: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: बालिग हिंदा के पिता को जैद के साथ उसका निकाह मंजूर नहीं था और न ही है, जो कि एक बराबर (कुफ़्फ़ खानदान से है। हिंदा के पिता की अनुपस्थिति में, जो अपने क्षेत्र में केवल बारह कोस की दूरी पर थे, जैद ने हिंदा की खामोशी और रोने पर, हिंदा की मां और नानी की सहमति और तीन करीबी रिश्तेदारों की वकालत और गवाही के आधार पर निकाह का दावा किया। हिंदा कह रही है कि मुझे अपने पिता की मर्जी के बिना यह निकाह न पहले मंजूर था और न अब है। ऐसी स्थिति में, हिंदा के पिता या हिंदा को मजबूर करने के लिए जैद की तरफ से, निकाह को वैध मानते हुए, यह बयान और गवाही दी गई कि हिंदा ने जुबान से इकरार किया था और रुखसती के बाद अदालत के माध्यम से या जिस तरह भी संभव हो, अपने घर जाकर निकाह का इरादा रखेंगे। ऐसी स्थिति में, हिंदा का संरक्षण (विलायत), जो उसके पिता के पास है, किसी माध्यम से लिया जाए तो उसे गसब (अवैध कब्जा) कहा जाएगा या कौन सा गुनाह? और बाद में होने वाले निकाह के बारे में क्या कहा जाना चाहिए जो वह उक्त बेटी को घर ले जाकर और उसे मजबूर करके करेगा? और जैद और अन्य किस गुनाह के अपराधी होंगे या कुछ भी नहीं? मान लिया जाए कि फैसले के अनुसार, गवाहों के कोरम के कारण निकाह वैध है, लेकिन जब हिंदा के पिता को न पहले मंजूर था न अब है, और हिंदा कह रही थी कि मुझे अपने पिता की मर्जी के बिना यह निकाह न पहले मंजूर था न अब है, ऐसी स्थिति में जैद और अन्य के बारे में क्या कहना चाहिए कि जबरदस्ती हिंदा के पिता या हिंदा को मजबूर करना कैसा है? यदि यह नाजायज है, तो गसब करने वाला किस गुनाह का अपराधी है, और गवाह, वकील और सहायक किस गुनाह के अपराधी हैं? और भविष्य में होने वाले निकाह के बारे में क्या कहना चाहिए जो वह जबरदस्ती घर ले जाकर करेगा? और यहाँ रज़ात (दूध पिलाना) का भी संदेह है, हालांकि इसमें संशय है क्योंकि हिंदा की नानी और हिंदा ने पहले कहा था कि रज़ात के दिनों में जैद को दूध पिलाया है, बाद में वे कसम खाकर

कहने को तैयार हैं कि नहीं पिलाया है। ऐसी स्थिति में एहतियात (सावधानी) और तकवा (परहेजगारी) का क्या तकाज़ा है? भले ही निकाह नाजायज न हो, लेकिन एहतियात और तकवा का तकाज़ा यह है कि न किया जाए। अगर हो गया है तो उसे छोड़ दिया जाए या क्या? यदि एहतियात बाधा है, तो इस एहतियात को हाथ से न जाने देने में जिस हद तक हिंदा का पिता जान की बाजी लगा रहा है और दुनियावी नुकसान उठा रहा है, बेघर हो रहा है, क्या यह धार्मिक मामलों और सवाब में शामिल है? और अगर इस सदमे से या विरोध में, यानी जिस वक्त जैद जबरदस्ती रुखसती कराना चाहे या कोई जबरदस्ती का काम करना चाहे, उस वक्त जान चली जाए, तो क्या उसे 'शहीद' कहा जाएगा या क्या? और इसी से संबंधित यह मसला भी विचारणीय है कि जैद और अन्य कहते हैं कि जब रज़ात के सबूत न होने के कारण निकाह शरई तौर पर जायज है, तो निकाह का नवीनीकरण कर दो, भले ही एहतियात और तकवा इसमें बाधा हों। और हिंदा का पिता कहता है कि जब एहतियात और तकवा बाधा हैं, तो हम क्यों करें? तो ऐसी स्थिति में सवाल यह है कि क्या जैद का उक्त कथन यह साबित करता है कि वह एहतियात और तकवा को एक मामूली चीज़ समझता है, या कुछ और निकलता है? दूसरे यह कि जैद जो हिंदा के पिता को एहतियात और तकवा से रोकता है...

پس پدر مخطوبہ پر لازم ہے کہ خدا سے ڈرے اور صلح و اوفق پر نظر کرے وہ دو مطالبوں کے زیر تقاضا ہے ایفائے موعدت و دفع مفسدت، پھر اگر خاطب اول میں کوئی محظور شرعی نہ ہو تو اول پر عمل کرے ورنہ ثانی پر کار بند رہے من ابتلی بلیتین فاختار اھونھما (جو دو آزمائشوں میں مبتلا ہو تو آسان کو اختیار کرے۔ ت) واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۲۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ باپ کو نکاح ہندہ بالغہ کا زید کے ساتھ جو اہل کفو سے ہے منظور نہ تھا اور نہ ہے زید نے بغیبت باپ ہندہ جو صرف بارہ کوس کے فاصلہ پر اپنے علاقہ پر تھا بہ سکوت و گریہ ہندہ برضامندی مادر و نانی ہندہ وکالت اور شہادت تین اقربا خاص نکاح ظاہر کیا ہندہ کہہ رہی ہے کہ مجھ کو بلا رضامندی اپنے باپ کے یہ نکاح نہ پہلے منظور تھا اور نہ اب ہے۔ ایسی حالت میں باپ ہندہ یا ہندہ کے مجبور کرنے کے واسطے منجانب زید بخیال جواز نکاح یہ بیان و شہادت گزری کہ ہندہ نے زبان سے اقرار کیا تھا وبعد از رخصتی بذریعہ عدالت یا جس طرح پر ہو اپنے گھر جا کر نکاح کا قصد رکھیں ایسی صورت میں ہندہ کو جو ولایت اپنے باپ میں ہے کسی ذریعہ سے لی جائے اطلاق غصب یا کس گناہ کا ہو گا و نکاح مابعد کی نسبت جو گھر لے جا کر دختر مذکور کو مجبور کر کے کرے کیا کہنا چاہئے و زید وغیرہ مرتکب کس گناہ کے ہوں گے یا کچھ نہیں، فرض کیا جائے کہ قضاء بوجہ نصاب شہادت نکاح جائز ہو لیکن جب باپ ہندہ کو نہ پہلے منظور تھا نہ اب ہے و ہندہ کہہ رہی تھی کہ مجھ کو بلا رضامندی اپنے باپ کے یہ نکاح نہ پہلے منظور تھا نہ اب ہے ایسی حالت میں زید وغیرہ کی نسبت کیا کہنا چاہئے کہ بالجبر باپ ہندہ خواہ ہندہ کو مجبور کرنا کیسا ہے، اگر ناجائز ہے تو مرتکب غصب یا کس گناہ کا مرتکب و گواہ و وکیل و معین اس کے کس گناہ کے مرتکب اور نکاح

آئندہ کی نسبت جو بالجبر اپنے گھر لے جا کر کرے کیا کہنا چاہئے اور یہاں رضاعت کا بھی شبہ ہے اگر چہ اس میں شک واقع ہے کہ ہندہ کی نانی اور ہندہ نے پہلے کہا تھا کہ ایام رضاعت میں زید کو دودھ پلایا ہے بعدہ بحلف کہنے کو موجود کہ نہیں پلایا ہے ایسی صورت میں احتیاط و تقوی کا کیا مقتضی ہے گو نکاح ناجائز ہو مگر احتیاط و تقوی مقتضی اس امر کا ہے کہ نہ کیا جائے اگر ہو گیا تو ترک کیا جائے یا کیا اگر احتیاط مانع ہے تو اس احتیاط کے ہاتھ سے نہ جانے میں جس قدر باپ ہندہ کا جان دے رہا اور نقصان امور دنیاوی اٹھا رہا ہے آوارہ وطن ہو جائے داخل امور دینی و ثواب ہے اور اگر اس صدمہ سے یا مقابلہ میں یعنی جس وقت زید رخصت بجبر یا کوئی فعل جبریہ کرنا چاہے اس وقت جان جاتی رہے تو شہید کا اطلاق کیا جائے یا کیا و نیز متعلق اسی کے یہ مسئلہ دریافت طلب ہے، کہ زید وغیرہ کہتے ہیں جب بسبب عدم ثبوت رضاعت نکاح شرعاً جائز تو تجدید نکاح کردو گو احتیاط و تقوی مانع ہے و باپ ہندہ کہتا ہے کہ جب احتیاط و تقوی مانع ہے تو ہم کیوں کریں پس ایسی صورت میں سوال یہ ہے کہ زید کا قول مرقومہ بالا سے ثابت ہوتا ہے کہ احتیاط و تقوی کو ایک ادنی چیز سمجھتا ہے یا کچھ نکلتا ہے دوسرے یہ کہ زید جو وہ باپ ہندہ کو احتیاط و تقوی سے روکتا ہے

Fatawa Razawiya Volume Eleven

What kind of act is it?

The Answer:

The answer to the first question marked with 'A' has already been clarified: If this marriage was neither performed with the explicit consent of the woman (Hinda) nor was it later ratified by explicit verbal or active consent, then her mere silence is not sufficient for its validation. The marriage was 'Nikah-e-Fuzuli' (marriage performed by an unauthorized person) and dependent on Hinda's consent. Since Hinda stated that she did not accept this marriage before nor does she now, it is clearly rejected and void. Now, if the validation of the marriage for Hinda and her father is sought to be proven by forcing them through false testimony, then Zaid and his witnesses will all deserve the wrath of Allah and severe punishment. Every Muslim knows the terrifying warnings issued against those who give false testimony, to the extent that the Great Quran has counted it as equal to idol worship.

Allah Almighty says: "So shun the filth of idols and shun false speech, remaining upright before Allah, not associating anything with Him." (Translation: Avoid the impurity of idols, abstain from false speech, turning towards Allah while avoiding polytheism.) (T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "False testimony has been made equal to associating partners with Allah. False testimony has been made equal to associating partners with Allah." Reported by Abu Dawud, At-Tirmidhi, and Ibn Majah on the authority of Khuraym ibn Fatik (may Allah be pleased with him). (Translation: False testimony has been made equal to associating partners with God. False testimony has been considered equivalent to declaring a partner for God (false testimony has been made equal to accepting a partner to God). Abu Dawud, Tirmidhi, and Ibn Majah reported this from Khuraym bin Fatik (may Allah be pleased with him).) (T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Shall I not inform you of the greatest of the major sins? False speech, or he said false testimony." Reported by the two Sheikhs (Bukhari and Muslim) on the authority of Anas (may Allah be pleased with him). (Translation: Shall I not tell you which is the greatest of all the major sins? Fabricated speech, or he said false testimony. (The two Sheikhs reported it from Anas (may Allah be pleased with him).) (T)

Note: 'A' refers to the question from the aforementioned place which is in the chapter of Al-Wali. 12 Minhu (M).

1. Al-Quran 22:30
2. Sunan Abi Dawud, Chapter on False Testimony, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/150
3. Sahih Bukhari, Chapter on what is said about False Testimony, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/362; Sahih Muslim, Chapter on Major Sins and the Greatest of them, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/64

फ़तवा रज़विया खंड ग्यारहवाँ

यह कैसा कृत्य है?

उत्तर:

पहले प्रश्न 'अ' का उत्तर स्पष्ट हो चुका है: कि यदि यह निकाह हिंदा (स्त्री) की स्पष्ट अनुमति के बिना हुआ और न ही बाद में स्पष्ट मौखिक या क्रियात्मक अनुमति से इसे लागू किया गया, तो उसका केवल मौन रहना इसके लागू होने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह निकाह 'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' (अनधिकृत व्यक्ति द्वारा कराया गया निकाह) था और हिंदा की अनुमति पर निर्भर था। जब हिंदा ने कह दिया कि मुझे यह निकाह न पहले स्वीकार था और न अब है, तो यह स्पष्ट रूप से रद्द और शून्य हो गया। अब यदि झूठी गवाही के माध्यम से हिंदा और उसके पिता को मजबूर करके निकाह की पुष्टि सिद्ध की जाती है, तो ज़ैद और उसके सभी गवाह अल्लाह के क्रोध और कठोर दंड के पात्र होंगे। झूठी गवाही देने वालों के विरुद्ध दी गई भयानक चेतावनियों को हर मुसलमान जानता है, यहाँ तक कि महान कुरान में इसे मूर्ति पूजा के बराबर गिना गया है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "तो मूर्तियों की अशुद्धता से बचो और झूठी बात से परहेज़ करो, अल्लाह तआला की ओर एकाग्र होकर रुजू करते हुए, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराते हुए।" (अनुवाद: मूर्तियों की अशुद्धता से बचो, झूठी बात से परहेज़ करो, शरीक होने से बचते हुए अल्लाह तआला की तरफ रुजू करते हुए।) (त)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "झूठी गवाही खुदा के साथ शरीक करने के बराबर की गई है, झूठी गवाही खुदा के लिए शरीक बताने के समकक्ष ठहराई गई है।" इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने ख़ुरैम बिन फ़ातिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। (अनुवाद: झूठी गवाही खुदा के साथ शरीक करने के बराबर की गई है। झूठी गवाही खुदा के लिए शरीक बताने के समकक्ष ठहराई गई है (झूठी गवाही खुदा का शरीक मानने के समान की गई है), इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने ख़ुरैम बिन फ़ातिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है।) (त)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "क्या मैं तुम्हें न बता दूँ कि सबसे बड़े गुनाहों (कबीरा गुनाहों) में से सबसे बड़ा कौन सा है? बनावटी बात, या फ़रमाया झूठी गवाही।" इसे शैखैन (बुखारी और मुस्लिम) ने अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। (अनुवाद:

क्या मैं तुम्हें न बता दूँ कि सब कबीरों (बड़े गुनाहों) में से बड़ा कबीरा कौन सा है, बनावट की बात, या फ़रमाया झूठी गवाही। (इसे शैखैन ने अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है।) (त)

नोट: 'अ' यानी उल्लेखित स्थान का प्रश्न जो 'बाब अल-वली' में है। 12 मिन्हु (म)।

1. अल-कुरान 22/30
2. सुनन अबू दाऊद, झूठी गवाही का अध्याय, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 150/2
3. सहीह बुखारी, झूठी गवाही के बारे में जो कहा गया है उसका अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/362; सहीह मुस्लिम, कबीरा गुनाहों और उनमें सबसे बड़े गुनाहों का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/64

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

کیسا فعل ہے؟

الجواب:

جواب سوال اول عہ میں واضح ہو چکا ہے عہ : کہ یہ نکاح اگر باذن صریح ہندہ نہ ہوا نہ بعد کو اذن صریح قولی یا فعلی سے نافذ ہو لیا تو مجرد سکوت ہندہ اس کے نفاذ کے لیے کافی نہیں، نکاح نکاح فضولی تھا اور اذن ہندہ پر موقوف، جب ہندہ نے کہا کہ مجھے یہ نکاح نہ پہلے منظور تھا نہ اب ہے تو یہ صاف رد و باطل ہو گیا، اب اگر ہندہ و پدر ہندہ کہ مجبور کرنے کے لیے کسی جھوٹی شہادت سے نفاذ نکاح ثابت کیا جائے تو زید اور اس کے شہود سب مستحق غضب الہی و عذاب شدید ہوں گے، جھوٹی گواہی دینے والے پر جو سخت ہولناک وعیدیں ارشاد ہوئی ہیں ہر مسلمان جانتا ہے یہاں تک کہ قرآن عظیم میں اسے بت پوجنے کے برابر شمار فرمایا،

قال اللہ تعالٰی: فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ۱ حُنَفَآءَ لِلّٰہِ غَیْرَ مُشْرِکِیْنَ بِہٖ - ۱ بتوں کی نجاست سے بچو، جھوٹی بات سے پرہیز کرو، شرک سے بچتے ہوئے اللہ تعالٰی کی طرف رجوع کرتے ہوئے۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: عدلت شهادة الزور الاشراك بالله عدلت شهادة الزور الاشراك بالله ۲۔ رواہ ابوداؤد والترمذی وابن ماجة عن خریم بن فاتك رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ جھوٹی گواہی خدا کے ساتھ شریک کرنے کے برابر کی گئی جھوٹی گواہی خدا کے لیے شریک بتانے کے ہمسر ٹھہرائی گئی (جھوٹی گواہی خدا کا شریک ماننے کے مساوی کی گئی)، اس کو ابوداؤد، ترمذی اور ابن ماجہ نے خریم بن فاتک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الانبئکم باکبر الکبائر قول الزور۳ وقال شھادۃ الزور۳۔ رواہ الشیخان عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ کیا میں تمہیں نہ بتادوں کہ سب کبیروں سے بڑا کبیرہ کون سا ہے، بناوٹ کی بات، یا فرمایا جھوٹی گواہی، (اسے شیخین نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

عہ : یعنی مقام مذکورہ کا سوال کہ باب الولی میں ہے ۱۲ منہ (م)

۱ القرآن ۲۲/۳۰ ۲ سنن ابی داؤد باب فی شھادۃ الزور آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۱۵۰ ۳ صحیح بخاری باب ماقیل في شھادۃ الزور قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۳۶۲، صحیح مسلم باب الکبائر و اکبرہا قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۶۴

Fatawa-e-Razawiyyah, Volume 11

Also, it is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic: The feet of a false witness shall not move until Allah makes the Fire mandatory for him. 1 Narrated by Ibn Majah and al-Hakim, who authenticated its chain of transmission from Ibn Umar (may Allah be pleased with both of them).] [Urdu: A false witness will not be able to move his feet before Allah Almighty makes Hell mandatory for him; it was narrated by Ibn Majah and al-Hakim, who declared it authentic, on the authority of Ibn Umar (may Allah be pleased with both of them). (T)]

Taking someone's daughter away without marriage through such an impure procedure, even if it is with the intention of taking her home and performing the marriage, is a severe major sin, a great and cursed act. The perpetrator of this act is trapped in the most severe injustice and deserves the painful punishment of the Fire. Allah Almighty says: "Behold! the curse of Allah is on the wrong-doers!" 2 Listen! the curse of Allah is upon the oppressors. It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "There are three registers: one from which Allah Almighty will forgive nothing, another for which He cares nothing, and a third from which He will leave nothing out. That from which He will forgive nothing is Shirk (associating partners with Allah), and that for which He cares nothing are the sins concerning the rights of Allah, such as missing a day's fast or a prayer, which Allah Almighty will forgive if He wills. And as for the register from which Allah will leave nothing out, it is the injustices of the servants among themselves; retaliation is inevitable." 3 Narrated by Imam Ahmad and al-Hakim, who authenticated it from the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her). (Imam Ahmad and al-Hakim narrated it and declared it authentic from Mother of the Believers Siddiqah (may Allah be pleased with her). T) Marriage, even if done under compulsion or duress, is valid.

[Arabic: In al-Hindiyyah: The principle is that all verbal disposals (contracts) of one under duress are validly executed according to us, except those which are susceptible to annulment, like sale and lease, which are annulled, and those which are not susceptible to annulment, such as divorce...] [Urdu: It is in Hindiyyah: The principle is that all the disposals of one who is under duress will be effective in that state, except for those disposals that are susceptible to annulment, like sale and hire, which will be considered annulled, and those which are not susceptible to annulment...]

1 Sunan Ibn Majah, Chapter on False Testimony, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, p. 173 2 Al-Quran 11/18 3 Musnad Ahmad bin Hanbal, Marwiyat Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her), Dar al-Fikr Beirut, 6/240

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

हदीस में यह भी है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी: झूठी गवाही देने वाले के पैर अपनी जगह से नहीं हिल पाएंगे कि अल्लाह उसके लिए जहन्नुम (नरक) वाजिब कर देगा। 1 इसे इब्न माजा और हाकिम ने इब्न उमर (रज़ि.) से रिवायत किया और इसकी सनद को सही माना है।] [उर्दू: झूठी गवाही देने वाला अपने पाँव हटाने नहीं पाता कि अल्लाह अज़-व-जल्ल उसके लिए जहन्नुम वाजिब कर देता है, इसको इब्न माजा और हाकिम ने सही करार देकर इब्न उमर (रज़ि.) से रिवायत किया। (त)]

ऐसी नापाक कार्रवाई के साथ किसी की बेटी को बिना निकाह विदा कराकर ले जाना, चाहे इस इरादे से हो कि घर ले जाकर निकाह कर लेंगे, एक बहुत ही बड़ा गुनाह-ए-कबीरा और लानत भरा काम है, जिसका अपराधी घोर अन्याय में फंसा हुआ है और आग के दर्दनाक अज़ाब का हकदार है। अल्लाह अज़-व-जल्ल फरमाता है, "सुन लो, अल्लाह की लानत है ज़ालिमों (अत्याचारियों) पर।" 2 हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "दफ़्तर (रजिस्टर) तीन हैं: एक वह जिसमें से अल्लाह अज़-व-जल्ल कुछ भी नहीं बख्शेगा, दूसरे जिसकी उसे कोई परवाह नहीं, और तीसरा जिसमें से वह कुछ भी नहीं छोड़ेगा। वह जिसमें से कुछ नहीं बख्शेगा वह कुफ़्र (शिर्क) है। और वह जिसकी उसे परवाह नहीं, वह बंदे और अल्लाह के बीच के हक के गुनाह हैं जैसे किसी दिन का रोज़ा या नमाज़ छोड़ना, जिसे अल्लाह अज़-व-जल्ल चाहेगा तो माफ़ कर देगा। और वह दफ़्तर जिसमें से अल्लाह कुछ भी नहीं छोड़ेगा, वह बंदों का आपस में एक-दूसरे पर किया गया ज़ुल्म है, उसका बदला ज़रूर होना है।" 3 इसे इमाम अहमद और हाकिम ने हज़रत आयशा (रज़ि.) से रिवायत किया और इसे सही माना है। (इमाम अहमद और हाकिम ने इसे सही करार देकर हज़रत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ि.) से रिवायत किया। त) निकाह, चाहे ज़बरदस्ती या दबाव (इक्राह) से भी किया गया हो, वह हो जाता है।

[अरबी: अल-हिन्दिया में है: नियम यह है कि जिस पर ज़बरदस्ती की गई हो, उसके उस हालत में किए गए तमाम ज़ुबानी फ़ैसले हमारे नज़दीक लागू होंगे, सिवाय उन फ़ैसलों के जिनमें रद्द (निरस्त) होने की गुंजाइश हो जैसे ख़रीद-फ़रोख्त या किरायानामा, कि ये निरस्त माने जाएंगे, और वे फ़ैसले जिनमें रद्द होने की गुंजाइश नहीं है जैसे तलाक़...] [उर्दू: हिन्दिया में है यह कायदा कि जिस पर जबर किया गया हो उसके उस हालत के तमाम तसर्रुफ़ात (निपटान) नाफ़िज़-उल-अमल (लागू) होंगे, हाँ

वह तसर्रुफ़ात जो फ़स्ख़ (निरस्तीकरण) का एहतमाल (संभावना) रखते हों जैसे बय (बिक्री) और इजारा (किराया) कि ये फ़स्ख़ करार पाएँगे और जो फ़स्ख़ का एहतमाल नहीं रखते...]

---

1 सुनन इब्न माजा, झूठी गवाही का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृष्ठ 173 2 अल-कुरान 11/18 3 मुस्नद अहमद बिन हंबल, हज़रत आयशा (रज़ि.) की रिवायतें, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 6/240

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

نیز حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی: لن تزول قدما شاهد الزور حتی یوجب الله له النار 1. رواه ابن ماجة والحاکم وصحح سنده عن ابن عمر رضی الله تعالٰی عنهما.] [اردو: جھوٹی گواہی دینے والا اپنے پاؤں ہٹانے نہیں پاتا کہ اللہ عزوجل اس کے لیے جہنم واجب کر دیتا ہے، اس کو ابن ماجہ اور حاکم نے صحیح قرار دے کر ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ ت)]

ایسی ناپاک کارروائی کے ساتھ کسی کی بیٹی کو بلانکاح رخصت کرا کر لے جانا اگر چہ اسی قصد پر ہو کہ گھر لے جا کر نکاح کرلیں گے سخت شدید کبیرہ عظیمہ ملعونہ ہے جس کا مرتکب کہ اشد ظلم میں گرفتار ہے مستحق عذاب الیم نار ہے، اللہ عزوجل فرماتا ہے، اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ 2 سن لو خدا کی لعنت ہے ظلم کرنے والوں پر، حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: دفتر تین ہیں، ایک میں سے اللہ عزوجل کچھ نہ بخشے گا، اور دوسرے کی اسے کچھ پروا نہیں، اور تیسرے میں سے کچھ نہ چھوڑے گا، وہ جس سے کچھ نہ بخشے گا کفر ہے، اور وہ جس کی اسے پروا نہیں آدمی کے حقوق اللہ میں گناہ ہیں جیسے کسی دن کا روزہ یا کوئی نماز ترک کرنی کہ اللہ عزوجل چاہے گا تو اسے معاف فرمادے گا و اما الدیوان الذی لا یترك الله منه شیئاً مظالم العباد بینهم القصاص لامحالة 3 اور وہ دفتر جس میں سے اللہ تعالٰی کچھ نہ چھوڑے گا بندوں کا آپس میں ایک دوسرے پر ظلم ہے اس کا بدلہ ضرور ہونا ہے رواہ الامام احمد والحاکم وصححه عن ام المومنین الصدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا (اس کو امام احمد اور حاکم نے صحیح قرار دے کر حضرت ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کیا۔ ت) نکاح اگر چہ جبر واکراہ سے بھی ہو جاتا ہے

[عربی: في الهندية الاصل ان تصرفات المكره كلها قولا منعقدة عندنا الا ان ما يحتمل الفسخ منه كالبيع والاجارة يفسخ وما لا يحتمل الفسخ منه كالطلاق] [اردو: ہندیہ میں ہے یہ قاعدہ کہ جس پر جبر کیا گیا ہو اس کے اس حالت کے تمام تصرفات نافذ العمل ہونگے ہاں وہ تصرفات جو فسخ کا احتمال رکھتے ہوں جیسے بیع اور اجارہ کہ یہ فسخ قرار پائیں گے اور جو فسخ کا احتمال نہیں رکھتے]

---

1 سنن ابن ماجہ باب شهادة الزور الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۷۳ 2 القرآن ۱۸/۱۱ 3 مسند احمد بن حنبل مرویات حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا دار الفکر بیروت ۲۴۰/۶

Fatawa Razawiyya - Volume 11

Arabic Text	Urdu Translation/Commentary
And manumission (itāq), marriage (nikāḥ), tadbīr (setting a slave free after death), istīlād (having a child with a slave woman), and vows (nudhūr) - these become binding, as stated in Al-Kāfī. Its complete discussion is in Radd al-Muḥtār just before the statement "And the presence of two witnesses is a condition etc."	For example, divorce, manumission, marriage, making someone a Mudabbar, making someone an Umm al-Walad, and vows - these matters will become binding, as it is in Al-Kāfī. Its full discussion is in Radd al-Muḥtār, slightly before their statement "the presence of witnesses is a condition etc."
I say: As for the statement in Al-Hindiyyah regarding the consent of the woman if she is an adult, etc., we have written in its margin what states: 'i.e., her permission through word or deed, explicitly or implicitly, even if under compulsion or hatred. This is how this passage should be interpreted.'	I say: The statement of Al-Hindiyyah, which they quoted from Al-Khāniyyah regarding the conditions of marriage, one of which is the consent of a sane, adult woman, etc. - we have written on its margin, the text of which is: meaning her permission occurs through word, explicit action, or indication, even if it is by force; it is appropriate to interpret this passage in this way.

(T) But to take someone's daughter by force without marriage and then perform a forced marriage is injustice upon injustice and bringing disgrace upon a Muslim.

Arabic Text	Urdu Translation
Allah Almighty said: "There is no compulsion in religion." (4)	Allah Almighty said: There is no compulsion in religion. (T)

It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:-

Arabic Text	Urdu Translation
"It is not lawful for a Muslim to take even a stick of his brother without his heart's pleasure." (5) Narrated by Ibn Hibban in his Sahih from Abu Humaid	It is not permissible for a Muslim to take the stick of his fellow Muslim brother without his heartfelt consent (Ibn Hibban narrated this in Sahih from Abu Humaid al-Sa'idi, may Allah be pleased with him. T).

Arabic Text	Urdu Translation
al-Sa'idi (may Allah be pleased with him).	

When taking a stick without consent is haram, then a girl - meaning to what degree will it be haram and most severely haram? The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

---

1. Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Ikrah, Chapter 1, Nurani Kutub Khana Peshawar, 5/38
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/277
3. Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Nikah, Chapter 1, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/269
4. Al-Quran, 2/256
5. Mawarid al-Zaman ila Zawa'id Ibn Hibban, Kitab al-Buyu', Chapter on what is narrated regarding usurpation (ghasb), Hadith, Al-Matba'ah al-Salafiyyah al-Rawdah, p. 283

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
और गुलामी से मुक्ति (इताक़), निकाह, तदबीर (मृत्यु के बाद दास को मुक्त करना), इस्तलाद (दासी से संतान होना), और मन्नतें (नज़ूर) - ये अनिवार्य हो जाते हैं, जैसा कि अल-काफ़ी में है। इसकी पूरी चर्चा रद अल-मुह्तार में उनके इस कथन से ठीक पहले है "और दो गवाहों की उपस्थिति एक शर्त है आदि।"	उदाहरण के लिए, तलाक, गुलामी से मुक्ति, निकाह, मुद़ब्बर बनाना, उम्मे वलद बनाना और मन्नत - ये मामले अनिवार्य हो जाएंगे, जैसा कि काफ़ी में है। इसकी पूरी चर्चा रद अल-मुह्तार में है, उनके कथन "गवाहों की मौजूदगी शर्त है आदि" से थोड़ा पहले।
मैं कहता हूँ: जहाँ तक अल-हिंदिया के उस कथन का संबंध है जो वयस्क होने पर महिला की सहमति के बारे में है आदि, हमने उसके हाशिये पर वह लिखा है जो कहता है: 'यानी शब्द या कार्य द्वारा उसकी अनुमति, स्पष्ट रूप से या संकेत द्वारा, भले ही वह जबरदस्ती या नापसंदगी के तहत हो। इस गद्यांश की व्याख्या इसी तरह की जानी चाहिए।'	मैं कहता हूँ: अल-हिंदिया का कथन जो उन्होंने खानिया से निकाह की शर्तों के बारे में उद्धृत किया है, जिनमें से एक यह है कि अकलमंद बालिग औरत की रज़ा आदि - तो हमने उसके हाशिये पर लिखा है जिसकी इबारत यह है: यानी उसकी इजाजत क़ौल (बात), वाज़ेह फेल (काम) या दलालत (इशारे) से हो जाती है, चाहे वह जबरन ही क्यों न हो; इस मुकाम की ऐसी ही तफ़सीर (व्याख्या) मुनासिब है।

(त) मगर किसी की बेटी को जबरन बिना निकाह के ले जाना फिर जबरदस्ती निकाह करना ज़ुल्म पर ज़ुल्म और मुसलमान को कलंकित करना है।

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
अल्लाह तआला ने फरमाया: "दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है।" (4)	अल्लाह तआला ने फरमाया: दीन में ज़बरदस्ती नहीं है। (त)

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:-

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
"किसी मुसलमान के लिए यह हलाल नहीं है कि वह अपने भाई की एक लकड़ी भी उसकी दिली खुशी	मुसलमान को हलाल नहीं कि अपने भाई मुसलमान की लकड़ी बिना उसकी दिली मर्ज़ी

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
के बिना ले ले।" (5) इसे इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में अबू हुमैद अल-साइदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है।	के ले ले (इसको इब्ने हिब्बान ने सहीह में अबू हुमैद अल-साइदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। त)

जब बिना मर्ज़ी के लकड़ी लेनी हराम है, तो लड़की - यानी किस दर्जे हराम और अत्यंत हराम होगी? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

---

1. फ़तावा हिंदिया, किताब अल-इकराह, अध्याय 1, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/38
2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/277
3. फ़तावा हिंदिया, किताब अल-निकाह, अध्याय 1, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/269
4. अल-कुरान, 2/256
5. मवारिद अल-ज़मान इला ज़वाइद इब्न हिब्बान, किताब अल-बियू, ग़सब के बारे में हदीस, अल-मतबअह अस-सलफ़िया अर-रौज़ा, पृ. 283

पृष्ठ 204/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

والعتاق والنکاح والتدبیر والاستیلاد والنذور فھو لازم کذا فی الکافی اھ وتمامہ فی ردالمختار قبیل قولہ و شرط حضور شاھدین الخ مثلاً طلاق، عتاق، نکاح، مدبر بنانا، ام ولد بنانا اور نذر تو یہ امور لازم ہو جائیں گے، جیسا کہ کافی میں ہے اھ اس کی تمام بحث ردالمحتار میں ہے، ان کے قول "گواہوں کی موجودگی شرط ہے۔" سے تھوڑا پہلے ہے الخ

اقول: واما قول الھندیۃ رضا المرأۃ اذکانت بالغۃ الخ فقد کتبنا علی ھامشہ مانصہ ای اذنھا قولا و فعلا صریحاً او دلالۃ و لو جبراً وکرھاً ھکذا ینبغی ان یفسر ھذا المقام۔ اقول: ہندیہ کا قول جو کہ انہوں نے خانیہ سے نقل کیا نکاح کی شرائط میں، جن میں سے ایک یہ ہے کہ عاقلہ بالغہ عورت کی رضا الخ تو ہم نے اس کے حاشیہ پر لکھا ہے جس کی عبارت یہ ہے یعنی اس کی اجازت قول، فعل صریح یا دلالت سے ہو جاتی ہے اگرچہ بطور جبر ہو، اس مقام کی یونہی تفسیر مناسب ہے۔

(ت) مگر کسی کی بیٹی کو جبراً بلا نکاح لے جانا پھر بالجبر نکاح کرنا ظلم پر ظلم اور مسلمان کو عار لاحق کرنا ہے۔

قال اللہ تعالٰی لَا اِکْرَاہَ فِی الدِّیْنِ ط ۴۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا: دین میں جبر نہیں ہے۔ (ت)

حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:۔

لایحل لمسلم ان یأخذ عصا اخیہ بغیر طیب نفس منہ ۵۔ رواہ ابن حبان فی صحیحہ عن ابی حمید الساعدی رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ مسلمان کو حلال نہیں کہ اپنے بھائی مسلمان کی لکڑی بغیر اس کی دلی مرضی کے لے لے (اس کو ابن حبان نے صحیح میں ابوحمید الساعدی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

جب بے مرضی لکڑی لینی حرام ہے لڑکی یعنی کس درجہ حرام واشد حرام ہوگی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

---

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب الاکراہ الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸/۵ 2 ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۷۷/۲ 3 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۲۶۹/۱ 4 القرآن ۲۵۶/۲ 5 مورد الظمان الی زوائد ابن حبان کتاب البیوع باب ماجاء فی الغصب حدیث المطبعة السلفية بالروضة ص ۲۸۳

"Whoever harms a Muslim has harmed me, and whoever has harmed me has harmed Allah Almighty."[1] — (Reported by al-Tabarani in al-Awsat with a good chain from Hazrat Anas, may Allah be pleased with him. - T)

Witnesses, agents, and helpers, as many people as become aware of this incident and assist Zaid, all of them will be involved in similar oppression, forbidden acts, and deserving of punishment.

Allah Almighty says: "And do not cooperate in sin and transgression."[2] — (T)

It is stated in a Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Whoever walks with an oppressor to assist him while knowing that he is an oppressor, has indeed exited from Islam."[3] — Reported by al-Tabarani in al-Kabir and al-Diya' in al-Mukhtar from Aws bin Sharahbeel al-Ashja'i, may Allah be pleased with him. (Whoever walked with an oppressor to help him while knowing he is an oppressor, he has indeed left Islam. [Reported by al-Tabarani in Kabir and al-Diya' in Mukhtar from Aws bin Sharahbeel al-Ashja'i, may Allah be pleased with him. - T])

As for the matter of fosterage (radha'at), in our school of thought, the statement of one woman is not sufficient for the proof of fosterage, especially when she herself is uncertain, As we have detailed it in our previous fatwas concerning the issues presented to us in this chapter. (As we have detailed in the answers to previous questions on this subject in our fatwas. - T)

Avoiding this as a precaution is only at the level of desirability (istihbab), and the act itself is intensely disliked (makruh tanzihi), i.e., contrary to what is better—it is better not to do it, but if one does, there is no sin. It is stated in the Fatawa of Imam Qadi Khan: "A man married a woman, then a reliable Muslim man informed him..." After a man married a woman, a reliable person...

---

[1] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktabah al-Ma'arif, Riyadh, 3/373; Al-Targhib wa al-Tarhib, regarding those who step over necks on Friday, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/504. [2] Al-Quran, 5/2. [3] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith, Maktaba Faysaliyah, Beirut, 7/22.

"जिसने किसी मुसलमान को कष्ट पहुँचाया, उसने मुझे कष्ट पहुँचाया, और जिसने मुझे कष्ट पहुँचाया, उसने अल्लाह अज्ज़-व-जल्ल को कष्ट पहुँचाया।"[1] — (इसे तबरानी ने अल-औसत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हसन सनद के साथ रिवायत किया है। - त)

गवाह, वकील और सहायक जितने भी लोग इस घटना से अवगत होकर ज़ैद की सहायता करेंगे, वे सभी उसी की तरह ज़ुल्म, हराम और सज़ा के हकदार होने में शामिल होंगे।

अल्लाह तआला का इरशाद है: "गुनाह और शत्रुता के कार्यों में एक-दूसरे की सहायता मत करो।"[2] — (त)

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: "जो किसी ज़ालिम की मदद करने के लिए उसके साथ चला, जबकि वह जानता है कि वह ज़ालिम है, तो वह निस्संदेह इस्लाम से निकल गया।"[3] — इसे तबरानी ने कबीर में और ज़िया ने मुख्तार में औस बिन शरहबील अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। (जो किसी ज़ालिम के साथ चला उसकी मदद करने के लिए और वह जानता है कि यह ज़ालिम है, वह बेशक इस्लाम से निकल गया। [इसे तबरानी ने कबीर में और ज़िया ने मुख्तार में औस बिन शरहबील अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त])

रहा मामला रज़ात (स्तनपान) का, तो हमारे मज़हब में रज़ात की पुष्टि के लिए एक महिला का बयान पर्याप्त नहीं है, विशेष रूप से तब जब वह स्वयं दुविधा में हो, जैसा कि हमने इस अध्याय में हमारे पास आए पहले के मसलों के उत्तर में अपने फतावा में इसका विस्तार से वर्णन किया है। (जैसा कि हमने इस बारे में पहले से आए हुए मसलों के जवाब में इसकी तफ़सील अपने फ़तावा में बयान कर दी है। - त)

इससे एहतियातन बचना केवल मुस्तहब (पसंदीदा) के स्तर पर है, और वह कार्य मकरूह-ए-तंज़ीही है यानी खिलाफ-ए-औला (जो बेहतर है उसके विपरीत) कि न करे तो बेहतर है, लेकिन अगर करे तो कोई गुनाह नहीं। इमाम क़ाज़ी ख़ाँ के फतावा में है: "एक व्यक्ति ने एक महिला से निकाह किया, फिर एक विश्वसनीय मुस्लिम व्यक्ति ने सूचित किया..." एक व्यक्ति का औरत से निकाह होने के बाद एक विश्वसनीय व्यक्ति...

[1] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस, मकतबा अल-मआरिफ, रियाद, 3/373; अल-तर्गीब वल-तर्हीब, जुमे के दिन गर्दनें लाँघने वालों के बारे में, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/504। [2] अल-क़ुरआन, 5/2। [3] मुअजम कबीर, हदीस, मकतबा फैसलिया, बेरुत, 7/22।

مَنْ آذَی مُسْلِمًا فَقَدْ آذَانِي وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَی اللّٰہَ - ۱ جس نے کسی مسلمان کو ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔ (اسے طبرانی نے اوسط میں سند حسن کے ساتھ حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ت)

گواہ و وکیل و معین جتنے لوگ اس واقعہ پر آگاہ ہو کر زید کی اعانت کریں گے سب اس کی مثل ظلم و حرام و استحقاقِ عذاب میں مبتلا ہوں گے۔

قَالَ اللہ تَعَالٰی وَلا تَعَاوَنُوا عَلَی الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۲ - اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے: گناہ و عداوت میں ایک دوسرے سے تعاون نہ کرو۔ (ت)

حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من مشٰی مع ظالم لیعینہ وھو یعلمُ اَنَّہُ ظالم فقد خرج من الاسلام ۳ - رواہ الطبرانی فی الکبیر والضیاء في المختار عن اوس بن شرحبیل الاشجعی رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ جو کسی ظالم کے ساتھ چلا اس کی مدد کرنے اور وہ جانتا ہے کہ یہ ظالم ہے وہ بیشک اسلام سے نکل گیا۔ (اسے طبرانی نے کبیر میں اور ضیاء نے مختار میں اوس بن شرحبیل اشجعی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ت)

رہا مسئلہ رضاعت، ہمارے مذہب میں ایک عورت کا بیان ثبوتِ رضاعت کے لیے کافی نہیں خصوصاً جبکہ خود مضطرب ہو، کما فصلناہ في فتاونا السابقۃ الواردۃ علینا من المسائل في ھذا الباب۔ جیسا کہ ہم نے اس بارے میں پہلے سے آئے ہوئے مسائل کے جوابات میں اس کی تفصیل اپنے فتاوٰی میں بیان کر دی ہے۔ (ت)

اس سے احتیاطاً بچنا صرف مرتبہ استحباب میں ہے اور فعلِ غایت درجہ مکروہِ تنزیہی یعنی خلافِ اولیٰ کہ نہ کرے تو بہتر، کرے تو کچھ گناہ نہیں، فتاویٰ امام قاضی خاں میں ہے: رجل تزوج امرأة فأخبر رجل مسلم ثقة ایک شخص کا عورت سے نکاح ہونے کے بعد ایک ثقہ

---

1 المعجم الاوسط حدیث مکتبة المعارف الریاض ۳۷۳/۳، الترغیب والترهیب من تخطی به الرقاب یوم الجمعة مصطفی البابي مصر ۱/۵۰۴ 2 القرآن ۲/۵ 3 معجم کبیر حدیث مکتبہ فیصلیہ بیروت ۷/۲۲

جلد یازدہم

فتاوٰی رضویہ

| اوامرأۃ انھما ارتضعا من امرأۃ واحدۃ قال فی الکتاب احب الی ان یتنزہ فیطلقھا ویعطیھا نصف المھر ان لم یدخل بھا ولا یثبت الحرمۃ بخبر الواحد عندنا مالم یشھد بہ رجلان اورجل وامرأتان ۱۔ | مرد یا عورت نے یہ خبر دی کہ ان میاں بیوی نے ایک عورت کا دودھ پیا ہے، تو امام قاضی خاں نے کتاب میں فرمایا کہ میرے نزدیک بہتر یہ ہے کہ وہ شخص بطور احتیاط عورت کو طلاق دے دے اور دخول نہ کیا ہو تو نصف مہر ادا کرے، جبکہ رضاعت کی حرمت ایک شخص کی خبر سے ثابت نہیں ہوتی جب تک دو مرد، یا ایک مرد دو عورتیں شہادت نہ دیں حرمت ثابت نہ ہوگی۔ (ت) |

ایسے امر سے بچنے کے لیے جان دینے کی اجازت ہر گز نہیں ہو سکتی کہ جان کا رکھنا ہر فرض سے اہم فرض ہے بلکہ اہل وعیال کو چھوڑ کر جلا وطنی وغیرہ امور بھی کہ خود گناہ یا منجر بہ گناہ ہوں جائز نہیں ہو سکتے۔

| اذلیس من قضیۃ الشرع الکریم والعقل السلیم درء شئی خفیف بارتکاب ثقیل عظیم۔ | شریعتِ مطہرہ اور عقل سلیم اس بات کی اجازت نہیں دیتی کہ معمولی چیز کو کسی عظیم اور بھاری چیز کے ارتکاب سے ختم کیا جائے۔ (ت) |

یہاں تقوٰی بمعنی اتقائے شہادت ہے وہ صرف مستحب ہے، نہ فرض وواجب، علماء فرماتے ہیں:

| لیس زماننا زمان اجتناب الشبہات ۲، کمافی الاشباہ وغیرہ عن الخانیہ والتجنیس وغیرھما۔ | جس طرح اشباہ وغیرہ میں خانیہ اور تجنیس کے حوالے سے ہے کہ ہمارا زمانہ شبہات سے بچاؤ کا زمانہ نہیں ہے۔ (ت) |

زید وغیرہ کی اس درخواست سے تقویٰ کی اہانت نہیں نکلتی بلکہ اس احتیاط کا غیر ضروری ہونا اور اس قدر ضرور صحیح ہے، ہاں اس سے در کنار اگر بالجبر ہو تو ہم لکھ چکے ہیں کہ مسلمان پر جبر واکراہ کسی امر مباح میں حرام وظلم ہے نہ امر غیر مستحب میں، مگر اس پر جان نہیں دے سکتے، البتہ صورتِ اولیٰ میں یعنی جبکہ واقع میں نکاح باطل ہو اور زید جھوٹی گواہیاں دلوا کر بالجبر بلا نکاح چھین لے جانا---- یا بالجبر اس کے ساتھ کوئی فعل ناجائز کرنا چاہے اس وقت اگر چہ اپنے ناموس کی حفاظت جائز کرے جو شرعاً وعقلاً وعرفاً ہر طرح اس کا حق ہے اور ظالم اسے قتل کر دے تو یہ شہید ہو گا، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| من قتل دون مالہ فھو شھید و من | جو اپنا مال بچانے میں مارا جائے وہ شہید، جو |

---

۱ فتاویٰ قاضی خاں کتاب الحظر والاباحۃ فصل فیما یقبل قول الواحد الخ نولکشور لکھنو ۴/۷۸ ۲ الاشباہ والنظائر کتاب الحظر والاباحۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱۰۸/۲

Fatawa Razawiyya - Volume 11

"Whoever is killed defending his blood is a martyr; whoever is killed defending his religion is a martyr; and whoever is killed defending his family is a martyr." — Reported by the Imams Ahmad, Abu Dawood, Al-Tirmidhi, Al-Nasa'i, and Ibn Hibban in their Sahih collections from Sa'id bin Zaid (may Allah be pleased with them both). And Allah Almighty knows best.

Issue 23: From Jamia Masjid, sent by Maulana Ehsan Hasan Sahib, 7 Muharram al-Haram 1312 AH. What do the scholars of religion say: Zaid and Hindah exchanged the words of proposal (Ijab) and acceptance (Qabul) for marriage in the presence of two people. However, those two people did not hear or know about the marriage of Zaid and Hindah at all. Later, Zaid denied the marriage, and those two witnesses also expressed their ignorance of hearing and knowing about the marriage before the Sharia judge. So, will the Sharia judge grant the wife dower (Mahr) or not? And will this marriage be considered valid or not? Explain and be rewarded.

The Answer: It is a condition in marriage that both witnesses simultaneously hear both words of proposal and acceptance in a single sitting and understand that a marriage is taking place. In Al-Durr al-Mukhtar: "It is a condition to have two free male witnesses, or one free man and two free women, who are legally responsible (adult and sane), hearing both their words together according to the most correct view, understanding that it is a marriage according to the school of thought." — Bahr. It is stated in Durr al-Mukhtar that for a marriage to be valid, the presence of two men or one man and two women, who are sane, adult, and free, in the assembly is a condition such that they hear the words of those performing the marriage while understanding it as a marriage; this is the correct position of the school. — Bahr. (T) Therefore, according to the most correct position, this marriage did not take place. Zaid's denial is true. If intercourse did not occur, then there is no claim for dower; otherwise, the customary dower (Mahr al-Mithl) must be given. "For sexual intercourse in the Abode of Islam (Dar al-Islam) is not devoid of a legal punishment (Hadd) or a compensatory payment (Uqr), as stated in Al-Durr al-Mukhtar and others." Because in Dar al-Islam, intercourse without a valid context is not free from legal punishment or a compensatory payment, as is found in reliable books like Al-Durr al-Mukhtar etc.

1 Sunan al-Nasa'i, Book of Warfare: Prohibition of Blood, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 2/178 2 Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Delhi, 1/186 3 Durr al-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Delhi, 1/203

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

"जो अपनी जान बचाने में मारा जाए वह शहीद है, जो अपना दीन बचाने में मारा जाए वह शहीद है, जो अपने परिवार को बचाने में मारा जाए वह शहीद है।" — इसे इमाम अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्न हिब्बान ने अपनी सहीह किताबों में सईद बिन ज़ैद (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 23: जामा मस्जिद से, प्रेषक मौलवी एहसान हसन साहब, 7 मुहर्रम अल-हराम 1312 हिजरी। उलेमा-ए-दीन क्या कहते हैं: ज़ैद और हिंदा ने दो आदमियों की मौजूदगी में निकाह के ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के शब्द कहे। लेकिन उन दोनों आदमियों ने ज़ैद और हिंदा के निकाह के बारे में बिल्कुल नहीं सुना और न ही उन्हें इसका पता चला। बाद में ज़ैद ने निकाह से इनकार कर दिया, और उन दोनों गवाहों ने भी काज़ी के सामने यह ज़ाहिर किया कि उन्हें निकाह के सुनने या जानने की कोई जानकारी नहीं है। तो क्या काज़ी पत्नी को मेहर दिलाएगा या नहीं? और क्या यह निकाह माना जाएगा या नहीं? जवाब दें और पुण्य कमाएं।

जवाब: निकाह की शर्त यह है कि दोनों गवाह एक ही सभा में ईजाब और क़ुबूल के दोनों शब्द एक साथ सुनें और समझें कि यह निकाह हो रहा है। 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में है: "निकाह के लिए दो स्वतंत्र पुरुषों या एक स्वतंत्र पुरुष और दो स्वतंत्र महिलाओं का होना शर्त है, जो शरीयत के पाबंद (वयस्क और बुद्धिमान) हों, और दोनों के शब्दों को एक साथ सही मत के अनुसार सुनें और समझें कि यह निकाह है जैसा कि मज़हब में है।" — बहर। दुर्र अल-मुख्तार में है कि निकाह में दो पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं का, जो समझदार, वयस्क और आज़ाद हों, सभा में इस तरह मौजूद होना शर्त है कि वे निकाह को समझते हुए निकाह करने वालों की बातों को सुनें; यह सही मज़हब है। — बहर। (त) इसलिए, सही मत के अनुसार यह निकाह नहीं हुआ। ज़ैद का इनकार सही है। अगर संभोग की नौबत नहीं आई है, तो मेहर का कोई सवाल ही नहीं है; अन्यथा 'मेहर-ए-मिसल' (प्रचलित मेहर) देना होगा। "क्योंकि दारुल इस्लाम में संभोग बिना सज़ा (हद्द) या हर्जाने (उक्र/मेहर) के नहीं होता, जैसा कि दुर्र अल-मुख्तार और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में है।" क्योंकि दारुल इस्लाम में अनुचित स्थान पर संभोग हद्द या उक्र से खाली नहीं होता, जैसा कि दुर्र अल-मुख्तार आदि विश्वसनीय पुस्तकों में उल्लेखित है।

1 सुनन अल-नसाई, किताबुल मुहारबा: तह़रीमुद्दम, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची, 2/178 2 दुर्र अल-मुख्तार, किताबुन निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/186 3 दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल मेहर, मुजतबाई दिल्ली, 1/203

पृष्ठ 207 का 739

قتل دون دمہ فھو شھید ومن قتل دون دینہ فھو شھید ومن قتل دون اھلہ فھو شھید۔ اپنی جان بچانے میں مارا جائے وہ شہید، جو اپنا دین بچانے میں مارا جائے وہ شہید، جو اپنے گھر والوں کے بچانے میں مارا جائے وہ شہید، (اسے احمد، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، ابن حبان نے سعید بن زید سے اپنی صحاح (کتب) میں روایت کیا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ت)

مسئلہ ۲۳: از مسجد جامع مرسلہ مولوی احسان حسن صاحب ۷ محرم الحرام ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید و ہندہ نے باہم کلمات ایجاب و قبول نکاح کے، بموجودگی دو آدمیوں کے، کہے۔ لیکن ان دونوں آدمیوں کو مطلقاً سماعت اور علم نکاح زید اور ہندہ کا نہ ہوا۔ بعد ازاں زید نکاح سے منکر ہوا۔ اور ان دونوں شاہدوں نے بھی سماعت اور علم نکاح سے لاعلمی روبرو حاکم شرع کے ظاہر کی، تو آیا حاکم شرع زوجہ کو مہر دلائے گا یا نہیں؟ اور یہ نکاح منعقد ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: نکاح میں شرط ہے کہ دونوں گواہ معاً دونوں لفظ ایجاب و قبول جلسہ واحدہ میں سنیں اور سمجھیں کہ یہ نکاح ہو رہا ہے۔ فی الدرالمختار شرط حضور شاھدین حرین اوحر وحرتین مکلفین سامعین قولھما معا علی الاصح فاھمین انہ نکاح علی المذھب، بحر۔ در مختار میں ہے کہ نکاح میں دو مردوں یا ایک مرد دو عورتوں عاقل بالغ اور آزاد کا مجلس میں اس طرح موجود ہونا کہ وہ نکاح سمجھتے ہوئے نکاح کرنے والوں کے کلام کو سنیں، شرط ہے، یہ صحیح مذہب ہے، بحر۔ (ت) تو مذہب اصح پر یہ نکاح منعقد نہ ہوا، زید کا انکار سچا ہے، اگر نوبت ہمبستری نہ آئی تو مہر سے کیا علاقہ، ورنہ مہر مثل دینا ہوگا۔ فان الوطء فی دارالاسلام لایخلو عن حد اوعقر کما فی

الدرالمختار وغیرہ۔ کیونکہ دار الاسلام میں بے محل جماع حد یا عقر سے خالی نہیں ہوتا، جیسا کہ در مختار وغیرہ معتمد کتب میں ہے۔

1 سنن النسائی کتاب المحاربۃ تحریم الدم نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۲ / ۱۷۸ 2 درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۶ 3 درمختار باب المہر مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۳

Fatawa Razawiya Volume 11

[Top Left Arabic]: From the reliable travel books: and as there was a suspicion of a contract here, the legal punishment (Hadd) was dropped and the dower (Uqr) was established. [Top Right Urdu]: Since there is a suspicion of marriage here, the legal punishment is dropped, and the dower (Uqr) will be mandatory. (T) And Allah Almighty knows best.

Masla 24: Asked by Hafiz Ali Bakhsh Sahib, resident of Aonla, Hanfia Mosque, 25 Shawwal 1324 AH. Is it permissible to use the plural form for Allah's glory out of respect, such as saying "Allah Jalla Shanuhu says so"? Similarly, in a marriage, should one say "Have you (plural/respectful) accepted this woman"? Please explain and be rewarded.

The Answer: There is no harm, but the singular form is better as it is more appropriate for the One and Only (Al-Ahad). In the Great Quran, there is one place where the Lord Almighty is addressed in plural: "My Lord, send me back" (23:99), and even that is from the tongue of a disbeliever. And saying to the one marrying, "You" or "Your Honor" or "Your Respectable Self have accepted," there is no harm in that either. And Allah Almighty knows best.

Masla 25: 16 Safar 1303 AH. Zaid says that it is very necessary and better to have the adult couple reciting the Kalima and the summary and detailed descriptions of faith (Iman-e-Mujmal and Mufassal) at the time of marriage. It should be done. It is mentioned in the fatwas of Shah Abdul Aziz Sahib Dehlvi (may his secret be sanctified):

[Left Box - Original Persian/Urdu]: According to the illustrious Shariah, marriage between a believer and a disbeliever cannot take place. It is evident that sometimes out of ignorance or oversight, words of disbelief may be uttered by a person without them being aware of it. In such a case, if a marriage took place between the couple, it would not be valid. Therefore, out of caution, the later meticulous scholars themselves recite and have the couple recite the summary and detailed descriptions of faith so that the marriage occurs while in a state of Islam. In reality, the addition of this precaution by the later scholars to the marriage contract is not devoid of Islamic delicacy. Those who have no share of Islam, gracefully...

[Right Box - Urdu Translation]: According to the bright Shariah, marriage cannot take place between a believer and a disbeliever. It is obvious that sometimes a word of

disbelief is uttered by a human being out of ignorance or oversight, which they are not even aware of. In such a case, if a marriage between a man and a woman took place, it would not be valid. Therefore, meticulous later scholars themselves recite and have the man and woman recite the summary and detailed descriptions of faith in the marriage gathering so that the marriage takes place in a state of Islam. This precaution added by later scholars to the marriage contract is not devoid of Islamic delicacy/refinement. Those who have information about Islam...

[1] Al-Quran 23/99 | Page 208 of 739

फतावा रज़विया जिल्द 11

[ऊपर बाएँ अरबी]: विश्वसनीय यात्रा पुस्तकों से: और चूँकि यहाँ निकाह का संदेह था, इसलिए हद (सज़ा) टल गई और उक्र (महर) साबित हो गया। [ऊपर दाएँ उर्दू]: चूँकि यहाँ निकाह का संदेह है, इसलिए हद साक़ित (ख़त्म) हो गई तो उक्र वाजिब (अनिवार्य) होगा। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसअला 24: सायल हाफ़िज़ अली बख़्श साहब, निवासी आँवला, मस्जिद हनफ़िया, 25 शव्वाल 1324 हिजरी। सम्मानवश अल्लाह की शान में बहुवचन शब्द का प्रयोग करना जायज़ है या नहीं, जैसे कि "अल्लाह जल्ल शानुहू यूँ फ़रमाते हैं"? इसी तरह निकाह में कहना कि "तुमने यह औरत स्वीकार की" (बहुवचन रूप में), बोलना चाहिए या नहीं। बयान करें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: कोई हर्ज नहीं है, और बेहतर एकवचन रूप है क्योंकि वह एक और अद्वितीय (अल-अहद) के लिए अधिक उपयुक्त है। महान कुरआन में एक स्थान पर रब अज़्ज़-ओ-जल्ल के लिए बहुवचन संबोधन है: "मेरे रब! मुझे वापस भेज दे" (23:99), और वह भी एक काफ़िर की ज़बान से है। और निकाह करने वाले से कहना कि "तुम" या "आपने" या "जनाब ने स्वीकार किया", इसमें भी कोई हर्ज नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसअला 25: 16 सफ़र 1303 हिजरी। ज़ैद कहता है कि निकाह करने वाले बालिगों को निकाह के समय कलमा और ईमान-ए-मुजमल व मुफ़स्सल पढ़ाना बहुत ज़रूरी और बेहतर है, इसे करना चाहिए। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब देहलवी (अल्लाह उनकी क़ब्र को पवित्र करे) के फ़तावा में है:

[बायाँ बॉक्स - मूल फारसी/उर्दू]: उज्ज्वल शरीयत के अनुसार, एक मोमिन और एक काफ़िर के बीच निकाह संपन्न नहीं होता। यह ज़ाहिर है कि कभी-कभी अज्ञानता में या भूलवश मनुष्य से कुफ़्र (अविश्वास) का कोई शब्द निकल जाता है जिसका उसे पता भी नहीं होता। ऐसी स्थिति में यदि उन दोनों का निकाह हुआ तो वह संपन्न नहीं होगा। इसलिए, बाद के सावधान विद्वान एहतियातन ईमान-ए-मुजमल और मुफ़स्सल उन दोनों की मौजूदगी में स्वयं भी पढ़ते हैं और उनसे भी पढ़वाते हैं ताकि निकाह इस्लाम की स्थिति में संपन्न हो। वास्तव में, बाद के विद्वानों ने निकाह के अनुबंध में जो यह सावधानी जोड़ी है, वह इस्लामी सूक्ष्मता से खाली नहीं है। जिन लोगों का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं है, वे शालीनता से...

[दायाँ बॉक्स - उर्दू अनुवाद]: उज्ज्वल शरीयत के अनुसार, मोमिन और काफ़िर के बीच निकाह नहीं हो सकता। यह ज़ाहिर है कि इंसान से ला-इल्मी (अज्ञानता) में कभी सहवन (भूलवश) कोई कलमा-ए-कुफ़्र निकल जाता है जिसका उसे पता भी नहीं चलता। तो उस सूरत में अगर मर्द और औरत का निकाह हुआ तो संपन्न नहीं होगा। लिहाज़ा, एहतियात बरतने वाले बाद के उलेमा निकाह की महफ़िल में ईमान-ए-मुजमल और मुफ़स्सल ख़ुद भी पढ़ते हैं और मर्द व औरत से भी पढ़वाते हैं ताकि निकाह इस्लाम की हालत में वाक़े(संपन्न) हो। बाद के उलेमा ने निकाह के अक़्द (अनुबंध) में जो यह एहतियात बढ़ाई है, वह वास्तव में इस्लामी बारीकी से खाली नहीं है। जो लोग इस्लाम के बारे में जानकारी...

[1] अल-कुरआन 23/99 | पृष्ठ 208/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

[اوپر بائیں عربی]: من معتمدات الاسفار وقد کانت ھھنا شبھة العقد فالحد سقط فالعقر ثبت۔ [اوپر دائیں اردو]: یہاں چونکہ نکاح کا شبہ ہے لہذا حد ساقط ہو گئی تو عقر واجب ہوگا۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۴: مسئولہ حافظ علی بخش صاحب ساکن آنوالہ مسجد حنفیاں ۲۵ شوال ۱۳۲۴ھ تعظیماً جمع کا لفظ خدا کی شان میں بولنا جائز ہے یا نہیں، جیسے کہ "اللہ جل شانہ یوں فرماتے ہیں" اسی طرح نکاح سے کہنا کہ "تم نے یہ عورت قبول کی" جمع بولنا چاہئے یا نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: حرج نہیں، اور بہتر صیغہ واحد ہے کہ واحد احد کے لیے وہی انسب ہے، قرآن عظیم میں ایک جگہ رب عزوجل سے خطاب جمع ہے "رَبِّ ارْجِعُوْنِ"[1] ، وہ بھی زبانِ کافر سے ہے۔ اور نکاح سے کہنا کہ تم یا آپ یا جناب نے قبول کی، اس میں بھی حرج نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۵: ۱۶ صفر ۱۳۰۳ھ زید کہتا ہے کہ متنا کحین بالغین کو بوقت نکاح کلمے اور صفت ایمانِ مجمل و مفصل پڑھانا بہت ضرور بہتر ہے اس کو کرنا چاہئے، شاہ عبدالعزیز صاحب دہلوی قدس سرہ کے فتاوٰی میں ہے:

[بایاں باکس - فارسی/اردو]: از روئے شریعت غرا نکاح در میان مومن وکافر منعقد نمی گردد و ظاہر است کہ از انسان در حالت لاعلمی یا از روئے سہوا کثر کلمہ کفر صادر مے گردد کہ بر آں متنبہ نمی شود، دریں صورت اگر نکاح متنا کحین واقع شد منعقد نمی شود، لہذا متاخرین از علمائے محتاطین احتیاطاً صفت ایمان مجمل و مفصل را بحضور متنا کحین می گویند و می گو یا نند تا انعقاد بحالت اسلام واقع شود فی الحقیقت علمائے متاخرین ایں احتیاط را در عقد نکاح افزودہ خالی از نزاکت اسلامی نیست کسائے کہ از اسلام بہرہ ندارند بلطف

[دایاں باکس - اردو ترجمہ]: روشن شریعت کی رو سے مومن کافر کے درمیان نکاح نہیں ہوسکتا، ظاہر ہے کہ انسان سے لاعلمی میں کبھی سہواً کوئی کلمہ کفر صادر ہو جاتا ہے جس پر وہ آگاہ ہی نہیں ہوتا، تو اس صورت میں اگر مرد و عورت کا نکاح ہوا تو منعقد نہیں ہوگا، لہذا محتاط علماء متاخرین مجلس نکاح میں صفت ایمان مجمل و مفصل خود بھی کہتے ہیں اور مرد و عورت سے بھی کہلواتے ہیں تاکہ نکاح بحالت اسلام واقع ہو، علماء متاخرین نے عقد نکاح میں اس احتیاط کا جو اضافہ فرمایا ہے وہ درحقیقت اسلامی نزاکت سے خالی نہیں، جو لوگ اسلام کے بارے میں معلومات

[1] القرآن ۹۹/۲۳ | صفحہ 208/739

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

...cannot reach its subtlety. (T) Is this statement of Zaid correct or not? Explain and be rewarded.

The Answer: There is no doubt about it being better, as the remembrance of Allah, the Glorious and Exalted, and His Messenger, may Allah the Exalted bless him and grant him peace, is pure good, especially the renewal of faith, for which there is a command in the Hadith anyway. The Messenger of Allah, may Allah the Exalted bless him and grant him peace, says:

[Boxed Text] "Verily, faith wears out in the heart of one of you just as a garment wears out, so ask Allah the Exalted to renew faith in your hearts." 2- Reported by al-Tabarani in al-Kabir from Ibn Umar with a good chain, and al-Hakim in al-Mustadrak from Umar with a sound chain, may Allah be pleased with them all. (Urdu Translation: Indeed, faith in the inner self of any of you becomes old just as a garment becomes worn out, so ask Allah, the Mighty and Sublime, to renew faith in your hearts. [This was narrated by Tabarani in Kabir from Ibn Umar (RA) with a good chain and by Hakim in Mustadrak from Hazrat Umar (RA) with a good chain. T])

And he says, may Allah the Exalted bless him and grant him peace:

[Boxed Text] "Renew your faith often through the saying: La ilaha illa Allah (There is no god but Allah)." 3- Reported by Imam Ahmad and al-Hakim from Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) with a sound chain. (Urdu Translation: Keep your faith fresh; say 'La ilaha illa Allah' in abundance. [Imam Ahmad and Hakim narrated this from Abu Hurayrah (RA) with a sound chain. T])

So it is definitely accepted that one should do it; however, calling it "very necessary" is not devoid of a kind of excess. Even if the occurrence of a word of disbelief inadvertently or by mistake (Allah forbid) is possible, to hold it as a matter of suspicion is a bad assumption, and without attaining suspicion (certainty), there is no ruling of necessity, as is not hidden. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Issue 26: 7 Rabi' al-Awwal Sharif 1317 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: the daughter of Zaid is aged seventeen (17) years and the son of Amr is aged twenty-three (23) years and...

---

1 Fatawa-e-Azizi, Ruling on proclaiming the Creeds and the nature of Iman-e-Mujmal and Mufassal on the day of marriage contract, Mujtabai Delhi 2/126. 2 Al-Mustadrak

lil-Hakim, Book of Faith, Command to ask for renewal of faith, Dar al-Fikr Beirut 1/4. 3 Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abu Hurayrah (RA), Dar al-Fikr Beirut 2/359.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...उसकी सूक्ष्मता तक कब पहुँच सकते हैं। (त) क्या ज़ैद का यह कथन सही है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: इसके बेहतर होने में क्या संदेह है कि अल्लाह जल्ल जलालाहु और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र (स्मरण) सरासर भलाई है, विशेष रूप से ईमान का नवीनीकरण, क्योंकि हदीस में भी इसका आदेश है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:-

[बॉक्स में पाठ] "बेशक ईमान तुममें से किसी के दिल में पुराना हो जाता है जैसे कपड़ा पुराना हो जाता है, तो अल्लाह तआला से माँगो कि वह तुम्हारे दिलों में ईमान को ताज़ा कर दे।" 2- इसे तबरानी ने अल-कबीर में इब्न उमर से 'हसन' सनद के साथ और हाकिम ने मुस्तदरक में उमर से 'सही' सनद के साथ रिवायत किया है, अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो। (उर्दू अनुवाद: बेशक ईमान तुममें से किसी के बातिन (भीतर) में पुराना हो जाता है जैसे कपड़ा पुराना हो जाता है, तो अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल से माँगो कि तुम्हारे दिलों में ईमान को ताज़ा फ़रमाए। [इसे तबरानी ने कबीर में इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से 'हसन' सनद और हाकिम ने मुस्तदरक में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से 'हसन' सनद के साथ रिवायत किया। त])

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[बॉक्स में पाठ] "अपने ईमान को ताज़ा करो और 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कसरत (अधिकता) से कहो।" 3- इसे इमाम अहमद और हाकिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से 'सही' सनद के साथ रिवायत किया है। (उर्दू अनुवाद: अपने ईमान ताज़े करो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' ब-कसरत कहो। [इसको इमाम अहमद और हाकिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से 'सही' सनद के साथ रिवायत किया। त])

तो इतना तो निश्चित रूप से स्वीकार्य है कि ऐसा करना चाहिए; हाँ, इसे 'अत्यंत आवश्यक' कहना एक प्रकार की अधिकता से खाली नहीं है। भले ही अनजाने में या भूल से अल्लाह न करे कुफ़्र के शब्द निकल जाना संभव हो, लेकिन इसे संदिग्ध मान लेना एक बुरा गुमान (शंका) है और पुख्ता शंका के बिना आवश्यकता का कोई आदेश नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २६: ७ रबीउल अव्वल शरीफ़ १३१७ हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद की बेटी की उम्र सत्रह (१७) साल है और अम्र के बेटे की उम्र तेईस (२३) साल है और...

---

1 फ़तावा अज़ीज़ी, निकाह के दिन कलिमा पढ़ने और ईमान-ए-मुजमल और मुफ़स्सल की सिफ़त का हुक्म, मुज्तबाई दिल्ली २/१२६। 2 मुस्तदरक अल-हाकिम, किताबुल ईमान, ईमान के नवीनीकरण के लिए पूछने का आदेश, दारुल फ़िक्र बेरूत १/४। 3 मुसनद अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित, दारुल फ़िक्र बेरूत २/३५९।

पृष्ठ २०९/७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

آن کے میر سند 1۔ انتہی | نہیں رکھتے وہ اس کی لطافت تک کب پہنچ سکتے ہیں۔ (ت) یہ قول زید کا صحیح ہے یا نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: بہتر ہونے میں کیا کلام کہ ذکر خدا اور رسول جل جلالہ وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم خیر محض ہے، خصوصاً تجدید ایمان، کہ ویسے بھی حدیث میں اس کا حکم ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:-

[خانہ] ان الایمان لیخلق فی جوف احدکم کما یخلق الثوب الخلق فاسئلوا اللہ تعالی، ان یجدد الایمان في قلوبکم 2۔ رواہ الطبرانی فی الکبیر عن ابن عمر بسند حسن والحاکم في المستدرک عن عمر وبسند صحیح رضی اللہ تعالی عنھم اجمعین۔ (ترجمہ: بیشک ایمان تم میں کسی کے باطن میں پرانا ہو جاتا ہے جیسے کپڑا کہنہ ہو جاتا ہے تو اللہ عزوجل سے مانگو کہ تمہارے دلوں میں ایمان کو تازہ فرمائے، [اسے طبرانی نے کبیر میں ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے سند حسن اور حاکم نے مستدرک میں حضرت عمر رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین سے سند حسن کے ساتھ روایت کیا۔ ت])

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

[خانہ] جددوا ایمانکم اکثر وامن قول لا الہ الا اللہ 3۔ رواہ الامام احمد والحاکم عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ بسند صحیح۔ (ترجمہ: اپنے ایمان تازے کرو لا الہ الا اللہ بکثرت کہو۔ [اس کو امام احمد اور حاکم نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے سند صحیح کے ساتھ روایت کیا۔ ت])

تو اس قدر ضرور مسلم کہ اس کو کرنا چاہئے، ہاں بہت ضروری کہنا نوع افراط سے خالی نہیں جسگا یا سہواً معاذ اللہ کلمہ کفر صادر ہو جانا محتمل سہی مگر اسے مظنون ٹھہرالینا سوئے ظن ہے اور بے حصول ظن حکم ضرورت نہیں، کما لا یخفی واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۶: ۷ ربیع الاول شریف ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ دختر زید بعمر سترہ ۱۷ سال و پسر عمرو بعمر تئیس ۲۳ سال ہے اور

---

1 فتاویٰ عزیزی حکم اعلام کلمہا و صفت ایمان مجمل و مفصل بروز عقد نکاح مجتبائی دہلی ۱۲۶/۲ 2 مستدرک للحاکم کتاب الایمان الامر بسؤال تجدید الایمان دارالفکر بیروت ۴/۱ 3 مسند احمد بن حنبل مروی از ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دارالفکر بیروت ۳۵۹/۲

Fatawa Razawiya Volume 11

There is no Shariah impediment. The boy's guardian wants a four-month delay for the marriage. If a delay is granted, is he religiously sinful or not? Please clarify and receive a reward.

Answer: There is no sin if there is no valid fear of wrongdoing. However, God forbid, if there is a fear and another suitable match (Kufu) is available, then no delay should be granted. If they do not agree, marry her to the other person, provided the daughter is willing.

[Table containing Arabic and its translation] Arabic: Regarding the Hadith: O Ali! Do not delay three things: prayer when its time arrives, a funeral when it is ready, and an unmarried woman when a suitable match is found. Or as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said. And Allah knows best.

Urdu: On the basis of this Hadith in which the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to Hazrat Ali (may Allah be pleased with him): O Ali! Do not delay in three things: Prayer when its time occurs, funeral when it is present, and an unmarried girl when her suitable match (Kufu) is found. Or as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said. And Allah knows best. (T)

Issue 77: From Rampur State, Police Department, sent by Syed Jafar Hussain Sahib, Department Clerk, 20 Muharram 1318 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Shariah say regarding this matter? Zaid married Hindah in such a way that two witnesses and a representative (Wakil) went to Hindah and said: 'Zaid, son of Bakr, has requested you into his matrimony in exchange for one thousand rupees, meaning he has made a proposal; you also accept him into your husbandhood and appoint me as your representative.' So, the said Hindah only said the word 'Qabul' (Accepted) (and the common and elite of this land understand and know this word 'Qabul' as being in place of the offer (Ijab) according to custom). Then these three people went to Zaid, and the representative said to Zaid, 'You have accepted Khalid's daughter, Hindah, on the said dowry,' so Zaid only said the word 'Qabul' (and the residents here consider this acceptance as equivalent to accepting marriage, and thousands of marriages have been and are being conducted in this way, and will be in the future, as this method has become the local custom). Now, in this situation, will the marriage be valid with just the word 'Qabul' or not? Some respected scholars say that the marriage will be valid because the speech of a sane and mature adult should not be rendered futile, otherwise, thousands of people will

be declared illegitimate children; Muslims should be religiously protected from adultery and [concerning] custom and tradition...

Footnote 1: Jami' al-Tirmidhi, Chapter: What has been narrated regarding the first time of excellence, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 1/52, Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Book of Marriage, Chapter: Considering Suitability (al-Kafa'ah), Dar Sader Beirut, 7/133.

कोई शरई रुकावट नहीं है, लड़के का अभिभावक विवाह के लिए चार महीने की मोहलत चाहता है, अगर मोहलत दी जाए तो क्या वह शरीयत की दृष्टि से गुनहगार होगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: कोई पाप नहीं है जब तक कि किसी गलत कार्य की कोई सही आशंका न हो। और यदि, ईश्वर न करे, आशंका है और दूसरा उपयुक्त मेल (कुफ़ू) उपलब्ध है, तो मोहलत नहीं दी जानी चाहिए। यदि वे नहीं मानते हैं, तो उसका निकाह दूसरे से कर दें, बशर्ते बेटी राजी हो।

[तालिका जिसमें अरबी और उसका अनुवाद है] अरबी: उस हदीस के आधार पर: ऐ अली! तीन चीज़ों में देरी न करो: नमाज़ जब उसका समय आ जाए, जनाज़ा जब वह तैयार हो, और एक अविवाहित महिला जब उसका उपयुक्त मेल मिल जाए। या जैसा कि पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा। और अल्लाह बेहतर जानता है।

उर्दू: इस हदीस के आधार पर जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: ऐ अली! तीन चीज़ों में देरी न करो, नमाज़ में जब वक़्त हो जाए, जनाज़ा में जब हाज़िर हो, और बिन ब्याही लड़की में जब उसका कुफ़ू(मेल) मिल जाए। या जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

मसला ७७: रामपुर रियासत, पुलिस विभाग से, प्रेषित सैयद जफ़र हुसैन साहब, विभाग क्लर्क, २० मुहर्रम १३१८ हिजरी। धर्म के विद्वान और मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिंदा से इस तरह निकाह किया कि दो गवाह और एक वकील हिंदा के पास गए और कहा कि बक्र के बेटे ज़ैद ने एक हज़ार रुपये के बदले में तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में माँगा है यानी निकाह का प्रस्ताव दिया है, तुम भी उसे अपने पति के रूप में स्वीकार कर लो और मुझे अपना वकील नियुक्त करो, तो उक्त हिंदा ने केवल 'क़बूल' (स्वीकार) शब्द कहा (और इस 'क़बूल' शब्द को इस देश के आम और ख़ास लोग प्रथा के अनुसार प्रस्ताव के स्थान पर समझते हैं और जानते हैं)। फिर ये तीनों व्यक्ति ज़ैद के पास गए और वकील ने ज़ैद से जाकर कहा कि तुमने खालिद की बेटी हिंदा को उक्त मेहर पर स्वीकार कर लिया है, तो ज़ैद ने केवल 'क़बूल' शब्द कहा (और यहाँ के निवासी इस स्वीकृति को निकाह की स्वीकृति के समान मानते हैं और हज़ारों निकाह इस तरह से हुए हैं और होते हैं और भविष्य में भी होंगे क्योंकि यह तरीका यहाँ का रीति-रिवाज बन गया है)। अब इस स्थिति में क्या केवल

'क़बूल' शब्द से निकाह सही होगा या नहीं? कुछ विद्वान कहते हैं कि निकाह सही हो जाएगा क्योंकि एक समझदार और वयस्क व्यक्ति की बात को व्यर्थ नहीं माना जाना चाहिए अन्यथा हज़ारों लोग नाजायज संतान घोषित किए जाएँगे; मुसलमान को शरीयत के अनुसार ज़िना (व्यभिचार) से बचाना चाहिए और रीति-रिवाज...

पादलेख १: जामे अल-तिर्मिज़ी, अध्याय: जो फ़ज़ीलत के पहले समय के बारे में वर्णित है, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब कराची, १/५२, सुनन अल-कुब्रा अल-बैहकी, निकाह की किताब, अध्याय: उपयुक्तता का विचार (अल-कफ़ा'ह), दार सादिर बेरूत, ७/१३३।

पृष्ठ २१०/७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مانع شرعی موجود نہیں، پسر کا ولی واسطے نکاح کے چار ماہ کی مہلت چاہتا ہے، اگر مہلت دی جائے تو شرعاً گنہگار ہی ہے یا نہیں۔؟ بینوا توجروا۔

الجواب: کوئی گناہ نہیں جبکہ کوئی اندیشہ صحیح نہ ہو۔ اور اگر معاذ اللہ اندیشہ ہے اور دوسرا کفو موجود ہے تو مہلت نہ دینا چاہئے، اگر نہ مانے اس دوسرے سے نکاح کر دیں جبکہ دختر رضامند ہو۔

لحدیث یا علی لاتؤخر ثلثاً الصلوۃ اذا حانت والجنازۃ اذا حضرت والایم اذا وجدت لھا کفواً او کما قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واللہ تعالٰی اعلم۔

اس حدیث کی بنا پر جس میں حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے حضرت علی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے فرمایا: اے علی! تین چیزوں میں تاخیر نہ کرو، نماز میں جب وقت ہو جائے، جنازہ میں جب حاضر ہو، اور غیر شادی شدہ لڑکی میں جب اس کا کفو ملے۔ یا جیسے حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۷: از ریاست رام پور سرشتہ پولیس مرسلہ سید جعفر حسین صاحب محرر سرشتہ ۲۰ محرم ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے اس طور پر نکاح کیا کہ دو گواہوں اور ایک وکیل نے ہندہ کے پاس جاکر یہ کہا کہ بکر کے بیٹے زید نے ایک ہزار روپے کے بدلے میں تم کو اپنی زوجیت میں طلب کیا ہے یعنی خواستگاری کی ہے تم بھی اس کو اپنی شوہریت میں قبول کر لو اور مجھ کو وکیل قرار دو، تو ہندہ مذکورہ نے فقط لفظ "قبول" کہا (اور اس لفظ قبول کو اس ملک کے عوام و خواص قائم مقام ایجاب کے بنا بر عرف

کے سمجھتے ہیں اور جانتے ہیں) پھر اس طرح تینوں شخص زید کے پاس گئے اور وکیل نے زید سے جا کر کہا کہ تم نے خالد کی بیٹی ہندہ کو مہر مذکور پر قبول کیا تو زید نے صرف لفظ "قبول" کہا (اور اس قبول کو یہاں کے باشندے بمنزلہ قبولِ نکاح کے تصور کرتے ہیں اور ہزاروں نکاح اس طور سے ہو گئے اور ہوتے ہیں اور آئندہ بھی ہوں گے کیونکہ یہ طور یہاں کا رسم و رواج قرار پایا ہے) اب اس صورت میں فقط لفظ "قبول" سے نکاح صحیح ہوگا یا نہیں؟ بعض علمائے کرام فرماتے ہیں کہ نکاح صحیح ہو جائے گا کیونکہ عاقل و بالغ کا کلام لغو کرنا نہ چاہئے ورنہ ہزاروں آدمی حرام زادہ قرار پائیں گے مسلمان کو زنا سے شرعاً بچانا چاہئے اور عرف اور رواج

۱۔ جامع الترمذی باب ماجاء فی الوقت الاول من الفضل نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱/۵۲، سنن الکبری للبیھقی کتاب النکاح باب اعتبار الکفاءۃ دار صادر بیروت ۷/۱۳۳

Volume 11 Fatawa Rizvia

...is also a proof from Sharia evidences, so marriage should be declared valid according to custom. Some scholars say that marriage is not valid with the word "qabul" (acceptance) because the word "qabul" is an infinitive (masdar), and marriage is not valid with an infinitive. Now, let the Sharia ruling be stated in the matter under dispute. The poor common people know neither the infinitive nor the past tense; they only know their customs and traditions, and they follow them. How can they be corrected? State the ruling and be rewarded.

The Answer: In the inquired case, there is no doubt about the validity of the marriage. When Hindah (the girl), after being asked for authorization, said the word "qabul", this became an offer of authorization (ijab-e-taukeel) and that person became an authorized agent (wakil-e-mazoon).

Arabic Text

For appointment of an agent, the offer (ijab) alone is sufficient and it is not dependent on acceptance (qabul), although if the offer is rejected, the agency will be annulled, as mentioned in al-Ashbah, al-Hindiyyah, and others. And here, in this issue, even if it were possible to consider the agent's statement to the girl "Accept him as your husband" as an unauthorized offer (ijab fuzuli) based on what is clearly stated in al-Khaniyyah and al-Khulasah that "a request in marriage" becomes an offer (ijab), about which it is said in al-Fath that this view is better, then the girl's saying "qabul" in response to the unauthorized person would be considered an acceptance of marriage, through which the marriage would be contracted and remain dependent on the man's permission. And when the person performing the marriage (unauthorized)

Urdu Translation

To make someone an agent, only the offer (ijab) is sufficient and it does not depend on acceptance, although if the offer is rejected, the agency will be annulled, as in Ashbah and Hindia etc. And here in this issue, although the agent's saying to the girl "Accept him to be your husband" can be declared as an offer from an unauthorized person (fuzuli) based on the explanation of Khania and Khulasa that "request in marriage" becomes an offer, about which it is said in Fath that this saying is very good, then the girl's saying "qabul" in response to the unauthorized person will be declared as acceptance of marriage, through which the marriage will be contracted and remain dependent on the boy's permission, and when the person performing the marriage (unauthorized) makes the offer to the

Arabic Text

offers it to the boy and the boy accepts, the marriage would become effective. However, the intention of the people in the gathering here is not that, rather their intention is only to seek permission from the girl, and in this gathering, acting as an agent and the girl saying "qabul" will only be authorization (taukeel).

Urdu Translation

boy and the boy accepts, the marriage will become effective. But the purpose of the people of the gathering here is not this, rather their purpose is only to seek permission from the girl, and in this gathering, acting as an agent and the girl's saying "qabul" will only be authorization (taukeel). (T)

1. Fatawa Qazi Khan, Book of Marriage, Chapter One, Naval Kishore, Lucknow, 1/151
2. Fath al-Qadir, Book of Marriage, Nuriya Rizvia, Sukkur, 3/104

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रिज़विया

...भी शरीयत के प्रमाणों में से एक प्रमाण है, इसलिए प्रथा (उर्फ़) के अनुसार निकाह को सही घोषित किया जाना चाहिए। कुछ विद्वानों का कहना है कि शब्द "क़बूल" (स्वीकृति) से निकाह सही नहीं होता क्योंकि शब्द "क़बूल" एक क्रियावाचक संज्ञा (मस्दर) है और क्रियावाचक संज्ञा से निकाह सही नहीं होता। अब विवादित मामले में शरीयत का जो आदेश हो, वह बताया जाए। बेचारे आम लोग न तो क्रियावाचक संज्ञा को जानते हैं और न ही भूतकाल को, वे तो अपनी प्रथाओं और परंपराओं को जानते हैं, और उन्हीं का पालन करते हैं। उनका सुधार किस प्रकार हो? बताएं पुण्य मिलेगा।

जवाब: पूछी गई स्थिति में निकाह की वैधता में कोई संदेह नहीं है। जब हिंदा (लड़की) ने अनुमति मांगे जाने के बाद "क़बूल" शब्द कहा, तो यह एजेंसी का प्रस्ताव (ईजाब-ए-तौकील) बन गया और वह व्यक्ति अधिकृत प्रतिनिधि (वकील-ए-माज़ून) बन गया।

अरबी पाठ

वकील नियुक्त करने के लिए केवल प्रस्ताव (ईजाब) ही पर्याप्त है और यह स्वीकृति (क़बूल) पर निर्भर नहीं है, हालाँकि यदि प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया जाए तो एजेंसी रद्द हो जाएगी, जैसा कि अशबाह, हिंदिया और अन्य में उल्लेख है। और यहाँ, इस मुद्दे में, भले ही एजेंट का लड़की से यह कहना कि "उसे अपने पति के रूप में स्वीकार कर लो" को अनाधिकृत प्रस्ताव (ईजाब-ए-फ़ुज़ूली) माना जा सकता है, अल-ख़ानिया और अल-ख़ुलासा के इस स्पष्टीकरण के आधार पर कि "निकाह में अनुरोध" प्रस्ताव (ईजाब) बन जाता है, जिसके बारे में अल-फ़तह में कहा गया है कि यह राय बेहतर है, तो अनाधिकृत व्यक्ति के जवाब में लड़की का "क़बूल" कहना निकाह की स्वीकृति माना जाएगा, जिससे निकाह

उर्दू अनुवाद

वकील बनाने के लिए केवल ईजाब (प्रस्ताव) काफी है और स्वीकार करने पर निर्भर नहीं है, भले ही ईजाब को अस्वीकार कर देने पर वकालत रद्द हो जाएगी, जैसा कि अशबाह और हिंदिया आदि में है। और यहाँ इस मसले में हालांकि वकील का लड़की को यह कहना कि "तू भी लड़के को अपना पति होना स्वीकार कर ले" फ़ुज़ूली (अनाधिकृत व्यक्ति) की तरफ से ईजाब करार दिया जा सकता है, वह खानिया और खुलासा की इस स्पष्टीकरण की बिना पर कि "निकाह में दरख्वास्त (अनुरोध)" ईजाब हो जाता है, जिसके बारे में फ़तह में कहा गया है कि यह कॉल (राय) बहुत अच्छा है, तो फ़ुज़ूली के जवाब में लड़की का "क़बूल" कहना निकाह को स्वीकार करना करार दिया जाएगा, जिससे

अरबी पाठ

संपन्न हो जाएगा और पुरुष की अनुमति पर निर्भर रहेगा। और जब निकाह कराने वाला व्यक्ति (अनाधिकृत) लड़के को प्रस्ताव दे और लड़का स्वीकार कर ले, तो निकाह प्रभावी हो जाएगा। लेकिन यहाँ सभा में उपस्थित लोगों का उद्देश्य यह नहीं है, बल्कि उनका उद्देश्य केवल लड़की से अनुमति लेना है, और इस सभा में प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना और लड़की का "क़बूल" कहना केवल एजेंसी (तौकील) ही होगी।

उर्दू अनुवाद

निकाह संपन्न हो जाएगा और लड़के की इजाजत पर निर्भर रहेगा, और जब निकाह कराने वाला व्यक्ति (फ़ुज़ूली) लड़के को पेशकश (प्रस्ताव) करे और लड़का स्वीकार कर ले तो निकाह प्रभावी हो जाए। लेकिन यहाँ मजलिस (सभा) वालों का मकसद यह नहीं है, बल्कि उनका मकसद सिर्फ लड़की से इजाजत मांगना है और इस मजलिस में वकालत करना और लड़की का "क़बूल" कहना सिर्फ तौकील (वकील बनाना) होगी। (त)

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताबुन निकाह, अल-फ़स्लुल अव्वल, नवल किशोर, लखनऊ, 1/151
2. फ़तहुल क़दीर, किताबुन निकाह, नूरिय्या रिज़विया, सुक्कुर, 3/104

पृष्ठ 211 / 739

بھی ادلہ شرعیہ سے ایک دلیل ہے تو موافق عرف کے نکاح کو صحیح قرار دینا چاہئے اور بعض علماء کہتے ہیں کہ لفظ "قبول" سے نکاح صحیح نہیں ہوتا ہے کیونکہ لفظ "قبول" مصدر ہے اور مصدر سے نکاح درست نہیں ہوتا، اب متنازعہ فیہ میں حکم شرع شریف جوارشاد ہو، عوام بیچارے نہ مصدر کو جانیں نہ ماضی کو، وہ تو اپنے عرف ورواج جانتے ہیں، اسی کے پیرو وتابعدار ہیں، ان کی اصلاح کس طور پر ہو ، بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں صحتِ نکاح میں شبہہ نہیں، جب ہندہ نے بعدِ سوال توکیل لفظ "قبول" کہا یہ ایجابِ توکیل ہوا اور وہ شخص وکیلِ ماذون ہو گیا۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فان التوکیل یتم بمجرد الایجاب ولا یتوقف علی القبول وان کان یرتد بالرد کما فی الاشباہ والھندیہ وغیرھما وھھنا وان امکن ان یجعل قول الوکیل تقبلیہ فی زوجیتك ایجاب فضولی بناء علی ما صرح فی الخانیۃ والخلاصۃ ان الامر فی النکاح ایجاب قال فی الفتح وھٰذا احسن وح یکون قول المرأۃ "قبول" قبولا وینعقد النکاح موقوفا	وکیل بنانے کے لیے صرف ایجاب کافی ہے اور قبول کرنے پر موقوف نہیں اگرچہ ایجاب کو رد کر دینے پر وکالت رد ہو جائیگی، جیسا کہ اشباہ اور ہندیہ وغیرہ میں ہے۔ اور یہاں اس مسئلہ میں اگرچہ وکیل کا لڑکی کو یہ کہنا کہ "تو بھی لڑکے کو اپنا خاوند ہونا قبول کرلے" فضولی کی طرف سے ایجاب قرار دیا جاسکتا ہے وہ خانیہ اور خلاصہ کی اس تصریح کی بنا پر کہ "نکاح میں درخواست" ایجاب ہو جاتا ہے جس کے متعلق فتح میں کہا گیا کہ یہ قول بہت اچھا ہے، تو فضولی کے جواب میں لڑکی کا "قبول" کہنا نکاح کو

عربی عبارت	اردو ترجمہ
على اجازة الرجل فاذا خاطبه الوكيل وقال قبول يكون تنفيذ الكنه خلاف ما قصدوه فان صنيعهم شاهدا نهم لم يجعلوا مجلس المخاطبة مع المخطوبة مجلس عقد بل استئذان فيكون طلبا للوكالة وقولها قبول توكيلا۔	قبول کرنا قرار دیا جائے گا، جس سے نکاح منعقد ہو جائے اور لڑکے کی اجازت پر موقوف قرار پائے، اور جب نکاح کرانے والا شخص (فضولی) لڑکے کو پیشکش کرے اور لڑکا قبول کرلے تو نکاح نافذ ہو جائے۔ لیکن یہاں مجلس والوں کا مقصد یہ نہیں ہے بلکہ ان کا مقصد صرف لڑکی سے اجازت طلب کرنا ہے اور اس مجلس میں وکالت کرنا اور لڑکی کا "قبول" کہنا صرف توکیل ہو گی۔ (ت)

1. فتاوٰی قاضی خان کتاب النکاح الفصل الاول نولکشور لکھنؤ ۱/۱۵۱
2. فتح القدیر کتاب النکاح نوریہ رضویہ سکھر ۳/۱۰۴

Fatawa-e-Razvia Volume 11

Now that the representative (Wakil) came to the addressed person and said those words, this became the proposal (Ijab) from the representative's side.

Arabic / Urdu

Arabic: فأنہ استفهام وان كان حرفه مقدر والا ستفهام عند ارادة التحقيق يؤدى مودى الامر كما حققناه في فتاونا والامر كما سمعت ايجاب في النكاح ولا نعدل عن هذا القول المرجح الى قول انه توكيل لان الوكيل لا يملك التوكيل فلا ينفذ العقد وفيه تضييق واللّٰه يحب الرفق۔

Urdu: Because in reality this is an interrogation (istifham), even if the particle of interrogation is hidden. Interrogation in the context of verification and establishment carries the meaning of a command, as we have established in our Fatawa. And a command, as you have heard, is considered a proposal (Ijab) in marriage. We will not deviate from this preferred view to the view that it is an authorization (Tawkil), because the woman's representative does not have the power to authorize another, whereby the contract would not be valid. This involves hardship, and Allah loves ease and broadness. (T)

And the husband's saying of "Acceptance" (Qabool) became the acceptance, and the marriage was validly and completely executed. The objection that 'acceptance' is a gerund (masdar) and marriage is not valid with a gerund is completely dismissed because this word is in response to the representative's question 'Did you accept Hind?'. The unanimous rule of reason and tradition is that:

Arabic / Urdu

Arabic: السؤال معاد في الجواب كما صرح به في الاشباہ وغیرہ ہما کتاب۔

Urdu: The question is considered repeated in the answer, as explicitly stated in Al-Ashbah and other books. (T)

So, the word "Acceptance" (Qabool) in the answer absolutely means "I accepted," which is in the past tense, and marriage is definitely valid with the past tense, as stated in texts, commentaries, and fatwas. (T). Furthermore, the core matter here are the words that unequivocally indicate consent for the initiation [of marriage]. There is no doubt that the word "Acceptance" explicitly points to this. Therefore, scholars state that if it is said to a woman, "Give yourself into my marriage," and she says, "With hearing and obedience," the marriage is established.

Arabic / Urdu

Arabic: كما في النوازل والخلاصة والبزازية والبحر والدر والمحيط والهندية وغيرها من الاسفار الغر۔

Urdu: As mentioned in Al-Nawazil, Al-Khulasah, Al-Bazzaziyah, Al-Bahr, Al-Durr, Al-Muhit, Al-Hindiyyah, and other famous great books. (T)

"Hearing and obedience" are also gerunds, and the basis for validity is either the implication of the past tense or the consideration of mutual consent; both are...

---

1. Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Eleventh Rule, Idarat al-Qur'an wa al-'Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 1/173. Page 212 of 739

फ़तावा रिज़विया खंड 11

अब जबकि वकील ने संबोधित व्यक्ति के पास आकर वे शब्द कहे, तो यह वकील की ओर से प्रस्ताव (ईजाब) हो गया।

अरबी / उर्दू

अरबी: فأنہ استفهام وان كان حرفه مقدر والا ستفهام عند ارادة التحقيق يؤدى مودى الامر كما حققناه في فتاونا والامر كما سمعت ايجاب في النكاح ولا نعدل عن هذا القول المرجح الى قول انه توكيل لان الوكيل لا يملك التوكيل فلا ينفذ العقد وفيه تضييق واللّٰه يحب الرفق۔

उर्दू: क्योंकि वास्तव में यह एक प्रश्न (इस्तिफ़हाम) है, भले ही प्रश्नवाचक शब्द छिपा हुआ हो। सत्यापन और स्थापना के संदर्भ में प्रश्न एक आदेश (अम्र) का अर्थ देता है, जैसा कि हमने अपने फ़तावा में सत्यापित किया है। और निकाह में आदेश को प्रस्ताव (ईजाब) माना जाता है। हम इस वरीयता प्राप्त मत को छोड़कर इसे वकालत (तौकील) नहीं मानेंगे, क्योंकि महिला का वकील किसी अन्य को वकील नहीं बना सकता, जिससे अनुबंध प्रभावी नहीं होगा। इसमें कठिनाई है, और अल्लाह नरमी और उदारता को पसंद करता है। (त)

और पति का "क़बूल" कहना स्वीकृति (क़बूल) हो गया और निकाह सही और पूर्ण रूप से प्रभावी हो गया। यह आपत्ति कि 'क़बूल' एक संज्ञा (मस्दर) है और संज्ञा से निकाह मान्य नहीं है, पूरी तरह से खारिज है क्योंकि यह शब्द वकील के प्रश्न "क्या तुमने हिंदा को क़बूल किया?" के उत्तर में है। तर्क और परंपरा का सर्वसम्मत नियम है कि:

अरबी / उर्दू

अरबी: السؤال معاد في الجواب كما صرح به في الاشباہ وغیرہ بما كتاب۔

उर्दू: उत्तर में प्रश्न की पुनरावृत्ति मान्य होती है जैसा कि अश्बाह आदि कई पुस्तकों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है। (त)

तो उत्तर में केवल "क़बूल" शब्द का निश्चित रूप से यही अर्थ है कि "मैंने स्वीकार किया" और यह भूतकाल (माज़ी) है, और भूतकाल से निकाह निश्चित रूप से मान्य है जैसा कि ग्रंथों, टीकाओं और फतवों में स्पष्ट है। (त)। इसके अतिरिक्त, यहाँ मुख्य बात वे शब्द हैं जो बिना किसी संदेह के निकाह के प्रारंभ के लिए सहमति का संकेत देते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि "क़बूल" शब्द स्पष्ट रूप से

इस पर संकेत करता है। इसीलिए विद्वान कहते हैं कि यदि किसी महिला से कहा जाए कि "स्वयं को मेरे निकाह में दे दो" और वह कहे "सुन लिया और मान लिया" (सामअ व ताअत), तो निकाह हो गया।

अरबी / उर्दू

अरबी: كما في النوازل والخلاصة والبزازية والبحر والدر والمحيط والهندية وغيرها من الاسفار الغر۔

उर्दू: जैसा कि नवाज़िल, खुलासा, बज़ाज़िया, बह्र, दुर्र, मुहीत, हिंदिया और अन्य प्रसिद्ध महान पुस्तकों में है। (त)

"सुनना और मानना" (सामअ व ताअत) भी संज्ञा (मस्दर) ही हैं और वैधता का आधार वही भूतकाल का निहितार्थ है या आपसी सहमति का विचार, वे दोनों...

---

1. अल-अश्बाह वल-नज़ायर, ग्यारहवां नियम, इदारतुल कुरान वल उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 1/173। पृष्ठ 212/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

اب کہ وکیل نے مخاطب سے آ کر وہ لفظ کہے یہ جانب وکیل سے ایجاب ہوا،

عربی / اردو

عربی: فأنہ استفہام وان کان حرفہ مقدر والا ستفہام عند ارادۃ التحقیق یؤدی مودی الامر کما حققناہ في فتاونا والامر کما سمعت ایجاب في النکاح ولا نعدل عن ھذا القول المرجح الی قول انہ توکیل لان الوکیل لا یملك التوکیل فلا ینفذ العقد وفیہ تضییق واللہ یحب الرفق۔

اردو: تو حقیقتاً یہ استفہام ہے اگرچہ صرف استفہام پوشیدہ ہے اور استفہام مقام تحقیق وانعقاد میں امر کا معنی دیتا ہے جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی میں تحقیق کی ہے اور نکاح میں امر ایجاب قرار پاتا ہے، اس ترجیح یافتہ قول کو چھوڑ کر ہم اس کو توکیل نہ بنائیں گے کیونکہ عورت کا وکیل کسی دوسرے کو وکیل نہیں بنا سکتا جس کی بنا پر عقد نافذ نہ ہوگا جبکہ اس میں تنگی ہے اور اللہ تعالٰی تو نرمی اور وسعت کو پسند فرماتا ہے۔ (ت)

اور زوج کا "قبول" کہنا قبول ہوا اور نکاح صحیح و تمام نافذ ہو گیا، اور یہ اعتراض کہ قبول مصدر ہے اور مصدر سے نکاح درست نہیں رائساً ساقط ہے کہ یہ لفظ اس سوال وکیل کے جواب میں ہے کہ تم نے ہندہ کو قبول کیا اور عقل و نقل کا قاعدہ اجماعیہ ہے کہ:

عربی / اردو

عربی: السؤال معاد في الجواب کما صرح بہ في الاشباہ وغیرہ ہما کتاب۔

اردو: جواب میں سوال کا اعادہ معتبر ہوتا ہے جیسا کہ اشباہ وغیرہ بہت سی کتب میں تصریح ہے۔ (ت)

تو جواب میں صرف لفظ "قبول" کے قطعاً یہی معنی ہیں کہ "قبول کیا" اور یہ ماضی ہے اور ماضی سے نکاح یقیناً درست ہے کما صرحوا بہ متوناً وشروحاً وفتاوٰی (جیسا کہ متون، شروح اور فتاوٰی میں تصریح ہے۔ ت) معہذا یہاں اصل کار وہ الفاظ ہیں جو رضا بالا نشا پر بے احتمال مساوی دلیل ہوں اور شک نہیں کہ لفظ "قبول" صراحتاً اس پر دال، ولہٰذا علماء تصریح فرماتے ہیں اگر عورت سے کہا اپنے نفس کو میری زوجیت میں دے اس نے کہا بالسمع والطاعۃ نکاح ہو گیا۔

عربی / اردو

عربی: کما في النوازل والخلاصة والبزازية والبحر والدر والمحيط والهندية وغيرها من الاسفار الغر۔

اردو: جیسا کہ نوازل، خلاصہ، بزازیہ، بحر، ڈر، محیط، ہندیہ وغیرہ مشہور کتب میں ہے۔ (ت)

سمع وطاعت بھی مصدر ہی ہیں اور مناط صحت وہی تقدیر ماضی ہے یا اعتبار تراضی، وہ دونوں

---

1. الاشباہ والنظائر القاعدہ الحادیۃ عشرۃ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱/ ۱۷۳ صفحہ

Fatawa Razawiya, Volume 11

The gist here is that the ruling of the non-validity of marriage is purely false. It is stated in Fath al-Qadir: "Since we know that the consideration of the Shariah in the establishment of the contract and the binding nature of its ruling is on the side of consent, we have extended its ruling to every word that yields that meaning without having an equal possibility for the opposite side, etc." (Urdu Translation provided in text): When we know that in the eyes of Shariah, the aspect of consent is considered for the establishment of the marriage and the binding nature of its ruling, then we have declared this ruling valid in every such word that holds the possibility of it and does not have an equal possibility of its opposite side, etc. (T)

It is in Radd al-Muhtar: "His statement 'or with hearing and obeying' is connected to an omitted part indicated by the mentioned context, i.e., 'I have married or accepted while being characterized by hearing and obeying your command.' Hearing and obeying a command does not occur except by supposing the response to be in the past-tense, intending it as an origination (Insha), so that the condition of the contract —that one of the parties' speech be in the past tense—is fulfilled." (Urdu Translation provided in text): The author's statement "or with hearing and obeying" has a hidden connection indicated by what was mentioned, i.e., I married or I accepted while obeying your command; and obedience to a command cannot occur by implication without a response in the past tense, whereas by past tense is meant an initiation (Insha), so that the condition of the contract, i.e., that the utterance of one of the parties in proposal or acceptance be complete, is fulfilled. (T)

In Bahr al-Ra'iq under the statement of Kanz: "Marriage is valid only with the words of Nikah and Tazwij and whatever is established for the immediate transfer of ownership of the essence." ("A contract is formed with the words designated for marriage, wedding, and immediate transfer of ownership of the essence." T) it is stated: "An objection is raised against the author regarding words other than the three by which marriage is contracted (and he counted many things until he said) and among them is 'with hearing and obeying.' If a man said, 'Marry yourself to me,' and she replied, 'With hearing and obeying,' then it is a marriage, as in Al-Khulasa." (Urdu Translation provided in text): An objection is raised against the author that marriage can also be contracted with words other than the aforementioned three. There, he mentioned many matters, among which he also mentioned "hearing and

obeying" and said that if a man told a woman "marry yourself to me" and the woman replied "with hearing and obeying," then the marriage...

1. Fath al-Qadir, Kitab al-Nikah, Nooria Razawiya Sukkur 3/103
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/324

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

यहाँ निष्कर्ष यह है कि निकाह न होने का हुक्म सरासर बातिल है, फ़तह अल-क़दीर में है: "चूँकि हमें यह ज्ञात है कि अनुबंध की स्थापना और उसके हुक्म की बाध्यता में शरीअत का विचार सहमति के पक्ष पर है, हमने इस हुक्म को हर उस शब्द तक विस्तारित किया है जो उसका अर्थ प्रदान करता है, बिना इसके कि उसके विपरीत पक्ष की समान संभावना हो, आदि।" (उर्दू अनुवाद पाठ में): जब हमें यह मालूम है कि निकाह के होने और उसके हुक्म के लाज़िम होने में शरीअत के नज़दीक रज़ा (सहमति) के पहलू का एतबार है, तो हमने इस हुक्म को हर ऐसे लफ़्ज़ में मोतबर (मान्य) करार दिया जो इस चीज़ का एहतेमाल (संभावना) रखता हो और उसके मुख़ालिफ़ पहलू का उसमें बराबरी का एहतेमाल न हो, आदि। (त)

रद्दुल मुहतार में है: "मातिन (लेखक) का क़ौल 'या सुनने और आज्ञा मानने के साथ' एक लुप्त अंश से जुड़ा है जिसका संकेत पूर्वोक्त संदर्भ से मिलता है, अर्थात 'मैंने निकाह किया या स्वीकार किया आपके आदेश को सुनने और मानने के साथ।' किसी आदेश को सुनना और मानना तब तक घटित नहीं होता जब तक कि उत्तर को भूतकाल में न माना जाए, जिससे उत्पत्ति (इन्शा) का अभिप्राय हो, ताकि अनुबंध की शर्त—कि पक्षों में से एक का कथन भूतकाल में हो—पूरी हो जाए।" (उर्दू अनुवाद पाठ में): मातिन का क़ौल 'या सुनने और मानने के साथ' का संबंध पोशीदा है जिस पर ज़िक्र किया हुआ दलालत करता है, यानी मैंने निकाह किया या क़ुबूल किया आपके हुक्म की इताअत करते हुए। और हुक्म की इताअत मुक़द्दर तौर पर माजी (भूतकाल) के सीग़े के साथ जवाब के बग़ैर नहीं हो सकती, जबकि माजी से इन्शा (उत्पत्ति/घोषणा) मुराद हो ताकि निकाह की शर्त यानी ईजाब व क़ुबूल में से किसी एक का सीग़ा मुकम्मल होना पाया जाए। (त)

बह्र-उर-रायिक़ में कंज़ के क़ौल के तहत: "निकाह केवल निकाह, तज़वीज और तत्काल मालिकाना हक हस्तांतरण के लिए निर्धारित शब्दों से ही मान्य होता है" ("निकाह, तज़वीज और तत्काल मालिकाना हक हस्तांतरण के लिए निर्धारित शब्दों से अनुबंध हो जाता है।" त) फ़र्माया: "लेखक पर आपत्ति है कि इन तीन शब्दों के अलावा अन्य शब्दों से भी निकाह हो जाता है (और उन्होंने कई चीज़ें गिनाईं जब तक कि उन्होंने कहा) और उनमें 'सुनने और मानने के साथ' भी शामिल है। यदि किसी व्यक्ति ने कहा, 'मुझसे निकाह कर ले,' और महिला ने उत्तर दिया, 'सुनने और मानने के साथ,' तो यह निकाह है, जैसा कि अल-ख़ुलासा में है।" (उर्दू अनुवाद पाठ में): मुसन्निफ़ पर एतराज़ है कि इन ज़िक्र किए गए तीन शब्दों के अलावा अन्य शब्दों से भी निकाह मुनअक़िद हो जाता है। वहाँ उन्होंने बहुत

से मामले ज़िक्र किए जिनमें से समि-ओ-ताअत भी ज़िक्र करके फ़र्माया कि अगर किसी मर्द ने किसी औरत को कहा कि तू अपने आप को मेरे निकाह में दे दे, तो औरत ने जवाब में 'बिल-समि वत-ताअति' कह दिया तो निकाह...

1 फ़तह अल-क़दीर, किताबुन निकाह, नूरिया रज़विया सुक्कुर 3/103 2 रद्दुल मुहतार, किताबुन निकाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बैरूत 2/324

पृष्ठ 213 कुल 739 में से

یہاں حاصل، تو حکم عدمِ نکاح محض باطل، فتح القدیر میں ہے: لما علمنا ان الملاحظة جهة الشرع في ثبوت الانعقاد ولزوم حكمه جانب الرضى عدينا حكمه الى كل لفظ يفيد ذلك بلا احتمال مساو للطرف الآخر[1] الخ۔ جب ہمیں یہ معلوم ہے کہ نکاح کے انعقاد اور اس کے حکم کے لزوم میں شرعاً رضا کے پہلو کا اعتبار ہے تو ہم نے اس حکم کو ہر ایسے لفظ میں معتبر قرار دیا جو اس چیز کا احتمال رکھتا ہو اور اس کے مخالف پہلو کا اس میں مساویانہ احتمال نہ ہو الخ (ت)

ردالمحتار میں ہے: قوله اوبالسمع والطاعة متعلق بمحذوف دل عليه المذكور اى زوجت او قبلت متلبسا بالسمع والطاعة لامرك يحصل السمع والطاعة لامره الابتـقدير الجواب ماضياً مرادا به الانشاء ليتم شرط العقد بكون احدهما للمضي[2]۔ ماتن کا قول "او بالسمع والطاعۃ" کا متعلق محذوف ہے جس پر مذکور دال ہے یعنی میں نے نکاح کیا یا قبول کیا آپ کے حکم کی اطاعت کرتے ہوئے اور حکم کی اطاعت مقدر طور پر ماضی کے صیغہ کے ساتھ جواب کے بغیر نہیں ہو سکتی جبکہ ماضی سے انشاء مراد ہو تاکہ نکاح کی شرط یعنی ایجاب و قبول میں سے ایک کا صیغہ ہونا تام ہو جائے۔ (ت)

بحرالرائق میں زیر قول کنز: انما یصح بلفظ النکاح والتزویج وما وضع لتملیك العین في الحال ("نکاح، تزویج اور تملیکِ عین فی الحال کے لیے موضوع الفاظ سے عقد ہو جاتا ہے۔"ت) فرمایا: یرد علی المصنف الفاظ ینعقد بها النکاح غیر الثلثة (وعد اشیاء کثیرة الی ان قال) ومنها بالسمع والطاعة لو قال زوجي نفسك مني فقالت بالسمع والطاعة فهو نکاح کما في الخلاصة مصنف پر اعتراض ہے کہ ان مذکورہ الفاظ ثلاثہ کے علاوہ دیگر الفاظ سے بھی نکاح منعقد ہو جاتا ہے وہاں انہوں نے بہت سے امور ذکر کیے جن میں سے سمع وطاعت بھی ذکر کر کے فرمایا کہ اگر کسی

مرد نے کسی عورت کو کہا کہ تو اپنے نفس کو مجھے بیاہ دے تو عورت نے جواب میں "بالسمع والطاعۃ" کہہ دیا تو نکاح

1 فتح القدیر کتاب النکاح نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۱۰۳ 2 ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۲۴

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Boxed Text] From what is mentioned in "Al-Dhakhirah": If a man says, "A right over the benefits of your intimacy is established for me for a thousand [dirhams]," and she says, "Yes," the marriage is valid. The answer is that in contracts, even in marriage, consideration is given to the meanings, as scholars have explicitly stated, and these words convey the meaning of marriage (Ref 1). It will be so as mentioned in "Al-Khulasah". Among those words is what is mentioned in "Al-Dhakhirah": If a man tells a woman, "The right of intercourse with you is established for me in exchange for a thousand," and the woman replies, "Yes," then the marriage will be validly established. The response is that in contracts, even marriage, the intention/meaning is what counts, as the jurists have specified, while these aforementioned words fulfill the meaning of marriage. (T) And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best.

Issue 28: Rabi-ul-Awwal Sharif 1318 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: if Zaid and Hindah both declare before a few people that "our marriage has taken place between us," or if Zaid individually declares before several people at different times that "our marriage has taken place between us," and subsequently in correspondence, Hindah uses the same titles and etiquette for Zaid that a wife uses for her husband, then how will this be understood and what is the Sharia ruling?

The Answer: Mutual confirmation by man and woman—where the man says "she is my wedded wife" and the woman says "he is my husband"—is proof of marriage among people. However, if they have made a false confession, it will never benefit them before Allah. They will be considered adulterers, deserving of severe punishment in Hell, and their offspring will be illegitimate. And Allah Ta'ala knows best.

Issue 29: 16 Dhu al-Qi'dah 1318 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married a woman on the condition that "I will divorce you after three or four months." Is this marriage valid according to Sharia or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The marriage is valid, and he is not obligated to give a divorce. For indeed, marriage is not invalidated by corrupt conditions; rather, it is the conditions themselves that become void. (Marriage does not become invalid due to corrupt conditions; instead, the conditions are deemed void. T) And Allah Ta'ala knows best.

1: Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Nikah, H.M. Saeed Company, Karachi, 4/87. Page 214 of 739

फतावा रज़विया, जिल्द 11

[बॉक्स अनुभाग] अरबी: "और उनमें से वह है जो अल-ज़खीरा में है: यदि वह कहे कि 'तुम्हारी योनि के लाभों में मेरा अधिकार एक हज़ार के बदले में साबित हो गया' और वह कहे 'हाँ', तो निकाह सही है। और उत्तर यह है कि अनुबंधों में, यहाँ तक कि निकाह में भी, अर्थों का विचार किया जाता है जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है, और ये शब्द निकाह का अर्थ व्यक्त करते हैं।" उर्दू व्याख्या: यह वैसा ही होगा जैसा 'खुलासा' में है। उन शब्दों में वह भी है जो 'ज़खीरा' में उल्लिखित है कि यदि किसी पुरुष ने स्त्री से कहा कि 'एक हज़ार के बदले तुझसे संभोग का अधिकार मेरे लिए साबित है' तो स्त्री ने उत्तर में कहा कि 'हाँ', तो निकाह सही साबित होगा। उत्तर यह है कि अनुबंधों में, यहाँ तक कि निकाह में भी, अर्थ का श्रेय होता है जैसा कि न्यायविदों (फुकहा) ने स्पष्ट किया है, जबकि ये उपर्युक्त शब्द निकाह का अर्थ व्यक्त कर रहे हैं। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 28: रबी-उल-अव्वल शरीफ 1318 हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि यदि ज़ैद और हिंदा दोनों कुछ लोगों के सामने यह घोषणा करें कि "हमारा निकाह आपस में हो गया है", या ज़ैद अलग-अलग समय पर कई व्यक्तियों के सामने अलग-अलग यह जाहिर करे कि "हमारा निकाह आपस में हो गया है", और फिर पत्राचार में हिंदा ज़ैद के लिए उन्हीं उपाधियों और शिष्टाचार का उपयोग करे जो एक पत्नी अपने पति के लिए करती है, तो इसे क्या समझा जाएगा और शरीयत के अनुसार क्या आदेश दिया जाएगा?

उत्तर: स्त्री और पुरुष की आपसी पुष्टि कि पुरुष कहे "यह मेरी विवाहिता है" और स्त्री कहे "यह मेरा पति है", लोगों के बीच निकाह का प्रमाण है। लेकिन अगर उन्होंने गलत इकरार (स्वीकारोक्ति) किया हो, तो अल्लाह के पास इसका कोई लाभ नहीं होगा। वे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी होंगे और जहन्नुम (नर्क) के कठोर दंड के पात्र होंगे और उनकी संतान अवैध (वल्द-उज़-ज़िना) होगी। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 29: 16 ज़िल-कादा 1318 हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने एक स्त्री से इस शर्त पर निकाह किया कि "मैं तुझे तीन-चार महीने बाद तलाक दे दूँगा।" क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: निकाह जायज़ है और उसे तलाक देना अनिवार्य नहीं है। "निश्चय ही निकाह भ्रष्ट शर्तों से रद्द नहीं होता, बल्कि वे शर्तें ही रद्द हो जाती हैं।" (भ्रष्ट शर्तों से निकाह बातिल/रद्द नहीं होता, बल्कि शर्तें स्वयं बातिल करार दी जाती हैं। त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

1: बहर-उर-रैक, किताब-उन-निकाह, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 4/87 पृष्ठ 739 का 214

[باکس کا متن] ومنها ما فی الذخیرة لو قال یثبت حق في منافع بضعك بألف فقالت نعم صح النکاح اه والجواب ان العبرة فی العقود للمعانی حتی فی النکاح کما صرحوا به وهذه الالفاظ تؤدی معنی النکاح ۱۔ ہو جائے گا جیسا کہ خلاصہ میں ہے، ان الفاظ سے وہ بھی ہے جو ذخیرہ میں مذکور ہے کہ اگر مرد نے عورت کو کہا کہ ہزار کے بدلے تجھ سے جماع کا حق میرے لیے ثابت ہے تو عورت نے جواب میں کہا کہ "ہاں" تو نکاح صحیح ثابت ہوگا اھ ، تو جواب یہ ہے کہ عقود میں حتی کہ نکاح میں معانی کا اعتبار ہوتا ہے جیسا کہ فقہاء نے تصریح کی ہے جبکہ یہ مذکورہ الفاظ نکاح کا معنی ادا کر رہے ہیں۔ ت) واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۲۸: ربیع الاول شریف ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اور ہندہ دونوں شخص چند شخصوں کے رو برو اس کے مقرر ہوں کہ ہمارا نکاح آپس میں ہو گیا، یا زید علیحدہ ایک وقت میں چند اشخاص کے روبرو فرداً فرداً یہ ظاہر کریں کہ ہمارا نکاح آپس میں ہو گیا ہے اور پھر خط وکتابت میں ہندہ زید کو وہی القاب آداب جو بی بی خاوند کو لکھتی ہے استعمال کرے تو کیا سمجھا جائے گا اور شرعا کیا حکم دیا جائے گا؟

الجواب: تصادق مرد و زن کہ مرد کہے یہ میری منکوحہ ہے، عورت کہے یہ میرا شوہر ہے، عند الناس مثبت نکاح ہے، مگر اگر غلط اقرار کیا ہو تو عند اللہ ہرگز نفع نہ دے گا وہ زانی و زانیہ ہوں گے اور سخت عذاب جہنم کے مستحق اور اولاد ولد الزنا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۹: ۱۶ ذی قعدہ ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک عورت سے اس شرط پر نکاح کیا کہ میں تجھ کو بعد تین چار ماہ کے طلاق دوں گا، آیا یہ نکاح شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: نکاح جائز ہے اور طلاق دینا اس پر لازم نہیں، فان النکاح لایبطل بالشروط الفاسدۃ بل ھي التي تبطل (شرائط فاسدہ سے نکاح باطل نہیں ہوتا بلکہ شرائط خود باطل قرار پاتی ہیں،ت) واللہ تعالٰی اعلم

۱ بحر الرائق کتاب النکاح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/ ۸۷ Page 214 of 739

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Problem 30: 18 Dhu al-Hijjah 1318 AH The situation is that Hamid and Mahmuda had such a relationship that Mahmuda could come before him, and they both lived together in the same place for a long period during their childhood. In 1897, Hamid's wife passed away, and with the consent of both parties (i.e., the parents of Hamid and Mahmuda), a betrothal was arranged with Mahmuda. After the betrothal ceremonies, a marriage date was fixed. However, Hamid, being a government employee, could not get leave on the scheduled date, so the marriage did not take place. Subsequently, some disputes arose. Before a second date could be fixed, Hamid left his job. Later, when Hamid's parents wanted to set a new date, Mahmuda's parents excused themselves, saying that Hamid is now unemployed and therefore they do not want to proceed with the marriage. Both Hamid and Mahmuda are adults. Since the betrothal, Mahmuda has been observing hijab from Hamid. When Mahmuda learned of the situation, she told her mother plainly that she would not like to go to another wealthy household, no matter what happens; she believes she should marry the person she was betrothed to. Mahmuda's father is indeed very wealthy, while Hamid is a man of ordinary status. Mahmuda's father is trying to marry her off to some rich and wealthy person, disregarding her consent. Therefore, Mahmuda wishes to marry Hamid before any coercion is applied, but without her parents' knowledge. Hamid also wants the same. The question for the scholars of the religion of Muhammad is: If a marriage is performed by a Qazi in the presence and knowledge of witnesses and a representative (wakeel), and the Qazi ensures valid offer (Ijab) and acceptance (Qabul) according to Sharia, is such a secret marriage permissible and valid? Is there any defect in it? Only.

Answer: If an adult woman marries on her own, whether secretly or openly, without the guardian's (wali) consent, a condition for its validity and effectiveness is that the husband must be her 'Kufu' (equal/compatible). This means he should not be so inferior in religion, lineage, profession, wealth, or conduct that her marriage to him becomes a cause of disgrace, shame, and ill-repute for the woman's guardians. If this is the case, then that marriage will not be valid.

It is stated in 'Ad-Durr al-Mukhtar': "A fatwa is given regarding the impermissibility of marriage with a non-Kufu (non-equal) fundamentally, and this is the chosen fatwa due to the corruption of the times." [1] In Ad-Durr al-Mukhtar, it says that the fatwa is for the non-permissibility of marriage in a non-Kufu situation, such that the marriage would not even be contracted due to the corruption of the times. (T)

[1] Ad-Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

प्रश्न 30: 18 ज़ुल-हिज्जा 1318 हिजरी स्थिति यह है कि हामिद और महमूदा के बीच ऐसा रिश्ता था कि महमूदा उसके सामने आ सकती थी और वे दोनों बचपन में काफी समय तक एक ही स्थान पर साथ रहे। 1897 में हामिद की पत्नी का निधन हो गया और दोनों पक्षों (यानी हामिद और महमूदा के माता-पिता) की सहमति से महमूदा के साथ रिश्ता तय हो गया। सगाई की रस्मों के बाद निकाह की एक तारीख तय की गई, लेकिन उस तय तारीख पर हामिद, जो एक सरकारी कर्मचारी था, संयोग से छुट्टी नहीं मिल सकी और तय तारीख पर निकाह नहीं हो सका। इसके बाद कुछ विवाद पैदा हो गए, जिससे पहले कि दूसरी तारीख तय हो पाती, हामिद ने अपनी नौकरी छोड़ दी। बाद में जब हामिद के माता-पिता ने तारीख तय करनी चाही, तो महमूदा के माता-पिता ने यह बहाना पेश किया कि हामिद अब बेरोजगार है, इसलिए हम निकाह नहीं करना चाहते। हामिद और महमूदा दोनों वयस्क हैं। सगाई की तारीख से ही महमूदा हामिद से परदा करती है। जब महमूदा को यह स्थिति पता चली, तो उसने अपनी माँ से साफ कह दिया कि मैं किसी दूसरे अमीर घर में जाना पसंद नहीं करूँगी, चाहे कुछ भी हो; जिससे रिश्ता हुआ है उसी से निकाह होना चाहिए। महमूदा के पिता वास्तव में बहुत अमीर हैं और हामिद एक साधारण हैसियत का आदमी है। महमूदा के पिता यह कोशिश कर रहे हैं कि महमूदा का निकाह किसी अमीर और मालदार व्यक्ति से कर दें और महमूदा की रजामंदी पर कोई ध्यान न दिया जाए। इसलिए महमूदा चाहती है कि इससे पहले कि उस पर कोई जबरदस्ती की जाए, वह हामिद के साथ अपना निकाह कर ले, लेकिन इस निकाह का हाल उसके माता-पिता को पता न चले। हामिद भी यही चाहता है। तो मुहम्मदी दीन के विद्वानों से यह बात पूछी गई है कि क्या केवल गवाहों और वकील की मौजूदगी में क़ाज़ी साहब निकाह पढ़ा दें और शरीयत के अनुसार ईजाब और क़ुबूल का आश्वासन प्राप्त कर लें, तो क्या यह गुप्त निकाह जायज़ है और किसी भी तरह से त्रुटिपूर्ण तो नहीं है? बस।

उत्तर: एक बालिग (वयस्क) महिला जो वली (अभिभावक) की सहमति के बिना गुप्त रूप से या खुले तौर पर अपना निकाह खुद करती है, उसके होने और सही होने के लिए यह शर्त है कि पति उसका 'कुफ़ू' (समान/अनुकूल) हो। यानी वह धर्म, वंश, पेशे, धन या आचरण में महिला से इतना कम न हो कि उसके साथ उसका निकाह होना महिला के अभिभावकों के लिए कलंक, अपमान और बदनामी का कारण बने। अगर ऐसा है, तो वह निकाह नहीं होगा।

'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में है: "गैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह के जायज़ न होने का फतवा है, और यही फतवे के लिए चुना गया है क्योंकि समय खराब (फ़साद-ए-ज़मान) है।" [1] दुर्रे मुख्तार में है कि गैर-कुफू में निकाह के जायज़ न होने का फतवा है कि ज़माने के बिगाड़ की वजह से निकाह होगा ही नहीं। (त)

[1] अद-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191।

पृष्ठ 739 का 215

مسئلہ ۳۰: ۱۸ ذی الحجہ ۱۳۱۸ھ حال یہ ہے کہ حامد اور محمودہ دونوں میں ایسا رشتہ تھا کہ محمودہ اس کے سامنے آ سکتی تھی اور یہ دونوں ایک مدت تک صغر سنی میں ایک ہی جگہ رہتے سہتے تھے۔ ۱۸۹۷ء میں حامد کی بیوی کا انتقال ہو گیا اور برضامندی فریقین (یعنی حامد اور محمودہ) کے والدین کی نسبت محمودہ سے ہو گئی اور مراسم نسبت ادا ہونے کے بعد ایک تاریخ نکاح مقرر ہو گئی، لیکن اس تاریخ مقررہ پر حامد کو کہ وہ گورنمنٹ کا ملازم تھا اتفاق سے رخصت نہ ملی اور تاریخ مقررہ پر نکاح نہ ہو سکا، اس کے بعد کچھ جھگڑے ایسے درپیش ہو گئے کہ دوسری تاریخ مقرر ہونے سے پہلے حامد اپنی ملازمت سے علیحدہ ہوا، اس کے بعد جب حامد کے والدین نے تاریخ مقرر کرنا چاہی تو محمودہ کے والدین نے یہ عذر پیش کیا کہ حامد اب بے نوکر ہے اس لیے ہم نکاح نہیں کرنا چاہتے۔ حامد اور محمودہ دونوں بالغ ہیں، محمودہ تاریخ نسبت سے حامد سے پردہ کرتی ہے، جب یہ حال محمودہ کو معلوم ہوا تو اس نے اپنی والدہ سے صاف صاف کہہ دیا کہ میں دوسرے امیر گھر جانا پسند نہ کروں گی خواہ کچھ ہی کیوں نہ ہو جس سے نسبت ہوئی اس سے نکاح ہو جانا چاہئے، محمودہ کے باپ واقعی امیر کبیر ہیں اور حامد ایک معمولی حیثیت کا آدمی ہے، محمودہ کے باپ یہ کوشش کرتے ہیں کہ محمودہ کا کسی امیر اور مالدار سے نکاح کر دیں اور محمودہ کی رضامندی پر کوئی توجہ نہ کی جائے، اس لیے محمودہ یہ چاہتی ہے کہ قبل اس کے کہ یہ جبر اس پر کیا جائے وہ حامد کے ساتھ اپنا نکاح کر لے، مگر اس نکاح کا حال اس کے والدین کو نہ معلوم ہو اور حامد بھی یہی چاہتا ہے، تو علمائے دین محمدی سے یہ امر دریافت طلب ہے کہ محض اگر گواہان اور وکیل کی موجودگی اور علم میں قاضی

صاحب نکاح پڑھا دیں اور ازروئے شریعت ایجاب و قبول کا اطمینان کر لیں تو یہ نکاح خفیہ جائز ہے اور کسی طرح ناقص تو نہیں۔؟ فقط

الجواب: بالغہ جو بے رضائے ولی بطور خود اپنا نکاح خفیہ خواہ اعلانیہ کرے، اس کے انعقاد و صحت کے لیے یہ شرط ہے کہ شوہر اس کا کفو ہو یعنی مذہب یا نسب یا پیشے یا مال یا چلن میں عورت سے ایسا کم نہ ہو کہ اس کے ساتھ اس کا نکاح ہونا اولیائے زن کے لیے باعث ننگ و عار و بدنامی ہو، اگر ایسا ہے تو وہ نکاح نہ ہوگا۔

فی الدرالمختار ویفتی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتوی لفساد الزمان [1] در مختار میں ہے کہ غیر کفو میں نکاح کے جائز نہ ہونے کا فتویٰ ہے کہ فسادِ زمان کی وجہ سے نکاح منعقد ہی نہ ہو گا۔ (ت)

[1] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱

Fatawa Razawiyya, Volume Eleven

Suitability (Kafa'at) in terms of wealth is only to the extent that if the person is a professional, he earns enough daily to provide maintenance for a wealthy woman according to her standard. If he is not a professional, he should be able to provide maintenance for a month. In any case, the ability to pay the agreed-upon immediate dowry (Mahr-e-Mu'ajjal) is required.

In 'al-Durr al-Mukhtar': Suitability among Arabs and non-Arabs is considered in such a way that he is able to provide the immediate dowry and a month's maintenance if he is not a professional; otherwise, if he earns enough every day for her maintenance, provided she is capable of intercourse. (Summarized).

It is stated in Durr al-Mukhtar that regarding wealth, suitability among Arabs and non-Arabs is considered in such a way that he is capable of giving the immediate dowry and one month's maintenance while being a non-businessman, otherwise he should have the power to give daily expenses, provided the wife is capable of intercourse. (Summarized) (T)

Therefore, if Hamid possesses this much wealth and is not inferior to Mahmooda in religion, lineage, profession, and conduct such that the marriage would cause shame to Mahmooda's father—as appears from the question's premise that the father was previously agreeable to the marriage and now only excuses himself due to Hamid losing his job—then in this situation, provided the petitioner's statement is true, the marriage will become valid and correct through the proposal (Ijab) and acceptance (Qabul) of Hamid and Mahmooda in the presence of two men or one man and two women. There will be no defect in the marriage itself. If the burden of displeasing the parents falls on Mahmooda, that is a separate matter. And Allah Ta'ala knows best.

Problem 31: District Peshawar, Tehsil Swabi, Post Office Yar Hussain, Village Yaqubi, Syed Eid Shah.

What do the scholars of religion and muftis of the clear Shariah say regarding this matter: Zaid's mother and sister came to Amr's house as guests and stayed. Amr addressed Zaid's mother and said, "I have given my daughter to you," meaning he intended to marry the girl to Zaid. In response, Zaid's mother gave blessings to Amr but did not verbally accept. Later, Zaid made a small piece of jewelry as a token and sent it for Amr's daughter. At the time Amr spoke about his daughter to Zaid's mother, Zaid's mother, sister, and Amr's wife were the three women present, and no

man except Amr was present in the house. There was neither a clear acceptance of this proposal, nor a mention of dowry, nor were witnesses present. Later, after Amr's death, Amr's son married this minor girl to Khalid, and the consummation (Rukhsati) has not yet occurred. However, this marriage took place with witnesses and a mention of dowry. So in this situation, is the marriage to Khalid valid or not? And Zaid claims that the marriage to him is valid. Explain and be rewarded.

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'at, Mujtabai Press Delhi, 1/195

फतावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

धन के मामले में उपयुक्तता (कफ़ाअत) केवल इतनी है कि यदि वह व्यक्ति पेशेवर है, तो वह दैनिक इतना कमाता हो जो उस धनी महिला के स्तर के अनुसार उसके भरण-पोषण के लिए पर्याप्त हो। और यदि वह पेशेवर नहीं है, तो वह एक महीने का भरण-पोषण (नफ़क़ा) दे सके। किसी भी स्थिति में, तयशुदा त्वरित मेहर (मेहर-ए-मुअज्जल) देने की क्षमता आवश्यक है।

'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में है कि धन के मामले में अरब और अजम में बराबरी (कफ़ाअत) का विचार इस प्रकार किया जाता है कि वह त्वरित मेहर देने और एक महीने का भरण-पोषण देने में सक्षम हो यदि वह पेशेवर नहीं है; अन्यथा, यदि वह प्रतिदिन उसकी पर्याप्तता के अनुसार कमाने वाला हो, बशर्ते कि पत्नी संभोग (जिमा) के योग्य हो। (सारांशित)।

दुर्र-ए-मुख्तार में है कि धन के एतबार से अरब व अजम में कफ़ाअत का एतबार इस प्रकार है कि मेहर-ए-मुअज्जल देने और एक महीने का नफ़क़ा देने पर कादिर हो जबकि वह गैर-कारोबारी हो, वरना रोज़ाना का खर्च देने पर कुदरत रखता हो, बशर्ते कि बीवी जिमा की कुदरत रखती हो। (सारांशित) (त)

अतः, यदि हामिद के पास इतना धन है और वह धर्म, वंश, पेशे और आचरण में भी महमूदा से इतना कम नहीं है कि विवाह महमूदा के पिता के लिए शर्म का कारण बने—जैसा कि प्रश्न की स्थिति से स्पष्ट है कि पिता पहले इस विवाह के लिए सहमत थे और अब केवल नौकरी न रहने का बहाना कर रहे हैं—तो ऐसी स्थिति में, याचिकाकर्ता की सच्चाई के आधार पर, हामिद और महमूदा के दो पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं के सामने ईजाब और क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कर लेने से निकाह जायज़ और सही हो जाएगा। निकाह में कोई दोष नहीं होगा। यदि माता-पिता को नाराज़ करने का बोझ महमूदा पर पड़ता है, तो वह अलग मामला है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला ३१: ज़िला पेशावर, तहसील स्वाबी, डाकखाना यार हुसैन, मौज़ा याक़ूबी, सैयद ईद शाह।

दीन के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं: ज़ैद की माँ और बहन अम्र के घर मेहमान बनकर आईं और ठहरी थीं। अम्र ने ज़ैद की माँ को संबोधित करते हुए कहा, "मैंने अपनी बेटी तुम्हें दे दी है," जिसका उद्देश्य यह था कि वह अपनी बेटी का निकाह ज़ैद से करेंगे। ज़ैद की माँ ने इसके उत्तर में अम्र को दुआएं दीं लेकिन जुबान से क़बूल नहीं किया। बाद में ज़ैद ने एक छोटा सा गहना निशानी के तौर पर बनाकर अम्र की बेटी के लिए भेजा। जिस समय अम्र ने ज़ैद की माँ से

अपनी बेटी का ज़िक्र किया था, उस समय ज़ैद की माँ, बहन और अम्र की पत्नी ही मौजूद थीं, और घर में अम्र के अलावा कोई पुरुष नहीं था। न तो इस प्रस्ताव की स्पष्ट स्वीकृति हुई, न मेहर का ज़िक्र हुआ और न ही गवाह मौजूद थे। फिर अम्र के निधन के बाद, अम्र के बेटे ने इस नाबालिग लड़की का निकाह खालिद से कर दिया, और अभी रुखसती नहीं हुई है। लेकिन यह निकाह गवाहों और मेहर के ज़िक्र के साथ हुआ है। तो इस स्थिति में, क्या खालिद के साथ हुआ निकाह सही है या नहीं? और ज़ैद का दावा है कि निकाह मेरे साथ सही हुआ है। बयान करें और सवाब पाएं।

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, कफ़ाअत का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/195

فتاوٰی رضویہ ، جلد یازدہم

مال میں کفاءت کو صرف اس قدر کہ وہ شخص اگر پیشہ ور ہو تو روز کا روز اتنا کماتا ہو جو اس عورت غنیہ کے قابل کفایت روزانہ دے سکے، اور پیشہ ور نہیں تو ایک مہینہ کا نفقہ دے سکے، اور مہر جس قدر معجل ٹھہرے اس کے ادا پر قدرت بہرحال درکار ہے۔

فی الدرالمختار تعتبر الکفائۃ فی العرب والعجم ما لابان یقدر علی المعجل ونفقۃ شھر لوغیر محترف والا فان کان یکتسب کل یوم کفایتھا لو تطیق الجماع ملخصاً۔

در مختار میں ہے کہ مال کے اعتبار سے عرب و عجم میں کفو کا اعتبار بایں طور ہے کہ مہر معجل دینے اور ایک مہینہ کا نفقہ دینے پر قادر ہو جبکہ غیر کاروباری ہو ورنہ روزانہ کا خرچہ دینے پر قدرت رکھتا ہو بشرطیکہ بیوی جماع کی قدرت رکھتی ہو ملخصاً (ت)

پس اگر حامد اس قدر مال رکھتا ہو اور مذہب ونسب وحرفت وروش میں بھی محمودہ سے ویسا کم نہیں کہ اس سے نکاح باعث عار پدر محمودہ ہو، جیسا کہ صورت سوال سے یہی ظاہر ہے کہ باپ پہلے اس سے نکاح پر راضی تھا اب صرف نوکری نہ رہنے کا عذر کرتا ہے تو اس صورت میں برتقدیر صدق مستفتی دو مرد یا ایک مرد دو عورتوں کے سامنے حامد اور محمودہ کے ایجاب و قبول کرلینے سے جائز و صحیح ہوجائے گا۔ نفس نکاح میں نقصان نہ ہوگا، ماں باپ کو ناراض کرنے کا وبال محمودہ پر ہو تو جدا امر ہے، واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۳۱: ضلع پشاور تحصیل صوابی ڈاکخانہ یار حسین موضع یعقوبی سید عید شاہ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کی والدہ اور ہمشیرہ عمرو کے مکان پر بطور مہمان داری کے آئیں وسوئی تھیں، عمرو نے زید کی والدہ سے مخاطب ہو کر

کہا کہ میں نے اپنی بیٹی تم کو دی ہے جس سے اس کا منشا یہ تھا کہ زید سے اس لڑکی کا نکاح کریں گے، زید کی والدہ نے اس کے جواب میں عمرو کو دعائیں دیں اور قبول زبان سے نہیں کیا، بعد کو زید نے ایک چھوٹا سا زیور بطور نشانی کے بنا کر عمرو کی بیٹی کے واسطے بھیجا، اور جس وقت عمرو نے اپنی بیٹی کا تذکرہ زید کی والدہ سے کیا، اس وقت زید کی والدہ اور ہمشیرہ اور عمرو کی بیوی تھی یہ تین عورتیں موجود تھیں، اور سوائے عمرو کے اور کوئی مرد گھر میں موجود نہیں تھا، نہ اس ایجاب کا قبول صراحۃ ہوا نہ ذکر مہر ہوا اور نہ گواہ موجود تھے، پھر عمرو کے انتقال کے بعد عمرو کے لڑکے نے اس نابالغہ کا عقد خالد سے کیا اور ابھی رخصت نہیں ہوئی ہے لیکن عقد مع گواہ اور ذکر مہر کے ہوا ہے تو اس صورت میں عقد خالد کا صحیح ہوا یا نہیں؟ اور زید مدعی اس بات کا ہے کہ نکاح مجھ سے صحیح ہے، بینوا توجروا۔

---

1 درمختار باب الکفائۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۵

Volume 11, Fatawa Razawiya.

The Answer: Zaid's claim is completely false; the marriage was never valid because of it. Even if it is assumed that Amr's conversation with Zaid's mother was an offer, and her prayers for him acted as acceptance because it indicated consent, and then Zaid sending jewelry was Zaid's permission for an unauthorized (fuduli) contract, even on all these assumptions, there is no basis for validity in the mentioned case due to the absence of male witnesses. (Note)

In Durr al-Mukhtar, it says: Its condition is the presence of two free male witnesses, or one free male and two free female witnesses who are sane and adult. (1) The condition for the marriage to be concluded is that two men, or one man and two women, who are sane, adult, and free, are present in the gathering. (Note)

In Bahr al-Ra'iq, it says: So it is not concluded in the presence of slaves and children. (2) Marriage will not take place in the presence of slaves and children. (Note)

Khalid's marriage became valid. Because this step of his was considered a rescission (faskh) of the invalid (fasid) marriage, if we differentiate between invalid (fasid) and void (batil) in marriage, as is the case in numerous branches of jurisprudence. (Note) And Allah Almighty knows best.

Problem 32: Asked by Maulvi Syed Zahoor Ahmad Sahib from Beetho Sharif, District Gaya, 25 Dhu al-Hijjah 1322 AH. A man's marriage was performed in the presence of two people with the woman's permission, and both people remained silent. In such a case, is the marriage valid or not? The marriage proxy is a third person, and those two people are aware of the marriage.

1. Durr al-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Press, Delhi, 1/186.
2. Bahr al-Ra'iq, Book of Marriage, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/89.

जिल्द ग्यारहवीं, फतावा रज़विया।

उत्तर: ज़ैद का दावा सरासर गलत है; इससे निकाह कभी सही नहीं हुआ। यदि यह मान लिया जाए कि अम्र का ज़ैद की माँ से बात करना 'ईजाब' (प्रस्ताव) है, और माँ का अम्र को दुआ देना 'क़बूल' (स्वीकृति) के समान है क्योंकि यह सहमति दर्शाता है, और फिर ज़ैद का आभूषण भेजना ज़ैद की ओर से अनाधिकृत (फ़ज़ूली) अनुबंध की अनुमति है, इन सबके बावजूद, उपर्युक्त स्थिति में निकाह सही नहीं है क्योंकि इस अनुबंध का कोई पुरुष गवाह नहीं है। (त)

दुर्र-ए-मुख्तार में है: इसकी शर्त दो स्वतंत्र पुरुष गवाहों, या एक स्वतंत्र पुरुष और दो स्वतंत्र महिला गवाहों की उपस्थिति है जो समझदार और वयस्क हों। (1) निकाह संपन्न होने की शर्त यह है कि दो पुरुष, या एक पुरुष और दो महिलाएँ जो बुद्धिमान, वयस्क और स्वतंत्र हों, सभा में उपस्थित हों। (त)

बहर-उर-रैक में है: अतः दासों और बच्चों की उपस्थिति में निकाह नहीं होगा। (2) गुलामों और बच्चों की मौजूदगी में निकाह नहीं होगा। (त)

खालिद का निकाह सही हुआ। क्योंकि उसका यह कदम 'फासिद' (दोषपूर्ण) निकाह के लिए निरस्तीकरण (फ़स्ख़) माना गया, यदि हम निकाह में 'फासिद' और 'बातिल' (शून्य) के बीच अंतर करें जैसा कि न्यायशास्त्र की कई शाखाओं का मामला है। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसअला 32: प्रेषक मौलवी सैयद ज़हूर अहमद साहब, बेठो शरीफ़, ज़िला गया, 25 ज़ुल-हिज्जा 1322 हिजरी। एक व्यक्ति का निकाह दो व्यक्तियों की उपस्थिति में महिला की अनुमति से हुआ और वे दोनों व्यक्ति चुप रहे, तो ऐसी स्थिति में निकाह सही हुआ या नहीं? और निकाह का वकील एक तीसरा व्यक्ति है और वे दोनों व्यक्ति निकाह के बारे में जानते हैं।

1. दुर्र-ए-मुख्तार, किताब-उन-निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/186
2. बहर-उर-रैक, किताब-उन-निकाह, एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/89

جلد یازدہم، فتاوٰی رضویہ۔

الجواب: زید کا دعوٰی محض غلط ہے اس سے نکاح ہر گز صحیح نہ ہوا، وان فرض ان کلام عمر و مع ام زید کان ایجاباً وان دعاء ہا لہ قام مقام القبول لدلالۃ الرضا وان بعثہ حلیاً للعرس کانہ اجازتہ لعقد الفضولی فعلی فرض کل ذلک لا وجہ للصحۃ فی الوجہ المذکور لعدم شاھد من الذکور۔ اگر یہ فرض کر لیا جائے کہ عمرو کی والدہ سے بات کرنا ایجاب ہے اور والدہ مذکورہ کا عمرو کو دعائیں دینا قبول کے قائم مقام ہے کہ یہ اظہارِ رضا مندی ہے، اور پھر زید کا زیور بھیجنا زید کی طرف سے فضولی کے عقد کی اجازت ہے بایں ہمہ مذکورہ صورت میں نکاح صحیح نہیں ہے کیونکہ اس عقد کا کوئی مرد گواہ نہیں ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: شرطہ حضور شاھدین حرین او حر و حرتین مکلفین 1۔ نکاح منعقد ہونے کی شرط یہ ہے کہ دو مرد یا ایک مرد اور دو عورتیں عاقل بالغ اور حر، مجلس میں حاضر ہوں (ت)

بحر الرائق میں ہے: فلایعقد بحضرۃ العبید والصبیان 2۔ غلاموں اور بچوں کی موجودگی سے نکاح نہ ہوگا۔ (ت)

خالد کا عقد صحیح ہوا۔ لان الاقدام علیہ فسخ للفاسد ان قلنا بالفرق بینہ وبین الباطل فی النکاح کما ھو قضیۃ فروع جمۃ۔ اس لئے کہ اس کا یہ اقدام فاسد نکاح کے لئے فسخ قرار پایا ہے، جب ہم نکاح میں فاسد و باطل کے فرق کا قول کریں جیسا کہ تمام فروع کا معاملہ ہے (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۲: مسئولہ مولوی سید ظہور احمد صاحب از بیتھو شریف ضلع گیا ۲۵ ذی الحجہ ۱۳۲۲ھ

ایک شخص کا نکاح بحضور دو شخص کے عورت کی اجازت سے ہوا اور دونوں شخص چپ

رہے، تو ایسی صورت میں نکاح درست ہوا یا نہیں۔؟ اور وکیل بالنکاح ایک شخص ثالث ہے اور وہ شخصین نکاح کو جانتے ہیں

1 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۶ 2 بحر الرائق کتاب النکاح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۹/۳

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

...but the groom (nakih) does not know, and the woman gave permission for her marriage to the representative (wakil bi al-nikah) behind a veil in the presence of those two persons. The representative said, "I have given such and such woman to you on such amount of dower (mahr)," neither used the word 'marriage' (nikah) nor 'spouse-ship' (zawjiyat).

The Answer: It is not necessary for the groom to recognize the witnesses, nor is it necessary for the witnesses to say anything at the time of the contract, nor are specific words like 'nikah' or 'zawjiyat' mandatory. Referring to just "such and such woman" is not problematic as long as her identification is established by that alone. It is necessary for the witnesses to simultaneously hear both the words of offer (ijab) and acceptance (qabul) and understand that a marriage is taking place. Whether the words are 'nikah' and 'tazwij' or any other words established for the immediate transfer of ownership of a person's essence (tamlik-e-ain). It is essential that the contracting parties, i.e., the husband and wife, are distinct to the witnesses, whether through presence and sight and pointing, or in absence through mere naming or naming with parentage etc. There is no doubt that giving a woman to a man for a certain mahr implies marriage. Therefore, in the asked scenario, if all other mentioned conditions were met, the marriage is valid. And all these issues are explicitly mentioned in Durr al-Mukhtar and other reliable books. And Allah Almighty knows best.

Issue 33: Sent by Sayyid Zahoor Ahmed mentioned above, 30 Muharram al-Haram 1324 AH. Is it a condition to accept the marriage three times or is once enough? And due to nervousness, he said it in three different ways three times: sometimes "it is accepted", sometimes "I accepted", sometimes "Qabiltu" (I have accepted). In such a case, is the marriage valid or not? This happened in the presence of witnesses. And was the offer from the woman's side correct or not?

The Answer: Acceptance three times is not at all necessary in marriage or any other contract; once is sufficient. Saying words of acceptance three times in three different ways is not harmful. Yes, if instead of acceptance, words of rejection or denial were uttered in nervousness, then it will be seen: if the word "accepted" was said first, then the marriage is solemnized, as a rejection after the completion of the contract does not prevent its establishment. If the word "denial/rejection" came out first, then the offer is rejected. Now, if after this he said the word "accepted", this would be

considered an offer from his side; if at that same gathering (majlis) the word "accepted" is established from the other side, the marriage will be solemnized, otherwise it will be void. And if among multiple words there was no word of rejection, but there were words that do not qualify as acceptance, then whether they were before or after, as long as a single word of correct acceptance is uttered before the gathering changes, the marriage will take place because immediate acceptance is not a condition and the gathering (majlis) unites scattered elements. Whether the offer is from the woman's side or the man's side, both are correct. In contracts, offer and acceptance are not fixed to a specific party; among the contracting parties, whichever side initiates the words...

...लेकिन दूल्हा (नाकिह) नहीं जानता है और औरत ने निकाह के वकील को उन दो व्यक्तियों के सामने पर्दे के पीछे से अपने निकाह की अनुमति दी और वकील ने इस तरह कहा कि फ़लां औरत को इतने मेहर (दहेज) पर आपको दिया, न निकाह शब्द कहा और न ही ज़ौजियत (वैवाहिक संबंध) का।

उत्तर: न दूल्हे का गवाहों को पहचानना ज़रूरी है, न गवाहों का निकाह के समय कुछ बोलना ज़रूरी है, न ही विशेष रूप से 'निकाह' या 'ज़ौजियत' शब्द अनिवार्य हैं। केवल "फ़लां औरत" कहने में कोई दोष नहीं है, बशर्ते कि केवल इसी से उसकी पहचान हो जाए। गवाहों के लिए ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) के दोनों शब्दों को एक साथ सुनना और इतना समझना ज़रूरी है कि यह निकाह हो रहा है। चाहे शब्द 'निकाह' और 'तज़्वीज' हों या कोई अन्य शब्द जो तत्काल प्रभाव से मालिकाना हक (तमलीक-ए-ऐन) के लिए निर्धारित हों। गवाहों की नज़रों में निकाह करने वाले पक्षों, यानी पति और पत्नी का स्पष्ट होना ज़रूरी है, चाहे वह उपस्थिति, देखने और संकेत के माध्यम से हो, या अनुपस्थिति में केवल नाम या नाम के साथ वंश आदि के माध्यम से हो। इसमें कोई संदेह नहीं है कि किसी पुरुष को एक निश्चित मेहर पर औरत का दिया जाना निकाह के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। इसलिए पूछी गई स्थिति में यदि अन्य सभी उल्लेखित शर्तें पूरी थीं, तो निकाह सही हो गया। ये सभी मसले 'दुर्रे मुख्तार' और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में स्पष्ट रूप से मौजूद हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 33: प्रेषक सैय्यद ज़हूर अहमद, उपरोक्त, 30 मुहर्रम अल-हराम 1324 हिजरी। निकाह को तीन बार क़बूल करना शर्त है या एक बार? और घबराहट की वजह से तीन बार तीन तरह से कहा, कभी यह कि "क़बूल है", कभी "मैंने क़बूल किया", कभी "क़बिल्तु" (मैंने स्वीकार किया), ऐसी स्थिति में निकाह सही हुआ या नहीं? और यह गवाहों की उपस्थिति में हुआ है। और क्या औरत की तरफ से ईजाब (प्रस्ताव) सही तरह से हुआ या नहीं?

उत्तर: निकाह हो या कोई अन्य अनुबंध, तीन बार क़बूल करना बिल्कुल ज़रूरी नहीं है, एक ही बार काफी है। और तीन बार तीन तरह से क़बूल के शब्द बोलना कोई नुकसानदेह नहीं है। हाँ, अगर घबराहट में क़बूल के बजाय कुछ शब्द इनकार या मना करने के बोले गए हों, तो यह देखा जाएगा कि यदि पहले क़बूल शब्द कहा था तो निकाह हो गया, क्योंकि अनुबंध पूरा होने के बाद इनकार

करना अनुबंध को नहीं रोकता। और अगर पहले "इनकार" शब्द निकला तो प्रस्ताव रद्द हो गया। अब इसके बाद उसने जो "क़बूल" शब्द कहा, वह उसकी तरफ से ईजाब (प्रस्ताव) माना जाएगा, यदि उसी महफ़िल (मजलिस) में दूसरी तरफ से शब्द "क़बूल" सिद्ध हो जाए तो निकाह हो जाएगा, अन्यथा शून्य हो जाएगा। और यदि अनेक शब्दों में इनकार का कोई शब्द नहीं था, हाँ ऐसे शब्द थे जो क़बूल नहीं माने जाते, तो वे चाहे पहले हों या पीछे, जब तक मजलिस बदलने से पहले सही क़बूल का एक शब्द भी बोला जाएगा, निकाह हो जाएगा। क्योंकि तुरंत स्वीकार करना शर्त नहीं है और मजलिस अलग-अलग हिस्सों को जोड़ देती है। और ईजाब चाहे औरत की तरफ से हो या मर्द की तरफ से, दोनों सही हैं। अनुबंधों में ईजाब और क़बूल निर्धारित नहीं हैं, अनुबंध करने वालों में जिसकी तरफ से शब्द...

पृष्ठ 739 का 218

لیکن ناکح نہیں جانتا ہے اور عورت نے وکیل بال نکاح کو وہ دو شخص کے سامنے پردہ سے اپنے نکاح کی اجازت دی اور وکیل نے یوں کہا کہ فلاں عورت کو اس قدر مہر پر آپ کو دیا، نہ نکاح کا لفظ کہا ہو اور نہ زوجیت کا۔

الجواب: نہ ناکح کا شاہدین کو پہچاننا ضرور، نہ شاہدین کا وقت عقد کچھ بولنا ضرور، نہ خاص نکاح یا زوجیت ضرور، نہ صرف فلاں عورت کہنے میں محذور، جبکہ تنہا اسی قدر سے اس کی معرفت ہو جائے، شاہدین کا معاً لفظین ایجاب و قبول کو سننا اور اتنا سمجھنا کہ یہ نکاح ہو رہا ہے اور لفظ نکاح و تزویج ہو یا کوئی اور لفظ جو تملیک عین کانی الحال کے لیے وضع کیا گیا اور شاہدین کے نزدیک عاقدین یعنی زوج وزوجہ کا متمیز ہو جانا خواہ بحضور و رویت و اشارہ یا بغیبت و تسمیہ مجردہ یا مع نسبت وغیرہ متمیزات میں اس قدر ضرور ہے اور شک نہیں کہ کسی مرد کو اتنے مہر پر عورت کا دیا جانا مفید معنی نکاح ہے تو صورت مستفسرہ میں اگر باقی شرائط مذکورہ مجتمع تھے نکاح درست ہو گیا، والمسائل کلھا مصرحۃ فی الدرالمختار وغیرہ من معتمدات الاسفار (ان تمام مسائل کی تصریح در مختار اور دیگر معتمد کتب میں موجود ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۳۳: مرسلہ سید ظہور احمد مذکور الصدر ۳۰ محرم الحرام ۱۳۲۴ھ نکاح کو تین مرتبہ قبول کرنا شرط ہے یا ایک بار؟ اور گھبرانے کی وجہ تین بار تین طرح کہا، کبھی یہ کہ قبول ہے، کبھی میں نے قبول کیا، کبھی قَبِلْتُ، ایسی صورت میں نکاح درست ہوا یا نہیں؟ اور یہ بحضور شاہدین ہے اور عورت سے ایجاب درست طور پر ہوا یا نہیں؟

الجواب: نکاح خواہ کسی عقد میں تین بار قبول اصلاً ضرور نہیں ایک ہی بار کافی ہے، اور تین بار تین طرح الفاظ قبول ادا ہونا کچھ مضر نہیں، ہاں اگر گھبراہٹ میں بجاے قبول بعض الفاظ رد و انکار ادا ہوں تو یہ دیکھا جائے گا کہ پہلے لفظ قبول کہا تھا تو نکاح ہو گیا کہ بعد تمامی عقد رد و انکار مانع انعقاد نہیں، اور پہلے لفظ "انکار" نکلا تو وہ ایجاب رد ہو گیا، اب جو اس کے بعد اس نے لفظ "قبول" کہا یہ اس کی طرف سے ایجاب ہوا، اگر اس مجلس میں ادھر سے لفظ "قبول" متحقق ہو منعقد ہو جائے گا ورنہ باطل ہو جائے گا، اور اگر متعدد الفاظ میں لفظ رد کوئی نہیں تھا ہاں ایسے الفاظ تھے کہ قبول نہ ٹھہریں تو وہ خواہ پہلے ہوں یا پیچھے جبکہ مجلس بدلنے سے پہلے ایک لفظ بھی قبول صحیح کا ادا ہو گا نکاح ہو جائے گا لان الفور غیر شرط والمجلس یجمع المتفرق (کیونکہ فوراً قبول کرنا شرط نہیں اور مجلس جامع متفرقات ہے۔ ت) اور ایجاب عورت کی طرف سے ہو یا مرد کی طرف سے دونوں درست ہیں، عقود میں ایجاب و قبول کچھ متعین نہیں، عاقدین میں جس کی طرف سے الفاظ

Fatawa-e-Razvia Volume 11

...contracts will be issued first, they will be named "Ijab" (proposal), and in response to them, what the second party says will be considered acceptance (Qabul) and affirmation. For example, if a woman says to a man, "I have accepted you into my marriage," this is a proposal (Ijab), even though it uses the word 'accepted'. If the man, in response, says "I have taken you into my marriage," this is acceptance (Qabul), even though it does not use the word 'accepted'. And Allah Almighty knows best.

Problem 42: From Mauza Baithu, District Gaya, sent by Mr. Maulvi Syed Zahoor Ahmad Sahib, 16 Shawwal 1324 AH.

Respected Maulana Sahib, Peace be upon you. The inquiry is: If the proxy for marriage (Wakil bil-Nikah) or the witnesses of the marriage are Ghair-Muqallid Wahhabis, can the representation (wakalat) or testimony (shahadat) of such persons be valid? And will the marriage be valid if such people are proxies or witnesses?

The Answer: Syed Sahib! Peace be upon you too. As long as the misguidance of Wahhabis and Ghair-Muqallids has not reached the level of disbelief (kufr) (and this is rare among Ghair-Muqallid Wahhabis, and just as the Rashidiya group emerged, the state of extremist Ismailis has become similar among muqallid Wahhabis too, probably none among them remains on whom the fatwa of mandatory disbelief (luzum-e-kufr) by the jurists wouldn't apply, and many are at the limit of explicit commitment [to kufr], we ask Allah for safety and a good end), then their being witnesses in a marriage does not fundamentally interfere with it. And even if they are at the level of disbelief, proxy (wakalat) is still permissible because one can appoint an apostate (murtad) as a proxy, and their proxy will be valid, even though social mixing with them is forbidden. It is stated in [Fatawa] Hindiyya:

[Arabic Box Content]: "The proxy of an apostate is permissible, such as if a Muslim appoints an apostate as a proxy, and similarly if he was a Muslim at the time of appointment and then became an apostate, he remains on his proxy until he joins the Dar al-Harb (territory of war), then his proxy becomes void, as stated in Al-Badai'."

If a Muslim appointed an apostate as a proxy, or appointed a Muslim as a proxy who later became an apostate, then this proxy will remain valid. However, if he flees to the Dar al-Harb, the proxy will end. It is similar in Badai'. (Translator's note)

Regarding testimony: If the two persons designated as witnesses for the marriage among the common people were both apostate Wahhabis, but in the gathering there were two other Muslim men, or one Muslim man and two Muslim women, who simultaneously heard and understood the proposal and acceptance, then the marriage would be valid despite [the designated witnesses being apostates], due to the presence of [other] witnesses even if those designated were apostates. (Translator's note). And if only these [apostates] were present, listening, and understanding, or if all others present were also like them, such that the required number of Muslim witnesses is not met, then the marriage will not be valid; it will be purely void, because among the conditions for validity...

1. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Wakalah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/563.

फतावा रज़विया जिल्द 11

...अनुबंध पहले जारी होंगे, उनका नाम "ईजाब" रखा जाएगा, उनके उत्तर में दूसरा जो कहेगा वह "क़ुबूल" (स्वीकृति) माना जाएगा, उदाहरण के लिए, एक महिला ने पुरुष से कहा "मैंने तुझे अपने विवाह में स्वीकार किया" यह ईजाब हुआ, हालांकि इसमें शब्द 'क़ुबूल' है, पुरुष ने इसके जवाब में कहा "मैंने तुझे अपने विवाह में लिया" यह क़ुबूल हुआ, हालांकि इसमें शब्द 'क़ुबूल' नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 42: मौज़ा बैठू जिला गया से, प्रेषक जनाब मौलवी सैयद ज़हूर अहमद साहब, 16 शव्वाल 1324 हिजरी।

जनाब मौलाना साहब, अस्सलामु अलैकुम। इस्तफ़्ता (सवाल) यह है कि यदि निकाह का वकील (प्रतिनिधि) या निकाह के गवाह ग़ैर-मुक़ल्लिद वहाबी हों, तो क्या ऐसे व्यक्ति की वकालत या गवाही सही हो सकती है या नहीं? और क्या निकाह सही होगा यदि ऐसे लोग वकील या गवाह हों?

अल-जवाब: सैयद साहब! वअलैकुम अस्सलाम। जब तक वहाबी और ग़ैर-मुक़ल्लिद की गुमराहियत कुफ़्र (अविश्वास) तक न पहुँची हो (और ग़ैर-मुक़ल्लिद वहाबियों में यह दुर्लभ है, और जैसे रशीदिया समूह पैदा हुआ, मुक़ल्लिद वहाबियों में भी कट्टर इस्माइलियों की तरह यही स्थिति हो गई है, उनमें शायद ही कोई ऐसा होगा जिस पर फ़ुक़हा (इस्लामी न्यायविदों) के हुक्म से कुफ़्र लागू न होता हो, और बहुत से तो स्पष्ट कुफ़्र की सीमा पर हैं, हम अल्लाह से सलामती और अच्छे अंत की प्रार्थना करते हैं), तो निकाह में उनका गवाह होना मूल रूप से बाधा नहीं डालता। और यदि वे कुफ़्र की सीमा पर हों, तब भी वकालत जायज़ है क्योंकि धर्मत्यागी (मुरतद) को वकील बनाया जा सकता है, और उसकी वकालत सही हो जाएगी, हालांकि उनसे मेलजोल हराम है। हिन्दिया में है:

[अरबी बॉक्स सामग्री]: "मुरतद की वकालत जायज़ है, जैसे किसी मुसलमान ने किसी मुरतद को वकील बनाया, और इसी तरह यदि वह वकील बनाने के समय मुसलमान था और फिर मुरतद हो गया, तो वह अपनी वकालत पर रहेगा जब तक कि वह दारुल हरब (युद्ध क्षेत्र) में न चला जाए, तब उसकी वकालत रद्द हो जाएगी, जैसा कि बदाइ' में है।"

मुसलमान ने मुरतद को वकील बनाया या मुसलमान को वकील बनाया जो बाद में मुरतद हो गया, तो यह वकालत बनी रहेगी, लेकिन जब वह दारुल हरब भाग जाए तो वकालत खत्म हो जाएगी। बदाइ' में भी ऐसा ही है। (अनुवादक)

जहाँ तक गवाही की बात है: आम लोगों में जिन दो व्यक्तियों को निकाह की गवाही के लिए नामित किया जाता है, यदि वे दोनों मुरतद वहाबी थे, लेकिन मजलिस (सभा) में दो और मुसलमान पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएँ मुसलमान थीं, जिन्होंने एक साथ ईजाब और क़ुबूल को सुना और समझा, तो निकाह सही हो गया, गवाहों की उपस्थिति के कारण भले ही नामित गवाह मुरतद हों। (अनुवादक)। और यदि केवल यही उपस्थित, सुनने वाले और समझने वाले थे, या जितने अन्य थे वे भी ऐसे ही थे, और मुसलमानों की निर्धारित संख्या (नसाब) पूरी नहीं होती, तो निकाह सही नहीं हुआ, वह पूरी तरह से फ़ासिद (अमान्य) है, क्योंकि वैधता की शर्तों में से...

1. फतावा हिन्दिया, किताब अल-वकालह, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 3/563।

पृष्ठ 219 का 739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدھم

عقد پہلے صادر ہوں گے، ان کا نام "ایجاب" رکھا جائے گا ان کے جواب میں دوسرا جو کہے گا وہ قبول اقرار پائے گا، مثلاً عورت نے مرد سے کہا "میں نے تجھے اپنی زوجیت میں قبول کیا" یہ ایجاب ہوا اگرچہ بلفظ قبول ہے، مرد نے اس کے جواب میں کہا "میں نے تجھے اپنی زوجیت میں لیا" یہ قبول ہوا اگرچہ بلفظ قبول نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۲: از موضع بیتھو ضلع گیا مرسلہ جناب مولوی سید ظہور احمد صاحب ۱۶ شوال ۱۳۲۴ھ

جناب مولانا صاحب السلام علیک، استفتاء یہ ہے کہ اگر وکیل بالنکاح یا شاہدین نکاح غیر مقلد وہابی ہو تو ایسے شخص کی وکالت یا شہادت درست ہو سکتی ہے یا نہیں؟ اور نکاح درست ہوگا یا نہیں اگر ایسے لوگ وکیل یا شاہد ہوں؟

الجواب: سید صاحب! وعلیک السلام، وہابی و غیر مقلد کی ضلالت جبکہ کفر تک نہ پہنچی ہو (اور یہ غیر مقلد وہابیوں میں نادر ہے اور جیسے طائفہ رشیدیہ پیدا ہوا، مقلد وہابیوں میں بھی کٹر اسمعیلیوں کی طرح یہی حالت ہو گئی ان میں غالباً کوئی نہ ہوگا، جس پر بحکم فقہائے کرام لزومِ کفر نہ ہو، اور بہت تو صریح التزام کی حد پر ہیں نسأل اللہ العافیۃ وحسن العاقبۃ) جب تو نکاح میں ان کا شاہد ہونا اصلاً مخل نہیں اور اگر حد کفر پر ہوں تو وکالت جب بھی جائز ہے کہ مرتد کو وکیل کر سکتے ہیں اس کی وکالت صحیح ہو جائے گی اگرچہ اس سے میل جول اختلاط حرام ہے، ہندیہ میں ہے:

[Arabic Box Content]: تجوز وکالۃ المرتد بأن وکل مسلم مرتدا وکذا لو کان مسلما وقت التوکیل ثم ارتد فھو علی وکالتہ الا ان یلحق بدار الحرب فتبطل وکالتہ کذا فی البدائع۔

مسلمان نے مرتد کو وکیل بنایا یا مسلمان کو وکیل بنایا وہ بعد میں مرتد ہو گیا تو یہ وکالت باقی رہے گی، مگر جب وہ دار الحرب بھاگ جائے تو وکالت ختم ہو جائے گی، بدائع میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

رہی شہادت، عوام میں دو شخص جن کو گواہی نکاح سے نامزد کیا جاتا ہے وہ اگر دونوں مرتد وہابی تھے مگر جلسے میں اور دو مرد یا ایک مرد دو عورتیں مسلمان ہیں جنہوں نے معاً ایجاب و قبول سنا اور سمجھا جب تو اگرچہ نکاح صحیح ہوگیا، لوجود الشھود وان کان من سوا شھود امر تدین (گواہوں کی حاضری کی وجہ سے، اگرچہ انھوں نے مرتد گواہوں کو نامزد کیا ہو۔ ت) اور اگر صرف یہی حاضر و سامع و فاہم تھے یا اور جتنے ہیں وہ بھی ایسے ہی ہیں ایک نصاب مسلمانوں سے پورا نہیں تو نکاح صحیح نہ ہوا فاسد محض ہوالان من شرائط الصحۃ

۱۔ فتاوٰی ہندیہ کتاب الوکالۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۵۶۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

...witnesses, and there is no testimony for an apostate as in ad-Durr al-Mukhtar etc. (Because witnessing is a condition for validity, and an apostate is not eligible to give testimony, as stated in Durr al-Mukhtar. - Note) And Allah Almighty knows best.

Mas'alah 35: If a man and a woman perform 'Ijab' (proposal) and 'Qabul' (acceptance) between themselves and no one else is informed, will this marriage be valid?

The Answer: Marriage without the presence of two witnesses is 'fasid' (invalid). It is stated in a Hadith:

"Adulteresses are those who give themselves in marriage without clear proof (witnesses)."[1] - And Allah Almighty knows best.

Mas'alah 36: Asked by Muhammad Yusuf from Jabalpur, 13 Dhu al-Qi'dah 1325 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say about this matter: If a 'Ghair-Muqallid' (one who does not follow a specific school of jurisprudence) performs the marriage ceremony of a 'Muqallid' (one who follows a school) according to the Shariah of the Chosen One (peace and blessings of Allah be upon him), is the marriage performed by him permissible or forbidden? And will the children born from this marriage not be illegitimate? Clarify, and may you be rewarded.

The Answer: Although a marriage officiant is not a requirement in the pure Shariah, if even a Hindu or a polytheist makes the couple perform Ijab and Qabul in front of witnesses and the conditions of validity are met, the marriage will take place. However, there is a sublime point here that only those understand who are granted success by Allah Almighty. It is that if a Hindu or polytheist performs it, no one will consider him a great religious figure, let alone a Muslim. In contrast, those who utter the words of Islam but have disbelief in their hearts are regarded by common people as pure Muslims, although on hundreds of grounds, according to authentic Hadiths and jurisprudential explanations, the ruling of disbelief (Kufr) is mandatory upon them.

As we have detailed in 'al-Kawkabah ash-Shahabiyyah', 'an-Nahy al-Akid', and other treatises, and I have additional points in view (Note).

And among them, many are openly deniers of the essentials of religion and are certainly and by consensus apostates/disbelievers. People call someone for marriage

officiating whom they consider righteous and reliable. So if either of the couple, after becoming aware of their blasphemies, still considers them good and righteous, then the same ruling (of disbelief) will immediately apply to them as well, as explicitly stated in 'ash-Shifa', 'al-Ashbah', and others.

[1] Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Book of Marriage, Dar Sader Beirut, 7/125. Note: This Hadith was found in Sunan al-Kubra; it uses the word 'al-baghaya' (prostitutes) instead of 'al-zawani'. - Nami Ahmad.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...गवाह, और धर्मत्यागी (मुर्तद) के लिए कोई गवाही नहीं है जैसा कि अल-दुर्र अल-मुख्तार आदि में है। (क्योंकि वैधता के लिए गवाही एक शर्त है और एक धर्मत्यागी गवाही देने के योग्य नहीं है, जैसा कि दुर्र-ए-मुख्तार में है। - नोट) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 35: अगर एक महिला और पुरुष आपस में ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कर लें और किसी और को इसकी जानकारी न हो, तो क्या यह निकाह हो जाएगा?

उत्तर: दो गवाहों की अनुपस्थिति में निकाह 'फ़ासिद' (अमान्य) है। हदीस में फ़रमाया गया है:

"व्यभिचारिणी वे हैं जो बिना किसी स्पष्ट प्रमाण (गवाहों) के स्वयं को निकाह में दे देती हैं।"[1] - और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 36: प्रश्नकर्ता मुहम्मद यूसुफ़, जबलपुर से, 13 ज़ुल-क़ादा 1325 हिजरी। दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: यदि कोई 'ग़ैर-मुक़ल्लिद' (जो किसी इमाम का अनुसरण नहीं करता) किसी 'मुक़ल्लिद' (जो इमाम का अनुसरण करता है) का निकाह मुस्तफ़वी शरीयत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुसार पढ़ा दे, तो उसका पढ़ाया हुआ निकाह जायज़ है या हराम? और इस निकाह से जो संतान पैदा होगी, वह हराम तो नहीं होगी? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: हालाँकि पाक शरीयत में निकाह पढ़ने वाला कोई अनिवार्य अंग नहीं है, अगर कोई हिंदू या मुशरिक (बहुदेववादी) भी गवाहों के सामने जोड़े से ईजाब-ओ-क़ुबूल करवा दे और वैधता की शर्तें पूरी हों, तो निकाह हो जाएगा। लेकिन यहाँ एक सूक्ष्म बिंदु है जिसे वही समझते हैं जिन्हें अल्लाह तआला की ओर से सफलता मिली है। वह यह है कि अगर कोई हिंदू या मुशरिक पढ़ाएगा, तो उसे कोई धार्मिक महान हस्ती, यहाँ तक कि मुसलमान भी नहीं समझेगा। इसके विपरीत, वे लोग जो ज़ुबान से कलमा पढ़ते हैं मगर दिल में कुफ़्र (अविश्वास) रखते हैं, आम लोग उन्हें पक्का मुसलमान समझते हैं, हालाँकि हज़ारों कारणों से, सही हदीसों और फ़िक़्ही स्पष्टीकरणों के अनुसार उन पर कुफ़्र का हुक्म अनिवार्य है।

जैसा कि हमने 'अल-कौकबतुश शहाबिया', 'अन-नह्युल अकीद' और अन्य रिसालों में विस्तार से बताया है, और मेरी नज़र में और भी बातें हैं। (नोट)

और उनमें से बहुत से तो खुलेआम दीन की आवश्यक बातों के मुनकिर (इनकारी) और निश्चित रूप से इजमा (सर्वसम्मति) के अनुसार मुर्तद-काफ़िर हैं। लोग निकाह ख्वानी (निकाह पढ़ाने) के लिए उसे बुलाते हैं जिसे वे अपने नज़दीक नेक और विश्वसनीय समझते हैं। तो अगर जोड़े में से किसी को उनके कुफ़्र के बारे में पता चलने के बाद भी उन्हें नेक और सालेह समझा, तो उन पर भी तुरंत वही हुक्म लागू होगा जैसा कि 'अश-शिफ़ा' और 'अल-अश्बाह' आदि में स्पष्ट किया गया है।

[1] अल-सुनन अल-कुबरा लिल-बयहक़ी, किताबुन निकाह, दार सादिर बेरुत, 7/125. नोट: यह हदीस सुनन कुबरा में मिली, उसमें 'अज़-ज़वानी' के बजाय 'अल-बग़ाया' शब्द है। - नमी अहमद।

الشہود ولا شہادۃ لمرتد کمافی الدر المختار وغیرہ (کیونکہ صحت کے لیے گواہی شرط ہے اور مرتد شہادت دینے کا اہل نہیں ہے جیسا کہ درمختار میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم،

مسئلہ ۳۵: عورت مرد اگر باہم ایجاب و قبول کرلیں اور کسی کو اطلاع نہ ہو تو یہ نکاح ہوجائے گا؟

الجواب: بے حضور دو گواہ نکاح فاسد ہے، حدیث میں فرمایا:۔

الزواني ف اللاتي ان ينكحن انفسهن بغير بينة 1 - واللہ تعالٰی اعلم | زناکار ہیں جو اپنی جانوں کو نکاح میں دیتی ہیں بغیر گواہوں کے۔

مسئلہ ۳۶: مسئولہ محمد یوسف از جبل پور ۱۳ ذی قعدہ ۱۳۲۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ اگر کوئی غیر مقلد کسی مقلد کا نکاح بموجب شرع مصطفوی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے پڑھادے تو اس کا پڑھایا ہوا نکاح جائز ہے یا حرام؟ اور جو اس نکاح سے اولاد پیدا ہو وہ حرامی تو نہ ہوگی؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگرچہ نکاح خواں شرعِ مطہر میں کوئی چیز نہیں، اگر کوئی ہند و مشرک زوجین کو ایجاب وقبول روبروئے گواہان کرادے اور شرائط صحت متحق ہوں نکاح ہو جائے گا۔ مگر یہاں ایک نکتہ جلیلہ ہے جسے وہی سمجھتے ہیں جو موفق من اللہ تعالٰی عزوجل ہیں وہ یہ کہ اگر ہندو مشرک پڑھائے گا تو کوئی کلمہ گوا سے معظم دینی بلکہ مسلمان بھی نہ جانے گا، بخلاف ان کلمہ گویان کفر در دل کے کہ عوام ان کو خالص مسلمان جانتے ہیں حالانکہ ان پر صد ہا وجہ سے بحکم احادیث صحیحہ وتصریحات فقہیہ حکم کفر لازم ہے۔

كما فصلناه في الكوكبة الشهابية وفي النهى الاكيد وغيرهما ولدي مزيد۔ | جیسا کہ الکوکبۃ الشہابیہ اور النہی الاکید وغیرہ رسائل میں ہم نے تفصیل بیان کردی ہے اور میری نظر میں مزید امور بھی ہیں(ت)

اور ان میں بہت تو کھلم کھلا ضروریات دین کے منکر اور قطعاً اجماعاً مرتد کافر ہیں اور نکاح خوانی کے لیے لوگ اسے بلاتے ہیں جسے اپنے نزدیک صالح اور معتبر جانتے ہیں تو اگر زوجین میں سے کسی نے ان کے کفریات پر مطلع ہو کر پھر ان کو نیک اور صالح سمجھا تو ان پر بھی وہی حکم نقد وقت ہوگا کما صرح به في الشفاء والاشباه وغیرهما

1 السنن الکبری للبیهقي کتاب النکاح دار صادر بیروت ۷/ ۱۲۵ ف: یہ حدیث سنن کبری سے ملی اس میں الزوانی کے بجائے البغایا کا لفظ ہے۔ نمیر احمد

(As clarified in Al-Shifa and Al-Ashbah etc. - T) In such a case, according to the rulings of jurisprudence, no marriage will be valid at all. Therefore, caution is necessary. If this has already occurred, i.e., after being informed of the testimonies, he was still considered great and blessed and invited to perform the marriage ceremony, then after repentance, the renewal of Islam and the renewal of marriage are mandatory. And Allah Almighty knows best.

Problem 73: From Nakla Marharo, Post Office Belaudah, District Meerut, requested by Mr. Muhammad Zakir Ali. What do the scholars of religion say regarding this matter? There are twin girls who are joined from the waist to the buttocks; the rectum (anal outlet) is one, and the rest of the general organs are separate and distinct. They can converse well in their mother tongue, Telugu. Their age is twelve years. This story is from Secunderabad, Deccan. I saw it in the newspaper 'Watan Lahore', Volume 8, Issue 23, dated July 12, 1908, page 13. It is written that they are Hindus and their parents get a significant income through them. In case this is true and they become Muslims, what would be the procedure for their marriage? If they are married to one man, two sisters cannot be gathered in the marriage of one man. And if it is said to marry them to two men, then indecency is inevitable, and these two girls cannot be separated. Please write a detailed and reasoned ruling on this issue and also include the narrations of the jurists. Provide the answer and be rewarded.

The Answer: Apparently, this is newspaper gossip. If such wonders are born rarely, they usually do not survive. If such a wonder had existed in the country for twelve years, then all newspapers would have been filled with its mention since then, and it would have been famous in regions and cities, not just appearing in the newspaper now after twelve years. Even if it were assumed to be true and they both became Muslims, the pure Shariah has not left any issue unanswered. Suppose a situation which is very remote: a woman who, from the onset of puberty, God forbid, is afflicted with leprosy and vitiligo, and along with that is so unsightly that no one would accept her even without the leprosy. What would be the situation for her? What command would the Shariah give her? Yes, it commands her to be chaste and patient and suggests the frequency of fasting as its cure. Allah Almighty says:

[Arabic Verse]: "And let those who find not [the means for] marriage keep themselves chaste until Allah enriches them from His bounty." [Urdu Translation]: "Those who

find no way towards marriage should remain chaste until Allah makes them independent by His grace."

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

---

1. Al-Quran 33/24 Page 221 of 739

(जैसा कि अल-शिफ़ा और अल-अशबाह आदि में स्पष्ट किया गया है। - त) ऐसी स्थिति में फ़िक़्ह के आदेशानुसार मूलतः कोई निकाह नहीं होगा, इसलिए सावधानी आवश्यक है। यदि ऐसा हो चुका है, यानी गवाहियों से अवगत होने के बाद फिर उसे महान और धन्य मानकर निकाह पढ़ने के लिए बुलाया गया, तो तौबा के बाद इस्लाम का नवीनीकरण और निकाह का नवीनीकरण अनिवार्य है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ७३: नकले मरहरो, डाकखाना बेलौदा, जिला मेरठ से, मुहम्मद ज़ाकिर अली साहब द्वारा पूछा गया। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि दो जुड़वां लड़कियां हैं, जो कमर से कूल्हों तक जुड़ी हुई हैं; मलद्वार एक है, और बाकी सामान्य अंग अलग-अलग हैं। वे अपनी मातृभाषा तेलुगु में अच्छी तरह बातचीत कर सकती हैं। उनकी उम्र बारह साल है। यह वाकया सिकंदराबाद दकन का है। मैंने इसे अखबार 'वतन लाहौर', जिल्द ८, अंक २३, दिनांक १२ जुलाई १९०८, पृष्ठ १३ में देखा है। लिखा है कि वे हिंदू हैं और उनके माता-पिता को उनके माध्यम से अच्छी आमदनी होती है। यदि यह सच हो और वे मुसलमान हो जाएं तो उनके निकाह की क्या सूरत होगी? यदि उनका निकाह एक पुरुष से किया जाए, तो दो बहनें एक पुरुष के निकाह में एकत्र नहीं हो सकतीं। और यदि कहा जाए कि दो पुरुषों से किया जाए, तो निर्लज्जता अनिवार्य है और ये दोनों लड़कियां अलग नहीं हो सकतीं। इस मसले पर विस्तृत और तर्कसंगत आदेश लिखें और न्यायविदों (फ़ुक़्हा) के हवाले भी दर्ज करें। उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: स्पष्ट रूप से यह अखबार की गप है। ऐसे चमत्कार यदि दुर्लभ रूप से पैदा होते हैं, तो वे आमतौर पर जीवित नहीं रहते। यदि बारह वर्षों से देश में ऐसा अजूबा मौजूद होता, तो तब से ही सभी अखबार इसके ज़िक्र से भर जाते, शहरों और बस्तियों में इसकी शोहरत होती, न कि अब बारह साल बाद अखबार में दर्ज होता। और मान लीजिए कि अगर यह सही भी हो और वे दोनों मुसलमान भी हो जाएं तो शरीयत-ए-मुतह्हरा ने कोई मसला अनुत्तरित नहीं छोड़ा है। भला यह सूरत तो बहुत दूर की बात है, मान लीजिए कि कोई महिला जो युवावस्था की शुरुआत से ही, अल्लाह न करे, कोढ़ और सफ़ेद दाग की बीमारी में मुब्तिला हो और उसके साथ ऐसी डरावनी शक्ल वाली हो कि उसे कोढ़ के बिना भी कोई स्वीकार न करता, उसके लिए क्या सूरत होगी? शरीयत उसे क्या हुक्म देगी? हाँ, उसे पाकीज़गी और सब्र का हुक्म देती है और रोज़ों की अधिकता को इसका इलाज बताती है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है:

[अरबी आयत]: "वल्-यस्त-अफ़िफ़िल लज़ी-न ला य-जिदू-न निका-हन हत्ता युग़्निय-हुमुल्लाहु मिन फ़ज़्लिह।" [उर्दू अनुवाद]: जो निकाह की तरफ़ कोई राह न पायें वो बच्चे रहें जब तक अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें बे-परवाह कर दे।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

---

1. अल-क़ुरान ३३/२४ पेज 221 of 739

(جیسا کہ الشفاء اور الاشباہ وغیرہما میں تصریح کی گئی ہے۔ ت) ایسی صورت میں بحکم فقہ اصلاً مطلق نکاح نہ ہوگا، لہٰذا احتیاط کی ضرورت ہے، اگر ایسا واقع ہو لیا یعنی اس کی گواہیوں پر مطلع ہو کر پھر اسے معظم و متبرک سمجھ کر نکاح خوانی کے لیے بلایا تو بعد توبہ تجدید اسلام تجدید نکاح لازم۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۷۳: از نکہ مرہرو ڈاکخانہ بیلاؤ دہ ضلع میرٹھ مسئولہ محمد ذاکر علی صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ دولڑکیاں توام ہیں، کمر سے لے کر سرین تک جڑیں ہوئی ہیں، مبرز ایک ہے، اور باقی عام اعضاء الگ الگ علیحدہ علیحدہ، وہ اپنی مادری زبان تلنگی میں اچھی طرح گفتگو کر سکتی ہیں، عمر ان کی بارہ سال ہے، یہ قصہ سکندرآباد دکن کا ہے، میں نے اس کو اخبار وطن لاہور جلد نمبر ۸ ۲۳ مورخہ ۱۲ جولائی ۱۹۰۸ء ص ۱۳ میں دیکھا ہے، لکھا ہے کہ یہ ہندو ہیں، ان کے والدین کو ان کے ذریعہ سے کافی آمدنی ہے، در صورت صحیح ہونے اور مسلمان ہونے ان کے لیے ان کی صورت نکاح کیا ہے؟ اگر کیا جائے تو دو بہنیں ایک مرد کے نکاح جمع نہیں ہو سکتیں، اور کہا جائے کہ دو سے کیا جائے تو بے حیائی لازم آتی ہے اور یہ دونوں لڑکیاں علیحدہ نہیں ہو سکتیں، حکم اس مسئلہ کا مفصل مدلل ارقام فرمائے اور روایت فقہاء بھی تحریر کیجئے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: ظاہراً یہ اخباری گپ ہے، ایسے عجائب اگر نادراً پیدا ہوتے ہیں تو عادۃً زندہ نہیں رہتے اگر بارہ برس سے ایسا عجوبہ ملک میں موجود ہوتا تو جب ہی سے تمام اخبار اس کے ذکر سے بھر جاتے، دیار وامصار میں شہرت ہوتی نہ کہ اب بارہ سال بعد درج اخبار ہوا، اور بالفرض اگر صحیح بھی ہو اور وہ دونوں مسلمان بھی ہو جائیں تو شریعت مطہرہ نے کوئی مسئلہ لاجواب نہ

چھوڑا، بھلا یہ صورت تو بہت بعید ہے فرض کیجئے جو عورت ابتدائے بلوغ سے معاذ اللہ جذام وبرص میں مبتلا ہو اور اس کے ساتھ ایسی کریہہ المنظر کہ اسے کوئی قبول نہ کرتا نہ کہ بحالت جذام، اس کے لیے کیا صورت ہوگی، اسے شرع کیا حکم دے گی، ہاں اسے عفت و صبر کا حکم فرماتی ہے اور روزوں کی کثرت اس کا علاج بتاتی ہے، اللہ عزوجل فرماتا ہے:

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ | جو نکاح کی طرف کوئی راہ نہ پائیں وہ بچے رہیں جب تک اللہ اپنے فضل سے انہیں بے پرواہ کردے۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

---

1. القرآن ۳۳/۲۴ Page 221 of 739

Fatawa Rizvia Volume Eleven

[Hadith Box] "O assembly of youths! Whoever among you can afford to marry, let him marry, for it is more effective in lowering the gaze and guarding the private parts. And whoever cannot afford it, then let him fast, for indeed it will be a shield for him (to suppress carnal desires)."[1]

O group of youths! Whoever among you has the strength to marry should marry, for marriage is the best way to prevent straying gazes and misconduct. And whoever finds it impossible, fasting is mandatory for him, as it will break the carnal desires.

This same ruling and remedy will apply to this wonder of creation. A parallel to this is the question that the ignorant often raise regarding the 90th degree of latitude (the poles), where there is a six-month day and a six-month night: how should Ramadan fasts be kept there? In reality, there is no trace of human habitation there; people do not even venture beyond this degree of latitude because perpetual snowfall has turned the sea into a quagmire—it is no longer water for ships to pass, nor has it become solid ground for people to walk. In fact, there is no sign of population beyond seventy degrees. In those places, while day and night are six months each, at the North Pole, it is actually a day of six months and nine days, and a night of six months minus nine days. At the South Pole, it is the opposite. This is because the solar apogee is northern and the perigee is southern, and its speed is slow at apogee and fast at perigee. Furthermore, this refers to sidereal day and night. If we consider conventional (apparent) day, then the solar radius and the factor of refraction will increase the day's duration by many more days. And if we take the eighteen-degree depression for the Sharia day, many months would be included in the day's duration, leaving the night very short. There, the rising and setting of the moon or any other celestial body is not due to the eastern celestial motion, but only due to its own specific motion. When the moon is north of the celestial equator, it will rise at the North Pole and remain visible as long as it stays northern. When it moves south, it will set and remain hidden as long as it stays southern. There is no fixed time for this appearance and disappearance based on whether the moon is in conjunction, opposition, quadrature, or crescent phase. Thus, within the twelve day-night cycles the moon experiences in a year, managing a calendar of lunar phases and months is impossible. Even if one were to adopt a method of estimation (taqdeer), similar to the instructions given regarding prayers during the long days of Dajjal, the same Great Quran which said, "So whoever among you finds the month, let him fast it"[2] (Translation: Whoever among you finds the month of Ramadan should fast it), also

ordained, "And upon those who are unable [to fast, but with hardship] - a ransom [as substitute] of feeding a poor person [each day]"[3] (Translation: Those who do not have the capacity to fast should give food to a needy person as ransom). This means for those who lack the power to fast, the substitute is to feed one needy person for each fast.

---

[1] Sahih al-Bukhari, Book of Marriage, Qadimi Kutub Khana Peshawar, 2/58; Sahih Muslim, Book of Marriage, Qadimi Kutub Khana Peshawar, 1/449 [2] Al-Quran 2/185 [3] Al-Quran 2/184

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

[हदीस बॉक्स] "ऐ नौजवानों के समूह! तुम में से जो निकाह की ताक़त रखे, उसे निकाह कर लेना चाहिए क्योंकि निकाह नज़र को नीचा रखने और शर्मगाह की हिफाज़त के लिए सबसे अच्छा तरीक़ा है। और जिसे इसकी सामर्थ्य न हो, उसे रोज़े रखने चाहिए क्योंकि ये उसके लिए एक ढाल (कामुक इच्छाओं को दबाने का ज़रिया) बनेंगे।"[1]

ऐ नौजवानों के गिरोह! तुम में से जिसे निकाह की ताक़त हो वह निकाह करे कि निकाह परेशान नज़री और बदकारी रोकने का सबसे बेहतर तरीक़ा है और जिसे नामुमकिन हो उस पर रोज़े लाज़िम हैं कि ये नफ़्सानी शहवत को तोड़ देंगे।

यही हुक्म और इलाज इस अजूबा-ए-ख़िलक़त (सृष्टि के आश्चर्य) के लिए होगा। इसकी मिसाल वह सवाल है जो जाहिल लोग 90 डिग्री अक्षांश (ध्रुवों) के बारे में करते हैं जहाँ छह महीने का दिन और छह महीने की रात होती है: कि वहाँ रमज़ान के रोज़े कैसे रखे जाएँ? जबकि हकीकत में वहाँ इंसानी आबादी का नाम-ओ-निशान नहीं है; इस दर्जे के अक्षांश से आगे लोगों का गुज़रना भी मुमकिन नहीं क्योंकि हमेशा होने वाली बर्फ़बारी ने वहाँ समुद्र को दलदल बना रखा है—न वह पानी रहा कि जहाज़ गुज़रें, न वह ज़मीन हुई कि आदमी चल सकें, बल्कि सत्तर डिग्री के आगे से आबादी का पता नहीं है। वहाँ जहाँ छह-छह महीने के दिन-रात हैं, बल्कि उत्तरी ध्रुव में छह महीने नौ दिन का दिन और नौ दिन से कम छह महीने की रात होती है, और दक्षिणी ध्रुव में इसके विपरीत। ऐसा इसलिए है क्योंकि सौर उच्च (Apogee) उत्तर में और नीच (Perigee) दक्षिण में है, और इसकी रफ़्तार उच्च में सुस्त और नीच में तेज़ है। फिर यह नक्षत्र संबंधी (Sidereal) दिन-रात हैं। अगर हम व्यावहारिक रूप से देखें, तो सूरज की त्रिज्या और अपवर्तन (Refraction) का हिस्सा बढ़कर दिन की अवधि में और बहुत से दिन बढ़ जाएँगे। और शरीयत के दिन के लिए अठारह डिग्री का झुकाव (Depression) लें, तो कई महीने दिन की अवधि में शामिल होकर रात बहुत कम रह जाएगी। वहाँ चंद्रमा आदि किसी भी नक्षत्र का उदय और अस्त होना पूर्वी खगोलीय गति से नहीं, बल्कि केवल अपनी विशिष्ट गति से होता है। जब चंद्रमा भूमध्य रेखा से उत्तर में होगा, तो वह उत्तरी ध्रुव में उदय होगा और जब तक उत्तर में रहेगा, उदय ही रहेगा। फिर जब दक्षिण में होगा, तो अस्त हो जाएगा और जब तक दक्षिण में रहेगा, अस्त ही रहेगा। और इस उदय और अस्त होने के लिए कोई निश्चित समय नहीं है कि चंद्रमा उस समय संयुति (Conjunction) में हो, या प्रतियुति (Opposition) में, या चतुर्थांश (Quadrature) में, या हिलाल (नया चाँद) की शक्ल में। इस प्रकार, वर्ष के जिन बारह दिन-रात को

चंद्रमा ने पाया, उनमें चंद्र कलाओं और महीनों का हिसाब-किताब करना असंभव है। और अगर हुक्म के तौर पर अंदाज़ा लगाने (तक़दीर) की सूरत अपनाई जाए, जैसा कि दज्जाल के लंबे दिनों के दौरान नमाज़ों के लिए इरशाद हुआ था, तो उसी महान क़ुरआन ने जिसने फ़रमाया "जो तुम में से माह-ए-रमज़ान को पाए तो उसका रोज़ा रखे"[2] (त: जो तुम में से रमज़ान के महीने को पाए तो उसका रोज़ा रखे) उसने यह भी इरशाद फ़रमाया: "और जो रोज़ा रखने की सामर्थ्य न रखे, तो वह फ़िद्ये में एक मिस्कीन (ग़रीब) को खाना खिलाए"[3] (त: जो रोज़ा रखने की ताक़त न रखे, वह एक गरीब का खाना फ़िद्ये में दे)। यानी जिन्हें रोज़े रखने की शक्ति न हो, उनके लिए बदला यह है कि हर रोज़े के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाएँ।

---

[1] सहीह अल-बुखारी, किताबुन निकाह, क़दीमी कुतुब खाना पेशावर, 2/58; सहीह मुस्लिम, किताबुन निकाह, क़दीमी कुतुब खाना पेशावर, 1/449 [2] अल-क़ुरआन 2/185 [3] अल-क़ुरआन 2/184

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

[Arabic Box] یا معشر الشباب من استطاع منکم الباءۃ فلیتزوج فانہ اغض للبصر واحصن للفرج ومن لم یستطع فعلیہ بالصوم فانہ لہ وجاء 1

اے گروہ نوجوانان! تم میں جسے نکاح کی طاقت ہو وہ نکاح کرے کہ نکاح پریشان نظری وبدکاری روکنے کا سب سے بہتر طریقہ ہے اور جسے ناممکن ہو اس پر روزے لازم ہیں کہ کسر شہوت نفسانی کر دیں گے۔

یہی حکم وعلاج اس عجوبہ خلقت کے لیے ہوگا، اس کی نظیر وہ سوال ہے کہ جہال عرض تسعین کی نسبت کیا کرتے ہیں جہاں چھ مہینے کا دن اور چھ مہینے کی رات ہے کہ وہاں رمضان کے روزے کیسے رکھیں حالانکہ وہاں انسانی آبادی کا نام نہیں کہ اسی درجے عرض سے آگے لوگوں کا گزر بھی نہیں کہ ہمیشہ کی ہر آن برف باری نے وہاں سمندر کو دلدل کر رکھا ہے ، نہ پانی رہا کہ جہاز گزرے ، نہ زمین ہو گیا کہ آدمی چلیں بلکہ ستر درجے آگے سے آبادی کا پتا نہیں ، وہاں جبکہ چھ چھ مہینے دن رات ہیں بلکہ قطب شمالی میں چھ مہینے نودن کا دن اور نو دن سے کم چھ مہینے کی رات، اور قطب جنوبی میں بالعکس ، اس لیے کہ اوج آفتابی شمالی اور حضیض جنوبی ہے اور اس کی رفتار اوج میں سست اور حضیض میں تیز ہے ، پھر یہ نہار ولیل تنجیمی ہے، عرفی لیجئے تو نصف قطر آفتاب اور حصہ انکسار بڑھ کر مقدار نہار میں اور بہت سے دن بڑھ جائیں گے ، اور نہار شرعی کے لیے اٹھارہ درجے کا انحطاط لیجئے تو کئی مہینے مقدار نہار میں شامل ہو کر رات بہت کم رہ جائے گی اور وہاں قمر و غیرہ کسی کو کب کا طلوع و غروب حرکت شرقیہ فلکیہ سے نہیں بلکہ صرف اپنی حرکت خاصہ سے جب منطقہ سے شمالی ہوگا قطب شمالی

میں طلوع کرے گا اور جب تک شمالی رہے گا طالع رہے گا پھر جب جنوبی ہوگا غروب کرے گا اور جب تک جنوبی رہے گا غارب رہے گا اور اس ظہور و بطون کے لیے کوئی تعیین نہیں کہ قمر اس وقت اجتماع میں ہو یا استقبال میں تربیع میں ہو یا شکل ہلال میں، تو سال کے بارہ دن رات جو قمر نے پائے ان میں حساب انتظام اہلہ و شہور نامقدور ، اور اگر حکما صورت تقدیر واندازہ لیجئے بھی جس طرح درباره ایام طوال دجال نمازوں کے لیے ارشاد ہوا تو وہی قرآن عظیم جس نے فَمَنْ شَہِدَ مِنْکُمُ الشَّہْرَ فَلْیَصُمْہُ 2 (جو تم میں سے ماہ رمضان کو پائے تو اس کا روزہ رکھے۔ ت) فرمایا اس نے وَعَلَی الَّذِیْنَ یُطِیْقُوْنَہٗ فِدْیَۃٌ طَعَامُ مِسْکِیْنٍ 3 (جو روزہ کی استطاعت نہ رکھے تو مسکین کا کھانا فدیہ میں دے۔ ت) ارشاد کیا یعنی جنھیں روزے کی قدرت نہ ہو ان پر بدلہ ہے ہر روزے کے عوض ایک مسکین کا کھانا۔

---

1 صحیح البخاری کتاب النکاح قدیمی کتب خانہ پشاور ۵۸/۲ ، صحیح مسلم کتاب النکاح قدیمی کتب خانہ پشاور ۴۴۹/۱ 2 القرآن ۱۸۵/۲ 3 القرآن ۱۸۴/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

And those who do not even have the means for this should wait to obtain the means and turn to their Lord in repentance and seeking forgiveness, as He says in the Holy Quran: "Allah does not burden a soul beyond its capacity" (2:286). Allah knows best.

Problem 38: From Khairabad, Mian Sarai, Old Arabic Madrasa, sent by Syed Fakhr-ul-Hasan Sahib, 3 Dhu al-Qi'dah 1326 AH. Should the marriage sermon (Khutbah al-Nikah) be delivered standing or sitting, and what is the prescribed (Sunnah) method?

The Answer: Although standing is generally superior for a sermon as the voice carries further and commands more attention from the audience, and all sermons share this aspect. Yes, for a sermon delivered on a mount, like the sermon of Arafah, the standing of the mount takes the place of the standing of the rider. However, optional (nafl) sermons are also proven while sitting.

Ibn Jarir narrated from Simak bin Harb, who said: I heard Ma'rur or Ibn Ma'rur al-Tamimi say: I heard Umar bin al-Khattab (may Allah be pleased with him) ascend the pulpit and sit two steps below the seating place of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and say: "I enjoin upon you the fear of Allah, and listen and obey whoever Allah has placed in authority over your affairs."

And since the marriage sermon is only optional (nafl), there is no harm in sitting either. And Allah Almighty knows best.

Problem 39: From Salon, District Rae Bareli, Ihata Shah Sahib, sent by Maulvi Muhammad Umar Sahib, Teacher at Madrasa Islamia, 22 Muharram al-Haram 1328 AH. Honorable Maulana, Renewer of the present century, peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings be upon those with you. What is your stance on the matter where Zaid said "Tazawwajtu" (I have married) and Hindah said "Qabiltu" (I have accepted) in front of two witnesses, and neither of them understood the meaning of these words, nor did the witnesses understand them? In this case, would the marriage contract be valid or not?

1. Quran 2/286
2. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Jarir, Hadith of Umar's sermons, Muassasat al-Risalah, Beirut 7/157

और जिन्हें इसकी भी सामर्थ्य न हो, वे सामर्थ्य प्राप्ति का इंतज़ार करें और अपने रब की ओर रुजू करें और क्षमा मांगें, जैसा कि वह पवित्र कुरान में फरमाता है: "अल्लाह किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता" (2:286)। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 38: खैरबाद, मुहल्ला मियां सराय, मदरसा अरबी कदीम से, सैयद फख्रुल हसन साहब द्वारा भेजा गया, 3 ज़िल-कादा 1326 हिजरी। निकाह का खुतबा खड़े होकर पढ़ना चाहिए या बैठकर, और किस तरीके से सुन्नत है?

जवाब: यद्यपि खुतबे में खड़े होना सामान्य रूप से श्रेष्ठ है क्योंकि आवाज़ भी दूर तक पहुँचती है और यह उपस्थित लोगों का ध्यान आकर्षित करने का कारण भी बनता है, और इस मामले में सभी खुतबे समान हैं। हाँ, जो खुतबा सवारी पर होता है जैसे अरफा का खुतबा, वहां सवारी का खड़ा होना सवार के खड़े होने के स्थान पर है। मगर नफ़ली खुतबे बैठकर भी साबित हैं।

इब्न जरीर ने सिमाक बिन हर्ब से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया: मैंने मअरूर या इब्न मअरूर तमीमी से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सुना जब आप मिम्बर पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बैठने के स्थान से दो सीढ़ियाँ नीचे तशरीफ़ फर्मा हुए, तो आपने फरमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ और अल्लाह की तरफ से तुम्हारे मामलों के बनाए गए वाली (शासक) की आज्ञाकारिता और बात सुनने को अपनाओ।"

और निकाह का खुतबा नफ़ल ही है, तो बैठकर भी कोई हर्ज नहीं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 39: सलवान, ज़िला रायबरेली, अहाता शाह साहब से, मौलवी मोहम्मद उमर साहब, शिक्षक मदरसा इस्लामिया द्वारा भेजा गया, 22 मुहर्रम-उल-हराम 1328 हिजरी। जनाब मौलाना साहब, मुजद्दिद-ए-माइत हाज़िरा, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अला मन लदैकुम। इस मसले में आपका क्या नज़रिया है कि ज़ैद ने "तज़व्वजतु" (मैंने निकाह किया) और हिंदा ने "क़बिल्तु" (मैंने स्वीकार किया) दो गवाहों के सामने कह दिया और दोनों इन शब्दों के अर्थ नहीं समझते, बल्कि गवाह भी नहीं समझे। क्या इस स्थिति में निकाह संपन्न हो जाएगा या नहीं?

1. अल-कुरान 2/286

2. कंज़ुल उम्माल ब-हवाला इब्न जरीर, हदीस खुतब-ए-उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु), मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 7/157

पेज 223 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

اور جن کو اس کی بھی استطاعت نہ ہو وہ حصول استطاعت کا انتظار کریں اور اپنے رب سے انابت و استغفار کہ وہی قرآن کریم میں فرماتا ہے: لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَھَا ط خدا کسی کو اس کی طاقت سے زیادہ حکم نہیں دیتا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۸: از خیر آباد محلہ میاں سرائے مدرسہ عربی قدیم مرسلہ سید فخر الحسن صاحب ۳ ذی القعدہ ۱۳۲۶ھ خطبہ نکاح کا کھڑے ہو کر پڑھنا چاہئے یا بیٹھ کر، اور کس طریقہ سے مسنون ہے؟

الجواب: اگرچہ خطبہ میں مطلقاً افضل قیام ہے کہ آواز بھی دور پہنچتی ہے اور باعث توجہ حاضرین بھی ہوتا ہے اور اس امر میں سب خطبے مشترک ہیں، ہاں جو خطبہ سواری پر ہوتا ہے جیسے خطبہ عرفہ۔ وہاں قیام مرکب قائم مقام قیام راکب ہے مگر خطبہ نافلہ بیٹھ کر بھی ثابت ہیں،

ابن جریر عن سماک بن حرب قال سمعت معرورا اوا بن معرور التمیمی قال سمعت عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالٰی عنہ وصعد المنبر قعد دون مقعد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بمقعدین فقال اوصیکم بتقوی اللہ واسمعوا واطیعوا من ولاہ اللہ تعالٰی امرکم ۲ ۔ ابن جریر نے سماک بن حرب سے روایت کیا کہ انھوں نے فرمایا: میں نے معرور یا ابن معرور تمیمی سے سنا انھوں نے کہا میں نے عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ سے سنا جبکہ آپ منبر پر حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی نشست گاہ سے دو سیڑھیاں نیچے تشریف فرما ہوئے تو آپ نے فرمایا میں تمھیں اللہ تعالٰی سے تقوٰی کی وصیت کرتا ہوں اور اللہ تعالٰی کی طرف سے تمھارے امور کے بنائے ہوئے والی کی اطاعت و سمع اختیار کرو۔ (ت)

اور خطبہ نکاح نفل ہی ہے تو بیٹھ کر بھی مضائقہ نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۹: از سلوان ضلع رائے بریلی احاطہ شاہ صاحب مرسلہ مولوی محمد عمر صاحب مدرس مدرسہ اسلامیہ ۲۲ محرم الحرام ۱۳۲۸ھ جناب مولانا صاحب مجدد مائتہ حاضرہ السلام علیکم ورحمتہ اللہ وبرکاتہ علی من لدیکم، کیا مسلک ہے آپ کا اس مسئلہ میں کہ زید نے "تَزَوَّجْتُ" اور ہندہ نے "قَبِلْتُ" دو گواہوں کے سامنے کہہ دیا اور دونوں ان الفاظ کے معنی نہیں سمجھتے بلکہ گواہ بھی نہیں سمجھے۔ آیا اس صورت میں نکاح منعقد ہو جائے گا یا نہیں،

۱ القرآن ۲/ ۲۸۶ ۲ کنز العمال بحوالہ ابن جریر حدیث خطب عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۷ / ۱۵۷

Fatawa Razawiya, Volume 11

In Sharh Wiqayah, Fatawa Qazi Khan, Fatawa Zahiriyyah, Radd al-Muhtar, and Durr al-Mukhtar, such a marriage is written as valid; in fact, the fatwa in Durr al-Mukhtar is based on this. The reasoning provided in all these books is that knowledge of the meaning of the word and understanding it is considered in matters where intention and purpose are necessary. In matters where seriousness (Jadd) and jest (Hazl) are equal, there is no need to understand the meaning. Therefore, a marriage will be contracted merely by pronouncing "Nikah-tu" (I have married) and "Qabiltu" (I have accepted) without understanding the meaning, as stated in Qazi Khan etc.:

Arabic	Urdu/English
Because knowledge of the word's content is only considered for the sake of intention; hence it is not considered in that wherein seriousness and jest are equal. End.	Because knowledge of the word's content is necessary for the intention of something, and where intention and lack of intention are equal, knowledge of the content will not be considered. End (T).

In my opinion, this reasoning is not correct. The phrase of Qazi Khan "it is not considered (i.e., knowledge of the word's content) in that wherein seriousness and jest are equal (i.e., knowledge of the word's content will not be considered where intention and non-intention/jest are equal. T)" is not at all acceptable. In jest (Hazl), knowledge of the word's content and understanding the meaning is necessary. Understanding the meaning is impossible without comprehension, because 'Hazl' is the name for using a word and intending a meaning other than its literal or metaphorical meaning. And it is a condition for it that before the contract, the contracting parties mention among themselves that this contract is by way of jest. It is in Mirqat, the commentary on Mishkat:

Arabic	Urdu/English
Jest is when something is intended by other than what it was placed for, without any suitability between them; and seriousness is when what it was placed for is intended, or what the word is suitable for metaphorically. End.	Jest (joke) means to take a metaphorical meaning without suitability; seriousness (intention) means to take the literal meaning or such a metaphorical meaning for which the word has the capacity. End (T).

It is in Nur al-Anwar:

Arabic	Urdu/English
The condition for jest is that it be explicitly stipulated by tongue, such that the contracting parties mention before the contract that they are jesting in the contract; and that is not established by circumstantial evidence.	The condition for a joke is that both parties performing the contract explicitly state verbally before the contract that 'we are making this contract as a joke,' and a joke will not be proven by circumstantial evidence. (T).

1. Fatawa Qazi Khan, Book of Marriage, Chapter One, Naval Kishore Lucknow 1/151.
2. Mirqat Sharh Mishkat, Chapter of Khul' and Divorce, Al-Maktabah al-Habibiyyah Quetta 6/277.
3. Nur al-Anwar, Discussion on Matters Affecting Legal Capacity, Second Type, H.M. Saeed Company Karachi, pp. 302-303.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

शरह विक़ाया, फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ, फ़तावा ज़हीरिया, रद्दुल मुह्तार और दुर्रे मुख़्तार में ऐसा निकाह जायज़ लिखा है, बल्कि दुर्रे मुख़्तार में इस पर फ़तवा है। इन तमाम किताबों में इसकी दलील यह लिखी है कि शब्द के अर्थ का ज्ञान और उसे समझना उन मामलों में मान्य है जिनमें नीयत और इरादे की ज़रूरत हो। जिन मामलों में गंभीरता (जद्द) और मज़ाक (हज़्ल) बराबर हों, उनमें अर्थ समझने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए, "नकाह-तु" (मैंने निकाह किया) और "क़बिल-तु" (मैंने स्वीकार किया) कहने मात्र से अर्थ समझे बिना निकाह संपन्न हो जाएगा, जैसा कि क़ाज़ी ख़ाँ आदि में है:

अरबी	**उर्दू/हिंदी**
क्योंकि शब्द के अर्थ का ज्ञान केवल इरादे (कस्द) के लिए माना जाता है; इसलिए यह उस चीज़ में नहीं माना जाता जिसमें गंभीरता और मज़ाक बराबर हों। इति।	क्योंकि शब्द के अर्थ का ज्ञान किसी चीज़ के इरादे के लिए ज़रूरी होता है, और जहाँ इरादा और गैर-इरादा बराबर हों वहाँ अर्थ का ज्ञान मान्य नहीं होगा। इति (त)।

मेरे विचार में यह दलील सही नहीं है। क़ाज़ी ख़ाँ की इबारत "मान्य नहीं होगा (यानी शब्द के अर्थ का ज्ञान) उन मामलों में जहाँ गंभीरता और मज़ाक बराबर हों (यानी शब्द के अर्थ का ज्ञान वहाँ मान्य नहीं होगा जहाँ इरादा और गैर-इरादा/मज़ाक बराबर हों। त)" हरगिज़ स्वीकार्य नहीं है। मज़ाक (हज़्ल) में शब्द की सामग्री का ज्ञान और अर्थ का समझना ज़रूरी है। अर्थ की समझ के बिना मज़ाक असंभव है, क्योंकि 'हज़्ल' का अर्थ शब्द का उपयोग करना और उसके वास्तविक या रूपक (मजाज़ी) अर्थ के अलावा कोई अन्य अर्थ निकालना है। और इसके लिए शर्त यह है कि अनुबंध (निकाह) से पहले दोनों पक्ष आपस में यह स्पष्ट कर लें कि यह अनुबंध मज़ाक के तौर पर है। मिर्कात शरह मिश्कात में है:

अरबी	**उर्दू/हिंदी**
मज़ाक वह है जब किसी शब्द से उसके मूल अर्थ के अलावा कोई ऐसा अर्थ लिया जाए जिसका उससे कोई संबंध न हो; और गंभीरता वह है जब उससे वही अर्थ लिया जाए जिसके लिए वह बना है या जिसका वह शब्द रूपक (मजाज़) के रूप में पात्र है। इति।	मज़ाक (हज़्ल) से तात्पर्य बिना किसी संबंध के रूपक अर्थ लेना है, गंभीरता (जद्द) से तात्पर्य वास्तविक अर्थ लेना है या ऐसा रूपक अर्थ जिसके लिए शब्द में क्षमता हो। इति (त)।

नूरुल अनवार में है:

अरबी	उर्दू/हिंदी
मज़ाक की शर्त यह है कि उसे ज़बान से स्पष्ट रूप से कहा जाए, इस तरह कि अनुबंध करने वाले दोनों पक्ष अनुबंध से पहले यह उल्लेख करें कि वे अनुबंध में मज़ाक कर रहे हैं; और यह परिस्थितियों के संकेत (दलालत-ए-हाल) से साबित नहीं होगा।	मज़ाक की शर्त यह है कि मौखिक रूप से स्पष्ट रूप से अनुबंध करने वाले दोनों पक्ष अनुबंध से पहले ज़िक्र करें कि 'हम मज़ाक में अनुबंध करेंगे', और मज़ाक परिस्थिति के संकेत से साबित नहीं होगा। (त)।

---

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ, किताबुन निकाह, फ़स्ल अव्वल, नवल किशोर लखनऊ 1/151.
2. मिर्कात शरह मिश्कात, बाबल खुलअ वत-तलाक, अल-मकतबतुल हबीबिया क्वेटा 6/277.
3. नूरुल अनवार, मबहसुल उमूरिल मोतरिज़ा लिल-अहलिया, नौ-ए-सानी, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 302-303.

شرح وقایہ اور فتاوٰی قاضی خاں اور فتاوٰی ظہیر یہ اور ردالمحتار اور درمختار میں ایسا نکاح جائز لکھا ہے بلکہ در مختار میں اس پر فتوٰی ہے ، اور دلیل اس کی کل کتابوں میں یہ لکھی ہے کہ مضمون لفظ کا علم اور اس کا سمجھنا ان امور میں معتبر ہے جن میں نیت اور قصد کی ضرورت ہو اور جن امور میں جدو ہزل برابر ہوں ان میں معنی سمجھنے کی ضرورت نہیں ، لہٰذا نکاح محض بتلفظ " نَکَحْتُ وقَبِلْتُ " بلا فہم معنی منعقد ہو جائیگا جیسا کہ قاضی خاں وغیرہ میں ہے :

عربی	**اردو**
لان العلم بمضمون اللفظ انما یعتبر لاجل القصد فلا یعتبر فیما یستوی فیہ الجد والھزل انتھی۔	کیونکہ لفظ کے مضمون کا علم کسی چیز کے قصد کے لیے ضروری ہوتا ہے اور جس میں قصد اور غیر قصد مساوی ہوں وہاں مضمون کا علم معتبر نہ ہوگا ، انتہی (ت)

میرے خیال میں یہ دلیل صحیح نہیں ، عبارت قاضی خاں کی فلا یعتبر (ای العلم بمضمون اللفظ) فیما یستوی فیہ الجد والھزل (لفظ کے مضمون کا علم معتبر نہ ہوگا جہاں قصد اور غیر قصد (مذاق) برابر ہو۔ ت) ہرگز قابل تسلیم نہیں ، ہزل میں مضمون لفظ کا علم اور معنی کا سمجھنا ضروری ہے بغیر فہم معنی ہزل غیر ممکن ہے اس واسطے کہ استعمال لفظ وارادہ غیر معنی حقیقی و مجازی کا نام ہزل ہے اور اس میں شرط ہے کہ قبل عقد متعاقدین آپس میں ذکر کرلیں کہ یہ عقد بطریق ہزل ہے ، مرقاۃ شرح مشکوۃ میں ہے : -

عربی	اردو
الھزل ان یراد بالشئ غیر ماوضع لہ بغیر مناسبۃ بینھما والجد مایراد بہ ما وضع لہ او ما صلح لہ اللفظ مجازا اھ	ہزل (مذاق) سے مراد یہ ہے کہ مناسبت کے بغیر مجازی معنی مراد لینا، جد (قصد) سے مراد یہ کہ حقیقی معنی یا ایسا مجازی معنی مراد لینا جس کے لیے لفظ صلاحیت رکھتا ہوا ھ (ت)

نورالانوار میں ہے :

عربی	اردو
وشرط الھزل ان یکون صریحاً مشروطا باللسان بان یذکر العاقد ان قبل العقد انھما یھزلان فی العقد ولا یثبت ذلك بدلالة الحال۔	مذاق کی شرط یہ ہے کہ زبانی طور پر صراحتہً عقد کرنے والے دونوں فریقوں ، عقد سے قبل ذکر کریں کہ ہم مذاقاً عقد کریں گے ، اور مذاق دلالت حال سے ثابت نہ ہوگا۔ (ت)

---

1. فتاوٰی قاضی خاں کتاب النکاح الفصل الاول نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۵۱
2. مرقاۃ شرح مشکوۃ باب الخلع والطلاق المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۶/ ۲۷۷
3. نورالانوار مبحث الامور المعترضۃ للاھلیۃ نوع ثانی ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۰۲ - ۳۰۳

Volume 11 Fatawa Razawiyya

In this case, where the contracting parties do not understand at all what the meanings of these words are and in what context they are used, how can it be considered a jest (hazl)? Regardless of the fact that in a jest, although the person is not satisfied with the ruling itself, he remains satisfied with its causes, as stated in Noor al-Anwar:

"Indeed, it (jest) is incompatible with the choice of the ruling and satisfaction with it, but it is not incompatible with satisfaction with the direct action etc." (Jest is contrary to the ruling and satisfaction with it, but not contrary to performing the act. (T))

And here the contracting parties do not even know what these words are and what their meanings are, so satisfaction with the causes is also missing. Therefore, it cannot be correct in any way to include this case in 'hazl'. The second argument of those who permit it is that even if the contracting parties do not understand the meaning, their ignorance will not be considered valid and the marriage will be concluded.

"Because the abode is the Abode of Islam, so ignorance of the Sharia rulings will not be an excuse." (Since this is the Abode of Islam, therefore, being ignorant of Sharia rulings cannot be an excuse. (T))

There is a clear discrepancy between the claim and the argument here. The intent of the argument is that ignorance in Sharia rulings is not acceptable, which is an admissible point. However, this does not imply that ignorance of the Arabic language is also unacceptable. Sharia rulings are not confined to the Arabic language. If the contracting parties know the marriage rulings in a non-Arabic language such as Persian or Urdu but are unfamiliar with Arabic, it cannot be said they are ignorant of the rulings. It is incorrect to equate ignorance of rulings with ignorance of language and declare both unacceptable. Therefore, when the contracting parties have no knowledge of the meaning of the words or their context, marriage cannot take place by their mere pronunciation. It is stated in Fusul-e-Imadi:

"Indeed, no contract is valid if they (the parties/witnesses) do not know its meaning." [Footnote 2] (When the witnesses do not understand the meaning of a contract, then the contract will not be valid. (T))

Similar views are recorded in Fatawa Hamadiyya. Someone asked Shams al-Islam Awzjandi about this issue; he replied: It will not be concluded,

"Because the woman in this is like a parrot and a child who does not reason."
(Because in this matter, the woman is like a parrot and an unintelligent child. (T))

1. Noor al-Anwar, Discussion on matters opposing legal capacity, two types, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 302.
2. Fusul Imadi.

जिल्द ग्यारहवीं फतावा रज़विया

इस सूरत में जबकि निकाह करने वाले बिल्कुल समझते ही नहीं कि इन अल्फ़ाज़ के क्या मायने हैं और किस मौक़े पर इस्तेमाल किए जाते हैं, तो हज़्ल (मज़ाक) कैसे हो सकता है? इस हक़ीक़त के अलावा कि हज़्ल में अगरचे इंसान ख़ुद हुक्म से राज़ी नहीं होता, लेकिन उसके अस्बाब (कारणों) से राज़ी रहता है जैसा कि नूरुल अनवार में है:

"और यक़ीनन यह हुक्म चुनने और उस पर राज़ामंदी के ख़िलाफ़ है, लेकिन सीधे काम (करने) की राज़ामंदी के ख़िलाफ़ नहीं है।" (मज़ाक, हुक्म और उस पर रजामंदी के ख़िलाफ़ है लेकिन काम को अंजाम देने के लिए मनाफ़ी (ख़िलाफ़) नहीं। (त))

और यहाँ निकाह करने वाले जानते ही नहीं कि ये अल्फ़ाज़ कैसे हैं और उनके क्या मायने हैं, तो अस्बाब पर राज़ामंदी भी नदारद है, लिहाज़ा इस सूरत को हज़्ल में शामिल करना किसी तरह सही नहीं हो सकता। इजाज़त देने वालों की दूसरी दलील यह है कि अगरचे निकाह करने वाले मायने नहीं समझते लेकिन उनकी जहालत (अज्ञानता) का एतबार नहीं होगा और निकाह मुनअक़िद (संपन्न) हो जाएगा।

"चूंकि यह दारुल इस्लाम (इस्लामी देश) है, इसलिए शरीअत के अहकाम (नियमों) से अनभिज्ञ होना कोई उज़्र (बहाना) नहीं होगा।" (चूंकि यह दारुल इस्लाम है लिहाज़ा अहकाम-ए-शरिया से जाहिल होना कोई उज़्र न बन सकेगा। (त))

यहाँ दावे और दलील में साफ़ फ़र्क़ है। दलील का मक़सद यह है कि शरीअत के अहकाम में जहालत क़ाबिले एतबार नहीं, यह बात माननी पड़ेगी लेकिन इससे यह ज़रूरी नहीं कि अरबी ज़बान की जहालत भी नाक़ाबिले एतबार हो। शरीअत के अहकाम सिर्फ़ अरबी ज़बान तक महदूद नहीं हैं। अगर निकाह करने वाले निकाह के अहकाम को ग़ैर-अरबी ज़बान जैसे फ़ारसी, उर्दू वग़ैरह में जानते हैं और अरबी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं हैं, तो यह नहीं कहा जा सकता कि वे अहकाम से जाहिल हैं। अहकाम की जहालत और ज़बान की जहालत को एक मानकर दोनों को नाक़ाबिले एतबार कहना सही नहीं हो सकता। लिहाज़ा जब निकाह करने वालों को किसी तरह यह इल्म नहीं कि इन अल्फ़ाज़ के क्या मायने हैं और किस मौक़े पर इनका इस्तेमाल होता है, तो उनके बोलने से निकाह नहीं हो सकता। फ़ुसूल-ए-इमादी में है:

"बेशक कोई भी अक़्द (अनुबंध) सही नहीं होता जब तक कि वे (पक्ष/गवाह) उसका अर्थ न जानते हों।" [फ़ुटनोट 2] (जब गवाह हज़रात किसी अक़्द का अर्थ न समझें तो अक़्द सही न होगा। (त))

फ़तावा हमादिया में भी इसी तरह लिखा है। शम्सुल इस्लाम औज़जंदी से किसी ने यह मसला पूछा, उन्होंने फ़रमाया: मुनअक़िद नहीं होगा,

"क्योंकि इस मामले में औरत उस तोते और नासमझ बच्चे की तरह है (जो अर्थ नहीं समझते)।" (क्योंकि इस मामले में औरत तोते और नासमझ बच्चे की तरह है। (त))

1. नूरुल अनवार, बह़स अल-अमूर अल-मुअतरिज़ह लिल-अहलिया (योग्यता में बाधक मामलों पर चर्चा), दो प्रकार, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 302।
2. फ़ुसूल-ए-इमादी।

पृष्ठ 225 का 739

اس صورت میں جبکہ عاقدین بالکل سمجھتے ہی نہیں کہ ان الفاظ کے کیا معنی ہیں اور کس موقع میں استعمال کئے جاتے ہیں تو ہزل کیسے ہوسکتا ہے، قطع نظر اس کے کہ ہزل میں اگرچہ ہزل نفس حکم سے راضی نہیں ہوتا لیکن اس کے اسباب سے راضی رہتا ہے جیسا کہ نور الانوار میں ہے:

وانه ینافی اختیار الحکم والرضاء به ولا ینافی الرضاء بالمباشرة الخ۔ مذاق، حکم اور اس پر رضامندی کے منافی ہے لیکن کام کو سر انجام دینے کے لیے منافی نہیں۔ (ت)

اور یہاں عاقدین جانتے ہیں کہ یہ الفاظ کیسے ہیں اور ان کے کیا معنی ہیں، تو رضا بالا سباب بھی مفقود ہے لہٰذا اس صورت کو ہزل میں داخل کرنا کسی طرح صحیح نہیں ہوسکتا، دوسری دلیل مجوزین کی یہ ہے کہ اگرچہ متعاقدین معنی نہیں سمجھتے لیکن ان کا جہل معتبر نہ ہوگا اور نکاح منعقد ہوجائے گا۔

لان الدار دارالاسلام فلا یکون الجهل في احکام الشرعیة عذرا۔ چونکہ یہ دارالاسلام ہے لہٰذا احکام شرعیہ سے جاہل ہونا کوئی عذر نہ بن سکے گا۔ (ت)

اس جگہ دعوی و دلیل میں صراحۃً تخلف ہے، دلیل کا منشا تو یہ ہے کہ احکام شرعیہ میں جہل معتبر نہیں، یہ ضرورت قابل تسلیم ہے لیکن یہ اس امر کو مستلزم نہیں کہ زبان عربی سے جہل بھی غیر معتبر ہو احکام شرعیہ منحصر بزبان عربی نہیں، عاقدین احکام نکاح کو زبان غیر عربی مثلاً فارسی اردو وغیرہ میں جانتے ہیں اور زبان عربی سے واقف نہیں تو یہ نہیں کیا جاسکتا کہ جاہل بالاحکام ہیں، جہل بالاحکام اور جہل باللسان کو متحد جان کر دونوں کو غیر معتبر کہنا صحیح

نہیں ہوسکتا، لہٰذا جب عاقدین کو کسی طرح اس کا علم نہیں کہ ان الفاظ کے کیا معنی ہیں اور کس موقع پر اس کا استعمال ہوتا ہے، تو ان کے تلفظ سے نکاح نہیں ہوسکتا، فصول عمادی میں ہے:

انہ لا یصح عقد من العقود اذالم یعلما معناہ 2 اھ۔ جب گواہ حضرات کسی عقد کا معنی نہ سمجھیں تو عقد صحیح نہ ہوگا اھ (ت)

فتاوٰی حمادیہ میں مثل اس کے لکھا ہے، شمس الاسلام اوزجندی سے کسی نے اس مسئلہ کو پوچھا، فرمایا: نہ منعقد ہوگا،

لان المرآۃ فی ھذہ بمنزلۃ الطوطی والصبی الذی لا یعقل۔ کیونکہ اس معاملے میں عورت طوطے اور ناسمجھ بچے کی طرح ہے۔ (ت)

1 نورالانوار مبحث الامور المعترضۃ للاھلیۃ نوعان ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۰۲ 2 فصول عمادی

The author of Fatawa Bazzaziya also holds the same opinion. It is written in Radd al-Muhtar regarding the fatwa in Durr al-Mukhtar that there is a difference of opinion on this. Now, if according to you this marriage is valid, then please provide a reasoned answer to the aforementioned doubt. And if it is invalid, then state whether the argument of those who permit it is completely weak or not? I have not seen their third argument; if you have come across it, please inform me. I also know that you are very busy, but God has made you an heir to the Prophets. From whom else should the questioner clear their doubts? Peace be upon you.

Answer: And peace be upon you too, and the mercy of Allah and His blessings. In the humble opinion of this faqir (poor servant), both arguments are free from objection, and both statements are correct in their respective contexts. The exoneration of the first argument is even clearer; Imam al-Ajall Qazi Khan stated it in Fatawa Khaniya, Imam Zahir-ud-Din Marghinani in Fatawa Zahiriya, and Imam Burhan-ud-Din, the author of Hidayah, mentioned it in the book At-Tajnis wal Mazeed. Then the absolute researcher Imam (Ibn al-Humam) in Fath al-Qadir, and subsequently, the researcher Zayn (Ibn Nujaym) in Bahr ar-Ra'iq, relied upon it. In it, the aforementioned situation was not called 'hazl' (jest), but rather an argument was deduced for the issue from the premise of 'hazl'. The discourse is that if there is an impediment to the conclusion of the marriage here, it would be that the meaning is unknown. If this were so, then knowledge of the meaning would be a condition, but it is not a condition whose stipulation is necessary for the intent itself. Here, intent is not required. Look, in 'hazl', the meanings are not intended, yet the marriage is valid. This same point was expressed in At-Tajnis with the following words:

Arabic Text	**Urdu Translation**
If two people conduct a marriage contract with words they do not understand to be marriage, does it take effect? The scholars have differed over it; some said it takes effect because intent is not a condition in marriage.[1]	If a man and woman conducted a marriage with such words through which both of them could not know that it is a marriage, will the marriage take place in this situation? There is a difference of opinion among the scholars regarding this. Some have said that the marriage will be concluded because intent is not a condition in marriage. (T)

Regarding the second argument, the objection to it arises from a confusion of meaning. This humble servant, with the help of the Almighty, will explain it in such a manner that all arguments and rulings will be revealed.[38] So I say: and with Allah is the guidance. There are two things here: 1. the concept of the word, which is divided into literal, shariah-based, customary, real, and metaphorical; and 2. its ruling, which is known as aim, objective, purpose, and fruit etc. The terms 'meaning', 'content', and even 'original designation' are applied to both of these, although for some of the first...

---

[1] At-Tajnis wal Mazeed

फ़तावा रज़विया, खंड 11

साहब-ए-फ़तावा बज़ाज़िया की भी यही राय है, दुर्रे मुख्तार के फ़तवे को रद-उल-मुहतार में लिखा है कि इसमें मतभेद है, अब आपके निकट अगर यह निकाह जायज़ है तो उपरोक्त संदेह का उत्तर तर्कपूर्ण ढंग से लिखें और यदि यह नाजायज़ है तो बतायें कि अनुमति देने वालों का तर्क पूरी तरह कमज़ोर है या नहीं? मैंने उनकी तीसरी दलील नहीं देखी, अगर आपकी नज़र से गुज़री हो तो सूचित करें, यह भी जानता हूँ कि आप बहुत व्यस्त होंगे, लेकिन ईश्वर ने आपको नबियों का वारिस बनाया है, पूछने वाला अपने संदेह और किससे दूर करे? वस्सलाम।

जवाब: व-अलैकुम अस्सलाम व-रहमतुल्लाह व-बरकातुह, फ़क़ीर की राय में दोनों दलीलें आपत्ति से मुक्त हैं और दोनों कथन अपने-अपने स्थान पर सही हैं, पहली दलील की बेगुनाही तो और भी स्पष्ट है, इमाम-ए-अजल क़ाज़ी ख़ाँ ने फ़तावा खानिया में, इमाम ज़हीर-उद-दीन मर्गीनानी ने फ़तावा ज़हीरिया में, इमाम बुरहान-उद-दीन साहब-ए-हिदाया ने किताब अत-तजनीस वल मज़ीद में इसे उल्लेखित किया है और इमाम मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने फ़तह-अल-क़दीर में, फिर मुहक़्क़िक़ ज़ैन ने बह्र-उर-राइक़ में इसे अपनाया है, इसमें उपरोक्त स्थिति को 'हज़्ल' (हँसी-मज़ाक) नहीं कहा गया बल्कि हज़्ल के मसले से एक दलील के रूप में निष्कर्ष निकाला गया है, बात यह है कि यदि यहाँ निकाह होने में कोई बाधा है तो वह यही कि अर्थ ज्ञात नहीं है, और यदि ऐसा हो तो अर्थ का ज्ञान एक शर्त होगी, लेकिन वह ऐसी शर्त नहीं है जिसकी आवश्यकता स्वयं मंशा (इरादे) के लिए हो, और यहाँ मंशा आवश्यक नहीं है, देखिए हज़्ल में अर्थ अभीष्ट नहीं होते और निकाह सही हो जाता है, इसी आशय को तजनीस में इन शब्दों में व्यक्त किया गया है:

अरबी मूलपाठ	**उर्दू अनुवाद**
यदि दो व्यक्तियों ने विवाह का अनुबंध ऐसे शब्दों के साथ किया जिसे वे विवाह नहीं समझते थे, तो क्या वह संपन्न होगा? विद्वानों में इसके बारे में मतभेद है; उनमें से कुछ ने कहा कि यह संपन्न हो जाएगा क्योंकि विवाह में इरादा (क़स्द) शर्त नहीं है।[1]	यदि पुरुष और महिला ने ऐसे शब्दों से निकाह किया जिनसे उन दोनों को निकाह होने का पता न चल सके क्या इस स्थिति में निकाह हो जाएगा? इस बारे में आचार्यों का मतभेद है, कुछ ने कहा कि निकाह संपन्न हो जाएगा क्योंकि निकाह में इरादा (क़स्द) शर्त नहीं है। (त)

रही दूसरी दलील, इस पर आपत्ति अर्थ के भ्रम से उत्पन्न हुई है, फ़क़ीर ईश्वर की सहायता से इसे इस तरह से बयान करेगा जिससे सभी दलीलें और नियम स्पष्ट हो जाएंगे।[38] तो मैं कहता हूँ: और अल्लाह की ही तौफीक है। यहाँ दो चीज़ें हैं: 1. शब्द का अर्थ जो शाब्दिक, शरीयत-सम्मत, प्रथागत, वास्तविक और आलंकारिक में विभाजित है, और 2. उसका नियम जो लक्ष्य, उद्देश्य, फल आदि के रूप में जाना जाता है, इन दोनों पर शब्द के अर्थ, विषय वस्तु यहाँ तक कि मूल नामकरण का भी अनुप्रयोग होता है, हालाँकि पहले के कुछ...

---

[1] अत-तजनीस वल मज़ीद

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

صاحب فتاوی بزازیہ کی بھی یہی رائے ہے، در مختار کے فتوی کو ردالمحتار میں لکھا ہے کہ اس میں اختلاف ہے، اب آپ کے نزدیک اگر یہ نکاح جائز ہے تو شبہ مذکورہ بالا کا جواب مدلل طور سے ارقام فرمائے اور اگر ناجائز ہے تو یہ فرمائے کہ مجوزین کی دلیل بالکل ست ہے یا نہیں۔؟ تیسری دلیل میں نے ان لوگوں کی نہیں دیکھی، اگر آپ کی نظر سے گزری ہو تو مطلع فرمائے، یہ بھی جانتا ہوں کہ آپ بہت عدیم الفرصت ہوں گے، مگر خدا نے وارث الانبیاء آپ کو کیا ہے، سائل اور کس سے اپنے شبے رفع کرے، والسلام۔

الجواب: وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، فقیر کی رائے میں دونوں دلیلیں اعتراض سے بری اور دونوں قول اپنے اپنے محل پر صحیح ہیں، دلیل اول کی برات تو واضح تر، امام اجل قاضی خاں نے فتاوی خانیہ میں امام ظہیر الدین مرغینانی نے فتاوی ظہیریہ امام برہان الدین صاحب ہدایہ نے کتاب التجنیس والمزید میں اسے افادہ فرمایا اور امام محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر، پھر محقق زین نے بحر الرائق میں اس پر تحویل کی، اس میں صورت مذکورہ کو ہزل نہ کہا بلکہ ایک مقدمہ دلیل پر مسئلہ ہزل سے استدلال فرمایا ہے، تقریر کلام یہ ہے کہ یہاں انعقاد نکاح سے مانع ہو تو یہی کہ معنی معلوم نہیں، اور ایسا ہو تو علم بمعنی شرط ہو لیکن وہ شرط نہیں کہ اس کا اشتراط ہو تو قصد ہی کے لیے اور یہاں قصد درکار نہیں، دیکھو ہزل میں معنی مقصود نہیں ہوتے اور نکاح صحیح ہے، اسی مطلب کو تجنیس میں بایں عبارت ادا فرمایا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ولو عقدا عقد النكاح بلفظ لايفهمان كونه نكاحا هل ينعقد اختلف المشائخ فيه قال بعضهم ينعقد لان النكاح لايشترط فيه القصد[1]۔	اگر مرد و عورت نے ایسے الفاظ سے نکاح منعقد کیا جن سے ان دونوں کو نکاح ہونے کا پتا نہ چل سکے، کیا اس صورت میں نکاح ہو جائے گا اس بارے میں مشائخ کا اختلاف ہے، بعض نے فرمایا کہ نکاح منعقد ہو جائے گا کیونکہ نکاح میں قصد شرط نہیں ہے۔(ت)

رہی دوسری دلیل، اس پر اعتراض اشتباہ معنی سے ناشی ہے، فقیر بعون القدیر اسے ایسے نہج سے بیان کرے جس سے دلائل و احکام سب کا انکشاف ہو جائے[38] فاقول : وباللہ التوفیق یہاں دو چیزیں ہیں 1 لفظ کا مفہوم کہ لغوی شرعی عرفی حقیقی مجازی کی طرف مقسوم، اور 2 اس کا حکم کہ غرض غایت مقصود و ثمرہ وغیرہا سے موسوم، ان دونوں پر لفظ کے معنی مضمون حتی کہ موضوع لہ کا بھی اطلاق آتا ہے اگر چہ اول کے بعض

---

[1] التجنیس والمزید

Fatawa Razawiyya Volume 11

There is a specific type of designation (Wad'ah). The great Imam Fakhr-ul-Islam Bazdawi (may his secret be sanctified) stated in Usul:

Arabic Original	Urdu Translation
Al-Hazal is play; it is to intend something by a thing for which it was not designated. It is the opposite of Jadd (earnestness), and Jadd is to intend the designation for which a thing was established.[1]	Hazal (jesting) is the name of a play in which something is intended by a thing for which that thing was not designated. It is the opposite of Jadd (intent), and Jadd is to intend the original designation (Maudu' lahu) of a thing. (T)

The illustrious Imam Abdul Aziz Bukhari states in its commentary, Kashf al-Kabeer:

Arabic Original	Urdu Translation
Designation here does not mean linguistic designation alone, but includes intellectual and legal designation. Speech is intellectually designated to convey its meaning, whether literal or metaphorical. Legal disposition is designated to convey its ruling. When the intellectual designation of speech—meaning conveying any meaning at all—is not intended, and the legal designation of a disposition—meaning conveying the ruling at all—is not intended, that is Hazal. Our explanation clarifies the difference between metaphor (Majaz) and Hazal: in Majaz, the intellectual designation is intended even if the linguistic one is not. In Hazal, neither is intended. This aligns with what is narrated from Shaykh Abu Mansur (may Allah have mercy on him): Hazal	Here, designation (Wad'ah) does not refer to specific linguistic designation only, but includes both intellectual and legal designation. This is because intellectually, speech is designated to convey its meaning, whether that meaning be literal or metaphorical. Legal disposition is designated to convey its ruling. Therefore, when the intellectual meaning of speech—which is to convey the purpose—is not intended, and the legal meaning of a disposition—which is to convey the ruling—is not intended, it is called Hazal. It becomes clear from our explanation that there is a difference between metaphor (Majaz) and Hazal. In Majaz, meaning is intended according to the intellectual designation even if the linguistic meaning is not intended. Whereas in Hazal, neither of the two meanings is intended. This is the meaning of what is narrated from Shaykh Abu Mansur (may Allah Almighty have mercy

Arabic Original	Urdu Translation
is that from which no meaning is intended.[2]	on him), that Hazal is that from which no meaning is intended. (T)

Knowledge of the first meaning is not absolutely necessary. Therefore, if a woman said "Zawwajtu nafsi minka bi-alf" (I married myself to you for a thousand) and the man said "Qabiltu" (I accepted), and both were completely unfamiliar with the Arabic language but knew summarily that these words were for the marriage contract...

---

[1] Usul al-Bazdawi, Chapter of Hazal, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 377 [2] Kashf al-Asrar ‘ala Usul al-Bazdawi, Chapter of Hazal, Dar al-Kutub al-Arabi Beirut, 2/357

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

वज़अ (निर्दिष्टीकरण) की किस्मों में से यह एक किस्म है। इमाम अजल फ़ख़्र-उल-इस्लाम बज़दवी (क़ुद्दिसा सिर्रहु) ने उसूल में फ़रमाया:

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
अल-हज़ल अल-ल'ब वहुवा अन युरादा बिश-शैयि मा लम युज़अ लहू वहुवा ज़िद अल-जद्द वहुवा अन युरादा बिश-शैयि मा वुज़िअ लहू[1]।	हज़ल (मज़ाक) ऐसे खेल का नाम है जिसमें किसी चीज़ से ऐसी मुराद ली जाए जिसके लिए वह चीज़ वज़अ न की गई हो, यह जद्द (क़स्द/इरादा) की ज़िद है और जद्द किसी चीज़ से उसका 'मौज़ू लहू' मुराद लेना है। (त)

इमाम जलील अब्दुल अज़ीज़ बुखारी इसकी शरह 'कश्फ़ कबीर' में फ़रमाते हैं:

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
लैसल मुरादु मिनल वज़इ हहुना वज़अल लुग़ह ला ग़ैर बल वज़अल अक़्ल वश-शरअ फ़इनल कलामा मौज़ूउन अक़्लन लि-इफ़ादति म'नाहु फ़ी हक़ीक़तिन कान अव मजाज़न वत-तसर्रफ़ुश शर'ई मौज़ूउन लि-इफ़ादति हुक्मिहि फ़इज़ा उरीदा बिल-कलामि ग़ैरा मौज़ूइहिल अक़्ली वहुवा अदमु इफ़ादति म'नाहु असलत व उरीदा बित-तसर्रफ़ि ग़ैरा मौज़ूइहिश शर'ई वहुवा अदमु इफ़ादतिल हुक्मि असलत फ़हुवल हज़ल व तबय्यना बिमा ज़करनाल फ़र्क़ु बैनल मजाज़ि वल-हज़ल फ़इनल मौज़ूअल अक़्ली लिल-कलामि वहुवा इफ़ादतुल म'ना फ़िल मजाज़ि मुरादुन वइन लम यकुनिल मौज़ूउ लहुल लुग़वी मुरादन वफ़िल हज़ल किलाहुमा लैसा बि-मुरादिन वहुवा म'ना मा नुकिला अनिश्शेख अबी	यहाँ वज़अ से ख़ास वज़अ लुग़वी मुराद नहीं बल्कि वज़अ अक़्ली व शरई सब को शामिल है, क्योंकि अक़्ली तौर पर कलाम की वज़अ इसलिए है कि अपने मानी का फ़ायदा दे चाहे मानी हक़ीक़ी हो या मजाज़ी और शरई तसर्रुफ़ की वज़अ उसके हुक्म के इफ़ादे के लिए है तो जब कलाम से उसका अक़्ली मानी यानी इफ़ादा मक़सद मुराद न हो और तसर्रुफ़ शरई से शरई मानी यानी हुक्म का इफ़ादा मुराद न हो तो उसको हज़ल कहते हैं, हमारे बयान से वाज़ेह हो गया कि मजाज़ और हज़ल (मज़ाक) में फ़र्क़ है कि मजाज़ में अक़्ली वज़अ के लिहाज़ से मानी मुराद लिया जाता है अगरचे लुग़वी मानी मुराद नहीं होता जबकि मज़ाक में दोनों मानों में से कोई भी मुराद नहीं होता, और शेख अबू मंसूर रहमतुल्लाह तआला

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
मंसूर रहमतुल्लाहि तआला अनहु अन्नल हज़ल मा ला युरादु बिही म'ना[2]।	अलैहि से मनक़ूल का यही मानी है कि मज़ाक वह है जिससे कोई मानी मुराद न लिया जाए। (त)

मानी बमानी अव्वल का इल्म असलन् ज़रूर नहीं वलहाज़ा अगर औरत ने "ज़व्वज्तु नफ़्सी मिंका बि-अल्फ़" और मर्द ने "क़बिल्तु" कहा और दोनों अरबी ज़बान से महज़ ना-आश्ना थे मगर इतना इज्मालन मालूम था कि ये अल्फ़ाज़ अक़्द-ए-निकाह...

---

[1] उसूल अल-बज़दवी, फ़स्ल अल-हज़ल, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिजारात कुतुब कराची, पृ. 377 [2] कश्फ़ अल-असरार अन उसूल अल-बज़दवी, फ़स्ल अल-हज़ल, दार अल-कुतुब अल-अरबी बैरूत, 2/357

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

اقسام میں وضع نوعی ہے۔ امام اجل فخر الاسلام بزدوی قدس سرہ نے اصول میں فرمایا:-

عربی متن	اردو ترجمہ
الھزل اللعب وھوان یراد بالشئ ما لم یوضع لہ وھو ضد الجد وھوان یراد بالشئ ما وضع لہ[1]۔	ہزل (مذاق) ایسے کھیل کا نام ہے جس میں کسی چیز سے ایسی مراد لی جائے جس کے لیے وہ چیز وضع نہ کی گئی ہو، یہ جد (قصد) کی ضد ہے اور جد کسی چیز سے اس کا موضوع لہ مراد لینا ہے۔ (ت)

امام جلیل عبدالعزیز بخاری اس کی شرح کشف کبیر میں فرماتے ہیں:-

عربی متن	اردو ترجمہ
لیس المراد من الوضع ھھنا وضع اللغۃ لا غیر بل وضع العقل والشرع فان الکلام موضوع عقلا لافادۃ معناہ فی حقیقۃ کان او مجازا والتصرف الشرعی موضوع لافادۃ حکمہ فاذا ارید بالکلام غیر موضوعہ العقلی وھو عدم افادۃ معناہ اصلاً وارید بالتصرف غیر موضوعہ الشرعی وھو عدم افادۃ الحکم اصلاً فھو الھزل وتبین بما ذکرنا الفرق بین المجاز والھزل فان الموضوع العقلی للکلام	یہاں وضع سے خاص وضع لغوی مراد نہیں بلکہ وضع عقلی و شرعی سب کو شامل ہے، کیونکہ عقلی طور پر کلام کی وضع اس لیے ہے کہ اپنے معنی کا فائدہ دے چاہے معنی حقیقی ہو یا مجازی ہو اور شرعی تصرف کی وضع اس کے حکم کے افادہ کے لیے ہے تو جب کلام سے اس کا عقلی معنی یعنی افادہ مقصد مراد نہ ہو اور تصرف شرعی سے شرعی معنی یعنی حکم کا افادہ مراد نہ ہو تو اس کو ہزل کہتے ہیں، ہمارے بیان سے واضح ہو گیا کہ مجاز اور ہزل

عربی متن	اردو ترجمہ
وھو افادة المعنی فی المجاز مراد وان لم یکن الموضوع لہ اللغوی مرادا وفی الھزل کلاھما لیس بمراد وھو معنی مانقل عن الشیخ ابی منصور رحمہ اللہ تعالی ان الھزل ما لا یراد بہ معنی[2]۔	(مذاق) میں فرق ہے کہ مجاز میں عقلی وضع کے لحاظ سے معنی مراد لیا جاتا ہے اگرچہ لغوی معنی مراد نہیں ہوتا جبکہ مذاق میں دونوں معنوں میں سے کوئی بھی مراد نہیں ہوتا، اور شیخ ابو منصور رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ سے منقول کا یہی معنی ہے کہ مذاق وہ ہے جس سے کوئی معنی مراد نہ لیا جائے۔ (ت)

معنی بمعنی اول کا علم اصلاً ضرور نہیں ولہذا اگر عورت نے "زوجت نفسي منك بألف" اور مرد نے "قبلت" کہا اور دونوں زبان عربی سے محض نا آشنا تھے مگر اتنا اجمالاً معلوم تھا کہ یہ الفاظ عقد نکاح

---

1 اصول البزدوی فصل الھزل نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۳۷۷ 2 کشف الاسرار عن اصول البزدوی فصل الھزل دار الکتاب العربی بیروت ۲/ ۳۵۷

Fatawa Rizvia Volume 11

...if they are said for it, then by the consensus of the scholars, the marriage is valid. It is stated in [Fatawa] Khaniya:

"A man married a woman using Arabic words or words whose meaning he does not know, or a woman married herself off in the same way; if they knew that marriage is solemnized with these words, then the marriage is valid according to everyone."

If a man used such words of the Arabic language or any other language for marriage, and likewise a woman used such words whose meaning she did not know, but if they both knew that marriage is solemnized by these words, then this marriage is valid according to everyone. (T)

Similarly, if those unfamiliar with Arabic said "Ba'tu Ishtaraitu" (I sold, I bought) with the intention of sale and purchase, and they knew that these are words for a contract of sale, the sale will certainly take place, even if they are ignorant of the literal interpretation of the words. This is because after knowing the legal ruling, the use of these words with intention is evidence of mutual consent, and such mutual consent is sufficient for the establishment of these contracts. It is stated in [Al-]Hidaya:

"The meaning is what matters in these contracts, and for this reason, sale is solemnized by a physical exchange (hand-to-hand transaction) in both valuable and trivial items. This is the correct view because mutual consent is established."

In these contracts, the intended meaning is considered, and therefore, by the exchange of every small or large item, a sale is concluded because in this case, consent becomes evident. (T)

Thus, it is proven that in the issue under discussion, 'meaning' refers to the second sense, as the first sense is unanimously not intended, so ignorance of it cannot be the basis of dispute. Some elders portrayed it as Arabic words used by parties who are Hindi or Turkish speaking; that is according to the habits of the jurists, as they consider the prevailing probability of a thing as the thing itself.

"As is not hidden from one who is well-versed in their elevated words, and we have mentioned some of it in our Fatawa."

As is not hidden from the experts in understanding the speech of the noble jurists, some of which we have explained in our Fatawa. (T)

It is most probable that a person is not even aware of the intent of words in a language they do not understand. Therefore, the Imam, the Jurist of the Soul (Faqih-un-Nafs), was not content with the phrase "even if they both did not know the meaning of the word" (even though both did not understand the word's meaning - T) so that the mind does not go towards the first sense, but rather for the expression of intent, he added, "and they did not know that marriage is solemnized with these words" (and both...

1. Fatawa Qazi Khan, Book of Marriage, Naval Kishore, Lucknow, 1/151
2. Hidaya, Book of Sales, Matba' Yusufi, Lucknow, 3/24
3. Fatawa Qazi Khan, Book of Marriage, Naval Kishore, Lucknow, 1/151

फतावा रजविया जिल्द 11

...के लिए कहे जाते हैं, तो विद्वानों की सर्वसम्मति से निकाह हो गया। [फ़तावा] खानिया में है:

"यदि किसी पुरुष ने अरबी भाषा या किसी ऐसी भाषा का शब्द प्रयोग करके निकाह किया जिसका अर्थ उसे ज्ञात न हो, या स्त्री ने स्वयं को इसी प्रकार निकाह में दिया; यदि वे जानते थे कि इन शब्दों से निकाह संपन्न होता है, तो सबके मत में निकाह वैध है।"

यदि किसी पुरुष ने अरबी भाषा या किसी भी भाषा का ऐसा शब्द प्रयोग करके निकाह किया और इसी तरह स्त्री ने भी ऐसा शब्द प्रयोग किया जिसका अर्थ उसे पता न हो, परंतु यदि उन दोनों को इन शब्दों से निकाह संपन्न होने का ज्ञान था, तो यह निकाह सबके निकट सही है। (त)

इसी प्रकार यदि अरबी से अपरिचित लोगों ने खरीद-बिक्री के उद्देश्य से "बैतु इश्तैतु" (मैंने बेचा, मैंने खरीदा) कहा और वे जानते थे कि ये बिक्री अनुबंध के शब्द हैं, तो बिक्री निश्चित रूप से हो जाएगी, भले ही वे शब्दों की शाब्दिक व्याख्या से अनभिज्ञ हों। क्योंकि नियम जानने के बाद, उद्देश्य के साथ इन शब्दों का उपयोग आपसी सहमति का प्रमाण है, और ऐसी आपसी सहमति ही इन अनुबंधों की स्थापना के लिए पर्याप्त है। [अल-] हिदाया में है:

"इन अनुबंधों में अर्थ ही मान्य होता है, और इसी कारण कीमती और साधारण दोनों वस्तुओं में लेन-देन (हाथों-हाथ सौदे) से बिक्री संपन्न हो जाती है। यही सही मत है क्योंकि इसमें आपसी सहमति सिद्ध हो जाती है।"

इन अनुबंधों में अर्थ का विचार किया जाता है और इसीलिए हर छोटी-बड़ी चीज़ के लेन-देन से बिक्री संपन्न हो जाती है क्योंकि इस स्थिति में रजामंदी स्पष्ट हो जाती है। (त)

अतः यह सिद्ध हुआ कि विचाराधीन मामले में 'अर्थ' का तात्पर्य दूसरे अर्थ से है, क्योंकि पहला अर्थ सर्वसम्मति से अभिप्रेत नहीं है, इसलिए उसका अज्ञान विवाद का कारण नहीं हो सकता। कुछ बुज़ुर्गों ने इसे अरबी शब्दों और हिंदी या तुर्की भाषी पक्षों के रूप में चित्रित किया है; वह न्यायविदों (फ़ुकहा) की आदतों के अनुसार है, क्योंकि वे किसी चीज़ की प्रबल संभावना को ही वह चीज़ मान लेते हैं।

"जैसा कि उनके उच्च शब्दों के ज्ञाता से छिपा नहीं है, और हमने अपने फतावा में इसका कुछ उल्लेख किया है।"

जैसा कि सम्मानित न्यायविदों के कथनों को समझने में माहिर लोगों से छिपा नहीं है, जिसका कुछ विवरण हमने अपने फतावा में किया है। (त)

इसकी प्रबल संभावना है कि व्यक्ति को किसी न समझ आने वाली भाषा के शब्दों के उद्देश्यों का भी पता नहीं होता। इसलिए, इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स ने केवल "भले ही उन दोनों ने शब्द का अर्थ न समझा हो" (यद्यपि दोनों ने शब्द का अर्थ नहीं समझा - त) पर संतोष नहीं किया ताकि मन पहले अर्थ की ओर न जाए, बल्कि इरादे की अभिव्यक्ति के लिए जोड़ा, "और वे नहीं जानते थे कि इन शब्दों से निकाह संपन्न होता है" (और दोनों...

1. फतावा काज़ी खान, किताबुन निकाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/151
2. हिदाया, किताबुल बुयूअ, मतबा यूसुफी, लखनऊ, 3/24
3. फतावा काज़ी खान, किताबुन निकाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/151

पृष्ठ 228 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

کے لیے کہے جاتے ہیں باتفاق علماء نکاح ہوگیا، خانیہ میں ہے :

رجل تزوج امراۃ بلفظۃ العربیۃ اوبلفظ لایعرف معناہ او زوجت المرأۃ نفسھا بذلک ان علما ان ھذا اللفظ ینعقد بہ النکاح یکون النکاح عند الکل ۱۔

اگر کسی مرد نے عربی زبان یا کسی بھی زبان کا ایسا لفظ استعمال کرکے نکاح کیا اور یوں ہی عورت نے ایسا لفظ استعمال کیا کہ جس کا معنی اسے معلوم نہ ہو اگر ان دونوں کو ان الفاظ سے نکاح کے انعقاد کا علم ہوگیا تو یہ نکاح سب کے ہاں درست ہے۔ (ت)

یوں ہی اگر نا آشنایان عربی نے "بعت اشتریت" بقصد بیع و شراء کہا اور جانتے تھے کہ یہ الفاظ عقد بیع کے ہیں ضرور بیع ہوجائے گی اگرچہ تفسیر الفاظ سے ناواقف ہوں کہ بعد علم حکم بقصد ان الفاظ کا تحاور دلیل مراضاۃ ہے اور ایسی مراضاۃ ہی ان عقود میں کفیل اثبات ہے۔ ہدایہ میں ہے :

المعنی ھو المعتبر فی ھذہ العقود ولھذا ینعقد بالتعاطی فی النفیس والخسیس ھو الصحیح لتحقق المراضاۃ ۲۔

ان عقود میں معنیٰ کا اعتبار ہوتا ہے اور اس لیے ہر چھوٹی موٹی چیز کے لین دین کرنے سے بیع منعقد ہوجاتی ہے کیونکہ اس صورت میں رضا ظاہر ہوجاتی ہے (ت)

تو ثابت ہوا کہ مسئلہ دائرہ میں معنی بمعنی دوم ہی مراد ہے کہ اول بالاجماع مراد نہیں تو اس کا جہل مناط نزاع نہیں ہوسکتا، بعض اکابر نے کہ الفاظ عربی اور عاقدین کے ہندی یا ترکی ہونے سے تصویر فرمائی وہ بحسب عادات فقہاء ہے کہ مظنہ غالبہ شئے کو قائم مقام شیئ کرتے ہیں۔

کمالایخفی علی من مارس کلماتہم العلیہ وقد ذکرنا طرفاً منھا فی فتاوٰنا۔

جیسا کہ فقہاء کرام کے کلام کے فہم میں ماہر پر مخفی نہیں جس کا کچھ بیان ہم نے اپنے فتاوٰی میں کیا ہے۔ (ت)

غالب یہی ہے کہ آدمی الفاظ زبان غیر مفہوم کے مقاصد پر بھی مطلع نہیں ہوتا، ولہذا امام فقیہ النفس نے "وان لم یعرفا معنی اللفظ" (اگرچہ دونوں نے لفظ کا معنی نہ سمجھا ہو) پر قناعت نہ کی کہ اول کی کہ اول کی طرف ذہن نہ جائے بلکہ افادہ مراد کے لیے "ولم یعلما ان ھذا لفلظ ینعقد بہ النکاح" ۳ (اور دونوں نے

۱۔ فتاوٰی قاضی خاں کتاب النکاح نولکشور لکھنو ۱/ ۱۵۱ ۲۔ ہدایہ کتاب البیوع مطبع یوسفی لکھنو ۳/ ۲۴ ۳۔ فتاوٰی قاضی خاں کتاب النکاح نولکشور لکھنو ۱/ ۱۵۱

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

...they did not understand that marriage is solemnized by this word. (Translator's note added) And Imam Burhan-ud-Din stated the original intended phrase as: 'la yafhamuna kawnahu nikahan' (a word from which both did not understand marriage to be occurring. T). Allama Ibn Abidin in 'Minhat al-Khaliq' quoted only this final intended sentence from the text of 'Khaniyah', omitting the first part.

Arabic	Urdu
Where he said: It was stated in Al-Khaniyah that even if they both did not know that marriage is contracted with this word, then these are a set of issues... etc.	Where they said that it was stated in Khaniyah that if they did not understand marriage to be occurring from this word, then these are all the issues, etc. (T)

This much has addressed the objection from the second piece of evidence. 3. Then I say: Just as knowledge in the first sense is not fundamentally necessary, in the second sense, it is absolutely necessary for religious practice (diyanatan). Allah Almighty said: "That I may warn you thereby and whomsoever it may reach." 2 (So that I may warn you and those to whom this warning reaches. T). Even if this reaching of the ruling is constructive (hukman), such as being in Dar al-Islam (Abode of Islam), where having the opportunity to learn makes subsequent ignorance one's own negligence. Therefore, ignorance is counted among 'acquired defects' (awarid-e-muktasabah), because one is capable of removing it, so keeping it is as if you are acquiring it yourself. This is the rationale behind the validity of divorce given in a state of intoxication; although the act of pronouncing it requires reason, and intoxication removes it, the deliberate act of becoming intoxicated is one's own fault. In 'Usul al-Bazdawi', it is stated:

Arabic	Urdu
Ignorance in Dar al-Harb (Abode of War) on the part of a Muslim who has not migrated is an excuse regarding Sharia rulings, so they are not binding on him because he is not negligent. Similarly, the initial address when it was first revealed; whoever it did not reach was excused. However, once the	A Muslim in Dar al-Harb who has not migrated to Dar al-Islam has an excuse for his ignorance of Sharia matters; based on this excuse, those rulings will not be binding on him there because it is not a negligence on his part. Similarly, when the first address (revelation) was revealed and did not reach those living in Dar al-Islam, they too were

Arabic	Urdu
address has spread within Dar al-Islam and the propagation is complete, anyone who remains ignorant thereafter is considered negligent. Thus, he is not excused, just as one who does not seek water in a populated area, performs Tayammum (dry ablution) while water was available, and prays; his prayer is not valid. 3	considered excused. But once that address spreads in Dar al-Islam and complete propagation occurs, anyone who remains ignorant after that will have it counted as his negligence, and he will not be considered excused. Just as if someone is in a populated area where water is present, yet prays with Tayammum without seeking or searching for water, his prayer will not be valid. (T)

1. Minhat al-Khaliq, marginalia on Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab an-Nikah, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/85.
2. Al-Qur'an, 6/19.
3. Usul al-Bazdawi, Chapter: Acquired Defects, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 325.

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

...उन्होंने यह नहीं समझा कि इस शब्द से निकाह संपन्न हो जाता है। (टी) जोड़ा गया, और इमाम बुरहानुद्दीन ने मूल उद्देश्य इस वाक्यांश को बताया: 'ला यफ़हमूना कौनाहू निकाहन' (ऐसा शब्द जिससे दोनों ने निकाह होना नहीं समझा। टी)। अल्लामा इब्न आबिदीन ने 'मिन्हात अल-ख़ालिक़' में 'ख़ानिया' के पाठ से केवल यही अंतिम इच्छित वाक्य उद्धृत किया और पहले वाले को छोड़ दिया।

अरबी	उर्दू
जहाँ उन्होंने कहा: ख़ानिया में कहा गया कि भले ही उन दोनों को यह न पता हो कि इस शब्द से निकाह हो जाता है, तो ये कई मसले हैं... आदि।	जहाँ उन्होंने कहा कि ख़ानिया में फ़रमाया गया कि अगर उन्होंने इस शब्द से निकाह होना न समझा तो ये तमाम मसाइल (मसले) हैं आदि। (टी)

इसी बात ने दूसरे प्रमाण से आपत्ति को दूर कर दिया। 3. फिर मैं कहता हूँ: जिस प्रकार पहले अर्थ में ज्ञान मूलतः आवश्यक नहीं है, दूसरे अर्थ में धार्मिक अभ्यास (दियानतन) के लिए पूर्णतः आवश्यक है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "ताकि मैं तुम्हें और जिसे यह पहुँचे, डराऊँ।" 2 (ताकि मैं तुम्हें डर सुनाऊँ और उन लोगों को जिन्हें यह डर पहुँचे। टी)। चाहे नियमों का यह पहुँचना कानूनी (हुक्मन) ही क्यों न हो, जैसे दारुल इस्लाम में होना, जहाँ सीखने का अवसर होने पर भी न जानना अपनी कोताही (लापरवाही) है। इसलिए अज्ञानता को 'अर्जित दोषों' (अवारिज़-ए-मुकतसबा) में गिना जाता है, क्योंकि व्यक्ति इसे दूर करने में सक्षम है, इसलिए इसे बनाए रखना ऐसा है जैसे आप स्वयं इसे प्राप्त कर रहे हों। यही कारण है कि नशे की स्थिति में दी गई तलाक़ प्रभावी होती है; हालाँकि उच्चारण के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है, और नशा उसे हटा देता है, लेकिन जानबूझकर नशा करना स्वयं की गलती है। 'उसूले बज़दवी' में उल्लेख है:

अरबी	उर्दू
दारुल हर्ब में उस मुसलमान के लिए अज्ञानता एक उज़्र (बहाना/कारण) है जिसने हिजरत नहीं की है, इसलिए उस पर शरीयत के हुक्म अनिवार्य नहीं होंगे क्योंकि वह लापरवाह नहीं है। इसी तरह जब पहला संदेश उतरा और	दारुल हर्ब में मुसलमान जो कि हिजरत करके दारुल इस्लाम न आया हो, उसकी शरीयत के मसाइल में जहालत (अज्ञानता) उज़्र है कि उसके उज़्र के आधार पर वहाँ उसके लिए वो ज़रूरी नहीं होंगे, क्योंकि यह उसकी तरफ़ से कोताही नहीं है।

अरबी

दारुल इस्लाम में रहने वालों तक नहीं पहुँचा, तो वे भी माज़ूर (माफ़ करने योग्य) माने गए। लेकिन जब वह संदेश दारुल इस्लाम में फैल जाए और पूर्ण प्रचार हो जाए, उसके बाद जो अज्ञानी रहे तो यह उसकी कोताही गिनी जाएगी। अतः उसे माज़ूर नहीं माना जाएगा, जैसे कि कोई व्यक्ति आबादी में जहाँ पानी मौजूद हो, पानी की तलाश किए बिना तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) करके नमाज़ पढ़ ले, तो उसकी नमाज़ जायज़ नहीं होगी। 3

उर्दू

वैसे ही जब पहला ख़िताब (संबोधन/आदेश) नाज़िल हुआ और दारुल इस्लाम में रहने वाले को न पहुँचा तो वह भी माज़ूर क़रार पाएगा, लेकिन वह ख़िताब जब दारुल इस्लाम में फैल जाए और तबलीग़ (प्रचार) पूरी हो जाए, उसके बाद जो जाहिल रहे तो यह उसकी कोताही शुमार होगी तो वह माज़ूर न क़रार पाएगा, जैसा कि कोई शख़्स आबादी में जहाँ पानी मौजूद है, तो पानी तलब या तलाश किए बग़ैर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले तो नमाज़ न होगी। (टी)

1. मिन्हात अल-ख़ालिक़ हशिया अलल बहरर रायक़ किताबुन निकाह एच एम सईद कंपनी कराची 3/85।
2. अल-क़ुरान 6/19।
3. उसूले बज़दवी बाबुल अवारिज़ अल-मुकतसबा नूर मोहम्मद कारख़ाना तिज़ारते कुतुब कराची पेज 325।

یہ نہ سمجھا کہ اس لفظ سے نکاح منعقد ہو جاتا ہے۔ ت) بڑھایا، اور امام برہان الدین نے اصل مقصود لفظ لا یفہمنا کونہ نکاحاً (ایسا لفظ جس سے دونوں نے نکاح ہونا نہ سمجھا۔ ت) فرمایا، علامہ ابن عابدین نے منحۃ الخالق میں کلام خانیہ سے یہی اخیر فقرہ مقصودہ نقل کیا اول ترک کر دیا،

عربی	اردو
حیث قال قال فی الخانیۃ وان لم یعلما ان ھذا الفظ ینعقد بہ النکاح فہذہ جملۃ مسائل ۱ الخ۔	جہاں انھوں نے کہا کہ خانیہ میں فرمایا کہ اگر انھوں نے اس لفظ سے نکاح ہونا نہ سمجھا تو یہ تمام مسائل ہیں الخ (ت)

اسی قدر نے دلیل دوم سے رفع اعتراض کر دیا۔ ۳ ثم اقول: پھر جس طرح علم بمعنی اول اصلاً ضرور نہیں بمعنی دوم دیانۃً مطلقاً ضرور ہے قال تعالٰی لِأُنْذِرَ كُمْ بِهٖ وَ مَنْ بَلَغَ ۲ (تاکہ تمھیں ڈر سناؤں اور ان لوگوں کو جن کو یہ ڈر پہنچے۔ ت) اگرچہ یہ بلوغ حکم حکماً ہو جیسے دارالاسلام میں ہونا اور سیکھنے کا میسر کہ پھر نہ جاننا اپنی تقصیر ہے، ولہذا جہل کو عوارضِ مکتسبہ سے شمار فرماتے ہیں کہ ازالہ پر قادر ہوں کہ باقی رکھنا گویا آپ اس کا حاصل کرنا ہے یہی منشا ہے کہ نشہ کی طلاق واقع ہے اگرچہ ایقاع کو عقل ضرور، اور نشہ اس کا مزیل مگر دانستہ اس کا ارتکاب خود اس کا قصور، اصول امام بزدوی میں ہے :

عربی	اردو
الجهل فی دارالحرب من مسلم لم یبها جریکون عذرا فی الشرائع حتی لاتلزمہ لانه غیر مقصر وکذلک الخطاب فی اول مانزل فان من لم یبلغہ کان معذورا فاما اذا انتشر الخطاب فی دارالاسلام فقد تم تقصیر فمن جهل بعد فانما اتی من قبلہ تقصیرہ فلا یعذر کمن لم یطلب الماء فی العمران وتیمم وکان الماء موجودا فصلی لم یجز ۳۔	دار الحرب میں مسلمان جو کہ ہجرت کر کے دارالاسلام نہ آیا ہو اس کی شرعی مسائل میں جہالت عذر ہے کہ اس کی عذر کی بناء پر وہاں اس کے لیے لازم نہ ہوں گے، کیونکہ یہ اس کی طرف سے کوتاہی نہیں ہے، یو نہی جب پہلا خطاب نازل ہوا اور دارالاسلام میں رہنے والے کو نہ پہنچا تو وہ بھی معذور قرار پائیگا لیکن وہ خطاب جب دارالاسلام میں پھیل جائے اور تبلیغ تام ہو جائے اس کے بعد جو جاہل رہے تو یہ اس کی کوتاہی شمار ہوگی تو وہ معذور نہ قرار پائے گا جیسا کہ کوئی شخص آبادی میں جہاں پانی موجود ہے تو پانی طلب یا تلاش کئے بغیر تیمم سے نماز پڑھ لے تو نماز نہ ہوگی۔ ت)

۱ منحۃ الخالق حاشیۃ علی البحر الرائق کتاب النکاح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۸۵ ۲ القرآن

۳ ۱۹/۶ اصول البزدوی باب العوارض المکتسبہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۳۲۵

Fatawa Rizvia Volume XI

This is the meaning of the statement that ignorance is not an excuse in Dar al-Islam. It is clear from this that if even the most ignorant person in our lands says to his unconsummated wife, "Divorce be upon you," she will immediately be out of the marriage contract. Without the need for a waiting period (iddah), she will have the right to marry whomever she chooses. His ignorance of the rule that an unconsummated wife becomes absolutely divorced (Ba'in) by any pronouncement of divorce will not be of benefit to him. However, if an illiterate Indian or Bengali is taught to say to his wife: "Tura az zani hashtum" (I have removed you from wifehood. T) or "Tallaktuki falhaqi bi-ahliki" (I have divorced you, so go to your family. T) and he does not know that these are words of divorce, then in the sight of Allah, divorce will not occur because this ignorance of the law (Hukm) arises from ignorance of the language (Lisan). Ignorance of the language is not a shortcoming, as learning Persian is not fundamentally obligatory, nor is learning Arabic mandatory for every individual. Regarding this, Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq stated in Al-Fath:

It is necessary to intend the address with the word of divorce while knowing its meaning or intending the outcome (of divorce), as noted in the branches (of jurisprudence), etc.

While addressing with the word of divorce, there must be knowledge of its meaning or intent toward the purpose, as noted in the branches, etc.

(T)

(T) This means knowledge in the second sense is also necessary for divorce. If a situation exists where the person is excused for their ignorance, such as ignorance of the ruling due to ignorance of the language, then divorce will not occur religiously (Diyanatan). In Nahr al-Faiq it is stated:

He intended that it is a condition for the occurrence [of divorce] both judicially (Qada'an) and religiously (Diyanatan). This excludes that through which it does not occur either way, such as one who repeats the legal issues of divorce. It also excludes that which occurs only judicially, such as a

Their meaning is that it is a condition for the occurrence of divorce both judicially and religiously. Thus, the situation where it does not occur in either way is excluded, such as someone repeating the legal issues of divorce. Also excluded is the situation where it occurs only

It is necessary to intend the address with the word of divorce while knowing its meaning or intending the outcome (of divorce), as noted in the branches (of jurisprudence), etc.

slip of the tongue, because it does not occur religiously. I say: His statement "judicially and religiously" means together; it is a condition for the religious occurrence just as it is for the judicial occurrence, even if [judicially] without it. So understand.

While addressing with the word of divorce, there must be knowledge of its meaning or intent toward the purpose, as noted in the branches, etc.

judicially, such as if someone said it by mistake; in that case, it will not occur religiously. I say, the meaning of his "statement of judicially and religiously" is that both together—meaning this condition—is also for religious occurrence, just as it is a condition for judicial occurrence without religious intent. Understand this. (T)

However, the judge (Qadi) will not accept a claim of ignorance and will rule that divorce has occurred until the excuse is made clear through evident proofs.

1. Fath al-Qadir, Chapter on Pronouncing Divorce, Maktabah Nooriyah Rizviyah Sukkur 3/351
2. Nahr al-Faiq

यही अर्थ है इस कथन का कि दारुल इस्लाम में अज्ञानता कोई बहाना नहीं है। यहीं से स्पष्ट हुआ कि यदि हमारे देशों में कोई अत्यंत अज्ञानी व्यक्ति अपनी उस पत्नी से जिससे अभी संभोग नहीं हुआ है, कहे "तुझे तलाक़ है", तो वह स्त्री तुरंत निकाह से बाहर हो जाएगी और बिना इद्दत की आवश्यकता के उसे अधिकार होगा कि जिससे चाहे निकाह कर ले। उसका यह मसला न जानना कि जिस पत्नी से संभोग न हुआ हो वह किसी भी तलाक़ से बाइन (पूर्णतः अलग) हो जाती है, उसके लिए लाभदायक न होगा। यदि किसी अनपढ़ हिंदी या बंगाली को सिखाया जाए कि पत्नी से कहो: "तुरा अज़ ज़नी हशतुम" (मैंने तुझे पत्नी होने से निकाल दिया। त) या "तल्लाक़्तुकी फलहक़ी बि-अह्लिकी" (मैंने तुझे तलाक़ दे दी है, अब अपने घरवालों के पास चली जा। त) और वह न जानता हो कि ये शब्द तलाक़ के हैं, तो अल्लाह के नज़दीक तलाक़ नहीं होगी क्योंकि यह हुक्म की अज्ञानता भाषा की अज्ञानता से उपजी है। भाषा की अज्ञानता कोई कोताही नहीं है, क्योंकि फ़ारसी सीखना मूल रूप से अनिवार्य नहीं है और न ही अरबी सीखना हर व्यक्ति पर फ़र्ज़ है। इसी के बारे में इमाम मोहक़्क़िक़ अल-मुतलक़ ने 'फ़तह' में फ़रमाया:

तलाक़ के शब्द से संबोधित करते समय उसके अर्थ का ज्ञान होना या परिणाम की ओर इरादा होना आवश्यक है जैसा कि फ़ुरआ (कानूनी शाखाओं) में बताया गया है आदि।

तलाक़ के शब्द के साथ संबोधन करते हुए उसके अर्थ का ज्ञान या उद्देश्य की ओर रुझान होना चाहिए जैसा कि शाखाओं ने स्पष्ट किया है आदि।

(त)

(त) यानी तलाक़ के लिए दूसरे अर्थ में ज्ञान भी आवश्यक है। यदि ऐसी स्थिति हो जिसमें व्यक्ति अपनी अज्ञानता में क्षमा के योग्य हो, जैसे भाषा न जानने के कारण हुक्म का न जानना, तो धार्मिक रूप से (दियानतन) तलाक़ नहीं होगी। 'नहरुल फ़ाएक़' में है:

उनका उद्देश्य यह था कि यह तलाक़ के न्यायिक (क़ज़ान) और धार्मिक (दियानतन) रूप से प्रभावी होने की शर्त है। इससे वह स्थिति बाहर हो गई

उनका अर्थ यह है कि वह न्यायिक और धार्मिक रूप से तलाक़ होने के लिए शर्त है, तो इससे वह स्थिति बाहर है जिसमें न्यायिक और धार्मिक रूप

तलाक़ के शब्द से संबोधित करते समय उसके तलाक़ के शब्द के साथ संबोधन करते हुए अर्थ का ज्ञान होना या परिणाम की ओर इरादा होना आवश्यक है जैसा कि फ़ुरआ (कानूनी शाखाओं) में बताया गया है आदि।

जिसमें दोनों तरह से तलाक़ नहीं होती, जैसे कि कोई तलाक़ के मसलों को दोहरा रहा हो। और वह स्थिति भी बाहर हो गई जो केवल न्यायिक रूप से प्रभावी होती है, जैसे कि ज़ुबान फिसल जाने से, क्योंकि उसमें धार्मिक रूप से तलाक़ नहीं होती। मैं कहता हूँ: उनका "क़ज़ान और दियानतन" कहना यानी दोनों साथ हैं, अर्थात यह शर्त धार्मिक रूप से प्रभावी होने के लिए भी है जैसे कि न्यायिक रूप से बिना इसके प्रभावी होने के लिए शर्त है। सो समझो।

उसके अर्थ का ज्ञान या उद्देश्य की ओर रुझान होना चाहिए जैसा कि शाखाओं ने स्पष्ट किया है आदि।

से तलाक़ न हो, जैसे कोई व्यक्ति तलाक़ के मसलों को दोहराए। और वह स्थिति भी बाहर है जिसमें केवल न्यायिक रूप से तलाक़ हो, जैसे ग़लती से कह दिया हो, तो उसमें धार्मिक रूप से तलाक़ नहीं होगी। मैं कहता हूँ, उनके"क़ज़ान और दियानतन" वाले कथन का अर्थ यह है कि "क़ज़ान और दियानतन" दोनों एक साथ, यानी यह शर्त धार्मिक रूप से तलाक़ होने के लिए भी है जिस तरह न्यायिक रूप से बिना धार्मिक के शर्त है। इसे समझो। (त)

हालाँकि, काज़ी (न्यायाधीश) अज्ञानता के दावे को स्वीकार नहीं करेगा और तलाक़ का आदेश देगा जब तक कि स्पष्ट प्रमाणों से उसका बहाना साफ़ न हो जाए।

1. फ़तह अल-क़दीर, तलाक़ देने का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सक्कर 3/351
2. नहरुल फ़ाएक़

पृष्ठ 230 का 739

یہی معنی ہیں اس قول کے کہ دار الاسلام میں جہل عذر نہیں، اور یہیں سے واضح ہوا کہ اگر ہمارے بلاد میں کوئی جاہل سا جاہل اپنی غیر مدخولہ عورت سے کہے تجھ پر طلاق ہے عورت فوراً نکاح سے باہر ہوجائے گی اور بے حاجت عدت اسے اختیار ہوگا کہ جس سے چاہے نکاح کرلے اور اس کا یہ مسئلہ نہ جاننا کہ غیر مدخولہ مطلقاً ہر طلاق سے بائن ہوجاتی ہے اسے مفید نہ ہوگا، کسی ناخواندہ ہندی یا بنگالی کو اگر سکھائے کہ عورت سے کہہ: ترا از زنی ہشتم (تجھ کو زوجیت سے نکال دیا۔ ت) یا طلقتک فالحقی باھلک (میں نے تجھے طلاق دے دی ہے تو اپنے گھر والوں کے پاس چلی جا۔ ت) اور وہ نہ جانے کہ یہ کلمات طلاق کے ہیں عند اللہ طلاق نہ ہوگی کہ یہ جہل بالحکم جہل باللسان سے ناشی ہوا، اور جہل باللسان تقصیر نہیں، فارسی سیکھنا اصلاً اور عربی سیکھنا ہر شخص پر فرض نہیں، اسی سے امام محقق علی الاطلاق نے فتح میں فرمایا:

لابد من القصد بالخطاب بلفظ الطلاق عالماً بمعناہ او النسبۃ الی الغایۃ کما یفیدہ فروع الخ۔

لفظ طلاق سے خطاب کرتے ہوئے اس کے معنی کا علم یا غرض کی طرف نسبت ہو جیسا کہ فروع نے افادہ کیا الخ

(ت) یعنی علم بمعنی دوم طلاق بھی ضرور ہے، اگر وہ صورت پائی جائے کہ اس کے جہل میں معذور ہو جیسے جہل بالحکم بوجہ جہل باللسان تو دیانتہ طلاق نہ ہوگی، نہر الفائق میں ہے:

(ت)

اراد انہ شرط للوقوع قضاء و دیانۃ فخرج ما لا یقع بہ لا قضاء ولا

ان کی مراد یہ ہے کہ وہ قضاءً و دیانتاً وقوع طلاق کے لیے شرط ہے تو اس سے وہ صورت خارج ہے جس میں قضاءً و

لابد من القصد بالخطاب بلفظ الطلاق عالماً بمعناه او النسبة الی الغاية كما يفيده فروع الخ۔

لفظ طلاق سے خطاب کرتے ہوئے اس کے معنی کا علم یا غرض کی طرف نسبت ہو جیسا کہ فروع نے افادہ کیا الخ

ديانة كمن كرر مسائل الطلاق و ما يقع به قضاء فقط كمن سبق لسانه لانه لا يقع فيه ديانة اه قلت فقوله قضاء و ديانة اى معا اى هو شرط لان يقع ديانة ايضا كما يقع قضاء ولو بدونه فافهم۔

دیانتاً واقع نہ ہو، جیسے کوئی شخص مسائل طلاق کا تکرار کرے اور وہ صورت بھی خارج ہے جس میں صرف قضاءً واقع ہو، جیسے غلطی سے کہہ دیا ہو تو اس میں دیانتاً واقع نہ ہوگی، اھ قلت اس کے "قول قضاءً و دیانتاً" کا مطلب یہ ہے کہ "قضاءً و دیانتاً" دونوں اکٹھی یعنی یہ شرط دیانتاً وقوع کے لیے بھی ہے جس طرح قضاءً بغیر دیانتاً کے لیے شرط ہے اسے سمجھو۔ت)

البتہ قاضی دعویٰ جہل نہ مانے گا اور حکم طلاق دے گا جب تک دلائل واضحہ سے اس کا عذر روشن نہ ہوجائے۔

1. فتح القدیر باب ایقاع الطلاق مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/۳۵۱
2. نہر الفائق

And it is stated in al-Hidaya and al-Mukhtar:

Arabic	Urdu
If one pronounces it (i.e., divorce) without knowing its meaning, or out of negligence, or forgetfulness, or with mispronounced words, it takes effect legally (qada'an) only. This is in contrast to the joker and the player, for it takes effect both legally and religiously (qada'an wa diyanatan), because the Legislator has treated his joking as serious - Fath.	If the word 'divorce' is spoken in a state where its meaning is unknown, or through negligence, or forgetfulness, or mispronunciation, then only legal divorce (qada'an) will occur. On the other hand, if the word 'divorce' is spoken as a joke or play, divorce will occur both legally and religiously (qada'an wa diyanatan), because the Legislator (peace and blessings be upon him) has commanded that a joke in divorce be treated as intentional divorce. - Fath. (T)

From this explanation, it becomes clear that those elders who did not accept the validity (of the marriage) in the questioned case meant the religious ruling (diyanatan), and those Imams who accepted it meant the legal ruling (qada'an). Naturally, Imam Faqih al-Nafs has clearly stated:

Arabic	Urdu
If both (parties) do not know the meaning of the word and do not know that marriage is contracted with this word, then this encompasses a series of issues: divorce, manumission (ataq), tadbir (granting freedom after death), marriage, khula, waiving of rights, sale, and transfer of ownership. Thus, divorce, manumission, and tadbir are legally effective; Imam Muhammad mentioned this ruling in the book 'al-Asl' in the chapter on 'ataq' regarding 'tadbir'. Once the ruling for divorce and manumission is known, the same should apply to marriage, because knowledge of the	If both do not know the meaning of the word and also do not know that marriage is contracted with this word, then divorce, manumission, tadbir, khula, waiving of rights, sale, and transfer of ownership are all issues where divorce, manumission, and tadbir (making someone a Mudabbir) are included in the ruling. Imam Muhammad mentioned this ruling in the discussion of tadbir in the chapter on ataq in 'al-Asl'. When the ruling on divorce and manumission is known, then the ruling on marriage should also be the same because knowledge of the word's content is credible for intention and choice. So,

Arabic	Urdu
word's content is considered for the sake of intention (qasd). Therefore, in matters where seriousness and joking are equal, such knowledge is not a condition. This is in contrast to sale and similar matters (where said knowledge is a condition).	where the ruling on intention and joking is equal, this knowledge will not be a condition. Unlike matters such as sale (where the aforementioned knowledge is a condition). (T)

Yes, the scholars of Uzjand, in order to reject the deception of the people of fraud, stated absolute non-contracting, meaning they will not even give a legal (qada'i) ruling. It is mentioned in Bahr al-Ra'iq:

---

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Talaq, Mujtabai Press, Delhi, 1/71.
2. Fatawa Qadi Khan, Kitab al-Nikah, Naval Kishore, Lucknow, 1/151.

अल-हिदाया और अल-मुख्तार में फ़रमाया:

अरबी

यदि कोई इसका (यानी तलाक़ का) उच्चारण बिना अर्थ जाने, या लापरवाही, या भूलवश, या गलत उच्चारण के साथ करे, तो यह केवल कानूनी रूप से (क़ज़अन) प्रभावी होगा। इसके विपरीत मज़ाक करने वाले और खेल करने वाले के लिए यह कानूनी और धार्मिक (क़ज़अन व दियानतन) दोनों तरह से प्रभावी होगा, क्योंकि व्यवस्थापक ने उसके मज़ाक को गंभीरता माना है - फ़तह।

उर्दू

अर्थ मालूम न होने या ग़फ़लत या भूल कर, या ग़लत तलफ़्फ़ुज़ की सूरत में तलाक़ का लफ़्ज़ बोला तो सिर्फ़ क़ज़ा-ए-तलाक़ होगी, इसके बरख़िलाफ़ जबकि मज़ाक़ और खेल के तौर पर लफ़्ज़ तलाक़ बोले तो क़ज़अन व दियानतन दोनों तरह तलाक़ हो जाएगी क्योंकि शारह अलैहिस सलातो वस्सलाम ने तलाक़ में मज़ाक़ को क़स्दन तलाक़ का हुक्म दिया है। फ़तह। (त)

इस तक़रीर से रोशन हुआ कि जिन अकाबिर ने सूरत-ए-मस्तूरा में इनेक़ाद (अनुबंध) न माना वह हुक्म-ए-दियानत है और जिन अइम्मा ने माना वह हुक्म-ए-क़ज़ा है। लाजर्म इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स ने साफ़ फ़रमाया:

अरबी

यदि दोनों शब्द का अर्थ नहीं जानते और यह भी नहीं जानते कि इस शब्द से निकाह संपन्न होता है, तो यह तलाक़, अताक़ (मुक्ति), तदबीर (मृत्यु उपरांत मुक्ति), निकाह, खुला, अधिकारों से मुक्ति, बिक्री और स्वामित्व हस्तांतरण के मुद्दों का एक समूह है। इस प्रकार तलाक़, अताक़ और तदबीर क़ानूनी रूप से प्रभावी हैं; इमाम मुहम्मद ने इस हुक्म का उल्लेख 'अल-अस्ल' के अध्याय 'अताक़' में 'तदबीर' की चर्चा में किया है। जब तलाक़ और अताक़ का हुक्म मालूम हो गया, तो निकाह का भी यही हुक्म होना चाहिए क्योंकि शब्द की सामग्री का

उर्दू

अगर दोनों लफ़्ज़ का माअनी नहीं जानते और यह भी मालूम नहीं कि इस लफ़्ज़ से निकाह मुनअक़िद हो जाता है तो तलाक़, अताक़, तदबीर, खुला, हुक़ूक़ से बरी करना, बयअ और तमील्क ये तमाम मसाइल हैं इनमें से तलाक़, अताक़ और तदबीर (मुदब्बर बनाना) हुक्म में शामिल हैं, इमाम मुहम्मद ने इस हुक्म को अस्ल के बाब अताक़ की बहस तदबीर में ज़िक्र किया है और जब तलाक़ व अताक़ का हुक्म मालूम हो गया तो निकाह का भी यही हुक्म होना चाहिए क्योंकि लफ़्ज़ के मज़मून का इल्म क़स्द

अरबी

ज्ञान इरादे (क़स्द) के लिए विश्वसनीय माना जाता है। इसलिए, जिन मामलों में गंभीरता और मज़ाक समान हैं, वहाँ ऐसा ज्ञान शर्त नहीं है। बिक्री और इसी तरह के मामलों के विपरीत (जहाँ उक्त ज्ञान शर्त है)।

उर्दू

व इख़्तियार के लिए मोतबर होता है तो जहाँ क़स्द व मज़ाक़ का हुक्म मसावी हो वहाँ ये इल्म शर्त नहीं होगा। बरख़िलाफ़ बयअ जैसे उमूर के (वहाँ इल्म-ए-मज़कूर शर्त है)। (त)

हाँ मशाइख़-ए-औजंद ने अहल-ए-तल्बीस का मक्र रद्द करने को मुतलक़न अदम-ए-इनेक़ाद फ़रमाया यानी क़ज़ा भी हुक्म न देंगे। बहर-उर-राइक़ में है:

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार किताब-उत-तलाक़ मतबा मुज्तबाई दिल्ली १/७१
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ किताब-उन-निकाह नवल किशोर लखनऊ १/१५१

पृष्ठ ७३९ में से २३१

والہدایۃ اور مختار میں فرمایا:

عربی	اردو
تلفظ به (اي بالطلاق) غير عالم بمعناه او غافلا او ساهيا او بالفاظ مصحفة يقع قضاء فقط بخلاف الهازل واللاعب فانه يقع قضاء وديانة لان الشارع جعل هزله جدا- فتح-	معنی معلوم نہ ہونے یا غفلت یا بھول کر، یا غلط تلفظ کی صورت میں طلاق کا لفظ بولا تو صرف قضاء طلاق ہوگی، اس کے بر خلاف جبکہ مذاق اور کھیل کے طور پر لفظ طلاق بولے تو قضاءً وديانۃً دونوں طرح طلاق ہوجائے گی کیونکہ شارع علیہ الصلوٰۃ والسلام نے طلاق میں مذاق کو قصداً طلاق کا حکم دیا ہے۔ فتح ۔ (ت)

اس تقریر سے مستنیر ہوا کہ جن اکابر نے صورت مستولہ میں انعقاد نہ مانا وہ حکم دیانت ہے اور جن ائمہ نے مانا وہ حکم قضاء ہے۔ لاجرم امام فقیہ النفس نے صاف فرمایا :

عربی	اردو
ان لم يعرفا معنى اللفظ ولم يعلما ان هذا لفظ ينعقد به النكاح فهذه جملة مسائل الطلاق والعتاق والتدبير والنكاح والخلع والابراء عن الحقوق و البيع والتمليك فالطلاق والعتاق والتدبير واقع في الحكم ذكره فی عتاق الاصل فی باب التدبير واذا	اگر دونوں لفظ کا معنی نہیں جانتے اور یہ بھی معلوم نہیں کہ اس لفظ سے نکاح منعقد ہوجاتا ہے تو طلاق، عتاق، تدبیر، خلع، حقوق سے بری کرنا، بیع اور تملیک یہ تمام مسائل ہیں ان میں سے طلاق، عتاق اور تدبیر (مدبر بنانا) حکم میں شامل ہیں، امام محمد نے اس حکم کو اصل کے باب عتاق کی بحث تدبیر میں ذکر کیا ہے

عربی	اردو
عرف الجواب في الطلاق والعتاق ينبغی ان يكون النكاح كذلك لان العلم بمضمون اللفظ انما يعتبر لاجل القصد فلا يشترط فيما يستوی فيه الجد والهزل بخلاف البيع ونحوذلك ۔	اور جب طلاق وعتاق کا حکم معلوم ہوگیا تو نکاح کا بھی یہی حکم ہونا چاہئے کیونکہ لفظ کے مضمون کا علم قصد و اختیار کے لئے معتبر ہوتا ہے تو جہاں قصد و مذاق کا حکم مساوی ہو وہاں یہ علم شرط نہیں ہوگا۔ بخلاف بیع جیسے امور کے (وہاں علم مذکور شرط ہے) (ت)

ہاں مشائخ اوز جند نے اہل تلبیس کا مکر رد کرنے کو مطلقاً عدم انعقاد فرمایا یعنی قضاء بھی حکم نہ دیں گے۔ بحر الرائق میں ہے:

---

1. در مختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۱
2. فتاوی قاضی خاں کتاب النکاح نولکشور لکھنو ۱/۱۵۱

[Arabic Column]: If she prompted him with the word of divorce and he uttered it without knowing its meaning, it occurs judicially (qada'an) but not religiously (diyanatan). The masters of Awzjand said: It does not occur at all, to protect people's properties from loss through deception, as mentioned in Al-Bada'i, and likewise in Al-Bazzaziyah. - 1 [Urdu Column]: If the wife made her husband say the words of divorce while the husband did not know their meaning, then by saying these words, divorce will occur judicially (qada'an), but it will not occur religiously (diyanatan). The scholars of Awzjand stated that in this case, divorce will not occur at all so that people's properties can be protected from loss through deception, as it is stated in Bada'i and similarly in Bazzaziyah. (T)

In Tatar Khaniya, then in Munha it is stated:

[Arabic Column]: It was narrated from Imam Qadi Mahmud al-Awzjandi regarding a woman who prompted her husband with divorce and he divorced her while not knowing its meaning. He said: This issue occurred in Awzjand, so I consulted my companions about it, and our opinions agreed that a fatwa for the occurrence of divorce should not be given, to protect people's properties from being invalidated through a type of deception. And if he prompted her to seek khul' from him in exchange for her dower and maintenance during the waiting period, and she sought khul', it is not valid, and fatwa is given based on this. - 2 [Urdu Column]: It is narrated about Imam Qadi Mahmud al-Awzjandi that he said regarding the situation where a wife taught her husband the words of divorce while the husband did not know their meaning, and the husband pronounced the divorce: This issue arose in Awzjand, so I consulted with my companions regarding it, and our unanimous opinion was that in this situation, a fatwa for the occurrence of divorce will not be given so that people's properties can be saved from loss through deception. And if the husband taught the wife to seek khul' in exchange for her dower and maintenance for the iddah period, and the woman uttered these words of khul', then the khul' would not be valid. This is what the fatwa is based on. (T)

In Wajeez of Imam Kardari it is stated:

[Arabic Column]: A woman was prompted in Arabic: 'I have married myself to so-and-so' and she does not know that, and so-and-so said: 'I accepted' while the witnesses know or do not know; the marriage is valid. It is said in Al-Nisab and the fatwa is on this, and likewise for divorce. [Urdu Column]: A woman was prompted to say in

Arabic: 'Zawwajtu nafsi min fulan' (I have married myself to such-and-such person) while the woman did not know the meaning of this sentence. After this, that person replied in response...

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Talaq, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/58.
2. Minhat al-Khaliq, Commentary on Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Talaq, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/258.

[अरबी कॉलम]: यदि उसने उसे तलाक़ के शब्द सिखाए और उसने उसका अर्थ जाने बिना उसे बोल दिया, तो यह न्यायिक रूप से (क़ज़ाअन) होगा, धार्मिक रूप से (दियानतन) नहीं। और औज़जंद के आचार्यों ने कहा: धोखे से लोगों की संपत्ति को नष्ट होने से बचाने के लिए यह बिल्कुल भी घटित नहीं होगा, जैसा कि अल-बदाइ' में है और वैसा ही अल-बज़ाज़िया में है। - 1 [उर्दू कॉलम]: अगर बीवी ने खावंद को तलाक़ के लफ़्ज़ कहलाए जबकि खावंद को उन का मानी मालूम नहीं था तो ये लफ़्ज़ कहने से तलाक़ क़ज़ाअन वाक़े होगी दियानतन नहीं होगी, मशाईख़ औज़जंद ने फ़रमाया कि इस सूरत में बिल्कुल तलाक़ न होगी ताकि धोके से लोगों के इमलाक को ज़ियाअ से बचाया जा सके जैसा कि बदाइअ में है, और यूँ ही बज़ाज़िया में है। (त)

ततार खानिया फिर मिन्हा में है:

[अरबी कॉलम]: इमाम क़ाज़ी महमूद अल-औज़जंदी से एक ऐसी महिला के बारे में वर्णित है जिसने अपने पति को तलाक़ सिखाया और उसने उसे यह जाने बिना तलाक़ दे दी। उन्होंने कहा: यह समस्या औज़जंद में हुई, इसलिए मैंने इस बारे में अपने साथियों से परामर्श किया और हमारी राय इस बात पर सहमत हुई कि एक प्रकार के धोखे के माध्यम से लोगों की संपत्ति को अमान्य होने से बचाने के लिए तलाक़ होने का फ़तवा नहीं दिया जाना चाहिए। और यदि पति ने पत्नी को उसके महर और इद्दत के ख़र्च के बदले में ख़ुला' माँगना सिखाया और उसने ख़ुला' ले लिया, तो यह मान्य नहीं है और इसी पर फ़तवा दिया जाता है। - 2 [उर्दू कॉलम]: इमाम क़ाज़ी महमूद औज़जंदी के बारे में मरवी है कि उन्होंने इस सूरत के बारे में कि बीवी ने खावंद को तलाक़ सिखाई जबकि खावंद को उस का मानी मालूम न था, खावंद ने तलाक़ कह दी फ़रमाया कि ये मसला औज़जंद में पेश आया तो मैं ने अपने असहाब से इस के मुतअल्लिक़ मशवरा किया तो हमारी मुत्तफ़िक़ा राये ये क़रार पाई कि इस सूरत में तलाक़ हो जाने का फ़तवा नहीं दिया जाएगा ताकि धोके के ज़रिए लोगों के इमलाक को ज़ियाअ से बचाया जा सके और अगर खावंद ने बीवी को ख़ुला' बे-इवज़ महर नफ़क़ा इद्दत सिखाया, तो औरत ने ख़ुला' के ये अल्फ़ाज़ कह दिए तो ख़ुला' सही न होगा, इसी पर फ़तवा है। (त)

वजीज़ इमाम करदरी में है:

[अरबी कॉलम]: एक महिला को अरबी में सिखाया गया: 'मैंने अपना विवाह फ़लाँ व्यक्ति से कर लिया है' और वह उसे नहीं जानती, और फ़लाँ ने कहा: 'मैंने स्वीकार किया' और गवाह जानते हैं या नहीं

जानते; निकाह सही है। अल-निसाब में कहा गया है और इसी पर फ़तवा है, और तलाक़ का मामला भी ऐसा ही है। [उर्दू कॉलम]: किसी औरत को अरबी में कहलाया गया "ज़व्वजतु नफ़्सी मिन फ़ुलान" (मैंने अपने आप को फ़लाँ शख़्स से ब्याह दिया) जबकि औरत को इस इबारत का मानी मालूम न था इस के बाद उस फ़लाँ शख़्स ने जवाब में...

1. बहरुल राइक़, किताबुत्तलाक़, एच एम सईद कंपनी कराची, ३/५८
2. मिन्हतुल ख़ालिक़, हाशिया अला बहरुल राइक़, किताबुत्तलाक़, एच एम सईद कंपनी कराची, ३/२५८

पृष्ठ 232/739

لو لقنته لفظ الطلاق فتلفظ به غیر عالم بمعناه وقع قضاء لادیانة وقال مشائخ اوزجندی لایقع اصلا صیانة لاملاك الناس عن الضیاع بالتلبیس کما فی البدائع کذا فی البزازیة - 1 | اگر بیوی نے خاوند کو طلاق کے لفظ کہلائے جبکہ خاوند کو ان کا معنٰی معلوم نہیں تھا تو یہ لفظ کہنے سے طلاق قضاءً واقع ہوگی دیانۃً نہیں ہوگی، مشائخ اوزجند نے فرمایا کہ اس صورت میں بالکل طلاق نہ ہوگی تاکہ دھوکے سے لوگوں کے املاک کو ضیاع سے بچایا جاسکے، جیسا کہ بدائع میں ہے، اور یوں ہی بزازیہ میں ہے۔ (ت)

تاتار خانیہ پھر منحۃ میں ہے :

حکی عن القاضی الامام محمود الاوزجندی عمن لقنته امرأة طلاقا فطلقها وهو لایعلم بذلك قال وقعت هذه المسألة باوزجند فشاورت اصحابی فی ذلك واتفقت اراؤنا انه لایفتی بوقوع الطلاق صیانة لاملاك الناس عن الابطال بنوع تلبیس ولو لقنها ان تخلع نفسها منه بمهرها ونفقة عدتها واختلعت لایصح و به یفتی - 2 | امام قاضی محمود اوزجندی کے بارے میں مروی ہے کہ انھوں نے اس صورت کے بارے میں کہ بیوی نے خاوند کو طلاق سکھائی جبکہ خاوند کو اس کا معنٰی معلوم نہ تھا، خاوند نے طلاق کہہ دی فرمایا کہ یہ مسئلہ اوزجند میں پیش آیا تو میں نے اپنے اصحاب سے اس کے متعلق مشورہ کیا تو ہماری متفقہ رائے یہ قرار پائی کہ اس صورت میں طلاق ہو جانے کا فتوٰی نہیں دیا جائیگا تاکہ دھوکے کے ذریعے لوگوں کے املاک کو ضیاع سے بچایا جاسکے ، اور اگر خاوند نے بیوی کو خلع بعوض مہر نفقہ عدت سکھایا، تو عورت نے خلع کے یہ الفاظ کہہ دئے تو خلع صحیح نہ ہوگا، اسی پر فتوٰی ہے۔ (ت)

وجیز امام کر دری میں ہے :

لقنت المرأة بالعربية زوجت نفسی من فلان ولا تعرف ذلك وقال فلان قبلت والشهود يعلمون اولايعلمون صح النكاح قال فی النصاب وعليه الفتوی وكذا الطلاق | کسی عورت کو عربی میں کہلایا گیا " زوجت نفسی من فلان " (میں نے اپنے آپ کو فلاں شخص سے بیاہ دیا) جبکہ عورت کو اس عبارت کا معنیٰ معلوم نہ تھا اس کے بعد اس فلاں شخص نے جواب میں

1 بحر الرائق كتاب الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۵۸/۳ 2 منحة الخالق حاشية على البحر الرائق كتاب الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۵۸/۳

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Imam Shams al-Islam al-Ozgandi said: [It is null] because he is like a parrot, and reliance will soon be placed on this. (Explanation: If he said "I accepted" (Qabiltu), it will be valid whether the witnesses know the meaning of the phrase or not. It is stated in Al-Nisab that the fatwa is on this, and the same ruling applies to the issue of divorce. Imam Shams al-Islam al-Ozgandi said: Divorce will not occur because in the mentioned case, the man is like a parrot, and it will soon be mentioned that this is what is relied upon. (T))

It is also stated in it: He was taught divorce in Arabic while he did not know [its meaning]. Faqih Abu al-Layth said: Religiously (diyantan), divorce does not occur. The scholars of Ozgand said: It does not occur at all, to protect people's properties from being nullified through deception. Similarly, if a woman is taught Khula (divorce initiated by wife) and she does not know [its meaning], it was said: It is valid. But the chosen view is what we mentioned. (Summarized) (Explanation: If someone taught a husband divorce in Arabic while he did not know its meaning or purpose, then according to the saying of Faqih Abu al-Layth, religiously divorce will not occur. The scholars of Ozgand said divorce will not occur at all, so that people's property can be saved from being wasted through deceit. Likewise, if a woman is taught Khula and she doesn't know what it means, some said it is valid while the preferred view is what we mentioned. Summarized (T))

Regarding the understanding of the witnesses in marriage, the research and reconciliation is that understanding the meaning in the first sense is not necessary, but understanding in the second sense is mandatory both religiously and legally (diyantan and qadaan). That is, they should know that a marriage is taking place and these are words of offer and acceptance, even if they don't know the specific interpretation of the words. It is stated in Durr al-Mukhtar: A condition is the presence of two witnesses who understand that it is a marriage according to the school [of law]. (Bahr) (Explanation: The presence of two witnesses who understand it is a marriage is a condition; this is the school of law. - Bahr (T))

It is stated in Radd al-Muhtar: He said in al-Bahr: It was stated decisively in al-Tabyin that if they performed the contract in the presence of two Indians who did not understand their speech, it would not be valid. (Explanation: It is in Bahr that it is decisively stated in Tabyin that if the parties conducted the marriage in Arabic in the

presence of two Indian witnesses who could not understand their speech, then the marriage would not be valid.)

1. Fatawa Bazzaziya, margin of Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 109/4
2. Fatawa Bazzaziya, margin of Fatawa Hindiyya, Masa'il al-Iqa' bila qasd etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 179/4
3. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Delhi, 186/1

फ़तावा रज़विया, खंड 11

इमाम शम्स अल-इस्लाम अल-औज़गंदी ने कहा: [यह शून्य है] क्योंकि वह एक तोते की तरह है, और जल्द ही इस पर भरोसा किया जाएगा। (व्याख्या: "कबिलतु" (मैंने स्वीकार किया) कहा तो सही होगा चाहे गवाहों को इबारत का अर्थ मालूम हो या न हो, निसाब में फ़रमाया कि इसी पर फ़तवा है और तलाक़ के मामले का भी यही हुक्म है, और इमाम शम्स अल-इस्लाम अल-औज़गंदी ने फ़रमाया: तलाक़ नहीं होगी क्योंकि उल्लेखित सूरत में मर्द, तोते के समान है और जल्द ही आएगा कि इस पर भरोसा है। (त))

इसी में है: किसी ने उसे अरबी में तलाक़ सिखाया जबकि वह (उसका अर्थ) नहीं जानता था। फ़क़ीह अबू अल-लैथ ने कहा: धार्मिक रूप से (दियानतन) तलाक़ नहीं होगी। और औज़गंद के मशायख़ (विद्वानों) ने फ़रमाया: धोखे से लोगों की संपत्ति को बर्बाद होने से बचाने के लिए तलाक़ बिल्कुल नहीं होगी। और इसी तरह अगर औरत को ख़ुला सिखाया गया और उसे पता नहीं कि इसका अर्थ क्या है। कुछ ने कहा: यह वैध है। और चुनिंदा वही है जो हमने ज़िक्र किया। (सारांश) (व्याख्या: पति को किसी ने अरबी भाषा में तलाक़ सिखाई जबकि वह उसका अर्थ और उद्देश्य नहीं जानता था, तो फ़क़ीह अबुल लैथ के कथन के अनुसार धार्मिक रूप से तलाक़ नहीं होगी, और औज़गंद के विद्वानों ने फ़रमाया कि तलाक़ बिल्कुल नहीं होगी ताकि धोखे से लोगों की संपत्ति को बर्बाद होने से बचाया जा सके और इसी तरह अगर औरत को ख़ुला सिखाया गया और उसे मालूम नहीं कि अर्थ क्या है, तो कुछ ने कहा कि ख़ुला सही होगा जबकि पसंदीदा वही है जिसका हमने ज़िक्र किया है। सारांश (त))

विवाह में गवाहों के समझने की बात है, इसमें शोध और समन्वय यह है कि पहले अर्थ को समझना अनिवार्य नहीं है, दूसरे अर्थ को समझना धार्मिक और कानूनी (दियानतन और क़ज़ान) दोनों तरह से अनिवार्य है। यानी वे इतना जानते हों कि यह विवाह हो रहा है, ये ईजाब और क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के शब्द हैं, भले ही वे शब्दों की विस्तृत व्याख्या न जानते हों और न ही उससे परिचित हों। दुर्र-ए-मुख्तार में है: मज़हब के अनुसार शर्त दो ऐसे गवाहों की उपस्थिति है जो समझते हों कि यह निकाह है। (बहर) (व्याख्या: निकाह समझने वाले दो गवाहों की हाज़िरी शर्त है यह मज़हब है। - बहर (त))

रद्द अल-मुह्तार में है: बहर में कहा: तब्यीन में यह निश्चित रूप से कहा गया है कि यदि उन्होंने दो भारतीयों की उपस्थिति में निकाह किया जो उनकी बात नहीं समझ पाए, तो यह वैध नहीं होगा।

(व्याख्या: बहर में है कि तब्यीन में इस पर पक्का फैसला किया गया है कि अगर दो भारतीय गवाहों की मौजूदगी में अरबी में निकाह फ़रीक़ैन (दोनों पक्षों) ने किया जिनकी बातचीत को वे न समझ सकें तो निकाह जायज़ न होगा।)

1. फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, किताब अल-निकाह, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 109/4
2. फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, मसाइल अल-ईक़ा बिला क़स्द आदि, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 179/4
3. दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-निकाह, मुजतबाई दिल्ली, 186/1

فتاوی رضویہ، جلد یازدھم

وقال الامام شمس الاسلام الاوزجندی لالہ کالببغاء وسیاتی علیہ التعویل۔ "قبلت" (میں نے قبول کیا) کہا تو صحیح ہوگا خواہ گواہوں کو عبارت کا معنی معلوم ہو یا نہ ہو، نصاب میں فرمایا کہ اسی پر فتوی ہے اور مسئلہ طلاق کا بھی یہی حکم ہے، اور امام شمس الاسلام اوزجندی نے فرمایا: طلاق نہ ہوگی کیونکہ مذکورہ صورت میں مرد، طوطے کے مانند ہے اور عنقریب آئے گا کہ اس پر اعتماد ہے۔ (ت)

اسی میں ہے: لقنہ الطلاق بالعربیۃ وھو لا یعلم قال الفقیہ ابو اللیث لا یقع دیانۃ وقال مشایخ اوزجند لا یقع اصلا صیانۃ لاملاك الناس عن الابطال بالتلبیس وکذا لو لقنت الخلع وھی لاتعلم وقیل یصح والمختار ماذکرنا . ملتقطا . خاوند کو کسی نے عربی زبان میں طلاق سکھائی جبکہ وہ اس کا معنی اور مقصد نہ جانتا تھا اس کے طلاق کہنے پر فقیہ ابواللیث کے قول کے مطابق دیانۃً طلاق نہ ہوگی، اور مشائخ اوزجند نے فرمایا طلاق بالکل نہ ہوگی تاکہ دھوکے سے لوگوں کے اموال کو ضیاع سے بچایا جاسکے، اور یوں ہی اگر عورت کو خلع سکھایا گیا اور اس کو معلوم نہیں کہ معنی کیا ہے، تو بعض نے کہا کہ خلع صحیح ہوگا جبکہ مختار وہی ہے جو ہم نے ذکر کیا ہے اھ ملتقطا (ت)

رہا نکاح میں گواہوں کا سمجھنا، اس میں تحقیق و توفیق یہ ہے کہ معنی معنی اول کا سمجھنا ضرور نہیں بمعنی دوم کا سمجھنا دیانۃً وقضاءً ہر طرح لازم ہے یعنی اتنا جانتے ہوں کہ یہ نکاح ہو رہا ہے یہ الفاظ ایجاب و قبول ہیں اگرچہ تفسیر الفاظ نہ جانیں نہ اس سے آگاہ ہوں، در مختار میں ہے : شرط حضور شاھدین فاھمین انہ نکاح علی المذھب . بحر نکاح سمجھنے والے دو گواہوں کی حاضری شرط ہے یہ مذہب ہے۔ بحر۔ (ت)

رد المحتار میں ہے : قال فی البحر جزم في التبيين بانه لو عقدا بحضرة هنديين لم يفهما كلامهما لم يجزو بحر میں ہے کہ تبیین میں اس پر جزم کیا گیا ہے کہ اگر دو ہندی گواہوں کی حاضری میں عربی میں نکاح فریقین نے کیا جن کے کلام کو وہ نہ سمجھ سکے تو نکاح جائز نہ ہوگا۔

1. فتاوی بزازیه علی هامش فتاوی هندیه کتاب النکاح نورانی کتب خانه پشاور ۱۰۹/۴
2. فتاوی بزازیه علی هامش فتاوی هندیه مسائل الایقاع بلا قصد الخ نورانی کتب خانه پشاور ۱۷۹/۴
3. درمختار کتاب النکاح مجتبائی دہلی ۱۸۶/۱

[Table Content - Left Column (Arabic)] Validated in Al-Jawhara, and it is mentioned in Al-Zahiriyya that the apparent view is that it is a condition for the witnesses to understand that it is a marriage. This view was chosen in Al-Khaniya, making it the [dominant] position in the school of thought. However, in Al-Khulasa, it is mentioned that if both parties know Arabic well and perform the contract in it, but the witnesses do not know it [the language], the sounder view is that it is valid. Al-Rahmati reconciled the views by interpreting the requirement of understanding as understanding that it is a marriage contract, while the view of its absence [the condition] pertains to the lack of requirement to understand the literal meanings of the words [of offer and acceptance] after having understood that the intended matter is a marriage contract. ^1 Ah.

I say [the author]: It had occurred to this weak servant before seeing this, and no doubt it is very good. It is in the 'Wajeez' of Imam al-Kardari: A man and a woman married in Arabic, and they both understood it, but the witnesses did not. It is mentioned in Al-Muhit that the sounder view is that it is valid. And it is narrated from [Imam] Muhammad: They married in the presence of two Indians who were unable to express it [the language]; it is not permissible. So this is textual evidence that it is also not permissible in the first case. Ah ^2.

[Table Content - Right Column (Urdu)] It was stated in Al-Jawhara that this ruling is correct, and in Al-Zahiriyya, it is said that the apparent view is that for witnesses to understand that a marriage is taking place is a condition. In Al-Khaniya, this was declared the preferred view, so this is the [main] school of thought. But in Al-Khulasa, it is mentioned that if the parties to the marriage know Arabic well and they conduct the marriage in Arabic, which the witnesses did not understand, the soundest view is that the marriage will be valid. And Allama Al-Rahmati (may Allah have mercy on him) reconciled both views by saying that where understanding was made a condition for witnesses, it means they should understand that a marriage is taking place. And where understanding was not made a condition, it means that understanding the specific meanings of the words of offer and acceptance is not a condition, provided the understanding of it being a marriage has been achieved. Ah.

I say [the author]: It became clear to this weak servant that this reconciliation is very good, whereas I had not seen this yet. And in Wajeez-ul-Kardari, it is mentioned that a man and a woman married in Arabic; they both knew Arabic, but the witnesses did

not. It is stated in Al-Muhit that the sounder view is that the marriage will be valid. And it is narrated from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) that the parties married in Arabic in the presence of two Indian gentlemen, while these gentlemen had no ability to express it [in Arabic]; then the marriage would not be valid. This narration from Imam Ahmad is textual proof that without even understanding that a marriage contract is occurring, the marriage will not take place. Ah.

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Book of Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/247 2. Fatawa Bazzaziya, margin of Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter Five, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/18

[तालिका सामग्री - बायां कॉलम (अरबी)] अल-जौहरा में इसे सही ठहराया गया है, और अज़-ज़हीरिया में उल्लेख है कि स्पष्ट राय यह है कि गवाहों के लिए यह समझना शर्त है कि यह निकाह है। अल-खनिया में इसे चुना गया था, जिससे यह इस संप्रदाय का मुख्य मत बन गया। हालाँकि, अल-खुलासा में उल्लेख है कि यदि निकाह करने वाले दोनों पक्ष अरबी अच्छी तरह जानते हैं और उन्होंने इसमें निकाह का अनुबंध किया लेकिन गवाह इसे नहीं जानते, तो अधिक सही विचार यह है कि निकाह हो जाता है। अर-रहमतुल्ला ने दोनों विचारों के बीच तालमेल बिठाते हुए कहा कि जहाँ शर्त की बात है उसका अर्थ यह है कि गवाहों को यह समझना चाहिए कि यह निकाह का अनुबंध है, और जहाँ शर्त नहीं है उसका अर्थ यह है कि शब्दों के शाब्दिक अर्थों को समझना शर्त नहीं है बशर्ते यह समझ लिया जाए कि निकाह हो रहा है। ^1 अह।

मैंने कहा [लेखक]: इस कमज़ोर सेवक के मन में इसे देखने से पहले ही यह बात आई थी, और निःसंदेह यह बहुत अच्छा है। इमाम अल-करदरी की 'वजीज़' में है: एक पुरुष और स्त्री ने अरबी में निकाह किया, और वे दोनों इसे समझते थे, लेकिन गवाह नहीं। मुहीत में कहा गया है कि अधिक सही यह है कि निकाह हो जाएगा। और इमाम मुहम्मद से वर्णित है: उन्होंने दो भारतीयों की उपस्थिति में निकाह किया जो इसे व्यक्त करने में असमर्थ थे; यह जायज़ नहीं है। तो यह इस बात का प्रमाण है कि पहले मामले में भी यह जायज़ नहीं है। अह ^2।

[तालिका सामग्री - दायां कॉलम (उर्दू)] जौहरा में इस हुक्म को सही कहा गया है, और ज़हीरिया में है कि ज़ाहिर यही है कि निकाह होना गवाहों को समझना शर्त है। और खानिया में इसको मुख्तार कहा तो यही मज़हब है लेकिन खुलासा में है कि अगर निकाह के फ़रीक़ैन (दोनों पक्ष) अरबी अच्छी तरह जानते हैं और उन्होंने निकाह अरबी में किया जिसे गवाहों ने न समझा तो असह (अधिक सही) यह है कि निकाह हो जाएगा। और अल्लामा रहमती रहमतुल्ला अलैहि ने दोनों अक़्वाल (कथनों) में यह मुवाफ़क़त (तालमेल) की कि जहाँ गवाहों के फ़हम (समझ) को शर्त कहा गया है उससे मुराद यह है कि वे निकाह होने को समझ लें और जहाँ फ़हम को शर्त क़रार नहीं दिया गया उससे मुराद यह है कि क़ुबूल व ईजाब के अल्फ़ाज़ के मानी समझना शर्त नहीं जबकि निकाह होने का फ़हम हासिल हो चुका हो। अह।

मैंने कहा [लेखक]: इस बंदा-ए-ज़ईफ़ (कमज़ोर सेवक) पर वाज़ेह (स्पष्ट) हुआ कि यह ततबीक़ (तालमेल) बहुत अच्छी है जबकि अभी मैंने यह नहीं देखा था। और वजीज़-ए-करदरी में है कि मर्द व औरत ने अरबी में निकाह किया, वे दोनों अरबी जानते थे और गवाह नहीं जानते थे, मुहीत में फ़रमाया कि असह यह है कि निकाह हो जाएगा, और इमाम मुहम्मद रहमतुल्ला तआला अलैहि से मरवी (वर्णित) है कि फ़रीक़ैन ने अरबी में दो हिंदी हज़रात की हाज़िरी में निकाह किया जबकि ये हज़रात इसकी ताबीर पर कुदरत नहीं रखते तो निकाह जाइज़ न होगा, इमाम अहमद से मरवी यह इस बात पर नस (स्पष्ट प्रमाण) है कि अक़्द-ए-निकाह होना समझने से भी निकाह न होगा। अह।

[पादलेख] 1. रद अल-मुह्तार, किताबुन निकाह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/247
2. फ़तावा बज़ाज़िया, हाशिए पर फ़तावा हिंदिया, किताबुन निकाह, पांचवा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/18

صححه في الجوهرة وقال في الظهيرية والظاهر انه يشترط فهم انه نكاح واختاره في الخانية فكان هو المذهب لكن في الخلاصة لو يحسنان العربية فعقد ابها والشهود لا يعرفونها الاصح انه ينعقد ووفق الرحمتی بحمل الاشتراط علی اشتراط فهم انه عقد نكاح والقول بعدمه علی عدم اشتراط فهم معانی الالفاظ بعد فهم ان المراد عقد نكاح ۱۸ اهـ

قلت قد كان سنح للعبد الضعيف قبل ان اره لاشك انه حسن جد اوفی وجيز الامام الكردری تزوجها بالعربي وهما يعقلان لا الشهود قال في المحيط الاصح انه ينعقد وعن محمد تزوجها بحضرة هنديين ولم يمكنهما ان يعبرا لم يجز فهذا نص علی انه لا يجوز فی الاول ايضا اهـ ۲۸.

جوہرہ میں اس حکم کو صحیح کہا ہے، اور ظہیر یہ میں ہے کہ ظاہر یہی ہے کہ نکاح ہونا گواہوں کو سمجھنا شرط ہے۔ اور خانیہ میں اس کو مختار کہا تو یہی مذہب ہے لیکن خلاصہ میں ہے کہ اگر نکاح کے فریقین عربی اچھی طرح جانتے ہیں اور انھوں نے نکاح عربی میں کیا جس کو گواہوں نے نہ سمجھا تو اصح یہ ہے کہ نکاح ہو جائیگا۔ اور علامہ رحمتی نے دونوں اقوال میں یہ موافقت کی کہ جہاں گواہوں کے فہم کو شرط کہا گیا ہے اس سے مراد یہ ہے کہ نکاح ہونے کو سمجھ لیں اور جہاں فہم کو شرط قرار نہیں دیا گیا اس سے مراد یہ ہے کہ قبول وایجاب کے الفاظ کے معانی سمجھنا شرط نہیں جبکہ نکاح ہونے کا فہم حاصل ہو چکا ہو اهـ

قلت اس عبد ضعیف پر واضح ہوا کہ یہ تطبیق بہت اچھی ہے جبکہ ابھی میں نے یہ نہیں دیکھا تھا اور وجیز کردری میں ہے کہ مرد و عورت نے عربی میں نکاح کیا ، وہ دونوں عربی جانتے تھے اور گواہ نہ جانتے تھے محیط میں فرمایا کہ اصح یہ ہے کہ نکاح ہو جائے گا ، اور امام محمد

رحمۃ اللہ تعالیٰ سے مروی ہے کہ فریقین نے عربی میں دو ہندی حضرات کی حاضری میں نکاح کیا جبکہ یہ حضرات اس کی تعبیر پر قدرت نہیں رکھتے تو نکاح جائز نہ ہوگا ، امام احمد سے مروی یہ اس بات پر نص ہے کہ عقد نکاح ہونا سمجھنے سے بھی نکاح نہ ہوگا اھـ

1 رد المحتار کتاب النکاح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۴۷ 2 فتاوی بزازیہ علی ہامش فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الفصل الخامس نورانی کتب خانہ پشاور ۴/۱۸

Fatawa Razawiya Volume Eleven

اقول (I say): In the statement of Imam Muhammad (may Allah Almighty be pleased with him) that "the witnesses could not express," there is an indication towards what we have mentioned. This is because witnesses only need expression when they are required to give testimony. At that time, it is not necessary for the witnesses to repeat the words of the parties to the marriage, nor to express synonyms or translations of those words. Instead, if they state that such-and-such man married such-and-such woman, it is sufficient. This is the required expression. For this, it is enough for the witnesses present in the gathering to understand that a marriage is taking place, even if they do not understand the detailed interpretation and meanings of the words. Furthermore, the purpose the Sharia has designated for the presence of witnesses specifically for this marriage contract, as distinct from other contracts, is fulfilled by this. Therefore, ignoring such a condition would be to disregard the Sharia's objective, and imposing the condition of understanding the words is an unnecessary addition. Thus, reliance should be placed on this, as through it reconciliation is achieved, and success is from Allah Almighty. Furthermore, the meaning of the statement of al-Bazzaziyya regarding the first instance did not become clear to me either; thus it became known that their stated view is that same first view. (T)

In summary, the crux of the ruling is that if the two witnesses do not understand that this is a marriage contract, then the marriage does not take place at all, even if the man and woman understand perfectly and intend to establish the marriage. If the two witnesses understand this much, even if they do not know the interpretation of the words, then if the contracting parties also know that marriage occurs through these words, the marriage will be valid by consensus (ijma'), even if both parties and the witnesses are unfamiliar with that language. And if both or one of the contracting parties did not know that these words signify marriage, then in a place where Islamic rulings are not widely known, this ignorance is an excuse; and where they are widely known and they...

फतावा रजविया ग्यारहवीं जिल्द

اقول। (मैं कहता हूँ): इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो) के इस कथन में कि "गवाह बयान न कर सकें", उस बात की ओर संकेत है जिसका हमने उल्लेख किया है। क्योंकि गवाहों को बयान की आवश्यकता केवल तब होती है जब उनसे गवाही देने की मांग की जाती है। उस समय गवाहों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे निकाह के पक्षों के शब्दों को दोहराएं या उन शब्दों के पर्यायवाची शब्द या अनुवाद बयान करें। बल्कि, यदि वे केवल इतना ही कह दें कि अमुक पुरुष का अमुक महिला से निकाह हुआ है, तो पर्याप्त है। यही वह बयान है जिसकी आवश्यकता है। इसके लिए गवाहों का सभा में इतना समझना पर्याप्त है कि निकाह हो रहा है, भले ही वे शब्दों की व्याख्या और अर्थ न समझ सकें। फिर यह कि शरीयत ने विशेष रूप से इस निकाह के अनुबंध के लिए गवाहों की उपस्थिति का जो उद्देश्य निर्धारित किया है, वह इसी से पूरा होता है। इसलिए इस शर्त को नज़रअंदाज़ करना शरीयत के उद्देश्य की अवहेलना होगी, और शब्दों को समझने की शर्त लगाना एक अनावश्यक अतिरिक्त बात है। अतः इसी पर भरोसा किया जाना चाहिए क्योंकि इसी से तालमेल बैठता है और अल्लाह तआला ही से सफलता है। फिर मुझे बज्जाज़िया के पहले कथन का अर्थ भी स्पष्ट नहीं हुआ, तो ज्ञात हुआ कि उनका बताया गया कथन वही पहला कथन है। (त)

संक्षेप में, हुक्म का सार यह है कि यदि दो गवाह यह न समझें कि यह निकाह का अनुबंध है, तो निकाह बिल्कुल नहीं होगा, भले ही स्त्री और पुरुष इसे अच्छी तरह समझते हों और निकाह का ही इरादा रखते हों। और यदि दो गवाह इतना समझ लें, भले ही वे शब्दों की व्याख्या न जानते हों, तो यदि निकाह करने वाले भी इतना जानते हों कि इन शब्दों से निकाह हो जाता है, तो सर्वसम्मति (इज्मा) से निकाह हो जाएगा, भले ही दोनों पक्ष और गवाह उस भाषा से अपरिचित हों। और यदि निकाह करने वालों में से दोनों या किसी एक को यह ज्ञात नहीं था कि ये शब्द निकाह के लिए हैं, तो जहाँ इस्लामी नियमों का प्रचार-प्रसार नहीं है वहाँ यह अज्ञानता एक बहाना है, और जहाँ प्रचार है और वे...

पृष्ठ 235 / 739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

اقول: فی قول محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ لم یمکنھما ان یعبرا اشارۃ الٰی ما ذکرنا اذ لا حاجۃ الا الٰی التعبیر الذی یطلب من الشھود عند اداء الشھادۃ ولیس علیھم ان یعید وا الالفاظ التی تلفظا بھا ولا ان یعبروھا بمرادفاتھا او ترجمتھا بل لو شھد وا ان فلا ناتزوج فلا نۃ کفی فھذا ھو التعبیر المحتاج الیہ او یکفی فھذا ھو التعبیر المحتاج الیہ او یکفی لہ ان یفھما انہ عقد نکاح وان لم یعرفا تفسیر الکلام لفظا لفظا وایضا اشتراط ھذا ھو المحقق للمقصد الذی شرع لہ الشرع شرط الشھود فی ھذا العقد منفرزاعن سائر العقود فاسقاطہ الغاء للمقصود واشتراط فھم الالفاظ زیادۃ مستغنی عنھا فعلیھا فلیکن التعویل وبہ یحصل التوفیق وباللہ التوفیق ثم لم یظھر لی معنی قول البزازیہ فی الاول ایضا فما ھو الا الاول۔

اقول: امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قول کہ "گواہ تعبیر نہ کر سکیں" میں اس بات کی طرف اشارہ ہے جو ہم نے ذکر کی، کیونکہ گواہوں کو تعبیر کی ضرورت صرف اس وقت پیش آتی ہے جب ان سے گواہی ادا کرنے کا مطالبہ کیا جائے تو اس وقت گواہوں کے لیے ضروری نہیں کہ وہ نکاح کے فریقین کے الفاظ کو دہرائیں یا ان کے الفاظ کے مترادف الفاظ یا ان الفاظ کا ترجمہ بیان کریں، بلکہ اگر اتنا ہی بیان کر دیں کہ فلاں مرد کا فلاں عورت سے نکاح ہوا ہے، تو کافی ہے، بس یہ وہ تعبیر ہے جس کی ضرورت ہے اور اس کے لیے گواہوں کا مجلس میں اتنا سمجھنا کافی ہے کہ نکاح ہو رہا ہے اگرچہ وہ الفاظ کی تفسیر و معانی نہ سمجھ پائیں، پھر یہ کہ شریعت نے خاص اس عقد نکاح کے لیے گواہوں کی حاضری کا جو مقصد متعین کیا ہے اس کے لیے یہ شرط مثبت ہے لہذا اتنی شرط کو سمجھنا شرعی مقصد سے بے اعتنائی ہوگی، اور گواہوں کی شرط لگانا غیر ضروری زیادتی ہے تو اس پر اعتماد ہونا چاہئے جبکہ اسی سے تطبیق ہو جاتی ہے اور اللہ تعالیٰ

ہی سے توفیق ہے۔ پھر مجھے بزازیہ کے پہلے قول کا مفہوم بھی نہیں ملا تو معلوم ہوا کہ ان کا بیان کردہ قول وہ پہلا قول ہی ہے۔ (ت)

بالجملہ حاصلِ حکم یہ ہے کہ اگر دو گواہ یہ نہ سمجھیں کہ یہ عقدِ نکاح ہے تو نکاح مطلقاً نہ ہوا اگرچہ زن و مرد خوب سمجھتے اور انشائے نکاح ہی کا قصد رکھتے ہوں اور اگر دو گواہ اس قدر سمجھ لیے اگرچہ تفسیرِ الفاظ نہ جانتے ہوں تو اگر عاقدین بھی اتنا جانتے ہوں کہ ان الفاظ سے نکاح ہو جاتا ہے تو بالاِجماع نکاح ہو جائے گا اگرچہ اس زبان سے دونوں وہ اور گواہ سب ناآشنا ہوں، اور اگر عاقدین میں دونوں یا ایک کو معلوم نہ تھا کہ یہ الفاظ نکاح ہیں تو جہاں احکامِ اسلام کا چرچا نہیں وہاں یہ جہل عذر ہے اور جہاں چرچا ہے اور وہ

Fatawa-e-Razvia Volume 11

If the words were not in a foreign language that one is unfamiliar with, then the marriage will be valid and this excuse will not be heard. And if they were in a foreign language and in reality, he did not understand it as a marriage contract, then according to Allah, the marriage will not be valid. As for the judge (Qazi), he should exercise complete insight; if it becomes clear that actual fraud was committed and he was deceived, then he should command the annulment of the marriage, otherwise its validity.

[Arabic Box Left]: This is my opinion and I hope that this is the solid jurisprudence and the comprehensive, clear, and distinct statement. [Urdu Box Right]: In my view, this is the understanding and I hope that this is the solid understanding and this is the comprehensive, clear, and specific statement. (T)

Marriage to a promiscuous woman is permissible even if she has not repented. Yes, if she continues her foul deeds and he (the husband) does not prevent it to the best of his ability, then he is a 'Dayyuth' (cuckold) and a perpetrator of a severe major sin. However, this ruling applies to his lack of honor and does not affect the essence of the marriage contract itself. Allah the Almighty, after listing prohibited women, said: "And lawful to you are [all others] beyond these." (1) As for the noble verse:

[Arabic Box Left]: "The adulteress, none shall marry her but an adulterer or an idolater; and that is forbidden to the believers." (2) [Urdu Box Right]: Only an adulterer or an idolater shall marry a promiscuous woman, and that is forbidden to the believers. (T)

Its ruling is abrogated, as stated by Sa'id ibn al-Musayyib and a group (of scholars). Or 'marriage' (nikah) here means intercourse, as stated by the scholar of the Ummah Abdullah ibn Abbas, Sa'id ibn Jubayr, Mujahid, al-Dahhak, Ikrimah, Abd al-Rahman ibn Zayd ibn Aslam, and Yazid ibn Harun (3). And the detail is in our Fatawa. And Allah Almighty knows best.

Issue 40: Questioner Abdul Rahim Khan, 1st Rajab 1329 AH. At the time of marriage, should the guardian's (wali) word be accepted or the girl's verbal words that she speaks? And who should be appointed as a guardian? What are the necessary words and essentials in marriage and what is their method?

The Answer: If the girl is an adult, her own proposal (ijab) or acceptance (qabul) must occur, even if through a representative (wakil). And if she is a minor, then...

1 Al-Quran 4/24 2 Al-Quran 24/3 3 Tafsir ad-Dur al-Manthur, Surah an-Nur, Ayatullah al-Uzma al-Najafi, Qom, Iran 19/5

यदि शब्द किसी विदेशी भाषा के नहीं थे जिससे कोई अपरिचित हो, तो निकाह हो जाएगा और यह बहाना नहीं सुना जाएगा। और यदि वे विदेशी भाषा के थे और वास्तव में उसने इसे निकाह का अनुबंध नहीं समझा, तो अल्लाह के यहाँ निकाह नहीं होगा। रहा काज़ी का मामला, तो उसे पूर्ण अंतर्दृष्टि से काम लेना चाहिए; यदि स्पष्ट हो जाए कि वास्तव में धोखा दिया गया और उसे बहकाया गया, तो वह निकाह को शून्य करने का आदेश दे, अन्यथा इसकी वैधता का।

[अरबी बॉक्स बाएँ: यह मेरी राय है और मुझे आशा है कि यही ठोस न्यायशास्त्र और व्यापक, स्पष्ट और सुस्पष्ट कथन है। [उर्दू बॉक्स दाएँ: मेरे यहाँ समझ यही है और आशा है कि यही मज़बूत समझ है और यही व्यापक, स्पष्ट और विशेष कथन है। (त)

एक व्याभिचारी स्त्री से निकाह जायज़ है, भले ही उसने पश्चाताप न किया हो। हाँ, यदि वह अपने गंदे कामों पर कायम रहे और वह (पति) अपनी शक्ति भर इसे न रोके, तो वह 'दय्यूथ' (दय्युस) है और एक गंभीर बड़े पाप का अपराधी है, लेकिन यह हुक्म उसकी इस गैरत की कमी पर है, स्वयं निकाह के अस्तित्व पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने निषिद्ध महिलाओं को गिनाने के बाद फरमाया: "और तुम्हारे लिए इनके अलावा अन्य स्त्रियाँ हलाल हैं।" (1) रही पवित्र आयत:

[अरबी बॉक्स बाएँ: "व्यभिचारिणी स्त्री, उससे केवल व्यभिचारी पुरुष या मुशरिक ही निकाह करेगा, और ईमान वालों पर यह हराम है।" (2) [उर्दू बॉक्स दाएँ: व्याभिचारी स्त्री से केवल व्याभिचारी या मुशरिक ही निकाह करे और मोमिनों पर यह हराम है। (त)

इसका हुक्म निरस्त (मनसूख) है, जैसा कि सईद बिन मुसय्यब और एक समूह ने कहा है। या यहाँ निकाह से तात्पर्य संभोग (जमाअ) है, जैसा कि उम्मत के विद्वान अब्दुल्ला बिन अब्बास और सईद बिन जुबैर, मुजाहिद, दहाक, इकरीमा, अब्दुर रहमान बिन ज़ैद बिन असलम और यज़ीद बिन हारून (3) ने कहा है। इसका विवरण हमारे फ़तावा में है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 40: प्रश्नकर्ता अब्दुल रहीम खां, 1 रजब 1329 हिजरी। निकाह के समय वली (अभिभावक) की बात मानी जाएगी या लड़की के वे शब्द जो वह कहती है? और वली किसे बनाया जाना चाहिए? निकाह में कौन से शब्द और अनिवार्य बातें आवश्यक हैं और उनका तरीका क्या है?

उत्तर: अल-जवाब: यदि लड़की वयस्क (बालिगा) है, तो उसका स्वयं का ईजाब (प्रस्ताव) या क़बूल (स्वीकृति) होना चाहिए, चाहे वह वकील (प्रतिनिधि) के माध्यम से ही क्यों न हो। और यदि वह अवयस्क (नाबालिगा) है तो...

---

1 अल-कुरान 4/24 2 अल-कुरान 24/3 3 तफ़सीर दुर्र-ए-मनसूर, सूरह अन-नूर, आयतुल्लाह अल-उज़मा अल-नजफ़ी, क़ुम, ईरान 19/5

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

الفاظ کسی غیر زبان کے نہ تھے جس سے آگاہی نہ ہو تو نکاح ہو جائے گا اور یہ عذر مسموع نہیں، اور اگر غیر زبان کے تھے اور فی الواقع اس نے اسے عقد نہ سمجھا تو عنداللہ نکاح نہ ہوگا، رہا قاضی، اسے نظر کامل چاہئے اگر ظاہر ہو کہ واقعی فریب کیا گیا اور دھوکا دیا گیا تو بطلان نکاح کا حکم دے ورنہ صحت کا۔

[عربی باکس]: ھذا ما عندی و ارجو ان یکون ھو الفقہ المتین و القول الجامع الناصع المبین۔ [اردو باکس]: میرے ہاں فہم یہ ہے اور امید ہے کہ یہی مضبوط فہم ہے اور یہی جامع واضح اور خاص قول ہے (ت)

زن فاحشہ سے نکاح جائز ہے اگر چہ تائب نہ ہوئی ہو، ہاں اگر اپنے افعالِ خبیثہ پر قائم رہے اور یہ تاقدر قدرت انسداد نہ کرے تو یہ دیوث ہے اور سخت کبیرہ کا مرتکب، مگر یہ حکم اس کی اس بے غیرتی پر ہے نفس نکاح پر اس سے اثر نہیں، حق سبحانہ و تعالٰی نے محرمات گنا کر فرمایا:۔ وَ اُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ ؕ 1 (اور ان کے سوا جو رہیں وہ تمھیں حلال ہیں۔ ت) رہی آیہ کریمہ:

[عربی باکس]: وَ الزَّانِیَةُ لَا یَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۪ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ ؕ 2 [اردو باکس]: زانیہ عورت سے صرف زانی یا مشرک نکاح کرے اور مومنین پر یہ حرام ہے (ت)

اس کا حکم منسوخ ہے قالہ سعید بن مسیب وجماعۃ (یہ سعید بن مسیب اور ایک جماعت کا قول ہے۔ ت) یا نکاح سے یہاں جماع مراد ہے کما قال حبرالامۃ عبداللہ بن عباس وسعید بن جبیر و مجاہد والضحاک وعکرمہ وعبدالرحمن بن زید بن اسلم و یزید بن ہارون 3 (جیسا کہ امت کے ماہر عالم عبداللہ بن عباس اور سعید بن جبیر اور مجاہد، ضحاک، عکرمہ، عبدالرحمان بن زید بن اسلم، اور

یزید بن ہارون کا قول ہے۔ ت) والتفصیل فی فتاوٰینا (اس کی تفصیل ہمارے فتاویٰ میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۰: مسئولہ عبدالرحیم خاں یکم رجب ۱۳۲۹ھ نکاح کے وقت ولی کی بات قبول کی جائے گی یا لڑکی کے زبانی الفاظ جو وہ کہتی ہے اور ولی کس کو بنانا چاہئے؟ نکاح میں ضروری الفاظ اور لازمی کیا کیا ہیں اور ان کا طریقہ کیا ہے؟

الجواب: لڑکی بالغہ ہے تو اس کا اپنا ایجاب یا قبول ہونا چاہئے اگر چہ بواسطہ وکیل۔ اور نابالغہ ہے تو

---

1 القرآن ۴/۲۴ 2 القرآن ۲۴/۳ 3 تفسیردرمنثورسورۃ النورآیۃاللہ العظمٰی النجفی قم ایران ۱۹/۵

Fatawa Razawiyya Volume 11

A person's guardian (Wali) is not someone appointed by anyone; rather, the pure Sharia has appointed them in order. Among them all, the first guardian is the son, then the father, then the grandfather, then the full brother, then the step-brother, then the full nephew, then the step-nephew, then the full uncle, then the step-uncle, then the son of the full uncle, then the son of the step-uncle, and so on. The closest sane, adult male descendant of the grandfather or great-grandfather will be the guardian. If none of them are present, then it is the mother, and similarly in the order of 'Ashab al-Faraid' (obligatory heirs), then 'Dhawi al-Arham' (distant kindred), and if none of them are present, then the Islamic ruler. In marriage, the necessary words are 'offer' (Ijab) and 'acceptance' (Qabul) by which the contract is understood, not just a promise. For example, if a man says to a woman, "I have taken you into my marriage," and the woman says, "I have accepted," or the woman's representative says, "I have given such-and-such woman, daughter of so-and-so, son of so-and-so (naming up to the grandfather if the father's name alone is not enough for full identification, or if the woman is sitting in front, there is no need to take anyone's name, he points and says) this woman into your marriage," and the man says, "I have accepted," and two men or one man and two women, who are Muslims, sane, adult, and free, hear and understand their conversation simultaneously that this marriage is taking place—this much is necessary. Apart from this, reciting the sermon (Khutbah) is Sunnah and making them recite the Kalimas is a good thing. And Allah Almighty knows best.

Problem 41: From Rampur state, Mohalla Pila Talab, sent by Maulana Shafa'at Rasul Sahib Salamah Qadri Barkati Razavi, 15 Rabi' al-Akhir 1336 AH. What is the guidance of your presence regarding 'Mut'ah' (temporary marriage)? It was permissible in the early days of Islam and then made forbidden (Haram). Is its prohibition proven by Hadith or by sayings?

The Answer: The prohibition of Mut'ah is proven by authentic Hadiths, by the sayings of the Commander of the Faithful, Mawla Ali (Karam Allah Wajhahu al-Karim), by the noble sayings of the noble Companions (Radhi Allahu Anhum), and above all, it is proven by the Great Quran. Allah Almighty says:

[Table Header: Quranic Verse | Translation] "And those who guard their private parts | Those people who guard their private parts except from their wives and bondwomen are safe from blame. Except from their wives or those their right hands

possess, for then they are not blameworthy. | And those who seek others (besides these) are the transgressors. (T) But whoever seeks beyond that, then those are the transgressors." (Quran 23:5-7) | And Allah Almighty knows best.

Footnote: 1 Al-Quran 23 / 5-7 Page 237 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

किसी का वली (संरक्षक) किसी के बनाने से नहीं होता, बल्कि उसे शरीअत-ए-मुतहरा ने तरतीबवार मुक़र्रर किया है। सब में पहला वली बेटा है, फिर बाप, फिर दादा, फिर सगा भाई, फिर सौतेला, फिर सगा भतीजा, फिर सौतेला, फिर सगा चाचा, फिर सौतेला, फिर सगे चाचा का बेटा, फिर सौतेले का, और इसी तरह दादा-परदादा की औलाद में से जो भी अक़्लमंद, बालिग़ और क़रीबी मर्द होगा, वही वली है। अगर इनमें से कोई न हो तो फिर माँ है, इसी तरह 'अस्हाबुल फ़राइज़' (क़ानूनी वारिसों) की तरतीब के मुताबिक़, फिर 'ज़विल अर्हाम' (दूर के रिश्तेदार), और अगर इनमें से भी कोई न हो तो फिर इस्लामी हाकिम। निकाह में ज़रूरी अलफ़ाज़ ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) हैं जिनसे निकाह का अक़्द (अनुबंध) समझ में आए, न कि वादा। मिसाल के तौर पर, मर्द औरत से कहे, "मैंने तुम्हें अपने निकाह में लिया," और औरत कहे, "मैंने क़बूल किया," या औरत का वकील कहे, "मैंने फ़लां औरत बिन्ते फ़लां इब्ने फ़लां को (दादा तक नाम ले अगर सिर्फ़ बाप के नाम से पूरी पहचान न हो रही हो, या अगर औरत सामने बैठी है तो किसी का नाम लेने की ज़रूरत नहीं, इशारा करके कहे) इस औरत को तेरे निकाह में दिया," और मर्द कहे, "मैंने क़बूल किया," और दो मर्द या एक मर्द और दो औरतें जो मुसलमान, अक़्लमंद, बालिग़ और आज़ाद हों, उन दोनों की गुफ़्तगू को एक साथ सुनें और समझें कि यह निकाह हो रहा है—बस इतना ही ज़रूरी है। इसके अलावा खुतबा पढ़ना सुन्नत है और कलमे पढ़ाना एक अच्छी बात है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 41: रियासत रामपुर, मोहल्ला पीला तालाब से, मुर्सला मौलवी शफ़ाअत रसूल साहब सलमह क़ादरी बरकाती रज़वी, 15 रबीउल आख़िर 1336 हिजरी। हुज़ूर पुर नूर का 'मुतआ' (अस्थायी विवाह) के बारे में क्या इरशाद है? शुरू-ए-इस्लाम में यह जायज़ था फिर हराम कर दिया गया, क्या इसकी हुरमत (मनाही) हदीस से साबित है या अक़वाल (कथनों) से?

अल-जवाब: मुतआ की हुरमत सही हदीसों से साबित है, अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करमल्लाहु वज्हहुल करीम) के इरशादात से साबित है, सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के अक़वाल-ए-शरीफ़ा से साबित है, और सबसे बढ़कर यह कि क़ुरआन-ए-अज़ीम से साबित है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है:

[तालिका शीर्षक: क़ुरआनी आयत | अनुवाद] "और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं। | जो लोग अपनी बीवियों और लौंडियों के सिवा अपनी शर्मगाहों को महफ़ूज़ रखते हैं वे मलामत से

महफ़ूज़ हैं। मगर अपनी बीवियों और लौंडियों के अलावा, तो उन पर कोई मलामत नहीं। | और जो लोग ग़ैर (इनके अलावा) के मुतलाशी (तलाश करने वाले) हैं वे हद से बढ़ने वाले हैं। (त) तो जो इनके अलावा तलाश करे, तो वही लोग हद से बढ़ने वाले हैं।" (क़ुरआन 23:5-7) | वल्लाहु तआला आलम।

पाद-टिप्पणी: 1 अल-क़ुरआन 23 / 5-7 पेज 237/739

اس کے ولی کا ولی کسی کے بنانے کا نہیں ہوتا بلکہ وہ شرع مطہر نے ترتیب وار مقرر کئے ہیں سب میں پہلا ولی بیٹا ہے پھر باپ پھر دادا پھر سگا بھائی پھر سوتیلا پھر سگا بھتیجا پھر سوتیلا پھر سگا چچا پھر سوتیلا پھر سگے چچا کا بیٹا پھر سوتیلے کا، وعلیٰ ہذا القیاس دادا پر دادا کی اولاد کا جو مرد عاقل بالغ قریب تر ہو گا وہی ولی ہے، اور ان میں کوئی نہ ہو تو پھر ماں ہے، اسی طرح بترتیب اصحاب فرائض، پھر ذوی الارحام، اور ان میں کوئی نہ ہو تو پھر حاکم اسلام۔ نکاح میں ضروری الفاظ ایجاب و قبول ہیں جن سے عقد سمجھا جائے نہ وعدہ مثلاً مرد عورت سے کہے میں نے تجھے اپنے نکاح میں لیا عورت کہے میں نے قبول کیا یا عورت کا وکیل کہے میں نے فلاں عورت بنت فلاں ابن فلاں کو دادا تک نام لے اگر صرف باپ کے نام سے پوری تمیز نہ ہو جائے یا عورت سامنے بیٹھی ہے تو کسی کے نام لینے کی حاجت نہیں اشارہ کر کے کہے اس عورت کو تیرے نکاح میں دیا مرد کہے میں نے قبول کیا اور دو مرد یا ایک مرد دو عورتیں مسلمان عاقل بالغ آزاد ان دونوں کی گفتگو کو معاً سنیں اور سمجھیں کہ یہ نکاح ہو رہا ہے، بس اسی قدر ضروری ہے اس کے سوا خطبہ پڑھنا سنت ہے اور کلمے پڑھانا ایک اچھی بات ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۴۱: از ریاست رام پور محلہ پیلا تالاب مرسلہ مولوی شفاعت رسول صاحب سلمہ قادری برکاتی رضوی ۱۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ حضور پر نور کا درباره متعہ کے کیا ارشاد ہے، اوائل اسلام میں جائز تھا پھر حرام کر دیا گیا، آیا اس کی حرمت حدیث سے ثابت ہے یا اقوال سے؟

الجواب: متعہ کی حرمت صحیح حدیثوں سے ثابت ہے، امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم کے ارشادوں سے ثابت ہے، صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے اقوال شریفہ سے ثابت ہے اور سب سے بڑھ کر یہ کہ قرآن عظیم سے ثابت ہے، اللہ عزوجل فرماتا ہے۔

وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَۙ (۵) اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَۚ (۶) فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْعٰدُوْنَۚ (۷)۔ ۱ واللہ تعالیٰ اعلم۔

جو لوگ اپنی بیویوں اور لونڈیوں کے ماسوا سے اپنی شرمگاہوں کو محفوظ رکھتے ہیں وہ ملامت سے محفوظ ہیں اور جو لوگ غیر کے متلاشی ہیں وہ حد سے متجاوز ہیں۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

۱ القرآن ۲۳ / ۵-۷ Page 237 of 739

Vol. 11 Fatawa-e-Razviyya

Question 42: From Mauza Meondi Buzurg, sent by Syed Amir Alam Hasan Sahib, dated 7 Rabi-ul-Awwal 1337 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this matter? Zaid has an acquaintance with a prostitute and commits forbidden acts with her, and several children have been born from this relationship. Now, the said prostitute intends to marry this Zaid, her acquaintance, so that she can avoid the forbidden act. Zaid also seems somewhat willing, but Zaid's family members are against this marriage. They are pressuring Zaid, saying that if he marries the prostitute, they will expel him from the community because it would bring a stain to their family since they are respectable people. Furthermore, they say they cannot marry off his children within their community, so this marriage is not right. Now, let the scholars of religion state how this marriage is: is it according to the Sunnah or against the Sunnah? And will Zaid remain within the fold of Islam and the community by performing this marriage or not? In what category will those who deny this marriage be counted? And those who object to this marriage and speak ill of it, in what category are they counted? That is all. We hope for a reply from the Respected Excellency along with Quranic verses and Hadith, seal, and signature. Inform us, and may you be rewarded.

The Answer: Marriage is Sunnah, but marrying a prostitute is not Sunnah. In fact, there is a difference of opinion among the Imams regarding its permissibility. Furthermore, a permissible act that causes mischief and hatred and creates division among people becomes impermissible. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Bashshiru wala tunaffiru[1] (Give glad tidings and do not cause aversion - Translator). And Allah Almighty knows best.

Question 43, 44: From Chuhar Kot, Yar Khan, Balochistan, sent by Qadir Bakhsh Sahib, dated 14 Rabi-ul-Awwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) If a woman becomes a widow, is it mandatory for her to marry a second time? If she says, "I will not marry," and wants to stay unmarried, is it permissible or not, whether she is young, middle-aged, or an old woman? Whatever the Sharia ruling is, please write it down. (2) A father married his daughter to a child, and the husband...

[1] Sahih Bukhari, Chapter: How the Prophet used to exhort them with sermons, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/6.

मसला ४२: मौज़ा मेओन्डी बुज़ुर्ग से, प्रेषक सैय्यद अमीर आलम हसन साहिब, दिनांक ७ रबी-उल-अव्वल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद का एक वेश्या से संबंध है और वह उसके साथ हराम काम करता है और उससे कई बच्चे पैदा हो चुके हैं। अब उक्त वेश्या का इरादा है कि मेरा निकाह इस परिचित ज़ैद से हो जाए ताकि मैं हराम काम से बच जाऊँ। ज़ैद की भी कुछ वैसी ही इच्छा दिखाई देती है, लेकिन ज़ैद के घर वाले इस निकाह के विरोधी हैं और ज़ैद पर दबाव डालते हैं कि अगर तूने अपना निकाह वेश्या से किया तो तुझे बिरादरी से निकाल देंगे क्योंकि हमारे खानदान पर धब्बा लगेगा क्योंकि हम शरीफ़ (कुलीन) लोग हैं, और न ही उसके बच्चों की शादी हम अपनी बिरादरी में कर सकते हैं, इसलिए यह निकाह ठीक नहीं। अब धर्म के विद्वान बता दें कि यह निकाह करना कैसा है? क्या यह सुन्नत में शामिल है या सुन्नत के ख़िलाफ़? और क्या ज़ैद इस निकाह को करने से इस्लाम और बिरादरी के दायरे में रहेगा या नहीं? और इस निकाह का इनकार करने वालों को किस श्रेणी में गिना जाएगा? और जो इस निकाह पर आपत्ति करें और बुरा कहें, वे किस श्रेणी में गिने जाते हैं? बस, जनाब आला हज़रत से आयत और हदीस, मुहर और दस्तख़त के साथ उत्तर की आशा है। बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: निकाह सुन्नत है लेकिन वेश्या से निकाह सुन्नत नहीं है, बल्कि इसके जायज़ होने में ही इमामों का मतभेद है। फिर एक जायज़ बात जिससे फ़ित्ना और नफ़रत पैदा हो और आपस में फूट पड़े, नाजायज़ हो जाती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: बश-शिरू वला तुनफ़्फ़िरू[1] (खुशखबरी दो और नफ़रत न फैलाओ - अनुवादक)। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला ४३, ४४: चूहड़ कोट यार ख़ान, बलोचिस्तान से, प्रेषक क़ादिर बख़्श साहिब, १४ रबी-उल-अव्वल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फ़रमाते हैं कि: (१) कोई औरत विधवा हो जाए तो क्या उसके लिए ज़रूरी है कि वह दूसरा निकाह करे? जबकि वह कहती है कि मैं निकाह नहीं करूँगी और बिना निकाह के बैठूँगी। चाहे वह जवान हो, मध्यम आयु की हो या वृद्ध हो, क्या उसका बिना दूसरे निकाह के बैठना जायज़ है? जो शरीअत का हुक्म हो, लिखकर बता दें। (२) बाप ने बेटी का निकाह किसी बच्चे से किया और पति...

[1] सहीह बुखारी, अध्याय: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को उपदेश देने में कैसे ख़्याल रखते थे आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/६।

पृष्ठ २३८ का ७३९

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۴۲: از موضع میونڈی بزرگ مرسلہ سید امیر عالم حسن صاحب مورخہ ۷ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کی آشنائی ایک طوائف سے ہے اور اس سے فعلِ حرام کرتا ہے اور اس سے کئی اولاد پیدا ہو چکی ہیں اب طوائف مذکور کا یہ ارادہ ہے کہ میرا نکاح اس زید آشنا سے ہو جائے تاکہ میں فعلِ حرام سے بچ جاؤں، زید کی بھی کچھ منشا پائی جاتی ہے لیکن زید کے گھر والے اس نکاح کے منکر ہیں اور زید پر اس بات کا دباؤ ڈالتے ہیں کہ اگر تو نے اپنا نکاح طوائف سے کیا تو تم کو برادری سے خارج کر دیں گے اس واسطے کہ ہمارے خاندان کو دھبہ لگانا ہے کیونکہ ہم شریف ہیں، اور نہ اس کی اولاد کا ہم لوگ اپنی برادری میں شادی بیاہ کر سکتے ہیں، یہ نکاح ٹھیک نہیں، اب علمائے دین فرما دیں کہ یہ نکاح کرنا کیسا ہے، آیا سنت میں داخل ہے یا خلافِ سنت؟ اور زید اس نکاح کے کرنے سے دائرہ اسلام اور برادری میں رہا یا نہیں؟ اور منکر اس نکاح کے کس درجہ میں شمار کئے جائیں؟ اور جو اس نکاح پر اعتراض کریں اور برا کہیں وہ کس درجہ میں شمار ہیں؟ فقط، جناب اعلیٰ حضرت کے مع آیت و حدیث، مہر، دستخط کے امیدوار ہیں، بینوا توجروا

الجواب: نکاح سنت ہے مگر رنڈی سے نکاح سنت نہیں، بلکہ اس کے جائز ہی ہونے میں ائمہ کا اختلاف ہے، پھر ایک جائز بات جس سے فتنہ و نفرت پیدا ہو اور آپس میں پھوٹ پڑے، ناجائز ہو جاتی ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: بشروا ولا تنفروا ۱ (خوشخبری دو اور نفرت نہ پھیلاؤ- ت) واللہ تعالیٰ اعلم-

مسئلہ ۴۳، ۴۴: از چوہڑ کوٹ یار خان ملک بلوچستان مرسلہ قادر بخش صاحب ۱۴ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ : (۱) کوئی عورت بیوہ ہو جائے تو

کیا اس کے لیے ضروری ہے کہ وہ دوسرا نکاح کرے جبکہ وہ کہتی ہے میں نکاح نہیں کروں گی اور بغیر نکاح بیٹھوں گی، جوان، درمیانہ عمر یا عمر رسیدہ ہو، کیا اس کو بغیر دوسرے نکاح کے بیٹھنا جائز ہے جو شرعی حکم ہو تحریر فرما دیں۔ (۲) باپ نے بیٹی کا نکاح کسی بچے سے کیا اور خاوند۔۔۔

۱ صحیح بخاری باب ما کان النبی یتخولہم بالموعظۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۶

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

[Top Section - Question:] (Persian:) A marriage contract was made while they were minors. The daughter stayed in her father's house. The father performed the Ijab and Qubul (proposal and acceptance) and then died. Two or three years have passed since the daughter became an adult, while the boy is still a child. Is it legally a sin for the brothers now, or should they hand her over to that child? How should this action of the deceased father be judged, and what is the sin? (Urdu:) Because the husband is a child, the father kept the daughter in his house and did not perform the Rukhsati (sending off). After the father's death, the daughter has been an adult for two or three years, while the boy is still a minor. Will there be any sin on the girl's brothers if they do not hand her over to the minor, or will there be no sin? And regarding the late father, please state whether his action was correct or not. If not, then what is the sin? (T)

Answer: (1) (Persian:) An elderly woman cannot be forced into marriage. Similarly, if a young woman is confident in her self-control and does not follow the false customs of the Hindus, she has the right to remain free from another marriage contract, as indicated by the Hadith of Umm Salama (may Allah be pleased with her), which we have explained in 'Ataib al-Tahani'. However, if she is not confident in her self-control, marriage is obligatory. And Allah knows best. (1) (Urdu:) If a woman is old, she should not be forced into marriage. Even if she is young, there is no compulsion upon her provided she is confident in safeguarding herself and does not refuse marriage by following the wrong customs of the Hindus. In such a case, she has the right to stay free from the bond of a second marriage, as the Hadith regarding Umm Salama (may Allah be pleased with her) points out, and we have described it in 'Ataib al-Tahani'. Yes, if a young woman is not confident about herself, then it is mandatory for her to marry. (T) And Allah knows best.

(2) (Persian:) A marriage contracted by a father for a minor girl cannot be annulled, even if it is without a suitable match (kufu) or with excessive inequality in the dower. If the child is near puberty and wants his wife handed over to him, it is necessary. And Allah knows best. (2) (Urdu:) The marriage of a minor girl performed by her father is binding, whether it is with a suitable match (kufu) or an unsuitable match, with a full dower or a very low dower. If the boy is near puberty and demands the sending-off (Rukhsati) of his wife, then the sending-off is necessary. And Allah knows best.

Problem 45: From Gaye Ghat Post Office, Haldi, District Ballia, sent by Maulvi Abdullah Sahib, 9 Rabi al-Akhar 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman named Gangli has come here for a month; she has a four or five-year-old son with her. Before this, this woman was in a village ten miles away from here, where for fifteen…

जिल्द 11 फ़तावा रज़विया

[शीर्ष अनुभाग - प्रश्न:] (फारसी:) एक निकाह तब हुआ जब वे नाबालिग थे। बेटी अपने पिता के घर पर ही रही। पिता ने ईजाब-ओ-क़ुबूल किया और फिर उनका देहांत हो गया। बेटी को बालिग (वयस्क) हुए दो या तीन साल बीत चुके हैं, जबकि लड़का अभी भी बच्चा है। क्या कानूनी तौर पर अब भाइयों पर पाप होगा, या क्या उन्हें उस बच्चे के हवाले उसे कर देना चाहिए? दिवंगत पिता के इस कार्य का मूल्यांकन कैसे किया जाए, और क्या पाप है? (उर्दू:) पति बच्चा है, इसलिए पिता ने बेटी को अपने घर पर रखा और विदाई (रुक़्सती) नहीं की। पिता की मृत्यु के बाद, बेटी दो-तीन साल से बालिग है और लड़का अभी भी नाबालिग है। क्या लड़की के भाइयों पर कोई पाप होगा यदि वे उसे नाबालिग के हवाले नहीं करते हैं, या कोई पाप नहीं होगा? और अब दिवंगत पिता के बारे में भी बताया जाए कि क्या उनका कार्य सही था या नहीं? यदि नहीं, तो क्या पाप है? (त)

उत्तर: (१) (फारसी:) एक वृद्ध महिला को निकाह के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। इसी तरह, यदि एक युवती को अपने आत्म-नियंत्रण पर भरोसा है और वह हिंदुओं के गलत रीति-रिवाजों का पालन नहीं करती है, तो उसे दूसरे निकाह के बंधन से मुक्त रहने का अधिकार है, जैसा कि उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) वाली हदीस से संकेत मिलता है। हालाँकि, यदि वह अपने आत्म-नियंत्रण को लेकर आश्वस्त नहीं है, तो निकाह अनिवार्य है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (१) (उर्दू:) अगर महिला बूढ़ी है तो उसे निकाह के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। अगर वह जवान भी है तो भी उस पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है, बशर्ते कि वह खुद को सुरक्षित रखने के बारे में आश्वस्त हो और हिंदुओं के गलत रिवाजों का पालन करते हुए निकाह से इनकार न करे। ऐसे में उसे दूसरे निकाह के बंधन से मुक्त रहने का अधिकार है, जैसा कि उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) वाली हदीस से ज़ाहिर होता है, और हमने इसे 'अताइब अल-तहानी' में बयान किया है। हाँ, अगर जवान औरत को अपने बारे में भरोसा न हो, तो उस पर निकाह करना वाजिब है। (त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

(२) (फारसी:) एक पिता द्वारा नाबालिग लड़की का किया गया निकाह रद्द नहीं किया जा सकता, भले ही वह बराबरी (कुफ़ू) के बिना हो या मेहर में बहुत अधिक अंतर के साथ हो। यदि बच्चा बालिग होने के करीब है और चाहता है कि उसकी पत्नी उसे सौंप दी जाए, तो यह आवश्यक है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (२) (उर्दू:) नाबालिग लड़की का निकाह जो वालिद (पिता) ने किया है, वह लाज़िम (अनिवार्य) है, चाहे वह कुफ़ू (बराबरी) में हो या गैर-कुफ़ू में, पूरे मेहर पर हो या बहुत कम

मेहर पर। लड़का अगर बालिग होने के करीब (मुरहिक़) हो और वह बीवी की रुक़्सती का मुतालबा (मांग) करे, तो रुक़्सती ज़रूरी है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला ४५: स्थान गाय घाट डाकखाना हल्दी जिला बलिया से मौलवी अब्दुल्ला साहब द्वारा प्रेषित, ९ रबी-उल-आख़िर १३४७ हिजरी। इस मामले में धर्म के विद्वान क्या कहते हैं: गंगली नाम की एक महिला यहाँ एक महीने से आई है; उसके साथ उसका एक चार-पाँच साल का बेटा है। इससे पहले यह महिला यहाँ से दस मील दूर एक गाँव में थी, जहाँ पंद्रह...

पृष्ठ २३९ का ७३९

نکاح آورد کہ صغیر است در خانہ خود دختر نشستہ ست محض ایجاب و قبول کردہ پدرش بمرد دختر دوسہ سال منقضی گردید کہ بالغہ است و کودک تاحال خورد آیا شرعاً اکنون بر برادران گناہ ست یانہ، یا حوالہ آں خورد بکنند؟ ایں چنیں کار برائے پدر مرحوم چگونہ باشد و چہ گناہ؟ بچہ ہے اس لیے باپ نے بیٹی کو اپنے گھر پر رکھا اور رخصتی نہ دی، باپ کے فوت ہونے پر بیٹی دو تین سال سے بالغ ہے اور لڑکا تاحال نابالغ ہے تو کیا اب لڑکی کے بھائیوں پر کوئی گناہ ہوگا اگر وہ نابالغ کے حوالے نہ کریں، یا گناہ نہ ہوگا؟ اور اب باپ مرحوم کے بارے میں بھی بتایا جائے کہ اس کا فعل درست تھا یا نہیں؟ اگر نہیں تو کیا گناہ ہے؟ (ت) الجواب: (۱) پیر زن را خود جبر بر نکاح نتواں کردہ جوان نیز اگر بر نفس خود اطمینان دارد و اتباع رسم باطل ہنود نمی کنند از قید نکاح دیگر آزادماندنش می رسد کمادل علیہ حدیث ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا وبیناہ فی اطائب التہانی آرے اگر بر خود اطمینان ندارد نکاح واجب ست واللہ تعالٰی اعلم۔ (۱) عورت بوڑھی ہو تو اسے نکاح پر مجبور نہ کیا جائے اور اگر جوان ہے تو بھی اس پر جبر نہیں بشرطیکہ وہ اپنے نفس کو محفوظ رکھنے میں مطمئن ہو، اور ہندوؤں کی غلط رسم کی پیروی میں نکاح سے انکار نہ کرتی ہو، تو اس کو دوسرے نکاح کی قید سے آزاد رہنے کا حق ہے جیسا کہ ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا والی حدیث اس پر دال ہے، اور اس کو ہم نے اطائب التہانی میں بیان کیا ہے، ہاں اگر جوان عورت کو اپنے نفس کے بارے میں اطمینان نہ ہو تو پھر اس پر نکاح کرنا واجب ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) قاصرہ را نکاحیکہ پدر کرد فسخ نتواں نمود گویا بغیر کفو وبغبن فاحش در مہر باش صبّی اگر مراہق شدہ زنش را می خواہد باو سپردن لازم ست۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ نابالغہ کا نکاح جو والد نے کیا ہے وہ لازم ہے کفو میں ہو یا غیر کفو میں، پورے مہر سے ہو یا بہت کم مہر پر،

لڑکا اگر قریب البلوغ ہو اور وہ بیوی کی رخصتی کا مطالبہ کرے تو رخصتی ضروری ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۵: از مقام گائے گھاٹ ڈاکخانہ ہلدی ضلع بلیا مرسلہ مولوی عبداللہ صاحب ۹ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت گنگلی یہاں ایک ماہ سے آئی ہے اس کے ساتھ اس کا ایک لڑکا چار پانچ برس کا ہے، اس کے قبل یہ عورت یہاں سے دس میل پر ایک گاؤں ہے وہاں پندرہ

Fatawa Razviya, Volume 11

...from the month when she came there, inquiries were made here and there, but it could not be found out where the woman is from and whether her husband is dead or alive and has gone missing or has divorced her. Now a person has kept her for marriage. Some say that if her husband were alive, he would not have left the boy. Is it permissible to marry her now or not? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: Marriage cannot take place,

| Indeed, the hindrance is known and the remover is unknown. What is established with certainty cannot be removed except with a similar certainty. And Allah Almighty knows best. | Because the hindrance to marriage (being already married) is known, and that which removes the hindrance (death of the husband or divorce) is not known. Thus, the removal of a certain matter can only happen through an equally certain matter. And Allah Almighty knows best. (T) |

Case 46: From Malihabad, District Lucknow, sent by Mr. Muhammad Yusuf Khan, 11th Jumada al-Ula 1337 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: a person belonging to the Hanafi school of thought states on oath in court that he has entered into a mut'ah (temporary marriage) contract with a woman. Does such a person remain within the Hanafi school or not? And is it permissible for Sunni Hanafi people to have him lead their prayers as an Imam? What can this action of his be termed as per Sharia? In such a state, does his oath of allegiance (bay'ah) to a spiritual elder remain valid or not? Will the actions and words of such a person be considered credible or not? And are Sunni Hanafi people religiously responsible for his burial, shrouding, and funeral prayer after his death or not?

The Answer: Mut'ah is undoubtedly void and strictly forbidden according to the text of the Great Quran and the consensus of the Imams of Ahl al-Sunnah.

| Allah Almighty said: "But whoever seeks beyond that, then those are the transgressors." 1 | Allah Almighty has said: Whoever desires someone other than (wives and female slaves owned) is a transgressor of limits. (T) |

The aforementioned person, by committing this act and announcing it in court, has become an open sinner (fasiq-e-mu'allin). His leadership in prayer (Imamat) is prohibited, and behind him...

1. Al-Quran 23/7

फतावा रज़विया, खंड 11

...महीने से थी जब वह वहाँ आई, तो इधर-उधर पता लगाया गया लेकिन यह पता नहीं चला कि वह औरत कहाँ की है और उसका पति मर गया है या जीवित है, और लापता हो गया है या उसने तलाक दे दिया है। अब एक व्यक्ति ने उससे निकाह करने के लिए उसे रखा है। कुछ लोग कहते हैं कि यदि उसका पति जीवित होता तो वह लड़के को न छोड़ता। अब उसके साथ निकाह करना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: निकाह नहीं हो सकता,

| चूँकि रुकावट ज्ञात है और उसे दूर करने वाला अज्ञात है। और जो बात यकीन के साथ साबित हो, वह वैसे ही यकीन से ही खत्म हो सकती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | क्योंकि निकाह में रुकावट (शादीशुदा होना) ज्ञात है और रुकावट को दूर करने वाली बात (पति की मृत्यु या तलाक देना) ज्ञात नहीं है, तो निश्चित बात का खत्म होना भी उसी जैसी निश्चित बात से ही हो सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) |

मसला 46: मलीहाबाद, जिला लखनऊ से, प्रेषक मुहम्मद यूसुफ खान साहब, 11 जमादी-उल-उला 1337 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक हनफी संप्रदाय का व्यक्ति कचहरी में हलफनामा देता है कि उसने एक महिला के साथ 'निकाह-ए-मुता' (अस्थायी विवाह) कर लिया है। अब क्या ऐसा व्यक्ति हनफी संप्रदाय के भीतर रहा या नहीं? और सुन्नी हनफी लोगों के लिए उसकी इमामत (प्रार्थना का नेतृत्व) में नमाज़ पढ़ना या जमात जायज़ है या नहीं? और उसके इस कृत्य को शरीयत के अनुसार क्या माना जा सकता है? और ऐसी स्थिति में किसी बुजुर्ग के हाथ पर की गई उसकी बैअत-ए-इरादत कायम रही या नहीं? और ऐसे व्यक्ति के कार्य और वचन विश्वसनीय होंगे या नहीं? और सुन्नी हनफी लोग उसकी मृत्यु के बाद उसके कफन-दफन और जनाजे की नमाज पढ़ने के लिए शरीयत के अनुसार जिम्मेदार हैं या नहीं?

उत्तर: मुता (अस्थायी विवाह) महान कुरान के स्पष्ट पाठ और अहले सुन्नत के इमामों की सहमति से निस्संदेह बातिल (अमान्य) और कतई हराम (सख्त वर्जित) है।

| अल्लाह तआला ने फरमाया: "तो जो इसके अलावा और किसी का तलबगार होगा, वही लोग हद से बढ़ने वाले हैं।" 1 | अल्लाह तआला ने फरमाया: जो व्यक्ति (पत्नियों और स्वामित्व वाली दासियों) के अलावा किसी और की चाहत रखता है, वह सीमा पार करने वाला है। (त) |

उपर्युक्त व्यक्ति इस कृत्य को करने और कचहरी में घोषणा करने के कारण 'फासिक़-ए-मुअल्लिन' (खुले तौर पर गुनाह करने वाला) हो गया है, उसकी इमामत वर्जित है और उसके पीछे...

---

1. अल-कुरान 23/7

فتاوٰی رضویہ ، جلد یاز دہم

مہینے سے تھی جب وہاں آئی تو ادھر ادھر پتا لگایا گیا مگر یہ پتا نہیں لگا کہ عورت کہاں کی ہے اور اس کا شوہر مر گیا ہے یا زندہ ہے اور لاپتا ہو گیا یا طلاق دے دیا، اب اس کو ایک شخص نے نکاح کرنے کے لیے رکھا ہے بعض یہ کہتے ہیں کہ اگر اس کا شوہر زندہ رہتا تو لڑکے کو نہ چھوڑتا، اب اس کے ساتھ نکاح کرنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: نکاح نہیں ہوسکتا،

| فان المانع معلوم والمزیل مجھول وما ثبت بیقین لا یزول الا بیقین مثلہ ۔ واللہ تعالٰی اعلم ۔ | کیونکہ اس سے نکاح میں مانع (شادی شدہ) ہونا معلوم ہوتا ہے اور مانع کو ختم کرنے والا (خاوند کا فوت ہونا یا طلاق دینا) معلوم نہیں ہے تو یقینی امر کا زوال بھی اس جیسے یقینی امر سے ہی ہوسکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

مسئلہ ۴۶: از ملیح آباد ضلع لکھنؤ مرسلہ محمد یوسف خاں صاحب ۱۱ جمادی الاولی ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص حنفی المذہب بحلف کچہری میں بیان کرتا ہے کہ اس نے ایک مسماۃ کے ساتھ عقدِ متعہ کرلیا، اب ایسا شخص مذہب حنفی کے اندر داخل رہا یا نہیں؟ اور سنی حنفی لوگوں کو نماز میں اس کی امامت یا جماعت جائز ہے یا نہیں؟ اور اس کا یہ فعل شرعاً کیا قرار دیا جاسکتا ہے؟ اور ایسی حالت میں اس کی بیعت ارادت جو ایک بزرگ کے ہاتھ پر کی تھی قائم رہی یا نہیں؟ اور ایسے شخص کے افعال و اقوال معتبر ہوں گے یا نہیں؟ اور حنفی سنی لوگ بعد اس کے مرنے کے اس شخص کی تجہیز و تکفین و نمازِ جنازہ پڑھنے کے شرعاً ذمہ دار ہیں یا نہیں؟

الجواب: متعہ نصِ قرآن عظیم و اجماع ائمہ اہلسنت بلاشبہ باطل و حرام قطعی ہے،

| قال تعالیٰ: فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۱ | اللہ تعالیٰ نے فرمایا: جو شخص (بیویوں اور لونڈی مملوکہ) کے علاوہ غیر کی خواہش کرتا ہے وہ حد سے متجاوز ہے۔ (ت) |

شخص مذکور اس کے ارتکاب اور کچہری میں اعلان سے فاسق معلن ہوا اس کی امامت ممنوع اور اس کے پیچھے

---

۱ القرآن ۲۳ / ۷

Offering prayer [behind him] is a sin and repeating it is mandatory. It is stated in Fatawa Hujja:

If they put forward a sinful person (Fasiq), they will be sinners [1]. | If a sinful person is made the Imam, they will be sinners. (T)

It is in Ghunya:

Based on the fact that the dislike of putting him forward is a prohibitive dislike (Karahat-e-Tehrimi) due to his lack of concern for religious matters, it is not far-fetched for him to neglect some conditions of prayer or perform what contradicts it, which is the predominant expectation given his sinfulness [2]. | On this basis, the dislike of making a sinful person Imam is a prohibitive dislike (Karahat-e-Tahrimi), because he shows indifference towards religious matters. So it's not improbable that he may cause disruption in some conditions of prayer or perform acts contrary to them during prayer; his outward state leads to this predominant suspicion. (T)

And when for a smelly piece of leather he committed a definitive forbidden act and was so bold that he himself announced it in court, then what reliance remains on his word and deed? Rather, Allah forbid, there is a fear of the loss of faith at the time of his death. It is in Tatarkhaniyya and Radd al-Muhtar, etc.:

It is narrated that a man from the companions of Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) proposed to the daughter of a man from the people of Hadith (Shafi'i school) during the era of Abu Bakr al-Juzjani. The father refused unless the man left his school, started reciting behind the Imam, raising his hands during bowing and such. He agreed to it and the father married her to him. When asked about this incident, the Sheikh lowered his head and said: The marriage is valid, but I fear for him that his faith might depart at the time of death's agony, because he belittled a school which was truth in his view and abandoned it for the sake of a smelly carcass [3]. | It has been narrated about a person that he was a follower (Muqallid) of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). He wanted to propose to the daughter of a Hadith scholar (of the Shafi'i school). The scholar gave the proposal on the condition of leaving the Hanafi school and performing 'Raf-e-Yadain' and 'Qirat Khalaf al-Imam' (recitation behind the Imam), which he accepted and the scholar performed the marriage. This incident is from the time of Sheikh Abu Bakr Juzjani. When he was asked about this incident, after some contemplation, he said: The marriage is valid,

but I fear for this person that at the time of death's agony his faith may be lost because he insulted his preferred religion and [left it for] a stinking carcass.

[1] Ghunya al-Mustamli Munya al-Musalli with reference to Fatawa Hujja, Chapter on Imamate, Mujtabai Delhi, p. 279 [2] Ghunya al-Mustamli Munya al-Musalli with reference to Fatawa Hujja, Chapter on Imamate, Mujtabai Delhi, p. 279 [3] Radd al-Muhtar, Book of Penalties, topic: when one moves to another school, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 3/190

फ़तावा रज़विया | जिल्द ग्यारहवीं

नमाज़ पढ़ना गुनाह और उसे दोहराना वाजिब है। फ़तावा हुज्जा में है:

अगर उन्होंने किसी फ़ासिक़ को आगे किया तो वे गुनाहगार होंगे [1]। | अगर फ़ासिक़ को इमाम बनाया तो वे गुनाहगार होंगे। (त)

ग़ुनिया में है:

इस आधार पर कि उसे आगे करने की नापसंदगी 'कराहते तहरीमी' (प्रतिबंधात्मक नापसंदगी) है क्योंकि वह अपने धार्मिक मामलों में ध्यान नहीं देता। अतः यह असंभव नहीं है कि वह नमाज़ की कुछ शर्तों में कमी कर दे या नमाज़ के विपरीत कार्य करे; उसकी फ़ासिक़ाना (पापी) स्थिति को देखते हुए यही प्रबल संभावना है [2]। | इस आधार पर कि फ़ासिक़ को इमाम बनाने की नापसंदगी, कराहते तहरीमी है, क्योंकि वह धार्मिक मामलों में लापरवाही बरतता है, तो यह क्या दूर की बात है कि वह नमाज़ की कुछ शर्तों में व्यवधान डाल दे या नमाज़ के दौरान उनके विपरीत कार्य करे; उसकी ज़ाहिरी हालत से यही प्रबल गुमान (संभावना) होता है। (त)

और जब उसने एक बदबूदार चमड़े (दुनियावी फ़ायदे) के लिए निश्चित हराम काम किया और इतना निडर था कि खुद कचहरी में इसका ऐलान किया, तो उसके कहने और करने का क्या भरोसा रहा? बल्कि अल्लाह न करे, मौत के वक़्त उसके ईमान छिन जाने का डर है। तातारखानिया और रद अल-मुह्तार आदि में है:

रिवायत है कि इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के साथियों में से एक व्यक्ति ने अबू बक्र अल-जौज़जानी के दौर में अहल-ए-हदीस (शाफ़ई संप्रदाय) के एक व्यक्ति की बेटी से निकाह का पैग़ाम भेजा। उसने इनकार किया सिवाय इसके कि वह अपना संप्रदाय छोड़ दे, इमाम के पीछे किराअत करे और झुकते समय हाथ उठाए (रफ़-ए-यदैन) वगैरह। उसने इसे स्वीकार कर लिया और पिता ने उसका निकाह कर दिया। जब शेख़ से इसके बारे में पूछा गया, तो उन्होंने सिर झुकाया और कहा: निकाह तो जाइज़ है, लेकिन मुझे डर है कि मौत की तड़प के वक़्त उसका ईमान चला जाएगा क्योंकि उसने उस संप्रदाय को कमतर समझा जिसे वह हक़ मानता था और उसे एक बदबूदार मुर्दार (सांसारिक सुख) के लिए छोड़ दिया [3]। | एक व्यक्ति के बारे में बयान किया गया है कि वह इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु) का मुक़ल्लिद (अनुयायी) था। उसने (शाफ़ई संप्रदाय के) एक मुहद्दिस की बेटी से सगाई करनी चाही तो मुहद्दिस साहब ने हनफ़ी संप्रदाय छोड़ने और रफ़-ए-यदैन

और इमाम के पीछे किराअत करने की शर्त पर रिश्ता दिया जो उसने स्वीकार कर लिया और मुहद्दिस साहब ने निकाह कर दिया। यह घटना शेख़ अबू बक्र जौज़जानी के समय की है। जब आप से इस घटना के बारे में पूछा गया तो आपने सोच-विचार के बाद कहा: निकाह तो जाइज़ है लेकिन इस व्यक्ति के बारे में मुझे अंदेशा है कि मौत के समय उसका ईमान जाता रहेगा क्योंकि उसने अपने पसंदीदा मज़हब (संप्रदाय) का अपमान किया है और उसे बदबूदार मुर्दार [के लिए छोड़ा है]।

1. ग़ुनिया अल-मुस्तमली मुनिया अल-मुसल्ली, फ़तावा हुज्जा के हवाले से, अध्याय इमामत, मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 279
2. ग़ुनिया अल-मुस्तमली मुनिया अल-मुसल्ली, फ़तावा हुज्जा के हवाले से, अध्याय इमामत, मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 279
3. रद अल-मुह्तार, किताबुल हुदूद, विषय: जब कोई दूसरे संप्रदाय में चला जाए, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 190/3

पृष्ठ 739 में से 241

نماز پڑھنی گناہ اور پھیرنی واجب۔ فتاوٰی حجہ میں ہے:

لو قد موا فاسقاً یا ثمن 1۔ | اگر فاسق کو امام بنایا تو وہ گناہ گار ہوں گے۔ (ت)

غنیہ میں ہے:

بناء علی ان کراھة تقدیمه کراھة تحریم لعدم اعتنائه بامور دینه فلا یبعد منه الاخلال ببعض شروط الصلوة وفعل ما ینافیھا ھو الغالب بالنظر الی فسقه 2۔ | اس بنا پر کہ فاسق کو امام بنانے کی کراہت، کراہت تحریمی ہے، کیونکہ وہ دینی امور سے بے اعتنائی کرتا ہے تو کیا بعید کہ وہ نماز کی بعض شرطوں میں خلل اور ان کے منافی عمل نماز میں کردے، اس کے ظاہر حال سے یہی غالب گمان ہوتا ہے (ت)

اور جب ایک بد بودار چمڑے کے لیے اس نے حرام قطعی کا ارتکاب کیا اور بیباک اتنا کہ کچہری میں اس کا خود اعلان کیا تو اس کے قول و فعل کا کیا اعتبار رہا، بلکہ معاذ اللہ مرتے وقت اس کے سلب ایمان کا خوف ہے، تاتارخانیہ و رد المحتار وغیرہما میں ہے:

حکی ان رجلا من اصحاب ابی حنیفه رضی اللہ تعالی عنه، خطب الی رجل من اصحاب الحدیث ابنته في عھد ابی بکر الجوزجانی فأبی الا ان یترك مذھبه، فیقرأ خلف الامام ویرفع یدیه عند الانحطاط ونحو ذلك فأجابه فزوجه فقال الشیخ بعد ماسئل عن ھذه واطرق راسه النکاح جائز ولکن اخاف علیه ان یذھب ایمانه وقت النزع لانه استخف بمذھب الذی ھو حق عنده وترکه لاجل جیفة منتنة 3۔ | ایک شخص کے متعلق بیان کیا گیا ہے کہ وہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کا مقلد تھا اس نے (شافعی مسلک) ایک محدث کی لڑکی کی منگنی چاہی تو محدث صاحب نے حنفی مسلک چھوڑنے اور رفع

یدین اور قرات خلف الامام کرنے کی شرط پر رشتہ دیا جو اس نے قبول کرلیا اور محدث صاحب نے نکاح دے دیا، یہ واقعہ شیخ ابو بکر جوزجانی کے زمانے کا ہے جب آپ سے اس واقعہ کے متعلق پوچھا گیا تو آپ نے سوچ بچار کے بعد فرمایا: نکاح تو جائز ہے لیکن اس شخص کے بارے میں مجھے اندیشہ ہے کہ نزع کے وقت اس کا ایمان جاتا رہے کیونکہ اس نے اپنے پسندیدہ مذہب کی توہین کی ہے اور اسے بد بودار مردار

1 غنیہ المستملی منیۃ المصلی بحوالہ فتاویٰ حجہ فصل فی الامامۃ مجتبائی دہلی ص ۲۷۹ 2 غنیہ المستملی منیۃ المصلی بحوالہ فتاویٰ حجہ فصل فی الامامۃ مجتبائی دہلی ص ۲۷۹ 3 رد المحتار کتاب الحدود مطلب اذا ارتحل الی غیر مذھبہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۹۰/۳

...left for its sake. (T) In fact, there seems to be no reason for Mut'ah except that the woman he did it with was a Rafidiyah, and marriage with a Rafidiyah is invalid even without Mut'ah, so it became double-forbidden. It is stated in reliable books like Zahiriyyah, Hindiyyah, Hadiqah, etc.: "Their rulings are the rulings for apostates." (T) In short, he deserves severe punishment according to Sharia, but he did not become an infidel due to the commission of a forbidden act, such that his oath of allegiance would be annulled, or that after his death, Muslims would not be responsible for his burial and funeral prayer. Rather, despite the major sin, he would not even be excluded from the Hanafi school if he did it knowing it to be forbidden. Yes, if he considered it permissible, then he is excluded from being a Hanafi, let alone a Sunni. "And one is not excluded from Islam because of matters of doubt." (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 47: From Village Nadwa Mahua, Post Office Bakhkhar Bazaar, District Basti. Sent by Gul Miyan Sahib, 13 Rajab 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person residing in Mahad Awwal handed over his real niece, who is sane and an adult, to a person residing in Amar Dobha. Since the girl's father had passed away long ago, her uncle was her guardian. The person to whom the girl was handed over was told, "Go to your house and marry this girl." The marriage was performed on a Friday in front of reliable witnesses. After a few days, the uncle was misled by his relatives; they caused a dispute and called a Maulvi (cleric). The Maulvi issued a decree that marriage is not permissible before performing the Friday prayer. Therefore, we are sending this petition to you: Is it true that marriage is impermissible on Friday? Please write the answer to this issue and send it.

The Answer: The statement of that person is purely false and a fabrication against the Sharia. Marriage is permissible on every day. Yes, if the Adhan (call to prayer) for Friday has occurred, then until the prayer is offered, marriage is not permitted, as with the Adhan, striving towards the Friday prayer becomes obligatory:

Allah Almighty says: "O you who believe! When the call is made for prayer on the day of Friday, then hasten to the remembrance of Allah and leave off business." Allah the Almighty said: O people of faith! When the call for prayer is made on Friday, proceed toward the remembrance of Allah and leave off buying and selling. (T)

1 Al-Hadiqa al-Nadiyya, Chapter on belittling Sharia being disbelief, i.e., apostasy, Maktaba Nooria Razvia, Faisalabad, 1/305. 2 Quran 62/9

...की खातिर छोड़ दिया। (त) बल्कि मुतअ की कोई वजह नहीं मालूम होती सिवाय इसके कि जिससे किया वह राफ़िज़िया हो और राफ़िज़िया हाल से निकाह भी बातिल (अमान्य) है न कि मुतअ, तो यह हराम पर हराम हुआ, ज़हीरिया व हिन्दिया व हदीक़ा वग़ैरा विश्वसनीय किताबों में है: "उनके अहकाम मुर्तदीन (स्वधर्मत्यागी) के अहकाम हैं।" (त) संक्षेप में, वह शरीयत के अनुसार कड़ी सज़ा का हकदार है, लेकिन हराम काम करने के कारण वह काफ़िर नहीं हुआ कि उसकी बैअत मंसूख हो जाए या उसकी मौत पर मुसलमान उसके दफ़न और नमाज़-ए-जनाज़ा के ज़िम्मेदार न रहें, बल्कि बड़े गुनाह के कारण वह हनफ़ी होने से भी बाहर नहीं होगा अगर उसने इसे हराम जानकर किया हो। हाँ, अगर हलाल समझा तो हनफ़ियत क्या सुन्नियत से भी निकल गया। "और संदेह वाली बात से कोई इस्लाम से बाहर नहीं होता।" (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ४७: ग्राम नदवा महुआ, डाकखाना बक्खर बाज़ार, जिला बस्ती से। प्रेषक गुल मियाँ साहब, १३ रजब १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: महद अव्वल का निवासी एक व्यक्ति अपनी सगी भतीजी को, जो बुद्धिमान और बालिग है, अमर डोभा के निवासी एक व्यक्ति के हवाले कर देता है। चूंकि लड़की के पिता का बहुत पहले देहांत हो गया था, उसका चाचा उसका संरक्षक था। जिस व्यक्ति के हवाले लड़की की गई उससे कहा गया कि तुम अपने घर जाकर इस लड़की से निकाह कर लो। जुमे के दिन विश्वसनीय गवाहों के सामने उनका निकाह कर दिया गया। कुछ दिनों बाद, चाचा को उसके रिश्तेदारों ने बहका दिया; उन्होंने झगड़ा खड़ा किया और एक मौलवी को बुलाया। मौलवी साहब ने यह फ़तवा दिया कि जुमे की नमाज़ अदा करने से पहले निकाह जायज़ नहीं होता। इसलिए हम यह प्रार्थना पत्र आपकी सेवा में भेज रहे हैं कि क्या यह बात सच है कि जुमे के दिन निकाह नाजायज़ है? कृपया इस मसले का जवाब लिखकर भेजने की कृपा करें।

जवाब: उस व्यक्ति का यह कहना बिल्कुल गलत और शरीयत पर आरोप (इफ़्तिरा) है। निकाह हर दिन जायज़ है। हाँ, अगर जुमे की अज़ान हो गई है, तो जब तक नमाज़ न पढ़ ली जाए निकाह की इजाज़त नहीं है क्योंकि अज़ान होते ही जुमे की नमाज़ की तरफ दौड़ना वाजिब हो जाता है:

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "ऐ ईमान वालो! जब जुमे के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त (लेन-देन) छोड़ दो।" अल्लाह तआला ने

फ़रमाया: ऐ ईमान वालो! जब जुमे के दिन इसकी अज़ान हो तो अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए चल पड़ो और ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त छोड़ दो। (त)

1 अल-हदीक़ा अन-नदिया, विषय: शरीयत का अपमान करना कुफ़्र है यानी इर्तिदाद, मकतबा नूरिय्या रज़विय्या, फ़ैसलाबाद १/३०५। 2 अल-क़ुरआन ६२/९

کی خاطر چھوڑ دیا۔ (ت) بلکہ متعہ کی کوئی وجہ نہیں معلوم ہوتی سوائے اس کے کہ جس سے کیا وہ رافضیہ ہو اور رافضیہ حال سے نکاح بھی باطل ہے نہ کہ متعہ، تو یہ حرام در حرام ہوا، ظہریہ و ہندیہ و حدیقہ و غیر ہا کتب معتمدہ میں ہے: احکامہم احکام المرتدین (ان سے متعلق مرتدین کے احکام ہیں۔ت) بالجملہ وہ شرعاً سخت سزا کا مستحق ہے مگر ارتکابِ حرام کے باعث کافر نہ ہوا کہ اس کی بیعت فسخ ہو جاتی یا اس کے مرنے پر مسلمان اس کی تجہیز و تکفین و نماز کے ذمہ دار نہ رہیں بلکہ بہ سببِ کبیرہ حنفیت سے بھی خارج نہ ہوگا اگر اسے حرام جان کر کیا ہو، ہاں اگر حلال جانا تو حنفیت کیا سنیت سے خارج ہو گیا ولایخرج عن الاسلام لمالھم فیہم الشبھۃ (شبہ والی بات سے خارج از اسلام نہ ہو گا۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۷: از موضوع نڈوا مہوا ڈاکخانہ بکھر بازار ضلع بستی مرسلہ گل میاں صاحب ۱۳ رجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص ساکن مہد اول میں اپنی سگی بھتیجی عاقل بالغ کو ایک شخص ساکن امر ڈو بھا کے حوالے کر دی چونکہ اس لڑکی کا باپ مدت سے انتقال کر گیا لڑکی کا چچا اس کا مربی تھا وہ لڑکی جس شخص کے حوالے کر دی اس کو کہا گیا کہ تم اپنے گھر جا کر اس لڑکی سے نکاح کرلو، جمعہ کے روز رو برو گواہان معتبر ان کے نکاح کر لیا گیا، بعد چند یوم کے چچا کو اس کے عزیزوں نے بہکا دیا، انہوں نے جھگڑا ڈال کر کے ایک مولوی کو بلایا، مولوی صاحب نے یہ حکم دیا جمعہ کی نماز ادا کرنے کے پہلے نکاح جائز نہیں ہوتا اس واسطے ہم لوگ یہ عریضہ آپ کی خدمت میں روانہ کرتے ہیں کہ یہ مسئلہ سچ ہے کہ جمعہ کے روز نکاح ناجائز ہے، برائے مہربانی یہ مسئلہ لکھ کر کے روانہ فرمادیں۔

الجواب: اس شخص کا یہ کہنا محض غلط اور شریعت پر افترا ہے، نکاح ہر دن جائز ہے، ہاں اگر اذانِ جمعہ ہو گئی تو اس کے بعد جب تک نماز نہ پڑھ لی جائے نکاح کی اجازت نہیں کہ اذان ہوتے ہی جمعہ کی طرف سعی واجب ہو جاتی ہے:

قال تعالیٰ یٰاَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوۃِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَۃِ فَاسْعَوْا اِلٰی ذِکْرِ اللہِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ- اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اے ایمان والو! جب جمعہ کے روز اس کی اذان ہو تو اللہ تعالیٰ کے ذکر کے لیے چل پڑو اور خرید و فروخت چھوڑ دو۔ (ت)

1 الحدیقۃ الندیہ مطلب الاستخفاف بالشریعۃ کفر ای ردہ مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱/۳۰۵ 2 القرآن ۹/۶۲

Even then, if one marries after the Adhan (call to prayer for Jumu'ah), it will be a sin, but the marriage will be valid and correct, as stated in Al-Hidayah regarding trade, that the dislike is for the neighboring [act], i.e., due to abandoning the effort [for Jumu'ah]. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 48: From Ajmer Sharif, Diggi Bazar, sent by Sayyid Zahid Husain Sahib and Manager of Press Ailaan-ul-Haq, 14 Rajab al-Murajjab 1337 AH.

What do the scholars of the religion say about this issue: if a person or several persons have specifically said that a certain person is from the 'Khawas' (concubines) of a married woman, who is described as chaste and virtuous, is that offspring legitimate? And are they entitled to receive ancestral inheritance or not? Is there any doubt about the nobility and lineage of such offspring? What is the difference between 'Khawas' and 'Kaneez' (maidservant/slave girl), and what are their definitions?

Answer: There is no difference between 'Khawas' and 'Kaneez'. A woman who belongs to someone by Shariah ownership is his slave girl (Kaneez). Then, if he married someone else's slave girl with their permission, the marriage was valid. And if the father is noble and distinguished, the offspring is also noble and distinguished because, according to Shariah, lineage is taken from the father.

Allah Almighty said: "And upon him to whom the child is born is their [the mothers'] provision."[2] | Allah Almighty said: "And for whom there is a child, it is his responsibility to provide for the women." (T)

Yes, in India, regarding 'Kafa'at' (compatibility), they consider it less, as here the offspring of a slave girl is considered of a lower rank. If she is one's own Shariah-legal slave girl, then marriage with her is void (as ownership and marriage cannot coexist), but she is lawful without marriage if there is no Shariah prohibition. In any case, the children born to the master from her are of valid lineage and entitled to the paternal inheritance, provided the master has acknowledged that "this is my child." And Allah Almighty knows best.

Problem 49: From Delhi, Pahar Ganj, Masjid Ghareeb Shah, sent by Sayyid Muhammad Abdul Karim Sahib, 9 Sha'ban 1337 AH.

What do the scholars of the religion say about this issue: It is a custom among many ignorant people that if a man dies and after the iddah (waiting period) his widow wants to marry a man from the community, the relatives of the deceased take some cash from the groom-to-be before allowing her to marry. The amount ranges from two hundred to three hundred rupees. If they are told that taking this money is not permissible, the reply is that "these are the customs of the community council (Panchayat); if these customs were not there, then all women..."

[1] Hidayah, Kitab al-Buyu', Chapter on what is disliked, Yusufi Press, Lucknow, 2/70. [2] Al-Quran 2/233.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

फिर भी अगर अज़ान के बाद निकाह करेगा तो गुनाह होगा मगर निकाह जायज़ और सही हो जाएगा जैसा कि 'हिदाया' में खरीद-फरोख्त के बारे में है कि कराहत 'मुजाविर' यानी कोशिश (जुमे की नमाज़ के लिए) छोड़ने की वजह से है। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 48: अजमेर शरीफ, डिग्गी बाज़ार से भेजा गया, सैयद ज़ाहिद हुसैन साहब और मैनेजर प्रेस 'एलान-उल-हक़', 14 रजब अल-मुरज्जब 1337 हिजरी।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर किसी व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों ने विशेष रूप से यह कह दिया हो कि अमुक व्यक्ति किसी विवाहित महिला की 'ख़्वास' (दासी) से है, जिसे पवित्र और चरित्रवान लिखा गया है, तो क्या वह संतान जायज़ है? और क्या वह पुश्तैनी विरासत पाने का हक़दार है या नहीं? क्या ऐसी संतान की शराफ़त और कुलीनता में कोई शक-ओ-शुबा है? 'ख़्वास' और 'कनीज़' (दासी) में क्या फ़र्क है और उनकी परिभाषा क्या है?

जवाब: 'ख़्वास' और 'कनीज़' में कोई फ़र्क नहीं है, वह औरत जो शरीअत के अनुसार किसी की मिल्कियत (स्वामित्व) में हो, वह उसकी कनीज़ है। फिर अगर उसने किसी दूसरे की कनीज़ से उसकी इजाज़त से निकाह किया तो निकाह सही हुआ। और अगर बाप शरीफ़ और नजीब (कुलीन) है तो औलाद भी शरीफ़ और नजीब है क्योंकि शरीअत में नसब (वंश) बाप से लिया जाता है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जिस का बच्चा है उस पर उन (औरतों) का खाना-कपड़ा वाजिब है।"[2] | अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और जिस का बच्चा है उस पर औरतों का खर्चा है। (त)

हाँ, हिन्दुस्तान में 'कफ़ाअत' (बराबरी) के मामले में इसे कम मानेंगे क्योंकि यहाँ कनीज़ की औलाद को कम दर्जा समझते हैं। और अगर अपनी शरीई कनीज़ है तो उससे निकाह बातिल (अमान्य) है और बिना निकाह हलाल है अगर कोई शरीई रुकावट न हो। बहरहाल, मालिक से जो औलाद उससे हो वह सही नसब (वैध वंश) वाली है और पिता की विरासत पाने की हक़दार है, जबकि मालिक ने इकरार किया हो कि "यह मेरी औलाद है।" और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 49: दिल्ली, पहाड़ गंज, मस्जिद ग़रीब शाह से भेजा गया, सैयद मोहम्मद अब्दुल करीम साहब, 9 शाबान 1337 हिजरी।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अक्सर जाहिल लोगों में रिवाज है कि अगर कोई शख्स मर गया और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद उस औरत ने बिरादरी के किसी मर्द से निकाह करना चाहा, तो मरने वाले के वारिसों ने निकाह करने वाले से कुछ नकद रुपया लेकर उस औरत का निकाह होने दिया। रुपये की तादाद दो सौ से तीन सौ तक लेते हैं। अगर उन्हें यह कहा जाता है कि यह रुपया लेना जायज़ नहीं है, तो जवाब दिया जाता है कि "यह तो पंचायत की रस्में हैं; अगर ये रस्में न हों तो तमाम औरतें..."

[1] हिदाया, किताब अल-बुयू, फ़स्ल फीमा युकरहु, मतबा यूसुफ़ी लखनऊ 2/70 [2] अल-क़ुरआन 2/233

پھر بھی اگر بعد اذان نکاح کریگا گناہ ہوگا مگر نکاح جائز و صحیح ہوجائے گا کما في الهداية فی البیع ان الکراهة للمجاور [1] (جیسا کہ ہدایہ میں بیع کے بارے میں ہے کہ کراہت مجاور یعنی ترک سعی کی وجہ سے ہے ،ت) واللہ تعالی اعلم مسئلہ ۴۸: از اجمیر شریف ڈگی بازار مرسلہ سید زاہد حسین صاحب و مینیجر پریس اعلان الحق ۱۴ رجب المرجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی شخص یا چند اشخاص نے خصو صیتہ یہ کہہ دیا ہو کہ فلان شخص خواص منکوحہ سے ہے جو خواص با عصمت و عفت لکھی گئی ہو تو کیا وہ اولاد جائز ہے؟ اور وہ جدی ورثہ پانے کے مستحق ہے یا نہیں؟ کیا ایسی اولاد کی شرافت و نجابت میں کوئی شک و شبہ ہے؟ خواص و کنیزک میں کیا فرق ہے اور ان کی تعریف کیا ہے؟ الجواب: خواص و کنیزک میں کوئی فرق نہیں وہ عورت کہ بملک شرعی کسی کی ملک ہو اس کی کنیز ہے، پھر اگر دوسرے کی کنیز سے اس کی اجازت سے اس نے نکاح کیا تو نکاح صحیح ہوا۔ اور باپ اگر شریف و نجیب ہے تو اولاد بھی شریف و نجیب ہے کہ شرعاً نسب باپ سے لیا جاتا ہے۔ قال اللہ تعالٰی وَ عَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ [2] ۔ | اللہ تعالٰی نے فرمایا: اور جس کا بچہ ہے اس پر عورتوں کا خرچہ ہے۔ (ت) ہاں ہندوستان میں درباره کفاءت اسے کم مانیں گے کہ یہاں کنیز کی اولاد کو کم درجہ سمجھتے ہیں اور اگر اپنی کنیز شرعی ہے تو اس سے نکاح باطل ہے اور بلا نکاح حلال ہے اگر کوئی ممانعت شرعیہ نہ ہو۔ بہر حال مولا کے جو اولاد اس سے ہو صحیح النسب ہے اور ترکہ پدری پانے کی مستحق ہے جبکہ مولا نے اقرار کیا ہو کہ یہ میری اولاد ہے۔ واللہ تعالی اعلم مسئلہ ۴۹: از دہلی پہاڑ گنج مسجد غریب شاہ مرسلہ سید محمد عبد الکریم صاحب ۹ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ کہ اکثر جاہل لوگوں میں رواج ہے کہ اگر کوئی شخص مر گیا

اور بعد عدت اس عورت نے برادری کے مرد سے نکاح کرنا چاہا تو اس مرنے والے کے لواحقین نے کچھ روپیہ نکاح کرنے والے سے نقد لے کر اس عورت کو نکاح کرنے دیا روپیہ کی تعداد دو سو سے تین سو تک لیتے ہیں، اگر ان کو یہ کہا جاتا ہے کہ یہ روپیہ لینا جائز نہیں تو جواب دیا جاتا ہے کہ یہ تو پنچان کی رسوم ہے، اگر یہ رسوم نہ ہو تو تمام عورتیں [1] ہدیہ کتاب البیوع فصل فیما یکرہ مطبع یوسفی لکھنؤ ۲/ ۷۰ [2] القرآن ۲ / ۲۳۳

Volume Eleven Fatawa Rizvia

...widows will run away with some stranger and no woman will marry within the community. Now the question is, considering all reasons as established from the Holy Quran, Hadith, and Jurisprudence, please give a ruling so it can be acted upon.

The Answer: This money is forbidden (haram) and bribery; both giving and taking it is haram. Those who consume it are consumers of haram. Sharia's haram cannot become halal by the customs of tribal elders (panchs). Muslims should fear the punishment of Allah. And Allah knows best.

Problem 50: From the state of Rampur, petitioner Syed Ahmad Mian Sahib, nephew of Maulana Syed Muhammad Ashiq Sahib (may mercy be upon him), 6 Ramadan 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter? The marriage of Khalid was decided with Ms. Hayat-un-Nisa Begum alias Razia Begum, a veiled woman, daughter of Zaid. According to the rule, witnesses went to the lady to obtain permission and consent. After obtaining permission, the witnesses testified before the Qazi in a public gathering as follows: 'Saadat-un-Nisa Begum alias Razia Begum, daughter of Zaid, has given the authority of her marriage to Amr, the proxy (Wakil).' Accordingly, the Qazi, with the permission of Amr the proxy, performed the marriage with Khalid with a dowry equal to the 'Mahr-e-Mithl'. Did the marriage of the said lady with the said Khalid legally (according to Sharia) take place or not? Because the witnesses, instead of the name Hayat-un-Nisa alias Razia Begum daughter of Zaid, used the name Saadat-un-Nisa Begum alias Razia Begum daughter of Zaid in their testimony. There is no Saadat-un-Nisa Begum daughter of Zaid, nor is Saadat-un-Nisa's alias Razia Begum. Does the marriage conclude despite this error?

The Answer: This method of marriage is an invention of the people of India; the 'Wakil-bil-Nikah' (marriage proxy) does not have the authority to appoint another proxy. The testimony given by these witnesses was void; it has no credibility. If the Qazi who performed the 'Ijab' (proposal) did so with correct words through which the bride became distinguishable to at least two people present in the gathering who met the conditions of witnessing, then a 'Nikah Fuzuli' (unauthorized but validatable marriage) was concluded, which remained dependent on Razia's permission. And if he also used the same words 'Saadat alias Razia daughter of Zaid' in the Ijab, then the marriage is void because there is no woman there who fits these three words. It is stated in Alamgiriyyah:

[Table/Reference Section] Left Column (Arabic): For a man with two daughters, the elder Ayesha and the younger Fatima. They intended to marry off the elder and the contract was made in the name of Fatima, it concludes for the younger one. If he said: 'I have married my elder daughter Fatima'... Right Column (Urdu): A person has two daughters, one elder named Ayesha and the second younger named Fatima. While marrying the elder one, he took the name of Fatima, so the marriage of the younger one took place. And if while performing the marriage he said...

...विधवाएँ किसी गैर मर्द के साथ भाग जाएँगी और कोई औरत बिरादरी में निकाह नहीं करेगी। अब सवाल यह है कि तमाम वजूहात को सोचते हुए जैसे कुरान शरीफ, हदीस शरीफ और फिकह शरीफ से साबित हो, इरशाद फरमाएं ताकि इस पर अमल किया जाए।

अल-जवाब (उत्तर): ये रुपये हराम और रिश्वत हैं, इनका लेना-देना दोनों हराम हैं, और इनको खाने वाले हरामखोर हैं। पंचों की रस्म से शरीयत का हराम हलाल नहीं हो सकता। मुसलमानों को अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला ५०: रियासत रामपुर से, मुस्तौ़ला (याचिकाकर्ता) सैयद अहमद मियां साहब, भतीजे मौलाना सैयद मुहम्मद आशिक साहब (रहमतुल्लाह अलैह), ६ रमज़ान १३३७ हिजरी। धार्मिक विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि खालिद का निकाह मुसमात हयात-उन-निसा बेगम उर्फ रज़िया बेगम, पर्दानशीं, बिन्ते ज़ैद (ज़ैद की बेटी) से तय पाया था। नियमानुसार गवाह महिला के पास अनुमति और आज्ञा प्राप्त करने गए और अनुमति प्राप्त करने के बाद गवाहों ने काज़ी के सामने आम जलसे में इस तरह गवाही दी कि 'सआदत-उन-निसा बेगम उर्फ रज़िया बेगम बिन्ते ज़ैद ने अपने निकाह का अधिकार अम्र वकील (प्रतिनिधि) को दिया है।' तदनुसार, काज़ी ने वकील अम्र की अनुमति से खालिद के साथ 'महर-ए-मिस्ल' की संख्या के साथ निकाह पढ़ाया। क्या शरीअत के अनुसार उक्त महिला का उक्त खालिद के साथ निकाह सही हुआ या नहीं? क्योंकि गवाहों ने हयात-उन-निसा उर्फ रज़िया बेगम बिन्ते ज़ैद के नाम के बजाय गवाही में सआदत-उन-निसा बेगम उर्फ रज़िया बेगम बिन्ते ज़ैद कहा। सआदत-उन-निसा बेगम बिन्ते ज़ैद कोई नहीं है और न ही सआदत-उन-निसा का उर्फ रज़िया बेगम है। इस सूरत की गलती से निकाह संपन्न हुआ या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): निकाह का यह तरीका भारत के लोगों का ईजाद किया हुआ है, निकाह का वकील आगे वकील बनाने का हक नहीं रखता। इन गवाहों ने जो गवाही दी वह बातिल (अमान्य) हो गई, न इसका कोई श्रेय है। काज़ी जिसने ईजाब (प्रस्ताव) किया, अगर उसने ईजाब सही शब्दों से किया जिनसे कम से कम जलसे के दो उपस्थित लोग जो गवाही की शर्तों पर पूरे उतरते हों, उनके नज़दीक दुल्हन स्पष्ट हो गई, तो निकाह-ए-फ़ुज़ूली संपन्न हो गया जो रज़िया की अनुमति पर निर्भर रहा। और अगर उसने भी ईजाब में वही शब्द 'सआदत उर्फ रज़िया बिन्ते ज़ैद' कहे, तो निकाह बातिल हुआ क्योंकि उन तीनों शब्दों का अर्थ वहाँ कोई महिला नहीं है। आलमगीरिया में है:

[तालिका/संदर्भ खंड] बायाँ कॉलम (अरबी): एक व्यक्ति की दो बेटियाँ हैं, एक बड़ी जिसका नाम आयशा और दूसरी छोटी जिसका नाम फातिमा है। उन्होंने बड़ी की शादी करने का इरादा किया और अनुबंध फातिमा के नाम पर किया गया, तो यह छोटी के लिए संपन्न हो जाता है। यदि उसने कहा: 'मैंने अपनी बड़ी बेटी फातिमा का निकाह कर दिया'... दायाँ कॉलम (उर्दू): एक व्यक्ति की दो बेटियाँ हैं, एक बड़ी जिसका नाम आयशा और दूसरी छोटी जिसका नाम फातिमा है। उसने बड़ी का निकाह करते हुए फातिमा का नाम लिया तो छोटी का निकाह हो गया। और अगर निकाह करते हुए उसने...

पृष्ठ २४४ / ७३९

بیوہ کسی غیر مرد کے ساتھ بھاگ جائیں گی اور کوئی عورت برادری میں نکاح نہیں کرے گی، اب سوال یہ ہے کہ تمام وجوہات سوچ کر جیسے قرآن شریف اور حدیث شریف ، فقہ شریف سے ثابت ہوارشاد فرمائیں تاکہ اس پر عمل کیا جائے۔ الجواب: یہ روپے حرام اور رشوت ہیں ان کا لینا دینا دونوں حرام، اور ان کے کھانے والے حرام خور، پنچوں کی رسم سے شریعت کا حرام حلال نہیں ہو سکتا، مسلمانوں کو اللہ کے عذاب سے ڈرنا چاہئے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۵۰: از ریاست رامپور مسئولہ سید احمد میاں صاحب برادر زادہ مولانا سید محمد عاشق صاحب علیہ الرحمۃ ۶ رمضان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ خالد کا نکاح مسماۃ حیات النساء بیگم عرف رضیہ بیگم پردہ نشین بنت زید سے قرار پایا تھا، حسب قاعدہ شہود واسطے حصول اجازت واذن مسماۃ کے پاس گئے اور بعد حصول اجازت شہود نے قاضی کے روبرو جلسہ عام میں شہادت اس صورت سے ادا کی کہ سعادت النساء بیگم عرف رضیہ بیگم بنت زید نے اپنے نکاح کا اختیار عمرو وکیل کو دیا، چنانچہ قاضی نے باجازت عمرو وکیل بہ تعداد مہر مثل خالد کے ساتھ نکاح پڑھایا، آیا شرعاً نکاح مسماۃ مذکور کا خالد مذکور کے ساتھ صحیح ہوا یا نہیں کیونکہ شہود نے بجائے نام حیات النساء عرف رضیہ بیگم زید کے سعادت النساء بیگم عرف رضیہ بیگم بنت زید شہادت میں ادا کیا، سعادت النساء بیگم بنت زید کوئی نہیں ہے اور نہ سعادت النساء کا عرف رضیہ بیگم ہے، اس صورت کی غلطی سے نکاح منعقد ہوا یا نہیں؟ الجواب: یہ طریقہ نکاح مخترع اہل ہند ہے وکیل بال نکاح مجاز توکیل نہیں، شہادت کہ ان گواہوں نے دی باطل گئی، نہ اس کا کچھ اعتبار ہے، قاضی جس نے ایجاب کیا اگر اس نے ایجاب صحیح لفظوں سے کیا جن سے کم از کم دو حاضران جلسہ جامعان شرائط شہادت کے نزدیک منکوحہ متمیز ہو گئی نکاح فضولی منعقد ہو گیا

کہ رضیہ کی اجازت پر موقوف رہا اور اگر اس نے بھی ایجاب میں وہی لفظ سعادت عرف رضیہ بنت زید کہے تو نکاح باطل ہوا کہ ان تینوں لفظوں کی مصداق وہاں کوئی عورت نہیں، عالمگیر یہ میں ہے : لرجل بنتان کبری عائشة وصغری فاطمة ارادان یزوج الکبری وعقد باسم فاطمة ینعقد علی الصغری ولو قال زوجت ابنتي الکبری فاطمة | ایک شخص کی دو بیٹیاں ہیں ایک بڑی جس کا نام عائشہ اور دوسری چھوٹی جس کا نام فاطمہ ہے، اس نے بڑی کا نکاح کرتے ہوئے فاطمہ کا نام لیا تو چھوٹی کا نکاح ہو گیا، اور اگر نکاح کرتے ہوئے اس نے

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

"Marriage is not contracted for either of them," as stated in Al-Zahiriyya - 1. If someone says, "I have given my elder daughter Fatimah in marriage," while he does not have an elder daughter by that name, then the marriage of any daughter is not contracted; it is mentioned as such in Zahiriyya. (T)

In Al-Walwalijiyya it is stated: "Marriage is not contracted for either of them because he does not have an elder daughter by this name." 2 And similar to it is in Al-Fath 3 from Al-Khaniyah: "Intention is of no avail here, nor the understanding of the witnesses after the expression has been used for other than the intended meaning - and Allah knows best." No daughter's marriage was contracted because he has no elder daughter by that name. The same is narrated in Al-Fath from Al-Khaniyah. Here, the intention and the understanding of the witnesses will not be effective when he used an explicit word contrary to his intention. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 51, 52: From Meerut city, Andar Kot, sent by Abdul Rahman Sahib, alias Nanhe, 20 Ramadan-ul-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Can a marriage contract be made between Sunnis and Shias? That is, if the boy is from the Shia sect and the girl is from the Ahl-e-Sunnat wa Jama'at, will the mutual marriage be valid according to the beliefs of the Ahl-e-Sunnat or not? (2) If after some time the girl becomes Shia, will the marriage remain valid or not?

Answer: (1) The common people call these Tabarra'i Rafidis "Shia"; marriage with them is strictly prohibited and absolutely void, and physical intimacy is pure adultery, even if the man is Sunni and the woman is from among them, let alone the reverse, which causes the severe wrath of Allah, and we seek refuge with Allah Almighty. (2) If they were Sunni at the time of marriage and then the man (God forbid) became one of them, the marriage was immediately annulled, whether the woman also adopted the same religion or not. "Because the apostasy of the man is an immediate annulment of marriage by consensus, and there is no marriage for an apostate with anyone, even with a female apostate like him." 4 Because with the apostasy of the husband, the marriage is immediately annulled by consensus, and an apostate cannot marry anyone, even one like himself.

1. Fatawa Hindiyyah, Kitab-un-Nikah, Al-Bab-ul-Awwal, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/27.
2. Al-Walwalijiyyah

3. Fath-ul-Qadeer, Kitab-un-Nikah, Nooria Ridawiyya Sukkur, 3/104.
4. Fatawa Hindiyyah, Al-Qism-us-Sabi', Al-Muharramat-bish-Shirk, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282.

"दोनों में से किसी के लिए भी [विवाह] संपन्न नहीं होता," जैसा कि अल-ज़हीरिया - 1 में है। यदि कोई व्यक्ति कहता है, "मैंने अपनी बड़ी बेटी फ़ातिमा का निकाह कर दिया," जबकि उस नाम की उसकी कोई बड़ी बेटी नहीं है, तो उसकी किसी भी बेटी का निकाह संपन्न नहीं हुआ; ज़हीरिया में ऐसा ही उल्लेख है। (त)

अल-वलवालीजिया में है: "दोनों में से किसी के लिए भी संपन्न नहीं होता क्योंकि इस नाम की उसकी कोई बड़ी बेटी नहीं है।" 2 और इसी तरह अल-फ़तह 3 में अल-ख़ानिया से उद्धृत है: "यहाँ नियत (इरादा) काम नहीं आती, और न ही गवाहों की समझ, जब शब्द को इच्छित अर्थ से अलग इस्तेमाल किया गया हो - और अल्लाह बेहतर जानता है।" किसी भी बेटी का निकाह नहीं हुआ क्योंकि उसकी किसी भी बड़ी बेटी का वह नाम नहीं है। अल-फ़तह में ख़ानिया से भी यही वर्णित है। यहाँ, नियत और गवाहों की समझ प्रभावी नहीं होगी क्योंकि इरादे के विपरीत एक स्पष्ट शब्द का उपयोग किया गया था। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ५१, ५२: मेरठ शहर, अंदर कोट से, प्रेषक अब्दुल रहमान साहब उर्फ़ नन्हे, २० रमज़ान-उल-मुबारक १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इन मुद्दों के बारे में क्या कहते हैं: (१) क्या सुन्नियों और शियाओं के बीच निकाह हो सकता है? यानी यदि लड़का शिया संप्रदाय का हो और लड़की अहले सुन्नत व जमाअत की हो, तो क्या अहले सुन्नत के अक़ीदे के अनुसार दोनों के बीच निकाह सही होगा या नहीं? (२) यदि कुछ समय बाद लड़की शिया हो जाए, तो क्या निकाह बरकरार रहेगा या नहीं?

जवाब: (१) आम लोग इन तबर्रई राफ़िज़ीओं को "शिया" कहते हैं; उनके साथ विवाह पूर्णतः वर्जित और बिल्कुल शून्य है, और शारीरिक संबंध शुद्ध व्यभिचार है, भले ही पुरुष सुन्नी हो और स्त्री उनमें से हो, और इसका उल्टा तो अल्लाह के भीषण क्रोध का कारण है, और हम अल्लाह तआला की शरण चाहते हैं। (२) यदि निकाह के समय दोनों सुन्नी थे, फिर पुरुष (अल्लाह न करे) उनमें से हो गया, तो निकाह तुरंत निरस्त (फ़स्ख़) हो गया, चाहे स्त्री ने भी वही धर्म अपनाया हो या नहीं। "क्योंकि पुरुष का धर्मत्याग (इर्तिदाद) सर्वसम्मति (इज्मा) से निकाह का तत्काल निरसन है, और धर्मत्यागी का किसी के साथ कोई निकाह नहीं है, भले ही वह उसके जैसी धर्मत्यागी ही क्यों न हो।" 4 क्योंकि पति के

धर्मत्याग के कारण, सर्वसम्मति से निकाह तुरंत निरस्त हो जाता है, और एक धर्मत्यागी किसी से भी निकाह नहीं कर सकता, यहाँ तक कि अपने जैसी किसी महिला से भी नहीं।

1. फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, बाब १, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, १/२७।
2. वलवालीजिया
3. फ़तह अल-क़दीर, किताबुन निकाह, नूरिया रज़विया सुक्कुर, ३/१०४।
4. फ़तावा हिन्दिया, सातवां भाग, शिर्क के कारण वर्जनाएं, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, १/२८२।

पृष्ठ 739 का 245

لا ینعقد علی احدھما کذا في الظھیریة-1 یوں کہا کہ میں نے اپنی بڑی بیٹی فاطمہ کا نکاح دیا، تو کسی بیٹی کا نکاح نہ ہوا، ظہیریہ میں ایسے ہے۔ (ت)

ولوالجیہ میں ہے: لا ینعقد علی احدھما لانه لیس له ابنة کبری بھذا الاسم 2 اھ و نحوہ فی الفتح 3 عن الخانیه ولا تنفع النیة ھھنا ولا معرفة الشھود بعد صرف اللفظ عن المراد- واللہ تعالٰی اعلم کسی بیٹی کا نکاح نہ ہوا کیونکہ اس کی بیٹی کی کوئی بڑی بیٹی اس نام کی نہیں ہے اھ اور فتح میں خانیہ سے بھی یہی مروی ہے اور یہاں نیت اور گواہوں کا فہم کار آمد نہ ہوگا جبکہ اس نے مراد کے خلاف صریح لفظ استعمال کیا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۵۱، ۵۲: از شہر میرٹھ اندر کوٹ مرسلہ عبد الرحمن صاحب عرف ننھے ۲۰ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ: (۱) اہل تسنن واہل تشیع میں باہم عقد ہوسکتا ہے یا نہیں یعنی لڑکا فرقہ شیعہ کا ہو اور لڑکی اہلسنت وجماعت کی ہو ان دونوں میں باہمی نکاح مذہب اہل سنت کے عقائد کے موافق صحیح ہوگا یا نہیں؟ (۲) اگر کچھ عرصہ بعد لڑکی اہل تشیع ہو جائے تو نکاح رہے گا یا نہیں؟

الجواب: (۱) عوام ان تبرائی روافض کو اہل تشیع کہتے ہیں ان سے مناکحت حرام قطعی و باطل محض، اور قربت زنائے خالص ہے اگرچہ مرد سنی اور عورت ان میں کی ہو، نہ کہ عکس کہ اشد غضب اللہ کا موجب ہے، والعیاذ باللہ تعالٰی۔ (۲) اگر وقت نکاح سنی تھے پھر مرد معاذ اللہ ان میں کا ہو گیا تو نکاح فوراً فسخ ہو گیا خواہ عورت نے بھی وہی مذہب اختیار کر لیا ہو یا نہیں۔ لان ردة

الرجل فسخ فی الحال بالاجماع ولا نکاح لمرتد مع احد ولو مرتدة مثلہ-4 کیونکہ خاوند کے ارتداد سے فوراً نکاح فسخ ہو جاتا ہے بالاجماع، اور مرتد کا کسی سے بھی حتی کہ اس جیسی

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۷ 2 ولوالجیہ 3 فتح القدیر کتاب النکاح نوریہ رضویہ سکھر ۳ / ۱۰۴ 4 فتاویٰ ہندیہ القسم السابع المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۸۲

[Boxed Text] As in ad-Durr al-Mukhtar and al-Fatawa al-Alamgiriyyah etc. (Arabic) Marriage with an apostate woman is also not permissible, as it is in ad-Durr al-Mukhtar and Fatawa Alamgiri etc. (T)

If the woman remained a Sunni and seclusion (Khalwat) had not yet occurred, or if it had occurred, she may marry whomever she wishes after the waiting period (Iddah). Even if the husband embraces Islam, he has no authority over her, because a dissolved marriage cannot be restored. If, God forbid, the woman became one of them (an apostate) and the man remained Sunni, then the marriage is not dissolved according to the report in Al-Nawadir, and we have confirmed the ruling based on this in our Fatawa in this current age. However, intimacy becomes prohibited for the man until she embraces Islam, because an apostate woman is not fit for anyone to have intercourse with her, whether the man is a Muslim, a disbeliever, or anyone else. The investigation of these matters is in the treatise "Radd al-Rafda". And Allah Almighty knows best.

Problem 53: From Nagina, sent by Abdul Rashid Sahib, Merchant, Sub-Agent, Burma Oil Company. What do the scholars of religion say in this matter: if a woman is married to a man who already has a wife and children, and that man has sufficient means for the upbringing of all of them; the man has no defects; the woman was an adult at the time of marriage; the dower (Mahr) is one thousand rupees; the marriage took place at the bride's house three years and five months ago; after the contract, the husband stayed there fifteen or twenty times for several days each. Does the married woman have the right to claim annulment of the marriage? The statement of the married woman is as follows: "I was born one month after my father's death, I was brought up in my mother's lap and still stay with my mother. My mother arranged my marriage with this person. Said person deceived us saying he has no wife or children. It has been two months since my mother passed away. I was compelled because of my mother. Now I am independent." The husband's statement is: "I admitted to having a wife and children and did not hide it. The married woman and all her relatives know about it, and the husband has writings regarding this." In such a situation, solely based on the married woman's statement that "my husband has another wife and children, and the husband deceived me, the marriage took place without my knowledge," what is the ruling of the Noble Sharia?

The Answer: The woman's excuses are invalid. She is presenting these nonsense claims after years of silence and marital relations. How was the mother being alive a cause of compulsion? Neither is the excuse of having a wife and children admissible, nor is compulsion an obstacle to the validity of the marriage. It is obligatory upon her to obey her husband and refrain from this satanic thought. And Allah Almighty knows best.

[बॉक्स पाठ] जैसा कि दुर्रे मुख्तार और अल-फ़तावा अल-आलमगीरिया आदि में है। (अरबी) एक धर्मत्यागी महिला (मुर्तदा) के साथ विवाह भी जायज़ नहीं है, जैसा कि दुर्रे मुख्तार और फ़तावा आलमगीरी आदि में है। (त)

यदि महिला सुन्नी बनी रही और अभी तक एकांत (खलवत) नहीं हुआ था, या हो चुका था, तो वह इद्दत के बाद जिससे चाहे विवाह कर सकती है। यदि पति इस्लाम स्वीकार कर भी ले, तो उसका उस पर कोई अधिकार नहीं रहता क्योंकि विच्छेदित विवाह बहाल नहीं किया जा सकता। यदि, अल्लाह न करे, महिला उनमें से हो गई (धर्मत्यागी हो गई) और पुरुष सुन्नी रहा, तो नवाजिर की रिपोर्ट के अनुसार विवाह भंग नहीं हुआ, और हमने इस वर्तमान समय में अपने फ़तवों में इसकी पुष्टि की है कि यही फ़तवा है। हालाँकि, जब तक वह इस्लाम स्वीकार नहीं करती, तब तक पुरुष के लिए उसके साथ अंतरंगता हराम है, क्योंकि एक धर्मत्यागी महिला इस योग्य नहीं रह जाती कि कोई भी उसके साथ संभोग करे, चाहे वह मुस्लिम पुरुष हो या काफ़िर या कोई और। इन मामलों की जांच "रद्द अल-रफ़्दा" शोधपत्र में है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 53: नगीना से, अब्दुल रशीद साहब, सौदागर सब एजेंट बर्मा ऑयल कंपनी द्वारा प्रेषित। दीन के विद्वान इस मामले में क्या फरमाते हैं कि यदि किसी महिला का विवाह ऐसे व्यक्ति से हुआ हो जिसकी एक पत्नी और बच्चे हों, और वह व्यक्ति उन सभी के पालन-पोषण के लिए पर्याप्त साधन रखता हो; पुरुष में किसी प्रकार का दोष न हो; विवाह के समय महिला वयस्क हो; मेहर एक हजार रुपये हो; निकाह दुल्हन के घर पर हुआ हो जिसे तीन साल पाँच महीने बीत चुके हों; निकाह के बाद पति वहाँ पंद्रह-बीस बार कई-कई दिनों तक रहा। क्या विवाहित महिला को निकाह रद्द करने (तनसीख़े निकाह) का दावा करने का अधिकार है? विवाहित महिला का बयान इस प्रकार है: "मेरा जन्म पिता की मृत्यु के एक महीने बाद हुआ, मेरा पालन-पोषण माँ की गोद में हुआ और अब तक माँ के साथ ही रहती हूँ। मेरी माँ ने उक्त व्यक्ति के साथ मेरा निकाह कर दिया। उक्त व्यक्ति ने यह धोखा दिया कि मेरी न पत्नी है न बच्चे। मेरी माँ के देहांत को दो महीने हो चुके हैं, मैं अपनी माँ के कारण मजबूर थी, अब मैं स्वतंत्र हूँ।" पति का बयान है: "मैंने पत्नी और बच्चे होने की बात स्वीकार की थी और इसे छिपाया नहीं था। विवाहित महिला और उसके सभी रिश्तेदारों को इसकी जानकारी है जिसके संबंध में पति के पास लिखित दस्तावेज हैं।" ऐसी स्थिति में केवल विवाहित महिला के इस

बयान पर कि "मेरे पति के पास पत्नी और बच्चे मौजूद हैं और पति ने धोखा दिया, निकाह मेरी जानकारी के बिना हुआ", शरीयत शरीफ का क्या हुक्म है?

जवाब: महिला के बहाने बातिल (अमान्य) हैं। वर्षों की चुप्पी और वैवाहिक संबंधों के बाद वह ये बेकार की बातें पेश कर रही है। माँ का जीवित रहना किस तरह की मजबूरी थी? न तो पत्नी और बच्चों का बहाना स्वीकार्य है, और न ही मजबूरी निकाह की वैधता में बाधक है। उस पर अनिवार्य है कि अपने पति की आज्ञा का पालन करे और इस शैतानी ख्याल से बाज़ आए। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

पृष्ठ 246 का 739

[باکس میں متن] کما فی الدر المختار و الفتاوی العالمگیریۃ وغیرہما۔ (عربی) مرتدہ سے بھی نکاح جائز نہیں، جیسا کہ در مختار اور فتاوی عالمگیری و غیرہما میں ہے۔ (ت)

اگر عورت سنیہ رہی اور ہنوز خلوت نہ ہوئی تھی تو ابھی اور ہو چکی تھی تو بعد عدت جس سے چاہے نکاح کرلے، اگر شوہر اسلام لے بھی آئے اس پر کچھ اختیار نہیں رکھتا لان المنفسخ لا یعود (کیونکہ فسخ شدہ نکاح بحال نہیں ہوسکتا۔ ت) اگر عورت معاذ اللہ ان میں کی ہوگئی اور مرد سنی رہا تو نکاح تو فسخ نہ ہوا علی ما فی النوادر وحققنا الافتاء بہ فی ہذا الزمان فی فتاوٰنا (نوادر کی روایت کے مطابق اور ہم نے اپنے فتاوی میں اس کی تحقیق کی ہے کہ اس زمانہ میں فتوی یہی ہے۔ت) مگر مرد کو اس سے قربت حرام ہو گئی جب تک اسلام نہ لائے لان المرتد لیست باھل ان یطأھا مسلم او کافر او احد (کیونکہ مرتد عورت اس قابل نہیں رہی کہ کوئی بھی اس سے وطی کرے خواہ مسلمان مرد ہو یا کافر یا کوئی بھی ہو۔ ت) ان مسائل کی تحقیق رسالہ ردالرفضہ میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۳: از نگینہ مرسلہ عبدالرشید صاحب سوداگر سب ایجنٹ برہما آئل کمپنی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی عورت کا نکاح کسی ایسے شخص سے ہو جس کی ایک عورت اور بچے ہوں اور وہ شخص معاش اس قدر کافی رکھتا ہو کہ ان سب کی پرورش کے لیے نہایت کافی ہو، مرد میں کسی قسم کا نقص نہ ہو، عورت بوقت نکاح بالغ ہو، مہر ایک ہزار روپیہ ہو، نکاح مکان منکوحہ پر ہو جس کو عرصہ تین سال پانچ ماہ ہوئے ہوں شوہر نے بعد عقد پندرہ بیس مرتبہ مختلف اوقات میں کئی کئی یوم قیام کیا، کیا عورت منکوحہ کو تنسیخ نکاح کا دعوی کرنے کا حق ہے؟ بیان منکوحہ حسب ذیل ہے: میری پیدائش ایک ماہ بعد انتقال والد ہوئی میں نے

آغوش مادر میں پرورش پائی اور ہنوز والدہ کے پاس رہی، میری والدہ نے اس شخص کے ساتھ عقد کردیا، شخص مذکور نے یہ دھوکا دیا کہ نہ میری بیوی ہے نہ بچے، میری والدہ کے انتقال کو دو ماہ کا عرصہ ہوا، میں والدہ کی وجہ سے مجبور تھی، اب میں خود مختار ہوں، بیان شوہر میں نے بیوی بچے ہونے کا اقرار کیا اور چھپایا نہیں، اس کا علم منکوحہ اور ان کے جملہ رشتہ داران کو ہے جس کی بابت تحریریں شوہر کے پاس ہیں ایسی حالت میں منکوحہ عورت کے صرف بیان پر کہ میرے شوہر کے پاس اور بیوی بچے موجود ہیں اور شوہر نے دھوکا دیا، نکاح میری لاعلمی میں ہوا، کیا حکم شرع شریف ہے؟

الجواب: عورت کے عذرات باطل ہیں، برسوں سکوت و معاملہ زن و شوئی کے بعد یہ مہملات پیش کرتی ہے، ماں کی زندگی کیا باعث مجبوری تھی، نہ بی بی بچوں کا عذر قابل سماعت۔ نہ مجبوری مانع جواز نکاح، اس پر فرض ہے کہ شوہر کی اطاعت کرے، اس شیطانی خیال سے باز آئے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatwa Razawiyya Volume 11

Problem 54: From Bareilly city, Katra Gali, Hakim Wazir Ali, inquired by Wilayat Ahmad Sahab, 2nd Dhu al-Hijjah 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person Wilayat Ahmad's marriage (nikah) was performed with Quraishi Bano, whose age is over twenty years. However, neither did the representative (wakil) go to obtain permission from the aforementioned lady, nor did the witnesses go, nor was formal permission taken from the aforementioned lady. The marriage ceremony was performed solely with the permission of the lady's father. In such a case, has the marriage taken place or not? The aforementioned lady continues to live as the wife of Wilayat Ahmad and is about one month pregnant. Although the father of the lady was told that permission should be taken from her, he replied that this is the custom here in Badaun district.

Answer: A marriage of a mature woman (baligha) performed without her consent remains dependent on her subsequent approval. If she validates it, it becomes valid; if she rejects it, it becomes void. Her moving to her husband's house after the marriage also constitutes permission, provided she had not previously rejected it. Especially here, pregnancy exists, therefore the marriage has become effective and there is no room for objection now. And Allah Almighty knows best.

Problem 55: From Rampur state, Mahalla Ziyarat, Halqa Wali, sent by Ikramullah Khan Sahab alias Chanda Miyan, 12th Dhu al-Hijjah 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's marriage took place with a woman from his community in such a way that the witnesses took the name of the aforementioned lady as 'Hinda alias Khuwayla daughter of Amr' in the marriage assembly and gave testimony. Through this, the description and identification of the said woman were fully established before the assembly, and no doubt or commonality remained among Zaid and his relatives who were present. The proposal and acceptance (ijab-o-qabul) were completed and the marriage took place. The witnesses of the marriage were close relatives of the said woman, in whose laps she was raised. Now the mother of the lady says that the marriage was not validly contracted because the name of the woman was stated incorrectly in the marriage assembly; her name is Kulsum. Accordingly, her name is engraved as Kulsum in the dower (mahr). However, everywhere except the dower, her name is Hinda, even on the receipts for the government-stipulated salary, the name Hinda is written, and also in government letters this same name is recorded. In the petitions submitted to the government before this, this same name was written, and in the applications for inheritance

rights submitted after the death of Amr, this same name was used. In short, the said woman has both names. In such a case, will the marriage be considered legally invalid by declaring this name incorrect, or since the woman has both names and because both...

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मसला 54: बरेली शहर, कटरा गली, हकीम वज़ीर अली के यहाँ से, सायल विलायत अहमद साहब, 2 ज़िल-हिज्जा 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स विलायत अहमद का निकाह क़ुरैशी बानो से हुआ जिसकी उम्र बीस साल से ज़्यादा है। लेकिन न तो वकील साहब मुसम्मात (स्त्री) की इजाज़त लेने गए और न ही गवाह गए, और न ही मुसम्मात से बाक़ायदा तौर पर इजाज़त ली गई। सिर्फ मुसम्मात के वालिद की इजाज़त से निकाह पढ़ा दिया गया। ऐसी सूरत में निकाह हुआ या नहीं? और मुसम्मात विलायत अहमद की ज़ौजियत (पत्नीत्व) में रहती है और क़रीब एक माह का हमल (गर्भ) भी है। हालांकि मुसम्मात के वालिद से कहा गया कि मुसम्मात से इजाज़त लेनी चाहिए, उन्होंने जवाब दिया कि हमारे यहाँ ज़िला बदायूँ में यही क़ायदा है।

अल-जवाब: बालीग़ा (वयस्क स्त्री) का निकाह उसकी इजाज़त के बिना होना उसकी इजाज़त पर मौक़ूफ़ (निर्भर) रहता है। अगर वह जायज़ कर दे तो जायज़ हो जाता है, और अगर रद्द कर दे तो बातिल (अमान्य) हो जाता है। रुख़सत होकर शौहर के घर जाना भी इजाज़त है, बशर्ते कि पहले उसकी तरफ़ से इसे रद्द न किया गया हो। ख़ासकर यहाँ तो हमल मौजूद है, लिहाज़ा निकाह नाफ़िज़ (प्रभावी) हो चुका है, अब एतराज़ (आपत्ति) की गुंजाइश नहीं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है)।

मसला 55: रियासत रामपुर, मोहल्ला ज़ियारत, हलक़ा वाली से, मुरसिला इकरामुल्लाह खां साहब उर्फ चंदा मियां, 12 ज़िल-हिज्जा 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद का निकाह अपनी बिरादरी की एक औरत से इस तरह हुआ कि गवाहों ने निकाह की मजलिस में मुसम्मात का नाम 'हिंदा उर्फ़ खुवैला बिन्ते अम्र' लेकर गवाही दी। इससे औरत की पहचान और तईन (निर्धारण) मजलिस के सामने पूरी तरह हो गई और ज़ैद और उसके मौजूद रिश्तेदारों के पास कोई शक-ओ-शुबहा बाक़ी नहीं रहा। ईजाब-ओ-क़बूल हो गया और निकाह मुकम्मल हो गया। निकाह के गवाह औरत के क़रीबी रिश्तेदार थे जिनकी गोदों में वह पली-बढ़ी है। अब मुसम्मात की माँ कहती हैं कि निकाह सही नहीं हुआ क्योंकि मजलिस में औरत का नाम ग़लत लिया गया था; उसका नाम कुलसुम है। चुनाँचे महर (स्त्रीधन) में उसका नाम कुलसुम ही खुदा हुआ है। हालांकि महर के अलावा हर जगह उसका नाम हिंदा ही है, यहाँ तक कि सरकारी तनख़्वाह की रसीदों में भी नाम हिंदा लिखा जाता है, और सरकारी चिट्ठियों में भी यही नाम दर्ज है। इससे पहले जो अर्ज़ियाँ सरकार में दी गई थीं उनमें भी यही नाम तहरीर है, और अम्र के इंतक़ाल के बाद जो वरासत के हक़ की अर्ज़ियाँ दी गईं

उनमें भी यही नाम है। ग़रज़ यह कि औरत के ये दोनों नाम हैं। ऐसी सूरत में क्या इस नाम को ग़लत क़रार देकर निकाह को शरीयत के लिहाज़ से ग़लत माना जाएगा या यह कि औरत के दोनों नाम हैं और चूंकि इन दोनों...

पेज 247/739

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۵۴ : از شہر بریلی محلہ کٹرا گلی حکیم وزیر علی مسئولہ ولایت احمد صاحب ۲ ذی الحجہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص ولایت احمد کا عقد قریشی بانو جس کی عمر قریب بیس سال سے زائد ہے اس کے ساتھ ہوا لیکن مسماۃ مذکورہ کی اجازت لینے کے لیے نہ وکیل صاحب گئے اور نہ گواہان گئے اور نہ مسماۃ مذکورہ سے اجازت باقاعدہ طور پر لی گئی صرف مسماۃ کے والد کی اجازت سے عقد پڑھا دیا گیا ایسی صورت میں عقد ہوا یا نہیں ، اور مسماۃ مذکورہ ولایت احمد کی زوجیت میں رہتی ہے اور قریب ایک ماہ کے حمل بھی ہے حالانکہ والد مسماۃ سے کہا گیا کہ مسماۃ سے اجازت لینا چاہئے انھوں نے جواب دیا ہمارے یہاں ضلع بدایوں میں یہی قاعدہ ہے۔ الجواب : بالغہ کا عقد کے بے اس کے اذن کے ہو بالغہ کی اجازت پر موقوف رہتا ہے ، اگر جائز کردے جائز ہو جاتا ہے ، رد کردے باطل ہو جاتا ہے ، رخصت ہو کر شوہر کے یہاں جانا بھی اجازت ہے اذ اکان غیر مسبوق بالرد (جبکہ پہلے بالغہ کی طرف سے اس کو رد نہ کیا گیا ہو۔ ت) خصوصاً یہاں تو حمل موجود ہے لہذا عقد نافذ ہو چکا اب اعتراض کی گنجائش نہیں ۔ واللہ تعالیٰ اعلم ، مسئلہ ۵۵ : از ریاست رام پور محلہ زیارت حلقہ والی مرسلہ اکرام اللہ خاں صاحب عرف چندا میاں ۱۲ ذی الحجہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا نکاح اپنی برادری میں ایک عورت سے بایں صورت ہوا کہ گواہان نے مسماۃ مذکورہ کا نام ہندہ عرف خویلہ بنت عمرو جلسہ نکاح میں لے کر ادائے شہادت کی اس سے عورت مذکورہ کی تعریف و تعیین کما حقہ نزد جلسہ ہوگئی اور کوئی شبہ واشتراک نزد زید و قرابت داران زید جو موجود تھے باقی نہیں رہا اور ایجاب و قبول ہو کر نکاح ہو گیا اور گواہان نکاح نکاح عورت مذکورہ کے قریبی رشتہ دار تھے جن کی گودوں میں عورت مذکورہ نے پرورش پائی ہے۔ اب والدہ

مسماۃ کہتی ہیں کہ نکاح صحیح منعقد نہیں ہوا اس لیے کہ نام عورت کا جلسہ نکاح میں غلط لیا گیا ہے اس کا نام کلثوم ہے ، چنانچہ مہر میں اس کا نام کلثوم کندہ ہے حالانکہ سوائے مہر کے ہر جگہ اس کا نام ہندہ ہے حتیٰ کہ تنخواہ جو مقررہ گورنمنٹ ہے اس کی وصول یابی کی رسیدوں میں بھی یہی نام ہندہ لکھا جاتا ہے اور نیز گورنمنٹ چٹھی میں بھی یہی نام درج ہوتا ہے اور جو عرائض گورنمنٹ میں قبل اس سے دی گئی ہیں ان میں بھی یہی نام تحریر ہے اور عمرو کے انتقال کے بعد جو درخواست باستحقاق وراثت دی گئی ہیں ان میں بھی یہی نام ہے غرضیکہ عورت مذکورہ کے دونوں نام ہیں ، ایسی حالت میں یہ نام غلط قرار دے کر نکاح کو غیر صحیح شرعاً مانا جائے گا یا یہ کہ عورت کے نام دونوں اور چونکہ ان دونوں

Fatawa Razawiyya Volume 11

...Hindah is more famous than Kulthum among them, so the identification and determination of the mentioned woman at the time of marriage was considered sufficient in this way. On this basis, a valid Sharia marriage was concluded. Hoping for a clear answer. State the ruling and be rewarded.

The Answer: If Hindah is the name of that woman (not in the way people refer to women as Hindah or Salma and men as Zaid or Amr as generic examples) and with just this name and the mention of her father without mentioning the grandfather, two righteous witnesses present at the accepted marriage recognized her, then the marriage is valid. Her having ten other names is also not harmful, because "the purpose is identification, not the multiplication of letters" (since the goal is recognition, not the abundance of words. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 56: From Pichham village, Pura district, Bengal. Sent by Syed Abdul Ghaffar Sahib, 10 Rabi al-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: whether the marriage of an adult woman will be valid with one reliable and credible witness mentioned, i.e., whether marriage with one witness is valid or not? State the ruling and be rewarded.

The Answer: Marriage cannot take place with one witness as long as there are not two men or one man and two women who are sane, adult Muslims. And Allah Almighty knows best.

Problem 57: From Gopal Nagar, Pargana Pilibhit. Questioner: Nisar Ahmed Sahib, 13 Rabi al-Akhir 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: that Zaid requested marriage from Hindah, the wife of his deceased brother Umar, after the completion of the Iddah period. She refused and expressed extreme displeasure. So Zaid's relatives tried to obtain permission by force. Hindah started crying and said, "I am by no means consenting, you are using force because none of my sympathizing relatives are present here." Those people said that crying is also included in permission, performed the marriage ceremony, and distributed sweets. After a month, Hindah went to her parents' house by some pretext and refused to return, saying, "I did not give permission, a fictitious marriage ceremony was performed, I will by no means go." Is this marriage valid or not? State the ruling and be rewarded.

The Answer: If after this marriage Hindah had seclusion (Khalwat) and intercourse with Zaid without force or coercion, then the marriage which was not previously effective has now become effective. And if she did not allow seclusion, or that also happened by force, then due to Hindah's displeasure, that marriage is purely void. And Allah Almighty knows best.

Problem 58: From Mauza Miranpur. Questioner: Syed Ashiq Hussain son of Muhammad Hussain, 12 Shaban 1338 AH. What do the scholars of religion and deputies of the Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) say in this matter: that at the time of marriage, the representative (Wakil) from which side...

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...उनमें कुलसुम की तुलना में हिंदा अधिक प्रसिद्ध है, इसलिए विवाह के समय उक्त महिला का पर्याप्त वर्णन और पहचान मानी गई। इस आधार पर एक वैध शरीयत विवाह संपन्न हुआ। स्पष्ट उत्तर की आशा है। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि हिंदा उस महिला का नाम है (उस तरह नहीं जैसे लोग महिलाओं को हिंदा या सलमा और पुरुषों को ज़ैद या अम्र उदाहरण के तौर पर कहते हैं) और केवल इस नाम और दादा का उल्लेख किए बिना पिता के उल्लेख से स्वीकार्य विवाह में उपस्थित दो नेक गवाहों ने उसे पहचान लिया, तो विवाह वैध हो गया। उसके दस और नाम होना भी हानिकारक नहीं है, क्योंकि "उद्देश्य पहचान है, अक्षरों की बहुलता नहीं" (क्योंकि लक्ष्य पहचान है, शब्दों की प्रचुरता नहीं। त)। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 56: पिच्छम गाँव, ज़िला पुरा, बंगाल से। प्रेषक सैय्यद अब्दुल गफ़्फ़ार साहब, 10 रबी अल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: क्या उक्त एक विश्वसनीय और भरोसेमंद गवाह के साथ एक वयस्क महिला का निकाह (विवाह) मान्य होगा या नहीं, यानी क्या एक गवाह के साथ निकाह मान्य है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: निकाह एक गवाह के साथ नहीं हो सकता जब तक कि दो पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएं जो समझदार, वयस्क मुस्लिम न हों। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 57: गोपाल नगर, परगना पीलीभीत से। प्रश्नकर्ता निसार अहमद साहब, 13 रबी अल-आख़िर 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: कि ज़ैद ने इद्दत की अवधि पूरी होने के बाद अपने मृतक भाई उमर की पत्नी हिंदा से निकाह का अनुरोध किया। उसने इनकार कर दिया और अत्यंत अप्रसन्नता व्यक्त की। तो ज़ैद के रिश्तेदारों ने ज़बरदस्ती अनुमति लेनी चाही। हिंदा ने रोना शुरू कर दिया और कहा, "मैं कतई सहमत नहीं हूँ, तुम ज़बरदस्ती कर रहे हो क्योंकि मेरा कोई हमदर्द रिश्तेदार यहाँ मौजूद नहीं है।" उन लोगों ने कहा कि रोना भी अनुमति में शामिल है, निकाह पढ़वा दिया और मिठाई बाँट दी। एक महीने बाद, हिंदा किसी बहाने से अपने माता-पिता के यहाँ चली गई और वापस आने से इनकार कर दिया कि "मैंने अनुमति नहीं दी थी, फ़र्ज़ी निकाह पढ़वा लिया गया, मैं कतई नहीं जाऊँगी।" तो यह निकाह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि इस निकाह के बाद हिंदा ने ज़ैद के साथ बिना किसी ज़बरदस्ती या दबाव के एकांत (खलवत) और संभोग किया, तो जो निकाह पहले प्रभावी नहीं था वह अब प्रभावी हो गया। और अगर उसने एकांत नहीं होने दिया, या वह भी ज़बरदस्ती हुआ, तो हिंदा की नाराज़गी के कारण वह निकाह पूरी तरह से शून्य (बातिल) है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 58: मौज़ा मीराँपुर से। प्रश्नकर्ता सैय्यद आशिक हुसैन वल्द मुहम्मद हुसैन, 12 शाबान 1338 हिजरी। दीन के उलेमा और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नायब इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: कि निकाह के वक़्त वकील किस तरफ़...

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

میں سے ہندہ بہ نسبت کلثوم کے زیادہ مشہور ہے اس لیے اس سے کافی طریق سے تعریف و تعیین عورت مذکورہ کی بوقت نکاح سمجھی گئی، اس بنیاد پر نکاح صحیح شرعی منعقد ہو گیا۔ امید کہ جواب صاف مرحمت فرمائیے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر ہندہ اس عورت کا نام ہے (نہ جس طرح عورتوں کو ہندہ سلمٰی مردوں کو زید عمرو سے تعبیر کرتے ہیں) اور اس نام اور صرف ذکرِ پدر بے ذکر جد سے حاضرین میں دو گواہانِ صالح شہادت نکاح مسلمہ نے اسے پہچان لیا تو نکاح صحیح ہو گیا اس کے دس نام اور بھی ہونا کچھ مضر نہیں لان المقصود التعریف لا تکثیر الحروف (کیونکہ مقصود پہچان ہے الفاظ کی کثرت مقصد نہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۶: از پچھم گاؤں ضلع پڑا بنگال مرسلہ سید عبدالغفر صاحب ۱۰ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ معتمد و معتبر ایک گواہ مذکورہ سے بالغہ عورت کا نکاح درست ہوگا یا نہیں یعنی ایک گواہ سے نکاح درست ہو گا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: نکاح ایک گواہ سے نہیں ہو سکتا جب تک کہ دو مرد یا ایک مرد دو عورتیں عاقل بالغ مسلم نہ ہوں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۷: از گوپال ناگر پرگنہ پیلی بھیت مسئولہ نثار احمد صاحب ۱۳ ربیع الآخر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے بھائی مرحوم عمر کی بی بی ہندہ سے بعد انقضائے میعاد عدت نکاح کی درخواست کی اس نے انکار کیا اور نہایت ناخوشی ظاہر کی تو زید کے رشتہ داران نے جبراً اذن لینا چاہا ہندہ نے رونا شروع کیا اور کہا کہ میں ہرگز رضا مند نہیں

تم جبر کرتے ہو اس وجہ سے کہ میرا کوئی عزیز ہمدرد یہاں موجود نہیں، ان لوگوں نے کہا کہ رونا بھی اذن میں شامل، نکاح پڑھا کر مٹھائی تقسیم کر دی، بعد ایک ماہ کے ہندہ اپنے والدین کے یہاں کسی حیلہ سے چلی آئی اور جانے سے انکار ہے کہ میں نے اذن نہیں دیا فرضی نکاح پڑھا لیا میں ہرگز نہیں جاؤں گی، تو یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر اس نکاح کے بعد ہندہ نے زید کے ساتھ خلوت و صحبت بلا جبر و اکراہ کی تو نکاح جب نافذ نہ تھا اب نافذ ہو گیا، اور اگر خلوت نہ کرنے دی یا وہ بھی بالجبر ہوئی تو ہندہ کی ناراضی سے وہ نکاح باطل محض ہو گیا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۸: از موضع میراں پور مسئولہ سید عاشق حسین ولد محمد حسین ۱۲ شعبان ۱۳۳۸ھ

علمائے دین و نائب رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ وقت نکاح کے وکیل کس طرف

Fatawa Razawiyya Volume 11

...should be of? And which side should the witnesses be from? And how many rupees is one Red Sultani Dinar worth, and into how many parts is it divided, and what is its quantity?

The Answer: A representative (Wakeel) is not necessary for any side, yet they can be from both sides, even from one side, from whichever side they wish. The witnesses are those two men, or one man and two women, who are sane, adult, free Muslims, who hear the proposal (Ijab) and acceptance (Qabul) together and understand that a marriage is taking place. They do not belong to any specific side. The custom of appointing two specific witnesses is baseless; all those present in the gathering who possess these qualities are themselves witnesses, whether someone appoints them or not. The Shariah Dinar was equal to four and a half masha of gold. The Dinars of kings were not fixed and varied. The Shariah Dinar was equal to ten dirhams, which here amounted to two rupees, twelve and three-quarter annas and some cowries. Perhaps by "grades of marriage," the questioner means grades of dower (Mahr). The minimum grade of dower is those same ten dirhams weight of silver, and for the maximum, there is no limit; it is whatever is agreed upon. The dower of Lady Batul Zahra was four hundred Mithqal of silver, which here amounted to one hundred and sixty rupees. The dower of most of the Pure Wives (Azwaj-e-Mutahharat) was five hundred dirhams, which here amounted to one hundred and forty rupees. Regarding the dower of Lady Umm Habiba (may Allah be pleased with her and all of them), there are two narrations: four thousand dirhams, which became eleven hundred and twenty rupees, or four thousand dinars, which became eleven thousand two hundred rupees. And Allah knows best.

Problem 59: From Fatehpur, Qaziana Mohalla, house of Mir Khairat Ali Tehsildar, asked by Muhammad Sadiq, 10 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this: Hindah is a woman of the marketplace and she lived with Zaid for a long time without marriage. Zaid, without the knowledge and information of Hindah, recorded his marriage with Hindah in the Qazi's register (Siyaahah). After this, Hindah's mother came there to take her away. At that time, Zaid told Hindah, "You cannot go, I am married to you." Then Hindah's mother told Hindah, "Give us our jewelry and clothes, you are making excuses to me, your marriage has taken place." To this, Hindah replied, "I will not give the jewelry and clothes; if you say the marriage has taken place, then whatever was to happen has happened, even though in reality no marriage took place." A while after this, Hindah fled from Zaid's house.

Then Zaid filed a case in the criminal court for taking the woman away, but it was dismissed. After that, he filed a claim for the restitution of conjugal rights in the Shariah Court (Dar al-Qaza). The Qazi, after taking evidence and refutation, decreed the claim, which has now been eight years. So, did this marriage become valid or not, whereas in reality permission was not taken from the woman? And can she marry another person or not? And the woman, after fleeing for a period of ten to twelve years, is living in sin (haram) with Zaid.

...होना चाहिए? और गवाह किस पक्ष के होने चाहिए? और एक लाल सुल्तानी दीनार कितने रुपये का होता है और कितने अंशों में विभाजित है और उसकी संख्या क्या है?

उत्तर: वकील किसी भी पक्ष का होना अनिवार्य नहीं है, और दोनों पक्षों से हो सकते हैं, चाहे एक ही पक्ष से हों, जिस तरफ से चाहें। गवाह वे दो पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएँ हैं जो बुद्धिमान, वयस्क, स्वतंत्र मुसलमान हों, जो प्रस्ताव (ईजाब) और स्वीकृति (क़बूल) को एक साथ सुनें और समझें कि निकाह हो रहा है। वे किसी विशेष पक्ष के नहीं होते। यह जो प्रथा है कि दो गवाह निश्चित किए जाते हैं, आधारहीन है; सभा में उपस्थित वे सभी लोग जिनमें ये गुण हैं, स्वयं गवाह हैं, चाहे कोई उन्हें नियुक्त करे या न करे। शरई दीनार साढ़े चार माशा सोने का था और राजाओं के दीनार निश्चित नहीं थे, अलग-अलग थे। शरई दीनार दस दिरहम के बराबर था जो यहाँ के दो रुपये, पौने तेरह आने और कुछ कौड़ियों के बराबर हुआ। शायद "निकाह के दर्जों" से पूछने वाले का तात्पर्य मेहर के दर्जों से है। मेहर का न्यूनतम दर्जा वही दस दिरहम चांदी है और अधिकतम के लिए कोई सीमा नहीं है, जितना तय हो जाए। हज़रत बतुल ज़हरा का मेहर चार सौ मिस्क़ाल चांदी था जो यहाँ के एक सौ साठ रुपये के बराबर हुआ। और अधिकांश पवित्र पत्नियों (अज़वाज-ए-मुतहरात) का मेहर पाँच सौ दिरहम था जो यहाँ के एक सौ चालीस रुपये हुए। हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा व अन्नहुन जमीआ) के मेहर के बारे में दो रिवायतें हैं: चार हज़ार दिरहम जो ग्यारह सौ बीस रुपये हुए या चार हज़ार दीनार जो ग्यारह हज़ार दो सौ रुपये हुए। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला ५९: फतेहपुर, मोहल्ला क़ज़ियाना, मीर ख़ैरात अली तहसीलदार का निवास, प्रेषक मुहम्मद सादिक, १० रमज़ान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि हिंदा एक बाज़ारी औरत है और वह बिना निकाह के लंबे समय तक ज़ैद के पास रही। ज़ैद ने हिंदा की जानकारी और सूचना के बिना काज़ी के रजिस्टर (सियाहा) में हिंदा के साथ अपना निकाह दर्ज करा दिया। इसके बाद हिंदा की माँ उसे लेने के उद्देश्य से वहाँ आई, तो उस समय ज़ैद ने हिंदा से कहा कि तुम नहीं जा सकती, मेरा तुम्हारे साथ निकाह हो गया है। तब हिंदा की माँ ने हिंदा से कहा कि हमारे गहने और कपड़े हमें दे दो, तुम मुझसे बहाना कर रही हो, तुम्हारा निकाह हो गया है। इस पर हिंदा ने जवाब दिया कि गहने और कपड़े नहीं दूँगी, अगर तुम कहती हो कि निकाह हो गया है, तो जो कुछ होना था हो गया, हालांकि वास्तव में निकाह नहीं हुआ था। इसके कुछ समय बाद हिंदा ज़ैद के पास से भाग गई। तब

ज़ैद ने फौजदारी अदालत में औरत को भगा ले जाने का दावा किया, जो खारिज हो गया। इसके बाद पत्नी की मांग के लिए दारुल क़ज़ा में दावा किया। काज़ी साहब ने सबूत और खंडन लेने के बाद दावे की डिक्री दे दी, जिसे आठ साल का समय बीत चुका है। तो क्या यह निकाह सही हुआ या नहीं, जबकि वास्तव में औरत से अनुमति नहीं ली गई थी? और क्या वह किसी दूसरे के साथ निकाह कर सकती है या नहीं? और औरत भागने के बाद दस-बारह साल के अंतराल से ज़ैद के साथ हराम कर रही है।

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

کا ہونا چاہئے؟ اور شاہد کس طرف کے ہوں؟ اور ایک دینار سرخ سلطانی کس قدر روپیہ کا ہوتا ہے اور کتنے جزوں پر منقسم ہے اور تعداد کیا ہے؟

الجواب: وکیل کسی طرف کا ضرور نہیں، اور دونوں طرف سے ہو سکتے ہیں، خواہ ایک طرف سے ہو، جدھر سے چاہیں، اور شاہد وہ دو مرد یا ایک مرد دو عورت عاقل بالغ آزاد مسلم ہیں کہ ایجاب و قبول معاً سنیں اور نکاح ہونا سمجھیں، وہ کسی کی طرف کے نہیں ہوتے، یہ جو رسم ہے کہ دو گواہ معین کرتے ہیں بے اصل ہے جتنے حاضران جلسہ اس صفت کے ہیں سب خود ہی شاہد ہیں کوئی انھیں مقرر کرے یا نہ کرے۔ دینار شرعی ساڑھے چار ماشہ بھر سونے کا تھا اور سلاطین کے دینار کوئی معین نہیں مختلف تھے، دینار شرعی دس درہم تھا کہ یہاں کے دو روپے پونے تیرہ آنے اور کچھ کوڑیاں ہوا، غالباً نکاح کے درجوں سے سائل کی مراد مہر کے درجے ہیں، مہر کا اقل درجہ وہی دس درہم بھر چاندی ہے اور اکثر کے لیے حد نہیں جتنا بندھے، اور مہر حضرت بتول زہرا چار سو مثقال چاندی تھا کہ یہاں کے ایک سو ساٹھ روپے بھر ہوئی، اور مہر اکثر ازواج مطہرات پانچ سو درہم کہ یہاں کے ایک سو چالیس روپے ہوئے اور مہر حضرت ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا و عنہن جمیعا میں دو روایتیں ہیں چار ہزار درہم کہ گیارہ سو بیس روپے ہوئے یا چار ہزار دینار کہ گیارہ ہزار دو سو روپے ۔ واللہ تعالیٰ اعلم ۔

مسئلہ ۵۹: از فچپور محلہ قاضیانہ مکان میر خیرات علی تحصیلدار مسئولہ محمد صادق ۱۰ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ہندہ بازاری عورت ہے اور وہ زید کے پاس بلانکاح مدت تک رہی زید نے بلا علم و اطلاع ہندہ کے قاضی کے سیاہہ میں اپنا ہندہ کے ساتھ

نکاح درج کر دیا، اس کے بعد ہندہ کی ماں وہیں لینے کی غرض سے آئی تو اس وقت زید نے ہندہ سے کہا کہ تو نہیں جا سکتی تیرے ساتھ میرا نکاح ہو گیا، تب ہندہ کی ماں نے ہندہ سے کہا کہ ہمارا زیور اور کپڑا ہم کو دے دے تو مجھ سے حیلہ کر رہی ہے تیرا نکاح ہو گیا ہے اس پر ہندہ نے جواب دیا کہ زیور اور کپڑا نہ دوں گی اگر تم کہتی ہو کہ نکاح ہو گیا، تو جو کچھ ہونا تھا ہو گیا اگر چہ واقعی نکاح نہیں ہوا، اس کے کچھ عرصہ بعد ہندہ زید کے پاس سے فرار ہو گئی تب زید نے کچہری فوجداری میں عورت کے بھگا لے جانے کا دعویٰ کیا، خارج ہو گیا، اس کے بعد طلب زوجہ کا دار القضاء میں دعویٰ کیا، قاضی صاحب نے بعد لینے ثبوت و تردید کے دعویٰ ڈگری کیا جس کو آٹھ برس کا عرصہ ہوا تو آیا یہ نکاح درست ہوا یا نہیں، جبکہ واقعی عورت سے اجازت نہیں لی گئی اور دوسرے کے ساتھ نکاح کر سکتی ہے یا نہیں؟ اور عورت بعد مفروری عرصہ دس بارہ سال سے زید کے ساتھ حرام کر رہی ہے۔

Fatawa Rizvia Volume Eleven

Answer: For Zaid to have his marriage with Hindah recorded in the register (Siyaha) without her knowledge is not a marriage, nor does Hindah's statement that "if you say that the marriage has taken place, then whatever was to happen has happened" in any way come within the boundary of marriage. Thus, Hindah was certainly unmarried. As for the decree of the Darul Qaza (Sharia Court), it is necessary to know its details: whether the claim made in it was correct according to Sharia conditions or not; what evidence was presented and whether it was correct according to Sharia laws; who issued the order and whether he was a Qazi (judge) according to Sharia. If even one of these points is missing, Hindah remains unmarried as before, and Zaid has no claim over her. And Allah Almighty knows best. (After this, the question came again from the same place, which is quoted along with the answer.) This incident is from Hyderabad Deccan. There, a judicial court (Adalat-e-Qaza) established by the government exists where cases of divorce, Khula, inheritance, dower, and restitution of conjugal rights are filed and decided according to the law of the Noble Sharia. However, the Qazi Sahib who decided this case was non-observant (ghair-mutasharri'), meaning he was clean-shaven and wore a coat and trousers, but at the same time, he strictly avoided recommendation and bribery. The witnesses were as per the general condition of these times, and the marriage officiant (Nikah Sahib) was also very minimally educated. Therefore, what would be the answer to the above problem in this situation? Please clarify and be rewarded.

Answer: Since that Qazi is appointed by the Islamic government for the resolution of judicial matters, if a claim was brought before him in a legally correct Sharia manner and evidence was presented in a legally correct Sharia manner, and the Qazi ruled for the validation of the marriage, then the marriage is established. Hindah cannot marry elsewhere without the death of the husband or divorce.

As it is in Al-Hidayah and Tanwir al-Absar[1] and other reliable books, and the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) has preferred it in Fath al-Qadir[2]. And the Leader of the Believers Ali (Karam Allah Wajhahu Al-Karim) said about it: "Your witnesses have married you off."[2] — And Allah Almighty knows best. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 60: From State of Jaora, Lal Imli. Questioned by Mumtaz Ali Khan, accounts official. 2 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this

problem: that Hindah's correct parentage is Zaid, and at the time of marriage, by establishing Bakr...

[1] Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Kitab al-Qada, Fasl fi al-Habs, Mujtabai Press Delhi, 9/2. [2] Fath al-Qadir, Bab al-Muharramat, Nooriya Razviya Sukkur, 56/3.

फतावा रज़विया खंड ग्यारह

अल-जवाब: ज़ैद का हिंदह को बताए बिना सयाह (विवाह पंजी) में उसके साथ अपना निकाह दर्ज करवा देना निकाह नहीं है, और न ही हिंदह का यह कहना कि "अगर तुम कहते हो कि निकाह हो गया तो जो कुछ होना था हो गया" किसी तरह निकाह की सीमा में आ सकता है। अतः हिंदह निश्चित रूप से अविवाहित थी। रही दारुल कज़ा (शरई अदालत) की डिक्री की बात, तो उसका विवरण जानना आवश्यक है कि उसमें किया गया दावा शरई शर्तों पर सही था या नहीं, क्या सबूत पेश किया गया और क्या वह शरई कानूनों पर सही था या नहीं, आदेश किसने दिया, और क्या वह शरई तौर पर काज़ी था या नहीं। अगर इनमें से एक भी बात कम है, तो हिंदह पहले की तरह अविवाहित है और ज़ैद का उस पर कोई दावा नहीं पहुँचता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (इसके बाद फिर वहीं से प्रश्न आया जो उत्तर के साथ उद्धृत है) यह घटना हैदराबाद दक्कन की है जहाँ सरकार की ओर से अदालत-ए-कज़ा स्थापित है जिसमें तलाक, खुला, विरासत, महर, और पत्नी की माँग के मुक़दमे शरीयत-ए-शरीफ के कानून के अनुसार दायर होते हैं और उनके फैसले होते हैं। लेकिन काज़ी साहब जिन्होंने इस मुक़दमे का फैसला किया है, वे गैर-मुतशर्री (शरीयत के पाबंद नहीं) थे, यानी दाढ़ी मुंडी हुई थी और लिबास कोट-पतलून था। मगर साथ ही वे सिफारिश और रिश्वत से पूरी तरह बचते थे। गवाहों की हालत वैसी ही थी जैसी आजकल के ज़माने में होती है, और निकाह पढ़ाने वाले साहब भी बहुत मामूली पढ़े-लिखे हैं। अतः इस सूरत-ए-हाल में उपरोक्त मसले का क्या उत्तर होगा? स्पष्ट करें और पुण्य पायें।

अल-जवाब: चूँकि वह काज़ी इस्लामी हुकूमत की ओर से फैसले के लिए नियुक्त है, अगर उसके यहाँ दावा सही शरई तरीके से हुआ और सबूत सही शरई तरीके से पेश किया गया और काज़ी ने निकाह के सबूत का हुक्म दे दिया, तो निकाह साबित हो गया। हिंदह मृत्यु या तलाक के बिना दूसरी जगह निकाह नहीं कर सकती।

जैसा कि अल-हिदाया और तनवीर अल-अब्सार[1] और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में है और फ़त्ह अल-क़दीर[2] में मुहाक्क़िक अला अल-इतलाक़ ने इसे प्राथमिकता दी है। और अमीरुल मोमिनीन अली (करम अल्लाह वज्हहुल करीम) ने इसके बारे में फरमाया: "तुम्हें तुम्हारे गवाहों ने ब्याह दिया है।"[2] — और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ६०: रियासत जावरा, लाल इमली से। मुमताज अली खाँ, हिसाब विभाग के कर्मचारी द्वारा पूछा गया। २ शव्वाल १३३९ हिजरी। विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि हिंदह के असली पिता ज़ैद हैं और निकाह के समय बक्र को पिता के रूप में खड़ा करके..

[1] दुर्रे मुख्तार शरह तनवीर अल-अब्सार, किताबुल कज़ा, फसलो फिल हब्स, मतबअ मुजतबाई दिल्ली, ९/२। [2] फ़त्ह अल-क़दीर, बाबुल मुहर्रमात, नूरिया रज़विया सुक्कुर, ५६/३।

पृष्ठ २५० / ७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الجواب: زید کا بے اطلاع ہندہ سیاہہ میں اس کے ساتھ اپنا نکاح ہونا درج کرا دینا نکاح نہیں، نہ ہندہ کا کہنا کہ اگر تم کہتی ہو کہ نکاح ہو گیا تو جو کچھ ہونا تھا ہو گیا کسی طرح حد نکاح میں آ سکتا ہے تو ہندہ ضرور بے نکاحی تھی، رہی دارالقضا کی ڈگری، اس کی تفصیل معلوم ہونی ضرور دعوٰی کہ اس میں ہوا شرائط شرعیہ پر صحیح تھا یا نہیں، ثبوت کیا گزرا اور وہ قوانین شرعیہ پر صحیح تھا یا نہیں، حکم کس نے دیا، اور وہ قاضی عند الشرع تھا یا نہیں، اگر ان میں سے ایک بات بھی کم ہے ہندہ بدستور بے نکاحی ہے زید کو اس پر کوئی دعوٰی نہیں پہنچتا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (اس کے بعد پھر وہیں سے سوال آیا جو مع جواب منقول ہے) یہ واقعہ حیدرآباد دکن کا ہے وہاں حکومت کی طرف سے عدالت قضا قائم ہے جس میں طلاق، خلع، ترکہ، مہر، طلب زوجہ کے مقدمات حسب قانون شرع شریف دائر ہوتے اور فیصل ہوتے ہیں مگر قاضی صاحب جنھوں نے اس مقدمہ کو فیصل کیا ہے غیر متشرع تھے یعنی داڑھی منڈی ہوئی لباس کوٹ پتلون مگر ساتھ ہی اس کے سفارش رشوت سے قطعی اجتناب رکھتے تھے اور گواہان جیسے فی زمانہ حالت ہے اور نکاح صاحب بھی بہت معمولی طور پر پڑھے ہوئے ہیں لہذا اس صورت واقعہ پر مسئلہ بالا کا کیا جواب ہوگا؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ وہ قاضی منجانب سلطنت اسلامیہ فصل قضا پر مقرر ہے، اگر اس کے یہاں دعوٰی بروجہ صحیح شرعی ہوا اور ثبوت بروجہ شرعی گزرا اور قاضی نے ثبوت نکاح کا حکم دیا تو نکاح ثابت ہو گیا، ہندہ بغیر موت یا طلاق دوسری جگہ نکاح نہیں کر سکتی۔

کما فی الہدایۃ وتنویر الابصار[1] وغیرہما من معتمدات الاسفار ورجحہ المحقق علی الاطلاق فی فتح القدیر[2] وقد قال امیر المؤمنین علی کرم اللہ وجہہ الکریم شاہدک زوجاک[2]- واللہ تعالٰی اعلم۔ جیسا کہ

ہدایہ اور تنویر الابصار[1] وغیرہما کتب معتمدہ میں ہے اور فتح القدیر[2] میں محقق علی الاطلاق نے اس کو ترجیح دی ہے، اور حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس کے بارے میں فرمایا کہ تجھے تیرے گواہوں نے بیاہ دیا ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۶۰: از ریاست جاورہ، لال املی مسئولہ ممتاز علی خاں اہل کار حساب ۲ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کی صحیح ولدیت زید ہے اور بوقت نکاح بکر قائم کرکے

[1] در مختار شرح تنویر الابصار کتاب القضاء فصل فی الحبس مطبع مجتبائی دہلی ۹/۲ [2] فتح القدیر باب المحرمات نوریہ رضویہ سکھر ۵۶/۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

If offer and acceptance have taken place, is such a marriage valid or not? Furthermore, her biological father, Zaid, is alive. At the time of marriage, neither was his permission taken nor was he informed. In the situation questioned, if the marriage did not take place, can Hindah remarry someone of her choice in her equal status (Kufu)? Is there a restriction of the 'Iddah period? Hindah is an adult. Explain and be rewarded.

The Answer:

If Hindah was not present in that marriage gathering and it was not said by pointing towards her that 'I marry this Hindah, daughter of Bakr, to you', but rather these words were said in Hindah's absence, then Hindah's marriage did not take place. She needs neither a divorce nor an 'Iddah period; she can marry whomever she wishes because the marriage was performed for 'Hindah daughter of Bakr', and she is not 'Hindah daughter of Bakr'. Yes, if Bakr had raised her or adopted her and she is known in common usage as 'Hindah daughter of Bakr' and mention of it brings her to mind, then the marriage has taken place and Hindah cannot be free without a divorce. It is in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Quote: If her representative (wakil) in marriage makes a mistake in her father's name in her absence, it is not valid.] In the girl's absence, if her representative wrongly stated her father's name, then the marriage will not be correct. (T)

It is in Alamgiri:

[Arabic Quote: A man says his wife 'Umrah daughter of Sabih' is divorced, while his wife's name is 'Umrah daughter of Hafs'. If he had no specific intention, no divorce occurs. However, if Sabih was the stepfather who raised her and she is attributed to him, then the divorce occurs regardless of whether the husband knew her true lineage.] If someone while giving divorce said 'I divorce my wife Umrah daughter of Sabih', whereas his wife's name is Umrah daughter of Hafs, then at that time if the person had no intention, his wife will not be divorced. And if his wife Umrah's mother's second husband's name was Sabih and this Umrah stayed with her mother under Sabih's care and due to this reason, Umrah is attributed to Sabih, and the husband knows Umrah's real lineage, in both cases his wife Umrah will be divorced. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 61: From Meerut, Bazaar Mohalla Soti Ganj, sent by Maulvi Muhammad Afzal Sahib Kabuli, educated at Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly, Imam of Soti Ganj Mosque, 2 Shawwal 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this problem in India...

1. Durr al-Mukhtar, Book of Nikah, Mujtabai Press, Delhi, 1/178.
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Two on Pronouncing Divorce, Section One, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/358.

फतावा रज़विया जिल्द 11

ईजाब और कुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) हुआ है, तो क्या ऐसा निकाह सही हुआ या नहीं? इसके अलावा उसका असली पिता ज़ैद जीवित है। निकाह के समय न तो उससे अनुमति ली गई और न ही उसे सूचित किया गया। प्रश्नगत स्थिति में यदि निकाह नहीं हुआ, तो क्या हिंदा अपनी इच्छा के अनुसार अपने कुफ़ू (समान स्तर) में दूसरा निकाह कर सकती है? क्या इद्दत की अवधि की पाबंदी है या नहीं? हिंदा बालिग (वयस्क) है। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर:

यदि हिंदा उस निकाह की सभा में उपस्थित नहीं थी और उसकी ओर इशारा करके यह नहीं कहा गया कि 'मैं इस हिंदा बिन्ते बक्र का निकाह तुम्हारे साथ करता हूँ', बल्कि हिंदा की अनुपस्थिति में ये शब्द कहे गए, तो हिंदा का निकाह नहीं हुआ। उसे न तो तलाक की ज़रूरत है और न ही इद्दत की आवश्यकता है; वह जिससे चाहे अपना निकाह कर सकती है क्योंकि निकाह तो 'हिंदा बिन्ते बक्र' का हुआ था और वह 'हिंदा बिन्ते बक्र' नहीं है। हाँ, यदि बक्र ने उसका पालन-पोषण किया था या उसे गोद लिया था और वह लोक-व्यवहार में 'हिंदा बिन्ते बक्र' के नाम से जानी जाती है और उसका नाम लेने से उसकी ओर ध्यान जाता है, तो निकाह हो गया और अब बिना तलाक के हिंदा मुक्त नहीं हो सकती। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी उद्धरण: लड़की की अनुपस्थिति में निकाह में उसके वकील ने उसके पिता के नाम में गलती की, तो वह सही नहीं है।] लड़की की अनुपस्थिति में उसके वकील ने लड़की के पिता का नाम गलत कह दिया तो निकाह सही नहीं होगा। (त)

'आलमगीरी' में है:

[अरबी उद्धरण: एक व्यक्ति कहता है कि उसकी पत्नी 'उमरा बिन्ते सबीह' को तलाक है, जबकि उसकी पत्नी का नाम 'उमरा बिन्ते हफ्स' है। यदि उसकी कोई विशेष नियत नहीं थी, तो तलाक नहीं होता। लेकिन यदि सबीह उसकी पत्नी का सौतेला पिता था जिसने उसे पाला और वह उसी के नाम से जानी जाती है, तो तलाक प्रभावी होगा चाहे पति को उसके असली वंश का पता हो या नहीं।] किसी व्यक्ति ने तलाक देते समय अपनी पत्नी का नाम 'उमरा बिन्ते सबीह' को तलाक कहा, जबकि उसकी पत्नी का नाम 'उमरा बिन्ते हफ्स' है, तो उस समय यदि उस व्यक्ति ने कोई नियत नहीं की, तो उसकी पत्नी को तलाक नहीं होगा। और यदि उसकी पत्नी उमरा की माँ के दूसरे पति का नाम सबीह था और

यह उमरा अपनी माँ के साथ सबीह के पालन-पोषण में रही, इस कारण उमरा को सबीह की ओर संबद्ध किया जाता है और पति को उमरा के असली वंश का ज्ञान है, तो दोनों ही स्थितियों में उसकी पत्नी उमरा को तलाक हो जाएगा। (त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 61: मेरठ, बाज़ार मोहल्ला सोती गंज से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद अफ़ज़ल साहब काबुली, शिक्षित मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम बरेली, इमाम मस्जिद सोती गंज, 2 शव्वाल 1339 हिजरी।

हिंदुस्तान के धर्मगुरु इस मसले में क्या फरमाते हैं...

1. दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/178
2. फतावा हिन्दिया, अल-बाब अल-थानी फ़ी ईकाअ अत-तलाक, अल-फस्ल अल-अव्वल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/358

पृष्ठ 251/739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

ایجاب وقبول ہوا ہے تو ایسا نکاح درست ہوا یا نہیں؟ نیز اس کا اصل باپ یعنی زید جو زندہ موجود ہے۔ بروقت نکاح نہ اس سے اجازت لی گئی نہ اسے اطلاع دی صورت مسئولہ میں اگر نکاح نہیں ہوا تو کیا ہندہ اپنی منشا کے موافق اپنے کفو میں نکاح ثانی کر سکتی ہے، ایام عدت کی قید ہے یا نہیں؟ ہندہ بالغہ ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب:

اگر ہندہ اس جلسہ نکاح میں حاضر نہ تھی اور اس کی طرف اشارہ کر کے نہ کہا گیا کہ اس ہندہ بنت بکر کا نکاح تیرے ساتھ کیا بلکہ ہندہ کی غیبت میں یہ الفاظ کہے گئے تو ہندہ کا نکاح نہ ہوا۔ نہ اسے طلاق کی حاجت نہ عدت کی ضرورت جس سے چاہے اپنا نکاح کر سکتی ہے کہ نکاح تو ہندہ بنت بکر کا ہوا اور یہ ہندہ بنت بکر نہیں، ہاں اگر بکر نے اسے پرورش یا متبنی کیا تھا اور وہ عرف میں ہندہ بنت بکر کہی جاتی ہے اور اس کے کہنے سے اس کی طرف ذہن جاتا ہے تو نکاح ہو گیا اب بغیر طلاق ہندہ کو مخلص نہیں۔ در مختار میں ہے:

غلط وکیلها بالنکاح فی اسم ابیها بغیر حضورها لم یصح لڑکی کی غیر موجودگی میں اس کے وکیل نے لڑکی کے باپ کا نام غلط کہہ دیا تو نکاح صحیح نہ ہوگا۔ (ت)

عالمگیری میں ہے:

قال امرأته عمرة بنت صبیح طالق و امرأته عمرة بنت حفص ولا نیة له لا تطلق امرأته فان کان صبیح زوج أم امرأته وکانت تنسب الیه وهی فی حجره فقال ذلك وهو یعلم نسب امرأته او لا یعلم طلقت امرأته۔ کسی شخص نے طلاق دیتے وقت اپنی بیوی کا نام عمرہ بنت صبیح کو طلاق کہا جبکہ

اسکی بیوی کا نام عمرہ بنت حفص ہے تو وقت اس شخص نے کوئی نیت نہ کی تو اس کی بیوی کو طلاق نہ ہوگی، اور اگر اس کی بیوی عمرہ کی ماں کے دوسرے خاوند کا نام صبیح تھا اور یہ عمرہ اپنی ماں کے ساتھ صبیح کی پرورش میں رہی اس وجہ سے عمرہ صبیح کی طرف منسوب ہوتی ہے اور خاوند کو عمرہ کے اصل نسب کا علم ہے دونوں صورتوں میں اس کی بیوی عمرہ کو طلاق ہو جائیگی۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۶۱ : از میرٹھ بازار محلہ سوتی گنج مرسلہ مولوی محمد افضل صاحب کابلی تعلیم یافتہ مدرسہ منظر اسلام بریلی امام مسجد سوتی گنج ۲ شوال ۱۳۳۹ھ

چہ مے فرمایند دریں مسئلہ کہ در ملک ہند علماء فتوٰی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندوستان کے

1 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۷۸ 2 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی فی ایقاع الطلاق الفصل الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۵۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

Scholars give fatwas that after an engagement (mangni), it is permissible for a girl to be married elsewhere. However, this humble person considers it impermissible because offer and acceptance (Ijab-o-Qubul) are established by both sides. The boy's family says "Give (her)," and the girl's family says "I have given" or "have already given" or "the engagement is done." These words are established for the marriage contract (Nikah). Yes, if the girl's family says "we will give," then it is fine. My master, it is a strange sorrow that the Deobandis, whose own faith is corrupt, are undermining the Muslims. If this fatwa of the scholars is wrong, then because of them, thousands of illegitimate children (lit. seeds of adultery) are spreading in the world. Therefore, please provide a remedy for this practice. (T)

Answer: And upon you be peace and the mercy and blessings of Allah. The phrase "engagement is done" itself manifests that "engagement" refers to the relationship and the promise of marriage, not the marriage contract itself. The girl's family saying "gave" or "has given" in a gathering of promise will be construed as a promise, not as a marriage contract. It is stated in the commentary of Imam Tahawi, Fath, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar that if a man says to someone, "Did you give her to me?" and he replies, "I have given," then if the gathering was for a promise and engagement, it is a promise and engagement; and if the gathering was for a contract, it is a marriage. Furthermore, how can it be a marriage in the questioned scenario when the presence of two witnesses is a condition for marriage in such a way that they understand it is a marriage? (Tanwir and Durr)

1. Fath al-Qadir, Kitab an-Nikah, Maktaba Nooria Razaviya, Sukkur, 3/103.
2. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Kitab an-Nikah, Matba Mujtabai Delhi, 1/186.

फतावा रज़विया, खंड 11

विद्वान फतवा देते हैं कि सगाई (मंगनी) के बाद लड़की का दूसरी जगह निकाह जायज़ है, लेकिन यह तुच्छ व्यक्ति इसे नाजायज़ समझता है क्योंकि दोनों पक्षों से इज़ाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) साबित हो जाता है। लड़के वाले कहते हैं "दे दो" और लड़की वाले "दे दी" या "दे चुका" या "सगाई कर चुका" कहते हैं। ये शब्द निकाह के अनुबंध के लिए तय हैं। हाँ, अगर लड़की वाले "देंगे" कहें तो ठीक है। मेरे आका, बड़े अफ़सोस की बात है कि देवबंदी, जिनका अपना दीन ख़राब है, वे मुसलमानों की जड़ें काट रहे हैं। अगर विद्वानों का यह फतवा गलत है, तो उनकी वजह से दुनिया में हज़ारों ज़िना (अवैध) की औलादें फैल रही हैं, इसलिए इस कार्य का निवारण फ़रमाएं। (त)

जवाब: और आप पर भी सलामती हो और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों। "सगाई कर चुका" शब्द स्वयं प्रकट करता है कि "सगाई" रिश्ते और निकाह के वादे को कहते हैं न कि निकाह को। लड़की वालों का "दे दिया" या "दे चुका" कहना वादे की सभा में वादे पर माना जाएगा, न कि निकाह के अनुबंध पर। इमाम तहावी की शरह, फ़तह, दुर्र-ए-मुख्तार और रद्द-उल-मुहतार में है कि अगर किसी आदमी ने किसी से कहा कि "क्या तुमने मुझे लड़की दी?" तो उसने जवाब दिया "दी", तो अगर यह वादा और मंगनी की सभा है तो वादा और मंगनी है और अगर यह निकाह की सभा है तो निकाह है। फिर पूछी गई स्थिति में निकाह कैसे हो सकता है जबकि निकाह के लिए दो गवाहों की उपस्थिति इस प्रकार शर्त है कि वे इसे निकाह समझें। (तन्वीर और दुर्र)

1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अन-निकाह, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/103.
2. दुर्र-ए-मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, किताब अन-निकाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/186.

पृष्ठ 252 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

علماء فتوٰی دیتے ہیں کہ منگنی کے بعد لڑکی کا دوسری جگہ نکاح جائز ہے لیکن یہ ناچیز اس کو ناجائز سمجھتا ہے کیونکہ ایجاب و قبول جانبین سے ثابت ہو جاتا ہے لڑکے والے "دے دو" کہتے ہیں اور لڑکی والے "دے دی" یا "دے چکا" کہتے ہیں یا "سگائی کر چکا" کہتے ہیں، یہ الفاظ عقد نکاح کے لیے وضع ہیں، ہاں اگر لڑکی والے "دیں گے" کہیں تو خیر ہے، جناب میرے آقا عجیب افسوس ہے کہ دیوبندی جن کا دین خود خراب ہے وہ مسلمانوں کی بیخ کنی کر رہے ہیں، اگر علماء کا یہ فتوٰی غلط ہو تو ان کی وجہ سے دنیا میں ہزاروں نطفہ زنا پھیلے ہوئے ہیں اس لیے اس عمل کا تدارک فرمادیں (ت)

الجواب: وعلیکم السلام و رحمۃ اللہ و برکاتہ، لفظ "سگائی کر چکا" کا لفظ خود ظاہر کرتا ہے کہ "سگائی" نسبت اور وعدہ نکاح کو کہتے ہیں نہ کہ نکاح کو، لڑکی والوں کا دے دیا یا دے چکا کہنا مجلس وعد میں وعدہ پر محمول ہو گا نہ کہ عقد نکاح پر، امام طحاوی کی شرح، فتح، درمختار اور ردالمحتار میں ہے کہ اگر مرد نے کسی کو کہا کہ تو نے مجھے لڑکی دی، تو اس نے جواب میں کہا کہ میں نے دی، تو اگر یہ مجلس وعدہ اور منگنی ہو تو وعدہ اور منگنی ہے اور اگر مجلس عقد ہے تو نکاح ہے، پھر مسئولہ صورت میں نکاح کیسے ہو سکتا ہے جبکہ نکاح کے لیے دو گواہوں کی موجودگی بایں طور پر شرط ہے کہ وہ اس کو نکاح سمجھیں۔ تنویر اور در

1 فتح القدیر کتاب النکاح مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/۱۰۳ 2 در مختار شرح تنویر الابصار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۶

Fatawa Ridawiyyah (Volume 11)

Even if a thousand people are present and no one understands it as a marriage contract because among them it is considered a betrothal, then it is merely one of the preliminaries of marriage and not marriage itself. Allah (the Exalted) knows best. It has been made a condition that there should be two witnesses to the marriage who understand it as such; this is the school of 'Bahr'. And in the mentioned scenario here, even if there are thousands in the gathering, no one will consider it a marriage because they regard betrothal not as marriage but as one of its preliminaries. And Allah (the Exalted) knows best. (T)

Question 62: From Choniyan, District Lahore, submitted by Zia-ud-Din, In-charge Government Stable, 8 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: A person, according to the instruction of his father who had guided him to give his sister's hand (naata) to his (the father's) real brother's son, agreed. Thus, in the presence of his father and a gathering of several Muslims, addressing his real brother, he said, "I have given my adult daughter (named so-and-so)'s hand to your adult son (so-and-so)." The father of the boy accepted. Did this marriage become valid through the offer and acceptance of these two guardians or not? If it did, can the girl's father marry her elsewhere without a divorce? And what is the Sharia ruling for the guardians, witnesses, and the officiant of the second marriage? Clarify and be rewarded.

The Answer: Giving a 'naata' (hand in marriage) in common usage refers to betrothal (mangni), and betrothal is not marriage. In this case, until the marriage contract (nikah) is performed, the girl's father can marry her elsewhere, and no blame lies on the marriage officiant etc. If in some local custom, 'naata karna' also means performing the marriage, then it will be seen whether that gathering in which these words were uttered was for the marriage contract or for betrothal. If it was for betrothal, then the same ruling applies that marriage did not take place, and the girl's father has the choice. But if it was for marriage and at least two people from those present, who are eligible to be witnesses to marriage, heard and understood the offer and acceptance as a marriage taking place, then marriage is concluded. Now her marriage cannot take place elsewhere. The girl's father, the marriage officiant, and the witnesses of the second marriage who knew that her marriage had already taken place, will all be involved in a forbidden act (haram). It is stated in Durr al-Mukhtar: "Did you give her to me?" If the gathering is for marriage, it's marriage; and if for a promise, it's a promise. And Allah (the Exalted) knows best. If one said to

another, "Did you give her to me?" and the second replied, "I gave," then if it is a marriage gathering, it will be a marriage; and if it is a gathering for a promise, it will be a betrothal. And Allah (the Exalted) knows best. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Press, Delhi, 1/185 Page 253 of 739

अगर हज़ार लोग मौजूद हों और कोई भी इसे निकाह न समझे क्योंकि उनके यहाँ यह मंगनी है, तो यह निकाह की प्रारंभिक औपचारिकताओं में से एक है, निकाह नहीं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। यह शर्त रखी गई है कि निकाह में दो ऐसे गवाह होने चाहिए जो यह समझें कि यह निकाह हो रहा है; यही 'बहर' संप्रदाय का मत है। और यहाँ बताई गई स्थिति में, सभा में चाहे हज़ार लोग भी हों, कोई भी इसे निकाह नहीं समझेगा क्योंकि वे मंगनी को निकाह नहीं बल्कि निकाह की तैयारियों में से एक मानते हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

प्रश्न 62: चुनियाँ, ज़िला लाहौर से, प्रेषक: ज़ियाउद्दीन, प्रभारी सरकारी अस्तबल, 8 शव्वाल 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति ने अपने पिता के निर्देशानुसार, जिन्होंने उसे अपनी अमुक पुत्री का नाता (हाथ) अपने अमुक सगे भाई को देने का निर्देश दिया था, तब से वह सहमत हो गया। तदनुसार, अपने पिता की उपस्थिति और कई मुसलमानों की सभा में, अपने सगे भाई को संबोधित करते हुए कहा, "मैंने अपनी अमुक नाम वाली वयस्क पुत्री का नाता तुम्हारे अमुक वयस्क पुत्र को दे दिया है।" लड़के के पिता ने इसे स्वीकार कर लिया। क्या इन दोनों संरक्षकों (वलियों) के प्रस्ताव और स्वीकृति (ईजाब-ओ-क़ुबूल) से यह निकाह संपन्न हो गया या नहीं? यदि हो गया, तो क्या अब लड़की का पिता बिना तलाक़ के उसकी शादी कहीं और कर सकता है? और दूसरे निकाह के संरक्षक, गवाह और निकाह पढ़ाने वाले के लिए शरीयत का क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: आम बोलचाल (उर्फ़) में 'नाता देना' मंगनी करने को कहते हैं और मंगनी निकाह नहीं है। इस स्थिति में, जब तक निकाह का अनुबंध (अक़्द) न हो जाए, लड़की का पिता उसकी शादी कहीं और कर सकता है और निकाह पढ़ाने वाले आदि पर कोई दोष नहीं है। और अगर कहीं के प्रचलन में 'नाता करना' निकाह कर देने को भी कहा जाता है, तो वहाँ यह देखा जाएगा कि वह सभा जिसमें ये शब्द कहे गए, निकाह के अनुबंध के लिए थी या मंगनी के लिए। यदि वह मंगनी के लिए थी, तो वही हुक्म है कि निकाह नहीं हुआ, और लड़की के पिता को अधिकार है। और अगर निकाह के लिए थी और उपस्थित लोगों में से कम से कम दो व्यक्तियों ने, जो निकाह के गवाह हो सकते हों, उस प्रस्ताव और स्वीकृति को सुना और समझा कि यह निकाह हो रहा है, तो निकाह संपन्न हो गया। अब उसकी शादी कहीं और नहीं हो सकती। लड़की का पिता, निकाह पढ़ाने वाला और दूसरे निकाह के गवाह जिन्हें यह मालूम था कि उसका निकाह पहले हो चुका है, सभी हराम (वर्जित कार्य) में लिप्त होंगे।

'दुर्रे मुख्तार' में है: "क्या तुमने उसे मुझे दिया?" यदि सभा निकाह के लिए है तो निकाह है; और यदि वादे के लिए है तो वादा है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। यदि एक ने दूसरे से कहा, "क्या तुमने मुझे दी?", दूसरे ने जवाब में कहा, "दी", तो अगर यह निकाह की सभा है तो निकाह होगा, और अगर वादे की सभा है तो मंगनी होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/185 पृष्ठ 739 में से 253

اگر ہزار حاضر باشند بیچ کس نکاح نہ فہد کہ منگنی نزد ایشاں میں ہے نکاح میں دو گواہوں کا ہونا جو یہ سمجھیں کہ یہ نکاح چیزے از مقدمات نکاح است نہ نکاح واللہ تعالٰی اعلم۔ ہے شرط قرار دیا گیا، یہ مذہب ہے بحر۔ اور یہاں مذکورہ صورت میں مجلس میں ہزار بھی ہوں تو کوئی بھی اس کو نکاح نہ سمجھیں گے کیونکہ منگنی کو وہ نکاح نہیں بلکہ اس کے مقدمات میں سے سمجھتے ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۶۲ : از چونیان ضلع لاہور مسئولہ ضیاء الدین انچارج اصطبل گورنمنٹی ۸ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے حسب ہدایت والد خود جس نے اس کی ہدایت کی تھی کہ اپنی فلاں دختر کا ناطہ اپنے فلاں برادر حقیقی کو دینا تب سے راضی ہو گیا چنانچہ اپنے والد کی موجودگی اور چند مسلمانوں کی مجلس میں اپنے برادر حقیقی کو مخاطب کرکے کہا میں نے اپنی فلاں نام والی دختر بالغہ کا ناطہ تمہارے فلاں بالغ کو دے دیا، والد پسر نے قبول کر لیا، آیا ہر دو ولیوں کے ایجاب و قبول سے یہ نکاح منعقد ہو گیا یا نہیں؟ اگر ہو گیا تو اب والد دختر اس کا اور جگہ نکاح کر سکتا ہے بغیر طلاق کے، اور ولی اور گواہان نکاح خوان نکاح ثانی کے واسطے حکم شرع کیا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب : ناطہ دینا عرف میں منگنی کرنے کو کہتے ہیں اور منگنی نکاح نہیں، اس صورت میں جب تک عقدِ نکاح نہ ہو والد دختر دوسری جگہ اس کا نکاح کرسکتا ہے اور نکاح خواں وغیرہ پر کوئی الزام نہیں، اور اگر کہیں کے عرف میں ناطہ کرنا نکاح کردینے کو بھی کہتے ہیں تو وہاں دیکھا جائے گا کہ وہ مجلس جس میں یہ الفاظ ادا ہوئے عقدِ نکاح کے لئے تھی یا منگنی کے لئے، اگر منگنی کے لئے تھی تو وہی حکم ہے کہ نکاح نہ ہوا، اور والد دختر کو اختیار ہے، اور اگر

نکاح کے لئے تھی اور حاضرین میں سے کم از کم دو شخصوں نے اس نکاح کے گواہ ہوسکتے ہوں وہ ایجاب و قبول سنے اور سمجھے کہ یہ نکاح ہو رہا ہے تو نکاح ہو گیا اب دوسری جگہ اس کا نکاح نہیں ہوسکتا، والد دختر اور نکاح خواں اور گواہانِ نکاح ثانی جن کو معلوم تھا کہ اس کا نکاح پہلے ہوچکا ہے سب مبتلائے حرام ہوں گے، درِ مختار میں ہے : ھل اعطیتنیھا ان المجلس للنکاح فنکاح وان للوعد فوعد ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم اگر ایک نے دوسرے کو کہا کیا تو نے مجھے دی، دوسرے نے جواب میں "دی" کہا تو اگر یہ مجلسِ نکاح ہو تو نکاح ہوگا، اور اگر مجلسِ وعدہ ہے تو منگنی ہوگی، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

۱ در مختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۵ Page 253 of 739

Volume Eleven Fatawa Rizvia

Problem 63: From Delhi, Paharganj, Masjid Gharib Shah, submitted by Syed Abdul Karim Sahib Qadri Rizvi, 9 Shawwal 1339 AH. To the presence of the honorable master, Hazrat Maulana Molvi Ahmed Raza Khan Sahib, Vice-Messenger (peace and blessings of Allah be upon him), may his blessings continue. What do the scholars of the religion say in this matter that a nobleman made a woman, who was of the Chamar caste, a formal Muslim and married her and took her to his house. When the people of the brotherhood found out that he had brought a stain on the Qadriya family and the Sayyids by making a Chamar woman a Muslim, marrying her, and keeping her in purdah (veiled seclusion), the woman had been a widow for two years. All the people of the brotherhood, and all the Muslims and Hindus, exposed that woman's face, dishonored her, and even non-mahram men beat her and took her to the police station. Now the question is, do Allah and His Messenger (Glory be to Him and peace and blessings of Allah be upon him) allow such treatment of this new Muslim woman or not? And those who participated in this, what sin are they guilty of? Or is the one who made her a Muslim and brought her into his marriage a sinner, and is it Shariah-permissible to boycott him, expel him from the brotherhood, and stop his social interactions (water and hookah)? And when can that woman become compatible (Kufu)? Explain and be rewarded. **The Answer:** Converting someone to Islam is a source of great reward, and marrying her and keeping her in purdah is also a good deed. Expelling him from the brotherhood on this basis is oppression. And the excess, beating, and exposing of that Muslim woman's face were all forbidden (Haram) and strictly forbidden, and a severe oppression. Those who do such things are caught in violating the rights of humans (Haq-ul-Abd), and Allah and His Messenger (Glory be to Him and peace and blessings of Allah be upon him) are displeased with them. For an adult male, compatibility (Kafa'at) is not a condition. Allah Almighty knows best.

Problem 64: From Rama, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, Post Office Jatli, submitted by Muhammad Ji, 27 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of the religion say in this matter that three witnesses of the claimant testify that the father of the minor daughter wrote a letter from his journey to his brother saying, "Arrange the engagement or marriage of my minor daughter Farhan Bibi wherever you wish." We are the auditors of that paper. Afterwards, that representative (vakeel) of the father performed a metaphorical marriage to a minor boy, Musti Khattar, who has no living male relative (asabah). And from the side of the known boy, his maternal uncle

accepted it for him, and we considered this to be a marriage. This is the complete statement of the claimant's witnesses. Now the father of the said daughter completely denies the journey, and the witnesses of it are also deniers of the above statement, or they say that an engagement took place, not a marriage, even though the representative has died and the paper has also been lost. The price of the paper will be given. Explain and be rewarded.

Page 254 of 739

मसला ६३: दिल्ली, पहाड़गंज, मस्जिद गरीब शाह से, सैय्यद अब्दुल करीम साहब कादरी रज़वी द्वारा प्रस्तुत, ९ शव्वाल १३३९ हिजरी। माननीय आका हज़रत मौलाना मौलवी अहमद रज़ा खान साहब, नायब-ए-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), उनकी बरकतें बनी रहें, की सेवा में। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक कुलीन व्यक्ति ने एक महिला को, जो चमार जाति की थी, विधिवत मुस्लिम बनाया और उससे निकाह किया और उसे अपने घर ले गया। जब बिरादरी के लोगों को पता चला कि उसने चमारिन को मुसलमान बनाकर निकाह कर लिया और पर्दे में बिठा लिया, तो उन्होंने इसे कादरिया परिवार और सादात के लिए कलंक माना। वह महिला दो साल से विधवा थी। बिरादरी के सभी लोगों और तमाम मुसलमानों और हिंदुओं ने उस महिला को बेपर्दा किया, उसकी बेइज्जती की और गैर-महरम पुरुषों ने उसके साथ मारपीट भी की और उसे थाने पहुँचा दिया। अब सवाल यह है कि अल्लाह और उसके रसूल (जल्ल जलालाहू व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस नव-मुस्लिम महिला के साथ ऐसा व्यवहार करने की अनुमति देते हैं या नहीं? और जो लोग इसमें शामिल हुए वे किस गुनाह के अपराधी हैं? या जिसने उसे मुसलमान बनाकर अपने निकाह में लाया वह गुनहगार है और उससे सामाजिक बहिष्कार (हुक्का-पानी बंद करना), बिरादरी से बाहर करना शरीयत की दृष्टि से जायज़ है या नहीं? और वह महिला कुफ़ू (बराबरी) में कब आ सकती है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। **जवाब:** मुसलमान बनाना महान प्रतिफल (अज्र) का कारण है और उससे निकाह करना और उसे पर्दे में बिठाना भी पुण्य का कार्य है। इस आधार पर उसे बिरादरी से बाहर करना ज़ुल्म है। और उस मुस्लिम महिला के साथ जो ज़्यादती, मारपीट और बेपर्दगी की गई, वह सब हराम और सख्त हराम और घोर ज़ुल्म था। ऐसा करने वाले हुकूक-उल-इबाद (बंदों के अधिकार) के उल्लंघन के अपराधी हैं और अल्लाह और उसके रसूल (जल्ल जलालाहू व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनसे नाराज़ हैं। बालिग पुरुष के लिए कफ़ाअत (बराबरी) कोई शर्त नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ६४: रामा, तहसील गुजर खान, जिला रावलपिंडी, डाकघर जातली से, मोहम्मद जी द्वारा प्रस्तुत, २७ शव्वाल १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि दावेदार के तीन गवाह गवाही देते हैं कि नाबालिग बेटी के पिता ने सफर के दौरान अपने भाई को एक खत लिखा कि "मेरी नाबालिग बेटी फरहान बीबी का रिश्ता या निकाह जहाँ तुम्हारी मर्जी हो कर दो, हम उस कागज के सुनने वाले (गवाह) हैं।" इसके बाद पिता के उस वकील ने एक नाबालिग लड़के मुस्ती

खट्टर, जिसका कोई असबा (पुरुष रिश्तेदार) जीवित नहीं है, के साथ किनाया (सांकेतिक) निकाह के तौर पर कर दिया और लड़के की ओर से उसके मामा ने इसे स्वीकार कर लिया और हमने इसे निकाह ही समझा। यह दावेदार के गवाहों का पूरा बयान है। अब उस बेटी का पिता सफर से पूरी तरह इनकार करता है और उसके गवाह भी उपरोक्त बयान से इनकार करते हैं, या कहते हैं कि केवल नाता (सगाई) हुआ है निकाह नहीं, जबकि वकील की मृत्यु हो गई है और कागज भी खो गया है। कागज की कीमत दी जाएगी। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

पृष्ठ २५४ / ७३९

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۶۳: از دہلی پہاڑ گنج مسجد غریب شاہ مسئولہ سید عبدالکریم صاحب قادری رضوی ۹ شوال ۱۳۳۹ھ بخدمت جناب قبلہ حضرت مولانا مولوی احمد رضا خاں صاحب نائب رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دامت برکاتہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شریف زادہ نے ایک عورت کو جو قوم کی چماری تھی مسلمان با قاعدہ کیا اور اس سے نکاح کیا اور اپنے مکان میں لے گیا، جب اہل برادری کو معلوم ہوا کہ اس نے خاندانِ قادریہ اور سادات کے بٹا لگا دیا کہ چماری کو مسلمان کر کے نکاح پڑھ لیا اور پردہ میں بٹھالیا، وہ عورت دو سال سے بیوہ تھی تمام اہل برادری اور تمام مسلمانوں اور ہندوؤں نے اس عورت کو بے پردہ کیا اور بے عزتی کی اور غیر محرموں نے مارپیٹ بھی کی اور اسے تھانہ میں پہنچا دیا، اب سوال یہ کہ اس عورت نو مسلمہ کے ساتھ ایسا کرنے کی اللہ و رسول جل و تعالیٰ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اجازت دیتے ہیں یا نہیں؟ اور جو لوگ اس میں شریک ہوئے وہ کس گناہ کے مرتکب ہیں یا جس نے مسلمان کر کے اسے اپنے نکاح میں لایا وہ گنہگار ہے اور اس سے ترک موالات کرنا، برادری سے خارج کرنا اس کا حقہ پانی بند کرنا شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ اور وہ عورت کفو میں کب آسکتی ہے؟ بینوا توجروا۔ **الجواب:** مسلمان کرنا باعث اجر عظیم ہے اور اس سے نکاح کرنا پردہ میں بٹھانا بھی کار خیر ہے اور اس بنا پر اسے برادری سے خارج کرنا ظلم ہے، اور اس مسلمہ عورت کے ساتھ جو زیادتی اور مار پیٹ اور بے پردگی کی گئی سب حرام اور سخت حرام اور ظلم شدید تھا، ایسا کرنے والے حق العبد میں گرفتار ہیں اور اللہ ورسول ان سے ناراض ہیں جل وعلا و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔ بالغ مرد کے لیے کفاءت کچھ شرط نہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۶۴: از رامہ تحصیل گوجر خاں ضلع راولپنڈی ڈاکخانہ جاتلی مسئولہ محمد جی ۲۷ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مدعی کے تین شاہد شہادت دیتے ہیں کہ والد دختر نابالغہ نے سفر سے ایک خط اپنے بھائی کو لکھا کہ میری دختر نابالغہ فرحان بی بی کا ناتا یا نکاح جس جگہ تمھاری مرضی ہو کردو، ہم لوگ اس کاغذ کے سامعین ہیں، بعدہ اس وکیل والد کے ایک لڑکے نابالغ مستی کھٹڑ کہ جس کا کوئی عصبہ زندہ نہیں ہے کنایہ نکاح کے طور پر کر دیا تھا اور لڑکے معلوم کی طرف سے اس کے ماموں نے اس کے لیے قبول کر لیا ہے اور ہم نے یہ نکاح ہی سمجھا ہے، یہ تقریر شاہدین مدعی کی بتامہ ہے، اب والد دختر معلومہ کا سفر سے بالکل منکر ہے اور گواہ اس کے بھی منکر ہیں، تقریر بالا سے، یا کہتے ہیں کہ ناتا ہوا ہے نہ نکاح حالانکہ وکیل فوت ہو گیا اور کاغذ بھی گم ہو گیا ہے۔ قیمت کاغذ دی جائے گی، بینوا توجروا۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

The Answer: State clearly who made the proposal (Ijab) and who accepted (Qabul). What were the words of the proposal and the words of acceptance? Did the girl's uncle, whom her father had appointed as his agent (Wakil), conduct the marriage ceremony himself or did he have someone else do it? Did someone conduct it of their own accord? Was the father's agent present in that gathering or not? And when the boy's father was present, why did the maternal uncle accept on behalf of the boy? Was it at the request of the boy's father or of his own accord? What did the boy's father say about it? And since those were metaphorical (Kinayah) words, by what context did those people understand a marriage was taking place? From what exactly is the girl's father denying - the appointment of the agent or the occurrence of the marriage? Did that letter arrive by post or was it delivered by hand? And regarding the three witnesses for the claimant, was it read in front of them or did the girl's father write it in their presence? Are these witnesses reliable and pious, or what? A complete answer can only be given upon receiving detailed answers to all these points. Regarding the price of the paper, it was previously written to you that fatwas are given for the sake of Allah and are not sold. Never write this word again. End.

Problem 65: From Rama, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, Post Office Jati, sent by Muhammad Ji Sahib, 18 Dhu al-Qi'dah 1339 AH. A father wrote a letter to his brother saying, "Arrange the engagement or marriage of my minor daughter wherever you wish." The recipient of the letter, with the father's permission, performed the marriage of that minor girl at a certain place. The words of proposal were: "I have given the specified daughter to such-and-such boy." On behalf of the minor boy, his maternal uncle accepted. Three witnesses say they personally heard the letter in which the father gave his brother permission for the marriage of the specified minor daughter, and they heard mention of the marriage in the gathering. At the time of the marriage, the father was on a journey, and the letter was also lost. A few days after the marriage, the recipient of the letter passed away. Now that the father has returned from his journey, he says, "I gave no such permission to my brother." His witnesses also say that this never happened. However, these witnesses for the father are very sinful (fasiq), while the three witnesses mentioned above are not.

The Answer: Since the father denies writing that letter, he needs no evidence. The evidence should have been that he wrote this letter in our presence. There is no such evidence for this. The witnesses say they heard the letter; this testimony is not

reliable. Therefore, giving permission is not proven. Upon the father's denial, that marriage becomes void, provided he states under oath that he neither wrote that letter nor gave permission to his brother. For indeed, handwriting resembles handwriting, and there is no proof except through clear evidence (Bayyinah), confession (Iqrar), or refusal to swear an oath (Nukul). (Because one handwriting looks like another; there is no proof except witness testimony, confession, or refusal of an oath. -Translator). And Allah Almighty knows best.

जवाब: बात साफ़ लिखिये कि ईजाब (प्रस्ताव) किसने किया और क़बूल (स्वीकृति) किसने किया? ईजाब के शब्द क्या थे और क़बूल के शब्द क्या थे? लड़की का चाचा, जिसे उसके पिता ने वकील (प्रतिनिधि) नियुक्त किया था, उसने निकाह ख़ुद पढ़ाया था या किसी और से पढ़वाया था? क्या किसी ने अपनी ओर से पढ़ा दिया था और वह वकील पिता उस सभा में उपस्थित था या नहीं? और जब लड़के का पिता उपस्थित था, तो लड़के की ओर से मामा ने क़बूल क्यों किया? क्या पिता के कहने पर किया या अपनी मर्जी से? और लड़के के पिता ने इस पर क्या कहा? और चूंकि वे शब्द किनाया (अप्रत्यक्ष) थे, तो उन लोगों ने किस संदर्भ से उसे निकाह होना समझा? और लड़की का पिता किस बात से इनकार कर रहा है - वकील बनाने से या निकाह होने से? वह पत्र डाक से आया था या किसी व्यक्ति के हाथ भेजा गया था? और जो दावेदार के तीन गवाह हैं, उनके सामने वह पत्र पढ़ा गया था या उनके सामने लड़की के पिता ने उसे लिखा था? और क्या ये गवाह विश्वसनीय और परहेजगार हैं या कैसे? इन सभी बातों के विस्तृत उत्तर मिलने पर ही जवाब दिया जा सकेगा। काग़ज़ की क़ीमत के बारे में आपको पहले ही लिखा जा चुका है कि फ़तवा अल्लाह के लिए दिया जाता है, बेचा नहीं जाता। भविष्य में कभी यह शब्द न लिखें। बस।

मसला 65: रामा, तहसील गुजर खान, जिला रावलपिंडी, डाकघर जाती से मोहम्मद जी साहिब द्वारा प्रेषित, 18 ज़ुल्-क़ादा 1339 हिजरी। एक पिता ने अपने भाई को पत्र लिखा कि, "मेरी नाबालिग बेटी का नाता या निकाह जहाँ तुम्हारी मर्जी हो कर दो।" पत्र प्राप्तकर्ता ने पिता की अनुमति से एक स्थान पर उस नाबालिग लड़की का निकाह कर दिया। ईजाब के शब्द ये थे: "मैंने उक्त लड़की फ़लाँ लड़के को दे दी है।" और नाबालिग लड़के की ओर से उसके मामा ने क़बूल किया। तीन गवाह कहते हैं कि हमने वह पत्र ख़ुद सुना है जिसमें पिता ने अपने भाई को नाबालिग लड़की के निकाह की अनुमति दी थी और हमने सभा में निकाह का ज़िक्र सुना है। निकाह के समय पिता यात्रा पर था और पत्र भी खो गया। निकाह के कुछ दिनों बाद पत्र प्राप्तकर्ता का इंतक़ाल हो गया। अब पिता यात्रा से लौट आया है और कहता है कि मैंने अपने भाई को कोई अनुमति नहीं दी थी। उसके गवाह भी कहते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं हुई। लेकिन पिता के ये गवाह बहुत फ़ासिक़ (पापी) हैं और ऊपर बताए गए तीन गवाह फ़ासिक़ नहीं हैं।

जवाब: चूँकि पिता उस पत्र को लिखने से इनकार कर रहा है, तो उसे किसी गवाही की आवश्यकता नहीं है। गवाही इस बात की होनी चाहिए थी कि उसने हमारे सामने यह पत्र लिखा है। इस पर कोई

गवाही नहीं है। गवाह कहते हैं कि हमने पत्र सुना, यह गवाही विश्वसनीय नहीं है। इसलिए, अनुमति देना साबित नहीं होता। पिता के इनकार करने से वह निकाह अमान्य हो गया, बशर्ते वह शपथ लेकर कह दे कि न तो मैंने वह पत्र लिखा था और न ही मैंने भाई को अनुमति दी थी। क्योंकि लिखावट दूसरी लिखावट के समान हो सकती है, और साक्ष्य (बय्यिनह), स्वीकारोक्ति (इक़रार) या शपथ लेने से इनकार (नुकूल) के अलावा कोई प्रमाण नहीं है। (क्योंकि एक लिखावट दूसरी लिखावट जैसी हो सकती है; गवाही, स्वीकारोक्ति और शपथ से इनकार के अलावा कोई दलील नहीं है। -त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पृष्ठ 255 / 739

الجواب: بات صاف لکھئے ایجاب کس نے کیا، قبول کس نے کیا، ایجاب کے کیا لفظ تھے، قبول کے کیا لفظ تھے، لڑکی کا چچا جس کو اس کے باپ نے وکیل کیا تھا اس نے خود پڑھایا تھا یا کسی سے پڑھوایا تھا کسی نے بطور خود پڑھا دیا تھا اور وہ وکیل والد اس جلسے میں موجود تھا یا نہ تھا، اور جب والد لڑکے کا موجود تھا تو لڑکے کی طرف سے ماموں نے قبول کیوں کیا، والد پسر کے کہنے سے یا بطور خود، اور والد پسر نے اس پر کیا کہا، اور جب وہ الفاظ کنایہ تھے تو ان لوگوں نے کس قرینہ سے نکاح ہونا سمجھا اور دختر کا والد کس بات سے منکر ہے اس وکیل کرنے سے یا نکاح ہونے سے، اور وہ خط ڈاک میں آیا تھا یا آدمی کے ہاتھ ، اور یہ جو مدعی کے تین گواہ ہیں ان کے سامنے پڑھا گیا یا ان کے سامنے والد دختر نے لکھا تھا، اور یہ گواہ ثقہ پر ہیز گار ہیں یا کیسے، ان سب باتوں کے مفصل جواب آنے پر جواب ہوسکے گا، قیمت کاغذ کی نسبت پہلے آپ کو لکھ دیا گیا کہ فتوٰی اللہ کے لیے دیا جاتا ہے بیچا نہیں جاتا۔ آئندہ کبھی یہ لفظ نہ لکھئے۔ فقط

مسئلہ ۶۵: از رامہ تحصیل گوجر خاں ضلع روالپنڈی ڈاکخانہ جاتی مرسلہ محمد جی صاحب ۱۸ ذی قعدہ ۱۳۳۹ھ باپ نے برادر کو خط لکھا کہ میری دختر نابالغہ کا ناتا یا نکاح جہاں تمھاری مرضی ہو کردو، مکتوب الیہ نے باجازت باپ کے ایک جگہ اس نابالغہ کا نکاح کردیا، ایجاب کے لفظ یہ ہیں "دختر معلومہ فلاں لڑکے کو میں نے دی ہے " اور نابالغ لڑکے کی جانب سے قبول اس کے ماموں نے کیا ہے اور تین گواہ کہتے ہیں کہ وہ خط ہم نے خود سنا ہے کہ باپ نے برادر کو اجازت نکاح دختر نابالغہ معلومہ دی ہے اور ہم نے مجلس میں ذکر نکاح کا سنا ہے اور نکاح کے وقت باپ سفر میں تھا اور خط بھی گم ہوگیا ہے اور بعد نکاح چند روز بعد مکتوب الیہ فوت ہوگیا،

اب باپ سفر سے آیا وہ کہتا ہے میں نے برادر کو کوئی اجازت نہیں دی اور اس کے گواہ بھی کہتے ہیں کہ یہ بات بالکل نہیں ہوئی لیکن یہ گواہ باپ کے بہت فاسق ہیں اور تین گواہ جو بالا مذکور ہیں وہ فاسق نہیں ہیں،

الجواب: جبکہ باپ اس خط کے لکھنے سے منکر ہے تو اسے کسی شہادت کی حاجت نہیں، شہادت اس کی ہونی چاہئے تھی کہ ہمارے سامنے اس نے یہ خط لکھا ہے اس پر کوئی شہادت نہیں، گواہ یہ کہتے ہیں کہ ہم نے خط سنا یہ شہادت کچھ معتبر نہیں لہٰذا اجازت دینا ثابت نہیں، باپ کے انکار سے وہ نکاح باطل ہوگیا جبکہ وہ حلف سے کہہ دے کہ وہ خط میں نے نہ لکھا تھا نہ میں نے بھائی کو اجازت دی تھی لان الخط یشبہ الخط ولا حجۃ الا البینۃ او الا قرار او النکول (کیونکہ خط، خط کے مشابہ ہوتا ہے، گواہی، اقرار اور قسم سے انکار کے علاوہ کوئی حجت نہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Rizvia, Volume 11

Problem 66 to 72: From Benares, Pitarkunda locality, sent by Maulana Maulvi Abdul Hamid Sahib Panipati, May his kindness increase, 27 Sha'ban 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Is a marriage valid if the proposal (Ijab) and acceptance (Qabul) are performed by a minor boy and girl themselves? (2) Here the custom is that the marriage officiant (Nikah Khwan) takes permission from the minor's father or another guardian (Wali), and along with two witnesses, goes to the minor bride. He makes her recite the Kalima of Shahadat and Amantu Billah and says, "Your marriage is being performed with so-and-so boy, son of so-and-so, for a mahr (dower) of 81 (currency units). Do you accept? Say, 'Yes, I accept.'" This is repeated three times. Then he comes to the minor groom and says the same words, "So-and-so's daughter, named so-and-so, is entering into marriage with you for a mahr of 81. Do you accept? Say, 'Yes, I accept.'" This is said three times. In short, acceptance happens from both sides, but there is no sign of the proposal (Ijab). Is this marriage valid according to Sharia? Sometimes in this gathering, the guardians (Walis) of the minor bride or groom are not present; instead, they are busy with their own work. Please clarify if there is any flaw or defect in this method according to Sharia, and also state the Sunnah method of marriage according to Sharia. (3) If the guardian (Wali) does not recite the Sunnah sermon (Khutba), or if he is only capable of performing the proposal and acceptance himself, then is it permissible to have someone else conduct the proposal and acceptance? (4) Is it permissible for the marriage officiant to take or be given a fee (Ujrat)? (5) If the marriage fee is not used for personal expenses but is spent on oil and mats for the mosque, is it permissible or not? (6) To place a turban on the groom's head, his paternal aunt's husband (Phupha) or brother-in-law (Bahnoi) is called. Until they arrive, no one else can place the turban. When they come, they do not do it without taking ten or five rupees. If the amount is less, they refuse to take it and insist on more. When they receive according to their wish, they place it. Some Phuphas or sons-in-law place it before taking the money and then take whatever is given. Some insist and take more. What is the status of this giving and taking according to Sharia? And what is the status of considering it a necessary right and being so insistent about it? (7) What is the definition of Walima (wedding feast) according to Sharia, and for how many days is its duration? (a) Is it Walima to host a feast first, and then bring the bride after the wedding procession (Barat) and departure (Rukhsati)? (b) Since consummation (Zifaf)

does not occur after the departure of a minor, is hosting a feast after bringing the bride a Sunnah Walima?

फतावा रज़विया, जिल्द 11

मसला 66 से 72: बनारस, मोहल्ला पितरकुंडा से, मौलाना मौलवी अब्दुल हमीद साहब पानीपती द्वारा प्रेषित, 27 शाबान 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इन मसलों के बारे में क्या फ़रमाते हैं: (1) क्या नाबालिग लड़के और लड़की से ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कराने से निकाह सही होता है या नहीं? (2) यहाँ दस्तूर है कि निकाह ख़्वाँ (निकाह पढ़ाने वाला) नाबालिग के बाप या किसी अन्य वली (संरक्षक) से अनुमति लेकर दो गवाहों के साथ नाबालिग दुल्हन के पास जाते हैं और उसे कलिमा-ए-शहादत और आमन्तु बिल्लाह पढ़ाकर कहते हैं कि "तुम्हारा निकाह 81 मुहर (मेहर) के बदले फ़लाँ लड़के पुत्र फ़लाँ के साथ होता है, क्या तुमने स्वीकार किया? कहो, 'हाँ, मैंने स्वीकार किया'।" इसी तरह तीन बार कहलाते हैं। इसके बाद वह नाबालिग दूल्हे के पास आते हैं और वही सब शब्द पढ़ाकर कहते हैं कि "फ़लाँ की बेटी, जिसका नाम फ़लाँ है, 81 मुहर के बदले तुम्हारे निकाह में आती है, क्या तुमने स्वीकार किया? कहो, 'हाँ, मैंने स्वीकार किया'।" इसी तरह तीन बार कहते हैं। सारांश यह कि दोनों ओर से केवल क़ुबूलियत (स्वीकृति) होती है, ईजाब (प्रस्ताव) का पता नहीं होता। क्या शरई तौर पर यह निकाह सही हो जाता है? और इस सभा में अक्सर ऐसा होता है कि नाबालिग दुल्हन या दूल्हे के वे वली मौजूद नहीं रहते, बल्कि वे अपने अन्य कामों में व्यस्त रहते हैं। इस तरीक़े में शरई तौर पर जो खराबी या दोष हो, उसे स्पष्ट फ़रमाएं, और निकाह का जो शरई सुन्नत तरीक़ा है, वह बताएं। (3) अगर वली सुन्नत खुत्बा न पढ़े या केवल ईजाब-ओ-क़ुबूल करने पर सक्षम हो, तो किसी और से ईजाब-ओ-क़ुबूल कराना कैसा है? (4) निकाह ख़्वाँ के लिए उजरत (पारिश्रमिक) लेना और देना कैसा है? (5) अगर निकाह की उजरत अपने व्यक्तिगत खर्च में न लाई जाए, बल्कि मस्जिद के तेल और चटाई में खर्च की जाए, तो यह जायज़ है या नहीं? (6) दूल्हे के सिर पर पगड़ी रखने के लिए उसके फूफा या बहनोई को बुलाया जाता है। जब तक वे नहीं आते, कोई दूसरा पगड़ी नहीं रख सकता। जब वे आते हैं, तो दस-पाँच रुपये लिए बिना नहीं मानते। जब कम होते हैं, तो लेने से इनकार करते हैं और ज़्यादा के लिए ज़िद करते हैं। जब मनचाही रक़म मिल जाती है, तो पगड़ी रख देते हैं। कुछ फूफा या दामाद पहले ही रख देते हैं और फिर जो मिल जाए ले लेते हैं, और कुछ ज़िद करके और ज़्यादा लेते हैं। क्या शरई तौर पर यह लेना-देना कैसा है? और इसे ज़रूरी हक़ समझना और इस पर इतना आग्रह और ज़ोर देना कैसा है? (7) शरीयत के अनुसार वलीमा की परिभाषा क्या है और इसकी अवधि कितने दिनों तक है? (क) पहले दावत करना, फिर बारात और

रुख़सती के बाद दुल्हन को लाना, क्या यह वलीमा है या नहीं? (ख) चूंकि नाबालिग की रुख़सती के बाद मिलाप (ज़िफ़ाफ़) नहीं होता, तो दुल्हन लाने के बाद दावत करना क्या सुन्नत वलीमा है?

पृष्ठ 256 का 739

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

مسئلہ ۶۶ تا ۷۲ : از بنارس محلہ پتر کندہ مرسلہ جناب مولانا مولوی عبدالحمید صاحب پانی پتی زید کرمہ ۲۷ شعبان ۱۳۳۸ھ علمائے دین ان مسائل میں کیا فرماتے ہیں : (۱) نابالغ لڑکے اور لڑکی سے ایجاب و قبول کرانے سے نکاح صحیح ہوتا ہے یا نہیں ؟ (۲) یہاں دستور ہے کہ نکاح خواں نابالغ کے باپ یا کسی اور ولی سے اجازت لے کر دو گواہوں کے ساتھ نابالغہ دلہن کے پاس آتے ہیں اور اس کو کلمہ شہادت و آمنت باللہ پڑھا کر کہتے ہیں کہ تمہارا نکاح بعوض عد ۸۱ مہر کے فلاں لڑکے مسمیٰ فلاں سے ہوتا ہے تم نے قبول کیا کہو ہاں قبول کیا، اسی طرح تین بار کہلاتے ہیں اس کے بعد نابالغ دولھا کے پاس آتے ہیں اور وہی سب کلمات پڑھا کر کہتے ہیں کہ فلاں کی لڑکی مسماۃ فلاں بعوض عد ۸۱ مہر کے تمہارے نکاح میں آتی ہے تم نے قبول کیا، کہو ہاں قبول کیا۔ اسی طرح تین بار کہتے ہیں غرض دونوں جانب قبولیت ہوتی ہے ایجاب کا پتا نہیں، شرعاً یہ نکاح صحیح ہو جاتا ہے اور اس مجلس میں بسا اوقات ایسا ہوتا ہے کہ دلہن یا دولھا نابالغان کے وہ سب یا اور ولی موجود نہیں رہتے بلکہ وہ اپنے اور کاموں میں مشغول رہتے ہیں اس طریقہ میں شرعاً جو خرابی اور نقص ہو اس کی تصریح فرمائیں، اور شرعاً جو طریقہ نکاح مسنون ہو ارشاد فرمائیں۔ (۳) اگر ولی خطبہ مسنون نہ پڑھے یا صرف ایجاب و قبول کرنے پر قادر ہو تو غیر سے ایجاب و قبول کرانا کیسا ہے ؟ (۴) نکاح خواں کو اجرت لینا اور دینا کیسا ہے ؟ (۵) اگر اُجرتِ نکاح اپنے مصرف میں نہ لائے بلکہ مسجد کے تیل اور چٹائی میں صرف کرے تو جائز ہے یا نہیں ؟ (۶) نوشہ کے سر پر پگڑی رکھنے کے واسطے اس کے پھو پھا یا بہنوئی کو بلاتے ہیں جب تک یہ نہیں آتے دوسرا پگڑی نہیں رکھ سکتے ، جب یہ آتے ہیں تو بغیر دس پانچ روپے لیے نہیں رکھتے ، جب کم ہوتا ہے تو لینے پر انکار اور زیادتی پر اصرار کرتے

ہیں، جب حسب مرضی پالیتے ہیں تو رکھ دیتے ہیں، اور بعض پھو پھا داماد قبل لینے کے رکھ دیتے ہیں، اس کے بعد جو ملالے لیا، اور بعض کچھ اصرار کر کے اور زیادہ لیتے ہیں آیا شرعاً یہ لینا دینا کیسا ہے ؟ اور اس کو ضروری حق سمجھنا اور اس پر اہتمام و اصرار کرنا کیسا ہے ؟ (۷) شرعاً ولیمہ کی تعریف کیا ہے اور اس کی مدت کے روز تک ہے ؟ (الف) پہلے دعوت کرنا پھر بارات اور رخصتی کر کے دلہن لانا یہ ولیمہ ہے یا نہیں ؟ (ب) نابالغ کی رخصتی کے بعد چونکہ زفاف نہیں ہوتا تو بعدِ دلہن لانے کے دعوت کرنا ولیمہ مسنون ہے

or not? (c) If one does not perform Walima with the intention of following the Sunnah, but rather for the purpose of gaining fame and maintaining social standing among the community, saying that since he has eaten at the homes of ten brothers, it is necessary to feed the community whether he has the means or not, what is the ruling on such an invitation? State the ruling for both those who are capable (financially) and those who are not.

The Answer: (1) The offer (Ijab) and acceptance (Qabul) by a minor boy and girl whose speech is understood and who can intend the words and their meanings is valid, whether done by themselves or through the instruction of another. Then, if it is with the guardian's (Wali) permission, it is also effective; otherwise, it depends on the guardian's permission, provided there is no Sharia prohibition. Allah Almighty knows best. (2) The answer to this is contained in the answer to the first question. In these contracts, the statement that comes first is the 'offer' (Ijab) even if the word 'acceptance' (Qabul) is used, and the one that follows is 'acceptance' (Qabul). When it is with the guardian's permission, the guardian's presence there is not necessary. If it is without permission, it will remain dependent on his approval. The recommended (Masnoon) method is for the guardians themselves to perform the offer and acceptance, or for their representatives to do so with their permission; there is no need to make the minors say it. (3) There is no harm. And Allah Almighty knows best. (4) It is permissible. And Allah Almighty knows best. (5) Since it is permissible, giving it in the mosque is better. And Allah Almighty knows best. (6) This is an invented custom. Considering it necessary is impermissible. If the insistence reaches a point of unpleasantness, it is forbidden; otherwise, these are mutual dealings about which there is no prohibition from the Sharia. And Allah Almighty knows best. (7) Walima is an invitation for friends on the morning after the wedding night (Shab-e-Zafaf). An invitation given before the departure (Rukhsat) is not Walima. Similarly, anything done after departure but before the wedding night with the intention of show-off and fame is forbidden. And where people consider it a debt, there is no harm in the intention of repaying the debt, although this intention is not commendable initially. And Allah Almighty knows best.

Issue 73: From Sultanpur, Bakar Estate, asked by Murtaza Khan P. Sergeant, Superintendent of Police Office, 17 Dhu al-Hijjah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding the issue that Zaid is a Qazi (judge) but also practices lawyering? What is the ruling on this? Explain and be rewarded.

The Answer: The profession of lawyering, as it is prevalent nowadays, is forbidden (Haram) by Sharia. It is not permitted to appoint such a person as a Qazi. And Allah Almighty knows best.

या नहीं? (ग) यदि वलीमा सुन्नत के इरादे से नहीं बल्कि ख्याति और बिरादरी में मान-सम्मान पाने के उद्देश्य से किया जाए और यह कहा जाए कि चूंकि दस बार भाई लोगों के यहाँ खा आए हैं इसलिए बिरादरी को खिलाना ज़रूरी है, चाहे हमारे पास हो या न हो, तो यह दावत कैसी है? और सक्षम और अक्षम दोनों के लिए क्या हुक्म है?

उत्तर: (१) नाबालिग लड़का और लड़की जिनकी बात समझी जाए और वे शब्दों और अर्थों का इरादा कर सकें उनका ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) स्वयं हो या दूसरे की सीख से, सही है। फिर यदि वली (अभिभावक) की अनुमति से है तो प्रभावी भी है, अन्यथा वली की अनुमति पर निर्भर है जब तक कि कोई शरीयत की रुकावट न हो, वल्लाह तआला आलम। (२) इसका उत्तर पहले प्रश्न के उत्तर में आ गया है। इन अनुबंधों में जो बात पहले है वह ईजाब है चाहे शब्द 'क़बूल' हो और जो बाद में हो वह क़बूल है। और जब वली की अनुमति से हो तो वली का वहाँ मौजूद होना ज़रूरी नहीं, और बिना अनुमति के हो तो उसकी अनुमति पर निर्भर रहेगा। और सुन्नत तरीका यह है कि वली स्वयं ईजाब व क़बूल करें या उनकी अनुमति से उनके वकील, नाबालिगों से कहलवाने की कोई ज़रूरत नहीं। (३) कोई हर्ज नहीं। वल्लाह तआला आलम। (४) जायज़ है। वल्लाह तआला आलम। (५) जब जायज़ है तो मस्जिद में देना और भी बेहतर है। वल्लाह तआला आलम। (६) यह एक आविष्कृत प्रथा है, इसे ज़रूरी समझना नाजायज़ है, और यदि ज़िद नापसंदगी की सीमा तक हो तो हराम है, अन्यथा आपसी व्यवहार हैं जिन पर शरीयत से कोई रोक नहीं आई। वल्लाह तआला आलम। (७) शब-ए-ज़फ़ाफ़ (सुहागरात) की सुबह को मित्रों की दावत वलीमा है, रुख़्सत से पहले जो दावत दी जाए वह वलीमा नहीं, इसी तरह रुख़्सत के बाद और शब-ए-ज़फ़ाफ़ से पहले जो कुछ दिखावे और नामवरी के इरादे से हो वह हराम है। और जहाँ इसे क़र्ज़ समझते हैं वहाँ क़र्ज़ उतारने की नियत में हर्ज नहीं यद्यपि शुरुआत में यह नियत अच्छी नहीं। वल्लाह तआला आलम।

मसला ७३: सुल्तानपुरा बकर एस्टेट से, मुर्तज़ा ख़ान पी. सार्जेंट सुपरिटेंडेंट पुलिस ऑफ़िस, १७ ज़िल हिज्जा १३३९ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद क़ाज़ी है मगर वकालत करता है, इसका क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: वकालत का पेशा जिस तरह आज कल प्रचलित है, शरीयत की दृष्टि से हराम है। ऐसे व्यक्ति को क़ाज़ी बनाने की अनुमति नहीं है। वल्लाह तआला आलम।

یا نہیں؟ (ج) اگر ولیمہ باراده سنت نہ کرے بلکہ خیال نام آوری و برادری سے سرخ روئی مقصود ہو اور یہ کہتا رہے کہ چونکہ دس دفعہ بھائی لوگ کے یہاں کھا آئے ہیں لہٰذا برادری کو کھلانا ضرور ہے چاہے ہمارے پاس ہو یا نہ ہو، یہ دعوت کیسی ہے؟ اور مستطیع غیر مستطیع دونوں کا حکم فرمائے۔

الجواب: (۱) نابالغ لڑکے اور لڑکی جن کا تلفظ کلام سمجھا جائے اور وہ الفاظ و معنی کا قصد کر سکیں ان کا ایجاب و قبول خود ہو یا دوسرے کی تلقین سے صحیح ہے، پھر اگر باجازت ولی ہے نافذ بھی ہے ورنہ اجازت ولی پر موقوف جبکہ کوئی مانع شرعی نہ ہو، واللہ تعالٰی اعلم (۲) اس کا جواب جواب سوال اول میں آگیا اور ان عقود میں جو کلام پہلے ہے وہ ایجاب ہے اگرچہ بلفظ قبول ہو اور جو بعد کو ہو وہ قبول، اور جب باذن ولی ہو تو ولی کا وہاں موجود ہونا ضروری نہیں، اور بلااذن ہو تو اس کی اجازت پر موقوف رہے گا، اور مسنون طریقہ یہ ہے کہ اولیاء خود ایجاب و قبول کریں یا ان کی اجازت سے ان کے وکیل نابالغوں سے کہلوانے کی کوئی حاجت نہیں۔ (۳) کوئی حرج نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم (۴) جائز ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (۵) جب جائز ہے تو مسجد میں دینا اور بہتر ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۶) یہ ایک مخترع رسم ہے، اسے ضروری سمجھنا ناجائز، اور اگر اصرار حد ناگواری تک ہو تو حرام ورنہ آپس کے معاملات ہیں جن پر شرع سے منع وارد نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۷) شب زفاف کی صبح کو احباب کی دعوت ولیمہ ہے، رخصت سے پہلے جو دعوت کی جائے ولیمہ نہیں، یونہی بعد رخصت قبل زفاف اور ریا و ناموری کے قصد سے جو کچھ ہو حرام ہے۔ اور جہاں اسے قرض سمجھتے ہیں وہاں قرض اتارنے کی نیت میں حرج نہیں اگرچہ ابتداً یہ نیت محمود نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۳: از سلطان پورہ بکر اسٹیٹ مسئولہ مرتضیٰ خاں پی سارجنٹ سپرنٹنڈنٹ پولیس آفس ۱۷ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید قاضی ہے مگر وکالت کرتا ہے اس کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: وکالت کا پیشہ جس طرح آج کل رائج ہے شرعاً حرام ہے۔ ایسے شخص کو قاضی کرنے کی اجازت نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Rizvia Volume 11

Question 74: From Sultanpur (Oudh), Pratap Ganj neighborhood, sent by Hafiz Abdul Ghani Sahib, 12th Ramadan-ul-Mubarak 1338 AH: Zaid performed the marriage of his daughter with the son of Bakr in his own presence, and Hindah (the daughter) went to her in-laws several times. Then, due to a conflict, the departure (rukhsati) was stopped for three years. Hindah is compelled due to her father Zaid. Now Zaid has filed a suit for annulment of marriage in his daughter's name, claiming that the marriage took place while she was a minor. Zaid's statement is that the girl's marriage took place in his absence because he had gone to another city for a week or ten days to arrange wedding supplies, and his wife performed the marriage without his permission. In court, Zaid and the neighbors took oaths, although the claim was dismissed because Bakr's lawyers proved that Zaid himself was present and the Qazi performed the marriage with Zaid's permission. Therefore, what is the Shariah ruling regarding Zaid and the designated helpers of Zaid? And what is the ruling on praying behind such liars?

The Answer: It is stated in the Hadith: "The false witness will not move his feet until Allah makes the Fire mandatory for him." (A false witness cannot move his feet from his place before Allah Almighty makes Hell compulsory for him.)

This is the state of the witnesses, and the burden on Zaid is equal to all of them because he was the cause for them giving false testimony. Furthermore, they intended to separate a woman from her husband and declare her unmarried; this is a second major sin. In short, all these people are open transgressors (Fasiq Mu'lin). Making them an Imam is a sin, and praying behind them is a sin. If a prayer has been performed behind them, it is mandatory to repeat it. And Allah Almighty knows best.

Question 75: Requested by Syed Ayub Ali Sahib, resident of Bareilly, Behari Pur Kasgaran neighborhood. A person who maintains social relations and intermarriages with Wahhabis, and knowing that they are Wahhabis, can we marry into their family when it is known that they have relations with Wahhabis? State the ruling and be rewarded.

The Answer: One who maintains social relations with Wahhabis is certainly a Wahhabi, for if he does not consider Wahhabis to be misguided and irreligious, then he himself is misguided and irreligious, and marriage with him is not possible at all. And if he knows and calls them misguided and irreligious but still maintains relations

with them, then he is a severe and bold transgressor (Fasiq); one should refrain from marrying into his family. And Allah Almighty knows best.

---

1 Tarikh Baghdad, Muhammad bin Isa, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 2/403; Sunan Ibn Majah, chapter on false testimony, p. [blank]; Tarikh Kabir, chapter 'Fa', 1/208.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मसला 74: सुल्तानपुर (अवध) मुहल्ला प्रताप गंज से, हफीज़ अब्दुल गनी साहब द्वारा प्रेषित, 12 रमज़ान-उल-मुबारक 1338 हिजरी: ज़ैद ने बक्र के पुत्र के साथ अपनी बेटी का निकाह अपनी स्वयं की मौजूदगी में किया, और हिन्दा (बेटी) कई बार अपनी ससुराल भी गई। फिर किसी विवाद के कारण विदाई (रुख़सती) तीन साल से बंद कर दी गई। हिन्दा अपने पिता ज़ैद के कारण मजबूर है। अब ज़ैद ने अपनी बेटी के नाम पर निकाह निरस्त करने का दावा दायर किया है कि निकाह नाबालिग होने की स्थिति में हुआ था। ज़ैद का बयान है कि लड़की का निकाह मेरी अनुपस्थिति में हुआ था क्योंकि मैं शादी का सामान लाने के लिए एक सप्ताह या दस दिन के लिए दूसरे शहर चला गया था और मेरी पत्नी ने मेरी अनुमति के बिना निकाह कर दिया। कचहरी में ज़ैद और मुहल्ले वालों ने शपथ ली, हालांकि दावा इस आधार पर खारिज हो गया कि बक्र के वकीलों ने यह साबित कर दिया कि ज़ैद स्वयं मौजूद था और ज़ैद की अनुमति से काज़ी ने निकाह पढ़ाया। अतः ज़ैद और ज़ैद की मदद करने वालों के बारे में शरीयत का क्या हुक्म है? और ऐसे झूठे लोगों के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है?

अल-जवाब: हदीस में है: "झूठा गवाह वहां से अपने पैर नहीं हटा पाता कि अल्लाह उसके लिए आग (जहन्नुम) वाजिब कर देता है।" (झूठा गवाह अपने स्थान से पैर भी नहीं हटा पाता कि अल्लाह तआला उसके लिए जहन्नुम अनिवार्य कर देता है।)

गवाहों का तो यह हाल है, और ज़ैद पर उन सब के बराबर वबाल (पाप का बोझ) है क्योंकि वही उन्हें झूठी गवाही देने का कारण बना। फिर उन्होंने एक स्त्री को उसके पति से अलग करना और उसे अविवाहित ठहराना चाहा, यह दूसरा बड़ा गुनाह (गुनाह-ए-कबीरा) है। संक्षेप में ये सभी लोग 'फासिक-ए-मुअ्लिन' (खुले तौर पर पाप करने वाले) हैं, उन्हें इमाम बनाना गुनाह है, और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह है। और यदि पढ़ ली हो, तो उसे दोहराना वाजिब (अनिवार्य) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 75: पूछा गया सैय्यद अय्यूब अली साहब द्वारा, निवासी बरेली, मुहल्ला बिहारी पुर कसगरान। जो व्यक्ति वहाबियों से मेल-जोल और आपसी विवाह संबंध रखता हो, और यह जानते हुए कि वे वहाबी हैं, क्या उनके यहाँ विवाह किया जा सकता है, जबकि यह ज्ञात है कि उनका वहाबियों से मेल-जोल है? हुक्म बयान करें और पुण्य के भागी बनें।

अल-जवाब: वहाबियों से मेल-जोल रखने वाला निश्चित रूप से वहाबी है, क्योंकि यदि वह वहाबियों को गुमराह और बेदीन नहीं समझता है, तो वह स्वयं गुमराह और बेदीन है और उसके साथ विवाह (निकाह) हो ही नहीं सकता। और यदि वह उन्हें गुमराह और बेदीन जानता और कहता है, फिर भी उनसे मेल-जोल रखता है, तो वह सख्त फासिक और निडर है; उसके यहाँ विवाह करने से परहेज करना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1 तारीख़ बगदाद, मुहम्मद बिन ईसा, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत, 2/403; सुनन इब्न माजह, झूठी गवाही का अध्याय, पृष्ठ [blank]; तारीख़ कबीर, अध्याय 'फा', 1/208.

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

مسئلہ ۷۴: از سلطان پور (اودھ) محلہ پرتاب گنج مرسلہ حافظ عبد الغنی صاحب ۱۲ رمضان المبارک ۱۳۳۸ھ زید نے پسر بکر سے اپنی لڑکی کا نکاح بموجودگی خود کیا اور ہندہ کئی بار اپنی سسرال بھی گئی پھر مخاصمت کی وجہ سے رخصتی تین سال سے بند کردی، ہندہ اپنے والد زید کی وجہ سے مجبور ہے، اب زید نے ایک دعویٰ فسخِ نکاح کا اپنی لڑکی کے نام دائر کیا ہے کہ میرا نکاح نا بالغی کی حالت میں ہوا، زید کا بیان ہے کہ لڑکی کا نکاح میری عدم موجودگی میں ہوا ہے کیونکہ میں شادی کا سامان مہیا کرنے کسی ضرورت سے ہفتہ عشرہ کے لیے کسی دوسرے شہر کو چلا گیا تھا بی بی نے میری بے اجازت نکاح کردیا اس کچہری میں زید نیز اہل محلہ نے حلف اٹھایا حالانکہ دعویٰ اس بناء پر خارج ہوگیا کہ بکر کے وکلاء نے اس بات کو ثابت کردیا کہ زید خود موجود تھا اور زید کی اجازت سے قاضی نے نکاح پڑھایا، لہٰذا زید و معین زید کا شرعاً کیا حکم ہے؟ اور ایسے جھوٹے لوگوں کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے؟

الجواب: حدیث میں ہے: شاھد الزور لا تزول قدماہ حتی یوجب اللہ لہ النار۔ (جھوٹا گواہ وہاں سے اپنے پاؤں ہٹانے نہیں پاتا کہ اللہ تعالیٰ اس کے لیے جہنم واجب کردیتا ہے۔)

گواہوں کا تو یہ حال ہے، اور زید پر ان سب کے برابر وبال ہے کہ وہی ان کو جھوٹی شہادت پر باعث ہوا، پھر انھوں نے عورت کو شوہر سے جدا کرنا اور غیر منکوحہ ٹھہرانا چاہا، یہ دوسرا کبیرہ ہے، غرض یہ سب لوگ فاسق معلن ہیں ان کو امام بنانا گناہ، اور ان کے پیچھے نماز پڑھنی گناہ۔ اور پڑھ لی ہو تو پھیرنی واجب۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۵: مسئولہ سید ایوب علی صاحب ساکن بریلی محلہ بہاری پور کسگران جو شخص وہابیہ سے میل جول اور باہمی شادی بیاہ رکھتا ہو اور یہ جانتے ہوئے کہ یہ وہابی ہے اس کے یہاں شادی بیاہ کر سکتے ہیں جبکہ یہ معلوم ہے کہ وہابیہ سے اس کا میل جول ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: وہابیہ سے میل جول رکھنے والا ضرور وہابی ہے کہ وہابیہ کو گمراہ بد دین نہیں جانتا تو خود گمراہ بد دین ہے اور اس کے ساتھ مناکحت ہو ہی نہیں سکتی، اور اگر ان کو گمراہ بد دین جانتا اور کہتا ہے پھر بھی ان سے میل جول رکھتا ہے تو سخت فاسق بیباک ہے اس کی مناکحت سے احتراز چاہئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

---

1 تاریخ بغداد محمد بن عیسی دار الکتاب العربي بیروت ۴۰۳/۲، سنن ابن ماجه باب شهادت الزور ص، تاریخ کبیر باب ف ۲۰۸/۱

Fatawa Rizwia - Volume Eleven

Problem 76: From Mauza Mir Killi Pur, Post Office Lahorpur, District Sitapur, submitted by Muhammad Hussain, student, 11 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say about this matter? A person sent a marriage proposal, stating that the boy is from Laharpur. It turned out the boy is from the town of Hargam. Furthermore, there is a dispute regarding the identity of the groom. The girl says, "My marriage was solemnized with Abdul Rahman bin Kallu," and the Qazi (judge) also says the same. However, the witnesses say it was Lal Muhammad bin Munnun, and the lawyer claims it was for Lal Muhammad bin Kallu. The boy who came as the groom was actually from Hargam, and his name was Lal Muhammad bin Munnun. In this situation, with whom did the marriage occur, and what is the Sharia ruling? Explain and be rewarded.

The Answer: The prevailing practice is that after obtaining permission from the woman's guardian (Wali), the groom is addressed: "I have given so-and-so's daughter to you in marriage for such-and-such dowry." He says, "I have accepted." In this case, the marriage is with the person addressed who accepted, regardless of where he lives or what his name is. Then, if the adult woman or the guardian of a minor had given permission for that specific person, the marriage is enforced if there is no Sharia impediment. Otherwise, it is an unauthorized (Fazooli) marriage, which depends on the permission of the woman or her guardian. If approved, it becomes valid; if rejected, it becomes void. This is the ruling on whether the marriage occurred. As for the dispute regarding identity, where the man claims the marriage was with him but there is a discrepancy in the statements of the woman's lawyer and witnesses—some naming one person and others naming another—if two reliable Sharia witnesses testify in accordance with the claimant's claim, a decree will be granted, regardless of what the woman or the lawyer say. And Allah Almighty knows best.

Problem 77: From Naushera, Tehsil Jampur, District Dera Ghazi Khan, submitted by Abdul Ghafoor Sahib, 14 Muharram 1339 AH. A person says, "I have a 'Tan Bakhshi' (giving of self) arrangement with my woman." Is 'Tan Bakhshi' considered valid in Sharia, or is Nikah (marriage) necessary? Explain and be rewarded.

The Answer: Relying on 'Tan Bakhshi' is explicit adultery (Zina). If someone considers it lawful, they become a disbeliever (Kafir). Arabic text: "Innama kana dhalika min khasa'isihi sallallahu ta'ala 'alayhi wa sallam, qala ta'ala: 'Khalisatan laka min duni al-

mu'minin'." Translation: This was among the specific characteristics of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him). Allah Almighty said: "This is exclusively for you, not for the [other] believers." (Quran 33:50). And Allah Almighty knows best.

मसला ७६: मौज़ा मीर किल्ली पुर, डाकखाना लहरपुर, ज़िला सीतापुर से, प्रेषक मुहम्मद हुसैन, छात्र, ११ मुहर्रम १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने शादी का संदेश भेजा और उसमें यह ज़ाहिर किया कि लड़का लहरपुर का है। वह लड़का हरगाम कस्बे का निकला। इसके अलावा, दूल्हे की पहचान के बारे में मतभेद रहा। लड़की कहती है कि मेरा निकाह 'अब्दुल रहमान बिन कल्लू' के साथ पढ़ा गया और क़ाज़ी का भी यही कहना है। लेकिन गवाह 'लाल मुहम्मद बिन मन्नू' बताते हैं और वकील 'लाल मुहम्मद बिन कल्लू' का दावा करता है। वह लड़का जो दूल्हा बनकर आया था, असल में हरगाम का था और उसका नाम 'लाल मुहम्मद बिन मन्नू' था। इस स्थिति में निकाह किसके साथ हुआ और इसमें शरीयत का क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: प्रचलित प्रथा यह है कि स्त्री के वली (संरक्षक) से अनुमति लेकर दूल्हे को संबोधित किया जाता है कि फलां की फलां लड़की इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दी। वह कहता है, 'मैंने स्वीकार किया'। इस स्थिति में जिससे संबोधन किया गया और जिसने स्वीकार किया, उसी के साथ निकाह हुआ, चाहे वह कहीं का रहने वाला हो और उसका नाम कुछ भी हो। फिर यदि वयस्क स्त्री या नाबालिग के वली ने उसी व्यक्ति के लिए अनुमति दी थी, तो यह निकाह लागू हो गया यदि कोई शरई बाधा न हो। अन्यथा यह 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत) निकाह हुआ जो स्त्री या उसके वली की अनुमति पर निर्भर है। यदि अनुमति दे दी जाए तो जायज़ हो गया, रद्द कर दिया जाए तो बातिल (अमान्य) हो गया। यह तो निकाह होने या न होने का हुक्म है। रहा यह कि निकाह हुआ और पुरुष ने दावा किया कि उसके साथ निकाह हुआ, और उस स्त्री के वकील और गवाहों के बयानों में मतभेद हुआ—किसी ने किसी के साथ निकाह होना बताया और दूसरे ने किसी और के साथ—तो यदि दो शरई न्यायप्रिय गवाह दावेदार के दावे के अनुसार गवाही दे दें, तो डिक्री दे दी जाएगी, चाहे स्त्री और वकील कुछ भी कहें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ७७: नौशेरा, तहसील जामपुर, ज़िला डेरा गाज़ी ख़ान से, प्रेषक अब्दुल ग़फ़ूर साहब, १४ मुहर्रम १३३९ हिजरी। एक व्यक्ति कहता है कि 'मेरी अपनी औरत के साथ तन बख़्शी (स्वयं को सौंपना) है'। क्या शरीयत में 'तन बख़्शी' कोई मान्य चीज़ है या निकाह? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: 'तन बख़्शी' पर संतोष करना स्पष्ट रूप से ज़िना (व्यभिचार) है। यदि कोई इसे हलाल (वैध) माने तो वह काफ़िर है। अरबी पाठ: "इन्नमा काना ज़ालिका मिन ख़साइसिहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, क़ाला तआला: 'ख़ालिसतन लका मिन दूनिल मुमिनीन'"। अनुवाद: यह हुज़ूर अलैहिस्सलाम की विशिष्टताओं में से है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "यह विशेष रूप से आपके लिए है, मोमिनों (ईमान वालों) के लिए नहीं।" (कुरान ३३:५०)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ ७३९ में से २५९

جلد یاز دہم - فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۷۶: از موضع میر کلی پور ڈاکخانہ لاہور پور ضلع سیتا پور مسئولہ محمد حسین طالب علم ۱۱ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے شادی کا پیام دیا اور اس میں یہ اظہار کیا کہ لڑکا لہر پور کا ہے وہ لڑکا قصبہ ہرگام کا نکلا، مزید بریں نوشہ کے تعینِ علم میں اختلاف رہا۔ لڑکی تو کہتی ہے کہ میرا نکاح عبد الرحمن بن کلو کے ساتھ پڑھا گیا اور قاضی کا بھی یہی قول ہے مگر گواہ لعل محمد بن منوں بتلاتے ہیں اور وکیل لعل محمد بن کلو کا مدعی ہے اور وہ لڑکا جو نوشہ بن کر آیا تھا دراصل ہرگام کا تھا اور اس کا نام لعل محمد بن منوں تھا۔ اس صورت میں نکاح کس کے ساتھ ہوا اور اس میں شرعی حکم کیا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: رائج یوں ہے کہ عورت اس کے ولی سے اذن لے کر دولہا سے خطاب کرتے ہیں کہ فلاں کی فلاں لڑکی اتنے مہر پر تیرے نکاح میں دی، وہ کہتا ہے میں نے قبول کی، اس صورت میں جس سے خطاب کیا گیا اور اس نے قبول کیا، اسی کے ساتھ نکاح ہوا، کہیں کا رہنے والا ہو اور اس کا کچھ بھی نام ہو۔ پھر اگر بالغہ عورت یا نابالغہ کے ولی نے اسی کے لیے اجازت دی تھی جب تو یہ نکاح نافذ ہوگیا اگر کوئی مانعِ شرعی نہ ہو ورنہ فضولی کا نکاح ہوا عورت یا اس کے ولی کی اجازت پر موقوف رہا، اگر جائز کیا جائے جائز ہوگیا، رد کیا جائے باطل ہوگیا، یہ تو نکاح ہونے نہ ہونے کا حکم ہے، رہایہ کہ نکاح ہوا اور مرد نے دعویٰ کیا کہ میرے ساتھ اس کا نکاح ہوا اور اس عورت کے وکیل اور گواہوں کے بیان میں اختلاف ہوا، کسی نے کسی کے ساتھ نکاح ہونا بیان کیا اور دوسرے نے کسی کے ساتھ، اگر دو گواہ شرعی عادل قابلِ قبول دعویٰ مدعی کے مطابق گواہی دے دیں ڈگری کردیا جائے گا عورت و وکیل کچھ کہا کریں، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۷: از نوشہرہ تحصیل جامپور ضلع ڈیرہ غازی خاں مسئولہ عبد الغفور صاحب ۱۴ محرم ۱۳۳۹ھ ایک شخص کہتا ہے کہ میری اپنی عورت کے ساتھ تن بخشی ہے۔ آیا شرعاً تن بخشی کوئی چیز معتبر ہے یا نکاح؟ بینوا توجروا

الجواب: تن بخشی پر قناعت صریح زنا ہے اگر اسے حلال جانے تو کافر، انما کان ذلک من خصائصہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، قال تعالٰی خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ۔ یہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے خصائص میں سے ہے، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: یہ خاص آپ کے لیے ہے مومنین کے لیے نہیں۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

Volume Eleven Fatawa Rizvia

Second Issue 78: A person said in a gathering of 'Dua-e-Khair' (blessing ceremony) that "I have given my daughter to this person, e.g., Zaid." Later, that person (the girl's father) died. His heirs married the girl to another person. Is the 'Dua-e-Khair' valid (as a marriage) or is the heirs' marriage valid? The Answer: If 'Dua-e-Khair' is understood as a promise, then the marriage performed by the heirs is valid. However, if the intention was to perform the marriage at that very moment, and Zaid accepted it in that gathering, and two witnesses heard it simultaneously and understood it to be a marriage, then the marriage was completed. The second marriage is null and void. And Allah the Almighty knows best.

Issues 79 to 80: From Rama, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, Jati Post Office. Asked by Taj Mahmood Sahib, 15 Muharram 1339 AH. (1) What do the scholars of religion say about Zaid? Three individuals testify that the defendant told the boy's father, "I have given my minor daughter [name] to your [name] boy." He accepted it for the known boy. In that gathering, neither the marriage sermon (Khutbah) was read nor was the dower (Mahr) mentioned. Furthermore, the defendant also says that he intended an engagement (Nata), not marriage. Now, will this be considered marriage, or just a sermon, or an engagement? (2) Will the indicators of marriage be both the sermon and the mention of dower, or will the witnesses' understanding of marriage be sufficient, or does it depend on the intention of the girl's guardian (Wali)? The Answer: (1) Reciting a sermon or mentioning the dower are not conditions for marriage. If that gathering was for a contract (aqd), then the contract was formed. If the gathering was for a promise and the attendees understood it as a promise, then it was a promise and marriage did not take place. [Arabic quote]: "In Durr al-Mukhtar, verily if the gathering is for a promise, it is a promise; and if for a contract, it is a contract." 1. And Allah the Almighty knows best. | In 'Durr al-Mukhtar' it is stated that if this gathering is for a promise (engagement), then it is an engagement, and if it is a gathering for marriage, then it will be a marriage. (T) (2) In marriage with explicit words, intention is not a condition. The words of proposal (Ijab) and acceptance (Qabul) and two witnesses' understanding that a marriage is taking place are sufficient. The mention of dower is neither necessary nor an indicator, and although the sermon is not necessary, it is an indicator of marriage. And Allah the Almighty knows best.

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Press, Delhi, 1/185.

दूसरा मसला ७८: एक व्यक्ति ने दुआ-ए-खैर की सभा में कह दिया कि मैंने अपनी लड़की इस व्यक्ति को, उदाहरण के लिए ज़ैद को दे दी, बाद में यानी लड़की का पिता मर गया। उसके वारिसों ने उस लड़की का निकाह दूसरे व्यक्ति से कर दिया। क्या दुआ-ए-खैर मान्य है या वारिसों का निकाह जायज़ है? जवाब: दुआ-ए-खैर से अगर वादा समझा जाता है तो वारिसों ने जो यह निकाह किया, वह जायज़ है। और अगर उसी समय निकाह कर देना उद्देश्य था और ज़ैद ने उस सभा में स्वीकार (क़ुबूल) किया और दो गवाहों ने साथ सुना और निकाह होना समझा तो निकाह हो गया था, दूसरा निकाह बातिल (अमान्य) है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला ७९ से ८०: रामा, तहसील गुजर खान, जिला रावलपिंडी, डाकखाना जाती से। प्रेषित ताज महमूद साहब, १५ मुहर्रम १३३९ हिजरी। (१) उलेमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं ज़ैद के बारे में? तीन व्यक्ति गवाही देते हैं कि प्रतिवादी (मुदआ अलैहि) ने लड़के के पिता को बोला है कि "मैंने अपनी नाबालिग बेटी फलां, तुम्हारे फलां लड़के को दे दी है"। उसने ज्ञात लड़के के लिए स्वीकार कर ली है और उस सभा में न निकाह का खुतबा (प्रवचन) पढ़ा गया और न ही महर का उल्लेख हुआ। इसके अलावा प्रतिवादी भी कहता है कि मैंने नाते (सगाई) का इरादा किया है न कि निकाह का। अब यह निकाह होगा या खुतबा या नाता? (२) निकाह का लक्षण (क़रीना) खुतबा और महर का उल्लेख दोनों होंगे या केवल गवाहों का निकाह समझना ही काफी होगा या नियत लड़की के वली (अभिभावक) पर निर्भर है? जवाब: (१) खुतबा पढ़ा जाना या महर का उल्लेख होना निकाह की कोई शर्त नहीं है। वह सभा अगर निकाह के अनुबंध (अक़्द) के लिए थी तो अक़्द हो गया और अगर सभा वादे के लिए थी और उपस्थित लोगों ने इसे वादा ही समझा तो वह वादा हुआ, निकाह नहीं। [अरबी उद्धरण]: "दुर्-ए-मुख्तार में है कि सभा वादे के लिए हो तो वादा और अनुबंध के लिए हो तो अनुबंध है।" १. वल्लाहु तआला आलम। | दुर्-ए-मुख्तार में है कि अगर यह सभा वादे (मंगनी) के लिए है तो मंगनी है और अगर निकाह की सभा है तो निकाह होगा। (त) (२) स्पष्ट शब्दों में निकाह में नीयत शर्त नहीं है। ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के शब्द होना और दो गवाहों का यह समझना कि यह निकाह हो रहा है, पर्याप्त है। महर का उल्लेख न तो अनिवार्य है और न ही अनिवार्य लक्षण, और हालांकि खुतबा अनिवार्य नहीं है, लेकिन यह निकाह का एक लक्षण है। वल्लाहु तआला आलम।

1. दुर्-ए-मुख्तार, किताबुन निकाह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/१८५।

دوسرا مسئلہ ۷۸: ایک شخص نے دعائے خیر جلسہ میں کہہ دی کہ میں نے لڑکی اپنی اس شخص مثلاً زید کو دی، بعدہ وہ یعنی باپ لڑکی کا مرگیا اس کے وارثان نے اس لڑکی کا عقد نکاح دوسرے شخص کو کردیا، آیا دعائے خیر جائز ہے یا وارثان کا نکاح جائز ہے؟ الجواب: دعائے خیر سے اگر وعدہ سمجھا جاتا ہے تو وارثوں نے جو یہ نکاح کیا، جائز ہے۔ اور اگر اسی وقت نکاح کر دینا مقصود ہوتا ہے اور زید نے اس جلسہ میں قبول کیا اور دو گواہوں نے معاً سنا اور نکاح ہونا سمجھا تو نکاح ہو گیا تھا، دوسرا نکاح باطل ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۷۹ تا ۸۰: از رامہ تحصیل گوجر خاں ضلع راولپنڈی ڈاکخانہ جاتی مسئولہ تاج محمود صاحب ۱۵ محرم ۱۳۳۹ھ (۱) کیا فرماتے ہیں علمائے دین زید کے بارے میں تین افراد شہادت دیتے ہیں کہ مدعی علیہ نے والد لڑکے کو بولا ہے کہ میں نے اپنی دختر نابالغہ فلانی تمہارے فلانے لڑکے کو دے دی ہے اس نے قبول لڑکے معلوم کے لیے کر لی ہے اور اس مجلس میں نہ نکاح کا خطبہ پڑھا گیا نہ ذکر مہر کا ہوا، اس کے علاوہ مدعی علیہ بھی کہتا ہے کہ میں نے ارادہ ناطہ کا کیا ہے نہ نکاح کا، اب یہ نکاح ہوگا یا خطبہ یا ناطہ؟ (۲) قرینہ نکاح کا خطبہ اور ذکر مہر کا ہر دو ہوویں گے یا فہم شہود نکاح کا فقط کافی ہو گا یا نیت ولی دختر پر ہے؟ الجواب: (۱) خطبہ پڑھا جانا یا ذکر مہر ہونا کچھ شرط نکاح نہیں، وہ مجلس اگر عقد کے لیے تھی عقد ہو گیا اور اگر مجلس وعدہ تھی اور حاضرین نے اسے وعدہ ہی سمجھا تو وعدہ ہوا نکاح نہ ہوا۔ فی الدر المختار ان المجلس للوعد فوعد وللعقد فعقد ۱۔ واللہ تعالیٰ اعلم | در مختار میں ہے کہ اگر یہ مجلس وعدہ (منگنی) کے لیے ہے منگنی ہے اور مجلس نکاح ہے تو نکاح ہوگا۔ (ت) (۲) نکاح بالفاظ صریحہ میں نیت شرط نہیں، الفاظ ایجاب و

قبول ہونا اور دوشاہدوں کا سمجھنا کہ یہ نکاح ہو رہا ہے کافی ہے۔ ذکر مہر نہ ضرور نہ قرینہ، اور خطبہ اگر چہ ضروری نہیں مگر قرینہ نکاح ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

۱ درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۵

Fatawa Rizvia Volume 11

Issue 81: From Pindi Gheb, General Post Office, Attock District, submitted by Maulvi Ghulam Mohi-ud-Din, Imam and Teacher of Jamia Masjid, 20 Muharram-ul-Haram 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this issue: A sane, adult woman, influenced and misled by some unrelated persons or those relatives (who have no right of guardianship in marriage/Wilayat-e-Nikah), goes to court and submits an application stating, "I am a young woman and wish to marry according to my will. My guardians, for example, my father or brother or other paternal relatives (Asaba), are preventing me. I am informing the government to grant me permission to marry wherever I please, without interference from my guardians." If the government court grants her permission and she marries wherever she wants, whether the guardians are happy or unhappy. On such an occasion, if any cleric tells those misleaders and relatives, "Sir! This marriage of yours will not be good; you must call the father or other guardians to the marriage assembly," and they reply, "The girl is sane, adult, young, and independent; no guardian has any connection with her, not even an atom's worth; we will do it now." Then, whoever breaks the cleric's advice, what will the cleric do when the court has given permission?

The Answer: This situation mostly occurs when the person the woman wants to marry is not a compatible match (Ghair Kufu), meaning his religion, lineage, behavior, or profession is so lowly that it becomes a source of shame and disgrace for the woman's guardians. If it were not so, why would she adopt such a level of immodesty? In such a case, the marriage is absolutely void, unless the guardian, knowing before the marriage that it is an incompatible match, explicitly gives permission. It is stated in Durr-ul-Mukhtar: (The fatwa is given) in the case of an incompatible match (of its absolute impermissibility) and this is the preferred view | A fatwa of impermissibility of marriage in an incompatible match will be given, and this for the fatwa due to the corruption of the times. | is preferred for the fatwa because corruption has spread in the times. (T)

It is obligatory upon guardians that when they find a compatible match, they should hurry in performing the marriage so that the door to such shameful and immodest incidents does not open. It is stated in a Hadith: O Ali (may Allah be pleased with

him)! Do not delay three things: Prayer when its time arrives, a funeral when it is present, and an unmarried woman when a match is found.

1. Durr-ul-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फतावा रिज़विया खंड 11

मसला 81: पिंडी घेब, डाकखाना खास, जिला अटक से, मुस्तौ़ला (प्रस्तुतकर्ता) मौलवी गुलाम मोहिउद्दीन, इमाम व मुदर्रिस जामे मस्जिद, 20 मुहर्रम-उल-हराम 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक अक्लमंद, बालिग औरत, कुछ गैर-संबंधित लोगों या उन रिश्तेदारों (जिनका निकाह के अधिकार/विलायत-ए-निकाह में कोई हक नहीं है) के बहकावे में आकर अदालत में दरख्वास्त पेश करे कि "मैं जवान हूँ और अपनी मर्जी के मुताबिक निकाह करना चाहती हूँ और मेरे वली (अभिभावक) जैसे बाप या भाई या अन्य करीबी रिश्तेदार मुझे रोकते हैं। मैं सरकार को सूचित करती हूँ कि मुझे अनुमति दी जाए कि मैं जहाँ चाहूँ निकाह कर लूँ, अभिभावकों की रुकावट मुझे न हो।" और अदालत उसे अनुमति दे दे और वह जहाँ चाहे निकाह कर ले, चाहे अभिभावक खुश हों या नाराज। अगर उसी मौके पर उन बहकाने वालों और रिश्तेदारों को कोई मौलवी लिखे कि "मियाँ! यह तुम्हारा निकाह अच्छा नहीं होगा, बाप या अन्य वली को निकाह की सभा में जरूर बुलाओ", तो वे कहें कि "लड़की अक्लमंद, बालिग, जवान और खुदमुख्तार है; किसी वली का उससे जर्रा बराबर भी संबंध नहीं है, हम अभी करते हैं।" फिर जिस मौलवी ने इसे देखा, वह क्या करे जब अदालत ने अनुमति दे दी है?

उत्तर: यह स्थिति अक्सर तब होती है जब वह पुरुष जिससे वह स्त्री निकाह करना चाहती है, 'गैर-कुफू (अयोग्य) हो, यानी धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना नीचा हो कि वह स्त्री के अभिभावकों के लिए लज्जा और अपमान का कारण बने। यदि ऐसा न होता, तो वह इस हद तक बेशर्मी क्यों अपनाती? ऐसी स्थिति में निकाह पूरी तरह बातिल (अमान्य) है, जब तक कि वली (अभिभावक) निकाह से पहले उसे गैर-कुफू जानकर स्पष्ट रूप से अनुमति न दे दे। 'दुर्रे मुख्तार' में है: (फतवा दिया जाता है) गैर-कुफू के मामले में (इसके पूर्णतया नाजायज होने का) और यही | गैर-कुफू में निकाह के नाजायज होने का फतवा दिया जाएगा और यही फतवे के लिए मुख्तार (पसंदीदा) है क्योंकि ज़माने में फसाद मच चुका है। | फतवे के लिए चुना गया है क्योंकि ज़माने में बुराई फैल चुकी है। (त)

अभिभावकों पर लाजिम है कि जब कुफू(योग्य वर) मिल जाए तो निकाह कराने में जल्दी करें ताकि ऐसी शर्मनाक और बेशर्मी वाली घटनाओं का दरवाजा न खुले। हदीस में है: ऐ अली (रज़ियल्लाहु

अन्हु)! तीन चीजों में देरी न करो: नमाज जब उसका वक्त हो जाए, जनाजा जब हाजिर हो, और कुंवारी लड़की जब उसका योग्य वर मिल जाए।

1. दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/191

पृष्ठ 261/739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۸۱: از پنڈی گھیب ڈاک خانہ خاص ضلع اٹک مسئولہ مولوی غلام محی الدین امام ومدرس جامع مسجد ۲۰ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت عاقلہ بالغہ بعض غیر تعلقداروں یا کہ ان ذوی الارحاموں (جن کا ولایتِ نکاح میں کوئی حق نہیں) کے ورغلانے بہکانے پر کچہری میں جاکر درخواست پیش کرے کہ میں جوان ہوں اور اپنے حسب منشاء نکاح کرنا چاہتی ہوں اور میرے والی مثلاً باپ یا کہ بھائی یا کہ دیگر عصبوں سے مجھے روکتے ہیں سرکار کو اطلاع دیتی ہوں کہ مجھے اجازت دی جائے کہ میں جہاں طبیعت ہو نکاح کرالوں، والیوں کی رکاوٹ مجھے نہ ہو، اور کچہری گورنمنٹ اسے اجازت دے دے اور وہ جہاں چاہے نکاح کرالے، والی خوش ہوں یا ناراض، اگر اسی موقعہ پر ان ورغلانے والوں اور ذوی الارحاموں کو کوئی مولوی لکھے میاں! یہ تمہارا نکاح اچھا نہ ہوگا باپ یا دیگر والی کو تم ضرور مجلسِ نکاح میں بلاؤ تو وہ کہیں کہ لڑکی عاقلہ بالغہ جوانہ خود مختار ہے کسی والی کا کوئی ایک ذرہ تک تعلق نہیں ہم ابھی کرتے ہیں، پھر جس مولوی نے توڑا تو دیکھا جائے گا مولوی کیا کرے گا جب کچہری نے اجازت دے دی۔

الجواب: یہ حالت غالباً اس صورت میں ہوتی ہے کہ عورت جس سے نکاح کرنا چاہتی ہے وہ غیر کفو ہو یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ میں ایسا کم کہ اس سے اولیائے زن کے لیے باعث ننگ وعار ہو، ایسا نہ ہو تو اس درجہ بے حیائی کیوں اختیار کرے اور اس صورت میں نکاح باطل محض ہے، جب تک ولی پیش از نکاح اسے غیر کفو جان کر بالتصریح اجازت نہ دے۔ درمختار میں ہے: (ویفتی) فی غیر الکفو(بعدم جوازہ اصلا) وھو المختار | غیر کفو میں نکاح کے عدم جواز

کا فتوٰی دیا جائے گا اور یہی للفتوی لفساد الزمان۔ | فتوٰی کے لیے مختار ہے کیونکہ زمانہ میں فساد برپا ہوچکا ہے۔ (ت)

اولیاء پر لازم ہے کہ جب کفو پائیں تزویج میں جلدی کریں کہ ایسے وقائع سے ننگ وبے حیائی کادروازہ نہ کھلے۔ حدیث میں ہے: یا علی! لاتوخر ثلثۃ الصلوۃ اذا حانت و الجنازۃ اذا | اے علی (رضی اللہ تعالٰی عنہ) ! تین چیزوں میں تاخیر نہ کرو حضرت والایم اذا وجدت | نماز میں جب وقت ہو جائے، جنازہ میں جب حاضر

1. در مختار کتاب النکاح باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

...takes place, and in the marriage of an unmarried girl when her compatible match (Kufu) is found. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 82: From Sheikh Salamatullah, Town Tilmasar, Mohalla Umarpur, District Shahjahanpur, cloth merchant, 18 Jamadi-ul-Akhira 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter regarding what age of a girl is marriage impermissible, and at what age is it permissible? The Answer: Marriage is not impermissible at any age; if a newborn's guardian performs the marriage, it will be valid. However, the marriage of an unborn child (fetus) is not possible. *Because no one has guardianship over the fetus, as stated in Ghamz al-Uyun.* (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 83: Questioner Abdul Aziz Sahib from the city, Mohalla Katkoiyan, 29 Jamadi-ul-Akhira 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter that two twin girls were born in such a way that both their hip bones were joined; if that bone were cut, there was a fear of their death. Now both have grown up, how can they be married? Explain and you will be rewarded. The Answer: To create a lie and a baseless story and then trouble the Sharia with it is extreme absurdity. Can the questioner present those girls?

Problem 84: From village Deornia, District Bareilly, questioner Inayat Hussain Sahib, 29 Shaban 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding whether this content of marriage ceremony (Nikah Khwani) is permissible or not: "The daughter of Wajid Ali Khan, whose name is known to you, in exchange for a deferred dowry (Mahr Mu'ajjal) of two hundred rupees English currency, through the agency of so-and-so and the testimony of so-and-so, in addition to maintenance (nan-nafqah), has been given in the contract of marriage to you. Is it acceptable to you?" Answer: "I have accepted." The Answer: It is permissible as long as Wajid Ali Khan is well-known, i.e., two witnesses from the attendees recognize that he is so-and-so person; otherwise, his...

1. As-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter of Consideration of Kafa'ah, Dar Sadr, Beirut, 7/133.
2. Ghamz Uyun al-Basair by al-Hamawi on al-Ashbah wa an-Nazair, Idara al-Quran wa al-Ulum al-Islamiyya, Karachi, 2/204.

फतावा रज़विया जिल्द 11

...हो जाए, और अविवाहित लड़की के निकाह में जब उसका कुफू(समान योग्य वर) मिल जाए। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 82: शेख सलामतुल्लाह, कस्बा तिलमसर, मोहल्ला उमरपुर, जिला शाहजहांपुर, कपड़ा व्यापारी, 18 जमादी-उल-उखरा 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि लड़की की कितनी उम्र तक निकाह नाजायज़ होता है और कितनी उम्र हो तो जायज़ होता है? अल-जवाब: निकाह किसी भी उम्र में नाजायज़ नहीं है, अगर उसी वक्त पैदा हुए बच्चे का निकाह उसका वली (संरक्षक) कर देगा तो निकाह हो जाएगा। हाँ, पेट के बच्चे (भ्रूण) का निकाह नहीं हो सकता। क्योंकि भ्रूण पर किसी का अधिकार *(*विलायत*)* नहीं है, जैसा कि गमज़ुल उयून में है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 83: मुस्तअल (पूछने वाले) अब्दुल अज़ीज़ साहब, शहर मोहल्ला कटकोइयाँ, 29 जमादी-उल-उखरा 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि दो जुड़वां लड़कियां इस तरह पैदा हुईं कि दोनों के कूल्हे की हड्डियाँ जुड़ी हुई थीं; अगर वह हड्डी काट दी जाती तो उनके मर जाने का डर था। अब दोनों जवान हो गई हैं, उनकी शादी किस तरह की जा सकती है? बयान करें, सवाब मिलेगा। अल-जवाब: झूठ और बेबुनियाद बात गढ़कर शरीयत को तकलीफ देना सख्त बेहुदगी है। क्या पूछने वाला उन लड़कियों को पेश कर सकता है?

मसला 84: गाँव देवनिया, जिला बरेली से, मुस्तअल इनायत हुसैन साहब, 29 शाबान 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि निकाह पढ़ाने का यह तरीका जायज़ है या नहीं: "वाजिद अली खान की बेटी जिसका नाम आपको मालूम है, दो सौ रुपये अंग्रेजी सिक्का के मोअज्जल मेहर (विलंबित दहेज) के बदले, फलां और फलां की वकालत और फलां-फलां की गवाही से, रोटी-कपड़े (नान-नफ्का) के अलावा, तुम्हारे निकाह के अनुबंध में दी गई, क्या तुम्हें स्वीकार है?" जवाब: "मैंने स्वीकार किया।" अल-जवाब: जायज़ है बशर्ते कि वाजिद अली खान मशहूर हों, यानी हाज़िरीन में से दो गवाह पहचानें कि वह फलां शख्स है, वरना उसके..

1. अस-सुनन अल-कुबरा, अल-बैहकी, बाब एतिबार अल-कफा'ह, दार सादिर बेरूत, 7/133.
2. गमज़ उयून अल-बसार, अल-हमावी, अल-अशबाह व अन-नज़ैर, इदारा अल-कुरान व अल-उलूम अल-इस्लामिया कराची, 2/204.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

ہو جائے، اور غیر شادی شدہ لڑکی کے نکاح میں جب اس کا کفو مل جائے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۸۲: شیخ سلامت اللہ قصبہ تلمسر محلہ عمر پور ضلع شاہجہان پور پارچہ فروش ۱۸ جمادی الاخرٰی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لڑکی کی کتنی عمر تک نکاح ناجائز ہوتا ہے اور کتنی عمر ہو تو جائز ہوتا ہے؟ الجواب: نکاح کسی عمر میں ناجائز نہیں، اگر اسی وقت کے پیدا ہوئے بچہ کا نکاح اس کا ولی کردے گا نکاح ہو جائے گا، ہاں پیٹ کے بچہ کا نکاح نہیں ہو سکتا۔ اذلا ولایۃ علی الجنین لاحد کما في غمز العیون۔ کیونکہ پیٹ میں بچہ پر کسی کو ولایت نہیں، جیسا کہ غمز العیون میں ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۸۳: مسئولہ عبدالعزیز صاحب از شہر محلہ کٹکوئیاں ۲۹ جمادی الاخرٰی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ دو لڑکیاں توام اس صورت سے پیدا ہوئیں کہ دونوں کے کولھوں کی ہڈیاں جڑی ہوئی تھیں اگر وہ ہڈی کاٹ دی جائے تو ان کے مر جانے کا خوف تھا، اب دونوں جوان ہوئیں ان کی شادی کس طرح کی جا سکتی ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: جھوٹ اور بے اصل بات قائم کر کے شریعت کو تکلیف دینی سخت بیہودگی ہوتی ہے کیا سائل ان لڑکیوں کو پیش کر سکتا ہے۔

مسئلہ ۸۴: از موضع دیور نیا ضلع بریلی مسئولہ عنایت حسین صاحب ۲۹ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ یہ مضمون نکاح خوانی جائز ہے یا نہیں، واجد علی خاں کی لڑکی نام اس کا تم کو معلوم ہے، بالعوض مہر موجل مبلغ دو سو روپیہ سکہ انگریزی کے بوکالت فلاں وفلاں اور شہادت فلاں فلاں علاوہ نان نفقہ کے بیچ عقد نکاح تمہارے کے دی گئی تم

کو قبول ہے؟ قبول کیا میں نے۔ الجواب: جائز ہے جبکہ واجد علی خاں معروف ہو یعنی حاضرین سے دو گواہ پہچانیں کہ فلاں شخص ہے ورنہ اس کے

1 السنن الکبری للبیھقی باب اعتبار الکفاءۃ دار صادر بیروت ۷ / ۱۳۳ 2 غمز عیون البصائر للحموی علی الاشباہ والنظائر ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۲ / ۲۰۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

The name of the father and grandfather should also be mentioned, and saying "with the proxy of so-and-so" and "with witnesses" and besides maintenance is an extra thing which is not needed, and instead of "was given", one should say "I gave", and the one who is the guardian (wali) of the minor girl or the proxy of the guardian or the proxy of the adult girl should say it. And Allah Almighty knows best.

Issue 85 to 86: Asked by Mr. Maulvi Anwar-ul-Haq, Tehsil Chunian, District Lahore, on Sunday, 10th Rabi-ul-Awwal 1334 AH.

What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say on this issue that: (1) The son of the uncle of Hindah's father, who was the guardian of the said Hindah, lived in Chunian, and her mother got Hindah married at a distance of seven kos (approx. 14 miles) from that place in the absence of the said guardian. Now when the said guardian expressed his displeasure, why was the marriage performed with the mother's permission considered void, even though after the passage chosen in Durr-e-Mukhtar, it was written that:

Arabic	**Urdu Translation**
و اختار فی الملتقی مالم ینظر الکفو الخاطب جوابہ واعتمدہ الباقانی ونقل ابن الکمال ان الفتوی علیہ	The marriage performed by a distant guardian (wali-e-aba'd) will be valid when the suitor from an equal match waits for the response of the near guardian (wali-e-aqrab). This is the choice of the author of al-Multaqa, upon which al-Baqani has relied. Ibn al-Kamal has narrated that the fatwa is based on this.
(1)	(ت)

And the author of Bazzaziyah has called this same saying "closer to jurisprudence" (aqrab-il-al-fiqh), and in Radd-ul-Muhtar, it is from Dhakhirah that:

Arabic	**Urdu Translation**
ھو الاصح فی البحر عن المجتبٰی والمبسوط انہ الاصح فی النھایۃ واختارہ اکثر المشائخ وصححہ ابن الفضل انتھٰی	This is the more correct opinion, and it is narrated in al-Bahr from al-Mujtaba and al-Mabsut that this is the more correct opinion. And in al-Nihayah, it says that most of the masters have adopted it, and Ibn al-Fadl has authenticated it. End.
(2)	(ت)

From these many passages, when it is known that in the absence of the nearest agnate guardian (wali-e-asbah aqrab), a distant guardian has the authority to perform the marriage, then why was the marriage performed by the mother declared void? Finis. (2) In the gathering of the sermon (nikah), [the person performing] the marriage said to Hindah's father, Amr, in front of witnesses, "Did you [give] your girl to Bakr's son..."

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/194
2. Radd-ul-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 11

बाप-दादा का भी नाम लिया जाए और फ़लां की वकालत और गवाही के साथ और गुज़ारे (नान व नफ़क़ा) के अलावा कहना एक अतिरिक्त बात है जिसकी ज़रूरत नहीं, और "दी गई" की जगह "मैंने दी" कहे, और वह कहे जो नाबालिग लड़की का वली (अभिभावक) हो या वली का वकील हो या बालिग लड़की का वकील हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 85 से 86: मुस्तफ़्सी (पूछने वाले) जनाब मौलवी अनवारुल हक़ साहब, तहसील चुनियाँ, ज़िला लाहौर, बरोज़ इतवार (यक शंबा), तारीख़ 10 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1334 हिजरी।

दीन के उलेमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: (1) हिन्दा के बाप के चचा का बेटा जो उक्त हिन्दा का वली था, वह चुनियाँ में रहता था और उसकी माँ ने उस स्थान से सात कोस की दूरी पर वली की ग़ैर-मौजूदगी में हिन्दा का निकाह पढ़ा दिया। अब जब उक्त वली ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की तो निकाह जो माँ की इजाज़त से हुआ था, वह किस आधार पर बातिल (अवैध) ठहराया गया, जबकि दुर्र-ए-मुख्तार की चुनी हुई इबारत के बाद लिखा था कि:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
واختار فی الملتقی مالم ینظر الکفو الخاطب جوابہ واعتمدہ الباقانی ونقل ابن الکمال ان الفتوی علیہ	वली-ए-अबअद (दूर का वली) का निकाह जायज़ होगा जब कुफ़्व (बराबरी) वाला रिश्ता वली-ए-अक़रब (निकटतम वली) के जवाब का इंतज़ार करे, यह साहब-ए-मुल्तका का पसंदीदा क़ौल है जिस पर बाक़ानी ने भरोसा किया है, इब्न अल-कमाल ने नक़ल किया कि फ़तवा इसी पर है।

(1) (ت)

और साहब-ए-बज़ाज़िया ने इसी क़ौल को अक़रब इलल फ़िक़्ह (फ़िक़्ह के अधिक निकट) कहा है, और रद्दुल मुहतार में ज़ख़ीरा से है कि:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
ہو الاصح فی البحر عن المجتبٰی والمبسوط انہ الاصح فی النہایۃ	यही अस्ह (अधिक सही) है और बहर में मुजतबा और मब्सूत से नक़ल है कि यही अस्ह है, और निहाया में है कि

अरबी	उर्दू अनुवाद
واختاره اكثر المشائخ وصححه ابن الفضل انتهٰى	अक्सर मशाइख़ ने इसे अपनाया है और इब्नुल फ़ज़्ल ने इसकी तस़हीह (पुष्टि) की है। इन्तिहा (समाप्त)।
(2)	(ت)

इतनी इबारतों से जब मालूम होता है कि वली-ए-अस़बा अक़रब की ग़ैर-मौजूदगी (ग़ैबत) में वली-ए-बईद (दूर के वली) को निकाह पढ़ाने का अख्तियार है, तो माँ का निकाह कराया हुआ किस वजह से बातिल किया गया? फ़क़त। (2) निकाह की मजलिस में निकाह पढ़ाने वाले ने गवाहों के सामने हिन्दा के बाप अम्र से कहा कि तूने अपनी लड़की बक्र के लड़के..

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मत़बा मुजतबाई देहली, 1/194
2. रद्दुल मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुरास़ अल-अरबी बैरूत, 2/315

पृष्ठ 263/739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

باپ دادا کا بھی نام لیا جائے اور بوکالت فلاں و شہادت اور علاوہ نان و نفقہ کے کہنا ایک زائد بات ہے جس کی حاجت نہیں، اور "دی گئی" کی جگہ "دی میں نے" کہے، اور وہ کہے جو نا بالغہ کا ولی یا ولی کا وکیل یا بالغہ کا وکیل۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۸۵ تا ۸۶ : مسئولہ جناب مولوی انوار الحق صاحب تحصیل چونیاں ضلع لاہور بروز یک شنبہ بتاریخ ۱۰ ربیع الاول شریف ۱۳۳۴ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ: (۱) ہندہ کے باپ کے چچا کا بیٹا جو ہندہ مذکورہ کا ولی تھا وہ چونیاں میں رہتا تھا اور اس کی والدہ نے اس مقام سے سات کوس کے فاصلہ پر ولی مذکور کی عدم موجودگی میں ہندہ کا نکاح پڑھا دیا اب جب ولی مذکور نے اپنی ناراضگی ظاہر کی تو نکاح والدہ کی اجازت سے جو ہوا تھا وہ کس واسطے باطل ٹھہرا حالانکہ درمختار کی اختیار کردہ عبارت کے بعد لکھا تھا کہ:

عربی	اردو ترجمہ
واختار فی الملتقی مالم ینظر الکفو الخاطب جوابہ واعتمدہ الباقانی ونقل ابن الکمال ان الفتوی علیہ	ولی ابعد کا نکاح جائز ہوگا جب کفو والا رشتہ ولی اقرب کے جواب کا انتظار کرے، یہ صاحب ملتقٰی کا مختار اس پر باقانی نے اعتماد کیا ہے، ابن الکمال نے نقل کیا کہ فتوی اسی پر ہے۔ (ت)

1

اور صاحب بزازیہ نے اسی قول کو اقرب الی الفقہ کہا ہے، اور ردالمختار میں ذخیرہ سے ہے کہ :

عربی	اردو ترجمہ
ہو الاصح فی البحر عن المجتبٰی والمبسوط انہ الاصح فی النہایۃ واختارہ اکثر المشائخ وصححہ ابن الفضل انتہٰی	یہی اصح ہے اور بحر میں مجتبٰی اور مبسوط سے منقول ہے کہ یہی اصح ہے، اور نہایہ میں ہے کہ اکثر مشائخ نے اس کو اپنایا ہے اور ابن الفضل نے اس کی تصحیح کی ہے۔ انتہی۔

2 (ت)

اتنی عبارتوں سے جب معلوم ہوتا ہے کہ ولی عصبہ اقرب کی غیبت میں ولی بعید کو نکاح پڑھانے کا اختیار ہے تو والدہ کا نکاح کیا ہوا کس واسطے باطل کیا گیا فقط (۲) مجلس خطبہ میں نکاح نے روبرو گواہان کے ہندہ کے باپ عمرو کو کہا کہ تونے اپنی لڑکی بکر کے لڑکے

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۴/۱ 2 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۲

Gave it to Zaid. He said "gave". Then Bakr was asked, "Did you accept Amr's daughter Hindah for your son Zaid?" He said, "I accepted." O Hazrat, through this offer (ijab) and acceptance (qabool), did Hindah's marriage take place or was it a promise of marriage?

The Answer: (1) In reality, opinions on this are varied, and corrections are also varied. The most correct of corrections is what is in 'Dur-re-Mukhtar', but it doesn't mean that at a distance of seven 'kos' (around 14 miles), "as long as he hasn't seen an equal suitor" (Ma lam yanzur al-kufw al-khatib) becomes applicable. Jurisprudence (Tafaqquh) is not just looking at text from a book and understanding literal translation; rather, the greatest pillar of jurisprudence is perceiving the intent of Sharia and observing the conditions of lands and people. It is in the same 'Dur-re-Mukhtar':

> "One who is not knowledgeable of the people of his time is ignorant." (T)

The state of virgin marriages in our lands is well known; messages and greetings go on for months. Even if the daughter's family is willing, they consider it a flaw to accept quickly. This is common among them, that a daughter's matter is not like a market transaction—shoes haven't worn out yet, nor have shawls torn, and already acceptance is given? And there is no such equal suitor that the closest guardian (Wali-e-Aqrab) sits seven 'kos' away and he wouldn't wait to take permission from him. Yes, only he would do this who knows that the closest guardian will not agree. Accepting such haste as valid is the annulment of the guardianship of proximity and the violation of Sharia law. Rather, in all fairness, this 'Mufti-bihi' (authoritative) report is even narrower than the distance of 'Qasr' (shortening prayers during travel). Trains have reduced the 'Qasr' distance to an hour's journey. Which suitor wouldn't wait that long? Remaining details are in this humble servant's fatwas. (T) And Allah Almighty knows best.

(2) If that gathering was for a promise and only a promise was understood, then it was a promise, not a marriage; otherwise, it is a marriage.

Arabic Quote	Urdu Explanation
He said: Have you given her to me? He said: Yes. Indeed,	If he said, "You gave me the girl," and in reply he said "Yes," then this statement in a promise-gathering is a

Arabic Quote	Urdu Explanation
the gathering is for a promise.	promise, and in a marriage-gathering, it's marriage. [Dur-re-Mukhtar etc. (T)]
Promise and for the contract then contract [Footnote 2 Dur-re-Mukhtar etc.]	

This is based on the local custom and understood tradition, as we have indicated towards it. (T) And Allah Almighty knows best.

---

1. Dur-re-Mukhtar, Bab al-Witr wal-Nawafil, Mujtabai Press Delhi, 1/315
2. Dur-re-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Press Delhi, 1/185

ज़ैद को दी, उसने कहा "दी"। फिर बक्र से कहा गया कि क्या तुमने अम्र की लड़की हिन्दह को अपने लड़के ज़ैद के लिए स्वीकार किया? उसने कहा "स्वीकार किया"। ऐ हज़रत, इस ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) से क्या हिन्दह का निकाह हो गया या यह निकाह का वादा था?

उत्तर: (1) वास्तव में इस बारे में विभिन्न मत हैं और विभिन्न संशोधन भी हैं। सबसे सही संशोधन वही है जो 'दुर-रे-मुख्तार' में है, लेकिन दुर-रे-मुख्तार का यह मतलब नहीं है कि सात कोस की दूरी पर "जब तक कि उसने समान वर न देखा हो" (मा-लम यन्ज़ुर अल-कुफ़्व अल-ख़ातिब) सच हो जाए। केवल पुस्तक की इबारत देख लेना और शाब्दिक अनुवाद समझ लेना ही तफ़क़्क़ुह (धर्मशास्त्र की समझ) नहीं है, बल्कि शरिया के उद्देश्य को समझना और शहरों और लोगों की स्थितियों पर नज़र रखना तफ़क़्क़ुह का सबसे बड़ा स्तंभ है। उसी दुर-रे-मुख्तार में है:

> "जो अपने ज़माने के लोगों के हालात नहीं जानता, वह जाहिल (अज्ञानी) है।" (त)

हमारे देशों में कुंवारी कन्याओं के विवाह की स्थिति सर्वविदित है; महीनों तक संदेश और दुआ-सलाम का सिलसिला चलता रहता है। यदि लड़की वालों की मर्ज़ी हो भी, तो वे जल्दी स्वीकृति देने को दोष मानते हैं। यह उनके यहाँ एक आम बात है कि बेटी का मामला कोई बाज़ार का सौदा नहीं है—अभी न जूतियाँ टूटीं, न चादरें फटीं, और अभी से स्वीकृति दे दी जाए? और ऐसा कोई समान वर नहीं है कि उसका निकटतम अभिभावक (वली-ए-अक़रब) सात कोस पर बैठा हो और वह उससे अनुमति लेने तक का इंतज़ार न करे। हाँ, यह वही करेगा जिसे पता होगा कि निकटतम अभिभावक उस पर राज़ी नहीं होगा। ऐसी जल्दबाज़ी को मान्य करना निकटता के अधिकार (विलायत-ए-क़ुर्बे) को समाप्त करना और शरिया के आदेश का उल्लंघन है। बल्कि निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो यह 'मुफ़्ती-बिही' (प्रामाणिक) रिवायत तो 'क़स्र' की दूरी से भी कम है। रेलगाड़ी ने क़स्र की दूरी को एक घंटे के सफर में बदल दिया है। कौन सा वर होगा जो इतनी देर इंतज़ार नहीं करेगा? शेष विवरण इस तुच्छ सेवक के फ़तावा में है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(2) यदि वह सभा वादे के लिए थी और केवल वादा ही समझा गया, तो वह वादा ही हुआ, निकाह नहीं; अन्यथा निकाह है।

अरबी उद्धरण	हिन्दी व्याख्या
उसने कहा: क्या आपने उसे मुझे दे दिया? उसने कहा: हाँ। निश्चय ही सभा वादे के लिए है।	यदि उसने कहा "आपने मुझे लड़की दी" और जवाब में "हाँ" कहा, तो यह बात वादे की सभा में वादा और निकाह की सभा में निकाह होगी। [दुर-रे-मुख्तार आदि (त)]
वादा और अनुबंध के लिए तो अनुबंध [पाद-टिप्पणी 2 दुर-रे-मुख्तार आदि]	

यह वहाँ के रीति-रिवाजों और आपसी समझ पर आधारित है, जैसा कि हमने इसकी ओर इशारा किया है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1. दुर-रे-मुख्तार, बाब अल-वित्र वल-नवाफ़िल, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/315
2. दुर-रे-मुख्तार, किताब अल-निकाह, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/185

زید کو دی اس نے کہا "دی" پھر بکر کو کہا کہ تو نے عمرو کی لڑکی ہندہ اپنے لڑکے زید کے واسطے قبول کی، اس نے کہا "قبول کی" یا حضرت اس ایجاب اور قبول سے ہندہ کا نکاح ہوا یا کہ نکاح کا وعدہ ہوا؟

الجواب: (۱) فی الواقع اقوال اس میں مختلف ہیں اور تصحیحیں بھی مختلف اور اصح التصحیحین یہی ہے جو در مختار میں ہے مگر در مختار کا یہ مطلب نہیں کہ سات کوس کے فاصلہ پر مالم ینظر الکفو الخاطب صادق آ جائے تفقہ فقط کتاب سے عبارت دیکھ لینے اور لفظی ترجمہ سمجھ لینے کا نام نہیں بلکہ مقصد شرع کا ادراک اور احوال بلاد و عباد پر نظر رکن اعظم تفقہ ہے، اسی در مختار میں ہے:

> من لم یکن عالماً اھل زمانہ فھو جاھل۔ [جو اپنے زمانہ والوں کے حالات نہیں جانتا وہ جاہل ہے۔ (ت)]

ہمارے بلاد میں نکاح ابکار کی حالت معلوم ہے مہینوں پیام سلام رہتے ہیں اگر بیٹی والوں کی مرضی بھی ہو تو جلد قبول کر دینے کو عیب جانتے ہیں یہ ان کے یہاں مثل دائر وسائر ہے کہ بیٹی کا معاملہ کچھ بازار کا سودا نہیں ابھی نہ جوتیاں ٹوٹیں نہ چادریں پھٹیں ابھی سے اقبال کر دیا جائے اور ایسا تو کوئی بھی کفو خاطب نہیں کہ ولی اقرب سات کوس پر بیٹھا ہے اور وہ اس سے اجازت لینے تک کا انتظار نہ کرے ہاں یہ وہی کرے گا جسے معلوم ہوگا کہ ولی اقرب اس پر رضانہ دے گا ایسی تعجیل معتبر کر لینے میں ولایت قربے کا ابطال اور حکم شرع کا نقض ہے بلکہ عند الانصاف یہ روایت مفتی بہا تو روایت مسافت قصر سے بھی تنگ تر ہے ریل نے مسافت

قصر کو گھنٹے کی مسافت کر دیا کون سا خاطب ہے کہ اتنی دیر کا انتظار نہ کرے گا وبقیۃ التفصیل فی فتاوی الفقیر (باقی تفصیل فقیر کے فتاوی میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

(۲) اگر وہ مجلس وعدہ کی تھی اور وعدہ ہی مفہوم ہوا تو وعدہ ہی ہوا نہ کہ نکاح، ورنہ نکاح۔

| قال ھل اعطیتنیھا قال نعم ان المجلس للوعد | اگر کہا کہ تو نے مجھے لڑکی دی تو جواب میں ہاں کہا تو یہ بات مجلس وعدہ میں وعدہ اور مجلس نکاح میں نکاح ہوگی، در مختار | | فوعدوان للعقد فعقد 2 در مختار وغیرہ | وغیرہ (ت) |

اس کی بنا وہاں کے رواج و متفا ہم عرف پر ہے کما اشرنا الیہ (جیسا کہ ہم نے اس کی طرف اشارہ کیا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

---

1. در مختار باب الوتر و النوافل مطبع مجتبائی دہلی ۳۱۵/۱
2. در مختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۵/۱

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

Problem 87: Questioned by Lal Muhammad Khayyat of Phaphund, Etawah, on Monday, 11th Rabi al-Awwal 1334 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this matter: A man committed adultery with a woman. Then the same man married the same woman while she was pregnant. After the marriage, he had intercourse with her. In this situation, does the marriage remain valid or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If that woman was without a husband, or her husband had died or divorced her, and this pregnancy could not be legally attributed to the husband—meaning the child was born more than two years after his death or divorce—then in all such cases, the marriage became valid. Furthermore, if that pregnancy was from the same adulterer, it was permissible to approach her after marriage; and if it was from someone else, then not. In any case, there is no flaw in the marriage due to this intercourse. Allah Almighty knows best.

Problem 88: From district Chhapra Saran, post office Hadai Bagh Bazar, village Chakdara, questioned by Shah Habib Ahmed Sahib, on Monday, 11th Rabi al-Awwal 1334 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this matter: Zaid authorized Khalid, in the presence of two witnesses and a few appointed persons, saying "Marry my daughter, whose name is so-and-so, to Walid for ten thousand rupees and two red dinars." Now, at the time of the proposal (ijab), the appointed agent (wakil) uttered the words "ten thousand dirhams" instead of "ten thousand rupees." A witness stopped him, saying "Leave it, say rupees." The appointed agent said that 'dirham' refers to rupees and 'dinar' to ashrafi (gold coins); here both dirham and dinar are combined, therefore, according to the speakers of the language, it is common usage for rupee and ashrafi. On this, the witnesses and the people of the assembly remained silent, and the appointed agent conducted the proposal and acceptance (ijab-o-qabul) with these words: "The daughter of so-and-so is given in your marriage for a mahr (dowry) of ten thousand dirhams in current currency and two red dinars, have you accepted?" After conducting the proposal and acceptance three times, he said verbally that you have no authority or right to increase or decrease. Dirham means ten thousand rupees and the other condition of currency is the rupee which is currently in circulation. If the appointed agent acts against this, then according to him, the marriage would be void. Now, on the second day, the second party along with the groom and his companions, and the first party, are in a dispute: a book is consulted which says that in the dictionary, the meaning of

dirham is 'paisa' (a small coin), therefore the marriage took place for even less than two hundred rupees. And some ignorant people from both parties are saying that the marriage became void. Please state the ruling and earn a reward. That's all.

The Answer: The marriage became valid, and the mahr is ten thousand rupees and two dinars. Dirham does not mean 'paisa', it means 'rupee' itself. Yes...

खण्ड ग्यारह फतावा रज़विया

मसला ८७: प्रेषक: लाल मुहम्मद खय्यात, फफूँद, इटावा, सोमवार, ११ रबीउल अव्वल १३३४ हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरिया के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि: एक व्यक्ति ने एक महिला के साथ व्यभिचार (ज़िना) किया। फिर उसी पुरुष ने उसी महिला के साथ गर्भावस्था के दौरान निकाह किया, निकाह के बाद उसके साथ सहवास किया। इस स्थिति में निकाह कायम रहा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: यदि वह महिला बिना पति के थी, या पति मर गया था या उसने तलाक दे दिया था, और इस गर्भ को कानूनी रूप से पति का नहीं माना जा सकता था (अर्थात उसकी मृत्यु या तलाक के दो साल बाद बच्चा पैदा हुआ), तो इन सभी मामलों में निकाह सही हो गया। फिर अगर वह गर्भ उसी व्यभिचारी (ज़ानी) का था, तो निकाह के बाद उसके पास जाना भी जायज़ था, और यदि किसी और का था, तो नहीं। बहरहाल, इस सहवास से निकाह में कोई दोष नहीं आता। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ८८: जिला छपरा सारन, डाकघर हदई बाग बाज़ार, गाँव चकदारा से शाह हबीब अहमद साहब द्वारा प्रेषित, सोमवार, ११ रबीउल अव्वल १३३४ हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरिया के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि: जैद ने खालिद को दो गवाहों और कुछ नियुक्त व्यक्तियों की उपस्थिति में अनुमति दी कि "मेरी बेटी, जिसका नाम फलां है, उसका निकाह वलीद से दस हज़ार रुपये और दो लाल दीनार पर कर दो"। अब नियुक्त वकील ने ईजाब (प्रस्ताव) के समय दस हज़ार रुपये के बजाय 'दस हज़ार दिरहम' शब्द ज़बान पर लाए। एक गवाह ने टोका कि इसे छोड़ो, 'रुपया' कहो। नियुक्त वकील ने कहा कि दिरहम रुपये को कहते हैं और दीनार अशरफी को, यहाँ दिरहम और दीनार दोनों एक साथ हैं, इसलिए ज़बान के जानकारों के नज़दीक यह रुपये और अशरफी के लिए इस्तेमाल होता है। इस पर गवाह और सभा के लोग चुप रहे और नियुक्त वकील ने इन शब्दों के साथ ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कराया कि "फलां की बेटी दस हज़ार दिरहम वर्तमान मुद्रा और दो लाल दीनार के महर के बदले तुम्हारी पत्नी बनी, क्या तुमने स्वीकार किया?"। तीन बार ईजाब-ओ-क़ुबूल कराकर ज़बान से कह दिया कि तुम्हें कमी-बेशी करने का अधिकार नहीं है। दिरहम से मतलब दस हज़ार रुपये है और मुद्रा की दूसरी शर्त वह रुपया है जो इस समय चल रहा है। अगर वकील इसके खिलाफ करेगा तो उसके नज़दीक निकाह बातिल (अमान्य) होगा। अब दूसरे दिन दूसरा पक्ष दूल्हे और साथियों के साथ और पहला पक्ष इस विवाद में है कि: किताब देखी जाती है

कि शब्दकोश में दिरहम का अर्थ 'पैसा' है, इसलिए निकाह दो सौ रुपये से भी कम पर हुआ। और दोनों पक्षों के कुछ अज्ञानी कह रहे हैं कि निकाह बातिल हो गया। कृपया इसका वर्णन करें और पुण्य पायें। फ़क़त।

जवाब: निकाह सही हो गया और महर दस हज़ार रुपये और दो दीनार तय हुआ। दिरहम का मतलब पैसा नहीं होता, यह रुपये को ही कहते हैं। हाँ...

पृष्ठ २६७/७३१

مسئلہ ۸۷: مسئولہ لال محمد خیاط از پھپھوند اٹھاوہ، بروز دوشنبہ بتاریخ ۱۱ ربیع الاول شریف ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے ایک عورت کے ساتھ زنا کیا۔ پھر اسی مرد نے اسی عورت کے ساتھ بحالتِ حمل نکاح کیا، بعد نکاح اس کے ساتھ مباشرت کی، اس صورت میں نکاح رہا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر وہ عورت بے شوہر تھی یا شوہر مر گیا یا طلاق دے دی تھی اور یہ حمل شوہر کا شرعاً نہیں قرار پا سکتا تھا یعنی اس کی موت اور طلاق دو برس کے بعد بچہ پیدا ہوا تو ان سب صورتوں میں نکاح صحیح ہو گیا، پھر اگر وہ حمل اسی زانی کا تھا تو اسے بعد نکاح پاس جانا بھی جائز تھا، اور دوسرے کا تھا تو نہیں، بہر حال اس مباشرت سے نکاح میں کوئی خلل نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۸: از ضلع چھپرہ سارن ڈاکخانہ حدائی باغ بازار موضع چکدارہ مسئولہ شاہ حبیب احمد صاحب، بروز دوشنبہ بتاریخ ۱۱ ربیع الاول شریف ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے خالد کو مع دو شاہد کے وکیل معین چند اشخاص کے مقابلہ اجازت دی کہ میری لڑکی جو فلاں نام کی ہے اس کا نکاح ولید سے دس ہزار روپیہ اور دو دینار سرخ پر کردو، اب وکیل معین وقتِ ایجاب بجائے دس ہزار روپیہ کے دس ہزار درہم کا الفاظ زبان پر لایا۔ شاہد نے روکا کہ چھوڑو روپیہ کہو۔ وکیل معین نے یہ کہا کہ درہم روپے کو کہتے ہیں اور دینار اشرفی، یہاں پر درہم و دینار دونوں جمع ہے، لہذا اہلِ زبان کے نزدیک مستعمل روپیہ واشرفی ہے، اس پر شاہدان واہلِ مجلس تمام ساکت رہے اور وکیل معین نے بایں الفاظ ایجاب و قبول

کرایا کہ بنتِ فلاں بعوضِ مہر دس ہزار درہم سکہ رائج الوقت اور دو دینار سرخ تمھاری زوجیت میں دیا تم نے قبول کیا، تیں مرتبہ ایجاب و قبول کراکے زبان سے کہہ دیا کہ تم کو کمی بیشی کرنے کی مجاز وحق نہیں ہے۔ درہم سے دس ہزار روپیہ مراد ہے اور سکہ کی دوسری قید ہے جو اس وقت کا روپیہ ہے جو رائج ہے، اگر اس کے خلاف وکیل معین کرے گا تو اس کے نزدیک نکاح باطل ہو گا، اب فریقِ ثانی دوسرے روز معہ نوشہ وہم جلیس اس کے وفریقِ اول میں یہ قصہ ہے کہ کتاب دیکھی جاتی ہے کہ لغت میں درہم کے معنیٰ پیسہ ہے لہذا دو سو روپے سے بھی کم پر نکاح ہوا، اور کوئی جہلا فریقین یہ کہتا ہے کہ نکاح باطل ہوا، بیان فرمایئے اجر و ثواب پایئے، فقط

الجواب: نکاح صحیح ہو گیا اور دس ہزار روپیہ اور دو دینار مہر ہوا، درہم پیسہ کو نہیں کہتے روپیہ ہی کو کہتے ہیں، ہاں

If it had been kept absolute, there would have been a possibility of Shari'ah Dirham, whose weight is 3 Mashas 1 Ratti and 1/5 Ratti. Now that he has specified the current currency, the possibility is eliminated, and certainly this very Rupee is meant, which is eleven and a quarter Mashas. And Allah knows best.

Problem 89: From Sipri area Raja, District Bareilly, Tehsil Aonla, Thana Seroli, Wednesday, 20 Rabi-ul-Awwal 1334 AH. Asked by Nathe Khan Sahib. What do the scholars of the religion and the firm Shari'ah say in this regard: If a person marries any woman, whether she wanders outside or is a prostitute, is it permissible or impermissible? And if after marriage the woman goes out without a veil (purdah), does the marriage remain or not? Or if, for this act, he gives her a divorce (talaq) and pays the dower (mahr), then does any right of hers remain upon the husband? And in marriage, if proposal (ijab) and acceptance (qabul) are done mutually but there are no witnesses or representative (wakeel), is the marriage permissible or impermissible? If after marriage, an unlawful act of the woman is known for a period of one or two days, and the husband divorces her and pays the dower, will the divorce occur or not? And at the time of marriage, what should be the minimum amount of dower?

Answer: Marriage with an unveiled or a woman from the marketplace is also permissible. A marriage does not dissolve if a woman goes out without a veil. After divorce, it is mandatory to pay the dower and maintenance until the completion of the waiting period ('iddah). After that, the woman has no right upon the man. There is no need for a representative (wakeel) in marriage. Nor is there a need for two specific individuals to be designated as witnesses. However, it is necessary that two sane adult men, or one sane adult man and two sane adult women (and in the marriage of a Muslim woman, it is also a condition that all two or three of them be Muslims), hear and understand the proposal and acceptance together at the same time, realizing that a marriage is taking place. Those very people are legally (shari'ah) witnesses, even if they are not specifically designated for witnessing. Without this, marriage cannot take place. Divorce given on any day, whenever it is given, will occur. The minimum dower is silver equal to ten dirhams, which is two tolas and seven and a half mashas, or equivalent to two rupees, twelve and three-quarter annas, and one-fifth of a paisa in local currency. And Allah knows best.

Problem 90 to 91: Asked by Maulvi Muhammad Ismail Sahib Mahmoodabadi, Imam of Risala Paltan, Bareilly Cantonment, 7 Rabi-ul-Akhir 1334 AH. (1) Is it prohibited to marry in the months of Muharram-ul-Haram and Safar-ul-Muzaffar? If so, why? (2) Is the marriage of Zaid's (adopted) step-daughter (rabibah) with Zaid's real brother, Bakr, permissible or not?

Answer: (1) Marriage is not prohibited in any month. And Allah knows best. (2) It is permissible. And Allah knows best.

यदि इसे निरपेक्ष रखा जाता, तो शरीअत के दिरहम की संभावना होती, जिसका वजन 3 माशा 1 रत्ती और 1/5 रत्ती है। अब जब उन्होंने वर्तमान में प्रचलित मुद्रा कह दी है, तो संभावना समाप्त हो गई है और निश्चित रूप से इसी रुपये का अर्थ है, जो सवा ग्यारह माशा का है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 89: स्थान सीपरी इलाका राजा, जिला बरेली, तहसील आंवला, थाना सरौली, बुधवार, 20 रबी-उल-अव्वल 1334 हिजरी। मुस्तौल्ला नत्थे खान साहब। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीअत इस बारे में क्या कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी महिला से निकाह (विवाह) कर ले, चाहे वह बाहर घूमने वाली हो या वेश्या, तो क्या वह जायज़ है या नाजायज़? और निकाह के बाद यदि महिला बिना पर्दे के बाहर जाए, तो निकाह रहा या नहीं? या इस कृत्य पर उसे तलाक दे दे और महर अदा कर दे, तो क्या उसका कोई अधिकार पति पर रह जाता है? और निकाह में यदि इजाब (प्रस्ताव) और कुबूल (स्वीकृति) आपस में कर लें और गवाह या वकील न हो, तो निकाह जायज़ है या नाजायज़? यदि निकाह के बाद उस महिला के किसी अनुचित कृत्य का एक या दो दिन में पता चले और पति उसे तलाक दे दे और महर अदा कर दे, तो तलाक होगा या नहीं? और निकाह के समय महर की न्यूनतम राशि कितनी होनी चाहिए?

जवाब: बिना पर्दे वाली और बाजारी महिला से भी निकाह जायज़ है। महिला के बिना पर्दे के बाहर निकलने से निकाह नहीं टूटता। तलाक के बाद महर देना अनिवार्य होता है और इद्दत तक का भरण-पोषण, उसके बाद महिला का पुरुष पर कोई अधिकार नहीं रहता। निकाह में वकील की आवश्यकता नहीं है। न ही ऐसे दो व्यक्तियों की आवश्यकता है जिन्हें गवाह के रूप में नामित किया जाए। हाँ, यह आवश्यक है कि दो बुद्धिमान वयस्क पुरुष, या एक बुद्धिमान वयस्क पुरुष और दो बुद्धिमान वयस्क महिलाएँ(और मुस्लिम महिला के निकाह में इन दोनों या तीनों का मुस्लिम होना भी शर्त है) एक साथ इजाब और कुबूल को सुनें और समझें कि यह निकाह हो रहा है। वे ही लोग शरीअत के अनुसार गवाह हैं, भले ही उन्हें गवाही के लिए नामित न किया गया हो। इसके बिना निकाह नहीं हो सकता। तलाक किसी भी दिन दें, जब भी दिया जाएगा, वह हो जाएगा। महर कम से कम दस दिरहम चांदी है, यानी दो तोले साढ़े सात माशे, या यहाँ के रुपयों के हिसाब से दो रुपये पौने तेरह आने और एक पैसे के पांचवें हिस्से के बराबर। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 90 से 91: मुस्तौल्ला मौलवी मोहम्मद इस्माइल साहब महमूदाबादी, इमाम रिसाला पलटन बरेली छावनी, 7 रबी-उल-आखिर 1334 हिजरी। (1) क्या मुहर्रम-उल-हराम और सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र के महीनों में निकाह करना मना है या नहीं? यदि है, तो क्यों? (2) जैद की (गोद ली हुई) रबीबा (सौतेली बेटी) का निकाह जैद के सगे भाई बक्र से जायज़ है या नहीं?

जवाब: (1) निकाह किसी भी महीने में मना नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) जायज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पेज 266 ऑफ़ 739

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

اگر اسے مطلق رکھتا تو درہم شرعی کا احتمال ہوتا جس کا وزن ۳ ماشے ایک رتی ۱/۵ رتی کا ہے اب کہ اس نے سکہ رائج الوقت کہہ دیا احتمال قطع ہو گیا اور یقیناً یہی روپیہ مراد رہا جو سوا گیارہ ماشہ کا ہے ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۹: از مقام سیپری علاقہ راجہ ضلع بریلی تحصیل آنولہ تھانہ سرولی روز چہار شنبہ ۲۰ ربیع الاول ۱۳۳۴ھ مسئولہ نتھے خاں صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع متین اس باب میں کہ اگر کوئی شخص کسی عورت خواہ باہر کی پھرنے والی یا طوائف سے نکاح کر لے تو وہ جائز یا ناجائز؟ اور بعد نکاح کے بے پردہ عورت باہر جاوے تو نکاح رہا یا نہیں؟ یا اس فعل پر اس کو طلاق دے دے اور مہر ادا کر دے تو پھر کوئی حق اس کا ذمہ زوج کے رہا یا نہیں؟ اور نکاح میں ایجاب و قبول باہم کر لے اور گواہ وکیل نہ ہو تو نکاح جائز یا ناجائز؟ اگر بعد نکاح اس عورت کا فعل ناجائز عرصہ ایک یا دو یوم کے معلوم ہو تو زوج اس کو طلاق دے دے اور مہر ادا کرے تو طلاق ہو جاوے گی یا نہیں؟ اور بروقت نکاح تعداد مہر کم از کم کتنی ہونی چاہئے؟

الجواب: نکاح زن بے پردہ و بازاری سے بھی جائز ہے اور عورت کے بے پردہ نکلنے سے نکاح نہیں جاتا اور بعد طلاق مہر دینا لازم ہوتا ہے اور عدت تک کا نفقہ، پھر عورت کا کوئی حق مرد پر نہیں رہتا۔ نکاح میں وکیل کی ضرورت نہیں۔ نہ ایسے دو شخصوں کی ضرورت ہے جن کو گواہ سے نامزد کیا جائے، ہاں یہ ضرور ہے کہ دو مرد عاقل بالغ یا ایک مرد دو عورتیں عاقل بالغ (اور مسلمان عورت کے نکاح میں ان دونوں تینوں کا مسلمان ہونا بھی شرط ہے) معاً ایجاب و قبول سنیں اور سمجھیں کہ یہ نکاح ہو رہا ہے، وہی لوگ شرعاً گواہ ہیں اگرچہ وہ لوگ گواہی کے لیے نامزد نہ کئے جائیں، بغیر اس کے نکاح نہیں ہو سکتا، طلاق اس دن دیں، خواہ جب دیں واقع ہو جائے

گی، مہر کم از کم دس درہم بھر چاندی ہے یعنی دو تولے ساڑھے سات ماشے بھر، یا یہاں کے روپے سے دوروپے پونے تیرہ آنے اور ایک پیسہ کے پانچویں حصے کے برابر۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۰ تا ۹۱: مسئولہ مولوی محمد اسمعیل صاحب محمود آبادی امام رسالہ پلٹن بریلی چھاؤنی ۷ ربیع الآخر ۱۳۳۴ھ (۱) ماہ محرم الحرام و صفر المظفر میں نکاح کرنا منع ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو کیوں؟ (۲) زید کی لڑکی (لے پالک) ربیبہ کا نکاح زید کے سگے بھائی بکر سے جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: (۱) نکاح کسی مہینے میں منع نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (۲) جائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Fatawa Rizwia Volume 11

Question 92: Saturday, 7 Rabi al-Thani 1337 AH A woman's husband has passed away, but her iddah (waiting period) has not yet been completed. Is it permissible to perform her marriage? If a prayer leader (Imam) or judge (Qazi) performs the marriage within the iddah, will that marriage be valid or not? And will there be any corruption in the marriage of the person performing this ceremony or not? Or is there any expiation (Kaffara) for this Imam performing the marriage or not? And is his leadership (Imamat) permissible or not? In another scenario, an Imam performed a woman's marriage within her iddah and then the next day confessed before two Muslims, saying, "I made a mistake; forgive me for God's sake." They told him, "O Imam! Your own marriage has become void." He then said, "Fine, I will have the marriage performed again secretly, but for God's sake, forgive me; I will not do this again." However, another cleric told him to say, "I was unaware; I performed the marriage in ignorance." So what is the ruling of the Sharia for him? Is the Imamat of such a marriage performer permissible or not? And what is the ruling for the one who taught him to tell such a lie, saying, "Tell them you didn't know"? And what about the people who were present at the marriage ceremony; is their marriage correct or has some defect occurred? And is the Imamat of such marriage performers permissible or not? And should such marriage performers pay any expiation?

The Answer: To marry during iddah is out of the question; even sending a proposal for marriage is prohibited (Haram). He who knowingly performed a marriage during iddah, if he performed it knowing it is prohibited, has become a severe transgressor (Fasiq) and a broker of adultery, but his own marriage did not go away. And if he considered marriage during iddah to be lawful (Halal), his own marriage was lost and he exited the fold of Islam. In any case, it is not permissible to make him an Imam until he repents. This is also the case for those who participated; someone who did not know that the marriage was taking place after the iddah is not blamed. But whoever participated knowingly, if they considered it prohibited, they became severe sinners. And if they considered it lawful, their Islam was also lost. And the person who instructed the Imam to lie became a severe sinner, and repentance is obligatory upon him. And Allah the Almighty knows best.

Question 93: Queried by Noor Ahmed Contractor, from Pilibhit, Chand Di Lamkra Par, Saturday, 10 Rabi al-Thani 1337 AH What do the scholars of religion and the clear Sharia say regarding this matter that a person divorced his woman, and after two or

three days another person married her, while the iddah has not yet passed. Did his marriage occur or not? If the marriage did not occur, then he committed a prohibited act for thirty years and was a perpetrator of Haram. Now we, the people of the community, want to impose a fine on him. What ruling does the Sharia apply in this, and what punishment should we give him? Whatever ruling the Sharia gives, we will give him that punishment.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

मस्अला 92: शनिवार, 7 रबी-उल-आख़िर 1337 हिजरी एक औरत का पति मर गया है मगर उसकी इद्दत अभी पूरी नहीं हुई है। क्या उसका निकाह पढ़ना जायज़ है? अगर कोई पेश इमाम या क़ाज़ी इद्दत के अंदर निकाह पढ़ा दे तो वह निकाह होगा या नहीं? और इस निकाह पढ़ाने वाले के निकाह में कुछ फ़साद (दोष) होगा या नहीं? या इस निकाह पढ़ाने वाले पेश इमाम के लिए कुछ कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) आता है या नहीं? और उसकी इमामत जायज़ है या नहीं? दूसरी सूरत यानी पेश इमाम ने एक औरत का निकाह इद्दत के अंदर पढ़ा दिया और फिर दूसरे दिन उसने दो मुसलमानों के रूबरू इक़रार किया कि मुझसे ग़लती हो गई, ख़ुदा के लिए माफ़ करो। उन्होंने उसको कहा कि पेश इमाम साहब! आपका अपना निकाह बातिल (अमान्य) हो गया है। तो उसने कहा कि अच्छा मैं निकाह दोबारा चोरी से पढ़ा लूँगा मगर बराए ख़ुदा मुझको माफ़ करो आइंदा को ऐसा न करूँगा। मगर फिर उसको किसी दूसरे मौलवी साहब ने कह दिया कि तुम कह दो कि मुझको ख़बर न थी मैंने बे-ख़बरी में निकाह पढ़ा दिया, तो उसके लिए शरअ शरीफ़ का क्या हुक्म है? तो ऐसे निकाह पढ़ाने वाले की इमामत जायज़ है या नहीं? और जिसने उसको ऐसा झूठ कहना सिखाया कि तुम कह दो कि मुझको ख़बर न थी, तो उस सिखाने वाले के वास्ते क्या हुक्म है? और जो लोग मज्लिस-ए-निकाह में हाज़िर थे उनका निकाह दुरुस्त है या कुछ ख़लल (दोष) हुआ? और ऐसे निकाह पढ़ाने वाले की इमामत जायज़ है या नहीं? और ऐसे निकाह पढ़ाने वाले को कुछ कफ़्फ़ारा देना चाहिए या नहीं?

अल-जवाब: इद्दत में निकाह तो निकाह, निकाह का पैग़ाम देना हराम है। जिसने दानिस्ता (जान-बूझकर) इद्दत में निकाह पढ़ाया, अगर हराम जानकर पढ़ाया तो सख़्त फ़ासिक़ और ज़िनाकार का दलाल हुआ मगर उसका अपना निकाह न गया, और अगर इद्दत में निकाह को हलाल जाना तो ख़ुद उसका निकाह जाता रहा और वह इस्लाम से ख़ारिज हो गया। बहरहाल उसको इमाम बनाना जायज़ नहीं जब तक तौबा न करे, यही हाल शरीक होने वालों का है। जो न जानता था कि निकाह पस-ए-इद्दत (इद्दत के बाद) हो रहा है उस पर कुछ इल्ज़ाम नहीं और जो दानिस्ता शरीक हुआ अगर हराम जानकर तो सख़्त गुनहगार हुआ। और हलाल जाना तो इस्लाम भी गया। और जिस शख़्स ने इमाम को झूठ बोलने की तालीम दी वह सख़्त गुनहगार हुआ, उस पर तौबा फ़र्ज़ है। वल्लाहु तआला आलम।

मस्अला 93: मस्ऊला नूर अहमद ठेकेदार अज़ मक़ाम पीलीभीत, चंद दी लमकड़ा पार, शनिवार 10 रबी-उल-आख़िर 1337 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन व शरअ-ए-मतीन इस मस्अले में

कि एक शख़्स ने अपनी औरत को तलाक़ दी, दो तीन रोज़ के बाद दूसरे शख़्स ने निकाह कर लिया, अभी इद्दत गुज़री नहीं है। आया उसका निकाह हुआ या नहीं? अगर निकाह नहीं हुआ तो तीस बरस तक उसने हराम किया और हराम का मुर्तकिब (दोषी) हुआ। अब हम बिरादरी वाले उस पर जुर्माना डालना चाहते हैं, शरीअत इसमें क्या हुक्म लगाती है और हम लोग कौन सी उसको सज़ा दें? जो हुक्म शरीअत करे उसको हम सज़ा दे दें।

पेज 267/739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۹۲: بروز شنبہ ۷ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ ایک عورت کا مرد فوت ہو گیا ہے مگر اس کی عدت پوری نہیں ہوئی اس کا نکاح پڑھنا جائز ہے؟ اگر کوئی پیش امام یا قاضی عدت کے اندر نکاح پڑھا دے تو وہ نکاح ہو گا یا نہیں؟ اور اس نکاح پڑھانے والے کے نکاح میں کچھ فساد ہو گا یا نہیں؟ یا اس نکاح پڑھانے والے پیش امام کے لیے کچھ کفارہ آتا ہے یا نہیں؟ اور اس کی امامت جائز ہے یا نہیں؟ صورت دیگر یعنی پیش امام نے ایک عورت کا نکاح عدت کے اندر پڑھا دیا اور پھر دوسرے روز اس نے دو مسلمان کے رو برو اقرار کیا کہ مجھ سے غلطی ہو گئی خدا کے لیے معاف کرو۔ انھوں نے اس کو کہا کہ پیش امام صاحب! آپ کا خود نکاح باطل ہو گیا ہے۔ تو اس نے کہا کہ اچھا میں نکاح دوبارہ چوری سے پڑھا لوں گا مگر برائے خدا مجھ کو معاف کرو آئندہ کو ایسا نہ کروں گا، مگر پھر اس کو کسی دوسرے مولوی صاحب نے کہہ دیا کہ تم کہہ دو کہ مجھ کو خبر نہ تھی میں نے بے خبری میں نکاح پڑھا دیا، تو اس کے لیے شرع شریف کا کیا حکم ہے؟ تو ایسے نکاح پڑھانے والے کی امامت جائز ہے یا نہیں؟ اور جس نے اس کو ایسا جھوٹ کہنا سکھلایا کہ تم کہہ دو کہ مجھ کو خبر نہ تھی، تو اس سکھانے والے کے واسطے کیا حکم ہے؟ اور جو لوگ مجلس نکاح میں حاضر تھے ان کا نکاح درست ہے یا کچھ خلل ہوا؟ اور ایسے نکاح پڑھانے والے کی امامت جائز ہے یا نہیں؟ اور ایسے نکاح پڑھانے والے کو کچھ کفارہ دینا چاہئے یا نہیں؟

الجواب: عدت میں نکاح تو نکاح، نکاح کا پیغام دینا حرام ہے۔ جس نے دانستہ عدت میں نکاح پڑھایا اگر حرام جان کر پڑھایا سخت فاسق اور زنا کار کا دلال ہوا مگر اس کا اپنا نکاح نہ گیا، اور اگر عدت میں نکاح کو حلال جانا تو خود اس کا نکاح جاتا رہا اور وہ اسلام سے خارج ہو گیا، بہرحال اس کو امام بنانا جائز نہیں جب تک توبہ نہ کرے، یہی حال شریک ہونے والوں کا ہے، جو نہ جانتا

تھا کہ نکاح پس از عدت ہو رہا ہے اس پر کچھ الزام نہیں اور جو دانستہ شریک ہوا اگر حرام جان کر تو سخت گنہ گار ہوا۔ اور حلال جانا تو اسلام بھی گیا، اور جس شخص نے امام کو جھوٹ بولنے کی تعلیم دی وہ سخت گناہ گار ہوا، اس پر توبہ فرض ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۳: مسئولہ نور احمد ٹھیکیدار از مقام پیلی بھیت چند دی لمکڑہ پار روز شنبہ ۱۰ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی عورت کو طلاق دی، دو تین روز کے بعد دوسرے شخص نے نکاح کر لیا، ابھی عدت گزری نہیں ہے۔ آیا اس کا نکاح ہوا یا نہیں؟ اگر نکاح نہیں ہوا تو تیس برس تک اس نے حرام کیا اور حرام کا مرتکب ہوا، اب ہم برادری والے اس پر جرمانہ ڈالنا چاہتے ہیں، شریعت اس میں کیا حکم لگاتی ہے اور ہم لوگ کون سی اس کو سزا دیں، جو حکم شریعت کرے اس کو ہم سزا دے دیں،

Fatawa-e-Razviyya Volume 11

Should he be separated from the community or should some people be given food? Please send the ruling on this quickly because there is a dispute here. That's all.

The Answer: That marriage did not take place; it is purely forbidden (haram). It is obligatory for the man and woman to separate immediately. If they do not, the community should completely exclude both of them from the community. They should immediately cease all talking, socializing, and interacting with them. What other punishment can there be here? And it is not permissible to forcibly make them provide food. Allah Almighty knows best.

Issue 94: Asked by Abdul Latif Khan, shopkeeper, Pilibhit, Dori Lal locality, on Sunday, 22nd Rabi' al-Akhir, 1337 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shariah say regarding this issue: A widowed woman who had a son married Zaid. The boy whom the widow (now Zaid's wife) brought with her was named Bakr. Zaid's wife died, and no children were born from Zaid, nor did Zaid have any other children. The aforementioned Bakr married a woman. When no children were born to Bakr, he expelled his wife and divorced her. After the completion of the waiting period ('iddah), Zaid married her. Is this permissible or not?

The Answer: It is permissible. She is not his daughter-in-law because Bakr is not his son; he is the son of his wife. Allah Almighty said: "And [also prohibited are] the wives of your sons who are from your [own] loins" [1]. Allah Almighty stated: It is forbidden to marry the wives of your biological sons. And Allah Almighty said: Apart from these mentioned prohibited women, other women are lawful for you (T). Allah Almighty knows best. Allah Almighty said: "And lawful to you are [all others] beyond these" [2]. And Allah Almighty knows best.

Issue 95: From Shahjahanpur on Saturday, dated 6th Jumada al-Ula, 1337 AH. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. What is your opinion on this matter, O noble scholars? First, Hinda's engagement was settled with Zaid with her consent and desire. Then Hinda's mother married her off to Bakr without informing Hinda, and told Hinda that if anyone asks you about the marriage, say that my mother has the authority. When Hinda [found out]...

---

1 Al-Quran 4/23 2 Al-Quran 4/24 Page 268 of 739

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

क्या इसे बिरादरी (समुदाय) से अलग कर दें या कुछ लोगों को खाना खिला दें? इसका हुक्म हुज़ूर जल्द भेजें क्योंकि यहाँ झगड़ा हो रहा है। फ़क़त।

जवाब: वह निकाह नहीं हुआ, वह पूरी तरह हराम (वर्जित) है। उस मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है कि वे फ़ौरन अलग हो जाएँ। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो बिरादरी वाले उन दोनों को बिरादरी से पूरी तरह बाहर कर दें। उनसे बातचीत, मिलना-जुलना और साथ बैठना-उठना सब तुरंत बंद कर दें। इसके अलावा यहाँ और क्या सज़ा हो सकती है? और ज़बरदस्ती खाना खिलवाना जायज़ नहीं है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 94: प्रार्थी अब्दुल लतीफ़ खाँ, दुकानदार, पीलीभीत, मोहल्ला डोरी लाल, रविवार, 22 रबी-उल-आख़िर 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: एक विधवा महिला जिसका एक बेटा था, उसने ज़ैद से निकाह किया। वह लड़का जिसे विधवा (अब ज़ैद की पत्नी) अपने साथ लाई थी, उसका नाम बक्र है। ज़ैद की पत्नी का निधन हो गया और ज़ैद से कोई संतान नहीं हुई, न ही ज़ैद की कोई संतान थी। उक्त बक्र ने एक महिला से निकाह किया। जब बक्र की कोई संतान नहीं हुई, तो बक्र ने अपनी पत्नी को निकाल दिया और तलाक़ दे दिया। इद्दत की अवधि पूरी होने के बाद, ज़ैद ने उसके साथ निकाह कर लिया। क्या यह जायज़ है या नहीं?

जवाब: जायज़ है। वह उसकी बहू नहीं है, क्योंकि बक्र उसका बेटा नहीं है, वह उसकी पत्नी का बेटा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और [तुम्हारे लिए हराम हैं] तुम्हारे उन बेटों की बीवियाँ जो तुम्हारी पुश्त (वंश) से हों।" [1]। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अपने हक़ीक़ी बेटों की पत्नियों से निकाह हराम है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: इन ज़िक्र किए गए हराम रिश्तों के अलावा बाकी औरतें तुम्हारे लिए हलाल हैं (त)। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और इनके अलावा अन्य महिलाएँ तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं।" [2]। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 95: शाहजहाँपुर से, शनिवार, तारीख 6 जमादी-उल-अव्वल 1337 हिजरी। बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। ऐ विद्वान उलमा, इस मामले में आपकी क्या राय है? पहले हिंदा का रिश्ता उसकी रज़ामंदी और इच्छा से ज़ैद के साथ हुआ। फिर हिंदा की माँ ने हिंदा को बताए बिना उसका निकाह बक्र के साथ कर दिया, और हिंदा से यह कह दिया कि अगर कोई तुझसे निकाह के बारे में पूछे, तो कह देना कि मेरी माँ को अधिकार है। जब हिंदा को अपनी...

1 अल-क़ुरआन 4/23 2 अल-क़ुरआन 4/24 पेज 268 / 739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

آیا اس کو برادری سے علیحدہ کر دیں یا کچھ لوگوں کو کھانا کھلوا دیں، اس کا حکم حضور جلد روانہ فرمادیجئے کیونکہ یہاں پر جھگڑا پڑا ہوا ہے۔ فقط

الجواب: وہ نکاح نہیں ہوا، حرام محض ہوا، ان مرد و عورت پر فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں، نہ ہوں تو برادری والے ان دونوں کو قطعاً برادری سے خارج کر دیں، ان سے بول چال، میل جول، نشست وبرخاست سب یک لخت ترک کردیں، اس کے سوا یہاں کیا سزا ہو سکتی ہے۔ اور جبراً کھانا ڈالنا جائز نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۴: مسئولہ عبد اللطیف خاں دکاندار پیلی بھیت محلہ ڈوری لال بروز یکشنبہ ۲۲ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت بیوہ جس کا ایک لڑکا تھا اس نے اپنا نکاح زید سے کیا اور جو لڑکا عورت بیوہ یعنی اب زوجہ زید اپنے ہمراہی لے کر آئی تھی اس کا نام بکر ہے، زوجہ زید فوت ہو گئی اور کوئی اولاد زید سے نہیں ہوئی اور نہ کوئی اولاد زید کی تھی، بکر مذکور نے اپنا نکاح کسی عورت کے ساتھ کیا جب بکر سے کوئی اولاد نہیں ہوئی بکر نے اپنی زوجہ کو نکال دیا اور طلاق دے دی، بعد انقضائے مدت عدت کے زید نے اس کے ساتھ نکاح کیا، آیا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: جائز ہے۔ وہ اس کی بہو نہیں، کہ بکر اس کا بیٹا نہیں، اس کی زوجہ کا بیٹا ہے۔ قال تعالیٰ وَحَلَائِلُ اَبْنَآئِکُمُ الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِکُمْ 1 و اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اپنے حقیقی بیٹے کی بیوی بننے والیوں سے نکاح حرام ہے۔ اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ان مذکورہ محرمات کے علاوہ باقی عورتیں تمہارے لیے حلال ہیں (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔ قال تعالیٰ وَ اُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ 2 ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۵: از شاہجہاں پور بروز شنبہ بتاریخ ۶ جمادی الاولی ۱۳۳۷ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم

ماقولکم فی ھذہ الصورۃ ایھا العلماء الکرام، اول ہندہ کی نسبت اس کی رضا و رغبت سے زید کے ساتھ ہوئی پھر ہندہ کی والدہ نے اس کا نکاح بکر کے ساتھ ہندہ کو اطلاع دئے بغیر کر دیا، اور ہندہ سے یہ کہہ دیا کہ اگر تجھ سے کوئی نکاح کے متعلق دریافت کرے تو یہ کہہ دینا کہ میری ماں کو اختیار ہے۔ جب ہندہ کو اپنے

---

1 القرآن ۲۳/۴ 2 القرآن ۲۴/۴ صفحہ 268 از 739

Fatawa Rizvia Volume 11

Information about the marriage which was performed with Bakr reached [her], so she did not accept it and, with her consent, had her marriage performed with Zaid (and besides mother and sisters, there was no one else for this girl, and the girl's age was seventeen years, meaning she was an adult). The question is, in these circumstances, was Hinda's marriage valid with Bakr or with Zaid? Only.

Answer: If the situation is that Hinda was an adult at the time of the marriage with Bakr and her mother performed her marriage without her permission, upon hearing which she did not accept it and performed her marriage with Zaid, then the marriage with Bakr became void. And if Hinda has no male relatives like grandfather, great-grandfather's descendants who could be guardians for marriage, or if Zaid, with whom Hinda, as an adult, entered into marriage by her own consent, is Hinda's Kufu (equal match) — meaning in matters like religion, lineage, conduct, profession etc., he is not so inferior that Hinda's marriage with him would be a cause of shame and disgrace for Hinda's guardian — or if he is not Kufu but the guardian, knowing him to be such before the marriage, gave explicit permission for Hinda's marriage with him, then in these cases, the marriage of Zaid with Hinda became valid and binding. And if the aforementioned Zaid is not Kufu and Hinda's guardian, knowing him to be non-Kufu before the marriage, did not give explicit permission, then Hinda's marriage with Zaid was also absolutely void. All these issues are explicitly mentioned in 'Al-Durr' and other great books of travel and brilliance (These all issues are explicitly mentioned in Durr and other books. Ed.). And Allah Almighty knows best.

Problem 96: From Post Office Sandila, Haji Mohalla Mathura, District Hardoi, sent by Mr. Muhammad Abdul Wakeel, Saturday, 6 Jamadi-ul-Ula 1334 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say in this matter where one party is of the Sunni sect and the other party follows the Shia Imami way? Is the marriage contract between these two persons legally permissible according to Sharia? And is the offspring born from them of established lineage or not?

Answer: The marriage will not take place at all. This issue is in 'Al-Hindiyya' etc., and we have detailed it several times in our fatwas. (This issue is in Hindiyya etc. We have explained it in detail many times in our fatwas. Ed.). And Allah Almighty knows best.

Problem 97: From Gonar, Gwalior State, Maqsood Ali, Saturday, dated 6 Jamadi-ul-Ula 1334 AH. In the presence of those who know the Path and scholars of Sharia points, leader of the Ahmadi religion and guide of Muhammadi commands, may his shadow

endure. After respectful greetings, it is humbly submitted that it has been a year since I came into the marriage contract of Sultan Ahmad Khan. His brother Suleiman Khan stayed with my parents for 7 months. Due to his misconduct and debauchery, my parents...

फतावा रज़विया जिल्द 11

बक्र के साथ किए गए निकाह की सूचना मिलने पर उसने उसे स्वीकार नहीं किया और अपनी सहमति से अपना निकाह ज़ैद के साथ पढ़वा लिया (और उस लड़की के माँ और बहनों के अलावा और कोई नहीं था, और लड़की की उम्र सत्रह साल थी) यानी वह बालिग थी। सवाल यह है कि इन स्थितियों में हिंदा का निकाह बक्र के साथ सही हुआ या ज़ैद के साथ? केवल।

जवाब: यदि स्थिति यह है कि बक्र के साथ निकाह के समय हिंदा बालिग थी और उसकी माँ ने उसकी अनुमति के बिना उसका निकाह कर दिया, जिसकी खबर मिलने पर उसने इसे स्वीकार नहीं किया और अपना निकाह ज़ैद से कर लिया, तो बक्र के साथ निकाह अमान्य (बातिल) हो गया। और यदि हिंदा का कोई पुरुष अभिभावक (वली) जैसे दादा, परदादा की संतान नहीं है जो निकाह का वली बन सके या ज़ैद, जिसके साथ बालिग हिंदा ने अपनी सहमति से निकाह किया है, हिंदा का 'कुफ़ू (समान स्तर) है — यानी धर्म, वंश, आचरण, पेशा आदि किसी भी बात में इतना कम नहीं है कि उसके साथ निकाह हिंदा के वली के लिए अपमान और शर्म का कारण हो — या यदि वह कुफ़ू नहीं है लेकिन वली ने निकाह से पहले उसे ऐसा जानकर हिंदा के साथ उसके निकाह की स्पष्ट अनुमति दे दी, तो इन स्थितियों में ज़ैद का हिंदा के साथ निकाह सही और अनिवार्य हो गया। और यदि उक्त ज़ैद कुफ़ू नहीं है और हिंदा के वली ने निकाह से पहले उसे गैर-कुफ़ू जानकर स्पष्ट अनुमति नहीं दी, तो ज़ैद के साथ हिंदा का निकाह भी पूरी तरह से अमान्य (बातिल) हुआ। ये सभी मामले 'दुर्र और यात्रा और महानता की अन्य पुस्तकों में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। (ये सभी मामले दुर्र आदि पुस्तकों में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। सं.) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 96: डाकखाना संडीला, हाजी मोहल्ला मथुरा, जिला हरदोई से मोहम्मद अब्दुल वकील साहब द्वारा प्रेषित, शनिवार, 6 जमादि-उल-ऊला 1334 हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरिया के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि एक पक्ष सुन्नी संप्रदाय का है और दूसरा पक्ष शिया इमामी पद्धति का पालन करता है? क्या इन दो व्यक्तियों के बीच विवाह अनुबंध (निकाह) शरिया के अनुसार जायज़ है? और क्या उनसे पैदा होने वाली संतान वैध वंश की है या नहीं?

जवाब: निकाह मूल रूप से नहीं होगा। यह मसला 'अल-हिंदिया' आदि में है और हमने इसे अपने फतावा में कई बार विस्तार से बताया है। (यह मसला हिंदिया आदि में है। हमने इसे अपने फतावा में कई बार विस्तार से बताया है। सं.) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 97: गोनार, ग्वालियर राज्य से मकसूद अली, शनिवार, दिनांक 6 जमादि-उल-ऊला 1334 हिजरी। तरीक़त के जानने वालों और शरीयत के रहस्यों के विद्वानों, अहमदी धर्म के नेता और मुहम्मदी आदेशों के मार्गदर्शक, उनकी छाया बनी रहे, के समक्ष। सम्मानजनक अभिवादन के बाद, विनम्र निवेदन है कि मुझे सुल्तान अहमद खान के साथ विवाह अनुबंध में आए हुए एक वर्ष हो गया है। उसका भाई सुलेमान खान 7 महीने तक मेरे माता-पिता के साथ रहा। उसके दुराचार और विलासिता के कारण, मेरे माता-पिता ने उससे...

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

نکاح کی اطلاع ہوئی جو بکر کے ساتھ کیا گیا تھا تو اس نے اس کو قبول نہیں کیا اور اپنی رضامندی سے اپنا نکاح زید کے ساتھ پڑھوا لیا (اور اس لڑکی کے سوائے ماں اور بہنوں کے اور کوئی نہ تھا، اور عمر لڑکی کی سترہ سال کی تھی) یعنی بالغ تھی، سوال یہ ہے ان صورتوں میں ہندہ کا نکاح بکر کے ساتھ صحیح ہوا یا زید کے ساتھ؟ فقط

الجواب: اگر صورت واقعہ یہ ہے کہ ہندہ وقت نکاح بکر بالغہ تھی اور ماں نے بے اس کی اجازت کے اس کا نکاح کیا، جس کی خبر پاکر اس نے قبول نہ کیا اور اپنا نکاح زید سے کر لیا تو نکاح بکر باطل ہو گیا، اور اگر ہندہ کے کوئی مرد دادا پر دادا کی اولاد کا کہ ولی نکاح ہو سکے نہیں، یا زید جس سے ہندہ بالغہ نے برضائے خود نکاح کر لیا ہندہ کا کفو ہے یعنی مذہب نسب، چال چلن، پیشے وغیرہ کسی بات میں ایسا کم نہیں کہ ہندہ کا اس سے نکاح ولی ہندہ کے لئے باعث ننگ و عار ہو یا اگر وہ کفو نہیں تو ولی نے پیش از نکاح اسے ایسا جان کر اس سے نکاح ہندہ کی صریح اجازت دے دی تو ان صورتوں میں زید کا ہندہ سے نکاح صحیح اور لازم ہو گیا، اور اگر زید مذکور کفو نہیں اور ہندہ کے ولی نے پیش از نکاح اسے غیر کفو جان کر صریح اجازت نہ دی تو ہندہ کا نکاح زید سے بھی باطل محض ہوا و المسائل کلھا منصوص علیہا فی الدر وغیرہ من الاسفار والغر (یہ تمام مسائل در وغیرہ کتب میں صراحۃً مذکور ہیں۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۶: از ڈاک خانہ سندیلہ حاجی محلہ متھوا ضلع ہر دوئی مرسلہ محمد عبدالوکیل صاحب بروز شنبہ ۶ جمادی الاولی ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ احد الفریقین سنی المذہب ہے اور دوسرا فریق شیعہ امامیہ طریقہ رکھتا ہے، کیا ان دو اشخاص کے باہم عقد مناکحت شرعاً جائز ہے؟ اور یہ کہ ان سے پیدا شدہ اولاد ثابت النسب ہے یا نہیں؟

الجواب: نکاح اصلاً نہ ہوگا والمسئلۃ فی الھندیۃ وغیرھا وقد فصلناھا غیر مرۃ فی فتاونا (یہ مسئلہ ہندیہ وغیرہ میں ہے ہم نے کئی بار اسے اپنے فتاوٰی میں مفصل بیان کیا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۹۷: از گونار ریاست گوالیار مقصود علی گرد آور بروز شنبہ بتاریخ ۶ جمادی الاولی ۱۳۳۴ھ بحضور واقفان طریقت و عالمان نکات شریعت پیشوائے دین احمدی و رہنمائے احکامات محمدی مدظلہ بعد آداب نیاز دست بستہ گزارش ہے کہ میں عقد تزوج سلطان احمد خاں میں عرصہ ایک سال کا ہوا آئی اس کا بھائی سلیمان خاں ۷ ماہ تک میرے والدین کے پاس رہا، اس کی بد چلنی واوباشی سے میرے والدین نے اس سے

said, "Mend your conduct; had I known such conduct from you, I would not have allowed my wife to come before you." He replied, "I am leaving now." The father said, "Go, farewell." He left. My father ordered my mother that from today, whenever you see his face, consider him excluded from marriage. My husband brought him, my mother observed the veil, my husband told me, "Your parents have separated my brother; from today, I separate you, you have no connection with me." I came inside crying, and they left. In the morning, I sent Kareem Khan to my husband. When called, he said, "I have already left her; what connection now? Now even if the Kaaba is on that side, I will not bow my head." He said this in front of witnesses. Nearly six months have passed since that day; I have been living abandoned. Now his sister came and first proposed to bring me back somehow, then said there was a mistake in the divorce, they would arrange it well by marrying me to their other brother, getting a divorce, and then having a third marriage with him; no one would know. I did not accept this and served a notice for the dower (Mahr). Now he claims for cohabitation (rukhsat). Therefore, I humbly request to know: does my marriage contract with Sultan Ahmad Khan still stand or is it nullified? Am I entitled to the deferred dower or not? Has my waiting period (Iddah) ended or is it remaining? Is it permissible for me to maintain the previous marital relationship with the former husband or not? Please provide a correct answer according to Allah's law so that no shortcoming in the commands of Muhammad's religion is committed by this sinner. May Allah Almighty reward you for this. This is an Indian state; no one has the competence to give a Sharia ruling; the treatment is arbitrary.

Answer: If the mentioned statement is true, then an irrevocable divorce (Talaq Ba'in) has occurred on the woman, and she is out of the marriage contract. Three divorces did not occur, so there is no need for Halala (marriage to another, consummation, and divorce) to marry Suleiman Khan. If the husband and wife have been together in private in a house, then the entire dower has become payable. From the day of divorce, a waiting period of three menstrual cycles became obligatory for the woman. If three cycles have started and ended, then the waiting period is over; otherwise, not. And if only the marriage contract took place without any private meeting between husband and wife in a house, then half of the dower is waived and half is payable, and there is no waiting period at all. After this divorce, if the woman wishes, remarriage with Sultan Ahmad Khan was possible. However, the statement he made, "even if the Kaaba is on that side, I will not bow my head," has been termed

as a word of disbelief (kufr) by scholars. Therefore, if he repents now and renews his Islam, marriage with him can take place. Allah Almighty knows best.

Problem 98: From Mr. Usman Ayub Haji Adam ji Haji Yaqub, Bilaspur district, CP, 10 Jamadi-ul-Ula 1334 AH. What do you say, O Hanafi scholars, may Allah Almighty have mercy on you, regarding this issue: If Zaid, in front of a large gathering...

(पति के पिता ने) कहा कि अपना आचरण सुधारो, काश मुझे तुम्हारे ऐसे आचरण का पता होता तो मैं अपनी पत्नी को तुम्हारे सामने आने की अनुमति न देता। उसने कहा, मैं अभी जा रहा हूँ। पिता ने कहा, जाओ, खुदा हाफ़िज़। वह चला गया। मेरे पिता ने मेरी माँ को आदेश दिया कि आज से जब भी तुम उसका चेहरा देखो, उसे निकाह से बाहर समझना। मेरा पति उसे लाया, मेरी माँ ने पर्दा किया, मेरे पति ने मुझसे कहा, "तुम्हारे माता-पिता ने मेरे भाई को अलग कर दिया है, आज से मैं तुम्हें अलग करता हूँ, तुम्हारा मुझसे कोई वास्ता नहीं है।" मैं रोती हुई अंदर आई और वे चले गए। सुबह मैंने करीम खान को पति के पास भेजा। बुलाने पर उसने कहा, "मैं उसे छोड़ चुका हूँ, अब क्या वास्ता? अब अगर काबा भी उस तरफ हो तो मैं सिर नहीं झुकाऊंगा।" उसने गवाहों के सामने यह बात कही। उस दिन से करीब छह महीने बीत चुके हैं; मैं बिल्कुल परित्यक्त पड़ी रही। अब उसकी बहन ने आकर पहले यह प्रस्ताव दिया कि किसी तरह घर ले आएँ, फिर कहा कि तलाक में गलती हो गई है, इसकी व्यवस्था अच्छी तरह कर लेंगे कि हम अपने दूसरे भाई से निकाह कराकर तलाक दिलाकर तीसरा निकाह (उसी से) करा देंगे, किसी को पता नहीं चलेगा। मैंने इसे स्वीकार नहीं किया और महर (दहेज राशि) के लिए नोटिस दे दिया। अब वह विदाई (रुख्सत) का दावा करता है। अतः मैं हाथ जोड़कर विनती करती हूँ कि क्या सुल्तान अहमद खान के साथ मेरा निकाह अनुबंध कायम है या समाप्त हो गया? क्या मैं मुअज्जल महर की हकदार हूँ या नहीं? मेरी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दिन समाप्त हो गए हैं या बाकी हैं? क्या मेरे लिए पूर्व पति के साथ पिछला वैवाहिक संबंध रखना जायज है या नहीं? अल्लाह के हुक्म के अनुसार सही जवाब देकर अवगत कराया जाए ताकि इस गुनहगार से मुहम्मदी धर्म के आदेशों में कोई कमी न रह जाए। अल्लाह तआला हुजूर को इसका बदला देगा। यह एक भारतीय रियासत है; यहाँ किसी में इतनी योग्यता नहीं है जो शरीयत के अनुसार फैसला दे सके, यहाँ का बर्ताव मनमाना है।

उत्तर: यदि वर्णित कथन सत्य है, तो महिला पर 'तलाक-ए-बायन' (अपरिवर्तनीय तलाक) हो गया और वह निकाह से बाहर हो गई। तीन तलाक नहीं हुए कि हलाला की आवश्यकता हो, जिसके लिए सुलेमान खान से निकाह करके तलाक लिया जाए। यदि पति और पत्नी एक घर में अकेले एक साथ रह चुके हैं, तो पूरा महर देय हो गया और महिला पर तलाक के दिन से तीन मासिक धर्म की इद्दत अनिवार्य हो गई। यदि तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त हो गए हैं तो इद्दत पूरी हो गई, अन्यथा नहीं। और यदि अभी केवल निकाह हुआ है और एक घर में पति-पत्नी की तन्हाई नहीं हुई है, तो आधा

महर माफ हो गया और आधा देय है, और इद्दत बिल्कुल नहीं है। इस तलाक के बाद यदि महिला चाहे तो सुल्तान अहमद खान से दोबारा निकाह हो सकता था। लेकिन उसने जो शब्द कहे कि "अगर इधर काबा भी हो तो सिर नहीं झुकाऊंगा", इसे विद्वानों ने 'कलम-ए-कुफ्र' (अविश्वास का शब्द) लिखा है। इसलिए, यदि वह अब तौबा करे और इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) करे, तो उससे निकाह हो सकता है। अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 98: जनाब उस्मान अयूब हाजी आदम जी हाजी याकूब साहिबान, जिला बिलासपुर, सी.पी., 10 जमादी-उल-उला 1334 हिजरी की ओर से। हे हनफ़ी विद्वानों, अल्लाह तआला आप पर रहम करे, इस मसले में आपकी क्या राय है कि यदि ज़ैद ने एक बड़ी जमात के सामने...

کہا کہ چلن اپنا سنبھالو، کاش میں ایسا چلن تمہارا خیال کرتا اپنی عورت کو تمہارے سامنے آنے کی اجازت نہ دیتا اس نے کہا میں ابھی جاؤں، والد نے کہا جاؤ سلام، وہ چلا گیا، میری والدہ کو والد نے یہ حکم دیا کہ آج سے تم جس وقت اس کا منہ دیکھو گی نکاح سے خارج سمجھنا، میرا شوہر اس کو لایا، میری والدہ نے پردہ کیا، میرے شوہر نے مجھ سے کہا میرے بھائی کو تمہارے والدین نے علیحدہ کیا میں آج سے تم کو علیحدہ کرتا ہوں، تمہارا مجھ سے کچھ واسطہ نہیں، میں روتی ہوئی اندر آئی وہ چلے گئے صبح کو کریم خاں کو شوہر کے پاس بھیجا، بلایا تو کہا میں چھوڑ چکا اب کیا واسطہ، اب اگر کعبہ بھی اس طرف ہو تو سر نہ جھکاؤں گا، گواہوں کے روبرو کہہ دیا، اس دن سے قریب چھ ماہ کے منقضی ہوئے بالکل میں متروکہ پڑی رہی، اب اس کی ہمشیرہ نے آکر اول یہ تجویز کیا کہ کسی صورت سے گھر میں لائے، پھر کہا طلاق کا قصور ہو گیا ہے اس کی تجویز اچھی طرح کر لیں گے کہ ہم اپنے دوسرے بھائی سے نکاح کراکر طلاق دلا کر تیسرا نکاح پڑھالیو یں گے، کسی کو کچھ معلوم نہ ہوگا۔ یہ میں نے منظور نہیں کیا اور نوٹس زرِ مہر کا دیا، تو اب دعویٰ رخصت کا کرتا ہے، لہذا دست بستہ ملتی ہوں کہ میرا عقد سلطان احمد خاں سے قائم رہا یا ساقط ہوا؟ زر مہر موجل کی میں حقدار ہوں یا نہیں؟ ایام عدت میرے ختم ہو چکے ہیں یا باقی ہیں؟ میں شوہر سابقہ سے اب تعلق ازدواج سابقہ رکھوں تو جائز ہے یا نہیں؟

عنداللہ جواب باصواب سے آگاہی بخشی جائے کہ جس سے دین محمدی کے احکام میں کوئی قصور اس عاصیہ سے نہ سر زد ہو، اس کا اجر حضور کو اللہ تعالیٰ دے گا، یہ ریاست ہندوستانی ہے کوئی اس قدر لیاقت نہیں رکھتا جو شرعا حکم دے ویراج کا برتاؤ ہے۔

الجواب: بیان مذکور اگر واقعی ہے تو عورت پر بائن طلاق ہوگئی اور نکاح سے نکل گئی اور تین طلاقیں نہ ہوئیں کہ حلالہ کی حاجت ہو جس کے واسطے سلیمان خاں سے نکاح ہو کر طلاق لی جائے، زن و شوہر کی اگر ایک مکان تنہا میں یک جائی ہو چکی ہے تو کل مہر واجب الادا ہوگیا اور عورت پر روز طلاق سے تین حیض کی عدت لازم ہوئی تین حیض اگر شروع ہو کر ختم ہوگئے تو عدت سے نکل گئی ورنہ ابھی نہیں، اور اگر ابھی صرف نکاح ہوا ہے اور ایک مکان میں زن و شوہر کی تنہائی نہ ہوئی تو نصف مہر ساقط ہوگیا اور نصف واجب الادا، اور عدت اصلا نہیں، اس طلاق کے بعد عورت اگر چاہے تو سلطان احمد خاں سے دوبارہ نکاح ہوسکتا تھا، مگر وہ کلمہ جو اس نے کہا کہ اگر ادھر کعبہ بھی ہو تو سر نہ جھکاؤں گا، اسے علماء نے کلمہ کفر لکھا ہے۔ لہذا اگر وہ اب توبہ کرے اور تجدیدِ اسلام، تو اس کا اس سے نکاح ہوسکتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۸: از جناب عثمان ایوب حاجی آدم جی حاجی یعقوب صاحبان ضلع بلا سپور سی پی ۱۰ جمادی الاولی ۱۳۳۴ھ ما قولکم ایھا العلماء الحنفیون رحمکم اللہ تعالی اندریں مسئلہ کہ اگر زید نے ایک جماعت کثیرہ کے روبرو

Fatawa Razawiyya, Volume 11

(A person) asked Bakr for his daughter's hand and said, "I have come to ask for your daughter for my son." Bakr accepted with hearing and obedience. Zaid presented clothes and jewelry, and the exchange of sweets etc., and sending the daughter (for visits) to the suitor's house continued regularly. Due to some bitterness in between, Bakr is now inclined to marry the mentioned daughter to someone else. Therefore, the questioner asks: in the above-mentioned situation, did the marriage contract (nikah) take place or not? In the above situation, can Bakr give the mentioned daughter in marriage to someone else or not? Clarify with proof and you will be rewarded with a great reward.

The Answer: Since that gathering was for engagement and not for nikah, only with the words mentioned in the question, the nikah was not solemnized. He has the authority to perform the marriage elsewhere. Allah Almighty knows best.

Problem 99: From Nizam Ali Khan, son of Imam Ali Khan, Pargana Sahaswan, District Budaun, Bhawani Pur Khurd, 10 Jamadi-ul-Awwal 1334 AH. A person was a prayer leader (Imam) here in Bhawani Pur Khurd. His wife passed away, and he married her stepmother, who was his step-mother-in-law, i.e., she was not his wife's biological mother. Now we need a fatwa regarding this. We trouble your presence to inform us clearly on this matter: is the marriage valid or invalid? Which verse in the Holy Quran makes it forbidden, and which verse makes it permissible? In which Para (chapter) and Ruku (section) are they?

The Answer: Marriage with the wife's stepmother is permissible because a stepmother is not a mother.

Allah Almighty said: "their mothers are only those who gave birth to them" [1] and He said: "And lawful for you are [all others] beyond these" [2]. And Allah Almighty knows best.	Allah Almighty has said: Their mothers are only those who have given birth to them, and Allah Almighty has said: Apart from them, they have been declared lawful for you (T). And Allah Almighty knows best.

Know better.

[1] Al-Quran 58/2 [2] Al-Quran 4/24

फतावा रज़विया, खंड 11

बक्र से उसकी बेटी का हाथ माँगा और कहा कि "मैं आपकी बेटी को अपने बेटे के लिए माँगने आया हूँ।" बक्र ने भी सुन लिया और मान लिया (बिस्मा वा तात)। ज़ैद ने कपड़े और गहने पेश किए और मिठाई आदि का आदान-प्रदान और बेटी का होने वाले दूल्हे के घर आना-जाना नियमित रूप से होता रहा। बीच में कुछ कड़वाहट के कारण, बक्र अब उक्त बेटी की शादी किसी और से करने के लिए तैयार है। इसलिए प्रश्नकर्ता पूछता है कि: क्या उपर्युक्त स्थिति में निकाह (विवाह) हो गया या नहीं? क्या बक्र उक्त बेटी का निकाह किसी और के साथ कर सकता है या नहीं? प्रमाण सहित स्पष्ट करें, आपको महान प्रतिफल मिलेगा।

उत्तर: चूँकि वह सभा सगाई (मंगनी) की थी न कि निकाह की, तो केवल प्रश्न में वर्णित शब्दों से निकाह संपन्न नहीं हुआ। उसे दूसरी जगह निकाह करने का अधिकार है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 99: निज़ाम अली खान वल्द इमाम अली खान, परगना सहसवान, जिला बदायूँ, भवानी पुर खुर्द, 10 जमादी-उल-अव्वल 1334 हिजरी की ओर से। एक व्यक्ति हमारे यहाँ भवानी पुर खुर्द में इमाम था। उसकी पत्नी का इंतकाल हो गया और उसने अपनी सौतेली सास (अपनी पत्नी की सौतेली माँ) से निकाह कर लिया, यानी वह उसकी पत्नी की सगी माँ नहीं थी। अब हमें इस बारे में फतवे की ज़रूरत है। हुज़ूर को तकलीफ देते हैं कि हमें इस मसले पर अच्छी तरह से आगाह करें: यह निकाह जायज़ है या नाजायज़? पवित्र कुरान की वह कौन सी आयत है जिससे यह नाजायज़ है और वह कौन सी आयत है जिससे यह जायज़ है? वे कौन से पारे और कौन से रुकू में हैं?

उत्तर: पत्नी की सौतेली माँ से निकाह जायज़ है क्योंकि सौतेली माँ, सगी माँ नहीं होती।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "उनकी माताएँ केवल वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है" [1] और फरमाया: "और तुम्हारे लिए इनके सिवा (महिलाएं) हलाल (वैध) की गई हैं" [2]। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: उनकी माताएँ केवल वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है, और अल्लाह तआला ने फरमाया: उनके अलावा तुम्हारे लिए हलाल करार दी गई हैं (त)। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

बेहतर जानें।

[1] अल-कुरान 58/2 [2] अल-कुरान 4/24

بکر سے اس کی دختر کو مانگا اور کہا کہ میں آپ کی دختر کو اپنے پسر کے واسطے مانگنے والا آیا ہوں اور بکر نے بھی بسمع وطاعت قبول کرلیا اور کپڑے و زیورات زید نے حاضر کئے اور قبول و تقسیم شیرینی وغیرہ کے دختر کا بھیجنا بھجانا بھی خاطب کے یہاں برابر ہوتا رہا، درمیان میں کسی قدر شکر رنجی کے باعث بکر دختر موصوفہ کو دوسرے کے ساتھ نکاح کرنے پر آمادہ ہے پس سائل سوال کرتا ہے کہ صورت مذکورۃ الصدر میں ایقاع نکاح ہوا کہ نہیں، کیا صورت بالا میں بکر دختر موصوفہ کو کسی دوسرے کے نکاح میں دے سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا بالدلیل وتوجروا بالاجر الجزیل۔

الجواب: جبکہ وہ جلسہ منگنی کا تھا نہ کہ نکاح کا تو صرف اتنے الفاظ سے کہ سوال میں مذکور ہوئے نکاح منعقد نہ ہوا، اسے دوسری جگہ نکاح کرنے کا اختیار ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۹: از نظام علی خاں ولد امام علی خاں پرگنہ سہسوان ضلع بدایوں بھوانی پور خورد ۱۰ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۴ھ ایک شخص ہمارے یہاں بھوانی پور خورد میں پیش امام تھا اس کی بیوی انتقال کر گئی اور اس کی سوتیلی ماں سے نکاح کرلیا ہے جو کہ اس کی سوتیلی ساس تھی یعنی اس کی بیوی کی سگی ماں نہ تھی، اب اس کی بابت ہم کو فتویٰ کی ضرورت ہے حضور کو تکلیف دیتے ہیں کہ اس مسئلہ کو خوب صحیح طور سے ہم کو آگاہ کیجئے گا نکاح درست ہے کہ نا درست ہے؟ وہ کون آیت کلام پاک میں ہے کہ جس سے ناجائز ہے اور وہ کون آیت ہے کہ جس سے جائز ہے اور کون کون پارہ میں ہیں اور وہ کون کون رکوع میں ہیں؟

الجواب: زوجہ کی سوتیلی ماں سے نکاح جائز ہے کہ سوتیلی ماں ماں نہیں ہوتی۔

قال الله تعالٰی اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓئِیْ وَلَدْنَهُمْ ط 1 وقال تعالٰی وَ اُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ 2 والله تعالیٰ اعلم۔

الله تعالیٰ نے فرمایا: ان کی مائیں صرف وہی ہیں جنہوں نے ان کو جنم دیا ہے، اور الله تعالیٰ نے فرمایا: ان کے ماسوا تمہارے لیے حلال قرار دی گئی ہیں(ت) والله تعالیٰ اعلم۔

اعلم

1 القرآن ۲/۵۸ 2 القرآن ۲۴/۴

Volume 11 | Fatawa Razawiyya

Question 100: Submitted by Munshi Muhammad Hussain Sahib Jaipuri from Shahjahanpur on 23 Jumadi al-Ula 1334 AH through Kunwar Jaginder Pal Singh BA, LLB, Deputy Collector. What is the ruling on this matter: Zaid's grandmother has a sister. The daughter of the real grandmother is Zaid's real maternal aunt, so marriage with her is not possible. But can a marriage take place with the daughter of the grandmother's second sister, who is also a maternal aunt in relation to Zaid, or not? The Answer: Marriage with the daughter of the mother's maternal aunt is permissible. Allah the Almighty says: "وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكُمْ" (And lawful for you are [all others] beyond these. - Al-Quran 4:24). And Allah Almighty knows best.

Question 101: From Gaya, Farhat Bagh Kothi, Isri Prasad Singh Rais Gaya, submitted by Mazharul Haq Sahib on 29 Jumadi al-Akhira 1334 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the clear Shariah say regarding this matter: Is it permissible to enter into a marriage contract with the daughter of one's real brother-in-law (husband of wife's sister) or not? The Answer: If the daughter of the brother-in-law (Sandho) is not from the womb of the wife's sister, then marriage with her is absolutely permissible, provided there is no other Shariah prohibition. And if she is from the wife's sister, i.e., she is his wife's niece, then as long as the wife is in his marriage, marriage with her niece is forbidden. However, if he divorces his wife and her 'iddah (waiting period) passes, or if the wife dies, then marriage with her niece will be permissible. And Allah Almighty knows best.

Question 102: Submitted by Maulvi Aziz-ul-Hasan Sahib Qadri Razawi Barkati Phaphund District Etawah on the date of Rajab al-Murajjab 1334 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the clear Shariah say regarding this matter: Zaid committed 'jama' bain-al-ukhtain' (simultaneous marriage with two sisters), and there are children from both. So, according to the noble Shariah, will these children and wives be considered legitimate or not? And will they be entitled to receive inheritance from Zaid or not? Give a ruling and be rewarded. The Answer: If marriage was performed with both at once, both are forbidden. And if it was done one after another, then the first marriage is valid without any flaw, and the second...

---

1. Al-Quran 4/24 Page 272 of 739

जिल्द 11 | फतावा रज़विया

मसला १००: मौसूला मुंशी मोहम्मद हुसैन साहब जयपुरी अज़ शाहजहांपुर २३ जमादी उल अव्वल १३३४ हिजरी बतवस्सुत कुंवर जगिंदर पाल सिंह बीए, एलएलबी, डिप्टी कलेक्टर। क्या फ़रमाते हैं इस बारे में कि ज़ैद की नानी दो बहनें हैं। सगी नानी की लड़की तो ज़ैद की सगी खाला (मौसी) हुई, उससे तो निकाह हो ही नहीं सकता, लेकिन नानी की दूसरी बहन की लड़की से जो ज़ैद के रिश्ते में खाला है, निकाह हो सकता है या नहीं? अल-जवाब: माँ की खाला की बेटी से निकाह जायज़ है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ" (और इनके सिवा तुम्हारे लिए हलाल कर दी गई हैं। - अल-क़ुरान ४:२४)। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १०१: अज़ गया फ़रहत बाग कोठी ईसरी प्रसाद सिंह रईस गया, मौसूला मजहरुल हक साहब २९ जमादी उल उखरा १३३४ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शराह-ए-मतीन इस मसले में कि अपने हक़ीक़ी साढ़ू (साली के पति) की लड़की से निकाह और अक़्द जायज़ है या नहीं? अल-जवाब: साढ़ू की लड़की अगर साली के पेट से नहीं है तो उससे निकाह मुतलक़न (पूर्ण रूप से) जायज़ है जब तक कि कोई शरीई रुकावट न हो। और अगर साली से है यानी अपनी ज़ौजा (पत्नी) की भांजी, तो जब तक ज़ौजा उसके निकाह में है, उसकी भांजी से निकाह हराम है। हाँ, अगर औरत को तलाक़ दे दे और इद्दत गुज़र जाए या औरत मर जाए, तो उसकी भांजी से निकाह जायज़ होगा। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १०२: मौसूला मौलवी अज़ीज़ुल हसन साहब क़ादरी रज़वी बरकाती फफूँद जिला इटावा, बतारीख रजब अल-मुरज्जब १३३४ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शराह-ए-मतीन इस मसले में कि ज़ैद ने 'जमा बैन अल-उख़्तैन' (दो बहनों से एक साथ निकाह) किया और औलादें दोनों से हैं, पस रू-ए-शराह-ए-अक़दस से ये औलादें और बीवियां जायज़ करार पाएंगी या नहीं? और ज़ैद का तरका (विरासत) पाने की मुस्तहिक होंगी या नहीं? बय्यानु तुजरू। अल-जवाब: अगर दोनों से एक साथ निकाह किया तो दोनों हराम, और अगर आगे-पीछे किया तो पहली का निकाह बे-खलल (सही), दूसरी का...

---

1. अल-क़ुरान ४/२४ पेज २७२ ऑफ़ ७३९

مسئلہ ۱۰۰: مسئولہ منشی محمد حسین صاحب جے پوری از شاہجہاں پور ۲۳ جمادی الاولی ۱۳۳۴ھ بتوسط کنور جگندر پال سنگھ بی اے، ایل ایل بی، ڈپٹی کلکٹر کیا فرماتے ہیں اس میں کہ زید کی نانی دو بہنیں ہیں اصلی نانی کی لڑکی تو زید کی اصلی خالہ ہوئی اس سے تو نکاح ہو ہی نہیں سکتا، لیکن نانی کی دوسری بہن کی لڑکی سے جو زید کی رشتہ میں خالہ ہے کا نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ الجواب: ماں کی خالہ کی بیٹی سے نکاح جائز ہے، قال تعالیٰ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ ۱ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ان کے سوا تمہارے لیے حلال قرار دی گئی ہیں۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۱: از گیا فرحت باغ کوٹھی ایسری پرشاد سنگھ رئیس گیا مسئولہ مظہر الحق صاحب ۲۹ جمادی الاخری ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ اپنے حقیقی ساڑھو (سانڈھوں) کی لڑکی سے عقد و مناکحت جائز ہے یا نہیں؟ الجواب: ساڑھو (سانڈھو) کی لڑکی اگر سالی کے بطن سے نہیں تو اس سے نکاح مطلقاً جائز ہے جبکہ کوئی مانع شرعی نہ ہو، اور اگر سالی سے ہے یعنی اپنی زوجہ کی بھانجی، تو جب تک زوجہ اس کے نکاح میں ہے اس کی بھانجی سے نکاح حرام ہے، ہاں عورت کو طلاق دے دے اور عدت گزر جائے یا عورت مر جائے اس کی بھانجی سے نکاح جائز ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۲: مسئولہ مولوی عزیز الحسن صاحب قادری رضوی برکاتی پھپھوند ضلع اٹاوہ بتاریخ رجب المرجب ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے جماع بین الاختین کیا، اور اولادیں دونوں سے ہیں، پس از روئے شرع اقدس یہ اولادیں اور بیویاں جائز قرار پائیں گی یا نہیں؟ اور پانے ترکہ زید کی مستحق ہوں گی یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب:

اگر دونوں سے ایک ساتھ نکاح کیا دونوں حرام، اور اگر آگے پیچھے کیا تو پہلی کا نکاح بے خلل، دوسری کا

Volume 11 Fatawa-e-Razvia

...Haram, then when intercourse with the second occurred, intercourse with the first also became haram until they are separated and the iddat (waiting period) has passed. Children, in any case [Note: see footnote], are "Walad al-Haram" (children of a forbidden act), similar to a fetus conceived during menstruation, but not "Walad al-Zina" (illegitimate). The inheritance of Zaid will be given to all these children. Yes, if marriage was performed with both simultaneously, both are wives, otherwise, the latter will not receive inheritance. This applies in the case where marriage was performed with both. If a wife is in the marriage bond and adultery was committed with the sister-in-law, intercourse with the wife will not become haram, nor will her children be "Walad al-Haram". Children born from the sister-in-law will be "Walad al-Zina" and will not receive Zaid's inheritance. And Allah Almighty knows best.

Problem 103: Sent by Mian Muhammad Ghous Sahib, District Attock, from his post office on 5 Rajab-ul-Murajab 1332 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this issue:

[Arabic]: A woman should not be married over her paternal aunt nor over her maternal aunt (Nasa'i etc.). Explain, and you shall be rewarded. [Urdu Explanation]: It is mentioned in Nasa'i etc. that one should not marry a niece or a sister's daughter while her paternal or maternal aunt is present [as a wife]. (T)

Answer: It is explicitly stated in the text (Quran): "Lawful to you are those beyond these" [1] (i.e., those other than the aforementioned prohibited ones are lawful. T). Thus, lawfulness is established. And the Hadith says: "My speech does not abrogate the speech of Allah, and the speech of Allah abrogates my speech" [2] (T). Therefore, there is no need for reconciliation; since the Quranic verse is the abrogator, the prohibition is lifted, and the ruling is for lawfulness.

The Answer:

[Arabic]: A woman should not be married over her paternal aunt nor over her maternal aunt. [3] [Urdu Explanation]: One should not marry a niece or a sister's daughter while her paternal or maternal aunt is present [as a wife]. (T)

This Hadith is authentic and famous; moreover, it does not contradict the Quran, but rather the noble verse: "and that you combine two sisters" [4] (is forbidden. Note: meaning if marriage was performed together or one after another, but all children

were born after the combination; otherwise, children born before the marriage and intercourse with the second are not "Walad al-Haram". 12 Mustafa Raza Qadri, may he be forgiven).

Footnotes: 1. Sahih Bukhari, Chapter: A woman should not be married over her paternal aunt, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/26. 2. Al-Quran 4/24. 3. Al-Kamil fi Du'afa al-Rijal, Biography of Jabroon bin Waqid etc., Dar al-Fikr, Beirut, 2/202. 4. Sahih Muslim, Book of Marriage, Chapter: Prohibition of combining a woman [and her aunt] etc., Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/253.

जिल्द 11 फ़तावा-ए-रिज़विया

...हराम, फिर जब दूसरी से सोहबत (संबंध) की गई तो पहली से सोहबत भी हराम हो गई, जब तक उसे जुदा (अलग) करके इद्दत न गुज़र जाए। औलादें बहरहाल (नोट देखें) 'वलद अल-हराम' (निषिद्ध संतान) हैं जैसे वह नुत्फ़ा (वीर्य) जो माहवारी की हालत में ठहरा हो मगर 'वलद अज़-ज़िना' (अवैध संतान) नहीं। ज़ैद का तरका (विरासत) इन तमाम बच्चों को मिलेगा। हाँ, अगर दोनों से एक साथ निकाह किया तो दोनों पत्नियाँ हैं, वरना बाद वाली को विरासत नहीं मिलेगी। यह सब उस सूरत में है कि दोनों से निकाह किया हो। और अगर बीवी निकाह में है और साली से ज़िना (व्यभिचार) किया तो बीवी से सोहबत हराम नहीं होगी, न ही उसकी औलाद 'वलद अल-हराम' होगी। साली से जो बच्चे होंगे वे 'वलद अज़-ज़िना' होंगे और ज़ैद की विरासत नहीं पाएंगे। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 103: प्रेषक मियां मोहम्मद गौस साहब, जिला अटक, अपने डाकखाने से, दिनांक 5 रजब-उल-मुरज्जब 1332 हिजरी।

सवाल: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि:

[अरबी]: औरत का निकाह उसकी फूफी या उसकी खाला की मौजूदगी में न किया जाए (नसाई वग़ैरा)। बयान फ़रमाएं पुण्य मिलेगा। [उर्दू अनुवाद]: नसाई वग़ैरा में है कि फूफी और खाला की मौजूदगी में उनकी भतीजी और भांजी से निकाह न किया जाए। (त)

जवाब: साफ़ तौर पर नक़्ली दलील (क़ुरआन) से मिलता है 'तुम्हारे लिए इनके अलावा हलाल हैं' [1] आयत (यानी इन ज़िक्र किए गए हराम रिश्तों के अलावा बाकी सब हलाल हैं। त) तो हलाली साबित हो गई। और हदीस 'मेरी बात अल्लाह के कलाम को रद्द नहीं करती और अल्लाह का कलाम मेरी बात को रद्द करता है' [2] (त), तो मेल बिठाने की कोई ज़रूरत न रही। जब आयत मन्सूख़ (रद्द) करने वाली ठहरी तो पाबंदी हट गई और हलाल होने का हुक्म मिला।

अल-जवाब:

[अरबी]: औरत का निकाह उसकी फूफी या उसकी खाला की मौजूदगी में न किया जाए। [3] [उर्दू अनुवाद]: फूफी और खाला की मौजूदगी में उनकी भतीजी और भांजी से निकाह न किया जाए। (त)

यह हदीस सहीह और मशहूर है, इसके साथ ही वह क़ुरआन के खिलाफ नहीं बल्कि आयते करीमा 'और यह कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो' [4] (हराम है। नोट: यानी अगर एक साथ निकाह किया

हो या आगे-पीछे, लेकिन तमाम औलाद इकट्ठा होने के बाद हुई हो, वरना वह औलाद जो दूसरी के निकाह और सोहबत से पहले हुई, वह 'वलद अल-हराम' नहीं। 12 मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी)।

फ़ुटनोट्स: 1. सहीह बुखारी, अध्याय: औरत का निकाह उसकी फूफी की मौजूदगी में न किया जाए, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/26. 2. अल-क़ुरआन 4/24. 3. अल-कामिल फ़ी दुआफ़ा अर-रिजाल, जीवनी जब्रून बिन वाक़िद वग़ैरा, दारुल फ़िक्र, बैरुत, 2/202. 4. सहीह मुस्लिम, निकाह की किताब, अध्याय: औरत (और उसकी फूफी/खाला) को इकट्ठा करने की हुरमत वग़ैरा, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/253.

पेज 273/739

حرام، پھر جب دوسری سے قربت کی پہلی سے قربت بھی حرام ہو گئی، جب تک اسے جدا کر کے عدت نہ گزر جائے اولادیں بہر حال ع ہ ولد الحرام ہیں جیسے وہ نطفہ جو حالت حیض میں ٹھہرا مگر ولد الزنا نہیں، زید کا ترکہ ان سب اولاد کو ملے گا۔ ہاں دونوں سے معاً نکاح کیا دونوں زوجہ ورنہ پچھلی ترکہ نہ پائے گی، یہ سب اس صورت میں ہے کہ دونوں سے نکاح کیا ہو، اور اگر زوجہ نکاح میں ہے اور سالی سے زنا کیا تو زوجہ سے قربت بھی حرام نہ ہو گی، نہ اس کی اولاد ولد الحرام ہوگی، سالی سے جو بچے ہوں گے ولد الزنا ہوں گے اور زید کا ترکہ نہ پائیں گے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۳: مرسلہ میاں محمد غوث صاحب ضلع اٹک ڈاکخانہ خود بتاریخ ۵ رجب المرجب ۱۳۳۲ھ

سوال: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ:

[عربی]: لا تنکح المرأۃ علی عمتھا والمرأۃ علی خالتھا نسائی وغیرہ۔ بینوا توجروا [اردو]: نسائی وغیرہ میں ہے پھوپھی اور خالہ کی موجودگی میں ان کی بھتیجی اور بھانجی سے نکاح نہ کیا جائے۔ (ت)

جواب: صریحاً نص سے پایا جاتا ہے 'أُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَاءَ ذٰلِكُمْ' ۱ الآیۃ (ان مذکورہ محرمات کے ماسوا حلال ہیں۔ ت) تو حل ثابت ہو گئی۔ اور حدیث 'کلامی لا ینسخ کلام اللہ وکلام اللہ ینسخ کلامی' ۲ (میرا کلام اللہ کے کلام کو منسوخ نہیں کرتا اور اللہ کا کلام میرے کلام کو منسوخ کرتا ہے۔ ت) تو تطبیق کی کچھ حاجت نہ رہی، جب ناسخ ٹھہری تو حرمت اٹھ گئی حل پر حکم پایا گیا۔

الجواب:

[عربی]: لا تنکح المرأة علی عمتها ولا علی خالتها ۳ [اردو]: پھوپھی اور خالہ کی موجودگی میں ان کی بھتیجی اور بھانجی سے نکاح نہ کیا جائے۔ (ت)

حدیث صحیح مشہور ہے، مع ہذا وہ مخالفِ قرآن نہیں بلکہ آیہ کریمہ 'وان تجمعوا بین الاختین' ٤ (حرام ہے ع ہ: یعنی اگر ایک ساتھ نکاح کیا ہو یا آگے پیچھے مگر سب اولاد بعد جمع ہوئی ہو ورنہ وہ اولاد جو دوسری کے نکاح اور قربت سے پہلے ہوئی ولد الحرام نہیں۔ ۱۲ مصطفیٰ رضا قادری غفر لہ

۱ صحیح بخاری باب لا تنکح المرأة علی عمتها قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۶ ۲ القرآن ۴/۲۴ ۳ الکامل فی ضعفاء الرجال ترجمہ جبرون بن واقد الخ دار الفکر بیروت ۲/۲۰۲ ٤ صحیح مسلم کتاب النکاح باب تحریم الجمع بین المرأة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۲۵۳

Fatawa Rizwia Volume 11

...that gathering two sisters in marriage (T) is the interpretation that from sisterhood every relationship of prohibition is intended. Besides, the noble verse "And lawful to you are those beyond these" (1) (meaning: besides them are lawful. T) is a general statement from which some exceptions have been made. Allah Almighty says:

Arabic	Urdu Translation
"And do not marry polytheistic women until they believe. And a believing slave woman is better than a polytheist, even though she might please you." (2)	Do not marry polytheistic women until they believe, and a believing slave woman is better than a polytheist, even though you might like her. (T)

The statement "My words do not abrogate the words of Allah" (3) (T) is merely baseless. It is mentioned in numerous authentic Hadiths that [the Prophet], peace and blessings of Allah be upon him, said: "Beware! Let it not be that a man with a full stomach, reclining on his couch, says: 'We do not know, what we find lawful in the Quran we take as lawful and what we find forbidden in the Quran we take as forbidden.' (4) Behold! I have been given the Quran and something like it along with it. (5) Behold! Verily, what the Messenger of Allah has forbidden is like what Allah has forbidden." (6) The Lord of Glory, Blessed and Exalted, Himself describes the state of the disbelievers in the Great Quran:

Arabic	Urdu Translation
"And they do not forbid what Allah and His Messenger have forbidden." (7)	Disbelievers do not consider those things forbidden which Allah and His Messenger made forbidden.

And He says to the Muslims:

Arabic	Urdu Translation
"And whatever the Messenger gives you, take it; and what he forbids you from, refrain from it." (8) - And Allah Almighty knows best.	Whatever the Messenger bestows upon you, take it; and whatever he forbids you from, stay away from it.

---

1. Al-Quran 4/24
2. Al-Quran 2/221
3. Al-Kamil fi Du'afa al-Rijal, Biography of Jabroon bin Waqid, Dar al-Fikr Beirut 202/2

4. Sunan Ibn Majah, Chapter on Following the Sunnah of the Messenger of Allah, H.M. Saeed Company Karachi, p.
5. Sunan Abi Dawud, Chapter on the Necessity of the Sunnah, Aftab-e-Alam Press Lahore 6/2-7
6. Sunan Ibn Majah, Chapter on Following the Sunnah of the Messenger of Allah, H.M. Saeed Company Karachi, p. 3
7. Al-Quran 9/29
8. Al-Quran 59/7

फ़तावा रज़विया जिल्द याज़दहम (11)

...कि दो बहनों को एक साथ निकाह में जमा करना (त) की व्याख्या यह है कि 'अख़तियत' (बहन होने) से हर प्रकार का महरम (निषिद्ध) रिश्ता मुराद है। इसके अलावा पवित्र आयत "और तुम्हारे लिए हलाल है इसके अलावा" (1) (उनके अलावा हलाल हैं। त) एक आम हुक्म है जिसमें से कुछ को अलग किया गया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाएँ और एक ईमान वाली दासी, मुशरिक औरत से बेहतर है चाहे वह तुम्हें कितनी ही पसंद हो।" (2)	मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाएँ और मोमिन लौंडी, मुशरिक औरत से बेहतर है चाहे वह तुम्हें पसंद हो। (त)

हदीस 'मेरा कलाम अल्लाह के कलाम को मंसूख (रद्द) नहीं करता' (3) (त) महज़ बेबुनियाद है। खुद कई सहीह हदीसों में आया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सावधान! ऐसा न हो कि कोई पेट भरा हुआ व्यक्ति अपनी मसनद पर तकिया लगाए हुए कहे कि 'हम नहीं जानते, जो हमें कुरान में हलाल मिलेगा उसे ही हलाल मानेंगे और जो कुरान में हराम मिलेगा उसे ही हराम मानेंगे।' (4) सुन लो! मुझे कुरान दिया गया है और उसके साथ उसके जैसा (सुन्नत) भी। (5) सुन लो! बेशक जिसे अल्लाह के रसूल ने हराम किया वह वैसा ही हराम है जैसा अल्लाह ने हराम किया। (6) खुद रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला क़ुरान-ए-अज़ीम में काफ़िरों की स्थिति बयान फ़रमाता है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"और वे उन चीज़ों को हराम नहीं मानते जिन्हें अल्लाह और उसके रसूल ने हराम किया।" (7)	काफ़िर उन चीज़ों को हराम नहीं जानते जिन्हें अल्लाह और उसके रसूल ने हराम किया है।

और मुसलमानों से फ़रमाता है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"जो कुछ रसूल तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे वह तुम्हें रोकें उससे रुक जाओ।" (8) - और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।	जो कुछ रसूल तुमको अता फ़रमाएँ उसको लो और जिससे मना फ़रमाएँ उससे बाज़ रहो।

1. अल-कुरान 4/24
2. अल-कुरान 2/221
3. अल-कामिल फ़ी दुआफ़ा अर-रिजाल, जब्रून बिन वाक़िद की जीवनी, दार अल-फ़िक्र बेरूत 202/2
4. सुनन इब्न माजह, रसूलुल्लाह की सुन्नत के पालन का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ.
5. सुनन अबी दाऊद, सुन्नत की अनिवार्यता का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 6/2-7
6. सुनन इब्न माजह, रसूलुल्लाह की सुन्नत के पालन का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 3
7. अल-कुरान 9/29
8. अल-कुरान 59/7

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

کہ دو بہنوں کو نکاح میں جمع کرو۔ ت) کی تفسیر ہے کہ اختیت سے ہر علاقہ محرمیت مراد ہے علاوہ بریں کریمہ "وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذٰلِكُمْ" 1 (ان کے سوا حلال ہیں۔ ت) عام مخصوص منہ البعض ہے۔ قال اللہ تعالٰی:

عربی متن	اردو ترجمہ
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ط - 2	مشرک عورتوں سے نکاح نہ کرو تاوقتیکہ وہ ایمان لائیں، اور مومن لونڈی، مشرکہ سے بہتر ہے اگرچہ مشرکہ تمہیں پسند ہو۔ (ت)

حدیث کلامی لا ینسخ کلام اللہ 3 (میرا کلام اللہ کے کلام کو منسوخ نہیں کرتا۔ ت) محض بے اصل ہے۔ خود صحاح احادیث کثیرہ میں ہے کہ ارشاد فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم : دیکھو ایسا نہ ہو کہ کوئی پیٹ بھرا اپنے فکر اپنی مسند پر تکیہ لگائے یہ کہے ہم نہیں جانتے جو قرآن میں حلال پائیں گے اسے حلال کہیں گے اور جو قرآن میں حرام پائیں گے اسے حرام کہیں گے۔ 4- الا انی اوتیت القرآن ومثلہ معہ 5 سن لو میں قرآن دیا گیا اور قرآن کے ساتھ اس کا مثل، اور الا وان ما حرم رسول اللہ مثل ما حرم اللہ 6 سنو بیشک جسے رسول اللہ نے حرام کیا وہ ایسا ہی حرام ہے جسے اللہ نے حرام کیا۔ خود رب العزت تبارک و تعالٰی قرآن عظیم میں کافروں کی حالت بیان فرماتا ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرسُوْلُهٗ 7-	کافر حرام نہیں جانتے ان چیزوں کو جنھیں اللہ اور اس کے رسول نے حرام کیا۔

اور مسلمانوں سے فرماتا ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
مَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَ مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ج 8 - واللہ تعالٰی اعلم۔	جو کچھ رسول تم کو عطا فرمائیں اس کو لو اور جس سے منع فرمائیں باز رہو۔

---

1 القرآن ۲۴/۴ 2 القرآن ۲۲۱/۲ 3 الکامل فی ضعفاء الرجال ترجمہ جبرون بن واقد دارالفکر بیروت ۲۰۲/۲ 4 سنن ابن ماجہ باب اتباع سنۃ رسول اللہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص 5 سنن ابی داؤد باب فی لزوم السنۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۷-۶/۲ 6 سنن ابن ماجہ باب اتباع سنۃ رسول اللہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳ 7 القرآن ۲۹/۹ 8 القرآن ۷/۵۹

Masala 102: From Enayatullah Khan Sahab, Village Masona, District Rampur, 7 Rajab-ul-Murajab 1332 AH.

What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this issue: The parents of a minor girl engaged her within their community to a minor boy. After some time, the girl's father passed away. Due to financial hardship, her mother, without a formal marriage ceremony (Nikah), called the father of the minor boy (to whom she was engaged) and allowed her to leave with him. He took her to his house and performed the marriage ceremony (Nikah) with his minor son. After some time, the girl's mother brought her back and married her off elsewhere, which has now been five or six years. Now, the person with whom the first marriage took place claims that she should be sent to him as she is his wedded wife. The girl's mother denies the first marriage, and the girl also claims ignorance of the first marriage. However, the mother admits to the engagement and to sending her away, from which a presumption of permission for marriage at that time can be inferred, even though she denies it now. Therefore, in such a situation, please issue a ruling according to the Sharia: is the first marriage valid or the second? Because in the presence of a guardian (Wali), merely sending the ward away is sufficient permission from the guardian for a 'Fuzuli' (unauthorized agent) to perform the marriage. Secondly, the first marriage happened during minority, and the second marriage happened after reaching puberty, and the woman is also consenting to it.

The Answer:

Any minor who has an 'Asbah' (paternal male relative), i.e., the closest male descendant of his grandfather or great-grandfather, he is the guardian (Wali) of her marriage. In his presence, even the mother has no authority. That marriage which the boy's father performed was dependent (Mawquf) on the permission of the guardian; if an 'Asbah' exists, then him, otherwise the mother. If the guardian's permission was obtained and the boy was her 'Kufu' (equal), i.e., not inferior in religion, lineage, profession, or character, such that marriage with him would be a cause of shame for the guardian, then the first marriage became valid and the second is void. Otherwise, the second is valid and the first is void because 'when a definitive ruling arrives upon a dependent ruling, it nullifies the dependent one.' And Allah the Almighty knows best.

Masala 103: From Abdus Salam Sahab, Postmaster, Post Office Dausa, Raj Jaipur, 9 Rajab-ul-Murajab 1332 AH.

What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say in the following situations: (1) At what age is a girl considered an adult? If an adult girl marries someone of her own free will, is it legally valid according to Sharia or not? (2) Zaid, a minor aged 11, who is the paternal first cousin of Hindah and Khalid, claims guardianship over Hindah (aged 18) and Khalid (aged 15) through Bakr, who is a paternal uncle of Zaid four generations removed, as opposed to the maternal grandmother of Hindah and Khalid. Is Zaid's claim valid according to Sharia or not? That is, the guardianship of Hindah and Khalid in this case...

पृष्ठ 275 (कुल 739 में से)

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

मसला 102: प्रेषक इनायतुल्ला खां साहब, गांव मसोना, जिला रामपुर, 7 रजब-उल-मुरज्जब 1332 हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं: एक नाबालिग लड़की के माता-पिता ने अपनी बिरादरी में एक नाबालिग लड़के से उसकी सगाई कर दी। कुछ समय बाद लड़की के पिता का देहांत हो गया। आर्थिक तंगी के कारण उसकी माँ ने बिना निकाह के उस नाबालिग लड़के के पिता को बुलाया और लड़की को उसके साथ विदा कर दिया। उसने अपने घर ले जाकर अपने नाबालिग बेटे के साथ उसका निकाह पढ़वा लिया। अब कुछ समय बाद उसकी माँ लड़की को वापस ले आई और दूसरी जगह उसका निकाह कर दिया, जिसे अब पाँच या छह साल हो चुके हैं। अब वह व्यक्ति जिससे पहला निकाह हुआ था, दावा कर रहा है कि लड़की को मेरे पास भेजा जाए, वह मेरी विवाहिता है। लड़की की माँ पहले निकाह से इनकार करती है और लड़की भी पहले निकाह से अनभिज्ञता जताती है। विदा करने और सगाई करने की बात माँ स्वीकार करती है, जिससे उस समय निकाह की अनुमति का संकेत मिलता है, हालाँकि अब वह इनकार कर रही है। अतः ऐसी स्थिति में शरीयत के अनुसार जो हुक्म हो, जारी फ़रमाएं कि पहला निकाह सही रहा या दूसरा? क्योंकि वली (अभिभावक) की मौजूदगी में केवल विदा कर देना वली की ओर से किसी 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत व्यक्ति) को निकाह करने के लिए अनुमति के रूप में पर्याप्त है। दूसरा यह कि वह निकाह नाबालिग़ी में हुआ था और दूसरा निकाह बालिग होने पर हुआ, और महिला भी इस पर राज़ी है।

उत्तर:

जिस नाबालिग का कोई 'अस्बा' (पितृपक्ष का पुरुष रिश्तेदार) हो, यानी उसके दादा या परदादा की संतान में निकटतम पुरुष, वह उसके निकाह का वली (अभिभावक) है। उसकी उपस्थिति में माँ को भी अधिकार नहीं है। वह निकाह जो लड़के के पिता ने पढ़वाया, वली की अनुमति पर निर्भर (मौकूफ़) था; यदि अस्बा हो तो वह, अन्यथा माँ। यदि वली की अनुमति हो गई थी और लड़का उसका 'कुफ़ू' (समान) था, यानी धर्म, वंश, पेशे या चाल-चलन में किसी बात में कम न था, जिससे उसके साथ निकाह वली के लिए अपमान का कारण हो, तो पहला निकाह सही हो गया और दूसरा बातिल (अमान्य) है। अन्यथा दूसरा सही हो गया और पहला बातिल है क्योंकि 'जब कोई निश्चित आदेश किसी

निर्भर आदेश पर आता है, तो वह उसे बातिल कर देता है।' और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 103: प्रेषक अब्दुस सलाम साहब, पोस्टमास्टर, डाकघर दौसा, राज जयपुर, 9 रजब-उल-मुरज्जब 1332 हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती निम्नलिखित स्थितियों में क्या कहते हैं: (1) लड़की कितने वर्ष की आयु में बालिग (वयस्क) मानी जाती है? यदि एक बालिग लड़की अपनी मर्जी से किसी के साथ निकाह करे, तो क्या वह शरीयत के अनुसार सही है या नहीं? (2) ज़ैद, उम्र 11 वर्ष (नाबालिग), जो हिंदा और खालिद का सगा चचेरा भाई है, बक्र के माध्यम से, जो ज़ैद का चार पीढ़ी दूर का चाचा है, 18 वर्षीय हिंदा और 15 वर्षीय खालिद की सगी नानी के मुक़ाबले में हिंदा और खालिद के विलायत (अभिभावकत्व) का दावा करता है। शरीयत के अनुसार ज़ैद का यह दावा सही है या नहीं? यानी हिंदा और खालिद की विलायत इस स्थिति में...

مسئلہ ۱۰۲: مرسلہ عنایت اللہ خاں صاحب موضع مسونہ ضلع رامپور ۷ رجب المرجب ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی نابالغ کے والدین نے اپنی برادری میں ایک نابالغ لڑکے سے نسبت یعنی منگنی کردی، کچھ عرصہ کے بعد لڑکی کا باپ فوت ہوگیا اس کی ماں نے بوجہ تنگی معاش بلا نکاح اس لڑکے نابالغ کے باپ کو بلا کر رخصت کردیا جس کے ساتھ نسبت ہوچکی ہے۔ اس نے اپنے مکان پر لے جاکر نکاح اپنے پسر نابالغ کے ساتھ پڑھوالیا، اب کچھ عرصہ بعد اس کی ماں لڑکی کو رخصت کرالائی اور دوسری جگہ نکاح کردیا جس کو اب پانچ یا چھ سال ہوچکے ہیں اب وہ شخص جس سے پہلے نکاح ہوا تھا دعویدار ہے کہ میرے ساتھ رخصت کرائی جاوے میری منکوحہ ہے۔ ماں لڑکی کی پہلے نکاح سے انکار کرتی ہے اور لڑکی بھی پہلے نکاح سے بے خبری بیان کرتی ہے۔ رخصت کرنے کا اور اس کی منگنی کا ماں اقرار کرتی ہے جس سے اس وقت اجازتِ نکاح قرینہ سے پائی جاتی ہے گو کہ اب انکار کرتی ہے، لہٰذا ایسی صورت میں بموجب شرع شریف جو حکم صادر ہو فرمائے کہ نکاح اول کا صحیح رہا یا دوسرے کا؟ کیونکہ بموجودگی ولی صرف رخصت کردینا اجازتِ نکاح ولی کی جانب سے کسی فضولی کو نکاح کرنے کے لیے کافی ہے۔ دوسرے یہ کہ یہ وہ نکاح یعنی نابالغی میں ہوا تھا اور دوسرا نکاح بالغ ہونے پر۔ اس پر عورت بھی راضی ہے۔ الجواب: جس نابالغ کا کوئی عصبہ ہو یعنی اس کے دادا پردادا کی اولاد کا قریب تر مرد ہو وہ اس کے نکاح کا ولی ہے۔ اس کے ہوتے ماں کو بھی اختیار نہیں وہ نکاح کہ لڑکے کے باپ نے پڑھوالیا اجازت ولی پر موقوف تھا، عصبہ ہو تو وہ ورنہ ماں۔ اگر ولی کی اجازت ہوگئی تھی اور لڑکا اس کا کفو تھا یعنی مذہب یا نسب یا پیشہ یا چال چلن میں کسی بات میں کم نہ تھا، کہ اس سے نکاح ولی کے لیے باعث ننگ و

عار ہو نکاح پہلا صحیح ہوگیا اور دوسرا باطل ہے۔ ورنہ دوسرا صحیح ہوگیا، اور پہلا باطل ہے لان البات اذا طرء علی موقوف ابطلہ (کیونکہ قطعی حکم جب موقوف حکم پر آجائے تو وہ موقوف کو باطل کردیتا ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۳: مرسلہ عبدالسلام صاحب پوسٹ ماسٹر ڈاکخانہ دوسہ راج جے پور ۹ رجب المرجب ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین صورتہائے مندرجہ ذیل میں: (۱) لڑکی کے برس کی عمر میں بالغ شمار ہوتی ہے اگر بالغہ برضائے خود کسی کے ساتھ نکاح کرے تو وہ شرعاً درست ہے یا نہیں؟ (۲) زید نابالغ العمر ۱۱ سال جو ہندہ اور خالد کے حقیقی تایا کا لڑکا ہے وہ بولایت بکر کے جو زید کا چار پشت کے فاصلہ سے چچا ہوتا ہے ہندہ بعمر ۱۸ سال اور حقیقی برادر ہندہ سے خالد بعمر ۱۵ سال کے ولایت کا بمقابلہ ہندہ خالد کے حقیقی نانی کے مدعی ہے۔ شرعاً زید کا یہ دعویٰ صحیح ہے یا نہیں یعنی ہندہ اور خالد کی ولایت اس صورت

Fatawa Rizvia Volume 11

Question: Does [guardianship] belong to the real maternal grandmother, or to Zaid, the minor paternal cousin, or to Bakr, who is a paternal uncle at a distance of four generations?

The Answer: (1) A girl reaches puberty at a minimum of nine years and a maximum of fifteen years. During this period, when signs of puberty appear, she is considered mature; otherwise, the ruling of puberty will be given upon completing fifteen years, even if no signs of puberty appear. A mature woman can marry without the permission of a guardian, but only within her Kufu (social and religious compatibility). That is, the person she marries should not be so low in religion, lineage, profession, or character that marrying him would be a cause of shame and disgrace for her guardian. If she marries someone outside her Kufu of her own free will and has a guardian, and he did not explicitly give permission before the marriage knowing him to be non-Kufu, then the marriage will not be valid at all. Yes, if she has no guardian or if the guardian explicitly gave permission before the marriage knowing the husband to be non-Kufu, then the marriage will also be valid with him. (2) Since Khalida's age is a full fifteen years, she is legally mature according to Sharia and is her own guardian; she does not need any guardian. And Hindah, who is eighteen years old, is not subject to compulsory guardianship by anyone because she is already mature herself. The non-compulsory guardianship (wilayat-e-ghair-mujbirah) belongs to her brother. In his presence, the grandmother or Bakr are nothing. And making the minor Zaid the guardian of another is madness; a minor cannot be anyone's guardian. And Allah Almighty knows best.

Problem 710: Sent by Mr. Wali Muhammad Sahab Betab, Teacher, Education Department, Holkar State Indore, Bombay Bazaar. What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say about this matter: Hindah, a young girl, was married by her grandfather to a very young boy named Zaid. Hindah is now fully mature but Zaid is a minor; at least five more years are required for his maturity. There is no question of a husband-wife relationship between Hindah and Zaid; in fact, Hindah's departure from her parental home has not even taken place to this day. At Zaid's house, a young foreign servant has been employed since the lifetime of Zaid's father, who died suddenly and under suspicious circumstances, yet until now, for some unknown reason, the news of this incident was not given even to Zaid's uncle. After the death of Zaid's father under suspicious circumstances, this servant gained such influence in Zaid's house that he controls everything ("black and white").

Because he stays in that house twenty-four hours a day where no other adult male member of the family resides, society looks upon Zaid's family with contempt and they are secretly subject to accusation. Zaid's uncle, surprised by the aforementioned incident, investigated the past conduct of this servant and found that from the beginning, he was a person of stray character, to the point that his parents had also kicked him out of the house. After that, he used to dance and sing in dramas for a long time. After being affected by this investigation, Zaid's uncle, who is Zaid's legal guardian, requested Zaid's mother that...

फतावा रज़विया जिल्द 11

प्रश्न: क्या [अभिभावकत्व] सगी नानी को मिलता है या ज़ैद को जो नाबालिग चचेरा भाई है या बक्र को जो चार पुश्त के फासले से चाचा होता है?

उत्तर: (1) एक लड़की कम से कम नौ साल और ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह साल की उम्र में बालिग होती है। इस बीच जब भी बुलूग (यौवन) के आसार नज़र आएं वह बालिगा है, वर्ना पंद्रह साल पूरे होने पर बुलूग का हुक्म दिया जाएगा, चाहे बुलूग के कोई लक्षण ज़ाहिर न हों। बालिगा अपने वली (अभिभावक) की अनुमति के बिना खुद अपना निकाह कर सकती है, लेकिन सिर्फ कुफ़ू (बराबरी) में, यानी जिससे वह निकाह करे वह मज़हब, नसब (वंश), पेशे या चाल-चलन में उससे इतना कम न हो कि उसके साथ निकाह होना उसके वली के लिए शर्म और अपमान का कारण बने। अगर वह अपनी मर्ज़ी से गैर-कुफ़ू (जो बराबर न हो) से निकाह करती है और उसका वली मौजूद है, और उसने निकाह से पहले उसे गैर-कुफ़ू जानकर साफ़ तौर पर इजाज़त नहीं दी थी, तो निकाह बिल्कुल नहीं होगा। हाँ, अगर उसका कोई वली नहीं है या वली ने निकाह से पहले शौहर को गैर-कुफ़ू जानकर साफ़ तौर पर इजाज़त दे दी थी, तो उससे भी निकाह सही हो जाएगा। (2) खालिदा की उम्र जब पूरे पंद्रह साल है, तो वह शरीयत के अनुसार बालिगा है और अपने नफ़्स (स्वयं) की खुद वली है, उसे किसी वली की ज़रूरत नहीं है। और हिन्दा, जिसकी उम्र अठारह साल है, उस पर किसी को विलायत-ए-जबर (ज़बरदस्ती का अधिकार) नहीं है क्योंकि वह खुद बालिगा है। विलायत-ए-गैर-मुजबिरा (अ-ज़बरदस्ती का अधिकार) उसके भाई को है। उसके होते हुए नानी या बक्र की कोई हैसियत नहीं है। और नाबालिग ज़ैद को दूसरे का वली बनाना पागलपन है; नाबालिग किसी का वली नहीं हो सकता। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 710: प्रेषक जनाब वली मोहम्मद साहब बेताब, शिक्षक शिक्षा विभाग, होलकर रियासत इंदौर, बम्बई बाज़ार। दीन के उलेमा और स्पष्ट शरीयत के मुफ्ती इस मसले के बारे में क्या फरमाते हैं कि: हिन्दा, एक कम उम्र लड़की का निकाह उसके दादा ने एक बहुत ही कम उम्र लड़के ज़ैद से कर दिया। हिन्दा अब पूरी तरह बालिगा है लेकिन ज़ैद नाबालिग है, उसके बालिग होने में कम से कम पाँच साल और लगेंगे। हिन्दा और ज़ैद के बीच पति-पत्नी का रिश्ता होना तो दूर, बल्कि हिन्दा की आज तक अपने मायके से विदाई तक नहीं हुई है। ज़ैद के यहाँ, ज़ैद के पिता के जीवन काल से ही एक परदेसी जवान नौकर चला आ रहा है, जिनका अचानक और संदिग्ध परिस्थितियों में निधन हो गया, फिर भी अब तक किसी अज्ञात कारण से इस घटना की खबर ज़ैद के चाचा तक को नहीं दी गई

थी। ज़ैद के पिता की संदिग्ध मृत्यु के बाद, उस नौकर ने ज़ैद के घर में ऐसा दबदबा हासिल कर लिया कि वही सर्वेसर्वा बन गया है ("काला और सफ़ेद वही करता है")। उसके उस घर में चौबीसों घंटे रहने के कारण, जहाँ परिवार का कोई दूसरा वयस्क पुरुष सदस्य नहीं रहता है, समाज ज़ैद के परिवार को हिकारत (नफरत) की नज़रों से देखता है और वे गुप्त रूप से आरोप का शिकार हैं। ज़ैद के चाचा ने उपरोक्त घटना से हैरान होकर इस नौकर के पुराने चाल-चलन के बारे में जाँच की तो पता चला कि शुरू से ही वह एक आवारा चाल-चलन वाला व्यक्ति है, यहाँ तक कि उसके माता-पिता ने भी उसे घर से निकाल दिया था। उसके बाद वह काफी समय तक नाटकों में नाचता-गाता रहा। इस जाँच के बाद प्रभावित होकर, ज़ैद के चाचा ने, जो कानूनी तौर पर ज़ैद के संरक्षक हैं, ज़ैद की माँ से दरख्वास्त की कि...

حقیقی نانی کو پہنچتی ہے یا زید نابالغ تایا زاد بھائی کو یا بکر کو جو چار پشت کے فاصلہ سے چچا ہوتا ہے؟ الجواب: (۱) لڑکی کم از کم نو برس میں اور زیادہ سے زیادہ پندرہ برس کی عمر میں بالغہ ہوتی ہے اس بیچ میں جب آثار بلوغ ظاہر ہوں بالغہ ہے ورنہ پندرہ سال پورے ہونے پر حکم بلوغ دیا جائے گا اگرچہ آثار بلوغ کچھ نہ ظاہر ہوں، بالغہ بے اذن ولی خود اپنا نکاح کرسکتی ہے مگر کفو میں، یعنی جس سے نکاح کرے وہ مذہب یا نسب یا پیشہ یا چال چلن میں اس سے ایسا کم نہ ہو کہ اس کے ساتھ نکاح ہونا اس کے ولی کے لئے باعث ننگ و عار ہو، اگر غیر کفو سے برضائے خود نکاح کرے گی اور ولی رکھتی ہے اور اس نے پیش از نکاح غیر کفو جان کر بالتصریح اجازت نہ دی تو نکاح اصلاً نہ ہوگا ہاں اگر کوئی ولی نہیں رکھتی یا ولی نے پیش از نکاح شوہر کو غیر کفو جان کر بالتصریح اجازت دی تو اس سے بھی نکاح صحیح ہو جائے گا۔ (۲) خالدہ کی جب عمر پندرہ سال کامل ہے تو وہ شرعاً بالغہ ہے اور اپنے نفس کا خود ولی ہے کسی ولی کا محتاج نہیں، اور ہندہ کہ اٹھارہ سال عمر رکھتی ہے اس پر ولایت جبر کسی کو نہیں کہ خود بالغہ ہے اور ولایت غیر مجبرہ اس کے بھائی کو ہے اس کے ہوتے نانی یا بکر کوئی چیز نہیں، اور زید نابالغ کو دوسرے کا ولی بنانا جنون ہے نابالغ کسی کا ولی نہیں ہوسکتا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۱۰: مرسلہ جناب ولی محمد صاحب بیتاب مدرس سر رشتہ تعلیم ریاست ہلکر اندور بمبئی بازار کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ کہ ہندہ ایک کمسن لڑکی کا نکاح اس کے دادا نے ایک نہایت ہی کمسن لڑکے زید سے کر دیا، ہندہ اس وقت بالکل بالغہ ہے مگر زید نابالغ، کم از کم پانچ برس اس کی بلوغت کو درکار ہیں، ہندہ اور زید میں زن و شوہر کا تعلق ہونا کیا معنی بلکہ ہندہ کی آج تک اپنے میکہ سے رخصتی ہی نہیں ہوئی، زید کے یہاں زید کے والد کی

حین حیات سے جس کا انتقال یکایک ہو گیا اور گومشتبہ مگر اب تک نامعلوم کسی نہ کسی وجہ سے اس سانحہ کی خبر زید کے چچاتک کو نہ دی گئی تھی ایک پردیسی نوجوان ملازم چلا آتا ہے زید کے والد مشتبہ جوانمرگ کے بعد اس ملازم نے زید کے مکان میں وہ رسوخ حاصل کیا کہ ہر سیاہ و سفید وہی کرتا ہے اور اس کے چوبیس گھنٹہ اس مکان میں رہنے سے جہاں کوئی دوسرا بالغ مرد بطور رکن خاندان کے نہیں رہتا ہے زید کے خاندان کو ایک زمانہ حقارت کی نظر سے دیکھتا ہے اور درپردہ مورد اتہام ہے۔ زید کے چچا نے سانحہ مذکورہ بالا سے متعجب ہو کر اس ملازم کے گذشتہ چال چلن کی نسبت جو تحقیقات کی تو معلوم ہوا کہ ابتداء سے یہ ایک آوارہ چلن شخص ہے حتیٰ کہ اسے والدین نے بھی اس کو مکان سے نکال دیا تھا اس کے بعد وہ عرصہ تک ناٹکوں میں ناچتا رہا گاتا رہا، اس تحقیق کے بعد متاثر ہو کر زید کے چچا نے جو زید کا جائز طور سے سرپرست ہے زید کی والدہ سے درخواست کی کہ اس

...the servant should be removed from the house. However, Zaid's mother replied that it is absolutely impossible no matter what happens; neither the servant can be separated from me nor I from the servant. Hindah is well aware of all these occurrences. She considers her life in danger besides the fear of rape and violation of her modesty if she goes to her in-laws' house. Therefore, she absolutely does not want to go to her in-laws, but rather wants to remarry after a separation to preserve the honor of her family. What is the ruling for Hindah in this situation? Explain and you will be rewarded.

The Answer: If Hindah's father is not present and the grandfather performed the marriage, and Hindah was a minor at the time of marriage and is now an adult, or if she was an adult and the marriage was performed after taking her permission, or it was performed without her permission but she gave permission after receiving the news, or the grandfather himself came to take permission and Hindah remained silent; in all these cases, the marriage became binding on Hindah's part, and its annulment is impossible. Separation can only occur through death or divorce, and the divorce of a minor is invalid. No guardian can give divorce on their behalf. Allah Almighty knows best.

Problem 108: What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding this matter: that twelve years ago Zaid was married to Hindah, but at the time of marriage, Hindah did not express acceptance verbally, nor did she refuse, but rather she remained silent. Another woman who was present with the bride told the representative (wakil) that Hindah accepts. Hindah states that at that time she was completely absent-minded; she had no thought of acceptance or refusal in her heart, but was rather engrossed in other thoughts of grief, sorrow, and the anxieties of starting a new life. It is requested to know whether this marriage is valid according to Shariah or not. What should Zaid and Hindah do to avoid accountability and the consequences of the afterlife? Explain and be rewarded. It is further requested that a quick response be granted because Hindah is extremely fearful and terrified of the thought of accountability in the afterlife. Only.

The Answer: Who came to take permission from Hindah? Was it her closest guardian, or someone sent by that guardian, or who? Has Hindah's departure (rukhsati) taken place or not? Before the departure, upon hearing the news of this marriage, was there any expression of inclination or dislike through any word or action of Hindah? A

response will be given based on the details of all these matters, if Allah Almighty wills.

Answers to Inquired Matters: Hindah's father's cousin, i.e., Hindah's uncle by relationship, went to take permission. It is not remembered who at that time...

Page 277 of 739

...नौकर को मकान से अलग कर दिया जाए। मगर ज़ैद की माँ ने यह जवाब दिया कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता चाहे कुछ भी हो, न नौकर मुझसे न मैं नौकर से अलग हो सकती हूँ। हिंदह इन तमाम वाक़यात से अच्छी तरह वाक़िफ़ है, वह ससुराल जाने में अपनी जान को खतरे में समझने के अलावा अपनी अस्मत दरी और आबरू रेज़ी का खौफ़ भी रखती है, इसलिए वह ससुराल हरगिज़ नहीं जाना चाहती बल्कि अपने खानदान की आबरू बचाने के लिए अलगाव के बाद दूसरा निकाह करना चाहती है। इस सूरत में हिंदह के लिए क्या हुक्म है? बयान कीजिए, सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: हिंदह का बाप अगर नहीं है और दादा ने निकाह कर दिया और हिंदह निकाह के वक्त नाबालिग़ थी तो अब बालिग़ है, या बालिग़ थी और उससे इजाज़त लेकर निकाह किया गया या उसकी इजाज़त के बिना निकाह किया गया मगर ख़बर मिलने पर उसने इजाज़त दे दी, या दादा खुद इजाज़त लेने आए थे और हिंदह खामोश रही, तो इन तमाम सूरतों में निकाह हिंदह की तरफ़ से लाज़िम हो गया, इसका फ़स्ख़ (खत्म करना) नामुमकिन है। अलगाव या तो मौत से हो सकता है या तलाक़ से, और नाबालिग़ की तलाक़ बातिल (अमान्य) है। न ही उसकी तरफ़ से उसका कोई वली (सरपरस्त) तलाक़ दे सकता है। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह सबसे बेहतर जानता है)।

मसला १०८: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरह मतीन इस मसले में कि बारह बरस हुए कि ज़ैद का निकाह हिंदह से हुआ लेकिन हिंदह ने निकाह के वक्त ज़बान से इजाब (मंज़ूरी) नहीं किया था, न इनकार किया था बल्कि खामोशी इख्तियार की थी। एक दूसरी औरत ने जो दुल्हन के पास मौजूद थी, वकील से यह कह दिया था कि हिंदह मंज़ूर करती है। हिंदह का बयान है कि उस वक्त मैं बिल्कुल खाली ज़हन थी, न मेरे दिल में इकरार था न इनकार का ख्याल, बल्कि दूसरे खयालात रंज व ग़म और नई ज़िंदगी शुरू होने की परेशानियों में मुब्तला थी। दरयाफ़्त तलब यह है कि क्या यह निकाह शरई तौर पर दुरुस्त हुआ या नहीं, तो ज़ैद और हिंदह को गिरफ्त और आख़िरत के अज़ाब से बचने के लिए क्या करना चाहिए? बयान कीजिए सवाब मिलेगा। मजीद अर्ज़ है कि जवाब जल्द अता फरमाएं क्योंकि हिंदह आख़िरत की गिरफ्त के ख्याल से निहायत खौफ़ज़दा और डरी हुई है। फ़क़त।

अल-जवाब: हिंदह से इजाज़त लेने कौन आया था? वह हिंदह का सबसे करीबी वली था या उस वली का भेजा हुआ कोई और था? हिंदह की रुख़्सती हुई या नहीं? रुख़्सती से पहले हिंदह के किसी कौल

(बात) या फ़ेल (काम) से इस निकाह की ख़बर सुनकर पसंदगी या नापसंदगी का इज़हार हुआ या नहीं? इन तमाम बातों की तफ़सील मिलने पर जवाब दिया जाएगा, इनशा अल्लाह तआला।

दरयाफ़्त शुदा उमूर के जवाबात। हिंदह के वालिद के चचेरे भाई यानी हिंदह के रिश्ते के ताया इजाज़त लेने गए थे, यह याद नहीं कि उस वक्त किसने...

पेज २७७ / ७३९

ملازم کو مکان سے علیحدہ کر دیا جائے۔ مگر زید کی والدہ نے یہ جواب دیا کہ ہرگز نہیں ہو سکتا چاہے کچھ بھی ہو ، نہ ملازم مجھ سے نہ میں ملازم سے جدا ہو سکتی ہوں ، ان تمام وقوعات سے ہندہ بخوبی واقف ہے ، وہ سسرال جانے سے خود کی عصمت دری اور آبرو ریزی کے خوف کے علاوہ اپنی جان معرض خطرہ میں سمجھتی ہے اس لیے سسرال ہر گز نہیں جانا چاہتی بلکہ اپنے خاندان کے حفظ آبرو کے لحاظ سے تفریق کے بعد دوسرا نکاح کر لینا چاہتی ہے۔ اس صورت میں ہندہ کے لیے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: ہندہ کا باپ اگر نہیں اور دادا نے نکاح کر دیا اور ہندہ وقت نکاح نابالغہ تھی تو اب بالغہ ہے یا بالغہ تھی اس سے اذن لے کر نکاح کیا یا بے اس کی اجازت کے نکاح کیا مگر بعد وصول خبر اس نے اجازت دی یا دادا آپ اذن لینے آیا تھا اور ہندہ نے سکوت کیا، تو ان سب صورتوں میں نکاح منجانب ہندہ لازم ہو گیا، اس کا فسخ نا ممکن ہے۔ تفریق ہو تو موت یا طلاق سے ، اور نابالغ کی طلاق باطل ہے۔ نہ اس کی طرف سے اس کا کوئی ولی طلاق دے سکے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ بارہ برس ہوئے کہ زید کا نکاح ہندہ سے ہوا لیکن ہندہ نے بوقت نکاح زبان سے ایجاب نہیں کیا تھا، نہ انکار کیا تھا بلکہ سکوت اختیار کیا، ایک دوسری عورت نے جو عروس کے پاس موجود تھی وکیل سے یہ کہہ دیا تھا کہ ہندہ منظور کرتی ہے۔ ہندہ کا بیان ہے کہ اس وقت میں بالکل خالی الذہن تھی نہ میرے دل میں اقرار تھا نہ انکار کا خیال بلکہ دوسرے خیالات رنج و غم و نئی زندگی شروع ہونے کے ترددات میں مبتلا تھی، دریافت طلب یہ ہے کہ آیا یہ نکاح شرعاً درست ہوا یا نہیں، تو زید و ہندہ کو

مواخذہ و عقبی سے بچنے کے لیے کیا کرنا چاہئے؟ بینوا توجروا مزید عرض ہے کہ جواب جلد مرحمت ہو کیونکہ ہندہ مواخذہ عقبی کے خیال سے نہایت خائف و ترساں ہے۔ فقط

الجواب: ہندہ سے اذن لینے کون آیا تھا وہ سب سے قریب تر ہندہ کا ولی یا اس ولی کا بھیجا ہوا یا کون تھا؟ ہندہ کی رخصت ہوئی یا نہیں؟ قبل رخصت ہندہ کے کسی قول یا فعل سے اس نکاح کی خبر سن کر اظہار رغبت یا نفرت ہوا یا نہیں؟ ان تمام باتوں کی تفصیل پر جواب دیا جائے گا ان شاء اللہ تعالیٰ۔

جوابات امور مستفسرہ ہندہ کے والد کے چچا زاد بھائی یعنی ہندہ کے رشتہ کے تایا اذن لینے گئے تھے، یہ یاد نہیں کہ اس وقت کس نے

Fatawa Razawiyya Volume 11

...appointed them for this task; generally, such family elders are sent from whom the girl does not observe purdah. Accordingly, the same happened here. Hindah's father was not present in this city; he had appointed Hindah's maternal uncle via letter to perform the ceremonies and rituals of this marriage. It can be said that Hindah's maternal uncle must have appointed the representative (wakil) to take permission; in reality, this is not remembered. The departure (rukhsati) took place that week. No matter against Hindah's desire and consent appeared then, nor until today, after twelve years have passed, has any matter occurred that would indicate Hindah's dissatisfaction. Instead, they live together as husband and wife with such perfect harmony. This question arises only due to Hindah's superstition, lest the marriage was not valid and accountability remains before Allah; reassurance regarding this is sought.

The Answer: If the situation is as described, even though the person seeking permission was not the closest guardian (wali aqrab), Hindah's silence would not be considered permission, and that marriage would be an unauthorized (fuzuli) marriage and remained dependent on Hindah's approval. However, when before the departure no word or action occurred from Hindah which would suggest her dissatisfaction with this marriage, and Hindah came to her husband's house willingly and gladly, then that suspended marriage became effective and complete. There is no fear of accountability in it. And Allah Almighty knows best.

Problem 109 to 111: From Gondal, Kathiawar, questioned by Mr. Seth Abdul Sattar bin Ismail Razvi, dated 7 Rajab-ul-Murajab 1334 AH, Saturday. (1) A custom has developed here that at the time of marriage, two witnesses do not go with the representative (wakil), and the Qazi performs the marriage based on the representation of the wakil and the testimony of those present. Is this matter praiseworthy or rejected according to Sharia? Also, will the marriage be valid in the Hanafi school of thought through this arrangement? Is it necessary for the wakil to keep two witnesses with him and for those witnesses to hear the woman's permission or not? If they do not do it this way and continuously act according to these current methods, are they all sinners or not?

The Answer: There is no need for witnesses to be with the wakil. If, in reality, the woman gave permission to the wakil and he had it performed, the marriage is done. Yes, if the woman denies, saying "I did not give permission," then there will be a need

for witnesses before a judge. This is not a mistake. However, it is certainly a mistake that the wakil is one person and someone else performs the marriage. In the correct and standard view (Zahir-ur-Riwayah) of the school, the wakil for marriage cannot appoint another person as a wakil. There are many complexities in this, the details of which are in our fatwas. Therefore, permission should be taken in the name of the person by whom it is intended to have the marriage performed, or absolute permission should be obtained. And Allah Almighty knows best. (2) What is the Sharia ruling on the groom wearing a floral veil (sehra) at the time of marriage and going to the marriage in a procession with music?

उन्हें इस काम पर नियुक्त किया था, आम तौर पर ऐसे बुजुर्ग खानदान जिनसे लड़की पर्दा नहीं करती, भेजे जाते हैं। चुनाँचे यहाँ भी ऐसा ही हुआ, हिंदा का बाप इस शहर में मौजूद नहीं था, उसने हिंदा के मामा को इस निकाह की रस्में और तक़रीबात अदा करने के लिए खत के ज़रिए नियुक्त किया था। यह कहा जा सकता है कि अनुमति लेने के लिए हिंदा के मामा ही ने वकील को मुकर्रर किया होगा, हक़ीक़त में यह याद नहीं। रुख़्सती उसी हफ़्ते में हो गई। हिंदा की इच्छा और सहमति के विरुद्ध कोई बात न उस समय और न आज तक, बारह साल बीतने के बाद तक, कोई ऐसी बात ज़हूर में नहीं आई जिससे हिंदा की नाराज़गी ज़ाहिर हो, बल्कि वे पति-पत्नी के रूप में मुकम्मल इत्तेहाद के साथ बसर करते हैं। यह सवाल सिर्फ हिंदा के इस वहम की बिना पर पैदा होता है कि कहीं निकाह सही न हुआ हो और अल्लाह के यहाँ पकड़ बाकी रहे, इसका इतमीनान मक़सूद है।

अल-जवाब (उत्तर): अगर वाकया यह है कि हालाँकि अनुमति लेने वाला वली-ए-अक़रब (निकटतम अभिभावक) नहीं था, हिंदा की खामोशी अनुमति नहीं मानी जाएगी और वह निकाह 'निकाह-ए-फुज़ूली' (अनधिकृत विवाह) हुआ और हिंदा की अनुमति पर मुअल्क (निर्भर) रहा। लेकिन जब रुख़्सती से पहले हिंदा से कोई ऐसा बोल या काम नहीं हुआ जिससे हिंदा का इस निकाह से नाराज़ होना समझा जाता, और हिंदा रज़ा और खुशी के साथ पति के यहाँ आई, तो वह मुअल्क निकाह प्रभावी और पूर्ण हो गया। इसमें पकड़ का कोई डर नहीं है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 109 से 111: गोंडल, काठियावाड़ से, सायल जनाब सेठ अब्दुल सत्तार bin इस्माइल रज़वी, तारीख 7 रजबुल मुरज्जब 1334 हिजरी, शनिवार। (1) यहाँ यह रिवाज़ हो गया है कि निकाह के समय वकील के साथ दो गवाह नहीं जाते हैं और क़ाज़ी वकील की वकालत और हाज़िरीन (उपस्थित लोगों) की गवाही से निकाह पढ़ा देता है। क्या यह बात शरीयत की नज़र में पसंदीदा है या नापसंद? साथ ही, क्या इस तरीके से हनफ़ी मज़हब में निकाह सही हो जाएगा या नहीं? वकील को अपने साथ दो गवाह रखना और उन गवाहों का औरत की अनुमति सुनना ज़रूरी है या नहीं? अगर इस तरह न करके मौजूदा रस्मों पर हमेशा अमल करें, तो क्या सब गुनहगार हैं या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): वकील के साथ गवाहों की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर हक़ीक़त में औरत ने वकील को अनुमति दी और उसने निकाह पढ़ा दिया, तो निकाह हो गया। हाँ, अगर औरत इनकार

करे कि "मैंने इजाज़त नहीं दी थी", तो हाकिम के यहाँ गवाहों की ज़रूरत होगी। यह तो कोई ग़लती नहीं है। हाँ, यह ज़रूर ग़लती है कि वकील कोई और होता है और निकाह कोई दूसरा पढ़ाता है। सही मज़हब और ज़ाहिरुर रिवाया में निकाह का वकील दूसरे को वकील नहीं बना सकता। इसमें बहुत सी पेचीदगियाँ हैं जिनका विवरण हमारे फ़तावा में है। लिहाज़ा यह चाहिए कि जिससे निकाह पढ़वाना मंज़ूर हो, उसके नाम की अनुमति ली जाए या मुतलक़ (निरपेक्ष) अनुमति ले ली जाए। वल्लाहु तआला आलम। (2) निकाह के समय दूल्हे का सेहरा बाँधना और बाजे-गाजे के साथ जुलूस की शक्ल में निकाह के लिए जाने का शरीअत में क्या हुक्म है?

पेज 278 ऑफ़ 739

انہیں اس کام پر متعین کیا تھا، بالعموم ایسے بزرگ خاندان جن سے لڑکی پردہ نہ کرتی ہو بھیجے جاتے ہیں۔ چنانچہ یہاں بھی ایسا ہی ہوا، ہندہ کا باپ اس شہر میں موجود نہ تھا، اس نے ہندہ کے ماموں کو اس نکاح کے مراسم و تقریبات ادا کرنے کے لیے بذریعہ خط مامور کیا تھا یہ کہا جاسکتا ہے اذن لینے کے لیے ہندہ کے ماموں ہی نے وکیل کو متعین کیا ہوگا در حقیقت یہ یاد نہیں، رخصت اس ہفتہ میں ہو گئی کوئی امر ہندہ کی رغبت و رضامندی کے خلاف نہ اس وقت نہ آج تک بارہ برس گزرنے کے بعد تک کوئی امر ایسا ظہور پذیر نہ ہوا جس سے ہندہ کی ناراضامندی ظاہر ہو بلکہ ایسا کمال اتحاد سے زن و شو بسر کرتے ہیں یہ سوال صرف ہندہ کے اس توہم کی بنا پر پیدا ہوتا ہے کہ مبادا نکاح صحیح نہ ہوا ہو اور عنداللہ مواخذہ باقی رہے اس کا اطمینان مقصود ہے۔

الجواب: اگر صورت واقعہ یہ ہے کہ اگرچہ از انجا کہ اذن لینے والا ولی اقرب نہ تھا ہندہ کا سکوت اذن نہ ٹھہرے اور وہ نکاح نکاح فضولی ہوا اور ہندہ کی اجازت پر موقوف رہا، مگر جبکہ پیش از رخصت ہندہ سے کوئی قول و فعل ایسا واقع نہ ہوا جس سے ہندہ کا اس نکاح سے ناراض ہونا سمجھا جاتا اور ہندہ برضا و رغبت ہو کر شوہر کے یہاں آتی تو وہ نکاح موقوف نافذ و تام ہو گیا، اس میں کوئی اندیشہ مواخذہ کا نہیں، واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۹ تا ۱۱۱: از گونڈل کاٹھیا واڑ مسئولہ جناب سیٹھ عبدالستار بن اسمعیل رضوی تاریخ ۷ رجب المرجب ۱۳۳۴ھ روز شنبہ (۱) یہاں پر یہ رواج ہو چلا ہے کہ وقت نکاح وکیل کے ہمراہ دو گواہ نہیں جاتے ہیں اور قاضی وکیل کی وکالت اور حاضرین کی شہادت سے نکاح پڑھادیتا ہے آیا یہ امر عند الشرع محمود ہے یا مردود؟ نیز اس ترکیب سے مذہب حنفی میں نکاح صحیح ہو جائے

گا یا نہیں؟ وکیل کو اپنے ساتھ دو گواہ رکھنا اور ان شاہدوں کو عورت کی اجازت سننا ضروری ہے یا نہیں : اگر اس طرح نہ کر کے بر طریق ان مروجہ پر مدام عمل کرنے پر سب گنہ گار ہیں یا نہیں؟

الجواب وکیل کے ساتھ شاہدوں کی حاجت کچھ نہیں، اگر واقع میں عورت نے وکیل کو اذن دیا اور اس نے پڑھا دیا نکاح ہو گیا، ہاں اگر عورت انکار کرے گی میں نے اذن نہ دیا تھا تو حاکم کے یہاں گواہوں کی حاجت ہو گی، یہ تو کوئی غلطی نہیں۔ ہاں یہ ضرور غلطی ہے کہ وکیل ہوتا ہے کوئی اور۔ نکاح پڑھاتا ہے دوسرا، مذہب صحیح و ظاہر الروایہ میں وکیل بالنکاح دوسرے کو وکیل نہیں بنا سکتا، اس میں بہت دقتیں ہیں جن کی تفصیل ہمارے فتاوی میں ہے۔ لہذا یہ چاہئے کہ جس سے نکاح پڑھوانا منظور ہے اس کے نام کی اجازت لی جائے یا اذن مطلق لے لیا جائے واللہ تعالی اعلم (۲) نوشہ کا وقت نکاح سہرا باندھنا نیز باجے گاجے سے جلوس کے ساتھ نکاح کو جانا شرعا کیا

Fatawa-e-Razvia Volume 11

...what is the ruling?

The Answer: A garland made of just flowers is permissible, and these musical instruments that are common and customary in weddings are all impermissible and forbidden. And Allah Almighty knows best.

(3) Within which ruling of the Pure Sharia does providing the feast of the honorable Walima fall? What is the status of one who abandons it? Furthermore, if none of the people in a city perform Walima after marriage, but instead feed people on the first day of marriage as per custom, what is the honorable ruling of the Prophetic Sharia (peace and blessings of Allah be upon him) for all those people?

The Answer: Walima after marriage is a Sunnah. In this regard, a command form is also narrated; it was said to Abdur Rahman bin Auf (may Allah be pleased with him), "Give a Walima feast, even if it is with a sheep"[1]. Whether it means "even one sheep" or "even if it's just a sheep," both meanings are possible, and the first is more apparent; they are abandoners of Sunnah. However, this is from the recommended Sunnahs. One who abandons it will not be a sinner if they consider it a right. And Allah Almighty knows best.

Problem 112: From District Hazaribagh, Post Office Chitarpur, Location Chitarpur, asked by Muhammad Abdul Rab Sahib on Thursday, 22 Rajab 1334 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia (may Allah have mercy on them all) say regarding this matter: Zaid's wife, during the period of infancy and within the timeframe of suckling, breastfed Bakr along with her son Amr. Later, three boys named Muhammad Saeed, Muhammad Fadhil, and Muhammad Saleem were born to Zaid's wife. Now, is marriage permissible between Bakr's daughter and Muhammad Saleem, who is Amr's real brother, or not? Please guide with references and quotes from reliable Hanafi books.

The Answer: Bakr's daughter is the real niece of all the previous and subsequent children of Zaid's wife, and intermarriage is strictly forbidden. And Allah Almighty knows best.

Problem 113: Asked by Mr. Abdul Sattar bin Ismail from Gondal City, Kathiawar region, Sunday, 9 Shaban 1334 AH. Some people in this country marry off their daughters to someone of equal status (Kufu) or unequal status (Ghair-Kufu) by taking one or two thousand rupees. In this, sometimes they don't even consider age,

meaning they marry her off to whoever pays a higher amount. Is it permissible for parents to take such money or not, even if the parents are poor? And by taking money this way, marrying into unequal status (Ghair-Kufu) or...

---

[1] Sahih Bukhari, Book of Dowry for the Married, Qadeemi Kutub Khana Karachi 5/2-77

फतावा-ए-रज़विया ग्यारहवीं जिल्द

...क्या हुक्म रखता है?

जवाब: सिर्फ फूलों का सेहरा जायज़ है और ये बाजे जो शादी में प्रचलित और सामान्य हैं, सब नाजायज़ और हराम हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

(3) वलीमा शरीफ़ का खाना खिलाना शरीअत-ए-मुतहरा के किस हुक्म में दाखिल है? इसका त्याग करने वाला कैसा है? इसके अलावा, जिस शहर के लोगों में से कोई भी निकाह के बाद वलीमा न करता हो, बल्कि निकाह के पहले दिन ही जैसा रिवाज है, खाना खिला देता हो, तो उन सब लोगों के लिए शरीअत-ए-नबवी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का शरीफ़ हुक्म क्या है?

जवाब: निकाह के बाद वलीमा सुन्नत है। इस मामले में अम्र (आदेश) का सीगा भी आया है, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से फरमाया: "वलीमा करो चाहे एक बकरी से ही हो"1। चाहे 'एक भेड़' या 'चाहे एक भेड़', दोनों अर्थ संभावित हैं, और पहला अधिक स्पष्ट है; वे सुन्नत के त्याग करने वाले हैं। लेकिन यह मुस्तहब सुन्नतों में से है। त्याग करने वाला गुनहगार नहीं होगा अगर वह इसे हक़ (सही) जानता हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 112: जिला हज़ारीबाग, डाकखाना चितरपुर, स्थान चितरपुर से, मुस्तौ़ला (पूछने वाले) मोहम्मद अब्दुल रब साहब, गुरुवार 22 रजब 1334 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन (अल्लाह तआला उन सब पर रहम फरमाए) इस मसले में कि ज़ैद की बीवी ने दूध छुड़ाने की उम्र के दौरान अपने बेटे अम्र के साथ बक्र को दूध पिलाया, उसके बाद ज़ैद की बीवी से तीन लड़के मोहम्मद सईद, मोहम्मद फ़ाज़िल और मोहम्मद सलीम पैदा हुए। तो अब बक्र की लड़की से मोहम्मद सलीम का निकाह, जो अम्र का सगा भाई है, जायज़ है या नहीं? मोतबर (भरोसेमंद) हनफ़ी किताबों की इबारतों और हवालों के साथ इरशाद हो।

जवाब: बक्र की लड़की, ज़ैद की बीवी की अगली-पिछली सभी औलाद की हकीकी भतीजी है और आपस में निकाह कतई हराम है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 113: मुस्तौ़ला जनाब अब्दुल सत्तार बिन इस्माइल साहब, शहर गोंडल इलाका काठियावाड़ से, रविवार 9 शाबान 1334 हिजरी। कुछ लोग अपनी लड़कियां इस मुल्क में एक-दो हज़ार रुपये लेकर कुफ़ू (बराबर) या ग़ैर-कुफ़ू (ना-बराबर) से निकाह कर देते हैं, इसमें कभी-कभी उम्र का भी

ख्याल नहीं रखते यानी जो शख़्स ज़्यादा रकम दे उससे निकाह कर देते हैं। क्या ऐसी रकम का लेना वालिदैन (माता-पिता) के हक में मुबाह (जायज़) है या नहीं, चाहे वालिदैन गरीब हों? और इस तरह ये रकम लेकर ग़ैर-कुफ़ू या...

---

1 सहीह बुखारी, बाब-अत-तस्वीयतु लि-मुतज़ौविज, पुरानी कुतुब खाना कराची 5/2-77

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

حکم رکھتا ہے؟

الجواب: خالی پھولوں کا سہرہ جائز ہے اور یہ باجے جو شادی میں رائج و معمول ہیں سب ناجائز و حرام۔ واللہ تعالیٰ اعلم

(۳) ولیمہ شریف کا کھانا کھلانا شریعت مطہرہ کے کس حکم میں داخل ہے۔ اس کا تارک کیسا ہے؟ نیز جس شہر کے لوگوں میں سے کوئی بھی بعد نکاح ولیمہ نہ کرتا ہو بلکہ پہلے نکاح کے اول روز جس طرح کہ رواج ہے کھلا دیتا ہو تو ان سب لوگوں کے لیے شریعت نبوی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا حکم شریف کیا ہے؟

الجواب: ولیمہ بعد نکاح سنت ہے اس صورت میں صیغہ امر بھی وارد ہے ، عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا اولم ولو بشاۃ 1 ولیمہ کر اگر چہ ایک ہی دنبہ یا اگر چہ ایک دنبہ ، دونوں معنی محتمل ہیں، اور اول اظہر تارکان سنت ہیں۔ مگر یہ سنن مستحبہ سے ہے۔ تارک گناہ گار نہ ہوگا اگر اسے حق جانے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۲: از ضلع ہزاری باغ، ڈاکخانہ چتر پور مقام چتر پور، مسئولہ محمد عبدالرب صاحب روز پنجشنبہ ۲۲ رجب ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین رحمہم اللہ تعالی اجمعین اس مسئلہ میں کہ زید کی بی بی نے بحالت شیر خواری اپنے بیٹے عمرو کے اندر مدت رضاعت کے بکر کو دودھ پلایا، بعدہ زید کی بی بی سے تین لڑکے مسمیان محمد سعید و محمد فاضل و محمد سلیم تولد ہوئے تو اب بکر کی لڑکی سے محمد سلیم جو برادر حقیقی عمرو کا ہے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بحوالہ و بدرج عبارات کتب معتبرہ حنفیہ ارشاد ہو۔

الجواب: بکر کی لڑکی زوجہ زید کی اگلی پچھلی سب اولاد کی حقیقی بھتیجی ہے اور باہم مناکحت حرام قطعی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۳: مسئولہ جناب عبد الستار بن اسمعیل صاحب از شہر گوندل علاقہ کاٹھیاواڑ یک شنبہ ۹ شعبان ۱۳۳۴ھ بعض لوگ اپنی لڑکیاں اس ملک میں ہزار دو ہزار روپیہ لے کر کفو یا غیر کفو سے نکاح کر دیتے ہیں اس میں بعض وقت عمر کا بھی خیال نہیں رکھتے یعنی جو شخص زائد رقم دے اس سے نکاح کر دیتے ہیں، آیا ایسی رقم کا لینا والدین کے حق میں مباح ہے یا نہیں اگر چہ والدین غریب ہوں اور اس طرح یہ رقم لے کر غیر کفو یا

---

1 صحیح بخاری باب الصفرة للمتزوج قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۵-۷۷

Fatawa Rizvia Volume 11

Is it correct to marry someone off to a person of much older age or not?

The Answer: Marrying off one's offspring to someone unsuitable (non-kufu) for the sake of money is a sign of ill-will towards them, and this money falls under bribery. Fatawa Khairiyyah has discussed this detail. And Allah Almighty knows best.

Problem 114: Inquiry by Abid Khan, care of Munshi Khuda Bakhsh Sahib, Contractor Sadar Bazar, Bareilly, Monday 1334 AH. What do the scholars of religion and Islamic law say about the case where Zaid and Bakr are paternal cousins as well as foster brothers? Zaid has only one younger biological brother, and Bakr has an elder biological sister and a younger biological sister. Since Zaid and Bakr are foster brothers, is Zaid's younger brother's marriage to Bakr's younger sister permissible or not?

The Answer: If Bakr drank Zaid's mother's milk, then he and his brother are Bakr's brothers, not Bakr's sister's. And if Zaid drank Bakr's mother's milk, then he is Bakr's sister's brother, not Zaid's brother. In any case, Zaid's brother and Bakr's sister can marry because of the saying: "The sister of one's foster brother is permissible for marriage." (According to the jurists, a foster brother's sister is lawful).

Problem 115: Inquiry by Inayat Hussain Khan, Clerk, Thana Dausa, Alwar State, Rajputana, 12 Sha'ban 1334 AH. (1) Can a minor girl marry of her own accord and against the guardian's (Wali) wish or not? (2) If a mature girl marries of her own accord and against the guardian's wish to someone unsuitable (non-kufu), is that marriage valid or not? And if the guardian had previously forbidden her from marrying someone unsuitable, and then she still married someone unsuitable secretly or by force, does the guardian have the right to annul this marriage or not?

The Answer: (1) Not at all. Yes, she can with the guardian's permission. If she is sensible and marries herself, and the guardian grants permission after being informed, it will become valid; if he rejects it, it will be void. It is in "Durr al-Mukhtar": "A guardian is a condition for the validity of a minor's marriage." etc. I say:

For the validity of a minor's marriage, a guardian is a condition etc. I say:

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

बड़ी उम्र वाले के साथ निकाह कर देना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: माल के कारण अपनी संतान का निकाह ग़ैर-कुफ़ू (अनुपयुक्त मेल) में करना उनके हक़ में बदनियती है, और यह रुपया रिश्वत में शामिल है। फ़तावा खैरिय्या में इस मसले पर चर्चा की गई है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 114: आबिद खान द्वारा प्रश्न, मार्फत मुंशी खुदा बख्श साहब, ठेकेदार सदर बाज़ार बरेली, सोमवार 1334 हिजरी। धर्म और शरीयत के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि ज़ैद और बक्र चचेरे भाई हैं और रज़ाई (दूध-भाई) भी हैं। ज़ैद का केवल एक सगा छोटा भाई है और बक्र के पास एक सगी बड़ी बहन और एक सगी छोटी बहन है। चूंकि ज़ैद और बक्र रज़ाई भाई हैं, तो क्या ज़ैद के छोटे भाई का निकाह बक्र की छोटी बहन से जायज़ है या नहीं?

उत्तर: अगर बक्र ने ज़ैद की माँ का दूध पिया है तो ज़ैद और उसका भाई बक्र के भाई हुए, न कि बक्र की बहन के। और अगर ज़ैद ने बक्र की माँ का दूध पिया है तो वह बक्र की बहन का भाई हुआ, न कि ज़ैद का भाई। बहरहाल ज़ैद के भाई और बक्र की बहन का निकाह जायज़ है क्योंकि कहा गया है: "रज़ाई भाई की बहन निकाह के लिए जायज़ है" (फ़कीहों के कथन के अनुसार रज़ाई भाई की बहन हलाल है)।

मसला 115: इनायत हुसैन खान, मुहर्रिर थाना दौसा, रियासत अलवर, राजपूताना, 12 शाबान 1334 हिजरी द्वारा प्रश्न। (1) क्या नाबालिग लड़की अपनी मर्ज़ी से और वली (अभिभावक) की इच्छा के विरुद्ध अपना निकाह कर सकती है या नहीं? (2) अगर बालिग लड़की अपनी मर्ज़ी से और वली की इच्छा के विरुद्ध ग़ैर-कुफ़ू (अनुपयुक्त मेल) में निकाह करे तो क्या वह निकाह दुरुस्त है या नहीं? और अगर वली ने पहले ही उसे ग़ैर-कुफ़ू में निकाह करने से मना किया था और फिर उसने किसी तरह गुपचुप या ज़बरदस्ती किसी ग़ैर-कुफ़ू के साथ निकाह कर लिया तो क्या वली को इस निकाह को खत्म (रद्द) करने का अधिकार है या नहीं?

उत्तर: (1) हरगिज़ नहीं। हाँ, वली की अनुमति से कर सकती है। जबकि समझदार हो और खुद निकाह कर ले और वली बाद में सूचना मिलने पर उसे जायज़ कर दे तो जायज़ हो जाएगा, अगर रद्द कर दे तो बातिल (अमान्य) हो जाएगा। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "नाबालिग के निकाह की वैधता के लिए वली शर्त है।" इत्यादि। मैं कहता हूँ:

नाबालिग के निकाह की वैधता के लिए वली शर्त है इत्यादि। मैं कहता हूँ:

1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/191.

بڑی عمر والے کے ساتھ نکاح کردینا درست ہے یا نہیں؟

الجواب: مال کے سبب اپنی اولاد کا نکاح غیر کفو سے اس کے حق میں بدخواہی ہے، اور یہ روپیہ رشوت میں داخل ہے۔ فتاویٰ خیریہ میں اس جزئیہ پر بحث فرمائی ہے۔ واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۱۴: مسئولہ عابد خان، معرفت منشی خدا بخش صاحب ٹھیکیدار صدر بازار بریلی دوشنبہ ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع متین اس بارے میں کہ زید بکر کا چچا زاد بھائی ہے اور رضاعی بھی، زید کے صرف ایک حقیقی چھوٹا بھائی ہے اور بکر کے ایک چھوٹا بھائی اور ایک بڑی بہن جو کہ حقیقی ہیں اور بکر کی بہن دونوں بھائیوں سے چھوٹی ہے، تو زید کے چھوٹے بھائی کا نکاح بکر کی چھوٹی بہن سے جائز ہے یا نہیں؟ چونکہ زید اور بکر آپس میں رضاعی بھائی ہیں۔

الجواب: بکر نے اگر زید کی ماں کا دودھ پیا ہے تو زید اور اس کا بھائی بکر کے بھائی ہوئے نہ کہ خواہر بکر کے اور اگر زید نے بکر کی ماں کا دودھ پیا ہے تو یہ خواہر بکر کا بھائی ہوا نہ کہ زید کا بھائی، بہر حال زید کے بھائی اور بکر کی بہن میں نکاح جائز ہے لقولھم تحل اخت اخیہ رضاعاً (فقہاء کے قول کے مطابق بھائی کی رضاعی بہن حلال ہے۔ ت)

مسئلہ ۱۱۵: مسئولہ عنایت حسین خاں محرر تھانہ دوسہ علاقہ ریاست جے پور ملک راجپوتانہ ۱۲ شعبان ۱۳۳۴ھ (۱) کیا نابالغ لڑکی برضا مندی خود اور خلاف مرضی ولی جائز کے اپنا نکاح کر سکتی ہے یا نہیں؟ (۲) بالغہ برضا مندی خود اور خلاف مرضی ولی جائز کے اپنا نکاح غیر کفو میں کرے تو وہ نکاح درست ہے یا نہیں؟ اور اگر ولی نے قبل از نکاح غیر کفو میں نکاح

کرنے سے منع کردیا ہو اور پھر بھی کسی طرح پوشیدہ یا زبردستی کسی غیر کفو کے ساتھ لڑکی نے نکاح کر لیا ہو تو اس کے ولی کو اس نکاح کے تنسیخ کا اختیار ہے یا نہیں؟

الجواب: (۱) ہرگز نہیں، ہاں ولی کے اذن سے کرسکتی ہے جبکہ سمجھ وال ہو یا بطور خود کرے اور ولی بعد اطلاع اسے جائز کردے تو جائز ہوجائے گا، رد کردے تو باطل ہوجائے گا، درمختار میں ہے: الولی شرط صحت نکاح صغیر الخ اقول:

نابالغ کے صحت نکاح کے لیے ولی شرط ہے الخ اقول:

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic Box Text]: The aspect is the estimation of "enforcement" (nafaz), for what is suspended (mawquf) is part of the valid (sahih), but he intended "validity" to mean "enforcement" and Allah knows best. [Urdu Translation/Explanation]: To correct it, the word "enforcement" is implied because marriage without a guardian (wali) is suspended, which is a valid marriage, but here validity refers to enforcement because that is what comes to mind first. (T) And Allah Almighty knows best.

(2) In Sharia, 'non-equal' (ghair kufu) refers to someone so inferior in lineage, religion, profession, or conduct that the woman's marriage to him would be a cause of shame and disgrace for her guardians. If an adult woman marries such a person on her own, the marriage will not take place at all, even if the guardian did not forbid it or it was not against his will. This marriage would only be permissible if the guardian was aware of this 'non-equal' status and the aforementioned condition before the marriage and deliberately and explicitly gave permission to the adult woman to marry him. If even one of these conditions is lacking, the marriage performed by the adult woman will be purely void (batil). There is no need for the guardian to annul it or seek its annulment, as annulment happens when a marriage has taken place; this never occurred in the first place. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar':

[Arabic]: A fatwa will be given for the absolute impermissibility of marriage in 'non-equal' cases. And Allah knows best. [Urdu]: A fatwa will be given for the absolute impermissibility of marriage in 'non-equal' cases. (T) And Allah Almighty knows best.

Yes, in common parlance, 'non-equal' refers to someone not from one's own community, for example, Sayyid and Sheikh, or Sheikh and Pathan, or Pathan and Mughal. If such a 'non-equal' person is not 'non-equal' in the Sharia sense, it is permissible for an adult woman to marry him without the guardian's permission or even against his will, and the guardian has no right to object. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar':

[Arabic]: The marriage of a free, legally responsible woman is enforced even without the guardian's consent. And Allah knows best. [Urdu]: The marriage of a free, adult, rational woman is enforced even without the guardian's consent. (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 117: Agra Cantonment, Engine Godown, G.I.P. Railway, Babu Muhammad Niaz Khan, Stores Clerk, Wednesday, 3rd Ramadan-ul-Mubarak 1336 AH. To جناب Maulvi

Ahmad Raza Khan Sahab, after Islamic greetings and sentiments of love, may it be known that I am troubling your presence to know what the scholars say regarding this matter: A marriage took place between a relative of mine and a certain woman. The parents of the woman sent the girl (rukhsati) after 5 months. However, in the meantime, a defect became apparent after 3 months, which was kept hidden, that the woman has white leprosy (safaid korh) and vitiligo (bars). And upon inquiring from the woman's parents...

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191 [2] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191

फ़तावा रज़विया खंड 11

[अरबी बॉक्स]: पहलू 'प्रवर्तन' (नफ़ाज़) का अनुमान है, क्योंकि जो निलंबित (मौक़ूफ़) है वह वैध (सहीह) का हिस्सा है, लेकिन उन्होंने 'वैधता' से 'प्रवर्तन' का अर्थ लिया है और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: इसे सही करने के लिए, 'प्रवर्तन' शब्द निहित है क्योंकि अभिभावक (वली) के बिना विवाह निलंबित होता है, जो कि एक वैध विवाह है, लेकिन यहाँ वैधता से तात्पर्य प्रवर्तन है क्योंकि यही सबसे पहले ध्यान में आता है। (त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

(2) शरीयत में 'ग़ैर कुफ़ू' (असमान) वह है जो वंश, धर्म, पेशे या आचरण में इतना कम हो कि उसके साथ महिला का विवाह महिला के अभिभावकों के लिए लज्जा और अपमान का कारण बने। यदि कोई वयस्क महिला अपने आप ऐसे व्यक्ति से विवाह करती है, तो विवाह होगा ही नहीं, चाहे अभिभावक ने मना न किया हो या वह उसकी इच्छा के विरुद्ध न हो। यह विवाह केवल उसी स्थिति में अनुमत होगा जब अभिभावक को विवाह से पूर्व इस 'ग़ैर कुफ़ू' और उक्त स्थिति की जानकारी हो और उसने जानबूझकर और स्पष्ट रूप से वयस्क महिला को उसके साथ विवाह करने की अनुमति दी हो। यदि इनमें से एक भी शर्त कम हो, तो वयस्क महिला द्वारा किया गया वह विवाह पूर्णतः शून्य (बातिल) होगा। अभिभावक को इसे रद्द करने या इसके रद्दीकरण की आवश्यकता ही क्या है, क्योंकि रद्दीकरण तो तब होता है जब विवाह हुआ हो; यह तो सिरे से हुआ ही नहीं। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी]: 'ग़ैर कुफ़ू' के मामलों में विवाह के पूर्णतः अवैध होने का फ़तवा दिया जाएगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। [उर्दू]: 'ग़ैर कुफ़ू' के मामलों में विवाह के पूर्णतः अवैध होने का फ़तवा दिया जाएगा। (त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

हाँ, आम बोलचाल में 'ग़ैर कुफ़ू' उसे कहते हैं जो अपने समुदाय का न हो, उदाहरण के लिए सैय्यद और शेख, या शेख और पठान, या पठान और मुग़ल। यदि ऐसा 'ग़ैर कुफ़ू' शरीयत के अर्थ में 'ग़ैर कुफ़ू' नहीं है, तो एक वयस्क महिला के लिए अभिभावक की अनुमति के बिना, बल्कि अभिभावक की असहमति के बावजूद उससे विवाह करना अनुमत है और अभिभावक को इस पर आपत्ति का कोई अधिकार नहीं है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी]: एक स्वतंत्र, कानूनी रूप से जिम्मेदार महिला का विवाह अभिभावक की सहमति के बिना भी लागू होता है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। [उर्दू]: एक स्वतंत्र, बालिग, बुद्धिमान महिला

का विवाह अभिभावक की सहमति के बिना भी लागू (नाफ़िज़) होता है। (त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 117: आगरा छावनी, इंजन गोदाम, जी.आई.पी. रेलवे, बाबू मुहम्मद नियाज़ ख़ान, स्टोर्स क्लर्क बुधवार, 3 रमज़ान-उल-मुबारक 1336 हिजरी। जनाब मौलवी अहमद रज़ा ख़ान साहब की सेवा में, इस्लामी सलाम और प्रेम के बाद, यह ज्ञात हो कि मैं हुज़ूर को इस मामले में विद्वानों की राय जानने के लिए कष्ट दे रहा हूँ: मेरे एक रिश्तेदार का निकाह एक महिला के साथ हुआ और उस महिला के माता-पिता ने लड़की की विदाई (रुख़्सती) 5 महीने बाद की। लेकिन इस बीच, 3 महीने बाद एक दोष प्रकट हुआ जिसे छिपाकर रखा गया था, कि महिला को सफेद कोढ़ और बर्रस (विटिलिगो) है। और उस महिला के माता-पिता से पूछने पर...

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/191 [2] दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/191

पृष्ठ 281/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

[عربی عبارت]: الوجہ تقدیر النفاذ فان الموقوف من الصحیح غیر انہ اراد بالصحۃ النفاذ واللہ تعالٰی اعلم [اردو ترجمہ]: اس کو درست کرنے کے لیے لفظ "نفاذ" مقدر ہے کیونکہ ولی کے بغیر نکاح موقوف ہوتا ہے جو کہ صحیح نکاح ہے مگر یہاں صحت سے مراد نفاذ ہے کیونکہ یہی متبادر ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

(۲) شرع میں غیر کفو وہ ہے کہ نسب یا مذہب یا پیشے یا چال چلن میں ایسا کم ہو کہ اس کے ساتھ عورت کا نکاح اولیائے زن کے لیے باعث ننگ و عار ہو ، ایسے شخص سے اگر بالغہ بطور خود نکاح کرے گی نکاح ہوگا ہی نہیں اگر چہ نہ ولی نے منع کیا ہو نہ اس کے خلاف مرضی ہو۔ یہ نکاح اس صورت میں جائز ہوسکے گا کہ ولی نے پیش از نکاح اس غیر کفو بمعنی مذکور کی حالت مذکورہ پر مطلع ہو کر دیدہ و دانستہ صراحتاً بالغہ کو اس کے ساتھ نکاح کرنے کی اجازت دے دی ہو ، ان میں سے ایک شرط بھی کم ہو تو بالغہ کا کیا ہوا وہ نکاح باطل محض ہوگا اور ولی کو اس کے فسخ کرنے یا اس کا فسخ چاہنے کی کیا حاجت کہ فسخ تو جب ہو کہ نکاح ہو لیا ہو ، یہ تو سرے سے ہوا ہی نہیں۔ در مختار میں ہے:

[عربی]: یفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلاً واللہ تعالٰی اعلم [اردو]: غیر کفو میں اصلاً نکاح کے ناجائز ہونے کا فتوٰی دیا جائے گا۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

ہاں عوام کے محاورہ میں غیر کفو اسے کہتے ہیں جو اپنا ہم قوم نہ ہو مثلاً سید و شیخ یا شیخ اور پٹھان یا پٹھان اور مغل، ایسا غیر کفو اگر اس شرعی معنی پر غیر کفو نہ ہو تو بالغہ کا بے اذنِ ولی

بلکہ بنا رضی ولی اس سے نکاح کر لینا جائز ہے اور ولی کو اس پر کوئی حق اعتراض نہیں۔ در مختار میں ہے:

[عربی]: نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلا رضی ولی واللہ تعالیٰ اعلم [اردو]: عاقلہ بالغہ حرہ عورت کا نکاح ولی کی رضا کے بغیر بھی نافذ ہوتا ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۱۷: آگرہ چھاؤنی انجن گودام جی ، آئی ، پی ، ریلوے بابو محمد نیاز خاں اسٹورس کلرک روز چہار شنبہ ۳ رمضان المبارک ۱۳۳۶ھ جناب مولوی احمد رضا خاں صاحب کو بعد سلام سنت اسلام و محبت مشام آن کہ معلوم ہو کہ حضور کو میں تکلیف دیتا ہوں کہ اس مسئلہ میں علماء کیا فرماتے ہیں میرے ایک عزیز کے عقد ایک مسماۃ کے ساتھ ہوا اور اس مسماۃ کے والدین نے لڑکی کی رخصت ۵ ماہ کے بعد کی مگر اس درمیان میں ایک نقص مسماۃ کے بعد ۳ ماہ کے ، خفیہ ظاہر ہوا ہے کہ مسماۃ کو سفید کوڑھ و برص کہتے ہیں وہ ہے۔ اور اس مسماۃ کے والدین سے دریافت

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ 2 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

...After revealing it, it is now disclosed that there is some mark on the abdomen. It was not disclosed at the beginning of the marriage. If the woman is not brought to the house after the send-off ceremony (Rukhsati), is she entitled to the dower (Mahr) or not? And can the boy claim his expenses from her parents? That is all.

Answer: The marriage is valid and complete. One of two things is obligatory: either to keep her with kindness or to release her in a good manner. If divorce is given before consummation (Khalwat), half of the mahr will be waived, and half will remain payable. Whatever was spent on the wedding ceremony has no claim for compensation from anyone. However, regarding the jewelry and clothes given as gifts (Chadhawa), if it is not the custom there to make the woman the owner of them, or if it wasn't considered a transfer of ownership (Tamleek), and ownership was not formally transferred, then the husband has the right to take those items back. And Allah Almighty knows best.

Problem 118: From Jabalpur Press Anjuman Muhammad Yusuf, Sunday 19 Shawwal 1334 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say about a person of the Hanafi school of thought who had his marriage performed by a Qazi of the Shafi'i school or a non-conformist (Ghayr Muqallid/Ahle Hadith) according to the Hanafi rules? Is his marriage valid or not? And in case of invalidity, is there a need for the renewal of marriage (Tajdeed-e-Nikah) as per the opinion of the author of Fath-ul-Mubeen? Please explain and be rewarded.

Answer: If someone is truly of the Shafi'i school, then Shafi'is are like our Ahl-us-Sunnah; there is no harm in that, provided he did not perform the marriage in a way that is invalid in the Hanafi school. As for the non-conformists (Ghayr Muqallideen), they are not just those who abandon following a school of thought (Taqlid), but their religion contains many blasphemous beliefs, some details of which are in Al-Kawakibat ash-Shahabiya. Having someone perform the marriage is sometimes done as a custom, like when a Qazi is appointed as a marriage officiant. If it was performed in this way and he performed it correctly according to the Hanafi school, there is no need for renewal of marriage. Another way is to have someone perform the marriage out of respect, considering him venerable and blessed. If performed this way and he was not known to be a non-conformist (as dissimulation/Taqiyya is common among Wahhabis), then also there is no need for renewal of marriage as long as he performed it correctly. However, if knowing him to be a non-conformist,

one considered him venerable and blessed and had him perform the marriage, then not only is renewal of marriage necessary, but renewal of Islam (Tajdeed-e-Islam) is also required. And Allah Almighty knows best.

Problem 119: From Rajputana Koth Mohalla Rampur near Masjid Mominan, Abdus Samad employee of Band Baja, Monday Shawwal al-Muazzam 1334 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say in this matter? Are the non-conformists (Ghayr Muqallid) Shafi'i or not? And a mature woman has been a widow for nine months and also has two children. Without the consent and presence of her parents, by her own consent and desire, without fear or persuasion, she went to the house of a Qazi with Zaid (a Hanafi) accompanied by a few people and got married. No flowers, sweets, or new clothes were taken. Two witnesses, one representative (Wakil), and the Qazi performed the offer and acceptance (Ijab-o-Qabul), the pillars of marriage, completely.

पेज ७३९ में से २८२ खंड ग्यारह फ़तावा रज़विया

...करने पर अब ज़ाहिर किया है कि कुछ पेट पर दाग है। निकाह के शुरू में ज़ाहिर नहीं किया था, अगर औरत को रुख़सत करके घर न लाया जाए तो क्या वह मेहर की हक़दार हो सकती है या नहीं? और क्या लड़का अपना ख़र्च उसके माता-पिता से ले सकता है या नहीं? बस।

उत्तर: निकाह सही और मुकम्मल हो गया, दो बातों में से एक फ़र्ज़ है: या तो भलाई के साथ रखना या अच्छी तरह छोड़ देना। अगर संभोग (ख़लवत) से पहले तलाक़ दी जाएगी तो आधा मेहर माफ़ हो जाएगा, आधा देय होगा। शादी में जो कुछ ख़र्च हुआ, उसका हर्जाना किसी पर नहीं है। हाँ, जो जेवर और कपड़े चढ़ावे में दिए गए हों और औरत को उनका मालिक बनाने का वहाँ रिवाज न हो और न ही इसे मालिकाना हक़ (तमलीक) समझा जाता हो, और न ही मालिकाना हक़ दिया गया हो, तो उन चीज़ों को वापस लेने का शौहर को अधिकार है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ११८: जबलपुर प्रेस अंजुमन मोहम्मद यूसुफ़ से, रविवार १९ शव्वाल १३३४ हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि एक हनफ़ी मज़हब के व्यक्ति ने अपना निकाह शाफ़ई मज़हब के क़ाज़ी या अहले-हदीस (ग़ैर मुक़ल्लिद) से हनफ़ी नियमों के अनुसार पढ़वाया, तो क्या उसका निकाह जायज़ हुआ या नहीं? और नाजायज़ होने की स्थिति में, क्या फ़तह-उल-मुबीन के लेखक के विचार के अनुसार निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) की ज़रूरत है? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: अगर कोई वास्तव में शाफ़ई मज़हब का है, तो शाफ़ई हमारे अहले-सुन्नत की तरह हैं, इसमें तो कोई हर्ज़ ही नहीं बशर्ते कि उसने निकाह ऐसे तरीक़े से न पढ़ाया हो जो हनफ़ी मज़हब में सही नहीं है। और ग़ैर-मुक़ल्लिद सिर्फ़ तक़लीद छोड़ने वाले नहीं हैं बल्कि उनके मज़हब में बहुत से कुफ़्र वाले अक़ीदे शामिल हैं, जिनका कुछ विवरण 'अल-कवाकिबत अश-शहाबिया' में है। निकाह पढ़वाना एक तो रस्म के तौर पर होता है जैसे निकाह पढ़ने वाले क़ाज़ी मुक़र्रर होते हैं, इस तरह पढ़वाया और उसने हनफ़ी मज़हब के तौर पर सही पढ़ाया तो निकाह के नवीनीकरण की ज़रूरत नहीं है। और एक निकाह पढ़वाना सम्मान के तौर पर होता है कि उसे आदरणीय और बरकत वाला समझकर उससे पढ़वाते हैं, अगर इस तरह पढ़वाया और उसे ग़ैर-मुक़ल्लिद नहीं जानता था (क्योंकि वहाबियों में तक़य्या बहुत है), तो इस तरह भी निकाह के नवीनीकरण की ज़रूरत नहीं है बशर्ते कि उसने सही तरीक़े से पढ़ाया हो। और अगर ग़ैर-मुक़ल्लिद जानकर उसे आदरणीय और बरकत वाला समझा

और उससे निकाह पढ़वाया तो न केवल निकाह का नवीनीकरण बल्कि इस्लाम के नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) की भी ज़रूरत है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ११९: राजपूताना कोठ मोहल्ला रामपुर, मस्जिद मोमिनां के पास से, अब्दुल समद कर्मचारी बैंड बाजा, सोमवार शव्वाल अल-मुअज़्ज़म १३३४ हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ग़ैर-मुक़ल्लिद शाफ़ई हैं या नहीं? और एक बालिग़ महिला नौ महीने से विधवा है और उसके दो बच्चे भी हैं। उसने अपने माता-पिता की सहमति और मौजूदगी के बिना, अपनी मर्ज़ी और रग़बत से, बिना किसी डर या दबाव के, ज़ैद हनफ़ी के साथ ख़ुद क़ाज़ी के घर जाकर कुछ लोगों की मौजूदगी में निकाह पढ़ लिया। फूल, मिठाई और नए कपड़े आदि नहीं ले जाए गए। दो गवाहों, एक वकील और क़ाज़ी ने निकाह के अरकान ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) पूरी तरह से अदा कर दिए...

पेज ७३९ में से २८२

کرنے پر اب ظاہر کیا ہے کہ کچھ شکم کا داغ ہے۔ اول نکاح کے ظاہر نہ کیا، اگر مسماۃ کو رخصت کرکے نہ لایا جائے اپنے گھر پر تو وہ مہر کی مستحق ہو سکتی ہے یا نہیں؟ اور لڑکا اپنا خرچہ اس کے والدین سے لے سکتا ہے یا نہیں؟ فقط

الجواب: نکاح صحیح و تام ہو گیا، دو باتوں سے ایک فرض ہے یا بھلائی کے ساتھ رکھنا یا اچھی طرح چھوڑ دینا، اگر قبل خلوت طلاق دی جائے گی آدھا مہر ساقط ہو جائے گا نصف واجب الادا ہو گا، شادی میں جو اٹھا دیا، خرچ کر دیا، اس کا تاوان کسی پر نہیں۔ ہاں جو زیور اور کپڑے چڑھاوے میں دئے ہوں اور عورت کو ان کا مالک کر دینے کی وہاں رسم نہ ہو یہ تملیک نہ سمجھی جاتی ہو نہ تملیک کی ہو تو ان اشیاء کے واپس لینے کا شوہر کو اختیار ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۱۸: از جبلپور پریس انجمن محمد یوسف یکشنبہ ۱۹ شوال ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین کہ ایک شخص حنفی المذہب نے اپنا نکاح قاضی شافعی المذہب یا اہلحدیث غیر مقلد سے بموجب قاعدہ احناف پڑھوایا، پس اس کا نکاح جائز ہوا یا نہیں؟ اور بصورتِ ناجائز ہونے نکاح حسب خیال مؤلف فتح المبین تجدید نکاح کی ضرورت ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر کوئی واقعی شافعی المذہب ہے تو شافعیہ مثل ہمارے اہلسنت ہیں اس میں تو کوئی حرج ہی نہیں جبکہ اس نے نکاح ایسے طور پر نہ پڑھایا ہو کہ وہ مذہب حنفی میں صحیح نہیں اور غیر مقلدین صرف تارک تقلید نہیں بلکہ ان کا مذہب بہت عقائد کفریہ پر مشتمل ہے جس کی قدرے تفصیل الکواکبۃ الشہابیۃ میں ہے۔ نکاح پڑھوانا ایک تو بطور رسم ہوتا ہے جیسے نکاح خواں قاضی

مقرر ہوتے ہیں یوں پڑھوایا اور اس نے حنفی مذہب کے طور پر صحیح پڑھایا تو تجدید نکاح کی حاجت نہیں۔ اور ایک نکاح پڑھوانا بطور تعظیم ہوتا ہے کہ اس کو معظم اور متبرک سمجھ کر اس سے پڑھواتے ہیں، اگر یوں پڑھوایا اور اس کو غیر مقلد نہ جانتا تھا کہ وہابیہ میں تقیہ بکثرت ہے تو یوں بھی تجدید نکاح کی ضرورت نہیں جبکہ اس نے صحیح طور پر پڑھایا ہو، اور اگر غیر مقلد جان کر اسے معظم و متبرک سمجھا اور اس سے نکاح پڑھوایا تو نہ فقط تجدید نکاح بلکہ تجدیدِ اسلام کی بھی حاجت ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۹: از راجپوتانہ کوٹھ محلہ رامپور متصل مسجد مومناں عبد الصمد ملازم بینڈ باجہ دو شنبہ شوال المعظم ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں غیر مقلد شافعی ہیں یا نہیں؟ اور بندہ بالغہ نوماہ سے بیوہ ہے اور دو بچے بھی رکھتی ہے اپنے والدین کی بلا رضا مندی و عدم موجودگی کے برضا مندی ورغبت خود بلا خوف و ترغیب کے زید حنفی سے خود قاضی کے مکان پر جا کر بمراہی چند آدمی نکاح پڑھ لیا، پھول و شیرنی ونئے کپڑے وغیرہ پہنے نہیں گئے، دو گواہوں اور ایک وکیل اور قاضی نے ایجاب و قبول ارکانِ نکاح پورے طور پر ادا کر دئے

Fatawa Rizvia Volume 11

Is this marriage invalid? After the marriage, Zaid and Hindah cohabited like husband and wife, and Hindah stayed with Zaid for only three days. Now Hindah denies the marriage and, for her protection, claims to be a non-follower (Ghair Muqallid). And in the Shafi'i school of thought, marriage without a guardian is invalid. Contrary to this, the Qazi, two witnesses, and the Hanafi lawyer state that the marriage took place. The Qazi states under oath that before the marriage, upon inquiry, Hindah had said she is from the Ahl-e-Sunnat, i.e., Hanafi. Being convinced of this, the Qazi performed the marriage ceremony. Is Hindah's statement correct for the invalidity of the marriage? State and be rewarded.

Answer: A non-follower (Ghair Muqallid) is not a Shafi'i, but rather from the people of innovation and desires and the people of fire. It is in Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar:

Whoever is outside of these four [schools of thought] in this age, then he is from the people of innovation and fire[1]. | One who is outside these four schools of thought in this era is an innovator and hellish. (T)

If the one Hindah married is her equal (kufu), meaning he is not so inferior in religion, lineage, behavior, or profession that Hindah's marriage to him would cause shame and disgrace to her guardians, then undoubtedly the marriage has become valid and binding. It cannot be revoked now by Hindah's denial, even if Hindah was actually a Shafi'ite. It is in Khulasa and Durr al-Mukhtar:

When the Shafi'i [view] is asked about such and such, it is mandatory to say that Abu Hanifa said such and such[2]. Allah knows best. | When a Hanafi is asked what Imam Shafi'i's (may Allah have mercy on him) saying is on this issue, he should state the saying of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). And Allah knows best.

Issue 120: From District Pratapgarh, Manikpur, Zuhoor Ham. Wednesday, 22 Shawwal 1334 AH. Zaid is a purely poor man, possessing no property etc. He makes a living only through medical practice etc. He wants to marry off his daughter, but the condition is that the dowry (mahr) will not be less than 1.25 lakh rupees. Amr, to whom the girl is betrothed, is even poorer than him. Due to poverty, Amr does not accept such a large debt and says, "I am just a poor man; I haven't even seen 1.25 lakh rupees. I will never accept such a large dowry." In short, the matter to be inquired is that although excess is not recommended, is it necessary to have some consideration for status or not? Has the Lawgiver (peace and blessings be upon him)

given some consideration to the status of the husband? In such a situation, where it is far beyond Amr's status, how will the marriage be with a dowry of 1.25 lakh? And if it takes place, then what has come in the noble Hadith—that if there was no intention to pay the dowry, it would be adultery and the children illegitimate—will it be contrary to that or not? And will the marriage be valid or not? That is all.

[1] Hashiya Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Dhaba'ih, Dar al-Ma'rifah Beirut, 153/4 [2] Al-Durr al-Mukhtar, Bab al-'Iddah, Matba' Mujtabai Delhi, 256/1

फतावा रज़विया जिल्द 11

क्या यह निकाह नाजायज़ है? निकाह के बाद ज़ैद और हिंदा ने पति-पत्नी की तरह सहवास किया और हिंदा ज़ैद के पास केवल तीन दिन रही। अब हिंदा निकाह से इनकार कर रही है और अपने बचाव के लिए कहती है कि वह गैर-मुक़ल्लिद है। और शाफ़ई मज़हब में वली के बिना निकाह नाजायज़ है। इसके विपरीत क़ाज़ी, दो गवाह और हनफ़ी वकील निकाह होने का बयान करते हैं। क़ाज़ी हलफ़िया बयान करते हैं कि निकाह से पहले पूछने पर हिंदा ने कहा था कि मैं सुन्नत जमाअत यानी हनफ़ी हूँ, इसका यकीन होने पर क़ाज़ी ने निकाह पढ़ाया। क्या हिंदा का कहना निकाह की नाजायज़ी के लिए सही है? बयान करें, पुण्य पायें।

उत्तर: गैर-मुक़ल्लिद शाफ़ई नहीं बल्कि अहले बिदअत और हवा (इच्छाओं) वाले और अहले नार (नरक वाले) हैं। तहतावी अलल दुर्रुल मुख़्तार में है:

"फ़मन काना खारिजन मिन हाउलाइल अरबति फ़ी हाज़िहिज़ ज़मान फ़हुवा मिन अहलिब बिदअति वन नार[1]" | जो इन चारों मज़हबों से बाहर है, इस दौर में तो वह बिदअती और जहन्नमी है (त)

हिंदा ने जिससे निकाह किया अगर वह हिंदा का कुफ़ू है, यानी मज़हब, नसब, चाल-चलन, पेशा किसी बात में ऐसा कम नहीं कि उससे हिंदा का निकाह हिंदा के वली (अभिभावकों) के लिए नंग-ओ-आर (अपमान और शर्म) का कारण हो, तो बेशक निकाह सही और लाज़िम हो गया। हिंदा के इनकार से अब मिट नहीं सकता, भले ही हिंदा वास्तव में शाफ़ई होती। खुलासा और दुर्रुल मुख़्तार में है:

"इज़ा सुइला मा क़ौलुश शाफ़ई फ़ी कज़ा वाजिबन अन यक़ूला क़ाला अबू हनीफ़ा कज़ा[2]" अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | जब हनफ़ी से सवाल किया जाए कि इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह का इस मसले में कौल क्या है, तो उसको चाहिए कि वह इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कौल बताए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 120: ज़िला प्रतापगढ़, मानिकपुर, ज़ुहूर हाम। बुधवार, 22 शव्वाल 1334 हिजरी। ज़ैद एक बिल्कुल गरीब आदमी है, उसके पास कोई संपत्ति आदि नहीं है, केवल हकीमी आदि के पेशे से काम चलता है। वह अपनी बेटी की शादी करना चाहता है, लेकिन शर्त यह है कि मेहर सवा लाख रुपये से कम नहीं होगा। अम्र, जिससे लड़की की सगाई हुई है, वह उससे भी अधिक गरीब है। गरीबी के कारण अम्र इतनी बड़ी देनदारी स्वीकार नहीं करता और कहता है कि मैं केवल एक गरीब आदमी हूँ,

मैंने सवा लाख रुपये देखे भी नहीं हैं। मैं इतने बड़े मेहर को कभी स्वीकार नहीं करूँगा। संक्षेप में, पूछने योग्य बात यह है कि हालांकि अधिकता अच्छी नहीं है, लेकिन स्थिति (status) का कुछ ध्यान रखना ज़रूरी है या नहीं? शरीयत देने वाले (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पति की स्थिति का कुछ ध्यान रखा है? ऐसी स्थिति में, जहाँ अम्र की स्थिति से कहीं ज़्यादा है, सवा लाख मेहर पर निकाह कैसा होगा? और अगर हो गया, तो हदीस शरीफ में जो आया है कि अगर मेहर अदा करने की नीयत न हो तो वह ज़िना (व्यभिचार) होगा और बच्चे हरामी—क्या यह उसके विपरीत होगा या नहीं? और क्या निकाह जायज़ होगा या नहीं? बस।

[1] हाशिया तहतावी अलल दुर्रुल मुख़्तार, किताबुज़ ज़बाइह, दारुल माअरिफ़ा बेरुत, 153/4 [2] दुर्रुल मुख़्तार, बाबुल् इद्दत, मतबअ मुजतबाई दिल्ली, 256/1

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

کیا یہ نکاح ناجائز ہے؟ اور بعد نکاح زید ہندہ نے مثل زن و شوہر کے ہمبستری کی اور صرف تین دن ہندہ زید کے پاس رہی اور اب ہندہ نکاح سے منکر ہے اور اپنے بچاوے کے لیے کہتی ہے کہ غیر مقلد ہوں۔ اور شافعی المذہب میں بغیر ولی کے نکاح ناجائز ہے اس کے برخلاف قاضی و دو گواہ و وکیل حنفیہ نکاح ہونا بیان کرتے ہیں، قاضی حلف سے یہ بیان کرتے ہیں کہ ہندہ نے نکاح کے پیشتر اس کے دریافت کرنے پر کہا تھا کہ میں سنت جماعت یعنی حنفی ہوں، اس کا یقین ہونے پر قاضی نے نکاح پڑھایا۔ کیا ہندہ کا کہنا نکاح کے ناجوازی کے لیے صحیح ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: غیر مقلد شافعی نہیں بلکہ اہل بدعت و اہوا واہل نار ہیں، طحطاوی علی الدر المختار میں ہے:

فمن کان خارجاً من ھؤلاء الأربعة فی ھذة الزمان فھو من اہل البدعة والنار[1]۔ | جو ان چاروں مذاہب سے خارج ہے اس دور میں تو وہ بدعتی اور جہنمی ہے (ت)

ہندہ نے جس سے نکاح کیا اگر وہ ہندہ کا کفو ہے یعنی مذہب نسب چال چلن پیشہ کسی بات میں ایسا کم نہیں کہ اس سے ہندہ کا نکاح اولیائے ہندہ کے لیے باعث ننگ و عار ہو تو بیشک نکاح صحیح ولازم ہو گیا، ہندہ کے انکار سے اب مٹ نہیں سکتا اگرچہ ہندہ واقع میں شافعیہ ہوتی، خلاصہ ودر مختار میں ہے:

اذا سئل ماقول الشافعی فی کذا واجب ان یقول قال ابو حنیفہ کذا[2]۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ | جب حنفی سے سوال کیا جائے کہ امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ کا اس مسئلہ میں قول کیا ہے تو اسکو چاہئے کہ وہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول بتائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۰: نوضلع پرتاب گڑھ مانک پور ظہور حام چہار شنبہ ۲۲ شوال ۱۳۳۴ھ زید محض غریب آدمی ہے جائداد وغیرہ کچھ نہیں رکھتا صرف پیشہ طبابت وغیرہ سے کام چلتا ہے اپنی لڑکی کی شادی کرنا چاہتا ہے لیکن شرط یہ ہے کہ مہر سوا لاکھ روپے سے کم نہ ہو گا۔ عمرو جس کو لڑکی منسوب ہے وہ اس سے بھی زیادہ غریب ہے غربت کی وجہ سے عمرو اس قدر دین منظور نہیں کرتا اور کہتا ہے کہ میں محض غریب آدمی ہوں سوا لاکھ روپیہ میں نے دیکھا بھی نہیں ہے۔ اس قدر مہر میں ہر گز قبول نہ کروں گا، غرضیکہ دریافت طلب یہ امر ہے کہ زیادتی اگرچہ غیر مستحسن ہے لیکن حیثیت کا کچھ لحاظ رکھنا ضروری ہے یا نہیں؟ شارع علیہ الصلوۃ والسلام نے حیثیت زوج کا کچھ لحاظ کیا ہے ایسی صورت میں کہ عمرو کی حیثیت سے کہیں زیادہ ہے نکاح سوا لاکھ مہر پر کیسا ہو گا اور اگر ہو گیا تو حدیث شریف میں جو آیا ہے کہ اگر مہر ادا کرنے کی نیت نہ ہوئی تو زنا ہو گا اور لڑکے حرامی۔ اس کے خلاف ہو گا یا نہیں؟ اور نکاح جائز ہو گا یا نہیں؟ فقط

[1] حاشیہ طحطاوی علی الدرالمختار کتاب الذبائح دار المعرفۃ بیروت ۱۵۳/۴ [2] در مختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۶/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

The Answer: It is appropriate to consider one's financial status, but marriage is valid in all circumstances, even if a person in dire poverty pledges a dowry equal to all the treasures of the world. Dowry (Mahr) is not the essence of marriage; therefore, a marriage is valid even if mahr is explicitly negated; in that case, the 'mahr-ul-mithl' (customary dowry) becomes mandatory. When a specific amount is fixed, even if it is a large amount, it becomes a necessary debt. Even if a person is the emperor of seven realms, their status is limited, but the capacity of responsibility is not. If one is completely destitute, the Hadith says: "Wealth comes and goes like morning and evening." Those who could not even afford bread became masters of kingdoms before people's eyes. However, it is essential that both parties consider it a debt and the husband intends to pay it. A companion (Sahabi) of the Prophet (may Allah be pleased with him) was extremely poor; he got married, a large dowry was requested, he accepted and said: "My reliance is upon Allah and His Messenger," meaning they will provide. And so it happened. The Great Quran itself states:

Verse	Translation
"If only they had been satisfied with what Allah and His Messenger gave them and said, 'Sufficient for us is Allah; Allah will give us of His bounty, and [so will] His Messenger; indeed, we are toward Allah desirous [of His favor].'" (1)	"And how good it would have been if they were pleased with what Allah and His Messenger gave them, and said, 'Allah is sufficient for us; soon Allah will give us from His bounty and [so will] His Messenger; indeed, we turn towards Allah with devotion.'"

In such a situation, there is no blame; rather, if the marriage is performed with sincere intention and true need, then according to the true promise of the Hadith, Allah Almighty is the guarantor of this debt. Once, during a sermon, the Leader of the Believers, Umar Farooq (may Allah be pleased with him), strongly disapproved of 'mughalata fil-muhur', i.e., fixing a dowry beyond one's status. A lady from the audience stood up and recited the noble verse: "...you have given one of them a great amount [of gold]..." (2) (even if you have given them heaps of wealth). In this verse, setting a heap of gold as a woman's dowry was shown to be permissible. Immediately, the Leader of the Believers withdrew his disapproval and said in humility:

Arabic Statement	Translation
"O Allah! Everyone is more knowledgeable in jurisprudence than Umar, even the secluded women." (3)	"O Allah! Everyone is more of a jurist than Umar, even the veiled women." (t)

Yes, it is impermissible to fix a dowry without the intention of paying it, even if it is much less than one's status. In Hadith, this is...

---

1. Al-Quran 9/59
2. Al-Quran 4/20
3. Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter: There is no time limit for dowry, etc., Dar Sader, Beirut, 7/233.

फतावा रज़विया जिल्द 11

जवाब: हैसियत का ध्यान रखना उचित है लेकिन निकाह हर तरह से हो जाएगा चाहे रात की रोटी के लिए मोहताज व्यक्ति पर दुनिया के तमाम खजानों के बराबर महर बांधा जाए। निकाह में महर असल (बुनियाद) नहीं है, इसलिए महर की मनाही के साथ भी निकाह सही है, महर-ए-मिस्ल (प्रचलित महर) लाज़िम होगा और जब कोई राशि तय कर दी जाए चाहे वह कितनी ही बड़ी हो, तो वह ज़िम्मे पर ज़रूरी हो जाएगी। मनुष्य चाहे सातों लोकों का राजा हो, उसकी हैसियत सीमित है लेकिन ज़िम्मेदारी की गुंजाइश सीमित नहीं है। अगर कोई बिल्कुल मोहताज हो, तो हदीस में फ़रमाया गया: "धन सुबह-शाम आने-जाने वाली चीज़ है।" वे जिन्हें रोटी नसीब नहीं थी, देखते ही देखते बड़े राज्यों के मालिक बन गए। अलबत्ता, यह ज़रूरी है कि दोनों पक्ष इसे क़र्ज़ समझें और शौहर इसे अदा करने की नीयत रखे। एक सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिल्कुल निर्धन थे, उन्होंने निकाह किया, बड़े महर की मांग की गई तो उन्होंने स्वीकार कर लिया और कहा: "अल्लाह और उसके रसूल पर भरोसा है" यानी वे अता फ़रमा देंगे। और ऐसा ही हुआ। खुद क़ुरआन अज़ीम फ़रमाता है:

आयत	**अनुवाद**
"व लौ अन्नहुम रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहु व क़ालू हसबुनल्लाहु सय्युअ्तीनुल्लाहु मिन फ़ज़्लिही व रसूलुहु इन्ना इलल्लाहि राघिबून" (1)	"और क्या ही अच्छा होता अगर वे अल्लाह और उसके रसूल के दिए पर राज़ी होते, और कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें अल्लाह और उसका रसूल अपने फ़ज़्ल से देंगे, बेशक हम अल्लाह ही की तरफ़ रुजु करने वाले हैं।"

ऐसी स्थिति में कोई दोष भी नहीं है, बल्कि यदि निकाह नेक नीयत और सच्ची ज़रूरत के साथ किया गया है, तो हदीस के सच्चे वादे के अनुसार अल्लाह अज़-व-जल्ल इस ऋण का ज़ामिन (गारंटर) है। अमीर-उल-मोमिनीन उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक बार खुतबे में 'मुग़ालता फ़िल-मुहूर' यानी हैसियत से ज़्यादा महर बांधने पर कड़ी मनाही फ़रमाई। हाज़िरीन में से एक महिला उठीं और आयत-ए-करीमा "अतैतुम एहदाहुन्ना क़िनतारा" (2) (तुम उन औरतों को ढेरों माल देते हो) पढ़ी, जिसमें महिला के महर में सोने का ढेर मुक़र्रर करना जायज़ बताया गया था। तुरंत अमीर-उल-मोमिनीन ने अपनी मनाही वापस ले ली और निहायत आज़िज़ी से फ़रमाया:

अरबी कथन	अनुवाद
"अल्लाहुम्मा कुल्लु अहदिन अफ़क़हु मिन उमरा हत्तल मुकद्दराती फ़िल मुहाल" (3)	"ऐ अल्लाह! उमर से हर कोई ज़्यादा फ़क़ीह (ज्ञानी) है, यहाँ तक कि पर्दे वाली औरतें भी।" (त)

हाँ, यह नाजायज़ है कि महर बांधा जाए और अदा करने की नीयत न हो, चाहे वह उसकी हैसियत से कितना ही कम क्यों न हो। हदीस में इसे...

---

1. अल-क़ुरआन 9/59
2. अल-क़ुरआन 4/20
3. सुनन अल-कुबरा लिल-बैहक़ी, अध्याय: सदाक़ (महर) के लिए कोई समय निर्धारित नहीं है आदि, दार सादिर बेरूत 7/233।

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

الجواب: حیثیت کا لحاظ رکھنا مناسب ہے مگر نکاح ہر طرح ہو جائے گا اگرچہ نان شبینہ کے محتاج پر تمام خزائن دنیا کے برابر مہر باندھا جائے۔ مہر نکاح میں اصل نہیں و لہٰذا نفی مہر کے ساتھ بھی نکاح صحیح ہے مہر مثل لازم ہوگا اور جب رقم معین کردی اگرچہ کسی قدر کثیر تو وہ ضرور ذمہ پر لازم ہو گی انسان اگرچہ بادشاہ ہفت اقلیم ہو اس کی حیثیت محدود ہے ذمہ کی وسعت محدود نہیں اگر محتاج محض ہو، حدیث میں فرمایا: المال غاد ورائح (مال صبح و شام آنے جانے والی چیز ہے ت) وہ کہ جنہیں روٹی نصیب نہ تھی آنکھوں دیکھتے والی ملک ہو گئے ، البتہ یہ ضرور ہے کہ طرفین اسے دین سمجھیں اور شوہر نیت ادا رکھے ، ایک صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ محض مفلس تھے ، نکاح کیا، مہر کثیر کی درخواست کی گئی قبول فرمالی اور فرمایا: علی اللہ وعلی رسولہ المعال اللہ اور اس کے رسول پر بھروسہ ہے یعنی وہ عطا فرما دیں گے۔ چنانچہ ایسا ہی ہوا۔ خود قرآن عظیم فرماتا ہے:

آیت	ترجمہ
وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ (1)	اور کیا اچھا ہوتا اگر وہ راضی ہوتے اللہ اور رسول کے دئے پر، اور کہتے ہمیں کافی ہے اب ہمیں دیتے ہیں اللہ اور رسول اپنے فضل سے، بیشک ہم اللہ ہی کی طرف روئے نیاز لاتے ہیں۔

ایسی حالت میں کوئی الزام بھی نہیں بلکہ نکاح نیت صحیحہ اور حاجت صادقہ کے ساتھ کیا گیا ہے تو حسب وعدہ صادقہ حدیث صحیح اللہ عز وجل اس دین کا ضامن ہے۔ امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک بار خطبہ میں مغالاۃ فی المہور یعنی حیثیت سے زیادہ مہر باندھنے پر

انکار شدید فرمایا، حاضرین میں سے ایک بی بی اٹھیں آیہ کریمہ "اٰتَیْتُمْ اِحْدٰھُنَّ قِنْطَارًا" (2) (تم ان عورتوں کو ڈھیر مال دیتے ہو۔ ت) تلاوت کی جس میں سونے کا ڈھیر عورت کے مہر میں مقرر کرنا جائز فرمایا گیا فوراً امیر المومنین نے انکار سے رجوع فرمائی اور بحال تواضع فرمایا:

عربی قول	ترجمہ
اللھم کل احد افقہ من عمر حتی المخدرات فی المحال (3)	اے اللہ! عمر سے ہر ایک زیادہ فقیہ ہے حتی کہ پردہ دار عورتیں بھی۔ (ت)

ہاں یہ ناجائز ہے کہ مہر باندھے اور ادا کی نیت نہ ہو اگرچہ اس کی حیثیت سے کتنا ہی کم ہو ، اس کو حدیث میں...

---

1. القرآن 59/9
2. القرآن 20/4
3. سنن الکبری للبیھقی باب لا وقت فی الصداق الخ دار صادر بیروت 233/7

Fatawa Razawiya, Volume 11

He said that they will be raised as adulterers on the Day of Resurrection. This is also not mentioned in this Hadith that they are legally adulterers and their children are illegitimate. And Allah Almighty knows best.

Issue 121: From Bareilly, Muhalla Zakhira, Wednesday, 22 Shawwal 1334 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: Zaid and Amr are real brothers. Zaid's son accidentally took the breast of Amr's wife in his mouth while she was sleeping. She was also four to five months pregnant with her first child. Amr's wife states: "When I woke up, I saw the boy holding my breast in his mouth and moving his mouth as if suckling. I do not know if I had milk at that time or not, nor did I feel any effect of milk. I immediately separated the boy from my breast." This incident happened about 17-18 years ago. In this case, according to Sharia, is it permissible for Zaid's son to marry any of Amr's daughters? Also, is this short duration of pregnancy sufficient for a pregnant woman to produce milk? At that time, Amr's wife was fourteen years old and Zaid's son was one year old. Please explain and be rewarded.

The Answer: Unless it is proven and known that even a drop of milk has entered the stomach, the prohibition (of marriage due to fosterage) will not be established. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic Text	**Urdu Translation**
It is established by the knowledge of its arrival into the stomach from the mouth or the nose and nothing else. So, if [the infant] takes the nipple but it is not known whether milk entered the throat or not, it is not prohibited because there is doubt in the impediment. [From] Al-Wajiyya.[1]	It is proven from this that there must be knowledge of the milk reaching the stomach through the throat or nose; without it, it is not proven. If a child puts the nipple in their mouth and it is not certain whether milk went down the throat or not, prohibition will not be established because there is doubt about the factor preventing marriage. [From] Al-Wajiyya. (T)

There is no fixed period for the arrival of milk; it depends on the strength of the woman's temperament and the abundance of blood. Sometimes it doesn't even arrive after childbirth, and sometimes it arrives in a virgin. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
Suckling (Ar-Rada') is the sucking from the breast of a human female, even if she is a virgin.[2]	Sucking the breast of a woman, whether she is a virgin or not, is called Rada' (suckling/ fosterage). (T)

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Rada', Matba' Mujtabai Delhi, 1/212. [2] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Rada', Matba' Mujtabai Delhi, 1/212.

फतावा रज़विया, खंड 11

उन्होंने फरमाया कि वे कयामत के दिन व्यभिचारी और व्यभिचारिणी के रूप में उठाए जाएंगे, यह इस हदीस में भी नहीं है कि वे शरिया के अनुसार व्यभिचारी हैं और उनकी संतान नाजायज है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 121: बरेली, मोहल्ला ज़खीरा से, बुधवार 22 शव्वाल 1334 हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले पर क्या कहते हैं: जैद और अम्र सगे भाई हैं। जैद के बेटे ने इत्तेफाक से अम्र की पत्नी का स्तन अपने मुंह में ले लिया जब वह सो रही थी। वह अपने पहले बच्चे के साथ चार-पांच महीने की गर्भवती भी थी। अम्र की पत्नी का बयान है: "जब मेरी आँख खुली तो मैंने लड़के को देखा कि वह मेरा स्तन अपने मुँह में लिए हुए है और अपना मुँह इस तरह चला रहा है जैसे बच्चे दूध पीते हैं। मुझे नहीं पता कि उस समय मुझमें दूध था या नहीं, और न ही मुझे दूध का कोई प्रभाव महसूस हुआ। मैंने तुरंत लड़के को अपने स्तन से अलग कर दिया।" यह घटना करीब 17-18 साल पहले हुई थी। इस स्थिति में, शरीयत के अनुसार, क्या जैद के बेटे का अम्र की किसी भी बेटी के साथ निकाह जायज़ है? और यह भी कि क्या गर्भावस्था की यह कम अवधि एक गर्भवती महिला के लिए दूध आने के लिए पर्याप्त है? उस समय अम्र की पत्नी चौदह साल की थी और जैद के बेटे की उम्र एक साल थी। बयान करें और सवाब पायें।

उत्तर: जब तक दूध की एक भी बूंद का पेट में जाना ज्ञात और प्रमाणित न हो, तब तक (दुग्धपान के कारण विवाह की) मनाही साबित नहीं होगी। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी पाठ	**हिंदी अनुवाद**
यह पेट में मुंह या नाक से इसके पहुँचने के ज्ञान से सिद्ध होता है, इसके अलावा और कुछ नहीं। यदि [शिशु] निप्पल को पकड़ता है लेकिन यह ज्ञात नहीं है कि दूध गले में गया या नहीं, तो यह वर्जित नहीं है क्योंकि बाधा में संदेह है। [अल-वाजीया से][1]	इससे साबित हुआ कि गले या नाक के माध्यम से पेट में दूध पहुँचने का ज्ञान होना चाहिए; इसके बिना यह साबित नहीं होता। यदि बच्चे ने स्तन का सिरा मुँह में लिया और यह निश्चित नहीं हो सका कि दूध गले से नीचे उतरा या नहीं, तो हुरमत (निकाह की मनाही) साबित नहीं होगी क्योंकि निकाह से रोकने वाले कारक में संदेह पाया गया। [अल-वाजीया से] (त)

दूध आने के लिए कोई निश्चित समय नहीं है; यह महिला के स्वभाव की शक्ति और रक्त की प्रचुरता पर निर्भर करता है। कभी-कभी यह प्रसव के बाद भी नहीं आता है, और कभी-कभी कुंवारी लड़की में भी आ जाता है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद
रज़ा (दुग्धपान) एक मानव महिला के स्तन से चूसना है, भले ही वह कुंवारी हो।[2]	महिला चाहे कुंवारी हो या नहीं, उसके स्तन को चूसना रज़ाअत (दुग्धपान) कहलाता है। (त)

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबू रज़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/212. [2] दुर्रे मुख्तार, बाबू रज़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/212.

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

فرمایا ہے کہ وہ حشر میں زانی وزانیہ اٹھائے جائیں گے، یہ اس حدیث میں بھی نہیں کہ وہ شرعاً زانی زانیہ ہیں اور اولاد حرامی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۱: از بریلی محلہ ذخیرہ چہار شنبہ ۲۲ شوال ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید وعمر و آپس میں حقیقی بھائی ہیں زید کے لڑکے نے زوجہ عمر و کی چھاتی اتفاقیہ درآنحالیکہ وہ سو رہی تھی اور چار پانچ ماہ کی نو حاملہ بھی تھی یعنی پہلا حمل تھا اپنے منہ میں لے لی، زوجہ عمر و کا بیان ہے کہ جس وقت میری آنکھ کھلی تو میں نے لڑکے کو دیکھا کہ میری چھاتی اپنے منہ میں لئے ہوئے اس طرح منہ چلا رہا ہے جیسے بچے دودھ پیتے ہیں مجھ کو نہیں معلوم کہ میرے اس وقت دودھ تھا یا نہیں۔ یا مجھ کو کوئی اثر دودھ کا معلوم ہوا یا نہیں میں نے لڑکے کو فوراً اپنی چھاتی سے علیحدہ کر دیا اس واقعہ کو عرصہ قریباً سترہ اٹھارہ سال کا ہوا اس صورت میں از روئے شرع زید کے لڑکے کا عمر و کی کسی لڑکی کے ساتھ نکاح درست ہے یا نہیں؟ اور نیز یہ کہ یہ مدت قلیل حمل کی عورت حاملہ کے اتر آنے دودھ کی ہے یا نہیں؟ زوجہ عمرو کی عمر اس وقت چودہ سال اور زید کے لڑکے کی عمر ایک سال کی تھی۔ بینوا توجروا

الجواب: جب تک دودھ کا کوئی قطرہ جوف میں جانا معلوم وثابت نہ ہو حرمت ثابت نہ ہوگی، در مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
يثبت به ان علم وصوله بجوفه من فمه او انفه لا غير فلو التقم الحلمة ولم يدر دخل اللبن في حلقه ام لا لم يحرم لان في المانع شكا ولواجية۔[1]	اس سے ثابت ہوا کہ دودھ کا حلق یا ناک کے ذریعہ پیٹ میں پہنچنے کا علم ہو، اس کے بغیر نہیں، اور اگر بچہ نے پستان کا سر منہ میں ڈالا اور یہ معلوم نہ ہوسکا کہ بچہ کے حلق سے دودھ اترا یا نہیں تو حرمت ثابت نہ ہوگی کیونکہ نکاح سے مانع میں شک پایا گیا، ولوا لجییہ (ت)

دودھ اتر آنے کے لیے کوئی مدت مقرر نہیں، عورت کے مزاج کی قوت اور خون کی کثرت پر ہے۔ کبھی بعد ولادت بھی نہیں اترتا اور کبھی کنواری کے اتر آتا ہے، در مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الرضاع المص من ثدی آدمیة ولو عورت خواہ باکرہ ہو، کے پستان کو چوسنا رضاع کہلاتا ہے۔ بکرا[2]۔	(ت)

[1] در مختار باب الرضاع مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۲ [2] در مختار باب الرضاع مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۲

Fatawa Razawiyyah Volume 11

This matter concerns the lifelong lawfulness (of the marriage) and whether the offspring will be legitimate or illegitimate. It is obligatory upon the woman to disclose the truth as it is and not to conceal it. And Allah, the Almighty, knows best.

Problem 122 to 127: Submitted by Muhammad Ishaq Sahib at the residence of Qadir Bakhsh Daf'adar, Mahalla Shagird Pesha, State of Jaora, Malwa region. Wednesday, 29th Shawwal 1334 AH.

Honored and respected Maulana Mufti Ahmad Raza Khan Sahib (may his glory endure), Peace be upon you and the mercy and blessings of Allah. I request the following matters of your excellence, hoping you will excuse the trouble. The marriage of Ms. Hindah was solemnized at the age of eleven with the permission of her stepfather to Zaid. After the marriage, Hindah stayed at Zaid's house for a few days and then went to her parents' house. From there, without Zaid's permission, Hindah moved with her parents and settled forty 'kos' (about 80 miles) away. It has been approximately a year since Hindah has been living at her parents' house. Zaid has now come and filed a claim for the departure of his wife (rukhsati). Since Hindah is now in her thirteenth year and claims to be an adult (baligha), and she was a minor (na-baligha) at the time of marriage, she wishes to annul the marriage. She says, "I was a minor, and my marriage was performed with the permission of my stepfather; I will have it annulled." What does the noble Shariah command in such a situation?

The Answer: The questioner must answer a few points: (1) Does Hindah have any (legal) guardian (wali) or not? For example, a grown-up brother, or paternal uncle, or uncle's son, or any male among the descendants of the grandfather or great-grandfather? (2) If there is one, was he present at the time (of marriage) or not? If he was, did he say anything after hearing the news of the marriage? And if he did, what did he say? (3) In which month and at what time did Hindah reach puberty? What was the hour and minute? (4) Since when has she been claiming annulment? How many days has it been? In which month, date, and time did the word of this claim come out of her mouth? (5) Is the person she was married to compatible in terms of religion, lineage, character, and profession, or is he superior or inferior? If so, by how much? (6) Was Hindah's marriage or departure done with her mother's consent or without it? An answer will be provided upon receiving the answers to these questions.

Answer to Questions: (1) No male guardian (wali) of Hindah, as mentioned, is alive. Among the spouses (meaning relatives/family), Hindah's mother is alive.

फतावा रज़विया खंड 11

यह मामला जीवन भर की हलाल (वैधता) और संतान के हलाली या हरामी (वैध या अवैध) होने का है। स्त्री पर यह अनिवार्य (फ़र्ज़) है कि जो बात वास्तव में हो, उसे प्रकट कर दे, उसे छिपाए नहीं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला 122 से 127: मोहम्मद इसहाक साहब द्वारा कादिर बख्श दफादार के निवास स्थान, मोहल्ला शागिर्द पेशा, रियासत जावरा, मालवा क्षेत्र से भेजा गया। बुधवार, 29 शव्वाल 1334 हिजरी।

सम्मानित और आदरणीय जनाब मौलाना मुफ्ती अहमद रज़ा खां साहब (उनकी महिमा बनी रहे), आप पर शांति हो और अल्लाह की दया और बरकतें हों। निवेदन है कि मैं आपकी सेवा में निम्नलिखित मामलों के लिए कष्ट दे रहा हूँ, आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे। सुश्री हिंदा का निकाह ग्यारह वर्ष की आयु में उनके सौतेले पिता की अनुमति से ज़ैद के साथ हुआ था। निकाह के बाद हिंदा कुछ दिनों तक ज़ैद के घर रहने के बाद अपने माता-पिता के घर चली गई। वहाँ से बिना ज़ैद की अनुमति के हिंदा अपने माता-पिता के साथ चालीस कोस दूर जाकर बस गई। हिंदा को अपने माता-पिता के घर रहते हुए लगभग एक वर्ष हो गया है। अब ज़ैद ने आकर अपनी पत्नी की रुख़सती (विदाई) का दावा किया है। चूँकि हिंदा अब तेरहवें वर्ष में है और वह खुद को बालिग़ (वयस्क) कहती है, और निकाह के समय वह ना-बालिग़ (नाबालिग) थी, इसलिए वह निकाह रद्द (फ़स्ख़) करना चाहती है। वह कहती है कि "मैं नाबालिग थी और मेरा निकाह मेरे सौतेले पिता की अनुमति से हुआ था, मैं इसे रद्द कराऊँगी।" ऐसी स्थिति में शरीयत-ए-मुकद्दसा का क्या आदेश है?

उत्तर: प्रश्नकर्ता को कुछ बातों का उत्तर देना चाहिए: (1) क्या हिंदा का कोई (कानूनी) संरक्षक (वली) है या नहीं? उदाहरण के लिए, जवान भाई या चाचा या चाचा का बेटा या दादा या परदादा की संतानों में से कोई पुरुष? (2) यदि है, तो क्या वह उस समय उपस्थित था या नहीं? यदि था, तो निकाह की खबर सुनकर उसने कुछ कहा या नहीं? और यदि कहा, तो क्या कहा? (3) हिंदा किस महीने और किस समय बालिग़ (वयस्क) हुई? घंटा और मिनट क्या था? (4) वह कब से निकाह रद्द करने का दावा कर रही है? उसे कितने दिन हो गए हैं? किस महीने, तारीख और समय में इस दावे के शब्द उसके मुँह से निकले? (5) जिससे निकाह हुआ है, क्या वह धर्म, वंश, आचरण और पेशे में हिंदा के अनुकूल है या उससे कम या अधिक है? यदि है, तो कितना? (6) हिंदा का निकाह या रुख़सती उसकी माँ की मर्जी से हुई या बिना मर्जी के? इन सवालों के जवाब आने पर ही उत्तर दिया जाएगा।

सवालों के जवाब: (1) जैसा कि निर्देश दिया गया है, हिंदा का कोई भी पुरुष संरक्षक (वली) जीवित नहीं है। रिश्तेदारों में हिंदा की माँ जीवित है।

पेज 739 का 286

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

یہ معاملہ عمر بھر کے حلال اور اولاد کے حلالی اور حرامی ہونے کا ہے۔ عورت پر فرض ہے کہ جو بات واقعی ہو ظاہر کر دے اخفاء نہ کرے، واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۲۲تا ۱۲۷: مسئولہ محمد اسحاق صاحب بر مکان قادر بخش دفعہ دار محلہ شاگرد پیشہ ریاست جاورہ ملک مالوہ چہار شنبہ ۲۹ شوال ۱۳۳۴ھ

مخدوم و مکرم جناب مولنا مفتی احمد رضا خاں صاحب دام مجدہم، السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، التماس ہے کہ میں حضور عالی کو امور ذیل کے لیے تکلیف دیتا ہوں امید ہے کہ معاف فرمادیں گے۔ مسماۃ ہندہ کا نکاح بعمر گیارہ سال سوتیلے والد کی اجازت سے زید کے ہمراہ ہوا، بعد نکاح ہندہ چند یوم زید کے گھر رہ کر والدین کے گھر چلی آئی اور وہاں سے بغیر اجازت زید ہندہ والدین کے ہمراہ چالیس کوس دور جاکر سکونت اختیار کی اور تقریباً ایک سال ہندہ کو اپنے والدین کے گھر رہتے ہوئے ہو گیا زید نے اب آن کر رخصت زوجہ کا دعویٰ کیا چونکہ اب ہندہ تیرہویں سال میں ہے اور اپنا بالغہ ہونا کہتی ہے اور بوقت نکاح نابالغہ تھی نکاح فسخ کرنا چاہتی ہے کہ میں نابالغہ تھی اور میرا نکاح سوتیلے والد کی اجازت سے ہوا میں فسخ کراؤں گی ایسی صورت میں شرع شریف کیا حکم دیتی ہے؟

الجواب: سائل کو چند امور کا جواب دینا چاہئے: (۱) ہندہ کا کوئی ولی ہے یا نہیں؟ مثلاً جوان بھائی یا چچا یا چچا کا بیٹا یا دادا پردادا کی اولاد میں کوئی مرد؟ (۲) اگر ہے تو وہ وقت پر موجود تھا یا نہ تھا، اگر تھا تو خبر نکاح سن کر کچھ بات کی یا نہیں؟ اور اگر کی تو کیا کہا؟ (۳) ہندہ کس مہینے اور وقت میں بالغہ ہوئی، کیا گھنٹہ منٹ تھا؟ (۴) وہ کب سے دعویٰ فسخ کرتی ہے۔ اس کو

کتنے دن ہوئے، کس مہینے تاریخ وقت میں اس دعویٰ کا لفظ منہ سے نکلا؟ (۵) جس سے نکاح ہوا وہ مذہب، نسل، چال چلن، پیشہ میں موافق ہے یا کم وبیش ہے تو کیا اور کس قدر؟ (۶) ہندہ کا نکاح یارخصت اس کی ماں کی مرضی سے ہوئی یا بلا مرضی؟ ان سوالوں کا جواب آنے پر جواب دیا جائے گا۔

جواب سوالات (۱) ہندہ کا کوئی ولی مرد جیسا ارشاد ہوا زندہ نہیں۔ ازواج میں ماں ہندہ کی حیات ہے۔

(2) At that time, no one was alive. (3) Hindah reached puberty on Saturday, 1st Shawwal 1334 AH, around 2:30 PM at the time of Zuhr; there was no clock, only minutes were observed. (4) On the day she reached puberty, i.e., Saturday, 1st Shawwal 1334 AH, at 3 o'clock, the word of claim [for annulment] came out of her mouth. (5) Zaid is an Ahl-e-Sunnat Hanafi Muslim by religion. His lineage is good, Pathan, and his conduct and profession are also compatible. (6) Hindah's marriage took place with the permission of her stepfather, and she was also sent away, although her mother did not consent, but it happened at the husband's behest and by force.

The Answer: If these statements are factual and Hindah's mother, who is the legal guardian (wali) in the mentioned case, did not permit the marriage, nor said any word of approval afterward, nor did any act that would serve as evidence of permission, then this marriage was a "Nikah Fuzuli" (marriage contracted without authority), and it was dependent on the mother's consent. If Hindah's mother expressed her displeasure and refusal before Hindah reached puberty, the marriage became void at that point, and Hindah no longer needs to seek annulment. If the mother remained silent until now and did not refuse, even if she was displeased, then as soon as Hindah reached puberty, the marriage, which was suspended, now became dependent on Hindah's own consent. When she expressed her displeasure, it became void, and Hindah needs no further claim. If the mother had already authorized it verbally or through action before Hindah's puberty, and that authorization was under legal coercion from the husband, the apparent ruling is still that such permission is not valid permission. However, if it was for the sake of the husband even though she was displeased, then the permission is certainly valid and the marriage became effective. Now, Hindah only had the "option of puberty" (Khiyar-ul-Bulugh). Since according to the questioner, the husband is a suitable match (Kufw) for Hindah, in this situation, Hindah had to claim annulment immediately upon reaching puberty. Since she claimed it half an hour after reaching puberty, this claim is inadmissible, and the marriage has become binding. Now, Hindah has no recourse in this matter. "It is extremely unlikely that a girl would only learn about her marriage at the time she claimed annulment after reaching puberty." (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 128: Requested by Abdul Aziz Sahib Jamadar Engineering, Kota Rajputana, Niyapura, Wednesday 19 Dhu al-Qi'dah 1334 AH. Apart from the city Qazi, if some

other person who follows the Sharia performs a marriage according to the noble Sharia, or other Muslims perform the marriage, and it is not recorded in the city Qazi's register, is it invalid? Please provide an answer to this as well. Finis.

फतावा रज़विया, जिल्द 11

(2) उस समय कोई जीवित नहीं था। (3) हिन्दा 1 शव्वाल 1334 हिजरी शनिवार के दिन ज़ुहर के वक्त लगभग ढाई बजे बालिग (वयस्क) हुई; घड़ी नहीं थी, मिनट देखे गए। (4) बालिग होने के दिन यानी 1 शव्वाल 1334 हिजरी शनिवार को तीन बजे दावे का शब्द मुँह से निकला। (5) ज़ैद मज़हब में अहल-ए-सुन्नत हनफ़ी मुसलमान है। वंश (नसब) अच्छा है, पठान, और चाल-चलन और पेशा में भी उपयुक्त है। (6) हिन्दा का निकाह सौतेले पिता की अनुमति से हुआ और रुख़सती भी हुई, हालांकि माँ की मर्जी नहीं थी, लेकिन पति के कहने पर और ज़बरदस्ती से।

अल-जवाब: यदि ये बयान तथ्यपरक हैं और हिन्दा की माँ, जो उक्त स्थिति में शरीयत के अनुसार वली (अभिभावक) है, उसने इस निकाह की अनुमति नहीं दी, न बाद में जायज़ (स्वीकार) करने का कोई शब्द कहा, न कोई ऐसा कार्य किया जो अनुमति का प्रमाण हो, तो यह निकाह 'निकाह फ़ुज़ूली' हुआ, और हिन्दा की माँ की अनुमति पर निर्भर था। यदि हिन्दा के बालिग होने से पहले उसकी माँ ने इस निकाह से अपनी नाखुशी और इनकार ज़ाहिर कर दिया था, तो निकाह उसी समय बातिल (अमान्य) हो गया, अब हिन्दा को निकाह खत्म करने (फ़स्ख़) की मांग करने की आवश्यकता नहीं है। और यदि हिन्दा की माँ अब तक चुप रही थी और इनकार नहीं किया था, हालांकि वह नाराज़ थी, तो हिन्दा के बालिग होते ही वह निकाह जो रुका हुआ था, अब खुद उसकी (हिन्दा की) अनुमति पर निर्भर हो गया। जब उसने उस पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की, तो वह बातिल हो गया, और हिन्दा को किसी दावे की आवश्यकता नहीं है। और यदि हिन्दा की माँ हिन्दा के बालिग होने से पहले उसे मौखिक या व्यावहारिक रूप से जायज़ कर चुकी थी और वह जायज़ करना पति के शरीयत के विरुद्ध ज़बरदस्ती के कारण था, तब भी प्रत्यक्ष हुक्म यही है कि वह अनुमति अनुमति नहीं हुई। और अगर पति की खातिर था चाहे वह नाराज़ थी, तो अनुमति निश्चित रूप से सही हो गई और निकाह लागू (नाफ़िज़) हो गया। अब हिन्दा के पास केवल 'ख़ियार-ए-बुलूग' (वयस्कता का विकल्प) रहा, क्योंकि प्रश्नकर्ता के अनुसार पति हिन्दा का 'कुफ़्व' (बराबरी का मेल) है, इस स्थिति में हिन्दा को बालिग होते ही तुरंत निकाह खत्म करने का दावा करना था। उसने बालिग होने के आधे घंटे बाद दावा किया, तो यह दावा सुना नहीं जाएगा और निकाह अनिवार्य (लाज़िम) हो चुका है। अब हिन्दा के लिए इसमें कोई उपाय नहीं है। "यह अत्यंत असंभव है कि किसी लड़की को बालिग होने के बाद निकाह खत्म करने के दावे के समय ही निकाह का पता चला हो।" (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 128: प्रेषक: अब्दुल अज़ीज़ साहब जमादार इंजीनियरिंग कोटा राजपूताना नियापुरा, बुधवार 19 ज़ुल्क़दह 1334 हिजरी। शहर के क़ाज़ी के अलावा अगर कोई दूसरा व्यक्ति जो शरीयत का पाबंद हो, शरीयत-ए-शरीफ़ के अनुसार निकाह पढ़ाए या अन्य मुसलमान निकाह पढ़ाएं और उसका पंजीकरण शहर के क़ाज़ी के रजिस्टर में न हो, तो क्या वह नाजायज़ है? इसका उत्तर भी दें। फ़क़त।

पृष्ठ 287 का 739

فتاویٰ رضویہ ، جلد یازدہم

(۲) اس وقت کوئی زندہ نہ تھا۔ (۳) ہندہ یکم شوال ۱۳۳۴ھ روز شنبہ کو بالغہ ہوئی بوقت ظہر قریب ڈھائی بجے کے گھڑی نہ تھی منٹ دیکھے جاتے۔ (۴) بالغہ ہونے کے دن یعنی یکم شوال ۱۳۳۴ھ روز شنبہ تین بجے دعوے کا لفظ منہ سے نکلا۔ (۵) زید مذہب میں اہل سنت حنفی مسلمان ہے۔ نسب اچھا ہے ، پٹھان، اور چال چلن اور پیشہ میں بھی موافق۔ (۶) ہندہ کا نکاح سوتیلے والد کی اجازت سے ہوا ونیز رخصت، حالانکہ ماں کی مرضی نہ تھی مگر خاوند کے کہنے سے اور زبردستی سے۔

الجواب: اگر یہ بیانات واقعی ہیں اور ہندہ کی ماں نے کہ صورت مذکورہ میں وہی ولی شرعی ہے اس کے نکاح کی اجازت نہ دی، نہ بعد کو جائز کرنے کا کوئی لفظ کہا، نہ کوئی فعل ایسا کیا کہ دلیل اجازت ہو تو یہ نکاح نکاح فضولی ہوا، اور والدہ ہندہ کی اجازت پر موقوف تھا، اگر قبل بلوغ ہندہ اس کی والدہ نے اس نکاح سے ناراضی اور اس پر انکار ظاہر کر دیا تو جبھی وہ نکاح باطل ہو گیا، اب ہندہ کو طلب فسخ کی حاجت نہیں، اور اگر والدہ ہندہ اب تک ساکت رہی تھی انکار نہ کیا تھا اگرچہ ناراض تھی تو ہندہ کے بالغ ہوتے ہی وہ نکاح موقوف، اب خود اس کی اجازت پر موقوف ہو گیا، جب اس نے اس پر ناراضی ظاہر کی باطل ہو گیا، اور کسی دعوے کی ہندہ کو حاجت نہیں، اور اگر والدہ ہندہ قبل بلوغ ہندہ اسے قولاً یا فعلاً جائز کر چکی تھی اور وہ جائز کرنا شوہر کے جبر و اکراہ شرعی سے تھا جب بھی ظاہر یہی حکم ہے کہ وہ اجازت اجازت نہ ہوئی، اور اگر بخاطر شوہر تھا اگرچہ وہ ناراض تھی تو اجازت یقیناً صحیح ہو گئی اور نکاح نافذ ہو گیا، اب ہندہ کو صرف خیار بلوغ رہا اس لیے کہ حسب بیان سائل شوہر ہندہ کا کفو ہے اس صورت میں ہندہ کو بالغ ہوتے ہی فوراً دعویٰ فسخ کرنا تھا اس نے بالغ ہونے کے آدھے گھنٹہ بعد دعویٰ کیا تو

یہ دعویٰ نامسموع ہے اور نکاح لازم ہو چکا۔ اب ہندہ کے لیے اس میں کوئی چارہ کار نہیں "وبعید غایۃ البعد انھا لم تعلم بالنکاح الا بعد البلوغ حین ادعت الفسخ" (یہ انتہائی بعید ہے کہ کسی لڑکی کو بلوغ ہونے کے بعد دعویٰ فسخ کے وقت ہی نکاح کا علم ہوا ہو۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۲۸: مسئولہ عبدالعزیز صاحب جمعدار انجینئرنگ کوٹہ راجپوتانہ نیا پورہ چہار شنبہ ۱۹ ذوالقعدہ ۱۳۳۴ھ قاضی شہر کے علاوہ اگر کوئی دوسرا شخص پابند شریعت شرع شریف کے مطابق نکاح پڑھاوے یا دیگر مسلمان نکاح پڑھاوے اور اس کا اندراج رجسٹر قاضی شہر میں نہ ہو تو کیا وہ ناجائز ہے؟ اس کا جواب بھی دیجئے۔ فقط

Volume 11

Fatawa Rizvia

The Answer These marriage-conducting Qazis are neither necessary according to Shariah, nor is their register a Shariah requirement. Yes, recording it is beneficial. Otherwise, you can have anyone perform it; there is no restriction. And Allah Almighty knows best.

Question 129: From Shimla Hills, Walirungal Lodge, sent by Kifayat Hussain Sahib, Sunday 16 Dhu al-Hijjah 1337 AH. Storehouse of knowledge, mine of arts, scholars of the firm religion of Shariah, respected Maulana Sahib, may your shadow be long. This matter is presented to your presence: There are two cousins (maternal aunt's sons). One's wife was involved in an illicit relationship with the other brother's son, i.e., her nephew, in front of her husband. When the husband died, she entered into a marriage contract with the same nephew. Is that marriage contract valid or invalid?

The Answer: Marriage with the husband's nephew after the husband's death and the completion of the waiting period ('iddah) is permissible. And Allah Almighty knows best.

Question 130: From Kathiawar, location Artian, sent by Amin Ahmed Sahib, Thursday 19 Dhu al-Hijjah 1337 AH. A man got married with the intention of divorcing her after a short or long period. Is this marriage valid or not?

The Answer: If no time limit is set in the marriage contract, and it is merely an intention in the heart to give a divorce after a year, a month, or even a day, then there is no harm in the marriage. However, giving divorce without a reason or cause is forbidden. And Allah Almighty knows best.

Question 131: Sent by Haji Syed Naeem-ud-Din Sahib, location Imamganj, Post Office Sunderganj, District Rangpur, Bengal, 2 Safar 1335 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say regarding this matter: An orphaned, oppressed girl named 'Alif', at a minor age of 11 or 12 years, was forcibly and under duress married off to an elderly person by the villagers out of greed for bribes, in the presence of her paternal uncle. The paternal uncle was unable to stop it due to fear of strife. Permission was also taken forcibly from the orphaned girl, though she had been refusing before and continued to refuse at the time of permission, and she still refuses today. After the marriage contract, she visited the sham husband's house several times within six months but under duress. Consequently, at one point she

was ready to die by eating something. Therefore, the heirs of the oppressed girl moved her to her maternal grandfather's house where she has been staying for more than four years. At present, the girl's age is approximately 16 or 17 years and she has been fully adult (attained puberty) for a year. Now...

खंड 11

फ़तावा रिज़विया

जवाब ये निकाह पढ़ाने वाले काज़ी न तो शरीयत के अनुसार अनिवार्य हैं और न ही उनके रजिस्टर की शरीयत के अनुसार आवश्यकता है। हाँ, पंजीकरण (इन्दराज) में भलाई है। बाकी जिससे चाहें पढ़वाएं कोई रोक नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १२९: कोह शिमला, वलिरंगल लॉज से, प्रेषक किफायत हुसैन साहब, रविवार १६ ज़िल हिज्जा १३३७ हिजरी। ज्ञान के भंडार, कलाओं की खान, दीन-ए-मतीन (मजबूत धर्म) के विद्वान, जनाब मौलवी साहब किबला दाम ज़िल्लुकुम, यह मसला आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जाता है कि दो मौसेरे भाई हैं, एक की पत्नी दूसरे भाई के बेटे यानी अपने भतीजे के साथ पति के सामने नाजायज काम करती थी। जब पति मर गया तो उसने उसी भतीजे के साथ निकाह कर लिया, तो वह निकाह जायज़ है या नाजायज़?

जवाब: पति की मृत्यु और इद्दत की अवधि पूरी होने के बाद पति के भतीजे से निकाह जायज़ है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १३०: काठियावाड़, स्थान अर्तियां से, प्रेषक अमीन अहमद साहब, गुरुवार १९ ज़िल हिज्जा १३३७ हिजरी। एक व्यक्ति ने निकाह किया, उसका इरादा यह है कि वह कुछ कम या अधिक समय के बाद उसे तलाक दे देगा। क्या यह निकाह होता है या नहीं?

जवाब: यदि निकाह में किसी अवधि की शर्त न लगाई जाए, केवल दिल में यह इरादा हो कि एक साल या एक महीने या एक ही दिन के बाद तलाक दे दूंगा, तो निकाह में कोई हर्ज नहीं है, हाँ बिना किसी ठोस कारण के महज़ तलाक देना मना है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १३१: प्रेषक हाजी सैयद नईम-उद-दीन साहब, स्थान इमामगंज, डाकखाना सुंदरगंज, जिला रंगपुर, बंगाल, २ सफर १३३५ हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक यतीम मज़लूम लड़की जिसका नाम 'अलिफ़' है, ११ या १२ साल की कम उम्र में उसके सगे चाचा की मौजूदगी में गाँव वालों ने रिश्वत के लालच में जबरदस्ती एक उम्रदराज व्यक्ति से यतीम अलिफ़ का निकाह कर दिया और सगा चाचा फितने (कलह) के डर से रोकने में असमर्थ रहा। लड़की से भी जबरन इज़ाज़त (अनुमति) ली गई जबकि लड़की पहले से इनकार कर रही थी और

अनुमति के समय भी इनकार करती रही, लिहाज़ा वह आज तक इनकार करती है। निकाह के बाद छह महीने के दौरान कई बार बनावटी पति के घर आना-जाना हुआ लेकिन जबरदस्ती। इस कारण एक समय वह कुछ खाकर मरने के लिए तैयार हो गई थी, इसलिए मज़लूम लड़की के वारिसों ने उसे विदा कराके उसके नाना के घर रहने भेज दिया, जहाँ वह चार साल से अधिक समय से रह रही है। इस समय लड़की की उम्र लगभग १६ या १७ साल है और वह एक साल से पूरी तरह बालिग़ है।
अब...

पृष्ठ २८८ / ७३९

جلد یاز دہم

فتاویٰ رضویہ

الجواب یہ نکاح خواں قاضی نہ شرعاً ضرور ہیں نہ ان کے رجسٹر کی شرعاً حاجت۔ ہاں اندراج میں مصلحت ہے۔ باقی جس سے چاہیں پڑھوائیں کوئی روک نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۲۹: از کوہ شملہ ولیر نگل لاج مرسلہ کفایت حسین صاحب روز یک شنبہ ۱۶ ذی الحجہ ۱۳۳۷ھ مخزن علوم، معدن فنون، علمائے دین شرع متین، جناب مولوی صاحب قبلہ دام ظلکم یہ مسئلہ حضور کی خدمت میں پیش کیا جاتا ہے کہ خالہ زاد دو بھائی ہیں، ایک کی بی بی دوسرے بھائی کے لڑکے سے یعنی اپنے بھتیجے سے فعل ناجائز کرتی تھی سامنے شوہر کے، جبکہ شوہر فوت ہو گیا تو اسی بھتیجے کے ساتھ عقد کر لیا تو وہ عقد جائز ہے یا نا جائز؟

الجواب: شوہر کے بھتیجے سے بعد وفات شوہر وانقضائے عدت نکاح جائز ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۰: از کاٹھیاواڑ مقام اڑتیاں مرسلہ امین احمد صاحب پنجشنبہ ۱۹ ذی الحجہ ۱۳۳۷ھ ایک شخص نے نکاح کیا، اس کا ارادہ یہ ہے کہ تھوڑی یا زیادہ مدت بعد اس کو طلاق دے دے گا۔ یہ نکاح ہوتا ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر نکاح میں کسی مدت کی قید نہ لگائے صرف دل میں ارادہ ہو کہ سال بھر یا ایک مہینے یا ایک ہی دن کے بعد طلاق دے دوں گا تو نکاح میں کوئی ہرج نہیں، ہاں بلاوجہ بے سبب محض طلاق دینا منع ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۳۱: مرسلہ حاجی سید نعیم الدین صاحب مقام امام گنج ڈاک خانہ سندر گنج ضلع رنگپور بنگال ۲ صفر ۱۳۳۵ھ کیا ارشاد فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی یتیمہ مظلومہ مسماۃ بہ الف بعمر صغیرہ نابالغہ ۱۱ یا ۱۲ سال کی اس کے چچا حقیقی کی عین موجودگی میں قہراً و جبراً اہل قریہ بطمع رشوت ایک عمر رسیدہ شخص سے یتیمہ الف کا عقد و نکاح کر دیا اور چچا حقیقی یتیمہ کا بخیال فتنہ منع کرنے سے قاصر رہا اور لڑکی یتیمہ سے بھی جبراً اذن لیا اور لڑکی قبل سے انکار کرتی تھی اور بوقت اذن انکار کرتی رہی لہٰذا آج تک انکار کرتی ہے بعد عقد نکاح پر چھ ماہ کے درمیان کئی بار مصنوعی شوہر کے مکان پر آمد و رفت کیا لیکن جبراً۔ لہٰذا ایک وقت کچھ کھا کر مرنے پر آمادہ ہو گئی تھی اس وجہ سے وارثان مظلومہ رخصتی کرا کے اس کے نانا کے مکان مقیم کیا ہے عرصہ چار سال سے زیادہ ہوا اور اس وقت عمر لڑکی کی قریباً ۱۶ یا ۱۷ سال کی ہے اور ایک سال سے بالغہ کامل ہے اب

Fatawa Razawiyya, Volume 11

A person (the contractor of marriage), the marriage itself, and the heirs of girl 'A' are ready for mischief and want her departure (rukhsati) to the husband's house. The girl refuses to go. There is a possibility that her life might be endangered if she is sent. Therefore, it is humbly requested: was the guardianship and consent for this orphan girl correct or not? Can the marriage contract be valid or not? And can any Shariah punishment be imposed on such contractors, the marriage ceremony participants, and those who conducted it? It is hoped that for the sake of Allah, mercy will be shown to this oppressed orphan girl. Please provide a detailed, reasoned answer in Urdu according to the Ahmadiyya Hanafi Shariah, adorned with a seal and signature, clarifying all these matters with a true investigation and a satisfactory summary. You will be thanked and rewarded with great virtue, and it will save me from sin. Answer and you shall be rewarded.

The Answer: The true knowledge lies with Allah Almighty. If this statement is factual that 'A' was a minor at that time and her uncle did not grant permission then, nor before it, and upon hearing the news of the marriage, no word or action serving as evidence of permission was issued by him, and 'A' being sent to the husband's house and going there a few times was also without his permission, and until that time she had not spoken any word rejecting this marriage, nor has 'A' yet had any children, then with all these conditions, that marriage was contingent upon the uncle's permission until 'A' reached puberty. After reaching puberty, it became contingent upon 'A's own permission. Now, if this statement is true that after puberty, no positive word or action of consent was issued by 'A', rather she refuses the marriage, then upon expressing her dissatisfaction, that contingent marriage was annulled. 'A' has the choice to marry whoever she wants after the waiting period (Iddah) if valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha) had occurred, as apparent from the wording of the question. If there was only coming and going and they were not alone together in a room even for a short while, then there is no need for Iddah. If the person who contracted the marriage took her into his possession, then with the aforementioned conditions, he committed a forbidden act because intercourse is forbidden in a contingent marriage before permission. Intercourse that occurred during 'A's minority cannot be evidence of permission, even if it was with her consent. If the person performing the marriage ceremony was a partner in this ill intention, then he too is a sinner; otherwise, a contingent marriage in itself is not a crime. And Allah Almighty knows best.

Problem 132: Sent by Haji, son of Mian Sahib, from district Gonda, state of Balrampur, Bazaar Chowk, 8 Safar 1335 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say about this matter: For example, Zaid knowingly married Hindah, who was pregnant due to adultery, during her pregnancy. Afterwards, several people forced him in a gathering to give three divorces. Is this marriage and divorce valid and correct or not? In the first case (if valid), can a new marriage take place after childbirth? Explain and you shall be rewarded.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

एक व्यक्ति (निकाह करने वाला), निकाह और लड़की 'अलिफ़' के वारिस शरारत पर आमादा हैं और उसकी रुख़्सती चाहते हैं। लड़की जाने से इंकार करती है। संभावना है कि रुख़्सती करने से लड़की की जान चली जाए, इसलिए हाथ जोड़कर निवेदन है कि क्या इस अनाथ लड़की की विलायत (संरक्षण) और अनुमति सही हुई या नहीं, और क्या निकाह सही हो सकता है या नहीं? और ऐसे निकाह करने वालों और निकाह पढ़ाने वालों पर क्या कोई शरीयत की सज़ा हो सकती है या नहीं? आशा है कि अल्लाह की राह में इस मज़लूम अनाथ लड़की पर रहम फरमाया जाएगा, और इन सभी मामलों पर तहकीक़ के साथ एक संतोषजनक संक्षिप्त विवरण, सही जवाब विस्तार से उर्दू में अहमदिया हनफ़िया शरीयत के प्रमाणों के साथ, मुहर और हस्ताक्षर के साथ प्रदान करने की कृपा करें। हम आपके आभारी रहेंगे, और यह नेक काम महान पुण्य में गिना जाएगा और मुझे गुनाह से बचाएगा। बयान करें तो सवाब मिलेगा।

उत्तर: हकीकत का इल्म अल्लाह अज़्ज़वजल को है। अगर यह बयान सच है कि 'अलिफ़' उस समय नाबालिग थी और उसके चाचा ने न उस वक़्त इजाज़त दी न उससे पहले, न निकाह की खबर सुनकर कोई ऐसी बात या काम हुआ जो इजाज़त की दलील बने, और 'अलिफ़' की रुख़्सती और कुछ बार शौहर के यहाँ जाना भी उसकी बिना इजाज़त के हो, और उस वक़्त तक उसने इस निकाह को रद्द करने का कोई शब्द भी नहीं कहा, न ही 'अलिफ़' के अभी तक कोई औलाद हुई, तो इन सब शर्तों के साथ वह निकाह 'अलिफ़' के बालिग होने तक चाचा की इजाज़त पर निर्भर (मवकूफ़) था और बालिग होने के बाद खुद 'अलिफ़' की इजाज़त पर निर्भर हुआ। अब अगर यह बयान सच है कि बालिग होने के बाद 'अलिफ़' से कोई सकारात्मक बात या काम इजाज़त के तौर पर नहीं हुआ बल्कि उसे निकाह पर इंकार है, तो नाराज़गी ज़ाहिर करते ही वह निकाह जो निर्भर था, रद्द हो गया। 'अलिफ़' को अधिकार है कि इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह कर ले, अगर 'खलवत-ए-सहीहा' (एकांत मिलन) हुआ हो जैसा कि सवाल की इबारत से ज़ाहिर है, और अगर सिर्फ आना-जाना हुआ और एक कमरे में अकेले थोड़ी देर के लिए भी नहीं रहे तो इद्दत की भी ज़रूरत नहीं। और निकाह करने वाले ने अगर उसे अपने कब्ज़े में लिया तो उक्त शर्तों के साथ उसने हराम काम किया क्योंकि निर्भर निकाह में इजाज़त से पहले संभोग हराम है और संभोग जो 'अलिफ़' के नाबालिग होने में हुआ, इजाज़त की दलील नहीं हो सकता चाहे उसकी इजाज़त से ही क्यों न हो। निकाह पढ़ाने वाला अगर इस

बदनीयती में शरीक था तो वह भी गुनहगार है वरना 'अक़्द-ए-मवकूफ़' (निर्भर निकाह) अपने आप में गुनाह नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 132: भेजने वाले हाजी वल्द मियां साहब, जिला गोंडा, रियासत बलरामपुर, बाज़ार चौक, 8 सफ़र 1335 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि उदाहरण के तौर पर ज़ैद ने हिंदा से, जो ज़िना (व्यभिचार) से गर्भवती थी, जानबूझकर गर्भावस्था की स्थिति में निकाह किया। इसके बाद कुछ लोगों ने मजबूर करके एक सभा में तीन तलाक़ दिलवा दिए। क्या यह निकाह और तलाक़ जायज़ और सही हुआ या नहीं? पहली स्थिति में (यदि जायज़ हो) प्रसव के बाद दोबारा निकाह हो सकता है या नहीं? बयान करें तो सवाब मिलेगा।

पृष्ठ 289/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

شخص عاقد و عقد و ہندہ وارثان الف پر مستعدِ شر ہے اور رخصتی چاہتا ہے۔ لڑکی جانے سے انکار کرتی ہے۔ احتمال ہے رخصتی کرنے سے لڑکی کی جان ہلاک ہو ، اس لیے دستِ بستہ عرض ہے کہ یہ ولایت واذنِ یتیمہ کا صحیح ہوا یا نہیں، اور عقد و نکاح صحیح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ اور ایسے عاقد و عقد و ہندہ و عقد پڑھانے والوں پر کچھ حدِ شرع ہو سکتا ہے یا نہیں؟ امید کہ فی سبیل اللہ یتیمہ مظلومہ پر رحم فرمایا جائے، اور ان سب امور کی بشرطِ توفیق رفیق تحقیق حقیقی خلاصہ بیانِ قابلِ اطمینان، جواب باصواب صاف صاف مفصل بعبارت اردو مدلل بدلائل شرعیہ احمدیہ حنفیہ مزین بمہر ودستخط تحریر صحیح عنایت فرما کر ممنون و مشکور فرمایا جائے، اور کارِ خیر و ثوابِ عظیم میں داخل ہو جائیے اور مجھ کو معصیت سے نجات دلائیے۔ بینوا توجروا

الجواب: حقیقت کا علم اللہ عزوجل کو ہے۔ اگر یہ بیان واقعی ہے کہ الف اس وقت نابالغہ تھی اور اس کے چچا نے نہ اس وقت اجازت دی نہ اس سے پہلے۔ نہ خبرِ نکاح سن کر کوئی قول و فعل دلیلِ اجازت اس سے صادر ہوا اور الف کی رخصت اور چند بار شوہر کے یہاں جانا، یہ بھی اس کی بلا اجازت کے ہو، اور اس وقت تک اس نے کوئی کلمہ اس نکاح کے رد کا بھی نہیں کہا، نہ الف کے ہنوز کوئی اولاد ہوئی، تو ان سب شرائط کے ساتھ وہ نکاح الف کے بالغہ ہونے تک چچا کی اجازت پر موقوف تھا اور بعدِ بلوغ الف خود الف کی اجازت پر موقوف ہوا، اب اگر یہ بیان واقعی ہے کہ بعدِ بلوغ الف سے کوئی قول و فعلِ مثبتِ اجازت صادر نہ ہوا بلکہ اسے نکاح پر انکار ہے تو ناراضی ظاہر کرتے ہی وہ نکاح کہ موقوف تھا رَد ہو گیا، الف کو اختیار ہے کہ بعدِ عدت جس سے چاہے نکاح کرلے اگر خلوتِ صحیحہ واقع ہو چکی ہو جیسا کہ عبارتِ سوال سے

ظاہر ہے، اور اگر خالی جانا آنا ہوا اور ایک مکان میں تنہا تھوڑی دیر کے لیے بھی نہ ہوئے تو عدت کی بھی حاجت نہیں، اور عاقد سے اگر اپنے تصرف میں لایا تو شرائطِ مذکورہ کے ساتھ مرتکبِ حرام ہوا کہ نکاح موقوف میں قبلِ اجازت وطی حرام ہے اور وطی کہ الف کی نابالغی میں واقع ہوئی دلیلِ اجازت نہیں ہو سکتی اگرچہ اس کی اجازت سے ہو، عقد پڑھانے والا اگر اس بدنیتی میں شریک تھا تو وہ بھی گناہگار ہے ورنہ عقد موقوف فی نفسہ جرم نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۲: مرسلہ حاجی ولد میاں صاحب از ضلع گونڈا ریاست بلرام پور بازار چوک ۸ صفر ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ مثلاً زید نے ہندہ سے جو زنا سے حاملہ تھی دیدہ و دانستہ حالتِ حمل میں نکاح کیا بعد اس کے چند آدمیوں نے مجبور کر کے ایک جلسہ میں تین طلاقیں دلوا دیں، یہ نکاح اور طلاق جائز و درست ہوا یا نہیں؟ بر تقدیر اول وضع حمل کے بعد جدید نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

Fatawa Razawiyya Volume 11

The Answer: Marriage is valid with a woman who (God forbid) is pregnant through adultery/fornication, whether the pregnancy is from that specific adulterer or from someone else. The difference is that the adulterer who caused the pregnancy may have intimacy with her, whereas if someone other than the adulterer marries her, he cannot have intimacy until she gives birth.

"Lest he water the field of another with his water" [1] - Durr-e-Mukhtar. "And marriage with a woman pregnant from adultery is valid" [2] - Tanwir al-Absar.	**So that he may not irrigate another's crop with his own water. Durr-e-Mukhtar. Marriage with a woman pregnant from adultery is valid. - Tanwir al-Absar.**

(t)

'Iddah (waiting period) is mandatory for a married woman whose husband dies or divorces her, and the child born is attributed to the husband. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The child belongs to the bed (marital relationship) and the adulterer is deprived." [3] (The lineage of the child belongs to the husband, and the adulterer gets nothing. - t). In the holy verse, "those who are pregnant" refers to this. The beginning of the discourse was about divorce and then this detail was provided.

"O Prophet! When you [men] divorce women, divorce them for [the commencement of] their waiting period and keep count of the waiting period." [4]	**O Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), when divorcing women, respect their 'iddah period and count the 'iddah. (t)**

The mentioned Hadith is by no means an evidence for the invalidity of marriage with a woman pregnant from adultery. Rather, if it is an evidence, it is for the validity of marriage as he said "separate them". Furthermore, it is possible that the separation is advisory, meaning such a woman is not suitable to be kept. In short, in the inquired scenario, the woman's marriage was certainly valid. Now, if this person had already had intimacy with her and then divorced her, or even if he had not had intimacy but pronounced three divorces in a single sentence (e.g., "You are divorced with three divorces"), then in both cases it became a Mughallazah (irrevocable) divorce, and he cannot remarry her without Halala. However, if he had not yet had intimacy and

pronounced three divorces in separate words (e.g., "You are divorced, you are divorced..."), then it became a Ba'in divorce, not Mughallazah, and he can remarry her without Halala. And Allah Almighty knows best.

Problems 133 to 144: Sent by Alif Khan Sahib, Manager, Madrasa Anjuman-e-Islamia, Sangur State, Kotah Rajputana, 23 Safar 1335 AH. (1) Whether the marriage of widows during the days of 'iddah, if it occurs unintentionally, is valid or not, or is it valid only after those days have passed?

1. Durr-e-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Chapter on Prohibited [Marriages], Majtabai Press, Delhi, 1/189.
2. Durr-e-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Chapter on Prohibited [Marriages], Majtabai Press, Delhi, 1/189.
3. Sahih Muslim, Chapter on 'The Child Belongs to the Bed', etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/407.
4. Al-Quran 1/65.

फ़तावा रजविया खंड ११

उत्तर: जो स्त्री (अल्लाह न करे) व्यभिचार (ज़िना) से गर्भवती हो, उससे निकाह जायज़ है, चाहे वह उस व्यभिचारी से हो या किसी और से। अंतर केवल इतना है कि वह व्यभिचारी जिससे गर्भ है, वह उससे शारीरिक संबंध बना सकता है, लेकिन यदि कोई अन्य व्यक्ति उससे निकाह करता है, तो वह प्रसव होने तक संबंध नहीं बना सकता।

"ताकि वह अपने पानी से दूसरे की खेती को न सींचे" [1] - दुर्रे मुख्तार। "और व्यभिचार से गर्भवती स्त्री का निकाह सही है" [2] - तनवीरुल अबसार।

ताकि वह अपने पानी से दूसरे की खेती को न सींचे। दुर्रे मुख्तार। व्यभिचार से गर्भवती स्त्री का निकाह सही है। - तनवीरुल अबसार।

(त)

इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) उस विवाहित स्त्री पर अनिवार्य होती है जिसका पति मर जाए या उसे तलाक दे दे, और गर्भ पति का ही माना जाता है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "संतान बिस्तर (निकाह) वाले की है और व्यभिचारी के लिए वंचना (पत्थर) है।" [3] (बच्चे का वंश निकाह वाले से है और व्यभिचारी को कुछ नहीं मिलेगा। - त)। पवित्र आयत में "गर्भवती स्त्रियाँ" (उलातुल अहमाल) से यही अर्थ है। बातचीत का मुख्य विषय तलाक की विशेष स्थिति थी और उसी के विवरण में यह फ़रमाया गया।

"ऐ नबी! जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत के(शुरू होने के) वक़्त पर दो और इद्दत की गिनती पूरी रखो।" [4]

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), औरतों को तलाक देते समय उनकी इद्दत का ध्यान रखें और इद्दत की गिनती करें। (त)

उल्लिखित हदीस व्यभिचार से गर्भवती स्त्री के निकाह के अमान्य (बातिल) होने का प्रमाण कतई नहीं है। बल्कि यदि प्रमाण है, तो निकाह के मान्य होने का है, क्योंकि फ़रमाया "उन दोनों को अलग कर दो"। इसके अतिरिक्त, यह संभव है कि वह जुदाई केवल एक परामर्श हो, जिसका अर्थ है कि ऐसी स्त्री को साथ रखने योग्य नहीं समझा गया। सारांश यह कि पूछी गई स्थिति में स्त्री का निकाह निश्चित रूप से सही था। अब यदि इस व्यक्ति ने उससे शारीरिक संबंध बना लिया था और उसके बाद तलाक दी, या भले ही संबंध न बनाया हो लेकिन एक ही वाक्य में तीन तलाकें दे दीं (जैसे "तुझे तीन तलाकें हैं"), तो इन दोनों स्थितियों में वह तलाक मुग़ल्लज़ह (कठोर/अंतिम) हो गई और वह बिना हलाला के

उससे पुनः निकाह नहीं कर सकता। परंतु यदि उसने अभी तक संबंध नहीं बनाया था और अलग-अलग शब्दों में तीन तलाकें दीं (जैसे "तुझ पर तलाक है, तलाक है..."), तो वह तलाक बाइन हुई, मुग़ल्लज़ह नहीं, और वह बिना हलाला के उससे पुनः निकाह कर सकता है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला १३३ से १४४: प्रेषक अलिफ खान साहिब, प्रबंधक, मदरसा अंजुमन-ए-इस्लामिया, सांगूर रियासत, कोटा राजपूताना, २३ सफ़र १३३५ हिजरी। (१) क्या विधवाओं का निकाह इद्दत के दिनों के दौरान भूलवश हो जाने पर वैध है या नहीं, या केवल उक्त अवधि बीत जाने के बाद ही वैध होगा?

1. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, हराम रिश्तों का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८९।
2. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, हराम रिश्तों का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८९।
3. सहीह मुस्लिम, 'संतान बिस्तर की है' संबंधी अध्याय आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, १/४०७।
4. अल-कुरान १/६५।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الجواب: جو عورت معاذ اللہ زنا سے حاملہ ہو اس سے نکاح صحیح ہے خواہ اس زانی سے ہو یا اس کے غیر سے ، فرق اتنا ہے کہ زانی جس کا حمل ہے وہ اس سے قربت بھی کر سکتا ہے اور غیر زانی اگر نکاح کرے تو تا وضع حمل قربت نہیں کر سکتا۔

لئلا یسقی ماءہ زرع غیرہ 1 درمختار، تاکہ دوسرے کی کھیتی کو اپنے پانی سے سے سیراب نہ
وصح نکاح حبلی من زنا 2 تنویر کرے۔ در مختار ، زنا سے حاملہ کا نکاح صحیح ہے ۔
الابصار ۔ تنویر الابصار

(ت)

عدت زن شوہر دار پر ہوتی ہے ، جب شوہر مرے طلاق دے اور ذات زوج کا حمل زوج ہی کا ٹھہرتا ہے قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: الولد للفراش وللعاھر الحجر 3 (بچے کا نسب نکاح والے کے لیے ہے زانی کو محرومی ہے ۔ ت) آیہ کریمہ میں "اولات الاحمال " سے یہی مراد ہے صدر کلام خاص صورت طلاق ارشاد ہوئی ہے اور اسی کی تفصیل فرمائی گئی۔

یٰٓاَیُّهَا النَّبِیُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ اے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم عورتوں کو طلاق دیتے
فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَ اَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ 4 وقت ان کی عدت کا پاس کرو اور عدت کا شمار کرو۔ (ت)

حدیث مذکورہ بطلان نکاح حبلی من زنا پر ہر گز دلیل نہیں بلکہ اگر دلیل ہے تو صحت نکاح پر کہ فرمایا "فرق بینھما " معہذا ممکن ہے کہ وہ تفریق ارشادی ہو یعنی ایسی عورت رکھنے کے قابل نہیں، غرض صورت مستفسرہ میں عورت کا نکاح بیشک صحیح تھا اب اگر یہ شخص اس سے قربت کر چکا اس کے بعد طلاق دی، یا قربت نہ کی تھی تو ایک لفظ میں تین طلاقیں دیں، مثلاً یہ

کہ تو تین طلاق سے مطلقہ ہے، تو ان دونوں صورتوں میں طلاق مغلظہ ہو گئی اور بغیر حلالہ اس سے نکاح نہیں کر سکتا۔ اور اگر ہنوز قربت نہ کی تھی اور متفرق لفظوں میں تین طلاقیں دیں مثلاً تجھ پر طلاق ہے طلاق ہے تو طلاق بائن ہوئی مغلظہ نہ ہوئی بے حلالہ اس سے دوبارہ نکاح کر سکتا ہے۔ واللہ تعالی اعلم

مسئلہ ۱۳۳ تا ۱۴۴: مرسلہ الف خاں صاحب مہتمم مدرسہ انجمن اسلامیہ سانگور ریاست کوٹہ راجپوتانہ ۲۳ صفر ۱۳۳۵ھ (۱) یہ کہ بیوگان کا عقد مابین ایام عدت سہواً ہو جائے تو یہ درست ہے کہ نہیں یا بعد گزر جانے ایام مذکورہ

1 درمختار شرح تنویر الابصار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۹ 2 درمختار شرح تنویر الابصار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۹ 3 صحیح مسلم باب الولد للفراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۰۷ 4 القرآن ۱/۶۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

If a marriage is to be performed, whose permission will be required? Can the woman perform her own marriage by her own authority, or will the permission of her relatives or any other person present be necessary? (2) Can a woman whose husband has died marry her elder brother-in-law (Jeth)? If so, in what situation, at what time, and under what conditions?

The Answer: Marriage during the iddah (waiting period) is completely void and forbidden, whether done inadvertently or intentionally. After the iddah, if the girl is a minor, the permission of the guardian (wali) is absolutely required. If she is an adult, there are two scenarios: If the person she wishes to marry is her 'Kufu' (equal/compatible in terms of religion, lineage, character, profession, etc.), such that marrying him does not bring shame or dishonor to her guardians, then she has the authority herself; the guardian's permission is not needed. If he is not her 'Kufu' and the woman has no Sharia-recognized guardian, she still has authority over herself. However, if a Sharia-recognized guardian exists—for example, a son, father, grandfather, or any male descendant of the great-grandfather in the order of inheritance—then as long as he does not explicitly grant permission for the marriage knowing before the ceremony that it is with a non-Kufu, the marriage performed by the woman will not be valid; it will be completely void.

(Arabic): *Yufta fi ghayril-kuf'i bi'adami jawazihi aslan bihi yufta lifasadiz-zaman*. Durr-ul-Mukhtar.

Due to the corruption of the times, the fatwa will be given that marriage in non-Kufu is fundamentally not permissible. Durr-ul-Mukhtar (T)

(2) After the iddah, marriage with the elder brother-in-law (Jeth) is permissible as long as there is no impediment such as fosterage (radha'at), affinity (musaharat), or the prohibition of joining two mahram sisters (jam' maharim). The conditions for the marriage are the same as those for an initial marriage; there are no new conditions. And Allah Almighty knows best.

Issue 135: From Bilaspur, CP, sent by Mr. Haji Adam Ji Haji Yaqub, 16 Sha'ban 1334 AH. What do the scholars say? Some scholars state that if 'Ijab-o-Qubul' (proposal and acceptance) take place in an engagement gathering, the marriage will occur, and if the conditions of marriage are met, then that same gathering will be considered a marriage gathering, as stated in Durr-ul-Mukhtar and Ghayat-ul-Awtar. On the other hand, some scholars say that gathering will not be considered a marriage gathering.

Annotation: In Durr-ul-Mukhtar it says: "Similarly [if I say] I am marrying you or I have come to you as a suitor"[2] (Similarly if one said, 'I want to marry you' or 'I have come to give you a proposal of marriage'. T). In Ghayat-ul-Awtar it says: "Therefore the marriage will be valid because bargaining over price is not prevalent in marriage[3]" 12 (M).

---

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/191. [2] Durr-ul-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Press, Delhi, 1/185. [3] Ghayat-ul-Awtar, translation of Durr-ul-Mukhtar, Book of Marriage, Mujtabai Press, Delhi, Nawal Kishore, Lucknow, 3/4.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

यदि निकाह किया जाए तो उसमें किसकी अनुमति आवश्यक होगी? क्या स्त्री स्वयं अपने अधिकार से निकाह पढ़ सकती है या उसके रिश्तेदारों या किसी अन्य उपस्थित व्यक्ति की अनुमति आवश्यक होगी? (२) ऐसी स्त्री जिसका पति मर जाए, क्या उसका निकाह उसके जेठ से हो सकता है या नहीं और वह किस स्थिति में, किस समय और किन शर्तों पर?

उत्तर: इद्दत के दौरान निकाह पूरी तरह से शून्य और हराम है, चाहे वह अनजाने में हो या जानबूझकर। इद्दत के बाद यदि लड़की नाबालिग है, तो अभिभावक (वली) की अनुमति पूर्णतः आवश्यक है। और यदि वह बालिग है, तो दो स्थितियाँ हैं: यदि वह व्यक्ति जिससे वह निकाह करना चाहती है, उसका 'कुफ़ू (समान/संगत—अर्थात धर्म, वंश, आचरण, पेशा आदि में इतना कम न हो कि उससे निकाह उसके अभिभावकों के लिए लज्जा और अपमान का कारण बने), तब वह स्वयं अधिकार रखती है, वली की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। और यदि वह 'गैर-कुफ़ू है और स्त्री का कोई शरई वली नहीं है, तब भी उसे अपने ऊपर अधिकार है। लेकिन यदि शरई वली मौजूद है—उदाहरण के लिए बेटा, पिता, दादा, परदादा की संतान का कोई पुरुष उत्तराधिकार के क्रम में—तो जब तक वह निकाह से पहले उसे 'गैर-कुफ़ू जानते हुए स्पष्ट रूप से निकाह की अनुमति नहीं देगा, स्त्री द्वारा किया गया निकाह मान्य नहीं होगा; वह पूरी तरह से शून्य होगा।

(अरबी): युफ्ता फ़ी ग़ैरिल-कुफ़’इ बि’अदमि जवाज़िहि असलन् बिहि युफ़्ता लिफ़सादिज़-ज़मान। दुर्र-ए-मुख्तार।	ज़माने के बिगाड़ के कारण गैर-कुफू में मूल रूप से निकाह न होने का फतवा दिया जाएगा। दुर्र-ए-मुख्तार (त)

(२) इद्दत के बाद जेठ से निकाह जायज़ है, बशर्ते कि कोई रुकावट जैसे रज़ाअत (दूध का रिश्ता), मुसाहरत (ससुराली रिश्ता) या जमे-महारिम (दो महरम स्त्रियों को एक साथ निकाह में रखना) न हो। निकाह की वही शर्तें हैं जो निकाह की शुरुआत में होती हैं, कोई नई शर्त नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला १३५: बिलासपुर सी.पी. से, प्रेषक जनाब हाजी आदम जी हाजी याकूब साहिबान, १६ शाबान १३३४ हिजरी। विद्वान क्या फ़रमाते हैं? कुछ विद्वान कहते हैं कि यदि मंगनी की महफ़िल में ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) हो जाए तो भी निकाह हो जाएगा और निकाह की शर्तें पूरी होने पर

वही महफ़िल निकाह की महफ़िल मानी जाएगी, जैसा कि 'दुर्र-ए-मुख्तार' और 'ग़ायत-उल-औतार' में है। और कुछ मौलवी कहते हैं कि वह महफ़िल निकाह की महफ़िल नहीं ठहरेगी।

टिप्पणी: दुर्र-ए-मुख्तार में है: "इसी तरह [यदि मैं कहूँ] मैं तुमसे निकाह कर रहा हूँ या मैं तुम्हारे पास निकाह का प्रस्ताव लेकर आया हूँ"[2] (इसी तरह अगर कहा, 'मैं तुझसे निकाह करना चाहता हूँ' या 'मैं तुझे निकाह का पैगाम देने आया हूँ'। त)। ग़ायत-उल-औतार में है: "इसलिए निकाह सही हो जाएगा क्योंकि निकाह में मोल-भाव करना प्रचलित नहीं है[3]" १२ (म)।

---

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/१९१ [2] दुर्र-ए-मुख्तार, किताब-उन-निकाह, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/१८५ [3] ग़ायत-उल-औतार, दुर्र-ए-मुख्तार का अनुवाद, किताब-उन-निकाह, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, नवल किशोर, लखनऊ ३/४

نکاح کیا جائے تو اس میں کسی کی اجازت درکار ہوگی، عورت خود اپنے اختیار سے نکاح پڑھ سکتی ہے یا اس کے رشتہ دار یا کسی اور شخص موجودہ کی اجازت درکار ہوگی۔ (۲) ایسی عورت جس کا خوند مر جائے اس کا نکاح اس کے جیٹھ سے ہوسکتا ہے یا نہیں اور وہ کیسی حالت میں اور کس وقت کن شرائط پر۔

الجواب: عدت میں نکاح باطل وحرام محض ہے سہواً ہو خواہ قصداً رہا، بعد عدت اگر عورت نابالغہ ہے تو اجازت ولی مطلقاً درکار ہے۔ اور اگر بالغہ ہے تو دو صورتیں ہیں جس سے نکاح کیا چاہتی ہے اگر وہ اس کا کفو ہے یعنی مذہب نسب و چال چلن پیشہ کسی بات میں ایسا کم نہیں کہ اس سے اس کا نکاح اس کے اولیاء کے لیے باعث ننگ و عار ہو جب تو یہ خود اختیار رکھتی ہے اجازت ولی کی حاجت نہیں، اور اگر غیر کفو ہے اور عورت کا کوئی ولی شرعی نہیں جب بھی اپنے نفس کا اختیار ہے اور اگر ولی شرعی ہے مثلاً بیٹا یا باپ یا دادا پردادا کی اولاد کا کوئی مرد بترتیب فرائض تو جب تک وہ پیش از نکاح اسے غیر کفو جان کر اس نکاح کی اجازت صراحۃً نہ دے گا عورت کے کئے نکاح نہ ہوسکے گا باطل محض ہوگا۔

یفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا بہ لفساد الزمان در مختار۔

فساد زمانہ کی وجہ سے غیر کفو میں اصلاً نکاح نہ ہونے کا فتوٰی دیا جائے گا۔ در مختار (ت)

(۲) بعد عدت جیٹھ سے نکاح جائز ہے جبکہ کوئی مانع مثل رضاعت یا مصاہرت یا جمع محارم نہ ہو اور نکاح کی وہی شرطیں ہیں جو ابتدائے نکاح میں ہوتی ہیں کوئی نئی شرط نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۵: از بلا سپور سی پی، مرسلہ جناب حاجی آدم جی حاجی یعقوب صاحبان ۱۶ شعبان ۱۳۳۴ھ کیا فرماتے ہیں بعض علماء کہتے ہیں اگر جلسہ منگنی میں ایجاب و قبول ہوں تو بھی نکاح ہوگا اور شرط نکاح پائی گئی تو وہی جلسہ جلسہ نکاح ہوگا جیسا کہ در مختار عہ و غایۃ الاوطار میں ہے، اور بعض مولوی کہتے ہیں وہ جلسہ جلسہ نکاح نہ ٹھہرے گا

عہ: در مختار میں ہے: کذا انا متزوجك او جئتك خاطبا ۲ (یوں ہی اگر کہا، میں تجھ سے نکاح کرنا چاہتا ہوں یا میں تجھے نکاح کا پیغام دینے آیا ہوں۔ ت) غایۃ الاوطار میں ہے: "اس واسطے نکاح صحیح ہو جائے گا کہ مول چکانا نکاح میں رائج نہیں ۳" ۱۲ (م)

---

۱ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ ۲ در مختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۵ ۳ غایۃ الاوطار ترجمہ در مختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی نو لکشور لکھنؤ ۳/ ۴

صفحہ 291 کا 739

Fatawa Rizvia Volume 11

...and the words of offer and acceptance and witnesses in this engagement ceremony will be invalid. Which party is right? And according to the statement of some Maulvi Sahib, what would be the meaning of this text from 'Khulasa' (عہ)?

The Answer: The text from 'Khulasa' has no relation to this issue. It pertains to the matter that if an offer is made for an unidentified person, the marriage is not valid, but if it is made for a specific person, it is valid. In this case, the ruling is that the words should be examined; if they are specific for offer and acceptance, then marriage will occur even if it is an engagement ceremony. If there is doubt whether it's a proposal speech or a marriage contract, the nature of the gathering will be considered. If it's an engagement ceremony, it'll be considered engagement; if it's a marriage ceremony, then marriage. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar':

"Similarly, if you asked 'Have you given her to me?' if the gathering was for marriage, it's marriage; if it was for a promise, then it's a promise.[1] And Allah Knows Best."	Just like it was said "Did you give me your girl?", in a marriage assembly it's marriage, and in a promise assembly it's a promise. Allah Knows Best. (T)

Issue 136: Sent by Muhammad Iqbal and Noor Muhammad, Imams of a mosque, Tehsil Daska, District Sialkot. 9 Rabi-ul-Awwal 1335 AH.

What do the scholars of religion (may Allah have mercy on them) say about the following: a boy's engagement was fixed at a place. Some time before the marriage, due to some domestic issue, a disagreement arose between the parents of the boy and the girl, due to which the girl's side refused the marriage. The boy's father, somehow by enticing the girl, secretly at night took the girl from her parent's home...

Note 'عہ': The text of 'Khulasa' is this:

"If the father of a minor says, 'I have married my daughter so-and-so to the son of so-and-so for such amount,' and so-and-so says, 'I accepted for my son' without naming the son, if he has two or more sons, it's not valid; if he has only one son, it's valid.[2] (M)"	When the father of a minor girl said, "I have given my daughter so-and-so to the son of so-and-so for this much dowry," in response the other said, "I have accepted for my son" and did not mention the son's name. So if he has more than one son, the marriage will not take place, and if there is only one son, the marriage will be valid. 12 (T)

[1] Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Press, Delhi, 1/185 [2] Khulasat-ul-Fatawa, Kitab al-Nikah, Maktaba Habibi, Quetta, 5/2

फतावा रज़विया, जिल्द 11

...और इस मंगनी की महफ़िल में ईजाब-ओ-क़ुबूल के अल्फ़ाज़ और गवाह ग़ैर-मोतबर होंगे। कौन सा फ़रीक़ हक़ पर है? और कुछ मौलवी साहब के कहने के मुताबिक़, इस 'खुलासा' (عہ) की इबारत के क्या मायने होंगे?

अल-जवाब: 'खुलासा' की इबारत का इस मसले से कोई ताल्लुक नहीं है। वह इस बारे में है कि अगर ईजाब (प्रस्ताव) किसी ग़ैर-मुतअय्यन (अनिश्चित) के लिए हुआ तो निकाह सही नहीं है, और अगर मुतअय्यन (निश्चित) के लिए हुआ तो सही। और इस मसले में हुक्म यह है कि इन अल्फ़ाज़ को देखा जाए; अगर वे ईजाब-ओ-क़ुबूल के लिए मुतअय्यन हैं तो निकाह हो जाएगा, चाहे वह मंगनी की महफ़िल ही क्यों न हो। और अगर खुतबा (भाषण) और अक़्द (अनुबंध) के बीच कोई शक है, तो महफ़िल का एतबार किया जाएगा। अगर मंगनी की महफ़िल है तो मंगनी मानी जाएगी, और अगर निकाह की है तो निकाह। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

"इसी तरह पूछा 'क्या आपने उसे मुझे दे दिया?' अगर महफ़िल निकाह की थी तो निकाह, और अगर वादे की थी तो वादा।[1] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।"	यूँ ही कहा "क्या तूने अपनी लड़की मुझे दी", निकाह की मज्लिस में निकाह और वादे की मज्लिस में वादा होगा। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला १३६: प्रेषित मोहम्मद इकबाल और नूर मोहम्मद साहिबान, इमाम मस्जिद, तहसील डस्का, जिला सियालकोट। ९ रबी-उल-अव्वल १३३५ हिजरी।

उलमा-ए-दीन (रहमतुल्लाह अलैहि) इस मामले में क्या फ़रमाते हैं: एक लड़के की मंगनी एक जगह हुई थी। निकाह से कुछ समय पहले, लड़के और लड़की के माता-पिता के बीच किसी घरेलू बात को लेकर अनबन हो गई, जिसकी वजह से लड़की वालों ने निकाह करने से इनकार कर दिया। लड़के के पिता ने किसी तरह लड़की को फुसलाकर, रात के समय चोरी-छिपे लड़की को उसके मायके से...

नोट 'عہ': 'खुलासा' की इबारत यह है:

"नाबालिग का पिता जब कहे 'मैंने अपनी फलां बेटी की शादी फलां के बेटे से इतने (महर) में कर दी', और फलां कहे 'मैंने अपने बेटे के लिए	नाबालिग के बाप ने जब कहा "मैंने अपनी बेटी फलां, फलां के बेटे को इतने महर में दी", उसके जवाब में दूसरे ने कहा "मैंने अपने बेटे के लिए

क़ुबूल की' और बेटे का नाम न ले, तो अगर उसके दो या ज़्यादा बेटे हों तो यह जायज़ नहीं है, और अगर एक ही बेटा हो तो सही है।[2] (म)"

क़ुबूल की" और बेटे का नाम ज़िक्र न किया। तो अगर उसके बेटे ज़्यादा हों तो निकाह न होगा और अगर एक ही बेटा हो तो निकाह सही होगा। १२ (त)

---

[1] दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली १/१८५ [2] खुलासातुल फतावा, किताबुन निकाह, मकतबा हबीबिया क्वेटा ५/२

اور الفاظ ایجاب و قبول و شواہد اس جلسہ منگنی میں غیر معتبر ہوگا، کون فریق حق پر ہے اور برتقدیر قول بعض مولوی صاحب اس عبارت عہ خلاصہ کے کیا معنی ہوں گے۔

الجواب: عبارت خلاصہ کو اس مسئلہ سے کوئی تعلق نہیں وہ اس امر میں ہے کہ ایجاب اگر نامتعین کے لیے واقع ہوا تو وہ نکاح صحیح نہیں اور متعین کے لیے واقع ہوا تو صحیح۔ اور اس مسئلہ میں حکم یہ ہے کہ ان الفاظ کو دیکھا جائے اگر وہ ایجاب قبول کے لیے متعین ہیں تو نکاح ہو جائے گا اگرچہ جلسہ منگنی کا ہو اور اگر خطبہ و عقد میں متردد ہیں تو جلسہ کا اعتبار رہے گا۔ جلسہ منگنی کا ہے تو منگنی ٹھہرائیں گے، اور نکاح کا ہے تو نکاح۔ در مختار میں ہے:

وکذا ھل اعطیتنیھا ان المجلس للنکاح فنکاح وان للوعد فوعد 1۔ واللہ تعالٰی اعلم۔	یوں ہی کہا "کیا تو نے اپنی لڑکی مجھے دی" نکاح کی مجلس میں نکاح اور وعدہ کی مجلس میں وعدہ ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۳۶: مرسلہ محمد اقبال و نور محمد صاحبان امام مسجد تحصیل ڈسکہ ضلع سیالکوٹ ۹ ربیع الاول ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین رحمہم اللہ تعالٰی مفصلہ ذیل میں، ایک لڑکے کی ایک جگہ منگنی ہوئی تھی نکاح سے پیشتر کچھ عرصہ کے بعد لڑکے اور لڑکی کے والدین کے درمیان کسی خانگی امر کی وجہ سے ناموافقت پیدا ہو گئی جس سے لڑکی والے نکاح دینے سے منکر ہو گئے لڑکے کے والد نے کسی طرح لڑکی کو ورغلا کر چوری بوقت رات لڑکی کو میکے سے

عہ: عبارت خلاصہ کی یہ ہے: | | | | :--- | :--- | | ابوالصغیر اذا قال زوجت بنتی فلانة من ابن فلان بکذا وقال فلان قبلت لابنی ولم یسم الابن ان کان له ابنان او اکثر لایجوز وان کان له ابن واحد صح 2 (م) | نابالغہ کے باپ نے جب کہا میں نے اپنی بیٹی فلانی، فلاں کے بیٹے کو اتنے مہر میں دی، اس کے جواب میں دوسرے نے کہا میں نے اپنے بیٹے کے لیے قبول کی اور بیٹے کا نام ذکر نہ کیا، تو اگر اسکے بیٹے زیادہ ہوں تو نکاح نہ ہوگا اور اگر ایک ہی بیٹا ہو تو نکاح صحیح ہو گا ۱۲ (ت) |

---

1 در مختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۵ 2 خلاصة الفتاوی کتاب النکاح مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۵/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 11

...took her away and fled. Since the girl is an adult, she went to the city of Gujranwala on her own and married his son despite the anger and absence of the girl's parents. This has caused a lot of turmoil between the two parties, which has reached the court. This matter is against religious interests. It is hoped that such interference will be prevented as it can become the basis for future actions and mischief, the prevention of which is obligatory. Is there any punishment prescribed in Sharia for such disruptive people? Please provide a detailed response. Only.

Answer: Undoubtedly, such people who create disorder, mischief, and dishonor are deserving of severe punishment and prolonged misfortune. God forbid! If such bold acts are allowed, it will cause great harm to honor and reputation. At the very least, its vileness lies in the fact that it is causing harm to a Muslim without a Shar'i reason. And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Whoever harms a Muslim has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah.[1]	**Whoever harms a Muslim unjustly has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah.**

If the person with whom this marriage took place is not a match (Kufu) for the woman—meaning he is so low in religion, lineage, conduct, or profession that marrying him is a cause of shame and disgrace for the woman's guardians—then this marriage, which an adult woman entered into on her own without the guardian's consent, has not taken place at all and is absolutely void. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Verdict is given for the absolute non-validity of marriage in the case of a non-match, and this is the verdict due to the corruption of the times.[2]	**Due to the corruption of the times, a fatwa of non-validity of marriage in a non-match (Ghair Kufu) will be given. (T)**

And if he is a match, then for the woman to marry on her own by displeasing her parents, especially in this manner, is a cause of severe deprivation and divine displeasure for the woman. And according to Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him), the marriage has still not taken place because, according to him, marriage without a guardian is void. Is it a small vileness that, according to a true Imam, the woman is without marriage? And Allah Almighty knows best.

[1] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 2/373 [2] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Delhi, 1/191

फतावा रज़विया, खंड 11

...निकाल लिया और फरार करके ले आया। चूंकि लड़की बालिग है, उसने खुद-ब-खुद गुजरांवाला शहर जाकर लड़की के माता-पिता की नाराजगी और अनुपस्थिति के बावजूद अपने लड़के से निकाह कर लिया, इससे दोनों पक्षों में बहुत फसाद पैदा हो गया, जिसकी नौबत कचहरी तक पहुंची। यह बात धार्मिक हित के विरुद्ध है। आशा की जा सकती है कि ऐसा हस्तक्षेप भविष्य में भी ऐसी कार्रवाइयों और फसाद का कारण बनेगा, जिसका रोकना अनिवार्य है। क्या ऐसे विघ्नकारी लोगों के लिए शरीयत में कोई सजा निर्धारित है? विस्तार से सूचित करें। इति।

उत्तर: निस्संदेह, ऐसे लोग जो फसाद फैलाने वाले, उपद्रवी और अपमान करने वाले हैं, वे कठोर दंड और लंबी विपत्ति के पात्र हैं। अल्लाह की पनाह! अगर ऐसी साहसपूर्ण हरकतों को अनुमति दी गई, तो मान-मर्यादा को बहुत ठेस पहुंचेगी। कम से कम इसकी बुराई यह है कि यह बिना किसी शरीई कारण के एक मुसलमान को दुख देना है। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

जिसने किसी मुसलमान को दुख दिया उसने मुझे दुख दिया और जिसने मुझे दुख दिया उसने अल्लाह को दुख दिया।[1]

जिसने किसी मुसलमान को नाहक दुख दिया, उसने मुझे दुख दिया और जिसने मुझे दुख दिया, उसने अल्लाह को दुख दिया।

यह निकाह जिससे हुआ है, यदि वह स्त्री का कुफु(बराबर) नहीं है, अर्थात धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना कम है कि उससे निकाह करना स्त्री के अभिभावकों के लिए लज्जा और अपमान का कारण है, तो यह निकाह जो एक बालिग स्त्री ने अभिभावक की सहमति के बिना स्वयं किया है, सिरे से हुआ ही नहीं और बिल्कुल शून्य (बातिल) है। दुर्रे मुख्तार में है:

समय के भ्रष्टाचार के कारण गैर-कुफु में निकाह के पूर्णतः अमान्य होने का फतवा दिया जाता है।[2]

समय के भ्रष्टाचार (फसाद-ए-ज़माना) के कारण गैर-कुफु में निकाह के अमान्य होने का फतवा दिया जाएगा। (T)

और यदि वह कुफु है, तो माता-पिता को नाराज करके स्त्री का स्वयं निकाह कर लेना, विशेष रूप से इस तरह जाकर, स्त्री के लिए भारी वंचितता और ईश्वरीय नाराजगी का कारण है। और इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुसार, निकाह अब भी नहीं हुआ क्योंकि उनके अनुसार अभिभावक के बिना निकाह शून्य (बातिल) है। क्या यह कम बुराई है कि एक सच्चे इमाम के अनुसार स्त्री बिना निकाह के है? और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

[1] अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस, मकतबा अल-माआरिफ, रियाद, 2/373 [2] दुर्रे मुख्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/191

पृष्ठ 293/739

نکال لیا اور فرار کرکے لے آیا۔ لڑکی چونکہ بالغ ہے اس نے خود بخود شہر گوجرانوالہ جاکر باوجود لڑکی کے والدین کی ناراضمندی اور عدم موجودگی کے اپنے لڑکے سے نکاح کرلیا، اس سے طرفین میں بہت سافساد برپا ہوگیا، جس کی نوبت کچہری تک پہنچی، یہ امر دینی مصلحت کے برخلاف ہوتا ہے۔ امید ہوسکتی ہے کہ ایسی دست درازی آئندہ بھی ایسی کارروائیوں اور فتنوں کی بانی ہو، جس کا انسداد واجب امر ہے۔ کیا ایسے رخنہ انداز آدمیوں کے لیے شریعت میں کوئی سزا مقرر ہے؟ مفصل حال سے آگاہی فرمائیں۔ فقط

الجواب: بلاشبہ ایسے لوگ مفسد وفتنہ پرداز اور آبروریز فتنہ انگیز مستحق عذاب شدید و وبال مدید ہیں، معاذاللہ! اگر ایسی جراتیں روا رکھی جائیں تو ننگ و ناموس کو بہت صدمہ پہنچے گا، کم سے کم اس میں شناعت یہ ہے کہ بلاوجہ شرعی ایذاء مسلم ہے۔ اور نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَ مَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللہ ۱۔ **جس نے کسی مسلمان کو ناحق ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ کو ایذا دی۔**

یہ نکاح جس سے ہوا اگر وہ عورت کا کفو نہیں یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ میں ایسا کم ہے کہ اس سے نکاح ہونا اولیائے زن کے لیے باعثِ ننگ وعار ہے جب تو یہ نکاح کہ زن بالغہ نے بے رضائے ولی خود کیا سرے سے ہوا ہی نہیں باطل محض ہے، درمختار میں ہے:

وَیُفْتٰی فِی غَیْرِ الْکُفُوِ بِعَدَمِ جَوَازِہٖ اَصْلًا بِہٖ یُفْتٰی لِفَسَادِ الزَّمَانِ ۲۔ **فسادِ زمانہ کی وجہ سے غیر کفو میں نکاح کے عدم جواز کا فتوٰی دیا جائے گا۔ (ت)**

اور اگر کفو ہے تو والدین کو ناراض کرکے عورت کا بطور خود نکاح کرلینا خصوصاً وہ بھی اس طور پر جاکر عورت کے لیے سخت محرومی و ناراضی الٰہی کا باعث ہے۔ اور امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک تو اب بھی نکاح نہ ہوا کہ ان کے نزدیک بغیر ولی کے نکاح باطل ہے۔ یہ کیا تھوڑی شناعت ہے کہ ایک امام برحق کے نزدیک عورت بے نکاح ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

۱ المعجم الکبیر حدیث مکتبۃ المعارف الریاض ۳۷۳/۲ ۲ درمختار باب الولی مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱

Fatawa Razawiyya - Volume 11

Problem 137: 4 Sha'ban 1335 AH From Bareilly, Khoji Mohalla, sent by Azeem Ullah Sahib. Question: What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this matter: Hindah's marriage was forcibly performed with Zaid, although Zaid never had any intention, for which several witnesses are present. At the time of the proposal and acceptance, Zaid said "Hoon" (yes/I agree) like a woman, and before the departure (rukhsati) could happen, Zaid went to his house. Even before that, on the scheduled date, Zaid had fled from his home. In this situation, did Zaid's marriage with Hindah take place or not? Please adorn this with a seal.

The Answer: The marriage is valid, even if "Hoon" was said under compulsion during acceptance.

[Arabic Quote]: For if coercion is established, it is not effective (as an excuse) in matters where serious intent and jesting are equal, such as marriage, divorce, and manumission. So what can be said if there is no coercion in these matters? (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 138: 11 Sha'ban 1335 AH Muhammad Rahim Bakhsh and Abdul Hamid Sahibaan, from town Fatrangar, District Gurgaon. Question: What do the scholars of religion say about this matter: When Zaid was beardless, his engagement was made with Hindah. Zaid used to stay at Hindah's house for some reason or due to an old family relationship. Hindah's paternal aunt had adopted Hindah, meaning Hindah's aunt was childless or barren. Zaid did not observe veil (purdah) with anyone in Hindah's house except Hindah. Hindah's aunt developed such affection for Zaid that it seemed more than motherly love. Eventually, she requested sexual intercourse from Zaid. Since at that time Zaid was completely ignorant, i.e., completely ignorant of God, His Messenger, prayer, and fasting. In short, an illicit relationship between both continued for several years, until the parents of Zaid and Hindah got them married. Since there was extreme affection and love between husband and wife, no relationship remained with Hindah's aunt. Now that about eighteen years have passed since the marriage and they have three children as well. Until today, Zaid never even thought of this. Now Zaid has taken the oath of allegiance (bay'at) to an elder and is determined in obedience to God and His Messenger, and similarly Hindah is also observant of Shariah and has also taken the oath of allegiance. Despite Zaid always dealing with books of Hadith and Fiqh, this issue never caught his eye until today, nor did he hear it mentioned by anyone, nor did he have any

thought about it. Now Zaid says he was studying 'Iksir-e-Hidayat', in which he came across the chapter on marriage. In it, he found the statement written that "paternal aunt and niece are prohibited in one marriage". Since Zaid read this statement, he has become like a madman and crazy because he has no power to leave the woman, i.e., his wife.

फ़तावा रज़विया - खंड 11

मसला 137: 4 शाबान 1335 हिजरी बरेली, खोजी मोहल्ला, प्रेषक अज़ीम उल्लाह साहिब। प्रश्न: धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि हिंदा का निकाह ज़ैद के साथ ज़बरदस्ती कराया गया, हालाँकि ज़ैद की मंशा बिलकुल नहीं थी, जिसके कई गवाह मौजूद हैं। ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के समय ज़ैद ने औरत की तरह "हूँ" कहा और रुख़सती होने से पहले ही ज़ैद अपने घर चला गया, और इससे पहले भी तय तारीख़ पर ज़ैद अपने घर से फरार हो गया था। तो इस स्थिति में ज़ैद का निकाह हिंदा के साथ हुआ या नहीं? मुहर से सुशोभित फ़रमाएं।

उत्तर: निकाह हो गया, चाहे क़ुबूल में सिर्फ़"हूँ" ज़बरदस्ती कहा हो।

[अरबी उद्धरण]: क्योंकि यदि ज़बरदस्ती (इकरा) साबित भी हो जाए, तो वह उन मामलों में प्रभावी (बहाना) नहीं होगी जिनमें गंभीरता और मज़ाक बराबर हैं, जैसे निकाह, तलाक़ और आज़ादी। फिर उन मामलों के बारे में क्या कहा जाए जिनमें कोई ज़बरदस्ती न हो? (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 138: 11 शाबान 1335 हिजरी मुहम्मद रहीम बख्श और अब्दुल हमीद साहिबान, कस्बा फतरानगर, जिला गुड़गांव से। प्रश्न: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि जब ज़ैद दाढ़ी-मूंछ के बिना (किशोर) था, उसकी सगाई हिंदा से हुई थी और ज़ैद किसी कारण से या पुराने पारिवारिक रिश्ते की वजह से हिंदा के घर पर रहता था। हिंदा की बुआ ने हिंदा को गोद लिया हुआ था, यानी हिंदा की बुआ बेऔलाद या बाँझ थी। हिंदा के घर में वह हिंदा के अलावा किसी से पर्दा नहीं करता था। हिंदा की बुआ ने ज़ैद के साथ इतना प्रेम बढ़ाया जो माँ की ममता से भी अधिक प्रतीत होता था। अंततः उसने ज़ैद से संभोग की माँग की। चूँकि उस समय ज़ैद बिलकुल अनभिज्ञ था, यानी अल्लाह, उसके रसूल, नमाज़ और रोज़े से बिलकुल बेख़बर था। संक्षेप में, दोनों के बीच कई वर्षों तक अवैध संबंध रहे, यहाँ तक कि ज़ैद और हिंदा के माता-पिता ने उनकी शादी करा दी। चूँकि पति-पत्नी के बीच अत्यंत प्रेम और स्नेह हो गया, इसलिए हिंदा की बुआ से कोई संबंध नहीं रहा। अब चूँकि शादी को लगभग अठारह वर्ष बीत चुके हैं और तीन बच्चे भी हो गए हैं। आज तक ज़ैद को इस बात का ख्याल तक नहीं आया। अब ज़ैद एक बुज़ुर्ग से बैअत (दीक्षा) लेकर अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाकारिता में तत्पर है और इसी तरह हिंदा भी शरीयत की पाबंद है और वह भी बैअत हो चुकी है। इसके बावजूद कि ज़ैद हमेशा हदीस और फिक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की किताबों का अध्ययन

करता रहता है, लेकिन यह मसला आज तक उसकी नज़र से नहीं गुज़रा और न ही किसी से इसका ज़िक्र सुना और न ही इस बात का कोई ख्याल था। अब ज़ैद कहता है कि वह 'इक्सीर-ए-हिदायत' का अध्ययन कर रहा था, जिसमें उसकी नज़र निकाह के अध्याय पर पड़ी। उसमें उसने यह इबारत लिखी हुई पाई कि "बुआ और भतीजी एक निकाह में (एक साथ) हराम हैं।" जब से ज़ैद ने यह इबारत पढ़ी है, वह दीवाना और पागल सा हो गया है क्योंकि उसे औरत यानी पत्नी को छोड़ने की हिम्मत नहीं है।

पृष्ठ 294 का 739

فتاویٰ رضویہ - جلد یازدہم

مسئلہ ۱۳۷: ۴ شعبان ۱۳۳۵ھ بریلی خوجی محلہ مرسلہ عظیم اللہ صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا نکاح زید کے ساتھ بجبر کرایا گیا حالانکہ زید کی منشاء ہرگز نہ تھی جس کے چند شاہد موجود ہیں، بوقت ایجاب قبول کرنے کے زید نے "ہوں" مثل عورت کے کہا اور رخصت نہ ہونے پائی کہ زید اپنے مکان کو چلا گیا، اور اس سے قبل بھی تاریخ مقرر پر زید اپنے گھر سے فرار ہو گیا تھا تو اس صورت میں نکاح زید کا ہندہ کے ساتھ ہوا یا نہیں؟ مہر سے مزین فرمایا جائے۔

الجواب: نکاح ہو گیا اگرچہ قبول میں صرف "ہوں" جبراً کہا ہو،

[عربی اقتباس]: فان الاکراہ ان تحقق لم یعمل فیما یستوي فیہ الجد والھزل کالنکاح والطلاق والعتاق فکیف مالیس باکراہ۔ [اردو ترجمہ]: جبر و اکراہ اگر پایا گیا تو ان امور میں موثر (عذر) نہیں بنے گا جن میں قصد و مذاق مساوی ہے مثلاً نکاح طلاق اور عتاق اور اگر ان امور میں جبر نہ ہو پھر کیا کہا جائے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۳۸: ۱۱ شعبان ۱۳۳۵ھ محمد رحیم بخش عبدالحمید صاحبان از قصبہ فترانگر ضلع گڑ گانوہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید جبکہ بے ریش تھا اس کی نسبت (یعنی سگائی) ہندہ سے ہوئی تھی اور زید ہندہ کے مکان پر کسی وجہ سے رہتا تھا یا پرانی رشتہ داری کی وجہ سے رہتا تھا۔ ہندہ کی پھوپھی نے ہندہ کو گود لیا ہوا تھا یعنی ہندہ کی پھوپھی لاولد یا بانجھ تھی، ہندہ کے گھر میں سوائے ہندہ کے پردہ نہیں کرتا تھا، ہندہ کی پھوپھی نے زید کے ساتھ اس قدر محبت بڑھائی جو کہ شفقت مادری سے زیادہ تر نظر آتی تھی، آخر کار زید سے سوالِ ہم

بستری کا کیا، چونکہ اس زمانے میں زید بالکل بے خبر تھا یعنی خدا و رسول اور نماز و روزہ سے بالکل بے خبر تھا۔ غرض دونوں کے باہم ناجائز دوستی کئی سال تک رہی، یہاں تک کہ زید اور ہندہ کے والدین نے شادی کردی، چونکہ میاں بیوی میں کمال درجہ الفت اور محبت ہوئی اور ہندہ کی پھوپھی سے کچھ تعلق نہ رہا۔ اب چونکہ شادی کو تقریباً اٹھارہ سال گزر گئے اور تین بچے بھی ہو گئے۔ آج تک زید کو اس بات کا خیال تک نہ آیا اب زید ایک بزرگ سے شرفِ بیعت ہو کر خدا اور رسول کی اطاعت میں کمر بستہ ہے اور اسی طرح ہندہ بھی پابندِ شرع ہے اور وہ بھی شرفِ بیعت ہو چکی ہے باوجود زید کو ہمیشہ کتبِ احادیث و فقہ سے کام رہتا ہے لیکن یہ مسئلہ آج تک اسکی نظر سے نہیں گزرا اور نہ کسی سے ذکر سنا نہ اس بات کا خیال تھا، اب زید کہتا ہے کہ اکسیرِ ہدایت کا مطالعہ کر رہا تھا اس میں باب النکاح پر نظر پڑی، اس میں یہ عبارت لکھی پائی کہ پھوپھی بھتیجی یک جانکاح میں حرام ہیں، جب سے زید نے یہ عبارت پڑھی دیوانہ اور پاگل سا ہو گیا ہے کیونکہ نہ عورت یعنی بیوی کو چھوڑنے کا یارا ہے۔

جلد یازدہم (Volume 11)

...nor does one have the strength to live contrary to the commands of Allah and His Messenger. If he wishes to leave her or divorce her, her parents will ask, "What is the fault of our daughter?" And separation will also be extremely painful, lest some other calamity arise. No one has known about Zaid's misdeeds until today; how can this disgrace be borne now? All the circumstances of Zaid and Hindah have been disclosed to your presence. I am hopeful that you will issue a ruling according to Sharia without any regard or partiality. And if there is any atonement for this sin, that should also be stated. And if the order is for Zaid and Hindah to separate, what should be done about the three daughters who have been born? And will the fixed monthly dower (Mahr) of Hindah have to be paid or not? Even though Hindah had forgiven her dower on the wedding night.

The Answer:

"And He it is Who accepts repentance from His servants and forgives sins." (Al-Quran 42:25) - It is Allah Who accepts the repentance of His servants and overlooks their sins.

All praise is due to Allah, Lord of the worlds. He should repent and seek forgiveness for the sin committed. As for the doubts raised regarding the wedded wife, they are entirely meaningless. Committing adultery with a woman does not make her niece (brother's or sister's daughter) unlawful (Haram), nor does it cause any defect in their marriage. It is stated in Al-Khulasa, Durr-e-Mukhtar, etc.:

Intercourse with the wife's sister does not make the wife unlawful. (T)

What is written in Iksir-e-Hidayat means that it is forbidden for both the paternal aunt and the niece to be in the marriage of one person simultaneously. For example, if the niece is in marriage, then as long as she remains in marriage, or if he divorces her, until the waiting period (Iddat) of the divorce passes, marriage with her paternal aunt is forbidden. And Allah the Almighty knows best.

Problem 139: Sent by Syed Abdullah Sahib, Post Office Pachhamgaon, Parah, Bengal, 15 Sha'ban 1335 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it valid or not to marry an adult newly-converted Muslim woman in the presence of only one male witness?

Please grant an answer out of kindness, be rewarded by Allah and thanked by people, and honor me with a response.

The Answer:

For marriage, it is necessary to have two male witnesses or one male and two female witnesses. An offer and acceptance in front of only one man...

---

1 Al-Quran 25/42 2 Durr-e-Mukhtar, Kitab an-Nikah, Fasl fil-Muharramat, Mujtabai Delhi 1/188

जिल्द ग्यारहवीं (Volume 11)

...और न ही अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ रहने की ताक़त है। अगर वह उसे छोड़ना चाहता है या तलाक़ देना चाहता है, तो उसके माता-पिता पूछेंगे कि हमारी लड़की का क्या क़सूर है। और जुदाई भी बेहद तकलीफ़देह होगी, कहीं कोई और मुसीबत खड़ी न हो जाए। ज़ैद की बदकारियों की आज तक किसी को ख़बर नहीं हुई, अब यह रुसवाई कैसे बर्दाश्त की जाए? ज़ैद और हिंदा के तमाम हालात आपके सामने ज़ाहिर कर दिए गए हैं। उम्मीद है कि आप बिना किसी लिहाज़ और मुरव्वत के शरीयत का हुक्म फ़रमाएंगे। और अगर इस गुनाह का कोई कफ़्फ़ारा हो सकता है, तो वह भी बता दिया जाए। और अगर ज़ैद और हिंदा के बीच जुदाई का हुक्म हो, तो जो तीन बेटियाँ पैदा हो चुकी हैं उनका क्या किया जाए? और क्या हिंदा का तयशुदा मासिक मेहर अदा करना होगा या नहीं? जबकि हिंदा ने सुहाग रात को अपना मेहर माफ़ कर दिया था।

जवाब:

"और वही है जो अपने बंदों की तौबा क़बूल करता है और गुनाहों को माफ़ फ़रमाता है।" (अल-क़ुरआन 42:25) - अल्लाह ही है जो अपने बंदों की तौबा क़बूल करता है और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है।

अल्हम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन, जो गुनाह हुआ उससे तौबा करे, इस्तिग़फ़ार करे। बाक़ी जो शंकाएँ विवाहित पत्नी के बारे में पेश आई हैं वे सरासर बेमानी हैं। किसी औरत के साथ ज़िना (व्यभिचार) करना उसकी भतीजी या भांजी को हराम नहीं करता, न ही उनके निकाह में कोई ख़लल आता है। ख़ुलासा और दुर्रे-मुख़्तार आदि में है:

पत्नी की बहन (साली) के साथ सोहबत करने से पत्नी हराम नहीं होगी। (त)

'इक्सीर-ए-हिदायत' में जो लिखा है उसका मतलब यह है कि फूफी और भतीजी दोनों का एक ही व्यक्ति के निकाह में होना हराम है। मिसाल के तौर पर, अगर भतीजी निकाह में है, तो जब तक वह निकाह में रहे, या अगर उसे तलाक़ दे दे तो तलाक़ की इद्दत गुज़रने तक उसकी फूफी से निकाह हराम है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 139: प्रेषक सैय्यद अब्दुल्ला साहब, डाकख़ाना पछमगाँव, पढ़ा, बंगाल, 15 शाबान 1335 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक मर्द गवाह के सामने एक बालिग़ नव-मुस्लिम महिला से निकाह किया, तो क्या यह सही है या नहीं? कृपया मेहरबानी करके जवाब इनायत फ़रमाएँ, अल्लाह के पास अज्र पाएँ और लोगों के पास शुक्रगुज़ार हों और मुझे सरफ़राज़ फ़रमाएँ।

जवाब:

निकाह के लिए दो पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं का गवाह होना लाज़िम है। सिर्फ़ एक मर्द के सामने ईजाब व...

---

1 अल-क़ुरआन 25/42 2 दुर्रे-मुख़्तार, किताबुन निकाह, फ़स्ल फ़िल-मुहर्रमात, मुजतबाई दिल्ली 1/188

جلد یازدہم

اور نہ خدا اور رسول کے حکم کے برخلاف ہو کر رہنے کی طاقت ہے، اگر اس کو چھوڑ نا چاہتا ہے یا طلاق دینا چاہے تو اس کے والدین یہ دریافت کریں گے کہ ہماری لڑکی کی کیا خطا ہے۔ اور جدائی بھی نہایت شاق گزرے گی، مبادا کوئی اور آفت پیدا ہو، زید کی بد کرداریوں کی آج تک کسی کو خبر نہ ہوئی اب یہ رسوائی کیونکر لی جاوے، اب تمام کیفیت زید و ہندہ کی آنجناب میں ظاہر کردی امید وار ہوں کہ آپ حکم شریعت سے بلا کسی لحاظ و مروت کے حکم فرمادیں، اور اگر اس گناہ کا کفارہ ہو سکتا ہے تو وہ بھی بتلایا جائے۔ اور اگر زید و ہندہ میں جدائی کرانے کا حکم ہو تو تین لڑکیاں جو پیدا ہو چکی ہیں ان کو کیا کیا جاوے اور مہر ہندہ کا مبلغ ماہ بندھا ہوا ادا کرنا ہو گا یا نہیں؟ حالانکہ ہندہ نے شب عروس کو اپنا مہر معاف کر دیا تھا۔ الجواب: وَ ھُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَۃَ عَنْ عِبَادِہٖ وَ یَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ - اللہ ہے کہ اپنے بندوں کی توبہ قبول کرتا ہے اور گناہوں سے در گزر فرماتا ہے۔ والحمد للہ رب العلمین، جو گناہ ہوا اس سے توبہ کرے استغفار کرے، باقی جو توہمات درباره منکوحہ پیش آئے محض بے معنی ہیں، کسی عورت سے زنا کرنا اس کی بھتیجی بھانجی کو حرام نہیں کرتا، نہ ان کے نکاح میں کوئی خلل آتا ہے۔ خلاصہ و در مختار وغیرہما میں ہے: وطی اخت امرأته لا تحرم علی امرأته - سالی سے زنا کرنے کی وجہ سے بیوی حرام نہیں ہوگی۔ (ت) اکسیر ہدایت میں جو لکھا اس کا مطلب ہے کہ پھوپھی بھتیجی دونوں ایک شخص کے نکاح میں ہونا یہ حرام ہے مثلاً بھتیجی نکاح میں ہے تو جب تک وہ نکاح میں رہے یا اگر اسے طلاق دے دے تو طلاق کی عدت جب تک نہ گزرے اس وقت تک اس کی پھوپھی سے نکاح حرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۱۳۹: مرسلہ سید عبداللہ صاحب ڈاکخانہ پچھم گاؤں پڑہ بنگال ۱۵ شعبان ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مرد گواہ کے مقابل بالغہ نو مسلمان

عورت کو نکاح کیا تو درست ہے یا نہیں؟ ازروئے مہربانی جواب عنایت فرما کر عند اللہ ماجور و عند الناس مشکور ہوویں اور مجھ کو سرفراز فرماویں۔ الجواب: نکاح کے لیے دو مردوں یا ایک مرد دو عورتیں گواہ ہونا لازم ہے۔ صرف ایک مرد کے سامنے ایجاب و

---

1 القرآن ۲۵/۴۲ 2 درمختار کتاب النکاح فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۱۸۸

Fatawa Razawiyya Volume XI

Marriage cannot be established merely by acceptance. And Allah Almighty knows best.

Case 140: Sent by Babar Aklowaz, Village Karanpura, P.O. Siwan Division, District Saran Chhapra, 15 Sha'ban 1335 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter?

[Box Content] Sister: Musammat Moloodan, age approx. 13 or 14 years. Brother: Sajjad Miyan, age approx. 21 or 22 years. They are the offspring of Ghaffar, son of the brother of Ghani Khan. Musammat Zaitoon is the daughter of the sister of Ghani Khan. (Vertical text on left): Both are brother and sister.

The marriage was arranged as 'Golawat', i.e., on the condition of exchange (Shighar). Sajjad married Musammat Zaitoon, daughter of Ghani Khan, and Sajjad married off his sister Moloodan to Ghaffar, son of Ghani Khan's brother. After the Nikah, a date was set for the wedding procession (Barat). Three days before the scheduled departure of the Barat at Sajjad's behest, Zaitoon left her father's house. Consequently, Ghaffar's Barat did not arrive at Sajjad's house. Disputes and bitter arguments have arisen between the two families. Sajjad claims that since Zaitoon did not come to his house, and due to the breach of the 'exchange marriage' condition and the apparent ill-conduct of that family, he will not allow his sister Moloodan to go to that family. He asserts that the marriages have become void due to breach of contract. He also fears for Moloodan's life. He requests a clear fatwa. Sajjad Miyan and Moloodan's parents are deceased.

The Answer: There was no valid 'exchange condition' in the Nikah, and even if there were, a marriage does not become invalid due to an invalid condition. Even then, the condition was Zaitoon's Nikah, which did take place. In any case, Moloodan is the wedded wife of Ghaffar Khan, and Sajjad has no right to stop her. Sajjad should find his wife Zaitoon and keep her with him, or if he wishes not to, he should divorce her. This will have no effect on Moloodan's marriage. And Allah Almighty knows best.

Case 141: From Badaun, Maulvi Mohalla, Kucheh Maulvi Anwar Husain, Sadr-e-Aala Makaan Bakhsh Wala, sent by Habibullah Sahib, 12 Shawwal 1335 AH. Musammat Hindah, daughter of Musammat Khalidah, is a widow. She has two minor children. Zaid, the father of Hindah's deceased husband...

फ़तावा रज़विया जिल्द ११

क़बूल कर लेने से निकाह नहीं हो सकता। वहू तआला आलम।

मसअला १४०: मसऊला बबर अकलवाज़ मौज़ा करनपुरा डाकख़ाना सिवान डिवीज़न ज़िला सारन छपरा १५ शाबान १३३५ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस सूरत में?

[विवरण] हमशीरा (बहन): मुसम्मात मोलूदन, उम्र तक़रीबन १३ या १४ साल बरादर (भाई): सज्जाद मियाँ, उम्र तक़रीबन २१ या २२ साल ग़फ़्फ़ार पिसर बरादर ग़नी ख़ाँ मौजूद की औलाद हैं मुसम्मात ज़ैतून दुख़्तर हमशीरा ग़नी ख़ाँ मौजूद की औलाद हैं (साइड नोट): दोनों भाई-बहन हैं

शादी गोलावट यानी बदलैन (विनिमय) की शर्त पर हुई। सज्जाद मियाँ ने अपना निकाह मुसम्मात ज़ैतून दुख़्तर ग़नी ख़ाँ से किया और सज्जाद ने अपनी बहन मुसम्मात मोलूदन का निकाह ग़फ़्फ़ार पिसर ग़नी ख़ाँ से किया। निकाह के बाद बारात की रवानगी और आमद की तारीख़ तय हुई। सज्जाद के कहने पर बारात जाने में जब तीन दिन बाक़ी थे, तभी मुसम्मात ज़ैतून अपने बाप के घर से निकल गई। उसके बाद ग़फ़्फ़ार की बारात सज्जाद के यहाँ नहीं आई। अब दोनों घरानों के बीच झगड़ा और कड़वाहट पैदा हो गई है। सज्जाद का कहना है कि चूँकि ज़ैतून उसके घर नहीं आई और विनिमय निकाह की शर्त टूटने और उस ख़ानदान की बदचलनी ज़ाहिर होने की वजह से वह अपनी बहन मोलूदन को उस ख़ानदान में नहीं जाने देगा। उसका दावा है कि शर्त और वादे के उल्लंघन की वजह से निकाह बातिल (अमान्य) हो गया है। उसे मोलूदन की जान का भी ख़तरा महसूस हो रहा है। अर्ज़ है कि इस पर साफ़-साफ़ फ़तवा दिया जाए। सज्जाद मियाँ और मोलूदन के माता-पिता का देहांत हो चुका है।

अल-जवाब: निकाह में विनिमय (बदल) की कोई वैध शर्त नहीं थी, और अगर होती भी तो निकाह 'शर्त-ए-फ़ासिद' (अमान्य शर्त) की वजह से फ़ासिद (अमान्य) नहीं होता। और अगर इसे छोड़ भी दें, तो शर्त ज़ैतून का निकाह था, जो हो गया। हर हाल में मोलूदन ग़फ़्फ़ार ख़ाँ की निकाहशुदा पत्नी है और सज्जाद को उसे रोकने का कोई हक़ नहीं है। सज्जाद अपनी पत्नी ज़ैतून को तलाश करे और अपने पास रखे, और अगर नहीं रखना चाहता तो तलाक़ दे दे। मोलूदन के निकाह पर इसका कोई असर नहीं पड़ सकता। वल्लाह तआला आलम।

मसअला १४१: अज़ बदायूँ, मौलवी मोहल्ला, कूचा मौलवी अनवार हुसैन सदर आला मकान बख़्श वाला, मुरसला हबीब उल्लाह साहब, १२ शव्वाल १३३५ हिजरी। मुसम्मात हिन्दा दुख़्तर मुसम्मात ख़ालिदा बेवा है। उसके दो बच्चे ना-बालीग हैं, ज़ैद पिसर शौहर मुतवफ़्फ़ा हिन्दा का...

पृष्ठ २९६ / ७३९

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

قبول کر لینے سے نکاح نہیں ہو سکتا۔ وھو تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۴۰: مسئولہ ببر اکلواز موضع کرن پورہ ڈاکخانہ سیوان ڈویژن ضلع سارن چھپرا ۱۵ شعبان ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں

[Box Content] ہمشیرہ: مسماۃ مولودن عمر تخمیناً ۱۳ یا ۱۴ برس برادر: سجاد میاں عمر تخمیناً ۲۱ یا ۲۲ برس غفار پسر برادر غنی خاں موجود کی اولاد ہیں مسماۃ زیتون دختر ہمشیرہ غنی خاں موجود کی اولاد ہیں (Vertical on left): دونوں بھائی بہن ہیں

شادی گولاوٹ یعنی بدلین شرط پر میاں سجاد مذکور نے اپنا نکاح مسماۃ زیتون مذکور دختر غنی خاں سے کیا اور سجاد مذکور اپنے ہمشیرہ مسماۃ مولودن کا نکاح ساتھ غفار پسر غنی خاں سے کیا اور تاریخ شادی روانگی و آمد و بارات کا بعد نکاح مذکورین کے تاریخ دوسرا مقرر تھا کہ اس درمیان میں جب تین روز سجاد کے کہنے سے بارات جانے کو باقی تھے تب ہی مسماۃ زیتون اپنے باپ کے گھر سے باہر نکل گئی تب بعدہ غفار مذکور کی بارات بھی سجاد کے نہیں آئی۔ اب درمیان اس گھرانے اور اس گھرانے کے تکرار رنجار رنجی تطویل کلامی پیش ہو گیا، سجاد کا مقولہ ہے کہ جب زیتون میرے گھر میں نہیں آئی تھی تب الحال بوجہ نقص شرط نکاح بدلین کے رہی اس خاندان کی بد چلنی وغیرہ ظاہر ہو جانے سے ہرگز ہم اپنی ہمشیرہ مولودن کو اس خاندان میں نہیں جانے دیا نہ اب آنے دیں گے اور نکاح مذکورین بوجہ شرط شکنی و عہد شکنی کے باطل ہو گیا، خدانخواستہ مسماۃ مولودن کی جان کو کوئی نقصان پہنچ جاوے تو عجب نہیں ہے۔ عرض ہے

صاف صاف فتویٰ اس کا حضور ارقام فرماویں۔ والسلام سجاد میاں برادر مولودن ہمشیرہ ان لوگ کے والدین فوت کر گئے

الجواب: نکاح میں کوئی شرط بدل کی نہ تھی اور ہوتی بھی تو نکاح شرط فاسد سے فاسد نہ ہوتا اور یہ بھی نہ سہی تو شرط نکاح زیتون تھا وہ ہو گیا، بہر حال مولودن غفار خاں کی منکوحہ ہے اور سجاد کو اس کے روکنے کا کوئی حق نہیں سجاد اپنی منکوحہ زیتون کو تلاش کر کے اپنے قبضہ میں رکھے اور نہ رکھنا چاہے تو طلاق دے، مولودن کے نکاح پر اس سے کوئی اثر نہیں پڑ سکتا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۴۱: از بدایوں مولوی محلہ کوچہ مولوی انوار حسین صدر اعلیٰ مکان بخش والا مرسلہ حبیب اللہ صاحب ۱۲ شوال ۱۳۳۵ھ مسماۃ ہندہ دختر مسماۃ خالدہ بیوہ ہے۔ اس کے دو بچے نا بالغ ہیں، زید پدر شوہر متوفی ہندہ کا

Fatawa Razawiya, Volume 11

Zaid provides food for children but it is insufficient. Hindah and Khalidah support themselves and Zaid through their own labor. Zaid wants Hindah to marry his other son, who already has a wife and children. Hindah and Khalidah do not agree. Other relatives of Hindah consider a second marriage to be bad. If they do give an opinion on marriage considering Hindah's youth, they suggest someone with whom Hindah and Khalidah are satisfied. Now Khalidah wants to arrange Hindah's marriage with a third person with whom Hindah is also satisfied and they live in the same place. She wants to arrange it in a way that one or two close persons and the third man she wants the marriage with are aware, and he himself is aware, so that Hindah remains safe from bad thoughts and actions and no dispute arises regarding children. Is such a marriage possible or not? For extra precaution, can the third person, with whom Hindah agrees to marry, recite the marriage sermon (khutbah) himself and conduct the proposal and acceptance (ijab-o-qabul) with Hindah, or is another person required to perform the marriage?

Answer: There is no need for another person to perform the marriage. Only the man and woman need to be there, and one man and two women, who are sane, adult, and Muslim, should simultaneously hear and understand the proposal and acceptance of both the man and woman, knowing that a marriage is taking place. However, if Hindah does not have a guardian (wali), i.e., no adult sane male among the descendants of her grandfather or great-grandfather, then she has the authority to marry whoever she wants. Otherwise, if the person she wants to marry is her "Kufu" (equal) – meaning he is not so inferior in religion, lineage, behavior, or profession that marrying him would be a cause of shame and disgrace for Hindah's guardian – then too Hindah is independent. But if he is not a "Kufu", then unless the guardian, knowing him to be a non-Kufu, explicitly grants permission before the marriage, the marriage will not take place at all, even if a thousand announcements are made. This is the fatwa in Durr-e-Mukhtar, etc. (The fatwa is on this. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 142: From Biharipur Bareilly, questioned by Maulvi Nawab Sultan Ahmad Khan Sahib, dated 21 Dhu al-Qi'dah 1335 AH.

A request to the guardians of the Muhammadan Sharia and supporters of the strong Ahmadi religion, the scholars of the Hanafi school, is that a person named Mir Imam-ud-Din married off his sane, adult daughter to a person named Abdul Quddus. The

proposal and acceptance of the marriage were conducted by a capable person. All the people of the settlement were present, but the Qazi Sahib was not present in the gathering. So, is this marriage, which was performed by someone other than the Qazi, valid or not? And what powers do these two Qazis have? And if someone did not invite the Qazi to the wedding for a specific reason, what blame lies on them? And should the Qazi's fee for the marriage ceremony be given to him even though it wasn't performed by him? Please explain thoroughly, may Allah reward you sufficiently.

Answer: A Qazi is not a condition for marriage. A person can have it performed by anyone they wish, even by the man and woman themselves in front of two witnesses.

ज़ैद बच्चों को खाना देता है लेकिन वह अपर्याप्त है। हिन्दा और खालिदा अपनी मेहनत से ज़ैद के साथ गुज़ारा करती हैं। ज़ैद चाहता है कि हिन्दा का निकाह उसके दूसरे बेटे से हो जाए, जिसकी पहले से ही पत्नी और बच्चे हैं। हिन्दा और खालिदा इसके लिए सहमत नहीं हैं। हिन्दा के अन्य रिश्तेदार दूसरे निकाह को बुरा समझते हैं। यदि वे हिन्दा की जवानी को देखते हुए निकाह की राय देते भी हैं, तो ऐसे व्यक्ति से जिससे हिन्दा और खालिदा संतुष्ट हों। अब खालिदा हिन्दा का निकाह एक तीसरे व्यक्ति से करना चाहती है जिससे हिन्दा भी सहमत है और वे एक ही जगह रहते हैं। वह चाहती है कि निकाह इस तरह हो कि एक-दो अज़ीज़ (करीबी) लोग और वह तीसरा व्यक्ति जिससे निकाह होना है, वाकिफ़ हों, और वह स्वयं भी वाकिफ़ हो, ताकि हिन्दा बुरे विचारों और कार्यों से बची रहे और बच्चों को लेकर कोई विवाद न हो। तो क्या इस तरह निकाह हो सकता है या नहीं? अधिक सावधानी के लिए, क्या वह तीसरा व्यक्ति जिससे हिन्दा निकाह के लिए सहमत है, स्वयं निकाह का खुतबा पढ़कर हिन्दा से ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) करा सकता है या निकाह कराने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता है?

उत्तर: निकाह पढ़ाने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है। केवल स्त्री और पुरुष हों और एक पुरुष व दो स्त्रियाँ जो बुद्धिमान, वयस्क और मुस्लिम हों, एक साथ स्त्री और पुरुष दोनों के ईजाब-ओ-क़ुबूल को सुनें और समझें कि यह निकाह हो रहा है। लेकिन यदि हिन्दा का कोई वली (अभिभावक) नहीं है, यानी दादा या परदादा की संतान में कोई बुद्धिमान वयस्क पुरुष नहीं है, तो उसे अधिकार है कि जिससे चाहे निकाह कर ले। अन्यथा, यदि वह व्यक्ति जिससे वह निकाह करना चाहती है, हिन्दा का "कुफ़ू" (समान) है - यानी धर्म, वंश, आचरण या पेशे में वह इतना कम नहीं है कि उससे निकाह करना हिन्दा के वली के लिए अपमान और शर्म का कारण बने - तब भी हिन्दा स्वतंत्र है। और यदि वह "कुफ़ू" नहीं है, तो जब तक वली निकाह से पहले उसे गैर-कुफ़ू जानते हुए स्पष्ट रूप से निकाह की अनुमति नहीं देगा, तब तक निकाह होगा ही नहीं, चाहे हज़ारों घोषणाएँ की जाएँ। दुर्र-ए-मुख्तार आदि में यही फ़तवा है। (फ़तवा इसी पर है। त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 142: बिहारीपुर बरेली से, मौलवी नवाब सुल्तान अहमद खां साहब द्वारा प्रेषित, दिनांक 21 ज़िल-क़ादा 1335 हिजरी।

मुहम्मदी शरीयत के संरक्षकों और अहमद के सुदृढ़ धर्म के समर्थकों, हनफ़ी मत के अनुयायी विद्वानों की सेवा में निवेदन यह है कि मीर इमाम-उद-दीन नामक एक व्यक्ति ने अपनी बुद्धिमान वयस्क पुत्री का निकाह अब्दुल कुद्दूस नामक व्यक्ति से कर दिया। निकाह का ईजाब-ओ-क़ुबूल एक योग्य व्यक्ति ने कराया। बस्ती के सभी लोग उपस्थित थे लेकिन क़ाज़ी साहब सभा में उपस्थित नहीं थे। तो क्या यह निकाह, जो गैर-क़ाज़ी द्वारा पढ़ाया गया, जायज़ हुआ या नहीं? और इन दोनों क़ाज़ियों के पास क्या अधिकार हैं? और यदि किसी व्यक्ति ने किसी विशेष कारण से क़ाज़ी को शादी में आमंत्रित नहीं किया, तो उस पर क्या दोष लगता है? और क्या क़ाज़ी का निकाह-ख्वानी (निकाह पढ़ाने) का हक उसे दिया जाना चाहिए जबकि निकाह उससे नहीं पढ़ाया गया? विस्तार से स्पष्ट करें, अल्लाह आपको पर्याप्त प्रतिफल दे।

उत्तर: क़ाज़ी निकाह के लिए कोई शर्त नहीं है। व्यक्ति जिससे चाहे निकाह पढ़वाए, चाहे स्वयं स्त्री-पुरुष दो गवाहों के सामने कर लें।

पृष्ठ 297/739

بچوں کو کھانے کو دیتا ہے مگر غیر کافی، ہندہ و خالدہ اپنی محنت کر کے بشمول زید بسر کرتے ہیں زید چاہتا ہے کہ ہندہ اس کے دوسرے لڑکے سے جس کی بیوی و اولاد موجود ہے عقد نکاح باندھنے پر رضامند ہوجائے مگر ہندہ و خالدہ رضامند نہیں دیگر اعزائے ہندہ عقد ثانی کو برا خیال کرتے ہیں۔ اور اگر ہندہ کی جوانی پر خیال کر کے رائے عقد کی دیتے ہیں تو ایسے شخص سے جس سے ہندہ و خالدہ کو اطمینان ہوتا ہے اب خالدہ ایک شخص ثالث سے جس سے ہندہ بھی رضامند ہے اور ایک جگہ رہتے ہیں اس طرح عقد کرنا چاہتی ہے کہ دو ایک شخص عزیز تیسرے آدمی جس سے عقد کرنا چاہتی ہے واقف ہوں، اور خود واقف ہوتا کہ ہندہ برے خیال و افعال سے بچی رہے اور اولاد کی بابت نزاع پیدا نہ ہو، تو اس طرح عقد ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بخیال مزید احتیاط شخص ثالث جس سے عقد نکاح پر رضامند ہے ہندہ کو خطبہ نکاح پڑھ کر ایجاب و قبول ہندہ سے کرا سکتا ہے یا عقد نکاح باندھنے کے واسطے شخص غیر کی ضرورت ہے؟ الجواب: نکاح پڑھانے کے لیے دوسرے شخص کی حاجت نہیں صرف مردوزن ہوں اور ایک مرد دو عورتیں عاقل بالغ مسلم کہ معاً دونوں مردوزن کا ایجاب و قبول سنیں اور سمجھیں کہ یہ نکاح ہو رہا ہے۔ مگر ہندہ اگر ولی نہیں رکھتی یعنی دادا پر دادا کی اولاد میں کوئی مرد عاقل بالغ جب تو اسے اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرلے۔ ورنہ اگر یہ شخص جس سے نکاح کیا چاہتا ہے ہندہ کا کفو ہے یعنی مذہب نسب چال چلن پیشے کسی بات میں ایسا کم نہیں کہ اس سے نکاح ہونا ولی ہندہ کے لیے باعث ننگ و عار ہو جب بھی ہندہ مختار ہے۔ اور اگر کفو نہیں تو جب تک ولی پیش از نکاح اسے غیر کفو جان کر صراحۃً اجازت نکاح نہ دے گا نکاح ہو گا ہی نہیں اگرچہ ہزار اعلان کیا جائے علیہ الفتوٰی در مختار وغیرہ (فتوٰی اسی پر ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۴۲: از بہاری پور بریلی مسئولہ جناب مولوی نواب سلطان احمد خاں صاحب مورخہ ۲۱ ذی قعدہ ۱۳۳۵ھ عرض در خدمت والیان شریعت محمدی و حامیاں دین متین احمدی علمائے مقلدین مذہب حنفی یہ ہے کہ ایک شخص میر امام الدین نامی اپنی دختر عاقلہ بالغہ کا نکاح عبدالقدوس نامی کے ساتھ کر دیا، نکاح کا ایجاب و قبول ایک لئیق شخص نے کرایا۔ بستی کے سب لوگ حاضر تھے مگر قاضی صاحب جلسہ میں موجود نہ تھے تو یہ نکاح جو غیر قاضی سے پڑھایا جائز ہوا یا نہیں؟ اور ان دونوں قاضیوں کو کیا اختیارات ہیں اور اگر کسی شخص نے کسی خاص وجہ سے قاضی کو شادی میں دعوت نہیں دی تو اس پر کیا الزام آتا ہے، اور قاضی کا حق نکاح خوانی اس کو دینا چاہئے یا نہیں جبکہ قاضی سے نہ پڑھوایا، بینوا بیانًا وافیا اجر کم اللہ اجرا کافیا۔ الجواب: قاضی کوئی شرط نکاح نہیں، آدمی جس سے چاہے پڑھوائے چاہے مردوزن دو گواہوں کے سامنے

They should perform the proposal and acceptance themselves. For a Qazi of this name, there are no powers according to Sharia, nor is he entitled to any fee, especially since another person performed the marriage ceremony. Nor is there any blame in not inviting the Qazi. These marriage ceremony Qazis are "just names that you and your fathers have named, for which Allah has sent down no authority" (Quran 7:71). (These are self-made names, there is no Sharia evidence for them. - Editor) And Allah knows best.

Mas'ala 143: From Baseeri, District Bareilly, sent by Hakim Riaz-ud-Din Sahib Razawi, 23rd Dhu al-Qi'dah 1335 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married a widow who was his younger brother's wife. She had an underage daughter with her. Her stepfather, who was previously her paternal uncle (elder brother of her biological father), married off this underage girl to a boy using his authority as a guardian. The girl has not yet gone to her husband's home. Now that both have reached puberty, the husband is calling his wife to his home, but she refuses to go, saying, "Your character is not good, I will break the marriage with you." In this situation, can the girl annul her marriage, or is the boy authorized to take her by force? And is the guardianship of her stepfather valid or not? Provide an answer and be rewarded.

The Answer:

Being a stepfather is not a ground for guardianship. Yes, being a paternal uncle is a cause for guardianship. If there was no other guardian more senior to him, and this boy to whom he married the girl was not so inferior in religion, lineage, profession, or character that marrying the girl to him would be a cause of shame and disgrace, then the marriage is valid. However, the girl had the option to express her dissatisfaction with this marriage immediately upon reaching puberty. In that case, she has the right to annul it. But if she delayed even a little, the marriage became binding, and the option to annul no longer remains. And if, at the time of marriage, the boy was deficient in the aforementioned matters, such that marrying the girl to him was a cause of shame and disgrace, then the marriage never took place to begin with, so there is no need for annulment! And Allah knows best.

Mas'ala 144 to 147: From Daleel Gunj, Pargana Jahanabad, District Pilibhit, sent by Munshi Muhibullah Sahib, retired District Officer, 23rd Dhu al-Qi'dah 1335 AH.

Regarding the proposal and acceptance performed at the time of marriage, many people raise objections against each other. (1) Zaid's daughter, whose name you know, though currently no girl by that name exists in that house, in exchange for the Sharia mahr of this many rupees and this many Sultanate gold dinars of current currency, besides maintenance, in the contract of marriage...

---

1 Al-Quran 7/71 Page 298 of 739

वे स्वयं ईजाब (प्रस्ताव) और कुबूल (स्वीकृति) कर लें। इस नाम के काज़ी के लिए शरीयत के अनुसार कोई अधिकार नहीं है, न ही वह शुल्क का हकदार है, जबकि निकाह किसी अन्य व्यक्ति ने पढ़ाया है। और न ही काज़ी को आमंत्रित न करने में कोई दोष है। ये निकाह पढ़ाने वाले काज़ी "केवल नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है" (क़ुरआन 7:71)। (ये उनके अपने बनाए हुए नाम हैं, शरीयत के अनुसार इनका कोई प्रमाण नहीं है। - संकलक) और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 143: बसेड़ी, जिला बरेली से हकीम रियाज़ुद्दीन साहिब रज़वी द्वारा भेजा गया, 23 ज़िल-क़ादा 1335 हिजरी।

दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने एक विधवा महिला से निकाह किया जो उसके छोटे भाई की पत्नी थी। उस महिला के साथ उसकी एक नाबालिग बेटी थी। उस बच्ची के सौतेले बाप ने, जो पहले उसका ताया (बड़े चाचा) था, अपनी विलायत (संरक्षकता) से उस नाबालिग लड़की का निकाह एक लड़के से कर दिया। लड़की अभी तक अपने पति के घर नहीं गई है। अब जब दोनों बालिग (वयस्क) हो गए हैं, तो पति अपनी पत्नी को अपने घर बुला रहा है, लेकिन पत्नी उसके घर जाने से इनकार कर रही है और कहती है कि "तुम्हारा चाल-चलन ठीक नहीं है, मैं तुमसे निकाह तोड़ दूंगी।" ऐसी स्थिति में, क्या लड़की अपना निकाह निरस्त (फ़स्ख़) कर सकती है, या लड़के को अधिकार है कि वह उसे ज़बरदस्ती ले जाए? और क्या उसके सौतेले बाप की विलायत सही है या नहीं? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर (अल-जवाब):

सौतेला बाप होना विलायत का कोई कारण नहीं है। हाँ, चाचा होना विलायत का एक कारण है। यदि उससे श्रेष्ठ कोई और वली (संरक्षक) नहीं था, और यह लड़का जिससे उसने इस लड़की का निकाह कराया, धर्म, वंश, पेशे या चाल-चलन में इतना कमतर नहीं था कि उससे निकाह करना लड़की के लिए लज्जा और अपमान का कारण हो, तो निकाह हो गया। लेकिन लड़की को अधिकार था कि बालिग होते ही तुरंत इस निकाह के प्रति अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करे, तब उसे इसे निरस्त करने का अधिकार है। और यदि उसने ज़रा भी देर की, तो अब निकाह अनिवार्य हो गया, निरस्त करने का अधिकार नहीं रहा। और यदि निकाह के समय ही उस लड़के में उक्त बातों में कोई कमी थी जिसके

कारण उस लड़की का निकाह अपमान का कारण हो, तो निकाह शुरू से ही हुआ ही नहीं, फिर उसे निरस्त करने की क्या आवश्यकता! और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 144 से 147: दलील गंज, परगना जहानाबाद, जिला पीलीभीत से मुंशी मुहिब उल्लाह साहिब, रिटायर्ड जिला अधिकारी द्वारा भेजा गया, 23 ज़िल-क़ादा 1335 हिजरी।

निकाह के समय जो ईजाब और कुबूल कराए जाते हैं, उसमें अक्सर लोग एक-दूसरे पर आपत्ति करते हैं। (1) ज़ैद की लड़की जिसका नाम आपको ज्ञात है, हालांकि वर्तमान में उस नाम की कोई लड़की उस घर में मौजूद नहीं है, शरीयत के अनुसार निर्धारित मेहर के बदले, इतने रुपये और इतने सुल्तानी स्वर्ण दीनार जो वर्तमान में प्रचलित हैं, गुज़ारा भत्ते के अतिरिक्त, निकाह के अनुबंध में...

---

1 क़ुरआन 7/71 पृष्ठ 298/739

خود ایجاب وقبول کر لیں اس نام کے قاضی کے لیے شرعاً کچھ اختیارات نہیں، نہ وہ اجرت کا مستحق، جبکہ نکاح دوسرے نے پڑھایا، نہ قاضی کو دعوت نہ دینے میں کوئی الزام، یہ نکاح خوانی کے قاضی اَسْمَاءً سَمَّیْتُمُوْھَا اَنْتُمْ وَاٰباؤُکُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰہُ بِھَا مِنْ سُلْطٰنٍ ط 1 (یہ اپنے بنائے نام ہیں، شرعی طور ان پر کوئی دلیل نہیں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۴۳: از بسیڑی ضلع بریلی مرسلہ حکیم ریاض الدین صاحب رضوی ۲۳ ذی القعدہ ۱۳۳۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک عورت بیوہ جو کہ اس کے چھوٹے بھائی کی زوجہ تھی اس سے نکاح کیا اور اب اس کے ساتھ میں ایک دختر نابالغ تھی اس دختر کا نکاح اس کے سوتیلے باپ جو اس کا پہلے تایا تھا اس نے اپنی ولایت سے نابالغہ کا نکاح ایک لڑکے کے ساتھ کر دیا لیکن لڑکی نکاح سے تاہنوز اپنے شوہر کے یہاں نہیں گئی اب ناکحین بالغ ہوئے تو ناکح اپنی منکوحہ کو اپنے گھر بلاتا ہے اور منکوحہ اس کے گھر جانے سے انکار کر رہی ہے اور کہتی ہے کہ تیرا چال چلن ٹھیک نہیں ہے میں تجھ سے نکاح توڑ دوں گی، تو اس صورت میں لڑکی اپنا نکاح فسخ کر سکتی ہے یا لڑکے کو مجاز ہے کہ زبردستی اسے لے جائے اور ولایت اس کے سوتیلے باپ کی درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب:

سوتیلا باپ ہونا تو کوئی وجہ ولایت نہیں۔ ہاں چچا ہونا سبب ولایت ہے۔ اگر اس سے مقدم اور کوئی ولی نہ تھا اور یہ لڑکا جس سے اس نے اس لڑکی کا نکاح کیا مذہب نسب یا پیشہ یا چال چلن میں ایسا کم نہ تھا کہ اس سے اس لڑکی کا نکاح باعث ننگ وعار ہو تو نکاح ہوگیا، مگر اس لڑکی کو

اختیار تھا کہ بالغہ ہوتے ہی فوراً اس نکاح سے اپنی ناراضی ظاہر کرے، جب تو اسے فسخ کرنے کا اختیار ہے، اور اگر ذرا دیر لگائی تو اب نکاح لازم ہوگیا اختیار فسخ نہ رہا، اور اگر وقت نکاح ہی اس لڑکے میں امور مذکورہ میں کوئی کمی تھی جس کے سبب اس لڑکی کا نکاح باعث ننگ و عار ہو، جب نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں فسخ کی کیا حاجت ! واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۴۴ تا ۱۴۷: از دلیل گنج پرگنہ جہاں آباد ضلع پیلی بھیت مرسلہ منشی محب اللہ صاحب ضلعدار پنشنر ۲۳ ذی القعدہ ۱۳۳۵ھ

وقت نکاح جو ایجاب وقبول کرائے جاتے ہیں اس میں اکثر اشخاص ایک دوسرے کے خلاف اعتراض کرتے ہیں۔ (۱) زید کی لڑکی کہ نام اس کا تم کو معلوم ہے اور بالفعل اس نام کی کوئی لڑکی اس گھر میں موجود نہیں ہے بعوض مہر شرعی اس قدر روپے اور اس قدر دینار سرخ سلطانی سکہ رائج الوقت سوائے نان نفقہ کے بیچ نکاح...

---

1 القرآن ۷ / ۷۱ Page 298 of 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

...came into your [possession], and I gave, you accepted. (2) The rest of the phrasing remains the same, except instead of the word "siwaye" (except), they use "alawah" (besides/in addition to). (3) In some cases, the phrasing remains the same, but instead of "siwaye" or "alawah", the word "ma'" (with) is used. (4) Some people only say that the marriage came into yours and I gave it, and some only say the word "ayi" (came), and some only say the word "di" (gave). Which word should be used? Now the objection to this word is that when the word "siwaye" maintenance (nan-o-nafaqah) is used, then the maintenance did not become the responsibility of the groom, rather only the dower (mahr) money became due. Just as if someone says such and such thing was given to such and such person "siwaye" (except) the turban, meaning the turban was not given. Similarly, the girl was given in marriage in exchange for this much dower "siwaye" maintenance, meaning this girl's maintenance did not come into the groom's marriage. The same objection arises from saying the word "alawah" (besides). And when the word "ma'" (with) maintenance is used, objectors refer to the amount of dower and say that by saying "in exchange for this much Shariah dower with maintenance", maintenance has become included in the dower. That is, when the woman receives maintenance, it should be deducted from the dower, and once the fixed dower amount has been fully received according to that maintenance, the woman would no longer be entitled to receive maintenance nor the dower money. As if she remained in the marriage without maintenance and dower, and the woman herself should arrange for her food and drink. Please clarify whether the marriage will be valid with the use of all three words "siwaye", "alawah", and "ma'", and will the maintenance remain the responsibility of the man or not? And with the use of which word will the maintenance be due, and with which will it not?

The Answer: These are all delusions and the debate over them is also futile. They are delusions because the amount mentioned is intended only for the dower, and "alawah" (besides), "masawaye" (other than), and "ma'" (with) are all attributes of the dower. That is, that dower which is besides maintenance or other than them or with them. The meaning of "alawah" and "siwaye" is that its obligation is in addition to their obligation, and the meaning of "ma'" is that this and that are partners in being obligatory. This is the intended meaning and this is the concept. And the debate over them is futile because maintenance and dower are not such things that they would be negated even if their negation is intended, or that any flaw would occur in the marriage. Marriage does not become void due to corrupt conditions; rather, those

conditions themselves become void. If a marriage is contracted on the condition that there will be no dower, then also dower will be mandatory by Shariah; one would have to give 'mahr-e-misl' (customary dower). And if a marriage is contracted on the condition that no maintenance will be obligatory, then also it will certainly be obligatory in its form of obligation, because renouncing it before it becomes obligatory is meaningless. It is in the Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box Text] What is the matter with people who stipulate conditions that are not in the Book of Allah? Whoever stipulates a condition that is not in the Book of Allah... What is the state of such people who impose such conditions for which there is no permission in the Book of Allah in any way, such conditions...

...तुम्हारे के आई, और दी मैंने कुबूल की तुमने। (२) बाकी इबारत सब वही है सिर्फ बजाए लफ्ज़ "सिवाए" के अलावा इस्तेमाल करते हैं। (३) में सब इबारत वही है बजाए "सिवाए" या "अलावा" के लफ्ज़ "मअ" (साथ) इस्तेमाल करते हैं। (४) बाज़ शख़्स सिर्फ ये कहते हैं कि बीच निकाह तुम्हारे के आई और दी मैंने और बाज़ सिर्फ लफ्ज़ "आई" कहते हैं और बाज़ शख़्स सिर्फ लफ्ज़ "दी" कहते हैं, इस में कौन सा लफ्ज़ इस्तेमाल करना चाहिये, अब एतराज़ इस लफ्ज़ पर है कि जब लफ्ज़ सिवाए नान नफ़का (भरण-पोषण) कहा गया तो नान व नफ़का दूल्हा के ज़िम्मे आएद न हुआ बल्कि सिर्फ रुपया महर का आएद हुआ जैसे कोई शख़्स कहे कि फ़लां फ़लां शय फ़लां शख़्स को दी गई सिवाए पगड़ी के यानी पगड़ी नहीं दी गई, इस तरह लड़की बिल-इवज़ (बदले में) इस कदर महर के निकाह में दी गई सिवाए नान व नफ़का के यानी इस लड़की का नान व नफ़का दूल्हा के निकाह में नहीं आया, यही एतराज़ लफ्ज़ अलावा के कहने से भी पैदा होता है। और जब लफ्ज़ मअ नान व नफ़का कहा जाता है तो मोअतरिज़ (एतराज़ करने वाले) लोग रुजू करते हैं तादाद महर की तरफ, और कहते हैं कि बिल-इवज़ इस कदर महर-ए-शरई मअ नान व नफ़का के कहने से नान व नफ़का महर में शामिल हो गया, यानी जब औरत नान व नफ़का पाए तो वो महर मुजरा दिया जाए (मुजरा हो जाए) और तअय्युन (निर्धारण) महर का रुपया इस नान व नफ़का के हिसाब से जब सब पा चुके तो फिर औरत न नान व नफ़का पाने की मुस्तहिक (हकदार) रही और न ज़र-ए-महर की, गोया वो बे नान व नफ़का और महर के निकाह में रही, अपने खाने पीने का इंतज़ाम औरत खुद करे, मोअज़्ज़ज़ (सम्मानित मुफ़्ती साहब) फरमाएं कि हर सह (तीनों) अल्फ़ाज़ सिवाए अलावा मअ के इस्तेमाल के निकाह दुरुस्त होगा और नान नफ़का ब-ज़िम्मा मर्द आएद रहेगा या नहीं? और कौन से लफ्ज़ के इस्तेमाल से नान नफ़का आएद होगा और कौन से नहीं?

अल-जवाब: ये सब औहाम (वहम/भ्रम) हैं और उन की बहस फ़ज़ूल भी, औहाम तो यूं हैं कि जो रक़म ज़िक्र की जाती सिर्फ महर के लिए मक़सूद होती है और अलावा और मासिवाए और मअ ये सब महर की सिफ़तें होती हैं यानी वो महर कि नान नफ़का से अलावा या उन के सिवा या उन के साथ है। अलावा और सिवाए के ये मानी कि इस का वुजूब (अनिवार्यता) उन के वुजूब पर ज़ायद (अधिक) है और मअ के ये मानी कि ये और वो वुजूब में शरीक हैं यही मुराद होती है और ये मफ़हूम, और इन से बहस फ़ज़ूल यूं कि नान व नफ़का व महर ऐसी चीज़ नहीं कि अगर बिल-क़स्द (जानबूझकर) उन की नफ़ी (मनाही) भी की जाए तो मुन्तफ़ी हो जाएं(समाप्त हो जाएं) या निकाह में

कुछ ख़लल आए, निकाह शरुत-ए-फ़ासिदा (ग़लत शर्तों) से बातिल नहीं होता बल्कि वो खुद शर्तें ही बातिल हो जाती हैं, अगर इस शर्त पर निकाह किया जाए कि महर कुछ न होगा जब भी महर लाज़िम शरअन होगा महर-ए-मिसल देना आएगा। और अगर इस शर्त पर निकाह किया जाए कि नान व नफ़का कुछ वाजिब न होगा जब भी अपनी सूरत-ए-वुजूब में ज़रूर वाजिब होगा कि क़ब्ल-ए-वुजूब इस्क़ात (गिरा देना/छोड़ देना) मोहमल (अर्थहीन) है। हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट] ऐसी क़ौम का क्या हाल हो जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जिन की इजाज़त किताबुल्लाह में किसी तरह नहीं, ऐसी शर्तें...

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

تمہارے کے آئی، اور دی میں نے قبول کی تم نے۔ (۲) باقی عبارت سب وہی ہے صرف بجائے لفظ "سوائے" کے علاوہ استعمال کرتے ہیں۔ (۳) میں سب عبارت وہی ہے بجائے "سوائے" یا "علاوہ" کے لفظ "مع" استعمال کرتے ہیں (۴) بعض شخص صرف یہ کہتے ہیں کہ بیچ نکاح تمہارے کے آئی اور دی میں نے اور بعض صرف لفظ "آئی" کہتے ہیں اور بعض شخص صرف لفظ "دی" کہتے ہیں، اس میں کون سا لفظ استعمال کرنا چاہئے ، اب اعتراض اس لفظ پر ہے کہ جب لفظ سوائے نان نفقہ کہا گیا تو نان و نفقہ دولھا کے ذمہ عائد نہ ہوا بلکہ صرف روپیہ مہر کا عائد ہوا جیسے کوئی شخص کہے کہ فلاں فلاں شے فلاں شخص کو دی گئی سوائے پگڑی کے یعنی پگڑی نہیں دی گئی، اس طرح لڑکی بالوض اس قدر مہر کے نکاح میں دی گئی سوائے نان و نفقہ کے یعنی اس لڑکی کا نان و نفقہ دولھا کے نکاح میں نہیں آیا، یہی اعتراض لفظ علاوہ کے کہنے سے بھی پیدا ہوتا ہے۔ اور جب لفظ مع نان و نفقہ کہا جاتا ہے تو معترض لوگ رجوع کرتے ہیں تعداد مہر کی طرف، اور کہتے ہیں کہ بالعوض اس قدر مہر شرعی مع نان و نفقہ کے کہنے سے نان و نفقہ مہر میں شامل ہو گیا، یعنی جب عورت نان و نفقہ پائے تو وہ مہر مجرا دیا جائے اور تعین مہر کا روپیہ اس نان و نفقہ کے حساب سے جب سب پا چکے تو پھر عورت نہ نان و نفقہ پانے کی مستحق رہی اور نہ زر مہر کی، گویا وہ بے نان و نفقہ اور مہر کے نکاح میں رہی، اپنے کھانے پینے کا انتظام عورت خود کرے، معزز فرمائے کہ ہر سہ الفاظ سوائے علاوہ مع کے استعمال کے نکاح درست ہو گا اور نان نفقہ بذمہ مرد عائد رہے گا یا نہیں؟ اور کون سے لفظ کے استعمال سے نان نفقہ عائد ہوگا اور کون سے نہیں؟

الجواب: یہ سب اوہام ہیں اور ان کی بحث فضول بھی، اوہام تو یوں ہیں کہ جو رقم ذکر کی جاتی صرف مہر کے لیے مقصود ہوتی ہے اور علاوہ اور ماسوائے اور مع یہ سب مہر کی صفتیں ہوتی ہیں یعنی وہ مہر کہ نان نفقہ سے علاوہ یا ان کے سوا یا ان کے ساتھ ہے علاوہ اور سوائے کے یہ معنی کہ اس کا وجوب ان کے وجوب پر زائد ہے اور مع کے یہ معنی کہ یہ اور وہ وجوب میں شریک ہیں یہی مراد ہوتی ہے اور یہ مفہوم، اور ان سے بحث فضول یوں کہ نان و نفقہ وہ میرا ایسی چیز نہیں کہ اگر بالقصد ان کی نفی بھی کی جائے تو منتفی ہو جائیں یا نکاح میں کچھ خلل آئے، نکاح شروط فاسدہ سے باطل نہیں ہوتا بلکہ وہ خود شرطیں ہی باطل ہو جاتی ہیں، اگر اس شرط پر نکاح کیا جائے کہ مہر کچھ نہ ہوگا جب بھی مہر لازم شرعاً ہوگا مہر مثل دینا آئے گا۔ اور اگر اس شرط پر نکاح کیا جائے کہ نان و نفقہ کچھ واجب نہ ہوگا جب بھی اپنی صورت وجوب میں ضرور واجب ہوگا کہ قبل وجوب اسقاط مہمل ہے۔ حدیث میں ہے حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

مابال اقوام یشترطون بشروط لیست في کتاب اللہ من اشترط شرطا لیس في کتاب اللہ ایسی قوم کا کیا حال ہو جو ایسی شرطیں لگاتے ہیں جن کی اجازت کتاب اللہ میں کسی طرح نہیں، ایسی شرطیں

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic]: فهو رد وان كانت مائة شرط شرط الله احق واوثق [Urdu Translation]: Even if there are a hundred such conditions, they will be rejected. A condition permitted by Allah Almighty is more firmly established. (T)

Furthermore, if such a phrase is desired in which these misconceptions do not arise, then say: 'In exchange for this much dower (mahr), the obligation of bread and maintenance is in addition to it, I gave her to you in marriage.' And using 'gave' (di) instead of 'came' (ai) is better as it is explicit in creation (insha), and Allah knows best.

Problem 148: From Hangan Ghat, Nishanpura Mohalla, Wardha District, from Muhammad Ismail Sahib, dated 25 Dhu al-Qi'dah 1335 AH. Respected Maulana, peace be upon you. Please write what the ruling of the Sharia is in the following matter, may Allah grant you a good reward. Zaid married Amr's daughter. At the time of marriage, there was no condition of any kind. The girl came to the house after the departure (rukhsati). After a few days, the girl's father took her to his house and now demands from Zaid that he write on a stamp paper stating that 'I will not take the girl to my homeland, I will keep her here with her parents in this city.' If Zaid does not write the stamp, my answer from the girl's side is that I will not send the girl now. The matters to be inquired about are whether this excuse of Amr, meaning the girl's father, is reasonable and can he stop the girl in such a situation?

The Answer: If it was not decided to pay the dower (mahr) in full or in part in advance, or if it was decided and it has been paid, then this excuse of the girl's father is misplaced and he cannot stop her.

[Arabic]: قال اللہ تعالیٰ و اسکنوھن من حیث سکنتم من وجدکم [Urdu Translation]: Allah Almighty said: Lodge them where you dwell according to your means. (T) And Allah Almighty knows best.

And Allah Almighty knows best. Yes, if there is a special case where the journey is very long and there is a strong suspicion of harm to the girl in solitude there, then without sufficient security arrangements for proof, they should not be allowed to be taken there.

[Arabic]: قال اللہ تعالیٰ ولاتضار وھن لتضیقوا علیھن - وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ [Urdu Translation]: Allah Almighty said: And do not harm them in order to distress them. - And the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him [said]...

1. Sahih Bukhari, Kitab al-Shurut fil-Wala, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/377.
2. Al-Quran 65/6.
3. Al-Quran 65/6.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

[अरबी]: فهو رد وان كانت مائة شرط شرط الله احق واوثق [उर्दू अनुवाद]: भले ही सौ ऐसी शर्तें हों, वे खारिज कर दी जाएँगी। अल्लाह तआला द्वारा जायज़ शर्त ज़्यादा मज़बूत साबित है। (त)

इसके अलावा, अगर ऐसी इबारत (वाक्य) चाहते हैं जिसमें ये भ्रम पैदा न हों, तो यों कहें: 'इतने मेहर के बदले कि रोटी-कपड़े का वाजिब होना इसके अलावा है, मैंने उसे तुम्हारे निकाह में दिया।' और 'आई' की जगह 'दी' कहना बेहतर है क्योंकि यह इन्शा (रचना) में स्पष्ट है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 148: मुकाम हंगनघाट, मोहल्ला निशानपुरा, जिला वर्धा से, मोहम्मद इस्माइल साहब की तरफ़ से, दिनांक 25 ज़िल-क़ादा 1335 हिजरी। जनाब मौलाना साहब, अस्सलाम अलैकुम। बराए करम लिखें कि निम्नलिखित मामले में शरीयत का क्या हुक्म है, अल्लाह आपको इसका नेक बदला दे। ज़ैद ने अम्र की लड़की से निकाह किया, निकाह के वक्त किसी किस्म की शर्त वगैरह नहीं थी। लड़की रुखसत होकर घर आई। कुछ दिनों के बाद लड़की का बाप उसे अपने घर ले गया और अब ज़ैद से इस बात का मुतालबा (मांग) कर रहा है कि वह एक स्टाम्प पर यह लिखकर दे कि 'मैं लड़की को अपने वतन नहीं ले जाऊंगा, यहीं उसके माँ-बाप के पास इसी शहर में रखूँगा।' अगर ज़ैद स्टाम्प नहीं लिखेगा, तो लड़की की तरफ़ से मेरा जवाब है कि अब मैं लड़की को रुखसत नहीं करूँगा। दरयाफ़्त (पूछने) लायक बातें ये हैं कि क्या अम्र यानी लड़की के बाप का यह बहाना माकूल (उचित) है और क्या वह ऐसी हालत में लड़की को रोक सकता है?

जवाब: अगर पूरा या आधा मेहर पेशगी (अग्रिम) देना तय नहीं हुआ था, या तय हुआ था और वह अदा हो चुका है, तो लड़की के बाप का यह बहाना गलत है और वह उसे नहीं रोक सकता।

[अरबी]: قال اللہ تعالیٰ و اسکنوھن من حیث سکنتم من وجدکم [उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और उन्हें वहीं बसाओ जहाँ तुम खुद रहते हो, अपनी गुंजाइश के मुताबिक। (त) वल्लाहु तआला आलम

वल्लाहु तआला आलम। हाँ, अगर कोई खास सूरत हो कि सफ़र बहुत लंबा है और वहाँ तन्हाई में लड़की को नुकसान पहुँचने का गहरा अंदेशा है, तो इसके सबूत पर बिना मुनासिब इंतज़ाम के वहाँ ले जाने की इजाज़त नहीं दी जाएगी।

[अरबी]: قال اللہ تعالیٰ ولاتضار وھن لتضیقوا علیھن - وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ [उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और उन्हें तंग करने के लिए नुकसान न पहुँचाओ। - और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया...

1. सहीह बुखारी, किताबुश शूरूत फिल-वला, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/377.
2. अल-कुरान 65/6.
3. अल-कुरान 65/6.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

فھو رد وان کانت مائۃ شرط شرط اللہ احق واوثق ۱۔ سو بھی ہوں تو وہ مردود ہوں گی، اللہ تعالٰی کی طرف سے جائز شرط زیادہ ثابت مضبوط ہے۔ (ت)

بایں ہمہ اگر ایسی عبارت چاہیں جس میں یہ اوہام پیدا نہ ہوں تو یوں کہیں بعوض اتنے مہر کے کہ نان و نفقہ کا وجوب اس کے علاوہ ہے تیرے نکاح میں دی اور "آئی" سے "دی" بہتر ہے کہ یہ انشا میں صریح ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۴۸: از مقام ہنگن گھاٹ محلہ نشان پورہ ضلع وردھامر سلہ محمد اسمعیل صاحب مورخہ ۲۵ ذی القعدہ ۱۳۳۵ھ جناب مولانا صاحب مد ظلہ السلام علیکم۔ مندرجہ ذیل میں شرع شریف کا کیا حکم ہے تحریر فرمائیں، اللہ آپ کو اجر نیک عطا کرے، زید نے عمرو کی لڑکی سے نکاح کیا، نکاح کے وقت کسی قسم کی شرط وغیرہ نہ تھی، لڑکی رخصت ہو کر گھر آئی، چند روز کے بعد لڑکی کا والد لڑکی کو اپنے مکان میں لے گیا اور اب زید سے اس بات کا طالب ہے کہ وہ ایک اسٹامپ اس مضمون کا تحریر کر دے کہ میں لڑکی کو اپنے وطن میں نہیں لے جاؤں گا یہیں اس کے والدین کے پاس اس شہر میں رکھوں گا، اگر زید اسٹامپ نہ لکھے گا تو لڑکی کی طرف سے میرا جواب ہے کہ اب میں لڑکی کو رخصت نہ کروں گا، دریافت طلب امور یہ ہیں کہ کیا عمرو کا یعنی لڑکی کے باپ کا یہ عذر معقول ہے اور وہ ایسی حالت میں لڑکی کو روک سکتا ہے؟

الجواب: اگر مہر کل یا بعض پیشگی دینا قرار نہ پایا تھا یا قرار پایا تھا اور وہ ادا ہو گیا تو لڑکی کے باپ کا یہ عذر بیجا ہے اور وہ اسے نہیں روک سکتا۔

قال اللہ تعالیٰ و اسکنوھن من حیث سکنتم من وجدکم ۲۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: بیویوں کو اپنے ساتھ سکونت دو گنجائش کے مطابق۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

واللہ تعالیٰ اعلم۔ ہاں اگر کوئی صورت خاص ہو کہ سفر بہت طویل ہے اور وہاں تنہائی میں لڑکی کو ضرر رسانی کا ظن غالب ہے تو اس کے ثبوت پر بے بند وبست کافی، وہاں لے جانے کی اجازت نہ دیں گے۔

قال اللہ تعالیٰ ولاتضار وھن لتضیقوا علیھن ۳۔ وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ان کو تنگی دینے کے لیے ضرر مت دو، اور حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

۱ صحیح بخاری کتاب الشروط فی الولاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۳۷۷ ۲ القرآن ۶/۶۵ ۳ القرآن ۶/۶۵

...[Peace be upon him] said: 'There is no harm and no reciprocating of harm in Islam.' And Allah Almighty knows best. (T) Allah Almighty knows best.

Problem 149: Sent by Sheikh Fazal Ahmad Sahib, Tailor, Bazaar Katra, near Yaqoob Khan's Table and Chair Factory, dated 16 Muharram-ul-Haram 1336 AH. What do the scholars of religion and virtuous experts say regarding this matter: A man divorced his wife. Before her 'iddah (waiting period) expired, the woman went to another man and told him to marry her, saying she was ready to commit a forbidden act (sin) otherwise. Thinking that the woman would be ruined by falling into sin, and having tried to convince her to wait until the 'iddah passed before marrying, she did not listen. Consequently, the man married her under compulsion. Is this marriage valid or not? Furthermore, for eight months now, the woman has lived with this man she remarried. Their affection and love have grown to such an extent that even being apart for a short time is unbearable for both. Therefore, if this second marriage is invalid, how can it be made valid? Both the man and woman are distressed about how the marriage occurred, as they have frequently been intimate. Please provide a ruling and be rewarded.

The Answer: That was not a marriage; it was pure adultery. It is mandatory (fard) for this man and woman to separate immediately. The man must leave her. Then, if three menstrual cycles have not yet passed since the first divorce, it is mandatory to wait until three cycles have begun and ended. If they have already ended and this second man wishes to marry her, he can do so immediately after leaving her. However, if the woman wishes to marry a third person, then three menstrual cycles must begin and end after the day the second man leaves her. She cannot marry a third person before then. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

If a divorced woman marries another man during her 'iddah and he has intercourse with her, they shall be separated. For us (Hanafis), the two 'iddahs merge. Any menstruation she sees will count for both of them. When the first 'iddah ends and the second is not yet complete, she must complete the second 'iddah.

If a divorced woman marries another man during her 'iddah and that man has sexual intercourse with her, they must be separated. Both waiting periods ('iddahs) will be merged. Any upcoming menstruation will be common to both. When the first waiting period is over and the second is not yet complete, she must complete the second waiting period. (T)

It is mentioned in Khaniya, Bahr, and Dur-ul-Mukhtar.

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 2/91.
2. Durar Sharh Ghurar, Chapter of Iddah, Ahmad Kamil, Dar al-Sa'adah, Beirut, 1/403.

...[सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम] ने फ़रमाया: 'इस्लाम में न कोई नुक़सान है और न ही नुक़सान पहुँचाना जायज़ है।' और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। (त) अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 149: प्रेषक शेख़ फ़ज़ल अहमद साहब दर्जी, बाज़ार कटरा, याक़ूब ख़ान की मेज़-कुर्सी फ़ैक्ट्री के पास, दिनांक 16 मुहर्रम-उल-हराम 1336 हिजरी। दीन के विद्वान और गुणी विशेषज्ञ इस मामले में क्या कहते हैं: एक आदमी ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी। इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने से पहले ही औरत दूसरे आदमी के पास गई और उससे कहा कि मुझसे निकाह कर लो, वरना मैं गुनाह (हराम काम) करने के लिए तैयार हूँ। यह सोचकर कि वह औरत गुनाह की वजह से तबाह हो जाएगी, और उसे समझाने के बावजूद कि इद्दत गुज़र जाने के बाद निकाह कर लेंगे, जब वह किसी तरह नहीं मानी, तो उस आदमी ने मजबूरी में उससे निकाह कर लिया। क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? इसके अलावा, आठ महीने से वह औरत उसी आदमी के पास है जिससे उसने दोबारा निकाह किया। दोनों के बीच प्यार-मुहब्बत इतनी बढ़ गई है कि थोड़ी देर के लिए भी एक-दूसरे की नज़रों से ओझल होना नागवार गुज़रता है। लिहाज़ा, अगर दूसरा निकाह नाजायज़ है, तो किस तरह जायज़ हो सकता है? दोनों ही बहुत परेशान हैं क्योंकि निकाह के बाद वे अक्सर हमबिस्तर भी हुए हैं। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: वह निकाह नहीं हुआ, बल्कि वह शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) था। उन दोनों पर फ़र्ज़ है कि तुरंत अलग हो जाएँ। मर्द उसे छोड़ दे। फिर अगर पहली तलाक़ के बाद अभी तीन माहवारी (हैज़) न आई हों, तो इंतज़ार करना फ़र्ज़ है जब तक कि तीन माहवारी शुरू होकर ख़त्म न हो जाएँ। और अगर वे ख़त्म हो गई हैं और यह दूसरा आदमी उससे निकाह करना चाहता है, तो उसे छोड़ने के बाद फ़ौरन कर सकता है। लेकिन अगर वह औरत किसी तीसरे से निकाह करना चाहे, तो दूसरे मर्द के छोड़ने के बाद तीन माहवारी शुरू होकर ख़त्म होना ज़रूरी है। उससे पहले वह तीसरे से निकाह नहीं कर सकती। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

अगर किसी तलाक़शुदा औरत ने अपनी इद्दत के दौरान किसी दूसरे आदमी से निकाह किया और उसने उसके साथ सहवास किया, तो उनके बीच अलगाव कर दिया जाएगा। हमारे नज़दीक *(हनफ़ी)*,

दोनों इद्दतें एक-दूसरे में मिल जाएँगी। उसे जो भी माहवारी आएगी, वह दोनों के लिए मानी जाएगी। जब पहली इद्दत समाप्त हो जाए और दूसरी पूरी न हुई हो, तो उसे दूसरी इद्दत पूरी करनी होगी।

अगर तलाक़शुदा औरत ने इद्दत में किसी दूसरे से निकाह किया और उसने उससे सहवास कर लिया, तो दोनों में जुदाई कर दी जाएगी और दोनों इद्दतें मिल जाएँगी। आने वाली माहवारी दोनों की साझी होगी। जब पहली इद्दत पूरी हो जाए और दूसरी अभी अधूरी हो, तो दूसरी को पूरा करे। (त)

ख़ानिया, बहर और दुर्रे मुख़्तार में इसी प्रकार है।

1. अल-मुअजम अल-औसत, हदीस, मकतबा अल-मआरिफ़, रियाद, 2/91.
2. दुरर शरह ग़ुरर, बाबुल इद्दत, अहमद कामिल, दारुल सआदत, बेरूत, 1/403.

وسلم لا ضرر ولا ضرار فی الاسلام واللہ تعالیٰ اعلم۔ نے فرمایا: اسلام ضرر اور نقصان پہنچانے کی اجازت نہیں دیتا۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۴۹: مرسلہ شیخ فضل احمد صاحب درزی بازار کٹڑہ متصل کارخانہ میز کرسی یعقوب خاں مورخہ ۱۶ محرم الحرام ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین وفضلائے متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کے شوہر نے اپنی زوجہ کو طلاق دی عدت گزرنے نہ پائی کہ عورت نے دوسرے شخص کے پاس جاکر کہا کہ تم میرے ساتھ نکاح کرلو ورنہ میں حرام کرنے پر تیار ہوں اس نے یہ خیال کرکے کہ عورت حرام کرنے سے خراب ہو جائیگی اور اس عورت کو سمجھایا کہ تیری عدت گزر جائے، بعدہ نکاح کرلینا مگر عورت نے کسی طرح نہ مانا لہٰذا اس شخص نے مجبوراً اس عورت سے نکاح کرلیا تو یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ دیگر یہ کہ عرصہ آٹھ ماہ سے یہ عورت اسی شخص کے پاس ہے جس کے ساتھ دوبارہ نکاح کیا، بایں وجہ شفقت و محبت دونوں میں حد اعتدال زیادہ ہوگئی کہ تھوڑی دیر کے واسطے بھی نگاہ سے اوجھل ہونا ایک کا دوسرے کو ناگوار خاطر ہوتا ہے۔ لہٰذا دوسرا نکاح اگر اس عورت کے ساتھ نا جائز ہو تو کس صورت سے جائز ہو اور خود بھی زوج وزوجہ پریشان ہیں کہ کیونکر نکاح ہوا اور اکثر اوقات ہم بستر بھی ہوئے ہیں، بینوا توجروا۔

الجواب: وہ نکاح نہ ہوا زنائے خالص ہوا، ان مرد وزن پر فرض ہے کہ فوراً جدا ہوجائیں، مرد اسے چھوڑ دے، پھر اگر پہلے کی طلاق کے بعد ابھی تین حیض نہ آئے ہوں تو انتظار فرض ہے یہاں تک کہ تین حیض شروع ہو کر ختم ہوجائیں اور اگر ختم ہوگئے ہیں اور یہ دوسرا اس سے

نکاح چاہتا ہے تو چھوڑنے کے بعد فوراً کرسکتا ہے، اور اگر عورت کسی تیسرے سے نکاح چاہے تو یہ دوسرا جس دن چھوڑے اس کے بعد تین حیض شروع ہو کر ختم ہونا لازم ہے۔ اس سے پہلے تیسرے سے نکاح نہیں کرسکتی، دررمیں ہے:

المطلقۃ اذا تزوجت فی عدتھا فوطئھا الثانی فرق بینھما وتداخلتا عند نا و یکون ماتراہ من الحیض محتسبا منھما جمیعا واذا انقضت العدۃ الاولی ولم تکمل الثانیۃ فعلیھا اتمام العدۃ الثانیۃ۔

مطلقہ عورت نے اگر عدت میں کسی دوسرے سے نکاح کیا اور اس دوسرے نے اس سے جماع کرلیا، تو دونوں میں تفریق کی جائے گی اور دونوں عدتیں متداخل ہوجائیں گی، اور آنے والا حیض دونوں کا مشترکہ ہوگا، اور جب پہلی عدت پوری ہوجائے اور دوسری عدت پوری نہ ہو تو دوسری کو تمام کرے۔ (ت)

خانیہ وبحر ودرالمختار میں ہے:

1. المعجم الاوسط حدیث مکتبۃ المعارف الریاض ۹۱/۲
2. درر شرح غرر باب العدۃ احمد کامل الکائنہ دارسعادت بیروت ۴۰۳/۱

Fatawa Razawiya Volume 11

[Top Box] Arabic: When the first waiting period (iddah) is completed, it becomes lawful for the second [husband] to marry her, but not for anyone else until the second iddah of three menstrual cycles from the time of separation is completed. 1 **Urdu translation:** When the first iddah is completed, the second husband will be permitted to marry her; until the completion of three menstrual cycles of the second iddah after separation, she will not be lawful for any other person. (T)

Issue 150: From village Bhota Bhoti, Basutoland, country of Africa, sent by Mr. Haji Ismail Miyan son of Haji Ameer Miyan Siddiqui Hanafi Qadri. (1) Zaid asks that God has commanded men [to take] two, three, or four [wives], but why did women not receive [a command] that you may take two, three, or four husbands. (2) A person made a non-Muslim woman, who was an adulteress, embrace Islam and then married her. Now that woman is pregnant, but from the same man who married her. Is this marriage valid or not? Zaid says that even if the pregnancy is from him, the marriage is still not valid and the presence of witnesses is voided. Majmu'a-e-Khani, Vol. 2, p. 394?

[Table Content] Persian text (Left): It is stated in Hidayah and Kafi that if a 'Harbi' woman (from enemy territory) comes to 'Dar al-Islam' (Islamic territory), iddah is not mandatory for her whether she embraced Islam in 'Dar al-Harb' or not; and this is the opinion of Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him). According to Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad (may Allah the Exalted have mercy on both), iddah is mandatory, and there is a consensus of scholars that iddah is not mandatory for a slave girl captured in a raid, but 'Istibra' (cleansing of the womb) is necessary. And if a 'Harbi' woman who has come to 'Dar al-Islam' is pregnant until such time as... **Urdu translation (Right):** It is in Hidayah and Kafi that if any woman comes to Dar al-Islam, iddah is not mandatory for her, whether she became a Muslim in Dar al-Harb or not. This is the opinion of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). According to Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad, iddah is mandatory for her. And iddah is not mandatory for a slave girl captured in war; this is everyone's consensus. Only 'Istibra' is mandatory for her. If any pregnant woman comes from Dar al-Harb to Dar al-Islam, she cannot marry before giving birth. Imam Sahab [Abu Hanifa] stated in another narration that she can marry, but intercourse with her is not permissible before the birth of the child, just as [it is not permitted with a woman pregnant] from adultery.

[Footnote] 1 Radd al-Muhtar, Chapter of Iddah, discussion on intercourse with a woman in iddah by mistake, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/209. Page 303 of 739

फ़तावा रज़विया खंड 11

[ऊपरी बॉक्स] अरबी: जब पहली इद्दत पूरी हो जाए, तो दूसरे [पति] के लिए उससे निकाह करना हलाल हो जाता है, लेकिन किसी और के लिए नहीं, जब तक कि अलगाव के समय से तीन मासिक धर्म की दूसरी इद्दत पूरी न हो जाए। 1 **उर्दू अनुवाद:** जब पहली इद्दत पूरी हो जाए तो दूसरे पति को उससे निकाह हलाल होगा; जुदाई के बाद जब तक दूसरी इद्दत के तीन मासिक धर्म पूरे न हो जाएं उस समय तक वह किसी गैर के लिए हलाल नहीं होगी। (त)

मसला 150: ग्राम भोटा भोटी, बसुटोलैंड, मुल्क अफ्रीका से प्रेषक श्री हाजी इस्माइल मियां पुत्र हाजी अमीर मियां सिद्दीकी हनफी कादरी। (1) ज़ैद पूछता है कि खुदा ने पुरुष को हुक्म दिया दो-दो, तीन-तीन, चार-चार [निकाह का], और औरत को क्यों नहीं मिला कि तुम दो-दो, तीन-तीन, चार-चार पति करो। (2) एक व्यक्ति ने एक काफ़िरा (गैर-मुस्लिम) ज़ानी (व्यभिचारी) औरत को इस्लाम कबूल करवाकर उससे निकाह किया। अब वह औरत गर्भवती है, लेकिन उसी मर्द से जिससे निकाह हुआ है। क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? ज़ैद कहता है कि भले ही वह उसी से गर्भवती हो, फिर भी निकाह जायज़ नहीं है और गवाहों की उपस्थिति टूट जाती है। मजमुआ-ए-खानी, खंड 2, पृष्ठ 394?

[तालिका की सामग्री] फारसी पाठ (बायां): हिदायह और काफी में उल्लेख है कि यदि कोई हर्बी महिला (शत्रु क्षेत्र से) दारुल-इस्लाम (इस्लामी क्षेत्र) में आती है, तो उस महिला पर इद्दत अनिवार्य नहीं है, चाहे वह दारुल-हर्ब में मुसलमान हुई हो या नहीं; और यह इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहि) का कथन है। इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहिमा) के अनुसार इद्दत अनिवार्य है, और विद्वानों की आम सहमति है कि छापे में पकड़ी गई दासी पर इद्दत अनिवार्य नहीं है, लेकिन 'इस्तिबरा' (गर्भाशय की शुद्धि) आवश्यक है। और यदि कोई हर्बी महिला जो दारुल-इस्लाम आई है और उस समय तक गर्भवती है... **उर्दू अनुवाद (दायां):** हिदायह और काफी में है कि अगर कोई महिला दारुल-इस्लाम आ जाए तो उस पर इद्दत अनिवार्य नहीं है, चाहे वह दारुल-हर्ब में मुसलमान हुई हो या नहीं। यह इमाम अबू हनीफा (रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु) का कथन है। इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद के अनुसार उस पर इद्दत अनिवार्य है। और जंग में गिरफ्तार की गई दासी पर इद्दत अनिवार्य नहीं है। यह सबका इत्तेफाक है, उस पर सिर्फ इस्तिबरा अनिवार्य है। अगर कोई गर्भवती महिला दारुल-हर्ब से दारुल-इस्लाम आई तो वह बच्चे की पैदाइश (जन्म) से पहले निकाह नहीं कर सकती। इमाम साहब ने एक दूसरी रिवायत में फरमाया कि वह निकाह कर सकती

है लेकिन बच्चे की पैदाइश से पहले उससे संभोग जायज़ नहीं है जैसे कि ज़िना (व्यभिचार) से [गर्भवती महिला के साथ]...

[पाद टिप्पणी] 1 रद अल-मुहतार, बाबू अल-इद्दह, मतलूबुन फी वतिअल मुअतद्दह बिशुब-हतिन, दार इह्या अल-तुरात अल-अरबी, बेरुत, 2/209। पृष्ठ 303/739

[اوپری باکس] عربی: اذا تمت عدة الاول حل للثانی ان یتزوجها لالغیرہ مالم تتم عدة الثانی بثلاث حیض من حین التفریق۔ 1 **اردو ترجمہ:** جب پہلی عدت پوری ہو جائے تو دوسرے خاوند کو اس سے نکاح حلال ہوگا، تفریق کے بعد جب تک دوسری عدت کے تین حیض مکمل ہو جائیں اس وقت تک کسی غیر کے لیے حلال نہ ہوگی۔ (ت)

مسئلہ ۱۵۰: از موضع بھوٹا بھوٹی بسوٹو لینڈ ملک افریقہ مرسلہ جناب حاجی اسمعیل میاں بن حاجی امیر میاں صدیقی حنفی قادری (۱) زید سوال کرتا ہے کہ خدا نے مرد کو حکم دیا دو دو تین تین چار چار، اور عورت کو کیوں نہیں ملا کہ تم دو دو تین تین چار چار مرد کرو۔ (۲) ایک شخص زانی عورت کافرہ کو اسلام قبول کروا کے نکاح کیا اب وہ عورت حاملہ ہے مگر اسی مرد سے جس کے ساتھ نکاح ہوا ہے۔ آیا یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ زید کہتا ہے کہ اگرچہ حاملہ اسی سے ہو جب بھی نکاح جائز نہیں اور شاہد و حاضرین کا ٹوٹ جاتا ہے۔ مجموعہ خانی جلد ثانی ص ۳۹۴؟

[جدول کا متن] فارسی متن (بائیں): در ہدایہ وکافی آوردہ ست عورتے حربیہ در دارالاسلام آمد برآں عورت عدت لازم نشود خواہ اسلام در دار حرب آوردہ باشد خواہ نیاوردہ باشد و ایں قول امام اعظم ست رحمتہ اللہ علیہ۔ و نزدیک امام ابویوسف و امام محمد رحمہما اللہ تعالٰی عدت لازم شود، و باتفاق علماء برکنیز کہ در تاخت گیرند عدت لازم نیست فاما استبراء لازم ست واگر حربیہ کہ در دار اسلام آمدہ ست و حاملہ تاآں زمان کہ... **اردو ترجمہ (دائیں):** ہدایہ وکافی میں ہے کہ اگر کوئی عورت دارالاسلام آجائے تو اس پر عدت لازم نہیں خواہ دار الحرب میں مسلمان ہوئی یا نہ ہوئی، یہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کا قول ہے، امام ابو یوسف اور امام محمد کے نزدیک اس پر

عدت لازم ہے اور جنگ میں گرفتار شدہ لونڈی پر عدت لازم نہیں ہے۔ یہ سب کا اتفاق ہے، اس پر صرف استبراء لازم ہے، اگر کوئی حاملہ عورت دار الحرب سے دارالاسلام آئی تو وہ بچہ کی پیدائش سے قبل نکاح نہیں کر سکتی، امام صاحب نے ایک دوسری روایت میں فرمایا کہ وہ نکاح کر سکتی ہے لیکن بچہ کی پیدائش سے قبل اس سے جماع جائز نہیں ہے جس طرح زنا سے...

[حاشیہ] 1 ردالمحتار باب العدة مطلب في وطئ المعتدة بشبهة دار احياء التراث العربی بیروت ۲۰۹/۲ صفحہ 303 از 739

Fatwa Rizvia Volume 11

[Left Column - Persian/Urdu Legal Text]: If she does not give birth, do not marry. Another narration from the Imam is that marriage is valid even if she is pregnant, but the husband should not have intercourse with that woman until she gives birth. For instance, if a woman is pregnant from adultery, desiring her is permissible, but intercourse is not allowed until she gives birth. And if one of the spouses becomes an apostate, separation occurs between them, but divorce does not take place. This is the opinion of Imam-e-Azam and Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them). According to Imam Muhammad, if one becomes an apostate, separation occurs without divorce. So if the husband becomes an apostate and has intercourse with his wife, full dowry (Mahr) becomes obligatory for him. If he has not had intercourse after apostasy, nothing of the dowry or maintenance (Nafaqa) is obligatory, provided she has left the husband's house. But if she has not left the husband's house, maintenance is obligatory on the man.

[Right Column - Urdu Translation/Explanation]: Marriage with a pregnant woman is permissible, but intercourse with her is not allowed before the child's birth. If one of the spouses becomes an apostate, they will be separated, but it will not be a divorce; this is the saying of Imam-e-Azam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them both). According to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), if only the husband becomes an apostate, separation will occur but not divorce. So, if after the husband becomes an apostate, he has intercourse with his wife, the full dowry will be mandatory. And if he did not have intercourse after becoming an apostate, then dowry and maintenance will not be mandatory, provided the woman herself has separated from his house. And if she is in his house, maintenance is mandatory on the man. (T)

The Answer: (1) Allah Almighty says: "Indeed, Allah does not command indecency." Verily, Allah Almighty does not command immodesty. The union of two men with one woman is blatant indecency, which among animals, even the most foul, i.e., the pig, only allows. The wisdom behind the prohibition of adultery is the preservation of lineage, otherwise, it would not be known whose child it is. If marriage of two men to one woman were permissible, the same evil that was in adultery would apply here too, as it would not be known whose child it is. And Allah Almighty knows best. (2) For a woman who is pregnant from adultery - may Allah Almighty protect us - and is not married, marriage with her is permissible for every person, whether the fornicator or someone else. The difference is that a non-fornicator is not allowed to go near her

until childbirth occurs. And if the person whose child it is marries her, then intimacy is also permissible for him. As stated in Durr al-Mukhtar:

[Boxed Text]: (Arabic): Marriage with a woman pregnant from adultery is valid, although intercourse and its preliminaries are forbidden until she gives birth. (Urdu): Marriage with a woman pregnant from adultery is correct, although intercourse and related matters are forbidden until she gives birth to the child.

1. Majmu'a-e-Khani
2. Al-Quran 28/7 Page 304 of 739

फ़तावा रज़विया खंड 11

[बायां कॉलम - फ़ारसी/उर्दू कानूनी पाठ]: यदि वह बच्चे को जन्म नहीं देती है, तो निकाह न करें। इमाम से एक और रिवायत यह है कि निकाह सही है यदि वह गर्भवती हो, लेकिन पति उस महिला के साथ संभोग न करे जब तक कि वह बच्चे को जन्म न दे दे। उदाहरण के लिए, यदि कोई महिला ज़िना (व्यभिचार) से गर्भवती हो जाती है, तो उसे चाहना जायज़ है, लेकिन संभोग तब तक जायज़ नहीं है जब तक वह बच्चे को जन्म न दे दे। और यदि पति-पत्नी में से कोई एक धर्मत्यागी (मुरतद) हो जाता है, तो उनके बीच अलगाव हो जाता है, लेकिन तलाक़ नहीं होता। यह इमाम-ए-आज़म और इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) का मत है। और इमाम मुहम्मद के अनुसार, यदि कोई धर्मत्यागी हो जाता है, तो बिना तलाक़ के अलगाव हो जाता है। अतः यदि पति धर्मत्यागी हो गया और उसने अपनी पत्नी के साथ संभोग किया, तो उस पर पूरा मेहर वाजिब होगा। यदि उसने धर्मत्याग के बाद संभोग नहीं किया है, तो मेहर या भरण-पोषण (नफ़क़ा) में से कुछ भी अनिवार्य नहीं है, बशर्ते वह पति के घर से बाहर आ गई हो। लेकिन अगर वह पति के घर से बाहर नहीं आई है, तो पुरुष पर भरण-पोषण अनिवार्य होगा।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: गर्भवती स्त्री से निकाह जायज़ है मगर बच्चे की पैदाइश से पहले उससे जिमा (संभोग) जायज़ नहीं है। अगर पति-पत्नी में से कोई एक मुरतद हो जाए तो दोनों का वियोग हो जाएगा लेकिन तलाक़ न होगी, यह क़ौल इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) का है। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के नज़दीक अगर सिर्फ शौहर मुरतद हो जाए तो वियोग हो जाएगा तलाक़ न होगी, तो शौहर के मुरतद होने के बाद अगर उसने बीवी से जिमा किया तो मुकम्मल मेहर लाज़िम होगा, और मुरतद होने के बाद जिमा न किया तो मेहर और नफ़क़ा लाज़िम न होगा, बशर्ते कि औरत ख़ुद उसके घर से अलहदा हो चुकी हो और अगर उसके घर में हो तो नफ़क़ा मर्द पर लाज़िम होगा, (त)

अल-जवाब (उत्तर): (1) अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है: "बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं फ़रमाता।" वास्तव में अल्लाह अज़्वजल बेहयाई का हुक्म नहीं देता। एक औरत पर दो मर्दों का मेल खुली बेहयाई है, जिसे इंसान तो इंसान जानवरों में भी जो सबसे ख़बीस तर है यानी सुअर वही रवा रखता है। हुरमत-ए-ज़िना (व्यभिचार की मनाही) की हिकमत नस्ल (वंश) को महफ़ूज़ रखना है, वरना पता न चले कि बच्चा किसका है। अगर औरत से दो मर्दों का निकाह जायज़ हो तो वही क़बाहत (बुराई) जो ज़िना में थी यहाँ भी लागू होगी कि बच्चा किसका है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह

बेहतर जानता है)। (2) जिसे ज़िना का गर्भ हो - वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला - और वह विवाहित न हो, उससे ज़ानी (व्यभिचारी) और ग़ैर-ज़ानी हर शख़्स का निकाह जायज़ है। फ़र्क़ इतना है कि ग़ैर-ज़ानी को उसके पास जाने की इजाज़त नहीं जब तक प्रसव (बच्चा पैदा) न हो जाए, और जिसका गर्भ है अगर वह निकाह करे तो उसे क़ुर्बत (निकटता/संभोग) भी जायज़ है। दुर्रे मुख़्तार में है:

[बॉक्स किया हुआ पाठ]: (अरबी): ज़िना से गर्भवती स्त्री के साथ विवाह वैध है, हालाँकि प्रसव होने तक संभोग और उसकी प्रारंभिक क्रियाएँ वर्जित हैं। (उर्दू): ज़िना से गर्भवती का निकाह सही है, हालाँकि उससे संभोग और उससे संबंधित कार्य हराम हैं जब तक वह बच्चे को जन्म न दे दे।

1. मजमूआ-ए-ख़ानी
2. अल-क़ुरआन 28/7 पृष्ठ 304 of 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

فرزند نزاید نکاح نہ کند دیگر روایت از امام آنست کہ نکاح درست ست اگر حاملہ باشد فاما نز دیکی با آں عورت شوہر نہ کند تا آں زمان کہ فرزند نزاید چنانچہ عورت را از زنا حاملہ ماندہ ست خواستن اور واست و نز دیکی کردن روانیست تا آں زمان کہ فرزند نزاید واگر یکے از میان زن و شوہر مرتد شد فرقت میاں ایشاں واقع شود فاما طلاق واقع نشود ایں امام اعظم امام ابو یوسف رحمہما اللہ تعالٰی و نز دیک امام محمد اگر مرتد شدہ است فرقت واقع شدہ است بے طلاق پس اگر مرد مرتد شدہ است و بازن نزدیکی کردہ باشد تمام مہر بر او لازم شود اگر نزدیکی نہ کردہ است چیزے از مہر لازم نشود و نفقہ نیز لازم نشود اگر خود از خانہ مرد بیروں آمدہ باشد و اگر خود از خانہ مرد بیروں نیا مدہ باشد نفقہ بر مرد لازم شود۔ حاملہ سے نکاح جائز مگر بچے کی پیدائش سے قبل اس سے جماع جائز نہیں ہے۔ اگر خاوند بیوی سے کوئی ایک مرتد ہوجائے تو دونوں کی فرقت ہو جائے گی لیکن طلاق نہ ہوگی ، یہ قول امام اعظم ابو حنیفہ اور امام ابو یوسف رحمہما اللہ تعالٰی علیہ کا ہے۔ اور امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی کے نزدیک اگر صرف خاوند مرتد ہوجائے تو فرقت ہو جائے گی طلاق نہ ہوگی ، تو خاوند کے مرتد ہونے کے بعد اگر اس نے بیوی سے جماع کیا تو مکمل مہر لازم ہوگا ، اور مرتد ہونے کے بعد جماع نہ کیا تو مہر اور نفقہ لازم نہ ہوگا، بشرطیکہ عورت خود اس کے گھر سے علیحدہ ہو چکی ہو اور اگر اس کے گھر میں ہو تو نفقہ مرد پر لازم ہوگا، (ت)

الجواب: (۱) اللہ عزوجل فرماتا ہے: اِنَّ اللّٰہَ لَا یَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِؕ بیشک اللہ عزوجل بے حیائی کا حکم نہیں فرماتا۔ ایک عورت پر دو مردوں کا اجتماع صریح بے حیائی ہے، جسے انسان تو انسان جانوروں میں بھی جو سب سے خبیث تر ہے یعنی خنزیر وہی روا رکھتا ہے۔ حرمت زنا کی حکمت

نسب کا محفوظ رکھنا ہے ، ورنہ پتا نہ چلے کہ بچہ کس کا ہے۔ اگر عورت سے دو مردوں کا نکاح جائز ہو تو وہی قباحت کہ زنا میں تھی یہاں بھی عائد ہو سکے کہ بچہ کس کا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) جسے زنا کا حمل ہو والعیاذ باللہ تعالیٰ اور وہ شوہر دار نہ ہو اس سے زانی و غیر زانی ہر شخص کا نکاح جائز ہے فرق اتنا ہے کہ غیر زانی کو اس کے پاس جانے کی اجازت نہیں جب تک وضع حمل نہ ہولے، اور جس کا حمل ہے وہ نکاح کرے تو اسے قربت بھی جائز، در مختار میں ہے:

صح نکاح حبلی من زنا وان حرم وطؤھا و دواعیہ حتی تضع لئلا زنا سے حاملہ کا نکاح صحیح ہے اگرچہ اس سے وطی اور اس سے متعلقہ امور حرام ہیں جب تک وہ بچے کو جنم نہ دے

Fatawa Rizwia - Volume Eleven

[Top Box] Arabic: ...his water (semen) should not water another's crop, for hair grows on the fetus from intercourse. If the fornicator himself marries her, intercourse with her is permissible by consensus[1]. Urdu: ...so that his water does not irrigate another's crop; this is because intercourse causes hair to grow on the fetus of the pregnant woman. If the fornicator himself marries her, then intercourse with her is also permissible. (T)

Zaid's statement is completely wrong. His saying that even if she is pregnant from the same man, marriage is not permissible is a slander against the Sharia. On the contrary, the correct and fatwa-given position is that even if the pregnancy is from someone else, marriage is permissible. And his saying that the witnesses and attendees of the gathering break [their faith/oaths] is slander upon slander. The text he quoted from Majmu'ah-e-Khani is explicitly against him.

[Middle Box] Persian: If a woman is pregnant from fornication, marriage with her is valid, but intercourse is not permissible until she gives birth. Urdu: If a woman becomes pregnant from fornication, marriage with her is permissible but intercourse is not permissible until she gives birth to the child. (T)

And what he quoted from the same source: [Box] Persian: A harbi (enemy) woman who comes to Dar al-Islam while pregnant should not marry until she gives birth[2]. Urdu: If a non-Muslim woman from an enemy land comes to the land of Islam and is pregnant, she should not marry until the birth of the child. (T)

This refers to a pregnant woman of an enemy disbeliever who comes to Dar al-Islam and becomes a Muslim, not a pregnancy from fornication. And Allah Almighty knows best.

Problem 152: From (Burma) Post Office Chigang, Midting locality, District Akyab, sent by Muhammad Umar Sahib, 5 Rabi al-Akhir 1336 AH. [Bottom Box] Arabic: What is your opinion, may Allah Almighty have mercy on you, regarding [what is mentioned in] Fatawa Qazi Khan: "And if one leaves Friday prayer three times, he becomes a transgressor (fasiq)." This is mentioned in some places, and Shams al-A'imma al-Sarakhsi, may Allah Almighty have mercy on him, adopted it. In some places, he mentioned that it invalidates [one's status as a] credible witness (adalah). End quote. And if one leaves congregational prayer without considering it a grave matter, as common people do, his credibility (adalah) is invalidated. Urdu: Honorable Ulama,

may Allah Almighty have mercy on you, what is your ruling? It is stated in Fatawa Qazi Khan that if someone skips three Friday prayers, they will become a fasiq (transgressor). Similarly, it is mentioned in some places which Shams-ul-Aimma Sarakhsi (may Allah have mercy on him) has adopted, and in some places, they mentioned that his credibility will end. And if someone skipped the congregational prayer without giving it importance as common people do, then his credibility is void.

---

[1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Chapter on Prohibited [Marriages], Mujtabai Delhi, 1/189. [2] Majmu'ah Khani.

फ़तावा रज़विया - ग्यारहवाँ खंड

[ऊपरी बॉक्स] अरबी: ...उसका पानी (वीर्य) दूसरे की फसल को न सींचे, क्योंकि संभोग से भ्रूण पर बाल उगते हैं। यदि व्यभिचारी स्वयं उससे विवाह कर ले, तो सर्वसम्मति से उसके साथ संभोग करना जायज़ है[1]। उर्दू: ...ताकि उसका पानी दूसरे की खेती को न सींचे; यह इसलिए कि संभोग से गर्भवती के बच्चे को बाल उगते हैं, और अगर व्यभिचारी ने खुद उससे निकाह किया तो उससे संभोग भी जायज़ है। (त)

ज़ैद की बात बिल्कुल गलत है। उसका यह कहना कि चाहे वह उसी पुरुष से गर्भवती हो, फिर भी निकाह जायज़ नहीं है, शरीयत पर एक कलंक है। बल्कि सही और फतवा-आधारित स्थिति यह है कि भले ही गर्भ किसी और का हो, फिर भी निकाह जायज़ है। और उसका यह कहना कि सभा के गवाह और उपस्थित लोग टूट जाते हैं, झूठ पर झूठ है। मजमुआ-ए-खानी से उसने जो इबारत (अनुच्छेद) उद्धृत की है, वह स्पष्ट रूप से उसके खिलाफ है।

[मध्य बॉक्स] फ़ारसी: यदि कोई स्त्री व्यभिचार से गर्भवती है, तो उससे निकाह करना वैध है, लेकिन संभोग करना तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि वह बच्चे को जन्म न दे दे। उर्दू: अगर कोई औरत व्यभिचार से गर्भवती हो जाए तो उससे निकाह जायज़ है और संभोग जायज़ नहीं जब तक कि वह बच्चे को जन्म न दे दे। (त)

और वही जो उसी से उद्धृत किया कि: [बॉक्स] फ़ारसी: एक हर्बी (शत्रु देश की) स्त्री जो गर्भवती होने की स्थिति में दारुल इस्लाम आती है, उसे तब तक निकाह नहीं करना चाहिए जब तक कि वह बच्चे को जन्म न दे दे[2]। उर्दू: हर्बी औरत अगर दारुल इस्लाम आ जाए और गर्भवती हो तो बच्चे के पैदा होने तक वह निकाह न करे। (त)

यह उस बारे में है कि एक शत्रु काफिर की गर्भवती स्त्री दारुल इस्लाम आकर मुसलमान हो गई हो, न कि व्यभिचार के गर्भ के बारे में। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १५२: (बर्मा) डाकखाना चिगांग, मिडटिंग मोहल्ला, जिला अकयाब से प्रेषित मोहम्मद उमर साहब, ५ रबी अल-आखिर १३३६ हिजरी। [निचला बॉक्स] अरबी: उलेमा-ए-किराम, अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए, फ़तावा काज़ी ख़ान के संबंध में आपकी क्या राय है: "और यदि कोई तीन बार जुमे की नमाज़ छोड़ देता है, तो वह फ़ासिक़ (अधर्मी) हो जाता है।" ऐसा कुछ स्थानों पर उल्लेख किया गया है, और शम्स अल-अइम्मा अल-सरखसी (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) ने इसे

अपनाया है। कुछ स्थानों पर उन्होंने उल्लेख किया है कि इससे उसकी शहादत (विश्वसनीयता) अमान्य हो जाती है। समाप्त। और यदि कोई जमात (सामूहिक नमाज़) को बिना किसी महत्व के छोड़ देता है, जैसा कि आम लोग करते हैं, तो उसकी विश्वसनीयता अमान्य हो जाती है। उर्दू: हज़रत उलेमा-ए-किराम, अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए, आपका क्या हुक्म है कि फ़तावा काज़ी ख़ान में है कि अगर किसी ने तीन जुमे छोड़ दिए तो वह फासिक़ होगा, इसी तरह कुछ स्थानों पर उल्लेख है जिसे शम्स-उल-आइम्मा सरख़सी (रहमतुल्लाह अलैह) ने लिया है और कुछ स्थानों पर उन्होंने ज़िक्र किया कि उसकी अदालत (विश्वसनीयता) खत्म हो जाएगी। और अगर किसी ने नमाज़-ए-बा-जमात को अहमियत न देते हुए छोड़ा जैसा कि आम लोग करते हैं तो उसकी अदालत बातिल (अमान्य)।

---

[1] दुर्रे मुख़्तार, किताबुन निकाह, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मुजतबाई दिल्ली १/१८९। [2] मजमुआ खानी।

पृष्ठ ३०५ / ७३९

فتاوٰی رضویہ - جلد یازدہم

[بالائی باکس] عربی: یسقی ماءہ زرع غیرہ اذ الشعر ینبت منہ ولونکح الزانی حل لہ وطؤھا اتفاقاً[1]۔
اردو: تاکہ اس کا پانی غیر کی کھیتی کو سیراب نہ کرے یہ اس لیے کہ جماع سے حاملہ کے بچے کو بال اگتے ہیں، اور اس سے خود زانی نے نکاح کیا تو اس کو جماع بھی جائز ہے۔ (ت)

زید کا قول محض غلط ہے اور اس کا کہنا اگر چہ حاملہ اسی مرد سے ہے جب بھی نکاح جائز نہیں شریعت پر افتراء ہے بلکہ صحیح و مفتی بہ یہ ہے کہ اگر چہ حمل دوسرے کا ہو جب بھی نکاح جائز ہے اور اس کا کہنا کہ شاہد و حاضر ان محفل کے ٹوٹ جاتے ہیں افتراء پر افتراء ہے، مجموعہ خانی سے جو عبارت اس نے نقل کی ہے صراحتًا اس کے خلاف ہے۔

[درمیانی باکس] فارسی: اگر عورت را از زنا حمل ماندہ است خواستن اور واست و نز دیکنی کردن روانیست تا آنکہ نزاید۔ اردو: اگر عورت زنا سے حاملہ ہو جائے تو اس سے نکاح جائز اور جماع جائز نہیں جب تک بچے کو جنم نہ دے دے۔ (ت)

اور وہ جو اسی سے نقل کیا کہ : [باکس] فارسی: حربیہ کہ دار الاسلام آمدہ است وحاملہ تانزاید نکاح نہ کند[2]۔ اردو: حربی عورت اگر دارالاسلام آجائے اگر حاملہ ہو تو بچے کی پیدائش تک وہ نکاح نہ کرے۔ (ت)

یہ اس میں ہے کہ حربی کا فرکی حاملہ عورت دارالاسلام میں آکر مسلمان ہو گئی نہ کہ حمل زنا میں، واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۵۲: از (برہما) ڈاک خانہ چیگانگ محلہ میڈ ٹنگ ضلع اکیاب مرسلہ محمد عمر صاحب ۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ [نچلا باکس] عربی: ماقولکم رحمکم اللہ تعالٰی فی الفتاوی قاضی خان وان ترک

الجمعة ثلاث مرات يصير فاسقاً كذا ذكر في بعض المواضع و به اخذ شمس الائمه السرخسی رحمه الله تعالی و ذكر في بعض المواضع انه يبطل العدالة انتهى. وان ترك الصلوٰة بالجماعة ولم يستعظم ذلك كما يفعل به العوام بطلت عدالته اردو: حضرات علمائے کرام اللہ تعالیٰ تم پر رحم فرمائے، آپ کا کیا حکم ہے کہ فتاویٰ قاضی خاں میں ہے کہ اگر کسی نے تین جمعے ترک کردئے تو وہ فاسق ہوگا، یوں ہی بعض مقامات پر مذکور ہے جس کو شمس الائمہ سرخسی رحمہ اللہ تعالیٰ نے لیا ہے اور بعض مقامات پر انہوں نے ذکر کیا کہ اس کی عدالت ختم ہوجائے گی اھ اور اگر کسی نے نماز باجماعت کو اہمیت نہ دیتے ہوئے ترک کیا جیسا کہ عوام کرتے ہیں تو اس کی عدالت باطل

---

[1] در مختار کتاب النکاح فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۱۸۹ [2] مجموعہ خانی

Fatawa Razawiyya Volume 11

| (Arabic) وان تركها متاو لابان كان يضلل او يفسق لا يبطل عدالته ولا يقبل شهادة من كان معروفاً بالكذب 1 انتهى | (Urdu Translation) ...it will be [valid], and if he, despite the importance [of congregational prayer], abandoned the congregation based on an interpretation and excuse, such as considering the Imam misguiding or a sinner, then his uprightness (Adalah) will not be invalidated. And a person who becomes famous for lying, his testimony is not accepted. End. | | (Arabic) وفي الدرالمختار لا تقبل شهادته الابتأويل بدعة الامام او عدم مراعاته 2 اهـ | (Urdu Translation) And it is in Al-Durr al-Mukhtar: His testimony will not be accepted, unless it is due to an interpretation and excuse such as the Imam being an innovator or not observing Sharia matters, for which he abandoned the congregation. End. (T) |

When the uprightness (Adalah) of these people is invalidated, will the marriage and divorce be valid if they are made witnesses at the time of marriage and divorce? Since it is stated in Al-Durr al-Mukhtar: 'Just witnesses according to Al-Shafi'i' 3 (According to Imam Shafi'i, may Allah have mercy on him, just witnesses are required - T). Just witnesses are a condition, and regarding taking back [a divorced wife], Allah Almighty says: 'And take for witness two just persons from among you' 4 (Make two just persons witnesses - T). And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'There is no marriage without a guardian and two just witnesses' 5 (No marriage without a guardian, and none without two just witnesses - T). From this quoted text and some books, it appears that making a sinner (Fasiq) a witness in marriage etc. is not reliable. When it is not reliable, should the marriage be performed again?

The Answer: Without a doubt, habitually skipping Friday or congregational prayers without a valid excuse leads to sinfulness (Fisq), invalidates uprightness (Adalah), and is a reason for rejecting testimony. However, the condition of witnesses in marriage is not for the time of giving testimony where uprightness is required, but rather for the time of witnessing the act (Tahammu-e-Shahadat), and in that, uprightness is not essential. In the Hanafi school, it is clearly stated that there is no harm if the marriage witnesses are sinners. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: 'Even if they are two sinners or those who have been punished for false accusation (Qadhf)' 6 (Even if two witnesses are sinners or have been lashed for Qadhf - T).

1. Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Shahadat, Naval Kishore Lucknow, 3/532
2. Al-Durr al-Mukhtar, Bab al-Imamah, Matba Mujtabai Delhi, 1/82

3. Radd al-Muhtar with Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/262
4. Al-Quran 65/2
5. Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, 'No marriage except with two witnesses...', Dar Sadr Beirut, 7/125
6. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Matba Mujtabai Delhi, 1/178

फ़तावा रज़विय्या जिल्द ग्यारहवीं

| (अरबी) وان تركها متاو لابان كان يضلل او يفسق لا يبطل عدالته ولا يقبل شهادة من كان معروفاً بالكذب 1 انتهى | (उर्दू अनुवाद) ...तो उसकी [अदालत] मान्य रहेगी, और यदि उसने महत्व के बावजूद किसी व्याख्या और बहाने के आधार पर, जैसे इमाम को गुमराह या पापी मानते हुए, जमाअत छोड़ दी, तो उसकी अदालत अमान्य नहीं होगी। और जो व्यक्ति झूठ बोलने के लिए प्रसिद्ध हो जाए, उसकी गवाही स्वीकार्य नहीं है। (समाप्त) | | (अरबी) وفي الدرالمختار لا تقبل شهادته الابتأويل بدعة الامام او عدم مراعاته 2 اھ | (उर्दू अनुवाद) और दुर्रे मुख्तार में है कि ऐसे व्यक्ति की गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी, सिवाय इसके कि उसने इमाम के बिदअती होने या शरई मामलों का पालन न करने जैसी किसी व्याख्या और बहाने के कारण जमाअत छोड़ी हो। (समाप्त - त) |

जब इन लोगों की अदालत अमान्य हो गई, तो निकाह और तलाक़ के समय उन्हें गवाह बनाने से क्या निकाह और तलाक़ सही होगा? क्योंकि दुर्रे मुख्तार में लिखा है: 'शाफ़ई के अनुसार न्यायप्रिय गवाह' 3 (यानी इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह के यहाँ न्यायप्रिय गवाह शर्त हैं - त)। न्यायप्रिय गवाह होना शर्त है, और रुजू (वापसी) के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'और अपने में से दो न्यायप्रिय व्यक्तियों को गवाह बनाओ' 4 (दो न्यायप्रिय गवाह बनाओ - त)। और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'बिना वली और दो न्यायप्रिय गवाहों के निकाह नहीं होता' 5 (बिना वली के निकाह नहीं, और दो न्यायप्रिय गवाहों के बिना भी नहीं - त)। इस उद्धरण और कुछ अन्य पुस्तकों से पता चलता है कि निकाह आदि में पापी (फासिक़) को गवाह बनाना विश्वसनीय नहीं है। जब यह विश्वसनीय नहीं है, तो क्या दोबारा निकाह करना चाहिए या नहीं?

उत्तर: निस्संदेह, बिना किसी वैध कारण के जुमा और जमाअत छोड़ने की आदत फिस़्क़ (पाप) का कारण है, अदालत को समाप्त कर देती है और गवाही को अस्वीकार करने का कारण बनती है। लेकिन निकाह में गवाहों की जो शर्त है, वह गवाही देने के समय के लिए नहीं है जहाँ अदालत की आवश्यकता हो, बल्कि गवाही को प्रत्यक्ष देखने (तहाम्मुल-ए-शहादत) के समय के लिए है, और उस समय न्यायप्रियता (अदालत) अनिवार्य नहीं है। हनफी मज़हब में स्पष्ट उल्लेख है कि यदि निकाह के गवाह पापी (फासिक़) भी हों, तो कोई हर्ज नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है: 'चाहे वे दो पापी हों या उन पर

अपवाद (क़ज़फ़) की सज़ा दी गई हो' 6 (चाहे दोनों गवाह पापी हों या उन पर क़ज़फ़ की सज़ा लागू की गई हो - त)।

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताबुश शहादात, नवल किशोर लखनऊ, 3/532
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुल् इमामत, मतबअ मुजतबाई दिल्ली, 1/82
3. रद्दुल् मुहतार मअ दुर्रे मुख्तार, किताबुन् निकाह, दार इह्याउत् तुरास अल-अरबी बैरुत, 2/262
4. अल-क़ुरान 65/2
5. अस्सुननुल कुबरा लिल-बैहक़ी, ला निकाह इल्ला बिशाहिदैनी व आदिलैनी, दार सादिर बैरुत, 7/125
6. दुर्रे मुख्तार, किताबुन् निकाह, मतबअ मुजतबाई दिल्ली, 1/178

पृष्ठ 306/739

| وان ترکھا متاو لابان کان یضلل او یفسق لا یبطل | ہو جائے گی اور اگر اس نے اہمیت کے باوجود کسی تاویل و عذر کی | | عدالته ولا یقبل شهادة من کان معروفاً بالکذب 1 | بنا پر مثلاً امام کو گمراہ یا فاسق قرار دیتے ہوئے جماعت ترک کردی | | انتھی | تو اس کی عدالت باطل نہ ہوگی، اور جو شخص جھوٹ بولنے میں | | وفي الدرالمختار لا تقبل شهادته الابتأویل بدعة | مشہور ہوجائے تو اس کی شہادت مقبول نہیں اھ اور درمختار میں | | الامام او عدم مراعاته 2 اھ | ہے کہ ایسے شخص کی شہادت مقبول نہ ہوگی، الا یہ کہ وہ تاویل اور | | | عذر مثلاً امام کے بدعتی ہونے یا شرعی امور کی رعایت نہ کرنے کی | | | وجہ سے جماعت ترک کرے۔ اھ (ت) |

جب ان لوگوں کی عدالت باطل ہوگئی تو بوقت نکاح و طلاق شہود بنانے سے نکاح و طلاق صحیح ہو گا یا نہیں ، چونکہ در مختار میں ہے، شهود عادل عند الشافعی 3 (امام شافعی رحمہ اللہ تعالی کے ہاں عادل گواہ ہوں۔ ت) شہود عادل شرط ہے ، اور رجعت کرنے کے بارے میں اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: وَأَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ 4 (دو عادل گواہ بناؤ۔ ت) اور آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا : لا نکاح الا بولي وشاهد ي عدل 5 (ولی کے بغیر نکاح نہیں، اور دو عادل گواہوں کے بغیر بھی۔ ت) اس عبارت مرقومہ اور بعض کتابوں سے معلوم ہوتا ہے کہ فاسق کو نکاح وغیرہ میں مشہود بنانا معتبر نہیں، جب معتبر نہیں ہے تو ثانیۃً تجدید نکاح کرنا چاہئے یا نہیں ؟

الجواب: بلا شبہ بلا عذر ترک جمعہ اور ترک جماعت کی عادت موجب فسق و مسقط عدالت و وجہ ردِ شہادت ہے مگر نکاح میں جو شاہدین کی شرط ہے یہ وقت ادائے شہادت نہیں کہ عدالت کی حاجت ہو بلکہ وقت تحمل شہادت ہے اور اس میں عدالت کچھ ضرور نہیں، حنفی مذہب میں تصریح

ہے کہ شاہدین نکاح اگر فاسق بھی ہوں حرج نہیں، در مختار میں ہے: ولو فاسقین او محدودین فی قذف 6 (اگرچہ دو گواہ فاسق ہوں یا قذف کی حد لگائے گئے ہوں۔ ت)

1 فتاوٰی قاضی خاں کتاب الشہادات نولکشور لکھنؤ ۳/۵۳۲ 2 درمختار باب الامامۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۸۲ 3 ردالمختار مع درمختار کتاب النکاح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۲/۲ 4 القرآن ۶۵/۲ 5 السنن الکبری للبیھقی لا نکاح الا بشاہدین و عادلین دار صادر بیروت ۷/۱۲۵ 6 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۷۸

Volume Eleven Fatawa Ridawiyyah

It is stated in the Hadith: "There is no marriage except with a guardian (Wali) and two just witnesses." (T: Marriage is not valid without a guardian and two just witnesses.) Here, the negation is in the sense of prohibition and does not negate the validity (of marriage without a guardian for a mature woman). Rather, according to us, this prohibition indicates that a guardian is not a condition for the marriage of a mature woman, and Allah knows best.

Case 153: From Shamsabad, District Campbellpur, Attock region, sent by Maulvi Qazi Gilani Sahib, 19th Jamadi-ul-Awwal 1330 AH.

To the presence of the radiant light, full of joy, the eradicator of evils, immorality, and transgression, the leader of the People of Sunnah and Community, the Mujaddid of the present century, may his glory increase! After initial respects, your honor had stated that 'Ayni Sharh al-Hidayah is not in the blessed library, therefore two pages as per need are sent to your service. The scholars of this country are strongly opposed to the issue of khutbah (engagement) and marriage without compatibility (Kufu). In some lesser-known Arabic and Persian manuscript books, it is written that distributing fruits and sugar with the recitation of Fatiha without formal proposal and acceptance, or a promise like "I will give my daughter to you," or if some edible or wearable gift is accepted with this intention, then like proposal and acceptance, it leads to the solemnization of marriage. They find further support for these texts from the Hadith prohibiting engagement over a brother's engagement (T: It is forbidden to propose over the proposal of one's brother). And the text of 'Ayni Sharh al-Hidayah in the Book of Marriage "Because the khutbah is for marriage" (T: because engagement is for the sake of marriage) is a complete proof of their claim. According to them, a verbal proposal and acceptance or any word or action indicating it leads to marriage. Although texts from Fatawa Mahdiyya and other books have been shown to them many times, those of limited understanding do not refrain from their stubbornness and call it "precaution in matters of private parts." Your honor once said that it seems like a mistake of the copyist's pen, and the correct text seems to be "Because the khutbah is for marriage." This gem-like statement of yours is most appropriate and fitting. However, the request is that your honor may provide a discourse of about four or five pages in Arabic regarding this issue of khutbah, covering all pros and cons, along with the removal of doubts and clarification of the objective. Another text of 'Ayni:

Text	Translation/Explanation
And from him regarding a man who drinks alcohol or is a weaver, they shall be separated.	It is narrated from 'Ayni that if someone is a habitual drinker or a weaver, the two will be separated. And it is in Al-Basit that the Shiah school of thought is that the marriage of Alawiyyat (Syed daughters) is forbidden to others even with the consent of their guardians. Al-Saruji said: both these statements are false. End. (T)
And in Al-Basit, the Shiah went to the view that the marriage of Alawiyyat is forbidden to others with mutual consent. Al-Saruji said: these are two false statements. End.	

1 Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Proposing over a Brother's Proposal, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/254. 2 'Ayni Sharh al-Hidayah, Chapter on Al-Hidad, Maktaba Imdadia Makkah Mukarramah, 2/434. 3 'Ayni Sharh al-Hidayah, Chapter on Al-Kafa'ah, Maktaba Imdadia Makkah Mukarramah, 2/102.

खण्ड ग्यारह फ़तावा रिज़विया

हदीस में इर्शाद हुआ: 'ला निकाह इल्ला बिवलींव वा शाहिदै अदल' (बिना वली और दो न्यायप्रिय गवाहों के निकाह नहीं होता। -त) यहाँ 'नफी' (نفی) 'नही' (نہی) के अर्थ में है और यह निकाह की वैधता के विपरीत नहीं है, बल्कि हमारे अनुसार यह इर्शाद इस बात की मनाही है कि एक वयस्क स्त्री के निकाह में वली शर्त नहीं है, और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 153: शमसाबाद, ज़िला कैम्पबेलपुर, इलाका अटक से, प्रेषक मौलवी काज़ी गिलानी साहब, 19 जमादी-उल-अव्वाल 1330 हिजरी।

प्रकाशपुंज, आनंद से परिपूर्ण, बुराइयों, अनैतिकता और अधर्म के नाशक, अहले सुन्नत वल जमाअत के हज़रत आलिम, वर्तमान शताब्दी के मुजद्दिद, उनका गौरव बना रहे! प्रारंभिक अभिवादन के बाद, हुज़ूर ने फरमाया था कि फ़ैज़-निशान पुस्तकालय में 'ऐनी शरह हिदाया' नहीं है, अतः आवश्यकतानुसार दो पन्ने हुज़ूर की सेवा में भेजे जा रहे हैं। इस क्षेत्र के विद्वान कुफ़ू (बराबरी) के बिना मंगनी और निकाह के मसले के सख्त खिलाफ हैं। कुछ अरबी और फारसी की कम प्रसिद्ध हस्तलिखित पुस्तकों में लिखा है कि बिना ईजाब व कुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के फातिहा ख्वानी के साथ फल और शक्कर बाँटना, या यह वादा करना कि "मैं अपनी बेटी तुम्हें दूँगा", या इस इरादे से कोई खाने योग्य या पहनने योग्य उपहार स्वीकार किया गया, तो यह ईजाब व कुबूल के समान निकाह के संपन्न होने का कारण बन गया। वे इस बात को 'हदिसे तहरीमुल खुत्बा अला खुत्बा अख़ीह' (भाई की मंगनी पर मंगनी करना हराम है। -त) से और अधिक पुख्ता करते हैं। और ऐनी शरह हिदाया की किताबुन-निकाह की इबारत "लिनल खुत्बता लित-तज़व्वुज" (क्योंकि मंगनी निकाह के लिए होती है। -त) उनके दावे का पूर्ण प्रमाण है। उनके अनुसार मौखिक ईजाब व कुबूल या इस पर संकेत करने वाला कोई भी शब्द या कार्य निकाह का कारण है। हालाँकि फतावा महदिया आदि पुस्तकों के उद्धरण उन्हें कई बार दिखाए गए, लेकिन कम समझ वाले लोग अपनी हठधर्मी से बाज़ नहीं आते और इसे "गुप्त अंगों के मामलों में एहतियात" कहते हैं। हुज़ूर ने एक बार फरमाया था कि यह नकल करने वाले की कलम की गलती लगती है, और सही इबारत "لأن الخطبة للتزوج" (क्योंकि मंगनी निकाह के लिए है) प्रतीत होती है। हुज़ूर का यह कथन अत्यंत सटीक और उपयुक्त है। लेकिन निवेदन यह है कि हुज़ूर इस मंगनी के मसले पर अरबी भाषा में लगभग चार-पांच पन्नों का एक विस्तृत विवरण इर्शाद फरमाएं जिसमें सभी पक्ष-विपक्ष, संदेहों का निवारण और लक्ष्य का स्पष्टीकरण हो। ऐनी की दूसरी इबारत:

पाठ	अनुवाद/व्याख्या
وعنه في الرجل يشرب الشراب او هو حائك يفرق بينهما	ऐनी से रिवायत है कि जो शराब का आदी है या जुलाहा है, उन दोनों को अलग कर दिया जाएगा। और बसीत में है कि शियाओं का मत है कि अलवियात (सैयदज़ादियों) का निकाह दूसरों से उनके वली की रजामंदी के बावजूद प्रतिबंधित है। सरूजी ने कहा: ये दोनों कथन असत्य हैं। इति। (त)
وفى البسيط ذهبت الشيعة الى ان نكاح العلويات ممتنع على غيرهم مع التراضى قال السروجى وهما قولان باطلان	और बसीत में है, शिया इस ओर गए हैं कि आपसी सहमति के साथ भी अलवियात का निकाह दूसरों से वर्जित है। सरूजी ने कहा कि ये दोनों कथन असत्य हैं। इति।

1 सहीह मुस्लिम, भाई की मंगनी पर मंगनी की मनाही का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/254 2 ऐनी शरह हिदाया, फस्ल फिल हदाद, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा, 2/434 3 ऐनी शरह हिदाया, फस्ल फिल कफाअत, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा, 2/102

جلد یاز دہم فتاوی رضویہ

حدیث میں ارشاد ہوا : لا نکاح الابولی و شاھدی عدل (ولی اور دو عادل گواہوں کے بغیر نکاح نہیں۔ ت) نفی بمعنی نہی ہے اور منافی صحت نہیں بلکہ ہمارے نزدیک یہ نہی ارشاد کی ہے کہ بالغہ کے نکاح میں ولی بھی شرط نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۳: از شمس آباد ضلع کیمل پور علاقہ اٹک مرسلہ مولوی قاضی گیلانی صاحب ۱۹ جمادی الاولی ۱۳۳۰ھ

بحضور لامع النور، موفور السرور، قاطع الشرور والفسق والفجور حضرت عالم اہل السنۃ والجماعۃ مجدد مائۃ حاضرہ زید مجدہم! بعد نیاز بے آغاز حضور نے فرمایا تھا کہ کتب خانہ فیض نشانہ میں عینی ہدایہ نہیں ولہذا دو ورق بقدر حاجت ارسال خدمت فیض درجت ہیں، مسئلہ خطبہ و نکاح بغیر کفو میں اس ملک کے علماء سخت مخالف ہیں بعض کتب عربیہ وفارسیہ قلمی غیر مشہور میں لکھا ہے کہ تقسیم فواکہ و شکر با فاتحہ خوانی بلا ایجاب و قبول کے یا وعدہ کہ میں تم کو اپنی بیٹی دوں گا یا اس ارادہ پر کوئی تحفہ خوردنی یا پوشیدنی لیا تو بھی مثل ایجاب و قبول کے موجب انعقاد نکاح ہو گیا اور حدیث تحریم الخطبہ علی خطبہ اخیہ (بھائی کی منگنی پر منگنی حرام ہے۔ت) سے ان عبارتوں کو اور بھی تاکید دیتے ہیں اور عینی شرح ہدایہ کی عبارت کتاب النکاح میں لان الخطبۃ التزوج (کیونکہ منگنی نکاح کے لیے ہوتی ہے۔ت) ان کے مدعا کی پوری مثبت ہے ان کے نزدیک ایجاب و قبول لفظی یا کوئی قول وفعل اس پر دال ہو موجب نکاح ہے اگر چہ فتاوی مہدیہ وغیرہ کتب کی عبارتیں ان کو بار ہا دکھائی گئیں مگر وہ لوگ قاصر الفہم اپنی ہٹ سے باز نہیں آتے اور اس کا نام احتیاط فی الفروج رکھا ہے۔ حضور نے ایک بار فرمایا تھا کہ قلم ناسخ کی غلطی معلوم ہوتی ہے، اور صحیح عبارت "لان الخطبۃ للتزوج" معلوم ہوتی ہے حضور کی یہ در فشانی نہایت

اوفق واوجہ ہے مگر عرض یہ ہے کہ اس مسئلہ خطبہ کے متعلق کل مالہا وما علیہا مع ازالہ اوہام وابانۂ مرام ابحاث کے ساتھ بقدر چار پانچ ورق کے بزبان عربی حضور ارشاد فرمائیں ۔ دوسری عبارت عینی کی :

متن	ترجمہ/تشریح
وعنه في الرجل يشرب الشراب او هو حائك يفرق بينهما	عینی سے روایت ہے کہ جو شراب کا عادی یا جولاہا ہے تو دونوں کی تفریق کر دی جائے گی، اور بسیط میں ہے کہ شیعہ کا مذہب ہے کہ علویات (سیدزادیوں) کا نکاح ان کے اولیاء کی رضامندی کے باوجود بھی غیر سے ممنوع ہے، سروجی نے کہا : یہ دونوں قول باطل ہیں انتہی۔ (ت)
وفی البسیط ذهبت الشیعة الی ان نکاح العلویات ممتنع علی غیرهم مع التراضی قال السروجی وهما قولان باطلان 3 انتہی۔	

1 صحیح مسلم باب تحریم الخطبة علی خطبة اخیه قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۵۴ 2 عینی شرح ہدایہ فصل فی الحداد مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۴۳۴/۲ 3 عینی شرح ہدایہ فصل فی الکفاءۃ مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۱۰۲/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

And the text before this is clear; there is doubt only in the reference point (Marja'). If we take two statements close to the original reference based on the majority rule, one regarding a wine-drinker and a weaver, and the second regarding a Shia... then although the invalidity of the Shia's statement is apparent because, in the 'Zahir al-Riwayah' (manifest reports), marriage is valid even without the consent of the guardians, despite the established objection of the guardian; and according to 'Nawadir' (rare reports) it is invalid, due to the corruption of times, thus it was not prohibited at all. (T) However, if a woman from a high-status tribe marries a wine-drinker or a weaver without the consent of the guardians, then according to the 'Zahir al-Riwayah' itself, separation will be effected as mentioned in all original texts, commentaries, and fatwas. So, what is the reason for its invalidity? Is Saruji from the Hanafi school or another? And to which class does he belong? And what is the clear meaning of his text? In most parts of the Khorasan region, most Hanafi scholars believe that the marriage of a Syeda (descendant of the Prophet) is valid with any person, whether noble or lowly, whether the guardian is pleased or displeased. And disregarding all books of jurisprudence, they insist on only two texts: one is a verse in the first section of Surah Al-Ahzab;

Arabic Text	**Urdu Translation**
The Prophet is closer to the believers than their own selves, and his wives are their mothers... etc.[1]	The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is closer to the believers even than their own lives, and his pure wives are the mothers of the believers, etc. (T)

That the prohibition of the pure wives does not extend to the daughters, sisters, and maternal aunts of the Messenger of Allah and his wives, as is stated in Madarik, Khazin, Ahmadi, Ruh al-Bayan, etc. And the second text 'Qala al-Saruji' etc., which was just quoted from Ayni, they were answered that this text is not contradictory to 'Zahir al-Riwayah' and 'Nawadir' because in 'Zahir al-Riwayah' it is also valid with the guardian's objection, and in 'Nawadir' where it is not valid, it is due to the corruption of the times; thus there is no conflict or collision (there is no conflict or collision between the manifest and rare reports. T). Please write something about this, O Luminous One (Hazrat Ahmad Raza Khan).

The Answer: With the noble observation of the Exalted, Honored, Possessor of Glory, Excellence, and Generosity, Maulana Maulvi Qazi Ghulam Gilani Sahib, peace be upon

you, and the mercy of Allah and His blessings. The text of Binayah, page 102, is very clear. By comparing it with the above report, the meaning of this report becomes clear. Two reports have been mentioned from Imam Ahmad bin Hanbal (may Allah be pleased with him): first...

---

[1] Al-Quran 33/6 Page 308 of 739

फ़तावा रज़विया खंड 11

और इससे पहले का इबारत (पाठ) स्पष्ट है; केवल संदर्भ (मर्जा) में संदेह है। यदि बहुमत के नियम के आधार पर मूल संदर्भ के निकट दो कथन लिए जाएँ, जिनमें से एक शराब पीने वाले और जुलाहे के बारे में है और दूसरा शिया के बारे में है... तो यद्यपि शिया के कथन की अमान्यता स्पष्ट है क्योंकि 'ज़ाहिर अल-रिवायत' (प्रसिद्ध वृत्तांत) में वली (अभिभावक) की सहमति के बिना भी निकाह (विवाह) मान्य है, वली की आपत्ति सिद्ध होने के बावजूद; और 'नवादिर' (दुर्लभ वृत्तांत) के अनुसार मान्य नहीं है, ज़माने के बिगाड़ के कारण, अतः मूल रूप से निषिद्ध नहीं हुआ (त)। लेकिन अगर किसी उच्च कुल की महिला ने वली की सहमति के बिना शराब पीने वाले या जुलाहे से निकाह कर लिया, तो 'ज़ाहिर अल-रिवायत' के अनुसार ही अलगाव (तफ़रीक) कराया जाएगा जैसा कि सभी मूल ग्रंथों, व्याख्याओं और फ़तवों में वर्णित है। तो इसकी अमान्यता का क्या कारण है? क्या सरूजी हनफ़ी संप्रदाय के हैं या अन्य के, और वे किस श्रेणी के हैं? और उनकी इबारत का स्पष्ट अर्थ क्या है? खुरासान क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में, अधिकांश हनफ़ी विद्वान इस बात के कायल हैं कि सैय्यदज़ादी (पैगंबर के वंशज की महिला) का निकाह हर व्यक्ति के साथ, चाहे वह शरीफ़ हो या रज़ील (नीच), मान्य है, चाहे वली सहमत हो या न हो। और फ़िक़्ह (इस्लामी कानून) की सभी किताबों को नज़रअंदाज़ करके वे केवल दो इबारतों पर अड़े हुए हैं: एक सूरह अल-अहज़ाब के पहले रुकूअ (अनुभाग) की आयत में;

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
नबी (पैगंबर) मोमिनों (विश्वासियों) के लिए उनकी अपनी जानों से भी अधिक निकट हैं और उनकी पत्नियाँ उनकी माताएँ हैं... इत्यादि।[1]	नबी पाक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मोमिनों के लिए उनकी जानों से भी अधिक करीब हैं और आपकी पाक पत्नियाँ मोमिनों की माताएँ हैं इत्यादि (त)

कि अज़वाजे मुतहरात (पवित्र पत्नियों) की हुरमत (निषेध) रसूलुल्लाह और उनकी पत्नियों की बेटियों, बहनों और मौसियों तक नहीं फैलती, जैसा कि मदारिक, ख़ाज़िन, अहमदी और रूह अल-बयान आदि में है। और दूसरी इबारत 'क़ाला अल-सरूजी' आदि जो अभी ऐनी से उद्धृत की गई थी, उन्हें उत्तर दिया गया कि यह इबारत 'ज़ाहिर अल-रिवायत' और 'नवादिर' के विपरीत नहीं है क्योंकि 'ज़ाहिर अल-रिवायत' में भी वली की आपत्ति के साथ मान्य है, और 'नवादिर' में जो अमान्य है वह

ज़माने के बिगाड़ की वजह से है; अतः कोई विरोध या टकराव नहीं है (ज़ाहिर और नादिर रिवायत में कोई विरोध और टकराव नहीं है। त)। हुज़ूर लामे-उन-नूर भी इस संबंध में कुछ लिखें।

अल-जवाब (उत्तर): प्रतिष्ठित, सम्मानित, गौरव, श्रेष्ठता और उदारता के धनी, मौलाना मौलवी क़ाज़ी गुलाम गिलानी साहब की सेवा में, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। बिनाया (Binayah) के पृष्ठ 102 की इबारत बहुत स्पष्ट है। ऊपर की रिवायत से तुलना करने पर इस रिवायत का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। इमाम अहमद बिन हंबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) से दो रिवायतें वर्णित की गई हैं, पहली...

---

[1] अल-क़ुरान 33/6 पृष्ठ 308/739

اور عبارت تو اس سے پہلے صاف ہے ہما کے مرجع ہی میں شبہ ہے۔ اگر اس قاعدہ اکثریہ پر کہ اصل مرجع میں مذکور قریب ہے قریب کے دو قول لیے جائیں جو کہ ایک شارب و حائک کا دوسرا شیعہ والا ہے۔ تو اگرچہ شیعہ کے قول کا بطلان ظاہر ہے کہ ظاہر روایت میں بغیر تراضی اولیاء بھی نکاح درست ہے باوجود ثبوت اعتراض ولی، اور بروایت نوادر نا درست ہے، لفساد الزمان فلم یکن ممتنعا (اس کی وجہ زمانے کا فساد ہے لہذا اصلا ممنوع نہ ہوا۔ ت) مگر شارب الشراب یا حائک سے اگر اعلیٰ قوم کی عورت نے بغیر تراضی اولیاء کے نکاح کر لیا تو ظاہر روایت ہی کی رو سے تو تفریق کی جائے گی جیسا کہ کل متون و شروح و فتاوٰی میں مذکور ہے پس اس کے بطلان کی وجہ کیا ہے، سروجی حنفی مذہب کا ہے یا کہ غیر، اور کس طبقہ کا ہے، اور اس کی عبارت کا صاف مطلب کیا ہے، ملک خراسان کے اکثر حصص میں اکثر علمائے احناف اس کے قائل ہیں کہ سید زادی کا نکاح ہر شخص شریف و رذیل کے ساتھ درست ہے ولی راضی ہو یا خفا۔ اور فقہ کی کل کتابوں سے اغماض کر کے صرف دو عبارتوں پر مصر ہیں ایک آیت سورہ احزاب کے اول رکوع میں؛

عربی متن	**اردو ترجمہ**
النَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ط الخ[1]	نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مومنین کی جانوں سے بھی ان کے لیے قریب تر ہیں اور آپ کی ازواج پاک مومنین کی مائیں ہیں الخ (ت)

کہ تحریم ازواج مطہرات کی رسول اللہ و ازواج کی بنات و اخوات و خالات کی طرف متعدی نہیں، جیسا کہ مدارک و خازن واحمدی و روح البیان وغیرہ میں ہے۔ اور دوسری عبارت قال السروجی الخ جو کہ ابھی عینی سے نقل ہوئی ان کو جواب دیا گیا ہے کہ ظاہر روایت و نوادر سے یہ عبارت مخالف نہیں کیونکہ ظاہر روایت میں بھی درست ہے مع اعتراض ولی، اور نوادر میں جو نادرست ہے تو وہ بوجہ فسادِ زمانہ ہے فلا تعارض ولا تصادم (ظاہر اور نادر روایت میں تعارض و تصادم نہیں ہے۔ ت) اس کے متعلق بھی حضور لامع النور کچھ تحریر فرمائیں

الجواب: بملاحظہ شریفہ مولانا المبجل المکرم ذی المجد والفضل والکرم مولانا مولوی قاضی غلام گیلانی صاحب دامت معالیہ السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ عبارت بنایہ صفحہ ۱۰۲ بہت صاف ہے۔ اوپر کی روایت سے موازنہ کر کے اس روایت کا مطلب واضح ہوتا ہے، امام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے دو روایتیں ذکر کیں، اول

---

[1] القرآن ۳۳/۶ صفحہ 308 از 739

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

"It is necessary to consider compatibility (Kafa'ah), and it cannot be waived except with the consent of the guardian (Wali) and the woman herself." - 1 | Consideration of compatibility is necessary; it can only be waived with the consent of both the guardian and the girl herself. (T)

This is consistent with our school of thought; even the 'Hasan' narration, which is preferred for issuing fatwas, states that if a mature woman marries a non-compatible person with the consent of her guardian before the marriage, while being aware of the lack of compatibility, it will be valid and binding, and there will be no right to object. Second:

"And it is narrated from him regarding a man who drinks wine or is a weaver, that they should be separated." - 2 | It is narrated from the same source that if a person is a habitual drinker or a weaver, a separation should be effected between them. (T)

This is absolute; the exception of mutual consent does not apply here. If that exception were present here too, both narrations would become one. Necessarily, the result of its absolute nature is that considering compatibility is a Shariah requirement and will not be waived even by the consent of the woman and the guardian. And if such a marriage occurs with everyone's consent, the judge will forcibly separate them, just as in our school, if a marriage occurs with a girl touched with lust with the consent of the woman and guardians, they are separated. The Rafidis gave the same ruling regarding Alawite women, that marriage of an Alawite woman to someone else, even if he is a Qurayshi, is prohibited even with the consent of all. Imam Saruji says regarding these two opinions, "Both are false." And they are certainly false. If a mature woman marries a weaver with the consent of her guardian, they will not be separated. And if a mature Alawite Qurayshi woman marries a non-Alawite, even without the guardian's consent, or a non-Qurayshi with the guardian's consent, it is not prohibited. Imam Saruji Abul Abbas Ahmad, the judge of Egypt (d. 710 AH), author of 'Ghayah' (a commentary on Al-Hidayah), is among the prominent Hanafi scholars. At that time, this humble servant (the author) had suggested by analogy that 'Al-Khitbah li-tazawuj' (engagement for marriage) would be the phrase. Now, seeing the page of the book sent by you, sir, I am certain it is indeed the letter 'Lam'. The scribe did not transcribe this book but distorted it, which is why I did not buy it. That engagement is not marriage is as clear as the morning not being the sun. The footnote 'precaution regarding private parts' is

actually 'deception regarding private parts'—that they make her a wife as soon as the engagement happens. No ignorant person would say this, let alone a learned scholar. How many abundant texts will be found that prove the distinction between engagement and marriage.

"Nothing among tangible things is sound if the day itself needs a proof." (If the presence of the day needs a proof, then nothing in the world will ever be established. T)

1. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter on Compatibility, Maktaba Imdadiyya, Makkah Mukarramah, 2/102.
2. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter on Compatibility, Maktaba Imdadiyya, Makkah Mukarramah, 2/102.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

"कफ़ाअत (बराबरी) का एतबार ज़रूरी है और यह केवल वली और औरत की रज़ामंदी के बिना साक़ित नहीं होता।" - 1 | कफ़ू का एतबार ज़रूरी है, सिर्फ़ वली और ख़ुद लड़की की रज़ा से इसका एतबार साक़ित हो सकता है। (त)

यह हमारे मज़हब के मुवाफ़िक़ है, यहाँ तक कि रिवायत-ए-हसन मुफ़्ती-बिहा है कि इसमें भी अगर बालिग़ा वली की रज़ामंदी से निकाह से पहले कफ़ाअत की कमी को जानते हुए ग़ैर-कफ़ू से निकाह करेगी तो वह सही और नाफ़िज़ होगा और एतराज़ का हक़ भी नहीं रहेगा। दूसरी:

"और उन्हीं से मरवी है उस आदमी के बारे में जो शराब पीता है या जुलाहा है कि उन दोनों के बीच तफ़रीक़ (अलगाव) कर दी जाए।" - 2 | उन्हीं से मरवी है कि अगर कोई शराब का आदी हो या जुलाहा हो तो दोनों के बीच जुदाई कर दी जाएगी। (त)

यह मुतलक़ है, यहाँ रज़ामंदी का इस्तसना (अपवाद) नहीं है। यहाँ भी अगर वह इस्तसना होता तो दोनों रिवायतें एक हो जातीं। लाज़मी तौर पर इसके मुतलक़ होने का हासिल यह है कि कफ़ाअत का लिहाज़ शरीयत का हक़ होने के नाते लाज़िम है और औरत व वली की रज़ामंदी से भी साक़ित नहीं होगा। और अगर सबकी रज़ा से ऐसा निकाह हो जाए तो क़ाज़ी जबरन उनके बीच तफ़रीक़ कर देगा, जैसे हमारे यहाँ शहवत के साथ छुई गई लड़की का निकाह औरत और वलियों की रज़ा से हो, तो उनके बीच तफ़रीक़ कर दी जाएगी। यही हुक्म राफ़ज़ियों ने अलवी ख़वातीन के बारे में दिया कि अलवी औरत का निकाह किसी और से, चाहे वह कुरैशी ही क्यों न हो, सबकी रज़ामंदी के बावजूद मना है। इन दोनों कौलों को इमाम सरूजी 'बातिलान' (दोनों बातिल हैं) फ़रमाते हैं। और वे बेशक बातिल हैं। अगर बालिग़ा वली की रज़ा से जुलाहे से निकाह कर ले तो उनमें तफ़रीक़ नहीं की जाएगी। और अगर बालिग़ा अलवी कुरैशी औरत ग़ैर-अलवी से निकाह करे, चाहे वली की रज़ा के बिना, या ग़ैर-कुरैशी से वली की रज़ा के साथ, तो उसे मना नहीं किया जाएगा। इमाम सरूजी अबुल अब्बास अहमद, मिस्र के क़ाज़ी (वफ़ात 710 हिजरी), ग़ाया शर्ह हिदाया के मुसन्निफ़, अजल उलेमा-ए-हनफ़िया में से हैं। उस समय तो फ़क़ीर (लेखक) ने क़यास से अर्ज़ किया था कि 'अल-ख़ुतबतु लित-तज़व्वुज' (मंगनी निकाह के लिए) होगा। अब किताब का पन्ना जो आपने भेजा है, उसे देखकर यक़ीन करता हूँ कि बेशक 'लाम' ही है। कातिब (लिपिक) ने इस किताब को नक़्ल नहीं किया बल्कि बिगाड़ दिया है, इसीलिए मैंने इसे नहीं खरीदा। मंगनी का निकाह न होना इतना रोशन है जैसे सुबह

का सूरज न होना। हाशिये में 'एहतियात फ़िल-फ़ुरूज' (निजी अंगों के मामले में सावधानी) नहीं बल्कि 'एहतियाल फ़िल-फ़ुरूज' (निजी अंगों के मामले में छल) है कि मंगनी होते ही उसे मनकूह (पत्नी) बना लें। कोई जाहिल भी यह बात नहीं कहेगा, फ़ाज़िल (विद्वान) तो बहुत दूर की बात है। कितने ही कसरत से ऐसे नुसूस (ग्रंथ प्रमाण) मिलेंगे जो मंगनी और निकाह के फर्क को साबित करेंगे।

"चीज़ों में कोई बात सही नहीं रहती जब दिन को अपनी मौजूदगी के लिए दलील की ज़रूरत पड़ जाए।" (अगर दिन की मौजूदगी भी किसी दलील की मोहताज हो, तो फिर दुनिया में कोई चीज़ साबित नहीं मानी जाएगी। त)

1. अल-बिनाया शर्ह अल-हिदाया, फ़स्ल फ़िल-कफ़ाअत, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा 2/102
2. अल-बिनाया शर्ह अल-हिदाया, फ़स्ल फ़िल-कफ़ाअत, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा 2/102

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

لابد من اعتبار الکفاءۃ ولا یسقط الابتراضی الولی والمرأۃ۔1 | کفو کا اعتبار ضروری ہے صرف ولی اور خود لڑکی کی رضا سے اس کا اعتبار ساقط ہو سکتا ہے۔ (ت)

یہ ہمارے مذہب کے موافق ہے حتٰی کہ روایت حسن مفتی بہا ہے کہ اس میں بھی اگر بالغہ برضائے ولی قبل النکاح عالما بعدم الکفاءۃ غیر کفو سے نکاح کرے گی صحیح و نافذ ہوگا اور حق اعتراض بھی نہ رہے گا۔ دوسری:

وعنہ فی الرجل یشرب الشراب او ھو حائک یفرق بینھما۔2 | انہی سے مروی کہ شراب کا عادی یا جولا ہا ہو تو دونوں میں تفریق کر دی جائے گی۔ (ت)

یہ مطلق ہے وہ استثنائے تراضی یہاں نہیں یہاں بھی وہ استثناء ہو تو دونوں روایتیں ایک ہوجائیں لاجرم اس کے اطلاق کا یہ حاصل کہ لحاظ کفاءت حقاً للشرع لازم تراضی زن و ولی سے بھی ساقط نہ ہوگا، اور گوسب کی رضا سے ایسا نکاح ہو تو قاضی جبراً علیہم تفریق کر دے گا، جیسے ہمارے یہاں بنت ممسوسہ بشہوت سے برضائے زن و اولیاء نکاح کرے یفرق بینھما (دونوں میں تفریق کر دی جائے گی،ت) یہی حکم روافض نے درباره علویات دیا کہ دوسرے سے اگرچہ قرشی ہو علویہ کا نکاح اگرچہ برضائے کل ہو ممتنع ہے۔ ان دونوں قولوں کو امام سروجی فرماتے ہیں، باطلان (دونوں باطل ہیں،ت) اور وہ بیشک باطل ہیں، اگر بالغہ برضائے ولی حائک سے نکاح کر لے لایفرق بینھما (دونوں میں تفریق نہیں کی جائے گی،ت) اور علویہ بالغہ قرشی غیر علوی سے نکاح کرے اگر چہ بے رضائے ولی یا غیر قرشی سے برضائے ولی لا یمتنع (منع نہیں کیا جائے گا۔ ت) امام سروجی ابو العباس احمد قاضی مصر متوفی ۷۱۰ھ صاحب غایہ شرح ہدایہ اجلہ

علمائے حنفیہ سے ہیں، اس وقت تو فقیر نے قیاس سے گزارش کیا تھا کہ الخطبۃ للتزوج (منگنی نکاح کے لیے ت) ہوگا، اب کتاب کا ورق کہ جناب نے بھیجا دیکھ کر یقین کرتا ہوں کہ بیشک لام ہی ہے۔ کاتب نے اس کتاب کو نسخ نہ کیا مسخ کیا ہے اسی لیے میں نے نہ خریدی، خطبہ کا غیر نکاح ہونا ایسا روشن ہے جیسے صبح کا غیر شمس ہونا حاشیہ احتیاط فی الفروج نہیں بلکہ احتیال فی الفروج ہے کہ منگنی ہوتے ہی منکوحہ بنا لیں ولا یقول بہ جاھل فضلا عن فاضل (کوئی جاہل بھی یہ بات نہ کہے گا چہ جائیکہ کوئی فاضل کہے ت) کس قدر کثرت وافرہ سے نصوص ملیں گے جو خطبہ و تزویج کی مباینت ثابت کریں گے۔

ولیس یصح فی الاعیان شیئ اذا احتاج النھار الی دلیل (دن کی موجودگی بھی اگر کسی دلیل کی محتاج ہو تو پھر دنیا میں کوئی چیز ثابت نہیں قرار پائے گی ت)

1 البنایہ شرح ہدایہ فصل فی الکفاءۃ مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۲/ ۱۰۲ 2 البنایہ شرح ہدایہ فصل فی الکفاءۃ مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۲/ ۱۰۲

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

The Hadith 'prohibiting a proposal (khitba) over another brother's proposal' (proposing to a woman who is already considering a proposal from another Muslim brother is forbidden) is supported by severe ignorance, otherwise from the Hadith 'prohibiting bidding over a brother's bid' (it is forbidden to offer a price over the price offered by a brother), they would turn the act of bidding into a contract of sale. The first statement of Al-Binaya is: "It is not appropriate to propose to a woman in her 'iddat (waiting period) because the proposal is for marriage, and marrying a woman in 'iddat is not permissible." (It is not appropriate to send a marriage proposal to a woman in her waiting period, as stated in the commentary, because the proposal is for marriage while marrying someone in 'iddat is not allowed). So it is obvious, would the marriage of a woman in 'iddat be called "not appropriate" (la yanbaghi)? Its prohibition was mentioned among the forbidden acts. Here the scribe has omitted "lan" (because). The text has mentioned two issues: one is the explicit proposal (khitba sariha), which it forbade. The commentator gives the reason that a proposal is for the purpose of marriage, and marriage during 'iddat is forbidden. The second is the allusive proposal (khitba bil-kinaya), which it permitted, stating "There is no harm in alluding to a proposal" (There is no restriction in sending a proposal to a woman in 'iddat through allusions). This means there should be a proposal but not in explicit words, rather in allusions, so there is no harm. Can any Muslim, or even any sane person, take this to mean that marrying a woman in 'iddat through allusions is permissible? God forbid! The second statement:

Arabic Statement	**Urdu Translation**
Any explicit saying like "I want to marry you" or "I propose to you" is not permissible because the proposal is for marriage, as we mentioned.	That is, to say explicitly "I want to marry you" or "I am giving you a marriage proposal" is impermissible because the proposal is for marriage, as we mentioned.

In which the scribe wrote "an" for "ay" and "at-tazawuj" for "lit-tazawuj". In this, those gentlemen probably were misled into reading "akhtub" as accusative (mansoob) and conjoined to "ankih", and considered it falling under "ureed" (I want), thinking it is not permissible to say "I want to propose to you", so they understood "khitba" as "tazawuj" (marriage), whereas it is not so. Rather, "akhtub" is in the nominative case (marfoo' hukai) and its conjunction is on "ureed", meaning it is not permissible to say "I want to marry you" nor is it permissible to say "I propose to you" i.e., I am giving a marriage proposal. Then he explains the reason for its being explicit is that the

proposal is for marriage itself, so the meaning of "akhtubuka" is exactly the same as "ureed an ankihaka". The Quranic verse like "mothers" (the wives of the Prophet) for eternal prohibition is general, but this is definitely specific to the Pure Wives, otherwise, the marriage of noble daughters with the noble sons-in-law would not have been possible. From this, it is necessary to understand that other than the Pure Wives...

---

1 Sahih Muslim, Chapter on the prohibition of a proposal over a brother's proposal, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/454 2 Sahih Muslim, Chapter on the prohibition of selling over a brother's sale, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 3/3 3 Al-Binaya Sharh al-Hidaya, Section on 'Iddat, Maktaba Imdadiya Makkah Mukarramah, 4/434 4 Al-Binaya Sharh al-Hidaya, Section on 'Iddat, Maktaba Imdadiya Makkah Mukarramah, 4/434 5 Al-Binaya Sharh al-Hidaya, Section on 'Iddat, Maktaba Imdadiya Makkah Mukarramah, 4/434

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

हदीस 'एक भाई के प्रस्ताव (मंगनी) पर प्रस्ताव करना हराम है' का समर्थन अत्यधिक अज्ञानता है, अन्यथा हदीस 'एक भाई की बोली पर बोली लगाना हराम है' से लोग बोली लगाने को ही बिक्री का अनुबंध (निकाह) मान लेंगे। बिनाया का पहला विवरण है: "इद्दत वाली महिला को प्रस्ताव देना उचित नहीं है क्योंकि प्रस्ताव विवाह के लिए होता है और इद्दत वाली महिला से विवाह करना जायज़ नहीं है।" (इद्दत वाली महिला को मंगनी का पैगाम देना मुनासिब नहीं, शरह में है। क्योंकि मंगनी निकाह के लिए होती है जबकि इद्दत वाली को निकाह जायज़ नहीं)। तो स्पष्ट है, क्या इद्दत वाली के निकाह को "उचित नहीं" (ला यनबगी) कहा जाता? इसका निषेध तो हराम चीज़ों में बीत चुका है। यहाँ लेखक ने "लैन" (क्युँकि) छोड़ दिया है। मूल पाठ (मतन) ने दो मसले बयान किए हैं: एक स्पष्ट प्रस्ताव (खुतबा सरीहा) जिससे मना फरमाया, टीकाकार (शारेह) इसकी दलील देते हैं कि प्रस्ताव तो विवाह के उद्देश्य से ही होता है और इद्दत वाली से विवाह हराम है। दूसरा संकेतपूर्ण प्रस्ताव (खुतबा बिल-किनाया), इसे जायज़ फरमाया कि 'प्रस्ताव के लिए संकेत करने में कोई हर्ज नहीं' (इद्दत वाली को किनाया के तौर पर मंगनी के पैगाम में कोई पाबंदी नहीं)। यानी प्रस्ताव हो मगर स्पष्ट शब्दों में नहीं बल्कि संकेत में, तो कोई हर्ज नहीं। क्या कोई मुस्लिम बल्कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति इसका यह अर्थ ले सकता है कि इद्दत वाली से संकेत द्वारा निकाह जायज़ है? अल्लाह की पनाह! दूसरा विवरण:

अरबी कथन	**उर्दू अनुवाद**
यानी स्पष्ट रूप से यह कहना जायज़ नहीं है कि 'मैं तुमसे निकाह करना चाहता हूँ' या 'मैं तुम्हें प्रस्ताव देता हूँ' क्योंकि प्रस्ताव विवाह के लिए होता है जैसा कि हमने उल्लेख किया।	यानी स्पष्ट रूप से यह कहना कि मैं तुझसे निकाह करना चाहता हूँ। या मैं तुझे निकाह का संदेश देता हूँ, नाजायज़ है क्योंकि मंगनी निकाह के लिए होती है जैसा कि हमने ज़िक्र किया।

जिसमें लेखक ने "ऐ" का "अन" और "लित-तज़वुज" का "अत-तज़वुज" लिखा है। इसमें उन साहबों को शायद यह भ्रम हुआ कि 'अखतुब' को मन्सूब (ज़ेर वाला) पढ़ा और 'अनकिह' पर म'तूफ (जुड़ा हुआ) किया, और "उरीद" (चाहता हूँ) के अंतर्गत माना कि यह कहना जायज़ नहीं कि 'मैं तुझसे मंगनी करना चाहता हूँ'। उन्होंने समझ लिया कि खुतबा ही तज़वुज (निकाह) है, हालाँकि ऐसा नहीं है बल्कि 'अखतुब' मरफ़ू है और इसका जुड़ाव "उरीद" पर है, यानी यह कहना जायज़ नहीं कि 'मैं तुझसे निकाह करना चाहता हूँ' और न ही यह कहना जायज़ है कि 'मैं तुझे खुतबा करता हूँ' यानी निकाह का संदेश देता हूँ। फिर इसके स्पष्ट होने का कारण बताते हैं कि खुतबा निकाह ही के लिए

होता है तो "अखतुबका" के अर्थ बिल्कुल वही हुए कि "उरीद अन अनकिहका"। आयत-ए-करीमा की तरह 'माताएँ (पैगंबर की पत्नियाँ) शाश्वत निषेध के लिए सामान्य है, यह निश्चित रूप से 'अज़वाज-ए-मुतहरात' (पवित्र पत्नियों) के लिए विशेष है वरना श्रेष्ठ दामादों से श्रेष्ठ पुत्रियों का विवाह संभव न होता। इससे यह समझना ज़रूरी है कि पवित्र पत्नियों के अलावा...

---

1 सहीह मुस्लिम, भाई के प्रस्ताव पर प्रस्ताव की मनाही का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/454 2 सहीह मुस्लिम, भाई की बिक्री पर बिक्री की मनाही का अध्याय, आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 3/3 3 अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, इद्दत का खंड, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा, 4/434 4 अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, इद्दत का खंड, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा, 4/434 5 अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, इद्दत का खंड, मकतबा इमदादिया मक्का मुकर्रमा, 4/434

पृष्ठ 310/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

حدیث تحریم الخطبة علی خطبة اخیہ ۱ (بھائی کی منگنی پر منگنی حرام ہے۔ت) اس کی تائید جہلِ شدید، ورنہ حدیث یحرم السوم علی سوم اخیہ ۲ (بھائی کے لگائے ہوئے بھاؤ پر بھاؤ لگانا حرام ہے۔ ت) سے نفسِ سوم کو عقد بیع کر لیں گے۔بنایہ کی پہلی عبارت لاینبغی ان تخطب المعتدة لان الخطبة للتزوج ونکاح المعتدة لایجوز ۳ (عدت والی عورت کو منگنی کا پیغام دینا مناسب نہیں، شرح میں ہے۔ کیونکہ منگنی نکاح کے لیے ہوتی ہے جبکہ عدت والی کو نکاح جائز نہیں۔ت) تو ظاہر ہے کیا نکاحِ معتدہ کو "لا ینبغی" کہا جاتا اس کی تحریم تو محرمات میں گزری، یہاں کاتب نے "لان" چھوڑ دیا ہے متن نے دو مسئلے بیان فرمائے ایک خطبہ صریحہ اسے منع فرمایا، شارح اس کی دلیل بتاتے ہیں کہ خطبہ تو بغرضِ تزویج ہی ہے اور تزویج معتدہ حرام، دوسرا خطبہ بالکنایہ ۴، اسے جائز فرمایا کہ لاباس بالتعریض فی الخطبة (عدت والی کو کنایہ کے طور پر منگنی کے پیغام میں کوئی ممانعت نہیں۔ت) یعنی خطبہ ہو مگر نہ الفاظِ صریحہ میں بلکہ کنایہ تو حرج نہیں۔ کیا کوئی مسلم بلکہ کوئی عاقل اس کے یہ معنی لے سکتا ہے کہ معتدہ سے نکاح بالکنایہ جائز ہے حاش للہ! دوسری عبارت:

| ای لایجوز ان یقول صریحاً ارید ان انکحک او اخطبک لان الخطبة للتزوج کما ذکرنا۔ ۵ | یعنی صراحتہً یہ کہنا کہ میں تجھ سے نکاح کرنا چاہتا ہوں۔ یا میں تجھے پیامِ نکاح دیتا ہوں، ناجائز ہے کیونکہ منگنی نکاح کے لیے ہوتی ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا۔(ت) |

جس میں کاتب نے "ای" کا "ان" اور "للتزوج" کا "التزوج" لکھا ہے اس میں ان صاحبوں کو غالباً یہ دھوکا لگا کہ اخطب کہ منصوب پڑھا اور انکح پر معطوف اور "ارید" کے تحت میں داخل مانا کہ یہ کہنا جائز نہیں کہ میں تجھ سے خطبہ کرنا چاہتا ہوں یوں سمجھ لیا خطبہ تزویج ہے حالانکہ

ایسا نہیں بلکہ اخطب مرفوع حکائی اور اس کا عطف "ارید" پر ہے یعنی یہ کہنا جائز نہیں کہ میں تجھ سے نکاح کیا چاہتا ہوں نہ یہ کہنا جائز ہے کہ میں تجھے خطبہ کرتا یعنی پیامِ نکاح دیتا ہوں پھر اس کے صریح ہونے کی وجہ فرماتے ہیں کہ خطبہ تزویج ہی کے لیے ہوتا ہے تو "اخطبک" کے معنی بعینہ وہی ہوئے کہ "ارید ان انکحک" آیہ کریمہ کی مثل امہات تحریم ابدی عام کے لیے ہے، یہ بیشک ازواجِ مطہرات سے خاص ہے ورنہ ختنین کریمین سے تزویجِ بناتِ مکرمات نہ ہو سکتی اس سے یہ لازم سمجھنا کہ غیر ازواجِ مطہرات

---

1 صحیح مسلم باب تحریم الخطبة علی خطبة اخیہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۵۴ 2 صحیح مسلم باب تحریم البیع علی بیع اخیہ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳/۳ 3 البنایہ شرح ہدایہ فصل فی الحداد مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۴/۴۳۴ 4 البنایہ شرح ہدایہ فصل فی الحداد مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۴/۴۳۴ 5 البنایہ شرح ہدایہ فصل فی الحداد مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۴/۴۳۴

Volume Eleven

Fatawa Razawiyya

...in absolute permission is a gross ignorance; where is the negation of absolute prohibition and where is the affirmation of absolute permission, meaning the contradiction of a universal negative is a universal affirmative. And there is no power nor might except with Allah. And Allah the Almighty knows best.

Issue 154: From Mauza Bain, District Patna, sent by Mr. Sayyid Muzaffar Hussain Sahib, dated 22 Jumada al-Akhira 1338 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: Zaid fixed the marriage of his adult daughter, Hindah, with 'Amr and appointed Bakr as the representative (Wakil) for the marriage. After fixing the marriage, he wrote a letter saying, "Marry Hindah to 'Amr for a dower (Mahr) of twenty-one thousand rupees." Hindah was aware of all these matters, although formal permission was not sought from Hindah according to the custom in India. Also, no sign of disapproval or anger appeared from Hindah's actions or behavior. Bakr performed the marriage of Hindah with 'Amr for a dower of twenty-one thousand and sent a letter to Zaid saying, "On such and such date, I performed the marriage of Hindah with 'Amr for twenty-one thousand; you may inform the girl." Zaid had his daughter informed, and the girl accepted it. Is the marriage valid in such a situation, and is there no need for renewal? Provide a ruling, and may you be rewarded.

The Answer: And upon you be peace and the mercy and blessings of Allah. If the situation is as described, then the marriage is valid, complete, effective, and binding. If there is no Sharia impediment such as religious corruption (fasad-e-mazhab) etc., there is no need for renewal. Because "Subsequent ratification is like prior authorization" as mentioned in Al-Khayriyya etc. (since subsequent permission is like a prior power of attorney, as in Al-Khayriyya etc. - T). And Allah the Almighty knows best.

---

1 Fatawa al-Khayriyya, Chapter on the Marriage of an Unauthorized Agent (Fuduli), Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/27.

जिल्द ग्यारहवीं

फतावा रज़विया

...पूर्ण अनुमति में है, यह घोर अज्ञानता है। पूर्ण निषेध का निषेध कहाँ और पूर्ण अनुमति की पुष्टि कहाँ, यानी एक सार्वभौमिक नकारात्मक का विरोधाभासी एक सार्वभौमिक सकारात्मक होता है। और अल्लाह के बिना कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है। और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

मसला 154: मौज़ा बैन, जिला पटना से, जनाब सैयद मुजफ्फर हुसैन साहब द्वारा प्रेषित, दिनांक 22 जमादी-उल-आख़िर 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी बालिग बेटी हिंदह का रिश्ता अम्र से तय किया और बक्र को निकाह के लिए वकील (प्रतिनिधि) नियुक्त किया। निकाह तय करने के बाद, उसने एक पत्र लिखकर भेजा कि हिंदह का निकाह इक्कीस हज़ार रुपये मेहर पर अम्र से कर दो। हिंदह को इन सभी बातों की जानकारी थी, हालाँकि हिंदह से हिंदुस्तान के दस्तूर के मुताबिक़ औपचारिक अनुमति नहीं मांगी गई थी। साथ ही हिंदह की किसी भी हरकत या व्यवहार से असहमति या नाराजगी प्रकट नहीं हुई। बक्र ने इक्कीस हज़ार रुपये मेहर पर अम्र से हिंदह का निकाह कर दिया और ज़ैद को पत्र लिखकर भेजा कि फलां तारीख को मैंने हिंदह का निकाह इक्कीस हज़ार पर अम्र से कर दिया है; आप लड़की को सूचित कर दें। ज़ैद ने अपनी लड़की को सूचित कराया तो लड़की ने इसे स्वीकार कर लिया। क्या ऐसी स्थिति में निकाह मान्य हो गया और नवीनीकरण (तजदीद) की कोई ज़रूरत तो नहीं है? हुक्म बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): व अलैकमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। यदि घटना की स्थिति यही है, तो निकाह सही, पूर्ण, प्रभावी और अनिवार्य हो गया है। यदि धर्म के भ्रष्ट होने (फ़साद-ए-मज़हब) जैसा कोई शरीयत संबंधी अवरोध न हो, तो नवीनीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि "बाद की अनुमति पहले की वकालत के समान है" जैसा कि अल-खैरिया आदि में है (क्योंकि बाद की अनुमति पहली वकालत की तरह है। जैसा कि खैरिया आदि में है। - त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1 फतावा अल-खैरिया, फ़सल फ़ी निकाह अल-फ़ुज़ूली, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत, 1/27।

جلد یازدہم

فتاوٰی رضویہ

میں حل مطلق ہے سخت جہل ہے کہاں تحریم مطلق کی نفی کہاں حل مطلق کا اثبات، یعنی سالبہ کلیہ کا نقیض موجبہ کلیہ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۴: از موضع بین ضلع پٹنہ مرسلہ جناب سید مظفر حسین صاحب مورخہ ۲۲ جمادی الآخرہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بالغہ لڑکی ہندہ کی نسبت عمرو سے مقرر کی اور بکر کو وکیل بالنکاح اور نکاح مقرر کر کے خط لکھ بھیجا کہ ہندہ کا نکاح عمرو سے اکیس ہزار روپے دین مہر پر کر دو، ان تمام باتوں کی اطلاع ہندہ کو ہے اگرچہ اجازت ہندہ سے موافق دستور ہندستان نہیں مانگا گیا اور ہندہ کی کسی حرکات وسکنات سے عدم رضا مندی اور ناراضگی بھی ظہور میں نہ آئی، بکر نے اکیس ہزار دین مہر پر عمرو سے ہندہ کا نکاح کر کے زید کے پاس خط لکھ بھیجا کہ فلاں تاریخ عمرو سے ہندہ کا نکاح اکیس ہزار پر کر دیا آپ لڑکی کو خبر کر دیجئے ، زید نے اپنی لڑکی کو اطلاع دلوایا تو لڑکی نے قبول کر لیا، نکاح ایسی صورت میں قبول ہوا اور تجدید کی ضرورت تو نہیں ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، اگر صورت واقعہ یہ ہے تو نکاح صحیح و تمام و نافذ ولازم ہوگیا، اگر کوئی مانع شرعی مثل فساد مذہب و غیرہ نہ ہو تجدید کی حاجت نہیں فان الاجازۃ اللاحقۃ کالوکالۃ السابقۃ کما فی الخیریہ وغیرہا (کیونکہ بعد کی اجازت پہلی وکالت کی طرح ہے۔ جیسا کہ خیریہ وغیرہ میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 فتاوٰی خیر یہ فصل فی نکاح الفضولی دارالمعرفۃ بیروت ۲۷/۱

Volume Eleven Fatawa Rizvia

Chapter of Prohibited Relations (Description of Prohibitions)

Problem 155: 19 Rajab 1305 AH What do the scholars of religion say regarding this matter? Hindah breastfed her grandson (son's son), Zaid. Now, she wants to arrange Zaid's marriage to her granddaughter, Laila daughter of Salma. Is this marriage permissible according to Sharia or not? Explain and be rewarded.

Answer: It is absolutely not permissible, because when Zaid drank his grandmother's milk, she became his (foster) mother. And once she became his mother, all her offspring, whether born before or after this breastfeeding, became his brothers and sisters. Since they are all brothers and sisters, their daughters are his nieces (brother's or sister's daughters). Thus, Laila, being the daughter of Salma (daughter of Hindah), is Zaid's niece, and Zaid is her maternal uncle. The marriage between a maternal uncle and a niece is never lawful. It is stated in Fatawa Alamgiri:

[Arabic Quote Box]: [Left Side (Arabic)]: The foster parents, their ancestors, and their descendants are prohibited for the nursing child, to the extent that if the nursing woman gave birth to a child before or after this breastfeeding or breastfed another child, they all become the brothers and sisters of the nursing child, and their children become the children of his brothers and sisters (nephews and nieces). (Summarized)

[Right Side (Urdu Translation)]: For the child who drinks milk, foster parents and their roots (ancestors) and branches (descendants) become forbidden. Even if the nursing woman gave birth to a child before or after this breastfeeding, or breastfed someone else, they will all be his brothers and sisters, and their children will be his nephews and nieces. (Summarized)

1. Fatawa Hindiyyah, Book of Nursing, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/343
Page 313 of 739

खंड ग्यारहवाँ फ़तावा रज़विया

बाबुल मुहर्रममात (निषिद्ध रिश्तों का वर्णन)

मसला १५५: १९ रजब १३०५ हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि हिंदा ने अपने पोते ज़ैद को दूध पिलाया, अब वह ज़ैद का निकाह अपनी नवासी लैला बिन्त सलमा से करना चाहती है। क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: यह बिल्कुल भी जायज़ नहीं है क्योंकि जब ज़ैद ने अपनी दादी का दूध पिया तो वह उसकी (रज़ाई/दूध की) माँ हो गई। और जब वह उसकी माँ हो गई, तो उसकी सारी संतान, चाहे वह इस स्तनपान से पहले पैदा हुई हो या बाद में, वे सब उसके भाई-बहन हो गए। और जब वे सब भाई-बहन हैं, तो उनकी बेटियाँ उसकी भतीजियाँ या भांजियाँ हैं। इसलिए, लैला भी जो सलमा बिन्त हिंदा की बेटी है, ज़ैद की भांजी है और ज़ैद उसका मामा है। और मामा-भांजी का निकाह कहीं भी जायज़ नहीं है। फ़तावा आलमगीरी में है:

[अरबी उद्धरण बॉक्स]: [बायाँ हिस्सा (अरबी)]: दूध पीने वाले बच्चे के लिए उसके रज़ाई माता-पिता, उनके पूर्वज और वंशज वर्जित हैं। यहाँ तक कि यदि स्तनपान कराने वाली स्त्री ने इस स्तनपान से पहले या बाद में किसी बच्चे को जन्म दिया हो या दूध पिलाया हो, तो वे सब उस बच्चे के भाई-बहन होंगे और उनकी संतान उसके भतीजे-भतीजियाँ और भांजे-भांजियाँ होंगे। (संक्षिप्त)

[दायाँ हिस्सा (उर्दू अनुवाद)]: दूध पीने वाले बच्चे पर रज़ाई माता-पिता और उनके मूल (पूर्वज) और शाखाएँ(वंशज) हराम हो जाते हैं, यहाँ तक कि अगर स्तनपान कराने वाली महिला ने दूध पिलाने से पहले या बाद में कोई बच्चा जना हो या किसी को दूध पिलाया हो, तो वे सब उसके भाई-बहन होंगे और उनकी संतान उसके भतीजे और भतीजियाँ और भांजे और भांजियाँ होंगी। (संक्षिप्त)

१ फ़तावा हिन्दिया, किताबुर रज़ाअ, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/ ३४३ पृष्ठ ३१३/७३९

جلد یاز دہم فتاوی رضویہ

باب المحرمات (محرمات کا بیان)

مسئلہ ۱۵۵: ۱۹ رجب ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نے اپنے ابن الابن زید کو دودھ پلایا، اب زید کا نکاح اپنی نواسی لیلی بنت سلمی سے کیا چاہتی ہے آیا یہ نکاح شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ہر گز جائز نہیں کہ جب زید نے اپنی دادی کا دودھ پیا تو وہ اس کی ماں ہوئی ، اور جب وہ اس کی ماں ہوئی تو اس کی ساری اولاد خواہ اس دودھ سے پہلے پیدا ہوئی ہو یا بعد ، سب اس کے بھائی بہن ہوئے ، اور جب وہ سب بہن بھائی ہیں تو ان کی بیٹیاں اس کی بھتیجیاں بھانجیاں ہیں ، بس لیلی بھی کہ سلمی بنت ہندہ کی دختر ہے زید کی بھانجی ہے اور زید اس کا ماموں ہے ۔ اور ماموں بھانجی کا نکاح کہیں حلال نہیں۔ فتاوی عالمگیریہ میں ہے :

[عربی عبارت کا باکس]: [بائیں طرف (عربی)]: یحرم علی الرضیع ابواہ من الرضاع واصولھما وفروعھما حتی المرضعۃ لو ولدت قبل ھذا الارضاع او بعدہ وارضعت رضیعاً فالکل اخوۃ الرضیع واخواتہ واولادھم واولاد اخوتہ واخواتہ اھ ملخصاً

[دائیں طرف (اردو)]: دودھ پینے والے بچے پر رضاعی ماں باپ اور ان کے اصول وفروع حرام ہو جاتے ہیں حتی کہ اگر وہ دودھ پلانے سے قبل یا بعد اس نے کوئی بچہ جنا ہو یا کسی کو دودھ پلایا ہو تو وہ سب اس کے بھائی بہن ہوں گے اور ان کی اولاد اس کے بھتیجے اور بھتیجیاں اور بھانجے اور بھانجیاں ہوں گی۔ اھ ملخصاً (ت)

۱ فتاوی ہندیہ کتاب الرضاع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۴۳ Page 313 of 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

...And from this, it has become clear that the opinion of some claimants of knowledge—that if Salma and Layla were born before Zaid, then there was no sharing of milk, thus Salma is not his sister nor Layla his niece—is pure and gross ignorance. And Allah (Exalted) knows best.

Problem 156: From Khairabad, sent by Hussain Bakhsh Sahib Rizvi, 1st Rabi' al-Awwal 1306 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid is married to the daughter of Bakr. Bakr married another woman, and afterwards, Bakr died. Now Zaid wishes to marry his stepmother-in-law. Is this marriage permissible according to the marginalia of 'Ayni or not? And is the aforementioned woman included in the Divine statement 'and [prohibited to you are] your wives' mothers'? Explain and be rewarded.

The Answer: The aforementioned marriage is undoubtedly permissible. Allah (Almighty and Majestic) says: "And lawful to you are [all others] beyond these." (i.e., besides the mentioned prohibited ones, others are made lawful for you. - T) All scholars in texts, commentaries, and fatwas state that relatives by marriage (prohibited through marriage) include the wives of ancestors and descendants, but not the wife of the wife's ancestors. The absence of mention in such places is equivalent to a mention of non-existence, as is not hidden. (T) And a stepmother is never included in the word 'mothers', otherwise, why would it be said after the verse of prohibition 'Prohibited to you are your mothers' (T), 'And do not marry those [women] whom your fathers married'? (T) Scholars explicitly state that the mother of a stepmother, her daughter, and her sister are all lawful. If a stepmother were also a 'mother', then these women would be considered grandmother, sister, and maternal aunt. 'Allama Khair al-Din al-Ramli states:

[Table/Box Text:] The daughter of the mother's husband, his mother, the mother of the father's wife, and her daughter are not prohibited. (The daughter of the mother's husband and his mother, and the mother and daughter of the father's second wife are not prohibited. - T)

The principle is that the prohibition of the mother-in-law is not because she is the wife of the father-in-law, but because she is the mother of the wife. This reason does not exist in a stepmother-in-law; therefore, there is no doubt in her permissibility. The matter is clear and the ruling is manifest. And Allah (Exalted) knows best.

Problem 157: From Narsinghpur Kandeli, near the Jamia Masjid, sent by Maulvi Yaqinuddin Sahib, 25th Dhu al-Qi'dah 1306 AH. We praise Him and send blessings upon His noble Messenger. After that, what do the scholars of religion say regarding this matter: Mst. Naseebun [married] her husband...

---

1. Quran 4/24
2. Quran 4/23
3. Quran 4/22
4. Fatawa Khairiyyah, Section on Prohibited Degrees, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/23.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...और यहीं से यह स्पष्ट हो गया कि ज्ञान के कुछ दावेदारों का यह विचार—कि यदि सलमा और लैला ज़ैद से पहले पैदा हुई थीं, तो दूध में कोई साझेदारी नहीं हुई, न सलमा उसकी बहन है और न लैला उसकी भांजी—शुद्ध और घोर अज्ञानता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 156: खैराबाद से, हुसैन बख्श साहब रज़वी द्वारा प्रेषित, 1 रबी-उल-अव्वल 1306 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद का विवाह बक्र की बेटी से हुआ है। बक्र ने दूसरी महिला से विवाह किया, जिसके बाद बक्र की मृत्यु हो गई। अब ज़ैद अपनी सौतेली सास से निकाह करना चाहता है। क्या यह निकाह 'ऐनी' के हाशिये के अनुसार जायज़ है या नहीं? और क्या उक्त महिला अल्लाह के कथन 'और तुम्हारी पत्नियों की माएँ में शामिल है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: उक्त निकाह निश्चित रूप से जायज़ है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: 'और तुम्हारे लिए उनके अलावा (महिलाएं) हलाल की गई हैं।' (यानी उल्लिखित निषिद्ध महिलाओं के अलावा अन्य तुम्हारे लिए हलाल हैं। - त) समस्त विद्वान ग्रंथों, व्याख्याओं और फ़तवों में निकाह के कारण निषिद्ध (मुहर्रमात-ए-सुहरिया) रिश्तों में पूर्वजों और वंशजों की पत्नियों को बताते हैं, न कि पत्नी के पूर्वजों की पत्नी को। ऐसी स्थितियों में उल्लेख न होना मानो न होने का उल्लेख है, जैसा कि स्पष्ट है। (त) और सौतेली माँ 'माओं' शब्द में कभी शामिल नहीं होती, अन्यथा निषेध की आयत में 'तुम पर तुम्हारी माएँ हराम की गई हैं' (त) के बाद 'और उन महिलाओं से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे पिताओं ने निकाह किया' (त) क्यों कहा जाता। विद्वान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि सौतेली माँ की माँ, उसकी बेटी और उसकी बहन सभी हलाल हैं। यदि सौतेली माँ भी 'माँ' होती, तो ये महिलाएँ उसकी नानी, बहन और खाला कहलातीं। अल्लामा खैर-उद-दीन रम्ली फ़रमाते हैं:

[बॉक्स का पाठ:] माँ के पति की बेटी, उसकी माँ, पिता की पत्नी की माँ और उसकी बेटी हराम नहीं हैं। (माँ के पति की बेटी और उसकी माँ, और पिता की दूसरी पत्नी की माँ और बेटी हराम नहीं हैं। - त)

मूल बात यह है कि सास की हुरमत (निषेध) इसलिए नहीं है कि वह ससुर की पत्नी है, बल्कि इसलिए है कि वह पत्नी की माँ है। सौतेली सास में यह कारण नहीं पाया जाता, अतः उसकी हलाल होने में

कोई संदेह नहीं है। मसला स्पष्ट है और हुक्म ज़ाहिर है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 157: नरसिंहपुर कंदेली, जामा मस्जिद के पास से, मौलवी यकीन-उद-दीन साहब द्वारा प्रेषित, 25 ज़िल-क़ादा 1306 हिजरी। हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं। इसके बाद, धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि मुसम्मात नसीबुन अपने शौहर...

---

1. अल-क़ुरआन 4/24
2. अल-क़ुरआन 4/23
3. अल-क़ुरआन 4/22
4. फ़तावा खैरिया, मुहर्रमात का अध्याय, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 1/23

पृष्ठ 314 / 739

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

اور یہیں سے ظاہر ہوگیا کہ بعض مدعیان علم کا یہ خیال کہ سلمیٰ اور لیلیٰ زید سے پہلے پیدا ہوئی تھی تو دودھ میں شرکت نہ ہوئی، نہ سلمیٰ اس کی بہن نہ لیلیٰ اس کی بھانجی ٹھہری، محض جہالتِ فاحشہ ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۵۶: از خیرآباد مرسلہ حسین بخش صاحب رضوی، یکم ربیع الاول ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کو بکر کی بیٹی بیاہی ہے اور بکر نے دوسری عورت سے نکاح کیا، بعدہ بکر مرگیا، اب زید چاہتا ہے کہ اپنی سوتیلی خوشدامن سے نکاح کرے، یہ نکاح موافق حاشیہ عینی کے جائز ہے یا نہیں؟ اور زن مذکورہ قولہ تعالٰی "وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُم" میں داخل ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: نکاح مذکور بیشک جائز ہے۔ قال اللہ عزوجل : وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَاءَ ذٰلِكُمْ (محرمات مذکورہ کے ماسوا تمہارے لیے حلال کی گئی ہیں۔ ت) علماء قاطبہ متون و شروح و فتاویٰ میں محرمات صہریہ زوجاتِ اصول و فروع بتاتے ہیں نہ زوجہ اصولِ زوجہ و عدم الذکر فی امثال المقام ذکر العدم کما لا یخفی (ایسے مقام میں ذکر نہ ہونا گویا نہ ہونے کا ذکر ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ ت) اور سوتیلی ماں لفظ امہات میں ہر گز داخل نہیں، ورنہ آیۂ تحریم میں حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ (تم پر تمہاری مائیں حرام کی گئی ہیں۔ ت) کے بعد وَ لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ (جن سے تمہارے آباء نے نکاح کیا تم ان سے نکاح نہ کرو۔ ت) کیونکر فرمایا جاتا۔ علماء تصریح فرماتے ہیں کہ سوتیلی ماں کی ماں اور اس کی بیٹی اور اس کی بہن سب حلال ہیں، اگر سوتیلی ماں بھی ماں ہوتی تو یہ عورتیں اس کی نانی، بہن، خالہ قرار پاتیں۔ علامہ خیر الدین رملی فرماتے ہیں:

[جدول/باکس ٹیکسٹ:] لا تحرم بنت زوج الام ولا امه ولا ام زوجة الاب ولا بنتها (ماں کے خاوند کی بیٹی اور اس کی ماں اور باپ کی دوسری بیوی کی ماں اور بیٹی حرام نہیں۔ ت)

اصل یہ ہے کہ ساس کی حرمت اس وجہ سے نہیں کہ وہ خسر کی زوجہ ہے بلکہ اس لیے کہ وہ زوجہ کی ماں ہے، سوتیلی ساس میں یہ وجہ نہیں لہٰذا اس کی حلت میں کوئی شبہ نہیں، مسئلہ واضح ہے اور حکم ظاہر، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۷: از نرسنگھ پور کندیلی متصل جامع مسجد مرسلہ مولوی یقین الدین صاحب ۲۵ ذیقعدہ ۱۳۰۶ھ نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم، اما بعد کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ نصیبن اپنے خاوند...

---

1 القرآن ۴/۲۴ 2 القرآن ۴/۲۳ 3 القرآن ۴/۲۲ 4 فتاوٰی خیریہ فصل فی المحرمات دارالمعرفہ بیروت ۱/۲۳

Fatawa Rizvia, Volume 11

[Question:] While Zaid was around, Nasiban was involved with Bakr. Zaid lives in another city due to his occupation, but he did not send any expenses to his wife Nasiban for two years. Consequently, Nasiban openly moved into Bakr's house; she also has a son from Zaid. Divorce has not been granted, but Zaid is willing to give a divorce if the lady pays something. Can Bakr marry Zaid's Nasiban if a divorce is not granted? Explain and be rewarded.

The Answer: The popular notion among the common people that if a woman leaves her husband's house without permission, she is out of the marriage contract, is absolutely false. Allah Almighty says: "And as for those women whose ill-conduct (Nushuz) you fear, then advise them..." [1] - The Verse. Advise those women whose disobedience you sense. Here, 'Takhafun' (you fear) means 'Ta'lamun' (you know), and 'Nushuz' refers to leaving the house without permission. (Translator) Refuge with Allah! If it were so, the knot of marriage would be in the hands of women deficient in intellect and religion. Any woman, regardless of her husband's intent, could easily gain freedom from marriage, even though Allah Almighty has kept the knot of marriage in the hand of the man. Allah Almighty says: "In whose hand is the marriage knot" [2], meaning the husband according to the statement of Ali, Sa'id bin al-Musayyib, Sa'id bin Jubayr, and others (may Allah be pleased with them). The marriage knot is in his (husband's) hand. Hadrat Ali al-Murtaza, Sa'id bin Musayyib, and Sa'id bin Jubayr (may Allah be pleased with them) have meant the husband. (Translator) Similarly, God forbid, a woman's immorality and adultery do not dissolve the marriage. Allah Almighty says: "And those of your women who commit illegal sexual intercourse..." [3] - Despite this, He called them 'their women' (wives). And Allah Almighty says: "And those who accuse their wives..." [4] until the statement of Allah Almighty "And it shall avert the punishment from her...". Those among your wives who commit obscenity, despite that, they have been called 'wives'. Allah Almighty said: Those who accuse their wives (up to the end of the) verse, the punishment (Hadd) is averted from that woman.

1 Quran 4:34 2 Quran 2:237 3 Quran 4:15 4 Quran 24:6

फ़तावा रज़विया, खंड 11

[प्रश्न:] ज़ैद की उपस्थिति में उसकी पत्नी नसीबन का बक्र के साथ चक्कर चल रहा था। ज़ैद अपने काम के कारण दूसरे शहर में रहता है, लेकिन उसने दो साल तक अपनी पत्नी नसीबन को कोई खर्चा नहीं भेजा। परिणामस्वरूप, नसीबन सरेआम बक्र के घर रहने चली गई; उसका ज़ैद से एक बेटा भी है। तलाक नहीं दिया गया है, लेकिन ज़ैद इस शर्त पर तलाक देने को तैयार है कि महिला कुछ भुगतान करे। क्या बक्र ज़ैद की नसीबन से शादी कर सकता है यदि तलाक नहीं दिया जाता है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: आम लोगों में यह धारणा प्रसिद्ध है कि यदि कोई महिला बिना अनुमति के अपने पति का घर छोड़ देती है, तो वह निकाह से बाहर हो जाती है, यह पूरी तरह से गलत है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी (नुशूज़) का डर हो, तो उन्हें नसीहत करो..." [1] - आयत। उन औरतों को नसीहत करो जिनकी नाफरमानी का तुम्हें एहसास हो। यहाँ 'तख़ाफ़ून' (तुम डरते हो) का अर्थ 'त'लमून' (तुम जानते हो) है और 'नुशूज़' का अर्थ बिना अनुमति के घर से निकलना है। (अनुवादक) अल्लाह की पनाह! अगर ऐसा होता, तो निकाह की गिरह (गाँठ) कम अक्ल और दीन में अधूरी औरतों के हाथ में होती। कोई भी औरत, अपने पति की इच्छा के विरुद्ध, आसानी से निकाह से आजादी हासिल कर लेती। जबकि अल्लाह तआला ने निकाह की गिरह मर्द के हाथ में रखी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "जिसके हाथ में निकाह की गिरह है" [2], यानी हज़रत अली, सईद बिन अल-मुसय्यिब, सईद बिन जुबैर और अन्य (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के अनुसार पति। उसी (पति) के हाथ में निकाह की गिरह है। हज़रत अली मुर्तज़ा, सईद बिन मुसय्यिब और सईद बिन जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने पति ही मुराद लिया है। (अनुवादक) इसी तरह, खुदा न करे, औरत के फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर (अनैतिकता और व्यभिचार) से भी निकाह नहीं टूटता। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और तुम्हारी औरतों में से जो बेहयाई का काम करें..." [3] - इसके बावजूद उन्हें "उनकी औरतें" (पत्नियां) कहा गया है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जो लोग अपनी बीवियों पर तोहमत लगाते हैं..." [4] अल्लाह तआला के इस कथन तक "और उस (औरत) से सज़ा (हद्द) टल जाएगी..."। तुम्हारी बीवियों में से जो बेहयाई की मुर्तकिब (दोषी) हों, इसके बावजूद उन्हें 'बीवियां' फ़रमाया गया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: वे लोग जो अपनी बीवियों पर तोहमत लगाते हैं (आयत के अंत तक), उस औरत से हद्द को साक़ित (ख़त्म) कर दिया जाता है।

1 कुरान 4:34 2 कुरान 2:237 3 कुरान 4:15 4 कुरान 24:6

زید کی موجودگی میں بکر سے پھنسی ہوئی تھی، زید اپنے روز گار کی وجہ سے دوسرے شہر میں رہتا ہے، مگر اپنی زوجہ نصیبن کو دو برس تک کچھ خرچہ نہ بھیجا، چنانچہ نصیبن علانیہ بکر کے گھر میں آگئی ، اس کے ایک لڑکا بھی زید سے ہے۔ طلاق نہیں دی ہے مگر ہاں زید کی مرضی ہے کہ مسماۃ کچھ دے تو طلاق دے دوں، بکر در صورت طلاق نہ دینے زید کے نصیبن سے نکاح کر سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: یہ جو عوام میں مشہور ہے کہ عورت بے اذن شوہر کے گھر سے نکل جائے تو نکاح سے نکل جائے محض غلط ہے۔ قال تعالٰی: "وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَ ھُنَّ فَعِظُوْ ھُنَّ" [1] - الآیۃ۔ جن عورتوں کی نافرمانی کا احساس کرتے ہو ان کو نصیحت کرو، الآیۃ، یہاں تخافون بمعنی تعلمون اور نشوز سے مراد اجازت کے بغیر گھر سے نکلنا ہے۔ (ت) تخافون تعلمون ومن النشوز الخروج بلا اذن۔ معاذ اللہ اگر ایسا ہو تو نکاح کی گرہ زنانِ ناقصات العقل والدین کے ہاتھ میں ہو جائے، جو عورت چاہے بے ارادہ شوہر سہل طور پر نکاح سے آزادی حاصل کرلے حالانکہ اللہ عزوجل نے نکاح کی گرہ مرد کے ہاتھ میں رکھی ہے، قال عزوجل: بِیَدِہٖ عُقْدَۃُ النِّکَاحِ [2] یعنی الزوج فی قول علی وسعید بن المسیب وسعید بن جبیر وغیرھم رضی اللہ تعالٰی عنھم۔ اسی (خاوند) کے ہاتھ میں نکاح کی گرہ ہے۔ حضرت علی مرتضٰی رضی اللہ تعالٰی عنہ، سعید بن مسیب اور سعید بن جبیر رضی اللہ تعالٰی عنہم نے خاوند مراد لیا ہے۔ (ت) اسی طرح عیاذاً باللہ عورت کے فسق و فجور سے بھی نکاح نہیں جاتا۔ قال اللہ تعالٰی: "وَالّٰتِیْ یَأْتِیْنَ الْفَاحِشَۃَ مِنْ نِّسَآئِکُمْ" [3] - سماھن مع ذلک نسائھم، وقال جل وعلا "وَالَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ اَزْوَاجَھُمْ" [4] الآیۃ الٰی قول تبارک وتعالٰی "وَیَدْرَؤُا عَنْھَا" تمہاری بیویوں میں سے

جو فحش کاری کی مرتکب ہوں، اس میں اس کے باوجود ان کو بیویاں فرمایا گیا ہے۔ اللہ عزوجل نے فرمایا: وہ لوگ جو اپنی بیویوں پر تہمت لگاتے ہیں الآیۃ، اس عورت سے حد کو ساقط

1 القرآن ۴/ ۳۴ 2 القرآن ۲/ ۲۳۷ 3 القرآن ۴/ ۱۵ 4 القرآن ۲۴/ ۶

Fatawa Razawiyya, Volume 11

AL-ADHAB 1 - The Verse: [Recite] until the Verse. (T)

Since Zaid has not yet given a divorce, Nasiban remains in his marriage as before. Neither Bakr nor anyone else can ever legally marry her. Even if a marriage were to be performed, they would both continue to be in a state of adultery, just as they have been until now. This false name of marriage will be of no use. Allah Almighty says: 'And [forbidden are] married women.' [2] (Married chaste women. T). So the only solution is for Bakr and Nasiban to separate immediately, fear the wrath of Allah Almighty, and repent for these major sins. Then, if Nasiban does not wish to stay with Zaid, she has the option to obtain a divorce from Zaid by giving money (Khula) or without giving money. Allah Almighty says:

Arabic Verse	Urdu Translation
'And if you fear that they cannot keep within the limits of Allah, then there is no blame on either of them for what she gives to ransom herself.' [3]	If you fear they cannot maintain Allah's boundaries through justice, then there is no harm in the ransom (given by the woman for Khula). (T)

When Zaid gives a divorce, after three complete menstrual cycles pass, it will be permissible for Nasiban to marry Bakr or anyone else she chooses. Allah Almighty says:

Arabic Verse	Urdu Translation
'And divorced women shall wait [concerning] themselves for three monthly periods.' [4]	Divorced women should keep themselves restricted for three menstrual cycles. (T)

If Bakr and Nasiban submit to this divine command, well and good. But if they do not comply and remain in this state, or marry each other without obtaining a divorce [from the first husband], then believing men and believing women should abandon them entirely. Neither let them sit with you nor sit with them. Allah Almighty says:

Arabic Verse	Urdu Translation
'And if Satan causes you to forget, then do not sit after the reminder with the wrongdoing people.' [5] Allah Almighty knows best.	And if Satan ever makes you forget, then after remembering, do not sit with the unjust people. (T)

Problem 158: What do the scholars of religion say regarding this matter: is it permissible to marry a real sister-in-law or a relative sister-in-law while the wife is still alive? Explain and you shall be rewarded.

Answer: During the lifetime of the wife, as long as she is not divorced and her iddah (waiting period) has not passed, [it is forbidden to marry] her sister, who is from her father's sperm...

1. Quran 8/32
2. Quran 4/24
3. Quran 2/229
4. Quran 2/228
5. Quran 6/68

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

अल-अज़ाब 1- आयत: करो, आयत तक। (त)

चूंकि ज़ैद ने अभी तक तलाक़ नहीं दिया है, नसीबन दस्तूर (नियमानुसार) उसके निकाह में बाक़ी है और बक्र या कोई और उससे निकाह नहीं कर सकता। अगर कर भी लिया जाए, तो जैसे अब तक वे दोनों ज़िना (व्यभिचार) में मुब्तिला रहे हैं, वैसे ही इस निकाह के बाद भी ज़ानी और ज़ानिया रहेंगे। यह निकाह का झूठा नाम कुछ काम न आएगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'और (हराम हैं) वे औरतें जो किसी के निकाह में हों।' [2] (शदी-शुदा पाकीज़ा औरतें। त) पस चारा-ए-कार (उपाय) यही है कि बक्र और नसीबन फ़ौरन अलग हो जाएं और अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल के ग़ज़ब से डरकर अपने इन कबीरा गुनाहों से तौबा करें। फिर अगर नसीबन ज़ैद के पास नहीं रहना चाहती, तो उसे अधिकार है कि ज़ैद से तलाक़ के बदले माल देकर या बिना माल दिए तलाक़ हासिल कर ले। अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने फ़रमाया:

अरबी आयत	**उर्दू अनुवाद**
'फिर अगर तुम्हें डर हो कि वे दोनों अल्लाह की सीमाओं को क़ायम न रख सकेंगे, तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं उस चीज़ में जिसे वह फ़िदिया (बदले) में दे।' [3]	अगर तुम्हें डर है कि न्याय के तौर पर वे दोनों अल्लाह की सीमाओं को क़ायम न रख सकेंगे, तो (खुल'अ के तौर पर औरत की तरफ़ से) फ़िदिया में कोई हर्ज नहीं। (त)

जब ज़ैद तलाक़ दे दे, तो तीन मुकम्मल हैज़ (मासिक धर्म) गुज़रने के बाद नसीबन को हलाल होगा कि वह बक्र या किसी ग़ैर-बक्र जिससे चाहे निकाह कर ले। अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने फ़रमाया:

अरबी आयत	**उर्दू अनुवाद**
'और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आप को तीन हैज़ तक रोके रखें।' [4]	तलाक़शुदा औरतें अपने आप को तीन हैज़ तक पाबंद रखें। (त)

बक्र और नसीबन अगर इस ईश्वरीय आदेश को स्वीकार कर लें तो बहुत अच्छा, और अगर न मानें और इसी हाल पर रहें या बिना तलाक़ हासिल किए आपस में निकाह कर लें, तो ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली औरतों को चाहिए कि उन्हें पूरी तरह छोड़ दें, न उन्हें अपने पास बैठने दें और न खुद उनके पास बैठें। अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल ने फ़रमाया:

अरबी आयत	उर्दू अनुवाद
'और अगर कभी शैतान तुझे भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के पास मत बैठ।' [5] और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।	और कभी शैतान तुझे भूल में डाल दे तो याद आने के बाद ज़ालिमों के पास मत बैठ। (त)

मसला 158: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि पत्नी के जीवित रहते हुए सगी साली या रिश्ते की साली से निकाह जायज़ है या नहीं? बयां करें, पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: पत्नी के जीवनकाल में जब तक उसे तलाक़ होकर इद्दत न गुज़र जाए, उसकी बहन से जो उसके बाप के नुत्फ़े(वीर्य) से...

1. अल-क़ुरआन 8/32
2. अल-क़ुरआन 4/24
3. अल-क़ुरआन 2/229
4. अल-क़ुरआन 2/228
5. अल-क़ुरआन 6/68

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

الْعَذَابُ ۱- الاٰیۃ۔ کرو، الاٰیۃ تک۔ (ت)

پس جبکہ زید نے ہنوز طلاق نہ دی نصیبن بدستور اس کے نکاح میں باقی ہے اور بکر خواہ کسی کو ہر گز اس سے نکاح حلال نہیں اگر کر بھی لیا، تاہم جیسے اب تک وہ دونوں مبتلائے زنا رہے یوں ہی اس نکاح کے بعد بھی زانی وزانیہ رہیں گے، اور یہ جھوٹا نام نکاح کا کچھ مفید نہ ہوگا، قال تعالٰی: وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۲ (شادی شدہ پاکیزہ عورتیں۔ ت) پس چارہ کار یہی ہے کہ بکر نصیبن فورا جدا ہو جائے اور اللہ عزوجل کے غضب سے ڈر کر اپنے ان کبیرہ گناہوں سے توبہ کریں پھر نصیبن زید کے پاس نہ رہنا چاہے تو اسے اختیار ہے کہ زید کی طلاق کے بدلے مال دے کر خواہ بغیر مال دیئے طلاق حاصل کرے، قال المولٰی سبحانہ وتعالٰی:

عربی آیت	اردو ترجمہ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا یُقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰہِ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْہِمَا فِیْمَا افْتَدَتْ بِہٖ ط ۳۔	اگر تمہیں ڈر ہے کہ عدل کے طور پر وہ دونوں حدودِ اللہ کو قائم نہ رکھ سکیں گے تو (خلع کے طور پر عورت کی طرف سے) فدیہ میں کوئی حرج نہیں۔ (ت)

جب زید طلاق دے دے تو تین حیض کامل گزرنے کے بعد نصیبن کو حلال ہوگا کہ بکر خواہ غیر بکر جس سے چاہے نکاح کرلے، قال سبحانہ وتعالٰی:

عربی آیت	اردو ترجمہ
وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِہِنَّ ثَلٰثَۃَ قُرُوْٓءٍ ط ۴۔	طلاق شدہ عورتیں اپنے کو تین حیض تک پابند رکھیں۔ (ت)

بکر و نصیین اگر اس حکم الہی پر گردن رکھیں فبہا اور اگر نہ مانیں اور اسی حالت پر رہیں یا بے طلاق حاصل کئے آپس میں نکاح کرلیں، تو ایمان والے مرد اور ایمان والی بیبیاں انھیں یک لخت چھوڑ دیں، نہ اپنے پاس بیٹھنے دیں نہ خود ان کے پاس بیٹھیں، قال عزوجل:

عربی آیت **اردو ترجمہ**

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّکَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّکْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۵- واللہ تعالیٰ اعلم

اور کبھی شیطان تجھے بھول میں ڈال دے تو یاد آنے کے بعد ظالموں کے پاس مت بیٹھ (ت)

مسئلہ ۱۵۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عالمِ حیاتِ زوجہ میں حقیقی سالی یا رشتہ کی سالی سے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: تاحیاتِ زوجہ جب تک اسے طلاق ہو کر عدت نہ گزر جائے اس کی بہن سے جو اس کے باپ کے نطفے...

1 القرآن ۸/۳۲ 2 القرآن ۲۴/۴ 3 القرآن ۲/۲۲۹ 4 القرآن ۲/۲۲۸ 5 القرآن ۶/۶۸

Fatawa Ridawiyya Volume 11

...whether they are sisters through birth or through nursing, marriage is prohibited. Allah Almighty says: "And that you should not gather two sisters in marriage" (It is forbidden that you join two sisters in marriage). Apart from them, the female relatives of the wife, such as the daughters of her paternal uncle, maternal uncle, maternal aunt, or paternal aunt, are permissible for her husband at all times. All of this is clearly stated in the books of Jurisprudence (Fiqh). And Allah knows best.

Problem 159: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is marriage with a niece-in-law (brother's son's wife) or a nephew-in-law (sister's son's wife) valid or not? Clarify and be rewarded.

Answer: It is permissible with both. Allah Almighty says: "And lawful to you are [all others] beyond these" (And besides the mentioned prohibited ones, they are made lawful for you). And Allah knows best.

Problem 160: 5 Dhu al-Hijjah 1306 AH, from Lucknow, Mohalla Aliganj, sent by Hafiz Abdullah Sahab. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say about this matter? A man brought up his sister-in-law's daughter for the purpose of marrying her to his son. By divine decree, the son passed away. Afterwards, the wife of the guardian also passed away. Now, the guardian has married this girl whom he brought up. Has this marriage become valid or not? Clarify and be rewarded.

Answer: It is absolutely valid. Allah Almighty says: "And lawful to you are [all others] beyond these" (And besides the mentioned prohibited ones, they are made lawful for you). It is clear that by merely intending her for marriage with the son, she does not become the son's wife, so as to be included in "and the wives of your sons who are from your loins" (the women who were married to your biological sons are forbidden for you). "Halail" is the plural of "Halilah", meaning those women are forbidden for you who have become lawful for your biological sons through marriage. Here, neither has the marriage with the son taken place nor has this woman become lawful for him; how then can she be forbidden for the father? And if it is said so out of consideration for her upbringing, then that is also purely wrong. The Great Quran has stated it thus:

And your step-daughters under your guardianship [born] of your wives unto whom you have gone in...

But if you have not gone in unto them...

1. Al-Quran 4:23
2. Al-Quran 4:23
3. Al-Quran 4:23
4. Al-Quran 4:23

Your step-daughters under your care, the daughters of your women with whom you

have been intimate, if you have not been intimate with those women

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...चाहे माँ के पेट से हो या दूध शरीक (रज़ाई) हो, निकाह हराम है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "व अन तजमऊ बैनुल उख़्तैन" (मना है कि तुम दो बहनों को निकाह में जमा करो)। और उनके अलावा पत्नी की रिश्ते की बहनें, जैसे चचा, मामू, ख़ाला, फूफी की बेटियाँ, उसके शौहर पर हर वक़्त हलाल हैं। यह सब मसाइल फ़िक़्ह की किताबों में स्पष्ट रूप से मौजूद हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १५९: धर्मगुरु इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि भतीजी बहू और भांजी बहू से निकाह दुरुस्त है या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य पाएँ।

जवाब: दोनों से दुरुस्त है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "व उहिल्ल लकुम मा वराअ ज़ालिकुम" (और उपरोक्त हराम औरतों के अलावा तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १६०: ५ ज़िल हिज्जा १३०६ हिजरी, लखनऊ मोहल्ला अलीगंज से, प्रेषक हाफ़िज़ अब्दुल्ला साहब। धर्मगुरु और शरिया के मुफ़्ती इस मसले पर क्या जवाब देते हैं कि एक व्यक्ति ने अपने बेटे के निकाह के लिए अपनी साली की लड़की का पालन-पोषण किया। अल्लाह की मर्ज़ी से लड़का मर गया। उसके बाद पालन-पोषण करने वाले की पत्नी का भी देहांत हो गया। अब पालन-पोषण करने वाले ने उस लड़की से शादी कर ली जिसका उसने पालन-पोषण किया था। क्या यह निकाह जायज़ हुआ या नहीं? स्पष्ट करें।

जवाब: यह पूर्णतः जायज़ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "व उहिल्ल लकुम मा वराअ ज़ालिकुम" (और उपरोक्त हराम औरतों के अलावा तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं)। ज़ाहिर है कि बेटे के निकाह की नीयत होने से वह बेटे की पत्नी (मनकूहा) नहीं हो गई जो "हलाएलु अब्नाइकुमुल लज़ीना मिन असलाबिकुम" (तुम्हरे सगे बेटों की पत्नियाँ तुम पर हराम हैं) में शामिल हो सके। 'हलाएल', 'हलीला' का बहुवचन है, यानी वे औरतें तुम पर हराम हैं जो निकाह के ज़रिये तुम्हारे सगे बेटों के लिए हलाल हो चुकी हों। यहाँ न तो अभी बेटे से निकाह हुआ और न ही यह औरत उसके लिए हलाल हुई, तो बाप पर कैसे हराम हो सकती है? और अगर पालन-पोषण के ख्याल से ऐसा कहा जाए, तो यह भी सरासर गलत है। क़ुरआन-ए-अज़ीम ने इस तरह फ़रमाया है:

व रबा-इबुकुमुल लाती फ़ी हुजूरिकुम मिन निसा-इकुमुल लाती दख़लतुम बिहिन्न

फ़इन लम तकूनू दख़लतुम बिहिन्न

तुम्हारी गोद की पालियाँ तुम्हारी उन औरतों की बेटियाँ जिनसे तुम

हम बिस्तर हो चुके अगर तुम ने उन औरतों से हम बिस्तर

1. अल-क़ुरआन २३/४
2. अल-क़ुरआन २३/४
3. अल-क़ुरआन २३/४
4. अल-क़ुरआन २३/४

पेज ३१७/७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

یا ماں کے پیٹ سے یا دودھ شریک ہے نکاح حرام ہے۔ قال اللہ تعالٰی: وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ 1 (منع ہے کہ تم دو بہنوں کو نکاح میں جمع کرو۔ ت) اور ان کے سوا زوجہ کی رشتہ کی بہنیں مثلاً چچا، ماموں، خالہ، پھوپھی کی بیٹیاں اس کے شوہر پر ہر وقت حلال ہیں کل ذلک مصرح بہ فی کتب الفقہ (ان تمام مسائل کی تصریح کتب فقہ میں موجود ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۵۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بھتیجی بہو اور بھانجی بہو سے نکاح درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: دونوں سے درست ہے، قال اللہ تعالٰی: وَاُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ 2 (اور مذکورہ محرمات کے علاوہ تمہارے لیے حلال کی گئی ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۶۰: ۵ ذی الحجہ ۱۳۰۶ھ از لکھنؤ محلہ علی گنج مرسلہ حافظ عبداللہ صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین جواب اس مسئلہ کا کہ ایک شخص نے اپنی سالی کی لڑکی کو واسطے اپنے لڑکے کے نکاح کے پرورش کیا، تقدیرِ ربی سے لڑکا انتقال کر گیا، بعدہ خود پرورش کنندہ کی بی بی فوت ہو گئی، اب پرورش کنندہ نے اپنی شادی اس لڑکی پرورش کردہ شدہ سے کر لی، یہ نکاح جائز ہوا یا نہیں۔ بینوا توجروا۔ الجواب: قطعاً جائز ہے۔ قال اللہ تعالٰی: وَاُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ 3 (اور مذکورہ محرمات کے علاوہ تمہارے لیے حلال کی گئی ہیں۔ ت) ظاہر ہے کہ بیٹے کے لیے نیت نکاح ہونے سے وہ بیٹے کی منکوحہ نہ ہو گئی جو حَلَآئِلُ اَبْنَآئِکُمُ الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِکُمْ 4 (تمہارے صلبی بیٹوں کے لیے حلال شدہ عورتیں تم پر حرام ہیں۔ ت) میں داخل ہو سکے۔ حلائل جمع حلیلہ ہے یعنی وہ عورتیں تم پر حرام ہیں جو بذریعہ نکاح تمہارے صلبی بیٹوں کے لیے حلال ہو چکیں، یہاں نہ ابھی بیٹے سے نکاح ہوا نہ یہ عورت اس کے لیے حلال ہوئی باپ پر کیونکر حرام ہو سکتی

ہے، اور اگر پرورش کے خیال سے ایسا کہا جائے تو بھی محض غلط، قرآنِ عظیم نے یوں فرمایا ہے:

وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِیۡ فِیۡ حُجُوۡرِكُمۡ مِّنۡ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِیۡ دَخَلۡتُمۡ بِهِنَّ	**تمھاری گود کی پالیاں تمھاری ان عورتوں کی بیٹیاں جن سے تم**
فَاِنۡ لَّمۡ تَكُوۡنُوۡا دَخَلۡتُمۡ بِهِنَّ	ہم بستر ہو چکے اگر تم نے ان عورتوں سے ہم بستری

1 القرآن ۲۳/۴ 2 القرآن ۲۳/۴ 3 القرآن ۲۳/۴ 4 القرآن ۲۳/۴

Fatawa Rizvia Volume 11

"Then there is no sin upon you." (1) [to marry them if you have not had sexual intercourse with their mothers].

Behold, the Holy Quran explicitly states that the daughter of one's wedded wife, even if she was raised in one's own lap, is lawful for marriage as long as one has not had seclusion (consummation) with the wife. One has the choice to leave the wife or, after her death, to marry her daughter. Why then would raising a sister-in-law's daughter make her prohibited? These are merely Hindu-influenced notions. And Allah Almighty knows best.

Problem 161: 21 Rajab 1300 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married his daughter to Amr. Amr did not divorce her. Zaid, after taking some money from Bakr, married her to Bakr, and Bakr also did not divorce her. Zaid then took some money from a third person and married her to him. In this situation, did these marriages become valid or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: These were not marriages, but purely adultery. Allah Almighty says: "And [also prohibited are] women already married" (2). The woman is now with someone, and it is an absolute obligation upon him to separate the woman from himself and cast her out. And it is an absolute obligation upon the woman to separate from him and return to her husband Amr. This money that Zaid took from Bakr and the third person is absolutely haraam (prohibited), a bribe, rather, it was payment for adultery. It is obligatory upon Zaid to return this money to those from whom he took it. Muslims should remove from their company Zaid, the third person, and that woman, whoever among them does not comply with these rulings, and should stop socializing with them. Allah Almighty says:

"And if Satan causes you to forget, then do not remain after the reminder with the wrongdoing people." (3)

And Allah Almighty knows best.

Problem 162: 7 Jumada al-Akhira 1309 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid has a son and Hindah has a daughter. Zaid's son wants to marry Hindah, and Zaid wants to marry Hindah's daughter. In this situation, can these two marriages take place or not? Inform us from the Book of Allah. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Both these marriages are lawful. Allah Almighty says: "And lawful to you are [all others] beyond these [prohibited ones mentioned]." (4)

1. Al-Quran 4/23
2. Al-Quran 4/24
3. Al-Quran 6/68
4. Al-Quran 4/24

फ़तावा रज़विया खंड 11

"तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है।" (1) [उनके साथ निकाह करने में यदि तुमने उनकी माँओं के साथ सहवास न किया हो]।

देखो, क़ुरआन मजीद स्पष्ट रूप से कहता है कि अपनी विवाहिता पत्नी की बेटी, चाहे वह अपनी गोद में ही क्यों न पली हो, तब तक हलाल है जब तक कि पत्नी के साथ एकांत (सहवास) न किया गया हो। अधिकार है कि पत्नी को छोड़ दे या उसकी मृत्यु के बाद उसकी बेटी से निकाह कर ले। तो फिर साली की बेटी की परवरिश करने से वह हराम क्यों होने लगी? ये महज़ हिंदूवादी विचार हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 161: 21 रजब 1300 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी बेटी का निकाह अम्र के साथ कर दिया। अम्र ने तलाक़ नहीं दिया। ज़ैद ने बक्र से कुछ पैसे लेकर उसका निकाह बक्र के साथ कर दिया, और बक्र ने भी तलाक़ नहीं दिया। ज़ैद ने एक तीसरे व्यक्ति से कुछ पैसे लिए और उसका निकाह उसके साथ कर दिया। इस स्थिति में क्या ये निकाह जायज़ हुए या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: ये निकाह नहीं हुए बल्कि केवल ज़िना (व्यभिचार) हुए। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और [हराम हैं] विवाहित महिलाएँ' (2)। वह स्त्री अब जिसके पास है, उस पर यह अनिवार्य (फ़र्ज़) है कि वह उस स्त्री को अपने से अलग कर दे और निकाल दे। और उस स्त्री पर भी यह अनिवार्य है कि वह उससे अलग हो जाए और अपने पति अम्र के पास वापस आ जाए। और यह पैसा जो ज़ैद ने बक्र और उस तीसरे व्यक्ति से लिया है, वह पूरी तरह से हराम और रिश्वत है, बल्कि यह ज़िना की मज़दूरी थी। ज़ैद पर अनिवार्य है कि वह यह पैसा उसे वापस करे जिससे उसने लिया है। ज़ैद, वह तीसरा व्यक्ति और वह स्त्री, इन तीनों में से जो भी इन आदेशों का पालन न करे, मुसलमान उन्हें अपनी संगत से बाहर कर दें और उनके साथ उठना-बैठना बंद कर दें। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और यदि शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिम लोगों के पास मत बैठो।" (3)

और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 162: 7 जमादी-उल-आख़िर 1309 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद का एक बेटा है और हिंदा की एक बेटी है। ज़ैद का बेटा हिंदा से निकाह करना चाहता है और ज़ैद हिंदा

की बेटी से। क्या इस स्थिति में ये दोनों निकाह हो सकते हैं या नहीं? अल्लाह की किताब से बताइए। स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: ये दोनों निकाह हलाल हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और तुम्हारे लिए इनके अलावा [अन्य सभी] हलाल हैं" (4)।

1. अल-क़ुरआन 4/23
2. अल-क़ुरआन 4/24
3. अल-क़ुरआन 6/68
4. अल-क़ुरआन 4/24

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ (۱) نہ کی ہو تو ان کے ساتھ نکاح میں تم پر کچھ گناہ نہیں۔

دیکھو قرآن مجید تصریح فرماتا ہے کہ اپنی منکوحہ کی دختر اپنی گود کی پالی بھی حلال ہے جب تک منکوحہ سے خلوت نہ کی ہو اختیار رکھتا ہے کہ منکوحہ کو چھوڑ کر یا اس کے مرے پر اس سے نکاح کر لے تو سالی کی بیٹی پرورش کرنے سے کیوں حرام ہونے لگی، یہ محض ہندوانہ خیالات ہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۱: ۲۱ رجب ۱۳۰۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر کا نکاح عمرو کے ساتھ کر دیا، عمرو نے طلاق نہیں دی، زید نے کچھ روپیہ بکر سے لے کر نکاح بکر کے ساتھ کر دیا، اور بکر نے بھی طلاق نہیں دی۔ زید نے اور شخص ثالث کے ساتھ کچھ روپیہ لے کر نکاح کر دیا، اس صورت میں یہ نکاح جائز ہو گئے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: یہ نکاح نہ ہوئے محض زنا ہوئے، قال اللہ تعالٰی: وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ (۲) (شادی شدہ عورتیں حرام ہیں، ت) عورت اب جس کے پاس ہے اس پر قطعی فرض ہے کہ عورت کو اپنے پاس سے الگ کر دے اور نکال دے۔ اور عورت پر فرض قطعی ہے کہ اس سے جدا ہو جائے اپنے خاوند عمرو کے پاس آئے اور یہ روپیہ کہ زید نے بکر اور اس شخص ثالث سے لیا بالکل حرام قطعی اور رشوت بلکہ زنا کی خرچی تھا، زید پر فرض ہے کہ یہ روپیہ جس سے لیا ہے اسے واپس کرے زید اور شخص ثالث اور وہ عورت تینوں میں سے جو شخص ان احکام کی تعمیل نہ کرے مسلمان اسے اپنی صحبت سے نکال دیں اور اس کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا ترک کریں، قال اللہ تعالٰی:

وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ (۳) جب کبھی شیطان تجھے بھول میں ڈالے تو یاد آنے پر ظالم لوگوں کے پاس مت بیٹھ۔ (ت)

واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۲: ۷ جمادی الآخرہ ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا ایک بیٹا ہے اور ہندہ کی ایک بیٹی۔ زید کا بیٹا ہندہ سے نکاح کیا چاہتا ہے اور زید ہندہ کی بیٹی سے، اس صورت میں یہ دونوں نکاح ہو سکتے ہیں یا نہیں؟ کتاب اللہ سے فرمائے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: یہ دونوں نکاح حلال ہیں قال اللہ تعالٰی: وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ (۴) (محرمات مذکورہ کے ماسوا تمہارے لیے

۱ القرآن ۴/۲۳ ۲ القرآن ۴/۲۴ ۳ القرآن ۶/۶۸ ۴ القرآن ۴/۲۴

...are made lawful. (T) It is clear that for Zaid's son, if Hinda exists, she would be the father's mother-in-law, that is if Zaid's marriage occurred before. (T) And the father's mother-in-law is lawful as long as she is not his maternal grandmother.

In Radd al-Muhtar, Al-Khayr al-Ramli said: The mother of the father's wife is not forbidden.[1]	**In Radd al-Muhtar, it is stated that Khayr al-Din Ramli said the father's mother-in-law is lawful. (T)**

And for Zaid, Hinda's daughter, if she exists, she would be the daughter-in-law's daughter (i.e., his son's wife's daughter from another husband), and this is if the son's marriage occurred previously. (T) And the daughter-in-law's daughter is lawful as long as she is not his paternal granddaughter.

In Radd al-Muhtar: As for the daughter of the son's wife, she is lawful.[2]	**In Radd al-Muhtar, it is stated that the daughter of the son's wife is lawful. (T) And Allah Almighty knows best.**

Problem 163: From Ujjain, sent by Meer Khadim Ali Sahib Assistant, 29 Rajab 1309 AH What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this issue: Zaid had intercourse with his biological sister-in-law (wife's sister), and Amr married his sister-in-law. Does divorce occur for the first wives of Zaid and Amr, or not? Because it is stated in the Holy Quran: "And [it is forbidden] that you combine two sisters [in marriage] at the same time, except for what has already passed." Please state the Sharia ruling for this issue separately with research and references to books.

Answer: Marriage with a sister-in-law while the wife is present is forbidden (haram). It is obligatory upon him not to touch her and to leave her immediately. Adultery (zina) is forbidden in any case, but marrying or committing zina with a sister-in-law does not result in the wife being divorced, nor does the verse mean that, nor does zina with a sister-in-law make intercourse with the wife forbidden. It is stated in Durr al-Mukhtar:

In al-Khulasa: Intercourse with the wife's sister does not make his wife forbidden for him.[3]	**In Khulasa, it is stated that the wife will not become forbidden due to zina with the sister-in-law. (T)**

Neither does just marrying the sister-in-law prohibit intercourse with the wife. Until intercourse occurs with the sister-in-law. Yes, if after marriage he had intercourse with the sister-in-law, then intercourse with the wife becomes forbidden until he leaves the sister-in-law and her waiting period (iddah) passes; at that time, intercourse with the wife will be permissible. Likewise, if he had intercourse with the sister-in-law without marriage but intentionally...

---

[1] Fatawa Khayriyya, Fasl fil-Muharramat, Dar al-Ma'rifa Beirut, 1/231 [2] Radd al-Muhtar, Fasl fil-Muharramat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/792 [3] Durr al-Mukhtar, Fasl fil-Muharramat, Matba Mujtabai Delhi, 1/188

फ़तावा रज़विया - जिल्द ग्यारहवीं

...हलाल की गई हैं। (त) ज़ाहिर है कि ज़ैद के बेटे के लिए अगर हिंदाह होगी तो वह बाप की सास होगी 'ज़ालिका इज़ा तक़द्दमा निकाह-ए-ज़ैद' (और यह तब है जब ज़ैद का निकाह पहले हुआ हो। त) और बाप की सास हलाल है जब तक कि वह उसकी अपनी नानी न हो।

फतावा रद्दुल मुहतार में अल-खैरुर रमली ने फरमाया: पिता की पत्नी की माँ (सास) हराम नहीं है।[1]

रद्दुल मुहतार में है कि खैरउद्दीन रमली ने फरमाया कि पिता की सास हलाल है। (त)

और ज़ैद के लिए हिंदाह की बेटी अगर होगी तो वह बहू यानी बेटे की पत्नी की बेटी होगी 'व हाज़ा इज़ा सबक़ा निकाह-उब्ने ज़ैद' (यह तब है जब ज़ैद के बेटे का निकाह पहले हुआ हो। त) और बहू की बेटी हलाल है जब तक कि वह उसकी अपनी पोती न हो।

फतावा रद्दुल मुहतार में: बेटे की पत्नी की बेटी हलाल है।[2]

रद्दुल मुहतार में है कि बेटे की पत्नी की बेटी हलाल है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १६३: उज्जैन से, प्रेषक मीर खादिम अली साहब असिस्टेंट, २९ रजब १३०९ हिजरी क्या फरमाते हैं दीन के उलेमा और शरीअत के मुफ़्ती इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी सगी साली के साथ सोहबत (संभोग) की और अम्र ने साली के साथ निकाह किया, तो क्या ज़ैद और अम्र की पहली पत्नियों पर तलाक लागू होता है या नहीं? क्योंकि कुरआन मजीद में है: "और (हराम है) यह कि तुम दो बहनों को (निकाह में) जमा करो सिवाय उसके जो पहले हो चुका।" इस मसले में शरीअत का जो हुक्म हो, उसे शोध और किताबों के हवाले के साथ अलग-अलग बयान फरमाएं।

अल-जवाब: पत्नी की मौजूदगी में साली से निकाह हराम है। और उस पर फर्ज़ है कि उसे हाथ न लगाए और फौरन छोड़ दे। ज़िना (व्यभिचार) तो हर हाल में हराम ही है, मगर साली से निकाह या ज़िना करने से पत्नी को तलाक नहीं होता, न ही इस आयत का यह मतलब है और न ही साली के साथ ज़िना करने की वजह से पत्नी के साथ संभोग हराम होगा। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

अल-खुलासा में है: पत्नी की बहन के साथ संभोग उसकी पत्नी को हराम नहीं करता।[3]

खुलासा में है कि साली से ज़िना की वजह से पत्नी हराम नहीं होगी। (त)

न ही साली के साथ केवल निकाह करने से पत्नी के साथ संभोग वर्जित हो जाएगा। जब तक कि साली के साथ संभोग न हो जाए। हाँ, अगर निकाह के बाद साली से संभोग कर लिया तो अब पत्नी से संभोग हराम हो गया, जब तक कि वह साली को छोड़ न दे और उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) न गुज़र जाए; उस समय पत्नी से संभोग जायज़ होगा। इसी तरह अगर बिना निकाह के साली से संभोग किया मगर जानबूझकर...

---

[1] फतावा खैरिया, फ़स्ल फिल मुहर्रमात, दारुल मारिफ़ा बेरुत, १/२३१ [2] रद्दुल मुहतार, फ़स्ल फिल मुहर्रमात, दारुल इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, २/७९२ [3] दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फिल मुहर्रमात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८८

पेज ७३९ में से ३१९

حلال کی گئی ہیں۔ ت) ظاہر ہے کہ پسرِ زید کے لیے ہندہ اگر ہوگی تو باپ کی ساس ہوگی ذلک اذا تقدم نکاح زید (اور یہ جب ہے کہ زید کا نکاح پہلے ہوا ہو۔ ت) اور باپ کی ساس حلال ہے جبکہ وہ اپنی نانی نہ ہو۔

فی ردالمحتار قال الخیر الرملی لاتحرم ام زوجة الاب - 1 **ردالمحتار میں ہے کہ خیر الدین رملی نے فرمایا کہ باپ کی ساس حلال ہے۔(ت)**

اور زید کے لیے ہندہ کی بیٹی اگر ہوگی تو بہو یعنی زوجہ پسر کی بیٹی ہوگی وھٰذا اذا سبق نکاح ابن زید (یہ جب ہے کہ زید کے بیٹے کا نکاح پہلے ہوا ہو۔ت) اور بہو کی بیٹی حلال ہے جبکہ وہ اپنی پوتی نہ ہو۔

فی ردالمحتار اما بنت زوجة ابنه فحلال - 2 **ردالمحتار میں ہے بیٹے کی بیوی کی بیٹی حلال ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔**

مسئلہ ۱۶۳: از اوجین مرسلہ میر خادم علی صاحب اسٹنٹ ۲۹ رجب ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے سالی حقیقی سے صحبت کی اور عمرو نے سالی کے ساتھ نکاح، تو زید وعمرو کی اولین عورتوں پر طلاق عائد ہوتی ہے یا نہیں؟ کیونکہ قرآن مجید وفرقان حمید میں اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ (منع ہے کہ تم دو بہنوں کو نکاح میں جمع کرو مگر جو ہو گزرا۔ت) وارد ہے، اس مسئلہ میں جو حکم شرعاً ہو جدا گانہ مع التشریح بحوالہ کتب بیان فرمائیں۔

الجواب: بموجود گی زوجہ سالی سے نکاح حرام ہے۔ اور اس پر فرض ہے کہ اسے ہاتھ نہ لگائے اور فوراً چھوڑ دے اور زنا تو بہرحال حرام ہی ہے مگر سالی سے نکاح یا زنا کرنے سے زوجہ مطلقہ نہیں ہوتی، نہ آیت کا یہ مطلب ہے نہ سالی سے زنا کے سبب زوجہ سے جماع حرام ہو، در مختار میں ہے:

فی الخلاصة وطئ اخت امرأته لاتحرم علیه امرأته - 3 **خلاصہ میں ہے کہ سالی سے زنا کی وجہ سے بیوی حرام نہ ہوگی۔(ت)**

نہ سالی کے ساتھ فقط نکاح کرنے سے جماع زوجہ ممنوع ہو جائے۔ جب تک سالی سے جماع واقع نہ ہو، ہاں اگر بعد نکاح سالی سے جماع کر لیا تو اب زوجہ سے جماع حرام ہو گیا، یہاں تک کہ سالی کو چھوڑ دے اور اس کی عدت گزر جائے اس وقت زوجہ سے جماع جائز ہوگا یوں ہی اگر بے نکاح سالی سے جماع کیا مگر دیدہ دانستہ

---

[1] فتاوی خیریہ فصل فی المحرمات دار المعرفۃ بیروت ۱ / ۲۳۱ [2] ردالمحتار فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۷۹۲ [3] در مختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۸

Volume 11 Fatawa Rizvia

...not only female, but undoubtedly if intercourse occurs by mistake, then intercourse with the wife becomes prohibited until the waiting period ('iddah) obligatory upon the sister-in-law due to this doubtful intercourse has ended.

In Radd al-Muhtar, regarding the issue of marrying a sister while her sister is still in marriage: "The second marriage is invalid. As long as he has not had intercourse with the second one, intercourse with the first one is permissible. If he has had intercourse with the second one, then intercourse with the first one is prohibited until the 'iddah of the one with whom he had doubtful intercourse has passed." Narrated from al-Bahr.

In Radd al-Muhtar regarding the issue of marriage of a woman over her sister: "The second (marriage) is void, and he may have intercourse with the first now until he has intercourse with the second, then the first becomes forbidden until the completion of the 'iddah of the second, as if he had intercourse with the sister of his wife by doubt, where the wife becomes forbidden as long as the 'iddah of the woman of doubt does not expire." - From Al-Bahr.

Just as if intercourse occurs with the wife's sister on the basis of doubt, intercourse with the wife becomes prohibited until the 'iddah of the woman with whom doubt occurred is completed. This is narrated from al-Bahr. (T) And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best, and His knowledge is most complete and most wise.

Issue 164: From Marahra Mutahhara, sent by Hazrat Syed Zahoor Haider Mian Sahib Qibla. 5th Shawwal 1309 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this: Zaid married off his minor daughter, Hindah, under his guardianship to Bakr. A year has passed since then. Zaid's wife had to travel, so Zaid sent Bakr along for protection and supervision. Zaid's wife undertook the journey in a carriage with her son-in-law Bakr and a female servant. At night in an inn, Bakr, with corrupt intentions and evil motive, came to his mother-in-law's bed and forcibly said, "Let me press your feet." Although she forbade him, he started pressing her feet forcibly and, stroking her stomach, was close to untying her waistband, having already untied his own waistband. With great difficulty and force, Bakr was removed from the bed. Later, around three o'clock in the morning, Bakr came again, sat on the bed, and intended to misbehave. Zaid's wife woke up and started screaming and shouting. Upon hearing this, the coachman and the servant woke up and saw Bakr by lamplight. He began making excuses worse than the sin, saying he came to kill a

dog. Zaid's wife says with absolute certainty and through mutual oath-taking (mubalaha) and religious oath that Bakr first stroked her stomach and reached out with the intention of untying her waistband, having his own waistband untied, and at that time Bakr's hands and feet were trembling severely. If she had not gotten angry and forcibly removed Bakr from the bed, he would surely have violated her modesty. And Bakr came and sat on her bed a second time with the same intention. If the coachman and servant had not come with a lamp and seen him...

1- Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibited Degrees (al-Muharramat), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/286.

ग्यारहवाँ खंड फ़तावा रिज़विया

...न केवल महिला, बल्कि निस्संदेह यदि धोखे से सहवास हो जाए, तो भी पत्नी से सहवास हराम (वर्जित) हो जाता है जब तक कि इस संदिग्ध सहवास के कारण साली पर जो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य हुई है, वह समाप्त न हो जाए।

रद्द अल-मुह्तार में एक बहन की मौजूदगी में दूसरी बहन (साली) से निकाह के मसले में फ़रमाया: "दूसरा निकाह बातिल (अमान्य) है। और जब तक दूसरी से सहवास न किया हो, पहली से सहवास जायज़ है। अगर दूसरी से सहवास कर लिया हो, तो पहली से सहवास उस समय तक हराम है जब तक कि दूसरी की इद्दत न गुज़र जाए।" अल-बह्र से उद्धृत।

रद्द अल-मुह्तार में औरत का उसकी बहन के ऊपर निकाह के मसले में: "दूसरा (निकाह) बातिल है, और वह पहली से अभी संभोग कर सकता है जब तक कि वह दूसरी से संभोग न करे, फिर पहली तब तक हराम हो जाती है जब तक कि दूसरी की इद्दत पूरी न हो जाए, जैसे कि उसने अपनी पत्नी की बहन से संदेहवश संभोग किया हो, जहाँ पत्नी तब तक हराम हो जाती है जब तक कि संदेह वाली महिला की इद्दत समाप्त न हो जाए।" - अल-बह्र से।

जिस तरह संदेह के आधार पर पत्नी की बहन से सहवास हो जाए तो पत्नी से सहवास हराम हो जाता है, जब तक कि संदेह वाली की इद्दत पूरी न हो जाए। यह बह्र से नक़ल किया गया है। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे हिकमत वाला है।

मसला १६४: मारहरा मुतहरा से, प्रेषक हज़रत सैयद ज़हूर हैदर मियां साहब क़िबला। ५ शव्वाल १३०९ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीअते मतीन के मुफ़्ती क्या फ़रमाते हैं कि: ज़ैद ने अपनी नाबालिग़ बेटी हिन्दह का निकाह अपनी विलायत (संरक्षण) में बक्र से कर दिया। इसे एक साल बीत चुका है। ज़ैद की पत्नी को यात्रा करनी पड़ी, तो ज़ैद ने सुरक्षा और देखरेख के लिए बक्र को साथ भेज दिया। ज़ैद की पत्नी ने अपने दामाद बक्र और एक दासी के साथ गाड़ी से यात्रा की। रात को सराय में, बक्र बुरी नीयत और भ्रष्ट इरादे से अपनी सास के बिस्तर पर आया और ज़बरदस्ती कहा कि "मैं पैर दबाऊँगा"। हालाँकि मना किया गया, लेकिन उसने ज़बरदस्ती पैर दबाने शुरू कर दिए और पेट पर हाथ फेरकर कमरबंद खोलने ही वाला था, और अपना इज़ारबंद (पैजामे की डोरी) पहले ही खोल चुका था। बड़ी मुश्किल और ज़बरदस्ती से बक्र को बिस्तर से अलग किया गया। दोबारा फिर रात के

करीब तीन बजे बक्र आया और बिस्तर पर बैठकर बदतमीज़ी का इरादा किया। ज़ैद की पत्नी की आँख खुल गई और वह चीखने-चिल्लाने लगी, जिससे गाड़ीवान और दासी चौंक गए और चिराग की रोशनी में देखा तो वह बक्र था। वह गुनाह से भी बदतर बहाने बनाने लगा कि "मैं कुत्ता मारने आया था"। ज़ैद की पत्नी पूरे यकीन के साथ और मुबाहला व शरई क़सम के तौर पर कहती है कि बक्र ने पहली बार मेरे पेट पर हाथ फेरकर मेरा इज़ारबंद खोलने की नीयत से छेड़छाड़ की थी और अपना इज़ारबंद खोल रखा था, और उस समय बक्र के हाथ-पांव ज़ोर से कांप रहे थे। अगर मैं नाराज़ होकर ज़बरदस्ती बक्र को बिस्तर से अलग न करती, तो वह यकीनन मेरी आबरू लूट लेता। और इसी इरादे से बक्र दोबारा आकर मेरे बिस्तर पर बैठा। अगर गाड़ीवान और दासी चिराग लेकर न आते और न देखते...

१- रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत २८६/२

زنانہ کیا بلکہ بلا شبہہ اور دھوکے سے جماع واقع ہو تو بھی زوجہ سے جماع حرام ہو گیا جب تک اس جماع شبہہ کے سبب سالی پر جو عدت لازم آئی ہے ختم ہو جائے۔

فی ردالمحتار فی مسئلۃ نکاح المرأۃ علی اختھا الثانی

باطل ولہ وطی الاولی الآن یطأ الثانیۃ فتحرم الاولی

الی انقضاء عدۃ الثانیۃ کما لو وطئ اخت امرأتہ

بشبہۃ حیث تحرم امرأۃ مالم تنقض عدۃ ذات الشبھۃ ح عن البحر 1-

ردالمحتار میں بہن کی موجودگی میں سالی سے نکاح کے مسئلہ

میں فرمایا کہ دوسرا نکاح باطل ہے اور جب تک دوسری

سے وطی نہ کی ہو پہلی سے جماع جائز ہے۔ اگر دوسری سے

وطی کرلی ہو تو پہلی سے جماع اس وقت تک حرام ہے جب

تک دوسری کی عدت نہ گزر جائے۔

جس طرح شبہہ کی بناء پر بیوی کی بہن سے جماع ہو جائے تو بیوی سے جماع حرام ہوتا ہے۔ تاوقتیکہ شبہہ والی کی عدت پوری نہ ہو جائے ، یہ بحر سے منقول ہے۔ (ت) واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم

مسئلہ ۱۶۴: از مارہرہ مطہرہ مرسلہ حضرت سید ظہور حیدر میاں صاحب قبلہ پنجم شوال ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین کہ زید نے اپنی دختر ہندہ نا بالغہ کا عقد بولایت اپنے ہمراہ بکر کر دیا کہ جس کو عرصہ ایک سال کا گزرا زید کی زوجہ کو سفر درپیش آیا

واسطے حفاظت و نگرانی بکر کو ہمراہ کر دیا زوجہ زید نے ہمراہی اپنے داماد بکر کے مع ایک خادمہ سفر گاڑی پر کیا شب کو سرائے میں بکر نے بارادہ فاسدہ و نیت خراب اپنی خوشدامن کی چار پائی پر آکر زبردستی کہا کہ میں پاؤں دابوں، ہر چند منع کیا لیکن زبردستی پاؤں دبانے شروع کر دئیے اور شکم پر ہاتھ پھیر کر قریب تھا کہ کمر بند کھول ڈالے اور اپنا ازار بند اول کھول لیا تھا، نہایت مشکل وزبردستی سے بکر کو چار پائی سے علیحدہ کیا گیا، دوبارہ پھر قریب تین بجے شب کے بکر نے آکر چار پائی پر بیٹھ کر ارادہ دست درازی کا کیا، زوجہ زید کی آنکھ کھل گئی اور وہ چیخ کر غل مچانے لگی جس سے گاڑی بان اور خادمہ نے چونک کر چراغ سے دیکھا تو بکر تھا عذر بدتر از گناہ کرنے لگا کہ میں کتا مارنے آیا تھا یہ بات زوجہ زید یقین اور خوب مضبوطی سے از روئے مباہلہ و قسم شرعی کہتی ہے کہ بکر نے اول مرتبہ میرے شکم پر ہاتھ پھیر کر میرے ازار بند کھولنے کی نیت سے دست درازی کی تھی اور اپنا ازار بند کھول رکھا تھا اور اس وقت بکر کے دست وپا میں رعشہ سخت تھا اگر میں ناراض ہو کر زبردستی بکر کو چار پائی سے علیحدہ نہ کرتی تو بیشک میری عصمت بکر خراب کر ڈالتا اور اسی ارادہ سے دوبارہ پھر بکر آکر میری چار پائی پر بیٹھا اگر گاڑی بان و خادمہ چراغ لے کر نہ آتے اور نہ دیکھتے

1- ردالمحتار فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۸۶

Volume 11 Fatawa Rizvia

So Bakr would not desist from his intention at all. After finding out about this situation, Zaid fell into doubt regarding the marriage of his daughter, Hindah, and said that he would not send her away (Rukhsati) now. So, in the current state where both the original guardians, i.e., Hindah's parents, are angry with Zaid's wife and Bakr because of this action, does Hindah's marriage to Bakr remain intact or is it broken? And if it is broken, can her second marriage take place with Bakr himself or elsewhere? Since Zaid's daughter, Hindah, is a minor and her guardians, the parents, are angry with Bakr, what is the Sharia ruling in such a situation? And what should be the procedure regarding Hindah and Bakr now? And Zaid's wife, with whom Bakr committed this act, is young. Only, please clarify and be rewarded.

The Answer: There is no doubt that touching any part of the body of one's wife's mother with lust (lustful gaze/touch) does not dissolve the marriage, but the woman becomes prohibited (haram) forever. It becomes obligatory for the person to leave her. However, it is necessary that the touch occurs in a state of lust, meaning that at the very moment of touching, an erection (na'uz - arousal of the male organ) occurs, or if an erection already existed, it increases in that state. Otherwise, if there was no erection at the time of touching and it occurred after the touching ended, or if the erection existed beforehand and did not increase during the touching but remained as it was, then prohibition (hurmat) will not occur.

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
In al-Durr al-Mukhtar: Consideration is given to lust at the time of touching and looking, not after them. Its limit is when his organ moves or increases by it; this is what the fatwa is based on.	It is in Durr-e-Mukhtar that lust is considered at the time of looking and touching; lust occurring after that is not valid. And the limit of valid lust at that time is that the sexual organ moves upon touching and looking, or an increase in movement occurs at that time. The fatwa is based on this.
1. And in Radd al-Muhtar: His saying 'or its increase' means an increase in movement if it existed before them. His saying 'by it the fatwa is based' - it is stated in al-Fath, and a branch was	And in Radd-al-Muhtar: His saying 'ziyadah' refers to an increase in movement when movement was already present. His saying 'bihi yufta' (on this is the fatwa): it was said in Fath, and a sub-branch was explained

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
derived from it: if someone had an erection and sought his wife, but by mistake, he entered between the thighs of her daughter, her mother does not become prohibited unless the erection increases. 2.	based on it that if someone had an erection, sought his wife, but by mistake/ error used the thighs of the daughter (from the wife's first husband) instead of the wife, then that girl's mother (the wife) becomes prohibited for him...

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press, Delhi, 1/188.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/280.

तो बक्र अपने इरादे से बिल्कुल बाज़ नहीं आता। इस स्थिति का पता चलने के बाद ज़ैद को अपनी बेटी हिंदा के निकाह के बारे में शक हो गया और उसने कहा कि अब मैं उसे विदा (रुख़्सती) नहीं करूँगा। तो अब जिस स्थिति में हिंदा के दोनों असली वली (अभिभावक) यानी माता-पिता ज़ैद और उसकी पत्नी बक्र की इस हरकत की वजह से उससे नाराज़ हैं, तो क्या बक्र से हिंदा का निकाह बाक़ी रह गया या टूट गया? और अगर टूट गया तो क्या उसका दूसरा निकाह बक्र से ही या किसी और जगह हो सकता है या नहीं? क्योंकि ज़ैद की बेटी हिंदा नाबालिग है और वली यानी उसके माता-पिता बक्र से नाराज़ हैं, तो ऐसी स्थिति में शरीयत का मसला क्या है? और अब हिंदा और बक्र के मामले में क्या होना चाहिए? और ज़ैद की पत्नी जवान है जिसके साथ बक्र ने यह हरकत की। केवल, बयान फ़रमाएं पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): इसमें कोई शक नहीं कि अपनी विवाहिता (निकाह में मौजूद) की माँ के शरीर को कामुकता (शहवत) की दृष्टि से किसी भी जगह छूने से, हालांकि निकाह समाप्त नहीं होता, लेकिन वह स्त्री हमेशा-हमेशा के लिए हराम (निषिद्ध) हो जाती है। और उस व्यक्ति पर अनिवार्य (वाजिब) हो जाता है कि वह उसे छोड़ दे। लेकिन इतनी बात ज़रूरी है कि स्पर्श कामुकता (शहवत) की स्थिति में हो, यानी छूने के समय ही तुरंत कामोत्तेजना (नऊज़ - लिंग का खड़ा होना) उत्पन्न हो जाए, या अगर पहले से कामोत्तेजना थी तो उस स्थिति में बढ़ जाए। अन्यथा, यदि स्पर्श के समय कामोत्तेजना नहीं थी और स्पर्श समाप्त होने के बाद उत्पन्न हुई, या कामोत्तेजना पहले से थी और स्पर्श करने में कुछ अधिक नहीं हुई बल्कि वैसी ही रही, तो हुरमत (निषेध) नहीं होगी।

अरबी पाठ

दुर्र-ए-मुख्तार में है: स्पर्श और दृष्टि के समय की कामुकता का ही विचार है, उनके बाद वाली का नहीं। इसकी सीमा वह है जिसमें उसका अंग (लिंग) हरकत करे या उससे बढ़ जाए; इसी पर फ़तवा है।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

दुर्र-ए-मुख्तार में है कि देखने और छूने के समय कामुकता (शहवत) का एतबार (मान्यता) है, उसके बाद वाली कामुकता मान्य नहीं है। और उस समय मान्य कामुकता की सीमा यह है कि छूने और देखने पर जननांग हरकत करे या उस समय हरकत में अधिकता पैदा हो। इसी पर फ़तवा है।

अरबी पाठ

1. और रद्द-अल-मुह्तार में: उसका कहना 'या उसकी वृद्धि' का अर्थ है हरकत में वृद्धि यदि वह उन दोनों से पहले मौजूद थी। उसका कहना 'इसी पर फ़तवा है' - अल-फ़तह में कहा गया और उससे यह उप-शाखा निकाली गई: यदि किसी को कामोत्तेजना हुई और उसने अपनी पत्नी को चाहा, लेकिन ग़लती से उसने उसकी बेटी की जांघों के बीच प्रवेश किया, तो उसकी माँ हराम नहीं होती जब तक कि कामोत्तेजना में वृद्धि न हो। 2.

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

और रद्द-अल-मुह्तार में है: उसके शब्द 'ज़ियादह' (अधिकता) से तात्पर्य हरकत की अधिकता है जबकि पहले हरकत मौजूद हो। उसका कहना 'बिही युफ़्ता' (इसी पर फ़तवा है): फ़तह में कहा गया और इस पर यह उप-विस्तार बताया गया कि यदि किसी को कामोत्तेजना (इंतिशार) हुई, अपनी पत्नी की चाह की, तो पत्नी के बजाय (पत्नी के पहले पति से पैदा हुई) बेटी की जांघों को ग़लती से इस्तेमाल किया, तो उस लड़की की माँ (पत्नी) उस पर हराम...

1. दुर्र-ए-मुख्तार, हराम कार्यों का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/188।
2. रद्द-अल-मुह्तार, हराम कार्यों का अध्याय, दार इहया अत-तुराथ अल-अल-अरबी, बेरूत, 2/280।

पृष्ठ 321 का 739

تو بکر ہرگز اپنے ارادہ سے باز نہ آتا، زید کو بعد دریافت اس حالت کے اپنی دختر ہندہ کے عقد میں شک پڑ گیا اور کہا کہ میں اب رخصت نہ کروں گا، تو اب جس حالت میں دونوں ولی اصلی یعنی والدین ہندہ زید مع زوجہ بکر سے باعث اس حرکت کے ناراض ہیں تو نکاح ہندہ کا بکر سے باقی رہ گیا یا ٹوٹ گیا؟ اور اگر ٹوٹ گیا تو عقد ثانی اس کا خواہ بکر سے یا اور جگہ ہو سکتا ہے یا نہیں؟ کیونکہ دختر زید یعنی ہندہ نا بالغہ ہے اور ولی یعنی والدین اس کے بکر سے ناراض ہیں تو ایسی حالت میں مسئلہ شریعت کیا ہے۔ اور اب معاملہ ہندہ و بکر کیا ہونا چاہئے؟ اور زوجہ زید جوان ہے جس سے یہ حرکت بکر نے کی ، فقط، بینوا توجروا۔

الجواب: اس میں شک نہیں کہ اپنی منکوحہ کی ماں کے جسم کو بنظرِ شہوت کسی جگہ ہاتھ لگانے سے گو نکاح زائل نہیں ہوتا مگر عورت ہمیشہ ہمیشہ کو حرام ہو جاتی ہے۔ اور اس شخص پر واجب ہوتا ہے کہ اسے چھوڑ دے لیکن اس قدر ضرور ہے کہ مس بحالتِ شہوت ہو یعنی ہاتھ لگانے کے وقت ہی معاً نعوظ (یعنی عضو تناسل کا قائم ہونا) پیدا ہو یا پہلے سے نعوظ تھا تو ایسی حالت میں زائد ہو جائے ورنہ اگر جس وقت مس کیا نعوظ نہ تھا جب مس ختم ہو چکا اس کے بعد پیدا ہوا یا نعوظ پہلے سے تھا اور مس کرنے میں کچھ زیادہ نہ ہوا بدستور رہا تو حرمت نہ ہو گی۔

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
فی الدر المختار العبرة للشهوة عند المس والنظر لا بعدهما وحدها فيما تحرك آلته او زيادته به يفتى	در مختار میں ہے کہ دیکھنے اور چھونے کے وقت شہوت کا اعتبار ہے اس کے بعد والی شہوت معتبر نہیں، اور اس وقت معتبر شہوت کی حد یہ ہے کہ چھونے اور دیکھنے پر

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
	آلہ تناسل حرکت کرے یا اس وقت حرکت میں زیادتی پیدا ہو۔
	اسی پر فتویٰ ہے۔
1۔ وفی ردالمحتار قوله او زيادته اى زيادة التحرك ان كان موجودا قبلهما قوله به يفتى قال فى الفتح وفرع عليه مالوانتشر وطلب امرأته فأولج بين فخذى بنتها خطأ لاتحرم امها مالم يزدالانتشار 2۔	اور ردالمحتار میں ہے: اس کا قول "زیادتہ" اس سے مراد حرکت کی زیادتی ہے جبکہ پہلے حرکت موجود ہو، اس کا قول "بہ یفتی"، فتح میں کہا اور اس پر تفریع بیان کی کہ کسی کو انتشار ہوا اپنی بیوی کی طلب کی تو بیوی کی بجائے (بیوی کے پہلے خاوند سے) بیٹی کی رانوں کو غلطی اور خطا سے استعمال کیا تو اس لڑکی کی ماں (بیوی) اس پر حرام...

1 در مختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی 1/ 188 2 رد المحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت 2/280

Fatawa Razawiya Volume 11

...because at that time there was no additional arousal (rather, the arousal that was present was what had previously occurred for the wife) (T). Similarly, it is also necessary that the touch be on a bare body or through such a thin cloth that it does not prevent the heat of the woman's body from reaching his hand, like the net or fine muslin shirts of that era. Otherwise, if such a thick cloth was intervening that the heat of the woman's body could not be felt by the hand, then prohibition (Hurmat-e-Musaharat) is not established, even if the touch occurred with a thousand-fold lust.

[From Ad-Durr al-Mukhtar: Touching with lust, even if it is the hair of the head through a barrier that does not prevent heat. 1 From Radd al-Muhtar: If it was a barrier (to heat), prohibition is not established; thus it is in most books. Likewise, if he had intercourse with her with a cloth wrapped around the penis. 2] [Translation: It is in Durr-e-Mukhtar that a woman touched with lust, whether this touch is of the hair on the woman's head despite the intervention of such a veil or cloth that is not a barrier to the body's heat reaching, even then the ancestors of this woman will become prohibited. It is in Radd-ul-Muhtar that if that cloth is a barrier to the body's heat, prohibition will not be established; this is how it is in most books. And similarly, if at the time of intercourse with a woman, a thick cloth was wrapped around the penis (such that the body heat of both could not be felt by each other and there was thick cloth on all the rest of the woman's body so that no part of the bare body was touched). (T)]

Furthermore, one condition for prohibition is that this act should not lead to ejaculation; if ejaculation occurred, prohibition is not established.

[From Ad-Durr al-Mukhtar: This is when he does not ejaculate; if he ejaculates with touching or looking, then there is no prohibition, as Ibn Kamal gave the fatwa. 3] [Translation: It is in Durr-e-Mukhtar that prohibition will be established only when there was no ejaculation during this arousal, and if ejaculation occurs with lust at the time of touching or looking, then prohibition will not be established, the fatwa is on this. Ibn Kamal (T)]

In short, there are these conditions for the establishment of prohibition by marriage (Hurmat-e-Musaharat) due to touching or looking. From the statement of Zaid's wife as mentioned in the question, it is not clear at all whether these were fulfilled in the instance or not. Regarding the 3 AM incident, she states that Bakr only came and sat on her cot and intended to misbehave; mere intention is nothing. And regarding the

incident in the early part of the night, she also does not say whether Bakr's massaging of her feet was over cloth or on bare feet.

1 Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press, Delhi, 1/188 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/280 3 Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press, Delhi, 1/188

फतावा रज़विया जिल्द 11

...क्योंकि उस समय काम-उत्तेजना में कोई अतिरिक्त वृद्धि नहीं हुई (बल्कि वही उत्तेजना बनी रही जो पहले पत्नी के लिए हुई थी) (त)। इसी तरह, यह भी आवश्यक है कि स्पर्श नग्न शरीर पर हो या किसी ऐसे बारीक कपड़े पर से हो कि औरत के शरीर की गर्मी उसके हाथ तक पहुँचने में बाधा न बने, जैसे उस समय के जालीदार या मलमल के कुर्ते। अन्यथा, यदि ऐसा मोटा कपड़ा बीच में था कि स्त्री के शरीर की गर्मी हाथ को महसूस न हो सके, तो निषेध (हुरमत-ए-मुसाहारत) स्थापित नहीं होगा, भले ही स्पर्श हज़ारों काम-इच्छाओं के साथ हुआ हो।

[अद-दुर्र अल-मुख्तार से: काम-इच्छा के साथ स्पर्श करना, भले ही वह सिर के बाल ही क्यों न हों, ऐसे पर्दे के माध्यम से जो गर्मी को न रोके। 1 रद अल-मुह्तार से: यदि वह (गर्मी के लिए) बाधा था, तो निषेध स्थापित नहीं होता; अधिकांश पुस्तकों में ऐसा ही है। इसी तरह, यदि उसने लिंग पर कपड़ा लपेटकर उसके साथ संभोग किया। 2] [अनुवाद: दुर्रे मुख्तार में है कि काम-इच्छा के साथ स्पर्श की गई औरत, चाहे यह स्पर्श औरत के सिर के बालों का हो, किसी ऐसे पर्दे और कपड़े के बीच में होने के बावजूद जो शरीर की गर्मी पहुँचने के लिए बाधक न हो, तो भी उस औरत के पूर्वज हराम हो जाएंगे। रद-उल-मुह्तार में है कि अगर वह कपड़ा शरीर की गर्मी के लिए बाधक हो तो हुरमत (निषेध) साबित नहीं होगी, अधिकतर किताबों में ऐसा ही है। और इसी तरह अगर किसी औरत से जिमा (संभोग) के वक्त लिंग पर मोटा कपड़ा लपेट लिया (जिससे आपस में दोनों के बदन की हरारत न महसूस हो सके और औरत के बाकी तमाम बदन पर मोटा कपड़ा हो कि कोई हिस्सा बदन नग्न स्पर्श न हो)। (त)]

साथ ही, हुरमत (निषेध) की एक शर्त यह भी है कि यह क्रिया वीर्यपात (इजनाल) की ओर न ले जाए; यदि वीर्यपात हो गया, तो हुरमत स्थापित नहीं होगी।

[अद-दुर्र अल-मुख्तार से: यह तब है जब वीर्यपात न हो; यदि स्पर्श या देखने के साथ वीर्यपात हो जाए, तो कोई हुरमत नहीं है, जैसा कि इब्न कमाल ने फतवा दिया है। 3] [अनुवाद: दुर्रे मुख्तार में है कि हुरमत तब साबित होगी जब इस उत्तेजना में वीर्यपात न हुआ हो, और अगर स्पर्श या नज़र के वक्त काम-इच्छा से वीर्यपात हो जाए तो हुरमत साबित नहीं होगी, इसी पर फतवा है। इब्न कमाल (त)]

संक्षेप में, स्पर्श या नज़र के कारण हुरमत-ए-मुसाहारत साबित होने में ये शर्तें हैं। जैद की पत्नी का बयान, जैसा कि सवाल में वर्णित है, उससे यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता कि वास्तविक स्थिति में ये शर्तें

पूरी हुई थीं या नहीं। रात के तीन बजे की घटना में, वह बताती है कि बक्र केवल उसकी चारपाई पर आकर बैठा और छेड़छाड़ का इरादा किया; केवल इरादा कुछ नहीं है। और रात के पहले हिस्से की घटना में भी वह यह नहीं कहती कि बक्र का पैर दबाना कपड़े के ऊपर से था या नग्न पैरों पर।

1 दुर्रे मुख्तार, फसल फिल मुहर्रमात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/188 2 रद-उल-मुह्तार, फसल फिल मुहर्रमात, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/280 3 दुर्रे मुख्तार, फसल फिल मुहर्रमात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/188

पृष्ठ 322 / 739

نہ ہوگی کیونکہ اس وقت انتشار زائد نہ ہوا (بلکہ وہ انتشار موجود رہا جو پہلے بیوی کے لیے ہوا تھا) (ت) اسی طرح یہ بھی ضرور ہے کہ مسِ برہنہ جسم پر ہو یا کسی ایسے باریک کپڑے پر سے کہ عورت کے جسم کی حرارت اس کے ہاتھ کو پہنچنے سے مانع نہ ہو، جیسے اس زمانے میں جالی یا تنزیب کی کرتیاں، ورنہ اگر ایسا سنگین کپڑا حائل تھا کہ جسم زن کی گرمی ہاتھ کو محسوس نہ ہونے دے تو حرمت نہیں اگرچہ مس بہزار شہوت واقع ہوا ہو۔

فی الدرالمختار واصل ممسوسة بشهوة و لو بشعر علی الرأس بحائل لا یمنع الحرارة 1 فی ردالمحتار فلوکان مانعاً لاتثبت الحرمة کذا فی اکثر الکتب وکذا لوجامعها بخرقة علی ذکره 2 - درمختار میں ہے شہوت کے ساتھ مس شدہ عورت خواہ یہ مس عورت کے سر کے بالوں کا کسی ایسے پردہ اور کپڑے کے حائل ہونے کے باوجود ہو جو بدن کی حرارت پہنچنے کے لیے مانع نہ ہو، تو بھی اس عورت کے اصول حرام ہوجائیں گے، ردالمحتار میں ہے کہ اگر وہ کپڑا بدن کی حرارت کے لیے مانع ہو تو حرمت ثابت نہ ہوگی، اکثر کتب میں ایسے ہی ہے۔ اور یوں ہی اگر کسی عورت سے جماع کے وقت ذکر پر موٹا کپڑا لپیٹ لیا (جس سے آپس میں دونوں کے بدن کی حرارت نہ محسوس ہوسکے اور عورت کے باقی تمام بدن پر موٹا کپڑا ہو کہ کوئی حصہ بدن برہنہ مس نہ ہو) (ت)

نیز ایک شرط حرمت یہ ہے کہ یہ حرکت انزال کی طرف مودی نہ ہو، اگر انزال ہو گیا حرمت نہ ہوئی۔

فی الدرالمختار ھذا اذالم ینزل فلو انزل مع مس اونظر فلا حرمۃ بہ یفتی ابن کمال 3 - درمختار میں ہے کہ حرمت تب ثابت ہوگی جب اس انتشار میں انزال نہ ہوا ہو، اور اگر مس یا نظر کے وقت شہوت سے انزال ہو جائے تو حرمت ثابت نہ ہوگی، اس پر فتوٰی ہے۔ ابن کمال (ت)

غرض مس یا نظر کے سبب حرمت مصاہرت ثابت ہونے میں یہ شرطیں ہیں زوجہ زید کا بیان جس قدر سوال میں مذکور اس سے کچھ نہیں کھلتا کہ صورت واقعہ میں یہ متحقق تھیں یا نہیں۔ تین بجے شب کے واقعہ میں بکر کا صرف اس کی چار پائی پر آ کر بیٹھنا اور دست درازی کا ارادہ کرنا بیان کرتی ہے کہ مجرد ارادہ کوئی چیز نہیں، اور واقعہ اول شب میں بھی کچھ نہیں کہتی کہ بکر کا پاؤں دبانا کپڑے پر سے تھا یا برہنہ پاؤں پر،

1 درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۸ 2 ردالمحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۸۰ 3 درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۸

And rubbing the belly is also not necessarily a clear text (nass) in this matter, as it is not known whether the hand was rubbed on the naked belly, nor is it known what kind of fabric Zaid's wife was wearing at that time. Therefore, the ruling of prohibition (hurmat) cannot be given based on this statement alone until it is clearly manifest that all conditions are met. Hence, this humble person (the author) can only give a ruling on this matter to the extent that if Bakr touched the feet or belly or any part of the body of Zaid's wife, either naked or with a thin cloth, with lust such that in the state of this movement an erection occurred, or if it was already there then it increased, and ejaculation did not occur, then indeed Hindah has become forever prohibited for Bakr, such that he can never touch her in any way. And if there was some deficiency in these conditions, then Hindah remains lawful for him as before. Furthermore, in the state where the ruling of prohibition is given, its result is by no means that the marriage is broken immediately; this is a pure error. Rather, at that time the ruling will only be to the extent that Hindah has become eternally prohibited for Bakr; it is obligatory upon Bakr to leave her, if he does not leave her, he will be a severe sinner and will also be seized regarding Hindah's right. Allah Almighty said:

[Arabic Verse]: "Then, either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment." (Surah Al-Baqarah 2:229). Since the possibility of keeping her in an acceptable manner has passed, it is necessary for him to release her with excellence. [Urdu Translation]: Keep her with goodness or set her free in a good manner; in this situation, keeping her is no longer possible, so he should leave her. (T)

But as long as he does not abandon her or the Sharia judge does not cause a separation, the marriage indeed remains. In another place, Hindah's marriage is absolutely not permissible. Note: It should be considered here because Ad-Durr [al-Mukhtar] has specified the right of abandonment (mutarakah) for the husband, while Allamah Shami said that the woman also has the right of abandonment because there is no difference between it and annulment (fasakh). And it is a proven fact that the prohibition of affinity (hurmat-e-musaharat) invalidates the marriage. In an invalid marriage (nikah fasid), both husband and wife have the right to annul it, whether in each other's presence or not, whether consummation has occurred or not. And it is also worth considering whether in the invalid marriage of a minor girl, the minor or her guardian has the authority to annul so that sin can be avoided, or will her reaching puberty be awaited on the basis that sin is not intended before that? The first possibility is apparent. This should be clarified. (T)

[Footnote] 1: Al-Quran 2/229 Page 323 of 739

और पेट पर हाथ फेरना भी इस मामले में कोई स्पष्ट प्रमाण (नस्स) नहीं है, क्योंकि यह ज्ञात नहीं है कि हाथ नंगे पेट पर फेरा गया था, न ही यह पता है कि उस समय ज़ैद की पत्नी ने किस तरह के कपड़े पहने हुए थे। इसलिए, केवल इस बयान के आधार पर तब तक हुरमत (निषेध) का आदेश नहीं दिया जा सकता जब तक कि सभी शर्तों का पूरा होना स्पष्ट रूप से प्रकट न हो जाए। अत; यह फकीर (लेखक) इस मामले के उत्तर में केवल इतना ही आदेश दे सकता है कि यदि बक्र ने ज़ैद की पत्नी के पैर या पेट या शरीर के किसी भी हिस्से को नग्न अवस्था में या किसी पतले कपड़े के साथ कामुकता (शहवत) के साथ छुआ, जिससे उस क्रिया की स्थिति में ही उत्तेजना पैदा हुई या यदि पहले से थी तो बढ़ गई, और स्खलन नहीं हुआ, तो वास्तव में हिन्दा बक्र पर हमेशा के लिए हराम हो गई, वह कभी भी किसी भी तरह से उसे स्पर्श नहीं कर सकता। और यदि इन शर्तों में कुछ कमी थी, तो हिन्दा उसके लिए पहले की तरह हलाल है। फिर, जिस स्थिति में हुरमत का आदेश दिया जाएगा, उसका परिणाम यह कदापि नहीं है कि निकाह तुरंत टूट गया; यह सरासर गलती है। बल्कि उस समय आदेश केवल इतना होगा कि हिन्दा बक्र पर स्थायी रूप से हराम हो गई है; बक्र पर यह अनिवार्य (फर्ज़) है कि वह उसे छोड़ दे, यदि वह उसे नहीं छोड़ेगा तो वह घोर पापी होगा और हिन्दा के अधिकार के संबंध में भी पकड़ा जाएगा। अल्लाह तआला ने फरमाया:

[अरबी आयत]: "तो या तो भलाई के साथ (उसे अपने पास) रखो या अच्छे तरीके से उसे विदा कर दो।" (सूरह अल-बकराह 2:229)। चूंकि अब भलाई के साथ साथ रखना संभव नहीं रहा, इसलिए उसके लिए अनिवार्य है कि वह उसे अच्छे तरीके से छोड़ दे। [उर्दू अनुवाद]: भलाई से पास रखो या अच्छे अंदाज़ में उसको आज़ाद कर दो, इस सूरत में पास रखना मुमकिन नहीं रहा लिहाज़ा उसको चाहिए कि छोड़ दे। (त)

लेकिन जब तक वह उसे नहीं छोड़ता या शरीयत का काजी अलगाव नहीं करा देता, निकाह वास्तव में बना रहता है। दूसरी जगह हिन्दा का निकाह बिल्कुल भी जायज़ नहीं है। नोट: यहाँ विचार करना चाहिए क्योंकि 'अद-दुर्र' ने परित्याग (मुतारका) का अधिकार पति के लिए विशेष किया है, जबकि अल्लामा शामी ने कहा है कि महिला को भी परित्याग का अधिकार है क्योंकि इसमें और निकाह खत्म करने (फ़स्ख़) में कोई अंतर नहीं है। और यह बात सिद्ध है कि हुरमत-ए-मुसाहरत निकाह को फासिद (अमान्य) कर देती है। जबकि फासिद निकाह में पति और पत्नी दोनों को एक-दूसरे की उपस्थिति में या अनुपस्थिति में, संभोग हुआ हो या न हुआ हो, निकाह खत्म करने का अधिकार है।

और यह भी विचारणीय है कि क्या एक नाबालिग लड़की के फासिद निकाह में, उस नाबालिग या उसके संरक्षक को निकाह खत्म करने का अधिकार है ताकि पाप से बचा जा सके, या उसके वयस्क होने का इंतज़ार किया जाएगा इस आधार पर कि उससे पहले पाप का उद्देश्य नहीं है? पहली संभावना स्पष्ट है। इसे स्पष्ट किया जाना चाहिए। (त)

[फुटनोट] 1: अल-कुरान 2/229 पृष्ठ 323/739

اور شکم پر ہاتھ پھیرنا بھی کچھ خواہ مخواہی اس میں نص نہیں کہ برہنہ پیٹ پر ہاتھ پھیرا نہ یہ معلوم کہ اس وقت زوجہ زید کی کرتی کیسے کپڑے کی تھی، تو اس کے فقط اتنے بیان پر حکم حرمت نہیں ہو سکتا جب تک صاف صاف تمام شرائط کا متحقق ہونا نہ ظاہر ہو۔ لہٰذا فقیر اس مسئلہ کے جواب میں صرف اس قدر حکم دے سکتا ہے کہ اگر بکر نے زوجہ زید کے پاؤں یا پیٹ خواہ کسی جسم پر برہنہ یا حائل نرم کے ساتھ بطور شہوت ہاتھ لگایا کہ اس حرکت کی حالت ہی میں اسے نعوظ پیدا ہوا یا پہلے سے تھا تو اسی حالت میں بڑھ گیا اور انزال واقع نہ ہوا تو بیشک ہندہ ہمیشہ ہمیشہ بکر پر حرام ہو گئی کہ کبھی کسی طریقہ سے اسے ہاتھ نہیں لگا سکتا ہے، اور اگر ان شرائط میں کچھ کمی تھی تو ہندہ بدستور اس کے لیے حلال ہے، پھر جس حالت میں حکم حرمت دیا جائے گا اس کا بھی یہ حاصل ہر گز نہیں کہ نکاح بالفعل ٹوٹ گیا، یہ محض خطا ہے بلکہ اس وقت حکم صرف اس قدر ہوگا کہ ہندہ بکر پر حرام ابدی ہو گئی، بکر پر فرض کہ اسے چھوڑ دے اگر نہ چھوڑے گا سخت گناہ گار ہوگا اور ہندہ کے حق میں بھی گرفتار ہوگا۔ قال اللہ تعالیٰ:

فَأَمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ط 1. واذ قد فاته الامساك بالمعروف لزمه التسريح باحسان۔ بھلائی سے پاس رکھو یا اچھے انداز میں اس کو آزاد کردو، اس صورت میں پاس رکھنا ممکن نہیں رہا لہٰذا اس کو چاہئے کہ چھوڑ دے۔(ت)

مگر جب عہ تک وہ ترک نہ کرے یا حاکم شرع تفریق نہ کردے نکاح بیشک باقی ہے۔ دوسری جگہ ہرگز ہندہ کا نکاح جائز عہ: انظہر ھھنا فان الدرخص البتارکۃ بالزوج و حقق الشامي انھا تکون من المرأۃ ایضا وان لا فرق بینھا وبین الفسخ، وقد تقرران حرمۃ المصاھرۃ تفسد النکاح وان فی النکاح الفاسد لکل منھما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بھا اولا وانظر ان غیر البالغۃ ھل لھا او

لولیھا فسخ نکاحھا الفاسد تحرزا عن المعصیۃ ام ینتظر بلوغھا اذلا معصیہ منھا قبلہ والظاھر الاول فلیحرر(م) یہاں غور کرنا چاہئے کیونکہ در نے متارکہ کے حق خاوند کے لیے خاص کیا ہے، جبکہ علامہ شامی نے کہا کہ عورت کو بھی متارکہ کا حق ہے کیونکہ اس میں اور فسخ میں کوئی فرق نہیں اور یہ بات ثابت شدہ ہے کہ حرمت مصاہرہ نکاح کو فاسد کردیتی ہے۔ جبکہ نکاح فاسد میں خاوند و بیوی دونوں کو ایک دوسرے کی موجودگی ہو یا نہ ہو دخول کیا ہو نہ کیا ہو فسخ کا حق ہے، اور یہ بھی قابل غور ہے کہ کیا نا بالغۃ کے فاسد نکاح میں نا بالغہ یا اس کے ولی کو فسخ کا اختیار ہے تاکہ گناہ سے بچایا جاسکے یا اس کے بالغ ہونے کا انتظار کیا جائے گا اس بنا پر کہ اس سے قبل گناہ مقصود نہیں اور ظاہر پہلا احتمال ہے۔ اس کو واضح کرنا چاہئے۔ (ت)

No. Yes, after separation (mutaraka) or the decree of a Sharia judge, the father of Hindah will have the authority to marry her to anyone he chooses except Bakr. It is stated in Durr al-Mukhtar: "Prohibition by affinity (hurmat-e-musaharah) does not terminate the marriage until separation and the passing of the waiting period (iddah). After that, her marriage and intercourse with another person will be permissible; before that, it is not permissible. (After the occurrence of prohibition by affinity but before separation) the husband's intercourse will not be called zina (adultery)." In Radd al-Muhtar, it is said that even if many years pass, according to the text of Al-Hawi, she will be able to marry only after the judge's separation or mutual separation. (T) And Allah, Glorified and Exalted is He, knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most wise.

Problem 165: From Marehra Mutahhara, sent by Janab Sayyid Amir Haidar Sahib Qibla, 22 Dhu al-Qi'dah 1309 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah married her minor daughter to Bakr with her own and her husband's guardianship. Later, due to mutual disagreement, the idea arose to terminate this marriage in some way so that she could be married elsewhere. Hindah went on a journey accompanied by Bakr, a maidservant, a minor girl, six people in total, and a coachman from whom there was no veil (purdah). After eating at an inn, Hindah kept the leftovers near her head. Hindah slept on a cot, while the maidservant, Bakr, and the young girl slept on the floor below. At 2 AM, the maidservant and the young girl went to relieve themselves. Bakr was sleeping soundly. Hindah called out loudly, "Wake up quickly, I feel afraid." Bakr went near and intended to sit on the floor; she said, "Sit on my cot." He sat in a corner. Meanwhile, the maidservant returned and easily told Bakr, "Now you go and sleep." Bakr went back to sleep in his place. At 2 AM, Bakr got up to smoke a hookah; it seemed a dog had entered the house. Giving the hookah to the coachman, he went inside. It was dark; he tripped against the cot. Hindah called out to the maidservant and the coachman. Bakr immediately said, "It's me, I came to drive away the dog so it wouldn't spoil the food, everyone is asleep." In the morning, Hindah told the maidservant, "Bakr intended ill towards me." She asked, "When?" She said, "When you went to relieve yourself." She said, "I wasn't gone that long, why didn't you say something then so I could have asked Bakr?" She made him swear a solemn oath. Then they stayed together for a week and nothing was apparent. Upon reaching home, Hindah leveled an accusation. The maidservant and the coachman, under oath, state total ignorance of any such event, and Bakr also

takes hundreds of oaths of his innocence. Is the sole statement of Hindah reliable, and does the marriage of Bakr remain valid or what? Give the ruling, and may you be rewarded.

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Relations, Mujtabai Press, Delhi, 1/188 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibited Relations, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/283

नहीं। हाँ, मुतारका (अलगाव) या शरा के हाकिम की तफ़रीक के बाद, हिन्दह के पिता को अधिकार होगा कि वह बक्र के अलावा जिससे चाहे निकाह कर दे। दुर्रे मुख्तार में है: "हुरमते मुसाहरत (सम्बन्धजन्य निषेध) निकाह को खत्म नहीं करती जब तक कि मुतारका और इद्दत न गुज़र जाए। इसके बाद उसका किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह और सोहबत जायज़ होगी, इससे पहले जायज़ नहीं। (हुरमते मुसाहरत के बाद और मुतारका से पहले) शौहर की सोहबत को जिना (व्यभिचार) नहीं कहा जाएगा।" रद-उल-मुहतार में है कि चाहे कई साल गुज़र जाएँ हावी की इबारत के अनुसार क़ाज़ी की तफ़रीक या मुतारका के बाद ही वह निकाह कर सकेगी। (त) और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, जिसकी बड़ाई कामिल है, सबसे मुकम्मल और सबसे मज़बूत है।

मसला १६५: मारहरा मुतहरा से, जनाब सैय्यद अमीर हैदर साहब क़िबला द्वारा भेजा गया, २२ ज़िलक़ादा १३०९ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: हिन्दह ने अपनी नाबालिग़ बेटी का निकाह अपनी और अपने शौहर की विलायत (संरक्षण) में बक्र से किया। बाद में आपसी अनबन के कारण यह विचार आया कि इस निकाह को किसी तरह तोड़ देना चाहिए ताकि दूसरी जगह निकाह हो सके। हिन्दह सफर पर गई, साथ में बक्र, एक खादिमा (दासी), एक नाबालिग़ बच्ची, कुल छह लोग और एक गाड़ीवान जिससे पर्दा नहीं था, गए। सराय में खाना खाकर जो बचा हिन्दह ने अपने सिरहाने रख लिया। चारपाई पर हिन्दह सोई और नीचे फर्श पर खादिमा, बक्र और बच्ची सोये। रात के २ बजे खादिमा बच्ची के साथ पेशाब के लिए गई। बक्र बेखबर सो रहा था। हिन्दह ने ज़ोर से आवाज़ दी कि जल्दी होशियार हो जाओ, मुझे डर लग रहा है। बक्र पास गया और फर्श पर बैठने का इरादा किया, उसने कहा मेरी चारपाई पर बैठ जाओ, वह एक कोने में बैठ गया। इतने में खादिमा आ गई तो बक्र से सहजता से कहा अब तुम जाकर सो रहो, बक्र अपनी जगह पर सो रहा। रात २ बजे बक्र हुक्का पीने उठा, घर में कुत्ता घुसता हुआ महसूस हुआ, हुक्का गाड़ीवान को देकर अंदर आ गया। अंधेरा था, चारपाई से ठोकर लगी। हिन्दह ने खादिमा और गाड़ीवान को पुकारा। बक्र ने फ़ौरन कहा कि मैं हूँ, कुत्ता मारने आया हूँ कि खाना खराब न करे, सब सो रहे हैं। सुबह हिन्दह ने खादिमा से कहा कि बक्र ने मेरे साथ बदनीयती (बुरी नीयत) का इरादा किया। उसने पूछा, कब? कहा, जब तुम पेशाब के लिए गई थी। उसने कहा, मुझे इतनी क्या देर हुई थी और तुमने तभी क्यों नहीं कहा ताकि मैं बक्र से पूछती? उसने उसे सख्त कसम दे दी। फिर हफ्ता भर साथ रहे, कुछ ज़ाहिर न हुआ। घर आकर हिन्दह ने तोहमत (इल्ज़ाम) लगा दी। खादिमा और गाड़ीवान कसम खाकर अपनी ला-

इल्मी (अज्ञानता) बयान करते हैं और बक्र भी अपनी बेगुनाही की सैकड़ों कसमें खाता है। क्या हिन्दह का अकेला बयान भरोसे के लायक है और बक्र का निकाह कायम रहा या क्या? बयान फरमाएं, आपको अज्र मिलेगा।

---

१ दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/१८८ २ रद-उल-मुहतार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, दारुल इहया-उत-तुरास अल-अरबी बैरूत, २/२८३

पृष्ठ ७३९ में से ३२४

نہیں۔ ہاں بعد متارکہ یا تفریقِ حاکم شرع، پدرِ ہندہ کو اختیار ہوگا کہ بکر کے سوا جس سے چاہے نکاح کردے۔ در مختار میں ہے "حرمتِ مصاہرہ نکاح کو ختم نہیں کرتی حتیٰ کہ متارکہ اور عدت گزرجانے کے بعد اس کا کسی دوسرے شخص سے نکاح اور وطی جائز ہوگی، اس سے قبل جائز نہیں (حرمتِ مصاہرہ کے بعد متارکہ سے قبل) خاوند کی وطی کو زنا نہ کہا جائے گا، ردالمحتار میں ہے کہ اگرچہ کئی سال گزر جائیں اور حاوی کی عبارت کے مطابق قاضی کی تفریق یا متارکہ کے بعد ہی وہ نکاح کرسکے گی۔ (ت) واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔"

مسئلہ ۱۶۵: از مارہرہ مطہرہ مرسلہ جناب سید امیر حیدر صاحب قبلہ ۲۲ ذیقعدہ ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نے اپنی دختر نابالغہ کا نکاح بولایت خود وشوئے خود بکر سے کیا، بعدہ بوجہ نااتفاقی باہمی یہ خیال ہوا کہ یہ نکاح کسی شکل سے توڑنا چاہئے کہ دوسری جگہ نکاح ہوسکے، ہندہ سفر کو گئی، ہمراہی میں بکر اور ایک خادمہ اور ایک نابالغہ، چھ آدمی اور گاڑی بان جس سے پردہ نہ تھا، گئے، سرائے میں کھانا کھاکرجو بچا ہندہ نے اپنے سرہانے رکھوالیا، چارپائی پر ہندہ اور نیچے فرش پر خادمہ بکر و چھوکری سوئے، ۲ بجے شب کے خادمہ مع چھوکری پیشاب کو گئی، بکر غافل سوتا تھا، ہندہ نے بآوازِ سخت پکارا کہ جلد ہوشیار ہو مجھے خوف معلوم ہوتا ہے۔ بکر پاس گیا اور فرش پر بیٹھنے کا ارادہ کیا، کہا میری چارپائی پر بیٹھ جاؤ، وہ ایک گوشہ میں بیٹھ گیا اتنے میں خادمہ آگئی تو بکر سے بہ سہولت کہا اب تو جاکر سورہ، بکر اپنی جگہ پر سورہا، ۲ بجے شب کے بکر حقہ پینے اٹھا مکان میں کتا جاتا معلوم ہوا حقہ گاڑی بان کو دے کر اندر آگیا، اندھیرا تھا، چارپائی کو ٹھوکر لگی، ہندہ نے خادمہ اور گاڑی بان کو پکارا، بکر نے فوراً کہا میں ہوں کتا مارنے آیا ہوں کہ کھانا خراب نہ کرے، سب

سورہے ہیں۔ صبح کو ہندہ نے خادمہ سے کہا بکر نے میرے ساتھ بدنیتی کا ارادہ کیا، کہا کب؟ کہا جب تو پیشاب کو گئی تھی، کہا مجھے ایسی کیا دیر ہوئی تھی اور تم نے جبھی کیوں نہ کہا میں بکر سے پوچھتی ہوں، اسے سخت قسم دے دی، پھر ہفتہ بھر ساتھ رہے کچھ ظاہر نہ ہوا مکان پر آکر ہندہ نے بہتان باندھا، خادمہ اور گاڑی بان بقسم محض لاعلمی بیان کرتے ہیں اور بکر بھی اپنی بے قصوری کی صدہا قسمیں کھاتا ہے۔ آیا تنہا بیانِ ہندہ قابل وثوق ہے اور نکاحِ بکر قائم رہا یا کیا، بینوا توجروا

---

۱ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۸ ۲ ردالمحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۸۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

The Answer: The statement of a single woman is not admissible at all. Allah the Almighty says: "And bring to witness two just men from among you." (Quran 65:2). Therefore, the marriage definitely remains valid.

[Boxed Text] Left (Arabic): even assuming she is telling the truth, because our school of thought (Madhab) is that 'Hurmat-e-Musaharah' (prohibition through marriage relationship) does not terminate the marriage but renders it 'fasid' (invalid/ corrupted). Thus, abandonment by the husband or separation by a judge (Qazi) is necessary. As mentioned in Rad al-Muhtar, quoted from Al-Nahr via Al-Zayla'i (in summary). And Allah knows best. Right (Urdu): Even if the woman is accepted as telling the truth, because our school of thought is that 'Hurmat-e-Musaharah' does not terminate the marriage but renders it corrupt (fasid). Therefore, abandonment by the husband or separation by the judge is necessary. As is reported from Al-Nahr with reference to Al-Zayla'i in Rad al-Muhtar. (T)

Issue 166: From Raipur region, Jaipur, Nandaon Post Office, sent by Munshi Farzand Hasan Sahib, 28 Dhu al-Qi'dah 1309 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it permissible for a woman who is pregnant from a person to marry that person or someone else before giving birth or not? Explain with reference to the book; you will be rewarded on the Day of Reckoning.

The Answer: If the pregnancy is from a legitimate source (i.e., one in which lineage is established according to Sharia), she cannot marry anyone else before giving birth. Allah the Almighty says:

[Boxed Text] Left (Arabic): "And for those who are pregnant, their term [of 'iddah] is until they give birth." Right (Urdu): The 'iddah (waiting period) for pregnant women is until the birth of the child. (T)

Yes, marriage with the husband who caused the pregnancy is permissible. The scenario for this is: if the husband divorces her after she has become pregnant, marriage can take place even before delivery, provided it is not a 'Mughallazah' (irrevocable) divorce which requires 'Halala'.

[Boxed Text] Left (Arabic): It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: "By consensus, one can remarry his divorced wife (who was divorced by less than three pronouncements) during her 'iddah or after it. He cannot marry one divorced by three pronouncements until she has intercourse with another person through a valid marriage." (Abridged)

Right (Urdu): It is in Durr al-Mukhtar that one can remarry his divorced wife (divorced by Ba'in) before the completion of 'iddah or after it, by consensus. He cannot marry one who was given three divorces until she has a marriage and intercourse with another person. (Abridged) (T)

1. Quran 2/65
2. Rad al-Muhtar, Section on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/283
3. Quran 2/65
4. Durr al-Mukhtar, Chapter of Returning, Mujtabai Press Delhi, 220/1

फ़तावा रज़विया खंड 11

उत्तर: अकेली महिला का बयान मूल रूप से सुनवाई योग्य नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अपने में से दो न्यायप्रिय गवाह बनाओ।" (क़ुरान 65:2)। अतः निकाह निश्चित रूप से कायम है।

[बॉक्स का टेक्स्ट] बाएँ(अरबी): यहाँ तक कि अगर उसकी बात को सच भी मान लिया जाए, तो भी हमारा मज़हब यह है कि 'हुरमत-ए-मुसाहरत' निकाह को खत्म नहीं करती बल्कि उसे 'फ़ासिद' (दूषित) कर देती है। इसलिए पति द्वारा छोड़ दिया जाना या क़ाज़ी द्वारा अलगाव ज़रूरी है। जैसा कि 'रद अल-मुह्तार' में ज़ैलाई के हवाले से 'अल-नहर' से उद्धृत है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। दाएँ(उर्दू): यहाँ तक कि औरत को सच्चा भी तस्लीम किया जाए, इसलिए कि हमारा मज़हब यह है कि हुरमत-ए-मुसाहरत निकाह को खत्म नहीं करती बल्कि उसको फ़ासिद करती है। लिहाज़ा खाविन्द (पति) का मतारका या क़ाज़ी की तफ़रीक़ ज़रूरी है। जैसा कि रद अल-मुह्तार में ज़ैलाई के हवाले से नहर से मनक़ूल (उद्धृत) है। (त)

मसला 166: रायपुर क्षेत्र, जयपुर, डाकखाना नंडाओं से, मुंशी फ़र्ज़ंद हसन साहिब द्वारा प्रेषित, 28 ज़ी क़ादा 1309 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: जिस महिला को किसी व्यक्ति का गर्भ है, क्या उसके लिए प्रसव (बच्चा पैदा होने) से पहले उसी व्यक्ति से या किसी और से निकाह करना जायज़ है या नहीं? किताब के हवाले से स्पष्ट करें, हिसाब के दिन आपको इसका सवाब मिलेगा।

उत्तर: अगर गर्भ हलाल का है (यानी जिसमें शरिया के अनुसार वंश साबित हो), तो प्रसव से पहले उसका निकाह किसी और से नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

[बॉक्स का टेक्स्ट] बाएँ(अरबी): "और गर्भवती महिलाओं की इद्दत (अवधि) उनके बच्चे के जन्म तक है।" दाएँ(उर्दू): हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत बच्चे की पैदाइश तक है। (त)

हाँ, जिस पति का गर्भ है उससे निकाह जायज़ है। इसकी सूरत यह है कि गर्भ रहने के बाद अगर पति ने तलाक़ दे दी हो, तो प्रसव होने से पहले ही उससे निकाह हो सकता है, बशर्ते कि तलाक़ 'मुग़ल्ज़ह' न हो जिसमें 'हलाला' की ज़रूरत पड़ती है।

[बॉक्स का टेक्स्ट] बाएँ(अरबी): 'दुर अल-मुख्तार' में है: "सर्वसम्मति से, व्यक्ति अपनी उस तलाक़शुदा पत्नी से (जिसे तीन से कम तलाक़ दी गई हो) उसकी इद्दत के दौरान या उसके बाद निकाह कर सकता है। वह तीन तलाक़ वाली से निकाह नहीं कर सकता, जब तक कि वह किसी अन्य व्यक्ति से वैध निकाह के बाद संभोग न कर ले।" (संक्षिप्त) दाएँ(उर्दू): दुर मुख्तार में है कि अपनी मुतलाक़ा बाइना से इद्दत पूरी होने से क़ब्ल (पहले) या बा'द निकाह कर सकता है बिल-इज़्मा (सर्वसम्मति से), तीन तलाक़ वाली से निकाह नहीं कर सकता, जब तक किसी ग़ैर शख़्स से उसका निकाह और वती (संभोग) न हो जाए। (मुल्तक़तन) (त)

1. क़ुरान 2/65
2. रद अल-मुह्तार, फ़सल फ़िल-मुहर्रमात, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/283
3. क़ुरान 2/65
4. दुर अल-मुख्तार, बाब अर-रजअह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 220/1

पृष्ठ 325/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الجواب: تنہا ایک عورت کا بیان اصلاً قابلِ سماعت نہیں، قال اللہ تعالٰی: وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِنْكُمْ (اپنے دو عادل گواہ بناؤ۔ ت) نکاح بحر یقیناً قائم ہے

[خانہ] عربی: حتی علی فرض صدقها ایضا لان المذهب عندنا ان حرمة المصاهرة لا ترفع النکاح، وانما تفسده فلا بد من متارکة من زوج او تفریق من قاض کما فی ردالمحتار عن النهر عن الزیلعی (مفهوماً) واللہ تعالٰی اعلم اردو: حتی کہ عورت کو سچا بھی تسلیم کیا جائے، اس لیے کہ ہمارا مذہب یہ ہے کہ حرمت مصاہرہ نکاح کو ختم نہیں کرتی بلکہ اس کو فاسد کرتی ہے۔ لہذا خاوند کا متارکہ یا قاضی کی تفریق ضروری ہے۔ جیسا کہ ردالمحتار میں زیلعی کے حوالے سے نہر سے منقول ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۶: از رائے پور علاقہ جے پور ڈاکخانہ نڈاوں مرسلہ منشی فرزند حسن صاحب ۲۸ ذی قعدہ ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عورت کو جس شخص کا حمل ہو قبل وضع حمل اسی سے یا غیر سے نکاح کرنا اسے جائز ہے یا نہیں۔ بینوا بالکتاب توجروا یوم الحساب۔

الجواب: حمل اگر حلال کا ہے (یعنی وہ جس میں شرعاً نسب ثابت ہو) تو قبل از وضع اس کا نکاح کسی غیر سے نہیں ہوسکتا۔ قال اللہ تعالٰی:

[خانہ] عربی: وَأُوْلاتُ الأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ اردو: حاملہ عورتوں کی عدت بچے کی پیدائش تک ہے۔ (ت)

ہاں شوہر سے جس کا حمل ہے نکاح جائز، اس کی صورت یہ کہ بعد حمل رہنے کے شوہر نے طلاق دے دی تو اگرچہ ہنوز وضع حمل نہ ہوا اس سے نکاح ہوسکتا ہے بشرطیکہ طلاق مغلظہ نہ ہو جس میں حلالہ کی ضرورت پڑتی ہے۔

[خانہ] عربی: فی الدر المختار ینکح مبائنتہ بمادون الثلاث فی العدۃ وبعدھا بالاجماع لا مطلقۃ بالثلاث حتی یطأھا غیرہ بنکاح نافذ (ملتقطاً) اردو: در مختار میں ہے کہ اپنی مطلقہ بائنہ سے عدت پوری ہونے سے قبل یا بعد نکاح کرسکتا ہے بالاجماع، تین طلاق والی سے نکاح نہیں کرسکتا، جب تک کسی غیر شخص سے اس کا نکاح اور وطی نہ ہوجائے۔ (ملتقطاً) (ت)

۱ القرآن ۲/۶۵ ۲ ردالمحتار فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۸۳/۲ ۳ القرآن ۲/۶۵ ۴ درمختار باب الرجعۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۰/۱

Fatawa Razawiya Volume 11

And if there is pregnancy from adultery (in which the child's lineage is considered unknown in Sharia), marriage can be performed with the adulterous or non-adulterous woman, whether or not she has given birth. However, the difference is that if the one who committed adultery marries the woman pregnant by him, he is allowed to have intercourse with her, but if someone else marries her, he cannot touch her until delivery.

In al-Durr al-Mukhtar: The marriage of a woman pregnant from adultery is valid, not the marriage of a woman pregnant from someone else. Intercourse and related matters with her are forbidden until the birth of the child, and if the adulterer himself has married her, then intercourse is also permissible by consensus. End summary. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 167: From Anwla, 27 Rabi-ul-Awwal Sharif 1310 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid and Hinda had an illicit relationship; Zaid intended to marry her. Hinda's minor daughter Salma, who is nine years old, was married to Zaid by her uncle, presenting her as his own daughter, but the departure (consummation) has not yet occurred. Now Zaid has come to know that she is the daughter of the same Hinda with whom Zaid had an illicit relationship prior to this marriage. In this situation, what is the ruling regarding this marriage, and can Zaid marry Hinda after this marriage or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If this statement is true that Zaid had touched Hinda illicitly before this marriage, then this marriage which was performed with Hinda's daughter became absolutely unlawful and forbidden. It is obligatory upon him to immediately withdraw from it, and after that, he can marry Hinda.

For though the marriage of daughters makes the mothers forbidden, but that is when the marriage with the daughter is valid, and marriage with the daughter of a woman touched with lust is not valid due to the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharah). (T)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Persons, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/189

और अगर ज़िना (व्यभिचार) का गर्भ है (जिसमें बच्चे का वंश शरीयत में अज्ञात माना जाता है), तो ज़िना करने वाली या किसी अन्य महिला से, चाहे उसने प्रसव नहीं किया हो, निकाह किया जा सकता है। लेकिन फ़र्क यह है कि अगर खुद ज़िना करने वाले ने निकाह किया, जिसका गर्भ था, तो उसके साथ संभोग करना जायज़ है, और अगर किसी और ने किया, तो प्रसव होने तक वह उसे हाथ नहीं लगा सकता।

दुर्र-ए-मुख़्तार में है: ज़िना से गर्भवती महिला के साथ निकाह जायज़ है, लेकिन किसी और से गर्भवती महिला के साथ नहीं। उसके साथ संभोग और संबंधित कार्य बच्चे के जन्म तक हराम हैं, और अगर ज़िना करने वाले ने खुद उससे निकाह किया है, तो संभोग भी सर्वसम्मति से जायज़ है। संक्षेप। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला १६७: अनवला से, २७ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३१० हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद और हिंदा के बीच नाजायज़ संबंध थे। ज़ैद उससे निकाह का इरादा रखता था। हिंदा की नाबालिग बेटी सलमा, जिसकी उम्र नौ साल है, उसके चाचा ने उसे अपनी बेटी बताकर ज़ैद से उसका निकाह कर दिया, लेकिन अभी रुख़सती नहीं हुई है। अब ज़ैद को पता चला कि यह उसी हिंदा की बेटी है जिसके साथ इस निकाह से पहले ज़ैद का नाजायज़ रिश्ता रह चुका है। इस स्थिति में इस निकाह का क्या हुक्म है, और क्या ज़ैद इस निकाह के बाद हिंदा से निकाह कर सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: अगर यह बयान सच है कि ज़ैद इस निकाह से पहले हिंदा को नाजायज़ तौर पर छू चुका था, तो हिंदा की बेटी से किया गया यह निकाह पूरी तरह से नाजायज़ और हराम है। उस पर फ़र्ज़ है कि वह तुरंत इससे हाथ खींच ले और उसके बाद वह हिंदा से निकाह कर सकता है।

क्योंकि बेटियों से निकाह माताओं को हराम कर देता है, लेकिन यह तब होता है जब निकाह सही हो। और शहवत (वासना) के साथ छुई गई औरत की बेटी से निकाह 'हुरमत-ए-मुसाहरह' (रिश्तेदारी की मनाही) के कारण सही नहीं होता। (त)

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल-मुहर्रमात, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/१८९ पृष्ठ ३२६ ऑफ़ ७३९

اور اگر زنا کا حمل ہے (جس میں بچہ شرعاً مجہول النسب ٹھہرتا ہے) تو زانی و غیر زانی جس سے چاہے بے وضع حمل نکاح کر سکتی ہے کہ زنا کے پانی کی شرع میں اصلاً حرمت و عزت نہیں۔ مگر فرق اتنا ہے کہ اگر خود زانی سے نکاح جس کا حمل رہا تھا تو اسے صحبت کرنی بھی جائز ہو جائے گی اور غیر سے نکاح ہوا جب تک وضع حمل نہ ہو لے وہ ہاتھ نہیں لگا سکتا۔ فی الدرالمختار صح نکاح حبلی من زنا لا حبلی من غیرہ وان حرم وطؤھا ودواعیہ حتی تضع ولو نکحہا الزاني حل لہ وطؤھا اتفاقاً اھ ملخصاً۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم در مختار میں ہے: زنا سے حاملہ کے ساتھ نکاح جائز ہے نہ کہ غیر زنا کی حاملہ سے جبکہ اس سے وطی اور متعلقہ امور بچے کی پیدائش تک حرام ہیں، اور اس سے خود زانی نے نکاح کیا ہو تو وطی بھی بالاتفاق جائز ہے اھ ملخصاً (ت) مسئلہ ۱۶۷: از آنولہ ۲۷ ربیع الاول شریف ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید وہندہ میں ناجائز طور کی ملاقات تھی، زید اس سے ارادہ نکاح رکھتا تھا، ہندہ کی بیٹی سلمہ نابالغہ کو جس کی عمر نو برس کی ہے اس کے چچا نے اپنی بیٹی ظاہر کر کے زید سے نکاح کر دیا مگر ہنوز رخصت واقع نہ ہوئی، اب زید کو معلوم ہوا کہ یہ اسی ہندہ کی بیٹی ہے جس سے قبل اس نکاح کے زید کا ناجائز تعلق رہ چکا ہے، اس حالت میں اس نکاح کی نسبت کیا حکم ہے، اور زید بعد اس نکاح کے ہندہ سے نکاح کر سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: اگر یہ بیان واقعی ہے کہ زید اس نکاح سے پہلے ہندہ کو ناجائز طور پر ہاتھ لگا چکا تھا تو اس کا یہ نکاح کہ ہندہ کی بیٹی سے کیا گیا محض ناجائز و حرام ہوا، اس پر فرض ہے کہ فوراً اس سے دست بردار ہو اور بعد اس کے وہ ہندہ سے نکاح کر سکتا ہے۔ فان نکاح البنات وان کان یحرم الامھات لکن اذاکان صحیحاً ولا یصح النکاح مع بنت ممسوسۃ لحرمۃ المصاھرۃ۔ بیٹی سے نکاح کی وجہ سے

ماں اگرچہ حرام ہو جاتی ہے مگر اس وقت جب بیٹی سے صحیح نکاح ہو، اور حرمت مصاہرہ کی بنا پر شہوت کے ساتھ مس شدہ عورت کی بیٹی سے نکاح صحیح نہیں ہوتا۔ (ت)

۱ در مختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۹ Page 326 of 739

Volume Eleven Fatawa Ridawiyyah

In Durr al-Mukhtar: "Prohibited by affinity (musaharah) are the daughter of the wife with whom intercourse has taken place, and the mother and grandmothers of the wife absolutely, merely by a valid marriage contract." [1] Intercourse with a wife makes her daughter prohibited due to affinity, and the wife's mother and grandmothers also become prohibited for him merely by a valid marriage contract. (T)

In Radd al-Muhtar: "This excludes an invalid marriage, for it does not establish the prohibition of affinity merely by itself, but rather by intercourse or what stands in its place, such as touching with desire or looking with desire..." [2] etc. This rule applies to a valid marriage. As for an invalid marriage, the prohibition of affinity for mothers and grandmothers does not occur by marriage alone, but by intercourse or actions equivalent to intercourse, such as looking or touching with desire, etc. (T) And Allah subhanahu wa ta'ala knows best.

Problem 168: From Mouza Darbhanga, Post Office Rostra Bazar, Moti Pur, sent by Mulla Bashir Ali Sahab, 5 Jumada al-Ula 1310 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: is a female disciple (murida) prohibited (haram) for her spiritual guide (pir) or permissible (halal)? And were the pure wives, Hazrat Khadija and Hazrat Aisha, disciples of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, or not? Please clearly explain the prohibition or permissibility of such a marriage with reference to Hadith and jurisprudence. Clarify and be rewarded.

The Answer: It is absolutely permissible (halal) for a spiritual guide to marry his female disciple (murida). [Note 'A'] To consider it prohibited is against the Book, Sunnah, consensus of the Ummah, and analogy (qiyas).

Note 'A': It is clear from this that it is impermissible for a female disciple to come before her spiritual guide without a veil (hijab). The irony is that some ignorant and reckless pseudo-Sufis of this age use the false notion that "a female disciple is like a daughter" as a pretext. They command all the women trapped in their web of discipleship to come before them without a veil, and even sit with them in seclusion. Whereas these things are strictly forbidden. There is no spiritual guide greater than the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, yet he himself forbade women from coming before him recklessly. And the luminous Prophet never touched a non-mahram woman; when ladies came to him wishing to pledge allegiance (bai'at), he would... (Continued on the next page)

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press Delhi, 1/187. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/278.

दुर्रे मुख़्तार में है: "वैवाहिक निकटता (मुसाहारत) के कारण संभोग की गई पत्नी की बेटी हराम हो जाती है, और पत्नी की माँ और नानी-दादी भी पूर्ण रूप से केवल एक वैध निकाह अनुबंध से ही हराम हो जाती हैं।" [1] पत्नी के साथ संभोग करने पर उसकी बेटी वैवाहिक निकटता की वजह से हराम हो जाती है और पत्नी की माँ और नानी-दादी भी उस पर केवल सही निकाह की वजह से हराम हो जाती हैं। (त)

रद्दुल मुहतार में है: "यह अमान्य निकाह (निकाह फ़ासिद) को बाहर करता है क्योंकि वह केवल निकाह से मुसाहारत की हुरमत (प्रतिबंध) को अनिवार्य नहीं करता, बल्कि संभोग या उसके समान कार्यों जैसे कामुकता के साथ छूने या देखने से होता है..." [2] इत्यादि। सही निकाह का यह नियम है, जहाँ तक अमान्य निकाह का सवाल है, तो केवल निकाह से माताओं और नानी-दादियों की हुरमत नहीं होगी, बल्कि संभोग से होगी या संभोग के समान कार्यों जैसे कामुकता से देखने और छूने से होगी इत्यादि। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १६८: मौज़ा दरभंगा, डाकखाना रोस्ट्रा बाज़ार, स्थान मोतीपुर, प्रेषक मुल्ला बशीर अली साहब, ५ जमादी-उल-उला १३१० हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि मुरीदा (शिष्या) औरत अपने पीर (गुरु) पर हराम है या हलाल? और क्या अज़वाजे मुतहरात (पवित्र पत्नियाँ) हज़रत ख़दीजा और हज़रत आइशा, रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुरीदा थीं या नहीं? इस निकाह की हुरमत (वर्जना) और हिल्लत (वैधता) जो कुछ भी हो, हदीस और फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) के हवाले से स्पष्ट लिखें। बयान करें, पुण्य पायें।

उत्तर: पीर को अपनी मुरीदा से निकाह करना निश्चित रूप से हलाल [नोट 'अ'] है। इसे वर्जित समझना किताब, सुन्नत, उम्मत की सहमति (इज्मा) और कयास (तर्क) के विरुद्ध है।

नोट 'अ': इससे स्पष्ट है कि मुरीदा का अपने पीर के सामने बिना पर्दे के आना नाजायज़ है। अफ़सोस तो यह है कि इस ज़माने के कुछ अज्ञानी और निडर तथाकथित सूफ़ी इस झूठे मसले को कि "मुरीदा बेटी है" एक बहाना बना लेते हैं और उन तमाम औरतों को जो उनकी मुरीदी के जाल में फँसी होती हैं, यह निश्चित आदेश देते हैं कि हमारे सामने बिना पर्दे के आया करो, बल्कि उन्हें एकांत में लेकर बैठते हैं, जबकि ये बातें पूरी तरह हराम हैं। रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ा कोई पीर नहीं है, उन्होंने खुद अपने सामने औरतों को बेबाकी से आने से मना फरमाया, और कभी हुज़ूरे पुरनूर

ने किसी गैर-महरम औरत को हाथ नहीं लगाया। जो बीबियाँ खिदमत में हाज़िर होकर बैअत (दीक्षा) चाहती थीं, आप उनसे... (शेष अगले पृष्ठ पर)

फुटनोट्स: १. दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८७। २. रद्दुल मुहतार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बैरूत, २/२७८।

पृष्ठ ७३९ में से ३२७

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

در مختار میں ہے: حرم بالمصاهرة بنت زوجة الموطوئة و ام زوجته وجدا تها مطلقا بمجرد العقد الصحیح - 1 بیوی سے وطی کرنے پر اس کی بیٹی حرمت مصاہرت کی بنا پر حرام ہو جاتی ہے اور بیوی کی ماں اور دادیاں بھی اس پر محض صحیح نکاح کی بنا پر حرام ہو جاتی ہیں (ت)

رد المحتار میں ہے: احتراز عن النکاح الفاسد فانه لا یوجب بمجرده حرمة المصاهرة بل بالوطوء او ما یقوم مقامه من المس بشهوة والنظر بشهوة 2 الخ۔ صحیح نکاح کا یہ حکم ہے، رہا فاسد نکاح تو صرف نکاح سے حرمت مصاہرت ماؤں اور دادیوں کی نہ ہوگی بلکہ وطی سے ہوگی یا وطی کے قائم مقام امور شہوت سے دیکھنے اور چھونے سے ہوگی الخ (ت) واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۶۸: از موضوع در بھنگہ ڈاکخانہ روسٹرابازار مقام موتی پور مرسلہ ملا بشیر علی صاحب ۵ جمادی الاولی ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عورت مریدہ اپنے پیر پر حرام ہے یا حلال؟ اور ازواج مطہرات حضرت خدیجہ و حضرت عائشہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی مریدہ تھیں یا نہیں؟ اس نکاح کی حرمت و حلت جو کچھ ہو بحوالہ حدیث و فقہ صاف تحریر کریں۔ بینوا توجروا

الجواب: پیر کو اپنی مریدہ سے نکاح قطعاً حلال عہ ہے اسے ممنوع جاننا کتاب وسنت اجماع امت و قیاس

عہ: اس سے صاف ظاہر ہے کہ مریدہ کو اپنے پیر کے سامنے بے پردہ آنا ناجائز ہے، غضب تو یہ ہے کہ اس زمانے کے بعض جاہل بے باک متصوف اس جھوٹے مسئلہ کو کہ مریدہ بیٹی ہے دستاویز بنا لیتے ہیں اور تمام عورتوں کو جوان کی مریدی کے جال میں پھنسی ہوتی ہیں حکم

قطعی دیتے ہیں کہ ہمارے سامنے بے پردہ حجاب آیا کرو، بلکہ تنہائیوں میں انھیں لے کر بیٹھتے ہیں، حالانکہ یہ باتیں حرام قطعی ہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے زیادہ کوئی پیر نہیں وہ خود اپنے سامنے عورتوں کو بے باکانہ آنے سے منع فرماتے ، اور کبھی حضور پر نور نے نامحرم عورت کو ہاتھ نہ لگایا ، جو بیبیاں کہ حاضر خدمت ہو کر بیعت چاہتیں آپ ان سے (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 در مختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۷ 2 رد المحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۷۸

All four arguments are completely false and baseless according to the Shariah. From the Great Quran, because the Lord Almighty, after listing prohibited women, stated: 'And lawful to you are all others beyond these.' Necessarily, female disciples, not being mentioned among those prohibited, remain included in this ruling of lawfulness. From the Sunnah, because who is a greater Pir and Murshid than the Prophet, especially our luminous Master of the Universe, may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him and them all. For the Master is the Pir of all worlds. Then the Master, may Allah the Almighty's peace and blessings be upon him, married his own Ummah wives, among whom were the Mothers of the Believers, Hazrat Khadija al-Kubra and Hazrat Aisha Siddiqa, may Allah be pleased with them, who were high-ranking disciples and high-ranking wives. It is proven by the consensus of scholars that when Allah Almighty revealed the general prophethood of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him), the first to be honored with the grace of discipleship was Hazrat Umm-ul-Momineen Khadija al-Kubra (may Allah be pleased with her). If some ignorant people do not understand this, they must acknowledge that the Shaykhayn, Hazrat Siddiq-e-Akbar and Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with them), were the most superior and perfect disciples of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him). The saints say:

In the entire universe, there is no Pir like Mustafa (peace be upon him) | No Pir like Mustafa (peace be upon him) exists in the whole creation. And no disciple like Abu Bakr Siddiq (may Allah be pleased with him). | Nor is there any disciple like Abu Bakr Siddiq (may Allah be pleased with him). (T)

That ignorant notion that the relationship of Pir and disciple is exactly like a lineage relationship—if it were true, then a female disciple would be like a daughter, and the daughters and granddaughters of disciples would be so as well. Thus, how could the marriage of the two sons-in-law, Uthman Ghani and Ali Murtaza (may Allah be pleased with them), with the pure daughters of the Master of the Universe (peace and blessings be upon him) have been possible? On this assumption, the daughters would have been sisters. However, the evils of ignorance and foolishness are even greater than this. By consensus, to this day, no scholar in the entire world has held this marriage to be prohibited.

(Remaining footnote from previous page) They would take verbal allegiance and say 'your allegiance is done'; they never took allegiance by holding hands. May Allah the

Almighty protect us from the deceptions of Satan. And Iblis, with his deception, misled some ignorant men, instilling in their minds that since our circumstances are not hidden from our Murshid, why should we make our women observe Purdah from the Pir Sahib? Thus, without any hesitation or suspicion, the Pir Sahib would enter the women's quarters of the house in the presence or absence of the master of the house and rest there. This was an eyewitness account of this sinful writer which was stated, and Refuge is sought with Allah the Almighty, (Maulvi Nawab) Sultan احمدا Khan, Bareilly.

1 Al-Quran 4/24 Page 328 of 739

शरीयत के चारों दलीलें पूरी तरह से बातिल (झूठी) और बेबुनियाद हैं। क़ुरआन-ए-अज़ीम से इस तरह कि मौला अज़्वजल ने हराम औरतों को गिनाकर फ़रमाया: 'और उनके सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल हैं'। लिहाज़ा, मुरीदा (शिष्या) भी उन मोहर्रमात (वर्जित औरतों) में ज़िक्र नहीं की गई, इसलिए वह हलाल होने के हुक्म में शामिल रही। सुन्नत से इस तरह कि नबी से ज़्यादा पीर-ओ-मुर्शिद कौन है, ख़ास तौर पर हमारे हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, क्योंकि हुज़ूर तो तमाम जहानों के पीर हैं। फिर हुज़ूर वाला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मती बीवियों ही से निकाह फ़रमाया, जिनमें हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा-तुल-कुबरा और हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा आला दर्जे की मुरीदा और आला दर्जे की बीवियाँ हैं। उलमा के इत्तेफ़ाक़ से यह साबित है कि जब अल्लाह अज़्वजल ने हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नबूवत-ए-आम्मा को ज़ाहिर फ़रमाया, तो सबसे पहले हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा शर्फ़ए-इरादत (मुरीद होने) से मुशर्रफ़ हुईं। अगर कुछ जाहिलों की समझ में यह न आए तो वे यह मानेंगे कि हज़रत शैख़ैन हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर और फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सबसे अफ़ज़ल और कामिल मुरीद थे। औलिया-ए-किराम फ़रमाते हैं:

ता जहाँ अस्त न हमचूँ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पीरे | पूरी कायनात में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जैसा न बूद न हमचूँ अबू बक्र सिद्दीक़ मुरीदे। | कोई पीर है और न अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसा कोई मुरीद है। (त)

वह जाहिलाना ख़याल कि पीरी और मुरीदी का रिश्ता ठीक वैसा ही है जैसा नसब (ख़ून) का रिश्ता, अगर यह सच होता तो मुरीदा अपनी बेटी होती, मुरीदों की बेटियाँ पोतियाँ होतीं। इसी तरह दामादों हज़रत उस्मान ग़नी और अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का निकाह हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पाक बेटियों से कैसे हो सकता था? इस लिहाज़ से वे बेटियाँ बहनें होतीं। लेकिन जहालत और बेवकूफ़ी की बुराइयाँ इससे भी ज़्यादा हैं। इजमा (आम राय) से इस तरह कि आज तक पूरी दुनिया में कोई भी आलिम इस निकाह की हुरमत (मनाही) का कायल नहीं हुआ।

(पिछले सफ़े के हाशिये का बाक़ी हिस्सा) वे ज़बानी बैअत लेते और फ़रमाते कि तुम्हारी बैअत हो गई, कभी हाथ में हाथ लेकर बैअत नहीं ली। अल्लाह सुब्हानहु शैतान की मकरी (चालों) से महफ़ूज़ रखे। और कुछ जाहिल मर्दों को इब्लीस ने अपनी चालों से इस तरह बरगलाया और उनके ज़ेहन में यह बिठा दिया कि जब हमारे हालात हमारे मुर्शिद से छिपे नहीं हैं, तो हम अपनी औरतों को पीर साहब से पर्दा क्यों कराएं? लिहाज़ा, बिना किसी झिझक के पीर साहब घर के मालिक की मौजूदगी या ग़ैर-मौजूदगी में घर की औरतों के हिस्से में जाते और वहीं आराम करते थे। यह इस गुनाहगार लिखने वाले का आँखों देखा हाल था जो बयान में आया, और अल्लाह तआला की पनाह, (मौलवी नवाब) सुल्तान अहमद ख़ान, बरेली।

1 अल-क़ुरआन 4/24 सफ़ा 739 में से 328

چاروں دلائل شرع سے محض باطل و بے اصل ہے قرآن عظیم سے یوں کہ مولٰی عزوجل نے حرام عورتیں گنوا کر فرمایا: وَأُحِلَّ لَكُم مَّا وَرَاءَ ذٰلِكُمْ ان کے سوا سب عورتیں تمہارے لیے حلال ہیں، لاجرم مریدہ بھی کہ ان محرمات میں ذکر نہ فرمائی اس حکم حلت میں داخل رہی سنت سے یوں کہ نبی سے زیادہ پیر و مرشد کون ہے، خصوصاً ہمارے حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلیہم اجمعین و بارک وسلم کہ حضور تو تمام جہانوں کے پیر ہیں پھر حضور والا صلوات اللہ تعالٰی وسلامہ علیہ نے اپنی امتی بیویوں ہی سے نکاح فرمایا جن میں حضرت ام المومنین خدیجہ الکبرٰی و حضرت ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہما اعلٰی درجہ کی مریدہ اور اعلٰی درجہ کی بیبیاں ہیں، باتفاق علماء ثابت کہ جب اللہ عزوجل نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی نبوت عامہ کو ظاہر فرمایا، سب سے پہلے حضرت ام المومنین خدیجہ الکبرٰی رضی اللہ تعالٰی عنہا شرف ارادت سے مشرف ہوئیں، بعض جاہلوں کی سمجھ میں یوں نہ آئے تو یہ مانیں گے کہ حضرات شیخین حضرت صدیق اکبر و فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہما حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سب سے افضل واکمل مرید تھے، اولیاء کرام فرماتے ہیں:

تاجہاں ست نہ ہچو مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پیرے | پوری کائنات میں مصطفٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم جیسا نہ بود نہ ہچو ابوبکر صدیق مریدے۔ | کوئی پیر ہے اور نہ ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ جیسا کوئی مرید ہے۔ (ت)

وہ جاہلانہ خیال کہ پیری و مریدی کا رشتہ بعینہ مثل رشتہ نسب کے ہے، اگر سچا ہوتا تو مریدہ اپنی بیٹی ہوتی، مریدوں کی بیٹیاں پوتیاں ہوتیں، یونہی ختنین عثمان غنی و علی مرتضٰی رضی اللہ

تعالٰی عنہما کا نکاح بنات مطہرات حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے کیونکر ہوسکتا، اس تقدیر پر صاحبزادیاں بہنیں ہوتیں، مگر جہل و سفاہت کے مفاسد اس سے بھی زائد ہیں، اجماع سے یوں کہ آج تک تمام عالم میں کوئی عالم اس نکاح کی حرمت کا قائل نہ ہوا،

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) زبانی بیعت لیتے، اور فرماتے تمہاری بیعت ہوگئی کبھی ہاتھ میں ہاتھ لے کر بیعت نہ لی شیطان کے مکر سے اللہ سبحانہ محفوظ رکھے، اور بعض جاہل مردوں کو ابلیس باتلبیس نے یوں ورغلایا اور ان کے ذہن میں یہ سمایا کہ جب ہمارے حالات ہمارے مرشد پر پوشیدہ نہیں تو ہم کیوں اپنی عورتوں کا پیرجی سے پردہ کرائیں، پس بے غل و غش پیر صاحب بحالت موجودگی و عدم موجودگی صاحب خانہ کے زنانہ میں جاتے اور وہیں آرام کرتے ہیں، یہ راقم آثم کا چشم دید تھا جو بیان میں آیا ، والعیاذ باللہ تعالیٰ، (مولوی نواب) سلطان احمد خان، بریلوی)

Fatawa Razawiyya, Volume 11

The books of all schools of jurisprudence are available; no one has counted a female disciple (mureeda) among the prohibited degrees of marriage (mahramat). By analogy, the relationship between a teacher and a student is also like that between a spiritual guide (Pir) and a disciple (Mureed). Both the guide and the teacher are considered in place of a father, as stated in the Hadith itself:

"Verily, I am to you as a father is, teaching you."[1] - Reported by Ahmad, Abu Dawood, An-Nasa'i, and Ibn Hibban from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). (T)

In fact, the relationship of a spiritual guide and disciple is itself a form of teacher and student relationship. If this false notion were correct, then marrying one's own female student would also be forbidden, and teaching a woman would lead to the dissolution of marriage because she would then become like his daughter. However, it is proven from the Quran and Hadith that one can make one's wife a student and also marry one's own female student.

Allah Almighty says: "O you who have believed, protect yourselves and your families from a Fire..."[2]

It is clear that protecting one's family from Hell is inconceivable without teaching them the religious rules (masa'il), because avoiding sin without action, and action without knowledge, is not possible. Thus, the Holy Quran clearly commands to teach your women the knowledge of religion and guide them to act upon it. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"A man who has a slave-girl and provides her with food and does it well, then educates her and does it well, then teaches her and does it well, then manumits her and marries her – for him is a double reward."[3] - Reported by the Imams Ahmad, al-Bukhari, Muslim, at-Tirmidhi, an-Nasa'i, and Ibn Majah from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him). (T)

---

[1] Sunan Abu Dawood, Chapter on the dislike of facing the Qibla when relieving oneself, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/3 [2] Al-Quran, 66/6 [3] Sahih Bukhari, Chapter on a man teaching his slave-girl and family, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/20

फ़तावा रज़विया, खंड ११

सभी संप्रदायों (मज़ाहिब) की फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) की पुस्तकें उपलब्ध हैं, किसी ने भी मुरीदा (शिष्या) को निकाह के लिए वर्जित महिलाओं (महरमात) में नहीं गिना है। तर्क(क़ियास) से यह कि उस्ताद और शागिर्द (शिक्षक और छात्र) का रिश्ता भी पीरी और मुरीदी (गुरु और शिष्य) के रिश्ते के समान है। पीर और उस्ताद दोनों को पिता के स्थान पर माना जाता है, जैसा कि हदीस में स्वयं फ़रमाया गया है:

"बेशक, मैं तुम्हारे लिए पिता के समान हूँ, तुम्हें शिक्षा देता हूँ।"[1] - इसे अहमद, अबू दाऊद, नसाई और इब्न हिब्बान ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के माध्यम से रिवायत किया है। (त)

बल्कि पीरी और मुरीदी भी स्वयं उस्तादी और शागिर्दी ही है। यदि यह निराधार विचार सही होता, तो अपनी शिष्या (शागिर्द औरत) से निकाह करना भी हराम होता और औरत को इल्म (ज्ञान) सिखाना निकाह के समाप्त होने का कारण बनता कि अब वह उसकी बेटी हो गई है, जबकि कुरआन और हदीस से पत्नी को शागिर्द बनाना और अपनी शागिर्द औरत को निकाह में लाना, दोनों बातें सिद्ध हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "ऐ ईमान वालो! अपने आप को और अपने घर वालों को आग (दोज़ख़) से बचाओ।"[2]

ज़ाहिर है कि घर वालों को दोज़ख़ से बचाना बिना मसाइल (नियमों) के सिखाए मुमकिन नहीं, क्योंकि बिना अमल के बचना और बिना इल्म के अमल मयस्सर नहीं। तो कुरआन मजीद साफ़ हुक्म फ़रमाता है कि अपनी औरतों को दीन का इल्म सिखाओ और उस पर अमल करने की हिदायत करो। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"जिस किसी के पास एक दासी (कनीज़) हो, वह उसे खिलाए और अच्छा खिलाए, फिर उसे अदब सिखाए और बेहतरीन सिखाए, और उसे तालीम दे और खूब तालीम दे, फिर उसे आज़ाद करके अपने निकाह में लाए, तो उस व्यक्ति को दोहरा सवाब (पुण्य) मिलेगा।"[3] - इसे इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्न माजा ने अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (त)

---

[1] सुनन अबू दाऊद, हाजत रफ़ा करने के समय क़िबले की ओर मुँह करने की नापसंदगी का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, १/३ [2] अल-कुरआन, ६६/६ [3] सहीह बुखारी, व्यक्ति का अपनी दासी और परिवार को शिक्षित करने का अध्याय, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, १/२०

पृष्ठ ३२९/७३१

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

فقہائے جملہ مذاہب کی کتابیں موجود ، کسی نے مریدہ کو محرمات سے نہ گنا ، قیاس سے یوں کہ رشتہ استادی و شاگردی بھی تو مثل رشتہ پیری و مریدی ہے۔ پیر و استاد دونوں بجائے باپ کے مانے جاتے ہیں ، خود حدیث میں فرمایا :

انما انا لکم بمنزلۃ الوالد اعلمکم 1۔ رواہ احمد وابوداؤد والنسائی و ابن حبان عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ میں تمہارے لیے بمنزلہ والد ہوں تمہیں تعلیم دیتا ہوں، اس کو احمد، ابوداؤد، نسائی اور ابن حبان نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے بذریعہ ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ روایت کیا ہے۔ (ت)

بلکہ پیری و مریدی بھی خود استادی و شاگردی ہے۔ اگر یہ خیال باطل ٹھیک ہوتا تو اپنی شاگرد عورت سے بھی نکاح حرام ہوتا اور عورت کو علم سکھانا نکاح جاتے رہنے کا باعث ہوتا کہ اب وہ اس کی بیٹی ہو گئی حالانکہ قرآن و حدیث سے زوجہ کو شاگرد کرنا اور اپنی شاگرد عورت کو نکاح میں لانا دونوں باتیں ثابت۔

قال اللہ تعالٰی: یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَکُمْ وَاَھْلِیْکُمْ نَارًا 2۔ اے ایمان والو! اپنی جانوں اور اپنے گھر والوں کو دوزخ سے بچاؤ۔

ظاہر ہے کہ گھر والوں کو دوزخ سے بچانا بغیر مسائل سکھائے متصور نہیں کہ بچنا بے عمل اور عمل بے علم میسر نہیں، تو قرآن مجید صاف حکم فرماتا ہے کہ اپنی عورتوں کو علم دین سکھاؤ اور اس پر عمل کی ہدایت کرو، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

رجل کانت له امة فغذاها فاحسن غذاءها ثم ادبها فاحسن تادیبها وعلمها فاحسن تعلیمها ثم اعتقها وتزوجها فله اجران 3۔ رواہ الائمة احمد والبخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجة عن ابی موسٰی الاشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ یعنی جو کوئی کنیز رکھتا ہے اسے کھلائے اور اچھا کھلائے پھر ادب سکھائے اور بہتر سکھائے اور علم پڑھائے اور خوب پڑھائے، پھر اسے آزاد کر کے اپنے نکاح میں لائے وہ شخص دوہرا ثواب پائے (اس کو احمد، بخاری، مسلم، ترمذی، نسائی اور ابن ماجہ نے ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ (ت)

---

1 سنن ابو داؤد باب کراھیة استقبال القبلة عند قضاء الحاجة آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۳ 2 القرآن ۶/۶۶ 3 صحیح بخاری باب تعلیم الرجل امته واھله قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۲۰

Fatawa-e-Razviya, Volume 11

It is the ignorance of the ignorant to claim that marrying a female disciple (murida) is impermissible and to make the husband and wife disciples without hesitation. If they were father and daughter, they would have become real brother and sister [through this logic]. Anyone who considers such a marriage forbidden commits an open slander against the pure Shariah and declares what Allah has made permissible as forbidden. Repentance is obligatory upon him. May Allah grant guidance, Ameen! And Allah knows best.

Problem 169: 13 Sha'ban 1311 AH What do the scholars of religion say regarding the issue that the prevalent beliefs held by Shiites in this age, especially the Shiites of Lucknow—is a Sunni's marriage with their daughter valid or not? And is the offspring entitled to the father's inheritance or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Today, common Rafizis (Tabarra'i), may Allah Almighty forsake them, hold blasphemous beliefs. Rarely will one be found among them who does not believe that something has been subtracted from the Holy Quran, and who does not consider the Commander of the Faithful, the Master of Muslims, Ali al-Murtaza, and the rest of the pure Imams (may Allah Almighty honor their faces) superior to the noble past prophets (upon our noble Prophet and upon them be the best of prayers and salutations). Both these beliefs are pure blasphemy. The Mujtahid of Lucknow, in his sealed fatwa, clearly explicitly stated these two cursed beliefs. Even if one among them does not personally hold this belief (hypothetically), it is unlikely that after seeing the Mujtahid's fatwa, far from considering him a disbeliever, he would not himself come to believe in it. And whoever, knowing such a person's belief, does not consider him a disbeliever, is himself a disbeliever: "Whoever doubts their disbelief and punishment, indeed he has disbelieved." (1) So today, finding someone among the Tabarra'i Rafizis who could even weakly be called a Muslim would perhaps be as difficult as finding a man of yellowish complexion among Ethiopian Zanjis or a white-colored crow. The ruling for such Rafizis is exactly like that for apostates (murtadd), (2) as explicitly stated in Al-Zahiriyya, Al-Hindiyya, Al-Hadiqa al-Nadiyya, and other books of jurisprudence. Therefore, the daughter of Rafizis who holds such blasphemous beliefs cannot be married to a Sunni or a non-Sunni, because an apostate woman is not fundamentally a subject for marriage at all, (3) as stated in Ad-Durr al-Mukhtar, Al-Alamgiriyya, and common books.

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Apostate, Mujtabai Press Delhi, 1/356

2. Fatawa Hindiyya, Chapter on the Rulings of Apostates, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/264
3. Fatawa Hindiyya, Section Seven, Prohibitions due to Shirk, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/282

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

यह जाहिलों की जाहिलियत है कि मुरीदा से निकाह को नाज़ायज़ बताएं और पति-पत्नी दोनों को बिना किसी हिचक के मुरीद बना दें। अगर वे पिता-पुत्री होते, तो वे सगे भाई-बहन हो जाते [इस तर्क से]। जो कोई ऐसे निकाह को वर्जित मानता है, वह पवित्र शरीयत पर खुल्लम-खुल्ला आरोप लगाता है और अल्लाह द्वारा हलाल की गई चीज़ को हराम ठहराता है। उस पर तौबा (पश्चात्ताप) अनिवार्य है। अल्लाह हिदायत दे, आमीन! और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला १६९: १३ शाबान १३११ हिजरी दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि वर्तमान समय में प्रचलित शिया अकीदा (विश्वास) रखने वाले, विशेष रूप से लखनऊ के शिया—उनकी पुत्री से सुन्नी का निकाह जायज़ है या नहीं? और क्या उसकी संतान पिता की विरासत की हकदार है या नहीं? बयान फरमाएं, आपको सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: आजकल के आम राफ़िज़ी (तबर्राई), अल्लाह तआला उन्हें बेसहारा छोड़े, कुफ़्रिया (ईशनिंदापूर्ण) अकीदे रखते हैं। उनमें से शायद ही कोई ऐसा निकले जो यह न मानता हो कि कुरान मजीद में से कुछ घट गया है, और जो अमीरुल मोमिनीन मौला-ए-मुस्लिमीन अली मुर्तज़ा और बाकी आइमा अतहार (अल्लाह उनके चेहरों को सम्मानित करे) को पिछले महान नबियों (हमारे नबी और उन पर बेहतरीन दुरूद और सलाम हो) से श्रेष्ठ न मानता हो। और ये दोनों अकीदे शुद्ध कुफ़्र हैं। लखनऊ के मुज्तहिद ने अपने मोहरबंद फतवे में इन दोनों शापित अकीदों को स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया है। अगर कोई उनमें से स्वयं यह विश्वास (मान लें) न भी रखता हो, फिर भी यह उम्मीद नहीं है कि मुज्तहिद का फतवा देखकर उसे काफ़िर जानना तो दूर, वह खुद भी उस पर विश्वास न ले आए। और ऐसे अकीदे वाले के अकीदे की जानकारी होने पर जो उसे काफ़िर न जाने, वह स्वयं काफ़िर है: "जिसने उनके कुफ़्र और अज़ाब में शक किया, वह यकीनन काफ़िर हो गया।" (१) तो आज के ज़माने में तबर्राई राफ़िज़ियों में किसी ऐसे व्यक्ति का मिलना जिसे कमज़ोर तौर पर भी मुसलमान कहा जा सके, शायद उतना ही कठिन होगा जितना हबशी ज़ंजियों में चम्पई रंग का आदमी या सफेद रंग का कौआ। ऐसे राफ़िज़ियों का हुक्म बिल्कुल मुर्तदों (धर्मत्यागियों) के समान है, (२) जैसा कि ज़हीरिया, हिन्दिया और हदीका नदिय्या आदि फिक्ह की किताबों में स्पष्ट किया गया है। अत; राफ़िज़ियों की वह पुत्री जो ऐसे ही कुफ़्रिया अकीदे रखती हो, उससे किसी सुन्नी या गैर-सुन्नी का निकाह नहीं हो

सकता क्योंकि मुर्तदा (धर्मत्यागी महिला) मूल रूप से निकाह के योग्य ही नहीं होती, (३) जैसा कि अद्दुरुल मुख्तार, आलमगीरिया और आम किताबों में उल्लेख किया गया है।

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल मुर्तद, मतबा मुजतबाई देहली, १/३५६
2. फतावा हिन्दिया, बाब फी अहकामुल मुर्तदीन, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, २/२६४
3. फतावा हिन्दिया, अल-क़िस्मुस साबेअ अल-मुहर्रमात बिश-शिर्क, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, २/२८२

جاہلوں کی جہالت کہ مریدہ سے نکاح ناجائز بتائیں اور زن و شو دونوں کو بے تکلف مرید بنائیں، وہ دونوں اگر باپ بیٹی تھے یہ دونوں سگے بہن بھائی ہوئے، اس نکاح کو ممنوع جاننے والا شریعت مطہرہ پر کھلا ہوا افترا کرتا اور حلالِ خدا کو حرام ٹھہراتا ہے۔ اس پر توبہ فرض ہے، اللہ تعالٰی ہدایت بخشے، آمین! واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۶۹: ۱۳ شعبان ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ فی زمانہ جو عقیدہ مروجہ شیعہ رکھتے ہیں علی الخصوص شیعہ لکھنو کے ان کی دختر سے نکاح سنی کا درست ہے یا نہیں اور اولاد اس کی مستحق ترکہ پدری کی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: آج کل عام روافض تبرائی خذلہم اللہ تعالٰی عقائد کفریہ رکھتے ہیں ان میں کوئی کم ایسا نکلے گا جو قرآن مجید میں سے کچھ گھٹ جانا نہ مانتا ہو اور حضرت امیر المومنین مولی المسلمین علی مرتضی و باقی ائمہ اطہار کرم اللہ تعالٰی وجوہہم کو حضرات علیہ انبیاء سابقین علی نبینا الکریم وعلیہم افضل الصلوٰۃ والتسلیم سے افضل نہ جانتا ہو، اور یہ دونوں عقیدے کفر خالص ہیں مجتہد لکھنو نے اپنے مہری فتوے میں ان دونوں ملعون عقیدوں کی صاف تصریح کی جو ان میں خود یہ اعتقاد (بالفرض) نہ بھی رکھتا ہو تاہم اس سے یہ امید نہیں کہ مجتہد کا فتوی دیکھ کر اسے کافر جاننا درکنار خود بھی اس پر اعتقاد نہ لے آئے اور ایسے عقیدے والے کو اس کے عقیدے پر مطلع ہو کر جو کافر نہ جانے خود کافر ہے من شك في كفره وعذابه فقد كفر ۱ (جس نے ان کے کفر اور عذاب میں شک کیا وہ کافر ہے۔ت) تو آج کل تبرائی رافضیوں میں کسی ایسے شخص کا ملنا جسے ضعیف طور پر بھی مسلمان کہہ سکیں شاید ایسا ہی دشوار ہو گا جیسے حبشیوں زنجیوں میں چمپئی رنگت کا آدمی یا سپید رنگ کا کوا، ایسے رافضیوں کا حکم بالکل مثل

مرتدین ہے ۲ کما صرح به في الظهيرية والهندية والحديقة الندية وغيرها من الكتب الفقهية (جیسا کہ ظہیریہ، ہندیہ، اور حدیقہ وغیرہ کتبِ فقہ میں اس کی تصریح ہے۔ت) پس دختر رافضیان جو ایسے ہی عقائد کفریہ رکھتی ہو اس سے سنی یا غیر سنی کسی کا نکاح نہیں ہو سکتا کہ مرتدہ اصلاً محلِ نکاح نہیں ۳ کما نص علیه في الدر المختار والعالمگیریة وعامة الاسفار

۱ در مختار باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۵۶ ۲ فتاوٰی ہندیہ باب فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۲۶۴ ۳ فتاوٰی ہندیہ القسم السابع المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۸۲

Fatawa-e-Razvia, Volume 11

(As stated in Durr-e-Mukhtar, Alamgiriyah and common books. T) Any offspring from this will definitely be illegitimate (born of adultery), and absolutely deprived of paternal inheritance, because according to Sharia, an illegitimate child has no father at all.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:	**For the adulterer, there is deprivation. (T)**
1. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding the adulterer:	(Reference)

And if the said daughter does not hold such beliefs but is a Muslim, then a Muslim can marry her. The offspring will be of legitimate lineage and entitled to paternal inheritance. Allah Almighty knows best, and His knowledge is most majestic, and His glory is most complete and perfect.

13 Sha'ban al-Mu'azzam 1311 AH

Problem 170: What do the scholars of religion say regarding the issue that are the children of current Shi'as illegitimate or legitimate? If she is illegitimate, then in the sight of Allah, can an illegitimate woman marry a Sunni man or not? And will any harm occur to the children of her womb or not? Clarify and be rewarded.

Answer: Among them, whether it's a man or a woman, whoever holds a blasphemous (kufr) belief, their offspring is illegitimate.

There is absolutely no marriage for an apostate man or an apostate woman, even with someone like them in apostasy 2, as clarified by the noble Imams.	**There can be absolutely no marriage for an apostate man or woman, even with a similar apostate, as clarified by the noble Imams. (T)**

Yes, if both husband and wife are free from blasphemous beliefs, then the offspring is legitimate. And the marriage of an illegitimate Rafidi woman to a Sunni is possible as long as she herself does not hold blasphemous beliefs. In this case, there is no harm to the children of her womb. And if she herself holds a blasphemous belief like her parents, then she herself is a product of forbidden semen, and her offspring will also be illegitimate, whether fathered by a Rafidi or a Sunni. And marriage with her is not possible at all for anyone. Allah Almighty knows best.

Problem 171: A woman became pregnant by a man, and after knowing about the pregnancy, the woman wants the secret not to be revealed; will the marriage contract during pregnancy be valid or not? Clarify and be rewarded.

Answer: It is valid even if it is from a non-adulterer, but intercourse and its preliminaries are not permissible for him until delivery. And if it is from the one who committed adultery...

---

1 Sahih Muslim, Chapter: The child belongs to the bed, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/470. 2 Fatawa Hindiyah, Section 7: Prohibitions due to Shirk, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/282.

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

(जैसा कि दुर्रे मुख्तार, आलमगीरिया और आम किताबों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है। टी) इससे होने वाली संतान निश्चित रूप से 'वल्द-उल-ज़िना' (अवैध) होगी और पैतृक विरासत से पूरी तरह वंचित होगी, क्योंकि शरीयत के अनुसार अवैध संतान का कोई पिता नहीं होता।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: ज़ानी के लिए वंचना है। (टी)

और अगर उक्त पुत्री ऐसे अकीदे (विश्वास) नहीं रखती बल्कि मुसलमान है, तो एक मुसलमान का उससे निकाह हो सकता है। संतान वैध वंशावली की होगी और पैतृक विरासत की हकदार होगी। अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे महान है, और उसकी महिमा सबसे पूर्ण और दृढ़ है।

13 शाबान अल-मुअज़्ज़म 1311 हिजरी

मसला 170: उलमा-ए-दीन इस मसले के बारे में क्या फरमाते हैं कि वर्तमान शियाओं की संतान अवैध है या वैध? अगर वह अवैध है, तो अल्लाह के नज़दीक एक अवैध महिला का निकाह सुन्नी पुरुष से हो सकता है या नहीं? और क्या उसके गर्भ से होने वाली संतान को कोई नुकसान होगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: उनमें से, चाहे पुरुष हो या महिला, जिसका अकीदा कुफ़्रिया (ईश-निंदापूर्ण) है, उसकी संतान अवैध है।

धर्मत्यागी पुरुष और धर्मत्यागी महिला के लिए बिल्कुल कोई निकाह नहीं है, यहाँ तक कि उनके जैसे धर्मत्यागी के साथ भी 2, जैसा कि महान इमामों ने स्पष्ट किया है।

मरतद (धर्मत्यागी) मर्द और औरत का बिल्कुल किसी से निकाह नहीं हो सकता हत्ता कि (यहाँ तक कि) उन जैसे मरतद से भी, जैसा कि इस पर अइम्मा-ए-बुज़ुर्गवार ने तसरीह (स्पष्टीकरण) की है। (टी)

हाँ, अगर पति-पत्नी दोनों कुफ़्रिया अकीदों से पाक (मुक्त) हैं, तो संतान वैध है। और एक अवैध राफ़िज़ी महिला का निकाह सुन्नी से हो सकता है बशर्ते वह खुद कुफ़्रिया अकीदा न रखती हो। इस स्थिति में, उसके गर्भ से होने वाली संतान को कोई नुकसान नहीं है। और अगर वह खुद भी अपने माता-पिता की तरह कोई कुफ़्रिया अकीदा रखती है, तो वह खुद भी 'नुत्फ़ा-ए-हराम' (अवैध वीर्य) है,

और उसकी संतान भी अवैध होगी, चाहे वह राफ़िज़ी से हो या सुन्नी से। और उससे किसी का निकाह होना बिल्कुल संभव नहीं है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 171: एक व्यक्ति से एक महिला को गर्भ रह गया और गर्भ का पता चलने के बाद वह महिला चाहती है कि राज़ फाश न हो; क्या गर्भ के दौरान निकाह का अनुबंध (अक़्द) सही होगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: सही है, चाहे वह गैर-ज़ानी से हो, लेकिन बच्चे के जन्म (वज़-ए-हमल) तक उसे संभोग और उससे जुड़ी चीजें जायज़ नहीं हैं। और जो ज़ानी से...

---

1 सहीह मुस्लिम, बाब: अल-वल्द लिल-फिराश आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/470. 2 फतावा हिन्दिया, सातवाँ खंड: शिर्क के कारण वर्जनाएँ नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/282.

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

(جیسا کہ در مختار، عالمگیریہ اور عام کتب میں اس پر نص ہے۔ت) اس سے جو اولاد ہوگی قطعاً ولد الزنا ہوگی اور ترکہ پدری سے مطلقاً محروم کہ ولد الزنا کے لیے شرعاً کوئی باپ ہی نہیں۔

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: زانی کے للعاھر الحجر ۱۔ لیے محرومی ہے۔(ت)

اور اگر دختر مذکورہ ایسے عقائد نہیں رکھتی بلکہ مسلمان ہے تو مسلمان کا نکاح اس سے ہوسکتا ہے اولاد صحیح النسب ہوگی اور ترکہ پدری کی مستحق واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اجل ومجدہ اتم واحکم۔

۱۳ شعبان المعظم ۱۳۱۱ھ

مسئلہ ۱۷۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شیعان مروجہ کی اولاد حرامی ہے یا حلالی؟ اگر حرامی ہے تو عنداللہ حرامی عورت کا نکاح سنی مرد سے ہو جائے گا یا نہیں؟ اور اس کی اولاد بطنی میں کچھ نقصان واقع ہو گا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ان میں مرد یا عورت جس کا عقیدہ کفریہ ہو اولاد حرامی ہے،

اذلا نکاح لمرتد ولامرتدۃ اصلا حتی مع مثلہ فی الارتداد ۲ کما نص علیہ فی الائمۃ الامجاد۔ مرتد مرد اور عورت کا بالکل کسی سے نکاح نہیں ہوسکتا حتی کہ ان جیسے مرتد سے بھی ، جیسا کہ اس پر ائمہ بزرگوار نے تصریح کی ہے۔(ت)

ہاں اگر زن و شوہر دونوں عقائد کفریہ سے پاک ہیں تو اولاد حلالی ہے۔ اور حرامی عورت رافضیہ کا نکاح سنی سے ہو سکتا ہے جبکہ وہ خود عقیدہ کفریہ نہ رکھتی ہو، اس صورت میں اس کی اولاد بطنی میں کوئی نقصان نہیں، اور اگر وہ خود بھی اپنے ماں باپ کی مثل کوئی عقیدہ کفریہ رکھتی ہے تو خود بھی نطفہ حرام ہے اور اس کی اولاد بھی حرامی خواہ رافضی سے ہو یا سنی سے۔ اور اس سے کسی کا نکاح اصلا ممکن نہیں۔ واللہ تعالی اعلم

مسئلہ ۱۷۱: ایک شخص کا حمل ایک عورت کو رہا اور بعد معلوم ہونے حمل کے وہ عورت چاہتی ہے کہ راز فاش نہ ہو مابین حمل عقد درست ہو گا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: درست ہے اگرچہ غیر زانی سے ہو مگر وطی و دواعی اسے روا نہیں جب تک وضع نہ ہو، اور جو زانی سے

---

۱ صحیح مسلم باب الولد للفراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۷۰ ۲ فتاوی ہندیہ القسم السابع المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۸۲

Fatawa Rizvia Volume 11

If one marries, then this too is permissible; yes, until the delivery, marriage is fundamentally invalid in such a case where the pregnancy is not from adultery, as stated in Al-Durr al-Mukhtar etc. And Allah Almighty knows best.

Issue 172: From Nainital, Tehsil Khatima, Thana Bhola, Village Jamur, sent by Sikandar Shah, 12 Rabi al-Akhir 1312 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this: Zaid married Hindah. While Hindah was still in his house, Zaid also married Hindah's other sister, and both women are present in his house. He has not divorced anyone. Are these two sisters lawful (halal) for Zaid or prohibited (haram)? Both sisters are from the same womb (mother) but had different fathers. Please explain and be rewarded.

Answer: In the mentioned case, Zaid's marriage to his sister-in-law is prohibited (haram).

Allah Almighty has said: "And [it is forbidden] that you bring together two sisters [in marriage]." (Surah An-Nisa 4:23)

Explanation: It is obligatory upon him to leave her (the sister-in-law) immediately. Then, if he has not yet had intercourse with the sister-in-law, Hindah remains lawful for him. But if he has had intercourse with her, then it has become prohibited for him to go near his wedded wife Hindah as well, until he leaves the sister-in-law and her waiting period (iddat) expires. When he leaves her and her iddat passes, then it will be permissible for him to touch Hindah. It is stated in Al-Hindiyyah:

Arabic: If he marries two sisters in two separate contracts, the second marriage is invalid (fasid), and it is mandatory for him to separate from her. If a judge (Qazi) learns of this, he should separate them. If he separates from her before consummation, none of the legal rulings of marriage are established. But if he separates from her after consummation, she is entitled to a dower (mahr); the lesser of the specified amount and the customary dower (mahr al-mithl) shall be mandatory. She must observe the waiting period (iddat), and lineage (nasab) can be established. He must remain separate from his first wife until the iddat of her sister is completed. This is as stated in...

Urdu: If he marries two sisters in two separate contracts, the second marriage is invalid (fasid), and it is mandatory for him to separate from her. If a judge (Qazi)

learns of this, he should separate them. If he separates from her before consummation, none of the legal rulings of marriage are established. But if he separates from her after consummation, she is entitled to a dower (mahr); the lesser of the specified amount and the customary dower (mahr al-mithl) shall be mandatory. She must observe the waiting period (iddat), and lineage (nasab) can be established. He must remain separate from his first wife until the iddat of her sister is completed. This is as stated in...

Al-Quran 4/23

फ़तावा रिज़विया खंड 11

यदि कोई निकाह करता है, तो यह भी जायज़ है; हाँ, प्रसव होने तक निकाह मौलिक रूप से उस स्थिति में अवैध है जहाँ गर्भ व्यभिचार से न हो, जैसा कि 'अल-दुर अल-मुख्तार' आदि में वर्णित है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 172: नैनीताल, तहसील खटीमा, थाना भोला, गाँव जमूर, प्रेषक सिकंदर शाह, 12 रबी-उल-आखिर 1312 हिजरी।

प्रश्न: विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिंदा के साथ निकाह किया, अभी हिंदा उसके घर में मौजूद है कि ज़ैद ने हिंदा की दूसरी बहन से भी निकाह कर लिया और दोनों औरतें उसके घर में मौजूद हैं। उसने किसी को तलाक नहीं दिया है। क्या ये दो बहनें ज़ैद के लिए हलाल हैं या हराम? दोनों बहनें एक ही माँ से हैं लेकिन उनके पिता अलग-अलग थे। कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: उक्त मामले में ज़ैद का अपनी साली से निकाह हराम है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "मना है कि तुम निकाह में दो बहनों को इकट्ठा करो।" (सन्दर्भ: सूरह अन-निशा 4:23)

व्याख्या: उस पर फ़र्ज़ है कि वह तुरंत उसे (साली को) छोड़ दे। फिर यदि उसने अभी तक साली के साथ संभोग नहीं किया है, तो हिंदा उसके लिए हलाल है। और यदि उसने उसके साथ संभोग कर लिया है, तो अब अपनी विवाहिता हिंदा के पास जाना भी हराम हो गया, जब तक कि वह साली को छोड़कर उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी न हो जाए। जब वह उसे छोड़ देगा और उसकी इद्दत बीत जाएगी, तब हिंदा को स्पर्श करना जायज़ होगा। 'हिन्दिया' में है:

अरबी: यदि उसने दो अलग-अलग अनुबंधों में दो बहनों से निकाह किया, तो दूसरा निकाह फ़ासिद (अमान्य) है और उस पर अलग होना लाज़िम है। और यदि काज़ी (न्यायाधीश) को यह पता चले, तो वह दोनों के बीच अलगाव करा दे। यदि उसने दूसरी को संभोग से पूर्व अलग कर दिया, तो निकाह का कोई भी नियम स्थापित नहीं होगा। और यदि उसे संभोग के बाद अलग किया, तो उसे मेہر देना होगा; तयशुदा मेहर और मेहर-ए-मिस्ल में से जो कम हो, वह अनिवार्य होगा। उसे इद्दत का पालन

करना होगा और वंश (नसब) स्थापित हो सकेगा। उसे अपनी पहली पत्नी से तब तक अलग रहना होगा जब तक कि उसकी बहन की इद्दत समाप्त न हो जाए। जैसा कि...

उर्दू: अगर दो बहनों से अलग-अलग निकाह किया तो दूसरी का निकाह फ़ासिद है और उस पर जुदाई लाज़िम है। और अगर काज़ी को ये मालूम हो तो वो दोनों में जुदाई कर दे। अगर दूसरी को संभोग से पहले अलग कर दिया तो निकाह का कोई हुक्म साबित न होगा, और अगर उसको संभोग के बाद जुदा किया तो फिर उसको मेहर देना होगा; मेहर-ए-मिस्ल और मुक़र्ररा में से जो कम हो वो वाजिब होगा और उस पर इद्दत होगी और नसब साबित हो सकेगा, और पहली से उस वक़्त तक जुदाई अख्तियार करे जब तक दूसरी की इद्दत पूरी न हो जाए।

अल-क़ुरआन 4/23

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

نکاح کرے تو یہ بھی روا، ہاں تاوقتِ وضع اصلا نکاح ناروا اسی صورت میں ہے کہ حمل زنا سے نہ ہو کما فی الدرالمختار وغیرہ۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۷۲: از نینی تال تحصیل کھٹیما تھانہ بھولا موضع جمور مرسلہ سکندر شاہ ۱۲ ربیع الآخر ۱۳۱۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارہ میں کہ زید نے ہندہ کے ساتھ نکاح کیا، ہنوز ہندہ اس کے گھر میں موجود ہے کہ ہندہ کی دوسری بہن سے بھی زید نے نکاح کرلیا اور دونوں عورتیں اس کے گھر میں موجود ہیں کسی کو طلاق نہیں دی ہے وہ دو بہنیں زید پر حلال ہیں یا حرام؟ دونوں بہنیں ایک بطن سے ہیں اور باپ ہر ایک کا جدا گانہ تھا، بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مذکورہ میں زید کا اپنی سالی سے نکاح حرام،

قال اللہ تعالٰی "وَ اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ" اللہ تعالٰی نے فرمایا: منع ہے کہ تم نکاح میں دو بہنوں کو جمع کرو۔ (ت)

اس پر فرض ہے کہ فوراً اسے چھوڑ دے پھر اگر ابھی سالی سے صحبت نہیں کی جب تو ہندہ اس کے لیے حلال ہے اور اگر اس سے صحبت کرلی تو اب اپنی منکوحہ ہندہ کے پاس بھی جانا حرام ہو گیا، جب تک سالی کو چھوڑ کر اس کی عدت نہ گزر جائے، جب اسے چھوڑے گا اور اس کی عدت گزر جائے گی اس وقت ہندہ کو ہاتھ لگانا جائز ہوگا، ہندیہ میں ہے:

ان تزوجہما فی عقدتین فنکاح الاخیرۃ فاسد و یجب علیہ ان یفارقھا و لو علم القاضی بذلک یفرق بینھما فان فارقھا قبل الدخول لا یثبت شیئی من الاحکام و ان فارقھا بعد الدخول فلھا المہر و یجب الاقل من المسمی و من مہر المثل و علیھا العدۃ و یثبت النسب و یعتزل عن امرأتہ حتی تنقضی عدۃ اختہا کذا فی

اگر دو بہنوں سے علیحدہ علیحدہ نکاح کیا تو دوسری کا نکاح فاسد ہے اور اس پر مفارقت لازم ہے، اور اگر قاضی کو یہ معلوم ہو تو وہ دونوں میں تفریق کردے، اگر دوسری کو دخول سے قبل علیحدہ کردیا تو نکاح کا کوئی حکم نہ ثابت ہوگا، اور اگر اس کو دخول کے بعد جدا کیا تو پھر اس کو مہر دینا ہوگا مہرِ مثل اور مقررہ سے جو کم ہو وہ واجب ہوگا اور اس پر عدت ہوگی اور نسب ثابت ہوسکے گا، اور پہلی سے اس وقت تک علیحدگی اختیار کرے (جب تک دوسری کی عدت پوری نہ ہو جائے)۔

القرآن ۴/۲۳

Volume 11 Fatawa Razawiyya

From Muhit al-Sarakhsi 1: And Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most perfect and most wise. Until the iddah (waiting period) of the other sister has passed; it is stated thus in Muhit al-Sarakhsi. (T)

Issue 173: 19 Rabi' al-Akhir Sharif 1312 AH If a woman's husband is missing (Mafqud al-Khabar) and both the man and the woman belong to the Hanafi school of thought, how long should the woman wait before marrying another person? What ruling do the scholars of the Hanafi school give in this regard? **The Answer:** [The waiting period should be] so much time that seventy years have passed from the man's birth; meaning, if he were still alive, he would be seventy years old. For example, if he went missing at the age of thirty, the woman should wait for forty years. Upon the passing of this period, a Qazi (Islamic judge) shall issue a decree of his death. After the decree, the woman should observe an iddah of four months and ten days. After completing the iddah, she may marry whomever she wishes. It is stated in Fath al-Qadir: "In my view, seventy is better because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'The ages of my Ummah are between sixty and seventy.' Therefore, the final limit will likely be considered." 2 (T) It is stated in Jawahir al-Akhlati: "This is more cautious and closer to legal reasoning (qiyas)." 3 (T) In the same book: "And the fatwa (legal verdict) is based on this." 4 (T) It is stated in Durr al-Mukhtar: In 'Waqiat al-Muftiyeen' by Qadruvi Effendi, attributing it to 'Al-Qunyah', it is said that the ruling of death shall only be by a judicial decree, because it is a matter of probability. As long as a judicial decree is not joined to it, the mere passage of time shall not be a legal proof. 5 (T)

1. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Section 4: Prohibitions by combination, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/277-278.
2. Fath al-Qadir, Kitab al-Mafqud, Nuriya Razawiyya, Sukkur, 5/274.
3. Jawahir al-Akhlati, Kitab al-Mafqud, Manuscript p. 122.
4. Jawahir al-Akhlati, Kitab al-Mafqud, Manuscript p. 122.
5. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Mafqud, Matba' Mujtabai Delhi, 1/369.

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

मुहीत अल-सरख़सी 1: और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा सर्वोच्च है, सबसे पूर्ण और सबसे हिकमत वाला है। जब तक दूसरी बहन की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त न हो जाए; मुहीत अल-सरख़सी में ऐसा ही है। (त)

मसला 173: 19 रबी अल-आख़िर शरीफ़ 1312 हिजरी जिस महिला का पति लापता (मफ़क़ूद अल-ख़बर) हो और पुरुष एवं महिला दोनों हनफ़ी पंथ के हों, तो वह महिला दूसरे व्यक्ति से निकाह करने के लिए कितनी अवधि तक प्रतीक्षा करे? हनफ़ी पंथ के विद्वान इस बारे में क्या आदेश देते हैं? **उत्तर:** इतनी अवधि कि पुरुष की आयु से सत्तर वर्ष बीत जाएँ यानी, यदि वह अब तक जीवित होता, तो सत्तर वर्ष का होता। उदाहरण के तौर पर, यदि वह तीस वर्ष की आयु में लापता हुआ, तो महिला चालीस वर्ष तक प्रतीक्षा करे। इस अवधि के बीतने पर क़ाज़ी (इस्लामी न्यायाधीश) उसकी मृत्यु का आदेश जारी करे। आदेश के बाद महिला चार महीने दस दिन की इद्दत मनाए। इद्दत पूरी करने के बाद वह जिससे चाहे निकाह कर सकती है। फ़तह अल-क़दीर में है: "मेरे विचार में सत्तर बेहतर है क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'मेरी उम्मत की आयु साठ और सत्तर के बीच है।' इसलिए अंतिम सीमा संभवतः मान्य होगी।" 2 (त) जवाहिर अल-अख़्लाती में है: "यही अधिक सावधानी और क़ियास (कानूनी तर्क) के अनुकूल है।" 3 (त) उसी में है: "और इसी पर फ़तवा है।" 4 (त) दुर्रे मुख्तार में है: 'वक़िआत अल-मुफ़्तीईन' में क़दरुवी अफ़ंदी ने 'अल-कुन्या' के हवाले से कहा है कि मृत्यु का निर्णय क़ाज़ी के माध्यम से ही होगा क्योंकि यह एक संभावित मामला है। जब तक क़ाज़ी का निर्णय इसमें शामिल न हो जाए, तब तक केवल समय का बीत जाना प्रमाण नहीं होगा। 5 (त)

1. फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, भाग 4: अल-मुहर्रमात बिल-जमा, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/277-278.
2. फ़तह अल-क़दीर, किताबुल मफ़क़ूद, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 5/274.
3. जवाहिर अल-अख़्लाती, किताबुल मफ़क़ूद, हस्तलिखित प्रति, पृष्ठ 122.
4. जवाहिर अल-अख़्लाती, किताबुल मफ़क़ूद, हस्तलिखित प्रति, पृष्ठ 122.
5. दुर्रे मुख़्तार, किताबुल मफ़क़ूद, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/369.

جلد یاز دہم فتاوی رضویہ

محیط السرخسی 1۔ واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ جب تک دوسری بہن کی عدت نہ گزر جائے، محیط سرخسی میں یونہی ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۷۳: ۱۹ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۲ھ جس عورت کا شوہر مفقود الخبر ہو اور مرد و عورت ہر دو حنفی مذہب کے ہیں تو عورت دوسرے شخص سے نکاح کرنے کا کس قدر مدت تک انتظار کرے؟ علماء مذہب حنفیہ کے اس میں کیا حکم دیتے ہیں؟ **الجواب:** اتنی مدت کہ مرد کی عمر سے ستر برس گزر جائیں یعنی اگر اب تک زندہ ہو تو ستر برس کا ہو، مثلاً تیس سال کی عمر میں مفقود ہوا تو عورت چالیس برس تک انتظار کرے، اس مدت گزرنے پر قاضی اس کی موت کا حکم کرے۔ بعد حکم عورت چار مہینے دس دن عدت بیٹھے، عدت گزار کر جس سے چاہے نکاح کرے، فتح القدیر میں ہے: عندی الاحسن سبعون لقولہ علیہ الصلوۃ والسلام اعمار امتی مابین الستین الی السبعین فکانت المنتہی غالباً 2۔ میرے نزدیک ستر بہتر ہے کیونکہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: "میری امت کی عمر ساٹھ اور ستر کے درمیان ہے۔" تو آخری حد غالباً معتبر ہوگا۔ (ت) جواہر اخلاطی میں ہے: انہ احوط واقیس 3 (یہی احتیاط اور قیاس کے زیادہ موافق ہے۔ ت) اسی میں ہے: وعلیہ الفتوی 4 (اسی پر فتوی ہے۔ ت) در مختار میں ہے: في واقعات المفتین للقدروی افندی معزیاً للقنیۃ انہ انما یحکم بموتہ بقضاء لانہ امر محتمل فمالم ینضم الیہ القضاء لایکون حجۃ 5۔ واقعات المفتین میں ہے کہ قنیہ کی طرف منسوب کرتے ہوئے آفندی نے کہا کہ موت کا حکم قاضی کے ذریعہ ہوگا کیونکہ احتمالی معاملہ ہے تو جب تک قاضی کا فیصلہ نہ مل جائے اس وقت تک محض مدت کا گزرنا حجت نہ ہوگا۔ (ت)

1 فتاوی ہندیہ کتاب النکاح القسم الرابع المحرمات بالجمع نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۷۷-۲۷۸ 2 فتح القدیر کتاب المفقود نوریہ رضویہ سکھر ۵ / ۲۷۴ 3 جواہر الاخلاطی کتاب المفقود قلمی نسخہ ص ۱۲۲ 4 جواہر الاخلاطی کتاب المفقود قلمی نسخہ ص ۱۲۲ 5 درمختار کتاب المفقود مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۳۶۹

Volume Eleven Fatawa Ridawiyyah

It is stated in Tanwir: `Afterwards, his death is decreed, and his wife observes the waiting period for death.`[1] (Summary) | After the period has passed, the husband's death will be ruled upon; therefore, this woman shall complete the waiting period for death. (Summary - Translation)

It is stated in Radd al-Muhtar: `i.e., the waiting period of death.`[2] (meaning the waiting period following death is intended. - Translation). Very elderly men marry young women, and such cases occur where a man is seventy and the woman is young; for example, if he married a fifteen-year-old woman at the age of fifty or fifty-five and then went missing. When seventy years have passed since his birth, the woman will be thirty or thirty-five years old. A woman of this age is certainly capable of marriage; even if she were not, the ruling of the Sharia is for the Law itself, not for one's personal desires. The Great Quran clearly states: "And [also prohibited are] married women [among women]."[3] (Translation) So what path is there against this? Allah Almighty knows best.

Problem 174: From Calcutta, Imam Bagh Lane No. 1 Masjid, sent by Hafiz Aziz-ur-Rahman Sahib, 29 Jumada al-Akhira 1312 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: Is it permissible to marry one's aunt (uncle's wife) after the uncle's death or not? If it is permissible, what is the evidence? Please clarify and be rewarded. Answer: It is permissible. Its evidence is the word of Allah, the Almighty and Majestic: "And lawful to you are [all others] beyond these"[4] (meaning women other than the prohibited ones have been made lawful for you. - Translation). After listing the prohibited women, it was declared that women besides them are lawful for you. Neither was the aunt listed among the prohibited women, nor has her prohibition been mentioned anywhere in the Sharia. Therefore, she is certainly among the lawful women. Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His glory, is most complete and most perfect.

Problem 175: From Amood, District Bharuch, Gujarat Kalan, sent by Syed Ghulam Sarwar, 2 Rajab 1312 AH. What do the scholars of the Sharia of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) say about this issue: A person's name is

Abdullah, his sister's name was Nooran. Musammat Nooran was married to Hidayatullah. From the seed of Hidayatullah and...

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Kitab al-Mafqud, Matba' Mujtabai Delhi, 1/369
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Mafqud, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/332
3. Al-Quran 4/24
4. Al-Quran 4/24

जिल्द ग्यारहवीं फतावा रज़विया

तनवीर में है: इसके पश्चात उसकी मृत्यु का निर्णय दिया जाएगा, अतः उसकी पत्नी मृत्यु वाली इद्दत पूर्ण करेगी।[1] (संक्षेप में) | अवधि बीतने के बाद पति की मृत्यु का निर्णय दिया जाएगा, इसलिए यह स्त्री मृत्यु वाली इद्दत पूरी करेगी। (संक्षेप - त)

रद-उल-मुह्तार में है: अर्थात वफ़ात की इद्दत।[2] (अर्थात मृत्यु वाली इद्दत अभिप्रेत है। - त) बहुत अधिक आयु के पुरुष कम उम्र की स्त्रियों से विवाह करते हैं, वहाँ ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं कि पुरुष सत्तर वर्ष का हो और स्त्री युवा हो; उदाहरण के लिए, पचास-पचपन वर्ष की आयु में पंद्रह वर्ष की स्त्री से विवाह किया और वह लापता हो गया। तो जब उसकी आयु सत्तर वर्ष हो जाएगी, तब स्त्री तीस-पैंतीस वर्ष की होगी। इस आयु की स्त्री निश्चित रूप से विवाह के योग्य है; और यदि न भी हो, तो शरीअत का आदेश शरीअत के लिए है, न कि अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं के लिए। महान क़ुरआन स्पष्ट रूप से कह रहा है: "और विवाहित स्त्रियाँ [स्त्रियों में से]।"[3] (त) फिर इसके विरुद्ध क्या मार्ग है? अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला १७४: कलकत्ता, इमाम बाग लेन नंबर १ मस्जिद से, प्रेषक हाफ़िज़ अज़ीज़ुर रहमान साहब, २९ जमादी-उल-आखिर १३१२ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या कहते हैं कि चाचा के देहांत के बाद चाची से निकाह करना वैध है या नहीं? यदि वैध है, तो क्या प्रमाण है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। उत्तर: वैध है। इसका प्रमाण अल्लाह अज्ज़-व-जल्ल का यह कथन है: "और तुम्हारे लिए इनके अतिरिक्त अन्य स्त्रियाँ हलाल की गई हैं।"[4] (महरमात के अतिरिक्त स्त्रियाँ तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं। - त) कि निषिद्ध स्त्रियों को गिनाने के बाद यह आदेश हुआ कि उनके अतिरिक्त स्त्रियाँ तुम्हारे लिए हलाल हैं। निषिद्ध स्त्रियों में चाची का उल्लेख नहीं किया गया और न ही शरीअत में कहीं उसकी मनाही आई है। अतः वह निश्चित रूप से हलाल स्त्रियों में से है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान, उसका प्रताप महिमामय है, सबसे पूर्ण और सबसे श्रेष्ठ है।

मसला १७५: आमूद, ज़िला भरूच, गुजरात कलां से, प्रेषक सैयद गुलाम सरवर, २ रजब १३१२ हिजरी। शरीयते-मोहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति का नाम मुसम्मा अब्दुल्ला है, उसकी बहन का नाम नूरन था, मुसम्मात नूरन का निकाह मुसम्मा हिदायतुल्लाह के साथ हुआ, मुसम्मा हिदायतुल्लाह के वीर्य और...

1. दुर्र-ए-मुख़्तार शरह तनवीर-उल-अबसार किताब-उल-मफ़क़ूद मतबा मुज्तबाई दिल्ली ३६९/१

2. रद-उल-मुह्तार किताब-उल-मफ़क़ूद दारु इहया-उत-तुरास-अल-अरबी बेरुत ३३२/३

3. अल-क़ुरआन ४/२४

4. अल-क़ुरआन ४/२४

पेज ३३४/७३९

جلد یاز دہم فتاوی رضویہ

تنویر میں ہے: بعدہ یحکم بموتہ فتعتد عرسہ للموت۱ (ملخصاً) | مدت گزرنے کے بعد خاوند کی موت کا حکم دیا جائے گا لہٰذا یہ عورت موت والی عدت پوری کرے گی ملخصاً (ت)

ردالمحتار میں ہے: ای عدۃ الوفاۃ۲ (یعنی وفات والی عدت مراد ہے۔ ت) بہت سن رسیدہ مرد نو عمر عورتوں سے نکاح کرتے ہیں وہاں ایسی صورتیں واقع ہوتی ہیں کہ مرد ستر برس کا اور عورت جوان ہو، مثلاً پچاس پچپن برس کی عمر میں پندرہ برس کی عورت سے نکاح کیا اور مفقود ہو گیا تو جب اس کی عمر سے ستر برس گزریں گے عورت تمیں پینتیس برس کی ہوگی اس عمر کی عورت بیشک نکاح کے قابل ہے اور نہ ہو تو حکم شرع کے لیے ہے نہ کہ اپنی خواہش نفس کے لیے۔ قرآن عظیم صاف فرما رہا ہے: وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ۳ (شادی شدہ عورتوں میں سے۔ ت) پھر اس کے خلاف کی طرف راہ کیا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۴: از کلکتہ امام باغ لین نمبر ا م مسجد مرسلہ حافظ عزیز الرحمن صاحب ۲۹ جمادی الآخرہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بعد چچا مرنے کے پچی سے نکاح درست ہے یا نہیں؟ اگر درست ہے تو کیا دلیل ہے؟ بینوا توجروا الجواب درست ہے۔ دلیل اس کی قول اللہ عزوجل ہے: وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ۴ (محرمات کے علاوہ عورتیں تمہارے لیے حلال کی گئی ہیں۔ ت) کہ حرام عورتوں کو شمار فرما کر ارشاد ہوا ان کے سوا عورتیں تمہارے لیے حلال ہیں، حرام عورتوں میں چچی کو نہ شمار فرمایا نہ شرح میں کہیں اس کی تحریم آئی تو ضرور وہ حلال عورتوں میں سے ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۱۷۵: از آمود ضلع بھڑوچ گجرات کلاں مرسلہ سید غلام سرور ۲ رجب ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے شریعتِ محمدی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کا نام مسمی عبداللہ ہے اس کی ہمشیرہ کا نام نورن تھا، مسماۃ نورن کا نکاح مسمی ہدایت اللہ کے ساتھ ہوا، مسمی ہدایت اللہ کے نطفہ و

۱ درمختار شرح تنویر الابصار کتاب المفقود مطبع مجتبائی دہلی ۳۶۹/۱ ۲ ردالمحتار کتاب المفقود داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۳۲/۳ ۳ القرآن ۴/۲۴ ۴ القرآن ۴/۲۴

Fatawa Ridawiyya - Volume 11

Two sons were born from the womb of Musammat Noran. Musammat Noran died, and the elder son also passed away; the younger son is alive. The aforementioned Musammi Abdullah has two daughters. After the death of his sister Musammat Noran, he married his elder daughter to the said Hidayatullah. Now, the marriage of the second daughter, who is the younger of Abdullah's, is being arranged with the son of Hidayatullah. Firstly, Hidayatullah is the brother-in-law of Abdullah, and he became the maternal uncle of the son. Abdullah is Hidayatullah's brother-in-law, and the boy is Abdullah's nephew. When Abdullah's daughter was married, she became the son's stepmother. A stepmother's sister is like a real maternal aunt. And Hidayatullah became Abdullah's father-in-law, or Zaid/Abdullah became the grandfather. Is this marriage permissible or not? Please write with the names of the books, Arabic text, Urdu translation, and summary. May Allah reward you. State and be rewarded.

The Answer: The marriage of Hidayatullah's son with Abdullah's daughter is permissible. Abdullah is his maternal uncle, not his grandfather. The father of a stepmother is not one's own grandfather, nor is the sister of a stepmother one's own aunt. Marriage is permissible with the real mother, sister, or daughter of a stepmother, even though she is the father's mother-in-law, sister-in-law, or stepdaughter. It is stated in Rad al-Muhtar: "The mother of a father's wife and her daughter are not prohibited" (The mother and daughter of a father's wedded wife are not forbidden. t). And Allah Almighty knows best.

Problem 176 to 177: From Allahabad, Mahalla Dondaypur, house of the late Subedar Sahib, sent by Maulvi Ubaidullah Sahib on 12 Shaban 1312 AH. To the service of the high-ranking, possessor of scientific and practical perfections, encompasser of primary and secondary arts. The respected master, the obeyed dignitary, the humble Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib, may his blessings continue. From the needy Ubaidullah, traditional peace filled with humility and submission. In this piece of request sent to your noble service, I humbly ask for two things and hope for your favorable attention. First, these two issues are controversial; please write the fatwa with complete research, precision, proof, and evidence in great detail. Second, their need is extreme; please prioritize them over other fatwas. The question is: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding this issue, that Zaid turned out his first wife Musammat Hindah from his house and married another woman. Several people asked Zaid the reason for turning her out. Zaid said, "I

committed adultery with her mother; now it has become known that she (the wife) is prohibited for me. That is why I turned her out." Afterwards, having divorced the second wife, he brought the first wife Hindah back to his house and denied the confession of adultery. Testimony of the confession of adultery was presented before the city judge. In the mentioned case, does his testimony of confessing adultery lead to prohibition?

---

1. Rad al-Muhtar, Chapter on Prohibited Relations, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/79.

फतावा रज़विया - ग्यारहवीं जिल्द

मुसम्मात नौरन की कोख से दो बेटे पैदा हुए। मुसम्मात नौरन की मृत्यु हो गई, बड़े बेटे का भी देहांत हो गया, छोटा बेटा जीवित है। उक्त मुसम्मी अब्दुल्ला की दो बेटियाँ हैं। अपनी बहन मुसम्मात नौरन की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपनी बड़ी बेटी का विवाह उपरोक्त हिदायतुल्लाह से कर दिया। अब, दूसरी बेटी, जो अब्दुल्ला की छोटी बेटी है, उसका निकाह हिदायतुल्लाह के बेटे से कराया जा रहा है। पहले तो हिदायतुल्लाह अब्दुल्ला का साला हुआ और बेटे का मामा हुआ, अब्दुल्ला हिदायतुल्लाह का बहनोई हुआ, और लड़का अब्दुल्ला का भांजा हुआ। जब अब्दुल्ला की बेटी निकाह में आई तो वह बेटे की सौतेली माँ बन गई। सौतेली माँ की बहन सगी खाला (मौसी) हुई। और हिदायतुल्लाह का अब्दुल्ला ससुर हुआ या ज़ैद/अब्दुल्ला नाना हुआ। क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? किताबों के नाम, अरबी इबारत, उर्दू तर्जुमा और सारांश के साथ तहरीर फरमाएं अल्लाह आपको इसका बदला देगा। बयान करें ताकि आपको सवाब मिले।

उत्तर: हिदायतुल्लाह के बेटे का निकाह अब्दुल्ला की बेटी से जायज़ है। अब्दुल्ला उसका मामा है, नाना नहीं। सौतेली माँ का बाप अपना नाना नहीं होता और न ही सौतेली माँ की बहन अपनी खाला (मौसी) होती है। सौतेली माँ की सगी माँ, बहन या बेटी, इन सब से निकाह जायज़ है, भले ही वह अपने बाप की सास, साली या बेटी (सौतेली बेटी) हो। रद-उल-मुहतार में है: "बाप की पत्नी की माँ और उसकी बेटी हराम नहीं हैं।" (बाप की निकाहशुदा बीवी की माँ और बेटी वर्जित नहीं हैं। त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 176 से 177: इलाहाबाद, मोहल्ला दौंडेपुर, मरहूम सूबेदार साहब का मकान, प्रेषक मौलवी उबैदुल्लाह साहब, 12 शाबान 1312 हिजरी। सेवा में उच्च पदस्थ, वैज्ञानिक और व्यावहारिक पूर्णता के स्वामी, प्राथमिक और माध्यमिक कलाओं के जानकार, सम्मानित स्वामी, आज्ञाकारी महानुभाव, विनीत मौलवी अहमद रज़ा खान साहब, उनकी कृपा बनी रहे। ज़रूरतमंद उबैदुल्लाह की ओर से, विनम्रता और अधीनता से भरा हुआ पारंपरिक सलाम। इस इस्तेफ्ता (सवालनामे) के टुकड़े में आपकी महान सेवा में दो बातों के लिए बड़े अदब के साथ गुज़ारिश करता हूँ और आपकी तवज्जो का उम्मीदवार हूँ। पहली बात यह कि ये दोनों मसले बहुत विवादास्पद हो रहे हैं, फतवा पूरी तहकीकात, बारीकी, सबूत और दलीलों के साथ विस्तार से लिखा जाए। दूसरी बात यह कि इनकी ज़रूरत बहुत ज़्यादा है, इन्हें दूसरे फतवों पर प्राथमिकता दी जाए। सवाल की सूरत यह है: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी पहली पत्नी

मुसम्मात हिंदा को अपने घर से निकाल दिया और दूसरी औरत से निकाह कर लिया। कई लोगों ने ज़ैद से उसे निकालने का कारण पूछा। ज़ैद ने कहा, "मैंने उसकी माँ के साथ ज़िना (व्यभिचार) किया था; अब पता चला है कि वह मुझ पर हराम है। इसलिए मैंने उसे निकाल दिया।" उसके बाद, दूसरी पत्नी को तलाक देकर वह पहली पत्नी हिंदा को अपने घर वापस ले आया और ज़िना के इकरार (कबूलनामे) से इनकार कर दिया। शहर के काज़ी के सामने ज़िना के इकरार की गवाही पेश की गई। तो ज़िक्र की गई सूरत में, क्या ज़िना के इकरार की गवाही से हुरमत (प्रतिबंध) लागू होती है?

---

1. रद-उल-मुहतार, वर्जित संबंधों का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/79।

شکم مسماۃ نورن سے دو فرزند پیدا ہوئے مسماۃ نورن مر گئی، بڑے فرزند کا بھی انتقال ہو گیا، چھوٹا فرزند زندہ ہے، مسمیٰ عبد اللہ مذکور کے دو دختر ہیں بعد مرنے اپنی بہن مسماۃ نورن کے اپنی بڑی دختر کا نکاح ہدایت اللہ موصوف سے کر دیا، دوسری دختر جو چھوٹی مسمیٰ عبد اللہ کی ہے۔ ہدایت اللہ کے فرزند سے نکاح پڑھادیا جاتا ہے، اول تو ہدایت اللہ کا عبد اللہ سالا ہوا اور فرزند کا ماموں ہوا عبد اللہ کا ہدایت اللہ بہنوئی ہوا، اور لڑکا ہدایت اللہ کا عبد اللہ بھانجا ہوا۔ جب عبد اللہ کی دختر نکاح میں آئی فرزند سوتیلی والدہ ہوئی، سوتیلی ماں کی بہن حقیقی خالہ ہوئی اور ہدایت اللہ کا عبد اللہ سسر ہوا وزید یا عبد اللہ نانا ہوا، نکاح جائز ہے یا نہیں؟ مع مہر نام کتب عبارت عربی ترجمہ اردو خلاصہ تحریر فرمایئے، اس کا اجر اللہ آپ کو عطا کرے گا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: فرزند ہدایت اللہ کا نکاح دختر عبداللہ سے جائز ہے، عبداللہ اس کا ماموں ہے نانا نہیں، سوتیلی ماں کا باپ نہ اپنا نانا، نہ سوتیلی ماں کی بہن اپنی خالہ۔ سوتیلی ماں کی حقیقی ماں یا بہن یا بیٹی سب سے نکاح جائز ہے اگرچہ وہ اپنے باپ کی ساس یا سالی یا دختر زن ہے، ردالمحتار میں ہے: لا تحرم ام زوجۃ الاب ولا بنتھا (باپ کی منکوحہ کی ماں اور بیٹی حرام نہیں ہوتیں۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۷۶ تا ۱۷۷: از الہ آباد محلہ دوندے پور مکان صوبیدار صاحب مرحوم مرسلہ مولوی عبیداللہ صاحب ۱۲ شعبان ۱۳۱۲ھ بجراہی خدمت سامی منزلت، جامع الکمالات العلمیہ والعملیہ، حاوی الفنون الاصلیہ والفرعیہ۔ مخدوم معظم، مطاع مفخم، نیاز کیشاں جناب مولوی احمد رضا خاں صاحب دامت فیوضہم از نیاز مند عبیداللہ سلام مسنون خشوع و خضوع مشحون در قطعہ استفتاء ابلاغ خدمت والا میں دو باتوں کے لیے بکمال ادب گزارش کر کے توجہ وجیہ کا امیدوار ہوں، ایک

یہ کہ یہ دونوں مسئلے معرکۃ الآرا ہو رہے ہیں فتویٰ بکمال تحقیق و تدقیق مبرہن مدلل خوب بسط و تفصیل سے لکھے جائیں، دوم یہ کہ ان کی ضرورت اشد ہے دوسرے فتووں پر انھیں کو مقدم فرمایا جائے، صورت سوال یہ ہے، کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے مسماۃ ہندہ زوجہ اولیٰ کو اپنے گھر سے نکال دیا اور دوسری عورت سے نکاح کیا، چند شخصوں نے سبب نکال دینے کا زید سے پوچھا، زید نے کہا میں نے اس کی ماں سے زنا کیا تھا اب معلوم ہوا کہ وہ مجھ پر حرام ہے۔ اس لیے اس کو نکال دیا، بعدہ زوجہ ثانیہ کو طلاق دے کر زوجہ اولیٰ ہندہ کو اپنے مکان میں لاکر رکھا اور اقرار زنا سے انکار کیا قاضی بلدہ کے سامنے شہادت اقرار زنا کی پیش ہوئی تو صورت مذکورہ میں اس کی شہادت اقرار زنا سے حرمت۔

---

1 ردالمحتار فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۷۹

Fatawa Ridawiyya - Volume 11

Will Musaharat (prohibition due to kinship/affinity) be established according to Shariah or not? And has Hind become forbidden for Zaid or what? A scholar stated that testimony regarding an admission of adultery is not credible; if adultery is not proven by this testimony, how can the prohibition of Musaharat be proven? Please provide a written response quickly as many scholars differ on this issue.

Second Question: What is the ruling if the admission is: "I committed adultery with her mother before her marriage to her (daughter)"? Please clarify and be rewarded.

The Answer: Undoubtedly, in the inquired situation, the prohibition of Musaharat is established according to Shariah law. Hind will be considered eternally forbidden for Zaid. "For evidence (Bayyinah) is like its name, clarifying. (t)" When Zaid's admission of adultery is proven through Shariah testimony, what way is there to reject it? For what is proven by testimony is like what is proven by observation. The lack of proof of adultery from this testimony is not absolutely due to the invalidation of testimony, the falsification of witnesses, or the rejection of the witnessed matter, such that the actual admission itself is not accepted. Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq in 'Fath al-Qadir' and then Allamah Zayn Misri in 'Bahr al-Ra'iq' state:

Arabic Text	**Urdu Translation**
If two men and two women testify to the admission of adultery by the person accused of it, the punishment (Hadd) for slander (Qadhf) is averted from the accuser and from the third party (meaning the man and the two women), because what is proven by evidence is like what is proven by ocular vision. Thus, it is as if we heard his admission of adultery. 1	If men or one man and two women testify to the admission of adultery by a person accused of it, then the jurists have ruled that the punishment for slander is dropped from the accuser and the witnesses (one man and two women). This is because something proven by testimony is like something seen. Therefore, an admission of adultery proven by the statement of witnesses is as if we heard it ourselves. (t)

It is proven that although testimony to an admission may not fundamentally have the capacity to prove adultery itself (since testimony from women or only two men is not heard in proving adultery), it certainly proves the admission, for which the full quorum (of witnesses) exists. Also, in 'Al-Bahr':

Arabic Text	Urdu Translation
If two men testify that he committed adultery, and two others testify that he admitted to adultery, then he is not punished. It is said in 'Al-Dhahiriyya': and the witnesses are not punished.	Two men testified that he committed adultery, and another (two) testified that he admitted to adultery. In such a case, the punishment for adultery is not imposed on him.

1 Fath al-Qadir, Chapter on the Punishment for Slander, Nooriya Ridawiyya, Sukkur, 11/5.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

क्या शरीयत के अनुसार मुसाहारत (ससुराली रिश्तों के कारण विवाह का निषेध) साबित होगी या नहीं? और क्या हिन्द ज़ैद पर हराम हो गई है? एक आलिम साहब ने कहा है कि ज़िना (व्यभिचार) के इकरार पर गवाही विश्वसनीय नहीं है; अगर इस गवाही से ज़िना साबित नहीं होता, तो हुरमत-ए-मुसाहारत (मुसाहारत का निषेध) कैसे साबित होगी? कृपया लिखित उत्तर जल्दी दें क्योंकि इस मसले पर बहुत से विद्वान आपस में असहमत हैं।

दूसरा सवाल: अगर इकरार यह हो कि "मैंने उसके निकाह से पहले उसकी माँ के साथ ज़िना किया था", तो क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

जवाब: निस्संदेह, पूछताछ की गई स्थिति में शरीयत के हुक्म के अनुसार हुरमत-ए-मुसाहारत हो गई है। हिन्द ज़ैद पर हमेशा के लिए हराम समझी जाएगी। "बय्यिनह (प्रमाण) अपने नाम की तरह स्पष्ट करने वाला है (त)"। जब शरीई गवाही से ज़ैद का ज़िना का इकरार साबित हो गया, तो इसे ठुकराने का क्या रास्ता है? क्योंकि गवाही से साबित होने वाली चीज़ वैसी ही है जैसे आँखों देखी चीज़। इस गवाही से ज़िना का सबूत न होना पूर्णतः गवाही के रद्द होने, गवाहों के झूठ या देखी गई बात के खंडन की वजह से नहीं है कि असल इकरार को भी न माना जाए। इमाम मुहक्क़िक़ अला अल-इतलाक़ 'फ़तह अल-क़दीर' में और फिर अल्लामा ज़ैन मिस्री 'बहर अल-राइक़' में फरमाते हैं:

अरबी पाठ

यदि दो पुरुष और दो महिलाएं उस व्यक्ति के ज़िना के इकरार पर गवाही दें जिस पर इसका आरोप लगाया गया है, तो तोहमत लगाने वाले और तीसरे (यानी पुरुष और दो महिलाओं) से हद-ए-क़ज़फ़ (अपमानजनक आरोप की सज़ा) टल जाएगी, क्योंकि बय्यिनह से साबित चीज़ वैसी ही है जैसे प्रत्यक्ष रूप से देखी गई चीज़। तो यह ऐसा ही है जैसे हमने उसका ज़िना का इकरार खुद सुना हो। 1

उर्दू अनुवाद

ज़िना के आरोपी व्यक्ति के ज़िना के इकरार पर पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं ने गवाही दी, तो इससे फ़ुक़हा ने तोहमत लगाने वाले और गवाह (एक पुरुष और दो महिलाओं) से हद-ए-क़ज़फ़ को साक़ित (समाप्त) करार दिया है। क्योंकि गवाही से साबित चीज़ वैसी ही है जैसे देखी हुई हो। तो गवाहों के बयान से साबित ज़िना का इकरार वैसा ही है जैसे हमने खुद सुना हो। (त)

यह साबित हुआ कि इकरार की गवाही भले ही मूल रूप से ज़िना को साबित करने की क्षमता न रखे (क्योंकि ज़िना साबित करने के लिए औरतों की गवाही या केवल दो पुरुषों की गवाही स्वीकार नहीं की जाती), लेकिन यह इकरार को साबित ज़रूर करती है, क्योंकि इसके लिए पूर्ण कोरम (नसाब) मौजूद है। साथ ही 'बहर' में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
अगर दो पुरुषों ने गवाही दी कि उसने ज़िना किया है, और दो अन्य ने गवाही दी कि उसने ज़िना का इकरार किया है, तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी। 'ज़हीरिया' में कहा गया है: और गवाहों को भी सज़ा नहीं दी जाएगी।	दो पुरुषों ने गवाही दी कि उसने ज़िना किया है और दूसरे (दो) ने गवाही दी कि उसने ज़िना का इकरार किया है। तो ऐसी स्थिति में उस पर ज़िना की 'हद' (सज़ा) लागू नहीं होगी।

1 फ़तह अल-क़दीर, बाब हद अल-क़ज़फ़, नूरिया रज़विया सुक्कुर 11/5.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مصاہرت شرعاً ثابت ہوگی یا نہیں؟ اور ہندہ زید پر حرام ہو گئی یا کیا؟ ایک عالم صاحب نے فرمایا کہ اقرارِ زنا پر شہادت معتبر نہیں ہے اس شہادت سے زنا ثابت نہیں ہوتا تو حرمتِ مصاہرت کیسے ثابت ہوگی، تحریر میں جلدی فرمائی جائے کہ مسئلہ میں بہت سے علماء مختلف ہیں۔

سوال دوم: اگر اقرار یہ کیا ہو کہ میں نے اس کی ماں سے قبل اس کے نکاح کے زنا کیا تھا، تو کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: بلاشبہ صورتِ مستفسرہ میں حکمِ شرع میں حرمتِ مصاہرت ہو گئی، ہندہ زید پر حرامِ ابدی سمجھی جائیگی فان البینۃ کاسمھا مبینۃ (بینہ اپنے نام کی طرح، واضح کرنے والا ہے۔ ت) جب شہادتِ شرعیہ سے زید کا اقرار بالزنا ثابت ہوا تو اس کے رد کی طرف کیا سبیل کہ ثابت بشہادت بمنزلہ ثابت بمشاہدہ ہے۔ اس گواہی سے ثبوتِ زنا نہ ہونا مطلقاً ابطالِ شہادت یا تکذیب شہود یا رد مشہود کی بنا پر نہیں کہ اس سے نفسِ اقرار بھی ثابت نہ مانے۔ امام محقق علی الاطلاق فتح القدیر میں پھر علامہ زین مصری بحر الرائق میں فرماتے ہیں:

| ان شھد رجلان و امرأتان علی اقرار المقذوف بالزنا یدفع عن القاذف الحد وعن الثالثۃ ای الرجل والمرأتین لان الثابت بالبینۃ کالثابت بالمعاینۃ فکانا سمعنا اقراره بالزنا۔ 1 | زنا سے متہم شخص کے اقرارِ زنا پر مردوں یا ایک مرد دو عورتوں نے شہادت دی تو اس سے فقہاء نے تہمت لگانے والے اور گواہ ایک مرد دو عورتوں سے حدِ قذف کو ساقط قرار دیا ہے کیونکہ گواہی سے ثابت شدہ چیز ایسے ہے جیسے دیکھی ہوئی ہو، تو گواہوں کے بیان سے ثابت شدہ زنا کا اقرار ایسے ہے جیسے ہم نے خود سنا ہے۔ (ت) |

ثابت ہوا کہ شہادتِ اقرار اگر چہ مثبتِ زنا ہونے کی اصلاً صلاحیت نہ رکھے کہ اثباتِ زنا میں شہادت زنان و شہادت دو مردِ زنہار مسموع نہیں مگر مثبتِ اقرار بیشک ہے کہ اس کے لئے نصابِ کامل ہے۔ نیز بحر میں ہے:

| لو شهد رجلان انه زنى واخران انه اقربالزنا فانه لا يحد قال فى الظهيرية ولا يحد الشهود | دو مردوں نے گواہی دی کہ اس نے زنا کیا ہے اور دوسرے نے گواہی دی کہ اس نے زنا کا اقرار کیا ہے۔ تو ایسی صورت میں اس کو زنا کی حد نہیں |

1 فتح القدیر باب حد القذف نوریہ رضویہ سکھر ۱۱/۵

Fatawa Ridawiyya Volume 11

[Arabic]: Also, if three testify to adultery and a fourth testifies to the confession of adultery, the penalty (hadd) is applicable to the three. This is because the testimony of one person regarding a confession is not considered valid; thus, the statement of the three remains an accusation of slander (qadhf). [Urdu]: ...will be applied. In Zahiriyya, it is stated that even the witnesses will not be spared from the penalty. If three men testify to adultery and the fourth testifies to the confession of adultery, then the penalty for slander (hadd al-qadhf) will be applied to the three because the testimony of a single witness regarding a confession is not reliable; therefore, the statement of the three witnesses becomes a false accusation (slander). (T)

Observe that a distinction has been made between the testimony of one and the testimony of two men; the first is void and useless while the second is reliable and confirms the confession. However, both are far from proving adultery. Furthermore, there are two other reasons why adultery is not proven by this testimony: Firstly, the confession proven by them was outside the court (majlis-e-qadha), and a confession outside the court does not prove adultery. It is stated in Sharh al-Niqayah by Allama Shams al-Qahistani: [Arabic]: Confession is not considered valid except before the Imam (Judge), to the extent that if they testify to it [outside], it will not be accepted. [Urdu]: A confession is not reliable without the presence of a Qazi (Judge) or ruler, such that if witnesses testify to a confession made outside the court, it will not be accepted. (T)

Secondly, if the person being testified against is a confessor, what is the need for testimony? [Arabic]: For testimony is only established against the denier, as in al-Durr and others, and it does not combine with a confession except in a few cases mentioned in al-Ashbah, of which this is not one. [Urdu]: Testimony is against the denier, as mentioned in al-Durr etc. In al-Ashbah, it is mentioned that apart from a few cases, testimony and confession cannot coexist, and this case is not one of those few. (T)

And if he is a denier, then he has retracted his previous confession, and a confession of adultery after retraction does not establish adultery. It is stated in Tuhfat al-Fuqaha, Badai', Tabyin al-Haqa'iq, Mu'in al-Hukkam, Jami' al-Rumuz, Bahr al-Ra'iq, Ghunyat Dhuwi al-Ahkam, Radd al-Muhtar, etc.: [Arabic]: The wording belongs to Allama al-Shurunbulali, reporting from the Imam, Malik al-Ulama al-Kashani: "If he confesses to adultery four times outside the council of the Qazi, and witnesses testify

to..." [Urdu]: The words of Allama Shurunbulali regarding the report from Malik al-Ulama Imam Kashani are: "If he confesses to his adultery four times outside the court (majlis-e-qadha), and..."

[1] Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Hudud, H.M. Saeed Company Karachi, 5/5 [2] Jami' al-Rumuz, Kitab al-Hudud, Maktaba Islamia Gunbad Qamus Iran, 515/2

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

[अरबी]: इसके अलावा, यदि तीन लोग ज़िना (व्यभिचार) की गवाही देते हैं और चौथा ज़िना के इक़रार (स्वीकारोक्ति) पर गवाही देता है, तो उन तीन पर हद्द (सज़ा) लागू होगी। क्योंकि इक़रार पर एक गवाह की गवाही मान्य नहीं है; इसलिए, उन तीन का बयान तोहमत (क़ज़फ़) माना जाएगा। [उर्दू]: ...लगाई जाएगी। और ज़हीरिया में कहा गया है कि गवाहों को भी हद्द से राहत नहीं होगी। अगर तीन पुरुषों ने ज़िना की गवाही दी और चौथे ने ज़िना के इक़रार पर गवाही दी, तो तीन पर हद्द-ए-क़ज़फ़ होगी क्योंकि इक़रार के एक गवाह की गवाही विश्वसनीय नहीं है, इसलिए तीन गवाहों की बात तोहमत (कलंक) बन जाएगी। (त)

देखिये, एक गवाह की गवाही और दो पुरुषों की गवाही के बीच फ़र्क बताया गया है कि पहली बातिल (अमान्य) और बेकार है जबकि दूसरी विश्वसनीय और इक़रार को साबित करने वाली है। हालाँकि ज़िना साबित होने से दोनों ही दूर हैं। इसके अलावा इस गवाही से ज़िना साबित न होने के दो और कारण हैं: पहला यह कि उनके द्वारा साबित इक़रार अदालत (मजलिस-ए-क़ज़ा) के बाहर था, और अदालत के बाहर का इक़रार ज़िना को साबित नहीं करता। अल्लामा शम्स क़ुहिस्तानी की 'शराह निक़ाया' में है: [अरबी]: इमाम (क़ाज़ी) के अलावा इक़रार मान्य नहीं माना जाता, यहाँ तक कि अगर वे इसकी गवाही दें [बाहर], तो उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। [उर्दू]: क़ाज़ी या हाकिम की उपस्थिति के बिना इक़रार विश्वसनीय नहीं है, यहाँ तक कि अगर गवाह अदालत से बाहर के इक़रार की गवाही दें तो वह स्वीकार्य नहीं होगी। (त)

दूसरा, यदि जिस पर गवाही दी जा रही है वह स्वयं इक़रार करने वाला है, तो गवाही की क्या आवश्यकता है? [अरबी]: क्योंकि गवाही केवल इनकार करने वाले के खिलाफ स्थापित की जाती है, जैसा कि 'अद-दुर्र' आदि में है, और यह 'अल-अश्बाह' में वर्णित कुछ स्थितियों के अलावा इक़रार के साथ मेल नहीं खाती, जिनमें से यह एक नहीं है। [उर्दू]: गवाही तो इनकार करने वाले के खिलाफ होती है जैसा कि 'अद-दुर्र' आदि में है। 'अश्बाह' में उल्लेख है कि कुछ स्थितियों के अलावा गवाही और इक़रार एक साथ नहीं हो सकते, और यह स्थिति उन चंद में से नहीं है। (त)

और यदि वह इनकार करने वाला है, तो उसने पिछले इक़रार से रुजू (वापसी) कर ली है, और रुजू के बाद ज़िना का इक़रार ज़िना को साबित नहीं करता। 'तुहफ़तुल फ़ुक़हा', 'बदाइ', 'तबीनुल हक़ाइक', 'मुईनुल हक्काम', 'जामेउर रुमूज़', 'बहरुर राइक', 'गुनियात ज़वी अल-अहकाम', 'रद्दुल मुहतार'

आदि में है: [अरबी]: और शब्द अल्लामा शरुन्बुलाली के हैं, जो इमाम मलिकुल उलमा अल-काशानी से उद्धृत हैं: 'यदि उसने क़ाज़ी की मजलिस के बाहर चार बार ज़िना का इक़रार किया और गवाहों ने गवाही दी...' [उर्दू]: मलिकुल उलमा इमाम काशानी से नकल के बारे में अल्लामा शरुन्बुलाली के शब्द ये हैं कि "अगर वह अपने ज़िना पर मजलिस-ए-क़ज़ा से बाहर चार बार इक़रार करे और..."

[1] बहरुर राइक, किताबुल हुदूद, एच.एम. सईद कंपनी कराची 5/5 [2] जामेउर रुमूज़, किताबुल हुदूद, मकतबा इस्लामिया गुंबद क़ामूस ईरान 515/2

पेज 739 का 337

ایضا وان شھد ثلثۃ بالزنا وشھد رابع علی الاقرار بالزنا فعلی الثلثۃ الحد اہ لان شھادۃ الواحد علی الاقرار لا تعتبر فبقی کلام الثلثۃ قذفا[1] - لگائی جائیگی، اور ظہیریہ میں کہا کہ گواہوں کو بھی حد نہ ہوگی، اور اگر تین مردوں نے زنا کی شہادت دی اور چوتھے نے زنا کے اقرار پر شہادت دی، تو تین پر حد قذف ہوگی کیونکہ اقرار کے ایک گواہ کی شہادت معتبر نہیں، تو تین گواہوں کی بات تہمت ہو جائیگی۔ (ت)

دیکھو شہادت واحد و شہادت رجلین میں تفرقہ فرمایا کہ اول باطل و بیکار اور ثانی معتبر و مثبت اقرار حالانکہ اثبات زنا سے دونوں برکنار بلکہ اس شہادت سے ثبوت زنا ہونے کی اور دو وجہیں ہیں: اولاً وہ اقرار جوان سے ثابت ہوا بیرون مجلس قضا تھا اور دارالقضا سے باہر کا اقرار مثبت زنا نہیں ہوتا، شرح نقایہ علامہ شمس قہستانی میں ہے: الاقرار لم یعتبر عند غیر الامام حتی لو شھد وا بذلك لم تقبل[2] - قاضی یا حاکم کی موجودگی کے بغیر اقرار معتبر نہیں حتی کہ اگر گواہ مجلس سے باہر کے اقرار کی شہادت دیں تو مقبول نہ ہوگی۔ (ت)

ثانیا مشہود علیہ اگر مقر ہے تو شہادت کی کیا حاجت، فانما انما تقام علی المنکر کما فی الدر وغیرہ ولا تجا مع الاقرار الا فی بضع صور مذکورۃ فی الاشباہ لیست ھذہ منھا۔ شہادت تو منکر کے خلاف ہوتی ہے جیسا کہ در وغیرہ میں ہے اشباہ میں مذکور ہے چند صورتوں کے علاوہ شہادت، اقرار کے ساتھ جمع نہیں ہوسکتی، اور یہ صورت ان چند میں سے نہیں ہے۔ (ت)

اور منکر ہے تو اقرار سابق سے رجوع کر چکا اور اقرار بالزنا بعد رجوع مثبت زنا نہیں رہتا، تحفۃ الفقہاء وبدائع و تبیین الحقائق اور معین الحکام و جامع الرموز و بحر الرائق و غنیۃ ذوی

الاحکام و ردالمحتار وغیرہما میں ہے: واللفظ للعلامة الشرنبلالی عن الامام ملك العلماء الكاشانی لو اقربالزنا اربع مرات في غير مجلس القاضي وشهد الشهود على ملک العلماء امام کاشانی سے منقول کے بارے میں علامہ شرنبلالی کے الفاظ یہ ہیں کہ اگر اپنے زنا پر مجلس قضاء سے باہر چار مرتبہ اقرار کرے اور اس

[1] بحر الرائق کتاب الحدود ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۵/۵ [2] جامع الرموز کتاب الحدود مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۵۱۵/۲

The father committed defloration and she (the wife) confirmed it; thus, the prohibition by affinity (Hurmat-e-Musaharat) was established. In Al-Zahiriyya, Al-Hindiyya, Al-Shumuni, Durr al-Mukhtar, etc., it is stated: "The wording is from Al-Durr: He married a virgin but found her to be a non-virgin (and the wording of the first two is: He married a woman on the condition that she was a virgin, but when he intended to have intercourse with her, he found her deflowered), and she said: Your father deflowered me. If he believes her, she is separated without dower, otherwise not." - Shumuni (1). In the words of Al-Durr, it is stated that he married a virgin but found her to be a non-virgin. The words of the first two books are that he married a woman on the condition of her being a virgin, but at the time of intercourse, he found her virginity broken, and the woman said that your father broke my virginity (i.e., had intercourse). If he accepted the wife's statement as true, the marriage with the wife would end and there would be no dower; otherwise, the marriage would not end. - Shumuni. (T) It is evident that establishing adultery through these scenarios is merely impossible. In the latter case, how can the woman's statement and its confirmation be useful where the testimony of fewer than four men is rejected? In the former case, it was a one-time admission, that too outside the court, and that too on an occasion of jest and humor. Does it have the capacity to prove adultery? By combining mere admission and confirmation, the ruling of prohibition by affinity was established, and denial after admission became useless. This much explanation for clarifying the position and removing doubts is sufficient. Rather, consider that the first branch is a specific text for the inquired situation; when they consider her mere statement as proof of prohibition and consider retraction and denial unheard, it is clear that this establishment is an establishment in judicial terms. As we have pointed out, and in Radd al-Muhtar etc., they have explicitly stated this. (As we have pointed out and it has been specified in Radd al-Muhtar etc. - T). And before the judge, after denial, the method of proof is the same evidence (bayyinah). So, it is clearly established that if the husband denies after admitting to adultery and his admission is proven by reliable evidence, the judge will immediately issue a ruling of prohibition. And that is the objective. From these statements, it also became clear that admitting to adultery with the wife's mother before marrying her, and its converse, both are equal in this ruling of prohibition, such that eternal prohibition is obtained in both ways, although it may be antecedent in one case and subsequent in the other. So, in every way, this admission is an admission regarding a forbidden act (Al-Muharram), and the man is

held accountable for his admission (And the man is taken to task based on his admission. - T). Yes, there will be this much difference: in the admission of adultery before marriage, the husband will not be believed in matters regarding the wife's rights, specifically in this claim ascribed to before marriage. This is because, assuming no consummation, it would lead to the annulment of dower, or if consummated, it would invalidate the specified dower. We cannot accept this merely on his say-so, only in what pertains to his own rights.

(1) Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press Delhi, 1/188.

पिता ने कुंवारापन भंग किया और उसने (पत्नी ने) इसकी पुष्टि कर दी; इस प्रकार वैवाहिक संबंध के कारण निषेध (हुर्मत-ए-मुसाहारत) सिद्ध हो गया। अज़-ज़हीरिय्या, अल-हिन्दिया, अल-शुमुनी, दुर्र-ए-मुख्तार आदि में है: "दुर्र के शब्द हैं: उसने एक कुंवारी से विवाह किया लेकिन उसे गैर-कुंवारी पाया (और पहले दो के शब्द हैं: उसने एक महिला से इस शर्त पर विवाह किया कि वह कुंवारी थी, लेकिन जब उसने संभोग करना चाहा, तो उसने उसे विक्षत पाया), और उसने कहा: तुम्हारे पिता ने मेरा कौमार्य भंग किया है। यदि वह उसे सच मानता है, तो वह बिना महर के अलग हो जाती है, अन्यथा नहीं।" - शुमुनी (१)। दुर्र के शब्दों में यह है कि एक कुंवारी से विवाह किया तो उसे गैर-कुंवारी पाया, और पहली दो पुस्तकों के शब्द ये हैं कि एक महिला से कुंवारी होने की शर्त पर विवाह किया तो संभोग के समय उसका कौमार्य टूटा हुआ पाया, और महिला ने कहा कि तुम्हारे पिता ने मेरा कौमार्य तोड़ा (यानी प्रवेश किया)। तो अगर उसने पत्नी की बात को सच स्वीकार कर लिया तो पत्नी का विवाह समाप्त हो जाएगा और महर नहीं होगा, अन्यथा विवाह समाप्त नहीं होगा। - शुमुनी। (त) जाहिर है कि इन स्थितियों से व्यभिचार (ज़िना) सिद्ध करना मात्र असंभव है। बाद वाली स्थिति में महिला का बयान और उसकी पुष्टि भला कैसे काम आ सकती है जहाँ चार पुरुषों से कम की गवाही अस्वीकार्य हो? पहली स्थिति में एक बार का इक़रार (स्वीकृति) वह भी अदालत से बाहर और वह भी मज़ाक और हंसी के अवसर पर किया गया। क्या यह ज़िना साबित करने की क्षमता रखता है? मात्र इक़रार और पुष्टि को मिला देने पर हुर्मत-ए-मुसाहारत का हुक्म हो गया और इक़रार के बाद इनकार बेकार रहा। स्थिति स्पष्ट करने और भ्रम दूर करने के लिए इतनी व्याख्या पर्याप्त है। बल्कि विचार करें तो पहली शाखा पूछताछ की गई स्थिति के लिए एक विशिष्ट निर्देश (नस्) है; जब वे केवल उसके इस कथन को हुर्मत (निषेध) का प्रमाण मानते हैं और मुकरने व इनकार को अनसुना कर देते हैं, तो यह स्पष्ट है कि यह प्रमाण न्यायिक रूप से प्रमाण ही है। जैसा कि हमने संकेत दिया है और रद-उल-मुहतार आदि में इस पर स्पष्ट निर्देश दिया गया है। (जैसा कि हमने इसकी ओर संकेत किया है और रद-उल-मुहतार आदि में इस पर नस् की गई है। त) और काज़ी के सामने इनकार के बाद प्रमाण का तरीका वही गवाही (बय्यिनाह) है। तो साफ सिद्ध हुआ कि पति अगर ज़िना के इक़रार के बाद मुकर जाए और विश्वसनीय गवाही से उसका इक़रार सिद्ध हो जाए, तो काज़ी तुरंत हुर्मत का हुक्म देगा। और यही उद्देश्य है। इन्हीं बयानों से यह भी स्पष्ट हो गया कि विवाह से पहले पत्नी की माँ के साथ ज़िना करना और इसका उल्टा, दोनों ही हुर्मत के इस हुक्म में समान हैं कि हुर्मत-ए-अबदिया (शाश्वत निषेध) दोनों

तरह से प्राप्त होता है, चाहे एक स्थिति में यह पहले से हो और दूसरी में बाद में आया हो। तो हर तरह से यह इक़रार हराम काम के बारे में इक़रार है और पुरुष अपने इक़रार के आधार पर जवाबदेह है (और पुरुष अपने इक़रार के आधार पर पकड़ा जाता है। त)। हाँ, इतना अंतर होगा कि विवाह से पूर्व ज़िना के इक़रार में, पत्नी के अधिकारों के मामले में पति विश्वसनीय नहीं माना जाएगा, विशेष रूप से विवाह से पहले की अवधि से संबंधित इस दावे में। ऐसा इसलिए है क्योंकि संभोग न होने की स्थिति में यह महर को रद्द करने का कारण बनेगा, या संभोग होने की स्थिति में निर्धारित महर को दूषित करेगा। केवल उसके कहने पर हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते, केवल उन बातों में जो उसके अपने अधिकारों से संबंधित हों।

(१) दुर्र-ए-मुख्तार, हराम रिश्तों का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली १/१८८।

पृष्ठ ७३९ में से ३३९

باپ نے ازالہ کیا اس نے تصدیق کردی حرمت مصاہرت ثابت ہوگئی، ظہیر یہ وہندیہ و شمنی و در مختار وغیرہما میں ہے: واللفظ للدرتزوج بکراً فوجدھا ثیباً (ولفظ الاولین تزوج امرأۃ علی انھا عذراء فلما اراد وقاعھا وجدھا قد افتضت) وقالت ابوك فضنی ان صدقھا بانت بلا مھر والا لا۔ شمنی ۱۔ در کے الفاظ میں ہے کہ باکرہ سے نکاح کیا تو اس کو ثیبہ پایا، اور پہلی دونوں کتب کے الفاظ یہ ہیں کہ ایک عورت سے باکرہ ہونے کی شرط پر نکاح کیا تو جماع کے وقت اس کی بکارت ٹوٹی ہوئی پائی، اور عورت نے کہا کہ تیرے باپ نے میری بکارت توڑی (یعنی دخول کیا) تو اگر اس نے بیوی کی بات کو سچ تسلیم کر لیا تو بیوی کا نکاح ختم ہو جائے گا اور مہر نہ ہوگا ورنہ نکاح ختم نہ ہوگا، شمنی۔ (ت) ظاہر ہے کہ ان صورتوں سے ثبوتِ زنا محض ناممکن اخیر میں تو عورت کا بیان اور اس کی تصدیق کیا بکار آمد ہوسکتی ہے جہاں چار مردوں سے کم کی شہادت مردود ہو، اولٰی میں بار اقرار وہ بھی بیرونِ دار القضاء وہ بھی ہزل و مزاح کے موقع پر کیا۔ قابلیت اثباتِ زنا رکھتا ہے، بالانضمام مجرد اقرار و تصدیق پر حرمتِ مصاہرت کا حکم ہوگیا اور بعد اقرار انکار بیکار رہا، اسی قدر تقریرِ ایضاحِ مقام و ازاحتِ اوہام کو بس ہے بلکہ غور کیجئے تو فرع اول صورتِ مستفسرہ کا خاص نص ہے کہ جب اس کے صرف اس قول کو مثبتِ حرمت ماننے اور رجوع و انکار کو نامسموع جانتے ہیں، اور پر ظاہر کہ یہ اثبات اثبات فی القضاء ہی ہے کما اشرنا الیہ وفی ردالمحتار وغیرھا نصوا علیہ (جیسا کہ ہم نے اس کی طرف اشارہ کیا ہے اور ردالمحتار وغیرہ میں اس پر نص کی گئی ہے۔ ت) اور عند القاضی بعد انکار طریقہ اثبات وہی بینہ تو صاف ثابت ہوا کہ شوہر اگر بعد اقرار بالزنا انکار کر جائے اور بینہ عادلہ سے اس کا اقرار ثابت ہو قاضی فوراً حکم حرمت دے گا وھو المقصود۔ انہی بیانوں سے یہ بھی واضح ہوگیا کہ زنا بما در زن

پیش از نکاح زن اور اس کا عکس دونوں کا اقرار اس حکم حرمت میں یکساں کہ حرمتِ ابدیہ دونوں طرح حاصل، اگرچہ ایک صورت میں سابقہ ہو، دوسری میں طاریہ، تو ہر طرح یہ اقرار اقرار بالمحرم ہے والرجال مواخذ باقرارہ (اور مرد اپنے اقرار کی بنا پر ماخوذ ہے۔ ت) ہاں اتنا تفاوت ہوگا کہ اقرارِ زنا قبل النکاح میں شوہر حقِ زن میں، اس دعوٰی اسناد الی ما قبل النکاح میں مصدق نہ ہوگا، کہ بر تقدیر عدم دخول ابطالِ مہر یا بحالتِ دخول افسادِ تسمیہ مجرد اس کے کہنے سے مان لیں صرف اپنے حق

۱ در مختار فصل في المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۸

Fatawa Razawiyya Volume 11

Meaning, in the annulment of lawfulness, corruption of chastity, and adopting separation, he will be considered truthful. Therefore, by establishing an unverified prohibition (hurmat), half of the specified dower (mahr) or the full amount, as per the circumstances, will be made mandatory. It is stated in Bahr-ul-Raiq and Radd-ul-Muhtar:

[Box 1] Arabic: If he confesses to intercourse with his mother-in-law before marriage, he is not believed regarding her (the wife's) right. Thus, the full specified dower is mandatory if it was after consummation, and half if it was before it, as in Al-Tajnīs. Urdu: If he confesses to fornication with his mother-in-law before marriage, this confession will not be accepted as true regarding the wife's right to dower. Therefore, the full specified dower must be paid, provided this confession was made after consummation with the wife. And if this confession was made before consummation, then half of the dower will be mandatory, as stated in At-Tajnīs. (T)

And this is nothing new that a person's confession is accepted from one perspective and rejected from another. Confession is a limited proof; its nature is always such that it is accepted as far as it is detrimental to the confessor. What is taken from it and what is imposed on another is discarded. Therefore, if someone married another's slave-girl and, before consummation, she kissed his son, and the husband claims it was with lust (shahwat), prohibition is established. However, his claim for the dismissal of the dower will not be heard; he will have to pay half the dower when the owner (of the slave-girl) does not acknowledge the lust of the slave-girl or the intent to corrupt. It is stated in Al-Hindiyya:

[Box 2] Arabic: A man married a person's slave-girl, then the slave-girl kissed her husband's son before consummation. The husband claimed she kissed him with lust, and the owner denied it. She becomes separated from her husband due to the husband's confession of a lustful kiss, and half the dower becomes mandatory for him because the owner denied his claim of a lustful kiss. The slave-girl's word is not accepted in this regard if she were to say, 'I kissed him with lust.' Thus it is in Al-Muhit. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. Urdu: A person married someone's slave-girl, then before consummation, the slave-girl kissed her husband's son. The husband claimed that she kissed him with lust, while the owner of the slave-girl denied it. So, she will be separated from her husband's marriage because the husband confessed to the kiss with lust. And due to the owner's denial, half of the

dower will be mandatory for the husband. And here, the slave-girl's confession that 'I kissed with lust' will not be given any weight. Thus it is in Al-Muhit. (T) And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Problem 178: What do the scholars of religion say regarding these matters: A person, upon the death of his wife, married his sister-in-law...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/283 2 Fatawa Hindiyya, Second Part, Prohibitions due to Affinity, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/277 Page 340 of 739

अर्थात, हलाल के बातिल होने, पाकीजगी के खराब होने और अलगाव अपनाने के मामले में उसे सच्चा माना जाएगा। इसलिए, एक अपुष्ट निषेध (हुरमत) स्थापित करके, परिस्थितियों के अनुसार आधा या पूरा निर्धारित महर अनिवार्य कर दिया जाएगा। बहर-उर-रैक और रद-उल-मुहतार में है:

[बॉक्स 1] अरबी: यदि वह विवाह से पूर्व अपनी सास के साथ संभोग का स्वीकार करता है, तो उसके (पत्नी के) अधिकार के संबंध में उसे सच्चा नहीं माना जाएगा। अत; यदि संभोग के बाद है तो पूरा निर्धारित महर अनिवार्य है, और यदि उससे पहले है तो आधा, जैसा कि अल-तजनीस में है। उर्दू: यदि विवाह से पूर्व अपनी सास के साथ ज़िना का इक़रार करता है, तो इस इक़रार को पत्नी के महर के अधिकार के बारे में सच नहीं माना जाएगा। इसलिए निर्धारित महर पूरा देना होगा, बशर्ते कि यह इक़रार पत्नी से संभोग के बाद किया हो। और यदि संभोग से पहले यह इक़रार किया, तो आधा महर वाजिब होगा, जैसा कि तजनीस में है। (त)

और यह कोई नई बात नहीं है कि एक व्यक्ति का इक़रार एक पक्ष से स्वीकार्य और दूसरे पक्ष से अस्वीकार्य हो। इक़रार एक सीमित प्रमाण है; इसकी प्रकृति हमेशा ऐसी होती है कि जहाँ तक यह इक़रार करने वाले के लिए हानिकारक है, वहां तक इसे स्वीकार किया जाता है। जो लिया जाता है और जो दूसरे पर थोपा जाता है उसे त्याग दिया जाता है। इसलिए, यदि किसी ने किसी की दासी से विवाह किया और संभोग से पहले उसने उसके(पति के) पुत्र को चूमा, और पति कहता है कि वह कामुकता (शहवत) के साथ था, तो निषेध सिद्ध हो गया। लेकिन महर को खत्म करने के अधिकार में उसकी बात नहीं सुनी जाएगी; उसे आधा महर देना होगा, जबकि दासी का मालिक कामुकता और बिगाड़ने के इरादे को नहीं मानता है। अल-हिन्दिया में है:

[बॉक्स 2] अरबी: एक व्यक्ति ने किसी की दासी से विवाह किया, फिर संभोग से पहले दासी ने अपने पति के पुत्र को चूमा। पति ने दावा किया कि उसने कामुकता के साथ चूमा है, और मालिक ने उसे झुठलाया। वह अपने पति से अलग हो जाएगी क्योंकि पति ने कामुक चुंबन को स्वीकार किया है, और मालिक के झुठलाने के कारण उस पर आधा महर अनिवार्य होगा। और इस संबंध में दासी की बात स्वीकार नहीं की जाएगी यदि वह कहे, 'मैंने उसे कामुकता के साथ चूमा है।' ऐसा ही अल-मुहीत में है। और अल्लाह, जो महिमामय और उच्च है, बेहतर जानता है। उर्दू: एक व्यक्ति ने किसी की दासी से विवाह किया, तो दासी ने संभोग से पहले पति के बेटे का बोसा (चुंबन) लिया। तो पति ने दावा

किया कि उसने यह बोसा शहवत के साथ लिया है, जबकि दासी का मालिक पति को झुठला रहा है। तो वह दासी निकाह से बाहर हो जाएगी क्योंकि पति ने शहवत के साथ बोसे का इक़रार किया है। और मालिक की तकज़ीब (झुठलाने) के कारण पति पर आधा महर लाज़िम होगा। और यहाँ दासी के इक़रार का कोई एतबार नहीं होगा कि मैंने शहवत से बोसा लिया है। ऐसा ही मुहीत में है। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 178: धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की मृत्यु पर साली से निकाह किया...

---

1 रद अल-मुहतार, निषेधों पर अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/283 2 फ़तावा हिन्दिया, दूसरा भाग, वैवाहिक संबंधों के कारण निषेध, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/277 पेज 340 ऑफ़ 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

یعنی بطلان حل و فساد وعصمت واخذ بالمتا رکمہ میں مصدق ہوگا لہذا حرمت غیر مستنده ثابت کرکے نصف مسمیٰ یا کحل علی التقدیرین لازم کردیں گے۔ بحر الرائق ور دالمحتار میں ہے :

[Box 1] عربی: اذا اقربجماع امها قبل التزوج لایصدق فی حقها فیجب کمال المهر المسمی ان کان بعدالدخول ونصفه ان کان قبله کمافی التجنیس - اردو: اگر نکاح سے قبل کے ساس سے زنا کا اقرار کرتا ہے تو اس اقرار کو بیوی کے حق مہر کے بارے میں سچ نہیں مانا جائے گا لہذا مقررہ مہر پورا دینا ہوگا بشر طیکہ یہ اقرار بیوی سے دخول کے بعد کیا ہو اور اگر دخول سے قبل یہ اقرار کیا تو نصف مہر واجب ہوگا، جیسا کہ تجنیس میں ہے۔(ت)

اور یہ کوئی نئی بات نہیں کہ اقرار واحد من جهتہ مقبول اور من جهتہ مردود ہو اقرار حجت قاصرہ ہے ہمیشہ اس کی یہی شان ہوتی ہے کہ جہاں تک مقر پر اس کا ضرر ہے۔ ماخوذ اور جتنا دوسرے پر لازم ہے منبوذ، و لہذا اگر کسی کی کنیز سے نکاح کیا اس نے پیش از دخول اس کے پسر کا بوسہ لیا شوہر کہتا ہے بشہوت تھا حرمت ثابت ہو گئی مگر حق اسقاط مہر میں مسموع نہ ہوگا نصف مہر دینا آئے گا جبکہ مولیٰ شہوت کنیز و قصد افساد کو نہ مانتا ہو، ہندیہ میں ہے :

[Box 2] عربی: تزوج بأمة رجل ثم ان الامة قبلت ابن زوجها قبل الدخول بها فادعی الزوج انها قبلت بشهوة وکذبه المولی فانها تبین من زوجها لاقرار الزوج انها قبلت بشهوة ویلزمه نصف المهر بتکذیب المولی ایاه انها قبلته بشهوة ولا یقبل قول الامة فی ذلك لو قالت قبلته بشهوة کذا فی المحیط - اه واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم اردو: ایک شخص نے کسی کی لونڈی سے نکاح کیا تو لونڈی نے قبل از دخول خاوند کے بیٹے کا بوسہ لیا تو خاوند نے دعوٰی کیا کہ اس نے یہ بوسہ شہوت کے ساتھ لیا ہے

جبکہ لونڈی کا مالک خاوند کو جھٹلا رہا ہے تو وہ لونڈی نکاح سے خارج ہو جائے گی کیونکہ خاوند نے شہوت کے ساتھ بوسے کا اقرار کیا ہے۔ اور مالک کی تکذیب کی وجہ سے خاوند پر نصف مہر لازم ہوگا اور یہاں لونڈی کے اقرار کا کوئی اعتبار نہیں ہوگا کہ میں نے شہوت سے بوسہ لیا ہے۔ یونہی محیط میں ہے۔ (ت) واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۷۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ ایک شخص نے اپنی زوجہ کے مرنے پر سالی سے نکاح کیا...

---

1 ردالمحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۸۳ 2 فتاوی ہندیہ القسم الثانی المحرمات بالصھریۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۷۷ Page 340 of 739

Fatawa-e-Razvia Volume XI

...and from the first woman there was a daughter. Now this person died and the sister-in-law (wife's sister) who was married to him and had no children, married another person and died. Now, is the daughter of that person, who married his sister-in-law and died, permissible for the second husband of the sister-in-law or not? State the ruling and be rewarded. Answer: It is permissible, and Allah Almighty knows best.

Problem 189: Hinda drank the milk of Zainab. Is Zainab's daughter permissible for Hinda's son or not? State the ruling and be rewarded. Answer: It is impermissible. And Allah Almighty knows best.

Problem 180: A person, mistaking her for his wife by oversight, grabbed his sister's or mother-in-law's hand with lust. Did any defect occur in his marriage or not? State the ruling and be rewarded. Answer: Grabbing the sister's hand did not cause any defect in the marriage, but grabbing the mother-in-law's hand made the marriage invalid (fasid). If lust was produced by it or was already present and increased, and ejaculation did not occur, the woman became permanently forbidden to him. And Allah Almighty knows best.

Problem 181: What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say in this situation: Zaid married his daughter Zainab to Bakr. After the marriage and before the departure (rukhsat), based on verbal hearsay without investigation, Bakr was declared impotent. Without getting a divorce and while Bakr was still alive, Zainab's marriage was performed with Khalid, and children were born from it. So, in such a situation, did this second marriage become valid or not? State the ruling and be rewarded. Answer: In the questioned situation, regardless of the fact that for separation due to impotence (innat), none of the matters required by Sharia were found or present here. It is not at all proven that Bakr is such an impotent person based on which Zainab would have the right of litigation and demanding separation. Therefore, it was possible that he would be capable of intimacy specifically with that woman. In the situation where Zainab's departure was not allowed to happen, how could Bakr's being impotent in her regard be proven?

In Al-Alamgiriyyah: 'And if he can reach a non-virgin but not virgins, or some women but not others, and that is because of a disease in him, or weakness in his constitution, or old age, or magic.'

It is in Al-Alamgiriyyah: A person who has the strength for intercourse with a non-virgin (thayyiba) but not with a virgin (bakira), or has the strength for intercourse with some women and not with others, and this is due to weakness caused by illness, or natural [weakness], or old age, or magic.

...और पहली औरत से एक बेटी थी। अब यह व्यक्ति मर गया और सालि (पत्नी की बहन), जो उसकी पत्नी थी और निस्संतान थी, उसने दूसरे व्यक्ति से निकाह किया और मर गई। अब वह बेटी, जो उस व्यक्ति की है जिसने अपनी सालि से निकाह किया था और मर गया था, सालि के दूसरे पति के लिए हलाल (जायज़) है या नहीं? बयान फरमाएं आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: जायज़ है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 189: हिंदा ने ज़ैनब का दूध पिया। क्या हिंदा के बेटे के लिए ज़ैनब की बेटी जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: नाजायज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 180: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के धोखे में भूलवश अपनी बहन या सास का हाथ कामुकता (शहवत) के साथ पकड़ लिया। क्या उसके निकाह में कोई खराबी आई या नहीं? बयान फरमाएं आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: बहन का हाथ पकड़ने से निकाह में कोई खराबी नहीं आई, लेकिन सास का हाथ पकड़ने से निकाह फासिद (अमान्य) हो गया। यदि इससे कामुकता पैदा हुई या पहले से थी तो बढ़ गई और वीर्यपात नहीं हुआ, तो वह औरत उस पर हमेशा के लिए हराम हो गई। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 181: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी बेटी ज़ैनब का निकाह बकर के साथ किया। निकाह के बाद और विदाई (रुखसत) से पहले, बिना जांच के केवल मौखिक बातों के आधार पर बकर को नामर्द करार देकर, बिना तलाक दिलाए बकर के जीवित रहते हुए ही ज़ैनब का निकाह खालिद के साथ कर दिया गया और उससे बच्चे पैदा हुए। तो ऐसी स्थिति में यह दूसरा निकाह जायज़ हुआ या नहीं? बयान फरमाएं आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: पूछे गए मामले में, इस बात से हटकर कि नामर्दगी (इन्नत) के कारण अलगाव (तफ़रीक़) के लिए शरीयत में जो बातें आवश्यक हैं, उनमें से यहाँ एक भी नहीं पाई गई। बकर का ऐसा नामर्द होना ही साबित नहीं है जिसके आधार पर ज़ैनब को मुक़दमा करने और अलगाव की मांग करने का अधिकार प्राप्त हो। इसलिए, यह संभव था कि वह विशेष रूप से उस औरत के साथ संभोग करने में सक्षम होता। जिस स्थिति में ज़ैनब की विदाई ही नहीं होने दी गई, उसके संबंध में बकर का नामर्द होना कैसे साबित हुआ।

'फ़िल-आलमगीरिया: व इन काना यसिलु इलत-तय्यिबी दूनल-अबकारी अव इला बा'दिन-निसाई दूनल-बा'दि व ज़ालिका लि-मरदिन बिही अव लि-ज़'फिन फ़ी खल्किही अव लि-कुबरि सिन्निही अव सिह्हिन।'

आलमगीरिया में है: जो व्यक्ति किसी विवाहिता (सय्यिबा) से संभोग की शक्ति रखता हो लेकिन कुंवारी (बाकरा) से नहीं, या कुछ औरतों से संभोग की शक्ति रखता हो और कुछ अन्य से नहीं, और इसकी वजह बीमारी के कारण कमजोरी हो, या जन्मजात हो, या बुढ़ापे या जादू की वजह से हो।

पेज 341 / 739

اور پہلی عورت سے ایک دختر تھی اب یہ شخص مر گیا اور سالی منکوحہ بے اولاد نے دوسرے سے نکاح کیا اور مر گئی اب وہ جو دختر اس شخص کی ہے جس نے اپنی سالی سے نکاح کیا تھا اور مر گیا تھا سالی کے دوسرے شوہر کو جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: جائز ہے، واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۱۸۹؛ ہندہ نے زینب کا دودھ پیا ہندہ کے بیٹے کو زینب کی دختر جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: ناجائز ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۱۸۰: ایک شخص نے اپنی زوجہ کے دھوکے میں سہو سے اپنی ہمشیرہ یا خوشدامن کا ہاتھ از روئے شہوت کے پکڑا، اس کے نکاح میں کچھ خلل واقع ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: ہمشیرہ کا ہاتھ پکڑنے سے نکاح میں کچھ خلل واقع نہ آیا اور خوشدامن کا ہاتھ پکڑنے سے نکاح فاسد ہو گیا اس سے شہوت پیدا ہوئی یا پہلے سے تھی تو زائد ہوگئی اور انزال نہ ہوا عورت ہمیشہ کو اس پر حرام ہو گئی۔ واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۱۸۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس صورت میں کہ زید نے اپنی دختر زینب کا بکر کے ساتھ نکاح کیا اور بعد نکاح قبل رخصت بکر کو بلا تحقیق زبانی باتوں پر نامرد ٹھہرا کر بے طلاق دلوائے بحالت حیات بکر کے زینب کا نکاح خالد کے ساتھ کردیا اور اس سے اولاد پیدا ہوئی پس ایسی صورت میں یہ نکاح ثانی جائز ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: صورت مستفسرہ میں قطع نظر اس سے کہ تفریق بوجہ عنت کے لیے جو امور شرعاً درکار ہیں ان میں سے یہاں ایک بھی نہیں نہ پایا گیا، رائساً بکر کا ایسا عنین ہونا ہی ثابت نہیں جس کی بناء پر زینب کو اختیار مخاصمہ و مطالبہ تفریق حاصل ہو، اس لیے ممکن تھا کہ وہ بالخصوص اس عورت سے نزدیکی پر قادر ہوتا جس صورت میں کہ زینب کی رخصت ہی نہ ہونے پائی اس کے حق میں بکر کا نامرد ہونا کیسے ثابت ہوا۔

في العالمگيرية وان كان يصل الى الثيب دون الابكار اوالى بعض النساء دون البعض وذلك لمرض به اولضعف في خلقه اولكبر سنه اوسحر

عالمگیر یہ میں ہے جو شخص ثیبہ سے جماع کی طاقت رکھتا ہو باکرہ سے نہیں یا بعض عورتوں سے جماع کی طاقت رکھتا ہو اور دیگر بعض سے نہیں اور اس کی کمزوری مرض کی وجہ سے یا پیدائشی یا بڑھاپے یا جادو کی وجہ سے ہو

Fatawa Rizvia Volume 11

“He is impotent (Inneen) in respect of her whom he cannot reach, as stated in Al-Nihayah.”[1] - Meaning, he will be considered impotent for those women with whom he does not have the power of intercourse; this is mentioned in Al-Nihayah. (T)

Therefore, without doubt, the second marriage of Zainab is purely unlawful and void. And Allah Almighty knows best.

Problem 182: From Etawah, sent by Maulvi Wasi Ali Sahib, Deputy Inspector Collectorate Etawah, 25 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. What do the scholars of the religion say on this matter: Laila and Salmi are two foster sisters. Zaid married Laila. Now, can Salmi be married to Zaid’s son, Amr bin Jamila, or will she be considered prohibited as Amr’s step-maternal aunt, i.e., his stepmother’s foster sister? Explain and be rewarded.

The Answer: In the situation asked, the marriage of Amr and Salmi is permissible, because the father’s sister-in-law is lawful as long as she is not the biological or foster mother’s real, half, maternal, or foster sister, whether the relationship is lineage-based or through fosterage. Allah Almighty said: “And [also prohibited are…] lawful for you are all others beyond these”[2] (all except the mentioned prohibited ones are lawful for you. - T). The “step-maternal aunt” who is forbidden means the step-sister of the biological or foster mother, not the biological or foster sister of the step-mother. And Allah Almighty knows best.

Problem 183: What do the scholars of the religion say on this matter: Zaid had one free woman (Hurrah) in his marriage, then he performed a second marriage with a slave girl (Kaneez). Was this marriage valid or not? And how much dower (Mehr) will be mandatory for the slave girl upon him? He also had children from this slave girl. Now that Zaid has passed away, will the slave girl and her children inherit the estate or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Marrying a slave girl over a free woman is invalid (fasid). In Durr al-Mukhtar: “The marriage of a free woman over a slave girl is valid, but the reverse is not valid. End.”[3] Summary. It is in Durr al-Mukhtar: Marrying a free woman over a slave girl is valid, and its reverse, meaning marrying a slave girl over a free woman, is not valid. End Summary. (T)

1. Fatawa Hindiyyah, The Twelfth Chapter on Impotence, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/522

2. Al-Quran 4/24
3. Durr al-Mukhtar, Section on Prohibited Relations, Matba' Mujtabai Delhi, 1/189

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

"वह उस महिला के लिए नपुंसक (इन्नीन) है जिस तक वह नहीं पहुँच सकता, जैसा कि निहाया में है।"[1] - अर्थात, उन महिलाओं के मामले में उसे नपुंसक माना जाएगा जिनसे वह संभोग करने की शक्ति नहीं रखता है, निहाया में ऐसा ही है। (त)

अतः निस्संदेह, ज़ैनब का दूसरा निकाह सरासर नाजायज़ और बातिल (अमान्य) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १८२: इटावा से, मौलवी वसी अली साहब, डिप्टी नाज़िर कलेक्टरी इटावा द्वारा प्रेषित, २५ ज़ी अल-क़ादा १३१२ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि लैला और सलमा दो रज़ाई (दूध शरीक) बहनें हैं, ज़ैद ने लैला से निकाह किया। अब क्या सलमा का निकाह उसके बेटे अम्र बिन जमीला से हो सकता है या उसे अम्र की सौतेली खाला यानी सौतेली माँ की रज़ाई बहन मानकर हराम समझा जाएगा? बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): पूछे गए मामले में अम्र और सलमा का निकाह जायज़ है, क्योंकि पिता की साली हलाल है जब तक कि वह अपनी सगी या रज़ाई माँ की सगी या सौतेली या मादरी (सहोदर) या रज़ाई बहन न हो, चाहे वह वंशानुगत हो या रज़ाई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और [वर्जित महिलाओं के अलावा...] तुम्हारे लिए उनके अलावा बाकी सब हलाल हैं"[2] (उल्लेखित हराम औरतों के अलावा तुम्हारे लिए बाकी सब हलाल हैं। - त)। जिस "सौतेली खाला" का निकाह हराम है, उसका अर्थ है सगी या रज़ाई माँ की सौतेली बहन, न कि सौतेली माँ की सगी या रज़ाई बहन। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १८३: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद के निकाह में एक स्वतंत्र महिला (हुर्रा) थी, उसने दूसरा निकाह एक लौंडी (कनीज़) से किया, यह निकाह सही हुआ या नहीं? और लौंडी का मेहर उस पर कितना अनिवार्य होगा? उस लौंडी से उसकी संतान भी हुई, अब ज़ैद का इंतकाल हो गया तो क्या लौंडी और उसकी संतान विरासत (तरका) पाएंगे या नहीं? बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): स्वतंत्र महिला के ऊपर लौंडी से निकाह करना फ़ासिद (अमान्य) है। दुर-ए-मुख़्तार में है: "दासी पर स्वतंत्र स्त्री से विवाह वैध है, और इसका उल्टा वैध नहीं है। समाप्त।"[3]

सारांश। दुर-ए-मुख़्तार में है: लौंडी पर स्वतंत्र महिला से निकाह सही है और इसका उल्टा यानी स्वतंत्र महिला पर लौंडी से निकाह सही नहीं है। इति सारांश (त)

1. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय १२ नपुंसकता पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/५२२
2. अल-क़ुरआन ४/२४
3. दुर-ए-मुख़्तार, अनुभाग निषिद्ध संबंधों पर, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८९

पृष्ठ ७३९ में से ३४२

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

فھو عنین فی حق من لا یصل الیھا کذا فی النھایۃ 1۔ تو ان عورتوں کے حق میں اس کو نامرد تصور کیا جائے گا جن سے جماع کی طاقت نہ رکھتا ہو، نہایہ میں یوں ہے۔ (ت)

پس بلاشبہ نکاح ثانی زینب کا محض ناجائز و باطل ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۸۲: از اٹاوہ مرسلہ مولوی وصی علی صاحب نائب ناظر کلکٹری اٹاوہ ۲۵ ذی قعدہ ۱۳۱۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لیلٰی و سلمٰی دورضاعی بہنیں ہیں، لیلٰی سے زید نے نکاح کیا اب سلمٰی سے اس کے پسر عمرو بن جمیلہ کا نکاح ہو سکتا ہے یا وہ عمرو کی سوتیلی خالہ یعنی سوتیلی ماں کی رضاعی بہن سمجھ کر حرام مانی جائے گی ۔ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں عمرو و سلمٰی کا نکاح جائز ہے کہ باپ کی سالی جبکہ اپنی حقیقی یا رضاعی ماں کی سگی یا سوتیلی یا مادری یا رضاعی بہن نہ ہو حلال ہے خواہ نسبی ہو خواہ رضاعی۔ قال اللہ تعالٰی : وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَاءَ ذَٰلِكُمْ 2 (محرمات مذکورہ کے سوا تم کے لیے حلال ہیں۔ ت) سوتیلی خالہ کہ حرام ہے اس کے معنی حقیقی یا رضاعی ماں کی سوتیلی بہن نہ کہ سوتیلی ماں کی حقیقی یا رضاعی بہن، واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۸۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کے نکاح میں ایک عورت حرہ تھی دوسرا نکاح اس نے ایک کنیز سے کیا، یہ نکاح صحیح ہوا یا نہیں؟ اور کنیز کا مہر اس کے ذمہ کس قدر لازم ہوگا؟ اس کنیز سے اس کی اولاد بھی ہوئی ، اب زید نے انتقال کیا تو کنیز اور اس کی اولاد ترکہ پائیں گے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: زنِ حرہ پر لونڈی سے نکاح کرنا فاسد ہے، في الدرالمختار وصح نکاح حرۃ علی امۃ ولا یصح عکسہ انتھی 3 ملخصاً۔ در مختار میں ہے لونڈی پر حرہ عورت سے نکاح صحیح ہے اور اس کا عکس یعنی حرہ پر لونڈی سے نکاح صحیح نہیں ہے۔ انتہی ملخصاً (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۲۲ 2 القرآن ۲۴/۴ 3 درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۹

Fatawa Razawiya, Volume 11

And a woman married through an irregular (fasid) marriage is not entitled to inheritance.

In 'al-Durr al-Mukhtar', chapter on the marriage of a disbeliever: "And they have reached consensus that they do not inherit from one another because inheritance is established by divine text (nass) contrary to analogy in a valid marriage absolutely, so it is restricted to it." - Ibn Malak [1]. And in the same work, the Book of Inheritances: "Entitlement to inheritance is through one of three [ways]: kinship (rahm), or a valid marriage; thus, there is no inheritance in an irregular or void marriage by consensus." [2] - Ended. In 'al-Durr al-Mukhtar', chapter on the 'Marriage of Non-Believers', it is stated that there is a consensus of the honorable Imams that they will not inherit from each other because the proof of inheritance in the divine text (nass) is contrary to analogy (qiyas) and it is found only in marriage and it will be confined to it. Ibn Malak. And in the same 'al-Durr al-Mukhtar', in the Book of Laws of Inheritance, it is mentioned that the entitlement of an heir is due to three reasons: kinship (rahm) and a valid marriage. Based on consensus, there is no entitlement to inheritance from an irregular or void marriage. - Ended (T).

Yes, if sexual intercourse (wat'i) occurred, then the lesser of the specified dower (mahr musamma) and the customary dower (mahr mithl) will be mandatory. For example, if the contract was made for a dower of five hundred rupees and the customary dower is one hundred rupees, then the customary dower will be paid. Conversely, if the specified dower (the amount fixed in the contract) is less, it will be payable. If nothing was fixed in the contract or it cannot be known, then whatever the customary dower is will be established.

In 'al-Khulasa': "In an irregular marriage, the mandatory [amount] is the lesser of the specified [dower] and the customary dower, if there was a specification [of amount]." [3]. In 'al-Durr al-Mukhtar': "The customary dower is mandatory in an irregular marriage due to intercourse, not otherwise. The customary dower shall not exceed the specified amount, even if it is less than the specified amount, the customary dower is mandatory. If no amount was specified or it was unknown, it is mandatory however much it reaches." [4] - Ended with summary. It is stated in 'al-Khulasa' that if there is a fixed dower, then in an irregular marriage, the customary dower or the fixed amount, whichever is less, will be mandatory. In 'al-Durr al-Mukhtar', it is stated that in an irregular marriage, the customary dower becomes mandatory through

intercourse; without intercourse, the customary dower does not become mandatory. The customary dower will not be increased beyond the fixed dower, even if the customary dower is less than the fixed dower. If no dower is fixed or the fixed amount is unknown, then in that case, the customary dower will be mandatory, no matter how much it is. - Ended summarized (T).

And a child born six months after the time of intercourse in an irregular marriage is, by consensus, of established lineage and entitled to inheritance.

In 'al-Durr al-Mukhtar': "Lineage is established as a precaution without a claim." In 'al-Durr al-Mukhtar', it is stated that in an irregular marriage, lineage is established as a precaution even without a claim.

[1] al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Marriage of the Disbeliever, Mujtabai Press, Delhi, 1/208 [2] al-Durr al-Mukhtar, Book of Inheritances, Chapter on Marriage of the Disbeliever, 2/352 [3] Khulasat al-Fatawa, Chapter 13 on Irregular Marriage, Maktaba Habibi, Quetta, 2/41 [4] al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Dower, Mujtabai Press, Delhi, 1/201

फतावा रज़विया, जिल्द 11

और निकाह-ए-फ़ासिद (अनियमित विवाह) से ब्याही गई महिला विरासत (उत्तराधिकार) की हकदार नहीं है।

'दुर्र-अल-मुख़्तार' के'काफ़िर के निकाह के अध्याय' में है: "और वे इस पर सहमत हैं कि वे एक-दूसरे से विरासत नहीं पाएंगे क्योंकि विरासत का सबूत पूर्णतः वैध निकाह में स्पष्ट धार्मिक पाठ (नस्स) द्वारा सादृश्य (क़यास) के विरुद्ध स्थापित है, इसलिए यह उसी तक सीमित रहेगा।" - इब्न मलक [1]। और उसी कार्य के'विरासत की किताब' में: "विरासत की हकदारी तीन में से किसी एक के माध्यम से होती है: रिश्तेदारी (रहम), या वैध निकाह; अतः सर्वसम्मति से अनियमित या अमान्य निकाह में कोई विरासत नहीं है।" [2] - इति। 'दुर्र-अल-मुख़्तार' के'काफ़िर के निकाह' वाले अध्याय में है कि प्रतिष्ठित इमामों की सर्वसम्मति (इज्मा) है कि वे आपस में उत्तराधिकारी नहीं बनेंगे क्योंकि विरासत का प्रमाण स्पष्ट पाठ (नस्स) में तर्क(क़यास) के विपरीत है और यह केवल निकाह में है और यह उसी में सीमित रहेगा। इब्न मलक। और इसी 'दुर्र-अल-मुख़्तार' की विरासत की किताब (किताबुल फ़राइज़) में है कि वारिस का हक तीन वजहों से होता है: खून का रिश्ता (रहम) और वैध (सही) निकाह। सर्वसम्मति से अनियमित (फ़ासिद) या अमान्य (बातिल) निकाह की वजह से विरासत का हक नहीं होता। - इति (त)।

हाँ, यदि संभोग (वत्ई) हुआ है, तो निर्धारित मेहर (महर मुसम्मा) और प्रथागत मेहर (महर मिस्ल) में से जो भी कम होगा, वह अनिवार्य होगा। उदाहरण के लिए, यदि निकाह पाँच सौ रुपये मेहर पर हुआ है और प्रथागत मेहर सौ रुपये है, तो प्रथागत मेहर देय होगी। इसके विपरीत स्थिति में, निर्धारित मेहर (महर मुसम्मा) जो निकाह में तय की गई थी, देय होगी। और यदि निकाह में कुछ भी निर्धारित नहीं किया गया था या निर्धारित राशि का पता नहीं लगाया जा सकता, तो प्रथागत मेहर (महर मिस्ल) तय होगी, चाहे वह कितनी ही हो।

'अल-खुलासा' में: "अनियमित निकाह में, अनिवार्य राशि निर्धारित [मेहर] और प्रथागत मेहर में से जो कम हो वह है, यदि वहां कोई मेहर निर्धारित थी।" [3]। 'दुर्र-अल-मुख़्तार' में: "अनियमित निकाह में संभोग के कारण प्रथागत मेहर अनिवार्य होती है, अन्यथा नहीं। प्रथागत मेहर निर्धारित राशि से अधिक नहीं होगी, भले ही वह निर्धारित राशि से कम हो, प्रथागत मेहर अनिवार्य है। यदि कोई राशि निर्धारित नहीं थी या अज्ञात थी, तो वह अनिवार्य है, चाहे वह जितनी भी हो।" [4] - सारांश के साथ

समाप्त। 'अल-खुलासा' में है कि यदि मेहर निर्धारित है, तो अनियमित (फ़ासिद) निकाह में प्रथागत मेहर और निर्धारित मेहर में से जो भी कम हो, वह अनिवार्य होगी। 'दुर्र-अल-मुख़्तार' में है कि अनियमित निकाह में संभोग (वत्ई) से प्रथागत मेहर अनिवार्य होती है; संभोग के बिना प्रथागत मेहर अनिवार्य नहीं होती। प्रथागत मेहर को निर्धारित मेहर से अधिक नहीं बढ़ाया जाएगा, भले ही प्रथागत मेहर निर्धारित मेहर से कम हो। और यदि मेहर निर्धारित न हो या निर्धारित मेहर ज्ञात न हो, तो ऐसी स्थिति में प्रथागत मेहर अनिवार्य होगी, चाहे वह कितनी भी हो। - संक्षेप में समाप्त (त)।

और वह संतान जो अनियमित निकाह में संभोग के समय से छह महीने बाद पैदा हुई हो, सर्वसम्मति (इज्मा) से वह वैध वंश (साबित-उन-नसब) की और विरासत की हकदार है।

'दुर्र-अल-मुख़्तार' में: "बिना दावे के सावधानी के तौर पर वंश सिद्ध हो जाता है।" 'दुर्र-अल-मुख़्तार' में है कि अनियमित निकाह में बिना दावे के सावधानीवश (एहतियातन) वंश सिद्ध हो जाता है।

[1] दुर्र-अल-मुख़्तार, काफ़िर के निकाह का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/208 [2] दुर्र-अल-मुख़्तार, विरासत की किताब, काफ़िर के निकाह का अध्याय, 2/352 [3] खुलासत-अल-फ़तावा, अनियमित निकाह पर अध्याय 13, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/41 [4] दुर्र-अल-मुख़्तार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/201

पृष्ठ 343/739

جلد یاز دہم فتاوٰی رضویہ

اور زن منکوحہ بنکاح فاسد مستحق ارث نہیں۔

فی الدر المختار من باب نکاح الکافر واجمعوا انھم لایتاورثون لان الارث انما ثبت بالنص علی خلاف القیاس فی النکاح الصحیح مطلقا فیقتصر علیہ ابن ملك ۱- و فیہ من کتاب الفرائض ویستحق الارث باحد ثلثۃ برحم ونکاح صحیح فلاتوارث بفاسد ولا باطل اجماعاً ۲- اھ در مختار کے "باب نکاح کافر" میں ہے کہ ائمہ کرام کا اجماع ہے کہ یہ آپس میں وارث نہ بنیں گے کیونکہ وراثت کا ثبوت نص میں قیاس کے خلاف ہے اور یہ صرف نکاح میں ہے اور اس میں منحصر رہے گا۔ ابن ملك۔ اور اسی در مختار کے کتاب الفرائض میں ہے کہ وارث کا استحقاق تین وجہ سے ہوتا ہے۔ رشتہ رحم اور صحیح نکاح کی بنا پر نکاح فاسد یا باطل سے باجماع استحقاق وراثت نہیں اھ (ت)

ہاں اگر وطی واقع ہوگئی تو مہر مسمیٰ و مہر مثل سے جو کم ہوگا لازم آئے گا مثلاً اگر عقد پان سو روپے مہر پر بندھا ہے اور مہر مثل سو روپے ہے تو مہر مثل، اور در صورت عکس مہر مسمیٰ یعنی جو عقد میں بندھا ہے واجب الادا ہوگا، اور جو عقد میں کچھ نہ بندھا یا بندھا معلوم نہیں ہو سکتا تو مہر مثل جس قدر ہو قرار پائے گا۔

فی الخلاصۃ الواجب فی النکاح الفاسد الاقل من المسمی ومن مہر المثل ان کان ھناك تسمیۃ ۳- فی الدرالمختار ویجب مہر المثل فی نکاح فاسد بالوطی لابغیرہ ولم یزدمہر المثل علی المسمی ولو کان دون المسمی لزم مہر المثل ولو لم یسم او جھل لزم بالغاً ما بلغ ٤- انتھی مع التلخیص۔ خلاصہ میں ہے اگر مہر مقررہ ہو تو فاسد نکاح سے مہر مثل اور مقررہ سے جو کم ہو وہ واجب ہوگا۔ در مختار میں ہے کہ فاسد نکاح میں مہر مثل وطی سے واجب ہوتا ہے وطی کے بغیر مہر مثل واجب نہیں

ہوتا اور مہر مثل مقررہ مہر سے زیادہ بھی نہیں کیا جائیگا اگرچہ مقررہ مہر سے مہر مثل کم ہو اور اگر مقرر نہ ہو یا مقرر معلوم نہ ہو تو اس صورت میں مہر مثل لازم ہوگا جتنا بھی ہو اھ ملخصاً (ت)

اور اولاد کہ نکاح فاسد میں وقت وطی سے چھ مہینے بعد پیدا ہوئی بالاجماع ثابت النسب و مستحق ارث ہے،

فی الدرالمختار ویثبت النسب احتیاطاً بلادعوۃ در مختار میں ہے کہ نکاح فاسد میں بغیر دعوی احتیاطا نسب

۱ در مختار باب نکاح الکافر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۸ ۲ در مختار کتاب الفرائض باب نکاح الکافر ۲/۳۵۲ ۳ خلاصہ الفتاوی الفصل الثالث عشر فی النکاح الفاسد مکتب حبیبیہ کوئٹہ ۲/۴۱ ٤ در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۱

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Top Box Content] Arabic: وتعتبر مدته وهى ستة اشهر من الوطى والا لا يثبت وهذا قول محمد وبه يفتى وقالا ابتداء المدة من وقت العقد كالصحيح ورجحه في النهر بانه احوط والله تعالى اعلم۔
Translation: It (the duration) will be established if it is considered for six months from intercourse, otherwise not. This is the saying of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), and the fatwa is based on this. And they (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf) said that the duration starts from the time of the contract as in a valid marriage; this has been preferred in 'An-Nahr' because it is more cautious. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 182: What do the scholars of religion say regarding this matter? (What is the opinion of the scholars of religion in this case? - T) A woman named Hindah, the wife of Bakr, was present with many other women at a domestic gathering at a place where there was a curtain at the door. Zaid's wife was also present at this gathering. Hindah, Bakr's wife, happened to be wearing the scarf or shawl of Zaid's wife. It was nighttime, and there was sufficient lighting as is customary in gatherings. In the meantime, Zaid came there, and Hindah, the aforementioned wife of Bakr, whose face was uncovered, brought it outside the curtain. Zaid kissed her on the cheek. Hindah and other women took Zaid to task for this. At that time, in front of everyone and five or seven reliable men, Zaid excused himself saying that he kissed his own wife by mistake because Bakr's wife, Hindah, was wearing his wife's shawl. He claimed he took the kiss out of deception and doubt and did not commit this act intentionally. Now, according to Sharia, is the marriage of the aforementioned Hindah's daughter to Zaid valid or invalid? Please issue a ruling on this matter with your signature. May Allah reward you.

The Answer: In the scenario presented, if it is proven that Zaid kissed Bakr's wife with lustful intent, then all of the woman's offspring are forever forbidden (haram) to Zaid. Marriage with them is not possible in any way. If marriage has been contracted unknowingly, it is mandatory for both parties to annul it, otherwise they will be grave sinners. If the husband does not agree to annulment, the woman herself can annul it, as specified in 'Radd al-Muhtar' (as it is mentioned in Radd al-Muhtar etc. - T). In fact, the absolute researcher Imam Kamal al-Millah wa al-Din Muhammad ibn al-Humam (may his secret be sanctified) stated in 'Fath al-Qadir', a commentary on 'Al-Hidayah', that just as kissing the lips will be considered lustful, even if the person claims it was not done with lust, his claim will not be accepted and a ruling of eternal

prohibition will be given. The same should be the case for kissing the cheek; it should also be considered as being with lust, and...

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi 1/201 Page 344 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[शीर्ष बॉक्स सामग्री] अरबी: وتعتبر مدته وهى ستة اشهر من الوطى والا لا يثبت وهذا قول محمد وبه يفتى وقالا ابتداء المدة من وقت العقد كالصحيح ورجحه في النهر بانه احوط والله تعالى اعلم۔ अनुवाद: (अवधि) तब प्रमाणित होगी जब अवधि का विचार होगा जो कि संभोग से छह महीने तक है, अन्यथा नहीं। यह इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) का कथन है और इसी पर फतवा है। और इमाम आज़म और इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अनुसार अवधि का विचार निकाह के समय से छह महीने है जैसा कि सही निकाह में होता है; 'अन-नहर' में इसे प्राथमिकता दी गई है क्योंकि इसमें अधिक सावधानी है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 182: इस मसले में दीन के उलमा क्या कहते हैं? (दीन के उलमा का इस मामले में क्या कहना है? - त) कि बक्र की पत्नी हिंदा किसी घरेलू समारोह में कई महिलाओं के साथ एक स्थान पर मौजूद थी जहाँ दरवाज़े पर पर्दा लगा था। उस सभा में ज़ैद की पत्नी भी थी। बक्र की पत्नी हिंदा ने इत्तेफ़ाक से ज़ैद की पत्नी का दुपट्टा या चादर ओढ़ रखी थी। रात का समय था, रोशनी पर्याप्त थी जैसा कि समारोहों में रिवाज है। इसी बीच ज़ैद वहाँ आया और उपर्युक्त बक्र की पत्नी हिंदा ने अपना चेहरा जो खुला था, पर्दे से बाहर निकाला, तो ज़ैद ने उसके गाल पर बोसा (चुंबन) ले लिया। हिंदा और अन्य महिलाओं ने ज़ैद की इस हरकत पर उसे टोका। उस समय ज़ैद ने सबके सामने और पांच-सात नेक गवाहों के सामने यह बहाना बनाया कि मैंने अपनी पत्नी समझकर धोखे में बोसा लिया था क्योंकि बक्र की पत्नी यानी हिंदा ने मेरी पत्नी की चादर ओढ़ रखी थी। उसने दावा किया कि यह काम धोखे और भ्रम में हुआ, जानबूझकर नहीं किया गया। तो अब शरीअत की रोशनी में उपर्युक्त हिंदा की बेटी का निकाह ज़ैद के साथ जायज़ है या नाजायज़? इस मामले पर हुक्म फ़रमाकर अपने हस्ताक्षर के साथ जवाब तहरीर फरमाएं। अल्लाह के यहाँ आपको इसका अज्र मिलेगा।

अल-जवाब: पूछी गई स्थिति में, यदि यह प्रमाणित हो जाता है कि ज़ैद ने बक्र की पत्नी को कामुक दृष्टि (शहवत) से चूमा था, तो उस महिला की सभी संतानें ज़ैद के लिए हमेशा के लिए हराम (निषिद्ध) हो गई हैं। उनके साथ किसी भी तरह से निकाह नहीं हो सकता। और यदि अनजाने में निकाह हो गया है, तो दोनों पक्षों पर अनिवार्य है कि वे इसे रद्द (फ़स्ख़) कर दें, अन्यथा वे गंभीर पापी होंगे। और यदि पति रद्द करने पर सहमत न हो, तो महिला स्वयं इसे रद्द कर सकती है जैसा कि 'रद अल-मुह्तार' आदि में स्पष्ट किया गया है (जैसा कि रद अल-मुह्तार आदि में इस पर स्पष्ट उल्लेख है - त)।

बल्कि इमाम मुहक़्क़िक अल-अतलक कमाल अल-मिल्लत वाल दीन मोहम्मद बिन अल-हुमाम (अल्लाह उनकी कब्र को पवित्र करे) ने 'फ़तह अल-क़दीर' (हिदाया की व्याख्या) में स्पष्ट किया है कि जिस तरह होंठों का बोसा लेना कामुकता माना जाएगा, यहाँ तक कि अगर वह व्यक्ति दावा करे कि यह काम कामुकता से नहीं हुआ, तो उसकी बात कतई नहीं मानी जाएगी और हमेशा के लिए हराम होने का हुक्म दिया जाएगा। गाल चूमने का भी यही हाल होना चाहिए कि वह भी कामुकता के साथ ही माना जाएगा और...

---

1. दुर्र अल-मुह्तार, बाब अल-महर, मुतबा-ए-मुज्तबाई देहली 1/201 पेज 344 ऑफ़ 739

وتعتبر مدته وهی ستة اشهر من الوطی والا لا یثبت وهذا قول محمد وبه یفتی وقالا ابتداء المدة من وقت العقد کالصحیح ورجحه في النهر بانه احوط واللہ تعالی اعلم۔ ثابت ہوگا جبکہ مدت کا اعتبار ہوگا جو کہ وطی سے چھ ماہ تک ہے ورنہ نہیں، یہ امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ کا قول ہے اور اسی پر فتویٰ ہے اور امام اعظم اور امام ابو یوسف رحمۃ اللہ تعالیٰ کے قول پر مدت کا اعتبار وقت نکاح سے چھ ماہ ہے جیسا کہ صحیح نکاح میں ہوتا ہے، نہر میں اس کو ترجیح دی ہے کیونکہ اس میں زیادہ احتیاط ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۸۲: چہ می فرمایند علمائے دین دریں مسئلہ (کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں ۔ ت) کہ ہندہ زوجہ بکر کسی تقریب خانگی میں بہت سی مستورات کے ہمراہ ایک مقام پر جہاں دروازہ پر پردہ لگا تھا موجود تھی، اور اس جلسہ میں زوجہ زید بھی تھی ، زوجہ بکر دوپٹہ یا چادر زوجہ زید کا اتفاق سے اوڑھے تھی، وقت شب تھا ، روشنی کافی جیسا کہ تقریبات میں قاعدہ ہے موجود تھی ، دریں اثناء زید وہاں آیا اور ہندہ زوجہ بکر مذکورہ بالا اپنا منہ جو کھلا تھا باہر پردہ کے لائی کہ زید مذکور نے اس کا بوسہ رخسار پر لیا، ہندہ نے و دیگر عورتات نے اس کا مواخذہ زید سے کیا، اس وقت زید نے روبرو جملہ اور پانچ سات ذکور عادل کے یہ عذر کیا کہ میں نے اپنی زوجہ کے دھوکا میں بوسہ لیا تھا بوجہ اس کے کہ زوجہ بکر یعنی ہندہ مذکور میری زوجہ کا چادر اوڑھے تھی اس دھوکا اور شبہ سے بوسہ لیا تھا ہر گز دانستہ یہ فعل نہیں کیا، پس اب ہندہ مذکورہ کی لڑکی کا نکاح زید کے ساتھ از روئے شرع شریف کے درست ہے یا نادرست؟ اس امر پر حکم فرما کر دستخط خاص سے جواب تحریر فرمایا جائے عند اللہ ماجور ہوں گے۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر ثابت ہے کہ زید نے زوجہ بکر کا بوسہ بنظر شہوت لیا تو اس پر عورت کی سب اولاد ہمیشہ کے لیے زید پر حرام ہوگئی ، کسی طرح اس کے ساتھ نکاح نہیں ہو سکتا، اور اگر نادانستہ نکاح کر لیا ہے فریقین پر واجب ہے کہ اسے فسخ کر دیں ورنہ سخت گناہ گار ہوں گے۔ اور اگر شوہر فسخ پر راضی نہ ہو تو عورت بذات خود فسخ کر سکتی ہے کما نص علیہ فی ردالمختار (جیسا کہ ردالمختار وغیرہ میں اس پر نص ہے۔ ت) بلکہ امام محقق علی الاطلاق کمال الملۃ والدین محمد بن الہمام قدس سرہ العزیز نے فتح القدیر شرح ہدایہ میں تصریح فرمائی ہے کہ جس طرح لبوں کا بوسہ لینا خواہی بنظر شہوت قرار پائے گا یہاں تک کہ اگر وہ شخص ادعا کرے کہ یہ فعل مجھ سے بنظر شہوت نہ ہوا تو ہرگز قبول نہ کریں گے اور حکم حرمت ابدی دیں گے یہی حال بوسہ رخسار کا ہونا چاہئے کہ یہ بھی بشہوت ہی ٹھہرے گا اور

---

1 در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۱ Page 344 of 739

Fatawa Razawiyya, Volume Eleven

The denial of the one who kissed will not be heard. In Durr al-Mukhtar it is stated: "And in al-Fath, it appears, that is, joining the cheeks with the mouth." [1] In al-Fath it is stated that cheeks will also be considered annexed to the mouth. (T) In this manner, in the inquired case, the ruling of prohibition (hurmat) is absolute, and if Zaid denies lust, it will not be heard. And Allah Almighty knows best.

Problem 185: From Najibabad, Bijnor District, Nawabpur locality, sent by Niazullah Khan, 5 Rabi al-Awwal Sharif 1313 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a person committed adultery with a woman for a long time, and then during her lifetime, he also committed forbidden acts with her daughter, even keeping her in his house for ten years under cover. Now, having repented from adultery, he wishes to perform nikah (marriage). Is nikah possible or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Marriage with her is not possible at any time or in any condition because having intercourse with the mother, whether halal or haram, or even just touching or kissing with lust, makes the daughter forbidden forever, and similar dealings with the daughter make the mother forbidden. It is stated in Durr al-Mukhtar: "Prohibited also by affinity (musaharat) is the root of the adulteress - by adultery he meant forbidden intercourse - and the root of the one touched with lust, and the one whose internal private parts were looked at, and their branches (descendants)." [2] Summarized. And Allah Almighty knows best. The root of the adulteress becomes forbidden due to affinity; by adultery, forbidden intercourse is meant. And the root of the woman touched with lust and the one whose internal private parts were looked at with lust, and their branches became forbidden. Summarized. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 186 to 188: From Tah Nagriya, sent by Niaz Muhammad Khan, 12 Rajab 1313 AH. What do the scholars of religion say in the following matters: (1) Is marriage with the teacher's daughter permissible or not? (2) Is marriage of a teacher with female students permissible or not? (3) Is the marriage of a nephew with his uncle's wife permissible, provided she is not from among the mahrams? Explain and be rewarded.

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press Delhi, 1/188 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press Delhi, 1/188

फ़तावा रज़विया, खंड ग्यारहवाँ

चूमने वाले का इनकार स्वीकार्य नहीं होगा। दुर्रे मुख़्तार में है: "और अल-फ़तह में ज़ाहिर है, यानी गालों को मुँह के साथ मिलाना।" [1] अल-फ़तह में है कि गालों को भी मुँह के साथ जुड़ा हुआ माना जाएगा। (त) इस तरह पूछी गई सूरत में हुर्मत (वर्जना) का हुक्म मुतलक़ (निरपेक्ष) है और अगर ज़ैद शहवत (कामवासना) का इनकार करे तो वह सुना नहीं जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 185: नजीबाबाद, जिला बिजनौर, मोहल्ला नवाबपुर से नियाज़ुल्लाह खाँ द्वारा प्रेषित, 5 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1313 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने एक औरत के साथ लंबे समय तक ज़िना (व्यभिचार) किया, और फिर उसकी ज़िंदगी में उसकी बेटी के साथ भी हराम किया, यहाँ तक कि दस साल तक उसे घर में रखकर पर्दे में रखकर हराम करता रहा। अब ज़िना से तौबा करके निकाह करना चाहता है, क्या निकाह हो सकता है या नहीं? बयान कीजिए सवाब पाइए।

अल-जवाब (उत्तर): किसी भी समय, किसी भी स्थिति में उससे निकाह नहीं हो सकता क्योंकि माँ के साथ हलाल या हराम किसी भी तरह संभोग करने से, बल्कि केवल वासना के साथ छूने या चूमने से बेटी हमेशा-हमेशा के लिए हराम हो जाती है और बेटी के साथ इन व्यवहारों से माँ। दुर्रे मुख़्तार में है: "मुसाहैरत (रिश्तेदारी) के कारण वह औरत भी हराम हो गई जिससे ज़िना किया गया - ज़िना से मुराद हराम संभोग है - और वह औरत जिसे शहवत (वासना) के साथ छुआ गया हो, या जिसकी शर्मगाह (आंतरिक भाग) को शहवत से देखा गया हो, उनकी जड़ें (माएं) और उनकी शाखाएं(बेटियां) हराम हो गई।" [2] (संक्षिप्त)। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। ज़िना करने वाली की जड़ भी मुसाहैरत के तौर पर हराम हो गई, ज़िना से मुराद हराम वती (संभोग) है। और शहवत के साथ छुई गई औरत और जिसकी फ़रज-ए-दाख़िल (योनि के आंतरिक भाग) पर शहवत से नज़र पड़ी हो, उसकी असल (जड़) और उनकी फ़रअ (शाखा) हराम हो गई। (संक्षिप्त)। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 186 से 188: टाह नगरिया से नियाज़ मोहम्मद खाँ द्वारा प्रेषित, 12 रजब 1313 हिजरी। उलेमा-ए-दीन निम्नलिखित मसलों में क्या फ़रमाते हैं: (1) उस्ताद (शिक्षक) की बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं? (2) महिला शिष्याओं से उस्ताद का निकाह जायज़ है या नहीं? (3) भतीजे का निकाह

चाचा की बीवी से, जबकि वह महरम (रक्त संबंधी) न हो, जायज़ है या नहीं? बयान कीजिए सवाब पाइए।

[1] दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल-मुहर्रमात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/188 [2] दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल-मुहर्रमात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/188

بوسہ لینے والے کا انکار مسموع نہ ہوگا۔ در مختار میں ہے: وفي الفتح یترأی ای الحاق الخدین بالفم ۱۔ فتح میں ہے کہ رخسار بھی منہ سے ملحق قرار پائیں گے۔ (ت) اس طور پر صورت مستفسرہ میں مطلقاً حکم حرمت ہے اور اگر زید انکارِ شہوت کرے مسموع نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۵: از نجیب آباد ضلع بجنور محلہ نواب پور مرسلہ نیاز اللہ خاں ۵ ربیع الاول شریف ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے ایک عورت سے زنا کیا مدت تک، اور پھر اس کی زندگی میں اس کی بیٹی سے بھی حرام کیا یہاں تک کہ دس برس تک اسے گھر میں ڈال کر پردہ میں رکھ کر حرام کرتا رہا۔ اب زنا سے توبہ کر کے نکاح کرنا چاہتا ہے آیا نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: کسی وقت کسی حال اس سے نکاح نہیں ہو سکتا کہ ماں کے ساتھ حلال خواہ حرام کسی طرح صحبت کرنے بلکہ صرف بشہوت ہاتھ لگانے یا بوسہ لینے سے بیٹی ہمیشہ ہمیشہ حرام ہو جاتی ہے اور بیٹی کے ساتھ ان معاملات سے ماں۔ در مختار میں ہے: حرم ایضا بالمصھریۃ اصل مزنیۃ اراد بالزنا الوطء الحرام واصل ممسوستھ بشھوۃ والمنظور الی فرجھا الداخل وفروعھن ۲ اھ ملخصا واللہ تعالٰی اعلم۔ مزنیہ کی اصل بھی مصاہرت کے طور پر حرام ہوگئی زنا سے مراد حرام وطی ہے۔ اور شہوت کے ساتھ مس شدہ عورت اور جس کی فرج داخل پر شہوت سے نظر پڑی ہو کی اصل اور ان کی فرع حرام ہوگئی اہ ملخصاً (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۶ تا ۱۸۸: از ٹاہ نگریہ مرسلہ نیاز محمد خاں ۱۲ رجب ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مسائل ذیل میں: (۱) استاد کی بیٹی سے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ (۲) شاگرد اناث سے استاد کا

نکاح جائز ہے یا نہیں؟ (۳) بھتیجے کا نکاح چچا کی بی بی سے در حالیکہ محارم سے نہ ہو جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

۱ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۸ ۲ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۸

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

The Answer: Marriage with all of them is permissible as long as they are not mahram (prohibited relatives). Allah Almighty said: "And lawful to you are [all others] beyond these" [1] (Except those mentioned as prohibited, others are lawful for you. -Translator) And Allah Almighty knows best.

Issue 189: From Etawah, house of Qazi Muzaffar Ali Sahib, Degree writer, Munsifi, sent by Sheikh Deedar Bakhsh Sahib, 23 Safar 1312 AH. Hinda was married at the age of nine. Her husband, who was an adult, went to Nainital three months after the marriage. There he married again and had children with the second wife. Hinda demanded maintenance from her husband, but he paid no attention. Then she desired a divorce, but he did not grant it. Instead, after a period of time, he left his second wife and children and went elsewhere. He has been missing for four or five years. Now Hinda wants to remarry. Please state the Sharia ruling considering the circumstances. Now Hinda's age is twenty-five years. Speak and be rewarded.

The Answer: She cannot marry like this at all. Allah Almighty said: "And [also prohibited are] married women" [2] (Married women are forbidden. -Translator). It is mandatory for her to be patient and wait until seventy years have passed since her husband's birth. After that, his death will be decreed. As stated in Jawahir al-Akhlati: "His death shall be decreed after seventy years, and the fatwa is based on this" [3] (In Jawahir al-Akhlati: After seventy years of the missing person's age are completed, his death will be decreed. This is the fatwa. -Translator). Claiming necessity and the excuse of youth cannot make a forbidden act permissible. Many very young girls who become widows, following Hindu customs, never consider remarriage for their entire lives. Where does the concern for "necessity" and "youth" go then? There are thousands whose husbands are alive but have completely turned away from them; how do they live their lives! The notion held by some that a woman gains the right to remarry after four years according to Imam Malik's school of thought is pure ignorance and lack of knowledge regarding Imam Malik's (may Allah be pleased with him) school. His school’s position is that the woman must approach a Sharia judge. After the disappearance is proven, the judge grants a four-year respite starting from the day of the appeal. Once that period passes, the Qazi performs the separation. Then the woman can marry after completing her 'Iddah' (waiting period).

[1] The Quran 4/24 [2] The Quran 4/24 [3] Jawahir al-Akhlati, Masail Mafqud, Manuscript Page 122 Page 346 of 739

जवाब: इन सभी से निकाह जायज़ है जब तक कि वे मेहरम न हों। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तुम्हारे लिए इनके अलावा हलाल हैं" [1] (उल्लेखित वर्जितों के अलावा, अन्य तुम्हारे लिए हलाल हैं। -अनुवादक) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 189: इटावा से, काज़ी मुज़फ़्फ़र अली साहब डिग्री लेखक मुंसिफ़ी के आवास से, प्रेषक शेख दीदार बख़्श साहब, 23 सफ़र 1312 हिजरी। हिंदा का निकाह नौ वर्ष की आयु में हुआ था, उसका पति जो बालिग था, निकाह के तीन महीने बाद नैनीताल चला गया, वहाँ उसने दूसरा निकाह किया और दूसरी पत्नी से संतान हुई। हिंदा ने पति से गुज़ारा भत्ता (نان و نفقہ) मांगा, उसने कोई ध्यान नहीं दिया, तब उसने तलाक़ की इच्छा की, तलाक़ भी नहीं दिया, बल्कि कुछ समय बाद दूसरी पत्नी और बच्चों को भी छोड़ कर कहीं चला गया, पाँच-चार साल से लापता (مفقود الخبر।) है, हिंदा अब अपना दूसरा निकाह करना चाहती है, इस मामले में परिस्थितियों को देखते हुए जो शरीयत का हुक्म हो बतायें, अब हिंदा की उम्र पच्चीस साल है। बयान करें और सवाब पायें।

जवाब: वह हरगिज़ इस तरह निकाह नहीं कर सकती, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और विवाहित स्त्रियाँ" [2] (शादीशुदा औरतें हराम हैं। -अनुवादक) उस पर लाज़िम है कि वह सब्र और इंतज़ार करे यहाँ तक कि उसके पति के जन्म को सत्तर वर्ष बीत जाएँ उसके बाद उसकी मृत्यु का निर्णय दिया जाएगा। जैसा कि 'जवाहर अल-अख़्लाती' में है: "सत्तर साल के बाद उसकी मृत्यु का हुक्म किया जाएगा और इसी पर फ़तवा है" [3] (जवाहर अल-अख़्लाती में है: लापता व्यक्ति की उम्र के सत्तर साल पूरे होने के बाद उसकी मृत्यु का हुक्म दिया जाएगा। इसी पर फ़तवा है। -अनुवादक)। ज़रूरत और जवानी का बहाना हराम को हलाल नहीं कर सकता। बहुत कम उम्र की लड़कियाँ जो विधवा हो जाती हैं, हिंदुओं की रस्मों का पालन करते हुए उम्र भर निकाह का नाम नहीं लेतीं। उस समय ज़रूरत और जवानी कहाँ जाती है। हज़ारों ऐसी हैं जिनके पति जीवित हैं मगर उनकी तरफ़ से बिलकुल विमुख और उदासीन हैं, वे अपनी उम्र कैसे काटती हैं! कुछ लोगों का यह भ्रम कि इमाम मालिक के मज़हब में चार साल बीतने पर औरत को दूसरे निकाह का अधिकार मिल जाता है, निरा अज्ञान और इमाम मालिक (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के मज़हब से अनभिज्ञता है। उनका मज़हब यह है कि औरत शरीयत के हाकिम के सामने गुहार लगाए, वह लापता होने के प्रमाण के बाद मुक़दमे के दिन से चार साल की मोहलत दे। उसके बीतने पर क़ाज़ी अलगाव (تفریق) कर दे। अब औरत इद्दत पूरी करके निकाह कर सकती है।

[1] अल-क़ुरआन 4/24 [2] अल-क़ुरआन 4/24 [3] जवाहर अल-अख़्लाती, मसाइल-ए-मफ़क़ूद, हस्तलिखित प्रति, पृष्ठ 122 पृष्ठ 346 / 739

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

الجواب: ان سب سے نکاح جائز ہے جبکہ محارم نہ ہوں۔ قال اللہ تعالٰی: "وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ" 1 (محرمات مذکورہ کے ماسوا تمہارے لیے حلال ہیں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۸۹: از اٹاوہ مکان قاضی مظفر علی صاحب ڈگری نویس منصفی مرسلہ شیخ دیدار بخش صاحب ۲۳ صفر ۱۳۱۲ھ ہندہ کا نکاح نو برس کی عمر میں ہوا تھا، اس کا شوہر جو بالغ تھا تین ماہ بعد نکاح کے نینی تال کو چلا گیا وہاں اس نے اپنا نکاح کیا اور زوجہ ثانیہ سے اولاد ہوئی۔ ہندہ شوہر سے نان و نفقہ کی طالب ہوئی، اس نے کچھ التفات نہ کی، تب خواہان طلاق ہوئی، طلاق بھی نہ دی، بلکہ ایک عرصہ کے بعد زوجہ ثانیہ اور اولاد کو بھی چھوڑ کر کہیں چلا گیا، پانچ چار سال سے مفقود الخبر ہے، ہندہ اب اپنا دوسرا نکاح کیا چاہتی ہے، اس معاملہ میں بنظر حالات جو مسئلہ شرعی ہو فرمائیے، اب عمر ہندہ پچیس سال کی ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: ہرگز یوں نکاح نہیں کر سکتی، قال اللہ تعالٰی: "وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ" 2 (شادی شدہ عورتیں حرام ہیں۔ت) اس پر لازم ہے کہ صبر وانتظار کرے یہاں تک کہ اس کے شوہر کی ولادت کو ستر برس گزر جائیں، اس کے بعد اس کی موت کا حکم کیا جائے فی جواہر الاخلاطی یحکم بموتہ بعد سبعین سنۃ وعلیہ الفتوٰی 3 (جواہر الاخلاطی میں ہے: گم شدہ کی عمر کے ستر سال پورے ہونے کے بعد اس کی موت کا حکم کیا جائے گا۔ اسی پر فتوٰی ہے۔ت) ادعائے ضرورت وعذر جوانی حرام کو حلال نہیں کر سکتا۔ بہت کسن لڑکیاں کہ بیوہ ہو جاتی ہیں باتباع رسم ہنود عمر بھر نام نکاح نہیں لیتیں۔ اس وقت ضرورت و جوانی کدھر جاتی ہے۔ ہزاروں وہ ہیں جن کے شوہر زندہ موجود ہیں مگر ان کی طرف سے قطعاً برگشتہ و روگرداں، وہ اپنی عمر کیونکر کاٹتی ہیں! یہ جو بعض کا زعم ہے کہ چار سال گزرنے پر عورت کو نکاحِ ثانی کا اختیار امام مالک کے

مذہب میں حاصل ہو جاتا ہے محض جہل۔ اور امام مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ کے مذہب سے ناواقفی ہے ان کا مذہب یہ ہے کہ عورت حاکم شرعی کے حضور مستغیثہ ہو وہ بعد ثبوت مفقودی روز مرافعہ سے چار سال کی مہلت دے۔ اس کے گزرنے پر قاضی تفریق کرے۔ اب عورت عدت پوری کرکے نکاح کر سکتی ہے

1 القرآن ۲۴/۴ 2 القرآن ۲۴/۴ 3 جواہر الاخلاطی مسائل مفقود قلمی نسخہ ص ۱۲۲ Page 346 of 739

Fatawa Razawiyya, Volume 11

...If twenty years have passed before the ruling of the Shari'ah judge, then it is not valid, as clearly stated by the Maliki scholars in their books. (The Maliki scholars have clarified this in their books. - Translator). The detailed explanation of this issue by this humble servant is in 'Fatawa-e-Faqir, Kitab al-Mafqud'. (Translator). And Allah, Glory be to Him, and Exalted is He, knows best.

Issue 190: From Patna, Lodi Katra, sent by Maulana Maulvi Abdul Wahid Ghulam Siddiq Sahib Bihari, 10 Rabi' al-Akhir 1312 AH.

To His Eminence Maulana, may Allah honor you in both worlds, greetings. A Sunni man has married a Shi'a woman; will it be valid or not? Please prepare and send the Fatwa quickly as there is an urgent need. My personal opinion is against marriage. Deniers of the necessities of religion are disbelievers, and how can marriage with a Muslim be valid due to disbelief? Peace be upon you!

The Answer: Shi'as are of three types: First, Ghali (Extremists): Those who deny the necessities of religion, for example, claiming the Holy Qur'an is incomplete, calling it 'Bayad-e-Uthmani', or considering the Commander of the Faithful, Maula Ali (may Allah ennoble his face), or other Pure Imams to be superior to previous Prophets (peace and blessings be upon them), even superior to any single Prophet. Or believing in 'Bada' regarding the Lord of Glory (Glorious and Exalted is He), i.e., believing that He gives a command and then regrets it, changes it out of remorse, or that He was unaware of the wisdom initially and changed it after becoming aware. Or accusing the Radiant Presence, the Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him), of 'Taqiyyah' (dissimulation) in preaching the firm religion, and other such blasphemies. These people are certainly, definitively, and by consensus, absolute disbelievers. Their rulings are like those of apostates (murtad). It is stated in Fatawa Zahiriyya, Fatawa Hindiyya, Hadiqah Nadiyyah, etc.: 'Their rulings are the rulings of apostates.' Most, rather all, of today's 'Tabarrai' Rafidis (Shi'as who insult companions) are of this type, where their scholars, ignorant people, men, and women all share in the aforementioned blasphemous beliefs, except as Allah wills. A woman holding such beliefs is an apostate; marriage with her is not possible for a Muslim, nor a disbeliever, nor an apostate, nor one of her own religion. Any marriage that takes place will be pure adultery and the offspring will be illegitimate.

Second, Tabarrai: Those who abstain from consensus-based blasphemous beliefs and only commit 'Sabb' (insulting) of the Companions (may Allah be pleased with them).

Among them, those who deny the Caliphate of the 'Shaykhayn' (Abu Bakr and Umar, may Allah be pleased with them) and speak ill of them are, according to the jurists, disbelievers and apostates. This is explicitly stated in Al-Khulasah, Al-Hindiyya, etc. However, the verified path of the theologians is that they are innovators, destined for hellfire, 'dogs of the fire', but not disbelievers. Marriage with such a woman, although...

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on the Rulings of Apostates, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/264.
2. Khulasat al-Fatawa, Book of Words of Disbelief, Maktaba Habibia, Quetta, 4/381.

फतावा रज़विया, खंड 11

...यदि शरई काज़ी के फैसले से पहले बीस साल बीत गए हों, तो वह मान्य नहीं है, जैसा कि मालिकी विद्वानों ने अपनी किताबों में स्पष्ट रूप से बताया है। (मालिकी विद्वानों ने अपनी किताबों में इसे स्पष्ट किया है। - अनुवादक)। इस मुद्दे का विस्तृत विवरण इस फकीर के'फतावा-ए-फकीर, किताब अल-मफकुद' में है। (अनुवादक)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 190: पटना, लोदी कटरा से मौलाना मौलवी अब्दुल वाहिद गुलाम सिद्दीक साहब बिहारी द्वारा प्रेषित, 10 रबी-उल-आखिर 1312 हिजरी।

हजरत मौलाना, अल्लाह आपको दोनों लोकों में सम्मानित करे, सलाम। एक सुन्नी व्यक्ति ने एक शिया महिला से निकाह किया है, क्या यह सही होगा या नहीं? कृपया शीघ्र फतवा तैयार कर भेजें, इसकी बहुत आवश्यकता है। मेरी अपनी राय निकाह न करने की है। धर्म की अनिवार्यताओं (ज़रूरियात-ए-दीन) का खंडन करने वाले काफिर हैं, और कुफ्र के कारण मुसलमान के साथ निकाह कब सही हो सकता है? वस्सलाम!

उत्तर: शिया तीन प्रकार के होते हैं: पहला, गाली (अतिवादी): वे जो धर्म की अनिवार्यताओं का खंडन करते हैं, उदाहरण के लिए, कुरान मजीद को अधूरा बताते हैं, उसे 'बयाज़-ए-उस्मानी' कहते हैं, या अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करम अल्लाह वज्हहु) या अन्य पाक इमामों को पिछले पैगंबरों (अलैहिमुस्सलाम) से, यहाँ तक कि किसी भी एक पैगंबर से श्रेष्ठ मानते हैं। या रब्बुल इज्जत (जल्ल व अला) पर 'बदा' का विश्वास रखते हैं, यानी यह मानना कि वह कोई हुक्म देकर शर्मिंदा होता है, पछताकर उसे बदल देता है, या पहले हिकमत का ज्ञान नहीं था, बाद में पता चलने पर उसे बदल दिया। या हुज़ूर पुर नूर सैयदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर मज़बूत दीन के प्रचार में 'तकिया' (सच्चाई छिपाने) का आरोप लगाते हैं, इसके अलावा अन्य कुफ्र की बातें। ये लोग निश्चित रूप से, सर्वसम्मति से पूर्ण काफिर हैं और उनके नियम 'मुर्तद' (धर्मत्यागी) के समान हैं। फतावा जहीरिया, फतावा हिंदिया और हदीका नदिया आदि में है: 'उनके नियम मुर्तदों वाले हैं।' आज के अधिकांश बल्कि सभी 'तबर्राई' राफिज़ी इसी प्रकार के हैं कि उनके विद्वान, अज्ञानी, पुरुष और महिलाएं सभी उपर्युक्त कुफ्र वाले अकीदे में शामिल हैं, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे। जो महिला ऐसे अकीदे की हो वह मुर्तदा है, उसका निकाह न तो किसी मुसलमान से हो सकता है, न काफिर से,

न मुर्तद से और न ही उसके हम-मज़हब से। जिससे निकाह होगा वह केवल ज़िना (व्यभिचार) होगा और संतान अवैध होगी।

दूसरा, तबर्राई: जो सर्वसम्मत कुफ्र वाले अकीदों से बचते हैं और केवल सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की शान में गुस्ताखी ('सब') करते हैं। उनमें से जो 'शैखैन' (अबू बक्र और उमर, रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की खिलाफत का खंडन करने वाले और उन्हें बुरा कहने वाले हैं, वे फुकहा-ए-किराम (धर्मशास्त्रियों) के निकट काफिर और मुर्तद हैं। 'अल-खुलासा' और 'अल-हिंदिया' आदि में इस पर स्पष्ट उल्लेख (नस्स) है। लेकिन मोहक़्क़िक़ मुतकल्लिमीन (तर्कशास्त्रियों) का रास्ता यह है कि ये बिदअती, नरी (आग वाले), जहन्नुमी और 'किलाबुन्नार' (जहन्नुम के कुत्ते) हैं लेकिन काफिर नहीं। ऐसी महिला से निकाह हालांकि...

1. फतावा हिंदिया, मुर्तदों के नियमों का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 2/264।
2. खुलासातुल फतावा, कुफ्र के शब्दों की किताब, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 4/381।

पृष्ठ 347/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

پیش از حکم قاضی شرع اگر بیس برس گزر گئے تو وہ معتبر نہیں صرح بہ علماء المالکیۃ فی کتبھم (مالکی علماء نے اپنی کتب میں اس کی تصریح کی ۔ت) اس مسئلہ کی تفصیل جلیل فتاوائے فقیر کتاب المفقود میں ہے۔ت) واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۹۰: از پٹنہ لودی کٹرہ مرسلہ مولانا مولوی عبدالوحید غلام صدیق صاحب بہاری ۱۰ ربیع الآخر ۱۳۱۲ھ

حضرت مولانا اعزکم اللہ فی الدارین تسلیم، ایک شیعہ عورت سے سنی نے نکاح کیا آیا درست ہو گا یا نہیں؟ جلد فتوی مرتب فرما کر روانہ کیجئے ضرورت شدید ہ ہے۔ میری خاص رائے عدم مناکحت پر ہے۔ منکرین ضروریات دین کافر ہیں اور کفر کے سبب نکاح مسلمان سے کب درست ہے، والسلام!

الجواب: شیعہ تین قسم ہیں: اول غالی کہ منکر ضروریات دین ہوں، مثلاً قرآن مجید کو ناقص بتائیں، بیاض عثمانی کہیں یا امیر المومنین مولا علی کرم اللہ وجہہ خواہ دیگر ائمہ اطہار کو انبیائے سابقین علیہم الصلوٰۃ والتسلیم خواہ کسی ایک نبی سے افضل جانیں یا رب العزت جل وعلا پر بدع یعنی حکم دے کر پشیمان ہونا، پچھتا کر بدل دینا، یا پہلے مصلحت کا علم نہ ہونا بعد کو مطلع ہو کر تبدیل کرنا مانیں، یا حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پر تبلیغ دین متین میں تقیہ کی تہمت رکھیں الٰی غیر ذلک من الکفریات (اس کے علاوہ دیگر کفریات۔ت) یہ لوگ یقیناً قطعاً اجماعاً کافر مطلق ہیں اور ان کے احکام مثل مرتد، فتاوٰی ظہیر یہ وفتاوٰی ہندیہ و حدیقہ ندیہ و غیرہا میں ہے: احکامہم احکام المرتدین (ان کے احکام مرتدین والے ہیں۔ت) آج کل کے اکثر بلکہ تمام روافض

تبرائی اسی قسم کے ہیں کہ وہ عقیدہ کفریہ سابقہ میں ان کے عالم جاہل مرد عورت سب شریک ہیں الا ماشاء اللہ (مگر جو اللہ تعالیٰ چاہے۔ت) جو عورت ایسے عقیدہ کی ہو مرتدہ ہے کہ نکاح نہ کسی مسلم سے ہو سکتا ہے نہ کافر سے نہ مرتد سے نہ اس کے ہم مذہب سے۔ جس سے نکاح ہو گا زنائے محض ہو گا اور اولاد ولد الزنا۔

دوم تبرائی کہ عقاید کفریہ اجماعیہ سے اجتناب اور صرف سَبّ صحابہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کا ارتکاب کرتا ہو، ان میں سے منکران خلافت شیخین رضی اللہ تعالٰی عنہما اور انھیں برا کہنے والے فقہائے کرام کے نزدیک کافر و مرتد ہیں نص علیہ فی الخلاصۃ والھندیۃ وغیرہما (خلاصہ اور ہندیہ میں اس پر نص ہے۔ت) مگر مسلک محقق قول متکلمین ہے کہ یہ بدعتی ناری جہنمی کلاب النار ہیں مگر کافر نہیں، ایسی عورت سے نکاح اگرچہ

1 فتاوی ہندیہ باب فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۲۶۴ 2 خلاصۃ الفتاوی کتاب الفاظ الکفر مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۴/۳۸۱

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[It is] correct but disliked with extreme severity.

| Because in the Hadith, it is the command of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that you should not marry them. (Trans.) | As mentioned in the Hadith from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): “Do not marry them.”[1] |

In a Sahih Hadith, it is mentioned that a person cursed his she-camel. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) made him leave it, saying that a cursed she-camel should not stay with us. Then no one touched that she-camel[2] even though the she-camel herself did not deserve the curse. Those who curse the two Shaikhs (Abu Bakr and Umar, may Allah be pleased with them) are undoubtedly subject to Allah's curse:

| These are the people upon whom Allah Almighty sends His curse and all those who curse, curse them. (Trans.) | “Those are the ones upon whom Allah sends His curse and [so do] those who curse.”[3] |

Many Sahih Hadiths speak to this effect; how then would the pure Shariah tolerate keeping company with a cursed person? And Allah is the Guide.

Third: [Tafzili] One who remembers all the companions (may Allah be pleased with them) with goodness, considers the imamate of the four Caliphs (may Allah's pleasure be upon them) as rightful, but considers Amir-ul-Momineen Maula Ali to be superior to the two Shaikhs (may Allah be pleased with them). They have no relation to disbelief (Kufr), but are certainly followers of a deviant sect. Marrying such a woman is valid by consensus, though not free from being disliked (karahat) because she is an innovator (mubtadi), even if it's a minor degree of innovation. Especially if there is a possibility of her love affecting one's own faith, then the dislike will become severe, and if there is a strong probability, then it reaches the level of prohibition (tahrim). And Allah Subhanah knows best.

Problem 191: From Ahmedabad, Gujarat, Kalpur Mohalla, sent by Abdul Karim son of Abdul Ghani, 13 Jumada al-Thani 1314 AH. What is your opinion, may Allah have mercy on you, on this issue: A man married a woman, and she is still alive and in his marriage. Now, the same man wants to marry the granddaughter of that woman's brother. Is it lawful or prohibited to combine a woman and her niece's daughter in marriage? Explain the matter clearly and you will be rewarded.

The Answer: It is prohibited (haram). The basic principle in these matters is that any two women who are mahram to each other—meaning if one were considered a male, the other would be permanently prohibited for him—it is not permissible to combine such two women [in marriage]. Here it is the same.

[1] Kanz al-Ummal Hadith & Muassasa al-Risala Beirut 10/522 [2] Sahih Muslim, Chapter on Prohibiting the Cursing of Animals, Qadeemi Kutub Khana Karachi 2/323 [3] Al-Quran 2/159

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

सही है मगर सख्त नापसंदगी (कराहियत) के साथ मकरूह है।

| क्योंकि हदीस शरीफ में हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम का इर्शाद है कि उनसे निकाह न करो। (त) | जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीस में है: 'उनसे निकाह न करो'।[1] |

सही हदीस में है कि एक शख्स ने अपनी ऊंटनी पर लानत की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे छुड़वा दिया कि मलऊन (शापित) ऊंटनी हमारे साथ न रहे। फिर किसी ने उस ऊंटनी को नहीं छुआ,[2] हालांकि ऊंटनी स्वयं लानत की हकदार नहीं थी। हज़रात शैखैन (अबू बक्र और उमर, रज़ियल्लाहु अन्हुमा) पर लानत करने वाले निस्संदेह अल्लाह की लानत के पात्र हैं:

| ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला लानत फ़रमाता है और सब लानत करने वाले लानत करते हैं। (त) | 'यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और सब लानत करने वाले उन पर लानत करते हैं।'[3] |

बहुत सी सही हदीसें इस अर्थ पर साक्ष्य हैं, तो फिर एक शापित के साथ संगति रखना पाक शरीयत को कैसे गंवारा होगा? और अल्लाह ही मार्गदर्शन करने वाला है।

तीसरा: [तफ़ज़ीली] जो तमाम सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को भलाई के साथ याद करता हो, चारों खलीफाओं की इमामत को हक़ मानता हो, लेकिन सिर्फ अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली को शैखैन (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से अफ़ज़ल मानता हो। उनका कुफ्र से कोई संबंध नहीं है, लेकिन वे निश्चित रूप से बद-मज़हब (भटके हुए) हैं। ऐसी औरत से निकाह सर्वसम्मति से जायज़ है, हाँ यह कराहियत से खाली नहीं है क्योंकि वह बिदअती है, भले ही वह हल्के दर्जे की बिदअत हो। विशेष रूप से यदि उसकी मुहब्बत से अपने मज़हब पर असर पड़ने की संभावना हो, तो कराहियत गंभीर हो जाएगी, और यदि प्रबल संभावना हो तो यह हराम के करीब पहुंच जाएगी। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 191: अहमदाबाद, गुजरात, कालपुर मोहल्ला से, अब्दुल करीम साहब वल्द अब्दुल गनी साहब द्वारा भेजा गया, 13 जमादी-उल-आखिर 1314 हिजरी। इस मसले में आपकी क्या राय है, अल्लाह आप पर रहम करे: एक मर्द ने एक औरत से निकाह किया, वह औरत अभी जीवित है और उस मर्द के निकाह में मौजूद है। अब वही मर्द उस औरत के भाई की पोती (नवासी) से निकाह करना

चाहता है। क्या एक औरत और उसकी भतीजी की बेटी को निकाह में जमा करना हलाल है या हराम? स्पष्ट उत्तर दें और सवाब पाएं।

जवाब: हराम है। इन मसलों में मूल नियम यह है कि जो दो औरतें आपस में महरम हों, यानी उनमें से जिसे मर्द फर्ज़ किया जाए वह दूसरी के लिए हमेशा के लिए हराम हो, ऐसी दो औरतों को [निकाह में] जमा करना जायज़ नहीं है। यहाँ भी वैसा ही है।

[1] कन्ज़ अल-उम्माल हदीस व मुअस्ससा अर-रिसाला बेरुत 10/522 [2] सही मुस्लिम, जानवरों पर लानत की मनाही का बाब, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/323 [3] अल-कुरआन 2/159

पेज 348/739

صحیح ہے مگر سخت کراہت شدیدہ سے مکروہ ہے۔

| کیونکہ حدیث شریف میں حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کا ارشاد ہے کہ ان سے نکاح نہ کرو۔ (ت)
| لما فی الحدیث عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لاتناکحوھم ۔ 1 |

صحیح حدیث میں ہے کہ ایک شخص نے اپنے ناقہ کو لعنت کی حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اسے چھڑوا دیا کہ ملعونہ ناقہ پر ہمارے ساتھ نہ رہ۔ پھر کسی نے اس ناقہ کو نہ چھوا 2 حالانکہ ناقہ فی نفسا مستحق لعنت نہیں۔ حضرات شیخین رضی اللہ تعالٰی عنہما پر لعنت کرنے والے بلا شبہ لعنت الہی کے مورد ہیں:

| یہ وہ لوگ ہیں کہ ان پر اللہ تعالٰی لعنت فرماتا ہے اور سب لعنت کرنے والے لعنت کرتے ہیں۔ (ت) | اولئک یلعنھم اللہ ویلعنھم اللاعنون ۔ 3 |

احادیث صحیحہ کثیرہ اس معنی پر ناطق ہیں تو ایک ملعونہ سے صحبت رکھنا کیونکر شرع مطہر کو گوارا ہوگا واللہ الہادی۔

سوم تفضیلی کہ تمام صحابہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم کو خیر سے یاد کرتا ہو خلفائے اربعہ رضوان اللہ تعالٰی علیہم کی امامت بر حق جانتا ہو صرف امیر المومنین مولٰی علی کو شیخین رضی اللہ تعالٰی عنہم سے افضل مانتا ہو، انھیں کفر سے کچھ علاقہ نہیں بد مذہب ضرور ہیں ایسی عورت سے بالاتفاق نکاح جائز ہے ہاں کراہت سے خالی نہیں کہ مبتدع ہے اگرچہ ہلکے درجہ کی بدعت ہے خصوصاً اگر اس کی محبت میں اپنے مذہب پر اثر پڑنے کا احتمال ہو تو کراہت شدید ہو جائے گی اور ظن غالب تو اشد بالغ بدرجہ تحریم، واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۹۱: از احمد آباد گجرات محلہ کالپور متصل پور گلیان مرسلہ عبدالکریم صاحب ولد عبدالغنی صاحب ۱۳ جمادی الآخرہ ۱۳۱۴ھ ما قولکم رحمکم اللہ تعالیٰ اس مسئلہ میں کہ ایک مرد نے ایک عورت سے نکاح کیا ابھی وہ عورت زندہ سلامت اس مرد کے نکاح میں موجود ہے اب وہی مرد اس عورت کے بھائی کی نواسی سے نکاح کرنا چاہتا ہے آیا یہ جمع کرنا درمیان عورت اور اس کی بھتیجی کی بیٹی کے حلال ہے یا حرام؟ بینوا بیانشافیاتوجروا اجراوافیا۔

الجواب: حرام ہے، اصل ان مسائل میں یہ ہے کہ جو دو عورتیں آپس میں محرم ہوں یعنی ان میں سے جس کو مرد فرض کیا جائے دوسری پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو ایسی دو عورتوں کو جمع کرنا جائز نہیں۔ یہاں ایسا ہی ہے کہ

1 کنز العمال حدیث و موسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۰ / ۵۲۲ 2 صحیح مسلم باب النہی عن لعن الدواب قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۳۲۳ 3 القرآن ۲ / ۱۵۹

Fatawa Rizvia, Volume 11

If we suppose the first wife to be a male, then the second one would be his nephew's daughter. Just as a niece is forbidden, so is a nephew's daughter. And if we suppose the second one to be male, then the first one would be his mother's paternal aunt. Just as one's own paternal aunt is forbidden, so is the mother's paternal aunt. It is stated in Bahr al-Ra'iq:

Arabic	Urdu
Al-Asl anna kulla imra'ataini lau kanat ihdahuma dhakaran wal-ukhra untha lam yajuz lidh-dhakari an yatazawwaja al-untha fa-innahu yahrum al-jam'u bainahuma bil-qiyasa 'ala hurmat al-jam'i bainal-ukhtaini[1].	The principle is that if there are two women such that if one of them were supposed to be male and the other female, marriage would not be permissible for the male with the female, then it is prohibited to gather them both in marriage, based on the analogy of the prohibition of gathering two sisters. (T)

In Niqayah and its commentary Jami' al-Rumuz, it is stated:

Arabic	Urdu
Wa hurrima 'alal-mar'i aslahu wa far'ahu wa furu'u aslihi al-qarib minal-akhawati li-abin wa ummin au li-ahadihima wa banatihinna wa banatil-ikhowati wa in ba'udat wa sulbiyyata aslihi al-ba'id min 'ammatihi wa khalatihi li-abin wa ummin au li-ahadihima wa 'ammatihima au khalatihima wa in 'alat[2]. Wallahu Ta'ala A'lam	A man's ancestors and his own descendants and the descendants of his parents, i.e., sisters, whether they are from only the father's side, only the mother's side, or both, and the children of those brothers and sisters down to the lowest level, and the direct descendants of the higher parents, i.e., paternal and maternal grandparents up to the top, like his paternal and maternal aunts, whether they are from both parents or from one side, and the biological paternal and maternal aunts of the father and mother, or from just one parent, up to the highest level, are all forbidden to him. (T) And Allah Ta'ala knows best.

Problem 192: From Sahibganj district, Gaya, village Kahra, post office Makhdumpur, sent by Sheikh Najmuddin Hyder, 3 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say about this matter: Zaid married Hindah, and two sons, Hasan and Husain, were born from this wife. After Hindah's death, Zaid married Hafsah, and several children were born from this wife. Hafsah breastfed

Bakr, the son of Husain, along with her daughter Zubaydah. So, in this case, can the marriage of Bakr with Hasan's daughter Zahidah be possible according to the Shari'ah of Muhammad? Explain and be rewarded.

[1] Bahr al-Ra'iq, Chapter on Prohibited Persons, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/95. [2] Jami' al-Rumuz, commentary on Niqayah, Book of Marriage, Maktaba Islamia Gumbad Qamus Iran, 1/248 to 250.

फ़तावा रज़विया, भाग 11

यदि हम पहली पत्नी को पुरुष मान लें, तो दूसरी उसके भतीजे की बेटी होगी। जिस प्रकार भतीजी हराम (वर्जित) है, उसी प्रकार भतीजे की बेटी भी। और यदि हम इस दूसरी को पुरुष मान लें, तो पहली उसकी माँ की बुआ होगी। जिस प्रकार अपनी बुआ हराम है, उसी प्रकार माँ की बुआ भी। बहरुर्राइक में है:

अरबी

अल-अस्ल अन्ना कुल्ला इमरअतयनि लौ कानत इहदाहुमा ज़करन वल-उख़रा उनसा लम यजुज़ लिज़-ज़करी अन यतज़व्वजल-उनसा फ़-इन्नहु यहरुमुल-जम्अु बैनहुमा बिल-क़ियासि अला हुरमतिल-जम्अि बैनल-उख़्तयनि 1।

उर्दू

सिद्धांत यह है कि ऐसी दो औरतें जिनमें से यदि एक को पुरुष मान लिया जाए तो उनका आपस में निकाह जायज़ न हो, क्योंकि ऐसी दो औरतों को निकाह में जमा करने की हुरमत (मनाही) दो बहनों को जमा करने की हुरमत पर आधारित है। (त)

नक़ाया और उसकी व्याख्या जामेउर्रूमूज़ में है:

अरबी

व हुर्रिमा अलल-मरइ असलुहू व फ़रअुहू व फ़ुरूअु अस्लिहिल-क़रीब मिनल-अख़वाति लि-अबिन व उम्मिन औ लि-अहदिहिमा व बनातिहिन्न व बनातिल-इख़वति व इन बअुदत व सुल्बिय्यत अस्लिहिल-बअीद मिन अ़म्मातिही व ख़ालातिही लि-अबिन व उम्मिन औ लि-अहदिहिमा व अ़म्मातिहिमा औ ख़ालातिहिमा व इन अलत 2। वल्लाहु तआ़ला आ़लम

उर्दू

पुरुष के पूर्वज और उसकी अपनी संतान और उसके माता-पिता की संतान यानी बहनें, जो केवल पिता की ओर से या केवल माँ की ओर से या दोनों की ओर से हों, और उन भाइयों और बहनों की औलाद चाहे नीचे तक हो, और ऊपर वाले माँ-बाप यानी दादा-दादी और नाना-नानी ऊपर तक की सीधी संतान, उसकी बुआ और मौसी, जो माता-पिता दोनों की ओर से या एक तरफ से हों, और माँ-बाप की सगी बुआ और मौसी हों या सिर्फ माँ या बाप की ओर से हों, चाहे ऊपर तक हों, सब उस पर हराम हैं। (त) वल्लाहु तआ़ला आ़लम।

मसला 192: ज़िला साहिबगंज गया, ग्राम कहरा, डाकखाना मख़दूमपुर, प्रेषक शेख नजमुद्दीन हैदर, 3 ज़िल-क़ादा 1312 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि

ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया, इस पत्नी से दो बेटे हसन और हुसैन पैदा हुए। हिंदा की वफ़ात के बाद ज़ैद ने हफ़्सा से निकाह किया, इस पत्नी से कई संतानें पैदा हुईं। हफ़्सा ने अपनी बेटी ज़ुबैदा के साथ हुसैन के बेटे बक्र को दूध पिलाया। तो क्या इस सूरत में बक्र का निकाह हसन की बेटी ज़ाहिदा से शरीअत-ए-मुहम्मदी के अनुसार हो सकता है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

1 बहरुर्राइक फ़स्ल फिल-मुहर्रमात, एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/95 2 जामेउर्रूमूज़ शरह नक़ाया किताबुन-निकाह मकतबा इस्लामिया गुम्बद क़ामूस ईरान 1/248 से 250

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

اگر منکوحہ اولیٰ کو مرد فرض کرتے ہیں تو وہ دوسری اس کے بھتیجے کی بیٹی۔ اور جس طرح بھتیجی حرام ہے یونہی بھتیجے کی بیٹی، اور اگر اس دوسری کو مرد فرض کرتے ہیں تو وہ پہلی اس کی ماں کی پھوپھی ہے اور جس طرح اپنی پھوپھی حرام ہے یونہی ماں کی، بحرالرائق میں ہے :

عربی	اردو
الاصل ان کل امرأتین لو کانت احداھما ذکرا والاخری انثی لم یجز للذکر ان یتزوج الانثی فانه یحرم الجمع بینھما بالقیاس علی حرمة الجمع بین الاختین 1 ۔	قاعدہ یہ ہے کہ ایسی دو عورتیں جن میں سے ایک کو مرد فرض کیا جائے تو ان کا آپس میں نکاح جائز نہ ہو کیونکہ ایسی دو عورتوں کو نکاح میں جمع کرنے کی حرمت دو بہنوں کو جمع کرنے کی حرمت پر قیاس ہے۔ (ت)

نقایہ اور اس کی شرح جامع الرموز میں ہے :

عربی	اردو
وحرم علی المرء اصله وفرعه وفروع اصله القریب من الاخوات لاب وام اولاحدھما وبناتھن وبنات الاخوة وان بعدت وصلیبیة اصله البعید من عماته وخالاته	مرد کی اصل اور اس کی اپنی اولاد اور اس کے ماں باپ کی اولاد یعنی بہنیں، صرف باپ کی طرف سے یا صرف ماں کی طرف سے یا دونوں کی طرف سے ہوں اور ان بھائیوں اور بہنوں کی اولاد خواہ نیچے تک ہو، اور اوپر والے ماں باپ یعنی دادا دادی اور نانا نانی، اوپر تک کی صلبی اولاد، اس کی

عربی	اردو
لاب وام اولاحدھما وعما تھما او خالاتھما و ان علت 2 ۔ واللہ تعالیٰ اعلم	پھوپھیاں اور خالائیں، ماں باپ دونوں کی طرف سے یا ایک طرف سے ہوں، اور ماں باپ کی حقیقی پھوپھیاں اور خالائیں ہوں یا صرف ماں یا باپ کی طرف سے ہوں، خواہ اوپر تک ہوں سب اس پر حرام ہیں۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۹۲: از ضلع صاحب گنج گیا موضع کہرا ڈاکخانہ مخدوم پور مرسلہ شیخ نجم الدین حیدر صاحب ۳ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے نکاح کیا اس زوجہ سے دو بیٹے حسن و حسین پیدا ہوئے، بعد وفات ہندہ کے زید نے حفصہ سے نکاح کیا اس زوجہ سے چند اولاد پیدا ہوئی اور حفصہ نے اپنی بیٹی زبیدہ کے ساتھ حسین کے بیٹے بکر کو دودھ پلایا، پس اس صورت میں بکر کا نکاح حسن کی بیٹی زاہدہ سے موافق شرع محمدی ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

1 بحرالرائق فصل فی المحرمات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۹۵ 2 جامع الرموز شرح نقایہ کتاب النکاح مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۲۴۸/۱تا ۲۵۰

Fatawa Rizvia - Volume 11

The Answer: It is clear from the description of the question that Zubaydah is the daughter of Zaid, and she was nursed by Hafsa while Bakr was with her. If the situation is as stated, then marriage between Bakr and Zahida is strictly prohibited. Under these circumstances, Bakr becomes the son of his grandfather Zaid, and his son Hasan is his half-brother, and Hasan's daughter is Bakr's step-niece. A niece, even if step-related, is strictly forbidden for an uncle. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) states:

"Fosterage makes unlawful what birth makes unlawful." - Narrated by the group (of traditionalists) except Ibn Majah, on the authority of the Mother of the Believers, may Allah be pleased with her. (T)

It is mentioned in Alamgiri: "Forbidden for the nursed child are their foster parents and their ancestors and descendants, whether through lineage or fosterage. This includes any child born to the wet-nurse before or after this nursing, whether from her current husband or another, or any child she has nursed, or any child of the woman's husband from this woman or another, born before or after this nursing, or if another woman nursed an infant with the milk of this man. All of these are siblings to the nursed child, and their children are the nephews and nieces of that child. This is how it is stated in Al-Tahdhib." (T)

It is mentioned in Tafsir Nishapuri:

1. Sahih Muslim, Kitab al-Rada', Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/466.
2. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Rada', Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/343.

फ़तावा रिज़विया - जिल्द ग्यारहवीं

अल-जवाब: प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है कि जुबैदा ज़ैद की बेटी है और उसे हफ़्सा ने दूध पिलाया था, जबकि बक्र उसी के पास था। यदि स्थिति ऐसी ही है, तो बक्र और ज़ाहिदा के बीच निकाह पूरी तरह से हराम (वर्जित) है। इस आधार पर, बक्र अपने दादा ज़ैद का बेटा हुआ और उसका बेटा हसन उसका सौतेला भाई है, और हसन की बेटी बक्र की सौतेली भतीजी है। भतीजी, भले ही वह सौतेली हो, चाचा पर पूर्णतः हराम है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"दूध पिलाने (रज़ाअत) से वही सब रिश्ते हराम हो जाते हैं जो पैदाइश (नसब) से हराम होते हैं।" - इब्न माजा के अलावा मुहद्दीसीन के समूह ने इसे उम्मुल मोमिनीन (आयशा) रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है। (त)

आलमगीरी में है: "दूध पीने वाले बच्चे पर उसके रज़ाई (दूध के) माँ-बाप और उनके पूर्वज तथा वंशज, चाहे वे खानदानी हों या रज़ाई, सब हराम हो जाते हैं। यहाँ तक कि दूध पिलाने वाली औरत का वर्तमान पति से या किसी अन्य से, दूध पिलाने से पहले या बाद का बच्चा हो, या उसने किसी बच्चे को दूध पिलाया हो, या उस औरत के पति की कोई संतान उस औरत से हो या किसी और से हो, दूध पिलाने से पहले की हो या बाद की हो, या किसी औरत ने उस पुरुष के दूध से किसी बच्चे को दूध पिलाया हो, तो ये सभी दूध पीने वाले बच्चे के भाई-बहन होंगे, और उनकी संतान उस बच्चे के भतीजे और भांजे होंगे। तहज़ीब में इसी प्रकार उल्लेख है।" (त)

तफ़सीर निशापुरी में है:

1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-रज़ाअत, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/466।
2. फ़तावा हिंदिया, किताब अल-रज़ाअत, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/343।

पृष्ठ 350/739

الجواب: تقریر سوال سے ظاہر ہے کہ زبیدہ دختر زید ہے اور یہ شیرِ حفصہ کہ بکر نے پیازید ہی سے تھا، اگر صورت واقعہ یہی ہے تو بکر و زاہدہ میں نکاح حرام محض ہے کہ اس تقدیر پر بکر اپنے دادا زید کا بیٹا ہوا اور اس کا بیٹا حسن اس کا سوتیلا بھائی اور حسن کی بیٹی بکر کی سوتیلی بھتیجی، اور بھتیجی اگرچہ سوتیلی ہو چچا پر حرام قطعی ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

یحرم من الرضاعة مایحرم من الولادة ' - رواہ الجماعة الا ابن ماجة عن ام المومنین رضی اللہ تعالی عنہا۔

رضاعت سے سب رشتے حرام ہوجاتے ہیں جو پیدائش (نسب) سے حرام ہیں، اس کو ابن ماجہ کے بغیر محدثین نے ام المومنین رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کیا ہے۔ (ت)

عالمگیری میں ہے:

یحرم علی الرضیع ابواہ من الرضاع واصولھما و فروعھما من النسب والرضاع جمیعاً حتی ان المرضعة لو ولدت من ھذا الرجل او غیرہ قبل ھذہ الارضاع او بعدہ او ارضعت رضیعاً او ولد الرجل من غیر ھذہ المرأة قبل ھذہ الارضاع او بعدہ او ارضعت امرأة من لبنہ رضیعاً فالکل اخوة الرضیع واخوانہ واولادھم اولاد اخوتہ واخواتہ کذا فی التھذیب '۔

دودھ پینے والے بچے پر رضاعی ماں باپ اور ان کے اصول و فروع نسبی ہوں یا رضاعی سب حرام ہو جاتے ہیں، حتی کہ دودھ پلانے والی عورت کا موجودہ خاوند سے یا کسی دوسرے سے، دودھ پلانے سے پہلے یا بعد کا بچہ ہو یا اس نے کسی بچے کو دودھ پلایا ہو، یا اس عورت کے

خاوند کی کوئی اولاد اس عورت سے ہو یا کسی اور سے ہو۔ دودھ پلانے سے پہلے کی ہو یا بعد کی ہو، یا کسی عورت نے اس مرد سے اترے ہوئے دودھ کو کسی بچے کو پلایا ہو، تو یہ تمام، دودھ پینے والے بچے کے بہن بھائی ہوں گے، اور ان کی اولاد اس بچے کے بھتیجے اور بھانجے ہوں گے تہذیب میں یوں ہے۔ (ت)

تفسیر نیشاپوری میں ہے:

1 صحیح مسلم کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۶۶ 2 فتاوی ہندیہ کتاب الرضاع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۴۳

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

[Arabic]: The daughters of a foster-brother are all females whose father is the ‘male’ (the foster-mother's husband) from whom the milk originated. [Summarized] (1) [Urdu]: Foster-nieces: These are all those girls who are the offspring of the son of the husband of the woman who nursed them, from whom the milk for that woman originated. [Summarized] (T)

Yes, if Hafsah's milk was not from Zaid, then Bakr's nursing would not have made Zahida forbidden for him.

[Arabic]: Because Hasan and Bakr did not share a mother or a father, Hasan was not his (Bakr's) paternal uncle. The daughter of a paternal uncle is permissible as long as there is no other impediment to permissibility. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best. [Urdu]: Because in this case, Hasan and Bakr did not share a mother or a father, Hasan was only a paternal uncle for Bakr. And a paternal uncle's daughter is permissible if there is no other prohibition. (T) And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

Problem 193: From Shahr-e-Kohna, asked by Amir Haidar Sahib, 9 Rajab 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: by which verse and Hadith is the prohibition of Mut'ah (temporary marriage) established among the Ahl al-Sunnah? Explain and be rewarded.

The Answer: Allah Almighty says: “And they who guard their private parts, Except from their wives or those their right hands possess, for then they are not to be blamed, But whoever seeks beyond that, then those are the transgressors.” (2) Translation: Those who guard their private parts, except from their wives or their legal concubines, for which they are not blamed; but whoever seeks anything beyond that, they are the ones who exceed the limits.

It is clear that a ‘mamtua’ woman (one in temporary marriage) is neither his wife nor a legal concubine, so this is that third path which is separate from the limit set by God and is forbidden and sinful. The Lord, Blessed and Exalted, says to men: “... [desiring] to be chaste, not committing adultery nor taking secret lovers...” (3) Translation: Perform marriage by making them wives, to keep them in a bond, not for the mere discharge of water (lust) nor for making secret mistresses.

He says to women: “...they being chaste, not committing adultery, nor taking secret lovers...” (4) Translation: [Women] who come into a bond, not for seeking pleasure (extramaritally) nor for making secret lovers.

(1) Ghara'ib al-Quran (Tafsir Nishapuri), statement on the marriage of mothers and daughters, etc., Mustafa al-Babi, Egypt, 8/5. (2) Al-Quran 23/5-7 (3) Al-Quran 4/24 (4) Al-Quran 4/25

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

[अरबी]: दूध पीने वाले भाई की बेटियाँ वे सभी स्त्रियाँ हैं जिनका पिता वह 'पुरुष' (दूध पिलाने वाली महिला का पति) है जिससे दूध उत्पन्न हुआ था। [संक्षिप्त] (1)

हाँ, अगर हफ़्सा का यह दूध ज़ैद से न होता तो बक्र का यह दूध पीना ज़ाहिदा को उस पर हराम न करता।

[अरबी]: क्योंकि हसन और बक्र ने न तो माँ और न ही पिता को साझा किया, इसलिए हसन उसके (बक्र के) चाचा नहीं थे। चाचा की बेटी तब तक जायज़ है जब तक कि हलाल होने में कोई अन्य रुकावट न हो। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है। उर्दू: क्योंकि इस सूरत में हसन और बक्र न माँ में शरीक हुए और न ही बाप में, तो हसन बक्र के लिए सिर्फ चाचा हुए। और चाचा की लड़की अगर कोई और रुकावट न हो तो हलाल होती है। (त) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 193: शहर-ए-कोहना से, प्रेषक अमीर हैदर साहब, 9 रजब 1315 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मुतअह (अस्थायी विवाह) की हरामियत किस आयत और हदीस से अहल-ए-सुन्नत के यहाँ साबित है? बयान करें, आपको सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फ़रमाता है: “और वह लोग जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं। सिवाय अपनी बीवियों के या जो उनकी मिल्कियत में हों, तो उन पर कोई मलामत नहीं। तो जो इसके अलावा कोई और राह तलाश करे, तो वही लोग हद से बढ़ने वाले हैं।” (2) अनुवाद: वह लोग जो अपनी शर्मगाहों को बचाए हुए हैं मगर अपनी बीवियों या अपनी शरई कनीज़ों पर कि उन पर कुछ मलामियत नहीं तो जो इसके अलावा कोई और राह तलब करे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले।

ज़ाहिर है कि मतुआ औरत न उसकी बीवी है न शरई कनीज़, तो यह वही तीसरी राह है जो खुदा की बाँधी हुई हद से अलग और हराम व गुनाह है। रब तबारक व तआला मर्दों से फ़रमाता है: “... पाकदामन होकर, न बदकारी करने वाले और न ही गुप्त संबंध बनाने वाले...” (3) अनुवाद: निकाह करो बीवी बनाकर, कैद में रखने को न कि पानी गिराने (वासना पूर्ति) के लिए और न ही दोस्त बनाने को।

वह औरतों से फ़रमाता है: "... पाकदामन होकर, न बदकारी करने वाली और न छुपकर दोस्ती करने वाली..." (4) अनुवाद: [औरतें] जो कैद (निकाह) में आती हों, न मस्ती निकालती हों और न यार बनाती हों।

(1) ग़राइब अल-कुरान (तफ़सीर निशापुरी), माताओं और बेटियों के निकाह आदि का वर्णन, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 8/5। (2) अल-कुरान 23/5-7 (3) अल-कुरान 4/24 (4) अल-कुरान 4/25

पृष्ठ 351/739

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

بنات الاخوۃ من الرضاع کل انثٰی ولدھا ابن الفحل الذی منہ اللبن ۱ اہ ملخصاً رضاعی بھتیجیاں یہ تمام وہ لڑکیاں ہیں جو دودھ پلانے والی عورت کے اس خاوند کے بیٹے کی اولاد ہوں جس سے اس عورت کو دودھ اترا ہے۔ اہ ملخصاً(ت)

ہاں اگر حفصہ کے یہ دودھ زید سے نہ ہوتا تو بکر کی یہ رضاعت زاہدہ کو اس پر حرام نہ کرتی۔

لان الحسن وبکراح لم یشترکا فی ام ولا اب فلم یکن الحسن الاعمہ وبنت العم یحل مالم یوجد مایمنع الحل۔ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ کیونکہ حسن اور بکر اس صورت میں ماں میں اور نہ ہی باپ میں شریک ہوئے، تو حسن بکر کے لیے صرف چچا ہوا۔ اور چچا کی لڑکی اگر کوئی اور مانع نہ ہو تو حلال ہوتی ہے۔ (ت) واللہ سبحانہ وتعالی اعلم

مسئلہ ۱۹۳: از شہر کہنہ مسئولہ امیر حیدر صاحب ۹ رجب ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ متعہ کی حرمت کس آیت وحدیث سے اہل سنت کے یہاں ثابت ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: اللہ عزوجل فرماتا ہے: وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿۵﴾ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿۶﴾ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿۷﴾ ۲ وہ لوگ جو اپنی شرمگاہوں کو بچائے ہوئے ہیں مگر اپنی بیبیوں یا اپنی شرعی کنیزوں پر کہ ان پر کچھ ملامت نہیں تو جو اس کے سوا کوئی اور راہ طلب کرے تو وہی لوگ ہیں حد سے بڑھنے والے۔

ظاہر ہے کہ زن ممتوعہ نہ اس کی بی بی ہے نہ کنیز شرعی، تو یہ وہی تیسری راہ ہے جو خدا کی باندھی ہوئی حد سے جدا اور حرام وگناہ ہے۔ رب تبارک وتعالٰی مردوں سے فرماتا ہے: مُّحْصِنِينَ

غَيْرَ مُسَافِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ط ۳ نکاح کرو بی بی بنا کر، قید میں رکھنے کو نہ پانی گرانے نہ آشنا بنانے کو۔

عورتوں سے فرماتا ہے: مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَافِحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ ج ۴ قید میں آتیاں نہ مستی نکالتیاں نہ یار بناتیاں

۱ غرائب القرآن (تفسیر نیشاپوری) بیان ان نکاح الامهات والبنات الخ مصطفی البابی مصر ۸/۵ ۲ القرآن ۲۳ / ۵-۷ ۳ القرآن ۴ / ۲۴ ۴ القرآن ۴ / ۲۵

Fatawa Razawiyya Volume 11

It is clear that Mut'ah (temporary marriage) is also a means for satisfying desire and discharging fluid. It is not for keeping someone in confinement or making them a wife. In Sahih Muslim Sharif, there is a Hadith narrated by Hazrat Saburah bin Ma'bad al-Juhani (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic Quote	English Translation
O people! I had previously given you permission to perform Mut'ah with women, and now indeed Allah the Almighty has forbidden it until the Day of Judgment. 1	O people! I had previously given you permission to perform Mut'ah with women, and now indeed Allah the Almighty has forbidden it until the Day of Judgment.

In Sahih Bukhari and Sahih Muslim, it is narrated from Hazrat Amir al-Mu'minin Mawla Ali (may Allah honor his face):

Arabic Quote	English Translation
Indeed, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade Mut'ah with women on the day of Khaybar and forbade the meat of domestic donkeys. 2	Indeed, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade Mut'ah with women on the day of Khaybar and forbade the meat of domestic donkeys.

In Jami' al-Tirmidhi Sharif, it is narrated from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with him):

Arabic Quote	English Translation
He said: Mut'ah was in the beginning of Islam. A man would come to a town where he had no acquaintance, so he would marry a woman for as long as he thought he would stay there. That woman would guard his belongings and manage his affairs for him. When the noble verse was revealed [commanding to] "guard your private parts from everyone except wives and those whom your right hands possess", Ibn	Mut'ah was in the early days of Islam; a man would visit a city where he knew no one, so he would contract marriage with a woman for the number of days he intended to stay there. That woman would take care of his belongings and set his affairs in order. When the noble verse was revealed that [commanded] to keep your private parts safe except for wives and slave girls, from that day,

Arabic Quote	English Translation
Abbas said: Since that day, every private part other than those two has become forbidden. 3	every private part besides these two became forbidden.

Hazimi in the book 'Al-Nasikh wal-Mansukh' narrates from Hazrat Jabir bin Abdullah Ansari (may Allah be pleased with him): During the Battle of Tabuk, we performed Mut'ah with some women.

Arabic Quote	English Translation
Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) came...	The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) arrived.

1. Sahih Muslim, Chapter of Nikah al-Mut'ah etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 1/451
2. Sahih Bukhari, Chapter of Prohibition of Nikah al-Mut'ah, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/767
3. Jami' al-Tirmidhi, Chapter on what has come regarding Nikah al-Mut'ah, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi 1/181

फ़तावा रज़विया खंड 11

यह स्पष्ट है कि मुता (अस्थायी विवाह) भी केवल कामवासना की संतुष्टि और वीर्य स्खलन का एक माध्यम है। यह न तो किसी को कैद रखने के लिए है और न ही पत्नी बनाने के लिए। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत सबरा बिन मा'बद अल-जुहानी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक हदीस है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

अरबी उद्धरण	हिंदी अनुवाद
या अयुहन-नासु इन्नी कुंतु अज़िंतु लकुम फी अल-इस्तिमता'इ मिन अन-निसा-इ वा इन्ना अल्लाहा अज़्ज़ा व जल्ला क़द हर्रामा ज़ालिका इला यौमि अल-क़ियामा 1	ओ लोगों! मैंने पहले तुम्हें महिलाओं के साथ मुता करने की अनुमति दी थी, और अब वास्तव में अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने इसे कयामत तक के लिए हराम (निषिद्ध) कर दिया है।

सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अमीरुल मोमिनीन मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) से वर्णित है:

अरबी उद्धरण	हिंदी अनुवाद
इन्ना रसूला अल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लमा नहा अन मुतअति अन-निसा-इ यौमा खैबरा वा अन लुहूमि अल-हुमुरी अल-इनिसिया 2	बेशक अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खैबर की जंग के दिन महिलाओं से मुता और पालतू गधों के मांस को हराम करार दिया।

जामे तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है:

अरबी उद्धरण	हिंदी अनुवाद
क़ाला इन्नमा कानत फी औवलि अल-इस्लामि काना अर-रजुलु यक़दमु अल-बलदाता लैसा लहू मा'रिफ़ातुन फ़ायताज़ौव्वजु अल-मर'आता बि-क़दरी मा यरा अन्नहु युक़ीमु फतातहफ़ज़ु लहू मता'अहु वा तुस्लिहु लहू शानहु हत्ता इज़ा नज़लत अल-आयातु अल-	मुता इस्लाम के शुरुआती दिनों में था; एक आदमी किसी ऐसे शहर में जाता जहाँ वह किसी को नहीं जानता था, इसलिए वह एक महिला के साथ उतने दिनों के लिए निकाह करता जितने दिन वह वहाँ रहने का इरादा रखता था। वह महिला उसके सामान की देखभाल करती और उसके मामलों को व्यवस्थित

अरबी उद्धरण	हिंदी अनुवाद
आला अज़वाजइहिम औ मा मालकत अय्मानुहुम क़ाला इब्नु अब्बासिन फ़ाकुल्लू फ़र्जिन सिवाहुमा फ़हुवा हराम 3	करती। जब वह महान आयत उतरी जिसमें अपनी शर्मगाहों को पत्नियों और लौंडियों के अलावा सुरक्षित रखने का आदेश दिया गया था, इब्ने अब्बास ने कहा: उस दिन से, इन दो के अलावा हर शर्मगाह हराम हो गई।

हाज़मी की किताब 'अन-नासिफ़ वल-मंसूख़' में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है: गज़वा-ए-तबूक में हमने कुछ औरतों से मुता किया।

अरबी उद्धरण	हिंदी अनुवाद
फ़जा-अ रसूला अल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लमा	फिर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तशरीफ़ लाए।

1. सहीह मुस्लिम, बाब निकाह अल-मुता आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/451
2. सहीह बुखारी, बाब अन-नही अन निकाह अल-मुता, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/767
3. जामे तिरमिज़ी, बाब मा जाआ फ़ी निकाह अल-मुता, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब कराची 1/181

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

ظاہر ہے کہ متعہ بھی مستی نکالنے پانی گرانے کا صیغہ ہے۔ نہ قید رکھنے بی بی بنانے کا،

صحیح مسلم شریف میں حدیث حضرت سبرہ بن معبد جہنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

یا ایھاالناس انی کنت اذنت لکم فی الاستمتاع من النساء وان اللہ عزوجل قد حرم ذلك الی یوم القیامة 1۔

اے لوگوں! میں نے پہلے تمھیں اجازت دی تھی عورتوں کے ساتھ متعہ کرنے کی، اور اب بیشک اللہ عزوجل نے اسے حرام کردیا قیامت تک۔

صحیح بخاری و صحیح مسلم میں حضرت امیر المومنین مولی علی کرم اللہ وجہہ سے ہے:

ان رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نھی عن متعة النساء یوم خیبر وعن لحوم الحمر الانسیة 2۔

بیشک رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے غزوہ خیبر کے دن عورتوں سے متعہ اور گدھے کا گوشت حرام فرمادیا۔

جامع الترمذی شریف میں حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے:

قال انما كانت فی اول الاسلام كان الرجل يقدم البلدة ليس له معرفة فيتزوج المرأة بقدر مايرى انه يقيم فتحفظ له متاعه وتصلح له شانه حتى اذا نزلت الآية الاعلى ازواجهم او ماملكت ايمانهم قال ابن عباس فكل فرج سواهما فهو حرام 3.

متعہ ابتدائے اسلام میں تھا مرد کسی شہر میں جاتا جہاں کسی سے جان پہچان نہ ہوتی تو کسی عورت سے اتنے دنوں کے لیے عقد کرلیتا جتنے روز اس کے خیال میں وہاں ٹھہرنا ہوتا، وہ عورت اس کے اسباب کی حفاظت اس کے کاموں کی درستی کرتی، جب یہ آیت شریفہ نازل ہوئی کہ سب سے اپنی شرمگاہیں محفوظ رکھو سوا بیویوں اور کنیزوں کے اس دن سے ان دو کے سوا جو فرج ہے وہ حرام ہو گئی۔

حازمی کتاب الناسخ والمنسوخ میں حضرت جابر بن عبداللہ انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی غزوہ تبوک میں ہم نے کچھ عورتوں سے متعہ کیا۔

فجاء رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لائے

1 صحیح مسلم باب نکاح المتعة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۵۱ 2 صحیح بخاری باب النهی عن نکاح المتعة قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۷۶۷ 3 جامع الترمذی باب ماجاء فی نکاح المتعة نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱/۱۸۱

Fatawa Razawiyya - Volume Eleven

He (the Prophet) looked at them and asked, 'Who are these women?' We said, 'O Messenger of Allah! (These are) women with whom we have performed Mut'ah (temporary marriage).' It is narrated that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) became so angry that his blessed cheeks turned red, and the color of his radiant face changed. He stood up to deliver a sermon, praised and extolled Allah, and then declared Mut'ah to be forbidden. Peace and blessings of Allah be upon him. And Allah knows best.

Issue 192: From the region of Bengal, Chittagong city, Cox's Bazar, sent by Maulvi Abdul Hamid Sahib on 3rd Ramadan-ul-Mubarak 1315 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it permissible to marry the wife of one's own younger biological brother or not? Please provide a ruling and be rewarded.

The Answer: It is unanimously permissible after separation due to the death or divorce of the brother, whether he was younger or older. Allah Almighty has said: '...And lawful for you are [all others] beyond these [prohibited women]...' (Quran). And Allah knows best. (T)

1. Nasb ar-Rayah, with reference to al-Hazimi, Kitab al-Nikah, al-Maktabat al-Islamiyyah li-Sahibiha Riyadh ash-Sheikh 3/179.
2. Al-Quran 4/24.

उन्होंने उन (महिलाओं) को देखा और पूछा, 'ये कौन महिलाएँ हैं?' हमने निवेदन किया, 'हे अल्लाह के रसूल! ये वे महिलाएँ हैं जिनसे हमने मुता (Mut'ah) किया है।' यह सुनकर हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बहुत क्रोधित हुए, यहाँ तक कि उनके दोनों पवित्र गाल लाल हो गए और उनके नूरानी चेहरे का रंग बदल गया। उन्होंने खड़े होकर खुतबा (प्रवचन) दिया, अल्लाह की प्रशंसा की और फिर मुता के हराम होने की घोषणा की। अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 192: बंगाल मुल्क के चटगाँव शहर, कॉक्स बाज़ार से मौलवी अब्दुल हमीद साहिब द्वारा भेजा गया, 3 रमज़ानुल मुबारक 1315 हिजरी। प्रश्न: दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि अपने छोटे सगे भाई की पत्नी से निकाह करना जायज़ है या नहीं? हुक्म बयान करें और पुण्य कमाएँ।

जवाब: छोटे या बड़े भाई की मृत्यु या तलाक के कारण अलगाव के बाद सर्वसम्मति से जायज़ है। अल्लाह तआला ने फरमाया: 'और [तुम्हारे लिए हलाल हैं] इन (वर्जित महिलाओं) के अलावा अन्य सभी।' और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

1. नसब अर-राया, अल-हाज़िमी के संदर्भ में, किताब अन-निकाह, अल-मकतबात अल-इस्लामिया लिहाज़िमिहा रियाज़ अल-शेख 3/179।
2. अल-कुरान 4/24।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

فنظر الیھن وقال من ھؤلاء النسوۃ. قلنا یا رسول اللہ نسوۃ نتمتع منھن. قال فغضب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حتی احمرت وجنتاہ، وتمعر وجھہ وقام فینا خطیباً، فحمد اللہ واثنی علیہ ثم نھی عن المتعۃ [1] انہیں دیکھا اور فرمایا یہ عورتیں کون ہیں؟ ہم نے عرض کی یا رسول اللہ! ان سے ہم نے متعہ کیا ہے، یہ سن کر حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے غضب فرمایا، یہاں تک کہ دونوں رخسارہ مبارک سرخ ہوگئے اور چہرہ انور کا رنگ بدل گیا، خطبہ فرمایا اللہ تعالٰی کی حمد وثنا بیان کی پھر متعہ کا حرام ہونا بیان فرمایا، صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۹۲: از ملک بنگالہ شہر چٹاگام کاکس بازار مرسلہ مولوی عبدالحمید صاحب ۳ رمضان المبارک ۱۳۱۵ھ چہ می فرمایند علمائے دین اندریں کہ نکاح کردن زوجہ برادر حقیقی صغیر خود جائز ست یا نہ؟ بینواتوجروا۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ چھوٹے سگے بھائی کی بیوی سے نکاح کرنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب جائز ست بالاتفاق بعد افتراق بموت یا طلاق برادر اصغر باشد یا اکبر۔ قال اللہ عز وجل، واحل لکم ماوراء ذالکم [2] - واللہ تعالٰی اعلم جواب: چھوٹے یا بڑے بھائی کے طلاق دینے یا فوتیدگی کے سبب جدائی کے بعد بالاتفاق جائز ہے۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا مندرجہ بالا محرمات کے سوا تمہارے لیے حلال ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

[1] نصب الرایہ بحوالہ الحازمی کتاب النکاح المکتبۃ الاسلامیہ لصاحبھا ریاض الشیخ ۱۷۹/۳ [2] القرآن ۲۴/۴

Fatawa Rizvia, Volume 11

Hibat al-Nisa' fi Tahqiq al-Musaharah bi'l-Zina 1315 AH (A grand investigation into establishing the prohibition of affinity through fornication)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Issue 195: Sent from Bihar, Mahalla Mahalli, by Syed Muhammad Abdul Subhan Sahib Hanafi, on 2nd Shawwal-ul-Mukarram 1315 AH. And for the second time, sent from the country of Bengal, Dhaka district, Amirabad post office, Peer Kandib village, by Muhammad Zeenat Ali Sahib, on 10th Shawwal-ul-Mukarram 1325 AH.

Respected Hazrat, Qibla and Kaaba, may your blessings continue, greetings and salutations. It is submitted that a dispute regarding a matter has spread in Bihar Sharif between the Hanafis and the Wahhabis (may Allah forsake them). Please send the answer as soon as possible. Zaid committed adultery with his mother-in-law, and his wife knew about it. Now, is that wife forbidden (haram) for Zaid or not? And if she became forbidden, is there a need to give a divorce or not? Secondly, despite having this knowledge, the wife continued to live with her husband Zaid, and Zaid also continued as usual, and they had children. Are those children entitled to Zaid's inheritance after the death of Zaid or the wife? Explain and be rewarded.

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Praise be to Allah, Who created man from clay. All praise is for the Being who [created] man from clay.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

हिबत-उन-निसा फ़ी तहक़ीक़ अल-मुसाहरा बिल-ज़िना 1315 हि. (ज़िना से हुरमत-ए-मुसाहरा के सुबूत में तहक़ीक़-ए-जलील)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

मसला 195: बिहार, मोहल्ला महल्ली से मुरसला सैयद मुहम्मद अब्दुल सुब्हान साहब हनफ़ी, 2 शव्वाल-उल-मुकर्रम 1315 हि. और दूसरी बार मुल्क-ए-बंगाल, ज़िला ढाका, डाकख़ाना अमीरआबाद, मौज़ा पीर कान्दिब से मुरसला मुहम्मद ज़ीनत अली साहब, 10 शव्वाल-उल-मुकर्रम 1325 हि.

हज़रत-ए-अक़दस क़िब्ला-ओ-काबा दामत बरकातुहुम, आदाब-ओ-तस्लीम। अर्ज़ है एक बात का झगड़ा बिहार शरीफ़ में हज़रात-ए-हनफ़िया और वहाबिया (ख़ज़लहुमुल्लाह) के दरमियान फैला हुआ है। इसका जवाब जल्द-तर रवाना फ़रमाइए। ज़ैद ने अपनी सास से ज़िना किया और उसकी बीवी को इसका इल्म था, तो अब ज़ैद पर वह बीवी हराम हुई या नहीं? और अगर हराम हुई तो ज़रूरत तलाक़ देने की है या नहीं? दूसरे वह बीवी बावजूद इल्म के अपने शौहर ज़ैद के साथ रही और ज़ैद भी हस्ब-ए-दस्तूर करता रहा और बीवी से औलाद भी हुई तो वह औलाद बाद-ए-फ़ौत ज़ैद या बीवी, ज़ैद के तरके की मुस्तहिक़ हैं या नहीं? बय्यिनू तू'जरू।

अल-जवाब: बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल-हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी ख़लक़ा मिन-अत-तीनी बशरा। तमाम तारीफें उस ज़ात के लिए जिसने मिट्टी से बशर को [पैदा किया]।

पेज 355 ऑफ़ 739

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

ھبۃ النساء فی تحقق المصاھرۃ بالزنا ۱۳۱۵ھ (زنا سے حرمت مصاہرہ کے ثبوت میں تحقیق جلیل)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۱۹۵: از بہار محلہ محلی پر مرسلہ سید محمد عبد السبحان صاحب حنفی دوم شوال مکرم ۱۳۱۵ھ و بار دوم از ملک بنگالہ ضلع ڈھاکہ ڈاکخانہ امیر آباد موضع پیرکاندب مرسلہ محمد زینت علی صاحب ۱۰ شوال مکرم ۱۳۲۵ھ

حضرت اقدس قبلہ و کعبہ دامت برکاتہم، آداب و تسلیم، عرض ہے ایک بات کا جھگڑا بہار شریف میں حضرات حنفیہ و وہابیہ خذلہم اللہ کے درمیان پھیلا ہوا ہے۔ اس کا جواب جلد تر روانہ فرمائیے، زید نے اپنی ساس سے زنا کیا اور اس کی بی بی کو اس کا علم تھا تو اب زید پر وہ بی بی حرام ہوئی یا نہیں؟ اور اگر حرام ہوئی تو ضرورت طلاق دینے کی ہے یا نہیں؟ دوسرے وہ بی بی باوجود علم کے اپنے شوہر زید کے ساتھ رہی اور زید بھی حسب دستور کرتا رہا اور بی بی سے اولاد بھی ہوئی تو وہ اولاد بعد فوت زید یابی بی زید کے ترکہ کی مستحق ہیں یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد للہ الذی خلق من الطین بشرا تمام تعریفیں اس ذات کے لیے جس نے مٹی سے بشر کو

Fatawa Rizwia Volume 11

[Arabic Section]: “And He made for him lineage and marriage relationship, and best blessings and peace be upon the master of the worlds and his noble family and his great companions forever.”

He created [them] and made lineage and marital relationships for them; may the best of blessings and peace be upon the Master of the universe and his chosen family and his great companions, forever. (T)

The wife of Zaid has become forbidden for him even if he had no knowledge of this heinous incident. I say: and success is from Allah, its grand proof is the saying of the Lord Almighty and Most High:

[Quranic Verse]: “And [forbidden for you are] your step-daughters under your guardianship [born] of your wives unto whom you have gone in. But if you have not gone in unto them, there is no sin upon you.” Forbidden for you are your step-daughters who are in your care, the daughters of those women with whom you have had intercourse; but if you have not had intercourse with them, then there is no sin upon you.

In this noble verse, the daughter of a woman with whom marriage has been consummated is made forbidden, and just as the description ‘who are in your care’ i.e., being raised in his care, is not a condition for prohibition by consensus. For example, if Zaid marries a twenty-five-year-old woman and she has a fourteen-year-old daughter from her previous husband whom Zaid has never even seen, let alone raised in his lap, could it be permissible for Zaid to also marry her daughter and keep both mother and daughter in his possession? There is no god but Allah, this is absolutely not the Sharia of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. Similarly, the description ‘of your wives’ i.e., those with whom marriage was consummated being formally married, is also not a condition by consensus. Is it permissible for someone to have intercourse with both Layla and Salma, mother and daughter, who are both his legal bondwomen? Mother and daughter on one bed? Allah forbid! How far removed this is from the Muhammadi Sharia, peace and blessings of Allah be upon him. Although bondwomen are certainly not included in ‘your wives’ nor are their daughters termed ‘step-daughters’ (raba’ib), perhaps even the non-followers (ghair-muqallids) would feel ashamed while declaring these forbidden acts as permissible. Thus, it is proven that just as marriage alone, according to the completion of the verse ‘but if you have

not gone in unto them', is not enough for the prohibition of the daughter, it is also not a necessary condition; meaning it is neither the cause nor a part of the cause. Now, what remains in the noble verse is only 'unto whom you have gone in', i.e., the daughters of those women with whom you have had intercourse. It is known that only this much is the cause for prohibition, and this is certainly proven in detail that she is a woman with whom he had intercourse. Inevitably, according to the ruling of the verse, her daughter became forbidden for him. A parallel to this in the same description of prohibitions is the saying of Allah: 'And the wives of your sons who are from your loins' - forbidden for you are the wives of your sons who are from your own loins. Just as 'who are from your loins', i.e., the son being from his own lineage, is for the exclusion of adopted sons and not for the exclusion of others etc.

[1] Al-Quran 4/23 [2] Al-Quran 4/23

फ़तावा रिज़विया जिल्द ग्यारहवीं

[अरबी खंड]: “और उसने उसके लिए वंश और वैवाहिक संबंध बनाए, और हमारे संसार के स्वामी और उनके महान परिवार और उनके महान साथियों पर हमेशा सर्वोत्तम कृपा और शांति हो।”

पैदा फ़रमाया और उसके लिए नसब (वंश) और रिश्ता-ए-इज़दवाज (विवाह) बनाया, बेहतरीन सलात और सलाम कायनात के आक़ा और उनकी बरगुजीदा (चुनी हुई) आल और उनके सहाबा-ए-इज़ाम पर, दायमी (हमेशा) हो, (त)।

ज़ैद की बीवी उस पर हराम हो गई, चाहे उसे इस घृणित घटना का इल्म भी न होता। मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है, इसकी बड़ी दलील मौला-ए-अज़्ज़-ओ-जल्ल व तबारक व ताला का फ़रमान है:

[कुरान की आयत]: “और तुम्हारी सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारी परवरिश में हैं उन औरतों की बेटियाँ जिनसे तुमने सोहबत की, फिर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं।” तुम पर हराम की गईं तुम्हारी गोद की पालियाँ, उन औरतों की बेटियाँ जिनसे तुमने सोहबत की, फिर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं।

इस आयत-ए-करीमा में उस औरत की बेटी को हराम फ़रमाया गया है जिससे सोहबत की गई हो। और जिस तरह ‘الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ’ (जो तुम्हारी गोद में हैं) यानी उसकी गोद में पलना इज्मा (सर्वसम्मति) के अनुसार हराम होने की शर्त नहीं है। मिसाल के तौर पर, ज़ैद किसी पच्चीस साल की औरत से निकाह करे और उसके पहले शौहर से उसकी एक चौदह साल की बेटी हो जिसे गोद में पालना तो दूर, ज़ैद ने आज से पहले कभी देखा भी न हो, तो क्या ज़ैद के लिए यह हलाल हो सकता है कि उसकी लड़की से भी निकाह कर ले और माँ-बेटी दोनों को अपने निकाह में ले आए? ला इलाहा इल्लल्लाह, यह हरगिज़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीयत नहीं। इसी तरह ‘نِّسَائِكُمْ’ (तुम्हारी बीवियों) का वर्णन यानी उन महिलाओं का पत्नी और विवाहिता होना भी आम सहमति से शर्त नहीं है। क्या लैला और सलमा माँ-बेटी दोनों, जो किसी की शरिया दासी हों, उसके लिए हलाल है कि वह दोनों से संभोग करे? माँ और बेटी एक ही बिस्तर पर? ख़ुदा की पनाह! यह मुहम्मदी शरीयत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कितना दूर है। हालांकि दासियाँ कभी ‘तुम्हारी बीवियों’ में शामिल नहीं होतीं और न ही उनकी बेटियों पर ‘सौतेली बेटी’ (रबाइब) शब्द लागू होता है, शायद इन हराम कामों को हलाल बताते हुए ग़ैर-मुक़ल्लिद साहब को भी शर्म आए। तो साबित हुआ

कि निकाह जिस तरह आयत के अगले हिस्से 'فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ' के हुक्म के अनुसार बेटी की हुरमत (प्रतिबंध) के लिए काफ़ी नहीं है, वैसे ही यह शर्त और ज़रूरी भी नहीं है, यानी यह न तो कारण है और न ही कारण का हिस्सा। अब आयत-ए-करीमा में केवल 'الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ' बचा यानी उन औरतों की बेटियाँ जिनके साथ तुमने सोहबत की। मालूम हुआ कि हुरमत का कारण सिर्फ़ इतना ही है, और यह निश्चित रूप से इस मामले में भी साबित है कि वह एक औरत है जिसके साथ उसने सोहबत की। यक़ीनन आयत के हुक्म के अनुसार उसकी बेटी उस पर हराम हो गई। इसकी मिसाल इसी हराम रिश्तों के बयान में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: 'وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ' यानी तुम पर उन बेटों की पत्नियाँ हराम की गईं जो तुम्हारी पीठ (सगे बेटे) से हैं। जिस तरह 'الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ' यानी बेटे का अपनी पीठ से होना गोद लिए हुए बेटे को निकालने के लिए है, न कि दूसरों को निकालने के लिए आदि।

1. अल-कुरान ४/२३
2. अल-कुरान ४/२३

पृष्ठ ३५६ का ७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

وجعل لہ نسباً وصھراً وافضل الصلوٰۃ والسلام علی سیدنا الانام والہ الکرام وصحبہ العظام علی الدوام۔

پیدا فرمایا اور اس کے لیے نسب اور رشتہ ازدواج بنایا، بہترین صلوۃ وسلام کائنات کے آقا اور اس کی برگزیدہ آل اور اس کے صحابہ عظام پر، دائمی ہو، (ت)

زوجہ زید اس پر حرام ہو گئی اگر چہ اسے اس واقعہ شنیعہ کا علم بھی نہ ہوتا اقول: وباللہ التوفیق اس کی دلیل جلیل قول مولٰی عزوجل وتبارک وتعالٰی ہے:

وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِّنْ نِّسَائِكُمُ الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۖ فَإِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۔ تم پر حرام کی گئیں تمہاری گود کی پالیاں ان عورتوں کی بیٹیاں جن سے تم نے صحبت کی پھر اگر تم نے ان سے صحبت نہ کی ہو تو تم پر کچھ گناہ نہیں۔

اس آیۂ کریمہ میں زن مدخولہ کی بیٹی حرام فرمائی اور جس طرح وصف الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ یعنی اس کی گود میں پلنا بالاجماع شرط حرمت نہیں۔ مثلاً زید کسی پچیس سال والی عورت سے نکاح کرے اور اس کے پہلے شوہر سے اس کی ایک بیٹی چاردہ سالہ ہو جسے گود میں پالنا درکنار زید نے آج سے پہلے کبھی دیکھا بھی نہ ہو تو کیا زید کو حلال ہو سکتا ہے کہ اس کی لڑکی سے بھی نکاح کرلے اور مادر و دختر دونوں کو تصرف میں لائے لاالہ الااللہ یہ ہرگز شریعتِ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نہیں۔ اسی طرح وصف نِّسَائِكُمُ یعنی ان مدخولات کا زوجہ و منکوحہ ہونا بھی بالاتفاق شرط نہیں۔ کیا لیلٰی و سلمٰی ماں بیٹی دونوں جس کی کنیز شرعی ہوں اسے حلال ہے کہ دونوں سے جماع کیا کرے، مادر و دختر دونوں ایک پلنگ پر، عیاذ باللہ، یہ شریعتِ محمدی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے کس درجہ بعید ہے۔ حالانکہ ہرگز کنیزیں نِّسَائِكُمُ میں داخل نہیں نہ ان

کی بیٹیوں پر رَبَائِبُکُمُ صادق، غالبا ان حراموں کو حلال بتاتے ہوئے غیر مقلد صاحب بھی شرم کریں، تو ثابت ہوا کہ نکاح جس طرح بحکم تتمہ آیت فَاِنْ لَّمْ تَکُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِھِنَّ تحریم دختر کے لیے کافی نہیں، یو نہی شرط و ضروری بھی نہیں یعنی نہ وہ علت ہے، نہ جزء علت اب آیہ کریمہ میں نہ رہا مگر الَّتِي دَخَلْتُمْ بِھِنَّ یعنی ان عورتوں کی بیٹیاں جن کے ساتھ تم نے صحبت کی، معلوم ہوا صرف اس قدر علت تحریم ہے اور یہ قطعاً جزئیہ میں بھی ثابت کہ وہ ایک عورت ہے جس کے ساتھ اس نے صحبت کی، لاجرم بحکم آیت اس کی بیٹی اس پر حرام ہوگئی، نظیر اس کی اسی بیانِ محرمات میں ہے قولہ عز شانہ ہے۔ وَحَلَائِلُ اَبْنَآئِکُمُ الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِکُمْ ۔ حرام کی گئیں تم پر تمھارے ان بیٹوں کی جوروئیں جو تمھاری پشت سے ہیں کہ جس طرح الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِکُمْ یعنی بیٹے کا اس کی پشت سے ہونا اخراج متبنی کے لیے ہے نہ کہ اخراج وغیرہ و غیرہ۔

1 القرآن ۲۳/۴ 2 القرآن ۲۳/۴

Volume 11 Fatawa-e-Razviya

For the sake of relationship, similarly, being a son's wife (Hala'il) is also not considered; a son's concubine who has been 'entered' (had intercourse with) is also certainly prohibited, though she is not included in the word 'Halila'. And if we take the derivative meaning (what is lawful for the son), then the general rule of prohibition would not remain correct, because a son's concubine is not absolutely prohibited until she has been entered. This is the case with "and [prohibited to you are] the mothers of your wives" (Surah An-Nisa 4:23), that your wives' mothers have been made prohibited for you; here too, the description of marriage is not a restriction, as the mother of a concubine who has been entered is also prohibited by the aforementioned evidence by consensus. Exactly by this evidence, in "And do not marry those [women] whom your fathers married" (Surah An-Nisa 4:22), if marriage is taken to mean the contract ('aqd), then the contract is not a restriction, and if it is taken to mean intercourse, then that is our exact school of thought. In short, in all these instances, the focus is solely on being entered, even if it is without marriage and that's it. Now, in "you have entered them" (Surah An-Nisa 4:23), the Lord Almighty did not mention any restriction of lawful or unlawful entry, and in its generality, both are included. So, whoever claims specialization should present evidence, and where is the evidence? Rather, the evidence stands against it. Did the daughter of a man not become absolutely prohibited to him by consensus if he had intercourse with his wife during menstruation, postnatal bleeding, fasting, i'tikaf, or ihram? Although this entry was prohibited. Rather, the scholars have mentioned many situations in which, let alone the entry, one cannot even call the woman lawful for him, and intercourse with her by consensus results in the prohibition of the daughter of the woman who was had intercourse with. For example, a concubine shared between two masters; whoever among them has intercourse with her, the daughter of that concubine will become prohibited to him. Similarly, [intercourse with] one's son's concubine, or one's non-scriptuary disbelieving concubine, or intercourse with one's wife after Zihar (a form of divorce) but before paying the expiation (kaffara)—all these, by consensus, make the daughters of these women prohibited, even though these women themselves were not lawful at all.

I say: Regarding these issues, the woman of Zihar does not even need consensus for substantiation, as the Great Quran itself is a sufficient evidence for it. Zihar, by the text of the Quran, does not dissolve marriage, so the woman of Zihar is undoubtedly included in "your wives" (nisa'ikum), and after intercourse, "you have entered them"

(dakhal-tum bihinna) is also achieved. Thus, the ruling of prohibition definitely includes her daughter. If Zaid married Hind and before intercourse, performed Zihar, then engaged in intercourse without paying expiation, is it permissible for him to marry Hind's daughter? By God, this is not the Sharia of Muhammad, the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. Although after Zihar, the woman became prohibited to him by the text of the Quran, and it was not permissible for him to touch her until he paid the expiation. So it is proven that neither marriage is a condition nor is it necessary for the intercourse to be in a lawful manner; rather, the basis of prohibition is solely the intercourse. The summary of the noble verse is that whichever woman you have had intercourse with in any way, even without marriage, even in a prohibited way, her daughter becomes prohibited to you. This is the school of thought of our noble Imams, and this is [the view of] the great companions like the Commander of the Faithful Umar Farooq, the great scholar of the companions Abdullah bin Mas'ood, the scholar of the Quran Abdullah bin Abbas and the best reciter among the companions...

---

1. Al-Quran 4:23
2. Al-Quran 4:22 Page 357 of 739

वंश के लिए, इसी तरह बेटे की पत्नी (हलाएल) होने का भी ध्यान नहीं रखा गया है; बेटे की वह दासी जिसके साथ संभोग किया गया हो, वह भी निश्चित रूप से वर्जित है, और वह शब्द 'हलीला' में शामिल नहीं है। और यदि हम व्युत्पत्तिगत अर्थ लें (जो बेटे के लिए हलाल है), तो अब निषेध की सामान्यता सही नहीं रहेगी, क्योंकि बेटे की दासी तब तक पूरी तरह से वर्जित नहीं है जब तक कि उसके साथ संभोग न किया गया हो। "وَ اُمَّهٰتُ نِسَآىٕكُمْ" (तुम्हारी पत्नियों की माताएँ) का भी यही हाल है कि तुम्हारी पत्नियों की माताओं को तुम्हारे लिए वर्जित किया गया है; यहाँ भी विवाह का गुण कोई शर्त नहीं है, क्योंकि उक्त प्रमाण के अनुसार सर्वसम्मति से उस दासी की माँ भी वर्जित है जिसके साथ संभोग किया गया हो। ठीक इसी प्रमाण से "وَ لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ" (अपने पिताओं की विवाहित पत्नियों से विवाह न करो) में यदि विवाह का अर्थ अनुबंध (अक़्द) लिया जाए, तो अनुबंध शर्त नहीं है, और यदि इसका अर्थ संभोग लिया जाए, तो वह हमारा सटीक मत है। संक्षेप में, इन सभी स्थानों पर ध्यान केवल 'संभोग' किए जाने पर है, चाहे वह बिना विवाह के ही क्यों न हो। अब "دخلتم بهن" (तुमने उनके साथ संभोग किया) में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने वैध या अवैध संभोग की कोई शर्त नहीं रखी और इसकी व्यापकता में दोनों शामिल हैं। तो, जो कोई विशेषता का दावा करता है उसे प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए, और प्रमाण कहाँ है? बल्कि प्रमाण इसके विरुद्ध खड़ा है। क्या उस व्यक्ति की बेटी सर्वसम्मति से उस पर पूर्णतः वर्जित नहीं हो गई जिसने अपनी विवाहित पत्नी के साथ केवल मासिक धर्म, या प्रसवोत्तर रक्तस्राव, या उपवास, या एतिकाफ, या एहराम की स्थिति में संभोग किया? हालांकि यह संभोग वर्जित था। बल्कि विद्वानों ने बहुत सी ऐसी स्थितियाँ बताई हैं जिनमें संभोग तो दूर, महिला को उसके लिए हलाल ही नहीं कहा जा सकता, और उसके साथ संभोग सर्वसम्मति से उस महिला की बेटी के निषेध का कारण बन जाता है। उदाहरण के लिए, दो मालिकों के बीच साझा एक दासी; उनमें से जो भी उसके साथ संभोग करेगा, उस दासी की बेटी उस पर वर्जित हो जाएगी। इसी तरह, अपने बेटे की दासी, या अपनी गैर-किताबी काफिर दासी, या अपनी उस पत्नी के साथ संभोग जिससे ज़िहार किया गया हो और कफ्फारा (प्रायश्चित) न दिया गया हो—ये सभी सर्वसम्मति से इन महिलाओं की बेटियों को वर्जित कर देते हैं, भले ही ये महिलाएँ स्वयं हलाल नहीं थीं।

मैं कहता हूँ: इन मुद्दों में ज़िहार वाली महिला को तो सर्वसम्मति के प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस पर महान कुरान स्वयं पर्याप्त प्रमाण है। कुरान के स्पष्ट पाठ के अनुसार ज़िहार विवाह

को समाप्त नहीं करता है, इसलिए ज़िहार वाली महिला निस्संदेह "तुम्हारी महिलाओं" (نسائكم) में शामिल है, और संभोग के बाद "तुमने उनके साथ प्रवेश किया" (دخلتم بهن) भी प्राप्त हो गया। तो निश्चित रूप से निषेध का आदेश उसकी बेटी को भी शामिल है। ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया और संभोग से पहले ज़िहार कर लिया, उसके बाद संभोग में लिप्त हुआ और कफ्फारा नहीं दिया। क्या इस स्थिति में उसके लिए जायज़ है कि वह हिंदा की बेटी से भी निकाह कर ले? खुदा की कसम, यह अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीयत नहीं है। हालांकि ज़िहार के बाद कुरान के स्पष्ट पाठ के अनुसार महिला उस पर वर्जित हो गई थी और जब तक वह कफ्फारा न दे दे, उसे छूना जायज़ नहीं था। तो यह सिद्ध हुआ कि न तो निकाह शर्त है और न ही संभोग का वैध होना आवश्यक है, बल्कि निषेध का आधार केवल संभोग है। आयत-ए-करीमा का सारांश यह है कि जिस महिला के साथ तुमने किसी भी तरह संभोग किया, चाहे वह बिना निकाह के हो, चाहे वह हराम तरीके से हो, उसकी बेटी तुम पर वर्जित हो गई। यही हमारे महान इमामों का मत है, और यही बड़े सहाबा जैसे अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक, सहाबा के महान विद्वान अब्दुल्ला बिन मसूद, कुरान के विद्वान अब्दुल्ला बिन अब्बास और सहाबा में सबसे अच्छे पाठक...

---

1. अल-कुरान 4:23
2. अल-कुरान 4:22 पृष्ठ 357 का 739

بنسہ کے واسطے ، یونہی وصف حلائل یعنی بیٹے کی جور وہونا بھی ملحوظ نہیں ، بیٹے کی کنیز مدخولہ بھی ضرور حرام ہے اور وہ لفظ حلیلہ میں داخل نہیں ، اور اگر اشتقاقی معنی لیجئے جو بیٹے پر حلال ہے تو اب عموم تحریم صحیح نہ رہے گا کہ بیٹے کی کنیز مطلقاً حرام نہیں جب تک مدخولہ نہ ہو ، یہی حال "وَ اُمَّهٰتُ نِسَآىِٕكُمْ" کا ہے کہ حرام کی گئیں تم پر تمہاری عورتوں کی مائیں ، یہاں پر بھی وصف زوجیت قید نہیں کہ کنیز مدخولہ کی ماں بھی بدلیل مذکور بالاتفاق حرام ، بعینہ اسی دلیل سے "وَ لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ" (اپنے باپوں کی منکوحہ بیویوں سے نکاح نہ کروت) میں اگر نکاح بہ معنی عقد لیجئے تو عقد غیر قید اور بمعنی وطی لیجئے تو وہ ہمارا عین مذہب ، بالجملہ ان سب مواضع میں مطمح نظر صرف مدخولہ ہونا ہے اگرچہ بلانکاح وبس ، اب دخلتم بھن میں مولٰی عزوجل نے دخول حلال وحرام کی کوئی قید ذکر نہ فرمائی اور اس کے اطلاق میں دونوں داخل ، تو جو مدعی تخصیص ہو دلیل پیش کرے اور دلیل کہاں بلکہ دلیل اس کے خلاف پر قائم ، کیا جس نے اپنی منکوحہ سے صرف حالت حیض یا نفاس یا صوم یا اعتکاف یا احرام میں صحبت کی ، اس کی بیٹی اس پر قطعاً اجماعاً حرام نہ ہوئی حالانکہ یہ دخول حرام تھا بلکہ علمائے کرام نے بہت وہ صورتیں ذکر فرمائیں جن میں دخول تو دخول ، عورت ہی کو اس کے لیے حلال نہیں کہہ سکتے اور اس سے وطی بالاتفاق موجب تحریمِ دخترِ موطؤہ ہو جاتی ہے مثلاً ایک کنیز دومولٰی میں مشترک ہے ان میں سے جو اس سے مقاربت کرے گا دخترِ کنیز اس پر حرام ہوجائے گی ، یونہی اپنے پسر کی کنیز یا اپنی کنیزِ کافرہ غیر کتابیہ یا اپنی اس عورت سے مجامعت جس سے ظہار کیا اور کفارہ نہ دیا ، یہ سب بالاتفاق ان عورتوں کی بنات کو حرام کردیتی ہے حالانکہ یہ عورتات سرے سے خود ہی حلال نہ تھیں ۔

اقول : ان مسائل سے زنِ مظاہرہ تو استناد بالاتفاق کا بھی محتاج نہیں کہ اس پر خود قرآن عظیم دلیل شافی ، ظہار بنصِ قرآن مزیل نکاح نہیں تو زن مظاہر بلاشبہ نسائکم میں داخل ، اور بعد وطی دخلتم بھن بھی حاصل ، تو قطعاً اس کی دختر کو حکم حرمت شامل ، زید نے ہندہ سے نکاح کیا اور قبل صحبت ظہار کر لیا بعدہ مشغول بجماع ہوا اور کفارہ نہ دیا ، کیا اس صورت میں اسے روا ہے کہ ہندہ کی بیٹی سے بھی نکاح کرلے ، حاش للہ یہ شریعت محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نہیں ، حالانکہ بعد ظہار عورت بنص قرآن اس پر حرام ہوگئی اور جب تک کفارہ نہ دے اسے ہاتھ لگانا جائز نہ تھا ، تو ثابت ہوا کہ نہ نکاح شرط نہ وطی کا بروجہ حلال ہونا لازم بلکہ مناطِ حرمت صرف وطی ہے اور حاصل آیت کریمہ یہ کہ جس عورت سے تم نے کسی طرح صحبت کی اگرچہ بلانکاح اگرچہ بروجہ حرام ، اس کی بیٹی تم پر حرام ہوگئی ، یہی ہمارے ائمہ کرام کا مذہب ، اور یہی اکابر صحابہ کرام مثل حضرت امیر المومنین عمر فاروق و حضرت علامہ صحابہ عبداللہ بن مسعود و حضرت عالم القرآن عبداللہ بن عباس و حضرت اقرؤ الصحابہ

---

1. القرآن ۲۳/۴
2. القرآن ۲۲/۴ Page 357 of 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

...Ubayy bin Ka'b, Hazrat Imran bin Husain, Hazrat Jabir bin Abdullah, and the female Mufti of the four caliphates, Siddiqah bint al-Siddiq, the beloved of the Lord of the worlds (peace and blessings of Allah be upon him and all of them), and the majority of the Tabi'un Imams such as Hazrat Imam Hasan Basri, the most excellent of the Tabi'un Sa'id bin al-Musayyib, the great Imam Ibrahim Nakha'i, Imam 'Amir Shabi, Imam Ta'us, Imam Ata bin Abi Rabah, Imam Mujahid, Imam Sulayman bin Yasar, Imam Hammad, and major Mujtahids like Imam Abdur Rahman Awza'i, Imam Ahmad bin Hanbal, Imam Ishaq bin Rahwayh, and in one narration it is from Imam Malik bin Anas (may Allah be pleased with them all).

I say that despite this, is 'nikah' used literally or metaphorically for 'intercourse' (wat'i)? A poet said:

"Those who leave their wives in the state of purity and have intercourse with cows on the banks of the Tigris."

And another poet said:

"Like a virgin who likes the pleasure of intercourse but flees from the assault of the one having intercourse."

So in the noble verse "And do not marry those whom your fathers married," at the very least it is probable (to mean intercourse), and caution is obligatory in matters of the private parts (sexual relations). Therefore, the aspect of prohibition (tahrim) is dominant; rather, the original state of the private parts is prohibition. Thus, until permissibility is proven, the ruling will remain as prohibition. Furthermore, there is no difference between kinship by marriage (musaharah) and other types; the act of intercourse itself, even if it is through prohibited means without marriage, will remain the cause of prohibition.

| And perhaps if you return to their words, you would know that the presentation of the evidence in this manner is better than what was said, because the objection mentioned in al-Fath will not apply to it. Rather, in my view, it is more correct than the first statement as well, as what I have mentioned here in the margin will guide you to it. And with Allah is success. | It is possible that when you refer to the words of the jurists (fuqaha), you will understand that this presentation of the evidence is better compared to the second statement because the objection raised by Fath against it will not exist. Rather, in my view, this is more correct than the first statement, as my

statement mentioned here in the margin will guide you. Success is only from Allah. (t) |

The opponent has no evidence for its permissibility except the hadith: "The prohibited does not make the permissible prohibited."

1 Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter: Adultery does not prohibit the permissible, Dar Sadr Beirut 7/169 Page 358 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...उबय बिन काब, हज़रत इमरान बिन हुसैन, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, और चारों खिलाफत की मुफ़्तिया सिद्दीक़ा बिंत अल-सिद्दीक़, रब्बुल आलमीन की महबूबा (उन पर और उन सब पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो), और ताबिईन के बहुमत इमाम जैसे हज़रत इमाम हसन बसरी, अफ़ज़लुत्ताबिईन सईद बिन अल-मुसय्यब, इमाम ए अजल इब्राहिम नखई, इमाम आमिर शाबी, इमाम ताऊस, इमाम अता बिन अबी रबाह, इमाम मुजाहिद, इमाम सुलेमान बिन यसार, इमाम हम्माद और बड़े मुजतहिदीन जैसे इमाम अब्दुर्रहमान औज़ाई, इमाम अहमद बिन हंबल, इमाम इसहाक़ बिन राहविया, और एक रिवायत में इमाम मालिक बिन अनस (अल्लाह उन सब से राज़ी हो) का भी यही कौल है।

मैं कहता हूँ कि इसके बावजूद, 'निकाह' का अर्थ सम्भोग (वती) के लिए हकीकत (शाब्दिक) है या मिजाज़-ए-मुआरफ़ (प्रचलित रूपक)? एक कवि ने कहा:

"अपनी पत्नियों को पाकी की हालत में छोड़ने वाले और दजला के किनारे गायों के साथ सम्भोग करने वाले।"

और एक अन्य कवि ने कहा:

"एक कुंवारी की तरह जो निकाह (सम्भोग) की लज्ज़त को पसंद करती है और निकाह करने वाले के हमले से भागती है।"

तो आयते करीमा "उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे बापों ने निकाह किया" में कम से कम (सम्भोग का अर्थ होने का) एहतमाल (संभावना) तो ज़रूर है, और शर्मगाह के मामले में एहतियात वाजिब है, इसलिए हुरमत (निषेध) का पहलू ही प्रबल है, बल्कि शर्मगाह का असल हुरमत ही है। तो जब तक हलाल होना साबित न हो जाए, हुरमत पर ही हुक्म होगा। फिर मुसाहरत (ससुराली रिश्ते) में कोई फर्क नहीं है, तो नफ़्स-ए-जिमाअ (सम्भोग का कृत्य) ही, चाहे वह निकाह के बिना हराम तरीके से ही क्यों न हो, हुरमत की इल्लत (कारण) रहेगा।

| और शायद अगर आप उनके कलाम की तरफ रुजू करें तो जान जाएंगे कि दलील की यह तक़रीर इस तरह बयान करना उससे बेहतर है जो कहा गया, क्योंकि इस पर 'अल-फ़तह' में ज़िक्र किया गया एतराज़ लागू नहीं होगा। बल्कि मेरे नज़दीक यह पहले कलाम से भी ज़्यादा सही है जैसा कि यहाँ

हाशिये पर मेरा ज़िक्र किया गया बयान आपकी रहनुमाई करेगा। और अल्लाह ही की तरफ से तौफ़ीक़ है। | हो सकता है कि जब आप फ़ुक़हा-ए-किराम के कलाम की तरफ रुजू करें तो समझ जाएं कि दूसरे कौल के मुकाबले में दलील की यह तक़रीर ज़्यादा बेहतर है क्योंकि इस पर फ़तह का बयान किया हुआ एतराज़ नहीं होगा। बल्कि मेरे नज़दीक यह पहले कलाम से भी अधिक सही है जैसा कि इसके हाशिये पर यहाँ मेरा ज़िक्र किया गया बयान तेरी रहनुमाई करेगा। अल्लाह तआला से ही तौफ़ीक़ है। (त) |

मुखालिफ के पास इसकी हिल्लत (वैधता) पर कोई दलील नहीं है सिवाय हदीस के "हराम हलाल को हराम नहीं करता"।

1 सुनन अल-कुबरा लिल-बैहक़ी, बाब: ज़िना हलाल को हराम नहीं करता, दार सादिर बेरुत 7/169 पृष्ठ 358 में से 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

ابی بن کعب وحضرت عمران بن حصین وحضرت جابر بن عبد اللہ وحضرت مفتیہِ چہار خلافت صدیقہ بنت الصدیق محبوبہ رب العالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلیہم اجمعین وجماہیر ائمہ تابعین مثل حضرات امام حسن بصری وافضل التابعین سعید بن المسیب وامام اجل ابراہیم نخعی وامام عامر شعبی وامام طاؤس وامام عطا بن ابی رباح وامام مجاہد وامام سلیمن بن یسار وامام حماد اور اکابر مجتہدین مثل امام عبدالرحمن اوزاعی وامام احمد بن حنبل وامام اسحق بن راہویہ اور ایک روایت میں امام مالک بن انس کا ہے رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین۔

اقول معہذا نکاح معنی وطی میں حقیقت ہے یا مجاز متعارف قال قائلہم (شاعر نے کہا)

التارکین علی طھر نساءھم والناکحین بشط دجلۃ البقرا (بیویوں کو طہر کی حالت میں چھوڑنے والے دجلہ کے کنارے گائے سے وطی کرتے ہیں۔ت)

وقال آخر (ایک دوسرے شاعر نے کہا)

کبکر تحب لذیذ النکاح وتھرب من صولۃ الناکح (باکرہ کی طرح کہ وہ جماع کی لذت کو پسند کرتی ہے اور خاوند کے حملہ سے فرار کرتی ہے۔ت)

تو کریمہ "لا تنکحوا مانکح آباؤکم" (اپنے باپوں کی منکوحہ عورتوں سے نکاح نہ کرو۔ت) میں لا اقل محتمل تو ضرور اور امر فرج میں احتیاط واجب ، تو جانب تحریم ہی غالب، بلکہ اصل فرج میں حرمت ہے۔ تو جب تک حل ثابت نہ ہو حرمت ہی پر حکم ہوگا پھر مصاہرت مصاہرت میں فرق نہیں تو نفس جماع ہی اگرچہ بوجہ حرام بلانکاح ہو علتِ تحریم رہے گا۔

| ولعلک ان رجعت کلماتہم دریت ان تقریر الدلیل علی ہذا الوجہ احسن مما قیل اذ لایرد علیہ ما افادہ فی الفتح بل ھو اصح عندی من کلام الاول ایضاً کما یرشدک الیہ ما ذکرتہ ھھنا علی ھامشہ وباللہ التوفیق۔ | ہوسکتا ہے کہ جب آپ فقہاء کرام کے کلام کی طرف رجوع کریں تو سمجھ جائیں کہ دوسرے قول کے مقابلہ میں دلیل کی یہ تقریر زیادہ بہتر ہے کیونکہ اس پر فتح کا بیان کردہ اعتراض نہ ہوگا۔ بلکہ میرے نزدیک یہ پہلے کلام سے بھی اصح ہے جیسا کہ اس کے حاشیہ پر یہاں میرا ذکر کردہ بیان تیری رہنمائی کرے گا۔ اللہ تعالٰی سے ہی توفیق ہے۔ (ت) |

مخالف کے پاس اس کی حلت پر کوئی دلیل نہیں مگر حدیث لایحرم الحرام الحلال حرام حلال کو حرام

1 سنن الکبری للبیھقي باب الزنا لا یحرم الحلال دار صادر بیروت ۷/ ۱۶۹ Page 358 of 739

Fatawa Ridawiyya - Volume 11

...does not do, but how can this Hadith be an evidence for the opponent when it is severely weak, discarded, and unacceptable for argumentation? Bayhaqi, despite being very diligent in the propagation of the Shafi'i school, narrated it from Mother of the Believers Siddiqa (may Allah be pleased with her) and declared it weak, as in *Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir* [1] (As it is in *Taysir*, the commentary of *Jami' Saghir* - Translator).

I say: To prove its weakness, it is sufficient that the Mother of the Believers herself held the view of prohibition as mentioned before. Had she heard the holy command of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) in this regard, what would have been the meaning of going against it? Consequently, Imam Ahmad said it is neither the command of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) nor the respect for Mother of the Believers, rather it is the saying of some judge of Iraq, as in *Al-Fath* [2] (As it is in *Al-Fath* - Translator). In the narration of Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them), there is Uthman bin Abdur Rahman Waqasi, who is the grandson of Amr bin Sa'd, the killer of Sayyiduna Imam Hussain (may Allah be pleased with him). Imam Bukhari said *Tarakoohu* [3] (scholars of Hadith abandoned him). Imam Abu Dawud said *Laysa bi-shay'in* [4] (he is nothing). Imam Ali bin Madini said he is severely weak [5]. Nasa'i and Daruqutni said he is *Matrook* [6] (discarded). To the extent that Imam Yahya bin Ma'een said *Yakdhibu* [7] (he lies).

I say: This same Uthman is also the narrator of the Hadith of Mother of the Believers Siddiqa. The narration in Ibn Hibban's *Kitab al-Du'afa* is as follows:

[Boxed Section] Left (Arabic): Al-Hasan bin Sufyan narrated to us, Ishaq bin Bahlul narrated to us, Abdullah bin Nafi' narrated to us, Al-Mughirah bin Isma'il bin Ayyub bin Salamah narrated to us, from Uthman bin Abdur Rahman, from... Right (Urdu): Al-Hasan bin Sufyan narrated to us the Hadith, from Ishaq bin Bahlul, from Abdullah bin Nafi', from Mughirah bin Isma'il bin Ayyub bin Salamah, from Uthman bin Abdur Rahman, from Imam Ibn Shihab Zuhri, from...

Footnotes: 1 Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, Letter 'La', Maktaba Imam Shafi'i, Riyadh, Saudi Arabia, 2/504 2 Fath al-Qadir, Section on Prohibitions, Maktaba Nuriyya Ridawiyya, Sukkur, 3/128 3 Kitab al-Du'afa al-Saghir with Al-Tarikh al-Saghir, Chapter 'Ayn', Maktaba Athariyya, Sangla Hill, p. 207; Mizan al-I'tidal, Letter 'Ayn', Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/43 4 Fath al-Qadir, Section on Prohibitions, Maktaba Nuriyya Ridawiyya, Sukkur, 3/128 5 Mizan al-I'tidal, Letter 'Ayn', Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/43 6

Mizan al-I'tidal, Letter 'Ayn', Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/43 7 Mizan al-I'tidal, Letter 'Ayn', Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/43

फतावा रज़विया - भाग 11

...नहीं करता लेकिन यह हदीस विपक्षी की दलील कैसे हो सकती है जबकि यह अत्यंत दुर्बल (ज़ईफ़), अस्वीकार्य और प्रमाण के लिए अयोग्य है। बैहक़ी, शाफ़ई मत के प्रचार में अत्यंत सावधान रहने के बावजूद, इसे उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णित करने के बाद दुर्बल करार दिया है, जैसा कि अल-तयसीर शरह अल-जामि अल-सगीर [1] में है। (जैसा कि जामि सगीर की व्याख्या तयसीर में है। - अनुवादक)

मैं कहता हूँ: दुर्बलता के प्रमाण के लिए यही पर्याप्त है कि स्वयं उम्मुल मोमिनीन प्रतिबंध (हुरमत) की कायल थीं जैसा कि पहले गुज़रा। यदि उन्होंने इस बारे में स्वयं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पवित्र आदेश सुना होता, तो उसके विरुद्ध जाने का क्या अर्थ था? अंततः इमाम अहमद ने फरमाया कि वह न तो पवित्र नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है और न ही उम्मुल मोमिनीन का सम्मान, बल्कि इराक के किसी काज़ी का कथन है, जैसा कि अल-फ़तह [2] में है। हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के वर्णन में उस्मान बिन अब्दुर्रहमान वक़ासी है, जो सैयदुना इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हत्यारे अम्र बिन साद का पोता है। इमाम बुखारी ने फरमाया 'तरकूह' [3] (मुहद्दिसीन ने उसे छोड़ दिया)। इमाम अबू दाऊद ने फरमाया 'लैसा बिशयइन' [4] (वह कुछ नहीं है)। इमाम अली बिन मदनी ने उसे अत्यंत दुर्बल [5] फरमाया। नसाई और दारक़ुतनी ने उसे 'मत़रूक' [6] (त्यागा हुआ) कहा है। यहाँ तक कि इमाम यह्या बिन मईन ने फरमाया 'यकज़िबु' [7] (वह झूठ बोलता है)।

मैं कहता हूँ: यही उस्मान उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा की हदीस का भी वर्णनकर्ता है। इब्न हिब्बान की किताब अल-ज़ुआफ़ा में वर्णन इस प्रकार है:

[बॉक्स वाला हिस्सा] बायां (अरबी): हसन बिन सुफ़ियान ने हमें हदीस सुनाई, इसहाक़ बिन बहलूल ने हमें सुनाई, अब्दुल्ला बिन नाफेअ ने हमें सुनाई, अल-मुग़ीरा बिन इस्माइल बिन अय्यूब बिन सलमा ने हमें सुनाई, उस्मान बिन अब्दुर्रहमान से, उन्होंने... दायां (उर्दू): हमें हसन बिन सुफ़ियान ने हदीस बयान की, उन्होंने इसहाक़ बिन बहलूल से, उन्होंने अब्दुल्ला बिन नाफेअ से, उन्होंने मुग़ीरा बिन इस्माइल बिन अय्यूब बिन सलमा से, उन्होंने उस्मान बिन अब्दुर्रहमान से, उन्होंने इमाम इब्न शिहाब ज़ुहरी से, उन्होंने...

पादलेख (Footnotes): 1 अल-तयसीर शरह अल-जामि अल-सगीर, अक्षर 'ला', मकतबा इमाम शाफ़ई, रियाद, सऊदी अरब, 2/504 2 फ़तह अल-क़दीर, वर्जनाओं का वर्णन, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/128 3 किताब अल-ज़ुआफ़ा अल-सगीर साथ अल-तारीख अल-सगीर, अध्याय 'ऐन', मकतबा असरिय्या, सांगला हिल, पृ. 207; मीज़ान अल-एतेदाल, अक्षर 'ऐन', दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 3/43 4 फ़तह अल-क़दीर, वर्जनाओं का वर्णन, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/128 5 मीज़ान अल-एतेदाल, अक्षर 'ऐन', दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 3/43 6 मीज़ान अल-एतेदाल, अक्षर 'ऐन', दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 3/43 7 मीज़ान अल-एतेदाल, अक्षर 'ऐन', दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 3/43

فتاوٰی رضویہ - جلد یازدہم

نہیں کرتا مگر یہ حدیث کس طرح مخالف کی دلیل ہو سکے جبکہ سخت ضعیف وساقط و ناقابلِ احتجاج ہے۔ بیہقی با آنکہ انتشارِ شافعیت میں اہتمامِ شدید رکھتے ہیں اسے حدیثِ ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کر کے تضعیف کردی کما فی التیسیر شرح الجامع الصغیر 1 (جیسا کہ جامع صغیر کی شرح تیسیر میں ہے۔ت)

اقول: دلیل ضعف کو یہی کافی کہ ام المومنین خود قائلِ حرمت کما تقدم (جیسا کہ گزرا۔ ت) اگر اس باب میں خود ارشادِ اقدس حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سنے ہوتے تو خلاف کے کیا معنی تھے لاجرم امام احمد نے فرمایا نہ وہ ارشادِ اقدس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہے نہ اِترامِ ام المومنین، بلکہ عراق کے کسی قاضی کا قول ہے کما فی الفتح 2 (جیسا کہ فتح میں ہے۔ت) روایت حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما میں عثمان بن عبد الرحمن وقاصی ہے جو سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالٰی عنہ کے قاتل عمرو بن سعد کا پوتا ہے۔ امام بخاری نے فرمایا ترکوہ 3 محدثین نے اسے متروک کر دیا۔ امام ابو داؤد نے فرمایا لیس بشیئی 4 کوئی چیز نہیں۔ امام علی بن مدینی نے سخت ضعیف 5 فرمایا۔ نسائی ودارقطنی نے کہا متروک 6 ہے۔ حتی کہ امام یحیٰی بن معین نے فرمایا یکذب 7 جھوٹ بولتا ہے۔

اقول: یہی عثمان حدیثِ ام المومنین صدیقہ کا بھی راوی ہے۔ روایت ابن حبان کتاب الضعفاء میں یوں ہے:

[جدول] بائیں جانب (عربی): حدثنا الحسن بن سفین نا اسحق بن بھلول نا عبد اللہ بن نافع نا المغیرۃ بن اسمعیل بن ایوب بن سلمۃ عن عثمان بن عبد الرحمن عن دائیں جانب (اردو): ہمیں حدیث بیان کی

حسن بن سفیان نے انھوں نے اسحاق بن بہلول سے، انھوں نے عبد اللہ بن نافع سے، انھوں نے مغیرہ بن اسمعیل بن ایوب بن سلمہ سے، انھوں نے عثمان بن عبد الرحمٰن سے، انھوں نے امام ابن شہاب زہری سے، انھوں نے

حواشی: 1 التیسیر شرح الجامع الصغیر حرف لا مکتبہ امام شافعی ریاض سعودیہ ۵۰۴/۲ 2 فتح القدیر فصل فی بیان المحرمات مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۲۸/۳ 3 کتاب الضعفاء الصغیر مع التاریخ الصغیر باب العین مکتبہ اثریہ سانگلہ ہل ص ۲۰۷، میزان الاعتدال حرف العین ترجمہ دارالمعرفۃ بیروت ۴۳/۳ 4 فتح القدیر فصل فی بیان المحرمات مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۲۸/۳ 5 میزان الاعتدال حرف العین ترجمہ دارالمعرفۃ بیروت ۴۳/۳ 6 میزان الاعتدال حرف العین ترجمہ دارالمعرفۃ بیروت ۴۳/۳ 7 میزان الاعتدال حرف العین ترجمہ دارالمعرفۃ بیروت ۴۳/۳

Ibn Shihab al-Zuhri from Urwah, from Aisha (may Allah be pleased with her), she said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) was asked about a man who follows a woman unlawfully (commits adultery), can he marry her daughter? Or follows the daughter unlawfully, can he marry her mother? The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The unlawful (haram) does not make the lawful (halal) unlawful; only that which is through a lawful marriage makes it unlawful."

From Urwah, from the Mother of the Believers Aisha (may Allah be pleased with her), who said that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was asked: If a person commits adultery with a woman, can he marry that woman's daughter or mother? So you (peace and blessings be upon him) said: Haram (the unlawful) does not make Halal (the lawful) Haram. Only a Halal (lawful) marriage makes it Haram. (T)

Ibn Hibban narrated this and said:

Uthman bin Abd al-Rahman is al-Waqasi; he narrates fabricated reports from trustworthy narrators; it is not permissible to use him as evidence. [1]

Uthman bin Abd al-Rahman is the same Waqasi who narrates fabricated reports from trustworthy people; it is not permissible to bring evidence from him.

However, in Sunan Ibn Majah, the narration from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) came as follows:

Yahya bin Mu'alla bin Mansur narrated to us, Ishaq bin Muhammad al-Farawi narrated to us, Abdullah bin Umar narrated to us from Nafi' from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), who said: "The unlawful (haram) does not make the lawful (halal) unlawful." [2]

He narrated the Hadith to us, Yahya bin Mu'alla bin Uthman bin Mansur; they from Ishaq bin Muhammad Farawi, from Nafi', from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both), that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Haram (the unlawful) does not make Halal (the lawful) Haram. (T)

Firstly, in this, Ishaq bin Abi Farwah is criticized (mutakallam fih); Imam Abdul Haq mentioned the Hadith in 'Al-Ahkam' and said: "In its chain is Ishaq bin Abi Farwah,

and he is abandoned (matruk)". [3] (The researcher quoted this from him in 'Al-Fath'. T). Imam Abu al-Faraj said...

[1] Al-Ilal al-Mutanahiyah citing Ibn Hibban, Hadith 1031, Dar al-Nashr al-Kutub al-Islamiyah, Lahore, 136/2 [2] Sunan Ibn Majah, Chapter: The unlawful does not make the lawful unlawful, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 146 [3] Fath al-Qadir, Section on explaining prohibitions, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, 128/3

इब्न शिहाब अल-ज़ुहरी, उरवा से, आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो किसी स्त्री के पीछे हराम तरीके से (व्यभिचार में) पड़ा हो, क्या वह उसकी बेटी से निकाह कर सकता है? या बेटी के पीछे हराम तरीके से पड़ा हो, क्या वह उसकी माँ से निकाह कर सकता है? तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "हराम, हलाल को हराम नहीं बनाता; केवल हलाल निकाह ही हराम बनाता है।"

उरवा से, उन्होंने हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वसल्लम से सवाल किया गया कि कोई व्यक्ति किसी महिला के साथ हरामकारी (व्यभिचार) करे तो क्या वह उस महिला की बेटी या माँ से निकाह कर सकता है। तो आपने फरमाया: हराम, हलाल को हराम नहीं बनाता। हलाल निकाह ही हराम बनाता है। (T)

इब्ने हिब्बान ने इसे रिवायत करके कहा:

उस्मान बिन अब्दुर्रहमान वही वक्कासी है जो भरोसेमंद लोगों से गढ़ी हुई (मौज़ू) बातें रिवायत करता है; उसके माध्यम से दलील देना जायज़ नहीं है। [1]

उस्मान बिन अब्दुर्रहमान वही वक्कासी है जो भरोसेमंदों से गढ़ी हुई खबरें रिवायत कर देता है; उससे सनद (प्रमाण) लाना हलाल (उचित) नहीं है।

हाँ, सुनन इब्ने माजह में हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की रिवायत इस तरह आई:

हमें याह्या बिन मुअल्ला बिन मंसूर ने हदीस सुनाई, हमें इसहाक बिन मुहम्मद अल-फ़रवी ने सुनाई, अब्दुल्ला बिन उमर ने नाफे से, उन्होंने इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से, उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की कि आपने फरमाया: "हराम, हलाल को हराम नहीं बनाता।" [2]

हमें हदीस बयान की याह्या बिन मुअल्ला बिन उस्मान बिन मंसूर ने, उन्होंने इसहाक बिन मुहम्मद फरवी से, उन्होंने नाफे से, उन्होंने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वसल्लम ने फरमाया: हराम, हलाल को हराम नहीं बनाता। (T)

पहले तो इसमें इसहाक बिन अबी फरवा आलोचना के घेरे में (मुतकल्लम फ़ीह) हैं, इमाम अब्दुल हक ने 'अल-अहकाम' में हदीस का ज़िक्र करके फरमाया: "इसकी सनद में इसहाक बिन अबी

फरवा है और वह मतरूक (परित्यक्त) है।" [3] (शेख मुहक़्क़िक़ ने इसे 'अल-फतह' में उनसे नक़ल किया है। T) इमाम अबुल फराज ने...

[1] अल-इल्लल अल-मुतनाहिया, इब्ने हिब्बान के हवाले से, हदीस 1031, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, लाहौर, 136/2 [2] सुनन इब्ने माजह, अध्याय: हराम हलाल को हराम नहीं बनाता, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 146 [3] फतह अल-क़दीर, हराम चीज़ों के बयान का अध्याय, मकतबा नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 128/3

ابن شہاب الزہری عن عروہ عن عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا قالت سئل رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عن الرجل یتبع المرأۃ حراماً اینکح ابنتہا اویتبع الابنۃ حراماً اینکح امہا فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لا یحرم الحرام الحلال انما یحرم ماکان بنکاح حلال۔

عروہ سے، انہوں نے حضرت ام المومنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے، انہوں نے فرمایا کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے سوال کیا گیا کہ کوئی شخص کسی عورت سے حرامکاری کرے تو کیا وہ اس عورت کی بیٹی یا ماں سے نکاح کرسکتا ہے۔ تو آپ نے فرمایا حرام، حلال کو حرام نہیں بناتا۔ حلال نکاح ہی حرام بناتا ہے۔ (ت)

ابن حبان نے اسے روایت کرکے کہا:

عثمان بن عبدالرحمن ہو الوقاصی یروی عن الثقات الاشیاء الموضوعات لایجوز الاحتجاج بہ۔ [1]

عثمان بن عبدالرحمن وہی وقاصی ہے ثقات سے موضوع خبریں روایت کردیتا ہے اس سے سند لانا حلال نہیں۔

ہاں سنن ابن ماجہ میں روایت حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما یوں آئی:

حدثنا یحیٰی بن معلّٰی بن منصور ثنا اسحٰق بن محمد الفروی ثنا عبد اللہ بن عمر عن نافع عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قال لایحرم الحرام الحلال[2] ۔

ہمیں حدیث بیان کی یحییٰ بن معلی بن عثمان بن منصور نے انھوں نے اسحٰق بن محمد فروی سے انھوں نے نافع سے انھوں نے حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا: حرام حلال کو حرام نہیں بناتا (ت)

اولاً اس میں اسحٰق بن ابی فروہ متکلم فیہ ہیں، امام عبدالحق نے احکام میں حدیث کو ذکر کرکے فرمایا: فی اسنادہ اسحٰق بن ابی فروہ وھو متروک [3] (اس کی سند میں اسحٰق بن ابی فروہ ہے اور وہ متروک ہے، نقلہ عنہ المحقق فی الفتح (اسے فتح میں شیخ محقق نے اس سے نقل کیا ہے۔ ت) امام ابو الفرج نے

[1] العلل المتناہیہ بحوالہ ابن حبان حدیث ۱۰۳۱ دار نشر الکتب الاسلامیہ لاہور ۱۳۶/۲ [2] سنن ابن ماجہ باب لایحرم الحرام الحلال ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۴۶ [3] فتح القدیر فصل فی بیان المحرمات مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۲۸/۳

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

In 'Ilal al-Mutanahiyah' it is stated:

[Table] Left (Arabic): Indeed, Ishaq ibn Muhammad al-Farwi narrated from Abdullah ibn Umar, from Nafi, from Ibn Umar, who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The unlawful does not make the lawful unlawful." Yahya al-Farwi said he is a liar, and al-Bukhari said they abandoned him. - End. Right (Urdu): Meaning this hadith was narrated by Ishaq ibn Muhammad al-Farwi through his chain from Hadrat Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with them both), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The unlawful does not prohibit the lawful." Imam Yahya ibn Ma'in said: "Farwi is a liar." Imam Bukhari said that according to Hadith scholars, he is discarded (matruk). - End.

And I say: And success is through Allah, Glory be to Him who does not forget (and I say, success is only from Allah the Almighty, glory be to the One who does not forget. - Trans.). The two great preservers [of Hadith], Abdul Haq and Abu al-Faraj, were confused between Ishaq ibn Abi Farwah and Ishaq al-Farwi. They are two different persons: one is Ishaq ibn Abdullah ibn Abi Farwah, a Tabi'i contemporary and student of Imam Zuhri, [his narrations are found] in Abu Dawud, Tirmidhi, and Ibn Majah. He is the one who is discarded (matruk), and Imam Bukhari said about him "they abandoned him", as in 'Tahdhib al-Tahdhib' and 'Mizan al-I'tidal' etc. (as it is in Tahdhib al-Tahdhib and Mizan al-I'tidal etc. - Trans.). In 'Tahdhib al-Tahdhib' it is stated: "Abu Zur'ah and a group [of scholars] said: 'Discarded (matruk)'." (Abu Zur'ah and a group of Imams said: 'Discarded'. - Trans.). In 'Mizan' it is stated:

[Table] Left (Arabic): I have not seen anyone who accepted him, and Ibn Ma'in and others said his hadith should not be written. Right (Urdu): I have not seen anyone who let it pass, meaning considered his narration to be reliable at all. Imam Ibn Ma'in and others said his hadith should not even be written down.

Both books state:

[Table] Left (Arabic): Ahmad ibn Hanbal forbade [narrating] from his hadith, and Ibrahim al-Juzajani said: "I heard Ahmad ibn Hanbal saying, 'According to me, narration from Ishaq is not permissible'." Right (Urdu): Imam Ahmad ibn Hanbal forbade the transmission of his hadith. Ibrahim al-Juzajani said: "I heard Imam Ahmad ibn Hanbal saying, 'According to me, Ishaq ibn Abi Farwah [is not reliable]'."

1 Al-'Ilal al-Mutanahiyah, Hadith 50, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyyah, Lahore, 136/2 2 Tahdhib al-Tahdhib, Letter Alif, Translation by Majlis Da'irat al-Ma'arif, Hyderabad Deccan, 221/1 3 Mizan al-I'tidal, Letter Alif, Translation by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 193/1

ग्यारहवीं जिल्द फ़तावा रजविया

'इल्लल मुतनाहिया' में फरमाया है:

[तालिका] बाएँ(अरबी): निश्चय ही इसहाक बिन मुहम्मद अल-फरवी ने अब्दुल्लाह बिन उमर से, उन्होंने नाफ़े से, उन्होंने इब्न उमर से रिवायत की कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "हराम हलाल को हराम नहीं करता।" याह्या अल-फरवी ने कहा कि वह झूठा है और बुखारी ने कहा कि उन्होंने उसे छोड़ दिया। - समाप्त। दाएँ(उर्दू): यानी यह हदीस इसहाक बिन मुहम्मद फरवी ने अपनी सनद से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "हराम हलाल को हराम नहीं करता।" इमाम याह्या बिन मईन ने फरमाया: "फरवी झूठा है।" इमाम बुखारी ने फरमाया कि मुहद्दिसीन के नज़दीक वह मतरूक (परित्यक्त) है। - समाप्त।

और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से, वह पाक है जो भूलता नहीं। (और मैं कहता हूँ, अल्लाह तआला से ही तौफीक है, वह पाक है जो भूलता नहीं। -अनुवाद) महान हाफ़िज़ अब्दुल हक़ और अबू अल-फरज को इसहाक बिन अबी फरवा और इसहाक फरवी के बीच भ्रम हो गया। वे दो अलग व्यक्ति हैं: एक इसहाक बिन अब्दुल्लाह बिन अबी फरवा हैं जो ताबई, इमाम ज़ुहरी के समकालीन और उनके छात्र हैं, [उनकी रिवायतें] अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह में हैं। वही मतरूक हैं, उन्हीं के बारे में इमाम बुखारी ने 'तरकूहु' (उन्हें छोड़ दिया) फरमाया जैसा कि 'तहज़ीब अत-तहज़ीब' और 'मीज़ान अल-इतेदाल' आदि में है। (जैसा कि तहज़ीब अत-तहज़ीब और मीज़ान अल-इतेदाल आदि में है। -अनुवाद) 'तहज़ीब अत-तहज़ीब' में है: "अबू ज़ुरआ और आइम्मा (इमामों) की एक जमात ने फरमाया: 'मतरूक' (परित्यक्त) है।" (-अनुवाद) 'मीज़ान' में है:

[तालिका] बाएँ(अरबी): मैंने किसी को उसे स्वीकार करते हुए नहीं देखा, और इब्न मईन और अन्य लोगों ने कहा कि उसकी हदीस नहीं लिखी जानी चाहिए। दाएँ(उर्दू): मैंने किसी को नहीं देखा कि उसने इसे चलने दिया हो, यानी उसकी रिवायत को कुछ भी विश्वसनीय समझा हो। इमाम इब्न मईन और अन्य लोगों ने फरमाया कि उसकी हदीस लिखी तक न जाए।

दोनों किताबों में है:

[तालिका] बाएँ(अरबी): अहमद बिन हंबल ने उसकी हदीस से मना किया, और इब्राहिम अल-जौज़जानी ने कहा: "मैंने अहमद बिन हंबल को कहते सुना, 'मेरे नज़दीक इसहाक से रिवायत जायज़

नहीं है'।" दाएँ(उर्दू): इमाम अहमद बिन हंबल ने उसकी हदीस नकल करने से मना फरमाया। इब्राहिम जौज़जानी ने कहा, "मैंने इमाम अहमद बिन हंबल को फरमाते सुना कि मेरे नज़दीक इसहाक बिन अबी फरवा [विश्वसनीय नहीं हैं]।"

1 अल-'इल्लल अल-मुतनाहिया, हदीस 50, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, लाहौर, 136/2 2 तहज़ीब अत-तहज़ीब, हर्फ अल-अलिफ़, अनुवाद मज्लिस दाइरत अल-मआरिफ, हैदराबाद दक्कन, 221/1 3 मीज़ान अल-इतेदाल, हर्फ अल-अलिफ़, अनुवाद दार अल-मअरिफ़ा, बेरूत, 193/1

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

علل متناہیہ میں فرمایا:

[جدول] بائیں (عربی): قد رواہ اسحاق بن محمد الفروی عن عبد اللہ بن عمر عن نافع عن ابن عمر قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا یحرم الحرام الحلال قال یحیی الفروی کذاب وقال البخاری ترکوہ ۱۔ انتہی۔ دائیں (اردو): یعنی یہ حدیث اسحاق بن محمد فروی نے بسند خود حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: حرام حلال کو حرام نہیں کرتا، امام یحییٰ بن معین نے فرمایا: فروی کذاب ہے۔ امام بخاری نے فرمایا محدثین کے نزدیک متروک ہے۔ انتہی

وانا اقول: وباللہ التوفیق سبحن من لا ینسی (اور میں کہتا ہوں اللہ تعالٰی سے ہی توفیق ہے پاک ہے وہ ذات جو بھولتی نہیں۔ت) حافظین جلیلین عبدالحق و ابی الفرج کو التباس واقع ہوا اسحق بن ابی فروہ خواہ اسحق فروی۔ دو ہیں: ایک اسحق بن عبداللہ بن ابی فروہ تابعی معاصر و تلمیذ امام زہری رجال ابوداؤد و ترمذی وابن ماجہ ہے۔ یہی متروک ہے، اسی کو امام بخاری نے ترکوہ فرمایا کما فی تہذیب التہذیب و میزان الاعتدال وغیرہما (جیسا کہ تہذیب التہذیب اور میزان الاعتدال وغیرہما میں ہے۔ت) تہذیب التہذیب میں ہے: قال ابو زرعۃ وجماعۃ متروک ۲ ابو زرعہ اور ایک جماعت ائمہ نے فرمایا: متروک ہے۔ت) میزان میں ہے؛

[جدول] بائیں (عربی): لم اراحد امشاہ وقال ابن معین وغیرہ لایکتب حدیثہ ۳۔ دائیں (اردو): میں نے کسی کو نہ دیکھا کہ اسے رواں کیا یعنی اس کی روایت کو کچھ بھی معتبر سمجھا ہو۔ امام ابن معین وغیرہ نے فرمایا اس کی حدیث لکھی تک نہ جائے۔

دونوں کتابوں میں ہے:

[جدول] بائیں (عربی): نهی احمد بن حنبل عن حدیثه وقال ابراهیم الجوزجانی سمعت احمد بن حنبل یقول لا تحل الروایة عندی عن اسحق دائیں (اردو): امام احمد بن حنبل نے اس کی حدیث نقل کرنے سے منع فرمایا : ابراہیم جوزجانی نے کہا میں نے امام احمد بن حنبل کو فرماتے سنا کہ میرے نزدیک اسحق بن ابی فروہ

۱ العلل المتناہیہ حدیث ۵۰ دارنشر الکتب الاسلامیہ لاہور ۱۳۶/۲ ۲ تہذیب التہذیب حرف الالف ترجمہ مجلس دائرۃ المعارف حیدرآباد دکن ۲۲۱/۱ ۳ میزان الاعتدال حرف الالف ترجمہ دارالمعرفہ بیروت ۱۹۳/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

Narrations from Ibn Abi Farwa[1] are not permissible.

Imam Tirmidhi, in the chapters of inheritance (Al-Fara'id), regarding the section on the nullification of inheritance for a killer, narrates the Hadith: "The killer does not inherit"[2] via Ishaq bin Abdullah, from Az-Zuhri, from Humayd bin Abdur Rahman, from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). After narrating this, he said: "This Hadith is not authentic, and Ishaq bin Abdullah bin Abi Farwa has been declared abandoned (matruk) by many people of knowledge; among them is Ahmad bin Hanbal."[3] (T)

Abul Faraj (Ibn al-Jawzi) in 'Al-Mawdu'at' (The Fabricated Traditions) mentions the Hadith: "Sleeping in the morning prevents sustenance"[4] via Isma'il bin Abi 'Ayyash, from Ibn Abi Farwa, from Muhammad bin Yusuf, from 'Amr bin 'Uthman bin 'Affan, from his father (may Allah be pleased with him). After narrating it, he said: "This Hadith is not authentic, and Ibn Abi Farwa is abandoned (matruk)." (Summary)[5] (T)

Imam Khatim al-Huffaz (Al-Suyuti) commented on this in 'Al-La'ali' and also addressed the criticism in 'Al-Ta'aqqubat'. In short, he is unanimously considered abandoned (matruk). However, he is an old figure who passed away in 126 AH as stated by Ibn Abi Fudayk[6] (T), or in 144 AH as stated by Ibn Sa'd and others, and Ahmad. This latter date is correct as mentioned in 'Al-Tahdhib'.[7]

1. Mizan al-I'tidal, Letter Alif, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/193; Tahdhib al-Tahdhib, Biography 449, Hyderabad Deccan, 1/241.
2. Jami' al-Tirmidhi, Chapter on the nullification of inheritance for a killer, Amin Company, Kutub Khana Rashidiyah, Delhi, 2/32.
3. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Inheritance, Chapter on the nullification of inheritance for a killer, Amin Company, Kutub Khana Rashidiyah, Delhi, 2/32.
4. Al-Mawdu'at by Ibn al-Jawzi, Book of Sleep, Sleeping in the morning, Dar al-Fikr, Beirut, 3/68.
5. Al-Mawdu'at by Ibn al-Jawzi, Book of Sleep, Sleeping in the morning, Dar al-Fikr, Beirut, 3/68.
6. Tahdhib al-Tahdhib, Letter Alif, Dairat al-Ma'arif al-Nizamiyyah, Hyderabad, India, 1/242.
7. Tahdhib al-Tahdhib, Letter Alif, Dairat al-Ma'arif al-Nizamiyyah, Hyderabad, India, 1/242.

फतावा रजविया, खंड 11

इब्ने अबी फ़रवा[1] से रिवायत हलाल (जायज़) नहीं है।

इमाम तिर्मिज़ी ने अबवाबुल फ़राइज़ में 'कातिल की विरासत के बातिल होने' के अध्याय में हदीस ज़िक्र की: 'कातिल वारिस नहीं होगा'[2], इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह के ज़रिए, ज़ुहरी से, उन्होंने हुमैद बिन अब्दुर्रहमान से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की। उन्होंने फ़रमाया: 'यह हदीस सही नहीं है और इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी फ़रवा को बहुत से अहले इल्म ने मत़रूक (परित्यक्त) करार दिया है, जिनमें इमाम अहमद बिन हंबल भी शामिल हैं।'[3] (त)

अबुल फ़रज (इब्ने जौज़ी) ने 'मौज़ूआत' में हदीस ज़िक्र की: 'सुबह की नींद रिज़्क़ को रोकती है'[4], इस्माइल बिन अबी अय्याश के ज़रिए, इब्ने अबी फ़रवा से, उन्होंने मुहम्मद बिन यूसुफ़ से, उन्होंने अम्र बिन उस्मान बिन अफ़्फ़ान से, उन्होंने अपने वालिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की। उन्होंने इसे रिवायत करके कहा: 'यह हदीस सही नहीं है क्योंकि इब्ने अबी फ़रवा मत़रूक है।' (सारांश)[5] (त)

इमाम खातिमुल हुफ़्फ़ाज़ (सुयूती) ने 'अल-लआली' में इस पर टिप्पणी की और 'अल-ताक्कुबात' में भी इस जिरह पर चर्चा की। संक्षेप में, यह सर्वसम्मति से मत़रूक है, लेकिन यह प्राचीन (पुराने) व्यक्ति हैं, इनका इंतिक़ाल १२६ हिजरी में हुआ जैसा कि इब्ने अबी फ़ुदैक[6] ने कहा है, या १४४ हिजरी में जैसा कि इब्ने साद वग़ैरह और अहमद ने कहा है। और यही (१४४ हिजरी) सही है जैसा कि 'तहज़ीब' में है।[7]

1. मीज़ानुल एतदाल, हर्फ़ुल अलिफ़, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 1/193; तहज़ीबुत तहज़ीब, जीवनी 449, हैदराबाद दक्कन, 1/241।
2. जामेअ तिर्मिज़ी, कातिल की विरासत के बातिल होने का अध्याय, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया, दिल्ली, 2/32।
3. जामेअ तिर्मिज़ी, अबवाबुल फ़राइज़, कातिल की विरासत के बातिल होने का अध्याय, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया, दिल्ली, 2/32।
4. मौज़ूआत इब्ने जौज़ी, किताबुन नौम, सुबह की नींद, दारुल फ़िक्र, बेरूत, 3/68।
5. मौज़ूआत इब्ने जौज़ी, किताबुन नौम, सुबह की नींद, दारुल फ़िक्र, बेरूत, 3/68।
6. तहज़ीबुत तहज़ीब, हर्फ़ुल अलिफ़, दाइरतुल मारिफ़ अन-निज़ामिया, हैदराबाद, भारत, 1/242।

7. तहज़ीबुत तहज़ीब, हर्फ़ुल अलिफ़, दाइरतुल मारिफ़ अन-निज़ामिया, हैदराबाद, भारत, 1/242।

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

بن ابی فروہ[1] سے روایت حلال نہیں۔

امام ترمذی نے ابواب الفرائض باب ما جاء فی ابطال میراث القاتل میں حدیث: القاتل لایرث[2] بطریق اسحق بن عبداللہ عن الزہری قاتل وارث نہیں ہوگا ، اس حدیث کو اسحق بن عبداللہ، انہوں نے حمید بن عبدالرحمن انہوں نے حضرت ابو عن حمید بن عبدالرحمن عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ، روایت کرکے فرمایا ہذا حدیث لایصح واسحق ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کر کے فرمایا یہ حدیث صحیح نہیں کہ اسحق بن عبداللہ بن ابوفروہ کو بہت سے اہل علم بن عبداللہ بن ابی فروۃ قد ترکہ بعض اھل العلم منھم احمد بن حنبل[3]- نے متروک قرار دیا ہے ان میں سے امام احمد بن حنبل ہیں۔(ت)

ابوالفرج نے موضوعات میں حدیث: الصبحہ تمنع الرزق[4] بطریق اسمعیل بن ابی عیاش الصبحہ تمنع الرزق (صبح کو سونا رزق کی (برکت) کے لیے مانع ہے) والی حدیث کو اسماعیل بن عیاش انہوں نے ابن عن ابی فروۃ عن محمد بن یوسف عن عمر وبن ابی فروہ انہوں نے محمد بن یوسف انہوں نے عمرو بن عثمان عثمن بن عفان عن ابیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ روایت بن عفان انہوں نے اپنے والد رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کر کے کہا ھذا حدیث لایصح وابن ابی فروۃ متروک روایت کرکے کہا یہ صحیح نہیں کیونکہ ابن ابی فروہ متروک ہے ملخصاً (ت) [5](ملخصاً)

امام خاتم الحفاظ نے لآلی میں اس پر تقریر فرمائی اور تعقبات میں بھی اس جرح پر جرح کی ، غرض یہ بالاتفاق متروک ہے مگر یہ قدیم ۱۲۶ھ میں انتقال کیا قالہ ابن ابی فدیک[6] (یہ ابن ابی فدیک نے کہا ہے۔ت) یا ۱۴۴ھ میں کما قالہ ابن سعد وغیرہ واحمد وھذا ھو الصحیح[7] کما فی تھذیب۔

1 میزان الاعتدال حرف الالف ترجمہ دار المعرفة بیروت ۱/۱۹۳، تهذیب التهذیب ترجمہ ۴۴۹ حیدر آباد دکن ۱/۲۴۱ 2 جامع الترمذی باب ما جاء فی ابطال میراث القاتل امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۳۲/۲ 3 جامع الترمذی ابواب الفرائض باب ما جاء فی ابطال میراث القاتل امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۳۲/۲ 4 موضوعات ابن جوزی کتاب النوم نوم الصبحة دارالفکر بیروت ۶۸/۳ 5 موضوعات ابن جوزی کتاب النوم نوم الصبحة دارالفکر بیروت ۶۸/۳ 6 تهذیب التهذیب حرف الالف ترجمہ دارة المعارف النظامیہ حیدر آباد بهارت ۱/۲۴۲ 7 تهذیب التهذیب حرف الالف ترجمہ دارة المعارف النظامیہ حیدر آباد بهارت ۱/۲۴۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

The [opinion in] at-Tahdhib (as narrated by Ibn Sa'd and many others) is the correct one, as found in Tahdhib al-Tahdhib. (T) Where did Yahya bin Mu'alla find that he belongs to the eleventh category?

Secondly, his brother's grandson, Ishaq bin Muhammad bin Ismail bin Abdullah bin Abi Farwah, is not even from the Tabi' al-Tabi'in but from their students. He is among the men [narrators] of Bukhari, Tirmidhi, and Ibn Majah, and was a teacher of Imam Bukhari; he passed away in 226 AH. He is by no means 'Matruk' (abandoned). If Imam Bukhari himself narrated from him in Jami' Sahih, how could he have said "Turikuh" (they abandoned him) regarding him? Ibn Hibban mentioned him among the 'Thiqat' (reliable narrators), and Abu Hatim and others called him 'Saduq' (truthful). However, he is not entirely free from criticism. Imam al-Nasa'i said he is not 'Thiqah', and Imam al-Daraqutni said he is 'Da'if' (weak). Leading Imams have objected to Imam Bukhari narrating from him. Imam Abu Hatim said he is 'Mudtarib al-Hadith' (unstable in Hadith); often, after he lost his eyesight, he would narrate as coached by someone. Al-'Uqayli said he narrated many ahadith from Imam Malik in which no one followed him. Imam Abu Dawud called him severely weak. Imam al-Sha'n [the great Imam] said his memory deteriorated after losing his sight. In 'Al-Targhib' by Imam Hafiz Abdul Azeem Mundhiri, it states:

Arabic	**Urdu**
Ishaq bin Muhammad bin Ismail bin Abi Farwah al-Farwi is Saduq. Bukhari narrated from him in his Sahih. Abu Hatim and others said he is Saduq. Ibn Hibban mentioned him in 'al-Thiqat'. Abu Dawud weakened him and al-Nasa'i said he is not 'Thiqah'.	Ishaq bin Muhammad bin Ismail bin Abi Farwah al-Farwi is Saduq. Bukhari narrated from him in his Sahih. Abu Hatim and others said he is Saduq. Ibn Hibban included him among reliable narrators. Abu Dawud described him as weak and al-Nasa'i said he is not reliable. (T)

In 'Mizan al-I'tidal' it says:

Arabic	**Urdu**
He is generally Saduq, a narrator of Hadith. Abu Hatim said he is Saduq whose eyesight failed, so he was sometimes prompted, but his books are	Overall, he is Saduq and a possessor of Hadith. Abu Hatim said he is Saduq but lost his vision, and sometimes he would follow what others said. His books of

Arabic	Urdu
correct. Once he said he is 'Mudtarib'. Al-'Uqayli said he reported many ahadith from Malik which are not corroborated, and Ibn Hibban mentioned him in [al-Thiqat]...	Hadith are correct. At times he was declared 'Mudtarib'. Al-'Uqayli said he narrated many reports from Imam Malik but they [are not corroborated]...

1 Al-Targhib wa al-Tarhib, Chapter on narrators about whom there is difference of opinion, Mustafa al-Babi Egypt 2/567.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 11

तहज़ीब (जैसा कि इब्न साद और कई अन्य लोगों ने बयान किया है) वही सही है जैसा कि तहज़ीब अल-तहज़ीब में है। (टी) याह्या बिन मुअल्ला ने कहाँ पाया कि वह ग्यारहवीं श्रेणी के हैं?

दूसरा, उनके भाई के पोते इसहाक बिन मुहम्मद बिन इस्माइल बिन अब्दुल्ला बिन अबी फरवा ताबे ताबेईन में से भी नहीं हैं, बल्कि उनके शिष्यों में से हैं। वह बुखारी, तिर्मिज़ी और इब्न माजा के रावी हैं, और इमाम बुखारी के उस्ताद थे; उनका इंतकाल 226 हिजरी में हुआ। वे कतई 'मतरूक' (त्यागने योग्य) नहीं हैं। यदि इमाम बुखारी ने खुद जामि सहीह में उनसे रिवायत की, तो उन्होंने उनके बारे में "तुरिकुहु" (उसे छोड़ दिया) कैसे कहा होगा? इब्न हिब्बान ने उन्हें 'सिक़ात' (विश्वसनीय रावियों) में शामिल किया, और अबू हातिम आदि ने उन्हें 'सदूक़' (सच्चा) कहा। हालाँकि, वे भी आलोचना से पूरी तरह मुक्त नहीं हैं। इमाम नसाई ने कहा कि वे 'सिक़ा' नहीं हैं, इमाम दारकुतनी ने कहा कि वे 'ज़ईफ़' (कमजोर) हैं। इमाम मुज्तहिदीन ने इमाम बुखारी द्वारा उनसे रिवायत करने पर आपत्ति जताई है। इमाम अबू हातिम ने कहा कि वे 'मुज़तरिब अल-हदीस' (हदीस में अस्थिर) हैं; अक्सर आँखें जाने के बाद ऐसा होता था कि जैसा कोई सिखा देता, वैसे ही रिवायत करने लगते। अक़ीली ने कहा कि उन्होंने इमाम मालिक से ऐसी कई हदीसें रिवायत कीं जिनमें उनका कोई अनुयायी नहीं है। इमाम अबू दाऊद ने उन्हें अत्यधिक कमज़ोर कहा। इमाम अल-शान ने कहा कि आँखों की रोशनी जाने के बाद उनकी याददाश्त खराब हो गई थी। इमाम हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीम मुंधिरी की 'अल-तरग़ीब' में है:

अरबी	उर्दू
इसहाक बिन मुहम्मद बिन इस्माइल bin अबी फरवा अल-फरवी सदूक हैं। बुखारी ने अपनी सहीह में उनसे रिवायत की है। अबू हातिम और अन्य ने कहा कि वे सदूक हैं। इब्न हिब्बान ने उन्हें 'अल-सिक़ात' में ज़िक्र किया। अबू दाऊद ने उन्हें कमज़ोर बताया और नसाई ने कहा कि वे विश्वसनीय नहीं हैं।	इसहाक बिन मुहम्मद बिन इस्माइल बिन अबी फरवा अल-फरवी सदूक है, उससे बुखारी ने अपनी सहीह में रिवायत की है, और अबू हातिम आदि ने कहा यह सदूक है, इसको इब्न हिब्बान ने विश्वसनीय रावियों में गिना है, और अबू दाऊद ने उसे कमज़ोर बताया है और नसाई ने कहा यह विश्वसनीय नहीं है। (त)

'मीज़ान अल-इतेदाल' में है:

अरबी

वे कुल मिलाकर सदूक हैं, हदीस वाले हैं। अबू हातिम ने कहा वे सदूक हैं जिनकी दृष्टि चली गई थी, इसलिए कभी-कभी उन्हें सिखाया जाता था, लेकिन उनकी किताबें सही हैं। एक बार उन्होंने उन्हें 'मुज़तरिब' कहा। अक़ीली ने कहा कि उन्होंने मालिक से कई हदीसें ऐसी पेश कीं जिनका अनुसरण नहीं किया गया, और इब्न हिब्बान ने उनका उल्लेख किया...

उर्दू

वह कुल मिलाकर सदूक है और साहिब-ए-हदीस है, अबू हातिम ने कहा यह सदूक है और इसकी नज़र खत्म हो गई थी और कभी-कभी दूसरों की बात मान लेता था और उसकी हदीस की किताबें सही हैं, और उन्होंने कभी इसको मुज़तरिब करार दिया है, और अक़ीली ने कहा कि उसने इमाम मालिक से बहुत सी रिवायतें ज़िक्र कीं लेकिन उनकी...

1 अल-तरग़ीब व अल-तरहीब, मतभेदों वाले रावियों का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 2/567।

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

التہذیب (جیسا کہ اس کو ابن سعد اور بہت سے حضرات نے بیان کیا ہے یہی صحیح ہے جیسا کہ تہذیب التہذیب میں ہے۔ت) یحیٰی بن معلیٰ نے کہ طبقہ حادیہ عشرہ سے ہیں اسے کہاں پایا۔

دوم اس کے بھائی کے پوتے اسحق بن محمد بن اسمعیل بن عبداللہ بن ابی فروہ یہ تبع تابعین سے بھی نہیں، ان کے تلامذہ سے ہیں، رجال بخاری و ترمذی وابن ماجہ سے، امام بخاری کے استاذ ہیں، ۲۲۶ھ میں انتقال کیا یہ ہر گز متروک نہیں، امام بخاری نے خود جامع صحیح میں ان سے روایت کی تو وہ ان کی نسبت "ترکوہ" کیونکر فرماتے، ابن حبان نے انہیں ثقات میں ذکر کیا، اور ابو حاتم وغیرہ نے صدوق کہا، البتہ کلام سے خالی یہ بھی نہیں، امام نسائی نے کہا ثقہ نہیں، امام دارقطنی نے کہا ضعیف ہیں، ائمہ مجتہدین امام بخاری پر ان سے روایت کرنے میں معترض ہیں، امام ابو حاتم نے کہا مضطرب الحدیث ہیں آنکھیں جانے کے بعد بارہا ہوتا کہ جیسا کوئی سکھا دیتا ویسے ہی روایت کرنے لگتے۔ عقیلی نے کہا امام مالک سے بکثرت وہ حدیثیں روایت کیں جن پر ان کا کوئی متابع نہیں، امام ابوداؤد نے سخت ضعیف کہا، امام الشان نے فرمایا آنکھیں جا کر حفظ خراب ہو گیا تھا، امام حافظ عبدالظیم منذری کی ترغیب میں ہے:

عربی	اردو
اسحق بن محمد بن اسمعیل بن ابي فروه الفروی صدوق روی عنه البخاری في صحیحه، وقال ابوحاتم وغیره صدوق،	اسحق بن محمد بن اسمعیل بن ابی فروہ الفروی صدوق ہے، اس سے بخاری نے اپنی صحیح میں روایت کیا ہے، اور ابوحاتم وغیرہ نے کہا یہ صدوق ہے، اس کو ابن حبان

عربی	اردو
وذكره ابن حبان في الثقات ووهاه ابوداؤد وقال النسائي ليس بثقة -	نے ثقہ راویوں میں شمار کیا ہے، اور ابوداؤد نے اس کو کمزور بتایا ہے اور نسائی نے کہا یہ ثقہ نہیں ہے۔(ت)

میزان الاعتدال میں ہے:

عربی	اردو
هو صدوق في الجملة، صاحب حديث، قال ابو حاتم صدوق ذهب بصره فربما لقن وكتبه صحيحة، وقال مرة مضطرب، وقال العقيلی جاء عن مالك باحاديث كثيرة لا يتابع عليها، وذكره ابن حبان في	وہ مجموعی طور پر صدوق ہے اور صاحبِ حدیث ہے، ابو حاتم صدوق ذہب بصرہ فربما ابوحاتم نے کہا یہ صدوق ہے اور اس کی نظر ضائع ہو گئی تھی اور بعض اوقات دوسرے کی بات مان لیتا تھا اور اس کی کتبِ حدیث صحیح ہیں، اور انہوں نے کبھی اس کو مضطرب قرار دیا ہے، اور عقیلی نے کہا کہ اس نے امام مالک سے کثیر روایات ذکر کیں لیکن ان کی

1 الترغیب و الترہیب باب ذکر الرواۃ المختلف فیہم الخ مصطفی البابی مصر ۲/ ۵۶۷

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

[Arabic]: "...Al-Thiqat. An-Nasa'i said: He is not reliable. Ad-Daraqutni said: He is not abandoned (matruk). He also said: [He is] weak; Al-Bukhari narrated from him, and they reproach him for this. Similarly, Abu Dawud mentioned him and considered him very weak. (1)" [Urdu]: There was no support [for his reliability]. Ibn Hibban included him among the reliable narrators, but An-Nasa'i said he is not reliable. Ad-Daraqutni said he is not 'matruk' (abandoned) but also called him weak. Al-Bukhari narrated from him, due to which Imam Bukhari was also criticized. Abu Dawud said the same and declared him very weak. (T)

[Urdu]: It is in 'Taqrib': "Sadūq (truthful), his memory failed. (2)" (He is truthful, but his memorization became weak. -T). It is in 'Tahdhib al-Tahdhib': "Al-Bukhari said he died in 236 [AH]. (3)" (Imam Bukhari - May Allah the Exalted have mercy on him - said: He passed away in 236 AH. -T). It is clear that the narrator of this Hadith is this Ishaq bin Muhammad Farwi, who is criticized (mutakallam fih), not Ishaq bin Abdullah Farwi who is abandoned (matruk). In any case, this is one point of criticism in its chain of transmission. Secondly, I say: The second point of criticism is regarding the teacher of the aforementioned Ishaq, Abdullah. The criticism of the Imams of Hadith regarding him is well-known. Imam Tirmidhi, in the chapter "About one who wakes up and finds wetness but does not remember a wet dream," narrated a Hadith from him and said:

[Table Content] Abdullah was weakened by Yahya bin Sa'id due to his memory in Hadith. - 4 | Imam Yahya bin Sa'id al-Qattan declared Abdullah weak in Hadith due to a deficiency in memory.

[Urdu]: In the same work, in the Chapters on Prayer, "Chapter on what has been narrated regarding the excellence of the first time" (Chapters on Prayer, regarding the explanation of the excellence of the first time of prayer. -T), it is stated:

[Table Content] Abdullah bin Umar al-Umari is not strong according to the people of Hadith. - 5 | Abdullah bin Umar al-Umari is not very strong according to the scholars of Hadith.

[Urdu]: Imam Nasa'i said "not strong," Imam Ali bin al-Madini said he is "weak," and Ibn Hibban said:

[Table Content] He was among those whom piety and worship overcame until... | Piety and worship overcame him to the extent that [his] memorization...

Footnotes: 1. Mizan al-I'tidal, Letter Alif, Biography, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/199 2. Taqrib al-Tahdhib, Letter Alif, Biography, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 1/84 3. Tahdhib al-Tahdhib, Letter Alif, Biography, Da'irat al-Ma'arif al-Nizamiyyah, Hyderabad, India, 1/228 4. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Purification, Chapter on one who wakes up and sees wetness, etc., Amin Company, Kutub Khana Rashidiyah, Delhi, 1/16 5. Jami' al-Tirmidhi, Chapter on what has been narrated regarding the first time, etc., Amin Company, Kutub Khana Rashidiyah, Delhi, 1/24

खंड ग्यारह फ़तावा रज़विया

[अरबी]: "...अस्-सिक़ात। अन-नसाई ने कहा: वह विश्वसनीय नहीं है। अद-दारक़ुतनी ने कहा: वह मतरूक (परित्यक्त) नहीं है। उन्होंने यह भी कहा: [वह] ज़ईफ़ (कमज़ोर) है; अल-बुखारी ने उनसे रिवायत की है, और वे इस पर उन्हें फटकारते हैं। इसी तरह, अबू दाऊद ने उनका ज़िक्र किया और उन्हें बहुत कमज़ोर बताया। (1)" [उर्दू]: पुष्टि नहीं हुई। इब्न हब्बान ने उन्हें विश्वसनीय लोगों में गिना है, लेकिन नसाई ने कहा कि वह विश्वसनीय नहीं हैं। दारक़ुतनी ने कहा कि वह 'मतरूक' नहीं हैं, और उन्हें ज़ईफ़ भी कहा। बुखारी ने उनसे रिवायत की है, जिसकी वजह से इमाम बुखारी पर भी आरोप लगे हैं। अबू दाऊद ने भी ऐसा ही कहा और उन्हें बहुत कमज़ोर बताया। (त)

[उर्दू]: 'तकरीब' में है: "सदूक (सच्चा), उसकी याददाश्त कमज़ोर हो गई थी। (2)" (वह सच्चा है, लेकिन उसकी याददाश्त कमज़ोर हो गई थी। -त)। 'तहरीब-अल-तहरीब' में है: "इमाम बुखारी ने फ़रमाया कि उनका इंतकाल 236 [हिजरी] में हुआ। (3)" (इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: वह 236 हिजरी में फ़ौत हुए। -त)। इससे ज़ाहिर है कि इस हदीस के रावी यही इसहाक़ बिन मुहम्मद फरवी हैं जो विवादित (मुतक़ल्लम फ़ीह) हैं, न कि वह इसहाक़ बिन अब्दुल्लाह फरवी जो 'मतरूक' हैं। बहरहाल, इसकी सनद में एक आपत्ति का स्थान यह है। दूसरा, मैं कहता हूँ: दूसरी आपत्ति उक्त इसहाक़ के उस्ताद अब्दुल्लाह के बारे में है। हदीस के इमामों की उनके बारे में आलोचना प्रसिद्ध है। इमाम तिर्मिज़ी ने "उस व्यक्ति के बारे में जो सोकर उठने पर गीलापन पाए लेकिन उसे एहतिलाम (स्वप्नदोष) याद न हो" वाले अध्याय में उनसे एक हदीस रिवायत करके फ़रमाया:

[सारणी सामग्री] अब्दुल्लाह को याह्या बिन सईद ने हदीस में याददाश्त की कमी के कारण कमज़ोर बताया। - 4 | अब्दुल्लाह को इमाम याह्या बिन सईद क़त्तान ने याददाश्त की कमी की वजह से हदीस में ज़ईफ़ बताया।

[उर्दू]: उसी के नमाज़ के अध्यायों में, "नमाज़ के पहले समय की फ़ज़ीलत के बारे में जो बयान हुआ" (नमाज़ के अध्याय, पहले समय की फ़ज़ीलत के बयान में। -त) वाले अध्याय में है:

[सारणी सामग्री] अब्दुल्लाह बिन उमर अल-उमरी हदीस के जानकारों के नज़दीक मज़बूत नहीं हैं। - 5 | अब्दुल्लाह बिन उमर अल-उमरी हदीस के जानकारों (मुहद्दिसीन) के नज़दीक कुछ ज़्यादा मज़बूत नहीं हैं।

[उर्दू]: इमाम नसाई ने कहा "मज़बूत नहीं हैं", इमाम अली बिन मदनी ने कहा "ज़ईफ़ हैं", इब्न हब्बान ने कहा:

[सारणी सामग्री] वह उन लोगों में से थे जिन पर नेकी और इबादत इस कदर ग़ालिब थी कि... | नेकी और इबादत उन पर यहाँ तक ग़ालिब हुई कि याददाश्त...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. मीज़ानुल एतदाल, हर्फ़ुल अलिफ़, तर्जुमा, दारुल मआरिफ़ा, बेरूत, 1/199 2. तक़रीबुल तहज़ीब, हर्फ़ुल अलिफ़, तर्जुमा, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, 1/84 3. तहज़ीबुल तहज़ीब, हर्फ़ुल अलिफ़, तर्जुमा, दाइरतुल मआरिफ़ अन-निज़ामिया, हैदराबाद, भारत, 1/228 4. जामे तिर्मिज़ी, पाकी के अध्याय, सोकर उठने और गीलापन देखने आदि का अध्याय, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया, दिल्ली, 1/16 5. जामे तिर्मिज़ी, पहले समय के बारे में जो बयान हुआ आदि का अध्याय, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया, दिल्ली, 1/24

الثقات، وقال النسائي ليس بثقه، وقال الدارقطنی لا يترك، وقال ايضاً ضعيف قدروی عنه البخاري و يوبّخونه على هذا، وكذا ذكره ابوداؤد ووّهاه جداً -1 تائید نہ ہوئی، اور اس کو ابن حبان نے ثقہ لوگوں میں شمار کیا ہے، اور نسائی نے کہا کہ ثقہ نہیں ہے، اور دار قطنی نے کہا کہ یہ متروک نہیں، اور ضعیف بھی کہا ہے، اور بخاری نے اس سے روایت کیا ہے اس وجہ سے امام بخاری پر طعن بھی ہوا ہے، ابوداؤد نے یوں ہی کہا اور اس کو بہت کمزور قرار دیا۔ (ت)

تقریب میں ہے: صدوق، كف فساء حفظہ -2 (صدوق ہے۔ اس کا حفظ کمزور ہو گیا تھا ۔ ت) تہذیب التہذیب میں ہے : قال البخاری مات 236 -3 (امام بخاری رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا: وہ 236ھ میں فوت ہوا ۔ ت) پر ظاہر کہ اس حدیث کے راوی یہی اسحاق بن محمد فردی متکلم فیہ ہیں نہ کہ وہ اسحاق بن عبداللہ فردی متروک ، بہر حال ایک موضع کلام تو اس کی سند میں یہ ہے۔ ثانیاً اقول: دوسرا محل کلام اسحاق مذکور کے شیخ عبداللہ میں ہے ائمہ محدثین کا ان میں کلام معروف ہے، امام ترمذی نے باب فیمن یستیقظ بللا ولا یذکر احتلاما (باب جو نیند سے بیدار ہو کر کپڑے پر رطوبت پائے مگر احتلام یاد نہ ہو۔ ت) میں ایک حدیث ان سے روایت کر کے فرمایا:

عبداللہ کو امام یحیٰی بن سعید قطان نے نقصان حافظہ کی رو سے حدیث میں ضعیف بتایا۔ | عبداللہ ضعفه يحيى بن سعيد من قبل حفظه في الحديث - 4

اسی کے ابواب الصلوٰۃ باب ماجاء فی الوقت الاول من الفضل (ابواب الصلوٰۃ، باب اول وقت کی فضیلت کے بیان میں۔ ت) میں ہے:

عبداللہ بن عمر العمری محدثین کے نزدیک چنداں قوی نہیں۔ | عبدالله بن عمر العمري ليس هو بالقوي عند اهل الحديث - 5

امام نسائی نے کہا قوی نہیں، امام علی بن مدنی نے کہا ضعیف ہیں، ابن حبان نے کہا:

صلاح و عبادت نے ان پر یہاں تک غلبہ کیا کہ حفظ | كان ممن غلب عليه الصلاح والعبادة حتى

1 میزان الاعتدال حرف الالف ترجمہ دار المعرفة بیروت 1/ 199 2 تقریب التهذیب حرف الالف ترجمہ دار الکتب العلمیہ بیروت 1/ 84 3 تهذیب التهذیب حرف الالف ترجمہ دائرة المعارف النظامیہ حیدر آباد بھارت 1/ 228 4 جامع الترمذی ابواب الطهارة باب فیمن یستیقظ ویری بللا الخ امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی 1/ 16 5 جامع الترمذی باب ماجاء فی الوقت الاول الخ امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی 1/ 24

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

[Boxed Text:] He neglected the preservation of reports and the quality of memorization of traditions, so when his errors became excessive, he deserved to be abandoned.

There are reports of his validation from Imam Ahmad and Yahya, but the final verdict is what Hafiz al-Sha'n stated in *Taqrib*: "Weak worshipper"[2] (Weak worshipper. - Note)

Thirdly, I say: To answer from this hadith, the noble verse and the issue of a woman in *Zihar* are sufficient. In *Zihar*, intercourse was forbidden, so how did he make the daughter of the woman he made *zihar* with, who was lawful, forbidden?

Fourthly, this hadith as narrated by Ibn Majah, if there is anything worth mentioning, it is this. Even if we disregard the weakness of its chain of narration, there is no story of a question in it like that discarded and fallen hadith. It only states that 'the unlawful does not make the lawful unlawful.' This is certainly not correct on its face. If wine or urine were added to a small amount of water or rose water, would they not make it unlawful!

I say: If someone becomes ritually impure (*junub*) through adultery, will prayer, recitation, entering the mosque, and circumambulating the Kaaba—which were lawful—not become unlawful for him! If an oppressor strangles the goat of an oppressed person and kills it, his action—which would have been unlawful even with his own property due to waste, and is doubly unlawful with someone else's property—will it not make that lawful animal unlawful! If someone gives three divorces to his wife in one week, especially during menstruation, will that lawful woman not become forbidden to him due to that act of multiple prohibitions! There are hundreds of cases where the unlawful makes the lawful unlawful. So how can this general statement be intended? Necessarily, there is no choice but to interpret it: that the unlawful *as such* does not make the lawful unlawful.

I say: That is, urine and wine made water and rose water unlawful not because of their prohibition, but because they were impure, and by mixing with them, they made them impure as well. Now its impurity became the cause of prohibition. If some pure but forbidden thing is mixed with something lawful in such a way that distinction is impossible, we do not accept that the lawful thing itself became unlawful. Rather, the lawful remains in its state of permissibility, and consuming the mixture is impermissible because due to mixing, its consumption cannot be free

from consuming the unlawful. This continues until if it can be separated and they are separated, the lawful would remain on its permissibility as is not hidden. Similarly, prayer etc. were not prohibited due to adultery in the sense that it is adultery—what role does the specificity of adultery have in it?—but rather in the sense that...

[1] *Mizan al-I'tidal*, letter 'Ayn, biography, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/465. [2] *Taqrib al-Tahdhib*, letter 'Ayn, biography, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/516.

फतावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

[बॉक्स किया गया टेक्स्ट:] वह रिपोर्टों के संरक्षण और परंपराओं के स्मरण की गुणवत्ता से गाफिल रहा, इसलिए जब उसकी त्रुटियाँ अत्यधिक हो गईं, तो वह त्याग दिए जाने का पात्र हो गया।

इमाम अहमद और याह्या से उनकी तौहीद (पुष्टि) के कथन भी हैं, लेकिन अंतिम निर्णय वह है जो हाफिज अल-शॉन ने 'तक़रीब' में फरमाया: "ज़ईफ आबिद"[2] (कमज़ोर इबादत करने वाला। - त)

तीसरा, मैं कहता हूँ: इस हदीस के जवाब के लिए वही आयते करीमा और ज़िहार वाली औरत का मसला काफी है। ज़िहार में संभोग हराम था, फिर उसने ज़िहार की हुई औरत की बेटी को, जो हलाल थी, कैसे हराम कर दिया?

चौथा, यह हदीस जिस तरह इब्न माजा ने रिवायत की है, अगर कुछ उल्लेखनीय है तो यही है। अगर इसकी सनद की कमजोरी को नज़रअंदाज़ भी कर दिया जाए, तो इसमें उस छोड़ी गई और गिरी हुई हदीस की तरह सवाल का कोई किस्सा नहीं है। इसमें सिर्फ इतना बयान है कि 'हराम हलाल को हराम नहीं करता।' यह अपनी ज़ाहिरी सूरत पर यकीनन सही नहीं है। क्या अगर थोड़े से पानी या गुलाब जल में शराब या पेशाब डाल दिया जाए, तो क्या वे उसे हराम नहीं कर देंगे!

मैं कहता हूँ: क्या अगर कोई व्यभिचार (ज़िना) से जुनुब (अपवित्र) हो जाए, तो क्या उसके लिए नमाज़, तिलावत, मस्जिद में प्रवेश और काबा का तवाफ—जो हलाल थे—हराम नहीं हो जाएंगे! क्या अगर कोई ज़ालिम किसी मज़लूम की बकरी का गला घोंटकर मार डाले, तो उसका यह काम—जो अपने माल के साथ होता तब भी माल बर्बाद करने के कारण हराम था और दूसरे के माल के साथ जुल्म के कारण हराम दर हराम है—क्या उस हलाल जानवर को हराम नहीं कर देगा! क्या अगर कोई व्यक्ति अपनी औरत को एक हफ्ते में तीन तलाक़ दे दे, विशेष रूप से मासिक धर्म के दिनों में, तो क्या उस हराम दर हराम काम से वह हलाल औरत उस पर हराम नहीं हो जाएगी! सैकड़ों ऐसी सूरतें हैं जिनमें हराम हलाल को हराम कर देता है, तो यह सामान्य कथन कैसे मुराद हो सकता है? लाज़मी तौर पर तावील (व्याख्या) के सिवा कोई चारा नहीं कि हराम अपनी हैसियत में हराम होने के नाते, हलाल को हराम नहीं करता।

मैं कहता हूँ: यानी पेशाब और शराब ने जो पानी और गुलाब जल को हराम किया, वह अपनी हुरमत (प्रतिबंध) के कारण नहीं बल्कि इस वजह से कि वे नजिस (अपवित्र) थे, और उससे मिलकर उसे भी नजिस कर दिया। अब उसकी नजासत हुरमत का कारण बनी। और अगर कोई पाक हराम चीज़

किसी हलाल में इस तरह मिल जाए कि पहचानना असंभव हो, तो हम यह स्वीकार नहीं करते कि वह हलाल खुद हराम हो गया, बल्कि हलाल अपनी हिल्लत (वैधता) पर बाकी है और मिश्रण का सेवन इसलिए नाजायज़ है कि मिलावट के कारण उसका सेवन हराम के सेवन से खाली नहीं हो सकता। यहाँ तक कि अगर वह अलग हो सके और उन्हें अलग कर लिया जाए, तो हलाल दस्तूर अपनी हिल्लत पर रहेगा जैसा कि छिपा नहीं है। इसी तरह ज़िना से नमाज़ वगैरह को इस हैसियत से हराम नहीं किया गया कि वह ज़िना है—इसमें ज़िना की विशिष्टता का क्या दखल?—बल्कि इस हैसियत से कि वह...

[1] मीज़ान अल-एतिदाल, हर्फ अल-ऐन, तर्जुमा, दार अल-मआरिफा, बेरुत, 2/465 [2] तक़रीब अल-तहज़ीब, हर्फ अल-ऐन, तर्जुमा, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 1/516

فتاوی رضویه، جلد یاز دہم

[باکس میں تحریر:] غفل عن حفظ الاخبار وجودة الحفظ للآثار فلما احادیث سے غافل ہوئے حدیثیں خوب یاد نہ رہیں جب فحش خطؤہ استحق الترک -1 خطا بکثرت واقع ہوئی ترک کے مستحق ہو گئے۔

امام احمد و یحییٰ سے ان کی توثیق کے اقوال بھی ہیں مگر قول فیصل یہ قرار پایا کہ حافظ الشان نے تقریب میں فرمایا: ضعیف عابد 2 (کمزور عابد ہے۔ ت)

ثالثاً اقول اس حدیث سے جواب کو وہی آیہ کریمہ ومسئلہ زن مظاہرہ کافی ظہار میں جماع حرام تھا پھر اس نے مظاہرہ کی دختر حلال کو کیونکر حرام کر دیا۔

رابعاً یہ حدیث جس طرح ابن ماجہ نے روایت کی کہ اگر کچھ قابل ذکر ہے تو یہی۔ اگر اس کے ضعف سند سے قطع نظر بھی کی جائے تو اس میں کوئی قصہ سوال اس حدیث متروک وساقط کی طرح نہیں صرف اتنا بیان ہے کہ حرام حلال کو حرام نہیں کرتا، یہ اپنے ظاہر پر تو یقیناً صحیح نہیں، کیا اگر قلیل پانی یا گلاب میں شراب یا پیشاب ڈال دیں تو اسے حرام نہ کر دیں گے !

اقول کیا کوئی اگر زنا سے جنب ہو تو اسے نماز و قرات و دخول مسجد وطواف کعبہ کہ حلال تھے حرام نہ ہو جائیں گے ! کیا اگر کوئی ظالم کسی مظلوم کی بکری کا گلا گھونٹ کر مار ڈالے تو اس کا یہ فعل کہ اگر اپنے مال کے ساتھ ہوتا جب بھی بوجہ اضاعت مال حرام تھا اور مال غیر کے ساتھ ظلماً حرام در حرام اس حلال جانور کو حرام نہ کر دے گا ! کیا اگر کوئی شخص اپنی عورت کو ایک ہفتہ میں تین طلاقیں دے خصوصاً ایام حیض میں تو اس فعل حرام در حرام سے وہ زن حلال اس پر حرام نہ ہو جائے گی ! صدہا صورتیں ہیں جن میں حرام حلال کو حرام کر دیتا ہے ،

تو یہ اطلاق کیونکر مراد ہو سکتا ہے، لاجرم تاویل سے چارہ نہیں کہ حرام من حیث ہو حرام ، حلال کو حرام نہیں کرتا۔

اقول یعنی بول و شراب نے جو آب و گلاب کو حرام کیا نہ بوجہ اپنی حرمت کے بلکہ اس جہت سے کہ یہ نجس تھے اس سے مل کر اسے بھی نجس کر دیا ، اب اس کی نجاست باعث حرمت ہوئی اور اگر کوئی شئی طاہر حرام کسی حلال میں ایسی مل جائے کہ تمیز نا ممکن ہو تو ہم تسلیم نہیں کرتے کہ وہ حلال خود حرام ہو گیا بلکہ حلال اپنی حلت پر باقی ہے اور مخلوط کا تناول اس لیے ناجائز کہ بوجہ اختلاط اس کا تناول تناول حرام سے خالی نہیں ہو سکتا یہاں تک کہ اگر جدا ہو سکے اور جدا کر لیں تو حلال بدستور اپنی حلت پر ہو کما لایخفی (جیسا کہ مخفی نہیں۔ ت) یو نہی زنا سے نماز و غیرہ کو اس حیثیت سے حرام نہ کیا کہ وہ زنا ہے کہ خصوصیت زنا کو اس میں کیا دخل ، بلکہ اس حیثیت سے کہ وہ

1 میزان الاعتدال حرف العین ترجمہ دارالمعرفہ بیروت ۴۶۵/۲ 2 تقریب التہذیب حرف العین ترجمہ .. دارالکتب العلمیہ بیروت ۵۱۶/۱

Penetration into the desired vagina is 'ilaj mushtahi' (the act of penetration in a desirable part). And measure the rest by it. Now we accept this, and the hadith is not applicable against us. Here, too, committing adultery with a woman did not make the woman's daughter forbidden because it is adultery, for the specialty of adultery has no role in it either. Rather, it was made forbidden for the reason that it is sexual intercourse and penetration, so "when you have entered unto them" (Qur'anic verse) became applicable and brought the prohibition of the daughter of the woman with whom intercourse was had. Thus, even in this weak hadith, there is no proof at all for the opponent. Praise be to Allah. The absolute researcher [Ibn al-Humam] in Fath al-Qadir mentioned some ahadith here as supporting evidence for his school of thought; among them are:

Arabic	Urdu Translation
A man said, "O Messenger of Allah! I committed adultery with a woman in the days of ignorance. May I marry her daughter?" He (peace be upon him) said, "I do not think so, nor is it correct for you to marry a woman where you would see from her daughter what you have seen from her." [1]	A person submitted: O Messenger of Allah! I committed adultery with a woman in the pre-Islamic era (Jahiliyyah); should I marry her daughter? He said: It is not my opinion, nor is such a marriage permissible, that you should become aware of that thing in the daughter of which you were aware in her mother.

I say, furthermore, that supporting it is the hadith narrated in *Ghaya al-Sam'ania* from Hazrat Umm Hani bint Abi Talib (may Allah be pleased with them). The Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic	Urdu Translation
Whoever looks at the private parts of a woman with lust, her mother and daughter become forbidden for him. [2]	Whoever looks at the private parts of a woman with lust, that woman's mother and daughter become forbidden for him.

In another hadith it says:

Arabic	Urdu Translation
Cursed is he who looks at the private parts of a woman and her daughter. [3]	Cursed is he who looks at the private parts of both a woman and her daughter.

Abd al-Razzaq narrated in his *Musannaf* from Hazrat Ibrahim al-Nakha'i (may Allah be pleased with him):

Arabic	Urdu Translation
Whoever looks at the private parts of a woman and her daughter, Allah will not look at him with mercy on the Day of Resurrection. [4]	Whoever looks at the private parts of both a woman and her daughter, Allah Almighty shall not look upon him with mercy on the Day of Resurrection.

1. *Fath al-Qadir*, Chapter: Explanation of Prohibitions, Nuriya Rizvia, Sukkur, 3/129
2. *Al-Binayah Sharh al-Hidayah*, Chapter: Marriage with Prohibited Women, Maktabah Imdadiyah, Makkah Mukarramah, 3/41
3. *Al-Binayah Sharh al-Hidayah*, Chapter: Marriage with Prohibited Women, Maktabah Imdadiyah, Makkah Mukarramah, 3/41
4. *Kanz al-Ummal* with reference to *Musannaf Abd al-Razzaq*, Hadith..., Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 16/517

इच्छित योनि (फ़र्ज मुश्तही) में प्रवेश 'इलाज मुश्तही' है और बाकी को उसी पर कयास (अनुमान) करें। अब हम इसे स्वीकार करते हैं और हदीस हम पर लागू नहीं होती। यहाँ भी स्त्री के साथ व्यभिचार (ज़िना) करने ने स्त्री की पुत्री को इस आधार पर हराम (वर्जित) नहीं किया कि वह ज़िना है, क्योंकि ज़िना की विशिष्टता का इसमें कोई दखल नहीं है। बल्कि इसे इस हैसियत से हराम किया गया कि वह संभोग और प्रवेश है, तो "जब तुम उनसे मिल चुके हो" (कुरान की आयत) सादिक आया और संभोग की गई स्त्री की पुत्री की हुरमत (वर्जना) ले आया। अतः इस कमज़ोर हदीस में भी विपक्षी के लिए कोई दलील नहीं है, अल्लाह की प्रशंसा हो। मुहाक्क़िक अल-इतलाक (इब्न अल-हुमाम) ने 'फ़तह अल-क़दीर' में यहाँ अपने मज़हब (विचारधारा) के समर्थन में कुछ हदीसें ज़िक्र की हैं, उनमें से ये हैं:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
एक व्यक्ति ने कहा, "हे अल्लाह के रसूल! मैंने जाहिलियत (अज्ञानता) के दौर में एक महिला के साथ ज़िना किया था। क्या मैं उसकी बेटी से निकाह कर सकता हूँ?" आपने फरमाया, "मेरा ऐसा विचार नहीं है और न ही ऐसा निकाह जायज़ है कि तुम बेटी की उस चीज़ से अवगत हो जिससे तुम उसकी माँ की चीज़ से अवगत हुए थे।" [1]	एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया: या रसूल अल्लाह! मैंने अज्ञानता के काल में एक औरत से ज़िना किया था, क्या उसकी बेटी से निकाह कर लूँ? फरमाया: मेरी राय नहीं है और न ही ऐसा निकाह जायज़ है कि तुम बेटी की उस चीज़ पर अवगत हो जिस चीज़ पर उसकी माँ की अवगत थे।

मैं कहता हूँ, इसके अलावा इसके समर्थक वह हदीस है जिसे 'गाया अल-सामानिया' में हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) से रिवायत किया गया है। सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
जो किसी औरत के गुप्तांगों को कामुकता (शहवत) के साथ देखे, उस पर उस औरत की माँ और बेटी हराम हो जाती हैं। [2]	जो किसी औरत के गुप्तांग (फ़र्ज) को शहवत से देखे, उस पर उस औरत की माँ और बेटी हराम हो जाएँ।

दूसरी हदीस में है:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
वह अभिशप्त (मलऊन) है जो किसी औरत और उसकी बेटी दोनों के गुप्तांगों को देखे। [3]	मलऊन है वह जो किसी औरत और उसकी बेटी दोनों के फ़र्ज देखे।

अब्दुर्रज्ज़ाक ने अपनी मुसन्निफ में हज़रत इब्राहीम नखई (अल्लाह उनसे राज़ी हो) से रिवायत की:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
जिसने किसी औरत और उसकी बेटी के गुप्तांगों को देखा, कयामत के दिन अल्लाह उसकी ओर नज़र-ए-रहमत नहीं करेगा। [4]	जो किसी औरत और उसकी बेटी दोनों के फ़र्ज देखे, अल्लाह तआला कयामत के दिन उस पर नज़र-ए-रहमत न करे।

1. 'फ़तह अल-क़दीर', फ़स्ल: मुहर्रमात का बयान, नूरिया रज्विया, सुक्कुर, 3/129
2. 'अल-बिनाया शरह अल-हिदाया', फ़स्ल: निकाह अल-मुहर्रमात, मकतबा इमदादिया, मक्का मुकर्रमा, 3/41
3. 'अल-बिनाया शरह अल-हिदाया', फ़स्ल: निकाह अल-मुहर्रमात, मकतबा इमदादिया, मक्का मुकर्रमा, 3/41
4. 'कन्ज़ुल उम्माल' ब-हवाला 'मुसन्निफ़ अब्दुर्रज्ज़ाक', हदीस..., मुअस्ससतुर रिसाला, बैरुत, 16/517

पृष्ठ 366/739

فرج مشتہی میں ایلاج مشتہی ہے وقس علی ذلک البواقی (باقی کو اس پر قیاس کروت) اب ہم اسے تسلیم کرتے ہیں اور حدیث ہم پر وارد نہیں، یہاں بھی عورت سے زنا کرنے نے دختر زن کو اس بنا پر حرام نہ کیا کہ وہ زنا ہے کہ خصوصیت زنا کو اس میں بھی دخل نہیں بلکہ اسی حیثیت سے حرام کیا کہ وہ وطی وادخال ہے تو "دخلتم بھن" صادق آیا اور دختر موطوہ کی حرمت لایا تو اس حدیث ضعیف میں بھی مخالف کے لیے اصلا حجت نہیں وللہ الحمد۔ محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں یہاں بعض احادیث اپنے مذہب کی مؤیدات ذکر فرمائیں، ازان جملہ،

عربی متن	**اردو ترجمہ**
قال رجل یا رسول اللہ انی زنیت بامرأۃ فی الجاہلیۃ افانکح ابنتہا قال لاری ذلک ولایصح ان تنکح امرأۃ تطلع من ابنتہا علی ماتطلع علیہ منہا 1-	ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ! میں نے زمانہ جاہلیت میں ایک عورت سے زنا کیا تھا اس کی بیٹی سے نکاح کر لوں، فرمایا: میری رائے نہیں اور نہ ایسا نکاح جائز ہے کہ تو بیٹی کی اس چیز پر مطلع ہو جس چیز پر اس کی ماں کی مطلع تھا۔

اقول نیز اس کے مؤید ہے وہ حدیث کہ غایہ سمعانیہ میں حضرت ام ہانی بنت ابی طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

عربی متن	**اردو ترجمہ**
من نظر الی فرج امرأۃ بشہوۃ حرمت علیہ امہا وبنتہا -2	جو کسی عورت کی فرج کو شہوت سے دیکھے اس پر اس عورت کی ماں اور بیٹی حرام ہوجائیں،

دوسری حدیث میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
ملعون من نظر الی فرج امرأة وبنتہا -3	ملعون ہے وہ جو کسی عورت اور اس کی بیٹی دونوں کی فرج دیکھے۔

عبدالرزاق نے اپنی مصنف میں حضرت ابراہیم نخعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی:

عربی متن	اردو ترجمہ
نظر الی فرج امرأة وبنتہا لم ینظر اللہ الیہ یوم القیامۃ -4	جو کسی عورت اور اس کی دختر دونوں کی فرج دیکھے اللہ تعالیٰ روز قیامت اس پر نظر رحمت نہ کرے۔

1 فتح القدیر فصل فی بیان المحرمات نوریہ رضویہ سکھر ۱۲۹/۳ 2 البنایہ شرح الھدایہ فصل فی نکاح المحرمات مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۴۱/۳ 3 البنایہ شرح الھدایہ فصل فی نکاح المحرمات مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ ۴۱/۳ 4 کنز العمال بحوالہ مصنف عبدالرزاق حدیث ۰ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۵۱۷/۱۶

Also, from the author [it is narrated] from Imran bin Husain (may Allah be pleased with them both):

| Regarding one who commits adultery with his wife's mother, he said: Both have become forbidden for him. And Allah knows best.[1] | That is, regarding someone who commits adultery with his mother-in-law, it was stated that both the mother-in-law and the wife become forbidden for him. |

Upon the occurrence of this prohibition (hurmah), it becomes obligatory for the man and woman to separate and for the now-vitiated (fasid) marriage to be annulled. However, the marriage is not automatically dissolved until the husband performs mutarakah (formal abandonment/separation) and the iddah (waiting period) after mutarakah has passed. It is not permissible for the woman to marry someone else [until then]. Before mutarakah, intercourse by the husband with her is forbidden but is not considered adultery (zina) because the marriage still exists. Therefore, any offspring born from such intercourse are of legitimate lineage (sahih al-nasab). The words spoken to dissolve such a marriage are not called 'divorce' (talaq) but are called 'mutarakah', even if the word 'talaq' is used. Furthermore, the number of available divorces is not reduced by them. It is stated in Durr al-Mukhtar:

| Due to the prohibition of affinity (hurmat al-musaharah), the marriage is not dissolved until it is not permissible for her to marry another except after mutarakah and the completion of the iddah, and intercourse in it is not adultery.[2] | The marriage does not end due to hurmat al-musaharah. Therefore, she cannot marry another person until the husband performs mutarakah and the waiting period has passed. During this period, if the husband has intercourse, it will not be adultery. (T) |

It is stated in Radd al-Muhtar:

| It is said in al-Dhakhirah: Muhammad mentioned in Nikah al-Asl that marriage is not dissolved by the prohibition of affinity and breastfeeding; rather, it becomes vitiated (fasid) such that if the husband has intercourse before separation, the legal punishment (hadd) is not mandatory for him, whether it was doubtful for him or not.[3] | It is in al-Dhakhirah that Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) mentioned in the discussion of marriage in al-Asl (i.e., al-Mabsut) that marriage does not end due to the prohibition of affinity (musaharah) or breastfeeding (rada'ah); rather, it becomes vitiated. Therefore, if the husband had intercourse

before separation, the punishment for adultery will not be applied to him, whether he had any doubt or not. (T) |

In the same book, it is stated:

| It is said in al-Hawi: and intercourse in it is not adultery. | It is in al-Hawi that intercourse during this period will not be called adultery. |

[1] Kanz al-Ummal, citing Musannaf Abd al-Razzaq, Hadith, Muassasat al-Risalah, Beirut, 16/516. [2] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Chapter on Forbidden Relations, Mujtabai Press, Delhi, 1/188. [3] Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Chapter on Forbidden Relations, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/283.

साथ ही, इमरान बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है:

| उस व्यक्ति के बारे में जो अपनी पत्नी की माँ के साथ व्यभिचार करता है, उन्होंने कहा: दोनों उस पर हराम (वर्जित) हो गए। और अल्लाह बेहतर जानता है।[1] | यानी, अपनी सास के साथ व्यभिचार करने वाले के बारे में कहा गया कि उसके लिए सास और पत्नी दोनों हराम हो गईं। |

इस हराम (वर्जितता) के पैदा होने से पुरुष और महिला का अलग हो जाना और इस दूषित (फ़ासिद) हुए निकाह का निरस्तीकरण (फ़स्ख़) अनिवार्य हो जाता है, लेकिन निकाह खुद-ब-खुद समाप्त नहीं होता जब तक कि पति 'मुतारकः (औपचारिक अलगाव) न कर ले और मुतारकः के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त न हो जाए। तब तक महिला के लिए दूसरे से निकाह करना जायज़ नहीं है। मुतारकः से पहले पति का उसके साथ संभोग करना हराम है लेकिन व्यभिचार (ज़िना) नहीं है क्योंकि निकाह अभी बाकी है। इसलिए, इस संभोग से जो संतान पैदा होगी, वह वैध वंश (सहीह-उल-नसब) की होगी। ऐसे निकाह को खत्म करने के लिए जो शब्द कहे जाते हैं, उन्हें 'तलाक़' नहीं बल्कि 'मुतारकः कहा जाता है, चाहे वे तलाक़ के शब्दों में ही क्यों न हों। यहाँ तक कि उनसे तलाक़ की संख्या कम नहीं होती। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

| निकाह वैवाहिक निकटता (हुरमत-ए-मुसाहरत) की वर्जना के कारण तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि मुतारकः और इद्दत पूरी होने के बाद ही उसका दूसरे से विवाह करना वैध न हो जाए, और इसमें संभोग ज़िना नहीं है।[2] | हुरमत-ए-मुसाहरत से निकाह खत्म नहीं होता, इसलिए वह किसी दूसरे व्यक्ति से तब तक निकाह नहीं कर सकती जब तक पति मुतारकः न कर ले और इद्दत की अवधि समाप्त न हो जाए। इस दौरान अगर पति ने संभोग किया तो वह ज़िना नहीं होगा। (त) |

'रद्द-उल-मुहतार' में है:

| अल-ज़ख़ीरा में कहा गया है: मुहम्मद ने 'निकाह-उल-अस्ल' में उल्लेख किया है कि निकाह मुसाहरत और रज़ाअत (दुग्धपान) की वर्जना से समाप्त नहीं होता है, बल्कि दूषित (फ़ासिद) हो जाता है, यहाँ तक कि यदि पति ने अलगाव से पहले संभोग किया, तो उस पर हद (दंड) अनिवार्य नहीं है, चाहे उसे संदेह हो या न हो।[3] | 'ज़ख़ीरा' में है कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने 'अस्ल' यानी 'मबस्त' की निकाह की बहस में ज़िक्र फ़रमाया कि हुरमत-ए-मुसाहरत और हुरमत-ए-रज़ाअत की

बिना पर निकाह खत्म नहीं होता बल्कि फ़ासिद होता है। लिहाज़ा अगर पति ने अलगाव से पहले संभोग कर लिया तो उस पर ज़िना की हद नहीं होगी, चाहे उसे कोई संदेह हो या न हो। (त) |

उसी में है:

| अल-हावी में कहा गया है: और इसमें संभोग ज़िना नहीं होगा। | 'हावी' में है कि इस अवधि में संभोग को ज़िना नहीं कहा जाएगा। |

[1] कंज़-उल-उम्माल, मुसन्निफ़ अब्द-उर-रज़्ज़ाक़ के हवाले से, हदीस, मुअस्सत-उर-रिसालाह, बेरूत, 16/516। [2] दुर्र-ए-मुख्तार, किताब-उन-निकाह, फ़स्ल फ़िल-मुहर्रमात, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/188। [3] रद्द-उल-मुहतार, किताब-उन-निकाह, फ़स्ल फ़िल-मुहर्रमात, दार इह्या-उत-तुरात अल-अरबी, बेरूत, 2/283।

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

نیز مصنف عمران بن حصین رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ہے:

| فی الذی یزنی بام امرأتہ قال حرمتا علیہ واللہ تعالٰی اعلم۔[1] | یعنی اپنی ساس سے زنا کرنے والے کی نسبت فرمایا کہ اس پر ساس اور عورت دونوں حرام ہوگئیں۔ |

اس حرمت کے پیدا ہونے سے مرد و زن کو جدا ہوجانا اور اس نکاح فاسد شدہ کا فسخ کردینا فرض ہو جاتا ہے مگر خود بخود نکاح زائل نہیں ہو جاتا، یہاں تک کہ شوہر جب تک متارکہ نہ کرے اور بعد متارکہ عدت نہ گزرے عورت کو روا نہیں کہ دوسرے سے نکاح کرے، اور قبل متارکہ شوہر کا اس سے وطی کرنا حرام ہوتا ہے مگر زنا نہیں کہ نکاح باقی ہے، وللہذا اس وطی سے جو اولاد پیدا ہو صحیح النسب ہے ایسے نکاح کے ازالہ کو جو الفاظ کہے جائیں طلاق نہیں بلکہ متارکہ کہلاتے ہیں اگرچہ بلفظ طلاق ہوں یہاں تک کہ ان سے عدد طلاق کم نہیں ہوتا، در مختار میں ہے:

| بحرمۃ المصاھرۃ لا یرتفع النکاح حتی لا یحل لھا التزوج بآخر الابعد المتارکۃ وانقضاء العدۃ والوطئ بھا لایکون زنا[2]۔ | حرمت مصاہرہ سے نکاح ختم نہیں ہوتا لہٰذا دوسرے شخص سے نکاح نہیں کرسکتی جب تک خاوند متارکہ نہ کرے اور عدت نہ گزر جائے، اس دوران اگر خاوند نے وطی کی تو وہ زنا نہیں ہوگا۔ (ت) |

رد المحتار میں ہے :

| قال في الذخیرۃ ذکر محمد في نکاح الاصل ان النکاح لا یرفع بحرمۃ المصاھرۃ والرضاع بل یفسد حتی لو وطئھا الزوج قبل التفریق لا یجب علیہ الحد اشتبہ علیہ اولم یشتبہ[3]۔ | ذخیرہ میں ہے امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی نے اصل یعنی مبسوط کی بحث نکاح میں ذکر فرمایا کہ حرمت مصاہرت اور

حرمت رضاعت کی بنا پر نکاح ختم نہیں ہوتا بلکہ فاسد ہوتا ہے لہٰذا اگر خاوند نے تفریق سے قبل وطی کرلی تو اس پر زنا کی حد نہیں ہوگی۔ اس کو کوئی اشتباہ ہو یا نہ ہو۔ (ت) |

اسی میں ہے :

| قال في الحاوي والوطئ فیھا لا یکون زنا | حاوی میں ہے کہ اس مدت میں وطی کو زنا نہ کہا جائے گا |

[1] کنز العمال بحوالہ مصنف عبدالرزاق حدیث موسسۃ الرسالۃ بیروت ۵۱۶/۱۶ [2] در مختار کتاب النکاح فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ [3] رد المحتار کتاب النکاح فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۸۳/۲

'Because this matter is disputed, whereas after the wife becomes forbidden, intercourse requires ‘Mahr-ul-Mithl’ (equivalent dowry), and if there is a child, its lineage (nasab) will be established, and there will be no legal punishment for adultery (Hadd-e-Zina) upon him.' (T)

It is in the same: In 'Bazzaziyyah', it states that in an invalid (fasid) marriage, after consummation, separation (mutaraka) can only happen through verbal declaration, for example, saying "I have set you free from the marriage" or "I have left you." Mere denial of the marriage is not considered separation. However, if he denies it and also says "Go and get married [to someone else]", then it will be separation. And in this situation, giving a divorce (talaq) will also constitute separation, but it will not reduce the [available] number of divorces. (T)

And from here it becomes clear that in this state, if the husband did not leave and continued to have intercourse illicitly with 'Hind' and children were born, then those children are heirs to both their parents. The inheritance from the mother is obvious, as even illegitimate children inherit from their mother as established by jurists, and this issue is mentioned in 'Durr' and other works. (T) And inheritance from the father is because it has just been cited that children in such a state are not considered illegitimate but of valid lineage. Yes, the man and woman will not inherit from each other. And Allah (the Glorious and Exalted) knows best, and His knowledge (may His glory be magnified) is most complete and most perfect.

Issue 196: From the State of Rampur, sent by Mr. Nosha Miyan Sahib, 20 Muharram 1316 AH. This fatwa of yours, a copy of which is presented, was shown to the scholars of Rampur for their seal of approval. Mufti Muhammad Lutfullah Sahib said: "This is a copy, and what is written in it—that a woman with such beliefs is an apostate, her marriage cannot take place with any Muslim, nor with an infidel, nor with an apostate, nor with someone of her own faith—I have reservations about this. What is the evidence for her not being able to marry someone of her own faith? Maulvi Sahib (meaning you) its..."

---

1. Rad al-Muhtar, Chapter of Prohibited [Marriages], Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/283
2. Rad al-Muhtar, Chapter of Prohibited [Marriages], Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/251-52

'क्योंकि यह बात विवादित है, जबकि पत्नी के हराम होने के बाद संभोग करने से 'महर-ए-मिस्ल' (समान मेहर) अनिवार्य होगा और यदि बच्चा हो तो उसका वंश (नसब) साबित होगा और उस पर व्यभिचार का दंड (हदे ज़िना) नहीं होगा।' (त)

उसी में है: 'बज़ाज़िया' में है कि अमान्य (फ़ासिद) निकाह में संभोग के बाद 'मुतारका' (अलगाव) केवल ज़बानी हो सकता है, जैसे वह कहे "मैंने तुझे निकाह से आज़ाद किया," या यों कहे "मैंने तुझे छोड़ दिया," और केवल पिछले निकाह के इंकार को मुतारका नहीं कहा जाएगा, हाँ यदि निकाह के साथ यह भी कहे कि "जा निकाह कर ले," तो मुतारका हो जाएगा। और इस स्थिति में तलाक देने से मुतारका हो जाएगा लेकिन इससे तलाक की संख्या कम नहीं होगी। (त)

और यहीं से स्पष्ट हुआ कि इस स्थिति में यदि पति ने नहीं छोड़ा और नाजायज तरीके से 'हिन्दा' से संभोग करता रहा और संतान हुई तो वह संतान अपने माता-पिता दोनों की वारिस है। माँ की विरासत तो स्पष्ट है क्योंकि नाजायज संतान भी अपनी माँ की विरासत पाती है जैसा कि फ़ुकहा (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है और यह मसला 'दुर्र' आदि में है। (त) और पिता की विरासत इसलिए कि अभी उद्धृत किया जा चुका है कि ऐसी स्थिति की संतान 'वलद-उल-ज़िना' (नाजायज) नहीं बल्कि सही नसब (वैध वंश) वाली है, हाँ स्त्री और पुरुष एक दूसरे के वारिस नहीं होंगे। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान (उसकी महिमा बढ़े) सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है।

मसला १९६: रियासत रामपुर से, प्रेषक जनाब नोशा मियाँ साहब, २० मुहर्रम १३१६ हिजरी। आपका यह फतवा जिसकी प्रति प्रस्तुत की जाती है, रामपुर के उलेमा की मुहर के लिए उनके समक्ष पेश हुआ। जनाब मुफ़्ती मुहम्मद लुत्फ़ुल्लाह साहब ने फ़रमाया: "यह एक प्रति है और इसमें जो लिखा है कि जो औरत ऐसे अक़ीदे (विश्वास) की हो वह मुर्तदा (धर्मत्यागी) है, उसका निकाह न किसी मुसलमान से हो सकता है, न काफिर से, न मुर्तद से, न ही उसके हम-मज़हब (अपने ही पंथ वाले) से - मुझे इसमें संकोच है। उसके हम-मज़हब से न होने का प्रमाण क्या है? मौलवी साहब (यानी जनाब) इसकी..."

---

1. रद-उल-मुहतार, बाब अल-मुहर्रमात, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/२८३
2. रद-उल-मुहतार, बाब अल-मुहर्रमात, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/२५१-५२

لانه مختلف فیه وعلیه مهر المثل بوطئها بعد الحرمة ولا حد علیه ویثبت النسب[1]۔ کیونکہ یہ بات مختلف فیہ ہے جبکہ بیوی کے حرام ہونے کے بعد وطی کرنے سے مہر مثل لازم ہوگا اور بچہ ہو تو اس کا نسب ثابت ہوگا اور اس پر حد زنا نہ ہوگی۔ (ت)

اسی میں ہے: فی البزازیه المتارکة فی الفاسد بعد الدخول لا تکون الا بالقول کخلیت سبیلك او ترکتک و مجرد انکار النکاح لا یکون متارکة اما لو انکر وقال ایضا اذهبی وتزوجي کان متارکة والطلاق فیه متارکة لکن لا ینقص به عدد الطلاق[2]۔ بزازیہ میں ہے کہ فاسد نکاح میں دخول کے بعد متارکہ صرف زبانی ہو سکتا ہے، مثلاً یہ کہے میں نے تجھے نکاح سے آزاد کیا، یا یوں کہے میں نے تجھے چھوڑ دیا، اور صرف سابقہ نکاح سے انکار کو متارکہ نہ کہا جائے گا، ہاں اگر نکاح کے ساتھ یہ بھی کہے کہ جا نکاح کر، تو متارکہ ہو جائے گا۔ اور اس موقعہ پر طلاق دینے سے متارکہ ہو جائے گا لیکن اس سے عدد طلاق کم نہ ہوگا۔ (ت)

اور یہیں سے ظاہر ہوا کہ اس حالت میں اگر شوہر نے نہ چھوڑا اور ناجائز طور پر ہندہ سے وطی کرتا رہا اور اولاد ہوئی تو وہ اولاد اپنے ماں باپ دونوں کی وارث ہے، ماں کی وراثت تو ظاہر کہ اولاد زنا بھی اپنی ماں کی میراث پاتی ہے کما نصوا علیه والمسألة في الدر وغیرہ (جیسا کہ فقہاء کرام نے اس پر نص کی ہے اور یہ مسئلہ در وغیرہ میں ہے۔ ت) اور باپ کی وراثت یوں کہ ابھی منقول ہو چکا کہ ایسی حالت کی اولاد ولد الزنا نہیں صحیح النسب ہے، ہاں زن و شوہر ایک دوسرے کے وارث نہ ہوں گے۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۱۹۶: از ریاست رامپور مرسلہ جناب نوشہ میاں صاحب ۲۰ محرم ۱۳۱۶ھ جناب کا یہ فتویٰ جس کی نقل حاضر کی جاتی ہے علمائے رامپور کے حضور بغرض مہر پیش ہوا جناب مفتی محمد لطف اللہ صاحب نے فرمایا یہ نقل ہے اور اس میں جو لکھا ہے کہ جو عورت ایسے عقیدہ کی ہو وہ مرتدہ ہے اس کا نکاح نہ کسی مسلمان سے ہو سکتا ہے نہ کافر سے نہ مرتد سے نہ اس کی ہم مذہب سے مجھے اس میں تامل ہے اس کے ہم مذہب سے نہ ہونے کی سند کیا ہے، مولوی صاحب (یعنی جناب) اس کی

---

1 رد المحتار باب المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۸۳/۲ 2 رد المحتار باب المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۱/۲-۵۲

Volume Eleven, Fatawa Razawiyya

Provide the certificate and seal it; I have no excuse in sealing it, so the copy of the fatwa is being sent to you. Is this fatwa written by you or not? If it is, what is the basis for this ruling? Please clarify and be rewarded.

Answer: In fact, this fatwa is written by this humble servant, and the Shariah ruling regarding an apostate (male) and an apostate (female) is that their marriage cannot be solemnized with any Muslim man or woman, nor with any non-believer (male or female). Not even with an apostate of their own sect or an opposing sect; in short, it cannot happen anywhere in the world. It is stated in Mabsut of Imam Shams al-A'imma Sarakhsi and then in Fatawa al-Hindiyya:

[Arabic Quote 1]: It is not permissible for an apostate man to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original non-believing woman. Likewise, the marriage of an apostate woman is not permissible with anyone. — [Urdu Translation]: An apostate man cannot marry an apostate woman, whether she be a Muslim or an original non-believer woman. Similarly, an apostate woman is not lawful for any Muslim man. (T)

In Fatawa of Imam Qadi Khan, it is stated:

[Arabic Quote 2]: The marriage of an apostate woman is not permissible with anyone. A Magian woman is not lawful for a Muslim, but she is lawful for every original non-believer except for an apostate. — [Urdu Translation]: The marriage of an apostate woman is not permissible with anyone. A Magian woman is not lawful for a Muslim; she is lawful for every original non-believer and not lawful for an apostate. (T)

In the same [book], it is stated:

[Arabic Quote 3]: When a hypocrite marries a hypocrite woman in the presence of witnesses and a guardian, if they both manifest disbelief or one of them does, they are treated like apostates; their marriage is not valid — summarized. And Allah knows best. — [Urdu Translation]: If a hypocrite man marries a hypocrite woman in the presence of her guardian and witnesses, and they both or one of them manifests their disbelief, then their ruling will also be like that of apostates and their marriage will not be valid. And Allah knows best. (T)

And Allah Ta'ala knows best. (T)

Problem 197: From Gilgit Cantonment Jukatāl, sent by Syed Muhammad Yusuf Ali Sahib, 7 Shaban 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: How is it to marry Shias and other people of bad faith? Clarify and be rewarded.

1. Fatawa al-Hindiyya, Book of Nikah, Section Seven: Prohibitions due to Shirk, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282.
2. Fatawa Qadi Khan, Book of Nikah, Chapter on Prohibitions, Nawal Kishore Lucknow, 1/167.
3. Fatawa Qadi Khan, Book of Nikah, Chapter on Prohibitions, Nawal Kishore Lucknow, 1/167.

जिल्द ग्यारहवीं, फ़तावा रज़विया

सनद लिखकर मुहर लगा दें तो मुझे मुहर करने में कोई उज्र नहीं, लिहाज़ा फ़तवे की नक़ल आपकी सेवा में भेजी जा रही है। क्या यह फ़तवा आपकी तहरीर है या नहीं? अगर है तो इस हुक्म की सनद क्या है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: वास्तव में यह फ़तवा इस फ़क़ीर (विनम्र दास) का ही लिखा हुआ है और मुर्तद (धर्म-त्यागी पुरुष) और मुर्तदा (धर्म-त्यागी स्त्री) के बारे में शरई हुक्म यही है कि उनका निकाह न किसी मुस्लिम पुरुष या स्त्री से हो सकता है और न ही किसी काफ़िर पुरुष या स्त्री से। न ही किसी मुर्तद या मुर्तदा से, चाहे वे उनके हम-मज़हब हों या विरोधी मज़हब के, संक्षेप में, पूरी दुनिया में कहीं भी नहीं हो सकता। इमाम शम्सुल अइम्मा सरख्सी की 'मबसूत' और फिर 'फ़तावा हिंदीया' में है:

[अरबी उद्धरण 1]: एक मुर्तद पुरुष के लिए मुर्तदा स्त्री, मुस्लिम स्त्री, या मूल रूप से काफ़िर स्त्री से विवाह करना जायज़ नहीं है। इसी तरह मुर्तदा स्त्री का विवाह किसी के साथ भी जायज़ नहीं है। — [उर्दू अनुवाद]: मुर्तद पुरुष का निकाह मुर्तदा स्त्री, मुस्लिम स्त्री या मूल काफ़िर स्त्री से जायज़ नहीं है, इसी तरह मुर्तदा स्त्री किसी मुसलमान मर्द के लिए हलाल नहीं है। (त)

फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ां में है:

[अरबी उद्धरण 2]: मुर्तदा स्त्री का निकाह किसी के साथ जायज़ नहीं है। एक मजूसी (पारसी) स्त्री मुसलमान के लिए हलाल नहीं है, वह हर मूल काफ़िर के लिए हलाल है सिवाय मुर्तद के। — [उर्दू अनुवाद]: मुर्तदा का निकाह किसी के साथ जायज़ नहीं। मजूसी स्त्री मुसलमान को हलाल नहीं, वह हर मूल काफ़िर के लिए हलाल है और मुर्तद के लिए हलाल नहीं। (त)

उसी में है:

[अरबी उद्धरण 3]: जब कोई मुनाफ़िक (पाखंडी) किसी मुनाफ़िक स्त्री से गवाहों और वली (अभिभावक) की मौजूदगी में निकाह करे, यदि वे दोनों या उनमें से कोई एक कुफ्र (अविश्वास) ज़ाहिर कर दे, तो वे मुर्तदों के समान होंगे; उनका निकाह सही नहीं है - संक्षेप में। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। — [उर्दू अनुवाद]: मुनाफ़िक ने अगर मुनाफ़िक स्त्री से उसके वली और गवाहों की मौजूदगी में निकाह किया और अपने कुफ्र को उन दोनों ने या उनमें से एक ने ज़ाहिर कर दिया तो

उनका हुक्म भी मुर्तदों वाला होगा और उनका निकाह सही न होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 197: गिलगित छावनी जो कटाल से, सैयद मोहम्मद यूसुफ अली साहब द्वारा भेजा गया, 7 शाबान 1312 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि शिया और अन्य बुरे अकीदे वालों (बद-मज़हबों) के साथ शादी करना कैसा है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

1. फ़तावा हिंदीया, किताबुन निकाह, अल्किसमुस साबिअ: अल-मुहर्रमात बिश-शिर्क़ नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/282।
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ां, किताबुन निकाह, बाबू फिल मुहर्रमात, नवल किशोर लखनऊ, 1/167।
3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ां, किताबुन निकाह, बाबू फिल मुहर्रमात, नवल किशोर लखनऊ, 1/167।

पेज 369 का 739

جلد یازدہم، فتاوٰی رضویہ

سند لکھ کر مہر فرمادیں تو مجھے مہر کرنے میں عذر نہیں لہذا نقل فتوی مرسل خدمت ہے۔ یہ فتوی جناب کا تحریر فرمایا ہوا ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو اس حکم کی سند کیا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: فی الواقع یہ فتوی فقیر ہی کا لکھا ہوا ہے اور درباره مرتد و مرتده حکم شرعی یہی ہے کہ ان کا نکاح نہ کسی مسلم و مسلمہ سے ہوسکتا ہے نہ کافر و کافرہ سے۔ نہ مرتد و مرتدہ سے ان کے ہم مذہب خواہ مخالف مذہب سے، غرض تمام جہاں میں کہیں نہیں ہو سکتا۔ مبسوط امام شمس الائمہ سرخسی پھر فتاوٰی ہندیہ میں ہے:

لایجوز للمرتدان یتزوج مرتده و لا مسلمۃ لا کافرۃ اصلیۃ و کذلک لایحوز نکاح المرتدۃ مع احد۔[1] —— مرتد شخص کو مرتدہ، مسلمان ہو یا اصلی کافرہ عورت سے نکاح جائز نہیں، یوں ہی مرتدہ عورت کسی مسلمان مرد کے لیے حلال نہیں۔ (ت)

فتاوی امام قاضی خاں میں ہے:

لایجوز نکاح المرتدۃ لاحد والمجوسیۃ لاتحل للمسلم وتحل لکل کافر الالمرتد۔[2] —— مرتدہ کا نکاح کسی کے ساتھ جائز نہیں۔ مجوسیہ مسلمان کو حلال نہیں وہ ہر اصلی کافر کے لیے حلال ہے اور مرتد کے لیے حلال نہیں۔ (ت)

اسی میں ہے:

المبیض اذاتزوج مبیضۃ بشھود و ولی ان کانا یظھران الکفر او احدھما کانا بمنزلۃ المرتدین لم یصح نکاحھما مختصرا۔[3] واللہ تعالٰی اعلم۔ —— منافق نے اگر منافقہ عورت سے اس کے ولی اور گواہوں

کی موجودگی میں نکاح کیا اور اپنے کفر کو ان دونوں نے یا ان میں سے ایک نے ظاہر کردیا تو ان کا حکم بھی مرتدوں والا ہوگا اور ان کا نکاح صحیح نہ ہوگا واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۹۷: از گلگت چھاؤنی جو کٹال مرسلہ سید محمد یوسف علی صاحب ۷ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شیعہ وغیرہ بد مذہبوں کے ساتھ شادی کرنا کیسا ہے؟

بینوا توجروا

[1] فتاوی ہندیہ کتاب النکاح القسم السابع المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۸۲ [2] فتاوی قاضی خاں کتاب النکاح باب فی المحرمات نولکشور لکھنو ۱ / ۱۶۷ [3] فتاوی قاضی خاں کتاب النکاح باب فی المحرمات نولکشور لکھنو ۱ / ۱۶۷

Fatawa Rizvia, Volume 11

The Answer: Among them, one who holds a belief of disbelief (kufr), such as the common Rafidis (Shias) of today, marriage with such a person is not possible at all, even for someone of their own religion. And as for a person of a misguided sect (bid'ati) who is saved from beliefs of disbelief, although marriage with them is valid in the sense that if performed, it will be legitimate and not adultery, yet one must stay far away from establishing such a significant connection with people of misguided sects. Marriage is such a great relationship that it inevitably creates mutual familiarity, love, and affection. Allah the Almighty says:

"And among His Signs is this, that He created for you mates from among yourselves, that ye may dwell in tranquility with them, and He has put love and mercy between your (hearts): verily in that are Signs for those who reflect." - Al-Quran 30:21

And establishing friendship with a person of a misguided sect and having their love enter the heart causes severe damage to one's faith. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "A person will be with the one whom he loves." A person's resurrection will be with the one they love. He (peace and blessings of Allah be upon him) also says:

"A man follows the religion of his close friend; so each one of you should consider whom he takes as a friend." - Reported by Abu Dawood and At-Tirmidhi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) with a good chain of narration.

From these verses and hadiths, it is also clear that at the time of marrying a woman from a misguided sect, thinking that we will have dominance over her and her misguided beliefs will not harm us, but rather we will make her a Sunni, is sheer folly. This relationship creates friendship, inclination, affection, and love, and in love, a person becomes blind and deaf. It is mentioned in the Hadith:

"Your love for a thing makes you blind and deaf." - Reported by Ahmad and Al-Bukhari

1. Al-Quran 30/21
2. Sahih Muslim, Chapter: A man is with the one he loves, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/332
3. Sunan Abu Dawood, Chapter: He who is commanded to sit with etc., Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/308
4. Musnad Ahmad bin Hanbal, Narrations of Abu Darda, Dar al-Fikr Beirut, 6/450

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 11

उत्तर: उनमें से जो कोई कुफ़्र (अधर्म) का अक़ीदा (विश्वास) रखता है, जैसे आज के आम राफ़ज़ी, उनके साथ किसी का निकाह हो ही नहीं सकता, यहाँ तक कि उनके अपने धर्म वालों का भी। और जो बद-मज़हब (गुमराह पंथ वाला) कुफ़्र के अक़ीदों से बचा हो, उसके साथ निकाह यद्यपि इस अर्थ में सही है कि अगर कर लें तो सही हो जाएगा और ज़िना (व्यभिचार) न होगा, मगर बद-मज़हबों के साथ इतना बड़ा संबंध स्थापित करने से दूर भागना अनिवार्य है। वैवाहिक संबंध वह महान रिश्ता है जो चाहे-न-चाहे आपस में मेल-जोल, प्रेम और स्नेह पैदा करता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से जोड़े बनाए ताकि तुम उनके पास शांति पाओ और तुम्हारे बीच प्रेम और दया रख दी। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं।" - अल-क़ुरआन 30:21

और बद-मज़हब से दोस्ती पैदा होना और उसका प्यार दिल में आना धर्म को भारी नुक़सान पहुँचाता है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "आदमी उसी के साथ होगा जिससे वह प्रेम करता है।" आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह मोहब्बत रखता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"आदमी अपने करीबी दोस्त के धर्म पर होता है, अतः तुममें से हर एक को देखना चाहिए कि वह किससे दोस्ती कर रहा है।" - इसे अबू दाऊद और तिरमिज़ी ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से 'हसन' सनद के साथ रिवायत किया है।

इन्हीं आयतों और हदीसों से यह भी स्पष्ट हुआ कि किसी बद-मज़हब औरत से निकाह करते समय यह सोच लेना कि हम उस पर ग़ालिब (हावी) रहेंगे, उसकी बद-मज़हबी हमें क्या नुक़सान देगी बल्कि हम उसे सुन्नी बना लेंगे, महज़ बेवकूफ़ी है। यह रिश्ता तो दोस्ती, झुकाव, मेल और मोहब्बत पैदा करता है, और मोहब्बत में आदमी अंधा-बहरा हो जाता है। हदीस में फ़रमाया गया:

"किसी चीज़ की मोहब्बत तुम्हें अंधा और बहरा कर देती है।" - इसे अहमद और बुखारी ने रिवायत किया

1. अल-क़ुरआन 30/21

2. सहीह मुस्लिम, अध्याय: आदमी उसी के साथ है जिससे वह प्यार करता है, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/332
3. सुनन अबू दाऊद, अध्याय: जिसे बैठने का आदेश दिया गया आदि, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/308
4. मुसनद अहमद bin हनबल, अबू दरदा की रिवायतें, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 6/450

पृष्ठ 370/739

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

الجواب: جو ان میں کوئی عقیدہ کفر رکھتا ہے جیسے آج کل کے عام رافضی، اس کے ساتھ کسی کا نکاح ہو ہی نہیں سکتا یہاں تک کہ خود اس کے ہم مذہب کا بھی، اور جو بد مذہب عقائد کفر سے بچا ہو اس کے ساتھ نکاح اگرچہ بائیں معنی درست کہ کرلیں تو درست ہوجائے گا زنا نہ ہوگا مگر بد مذہبوں کے ساتھ ایسا بڑا علاقہ پیدا کرنے سے دور بھاگنا لازم ، زوجیت وہ عظیم رشتہ ہے کہ خواہی نخواہی باہم انس و محبت والفت پیدا کرتا ہے، قال اللہ تعالٰی:

وَمِنْ اٰیٰتِہٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَیْهَا وَجَعَلَ بَیْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةًؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۔ ۱ اللہ کی نشانیوں سے ہے کہ اس نے بنائیں تمہارے لیے تمہاری ہی جنس سے جو روئیں کہ تم ان کی طرف رغبت کروان سے مل کر چین پاؤ اور تمہارے آپس میں دوستی اور مہر رکھی، بیشک اس میں ٹھیک نشانیاں ہیں سوچنے والوں کے لیے،

اور بد مذہب سے دوستی پیدا ہونی اس کی محبت دل میں آنی دین کو سخت نقصان دیتی ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں : المرء مع من احب ۲ آدمی کا حشر اس کے ساتھ ہوگا جس سے محبت رکھتا ہے۔ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم:

الرجل علی دین خلیلہ فلینظر احدکم من یخالل ۔ ۳ رواہ ابوداؤد والترمذی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ باسناد حسن۔ آدمی اپنے خاص دوست کے دین پر ہوتا ہے تو غور کرے کہ کس سے دوستی کرتا ہے۔ (اس کو ابوداؤد اور ترمذی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سند حسن کے ساتھ روایت کیا ہے۔ ت)

انہی آیات و احادیث سے یہ بھی واضح ہوا کہ بد مذہب عورت کو نکاح میں لاتے وقت یہ خیال کر لینا کہ ہم اس پر غالب ہیں اس کی بد مذہبی ہمیں کیا نقصان دے گی بلکہ اسے سنی کریں گے محض حماقت ہے یہ رشتہ تو دوستی میل رغبت میل محبت مہر پیدا کرتا ہے اور محبت میں آدمی اندھا بہرا ہو جاتا ہے، حدیث میں فرمایا :

حبک الشیئ یعمی و یصم ۔ ۴ رواہ احمد والبخاری شیئ کی محبت تجھے اندھا اور بہرا کر دیتی ہے۔ اس کو احمد،

۱ القرآن ۳۰/۲۱ ۲ صحیح مسلم باب المرء مع من احب قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۳۲/۲ ۳ سنن ابو داؤد باب من یؤمر ان یجالس الخ آفتاب عالم پریس لاہور ۳۰۸/۲ ٤ مسند احمد بن حنبل مرویات ابوالدرداء دارالفکر بیروت ٤٥٠/٦

Fatawa Ridawiyyah Volume 11

| In 'At-Tarikh' and Abu Dawud from Abu Ad-Darda, and Ibn Asakir with a good chain from Abdullah bin Unays, and Al-Khara'iti in 'Al-I'tilal' from Abu Barzah Al-Aslami (may Allah be pleased with them). | Bukhari narrated in his Tarikh, and Abu Dawud narrated from Abu Ad-Darda (may Allah be pleased with him), and Ibn Asakir from Abdullah bin Unays (may Allah be pleased with him), and Khara'iti in I'tilal from Abu Barzah Aslami (may Allah be pleased with them). (T) |

Hearts turn, thoughts change, it takes no time; may Allah Almighty keep us in His protection and safety. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "Verily, the hearts are between two fingers of the fingers of Allah; He turns them as He wills."[1] - Narrated by Ahmad, At-Tirmidhi, and Al-Hakim from Anas (may Allah be pleased with him), and its narrators are the men of Muslim. | Hearts are under the special control of Allah Almighty; He turns them as He wills. Al-Hakim, Ahmad, and Tirmidhi narrated this from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him). And the narrators of this chain are the narrators of Imam Muslim. (T) |

And giving one's daughter in marriage is a severe affliction, a deadly poison, for women are overcome and subject. Allah Almighty said: "Men are the protectors and maintainers of women."[2] (T) Then, their love for their husband is more than for their mother, father, and the whole world. It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "Verily, for a husband, a woman has a share of love that is for nothing else."[3] - Narrated by Ibn Majah and Al-Hakim from Muhammad bin Abdullah bin Jahsh (may Allah be pleased with him). | A wife has a special love for her husband that she doesn't have for anyone else. Ibn Majah and Al-Hakim narrated this from Muhammad bin Abdullah bin Jahsh (may Allah be pleased with him). (T) |

Furthermore, they are also soft-hearted; the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "Take care, O Anjashah, with the glass vessels (fragile women)."[4] | O Anjashah (may Allah be pleased with him), take care of the soft and delicate women. (T) |

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abdullah bin Umar, Dar al-Fikr, Beirut, 2/168 [2] Al-Qur'an 4/34 [3] Mustadrak lil-Hakim, Kitab Ma'rifat as-Sahabah, Dar al-Fikr, Beirut, 4/62 [4] Sahih Bukhari, Bab al-Ma'aridh, Old Book House, Karachi, 2/917

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

| 'अत-तारीख़' और अबू दाऊद में अबू अद-दरदा से, और इब्न असाकिर ने एक अच्छी सनद के साथ अब्दुल्ला बिन उनीस से, और ख़राइती ने 'अल-इअतिलाल' में अबू बरज़ह अल-असलमी (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत किया है। | बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में और अबू दाऊद ने अबू दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से, और इब्न असाकिर ने इसको अब्दुल्ला बिन उनीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से, और ख़राइती ने इअतिलाल में अबू बरज़ह असलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रिवायत किया है। (त) |

दिल पलटने, ख्याल बदलने में कुछ देर नहीं लगती; अल्लाह अज़वजल अपने हिफ़्ज़-ओ-अमान ही में रखे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

| "बेशक दिल अल्लाह की उँगलियों में से दो उँगलियों के बीच हैं; वह जैसे चाहता है उन्हें फेर देता है।"[1] - इसे अहमद, तिर्मिज़ी और हाकिम ने अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है और इसके रावी मुस्लिम के रावी हैं। | दिल अल्लाह तआला के ख़ास तसर्रुफ़ (अधिकार) में हैं, वह जिस तरह चाहता है उन्हें फेरता है। इसको हाकिम, अहमद और तिर्मिज़ी ने अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। और इस सनद के रावी इमाम मुस्लिम के रावी हैं। (त) |

और अपनी बेटी देना तो सख्त क़हर, क़ातिल ज़हर है कि औरतें मग़लूब-ओ-महकूम (दबी हुई और अधीन) होती हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "मर्द औरतों के मुंतज़िम (देखभाल करने वाले) हैं।"[2] (त) फिर उन्हें शौहर की मोहब्बत भी माँ से, बाप से और तमाम दुनिया से ज़्यादा होती है, हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

| "बेशक औरत के दिल में शौहर के लिए ऐसी जगह है जो किसी और चीज़ के लिए नहीं।"[3] - इसे इब्न माजा और हाकिम ने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन जहश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। | खावंद के लिए बीवी को ख़ास मोहब्बत होती है जो किसी दूसरे से नहीं। इसको इब्न माजा और हाकिम ने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन जहश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। (त) |

फिर वे नरम दिल भी ज़्यादा हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

| "ऐ अनजशह! आबगीनों (शीशे के बर्तनों अर्थात औरतों) का ख्याल रख।"[4] | ऐ अनजशह (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) नरम और नाज़ुक औरतों का पास (ख्याल) कर। (त) |

[1] मसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्ला बिन उमर से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरूत 2/168 [2] अल-क़ुरआन 4/34 [3] मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब मारिफ़त अस-सहाबा, दारुल फ़िक्र बेरूत 4/62 [4] सहीह बुख़ारी, बाबुल मआरिज़, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/917

| فی التاریخ وابوداؤد عن ابی الدرداء و ابن عساکر بسند حسن عن عبداللہ بن انیس والخرائطی فی الاعتلال عن ابی برزۃ الاسلمی رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ | بخاری نے اپنی تاریخ میں اور ابو داؤد نے ابو درداء رضی اللہ تعالٰی عنہ سے، اور ابن عساکر نے اس کو عبد اللہ بن انیس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے، اور خرائطی نے اعتلال میں ابو برزہ اسلمی رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا ہے۔ (ت) |

دل پلٹتے، خیال بدلتے کچھ دیر نہیں لگتی اللہ عزوجل اپنے حفظ وامان ہی میں رکھے ، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

| ان القلوب بین اصبعین من اصابع اللہ یقلبھاکیف یشاء ۱^ -رواہ احمد والترمذی والحاکم عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ ورجالہ رجال مسلم۔ | دل اللہ تعالٰی کے خاص تصرف میں ہیں جس طرح چاہتا ہے ان کو پھیرتا ہے۔ اس کو حاکم نے ، احمد اور ترمذی نے انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ اور اس سند کے راوی رجال امام مسلم ہیں۔ (ت) |

اور اپنی بیٹی دینا تو سخت قہر ، قاتل زہر ہے کہ عورتیں مغلوب و محکوم ہوتی ہیں ، قال اللہ تعالٰی : اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَی النِّسَاءِ ۲^ (مرد، عورتوں کے منتظم ہیں۔ت) پھر انہیں شوہر کی محبت بھی ماں سے باپ سے تمام دنیا سے زیادہ ہوتی ہے، حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

| ان للزوج من المرأۃ لشعبۃ ماھي لشیئ ۳^ -رواہ ابن ماجۃ والحاکم عن محمد بن عبداللہ بن جحش رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | خاوند کے لیے بیوی کو خاص محبت ہوتی ہے جو کسی دوسرے سے نہیں۔

اس کو ابن ماجہ اور حاکم نے محمد بن عبداللہ بن جحش رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت) |

پھر وہ نرم دل بھی زائد ہیں ، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

| رویدک یا انجشة بالقواریر ۸4 ۔ | اے انجشہ (رضی اللہ تعالٰی عنہ) نرم و نازک عورتوں کا پاس کر۔ (ت) |

1 مسند احمد بن حنبل مروی از عبداللہ بن عمر دار الفکر بیروت ۱۶۸/۲ 2 القرآن ۳۴/۴ 3 مستدرک للحاکم کتاب معرفة الصحابه دار الفکر بیروت ۶۲/۴ 4 صحیح بخاری باب المعاریض، مند وحة عن الکرب قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۱۷/۲

Fatawa Ridawiyya Volume Eleven

They are deficient in intellect and religion, as said by the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), as stated in Sahih. (This is the saying of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, as in the Sahih Hadith. - T). Furthermore, all this is in the case where the husband is not an equal (Kufu) to the woman, not a barrier to validity; otherwise, the marriage would be completely void. As we have detailed in our Fatawa (as we have explained it in detail in our Fatawa. - T). And Allah knows best.

Mas'ala 198: From Patna, Lodi Katra Mohalla, sent by Syed Shah Muhammad Kamal Sahib, 21 Rabi-ul-Awwal Sharif 1316 AH.

Respected Maulana Sahib Qibla! If a man has committed adultery once or twice with his foster mother-in-law and foster sister-in-law, whether unintentionally or intentionally, in this situation will his wife's marriage remain intact or not? And if the marriage did not remain, then can he marry her again in any way, or can the same wife become lawful for her husband again or not? However, before this act, the man was not aware of this issue. Explain and be rewarded.

The Answer: Even if the sister-in-law is a biological relative, God forbid, even if adultery with her occurs repeatedly, it does not make the wife haram (forbidden) at all.

Arabic Quote	Urdu Translation
In Al-Durr al-Mukhtar, from Al-Khulasa: Intercourse with the wife's sister does not make his wife forbidden for him. 1	In Durr al-Mukhtar it is mentioned from Al-Khulasa that intercourse with a sister-in-law does not make the wife forbidden. (T)

Yes, if intercourse occurs with the sister-in-law due to doubt and deception, then as long as the sister-in-law does not complete her waiting period (Iddat) from this doubtful intercourse, the man cannot touch his wedded wife, 'so as not to necessitate the joining of two mahram women in the waiting period' (so that two mahram women are not joined for one person in the waiting period. - T). This prohibition will be only for those many days; after the completion of the waiting period, the wife will become lawful as before.

Arabic Quote	Urdu Translation
In Radd al-Muhtar, regarding his statement 'does not make forbidden' means it does not	In Radd al-Muhtar, regarding his statement "not forbidden", it means

Arabic Quote

establish the prohibition of affinity (Hurmat al-Musahara). So the meaning is that it does not make forbidden as a perpetual prohibition, otherwise, she becomes forbidden until the completion of the waiting period of the one who was had intercourse with, even if by doubt. It is said in Al-Bahr: If someone had intercourse with his wife's sister by doubt, his wife becomes forbidden for him as long as the waiting period of the one with doubt is not completed. 2

Urdu Translation

that the prohibition of affinity is not perpetual, otherwise, by having intercourse with the sister-in-law in doubt, his wife remains forbidden until her waiting period is completed. It is said in Al-Bahr: If intercourse occurs with a sister-in-law on the basis of doubt, then the wife remains forbidden until the waiting period for the doubtful intercourse passes. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relations, Mujtabai Delhi, 1/288 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Forbidden Relations, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/281

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

वे बुद्धि और धर्म में कम हैं, जैसा कि अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा, जैसा कि सहीह में है। (यह अल्लाह के रसूल, उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो, का कथन है जैसा कि सहीह हदीस में है। - टी)। इसके अलावा, यह सब उस मामले में है जहां पति महिला के लिए बराबर (कुफ़्फ़ नहीं है, वैधता के लिए कोई बाधा नहीं है; अन्यथा निकाह पूरी तरह से शून्य होगा। जैसा कि हमने अपने फतावा में विस्तार से बताया है (जैसे हमने इसे अपने फतावा में विस्तार से बताया है। - टी)। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 198: पटना, लोदी कटरा मोहल्ला से, सैयद शाह मुहम्मद कमाल साहिब द्वारा भेजा गया, 21 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1316 हिजरी।

हज़रत मौलाना साहिब क़िबला! यदि किसी व्यक्ति ने अपनी रज़ाई सास और रज़ाई साली के साथ एक या दो बार ज़िना (व्यभिचार) किया हो, चाहे अनजाने में या जानबूझकर, तो इस स्थिति में उसकी बीवी का निकाह शेष रहेगा या नहीं? और यदि निकाह नहीं रहा, तो क्या उस बीवी से किसी तरह फिर से निकाह हो सकता है या वही बीवी अपने पति के लिए फिर से हलाल हो सकती है या नहीं? हालांकि, इस कार्य से पहले उस व्यक्ति को इस मसले की जानकारी नहीं थी। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: साली चाहे सगी बहन हो, अल्लाह न करे, अगर उसके साथ बार-बार ज़िना हो जाए, तो वह पत्नी को कतई हराम नहीं करता।

अरबी उद्धरण	**उर्दू अनुवाद**
अल-दुर्र अल-मुख्तार में अल-खुलासा से: पत्नी की बहन के साथ सहवास करने से उसकी पत्नी उस पर हराम नहीं होती। 1	दुर्र-ए-मुख्तार में है कि खुलासा में है कि साली से सहवास बीवी को हराम नहीं करता। (टी)

हाँ, यदि साली के साथ संदेह और धोखे में सहवास हो जाए, तो जब तक साली इस संदेहात्मक सहवास की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) से बाहर न निकल जाए, तब तक पुरुष अपनी विवाहित पत्नी को हाथ नहीं लगा सकता, ताकि इद्दत में दो महरम महिलाओं को एक साथ जमा न किया जाए (ताकि इद्दत में दो महरम महिलाएं एक के लिए जमा न हों। - टी)। यह मनाही केवल उतने ही दिनों के लिए होगी; इद्दत समाप्त होने के बाद पत्नी पहले की तरह हलाल हो जाएगी।

अरबी उद्धरण

रद्द अल-मुह्तार में उनके कथन 'हराम नहीं' का अर्थ है कि यह मुसाहरत (ससुराली रिश्ते) की हुरमत स्थापित नहीं करता है। तो अर्थ यह है कि यह हमेशा के लिए हराम नहीं करता है, अन्यथा वह सहवास करने वाली की इद्दत पूरी होने तक हराम हो जाती है, भले ही संदेह से हो। अल-बहर में कहा गया है: यदि किसी ने संदेह से अपनी पत्नी की बहन के साथ सहवास किया, तो उसकी पत्नी उस पर हराम हो जाती है जब तक कि संदेह वाली महिला की इद्दत पूरी न हो जाए। 2

उर्दू अनुवाद

रद्द अल-मुह्तार में है इसके कथन "हराम नहीं" का मतलब मुसाहरत की हुरमत अबदी (शाश्वत) नहीं है वरना साली के साथ संदेहात्मक सहवास से उसकी बीवी इद्दत पूरी होने तक हराम रहती है। बहर में कहा है अगर साली से शुभे (संदेह) की बिना पर वती (सहवास) हो जाए तो बीवी हराम रहती है जब तक शुभे वाली वती की इद्दत पूरी न गुजर जाए। (टी)

1 दुर्र अल-मुख्तार, हराम रिश्तों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/288 2 रद्द अल-मुह्तार, हराम रिश्तों का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/281

पृष्ठ 372/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

ناقصات العقل والدین بھی ہیں قالہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کما فی الصحیح (یہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد ہے جیسا کہ صحیح حدیث میں ہے۔ت) پھر یہ سب اس صورت میں ہے جہاں شوہر کا کفو عورت نہ ہو نامانع صحت نہ ہو ورنہ نکاح محض باطل ہوگا۔کما فصلناہ فی فتاوٰنا (جیسے ہم نے اسے اپنے فتاوٰی میں مفصل بیان کیا ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۹۸: از پٹنہ محلہ لودی کٹرہ مرسلہ سید شاہ محمد کمال صاحب ۲۱ ربیع الاول شریف ۱۳۱۶ھ حضرت مولانا صاحب قبلہ! اگر کسی مرد نے اپنی رضاعی ساس اور رضاعی سالی کے ساتھ ایک دفعہ یا دو دفعہ زنا کیا ہو سہواً یا عمداً تو اس حالت میں بی بی کا نکاح باقی رہے گا یا نہیں؟ اور اگر نکاح نہیں رہا تو پھر اس بی بی سے کسی طرح نکاح یا وہی بی بی اپنے شوہر پر پھر حلال ہو سکتی ہے یا نہیں؟ مگر قبل اس فعل کے اس مرد کو اس مسئلے سے واقفیت نہ تھی۔ بینوا توجروا

الجواب: سالی اگرچہ خاص نسبتی حقیقی ہو اس سے معاذ اللہ زنا اگرچہ بار بار ہو عورت کو اصلاً حرام نہیں کرتا۔

في الدرالمختار في الخلاصة وطئ اخت امرأته لاتحرم عليه امرأته 1۔

درمختار میں ہے کہ خلاصہ میں ہے کہ سالی سے وطی بیوی کو حرام نہیں کرتی۔ (ت)

ہاں اگر سالی سے شبہ اور دھوکے میں وطی ہو جائے تو جب تک سالی اس وطی بالشبہ کی عدت سے نہ نکلے مرد اپنی منکوحہ کو ہاتھ نہیں لگا سکتا کیلا یلزم الجمع بین المحارم عدۃ (تاکہ عدت

میں دو محرم عورتیں ایک کے لیے جمع نہ ہوں۔ ت) یہ حرمت اتنے ہی دنوں کے لیے ہو گی بعد اختتام عدت عورت بدستور حلال ہو جائیگی

في رد المحتار قوله لاتحرم ای لا تثبت حرمة المصاهرة فالمعنى لاتحرم حرمة مؤبدة والافتحرم الى انقضاء عدة الموطوٴة لو بشبهة قال في البحر لو وطئ اخت امرأة بشبهة تحرم عليه امرأته مالم تنقض عدة ذات الشبهة 2.

ردالمحتار میں ہے اس کے قول "حرام نہیں" کا مطلب مصاہرت کی حرمت ابدی نہیں ہے ورنہ سالی کے ساتھ شبہ میں وطی سے اس کی بیوی عدت پوری ہونے تک حرام رہتی ہے۔ بحر میں کہا ہے اگر سالی سے شبہ کی بنا پر وطی ہو جائے تو بیوی حرام رہتی ہے جب تک شبہ والی وطی کی عدت پوری نہ گزر جائے۔ (ت)

1 درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۲۸۸ 2 ردالمحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۸۱

Fatawa Rizvia Volume 11

Even if the mother-in-law is a foster mother (i.e., the wife's foster mother or foster maternal/paternal grandmother), seeking refuge with Allah, adultery with her, or even the precursors of intercourse, i.e., touching any part of her body with lust, even through a barrier that doesn't prevent feeling the body's heat, or looking at her internal vagina with lust as long as these remain precursors (meaning no ejaculation occurred), whether these acts of adultery or its precursors were intentional, accidental, or under duress, will in any case make the wife eternally prohibited and the marriage invalid. It becomes mandatory to leave the woman immediately and annul the invalid marriage; now the wife will never be lawful for him, nor can he ever marry her. This is the school of thought of all our Imams, and Imam Malik in one of two narrations (T), and the prominent companions like the Commander of the Faithful Umar Farooq the Great, Hazrat Abdullah bin Masud, Hazrat Abdullah bin Abbas (in the most correct narration from him) (T), and Hazrat Umm al-Mu'minin Siddiqah, Ubayy bin Ka'b, Jabir bin Abdullah, Imran bin Husain, and the majority of the Successors (Tabi'in) like Imam Hasan Basri, Imam Ibrahim Nakha'i, Imam Tawus, Imam Ata bin Abi Rabah, Imam Mujahid, Imam Sa'id bin al-Musayyib, Imam Sulayman bin Yasar, Imam Hammad bin Abi Sulayman, and other leaders of the religion, may Allah the Almighty have mercy on them all.

[Left Column - Arabic Text]: As mentioned in Al-Fath and others, and in Al-Durr al-Mukhtar: The ancestors and descendants of a woman committed adultery with, or touched with lust even if it's the hair on the head through a barrier that does not prevent heat, or whose internal vagina was looked at (with lust), are prohibited absolutely as long as no ejaculation occurred. If ejaculation occurred with touching or looking, then there is no prohibition (of musaharat). There is no difference in what was mentioned between intention, forgetfulness, error, or coercion. [Extracted from Al-Durr al-Mukhtar]. And in Radd al-Muhtar, it says: In Al-Bahr it is said: By 'prohibition of affinity' (hurmat-e-musaharat), four prohibitions are meant: the prohibition of the woman to the ancestors and descendants of the adulterer (whether by lineage or fosterage), and the prohibition of her ancestors and descendants to the adulterer (whether by lineage or fosterage), just as it is in lawful intercourse. And Allah Almighty knows best.

[Right Column - Urdu Translation]: As mentioned in 'Al-Fath' etc. and in 'Dur al-Mukhtar', it states: the ancestors and descendants of a woman committed adultery with, or a woman who was touched with lust without a barrier preventing body heat

(even if the hair on the head was touched), or a woman whose internal vagina was looked at with lust, become absolutely prohibited for that man. Provided that ejaculation did not occur at that time; if ejaculation occurs at the time of looking or touching, the prohibition will not be established. There is no difference whether it was intentional, forgotten, accidental, or forced. [Extracted]. And in 'Radd al-Muhtar', it is stated that 'Bahr' says: four prohibitions are meant by 'hurmat-e-musaaharat'. For the man, the woman's ancestors and descendants (by lineage and fosterage), and for the woman, the man's ancestors and descendants (by lineage and fosterage), as it is in lawful intercourse. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Dur al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Delhi, 1/188.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/79.

फतावा रज़विया जिल्द 11

और सास चाहे रज़ाई (दूध शरीक) हो, यानी बीवी की रज़ाई माँ या रज़ाई नानी-दादी, अल्लाह की पनाह! उससे ज़िना, बल्कि ज़िना के शुरूआती काम (दवाइये वती) भी, यानी शहवत के साथ उसके बदन के किसी हिस्से को छू लेना, चाहे ऐसे हायल (पर्दे) के साथ हो जो जिस्म की गर्मी महसूस होने से न रोके या शहवत के साथ उसकी फर्ज-ए-दाख़िल (योनि) पर नज़र पड़ जाना, जबकि ये सिर्फ शुरूआती काम रहें यानी इनसे इंज़ाल (वीर्यपात) न हुआ हो, चाहे वो ज़िना या ज़िना की तरफ ले जाने वाला काम जानबूझकर हो, भूलकर हो, धोखे से हो या किसी के दबाव (जबर व इकरा) से हो, हर हाल में बीवी को हमेशा के लिए हराम कर देता है और निकाह फासिद (अमान्य) कर देता है। औरत को फौरन छोड़ देना और उस फासिद निकाह को खत्म करना वाजिब हो जाता है। अब बीवी कभी उसके लिए हलाल नहीं होगी और न कभी उससे निकाह कर सकता है। यही हमारे तमाम आइमा का मज़हब है, और इमाम मालिक की दो रिवायतों में से एक रिवायत में भी यही है (त)। और बड़े सहाबा जैसे अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (उनसे सबसे सही रिवायत के मुताबिक) (त), और हज़रत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा, उबई बिन काब, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, इमरान बिन हुसैन, और अक्सर ताबेईन जैसे इमाम हसन बसरी, इमाम इब्राहीम नख़ई, इमाम ताऊस, इमाम अता बिन अबी रबाह, इमाम मुजाहिद, इमाम सईद बिन मुसैय्यब, इमाम सुलेमान बिन यसार, इमाम हम्माद बिन अबी सुलेमान और दीगर दीनी पेशवाओं (अल्लाह उन सब पर रहमत फरमाए) का भी यही मौकिफ़ है।

[बायां कॉलम - अरबी पाठ]: जैसा कि 'अल-फ़तह' वगैरह में ज़िक्र है और 'दुर्रे मुख्तार' में है कि: जिस औरत से ज़िना किया गया हो या जिसे शहवत के साथ छुआ गया हो, चाहे सर के बालों को ही क्यों न छुआ हो किसी ऐसे पर्दे के साथ जो गर्मी न रोके या जिसकी फर्ज-ए-दाखिल (अंदरूनी योनि) को देखा गया हो, उनके असूल (बुज़ुर्ग) और फरू (औलाद) उस मर्द पर मुतलक़न (पूरी तरह) हराम हो जाते हैं, बशर्ते कि उस वक्त इंज़ाल (वीर्यपात) न हुआ हो। अगर छूने या देखने के साथ इंज़ाल हो जाए तो हुरमत (ह़राम होना) साबित न होगी। इसमें जानबूझकर, भूलकर, गलती से या ज़बरदस्ती किए जाने में कोई फर्क नहीं है। [अल-दुर्रे मुख्तार से संकलित]। और 'रद्दुल मुहतार' में है: 'बहर' में कहा गया है कि 'हुरमते मुसाहरत' (ससुराली रिश्तों की हुरमत) से चार हराम मुराद हैं: मर्द पर औरत के असूल और फरू (नस्बी और रज़ाई तौर पर), और औरत पर मर्द के असूल और फरू (नस्बी और

रज़ाई तौर पर), जैसा कि हलाल मिलाप (संभोग) में होता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: जैसा कि उसे 'फ़तह' वगैरह में ज़िक्र किया गया है और 'दुर्रे मुख्तार' में है कि ज़िना की गई औरत और वह औरत जिसे जिस्मानी गर्मी को रोकने वाली चीज़ के बिना शहवत के साथ छुआ गया हो, चाहे सिर के बालों को ही क्यों न छुआ हो, और वह औरत जिसकी अंदरूनी योनि पर शहवत से नज़र पड़ी हो, तो उन औरतों के असूल और फरू (पूर्वज और वंशज) उस मर्द पर मुतलक़न हराम हो जाते हैं। बशर्ते कि उस समय उसे इंज़ाल न हुआ हो, और अगर देखने या छूने के समय इंज़ाल हो जाए तो हुरमत साबित नहीं होगी। इसमें कोई फर्क नहीं है कि यह जानबूझकर हो, भूलकर हो, गलती से हो या ज़बरदस्ती हो। [अल-मुल्तक़त से]। और 'रद्दुल मुहतार' में है कि 'बहर' में कहा गया है कि हुरमते मुसाहरत से चार हराम मुराद हैं। मर्द पर औरत के असूल और फरू (नस्बी और रज़ाई) और औरत पर मर्द के असूल और फरू (नस्बी और रज़ाई), जैसा कि हलाल मिलाप में होता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

1. दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फिल मुहर्रमात, मुजतबाई दिल्ली, 1/188
2. रद्दुल मुहतार, फ़स्ल फिल मुहर्रमात, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/79

पेज 373 का 739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

اور ساس اگر چہ رضاعی ہو یعنی زوجہ کی رضاعی ماں یا رضاعی نانی دادی عیاذاً باللہ اس سے زنا بلکہ دواعی وطی بھی یعنی بشہوت اس کے کسی جز و بدن کو چھو جانا اگرچہ ایسے حائل کے ساتھ کہ اس کے جسم کی گرمی اسے محسوس ہونے سے منع نہ کرے یا بشہوت اس کی فرج داخل پر نظر پڑ جانا جبکہ یہ دواعی دواعی رہیں یعنی ان سے انزال واقع نہ ہوا گرچہ وہ زنا یا داعی زنا دانستہ ہو یا بھول کر یا دھوکے سے یا کسی کے جبر و اکراہ سے بہر حال زوجہ کو حرام ابدی اور نکاح کو فاسد کر دیتا ہے، عورت کو فوراً چھوڑ دینا اور اس نکاح فاسد شدہ کو فسخ کرنا واجب ہو جاتا ہے اب زوجہ کبھی اس کے لیے حلال نہ ہو گی نہ کبھی اس سے نکاح کر سکتا ہے۔ یہی مذہب ہمارے جمیع ائمہ اور امام مالک فی احد الروایتین (دو روایتوں میں سے ایک روایت میں۔ ت) اور اکابر صحابہ مثل امیر المومنین عمر فاروق اعظم و حضرت عبداللہ بن مسعود و حضرت عبداللہ بن عباس فی الاصح عنہ (ان سے اصح روایت میں۔ ت) اور حضرت ام المومنین صدیقہ وابی بن کعب و جابر بن عبداللہ و عمران بن حصین اور جمہور تابعین مثل امام حسن بصری و امام ابراہیم نخعی و امام طاؤس و امام عطا بن ابی رباح و امام مجاہد و امام سعید بن المسیب و امام سلیمان بن یسار و امام حماد بن ابی سلیمان وغیرہ ہم ائمہ دین رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین کا ہے۔

[بایاں کالم - عربی متن]: کما ذکرہ في الفتح وغیرہ وفی الدر المختار حرم اصل مزنیة وممسوسة بشھوة ولو بشعر علی الرأس بحائل لا یمنع الحرارة والمنظور الی فرجھا الداخل وفروعھن مطلقا اذا لم ینزل فلو انزل مع مس او نظر فلا حرمة ولا فرق فیما ذکر بین عمد و نسیان و خطاء واکراہ اہ ملتقطا، وفي ردالمحتار قال في البحر اراد بحرمة المصاھرة الحرمات الاربع حرمة المرأة علی اصول الزانی و

فروعه نسباً و رضاعاً وحرمة اصولها وفروعها علی الزانی نسباً و رضاعاً کما في الوطی الحلال۔ واللہ تعالیٰ اعلم

[دایاں کالم - اردو ترجمہ]: جیسا کہ اس کو فتح وغیرہ میں ذکر کیا ہے اور در مختار میں ہے کہ مزنیہ اور وہ عورت جس کو حرارت بدنیہ سے مانع چیز کے بغیر شہوت کے ساتھ مس کیا ہو خواہ سر کے بالوں کو مس کیا ہو اور وہ عورت جس کی فرج داخل پر شہوت سے نظر پڑی ہو تو ان عورتوں کے اصول و فروع اس مرد پر مطلقا حرام ہو جاتے ہیں بشر طیکہ اس وقت اس کو انزال نہ ہوا ہو اور نظر یا مس کے وقت انزال ہو جائے تو حرمت ثابت نہ ہو گی اس میں فرق نہیں خواہ قصدا ہو یا بھول کر یا خطاء یا جبرا ہو اھ ملتقطا، اور رد المحتار میں ہے بحر میں کہا ہے کہ حرمت مصاہرت سے چار حرام مراد ہیں۔ مرد پر عورت کے اصول و فروع نسبی و رضاعی اور عورت پر مرد کے اصول فروع نسبی و رضاعی، جیسا کہ وطی حلال میں ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

1. در مختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۱۸۸
2. رد المحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۷۹

Fatawa Ridawiyyah Volume 11

Removal of Disgrace by Shielding Noble Women from the Dogs of Hell (1316 AH) (Protecting honorable women from disgrace by not giving them in marriage to the dogs of hell)

Problem 199: What do the scholars of religion and supporters of the firm Shariah say regarding this matter: Is it permissible or forbidden to marry a Sunni Hanafi woman, whose father is also a Sunni Hanafi, to a non-follower (Ghair Muqallid) Wahhabi? Will it be a sin according to Shariah or not? Explain and be rewarded. Petitioner: Muhammad Khalilullah Khan from Rampur State, residence of Hakim Ajmal Khan Sahib.

Answer: From the office of Tuhfa-e-Hanafiya, Patna, Mohalla Lodi Katra.

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

The aforementioned marriage is forbidden, impermissible, and a sin. Many blasphemous and deviant beliefs of the non-followers of the current era have been cited from their own writings in the book "Jami' al-Shawahid fi Ikhraj al-Wahhabiyyin 'an al-Masajid", and their status as misguided and belonging to an evil sect has been proven in the best manner. A Hadith was mentioned where the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding people of evil sects:

"Do not eat with them and do not drink with them." Meaning: Do not eat food with them and do not drink water with them.

Page 375 of 739

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवाँ भाग

इज़ालतु-अार बि-हज़्रिल-कराइम 'अन किलाबिन-नार १३१६ हिजरी (सम्मानित महिलाओं को नरक के कुत्तों के निकाह में न देकर उन्हें अपमान से बचाना)

मसला १९९: धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीअत के समर्थक इस बारे में क्या कहते हैं कि एक सुन्नी हनफी महिला, जिसके पिता भी सुन्नी हनफी हैं, का निकाह एक ग़ैर-मुक़ल्लिद वहाबी से करना जायज़ है या वर्जित? क्या इसमें शरीअत के अनुसार गुनाह होगा या नहीं? बयान फरमाएं और पुण्य कमाएं। प्रार्थी: मुहम्मद खलील उल्लाह खान, रामपुर रियासत, हकीम अजमल खान साहब का आवास।

उत्तर: तोहफ़ा-ए-हनफिया पटना के कार्यालय से, मोहल्ला लोदी कटरा।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपावान है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके महान रसूल पर दुरूद भेजते हैं।

उक्त निकाह वर्जित, नाजायज़ और गुनाह है। वर्तमान समय के ग़ैर-मुक़ल्लिदों के कई कुफ़्रिया (ईशनिंदापूर्ण) और भ्रामक अकीदे (विश्वास) उनकी अपनी पुस्तकों से "जामे-उश-शवाहिद फ़ी इखराज-इल-वहाबीयीन 'अन-इल-मसाजिद" नामक पुस्तक में उद्धृत किए गए हैं और उनका गुमराह और कुमार्गी होना बेहतरीन तरीके से साबित किया गया है। एक हदीस का ज़िक्र किया गया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कुमार्गियों के बारे में फरमाया:

"न उनके साथ खाना खाओ और न ही पियो।" अर्थात्: उनके साथ खाना न खाएं और पानी न पिएं।

पृष्ठ ३७५/७३९

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

ازالۃ العار بحجر الکرائم عن کلاب النار ۱۳۱۶ھ (معزز خواتین کو جہنم کے کتوں کے نکاح میں نہ دیتے ہوئے انھیں رسوائی سے بچانا)

مسئلہ ۱۹۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین وحامیان شرع متین اس بارہ میں کہ ایک عورت سنیہ حنفیہ جس کا باپ بھی سنی حنفی ہے اس کا نکاح ایک غیر مقلد وہابی سے کر دینا جائز ہے یا ممنوع؟ اس میں شرعاً گناہ ہو گا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ مستفتی محمد خلیل اللہ خاں از ریاست رامپور دولت خانہ حکیم اجمل خاں صاحب

الجواب: از دفتر تحفہ حنفیہ پٹنہ محلہ لودی کٹرہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

نکاح مذکورہ ممنوع و ناجائز و گناہ ہے۔ غیر مقلدین زماں کے بہت عقائد کفریہ وضلالیہ کتاب "جامع الشواهد في اخراج الوهابين عن المساجد" میں ان کی تصانیف سے نقل کئے اور ان کا گمراہ وبد مذہب ہونا بروجہ احسن ثابت کیا اور حدیث ذکر کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے بد مذہبوں کی نسبت فرمایا:

ولا تؤاکلوھم ولا تشاربوھم یعنی ان کے ساتھ کھانا نہ کھاؤ اور پانی نہ پیو

صفحہ ۳۷۵ از ۷۳۹

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

"And do not marry them." - And do not enter into marriages. (1) And it is quoted from the Tafsir (exegesis) of Maulana Shah Abdul Aziz that: "Whoever develops intimacy and friendship with innovators, the light and sweetness of faith are taken away from him." - A person who befriends and loves those with incorrect beliefs, the light of faith is stripped from him. (T) (2) And quoted from Tahtawi's marginalia on Durr al-Mukhtar: "Whoever is outside of these four schools (Madhabs) in this era, he is among the people of innovation and the Fire." - Whoever remains outside of these four Madhabs in this time is an innovator and destined for Hell. (3) There are seals of many famous scholars on this; in summary, if a non-Muqallid (one who doesn't follow a school of jurisprudence) holds beliefs that constitute disbelief (Kufr), then marriage with them is purely invalid and adultery, because a Muslim woman's marriage to a disbeliever is not valid at all. Even if they do not hold beliefs of disbelief, marriage with a follower of an incorrect sect is forbidden by the command of the Verse and Hadith. The Hadith has been mentioned above, and the Verse is: Allah Almighty said: "And do not incline toward those who do wrong, lest you be touched by the Fire." - Do not mix with the oppressors, lest the fire of Hell touches you. (4) The administrator of Nadwa, in his fatwa on the impermissibility of marriage between a Sunni and a Shia, printed at Nizami Press, reasoned from this very verse. And Allah knows best what is right, and to Him is the return and the final destination. The one covered [by Allah's mercy], the helper, holding the hem of his master and lord, the Commander of the Faithful, our master As-Siddiq, the Liberated, the God-fearing, Abdul Wahid Ghulam Siddiq Al-Hanafi Al-Firdousi Al-Azimabadi, may his Lord, the Possessor of Favours, forgive him. Fatwa of the Scholars of Patna (1) He who answered has hit the mark. (The answer provided is correct. T) - Hafiz Muhammad Fath-ud-Din Punjabi (President, Majlis-e-Ahle-Sunnat Patna, resident of Murshidabad).

---

1. Al-Du'afa al-Kabir, translation of Ahmad bin Imran, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 1/126; Kanz al-Ummal, Hadith Number, Mu'assasat al-Risala, Beirut 11/529.
2. Tafsir Azizi, under the verse "Waddu law tud-hin fayud-hinun," Afghani Dar al-Kutub Lal Kuan Delhi, p. 56.
3. Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Dhabaih, Dar al-Ma'rifah, Beirut 4/153.
4. Al-Quran 11/113.

"और उनसे निकाह न करो।" - और विवाह संबंध न बनाओ। (1) और मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब की तफ़सीर से उद्धृत किया गया है कि: "जो कोई बिदअतियों (नवाचार करने वालों) के साथ आत्मीयता और मित्रता विकसित करता है, उससे ईमान का नूर और मिठास छीन ली जाती है।" - जो व्यक्ति गलत अक़ीदे (विश्वास) वाले लोगों से दोस्ती और प्यार करता है, उससे ईमान का नूर छीन लिया जाता है। (त) (2) और तहतावी ने दुर्रुल मुख्तार के हाशिये (व्याख्या) से उद्धृत किया: "इस ज़माने में जो इन चार मज़हबों से बाहर है, वह बिदअती और दोज़खी (नारकीय) है।" - जो इस समय इन चार मज़हबों से बाहर रहता है वह बिदअती और नरक का पात्र है। (3) इस पर कई प्रसिद्ध विद्वानों की मुहरें हैं; संक्षेप में, यदि कोई ग़ैर-मुक़ल्लिद कुफ़िया (अविश्वासपूर्ण) अक़ीदा रखता है, तो उससे निकाह पूरी तरह से बातिल (अमान्य) और ज़िना (व्यभिचार) है, क्योंकि एक मुस्लिम महिला का काफ़िर से निकाह बिल्कुल भी सही नहीं है। और अगर वह कुफ़िया अक़ीदा न भी रखता हो, तो भी बद-मज़हब (गलत पंथ वाले) से निकाह आयत और हदीस के हुक्म से मना है। हदीस ऊपर गुज़र चुकी है, और आयत यह है: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और उन लोगों की ओर मत झुको जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना तुम्हें आग छू लेगी।" - ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको कि तुम्हें जहन्नम की आग छुए। (4) नाज़िम नदवा ने सुन्नी और शिया के निकाह के नाज़ायज़ होने पर अपने फतवे में, जो निज़ामी प्रेस में छपा है, इसी आयत से दलील दी है। और अल्लाह बेहतर जानता है कि क्या सही है, और उसी की ओर लौटना और ठिकाना है। सतरुल वाज़िर, अपने आका और मौला अमीरल मोमिनीन सैयदुना सिद्दीक अल-अतीक अल-तकी के दामन को थामने वाले, अब्दुल वाहिद ग़ुलाम सिद्दीक़ अल-हनफ़ी अल-फिरदौसी अल-अज़ीमाबादी, उनके रब, जो एहसान करने वाला है, उन्हें माफ़ करे। पटना के विद्वानों का फतवा (१) जिसने जवाब दिया उसने सही कहा। (जो जवाब दिया गया है वह सही है। त) - हाफ़िज़ मुहम्मद फ़तह-उद-दीन पंजाबी (अध्यक्ष, मज्लिस-ए-अहले सुन्नत पटना, निवासी मुर्शिदाबाद)।

---

1. अद-दुआफ़ा अल-कबीर, अहमद बिन इमरान का अनुवाद, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत १२६/१; कंज़ अल-उम्माल, हदीस संख्या, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरूत ५२९/११।
2. तफ़सीर अज़ीज़ी, आयत "वददू लौ तुद-हिनु फ़-युद-हिनून" के तहत, अफ़ग़ानी दार अल-कुतुब लाल कुआँ दिल्ली, पृष्ठ ५६।

3. तहतावी अला अद-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अज़-ज़बाह, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत १५३/४।

4. अल-कुरान ११/११३।

पृष्ठ 739 में से 376

ولا تناکحوھم - اور بیاہ شادی نہ کرو۔ (1) اور مولانا شاہ عبد العزیز صاحب کی تفسیر سے نقل کیا ہے کہ: ھر کہ با بدعتیان انس و دوستی پیدا کند نور ایمان و حلاوت آں از وے بر گیرند - جو شخص بد عقیدہ لوگوں سے دوستی اور پیار کرتا ہے اس سے نور ایمان سلب ہو جاتا ہے۔(ت) (2) اور طحطاوی حاشیہ در مختار سے نقل کیا: من کان خارجا من ھذہ المذاھب الاربعۃ في ذلك الزمان فھو من اھل البدعۃ والنار - جو اس زمانے میں ان چاروں مذہب سے خارج ہو وہ بدعتی اور دوزخی ہے۔ (3) کثرت سے علمائے مشاہیر کی اس پر مہریں ہیں ،بالجملہ اگر غیر مقلد عقیدہ کفریہ رکھتا ہو تو اس سے نکاح محض باطل وزنا ہے کہ مسلمان عورت کا کافر سے نکاح اصلا صحیح نہیں اور اگر عقیدہ کفریہ نہ بھی رکھتا ہو تو بد مذہب سے مناکحت بحکم آیت و حدیث منع ہے، حدیث اوپر گزری، اور آیت یہ ہے قال اللہ تعالٰی: وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ - نہ میل کرو ظالموں کی طرف کہ تمھیں چھوئے گی آگ دوزخ کی۔ (4) ناظم ندوہ نے اپنے فتوی عدم جواز نکاح سنیہ و شیعہ مطبوعہ مطبع نظامی میں اسی آیت سے استدلال کیا ہے واللہ اعلم بالصواب والیہ المرجع والمآب۔ الساطر الوازر المعتصم بذیل سیدہ و مولاہ امیر المومنین سیدنا الصدیق العتیق التقی عبد الوحید غلام صدیق الحنفی الفردوسی العظیم آبادی عفا عنہ ربہ ذو الایادی۔ فتوائے علمائے پٹنہ (۱) اصاب من اجاب (جو جواب دیا گیا ہے درست ہے۔ت) حافظ محمد فتح الدین پنجابی (صدر مجلس اہلسنت پٹنہ، مقیم مرشد آباد)

---

1. الضعفاء الکبیر ترجمہ احمد بن عمران دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/۱۲۶، کنز العمال حدیث نمبر موسستہ الرسالہ بیروت ۱۱/۵۲۹

2. تفسیر عزیزی پارہ آیۃ ودو الوتد ھن فید ھنون کے تحت افغانی دار الکتب لال کنواں دہلی ص ۵۶

3. طحطاوی علی الدر المختار کتاب الذبائح دار المعرفہ بیروت ۱۵۳/۴

4. القرآن ۱۱۳/۱۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

(2) This is the manifest truth, and anything other than it is false and repugnant. (This answer is explicit and everything else besides it is false and repugnant. - T) Muhammad Amir Ali (Late), former Head Maulvi, Normal School, Patna.

Fatwas of the Scholars of Bihar

(1) Starting with the name of Allah, and praising Him and sending blessings upon the Prophet. To proceed: What the Great Scholar and man of profound understanding has stated is the manifest truth, verified and correct, worthy of trust and deserving of reliance. Anything contrary to it is extremely difficult, and none but the people of misguidance, obstinacy, rebellion, and corruption can deny it. (T) Written by the servant of students, Abu al-Asfya Muhammad Abdul Wahid Khan Rampuri Bihari, may he be forgiven.

(2) Whoever is from the group of Muhammad ibn Abd al-Wahhab, who, based on their corrupt assumptions and flawed understanding, accuse the general masses of the blessed Ummah of polytheism and disbelief, is from among the heretics and atheists. Marriage and social interaction with them is not permissible. Similarly, the same ruling applies to those from the non-muqallideen (non-conformists) who incline towards anthropomorphism, similitude, and the evil Rafidites. (T) Written by Muhammad Yusuf Bihari.

(3) The one who answered has hit the mark. May Allah reward the meticulous researcher, the supporter of the Sunnah, the obliterator of innovation, our master, and the organizer of 'Tuhfa-e-Hanfia' with goodness.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

(२) यही स्पष्ट सत्य है और इसके सिवा सब असत्य और घृणित है। (यह उत्तर स्पष्ट है और इसके सिवा सब असत्य और घृणित है। - त) मुहम्मद अमीर अली (दिवंगत), पूर्व हेड मौलवी, नॉर्मल स्कूल, पटना।

बिहार के विद्वानों के फ़तवे

(१) अल्लाह के नाम से, प्रशंसा और हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद के बाद: जो कुछ हज़रत अल्लामा और फ़हामा ने कहा है वह स्पष्ट सत्य, प्रमाणित और सही है, भरोसे और प्रमाण के योग्य है। इसके विपरीत कुछ भी बहुत कठिन है, और सिवाय गुमराह, हठधर्मी, विद्रोही और फ़सादी के कोई इसका इनकार नहीं कर सकता। (त) इसे छात्रों के सेवक अबुल अस्फ़िया मुहम्मद अब्दुल वाहिद ख़ान रामपुरी बिहारी ने लिखा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

(२) जो मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के समूह से है, जो अपने भ्रष्ट अनुमान और दोषपूर्ण समझ के आधार पर सामान्य धन्य उम्मत पर शिर्क और कुफ्र का आरोप लगाते हैं, वह ज़ंदीक और नास्तिक है। उनके साथ निकाह और मेल-जोल जायज़ नहीं है। और यही हुक्म उस व्यक्ति का भी है जो गैर-मुक़ल्लिद है और मुजस्सिमिया, मुशब्बिहा और राफ़िज़ियों की बुराइयों की ओर झुकाव रखता है। (त) इसे मुहम्मद यूसुफ़ बिहारी ने लिखा।

(३) उत्तर देने वाले ने सही उत्तर दिया है। अल्लाह तआला शोधकर्ता, सुन्नत के समर्थक, बिदअत को मिटाने वाले, हमारे सरदार और 'तोहफ़ा-ए-हनफ़िया' के प्रबंधक को उत्तम बदला दे।

पृष्ठ ३७७ का ७३९

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

(۲) هذا هو الحق الصريح وما سواه باطل قبيح (یہ جواب صریح ہے اور اس کے سوا باطل قبیح ہے۔ ت) محمد امیر علی (مرحوم) سابق ہیڈ مولوی نارمل اسکول پٹنہ۔

فتوائے علمائے بہار

(۱) مبسملاً و محمداً او مصلیاً اما بعد ما قاله العلامه وافاده الفهامه حق صریح ومحقق صحیح جدیر بالاعتماد و حقیق بالاستناد ودونه خرط القتاد ولا ینکره الا اهل الغي والعناد والبغي والفساد۔ بسم اللہ ، تحمید اور حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر درود کے بعد، جو کچھ حضرت علامہ وفہامہ نے کہا وہ واضح حق، ثابت و صحیح ، لائق اعتماد و استناد ہے اور اس کا خلاف مشکل ہے ، اور سوائے گمراہ، ہٹ دھرم ، باغی اور فسادی کے کوئی اس کا انکار نہیں کر سکتا۔ (ت) کتبه خویدم الطلبه ابوالاصفیا محمد عبدالواحد خاں رامپوری بہاری عفا عنہ

(۲) من کان من زمرة محمد بن عبدالوهاب ممن یتهمون عامة امة مرحومة با لشرك والکفر علی زعمهم الفاسد وفهمهم الکاسد فهو من الزنادقة والملاحدة ولایجوز به المناکحة والمخالطة وکذلك من کان من الغیر المقلدین من یرکن الی المجسمیة والمشبهیة والرافضیة في السوء۔ تمام امتِ مرحومہ کو اپنے زعمِ فاسد اور فہمِ کاسد کی بناء پر شرک و کفر کے ساتھ متہم کرنے والے محمد بن عبدالوہاب کے گروہ سے تعلق رکھنے والا شخص زندیق و ملحد ہے اور اس کے ساتھ نکاح اور میل جول ناجائز ہے، اور یہی حکم اس شخص کا بھی ہے جو غیر مقلدین میں سے اور مجسمیہ ، مشبہہ اور روافض کی طرف میلان رکھتا ہو۔ (ت) حررہ محمد یوسف بہاری

(۳) اصاب من اجاب جزی اللہ المحقق المدقق وحامی السنۃ وماحی البدعۃ مولانا متنظم التحفۃ خیر۔

مجیب نے درست جواب دیا، محقق ، مدقق، سنت کے حامی، بدعت کو مٹانے والے، ہمارے سردار اور تحفہ حنفیہ کے منتظم کو اللہ تعالیٰ۔

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Reward—and Allah knows best what is right, and to Him is the return and resort. May He grant the best reward; Allah Almighty knows well and to Him is the return. (T)

Mr. Maulana Hakim (Abul Barakat) Asthanvi Bihari

(4) Praising [Allah] and sending blessings [upon the Prophet], what is in this fatwa has been authenticated; why not, as it is filled with reliable jurisprudential narrations and authentic Hadiths. Thus, the respondent is undoubtedly correct. May Allah, Glorified be He, reward him with the best reward from His most complete grace, as he dedicated his high resolve and exerted his effort in the most sublime manner in refuting the base words. Whoever answered [as such] has hit the mark, and anything besides that is like skinning a thorny tree. And Allah knows best what is right, exclusively. Praising Allah Almighty and sending blessings upon the Noble Prophet, I say that whatever is in this fatwa is correct; how could it not be when this fatwa is overflowing with reliable jurisprudential narrations and authentic Hadiths, and the respondent is undoubtedly correct. May Allah Almighty grant the respondent the best reward from His infinite grace, who employed his high ambition and profound effort in a perfect manner to refute the base words. The respondent has spoken correctly, to speak against which is difficult and impossible, and Allah Almighty knows best what is right, exclusively. (T)

Written by the humble student hoping for the mercy of his Generous Lord, Al-Sayyid Muhammad Sulayman Ashraf Al-Bihari Al-Mardawi, may he be forgiven.

(5) Praising [Allah] and sending blessings [upon the Prophet]. The answer is the truth; so what is there after the truth except misguidance. Praising Allah Almighty and sending blessings upon the Most Holy Prophet, I say that the answer is the truth, and after the truth there is nothing but misguidance. (T)

Written by the servant of students, the humble Sayyid Nazir Hussain Bihari Al-Mardawi

Fatwas of the Scholars of Budaun (1) Al-Mujeeb Musib (The respondent is correct. T) Muhib-ur-Rasool Abdul Qadir Qadri (2) La Rayba Fih (There is no doubt in it. T) Mutee-ur-Rasool Muhammad bin Abdul Muqtadir Qadri (3) Al-Jawab Sahih (The answer is correct. T) Muhammad Abdul Qayyum Qadri

जज़ा (प्रतिफल)—और अल्लाह बेहतर जानता है कि क्या सही है, और उसी की ओर लौटना और ठिकाना है। बेहतरीन जज़ा अता फरमाए, अल्लाह तआला खूब जानता है और उसकी तरफ ही लौटना है। (त)

जनाब मौलाना हकीम (अबुल बरकात) अस्थानवी बिहारी

(4) अल्लाह की हम्द और नबी पर दरूद के साथ, जो कुछ इस फ़तवे में है वह प्रमाणित है; क्यों न हो जबकि यह विश्वसनीय फ़िक़्ही रिवायात और सही अहादीस से भरा हुआ है। चुनाँचे जवाब देने वाला बिना किसी शक के सही है। अल्लाह सुब्हानहू उसे अपने असीम फ़ज़्ल से बेहतरीन बदला अता फरमाए, क्योंकि उसने नीच शब्दों के खंडन में अपना उच्च संकल्प समर्पित किया और सर्वोत्तम तरीके से अपना प्रयास किया। जिसने [ऐसा] जवाब दिया उसने सही निशाना साधा, और इसके अलावा कुछ भी कांटों भरे पेड़ को छीलने के समान है। और अल्लाह बेहतर जानता है, केवल। अल्लाह तआला की हम्द करते और नबी करीम पर दरूद भेजते हुए कहता हूँ कि जो कुछ इस फ़तवे में है दुरुस्त है, कैसे न हो जबकि यह फ़तवा मोतबर फ़िक़्ही रिवायात और सही अहादीस से लबरेज़ है और मुजीब (जवाब देने वाला) बिलाशुबा मुसीब (सही) है। अल्लाह तआला अपने बेइन्तहा फ़ज़्ल से मुजीब को जज़ा-ए-खैर अता फरमाए जिसने कलमात-ए-सुफ़्ली के रद में अपनी बुलन्द हिम्मती और सई-ए-बलीग़ को कामिल तरीके से बरूए कार लाया। मुजीब ने दुरुस्त कहा जिसके ख़िलाफ़ कहना मुश्किल व नामुमकिन है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। फ़क़त (त)

इसे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार तालिब-ए-इल्म सय्यद मुहम्मद सुलेमान अशरफ़ अल-बिहारी अल-मरदावी ने लिखा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

(5) अल्लाह की हम्द और दरूद के साथ। जवाब हक़ (सत्य) है; तो हक़ के बाद गुमराही के सिवा क्या है। अल्लाह तआला की हम्द करते हुए और नबी-ए-अकदस पर दरूद भेजते हुए कहता हूँ कि जवाब हक़ है और हक़ के बाद सिवाए गुमराही के कुछ नहीं। (त)

लिखने वाला: खादिम-उत-तल्बा खाकसार सय्यद नाज़िर हुसैन बिहारी अल-मरदावी

बदायूँ के उलमा के फतावा (1) अल-मुजीब मुसीब (जवाब दुरुस्त है। त) मुहिब-उर-रसूल अब्दुल क़ादिर क़ादरी (2) ला रैबा फ़ीह (इसमें कोई शक नहीं। त) मुती-उर-रसूल मुहम्मद बिन अब्दुल मुक़्तदिर क़ादरी (3) अल-जवाब सहीह (जवाब सही है। त) मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الجزاء۔ واللہ اعلم بالصواب والیہ المرجع والمآب۔ بہترین جزا عطا فرمائے، اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے اور اس کی طرف ہی لوٹنا ہے۔ (ت)

جناب مولانا حکیم (ابوالبرکات) استھانوی بہاری

(۴) حامدا ومصلیا قد صح ما فی ھذہ الفتوی کیف لاوھی مملوۃ من الروایات الفقھیۃ المعتبرۃ والاحادیث الصحیحۃ فالمجیب مصیب بلاامتراء جزاہ اللہ سبحنہ بفضلہ الاوفی خیر الجزاء حیث صرف ھمۃ العلیا و بذل جھدہ بالنھج الاعلی فی رد الکلمات السفلی من اجاب فقد اصاب ودونہ خرط القتاد۔ واللہ اعلم بالصواب فقط اللہ تعالٰی کی حمد کرتے اور نبی کریم پر درود بھیجتے ہوئے کہتا ہوں کہ جو کچھ اس فتوی میں ہے درست ہے، کیسے نہ ہو جبکہ یہ فتوی معتبر فقہی روایات اور صحیح احادیث سے لبریز ہے اور مجیب بلاشبہ مصیب ہے۔ اللہ تعالٰی اپنے بے انتہا فضل سے مجیب کو جزائے خیر عطا فرمائے جس نے کلمات سفلی کے رد میں اپنی بلند ہمتی اور سعی بلیغ کو کامل طریقے سے بروئے کار لایا۔ مجیب نے درست کہا جس کے خلاف کہنا مشکل و نا ممکن ہے واللہ تعالٰی اعلم بالصواب فقط (ت)

حررہ خوی دم الطلبۃ الراجی الی رحمۃ ربہ المنان السید محمد سلیمان اشرف البہاری المرداوی عفی عنہ۔

(۵) حامداً ومصلیاً، الجواب حق فما ذا بعد الحق الاالضلال۔ اللہ تعالٰی کی حمد کرتے ہوئے اور نبی اقدس پر درود بھیجتے ہوئے کہتا ہوں کہ جواب حق ہے اور حق کے بعد سوائے گمراہی کے کچھ نہیں۔ (ت)

کتبہ خادم الطلبہ خاکسار سید ناظر حسین بہاری المرداوی

فتوائے علمائے بدایوں (۱) المجیب مصیب (جواب درست ہے۔ ت) محب الرسول عبدالقادر قادری (۲) لاریب فیه (اس میں کوئی شک نہیں۔ ت) مطیع الرسول محمد بن عبدالمنقدر قادری (۳) الجواب صحیح (جواب صحیح ہے۔ ت) محمد عبدالقیوم قادری

Fatawa-e-Razvia Volume 11

The Answer: In the name of Allah, the Most Beneficent, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

Arabic

All praise is due to Allah, Who did not approve of pure things except for the pure and righteous, and left the foul things for the foul and filthy ones. Peace and blessings be upon the one who commanded us to avoid the dogs of Hellfire, and upon his family and companions who brandish their swords against the heads of the wicked innovators.

Urdu

All praise is for Allah Almighty, who selected pure things only for pure people and left foul things for foul people. And peace and blessings be upon him who commanded us to stay away from the dogs of Hellfire, and upon his family and companions who are brandishing their swords over the heads of sinful innovators. (T)

In fact, in the case asked about, that marriage is either purely void and adultery according to Sharia, or forbidden and a sin. The questioner, the person involved, and the woman are all Sunnis. The address is to the Sunni brothers, and the intent is to inform them of the command of Sharia so that they may observe with a contemplative eye. If these rulings become clear through Sharia evidence, it is expected of Sunni brothers that they will not only accept it verbally but will always act upon it and save their precious daughters, dear sisters, and female relatives from destruction, trials, and the calamity of being caught in matters of religion and honor. And success is from Allah. Whether it be a Wahhabi or a Rafidi who holds misbelieving heretical beliefs, such as denying the Finality of Prophethood of the Radiant Presence, the Seal of Prophets (peace and blessings of Allah be upon him), or admitting defects or human interference in the Great Quran; marriage with such individuals is, by the consensus of Muslims, absolutely and certainly void and pure adultery. Even if the case is the reverse of the question, meaning a Sunni man wants to bring such a woman into marriage, among those claiming to be Muslims who hold heretical beliefs, their ruling is like that of an apostate. As we have researched in our treatise 'Al-Maqala al-Musfira 'an Ahkam al-Bid'a wa al-Mukaffira' (as we have researched in our treatise... - T). It is mentioned in 'Zahiriyya', 'Hindiyya', 'Hadiqa Nadiyya', etc.: 'Their rulings are like the rulings for apostates.'[1] (Their rulings are those of apostates. - T). And the marriage of an apostate man or woman cannot take

place with any Muslim or kafir, apostate or original, man or woman in the entire world. It is mentioned in 'Khaniya', 'Hindiyya', etc.:

Arabic	Urdu
And the wording of the latter is: It is not permissible for an apostate to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original disbelieving woman. Likewise, it is not permissible for an apostate woman to marry anyone. Thus it is in Al-Mabsut.[2]	The words of the second [source] are: For an apostate, marriage with any woman, Muslim, kafir (disbelieving woman), or apostate woman is not permissible. Similarly, an apostate woman's marriage with any person is not permissible. As it is in Al-Mabsut. (T)

[1] Hadiqa Nadiyya, Al-Istikhfaf bish-Shari'a Kufr, Maktaba Nooria Rizvia Faisalabad, 1/305 [2] Fatawa Hindiyya, Section Seven, Al-Muharramat bish-Shirk, Kitab al-Nikah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 11

उत्तर: अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपावान है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके महान रसूल पर दुरूद (आशीर्वाद) भेजते हैं।

अरबी

प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने पवित्र चीज़ों को केवल पवित्र और नेक लोगों के लिए पसंद किया, और अपवित्र चीज़ों को अपवित्र और गंदे लोगों के लिए छोड़ दिया। और दुरूद व सलाम हो उस पर जिसने हमें नरक के कुत्तों से बचने का आदेश दिया, और उसके परिवार और साथियों पर जो दुष्ट नवप्रवर्तकों (बिदअतियों) के सिरों पर अपनी तलवारें लहरा रहे हैं।

उर्दू

उस अल्लाह तआला के लिए हम्द है जिसने पाक चीज़ों को सिर्फ पाक लोगों के लिए चुना और नापाक को नापाक लोगों के लिए छोड़ दिया। और दरूद व सलाम उस पर जिसने हमें जहन्नुम के कुत्तों से बचने का हुक्म फ़रमाया है और आपकी आल व असहाब पर जो बदअती फ़ाजिर लोगों पर अपनी तलवारें लहरा रहे हैं। (त)

वास्तव में, पूछे गए मामले में वह निकाह या तो शरीयत के अनुसार पूरी तरह से बातिल (अमान्य) और ज़िना (व्यभिचार) है, या वर्जित और गुनाह है। प्रश्नकर्ता सुन्नी हैं, मामले से जुड़े व्यक्ति और स्त्री भी सुन्नी हैं। सुन्नी भाइयों को ही संबोधित किया जा रहा है और उन्हें शरीयत के हुक्म से अवगत कराना ही उद्देश्य है ताकि वे एक बार गौर से देखें। यदि शरीयत की दलीलों से ये अहकाम ज़ाहिर हो जाएं तो सुन्नी भाइयों से उम्मीद है कि वे न केवल ज़बानी तौर पर इसे स्वीकार करेंगे बल्कि हमेशा इस पर अमल करेंगे और अपनी अज़ीज़ बेटियों और बहनों को हलाकत, आज़माइश और दीन व नामूस के मामले में फँसने की बला से बचाएंगे। और तौफीक अल्लाह ही से है। वहाबी हो या राफ़िज़ी जो गुमराह करने वाले कुफ़िया अक़ीदे (विश्वास) रखता हो, जैसे कि हुज़ूर पुरनूर ख़ातमुन्नबीय्यीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़त्मे नुबूवत का इनकार करना या महान क़ुरआन में कमी या इंसानी दख़ल को स्वीकार करना, तो ऐसे लोगों से निकाह मुसलमानों की इज्मा (आम सहमति) से निश्चित रूप से बातिल और केवल ज़िना है। भले ही मामला सवाल के विपरीत हो, यानी एक सुन्नी पुरुष ऐसी महिला से निकाह करना चाहे, इस्लाम का दावा करने वालों में से जो लोग कुफ़िया अक़ीदे रखते हैं, उनका हुक्म मुर्तद (धर्मत्यागी) की तरह है। जैसा कि हमने अपने शोध पत्र "अल-मक़ाला अल-मुसफ़िरा अन अहकाम अल-बिदअत वल मुकफ़्फ़िरा" में शोध किया है (जैसा कि हमने अपने

रिसाला... में शोध किया है। - त)। ज़हीरिया, हिंदिया, हदीक़ा नदिया आदि में है: "उनके अहकाम मुर्तदों के अहकाम की तरह हैं।" 1 (उनके हुक्म मुर्तदों वाले हैं। - त)। और एक मुर्तद पुरुष या महिला का निकाह पूरी दुनिया में किसी भी मुस्लिम या काफ़िर, मुर्तद या असली, पुरुष या महिला से नहीं हो सकता। खानिया, हिंदिया आदि में है:

अरबी	उर्दू
और उत्तरार्ध के शब्द इस प्रकार हैं: एक मुर्तद के लिए मुर्तद महिला, मुस्लिम महिला या मूल काफिर महिला से विवाह करना जायज़ नहीं है। इसी प्रकार एक मुर्तद महिला का किसी भी व्यक्ति से विवाह करना जायज़ नहीं है। ऐसा ही अल-मबसूत में है। 2	दूसरी किताब के शब्द ये हैं कि मुर्तद के लिए किसी भी औरत, मुसलमान, काफ़िरा या मुर्तदा से निकाह जायज़ नहीं, और इसी तरह मुर्तदा औरत का किसी भी व्यक्ति से निकाह जायज़ नहीं। जैसा कि मबसूत में है। (त)

1 हदीक़ा नदिया, अल-इस्तिखफ़ाफ़ बिश-शरीअत कुफ़्र, मकतबा नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 1/305 2 फ़तावा हिंदिया, सातवां भाग, अल-मुहर्रमात बिश-शिर्क किताबुन निकाह, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/282

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم ۔ نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

عربی متن	اردو ترجمہ
الحمد للہ الذي لم یرتض الطیبات الّا للطیبین الاخیار وترك الخبیثین للخبیثات الاقذار والصلوۃ والسلام علی من امرنا بالتجنب عن کلاب النار وعلی الہ وصحبہ الشاھرین سیوفھم علی رؤوس المبتدعین الفجار۔	اس اللہ تعالٰی کے لیے حمد ہے جس نے طیبات کو صرف طیب لوگوں کے لیے منتخب فرمایا اور خبیث خبیث لوگوں کے لیے چھوڑ دیا گیا اور صلوۃ و سلام اس پر جس نے ہمیں جہنم کے کتوں سے بچنے کا حکم فرمایا ہے اور آپ کے آل و اصحاب پر جو بدعتی فاجر لوگوں پر اپنی تلواریں لہرا رہے ہیں۔ (ت)

فی الواقع صورت مستفسرہ میں وہ نکاح یا تو شرعاً محض باطل و زنا ہے یا ممنوع و گناہ، سائل سنی صاحب معاملہ سنی و سنیہ۔ برادران سنت ہی سے خطاب ہے اور انہیں کو حکم شرع سے اطلاع دینی مقصود کہ ایک ذرا بنگاہ غور ملاحظہ فرمائیں، اگر دلیل شرعی سے یہ احکام ظاہر ہو جائیں تو سنی بھائیوں سے توقع کہ نہ صرف زبانی قبول بلکہ ہمیشہ اسی پر عمل فرمائیں گے اور اپنی کریمہ عزیزہ بنات و اخوات کو ہلاک و ابتلا اور دین و ناموس میں گرفتاری بلا سے بچائیں گے وباللہ التوفیق، وہابی ہو یا رافضی جو بد مذہب عقائد کفریہ رکھتا ہے جیسے ختم نبوت حضور پر نور خاتم النبیین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا انکار یا قرآن عظیم میں نقص و دخل بشری کا اقرار، تو ایسوں سے نکاح بالاجماع مسلمین بالقطع والیقین باطل محض و زنائے صرف ہے اگرچہ صورت صورتِ سوال کا عکس ہو یعنی سنی مرد ایسی عورت کو نکاح میں لانا چاہے کہ مدعیان

اسلام میں جو عقائد کفریہ رکھیں ان کا حکم مثل مرتد ہے کما حققنا فی المقالة المسفرة عن احکام البدعة والمکفرة (جیسا کہ ہم نے اپنے رسالہ "المقالة المسفرة عن احکام البدعة والمکفرة" میں تحقیق کی ہے۔ت) ظہیریہ وہندیہ وحدیقہ ندیہ و غیر ہا میں ہے : احکامھم مثل احکام المرتدین 1 (ان کے احکام مرتدین والے ہیں۔ ت) اور مرتد مرد خواہ عورت کا نکاح تمام عالم میں کسی عورت و مرد مسلم یا کافر مرتد یا اصلی کسی سے نہیں ہو سکتا، خانیہ و ہندیہ و غیر ہما میں ہے :

عربی متن	**اردو ترجمہ**
واللفظ للاخیرة لا یجوز للمرتدان یتزوج مرتدة ولامسلمة ولاکافرة اصلیة وکذلك لایجوز نکاح المرتدة مع احد کذا فی المبسوط 2-	دوسری کے الفاظ یہ ہیں مرتد کے لیے کسی عورت، مسلمان، کافرہ یا مرتدہ سے نکاح جائز نہیں، اور یونہی مرتدہ عورت کا کسی بھی شخص سے نکاح جائز نہیں۔ جیسا کہ مبسوط میں ہے۔ (ت)

1 حدیقہ ندیہ الاستخفاف بالشریعة کفر مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۳۰۵/۱ 2 فتاوی ہندیہ القسم السابع المحرمات بالشرك کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

And if he does not hold such beliefs himself but regards the leaders of the Wahhabis or the mujtahids of the Rafidis (may Allah Almighty forsake them) who hold these beliefs as imams, leaders, or even Muslims, then he himself is definitely an infidel (kafir) by consensus. Just as denying the necessities of religion is disbelief, similarly, not considering one who denies them as an infidel is also disbelief. It is stated in Al-Wajiz by Imam Kardari, Al-Durr al-Mukhtar, Al-Shifa by Imam Qadi 'Iyad, and others:

[Arabic]: The wording in Al-Shifa, summarized, is: The scholars have reached a consensus that whoever doubts his disbelief and punishment has indeed disbelieved. 1 [Urdu]: The words of Al-Shifa in brief are: It is the consensus of the scholars that whoever doubts his disbelief and punishment is a disbeliever. (T)

And if he is free from even this, and clearly considers those with such beliefs—even if they are the leaders of the sect—to be infidels (though the expectation of this from innovators is very weak and experience testifies strongly to the contrary), then the third level of necessitated blasphemies (kufriyat-e-luzumiya) will come. These are abundant in the false beliefs of these stray sects, which are clearly and sufficiently explained in the humble servant's treatise Al-Kawkaba al-Shahabiya fi Kafriyat Abi al-Wahhabiya (1312 AH) and sufficiently mentioned in the treatise Sall al-Suyuf al-Hindiya 'ala Kafriyat Baba al-Najdiya (1312 AH). And even if it were not so, calling the following (taqlid) of Imams 'polytheism' (shirk) and labeling those who follow them (muqallids) as 'polytheists' (mushriks) is a well-known and famous misguided belief of these gentlemen. Similarly, regarding hundreds of matters concerning Prophets, saints, the dead, and the living, applying the ruling of 'shirk' to minor, forbidden, disliked, or even permissible and recommended acts is a specific fundamental principle of Wahhabism, with which their records are filled. Are these matters hidden or concealed? Are they mentioned with any less frequency in their books, tongues, treatises, and statements? Is every Sunni scholar and layman not aware that they call themselves monotheists (muwahhids) and Muslims, God forbid, polytheists (mushriks)? Not just from today, but from the beginning, the summary of their belief is that whoever is not a Wahhabi is a polytheist. In Radd al-Muhtar, concerning this Wahhabi group, it is stated:

[Arabic]: They believed that they alone are the Muslims and that whoever opposes their belief is a polytheist. 2 [Urdu]: Their belief is that they are the only Muslims, and whoever opposes them in belief is a polytheist. (T)

The humble servant clarified in the treatise Al-Nahy al-Akid 'an al-Salat wara' 'Adi al-Taqlid (1305 AH) that specifically on the issue of taqlid, according to their sect, the Imams of religion, perfect scholars, and gnostic saints of the past eleven hundred years (may Allah Almighty be pleased with them all) would all, God forbid, be declared polytheists. Especially those major eminent Imams, masters of Islam, and great scholars who strictly emphasized personal following (taqlid-e-shakhsi) and considered anything contrary to it as rejected, loathsome, false, and atrocious.

1 Kitab al-Shifa, Part 4, Chapter 1, Dar al-Sa'adat, Beirut, 2/208; Durr al-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Bab al-Murtad, Mujtabai Delhi, 1/356. 2 Radd al-Muhtar, Bab al-Bughat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/311.

और अगर वह स्वयं ऐसे अक़ीदे (विश्वास) नहीं रखता, लेकिन वहाबियों के बड़े लोगों या राफ़िज़ियों के मुजतहिदों (अल्लाह तआला उन्हें बेसहारा करे) को, जो ये अक़ीदे रखते हैं, अपना इमाम और पेशवा या मुसलमान ही मानता है, तो भी वह निश्चित रूप से सर्वसम्मति (इजमा) से स्वयं काफ़िर है। क्योंकि जिस तरह धर्म की अनिवार्यताओं (ज़रूरियाते दीन) का इंकार कुफ़्र है, उसी तरह उनके इंकार करने वाले को काफ़िर न मानना भी कुफ़्र है। वजीज़ इमाम करदरी, दुर्रे मुख़्तार, और इमाम क़ाज़ी अयाज़ की 'शिफ़ा' आदि में उल्लेख है:

[अरबी]: 'शिफ़ा' के शब्द संक्षेप में ये हैं: विद्वानों की सर्वसम्मति है कि जो उसके कुफ़्र और सज़ा में संदेह करे, वह वास्तव में काफ़िर हो गया। 1 [उर्दू]: 'शिफ़ा' के शब्द संक्षेप में ये हैं: विद्वानों का इजमा है कि जो उसके कुफ़्र और अज़ाब में शक करे, वह काफ़िर है। (त)

और अगर वह इससे भी मुक्त है और ऐसे अक़ीदे रखने वालों को, भले ही वे उस समूह के पेशवा हों, साफ़-साफ़ काफ़िर मानता है (यद्यपि विधर्मियों से इसकी अपेक्षा बहुत कम है और अनुभव इसके विपरीत होने का पुख्ता प्रमाण देता है), तो अब 'कुफ़्रियाते लुज़ूमिया' (अनिवार्य ईशनिंदा) का तीसरा स्तर आएगा। ये इन भटके हुए समूहों के झूठे विश्वासों में बहुतायत से हैं, जिनका स्पष्ट और पर्याप्त वर्णन इस तुच्छ सेवक के शोध-पत्र 'अल-कौकबतुल शहाबिया फ़ी कुफ़्रियाति अबिल वहाबिया' (1312 हिजरी) में है और पर्याप्त मात्रा में 'सलुल सुयूफ़ुल हिन्दिया अला कुफ़्रियाति बाबाल नज्दिया' (1312 हिजरी) में वर्णित है। और अगर ऐसा न भी हो, तो इमामों के अनुसरण (तक़लीद) को शिर्क कहना और मुक़ल्लिदों (अनुसरण करने वालों) को मुशरिक कहना इन हज़रात का प्रसिद्ध और जाना-माना गुमराह अक़ीदा है। इसी तरह, पैग़ंबरों, वलियों, मृतकों और जीवितों के मामलों में सैकड़ों बातों में छोटी-छोटी चीज़ों को प्रतिबंधित या नापसंद, बल्कि अनुमत और सराहनीय कार्यों पर भी जगह-जगह शिर्क का हुक्म लगा देना वहाबियत का एक विशिष्ट मूल सिद्धांत है, जिससे उनके कार्यालय (किताबें) भरे पड़े हैं। क्या ये बातें छिपी हुई हैं? क्या उनकी किताबों, ज़ुबानों, शोध-पत्रों और बयानों में इनकी कोई कमी है? क्या हर सुन्नी विद्वान और सामान्य व्यक्ति इससे परिचित नहीं है कि वे खुद को मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) और मुसलमानों को, अल्लाह की पनाह, मुशरिक कहते हैं? आज से नहीं बल्कि शुरुआत से ही उनके विश्वास का सार यही है कि जो वहाबी नहीं है, वे सब मुशरिक हैं। 'रद्दुल मुह्तार' में इसी वहाबी समूह के वर्णन में है:

[अरबी]: उन्होंने विश्वास किया कि वही मुसलमान हैं और जो उनके विश्वास के विरुद्ध है, वह मुशरिक है। 2 [उर्दू]: उनका अक़ीदा यह है कि वही मुसलमान हैं और जो अक़ीदे में उनके विरुद्ध हो वह मुशरिक है। (त)

इस तुच्छ सेवक ने शोध-पत्र 'अन-नह्युल अकीद अनिस सलात वराअ अदित तक़लीद' (1305 हिजरी) में स्पष्ट किया है कि विशेष रूप से तक़लीद के मसले में उनके मज़हब के अनुसार, पिछले ग्यारह सौ वर्षों के दीनी इमाम, पूर्ण विद्वान और आरिफ़ वली (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो), अल्लाह की पनाह, सब मुशरिक करार पाते हैं। विशेष रूप से वे महान इमाम, इस्लाम के सरदार और विख्यात विद्वान जो व्यक्तिगत अनुसरण (तक़लीद-ए-शख़्सी) पर अत्यंत ज़ोर देते थे और इसके विपरीत को बुरा, घृणित, असत्य और भयानक करार देते हैं।

1 किताबुश शिफ़ा, चौथा भाग, पहला अध्याय, दारुस सआदत, बेरूत, 2/208; दुर्रे मुख़्तार, किताबुल जिहाद, बाबल मुर्तद, मुजतबाई दिल्ली, 1/356। 2 रद्दुल मुह्तार, बाबल बुग़ात, दारु एह़याउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/311।

पृष्ठ 739 का 380

اور اگر ایسے عقائد خود نہیں رکھتا مگر کبرائے وہابیہ یا مجتہدین روافض خذلہم اللہ تعالٰی کہ وہ عقائد رکھتے ہیں انھیں امام و پیشوا یا مسلمان ہی مانتا ہے تو بھی یقینا اجماعاً خود کافر ہے کہ جس طرح ضروریاتِ دین کا انکار کفر ہے یونہی ان کے منکر کو کافر نہ جاننا بھی کفر ہے، وجیز امام کردری و در مختار و شفائے امام قاضی عیاض و غیر ہما میں ہے:

واللفظ للشفاء مختصراً اجمع العلماء ان من شك فی کفرہ وعذابہ فقد کفر ۱ | شفاء کے الفاظ اختصاراً یہ ہیں، علما کا اجماع ہے کہ جو اس کے کفر و عذاب میں شک کرے وہ کافر ہے۔ (ت)

اور اگر اس سے بھی خالی ہے ایسے عقائد والوں کو اگرچہ اس کے پیشوایانِ طائفہ ہوں صاف صاف کافر مانتا ہے (اگرچہ بد مذہبوں سے اس کی توقع بہت ہی ضعیف اور تجربہ اس کے خلاف پر شاہد قوی ہے) تو اب تیسرا درجہ کفریاتِ لزومیہ کا آئے گا کہ ان طوائف ضالہ کے عقائد باطلہ میں بکثرت ہیں جن کا شافی و وافی بیان فقیر کے رسالہ الکوکبۃ الشھابیۃ فی کفریات ابی الوھابیۃ (۱۳۱۲ھ) میں ہے اور بقدر کافی رسالہ سل السیوف الھندیہ علی کفریات بابا النجدیۃ (۱۳۱۲ھ) میں مذکور۔ اور اگرچہ نہ ہو تو تقلید ائمہ کو شرک اور مقلدین کو مشرک کہنا ان حضرات کا مشہور و معروف عقیدہ ضلالت ہے یونہی معاملاتِ انبیاء و اولیاء و اموات و احیاء کے متعلق صدہا باتوں میں ادنٰی ادنٰی بات ممنوع یا مکروہ بلکہ مباحات و مستحبات پر جابجا حکمِ شرک لگا دینا خاص اصل الاصول وہابیت ہے جن سے ان کے دفاتر بھرے پڑے ہیں، کیا یہ امور مخفی و مستور ہیں، کیا ان کی کتابوں زبانوں رسالوں بیانوں میں کچھ کمی کے ساتھ مذکور ہیں، کیا ہر سنی عالم و عامی اس سے آگاہ نہیں کہ وہ اپنے آپ کو موحد اور مسلمانوں کو معاذ اللہ مشرک کہتے ہیں آج

سے نہیں شروع سے ان کا خلاصہ اعتقاد یہی ہے کہ جو وہابی نہ ہو سب مشرک، ردالمحتار میں اسی گروہِ وہابیہ کے بیان میں ہے:

اعتقدوا انهم هم المسلمون وان من خالف اعتقاد هم مشرکون ۲ | ان کا اعتقاد یہ ہے کہ وہی مسلمان ہیں اور جو عقیدہ میں ان کے خلاف ہو وہ مشرک ہے (ت)

فقیر نے رسالہ النهي الاکید عن الصلاۃ وراء عدی التقلید (۱۳۰۵ھ) میں واضح کیا کہ خاص مسئلہ تقلید میں ان کے مذہب پر گیارہ سو برس کے ائمہ دین و علمائے کاملین و اولیائے عارفین رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین معاذ اللہ سب مشرکین قرار پاتے ہیں خصوصاً وہ جماہیر ائمہ کرام وسادات اسلام و علمائے اعلام جو تقلیدِ شخصی پر سخت شدید تاکید فرماتے اور اس کے خلاف کو منکر و شنیع و باطل و فظیع قرار دیتے ہیں۔

۱ کتاب الشفاء القسم الرابع الباب الاول دارسعادت بیروت ۲۰۸/۲، درمختار کتاب الجهاد باب المرتد مجتبائی دہلی ۳۵۶/۱ ۲ ردالمحتار باب البغاۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۱/۲

Fatawa Rizvia Volume 11

...they kept mentioning, just like Imam Hujjat al-Islam Muhammad Ghazali, Imam Burhan al-Din the author of Hidayah, Imam Ahmad Abu Bakr al-Jauzjāni, Imam Kiya al-Harrāsi, Imam Ibn al-Sam'āni, the most noble Imam al-Haramayn, the authors of Khulasah, Idah, Jami' al-Rumuz, Bahr al-Ra'iq, Nahr al-Fa'iq, Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, Fatawa Khayriyyah, Ghamz al-'Uyun, Jawahir al-Akhlati, Munyah, Sirajiyyah, Musaffa, Jawahir, Tatarkhaniyah, Majma', Kashf, Alamgiriyyah, Maulana Shaykh Muhaqqiq Abdul Haq Muhaddith Dehlavi, Janab Shaykh Mujaddid Alf Thani, and thousands of other great scholars whose faith's whereabouts would not be known, and Muslims would become sheer polytheists (mushrik). These personalities are deemed polytheists—we seek refuge with Allah, the Glorified and Most High—and the correct, relied upon, and authoritative school of the majority of noble Imams and eminent jurists (Fuqaha) is that whoever regards even a single Muslim as a disbeliever (kafir) is himself a disbeliever. Explicit clarifications of this are found in numerous books such as Dhakhirah, Bazzaziyyah, Fusul 'Imadi, Fatawa Qadi Khan, Jami' al-Fusulayn, Khizanat al-Muftin, Jami' al-Rumuz, Sharh Nuqayah by Birjindi, Sharh Wahbaniyah, Nahr al-Fa'iq, Durr al-Mukhtar, Majma' al-Anhur, Ahkam 'ala al-Durar, Hadiqah Nadiyyah, Alamgiriyyah, Radd al-Muhtar, and other general works. It is stated: "Al-Mukhtar lil-Fatwa"[1] (Chosen for fatwa. - Translator) [Footnote 1]. In Sharh Tanwir it is said: "Bihi yufta"[2] (Upon this a fatwa is given. - Translator) [Footnote 2]. These fatwas and corrections stand against the absolute statement that someone who calls Muslims disbelievers is absolutely a disbeliever, even if said merely as an insult and not out of belief. In Jami' al-Fusulayn it is stated:

[Table Content] Arabic Text: He said to another: "O disbeliever!" Imam A'mash al-Balkhi, the jurist, said: "The speaker has committed disbelief." Others from the scholars of Balkh said: "He does not commit disbelief." This matter was agreed upon in Bukhara when some Imams of Bukhara answered that he committed disbelief. When the answer reached Balkh, those who had given a fatwa contrary to Imam A'mash the jurist retracted and agreed with A'mash's statement. However, according to Abu al-Layth and some Imams of Bukhara, it is appropriate not to call him a disbeliever, while the fatwa in such matters is that if the one calling a Muslim a disbeliever intended an insult and did not intend disbelief (kufr), he does not become a disbeliever. And if he...

Urdu Text: Someone said to another: "O disbeliever!" Imam A'mash al-Balkhi, the jurist, said: "He has become a disbeliever." Other scholars besides him said: "He will

not become a disbeliever." This same matter was presented in Bukhara, and some Imams of Bukhara said: "He became a disbeliever." When this answer reached Balkh, those who had issued a fatwa against Imam A'mash retracted and agreed with A'mash's statement. According to Abu al-Layth and some Imams of Bukhara, it is appropriate not to call him a disbeliever, while the fatwa in such matters is that if the one calling a Muslim a disbeliever intended an insult and did not intend disbelief (kufr), he will not be a disbeliever. And if he...

[Footnotes] 1. Jami' al-Fusulayn fi Masa'il Kalimat al-Kufr, Islami Kutub Khana, Karachi, 2/311 2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Ta'zir, Matba' Mujtaba'i, Delhi, 1/37

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...बताते रहे जैसे इमाम हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद ग़ज़ाली, इमाम बुरहानुद्दीन साहिब-ए-हिदाया, इमाम अहमद अबू बक्र जोज़जानी, इमाम किया हर्रासी, इमाम इब्न समआनी, इमाम अजल्ल इमामुल हरमैन, और खुलास; ईज़ाह, जामिउर रूमूज़, बहरुर रैक, नहरुल फ़ाइक, तनवीरुल अबसार, दुर्रे मुख़्तार, फ़तावा ख़ैरिय्या, ग़मज़ुल उयून, जवाहिरुल अख़लाती, मुन्या, सिराजिय्या, मुसफ़्फ़ा, जवाहिर, ततारख़ानिया, मजमअ, कश्फ़, आलमगीरिया, मौलाना शेख मुहक्किक़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी, जनाब शेख मुजद्दिद अल्फ सानी और उनके अलावा हज़ारों अकाबिर के ईमान का तो कहीं पता ही नहीं रहता और मुसलमान तो कोरे मुशरिक बन जाते हैं, ये हज़रात मुशरिक ठहरते हैं—व-अल-इयाज़ु बिल्लाह सुब्हानहू व तआला—और जमहूर आइम्म-ए-किराम और फ़ुक़हा-ए-एलाम का मज़हब सही, मोअतमद और मुफ़्ता-बिह यही है कि जो किसी एक मुसलमान को भी काफिर एतेकाद करे वह खुद काफिर है। ज़ख़ीरा, बज़ाज़िया, फ़ुसूल इमादी, फ़तावा क़ाज़ी खां, जामिउल फ़ुसूलैन, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन, जामिउर रूमूज़, शरह नुक़ाया बर जिन्दी, शरह वहबानिया, नहरुल फ़ाइक, दुर्रे मुख़्तार, मजमअुल अनहुर, अहकाम अलद दुरर, हदीकः नदिया, आलमगीरिया, रददुल मुहतार और इसके अलावा दीगर आम किताबों में इसकी तसरीहात वाज़िह हैं। कसीर किताबों में इसे फरमाया: "अल-मुख़्तार लिल-फ़तवा" 1 (फ़तवा के लिए यही मुख़्तार है। - अनु.)। शरह तनवीर में फरमाया: "बिही युफ्ता" 2 (इसी पर फ़तवा दिया जाता है। - अनु.)। ये इफ्ता और तसहीहात उस कौले इतलाक के मुक़ाबिल हैं कि मुसलमानों को काफिर कहने वाला मुतलक़न काफिर है चाहे वह महज़ बतौर-ए-दशनाम (गाली) कहे न कि राह-ए-एतेकाद से। जामिउल फ़ुसूलैन में है:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: उसने दूसरे से कहा: "ऐ काफिर!" इमाम आमश बल्ख़ी फकीह ने कहा: "कहने वाला काफिर हो गया।" बल्ख़ के अन्य मशाइख़ ने कहा: "वह काफिर नहीं होता।" यह मसला बुखारा में तब तय हुआ जब बुखारा के कुछ इमामों ने जवाब दिया कि वह काफिर हो गया। जब जवाब बल्ख़ पहुँचा, तो जिन लोगों ने इमाम आमश फकीह के खिलाफ फतवा दिया था, उन्होंने अपने फतवे से रुजू कर लिया और आमश के कथन से सहमत हो गए। हालाँकि, अबू अल-लैथ और बुखारा के कुछ इमामों के अनुसार, उसे काफिर न कहना उचित है, जबकि ऐसे मामलों में फतवा यह है कि यदि मुस्लिम को काफिर कहने वाले ने अपमान (गाली) का इरादा किया था और कुफ्र का इरादा नहीं था, तो वह काफिर नहीं होता। और यदि उसने...

उर्दू पाठ: किसी ने दूसरे को कहा "ऐ काफिर", इमाम आमश फकीह बल्ख़ी ने फरमाया वह काफिर हो गया, और उनके अलावा अन्य मशाइख़ ने फरमाया: वह काफिर न होगा, और यही मसला बुखारा में पेश आया तो बुखारा के कुछ आइम्मा ने फरमाया: वह काफिर हो गया। जब यह जवाब बल्ख़ पहुँचा तो जिन लोगों ने इमाम आमश फकीह के खिलाफ फतवा दिया था उन्होंने रुजू करके आमश के कथन से सहमति व्यक्त की, और अबुल लैथ और बुखारा के कुछ आइम्मा के निकट काफिर न कहना उचित है, जबकि इस प्रकार के मसलों में फतवा यह है कि मुसलमान को काफिर कहने वाले ने यदि गाली का इरादा किया हो और कुफ्र का इरादा न लिया हो तो काफिर न होगा। और यदि उसने...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. जामिउल फ़ुसूलैन फ़ी मसाइल कलमातिल कुफ़्र, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 311/2 2. दुर्रे मुख़्तार बाबुत ताज़ीर, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 37/1

بتاتے رہے جیسے امام حجتہ الاسلام محمد غزالی و امام برہان الدین صاحب ہدایتہ و امام احمد ابو بکر جوز جانی و امام کیا ہر اسی و امام ابن سمعانی و امام اجل امام الحرمین و صاحبان خلاصہ وایضاح و جامع الرموز و بحر الرائق و نہر الفائق و تنویر الابصار و درمختار و فتاوٰی خیر یہ و غمز العیون و جواہر الاخلاطی و منیتہ و سراجیہ و مصفٰی و جواہر و تتار خانیہ و مجمع و کشف و عالمگیر یہ و مولانا شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی و جناب شیخ مجدد الف ثانی و غیر ہم ہزاروں اکابر کے ایمان کا تو کہیں پتا ہی نہیں رہتا اور مسلمان تو نرے مشرک بنتے ہیں یہ حضرات مشرک ٹھہرتے ہیں والعیاذ باللہ سبحنہ و تعالٰی، اور جمہور ائمہ کرام فقہائے اعلام کا مذہب صحیح و معتمد و مفتی بہ یہی ہے کہ جو کسی ایک مسلمان کو بھی کافر اعتقاد کرے خود کافر ہے، ذخیرہ وبزازیہ و فصول عمادی و فتاوٰی قاضی خاں و جامع الفصولین وخزانیۃ المفتین و جامع الرموز و شرح نقایہ بر جندی و شرح وہبانیہ و نہر الفائق و در مختار و مجمع الانہر و احکام علی الدرر و حدیقۃ ندیہ و عالمگیر یہ ورد المختار و غیر ہا عامہ کتب میں اس کی تصریحات واضحہ کتب کثیرہ میں اسے فرمایا: المختار للفتوٰی ۱ (فتوی کے لیے مختار ہے۔ ت) شرح تنویر میں فرمایا: بہ یفتی ۲ (اس پر فتوی دیا جاتا ہے۔ ت) یہ افتاء و تصحیحات اس قول اطلاق کے مقابل ہیں کہ مسلمانوں کو کافر کہنے والا مطلقاً کافر اگر چہ محض بطور دشنام کہے نہ از راہ اعتقاد، جامع الفصولین میں ہے:

[جدول] عربی عبارت: قال لغیرہ یا کافر قال الفقیہ الاعمش البلخی کفر القائل وقال غیرہ من مشائخ بلخ لایکفر فاتفقت ھذہ المسألۃ ببخاری اذاجاب بعض ائمہ بخاری انہ کفر فرجع الجواب الی بلخ فمن افتی بخلاف الفقیہ الاعمش رجع الی قولہ و ینبغی ان لایکفر علی قول ابی اللیث و بعض ائمۃ بخاری و المختار للفتوی فی جنس ھذہ المسائل ان قائل ھذہ المقالات لو اراد الشتم ولایعتقد کفر الایکفر ولو

اردو عبارت: کسی نے غیر کو کہا "اے کافر" امام اعمش فقیہ بلخی نے فرمایا وہ کافر ہو گیا، اور ان کے علاوہ دیگر مشائخ نے فرمایا: وہ کافر نہ ہو گا، اور یہی مسئلہ بخاری میں پیش آیا تو بخاری کے بعض ائمہ نے فرمایا: وہ کافر ہو گیا۔ جب یہ جواب بلخ پہنچا تو جن لوگوں نے امام اعمش فقیہ کے خلاف فتوی دیا تھا انھوں نے رجوع کر کے اعمش کے قول سے اتفاق کر لیا، اور ابولیث اور بخاری کے بعض ائمہ کے نزدیک کافر نہ کہنا مناسب ہے جبکہ اس قسم کے مسائل میں فتوی یہ ہے کہ مسلمان کو کافر کہنے والے نے اگر گالی مراد لی ہو اور کفر مراد نہ لیا تو کافر نہ ہو گا۔ اور اگر اس نے

[حواشی] ۱ جامع الفصولین فی مسائل کلمات الکفر اسلامی کتب خانہ کراچی ۳۱۱/۲ ۲ درمختار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۳۷/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

اعتقاد کافرا کفر اھ اختصارا (To believe a disbeliever is a believer is disbelief. End of summary.)

If disbelief is believed in, then he is a disbeliever. End of summary.

According to both the general statements of the venerable jurists and the fatwas (legal rulings), a ruling of disbelief (kufr) is unanimously established against them. This same ruling is derived from the apparent meanings of authentic (Sahih) Hadiths. In Sahih Bukhari, Sahih Muslim, and others, there is a Hadith from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said:

Whoever says to his brother, "O disbeliever," then one of them has returned with it (the charge of disbelief). Muslim added: if he is as he said, otherwise it returns to him.

Whoever calls a reciter of the Kalimah (a Muslim) a disbeliever, one of the two will certainly be afflicted with this calamity. If the person spoken to is indeed a disbeliever, then fine; otherwise, this charge of disbelief will return to the speaker. (T)

Also, in the two Sahihs (Bukhari and Muslim) and others, there is a Hadith from Hazrat Abu Dharr (may Allah be pleased with him):

A person does not accuse another person of disbelief (kufr) or call him an enemy of Allah while he is not so, but it (the accusation) reverts to him.

Whoever calls someone a disbeliever or calls them an enemy of God, and they are not so, then this statement of theirs returns to them.

Ironically, these people claim to follow only the apparent meanings of the Hadiths. Thus, it is proven by the rulings of both Hadith and Jurisprudence (Fiqh) that labeling a Muslim as an infidel necessitates a ruling of disbelief. This is not about the millions of Imams, Saints, and Scholars whose takfir (declaring as infidels) is—God forbid—the summary of these people's religion. It has just been quoted from Radd-ul-Muhtar that they consider everyone who is not a Wahhabi to be a polytheist (Mushrik). For this very reason, Allama Shami (may Allah have mercy on him) included them among the Kharijites (Khawarij), and it is stated in Wajiz al-Kardari:

It is necessary to declare the Kharijites as infidels because they declare everyone besides those of their own sect to be infidels.	**It is obligatory to call the Khawarij disbelievers because they call everyone besides their own co-religionists disbelievers.**

Naturally, it is stated in Al-Durar al-Saniyya fi al-Radd 'ala al-Wahhabiyya:

These are the heretics who declare Muslims to be infidels.	**Meaning, these are the Wahhabi heretics and irreligious people who perform takfir of (declare as disbelievers) Muslims.**

---

1. Jami' al-Fussulayn fi Masa'il Kalimat al-Kufr, Islami Kutub Khana, Karachi, 311/2
2. Sahih al-Bukhari, Chapter on 'Whoever declares his brother an infidel', etc., Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 901/2
3. Sahih Muslim, Chapter on the Explanation of the State of Faith of one who says to his Muslim brother 'O Disbeliever', Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/57
4. Sahih Muslim, Chapter on the Explanation of the State of Faith of one who says to his Muslim brother 'O Disbeliever', Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/57
5. Fatawa Bazzaziyya on the margin of Hindiyya, Type concerning what relates to what must be declared disbelief, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 318/6
6. Al-Durar al-Saniyya fi al-Radd 'ala al-Wahhabiyya, al-Maktabat al-Haqiqiyya, Istanbul, Turkey, p. 38

फ़तावा रज़विया खंड 11

اعتقاد کافرا کفر اھ اختصارا (किसी काफ़िर को आस्तिक मानना कुफ़्र है।) **कुफ़्र का एतकाद किया तो वह काफ़िर है अ.ह. (संक्षेप में)**

तो फ़ुक़हा-ए-किराम के कॉल (कथन) के मुतलक (सामान्य) और हुक्म मुफ्ती-बेह, दोनों के अनुसार सर्वसम्मति से उन पर कुफ़्र का हुक्म साबित होता है, और यही हुक्म सही हदीसों के ज़ाहिरी (स्पष्ट) अर्थों से प्राप्त होता है। सही बुखारी और सही मुस्लिम आदि में हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की हदीस से है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

जो कोई अपने भाई को काफ़िर कहे, तो उन दोनों में से एक पर यह बात लौट आती है। मुस्लिम ने अतिरिक्त कहा: यदि वह वैसा ही है जैसा उसने कहा, अन्यथा वह उसी पर लौट आती है।

जो किसी कलमा पढ़ने वाले (मुसलमान) को काफ़िर कहे, तो उन दोनों में से एक पर यह मुसीबत ज़रूर पड़ेगी। अगर जिसे कहा गया वह वास्तव में काफ़िर है तो ठीक, अन्यथा कुफ़्र का यह हुक्म कहने वाले पर ही लौट आएगा। (त)

साथ ही, सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) आदि में हज़रत अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस से है:

कोई व्यक्ति दूसरे पर कुफ़्र का आरोप नहीं लगाता या उसे अल्लाह का दुश्मन नहीं कहता, जबकि वह वैसा न हो, लेकिन वह (आरोप) उसी पर लौट आता है।

जो किसी को कुफ़्र के साथ पुकारे या खुदा का दुश्मन बताए और वह वैसा न हो, तो उसका यह कहना उसी पर लौट आए।

विडंबना यह है कि इन हज़रात को केवल हदीसों के ज़ाहिरी अर्थों पर अमल करने का बड़ा दावा है, तो साबित हुआ कि हदीस और फ़िक़्ह (विधिशास्त्र), दोनों के हुक्म से मुसलमान की तक़्फ़िर (काफ़िर कहना) पर कुफ़्र का हुक्म लाज़िम है। यह उन करोड़ों इमामों, वलियों और विद्वानों की तक़्फ़िर के बारे में नहीं है जो - अल्लाह न करे - इन साहबों के मज़हब का सारांश है। अभी 'रद्दुल मुहतार' से उद्धृत किया गया कि जो वहाबी नहीं है, वे उन सबको मुशरिक (बहुदेववादी) मानते हैं। इसी आधार पर अल्लामा शामी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने उन्हें ख़ारजियों में शामिल फ़रमाया और 'वजीज़ अल-करदरी' में उल्लेख है:

ख़ारजियों को काफ़िर कहना अनिवार्य है क्योंकि वे अपने अलावा पूरी उम्मत को काफ़िर कहते हैं।	**ख़ारजियों को काफ़िर कहना वाजिब है इस आधार पर कि वे अपने हम-मज़हब के अलावा सबको काफ़िर कहते हैं।**

लाजरम (निश्चित ही) 'अद-दुरर अस-सनिय्या फ़ी अर-रद्द अलल-वहाबिया' में फ़रमाया:

ये वे मुल्हिद (नास्तिक/पाखंडी) हैं जो मुसलमानों को काफ़िर ठहराते हैं।	**यानी ये वहाबी मुल्हिद और बेदीन हैं जो मुसलमानों की तक्फ़िर करते हैं।**

---

1. जामि अल-फ़ुसुलैन फ़ी मसाइल कलमात अल-कुफ़्र, इस्लामी कुतुब खाना, कराची, 311/2
2. सही अल-बुखारी, अध्याय: जिसने अपने भाई को काफ़िर कहा, आदि, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 901/2
3. सही मुस्लिम, अध्याय: अपने मुस्लिम भाई को काफ़िर कहने वाले के ईमान का वर्णन, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/57
4. सही मुस्लिम, अध्याय: अपने मुस्लिम भाई को काफ़िर कहने वाले के ईमान का वर्णन, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/57
5. फ़तावा बज़ज़िया हंदिया के हाशिये पर, कुफ़्र ठहराए जाने वाले विषयों से संबंधित प्रकार, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 318/6
6. अद-दुरर अस-सनिय्या फ़ी अर-रद्द अलल-वहाबिया, अल-मकतबात अल-हक़ीक़िया, इस्तांबुल, तुर्की, पृष्ठ 38

पृष्ठ 382/739

اعتقاد کافرا کفر اھ اختصارا کفر کا اعتقاد کیا تو وہ کافر ہے اھ اختصارا

تو فقہائے کرام کے قول کے مطلق و حکم مفتی بہ دونوں کے رو سے بالاتفاق ان پر حکم کفر ثابت، اور یہی حکم ظواہر احادیث صحیحہ سے مستفاد صحیح بخاری و صحیح مسلم وغیرہما میں حضرت عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما کی حدیث سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ایما امرئ قال لاخیہ کافرا فقد باء بھا احدھما، زاد مسلم ان کان کما قال والا رجعت الیہ۔ **جو کسی کلمہ گو کو کافر کہے ان دونوں میں ایک پر یہ بلا ضرور پڑے گی، اگر جسے کہا وہ فی الحقیقہ کافر ہے تو خیر، ورنہ یہ کفر کا حکم اسی قائل پر پلٹ آئے گا۔ (ت)**

نیز صحیحین وغیرہما میں حضرت ابوذر رضی اللہ تعالٰی عنہ کی حدیث سے ہے:

لیس من دعار جلا بالکفر او قال عدواللہ ولیس کذالک الا حار علیہ۔ **جو کسی کو کفر پر پکارے یا خدا کا دشمن بتائے اور وہ ایسا نہ ہو تو اس کا یہ قول اسی پر پلٹ آئے۔**

طرفہ یہ کہ ان حضرات کو ظواہر احادیث ہی پر عمل کرنے کا بڑا دعوٰی ہے، تو ثابت ہوا کہ حدیث وفقہ دونوں کے حکم سے مسلمان کی تکفیر پر حکم کفر لازم، نہ کہ لاکھوں کروڑوں ائمہ واولیاء وعلماء کی معاذ اللہ تکفیر ان صاحبوں کا خلاصہ مذہب ابھی ردالمحتار سے منقول ہوا کہ جو وہابی نہیں سب کو مشرک مانتے ہیں اسی بنا پر علامہ شامی رحمۃ اللہ تعالٰی نے انھیں خوارج میں داخل فرمایا اور وجیز کردری میں ارشاد ہے:

يجب اكفار الخوارج في اكفارهم جميع الامۃ سواهم۔

خوارج کو کافر کہنا واجب ہے اس بنا پر کہ وہ اپنے ہم مذہب کے سوا سب کو کافر کہتے ہیں۔

لاجرم الدرر السنیہ فی الرد علی الوھابیۃ میں فرمایا:

ھولاء الملاحدۃ المکفرۃ للمسلمین۔ یعنی یہ وہابی ملحد بے دین کہ مسلمانوں کی تکفیر کرتے ہیں۔

---

1 جامع الفصولین فی مسائل کلمات الکفر اسلامی کتب خانہ کراچی ۳۱۱/۲ 2 صحیح البخاری باب من اکفر اخاہ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۰۱/۲ 3 صحیح مسلم باب بیان حال ایمان من قال لاخیہ المسلم یاکافر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۷ 4 صحیح مسلم باب بیان حال ایمان من قال لاخیہ المسلم یاکافر قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۷ 5 فتاوی بزازیہ علی ہامش ہندیہ نوع فیما یتصل بھا مما یجب اکفارہ الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۱۸/۶ 6 الدرر السنیہ فی الرد علی الوھابیۃ المکتبہ الحقیقہ استنبول ترکی ص ۳۸

Fatawa Razawiyya Volume 11

Furthermore, this is only based on one of their issues, which is the rejection of Taqlid (imitation). Observe their high flights of Shirk (polytheism) in other matters related to Prophets and Saints, etc. This humble servant [the author], in the treatise 'Ikmal al-Taammah 'ala Shirk Siwa bi al-Umoor al-'Aammah', has proven through sixty verses of the Divine Word (the Quran) and three hundred (300) Hadiths of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that according to their unrefined religion, not only the blessed Ummah but even the noble Prophets, great Angels, and the Radiant Master of Mankind himself (upon whom be the best of blessings and peace), and even the Lord of Honor (Glory be to Him and Most High) Himself, are not safe from [their accusations of] Shirk. Wa la hawla wa la quwwata illa billah al-Aliyy al-Adheem. Then, which Muslim can hesitate in the clarity of the blasphemies (Kufriyat) of such an impure religion? Furthermore, when these false beliefs and deviated statements are the principles of their religion, how can it be reasonable for any Wahhabi to be free of them? This would be like saying some Rawafid are free from 'Tabarra' (reviling companions) and 'Tafdhil' (preferring Ali). Even if we assume for a moment that some Wahhabi, for some reason or strategy, avoids all those rejected beliefs and discarded sayings, or let's assume they are actually free from them, how is it conceivable that they would acknowledge the blasphemies (Kufriyat) or at the very least the necessary implications of disbelief (Luzum-e-Kufr) of all their predecessors and successors, minor and major authors, writers, and preachers—Najdi, Dehlavi, Bengali, Bhopali, etc.—in whose speech these falsehoods are explicitly stated? Will any Wahhabi emerge in the world who admits the disbelief and the necessity of disbelief of all his predecessors, leaders, and co-religionists, and labels as 'disbelief' all the false rulings found in 'Kitab al-Tawhid', 'Taqwiyat al-Iman', 'Sirat-e-Mustaqim', 'Tanwir al-Aynayn', and the writings of Bhopali, Suraj Garhi, Batlawi, etc., which have—God forbid—applied the ruling of Shirk upon Muslims and reached even God, the Messenger, Prophets, and Angels? Never, by God! Instead, they certainly consider them good, regard them as Imams, leaders, and righteous scholars, and consider their words and sayings either meaningful and acceptable or are pleased with them. And to utter blasphemies oneself or to be pleased with blasphemies, or to not consider them as such but to take them in a supposedly correct sense—the ruling for all of these is the same. In 'I'lam bi-Qawati' al-Islam', it is quoted from our prominent scholars in the explanation of those matters which are agreed-upon disbelief (Kufr):

Man talaffadha bi-lafzi kufrin yakfuru wa kadha kullu man dhahika aw istahsanahu aw radiya bihi yakfuru | Whoever utters a word of disbelief becomes a disbeliever, and likewise, anyone who laughs at it, approves of it, or is pleased with it, becomes a disbeliever. He who uttered a word of disbelief will be declared a disbeliever; similarly, he who laughed at this word of disbelief, or praised it, or was pleased with it, will also be declared a disbeliever. (T)

1 I'lam bi-Qawati' al-Islam, annexed to Sabil al-Najat, Haqiqah Printing House, Istanbul, Turkey, p. 366. Page 383 of 739

फिर यह भी उनके सिर्फ़ एक मसले 'तर्कए-तक़्लीद' (तक़्लीद को छोड़ना) के लिहाज़ से है; बाक़ी अंबिया और औलिया वगैरह से मुताल्लिक़ मसाइल में उनके शिर्क(बहुदेववाद) की ऊँची उड़ानों को देखिए। फ़क़ीर ने अपने रिसाले 'इकमल अल-ताम्माह अला शिर्क सिवा बिल-उमूर अल-आम्माह' में कलाम-ए-इलाही की साठ आयतों और हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तीन सौ (300) हदीसों से साबित किया है कि उनके इस बे-अदब मज़हब के मुताबिक़ न सिर्फ़ उम्मत-ए-मरहूमा बल्कि अंबिया-ए-किराम, मलाइका-ए-इज़ाम और ख़ुद हुज़ूर पुरनूर सैयदुल अनाम अलैहि अफ़ज़ल अल-सलात वल-सलाम, यहाँ तक कि ख़ुद रब्बे इज़्ज़त जल्ल व अला तक कोई भी शिर्क से महफ़ूज़ नहीं है। वला हौला वला.कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम। फिर ऐसे नापाक मज़हब के कुफ़्रियात के वाज़ेह होने में कौन मुसलमान हिचकिचा सकता है? फिर ये बातिल अक़ीदे और गुमराह कुन बातें जब उन हज़रात के मज़हब के उसूल हैं, तो किसी वहाबी साहब का उनसे खाली होना कैसे मुमकिन है? यह वैसा ही होगा जैसे कुछ रवाफ़िज़ के बारे में कहा जाए कि वे 'तबर्रा' और 'तफ़्ज़ील' से पाक हैं। और बिल-फ़र्ज़ मान भी लें कि कोई वहाबी साहब किसी जगह किसी मसलहत से इन तमाम मरदूद अक़ायद और मतरूद अक़्वाल से परहेज़ भी करें, या बिल-फ़र्ज़ हक़ीक़त में वे उनसे खाली हों, तो यह कैसे मुमकिन है कि वे अपने पिछले और अगले, छोटे-बड़े मुसन्निफ़ों, लेखकों और वाज़ों (उपदेशकों)—नज्दी, देहलवी, बंगाली, भोपाली वगैरह—जिनके कलाम में इन बातों की साफ़ वजाहत है, उन सबके कुफ़्रियात या कम से कम 'लुज़ूम-ए-कुफ़्र' (कुफ़्र का लाज़िम होना) का इक़रार करें? क्या दुनिया में कोई ऐसा वहाबी निकलेगा जो अपने अगले-पिछले पेशवाओं और हम-मज़हबों के कुफ़्र और लुज़ूम-ए-कुफ़्र का इक़रार करे? और 'किताब अल-तौहीद', 'तक़्वियत अल-ईमान', 'सिरात-ए-मुस्तक़ीम', 'तनवीर अल-ऐनैन' और भोपाली, सूरजगढ़ी और बटालवी वगैरह की तसानीफ़ में जितने बातिल अहकाम हैं, जिन्होंने—अल्लाह की पनाह—मुसलमानों पर शिर्क का हुक्म लगाया या जो माज़-अल्लाह ख़ुदा और रसूल और अंबिया और मलाइका सब तक पहुँचा, उन सबको कुफ़्र कह दे? अल्लाह की पनाह, हरगिज़ नहीं! बल्कि वे यक़ीनन उन्हें अच्छा समझते हैं, उन्हें अपना इमाम, पेशवा और नेक आलिम मानते हैं और उनके जुमलों और अक़्वाल को या तो सही और मक़बूल समझते हैं या उन पर राज़ी रहते हैं। और ख़ुद कुफ़्रिया बकना या कुफ़्रियात पर राज़ी होना, या उन्हें कुफ़्र न जानकर उनके लिए कोई सही मानी निकालना—इन सबका एक ही

हुक्म है। 'इलाम बि-क़वाति अल-इस्लाम' में हमारे बड़े उलमा से उन उमूर के बयान में जो सर्वसम्मति से कुफ़्र हैं, नक़्ल किया गया है:

मन तलफ्फ़ज़ा बिलफ्ज़ि कुफ्रिन यकफुरु व कज़ा कुल्लु मन ज़हिका औ इस्तहसनहु औ रज़िया बिही यकफुरु | जिसने कुफ़्रिया कलमा बोला उसे काफिर क़रार दिया जाएगा, वैसे ही जिसने उस कुफ़्रिया कलमे पर हँसी की या उसे अच्छा समझा या उस पर राज़ी हुआ, उसे भी काफिर क़रार दिया जाएगा। (त)

1 इलाम बि-क़वाति अल-इस्लाम, सबील अल-नजात के साथ, मतबआ हक़ीक़ह इस्तांबुल तुर्की, सफ़ा 366. पेज 383 of 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

پھر یہ بھی ان کے صرف ایک مسئلہ ترکِ تقلید کی رو سے ہے باقی مسائل متعلقہ انبیاء واولیاء وغیرہم میں ان کے شرک کی اونچی اڑانیں دیکھئے۔ فقیر نے رسالہ اکمال الطامۃ علی شرک سوٰی بالأمور العامۃ میں کلام الہی کی ساٹھ آیتوں اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی تین سو ۳۰۰ حدیثوں سے ثابت کیا ہے کہ ان کے مذہب نامہذب پر نہ صرف امتِ مرحومہ بلکہ انبیائے کرام وملائکہ عظام و خود حضور پر نور سید الانام علیہ افضل الصلوٰۃ والسلام حتی کہ خود رب العزۃ جل وعلا تک کوئی بھی شرک سے محفوظ نہیں ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم، پھر ایسے مذہب ناپاک کے کفریات واضح ہونے میں کون مسلمان تامل کر سکتا ہے، پھر یہ عقائد باطلہ ومقالاتِ زائغہ جب ان حضرات کے اصولِ مذہب ہیں تو کسی وہابی صاحب کا ان سے خالی ہونا کیونکر معقول، یہ ایسا ہو گا جس طرح کچھ روافض کو کہا جائے تبرا وتفضیل سے پاک ہیں، اور بالفرض تسلیم بھی کر لیں کہ کوئی وہابی صاحب کسی جگہ کسی مصلحت سے ان تمام عقائد مردودہ واقوال مطروحہ سے تحاشی بھی کریں یا بالفرض غلط فی الواقع ان سے خالی ہوں تو یہ کیونکر متصور کہ ان کے اگلے پچھلے چھوٹے بڑے مصنف مؤلف واعظ مکب نجدی دہلوی بنگالی بھوپالی وغیرہم جن کے کلام میں ان اباطیل کی تصریحات ہیں یہ صاحب ان سب کے کفریات یا اقل درجہ لزومِ کفر کا اقرار کریں کیا دنیا میں کوئی وہابی ایسا نکلے گا کہ اپنے اگلے پچھلوں پیشواؤں ہم مذہبوں سب کے کفر ولزومِ کفر کا مقر ہو اور جتنے احکام باطلہ سے کتاب التوحید و تقویۃ الایمان و صراط مستقیم و تنویر العینین و تصانیف بھوپالی وسورج گڑھی وبٹالوی وغیرہم میں مسلمانوں پر حکمِ شرک لگا یا جو معاذ اللہ خدا و رسول و انبیاء وملائکہ سب تک پہنچا ان سب کو کفر کہہ دے حاش للہ ہر گز نہیں، بلکہ قطعاً انہیں اچھا جانتے امام و پیشوا و صلحائے علما

مانتے اور ان کے کلمات واقوال کو یا معنی ومقبول سمجھتے اور ان پر رضا رکھتے ہیں اور خود کفریات بکنا یا کفریات پر راضی ہونا برابرانہ جاننا ان کے لیے معنی صحیح ماننا سب کا ایک ہی حکم ہے، اعلام بقواطع الاسلام میں ہمارے علمائے اعلام سے ان امور کے بیان میں جو بالاتفاق کفر ہیں نقل فرمایا:

من تلفظ بلفظ کفر یکفر و کذا کل من ضحک او استحسنہ اورضی بہ یکفر ۱ | جس نے کلمہ کفریہ بولا اس کو کافر قرار دیا جائے گا، یونہی جس نے اس کلمہ کفر پر ہنسی کی یا اس کی تحسین کی اور اس پر راضی ہوا اس کو بھی کافر قرار دیا جائے گا (ت)

۱ اعلام بقواطع الاسلام ملحق بسبیل النجاۃ مطبعہ حقیقہ استنبول ترکی ص ۳۶۶ Page 383 of 739

Fatawa Razawiyyah Volume 11

In Bahr-ul-Raiq it is stated: Whoever appreciates the speech of the people of desires (innovators) and says it is meaningful or its speech has a correct meaning, if that word is disbelief from the speaker, the one who appreciates it also becomes a disbeliever. (Note: This is because) he praised the one who uttered words of disbelief, or termed it purposeful, or declared its meaning correct; so if it was a word of disbelief, the speaker is a disbeliever and so is the one who appreciated it. (T)

Thus, on the face of the earth, there will be no Wahhabi upon whom disbelief (kufr) is not necessitated by the rulings of the noble jurists (Fuqaha), and the permissibility of marriage is not a question, rather it's a legal issue. Thus, here the ruling of the jurists will be that marriage with them is fundamentally not permissible, whether the man is a Wahhabi, or the woman is a Wahhabiyyah and the man is a Sunni. Yes, it is certain that in this matter we adopt the saying of the theologians (Mutakallimin), and among them, whoever does not deny any necessity of religion nor calls any denier of religious necessities a Muslim, we do not call him a disbeliever, but this is only for the sake of caution. Regarding excommunication (takfir), as far as possible, caution lies in remaining silent. However, the same caution that prevented takfir there will prevent marriage here; for when by the ruling of the majority of jurists, disbelief is necessitated upon them, then marriage with them is adultery. So caution here lies in staying away from it and keeping Muslims away. For God's sake, be fair, would the sound heart of any Sunni of correct belief tolerate that any of his respected female relatives be involved in such a calamity which the noble jurists describe as lifelong adultery? Silence from takfir was a caution for the tongue, and avoiding this marriage is a caution for the private parts (chastity). What kind of Sharia is it that you exercise caution in the matter of the tongue and show lack of caution in the matter of chastity? Be fair, looking at the reality, the ruling becomes clear to this extent that in reality, no Wahhabi will be found free from these absurdities, and in legal rulings, actual occurrences are considered, not unrealistic possibilities.

Rather, they have clarified that the basis of legal rulings is upon the majority of cases, rare occurrences are not taken into consideration. (T)

And if we go beyond this and suppose a Wahhabi who himself is free from all these blasphemies and considers all former and latter Wahhabi proponents of these blasphemies as misguided and of bad religion, rather, suppose he considers the proponents of blasphemies and knows them to be essentially disbelievers, and his

Wahhabism is only to the extent that, despite being a commoner, he does not consider following (taqlid) necessary and, without the capability of independent reasoning (ijtihad), abandons the following of Mujtahids and considers it permissible to derive rulings himself from the Quran and Hadith, then there is no doubt that this hypothetical person also contradicts the definitive Quranic verse: "So ask the people of knowledge if you do not know." (T)

1. Bahr-ul-Raiq, Chapter: Rulings of Apostates, H.M. Saeed Company Karachi, 5/122.
2. Al-Quran 16/43.

फ़तावा रज़विया ग्यारहवाँ भाग

बह्र-उर-राइक़ में है: जिसने कुफ़्र की बात को सराहा या उसे उद्देश्यपूर्ण ठहराया, या उसके अर्थ को सही करार दिया, तो अगर यह शब्द कुफ़्र है तो इसका कहने वाला काफ़िर होगा और इसकी प्रशंसा करने वाला भी। (नोट: इसका कारण यह है कि) उसने कुफ़्र की बात की प्रशंसा की या उसे उद्देश्यपूर्ण ठहराया, या उसके अर्थ को सही बताया; तो अगर वह कुफ़्र का शब्द था, तो कहने वाला काफ़िर है और वह भी जिसने उसे सराहा। (त)

तो दुनिया के पर्दे पर कोई वहाबी ऐसा न होगा जिस पर फुक़हा-ए-किराम (श्रेष्ठ न्यायविदों) के निर्देशों से कुफ़्र लाज़िम न हो और निकाह का जायज़ या नाज़ायज़ होना कोई मसला नहीं, बल्कि एक फ़िक़्ही मसला है, तो यहाँ फुक़हा का हुक्म यही होगा कि उनसे निकाह मूल रूप से जायज़ नहीं है, चाहे मर्द वहाबी हो या औरत वहाबिया और मर्द सुन्नी। हाँ, यह ज़रूर है कि हम इस बाब (अध्याय) में मुतक़ल्लिमीन (धार्मिक विचारकों) का कथन अपनाते हैं और उनमें जो किसी ज़रूरी दीन का मुनकिर (इनकारी) नहीं है और न ही ज़रूरी दीन के किसी मुनकिर को मुसलमान कहता है, उसे काफ़िर नहीं कहते। लेकिन यह सिर्फ एहतियात (सावधानी) के लिए है। तक़्फ़ील (काफ़िर करार देने) के बारे में यथासंभव एहतियात इसी में है कि खामोश रहें। लेकिन वही एहतियात जो वहाँ तक़्फ़ील को रोकने वाली थी, यहाँ निकाह को रोकने वाली होगी; क्योंकि जब अधिकांश फुक़हा के हुक्म से उन पर कुफ़्र लाज़िम है, तो उनसे निकाह ज़िना (व्यभिचार) है। तो यहाँ एहतियात इसी में है कि इससे दूर रहें और मुसलमानों को भी दूर रखें। अल्लाह के लिए इंसाफ करें, क्या किसी सही अक़ीदे वाले सुन्नी फुक़हा का पवित्र हृदय यह गवारा करेगा कि उसकी कोई अज़ीज़ा (प्रिय महिला संबंधी) ऐसी मुसीबत में मुब्तला हो जिसे फुक़हा उम्र भर का ज़िना बताते हों? तक़्फ़ील से खामोशी ज़बान के लिए एहतियात थी और इस निकाह से परहेज़ शर्मगाह (शुचिता) की रक्षा के लिए एहतियात है। यह कैसी शरीअत है कि ज़बान के मामले में एहतियात बरतें और शर्मगाह के मामले में लापरवाही? इंसाफ करें तो हकीकत को देखते हुए हुक्म इसी हद तक स्पष्ट हो गया कि वास्तविकता में कोई भी वहाबी इन खुराफात (असंगतियों) से खाली नहीं निकलेगा, और फ़िक़्ही अहकाम में हकीकतों का ही लिहाज़ होता है, न कि अवास्तविक संभावनाओं का।

बल्कि उन्होंने स्पष्ट किया है कि फ़िक़्ही अहकाम का आधार अधिकांश मामलों पर होता है, दुर्लभ मामले संज्ञान में नहीं लिए जाते। (त)

और अगर इससे आगे बढ़कर किसी ऐसे वहाबी की कल्पना करें जो स्वयं इन तमाम कुफ़्र वाली बातों से मुक्त हो और इन बातों को कहने वाले तमाम पूर्ववर्ती और परवर्ती वहाबियों को गुमराह और बद-मज़हब मानता हो, बल्कि मान लीजिए कि वह कुफ़्र वाली बातें कहने वालों को जानता है और उन्हें लाज़िम-उल-कुफ़्र (निश्चित रूप से काफ़िर) ही समझता है, और उसकी वहाबियत सिर्फ इस हद तक हो कि आम आदमी होने के बावजूद वह तक़्लीद (अनुसरण) को ज़रूरी नहीं समझता और इज्तिहाद (स्वतंत्र निर्णय) की योग्यता न होने के बावजूद मुज्तहिदीन की पैरवी छोड़कर खुद कुरान और हदीस से हुक्म निकालना जायज़ समझता है, तो इस हद तक भी शक नहीं कि यह कल्पित व्यक्ति भी आयत-ए-करीमा 'फ़स-अलू अहलज़-ज़िक्री इन कुंतुम ला ता'लमून' (अगर तुम नहीं जानते तो अहले ज़िक्र यानी विद्वानों से पूछो) के खिलाफ है। (त)

1. बह्र-उर-राइक़, बाब अहकाम-उल-मुर्तदीन, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 5/122.
2. अल-कुरान 16/43.

بحر الرائق میں ہے: من حسن کلام اھل الاھواء وقال معنوی اوکلام لہ معنی صحیح ان کان ذلك کفرا من القائل کفر المحسن ۔ جس نے بے دینی کی بات کو سراہا یا بامقصد قرار دیا، یا اس کے معنی کو صحیح قرار دیا تو اگر یہ کلمہ کفر ہو تو اس کا قائل کافر ہوگا اور اس کی تحسین کرنے والا بھی (ت)

تو دنیا کے پردے پر کوئی وہابی ایسا نہ ہوگا جس پر فقہائے کرام کے ارشادات سے کفر لازم نہ ہو اور نکاح کا جواز عدم جواز نہیں مگر ایک مسئلہ فقہی، تو یہاں حکم فقہا یہی ہوگا کہ ان سے مناکحت اصلاً جائز نہیں خواہ مرد وہابی ہو، یا عورت وہابیہ اور مرد سنی، ہاں یہ ضرور ہے کہ ہم اس باب میں قول متکلمین اختیار کرتے ہیں اور ان میں جو کسی ضروری دین کا منکر نہیں نہ ضروری دین کے کسی منکر کو مسلمان کہتا ہے اسے کافر نہیں کہتے مگر یہ صرف برائے احتیاط ہے، درباره تکفیر حتی الامکان احتیاط اس میں ہے کہ سکوت کیجئے، مگر وہی احتیاط جو وہاں مانع تکفیر ہوئی تھی یہاں مانع نکاح ہوگی کہ جب جمہور فقہائے کرام کے حکم سے ان پر کفر لازم نہیں تو ان سے مناکحت زنا ہے تو یہاں احتیاط اسی میں ہے کہ اس سے دور رہیں اور مسلمانوں کو باز رکھیں، للہ انصاف کسی سنی صحیح العقیدہ فقہائے کرام کا قلب سلیم گوارا کرے گا کہ اس کی کوئی عزیزہ کریمہ ایسی بلا میں مبتلا ہو جسے فقہائے کرام عمر بھر کازنا بتائیں، تکفیر سے سکوت زبان کے لیے احتیاط تھی اور اس نکاح سے احتراز فرج کے واسطے احتیاط ہے یہ کونسی شرع کہ زبان کے باب میں احتیاط کیجئے اور فرج کے بارے میں بے احتیاطی، انصاف کیجئے تو بنظر واقع حکم اسی قدر سے منقح ہو لیا کہ نفس الامر میں کوئی وہابی ان خرافات سے خالی نہ نکلے گا اور احکام فقہیہ میں واقعات ہی کا لحاظ ہوتا ہے نہ احتمالات غیر واقعیہ کا،

بل صرحوا ان احکام الفقہ تجری علی الغالب من دون نظر الی النادر۔ بلکہ انہوں نے تصریح کی ہے کہ فقہی احکام کا مدار غالب امور بنتے ہیں، نادر امور پیش نظر نہیں ہوتے۔ (ت)

اور اگر اس سے تجاوز کرکے کوئی وہابی ایسا فرض کیجئے جو خود بھی ان تمام کفریات سے خالی ہو اور ان کے قائلین جملہ وہابیہ سابقین ولا حقین سب کو گمراہ و بد مذہب مانتا بلکہ بالفرض قائلان کفریات مانتا اور لازم الکفر ہی جانتا ہو اس کی وہابیت صرف اس قدر ہو کہ باوصف عامیت تقلید ضروری نہ جانے اور بے صلاحیت اجتہاد پیروی مجتہدین چھوڑ کر خود قرآن و حدیث سے اخذ احکام روا مانے تو اس قدر میں شک نہیں کہ یہ فرضی شخص بھی آیہ کریمہ قطعیہ فَسْئَلُوْا اَھْلَ الذِّکْرِ اِنْ کُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (اگر یہ نہیں جانتے تو اہل ذکر (علماء) سے پوچھو۔ت)

1 بحر الرائق باب احکام المرتدین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۲/۵ 2 القرآن ۱۶/ ۴۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

And it contradicts the definitive consensus (Ijma) of all the early imams (Salaf). Even if, according to the jurists (Fuqaha), it avoids the necessity of disbelief (Kufr), there can be no doubt that it falls outside the consensus, follows a path other than that of the believers, and is misguidance and irreligiousness. Just as, according to the theologians (Mutakallimin), apart from the two types mentioned previously who are certainly disbelievers, all other types of Wahhabis [are also misguided]. Now, if a mature (baligha) Sunni woman marries such a person, and her guardian (wali) was aware of that person's wrong beliefs before the marriage and did not explicitly consent to the marriage – whether because he was not informed of his wrong beliefs at all, or he wasn't aware of the intention before the marriage, or he became aware of him being of a wrong sect and of this intention but remained silent and did not clearly express consent; or if the woman is a minor (na-baligha) and the marrying guardian is other than the father or grandfather, or if they are a father or grandfather who had previously misused their guardianship to marry [her] to a non-compatible (ghair-kufu) person, or if they were intoxicated at the time of marriage – in all these cases, this marriage will also be void (batil) and pure adultery (zina-e-khalis), because a person of a wrong sect cannot be a suitable match (kufu) for a Sunni woman, the daughter of a Sunni. These aforementioned rulings apply to marrying a non-compatible (ghair-kufu) person. It is stated in 'Durr al-Mukhtar':

Arabic Quote	Translation/Explanation
Compatibility (Kufu) is considered among both Arabs and non-Arabs in terms of piety (Diyanat), meaning fear of God. Thus, a sinful (fasiq) person will not be a suitable match for a virtuous woman. (Nahr)[1]	Piety and God-fearing are considered for compatibility among Arabs and non-Arabs; thus a sinful person will not be a match for a pious woman. (Nahr) (T)

It is stated in 'Ghuniyah':

Arabic Quote	Translation/Explanation
An innovator (mubtadi) is a sinner in terms of belief, and this is more severe than sin in terms of action.[2]	Being sinful in belief is worse than being sinful in action. (T)

It is stated in 'Tanwir al-Absar' and 'Sharh Alai':

Arabic Quote	Translation/Explanation
Marriage with a non-compatible person is binding if the one conducting the marriage is the father or grandfather, provided they have not previously misused their choice. If such misuse is known, the marriage is not valid by consensus. Similarly, if [the guardian] is intoxicated (Bahr). And if the one conducting the marriage is other than these two, marriage with a non-compatible person is not valid at all.[3]	If the father or grandfather conducted the marriage, then even in a non-compatible case, this marriage will be binding, provided that the father and grandfather have not previously misused their discretion. And if misuse is known, then by consensus this marriage will not be valid. And if the father or grandfather is intoxicated, then also by consensus the marriage will not be valid (Bahr). And if the marriage was not conducted by the father or grandfather, then the marriage in a non-compatible case will not be valid. (T)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Kafa'ah (Compatibility), Matba' Mujtabai Delhi, 1/195.
2. Ghuniyat al-Mustamli, Sharh Munyat al-Musalli, Section on Imamat, Suhail Academy Lahore, p. 512.
3. Durr al-Mukhtar, Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of al-Wali (The Guardian), Matba' Mujtabai Delhi, 1/192.

फतावा रज़विया जिल्द 11

और यह तमाम सलफ़ अइम्मा (पूर्वजों) के कतई इज्मा (निश्चित सर्वसम्मति) के खिलाफ है। यदि यह फुक़हा (न्यायविदों) के अनुसार कुफ्र की अनिवार्यता से बच भी जाए, तो इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि यह इज्मा से बाहर है, मोमिनों के मार्ग के अलावा किसी अन्य मार्ग का अनुसरण करना है, और गुमराही तथा बद-दीनी (अधर्म) है। जैसा कि मुतक्लिमीन (ईश्वरविज्ञानी) के अनुसार, पहले वर्णित दो प्रकार के निश्चित काफिरों के अलावा, वहाबियों की अन्य सभी श्रेणियां [भी गुमराह हैं]। अब, यदि कोई बालिग सुन्नी महिला अपना निकाह किसी ऐसे व्यक्ति से करे और निकाह से पहले उसका वली (अभिभावक) उस व्यक्ति की बद-मज़हबी (गलत पंथ) से अवगत हो, तो उसे स्पष्ट रूप से इस निकाह के लिए अपनी सहमति व्यक्त नहीं करनी चाहिए - चाहे इसलिए कि उसे उसकी बद-मज़हबी की सूचना ही न हो, या निकाह से पहले इस इरादे की खबर न हुई हो, या बद-मज़हब होने और इस इरादे का पता चला हो लेकिन वह चुप रहा हो और स्पष्ट सहमति प्रकट न की हो; या यदि महिला नाबालिग हो और निकाह कराने वाला वली पिता या दादा के अलावा कोई और हो, या ऐसे पिता या दादा हों जिन्होंने इससे पहले अपनी विलायत (अभिभावकत्व) का उपयोग करके किसी गैर-कुफ़ू (अयोग्य) से निकाह कराया हो, या निकाह के समय वे नशे में हों - इन सभी स्थितियों में, यह निकाह भी बातिल (अमान्य) और खालिस जिना (शुद्ध व्यभिचार) होगा, क्योंकि एक बद-मज़हब व्यक्ति किसी सुन्नी की बेटी सुन्नी महिला का कुफ़ू (योग्य वर) नहीं हो सकता। और गैर-कुफ़ू के साथ निकाह करने के बारे में यही नियम ऊपर बताए गए हैं। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी उद्धरण	**अनुवाद/व्याख्या**
अरब और गैर-अरब दोनों में कुफ़ू (योग्यता) का आधार दयानत यानी तक़वा (परहेजगारी) है। अतः एक फासिक (पापी) व्यक्ति एक नेक महिला का कुफ़ू नहीं होगा। (नहर)[1]	अरबी और अजमी (गैर-अरब) लोगों के कुफ़ू में दयानत और तक़वा का एतबार है, तो फासिक शख्स नेक औरत का कुफ़ू न होगा। (नहर) (त)

'गुनिया' में है:

अरबी उद्धरण	अनुवाद/व्याख्या
बिदअती (नवाचारी) विश्वास के मामले में फासिक है, और यह कर्म के मामले में फासिक होने से अधिक गंभीर है।[2]	एतकाद (विश्वास) में फासिक होना, अमल (कर्म) में फासिक होने से ज्यादा बुरा है। (त)

'तन्वीरुल अबसार' और 'शरह अलाई' में है:

अरबी उद्धरण	अनुवाद/व्याख्या
गैर-कुफ़ू में निकाह तब लाज़िम (अनिवार्य) होता है जब निकाह पिता या दादा ने किया हो, बशर्ते कि पिता और दादा ने इससे पहले अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल न किया हो। और यदि गलत अधिकार का इस्तेमाल करना ज्ञात हो, तो सर्वसम्मति से यह निकाह सही नहीं होगा। इसी तरह यदि [अभिभावक] नशे में हो (बहर)। और यदि निकाह कराने वाला इन दोनों (पिता/दादा) के अलावा कोई और हो, तो गैर-कुफ़ू में निकाह कतई सही नहीं होगा।[3]	अगर बाप या दादा ने निकाह किया तो गैर-कुफ़ू में भी यह निकाह लाज़िम होगा बशर्ते कि बाप और दादा ने इससे पहले इख़्तियार (विकल्प) को गलत इस्तेमाल न किया हो, और अगर वह गलत इख़्तियार इस्तेमाल कर चुका हो तो बिल-इत्तेफ़ाक यह निकाह सही न होगा, और अगर बाप या दादा नशे में हो तब भी बिल-इत्तेफ़ाक निकाह सही न होगा (बहर) और निकाह वालिद और दादा ने न किया तो गैर-कुफ़ू में निकाह सही न होगा। (त)

1. दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-कफ़ा'ह (योग्यता का अध्याय), मतबअ मुजतबाई दिल्ली, 1/195।
2. गुनियात अल-मुस्तमली शरह मुनियत अल-मुसल्ली, इमामत का खंड, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 512।
3. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाबू अल-वली (अभिभावक का अध्याय), मतबअ मुजतबाई दिल्ली, 1/192।

اور اجماع قطعی تمام ائمہ سلف کا مخالف ہے یہ اگر بطورِ فقہاء لزوم کفر سے بچ بھی گیا تو خارج اجماع ومتبع غیر سبیل المومنین و گمراہ و بد دین ہونے میں کلام نہیں ہو سکتا جس طرح متکلمین کے نزدیک دو قسم پیشین کافر بالیقین کے سوا باقی جمیع اقسام کے وہابیہ، اب اگر عورت سنیہ بالغہ اپنا نکاح کسی ایسے شخص سے کرے اور اس کا ولی پیش از نکاح اس شخص کی بد مذہبی پر آگاہ ہو کہ صراحتاً اس سے نکاح کئے جانے کی رضا مندی ظاہر نہ کرے خواہ یوں کہ اسے اس کی بد مذہبی پر اطلاع ہی نہ ہو یا نکاح سے پہلے اس قصد کی خبر نہ ہوئی یا بد مذہب ہونا اور اس ارادہ پر مطلع بھی ہوا مگر سکوت کیا صاف رضا کا مظہر نہ ہوا، یا عورت نابالغہ ہو اور ولی مزوج اب وجد کے سوا یا اب وجد ایسے جو اس سے پہلے اپنی ولایت سے کوئی تزویج کسی غیر کفو سے کر چکے ہوں یا وقت تزویج نشے میں ہوں ان سب صورتوں میں یہ بھی نکاح باطل و زنائے خالص ہو گا کہ بد مذہب کسی سنیہ بنت سنی کا کفو نہیں ہو سکتا اور غیر کفو کے ساتھ تزویج میں یہی احکام مذکورہ ہیں، در مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ/تشریح
الکفاءۃ تعتبر فی العرب والعجم دیانۃ ای تقوی ۱ فلیس فاسق کفو الصالحۃ۔ نہر ۱	عربی اور عجمی لوگوں کے کفو میں دیانت اور تقوٰی کا اعتبار ہے تو فاسق شخص نیک عورت کا کفو نہ ہوگا، نہر (ت)

غنیہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ/تشریح
المبتدع فاسق من حیث الاعتقاد وھو اشد من الفسق ۲ من حیث العمل ۲۔	اعتقاد فاسق، عمل فاسق سے زیادہ برا ہے۔(ت)

تنویر الابصار و شرح علائی میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ/تشریح
لزم النکاح بغیر کفو ان المزوج اباو جدالم یعرف منھما سوء الاختیار وان عرف لا یصح النکاح اتفاقا وکذا لو سکران بحر، وان المزوج غیرھما لایصح النکاح من غیر کفؤ اصلا ۳۔	اگر باپ یا دادا نے نکاح کیا تو غیر کفو میں بھی یہ نکاح لازم ہوگا بشرطیکہ باپ اور دادا نے اس سے قبل اختیار کو غلط استعمال نہ کیا ہو، اور اگر وہ غلط اختیار استعمال کر چکا ہو تو بالاتفاق یہ نکاح صحیح نہ ہوگا، اور اگر باپ یا دادا نشے میں ہو تب بھی بالاتفاق نکاح صحیح نہ ہوگا (بحر) اور نکاح والد اور دادا نے نہ کیا تو غیر کفو میں نکاح صحیح نہ ہوگا۔ (ت)

۱ در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۵ ۲ غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی الامامۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۲ ۳ در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲

جلد یازدہم (Volume 11) فتاوی رضویہ (Fatawa Razawiyya)

In it, it is stated:

[Arabic Text Block] If a sane, adult free woman marries without her guardian's (wali) consent, the marriage will be valid. However, in the case of a non-equal (ghair-kufu), the fatwa of non-permissibility will be given, and this is the preferred view for fatwa due to the corruption of the times. Thus, a woman divorced three times will not be lawful for her first husband if she marries a non-equal without the wali's consent, provided the wali knows he is a non-equal. Keep this in mind. (T)

In Rad al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Text Block] It is not necessary for the guardian to explicitly express his disapproval; rather, his silence in this matter constitutes lack of consent. The phrase "without consent" applies to cases after knowing of non-equality, as well as the denial of consent without such knowledge, and consent given when the non-equality was unknown. In these three scenarios, she does not become lawful [to the first husband]. She only becomes lawful in the fourth scenario, which is when the guardian knows the person is a non-equal and despite that, he agrees to the marriage. This is summarized. (T)

From this luminous discourse, an answer is obtained to a doubt that arises in some minds: since marriage with the People of the Book is permissible, and innovators (mubtadi'een) are worse than them, yet a non-conformist (Ghair-Muqallid) is a Muslim, then why the hesitation in a marriage between a Muslim man and a Muslim woman? What does marriage with the People of the Book mean? Does it mean a Muslim man marrying a Kitabiyah (female scripturist) infidel? We will, God willing, soon discuss the permissibility and non-permissibility of this. Here, it is enough that the issue revolves around the marriage of a Sunni woman to a Wahhabi man. How can an analogy of a woman to a man be correct? After all, what was the difference for which the pure Sharia considered the marriage of a Muslim woman to a Kitabi as adultery, but considered the marriage of a Muslim man to a Kitabiyah as valid? If a Muslim man can bring an infidel woman under his authority, why is it necessary...

---

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.
2. Rad al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297.

جلد یازدہم (ग्यारहवीं जिल्द) فتاوی رضویہ (फ़तावा रजविया)

उन्हीं में है:

[अरबी पाठ ब्लॉक] यदि एक बुद्धिमान, वयस्क स्वतंत्र महिला ने अपने संरक्षक (वली) की सहमति के बिना विवाह किया, तो विवाह प्रभावी होगा। और गैर-कुफ़ू (गैर-समान) के मामले में अमान्यता का फ़तवा दिया जाएगा, और यही फ़तवा के लिए चुना गया मत है क्योंकि समय में बिगाड़ आ गया है। अतः तीन बार तलाक़ दी गई महिला भी यदि वली की सहमति के बिना गैर-कुफ़ू में विवाह करती है, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी, जबकि वली को यह ज्ञात हो कि वह गैर-कुफ़ू है। याद रखें। (त)

रद-उल-मुहतार में है:

[अरबी पाठ ब्लॉक] वली के लिए अपनी असहमति व्यक्त करने हेतु स्पष्टीकरण आवश्यक नहीं है, बल्कि इस मामले में उसकी खामोशी ही असहमति है। उसके कथन "बिना सहमति" का अर्थ है कुफ़ू और गैर-कुफ़ू के ज्ञान के बाद सहमति का न होना, और इसी प्रकार ज्ञान के बिना भी सहमति का न होना, और गैर-कुफ़ू होने का ज्ञान न होने पर दी गई सहमति। इन तीन स्थितियों में वह हलाल नहीं होगी। केवल चौथी स्थिति में हलाल होगी, और वह यह है कि वली को गैर-कुफ़ू का ज्ञान हो और इसके बावजूद वह विवाह पर सहमत हो। यह संक्षेप में है। (त)

इस स्पष्ट विवेचन से उस संदेह का एक उत्तर प्राप्त हुआ जो कुछ मस्तिष्कों में उत्पन्न होता है कि जब अहले किताब (ग्रंथ वाले) से विवाह जायज़ है, और नवाचारी (मुब्तदी) उनसे भी गए-गुजरे हैं, फिर भी गैर-मुक़ल्लिद एक मुस्लिम है, तो मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम महिला के निकाह में क्या हिचकिचाहट है? अहले किताब से निकाह का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ यह है कि एक मुसलमान पुरुष किसी किताबी काफ़िरा को अपने निकाह में लाए? हम इंशाअल्लाह तआला जल्द ही इसकी वैधता और अवैधता पर चर्चा करेंगे। यहाँ इतना ही पर्याप्त है कि विचाराधीन मुद्दा एक सुन्नी महिला और वहाबी पुरुष के निकाह का है। पुरुष पर महिला की तुलना करना कैसे सही हो सकता है? आखिर वह क्या अंतर था जिसके लिए पाक शरीयत ने किताबी पुरुष से मुस्लिम महिला के निकाह को ज़िना माना, और मुस्लिम पुरुष का किताबी महिला से निकाह सही माना? यदि एक मुसलमान पुरुष किसी काफ़िरा को अपने अधिकार में ला सके तो क्या ज़रूरी है...

1. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई देहली 1/191।
2. रद-उल-मुहतार, बाबुल वली, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बैरुत 2/297।

جلد یازدہم فتاوی رضویہ

انہی میں ہے:

نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلارضی ولی و بہ یفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلاوھو المختار للفتوی لفساد الزمان فلا تحل مطلقۃ ثلثا نکحت غیر کفو بلارضی ولی بعد معرفتہ ایاہ فلیحفظ۔ عاقلہ بالغہ نے ولی کی رضا کے بغیر نکاح کیا تو نکاح نافذ ہوگا اور غیر کفو میں عدم جواز کا فتوی دیا جائیگا اور یہی فتوی کے لیے مختار ہے کیونکہ زمانہ میں فساد آگیا ہے، تو مطلقہ ثلاثہ بھی اگر ولی کی رضا کے بغیر غیر کفو میں نکاح کرے تو پہلے خاوند کے لیے حلال نہ ہوگی جبکہ ولی کو یہ معلوم ہو کہ وہ غیر کفو ہے یاد رکھو۔(ت)

ردالمحتار میں ہے :

لا یلزم التصریح بعدم الرضا بل السکوت منہ لا یکون رضی و قولہ بلا رضی یصدق بنفی الرضی بعد المعرفۃ و بعدھا و بوجود الرضی مع عدم المعرفۃ ففی ھذہ الصور الثلثہ لا تحل و انما تحل في الصورۃ الرابعۃ وھی رضی الولی بغیر الکفو مع علمہ بانہ کذلک اھ ا ھ الکل مختصر۔ ولی کو اپنی عدم رضا مندی کے اظہار کے لیے تصریح ضروری نہیں ہے بلکہ اس بارے میں اس کا خاموش رہنا ہی عدم رضا ہے اس کے قول "بغیر رضا" کا مصداق کفو غیر کفو کے علم کے بعد اور اسی طرح علم کے بغیر رضا کی نفی اور غیر کفو کا علم نہ ہونے پر رضا مندی، ان تین صورتوں میں حلال نہ ہوگی، صرف چوتھی صورت میں حلال ہے اور وہ یہ ہے کہ ولی کو غیر کفو کا علم ہو اور اس کے باوجود وہ نکاح پر راضی ہوا ھ ح تمام اختصاراً (ت)

اس تقریر منیر سے اس شبہ کا ایک جواب حاصل ہوا جو یہاں بعض اذہان میں گزرتا ہے کہ جب اہل کتاب سے مناکحت جائز ہے تو مبتدعین ان سے بھی گئے گزرے ، غیر مقلد مسلم ہے پھر نکاح مسلم و مسلمہ میں کیا توقف، اہل کتاب سے مناکحت کے کیا معنی ، آیا یہ کہ مسلمان مرد کا کتابیہ کافرہ کو اپنے نکاح میں لانا، اس کے جواز و عدم جواز سے ہم ان شاء اللہ تعالیٰ عنقریب بحث کریں گے یہاں اسی قدر کافی ہے کہ مسئلہ دائرہ میں عورت سنیہ اور مرد وہابیہ کے نکاح سے بحث ہے، عورت کا مرد پر قیاس کیونکر صحیح، آخر وہ کیا فرق تھا جس کے لیے شرع مطہر نے کتابی سے مسلمہ کا نکاح زنا مانا اور مسلم کا کتابیہ سے صحیح جانا، اگر مسلمان مرد کسی کافرہ کو اپنے تصرف میں لاسکے تو کیا ضرور ہے

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ 2 رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۹۷

Fatawa Razawiyyah - Volume 11

That a Sunni woman should also come under the control of a misguided person; equality (Kafa'at) of the man is considered for the woman by consensus (Ijma'), based on which the aforementioned rulings are derived. However, for an adult man, the equality of the woman is of no consequence because the meanness of the bed (partner) does not become a cause of deep-seated resentment for him.

In Al-Durr al-Mukhtar: Equality is considered from the side of the man because a noble woman refuses to be a bed (wife) for a lowly man. It is not considered from her side because the husband is the one who makes use of the bed, so the meanness of the bed does not provoke his resentment. - Summarized.	**In Durr-e-Mukhtar, it is stated that being a peer (Kufu) is considered from the man's side because a noble woman refuses to be the wife of an insignificant man. And from the woman's side, being a peer for the man is not considered because a husband can take a wife even if she is of low status, he does not feel shame because of that. Summarized (T).**

The Wahhabi faith is misguided. If any noble woman, without the explicit consent of her guardian (Wali), as mentioned above, marries a Sunni of correct belief and a pious weaver, or a guardian other than the father or grandfather marries off his minor girl to such a person, will it be invalid and void or not? It will definitely be void. Then are these pious Sunnis even worse than them? And why was the ruling of invalidity given in the marriage of a Muslim man and a Muslim woman? "Haza wal-narji'u ila ma kunna fihi" (Keep this in mind and let us return to our discussion. - T). These were cases of invalidity of marriage due to lack of equality. If there is a case other than these where lack of equality is not a barrier to validity, then first understand that in the terminology of jurisprudence (Fiqh), "Jawaz" (permissibility) is used in two senses: one in the sense of validity (Sehat), which is more common in contracts (Uqood). This contract is 'jaiz', meaning it is valid and yields results like benefit of ownership of enjoyment, or ownership by right hand, or ownership of benefits, even if it is prohibited and a sin, like selling at the time of the Friday Adhan. Second, in the sense of lawfulness (Hillat), which is more prevalent in actions (Af'aal). This work is 'jaiz', meaning it is lawful, not forbidden, not a sin, and there is no Sharia prohibition. It is stated in Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, section on waters:

The scholars sometimes use "Jawaz" to mean lawfulness (al-hill) and sometimes to mean validity (al-sihhah). Validity necessitates lawfulness, but not vice versa. Generally, the first is intended in actions and the second in contracts.	**Scholars use the word "Jawaz" sometimes in the sense of being lawful and sometimes in the sense of being valid, whereas being valid necessitates being lawful. Predominantly, it is used in the sense of being lawful in actions and in the sense of being valid in contracts. (T)**

Similarly, Allama Sayyid Ahmad Misri has quoted and established it in the marginalia of Al-Durr. It is in Al-Durr al-Mukhtar:

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Equality, Mujtabai Press, Delhi, 1/194.
2. Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/26.

कि सुन्नी औरत भी बद-मज़हब (गुमराह) के अधिकार में जाए; औरत के लिए पुरुष की कुफ़ूअत (समानता) पर सर्वसम्मति (इजमा) से विचार किया जाता है, जिसके आधार पर उक्त नियम निकाले गए हैं। और वयस्क पुरुष के हक में औरत की कुफ़ूअत का कोई महत्व नहीं है क्योंकि बिस्तर (जीवनसाथी) की नीचता उसके लिए गहरे गुस्से का कारण नहीं बनती।

अद-दुर्र अल-मुख्तार में है: कुफ़ूअत पुरुष की ओर से विश्वसनीय है क्योंकि एक कुलीन महिला नीच पुरुष का बिस्तर बनने से इनकार करती है। और उसकी ओर से विचार नहीं किया जाता क्योंकि पति बिस्तर का उपयोग करने वाला है, इसलिए बिस्तर की नीचता उसे क्रोधित नहीं करती। - संक्षेप में।

दुर्रे मुख्तार में है कि कुफ़ू पुरुष की ओर से विश्वसनीय है क्योंकि शरीफ़ (कुलीन) औरत, तुच्छ पुरुष की पत्नी बनने से इनकार करती है और औरत की ओर से पुरुष के लिए कुफ़ू होना विश्वसनीय नहीं है क्योंकि पति तो पत्नी बना लेता है चाहे औरत मामूली ही क्यों न हो, वह इस वजह से शर्म महसूस नहीं करता। संक्षेप में (त)।

वहाबी मज़हब गुमराह है। यदि कोई शरीफ़ (कुलीन) महिला, अपने वली (अभिभावक) की स्पष्ट सहमति के बिना, जैसा कि ऊपर बताया गया है, किसी सही अक़ीदे (विश्वास) वाले और नेक सुन्नी जुलाहे से निकाह कर ले, या पिता और दादा के अलावा कोई वली अपनी नाबालिग लड़की का निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दे, तो क्या यह नाजायज़ और बातिल (अमान्य) होगा या नहीं? निश्चित रूप से बातिल होगा। फिर क्या ये नेक सुन्नी उनसे भी गए गुज़रे हैं? और मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम महिला के निकाह में अमान्यता का हुक्म क्यों हुआ? "हज़ा वल-नरजिउ इला मा कुन्ना फ़ीहि" (इसे याद रखें और हमें अपनी चर्चा की ओर लौटना चाहिए - त)। ये निकाह की अमान्यता की सूरतें कुफ़ूअत की कमी के कारण थीं। और अगर इनके अलावा वह सूरत हो जहाँ कुफ़ूअत की कमी स्वास्थ्य (वैधता) के लिए बाधा नहीं है, तो पहले इतना समझ लें कि फिक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की शब्दावली में "जवाज़" दो अर्थों में उपयोग होता है: एक "सेहत" (वैधता) के अर्थ में, और अनुबंधों (उक़ूद) में यही अधिक प्रचलित है; यह अनुबंध 'जायज़' है यानी सही है और फल (लाभ) देने वाला है जैसे संभोग के स्वामित्व का लाभ, या दासी के स्वामित्व का लाभ, या लाभों का स्वामित्व, चाहे वह निषिद्ध और पाप ही क्यों न हो, जैसे जुमे की अज़ान के समय की गई बिक्री। दूसरा "हिल्लत" (वैधता/वैध होने) के अर्थ में, और कार्यों (अफ़आल) में यही अधिक प्रचलित है; यह काम 'जायज़' है यानी

हलाल है, हराम नहीं, गुनाह नहीं, शरई मनाही नहीं है। बहरुल रैक़, किताबुत तहारत, पानी के बयान में है:

उलेमा कभी 'जवाज़' का प्रयोग 'हिल्ल' (वैधता) के अर्थ में करते हैं और कभी 'सिह्हा' (वैधता/सही होने) के अर्थ में। सिह्हा पहले के लिए अनिवार्य है (जो सही है वह वैध भी है) लेकिन इसका विपरीत नहीं। अधिकतर कार्यों में पहला अर्थ और अनुबंधों में दूसरा अर्थ अभीष्ट होता है।

उलेमा शब्द "जवाज़" को कभी हलाल होने के अर्थ में और कभी सही होने के अर्थ में इस्तेमाल करते हैं, जबकि सही होना हलाल होने के लिए अनिवार्य है। अधिकतर कार्यों में हलाल होने और अनुबंधों में सही होने के अर्थ में इस्तेमाल होता है। (त)

इसी तरह अल्लामा सैय्यद अहमद मिस्री ने हाशिया दुर्र में उद्धृत किया और इसे स्थापित रखा। दुर्र अल-मुख्तार में है:

---

1. दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-कफ़ाअत, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/194।
2. बहरुल रैक़, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/26।

کہ سنیہ عورت بھی بد مذہب کے تصرف میں جائے، عورت کے لئے کفاءت مرد بالاجماع ملحوظ جس کی بنا پر احکام مذکورہ متفرع ہوئے اور مرد بالغ کے حق میں کفاءت زن کا کچھ اعتبار نہیں کہ دناءت فراش وجہ غیظ مستقرش نہیں ہوتی۔

فی الدرالمختار الکفاءۃ معتبرۃ من جانب الرجل لان الشریفۃ تأبی ان تکون فراشا للدني ولا تعتبر من جانبها لان الزوج مستفرش فلاتغیظه دناءۃ الفراش 1- ملخصاً

در مختار میں ہے کہ کفو مرد کی طرف سے معتبر ہے کیونکہ شریف عورت، حقیر مرد کی بیوی بننے سے انکاری ہوتی ہے اور عورت کی طرف سے مرد کے لئے ہم کفو ہونا معتبر نہیں ہے کیونکہ خاوند تو بیوی بنالیتا ہے خواہ عورت ادنی ہو، وہ اس وجہ سے عار نہیں پاتا۔ ملخصاً (ت)

وہابی توبہ مذہب گمراہ ہے اگر کوئی زن شریفہ بے رضائے صریح ولی برو جہ مذکور کسی سنی صحیح العقیدہ صالح حائک سے نکاح کر لے یا غیر ولی غیر اب وجد اپنی صغیرہ کو کسی ایسے سے بیاہ دے تو نا جائز و باطل ہو گا یا نہیں، ضرور باطل ہے پھر یہ سنی صالح کیا ان سے بھی گیا گزرا، اور نکاح مسلم و مسلمہ میں کیوں بطلان کا حکم ہوا، ھذا ولنرجع الی ما کنا فیہ (اس کو محفوظ کرو اور ہمیں اپنی بحث کی طرف لوٹنا چاہئے۔ ت) یہ صورتیں بطلان نکاح بوجہ عدم کفاءت کی تھیں اور اگر ان کے سوا وہ صورت ہو جہاں عدم کفاءت مانع صحت نہیں تو پہلے اتنا سمجھ لیجئے کہ عرف فقہ میں جواز دو معنی پر مستعمل، ایک بمعنی صحت اور عقود میں یہی زیادہ متعارف، یہ عقد جائز ہے یعنی صحیح مثمر ثمرات مثل افادہ ملک متعہ یا ملک یمین یا ملک منافع ہے اگر چہ ممنوع و گناہ ہو جیسے بیع وقت اذان جمعہ، دوسرے بمعنی حلت اور افعال میں

یہی زیادہ مروج، یہ کام جائز ہے یعنی حلال ہے، حرام نہیں، گناہ نہیں، ممانعت شرعیہ نہیں، بحر الرائق کتاب الطھارۃ بیان میاہ میں ہے :

المشائخ تارة يطلقون الجواز بمعنى الحل وتارة بمعنى الصحة وهي لازمة للاول من غير عكس والغالب ارادة الاول فى الافعال والثاني في العقود -2

مشائخ لفظ "جواز" کو کبھی حلال ہونے کے معنی میں اور کبھی صحیح ہونے کے معنی میں استعمال کرتے ہیں جبکہ صحیح ہونا حلال ہونے کو لازم ہے، غالب طور پر افعال میں حلال ہونے اور عقود میں صحیح ہونے کے معنی میں استعمال ہوتا ہے (ت)

اسی طرح علامہ سید احمد مصری نے حاشیہ در میں نقل کیا اور مقرر رکھا، در مختار میں ہے:

---

1 در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۴ 2 بحر الرائق کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۲۶

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

"It is permissible to remove ritual impurity with what has been mentioned etc. (To remove ritual impurity with the mentioned thing is permissible etc. - Translator's note)." On this, it is stated in Radd al-Muhtar: "It is permissible, i.e., valid, even if it is not lawful, such as with usurped water. And this meaning is better here than intending lawfulness, even though 'valid' is predominantly used in contracts and 'lawful' in actions." (2) 'Jawazu' (permissible) means valid, even if it is not lawful, for example, using stolen/usurped water; and this meaning is better here instead of taking the meaning of being lawful, although 'valid' is commonly used for contracts and 'lawful' for actions. (T)

In Durr al-Mukhtar, the Book of Drinks: "The sale of things other than wine is valid as mentioned, and its implication is the validity of the sale of hashish and opium. I say: Ibn Nujaym was asked about the sale of hashish, 'Is it permissible?' He wrote, 'It is not permissible.' So, it is interpreted that his intent behind 'lack of permissibility' was 'lack of lawfulness'." (3) The sale of things other than wine from the mentioned items is valid, which implies that the sale of hashish and opium is valid. I say that Ibn Nujaym was asked about the sale of hashish, whether it is permissible, so he wrote 'La Yajuz' (it is not permissible) in response. His purpose with non-permissibility is non-lawfulness (prohibition of use). (T)

In short, these two applications of jawaz (permissibility) are common and widespread, and besides them, there are other applications too, the details of which are: Note: Sometimes it is applied with the meaning of 'enforcement/effectiveness' (Nafadh), as stated in the chapter of Kifa'ah in Tanwir: If someone orders another to marry him to a woman and he marries him to a slave girl, it is jaza (permissible), meaning it is enforced, because the discussion there is about enforcement, not about permissibility. (5) This was stated by the three commentator masters (H, T, Sh). And sometimes the application of jawaz is also on "enforcement", as it is in the chapter of Kifa'ah of Tanwir. If someone tells another, "Marry me to some woman," and he marries him to a slave girl, it is permissible, meaning it is enforced, because here the talk is about enforcement, there is no discussion on permissibility. (Continued on the next page)

1. Durr al-Mukhtar, Book of Purification, Mujtabai Press Delhi, 1/35
2. Radd al-Muhtar, Book of Purification, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/123
3. Durr al-Mukhtar, Book of Drinks, Mujtabai Press Delhi, 3/260

4. Durr al-Mukhtar, Chapter of Kifa'ah, Mujtabai Press Delhi, 1/195
5. Radd al-Muhtar, Chapter of Kifa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/325

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

"जिक्र की गई चीज़ के साथ ह़दथ (अशुद्धता) को दूर करना जायज़ है इत्यादि। (मज़कूर चीज़ के साथ ह़दथ को ख़त्म करना जायज़ है - त)" इसी पर रद-उल-मुह्तार में कहा गया है: "जायज़ है यानी सही है, चाहे वह ह़लाल न हो, जैसे कि ग़सब (छीने हुए) पानी के साथ, और यही अर्थ यहाँ बेहतर है बजाय इसके कि ह़लाल वाला अर्थ लिया जाए, हालाँकि 'सही' का उपयोग अधिकतर अनुबन्धों में और 'ह़लाल' का कार्यों में होता है।" (2) जायज़ का मतलब सही है, चाहे वह ह़लाल न हो, उदाहरण के लिए, छीने हुए पानी के साथ; और यही अर्थ यहाँ बेहतर है बजाय इसके कि ह़लाल वाला अर्थ लिया जाए, हालाँकि सही का उपयोग अधिकतर अनुबन्धों में और ह़लाल का कार्यों में होता है। (त)

दुर्रे मुख़्तार किताबुल अशरबा में है: "शराब के अलावा अन्य चीज़ों की बिक्री सही है जैसा कि उल्लेख किया गया है, और इसका तात्पर्य हशीश और अफीम की बिक्री की वैधता है। मैं कहता हूँ: इब्न नुजैम से हशीश की बिक्री के बारे में पूछा गया था, 'क्या यह जायज़ है?' तो उन्होंने लिखा, 'जायज़ नहीं है।' अतः इसका अर्थ यह निकाला जाता है कि 'अ-जायज़' से उनका अभिप्राय 'अ-ह़लाल' (अवैधता) था।" (3) उल्लिखित चीज़ों में से शराब के अलावा अन्य की बिक्री सही है, जिसका अर्थ यह है कि हशीश और अफीम की बिक्री सही है। मैं कहता हूँ कि इब्न नुजैम से हशीश की बिक्री के बारे में पूछा गया था कि क्या वह जायज़ है, तो उन्होंने जवाब में लिखा 'ला-यजूज़' (जायज़ नहीं है)। उनका उद्देश्य अ-जायज़ से अ-ह़लाल (उपयोग की मनाही) है। (त)

संक्षेप में, 'जवाज़' के ये दोनों प्रयोग प्रसिद्ध और व्यापक हैं, और इनके अलावा अन्य प्रयोग भी हैं जिनका विवरण है: नोट: कभी-कभी इसका उपयोग 'नफ़ाज़' (लागू होने) के अर्थ में भी होता है जैसा कि तनवीर के किफ़ाअत अध्याय में कहा गया है: यदि कोई किसी दूसरे से कहे कि मेरी शादी किसी औरत से कर दे और वह उसकी शादी एक दासी से कर दे, तो वह 'जायज़' है, यानी लागू है, क्योंकि वहाँ चर्चा लागू होने के बारे में है, न कि जायज़ होने के बारे में। (5) यह बात तीन व्याख्याकार स्वामियों (ह़, त, श) ने बताई है। और कभी 'जवाज़' का प्रयोग 'नफ़ाज़' पर भी होता है जैसा कि तनवीर के किफ़ाअत के अध्याय में है, अगर किसी ने दूसरे को कहा कि मेरा निकाह किसी औरत से कर दे तो उसने दासी से निकाह कर दिया तो जायज़ है यानी लागू है क्योंकि यहाँ नफ़ाज़ (लागू होने) की बात हो रही है, जवाज़ (वैधता) पर बहस नहीं है। (बाकी अगले पन्ने पर)

1. दुर्रे मुख़्तार किताबुत तह़ारत, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/35

2. रद-उल-मुह्तार किताबुत तह़ारत, दार एह़्या-उत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 1/123

3. दुर्रे मुख़्तार किताबुल अशरबा, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 3/260

4. दुर्रे मुख़्तार बाबुल किफ़ाअत, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/195

5. रद-उल-मुह्तार बाबुल किफ़ाअत, दार एह़्या-उत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/325

पृष्ठ 388/739

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

یجوز رفع الحدث بما ذکر الخ (مذکور چیز کے ساتھ حدث کو ختم کرنا جائز ہے الخ ۔ت) اسی پر ردالمحتار میں کہا: یجوز ای یصح وان لم یحل في نحو الماء المغصوب وھو اولی من ارادۃ الحل وان کان الغالب ارادۃ الاول فی العقود والثانی فی الافعال - 2 یجوز یعنی صحیح، اگر چہ حلال نہ ہو، مثلا غصب شدہ پانی کے ساتھ، اور یہی معنی یہاں بہتر ہے بجائیکہ حلال والا معنی مراد لیا جائے اگر چہ صحیح غالب طور پر عقود میں اور حلال افعال میں استعمال ہوتا ہے۔ (ت)

در مختار کتاب الاشر بہ میں ہے: صح بیع غیر الخمر مامر و مفادہ صحۃ بیع الحشیشۃ والا فیون قلت وقد سئل ابن نجیم عن بیع الحشیشۃ ھل یجوز فکتب لا یجوز فیحمل علی ان مرادہ بعدم الجواز عدم الحل - 3 مذکورہ چیزوں میں سے غیر خمر کی بیع صحیح ہے جس کا مفادیہ ہے کہ حشیش اور افیون کی بیع صحیح ہے، میں کہتا ہوں کہ ابن نجیم سے حشیش کی بیع کے متعلق پوچھا گیا کہ وہ جائز ہے تو انہوں نے جواب میں لکھا لایجو ز۔ ان کا مقصد عدم جواز سے عدم حل ہے۔ (ت)

با لجملہ جواز کے یہ دونوں اطلاق شائع وذائع ہیں اور ان کے سوا اور اطلاقات صہ بھی ہیں جن کی تفصیل سے صہ: فقد یطلق بمعنی النفاذ کما قال فی کفاءۃ التنویر امرہ بتزویج امرأۃ فزوجہ امۃ جاز 4 ای نفذ لان الکلام ثمہ في النفاذ لافي الجواز 5 افادہ السادات الثلثۃ المحشون ح ط ش اور کبھی جواز کا اطلاق "نفاذ" پر بھی ہوتا ہے جیسا کہ تنویر کے کفاءۃ کے باب میں ہے، اگر کسی نے دوسرے کو کہا کسی عورت سے میرا نکاح کر دے تو اس نے لونڈی سے نکاح کردیا تو جائز ہے یعنی نافذ ہے کیونکہ یہاں نفاذ میں بات ہورہی ہے جواز میں بحث نہیں، (باقی اگلے صفحہ پر)

1 درمختار کتاب الطهارۃ مطبع مجتبائی دہلی ۳۵/۱ 2 ردالمحتار کتاب الطهارۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۲۳/۱ 3 درمختار کتاب الاشربہ مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۰/۳ 4 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۵/۱ 5 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۵/۲

Fatawa Razawiyya, Volume Eleven

There is no debate here. Now, in this specific case, 'jawaz' (permissibility) in the sense of validity (sihhat) is necessary; meaning, if the marriage is performed, it will be valid. And 'hall' (lawfulness) in the sense of benefit— (continued from previous page footnote) —was explained by three venerable commentators—namely, Halabi, Tahtawi, and Shami. These meanings are specifically related to the first two meanings of correctness (sihhat) and being lawful (halal) in one respect because sometimes a contract is valid and halal yet it becomes effective despite not being lawful, such as a sale after the Friday prayer call for an unknown duration of credit. And sometimes a contract is lawful and valid but is not effective, such as an unauthorized (fudhuli) sale that meets all the conditions of being lawful and valid. In Radd al-Muhtar, it is stated that a suspended (mawqoof) sale is a type of valid sale, which is one of the two ways used by the masters, and this is the correct view, etc. And 'jawaz' in the sense of bindingness (luzum) is also used. It is mentioned in the issue of pledges (rahn) in Durr al-Mukhtar that possession is a condition for bindingness, just as it is in gifts (hibah). Upon this, Allama Shami said that it is stated in Al-Inayah that this is contrary to the general narration. Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) stated that a pledge is not valid without possession. And in Al-Sa'diyyah, it is mentioned that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said that a gift is not permissible without possession, whereas possession is not a condition for the validity (jawaz) of a gift. It is appropriate that here too it should be thus. The gist of it is that here, in the matter of pledges as well, the interpretation of 'jawaz' in Imam Muhammad's statement should be taken as bindingness (luzum), not validity (sihhat), as the jurists (fuqaha) did regarding gifts, meaning the meaning of 'la yajuz' is this.

[Arabic quote in left column]: "...and it is narrower from one aspect than both health (validity) and lawfulness. A contract might be effective but not valid or lawful, like a sale at the time of the call to Friday prayer for an unknown term. It might be valid and lawful but not effective, like the sale by an unauthorized person (fuduli) that meets the conditions of validity and lawfulness. He said in Radd al-Muhtar: its apparent meaning is that the suspended [sale] is a category of the valid, and it is one of two ways for the masters, and it is the truth, etc. And it may be used in the sense of bindingness. He said in the pledge [section] of al-Durr: possession is a condition for bindingness, as in gift. Al-Shami said: it is stated in al-'Inayah that it is contrary to the narration of the commonality. Muhammad said: the pledge is not permissible except when possessed. And in al-Sa'diyyah: that he, peace and blessings be upon

him, said: the gift is not permissible except when possessed. And possession is not a condition of permissibility in the gift, so let it be the same there. And the summary of it is that permissibility should be interpreted here too..."

1. Radd al-Muhtar, Book of Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/4.
2. Durr al-Mukhtar, Book of Pledges, Matba Mujtabai Delhi, 4/265.

यहाँ बहस नहीं है। अब इस विशेष मामले में, वैधता (सिहत) के अर्थ में 'जवाज़' (अनुमति) आवश्यक है; यानी, यदि निकाह कर दिया जाए, तो वह मान्य होगा। और लाभ के अर्थ में 'हल' (वैधता) को—(पिछले पृष्ठ के फ़ुटनोट से निरंतर) —तीन सम्मानित टीकाकारों—अर्थात हलबी, तहतावी और शामी ने स्पष्ट किया है। ये अर्थ पहले दो अर्थों 'सही' (सिहत) और 'हलाल' होने से एक पहलू से विशिष्ट हैं क्योंकि कभी-कभी एक अनुबंध सही और हलाल होने के बावजूद प्रभावी (नाफ़िज़) हो जाता है, जैसे जुमे की अज़ान के बाद किसी अज्ञात अवधि के उधार पर बिक्री। और कभी-कभी अनुबंध हलाल और सही होता है लेकिन प्रभावी नहीं होता, जैसे कि एक अनधिकृत (फ़ुज़ूली) बिक्री जो हलाल और सही होने की सभी शर्तों को पूरा करती है। रद अल-मुह्तार में कहा गया है कि निलंबित (मौक़ूफ़) बिक्री एक प्रकार की सही बिक्री है, जो विद्वानों (मशाइख़) द्वारा उपयोग किए जाने वाले दो तरीकों में से एक है, और यही सही दृष्टिकोण है, इत्यादि। और 'जवाज़' शब्द का प्रयोग 'लुज़ूम' (अनिवार्यता/बाध्यता) के अर्थ में भी किया जाता है। दुर्रे मुख्तार के गिरवी (रहन) के मुद्दे में है कि कब्ज़ा अनिवार्यता के लिए एक शर्त है, जैसा कि उपहार (हिबा) में होता है। इस पर अल्लामा शामी ने कहा कि इनाया में कहा गया है कि यह सामान्य वर्णन के विरुद्ध है। इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फरमाया कि कब्ज़ा किए बिना गिरवी सही नहीं है। और सादिया में है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि कब्ज़ा किए बिना उपहार जायज़ नहीं है, जबकि उपहार के जायज़ होने के लिए कब्ज़ा शर्त नहीं है। यह उचित है कि यहाँ भी ऐसा ही हो। इसका सार यह है कि यहाँ गिरवी के मामले में भी इमाम मुहम्मद के कथन में 'जवाज़' की व्याख्या 'लुज़ूम' (अनिवार्यता) के साथ की जानी चाहिए, न कि सिहत (वैधता) के साथ, जैसा कि न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने उपहार में किया है, यानी 'ला यजुज़' का अर्थ यही है।

1. रद अल-मुह्तार, किताबुल बुयू, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/4।
2. दुर्रे मुख्तार, किताबुर रहन, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 4/265।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

یہاں بحث نہیں۔ اب اس صورت خاصہ میں جواز بمعنی صحت ضرور ہے یعنی نکاح کر دیں تو ہو جائے گا اور حل بمعنی (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اس فائدے کو تین بزرگوار محشی حضرات ـــــ یعنی حلبی، طحطاوی اور شامی نے بیان کیا، اور یہ معنی پہلے دو معنی صحیح اور حلال ہونے سے خاص من وجہ ہے کیونکہ کبھی عقد صحیح اور حلال ہونے کے باوجود نافذ ہوتا ہے جیسے جمعہ کی اذان کے بعد بیع مجہول مدت کے ادھار پر ہو، اور کبھی عقد حلال اور صحیح ہوتا ہے لیکن نافذ نہیں ہوتا، جیسا کہ فضولی کی وہ بیع جو حلال اور صحیح ہونے کی شرائط کی جامع ہو، ردالمحتار میں کہا کہ موقوف بیع، صحیح کی قسم ہے اور یہ مشائخ کے استعمال کے دو طریقوں میں سے ایک ہے اور یہی حق ہے الخ اور جواز بمعنی لزوم بھی استعمال ہوتا ہے، درمختار کے مسئلہ رہن میں ہے کہ قبضہ لزوم کے لیے شرط ہے جیسا کہ ہبہ میں ہوتا ہے اھ، اس پر علامہ شامی نے کہا کہ عنایہ میں کہا ہے کہ یہ عام روایت کے خلاف ہے، امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ رہن، قبضہ کے بغیر صحیح نہیں اھ اور سعدیہ میں ہے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کہ ہبہ قبضہ کے بغیر جائز نہیں، جبکہ ہبہ کے جواز کے لیے قبضہ شرط نہیں ہے، مناسب ہے کہ یہاں بھی یونہی ہو اس کا حاصل یہ ہے کہ یہاں رہن کے معاملہ میں بھی امام محمد کے قول میں جواز کی تفسیر لزوم کے ساتھ کی جائے نہ کہ صحت کے ساتھ جیسا کہ فقہاء نے ہبہ میں کیا یعنی لایجوذ کا معنی یہی

[عربی عبارت بائیں کالم میں]: وهو اخص من وجه من الصحة والحل جميعا فقد ينفذ عقد ولايصح ولايحل كالبيع عند اذان الجمعة الى اجل مجهول وقد يصح ويحل ولاينفذ كبيع فضولي مستجمعا شرائط الصحة والحل . قال في ردالمحتار ظاهره ان الموقوف من قسم الصحيح وهو احد طريقين للمشائخ وهو

الحق الخ وقد يطلق بمعنى اللزوم قال في رهن الدر القبض شرط اللزوم كما في الهبة اه قال الشامى قال في العناية هو مخالف لرواية العامة قال محمد لايجوز الرهن الامقبوضا اه وفى السعديه انه عليه الصلوة والسلام قال لاتجوز الهبة الامقبوضة والقبض ليس بشرط الجواز في الهبة فليكن هناكذلك اه وحاصله ان يفسر هنا ايضا الجواز

1 ردالمحتار كتاب البيوع داراحياء التراث العربى بيروت ٣/٤ 2 درمختار كتاب الرهن مطبع مجتبائى دہلى ٢٦٥/٤

Fatawa Rizwia | Volume 11

Statements from *Durr-e-Mukhtar* etc.: Marriage with Mu'tazilites is permissible as we do not declare anyone from the People of the Qibla as a disbeliever, even if the charge of disbelief against them is established in academic discussions. (1) (Transl: This is the meaning, yet it is apparent that marriage is a contract, and it was just mentioned from *Bahr al-Raiq*, *Tahtawi*, and *Radd al-Muhtar* that in contracts, the common and prevalent meaning of 'permissibility' (jawaz) is validity (sihhat). However, it is not contradictory to 'lack of permissibility' in the sense of prohibition and sin. It is stated in *Fath al-Qadir*, *Ghunya*, *Bahr al-Raiq*, etc.:)

By 'lack of permissibility' is meant 'lack of lawfulness', i.e., it is not lawful to do so, and this does not contradict validity. (Transl)	*Yuradu bi'adami al-jawazi 'adamu al-hilli ay 'adamu hilli an yuf'ala wa huwa la yunafi al-sihhata*. (2)

As for the permissibility of the act in the sense of a lack of Sharia prohibition—implying that marrying a Sunni woman to innovators is permissible and lawful, such that there is no sin or violation of Sharia laws—this is not the case at all. The instruction of the honorable Mashayikh that "Marriage between the People of Sunnah and the People of Mu'tazila is not permissible" (3) carries this meaning, i.e., intermarriage between Sunnis and Mu'tazilites is not allowed. In *Fatawa Khulasa*, it is stated: "The issue is in *Majmu' al-Nawazil*" (4). This issue is found in *Majmu' al-Nawazil* of Imam Faqih Ahmad bin Musa Kashani, a student of the Mufti of Jinn and Men, Arif Billah Sayyiduna Najm al-Din Umar al-Nasafi. In the same work, it is stated: "Likewise responded Imam al-Rustughfani" (5). Imam Rustughfani gave a similar answer. In *Radd al-Muhtar*, it is cited from *Nihayah* of Imam Saghnaqi, who quoted from his teacher as saying:

Al-Rustughfani imāmun mu'tamadun fī al-qawli wa al-'amali wa law akhadhanā yawma al-qiyāmati lil-'amali bi-riwāyatihi na'khudhuhu kamā akha'dhanā. (6)	Meaning, Rustughfani is a reliable Imam in word and deed. If on the Day of Judgment we are held accountable for acting upon his narration, we will take hold of him, saying we acted upon his instruction.

Footnotes: 1. *Durr-e-Mukhtar*, Section on Prohibited [Marriages], Mujtabai Press, Delhi, 1/189. 2. *Fath al-Qadir*, Chapter on Leadership (Imamate), Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 2/302. 3. *Bahr al-Raiq*, Section on Prohibited [Marriages], H.M. Saeed Company, Karachi, 3/102. 4. *Khulasat al-Fatawa*, Book of Marriage, Another type regarding permission, Maktaba Habibiya, Quetta, 2/6. 5. *Khulasat al-Fatawa*, Book of

Marriage, Another type regarding permission, Maktaba Habibiya, Quetta, 2/6. 6. *Radd al-Muhtar*.

Page 391 of 739

फ़तावा-ए-रजविया | खंड 11

दुर्रे मुख्तार आदि के वाक्यांश: मुताज़िला के साथ विवाह वैध है क्योंकि हम किबला के लोगों में से किसी को काफ़िर नहीं घोषित करते हैं, भले ही बहस के दौरान उन पर कुफ़्र का आरोप साबित हो गया हो। (1) (अनुवाद: इसका यही अर्थ है, पर स्पष्ट है कि निकाह एक अनुबंध है और अभी बहरुर राइक, तहतावी और रद-दुल-मुह्तार से गुज़रा कि अनुबंधों में 'जवाज़' (वैधता) का प्रचलित अर्थ 'सिहत' (सत्यता) होता है, लेकिन यह 'अदम-ए-जवाज़' (अवैधता) के विरोधाभासी नहीं है जिसका अर्थ मनाही और पाप है। फ़तह अल-क़दीर, गुनिया और बहरुर राइक आदि में है:)

'अदम-ए-जवाज़' (अवैधता) से 'अदम-ए-हल्ल' (गैर-कानूनी होना) मुराद लिया जाता है, यानी इसका करना हलाल नहीं है और यह सही (वैध) होने के खिलाफ नहीं है। (अनुवाद)

युरादु बि'अदमि अल-जवाज़ि 'अदमु अल-हल्लि अई 'अदमु हल्लि अन युफ़'अला व हुवा ला युनाफ़ि अल-सिह्तह। (2)

जहाँ तक कार्य की अनुमति (जवाज़े फ़ेल) का प्रश्न है जिसका अर्थ शरिया की मनाही का न होना है—ताकि बिदअतियों के साथ सुन्नी महिला का निकाह करना जायज़ और मुबाह (अनुमेय) हो जाए जिसमें कोई पाप और शरिया के आदेशों का उल्लंघन न हो—तो यह बिल्कुल नहीं है। सम्मानित मशायख का कथन कि "सुन्नत और मुताज़िला के लोगों के बीच निकाह जायज़ नहीं है" (3) इसी अर्थ में है, यानी सुन्नियों और मुताज़िलाओं के बीच निकाह मुबाह नहीं है। फ़तावा खुलासा में कहा गया है: "मसला मजमू अल-नवाज़िल में है" (4)। यह मसला इमाम फ़क़ीह अहमद बिन मूसा कशानी के मजमू अल-नवाज़िल में है, जो जिन्न और इंसानों के मुफ्ती, आरिफ़ बिल्लाह सैयदुना नजमुद्दीन उमर अल-नस्फ़ी के छात्र थे। उसी में कहा गया है: "इमाम रुस्तुगफानी ने भी ऐसा ही जवाब दिया" (5)। इमाम रुस्तुगफानी ने ऐसा ही जवाब दिया। रद-दुल-मुह्तार में निहाया इमाम सग्नाकी से है, उन्होंने अपने शेख से नकल किया है, वे फरमाते थे:

अर-रुस्तुग़फ़ानी इमामम मुअतमदुन फ़िल क़ौलि वल अमलि व लौ अख़ज़्ना यौमल क़ियामति लिल-अमलि बि-रिवाअतिहि नअ-ख़ुज़ुहु कमा अख़ज़्ना। (6)

यानी रुस्तुगफानी कहने और करने में एक भरोसेमंद इमाम हैं। अगर क़यामत के दिन उनकी रिवायत पर अमल करने के लिए हमें पकड़ा गया, तो हम उनका दामन पकड़ेंगे कि हमने उनके आदेश पर अमल किया।

पादलेख (फ़ुटनोट्स): 1. दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/189. 2. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-इमामाह, मकतबा नूरिया रजविया, सुक्कुर, 2/302. 3. बहरुर राइक, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/102. 4. खुलासतुल फ़तावा, किताबुन निकाह, जिन्स आखर फ़िल इजाज़ा, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/6. 5. खुलासतुल फ़तावा, किताबुन निकाह, जिन्स आखर फ़िल इजाज़ा, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/6. 6. रद-दुल-मुह्तार.

عبارات در مختار و غیرہ تجوز مناکحة المعتزلة لانا لانکفر احدا من اھل القبلة وان وقع الزامالھم فی المباحث 1 (معتزلہ سے نکاح جائز ہے ہم اہل قبلہ کی تکفیر نہیں کرتے اگرچہ بحث کے طور پر ان پر کفر کا الزام ثابت ہے۔ ت) کے یہی معنی ہیں، پر ظاہر کہ نکاح عقد ہے اور ابھی بحر الرائق و طحطاوی ورد المحتار سے گزرا کہ عقود میں غالب و شائع جواز بمعنی صحت ہے مگر وہ عدم جواز بمعنی ممانعت و اثم کے منافی نہیں، فتح القدیر و غنیہ و بحر الرائق وغیرہما میں ہے:

یراد بعدم الجواز عدم الحل ای عدم حل عدم جواز سے عدم حل مراد لیا جاتا ہے یعنی اس کا کرنا ان یفعل وھو لاینافی الصحة۔ 2 حلال نہیں اور یہ صحیح کے منافی نہیں۔ (ت)

رہا جواز فعل بمعنی عدم ممانعت شرعیہ بد مذہبوں سے سنیہ عورت کا نکاح کردینا روا و مباح ہو جس میں کچھ گناہ و مخالفت احکام شرع نہ ہو یہ ہرگز نہیں۔ ارشاد مشائخ کرام المناکحة بین اھل السنة واھل الاعتزال لاتجوز 3 کے یہی معنی ہیں یعنی سنیوں اور معتزلیوں میں مناکحت مباح نہیں، فتاوی خلاصہ میں فرمایا: المسألة فی مجموع النوازل 4۔ یہ مسئلہ مجموع النوازل امام فقیہ احمد بن موسی کشنی تلمیذ امام مفتی الجن والانس عارف باللہ سیدنا نجم الدین عمر النسفی میں ہے اسی میں فرمایا: کذا اجاب الامام الرستغفنی 5 امام رستغفنی نے ایسا ہی جواب ارشاد فرمایا۔ ردالمحتار میں نہایہ امام سغناقی سے ہے انھوں نے اپنے شیخ سے نقل کیا وہ فرماتے تھے :

الرستغفنی امام معتمد في القول یعنی رستغفنی امام معتمد ہیں قول وفعل میں، اگر روز قیامت والعمل ولواخذنا یوم القیمة للعمل ان کی روایت پر عمل میں ہم سے گرفت ہوئی تو ہم ان کا دامن بروایته ناخذه کما اخذنا 6۔ پکڑیں گے کہ ہم نے ان کے ارشاد پر عمل کیا۔

حواشی: 1 در مختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی 1/189 2 فتح القدیر باب الامامة مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر 2/302 3 بحر الرائق فصل فی المحرمات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 3/102 4 خلاصۃ الفتاوی کتاب النکاح جنس آخر فی الاجازۃ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ 2/6 5 خلاصۃ الفتاوی کتاب النکاح جنس آخر فی الاجازۃ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ 2/6 6 رد المحتار

Fatawa Rizvia Volume 11

In Wajiz Imam Kardari, it is stated:

[Arabic Box]: I heard from some of the Imams of Khwarazm that one may marry a woman from the Mu'tazilah but not give a woman in marriage to them, just as one marries from the People of the Book but does not give to them. Perhaps this detail was taken from the words of Abu Hafs al-Safkardari.

[Urdu Box]: I heard from some Imams of Khwarazm that one may wed a daughter of a Mu'tazili but should not give one's own daughter in marriage to them. Just as one weds a daughter of a Jew or Christian but does not give one's own daughter in marriage to them. And it is possible that these Imams derived this detail from the saying of Imam Abu Hafs al-Safkardari.

This is the second answer to this doubt, that innovators are even worse than the People of the Book. (Then I say, and success is only from Allah Almighty. - T) If you allow the investigative gaze to wander, many proofs from the pure Shariah are established against the prohibition of marrying a Sunni woman to a person of corrupt beliefs, for example:

Proof One: Allah Almighty said: [Arabic Quranic Verse]: "And if the Devil should cause you to forget, then do not sit after the remembrance with the wrongdoing people."

[Urdu Box]: And if Satan makes you forget, then do not sit with the unjust people after remembering.

Who is more unjust than a person of corrupt beliefs? And what companionship is more permanent than the companionship of marriage, when they are together at all times? That person of corrupt beliefs will surely make her see what shouldn't be seen and hear what shouldn't be heard, and she will have no power to deny it. It is forbidden to voluntarily go to a place where there is evil and it cannot be denied. So how can one create the means for such a disgraceful and heinous situation for oneself or one's helpless, confined, and overpowered minor female ward for a whole lifetime?

Proof Two: Allah the Blessed and Exalted said: [Arabic Quranic Verse]: "And of His signs is that He created for you from yourselves mates that you may find tranquillity in them; and He placed between you affection and mercy."

[Urdu Box]: It is among Allah's signs that He created your mates from among yourselves so that you may find peace with them, and He established friendship and mercy between you.

And it is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

---

1. Fatawa Bazzaziyya on the margins of Fatawa Hindiyya, Kitab an-Nikah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/112.
2. Al-Quran 6:68.
3. Al-Quran 30:21.

फतावा रजविया खंड 11

वजीज़ इमाम करदरी में है:

[अरबी बॉक्स]: मैंने ख्वारज़म के कुछ इमामों से सुना कि मुताज़िली की बेटी से तो विवाह किया जा सकता है लेकिन अपनी बेटी उनके निकाह में न दी जाए, जैसे कि अहले-किताब (यहूदी-ईसाई) की बेटी से विवाह किया जाता है लेकिन अपनी बेटी उन्हें नहीं दी जाती। संभव है कि उन इमामों ने यह विवरण इमाम अबू हफ़्स अस-सफ़करदरी के कथन से लिया हो।

[उर्दू बॉक्स]: मैंने ख्वारज़म के कुछ इमामों से सुना कि मुताज़िली की बेटी तो ब्याह ले और अपनी बेटी उनके निकाह में न दे। जिस तरह यहूदी-ईसाई की बेटी ब्याह लेता है और अपनी बेटी उनके निकाह में नहीं देता। और मुमकिन है कि उन इमामों ने यह तफ़सील इमाम अबू हफ़्स सफ़करदरी के क़ौल से अख़्ज़ की।

यह उस शंका का दूसरा उत्तर है कि बिदअती अहले-किताब से भी बदतर हैं। (फिर मैं कहता हूँ और तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ही से है। - त) अगर तहक़ीक़ की नज़र को खुली छूट दें तो बद-मज़हब के साथ सुन्नी महिला के निकाह के मना होने पर शरीयत-ए-मुतह्हरा से अनेकों प्रमाण मौजूद हैं, उदाहरण के तौर पर:

प्रथम प्रमाण: अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने फ़रमाया: [अरबी कुरान की आयत]: "और अगर शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो।"

[उर्दू बॉक्स]: और अगर शैतान तुझे भुला दे तो याद आने पर ज़ालिमों के पास न बैठो।

बद-मज़हब से ज़्यादा ज़ालिम कौन है? और निकाह की स्थायी सोहबत से बढ़कर कौन सी सोहबत है, जब हर वक़्त का साथ है? और वह बद-मज़हब तो यक़ीनन उसे वह दिखाएगी जो नहीं देखना चाहिए और वह सुनाएगी जो नहीं सुनना चाहिए, और इनकार पर शक्ति न होगी। अपनी इच्छा से ऐसी जगह जाना हराम है जहाँ बुराई हो और उसका विरोध न किया जा सके तो फिर जीवन भर के लिए अपने या अपनी बेबस और मजबूर नाबालिग़ा बच्ची के लिए इस घिनौनी और शर्मनाक स्थिति का सामान पैदा करना कैसा?

दूसरा प्रमाण: अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया: [अरबी कुरान की आयत]: "और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से जोड़े बनाए ताकि तुम उनके पास शांति पाओ, और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया पैदा कर दी।"

[उर्दू बॉक्स]: अल्लाह की निशानियों में से है कि उसने तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े बनाए कि उनसे मिल कर चैन पाओ और तुम्हारे आपस में दोस्ती व मेहर रखी।

और हदीस में है, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

---

1. फतावा बज़ाज़िया, फतावा हिंदिया के हाशिये पर, किताबुन निकाह, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/112.
2. अल-कुरान 6:68.
3. अल-कुरान 30:21.

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

وجیز امام کردری میں ہے:

[Arabic Box]: سمعت عن ائمۃ خوارزم انہ یتزوج من المعتزلی ولایزوج منہم کما یتزوج من الکتابی ولایزوج منہم ولعلہ اخذ ہذا التفصیل من کلام ابی حفص السفکردری ۱۔

[Urdu Box]: میں نے بعض ائمہ خوارزم سے سنا کہ معتزلی کی بیٹی تو بیاہ لے اور اپنی بیٹی ان کے نکاح میں نہ دے۔ جس طرح یہودی نصرانی کی بیٹی بیاہ لیتا ہے اور اپنی بیٹی ان کے نکاح میں نہیں دیتا اور ممکن ہے کہ ان امام نے یہ تفصیل امام ابو حفص سنگردری کے قول سے اخذ کی۔

یہ دوسرا جواب ہے اس شبہ کا، کہ مبتدعین کتابیوں سے بھی گئے گزرے (پھر میں کہتا ہوں اور توفیق اللہ تعالٰی ہی سے ہے۔ ت) اگر نظر تحقیق کو رخصت جولاں دیجئے تو بد مذہب سے سنیہ کی تزویج ممنوع ہونے پر شرع مطہر سے دلائل کثیرہ قائم ہیں مثلاً:

دلیل اول: قال عزوجل [Arabic Quranic Verse]: وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۲۔

[Urdu Box]: اور اگر شیطان تجھے بھلادے تو یاد آنے پر ظالموں کے پاس نہ بیٹھو۔

بد مذہب سے زیادہ ظالم کون ہے اور نکاح کی صحبت دائمہ سے بڑھ کر کون سی صحبت، جب ہر وقت کا ساتھ ہے، اور وہ بد مذہب تو ضرور اس سے نادیدنی دیکھے گی ناشنیدنی سنے گی اور انکار پر قدرت نہ ہوگی اور اپنے اختیار سے ایسی جگہ جانا حرام ہے جہاں منکر ہو اور انکار نہ

ہوسکے نہ کہ عمر بھر کے لیے اپنے یا اپنی قاصرہ مقصورہ عاجز مقہورہ کے واسطے اس فضیحہ شنیعہ کا سامان پیدا کرنا۔

دلیل دوم: قال تبارک وتعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا): [Arabic Quranic Verse]: وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۳۔

[Urdu Box]: اللہ کی نشانیوں سے ہے کہ اس نے تمھیں میں سے تمھارے جوڑے بنائے کہ ان سے مل کر چین پاؤ اور تمھارے آپس میں دوستی و مہر رکھی۔

اور حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

---

۱ فتاویٰ بزازیہ علی ہامش فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح نورانی کتب خانہ پشاور ۱۱۲/۴ ۲ القرآن ۲۸/۶

۳ القرآن ۲۱/۳۰

| Indeed, for a husband in a woman's heart, there is a place that is not for anyone else. [1 - Reported by Ibn Majah and al-Hakim from Muhammad bin Abdullah bin Jahsh, may Allah be pleased with him.] | In a woman's heart, the path that exists for her husband is not for anyone else. (Reported by Ibn Majah and al-Hakim from Muhammad bin Abdullah bin Jahsh, may Allah be pleased with him. - T) |

Verse bears witness that marriage is such a great relationship that it naturally creates mutual intimacy, love, affection, and kindness. And the Hadith is a witness that what a woman has in her heart for her husband, she doesn't have for anyone else. And the love of a heretic is a deadly poison. Allah Almighty says: "And whoever among you takes them as friends, then he is indeed one of them." [2] Whoever keeps friendship with them from among you will be one of them. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

| A man will be with the one he loves. [3 - Reported by Imams Ahmad and the six compilers of Hadith except Ibn Majah, from Anas; and the two Sheikhs (Bukhari and Muslim) from Ibn Mas'ud; and Ahmad and Muslim from Jabir; and Abu Dawud from Abu Dharr; and al-Tirmidhi from Safwan bin Assal. And in this chapter there are narrations from Ali, Abu Hurairah, Abu Musa and others, may Allah be pleased with them.] | A person will be resurrected with the one they love. (This has been narrated by Imam Ahmad, and by the Imams of the Six Authentic Collections except Ibn Majah, from Hazrat Anas; by Bukhari and Muslim from Ibn Mas'ud; by Ahmad and Muslim from Jabir; by Abu Dawud from Abu Dharr; and by Tirmidhi from Safwan bin Abbas. And in this chapter, it is also narrated from Ali, Abu Hurairah, Abu Musa and others, may Allah be pleased with them. - T) |

Third Proof: Allah Almighty said: | "And do not throw [yourselves] with your [own] hands into destruction." [4] | Do not fall into destruction by your own hands, and bad religious belief is true destruction. | Allah Almighty said: "And do not follow desire, for it will mislead you from the way of Allah." [5] (And of desire)

---

1 Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Knowing the Companions, Dar al-Fikr Beirut 2/62, Sunan Ibn Majah, Book of Funerals, Chapter: What has been narrated regarding weeping over the deceased, H.M. Saeed Company Karachi, p. 115. 2 Al-Quran 5/51 3 Sunan Abu Dawud, Book of Etiquette, Aftab-e-Alam Press Lahore 2/344 4 Al-Quran 2/195 5 Al-Quran 38/26

| निश्चय ही, एक महिला के हृदय में पति के लिए एक ऐसा स्थान होता है जो किसी और के लिए नहीं होता। [1 - इसे इब्न माजा और अल-हाकिम ने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।] | एक औरत के दिल में शौहर के लिए जो रास्ता है वह किसी और के लिए नहीं है (इसे इब्न माजा और हाकिम ने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त) |

आयत गवाह है कि विवाह वह महान रिश्ता है जो स्वाभाविक रूप से आपसी घनिष्ठता, प्रेम, स्नेह और दया पैदा करता है। और हदीस गवाह है कि एक महिला के दिल में जो बात पति के लिए होती है, वह किसी और के लिए नहीं होती। और विधर्मी (बद-मज़हब) का प्यार एक घातक जहर है। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "और तुम में से जो कोई उन्हें अपना दोस्त बनाएगा, वह उन्हीं में से होगा।" [2] तुम में से जो उनसे दोस्ती रखेगा, वह उन्हीं में से गिना जाएगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

| मनुष्य उसी के साथ होगा जिससे वह प्रेम करता है। [3 - इसे इमाम अहमद और इब्न माजा के अलावा अन्य छह हदीस संग्रहकर्ताओं ने हज़रत अनस से रिवायत किया है; बुखारी और मुस्लिम ने इब्न मसूद से; अहमद और मुस्लिम ने जाबिर से; अबू दाऊद ने अबू ज़र से; और तिर्मिज़ी ने सफवान बिन अस्साल से। और इस विषय में अली, अबू हुरैरा, अबू मूसा और अन्य रज़ियल्लाहु अन्हुम से भी रिवायतें हैं।] | इंसान का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह प्यार करता है। (इसे इमाम अहमद ने, और इब्न माजा के अलावा सिहाह-ए-सित्ता के अन्य इमामों ने हज़रत अनस से रिवायत किया है; बुखारी और मुस्लिम ने इब्न मसूद से; अहमद और मुस्लिम ने जाबिर से; अबू दाऊद ने अबू ज़र से; और तिर्मिज़ी ने सफवान बिन अब्बास से। और इस विषय में अली, अबू हुरैरा, अबू मूसा और अन्य रज़ियल्लाहु अन्हुम से भी रिवायत है। - त) |

तीसरा प्रमाण: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: | "और अपने ही हाथों विनाश में न पड़ो।" [4] | अपने हाथों से खुद को बर्बादी में न डालो, और विधर्म (बद-मज़हबी) ही असली बर्बादी है। | अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और इच्छा का पालन न करो, वरना वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देगी।" [5] (और इच्छा के)

1 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब मारिफ़त अल-सहाबा, दार अल-फ़िक्र बेरुत 2/62, सुनन इब्न माजा, अबवाब अल-जनाइज़, बाब: मय्यत पर रोने के बारे में क्या आया है, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 115. 2 अल-कुरान 5/51 3 सुनन अबू दाऊद, किताब अल-अदब, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 2/344 4 अल-कुरान 2/195 5 अल-कुरान 38/26

| ان للزوج من المرأة لشعبة ماهی لشئ 1 -رواه ابن ماجة والحاکم عن محمد بن عبدالله بن جحش رضي الله تعالی عنه- | عورت کے دل میں شوہر کے لیے جو راہ ہے کسی کے لیے نہیں (اس کو ابن ماجہ اور حاکم نے محمد بن عبداللہ بن جحش رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت) |

آیت گواہ ہے کہ زن و شوئی وہ عظیم رشتہ ہے کہ خواہی نخواہی باہم انس و محبت الفت و رافت پیدا کرتا ہے اور حدیث شاہد ہے کہ عورت کے دل میں جو بات شوہر کی ہوتی ہے کسی کی نہیں ہوتی، اور بد مذہب کی محبت سم قاتل ہے، اللہ عزوجل فرماتا ہے: وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ 2 تم میں جو ان سے دوستی رکھے گا وہ انہیں میں سے ہو گا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| المرء مع من احب 3 -رواه الائمة احمد والستة الا ابن ماجه عن انس والشیخان عن ابن مسعود واحمد ومسلم عن جابر وابوداؤد عن ابي ذر والترمذي عن صفوان بن عسال وفي الباب عن علي وابي هريرة وابي موسی وغیرهم رضي الله تعالی عنهم- | آدمی کا حشر اسی کے ساتھ ہوگا جس سے محبت رکھتا ہے (اس کو امام احمد نے اور ابن ماجہ کے ماسوا صحاح ستہ کے ائمہ نے روایت کیا ہے حضرت انس سے اور بخاری و مسلم نے ابن مسعود سے، احمد و مسلم نے جابر سے، ابوداؤد نے ابوذر سے، اور ترمذی نے صفوان بن عباس سے، اور اس باب میں علی، ابو ہریرہ، ابو موسٰی وغیرہ ہم رضی اللہ تعالٰی عنہم سے بھی روایت ہے۔ ت) |

دلیل سوم: قال اللہ تعالی (اللہ تعالی نے فرمایا): | لَا تُلْقُوْا بِأَيْدِيْكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ 4 | اپنے ہاتھوں ہلاکت میں نہ پڑو اور بد مذہبی ہلاک حقیقی ہے۔ | قال اللہ تعالی (اللہ تعالی نے فرمایا): وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ 5 (اور خواہش کے)

---

1 المستدرك للحاكم كتاب معرفة الصحابه دارالفكر بيروت ۶۲/۲ ، سنن ابن ماجه ابواب الجنائز باب ماجاء فی البكاء على الميت ايچ ايم سعيد كمپنی كراچی ص ۱۱۵ 2 القرآن ۵۱/۵ 3 سنن ابو داؤد كتاب الادب آفتاب عالم پريس لاہور ۳۴۴/۲ 4 القرآن ۱۹۵/۲ 5 القرآن ۲۶/۳۸

Fatawa Rizvia Volume 11

...do not follow [him], lest he mislead you from the path of Allah. (T) And the influence of company, especially bad company, is proven by authentic Hadiths and experiences. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Hadith Text	Urdu Translation Text
Indeed, the example of a good companion and a bad companion is like that of a carrier of musk and a blacksmith. As for the carrier of musk, he will either give you some for free, or you will buy it from him, or at least you will smell a pleasant fragrance from him. As for the blacksmith, he will either burn your clothes or you will get a foul odor from him. 1 - Narrated by the two Shaikhs from Abu Musa (may Allah be pleased with him).	The analogy of a good and bad companion is such that one has musk and the other blows the bellows. The one with musk will either give it to you for free or you will buy it from him. If nothing else, you will surely get a pleasant fragrance. And the blacksmith will either burn your clothes or you will get a bad smell from him. (Narrated by the Shaikhayn (Imam Bukhari and Muslim) from Abu Musa, may Allah be pleased with him. T)

In another Hadith, he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Hadith Text	Urdu Translation Text
The example of a bad companion is like that of a person at a forge; if its soot does not reach you, its smoke will. 2 - Narrated by Abu Dawud and An-Nasa'i from Anas (may Allah be pleased with him).	A bad companion is like a blacksmith; if you are not reached by his blackness, you will surely be reached by his smoke. (Narrated by Abu Dawud and An-Nasa'i from Hazrat Anas, may Allah be pleased with him. T)

In a third explicit Hadith, he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Hadith Text	Urdu Translation Text
Keep away from them and keep them away from you, so they do not mislead you and do not lead you into trials. 3 - Narrated by Muslim.	Run away from the misguided. Keep them away from yourselves. Lest they mislead you. Lest they put you into trial (Fitna). (Narrated by Muslim. T)

In a fourth Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Hadith Text	Urdu Translation Text
Judge a companion by his companion. 4 - Narrated by Ibn Adi.	Judge a companion by his companion (Narrated by Ibn Adi)

1. Sahih Bukhari, Book of Musk, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/830
2. Sunan Abu Dawud, Chapter on who is ordered to sit with, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/308
3. Sahih Muslim, Chapter on the prohibition of narrating from weak narrators, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/10
4. Kanz al-Ummal, with reference to Abdullah bin Mas'ud, Hadith 24736, Maktaba at-Turath al-Islami Aleppo, 11/89

फतावा रज़विया जिल्द 11

...पीछे न जाना कि वह तुझे अल्लाह की राह से भटका दे। (T) और सोहबत (संगति), विशेष रूप से बुरी संगति का प्रभाव सही हदीसों और अनुभवों से सिद्ध है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी हदीस पाठ	उर्दू अनुवाद पाठ
एक अच्छे साथी और एक बुरे साथी का उदाहरण कस्तूरी ले जाने वाले और धौंकनी फूंकने वाले (लोहार) के समान है। कस्तूरी ले जाने वाला या तो आपको कुछ उपहार देगा, या आप उससे खरीदेंगे, या कम से कम आपको उससे सुखद सुगंध आएगी। और धौंकनी फूंकने वाला या तो आपके कपड़ों को जला देगा या आपको उससे दुर्गंध आएगी। 1 - शैख़ैन द्वारा अबू मूसा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया गया।	अच्छे और बुरे साथी की मिसाल ऐसी है जैसे एक के पास कस्तूरी है और दूसरा धौंकनी फूंकता है। वह कस्तूरी वाला या तो तुझे मुफ़्त दे देगा या तू उससे मोल ले लेगा। और कुछ नहीं तो खुशबू ज़रूर आएगी, और धौंकनी वाला तेरे कपड़े जला देगा या तुझे उससे बदबू आएगी। (इसे शैख़ैन (इमाम बुखारी और मुस्लिम) ने अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। T)

दूसरी हदीस में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी हदीस पाठ	उर्दू अनुवाद पाठ
बुरे साथी का उदाहरण लोहार के समान है; यदि उसकी कालिख तुम तक न पहुँचे, तो उसका धुआँ तुम तक पहुँचेगा ही। 2 - अबू दाऊद और अन-नसाई ने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया।	बुरा साथी धौंकनी वाले की तरह है; तुझे तो उसकी कालिख न पहुँचे तो धुआँ तो पहुँचेगा ही। (इसे अबू दाऊद और नसाई ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। T)

तीसरी स्पष्ट हदीस में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी हदीस पाठ	उर्दू अनुवाद पाठ
उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो, ताकि वे तुम्हें गुमराह न करें और तुम्हें फ़ितनों (परीक्षणों) में न डालें। 3 - मुस्लिम ने रिवायत किया।	गुमराहों से दूर भागो। उन्हें अपने से दूर करो। कहीं वे तुम्हें बहका न दें। कहीं वे तुम्हें फ़ितने में न डाल दें। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया। T)

चौथी हदीस में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी हदीस पाठ	उर्दू अनुवाद पाठ
साथी को उसके साथी के आधार पर आंको। 4 - इब्न अदी ने रिवायत किया।	साथी को साथी पर क़यास करो (इसे इब्न अदी ने रिवायत किया)

1. सहीह बुखारी, बाब अल-मिस्क, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/830
2. सुनन अबू दाऊद, बाब मन युअमर अन युजालिस, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/308
3. सहीह मुस्लिम, बाब अन-नही अन-रवायती अन-ज़ुअफ़ा आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/10
4. कन्ज़ुल उम्माल, अब्दुल्ला बिन मसूद के हवाले से, हदीस 24736, मकतबा अत-तुरास अल-इस्लामी हलब, 11/89

पेज 394/739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

پیچھے نہ جانا کہ تجھے اللہ کی راہ سے بہکا دے گی۔ت) اور صحبت خصوصاً بد کا اثر پڑ جانا احادیث و تجارب صحیحہ سے ثابت ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی متن حدیث	اردو ترجمہ متن
انما مثل الجليس الصالح و جليس السوء كحامل المسك و نافخ الكير فحامل المسك اما ان يحذيك و اما ان تبتاع منه و اما ان تجد منه ريحاً طيبة و نافخ الكير اما ان يحرق ثيابك و اما ان تجد منه ريحاً خبيثة 1 - رواه الشيخان عن ابي موسى رضى الله تعالى عنه۔	اچھے اور برے ہمنشین کی کہاوت ایسی ہے جیسے ایک کے پاس مشک ہے اور دوسرا دھونکنی پھونکتا، وہ اما ان مشک والا یا تجھے مفت دے گا یا تو اس سے مول لے گا۔ اور کچھ نہیں تو خوشبو ضرور آئے گی، اور دھونکنی والا تیرے کپڑے جلا دے گا یا تجھے اس سے بدبو آئے گی، (اسے شیخین (امام بخاری و مسلم) نے ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت)

دوسری حدیث میں فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

عربی متن حدیث	اردو ترجمہ متن
مثل جليس السوء كمثل صاحب الكيران لم يصبك من سواده اصابك من دخانه 2- رواه ابوداؤد والنسائى عن انس رضى الله تعالى عنه۔	برا ہمنشین دھونکنی والے کی مانند ہے تجھے اس کی سیاہی نہ پہنچے تو دھواں تو پہنچے گا۔ (اس کو ابوداؤد اور نسائی نے حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت)

تیسری حدیث صریح میں فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

عربی متن حدیث	اردو ترجمہ متن
ایاکم و ایاھم لا یضلونکم و لا یفتنونکم 3 - رواہ مسلم۔	گمراہوں سے دور بھاگو۔ انھیں اپنے سے دور کرو۔ کہیں وہ تمھیں بہکا نہ دیں۔ کہیں وہ تمھیں فتنے میں نہ ڈال دیں۔ (اس کو مسلم نے روایت کیا۔ت)

چوتھی حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی متن حدیث	اردو ترجمہ متن
اعتبروا الصاحب بالصاحب 4 - رواہ ابن عدی مصاحب کو مصاحب پر قیاس کرو (اس کو ابن عدی	

1 صحیح بخاری باب المسک قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۳۰/۲ 2 سنن ابوداؤد باب من یؤمر ان یجالس آفتاب عالم پریس لاہور ۳۰۸/۲ 3 صحیح مسلم باب النہی عن الروایۃ عن الضعفاء الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۰/۱ 4 کنز العمال بحوالہ عبد اللہ بن مسعود حدیث ۲۴۷۳۶ مکتبہ التراث الاسلامی حلب ۸۹/۱۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

| Narrated by Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him): It is considered Hasan (good) due to its supporting evidences. | He narrated from Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) and based on its supporting evidences, he declared this Hadith to be Hasan. (T) |

In the fifth Hadith, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "Beware of an evil companion, for you will be known by him." - Narrated by Ibn Asakir from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him). | Keep away from an evil companion, for you will be famous for being with him. (Ibn Asakir narrated this from Hazrat Anas bin Malik, may Allah be pleased with him. T) |

Mawla Ali (may Allah honor his face) says:

| "Nothing indicates a thing more, nor does smoke indicate fire, more than a companion indicates his companion." - Mentioned in At-Taysir. | Nothing indicates something else, and smoke does not indicate fire, more than one companion indicates the other. (This was mentioned in At-Taysir. T) |

Wise people say that what reaches the ear has an effect, it doesn't take a lifetime of filling the ears. Then along with that, another supporting factor is the husband being a ruler over her; experienced people say: "The people follow the religion of their kings." (T) The third supporting factor is the abundance of receptivity and influence in women; they are very soft-hearted and easily influenced, so much so that among the experienced they are famous as "wax noses." The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) himself says: "Gently, O Anjashah, with the glass vessels [referring to women]." (O Anjashah! Take care of the crystal/glass vessels. T) The fourth supporting factor is their being deficient in intellect and religion; the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) also stated this in a Sahih Hadith as found in the Sahihayn (as in Bukhari and Muslim. T). The fifth supporting factor is the love for the husband, the description of which has passed from the Verse and Hadith, and the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

| "Your love for a thing makes you blind and deaf." - Narrated by Ahmad and Al-Bukhari. | Love makes one blind and deaf. (Ahmad and Bukhari) |

1. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Asakir, Hadith, Maktabah al-Turath al-Islami, Aleppo, 9/24
2. At-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir, under the previous Hadith, Maktaba Imam Shafi'i, Riyadh, Saudi Arabia, 1/202
3. Al-Maqasid al-Hasanah, Letter Noon, Hadith, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 441
4. Sahih Bukhari, Chapter on Allusions/Indirect speech as a way out of lying, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/717
5. Sunan Abu Dawood, Book of Manners, Chapter on Passion, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/343

फ़तावा रज़विया खंड 11

| इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है, इसके सहायक साक्ष्यों के कारण इसे 'हसन' (उत्तम) माना गया है। | उन्होंने हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की और इसके सहायक साक्ष्यों के आधार पर इस हदीस को उन्होंने 'हसन' करार दिया। (टी) |

पांचवीं हदीस में है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

| "बुरे साथी से बचो, क्योंकि तुम उसी के द्वारा पहचाने जाओगे।" - इब्न असाकिर ने अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। | बुरे हमनशीन (साथी) से दूर भागो कि तुम उसी के साथ मशहूर होगे (इसे इब्न असाकिर ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। टी) |

मौला अली (कर्रमल्लाहु वजहुल करीम) फ़रमाते हैं:

| "किसी चीज़ का दूसरी चीज़ पर संकेत देना, और आग पर धुएं का संकेत देना, उससे अधिक नहीं है जितना एक साथी का अपने साथी पर संकेत होता है।" - तयसीर में उल्लेखित। | कोई चीज़ दूसरी चीज़ पर और न ही धुआं आग पर उससे ज़्यादा दलालत (संकेत) करता है जितना एक हमनशीन दूसरे पर (इसे तयसीर में ज़िक्र किया गया। टी) |

विद्वान कहते हैं कि कान में पड़ी बात का असर होता है, न कि जीवन भर कान भरे जाना। फिर इसके साथ दूसरा समर्थक कारक पति का उस पर शासक होना है; अनुभवी लोग कहते हैं: "लोग अपने शासकों के धर्म पर होते हैं।" (टी) तीसरा समर्थक कारक स्त्री में स्वीकार्यता और प्रभाव की प्रचुरता है; वे बहुत कोमल हृदय वाली और जल्दी प्रभावित होने वाली होती हैं, यहाँ तक कि अनुभवियों में वे "मोम की नाक" के रूप में प्रसिद्ध हैं। स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "ऐ अंजशा! शीशे के बर्तनों (स्त्रियों) के साथ नरमी बरतें।" (ऐ अंजशा! आबगीनों (शीशे के पात्रों) को बचा कर रखो। टी)। चौथा समर्थक कारक, उनका बुद्धि और धर्म में न्यून होना है, यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सही हदीस में फ़रमाया है जैसा कि सहीहैन में है (जैसे सहीहैन में है। टी)। पांचवां समर्थक कारक, पति का प्रेम है, जिसका वर्णन आयत और हदीस से गुज़र चुका है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

| "किसी चीज़ के लिए तुम्हारा प्यार तुम्हें अंधा और बहरा बना देता है।" - अहमद और बुख़ारी द्वारा वर्णित। | प्रेम अंधा और बहरा कर देता है (इसे अहमद और बुख़ारी ने वर्णित किया) |

1. कंज़ुल उम्माल, इब्न असाकिर के हवाले से, हदीस, मकतबतुल तुरासुल इस्लामी, हलब 9/24
2. अल-तयसीर शरह अल-जामी अल-सगीर, पिछली हदीस के तहत, मकतबा इमाम शाफ़ई, रियाद, सऊदी अरब 1/202
3. अल-मक़ासिदुल हसना, हर्फ नून, हदीस, दारुल कुतुबुल इलमिया, बेरुत, पृ. 441
4. सहीह बुख़ारी, बाब अल-मआरिज़ (झूठ से बचने के इशारे) आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/717
5. सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल हवा, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 2/343

पृष्ठ 395/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

| عن ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ حسن لشواھدہ۔ | نے حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا اور اس کے شواہد کی بنا پر اس حدیث کو انھوں نے حسن قرار دیا۔ ت) |

پانچویں حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| ایاك وقرین السوء فانك به تعرف - رواہ ابن عساکر عن انس بن مالك رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ | برے ہمنشین سے دور بھاگ کہ تو اسی کے ساتھ مشہور ہو گا (اس کو ابن عسا کر نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت) |

مولٰی علی کرم اللہ وجہہ الکریم فرماتے ہیں:

| ماشئی ادل علی الشئی ولا الدخان علی النار من الصاحب علی الصاحب - ذکرہ التیسیر۔ | کوئی چیز دوسری پر اور نہ دھواں آگ پر اس سے زیادہ دلالت کرتا ہے جس قدر ایک ہمنشین دوسرے پر (اس کو تیسیر میں ذکر کیا گیا۔ ت) |

عقلاء کہتے ہیں گوش زدہ اثرے دارد نہ کہ عمر بھر کان بھرے جانا۔ پھر اس کے ساتھ دوسرا مؤید شوہر کا اس پر حاکم ہونا، مجربین کہتے ہیں: الناس علی دین ملوکھم (لوگ اپنے حکمرانوں کے دین پر ہوتے ہیں۔ ت) تیسرا مؤید عورت میں مادہ قبول وانفعال کی کثرت، وہ بہت نرم دل ہیں جلد اثر پذیر ہیں یہاں تک کہ اہل تجربہ میں موم کی ناک مشہور ہیں۔ خود رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: رویدك یا انجشہ بالقواریر (اے انجشہ! آبگینوں کو بچا کر رکھو۔ ت) چوتھا مؤید، ان کا ناقصات العقل والدین ہونا، یہ بھی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے صحیح حدیث میں

فرمایا کمافی الصحیحین (جیسا کہ صحیحین میں ہے۔ ت) پانچواں مؤید، شوہر کی محبت، جس کا بیان آیت وحدیث سے گزرا اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

| حبك الشئی یعمی ویصم - رواہ احمد والبخاری | محبت اندھا بہرا کر دیتی ہے (اسے احمد و بخاری) |

1 کنز العمال بحوالہ ابن عسا کر حدیث مکتبۃ التراث الاسلامی حلب ۲۴/۹ 2 التیسیر شرح الجامع الصغیر حدیث ماقبل کے تحت مکتبہ امام شافعی الریاض السعودیہ ۲۰۲/۱ 3 المقاصد الحسنہ حرف النون حدیث دار الکتب العلمیۃ بیروت ص ۴۴۱ 4 صحیح بخاری باب المعارضی مند وحۃ عن الکذب الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۷۱۷/۲ 5 سنن ابو داؤد کتاب الادب باب فی الھوی آفتاب عالم پریس لاہور ۳۴۳/۲

Fatawa Razawiya - Volume 11

In 'Al-Tarikh', and Abu Dawood narrated from Abu Darda, and Ibn Asakir with a good chain from Abdullah bin Unais, and Al-Kharaiti in 'Al-I'tilal' narrated from Abu Barzah Al-Aslami (may Allah be pleased with them). (T)

And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "A man follows the religion of his close friend, so let each of you look to whom he takes as a friend." (Narrated by Abu Dawood and Tirmidhi with a good chain from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). (T))

O Muslims! May Allah (Mighty and Majestic) grant safety. How long does it take for hearts to turn and thoughts to change? The heart is called 'qalb' precisely because it is constantly overturning ('munqalib'). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The likeness of the heart is like a feather thrown in an open field, being turned over and over by the winds." (Narrated by Ibn Majah from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him). (T))

Especially the delicate nature of women's hearts, combined with continuous companionship and listening, and then the dynamic of ruler and ruled, along with the overwhelming force of affection and love. With all these compelling factors and the deficiency of barriers like intellect and religion, in such a marriage there is an absolute and certain strong suspicion of the woman's straying and changing her religion. This is like throwing oneself into destruction with one's own hands, which is strictly prohibited and unlawful by definitive text. When the pure Shariah forbids something, it also declares its precursors and provocations as forbidden. 'The precursor to the forbidden is forbidden' (The precursor to a forbidden act is also forbidden. T) is an established principle. Allah the Almighty said: "And do not come near to adultery. Indeed, it is ever an immorality and..." (Urdu: Do not go near adultery; certainly, it is an indecency and...)

1. Sunan Abu Dawood, Book of Manners, Chapter on whom one is commanded to sit with, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/308.
2. Sunan Ibn Majah, Chapter on Al-Qadar, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 10.

फ़तावा रज़विया - ग्यारहवीं जिल्द

'अल-तारिख' में, और अबू दाऊद ने अबू दरदा से, और इब्न असाकिर ने एक अच्छी सनद (हसन) के साथ अब्दुल्लाह बिन अनैस से, और अल-ख़रैती ने 'अल-इ'तिलाल' में अबू बरज़ह अल-अस्लमी (अल्लाह उन सबसे राज़ी हो) से रिवायत किया है। (त)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, इसलिए तुममें से हर एक को देखना चाहिए कि वह किससे दोस्ती करता है।" (इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने हसन सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। त)

मुसलमानों! अल्लाह अज्ज़-व-जल्ल आफ़ियत अता फ़रमाए। दिल पलटने और ख़याल बदलने में भला कितनी देर लगती है? दिल को 'क़ल्ब' इसीलिए कहते हैं क्योंकि यह मुनक़लिब (पलटने वाला) होता है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "दिल की मिसाल उस पर (पंख) की तरह है जो मैदान में पड़ा हो और हवाएँ उसे पलट रही हों।" (इसे इब्न माजा ने अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। त)

न कि औरतों का साज़-ए-नर्म नाज़ुक दिल और उस पर यह सोहबत और समाअ मुत्तसिल (लगातार साथ और सुनना), फिर हाकिमी और महकूमी का वास्ता, और उसके साथ मेहर-ओ-मोहब्बत का ग़ज़ब जज़्बा। इन सब बातों के रहते और अक्ल व दीन जो रुकावट थे उनमें कमी और नुक़्स होने पर, ऐसे निकाह में निश्चित रूप से औरत की गुमराही और मज़हब बदलने का मज़बूत अंदेशा है। और यह अपने हाथों हलाकत (विनाश) में पड़ना है जो कि क़तई तौर पर मना और नाजायज़ है। शरीयत-ए-मुतह्हरा जिस चीज़ को हराम फ़रमाती है, उसके मुक़द्दमा और दाई (रास्ता बनाने वाली चीज़ों) को भी हराम बताती है। 'हराम का मुक़द्दमा हराम होता है' (हराम की ओर ले जाने वाली चीज़ भी हराम है। त) यह एक माना हुआ उसूल है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और ज़िना के करीब न जाओ, बेशक वह बेहयाई है और..." (उर्दू: ज़िना के पास न जाओ बेशक वह बेहयाई है और...)

1. सुनन अबू दाऊद, किताब अल-अदब, बाब: जिससे बैठने का हुक्म दिया गया, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 308/2
2. सुनन इब्न माजा, बाब फ़िल क़द्र, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 10

فتاوٰی رضویہ - جلد یازدہم

فِی التَّارِیخِ وابوداؤد عن ابی الدرداء وابن عساکر بسند حسن عن عبداللہ بن انیس والخرائطی فی الاعتلال عن ابی برزۃ الاسلمی رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ (نے اپنی تاریخ میں اور ابو داؤد نے ابودرداء سے، اور ابن عساکر نے سند حسن کے ساتھ عبداللہ بن انیس سے اور خرائطی نے اعتلال میں ابو برزہ اسلمی رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: الرجل علی دین خلیلہ فلینظر احدکم من یخالل - رواہ ابوداؤد والترمذی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنھم - آدمی اپنے محبوب کے دین پر ہوتا ہے تو دیکھ بھال کر کسی سے دوستی کرو (اسے ابوداؤد اور ترمذی نے سند حسن کے ساتھ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

مسلمانو! اللہ عز وجل عافیت بخشے دل پلٹتے خیال بدلتے کیا کچھ دیر لگتی ہے قلب کہتے ہی اس لیے ہیں کہ وہ منقلب ہوتا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: مثل القلب مثل الریشۃ تقلبھا الریاح بفلاۃ - رواہ ابن ماجۃ عن ابی موسی الاشعری رضی اللہ تعالی عنہ - دل کی حالت اس پر کی طرح ہے کہ میدان میں پڑا ہو اور ہوائیں اسے پلٹے دے رہی ہوں۔ (اس کو ابن ماجہ نے ابو موسٰی اشعری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

نہ کہ عورتوں کا سازم نازک دل اور اس پر یہ صحبت و سماع متصل پھر واسطہ حاکمی محکومی کا اور اس کے ساتھ مہر و محبت کا غضب جذبہ باعثوں داعیوں کا یہ متواتر وفور اور مانع کہ عقل و دین تھے ان میں نقصان و قصور تو اس تزوج میں قطعاً یقیناً عورت کی گمراہی و تبدیلِ مذہب کا مظنہ قویہ ہے اور یہ خود اپنے ہاتھوں ہلاکت میں پڑنا ہے کہ بنص قطعی ممنوع و ناروا ہے شرع

مطہر جس چیز کو حرام فرماتی ہے کہ مقدمہ و داعی کو بھی حرام بتاتی ہے مقدمۃ الحرام حرام (حرام کا پیش خیمہ بھی حرام ہوتا ہے۔ت) مقدمہ مسلمہ ہے، قال اللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا):

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰی اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّ زنا کے پاس نہ جاؤ بیشک وہ بے حیائی ہے اور

۱۔ سنن ابوداؤد کتاب الادب باب من یومر ان یجالس آفتاب عالم پریس لاہور ۳۰۸/۲ ۲۔ سنن ابن ماجہ باب فی القدر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۰

Fatawa Rizvia Volume 11

"An evil way." (32)[1] Just as adultery became forbidden, approaching adultery also became forbidden. The thought that it might not have an effect is mere misunderstanding and alienation from both reason and tradition. It is not necessary for a stimulant to always lead to the final act; after all, kissing, embracing, touching, and looking became forbidden because they are stimulants and precursors to intercourse, even though they do not always or necessarily lead to it. Fourth Evidence: The Lord, Blessed and Exalted, said: "Men are the protectors and maintainers of women, because Allah has given the one more (strength) than the other."[2] Men are rulers and in authority over women because of the excellence that Allah has given some over others.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The person who has the greatest right over a woman is her husband."[3] - Narrated by al-Hakim and he authenticated it from the Mother of the Believers, al-Siddiqah (may Allah be pleased with her). (Al-Hakim narrated it and the Mother of the Believers, Lady Aisha al-Siddiqah, may Allah be pleased with her, corrected its authenticity. - T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "If I were to command anyone to prostrate to someone else, I would have commanded women to prostrate to their husbands because of the right that Allah Almighty has placed upon them for them.[4] Even if the husband had a sore from his heel to the parting of his hair, from which pus and filthy fluid gush out, and the woman were to come and lick it clean with her tongue, she would not have fulfilled his right."[5] - Narrated by Abu Dawood and al-Hakim with a sound chain from Qais bin Sa'd bin 'Ubadah and Ahmad.

[1] Al-Quran 17/32 [2] Al-Quran 4/34 [3] Mustadrak al-Hakim, Book of Piety and Joining Ties, Dar al-Fikr Beirut, 2/150 [4] Sunan Abi Dawood, Chapter on the husband's right over the woman, Aftab Alam Press Lahore 1/291, Al-Mustadrak al-Hakim, Book of Marriage, Dar al-Fikr Beirut 2/187 [5] Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from the Musnad of Anas bin Malik, Dar al-Fikr Beirut 3/159 Page 397 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

"बुरा रास्ता है।" (32)[1] जिस तरह व्यभिचार (ज़िना) हराम हुआ, व्यभिचार के पास जाना भी हराम हुआ और यह विचार कि संभव है इसका प्रभाव न हो, केवल नासमझी और तर्क तथा परंपरा दोनों से अनभिज्ञता है। किसी प्रेरक (दाइ) के लिए स्थायी रूप से परिणाम तक पहुँचना आवश्यक नहीं है। अंततः चूमना, आलिंगन करना, छूना और देखना, संभोग के प्रेरक होने के कारण ही हराम हुए, हालांकि वे हमेशा स्थायी रूप से संभोग का कारण नहीं बनते। चौथा प्रमाण: मौला तबारक व तआला ने फ़रमाया: "पुरुष स्त्रियों पर हाकिम व संरक्षक हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे पर श्रेष्ठता दी है।"[2] पुरुष स्त्रियों पर हाकिम और वर्चस्व वाले हैं उस श्रेष्ठता के कारण जो अल्लाह ने एक दूसरे को दी।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "स्त्री पर सबसे बड़ा हक़ उसके पति का है।"[3] - इसे हाकिम ने रिवायत किया और इसे उम्मुल मोमिनीन अत्-सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से सहीह करार दिया। (हाकिम ने इसे रिवायत किया और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने इसकी तस्दीक़ की। - त)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "यदि मैं किसी को यह आदेश देता कि वह अल्लाह के सिवा किसी और को सजदा करे, तो मैं स्त्रियों को आदेश देता कि वे अपने पतियों को सजदा करें, उस हक़ के कारण जो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने उनके लिए उन पर रखा है।[4] और यदि पति के पैर की एड़ी से सिर की मांग तक सारा शरीर एक ऐसा घाव हो जिससे पीप और गंदा पानी उबल रहा हो, और स्त्री आकर उसे अपनी जीभ से चाटकर साफ़ करे, तब भी उसने पति का हक़ अदा नहीं किया।"[5] - इसे अबू दाऊद और हाकिम ने क़ैस बिन साद बिन उबादा और अहमद से सहीह सनद के साथ रिवायत किया।

[1] अल-क़ुरआन 17/32 [2] अल-क़ुरआन 4/34 [3] मुस्तदरक अल-हाकिम, किताबुल बिर्र वस्-सिला, दारुल फ़िक्र बैरुत, 2/150 [4] सुनन अबी दाऊद, बाब फ़ी हक़्क़िज़्-ज़ौज अलल् मरअत, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर 1/291, अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, किताबुन्-निकाह, दारुल फ़िक्र बैरुत 2/187 [5] मुसनद अहमद बिन हंबल, मुसनद अनस बिन मालिक से रिवायत, दारुल फ़िक्र बैरुत 3/159 पेज 397 ऑफ़ 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

سَآءَ سَبِیۡلًا ﴿۳۲﴾۱ بہت بری راہ۔ جس طرح زنا حرام ہوا زنا کے پاس جانا بھی حرام ہوا اور یہ خیال کہ ممکن ہے اثر نہ ہو محض ناہمی اور عقل و نقل دونوں سے بیگانگی ہے داعی کے لیے مفضی بالدوام ہونا ضرور نہیں آخر بوس وکنار و مس و نظر دوای و طی داعی ہی ہونے کے باعث حرام ہوئے مگر ہر گز مستلزم و مفضی دائم نہیں۔ دلیل چہارم : قال المولی تبارک و تعالٰی (مولی تبارک و تعالٰی نے فرمایا) : اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوۡنَ عَلَی النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰہُ بَعْضَہُمْ عَلٰی بَعْضٍ ۲ مرد حاکم و مسلط ہیں عورتوں پر بسبب اس فضیلت کے جو اللہ نے ایک دوسرے پر دی۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اعظم الناس حقا علی المرأۃ زوجھا ۳ - رواہ الحاکم وصححہ عن ام المومنین الصدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا عورت پر سب سے بڑھ کر حق اس کے شوہر کا ہے (اسے حاکم نے روایت کیا اور ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے اس کی تصحیح کی ۔ ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لوکنت امر احدا ان یسجد لاحد لامرت النساء ان یسجدن لازواجھن لما جعل اللہ لھم علیھن من الحق ۴- ولو کان من قدمہ الی مفرق رأسہ قرحۃ تنجس بالقیح والصدید ثم استقبلتہ فلحستہ ماادت حقہ ۵- رواہ ابو داؤد والحاکم بسند صحیح عن قیس بن سعد بن عبادۃ واحمد اگر میں کسی کو حکم کرتا کہ غیر خدا کو سجدہ کرے تو البتہ عورتوں کو حکم کرتا کہ اپنے شوہروں کو سجدہ کریں بسبب اس حق کے کہ اللہ عزوجل نے ان کے لیے ان پر رکھا ہے۔ اور اگر شوہر کی ایڑی سے مانگ تک سارا جسم پھوڑا ہو جس سے پیپ اور گندا پانی جوش مارتا ہو عورت آکر اپنی زبان سے اسے چاٹ کر صاف کرے تو خاوند کا حق ادا نہ کیا (اس کو ابوداؤد)

۱ القرآن ۱۷/ ۳۲ ۲ القرآن ۴/ ۳۴ ۳ مستدرک للحاکم کتاب البر والصلۃ دار الفکر بیروت ۲/ ۱۵۰ ۴ سنن ابی داؤد باب فی حق الزوج علی المرأۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۹۱ ، المستدرک للحاکم کتاب النکاح دارالفکر بیروت ۲/ ۱۸۷ ۵ مسند احمد بن حنبل مروی از مسند انس بن مالک دار الفکر بیروت ۳/ ۱۵۹ Page 397 of 739

[Table 1] Arabic: Tirmidhi from Anas bin Malik; regarding prostration Ahmad, Ibn Majah, and Ibn Hibban from Abdullah bin Abi Awfa; Tirmidhi and Ibn Majah from Abu Huraira; Ahmad from Mu'adh bin Jabal; and Hakim from Buraidah al-Aslami (may Allah be pleased with them all). Urdu: And Hakim narrated with an authentic chain from Qais bin Sa'd bin Ubadah; and Ahmad and Tirmidhi from Anas bin Malik; and Ahmad, Ibn Majah and Ibn Hibban from Abdul Aziz bin Abi Awfa in the chapter of prostration; and Tirmidhi and Ibn Majah from Abu Huraira; and Ahmad from Mu'adh bin Jabal and Hakim from Buraidah al-Aslami (may Allah be pleased with them all). (T)

In short, the husband is highly mandatory of respect, and honoring a person of a wrong sect (deviant) is forbidden. It is mentioned in several Hadiths that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Table 2] Arabic: "Whoever honors a person of innovation has helped in the demolition of Islam." (1) Narrated by Ibn Adi and Ibn Asakir from the Mother of the Believers Siddiqah; and Hasan bin Sufyan in his Musnad and Abu Nu'aym in Hilya from Mu'adh bin Jabal; and Sijzi in Al-Ibana from Ibn Umar; and like Ibn Adi from Ibn Abbas; and Tabarani in Al-Kabir and Abu Nu'aym in Hilya from Abdullah bin Busr; and Bayhaqi in Shu'ab al-Iman from Ibrahim bin Maysara, the trustworthy Makkan Tabi'i, as a Mursal narration. The correct view is that the Hadith is Hasan (good) due to its multiple chains. Urdu: "Whoever honors any person of a wrong sect has assisted in the demolition of Islam." (This was narrated by Ibn Adi and Ibn Asakir from the Mother of the Believers Aisha Siddiqah; and Hasan bin Sufyan in his Musnad; and Abu Nu'aym in Hilya from Mu'adh bin Jabal; and Sijzi in Al-Ibana from Ibn Umar; and Ibn Adi from Ibn Abbas; and Tabarani in Al-Kabir; and Abu Nu'aym in Hilya from Abdullah bin Busr; and Bayhaqi in Shu'ab al-Iman from Ibrahim bin Maysara, the Makkan Tabi'i, as a Mursal narration. And the correct view is that this Hadith is Hasan due to its multiple chains. T)

The noble scholars clearly state that not just an innovator (Mubtadi'), but even an open sinner (Fasiq) is legally required to be disdained according to Shariah, and honoring them is impermissible. Allama Hasan Shurunbulali states in Maraqi al-Falah:

[Table 3] Arabic: "An open sinner scholar must be legally disdained, so he should not be honored." (2) Urdu: "It is legally necessary to disdain an open sinning scholar, therefore he should not be honored." (T)

1. Shu'ab al-Iman, Hadith No. 9464, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 7/61.
2. Maraqi al-Falah, Chapter regarding the one most entitled to Imamah, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 165.

[टेबल 1] अरबी: तिरमिज़ी ने अनस बिन मालिक से; सज्दे के अध्याय में अहमद, इब्न माजा और इब्न हिब्बान ने अब्दुल्ला बिन अबी औफ़ा से; तिरमिज़ी और इब्न माजा ने अबू हुरैरा से; अहमद ने मुआज़ बिन जबल से; और हाकिम ने बुरैदा अल-असलमी (अल्लाह उन सब से राज़ी हो) से रिवायत की है। उर्दू: और हाकिम ने सही सनद के साथ क़ैस बिन साद बिन उबादा से, और अहमद और तिरमिज़ी ने अनस बिन मालिक से, और अहमद, इब्न माजा और इब्न हिब्बान ने अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी औफ़ा से सज्दा के अध्याय में, और तिरमिज़ी और इब्न माजा ने अबू हुरैरा से और अहमद ने मुआज़ बिन जबल और हाकिम ने बुरैदा असलामी (अल्लाह तआला उन सब से राज़ी हो) से रिवायत किया है। (त)

संक्षेप में, पति का सम्मान करना अत्यंत अनिवार्य है और ग़लत पंथ (बद-मज़हब) वाले का सम्मान करना हराम है। अनेक हदीसों में आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[टेबल 2] अरबी: "जिसने बिदअती (नवाचारी) का सम्मान किया, उसने इस्लाम को ढहाने में सहायता की।" (1) इसे इब्न अदी और इब्न असाकिर ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा से; और हसन बिन सुफ़ियान ने अपनी मुसनद में और अबू नुऐम ने 'हिलिया' में मुआज़ बिन जबल से; और सिजज़ी ने 'इबाना' में इब्न उमर से; और इब्न अदी की तरह इब्न अब्बास से; और तबरानी ने 'कबीर' में और अबू नुऐम ने 'हिलिया' में अब्दुल्ला बिन बुस्र से; और बैहक़ी ने 'शुअबुल ईमान' में इब्राहिम बिन मैसरा, विश्वसनीय मक्की ताबई से मुरसल रूप में रिवायत किया है। सही यह है कि हदीस अपने कई सूत्रों के कारण 'हसन' (उत्तम) है। उर्दू: जिसने किसी बद-मज़हब (ग़लत पंथ वाले) की तौक़ीर (सम्मान) की, उसने इस्लाम के ढाने में मदद की (इसको इब्न अदी और इब्न असाकिर ने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा और हसन बिन सुफ़ियान ने अपनी मुसनद में और अबू नुऐम ने 'हिलिया' में मुआज़ बिन जबल से और सिजज़ी ने 'इबाना' में इब्न उमर से और इब्न अदी ने इब्न अब्बास से और तबरानी ने 'कबीर' में और अबू नुऐम ने 'हिलिया' में अब्दुल्ला बिन बुस्र और बैहक़ी ने 'शुअबुल ईमान' में इब्राहिम बिन मैसरा ताबई मक्की से मुरसल तौर पर रिवायत किया है। और सही यह है कि अपने तरीक़ों (सूत्रों) पर यह हदीस हसन है। त)

विद्वान स्पष्ट रूप से फ़रमाते हैं कि बिदअती (मुलहिद) तो बिदअती, फ़ासिक़ (खुला पापी) भी शरई तौर पर तिरस्कार के योग्य है और उसका सम्मान नाजायज़ है। अल्लामा हसन शुरुनबुलाली 'मराक़िल फ़लाह' में फरमाते हैं:

[टेबल 3] अरबी: "फ़ासिक़ आलिम (पापी विद्वान) का शरई तौर पर अपमान आवश्यक है, अतः उसका सम्मान न किया जाए।" (2) उर्दू: फ़ासिक़ आलिम की शरई तौर पर तौहीन (अपमान) ज़रूरी है इसलिए उसकी ताज़ीम (सम्मान) न की जाए। (त)

---

1. शुअबुल ईमान, हदीस संख्या 9464, दारुल कुतुब अल-इलमिया बेरूत, 7/61
2. मराक़िल फ़लाह, इमामत के अधिक हकदार के बयान में अध्याय, नूर मोहम्मद कारखाना तिजारते कुतुब कराची, पृ. 165

पेज 398/739

[Table 1] Arabic: والترمذی عن انس بن مالک وفصل السجود احمد وابن ماجة وابن حبان عن عبداللہ بن ابی اوفی والترمذی وابن ماجة عن ابی ہریرة واحمد عن معاذ بن جبل والحاکم عن بریدة الاسلمی رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین۔ Urdu: اور حاکم نے صحیح سند کے ساتھ قیس بن سعد بن عبادہ، اور احمد اور ترمذی نے انس بن مالک سے، اور احمد، ابن ماجہ اور ابن حبان نے عبدالعزیز بن ابی اوفی سے سجدہ کی فصل میں، اور ترمذی اور ابن ماجہ نے ابو ہریرہ سے اور احمد نے معاذ بن جبل اور حاکم نے بریدہ اسلمی رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا ہے۔ (ت)

الغرض شوہر کے لیے سخت واجب التعظیم ہے اور بد مذہب کی تعظیم حرام ، متعدد حدیثوں میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

[Table 2] Arabic: من وقر صاحب بدعة فقد اعان علی ہدم الاسلام (1)۔ رواہ ابن عدی وابن عساکر عن ام المومنین الصدیقہ والحسن بن سفیان فی مسندہ وابونعیم فی الحلیة عن معاذ بن جبل والسجزی فی الابانة عن ابن عمر وکابن عدی عن ابن عباس والطبرانی فی الکبیر وابونعیم فی الحلیة عن عبداللہ بن بسر والبیہقی فی شعب الایمان عن ابراہیم بن میسرہ التابعی المکی الثقة مرسلاً فالصواب ان الحدیث حسن بطرقہ۔ Urdu: جس نے کسی بد مذہب کی توقیر کی اس نے اسلام کے ڈھانے میں مدد کی (اس کو ابن عدی اور ابن عساکر نے ام المومنین عائشہ صدیقہ اور حسن بن سفیان نے اپنی مسند میں اور ابو نعیم نے حلیہ میں معاذ بن جبل سے اور سجزی نے ابانہ میں ابن عمر سے اور ابن عدی نے ابن عباس سے اور طبرانی نے کبیر میں اور ابو نعیم نے حلیہ میں عبد اللہ بن بسر اور بیہقی نے شعب الایمان میں ابراہیم بن میسرہ تابعی مکی سے مرسل طور پر روایت کیا ہے۔ اور صحیح یہ ہے کہ اپنے طرق پر یہ حدیث حسن ہے۔ت)

علمائے کرام تصریح فرماتے ہیں کہ مبتدع تو مبتدع فاسق بھی شرعاً واجب الاہانہ ہے اور اس کی تعظیم ناجائز، علامہ حسن شرنبلالی مراقی الفلاح میں فرماتے ہیں :

[Table 3] Arabic: الفاسق العالم تجب اهانته شرعاً فلا يعظم۔ (2) Urdu: فاسق عالم کی شرعاً توہین ضروری ہے اس لیے اس کی تعظیم نہ کی جائے۔ (ت)

---

1 شعب الایمان حدیث نمبر ۹۴۶۴ دار الکتب العلمیہ بیروت ۷ / ۶۱ 2 مراقی الفلاح فصل فی بیان الاحق بالامامۃ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۱۶۵

Fatawa Razawiya - Volume 11

Imam Allama Fakhruddin Zaila'i in Tabyin al-Haqa'iq, then Allama Sayyid Abu'l-Su'ud Azhari in Fath al-Mu'in, then Allama Sayyid Ahmad Misri in the commentary on Durr al-Mukhtar state:

It is religiously obligatory to humiliate them. (Ref)	**قد وجب عليهم اهانته شرعاً [1]۔**

Researcher Allama Sa'd al-Milla wal-Din Taftazani states in Maqasid and Sharh al-Maqasid:

The Sharia ruling regarding an innovator is to have hatred and enmity towards him, avoid him, humiliate and despise him, and treat him with reproach and condemnation.[2]	**حكم المبتدع البغض والعداوة والاعراض عنه والاهانة والطعن واللعن [2]۔**

Therefore, it is proven that making a heretic the husband of a Sunni woman is sinful and impermissible.

Fifth Argument: Allah Almighty said: "And they found her master (husband) at the door." [3] [Surah Yusuf 12:25] Those two found Zulaikha's master and chief, i.e., her husband, by the door. In Radd al-Muhtar, Chapter on Compatibility (Al-Kafa'ah), it says: "Marriage is slavery for the woman and the husband is the master." [4] Through marriage, the woman becomes like a bondwoman and the husband the owner. And the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) states:

Do not call a hypocrite "O master," for if he is your master, then you have surely incurred the wrath of your Lord, Mighty and Majestic. (Narrated by Abu Dawud and al-Nasa'i with a sahih chain from Buraydah ibn al-Hasib, may Allah be pleased with him. Ref)	**لاتقولوا للمنافق ياسيد فانه ان يكن سيدا فقدا سخطتم ربكم عزوجل [5] - رواه ابوداؤد و النسائی بسند صحیح عن بریدة بن الحصیب رضی الله تعالی عنه۔**

Al-Hakim in Sahih al-Mustadrak and al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman narrated with these words that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) states:

---

1. Tahtawi on Durr al-Mukhtar, Chapter of Imamate, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/243
2. Sharh al-Maqasid, Eighth Inquiry, Ruling of the Believer, Dar al-Ma'arif al-Nu'maniyyah Lahore, 2/270

3. Al-Quran, 12:25
4. Radd al-Muhtar, Chapter of Al-Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/317
5. Sunan Abi Dawud, Book of Adab, Aftab-e-Alam Press Lahore, 2/322

फ़तावा रज़विया - जिल्द ग्यारहवीं

इमाम अल्लामा फ़ख़रुद्दीन ज़ैलाई 'तबीन अल-हक़ाएक़' में, फिर अल्लामा सैय्यद अबुल-सऊद अज़हरी 'फ़तह अल-मुईन' में, फिर अल्लामा सैय्यद अहमद मिस्री 'दुर्रे मुख्तार' के हशिया में फ़रमाते हैं:

शरन (शरीयत) के अनुसार उनकी अपमान करना अनिवार्य है। (त)

قد وجب عليهم اهانته شرعاً [1]۔

अल्लामा मुक़क़िक़ सअद अल-मिल्लत वद-दीन तफ़्ताज़ानी 'मक़ासिद' और 'शरह मक़ासिद' में फ़रमाते हैं:

एक नवाचारी (मुब्तदी) के संबंध में शरीयत का आदेश यह है कि उससे द्वेष और शत्रुता रखी जाए, उससे मुंह मोड़ लिया जाए, उसकी तजलील व तहकीर की जाए। उसके साथ निंदा और ताने के साथ पेश आएं।[2]

حكم المبتدع البغض والعداوة والاعراض عنه والاهانة والطعن واللعن [2]۔

निश्चित रूप से यह सिद्ध हो गया कि एक बद-मज़हब को सुन्नी स्त्री का पति बनाना पाप और नाजायज़ है।

पांचवां प्रमाण: अल्लाह बुलंद व आला ने फ़रमाया: "और उन दोनों ने उसके स्वामी (पति) को द्वार पर पाया।" [3] [यूसुफ़ 12:25] उन दोनों ने ज़ुलैखा के सैय्यद और सरदार यानी पति को दरवाज़े के पास पाया। 'रद्द अल-मुह्तार' बाब अल-कफ़ाअत में है: "निकाह स्त्री के लिए दासता है और पति स्वामी है।" [4] निकाह से स्त्री कनीज़ हो जाती है और पति मालिक। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

मुनाफ़िक़ को "ऐ सरदार" कहकर मत पुकारो, क्योंकि यदि वह तुम्हारा सरदार है, तो निश्चय ही तुमने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को नाराज़ किया। (इसे अबू दाऊद और नसाई ने सही सनद के साथ बुरैदा बिन हसीब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। त)

لاتقولوا للمنافق ياسيد فانه ان يكن سيدا فقدا سخطتم ربكم عزوجل [5] - رواه ابوداؤد و النسائی بسند صحیح عن بريدة بن الحصيب رضی الله تعالی عنه۔

हाकिम ने 'सही मुस्तदरक' में और बैहक़ी ने 'शुअब अल-ईमान' में इन शब्दों के साथ रिवायत की कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

---

1. तहतावी अलद-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-इमामाह, दार अल-मआरिफा बेरूत, 1/243
2. शरह मक़ासिद, अल-मबहस अस-सामिन, हुक्म अल-मोमिन, दार अल-मआरिफ अल-नोमानिया लाहौर, 2/270
3. अल-क़ुरान, 12:25
4. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअत, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/317
5. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/322

पृष्ठ 399/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

امام علامہ فخر الدین زیلعی تبیین الحقائق، پھر علامہ سید ابوالسعود از ہری فتح المعین، پھر علامہ سید احمد مصری حاشیہ در مختار میں فرماتے ہیں :

قد وجب علیھم اھانتہ شرعاً [1]۔ ان پر اس کی اہانت ضروری ہے۔ (ت)

علامہ محقق سعد الملۃ والدین تفتازانی مقاصد و شرح مقاصد میں فرماتے ہیں :

حکم المبتدع البغض والعداوۃ والاعراض عنہ والاھانۃ والطعن واللعن [2]۔

بد مذہب کے لیے حکم شرعی یہ ہے کہ اس سے بغض و عداوت رکھیں، رو گردانی کریں، اس کی تذلیل و تحقیر بجا لائیں۔ اس سے طعن کے ساتھ پیش آئیں۔

لاجرم ثابت ہوا کہ بد مذہب کو سنیہ کا شوہر بنانا گناہ و نا جائز ہے۔ دلیل پنجم : قال العلی الاعلیٰ جل وعلا (اللہ بلند و اعلیٰ نے فرمایا): "وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَ الْبَابِ" [3] ان دونوں نے زلیخا کے سید و سردار یعنی شوہر کو پایا دروازے کے پاس، ردالمختار باب الکفاءۃ میں ہے: "النکاح رق للمرأۃ والزوج مالك" [4] نکاح سے عورت کنیز ہو جاتی ہے اور شوہر مالک۔ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لاتقولوا للمنافق یاسید فانہ ان یکن سیدا فقدا سخطتم ربکم عزوجل [5] - رواہ ابوداؤد و النسائی بسند صحیح عن بریدۃ بن الحصیب رضی اللہ تعالی عنہ۔

منافق کو "اے سردار" کہہ کر نہ پکارو کہ اگر وہ تمہارا سردار ہو تو بیشک تم نے اپنے رب عزوجل کو ناراض کیا۔ (اس کو ابوداؤد اور نسائی نے صحیح سند کے ساتھ بریدہ بن حصیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

حاکم نے صحیح مستدرک میں بافادہ صحیح اور بیہقی نے شعب الایمان میں ان لفظوں سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

---

1 طحطاوی علی الدرالمختار باب الامامة دارالمعرفة بیروت ۱/ ۲۴۳ 2 شرح مقاصد المبحث الثامن حکم المومن دار المعارف النعمانیه لاہور ۲/ ۲۷۰ 3 القرآن ۲۵/ ۱۲ 4 ردالمحتار باب الکفاءة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۱۷ 5 سنن ابی داؤد کتاب الادب آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۳۲۲

Fatawa Razawiyya, Volume 11

| "When a man says to a hypocrite, 'O master,' he has surely angered his Lord."[1] | Whoever calls a hypocrite "master" falls under the wrath of his Lord, Almighty and Glorious. |

Imam Hafiz al-Hadith Abdul Azeem Zaki-ud-Din, in his book 'Al-Targhib wa al-Tarhib,' established a chapter:

| "The Warning Against Saying to a Transgressor or an Innovator 'O my Master,' or similar words indicating respect."[2] | That is, the description of those hadiths that warn against calling a transgressor or a heretic "O my master" or any word of honor. |

And in this chapter, he mentioned this very hadith from the narrations of Abu Dawood and Nasa'i. When merely saying "O my master" with the tongue is a cause of the wrath of the Lord (Jalla Jalalahu), then truly making them a master and owner would be such a severe cause of wrath! We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds.

Sixth Proof: | "O mankind, an example is presented, so listen to it."[3] | | "And Allah is not ashamed of the truth."[4] | | "Would any of you like his noble woman [daughter/sister] to be the bed of a dog? You would hate it."[5] | | O people! A parable is set forth, so listen to it carefully. Verily, Allah Almighty is not ashamed to speak the truth. Does any of you like it that his daughter or sister should be under a dog? You would find it very bad. |

The Lord, Almighty and High, expressed the prohibition of backbiting in this eloquent manner:

| "Would one of you like to eat the flesh of his brother when dead? You would detest it."[6] | Would any of you like to eat the flesh of his dead brother? You would loathe it. |

---

1. Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Riqaq, Dar al-Fikr Beirut, 2/311; Shu'ab al-Iman, Hadith Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, 2/230
2. Al-Targhib wa al-Tarhib, Chapter on 'Saying to a Transgressor or Innovator: O my Master, etc.', Mustafa al-Babi Egypt, 3/579
3. Al-Quran al-Karim, 22/73
4. Al-Quran al-Karim, 33/53

5. Sunan Ibn Majah, Chapters on Marriage, H.M. Saeed Company Karachi, p. 139; Musnad Ahmad bin Hanbal narrated from Musnad Ali (R.A.), Dar al-Fikr Beirut, 1/86
6. Al-Quran al-Karim, 49/12

फ़तावा रजविया, खंड 11

| "जब कोई व्यक्ति किसी मुनाफ़िक (पाखंडी) को 'सरदार' कहकर पुकारता है, तो वह अपने रब (ईश्वर) के क्रोध का पात्र बनता है।"[1] | जो व्यक्ति किसी मुनाफ़िक को "सरदार" कहकर पुकारे वह अपने रब अज़्ज़वजल के क्रोध में पड़े। |

इमाम हाफिज़ अल-हदीस अब्दुल अज़ीम ज़की-उद-दीन ने किताब 'अल-तरग़ीब वल-तरहीब' में एक अध्याय बनाया:

| "किसी फ़ासिक (पापी) या नवप्रवर्तक (बिदअती) को 'ऐ मेरे सरदार' या सम्मान सूचक कोई शब्द कहने से डराना।"[2] | यानी उन हदीसों का वर्णन जिनमें किसी पापी या पथभ्रष्ट को "ऐ मेरे सरदार" या सम्मान का कोई शब्द कहने से डराया गया है। |

और इसी अध्याय में उन्होंने अबू दाऊद और नसाई के उल्लेखों से यही हदीस उद्धृत की है। जब केवल ज़ुबान से "ऐ मेरे सरदार" कह देना रब (जल्ला जलालाहु) के क्रोध का कारण है, तो वास्तव में उन्हें सरदार और मालिक बना लेना क्रोध का कितना बड़ा कारण होगा! हम अल्लाह, संपूर्ण जगत के पालनहार की शरण माँगते हैं।

छठा प्रमाण: | "ऐ लोगों! एक मिसाल दी गई है, उसे कान लगाकर सुनो।"[3] | | "बेशक अल्लाह सच बात कहने में नहीं शर्माता।"[4] | | "क्या तुममें से किसी को पसंद है कि उसकी कुलीन स्त्री (बेटी/बहन) किसी कुत्ते के नीचे रहे? तुम इसे नापसंद करोगे।"[5] | | ऐ लोगों! एक मिसाल दी गई है, उसे कान लगाकर सुनो। बेशक अल्लाह अज़्ज़वजल सच बात कहने में नहीं शर्माता। क्या तुममें से किसी को यह पसंद आता है कि उसकी बेटी या बहन किसी कुत्ते के नीचे हो? तुम इसे बहुत बुरा समझोगे। |

रब (अल्लाह) ने चुगली/गीबत के हराम होने को इसी प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है:

| "क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि अपने मरे हुए भाई का मांस खाए? तो यह तुम्हें बुरा लगा।"[6] | क्या तुममें से कोई पसंद रखता है कि अपने मुर्दा भाई का मांस खाए, तो यह तुम्हें बुरा लगा। |

1. मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अर-रिकाक, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 2/311; शुअ़ब अल-ईमान, हदीस दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या बेरूत, 2/230
2. अल-तरग़ीब वल-तरहीब, अध्याय: किसी पापी या बिदअती को ऐ मेरे सरदार कहना आदि, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 3/579
3. अल-कुरान अल-करीम, 22/73
4. अल-कुरान अल-करीम, 33/53
5. सुनन इब्न माजह, निकाह के अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 139; मुस्नद अहमद बिन हंबल, हजरत अली (र.अ.) से रिवायत, दार अल-फ़िक्र बेरूत, 1/86
6. अल-कुरान अल-करीम, 49/12

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

| اذا قال الرجل للمنافق یاسید فقد اغضب ربہ ۱۔ | جو شخص کسی منافق کو "سردار" کہہ کر پکارے وہ اپنے رب عزوجل کے غضب میں پڑے۔ |

امام حافظ الحدیث عبدالعظیم زکی الدین نے کتاب الترغیب والترہیب میں ایک باب وضع کیا:

| الترہیب من قولہ لفاسق او مبتدع یاسیدی، او نحوہا من الکلمات الدالۃ علی التعظیم ۲۔ | یعنی ان حدیثوں کا بیان جن میں کسی فاسق یا بدمذہب کو "اے میرے سردار" یا کوئی کلمہ تعظیم کہنے سے ڈرانا۔ |

اور اس باب میں یہی حدیث انھیں روایات ابی داؤد ونسائی سے ذکر فرمائی۔ جب صرف زبان سے "اے میرے سردار" کہہ دینا باعثِ غضب رب جل جلالہ ہے تو حقیقتاً سردار مالک بنالینا کس قدر سخت موجبِ غضب ہو گا والعیاذ باللہ رب العالمین۔

دلیل ششم: | یَا أَیُّھَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَہُ ۳ | | وَاللہُ لَا یَسْتَحْیِ مِنَ الْحَقِّ ۴ ۔ | | ایحب احدکم ان تکون کریمتہ فراش کلب فکرھتموہ ۵ ۔ | | اے لوگو! ایک مثل کہی گئی اسے کان لگا کر سنو، بیشک اللہ عزوجل حق بات فرمانے میں نہیں شرماتا۔ کیا تم میں کسی کو پسند آتا ہے کہ اس کی بیٹی یا بہن کسی کتے کے نیچے بچے تم اسے بہت برا جانو گے۔ |

رب جل وعلا نے غیبت کو حرام ہونا اسی طرزِ بلیغ سے ادا فرمایا:

| اَیُحِبُّ اَحَدُکُمْ اَنْ یَّاْکُلَ لَحْمَ اَخِیْہِ مَیْتًا فَکَرِھْتُمُوْہُ ط ۶ ۔ | کیا تم میں سے کوئی پسند رکھتا ہے کہ اپنے مردے بھائی کا گوشت کھائے، تو یہ تمھیں برا لگا۔ |

1 مستدرك للحاكم كتاب الرقاق دار الفكر بيروت ٢ / ٣١١، شعب الايمان حديث دار الكتب العلميہ بيروت ٢ / ٢٣٠ 2 الترغيب والترہيب من قولہ لفاسق او مبتدع ياسيدى الخ مصطفى البابى مصر ٣ / ٥٧٩ 3 القرآن الكريم ٢٢ / ٧٣ 4 القرآن الكريم ٣٣ / ٥٣ 5 سنن ابن ماجہ ابواب النكاح ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ص ١٣٩، مسند احمد بن حنبل مروى از مسند على رضى الله عنہ دار الفكر بيروت ١ / ٨٦ 6 القرآن الكريم ٤٩ / ١٢

Fatawa Razawiyya Volume 11

Listen attentively, if you are a Sunni, listen with open ears. "We do not have an evil example." The woman who becomes the wife of an innovator (heretic) is just like one who has come under the control of a dog. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) explained the prohibition of taking back something after giving it with this eloquent reason:

[Box] Arabic: One who takes back his gift is like a dog that returns to its vomit. We do not have an evil example. 1 Urdu: One who takes back a gift they have given is like a dog that vomits and then eats it again. Should we not have an evil example?

Now it remains to be determined whether an innovator (follower of a bad sect) is a dog or not. Yes, certainly, in fact, they are worse and more impure than a dog. A dog is not a 'fasiq' (transgressor), but this person is a 'fasiq' in the fundamentals of religion and creed. A dog is not subject to punishment, while this person deserves severe punishment. Do not believe me, believe the Hadith of the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him). Abu Hazim Khuza'i in his collection of Hadith narrates from Hazrat Abu Umamah Bahili (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Followers of innovation (heretics) are the dogs of the people of Hell." 2 Those who follow a bad creed are the dogs of the dwellers of Hell. The narration of Imam Daraqutni is as follows:

[Box] Arabic: Qadi al-Husayn ibn Isma'il narrated to us, [who said] Muhammad ibn Abd Allah al-Makhrami narrated to us, [who said] Isma'il ibn Aban narrated to us, [who said] Hafs ibn Ghiyath narrated to us, from al-A'mash, from Abu Ghalib, from Abu Umamah (may Allah be pleased with him), who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "People of innovation are the dogs of the people of Hell." 3 Urdu: (Qadi Husayn ibn Isma'il narrated from Muhammad ibn Abd Allah Makhrami, who narrated from Isma'il ibn Aban, who narrated from Hafs ibn Ghiyath, who narrated from A'mash, who narrated from Abu Ghalib, who narrated the Hadith from Abu Umamah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:) People of bad creed are the dogs of the dwellers of Hell.

Footnotes: 1 Musnad Ahmad bin Hanbal narrated from Musnad Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr Beirut 1/217. 2 Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, Hadith 1080, Dar al-Ma'rifah Beirut 1/528; Kanz al-Ummal citing Abu

Hatim al-Khuza'i, Hadith 1094, Muassasat al-Risalah Beirut 1/218. 3 Kanz al-Ummal citing [Dara]qutni in Al-Afrad from Abu Umamah, Hadith, Muassasat al-Risalah Beirut 1/223.

फ़तावा रज़विया खंड 11

ध्यान से सुनें, यदि आप सुन्नी हैं, तो कान खोलकर सुनें। "हमारे पास कोई बुरा उदाहरण नहीं है।" जो स्त्री किसी बद-मज़हब (नवाचार करने वाले) की पत्नी बन गई, वह वैसी ही है जैसे किसी कुत्ते के अधिकार में आ गई हो। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कोई चीज़ देकर उसे वापस लेने की मनाही को इस सुंदर तर्क के साथ बयान फ़रमाया:

[बॉक्स] अरबी: अपनी दी हुई चीज़ वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी को फिर से चाट लेता है। हमारे पास कोई बुरा उदाहरण नहीं है। 1 उर्दू: अपनी दी हुई चीज़ वापस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता उल्टी करके उसे फिर खा लेता है। क्या हमारे लिए कोई बुरा उदाहरण नहीं है?

अब यह पता लगाना रह गया है कि बद-मज़हब कुत्ता है या नहीं? हाँ, निश्चित रूप से, बल्कि कुत्ते से भी बदतर और अपवित्र है। कुत्ता फासिक (पापी) नहीं है, और यह दीन और मज़हब की जड़ों में फासिक है। कुत्ते पर कोई अज़ाब (दंड) नहीं है और यह कठोर अज़ाब का हकदार है। मेरी बात न मानें, सैय्यदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस मानें। अबू हाज़िम खुज़ाई ने अपने हदीस संग्रह में हज़रत अबू उमामा बाहिली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "बिदअत वाले (नवाचारी) जहन्नमियों के कुत्ते हैं।" 2 बद-मज़हब लोग जहन्नम के कुत्ते हैं। इमाम दारकुतनी की रिवायत इस प्रकार है:

[बॉक्स] अरबी: काज़ी अल-हुसैन इब्न इस्माइल ने हमसे बयान किया, मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला अल-मख्रमी ने हमसे बयान किया, इस्माइल इब्न अबान ने हमसे बयान किया, हफ़्स इब्न ग़ियास ने हमसे बयान किया, अअमश से, उन्होंने अबू ग़ालिब से, उन्होंने अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बिदअत वाले लोग जहन्नमियों के कुत्ते हैं।" 3 उर्दू: (काज़ी हुसैन इब्न इस्माइल ने मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला मख्रमी से, उन्होंने इस्माइल इब्न अबान से, उन्होंने हफ़्स इब्न ग़ियास से, उन्होंने अअमश से, उन्होंने अबू ग़ालिब से, उन्होंने अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हदीस बयान की कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:) बद-मज़हब लोग दोज़खियों के कुत्ते हैं।

पाद-टिप्पणियाँ: 1 मुसनद अहमद बिन हंबल, मुसनद अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरूत 1/217। 2 फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामि' अस-सग़ीर हदीस 1080, दारुल मारिफ़ा बेरूत 1/528; कन्ज़ुल उम्माल अबू हातिम अल-खुज़ाई के हवाले से हदीस 1094,

मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 1/218। 3 कन्ज़ुल उम्माल [दार]कुतनी के हवाले से अल-अफ़राद में अबू उमामा से, हदीस, मुअस्ससतुल रिसाला बेरूत 1/223।

पृष्ठ 401/739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

سینو سینو اگر سنی ہو تو بگوش سنو لیس لنا مثل السوء التی صارت فراش مبتدع کالتی کانت فراشا لکلب ہمارے لیے بری مثل نہیں جو عورت کسی بد مذہب کی جو رو بنی وہ ایسی ہی ہے جیسے کسی کتے کے تصرف میں آئی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے کوئی چیز دے کر پھیر لینے کا ناجائز ہونا اس وجہ انیق سے بیان فرمایا:

[Box] العائد فی ھبتہ کالکلب یعود فی قیئہ لیس لنا مثل السوء۔ 1 اپنی دی ہوئی چیز پھیرنے والا ایسا ہے جیسے کتا قے کر کے اسے پھر کھا لیتا ہے۔ ہمارے لیے بری مثل نہیں؟

اب اتنا معلوم کرنا رہا کہ بد مذہب کتا ہے یا نہیں؟ ہاں ضرور ہے بلکہ کتے سے بھی بدتر و ناپاک تر، کتا فاسق نہیں اور یہ اصل دین و مذہب میں فاسق ہے، کتے پر عذاب نہیں اور یہ عذاب شدید کا مستحق ہے، میری نہ مانو سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی حدیث مانو، ابو حازم خزاعی اپنے جزء حدیثی میں حضرت ابو امامہ باہلی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اصحاب البدع کلاب اھل النار 2۔ بد مذہبی والے جہنمیوں کے کتے ہیں، امام دار قطنی کی روایت یوں ہے:

[Box] حدثنا القاضی الحسین بن اسمعیل نامحمد بن عبد اللہ المخرمی نا اسمعیل بن ابان نا حفص بن غیاث عن الاعمش عن ابی غالب عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اھل البدع کلاب اھل النار 3۔ (قاضی حسین بن اسمعیل نے محمد بن عبد اللہ مخرمی سے انھوں نے اسمعیل بن ابان سے انھوں نے حفص بن غیاث سے انھوں نے اعمش سے انھوں نے ابو

غالب سے انھوں نے ابو امامہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے حدیث بیان کی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا) بد مذہب لوگ دوزخیوں کے کتے ہیں۔

1 مسند احمد بن حنبل مروی از مسند عبد اللہ ابن عباس رضی اللہ عنہ دار الفکر بیروت ۲۱۷/۱ 2 فیض القدیر شرح الجامع الصغیر حدیث ۱۰۸۰ دار المعرفۃ بیروت ۵۲۸/۱، کنز العمال بحوالہ ابی حاتم الخزاعی حدیث ۱۰۹۴ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۱۸/۱ 3 کنز العمال بحوالہ قط فی الافراد عن ابی امامہ حدیث موسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۲۳/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

Abu Nu'aym in Hilya narrates from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said:

Ahl al-Bida' sharru al-khalqi wa al-khaliqah - 1 | People of innovation (heretics) are the worst of mankind and the worst of creatures.

Allama Munawi stated in at-Taysir: **Al-khalqu an-nasu wa al-khaliqatu al-baha'im - 2** | 'Khalq' refers to people and 'Khaliqah' refers to animals. (Note)

Undoubtedly, the Hadith prohibits marriage with them; Uqayli and Ibn Hibban narrate from Hazrat Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: **La tujalisuhum wa la tusharibuhum wa la tu'akiluhum wa la tunakihuhum - 3** | Do not sit with heretics, do not drink with them, do not eat with them, and do not marry with them.

Seventh Argument: The permissibility, lack of prohibition, and lack of sin regarding marriage with a 'Kitabiyah' (woman from the People of the Book) applies only to a 'Dhimmi' Kitabiyah who lives in 'Dar al-Islam' (Islamic territory) under the rule of Muslims as a submissive subject. Even then, it is not free from dislike (karahah), rather it is a harmless dislike. It is stated in Fath al-Qadir and other sources: **Al-awla an la yaf'ala wa la ya'kula dhabihatahum illa li-darurah - 4** | It is better not to do so [marry them] and not to eat their slaughtered meat except in case of necessity. (Note)

However, marriage with a 'Harbiyah' Kitabiyah (a woman from a hostile non-Islamic land) is not permissible as mentioned above; rather, upon investigation, it is prohibited and sinful. The esteemed scholars state the reason for prohibition as the fear of 'fitnah' (trial/discord), as it is possible that such an emotional bond develops that a person settles down in 'Dar al-Harb' (non-Islamic territory). Furthermore, there is a fear for the child that they might learn the habits of the disbelievers. There is also a possibility that if the woman is captured while pregnant, the child will become a slave. It is stated in Al-Muhit: **Yukrahu tazawuju al-kitabiyati al-harbiyati li-anna al-insana la ya'manu an yakuna bainahuma waladun fayansha'u 'ala taba'i'i ahli al-harbi wa yatakhallaqu bi-akhlaqihim fala...** | Marrying a 'Harbiyah' Kitabiyah woman is disliked because a person cannot be certain that if a child is born between

them, he will grow up according to the nature of the people of war (Ahl al-Harb) and adopt their character, then the Muslim [will be separated] from this child.

---

1 Hilyat al-Awliya, Biography of Abu Mas'ud al-Mawsili, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 8/291 2 At-Taysir Sharh al-Jami' as-Saghir, under the preceding Hadith, Maktaba Imam Shafi'i, Riyadh, Saudi Arabia, 1/383 3 Ad-Du'afa al-Kabir by Uqayli, Hadith, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/126 4 Fath al-Qadir, Chapter on prohibited women, Nuriya Razawiyya, Sukkur, 3/135

फ़तवा रज़विया जिल्द 11

अबू नुऐम हिल्या में अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: **अहल-उल-बिदअ शर्र-उल-खल्क़ि वल-खलीक़ह - 1** | बे-दीन लोग सब आदमियों से बदतर और सब जानवरों से बदतर हैं।

अल्लामा मुनावी ने अत-तयसीर में फ़रमाया: **अल-खल्क़ु अन-नासु वल-खलीक़तु अल-बहाइम - 2** | खल्क़ से मुराद लोग और खलीक़ह से मुराद जानवर हैं। (त)

यकीनन हदीस में उनके साथ निकाह से मना फ़रमाया गया है; अक़ीली और इब्ने हब्बान हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: **ला तुजालिसुहुम वला तुशारिबुहुम वला तुआकिलुहुम वला तुनाकिहुहुम - 3** | बे-दीनों के पास न बैठो, उनके साथ पानी न पियो, न खाना खाओ, उनसे शादी-ब्याह न करो।

सातवीं दलील: किताबिया से निकाह की इजाज़त, मनाही न होना और गुनाह न होना सिर्फ उस किताबिया ज़िम्मी के लिए है जो इस्लाम की फ़रमाबरदार होकर दारुल इस्लाम में मुसलमानों की हुकूमत में रहती हो, वह भी कराहत (नापसंदगी) से खाली नहीं बल्कि बे-ज़रर मकरूह है, फ़तहुल् क़दीर वग़ैरह में फ़रमाया: **अल-औला अन ला यफ़अला वला यअकुल ज़बीहतहुम इल्ला लि-दरूरह - 4** | बेहतर यह है कि बिना ज़रूरत उनसे निकाह न करे और न ज़बीहा (ज़बह किया हुआ जानवर) खाए। (त)

लेकिन किताबिया हरबिया (दुश्मन गैर-इस्लामी देश की) से निकाह यानी मज़कूरा जायज़ नहीं है बल्कि तहकीक के मुताबिक मना और गुनाह है, उलेमा-ए-किराम मनाही की वजह फ़ितने का अंदेशा करार देते हैं कि मुमकिन है कि इससे दिल का ऐसा लगाव पैदा हो जाए जिसके कारण आदमी दारुल हर्ब में बस जाए, साथ ही बच्चे पर अंदेशा है कि वह काफ़िरों की आदतें सीखे, और यह भी संभावना है कि औरत गर्भावस्था की हालत में कैद हो जाए तो बच्चा गुलाम बन जाए, अल-मुहीत में है: **युक़रहु तज़व्वुजु अल-किताबियति अल-हरबियति लि-अन्ना अल-इंसाना ला यअमनु अन यकूनी बैनहुमा वलदुन फ़यंसशउ अला तबा-इइ अहलि अल-हर्बि व यतखल्लक़ु बि-अख्लाक़िहिम फ़ला...** | हरबिया किताबिया औरत से निकाह मकरूह है क्योंकि इंसान इस बात से बे-फ़िक्र नहीं हो सकता कि उससे बच्चा पैदा हो तो वह अहल-ए-हर्ब (जंग करने वाले) के बीच

परवरिश पाएगा और उनके तौर-तरीके अपना लेगा और फिर मुसलमान इस बच्चे से (महरूम हो जाएगा)।

---

1 हिल्या-तुल-औलिया, तर्जुमा अबू मसऊद मूसली, दारुल किताब अल-अरबी, बेरूत, 291/8 2 अत-तयसीर शरह अल-जामी अस-सगीर, हदीस के तहत, मकतबा इमाम शाफ़ई, रियाद, सऊदी अरब, 383/1 3 अद-दुअफ़ा अल-कबीर लिल-अक़ीली, हदीस, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 126/1 4 फ़तहुल् क़दीर, महर्रमात के बयान में, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 135/3

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

ابو نعیم حلیہ میں انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: **اھل البدع شر الخلق و الخلیقۃ 1** | بد مذہب لوگ سب آدمیوں سے بدتر اور سب جانوروں سے بدتر ہیں۔

علامہ مناوی نے تیسیر میں فرمایا: **الخلق الناس و الخلیقۃ البہائم 2** | خلق سے مراد لوگ اور خلیقہ سے مراد جانور ہیں۔ (ت)

لا جرم حدیث میں ان کی مناکحت سے ممانعت فرمائی، عقیلی و ابن حبان حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: **لا تجالسوھم و لا تشاربوھم و لا تؤاکلوھم و لا تناکحوھم 3** | بد مذہبوں کے پاس نہ بیٹھو، ان کے ساتھ پانی نہ پیو، نہ کھانا کھاؤ، ان سے شادی بیاہ نہ کرو۔

دلیل ہفتم: کتابیہ سے نکاح کا جواز عدم ممانعت و عدم گناہ صرف کتابیہ ذمیہ میں ہے جو مطیع الاسلام ہو کر دار الاسلام میں مسلمانوں کے زیر حکومت رہتی ہو وہ بھی خالی از کراہت نہیں بلکہ بے ضرر مکروہ ہے، فتح القدیر وغیرہ میں فرمایا: **الاولٰی ان لا یفعل و لا یاکل ذبیحتھم الا لضرورۃ 4** | بہتر یہ ہے کہ بلا ضرورت ان سے نکاح نہ کرے اور نہ ذبیحہ کھائے۔ (ت)

مگر کتابیہ حربیہ سے نکاح یعنی مذکورہ جائز نہیں بلکہ عند التحقیق ممنوع و گناہ ہے، علمائے کرام وجہ ممانعت اندیشہ فتنہ قرار دیتے ہیں کہ ممکن کہ اس سے ایسا تعلق قلب پیدا ہو جس کے باعث آدمی دارالحرب میں وطن کر لے نیز بچے پر اندیشہ ہے کہ کفار کی عادتیں سیکھے نیز احتمال ہے کہ عورت بحالت حمل قید کی جائے تو بچہ غلام بنے، محیط میں ہے: **یکرہ تزوج**

الکتابیۃ الحربیۃ لان الانسان لا یامن ان یکون بینھما ولد فینشا علی طبائع اھل الحرب و یتخلق باخلاقھم فلا | حربیہ کتابیہ عورت سے نکاح مکروہ ہے کیونکہ انسان اس بات سے بے فکر نہیں ہو سکتا کہ اس سے بچہ پیدا ہو تو وہ اہل حرب میں پرورش پائیگا اور انکے طور طریقے اپنا لے گا اور پھر مسلمان اس بچے سے

---

1 حلیۃ الاولیاء ترجمہ ابو مسعود موصلی دار الکتاب العربی بیروت ۲۹۱/۸ 2 التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ما قبل مکتبہ امام شافعی الریاض سعودیہ ۳۸۳/۱ 3 الضعفاء الکبیر للعقیلی حدیث دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۲۶/۱ 4 فتح القدیر فصل فی بیان المحرمات نوریہ رضویہ سکھر ۱۳۵/۳

Fatawa Razviya, Volume 11

A Muslim may be able to uproot him from that habit.[1]

He will not be able to leave their habits. (T)

It is in Fath-ul-Mueen from Allama Syed Ahmad Hamwi:

Even if she is a Harbiya (woman from a hostile state), but it is disliked by consensus because he might choose to stay in Dar-ul-Harb (hostile territory), and because it exposes his child to slavery; she might become pregnant and be captured with him, so his child would become a slave even if he is a Muslim, and the child might adopt the character of the disbelievers.[2]

The ruling of permissibility of marriage also includes a Harbiya Kitabiya (woman of the people of the book from a hostile land), but this is disliked by consensus, because it is possible that due to the wife he may prefer to stay in Dar-ul-Harb, and also because there can be a way to involve the child in slavery, that his pregnant wife might be captured by Muslims, so the child would also become a prisoner and slave because of the mother, even if he is a Muslim, also that child can adopt the habits of disbelievers in Dar-ul-Harb. (T)

The Absolute Researcher said in Fath-ul-Qadeer after the aforementioned text:

A Harbiya Kitabiya is disliked by consensus because it opens the door to fitna (tribulation) due to the possibility of attachment necessitating staying with her in Dar-ul-Harb, and exposing the child to adopting the character of the people of disbelief, and to slavery if she is captured while pregnant, so he is born a slave even if he is a Muslim.[3]

Harbiya Kitabiya is disliked by consensus because there is fear of opening the door of tribulation, that is, the connection with the wife can prepare the Muslim man to live in Dar-ul-Harb, and it is a way to make the child accustomed to the habits of disbelievers, and also an attempt to pave the way for the child's slavery because it is possible that she becomes pregnant and is arrested by Muslims, so the child would also become a slave because of the mother even if he were a Muslim. (T)

It is in Radd al-Muhtar:

His statement "it is better not to do it" signifies Makruh-e-Tanzihi (slightly disliked) regarding a non-Harbiya, and

From his statement "it is better not to do it," this benefit is obtained that marriage with a non-Harbiya Kitabiya is Makruh-e-

what follows it signifies Makruh-e-Tahrimi (prohibitively disliked) regarding a Harbiya.[4]

Tanzihi, while what follows gives the benefit of being Makruh-e-Tahrimi regarding a Harbiya. (T)

---

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, referring to Al-Muhit, Chapter on Prohibited [Marriages], H.M. Saeed Company, Karachi, 3/103. [2] Fath al-Mueen, Chapter on Prohibited [Marriages], H.M. Saeed Company, Karachi, 2/20. [3] Fath al-Qadir, Chapter on Prohibited [Marriages], Nuriya Razviya, Sukkur, 3/135. [4] Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibited [Marriages], Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/289.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

एक मुसलमान उसे उस आदत से उखाड़ने में सक्षम हो वह उनकी आदतों को छोड़ने में सक्षम नहीं सकता है।[1] होगा। (त)

फतह-उल-मुईन में अल्लामा सैयद अहमद हमवी से है:

यदि वह ह़रबिया हो लेकिन सर्वसम्मति से नापसंद (मकरूह) है क्योंकि शायद वह दार-उल-ह़र्ब में रहने का विकल्प चुन ले, और क्योंकि इसमें अपनी संतान को दासता में डालने का जोखिम है; शायद वह गर्भवती हो जाए और उसके साथ पकड़ ली जाए, तो उसका बच्चा गुलाम बन जाएगा भले ही वह मुसलमान हो, और शायद बच्चा काफ़िरों के आचरण को अपना ले।[2]

निकाह की अनुमति का हुक्म किताबी ह़रबिया पर भी लागू होता है लेकिन यह सर्वसम्मति से मकरूह है, क्योंकि हो सकता है कि पत्नी के कारण वह दार-उल-ह़र्ब में रहना पसंद कर ले, और इसलिए भी कि इसमें बच्चे को गुलामी में डालने का रास्ता हो सकता है कि उसकी वह गर्भवती पत्नी मुसलमानों के हाथों कैद हो जाए तो बच्चा भी माँ की वजह से कैदी होकर गुलाम बन जाए चाहे वह मुसलमान हो, साथ ही वह बच्चा दार-उल-ह़र्ब में काफ़िरों की आदतों को अपना सकता है। (त)

मुहाक़्क़िक़ अलल इतलाक़ ने फ़तह अल-क़दीर में उपरोक्त इबारत के बाद फ़रमाया:

ह़रबिया किताबी सर्वसम्मति से मकरूह है क्योंकि इससे फ़ितने का दरवाज़ा खुलने की संभावना है, पत्नी से लगाव के कारण दार-उल-ह़र्ब में उसके साथ रहने की आवश्यकता हो सकती है, और बच्चे को कुफ़्र के लोगों के आचरण अपनाने और गुलामी के जोखिम में डालना है यदि वह गर्भावस्था में पकड़ी जाती है, तो वह गुलाम पैदा होगा चाहे वह मुसलमान हो।[3]

ह़रबिया किताबी सर्वसम्मति से मकरूह है क्योंकि इससे फ़ितने का दरवाज़ा खुलने का अंदेशा है, वह यह कि पत्नी से लगाव मुसलमान मर्द को दार-उल-ह़र्ब में रहने पर आमादा कर सकता है और बच्चे को काफ़िरों की आदतों का आदी बनाने का रास्ता है तथा बच्चे की गुलामी के लिए रास्ता हमवार करने की कोशिश है क्योंकि हो सकता है वह पत्नी गर्भवती होकर मुसलमानों के हाथों गिरफ्तार हो जाए तो बच्चा भी माँ की वजह से गुलाम बने चाहे वह मुसलमान होगा। (त)

रद-अल-मुह्तार में है:

उनका यह कथन कि "बेहतर है न करे" गैर-ह़रबिया के संबंध में मकरूह-ए-तन्ज़ीही का लाभ देता है और इसके बाद वाला ह़रबिया के संबंध में मकरूह-ए-तहरीमी का लाभ देता है।[4]	उनके कथन "बेहतर है न करे" से यह लाभ मिलता है कि किताबी गैर-ह़रबिया से निकाह मकरूह-ए-तन्ज़ीही है जबकि इसके बाद ह़रबिया के बारे में मकरूह-ए-तहरीमी होने का लाभ देता है। (त)

---

[1] अल-बह्र अर-राईक़, अल-मुह़ीत के हवाले से, हराम निकाह का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/103. [2] फ़तह अल-मुईन, हराम निकाह का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/20. [3] फ़तह अल-क़दीर, हराम निकाह का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/135. [4] रद अल-मुह्तार, हराम निकाह का अध्याय, दार इह़या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/289.

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

یستطیع المسلم قلعه عن تلك العادة۔[1] ان کی عادات کو چھوڑنے پر قادر نہ ہوگا۔ (ت)

فتح اللہ المین میں علامہ سید احمد حموی سے ہے:

عم مالو کانت حربیة ولکن مکروہ جوازِ نکاح کا حکم کتابیہ حربیہ کو بھی شامل ہے لیکن یہ مکروہ ہے بالاجماع، کیونکہ ہو سکتا ہے کہ بیوی کی وجہ سے دارالحرب میں قیام پسند کرلے، اور اس لیے بھی کہ اس میں بچے کو غلامی میں مبتلا کرنے کی سبیل ہو سکتی ہے کہ اس کی وہ حاملہ بیوی مسلمانوں کے ہاتھ قید ہو جائے تو بچہ بھی ماں کی وجہ سے قیدی ہو کر غلام بن جائے اگرچہ وہ مسلمان ہے نیز وہ بچہ دارالحرب میں کفار کی عادات کو اپنا سکتا ہے۔ (ت)

بالاجماع لانه ربما یختار المقام فی دار الحرب ولانه فیه تعریض ولده للرق فربما تحبل وتسبی معه فیصیر ولده رقیقا وان کان مسلما وربما یتخلق الولد باخلاق الکفار۔ [2]

محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں بعدِ عبارت مذکورہ فرمایا:

وتکرہ الکتابیة الحربیة اجماعا لانفتاح باب الفتنة من امکان التعلق المستدعی للمقام معها فی دار الحرب وتعریض الولد علی التخلق باخلاق اهل الکفر وعلی الرق بان تسبی وهی حبلی فیولد رقیقا وان کان مسلما۔[3]

حربیہ کتابیہ بالاجماع مکروہ ہے کیونکہ اس سے فتنے کا دروازہ کھلنے کا اندیشہ ہے وہ یہ کہ بیوی سے تعلق مسلمان مرد کو دارالحرب میں رہنے پر آمادہ کر سکتا ہے اور بچے کو کفار کی عادات کا عادی بنانے کا راستہ ہے نیز بچے کی غلامی کے لیے راستہ ہموار کرنے کی کوشش ہے کیونکہ ہو سکتا ہے وہ بیوی حاملہ ہو کر مسلمانوں کے ہاتھوں گرفتار

ہوجائے تو بچہ بھی ماں کی وجہ سے غلام بنے اگرچہ وہ مسلمان ہوگا۔ (ت)

ردالمختار میں ہے:

قولہ والاولی ان لا یفعل یفید کراھۃ التنزیہ فی غیر الحربیۃ وما بعدہ یفید کراھۃ التحریم فی الحربیۃ۔[4]

اس کے قول کہ "بہتر ہے نہ کرے" سے یہ فائدہ ملتا ہے کہ کتابیہ غیر حربیہ سے نکاح مکروہِ تنزیہی ہے جبکہ اس کا مابعد میں حربیہ کے بارے میں مکروہِ تحریمی ہونے کا فائدہ دیتا ہے۔ (ت)

---

[1] بحر الرائق بحوالہ المحیط فصل فی المحرمات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۳/۳ [2] فتح المعین فصل فی المحرمات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۰/۲ [3] فتح القدیر فصل فی المحرمات نوریہ رضویہ سکھر ۱۳۵/۳ [4] ردالمحتار فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۸۹/۲

Fatawa Rizvia Volume 11

Let people of justice observe whether the concerns raised by the esteemed Imams there for men and children are more, or those present here for women and children. There, it is a matter concerning men; here, it concerns women. He is the ruler, she is the ruled; he is stable, she is fickle; he is the influencer, she is the influenced; he is complete in intellect and religion, she is deficient. If he settles in a hostile land (Dar al-Harb), he becomes a sinner but does not lose his religion. If she, in his company, becomes an innovator, her religion itself departs. A child, after reaching consciousness, remains under the upbringing of parents. There, the father is a Muslim; here, he is a follower of a wrong sect (misguided). There, there is a possibility of learning the habits of disbelievers; here, there is a strong likelihood of religion itself changing. If one becomes a slave there, it is a worldly humiliation; in the hereafter, thousands of slaves will be more honored and superior than millions of free people. Here, if one becomes a Rafidi or Wahhabi, it is an eternal humiliation and religious disgrace. There, slavery was a possibility, but here this bad end is a strong presumption. So, if those concerns there led to 'dislike of purification' (karahat-e-tanzihiya), here these suspicions reach 'dislike of prohibition' (karahat-e-tahrimiya). We have already stated above that in Sharia, things leading to what is prohibited are also prohibited. And when they consider prohibition there because of them, here it's an open prohibition due to them. This is the third answer to the doubt that they are even worse than them. Furthermore, in the pure Sharia, although an innovator whose innovation has not reached the limit of disbelief will be less burdened in the hereafter than disbelievers—their punishment is eternal while his is temporary—and after death, there will be ease in worldly rulings for him, yet during his life, the treatment toward him is more severe than the treatment of a protected non-Muslim (Zimmi). The reason is clear to any rational person. There is never that fear from a Zimmi disbeliever which exists from this enemy of religion who claims Islam and well-wishing for Muslims. He is an open enemy, while this one is a snake in the grass. His words will not settle in the heart of even the simplest person because everyone knows he is a rejected disbeliever, a clear denier of God and His Messenger. But when he misleads using the pretexts of the Quran and Hadith, it is certainly more hidden and manifest. We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds. Imam Hujjat al-Islam Muhammad Muhammad Muhammad Ghazali (may his secret be sanctified) says in Ihya' al-Ulum al-Sharif:

[Boxed Text] (Arabic): If the innovation is such that it makes one a disbeliever, then his matter is more severe than a Zimmi (protected non-Muslim), because he is not settled with Jizya nor is he accommodated with a contract of protection. And if it is such that he is not made a disbeliever by it, then his matter between him and Allah is surely lighter than a disbeliever. However, the matter of denouncing him is more severe than against a disbeliever because the evil of a disbeliever does not spread.

(Urdu Translation): An innovation that plunges a Muslim into disbelief makes such an innovating disbeliever worse than a Zimmi disbeliever in the Islamic state, because he does not become bound by Jizya nor does he care for the contract of protection. And if the innovation is such that the innovator cannot be called a disbeliever because of it, then the matter of such an innovator compared to a disbeliever is certainly lighter in the sight of Allah Almighty, but the matter of his refutation is more important compared to a disbeliever because the evil of a disbeliever for Muslims is not so harmful...

इन्साफ़ वाले लोग ग़ौर करें कि जो ख़दशात आइम्मा-ए-कराम ने वहाँ मर्दों और औलाद के लिए पैदा किए हैं, वे ज़्यादा हैं या ये जो यहाँ औरतों और औलाद के लिए हैं? वहाँ मर्द का मामला है, यहाँ औरत का। वह हाकिम होता है, यह महकूम; वह मुस्तक़िल होता है, यह मुतल्लविना; वह मुअस्सिर होता है, यह मुतअस्सिर; वह अक़्ल व दीन में कामिल होता है, यह नाक़िसा। अगर वह दारुल-हर्ब में मुतवत्तिन हो गया तो गुनहगार हुआ, दीन न गया; अगर यह उसकी सोहबत में मुब्तदिआ हो गई तो दीन ही रुख़सत हो गया। बच्चा शहूर के बाद अपने माँ-बाप की तरबियत में रहता है। वहाँ बाप मुस्लिम है, यहाँ बद-मज़हब। वहाँ काफ़िरों की आदतें ही सीखने का एहतिमाल है, यहाँ ख़ुद मज़हब के बदल जाने का क़वी मज़न्ना है। वहाँ अगर ग़ुलाम बना तो एक दुनियावी ज़िल्लत है, आख़िरत में हज़ारों ग़ुलाम करोड़ों आज़ादों से अअज़्ज़ व आला होंगे; यहाँ अगर राफ़िज़ी-वहाबी हो गया तो उख़रवी ज़िल्लत और दीनी फ़ज़ीहत है। वहाँ ग़ुलामी एक एहतिमाल थी और यहाँ यह बद-अंजामी मज़नून क़वी। तो वहाँ वे अंदेशे अगर कराहत-ए-तन्ज़ीहिया लाते थे, यहाँ ये ज़ुनून कराहत-ए-तहरीमिया तक पहुँच जाते हैं। हम ऊपर गुज़ारिश कर चुके हैं कि शरअन जो चीज़ हराम है, उसके मुक़द्दमात व दवाओ भी हराम होते हैं। और जब वहाँ उनके सबब कराहत-ए-तहरीम मानें तो यहाँ उनके बाइस खुली तहरीम रखी है। यह तीसरा जवाब है इस शुबहे का कि ये उनसे भी गए-गुज़रे हैं। मा-हाज़ा शरा-ए-मुतह्हरा में अगरचे वह मुब्तदिअ जिसकी बिदअत हद-ए-कुफ़्र को न पहुँची, आख़िरत में कुफ़्फ़ार से हल्का रहेगा, उनका अज़ाब अबदी है और इसका मुनक़तेअ, और बा'द मौत दुनियावी अहकाम में भी ख़िफ़्फ़त होगी, मगर उसके जीते-जी उसके साथ बर्ताव काफ़िर-ए-ज़िम्मी के बर्ताव से अशुद्द (सख़्त) है, और इसकी वजह ज़ी-अक़्ल पर रौशन है। काफ़िर-ए-ज़िम्मी से हरगिज़ वह अंदेशा नहीं जो इस दुश्मन-ए-दीन मुद्दई-ए-इस्लाम व ख़ैर-ख़्वाह-ए-मुसल्मीन से है। वह खुला दुश्मन है और यह आस्तीन का साँप। उसकी बात किसी जाहिल से जाहिल के दिल पर न जमेगी कि सब जानते हैं यह मरदूद काफ़िर है, ख़ुदा और रसूल का सरीह मुनकिर है। और यह जब क़ुरआन व हदीस ही के हीले से बहकाएगा तो ज़रूर असरअ व अज़हर है। वल-इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल-आलमीन। इमाम हुज्जतुल-इस्लाम मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद ग़ज़ाली क़ुद्दिस सिर्रहु अल-आली एहया-उल-उलूम शरीफ़ में फ़रमाते हैं:

[बॉक्स टेक्स्ट] (अरबी): यदि बिदअत ऐसी है जिससे कुफ़्र लाज़िम आता है, तो उसका मामला ज़िम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) से अधिक सख़्त है, क्योंकि वह जजिया का पाबंद नहीं होता और न ही उसे

संरक्षण के अनुबंध के साथ स्वीकार किया जाता है। और यदि वह ऐसी है जिससे कुफ़्र लाज़िम नहीं आता, तो उसका मामला अल्लाह के नज़दीक काफ़िर की तुलना में अवश्य हल्का है। लेकिन उसका खंडन करना काफ़िर के खंडन से अधिक आवश्यक है, क्योंकि काफ़िर की बुराई दूसरों तक नहीं फैलती।

(उर्दू अनुवाद): वह बिदअत जो मुसलमान को कुफ़्र में मुब्तला कर दे तो ऐसा काफ़िर मुब्तदिअ दारुल इस्लाम में ज़िम्मी काफ़िर से बदतर है क्योंकि वह जजिया का पाबंद नहीं बनता और न ही वह अक़्द-ए-ज़िम्मा की परवाह करता है। और अगर बिदअत ऐसी हो जिसकी वजह से मुब्तदिअ को काफ़िर नहीं कहा जा सकता तो ऐसे मुब्तदिअ का मामला काफ़िर की निस्बत से अल्लाह तआला के यहाँ ज़रूर ख़फ़ीफ़ है लेकिन इसकी तरदीद का मामला काफ़िर के मुक़ाबले में ज़्यादा अहम है क्योंकि काफ़िर का शर मुसलमानों के लिए इतना नुक़सानदेह...

पेज 404/739

اہلِ انصاف ملاحظہ کریں کہ جو اندیشے ائمہ کرام نے وہاں مرد اور اولاد کے لیے پیدا کئے وہ زائد ہیں یا یہ جو یہاں عورت و اولاد کے لیے ہیں، وہاں مرد کا معاملہ ہے یہاں عورت کا، وہ حاکم ہوتا ہے یہ محکوم، وہ مستقل ہوتا ہے یہ متلونہ، وہ موثر ہوتا ہے یہ متاثر، وہ عقل ودین میں کامل ہوتا ہے یہ ناقصہ، وہ اگر دارالحرب میں متوطن ہو گیا تو گنہگار ہوا دین نہ گیا یہ اگر اس کی صحبت میں مبتد عہ ہو گئی تو دین ہی رخصت ہوا، بچہ بعد شعور اپنے ماں باپ کی تربیت میں رہتا ہے وہاں باپ مسلم ہے یہاں بد مذہب، وہاں کافروں کی عادتیں ہی سیکھنے کا احتمال ہے یہاں خود مذہب کے بدل جانے کا قوی مظنہ، وہاں اگر غلام بنا تو ایک دنیوی ذلت ہے آخرت میں ہزاروں غلام کروڑوں آزادوں سے اعز واعلیٰ ہوں گے یہاں اگر رافضی وہابی ہو گیا تو اخروی ذلت دینی فضیحت ہے۔ وہاں غلامی ایک احتمال تھی اور یہاں یہ بدانجامی مظنون قوی، تو وہاں وہ اندیشے اگر کراہت تنزیہیہ لاتے یہاں یہ ظنون کراہت تحریمیہ تک پہنچ جاتے، ہم اوپر گزارش کر چکے ہیں کہ شرعا جو چیز حرام ہے اس کے مقدمات و دواعی بھی حرام ہوتے ہیں اور جب کہ وہاں ان کے سبب کراہت تحریم مانیں تو یہاں ان کے باعث کھلی تحریم رکھی ہے، یہ تیسرا جواب ہے اس شبہ کا کہ یہ ان سے بھی گئے گزرے، مع ہذا شرع مطہر میں اگرچہ وہ مبتدع جس کی بدعت حد کفر کو نہ پہنچی آخرت میں کفار سے ہلکا رہے گا ان کا عذاب ابدی ہے اور اس کا منقطع اور بعد موت دنیوی احکام میں بھی خفت ہو گی مگر اس کے جیتے جی اس کے ساتھ برتاؤ کافر ذمی کے برتاؤ سے اشد ہے اور اس کی وجہ ذی عقل پر روشن، کافر ذمی سے ہر گز وہ اندیشہ نہیں جو اس دشمن دین مدعی اسلام وخیر خواہ مسلمین سے ہے وہ کھلا دشمن ہے اور یہ مار آستین، اس کی بات کسی جاہل سے جاہل کے دل پر نہ جمے گی کہ سب جانتے ہیں یہ مردود کافر ہے خدا اور

رسول کا صریح منکر ہے اور یہ جب قرآن وحدیث ہی کے حیلے سے بہکائے گا تو ضرور اسرع و اظہر ہے والعیاذ باللہ رب العالمین، امام حجتہ الاسلام محمد محمد محمد غزالی قدس سرہ العالی احیاء العلوم شریف میں فرماتے ہیں :

[باکس ٹیکسٹ] ان کانت البدعة بحیث یکفر بها فامره اشد من الذمی لانه لایقر بجزیة ولا یسامح بعقد ذمة وان کان مما لایکفر به فامره بینه وبین الله اخف من الکافر لامحالة۔ ولکن الامر فی الانکار علیه اشد منه علی الکافر لان شر الکافر غیر متعد

وہ بدعت جو مسلمان کو کفر میں مبتلا کر دے تو ایسا کافر بدعتی دار الاسلام میں ذمی کافر سے بدتر ہے کیونکہ وہ جزیہ کا پابند نہیں بنتا اور نہ ہی وہ عقد ذمہ کی پروا کرتا ہے اور اگر بدعت ایسی ہو جس کی وجہ سے بدعتی کو کافر نہیں کہا جاسکتا تو ایسے بدعتی کا معاملہ کافر کی نسبت سے اللہ تعالیٰ کے ہاں ضرور خفیف ہے لیکن اس کی تردید کا معاملہ کافر کے مقابلہ میں زیادہ اہم ہے کیونکہ کافر کا شر مسلمانوں کے لیے اتنا نقصان دہ

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Boxed Content] For Muslims believe him (an open disbeliever) to be a disbeliever, so they do not pay attention to his words since he does not claim Islam or adherence to the truth. However, the innovator who calls to innovation and claims that what he calls to is the truth is a cause for the misguidance of people. Therefore, his evil is transmissible, and the recommendation to manifest hatred and enmity towards him, to cut ties with him, to belittle him, to denounce him for his innovation, and to warn people away from him is even more intense and carries more reward.

(T) This is the fourth answer to this doubt. Praise be to Allah, the sun of truth has shone through the clouds without a veil, and it has become clear through evident proofs that a Sunni marrying any person of wrong beliefs—not just a Wahhabi—is either totally void or at least prohibited and a sin. Yes, some of our brothers, deceived by the trickery of certain cunning Wahhabis, offer the excuse that these rulings apply only to those who are outside the fold of Ahl al-Sunnah, and that Wahhabis are not like that; they claim "so-and-so Wahhabis are actually Sunnis." The answer to this is simply: Dear brothers! Devotees of the true religion! Beware, these are traps hidden in the grass; do not be deceived. The Wahhabis may say whatever they wish, for they fear neither God nor feel shame before people. But, dear Sunnis! How did you believe that some Wahhabis are Sunnis? Dear ones! Is this any less strange than saying "so-and-so is both day and night" or "such-and-such Christian is a believer"? Since Sunnism and Wahhabism are clearly distinct, how is their union possible? If they had said that "the people who are called Wahhabis are actually not Wahhabis but Sunnis," that would be a different matter. Very well, our eyes are brightened and our hearts are delighted; may God make it so. If this is truly the case, how does it harm us, and what effect does it have on this fatwa? The fatwa did not specify any individual like Zaid or Amr. The questioner asked about a Wahhabi, and the respondent gave an answer regarding the chapter on Wahhabis. If someone is not a Wahhabi, they are exempt from both the question and the answer. What doubt can there be regarding the correctness of the fatwa? Furthermore, dear brothers, this concessionary answer is based on accepting their claim; the stage of practical testing is still pending and remains to be seen. Claiming verbally "we are not Wahhabis" is just a matter of a few words, which is not difficult.

Alif Lam Meem. Do people think that they will be left alone because they say: 'We believe' [Verse 1-2, Surah Al-Ankabut]? [Boxed text:] Do people think that on this verbal claim...

1. Ihya Ulum al-Din, Book of Fellowship and Brotherhood, Chapter on the ranks of those who hate for the sake of Allah, Maktabah wa Matba'ah al-Mashhad al-Husayni, Cairo, Egypt, 169/2.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

[बॉक्स किया गया पाठ] चूँकि मुसलमान उसे (खुले काफ़िर को) काफ़िर मानते हैं, इसलिए वे उसकी बात पर ध्यान नहीं देते क्योंकि वह इस्लाम या सत्य का दावा नहीं करता है। लेकिन वह बिदअती (नवाचारी) जो बिदअत (नवाचार) की ओर बुलाता है और दावा करता है कि वह जिसकी ओर बुला रहा है वही सत्य है, वह लोगों के पथभ्रष्ट होने का कारण है। इसलिए उसकी बुराई फैलने वाली है, और उसके प्रति घृणा और शत्रुता प्रकट करने, उससे संबंध तोड़ने, उसे तुच्छ समझने, उसकी बिदअत के लिए उसकी निंदा करने और लोगों को उससे दूर करने की अनुशंसा और भी अधिक दृढ़ है और इसमें अधिक पुण्य है।

(त) यह इस संदेह का चौथा उत्तर है। अल्हम्दुलिल्लाह, सत्य का सूर्य बिना किसी घूँघट के बादलों से चमक उठा है और स्पष्ट प्रमाणों के माध्यम से यह स्पष्ट हो गया है कि सुन्नी का किसी भी विधर्मी के साथ विवाह करना—न केवल वहाबी, बल्कि पूरी तरह से व्यर्थ है या कम से कम निषिद्ध और पाप है। हाँ, हमारे कुछ भाई, कुछ चतुर वहाबियों की चालबाजी से धोखा खाकर यह बहाना बनाते हैं कि ये हुक्म केवल उन लोगों पर लागू होते हैं जो अहल-ए-सुन्नत के दायरे से बाहर हैं, और वहाबी ऐसे नहीं हैं; वे दावा करते हैं कि "अमुक वहाबी वास्तव में सुन्नी हैं।" इसका उत्तर सरल है: प्रिय भाइयों! सच्चे धर्म के भक्तों! सावधान रहें, ये घास में छिपे जाल हैं; धोखे में न आएं। वहाबी जो चाहें कह सकते हैं, क्योंकि वे न तो ईश्वर से डरते हैं और न ही लोगों के सामने शर्म महसूस करते हैं। लेकिन, प्रिय सुन्नियों! आपने कैसे मान लिया कि कुछ वहाबी सुन्नी हैं? प्रिय मित्रों! क्या यह "अमुक दिन और रात दोनों है" या "अमुक ईसाई मोमिन है" कहने से कम अजीब है? चूँकि सुन्नियत और वहाबियत स्पष्ट रूप से अलग हैं, तो उनका मिलन कैसे संभव है? यदि वे कहते कि "जो लोग वहाबी कहलाते हैं वे वास्तव में वहाबी नहीं बल्कि सुन्नी हैं," तो वह अलग बात होती। बहुत अच्छा, हमारी आँखें रोशन हुईं और हमारे दिल खुश हुए; खुदा ऐसा ही करे। यदि वास्तव में ऐसा है, तो इससे हमें क्या हानि है, और इस फतवे पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? फतवे में ज़ैद या अम्र जैसे किसी व्यक्ति को निर्दिष्ट नहीं किया गया था। प्रश्नकर्ता ने वहाबी के बारे में पूछा, और उत्तरदाता ने वहाबियों के विषय में उत्तर दिया। यदि कोई वहाबी नहीं है, तो वह प्रश्न और उत्तर दोनों से मुक्त है। फतवे की सत्यता के बारे में क्या संदेह हो सकता है? इसके अलावा, प्रिय भाइयों, यह रियायती उत्तर उनके दावे को स्वीकार करने पर आधारित है; व्यावहारिक परीक्षा का चरण अभी भी लंबित है और देखा जाना बाकी है।

मौखिक रूप से यह दावा करना कि "हम वहाबी नहीं हैं" केवल कुछ शब्दों की बात है, जो कठिन नहीं है।

अलिफ़ लाम मीम। क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि: 'हम ईमान लाए'? [बॉक्स पाठ:] क्या लोग इस घमंड में हैं कि इस ज़बानी कह देने पर...

1. इह्या उलूम अद-दीन, संगति और भाईचारे की पुस्तक, अल्लाह के लिए नफरत करने वालों के स्तर पर अध्याय, मकतबा व मतब'अ अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, मिस्र, 169/2।

[باکس کا متن] فان المسلمین اعتقدوا کفرہ فلا یلتفتون الی قولہ اذ لا یدعی الاسلام واعتقاد الحق اما المبتدع الذي یدعو الی البدعۃ و یزعم ان ما یدعو الیہ حق فھو سبب لغوایۃ الخلق فشرہ متعد فلاستحباب في اظھار بغضہ ومعاداتہ والانقطاع عنہ وتحقیرہ والتشنیع علیہ ببدعتہ وتنفیر الناس عنہ اشد۱۔

نہیں کیونکہ مسلمان اس کے کافر ہونے کی وجہ سے اس کی بات کو قابلِ التفات نہیں سمجھتے کیونکہ وہ اسلام اور حق کا مدعی نہیں بنتا لیکن گمراہ بدعتی اپنی بدعت کو حق قرار دے کر لوگوں کو اس کی طرف دعوت دیتا ہے اس لیے وہ عوام الناس کو گمراہ کرنے کا سبب بنتا ہے لہذا اس کا شر زیادہ موثر ہے، ایسے شخص کو برا جاننا اس کی مخالفت کرنا، اس سے قطع تعلق کرنا، اس کی تحقیر کرنا، اس کا رد کرنا، اور لوگوں کو اس سے متنفر کرنا زیادہ باعثِ اجر وثواب ہے۔

(ت) یہ چوتھا جواب ہے اس شبہ کا الحمد للہ آفتاب حق بے حجاب سحاب متجلی ہوا اور دلائل واضحہ سے نہ صرف وہابی بلکہ ہر بد مذہب کے ساتھ سنیہ کی تزویج کا باطل محض یا اقل درجہ ممنوع و گناہ ہونا ظاہر ہو گیا، ہاں ہمارے بعض بھائیوں کا بعض متفنی وہابیہ کے فریب سے دھوکا پا کر یہ عذر باقی ہے کہ یہ احکام تو ان کے لیے ہیں جو مذہب اہلسنت سے خارج ہیں اور وہابی ایسے نہیں فلاں فلاں وہابی تو سنی ہیں، اس کا جواب اسی قدر بس ہے کہ عزیز بھائیو! دینِ حق کے فدائیو! دیکھو یہ دامِ در سبزہ ہیں دھوکے میں نہ آئیو، بھلا وہابی صاحب جو چاہیں بکیں وہاں نہ خوفِ خدا نہ خلق کی حیاء، مگر پیارے سنیو! تم نے یہ کیونکر باور کر لیا کہ بعض وہابی اہلسنت ہیں، عزیزو! کیا یہ اس کہنے سے کچھ زیادہ عجیب تر ہے کہ فلاں رات دن ہے یا فلاں نصرانی، مومن ہے، جب سنیت، وہابیت سے صاف مباین ہے تو ان کا اجتماع کیونکر ممکن ہے، ہاں یوں کہتے تو ایک بات تھی کہ فلاں فلاں لوگ جو وہابی کہلاتے ہیں وہابی نہیں اہلسنت ہیں،

بہت اچھا، چشم ما روشن دل ماشاد، خدا ایسا ہی کرے، اگر واقع اس کے مطابق ہے تو ہمارا کیا ضرر، اور اس فتویٰ پر اس سے کیا اثر، فتویٰ میں زید وعمرو کسی کی تعیین نہ تھی، سائل نے وہابی کی نسبت سوال کیا مجیب نے وہابی کے باب میں جواب دیا فلاں اگر وہابی نہیں ہے اس سوال وجواب دونوں سے بری ہے، فتویٰ کی صحت میں کیا شک پروری ہے، پھر عزیز بھائیو! یہ تنزل جواب اس کے تسلیم ادعا پر مبنی ہے، ابھی امتحان کا مرحلہ باقی و دیدنی ہے، زبان سے کہہ دینا کہ ہم وہابی نہیں گنتی کے لفظ ہیں کچھ بھاری نہیں،

الٓمّٓ ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَکُوْٓا اَنْ یَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا [باکس میں:] کیا لوگ اس گھمنڈ میں ہیں کہ اس زبانی کہہ دینے پر

۱ احیاء العلوم کتاب الالفة والاخوة بیان مراتب الذین یبغضون فی اللہ مکتبہ ومطبعة المشهد الحسینی القاہرہ مصر ۱۶۹/۲

صفحہ 739 میں سے 405

...and they will not be tested? [1] | They will be left [at ease] because they say, 'We believe' and | they will not be tested.

There is no god but Allah, Muhammad is the | There is no deity worthy of worship except Allah and Hazrat Messenger of Allah, peace and blessings of Allah | Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) is the be upon him. Allah is sufficient for us, and He is the | Messenger of Allah. Allah Almighty is sufficient for us and best Disposer of affairs. There is no power or | He is a good Guardian. There is no movement and no power strength except with Allah, the Most High, | except by the will of Allah the Almighty and the Sublime. (T) the Most Supreme. |

It is very good if any person whose condition is doubtful regarding Wahhabism denies it, let them sign the following points. The distinction between the false and the true will become clear in practice: (1) The Wahhabi sect is deviation and misguidance. (2) The leaders of the Wahhabis, such as Ibn Abdul Wahhab Najdi, Ismail Dehlvi, Nazir Husain Dehlvi, Siddiq Hasan Bhopali, and other minor figures from Arrah, Batala, Punjab, and Bengal, are all misguided and irreligious. (3) The books 'Taqwiyat-ul-Iman', 'Sirat-e-Mustaqim', 'Risalah Yak Rozi', and 'Tanvir-ul-Ainain' written by Ismail, and all other Wahhabi writings by Dehlvi, Bhopali, etc., are full of clear deviations, misguidance, and blasphemous words. (4) Following the Imams (Taqlid) is an absolute obligation. To turn away from it without reaching the rank of Ijtihad (independent legal reasoning) is an act of irreligion. The aforementioned non-conformists (Ghair-Muqallideen) and their followers and cohorts in India who have taken up the cause of non-conformity are merely undistinguished fools. Their abandonment of Taqlid and their enticing of other ignorant people and those even more ignorant than themselves to abandon Taqlid is clear misguidance and misleading behavior. (5) The four schools of thought (Madhahib) of the Ahl al-Sunnah are all sources of guidance and righteousness. Whoever follows any one of them and remains a follower throughout their life, never acting against it in any matter, is certainly on the straight path. There is no legal blame on him. Each of these schools is sufficient for a person's salvation. Those who consider personal Taqlid (Taqlid-e-Shakhsi) to be polytheism (shirk) or forbidden (haram) are misguided deviants following a path other than that of the believers. (6) Regarding matters related to Prophets and Saints (peace and praise be upon them), such as seeking help (istianat),

calling upon them (nida), their knowledge (ilm), and their God-given power to dispose of affairs (tasarruf), etc., in matters related to the deceased and the living, the rulings of polytheism (shirk) fabricated by the Najdis, Dehlvis, and their cohorts...

---

[1] Al-Quran al-Kareem 29/2

...और उनकी आज़माइश न होगी? [1] | उन्हें छोड़ दिया जाएगा क्योंकि उन्होंने कहा, 'हम ईमान ले आए' और | उनकी परीक्षा नहीं ली जाएगी।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुहम्मद अल्लाह के| अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और हज़रत मुहम्मद रसूल हैं, उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो। | (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह तआला हमारे लिए अल्लाह ही काफी है और वह सबसे अच्छा | हमारे लिए काफी है और वह एक अच्छा संरक्षक है। अल्लाह तआला कार्यसाधक है। अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य | महान और बुलंद की इच्छा के बिना कोई हरकत और कोई शक्ति नहीं है, जो सबसे ऊँचा और महान है। | नहीं है। (त)

यह बहुत अच्छा है यदि कोई व्यक्ति जिसकी स्थिति वहाबियत के संबंध में संदिग्ध है, वह इससे इनकार करता है, तो उन्हें निम्नलिखित बिंदुओं पर हस्ताक्षर करने दें। व्यवहार में खोटे और खरे के बीच का पर्दा खुल जाएगा: (१) वहाबी पंथ पथभ्रष्टता और गुमराह है। (२) वहाबियों के नेता जैसे इब्न अब्दुल वहाब नज़दी, इस्माइल देहलवी, नज़ीर हुसैन देहलवी, सिद्दीक हसन भोपाली और आरा, बटाला, पंजाब और बंगाल के अन्य छोटे नेता सभी गुमराह और अधर्मी हैं। (३) इस्माइल द्वारा लिखित 'तक़्वियत-उल-ईमान', 'सिरात-ए-मुस्तकीम', 'रिसाला यक रोज़ी' और 'तन्वीर-उल-ऐनैन' और देहलवी, भोपाली आदि द्वारा लिखित अन्य सभी वहाबी रचनाएँ स्पष्ट पथभ्रष्टता, गुमराह और कुफ़िया (ईशनिंदापूर्ण) शब्दों से भरी हैं। (४) इमामों का अनुसरण (तक़्लीद) एक पूर्ण दायित्व है। इज्तिहाद (स्वतंत्र कानूनी तर्क) का पद प्राप्त किए बिना इससे विमुख होना अधर्म का कार्य है। उपर्युक्त गैर-मुकल्लिदीन और भारत में उनके अनुयायी और साथी जिन्होंने गैर-मुकल्लदियत का बीड़ा उठाया है, वे केवल अल्पज्ञानी मूर्ख हैं। उनका तक़्लीद छोड़ना और अन्य अज्ञानियों और अपने से भी अधिक अज्ञानियों को तक़्लीद छोड़ने के लिए उकसाना स्पष्ट पथभ्रष्टता और पथभ्रष्ट करना है। (५) सुन्नत संप्रदाय (अहल-ए-सुन्नत) के चारों पंथ (मज़हब) मार्गदर्शन और धर्मपरायणता के स्रोत हैं। जो कोई भी उनमें से किसी एक का अनुसरण करता है और जीवन भर उसका अनुयायी रहता है, कभी भी किसी मामले में उसके विरुद्ध नहीं जाता, वह निश्चित रूप से सीधे रास्ते (सिरात-ए-मुस्तकीम) पर है। उस पर शरीयत के अनुसार कोई दोष नहीं है। इनमें से प्रत्येक मज़हब इंसान के लिए उद्धार के लिए पर्याप्त है। जो लोग व्यक्तिगत तक़्लीद (तक़्लीद-ए-शखसी) को शिर्क(बहुदेववाद) या हराम (वर्जित)

मानते हैं, वे गुमराह पथभ्रष्ट हैं और मोमिनों (विश्वासियों) के मार्ग के अलावा किसी अन्य मार्ग का अनुसरण करने वाले हैं। (६) नबियों और वलियों (उन पर शांति और प्रशंसा हो) से संबंधित मामले जैसे सहायता मांगना (इस्तिआनत), पुकारना (निदा), ज्ञान (इल्म) और अल्लाह द्वारा दी गई कार्य-संपादन शक्ति (तसर्रुफ़) आदि, मृतकों और जीवितों से संबंधित मामलों में नज़दी, देहलवी और उनके अनुयायियों ने जो शिर्क के आदेश गढ़े और...

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम २९/२

وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۔ 1 | چھوڑ دے جائیں گے کہ ہم ایمان لے آئے اور ان کی آزمائش نہ ہوگی۔

لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم، | اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور حضرت محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وحسبنا اللہ ونعم الوکیل ولاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی | وسلم اللہ کے رسول ہیں، اللہ تعالیٰ ہمیں کافی ہے اور وہ اچھا العظیم۔ | وکیل ہے کوئی حرکت اور کوئی قوت اللہ تعالیٰ عظیم و بلند کی | مشیت کے بغیر نہیں ہے۔ (ت)

بہت اچھا جو صاحب مشتبہ الحال وہابیت سے انکار فرمائیں امور ذیل پر دستخط فرماتے جائیں۔ کھوٹے کھرے کا پردہ کھل جائے گا چلن میں (۱) مذہب وہابیہ ضلالت و گمراہی ہے۔ (۲) پیشوایان وہابیہ مثل ابن عبدالوہاب نجدی و اسماعیل دہلوی و نذیر حسین دہلوی و صدیق حسن بھوپالی اور دیگر چھٹ بھئے آروی بٹالی پنجابی بنگالی سب گمراہ بد دین ہیں۔ (۳) تقویت الایمان و صراطِ مستقیم و رسالہ یک روزی و تنویر العینین تصانیف اسماعیل اور ان کے سوا دہلوی و بھوپالی و غیرہما وہابیہ کی جتنی تصنیفیں ہیں صریح ضلالتوں گمراہیوں اور کلمات کفریہ پر مشتمل ہیں۔ (۴) تقلید ائمہ فرض قطعی ہے بے حصولِ منصبِ اجتہاد اس سے روگردانی بددینی کا کام ہے، غیر مقلدین مذکورین اور ان کے اتباع واذناب کہ ہندوستان میں نامقلدی کا بیڑا اٹھائے ہیں محض سفیہان نامشخص ہیں ان کا تارکِ تقلید ہونا اور دوسرے جاہلوں اور اپنے سے اجہلوں کو ترکِ تقلید کا اغوا کرنا صریح گمراہی و گمراہ گری ہے۔ (۵) مذاہب اربعہ اہلسنت سب رشد و ہدایت ہیں جو ان میں

سے جس کی پیروی کرے اور عمر بھر اس کا پیرو رہے، کبھی کسی مسئلہ میں اس کے خلاف نہ چلے، وہ ضرور صراطِ مستقیم پر ہے، اس پر شرعاً الزام نہیں ان میں سے ہر مذہب انسان کے لیے نجات کو کافی ہے تقلید شخصی کو شرک یا حرام ماننے والے گمراہ ضالین متبع غیر سبیل المومنین ہیں۔ (۶) متعلقات انبیاء واولیاء علیہم الصلوۃ والثناء مثل استعانت و ندا و علم و تصرف بعطائے خدا وغیرہ مسائل متعلقہ اموات واحیا میں نجدی و دہلوی اور ان کے اذناب نے جو احکام شرک گھڑے اور

---

1 القرآن الکریم ۲/۲۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

...arbitrarily imposing such impure rulings on the general Muslim populace is due to the malice of those deviants' school of thought, which makes them deserving of punishment and wrath.

(7) Time has no role in declaring something good or bad. A commendable act is commendable whenever it occurs, even if in later centuries. Similarly, a blameworthy act is blameworthy even if it occurred in earlier times. A blameworthy innovation (bid'ah) is only that which is created in opposition to established Sunnah. For permissibility, it is sufficient that God and His Messenger did not forbid it. If a thing is not prohibited in the Quran and Hadith, then whoever tries to prohibit it is attempting to act as a self-proclaimed ruler and lawgiver.

(8) All the fatwas and treatises authored by the scholars of the two holy sanctuaries (Haramain Tayyibain), such as "Al-Durar al-Saniyya fi al-Radd 'ala al-Wahhabiyya" and others refuting Wahhabism, are entirely truthful and guided. Opposing them is falsehood and misguidance.

Gentlemen! These are the eight chapters of the garden of Sunnah, guiding towards truth and correctness. Any individual who, without deceitful excuses or stubborn denial, openly signs them, we will surely accept that he is not a Wahhabi at all. Otherwise, it will be clear to every intelligent person that the denial of Wahhabism by these deniers was merely a pretext. What is the meaning of clinging to the named thing while fleeing from the name?

Being a denier yet living in the style of the intoxicated. (Translation: To be a denier while living like the intoxicated.)

"And Allah guides whom He wills to a straight path." [1] (Allah grants guidance to the straight path to whomever He wills.)

Praise be to Allah that this brief statement, confirming the manifestation of truth and reality, was completed in a few sessions during the last ten days of the blessed month of Rabi' al-Awwal. Historically, it is named "Izalat al-Ar bi-Hajr al-Kara'im 'an Kilab al-Nar" (Removing the Shame by Casting the Noble Stones at the Dogs of Hellfire). May Allah's peace and blessings be upon our master and leader Muhammad, and upon his entire family and companions. All praise is due to Allah, the Lord of all worlds.

1st of Jumada al-Ula, 1311 AH.

Question 200: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid follows the Sunni school of thought, while Hindah, his wife, follows the Shi'a school of thought. They have somehow entered into a marriage contract. In such a situation, is sexual intercourse (cohabitation) Shari'ah-permissible? And will the children born in this state be of legitimate lineage or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Today's Tabarra'i Rawafid (a sect of Shi'as) are generally kafir (disbelievers) and murtad (apostates). Perhaps very rarely one amongst them might turn out to be a Muslim.

[1] Al-Quran al-Karim 2/213 Page 407 of 739

फतावा रजविया, खंड 11

...सामान्य मुसलमानों पर बिना किसी कारण के ऐसे नापाक हुक्म थोप देना इन गुमराहों के संप्रदाय की खबासत (बुराई) है और इसी कारण वे दंड और प्रकोप के पात्र हैं।

(7) किसी चीज़ को अच्छा या बुरा ठहराने में समय की कोई भूमिका नहीं है। एक सराहनीय कार्य सराहनीय ही है चाहे वह बाद की सदियों में हुआ हो, और एक निंदनीय कार्य निंदनीय ही है चाहे वह पिछले समय में हुआ हो। निंदनीय बिदअत (नवाचार) केवल वही है जो स्थापित सुन्नत के विरोध में पैदा की गई हो। वैधता के लिए केवल इतना ही पर्याप्त है कि ईश्वर और उसके रसूल ने उसे मना नहीं फरमाया। यदि कुरान और हदीस में किसी चीज़ की मनाही नहीं है, तो उसे मना करने वाला स्वयं हाकिम और शरीयत बनाने वाला बनना चाहता है।

(8) हरमैन तय्यिबन (मक्का और मदीना) के विद्वानों ने वहाबियत के खंडन में जितने भी फतवे और लेख लिखे हैं, जैसे "अल-दुरर अल-सन्निया फी अर-रद्द अलल वहाबिया" आदि, वे सभी सत्य और मार्गदर्शन हैं और उनका विरोध असत्य और गुमराह होना है।

सज्जनों! ये सुन्नत के बगीचे के आठ अध्याय हैं, जो सत्य और सही रास्ते की ओर मार्गदर्शन करते हैं। जो व्यक्ति बिना किसी बहानेबाजी या हठधर्मी के खुले दिल से इन पर हस्ताक्षर करेगा, तो हम निश्चित रूप से मान लेंगे कि वह बिल्कुल भी वहाबी नहीं है। अन्यथा, हर बुद्धिमान व्यक्ति पर यह स्पष्ट हो जाएगा कि इन लोगों द्वारा वहाबियत से इनकार करना केवल एक बहाना था। किसी चीज़ से जुड़े रहना लेकिन उसके नाम से भागना, इसका क्या अर्थ है?

मुनकिर मी बोदन व दर रंग मस्तान ज़ीस्तन। (अनुवाद: इनकार करने वाला होना और मस्त लोगों के ढंग में जीना।)

"और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते का मार्गदर्शन करता है।" [1] (अल्लाह जिसे चाहता है उसे सीधे रास्ते का मार्गदर्शन प्रदान करता है।)

अल्हम्दुलिल्लाह कि सत्य की अभिव्यक्ति और वास्तविकता की पुष्टि करने वाला यह संक्षिप्त विवरण रबी उल अव्वल के मुबारक महीने के अंतिम दस दिनों में कुछ सभाओं में पूरा हुआ और ऐतिहासिक रूप से इसका नाम "इज़ालातुल आर बि-हजरिल करैम अन किलाबल नार" (जहन्नम के कुत्तों पर नेक पत्थरों से लज्जा दूर करना) हुआ। अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी

पूरी आल और साथियों पर कृपा और शांति बरसाए। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

पहली जमादि-उल-उला, 1311 हिजरी।

मसला 200: इस मसले में धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि ज़ैद सुन्नी संप्रदाय का है और उसकी पत्नी हिंदह शिया संप्रदाय की है और उनके बीच किसी तरह निकाह भी हो गया है, ऐसी स्थिति में क्या शरीयत के अनुसार सहवास (मैथुन) जायज़ है? और ऐसी स्थिति में जो संतान पैदा होगी, वह वैध होगी या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: आज कल के तबर्राई राफज़ी (शियाओं का एक वर्ग) आम तौर पर काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं, शायद ही उनमें से कोई विरला ही मुसलमान निकल सके।

[1] अल-कुरान अल-करीम 2/213 पृष्ठ 407/739

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

...عامہ مسلمین پر بلاوجہ ایسے ناپاک حکم جڑدئیے ان گمراہوں کی خباثتِ مذہب اور اس کے سبب انھیں استحقاقِ عذاب وغضب ہے۔

(۷) زمانہ کو کسی چیز کی تحسین و تقبیح میں کچھ دخل نہیں، امر محمود جب واقع ہو محمود ہے اگرچہ قرونِ لاحقہ میں ہو، اور مذموم جب صادر ہو مذموم ہے اگرچہ ازمنہ سابقہ میں ہو، بدعتِ مذمومہ صرف وہ ہے جو سنت ثابتہ کے رد و خلاف پر پیدا کی گئی ہو، جواز کے واسطے صرف اتنا کافی ہے کہ خدا اور رسول نے منع نہ فرمایا، کسی چیز کی ممانعت قرآن وحدیث میں نہ ہو تو اسے منع کرنے والا خود حاکم و شارع بننا چاہتا ہے۔

(۸) علمائے حرمین طیبین نے جتنے فتاوے ورسائل مثل الدرر السنیہ فی الرد علی الوھابیہ وغیرہ باردِ وہابیہ میں تالیف فرمائے سب حق و ہدایت ہیں اور ان کا خلاف باطل وضلالت۔

حضرات ! یہ جنت سنت کے آٹھ باب ہادیِ حق و صواب ہیں، جو صاحب بے پیرا پھار بے حیلہ انکار بکشادہ پیشانی ان پر دستخط فرمائیں تو ہم ضرور مان لیں گے کہ وہ ہرگز وہابی نہیں، ورنہ ہر ذی عقل پر روشن ہو جائیگا کہ منکر صاحبوں کا وہابیت سے انکار نرا حیلہ ہی حیلہ تھا، مسمے پر جمنا اور اسم سے رمنا، اس کے کیا معنی۔

منکر می بودن و در رنگ مستان زیستن (منکر ہونا اور مستوں کے رنگ میں جینا۔ ت)

وَاللّٰہُ یَھْدِي مَنْ یَشَاءُ إِلَی صِرَاطٍ مُسْتَقِیمٍ (۱) (اللہ تعالٰی جسے چاہتا ہے صراطِ مستقیم کی ہدایت عطا فرماتا ہے۔ ت)

الحمد للہ کہ یہ مختصر بیان تصدیقِ مظہرِ حق و حقیقِ اوائل عشرہ اخیرہ ماہ مبارک ربیع الاول شریف سے چند جلسوں میں بدرِ سمائے تمام اور بلحاظِ تاریخ "ازالۃ العار بحجر الکرائم عن کلاب النار" نام ہوا، و صلی اللہ تعالیٰ علی سیدنا و مولینا محمد وآلہ و اصحابہ اجمعین والحمد للہ رب العالمین۔

غرہ جمادی الاولیٰ ۱۳۱۱ھ

مسئلہ ۲۰۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید سنی المذہب ہے اور ہندہ زوجہ شیعی مذہب رکھتی ہے اور باہم کسی طریقہ پر عقد بھی ہوگیا ہے ایسی حالت میں شرعاً ہمبستری یعنی مجامعت جائز ہے اور ایسی حالت میں جو اولاد ہوگی وہ نطفہ صحیح ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: آج کل کے روافض تبرائی علی العموم کافر مرتد ہیں شاید شاذ و نادر ان میں کوئی مسلمان نکل سکے۔

۱ القرآن الکریم ۲۱۳/۲ صفحہ ۴۰۷ از ۷۳۹

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

...like a white crow among crows, marriage with such a woman is purely void, intimacy is clear adultery, and offspring are certainly illegitimate children, and Allah Almighty knows best.

Question 201: From Calcutta, Sunderiapati 109, near Nakhuda Mosque, bookstore of Sheikh Fakhruddin. Sent by Nazir Hasan on 23rd Jumada al-Akhira 1317 AH. To the presence of honorable Maulana Maulvi Ahmed Raza Khan Sahib (may his grace endure), after the standard Islamic greetings. The matter is that Zaid married the daughter of his own real sister's daughter (his great-niece) based on the decree of a scholar. Is this permissible or impermissible according to Sharia among the Hanafis? Please write in detail. Give your verdict and be rewarded.

Answer: The aforementioned marriage is pure adultery, absolutely forbidden, and a very great, severe major sin. It is prohibited not only by the Hanafis but by the consensus (Ijma) of the Shafi'is, Malikis, and Hanbalis—the entire blessed Ummah. It is forbidden by the explicit text (Nass) of the Great Quran. Allah Almighty said: "Prohibited to you are your mothers, your daughters, your sisters, your father's sisters, your mother's sisters, your brother's daughters, and your sister's daughters[1]." (T) In this noble verse, the Lord Almighty used the word "banat" (daughters) in three places: that prohibited to you are your daughters, your brother's daughters, and your sister's daughters. If "banat" (daughters) includes granddaughters and maternal granddaughters, then certainly the brother's and sister's granddaughters are also included in this ruling. If they were not included, then one's own granddaughters would also not be included in the verse's ruling, and according to that ignorant and bold person, they would be deemed lawful, because Allah says: "...lawful to you are those beyond that[2]." (T) Consequently, books of exegesis (Tafsir) have established the eternal prohibition of the brother's and sister's granddaughters from this very noble verse, and books of jurisprudence (Fiqh) have counted them among the eternally prohibited (Maharim Abadiyya) by considering them included as nieces (brother's or sister's daughters). In Ma'alim al-Tanzil, it says: "Included among them are the daughters of the offspring of the brother and sister, however low they descend[3]." These eternally prohibited women include the daughters of the offspring of the brother and sister, down to any level. (T)

[1] The Holy Quran 4:23 [2] The Holy Quran 4:24 [3] Ma'alim al-Tanzil, under "hurmat alaikum ummahatukum..." Mustafa al-Babi Egypt 1/501 Page 408 of 739

भाग ग्यारह फ़तावा रज़विया

...जैसे कौओं में सफ़ेद रंग का कौआ, ऐसी औरत से निकाह पूरी तरह बातिल (अमान्य) है और शारीरिक संबंध स्पष्ट रूप से ज़िना (व्यभिचार) है, और संतान निश्चित रूप से वलद-उज़-ज़िना (अवैध) है, और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

मसला 201: कलकत्ता, सुंदरियापट्टी 109, नाख़ुदा मस्जिद के पास, शेख़ फ़ख़रुद्दीन की किताबों की दुकान से। नज़ीर हसन साहब द्वारा प्रेषित, 23 जमादी अल-आख़िरा 1317 हिजरी। माननीय मौलाना मौलवी अहमद रज़ा खान साहब (उनका अनुग्रह बना रहे) की सेवा में, सुन्नत के अनुसार सलाम के बाद। बात यह है कि ज़ैद ने अपनी सगी यानी सगी बहन की लड़की की लड़की (भांजी की बेटी) से एक आलिम के हुक्म पर निकाह किया। क्या शरीयत के अनुसार अहनाफ़ (हनफ़ियों) के नज़दीक यह जायज़ है या नाजायज़? विस्तार से लिखें। उत्तर देकर पुण्य के भागी बनें।

अल-जवाब (उत्तर): उक्त निकाह शुद्ध ज़िना (व्यभिचार) है, कतई हराम है, और बहुत बड़ा और गंभीर गुनाह-ए-कबीरा है। यह न केवल हनफ़ियों के नज़दीक, बल्कि शाफ़ई, मालिकी और हनबली सभी—संपूर्ण उम्मत-ए-मर्हूम के इज्मा (आम सहमति) से हराम है। यह क़ुरआन अज़ीम की स्पष्ट आयत (नस्स) से हराम है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तुम पर तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफ़ियाँ, तुम्हारी ख़ालाएँ, भाई की बेटियाँ (भतीजियाँ), और बहन की बेटियाँ (भांजियाँ) हराम कर दी गई हैं[1]।" (त) इस आयत-ए-करीमा में रब अज़्ज़ व जल्ल ने 'बनात' (बेटियाँ) शब्द का तीन जगह प्रयोग किया कि तुम पर तुम्हारी बेटियाँ, भाई की बेटियाँ और बहन की बेटियाँ हराम की गईं। यदि 'बनात' में पोती और नवासा (नाती) भी शामिल हैं, तो निश्चित रूप से भाई की पोती और नवासी भी इसी हुक्म में शामिल हैं। और अगर शामिल नहीं हैं, तो खुद अपनी पोती और नवासी भी आयत के हुक्म में शामिल नहीं होंगी, तो उस जाहिल और बेबाक शख्स के अनुसार वे हलाल ठहरेंगी, क्योंकि अल्लाह का फ़रमान है: "तुम्हारे लिए इनके सिवा हलाल कर दी गई हैं[2]।" (त) इसीलिए तफ़सीर की किताबों में इसी आयत-ए-करीमा से भाई और बहन की पोती और नवासी का हराम-ए-अबदी (सदा के लिए हराम) होना साबित किया गया है, और फ़िक़्ह (इस्लामी कानून) की किताबों में उन्हें भतीजी और भांजी में शामिल मानकर महरम-ए-अबदी (सदा के लिए प्रतिबंधित) में गिना गया है। 'मआलिम अल-तन्ज़ील' में है: "इन हराम औरतों में भाई और बहन की संतानों की बेटियाँ, चाहे वे कितनी ही नीचे के स्तर की हों, शामिल हैं[3]।" इन महरमात-ए-अबदीया में भाई और बहन की औलाद की बेटियाँ, चाहे नीचे तक हों, शामिल हैं। (त)

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 4/23 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 4/24 [3] मआलिम अल-तन्ज़ील, "हुर्रिमत अलैकुम उम्महातु-कुम..." के अंतर्गत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/501 पेज 408/739

جیسے کوؤں میں سپید رنگ کا کوآ، ایسی عورت سے نکاح محض باطل ہے اور قربت صریح زنا، اور اولاد یقیناً ولدالزنا، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۱ : از کلکتہ سندریا پٹی ۱۰۹ متصل مسجد نا خدا دکان کتب شیخ فخرالدین مرسلہ نظیر حسن صاحب ۲۳ جمادی الآخرہ ۱۳۱۷ھ بعالی خدمت جناب مولانا مولوی احمد رضا خان صاحب دام افضالہ پس از سلام مسنون الاسلام آنکہ زید نے اپنی سگی یعنی حقیقی بہن کی لڑکی کی لڑکی سے بحکم ایک عالم عقد کیا یہ از روئے شرع شریف کے عند الاحناف جائز ہے یا ناجائز ہے ؟ مفصل تحریر فرمائیے ۔ بینوا توجروا

الجواب: عقد مذکور زنائے محض ہے حرام قطعی ہے سخت عظیم شدید گناہ کبیرہ ہے ، نہ فقط حنفیہ بلکہ شافعیہ مالکیہ حنبلیہ تمام امتِ مرحومہ کے اجماع سے حرام ہے نصِ قرآن عظیم سے حرام ہے ، قال اللہ تعالٰی (اللہ تعالٰی نے فرمایا) : حرمت علیکم امھاتکم وبنتکم واخواتکم وعمتکم وخالتکم وبنت الاخ وبنت الاخت[1] ۔ تم پر تمھاری مائیں، بیٹیاں، بہنیں، پھوپھیاں ، خالائیں ، بھتیجیاں ، اور بھانجیاں حرام کی گئی ہیں۔ (ت) اس آیہ کریمہ میں رب عز و جل نے بنات کا لفظ تین جگہ ارشاد فرمایا کہ حرام کی گئیں تم پر تمھاری بیٹیاں، بھائی کی بیٹیاں ، بہن کی بیٹیاں ، اگر بنات یعنی بیٹیاں پوتی نواسی کو بھی شامل تو ضرور بھائی کی پوتی ، نواسی بھی اسی حکم میں داخل ، اور اگر شامل نہیں تو خود اپنی پوتی نواسی بھی حکم آیت میں داخل نہیں تو اس جاہل بیباک کے طور پر وہ حلال ٹھہرے گی ، لقولہ تعالٰی : وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَاءَ ذٰلِكُمْ [2] (تمھارے لیے ان کے ماسوا حلال قرار دی گئی ہیں، ت) لاجرم کتب تفسیر میں اسی آیت کریمہ سے بھائی بہن کی پوتی نواسی کا حرام ابدی ہونا ثابت فرمایا اور کتب فقہ میں انھیں بھتیجی بھانجی میں داخل مان کر محارم

ابدیہ میں گنایا ، معالم التنزیل میں ہے : یدخل فیھن بنات اولاد الاخ والاخت وان سفلن[3] ۔ ان محرمات ابدیہ میں بھائی اور بہن کی اولاد کی بیٹیاں خواہ نیچے تک ہوں ، داخل ہیں۔ (ت)

[1] القرآن الکریم ۴ / ۲۳ [2] القرآن الکریم ۴ / ۲۴ [3] معالم التنزیل حرمت علیکم امھتکم الخ کے تحت مصطفی البابی مصر ۱ / ۵۰۱

Fatawa Razawiya Volume 11

It is stated in Tafsir Kabir: Arabic: النوع الثاني من المحرمات البنات كل انثى يرجع نسبها اليك بالولادة بدرجة او بدرجات باناث او بذكر فهي بنتك النوع السادس والسابع بنات الاخ وبنات الاخت والقول في بنات الاخ وبنات الاخت كالقول في بنات الصلب فهذه الاقسام السبعة محرمة في نص الكتاب بالانساب والارحام 1 اهـ ملتقطاً. Urdu: The second type of prohibited women are daughters; all those girls whose lineage traces back to you through birth, either by one degree or several degrees through males or females, are all your daughters. And the sixth and seventh categories are the daughters of the brother and the daughters of the sister. The ruling regarding the daughters of the brother and the sister is also the same as the ruling for one's own biological daughters. Thus, these seven categories are prohibited by the clear text of the Quran due to lineage and kinship. (Abridged)

It is stated in Tafsir Baidawi and Tafsir Irshad al-Aql: Arabic: بنات الاخ وبنات الاخت تتناول القربى والبعدى 2۔ Urdu: In the list of prohibited women, both near and distant daughters of the brother and sister are included. (T)

It is stated in Tafsir Jalalayn: Arabic: 3۔ وبنت الاخ وبنت الاخت وتدخل فيهن اولادهن Urdu: Among the daughters of the brother and sister, the children of those daughters are also included. (T)

It is stated in Futuhat al-Ilahiyyah Hashiyah Jalalayn: Arabic: فشملت العبارة بنت ابن الاخ وان سفل وبنت ابن الاخت وان سفل 4۔ Urdu: This text includes the daughters of nephews and nieces, even if they are many generations down. (T)

It is stated in Multaqa al-Abhur: Arabic: تحرم على الرجل اخته وبنتها وبنت اخيه Urdu: Prohibited for a man are his sister, her daughter, and his brother's daughter, and their...

1 Tafsir Kabir, under the verse 'Prohibited to you are your mothers,' Al-Bahiyyah Press, Egypt, 10/28-29. 2 Tafsir Baidawi, under the verse 'Prohibited to you are your mothers,' Mustafa al-Babi, Egypt, 1/83. 3 Tafsir Jalalayn, under the verse 'Prohibited to you are your mothers,' Asah al-Matabi, Delhi, p. 83. 4 Futuhat al-Ilahiyyah Hashiyah Jalalayn, under the verse 'Prohibited to you are your mothers,' Mustafa al-Babi, Egypt, 1/370.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

तफ़्सीर कबीर में है: अरबी: النوع الثاني من المحرمات البنات كل انثى يرجع نسبها اليك بالولادة بدرجة او بدرجات باناث او بذكر فهي بنتك النوع السادس والسابع بنات الاخ وبنات الاخت والقول في بنات الاخ وبنات الاخت كالقول في بنات الصلب فهذه الاقسام السبعة محرمة في نص الكتاب بالانساب والارحام 1 اهـ ملتقطاً. उर्दू: हराम औरतों की दूसरी किस्म बेटियाँ हैं; वे सभी लड़कियां जिनका वंश जन्म के माध्यम से एक या कई पीढ़ियों के साथ पुरुषों या महिलाओं के माध्यम से आप तक पहुँचता है, वे सब आपकी बेटियाँ हैं। और छठी और सातवीं श्रेणी भाई की बेटियाँ और बहन की बेटियाँ हैं। भाई और बहन की बेटियों का हुक्म भी सगी बेटियों की तरह है। अत; ये सात श्रेणियां वंश और रिश्तेदारी के कारण कुरान के स्पष्ट पाठ द्वारा हराम हैं। (संक्षिप्त)

तफ़्सीर बैज़ावी और तफ़्सीर इरशाद-उल-अक़्ल में है: अरबी: بنات الاخ وبنات الاخت تتناول القربى والبعدى 2۔ उर्दू: हराम औरतों में भाई और बहन की बेटियाँ चाहे वे निकट हों या दूर, सब शामिल हैं। (त)

तफ़्सीर जलालेन में है: अरबी: 3۔ وبنت الاخ وبنت الاخت وتدخل فيهن اولادهن उर्दू: भाई और बहन की बेटियों की श्रेणी में उन बेटियों की संतान भी शामिल है। (त)

फ़ुतूहात-ए-इलाहिया हाशिया जलालेन में है: अरबी: فشملت العبارة بنت ابن الاخ وان سفل 4۔ وبنت ابن الاخت وان سفل उर्दू: यह पाठ भतीजों और भांजों की बेटियों को भी शामिल करता है, चाहे वे कितनी भी निचली पीढ़ी की हों। (त)

मुल्तक़ा अल-अब्हुर में है: अरबी: تحرم على الرجل اخته وبنتها وبنت اخيه उर्दू: पुरुष पर उसकी बहन, उसकी भांजी, और उसकी भतीजी, और उनकी... हराम है।

1 तफ़्सीर कबीर, आयत 'तुम पर तुम्हारी माताएं हराम की गई हैं' के तहत, मतबा-ए-बहिया मिस्र, 10/28-29। 2 तफ़्सीर बैज़ावी, आयत 'तुम पर तुम्हारी माताएं हराम की गई हैं' के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/83। 3 तफ़्सीर जलालेन, आयत 'तुम पर तुम्हारी माताएं हराम की गई हैं' के तहत, असहुत अल-मताबे दिल्ली, पृ. 83। 4 फ़ुतूहात-ए-इलाहिया हाशिया जलालेन, आयत 'तुम पर तुम्हारी माताएं हराम की गई हैं' के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/370।

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

تفسیر کبیر میں ہے : النوع الثانی من المحرمات البنات کل انثی یرجع نسبھا الیک بالولادۃ بدرجۃ اوبدرجات باناث اوبذکر فھی بنتك النوع السادس و السابع بنات الاخ و بنات الاخت والقول فی بنات الاخ و بنات الاخت کالقول فی بنات الصلب فھذہ الاقسام السبعۃ محرمۃ فی نص الکتاب بالانساب و الارحام 1 اھ ملتقطاً۔ محرمات کی دوسری قسم بیٹیاں ہیں وہ تمام لڑکیاں جن کا نسب ایک درجہ یا کئی درجوں کے مرد اور عورتوں کے واسطہ سے تیری طرف بطور ولادت لوٹتا ہے وہ سب کی سب تیری بیٹیاں ہیں اور چھٹی اور ساتویں قسم بھائی اور بہن کی بیٹیاں ہیں ، اور بھائی بہن کی بیٹیوں کا حکم بھی اپنی صلبی بیٹیوں کی طرح ہے، تو یہ سات اقسام نسب اور ارحام کی وجہ سے قرآنی نص سے حرام ہیں اھ ملتقطاً (ت)

تفسیر بیضاوی و تفسیر ارشاد العقل میں ہے: بنات الاخ وبنات الاخت تتناول القربیٰ والبعدی 2 ۔ محرمات میں بھائی اور بہن کی بیٹیاں قریب ہوں یا بعید ہوں سب شامل ہیں ۔ (ت)

تفسیر جلالین میں ہے: وبنت الاخ وبنت الاخت وتدخل فیھن اولادھن 3 ۔ بھائی اور بہن کی بیٹیوں میں ان بیٹیوں کی اولاد بھی داخل ہے ۔ (ت)

فتوحات الہیہ حاشیہ جلالین میں ہے : فشملت العبارۃ بنت ابن الاخ وان سفل وبنت ابن الاخت وان سفل 4 ۔ یہ عبارت بھتیجوں اور بھانجوں کی بیٹیوں کو بھی اگرچہ نیچے تک ہو شامل ہے۔ (ت)

ملتقی الا بحر میں ہے : تحرم علی الرجل اختہ وبنتھا وبنت اخیہ مرد پر اس کی بہن اور اس کی بھانجی اور بھتیجی اور ان

1 تفسیر کبیر تحت الآیۃ حرمت علیکم امہاتکم مطبعۃ البہیۃ مصر ۱۰/ ۲۹-۲۸ 2 تفسیر بیضاوی تحت الآیۃ حرمت علیکم امہاتکم مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۸۳ 3 تفسیر جلالین تحت الآیۃ حرمت علیکم امہاتکم اصح المطابع دہلی ص ۸۳ 4 فتوحات الہیہ حاشیہ جلالین تحت الآیۃ حرمت علیکم امہاتکم مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۳۷۰

Fatawa Razawiya, Volume 11

Arabic Text	Urdu Translation
...and their descendants downwards.	Their offspring downwards are prohibited (for marriage). (T)

In Nuqayah: | Prohibited to him are his origins, branches, and the branches of his close origins. | Prohibited for a man are his origins (parents, grandparents) and branches (children, grandchildren) and the branches of his close origins (descendants of father and mother) are prohibited. (T) |

In Sharh al-Wiqayah: | The daughters of brothers and sisters and their descendants; all of these are prohibited. | Nieces (brother's and sister's daughters) downwards, all are prohibited. (T) |

In Islah: | Prohibited to a man are his origins, branches, sister, and her branches and his brother's branches. | Prohibited for a man are his origins and branches, and his sister and the offspring of his sister and brothers. (T) |

In Durar: | And his sister and the daughters of both downwards. | Sister and her daughters downwards are prohibited. (T) |

In Fath al-Qadir: | Included in the daughters of brothers and sisters are their daughters downwards. | In (the category of) nieces and sister's daughters, their daughters downwards are also included. (T) |

In Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar and Khizanat al-Muftin: | The daughters of the brother and daughters of the sisters downwards are prohibited women by the text of the Book (Quran) from marriage... | Nieces (daughters of brothers and sisters) downwards are mahrams (prohibited women), for whom marriage, intercourse, and its precursors are eternally prohibited. |

Footnotes: 1. Multaqā al-Abḥur, Chapter on Prohibited Relations, Mu'assasah al-Risālah, Beirut, 1/239. 2. Al-Nuqāyah, Mukhtaṣar al-Wiqāyah, Book of Marriage, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 52. 3. Sharḥ Wiqāyah, Prohibited Women, Mujtabai, Delhi, 2/11. 4. Iṣlāḥ. 5. Durar al-Ḥukkām, Book of Marriage, Ahmad Kamil al-Kainah, Dar al-Sa'adat, Beirut, 1/329-330. 6. Fatḥ al-Qadīr, Chapter on the Explanation of Prohibited Relations, Nooria Razvia, Sukkur, 3/118.

फतावा रज़विया, खंड 11

अरबी पाठ उर्दू अनुवाद

...और उनके नीचे के वंशज। उनकी औलाद नीचे तक हराम (प्रतिबंधित) है। (त)

नुकाया में है: | उस पर उसके मूल, शाखाएं और उसके निकटतम मूल की शाखाएं हराम हैं। | पुरुष पर उसके मूल (बुज़ुर्ग) और शाखाएं(संतान) और निकटतम मूल (पिता और माता) की शाखाएं हराम हैं। (त) |

शरह वकाया में है: | भाइयों और बहनों की बेटियाँ और उनके वंशज नीचे तक, ये सभी हराम हैं। | भतीजियां और भांजियां नीचे तक सब हराम हैं। (त) |

इस्लाह में है: | पुरुष पर उसके मूल, शाखाएं उसकी बहन और उसकी और उसके भाइयों की शाखाएं हराम हैं। | पुरुष पर उसके मूल और शाखाएं और उसकी बहन और उसके भाई-बहनों की औलाद हराम है। (त) |

दुरर में है: | और उसकी बहन और उन दोनों की बेटियाँ नीचे तक। | बहन और उसकी बेटियाँ नीचे तक हराम हैं। (त) |

फतह अल-कदीर में है: | भाई और बहन की बेटियों में उनकी बेटियाँ भी शामिल हैं, चाहे वे कितनी भी नीचे हों। | भतीजियों और भांजियों में उनकी बेटियाँ भी नीचे तक शामिल हैं। (त) |

इख्तियार शरह मुख्तार और खज़ानत अल-मुफ्तीन में है: | भाई की बेटियाँ और बहनों की बेटियाँ नीचे तक किताब (कुरान) के स्पष्ट पाठ के अनुसार निकाह के लिए हराम हैं... | भतीजियां और भांजियां नीचे तक महरम हैं जिनसे निकाह, संभोग और उसके कारणों की शाश्वत मनाही है। |

पादलेख: 1. मुल्तक़ा अल-अब्हुर, हराम रिश्तों का अध्याय, मुअस्सस अल-रिसालाह, बेरूत, 1/239। 2. अल-नुकाया, मुख़्तसर अल-वक़ाया, निकाह की किताब, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब, कराची, पृष्ठ 52। 3. शरह वकाया, महिलाओं में हराम, मुस्तबाई, दिल्ली, 2/11। 4. इस्लाह। 5. दुरर अल-हुक्काम, निकाह की किताब, अहमद कामिल अल-काइनह, दारुस सआदत, बेरूत, 1/329-330। 6. फतह अल-कदीर, हराम रिश्तों के वर्णन का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/118।

पृष्ठ 410 का 739

جلد یاز دہم (فتاوی رضویہ)

متنِ عربی **اردو ترجمہ**

وان سفلتنا ۱۸ کی اولاد نیچے تک حرام ہے۔ (ت)

نقایہ میں ہے: | حرم اصلہ وفرعہ اصلہ القریب ۲۸ | مرد پر اس کے اصول وفروع اور اصل قریب (باپ اور ماں) کے فروع حرام ہیں۔ (ت) |

شرح وقایہ میں ہے: | وبنات الاخوۃ والاخوات وان سفلت فیحرم جمیع ھؤلاء ۳۸ | بھتیجیاں اور بھانجیاں نیچے تک سب حرام ہیں۔ (ت) |

اصلاح میں ہے: | حرم علی المرء اصلہ وفرعہ واختہ وفرعھا وفرع اخیہ ۴۸ | مرد پر اس کے اصول وفروع اور اس کی بہن اور بھائیوں کی اولاد حرام ہے۔ (ت) |

درر میں ہے: | واختہ وبنتھما وان سفلت ۵۸ | بہن اور اس کی بیٹیاں نیچے تک حرام ہیں۔ (ت) |

فتح القدیر میں ہے: | تدخل فی بنات الاخ والاخت بناتھن وان سفلن ۶۸ | بھتیجیوں اور بھانجیوں میں ان کی بیٹیاں بھی نیچے تک داخل ہیں۔ (ت) |

اختیار شرح مختار و خزانہ لمفتین میں ہے: | وبنات الاخ وبنات الاخوات وان سفلن فھن محرمات بنص الکتاب نکاحاً | بھتیجیاں اور بھانجیاں نیچے تک محرمات ہیں جن سے نکاح، وطی اور اس کے دواعی کی ابدی حرمت |

حواشی: 1. ملتقی الابحر باب المحرمات موسسۃ الرسالۃ بیروت ۱/۲۳۹ 2. النقایۃ مختصر الوقایۃ کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۲ 3. شرح وقایہ المحرمات من النساء

مجتبائی دہلی ۲/۱۱ 4. اصلاح 5. درر الحكام كتاب النكاح احمد كامل الكائنه دار السعادت بيروت ۱/ ۳۲۹-۳۰ 6. فتح القدير فصل في بيان المحرمات نور یہ رضویہ سکھر ۳/۱۱۸

Fatawa Rizvia Volume 11

Sexual intercourse and its precursors lead to permanent prohibition.	This is proven by the explicit text of the Book of Allah. (T)

It is stated in Fatawa Qadi Khan etc.: | And the daughters of sisters, however low they descend. | Nieces (sister's daughters) until the end of the line. (T) |

It is stated in Muhit-e-Sarakhsi and Fatawa Alamgiri: | And likewise the daughters of brothers and sisters, however low they descend. | Similarly, nieces and sister's daughters until the end of the line. (T) |

It is stated in Anwar Imam Yusuf Ardabili Shafi'i: | The permanently prohibited women due to lineage are mothers (upwards) and daughters (downwards) and the daughters of brothers and sisters (downwards). | Lineally, permanent prohibitions are: mothers going upwards, daughters going downwards, and nieces and sister's daughters going downwards. (T) |

It is obligatory for this ignorant and foolish person who entered into such a marriage to immediately separate from his own biological daughter. And it is a charge against this most ignorant and most astray scholar that he should recite the Kalima of Islam afresh, repent from his impure and cursed fatwa, and remarry his wife anew. It is stated in 'I'lam bi-Qawati' al-Islam':

And from those (acts of disbelief) is to consider permissible something whose prohibition is agreed upon by consensus, such as wine and sodomy, even if it is with one's own slave, etc.	Among the things that constitute disbelief is to consider permissible something whose prohibition is established by consensus, such as alcohol, sodomy (even with one's own slave), etc. (T)

In Khulasa and Hindiyya it is stated: | Whoever believes a prohibited (haram) thing to be permissible (halal) or vice-versa, becomes a disbeliever. | A person who holds the belief of making forbidden things permissible or permissible things forbidden is a disbeliever. (T) |

O Allah! I seek Your protection from every trial and evil of this era of tribulations. There is no power and no strength except from Allah, the Most High, the Most Great.

---

1. Al-Ikhtiyar li-Ta'lil al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Firas for Publishing and Distribution, Beirut, 3/85

2. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Prohibitions, Naval Kishore Lucknow, 1/125
3. Fatawa Hindiyya, in explanation of Prohibitions, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/273
4. Anwar al-A'mal al-Abrar
5. Al-I'lam bi-Qawati' al-Islam, appended to Subul al-Najat, Maktaba Haqiqa Dar al-Shafaqa Istanbul Turkey, p. 353
6. Fatawa Hindiyya, Rulings on Apostates, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/272

सहवास और उसके प्रेरक स्थायी रूप से निषेध का कारण बनते हैं।	यह अल्लाह की किताब के स्पष्ट पाठ (नस) से सिद्ध है। (त)

फ़तावा काज़ी ख़ान आदि में है: | और बहनों की बेटियाँ, चाहे वे कितनी भी नीचे की हों। | भांजियाँ नीचे (अंतिम पीढ़ी) तक। (त) |

मुहीत-ए-सरख़सी और फ़तावा आलमगीरी में है: | और इसी तरह भाइयों और बहनों की बेटियाँ, चाहे वे कितनी भी नीचे की हों। | इसी तरह भतीजियां और भांजियां नीचे तक। (त) |

अनवार इमाम यूसुफ़ अर्दबीली शाफ़ई में है: | वंश के आधार पर स्थायी रूप से वर्जित महिलाएं माताएं(ऊपर की ओर) और बेटियां (नीचे की ओर) और भाइयों और बहनों की बेटियां (नीचे की ओर) हैं। | वंशानुगत रूप से स्थायी वर्जनाएं हैं: माताएं ऊपर तक, बेटियां नीचे तक, और भांजियां व भतीजियां नीचे तक हैं। (त) |

इस अज्ञानी और मूर्ख निकाह करने वाले पर अनिवार्य है कि वह तुरंत अपनी सगी बेटी से अलग हो जाए और उस परम अज्ञानी और सबसे अधिक गुमराह आलिम पर यह आरोप है कि वह नए सिरे से कलमा-ए-इस्लाम पढ़े, अपने इस नापाक और अभिशप्त फ़तवे से तौबा करे और अपनी पत्नी से नए सिरे से निकाह करे। 'एलाम बि-क़वातिए अल-इस्लाम' में है:

और उनमें से (कुफ़्र के कार्यों में से) यह है कि किसी ऐसी चीज़ को हलाल मान लेना जिसकी हुरमत (निषेध) पर इजमा (सर्वसम्मति) है, जैसे शराब और अप्राकृतिक मैथुन, चाहे वह अपने दास से ही क्यों न हो, आदि।	कुफ़्र बनाने वाली चीज़ों में से किसी ऐसी चीज़ को हलाल बना लेना जिसकी वर्जना पर सर्वसम्मति है, जैसे शराब, अप्राकृतिक मैथुन चाहे वह अपने गुलाम से ही क्यों न हो, आदि। (त)

खुलासा और हिन्दिया में है: | जो व्यक्ति हराम को हलाल या हलाल को हराम मानने का अक़ीदा (आस्था) रखे, वह काफ़िर है। | जो व्यक्ति हराम को हलाल या हलाल को हराम करने पर विश्वास रखे, वह काफ़िर है। (त) |

हे अल्लाह! इस फ़ितनों के दौर के हर फ़ितने और बुराई से तेरी पनाह। अल्लाह के सिवा न कोई ताक़त है और न कोई शक्ति, जो सबसे उच्च और महान है।

1. अल-इख़्तियार लि-ता'लील अल-मुख्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, दार फ़िरास, बेरुत, 3/85
2. फ़तावा काज़ी ख़ान, बाब फ़िल मुहर्रमात, नवल किशोर लखनऊ, 1/125
3. फ़तावा हिन्दिया, मुहर्रमात के बयान में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/273
4. अनवारुल अमालुल अबरार
5. अल-एलाम बि-क़वातिए अल-इस्लाम, मकतबा हक़ीक़त दारुश शफ़क़ा इस्तांबुल तुर्की, पृ. 353
6. फ़तावा हिन्दिया, अहकामुल मुर्तदीन, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 2/272

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

و وطأودواعیہ علی التأبید 1۔ کتاب اللہ کی نص سے ثابت ہے۔ (ت)

فتاوٰی قاضی خان و غیر ہا میں ہے: | وبنات الاخوات وان سفلن 2۔ | بھانجیاں نیچے تک۔ (ت) |

محیط سرخسی و فتاوٰی عالمگیری میں ہے: | وکذا بنات الاخ والاخت وان سفلن 3۔ | یونہی بھتیجیاں اور بھانجیاں نیچے تک۔ (ت) |

انوار امام یوسف اردبیلی شافعی میں ہے: | المحرمات علی التأبید بالنسب الامہات وان علت والبنات وان سفلت وبنات الاخوۃ والاخوات وان سفلت 4۔ | نسبی طور پر ابدی محرمات مائیں اوپر تک، بیٹیاں نیچے تک، بھانجیاں اور بھتیجیاں نیچے تک ہیں۔ (ت) |

اس جاہل احمق نکاح کرنے والے پر فرض ہے کہ فوراً فوراً اس اپنی سگی بیٹی سے جدا ہو جائے اور اس اجبل اضل عالم پر الزام کہ از سر نو کلمہ اسلام پڑھے اپنے اس ناپاک ملعون فتوٰی سے توبہ کرے اپنی عورت سے نکاح از سر نو کرے۔ "اعلام بقواطع الاسلام" میں ہے:

ومن ذلک(ای من المکفرات)ان یستحل کفر بنانے والی چیزوں میں سے کسی ایسی چیز کو حلال محرماً بالاجماع کالخمر واللواط ولو فی بنا لینا جس کی حرمت پر اجماع ہے مثلاً شراب، لواطت مملوکہ الخ 5۔ خواہ اپنے مملوک سے ہو، الخ (ت)

خلاصہ وہندیہ میں ہے: | من اعتقد الحرام حلالا او علی القلب یکفر 6۔ | جو شخص حرام کو حلال یا حلال کو حرام کرنے پر عقیدہ رکھے وہ کافر ہے۔ (ت) |

الٰہی! اس زمانہ پر فتن کے ہر فتنے و شر سے تیری پناہ، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

1 الاختیار لتعلیل المختار فصل فی المحرمات دار فراس للنشر والتوزیع بیروت ۸۵/۳ 2 فتاویٰ قاضی خان باب فی المحرمات نولکشور لکھنو ۱/ ۱۲۵ 3 فتاویٰ ہندیہ فی بیان المحرمات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۷۳ 4 انوار الاعمال الابرار 5 الاعلام بقواطع الاسلام ملحق بسبل النجاۃ مکتبہ حقیقۃ دار الشفقۃ استنبول ترکی ص ۳۵۳ 6 فتاویٰ ہندیہ احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۷۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

Problem 202: From Nawabganj, Bareilly district, residence of Tehsildar Zahoor-ul-Islam, sent by Hazrat Syed Noor Alam Mian Sahab Marehravi, 5 Rajab 1317 AH. What do the scholars of religion and the noble Sharia, the pillars of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'at and followers of the Hanafi school, say in this matter: A person married his biological sister-in-law (wife's sister) while his wife was alive. After marrying the sister-in-law, but either before valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha) or after it, he divorced the first wife. In both these cases, did this marriage become valid and permissible according to Sharia or not? Explain and be rewarded.

The Answer: When one sister is already in marriage, marrying the second is strictly forbidden (Haram Qat'i). Allah Almighty says: "...and that you combine two sisters (in wedlock at the same time)." (1) Interpretation: It is the command of Allah Almighty: It is forbidden to combine two sisters. (T) So this marriage was certainly forbidden and unlawful. Divorcing the first wife after this invalid marriage (Nikah-e-Fasid), whether before or after seclusion, cannot make that forbidden act lawful, that invalid act valid, or that unlawful act permissible. Scholars state clearly that if he divorces the wife first, and her 'iddah (waiting period) has not yet passed, and he then marries her sister, that marriage would be forbidden. So, how can it be lawful here, where he married her sister first and then divorced the wife? It is stated in Durr-e-Mukhtar: "It is forbidden to combine Mahram women (those who cannot be married simultaneously) in marriage and in 'iddah, even if it is from a 'Talaq-e-Ba'in' (irrevocable divorce)." (2) Translation: It is forbidden to combine women who are Mahrams to each other in marriage and during 'iddah, even if it is the 'iddah of an irrevocable divorce. (T) It is obligatory for the said person to immediately leave the second one. Then, if the 'iddah of the first wife has passed, he has the option to leave the second one and immediately perform a new marriage contract with her. Otherwise, it is mandatory to wait until the 'iddah of the first one passes, after which he should perform a valid marriage with the second one according to Sharia. And Allah Almighty knows best.

Problem 203: 5 Rajab 1317 AH What do the scholars of religion say in this matter: When, God forbid, a wife becomes forbidden due to adultery with the mother-in-law, does veiling (Pardah) from her also become mandatory, or does she become like a Mahram such that looking, touching, and staying in a house alone with her is permissible? Explain and be rewarded.

(1) The Holy Quran 4:23 (2) Durr-e-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relations, Mujtabai Delhi, 1/188.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मसला 202: नवाबगंज ज़िला बरेली, तहसीलदार ज़ुहूर-उल-इस्लाम साहब के मकान से, हज़रत सैय्यद नूर आलम मियां साहब मारहरवी द्वारा प्रेषित, 5 रजब 1317 हिजरी। दीन के उलमा और शरीयत-ए-शरीफ़ के सुतून, अहले सुन्नत व जमाअत के फ़िक़्ह-ए-हनफिया के पैरोकार इस बारे में क्या कहते हैं कि: एक व्यक्ति ने अपनी बीवी की ज़िंदगी में ही उसकी सगी बहन से निकाह कर लिया। निकाह के बाद, चाहे वह 'खलवत-ए-सहीहा' (एकांतवास) से पहले हो या बाद में, उसने अपनी पहली बीवी को तलाक़ दे दी। इन दोनों स्थितियों में क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार सही और जायज़ हुआ या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

अल-जवाब: जब एक बहन निकाह में हो तो दूसरी से निकाह करना क़तई हराम है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "और (तुम पर हराम है) दो बहनों को (एक साथ निकाह में) जमा करना।" (1) तर्जुमा: अल्लाह तआला का फ़रमान है: दोनों बहनों को जमा करना हराम है। (त) तो यह निकाह निश्चित रूप से हराम और नाजायज़ हुआ। इस 'निकाह-ए-फ़ासिद' (अमान्य निकाह) के बाद पहली पत्नी को तलाक़ दे देना, चाहे खलवत (एकांतवास) से पहले हो या बाद में, उस हराम को हलाल, उस फ़ासिद को सही या उस नाजायज़ को जायज़ नहीं बना सकता। उलमा स्पष्ट रूप से फ़रमाते हैं कि यदि कोई व्यक्ति पहले पत्नी को तलाक़ दे दे और अभी उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी न हुई हो और वह उसकी बहन से निकाह कर ले, तो वह निकाह हराम होगा। तो यहाँ, जहाँ उसने पहले उसकी बहन से निकाह किया और बाद में बीवी को तलाक़ दी, वह कैसे हलाल हो सकता है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "ऐसी औरतों को जो आपस में महरम हों, निकाह और इद्दत में जमा करना हराम है, चाहे वह तलाक़-ए-बाइन की इद्दत ही क्यों न हो।" (2) तर्जुमा: वे औरतें जो आपस में महरम हों, उन्हें निकाह और इद्दत में जमा करना हराम है, चाहे वह तलाक़-ए-बाइन की इद्दत हो। (त) उक्त व्यक्ति पर फ़र्ज़ है कि वह तुरंत उस दूसरी औरत को छोड़ दे। फिर यदि पहली बीवी की इद्दत गुज़र चुकी हो, तो उसे अधिकार होगा कि वह उस दूसरी को छोड़कर अभी तुरंत उससे दोबारा निकाह कर ले, वरना इतना इंतज़ार करना फ़र्ज़ है कि पहली की इद्दत गुज़र जाए, उसके बाद उस दूसरी से शरई तरीक़े से सही निकाह करे। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 203: 5 रजब 1317 हिजरी उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या कहते हैं कि: माज़अल्लाह, अगर सास के साथ व्यभिचार के कारण पत्नी हराम हो जाए, तो क्या उससे पर्दा करना भी फ़र्ज़ हो जाता है,

या वह महरमों की तरह हो जाती है कि उसे देखना, छूना और अकेले मकान में रहना जायज़ है? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

(1) अल-क़ुरआन अल-करीम 4/23 (2) दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मुज्तबाई दिल्ली, 1/188.

पेज 412 ऑफ़ 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۲۰۲: از نواب گنج ضلع بریلی مکان تحصیلدار ظہور الاسلام صاحب مرسلہ حضرت سید نور عالم میاں صاحب مارہروی ۵ رجب ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع شریف اساطین فرقہ اہل سنت و جماعت متبعین ملت حنفیہ اس باب میں کہ ایک شخص نے اپنی بی بی کی زندگی میں اس کی خواہر حقیقی سے نکاح کیا اور بعد نکاح خواہر زن مگر قبل خلوت صحیحہ یا اس سے خلوت صحیحہ کے بعد پہلی بی بی کو طلاق دے دی ان دونوں صورتوں میں یہ نکاح عندالشرع درست و جائز ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: جب ایک بہن نکاح میں ہو دوسری سے نکاح حرام قطعی ہے۔ قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَأَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْأُخْتَیْنِ۔ (۱) اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے: حرام ہے دونوں بہنوں کو جمع کرنا۔ (ت) تو یہ نکاح ضرور حرام و ناجائز ہوا اور پہلی زوجہ کو اس نکاحِ فاسد کے بعد پیش از خلوت خواہ بعد خلوت طلاق دے دینا اس حرام کو حلال اس فاسد کو صحیح اس ناجائز کو جائز نہیں کرسکتا۔ علماء تصریح فرماتے ہیں کہ اگر اولاً زوجہ کو طلاق دے اور ہنوز اس کی عدت نہ گزری ہو کہ اس کی بہن سے نکاح کرلے تو یہ نکاح حرام ہوگا تو یہاں کہ پہلے اس کی خواہر سے نکاح کرلیا بعد کو طلاق دی کیونکر حلال ہوسکتا ہے۔ درمختار میں ہے: حرم الجمع بین المحارم نکاحاً وعدۃ ولو من طلاق بائن۔ (۲) وہ عورتیں جو آپس میں محرم ہوں ان کو نکاح اور عدت خواہ طلاق بائن کی عدت ہو، میں جمع کرنا حرام ہے۔ (ت) شخص مذکور پر فرض ہے کہ فوراً فوراً اس دوسری کو چھوڑ دے پھر اگر پہلی کی عدت گزر چکی ہے تو اسے اختیار ہوگا کہ اس دوسری کو چھوڑ کر ابھی معاً اس سے نکاح کرلے ورنہ اتنا انتظار فرض ہے کہ اس پہلی کی عدت گزر جائے اس کے بعد اس دوسری سے نکاح صحیح بروجہ شرعی کرے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۳: ۵ رجب ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ معاذ اللہ ساس سے زنا کے باعث جب منکوحہ حرام ہوجائے تو اس سے پردہ بھی فرض ہو جاتا ہے یا وہ مثل محارم کے ہوجاتی ہے کہ دیکھنا، چھونا، تنہا مکان میں رہنا جائز ہے۔ بینوا توجروا

(۱) القرآن الکریم ۲۳/۴ (۲) درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۸

Fatawa Rizvia Volume 11

The Answer: The most correct view in the school of thought is that the prohibition of affinity (hurmat-e-musaaharat), even if it arises from adultery (Allah forbid), makes the woman like a mahram (unmarriageable relative). Therefore, looking at or touching with lust is absolutely forbidden. Doing so without lust is permissible if there is no apprehension of lust arising in oneself or the woman. If there is such an apprehension, even without lust, looking and touching will be forbidden. In fact, even if there is doubt whether lust will arise or not, the ruling of prohibition stands. Initially, going alone into a room with her is not permitted, as this is inevitably a potential source of lust, especially with a formerly married wife who remained in his marriage for a time and where barriers and formalities had been removed. In fairness, when prohibition of affinity has occurred with a wife (Allah forbid), it is safer to consider her like a non-mahram (stranger woman). And with Allah lies protection. It is mentioned in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic Text	English Translation
ينظر الرجل من محرمه هى من لا يحل له نكاحها ابدا بنسب او بسبب ولو بزنا الى الراس والوجه والصدر والساق والعضدان أمن شهوته وشهوتها وان لم يأمن او شاهى لا يحل النظر والمس۔ كشف الحقائق لابن سلطان والمجتبىٰ اه ملتقطاً۔	A mahram is a woman with whom marriage is permanently forbidden, whether due to lineage or a cause, even if that cause is adultery. If there is no fear of lust for him or her, it is permissible for a man to look at the head, face, chest, calf, and forearms of such mahram women. But if the man or the woman fears lust, or if any of them is in a state of lust, then touching and looking at the mahram is not permissible. Kashf al-Haqa'iq by Ibn Sultan and al-Mujtaba, summary. (T)

It is mentioned in Radd-ul-Muhtar: | Arabic Text | English Translation | | :--- | :--- | | قوله ولو بزنا اى ولو كان عدم حل نكاحها له بسبب زناه بأصولها او فروعها قال الزيلعى وقيل انها كالأجنبية والاول اصح اعتباراً للحقيقة لانها محرمة عليه على التأبيد۔ | His statement "even if by adultery" means if the impermissibility of her marriage to him is due to his adultery with her ascendants or descendants. Az-Zayla'i said it is said that she is like a stranger woman, but the first view is more correct, considering the reality because she is permanently forbidden to him. (T) |

In the same work: | Arabic Text | English Translation | | :--- | :--- | | قوله اوشك معناه استواء الامرين | His statement "aw shakka" (or doubted), its meaning is the equality of the two matters... |

1 Durr-ul-Mukhtar, Section on Looking and Touching, Mujtabai Delhi, 2/241 2 Radd-ul-Muhtar, Section on Looking and Touching, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/235

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

जवाब: सही मज़हब यही है कि हुरमत-ए-मुसाहरत (विवाह के कारण प्रतिबंध) चाहे माज़ अल्लाह ज़िना से पैदा हुई हो, औरत को महरम के समान कर देती है। तो शहवत (वासना) के साथ देखना और छूना तो यक़ीनन हराम हो गया, और बिना शहवत के इसमें कोई हर्ज नहीं है जब तक कि अपने या औरत के लिए शहवत पैदा होने का डर न हो। डर की सूरत में बिना शहवत के भी देखना-छूना हराम होगा, बल्कि अगर शक भी हो कि शायद मुझे या औरत को शहवत पैदा हो या न हो, तब भी हराम का ही हुक्म है। अकेले एक कमरे में जाने की शुरू से इजाज़त नहीं है क्योंकि यह अनिवार्य रूप से शहवत का स्थान है, विशेष रूप से उस पत्नी के साथ जो एक समय तक उसके निकाह में रह चुकी हो और आपस में पर्दा और औपचारिकता समाप्त हो चुकी थी। इंसाफ की बात यह है कि जब पत्नी से माज़ अल्लाह हुरमत-ए-मुसाहरत पैदा हो जाए, तो उसे एक अजनबी औरत की तरह ही समझना बेहतर और एहतियात वाला है। और अल्लाह ही हिफ़ाज़त करने वाला है। दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी इबारत	**हिंदी अनुवाद**
ينظر الرجل من محرمه هى من لا يحل له نكاحها ابدا بنسب او بسبب ولو بزنا الى الراس والوجه والصدر والساق والعضدان أمن شهوته وشهوتها وان لم يأمن او شاهى لا يحل النظر والمس۔ كشف الحقائق لابن سلطان والمجتبىٰ اه ملتقطاً۔	महरम वह औरत है जिससे स्थायी रूप से निकाह हराम हो, चाहे वह वंश (नसब) के कारण महरम हो या किसी कारण (सबब) से, और वह कारण ज़िना ही क्यों न हो। अगर शहवत का अंदेशा न हो तो ऐसी महरम औरतों के सिर, चेहरा, सीना, पिंडली और बाजू को देखना मर्द के लिए जायज़ है और अगर मर्द या औरत को शहवत का अंदेशा हो या उनमें से कोई शहवत की हालत में हो, तो फिर महरम को छूना और देखना जायज़ नहीं। कशफ़ुल हक़ाइक़ इब्न सुल्तान और मुजतबा, संक्षेप। (त)

रद्दुल मुहतार में है: | अरबी इबारत | हिंदी अनुवाद | | :--- | :--- | | قوله ولو بزنا اى ولو كان عدم حل نكاحها له بسبب زناه بأصولها او فروعها قال الزيلعى وقيل انها كالأجنبية والاول اصح اعتباراً للحقيقة لانها محرمة عليه على التأبيد۔ | उनका कथन "चाहे ज़िना से हो" यानी उसके साथ निकाह जायज़ न होने की वजह उसके उसूल (माँ, दादी आदि) या फ़रूह (बेटी, पोती आदि) के साथ ज़िना हो। ज़ैलई ने कहा कि कहा गया है कि ऐसी औरत का छूने और देखने में

अजनबी औरत जैसा हुक्म है, जबकि पहला कथन ज़्यादा सही है क्योंकि इसकी असलियत का एतबार होगा कि वह उस पर हमेशा के लिए हराम है। (त) |

उसी में है: | अरबी इबारत | हिंदी अनुवाद | | :--- | :--- | | قوله اوشك معناه استواء الامرين | उनका कथन "ओ शक्का" (या शक हो), इसका अर्थ यह है कि दोनों बातों (शहवत होने या न होने) की बराबरी हो... |

1 दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़िन-नज़र वल-मस, मुज्तबाई दिल्ली, 2/241 2 रद्दुल मुहतार, फ़स्ल फ़िन-नज़र वल-मस, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 5/235

الجواب: مذہب اصح یہی ہے کہ حرمتِ مصاہرت اگرچہ معاذ اللہ زنا سے ناشی ہوئی ہو عورت کو مثل محارم کے کر دیتی ہے تو نظر و مس بہ شہوت تو قطعاً حرام ہو گئے اور بلا شہوت میں حرج نہیں جبکہ اپنے یا عورت کے لیے حدوث شہوت کا اندیشہ نہ ہو۔ بحالت اندیشہ بلا شہوت بھی دیکھنا چھونا حرام ہوگا بلکہ اگر شک بھی ہو کہ شاید مجھے یا عورت کو شہوت پیدا ہو، نہ ہو جب بھی حکم حرمت ہے، تنہا ایک مکان میں جانے کی تواصلاً اجازت نہیں کہ یہ خواہی نخواہی مظنہ شہوت ہے خصوصاً منکوحہ میں جو ایک زمانے تک اس کے نکاح میں رہ چکی اور باہم حجاب و تکلف مرتفع رہا تھا تو عند الانصاف جبکہ منکوحہ سے معاذ اللہ حرمتِ مصاہرت پیدا ہو اسے مثل اجنبیہ تصور کرنے ہی میں احتیاط ہے وباللہ العصمۃ، درمختار میں ہے :

عربی عبارت

ینظر الرجل من محرمه هی من لا یحل له نکاحها ابدا بنسب او بسبب ولو بزنا الی الراس والوجه والصدر والساق والعضدان أمن شهوته وشهوتها وان لم یأمن او شاهی لا یحل النظر والمس۔ کشف الحقائق لابن سلطان والمجتبیٰ اه ملتقطاً۔

اردو ترجمہ

محرمہ وہ عورت ہے جس سے ابدی طور پر نکاح حرام ہو، نسب کی وجہ سے محرمہ ہو یا کسی سبب کی وجہ سے وہ سبب زنا ہی کیوں نہ ہو، شہوت کا خدشہ نہ ہو تو ایسی محرم عورتوں کے سر، چہرہ، سینہ، پنڈلی اور بازو کو دیکھنا مرد کے لیے جائز ہے اور اگر مرد یا عورت کو شہوت کا خدشہ ہو یا کوئی ان میں سے حالتِ شہوت میں ہو تو پھر محرمہ کو چھونا اور دیکھنا جائز نہیں۔ کشف الحقائق ابن سلطان اور مجتبیٰ اھ ملتقطاً (ت)

ردالمحتار میں ہے : | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | قوله ولو بزنا ای ولو کان عدم حل نکاحها له بسبب زناه بأصولها او فروعها قال الزیلعی وقیل انها کالأجنبیة والاول اصح اعتباراً للحقیقة لانها محرمة علیه علی التأبید۔ | اس کا قول "اگرچہ زنا سے ہو" یعنی اس سے نکاح حلال نہ ہونے کی وجہ سے اس کے اصول یا فروع سے زنا ہو، زیلعی نے کہا کہ ایسی عورت کا چھونے اور دیکھنے میں اجنبی عورت جیسا حکم ہے جبکہ پہلا قول اصح ہے کیونکہ اس کے ابدی ہونے کی حقیقت کا اعتبار ہوگا۔ (ت) |

اسی میں ہے : | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | قوله اوشك معناه استواء الامرین | اس کا قول "اوشک" اس کا معنی یہ ہے کہ شہوت اور |

1 درمختار فصل فی النظر والمس مجتبائی دہلی ۲۴۱/۲ 2 ردالمحتار فصل فی النظر والمس دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۳۵/۵

Fatawa Razawiya Volume 11

In Tatar Khaniya [1]: The possibility of lack of lust being equal for both. Tatar Khaniya (T)

In Durr-ul-Mukhtar: "Seclusion (khalwah) with a Mahram (unmarriageable kin) woman is permissible, except for a foster sister and a young mother-in-law." [2] Seclusion with Mahram women is allowed, but it is not permissible with a foster sister or a young mother-in-law. (T)

In Radd-ul-Muhtar: "It is stated in 'Al-Qunya' and in the 'Istihsan' (juristic preference) of Qadhi Al-Sadr Al-Shaheed that it is not appropriate for a foster brother to be alone with his foster sister, because seclusion usually leads to intercourse; this is the dominant case. Al-Allama Al-Biri pointed out a beneficial point that 'appropriate' (yanbaghi) here means 'obligatory' (wujub)." [3] In 'Al-Qunya' and the preference of Qadhi Al-Sadr Al-Shaheed, it is mentioned that it is not suitable for a foster brother to have seclusion with a foster sister because seclusion is a cause for intercourse, and this is the prevailing outcome. Allama Biri stated a useful point that here "suitable" carries the meaning of "obligatory". End of Radd-ul-Muhtar's statement. I say: when this is the prevailing matter regarding a foster sister, what then is your opinion about a woman who was under him [in marriage] for a long time, and both have tasted each other's sweetness (intimacy)? We ask Allah for forgiveness and well-being. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 202: From Marharah Mutahharah, Madrasa Dargah Mu'alla, sent by Maulvi Rahmatullah Sahib, 17 Rajab-ul-Murajab 1317 AH. Zaid was married to Hindah for fifteen years; they also had a son. Then Zaid left and until now there is no news of him. He neither provided maintenance nor responded to several written requests for divorce. Now Hindah wishes to enter into another marriage contract, considering the circumstances and the unknown future, fearing that something improper might occur, at which time nothing would be of use except the regret of worldly people and the blame of Sharia. So, is this permissible according to Sharia or not? Explain and be rewarded.

[1] Radd-ul-Muhtar, Chapter on Looking and Touching, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/235. [2] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Looking and Touching, Mujtabai, Delhi, 2/241. [3] Radd-ul-Muhtar, Chapter on Looking and Touching, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/236.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

ताऱ्तार ख़ानिया [1]: दोनों में काम-वासना न होने की संभावना बराबर हो। ताऱ्तार ख़ानिया (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में है: "महरम (जिनसे निकाह हराम हो) औरतों के साथ एकांत (ख़लवत) जायज़ है, सिवाय रज़ाई (दूध शरीक) बहन और जवान सास के।" [2] महरम औरतों के साथ एकांत में बैठना जायज़ है लेकिन रज़ाई बहन और जवान सास के साथ जायज़ नहीं। (त)

रद्द-उल-मुह्तार में है: "क़ुन्या और क़ाज़ी अस-सदर अल-शहीद के इस्तिहसान (क़ानूनी प्राथमिकता) में है कि रज़ाई भाई के लिए अपनी रज़ाई बहन के साथ एकांत में रहना उचित नहीं है, क्योंकि एकांत संभोग का कारण बनता है; यही प्रबल स्थिति है। अल्लामा अल-बीरी ने एक उपयोगी बात बताई है कि यहाँ 'उचित' (यम्बग़ी) का अर्थ 'अनिवार्य' (वुजूब) है।" [3] क़ुन्या और क़ाज़ी अल-सदर अल-शहीद के इस्तिहसान में है कि रज़ाई भाई को रज़ाई बहन के साथ एकांत (तख़लिया) मुनासिब नहीं क्योंकि एकांत संभोग का कारण होता है, अक्सर यही होता है। अल्लामा बीरी ने मुफ़ीद बात बताई है कि यहाँ 'यम्बग़ी' का अर्थ वाजिब है। रद्द-उल-मुह्तार का बयान समाप्त हुआ। मैं कहता हूँ (त) कि जब रज़ाई बहन के बारे में प्रबल बात यह है, तो उस औरत के बारे में क्या ख़्याल है जो मुद्दत भर उसकी बीवी रही हो और ये मर्द-औरत दोनों एक दूसरे से लुत्फ़अंदोज़ होते रहे हों? हम अल्लाह तआला से माफ़ी और आफ़ियत की दुआ करते हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 202: मारहरा मुत़ह्हरा, मदरसा दरगाह-ए-मुअ़ल्ला से, मुरसला मौलवी रह़मतुल्लाह साहब, 17 रजब-उल-मुरज्जब 1317 हिजरी। ज़ैद का निकाह हिन्दह के साथ हुए पंद्रह साल का अरसा हुआ, लड़का भी पैदा हुआ, फिर ज़ैद चला गया और अब तक उसकी कोई ख़बर नहीं मिली, न गुज़ारा भत्ता दिया। उसे तलाक़ देने के लिए कई बार पत्र लिखा गया पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। अब हिन्दह दूसरा निकाह करना चाहती है, यह सोचकर कि भविष्य में न जाने क्या अनुपयुक्त स्थिति पैदा हो जाए, उस समय दुनिया वालों की शर्मिंदगी और शरीयत के इल्ज़ाम के सिवा कुछ हासिल न होगा। तो क्या शरीयत की दृष्टि से यह जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएँ, आपको अज्र (पुण्य) मिलेगा।

[1] रद्द-उल-मुह्तार, नज़र और मस का अध्याय, दार इह़या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/235. [2] दुर्र-ए-मुख़्तार, नज़र और मस का अध्याय, मुज्तबाई दिल्ली, 2/241. [3] रद्द-उल-मुह्तार, नज़र और मस का अध्याय, दार इह़या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/236.

पृष्ठ 739 का 414

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

تاتار خانیہ ۱۔ عدم شہوت دونوں کا احتمال مساوی ہو۔ تاتار خانیہ (ت)

در مختار میں ہے: والخلوۃ بالمحرم مباحۃ الاالاخت رضاعا والصھرۃ الشابۃ ۲۔ محرم عورتوں سے خلوت مباح ہے مگر رضاعی بہن اور جوان ساس سے جائز نہیں۔ (ت)

رد المحتار میں ہے: قال فی القنیۃ وفی استحسان القاضی الصدر الشھید وینبغی للاخ من الرضاع ان لایخلو باختہ من الرضاع لان الغالب ھنالك الوقوع فی الجماع ۔ اھ وافاد العلامۃ البیری ان ینبغی معناہ الوجوب ھنا ۳ اھ مافي ردالمحتار قلت فاذ ا کان الغالب ذلك فی الاخت رضاعا فما ظنك فی التی کانت تحتہ زمانا وقد ذاق کل عسیلۃ صاحب نسأل اللہ العفو والعافیۃ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم قنیہ اور قاضی الصدر الشہید کے استحسان میں ہے کہ رضاعی بھائی کو رضاعی بہن کے ساتھ تخلیہ مناسب نہیں کیونکہ تخلیہ جماع کا موجب ہوتا ہے، غالب یہی ہے۔ اھ اور علامہ بیری نے مفید بات کی ہے کہ یہاں ینبغی کا معنی وجوب ہے، ردالمحتار کا بیان ختم ہوا، قلت (میں کہتا ہوں کہ۔ ت) جب رضاعی بہن کے متعلق غالب امر یہ ہے تو اس عورت کے بارے میں کیا خیال ہے جومدت بھر اس کی بیوی رہی ہو اور یہ مرد عورت دونوں ایک دوسرے سے لطف اندوز ہوتے رہے ہوں ، ہم اللہ تعالی سے معافی اور عافیت کی دعا کرتے ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۰۲: از مارہرہ مطہرہ مدرسہ درگاہ معلی مرسلہ مولوی رحمت اللہ صاحب ۱۷ رجب المرجب ۱۳۱۷ھ زید نے ہندہ کے ساتھ عرصہ پندرہ برس کا ہوا نکاح کیا، لڑکا بھی پیدا ہوا پھر زید چلا گیا اور اب تک اس کی خبر نہ ملی، نہ نان نفقہ دیا، چند بار اس کو واسطے دینے طلاق کے تحریر کیا، جواب نہ دیا، اب ہندہ دوسرا عقد کرنا چاہتی ہے بخیال حالات کہ زمانہ نامعلوم کیا امر نا

مناسب آئندہ پیش آئے، اس وقت بجز ندامت اہل دنیا والزام شرع کچھ سود نہ ہوگا، پس یہ ازروئے شریعت جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

۱ ردالمحتار فصل فی النظر والمس دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۳۵/۵ ۲ درمختار فصل فی النظر والمس مجتبائی دہلی ۲۴۱/۲ ۳ ردالمحتار فصل فی النظر والمس دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۳۶/۵

Volume 11 Fatawa Rizvia

The Answer: As long as there is no death or divorce, it is forbidden.

Allah Almighty says: "And [also prohibited are] women who are already married." (T) [Quran 4:24]

The only course of action is legal recourse, otherwise patience. Otherwise, if this marriage itself was not forbidden, then what is the meaning of intentional adultery to avoid future doubt? Allah Almighty knows best.

Problem 205 to 208: From Bengal, District Sylhet, Post Office Kamal Ganj, Village Phool Toli, sent by Maulvi Abdul Ghani Sahib, 19 Shawwal 1317 AH.

What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Among Syeds, Sheikhs, Pathans, is marriage permissible between the daughter of an elder brother and the son of a younger brother in this situation? (2) Zaid and Amr are biological paternal first cousins. Now Zaid wants to marry Amr's daughter; is it permissible or not? And what is the ruling for non-biological relatives? (3) Is marriage permissible between brothers and sisters except those related by lineage (nasab) or fosterage (rada'ah)? (4) Zaid's grandfather is not his biological grandfather. Now Zaid wants to marry the daughter of this non-biological grandfather; is it permissible or not? Explain and be rewarded.

The Answer: In all these cases, i.e., marrying one's biological paternal uncle's daughter, or a paternal first cousin's daughter, or the daughter of a non-biological grandfather even if he is the biological brother of the biological grandfather, and relatives like sisters who do not share the same mother or father, nor have a foster relationship—such as daughters of maternal uncles, maternal aunts, and paternal aunts—all these women are Shariah-wise permissible (halal), provided no impediment to marriage like fosterage (rada'ah) or affinity (musaharah) exists.

Allah Almighty said: "And lawful to you are [all others] beyond these." (T) [Quran 4:24]

It is in *Niqayah*:

Forbidden to him are his ancestors, descendants, and the immediate descendants of his ancestors. | Forbidden for a man are his roots (ascendants), branches (descendants), and immediate roots (parents).

1. Al-Quran Al-Karim 4/24

2. Al-Quran Al-Karim 4/24

उत्तर: जब तक मृत्यु या तलाक़ न हो जाए, यह हराम (वर्जित) है।

अल्लाह तआला का इरशाद है: "और विवाहित स्त्रियाँ।" (त) [क़ुरआन 4:24]

समाधान क़ानूनी कार्यवाही है, अन्यथा धैर्य। अन्यथा यह निकाह स्वयं यदि हराम न होता, तो भविष्य के संदेह से बचने के लिए जानबूझकर व्यभिचार करने का क्या अर्थ है? अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 205 से 208: बंगाल, जिला सिलहट, डाकखाना कमाल गंज, गाँव फूल टोली से मौलवी अब्दुल गनी साहब द्वारा भेजा गया, 19 शव्वाल 1317 हिजरी।

इन मसलों में दीन के विद्वान क्या कहते हैं: (1) सैयद, शेख, पठान समुदायों में क्या बड़े भाई की बेटी और छोटे भाई के बेटे का निकाह इस स्थिति में जायज़ है या नहीं? (2) ज़ैद और उम्रू सगे चचेरे भाई हैं। अब ज़ैद, उम्रू की बेटी के साथ निकाह करना चाहता है, क्या यह जायज़ है या नहीं? और गैर-सगे के मामले में क्या हुक्म है? (3) क्या आपस में भाइयों और बहनों का निकाह जायज़ है, सिवाय उनके जो नसब (रक्त संबंध) या रज़ाअत (दूध का रिश्ता) से न हों? (4) ज़ैद का दादा गैर-सगा है। अब ज़ैद इस गैर-सगे दादा की बेटी से निकाह करना चाहता है, क्या यह जायज़ है या नहीं? बयान करें, सवाब पाएँ।

उत्तर: इन सभी सूरतों में यानी अपने सगे चचा की बेटी या चचेरे भाई की बेटी या गैर-सगे दादा की बेटी, भले ही वह सगे दादा का सगा भाई हो, और रिश्ते की वह बहन जो न माँ में एक हो न बाप में शरीक हो और न ही उनके बीच रज़ाअत (दूध का रिश्ता) हो—जैसे मामू, खाला और फूफी की बेटियां—ये सभी स्त्रियाँ शरीयत के अनुसार हलाल हैं, जब तक कि निकाह में कोई बाधा जैसे रज़ाअत या मुसाहरत (ससुराली रिश्ता) न हो।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और इनके अलावा बाकी औरतें तुम्हारे लिए हलाल हैं।" (त) [क़ुरआन 4:24]

निकाया में है:

किसी पुरुष के लिए उसके मूल (पूर्वज), उसकी शाखाएं(वंशज) और उसके मूल के निकटवर्ती वंशज वर्जित हैं। | मर्द पर उसके उसूल (पूर्वज), फ़रुआ (वंशज) और अस्ल करीब (माता-पिता) वर्जित हैं।

1. अल-कुरान अल-करीम 4/24
2. अल-कुरान अल-करीम 4/24

पृष्ठ 739 में से 415

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

الجواب جب تک موت یا طلاق نہ ہو حرام ہے،

قال اللہ تعالٰی وَ الْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۔۱ | اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے: شادی شدہ عورتیں۔ (ت)

چارہ کار نالش ہے ورنہ صبر ، ورنہ یہ نکاح خود کیا حرام نہ ہوگا تو وہم آئندہ سے بچنے کے لیے قصداً حرام کاری کے کیا معنی واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۰۵ تا ۲۰۸: از بنگالہ ضلع سلہٹ ڈاک خانہ کمال گنج موضع پھول ٹولی مرسلہ مولوی عبدالغنی صاحب ۱۹ شوال ۱۳۱۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں : (۱) سید سید شیخ پٹھان ، آیا ان قوموں میں بڑے بھائی کی لڑکی اور چھوٹے بھائی کا لڑکا اس صورت میں نکاح جائز ہے یا نہیں؟ (۲) زید وعمر و حقیقی چچا زاد بھائی ہیں اب عمرو کی دختر کے ساتھ نکاح کرنا چاہتا ہے جائز ہے یا نہیں؟ اور غیر حقیقی میں کیا حکم ہے؟ (۳) آپس میں بھائی اور بہنوں سوائے نسبی اور رضاعی کے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ (۴) زید کا دادا غیر حقیقی ہے اب زید اس غیر حقیقی دادا کی دختر سے نکاح کرنا چاہتا ہے جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب : ان سب صورتوں میں یعنی اپنے حقیقی چچا کی بیٹی یا چچا زاد بھائی کی بیٹی یا غیر حقیقی دادا کی اگر چہ وہ حقیقی دادا کا حقیقی بھائی ہو ، اور رشتے کی بہن جو ماں میں ایک نہ باپ میں شریک نہ باہم علاقہ رضاعت جیسے ماموں خالہ پھوپھی کی بیٹیاں یہ سب عورتیں شرعاً حلال ہیں جبکہ کوئی مانع نکاح مثل رضاعت ومصاہرت قائم نہ ہو۔

قال اللہ تعالیٰ وَ أُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ ۔۲ | اللہ تعالیٰ نے فرمایا: محرمات کے علاوہ عورتیں تمہارے لیے حلال ہیں۔ (ت)

نقایہ میں ہے: حرم اصلہ وفرعہ وفرع اصلہ القریب | مرد پر اس کے اصول وفروع اور اصل قریب (ماں باپ)

۱ القرآن الکریم ۲۴/۴ ۲ القرآن الکریم ۲۴/۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

Section 1: "The biological lineage for the distant ancestors. (1) | The branches (siblings) and the distant ancestors (grandfathers and those above them) of fathers are prohibited as biological relationships. (T)"

Section 2: In Durr al-Mukhtar it is stated:

Section 3: "The daughters of the paternal uncle, paternal aunt, maternal uncle, and maternal aunt are lawful [to marry], as Allah Almighty said: 'And lawful to you are those beyond that' (2) [end of quote]. I say (T): This includes the paternal uncles of his father and grandfather, even if higher, and his mother and grandmother, even if higher, and their paternal aunts, maternal uncles, and maternal aunts, just as they are included in the word of Allah Almighty: 'and your paternal aunts and your maternal aunts' as in At-Tabyin. And Allah Almighty knows best. (T) | The daughters of the paternal uncle, paternal aunt, maternal uncle, and maternal aunt are lawful because Allah Almighty said that except for the prohibited ones, all women are lawful for you. I say (T): Among them, the daughters of the uncles, maternal uncles, maternal aunts, and paternal aunts of the mother, father, grandfather, and grandmother are also included in being lawful, as it is in At-Tabyin. And Allah Almighty knows best. (T)"

Section 4: Problem 209: Sent by Maulana Abdul Hamid Sahib, 6 Muharram 1318 AH What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say about this matter: Zaid has two sisters and a daughter, and they are all married. Now, is it mandatory for Zaid's daughter to observe purdah (hijab) from the husbands of Zaid's both sisters or not? And after the death of one sister, can Zaid's daughter marry her husband or not? And is purdah still necessary from him in this situation? And is marriage valid with the husband of the sister who is still alive or not? Explain with evidence, may you be rewarded with a great reward.

Section 5: The Answer: Paternal aunt, maternal aunt, or sister, and similarly, all the maharams of a woman, marriage to their husbands is prohibited during their lifetime, although [it is otherwise] forbidden.

Section 6: "And its basis is the saying of Allah Almighty: 'and that you combine two sisters' (3). And in the Hadith: 'A woman should not be married along with her paternal aunt nor along with...' | And its origin — the command of Allah Almighty: 'It is forbidden to gather two sisters', and it is in the Hadith that paternal aunt and..."

Footnotes: 1. Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Kitab al-Nikah, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 52. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Matba' Mujtabai Delhi, 1/178. 3. Al-Quran al-Karim, 4/23.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

अनुभाग 1: "वस्लिबिया असलुहु लिल-बईद। (1) | शाखाएं(भाई-बहन) और दूर के पूर्वज (दादा और उनके ऊपर के) पिताओं के सगे रिश्ते हराम (निषिद्ध) हैं। (त)"

अनुभाग 2: दुर-ए-मुख्तार में है:

अनुभाग 3: "चचेरी, फुफेरी, ममेरी और मौसेरी बहनें हलाल (वैध) हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि महरमात (जिनसे निकाह हराम है) के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल हैं। क़ुल्त (मैं कहता हूँ - त) इनमें माँ, बाप, दादा और दादी के चचाओं और उनके मामाओं, मौसियों और बुआओं की बेटियाँ भी हलाल होने में शामिल हैं, जैसा कि 'तबीन' में है। वल्लाहु तआला आलम। (त) | चचा, फूफी, मामू और खाला की बेटियाँ हलाल हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने फरमाया कि महरमात के अलावा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल हैं, कुल्त (मैं कहता हूँ-त) इनमें माँ, बाप, दादा और दादी के चचाओं और उनके मामाओं, खालाओं और फूफ़ियों की बेटियाँ भी हलाल होने में शामिल हैं, जैसा कि 'तबीन' में है। वल्लाहु तआला आलम। (त)"

अनुभाग 4: मसला 209: प्रेषक मौलवी अब्दुल हमीद साहब, 6 मुहर्रम 1318 हिजरी। दीन के उलमा और शरीयत-ए-मतीन के मुफ्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद की दो बहनें और एक बेटी है और उनका निकाह भी हो चुका है, अब क्या ज़ैद की बेटी को ज़ैद की दोनों बहनों के शौहरों से पर्दा करना वाजिब है या नहीं? और एक बहन के मरने के बाद उसके शौहर से ज़ैद की लड़की का निकाह हो सकता है या नहीं? और क्या उस हालत में भी उससे पर्दा है या नहीं? और जिस बहन का शौहर ज़िंदा है उससे भी निकाह दुरुस्त है या नहीं? दलील के साथ बयान करें, आपको जज़ा-ए-खैर (बड़ा सवाब) मिले।

अनुभाग 5: अल-जवाब: बुआ या मौसी या बहन और इसी तरह औरत के जितने भी महरम हैं, उनकी ज़िंदगी में उनके शौहरों से औरत का निकाह अगरचे हराम है।

अनुभाग 6: "और इसकी असल—अल्लाह तआला का यह इर्शाद है 'हराम है दो बहनों को जमा करना' (3) और हदीस में है कि बुआ और... | और इसकी असल — अल्लाह तआला का यह इर्शाद है 'हराम है दो बहनों को जमा करना (एक साथ निकाह में रखना)' और हदीस में है कि बुआ और..."

पादलेख: 1. मुख्तसर अल-विकाया फि मसाइल अल-हिदाया, किताब अल-निकाह, नूर मोहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृ. 52. 2. दुर-ए-मुख्तार, फसल फिल-महरमात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/178. 3. अल-कुरआन अल-करीम, 4/23.

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

وصلبیہ اصلہ للبعید۔ ۱ | کے فروع (بہن بھائی) اور اصل بعید (دادا اور اوپر والے) باپوں کے صلبی رشتے حرام ہیں۔ (ت)

درمختار میں ہے:

حلال بنت عمه وعمته وخاله وخالته لقوله تعالٰی واُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ ۲ اه قلت ویدخل فیهم اعمام ابیه وجده وان علا وامه وجدته وان علت وعماتهم واخوالهم وخالاتهم کما دخلن فی قوله تعالٰی وَعَمّٰتُکُمْ وَخٰلٰتُکُمْ کما فی التبیین۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | چچا، پھوپھی، ماموں اور خالہ کی لڑکیاں حلال ہیں کیونکہ اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ محرمات کے ماسوا سب عورتیں تمہارے لیے حلال ہیں، قلت (میں کہتا ہوں۔ت) ان میں ماں، باپ، دادا اور دادی کے چچوں اور ان کے ماموں، خالاؤں، اور پھوپھیوں کی بیٹیاں بھی حلال ہونے میں داخل ہیں، جیسا کہ تبیین میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۰۹: مرسلہ مولوی عبدالحمید صاحب ۶ محرم ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کی دو بہنیں اور ایک بیٹی ہے اور ان کا نکاح بھی ہو گیا ہے، اب آیا زید کی بیٹی کو زید کی دونوں بہنوں کے شوہر سے پردہ کرنا واجب ہے یا نہیں؟ اور بعد مرنے کے ایک ہمشیرہ کے اس کے شوہر سے زید کی لڑکی کا نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ اور اس سے بھی پردہ اس حالت میں ہے یا نہیں؟ اور جس بہن کا شوہر زندہ ہے اس سے بھی نکاح درست ہے یا نہیں؟ بینوا بالدلیل توجروا باجر الجزیل۔

الجواب: پھوپھی یا خالہ یا بہن اور اسی طرح جتنی عورت کی محارم ہیں ان کی زندگی میں ان کے شوہروں سے عورت کا نکاح اگرچہ حرام۔

واصلہ قولہ عزوجل وان تجمعوا بین الاختین ۳ ۔ وفی الحدیث لا تنکح المرأة علی عمتها ولا علی |

اور اس کا اصل ـــــ اللہ تعالیٰ کا یہ ارشاد "حرام ہے دو بہنوں کو جمع کرنا" اور حدیث میں ہے کہ پھوپھی اور

۱۔ مختصر الوقایة فی مسائل الہدایہ کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۲ ۲۔ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۷۸ ۳۔ القرآن الکریم ۲۳/۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

Khalat-ha 1: Marriage should not be performed with her (the wife's) niece (brother's or sister's daughter) while she is in marriage. (T)

However, they do not become the woman's mahrams (prohibited degrees of kin) such that marriage with them is only forbidden as long as her paternal aunt, maternal aunt, sister, or any mahram woman is in their marriage. After separation due to death or divorce, a woman's marriage with their husbands is permissible. A mahram is someone with whom marriage can never be possible under any circumstances, and whose prohibition is eternal, such as a father, son, brother, nephew (brother's or sister's son), etc. One who is not a mahram is a stranger (ajnabi); the ruling for veiling (purdah) from them is the same as from any stranger, whether marriage with them is currently possible or not. If a temporary prohibition were sufficient for not veiling, then a married woman should not have to veil from anyone in the whole world, because as long as she is in her husband's marriage bond, marriage with anyone else is not permissible for her. Allah Almighty says: "And [also prohibited are] women already married" (Surah An-Nisa, 4:24). Similarly, a man who has four wives should not have to veil from any woman, whether married or unmarried, because until he separates from one of those four through death or divorce, a fifth marriage is not permissible for him. In short, all these are Indian and ignorant customs. In the pure Shari'ah, the paternal uncle-in-law (paternal aunt's husband), maternal uncle-in-law (maternal aunt's husband), brother-in-law (sister's husband), and husband's elder or younger brother (Jeth and Devar), as well as the sons of paternal uncles, paternal aunts, maternal aunts, maternal uncles, and passing strangers, all have the same ruling: they cannot enter the house informally, unlike those mentioned. Therefore, it is mentioned in a Hadith that it was submitted to the presence of the Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him): "O Messenger of Allah! What is the ruling regarding the 'Hamw' (husband's relatives like brother-in-law)?" He replied: "The Hamw is death." These are death, we seek refuge in Allah Almighty. From this explanation, the answers to all levels of the question have been revealed, and Allah knows best.

Problem 210: From Usmanpur, Post Office Kothi, District Barabanki, sent by Muhammad Hasan Yar Khan Sahib, 27 Rabi al-Awwal 1318 AH. What do the scholars

of religion say regarding the issue of whether a Sunni-madhab person should marry his daughter to a Shi'a Tabarra'i and Qadhif...

1. Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Combining a Woman and her Paternal Aunt, etc., Qadimi Kutub Khana Karachi; Sahih Bukhari, Chapter on Not Marrying a Woman Over Her Paternal Aunt, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/66
2. Al-Qur'an al-Karim 4/24
3. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Uqbah bin Amir al-Juhani (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr Beirut 4/139

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

खलतहा 1: खाला के होते हुए उनकी भतीजी और भांजी से निकाह न किया जाए। (त)

मगर वे औरत के महरम नहीं हो जाते कि उनसे निकाह सिर्फ उस हालत तक हराम है जब तक उसकी फूफी या खाला या बहन या कोई महरम औरत उनके निकाह में है। अलग होने के बाद, मौत या तलाक की वजह से, उनके शौहरों से औरत का निकाह हलाल है। और महरम वह होता है जिससे कभी किसी हाल में निकाह न हो सके उसकी हुरमत (प्रतिबंध) हमेशा के लिए हो, जैसे बाप, बेटा, भाई, भतीजा, भांजा वगैरह। और जो महरम नहीं है वह अजनबी है, उससे पर्दे का वही हुक्म है जो अजनबी से है, चाहे फिलहाल उससे निकाह हो सकता हो या नहीं। अगर फिलहाल हराम होना पर्दा न करने के लिए काफी होता, तो चाहिए था कि शादीशुदा औरत को पूरी दुनिया में किसी से पर्दा न करना पड़े क्योंकि जब तक वह अपने शौहर के निकाह में है, किसी के लिए उससे निकाह जायज़ नहीं। अल्लाह तआला का इरशाद है: "और (हराम हैं) वे औरतें जो किसी के निकाह में हों" (सूरह अन-निसा, 4:24)। इसी तरह जिस मर्द के निकाह में चार औरतें मौजूद हों, उसे किसी भी औरत (चाहे शादीशुदा हो या नहीं) से पर्दा नहीं होना चाहिए क्योंकि जब तक उन चारों में से किसी से मौत या तलाक के ज़रिए जुदाई न हो जाए, पांचवां निकाह उसके लिए हलाल नहीं। संक्षेप में, ये सब हिन्दुस्तानी और जाहिलाना रस्में हैं। शरीअत-ए-मुतह्हरा में फूफा, खालू, बहनोई, जेठ और देवर, और चाचा, फूफी, खाला, मामू के बेटों और राह चलते अजनबियों का एक ही हुक्म है। वे बिना किसी रोक-टोक के घर में नहीं आ सकते, इसके विपरीत जैसा कि ऊपर ज़िक्र किया गया। इसलिए हदीस में है कि हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ की गई: "या रसूल अल्लाह! जेठ और देवर (हमू) का क्या हुक्म है?" आपने फ़रमाया: "हमू (जेठ-देवर) तो मौत है।" ये तो मौत हैं, वल-इयाज़ु बिल्लाहि तआला। इस बयान से सवाल के सभी पहलुओं का जवाब स्पष्ट हो गया। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 210: उस्मानपुर, पोस्ट ऑफिस कोठी, जिला बाराबंकी से, मुहम्मद हसन यार खान साहब द्वारा भेजा गया, 27 रबीउल अव्वल 1318 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि क्या कोई सुन्नी मज़हब वाला अपनी बेटी का निकाह किसी शिया तबर्राई और क़ाज़िफ़...

1. सहीह मुस्लिम, बाब: औरत और उसकी फूफी को एक साथ निकाह में जमा करने की हुरमत आदि, क़दीमी कुतुब खाना कराची; सहीह बुखारी, बाब: औरत का उसकी फूफी के साथ निकाह न किया जाए, क़दीमी कुतुब खाना कराची 2/66
2. अल-कुरआन अल-करीम 4/24
3. मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस उकबा बिन आमिर अल-जुहनी (रज़ियल्लाहु अन्हु), दारुल फ़िक्र बेरूत 4/139

पृष्ठ 417/739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

خالتھا 1۔ خالہ کے ہوتے ہوئے ان کی بھتیجی اور بھانجی سے نکاح نہ کیا جائے۔(ت)

مگر وہ عورت کے محارم نہیں ہوجاتے کہ ان سے نکاح صرف اس حالت تک حرام جب تک اس کی پھوپھی یا خالہ یا بہن یا کوئی محرم عورت ان کے نکاح میں ہے بعد افتراق بموت یا طلاق ان کے شوہروں سے عورت کا نکاح حلال ہے اور محرم وہ ہوتا ہے جس سے کبھی کسی حال میں نکاح نہ ہوسکے اس کی حرمت ابدیہ ہو جیسے باپ، بیٹا، بھائی، بھتیجا، بھانجا، وغیر ہم، اور جو محرم نہیں وہ اجنبی ہے اس سے پردہ کا ویسا ہی حکم ہے جیسے اجنبی سے خواہ فی الحال اس سے نکاح ہوسکتا ہو یا نہیں۔ اگر حرمت فی الحال عدم پردہ کے لیے کافی ہو تو چاہئے کہ زنِ شوہر کا تمام جہان میں سے کسی سے پردہ نہ ہو کہ جب تک وہ اپنے شوہر کے عقدِ عصمت میں ہے کسی کو اس سے نکاح روا نہیں۔ قال اللہ تعالٰی: "وَالْمُحْصَنَتُ مِنَ النِّسَاءِ" 2 (منکوحہ عورتیں حرام ہیں۔ت) اس طرح جس مرد کے نکاح میں چار عورتیں موجود ہوں چاہئے کہ اس سے کسی عورت شوہر دار خواہ بے شوہر کا پردہ نہ ہو کہ جب تک ان چار میں سے کسی سے بذریعہ موت یا طلاق جدائی نہ ہو پانچواں نکاح اسے حلال نہیں، غرض یہ سب ہندی ہو سکیں اور جاہلانہ رسمیں ہیں، شرع مطہر میں پھوپھا اور خالو اور بہنوئی اور جیٹھ اور دیور اور چچا، پھوپھی، خالہ، ماموں کے بیٹوں اور راہ چلتے اجنبی سب کا ایک حکم ہے نہ وہ بے تکلف گھر میں آسکتا ہے بخلاف ان کے، و لہذا حدیث میں ہے حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے عرض کی گئی یا رسول اللہ ارایت الحمو یا رسول اللہ ! جیٹھ دیور کا حکم ارشاد ہو، فرمایا: "الحمو موت" 3 یہ تو موت ہیں، والعیاذ باللہ تعالٰی، اس بیان سے تمام مراتب سوال کا جواب منکشف ہو گیا، واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۱۰: از عثمان پور ڈاک خانہ کوٹھی ضلع بارہ بنکی مرسلہ محمد حسن یار خان صاحب ۲۷ ربیع

الاول شریف ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کسی سنی المذہب کو اپنی دختر شیعی تبرائی و قاذف حضرت

1 صحیح مسلم باب تحریم الجمع بین المرأة وعمتها الخ قدیمی کتب خانہ کراچی، صحیح بخاری باب لا تنکح المرأة علی عمتها قدیمی کتب خانہ کراچی ۶۶/۲ 2 القرآن الکریم ۲۴/۴ 3 مسند احمد بن حنبل حدیث عقبہ بن عامر الجهنی رضی الله عنہ دار الفکر بیروت ۱۳۹/۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

Question: Is it permissible to give [one's daughter or sister] in the marriage contract to a person who slanders Siddiqa (Aisha) [may Allah be pleased with her]? If it is impermissible and a Sunni person does so despite knowing it is impermissible, what is the Sharia ruling regarding him? Please provide a concise and reasoned answer. Clarify and be rewarded.

Answer: God forbid, a Rafidi slanderer is an accursed disbeliever by the consensus of Muslims, to the extent that one who does not consider him a disbeliever is a disbeliever himself. It is stated in Radd al-Muhtar:

Table Text: - Arabic: "There is no doubt in the takfir (labeling as a disbeliever) of one who slanders Lady Aisha, may Allah be pleased with her, etc." 1. - Urdu: "There is no doubt in the disbelief (kufr) of the person who slanders Lady Aisha Siddiqa, may Allah be pleased with her, etc. (T)"

In the chapter on 'Al-Bughat' (Rebels) of the same book: - Arabic: "Because that is an explicit denial of the Quran." 2. - Urdu: "Because this is an explicit denial of the Quran. (T)"

Whoever gives his daughter or sister in marriage to such a person is certainly a 'Dayyuth' (a man who lacks protective jealousy/honor). He is giving his sister or daughter for explicit adultery. The Hadith states that Paradise is forbidden for him, and Allah Almighty will not look upon him with mercy on the Day of Resurrection.

Table Text: - Arabic: "Ahmad, an-Nasa'i, and al-Hakim narrated from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) with a good chain from the Prophet (peace and blessings be upon him): 'There are three at whom Allah will not look on the Day of Resurrection: the one who is undutiful to his parents, the woman who assumes the appearance of men by imitating them, and the Dayyuth.' 3 - And al-Hakim and al-Bayhaqi narrated in Shu'ab [al-Iman] with an authentic chain from him, from the Prophet (peace and blessings be upon him): 'Three will not enter Paradise: the one who is disobedient to his parents...'" - Urdu: "Ahmad, Nasa'i, and Hakim have narrated from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) with a good chain from the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) that: (T) Allah Almighty will not look towards three persons on the Day of Resurrection: the one who hurts his parents, the masculine woman i.e., who adopts the appearance of men, and the Dayyuth. (Hakim and Bayhaqi have narrated in Shu'ab al-Iman with an

authentic chain that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: T) Three persons will not enter Paradise: the disobedient one to parents and..."

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of the Apostate, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/294. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of the Rebels, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/310. 3. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Musnad Abdullah bin Umar, Dar al-Fikr Beirut, / Sunan an-Nasa'i, Book of Zakat, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 1/357.

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

प्रश्न: क्या सिद्दीक़ा (आयशा) रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के निक़ाह के अनुबंध में (अपनी बेटी या बहन) देना जायज़ है? यदि यह नाजायज़ है और कोई सुन्नी इसे नाजायज़ समझने के बावजूद ऐसा करता है, तो शरीअत में उसके बारे में क्या हुक्म है? कृपया संक्षिप्त और तर्कसंगत उत्तर प्रदान करें, स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: अल्लाह की पनाह, मुसलमानों की सर्वसम्मति (इज्मा) के अनुसार सिद्दीक़ा पर आरोप लगाने वाला राफ़ज़ी एक शापित काफ़िर है, यहाँ तक कि जो उसे काफ़िर नहीं मानता, वह स्वयं काफ़िर है। 'रद-उल-मुहतार' में लिखा है:

सारणी पाठ: - अरबी: "सैयदा आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत (आरोप) लगाने वाले के कुफ़्र में कोई संदेह नहीं है आदि।" 1. - उर्दू: "हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाने वाले के कुफ़्र में कोई संदेह नहीं है आदि (त)"

उसी के'बाब-उल-बुग़ात' (विद्रोहियों का अध्याय) में है: - अरबी: "क्योंकि वह स्पष्ट रूप से कुरान को झुठलाना है।" 2. - उर्दू: "क्योंकि यह कुरान की स्पष्ट तक़ज़ीब (झुठलाना) है। (त)"

जो व्यक्ति अपनी बेटी या बहन का निक़ाह ऐसे व्यक्ति से करता है, वह निश्चित रूप से 'दयूष' (मर्यादाहीन) है। वह अपनी बहन-बेटी को खुलेआम ज़िना (व्यभिचार) के लिए देने वाला है। हदीस पाक इरशाद फ़रमाती है कि उस पर जन्नत हराम है और अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस पर रहमत की नज़र नहीं फ़रमाएगा।

सारणी पाठ: - अरबी: "अहमद, नसाई और हाकिम ने इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हा) से अच्छी सनद के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की है: 'तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन पर अल्लाह क़यामत के दिन नज़र नहीं फ़रमाएगा: माता-पिता का अवज्ञाकारी, पुरुषों की नकल करने वाली महिला, और दयूष।' 3 - और हाकिम और बैहक़ी ने 'शुअब' में सही सनद के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की: 'तीन व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं करेंगे: माता-पिता का अवज्ञाकारी...'" - उर्दू: "अहमद, नसाई और हाकिम ने अब्दुल्ला बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से सनद-ए-हसन के साथ हुज़ूर अलैहिस्सलाम से रिवायत किया कि: (त) तीन व्यक्तियों पर अल्लाह तआला क़यामत के दिन नज़र न फ़रमाएगा, माँ-बाप को आज़ार (दुख) देने वाला और मर्दानी औरत यानी मर्दों की वज़ा बनाने वाली और दयूष। (हाकिम और बैहक़ी ने 'शुअबुल ईमान' में सनद-

ए-सहीह के साथ रिवायत किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: त) तीन शख़्स जन्नत में न जाएँगे, माँ-बाप का नाफ़रमान और..."

फुटनोट: 1. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-मुरतद, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/294. 2. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-बुग़ात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/310. 3. मुसनद अहमद बिन हंबल, मुसनद अब्दुल्ला बिन उमर से रिवायत, दार अल-फ़िक्र बेरुत, / सुनन अन-नसाई, किताब अल-ज़कात, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब कराची, 1/357.

فتاوی رضویہ جلد یارہ دہم

صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے عقد نکاح میں دینا جائز ہے یا نہیں؟ اگر ناجائز ہے اور کوئی سنی باوجود ناجائز سمجھنے کے بھی ایسا کرے تو اس کی بابت شرعا کیا حکم ہے؟ جواب مختصر و مدلل مرحمت فرمایا جائے، بینوا توجروا

الجواب: معاذ اللہ رافضی قاذف باجماع مسلمین کافر ملعون ہے یہاں تک کہ جو اسے کافر نہ جانے خود کافر ہے، ردالمحتار میں ہے:

جدول کا متن: - عربی: لاشك في تكفير من قذف السيدة عائشه رضی اللہ تعالی عنها الخ 1- - اردو: حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا پر تہمت لگانے والے کے کفر میں کوئی شک نہیں الخ (ت)

اسی کے باب البغاۃ میں ہے: - عربی: لان ذلك تكذيب صريح القرآن 2- - اردو: کیونکہ یہ صریح قرآن کی تکذیب ہے۔ (ت)

جو شخص اپنی دختر یا خواہر ایسے کے نکاح میں دے وہ یقیناً دیوث ہے۔ وہ اپنی بہن بیٹی کو صریح زنا کے لیے دینے والا ہے، حدیث ارشاد فرماتی ہے کہ اس پر جنت حرام ہے اللہ تعالیٰ روز قیامت اس پر نظر رحمت نہ فرمائے گا۔

جدول کا متن: - عربی: احمد والنسائی والحاکم عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنهما بسند حسن عن النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم، ثلثه لا ینظر اللہ الیهم یوم القیامة العاق لوالدیه والمرأة المترجلة المتشبهة بالرجال والدیوث 3- وروی الحاکم والبیهقي في الشعب بسند صحیح عنه عن النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم ثلثة لا یدخلون الجنة العاق لوالدیه - اردو: احمد، نسائی اور حاکم نے عبداللہ بن عمر

رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے سند حسن کے ساتھ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے روایت کیا کہ (ت) تین شخصوں پر اللہ تعالیٰ روز قیامت نظر نہ کرے گا، ماں باپ کو آزار دینے والا اور مردانی عورت یعنی مردوں کی وضع بنانے والی اور دیوث۔ (حاکم اور بیہقی نے شعب الایمان میں بسند صحیح روایت کیا ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا۔ ت) تین شخص جنت میں نہ جائیں گے ماں باپ کا نافرمان اور

فٹ نوٹ: 1 ردالمحتار باب المرتد دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۲۹۴ 2 ردالمحتار باب البغاۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳لو/۳ 3 مسند احمد بن حنبل مروی از مسند عبداللہ بن عمر دار الفکر بیروت، / سنن النسائی کتاب الزکوۃ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۳۵۷/۱

Fatawa Razawiya, Volume 11

[Boxed Text] Arabic: "And the dayyuth (cuckold) and the woman who imitates men. 1 - At-Tabarani narrated in al-Kabir with a good chain from Ammar ibn Yasir (may Allah be pleased with both of them) that: 'Three people will never enter Paradise: the dayyuth, the woman who imitates men, and the habitual wine-drinker.' 2" Urdu Translation: "The dayyuth and the woman with a manly appearance. (Tabarani narrated in al-Kabir with a good chain from Hazrat Ammar ibn Yasir (may Allah be pleased with both of them) that:) Three persons will never enter Paradise: the dayyuth, the woman with a manly appearance, and the drunkard. We seek refuge in Allah Almighty. And Allah Almighty knows best." [End Boxed Text]

Issue 211 to 212: From the aforementioned place through Nawab Nisar Ahmad Khan Sahib Barelwi, 17 Rabi al-Awwal Sharif 1318 AH. What do the scholars of the religion say on these issues: (1) Zaid, despite having knowledge, took two real sisters into his marriage contract and lives with both of them. The people of Islam forbade this act, but Zaid paid no heed, nor did he separate from either of them. Muslims were forced to adopt avoidance (boycott) of Zaid, but some individuals sided with Zaid. So, according to the Noble Sharia, is this avoidance by Muslims right or not? And is it permissible to eat, drink, or greet Zaid and his companions? And which woman is permissible for Zaid: the first one or the second one? Or are both impermissible? Please grant a reasoned answer. State it and you shall be rewarded. (2) Is it permissible for a Sunni to give his daughter in marriage to a Shia? If it is impermissible, and a Sunni does so despite knowing it's impermissible, what is the Sharia ruling on this? And what is the reason for the relationship between Sunnis and Shias continuing from the past until now? Have the scholars of religion not paid any attention to this? Is there a difference between the Shias of that time and the Shias of today? Please write down the reasoned cause so that the questioner's unease and the objectors' criticism are removed. Please grant a brief, reasoned answer. State it and you shall be rewarded.

The Answer: (1) By saying 'first and second', it is clear that he did not actually marry both [simultaneously]. In this case, the marriage with the second one...

[Footnotes] 1. Al-Mustadrak li al-Hakim, Book of Faith, 'Three shall not enter Paradise...', Dar al-Fikr Beirut 1/72. Shu'ab al-Iman, Chapter on Jealousy and Lust..., Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 7/412. 2. Majma' al-Zawa'id, Chapter on those who are not pleased with their family regarding evil, Dar al-Kitab Beirut 4/327.

फ़तावा रज़विया, जिल्द ११

[बॉक्स में पाठ] अरबी: "और दय्यूथ और मर्दों जैसी वेषभूषा धारण करने वाली स्त्री। १- अल-तबरानी ने अल-कबीर में एक अच्छी सनद (हवाला) के साथ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है कि: 'तीन व्यक्ति कभी जन्नत में प्रवेश नहीं करेंगे: दय्यूथ, औरतों में से पुरुषों जैसी वेषभूषा धारण करने वाली स्त्री, और शराब का आदी।' २" उर्दू अनुवाद: "दय्यूथ और मर्दानी वज़अ (दिखावट) की औरत। (तबरानी ने कबीर में सनद-ए-हसन के साथ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया कि) तीन शख़्स जन्नत में कभी न जाएंगे: दय्यूथ और मर्दानी वज़अ की औरत और शराबी। वल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला वल्लाहु तआला आलम।" [बॉक्स का अंत]

मसला २११ ता २१२: मज़कूरा स्थान से नवाब निसार अहमद खाँ साहब बरेलवी के माध्यम से, १७ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३१८ हिजरी। दीन के विद्वान इन मसाइल में क्या फ़रमाते हैं: (१) ज़ैद ने जानकारी होने के बावजूद दो सगी बहनों को अपने अक़्द (निकाह) में लिया और दोनों के साथ समय बिताता है। अहले इस्लाम ने इस हरकत से मना किया, लेकिन ज़ैद ने कोई परवाह नहीं की, न ही दोनों में से किसी को अलग किया। मुसलमानों ने मजबूर होकर ज़ैद से इजतिनाब (परहेज़/बहिष्कार) करना शुरू कर दिया, लेकिन कुछ व्यक्तियों ने ज़ैद का साथ दिया। तो क्या शरीयत के अनुसार मुसलमानों का यह परहेज़ सही है या नहीं? और क्या ज़ैद तथा उसके साथियों के यहाँ खाना-पीना और सलाम-दुआ करना जायज़ है या नहीं? और ज़ैद पर कौन सी औरत जायज़ है: पहली या दूसरी? या दोनों नाजायज़ हैं? कृपया दलील के साथ जवाब अता फरमाएं। बयान करें, पुण्य पाएंगे। (२) सुन्नी को अपनी बेटी का निकाह शिया से करना जायज़ है या नहीं? अगर नाजायज़ है और कोई सुन्नी इसे नाजायज़ समझते हुए भी ऐसा करता है, तो शरीयत के अनुसार इस पर क्या हुक्म है? और सुन्नी व शिया की जो रिश्तेदारी पिछले ज़माने से अब तक चली आ रही है, उसका क्या कारण है? क्या उस समय के विद्वानों ने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया या उस समय के शिया और आज के शिया में कुछ फर्क है? इसका कारण दलील के साथ लिखें ताकि पूछने वाले की बेचैनी और ऐतराज करने वालों का ऐतराज दूर हो। कृपया संक्षिप्त और दलीलयुक्त उत्तर अता फरमाएं। बयान करें, पुण्य पाएंगे।

जवाब: (१) पहली और दूसरी कहने से स्पष्ट हुआ कि दोनों से वास्तव में निकाह नहीं किया था, इस स्थिति में दूसरी से निकाह...

[फ़ुटनोट्स] १. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम किताब-उल-ईमान सलासा ला-यदख़ुलून अल-जन्ना अ़ल-ख़ारिज दारुल फ़िक्र बेरूत १/७२, शोअब-उल-ईमान बाब फ़िल-गैरत वल-मज़ा अ़ल-ख़ारिज दारुल कुतुब अल-इल्मिया बेरूत ७/४१२ २. मज्मअ-उज़-ज़वाइद बाब फ़ीमन ला-यरज़ा लि-अहलिही बिल-ख़ुब्त दारुल किताब बेरूत ४/३२७

पृष्ठ ४१९/७३९

[خانہ] والدیوث ورجلۃ النساء 1- الطبرانی فی الکبیر بسند حسن عن عمار بن یاسر رضی اللہ تعالٰی عنہما، ثلثہ لا یدخلون الجنۃ ابدا الدیوث والرجلۃ من النساء ومدمن الخمر 2 دیوث اور مردانی وضع کی عورت۔ (طبرانی نے کبیر میں سند حسن کے ساتھ حضرت عمار بن یاسر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا کہ) تین شخص جنت میں کبھی نہ جائیں گے : دیوث اور مردانی وضع کی عورت اور شرابی۔ والعیاذ باللہ تعالی واللہ تعالٰی اعلم۔ [خانہ ختم]

مسئلہ ۲۱۱ تا ۲۱۲ : از موضع مذکور بوساطت نواب نثار احمد خاں صاحب بریلوی ۱۷ ربیع الاول شریف ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں : (۱) زید باوجود علم ہونے کے حقیقی دو بہنوں کو اپنے عقد میں لایا اور دونوں کے ساتھ اوقات بسر کرتا ہے ، اہل اسلام اس حرکت سے مانع ہوئے لیکن زید نے کچھ خیال نہ کیا ، نہ دونوں میں سے کسی کو جدا کیا، مسلمانوں نے مجبور ہو کر زید سے اجتناب اختیار کیا مگر بعض اشخاص نے زید کا ساتھ دیا تو از روئے شرع شریف مسلمانوں کا یہ اجتناب حق ہے یا نہیں ؟ اور زید ونیز اس کے ہمراہیوں کے یہاں خوردو نوش اور سلام علیک جائز ہے یا نہیں ؟ اور زید پر کون سی عورت جائز ہے اولی یا ثانیہ ؟ یا دونوں ناجائز ہیں ؟ جواب مدلل مرحمت فرمائیے، بینوا توجروا۔ (۲) سنی کو اپنی دختر شیعی کے نکاح میں دینا جائز ہے یا نہیں ؟ اگر ناجائز ہے کوئی سنی باوجود ناجائز سمجھنے کے ایسا کرے تو اس بابت شرعاً کیا حکم ہے ؟ اور جو سنی و شیعہ کی قرابت زمانہ سلف سے اس وقت تک جاری ہے اس کا کیا باعث ہے آیا اس وقت میں علمائے دین نے اس طرف کچھ توجہ نہیں فرمائی یا اس وقت کے شیعہ میں اور اس وقت کے شیعہ میں کچھ فرق ہے ؟ اس کی وجہ مدلل زیب قلم

فرمایئے کہ سائل کی خلش و معترضین کا اعتراض دفع ہو جواب مختصر مدلل مرحمت فرمایا جائے، بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) اولی و ثانیہ کہنے سے واضح ہوا کہ دونوں سے معناً نکاح نہ کیا تھا اس صورت میں ثانیہ سے نکاح

[حواشی] 1 المستدرک للحاکم کتاب الایمان ثلاثہ لایدیخلون الجنۃ الخ دارالفکر بیروت ۱ / ۷۲ ، شعب الایمان باب فی الغیرۃ والمذاء الخ دار الکتب العلمیہ بیروت ۷ / ۴۱۲ 2 مجمع الزوائد باب فیمن لایرضی لاھلہ بالخبث دارالکتاب بیروت ۴ / ۳۲۷

Fatawa Rizvia Volume 11

It became forbidden because of the words of Allah Almighty: "And that you join two sisters [in marriage]" (Surah An-Nisa 4:23). And as long as he had not touched her, the wife was lawful. As soon as he touched her, she also became forbidden. Now, until he leaves this second one and her waiting period (Iddah) passes, he is not permitted to touch the wife. It is obligatory on Zaid to leave her. When her waiting period after separation passes, at that time the wife will become lawful for him.

In *Radd al-Muhtar*: The second marriage is void (batil). Intercourse with the first [wife] is permissible now. But if he has intercourse with the second one, then the first one becomes forbidden until the waiting period of the second one expires, just as if one has intercourse with his wife's sister by mistake (shubha), the wife remains forbidden until the waiting period of the one involved in the mistake expires. [Reference: Halabi on the authority of Al-Bahr].

This avoidance by Muslims is correct. Allah Almighty says:

"And after the reminder, do not sit with the wrongdoing people." (Surah Al-An'am 6:68).

Initiating greetings (salam) with Zaid is forbidden until he repents, as he is an open sinner (fasiq mu'lin) and persists in major sin.

In *Al-Durr al-Mukhtar*: It is disliked (makruh) to greet a sinner if he is an open sinner, etc. And in *Radd al-Muhtar*, it is narrated from *Fusul al-'Allami* that greetings should not be offered to an elderly joker who is a liar and speaks nonsense, nor to one who insults people or gazes at the faces of strange women, nor to an open sinner, nor to a singer, nor to a pigeon-fancier, until their repentance is known.

1. The Holy Quran 4/23
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Prohibited [Marriages], Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/286
3. The Holy Quran 6/68
4. Durr al-Mukhtar, Chapter on Sales, Mujtabai Press, Delhi, 2/251
5. Radd al-Muhtar, Book of Prohibition and Permission, Chapter on Sales, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/267

फ़तावा रिज़विया खंड 11

यह अल्लाह सर्वशक्तिमान के शब्दों के कारण हराम (वर्जित) हो गया: "और यह कि तुम दो बहनों को [निकाह में] एकत्र करो" (सूरा अन-निसा 4:23)। और जब तक उसने उसे स्पर्श नहीं किया था, पत्नी हलाल (वैध) थी। जैसे ही उसने उसे स्पर्श किया, वह भी हराम हो गई। अब, जब तक वह इस दूसरी को छोड़कर उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी नहीं कर लेता, उसे पत्नी को छूने की अनुमति नहीं है। ज़ैद पर अनिवार्य है कि वह उसे छोड़ दे। जब अलगाव के बाद उसकी इद्दत बीत जाएगी, तब पत्नी उसके लिए हलाल हो जाएगी।

रद्द अल-मुह्तार में है: दूसरा निकाह बातिल (अमान्य) है। पहली के साथ संभोग (वती) अब जायज़ है। लेकिन अगर उसने दूसरी के साथ संभोग कर लिया, तो पहली दूसरी की इद्दत पूरी होने तक हराम होगी, जैसे कि अगर गलती से (शुबा) पत्नी की बहन के साथ संभोग हो जाए, तो पत्नी तब तक हराम रहती है जब तक कि गलती वाली महिला की इद्दत न गुजर जाए। [संदर्भ: हलबी, बहर के हवाले से]।

मुसलमानों का यह परहेज़ सही है। अल्लाह सर्वशक्तिमान फ़रमाता है:

"और याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ मत बैठो।" (सूरा अल-अन'आम 6:68)।

ज़ैद से, जब तक वह तौबा न करे, सलाम की शुरुआत करना मना है क्योंकि वह एक खुल्लम-खुल्ला गुनहगार (फ़ासिक़ मु'लिन) है और बड़े गुनाह पर अड़ा हुआ है।

दुर्रे मुख्तार में है कि फ़ासिक़ को सलाम करना मकरूह (नापसंद) है बशर्ते कि वह खुल्लम-खुल्ला फ़िस्क़ (पाप) करता हो, इत्यादि। और रद्द अल-मुह्तार में है कि फुसूल अल्लामी से रिवायत है कि झूठे और मज़ाक करने वाले बूढ़े, बेकार बातें करने वाले, लोगों को गाली देने वाले, अजनबी औरतों को देखने वाले, खुल्लम-खुल्ला गुनाह करने वाले, गाने वाले और कबूतरबाज़ी करने वाले को तब तक सलाम न किया जाए जब तक कि उनकी तौबा (पश्चाताप) के बारे में पता न चल जाए।

1. अल-क़ुरान अल-करीम 4/23
2. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल मुहर्रमत, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत 2/286
3. अल-क़ुरान अल-करीम 6/68
4. दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल अल-बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 2/251

5. रद्द अल-मुह्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहह, फ़स्ल फ़िल बैअ, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत 5/267

पृष्ठ 739 का 420

حرام ہوا لقولہ تعالٰی : "وَ اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ" (حرام ہے دو بہنوں کو جمع کرنا۔ ت) اور جب تک اسے ہاتھ نہ لگایا تھا زوجہ حلال تھی اسے ہاتھ لگاتے ہی وہ بھی حرام ہو گئی، اب جب تک اس دوسری کو چھوڑ کر اس کی عدت نہ گزر جائے زوجہ کو بھی ہاتھ لگانے کی اجازت نہیں، زید پر فرض ہے کہ اسے ترک کردے، جب اس کی عدت بعد متارکہ گزر جائے گی اس وقت زوجہ اس کے لیے حلال ہوگی۔

في ردالمحتار الثانی باطل وله وطء الاولی الآن یطأ الثانیة فتحرم الاولی الی انقضاء عدة الثانیة کما لو وطی اخت امرأته بشبهة حیث تحرم امرأته مالم تنقض عدة ذات الشبهة عن البحر۔ ردالمحتار میں ہے: دوسرا نکاح باطل ہے اس کی پہلی سے وطی جائز ہے لیکن اگر دوسری سے وطی کرلی تو پہلی دوسری کی عدت گزر جانے تک حرام ہوگی جیسا کہ اگر شبہ کے طور پر بیوی کی بہن سے وطی ہوجائے تو بیوی اس وقت تک حرام رہتی ہے جب تک شبہ والی کی عدت نہ گزر جائے حلبی بحوالہ بحر۔ (ت)

مسلمانوں کا یہ اجتناب حق ہے۔ قال اللہ تعالٰی:

فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّکْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ظالموں کے ساتھ یاد آنے پر مت بیٹھو۔ (ت)

زید سے، جب تک تائب نہ ہو، ابتدا اسلام ممنوع ہے کہ وہ فاسق معلن ہے اور گناہِ کبیرہ پر مصر ہے۔

في الدرالمختار یکره السلام علی الفاسق لو معلنا الخ وفي ردالمحتار عن فصول العلامی لایسلم علی الشیخ المازح الکذاب واللاغی ولا علی من یسب الناس او ینظر وجوه الاجنبیات ولا علی الفاسق المعلن

ولا علی من یغنی او یطیر الحمام مالم تعرف توبتھم۔ درمختار میں ہے کہ فاسق کو سلام کرنا مکروہ ہے بشرطیکہ وہ اعلانیہ فسق کرتا ہو الخ، اور ردالمحتار میں ہے فصول علامی سے مروی ہے کہ جھوٹے اور مذاق کرنے والے بوڑھے، لغویات بولنے والے، لوگوں کو گالی گلوچ کرنے والے، اجنبی عورتوں کو دیکھنے والے، اعلانیہ فسق کرنے والے، گانے والے اور کبوتر بازی کرنیوالے کو اس وقت تک سلام نہ کیا جائے جب تک اس کی توبہ کا علم نہ ہوجائے۔ (ت)

1 القرآن الکریم ۲۳/۴ 2 ردالمحتار باب المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۸۶/۲ 3 القرآن الکریم ۶۸/۶ 4 درمختار فصل البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۱/۲ 5 ردالمحتار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۶۷/۵

And one should also avoid eating and drinking with them. It is narrated in Sunan Abi Dawood and Jami' at-Tirmidhi from Abdullah ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"When the Children of Israel fell into sins, their scholars forbade them but they did not desist. Then those scholars sat with them in their gatherings, and ate and drank with them. So Allah struck the hearts of some of them against others and cursed them through the tongues of Dawud and 'Isa ibn Maryam." (Hadith)

If those who support Zaid are specifically helping and assisting him in this sin, then it is obvious that they are like Zaid, or rather worse than him. Allah the Almighty says: "And do not cooperate in sin and aggression." (Quran 5:2) (Meaning: Do not cooperate with each other in sin and enmity. - Trans). It is stated in the Hadith:

"Whoever walks with an oppressor to aid him, while knowing that he is an oppressor, has indeed left Islam." (Reported by at-Tabarani in al-Kabir and ad-Diya' in al-Mukhtara from Aws ibn Shurahbil, may Allah be pleased with him. - Trans)

And if it is only to the extent that they are pleased with Zaid despite this action, then even so, by the evidence of the aforementioned Hadith about the Children of Israel, they are partners in the sin and deserve humiliation and degradation. It is stated in the Hadith:

"A sin's ill-omen is upon other than its doer... (until his saying) and if one is pleased with it, he shares in it." (Reported in Musnad al-Firdaws from Anas ibn Malik, may Allah be pleased with him. - Trans) And Allah Almighty knows best.

---

1 Jami’ at-Tirmidhi, Chapters on Tafsir, Surah al-Ma'idah, Amin Company Karachi, 130/2 2 Al-Quran 5/2 3 Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith of Aws ibn Shurahbil, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut, 7/22 4 Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, 2/249

और उनके साथ खाने-पीने से भी परहेज़ करना चाहिए, सुनन अबी दाऊद और जामी अत-तिर्मिज़ी में अब्दुल्ला इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

"जब बनी इसराइल गुनाहों में पड़ गए, तो उनके विद्वानों ने उन्हें रोका, लेकिन वे नहीं माने। फिर वे विद्वान उनके साथ उनकी महफिलों में बैठने लगे, उनके साथ खाना खाया और पानी पिया, तो अल्लाह तआला ने उनमें से एक के दिल को दूसरे पर मार दिया और उन सबको दाऊद और ईसा इब्न मरियम (अलैहिमुस्सलाम) की ज़ुबान पर शापित (मल'ऊन) कर दिया।" (हदीस)

ज़ैद का साथ देने वाले अगर विशेष रूप से इस गुनाह में उसके मददगार और सहायक हुए, तो ज़ाहिर है कि वे भी ज़ैद की तरह बल्कि उससे भी बदतर हैं। अल्लाह तआला फरमाता है: "और गुनाह और सरकशी में एक-दूसरे का सहयोग न करो।" (अल-कुरान ५:२) (अर्थ: गुनाह और दुश्मनी पर एक-दूसरे से सहयोग न करो। - तर्जुमा)। हदीस में है:

"जो किसी ज़ालिम की मदद करने के लिए उसके साथ चले और वह जानता हो कि वह ज़ालिम है, तो वह इस्लाम से निकल गया।" (इसे तबरानी ने 'कबीर' में और ज़िया ने 'मुख्तारा' में औस बिन शुरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - तर्जुमा)

और अगर बात सिर्फ इतनी है कि वे इस हरकत के बावजूद ज़ैद से खुश हैं, तब भी बनी इसराइल वाली हदीस के प्रमाण से वे गुनाह में शामिल हैं और अपमान और ज़िल्लत के हकदार हैं। हदीस में है:

"गुनाह की अशुभता (मंहुसियत) उसके कर्ता के अलावा दूसरों पर भी पड़ती है... (यहाँ तक कि कहा) और जो उस पर राजी हो, वह भी गुनाह में शरीक है।" (इसे मुसनद अल-फिरदौस में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है। - तर्जुमा) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

---

1 जामी अत-तिर्मिज़ी, अबवाब उत-तफ़्सीर, सूरह अल-मायदा, अमीन कंपनी कराची, 130/2 2 अल-क़ुरान 5/2 3 अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस औस बिन शुरहबील, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरूत, 7/22 4 अल-फिरदौस बि-माथूर अल-ख़िताब, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत, 2/249

اور اس کے ساتھ کھانے پینے سے بھی احتراز کرنا چاہئے، سنن ابی داؤد وجامع الترمذی میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لمّا وقعت بنو اسرائیل فی المعاصی نھتھم علماؤھم فلم ینتھوا فجالسو ھم في مجالسھم واکلوھم وشاربو ھم فضرب اللہ قلوب بعضھم ببعض فلعنھم علی لسان داؤد وعیسی بن مریم - الحدیث- جب بنی اسرائیل گناہوں میں پڑے ان کے مولوی مانع آئے، انھوں نے نہ مانا، اب وہ مولوی ان کے پاس بیٹھے، ساتھ کھانا کھایا پانی پیا تو اللہ تعالٰی نے ان میں ایک کے دل میں دوسرے پر مارے اور ان سب کو ملعون کردیا داؤد اور عیسٰی بن مریم علیہم الصلوٰۃ والسلام کی زبان پر۔ (الحدیث)

زید کا ساتھ دینے والے اگر خاص اس گناہ میں اس کے مدد معاون ہوئے جب تو ظاہر کہ وہ بھی زید کے مثل بلکہ اس سے بدتر ہیں، قال اللہ تعالٰی: لَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ (گناہ اور دشمنی پر ایک دوسرے سے تعاون نہ کروت) حدیث میں ہے:

من مشی مع ظالم لیعینہ وھو یعلم انہ ظالم فقد خرج من الاسلام - رواہ الطبراني في الکبیر والضیاء فی المختارۃ عن اوس بن شرحبیل رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ جو کسی ظالم کے ساتھ مدد دینے کو چلے اور وہ جانتا ہو کہ یہ ظالم ہے وہ اسلام سے نکل جائے (اس کو طبرانی نے کبیر میں اور ضیاء نے مختارہ میں اوس بن شرحبیل رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور اگر اسی قدر ہو کہ زید سے باوصف اس حرکت کے راضی ہیں جب بھی بدلیل حدیث مذکور بنی اسرائیل شریک گناہ ومستحق توہین و تذلیل ہیں، حدیث میں ہے :

الذنب شؤم علی غیر فاعلہ الی قولہ وان رضی بہ شارکہ - رواہ في مسند الفردوس عن انس بن مالك رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم یعنی گناہ کرتا ایک ہے اور اس کا وبال اوروں پر بھی پڑتا ہے کہ جو اس پر راضی ہو وہ بھی شریک گناہ ہے، (اس کو مسند فردوس میں انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

1 جامع ترمذی ابواب التفسیر سورۃ المائدۃ، امین کمپنی کراچی ۲/۱۳۰ 2 القرآن ۲/۵ 3 المعجم الکبیر حدیث اوس بن شرحبیل حدیث المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۷ / ۲۲ 4 الفردوس بمأثور الخطاب حدیث دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/۲۴۹

(2) Nowadays, common Rafizis (Shias) are deniers of the necessities of religion and are, by the consensus of the Ummah, apostate disbelievers, as we have investigated in our Fatawa and in our treatise "Al-Maqalatu al-Musfiratu 'an Ahkamil Bid'ati wal Mukaffirah" (As we have established in our Fatawa and in our treatise "The Shining Treatise on the Rulings of Innovation and Acts of Disbelief"). Apart from other disbeliefs, two types of disbelief are common among their scholars and ignorant men and women alike: considering Mawla Ali (may Allah honor him) superior to the previous prophets (peace be upon them), and whoever considers a non-prophet superior to any prophet is a disbeliever. And, seeking refuge in Allah, claiming that the Companions (may Allah be pleased with them) and others among the Ahl al-Sunnah subtracted a few parts, Surahs, or verses from the Great Quran, or changed some words, and whoever holds such a suspicion regarding even a single letter or dot of the Great Quran is a disbeliever. Allah Almighty says: "Indeed, it is We who sent down the message [i.e., the Quran], and indeed, We will be its guardian." (We sent down the Reminder and We ourselves shall protect it). Their current Mujtahids have clearly written these false beliefs and other blasphemous creeds and set their seals upon them. Even if one among them does not personally hold these beliefs, they would never call the Mujtahid a disbeliever, but would rather consider him a 'Janab Qibla wa Kaaba' (a title of extreme respect). And whoever considers a denier of the necessities of religion as a religious leader or does not even call him a disbeliever is himself a disbeliever. It is stated in Al-Bazzaziyah, Durr al-Mukhtar, etc.: "Whoever doubts their disbelief and punishment has indeed disbelieved." Therefore, it is asserted that finding a Muslim among the Rafizis today is as difficult as finding a white crow. Marriage with such people is strictly forbidden and pure adultery. Whoever gives his sister or daughter to them is a 'dayyuth' (cuckold). The mildest names that his sister or daughter will acquire through this invalid contract are: adulteress, profligate, prostitute, lewd, harlot, whore, evildoer. Whoever likes this should commit this major obscenity, otherwise, let him fear the wrath of Allah Almighty. And if, for argument's sake, a Rafizi is found who could be called a Muslim, then according to the jurists, merely reviling the two Shaykhs (Abu Bakr and Umar, may Allah be pleased with them) is absolute disbelief, as explicitly mentioned in Al-Khulasah, Al-Fath, Al-Durr, and other luminous books. Thus, according to the jurists, the same rulings will apply to marriage with any reviler. Even if, for the sake of a faulty argument, one is found free from that, there is no doubt in him being

misguided and irreligious, and giving a daughter to such a person is religiously sinful and prohibited.

As we have explained in a separate treatise on this subject which we have named "Izalat al-'Aar bi-Hajar al-Kara'im 'an Kilab al-Nar" (Removing the Shame by the Stone of the Noble against the Dogs of Hell).

This matter is never proven from the reliable Imams of the pious predecessors. And if rare instances have occurred, the reason was the lack of knowledge of their Rafz (heresy), the presence of Taqiyya (dissimulation) in the Rafizi religion, and similar excuses.

1. Al-Quran Al-Karim 15:9
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Apostate, Mujtabai Press Delhi, 1/56 Page 422 of 739

(2) आजकल के आम राफ़ज़ी (शिया) धर्म की अनिवार्यताओं के मुनकिर (इनकारी) हैं और उम्मत की सर्वसम्मति (इज्मा) से धर्मभ्रष्ट काफ़िर हैं, जैसा कि हमने अपने फ़तवों और अपने शोधपत्र "अल-मक़ालतुल मुसफ़िरह अन अहकामिल बिद'अती वल मुकफ़्फ़िरह" में स्पष्ट किया है। अन्य कुफ़्रों (ईश-निंदाओं) के अलावा, दो प्रकार के कुफ़्र उनके विद्वानों और अनपढ़ पुरुषों और महिलाओं, सभी में शामिल हैं: मौला अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) को पिछले नबियों (पैगंबरों) से श्रेष्ठ मानना, और जो किसी गैर-नबी को किसी नबी से श्रेष्ठ कहे, वह काफ़िर है। और, अल्लाह की पनाह, यह दावा करना कि सहाबा किराम और अन्य सुन्नी मुसलमानों ने महान क़ुरआन से कुछ पारे, सूरतें या आयतें कम कर दी हैं या कुछ शब्दों को बदल दिया है, और जो महान क़ुरआन के एक अक्षर या एक नुक्ते (बिंदु) के बारे में भी ऐसा संदेह करे, वह काफ़िर है। अल्लाह तआला का फ़रमान है: "निस्संदेह, हमने ही इस नसीहत (क़ुरआन) को उतारा है और हम ही इसके संरक्षक हैं।" उनके वर्तमान मुजतहिद ने इन झूठे अक़ीदों (विश्वासों) और अन्य कुफ़्रिया अक़ीदों को साफ़-साफ़ लिखकर अपनी मुहर लगा दी है। उनमें से यदि कोई स्वयं इन अक़ीदों का मानने वाला न भी हो, तो भी वह मुजतहिद को काफ़िर हरगिज़ नहीं कहेगा, बल्कि उसे 'जनाब क़िब्ला व काबा' ही मानेगा। और जो धर्म की अनिवार्यताओं के मुनकिर को महान धार्मिक व्यक्ति माने या उसे काफ़िर ही न कहे, वह स्वयं काफ़िर है। बज़ाज़िया और दुर्रे मुख़्तार आदि में है: "जिसने उनके कुफ़्र और अज़ाब में संदेह किया, उसने स्वयं कुफ़्र किया।" इसलिए यह दृढ़ता से कहा जाता है कि आजकल राफ़ज़ियों में किसी मुसलमान का मिलना उतना ही कठिन है जितना कौओं में सफ़ेद रंग वाला। ऐसे लोगों के साथ निकाह करना तो क़तई हराम और शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) है। जो अपनी बहन या बेटी उन्हें दे, वह 'दय्यूथ' है। इस अवैध निकाह (अक़्द-ए-बातिल) के माध्यम से उसकी बहन और बेटी को जो नाम मिलने वाले हैं, उनमें हल्के नाम ये हैं: ज़ानिया (व्यभिचारिणी), फ़ाजिरा, क़हबा, फ़ाहिशा, रूसी, रंडी, बदकार। जो इसे पसंद करता हो, वह इस घोर पाप को करे, अन्यथा अल्लाह अज़्ज़वजल के क्रोध से डरे। और अगर मान भी लिया जाए कि कोई ऐसा राफ़ज़ी मिले जिसे मुसलमान कहा जा सके, तो फ़ुक़हा-ए-किराम के नज़दीक केवल 'शैख़ैन' (हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर) पर तबरा (गाली-गलौज) करना भी पूर्णतः कुफ़्र है, जैसा कि खुलासतुल फ़तावा, फ़तहुल क़दीर, दुर्रे मुख़्तार और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में स्पष्ट किया गया है। तो फ़ुक़हा के अनुसार, हर तबरा करने वाले के साथ निकाह में वही हुक्म होंगे। और यदि ग़लती से कोई इससे भी सुरक्षित मिल जाए, तो भी अंततः उसके गुमराह

और अधर्मी होने में कोई संदेह नहीं है, और ऐसे व्यक्ति को बेटी देना शरीयत की दृष्टि से पाप और प्रतिबंधित है।

जैसा कि हमने इस विषय पर एक अलग शोधपत्र में विस्तार से बताया है, जिसका नाम हमने "इज़ालातुल आर बि-हजरिल कराइम अन किलाबिन नार" रखा है।

विश्वसनीय पूर्ववर्ती इमामों (सलफ़ सालेहीन) से यह बात हरगिज़ साबित नहीं है। और यदि कहीं कोई दुर्लभ घटना हुई भी हो, तो उसका कारण उनके'रफ़्ज़' (धर्मभ्रष्टता) की जानकारी न होना, राफ़ज़ी धर्म में 'तक़िया' (झूठ बोलकर अपनी वास्तविकता छिपाना) का होना और इसी तरह के अन्य बहाने रहे होंगे।

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 15:9
2. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल मुर्तद, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/56 पृष्ठ 422/739

(۲) آج کل عام رافضی منکر انِ ضروریاتِ دین اور باجماعِ امت کفارِ مرتدین ہیں کما حققناہ فی فتاوٰنا و فی المقالۃ المسفرۃ عن احکام البدعۃ والمکفرۃ (جیسا کہ اس کی تحقیق ہم نے اپنے فتاوٰی میں اور اپنے رسالہ "المقالۃ المسفرۃ عن احکام البدعۃ والمکفرۃ" میں کردی ہے۔ت) علاوہ اور کفریات کے دو کفر تو ان کے عالم و جاہل مرد عورت سب کو شامل ہیں، مولٰی علی کرم اللہ وجہہ الکریم کو انبیاء سابقین علیہم الصلوٰۃ والتسلیم سے افضل ماننا، اور جو کسی غیر نبی کو کسی نبی سے افضل کہے کافر ہے، اور قرآنِ عظیم سے معاذ اللہ صحابہ کرام وغیرہم اہلسنت کا چند پارے یا سورتیں آیتیں گھٹانا کچھ الفاظ تغیر و تبدیل کردینا اور جو قرآنِ عظیم کے ایک حرف ایک نقطے کی نسبت ایسا گمان کرے کافر ہے، قال اللہ تعالٰی: إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (ہم نے ذکر نازل کیا اور ہم ہی اس کی حفاظت کریں گے۔ت) ان کے مجتہد حال نے یہ عقائد باطلہ اور دیگر عقیدہ کفریہ صاف صاف لکھ کر اپنی مہر کردی ان میں جو کوئی خود ان عقائد کا معتقد نہ بھی ہو تو مجتہد کو کافر ہرگز نہ کہے گا بلکہ جناب قبلہ و کعبہ ہی مانے گا اور جو منکر ضروریاتِ دین کو معظم دینی جانے یا کافر ہی نہ کہے خود کافر ہے، بزازیہ و در مختار وغیرہما میں ہے: من شك في كفره وعذابه فقد كفر (جس نے اس کے کفر اور عذاب میں شک کیا وہ کافر ہے۔ت) لہذا جزم کیا جاتا ہے کہ آج کل رافضیوں میں کوئی مسلمان ملنا ایسا ہی مشکل ہے جیسا کوؤں میں سپید رنگ والا، ایسوں کے ساتھ مناکحت تو حرام قطعی و زنائے خالص ہے، جو اپنی بہن بیٹی ان کو دے دیوث ہے، اس عقدِ باطل کے ذریعہ سے جو نام اس کی بہن بیٹی کو ملنے والے ہیں ان میں ہلکے نام یہ ہیں: زانیہ، فاجرہ، قحبہ، فاحشہ، روسی، رنڈی، بدکار، جو اسے پسند کرتا ہو اس کبیرہ فاحشہ پر اقدام کرے ورنہ اللہ عزوجل کے غضب سے ڈرے، اور اگر بالفرض کوئی رافضی ایسا ملے

جسے مسلمان کہہ سکیں تو حضراتِ شیخین رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر صرف تبرا بھی فقہائے کرام کے نزدیک مطلقا کفر ہے، کما نص علیہ فی الخلاصۃ والفتح والدر وغیرھما من الاسفار الغر (جیسا کہ خلاصہ، فتح، در وغیرہ مشہور کتب میں اس پر تصریح ہے۔ت) تو فقہاء کے طور پر ہر تبرائی کے ساتھ مناکحت میں وہی احکام ہوں گے اور بغرضِ غلط اس سے بھی محفوظ ملے تو آخر گمراہ بد دین ہونے میں شبہ نہیں اور ایسے کو بیٹی دینا شرعا گناہ و ممنوع ہے۔

کما بیناہ فی رسالۃ مفردۃ فی ھذا الباب سمیناہا ازالۃ العار بحجر الکرائم عن کلاب النار۔ جیسا کہ ہم نے اس کو علیحدہ ایک رسالہ میں بیان کیا ہے جو اس موضوع سے متعلق ہے جس کا نام ہم نے "ازالۃ العار بحجر الکرائم عن کلاب النار" رکھا ہے۔(ت)

ائمہ معتمدین سلف صالحین سے ہر گز یہ امر ثابت نہیں اور اگر نادر اشاہد کہیں وقوع ہوا ہو تو اس کا منشا اس کے رفض پر اطلاع نہ پانا اور رافضی کے دین میں تقیہ ہونا وامثال ذلک من الاعذار (اور اس قسم کے

1 القرآن الکریم 9/15 2 در مختار باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/۵۶ Page 422 of 739

Fatawa Rizwia Volume 11

...there will be another excuse. There is also such a difference between the Rafidis of this time and the earlier ones that initially there wasn't so much freedom. Generally, there wasn't the audacity and persistence to deny the necessities of religion. Rafidis have emerged now, whereas adultery and consuming forbidden things have been prevalent for thousands of years before them. Did the scholars of religion not pay any attention to this, or is there any difference between the adultery and forbidden consumption of that time and the adultery and forbidden acts of this time? God forbid! Devout scholars in every century, class, and era have continued to forbid it. To obey or not is the action of the common people, and to guide is within the power of Allah Almighty. This is the case with mingling with the misguided; the scholars of the people of truth, the Companions, the Successors, and the Imams of religion (may Allah Almighty be pleased with them all) have forbidden it generation after generation. Refer to the treatises refuting the Nadwis, especially the new fatwas of the humble servant named "Fatawa al-Haramayn bi-Rajf Nadwat al-Mayn". Then, if the common people do not obey or if worldly-minded clerics invite them towards misguidance, what is the remedy for that, and what blame lies upon the scholars of the people of truth? And to Allah is the complaint about the weakness of Islam (the complaint of the people's weakness in Islam is in the court of Allah Almighty alone. - Translator). There is no power or might except with Allah, the Most High, the Supreme. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

Problem 213: 8 Rabi' al-Akhir 1318 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Hind's husband gave her an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). During the waiting period ('iddah), Hind entered into a second marriage. After about a year of marriage, the second husband went abroad and there was no news of him. Now, after almost a year, at the instigation of Hind's heirs and her own desire, he wants to call her to him. However, Hind and her heirs are not willing to send her to him and also claim that the marriage during the 'iddah was not valid. Now she wants to perform a third marriage with another person. Is this marriage permissible without a divorce or not? Explain and be rewarded.

The Answer: If that second person knew at the time of marriage that the woman was still in her 'iddah and married her despite knowing this, then it was pure adultery. There is no need for 'iddah, nor is there a need for divorce. Rather, she can marry whoever she wants now, provided that the 'iddah from the first husband has passed. And if he did not know that the woman was in 'iddah, then divorce is not needed

now, but separation (mutarakah) is necessary. That is, the husband should say to the woman, "I have left you," or the woman should say to him, "I have separated from you." After this, she should observe the 'iddah. After the 'iddah, she can marry whoever she wants. It is mentioned in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Text]: There is no 'iddah for one who marries another's wife knowing that, and enters into her, and upon this is the fatwa. [Urdu Translation]: There will be no 'iddah for marrying and having intercourse with another's wedded wife while knowing she is wedded; the fatwa is based on this. (Translator)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Iddah, Mujtabai Press Delhi, 1/259 Page 423 of 739

...अन्य बहाना होगा। इस समय और पहले के राफ़िदयों में इतना अंतर भी है कि पहले इतनी आज़ादी नहीं थी, सामान्य रूप से दीन की अनिवार्यताओं के इनकार का साहस और निरंतरता नहीं थी। राफ़िदी तो अब पैदा हुए हैं, जबकि व्यभिचार और हराम खाना तो उनसे हज़ारों साल पहले से प्रचलित है। क्या दीन के विद्वानों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया या उस समय के व्यभिचार और हराम खाने और इस समय के व्यभिचार और हराम में कोई अंतर है? अल्लाह न करे! धर्मनिष्ठ विद्वान हर सदी, वर्ग और युग में इसे मना करते आए हैं। मानना या न मानना आम लोगों का काम है, और मार्गदर्शन करना अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के अधिकार में है। यही हाल गुमराहों से मेल-जोल का है कि हक़ वालों के विद्वान, सहाबा, ताबेईन और दीन के इमाम (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो) युग दर युग मना करते आए हैं। नदवा के खंडन में लिखे गए रिसाले, विशेष रूप से इस विनम्र सेवक के नए फ़तवे "फ़तावा अल-हरमईन बि-रज़फ़ नदवत अल-मईन" देखें। फिर यदि आम लोग न मानें या दुनिया-परस्त मौलवी गुमराहियत की ओर बुलाएँ तो इसका क्या इलाज और हक़ वाले विद्वानों पर क्या इल्ज़ाम? अल्लाह ही से इस्लाम की कमज़ोरी की शिकायत है (लोगों के इस्लाम की कमज़ोरी की शिकायत अल्लाह तआला ही के दरबार में है। - त)। अल्लाह के सिवा न कोई ताक़त है न कोई कुव्वत, जो बहुत बुलंद और महान है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला २१३: ८ रबीउल आख़िर १३१८ हिजरी क्या फ़रमाते हैं दीन के विद्वान इस मसले में कि हिंदा के शौहर ने तलाक़-ए-बाइन दी, इद्दत के दौरान हिंदा ने निकाह-ए-सानी कर लिया। निकाह के कम-ओ-बेश एक साल बाद हिंदा का शौहर बाहर चला गया और कोई ख़बर नहीं मिली। अब कुछ कम एक साल के बाद वारिसों के उकसाने पर और हिंदा की अपनी ख्वाहिश पर वह उसे अपने पास बुलाना चाहता है। लेकिन अब हिंदा और उसके वारिस उसे भेजने पर रज़ामंद नहीं हैं और यह भी कहते हैं कि इद्दत के दौरान निकाह जायज़ नहीं था। अब वह किसी अन्य व्यक्ति से तीसरा निकाह करना चाहती है। क्या यह निकाह बिना तलाक़ के जायज़ है या नहीं? बयां करें और पुण्य पाएँ।

अल-जवाब: अगर उस दूसरे व्यक्ति को निकाह के समय पता था कि औरत अभी इद्दत में है और यह जानकर उससे निकाह किया तो वह तो निरा व्यभिचार था। इद्दत की कोई आवश्यकता नहीं और न ही तलाक़ की ज़रूरत, बल्कि वह अब जिससे चाहे निकाह करे जबकि पहले शौहर की इद्दत गुज़र चुकी हो। और अगर उसे औरत का इद्दत में होना मालूम नहीं था तो अब तलाक़ की ज़रूरत नहीं

मगर मुतारका (संबंध विच्छेद) ज़रूरी है, यानी शौहर का औरत से कहना कि "मैंने तुझे छोड़ दिया" या औरत का उससे कह देना कि "मैं तुझसे अलग हो गई"। इसके बाद वह इद्दत में बैठे। इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह करे। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी पाठ]: यदि कोई व्यक्ति दूसरे की पत्नी से यह जानते हुए निकाह करे और उसके साथ संभोग करे, तो कोई इद्दत नहीं होगी, और इसी पर फतवा है। [उर्दू अनुवाद]: दूसरे की विवाहित महिला से यह जानते हुए कि वह विवाहित है, निकाह और संभोग करने से इद्दत नहीं होगी, इसी पर फतवा है। (त)

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, १/ २५९ पृष्ठ ४२३ / ७३९

دیگر عذرت ہوگا اس وقت اور پہلے کے روافض میں اتنا فرق بھی ہے کہ اول اتنی آزادی نہ تھی عام طور پر انکار ضروریاتِ دین کی جرات و تمادی نہ تھی رافضی تو اب پیدا ہوئے زناکاری و حرام خواری تو ان سے بھی ہزاروں برس پہلے رائج ہے، کیا علمائے دین نے اس طرف کچھ توجہ نہ فرمائی یا اس وقت کے زنا واکلِ حرام سے اس وقت کے زنا و حرام کو کچھ فرق ہے، حاشا علمائے دیندار ہر قرن وطبقہ و زمانہ میں منع فرماتے آئے، ماننا نہ ماننا عوام کا فعل ہے، اور ہدایت کرنا اللہ عزوجل کے اختیار، یہی حال گمراہوں سے میل جول کا ہے کہ علمائے اہلِ حق صحابہ و تابعین و ائمہ دین رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین قرناً فقرناً منع فرماتے آئے، رسائلِ ردِ ندوہ خصوصاً فتاوائے جدیدہ فقیر مسمٰی بہ "فتاوٰی الحرمین برجف ندوۃ المین" ملاحظہ ہوں۔ پھر اگر عوام نہ مانیں یا دنیا پرست مولوی ضلالت کی طرف بلائیں تو اس کا کیا علاج اور علمائے اہلِ حق پر کیا الزام، والی اللہ المشتکی من ضعف الاسلام (لوگوں کے ضعفِ اسلام کی شکایت اللہ تعالٰی ہی کے دربار میں ہے۔ ت) ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۳: ۸ ربیع الآخر ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کے شوہر نے طلاقِ بائن دی، درمیانِ عدت کے ہندہ نے نکاحِ ثانی کرلیا، بعد نکاح کم وبیش ایک سال کے، شوہر ثانی ہندہ کا، باہر چلا گیا اور کچھ خبر گیراں نہ ہوا، اب کچھ کم ایک سال کے بعد تحریکِ ورثہ ہندہ و نیز خواہشِ خود ہندہ کو اپنے پاس بلانا چاہتا ہے لیکن اب ہندہ و ورثہ ہندہ اس کے یہاں بھیجنے پر رضامند نہیں اور نیز یہ بھی کہتے ہیں کہ نکاح درمیانِ عدت کے جائز نہیں تھا اب نکاحِ ثالث کسی شخصِ دیگر سے کرنا چاہتی ہے آیا یہ نکاح بلا طلاق جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر اس دوسرے شخص کو وقتِ نکاح معلوم تھا کہ عورت ہنوز عدت میں ہے یہ جان کر اس سے نکاح کرلیا جب تو وہ زنائے محض تھا عدت کی کچھ حاجت نہیں نہ طلاق کی ضرورت بلکہ ابھی جس سے چاہے نکاح کرے جبکہ شوہرِ اول کی عدت گزر چکی ہو اور اگر اسے عورت کا عدت میں ہونا معلوم نہ تھا تو طلاق کی اب حاجت نہیں مگر متارکہ ضرور ہے یعنی شوہر کا عورت سے کہنا کہ میں نے تجھے چھوڑ دیا یا عورت کا اس سے کہہ دینا کہ میں تجھ سے جدا ہوگئی، اس کے بعد عدت بیٹھے عدت کے بعد جس سے چاہے نکاح کرے۔ درمختار میں ہے:

لا عدۃ لو تزوج امرأۃ الغیر عالماً بذلک ودخل بھا وبہ یفتٰی۔ دوسرے کی منکوحہ عورت سے یہ جانتے ہوئے کہ منکوحہ ہے، نکاح اور دخول کرنے سے عدت نہ ہوگی، اسی پر فتویٰ ہے (ت)

۱۔ درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۹ Page 423 of 739

Fatawa Rizvia Volume 11

In Radd al-Muhtar, it is said:

Arabic	Urdu
As for the marriage of another's wife or a woman in her waiting period (iddah), then entering into it does not necessitate iddah if it was known that she belonged to another.[1]	Even after knowing she is another's wife or in iddah, marriage and intercourse with her will not make iddah obligatory. (T)

In the same, it is said:

Arabic	Urdu
The annulment of this marriage is valid from either of them in the presence of the other by agreement, and the difference between leaving (mutarakah) and annulment (faskh) is remote, as mentioned in Al-Bahr.[2]	The annulment of this marriage by either the man or the woman in the presence of the other by agreement is correct through mutarakah (leaving/abandoning the marriage), because the difference between mutarakah and faskh is remote here, as it is in Al-Bahr. (T)

In the same from Allama Khairuddin al-Ramli: "The truth is that there is no difference, and therefore Al-Maqdisi was firm upon it."[3] (Not having a difference is the truth, that is why Al-Maqdisi was firm on it. - T) And Allah subhanahu wa ta'ala knows best.

Issue 212: From Old City, Ladle Mian Sahib What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding this matter: Can the foster sister of Zaid's real sister marry Zaid or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Being the foster sister of a real sister is not in itself a reason for prohibition (haram), unless some other established prohibition is present. For example, if the real sister's foster sister is such because she drank the milk of Zaid's mother or father, then she herself becomes Zaid's foster sister as well, and she is forbidden to him. However, if it is that Zaid's sister drank the milk of that girl's mother, or both of them drank the milk of a third woman with whom Zaid has no relation, then in this case, that girl is not forbidden to Zaid. And Allah Almighty knows best.

Issue 215: From Biadra 9, Bajanti, Bhopal, Malwa region, sent by Muhammad Ashiq Sahib, official of Nizamat, 29 Rabi-ul-Awwal 1319 AH What do the scholars

of religion say regarding this matter: The petitioner (female), in her lifetime and desiring children, wants that my...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/350 [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/352 [3] Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/352

फतावा रिज़विया ग्यारहवाँ खंड

रद्द अल-मुह्तार में है:

अरबी	उर्दू
जहाँ तक किसी दूसरे की विवाहिता (मंकुहा) या इद्दत वाली महिला से विवाह का सवाल है, तो उसमें प्रवेश इद्दत को अनिवार्य नहीं करता यदि यह ज्ञात हो कि वह दूसरे की है।[1]	दूसरे की विवाहिता या इद्दत वाली महिला होने का ज्ञान होने के बावजूद उससे विवाह और संभोग के कारण इद्दत अनिवार्य नहीं होगी। (त)

उसी में है:

अरबी	उर्दू
इस विवाह का निरस्तीकरण (फ़स्ख़) दोनों में से किसी के द्वारा भी दूसरे की उपस्थिति में सर्वसम्मति से मान्य है, और मुतारका (छोड़ना) और फ़स्ख़ के बीच का अंतर यहाँ बहुत कम है, जैसा कि 'अल-बहर' में है।[2]	इन स्त्री और पुरुष में से प्रत्येक की ओर से दूसरे की उपस्थिति में सर्वसम्मति से इस विवाह का फ़स्ख़ 'मुतारका' से सही हो जाता है क्योंकि यहाँ मुतारका और फ़स्ख़ में अंतर बहुत कम है, जैसा कि 'बहर' में है। (त)

उसी में अल्लामा खैर उद्दीन रमली से है: "सत्य यह है कि इनमें कोई अंतर नहीं है और इसीलिए अल-मक़दिसी इस पर दृढ़ थे।"[3] (अंतर न होना ही सत्य है, इसीलिए मक़दिसी ने इस पर दृढ़ता व्यक्त की है। - त) और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसला २१२: ओल्ड सिटी (शहर कुहना) से, लाडले मियां साहब धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि क्या जैद की सगी बहन की रज़ाई (दूध की) बहन का निकाह जैद से हो सकता है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि पुण्य मिले।

उत्तर: सगी बहन की रज़ाई बहन होना अपने आप में कोई ऐसा रिश्ता नहीं है जो हराम (वर्जित) होने का कारण बने, बशर्ते कि उसके साथ कोई अन्य स्थापित वर्जना न हो। उदाहरण के लिए, यदि सगी बहन की रज़ाई बहन इसलिए है क्योंकि उसने जैद की माँ या पिता का दूध पिया है, तो वह स्वयं जैद की भी रज़ाई बहन हो गई और उस पर हराम है। और यदि ऐसा है कि जैद की बहन ने उस लड़की

की माँ का दूध पिया या उन दोनों ने किसी तीसरी महिला का दूध पिया जिससे जैद का कोई संबंध नहीं है, तो इस स्थिति में वह लड़की जैद पर हराम नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २१५: मुकाम बियादरा ९, बजंती भोपाल, मालवा क्षेत्र से, प्रेषक मुहम्मद आशिक साहब, अधिकारी निज़ामत, २९ रबी-उल-अव्वल १३१९ हिजरी धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि याचिकाकर्ता (महिला) अपने जीवनकाल में संतान की इच्छा रखते हुए चाहती है कि मेरा...

---

[1] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मह्र, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/३५० [2] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मह्र, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/३५२ [3] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मह्र, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/३५२

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

ردالمحتار میں ہے:

عربی	اردو
اما نکاح منکوحۃ الغیر ومعتدتہ فالدخول فیہ لا یوجب العدۃ ان علم انہا للغیر 1	غیر منکوحہ اور معتدہ کو جانتے ہوئے بھی اس سے نکاح اور دخول کی وجہ سے عدت واجب نہ ہوگی۔ (ت)

اسی میں ہے:

عربی	اردو
فسخ ھذا النکاح یصح من کل منھما بمحضر الاخر اتفاقاً والفرق بین المتارکۃ والفسخ بعید کذا فی البحر 2	ان مرد و عورت میں سے ہر ایک کی طرف سے اس نکاح کا فسخ باتفاق دوسرے کی موجودگی میں متارکہ سے صحیح ہو جاتا ہے کیونکہ متارکہ اور فسخ میں یہاں فرق بعید ہے، جیسا کہ بحر میں ہے۔ (ت)

اسی میں علامہ خیر الدین رملی سے ہے: الحق عدم الفرق ولذا جزم بہ المقدسی 3 (فرق نہ ہونا ہی حق ہے، اسی لیے مقدسی نے اس پر جزم کیا ہے۔ ت) واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۲: از شہر کہنہ لاڈلے میاں صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کی حقیقی بہن کی رضاعی بہن زید کے نکاح میں آسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: حقیقی بہن کی رضاعی بہن ہونا خود یہ رشتہ موجب حرمت نہیں جبکہ اس کے ساتھ کوئی مروجہ حرمت نہ پائی جائے، مثلاً اگر حقیقی بہن کی رضاعی بہن یوں ہے کہ اس نے اس کی ماں

یا باپ کا دودھ پیا ہے تو وہ خود اس کی بھی رضاعی بہن ہوئی اور اس پر حرام ہے، اور اگر یوں ہے کہ زید کی بہن نے اس لڑکی کی ماں کا دودھ پیا یا دونوں نے تیسری عورت کا دودھ پیا جس سے زید کو کوئی علاقہ نہیں تو اس صورت میں وہ لڑکی زید پر حرام نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۵: از مقام بیادرہ ۹ بجنٹی بھوپال ملک مالوہ مرسلہ محمد عاشق صاحب اہلکار نظامت ۲۹ ربیع الاول ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ سائلہ اپنی حیات میں بخواہش اولاد چاہتی ہے کہ میرا

---

1 ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۰/۲ 2 ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۲/۲ 3 ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۲/۲

Fatawa Razawiya - Volume 11

Question: My real sister wants my husband, who is a widower, to enter into a marriage contract with her, and the husband is willing. Please provide guidance according to the ruling of the Noble Sharia.

The Answer: When a wife dies or is divorced and her iddah (waiting period) expires, then marrying the wife's sister is permissible. Without this, it is strictly forbidden and akin to adultery. Allah Almighty says: "...and that you should not have two sisters together [in marriage] at the same time"[1] (forbidden is joining two sisters - Translator). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Do not present your daughters or your sisters to me (O my wives!)[2]." And Allah Almighty knows best.

Problem 216: 17 Rabi al-Akhir Sharif 1320 AH Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is Zaid's marriage to his sister-in-law's daughter permissible after the death of his wife or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Immediately upon the death of the wife, marriage with her niece (brother's or sister's daughter) is permissible, due to the absence of combining them in marriage or iddah, as there is no iddah for a man, as researched in Al-Uqud al-Durriyah. (Due to the lack of simultaneous gathering in marriage and iddah, because there is no iddah for a man as verified in Uqud al-Durriya - Translator). And Allah Almighty knows best.

Problem 217: Asked by Sanaullah Sahib, adjacent to Sarai Kham, 5 Jumada al-Ula 1320 AH Question: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding this matter: Zaid performed the marriage of his daughter. After the marriage, the son-in-law went on a journey for six months and left his daughter at his [Zaid's] house. Upon returning from the journey, he saw that his wedded wife was found to be pregnant. After investigation, it was found that the pregnancy was from the son-in-law. Has the girl been separated from the son-in-law's marriage or not? And is there a need for divorce or not? And does the dower (mahr) of this girl remain the responsibility of the son-in-law or not? And does she remain his wife after delivery or not? And in the marriage of the son-in-law, his wife...

[1] Al-Quran Al-Karim 4/23 [2] Musnad Ahmad bin Hanbal, Khutbah Ali Radi Allahu Anhu wa Maw'izuhu, Dar al-Fikr Beirut 6/309

फ़तावा रज़विया - ग्यारहवीं जिल्द

प्रश्न: मेरे पति मेरी सगी विधवा बहन से निकाह करना चाहते हैं और पति इसके लिए सहमत हैं। शरीयत के हुक्म के मुताबिक मार्गदर्शन प्रदान करें।

उत्तर: जब पत्नी मर जाए या उसे तलाक़ दे दी जाए और उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाए, तो उस समय पत्नी की बहन से निकाह जायज़ होता है। इसके बिना यह कतई हराम और ज़िना (व्यभिचार) के समान है। अल्लाह तआला फरमाता है: "...और यह कि तुम दो बहनों को एक साथ (निकाह में) जमा न करो"[1] (दो बहनों को एक साथ रखना हराम है - अनुवादक)। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "अपनी बेटियों और बहनों को (ऐ मेरी पत्नियों!) मुझ पर पेश न करो।"[2] और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २१६: १७ रबी-उल-आखिर शरीफ़ १३२० हिजरी प्रश्न: दीन के उलमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद ज़ैद का अपनी साली की लड़की से निकाह करना सही है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि सवाब पाएं।

उत्तर: पत्नी के देहांत होते ही फौरन उसकी भतीजी या भांजी से निकाह जायज़ है, क्योंकि निकाह या इद्दत में दो औरतों को एक साथ जमा करने की सूरत नहीं बनती, क्योंकि मर्द पर इद्दत नहीं होती जैसा कि 'उक़ूद अद्दुर्रिया' में तहक़ीक़ फ़रमाई गई। (निकाह और इद्दत में इकट्ठा न होने के कारण क्योंकि मर्द पर इद्दत नहीं होती जैसा कि उक़ूद अद्दुर्रिया में शोध किया गया है - अनुवादक)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २१७: प्रस्तावक सनाउल्लाह साहब, सराय ख़ाम के पास, ५ जमादी अल-उला १३२० हिजरी प्रश्न: दीन के उलमा और मज़बूत शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी लड़की का निकाह किया। निकाह के बाद दामाद छह महीने के लिए सफर पर चला गया और अपनी लड़की को लड़की के घर (ज़ैद के यहाँ) छोड़ गया। सफर से वापस आने पर देखा गया कि उसकी विवाहित पत्नी गर्भवती पाई गई। जांच के बाद पता चला कि गर्भ दामाद से ही था। क्या लड़की अपने दामाद के निकाह से अलग हो गई या नहीं? और क्या तलाक़ की ज़रूरत है या नहीं? और क्या इस लड़की का महर दामाद के ज़िम्मे रहा या नहीं? और क्या वह प्रसव (डिलीवरी) के बाद उसकी पत्नी बनी रही या नहीं? और दामाद के निकाह में उसकी पत्नी...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम ४/२३ [2] मुसनद अहमद बिन हंबल, खुत्बा अली रज़ियल्लाहु अन्हु व मवाइज़ुहु, दार अल-फ़िक्र बेरुत ६/३०९

पृष्ठ ४२५ / ७३९

شوہر میری ہمشیرہ حقیقی بیوہ کے ساتھ اپنا عقد کرلیوے اور شوہر اس کا رضامند ہے جو کچھ کہ حکم شرع شریف میں سے ہو ، آگہی بخشی جائے۔

الجواب: جب زوجہ مر جائے یا اسے طلاق دے اور عدت گزر جائے تو اس وقت زوجہ کی بہن سے نکاح جائز ہوتا ہے بغیر اس کے حرام قطعی اور مثل زنا ہے ، اللہ تعالٰی فرماتا ہے : وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ (حرام ہے جمع کرنا دو بہنوں کو۔ت) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں : فلاتعرضن علیّ بناتکن ولا اخواتکن[2] اپنی بیٹیوں اور بہنوں کو (اے میری ازواج!) مجھ پر مت پیش کرو۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۱۶: ۱۷ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا نکاح سالی کی لڑکی سے بعد فوت بی بی کے درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: زوجہ کا انتقال ہوتے ہی فوراً اس کی بھتیجی بھانجی سے نکاح جائز ہے، لعدم الجمع نکاحاً ولا عدۃ اذلا عدۃ علی الرجل کما حققہ فی العقود الدریۃ ۔ (بوجہ عدم اجتماع کے نکاح اور عدت میں کیونکہ مرد پر عدت نہیں ہوتی جیسا کہ عقود الدریہ میں تحقیق فرمائی۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۱۷: مسئولہ ثناء اللہ صاحب متصل سرائے خام ۵ جمادی الاولی ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی لڑکی کا نکاح کیا ، بعد نکاح کے چھ مہینے کے واسطے سفر کو گیا داماد کو اور اپنی بیٹی کو مع لڑکی کے مکان پر چھوڑ گیا ، بعد واپس آنے سفر کے دیکھا کہ بیوی منکوحہ اپنی کو حاملہ پایا ، بعد تحقیقات کے معلوم ہوا کہ حاملہ داماد سے ہوئی تھی ، آیا لڑکی اس کی داماد کے نکاح سے علیحدہ ہو گئی یا نہیں؟ اور طلاق کی

ضرورت ہے یا نہیں؟ اور مہر اس لڑکی کا بذمہ داماد رہا یا نہیں؟ اور زوجہ اس کی بعد وضع حمل کے اس کی رہی یا نہیں؟ اور داماد کے نکاح میں اس کی زوجہ

[1] القرآن الکریم ۲۳/۴ [2] مسند احمد بن حنبل خطب علی رضی اللہ عنہ و مواعظہ دار الفکر بیروت ۳۰۹/۶

Fatawa-e-Razvia Volume 11

Can she come back or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Finding a woman pregnant after her return in less than two years, or even as soon as six months, does not prove that the pregnancy belongs to someone else. Absolute suspicion is strictly forbidden. If investigations were conducted through witnesses—meaning people testified that his wife committed adultery with the son-in-law—then this is nearly impossible. Such evidence requires a proper court, which is virtually non-existent here. Furthermore, for proof of adultery, the direct observation of four just men is mandatory, who must have seen with their own eyes the male organ enter her body as a probe enters a kohl container. How can this even be imagined! People often circulate rumors based merely on conjectures and suppositions; these are not reliable, and according to Shariah, all such accusers deserve eighty lashes each.

"Allah admonishes you that you should never return to the like of it, if you are believers." [1] Allah declares such people as transgressors and commands that if you have faith, then do not let such things cross your lips again.

This was the state of investigations; this was the ruling for leveling a false accusation of adultery. However, for proof of affinity (hurmat-e-musaharat), even two witnesses are sufficient, even if they only testify to lustful touching. And if there are no witnesses, then the woman and the son-in-law know their own state well, and their Lord knows their state better than they do. If he truly touched that woman's body with lust, then his wedded wife became forbidden (haram) for him forever; she became like his daughter, and the mother-in-law was already like his mother. Now both mother and daughter are forbidden to him for all eternity. Marriage can never be contracted with them in any way. It is obligatory for him to leave his wife and pay her dower (mahr). Zaid's wife remains in marriage as before; the marriage was not affected by the act of adultery. And Allah the Almighty knows best.

Problem 218: 12 Jumadi-al-Akhir 1321 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman remarried. She has a daughter from her first husband. Now she wants to marry her daughter to the second husband's brother, who is considered that girl's step-uncle. Can this marriage take place or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The mother's second husband is not the girl's biological father, nor is his brother her uncle—neither real nor step. A step-uncle is one who...

---

1 Al-Quran Al-Karim 24/17 Page 426 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

क्या वह आ सकती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: छह महीने या यहाँ तक कि दो साल से एक दिन कम के बाद वापस आने पर किसी महिला को गर्भवती पाना यह साबित नहीं करता कि गर्भ किसी और का है, और पूर्ण संदेह हराम (निषिद्ध) है। और यदि जांच गवाहों के माध्यम से की गई, यानी लोगों ने गवाही दी कि उसकी पत्नी ने दामाद के साथ व्यभिचार किया, तो यह लगभग असंभव है। साक्ष्य के लिए न्यायालय की आवश्यकता होती है, जो यहाँ मानो दुर्लभ है। फिर व्यभिचार के प्रमाण के लिए चार न्यायप्रिय पुरुषों का अवलोकन आवश्यक है, जिन्होंने अपनी आँखों से पुरुष अंग को उसके शरीर में वैसे प्रवेश करते देखा हो जैसे सुरमेदानी में सलाई जाती है। यह कहाँ संभव है! लोग मात्र अनुमानों और कल्पनाओं पर बात उड़ा देते हैं, इनका कोई भरोसा नहीं है और वे सभी शरीयत के अनुसार अस्सी-अस्सी कोड़ों के पात्र हैं।

"अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि अगर तुम मोमिन (ईमान वाले) हो तो फिर कभी ऐसा न करना।" [1] अल्लाह उन्हें फ़ासिक़ (पापी) करार देता है और हुक्म देता है कि अगर ईमान रखते हो तो फिर ऐसी बात ज़बान से न निकालना।

जांच का तो यह हाल है, यह व्यभिचार का आरोप लगाने का हुक्म था। हाँ, मुसाहरत (ससुराली रिश्ता) साबित करने के लिए दो गवाह भी पर्याप्त हैं, भले ही वे केवल कामुक स्पर्श की गवाही दें। और यदि कोई गवाह न हो तो वह महिला और दामाद अपनी स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं और उनका रब उनसे ज़्यादा उनकी स्थिति जानता है। यदि उसने वास्तव में उस महिला के शरीर को कामुकता के साथ छुआ, तो उसकी विवाहिता पत्नी हमेशा के लिए उस पर हराम हो गई, वह उसकी बेटी के समान हो गई और सास तो उसकी माँ [समान] थी ही। अब वे दोनों माँ-बेटी उस पर हमेशा-हमेशा के लिए हराम हैं। किसी भी तरह कभी उनसे निकाह नहीं हो सकता। उस पर फर्ज़ है कि अपनी पत्नी को छोड़ दे और उसका महर अदा कर दे। ज़ैद की पत्नी पूर्ववत निकाह में है, व्यभिचार के कारण उसके निकाह में कोई खलल नहीं आया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 218: 12 जमादी-उल-आख़िर 1321 हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक महिला ने दूसरा निकाह किया, उसकी पहली पति से एक लड़की है। अब वह उसका निकाह दूसरे पति के भाई से करना चाहती है जो उस लड़की का सौतेला चाचा है। क्या यह निकाह हो सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: माँ का दूसरा पति न तो अपना पिता है, न ही उसका भाई अपना चाचा है—न सगा, न सौतेला। सौतेला चाचा वह है जो अपने...

---

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 24/17 पेज 739 का 426

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

آسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: چھ مہینے بلکہ دوسال سے ایک دن کم کے بعد واپس آکر عورت کو حاملہ پانے سے یہ ثابت نہیں ہوسکتا کہ وہ حمل دوسرے کا ہے، اور بدگمانی قطعی حرام ہے، اور تحقیقات اگر بذریعہ شہود یعنی لوگوں نے گواہی دی کہ اس کی زوجہ نے داماد سے زنا کیا تو یہ قریب بہ ناممکن ہے، شہادت کے لئے عدالت درکار ہے، جو یہاں گویا عنقا ہے، پھر ثبوت زنا کے لئے چار مرد عادل کا مشاہدہ ضرور کہ انھوں نے اپنی آنکھ سے اس کا اندام اس کے بدن میں سرمہ دانی میں سلائی کی طرح دیکھا، یہ کہاں منصور! لوگ محض قرائن و قیاسات پر اڑا دیتے ہیں، اس پر اعتبار نہیں اور وہ سب شرعاً اسی اسی کوڑے کے مستحق ہوتے ہیں۔

يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ 1 اللہ تعالیٰ انھیں فاسق فرماتا ہے اور حکم دیتا ہے کہ ایمان رکھتے ہو تو پھر ایسی بات زبان سے نہ نکالنا۔

تحقیقات کا تو یہ حال ہے یہ تو تہمت زنا رکھنے کا حکم تھا، ہاں ثبوت مصاہرت کے لئے دو گواہ بھی کافی ہیں، اگرچہ صرف مس بہ شہوت کی گواہی دیں، اور اگر کوئی گواہ نہ ہو تو عورت اور داماد اپنے حال سے خوب آگاہ ہیں اور ان کا رب ان سے زیادہ ان کا حال جانتا ہے، اگر واقعی اس نے بشہوت اس عورت کے بدن کو صرف ہاتھ لگایا تو جب بھی اس کی منکوحہ ہمیشہ کے لئے اس پر حرام ہو گئی، وہ اس کی بیٹی ہوگئی اور ساس تو اس کی ماں تھی، اب وہ دونوں ماں بیٹیاں اس پر ابداً لآباد تک حرام ہیں۔ کسی طرح کبھی ان سے نکاح نہیں ہوسکتا، اس پر فرض ہے کہ اپنی

زوجہ کو چھوڑ دے اور اس کا مہر ادا کردے، زوجہ زید بدستور نکاح میں ہے زنا کے سبب اس کے نکاح میں خلل نہ آیا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۸: ۱۲ جمادی الآخر ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت نے نکاح ثانی کیا، اس کے ایک لڑکی شوہر اول سے ہے، اب اس کا نکاح شوہر ثانی کے بھائی سے کرنا چاہتی ہے جو اس لڑکی کا سوتیلا چچا ہے، یہ نکاح ہوسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ماں کا شوہر ثانی نہ اپنا باپ ہے، نہ اس کا بھائی اپنا چچا نہ سگانہ سوتیلا، سوتیلا چچا وہ ہے کہ اپنے

---

1 القرآن الکریم ۱۷/۲۴ Page 426 of 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

Whether he is the father's stepbrother or the brother of a stepfather, this marriage is permissible. Allah the Almighty says: "And lawful for you are [all others] beyond those"[1] (All women besides the prohibited ones are made lawful for you. - Trans.). And Allah Almighty knows best.

Issue 219: 20 Rajab al-Murajjab 1321 AH What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say about this matter: Zaid's father-in-law and mother-in-law became unjustly angry with Zaid's parents. Therefore, the father-in-law and mother-in-law called for Zaid's wife. Zaid and his parents said that if the mutual resentment is resolved, they would send the wife. Upon this, from Bakr's house, where Zaid's wife had gone for some worldly reason, the men sent by the father-in-law and the mother-in-law forcibly took the wife. Now, when Zaid wanted his wife to return home, the father-in-law and mother-in-law claimed that Zaid had given a divorce and even produced false witnesses, and they themselves intend to marry her off to another person. So, will this second marriage without a divorce from the first husband be valid or invalid? And will intercourse with the second husband be forbidden (haram) or permissible (halal)? Explain so you may be rewarded.

Answer: Since the situation is as stated, the second marriage will be absolutely void (batil), and intercourse with the second husband will be pure adultery (zina). All those who participate in this severe, grave, and great major sin while being aware of the situation will be severe sinners and deserving of the punishment of hellfire. Among them, the first to deserve the punishment of hell will be the false witnesses, whose impure testimony laid the foundation for such an impure and shameful act. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"He is not from us who turns a woman against her husband."[2] (Reported by Imam Ahmad, Ibn Hibban, Al-Bazzar, and Al-Hakim, who called it authentic, and others confirmed it, from Buraydah (may Allah be pleased with her). Abu Dawud and Al-Hakim with an authentic chain from Abu Hurairah. Abu Ya'la with a good chain, and At-Tabarani in Al-Awsat from Ibn Abbas, and in As-Saghir and similarly in Al-Awsat from Ibn Umar (may Allah be pleased with them). - Trans.)

[1] Al-Quran Al-Karim 4/24 [2] Sunan Abi Dawud, Book of Divorce, Chapter: On him who turns a woman against her husband, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/296.

चाहे वह पिता का सौतेला भाई हो या सौतेले पिता का भाई, यह निकाह हलाल है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और तुम्हारे लिए इनके अलावा अन्य स्त्रियाँ हलाल की गई हैं।"[1] (हराम औरतों के अलावा बाकी सब तुम्हारे लिए हलाल हैं। - अनुवाद) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

مسئلہ ۲۱۷: २० रजब अल-मुरज्जब १३२१ हिजरी धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद के माता-पिता से उसके ससुर और सास को किसी गलत कारण से नाराज़गी हो गई। इसलिए ससुर और सास ने ज़ैद की पत्नी को बुलाया। ज़ैद और उसके माता-पिता ने कहा कि अगर आपसी नाराज़गी दूर हो जाए तो वे पत्नी को भेज देंगे। इस पर बक्र के घर से, जहाँ ज़ैद की पत्नी किसी सांसारिक काम से गई थी, ससुर के भेजे हुए लोग और सास ज़बरदस्ती पत्नी को ले गए। अब जब ज़ैद ने चाहा कि उसकी पत्नी घर वापस आए, तो ससुर और सास ने दावा किया कि ज़ैद ने तलाक दे दिया है और झूठे गवाह भी पेश किए, और वे खुद उसका निकाह दूसरे व्यक्ति से करने का इरादा रखते हैं। तो, क्या पहले पति के तलाक के बिना यह दूसरा निकाह जायज़ होगा या नाजायज़? और दूसरे पति के साथ शारीरिक संबंध हराम होंगे या हलाल? बयान फ़रमाएं पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: चूंकि मामला वैसा ही है जैसा बताया गया है, इसलिए दूसरा निकाह पूरी तरह से बातिल (अमान्य) होगा और दूसरे पति के साथ शारीरिक संबंध शुद्ध ज़िना (व्यभिचार) होगा। जितने भी लोग इस गंभीर और बड़े पाप में स्थिति से अवगत होने के बावजूद शामिल होंगे, वे सभी घोर पापी और नर्क की आग के पात्र होंगे। उनमें से नर्क के दंड के सबसे पहले पात्र वे झूठे गवाह होंगे जिनकी अपवित्र गवाही ने ऐसी अपवित्र और शर्मनाक बात की नींव रखी। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"वह हममें से नहीं है जो किसी स्त्री को उसके पति के विरुद्ध भड़काए।"[2] (इसे इमाम अहमद, इब्न हिब्बान, अल-बज्ज़ार और अल-हाकिम ने सही कहा और अन्य ने इसे प्रमाणित माना, हज़रत बुरैदा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से। अबू दाऊद और अल-हाकिम ने सही सनद के साथ अबू हुरैरा से। अबू यअला ने मज़बूत सनद के साथ, और अत-तबरानी ने अल-औसत में इब्न अब्बास से, और अस-सगीर में और इसी तरह अल-औसत में इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। - अनुवाद)

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 4/24 [2] सुनन अबू दाऊद, किताब अल-तलाक़, अध्याय: उस व्यक्ति के बारे में जो किसी स्त्री को उसके पति के विरुद्ध भड़काए, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 1/296.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

باپ کا سوتیلا بھائی ہو، نہ وہ کہ سوتیلے باپ کا بھائی ہو، یہ نکاح حلال ہے، قال تعالٰی: وَأُحِلَّ لَكُم مَّا وَرَاءَ ذَٰلِكُمْ[1] (محرمات کے ماسوا عورتیں تمہارے لیے حلال کی گئی ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۹: ۲۰ رجب المرجب ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس امر میں کہ زید کے پدر ومادر سے خسر اور خوشدامن کو بوجوہِ ناروا ناراضی پیدا ہوئی لہٰذا زید کی زوجہ کو خسر خوشدامن نے طلب کیا، زید اور پدر ومادر زید نے کہا کہ ناراضی فیما بین کی دور ہو جائے تو زوجہ کو بھیجیں گے۔ اس پر بکر کے مکان سے کہ وہاں بتقریب دنیاوی زوجہ زید کی گئی تھی زبردستی جاکے خسر کے بھیجے ہوئے آدمی اور خوشدامن زوجہ کو لے گئے اب جب زید نے چاہا کہ میری زوجہ میرے گھر آئے تو خسر اور خوشدامن مجیب ہوئے کہ زید نے تو طلاق دے دی اور جھوٹے گواہ بھی بنائے، اور خود ارادہ دوسرے شخص سے نکاح کا خسر وخوشدامن رکھتے ہیں، پس یہ نکاح ثانی بدون طلاق زوج اول کے جائز ہوگا یا ناجائز اور وطی زوج ثانی سے حرام ہوگی یا حلال؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ صورت واقعہ یہ ہے تو نکاح ثانی محض باطل ہوگا اور زوجِ ثانی سے وطی نری زنا ہوگی، جتنے لوگ اس سخت شدید کبیرہ عظیمہ میں اس حال سے آگاہ ہو کر شریک ہوں گے سب سخت گنہ گار و مستحق عذابِ نار ہوں گے اور ان میں پہلے عذابِ دوزخ کا استحقاق جھوٹے گواہوں کو ہوگا جن کی ناپاک گواہی ایسے ناپاک فاحشہ بات کی تمہید ہوئی، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیس منا من خبب امراۃ علی زوجھا۔[2] رواہ الامام احمد وابن حبان والبزار والحاکم وقال صحیح و اقروہ عن بریرۃ وابوداؤد والحاکم بسند صحیح عن ابی ہریرۃ وابویعلٰی بسند جید والطبرانی فی

الاوسط عن ابن عباس وفی الصغیر ونحوہ فی الاوسط عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ جو کسی عورت کو اس کے شوہر سے بگاڑ دے وہ ہمارے گروہ سے نہیں (اسے امام احمد، ابن حبان، بزار اور حاکم نے صحیح کہہ کر اور دوسرے نے ثابت مان کر، حضرت بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے ابوداؤد اور حاکم بسند صحیح ابوہریرہ سے ابو یعلیٰ نے سند جید سے اور طبرانی نے اوسط میں ابن عباس سے اور طبرانی صغیر میں اوسط کی مثل عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

[1] القرآن الکریم ۲۴/۴ [2] سنن ابی داؤد کتاب الطلاق باب فیمن خبب امرأۃ علی زوجھا آفتاب عالم پریس لاہور ۲۹۶/۱

Fatawa Razawiyyah Volume Eleven

When such is the ruling for causing discord between a woman and her husband, then refuge is sought with Allah, how severe an oppression it must be to break a woman away from her husband and have her marry someone else. It is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "False testimony is equal to associating partners with Allah, false testimony is equal to associating partners with Allah." Then he recited: "So avoid the filth of idols and avoid false speech." (1 - Narrated by Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah from Khuzaymah bin Fatik, may Allah be pleased with him.) False testimony was equated to worshipping idols, false testimony was equated to worshipping idols, false testimony was equated to worshipping idols. (After saying this three times), the Prophet (peace be upon him) recited this verse as proof: Allah Almighty says, 'So shun the filth of idols and shun false words.' (This has been narrated by Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah from Khuzaymah bin Fatik, may Allah be pleased with him. - T)

Also, it is in the Hadith that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The feet of a false witness shall not move until Allah makes Hellfire obligatory for him." (2 - Narrated by Ibn Majah, and Al-Tabarani in Al-Kabir, and Al-Hakim, who graded its chain as authentic, from Ibn Umar, may Allah be pleased with him.) The feet of a false witness will never move from their place until Allah Almighty makes Hell mandatory for him. (Narrated by Tabarani in Kabir, and Ibn Majah and Hakim, who declared the chain authentic, from Abdullah bin Umar, may Allah be pleased with both of them. - T)

When this is the consequence for absolute false testimony, which even includes false witness over a small amount of money, then how great a cause for Divine Wrath must it be to destroy someone's honor through perjury! We seek refuge in Allah Almighty. May Allah Almighty guide the Muslims. Ameen! And Allah Almighty knows best.

Question 220: From Budaun Tola, sent by Sheikh Nazrullah Sahib, 30 Shawwal 1321 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid is the Imam of a

mosque. A woman was in his marriage (nikah). Afterwards, he married her biological sister. Now both biological sisters are with him. When the mother-in-law is told...

1. Sunan Abi Dawud, Chapter on False Testimony, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/51-150; Sunan Ibn Majah, Chapter on False Testimony, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/371.
2. Sunan Ibn Majah, Chapter on False Testimony, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/371.

जब किसी औरत को उसके शौहर से बिगाड़ देने पर यह हुक्म है, तो अल्लाह की पनाह, औरत को शौहर से तोड़कर दूसरे के निकाह में करा देना कैसा अज़ीम ज़ुल्म है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं: "झूठी गवाही अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर है, झूठी गवाही अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर है।" फिर आपने यह आयत पढ़ी: "तो बुतों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो।" (१- इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने खुज़ैमा बिन फातिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।) झूठी गवाही को बुत पूजने के बराबर करार दिया गया, झूठी गवाही को बुत पूजने के बराबर करार दिया गया, झूठी गवाही को बुत पूजने के बराबर करार दिया गया। (तीन बार यह फरमाकर) हुज़ूर ने इसकी दलील में यह आयत पढ़ी कि अल्लाह तआला फरमाता है: बुतों की नापाकी से बचो और झूठी गवाही से बचो। (इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने खुज़ैमा बिन फातिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त)

नीज़ हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं: "झूठे गवाह के कदम तब तक अपनी जगह से नहीं हटेंगे जब तक कि अल्लाह उसके लिए जहन्नुम वाजिब न कर दे।" (२- इसे इब्न माजा, अल-तबरानी ने अल-कबीर में और अल-हाकिम ने रिवायत किया और इसकी सनद को सहीह करार दिया, इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से।) झूठे गवाह के पैर हरगिज़ अपनी जगह से न हट पाएंगे कि अल्लाह तआला उसके लिए जहन्नुम वाजिब कर देगा। (इसे तबरानी ने कबीर में और इब्न माजा और हाकिम ने सनद को सहीह करार देकर अब्दुल्ला बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है। - त)

जब मुतलक झूठी गवाही का यह वबाल है, जिसमें दो पैसे के माल पर झूठी गवाही भी शामिल है, तो झूठी गवाही से किसी की आबरू बर्बाद कर देना किस कदर अल्लाह के ग़ज़ब का सबब होगा! अल्लाह की पनाह। अल्लाह तआला मुसलमानों को हिदायत दे। आमीन! वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला २२०: बदायूँ टोला से मुरसला शैख़ नज़रुल्लाह साहब, ३० शव्वाल १३२१ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद एक मस्जिद का इमाम है, एक औरत उसके निकाह में थी,

उसके बाद उसने उसकी सगी बहन से निकाह कर लिया, अब वे दोनों सगी बहनें उसके पास हैं, जब सास से कहा जाता है...

1. सुनन अबू दाऊद, बाब फि शहादत अल-ज़ूर, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, २/५१-१५०; सुनन इब्न माजा, बाब फि शहादत अल-ज़ूर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, २/३७१।
2. सुनन इब्न माजा, बाब फि शहादत अल-ज़ूर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, २/३७१।

पेज ७३९ का ४२८

جب کسی عورت کو شوہر سے بگاڑ دینے پر یہ حکم ہے تو معاذ اللہ عورت کو شوہر سے توڑ کر دوسرے کے نکاح میں کرا دینا کیسا اشد ظلم ہے، حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: عدلت شهادة الزور بالأشراك بالله، عدلت شهادة الزور بالأشراك بالله، ثم قرأ فاجتنبوا الرجس من الأوثان واجتنبوا قول الزور ۱- رواہ ابوداؤد والترمذی و ابن ماجۃ عن خزیم بن فاتک رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ جھوٹی گواہی بت پوجنے کے برابر کی گئی، جھوٹی گواہی بت پوجنے کے برابر کی گئی، جھوٹی گواہی بت پوجنے کے برابر کی گئی، (تین بار اسے فرما کر) حضور نے یہ آیت اس کی سند میں پڑھی کہ اللہ تعالٰی فرماتا ہے بچو ناپاکی سے کہ وہ بت ہیں اور بچو جھوٹی گواہی سے۔ (اس کو ابوداؤد، ترمذی، اور ابن ماجہ نے خزیم بن فاتک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

نیز حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لن تزول قدما شاهد الزور حتى يوجب الله له النار ۲- رواہ ابن ماجۃ والطبراني في الكبير والحاكم وصحح سنده عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ ہر گز جھوٹے گواہ کے پاؤں جگہ سے ہٹ نہ پائیں گے، کہ اللہ تعالٰی اس کے لیے جہنم واجب کر دے گا۔ (اسے طبرانی نے کبیر میں اور ابن ماجہ اور حاکم نے سند کو صحیح قرار دے کر عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ہے۔ ت)

جب مطلق جھوٹی شہادت کا یہ وبال ہے جس میں پیسہ دو پیسہ مال پر جھوٹی گواہی بھی داخل تو شہادت کذب سے کسی کے ناموس کو برباد کر دینا کس قدر موجب غضب الٰہی ہو گا والعیاذ باللہ تعالٰی، اللہ تعالٰی مسلمانوں کو ہدایت دے۔ آمین! واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۰: از بدایوں ٹولہ مرسلہ شیخ نذر اللہ صاحب ۳۰ شوال ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید ایک مسجد کا امام ہے، ایک عورت اس کے نکاح میں تھی، بعدہ اس کی حقیقی بہن سے نکاح کر لیا، اب وہ دونوں سگی بہن اس کے پاس ہیں، جب ساس سے کہا جاتا ہے

۱ سنن ابی داؤد باب فی شهادة الزور آفتاب عالم پریس لاہور ۵۱/۲-۱۵۰، سنن ابن ماجہ باب فی شهادة الزور ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۳۷۱ ۲ سنن ابن ماجہ باب فی شهادة الزور ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۳۷۱

Fatawa Razawiyya, Volume Eleven

...then he says this is permissible in Imam Shafi'i's school of thought. In this situation, is it permissible to make him an Imam and pray behind him or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Having two sisters in marriage to one man is absolutely forbidden (haram qat'i). Its prohibition is not such that some Imam derived it through his own interpretation (ijtihad) where another Imam would have room for disagreement. Nor is its prohibition based on an isolated narration (hadith ahad) such that someone to whom the hadith didn't reach or whose authenticity wasn't proven to them could deny it. Rather, its prohibition has been ordained by the Great Quran in its own clear and explicit text, stating:

"Forbidden to you are your mothers, your daughters, your sisters... (until the word of Allah Almighty) and that you take two sisters together [in marriage]." (The Verse) - 1

Translation: Forbidden to you are your mothers, and your daughters, and your sisters... (up to this saying of Allah Almighty) and that you combine two sisters. (The Verse)

Look, just as a man's mother, sister, and daughter are forbidden to him, in the same way, joining two sisters is forbidden for him. Zaid has committed a grave slander against Imam Shafi'i. Until now, he was only a sinner, a perpetrator of a major sin, and deserving of hellfire for this impure act. But now, by considering it a matter of difference among Muslim Imams, he has become a denier of its prohibition, and his action has reached the boundaries of disbelief (kufr). His case has become very severe. It is forbidden to make him an Imam, and praying behind him is utterly invalid. It is obligatory for Muslims that as long as he does not desist from this impure act, does not separate from the second woman, does not repent from this most filthy statement, and does not renew his Islam, they should not sit with him or socialize with him. Otherwise, they should fear that his fire might also burn them. Allah Almighty says:

"And fear a trial that will not strike those who have wronged among you exclusively." (By Allah) - 2

Translation: "Beware of a trial that will not be limited only to the wrongdoers." (T) And Allah Almighty knows best.

And Allah Almighty knows best.

Problem 221: Asked by Maulvi Abdul Karim Sahib, resident of Amritsar, Katra Hakiman, staying in Bareilly, 5 Muharram al-Haram 1322 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid had two wives. From the first wife, he had a son, Amr, and from the second, three sons, Bakr, Khalid, and Walid. Amr's son was Saeed. Saeed's daughter was Laila. Laila's daughter is Salma. This Salma...

1. Al-Quran al-Karim 4/23
2. Al-Quran al-Karim 8/25

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवाँ खंड

...तो वह कहता है कि यह इमाम शाफ़ई के मज़हब में जायज़ है। इस सूरत में उसे इमाम बनाना और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं? बयान कीजिए और सवाब पाइए।

उत्तर: दो बहनों का एक व्यक्ति के निकाह में होना निश्चित रूप से हराम (हराम क़तई) है। इसकी हुरमत (निषेध) ऐसी नहीं है कि किसी इमाम ने अपने इजतिहाद (तर्क) से निकाली हो, जिसमें दूसरे इमाम के लिए विरोध की गुंजाइश हो। न ही इसकी हुरमत किसी हदीस-ए-अहाद (एकल वर्णन) से है कि जिसे वह हदीस न पहुँची हो या जिसकी सत्यता उसे सिद्ध न हुई हो वह इनकार कर सके। बल्कि इसकी हुरमत क़ुरआन अज़ीम ने विशेष रूप से अपने स्पष्ट और साफ़ पाठ (नस्) से इरशाद फ़रमाई है कि:

"तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माँएं और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें... (अल्लाह अज़्ज़वजल के इस क़ौल तक) और यह कि दो बहनों को एक साथ (निकाह में) जमा करो।" (आयत) - १

अनुवाद: तुम पर तुम्हारी माँएं तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें हराम की गईं... (अल्लाह अज़्ज़वजल के इस वचन तक) और यह कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो। (आयत)

देखो, जिस प्रकार आदमी पर उसकी माँ, बहन और बेटी हराम है, उसी प्रकार दो बहनों को जमा करना उस पर हराम है। ज़ैद ने इमाम शाफ़ई पर बहुत बड़ा झूठ और आरोप लगाया है। अब तक तो वह इस नापाक काम के कारण केवल गुनहगार, कबीरा गुनाह करने वाला और नर्क की आग का पात्र था, लेकिन अब मुसलमानों के इमामों के बीच इसे विवादास्पद मानकर वह इसकी हुरमत का मुनकिर (इनकार करने वाला) हो गया है और उसका मामला कुफ़्र (अधर्म) की सीमा तक पहुँच गया है। उसका मामला बहुत गंभीर हो गया है। उसे इमाम बनाना हराम है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना सरासर बातिल (अमान्य) है। मुसलमानों पर लाज़िम है कि जब तक वह अपने इस नापाक काम से बाज़ न आए, उस दूसरी औरत को अलग करके जुदा न कर दे, अपने इस अत्यंत गंदे क़ौल से तौबा न करे और नए सिरे से तजदीद-ए-इस्लाम (इस्लाम का नवीनीकरण) न करे, तब तक उसके पास न बैठें और उससे मेल-जोल न रखें। वरना इस बात का डर रखें कि उसकी आग उन्हें भी झुलसा सकती है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और उस फ़ितने (आज़माइश) से डरो जो केवल उन्हीं लोगों को नहीं पहुँचेगा जिन्होंने तुममें से ज़ुल्म किया है।" (वल्लाह) - २

अनुवाद: "ऐसे फ़ितने से बचो जो केवल ज़ालिमों तक ही सीमित नहीं रहेगा।" (त) वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

वल्लाह तआला आलम।

मसला 221: मौलवी अब्दुल करीम साहब, निवासी अमृतसर, कटरा हकीमां, बरेली निवासी द्वारा पूछा गया, 5 मुहर्रम अल-हराम 1322 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद की दो पत्नियाँ थीं। पहली पत्नी से एक बेटा अम्र और दूसरी से तीन बेटे बक्र, ख़ालिद और वलीद हुए। अम्र का बेटा सईद हुआ। सईद की बेटी लैला थी। लैला की बेटी सलमा है। यह सलमा...

1. अल-क़ुरआन अल-करीम ४/२३
2. अल-क़ुरआन अल-करीम ८/२५

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

تو کہتا ہے یہ امام شافعی کے مذہب میں جائز ہے۔ اس صورت میں اسے امام بنانا اور اس کے پیچھے نماز پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: دو بہنوں کا ایک شخص کے نکاح میں ہونا حرام قطعی ہے، اس کی حرمت ایسی نہیں کہ کسی امام نے اپنے اجتہاد سے نکالی ہو جس میں دوسرے امام کو خلاف کی گنجائش ہو، نہ اس کی حرمت کسی حدیث احاد سے ہے کہ جسے وہ حدیث نہ پہنچے یا اس کی صحت اسے ثابت نہ ہوئی وہ انکار کرسکے بلکہ اس کی حرمت قرآن عظیم نے خاص اپنی نص واضح صریح سے ارشاد فرمائی ہے کہ:

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ (الی قولہ عزوجل) وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ ۔ الآیۃ ۱

حرام کی گئیں تم پر تمہاری مائیں اور تمہاری بیٹیاں اور تمہاری بہنیں، (اللہ عزوجل کے اس قول تک) اور یہ کہ اکٹھی کرو دو بہنیں۔ الآیۃ

دیکھو جس طرح آدمی پر اس کی ماں بہن بیٹی حرام ہے اسی طرح دو بہنوں کو جمع کرنا اس پر حرام ہے، زید نے امام شافعی پر سخت جھوٹا افترا کیا اور اب تک تو وہ اس ناپاک فعل سے فقط حرام کار و مرتکب کبیرہ و مستحق عذاب نار تھا اب مسلمانوں کے اماموں میں مختلف فیہ مان کر اس کی حرمت کا منکر ہوا اور اس کا کام سرحد کفر تک پہنچا، اس کا معاملہ بہت سخت ہوگیا، اسے امام بنانا حرام ہے اس کے پیچھے نماز محض باطل ہے، مسلمانوں پر لازم ہے کہ جب تک وہ اپنے اس ناپاک فعل سے باز نہ آئے اس دوسری کو الگ کرکے جدا نہ کردے اپنے اس نجس تر

قول سے توبہ نہ کرے نئے سرے سے تجدید اسلام نہ کرے جب تک اس کے پاس نہ بیٹھیں اس سے میل جول نہ کریں ورنہ خوف کریں کہ اس کی آگ انھیں بھی نہ پھونک دے، قال اللہ تعالیٰ:

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً ۔ واللہ ۲

ایسے فتنے سے بچو جو صرف ظالموں تک محدود نہ رہے گا (ت) واللہ تعالٰی اعلم

تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۱: مسئولہ مولوی عبدالکریم صاحب ساکن امرتسر کٹڑہ حکیمان نزیل بریلی ۵ محرم الحرام ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کے دو زوجہ تھیں، زوجہ اولیٰ سے ایک بیٹا عمرو اور ثانیہ سے تین بیٹے بکر، خالد، ولید ہوئے، عمرو کا بیٹا سعید ہوا، سعید کی دختر لیلیٰ تھی، لیلیٰ دختر سلمیٰ ہے، یہ سلمیٰ

۱ القرآن الکریم ۲۳/۴ ۲ القرآن الکریم ۲۵/۸

Fatawa Razawiya, Volume 11

Question: Is the granddaughter of Sa'id, the son of 'Umar, prohibited (haram) or permissible (halal) for 'Umar's step-brothers Bakr, Khalid, and Waleed? Clarify and be rewarded.

The Answer: Sulmi is prohibited to all those step-grandfathers of her mother Layla, just as she is prohibited to her real grandfather 'Umar. She is their daughter. Regarding her as permissible for any of them is a denial of a definitive text (Nass Qat'i) and the consensus of the Ummah (Ijma'), which leads to disbelief. Allah Almighty says:

"Forbidden to you are your mothers, your daughters, your sisters, your paternal aunts, your maternal aunts, your brother's daughters and your sister's daughters." [Quran 4:23]

Allah Almighty declares the daughters of brothers prohibited. "Brother" is general, whether real or step (paternal or maternal). Similarly, "daughters" are general, whether it is the brother's own daughter, granddaughter, or great-granddaughter, and so on. It is stated in Al-Alamgiri:

"As for sisters, it includes all three types: full sisters, paternal sisters, and maternal sisters. Likewise, the daughters of brothers and sisters, however far they descend."

It is mentioned in Tafsir al-Kabir regarding the definition of a biological daughter:

"Every female whose lineage returns to you through birth, by one degree or several degrees, through males or females, is your daughter."

Also in the same:

"The ruling regarding brother's daughters and sister's daughters is the same as the ruling regarding biological daughters. These seven categories of women are prohibited by the text of the Book based on lineage." And Allah Almighty knows best.

Footnotes: 1. Al-Quran Al-Karim 4/23 2. Fatawa Hindiyah, Chapter explaining Prohibitions, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/273 3. Tafsir Kabir under the verse "Forbidden to you are your mothers...", Al-Matba'ah al-Bahiyyah al-Misriyyah, 10/28 4. Tafsir Kabir under the verse "Your mothers who nursed you...", Al-Matba'ah al-Bahiyyah al-Misriyyah, 10/29

फतावा रजविया, ग्यारहवीं जिल्द

प्रश्न: क्या उमर के बेटे सईद की नवासी (बेटी की बेटी) उमर के सौतेले भाइयों बक्र, खालिद और वलीद के लिए हराम है या हलाल? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: सुल्मी अपनी माँ लैला के उन सभी सौतेले दादाओं के लिए वैसे ही हराम है जैसे कि वह अपने सगे दादा उमर के लिए है। वह उन सबकी बेटी के समान है। इनमें से किसी के लिए भी उसे हलाल समझना स्पष्ट ईश्वरीय आदेश (नस्स कतई) और उम्मत की सहमति (इज्मा) का खंडन है जो कुफ्र का कारण है। अल्लाह तआला फरमाता है:

"तुम पर तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूपियाँ, तुम्हारी खालाएँ, तुम्हारी भतीजियाँ और तुम्हारी भांजियाँ हराम कर दी गई हैं।"

अल्लाह तआला भाई की बेटियों को हराम फरमाता है, और भाई का शब्द आम है चाहे वह सगा हो या सौतेला (बाप या माँ की तरफ से), और बेटियाँ भी आम हैं चाहे भाई की अपनी बेटी हो या पोती या नवासी या उसके बेटे की बेटी, पोती, नवासी अंत तक। आलमगीरी में है:

"जहाँ तक बहनों का प्रश्न है, इसमें तीनों प्रकार की बहनें शामिल हैं: सगी, पिता की ओर से और माता की ओर से। इसी प्रकार भाई और बहन की बेटियों का भी यही हुक्म है चाहे वे कितनी ही नीची पीढ़ी की हों।"

तफ़सीर-ए-कबीर में सगी बेटी (बिन्ते सल्बी) के वर्णन में है:

"हर वह स्त्री जिसका वंश जन्म के माध्यम से एक स्तर या कई स्तरों से पुरुष या स्त्री के ज़रिये तुम्हारी ओर लौटता है, वह तुम्हारी बेटी है।"

इसी में है:

"भतीजियों और भांजियों का हुक्म सगी बेटी की तरह है, तो सात प्रकार की ये स्त्रियाँ वंश (नसब) के आधार पर कुरआनी आदेश से हराम हैं।" और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-कुरआन अल-करीम 23/4 2. फतावा हिंदिया, हराम चीज़ों के बयान में अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 273/1 3. तफसीर कबीर, आयत "हुर्मत अलैकुम उम्महातु-

कुम..." के तहत, अल-मतबा अल-बहिया अल-मिसरिया, 28/10 4. तफसीर कबीर, आयत "उम्महातु-कुमुल लती अरज़अनकुम..." के तहत, अल-मतबा अल-बहिया अल-मिसरिया, 29/10

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

عمرو کے بیٹے سعید کی نواسی عمرو کے سوتیلے بھائیوں بکر وخالد و ولید پر حرام ہے یا حلال ؟ بینوا توجروا۔

الجواب: سُلّمی اپنی ماں لیلیٰ کے ان سب سوتیلے داداؤں پر ایسے ہی حرام ہے جیسے اس کے سگے دادا عمرو پر، وہ ان سب کی بیٹی ہے، اسے ان میں سے کسی کے لیے حلال جاننا نص قطعی واجماع امت کا انکار اور موجب کفر ہے ،قال اللہ تعالیٰ:

حُرِّمَتْ عَلَیْکُمْ اُمَّھٰتُکُمْ وَ بَنٰتُکُمْ وَ اَخَوٰتُکُمْ وَ عَمّٰتُکُمْ وَ خٰلٰتُکُمْ وَ بَنٰتُ الْاَخِ وَ بَنٰتُ الْاُخْتِ 1 تمھاری مائیں، بیٹیاں، بہنیں، پھوپھیاں ، خالائیں، بھتیجیاں اور بھانجیاں تم پر حرام کی گئی ہیں۔(ت)

اللہ تعالیٰ بھائی کی بیٹیوں کو حرام فرماتا ہے ، اور بھائی عام ہے سگا ہو خواہ سوتیلا، ماں جدا ہو خواہ باپ جدا، اور بیٹیاں عام ہیں خواہ بھائی کی اپنی بیٹی ہو یا پوتی یا نواسی یا اس کے بیٹے کی بیٹی، پوتی ، نواسی آخر تک، عالمگیریہ میں ہے:

اما الاخوات فالاخت لاب وام والاخت لاب والاخت لام و کذا بنات الاخ والاخت وان سفلن 2 بہنوں کا حرام ہونا تینوں قسم، سگی، باپ یا ماں کی طرف سے بہن کو شامل ہے اور اسی طرح بھائی اور بہن کی بیٹیوں کے بارے میں نیچے تک (ت)

تفسیر کبیر میں بیانِ بنت صلبی میں ہے:

کل انثی یرجع نسبھا الیک بالولادۃ بدرجۃ او بدرجات باناث او بذکور فھی بنتک 3 ہر وہ عورت جس کا صلبی نسب ایک درجہ یا کئی درجات سے مرد و عورت کے ذریعہ تیری طرف پلٹے وہ تیری بیٹی ہے(ت)

اسی میں ہے:

القول فی بنات الاخ و بنات الاخت کالقول فی بنات الصلب فھذہ الاقسام السبعۃ محرمۃ فی نص الکتاب بالانساب 4۔ واللہ تعالٰی اعلم بھتیجیوں اور بھانجیوں کا حکم صلبی بیٹی کی طرح ہے، تو سات قسم کی یہ عورتیں نسب کی بنا پر قرآنی نص سے حرام ہیں (ت) واللہ تعالٰی اعلم

حواشی: 1 القرآن الکریم ۲۳/۴ 2 فتاوٰی ہندیہ باب فی بیان المحرمات نورانی کتب خانہ پشاور ۲۷۳/۱ 3 تفسیر کبیر تحت آیت حرمت علیکم امھاتکم الخ مطبع بالمطبعۃ البھیۃ المصریۃ ۲۸/۱۰ 4 تفسیر کبیر تحت آیت امھاتکم الذی ارضعنکم الخ مطبع بالمطبعۃ البھیۃ المصریۃ ۲۹/۱۰

Fatawa Rizvia, Volume 11

Issue 222: From Puranpur, District Pilibhit. 14 Safar 1323 AH

Query: What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding the following matter? Zaid died leaving behind his wife. During her waiting period ('iddah') of widowhood, she committed adultery with 'Amr and became pregnant; it was established that the pregnancy was due to adultery. The days of 'iddah' have now passed. 'Amr wishes to marry this woman. Is marriage permissible now, and is intercourse also permissible before purification (istibra)? Does any expiation (kaffarah) fall upon the adulterer and the adulteress? Please honor us with an answer and be included among those rewarded with virtues. State it and be rewarded.

Answer: Since the 'iddah' for the husband's death has passed, marriage is now permissible for the woman. Neither the adulterer nor anyone else needs to wait for childbirth because a pregnancy that occurs during the 'iddah' of death does not change the 'iddah' of death, which is four months and ten days. It is stated in Radd al-Muhtar:

In Al-Nahr, it is mentioned that if a woman in her waiting period becomes pregnant during it, Al-Karkhi stated that her waiting period would be the delivery of the child, without specifying which waiting period this applies to. And what Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) mentioned is that this ruling pertains to the 'iddah' of divorce, but as for the 'iddah' of death, it does not change due to pregnancy, and this is the correct view, as stated in Al-Bada'i. (T)

In Al-Nahr, it is stated that if a woman in her waiting period becomes pregnant, Al-Karkhi said that her waiting period would be until childbirth, i.e., the birth of the child. He did not provide the detail of which waiting period this rule applies to. And what Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) mentioned is that the said rule is for the waiting period of divorce, but if it is the waiting period of death, its rule will not change. This is correct as stated in Bada'i. (T)

The only difference is that if 'Amr himself, whose adultery caused this pregnancy, marries her now, intercourse is permissible for him immediately. If someone else marries her, the marriage is valid, but it will be impermissible for him to touch the woman (have intercourse) until the birth. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Marriage with a woman pregnant from adultery is valid, even though intercourse and its preliminaries are forbidden until she gives birth. However, if the adulterer himself marries the pregnant woman, intercourse is permissible for him by consensus. 2

Marriage with a woman pregnant from adultery is valid, although intercourse and its preliminaries are forbidden until the birth of the child. But if the adulterer himself marries the pregnant woman, intercourse is permissible for him by consensus. (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/603 2 Durr-e-Mukhtar, Section on Prohibited Relations, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/189

फ़तावा रज़विया, खंड 11

प्रश्न 222: पूरनपुर, ज़िला पीलीभीत से। 14 सफ़र 1323 हिजरी

प्रश्न: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं? ज़ैद अपनी पत्नी को छोड़कर मर गया। विधवा महिला ने अपनी इद्दत (शोक की अवधि) के दौरान 'अम्र के साथ व्यभिचार किया और गर्भवती हो गई; यह सिद्ध हो गया कि गर्भ व्यभिचार से था। इद्दत के दिन अब बीत चुके हैं। 'अम्र इस महिला से विवाह करना चाहता है। क्या अब निकाह जायज़ है, और क्या इस्तिबड़ा (शुद्धिकरण) से पहले सहवास भी जायज़ है या नहीं? और क्या व्यभिचारी और व्यभिचारिणी पर कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) लागू होता है या नहीं? उत्तर देकर कृतार्थ करें और नेक कार्यों के प्रतिफल के पात्र बनें। बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: चूँकि पति की मृत्यु की इद्दत बीत चुकी है, इसलिए महिला के लिए निकाह अब जायज़ है। व्यभिचारी या किसी और को प्रसव का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मृत्यु की इद्दत के दौरान होने वाला गर्भ, मृत्यु की इद्दत को नहीं बदलता है, जो कि चार महीने दस दिन है। रद अल-मुहतार में उल्लेख है:

अन-नह्र में उल्लेख है कि यदि इद्दत के दौरान महिला गर्भवती हो जाए, तो अल-करखी ने उल्लेख किया है कि उसकी इद्दत बच्चे के जन्म तक होगी, उन्होंने विस्तार से नहीं बताया कि यह नियम किस इद्दत के लिए है। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने जो उल्लेख किया है वह यह है कि उक्त नियम तलाक़ की इद्दत का है, लेकिन जहाँ तक मृत्यु की इद्दत का सवाल है, वह गर्भ के कारण नहीं बदलती है, और यही सही मत है, जैसा कि अल-बदा'ई में है। (टी)

नह्र में है कि अगर इद्दत के दौरान मोतदा को हमल हो जाए तो करख़ी ने कहा कि उसकी इद्दत वज़-ए-हमल यानी बच्चे की पैदाइश तक होगी, इसकी तफ़्सील बयान न की कि कौन सी इद्दत में यह हुक्म है, और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने जो ज़िक्र फ़रमाया वह यह है कि मज़कूरा हुक्म तलाक़ की इद्दत का है लेकिन इद्दत-ए-वफ़ात हो तो उसका हुक्म तब्दील नहीं होगा, यही सही है जैसा कि बदा'ए में है। (टी)

अंतर केवल इतना है कि यदि स्वयं 'अम्र, जिसके व्यभिचार से यह गर्भ हुआ है, अब उससे निकाह करता है, तो उसके लिए तुरंत सहवास जायज़ है। यदि कोई दूसरा व्यक्ति निकाह करता है, तो

निकाह सही है लेकिन प्रसव तक उसके लिए महिला को हाथ लगाना (सहवास करना) नाजायज़ होगा। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

व्यभिचार से गर्भवती महिला से निकाह जायज़ है, हालांकि प्रसव होने तक सहवास और उसके शुरुआती चरण वर्जित हैं; लेकिन यदि स्वयं व्यभिचारी उससे निकाह करता है, तो आम सहमति से उसके लिए सहवास हलाल है। 2

ज़ना से हामिला औरत से निकाह जायज़ है अगर उससे वती और उसके दवा'ई बच्चे की पैदाइश तक हराम है लेकिन अगर ज़ानिया हामिला से खुद उसका ज़ानी निकाह करे तो उसको वती बिल-इत्तिफ़ाक़ हलाल है (टी)

1 रद अल-मुहतार, इद्दत का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/603 2 दुर्र-ए-मुख़्तार, हराम रिश्तों का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/189

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۲۲۲: از پورن پور ضلع پیلی بھیت ۱۴ صفر ۱۳۲۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین مسئلہ ذیل میں، زید اپنی عورت چھوڑ کر مر گیا، عورت بیوہ اندر ایام عدت کے عمرو سے مرتکب زنا کی ہوئی حاملہ، حمل زنا کا قرار پا گیا، عدت کے ایام اب گزر گئے، عمرو مستدعیِ نکاح کا اسی عورت سے ہے، اب نکاح جائز ہے اور وطی کرنا قبل استبراء کے بھی جائز ہے یا نہیں؟ اور کفارہ ذمہ زانی وزانیہ کے عائد ہوتا ہے یا نہیں؟ جواب سے مشرف فرما کر داخلِ اجر و حسنات ہوں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ وفات شوہر کی عدت گزر گئی تو اب عورت کو نکاح جائز ہو گیا اور وضع حمل کا انتظار زانی خواہ غیر زانی کسی کو ضرور نہیں کہ حمل جو اثنائے عدتِ وفات میں حادث ہوا اس سے عدتِ موت کہ چار مہینے دس دن ہے نہیں بدلتی، ردالمحتار میں ہے:

فی النھر ان المعتدۃ لو حملت فی عدتھا ذکر الکرخی ان عدتھا وضع الحمل ولم یفصل والذی ذکرہ محمد ان ھذا فی عدۃ الطلاق امافی عدۃ الوفاۃ فلاتتغیر بالحمل وھو الصحیح کذا فی البدائع۔

نہر میں ہے کہ اگر عدت کے دوران معتدہ کو حمل ہو جائے تو کرخی نے کہا کہ اس کی عدت وضع حمل یعنی بچے کی پیدائش تک ہوگی، اس کی تفصیل بیان نہ کی کہ کون سی عدت میں یہ حکم ہے، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے جو ذکر فرمایا وہ یہ ہے کہ مذکورہ حکم طلاق کی عدت کا ہے لیکن عدتِ وفات ہو تو اس کا حکم تبدیل نہیں ہوگا، یہی صحیح ہے جیسا کہ بدائع میں ہے۔ (ت)

فرق اتنا ہے کہ خود عمرو جس کے زنا سے یہ حمل رہا ہے وہ اب اگر نکاح کرے تو اسے فی الحال وطی جائز اور دوسرے شخص سے نکاح صحیح ہے مگر اسے تا وضع حمل زنا عورت کو ہاتھ لگانا ناجائز ہوگا۔ در مختار میں ہے:

صح نکاح حبلی من زنا وان حرم وطؤھا ودواعیہ حتی تضع لونکحھا الزانی حل لہ وطؤھا اتفاقا ۲۔

زنا سے حاملہ عورت سے نکاح جائز ہے اگر اس سے وطی اور اس کے دوائی بچے کی پیدائش تک حرام ہے لیکن اگر زانیہ حاملہ سے خود اس کا زانی نکاح کرے تو اس کو وطی بالاتفاق حلال ہے (ت)

۱ رد المحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۶۰۳ ۲ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۹

Fatawa Razawiyya, Volume 11

The punishment (hadd) prescribed by the pure Shariah for an adulterer and adulteress is not applicable here, but repentance is obligatory, and the punishment of Allah Almighty is severe. We seek refuge with Allah. And Allah knows best.

Issue 226 to 227: From Akbarabad, sent by Muhammad Abdul Razzaq Sahib Panipati, Editor of 'Hamdard-e-Islam' Magazine, Agra, 9th Rabi-ul-Awwal 1322 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: (1) A person married his son to his real brother's daughter, or two brothers (cousins) married their son and the other's daughter to each other. According to the noble Shariah, is this marriage valid or not? And is a paternal cousin sister lawful (halal) for a paternal cousin brother, and a paternal cousin's daughter lawful for another paternal cousin's son, or not? (2) If it is valid and lawful, what is the ruling regarding a person who does not accept this command and says, "Although this is a matter of noble Shariah, we do not act upon it because it has never happened in our community or among our forefathers"? How should one associate with such people and maintain brotherly relations? Furthermore, is it permissible to offer prayers behind such people or not? (3) If a group boycotts someone who performs such a marriage, stops social interaction, and considers this marriage a matter of national/communal disgrace, should one maintain relations with them or not? (4) If following the Shariah causes parents to be displeased, should one obey the parents even if it opposes the Shariah, or should obedience to Shariah be prioritized even if parents become displeased? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Whether two brothers are real or paternal cousins, the children of one are absolutely, certainly, and by the consensus of the Ummah, lawful and permitted for the children of the other. Calling the children of paternal uncles, maternal uncles, maternal aunts, or paternal aunts "brothers and sisters" is metaphorical. They are never included in the words of the Quranic verse regarding prohibited relatives (mahram), such as "your sisters, or the daughters of your brother, or the daughters of your sister" in any Islamic school of thought. Rather, the categorical text of the Great Quran testifies that these women are not included among sisters at all. Allah Almighty says: "O Prophet! Indeed, We have made lawful for you your wives to whom you have given their due compensation and those your right hand possesses from what Allah has returned to you [of captives] and the daughters of your paternal uncles..." O Prophet! Indeed, We have made lawful for you your wives whose mahr

(dowry) you have paid, and the slave-girls you own from what Allah gave you as war booty, and the daughters of your paternal uncle...

फ़तावा रज़विया, खंड 11

ज़ानी और ज़ानिया (व्यभिचारी और व्यभिचारिणी) पर जो शुद्ध शरीअत ने सज़ा (हद्द) अनिवार्य की है, वह यहाँ कहाँ, लेकिन तौबा (पश्चाताप) अनिवार्य है और अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल का अज़ाब बहुत सख्त है। हम अल्लाह की शरण मांगते हैं। और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है।

मसला 226 से 227: अकबरबाद से, प्रेषक मुहम्मद अब्दुल रज्जाक साहब पानीपती, संपादक पत्रिका 'हमदर्द-ए-इस्लाम', आगरा, 9 रबी-उल-अव्वल 1322 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: (1) एक व्यक्ति ने अपने बेटे की शादी अपने सगे भाई की बेटी से कर दी, या ताया/चाचा के दो बेटों ने आपस में अपने बेटे और दूसरे भाई की बेटी का निकाह कर दिया। शरीअत-ए-मुतह्हरा के अनुसार क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? और क्या चचेरी बहन, चचेरे भाई पर और ताया के बेटे की बेटी, चचेरे भाई के बेटे पर हलाल है या नहीं? (2) यदि यह जायज़ और हलाल है, तो जो व्यक्ति इस हुक्म को न माने और यह कहे कि हालाँकि यह शरीअत का मसला है लेकिन हम इस पर अमल नहीं करते क्योंकि हमारी बिरादरी और बाप-दादाओं में कभी ऐसा नहीं हुआ, तो ऐसे लोगों से मिलना-जुलना और भाईचारा रखना कैसा है? और क्या ऐसे लोगों के पीछे नमाज़ पढ़नी जायज़ है या नहीं? (3) यदि कोई समूह ऐसे निकाह करने वालों का हुक्का-पानी बंद कर दे, मेल-जोल बंद कर दे और इस निकाह को कौमी बेइज़्ज़ती समझे, तो उनसे मेल-जोल रखना चाहिए या नहीं? (4) यदि ऐसे लोगों के विरोध से माता-पिता नाराज़ हों, तो क्या माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए चाहे वह शरीअत के विरुद्ध हो, या शरीअत का पालन पहले रखना चाहिए चाहे माता-पिता नाराज़ हो जाएँ? उत्तर दें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: दो भाई सगे हों या चचेरे, उनमें से प्रत्येक की संतान दूसरे की संतान के लिए निश्चित रूप से, यकीनन और उम्मत के आम सहमति (इज्मा) से जायज़ और हलाल है। चाचा, मामा, मौसी या बुआ की संतान को भाई-बहन कहना केवल औपचारिक या प्रतीकात्मक बात है। इन्हें किसी भी इस्लामी धर्मशास्त्र में कुरान की आयत में बताए गए 'महरम' (जिनसे विवाह वर्जित है) शब्दों जैसे "तुम्हारी बहनें, या तुम्हारे भाई की बेटियाँ या तुम्हारी बहन की बेटियाँ" में शामिल नहीं किया गया है। बल्कि महान कुरान का स्पष्ट प्रमाण गवाह है कि ये औरतें बहनों में कतई शामिल नहीं हैं। अल्लाह तआला फरमाता है: "या अय्युहन नबिय्यु इन्ना अहललना लका अज़वा-जकल लाती आतैता उजूरहुन्न व मा मलकत यमीनुक मिम्मा अफाअल्लाहु अलैक व बनाति अम्मिका..." ऐ नबी! बेशक हमने आपके लिए

आपकी वे पत्नियाँ हलाल कीं जिनके मह्र आपने दे दिए हैं, और वे लौंडियाँ भी जो आपके अधिकार में आईं जो अल्लाह ने आपको ग़नीमत में दीं, और आपके चाचा की बेटियाँ...

पेज 432 / 739

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

زانی و زانیہ پر جو حدِ شرعِ مطہر نے لازم فرمائی ہے وہ یہاں کہاں، مگر توبہ فرض ہے اور اللہ عزوجل کا عذاب سخت ہے والعیاذ باللہ تعالیٰ۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۲۶ تا ۲۲۷: از اکبر آباد مرسلہ محمد عبدالرزاق صاحب پانی پتی ایڈیٹر رسالہ ہمدردِ اسلام آگرہ ۹ ربیع الاول ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ: (۱) ایک شخص نے اپنے لڑکے کی شادی اپنے حقیقی بھائی کی بیٹی سے کر دی یا تایا چچازاد دو بھائیوں نے آپس میں اپنے لڑکے اور دوسرے بھائی کی بیٹی سے نکاح کر دیا از روئے شرعِ شریف یہ نکاح جائز ہوا یا نہیں، اور چچازاد بہن تایا زاد بھائی پر اور تایا زاد بھائی کی دختر چچازاد بھائی کے پسر پر حلال ہے یا نہیں؟ (۲) اگر جائز اور حلال ہے تو جو شخص اس حکم کو نہ مانے اور یہ کہے کہ گویہ مسئلہ شرعِ شریف کا ہے لیکن ہم اس پر عمل نہیں کرتے کہ ہماری برادری اور باپ داداوں سے کبھی ایسا نہیں ہوا تو ایسے لوگوں سے ملنا جلنا اور برادرانہ برتاؤ رکھنا کیسا ہے اور نیز ایسے لوگوں کے پیچھے نماز پڑھنی جائز ہے یا نہیں؟ (۳) اگر کوئی گروہ ایسے نکاح کرنے والے کا حقہ پانی، میل جول برادرانہ بند کردیں اور اس نکاح کو ننگ و ناموس قومی تصور کریں تو ان سے میل جول رکھنا چاہئے یا نہیں؟ (۴) اگر ایسے لوگوں کی مخالفت سے ماں باپ ناراض ہوں تو اطاعتِ والدین گو مخالفتِ شرعِ شریف ہو جائے ان سے میل جول رکھنا چاہئے یا اطاعتِ شریعت مقدم رکھے گو والدین ناراض ہو جائیں؟ بینوا توجروا

الجواب: دو بھائی حقیقی ہوں خواہ عم زاد، ان میں ہر ایک کی اولاد دوسرے کی اولاد پر قطعاً یقیناً باجماعِ امت جائز و حلال ہے، چچاما موں خالہ پھوپھی کی اولاد کو بہن بھائی کہنا ایک مجازی بات ہے جسے ہر گز آیہ کریمہ محارم کے کلمات اخواتکم، یابنت الاخ وبنت الاخت (تمھاری بہنیں یا

تمھاری بھتیجیاں اور بھانجیاں۔ت) کسی اسلامی مذہب میں شامل نہیں بلکہ نص قطعی قرآن عظیم گواہ ہے کہ یہ عورتیں ہرگز بہنوں میں داخل نہیں۔ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ اے نبی! بیشک ہم نے حلال کیں تمھارے لیے تمھاری زوجات جن کے مہر تم نے دئے اور تمھاری کنیزیں جو اللہ نے تمھیں غنیمت میں دیں اور تمھارے چچا کی

Fatawa Ridawiyya Volume 11

وَبَنٰتِ عَمَّتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الْاٰیَۃَ ۔ 1	**...and the daughters of your paternal aunts, and the daughters of your maternal uncles, and the daughters of your maternal aunts... (Verse)**

Yes, the stubborn Hindus have considered them like real sisters, just as they falsely consider an adopted son to be like a biological son and his wife like a real daughter-in-law. The pagans of Arabia were like-minded with the pagans of India in this latter issue, upon which those foolish people raised objections and criticized the marriage of the Mother of the Believers, Zainab (may Allah be pleased with her). The Great Quran struck their devilish thoughts back in their faces.

Allah Almighty said:

فَلَمَّا قَضٰی زَیْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ 2	**When Zaid fulfilled his desire from her, We married her to you so that there be no blame on the believers concerning the (divorced) wives of their adopted sons, when the latter have fulfilled their desire from them (i.e., divorced them). (T)**

However, even the Arab pagans did not consider the daughters of paternal and maternal uncles and aunts as sisters; intermarriage among them was prevalent even then, and it has always been prevalent among Muslims and is now widespread and common in all Islamic countries. Its highest example is the marriage of Hazrat Umm Hasan Muthanna and Hazrat Fatima Sughra (may Allah be pleased with them). Who does not know that Hazrat Hasan Muthanna is the son of Hazrat Imam Hasan Mujtaba and Hazrat Fatima Sughra is the daughter of Hazrat Imam Hussain, the Martyr of Karbala (may Allah be pleased with them all)? She was in marriage with him. Hazrat Imam Abdullah Mahd (may Allah be pleased with him) was born from these two pure and blessed parents. He is called 'Mahd' (pure) simply because he was the first person in the world whose both parents were the noble descendants of Batul Zahra (peace and blessings be upon her). His father was the grandson of the Queen of Paradise, and his mother was her granddaughter. It is mentioned in Sahih Bukhari:

لِما مات الحسن بن الحسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہم ضربت امرأته القبة علی قبره سنة۔ 3	**When Hasan bin Hasan bin Ali (may Allah be pleased with them) passed away, his wife set up a tent over his grave for one year. (T)**

1. The Holy Quran 33/6
2. The Holy Quran 33/37
3. Sahih Bukhari, Book of Funerals, Chapter on what is disliked regarding making mosques over graves, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/177.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 11

وَبٰنٰتِ عَمَّتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الاٰیَۃ ۔ 1	**...और तुम्हारी फूंकियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामुओं की बेटियाँ और तुम्हारी मौसियों की बेटियाँ... (आयत)**

हाँ, हठधर्मी हिंदुओं ने उन्हें सगी बहन की तरह समझा है, जैसे वे गोद लिए हुए बेटे को गलत तरीके से अपना बेटा और उसकी पत्नी को सगी बहू के समान मानते हैं। अरब के मुशरिक इस बाद वाले मुद्दे में भारत के मुशरिकों के समान विचारधारा वाले थे, जिस पर उन मूर्ख लोगों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के निकाह पर कटाक्ष और आपत्तियाँ कीं। महान कुरान ने उनके शैतानी ख्यालों को उनके मुंह पर दे मारा।

अल्लाह तआला ने फरमाया:

فَلَمَّا قَضٰی زَیْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ 2	**जब ज़ैद ने उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली तो हमने उसे आपसे ब्याह दिया ताकि मोमिनों को अपने मुंह बोले बेटों की (तलाकशुदा) पत्नियों से निकाह के बारे में कोई हर्ज न हो, जब वे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें। (त)**

लेकिन अरब के मुशरिक भी चचा, फूफी, मामू और मौसी की बेटियों को बहन नहीं मानते थे; उनके बीच भी निकाह का प्रचलन था और मुसलमानों में भी हमेशा रहा है और अब सभी इस्लामी देशों में यह आम है। इसका सबसे बेहतरीन उदाहरण हज़रत उम्मे हसन मुसन्ना और हज़रत फातिमा सुग़रा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का निकाह है। कौन नहीं जानता कि हज़रत हसन मुसन्ना हज़रत इमाम हसन मुजतबा के साहबज़ादे हैं और हज़रत फातिमा सुग़रा हज़रत इमाम हुसैन शहीद-ए-कर्बला की साहबज़ादी हैं (अल्लाह उन सब से राज़ी हो)। फिर वे उनके निकाह में थीं, हज़रत इमाम अब्दुल्ला महज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) इन्हीं दो पाक और मुबारक माता-पिता से पैदा हुए। उन्हें 'महज़' (शुद्ध) इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे दुनिया के पहले ऐसे व्यक्ति थे जिनके माता-पिता दोनों बतुल ज़हरा (उन पर कृपा हो) की औलाद थे। उनके पिता जन्नत की खातून के पोते और उनकी माँ उनकी पोती थीं। सहीह बुखारी शरीफ़ में है:

لِما مات الحسن بن الحسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہم ضربت امرأته القبة علی قبره سنة۔ 3	**जब हसन बिन हसन बिन अली (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का देहांत हुआ, तो उनकी पत्नी ने एक साल तक उनकी कब्र पर तंबू लगाया। (त)**

1. अल-कुरान अल-करीम 33/6
2. अल-कुरान अल-करीम 33/37
3. सहीह बुखारी, किताबुल जनाइज़, बाब: कब्रों पर मस्जिदें बनाने की नापसंदगी के बारे में, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/177।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

وَبَنٰتِ عَمَّتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الْاٰیَۃَ ۔ 1

بیٹیاں اور پھوپھیوں کی بیٹیاں اور ماموؤں کی بیٹیاں اور خالاؤں کی بیٹیاں۔ الایۃ۔

ہاں ہنود عنود نے انہیں حقیقی بہن کی طرح سمجھا ہے جیسے متبنی کو بزعم باطل بیٹا اور اس کی زوجہ کو حقیقی بہو کے مثل جانتے ہیں، مشرکان عرب اس پچھلے مسئلے میں مشرکان ہند کے ہم خیال تھے جس پر ان سفہا نے نکاح حضرت ام المؤمنین زینب رضی اللہ تعالٰی عنہا پر طعن و اعتراض کئے اور قرآن عظیم نے ان کے شیطانی خیال ان کے منہ پر ماردئے،

قال اللہ تعالٰی:

فَلَمَّا قَضٰی زَیْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ 2

جب زید نے اس سے اپنی حاجت پوری کرلی تو اس کو ہم نے آپ سے بیاہ دیا تاکہ مؤمنین کو اپنے منہ بولے بیٹوں کی مدخولہ مطلقہ بیویوں سے نکاح کے بارے میں حرج نہ ہو۔ (ت)

مگر عم و عمہ وخال وخالہ کی بیٹیوں کو مشرکین عرب بھی بہن نہ جانتے تھے ان سے مناکحت ان میں بھی رائج تھی اور مسلمانوں میں بھی ہمیشہ رائج تھی اور اب تمام ممالک اسلامیہ میں شائع و ذائع ہے اس کی سب سے اعلٰی نظیر حضرت ام حسن مثنی و حضرت فاطمہ صغرٰی رضی اللہ تعالٰی عنہا کا نکاح ہے کون نہیں جانتا کہ حضرت حسن مثنٰی حضرت امام حسن مجتبٰی کے صاحبزادے ہیں اور حضرت فاطمہ صغرٰی حضرت امام حسین شہید کربلا کی صاحبزادی رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین، پھر یہ ان کے نکاح میں تھیں، حضرت امام عبداللہ محض رضی اللہ تعالٰی

عنہ انہی دونوں پاک مبارک والدین سے پیدا ہوئے انھیں محض اس لئے کہتے ہیں کہ وہ دنیا میں پہلے شخص تھے جن کے ماں باپ دونوں بتول زہرا صلی اللہ تعالیٰ علیہا الکریم وعلیہا وسلم کی اولاد امجاد ہیں، باپ حضرت خاتون جنت کے پوتے اور ماں ان کی پوتی، صحیح بخاری شریف میں ہے:

لِما مات الحسن بن الحسن بن علی رضی جب حسن بن حسن بن علی (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) فوت اللہ تعالیٰ عنہم ضربت امرأته القبة علی ہوئے تو ان کی بیوی نے ایک سال تک ان کی قبر پر قبره سنة۔ 3 خیمہ لگایا۔ (ت)

1 القرآن الکریم ۳۳ / ۶ 2 القرآن الکریم ۳۳ / ۳۷ 3 صحیح بخاری کتاب الجنائز باب ما یکرہ من اتخاذ المساجد علی القبور قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۷۷

Fatawa Razawiyya Volume 11

In Irshad al-Sari, the commentary on Sahih Bukhari, it is stated:

(His wife) Fatima bint al-Hasan bin Ali (may Allah be pleased with them) was their cousin (the daughter of their father's brother)[1]. | By wife is meant Fatima bint Hasan bin Ali (may Allah be pleased with them) who is their cousin. (T)

This new issue is a fabrication specific to the polytheists of India, and perhaps for the inhabitants of some other cities in India like Deccan, they might also consider it permissible. For the stubborn Hindus, it is easy because their leader is their carnal desire and Satan. It is a wonder for those who claim to be Muslims, consider the Great Quran their leader, and then believe in Satanic issues contrary to the Quran, and seek refuge in Allah, the Lord of the worlds. Most likely, these could be the impure delusions of such people whose forefathers were Hindus, who converted to Islam only a short while ago and remained ignorant, senseless, and far from the company of scholars. Meaningless thoughts are stuck in their hearts and due to being inherited, they have become like a second nature. Now that the command of the Great Quran is known, natural disgust, which has intensified, prevents its compliance. Just as if an old priest or celibate (Brahmachari), by good fortune, is honored with Islam, and in front of him, the fine, high-quality, fat, fresh, roasted red, fragrant, beautiful, soft, smooth, savory meat of a young cow is presented, due to old habit, his courage will not suddenly support him for this delicious morsel; rather, his eyes will close as soon as he sees it. If in reality the origin of these people's denial is only this much—they know well and believe that these marriages are permissible and there is no harm in them, and the Hindus who consider them forbidden, this is their heinous and ugly presumption—yet they hesitate and avoid it because of this old habit, then it is not disbelief (Kufr). However, this thought is a remnant of the impure customs of disbelief. It is obligatory upon them to remove it from their hearts and enter Islam completely; otherwise, they should wait for the divine punishment. Allah Almighty says:

"O you who have believed, enter into Islam completely [and perfectly] and do not follow the footsteps of Satan. Indeed, he is to you a clear enemy. But if you slip after clear proofs have come to you, then know that Allah is Exalted in Might and Wise. Do they wait but that Allah should come to them in canopies of clouds and the angels [as well] and the matter is [then] decided? And to Allah [all] matters are returned." | O you who believe! Enter into Islam completely and do not follow the footsteps of

Satan; indeed, he is your open enemy. Then if you slip after clear signs have come to you, then know that Allah is Mighty, Wise. Are they waiting for anything but that Allah should come to them in the shadows of clouds and the angels and the matter is settled? And to Allah all matters are returned.

[1] Irshad al-Sari Sharh Sahih Bukhari, Kitab al-Jana'iz, Qadimi Kutub Khana Karachi 429/2

फतवा रज़विया जिल्द 11

इरशाद अल-सारी शरह सहीह बुखारी में है:

(उनकी पत्नी) फातिमा बिन्त अल-हसन बिन अली (अल्लाह उन सबसे प्रसन्न हो) उनकी चचेरी बहन थीं[1]। | पत्नी से मुराद फातिमा बिन्त हसन बिन अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) हैं जो उनकी चचेरी बहन हैं। (त)

यह नया मसला खास तौर पर हिंद के मुशरिकों की गढ़ी हुई बात है, शायद हिंदुस्तान के कुछ अन्य शहरों जैसे दक्कन के निवासियों के लिए भी वे इसे हलाल (वैध) मानते हों। हठधर्मी हिंदुओं के लिए तो आसान है क्योंकि उनका इमाम नफ्स (इच्छा) और शैतान है, अचरज तो उन पर है जो इस्लाम का दावा करते हैं, कुरान-ए-अजीम को अपना इमाम मानते हैं और फिर कुरान के खिलाफ शैतानी मसलों को मानते हैं, वल-इयाज़ु बिल्लाह रब्बिल आलमीन। शायद ये उन लोगों के नापाक वहम हो सकते हैं जिनके बाप-दादा हिंदू थे, इस्लाम लाए हुए थोड़ा ही समय बीता है और वे जाहिल, बेवकूफ और विद्वानों की सोहबत से दूर रहे। उनके दिलों में वही बेमानी खयालात जमे हुए हैं और विरासत में मिलने के कारण मानो दूसरी प्रकृति बन गए हैं। अब जब कुरान-ए-अजीम का हुक्म मालूम हुआ, तो कुदरती नफरत जो उससे पैदा हुई है, उसके पालन में बाधा डालती है। जैसे कोई पुराना पुजारी या ब्रह्मचारी खुशकिस्मती से इस्लाम कुबूल कर ले और उसके सामने एक जवान गाय का बेहतरीन, उम्दा, मोटा, ताजा, लाल, भुना हुआ, खुशबूदार, खूबसूरत, नरम, चिकना, नमकीन मांस पेश किया जाए, तो पुरानी आदत के कारण अचानक उसकी हिम्मत उस लजीज निवाले के लिए साथ नहीं देगी, बल्कि देखते ही आँखें बंद हो जाएंगी। अगर वास्तव में इन लोगों के इनकार की वजह सिर्फ इतनी ही है—वे अच्छी तरह जानते हैं और ईमान लाते हैं कि ये निकाह हलाल हैं और उनमें कोई खराबी नहीं है, और हिंदू जो उन्हें हराम समझते हैं यह उनकी घिनौनी और बुरी धारणा है—इसके बावजूद पुरानी आदत के कारण वे इससे झिझकते और बचते हैं, तो यह कुफ्र नहीं है। लेकिन यह विचार कुफ्र की नापाक रस्मों का अवशेष है। उन पर फर्ज है कि इसे दिल से निकालें और पूरे तौर पर इस्लाम में दाखिल हों, वरना अल्लाह के अज़ाब (दंड) का इंतज़ार करें। अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है:

"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। फिर अगर तुम उन रोशन दलीलों के आने के बाद फिसल जाओ जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं, तो जान लो कि अल्लाह जबरदस्त हिकमत वाला है। क्या वे इसी बात का इंतज़ार

कर रहे हैं कि अल्लाह बादलों की छाँव में उनके पास आए और फरिश्ते भी आ जाएं और फैसला कर दिया जाए? और सब मामले अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाते हैं।" | ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के नक्श-ए-कदम पर न चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। फिर अगर तुम लग़्ज़िश (चूक) करो उसके बाद कि तुम्हारे पास रोशन आयतें आ चुकीं, तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। ये लोग किस बात का इंतज़ार कर रहे हैं सिवाय इसके कि अल्लाह बादलों की घटाओं में उनके पास आए और फरिश्ते भी, और मामला खत्म कर दिया जाए।

[1] इरशाद अल-सारी शरह सहीह बुखारी, किताब अल-जनाइज़, कदीमी कुतुब खाना कराची 429/2

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

ارشاد الساری شرح صحیح بخاری میں ہے:

(امرأته) فاطمة بنت الحسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنهم وهی ابنة عمهم[1]۔ | بیوی سے مراد فاطمہ بنت حسن بن علی (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) ہے جو ان کی چچازاد ہیں (ت)

یہ نیا مسئلہ خاص مشرکینِ ہند کی گھڑت ہے وہ بھی ہندوستان کے بعض شہروں کے لیے دیگر مثل دکن کے سکان کو شاید وہ بھی حلال مانتے ہوں۔ ہنودِ عنود کو تو آسان ہے کہ ان کا امام ہوائے نفس و شیطان ہے، عجب اس سے جو دعوی اسلام رکھے قرآنِ عظیم کو اپنا امام جانے اور پھر خلافِ قرآن مسائل شیطان مانے والعیاذ باللہ رب العالمین، غالباً یہ ایسے ہی لوگوں کے ناپاک اوہام ہو سکتے ہیں جن کے باپ دادا ہندو تھے اسلام لائے تھوڑا زمانہ گزرا ہوا اور رہے جاہل بے شعور اور صحبتِ اہل علم سے دور ، دل میں وہی خیالات بے معنی جمے ہوئے ہیں اور موروث ہونے کے باعث گویا طبیعت ثانیہ ہوگئے ہیں اب کہ حکمِ قرآنِ عظیم معلوم ہوا طبعی گھن کہ اس سے چڑھی ہوئی ہے اس کے امتثال سے مانع آتی ہے جیسے کوئی پرانا پجاری برہمچاری خوبیِ قسمت سے مشرف بہ اسلام ہو جائے اور اس کے سامنے نوجوان گائے کا نفیس عمدہ فربہ تازہ سرخ بریاں خوشبو خوشنما نرم چکنا چپٹا سلونا گوشت پیش کیا جائے تو عادتِ قدیمہ کے باعث یکایک اس کی ہمت اس لذیذ نوالے کے لیے یاری نہ دے گی بلکہ دیکھتے ہی آنکھ بند ہوجائے گی ، اگر فی الواقع ان لوگوں کے انکار کا صرف اسی قدر منشاء ہے خوب جانتے ہیں ، اور ایمان لاتے ہیں کہ یہ نکاح حلال ہیں ان میں کوئی قباحت نہیں، اور ہنود کہ انھیں حرام سمجھتے ہیں یہ ان کا شنیع و قبیح زعم ہے بایں ہمہ اس عادتِ قدیمہ کے سبب اس سے جھجھکتے بچتے ہیں جب تو کفر نہیں

مگر یہ خیال ناپاک رسومِ کفر کا بقیہ ہے ان پر فرض ہے کہ اسے دل سے دور کریں اور پورے پورے اسلام میں داخل ہوں ورنہ عذابِ الہی کے منتظر رہیں، اللہ عزوجل فرماتا ہے:

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱدۡخُلُواْ فِي ٱلسِّلۡمِ كَآفَّةٗ وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيۡطَٰنِۚ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٞ ۝ فَإِن زَلَلۡتُم مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡكُمُ ٱلۡبَيِّنَٰتُ فَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ هَلۡ يَنظُرُونَ إِلَّآ أَن يَأۡتِيَهُمُ ٱللَّهُ فِي ظُلَلٖ مِّنَ ٱلۡغَمَامِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ ٱلۡأَمۡرُۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرۡجَعُ ٱلۡأُمُورُ ۝ | اے ایمان والو! اسلام میں پورے پورے داخل ہو اور شیطان کے قدموں پر نہ چلو بیشک وہ تمہارا صریح دشمن ہے پھر اگر لغزش کرو بعد اس کے کہ تمہارے پاس آچکیں روشن آیتیں تو جان رکھو کہ اللہ زبردست حکمت والا ہے یہ لوگ کس انتظار میں ہیں مگر یہی کہ آئے ان پر اللہ کا عذاب بادل کی گھٹاؤں میں

[1] ارشاد الساری شرح صحیح بخاری کتاب الجنائز قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۲۹/۲

Fatawa Ridawiyya - Volume 11

[Arabic]: "...and to Allah all matters return." And the angels and what has already happened, and to Allah alone all matters return.

In Jalalayn Sharif, it is mentioned: [Arabic]: "It was revealed regarding Abdullah bin Salam and his companions when they glorified the Sabbath and disliked camel [meat] after [embracing] Islam. [Then] 'Enter into Islam completely' was revealed, meaning into Islam in its entirety, i.e., all its laws." (Summarized) [Urdu Translation]: When Abdullah bin Salam and his companions wanted to observe the Saturday (Sabbath) and disliked camel meat due to their previous religion, the noble verse "Enter into Islam completely" was revealed. This means enter into 'silm' (submission), and 'silm' here refers to Islam, meaning adopt the entire Islamic Sharia. (Summarized)

That is, when the Jewish scholars embraced Islam, they felt a dislike for camel meat due to their old habit, as camel meat was forbidden for Jews, and they intended to continue honoring Saturday because it was a significant day for them. Upon this, Allah Almighty revealed this noble verse: "O you who believe! Enter into Islam completely." Follow all its commands, otherwise, wait for divine punishment, and refuge is sought with Allah. If these people do not comply, then Muslims should avoid socializing with them, especially those foolish ones who uttered that impure phrase, "Though this is a matter of Sharia, but we etc." And those who excluded someone who performed such a marriage from the community are severe oppressors and grave criminals. Muslims must strictly avoid them.

[Arabic]: Allah Almighty said: "And do not incline towards those who do wrong, lest the Fire should touch you." Do not incline towards the oppressors, lest the fire of Hell touches you.

Praying behind them is prohibited because they have become open sinners (fasiq mu'lin) due to this prejudice and extremism. Praying behind an open sinner is 'makruh tahrimi' (prohibitively disliked), and making him an imam is a sin, as explicitly stated in 'Al-Ghunyah' etc., and we have researched this in our treatise 'An-Nahy al-Akid'.

[Arabic Note]: Source of it is Allah's saying: "And on the day they did not keep the Sabbath, they did not come to them." The meaning is honoring the Sabbath. (M, may he be forgiven) This is the root word. From it is Allah's word "The day they did not

keep the Sabbath, they did not come to them." Fish did not come to them on days other than Saturday. And this refers to honoring the day of Saturday.

1 Al-Quran al-Karim 2/208 to 210 2 Tafsir Jalalayn under the verse 'Enter into Islam completely', Asah al-Matabi Karachi p. 31 3 Al-Quran al-Karim 11/113

फतावा रज़विया - जिल्द 11

[अरबी]: "...और अल्लाह की तरफ ही सारे मामले लौटते हैं।" और फरिश्ते और जो हो चुका है, और अल्लाह ही की तरफ सारे काम फिरते हैं।

जलालैन शरीफ में है: [अरबी]: "यह अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों के बारे में नाजिल हुआ जब उन्होंने शनिवार (सब्त) की महिमा की और इस्लाम लाने के बाद ऊंट [के मांस] को नापसंद किया। [तब] 'पूरे के पूरे इस्लाम में दाखिल हो जाओ' नाजिल हुआ, यानी इस्लाम में पूरी तरह से, यानी इसकी तमाम शरीयत में।" (संक्षिप्त) [उर्दू अनुवाद]: जब अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों ने शनिवार का दिन मनाना चाहा और पिछले धर्म के कारण ऊंट के मांस को नापसंद किया, तो यह आयत "पूरे के पूरे इस्लाम में दाखिल हो जाओ" नाजिल हुई। यानी 'सिल्म' में दाखिल हो जाओ, 'सिल्म' से मुराद इस्लाम है, यानी यह कि पूरी इस्लामी शरीयत को अपनाओ। (संक्षिप्त)

यानी जब यहूदी विद्वान इस्लाम से सम्मानित हुए, तो पुरानी आदत के कारण ऊंट के मांस से घृणा की क्योंकि यहूदियों के यहाँ ऊंट हराम था और शनिवार के सम्मान का संकल्प किया क्योंकि यहूदियों में शनिवार महान दिन था। इस पर अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने यह आयत नाजिल फरमाई कि ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ, इसके सभी हुक्म मानो वरना अल्लाह के अजाब के लिए तैयार रहो। और अल्लाह की पनाह। अगर ये लोग न मानें तो मुसलमानों को चाहिए कि उनसे मेल-जोल न करें, खासकर उन मूर्खों से जिन्होंने वे अपवित्र शब्द कहे कि "भले ही यह शरीयत का मसला है लेकिन हम आदि"। और जिन्होंने ऐसे निकाह करने वाले को बिरादरी से बाहर कर दिया, वे सख्त जालिम और गंभीर अपराधी हैं। मुसलमानों को उनसे बचना अनिवार्य है।

[अरबी]: अल्लाह तआला ने फरमाया: "और उन लोगों की तरफ न झुको जिन्होंने जुल्म किया, वरना तुम्हें दोज़ख की आग छुएगी।" जालिमों की तरफ झुकाव न करो कि तुम्हें दोज़ख की आग छुए।

उनके पीछे नमाज मना है क्योंकि वे इस पक्षपात और कट्टरता के कारण खुले गुनहगार (फासिक मुअल्लन) हो गए हैं। खुले गुनहगार के पीछे नमाज मकरूहे तहरीमी (गंभीर रूप से नापसंद) है और उसे इमाम बनाना गुनाह है, जैसा कि 'अल-गुनिया' आदि में स्पष्ट रूप से कहा गया है और हमने अपने शोध प्रबंध 'अन-नह्य अल-अकीद' में इसका शोध किया है।

[अरबी नोट]: इसका स्रोत अल्लाह का यह कथन है: "और जिस दिन वे सब्त नहीं मनाते थे, वे उनके पास नहीं आती थीं।" इसका अर्थ सब्त का सम्मान करना है। (म, उन्हें क्षमा किया जाए) यह मूल शब्द

है, इसी से अल्लाह का कौल है "जिस दिन वे सब्त नहीं मनाते थे, वे उनके पास नहीं आती थीं।" शनिवार के अलावा अन्य दिनों में मछलियाँ उनके पास नहीं आती थीं। और इससे मुराद शनिवार के दिन का सम्मान है।

1 अल-कुरान अल-करीम 2/208 से 210 2 तफ़सीर जलालैन, आयत 'पूरे इस्लाम में दाखिल हो जाओ' के तहत, अस्ह अल-मताबे कराची पृ. 31 3 अल-कुरान अल-करीम 11/113

فتاوٰی رضویہ - جلد یاز دہم

تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۱ اور فرشتے اور ہوچکے ہونے والی ، اور اللہ ہی کی طرف پھرتے ہیں سب کام۔

جلالین شریف میں ہے: نزل فی عبد اللہ بن سلام واصحابہ لما عظموا السبت و کرھوا الابل بعد الاسلام ادخلوا في السلم ای الاسلام کافۃ ای جمیع شرائعہ ۲ (ملخصا) جب عبد اللہ بن سلام اور ان کے ساتھیوں نے ہفتہ کا دن منانا چاہا اور سابقہ دین کے پیش نظر اونٹ کے گوشت کو ناپسند کیا تو آیہ کریمہ "ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً" نازل ہوئی یعنی داخل ہو جاؤ سلم میں، سلم سے مراد اسلام ہے یعنی یہ کہ پوری شریعت اسلامیہ کو اپناؤ۔ (ملخصا) (ت)

یعنی جب علمائے یہود مشرف باسلام ہوئے عادت قدیمہ کے باعث اونٹ کے گوشت سے کراہت کی کہ یہود کے یہاں اونٹ حرام تھا اور تعظیم شنبہ کا عزم کیا کہ یہود میں ہفتہ معظم تھا اس پر حق سبحانہ و تعالی نے یہ آیہ کریمہ نازل فرمائی کہ اے ایمان والو! اسلام میں پورے پورے داخل ہو اس کے سب احکام مانو ورنہ عذاب الہی کے منتظر رہو والعیاذ باللہ تعالٰی۔ اگر یہ لوگ نہ مانیں تو مسلمانوں کو چاہئے کہ ان سے میل جول نہ کریں خصوصاً جن سفہانے وہ ناپاک کلمہ کہا کہ " گویہ مسئلہ شرع کا ہے مگر ہم الخ " اور جنہوں نے ایسے نکاح کرنے والے کو برادری سے خارج کردیا وہ سخت ظالم اور شدید مجرم ہیں مسلمانوں کو ان سے احتراز ضرور ہے۔

قال اللہ تعالٰی: وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۳ - ظالموں کی طرف میل نہ کرو کہ تمہیں چھوئے دوزخ کی آگ۔

ان کے پیچھے نماز ممنوع ہے کہ وہ اس تعصب و تشدد کے باعث فاسق معلن ہوئے اور فاسق معلن کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے اور اسے امام بنانا گناہ، کما نص فی الغنیۃ وغیرہا وحققناہ فی

النہی الاکید (جیسا کہ اس پر غنیہ وغیر ہا میں نص کی ہے اور ہم نے اس کی تحقیق اپنے رسالہ النہی الاکید میں کی ہے۔ت

عہ : مصدر منہ قولہ تعالی ویوم لایسبتون لا تاتیھم والمعنی تعظیم السبت ۱۲ منہ غفر لہ (م) یہ مصدر ہے ، اسی سے ہے اللہ تعالیٰ کا قول "یوم لایسبتون لاتاتیھم" روزِ ہفتہ کے علاوہ دنوں میں مچھلیاں انکے پاس نہ آئیں اور اس سے مراد روزِ ہفتہ کی تعظیم ہے۔ (ت)

۱ القرآن الکریم ۲/ ۲۰۸ تا ۲۱۰ ۲ تفسیر جلالین زیر آیہ ادخلوا فی السلم کافۃ اصح المطابع کراچی ص ۳۱ ۳ القرآن الکریم ۱۱/ ۱۱۳

Fatawa-e-Razvia Volume XI

In this situation, one should strive to the best of their ability to keep parents pleased and to be saved from the opposition of their wishes as well, otherwise, to the extent that outward opposition does not lead to sin, one should reluctantly fulfill their wishes just for their sake.

[Arabic Box Text]: For hurting them is among the gravest of major sins, and their opposition in what we have described of evil and ugliness is not like disobedience (aqooq). And whoever is afflicted with two calamities should choose the lesser of them. Our master Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with them both) was the standard-bearer in the Battle of Siffin with his father (may Allah be pleased with him) without fighting, while knowing that the truth was with the Commander of the Faithful Ali (may Allah ennoble his countenance). He used to excuse this by saying that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) commanded him to obey his father (may Allah be pleased with them).

[Urdu Translation in Box]: To cause grief to parents is a major sin, and opposing them in bad things and wrong matters is not like the disobedience of parents. Whoever is afflicted with two calamities should choose the easier of the two. Hazrat Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with him), on his father's command, was the flag-bearer in the Battle of Siffin and did not want to participate in the war because he knew that Hazrat Ali (may Allah ennoble his noble countenance) was on the right path. He conformed with his father under the excuse of the Prophet's command to obey one's father. (T)

And if, God forbid, the reason for this denial is that they consider this marriage to be actually haram and consider the command of Sharia as void, and consider the matter of the disbelievers to be correct and good, then they are clearly disbelieving apostates. Association with them is strictly forbidden. Now, in this case, their women have left their marriage; sexual intercourse with them would be adultery, children would be illegitimate, prayer behind them is utterly void, and in association with them, obedience to parents is impermissible, opposition and separation from them is mandatory, even if the parents are angry. The Messenger of Allah (may Allah be pleased with him and grant him peace) says:

[Arabic Box Text]: There is no obedience to anyone in disobedience to Allah Almighty. - Narrated by al-Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and al-Nasa'i from the Commander of the Faithful Ali (may Allah ennoble his countenance).

[Urdu Translation in Box]: There is no obedience to anyone in the disobedience of Allah Almighty. (Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and Nasa'i have narrated this from Hazrat Amir al-Mu'minin Ali, may Allah ennoble his countenance. - T)

---

1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, rest of the hadith of Al-Hakim bin Amr al-Ghifari (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr Beirut 5/26. F: Bukhari 8/187, Muslim 2/125, Sunan Abi Dawud 353/, and Sunan al-Nasa'i 2/186. The words in all are: "There is no obedience in disobedience to Allah; obedience is only in what is good." - Nazir Ahmad Saeedi

इस स्थिति में यथासंभव प्रयास करें कि माता-पिता प्रसन्न रहें और उनकी इच्छा के विरुद्ध चलने से भी बचा जा सके, अन्यथा बाहरी विरोध इस सीमा तक कि पाप का कारण न बने, विवश होकर केवल माता-पिता को दिखाने के लिए उसे पूरा करे।

[अरबी बॉक्स]: क्योंकि उन्हें कष्ट पहुँचाना सबसे बड़े पापों में से है, और जैसा कि हमने बुराई और कुरूपता के बारे में बताया है, वैसी बातों में उनका विरोध करना माता-पिता की अवज्ञा (अक़ूक़) जैसा नहीं है। और जो व्यक्ति दो मुसीबतों में फँसा हो, वह उनमें से आसान को चुन ले। हमारे आका अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) अपने पिता के साथ सिफ़्फ़ीन के युद्ध में बिना लड़ाई के झंडाबरदार थे, जबकि वे जानते थे कि सत्य अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) के साथ था। वे इसका यह बहाना देते थे कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें अपने पिता की आज्ञा मानने का आदेश दिया था।

[उर्दू अनुवाद]: माता-पिता को कष्ट देना गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) है, और बुरी बातों और गलत मामलों में उनका विरोध करना माता-पिता की नाफरमानी जैसी बात नहीं है। जो व्यक्ति दो मुसीबतों में फँसा हो, वह दोनों में से आसान को चुने। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने पिता के आदेश पर जंग-ए-सिफ़्फ़ीन में झंडाबरदार थे और युद्ध में भाग नहीं लेना चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि हज़रत अली (करम अल्लाह वजहुल करीम) हक़ पर हैं। उन्होंने हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वसल्लम) की ओर से पिता की आज्ञा पालन के आदेश के बहाने से पिता का साथ दिया। (त)

और यदि, ईश्वर न करे, इस इनकार का कारण यह हो कि वे इस निकाह को वास्तव में हराम मानते हैं और शरीयत के हुक्म को बातिल (अमान्य) मानते हैं, काफ़िरों के मसले को सही और अच्छा समझते हैं, तब तो वे स्पष्ट रूप से काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं, उनसे मेल-जोल पूर्णतः हराम है। अब इस स्थिति में उनकी स्त्रियाँ उनके निकाह से निकल गईं, उनसे शारीरिक संबंध व्यभिचार होगा, संतान नाजायज़ होगी, उनके पीछे नमाज़ पढ़ना पूरी तरह व्यर्थ है, और उनसे मेल-जोल रखने में माता-पिता की आज्ञा मानना अनुचित है, उनका विरोध और उनसे अलगाव अनिवार्य है, भले ही माता-पिता नाराज़ हों। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स]: अल्लाह तआला की नाफरमानी में किसी की आज्ञा मानना जायज़ नहीं है। - इसे बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (करम अल्लाह वजहु) से रिवायत किया है।

[उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला की नाफरमानी में किसी का हुक्म मानना जायज़ नहीं है। (इसे बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है - त)

---

1 मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, हकीम बिन अम्र अल-ग़िफ़ारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शेष हदीस, दारुल फ़िक्र बेरुत 5/26 फ़: बुखारी 8/187, मुस्लिम 2/125, सुनन अबी दाऊद 353/, और सुनन नसाई 2/186, इन सभी में शब्द इस प्रकार हैं: "अल्लाह की अवज्ञा में कोई आज्ञाकारिता नहीं है; आज्ञाकारिता केवल भलाई के कार्यों में है।" - नज़ीर अहमद सईदी

पृष्ठ 436 / 739

اسی صورت میں حتی الوسع کوشش کرے کہ والدین راضی رہیں اور ان کی مرضی کی مخالفت سے بھی نجات ملے ورنہ ظاہری مخالفت اس قدر کہ منجر بہ معصیت نہ ہو مجبورانہ محض والدین کے دکھانے تک بجالائے۔

فان ایذاء ہما من اشد الکبائر ولیست مخالفتہم علی ماوصفنا فی السوء والشناعۃ مثل العقوق ومن ابتلی بلیتین اختار اہونہما وقد کان سیدنا عبد اللہ بن عمر و بن العاص رضی اللہ تعالی عنہما حامل لواء صفین مع ابیہ رضی اللہ تعالٰی عنہ من دون قتال مع علمہ ان الحق مع امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ وکان یعتذر عن ذلک بان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم امرہ بطاعۃ ابیہ رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ والدین کو اذیت دینا گناہ کبیرہ ہے، اور بری باتوں اور غلط امور میں ان کی مخالفت والدین کی نافرمانی جیسی بات نہیں ہے، اور جو شخص دو مصیبتوں میں مبتلا ہو وہ دونوں میں سے آسان کو اختیار کرے، حضرت عبداللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ تعالٰی عنہ اپنے والد کے حکم پر جنگ صفین میں علم بردار تھے اور جنگ میں شرکت نہ چاہتے تھے کیونکہ وہ جانتے تھے کہ اس جنگ میں حضرت علی کرم اللہ وجہہ الکریم حق پر ہیں انھوں نے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی طرف سے والد کی اطاعت کی پابندی کے حکم کے عذر سے والد کی موافقت کی۔(ت)

اور اگر معاذ اللہ اس انکار کی وجہ یہ ہو کہ اس نکاح کو واقع میں حرام جانتے اور حکم شرع کو باطل مانتے مسئلہ کفار کو صحیح و حسن سمجھتے ہیں جب تو صریح کفار مرتدین ہیں ان سے میل جول قطعی حرام، اب اس صورت میں ان کی عورتیں ان کے نکاح سے نکل گئیں، ان سے ہمبستری زنا ہوگی، اولاد ولد الزنا ہوگی، ان کے پیچھے نماز باطل محض، ان سے میل جول میں

والدین کی اطاعت ناجائز، ان سے مخالفت و جدائی لازم، اگر چہ ماں باپ ناراض ہوں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

لاطاعۃ لاحد فی معصیۃ اللہ تعالیٰ - رواہ البخاری ومسلم وابوداؤد والنسائی امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ۔ اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں کسی کی اطاعت نہیں۔(اس کو بخاری، مسلم، ابوداؤد اور نسائی نے حضرت امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ سے روایت کیا-ت)

---

1 مسند امام احمد بن حنبل بقیہ حدیث الحاکم بن عمر و الغفاری رضی اللہ عنہ دارالفکر بیروت ۲۶/۵ ف: بخاری ۱۸۷/۸، مسلم ۱۲۵/۲، سنن ابی داؤد ۳۵۳/اور سنن النسائی ۱۸۶/۲ سب کے الفاظ یوں ہیں: لاطاعۃ فی معصیۃ اللہ انما الطاعۃ فی المعروف۔ نذیر احمد سعیدی

Fatawa Rizvia Volume 11

In 'Ghamz al-Uyun' it is stated: "Our masters have agreed that anyone who regards the ways of the disbelievers as good becomes a disbelievers. They even said that a person who considers it good to adopt the custom of the Magians (fire-worshippers) by remaining silent while eating, or considers it good to adopt their practice of not sharing a bed with one's wife during menstruation because it's their custom, then he is a disbeliever." (T)

And this much command is also for the first case: that whoever uttered those words of denial should cautiously renew Islam and renew their marriage. In 'Jami' al-Fusulain' it is written: "A person said to his opponent, 'The Sharia ruling is such,' and the opponent replied, 'I follow the prevailing custom, not the Sharia.' Some have said he became a disbeliever and some said he did not." (T)

In 'Durr-e-Mukhtar' it is stated: "In the commentary on al-Wahbaniyya by Sharanbalali, it is stated that what is unanimously considered disbelief invalidates deeds and marriage, and any children born in that state are illegitimate. In matters where there is disagreement whether it constitutes disbelief, the person shall be ordered to repent, seek forgiveness, and renew their marriage. And Allah, Glory be to Him, the Exalted, knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most perfect and complete." (T)

Problem 72: From Bengal province, Patna district, Bangashi post office, village Mukhtargati, sent by Muslehuddin Sahib, 12th Shawwal-ul-Mukarram 1322 AH. What do the scholars of the faith and the muftis of the firm Sharia say on this issue: Is marriage with a real nephew's (sister's son) daughter permissible?

1. Ghamz al-Uyun with al-Ashbah wa an-Naza'ir, Kitab as-Siyar wa ar-Riddah, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/295.
2. Jami' al-Fusulain, Chapter on the Execution of Wills, Islami Kutub Khana Karachi, 2/310.
3. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Jihad, Chapter on the Apostate, Mujtabai Delhi, 359/1.

फ़तावा रिज़विया जिल्द ११

'ग़म्ज़ुल उयून' में है: "हमारे मशाइख़ का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि कुफ़्फ़ार के शिआर (तौर-तरीकों) को पसंद करने वाला काफ़िर है। यहाँ तक कि उन्होंने फ़रमाया कि जो शख़्स मजूसियों (अग्नि-पूजकों) के शिआर, यानी खाना खाते समय बातचीत बंद रखने को अच्छा कहे, या मजूसियों की वजह से अपनी बीवी के साथ माहवारी (हैज़) की हालत में एक बिस्तर पर लेटने के तर्क(त्याग) को अच्छा कहे, तो वह काफ़िर है।" (त)

और इतना हुक्म तो पहली सूरत में भी है कि जिसने वह इन्कार के अल्फाज़ कहे, वह एहतियातन तज्दीद-ए-इस्लाम और तज्दीद-ए-निकाह करे। 'जामे-उल-फ़ुसुलैन' में है: "जिसने अपने प्रतिद्वंद्वी से कहा कि शरीयत का हुक्म यूँ है, और प्रतिद्वंद्वी कहे कि मैं प्रचलित रस्म पर अमल कर रहा हूँ शरीयत पर नहीं, तो बाज़ (कुछ) ने फ़रमाया कि वह काफ़िर हो गया और बाज़ ने फ़रमाया कि नहीं हुआ।" (त)

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: "शराह वहबानिया शरनबलाली में है कि मुत्तफ़क़ अलैह (सर्वसम्मत) कुफ़्र से नेक अमल और निकाह बातिल हो जाते हैं, और हालत-ए-कुफ़्र की औलाद वल्द-उज़-ज़िना (अवैध) होगी। और जिस बात के कुफ़्र होने में इख्तिलाफ़ (मतभेद) हो, उसमें तौबा-ओ-इस्तग़फ़ार और तज्दीद-ए-निकाह का हुक्म दिया जाएगा। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म कामिल और अकमल है।" (त)

मसला ७२: अज़ मुल्क बंगाल, ज़िला पटना, डाकख़ाना बंगाशी, मौज़ा मुख़्तार गाती, मुर्सला मुसलेह-उद्दीन साहब, १२ शव्वाल-उल-मुकर्रम १३२२ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस मसले में कि हक़ीक़ी भांजे की बेटी से निकाह जायज़ है?

1. ग़म्ज़ुल उयून मअ अल-अशबाह व अन-नज़ाइर, किताबुस सियर वर-रिद्दा, इदारतुल क़ुरआन कराची, १/२९५
2. जामे-उल-फ़ुसुलैन, फ़स्ल फ़ी तन्फ़ीज़-उल-वसीयत, इस्लामी कुतुब ख़ाना कराची, २/३१०
3. दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल जिहाद, बाबुल मुर्तद, मुज्तबाई दिल्ली, ३५९/१

पेज ४३७ ऑफ़ ७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

غمز العیون میں ہے: اتفق مشائخنا من رأی امر الکفار حسناً فقد کفر حتی قالوا في رجل ترك الکلام عند اکل الطعام حسن من المجوس او ترك المضاجعة عندهم حال الحیض حسن فهو کافر۔ 1 ہمارے مشائخ کا اس بات پر اتفاق ہے کہ کفار کے شعائر کو پسند کرنے والا کافر ہے، حتی کہ انہوں نے فرمایا کہ جو شخص مجوسیوں کے شعار، کھانا کھاتے وقت بات چیت کے ترک، کو اچھا کہے یا حالت حیض میں بیوی کے ساتھ ایک بستر میں لیٹنے کے ترک، کو مجوسیوں کی وجہ سے اچھا کہے وہ کافر ہے (ت)

اور اتنا حکم تو پہلی صورت میں بھی ہے کہ جس نے وہ الفاظ انکار کہے احتیاطاً تجدید اسلام و تجدید نکاح کرے، جامع الفصولین میں ہے: قال لخصمه حکم الشرع کذا فقال خصمه من برسم کار می کنم بشرع نے قیل کفر وقیل لا۔ 2 جس نے اپنے مقابل کو کہا کہ حکم شرع یوں ہے اور مقابل کہے میں مروجہ رسم پر عمل پیرا ہوں شرع پر نہیں، تو بعض نے فرمایا وہ کافر ہو گیا اور بعض نے فرمایا نہ ہوا (ت)

درمختار میں ہے: في شرح الوهبانیة للشرنبلالي ما یکون کفراً اتفاقاً یبطل العمل والنکاح واولاده اولاد زنا وما فیه خلاف یومر بالاستغفار والتوبه وتجدید النکاح 3 ۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمه جل مجده اتم واحکم۔ شرح وہبانیہ شرنبلالی میں ہے کہ متفق علیہ کفر سے عمل اور نکاح باطل ہو جاتا ہے حالت کفر کی اولاد اولاد زنا ہو گی، اور جس کے کفر ہونے میں اختلاف ہو اس میں توبہ و استغفار اور تجدید نکاح کا حکم دیا جائے گا _ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم اور اس جل مجدہ کا علم اتم واکمل ہے۔ (ت)

مسئلہ ۷۲: از ملک بنگال ضلع پٹنہ ڈاکخانہ بنگاشی موضع مختار گاتی مرسلہ مصلح الدین صاحب ۱۲ شوال المکرم ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ حقیقی بھانجا کی بیٹی سے نکاح جائز

1 غمز العیون مع الاشباہ والنظائر کتاب السیر والردۃ ادارۃ القران کراچی ۲۹۵/۱ 2 جامع الفصولین فصل فی تنفیذ الوصیۃ اسلامی کتب خانہ کراچی ۳۱۰/۲ 3 درمختار کتاب الجہاد باب المرتد مجتبائی دہلی ۳۵۹/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

...is it or not? Provide with evidence, state the answer and be rewarded.

Answer: It is absolutely prohibited; she is his own daughter.

Allah Almighty said: "and the daughters of the sister" (1). And they include the daughters of her womb, the daughters of her son, and the daughters of her daughter, all the way down. And Allah Almighty knows best. Allah Almighty said: "and nieces," while this word includes the daughters of nieces, and granddaughters (paternal and maternal) down to the lower generations. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 228: What do the scholars of religion and protectors of the firm Shariah say in this matter: if a man from the path of Ahl-us-Sunnah wa al-Jama'ah and a woman from the Shia path, and both man and woman have read the formula of marriage in the manner prevalent among Ahl-us-Sunnah wa al-Jama'ah, and as yet correct seclusion (Khalwat-e-Sahiha) or even the customary practice of departure (Rukhsati) prevalent in India hasn't taken place, and now there is no mutual consent, what is the ruling? Is the marriage valid or not? State the answer and be rewarded. What do the scholars of religion and protectors of the firm Shariah say in this matter: that the man is from Ahl-us-Sunnah wa al-Jama'ah and the woman is from the Shia; the marriage of both took place according to the method of Ahl-us-Sunnah wa al-Jama'ah, and as yet correct seclusion or even departure hasn't happened, as is the custom in India, while there is currently no consent either, then is such a marriage valid or not? Explain and be rewarded. (T)

Answer: If that woman is free from heretical beliefs with a sound heart, the marriage is valid, and after marriage, the lack of consent has no weight, and she should be legally handed over to the husband. If she holds heretical beliefs in the manner of the common Rafidis of the time, the marriage with her is absolutely void. It is not permissible for a Sunni, nor a Rafidi, nor a Jew, nor a Magian, nor anyone else, because one who is declared an infidel among the 'people of desire' is like an apostate in ruling, and an apostate woman cannot be married by a Muslim, nor an original infidel, nor an apostate. If that woman has herself repented from her heart of heretical beliefs and has become free of them, then the marriage is valid, and after the marriage, lack of consent has no weight. Such a woman will be legally handed over to the husband. And if that woman holds heretical beliefs like the current common Rafidis, then marriage with her is absolutely void. She is not lawful for a

Sunni, Rafidi, Magian, or anyone, because those from among the 'people of desire' who have been declared infidels are like apostates.

(1) Holy Quran 4:23. Page 438 of 739.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

...है या नहीं? सप्रमाण बताएं उत्तर दें और पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर: यह स्पष्ट रूप से हराम (वर्जित) है, वह उसकी अपनी ही बेटी है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "और बहन की बेटियाँ" (1)। इनमें उसकी कोख से पैदा होने वाली बेटियाँ, उसके बेटे की बेटियाँ और उसकी बेटी की बेटियाँ शामिल हैं, चाहे वे कितनी भी नीचे की पीढ़ी में हों। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और भांजियाँ," जबकि यह शब्द भांजी की बेटियों, पोतियों और नवासियों को नीचे तक शामिल करता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 228: धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के समर्थक इस मामले में क्या कहते हैं कि यदि सुन्नत व जमाअत के मार्ग का एक पुरुष और शिया मार्ग की एक महिला हो, और दोनों ने सुन्नत व जमाअत के प्रचलित तरीके से निकाह पढ़ा हो, और अभी तक न तो 'खलवत-ए-सहीहा' (एकांतवास) हुआ हो और न ही भारत में प्रचलित विदाई की रस्म हुई हो, और अब आपसी सहमति भी न हो, तो इस बारे में क्या हुक्म है? क्या निकाह वैध है या नहीं? उत्तर दें और पुण्य के पात्र बनें। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के समर्थक इस मामले में क्या कहते हैं कि पुरुष अहले सुन्नत व जमाअत से हो और महिला शिया हो, उन दोनों का निकाह अहले सुन्नत व जमाअत के तरीके पर हुआ, और अभी खलवत-ए-सहीहा या विदाई भी नहीं हुई, जैसा कि भारत का तरीका है, जबकि अभी सहमति भी न हो, तो क्या ऐसा निकाह सही है या नहीं? वर्णन करें और पुण्य पायें। (त)

उत्तर: यदि वह स्त्री अपने हृदय की शुद्धि के साथ कुफ्र वाले अकीदों (विश्वासों) से मुक्त है, तो निकाह सही हो गया और निकाह के बाद असहमति का कोई महत्व नहीं है और उसे कानूनी तौर पर पति को सौंप दिया जाएगा। यदि वह वर्तमान समय के आम राफ़ज़ियों (शियाओं) की तरह कुफ्र वाले अकीदे रखती है, तो उसके साथ निकाह पूरी तरह बातिल (अमान्य) है। न किसी सुन्नी के लिए वह वैध है, न राफ़ज़ी, न यहूदी और न ही मजूसी (पारसी) किसी के लिए भी, क्योंकि 'अहले हवा' (इच्छाओं के अनुयायी) में से जिन्हें काफ़िर घोषित किया गया है, वे हुक्म में मुर्तद (धर्मत्यागी) की तरह हैं, और मुर्तद महिला से न तो कोई मुसलमान निकाह कर सकता है, न मूल काफ़िर और न ही कोई मुर्तद। यदि उस महिला ने स्वयं हृदय से कुफ्र वाले अकीदों से तौबा कर ली है और उनसे मुक्त हो चुकी है, तो निकाह सही है, और निकाह के बाद असहमति का कोई विचार नहीं किया जाएगा, ऐसी महिला

को कानूनी तौर पर पति के सुपुर्द कर दिया जाएगा। और यदि वह महिला वर्तमान समय के आम राफ़ज़ियों जैसे कुफ्र वाले अकीदे रखती हो, तो उससे निकाह बिल्कुल अमान्य है। सुन्नी, राफ़ज़ी और मजूसी किसी के लिए भी वह हलाल नहीं है, क्योंकि 'अहले हवा' में से जिन्हें काफ़िर करार दिया गया हो, वे मुर्तद के समान हैं।

(1) अल-कुरानुल करीम 4/23। पृष्ठ 438 का 739।

... ہے یا نہیں؟ با دلیل عنایت ہو، بینوا توجروا الجواب: حرام قطعی ہے وہ خود اسی کی بیٹی ہے، قال اللہ تعالٰی ﴿وَبَنٰتُ الْاُخْتِ﴾ ۱ وھن یشملن بناتھا من بطنھا و من ابنھا و من بنتھا وان سفلن۔ واللہ تعالٰی اعلم اللہ تعالٰی نے فرمایا: اور بھانجیاں جبکہ یہ لفظ بھانجی کی بیٹیوں، پوتیوں اور نواسیوں کو نیچے تک شامل ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۲۸: چہ می فرمایند علمائے دین و حامی شرع متین دریں مسئلہ کہ اگر مردے از طریق اہل سنت و جماعت وزنے از طریق اہل شیعہ و باہم مرد وزن صیغہ نکاح مروجہ بطریق اہل سنت و جماعت خواندہ باشد و ہنوز خلوت صحیحہ بلکہ رسم رخصت مروجہ ہندوستان نہ شدہ باشد و حالا باہم رضامندی نہ، چہ حکم دارد، آیا نکاح صحیح ست یا نہ؟ بینوا توجروا علمائے دین و حامی شرع متین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ مرد اہل سنت و جماعت ہو اور عورت اہل شیعہ میں سے، ان دونوں کا نکاح اہل سنت و جماعت کے طریقہ پر ہوا، اور ابھی خلوت صحیحہ بلکہ رخصتی نہ بھی ہوئی، جیسا کہ ہندوستان کا طریقہ ہے، جبکہ ابھی رضامندی بھی نہ ہوں، تو ایسا نکاح صحیح ہے یا نہیں؟ بیان کرو اجر پاؤ۔ (ت)

الجواب: آں زن اگر بسلامت قلب خود از عقائد کفرہ بری ست نکاح صحیح شد وبعد نکاح عدم رضائے اعتبارے نے و حکما سپرد شوہر کردہ شود اگر در رنگ عامہ روافض زمانہ عقیدہ کفرہ دارد، نکاح با و باطل محض ست نہ سنی را رسد نہ رافضی نہ یہودی نہ مجوسی ہیچ کس را لان المکفر من اھل الھوی کالمرتد حکمہ والمرتدۃ لا ینکحھا مسلم ولا کافر اصلی ولا مرتد اگر وہ عورت خود دل سے عقائد کفریہ سے توبہ کر چکی ہے اور بری ہو چکی ہے تو نکاح صحیح ہے، اور نکاح کے بعد عدم رضامندی کا کوئی اعتبار نہیں، ایسی عورت کو حکماً شوہر کے سپرد کیا جائے

گا، اور اگر وہ عورت موجودہ عام روافض جیسے کفریہ عقیدے رکھتی ہو تو اس سے نکاح باطل محض ہے، سنی رافضی اور مجوسی کسی کے لیے بھی وہ حلال نہیں کیونکہ اہلِ ہوا میں سے جن کو کافر قرار دیا گیا ہو وہ مرتد کی طرح ہیں القرآن الکریم ۲۳/۴ | Page 438 of 739

...as they have explicitly stated. Yes, if at the time of marriage she was free from disbelief (Kufr) until the marriage was validly contracted, and now she commits it to get out of the bond of marriage, then this trick and corrupt scheme will be thrown back in her face. The ruling for the continuation of the marriage and the obligation of submitting herself [to the husband] will be given, as is the preferred view now for fatwa according to what we have established in our Fatawa. And Allah knows best. And they are subject to the ruling regarding apostates. Marriage to an apostate woman is not permissible for any Muslim, original disbeliever, or a similar apostate, as the eminent jurists have clarified. Yes, if at the time of marriage she was free from disbelief, the marriage was valid. But if after that she expresses blasphemous beliefs now as a trick and deceit to gain freedom from marriage, then this trick, deceit, and fraud should be thrown in her face. The ruling of marriage will be maintained and it is necessary to hand her over to the husband, as is the preferred view in fatwas nowadays, which we have researched in our Fatawa. And Allah knows best. (T)

Question 229 to 231: From Maulvi Bashir Ahmed Sahib Aligarhi, Head Teacher at Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly, 19 Dhu al-Hijjah 1322 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Is marriage with a step-maternal aunt (step-khala) permissible or not? (2) If a person has intimacy and sexual intercourse with his mother-in-law, does the wife get out of his marriage contract, and is there any iddah (waiting period) for her or not? Please explain, and may you be rewarded. (3) Is it permissible to bring two such women into marriage at the same time who, if one were assumed to be a man and the other a woman, would fall into the category of prohibited relations (Mahram)? Please explain, and may you be rewarded.

The Answer: (1) A maternal aunt (khala), whether real or step, is absolutely prohibited like a mother. Allah Almighty says: "and your maternal aunts" (Surah An-Nisa 4:23). It is mentioned in Durr-ul-Mukhtar: "whether full sisters or others"[1] (step etc.). Yes, the father's wedded wife who is not one's own mother, her real sister is permissible provided there is no other Shariah prohibition. Allah Almighty says: "And lawful for you are those beyond these [prohibitions]"[2] (Surah An-Nisa 4:24). However, she is not actually his maternal aunt (khala) because the woman whose sister she is, is not his mother. Metaphorically calling her so, or claiming a metaphor without context, is rejected and unheard of. Even if, hypothetically, a step-mother's sister...

[1] Durr-ul-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Chapter on Prohibited Relations, Mujtabai Press, Delhi, 1/187. [2] The Holy Quran, 4/24.

...जैसा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है। हाँ, यदि निकाह के समय वह कुफ़्र (अविश्वास) से मुक्त थी, यहाँ तक कि निकाह सही हो गया, और अब वह निकाह के बंधन से बाहर आने के लिए इसे करती है, तो यह चाल और भ्रष्ट योजना उसके चेहरे पर मारी जाएगी। निकाह के बने रहने और स्वयं को (पति के) हवाले करने की अनिवार्यता का हुक्म दिया जाएगा, जैसा कि अब फतवे के लिए पसंदीदा विचार है, जैसा कि हमने अपने फतावा में प्रमाणित किया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। और वे धर्मत्यागी (मुरतद) वाला हुक्म रखते हैं, और एक धर्मत्यागी महिला से किसी भी मुसलमान, मूल काफिर या उसी जैसे धर्मत्यागी के लिए निकाह जायज़ नहीं है, जैसा कि फ़ुक़हा-ए-किराम (विद्वानों) ने इस पर स्पष्ट किया है। हाँ, अगर निकाह के समय वह कुफ़्र से मुक्त थी तो निकाह सही हुआ, लेकिन उसके बाद अब वह कुफ़्र वाले अकीदों (विश्वासों) का इज़हार बतौर हीला (बहाना) और मकर (धोखा) इसलिए करती है ताकि निकाह से छुटकारा पा सके, तो इस हीले, मकर और फरेब को उसके मुँह पर दे मारा जाए और निकाह का हुक्म बाकी रखा जाए और उसे शौहर (पति) के सुपुर्द करना ज़रूरी है, जैसा कि आजकल फतवे में मुख्तार (पसंदीदा) है, जिसकी तहकीक (शोध) हमने अपने फतावा में कर दी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 229 से 231: प्रेषक जनाब मौलवी बशीर अहमद साहब अलीगढ़ी, प्रथम शिक्षक मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम बरेली, 19 ज़िल-हिज्जा 1322 हिजरी। धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं: (1) सौतेली खाला (मौसी) से निकाह जायज़ है या नहीं? (2) यदि कोई व्यक्ति अपनी सास से नज़दीकी और संभोग करे, तो क्या उसकी पत्नी उसके निकाह से बाहर हो जाती है, और क्या उसकी कोई इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) है या नहीं? बयान फरमाएं, आपको अज्र (पुण्य) मिले। (3) ऐसी दो औरतों को एक ही समय में निकाह में लाना कि यदि उनमें से एक को पुरुष और दूसरी को स्त्री मान लिया जाए तो वे 'महरम' (निषिद्ध संबंधों) की श्रेणी में आ जाएं, तो क्या यह सही है या नहीं? बयान फरमाएं, आपको अज्र मिले।

अल-जवाब (उत्तर): (1) खाला सगी हो या सौतेली, माँ की तरह कतई (पूर्णत:) हराम है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और तुम्हारी खालाएं" (सूरह अन-निसा 4:23)। दुर्र-ए-मुख्तार में है: "सगी बहनें या अन्य"[1] (सौतेली आदि)। हाँ, पिता की विवाहित पत्नी जो उसकी अपनी माँ नहीं है, उसकी सगी बहन हलाल है जब तक कि कोई अन्य शरीअत की रोक न हो। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और तुम्हारे लिए इन महरमात (निषिद्धों) के अलावा हलाल की गई हैं"[2] (सूरह अन-निसा 4:24)। लेकिन

वह उसकी खाला नहीं है क्योंकि जिसकी वह बहन है, वह उसकी माँ नहीं है। उसे मज़ाज़ी (लाक्षणिक) तौर पर कहना, और बिना किसी संदर्भ के लाक्षणिक होने का दावा करना अस्वीकार्य और अनसुना है। और गलत परिकल्पना के तौर पर यदि सौतेली माँ की बहन...

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुन निकाह, हराम रिश्तों का अध्याय, मतब-ए-मुज्तबाई दिल्ली, 1/187. [2] अल-कुरआन अल-करीम, 4/24.

مثلها كما نصوا عليه آرے اگر وقت نکاح از کفر بری بود تآ نکہ نکاح صحیح شدہ و حالا ارتکاب او کند تا از حبالہ نکاح بدر آید این حیلت و مکیدہ فاسدہ اش ہم بروئے زن زنند و حکم ببقائے نکاح ووجوب تسلیم نفس کنند كما هو المختار الان للفتوى على ما حققناه في فتاؤنا واللہ تعالٰی اعلم۔ اور مرتد والا حکم رکھتے ہیں اور مرتدہ سے کسی مسلمان، اصلی کافر یا اس جیسے مرتد کو نکاح جائز نہیں، جیسا کہ فقہاء کرام نے اس پر تصریح کی ہے، ہاں اگر نکاح کے وقت کفر سے بری تھی تو نکاح صحیح ہوا مگر اس کے بعد اب وہ عقائد کفریہ کا اظہار بطور حیلہ و مکر اس لئے کرتی تاکہ نکاح سے خلاصی حاصل کرے تو اس حیلہ و مکر و فریب کو اس کے منہ پر دے مارا جائے اور نکاح کا حکم باقی رکھا جائے اور اس کو خاوند کے سپرد کرنا ضروری ہے جیسا کہ آج کل فتوٰی میں مختار ہے جس کی تحقیق ہم نے اپنے فتاوٰی میں کر دی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۲۹ تا ۲۳۱: مسئولہ جناب مولوی بشیر احمد صاحب علی گڑھی مدرس اول مدرسہ منظر اسلام بریلی ۱۹ ذی الحجہ ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں: (۱) سوتیلی خالہ سے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ (۲) کوئی شخص اگر ساس سے آشنائی اور صحبت کرے تو عورت اس کے نکاح سے باہر ہو جاتی ہے اور اس کی عدت ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (۳) ایسی دو عورتوں کا ایک وقت میں نکاح میں لانا کہ اگر ایک کو مرد اور ایک کو عورت قرار دیا جائے تو صورت محرمات میں آجائیں تو درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) خالہ سگی ہو یا سوتیلی، مثل ماں کے حرام قطعی ہے، قال اللہ تعالٰی: "وَخَٰلَٰتُكُمْ" (اور تمہاری خالائیں ۔ت) در مختار میں ہے: الاشقاء وغیرہن 1 (سوتیلی وغیرہ ۔ت) ہاں منکوحہ پدر کہ اس کی ماں نہیں تو اس کی سگی بہن بھی حلال ہے جبکہ کوئی مانع شرعی نہ ہو، قال تعالٰی:

"وَاُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَاءَ ذٰلِکُمْ" 2 (تمھارے لیے ان محرمات کے ماسوا حلال کی گئی ہیں۔ ت) مگر وہ اس کی خالہ نہیں کہ جس کی بہن ہے وہ اس کی ماں نہیں ہے مجازاً اور ادعائے مجاز بے قرینہ مدفوع ونا مسموع۔ اور بفرضِ غلط اگر سوتیلی ماں کی بہن،

1 درمختار کتاب النکاح باب فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۷ 2 القرآن الکریم ۴/ ۲۴

Fatawa Razawiya Volume 11

...even if she is a step-aunt, the mother's step-sister is certainly a step-aunt; in fact, she is the one most commonly and clearly understood as such. Thus, the twin accusations of some non-conformist leaders—of declaring the forbidden as permissible and misleading the common people—cannot be refuted. And Allah Almighty knows best. (2) Adultery with a sister-in-law (wife's sister) does not make the wife forbidden (haram). Touching a mother-in-law with lust makes the wife forbidden forever, such that she can never become permissible for him again. However, the marriage doesn't break automatically; separation (matarakah) is necessary. For example, he should say to the wife, 'I have left you' or 'abandoned you.' After separation, the waiting period (Iddah) will be mandatory if he had already consummated the marriage or had a valid seclusion (khalwat) with her. And Allah Almighty knows best. (3) Two women of whom if either is assumed to be male, the other would be permanently forbidden (haram) to him, cannot be gathered in one person's marriage, whether at the same time or at different times. For example, mother and daughter; if after assuming one to be male, they would be mother-son or father-daughter. But if assuming one to be male makes the other permanently forbidden to him, while assuming the second to be male doesn't make the first one forbidden to him, then such two women can be gathered in marriage. For example, a mother-in-law and a daughter-in-law: if the mother-in-law were a man, they would be father-in-law and daughter-in-law; a daughter-in-law is always forbidden to the father-in-law. But if the daughter-in-law were a man, there would be no relationship with the mother-in-law, and she would be permissible for him. And Allah Almighty knows best.

Problem 232 to 233: From Tehsil Sitarganj, Post Office Main, District Nainital. Sent by Ilahi Bakhsh Sahib, artisan. Guide of the religion, stable Sharia, Honorable Maulana Maulvi Ahmed Raza Khan Sahib (may his glory endure). After respectful greetings, the request is that your personality, a collection of perfections, is a source of pride for us sinners. In every difficult problem, a solution from you allows us to perform a meritorious act and remain bound to good deeds. (1) A widowed woman gave her minor daughter in marriage to a boy. After a short period, that minor girl died. After a short time, that woman, who was previously a widow, has now married her son-in-law, and there is now a child from this marriage. Is this marriage valid or forbidden (haram)? (2) A person married a widowed woman. That widowed woman had a son from her first husband who came along when the woman remarried. That boy grew

up and died, and his mother also died. Now, the wife of that young man is a widow. Now, the father of that boy—meaning the step-father—wants to marry his step-son's widowed wife, i.e., his step-daughter-in-law, i.e., the widow of his step-son. He has also committed an unlawful act (haram), and for this reason, that widowed daughter-in-law is pregnant. Her pregnancy is about four months along, and about the same amount of time has passed since her husband died. It was also learned that after the death of his step-son, that person...

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...भले ही वह सौतेली खाला (मौसी) हो, माँ की सौतेली बहन निश्चित रूप से सौतेली खाला है; वास्तव में, वह सामान्य रूप से और स्पष्ट रूप से वही समझी जाती है। अतः कुछ ग़ैर-मुक़ल्लिद (गैर-अनुयायी) नेताओं पर हराम को हलाल करने और आम लोगों को गुमराह करने के दोनों आरोप खारिज नहीं किए जा सकते। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (2) साली से ज़िना करने से पत्नी हराम नहीं होती। सास को कामुकता (शहवत) के साथ छूने मात्र से पत्नी हमेशा के लिए हराम हो जाती है, इस तरह कि वह किसी भी तरह उसके लिए हलाल नहीं हो सकती। लेकिन निकाह खुद-ब-खुद नहीं टूटता बल्कि मुतारका (विच्छेद) ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर, उसे पत्नी से कहना चाहिए, 'मैंने तुझे छोड़ दिया' या 'त्याग दिया'। मुतारका के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) वाजिब होगी यदि वह औरत के साथ एकांत (खलवत) कर चुका हो। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (3) दो औरतें जिनमें से अगर किसी एक को पुरुष मान लिया जाए तो दूसरी उस पर हमेशा के लिए हराम हो जाए, उन्हें एक व्यक्ति के निकाह में इकट्ठा नहीं किया जा सकता, चाहे एक ही समय में हो या अलग-अलग समय में। जैसे माँ और बेटी; कि फर्ज़ करने के बाद वे माँ-बेटा या बाप-बेटी होंगे। लेकिन अगर एक को पुरुष फर्ज़ करने से दूसरी उस पर स्थायी रूप से हराम हो, लेकिन दूसरी को पुरुष ठहराने से पहली उस पर हराम न हो, तो ऐसी दो औरतों को निकाह में इकट्ठा किया जा सकता है। जैसे सास और बहू: अगर सास पुरुष होती तो वे ससुर और बहू होते; बहू ससुर पर हमेशा हराम है। और अगर बहू पुरुष होती तो अब सास से कोई रिश्ता नहीं होता, वह उसके लिए हलाल होती। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 232 से 233 तक: तहसील सितारगंज, मुख्य डाकघर, जिला नैनीताल से प्रेषक: इलाही बख्श साहिब, कारीगर। दीन के मार्गदर्शक, सुदृढ़ शरिया, जनाब मौलाना मौलवी अहमद रज़ा खाँ साहिब (उनका वैभव बना रहे)। सम्मानपूर्वक अभिवादन के बाद, प्रार्थना है कि आपका व्यक्तित्व, जो पूर्णताओं का संगम है, हम गुनाहगारों के लिए गर्व का कारण है। हर कठिन समस्या में आपसे समाधान प्राप्त करना सवाब का कार्य है और हमें नेक कामों का पाबंद बनाता है। (1) एक विधवा औरत ने अपनी नाबालिग लड़की का निकाह एक लड़के से कर दिया। कुछ समय बाद वह नाबालिग लड़की मर गई। कुछ समय बाद उस औरत ने, जो पहले से विधवा थी, अब अपने दामाद से निकाह कर लिया है और इस निकाह से अब एक बच्चा भी है। क्या यह निकाह सही है या हराम? (2) एक व्यक्ति ने एक विधवा औरत से निकाह कर लिया। उस विधवा औरत का उसके पहले पति से एक

लड़का था जो औरत के दूसरे निकाह के समय साथ आया था। वह लड़का जवान होकर मर गया और उसकी माँ भी मर गई। अब उस जवान लड़के की पत्नी विधवा है। अब उस लड़के का पिता यानी सौतेला पिता, अपने सौतेले लड़के की विधवा पत्नी को, यानी अपनी सौतेली बहू को, यानी सौतेले बेटे की विधवा पत्नी को निकाह में लाना चाहता है। उसने हराम (अवैध कृत्य) भी किया है और इसी वजह से वह विधवा बहू गर्भवती है। उसका गर्भ लगभग चार महीने का है और उसके पति को मरे हुए भी लगभग इतना ही समय बीता है। यह भी ज्ञात हुआ कि अपने सौतेले बेटे की मृत्यु के बाद वह व्यक्ति अपनी...

بھی سوتیلی خالہ ہو تو ماں کی سوتیلی بہن یقیناً سوتیلی خالہ ہے بلکہ وہی اطلاقاً اکثر اور فہماً اظہر تو بعض عمائد غیر مقلدین سے تحلیل حرام و تضلیل عوام کے دونوں الزام مدفوع نہیں ہو سکتے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) سالی سے زنا عورت کو حرام نہیں کرتا، ساس کو بشہوت ہاتھ لگانے ہی سے عورت ہمیشہ کو حرام ہو جاتی ہے کہ کسی طرح اس کے لیے حلال نہیں ہو سکتی مگر نکاح نہیں جاتا بلکہ متارکہ ضرور ہے مثلاً عورت سے کہہ دے میں نے تجھے چھوڑا یا ترک کر دیا، متارکہ کے بعد عدت واجب ہوگی جبکہ عورت سے خلوت کر چکا ہو واللہ تعالیٰ اعلم (۳) دو عورتیں کہ ان میں جس کو مرد فرض کریں دوسری اس پر ہمیشہ حرام ہو ایک شخص کے نکاح میں جمع نہیں ہو سکتیں خواہ ایک وقت میں خواہ مختلف اوقات میں۔ جیسے ماں بیٹی کہ بعد فرض ماں بیٹا یا باپ بیٹی ہوں گی اور اگر ایک کو مرد فرض کرنے سے دوسری اس پر حرام ابدی ہو مگر دوسری کو مرد ٹھہرانے سے وہ پہلی حرام نہ ہو تو ایسی دو عورتوں کو نکاح میں جمع کر سکتے ہیں جیسے ساس بہو کہ ساس مرد ہو تو وہ خسر اور بہو ہیں، بہو خسر پر ہمیشہ حرام ہے اور اگر بہو مرد ہو تو اب ساس سے کوئی رشتہ نہیں وہ اس کے لیے حلال ہو گی واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۳۲ تا ۲۳۳: از تحصیل ستار گنج ڈاک خانہ خاص ضلع نینی تال مرسلہ الہی بخش صاحب کاریگر ہادی دین شرع متین جناب مولانا مولوی احمد رضا خاں صاحب دام مجدہم، بعد سلام دست بستہ کے التماس ہے آپ کی ذات مجمع کمالات ہم عاصیوں کے لیے باعث افتخار ہے اور ہر مشکل مسئلہ میں آپ سے عقدہ کشائی ہو کر کار ثواب میں داخل ہو کر کار نیک کے پابند ہو سکتے ہیں۔ (۱) ایک عورت بیوہ نے اپنی لڑکی نابالغ کو لڑکے کی زوجیت میں دیا، بعد تھوڑی مدت میں وہ لڑکی نابالغ مر گئی، بعد تھوڑی مدت کے اس عورت نے جو بیوہ پہلے سے تھی اب اس نے اپنے

داماد سے نکاح کر لیا ہے اور اس نکاح سے اب ایک بچہ موجود ہے، آیا یہ نکاح درست ہے یا حرام ہے؟ (۲) ایک شخص نے ایک عورت بیوہ سے نکاح کر لیا، اس عورت بیوہ کا جو پہلا خاوند تھا اس سے ایک لڑکا تھا جواب عورت کے دوسرے نکاح کرنے پر ہمراہ آیا تھا وہ لڑکا جوان ہو کر مر گیا اور اس کی ماں بھی مر گئی، اب اس جوان لڑکے کی بیوی بیوہ ہے اور اب اس لڑکے کا باپ یعنی اب سوتیلا باپ اس سوتیلے لڑکے کی بیوہ بیوی کو یعنی اب اپنی سوتیلی بہو کو یعنی اب سوتیلے بیٹے کی بیوی بیوہ کو نکاح میں لانا چاہتا ہے اور حرام بھی کیا ہے اور اسی وجہ سے وہ بیوہ بہو حاملہ ہے اور اس کا حمل قریباً چار ماہ کا ہے اور اسی قدر عرصہ اس کے خاوند کو مرے ہوئے گزرا، اور یہ بھی معلوم ہوا کہ بعد مرنے اپنے سوتیلے بیٹے کے وہ شخص اپنی

Volume 11
Fatawa-e-Razviyya

(Context: A man) had intercourse with his step-daughter-in-law. Now it is not known whether the pregnancy is from the son or the father. However, the most likely assumption is that it is the stepson's, i.e., her husband's, because it has been four months since her husband died. Is it permissible or impermissible for the step-father-in-law to marry his stepson's widow after childbirth? Peace be upon you. In short, the crux of the second issue is whether a step-father-in-law can marry his stepson's widow or not? State the ruling and be rewarded.

The Answer: (1) A mother-in-law is absolutely forbidden (haram) for the son-in-law, even if his wife (her daughter) had not moved in with him and died before that. Allah the Almighty says: *"And your wives' mothers [are forbidden to you]"*[1] (Surah An-Nisa, 4:23). This marriage was purely forbidden, and that child is illegitimate (born out of wedlock). It is obligatory for both of them, who are effectively mother and son, to separate immediately. And Allah the Almighty knows best.

(2) Since there is also a possibility that this widow's pregnancy is from her husband, then as long as childbirth does not occur, marriage with her is strictly forbidden. After childbirth, marriage can take place due to Allah's saying: *"And the wives of your sons who are from your own loins [are forbidden to you]"*[2] (Surah An-Nisa, 4:23). (Note: This refers to biological sons). Combined with Allah's saying: *"And lawful to you are all [others] beyond these"*[3] (Surah An-Nisa, 4:24). Considering this statement of Allah the Almighty: And those besides them are made lawful for you. And Allah the Almighty knows best.

Problem 244: Submitted by Maulana Muhammad Amanat al-Rasul Sahib from Rampur, Pila Talab neighborhood. If a father gives three divorces to a stepmother, can the son marry his stepmother or not? Write with evidence. Peace be upon you. State the ruling and be rewarded.

The Answer: Allah, there is no god but Allah. A stepmother is strictly forbidden just like a biological mother. Allah the Almighty mentioned the prohibition of the stepmother in the Great Quran before the prohibition of the biological mother, as Allah the Almighty said: *"And do not marry those [women] whom your fathers married..."* until the saying of the Almighty *"...Indeed, it was an immorality and hateful [to Allah] and was evil as a way."*[4] (Surah An-Nisa, 4:22). Do not marry those women whom your

fathers have married; indeed, it was an act of indecency and an abomination and an evil way. (t) And Allah the Almighty knows best.

Problem 245: From the city, submitted by Maulana Hafiz Amirullah Sahib, 14 Dhu al-Qi'dah 1326 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a person conducts a marriage ceremony during the waiting period (iddah) and takes "yatarabbasna" (they shall wait) only...

[1] Al-Quran al-Karim 4/23 [2] Al-Quran al-Karim 4/23 [3] Al-Quran al-Karim 4/24 [4] Al-Quran al-Karim 4/22

जिल्द ग्यारहवीं

फतावा-ए-रज़विया

(सन्दर्भ: एक व्यक्ति) अपनी सौतेली बहू के साथ संभोग करता रहा। अब यह ज्ञात नहीं है कि गर्भ बेटे का है या बाप का। हालांकि, सबसे प्रबल अनुमान यह है कि यह सौतेले बेटे यानी उसके पति का है, क्योंकि उसके पति को मरे हुए चार महीने बीत चुके हैं। क्या प्रसव (बच्चा होने) के बाद सौतेले ससुर के लिए अपने सौतेले बेटे की विधवा पत्नी से निकाह करना जायज है या नाजायज? वस्सलाम। दूसरे मसले का संक्षिप्त सारांश यह है कि क्या सौतेला ससुर अपने सौतेले बेटे की विधवा को अपने निकाह में ला सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: (१) सास दामाद पर पूर्णतः हराम है, भले ही उसकी बेटी की विदाई न हुई हो और विदाई से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई हो। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और तुम्हारी पत्नियों की माएँ/तुम पर हराम हैं/"[1] (अल-कुरान, ४:२३)। यह निकाह पूर्णतः हराम हुआ, और वह बच्चा हरामज़ादा हुआ। उन दोनों पर, जो हकीकत में माँ-बेटे (जैसे रिश्ते में) हैं, यह अनिवार्य है कि वे तुरंत अलग हो जाएं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(२) चूँकि यह संभावना भी है कि इस विधवा का यह गर्भ उसके पति का हो, इसलिए जब तक प्रसव न हो जाए, उससे निकाह निश्चित रूप से हराम है। प्रसव के बाद निकाह हो सकता है क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है: "और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुम्हारी अपनी पीठ (नस्ल) से हैं /तुम पर हराम हैं/"[2] (अल-कुरान, ४:२३)। (नोट: यह जैविक बेटों की बात कर रहा है)। अल्लाह के इस फरमान के साथ: "और इनके अलावा सभी /महिलाएं/ तुम्हारे लिए हलाल कर दी गई हैं"[3] (अल-कुरान, ४:२४)। अल्लाह तआला के इस कथन को ध्यान में रखते हुए: और तुम्हारे लिए उनके अलावा बाकी सब हलाल कर दी गई हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २४४: प्रेषक मौलवी मुहम्मद अमानत रसूल साहब, रामपुर, मोहल्ला पीला तालाब। यदि पिता अपनी सौतेली माँ को तीन तलाक दे दे, तो क्या लड़का अपनी सौतेली माँ से निकाह कर सकता है या नहीं? साक्ष्य सहित लिखें। वस्सलाम। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। सौतेली माँ सगी माँ के बराबर निश्चित रूप से हराम है। अल्लाह अज़्ज़वजल ने कुरान-ए-अजीम में सगी माँ की हुरमत (निषेध) से पहले सौतेली माँ की हुरमत बयान फरमाई है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया: "और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे

तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं..." अल्लाह तआला के इस कथन तक "...बेशक वह बेहयाई है और खुदा की नज़र में दुश्मनी और निहायत बुरा रास्ता है।"[4] (अल-कुरान, ४:२२)। उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हों, बेशक वह बेहयाई और खुदा का दुश्मन (घृणित कार्य) और बहुत बुरा रास्ता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २४५: शहर से, प्रेषक मौलवी हाफिज अमीरुल्लाह साहब, १४ जिल-कादह १३२६ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में निकाह पढ़वा देता है और "यतरब्बस्ना" (वे इंतज़ार करें) को सिर्फ..

1. अल-कुरान अल-करीम ४/२३
2. अल-कुरान अल-करीम ४/२३
3. अल-कुरान अल-करीम ४/२४
4. अल-कुरान अल-करीम ४/२२

جلد یازدہم

فتاویٰ رضویہ

سوتیلی بہو کے ساتھ فعل کرتا رہا، اب یہ نہیں معلوم کہ حمل بیٹے کا ہے یا باپ کا، البتہ قرینِ قیاس یہ ہے کہ سوتیلے بیٹے کا یعنی اس کے شوہر کا ہے کیونکہ اس کے شوہر کو مرے ہوئے بھی عرصہ چار ماہ کا گزرا ہے، آیا بعد وضعِ حمل کے نکاح ہونا یعنی سوتیلے بیٹے کی بیوہ بیوی سے خسر سوتیلے کا جائز ہے یا ناجائز؟ والسلام، دوسرے مسئلہ کا اصل قصہ مختصر یہ ہے کہ سوتیلے بیٹے کی بیوہ بیوی کو سوتیلا خسر اپنے نکاح میں لا سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: (۱) ساس پر داماد مطلقاً حرام ہے اگرچہ اس کی بیٹی کی رخصت نہ ہوئی ہو اور قبل رخصت مر گئی ہو، قال اللہ تعالیٰ: "وَأُمَّهٰتُ نِسَائِكُمْ"[1] (اور تمہاری بیویوں کی مائیں تم پر حرام ہیں) یہ نکاح حرام محض ہوا، وہ بچہ ولد الحرام ہوا، ان دونوں پر کہ حقیقۃً ماں بیٹے ہیں فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) جبکہ یہ بھی احتمال ہے کہ اس بیوہ کا یہ حمل اپنے شوہر کا ہو، تو جب تک وضع حمل نہ ہو اس سے نکاح قطعی حرام ہے، بعد وضع حمل نکاح ہو سکتا ہے لقولہ تعالیٰ: "وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ"[2] (اور تمہارے نسبی بیٹوں کی بیویاں حرام ہیں، ت) مع قولہ تعالیٰ: "وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ"[3] (اللہ تعالیٰ کے اس قول کے پیش نظر: اور تمہارے لیے ان کے ماسوا حلال کی گئیں ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۴: مسئولہ مولوی محمد امانت الرسول صاحب از رام پور محلہ پیلا تالاب سوتیلی ماں کو اگر باپ تین طلاقیں دے دے لڑکا اپنی سوتیلی ماں سے نکاح کر سکتا ہے یا نہیں؟ مدلل تحریر ہو، والسلام۔ بینوا توجروا

الجواب: اللہ لا الہ الا اللہ، سوتیلی ماں حقیقی ماں کے برابر حرام قطعی ہے۔ اللہ عزوجل نے قرآن عظیم میں ماں کی حرمت سے پہلے سوتیلی ماں کی حرمت بیان فرمائی ہے، اذ قال اللہ تعالیٰ (جبکہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ ت): "وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ اِلَى قولہ تعالیٰ" "اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا وَّسَآءَ سَبِيْلًا"[4] - نہ نکاح کرو ان عورتوں سے جن سے تمہارے باپ نکاح کر چکے، بیشک وہ بے حیائی اور خدا کو دشمن اور نہایت بری راہ ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۴۵: از شہر مسئولہ مولوی حافظ امیر اللہ صاحب ۱۴ ذی القعدہ ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص عدت میں نکاح پڑھوا دیتا ہے اور "یتربصن" کو صرف

۱ القرآن الکریم ۲۳/۴ ۲ القرآن الکریم ۲۳/۴ ۳ القرآن الکریم ۲۴/۴ ۴ القرآن الکریم ۲۲/۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

Question: Does it carry the meaning of a proposal for marriage? Is it right or wrong? And what is the ruling regarding such a person? Explain and be rewarded.

Answer: Marriage during the waiting period (Iddah) is absolutely forbidden; in fact, marriage is a grave matter. The Great Quran has forbidden even an explicit proposal of marriage during Iddah. It has also forbidden even a promise to marry after the completion of Iddah. It has only permitted keeping the thought in one's heart or saying something subtle from which an indication of intending marriage after Iddah may emerge. There should be no clear mention like, 'I want to marry you after Iddah'; even saying this much is forbidden, so how could actually performing the marriage be permissible? Furthermore, saying even subtle/hinted things is only permissible to a woman who is in Iddah due to her husband's death; for a woman in Iddah due to divorce, by the consensus of the Ummah, even that is not permissible. Allah Almighty said (Allah Almighty said - T):

"And those of you who die and leave wives behind, let them wait for four months and ten days. Then when they have reached their term, there is no blame on you for what they do for themselves in a lawful manner. And Allah is Acquainted with what you do. And there is no blame on you for that which you hint at regarding a proposal to women or for what you conceal within yourselves. Allah knows that you will remember them. But do not make a promise of marriage to them secretly except that you say a customary word. And do not resolve on the marriage bond until the waiting period has come to its end. And know that Allah knows what is within yourselves, so beware of Him. And know that Allah is Forgiving and Forbearing."

That is, those among you who die and leave behind wives, those women should restrain themselves for four months and ten days. When the Iddah is completed, then there is no blame on you for whatever they do concerning themselves according to the Shariah. And God knows that the thought of marrying them will cross your minds, but do not make a secret promise of marriage with each other. Yes, you may say something through hints in a known manner, and do not intend the marriage contract until the Iddah is complete. And know that Allah knows what is in your hearts, so fear Him. And know that Allah is Forgiving, Forbearing; i.e., do not be deluded by the delay in punishment, for He is Forbearing.

It is stated in Fath al-Qadeer:

"His saying 'there is no harm in hints regarding the proposal' refers to the woman whose husband has died, as hints regarding a divorced woman are not permissible by consensus."[2]

There is no harm in a hinted marriage proposal specifically for a woman in her waiting period after her husband's death, because for one in the waiting period of divorce, even hints are not permissible by consensus. (T)

[1] The Holy Quran 2/234-235 [2] Fath al-Qadeer, Chapter on Iddah, Maktaba al-Nooriya, Sukkur 4/165

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

सवाल: निकाह के पैगाम पर हम्ल करता है (क्या इसका अर्थ निकाह का प्रस्ताव लिया जाता है), सही है या गलत? और उस शख़्स का क्या हुक्म है? बय्यिनू तुजरू (स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें)।

जवाब: इद्दत में निकाह हराम-ए-क़तई (निश्चित रूप से वर्जित) है, बल्कि निकाह तो बड़ी चीज़ है। क़ुरआन अज़ीम ने इद्दत में निकाह के साफ़ (स्पष्ट) पैगाम को भी हराम फ़रमाया। इद्दत के बाद निकाह कर लेने के वादे को भी हराम फ़रमाया, सिर्फ इसकी इजाज़त दी है कि दिल में ख्याल रखो या कोई ऐसी गोल-मोल बात कहो जिससे इद्दत के बाद निकाह के इरादे का इशारा निकलता हो। साफ़-साफ़ यह ज़िक्र न हो कि 'मैं इद्दत के बाद तुझसे निकाह करना चाहता हूँ', यहाँ तक कहना भी हराम है, तो खुद निकाह कर लेना कैसे हलाल होगा? फिर गोल-मोल बात भी सिर्फ वफ़ात (पति की मृत्यु) वाली इद्दत वाली औरत से कहना जायज़ है, तलाक़ वाली इद्दत वाली से उम्मत के इज्मा (आम सहमति) के अनुसार वह भी जायज़ नहीं। अल्लाह अज़वज्जल ने फ़रमाया (अल्लाह अज़वज्जल ने फ़रमाया - त):

"यानी तुम में जो लोग मरें और औरतें छोड़ें, वे औरतें चार महीने दस दिन अपनी जानों को रोके रखें। जब इद्दत पूरी हो जाए फिर जो कुछ वे अपने मामले में शरीयत के अनुसार करें, उस पर तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। और ख़ुदा जानता है कि तुम्हें उनसे निकाह का ख्याल आएगा, लेकिन आपस में निकाह का गुप्त वादा न करो। हाँ, मालूम तरीके से कुछ इशारा (किनाया) कह सकते हो, और जब तक इद्दत पूरी न हो निकाह का इरादा भी न करो। और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात जानता है, तो उससे डरो। और जान लो कि अल्लाह बख्शने वाला, हिल्म (सहनशीलता) वाला है, यानी अज़ाब न आने पर मगरूर न हो कि वह हलीम है।"

यानी तुम में जो लोग मरें और औरतें छोड़ें वो औरतें चार महीने दस दिन अपनी जानों को रोके रहें। जब इद्दत पूरी हो जाये फिर जो कुछ अपने मामले में शरीयत के मुताबिक करें उसमें तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। और ख़ुदा जानता है कि तुम्हें उनसे निकाह का ख्याल आएगा, लेकिन आपस में निकाह का गुप्त वादा न करो। हाँ, मालूम तरीके से कुछ इशारा (किनाया) कह सकते हो, और जब तक इद्दत पूरी न हो निकाह का इरादा भी न करो। और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात जानता है, तो उससे डरो। और जान लो कि अल्लाह बख्शने वाला, हिल्म वाला है, यानी अज़ाब न आने पर मगरूर न हो कि वह हलीम है।

फ़तह-उल-क़दीर में है:

"उनका यह कहना कि 'प्रस्ताव में संकेत करने में कोई हर्ज नहीं' उस महिला के बारे में है जिसके पति का देहांत हो गया हो, क्योंकि तलाक़शुदा महिला के मामले में सर्वसम्मति से संकेत करना भी जायज़ नहीं है।"[2]

विशेष रूप से मृत्यु की इद्दत वाली महिला से संकेत (किनाया) के रूप में निकाह का पैगाम देने में कोई हर्ज नहीं, क्योंकि तलाक़ की इद्दत वाली से सर्वसम्मति (इज्मा) से किनाया भी जायज़ नहीं। (त)

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 2/234-235 [2] फ़तह-उल-क़दीर, बाब फ़िल इद्दत, अल-मकतबा अल-नूरिया, सुक्कुर 4/165

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

نکاح کے پیغام پر حمل کرتا ہے، صحیح ہے یا غلط؟ اور اس شخص کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: عدت میں نکاح حرامِ قطعی ہے بلکہ نکاح تو بڑی چیز ہے۔ قرآنِ عظیم نے عدت میں نکاح کے صریح پیام کو بھی حرام فرمایا۔ نکاح بعد عدت کر لینے کے وعدہ کو بھی حرام فرمایا صرف اس کی اجازت دی ہے کہ دل میں خیال رکھو یا کوئی پہلو دار بات ایسی کہو جس سے بعد عدت ارادہ نکاح کا اشارہ نکلتا ہو۔ صاف صاف یہ ذکر نہ ہو کہ میں بعد عدت تجھ سے نکاح کرنا چاہتا ہوں، یہاں تک کہنا بھی حرام ہے، تو خود نکاح کر لینا کیونکر حلال ہوگا، پھر پہلو دار بات بھی عدتِ وفات والی سے کہنا جائز ہے، عدتِ طلاق والی سے باجماعِ امت وہ بھی جائز نہیں، قال اللہ عزوجل (اللہ عزوجل نے فرمایا-ت):

وَالَّذِیْنَ یُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَیَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا یَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَعَشْرًاۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ فِیْمَا فَعَلْنَ فِیْۤ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ(۲۳۴) وَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ فِیْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِیْۤ اَنْفُسِكُمْؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّاۤ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا۬ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى یَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ(۲۳۵)

یعنی تم میں جو لوگ مریں اور عورتیں چھوڑیں وہ عورتیں چار مہینے دس دن اپنی جانوں کو روکے رہیں۔ جب عدت پوری ہو جائے پھر جو کچھ اپنے معاملہ میں موافق شرع کریں اس کا تم پر الزام نہیں۔ اور خدا جانتا ہے کہ تمھیں ان سے نکاح کا خیال گزرے گا مگر باہم نکاح کا وعدہ خفیہ بھی نہ رکھو۔ ہاں اس طریقہ معلوم پر کنایہ کچھ کہہ سکتے ہو اور جب تک عدت پوری نہ ہو نکاح

کا قصد بھی نہ کرو۔ اور جان لو کہ اللہ تمہارے دلوں کی بات جانتا ہے تو اس سے ڈرو۔ اور جان لو کہ اللہ بخشنے والا حلم والا ہے یعنی عذاب نہ آنے پر مغرور نہ ہو کہ وہ حلیم ہے۔

فتح القدیر میں ہے :

قولہ لاباٰس بالتعریض فی الخطبۃ اراد المتوفیٰ عنھا زوجھا اذ التعریض فی المطلقۃ لایجو ز بالاجماع ۔ [2]

خاص وفات کی عدت والی عورت سے کنایہ کے طور پر پیام نکاح میں کوئی حرج نہیں، کیونکہ طلاق کی عدت والی سے بالاجماع کنایہ بھی جائز نہیں۔ (ت)

[1] القرآن الکریم ۲/ ۲۳۴۔۲۳۵ [2] فتح القدیر باب فی العدۃ المکتبۃ النوریہ سکھر ۴/ ۱۶۵

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

If a person performs a marriage during 'Iddah' (waiting period) and considers it forbidden and adultery, then he would be a severe committer of major sins and a pimp for adulterers and adulteresses. However, if he claims it to be permissible and, by distorting the Great Quran, interprets "wait" (yatarabbasna) merely as abstinence from intercourse, then he is certainly a denier of the Glorious Quran, and disbelief (kufr) is certainly mandatory upon him. It is obligatory for him to repent, renounce his impure statement, and embrace Islam anew. After that, he should marry his woman. And Allah the Almighty knows best.

Problem 236: From Salon Sharif, District Rae Bareli, Shah Sahab's premises, sent by Maulvi Muhammad Umar Sahab, Madrasa Islamia, 22 Muharram al-Haram 1328 AH.

Respected Maulana Sahab, Mujaddid of the present century, peace be upon you and the mercy and blessings of Allah. Is marriage with a lewd woman (prostitute) permissible or not? If it is permissible, is it after repentance or even without repentance? If it is permissible even after repentance, why the restriction of repentance? Marriage with a woman of the People of the Book is permissible without dislike, while marriage with her without repentance is not. Sound reason acts against this ruling. And if it is impermissible, then why? Peace! State the ruling and be rewarded.

The Answer:

And upon you be peace and the mercy and blessings of Allah. Marriage with a lewd woman is permissible even if she has not repented. Yes, if she persists in her foul deeds and he does not stop her to the best of his ability, then he is a 'dayyuth' (cuckold) and a committer of a severe major sin. However, this ruling is due to his lack of honor; it does not affect the marriage itself. Allah, the Glorious and Exalted, after listing the prohibited relations, stated: "And lawful to you are those beyond these" (meaning everything except the prohibited categories has been made lawful for you. - Translation). As for the noble verse:

"And the adulteress—none shall marry her except an adulterer or a polytheist, and that has been forbidden to the believers." [Quran 24:3]

An adulteress is only married by an adulterous man or a polytheist, and this is forbidden for believers. (Translation)

There are four traditional interpretations of this. Among them, the first two are the most correct and better in the view of this humble servant (the author).

First Interpretation: By marriage ('nikah'), the contract itself is meant. Previously, marriage with an adulteress was forbidden; this ruling was later abrogated. This is the opinion of our master Sa'id ibn al-Musayyib (may Allah be pleased with them), and Al-Baghawi attributed it to a group of scholars. Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him) authenticated it; he states in 'Kitab al-Umm':

"The people of tafsir (exegesis) differed concerning this verse with a clear difference." (The people of exegesis have clearly differed regarding this noble verse).

1 Holy Quran 4/24 2 Holy Quran 24/3

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

यदि कोई व्यक्ति इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में निकाह पढ़ा देता है और इसे हराम और व्यभिचार (ज़िना) मानता है, तो वह बड़े गुनाहों का गंभीर अपराधी और व्यभिचारियों का दलाल होगा। लेकिन अगर वह इसे जायज़ बताता है और कुरान-ए-अज़ीम में हेर-फेर करके"यतरब्बस्ना" (वे प्रतीक्षा करें) को केवल संभोग से परहेज समझता है, तो वह निश्चित रूप से कुरान-ए-मजीद का इनकार करने वाला है और उस पर कुफ़्र (नास्तिकता) अनिवार्य है। उस पर फ़र्ज़ है कि वह तौबा करे और अपने इस अपवित्र कथन को झुठलाए और नए सिरे से इस्लाम लाए। इसके बाद अपनी औरत से निकाह करे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २३६: सलोन शरीफ़, ज़िला रायबरेली, अहाता शाह साहब से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद उमर साहब, मदरसा इस्लामिया, २२ मुहर्रम अल-हराम १३२८ हिजरी।

जनाब मौलाना साहब, मुजद्दिद-ए-अहदे हाज़िरा, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू। व्यभिचारिणी स्त्री (वेश्या) से निकाह जायज़ है या नहीं? अगर जायज़ है तो तौबा के बाद या बिना तौबा के भी? अगर तौबा के बाद भी जायज़ है तो तौबा की शर्त क्यों है? किताबिया (अहले किताब की महिला) से तो बिना किसी नापसंदगी के जायज़ है, जबकि उससे (वेश्या से) बिना तौबा के जायज़ नहीं। स्वस्थ बुद्धि इस हुक्म के विरुद्ध कार्य करती है। और अगर नाजायज़ है तो क्यों? वस्सलाम! उत्तर दें और पुण्य के भागी बनें।

अल-जवाब (उत्तर):

व अलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू। व्यभिचारिणी स्त्री से निकाह जायज़ है चाहे उसने तौबा न की हो। हाँ, अगर वह अपने गंदे कामों पर कायम रहे और पति अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसे न रोके तो वह 'दयूष' (बेगैरत) है और सख्त गुनाह-ए-कबीरा का अपराधी है, लेकिन यह हुक्म उसकी इस बेगैरती पर है, निकाह के असल अस्तित्व पर इसका प्रभाव नहीं पड़ता। हक सुब्हानहू व तआला ने हराम रिश्तों को गिनाने के बाद फ़रमाया: "व उहिल्ला लकुम मा वराअ ज़ालिकुम" (और तुम्हारे लिए हराम रिश्तों के अलावा शेष को हलाल कर दिया गया है। - अनुवाद)। रही आयत-ए-करीमा:

"व्यभिचारिणी स्त्री से केवल व्यभिचारी पुरुष या मुशरिक (बहुदेववादी) ही निकाह करे, और ईमान वालों पर यह हराम कर दिया गया है।" [कुरान २४:३]

ज़ानिया से सिर्फ़ ज़ानी मर्द या मुशरिक निकाह करे और यह मोमिनों के लिए हराम है। (अनुवाद)

इसमें चार पारंपरिक व्याख्याएँ(तावीलें) हैं। उनमें से पहली दो इस फ़कीर (लेखक) के नज़दीक सबसे सही और बेहतर हैं।

पहली व्याख्या: निकाह से तात्पर्य निकाह का अनुबंध (अक़्द) ही है। पहले ज़ानिया से निकाह हराम था, बाद में यह हुक्म मंसूख (निरस्त) हो गया। यह हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) का कथन है और बगवी ने इसे एक जमात (समूह) की ओर मंसूब किया है। इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर राज़ी हो) ने इसकी पुष्टि की है, वे 'किताबुल उम्म' में फ़रमाते हैं:

"इख्तलफ़ा अहलुत-तफ़सीर फ़ी हाज़िहिल आयति इख्तलाफ़ा" (तफ़सीर करने वालों ने इस आयत-ए-करीमा में स्पष्ट मतभेद किया है)।

1 अल-कुरानुल करीम ४/२४ 2 अल-कुरानुल करीम २४/३

اگر کوئی شخص عدت میں نکاح پڑھا دیا کرتا اور اسے حرام و زنا جانتا ہوتا کہ وہ سخت مرتکب کبائر اور زانی و زانیہ کا دلال ہوتا مگر وہ جواسے جائز بتاتا ہے اور قرآن عظیم میں تحریف کرکے "یتربصن" کو فقط منعِ جماع پر حمل کرتا ہے وہ ضرور منکرِ قرآنِ مجید ہے اور اس پر یقیناً کفر لازم۔ اس پر فرض ہے کہ توبہ کرے اور اپنے اس قول ناپاک کو جھٹلائے اور نئے سرے سے اسلام لائے۔ اس کے بعد اپنی عورت سے نکاح کرے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۶: از سلون شریف ضلع رائے پور بریلی احاطہ شاہ صاحب مرسلہ مولوی محمد عمر صاحب مدرسہ اسلامیہ ۲۲ محرم الحرام ۱۳۲۸ھ

جناب مولانا صاحب مجدد مائتہ حاضرہ السلام علیکم ورحمتہ اللہ وبرکاتہ، زن فاحشہ رنڈی سے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ اگر جائز ہے تو بعد توبہ یا بغیر توبہ بھی؟ اگر بعد توبہ بھی جائز ہے تو توبہ کی قید کیوں ہے؟ کتابیہ سے تو بلا کراہت جائز ہو اور اس سے بلا توبہ جائز نہ ہو۔ عقل سلیم خلافِ حکم کرتی ہے۔ اور اگر ناجائز ہے تو کیوں؟ والسلام! بینوا توجروا

الجواب:

وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، زن فاحشہ سے نکاح جائز ہے اگرچہ تائب نہ ہوئی ہو، ہاں اگر اپنے افعالِ خبیثہ پر قائم رہے، اور یہ تاقدرِ قدرت انسداد نہ کرے تو دیوث ہے اور سخت کبیرہ کا مرتکب، مگر یہ حکم اس کی اس بے غیرتی پر ہے، نفسِ نکاح پر اس سے اثر نہیں، حق سبحانہ و تعالٰی نے محرمات گنا کر فرمایا: "وَ اُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ" (اور تمہارے لیے محرمات کے ماسوا حلال کی گئیں ہے۔ ت) رہی آیہ کریمہ:

وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

زانیہ سے صرف زانی مرد یا مشرک نکاح کرے اور یہ مومنین کے لیے حرام ہے۔ (ت)

اس میں چار تاویلیں ماثور ہیں۔ ان میں سے اول کی دو فقیر کے نزدیک اصح و احسن ہیں۔

تاویل اول: نکاح سے عقد ہی مراد ہے۔ پہلے زانیہ سے نکاح حرام تھا یہ حکم منسوخ ہو گیا، یہ قول سیدنا سعید بن مسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا ہے اور بغوی نے اسے ایک جماعت کی طرف منسوب کیا۔ امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس کی تصحیح کی، کتاب الام میں فرماتے ہیں:

اختلف اھل التفسیر فی ھذہ الآیۃ اختلافا (اہلِ تفسیر نے اس آیہ کریمہ میں واضح اختلاف کیا ہے)

1 القرآن الکریم ۲۴/۴ 2 القرآن الکریم ۳/۲۴

Fatawa Razawiya Volume Eleven

[Table Header] [Arabic Text]: Contradictory opinions were given. It was said that it is general but was abrogated by the words of Allah Almighty, "And marry the unmarried among you..." (Al-Nur: 32). We have narrated this from Sa'id bin al-Musayyib, and it is as he said, supported by proofs from the Book and the Sunnah. Therefore, no consideration will be given to what contradicts it. End of its summary, as quoted in Inayat al-Qadi (1).

[Urdu Text]: Some said that this is general, but it was abrogated upon the revelation of Allah Almighty's word "And marry the unmarried" etc. We have narrated this statement from Sa'id bin al-Musayyib, and it is correct according to his statement, and there are proofs for it from the Quran and Hadith. Therefore, the opposing statement will not be considered. This summary ends here, as quoted in Inayat al-Qadi. (T)

In Tafsirat-e-Ahmadiyya, it is stated:

[Arabic Text]: This is what the jurist Abu al-Layth chose. He said that the verse is abrogated, or its meaning is that a fornicator does not marry except a fornicatrix or one like her (2). End. I say: What I have seen in the words of the jurist in his "Bustan" is that Sa'id bin Jubayr and al-Dahhak said its meaning is that a fornicator only commits fornication with a fornicatrix like him. Similarly, it is narrated from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them). It was also said that the verse is abrogated because a man asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), saying, "My wife does not refuse any hand that touches her." He said, "Divorce her." The man said, "I love her." The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Then keep her" (3). End. So his saying that its meaning is "the fornicator does not marry" (la yankihu) should correctly be "does not fornicate" (la yazni), and his assertion that the jurist was certain about abrogation is not apparent.

[Urdu Text]: Jurist Abu al-Layth has chosen this as the preferred view and said that this verse is abrogated or its meaning is that a fornicator should marry a fornicatrix or women like her. (T) I say: (I say - T) What I have seen in the book "Bustan" of the said jurist is that Sa'id bin Jubayr and Dahhak said the meaning of this verse is that a fornicator only commits fornication with a fornicatrix like himself, and similar is narrated from Ibn Abbas (may Allah Almighty be pleased with them). And some said that the noble verse is abrogated because a person mentioned to the Messenger

(peace and blessings be upon him) that "my wife does not refuse the hand of any toucher," so the Messenger (peace and blessings be upon him) said: "Divorce her." Then that person said, "I love her," so the Messenger (peace and blessings be upon him) said: "Then do not divorce her." End. So his statement that...

[Footnotes]: 1. Inayat al-Qadi Hashiya al-Baydawi, under the previous verse, Dar Sader Beirut 2/357. 2. Tafsirat-e-Ahmadiyya, under the previous verse, Karimi Press Bombay, p. 525. 3. Bustan al-Arifin, on the margin of Tanbih al-Ghafilin, Chapter 71, Marriage of a Fornicatrix, Dar al-Zabra for Printing and Publishing, pp. 103-104.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

[तालिका शीर्षक] [अरबी पाठ]: विरोधाभासी राय दी गई। कहा गया कि यह सामान्य है लेकिन अल्लाह तआला के क़ौल 'व अंक़िहुल अयामा' (और अपने में से बिना शादी वालों का निकाह कर दो) वग़ैरह के नाज़िल होने पर मंसूख़ (रद्द) हो गई। हमने इसे सईद बिन मुसय्यब से रिवायत किया है, और यह वैसा ही है जैसा उन्होंने कहा, जिस पर किताब और सुन्नत से दलीलें मौजूद हैं। इसलिए, इसके विपरीत किसी भी चीज़ पर विचार नहीं किया जाएगा। इसका सारांश समाप्त हुआ, जैसा कि इनायतुल् क़ाज़ी (1) में उद्धृत है।

[उर्दू पाठ]: कुछ लोगों ने कहा कि यह सामान्य है लेकिन अल्लाह तआला के क़ौल 'व अंक़िहुल अयामा' वग़ैरह के नाज़िल होने पर मंसूख़ हो गई, और इस क़ौल को हमने सईद बिन मुसय्यब से रिवायत किया है और वह उनके क़ौल के मुताबिक़ दुरुस्त है और इस पर क़ुरआन व हदीस से दलीलें हैं। तो इसके मुख़ालिफ़ क़ौल का एतबार न होगा। इसका ख़ुलासा यहाँ समाप्त होता है, जिसे इनायतुल् क़ाज़ी में नक़ल किया गया है। (त)

तफ़सीराते अहमदिया में है:

[अरबी पाठ]: यही वह चीज़ है जिसे फ़क़ीह अबुल लैस ने चुना है। उन्होंने कहा कि आयत मंसूख़ है, या इसका मतलब यह है कि एक ज़ानी सिर्फ़ एक ज़ानिया या उसके जैसी महिला से ही निकाह करता है (2)। अंत। मैं कहता हूँ: मैंने फ़क़ीह के अपने 'बुस्तान' में जो शब्द देखे हैं, वे यह हैं कि सईद बिन जुबैर और ज़ह्हाक ने कहा कि इसका मतलब यह है कि एक ज़ानी केवल अपने जैसी ज़ानिया के साथ ही ज़िना करता है। इसी तरह, यह अब्दुल्ला बिन अब्बास (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत है। यह भी कहा गया कि आयत मंसूख़ है क्योंकि एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) से पूछा, "मेरी पत्नी किसी भी छूने वाले हाथ को मना नहीं करती है।" उन्होंने कहा, "उसे तलाक़ दे दो।" उस आदमी ने कहा, "मैं उससे प्यार करता हूँ।" अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने कहा, "तो फिर उसे अपने पास रखो" (3)। अंत। तो उनका यह कहना कि इसका अर्थ है "ज़ानी निकाह नहीं करता" (ला यंक़िहु) सही मायने में "ज़िना नहीं करता" (ला यज़नी) होना चाहिए, और उनका यह दावा कि फ़क़ीह मंसूख़ी के बारे में निश्चित थे, स्पष्ट नहीं है।

[उर्दू पाठ]: इसी को फ़क़ीह अबुल लैस ने मुख़्तार (पसंदीदा) क़रार दिया है और कहा कि यह आयत मंसूख़ है या इसका मानी यह है कि ज़ानी, ज़ानिया या उस जैसी औरतों से निकाह करे। (त) अक़ूल: (मैं कहता हूँ - त) मैंने जो कुछ फ़क़ीह मज़कूर की किताब "बुस्तान" देखी है वह यह है कि सईद बिन जुबैर और ज़ह्हाक ने फ़रमाया कि इस आयत का मानी यह है कि ज़ानी सिर्फ़ अपने जैसी ज़ानिया से ज़िना करता है, और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से इसी तरह मरवी है। और बाज़ ने कहा कि आयह-ए-करीमा मंसूख़ है क्योंकि एक शख़्स ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से ज़िक्र किया कि "मेरी बीवी किसी छूने वाले के हाथ को रद्द नहीं करती," तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया: "उसे तलाक़ दे दे।" तो उस शख़्स ने कहा कि "मुझे उससे मोहब्बत है," तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया: "तो फिर तलाक़ न दे।" अंत। तो उनका यह कहना कि...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. इनायतुल् क़ाज़ी हाशिया अल-बैज़ावी, पिछली आयत के तहत, दार सादिर बैरुत 2/357. 2. तफ़सीराते अहमदिया, पिछली आयत के तहत, मतबअ करीमी बंबई, पेज 525. 3. बुस्तानुल आरिफ़ीन, तनबीहुल ग़ाफ़िलीन के हाशिये पर, बाब 71, ज़ानिया का निकाह, दारुल ज़बरा लित्तबाअत वन्नश्र, पेज 103-104.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

[جدول سرخی] [عربی عبارت]: متبائنا فقیل ھی عامۃ ولکن نسخت بقولہ تعالٰی وَ أَنْكِحُوا الْأَيَامٰى الخ وقد رویناہ عن سعید بن المسیّب وھو کما قال وعلیہ دلائل من الکتاب والسنۃ فلا عبرۃ بما خالفہ اھ بمحصولہ۔ نقلہ في عنایۃ القاضی ۱۔

[اردو عبارت]: بعض نے کہا کہ یہ عام ہے لیکن اللہ تعالٰی کے قول وانکحوا الایامی الخ کے نازل ہونے پر منسوخ ہوگئی ہے، اور اس قول کو ہم نے سعید بن مسیب سے روایت کیا ہے اور وہ ان کے قول کے مطابق درست ہے اور اس پر قرآن و حدیث سے دلائل ہیں۔ تو اس کے مخالف قول کا اعتبار نہ ہوگا۔ اس کا خلاصہ ختم ہوا، جس کو عنایۃ القاضی میں نقل کیا ہے۔ (ت)

تفسیرات احمدیہ میں ہے:

[عربی عبارت]: ھذا ھو الذي اختارہ الفقیہ ابواللیث و قال ان الآیۃ منسوخۃ او معناھا الزانی لا ینکح الا زانیۃ او مثلھا ۲ اھ اقول: الذی رأیت من لفظ الفقیہ فی بستانہ قال سعید بن جبیر والضحاک معناھا الزانی لا یزنی الا بزانیۃ مثلہ وھکذا روی عن عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنھما وقد قیل ان الآیۃ منسوخۃ لان رجلا سأل رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقال ان امرأتی لا ترد ید لامس فقال طلقھا۔ فقال انی احبھا۔ قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فامسکھا ۳ اھ فقولہ معناھا الزانی لا ینکح صوابہ لا یزنی وجزمہ بان الفقیہ جزم بالنسخ غیر ظاھر

[اردو عبارت]: اسی کو فقیہ ابواللیث نے مختار قرار دیا ہے اور کہا کہ یہ آیت منسوخ ہے یا اس کا معنی یہ ہے کہ زانی، زانیہ یا اس جیسی عورتوں سے نکاح کرے۔ اھ (ت) اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) میں نے جو کچھ فقیہ مذکور کی کتاب "بستان" دیکھی ہے وہ یہ ہے کہ سعید بن جبیر اور ضحاک

نے فرمایا کہ اس آیت کا معنی یہ ہے کہ زانی صرف اپنے جیسی زانیہ سے زنا کرتا ہے، اور ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اسی طرح مروی ہے۔ اور بعض نے کہا کہ آیہ کریمہ منسوخ ہے کیونکہ ایک شخص نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے ذکر کیا کہ میری بیوی کسی چھونے والے کے ہاتھ کو رد نہیں کرتی، تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: اس کو طلاق دے، تو اس شخص نے کہا کہ مجھے اس سے محبت ہے، تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: تو پھر طلاق نہ دے اھ، تو اس کا قول کہ

[حواشی]: ۱ عناية القاضی حاشيه البيضاوي زير آية ما قبل دارصادر بيروت ۲/ ۳۵۷ ۲ تفسيرات احمديه زير آية ما قبل مطبع كريمی بمبئی ص ۵۲۵ ۳ بستان العارفين على هامش تنبيه الغافلين الباب الحادی والسبعون تزويج الزانية دارالزبراء للطباعة والنشر ص ۱۰۳-۱۰۴

Fatawa Rizvia Volume 11

From the words of the Jurist - and Allah Almighty knows best.

Abu al-Layth said that its meaning 'do not marry' is not correct. However, according to my reference, the truth is that he explained the meaning as 'do not commit adultery' and he stated with confidence that Abu al-Layth chose abrogation. This matter is not apparent from the speech of Abu al-Layth. And Allah Almighty knows best. (T)

In 'Raghaib al-Furqan' it is stated:

It was said that it has become abrogated either by consensus, which is the view of Sa'id ibn al-Musayyib, and it is weakened by the fact that consensus is neither abrogated nor does it abrogate. Or it was abrogated by the generality of the word of Allah Almighty: 'And marry the widows... marry what seems good to you,' which is the view of al-Jubba'i, and it was weakened by the fact that this generality is conditional on the absence of causal and lineage impediments, and let this impediment also be among them. I say, what is attributed to al-Jubba'i, then it is...

Some said it is abrogated by consensus, this is the saying of Sa'id bin Musayyib. This position is weak because consensus is neither abrogated nor an abrogator. Or it is abrogated by the command of Allah Almighty 'And marry the widows... marry what seems good to you,' and this is the saying of Jubba'i, and this too is declared weak because the permissibility mentioned in this verse is conditional on the absence of causal or lineage impediments, and adultery is also one of these impediments. I say, what is attributed to Jubba'i, then it is (the text beyond this was not available). (T)

Problem 237: From Faridabad Post Office Ghauspur, State of Bahawalpur, sent by Maulana Noor Ahmad Sahib Faridi, 12th Muharram al-Haram 1337 AH. Sharia-wise, before abandonment and separation between unconsummated mahrams, is marriage with someone else valid or not? And who is the judge according to Sharia? At the time of necessity, in this Islamic State of Bahawalpur, which is under the occupation of Christians, who holds the higher right of annulment and separation? Is it the scholars, or the gathered government judges, or merely the rulers? And some rulers are Muslims, some are Hindus, is there any distinction between them or do all of them have this right in this?

Note: Alas, this fatwa was found only this much transcribed, further could not be found. As much as was found has been printed, if the rest is ever found in the future, it will, God willing, be printed separately or as a blessing in some future part. (Editor)

1 Raghaib al-Furqan (Tafsir Nishapuri) under the previous verse, Mustafa al-Babi Egypt 58/12.

फतावा रज़विया खंड ग्यारह

फकीह (विधिवेत्ता) के शब्दों से - और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

अबू अल-लैथ ने कहा कि इसका अर्थ 'निकाह न करें' सही नहीं है। लेकिन मेरे संदर्भ के अनुसार, सच्चाई यह है कि उन्होंने इसका अर्थ 'व्यभिचार न करें' बताया है और उन्होंने विश्वास के साथ कहा कि अबू अल-लैथ ने निरसन (नस्ख) को चुना है। यह बात अबू अल-लैथ के कलाम से स्पष्ट नहीं होती। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

'रग़ाइब अल-फ़ुरकान' में है:

कहा गया कि यह या तो आम सहमति (इज्मा) के साथ निरस्त हो गया है, जो सईद इब्न अल-मुसय्यिब का विचार है, और इसे इस तथ्य से कमजोर बताया गया है कि इज्मा न तो निरस्त होता है और न ही निरस्त करता है। या इसे अल्लाह सर्वशक्तिमान के शब्दों 'और विधवाओं से निकाह करो... जो तुम्हें अच्छा लगे उनसे निकाह करो' की व्यापकता से निरस्त कर दिया गया था, जो अल-जुब्बाई का विचार है, और इसे इस तथ्य से कमजोर किया गया है कि यह व्यापकता कारण और वंश संबंधी बाधाओं की अनुपस्थिति पर सशर्त है, और इस बाधा को भी उनमें से एक रहने दें। मैं कहता हूँ, जो अल-जुब्बाई की ओर जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वह...

कुछ ने कहा कि यह आम सहमति के साथ निरस्त है, यह सईद बिन मुसय्यिब का कथन है। यह रुख कमजोर है क्योंकि इज्मा न तो निरस्त होता है और न ही निरस्त करने वाला। या यह अल्लाह सर्वशक्तिमान के फरमान 'और विधवाओं से निकाह करो... जो तुम्हें अच्छा लगे उनसे निकाह करो' के साथ निरस्त है, और यह जुब्बाई का कथन है, और इसे भी कमजोर करार दिया गया है क्योंकि इस आयत में वर्णित अनुमति, कारण या वंश संबंधी बाधा न होने के साथ शर्त है, और व्यभिचार भी इन बाधाओं में से एक बाधा है। मैं कहता हूँ, जो जुब्बाई की तरफ जिम्मेदार ठहराया गया है, तो वह (इससे आगे इबारत उपलब्ध नहीं हो सकी)। (त)

मसला 237: फरीदाबाद डाकघर गौसपुर, रियासत बहावलपुर से प्रेषित मौलवी नूर अहमद साहब फरीदी, 12 मुहर्रम अल-हराम 1337 हिजरी। शरीयत के अनुसार, गैर-मदखूला महरमों के बीच अलगाव और जुदाई से पहले, किसी दूसरे के साथ निकाह सही है या नहीं? और शरीयत के अनुसार काजी कौन है? जरूरत के समय इस इस्लामी रियासत बहावलपुर में, जो ईसाइयों के कब्जे में है, निकाह निरस्त करने और अलग करने का उच्च अधिकार किसके पास है? क्या यह विद्वानों (उलेमा)

का है, या सरकारी काजियों का, या केवल शासकों का? और कुछ शासक मुसलमान हैं, कुछ हिंदू, क्या उनमें कोई भेदभाव है या सब इसका अधिकार रखते हैं?

नोट: अफसोस कि यह फतवा इतना ही नकल किया हुआ मिला, आगे उपलब्ध नहीं हो सका। जितना मिला उतना छाप दिया, बाकी अगर कभी भविष्य में कहीं मिल सका तो वह भी इंशाअल्लाह अलग से या बरकत के तौर पर किसी भविष्य के हिस्से में छाप दिया जाएगा। (संपादक)

1 रग़ाइब अल-फ़ुरकान (तफसीर निशापूरी) पिछली आयत के तहत, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 58/12।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

من کلام الفقیہ ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

ابواللیث نے کہا اس کا معنٰی "لا ینکح" درست نہیں۔ مگر میرے حوالے کے مطابق صحیح یہ ہے کہ انہوں نے معنٰی "لا یزنی" بتایا ہے اور انھوں نے بطور اعتماد کہا کہ ابواللیث نے نسخ کو مختار قرار دیا۔ یہ بات ابواللیث کے کلام سے ظاہر نہیں ہوتی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

رغائب الفرقان میں ہے:

قیل انہ صار منسوخا اما بالاجماع وھو قول سعید بن المسیب، و زیف بان الاجماع لا ینسخ ولا ینسخ بہ، و اما بعموم قولہ تعالی "وانکحوا الایامی فانکحوا ماطاب لکم" وھو قول الجبائی وضعف بان ذلک العام مشروط بعدم الموانع السببیۃ والنسبیۃ، ولیکن ھذا المانع ایضا من جملتھا 1 اھ اقول مانسب الی الجبائی فھو عہ

بعض نے کہا کہ منسوخ ہے یا اجماع کے ساتھ یہ قول سعید بن مسیب کا ہے یہ موقف کمزور ہے کیونکہ اجماع نہ منسوخ ہوتا اور نہ ناسخ ہوتا ہے۔ یا منسوخ ہے اللہ تعالٰی کے ارشاد " وانکحوا الایامی فانکحوا ماطاب لکم" کے ساتھ، اور یہ جبائی کا قول ہے، اور یہ بھی ضعیف قرار دیا گیا ہے کیونکہ اس آیت میں بیان کردہ اباحت، سببی یا نسبی مانع نہ ہونے کے ساتھ مشروط ہے اور زنا بھی ان موانع میں سے ایک مانع ہے اھ اقول جو جبائی کی طرف منسوب ہے تو وہ (اس سے آگے عبارت دستیاب نہیں ہو سکی)۔ (ت)

مسئلہ ۲۳۷: از فرید آباد ڈاک خانہ غوث پور ریاست بہاولپور مرسلہ مولوی نور احمد صاحب فریدی دواز دہم محرم الحرام ۱۳۳۷ھ شرعاً قبل متارکہ و تفریق بین المحارم غیر مدخولہ سے کسی

دوسرے کا نکاح درست ہے یا نہیں؟ اور قاضی شرعاً کون ہے؟ بوقت ضرورت فسخ و تفریق اس ملک ریاست بہاولپور اسلامیہ میں جو تحت قبضہ نصاریٰ ہے کون حق فسخ و تفریق بالاتر رکھتا ہے؟ علما کا ہے یا گرد آور قاضیان سرکار کا یا محض حکام کا؟ اور حکام بعض صاحب اسلام ہیں بعض اہل ہنود، ان میں کوئی امتیاز ہے یا سب اس کا حق رکھتے ہیں اس

عه: افسوس کہ یہ فتویٰ اس قدر منقول ملا، آگے دستیاب نہ ہوسکا، جتنا ملا اتنا چھاپ دیا، باقی اگر کبھی آئندہ کہیں مل سکا تو وہ بھی ان شاء اللہ تعالیٰ علیحدہ یا بطور تبرک چھاپ دیا جائے گا یا کسی حصہ آئندہ میں۔ (مرتب)

1 رغائب الفرقان (تفسیر نیشاپوری) زیر آیہ ماقبل مصطفیٰ البابی مصر ۵۸/۱۲

Fatawa Rizwia Volume 11

In an Islamic state, two women have married one person one after another, and according to Shariah law: *In tazawwajahuma 'ala al-ta'aqubi sahh al-awwalu wa batala al-thani* (If marriage is performed with two mahram women one after another, the first one is valid and the second is void. - T). Abandonment (mutarakah) or the second separation is necessary, but the person in the marriage is not performing mutarakah. Separation is mandatory. The question is what should be done now? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In an Islamic state, a Muslim ruler, provided he is not a Wahhabi, Rafizi, Qadiani, Nechari, or the like, is the representative of Shariah. However, here neither a Qazi (judge) is needed nor is mutarakah (mutual abandonment) required because the marriage was fundamentally void from the start. The woman alone has the power to annul it; she should say to the husband, "I have left this forbidden (relation)." Then, if intercourse has not occurred, she can marry whoever she wishes immediately; otherwise, after the completion of the 'iddah period. It is stated in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
Each of them has the right to annul it, even without the presence of the other, whether intercourse has occurred or not, according to the most correct opinion, to avoid sin. This does not contradict its obligation; rather, it is mandatory for the judge to separate them.[1]	Both man and woman have the right to annulment, even if one of them is absent. Whether consummation has occurred or not, this is the more correct view, so that separation from sin happens. This does not contradict the necessity of the judge's separation. In fact, it is obligatory for the judge to separate them. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
His saying "in the more correct (opinion)" - and it is said that after consummation, one of them cannot annul it except in the presence of the other. His saying "it is mandatory for	His statement "in the more correct (opinion)" - and some have said that after consummation, separation by one is not permissible without the presence of the other. And his statement that it is mandatory

Arabic Text	Urdu Translation
the judge" means if they do not separate themselves.[2]	for the judge means when the two have not separated between themselves. (T)

In the same source it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
Annulment of this marriage by either of them in the presence of the other is agreed upon, and the difference between mutarakah and annulment is remote.	The annulment of this marriage should be done by both in each other's presence. This is an agreed-upon matter, and here [the difference between] mutarakah and

[1] Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Mahr, Matba' Mujtabai Delhi, 1/201 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/351

फ़तावा रज़विया जिल्द ११

एक इस्लामी रियासत में दो औरतों ने एक शख़्स से एक के बाद एक निकाह किया है, और शरीयत के हुक्म के अनुसार: इन तज़व्वजहुमा अला अत्ता'कुबि सह्हल अव्वलु व बतलल थानी (अगर दो महरम औरतों से एक के बाद एक निकाह किया गया तो पहला सही हुआ और दूसरा बातिल है। - त)। मुतारका (छोड़ना) या दूसरी जुदाई ज़रूरी है, लेकिन निकाह वाला मुतारका नहीं कर रहा। जुदाई लाज़मी है। सवाल यह है कि अब क्या किया जाए? बयान फरमाएं सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: इस्लामी रियासत में मुसलमान हाकिम, बशर्ते कि वह वहाबी, राफ़ज़ी, क़ादियानी, नैचरी वगैरह न हो, शरीयत का नायब है। मगर यहाँ न क़ाज़ी की हाजत है और न मुतारका की ज़रूरत क्योंकि निकाह सिरे से ही फ़ासिद (अवैध) हुआ है। औरत को अकेले ही इसे फ़स्ख़ (रद्द) करने का अख्तियार है; वह शौहर से कह दे कि "मैंने इस हराम (रिश्ते) को छोड़ दिया।" फिर, अगर सोहबत (सम्भोग) नहीं हुई तो फ़ौरन, वर्ना इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह कर ले। तनवीरुल अबसार व दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी इबारत	उर्दू तर्जुमा
दोनों में से हर एक को इसे फ़स्ख़ करने का हक़ है, चाहे दूसरे की मौजूदगी के बिना ही हो, ख़्वाह सोहबत हो चुकी हो या नहीं, सबसे सही कौल यही है ताकि गुनाह से बचा जा सके। यह इसकी वजूबियत (अनिवार्यता) के मुनाफ़ी नहीं है; बल्कि क़ाज़ी पर उन दोनों के बीच जुदाई कराना वाजिब है।[1]	मर्द और औरत दोनों को फ़स्ख़ का हक़ है चाहे दोनों में से एक ग़ैर-हाज़िर हो। दुख़ूल (सम्भोग) हो चुका हो या नहीं, असह् कौल यही है, ताकि गुनाह से अलाहदगी हो जाए। तो यह मुतारका क़ाज़ी की तफ़रीक के वुजूब के मुनाफ़ी नहीं है। बल्कि क़ाज़ी पर उन दोनों को अलग करना वाजिब है। (त)

रद्दुल मुहतार में है:

अरबी इबारत	उर्दू तर्जुमा
उनका कौल "असह् में" - और कहा गया है कि दुख़ूल के बाद उनमें से एक को दूसरे की मौजूदगी के बिना फ़स्ख़ करने का हक़ नहीं है।	उनका कौल "असह् में" और बाज़ ने कहा कि दुख़ूल के बाद एक की तफ़रीक दूसरे की मौजूदगी के बिना जायज़ नहीं, और उनका कौल

अरबी इबारत	उर्दू तर्जुमा
उनका कौल कि क़ाज़ी पर वाजिब है यानी उस वक़्त जब वे खुद अलग न हुए हों।[2]	कि क़ाज़ी पर वाजिब है यानी उस वक़्त जब दोनों ने आपस में तफ़रीक न की हो। (त)

इसी में है:

अरबी इबारत	उर्दू तर्जुमा
इस निकाह का फ़स्ख़ दोनों में से हर एक की जानिब से दूसरे की मौजूदगी में इत्तेफ़ाक़ी है, और मुतारका व फ़स्ख़ के दरमियान फ़र्क़ बईद है।	इस निकाह का फ़स्ख़ दोनों एक दूसरे की मौजूदगी में करें। यह मुत्तफ़क़ा मसअला है और यहाँ मुतारका और

---

[1] दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल महर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/२०१ [2] रद्दुल मुहतार, बाबुल महर, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी बैरूत, २/३५१

ریاستِ اسلامی میں دو عورتیں ایک شخص سے یکے بعد دیگرے نکاح کر چکی ہیں اور بحکمِ شرعی وان تزوجہما علی التعاقب صح الاول وبطل الثانی (آپس میں دو محرم عورتوں سے اگر یکے بعد دیگرے نکاح کیا تو پہلا صحیح ہوا دوسرا باطل ہے۔ ت) متارکہ یا تفریقِ ثانیہ کی ضرورت ہے لیکن نکاح متارکہ نہیں کرتا۔ تفریق لازمی ہے۔ دریافت طلب یہ ہے کہ اب کیا کیا جائے؟ بینوا توجروا

الجواب: اسلامی ریاست میں مسلمان حاکم کہ وہابی، رافضی، قادیانی، نیچری وامثالہم سے نہ ہو، نائبِ شرعی ہے، مگر یہاں نہ قاضی کی حاجت نہ متارکہ کی ضرورت کہ نکاح راساً فاسد واقع ہوا، عورت تنہا اس کے فسخ کا اختیار رکھتی ہے، شوہر سے کہہ دے میں نے اس حرام کو چھوڑا، پھر اگر مجامعت نہ ہوئی تو ابھی، ورنہ بعد عدت جس سے چاہے نکاح کرلے۔ تنویر الابصار ودرِ مختار میں ہے:

یثبت لکل واحد منہما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بہا أولا فی وجوبہ بل یجب علی القاضی التفریق بینہما[1]۔

مرد وعورت دونوں کو فسخ کا حق ہے اگرچہ دونوں میں ایک غیر حاضر ہو۔ دخول ہو چکا ہو یا نہیں، اصح قول یہی الاصح خروجاً عن المعصیۃ فلا ینافی ہے، تاکہ گناہ سے علیحدگی ہو جائے تو یہ متارکہ قاضی کی تفریق کے وجوب کے منافی نہیں ہے۔ بلکہ قاضی پر الگ کرنا ان دونوں کو واجب ہے۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

قولہ فی الاصح وقیل بعد الدخول لیس لاحدھما فسخہ الابحضرۃ الآخر. قولہ یجب علی القاضی ای ان لم یتفرقا [2].

اس کا قول "فی الاصح" اور بعض نے کہا کہ دخول کے بعد ایک کی تفریق دوسرے کی موجودگی کے بغیر جائز نہیں، اور اس کا قول کہ قاضی پر واجب ہے یعنی اس وقت جب دونوں نے آپس میں تفریق نہ کی ہو۔ (ت)

اسی میں ہے:

فسخ ھذہ النکاح من کل منھما بمحضر الآخر اس نکاح کا فسخ دونوں ایک دوسرے کی موجودگی اتفاقاً والفرق بین المتارکۃ والفسخ بعید میں کریں۔ یہ متفقہ مسئلہ ہے اور یہاں متارکہ اور

---

[1] درمختار شرح تنویر الابصار باب المھر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۱ [2] ردالمحتار باب المھر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۵۱

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

As in al-Bahr[1]. The difference in annulment is distant; it is the same in al-Bahr. (T)

In the same, from al-Khayriyya: Al-Haqqu adam al-farqi wa-lidha jazama bi-hi al-Maqdisiyu fi Sharhi Nazm al-Kanzi[2]. The truth is that there is no difference between the two, which is why Maqdisi asserted this in his commentary on Nazm al-Kanz. (T)

In Bahr al-Ra'iq it is: Raj-jahna (fi bab al-mahri) ath-thani annaha takunu min al-mar'ati aydan wa-lidha dhakara Miskeenun min suwariha an taqula lahu taraktuka[3]. We preferred the second opinion in the chapter of dower, which is that the woman also has this right. This is why Miskeen, while describing its forms, mentioned that a woman can say, 'I have separated from you.' (T)

The complete investigation of this issue is in our Fatwas, and there is no need here to discuss whether the woman's annulment is called 'mutaraka' or not. She undoubtedly has the right of annulment by consensus to prevent sin. And Allah the Almighty knows best.

Problem 238: From Matanpuri Mohalla, under Raja's Fort, sent by Saadullah Sahib, builder, 21 Rabi al-Akhir 1332 AH. Hinda, a widow, developed an illicit relationship with Zaid, and it is heard that a few pregnancies were also aborted. Hinda forced her daughter, who had also become a widow at a young age, into a marriage contract with Zaid, with whom she herself had an illicit relationship, without the daughter's consent. Is this marriage valid or not? And can this girl be married elsewhere without a divorce? Explain, and you will be rewarded. The Answer: If the situation is as stated, this marriage is purely forbidden (haram). It is obligatory on Zaid to leave her. After Zaid leaves her, she can complete the days of Iddat (waiting period) and marry whomever she wishes. And Allah the Almighty knows best.

Problem 239: From Jaipur, Rajputana, Chandpole Bazaar, adjacent to Gobind Ram Photographer's shop, sent by Hafiz Rahim Bakhsh Sahib Kharadi, 24 Rabi al-Akhir 1346 AH. For 'hurmat-e-musaharat' (prohibition through affinity), it is necessary that the woman be 'mushtaha' (at an age of sexual maturity).

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Dower, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/352 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Dower, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/352 [3] Bahr al-Ra'iq, Chapter of Iddat, H.M. Saeed Company, Karachi, 4/136

जैसा कि अल-बहर[1] में है। फ़स्ख़ (विच्छेद) का अंतर बहुत कम है, अल-बहर में ऐसा ही है। (त)

उसी में अल-खैरिय्याह से है: सत्य यही है कि दोनों में अंतर नहीं है, इसीलिए मुक़द्दिसी ने नज़्म अल-कंज़ की शरह (व्याख्या) में इस पर दृढ़ता से कहा है। (त)

बहर अल-राइक़ में है: हमने (महर के अध्याय में) दूसरे विचार को प्राथमिकता दी है कि यह औरत की ओर से भी होता है, इसीलिए मिस्कीन ने इसके रूपों का वर्णन करते हुए उल्लेख किया है कि वह उसे कह सकती है कि मैंने तुझे छोड़ दिया। (त) हमने महर के अध्याय में दूसरे मत को प्राथमिकता दी है कि औरत को भी यह अधिकार है। इसी कारण मिस्कीन ने इसके स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि औरत कह सकती है कि मैंने तुझसे अलहदगी (अलग होने) कर ली है। (त)

इस मसले की पूरी तहक़ीक़ हमारे फ़तावा में है और यहाँ इसकी आवश्यकता नहीं कि औरत के फ़स्ख़ को मुतारका कहें या नहीं, उसे फ़स्ख़ का अधिकार निस्संदेह सर्वसम्मति से है ताकि गुनाह को रोका जा सके। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २३८: मतनपुरी मोहल्ला, राजा के किले के नीचे से, प्रेषक सादुल्लाह साहब मेमार, २१ रबी-उल-आख़िर १३३२ हिजरी। हिंदा विधवा ने ज़ैद के साथ अवैध संबंध बनाए, और सुना है कि कुछ गर्भ भी गिरे, और हिंदा ने अपनी बेटी का, जो बचपन में ही विधवा हो गई थी, ज़ैद के साथ निकाह कर दिया, जिससे वह खुद अवैध संबंध रखती थी, बेटी की रज़ामंदी के बिना जबरन निकाह कर दिया। तो क्या यह निकाह सही हुआ या नहीं? और अब उस लड़की का निकाह दूसरी जगह बिना तलाक के हो सकता है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: यदि स्थिति वैसी ही है जैसा कि बताया गया है, तो यह निकाह सरासर हराम है। ज़ैद पर अनिवार्य है कि वह उसे छोड़ दे। ज़ैद के छोड़ने के बाद, इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दिन पूरे करके वह जिससे चाहे निकाह कर सकती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २३९: जयपुर राजपूताना, चाँदपोल बाज़ार, गोबिंद राम फ़ोटोग्राफ़र की दुकान के पास से, प्रेषक हाफ़िज़ रहीम बख़्श साहब ख़रादी, २४ रबी-उल-आख़िर १३४६ हिजरी। हुरमत-ए-मुसाहरत (सम्बन्धों के कारण निकाह की मनाही) के लिए औरत का 'मुश्तहा' (यौवन की आयु में) होना आवश्यक है।

[1] रद अल-मुहतार, बाब अल-महर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/३५२ [2] रद अल-मुहतार, बाब अल-महर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/३५२ [3] बहर अल-राइक़, बाब अल-इद्दत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, ४/१३६

पृष्ठ ४४७ का ७३९

جلد یاز دہم فتاوٰی رضویہ

کذافی البحر[1]۔ فسخ کا فرق بعید ہے، بحر میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

اسی میں خیریہ سے ہے: الحق عدم الفرق ولذا جزم به المقدسي فی شرح نظم الکنز[2]۔ حق یہی ہے کہ دونوں میں فرق نہیں ہے، اسی لیے مقدسی نے اس پر نظم الکنز کی شرح میں جزم کیا ہے۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: رجحنا(فی باب المہر)الثانی انها تکون من المرأة ایضا ولذاذکر مسکین من صورها ان تقول لہ ترکتک[3]۔ ہم نے باب المہر میں ثانی کو ترجیح دی ہے یہ کہ عورت کو بھی حق ہے۔ اسی لیے مسکین نے اس کی صورت کو بیان کرتے ہوئے کہا کہ عورت کہہ سکتی ہے کہ میں نے تجھ سے علیحدگی کرلی ہے۔ (ت)

اسی مسئلہ کی تمام تحقیق ہمارے فتاوی میں ہے اور یہاں اس کی حاجت نہیں کہ عورت کے فسخ کو متارکہ کہیں یا نہیں ،اسے فسخ کا اختیار بلاشبہ بالاتفاق ہے دفعا للمعصیۃ (گناہ کو ختم کرنے کے لیے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۳۸: از متن پوری محلہ زیر قلعہ راجہ مرسلہ سعد اللہ صاحب معمار ۲۱ ربیع الآخر ۱۳۳۲ھ ہندہ بیوہ نے زید سے تعلق ناجائز پیدا کیا، اور سنا ہے کہ چند حمل بھی ساقط ہوئے اور ہندہ نے اپنی دختر کا کہ وہ بھی صغر سنی میں بیوہ ہوگئی تھی زید کے ساتھ جس سے خود تعلق ناجائز رکھتی تھی بلارضامندی دختر خود بحبر عقد کرلیا تو یہ نکاح درست ہوا یا نہیں ؟ اور اب اس لڑکی کا نکاح دوسری جگہ بلاطلاق ہوسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: اگر صورت واقعہ یہ ہے یہ نکاح حرام محض ہے۔ زید پر فرض ہے کہ وہ اسے چھوڑ دے، زید کے چھوڑنے کے بعد عدت کے دن پورے کرکے جس سے چاہے نکاح کرلے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۹: از جے پور راجپوتانہ چاند پول بازار متصل دکان گوبند رام فوٹو گرافر مرسلہ حافظ رحیم بخش صاحب خرادی ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۴۶ھ حرمت مصاہرت کے لیے عورت کا مشتہاۃ ہونا ضروری ہے،

[1] ردالمحتار باب المہر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۲/۲ [2] ردالمحتار باب المہر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۲/۲ [3] بحرالرائق باب العدۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۳۶/۴

| Arabic: This is when she is alive and desirable (Mushtahaat). As for others, meaning a dead woman or a young girl who is not desirable, the prohibition (of affinity) is not established at all. - Durr-ul-Mukhtar. (1) | Urdu: The prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharat) will occur when the woman is alive and of a desirable age. However, if she is dead or a minor girl who is not yet desirable, the prohibition of affinity will not be established at all. (T) - From Durr-ul-Mukhtar. |

And a desirable girl (Mushtahaat) can be at least nine years old, as per the following excerpts:

| Arabic: ...or the erection increases, meaning it was already erect before it. It was even said that if one sought his wife for intercourse after his organ became erect, but mistakenly rubbed it between the thighs of her daughter, the mother does not become prohibited to him unless the erection increases [at that moment]. And the presence of desire (shahwat) from either of them is sufficient. (2) | Urdu: Or the erection increases, meaning the penis was already erect; to the extent that it's said if after the organ became erect, he sought his wife, or while seeking, by mistake rubbed it against the thighs of his wife's daughter, the girl's mother will not become prohibited as long as the erection did not increase while touching the girl. And during the touch, desire being present in either the man or the woman is sufficient for prohibition. (T) |

This, which is written in the relevant footnote on page 93 of Sharh Chalpi, seems to apply to a girl of nine years or older. Although this ruling could also apply to a ten-year-old girl, meaning will the prohibition of affinity be established or what?

The Answer: For the establishment of the prohibition of affinity, it is necessary for the female to be 'Mushtahaat' (desirable), as explicitly mentioned in general books like Durr-ul-Mukhtar etc. And the meaning of "presence of desire from either of them is sufficient" (3) is not that if only he is 'Mushtahi' (desiring) and the daughter is non-'Mushtahaat', or the woman is 'Mushtahaat' and the boy is non-'Mushtahi', then prohibition is established. This is nobody's opinion. Rather, its meaning is that he should be 'Mushtahi' and she should be 'Mushtahaat', and the actual act of desire is from one side; for example, if he touched her with desire while she was sleeping such that she didn't even know, the prohibition is established because 'presence from either one' is sufficient. And Allah Almighty knows best.

Issue 240: From Mahim, Post Office No. 16, Bombay, sent by Haji Muhammad Sulaiman, 22 Rabi al-Akhir 1330 AH. Is Zaid's marriage to his niece's daughter lawful or prohibited? Meaning Zaid and Bakr are real brothers from the same father and mother. Now, is Zaid's marriage with Bakr's granddaughter lawful or not? Whatever is the command of Allah and His Messenger in the Holy Quran.

---

1. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press, Delhi, 1/188.
2. Dhakhira-ul-Uqba, Footnote on Sharh al-Wiqayah, Book of Marriage, Munshi Nawal Kishore, Lucknow, 2/179.
3. Dhakhira-ul-Uqba, Footnote on Sharh al-Wiqayah, Book of Marriage, Munshi Nawal Kishore, Lucknow, 2/179.

ग्यारहवाँ खंड | फतावा रज़विया

| अरबी पाठ: "यह तब है जब वह जीवित और कामुक (मुश्ताहात) हो। दूसरों के लिए, यानी मृत महिला या छोटी लड़की जो कामुक नहीं है, (सम्बन्ध की) मनाही बिल्कुल भी स्थापित नहीं होती है।" - दुर्र-उल-मुख्तार। (1) | उर्दू अनुवाद: हुरमत-ए-मुसाहरत (विवाह सम्बन्ध से उत्पन्न निषेध) तब होगी जब महिला जीवित और कामुक हो, लेकिन अगर वह मृत हो या ऐसी नाबालिग लड़की हो जो कामुक न हो, तो हुरमत-ए-मुसाहरत हरगिज़ साबित नहीं होगी। (त) - दुर्र-उल-मुख्तार से। |

और एक कामुक लड़की (मुश्ताहात) कम से कम नौ साल की हो सकती है, जैसा कि निम्नलिखित उद्धरणों में है:

| अरबी पाठ: "...या उत्तेजना बढ़ जाती है, अर्थात वह पहले से ही उत्तेजित थी। यहाँ तक कहा गया है कि यदि किसी ने अपने अंग के उत्तेजित होने के बाद अपनी पत्नी को सम्भोग के लिए चाहा, लेकिन गलती से उसे उसकी बेटी की जांघों के बीच रगड़ दिया, तो माँ उस पर तब तक हराम नहीं होगी जब तक कि लड़की को छूते समय उत्तेजना न बढ़ जाए। और उनमें से किसी एक की ओर से कामवासना (शहवत) की उपस्थिति पर्याप्त है।" (2) | उर्दू अनुवाद: या उत्तेजना बढ़ जाए, यानी लिंग पहले से ही उत्तेजित था; यहाँ तक कहा गया है कि अगर अंग के उत्तेजित होने के बाद उसने अपनी पत्नी को चाहा, या चाहने के दौरान गलती से अपनी पत्नी की बेटी की जांघ पर रगड़ दिया, तो लड़की की माँ तब तक हराम नहीं होगी जब तक कि लड़की को छूते समय उत्तेजना न बढ़ी हो। और छूते समय पुरुष या महिला में से किसी एक का कामवासना में होना हुरमत के लिए काफी है। (त) |

यह, जो शरह चलपी के पृष्ठ ९३ के संबंधित हाशिये पर लिखा है, नौ साल या उससे अधिक की लड़की के लिए प्रतीत होता है। हालाँकि यह मसला दस साल की लड़की पर भी लागू हो सकता है, यानी क्या हुरमत-ए-मुसाहरत साबित हो जाएगी या क्या?

उत्तर (Al-Jawab): हुरमत-ए-मुसाहरत की पुष्टि के लिए 'मुश्ताहात' (कामुक) होना ज़रूरी है, जैसा कि दुर्र-उल-मुख्तार आदि सामान्य किताबों में स्पष्ट है। और "उनमें से किसी एक की ओर से कामवासना की उपस्थिति पर्याप्त है" (3) का यह अर्थ नहीं है कि यदि केवल वह 'मुश्तही' (कामवासना रखने वाला) है और बेटी 'मुश्ताहात' नहीं है, या महिला 'मुश्ताहात' है और लड़का 'मुश्तही' नहीं है, तो हुरमत साबित हो जाएगी। यह किसी का भी मत नहीं है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसे 'मुश्तही' होना चाहिए और उसे 'मुश्ताहात' होना चाहिए, और कामवासना वास्तव में एक

पक्ष से हो; उदाहरण के लिए, यदि उसने उसके सोते समय कामवासना के साथ स्पर्श किया कि उसे पता भी नहीं चला, तो हुरमत साबित हो गई क्योंकि 'किसी एक से उपस्थिति' पर्याप्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २४०: माहिम, पोस्ट ऑफिस नंबर १६, बॉम्बे से, हाजी मुहम्मद सुलेमान द्वारा भेजा गया, २२ रबी अल-आकिर १३३० हिजरी। क्या ज़ैद का निकाह ज़ैद की भतीजी की बेटी से हलाल है या हराम? यानी ज़ैद और बक्र दोनों सगे भाई एक ही माता-पिता की संतान हैं। अब ज़ैद का निकाह बक्र की नवासी के साथ हलाल है या नहीं? जैसा कि पवित्र कुरान में अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म है।

---

1. दुर्र-उल-मुख्तार, महर्रमात का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १/१८८।
2. ज़खीरा-उल-उकबा, शरह अल-विकाया का हाशिया, निकाह की किताब, मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, २/१७९।
3. ज़खीरा-उल-उकबा, शरह अल-विकाया का हाशिया, निकाह की किताब, मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, २/१७९।

पृष्ठ 448/739

| هذا اذا كانت حية مشتهاة اما غيرها يعنى الميتة وصغيرة لم تشتهه (فلا) تثبت الحرمة بها اصلا۔

درمختار (1) | حرمتِ مصاہرت تب ہوگی جب عورت زندہ اور شہوت والی ہو، لیکن اگر مردہ ہو یا صغیرہ غیر شہوت والی ہو تو حرمتِ مصاہرت ہرگز ثابت نہ ہوگی۔ (ت) (درمختار- (ت)) |

اور مشتہاۃ کم سے کم نو سال کی لڑکی ہوسکتی ہے تو عبارات ذیل بھی:

| او يزداد انتشارا اى ان تكون منتشرة قبلہ حتى قيل من انتشرت آلتہ و طلب امرأتہ لو طيها فاولجها بين فخذى بنتها لا تحرم عليها امها مالم يزداد انتشارا، و وجود الشهوة من احدهما يكفى (2) | یا انتشار زیادہ ہو جائے یعنی آلہ تناسل پہلے منتشر تھا اس پر یہاں تک کہا گیا کہ اگر اس نے آلہ تناسل کے انتشار کے بعد بیوی کو طلب کیا ہو۔ یا طلب کرتے ہوئے غلطی سے بیوی کی بیٹی کی ران پر مل دیا تو اس لڑکی کی ماں حرام نہ ہوگی جب تک لڑکی کو چھوتے ہوئے انتشار زیادہ نہ ہوا ہو، اور چھوتے وقت مرد یا عورت میں سے ایک کا شہوت میں ہونا حرمت کے لیے کافی ہے۔ (ت) |

جو شرح چلپی کے صفحہ ۹۳ کے متعلقہ حاشیہ پر درج ہے نو سال یا اس سے زائد کی لڑکی کے واسطے معلوم ہوتی ہے بآنکہ دہ سال کی لڑکی پر بھی یہ مسئلہ عائد ہو سکتا ہے، یعنی حرمتِ مصاہرت ثابت ہو جائے گی یا کیا؟

الجواب: ثبوتِ حرمتِ مصاہرت کے لیے مشتہاۃ ہونا ضروری ہے جیسا کہ درمختار وغیرہ عامہ کتب میں تصریح ہے اور وجود الشهوة من احدهما يكفى (3) (دونوں میں سے ایک کا شہوت سے ہونا کافی ہے۔ت) کے یہ معنی نہیں کہ صرف یہ مشتہی اور دختر غیر مشتہاۃ یا عورت مشتہاۃ ہو

اور لڑکا غیر مشتہی تو حرمت ثابت ہو جائے یہ کسی کا بھی قول نہیں بلکہ اس کے یہ معنی ہیں کہ یہ مشتہی ہو اور وہ مشتہاۃ اور بالفعل شہوت ایک کی طرف سے ہو مثلاً اس کے سوتے میں مس بشہوۃ کیا کہ اسے اطلاع بھی نہ ہوئی تو حرمت ہو گئی کہ وجود من احدھما کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۰: از ماہم ڈاک خانہ نمبر ۱۶ بمبئی مرسلہ حاجی محمد سلیمان ۲۲ ربیع الآخر ۱۳۳۰ھ زید کا نکاح زید کی بھتیجی کی دختر سے حلال ہے یا حرام یعنی زید وبکر حقیقی دونوں بھائی ایک باپ مادر کی پشت سے ہیں، اب زید کا نکاح بکر کی نواسی سے حلال ہے یا نہیں؟ جیسا خدا اور رسول کا حکم ہو قرآن مجید

---

1. درمختار باب فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۸
2. ذخیرۃ العقبی حاشیہ شرح وقایہ کتاب النکاح منشی نولکشور لکھنؤ ۲/۱۷۹
3. ذخیرۃ العقبی حاشیہ شرح وقایہ کتاب النکاح منشی نولکشور لکھنؤ ۲/۱۷۹

Fatawa Ridawiyya Volume 11

Issue: Please issue a ruling from Hadith and Jurisprudence: Is marriage permissible with a niece's daughter (brother's daughter's daughter), a niece's daughter (sister's daughter's daughter), a nephew's daughter (brother's son's daughter), and a nephew's daughter (sister's son's daughter)? Marriage with a niece or nephew's daughter is forbidden, but is it permissible or forbidden with their descendants?

The Answer: It is strictly forbidden (Haram Qati). These are all considered as daughters. Just as nieces (brother's or sister's daughters) are forbidden, so are the children of nephews and nieces, and their descendants no matter how distant the lineage goes. This includes granddaughters, great-granddaughters, etc., of one's own children and of one's siblings. As stated in the Quran: "Forbidden to you are your mothers and your daughters" [1]. "Mothers" includes grandmothers (paternal and maternal), great-grandmothers, and so on upwards. "Daughters" includes granddaughters, great-granddaughters, and so on downwards. Similarly, it says: "And your brother's daughters and your sister's daughters" [2]. This also includes the granddaughters, great-granddaughters, etc., of brothers and sisters, however distant they may be. And Allah Almighty knows best.

Issue 241: From Bahraich district, Nazirahpura neighborhood, at the residence of Syed Mansab Ali Sahib, petition writer, sent by Syed Naseeruddin Sahib, 22nd Rabi' al-Akhir 1336 AH.

Zaid, belonging to the Ahle Sunnat wal Jama'at, married a Shia woman according to the Shia rite (sigha) and did not perform the marriage according to the Ahle Sunnat way. They remained in their respective religions throughout their lives. In such a case, are the children born from this union legitimate or illegitimate? Please explain and be rewarded.

The Answer: Nowadays, the 'Tabara'i Rafidis' (Shias who practice Tabarra) are generally considered apostates (murtads). Neither an apostate man nor an apostate woman can marry anyone in the entire world. Any children born will not be legitimate. In Fatawa Hindiyya, quoting Fatawa Zahiriyya, it is stated:

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
It is mandatory to declare the Rafidis as disbelievers for their belief in the 'Raj'ah' (return) of the dead to this	Regarding the Rafidi belief that "deceased people will return to the world again," it is mandatory to declare them disbelievers, to

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
world; and their legal rulings are those of apostates [3].	the extent that it is stated their legal rulings are the same as those of apostates.

(T)

In the same work, it is mentioned from Al-Mabsut:

---

[1] Al-Quran Al-Karim 23/2 [2] Al-Quran Al-Karim 23/2 [3] Fatawa Hindiyya, Chapter on Rulings of Apostates, Noorani Kutub Khana Peshawar 2/264

फतावा रज़विया जिल्द: ग्यारहवीं

प्रश्न: हदीस और फ़िक़्ह के आधार पर आदेश जारी करें कि क्या भाई की पोती (भतीजी की बेटी), बहन की पोती (भांजी की बेटी), भाई के बेटे की बेटी और बहन के बेटे की बेटी से निकाह करना जायज़ है? जबकि भतीजी और भांजी से निकाह हराम है, क्या उनकी औलाद और नस्ल से निकाह जायज़ है या हराम?

उत्तर (अल-जवाब): यह बिल्कुल हराम (हराम-ए-क़तई) है। ये सभी उनकी बेटियों की तरह हैं। जैसे भतीजी और भांजी हराम हैं, वैसे ही उनके और भतीजों और भांजों की औलाद, और उनकी औलाद की औलाद, चाहे सिलसिला कितना ही दूर क्यों न जाए, सब हराम हैं। इसमें पोतियां, नवाकियां और उनकी दूर की नस्लें सब शामिल हैं। जैसा कि फ़रमाया गया: "तुम पर तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियाँ हराम की गई हैं" (1)। माओं में दादी, नानी, परदादी, परनानी जितनी भी ऊपर हों, सब शामिल हैं। और बेटियों में पोती, नवासी, परपोती, परनवासी जितनी भी नीचे हों, सब शामिल हैं। इसी तरह फ़रमाया: "और तुम्हारे भाई की बेटियाँ और तुम्हारी बहन की बेटियाँ" (2)। इनमें भाई-बहन की पोती, नवासी, परपोती, परनवासी जितनी भी दूर हों, सब शामिल हैं। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 241: ज़िला बहराइच, मोहल्ला नाज़िरापुरा, सैयद मन्सब अली साहब अर्ज़ी-नवीस के मकान से, प्रेषक सैयद नसीरुद्दीन साहब, 22 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी।

ज़ैद, जो अहले सुन्नत वल जमाअत से है, ने एक शिया औरत से शिया मज़हब के अनुसार 'सीग़ा' (निकाह-ए-मुता) पढ़ा और अहले सुन्नत के तरीक़े से निकाह नहीं किया। पूरी उम्र दोनों अपने-अपने मज़हब पर क़ायम रहे। ऐसी स्थिति में जो औलाद हुई, वह जायज़ है या नाजायज़? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर (अल-जवाब): आज कल तबर्राई राफ़ज़ी (गाली-गलौज करने वाले शिया) आम तौर पर मुर्तद (धर्म-त्यागी) हैं, और मुर्तद चाहे मर्द हो या औरत, दुनिया भर में किसी से निकाह नहीं कर सकता। जो भी औलाद होगी, वह जायज़ (वलद-ए-हलाल) नहीं हो सकती। फतावा आलमगीरी में फतावा ज़हीरिया से उद्धृत है:

(अरबी पाठ)

राफ़ज़ियों को उनके इस कथन पर काफ़िर कहना वाजिब है कि मुर्दे दुनिया में वापस आएंगे; और उनके हुक्म मुर्तदों वाले हैं (3)।

(उर्दू अनुवाद)

राफ़ज़ियों के इस कथन पर कि "मरे हुए लोग दुनिया में फिर वापस आएंगे", उन्हें काफ़िर कहना वाजिब है, यहाँ तक कि फ़रमाया कि उनके हुक्म मुर्तदों वाले हैं।

(त)

इसी में 'मब्सूत' से है:

---

1. अल-क़ुरान अल-करीम 2/23
2. अल-क़ुरान अल-करीम 2/23
3. फतावा हिन्दिया, मुर्तदों के हुक्म का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/264

حدیث فقہ سے حکم صادر فرمائیں، بھتیجی کی لڑکی سے اور بھانجی کی لڑکی سے اور بھتیجے کی بیٹی سے اور بھانجھے کی لڑکی سے نکاح درست ہے اور بھتیجی و بھانجی سے تو حرام ہے مگر ان کی اولاد آل سے جائز ہے یا حرام؟ الجواب: حرام قطعی ہے، یہ سب اس کی بیٹیاں ہیں، جیسے بھتیجی بھانجی ویسے ہی ان کی اور بھتیجوں اور بھانجوں کی اولاد، اور اولاد اولاد کتنے ہی دور سلسلہ جائے سب حرام ہیں، بنات پوتیوں نواسیوں دور تک کے سلسلے سب کو شامل ہے۔ جس طرح فرمایا گیا۔ حُرِّمَتْ عَلَیْکُمْ اُمَّھٰتُکُمْ وَبَنٰتُکُمْ (1) تم پر حرام کی گئیں تمھاری مائیں اور تمھاری بیٹیاں، اور ماؤں میں دادی، نانی، پر دادی، پرنانی جتنی اوپر ہوں سب داخل ہیں، اور بیٹیوں میں پوتی، نواسی، پر پوتی، پر نواسی جتنی ہوں نیچے سب داخل ہیں، یوں فرمایا: وَبَنٰتُ الْاَخِ وَ بَنٰتُ الْاُخْتِ (2) تم پر حرام کی گئیں بھائی کی بیٹیاں اور بہن کی بیٹیاں۔ ان میں بھی بھائی بہن کی پوتی، نواسی، پر پوتی، پر نواسی جتنی دور ہوں سب داخل ہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۱: از ضلع بہرائچ محلہ ناظرہ پورہ بمکان سید منصب علی صاحب عرضی نویس مرسلہ سید نصیر الدین صاحب ۲۲ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ زید، مذہب اہل سنت والجماعت نے ایک عورت شیعہ کے مطابق مذہب شیعہ صیغہ پڑھایا اور نکاح بطریق اہلسنت نہیں کیا اور مدت العمر دونوں اپنے اپنے مذہب پر قائم رہے، ایسی حالت میں جو اولاد ہوئی وہ جائز یا ناجائز؟ بینوا توجروا الجواب: آج کل تبرائی رافضی علی العموم مرتدین ہیں اور مرتد خواہ مرد خواہ عورت سے دنیا بھر میں کسی کا نکاح نہیں ہو سکتا۔ جو کچھ اولاد ہو گی ولد الحلال نہیں ہو سکتی، عالمگیری میں فتاوٰی ظہیریہ سے ہے:

| یجب اکفار الروافض فی قولہم برجعۃ الاموات الی الدنیا ان قال واحکامہم احکام المرتدین (3) |

رافضیوں کے اس قول پر کہ "فوت شدہ لوگ دنیا میں پھر واپس آئیں گے" ان کی تکفیر واجب ہے

اور یہاں تک کہ انہوں نے فرمایا کہ ان کے احکام مرتدین والے ہیں۔ | | (ت) | | |

اسی میں مبسوط سے ہے:

---

1 القرآن الکریم ۲۳/۲ 2 القرآن الکریم ۲۳/۲ 3 فتاوی ہندیہ باب فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۶۴

Fatawa Razvia, Volume 11

[Arabic Quote]: It is not permissible for an apostate man to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original disbelieving woman. Likewise, the marriage of an apostate woman with anyone is not permissible. (T)

After this, there is no need for discussion on the marriage formula; had it been a marriage according to Sunni practices, when could it have happened? And Allah Almighty knows best.

Problem 242: From Miranpur Karah, Tehsil Tilhar, District Shahjahanpur, near the police post. Sent by Qazi Tafazzul Husain Sahib Naib, 24 Rabi' al-Akhir 1336 AH.

Question: Is the marriage of a pregnant woman permissible or not? Also, please write what is the ruling regarding the marriages of Boora (community) people?

Answer: If a woman is pregnant from a lawful relationship, her marriage with another person is absolutely void until the child is born. If a woman is without a husband and the pregnancy is from adultery (Zina), then marriage with her is permissible. Furthermore, if the person whose pregnancy it is marries her, he may also approach her (sexually). But if another person marries her, he cannot touch her until the child is born, as stated in Durr al-Mukhtar, etc. (T). The Boora people are in the ruling of minors; their marriage will be with the permission of the guardian (Wali). And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and most wise.

Problem 243: Zaid was extremely ill-behaved; now his whereabouts are unknown (missing). It is difficult for Zaid's wife to make ends meet. Zaid's father looked at this woman with ill intentions and committed adultery with her. In this situation, the woman wants to remarry so that she can support herself and avoid this sin. What is the ruling of the Noble Shariah in this case? State it and you will be rewarded.

Answer: God forbid! If this adultery is proven—and proving it is very difficult—then the woman has surely become prohibited for her husband forever. However, she does not exit the marriage bond until the husband utters any word of separation with his tongue. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Quote]: The marriage is not terminated due to 'Hurmat-e-Musaharat' (prohibition through affinity). It will not be lawful for her to marry another person

until separation (mutarakah) and the completion of the waiting period (iddat) occur. During this period, sexual intercourse will not be declared as adultery (zina). (T)

1. Fatawa Khayriyya, Section on Prohibitions through Polytheism, Noorani Kutub Peshawar, 1/282
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Matba' Mujtabai Delhi, 1/188

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

अरबी उद्धरण: एक धर्मत्यागी पुरुष के लिए किसी धर्मत्यागी स्त्री, मुस्लिम स्त्री, या मूल रूप से काफ़िर स्त्री से निकाह करना जायज़ नहीं है। इसी तरह, किसी धर्मत्यागी स्त्री का किसी के भी साथ निकाह जायज़ नहीं है। (त)

इसके बाद निकाह के सूत्रों पर बहस की कोई आवश्यकता नहीं है; यदि सुन्नी तौर-तरीकों के अनुसार निकाह होता, तो कब संभव होता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 242: मीरानपुर कड़ा, तहसील तिलहर, ज़िला शाहजहाँपुर, पुलिस चौकी के पास से। प्रेषक: काज़ी तफ़ज़्ज़ुल हुसैन साहब नायब, 24 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी।

प्रश्न: क्या गर्भवती महिला का निकाह जायज़ है या नहीं? साथ ही यह भी लिखें कि बोरा समुदाय के लोगों के निकाहों का क्या हाल है?

उत्तर: जिस स्त्री को जायज़ संबंध (हलाल) से गर्भ हो, उसका दूसरे व्यक्ति से निकाह पूरी तरह अमान्य (बातिल) है जब तक कि बच्चा पैदा न हो जाए। और यदि स्त्री बिना पति की है और गर्भ व्यभिचार (ज़िना) से है, तो उससे निकाह हो सकता है। फिर, यदि वही व्यक्ति निकाह करता है जिसका यह गर्भ है, तो वह उसके पास भी जा सकता है। लेकिन अगर दूसरा व्यक्ति निकाह करता है, तो जब तक बच्चा पैदा न हो जाए, वह उसे हाथ नहीं लगा सकता, जैसा कि दुर्र-ए-मुख़्तार आदि में है। (त)। बोरा लोग नाबालिगों के हुक्म में हैं, उनका निकाह वली (अभिभावक) की अनुमति से होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान पूर्ण और सर्वोपरि है।

मसाला 243: ज़ैद बहुत ही बुरे चरित्र वाला था, अब वह लापता (मफ़क़ूदुल ख़बर) है। ज़ैद की पत्नी के लिए गुज़ारा करना मुश्किल है। ज़ैद के पिता ने उस स्त्री को बुरी नज़र से देखा और उसके साथ व्यभिचार किया। इस स्थिति में वह स्त्री अपना निकाह (दूसरा) करना चाहती है ताकि अपना गुज़ारा कर सके और इस हराम काम से बच सके। इस स्थिति में शरीयत का क्या हुक्म है? बयान करें, पुण्य मिलेगा।

उत्तर: खुदा न करे! अगर यह व्यभिचार सिद्ध हो जाए—और इसे सिद्ध करना बहुत कठिन है—तो वह स्त्री अपने पति पर निश्चित रूप से हमेशा के लिए हराम हो गई। लेकिन वह निकाह से तब तक

बाहर नहीं निकलेगी जब तक पति अपनी ज़बान से उसे छोड़ने का कोई शब्द न कहे। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

1. फ़तावा खैरिया, शिर्क के कारण वर्जित वस्तुओं का खंड, नूरानी कुतुब पेशावर, 1/282
2. दुर्र-ए-मुख़्तार, वर्जित वस्तुओं का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/188

पृष्ठ 739 का 450

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

لایجوز للمرتدان یتزوج مرتدۃ ولا مسلمۃ ولا کافرۃ | مرتد کو کسی مرتدہ عورت یا مسلمان یا اصلی کافر عورت سے اصلیۃ وکذلك لایجوز نکاح المرتدۃ مع احد 1- | نکاح کرنا جائز نہیں اور یوں ہی مرتدہ عورت کا بھی کسی ایک سے نکاح جائز نہیں۔ (ت)

اس کے بعد صیغہ و نکاح کی بحث کی کچھ حاجت نہیں، سنیوں کے طور پر نکاح ہوتا تو کب ہوسکتا۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۴۲ : از میران پور کڑہ تحصیل تلہر ضلع شاہجہان پور متصل چوکی مرسلہ قاضی تفضل حسین صاحب نائب ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

حاملہ عورت کا نکاح جائز ہے یا نہیں؟ نیز یہ بھی تحریر فرمائیے کہ بورے آدمیوں کے نکاحوں کا کیا حال ہے؟ الجواب : عورت جسے حلال سے حمل ہو دوسرے شخص سے اس کا نکاح باطل محض ہے جب تک بچہ پیدا نہ ہو۔ اور اگر بے شوہر عورت اور حمل زنا کا ہے تو اس سے نکاح ہوسکتا ہے، پھر اگر وہ ہی نکاح کرے جس کا یہ حمل ہے تو وہ پاس بھی جاسکتا ہے اور اگر یہ دوسرا شخص نکاح کرے تو جب تک بچہ پیدا نہ ہولے ہاتھ نہیں لگا سکتا، کما فی الدرالمختار وغیرہ (جیسا کہ در مختار وغیرہ میں ہے۔ت) بورہ نا بالغ کے حکم میں ہے اس کا نکاح ولی کی اجازت سے ہوگا، واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم و احکم۔

مسئلہ ۲۴۳ : زید نہایت بد چلن تھا اب وہ مفقود الخبر ہے اور زید کی عورت کو گزر اوقات کرنا دشوار ہے اور زید کے باپ نے اس عورت کو نظر بد سے دیکھا اور زنا کیا اس صورت میں وہ عورت اپنا نکاح کرنا چاہتی ہے تاکہ اپنی گزر اوقات کرے اور اس حرام سے بچے، اس صورت

میں شرع شریف کا کیا حکم ہے ؟ بینوا توجروا الجواب : معاذ اللہ اگر یہ زنا ثابت ہو اور اس کا ثابت ہونا بہت دشوار ہے تو عورت اپنے شوہر پر ضرور ہمیشہ ہمیشہ حرام ہوگئی مگر نکاح سے نہ نکلی جب تک شوہر اپنی زبان سے اسے چھوڑنے کا کوئی لفظ نہ کہے۔ درمختار میں ہے :

بحرمة المصاهرة لایرتفع النکاح حتی لا یحل لها التزوج | حرمت مصاہرت سے نکاح ختم نہیں ہوتا اور عورت دوسرے کو الا بعد المتارکة وانقضاء العدة والوطء بهالا یکون زناً 2- | اس وقت تک حلال نہ ہوگی جب تک متارکہ اور اس کی عدت پوری نہ ہوجائے، اس دوران وطی کو زنا نہیں قرار دیا جائے گا۔ (ت)

1 فتاوٰی خیریہ فصل فی المحرمات بالشرک نورانی کتب پشاور ۱ / ۲۸۲ 2 درمختار باب فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۸

Fatawa Razawiyya - Volume 11

In the same [book], it is mentioned: In an invalid marriage (Nikah-e-Fasid), the waiting period ('iddah) equivalent to that for divorce becomes obligatory upon the woman from the time of separation or abandonment (mutarakah) by the husband, provided there was sexual intercourse. This 'iddah is not mandatory based on mere seclusion (khalwah) alone, nor is there a mourning 'iddah due to the husband's death. Even if the woman is unaware of the abandonment, the 'iddah becomes necessary upon the husband's abandonment. [Ref: Ash-Shami]. Ash-Shami said: The commentator restricted abandonment to the husband, as did Az-Zailai, because the literal sense of their words suggests that abandonment does not originate from the woman at all, even though the annulment (faskh) of this marriage is valid from either of them in the presence of the other by consensus. The distinction between abandonment and annulment is far-fetched, as mentioned in 'Al-Bahr'. However, a distinction was made in 'An-Nahr' stating that abandonment is like divorce, therefore, only the husband can initiate abandonment just as he can divorce. Whereas, annulment is the declaration of the marriage as void, thus it's not restricted to the husband. Even though the meaning of abandonment is found [in annulment], Khairuddin al-Ramli refuted this and said that since divorce is not required in an invalid marriage, how can abandonment there be interpreted in the sense of divorce? Therefore, the truth is that there is no difference between abandonment and annulment. This is why Al-Maqdisi expressed certainty about this in the commentary on 'Nazm al-Kanz', etc. This entire discussion is in our marginal notes on 'Al-Bahr'. [Ref: Ash-Shami]. There, Ash-Shami...

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Delhi, 1/301.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar al-Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/352.

उसी में उल्लेख है: निक़ाह-ए-फ़ासिद (अमान्य विवाह) में संभोग के बाद अलगाव या पति द्वारा परित्याग (मुताराका) के समय से स्त्री पर तलाक के समान इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य होगी। केवल एकांत (ख़लवत) से यह इद्दत अनिवार्य नहीं होगी और न ही पति की मृत्यु पर शोक वाली इद्दत होगी। भले ही स्त्री को परित्याग का ज्ञान न हो, फिर भी पति द्वारा परित्याग किए जाने पर इद्दत अनिवार्य हो जाएगी। [हवाला: अल-शामी]। अल-शामी ने कहा कि टीकाकार ने परित्याग को पति तक ही सीमित रखा है जैसा कि इमाम ज़ैलई ने किया है, क्योंकि उनके शब्दों के प्रत्यक्ष अर्थ से यही प्रतीत होता है कि परित्याग का अधिकार स्त्री को बिल्कुल नहीं है। जबकि सर्वसम्मति से इस तरह के निक़ाह को एक-दूसरे की उपस्थिति में निरस्त (फ़स्ख़) करना स्त्री-पुरुष दोनों के लिए जायज़ है। परित्याग और फ़स्ख़ के बीच अंतर करना अनुचित है, जैसा कि 'अल-बहर' में कहा गया है। जबकि 'अन-नहर' में यह अंतर बताया गया है कि परित्याग तलाक़ की तरह है, इसलिए तलाक़ की तरह केवल पति ही परित्याग कर सकता है। और फ़स्ख़ निक़ाह को अमान्य घोषित करने का नाम है, इसलिए यह केवल पति के लिए विशिष्ट नहीं होगा। यद्यपि परित्याग का अर्थ [फ़स्ख़ में] पाया जाता है, लेकिन ख़ैरुद्दीन अल-रमली ने इसे खारिज कर दिया और कहा कि चूंकि निक़ाह-ए-फ़ासिद में तलाक़ की आवश्यकता नहीं होती, तो वहां परित्याग को तलाक़ के अर्थ में कैसे लिया जा सकता है? अतः सत्य यही है कि परित्याग और फ़स्ख़ में कोई अंतर नहीं है। इसीलिए मुक़द्दसी ने 'नज़्म अल-कंज़' की व्याख्या में इस पर दृढ़ता व्यक्त की है, और यह संपूर्ण चर्चा 'अल-बहर' पर हमारे हाशिए (नोट्स) में उपलब्ध है। वहां शामी ने...

---

1. दुर्रे मुख्तार, बाब फ़िल महर, मुजतबाई दिल्ली, 1/301
2. रद्दुल मुहतार, बाब फ़िल महर, दार एह्या अल-तुरास अल-अरबी बेरुत, 2/352

اسی میں ہے: نکاح فاسد میں وقت تفریق یا متارکہ سے عورت پر وطی سے طلاق والی عدت ہوگی محض خلوت سے یہ عدت واجب نہ ہوگی اور نہ ہی خاوند کی موت سے موت کی عدت ہوگی ، عورت کو متارکہ کا علم نہ بھی ہو تب بھی خاوند کے متارکہ سے عدت لازم ہوگی اھ شامی نے کہا کہ شارح نے متارکہ کو خاوند کے ساتھ مختص کیا جیسا کہ امام زیلعی نے کیا ہے کیونکہ ظاہر کلام سے یہی معلوم ہوتا ہے کہ متارکہ کا حق عورت کو نہیں ہے حالانکہ اس نکاح کا فسخ مرد اور عورت دونوں کو ایک دوسرے کی موجودگی میں بالاتفاق جائز ہے اور متارکہ اور فسخ میں فرق بعید ہے ، بحر میں یوں ہی ہے جبکہ نہر میں فرق بتایا گیا کہ متارکہ طلاق کی طرح ہے اس لیے طلاق کی طرح خاوند ہی متارکہ کرسکتا ہے، اور فسخ نکاح کو کالعدم قرار دینے کا نام ہے اس لیے یہ خاوند سے مختص نہ ہوگا۔ اگرچہ متارکہ کا معنی پایا جاتا ہے، اس کو خیر الدین رملی نے رد کر دیا اور کہا کہ فاسد نکاح میں طلاق کی ضرورت نہیں ہوتی تو وہاں متارکہ ، طلاق کے معنی میں کیسے کہا جاسکتا ہے ، لہذا حق یہی ہے کہ متارکہ اور فسخ میں کوئی فرق نہیں، اس لیے مقدسی نے نظم الکنز کی شرح میں اس پر جزم کا اظہار کیا ہے ، اور یہ تمام بحث بحر پر ہمارے حاشیہ میں ہے اھ وہاں شامی نے

---

1 درمختار باب فی المہر مجتبائی دہلی ۱/۳۰۱ 2 ردالمحتار باب فی المہر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۵۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic Column Transcription/Translation]: He clarified it in 'Minhat al-Khaliq'. In summary, it is not established from their words except that abandonment (mutarakah) is specific to the husband, and there is no hint of disagreement at all. I say: the statement in 'Al-Nahr' that 'abandonment is in the meaning of divorce' means that abandonment in a corrupt (fasid) marriage is equivalent to divorce in a valid marriage. Thus, what Al-Ramli mentioned and Al-Shami supported does not affect it. As for the problem arising from their statement, as in 'Al-Durr': "The right to annul it is established for each of them even without the presence of the other, whether consummated or not, according to the more correct opinion, to avoid sin; this does not contradict its obligation, rather the judge must separate them." [End of quote]

So I say: It appears to me, and Allah knows best, that this is when it (the marriage) occurred corruptly, such as if he married her without witnesses or after having touched her mother with desire. This is because no legal authority (hand) was established for him over her at all. Thus, each of them has the right to annul it to remove the sin. And what they mentioned here about specifying abandonment to the husband, it is...

[Urdu Column Transcription/Translation]: The evidence cited by Khair al-Din al-Ramli is not in his favor but rather against him, as he mentioned in 'Minhat al-Khaliq'. The gist of the matter is that from the words of the jurists (Fuqaha), it is proven that abandonment (mutarakah) is specific to the husband, and not even a scent of anything to the contrary is felt. I say: the statement in 'Nahr' that 'mutarakah is in the meaning of divorce' means that in a corrupt marriage, abandonment stands in place of divorce in a valid marriage. Therefore, Al-Ramli's objection is misplaced, even though Allama Shami supported it. As for the issue arising from the jurists' statement quoted in 'Durr', that both man and woman have the right of annulment even in each other's absence, whether consummated or not, to avoid sin—this mutual abandonment does not contradict the judge's duty to separate them; rather, the judge will order a separation for both.

So I say: Allah knows best, what I understand is that both man and woman have the right of annulment in any case in the situation where the marriage was contracted as corrupt from the start, such as marriage without witnesses or having previously touched the wife's mother with desire. Because in this case, no legal right of the

husband over the wife is established. Therefore, both have the right of abandonment from each other so that the sin may be removed. And when the jurists said that abandonment is only the husband's right, that...

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Mahr (Dowry), Mujtabai Press, Delhi, 1/201.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

[अरबी कॉलम का अनुवाद]: उन्होंने 'मिन्हात अल-ख़ालिक़' में इसे स्पष्ट किया। संक्षेप में, उनके शब्दों से यह सिद्ध नहीं होता सिवाय इसके कि परित्याग (मुतारका) पति के लिए विशिष्ट है, और इसमें बिल्कुल भी असहमति की कोई गंध नहीं है। मैं कहता हूँ: 'अल-नहर' का यह कथन कि 'परित्याग तलाक के अर्थ में है' का अर्थ है कि दूषित (फासिद) विवाह में परित्याग, सही विवाह में तलाक के समकक्ष है। अत; अल-रमलली ने जो उल्लेख किया और अल-शामी ने जिसका समर्थन किया, वह इसे प्रभावित नहीं करता। जहाँ तक उनके इस कथन से उत्पन्न समस्या का प्रश्न है, जैसा कि 'अल-दुर्र' में है: "उनमें से प्रत्येक के लिए इसे रद्द करने का अधिकार स्थापित है, चाहे दूसरे की उपस्थिति के बिना ही क्यों न हो, संभोग हुआ हो या नहीं, अधिक सही राय के अनुसार, पाप से बचने के लिए; यह इसकी अनिवार्यता के विपरीत नहीं है, बल्कि न्यायाधीश को उन्हें अलग करना ही चाहिए।" [उद्धरण समाप्त]

तो मैं कहता हूँ: मुझे ऐसा लगता है, और अल्लाह बेहतर जानता है, कि यह तब होता है जब यह (विवाह) दूषित रूप में हुआ हो, जैसे कि यदि उसने गवाहों के बिना उससे विवाह किया हो या उसकी माँ को पहले वासना के साथ छुआ हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि उस पर उसका कोई कानूनी अधिकार (हाथ) बिल्कुल भी स्थापित नहीं हुआ था। इस प्रकार, उनमें से प्रत्येक को पाप को दूर करने के लिए इसे रद्द करने का अधिकार है। और उन्होंने यहाँ परित्याग को पति तक सीमित करने के बारे में जो उल्लेख किया है, वह...

[उर्दू कॉलम का अनुवाद]: खैर अल-दीन अल-रमलली ने जो प्रमाण दिया है वह उनके पक्ष में नहीं बल्कि उनके विरुद्ध है, जैसा कि उन्होंने 'मिन्हात अल-ख़ालिक़' में इसका उल्लेख किया है। बात का सार यह है कि न्यायविदों (फ़ुक़हा) के शब्दों से यह सिद्ध होता है कि परित्याग (मुतारका) पति के साथ ही विशेष है, और इसके विपरीत की कोई महक तक महसूस नहीं होती। मैं कहता हूँ: 'नहर' के कथन में कि 'मुतारका तलाक के अर्थ में है', इसका मतलब यह है कि फासिद निकाह में मुतारका सही निकाह में तलाक के स्थान पर है। इसलिए रमलली का ऐतराज बेजा है, हालांकि अल्लामा शामी ने इसका समर्थन किया है। रही वह समस्या जो न्यायविदों के उस कथन से उत्पन्न होती है जिसे 'दुर्र' में अपनाया गया है कि पुरुष और स्त्री दोनों को निकाह रद्द करने का अधिकार है, चाहे एक दूसरे की अनुपस्थिति में हो, संभोग हुआ हो या नहीं, ताकि पाप से बचा जा सके—और यह आपसी मुतारका

न्यायाधीश (क़ाज़ी) पर अलगाव (तफ़रीक़) के अनिवार्य होने के विपरीत नहीं है, बल्कि क़ाज़ी दोनों को अलग होने का आदेश देगा।

तो मैं कहता हूँ: अल्लाह बेहतर जानता है, मुझे जो मालूम होता है वह यह कि पुरुष और स्त्री दोनों को हर हाल में रद्द करने का अधिकार उस स्थिति में है जब निकाह शुरू से ही फासिद संपन्न हुआ हो, जैसे गवाहों के बिना निकाह या निकाह की गई महिला की माँ को पहले वासना से छुआ हो। क्योंकि इस स्थिति में पत्नी पर पति का कोई शरई अधिकार स्थापित ही नहीं होता, इसलिए दोनों को एक दूसरे से मुतारका का अधिकार है ताकि पाप का निवारण हो सके। और न्यायविदों ने जो यह कहा कि मुतारका पति का ही अधिकार है, वह...

---

1. दुर्रे मुख्तार, महर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/201।

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

[عربی کالم]: بینه فی منحة الخالق و بالجملة فلا یثبت من کلامهم الا اختصاص الزوج بالمتارکة ثم لا یشم خلافه اصلا، اقول و قول النهران المتارکة فی معنی الطلاق معناه ان المتارکة فی الفاسد فی معنی الطلاق فی الصحیح فلا یمسه ما ذکر الرملی وایده الشامی و اما الاستشکال بقولهم کما فی الدر یثبت لکل واحد منهما فسخه ولو بغیر محضر من صاحبه دخل بها اولا فی الاصح خروجا عن المعصیة فلا ینافی وجوبه بل یجب علی القاضی التفریق بینهما ۱ اھـ

فأقول: یترأی لی واللہ تعالی اعلم ان هذا فیما اذا وقع فاسداً کما اذا انکحها بلاشهود او بعد مامس امها وذلك لانه لم یثبت له الید الشرعیه علیها اصلا و کان لکل منهما فسخه ازالة للمعصیة وماذکروا ههنا من تخصیص المتارکة بالزوج فهو...

[اردو کالم]: خیر الدین رملی کی جو دلیل ذکر کی وہ ان کے حق میں نہیں بلکہ ان کے خلاف ہے، جیسا کہ انہوں نے منحة الخالق میں اس کو ذکر کیا ہے، حاصل کلام یہ ہے کہ فقہاء کرام کے کلام سے متارکہ کا خاوند کے ساتھ خاص ہونا ہی ثابت ہوتا ہے، اور اس کے خلاف کی بو تک محسوس نہیں ہوتی۔ اقول نہر کے قول میں کہ متارکہ، طلاق کے معنی میں ہے، اس کا مطلب یہ ہے کہ فاسد نکاح میں متارکہ طلاق کے قائم مقام ہے صحیح قول میں، لہٰذا رملی کا اعتراض بے جا ہے اس کی تائید علامہ شامی نے کی ہے، باقی رہا وہ اشکال جو فقہاء کی اس عبارت سے پیدا ہوتا ہے جس کو در میں اختیار کیا ہے کہ مرد اور عورت دونوں کو فسخ کا اختیار ہے اگرچہ ایک دوسرے کی غیر حاضری میں ہو، دخول ہو ایا نہ، تاکہ گناہ سے اجتناب ہو سکے، اور یہ آپس کا متارکہ قاضی پر تفریق کے وجوب کے منافی نہیں ہے بلکہ قاضی دونوں پر تفریق کا حکم دے گاھ

فأقول: واللہ تعالیٰ اعلم مجھے جو معلوم ہوتا ہے وہ یہ کہ مرد اور عورت دونوں کو بہر صورت فسخ کا اختیار اس صورت میں ہے جبکہ نکاح ابتداء ہی فاسد منعقد ہوا ہو جیسے بغیر گواہوں کے نکاح یا منکوحہ کی ماں کو پہلے شہوت سے چھو چکا ہو، کیونکہ اس صورت میں خاوند کا بیوی پر شرعی حق ثابت ہی نہیں ہوتا اس لیے دونوں کو ایک دوسرے سے متارکہ کا حق ہے تاکہ گناہ کا ازالہ ہو جائے اور فقہاء کرام نے جو یہ کہا کہ متارکہ خاوند کا ہی حق ہے وہ ...

---

۱ در مختار باب فی المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۱

Volume 11 Fatawa Razawiyya

[Boxed Text] (Arabic): In cases where invalidity (fasad) arises after the marriage was initially valid, the woman alone does not have the right of annulment (fasakh). This is because it is not a defense against a wrong, but rather the termination of a legally established right of the husband. Therefore, separation (mutaraka) from the husband's side is necessary. The wisdom behind this is that if we were to allow her independent right to annul, strife (fitna) would spread. Any woman wishing to leave her husband could, for example, kiss her husband’s son with desire, thereby invalidating the marriage. She would then annul it herself and marry whomever she chooses. Closing this door to strife is necessary.

(Urdu Translation): This applies when the marriage was initially valid and invalidity occurred later. In such a case, the woman alone does not have the right of annulment because it is not a defense against sin but a termination of a proven Shari'a right. Therefore, mutual separation from the husband's side is necessary. The wisdom is that if the woman were given the independent right of annulment in this situation, strife would break out; whenever a woman wanted separation from her husband, she might, for instance, kiss her husband's son lustfully, invalidate the marriage herself, and then marry wherever she wished. It is necessary to block this door to strife. (T)

[Main Text] Here the husband is missing and the prohibition (hurmat) exists. It is incumbent upon the woman to bring the case before a Shari'a judge (Hakim-e-Shar’a) and provide proof. If it is proven by just witnesses that Zaid’s father committed an immoral act with Zaid’s wife—for this is the required evidence for establishing 'Hurmat-e-Musahara' (prohibition through marriage) even if it does not prove adultery according to the legal limit (Hadd) standards (T)—then the judge should separate the man and the woman. From the day of separation, the woman should observe a waiting period (Iddah) of three menstrual cycles, after which a second marriage may be permissible. And Allah Almighty knows best.

Question 244: From Bareilly city, asked by Abdul Jalil Sahib, student of knowledge, 29 Muharram al-Haram 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid and Bakr are real brothers. Zaid is older than Bakr, and Bakr is younger than Zaid. Zaid has a daughter, and from her, Zaid has a granddaughter. Bakr has a son. In this situation, if Zaid marries his granddaughter to his real brother's son, will the marriage be valid or not? State the ruling and be rewarded.

The Answer: Marriage with the granddaughter of a paternal uncle is permissible. And Allah Almighty knows best.

Question 245: From Rangoon, sent by Janab Seth Abdul Sattar son of Ismail Sahib Qadri Barkati Razavi, 2 Rabi' al-Awwal Sharif 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Can Zaid marry his stepmother’s real sister or not? What is the ruling of the pure Shari’ah? State the ruling and be rewarded.

जिल्द 11 फ़तावा रज़विया

[बॉक्स में दिया गया पाठ] (अरबी): उन मामलों में जहाँ निकाह शुरू में सही था और बाद में खराबी (फ़साद) उत्पन्न हुई, औरत को अकेले निकाह समाप्त करने (फ़स्ख़) का अधिकार नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह किसी गुनाह का बचाव नहीं है बल्कि पति के कानूनी रूप से स्थापित अधिकार की समाप्ति है। इसलिए, पति की ओर से अलगाव (मुतारका) आवश्यक है। इसके पीछे की हिकमत (बुद्धिमानी) यह है कि यदि हम उसे स्वतंत्र रूप से निकाह समाप्त करने का अधिकार दे दें, तो फितना (अव्यवस्था) फैल जाएगा। कोई भी औरत जो अपने पति को छोड़ना चाहती है, वह उदाहरण के लिए अपने पति के बेटे को कामुकता से चूम सकती है, जिससे निकाह फासिद (अवैध) हो जाएगा। फिर वह स्वयं इसे समाप्त कर लेगी और जिससे चाहे निकाह कर लेगी। इस फितने का रास्ता बंद करना आवश्यक है।

(उर्दू अनुवाद): यह उस स्थिति में है जब निकाह शुरू में सही था और खराबी बाद में आई हो। ऐसी स्थिति में, अकेली औरत को फ़स्ख़ का अधिकार नहीं है क्योंकि यह गुनाह से बचाव नहीं है बल्कि एक सिद्ध शरीयत अधिकार की समाप्ति है। इसलिए पति की ओर से मुतारका ज़रूरी है। हिकमत यह है कि अगर इस स्थिति में औरत को स्वतंत्र रूप से फ़स्ख़ का अधिकार दिया जाए, तो फितना पैदा होगा; जब भी कोई औरत अपने पति से अलग होना चाहेगी, वह उदाहरण के लिए अपने पति के बेटे को कामुकता से चूम लेगी, निकाह को खुद फासिद कर देगी और फिर जहाँ चाहेगी निकाह करती फिरेगी। इस फितने का रास्ता रोकना ज़रूरी है। (त)

[मुख्य पाठ] यहाँ पति लापता है और हुरमत (वर्जना) मौजूद है। औरत के लिए ज़रूरी है कि वह शरीयत के हाकिम के सामने मामला पेश करे और सबूत दे। यदि न्यायप्रिय गवाहों से यह साबित हो जाए कि ज़ैद के पिता ने ज़ैद की पत्नी के साथ अनुचित कार्य किया है—क्योंकि 'हुरमत-ए-मुसाहरत' (ससुराल के रिश्तों से वर्जना) स्थापित करने के लिए यही पर्याप्त साक्ष्य है, भले ही इससे सज़ा (हद) के लिए ज़िना साबित न हो (त)—तो हाकिम उन दोनों पुरुष और स्त्री को अलग कर दे। अलग होने के दिन से औरत तीन माहवारी की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गुज़ारे, और उसके बाद दूसरा निकाह जायज़ हो सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 244: बरेली शहर से, प्रार्थी अब्दुल जलील साहब, विद्यार्थी, 29 मुहर्रम अल-हराम 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद और बक्र आपस में सगे भाई हैं। ज़ैद उम्र में

बक्र से बड़ा है और बक्र ज़ैद से छोटा है। ज़ैद की एक बेटी है और उस बेटी से ज़ैद की एक नवासी (बेटी की बेटी) भी है। बक्र का एक बेटा है। इस स्थिति में, यदि ज़ैद अपनी नवासी का निकाह अपने सगे भाई के बेटे के साथ कर देता है, तो क्या निकाह जायज़ होगा या नहीं? बयान फ़रमाएं और पुण्य (सवाब) पाएं।

जवाब: चचा की नवासी से निकाह जायज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 245: रंगून से, प्रेषक जनाब सेठ अब्दुल सत्तार पुत्र इस्माइल साहब क़ादरी बरकाती रज़वी, 2 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: क्या ज़ैद अपनी सौतेली माँ की सगी बहन से निकाह कर सकता है या नहीं? पावन शरीयत का क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

पृष्ठ 739 का 453

جلد یاز دہم فتاوٰی رضویہ

[خانہ] (عربی): فیما اذا طرأ الفساد فح لاتنفرد بالفسخ لانه لیس دفعاً بل رفع لید شرعیة ثبتت للزوج فلا بد من متارکته والحکمة فیه ان لوجوزنا تفردها فیه بالفسخ لشاعت الفتن فکل امرأة ترید ان تفارق زوجها تقبل ابنه مثلا بشهوة فیفسد النکاح فتفسخه مبتدءة وتنکح من شاءت وهذا باب یجب سده۔

(اردو ترجمہ): اس صورت میں ہے جبکہ ابتداءً نکاح صحیح ہوا ہو اور بعد میں فساد اس پر طاری ہوا ہو ، تو اس صورت میں اکیلی عورت کو فسخ کا حق نہیں کیونکہ یہ گناہ کا دفاع نہیں بلکہ ثابت شدہ شرعی حق کا خاتمہ ہے اس لیے خاوند کی طرف سے متارکہ ضروری ہے اور اس کی حکمت یہ ہے کہ اگر اس صورت میں عورت کو مستقل طور پر فسخ کا حق دیا جائے تو فتنہ برپا ہو گا کہ جب بھی عورت اپنے خاوند سے علیحدگی چاہے تو وہ مثلاً خاوند کے بیٹے کا شہوت سے بوسہ لے لے اور خود نکاح کو فاسد کرکے جہاں چاہے نکاح کرتی پھرے تو اس فتنہ کا سد باب ضروری ہے۔ (ت)

[عبارت] یہاں شوہر مفقود ہے اور حرمت موجود ہے، عورت پر لازم کہ حاکم شرع کے حضور مرافعہ کرے اور وہ ثبوت لے، اگر وہ گواہان عادل سے پدرِ زید کا زوجہ زید کے ساتھ فعل بد کا ارتکاب ثابت ہو لان هذا هو نصاب ثبوت حرمة المصاهرة وان لم یثبت به الزنا فی حق الحد (کیونکہ یہ حرمت مصاہرہ کے ثبوت کے لیے نصاب ہے اگرچہ اس سے حد کے معیار پر زنا ثابت نہیں ہوتا) تو ان دونوں مرد و زن میں تفریق کردے، روزِ تفریق سے عورت تین حیض کی عدت کرے اور اس کے بعد نکاح ثانی جائز ہو سکتا ہے، واللہ تعالٰی اعلم،

مسئلہ ۲۴۴: از شہر بریلی مسئولہ عبد الجلیل صاحب طالب علم ۲۹ محرم الحرام ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اور بکر آپس میں حقیقی برادر ہیں، زید عمر میں بکر سے بڑا ہے اور بکر عمر میں چھوٹا ہے زید سے، زید کے پاس ایک لڑکی ہے اور اس سے زید کو ایک نواسی بھی ہے، بکر کے پاس ایک لڑکا ہے، اس صورت میں زید اگر اپنی نواسی سے اپنے برادر حقیقی کے لڑکے کے ساتھ نکاح کر دے تو نکاح جائز ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: چچا کی نواسی سے نکاح جائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۵: از رنگون مرسلہ جناب سیٹھ عبدالستار ابن اسمعیل صاحب قادری برکاتی رضوی ۲ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اپنی سوتیلی والدہ کی سگی ہمشیرہ سے نکاح کرسکتا ہے یا نہیں؟ شریعت مطہرہ کا کیا حکم ہے؟ بینواتوجروا

Fatawa Rizwia - Volume 11

The Answer:

A stepmother is not a [biological] mother. Allah Almighty says: "Their mothers are only those who gave birth to them."[1] (Your mothers are only those who gave birth to you). Marriage with her biological sister is permissible. Allah Almighty says: "And lawful for you are all others besides those [prohibited women]."[2] (Besides the prohibited ones, other women are lawful for you). And Allah Almighty knows best.

Problem 246: From Rampur, sent by Farooq Hassan Sahib, Editor of the newspaper *Dabdaba-e-Sikandari*, 16 Jumada al-Akhira 1337 AH.

What do the scholars of religion say in this rare case where Zaid committed a forbidden act (adultery) with Hindah, the wife of his son Amr? Is the marriage between Amr and Hindah still valid or not? And if the woman herself confesses that Zaid, who is her husband's father, committed intercourse with her by force, and Zaid denies it, what is the ruling? And if both Zaid and Hindah confess to the occurrence of intercourse, then what is the ruling? Furthermore, if the occurrence of intercourse is proven by testimony, what should be the nature of the witnesses' testimony? Explain and you will be rewarded.

The Answer:

Through this act, the woman becomes forbidden for her husband forever, but the marriage is not annulled. The woman cannot marry elsewhere until the husband terminates the relationship (mutarika), for example, by saying "I have left you," and after the waiting period (iddah) has passed, she can marry another. It is stated in *Durr-e-Mukhtar*:

Arabic Text	Translation
Due to the prohibition of affinity (hurmat al-musaharah), the marriage is not dissolved until it is not permissible for her to marry another except after termination (mutarika) and the completion of the waiting period (iddah).[3]	Due to the prohibition of affinity, the marriage does not end; therefore, marriage with another person is not permissible for this woman until termination and the completion of her iddah. (t)

The woman's statement means nothing unless the husband confirms it. It is stated in *Durr-e-Mukhtar*:

Arabic Text	Translation
Because the decision of prohibition (hurmah) is not in her hands; they [the jurists] said that the fatwa is based on this in all cases. *Bazzaziyah*.[4]	Because the decision of prohibition is not in the woman's hands, and the honorable jurists have stated that the fatwa is based on this in all cases. *Bazzaziyah*. (t)

[1] Al-Quran Al-Karim 58/2 [2] Al-Quran Al-Karim 4/24 [3] *Durr-e-Mukhtar*, Chapter on Prohibited Relations, Matba' Mujtabai Delhi 1/188 [4] *Durr-e-Mukhtar*, Chapter on Breastfeeding, Matba' Mujtabai Delhi 1/214

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

अल-जवाब (उत्तर):

सौतेली माँ माँ नहीं है, अल्लाह तआला ने फरमाया: "उनकी माँएँ तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया।"[1] (तुम्हारी माँएँ वही हैं जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया है)। उसकी सगी बहन से निकाह जायज़ है, अल्लाह तआला ने फरमाया: "और तुम्हारे लिए इनके अलावा सब औरतें हलाल हैं।"[2] (महरमात [निषिद्ध स्त्रियों] के अलावा औरतें तुम्हारे लिए हलाल हैं)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 246: रामपुर से भेजा गया, फारूक हसन साहब, संपादक समाचार पत्र 'दबदबा-ए-सिकंदरी', 16 जमादी-उल-आख़िर 1337 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस दुर्लभ मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपने बेटे अम्र की पत्नी हिंदह के साथ हराम काम (व्यभिचार) किया? अब अम्र और हिंदह के बीच निकाह शेष है या नहीं? और यदि महिला स्वयं स्वीकार करती है कि ज़ैद, जो उसके पति का पिता है, उसने उसके साथ ज़बरदस्ती संभोग किया है, और ज़ैद इससे इनकार करता है, तो क्या हुक्म है? और यदि ज़ैद और हिंदह दोनों संभोग होने की बात स्वीकार करते हैं, तो क्या हुक्म है? फिर यदि संभोग की घटना गवाही से साबित हो जाए, तो गवाहों की गवाही का स्वरूप कैसा होना चाहिए? बयान करें, पुण्य पायें।

अल-जवाब (उत्तर):

इस कृत्य से स्त्री अपने पति के लिए हमेशा के लिए हराम (निषिद्ध) हो जाती है, लेकिन निकाह समाप्त नहीं होता। वह महिला किसी और से निकाह तब तक नहीं कर सकती जब तक कि पति उसे मुक्त (मुतारिका) न कर दे, जैसे कि वह कहे "मैंने तुझे छोड़ दिया", और इद्दत की अवधि पूरी होने के बाद ही वह दूसरे से निकाह कर सकेगी। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

अरबी पाठ	अनुवाद
वैवाहिक संबंध की मनाही (हुर्मत-ए-मुसाहरत) के कारण निकाह तब तक भंग नहीं होता जब तक कि उसके लिए दूसरे से निकाह करना जायज़ न हो	हुर्मत-ए-मुसाहरत से निकाह खत्म नहीं होता, इसलिए दूसरे व्यक्ति से उस औरत का निकाह उस समय तक जायज़ नहीं है जब तक

अरबी पाठ	अनुवाद
जाए, सिवाय मुतारिका और इद्दत पूरी होने के बाद।[3]	मुतारिका और उसकी इद्दत पूरी न हो जाए। (त)

औरत का बयान तब तक कुछ नहीं है जब तक पति उसकी पुष्टि न कर दे। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

अरबी पाठ	अनुवाद
क्योंकि हराम (निषेध) का निर्णय उसके हाथ में नहीं है; फकीहों ने कहा है कि सभी स्थितियों में इसी पर फतवा है। बज़ाज़िया।[4]	क्योंकि हुर्मत का फैसला औरत के हाथ में नहीं है और फकीह-ए-किराम ने फरमाया है कि तमाम सूरतों में इसी पर फतवा है। बज़ाज़िया। (त)

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 2/58 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 24/4 [3] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब फ़िल महरमात, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/188 [4] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब अर-रज़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/214

الجواب:

سوتیلی ماں ماں نہیں، قال اللہ تعالٰی: اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓیْ وَلَدْنَهُمْ ۱ (تمہاری مائیں وہی ہیں جنہوں نے تمہیں جنم دیا ہے۔ت) اس کی سگی بہن سے نکاح جائز ہے، قال تعالٰی: وَ اُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ ۲ (محرمات کے علاوہ عورتیں تمہارے لیے حلال ہیں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۴۶: از رامپور مرسلہ فاروق حسن صاحب ایڈیٹر اخبار دبدبہ سکندری ۱۶ جمادی الآخرہ ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ نادرۃ الوقوع میں کہ زید اپنے بیٹے عمرو کی زوجہ ہندہ سے فعلِ حرام کا مرتکب ہوا، اب مابین عمرو و ہندہ کے نکاح باقی ہے یا نہیں؟ اور اگر عورت خود اقرار کرے کہ زید جو میرے شوہر کا باپ ہے وہ مجھ سے بالجبر وطی کیا ہے اور زید منکر ہے تو کیا حکم؟ اور اگر زید و ہندہ دونوں اقرار کریں وقوع وطی کا جب کیا حکم؟ پھر اگر وقوع وطی کو شہادت سے ثابت کیا جاوے تو شاہدوں کی شہادت کی صورت کیسی ہونی چاہئے؟ بینوا توجروا

الجواب:

اس فعل سے عورت اپنے شوہر پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو جاتی ہے مگر نکاح زائل نہیں ہوتا۔ نہ عورت دوسری جگہ نکاح کر سکتی ہے جب تک شوہر متارکہ نہ کرے، مثلاً کہے میں نے تجھے چھوڑا، اور عدت گزرے اس کے بعد نکاح دوسرے سے کر سکے گی، در مختار میں ہے:

عربی عبارت	ترجمہ
بحرمہ المصاہرۃ لایرتفع النکاح حتی لایحل لہا التزوج بآخر الا بعد المتارکۃ وانقضاء العدۃ ۳-	حرمتِ مصاہرت سے نکاح ختم نہیں ہوتا اسی لیے دوسرے شخص سے اس عورت کا نکاح اس وقت تک جائز نہیں جب تک متارکہ اور اس کی عدت پوری نہ ہو جائے۔ (ت)

عورت کا بیان کوئی چیز نہیں جب تک شوہر اس کی تصدیق نہ کرے۔ درمختار میں ہے:

عربی عبارت	ترجمہ
لان الحرمۃ لیست الیہا قالو اوبہ کیونکہ حرمت کا فیصلہ عورت کے ہاتھ نہیں ہے اور فقہاء کرام یفتی فی جمیع الوجوہ بزازیہ ۴-	نے فرمایا تمام صورتوں میں اسی پر فتویٰ ہے۔ بزازیہ (ت)

---

۱ القرآن الکریم ۲/۵۸ ۲ القرآن الکریم ۲۴/۴ ۳ درمختار باب فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ ۴ درمختار باب الرضاع مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۴/۱

Volume 11

Fatawa Razawiyya

And even if the husband's father also confesses, it is still not a proof against the husband. "Because he intends to remove a proven ownership by the testimony of one individual, especially when it concerns his own action; and a person's testimony regarding his own action is not accepted, as jurists have stated categorically." Because he wishes to terminate an established ownership based on a single witness's testimony, particularly when that witness is testifying about his own act; whereas a person's testimony about his own action is not acceptable, as clarified by all the honorable jurists. (T) Yes, if the truth of it enters the husband's heart, then it is obligatory for him to consider the woman forbidden to him and separate from her. It is stated in Al-Bazzaziyya and then in Al-Hindiyya: "If its truthfulness occurs to him, its acceptance becomes mandatory." So if its truthfulness settles in his heart, it is obligatory for him to accept it. (T) Or if this matter is proven by the testimony of two just witnesses, even if it's only to the extent that his father touched her with lust or kissed her with lust, for this much is sufficient to establish prohibition. It is stated in Tanwir al-Absar: "Testimony regarding touching and kissing with lust is accepted according to the preferred opinion. And Allah the Almighty knows best." Testimony regarding touching and kissing with lust shall be accepted according to the preferred view. (T) And Allah the Almighty knows best.

Problem 724: From Bandel Station and Post Office Hooghly, sent by Haqqakhan Sahib, 6 Ramadan al-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Is it permissible to marry one's own great-grandfather's great-granddaughter, who is the daughter of one's own grandfather's niece and is, in one way, his paternal cousin's aunt, or not? Answer: A great-grandfather's great-granddaughter, a grandfather's niece's daughter, whether a cousin or a real paternal aunt—there is no prohibited relationship for marriage here. Marriage with her is permissible, provided there is no other Sharia prohibition like fosterage, etc. And Allah the Almighty knows best.

Problem 228: From Purnia District, Forbesganj Post Office, from Bakshi Shah's shop. What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say in this matter: Zaid

intentionally had intercourse with his mother-in-law. Now, does his marriage with his wife remain intact or not, or should he marry her again?

1. Fatawa al-Hindiyya, Book of Abominations, Chapter 2 on acting upon a single report in transactions, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/312.
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Relationships, Mujtabai Press, Delhi, 1/188.

भाग ग्यारहवाँ

फतावा रज़विया

और अगर पति का पिता भी स्वीकार कर ले, तब भी यह पति पर प्रमाण नहीं है। "क्योंकि वह एक व्यक्ति की गवाही से एक स्थापित स्वामित्व को समाप्त करना चाहता है, विशेषकर तब जब वह स्वयं के कृत्य पर हो; और किसी व्यक्ति की अपने कृत्य पर गवाही स्वीकार नहीं की जाती, जैसा कि सभी न्यायविदों (फुक़्हा) ने स्पष्ट रूप से कहा है।" क्योंकि वह एक गवाही से स्थापित मालिकाना हक को समाप्त करना चाहता है, विशेष रूप से जब उस एक गवाह की गवाही उसके अपने कृत्य पर हो, जबकि अपने कृत्य पर किसी व्यक्ति की गवाही स्वीकार्य नहीं है, जैसा कि इस पर सभी सम्मानित न्यायविदों ने स्पष्ट किया है। (त) हाँ, यदि पति के हृदय में इसकी सत्यता आ जाए, तो उस पर अनिवार्य है कि वह उस स्त्री को अपने ऊपर वर्जित (हराम) माने और उससे अलग हो जाए। 'बज़ाज़िया' और फिर 'हिन्दिया' में है: "यदि उसके पास उसकी सत्यता सिद्ध हो जाए, तो उसे स्वीकार करना अनिवार्य है।" तो अगर उसके दिल में इसकी सच्चाई बैठ जाए, तो उसे स्वीकार करना उस पर अनिवार्य है। (त) या दो न्यायप्रिय गवाहों की गवाही से यह बात सिद्ध हो जाए, चाहे वह इसी हद तक हो कि उसके पिता ने उसे वासना के साथ छुआ या वासना के साथ चूमा, क्योंकि वर्जना (हुरमत) के लिए इतना ही पर्याप्त है। 'तनवीर अल-अबसार' में है: "पसंदीदा मत के अनुसार वासना के साथ छूने और चूमने पर गवाही स्वीकार की जाएगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।" पसंदीदा कथन के अनुसार वासना के साथ छूने और चूमने पर गवाही स्वीकार की जाएगी। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ७२४: बंडेल स्टेशन व डाकखाना हुगली से, प्रेषक हक़्क़ा खाँ साहब, ६ रमज़ानुल मुबारक १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि अपने ही दादा की पड़पोती, जो कि अपने ही दादा की भांजी की बेटी है और एक रिश्ते से अपनी चचेरी बुआ लगती है, उससे निकाह करना जायज़ है या नहीं? उत्तर: परदादा की परनातिन, दादा की भांजी की बेटी, चचेरी या सगी बुआ —इनमें निकाह के निषेध का कोई रिश्ता नहीं है। उससे निकाह जायज़ है, बशर्ते कि दूध पीने (रज़ाअत) आदि जैसी कोई अन्य शरीयत की बाधा न हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २२८: जिला पूर्णिया, डाकखाना फ़ारबिसगंज, बख्शी शाह की दुकान से। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस विषय में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने जानबूझकर अपनी सास के साथ संभोग

किया। अब उसकी पत्नी का निकाह उसके साथ बरकरार रहा या नहीं, या फिर वह उसके साथ दोबारा निकाह करे?

1. फतावा हिन्दिया, किताब अल-कराहिया, दूसरा अध्याय, लेन-देन में एक व्यक्ति की सूचना पर अमल करने के बारे में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, ५/३१२।
2. दुर्रे मुख़्तार, निषिद्ध रिश्तों का अध्याय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/१८८।

पृष्ठ ४५५ / ७३९

جلد یاز دہم

فتاوی رضویہ

اور اگر پدرِ شوہر بھی اقرار کرے جب بھی شوہر پر حجت نہیں۔ لانه یرید ازالة ملك ثابت بشهادة واحد لاسیما وهی علی نفسه وشهادة المرء علی فعل نفسه لا تقبل کما نصوا علیه قاطبة۔ کیونکہ ثابت شدہ ملکیت کو وہ ایک گواہی سے ختم کرنا چاہتا ہے خصوصاً جبکہ اس ایک گواہ کی شہادت اپنے فعل پر ہو جبکہ اپنے فعل پر کسی شخص کی شہادت مقبول نہیں، جیسا کہ اس پر تمام فقہاء کرام نے تصریح کی ہے۔ (ت) ہاں اگر شوہر کے قلب میں اس کا صدق واقع ہو تو اس پر واجب ہے کہ عورت کو اپنے اوپر حرام جانے اور متارکہ کردے، بزازیہ پھر ہندیہ میں ہے: فان وقع عنده صدقه وجب قبوله۔ تو اگر اس کے دل میں اس کا صدق واقع ہو تو اسے قبول کرنا اس پر واجب ہے۔ (ت) یا دو شاہد عادل کی گواہی سے یہ امر ثابت ہو اگرچہ اسی قدر کہ اس کے باپ نے اسے بشہوت مس کیا یا بشہوت بوسہ لیا کہ حرمت کو اسی قدر بس ہے، تنویر الابصار میں ہے: تقبل الشهادة علی اللمس والتقبیل عن شهوة فی المختار۔ واللہ تعالی اعلم۔ شہوت کے ساتھ چھونے اور بوسہ لینے پر شہادت قبول کی جائے گی مختار قول میں۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۲۴: از بنڈیل اسٹیشن و ڈاک خانہ ہوگلی مرسلہ حقاخاں صاحب ۶ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اپنے خاص دادا کی پر تنی اور جو کہ اپنے خاص دادا کی بھانجی کی لڑکی ہوتی ہے اور ایک رشتہ سے اپنی چچیری پھوپھی ہوتی ہے ان سے عقد کرنا جائز ہے یا نہیں؟ الجواب: پرداد کی پرنواسی، دادا کی بھانجی کی بیٹی، چچیری خواہ حقیقی پھوپھی، اس میں کوئی رشتہ ممانعت نکاح کا نہیں۔ اس سے نکاح جائز ہے جبکہ رضاعت وغیرہ کا کوئی مانع شرعی نہ ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۲۸: از ضلع پورینہ ڈاکخانہ فارس گنج از دکان بخشی شاہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی خوش دامن سے قصداً وطی کی اب اس کی بی بی کا نکاح اس کے ساتھ قائم رہا یا نہیں یا پھر اس کے ساتھ دوبارہ نکاح کرے

1. فتاوی ہندیہ کتاب الکراھیۃ الفصل الثانی فی العمل بخبر الواحد فی المعاملات نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۱۲
2. درمختار باب المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۸

Fatawa Razawiyya Volume 11

...or not? State it and you shall be rewarded.

The Answer: Whoever had intercourse with the biological mother of his wedded wife, or touched her with lust intentionally in any manner, his wife becomes forbidden to him forever. He can never keep her, nor can he remarry her under any circumstances. It is obligatory upon him to leave the woman immediately so that she becomes out of his marriage bond. And Allah Almighty knows best.

Problem 249: From Tanda Chhanga, Post Office Darau, District Bareilly. Sent by Hidayatullah Sahib, cloth merchant, 8 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of the religion say on this matter: Musammat Maryam and Musammat Sakina have the same mother, but their fathers are different. Now Musammat Maryam has a daughter whom Musammat Maryam has married off to Bakr. Now Bakr wants to marry his wife's maternal aunt whose name is Sakina. Is this marriage permissible in the eyes of Allah and His Messenger or not? State it and you shall be rewarded.

The Answer: Marriage with Sakina is forbidden for him [while married to her niece]. Yes, if this wife of his dies or he divorces her and her waiting period (iddah) passes, then he can marry Sakina. And Allah Almighty knows best.

Problem 250: From village Lalpur, Post Office Mohanpur, Bengal. Sent by Muniruddin Ahmad Karloi Lalpuri, 8 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of the religion say: is marriage with the daughter's daughter of a consanguine sister (half-sister from the father's side) permissible or forbidden? State it and you shall be rewarded.

The Answer: Marriage with the granddaughter of one's consanguine sister is definitively forbidden (haram qat'i). And Allah Almighty knows best.

Problem 251: From village Meondi, Post Office Shahi, District Bareilly. Sent by Sayyid Amir Alam Hasan Sahib, 16 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of the religion say on this matter: Zaid married a woman, and that woman had a daughter from a previous husband with her. After some time, the woman passed away. Now Zaid wants to marry that girl. Is this marriage correct or not? Whether the wife (stepdaughter's mother) is in the house or not. And if he has already done so, what is the Sharia ruling for such people? State it and you shall be rewarded.

...या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: जिसने अपनी विवाहित पत्नी की सगी माँ से संभोग किया या उसे जानबूझकर किसी भी तरह वासना के साथ छुआ, उसकी पत्नी उस पर हमेशा के लिए हराम (वर्जित) हो गई। वह उसे कभी नहीं रख सकता और न ही किसी भी स्थिति में उससे दोबारा निकाह कर सकता है। उस पर यह फर्ज़ है कि वह औरत को तुरंत छोड़ दे ताकि वह उसके निकाह से बाहर हो जाए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २४९: टांडा छंगा, डाकखाना दरऊ, जिला बरेली से। प्रेषित: हिदायत उल्लाह साहब, कपड़ा व्यापारी, ८ शव्वाल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि मुसम्मात मरियम और मुसम्मात सकीना की माँ एक ही है लेकिन दोनों के पिता अलग-अलग हैं। अब मुसम्मात मरियम की एक बेटी है जिसका निकाह मुसम्मात मरियम ने बक्र के साथ कर दिया है। अब बक्र अपनी पत्नी की खाला (मौसी) को जिसका नाम सकीना है, निकाह में लाना चाहता है। अल्लाह और उसके रसूल की नज़र में यह निकाह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: सकीना से उसका निकाह हराम है। हाँ, जब उसकी यह पत्नी मर जाए या वह उसे तलाक दे दे और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गुजर जाए, तब वह सकीना से निकाह कर सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २५०: ग्राम लालपुर, डाकखाना मोहनपुर, बंगाल से। प्रेषित: मुनीर उद्दीन अहमद कर लोई लालपुरी, ८ शव्वाल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि सौतेली बहन (पिता की ओर से) की बेटी की बेटी के साथ निकाह हलाल है या हराम? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: अपनी सौतेली बहन की पोती से निकाह निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २५१: ग्राम म्योंडी, डाकखाना शाही, जिला बरेली से। प्रेषित: सैयद अमीर आलम हसन साहब, १६ शव्वाल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने एक औरत से निकाह किया और उस औरत की पिछले पति से एक बेटी भी साथ थी। कुछ समय बाद उस औरत का निधन हो गया। अब ज़ैद चाहता है कि मैं उस लड़की (सौतेली बेटी) के साथ अपना निकाह कर लूँ। क्या यह

निकाह सही है या नहीं? चाहे पत्नी घर में रही हो या न रही हो। और अगर ऐसा कर लिया हो तो ऐसे लोगों के लिए शरीयत का क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

पृष्ठ ७३९ का ४५६

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: جس نے اپنی منکوحہ کی حقیقی ماں سے وطی کی یا اسے قصداً خواہ کسی طرح بشہوت ہاتھ لگایا اس کی عورت اس پر ہمیشہ کے لیے حرام ہوگئی کبھی نہ اسے رکھ سکتا ہے نہ کسی حال میں اس سے دوبارہ نکاح کر سکتا ہے اس پر فرض ہے کہ عورت کو فوراً چھوڑ دے تاکہ وہ اس کے نکاح سے باہر ہو جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۴۹: از ٹانڈہ چھنگا ڈاک خانہ درؤ ضلع بریلی مرسلہ ہدایت اللہ صاحب پارچہ فروش ۸ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ مریم ومسماۃ سکینہ کی والدہ ایک ہے لیکن باپ دونوں کے علیحدہ علیحدہ ہیں، اب مسماۃ مریم کی ایک دختر ہے جس کا نکاح مسماۃ مریم نے بکر کے ساتھ کردیا ہے اب بکر اپنی زوجہ کی خالہ کو جس کا نام سکینہ ہے نکاح میں لانا چاہتا ہے، نزدیک اللہ ورسول کے یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: سکینہ سے اس کا نکاح حرام ہے، ہاں جب اس کی یہ عورت مر جائے یا یہ اس کو طلاق دے دے اور عدت گزر جائے اس وقت سکینہ سے نکاح کرسکے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۰: از موضع لال پور ڈاک خانہ موہن پور ملک بنگال مرسلہ منیر الدین احمد کر لوی لال پوری ۸ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ اخت علاتی کی لڑکی کی لڑکی کے ساتھ نکاح حلال ہے یا حرام؟ بینوا توجروا

الجواب: اپنی علاتی بہن کی پوتی سے نکاح حرام قطعی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۱: از موضع میونڈی ڈاک خانہ شاہی ضلع بریلی مرسلہ سید امیر عالم حسن صاحب ۱۶ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنا نکاح کسی عورت سے کیا اور اس عورت کی ایک دختر بھی پہلے شوہر کی اس کے ساتھ تھی، بعد چند مدت کے اس عورت کا انتقال ہو گیا، اب زید یہ چاہتا ہے کہ میں اس لڑکی کے ساتھ اپنا نکاح کر لوں تو یہ نکاح درست ہے یا نہیں؟ اگرچہ بی بی گھر میں ہو یا نہ ہو اور اگر ایسا کر لیا ہو تو کیا حکم شریعت ہے ایسے لوگوں کے لیے؟ بینوا توجروا۔

صفحہ 739 کا 456

Fatawa Razvia, Volume 11

The Answer: If seclusion (khalwat) did not take place with that woman, he can marry her daughter afterwards; otherwise, it is haram (forbidden). And if he has already married her, then separation and staying apart is an absolute obligation. Allah the Almighty says: "And your step-daughters under your guardianship [born] of your wives unto whom you have gone in. But if you have not gone in unto them, there is no sin upon you." (1) And Allah knows best.

Problem 252: From Village Bhoni, Post Office Amria, District Pilibhit. Sent by Muhammad Noor Sahib, 27 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person named Abdul Razzaq married a woman named Mahmooda, known as Noor Jahan. After that, he also married her sister, named Najban, who was born to the same mother but had different fathers. More than six months have passed. The Muslims here considered this very wrong and told him to divorce one of the two women, but he did not understand. Consequently, the Muslims stopped social interactions with him, forcing his hand. Noor Jahan, the first wife, became severely ill, making it difficult for people to sit with her. She wished for a divorce, which would be better. Now, for a week, Noor Jahan has left home without permission and is still missing. Abdul Razzaq and the missing Noor Jahan both wished for a mutual divorce, so that marrying Najban would be appropriate. In such a situation, can he divorce Noor Jahan or not, and can he remarry Najban or not? Explain, may you be rewarded.

The Answer: After divorcing Noor Jahan and her Iddah (waiting period) has passed—meaning she has completed three menstrual cycles—he can then marry Najban. Otherwise, it is strictly forbidden (haram, haram, haram). And Allah the Almighty knows best.

Problem 253: From Howrah, Mohalla Bina Para, Madrasa Darul Uloom. Sent by Mir Ehsan Ali Sahib, teacher, 5 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person divorced his wife a week ago. The man she is now going to marry, she is currently in his house, but that man stays outside.

(1) The Holy Quran 4:23 Page 457 of 739

उत्तर: अगर उस स्त्री से खिलवत (एकांतवास) नहीं हुई थी, तो उसके बाद उसकी बेटी से निकाह कर सकता है अन्यथा यह हराम (वर्जित) है। और यदि उसने निकाह कर लिया है, तो उन्हें अलग कर देना और अलग होना एक परम कर्तव्य है। अल्लाह सर्वशक्तिमान कहता है: "और तुम्हारी सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारे संरक्षण में हैं, जो तुम्हारी उन पत्नियों से जन्मी हैं जिनसे तुमने यौन संबंध बनाए हैं। लेकिन यदि तुमने उनसे यौन संबंध नहीं बनाए हैं, तो तुम पर कोई पाप नहीं है।" (1) और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 252: ग्राम भौनी, पोस्ट ऑफिस अमरिया, जिला पीलीभीत से। मोहम्मद नूर साहब द्वारा प्रेषित, 27 शव्वाल 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: अब्दुल रज्जाक नामक व्यक्ति ने महमूदा उर्फ नूर जहाँ नामक महिला से निकाह किया। उसके बाद उसने उसकी बहन नज्मिन से भी निकाह कर लिया, जिनकी माँ एक ही है लेकिन पिता अलग-अलग हैं। लगभग छह महीने से अधिक समय बीत चुका है। यहाँ के मुसलमानों ने इसे बहुत गलत माना और उसे दो महिलाओं में से एक को तलाक देने के लिए कहा, लेकिन वह नहीं माना। फलस्वरूप, मुसलमानों ने उससे सामाजिक संबंध तोड़ लिए, जिससे वह मजबूर हो गया। पहली पत्नी नूर जहाँ गंभीर रूप से बीमार हो गई, जिससे लोगों का उसके पास बैठना कठिन हो गया। उसने इच्छा जताई कि मेरा तलाक हो जाए तो बेहतर होगा। अब, एक हफ्ते से नूर जहाँ बिना अनुमति के घर से चली गई है और अभी भी लापता है। अब्दुल रज्जाक और लापता नूर जहाँ दोनों की इच्छा थी कि हमारा आपसी तलाक हो जाए, ताकि नज्मिन से निकाह करना उचित हो। ऐसी स्थिति में, क्या वह नूर जहाँ को तलाक दे सकता है या नहीं, और क्या वह नज्मिन से दोबारा निकाह कर सकता है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: नूर जहाँ को तलाक देने के बाद जब उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाए—यानी उसके तीन मासिक धर्म पूरे हो जाएँ—तो वह नज्मिन से निकाह कर सकता है। अन्यथा, यह पूरी तरह से हराम (वर्जित) है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 253: हावड़ा, मोहल्ला बीना पाड़ा, मदरसा दारुल उलूम से। मीर एहसान अली साहब, शिक्षक द्वारा प्रेषित, 5 ज़िलक़ादा 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति ने एक सप्ताह पहले अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। वह महिला अब जिस व्यक्ति से विवाह करने वाली है, उसी के घर में रह रही है, लेकिन वह व्यक्ति बाहर रहता है।

(1) पवित्र कुरान 4:23 पृष्ठ 739 में से 457

الجواب اگر اس عورت سے خلوت نہ ہوئی تھی تو اس کے بعد اس کی بیٹی سے نکاح کرسکتا ہے ورنہ حرام، اور اگر کر لیا تو جدا کر دینا اور جدا ہونا فرض قطعی، قال اللہ تعالٰی: وَرَ بَآئِبُكُمُ الَّتِي فِي حُجُورِكُم مِّن نِّسَآئِكُمُ الَّتِي دَخَلْتُم بِهِنَّ | تمہاری مدخولہ بیویوں کی وہ بیٹیاں جو تمہارے پاس فَإِن لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۱۔ | زیر پرورش ہیں اور اگر بیویوں سے دخول نہ کیا ہو تو تمہیں واللہ تعالٰی اعلم | ممانعت نہیں۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۵۲: از موضع بھونی ڈاک خانہ امریا ضلع پیلی بھیت مرسلہ محمد نور صاحب ۲۷ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمیٰ عبدالرزاق نے ایک مسماۃ محمودہ عرف نور جہاں کے ساتھ نکاح کیا اور اس کے بعد اسکی بہن جو ایک ماں سے پیدا ہوئی ہیں مگر باپ دونوں کا دو ہیں اس کا نام مسماۃ نجبن ہے نکاح کر لیا، عرصہ تقریباً چھ ماہ سے زائد ہو گیا، مسلمانوں نے یہاں کے اس کو بہت برا سمجھا اور اس سے کہا کہ ایک عورت کو دونوں میں سے طلاق دے دو، مگر نہیں سمجھا، اس پر مسلمانوں نے اپنا رسم ترک کردیا تو وہ مجبور ہو گیا، مسماۃ نور جہاں زوجہ اول سخت بیمار ہو گئی کہ اس کے پاس لوگوں کا بیٹھنا دشوار ہو گیا، اس نے خواہش کی میری طلاق ہو جائے تو افضل ہے اور مسماۃ نور جہاں اب عرصہ ایک ہفتہ سے کسی جگہ بلا اجازت شوہر گھر سے چلی گئی ہے اور ہنوز مفقود الخبر ہے، اب عبدالرزاق و نور جہاں مفقود الخبر کی خواہش یہ تھی کہ ہم میں باہمی طلاق ہو جائے اور مسماۃ نجبن سے نکاح ہو جاوے تو مناسب ہو، ایسی صورت میں مسماۃ نور جہاں کو طلاق دے سکتا ہے یا نہیں اور نجبن سے دوبارہ نکاح پڑھا سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: نور جہاں کو طلاق دینے کے بعد اس کی عدت گزر جائے یعنی اسے تین حیض آکر ختم ہو جائیں اس کے بعد نجبن سے نکاح کرسکتا

ہے ورنہ حرام حرام حرام، واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۵۳: از ہوڑہ محلہ بینا پاڑہ مدرسہ دارالعلوم مرسلہ میر احسان علی صاحب مدرس ۵ ذی قعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص جس نے اپنی عورت کو طلاق دے دیا ایک ہفتہ ہوا طلاق دے کر، اور جس شخص سے اب نکاح ہو گا وہ عورت اسی شخص کے گھر ہے مگر وہ شخص باہر رہتا ہے

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

...does not enter the house. He says that until the marriage is performed, I will not enter. A midwife or similar person examined the woman to ensure she is not pregnant, and it was found that there is no pregnancy. In this case, if the marriage is performed, it cannot be a sin, can it? The reason for haste is that Satan misleads at all times. What is the ruling if the marriage is performed quickly in this situation? Thinking only of avoiding sin, can the marriage be performed within the waiting period (iddah) since there is no pregnancy? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: Marriage during the waiting period (iddah) is forbidden, forbidden, forbidden. Not just marriage, but even proposing for marriage is forbidden. If marriage occurs and there is intimacy, it will be adultery. What greater misleading of Satan is there than what you are seeking yourself? It is obligatory for a woman to complete her waiting period (iddah) at her husband's house. Leaving from there is forbidden. Now that she has come out, it is mandatory that she returns to her husband's place immediately and completes the days of iddah there, provided the distance is not a three-day journey, otherwise, she should stay in a place of peace and security. She must absolutely not stay at the house of the person about whom there is apprehension. And Allah the Almighty knows best.

Problem 254: From Tanda Chhanga, Post Office Durru, Tehsil Kachaar, sent by Abdullah Sahib Muneeb Bukhara, 10 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Maryam and Sakina are real sisters, but their fathers are different, one is a tailor (Khayyat) and the other a cotton dresser (Naddaf). Now Maryam has a daughter named Fatima and Fatima's marriage was with Zaid. Now Zaid is bringing his wife's real maternal aunt into marriage and is being intimate with both. In this situation, what is the command of Allah (Exalted) and His Messenger (May Allah the Almighty bless him and grant him peace)? Are both marriages valid? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: Forbidden, forbidden, forbidden, absolutely forbidden. It is obligatory upon him to leave his wife's maternal aunt. And until her iddah (waiting period) passes, it is also forbidden for him to touch his wife. When her maternal aunt comes out of iddah, at that time it will be lawful for him to go to his wife. And Allah the Almighty knows best.

Problem 255: From Sultanpur, Oudh region, sent by Abdul Khaliq Sahib, Petition Writer Civil Court, 18 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say in

this matter that Zaid had three marriages. A girl was born from the first wife and she was married to Zaid's real nephew, and a girl was born from her who became Zaid's real granddaughter. And from Zaid's third marriage, there are three boys. Now Zaid wants to marry his son, i.e., the male child, to his real nephew's daughter. So, in such a situation, is it permissible or impermissible? Please explain and you will be rewarded.

...घर के अंदर नहीं जाता। वह कहता है कि जब तक निकाह नहीं होगा, मैं अंदर नहीं जाऊंगा। दाई आदि द्वारा स्त्री की जांच कराई गई कि वह गर्भवती तो नहीं है, तो पता चला कि वह गर्भवती नहीं है। ऐसी स्थिति में यदि निकाह कर दिया जाए तो क्या यह पाप नहीं होगा? जल्दबाजी इसलिए की जा रही है क्योंकि शैतान हर समय बहकाता रहता है। यदि इस स्थिति में जल्दी निकाह कर दिया जाए तो इस पर क्या हुक्म है? केवल पाप से बचने के विचार से, क्या इद्दत के भीतर निकाह किया जा सकता है जबकि गर्भावस्था नहीं है? कृपया बताएं और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: इद्दत के दौरान निकाह हराम, हराम, हराम है। निकाह तो दूर की बात है, निकाह का प्रस्ताव देना भी हराम है। यदि निकाह हो जाए और शारीरिक संबंध बने, तो वह ज़िना (व्यभिचार) होगा। इससे बड़ा शैतान का बहकाना और क्या होगा जिसे आप स्वयं चाह रहे हैं? स्त्री के लिए अपने पति के घर पर ही इद्दत के दिन पूरे करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है, वहां से निकलना हराम है। अब जब वह निकल आई है, तो अनिवार्य है कि वह तुरंत अपने पति के घर वापस जाए और वहीं इद्दत के दिन पूरे करे, बशर्ते कि वहां तक की दूरी तीन दिन की यात्रा न हो, अन्यथा वह किसी सुरक्षित स्थान पर रहे। उसे उस व्यक्ति के यहाँ कतई नहीं रहना चाहिए जिसके प्रति आशंका हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 254: स्थान टांडा छंगा, डाकखाना दुरु, तहसील कछार से, प्रेषक अब्दुल्ला साहब मुनीब बुखारा, 10 ज़िलक़ादा 1337 हिजरी। इस मामले में विद्वान क्या कहते हैं कि मरियम और सकीना सगी बहनें हैं, लेकिन दोनों के पिता अलग-अलग हैं, एक दर्जी (खैयात) है और दूसरा धुनिया (नद्दाफ़)। अब मरियम की एक बेटी है जिसका नाम फातिमा है और फातिमा का निकाह ज़ैद के साथ हुआ है। अब ज़ैद अपनी पत्नी की सगी खाला (मौसी) से भी निकाह कर रहा है और दोनों के साथ संभोग कर रहा है। ऐसी स्थिति में अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का क्या हुक्म है? क्या दोनों निकाह जायज़ हैं? कृपया स्पष्ट करें।

जवाब: हराम हराम हराम, स्पष्ट रूप से हराम। उस पर अनिवार्य है कि वह अपनी पत्नी की खाला को छोड़ दे। और जब तक उसकी इद्दत बीत न जाए, अपनी पत्नी को छूना भी उसके लिए हराम है। जब उसकी खाला इद्दत से बाहर आ जाए, तब उसके लिए अपनी पत्नी के पास जाना हलाल होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 255: सुल्तानपुर, अवध से, प्रेषक अब्दुल खालिक साहब, अर्ज़ी लेखक दीवानी कचहरी, 18 ज़िलक़ादा 1337 हिजरी। इस मामले में विद्वान क्या कहते हैं कि ज़ैद की तीन शादियाँ हुईं। पहली पत्नी से एक बेटी हुई और उसकी शादी ज़ैद के सगे भतीजे से हुई, जिससे एक बेटी पैदा हुई जो ज़ैद की सगी नातिन हुई। और ज़ैद की तीसरी शादी से तीन बेटे हुए। अब ज़ैद अपने इस बेटे यानी पुत्र का निकाह अपने सगे भतीजे की बेटी से करना चाहता है। तो ऐसी स्थिति में यह जायज़ है या नाजायज़? कृपया स्पष्ट करें।

पृष्ठ 458/739

اندر مکان کے نہیں جاتا۔ کہتا ہے کہ جب تک نکاح نہ ہوگا اندر نہ جاؤں گا اور عورت کی دایہ وغیرہ سے جانچ کرایا گیا کہ حمل تو نہیں ہے، معلوم ہوا کہ حمل نہیں ہے، اس صورت میں اگر نکاح کردیا جائے تو گناہ تو نہیں ہوسکتا؟ جلدی اس وجہ سے کی جاتی ہے کہ شیطان ہر وقت بہکاتا ہے، اگر اس صورت میں جلد نکاح کردیا جائے اس پر کیا حکم ہے؟ صرف گناہ کا خیال کر کے ایسا ہو کہ عدت کے اندر نکاح کردیا جاوے حمل نہیں ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: عدت کے نکاح حرام حرام حرام، نکاح تو نکاح، نکاح کا پیام دینا حرام، اگر نکاح ہو اور قربت ہو ناز نا ہوگا۔ اس سے زیادہ یہاں شیطان کا بہکانا اور کیا ہے جسے خود چاہ رہے ہو، عورت کو ایام عدت شوہر ہی کے مکان پر پورے کرنے فرض ہیں وہاں سے نکلنا حرام ہے، اب کہ نکل آئی ہے فرض ہے کہ فوراً شوہر کے یہاں چلی جائے اور وہیں عدت کے دن پورے کرے، اگر یہاں سے وہاں تک تین دن کی راہ نہ ہو، ورنہ اطمینان کی جگہ رہے، اس شخص کے یہاں جب تک ہر گز نہ رہے جس سے اندیشہ ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۵۴: از مقام ٹانڈہ چھنگا ڈاک خانہ درو تحصیل کچھار مرسلہ عبداللہ صاحب منیب بخارہ ۱۰ ذی قعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مریم و سکینہ ہمشیرہ حقیقی ہیں لیکن باپ دونوں کے جدا ہیں ایک خیاط دوسرا نداف۔ اب مریم کی ایک دختر ہے جس کا نام فاطمہ ہے اور فاطمہ کا نکاح زید کے ساتھ ہوگیا ہے، اب زید اپنی زوجہ کی حقیقی خالہ کو نکاح میں لا کر دونوں سے ہمبستر ہورہا ہے اس صورت میں اللہ ورسول کا کیا حکم ہے عزوجل وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کیا دونوں نکاح جائز ہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: حرام حرام حرام قطعی حرام، اس پر فرض ہے کہ اپنی زوجہ کی خالہ کو چھوڑ دے اور جب تک اس کی عدت گزرے زوجہ کو ہاتھ لگانا بھی اس پر حرام ہے جب اس کی خالہ عدت سے نکل جائے اس وقت اسے اپنی زوجہ کے پاس جانا حلال ہوگا وہو تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۵: از سلطان پور ملک اودھ مرسلہ عبدالخالق صاحب عرائض نویس کچہری دیوانی ۱۸ ذی قعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی تین شادیاں ہوئیں، زوجہ اول سے ایک لڑکی پیدا ہوئی اور اس کی شادی زید کے حقیقی بھتیجے کے ساتھ ہوئی اور اس سے ایک لڑکی پیدا ہوئی جو زید کی حقیقی نواسی ہوئی، اور زید کی تیسری شادی جو ہوئی اس سے تین لڑکے ہیں اب زید اس اپنے لڑکے یعنی نرینہ کی شادی اپنے حقیقی بھتیجے کی لڑکی کے ساتھ کرنا چاہتا ہے پس ایسی حالت میں جائز ہے یا نا جائز؟ بینوا توجروا

The Answer: Forbidden, forbidden, forbidden! She is not just his brother's granddaughter who would be lawful for his son; she is also his own maternal granddaughter, hence his son's niece, even if the son is from one wife and she was from another daughter. In any case, she is a niece, and a niece is forbidden. Allah Almighty says: "And [forbidden to you are] your sisters' daughters" (and your nieces are forbidden). And Allah Almighty knows best.

Problem 256: From the city of Agra, Kalu Gali, Nai Mandi, sent by Rahim Bakhsh Sahib, owner of Rahim Shoe Factory, 16 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, who was a follower of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah, married a woman named Hindah who belonged to the Shia faith. Zaid married his son Amr, born from Hindah, to Bakr's minor daughter, Halima, while both were minors. Due to their minority, Halima's departure (consummation) did not take place. Halima belongs to a noble Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah family. Zaid passed away by divine decree. Zaid's widow Hindah and all her children are now strictly following the Shia faith in every way. Amr, now an adult, wants to take his wife home. Halima, also now an adult, does not accept a person of a different faith (Shia) in her marriage and does not want to go with him. Furthermore, Halima's parents now also refuse the departure. In this situation, was Halima's marriage, which occurred while she was a minor with a Shia, valid or void according to the Sharia? Can Halima marry somewhere else or not? Provide a verdict and be rewarded.

The Answer: The people who call themselves Shia today, i.e., Tabara'i Rafidis, marriage with them is absolutely void. Even if Halima and all her guardians are willing, Allah and His Messenger are not. It is forbidden for Halima to consider herself in his wedlock. In Fatawa Zahiriyya, Hadiqah Nadiyyah, and Alamgiriyyah, the example given for Rafidis is "Their rulings are the rulings of apostates"1 (their rulings are like those of apostates). Also, in Alamgiri it is stated: "It is not permissible for an apostate man to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original disbelieving woman. Likewise, it is not permissible for an apostate woman to marry anyone."2 And Allah Almighty knows best.

1 Al-Hadiqat al-Nadiyyah, Al-Istikhfaf bi al-Shari'ah Kufr, i.e., Ridda, Maktabah Nooriyyah Razawiyyah, Faisalabad, 1/305. 2 Fatawa Hindiyyah, Chapter on Prohibitions due to Shirk, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/282.

उत्तर: हराम हराम हराम, वह केवल उसके भाई की पोती नहीं है जो उसके बेटे के लिए हलाल हो, वह उसकी अपनी नातिन (नवासी) भी है, तो वह उसके बेटे की भांजी है, भले ही बेटा एक पत्नी से हो और वह बेटी दूसरी से थी। बहरहाल, वह भांजी है और भांजी हराम है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "व बिन्तुल अख्त" (और तुम्हारी भांजियाँ हराम हैं)। वल्लाह तआला आलम।

मसला 256: आगरा शहर, कालू गली, नाई मंडी से प्रेषित रहीम बख्श साहब, मालिक रहीम शू फैक्ट्री, 16 सफर 1338 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद, जो अहले सुन्नत व जमाअत मज़हब का पाबंद था, उसने अपना निकाह मुसम्मात हिंदा के साथ किया जो शिया मज़हब रखती थी। ज़ैद ने अपने बेटे अम्र का निकाह, जो हिंदा के पेट से पैदा हुआ था, नाबालिग होने की स्थिति में बक्र की लड़की हलीमा (नाबालिग) के साथ कर दिया। नाबालिग होने के कारण मन्कूह (विवाहित) हलीमा की विदाई नहीं हुई। हलीमा दोनों ओर से कुलीन अहले सुन्नत व जमाअत है। ज़ैद अल्लाह की मर्जी से वफात पा गया। ज़ैद की विधवा हिंदा और उसकी तमाम औलाद हर तरह से शिया मज़हब की पाबंद है। अम्र अब बालिग होकर चाहता है कि अपनी ज़ौजा (पत्नी) की विदाई कराके ले जाए। हलीमा भी अब चूंकि बालिग है, वह अपने निकाह में गैर-मज़हब के आदमी शिया को मंजूर नहीं करती और उसके साथ जाना नहीं चाहती। साथ ही हलीमा के माता-पिता भी अब विदाई से इनकार कर रहे हैं। इस सूरत में हलीमा का यह निकाह, जो नाबालिग होने की हालत में एक शिया के साथ हुआ था, शरीअत के अनुसार जायज़ रहा या बातिल (अमान्य)? और क्या हलीमा अपना निकाह किसी दूसरी जगह कर सकती है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि आपको सवाब मिले।

उत्तर: आज कल जो लोग शिया कहलाते हैं यानी तबर्रई राफिज़ी, उनके साथ निकाह बिल्कुल बातिल है। अगर हलीमा और उसके सभी वली (अभिभावक) राज़ी हैं, तो अल्लाह और उसका रसूल राज़ी नहीं। हलीमा के लिए हराम है कि वह खुद को उसके निकाह में समझे। फतावा ज़हीरिया, हदीका नदिया और आलमगीरिया में राफिज़ियों के लिए मिसाल है: "उनके अहकाम मुर्तदीन (स्वधर्मत्यागियों) वाले हैं।"1 साथ ही आलमगीरी में है: "मुर्तद (स्वधर्मत्यागी) का किसी मुर्तदा, मुस्लिमा या असली काफिर महिला से निकाह जायज़ नहीं है, और इसी तरह मुर्तदा महिला का भी किसी से निकाह जायज़ नहीं है।"2 वल्लाह तआला आलम।

1 अल-हदीका अन-नदिया, अल-इस्तिखफाफ बिश-शरीअह कुफ्र यानी रिद्दह, मकतबा नूरिया रज़विया, फैसलाबाद, 1/305। 2 फतावा हिंदिया, शिर्क के कारण हराम होने का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/282।

पृष्ठ 459/739

الجواب: حرام حرام حرام، وہ صرف اس کے بھائی کی پوتی نہیں جو اس کے بیٹے کو حلال ہو خود اس کی نواسی بھی ہے تو اس کے بیٹے کی بھانجی ہے اگرچہ بیٹا اور زوجہ سے ہے اور وہ بیٹی اور سے تھی بہر حال بھانجی ہے اور بھانجی حرام، قال اللہ تعالٰی: وبنت الاخت (اور تمھاری بھانجیاں حرام ہیں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۵۶: از شہر آگرہ کلو گلی نائی منڈی مرسلہ رحیم بخش صاحب مالک کارخانہ رحیم شو فیکٹری ۱۶ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید جو پابند مذہب اہل سنت وجماعت تھا اس نے اپنا عقد نکاح مسماۃ ہندہ کے ساتھ کیا جو مذہب اہل شیعہ رکھتی تھی، زید نے اپنے بیٹے عمرو کا نکاح جو بطن ہندہ سے پیدا ہوا تھا بحالت نابالغی بکر کی لڑکی حلیمہ نابالغہ کے ساتھ کردیا اور بوجہ نابالغی منکوحہ حلیمہ کی وداع نہیں ہوئی، حلیمہ نجیب الطرفین اہلسنت والجماعت ہے، زید بقضائے الہی فوت ہو گیا، زید کی بیوہ ہندہ نیز اس کی تمام اولاد ہر طریقہ سے پابند اہل تشیع ہے، عمرو اب بالغ ہو کر چاہتا ہے کہ اپنی زوجہ کو رخصت کراکے لے جائے، حلیمہ بھی اب چونکہ بالغہ ہے وہ اپنے عقد میں غیر مذہب کے آدمی شیعہ کو منظور نہیں کرتی اور اس کے ساتھ جانا نہیں چاہتی نیز والدین حلیمہ بھی اب وداع سے انکاری ہیں، اندریں صورت یہ نکاح حلیمہ کا جو بحالت نابالغی ایک شیعہ کے ساتھ ہوا تھا ازروئے شرع شریف جائز رہا یا باطل؟ اور حلیمہ اپنا عقد کسی دوسری جگہ کرسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: آج کل جو لوگ شیعہ کہلاتے ہیں یعنی تبرائی رافضی، ان کے ساتھ نکاح باطل محض ہے، اگر حلیمہ اور اس کے اولیا سب راضی ہیں تو اللہ ورسول راضی نہیں، حلیمہ کو حرام ہے کہ اپنے آپ کو اس کی زوجیت میں سمجھے، فتاوی ظہیر یہ وحدیقہ ندیہ و عالمگیریہ میں مثال روافض کے لیے ہے احکامھم احکام المرتدین 1(ان کے احکام مرتدین والے

ہیں۔ت) نیز عالمگیری میں ہے: لا یجوز للمرتدان یتزوج مرتدۃ ولامسلمۃ ولاکافرۃ | مرتد کا مرتدہ، مسلمہ اور اصلی کافرہ عورت سے نکاح جائز اصلیۃ وکذلک لایجوز نکاح المرتدۃ مع احد 2۔ واللہ | نہیں اور یوں ہی مرتدہ کو بھی کسی سے نکاح جائز نہیں۔(ت) تعالٰی اعلم۔ | واللہ تعالٰی اعلم

1 الحدیقہ الندیہ والاستخفاف بالشریعہ کفر ای ردہ مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۳۰۵/۱ 2 فتاوٰی ہندیہ فصل فی المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Problem 75: From Shams Abad, district Kamilpur, sent by Maulana Maulvi Qazi Ghulam Gilani Sahab, 16 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding the following: Zaid has been living in Africa for thirteen years. His mother-in-law claims he committed a sinful act with her. There are two witnesses to this; one says he saw them both actively engaged in the act at noon in a certain place, and the second says he saw them both dressed. All the people of that locality, one or two from every house totaling 50 people, say that based on conclusive circumstantial evidence, they know Zaid and his mother-in-law were of ill-repute and there was no doubt about their illicit relationship. For two years, they had mutual mingling and intimacy. When those two witnesses saw them in such a detestable state, Zaid fled and told another person that his wife, who is the daughter of this mother-in-law and remains unconsummated, is now forbidden to him; anyone who wants her can have her. His wife has been a young woman for eight to ten years now and suffers greatly for food, drink, and residence. There is a strong suspicion that she might fall into adultery. Therefore, if a most learned and pious scholar of that region, according to the text of Al-Hadiqah al-Nadiyyah:

And when the era is devoid of a competent ruler, all matters are entrusted to the scholars; they become the authorities.	When the time is devoid of an effective ruler, all matters requiring decision shall be entrusted to the scholars, and they will be established as the authorities. (T)

...were to summon the father of the absent party or appoint someone as a representative for him, hear the claim and witness testimony against him, and then issue a ruling of separation, would it be correct or not? And if it is correct, since the absent party is not within the jurisdiction of a judge (Qazi), what could be the way to appoint a 'Masakhar' (legal representative) for him? In Shami, Volume 4, Page 353, in the Chapter of Judiciary, it states: "And in Al-Bahr, and the relied-upon opinion is that judgment is passed against the Masakhar..." (In Bahr, regarding issuing a verdict against a Masakhar...-T):

And the explanation of Masakhar is that the judge appoints a representative for the absent person to hear the litigation against him, and the condition according to those who	And the explanation of Masakhar is that the judge appoints someone as a representative on behalf of an absent person so that he may hear the charges against the absent person, but the

permit it is that the absent person should be within the jurisdiction of the judge.

condition for those who allow its validity is that the absent person must be in the jurisdiction of that judge. (T)

1. Al-Hadiqah al-Nadiyyah, The Third Category of the Three Types of Sciences, etc., Nooriya Razawiyya, Faisalabad, 1/351.
2. Radd al-Muhtar, Section on Imprisonment, Discussion on Judgment against a Masakhar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/339.

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

समस्या 75: शम्स आबाद, ज़िला कामिलपुर से, मौलाना मौलवी क़ाज़ी ग़ुलाम गिलानी साहब द्वारा प्रेषित, 16 सफ़र 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि ज़ैद तेरह वर्षों से अफ्रीका में रह रहा है। उसकी सास का कहना है कि उसने उसके साथ बुरा काम (व्यभिचार) किया है। इस मामले में दो गवाह हैं; एक कहता है कि मैंने दोपहर के समय एक निश्चित स्थान पर दोनों को उस कृत्य में लिप्त देखा, दूसरा कहता है कि उसने दोनों को कपड़े पहने हुए देखा। उस मोहल्ले के सभी लोग, हर घर से एक या दो व्यक्ति जिनका कुल योग 50 होता है, यही कहते हैं कि पक्के सबूतों और परिस्थितियों से हम जानते हैं कि ज़ैद और उसकी सास बदचलन थे और उनके अवैध संबंधों में कोई संदेह नहीं था। लगातार दो साल तक दोनों का आपस में मिलना-जुलना और घनिष्ठता रही। जब उन दो गवाहों ने उन्हें ऐसी घिनौनी स्थिति में देखा, तब से ज़ैद भाग गया और दूसरे से कह गया कि अब यह मेरी पत्नी (जो उस सास की बेटी है और जिसके साथ अभी संबंध नहीं बने हैं) मेरे ऊपर हराम है; जिसे उसका दिल चाहे उसे दे दे। उसकी पत्नी अब आठ-दस वर्षों से जवान है और खान-पान और रहने में उसे बहुत कष्ट है। प्रबल आशंका है कि वह व्यभिचार में लिप्त न हो जाए। अत; यदि उस क्षेत्र का कोई अत्यंत विद्वान और परहेज़गार आलिम (विद्वान), 'अल-हदीक़ह अन-नदिय्या' के पाठ के अनुसार:

और जब समय एक सक्षम शासक से खाली हो, तो सभी मामले विद्वानों को सौंप दिए जाते हैं; वे अधिकारी बन जाते हैं।	जब ज़माना प्रभावी शासक से खाली हो तो तमाम फ़ैसला तलब मामले उलेमा (विद्वानों) के सुपुर्द होंगे और वही वाली (शासक/अधिकारी) क़रार पायेंगे। (त)

...उस ग़ायब (अनुपस्थित) व्यक्ति के पिता के सामने या उसकी ओर से किसी को वकील नियुक्त करके उस पर दावा और गवाही सुनकर अलगाव (तफ़रीक़) का आदेश दे दे, तो क्या यह सही होगा या नहीं? और अगर सही है, तो चूंकि ग़ायब व्यक्ति क़ाज़ी के अधिकार क्षेत्र में नहीं है, इसलिए उसकी ओर से 'मुसख़र' (प्रतिनिधि) नियुक्त करने का क्या तरीक़ा हो सकता है? शामी, खंड 4, पृष्ठ 353 में 'क़ज़ा' (न्यायपालिका) के अध्याय में 'वफ़िल बहर वल मोतमदान अल-क़ज़ा अलल मुसख़र' आदि (बहर में मुसख़र के ख़िलाफ़ फ़ैसला जारी करने से संबंधित कथन...-त) के बारे में है:

और मुसख़र की व्याख्या यह है कि क़ाज़ी अनुपस्थित व्यक्ति की ओर से एक वकील	और मुसख़र की तफ़्सीर (व्याख्या) यह है कि क़ाज़ी किसी ग़ायब (अनुपस्थित) व्यक्ति की तरफ़ से किसी

नियुक्त करता है ताकि वह उसके विरुद्ध मुक़दमे को सुन सके और इसके समर्थकों के अनुसार शर्त यह है कि अनुपस्थित व्यक्ति क़ाज़ी के अधिकार क्षेत्र में हो।

को वकील बनाये ताकि वह ग़ायब के ख़िलाफ़ इल्ज़ामों को सुन सके लेकिन इसके जायज़ होने के क़ायल के यहाँ यह शर्त है कि वह ग़ायब शख़्स उस क़ाज़ी के इलाक़े में हो। (त)

1. अल-हदीक़ह अन-नदिय्या, तीन प्रकार के विज्ञानों में से तीसरा प्रकार, आदि, नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद 1/351
2. रद अल-मुह्तार, क़ैद का अध्याय, मुसख़र पर फ़ैसले का विषय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत 4/339

पृष्ठ 460/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۷۵: از شمس آباد ضلع کمیل پور مرسلہ مولانا مولوی قاضی غلام گیلانی صاحب ۱۶ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید خود عرصہ تیرہ برس سے ملک افریقہ میں رہتا ہے اس کی خوشدامن کہتی ہے کہ اس نے میرے ساتھ فعل بد کیا ہے اس پر دو گواہ اس امر کے معائنہ کے ہیں کہ ایک کہتا ہے کہ میں نے بوقت دوپہر کے فلاں مقام میں دونوں کو عین مشغولی میں دیکھا، دوسرا کہتا ہے کہ دونوں کو کپڑے پہنے ہوئے دیکھا ہے، اس موضع کے کل لوگ ہر ایک مکان کے ایک دو آدمی جن کا مجموعہ ۵۰ نفر ہوتے ہیں یہی کہتے ہیں کہ قرائن قاطعہ سے ہم لوگ جانتے ہیں کہ زید اور اس کی خوشدامن باہم بد معاش تھے اور ان کے ناجائز تعلق میں کوئی شک نہ تھا، برابر دو برس تک دونوں کا باہم اختلاط اور انبساط رہا، جب ان دو گواہوں نے ان کو ایسی کریہہ صورت میں دیکھا تب سے زید فرار کر گیا اور ایک دوسرے سے کہہ گیا کہ اب یہ میری عورت غیر مدخولہ جو کہ اس خوشدامن کی دختر ہے میرے اوپر حرام ہے جس کو اس کا دل چاہے دے دے، اس کی عورت اب عرصہ آٹھ دس برس سے جوان ہے اور خوردونوش و سکونت کی اس کو بہت تکلیف ہے اور غالب گمان ہے کہ کہیں حرامکاری میں مبتلا ہو جائے، پس اگر کوئی عالم افقہ واورع اس علاقہ کا بموجب عبارت حدیقہ ندیہ:

واذاخلا الزمان من سلطان ذي كفاية	جب زمانہ موثر حکمران سے خالی ہو تو تمام فیصلہ
فالامور كلها مفوضة الى العلماء يصيرون ولاةً-1	طلب امور علماء کے سپرد ہوں گے اور وہ والی قرار پائیں گے۔ (ت)

کے اس غائب کے باپ کے روبرو یا اس کی طرف سے کسی کو وکیل کر کے اس پر سمع دعوٰی و شہادت کر کے تفریق کا حکم دے دے تو درست ہوگا یا نہیں، اور اگر درست ہے تو چونکہ غائب

ولایت قاضی میں نہیں لہذا اس کی طرف سے مسخر پکڑنے کی کیا صورت ہو سکتی ہے؟ شامی جلد ۴ ص ۳۵۳ میں باب القضاء میں وفي البحر والمعتمدان القضاء على المسخر الخ(بحر میں ہے مسخر کے خلاف فیصلہ صادر کرنے سے متعلق قول الخ۔ت) کے متعلق ہے:

وتفسير المسخران ينصب القاضي وكيلا عن الغائب يسمع الخصومة عليه وشرطه عندالقائل به ان يكون الغائب في ولاية القاضى-2

اور مسخر کی تفسیر یہ ہے کہ قاضی کسی غائب شخص کی طرف سے کسی کو وکیل بنائے تاکہ وہ غائب کے خلاف الزامات کو سن سکے، لیکن اس کے جواز کے قائل کے ہاں یہ شرط ہے کہ وہ غائب شخص اس قاضی کے علاقہ میں ہو۔ (ت)

1 الحدیقہ الندیہ النوع الثالث من انواع العلوم الثلاثۃ الخ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱/۳۵۱ 2 ردالمحتار فصل فی الحبس مطلب فی القضاء علی المسخر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۳۹/۴

Volume 11, Fatawa Razawiyya

The Answer: If the stated situation is true, then fundamentally there is no need for any court order, separation, coercion, or judgment against an absentee husband. The woman has the right to marry wherever she wishes immediately. This situation is not without two possibilities: either the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharat) occurred before the marriage with the daughter or after it. If it occurred before, then the marriage was void (Fasid) and rejected from the start; the woman can annul it herself, even in the husband's absence, because staying in it is a sin, and eliminating sin is mandatory for everyone, as we have researched in our annotations on Radd al-Muhtar. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic: (و) يثبت لكل واحد منهما فسخه ولو بغير محضر من صاحبه دخل بها اولا فى الاصح خروجاً من المعصية فلاينافى وجوبه[1]. Translation: And it is permissible for both man and woman to annul this marriage even without the presence of the other partner, whether consummation occurred or not according to the most correct view, so that the sin can be ended, and this is not contrary to the judge's obligation to separate them. (T)

And if that prohibition of affinity occurred after marriage, the marriage becomes void (Fasid) but will not be annulled without formal abandonment (Mutarakah), and the woman will not have the right to marry elsewhere. Only the husband can perform this abandonment, as we have explained and been granted success in our notes on Ibn Abidin. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic: بحرمة المصاهرة لايرتفع النكاح حتى لايحل لها التزوج بأخر الا بعد المتاركة و انقضاء العدة والوطى بها لايكون زنا[2]. Translation: Marriage does not end [automatically] due to the prohibition of affinity, so it is not permissible for a woman to marry another person until the waiting period ('iddah) after abandonment has passed. During this period, the husband's intercourse with her will not be ruled as adultery (zina). (T)

In the same [book] it is stated:

Arabic: مبدؤها (اى العدة) فى النكاح الفاسد بعد التفريق من القاضى بينهما اوالمتاركة
Translation: The waiting period starts after abandonment or separation by the judge. Abandonment means the husband's announcement of separation from his wife with whom marriage was consummated.

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Delhi, 1/201 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Marriages, Mujtabai Delhi, 1/188

ग्यारहवाँ खण्ड, फतावा रज़विया

उत्तर: यदि वर्णित स्थिति सत्य है, तो मूलतः न तो किसी कानूनी आदेश (क़ज़ा) की आवश्यकता है, न पृथक्करण (तफ़रीक़) की, न किसी दबाव की और न ही अनुपस्थित पति के विरुद्ध निर्णय की। महिला को अधिकार है कि वह वर्तमान में जहाँ चाहे अपना निकाह कर सकती है। यह स्थिति दो संभावनाओं से रहित नहीं है: या तो निकाह से पहले पुत्री के साथ सम्भोग के कारण 'हुरमते मुसाहरत' (सम्बन्ध की वर्जना) उत्पन्न हुई या बाद में। यदि पहले हुई, तो निकाह शुरू से ही दोषपूर्ण (फ़ासिद) और अस्वीकार्य था, महिला स्वयं इसे निरस्त कर सकती है, चाहे पति की अनुपस्थिति में ही क्यों न हो, क्योंकि इसमें रहना पाप है और पाप को समाप्त करना सभी पर अनिवार्य है, जैसा कि हमने 'रद अल-मुह्तार' के हाशिये में शोध किया है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी: (و) يثبت لكل واحد منهما فسخه ولو بغير محضر من صاحبه دخل بها اولا فى الاصح خروجاً من المعصية فلاينافى وجوبه[1]. अनुवाद: और दोनों पुरुष और महिला के लिए इस निकाह को एक-दूसरे की उपस्थिति के बिना भी निरस्त करना जायज़ है, चाहे संभोग हुआ हो या न हुआ हो, सही मत के अनुसार ताकि पाप को समाप्त किया जा सके और यह बात काज़ी पर पृथक्करण की अनिवार्यता के विपरीत नहीं है। (त)

और यदि वह 'हुरमते मुसाहरत' निकाह के बाद हुई, तो निकाह फ़ासिद (दोषपूर्ण) हो गया लेकिन बिना 'मुतारका' (औपचारिक त्याग) के समाप्त नहीं होगा और महिला को दूसरी जगह निकाह करने का अधिकार नहीं होगा। यह त्याग केवल पति ही कर सकता है जैसा कि हमने स्पष्ट किया है और इब्ने आबिदीन पर अपनी टिप्पणियों में हमें इसकी सफलता मिली है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी: بحرمة المصاهرة لايرتفع النكاح حتى لايحل لها التزوج بأخر الا بعد المتاركة و انقضاء العدة والوطى بها لايكون زنا[2]. अनुवाद: हुरमते मुसाहरत से निकाह खत्म नहीं होता इसलिए औरत को दूसरे व्यक्ति से निकाह उस वक्त तक जायज़ नहीं जब तक मुतारका के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) न गुज़र जाए, इस दौरान खाविन्द (पति) की उससे वती (संभोग) को ज़िना (व्यभिचार) का हुक्म नहीं दिया जाएगा। (त)

उसी में है:

अरबी: مبدؤها (ای العدة) فی النکاح الفاسد بعد التفریق من القاضی بینهما اوالمتارکة
अनुवाद: इद्दत की शुरुआत मुतारका या काज़ी के पृथक्करण के बाद होगी, मुतारका से तात्पर्य पति का अपनी पत्नी से अलगाव की घोषणा है।

[1] दुर्रे मुख्तार, महर का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/201 [2] दुर्रे मुख्तार, हराम विवाहों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/188

جلد یاز دہم، فتاویٰ رضویہ

الجواب: صورت مسئولہ اگر واقعی ہے تو اصلاً نہ کسی قضا کی حاجت نہ تفریق کی ضرورت، نہ مسخر درکار نہ قضا علی الغائب، عورت کو اختیار ہے کہ فی الحال جہاں چاہے اپنا نکاح کر سکتی ہے، یہ دو حال سے خالی نہیں۔ یہ حرمت مصاہرت یا تو نکاح دختر سے پہلے ہوئی یا بعد، اگر پہلے ہوئی تو نکاح سرے سے فاسد و مردود واقع ہوا، عورت بذاتِ خود اسے فسخ کر سکتی ہے اگر چہ شوہر کی غیبت میں کہ وہ معصیت ہے اور اعدام معصیت سب پر واجب، کما حققناہ فیما علی ردالمحتار علقناہ (جیسا کہ ردالمحتار کے حاشیہ میں ہم نے اس کی تحقیق کی ہے۔ ت) در مختار میں ہے:

(و) یثبت لکل واحد منھما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بھا اولا فی الاصح خروجاً من المعصیۃ فلاینافی وجوبہ[1]۔ اور دونوں مرد اور عورت کے لیے اس نکاح کو ایک دوسرے کی موجودگی کے بغیر بھی فسخ کرنا جائز ہے دخول کیا ہو یا نہ کیا ہو اصح قول میں تاکہ گناہ کو ختم کیا جاسکے، اور یہ بات قاضی پر تفریق کے وجوب کے منافی نہیں ہے۔ (ت)

اور اگر وہ حرمت مصاہرت بعد نکاح واقع ہوئی تو نکاح فاسد ہو گیا مگر بلا متارکہ فسخ نہ ہوگا اور عورت کو دوسری جگہ نکاح کا اختیار نہ ہوگا اور یہ متارکہ صرف شوہر ہی کر سکتا ہے کما بیناہ وبہ وفقنا علی ابن عابدین علقنا (جیسا کہ ہم بیان کر چکے ہیں اور رد المحتار کے حاشیہ میں ہمیں اس کی توفیق دی گئی۔ ت) درمختار میں ہے:

بحرمۃ المصاھرۃ لایرتفع النکاح حتی لایحل لھا التزوج بأخر الا بعد المتارکۃ و انقضاء العدۃ والوطی بھا لایکون زنا[2]۔ حرمت مصاہرت سے نکاح ختم نہیں ہوتا اس لیے عورت کو دوسرے شخص سے

نکاح اس وقت تک جائز نہیں جب تک متارکہ کے بعد عدت نہ گزر جائے، اس دوران خاوند کی اس سے وطی کو زنا کا حکم نہ دیا جائیگا۔ (ت)

اسی میں ہے:

مبدؤھا (ای العدۃ) فی النکاح الفاسد بعد التفریق من القاضی بینھما اوالمتارکۃ عدت کی ابتداء متارکہ یا قاضی کی تفریق کے بعد ہوگی، متارکہ سے مراد خاوند کا مدخولہ بیوی سے علیحدگی کا اعلان

[1] درمختار باب فی المھر مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۱ [2] درمختار باب فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۸

Fatawa-e-Razvia, Volume 11

[Arabic Box Text]: It means the husband's declaration of intent to cease intercourse, and not just the intent itself, if she is a woman with whom the marriage was consummated. [End Arabic Box Text] It is merely not enough to have the intention of abandoning intercourse. (T)

To the extent that Zaid clearly said in plain words that now this woman, who is unconsummated, is forbidden to me; give her to whomever her heart desires. By consensus, the separation occurred and the marriage was annulled, there is no need for a judge's decree. Nor does an unconsummated woman need an 'Iddah (waiting period); at this time she may marry whomever she wishes. And Allah knows best.

Problem 258: From Town Iranwa, Mahalla Sadat, District Fatehpur, sent by Muhammad Rafi Sahib, 28 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter: A man named Faqeeray drank the milk of a woman named Biya (while her nursing daughter, named Hafizun, was in her lap) during the period of fosterage. Another girl, named Fahmeen, was later born to the same woman, Biya. Now, the marriage of the said Faqeeray has been performed with the said Fahmeen. Is this marriage legally permissible or impermissible? If it is impermissible, can the said Fahmeen marry another man or not? And does Fahmeen need to obtain a divorce from Faqeeray or not? Please clarify and be rewarded.

Answer: All of Biya's previous and subsequent daughters are Faqeeray's biological [foster] sisters, and he cannot marry any of them; it is purely forbidden (Haram). It is obligatory upon him to leave Fahmeen immediately, and if he does not leave her, it is obligatory upon Fahmeen to immediately annul this invalid (fasid) marriage, and after the waiting period, she may marry whomever she wishes. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar':

[Arabic Box Text]: The right of annulment is established for each of them, even without the presence of the other, whether consummation occurred or not, according to the most correct opinion, to depart from sin, and it does not contradict the obligation of separation. And Allah knows best. [End Arabic Box Text] Both the man and the woman have the right to annulment, whether in the presence of the other or not, and whether consummation occurred or not, according to the most correct opinion, so that the sin can be ended. This does not contradict the judge's duty to order a separation. (T) And Allah knows best.

Problem 259: From Mauza Khurd Mo, Post Office Badosarai, District Barabanki, sent by Safdar Ali Sahib, 6 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter: After the death of a wife, is it permissible to marry the wife's maternal aunt or paternal aunt...

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/258
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/201

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: इसका अर्थ है पति द्वारा सहवास छोड़ने के इरादे की घोषणा करना, न कि केवल इरादा करना, यदि वह एक ऐसी महिला है जिसके साथ निकाह मुकम्मल (दुखूल) हो चुका हो। [अरबी बॉक्स टेक्स्ट समाप्त] सिर्फ सहवास (वत्ती) छोड़ने का इरादा काफी नहीं है। (त)

यहाँ तक कि ज़ैद ने साफ़ लफ़्ज़ों में कह दिया कि अब यह मेरी औरत 'ग़ैर मदख़ूला' (जिससे सहवास न हुआ हो) मेरे ऊपर हराम है, जिसे उसका दिल चाहे उसे दे दे। सर्वसम्मति (बिलात्तिफ़ाक़) से अलगाव (मुतारका) हो गया और निकाह रद्द (फ़स्ख़) हो गया, काज़ी के फ़ैसले की कोई ज़रूरत नहीं। न ही ग़ैर मदख़ूला औरत को इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की ज़रूरत है; वह इस वक़्त जिससे चाहे निकाह कर ले। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 258: क़स्बा इरानवाँ, मोहल्ला सादात, ज़िला फ़तेहपुर से मुहम्मद रफ़ी साहिब द्वारा भेजा गया, 28 सफ़र 1338 हिजरी। धार्मिक विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति जिसका नाम 'फ़क़ीरे' है, उसने 'मुसम्मात बिया' नाम की महिला का दूध पिया (जब उसकी अपनी लड़की 'मुसम्मात हफ़ीजन' उसकी गोद में दूध पीती बच्ची थी) दूध पिलाने के दिनों (अय्याम-ए-रज़ाअत) के दौरान। बाद में उसी मुसम्मात बिया की दूसरी लड़की 'मुसम्मात फ़हमीना' पैदा हुई। अब फ़क़ीरे का निकाह मुसम्मात फ़हमीना के साथ कर दिया गया है। क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार जायज़ है या नाजायज़? अगर नाजायज़ है, तो क्या मुसम्मात फ़हमीना किसी दूसरे मर्द से निकाह कर सकती है या नहीं? और क्या फ़हमीना को फ़क़ीरे से तलाक़ लेने की ज़रूरत है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य के पात्र बनें।

जवाब: बिया की पिछली और अगली सभी लड़कियाँ फ़क़ीरे की हक़ीक़ी (रज़ाई) बहनें हैं और उनमें से किसी से भी उसका निकाह नहीं हो सकता, यह पूरी तरह हराम है। उस पर फ़र्ज़ है कि वह फ़हमीना को तुरंत छोड़ दे और अगर वह उसे नहीं छोड़ता, तो फ़हमीना पर फ़र्ज़ है कि वह तुरंत इस फ़ासिद (अवैध) निकाह को फ़स्ख़ (रद्द) कर दे और इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह कर ले। दुर्रे मुख़्तार में है:

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: उनमें से प्रत्येक के लिए निकाह रद्द करने का अधिकार साबित है, चाहे दूसरे की उपस्थिति के बिना हो, चाहे सहवास हुआ हो या नहीं, सबसे सही मत के अनुसार, ताकि पाप से बचा जा सके और यह अलगाव की अनिवार्यता के विपरीत नहीं है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट समाप्त] पुरुष और महिला दोनों को फ़स्ख़ (निकाह रद्द करने) का हक़ हासिल है, चाहे दूसरा मौजूद हो या न हो, चाहे दुखूल (सहवास) हुआ हो या न हो, सबसे सही क़ौल (मत) के अनुसार, ताकि गुनाह को ख़त्म किया जा सके। और यह बात काज़ी पर तफ़रीक़ (अलगाव) कराने के फ़र्ज़ के विपरीत नहीं है। (त) और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 259: मौज़ा खुर्द मो, डाकखाना बदोसराये, ज़िला बाराबंकी से सफ़दर अली साहिब द्वारा भेजा गया, 6 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी। धार्मिक विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि पत्नी की मृत्यु के बाद, पत्नी की मौसी या बुआ से निकाह जायज़ है...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब फ़िल इद्दत, मतब-ए-मुजतबाई दिल्ली, 1/258
2. दुर्रे मुख़्तार, बाब फ़िल महर, मतब-ए-मुजतबाई दिल्ली, 1/201

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

ای اظہار العزم من الزوج علی ترک وطئھا لا مجرد العزم لو مدخولہ ۱۔ ہے صرف وطی کے ترک کا عزم کافی نہیں ہے۔ (ت)

یہاں تک کہ زید نے صاف لفظوں میں کہہ دیا کہ اب یہ میری عورت غیر مدخولہ میرے اوپر حرام ہے جس کو اس کا دل چاہے دے دے بالاتفاق متارکہ ہو گیا اور نکاح فسخ ہو گیا قضاء قاضی کی کچھ حاجت نہیں۔ نہ غیر مدخولہ کو عدت کی حاجت ، اس وقت جس سے چاہے نکاح کر لے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۵۸: از قصبہ ایرانواں محلہ سادات ضلع فتحپور مرسلہ محمد رفیع صاحب ۲۸ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمٰی فقیرے نے مسماۃ بیا کا (جبکہ اس کی گود میں مسماۃ حفیظن اس کی لڑکی دودھ پیتی تھی) اندر ایام رضاعت کے دودھ پیا، اسی مسماۃ بیا کے دوسری لڑکی مسماۃ فہمین پیدا ہوئی، اب فقیرے مذکور کا نکاح مسماۃ فہمین کے ساتھ کیا گیا یہ نکاح شرعا جائز ہے یا ناجائز؟ اگر ناجائز ہے تو مسماۃ فہمین کسی دوسرے مرد سے نکاح کر سکتی ہے یا نہیں؟ اور فہمین کو فقیرے سے طلاق حاصل کرنے کی ضرورت ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بیا کی اگلی پچھلی سب لڑکیاں فقیرے کی حقیقی بہنیں ہیں اور ان میں کسی سے اس کا نکاح نہیں ہو سکتا حرام محض ہے، اس پر فرض ہے فہمین کو فوراً چھوڑ دے اور وہ نہ چھوڑے تو فہمین پر فرض ہے کہ فوراً اس فاسد نکاح کو فسخ کر دے اور عدت کے بعد جس سے چاہے نکاح کرلے، در مختار میں ہے:

یثبت لکل واحد منھما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بھا اولافی الاصح خروجا عن المعصیۃ ۲۔ فلاینا فی وجوبہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مرد و عورت ہر ایک کو فسخ کا حق حاصل ہے خواہ دوسرے کی موجودگی ہو یا نہ ہو، دخول کیا ہو یا نہ، اصح قول میں، تاکہ گناہ کو ختم کیا جاسکے، اور یہ بات قاضی پر وجوب تفریق کے منافی نہیں ہے (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۵۹: از موضوع خورد مؤ ڈاک خانہ بدوسرائے ضلع بارہ بنکی مرسلہ صفدر علی صاحب ۶ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بعد فوت ہونے بیوی کے، بیوی کی خالہ وعمہ سے نکاح جائز

---

۱ در مختار باب فی العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۸ ۲ در مختار باب فی المھر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۱

...is it permissible or impermissible? And is marriage with a daughter-in-law valid after the son divorces her or after the son's death?

The Answer: Marriage with the deceased wife's maternal or paternal aunt is permissible. Allah Almighty says: "And [also prohibited to you are all other] lawful to you are [all others] beyond these" [1] (And apart from the prohibited ones, other women are made lawful for you. -Translator) And whether the son dies or divorces, marriage with his wife is forbidden forever. Allah Almighty says: "and the wives of your sons" [2] (and the wives of your sons. -Translator). And Allah Almighty knows best.

Issue 260: From Parsona, Pargana Bareilly, sent by Sheikh Karimullah, Munshi Allahdeen, Moinuddin, Saadi, Sheikh Masit Zamindar, Bandu Khan, Wahid Lakhia, and Gholami. 26th Rabi' al-Akhir 1338 AH. Respected Sir! It is submitted that a person named Medu, a weaver, got married. A girl came with his wife. The aforementioned Medu committed an indecent act with her, and a boy was also born. Now he has separated from her; he wants his mistake to be forgiven. What fatwa does your honorable self give in this matter? That is all.

The Answer: His wife has become forbidden for him forever. It is obligatory upon him to leave her immediately and now he can never marry her in any way, nor can he ever marry that girl. She is in the place of his daughter and the wife has become like a mother. Both have become forbidden forever. He should separate both immediately and repent with a sincere heart and strictly adhere to prayers, then they may be reunited; otherwise, keep them out of the community forever. And Allah Almighty knows best.

Issue 261: From Peeran Patan via Meana Station, Mohalla Qassab Wada, sent by Kamal Bhai Yar and Bhai. 28th Rabi' al-Akhir 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter that, for example, Bakr has two sons, one named Zaid and the other named Amr. From Zaid's marriage, a daughter was born named Fatima. Now from Fatima's marriage, a daughter was born to Fatima named Maryam. Now, is the marriage of Maryam with Amr permissible according to Sharia or not? And in this, there is no relation of milk (breastfeeding) from any side or through anyone to anyone? And these two sons...

---

[1] The Holy Quran 4/24 [2] The Holy Quran 4/23 Page 463 of 739

फतावा रिज़विया | ग्यारहवीं जिल्द

...है या नाजायज़? और लड़के के तलाक़ देने पर या लड़के के मर जाने पर बहू के साथ निकाह दुरुस्त है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): पत्नी के मरने पर उसकी ख़ाला (मौसी) और फूफी (बुआ) से निकाह जायज़ है, अल्लाह तआला फ़रमाता है: "[1] "وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ (और मुहर्रमात के सिवा औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं - अनुवादक)। और बेटा मर जाए या तलाक़ दे दे, उसकी पत्नी से निकाह हमेशा-हमेशा के लिए हराम है, अल्लाह तआला फ़रमाता है: "[2] "وَحَلَائِلُ اَبْنَآئِكُمْ (और तुम्हारे बेटों की बीवियाँ - अनुवादक)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २६०: परसोना, परगना बरेली से, प्रेषक: शेख करीम उल्लाह, मुंशी अल्लाह दीन, मुईन-उद-दीन, सादी, शेख मसीत जमींदार, बंदू खान, वाहिद लखिया और गुलामी। २६ रबी-उल-आखिर शरीफ़ १३३८ हिजरी। जनाब-ए-आली! गुज़ारिश है कि मुसम्मी मीडू नूरबाफ़ ने निकाह किया था, उसकी बीवी के साथ एक लड़की आई थी। उक्त मुसम्मी मीडू ने उसके साथ अनुचित व्यवहार (अनैतिक कार्य) किया और एक लड़का भी पैदा हुआ। अब उसने उसे अलग कर दिया है, वह अपनी गलती माफ़ करवाना चाहता है। हुज़ूर पुरनूर इस बारे में क्या फ़तवा देते हैं? फ़क़त।

अल-जवाब (उत्तर): उसकी औरत उस पर हमेशा के लिए हराम हो गई, उस पर फ़र्ज़ है कि फ़ौरन उसे छोड़ दे और अब कभी भी उससे किसी तरह निकाह नहीं कर सकता, न ही कभी उस लड़की से निकाह कर सकता है। वह उसकी बेटी की जगह है और बीवी माँ की जगह हो गई। दोनों हमेशा के लिए हराम हो गईं। दोनों को फ़ौरन जुदा कर दे और सच्चे दिल से तौबा करे और नमाज़ की पूरी पाबंदी करे तो उसे मिला लें, वरना हमेशा के लिए बिरादरी से बाहर रखें। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २६१: पीरान पटन से, द्वारा: स्टेशन मयाना, मोहल्ला कसाब वाड़ा, प्रेषक: कमाल भाई यार और भाई। २८ रबी-उल-आखिर शरीफ़ १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या फ़रमाते हैं कि, उदाहरण के लिए, बक्र के दो बेटे हैं, एक का नाम ज़ैद है और दूसरे का नाम अम्र। ज़ैद के निकाह से एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम फातिमा है। अब फातिमा की शादी से फातिमा की एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम मरियम है। अब, क्या मरियम का निकाह अम्र के साथ शरीअत के

अनुसार जायज़ है या नहीं? और इसमें किसी भी तरफ से या किसी भी माध्यम से दूध का कोई संबंध नहीं है? और ये जो दो बेटे...

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम ४/२४ [2] अल-क़ुरआन अल-करीम ४/२३ पृष्ठ ४६३ / ७३९

ہے یا نا جائز؟ اور لڑکے کے طلاق دینے پر یا لڑکے کے مر جانے پر بہو کے ساتھ نکاح درست ہے یا نہیں؟

الجواب: زوجہ کے مرنے پر اس کی خالہ وعمہ سے نکاح جائز ہے، قال اللہ تعالٰی: "وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ" 1 (اور محرمات کے سوا عورتیں تمہارے لیے حلال کی گئی ہیں۔ت) اور بیٹا مر جائے خواہ طلاق دے دے اس کی زوجہ سے نکاح ہمیشہ ہمیشہ کو حرام ہے، قال تعالٰی: "وَحَلَائِلُ اَبْنَآئِكُمْ" 2 اور تمہارے بیٹوں کی بیویاں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۰: از پرسونہ پرگنہ بریلی مرسلہ شیخ کریم اللہ و منشی الہ دین و معین الدین و سعدی و شیخ مسیت زمیندار و بندو خاں و واحد لکھیا و غلامی ۲۶ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۸ھ جناب عالی! گزارش ہے کہ مسمّی میڈ و نورباف نے نکاح کیا تھا، اس کی بی بی کے ساتھ ایک لڑکی آئی تھی اس کے ساتھ مسمّی میڈ مذکور نے حرکت ناشائستہ کی اور ایک لڑکا بھی پیدا ہوا ہے اب اس کو علیحدہ کردیا ہے وہ اپنی خطا معاف کرانا چاہتا ہے، حضور پر نور اس امر میں کیا فتویٰ فرماتے ہیں؟ فقط

الجواب: اس کی عورت اس پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو گئی، اس پر فرض ہے کہ فوراً اسے چھوڑ دے اور اب کبھی اس سے کسی طرح نکاح نہیں کرسکتا، نہ کبھی کسی طرح اس لڑکی سے نکاح کرسکتا ہے، یہ اس کی بیٹی کی جگہ ہے اور بی بی ماں کی جگہ ہوگئی، دونوں ہمیشہ ہمیشہ کے لیے حرام ہوگئیں، دونوں کو فوراً جدا کردے اور سچے دل سے تائب ہو اور نماز کی پوری پابندی کرے تو اسے ملالیں ورنہ ہمیشہ برادری سے خارج رکھیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۱: از پیران پٹن معرفت اسٹیشن میانہ محلہ قصاب واڑہ مرسلہ کمال بھائی یار و بھائی ۲۸ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مثلاً بکر کے دو فرزند ہیں، ایک کا نام زید ہے اور دوسرے کا نام عمرو، زید کا نکاح ہونے سے ایک دختر پیدا ہوئی جس کا نام فاطمہ ہے، اب فاطمہ کی شادی ہونے سے فاطمہ کے ایک دختر پیدا ہوئی جس کا نام مریم ہے، اب مریم کا نکاح عمرو کے ساتھ ازروئے شرع جائز ہے یا نہیں؟ اور اس میں دودھ کا تعلق کس طرف سے اور کسی ذریعہ سے کسی کا بھی نہیں؟ اور یہ جو دونوں فرزند

---

1 القرآن الکریم ۲۴/۴ 2 القرآن الکریم ۲۳/۴ Page 463 of 739

...belong to Bakr, meaning Zaid and Amr, their mother is different. Clarify the matter and be rewarded.

The Answer: Zaid is Amr's brother. Fatima is Amr's niece. Maryam is the daughter of Amr's niece. Just as a niece is prohibited (in marriage), similarly, the daughter of a niece is also prohibited. A niece is like a daughter and a niece's daughter is like a granddaughter. Amr is Maryam's maternal grandfather; how can a granddaughter be lawful for a grandfather? Allah Almighty says: "And your brother's daughters" (are prohibited to you). Granddaughters and great-granddaughters are also included in the category of daughters, as He said: "Prohibited to you are your mothers and your daughters." If granddaughters were not included in "daughters," how would his own granddaughter or great-granddaughter be prohibited for a man? For the Holy Quran prohibited "daughters" and after listing these prohibitions, it stated: "And lawful for you are those beyond that." In short, denying the prohibition of a brother's granddaughter is denial of the Quran and Islam. It is stated in 'Niqayah':

[Arabic Quote]: "Prohibited to a man are his origins (ancestors), his branches (descendants), and the branches of his immediate origins (siblings and their descendants)." (Urdu Translation): Prohibited to a man are his origins, his branches, and the branches of his immediate origins, i.e., parents. Etc.

It is stated in 'Jami' al-Rumuz':

[Arabic Quote]: "From sisters through father and mother, their children, and the daughters of brothers, and so on." (Urdu Translation): Real sisters or sisters from the mother's side or father's side, and nieces downwards. (Translation). And Allah Almighty knows best.

Masala 262: From Bareilly city, Vegetable Market, asked by Kabir Ahmad Miyan, 2 Jumada al-Ula 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid has a granddaughter from his first wife, and Zaid has a son from his second wife who has been raised by a stranger. Can Zaid's son marry the daughter of Zaid's granddaughter? Clarify the matter and be rewarded.

The Answer: It is prohibited. She is his niece's daughter (daughter of his half-sister's daughter) and stands in the place of his granddaughter. And Allah Almighty knows best.

1. Al-Quran al-Karim
2. Al-Quran al-Karim
3. Al-Quran al-Karim 4/22
4. Mukhtasar al-Wiqayah fi Masail al-Hidayah, Kitab al-Nikah, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 52
5. Jami' al-Rumuz, Kitab al-Nikah, Maktaba-tul-Islam, Gumbad Qamus Iran, 1/249

फ़तावा रज़विया - खंड 11

...बक्र के हैं यानी ज़ैद और अम्र इन दोनों की माँ अलग-अलग है, बयान करें और पुण्य पाएं।

उत्तर: ज़ैद अम्र का भाई है। फ़ातिमा अम्र की भतीजी है, मरयम अम्र की भतीजी की बेटी है, जैसे भतीजी हराम है वैसे ही भतीजी की बेटी भी हराम है। भतीजी बेटी है और भतीजी की बेटी नातिन, अम्र मरयम का नाना है, नाना के लिए नातिन कैसे हलाल हो सकती है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तुम्हारे भाई की बेटियां" (तुम पर हराम हैं)। बेटियों में नातिन और पोती भी शामिल हैं जैसे फ़रमाया: "तुम पर हराम की गई तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियाँ"। अगर बेटियों में नातिन और पोती शामिल न हों तो आदमी पर उसकी अपनी पोती या नातिन कहाँ से हराम होगी क्योंकि क़ुरआन मजीद में तो बेटियाँ हराम की गई हैं और इन हराम रिश्तों को गिनाने के बाद फ़रमाया: "और इनके अलावा जो रह गईं वह तुम्हारे लिए हलाल हैं।" संक्षेप में भाई की नातिन के हराम होने से इनकार करना क़ुरआन और इस्लाम से इनकार करना है। 'निक़ाया' में है:

[अरबी उद्धरण]: "मनुष्य पर उसके मूल, उसकी शाखाएं और उसके निकटतम मूल की शाखाएं हराम हैं।" (अनुवाद): पुरुष पर उसके मूल (पूर्वज), शाखाएं(वंशज) और उसके निकटतम मूल यानी माता-पिता की शाखाएं हराम हैं। इत्यादि।

'जामे अल-रुमोज़' में है:

[अरबी उद्धरण]: "सगी बहनों, माँ की ओर से बहनों या बाप की ओर से बहनों की संतानें और भाइयों की बेटियाँ और इसी तरह नीचे तक।" (अनुवाद): सगी बहनें या माँ या बाप की तरफ़ से बहनें और भतीजियाँ नीचे तक। (अनुवाद)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 262: शहर बरेली सब्ज़ी मंडी से मसला पूछने वाले कबीर अहमद मियाँ, 2 जमादी अल-उला 1338 हिजरी। विद्वान इस मसले के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद की एक नातिन है जो पहली पत्नी से है, और ज़ैद का एक बेटा है जो दूसरी पत्नी से है जिसे किसी अन्य व्यक्ति ने पाला है। क्या ज़ैद का बेटा ज़ैद की नातिन की बेटी से निकाह कर सकता है? बयान करें और पुण्य पाएं।

उत्तर: हराम है, वह उसकी भांजी की बेटी है और उसकी नातिन की जगह है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. अल-क़ुरआन अल-करीम
2. अल-क़ुरआन अल-करीम
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 4/22
4. मुख़्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, किताब अल-निकाह, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची, पृ. 52
5. जामे अल-रुमोज़, किताब अल-निकाह, मकतबा-तुल-इस्लाम, गुंबद क़ामूस ईरान, 1/249

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

بکر کے ہیں یعنی زید و عمرو ان دونوں کی والدہ الگ الگ ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: زید عمرو کا بھائی ہے۔ فاطمہ عمرو کی بھتیجی ہے، مریم عمرو کی بھتیجی کی بیٹی ہے، جیسے بھتیجی حرام ہے یونہی بھتیجی کی بیٹی حرام ہے، بھتیجی بیٹی ہے اور بھتیجی کی بیٹی نواسی، عمرو مریم کا نانا ہے نانا کے لیے نواسی کیسے حلال ہو سکتی ہے، قال اللہ تعالٰی: وَبَنٰتُ الْاَخِ تم پر بھائی کی بیٹیاں حرام ہیں۔ بیٹیوں میں نواسیاں پوتیاں بھی داخل ہیں جیسے فرمایا: حُرِّمَتْ عَلَیْکُمْ اُمَّھٰتُکُمْ وَبَنٰتُکُمْ تم پر حرام ہیں تمہاری مائیں اور تمہاری بیٹیاں۔ بیٹیوں میں نواسی پوتی داخل نہ ہوں تو آدمی پر خود اس کی پوتی نواسی کہاں سے حرام ہوگی کہ قرآن مجید میں تو بیٹیاں حرام فرمائیں اور یہ محرمات گنا کر فرمایا: وَاُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ ان کے سوا اور جو رہیں وہ تم پر حلال ہیں۔ بالجملہ بھائی کی نواسی حرام ہونے سے انکار قرآن و اسلام سے انکار ہے، نقایہ میں ہے:

حرم علی المرء اصلہ وفرعہ وفرع اصلہ القریب مرد پر اس کے اصول و فروع اور اصل قریب یعنی ماں باپ کے فروع حرام ہیں۔ الخ (ت)

جامع الرموز میں ہے:

من الاخوات لاب و ام اولادھما وبنات الاخوۃ وان بعدت۔ سگی بہنیں یا ماں یا باپ کی طرف سے بہنیں اور بھتیجیاں نیچے تک۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۲: از شہر بریلی سبزی منڈی مسئولہ کبیر احمد میاں ۲ جمادی الاولی ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی نواسی زوجہ اول سے اور زید کا لڑکا زوجہ ثانیہ سے

جس کو ایک شخص غیر نے پالا ہے، کیا پسر زید زید کی نواسی کی لڑکی سے عقد کر سکتا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: حرام ہے، وہ اس کی بھانجی کی بیٹی ہے اس کی نواسی کی جگہ ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

---

۱ القرآن الکریم ۲ القرآن الکریم ۳ القرآن الکریم ۲۲/۴ ۴ مختصر الوقایۃ فی مسائل الہدایہ کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۲ ۵ جامع الرموز کتاب النکاح مکتبۃ الاسلام گنبد قاموس ایران ۲۴۹/۱

Volume Eleven Fatawa Ridawiyya

Problem 263: From Fatehpur, Mohalla Syed Wada, sent by Noor Khan clerk, Muhammad Yar Khan, and High Court advocate. 2nd Jumada al-Ula 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid and Bakr's wives were biological sisters. Zaid's wife had three sons and two daughters, of whom one boy and one girl died, and one girl is currently a widow. Bakr's wife has one son who is married. Now, the point of inquiry is that when Zaid's first boy was born, he drank the milk of Bakr's wife, i.e., his maternal aunt. After him, after three children of Zaid, this girl was born who is currently a widow. Can a marriage be valid between Bakr's unmarried son and Zaid's daughter (the widow)? While Bakr's son drank the milk of Zaid's wife. In summary, the milk of Zaid's wife was drunk by Bakr's son, and Zaid's daughter was born after three children who shared the same milk. Please explain and be rewarded.

The Answer: The marriage of both is strictly forbidden (Haram Qat'i). They are biological milk-siblings. After those three children, the girl born to Zaid's wife is not excluded from being the sister of Bakr's son, nor are any of her children excluded from being siblings to Bakr's son. Allah the Almighty says: "And your sisters through nursing." And Allah the Almighty knows best.

Problem 264: From Nawab Ganj, Bareilly, sent by Syed Nisar Husain Sahib. 15th Jumada al-Ukhra 1338 AH. Zaid's wife Hindah's sister is Zahidah. Zahidah had a son born to Zaid without marriage. Does Zaid's marriage with Hindah still remain? And is a marriage with Zahidah permissible or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: Hindah remains in his marriage as per the norm. Adultery with a sister-in-law makes the woman forbidden (to marry simultaneously), but does not make the wife forbidden. Marriage with Zahidah cannot occur as long as Hindah is in marriage. If Hindah dies or he divorces her, then after the completion of the waiting period (Iddah), he can marry Zahidah. And Allah the Almighty knows best.

Problem 265: From Lahore, Begum Shahi Mosque, sent by Maulana Maulvi Alim-ud-Din Sahib. 6th Rajab al-Murajjab 1338 AH. Zaid married Hindah. During her minority, Zaid had intercourse with her, after which he divorced Hindah.

---

1. The Holy Quran 4/23 Page 465 of 739

खंड ग्यारहवां फ़तावा रज़विया

मसाला २६३: फ़तेहपुर, मोहल्ला सैयद वाड़ा से, नूर खान मुहर्रिर, मोहम्मद यार खान, और वकील हाई कोर्ट द्वारा प्रेषित। २ जमादी उल-उला १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले के बारे में क्या कहते हैं: ज़ैद और बक्र की पत्नियाँ सगी बहनें थीं। ज़ैद की पत्नी के तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं, जिनमें से एक लड़का और एक लड़की मर गई, और एक लड़की विधवा है। बक्र की पत्नी का एक बेटा है जो विवाहित है। अब, पूछताछ का बिंदु यह है कि जब ज़ैद का पहला लड़का पैदा हुआ था, तो उसने बक्र की पत्नी यानी अपनी खाला (मौसी) का दूध पिया था। उसके बाद, ज़ैद की तीन संतानों के बाद, यह लड़की पैदा हुई जो वर्तमान में विधवा है। क्या ज़ैद की इस बेटी का विवाह बक्र के कुंवारे बेटे के साथ मान्य हो सकता है? जबकि बक्र के बेटे ने ज़ैद की पत्नी का दूध पिया है। संक्षेप में, ज़ैद की पत्नी का दूध बक्र के बेटे ने पिया है और ज़ैद की बेटी उन तीन संतानों के बाद पैदा हुई है जो दूध के शरीक भाई थे। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: दोनों का विवाह पूर्णतः वर्जित (हराम कतई) है। वे आपस में सगे दूध-भाई-बहन हैं। उन तीन संतानों के बाद, ज़ैद की पत्नी से पैदा हुई लड़की को बक्र की पत्नी के बेटे की बहन होने से अलग नहीं किया जा सकता, न ही उसकी किसी संतान को बक्र के बेटे का भाई-बहन होने से निकाला जा सकता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और तुम्हारी दूध शरीक बहनें"। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला २६४: नवाब गंज, बरेली से, सैयद निसार हुसैन साहिब द्वारा प्रेषित। १५ जमादी उल-उख़रा १३३८ हिजरी। ज़ैद की पत्नी हिन्दा की बहन ज़ाहिदा है। ज़ाहिदा से बिना निकाह के ज़ैद का एक लड़का पैदा हुआ। क्या हिन्दा के साथ ज़ैद का निकाह अभी भी बना हुआ है? और क्या ज़ाहिदा के साथ निकाह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: हिन्दा दस्तूर के मुताबिक उसके निकाह में है। साली के साथ ज़िना (अवैध संबंध) उस औरत को हराम करता है लेकिन पत्नी को हराम नहीं करता। जब तक हिन्दा निकाह में है, ज़ाहिदा के साथ निकाह नहीं हो सकता। अगर हिन्दा मर जाए या वह उसे तलाक दे दे, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गुज़रने पर वह ज़ाहिदा से निकाह कर सकता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला २१५: लाहौर, बेगम शाही मस्जिद से, मौलाना मौलवी अलीम उद्दीन साहिब द्वारा प्रेषित। ६ रजब अल-मुरज्जब १३३८ हिजरी। ज़ैद ने हिन्दा से निकाह किया। उसकी नाबालिग होने की स्थिति में ज़ैद ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए, जिसके बाद उसने हिन्दा को तलाक दे दिया।

---

1. कुरान करीम ४/२३ पृष्ठ ४६५ का ७३९

جلد یاز دہم فتاوی رضویہ

مسئلہ ۲۶۳: از فتح پور محلہ سید واڑہ مرسلہ نور خاں محرر، محمد یار خاں وکیل ہائی کورٹ ۲ جمادی الاولی ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اور بکر دونوں کی عورتیں سگی بہنیں تھیں، زید کی بی بی کے تین لڑکے اور دو لڑکیاں ہوئیں، منجملہ ان کے ایک لڑکا اور ایک لڑکی مر گئی، اور ایک لڑکی بیوہ موجود ہے، اور بکر کی بی بی کا ایک لڑکا بن بیاہا موجود ہے، اب دریافت طلب یہ امر ہے کہ جب زید کا پہلا لڑکا پیدا ہوا ہے تو بکر کے اس لڑکے نے اپنی خالہ یعنی زید کی بی بی کا دودھ پیا تھا، بعد اس کے تین اولاد کے بعد زید کی یہ لڑکی پیدا ہوئی جو اس وقت بیوہ موجود ہے، اس سے بکر کے کنوارے لڑکے کا نکاح درست ہے یا ہو سکتا ہے جبکہ بکر کے بیٹے نے زید کی بی بی کا دودھ پیا ہے، خلاصہ یہ ہے کہ زید کی بی بی کا دودھ بکر کے بیٹے نے پیا ہے اور زید کی بیٹی یہ اس دودھ شریکی بھائی کی تیسری اولاد کے بعد پیدا ہوئی ہے، بینوا توجروا۔ الجواب: ان دونوں کا نکاح حرام قطعی ہے، وہ آپس میں سگے بھائی بہن ہیں، تین یا تئیس اولاد کے بعد اس لڑکی کا پیدا ہونا زید کی بی بی کو بکر کے بیٹے کے ماں باپ ہونے سے خارج نہ کرے گا، نہ ان کی کسی اولاد کو پسر بکر کے بھائی بہن ہونے سے، قال اللہ تعالیٰ : وَ اَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ (اور تمہاری رضاعی بہنیں ۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۲۶۴: از نواب گنج بریلی مرسلہ سید نثار حسین صاحب ۱۵ جمادی الآخر ۱۳۳۸ھ زید کی زوجہ ہندہ کی ہمشیرہ زاہدہ ہے، زاہدہ کے زید سے بلانکاح لڑکا پیدا ہوا، ہندہ کے ساتھ زید کا نکاح رہا یا نہیں؟ اور زاہدہ کے ساتھ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: ہندہ بدستور اس کے نکاح میں ہے، سالی کے ساتھ زنا حرام مگر عورت کو حرام نہیں کرتا، زاہدہ سے جب تک ہندہ اس کے نکاح میں ہے نکاح نہیں کر سکتا، اگر ہندہ مر جائے تو اسی وقت یا یہ اسے طلاق دے دے تو عدت گزرنے

پر زاہدہ سے نکاح کر سکے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۲۶۵: از لاہور مسجد بیگم شاہی، مسئولہ مولوی احمد الدین صاحب ۶ رجب المرجب ۱۳۳۸ھ زید نے ہندہ سے نکاح کیا بحالت نابالغی ہندہ زید نے اس سے وطی کی، بعد وطی ہندہ کو طلاق دے دی

---

1 القرآن الکریم ۲۳/۴ Page 465 of 739

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Question: She married Amr. From Amr, a daughter was born to Hind. Is this girl prohibited (haram) for Zaid or not? Does mere marriage with the mother make the daughter prohibited, and similarly, does marriage with the daughter make the mother prohibited? Is sexual intercourse (wati) a condition for prohibition in both cases? And for sexual intercourse, is the puberty of the entered woman (madkhulah) a condition? Explain and you shall be rewarded.

Answer: The command of the Pure Sharia is that mere marriage with a daughter makes the mother eternally prohibited; sexual intercourse is not a condition. Allah the Almighty says: "And [prohibited to you are] the mothers of your wives"[1] (Your wives' mothers. - T). And if sexual intercourse occurred, then it is prohibited with even greater reason; if through marriage, then by consensus, and if without marriage, then according to us. And mere marriage with the mother does not make the daughter prohibited as long as sexual intercourse has not occurred. Allah the Almighty says:

"And your step-daughters under your guardianship [born] of your wives unto whom you have gone in. But if you have not gone in unto them, there is no sin upon you [in marrying their daughters]."[2] (The daughters of your consummated wives who are under your care, and if you have not entered upon the wives, then there is no prohibition for you. - T)

Yes, if sexual intercourse occurred, it will cause prohibition according to this detail: that in marriage it is by consensus, and without marriage according to us. Thus, that minor, non-pubescent girl with whom Zaid had intercourse, then divorced her, and she married another person, and from him a daughter was born to this woman—this daughter is definitely prohibited for the first husband because once intercourse happened, "you have gone in unto them" became applicable; puberty is not a condition. Yes, if the minor is four or five years old where penetration is not possible, then certainly there will be no prohibition as intercourse did not occur. And the mother of a consummated wife is absolutely prohibited, whether the consummation was lawful (halal) or unlawful (haram), and the wife's mother is eternally like one's own mother. She cannot become lawful in any way even after the wife's death or after divorce and the passing of the 'iddah (waiting) period. And Allah Almighty knows best.

Problem 266: From Mauza Sindhooli, District Bareilly, asked by Ghafoor Sahib, 27 Shaban 1338 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: besides paternal aunts, maternal aunts, paternal grandmothers, maternal grandmothers, and mothers, etc., is marriage permissible with any other female relative? Explain and you shall be rewarded.

Answer: Marriage is also permissible with an aunt (chachi - uncle's wife) and a maternal aunt (mamani - maternal uncle's wife). In blood relations, four types of women are prohibited: First, those from whose offspring one comes, such as mother, paternal grandmother, maternal grandmother, howsoever high. Second, those who are one's own offspring, such as daughter, granddaughter, maternal granddaughter, howsoever low. Third, those who are the offspring of one's mother or father, whether offspring of offspring, such as sister, niece (sister's daughter), niece (brother's daughter) and their...

[1] Al-Quran Al-Karim 4/23 [2] Al-Quran Al-Karim 4/23

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

सवाल: उसने अम्र से निकाह किया, अम्र से हिंदा के एक लड़की पैदा हुई, तो यह लड़की ज़ैद पर हराम है या नहीं? क्या केवल माँ से निकाह करने से बेटी हराम हो जाती है, और इसी तरह बेटी से निकाह करने से माँ? क्या दोनों स्थितियों में संभोग (वति) हराम होने की शर्त है? और संभोग के लिए क्या वधू (मदखूला) का बालिग होना शर्त है? बयान करें, पुण्य पायें।

जवाब: शरीयत-ए-मुतहरा का हुक्म यह है कि बेटी से केवल निकाह करना ही माँ को हमेशा के लिए हराम कर देता है, संभोग की शर्त नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और तुम्हारी बीवियों की माताएँ'[1] (तुम्हारी बीवियों की माएँ। - त)। और अगर संभोग हुआ हो तो और भी ज़्यादा (बदरजा-ए-औला), निकाह से हो तो आम सहमति (इज्मा) से, और बिना निकाह के हो तो हमारे नज़दीक। और माँ से केवल निकाह करना बेटी को हराम नहीं करता जब तक कि संभोग न हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और तुम्हारी वे सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारी गोद में हैं उन बीवियों से जिनसे तुमने संभोग किया है, लेकिन अगर तुमने उनसे संभोग नहीं किया है तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है।"[2] (तुम्हारी उन बीवियों की बेटियाँ जिनसे संभोग हो चुका है और जो तुम्हारी देख-रेख में हैं, और अगर तुमने अपनी बीवियों से संभोग नहीं किया है तो तुम पर (उनकी बेटियों से निकाह करने में) कोई पाबंदी नहीं है। - त)

हाँ, अगर संभोग हुआ हो तो हराम होने का हुक्म लागू होगा इसी विवरण के अनुसार कि निकाह में आम सहमति से और बिना निकाह के हमारे नज़दीक। अत; वह नाबालिग लड़की जिससे ज़ैद ने संभोग किया फिर तलाक़ दे दी और उसने दूसरे से निकाह किया और उससे उस औरत के बेटी पैदा हुई—यह बेटी पहले पति पर निश्चित रूप से हराम है क्योंकि जब संभोग किया तो "तुमने संभोग किया" (दखल्तुम बिहिन्न) लागू हो गया; बालिग होना शर्त नहीं है। हाँ, अगर नाबालिग चार-पाँच साल की हो जहाँ संभोग संभव न हो, तो निश्चित रूप से हराम नहीं होगी क्योंकि संभोग नहीं हुआ। और जिस औरत से संभोग हो चुका हो उसकी माँ पूरी तरह हराम है, चाहे संभोग वैध (हलाल) हो या अवैध (हराम), और पत्नी की माँ हमेशा के लिए अपनी माँ की तरह है। पत्नी की मृत्यु के बाद या तलाक़ होकर इद्दत गुज़रने के बाद भी वह किसी भी तरह हलाल नहीं हो सकती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २६६: मौज़ा सिंधौली, ज़िला बरेली, प्रेषक गफ़ूर साहब, २७ शाबान १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि चाची, बुआ, ममानी, दादी, नानी और माँ आदि के अलावा रिश्तेदारों में किसी औरत से निकाह जायज़ है? बयान करें, पुण्य पायें।

जवाब: चाची और ममानी से भी निकाह जायज़ है। रज़ाई (दूध) के रिश्तों के अलावा, रक्त संबंधों (नस्बी रिश्तों) में चार प्रकार की औरतें हराम हैं: पहली वे, जिनकी संतान से व्यक्ति पैदा हुआ है, जैसे माँ, दादी, नानी, चाहे कितनी ही ऊपर की हों। दूसरी वे, जो उसकी संतान हैं, जैसे बेटी, पोती, नवासी, चाहे कितनी ही नीचे की हों। तीसरी वे, जो उसके माता या पिता की संतान हों, चाहे वे संतान की संतान हों, जैसे बहन, भांजी, भतीजी और उनकी...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम ४/२३ [2] अल-क़ुरान अल-करीम ४/२३

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

اس نے عمرو سے نکاح کیا عمرو سے ہندہ کے لڑکی پیدا ہوئی تو یہ لڑکی زید پر حرام ہے یا نہیں؟ ماں سے محض نکاح بیٹی کو حرام کرتا ہے یا نہیں، یو نہی بیٹی سے نکاح ماں کو؟ دونوں میں وطی شرط حرمت ہے یا نہیں؟ اور وطی کے لیے کیا بلوغ مدخولہ شرط ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: شریعت مطہرہ کا حکم یہ ہے کہ بیٹی سے مجرد نکاح ماں کو حرام ابدی کرتا ہے وطی کی شرط نہیں، قال تعالی: وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ [1] (تمہاری بیویوں کی مائیں۔ت) اور وطی ہو تو بدرجہ اولیٰ نکاحا ہو تو بالاجماع اور بلا نکاح ہو تو ہمارے نزدیک اور ماں سے مجرد نکاح بیٹی کو حرام نہیں کرتا جب تک کہ وطی نہ ہو، قال تعالی:

وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ [2] تمہاری مدخولہ بیویوں کی وہ بیٹیاں جو تمہاری پرورش میں ہیں، اور اگر تم نے بیویوں سے دخول نہ کیا تو تم پر ممانعت نہیں۔(ت)

ہاں اگر وطی ہو تو تحریم لائے گی اسی تفصیل پر کہ نکاح میں بالاجماع اور بلا نکاح ہمارے نزدیک تو وہ صغیرہ نا بالغہ جس سے زید نے صحبت کی پھر طلاق دے دی اور اس نے دوسرے سے نکاح کیا اور اس سے اس عورت کے بیٹی پیدا ہوئی یہ بیٹی قطعاً شوہر اول پر حرام ہے کہ جب صحبت کی "دخلتم بھن" صادق آگیا بلوغ کی شرط نہیں۔ ہاں اگر صغیرہ چار پانچ برس کی ہو جہاں ایلاج حشفہ ممکن نہ ہو تو البتہ حرمت نہ ہوگی کہ صحبت نہ ہوگی اور مدخولہ کی ماں مطلقاً حرام ہے خواہ مدخولہ بالحلال ہو یا بالحرام، اور زوجہ کی والدہ ابداً اپنی ماں کی طرح ہے زوجہ

کے مرنے یا طلاق ہو کر عدت گزرنے کے بعد بھی کسی طرح حلال نہیں ہو سکتی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۶۶: از موضع سند ھولی ضلع بریلی مسئولہ غفور صاحب ۲۷ شعبان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ علاوہ چچی و پھوپھی وممانی و دادی و نانی و والدہ وغیرہ کے رشتہ داروں میں کسی عورت سے نکاح جائز ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: چچی اور ممانی سے بھی نکاح جائز ہے، نسبی رشتوں میں چار قسم کی عورتیں حرام ہیں، ایک وہ کہ یہ جن کی اولاد سے ہے جیسے ماں، دادی، نانی کتنے ہی اوپر کی ہوں۔ دوسری وہ جو اس کی اولاد ہیں، جیسے بیٹی، پوتی، نواسی کتنے ہی نیچے کی ہوں۔ تیسری وہ جو اس کے ماں یا باپ کی اولاد خواہ اولاد در اولاد جیسے بہن، بھانجی، بھتیجی اور ان کی

[1] القرآن الکریم ۴/ ۲۳ [2] القرآن الکریم ۴/ ۲۳

...and the children of brothers and nephews, no matter how distant. Fourthly, those who are from the offspring of someone other than the parents, such as grandfathers, grandmothers, maternal grandfathers, maternal grandmothers, no matter how far back, their own direct offspring, like one's paternal aunt, maternal aunt, or the paternal/maternal aunt of one's mother, father, grandfather, grandmother, etc. The children of the children of these people are not forbidden, for example, the daughter of a paternal aunt or the daughter of a maternal aunt. And Allah Almighty knows best.

Masala 267: From the village of Sindhauli, District Bareilly, questioned by Ghafoor Sahib, 27 Shaban 1338 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: an unmarried girl became pregnant by Zaid. Her parents married her off to 'Amr. Now, a petition is made to the scholars of religion; some say marriage is permissible with the one whose seed it is (Zaid), while others say marriage is also permissible with 'Amr.

Answer: Marriage with 'Amr is also permissible, but it is forbidden for 'Amr to go near her until the child is born. This is in the case where the pregnancy is from adultery (Zina). If it is not adultery but Zaid had intercourse with her due to doubt or deception, then certainly, marriage with another is not permissible until the child is born. And Allah Almighty knows best.

Masala 268: What do the scholars of religion say in this matter: Zaid married Hindah, then he also brought her sister into his house. Now, how is it for Zaid to have intercourse with Hindah, and what is the ruling regarding the children of both sisters? Explain and you shall be rewarded.

Answer: If he brought the second one into the house without marriage, then intercourse with the first remains permissible as before; the children from her will be legitimate. Intercourse with the second one is forbidden and adultery; any child born from her will be illegitimate (vuld-ul-zina). If he also married the second sister, then as long as he has not touched her, intercourse with the first is halal. But the moment he touches the second one, closeness with the first also becomes haram. Until he leaves the second one and her waiting period (iddah) passes, the first remains haram. In this case, any child born from either woman after that, although it will be his, will not be 'vuld-ul-zina' but will be 'vuld-ul-haram' (child of a forbidden act). And Allah Almighty knows best.

Masala 269: 3 Dhu al-Qi'dah 1338 AH. Zaid's father committed rape (Zina bil-jabr) on Zaid's wife. The woman told Zaid. Thereupon, Zaid divorced his wife, and three months have passed. After this, the woman said to Zaid, "You accused me, therefore..."

फतावा रज़विया जिल्द 11

...और भाइयों, भतीजों की संतान चाहे कितनी ही दूर की हो। चौथी वे जो माता-पिता के अलावा किसी और की संतान से हों जैसे दादा, दादी, नाना, नानी चाहे कितने ही ऊपर के हों, उनकी खास अपनी संतान जैसे अपनी बुआ, खाला या अपने माता या दादा या दादी या नाना या नानी की बुआ, खाला। इन लोगों की संतान की संतान हराम नहीं है जैसे बुआ की बेटी या खाला की बेटी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 267: मौज़े सिंधौली, ज़िला बरेली से, मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता) गफ़ूर साहब, 27 शाबान 1338 हिजरी। दीन के विद्वान और मतीन शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक कुंवारी लड़की ज़ैद से गर्भवती हो गई, उसके माता-पिता ने उसका निकाह अम्र के साथ कर दिया। अब दीन के विद्वानों की सेवा में इस्तगासा (प्रार्थना) है कि कुछ लोग कहते हैं कि जिसका वीर्य (नतफ़ा) है उसके साथ निकाह जायज़ है और कुछ कहते हैं कि अम्र के साथ भी निकाह जायज़ है।

अल-जवाब (उत्तर): अम्र के साथ निकाह भी जायज़ है लेकिन जब तक बच्चा पैदा न हो जाए अम्र का उसके पास जाना मना है। यह उस सूरत में है जब गर्भ ज़िना (व्यभिचार) का हो। और अगर ज़िना न हो बल्कि शुबहा (संदेह) या धोखे से ज़ैद ने उसके साथ संभोग किया हो तो बेशक जब तक बच्चा न हो जाए दूसरे से निकाह जायज़ नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 268: दीन के विद्वान इस मामले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया फिर उसकी बहन को भी घर में डाल लिया, अब ज़ैद का हिंदा से संभोग करना कैसा है और दोनों बहनों की औलाद के बारे में क्या हुक्म है? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): अगर दूसरी को बिना निकाह के घर में डाल लिया तो पहली से संभोग पहले की तरह जायज़ है, उससे जो औलाद होगी वह हलाल है। और इस दूसरी से संभोग हराम और ज़िना है, उससे जो औलाद होगी वह वल्द-उज़-ज़िना (अवैध) होगी। और अगर दूसरी से भी निकाह कर लिया तो जब तक उसे हाथ न लगाया हो, पहली से संभोग हलाल है। लेकिन जिस वक्त उस दूसरी को हाथ लगाएगा, पहली से निकटता भी हराम हो जाएगी। जब तक उस दूसरी को छोड़े न और उसकी इद्दत न गुज़रे, तब तक पहली हराम है। इस सूरत में दोनों औरतों से इसके बाद जो औलाद होगी, हालांकि वह उसी की होगी, वह वल्द-उज़-ज़िना नहीं होगी मगर वल्द-उल-हराम होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 269: 3 ज़ी अल-कादा 1338 हिजरी। ज़ैद के पिता ने ज़ैद की पत्नी के साथ बलात्कार (ज़िना बिल-जबर) किया। औरत ने ज़ैद को बता दिया, इस पर ज़ैद ने अपनी औरत को तलाक दे दी जिसे तीन महीने बीत चुके हैं। इसके बाद औरत ने ज़ैद से कहा कि तुमने मुझ पर तोहमत लगाई थी, इसलिए...

पृष्ठ 467/739

اور بھائیوں بھتیجوں کی اولاد کتنی ہی دور ہوں۔ چوتھی وہ کہ ماں باپ کے سوا اور جن کی اولاد سے یہ شخص ہے جیسے دادا، دادی، نانا، نانی کتنے ہی اوپر کے ہوں ان کی خاص اپنی اولاد جیسے اپنی پھوپھی خالہ یا اپنے ماں یا دادا یا دادی یا نانا یا نانی کی پھوپھی خالہ، ان لوگوں کی اولاد کی اولاد حرام نہیں جیسے پھوپھی کی بیٹی یا خالہ کی بیٹی، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۷: از موضع سندھولی ضلع بریلی مسئولہ غفور صاحب ۲۷ شعبان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک کنواری لڑکی کا حمل زید سے رہ گیا اس کے والدین نے عمرو کے ساتھ نکاح کر دیا، اب علمائے دین کی خدمت میں استغاثہ ہے کہ بعض کہتے ہیں کہ جس کا نطفہ ہے اس کے ساتھ نکاح جائز ہے اور بعض کہتے ہیں کہ عمرو کے ساتھ بھی نکاح جائز ہے۔

الجواب: نکاح عمرو سے بھی جائز ہے مگر عمرو کو اس کے پاس جانا منع ہے جب تک بچہ پیدا نہ ہولے، یہ اس صورت میں ہے کہ حمل زنا کا ہو، اور اگر زنا نہ ہو بلکہ شبہ اور دھوکے سے زید اس کے ساتھ ہمبستر ہوا تو بیشک جب تک بچہ نہ ہولے دوسرے سے نکاح جائز نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس امر میں کہ زید نے ہندہ سے نکاح کیا پھر اس کی بہن کو بھی گھر میں ڈال لیا اب زید کا ہندہ سے وطی کرنا کیسا ہے اور دونوں بہنوں کی اولاد کے بارے میں کیا حکم ہے؟ بَیِّنُوْا تُؤْجَرُوْا ۔

الجواب: اگر دوسری کو بلانکاح گھر میں ڈال لیا تو پہلی سے وطی بدستور جائز ہے اس سے جو اولاد ہوگی اولاد حلال ہے، اور اس دوسری سے صحبت حرام وزنا ہے اس سے جو اولاد ہوگی ولدالزنا ہوگی، اور اگر دوسری سے بھی نکاح کرلیا تو جب تک اسے ہاتھ نہ لگایا پہلی سے وطی حلال ہے۔ لیکن جس وقت اس دوسری کو ہاتھ لگائے گا پہلی سے قربت بھی حرام ہو جائے گی، جب تک اس دوسری کو چھوڑے اور اس کی عدت گزرے اس وقت تک پہلی حرام ہے، اس صورت میں دونوں عورتوں سے اس کے بعد جو اولاد ہوگی اگرچہ اسی کی ٹھہرے گی ولدالزنا نہ ہوگی مگر ولدالحرام ہوگی، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۹: ۳ ذی القعدہ ۱۳۳۸ھ زید کے والد نے زید کی زوجہ سے زنا بالجبر کیا، عورت نے زید سے کہہ دیا، اس پر زید نے اپنی عورت کو طلاق دے دی جس کو عرصہ تین ماہ کا ہو گیا اس کے بعد زید سے عورت نے کہا کہ تم نے مجھ پر تہمت رکھا تھا، اس لیے

I stated this incorrectly, Zaid divorced the woman, can he now keep this woman in his marriage? The Answer: If Zaid gave divorce based only on the woman's statement, then the divorce occurred, but her becoming permanently forbidden for Zaid was not proven as long as Zaid himself does not confirm it. However, the questioner stated that Zaid gave three divorces; Zaid has sinned and now cannot remarry the woman without 'halala'. If he keeps her like this, it will be forbidden (haram). And Allah Ta'ala knows best.

Issue 270: Sent by Qazi Muhammad Ibrahim and Qazi Niyazuddin Siddiqui, soap sellers, Suniya Darwaza inside Jhansi. What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say regarding the following matter: Women who are vagrants, remain without veils (purdah), and roam around openly. Adultery is also proven from them and they have also had abortions, or are prostitutes etc. Is marriage with such women permissible without 'Istibra-e-Rahm' (purification of the womb) or not? Explain and be rewarded, may God grant you a good reward. The Answer: If she is not someone's married wife, then marriage with her is permissible even without purification of the womb, especially in a state of adultery. However, if the pregnancy is not from the marrying person himself, then intimacy is not permissible until the delivery of the child, so that his water does not irrigate someone else's crop. [Durr-e-Mukhtar] (so that his water does not irrigate another's field. Durr-e-Mukhtar - T)

Issue 271: What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say regarding the following matter: A man committed adultery with his real son's wife and the woman is assigned to him. The man, meaning the one who committed adultery, has been separated by all the people of the community, and all conversation with him has stopped. People do not greet him etc. The adulterous man neither confesses nor denies, but when people say you have committed a very great sin, he says an error occurred, what can be done. The matter to be inquired is whether the woman can now stay with her original husband and is she lawful for him, or should she marry another person? And does the woman also need to take a divorce from her husband? And can she not marry another until he gives a divorce? Some Maulvi Sahabs say that she cannot marry another without a divorce being given, and some say that there is no need for divorce, the woman has become forbidden for her original husband. And can this woman take her mahr (dowry)?

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relationships, Mujtabai Delhi, 1/189

मैंने यह गलत बात बयान की, ज़ैद ने औरत को तलाक दी, अब क्या वह अपनी इस औरत को निकाह में रख सकता है? अल-जवाब: अगर ज़ैद ने सिर्फ औरत के बयान पर उसको तलाक दे दी तो तलाक हो गई मगर हमेशा के लिए उसका ज़ैद पर हराम होना साबित न हुआ। जब तक ज़ैद खुद उसकी तस्दीक (पुष्टि) न करे लेकिन साइल (प्रश्नकर्ता) ने बयान किया कि ज़ैद ने तीन तलाकें दीं, ज़ैद गुनहगार हुआ और औरत से अब बगैर हलाला के निकाह नहीं कर सकता, यूँ उसे रखेगा तो हराम होगा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला २७०: मुरसला काज़ी मोहम्मद इब्राहीम व काज़ी नियाज़ुद्दीन साहिबान सिद्दीकी साबुन फ़रोश सुनिया दरवाज़ा अन्दर झाँसी। क्या फ़रमाते हैं उलम-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शर-ए-मतीन मसला ज़ैल (नीचे दिए गए मामले) में: ऐसी औरतें जो आवारा हैं, बे-पर्दा रहती हैं, खुलेआम चलती-फिरती हैं। ज़िना (व्यभिचार) भी उनसे साबित हो और हमल (गर्भ) भी गिराए गए हों या तवायफ़ वग़ैरह। तो ऐसी औरतों का निकाह बिला इस्तिबरा-ए-रहम (गर्भ-शुद्धि के बिना) जायज़ है या नहीं? बैनवा तूजरवा (बयान करें सवाब पायें), ख़ुदा आप को जज़ा-ए-खैर अता करे। अल-जवाब: अगर वह किसी की मनकूहा (विवाहित) नहीं तो बिला इस्तिबरा-ए-रहम बल्कि ख़ास हालत-ए-ज़िना में उससे निकाह जायज़ है मगर हमल खुद उस नाकह (निकाह करने वाले) का न हो तो उसे कुर्बत (निकटता/सम्बन्ध) जायज़ नहीं जब तक वज़ा-ए-हमल (प्रसव) न हो जाए 'लइल्ला यसकी माअहू ज़रअ़ ग़ैरहु' दुर्रे मुख्तार (ताकि उसका पानी दूसरे की खेती को सैराब न करे। दुर्रे मुख्तार-त)

मसला २७१: क्या फ़रमाते हैं उलम-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शर-ए-मतीन मसला ज़ैल में: एक शख़्स ने अपने हकीकी (सगे) बेटे की बीवी से ज़िना किया और औरत उसकी मुकर्रर है मर्द यानी जिसने ज़िना किया उसको तमाम बिरादरी के लोगों ने अलाहिदा (अलग) कर दिया उससे बातचीत सब बंद है सलाम वग़ैरह सब लोग नहीं करते और मर्द ज़ानी न इकरार करता है न इंकार बल्कि जब लोग कहते हैं कि तूने बड़ा भारी गुनाह किया तो कहता है कि ख़ता (गलती) हो गई क्या करें, दरयाफ़्त तलब यह अम्र है कि औरत क्या अब ख़ावंद-ए-असली के पास रह सकती है और उसके लिए हलाल है या कि दूसरे शख़्स से निकाह कर ले और क्या इस औरत को ख़ावंद से तलाक लेने की भी ज़रूरत है और क्या जब तक वह तलाक न दे उस वक़्त तक ग़ैर से निकाह नहीं कर सकती? और बाज़ मौलवी साहिब कहते हैं कि बिला तलाक दिए ग़ैर से निकाह नहीं कर सकती और बाज़ यह कहते हैं कि

तलाक की ज़रूरत नहीं वह औरत अपने ख़ावंद-ए-असली के लिए हराम हो गई और क्या यह औरत महर ले सकती है?

१ दुर्रे मुख्तार फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात मुजतबाई देहली १/१८९

पेज ४६८ ऑफ़ ७३९

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

میں نے یہ غلط بات بیان کی، زید نے عورت کو طلاق دی اب وہ اپنی اس عورت کو نکاح میں رکھ سکتا ہے؟ الجواب: اگر زید نے صرف عورت کے بیان پر اس کو طلاق دے دی تو طلاق ہوگئی مگر ہمیشہ کے لیے اس کا زید پر حرام ہونا ثابت نہ ہوا۔ جب تک زید خود اس کی تصدیق نہ کرے لیکن سائل نے بیان کیا کہ زید نے تین طلاقیں دیں زید گنہ گار ہوا اور عورت سے اب بغیر حلالہ کے نکاح نہیں کرسکتا، یوں اسے رکھے گا تو حرام ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۷۰: مرسلہ قاضی محمد ابراہیم و قاضی نیاز الدین صاحبان صدیقی صابون فروش سنیہ دروازہ اندر جھانسی کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین مسئلہ ذیل میں: ایسی عورتیں جو آوارہ ہیں، بے پردہ رہتی ہیں، کھلے بندوں چلتی پھرتی ہیں۔ زنا بھی ان سے ثابت ہو اور حمل بھی گرائے گئے ہوں یا طوائف وغیرہ۔ تو ایسی عورتوں کا نکاح بلا استبراءِ رحم جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا خدا آپ کو جزائے خیر عطا کرے۔ الجواب: اگر وہ کسی کی منکوحہ نہیں تو بلا استبراءِ رحم بلکہ خاص حالتِ زنا میں اس سے نکاح جائز ہے مگر حمل خود اس ناکح کا نہ ہو تو اسے قربت جائز نہیں جب تک وضعِ حمل نہ ہوجائے لئلا یسقی ماءہ زرع غیرہ درمختار (تاکہ اس کا پانی دوسرے کی کھیتی کو سیراب نہ کرے۔ درمختار-ت) مسئلہ ۲۷۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین مسئلہ ذیل میں: ایک شخص نے اپنے حقیقی بیٹے کی بی بی سے زنا کیا اور عورت اس کی مقرر ہے مرد یعنی جس نے زنا کیا اس کو تمام برادری کے لوگوں نے علیحدہ کردیا اس سے بات چیت سب بند ہے سلام وغیرہ سب لوگ نہیں کرتے اور مرد زانی نہ اقرار کرتا ہے نہ انکار بلکہ جب لوگ کہتے ہیں کہ تو نے بڑا بھاری گناہ کیا تو کہتا ہے کہ خطا ہوگئی کیا کریں، دریافت طلب یہ امر ہے کہ عورت کیا اب خاوند اصلی کے پاس رہ سکتی ہے اور اس کے لیے حلال ہے یا کہ دوسرے

شخص سے نکاح کرلے اور کیا اس عورت کو خاوند سے طلاق لینے کی بھی ضرورت ہے اور کیا جب تک وہ طلاق نہ دے اس وقت تک غیر سے نکاح نہیں کر سکتی؟ اور بعض مولوی صاحب کہتے ہیں کہ بلا طلاق دیئے غیر سے نکاح نہیں کر سکتی اور بعض یہ کہتے ہیں کہ طلاق کی ضرورت نہیں وہ عورت اپنے خاوند اصلی کے لیے حرام ہوگئی اور کیا یہ عورت مہر لے سکتی ہے؟

1 درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۹

The Answer: If the husband admits that this happened, the woman has become forbidden (Haram) for him forever; she cannot return to his marriage through any stratagem. It is obligatory upon him to separate from her immediately and perform 'mutarkah' (releasing), for example, by saying "I have left you." She cannot marry another person, so there is no need for more divorce. If the husband does not accept the occurrence of the said matter, then it cannot be proven just by the woman's statement. If the husband did not give a divorce, she is still his wife; and if he did, the ruling will be according to the type of divorce given. If he gave three divorces, then marriage with her is not possible without 'halala'. As for the dowry (mahr), it is absolutely necessary in all cases. In the case of deferred dowry, the woman has the right to take it after separation, divorce, or death. And Allah Almighty knows best.

Issue 272: From Akaltara, District Bilaspur, submitted by Hamid Ali Sahib. What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid committed adultery with his real son's wife. Now, can this wife stay with her original husband, who is the son of the adulterer? And if she cannot stay, can she marry someone else? And is she entitled to receive mahr from the first husband or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: That adultery was committed cannot be proven by just uttering lies; for this, four witnesses are required. Without this, even if Zaid's father confesses and Zaid does not believe it, his confession is not evidence against Zaid. Yes, if it is proven by Sharia evidence or if Zaid confirms it, then the woman becomes forbidden for Zaid forever, but she hasn't left the marriage yet. She cannot marry another until Zaid leaves her. And in this situation, it will be obligatory upon Zaid to leave her immediately. After that, the woman should observe the waiting period (iddah). After the iddah, she can marry whomever she wishes, except for Zaid. Zaid is obligated to pay her mahr in any case. And Allah Almighty knows best.

Issue 273: From Colombo, Ceylon, submitted by Abdul Qadir Sahib, 20 Dhu al-Hijjah 1338 AH. What do the scholars of religion say on this issue: which female relatives can one marry and with which ones is it impermissible? Please write in detail. Clarify and be rewarded.

The Answer: It is forbidden to marry the wives of those from whose lineage a person comes, such as father, grandfather, maternal grandfather; and the wives of those who are in his lineage, such as son, grandson, daughter's son. And it is also forbidden to marry the wife of a father-in-law if she is the real mother of his own

wife. Marriage with the wives of other relatives is permissible after their death or divorce and completion of the iddah period. And Allah Almighty knows best.

जवाब: अगर शौहर मानता है कि ऐसा हुआ है तो औरत उस पर हमेशा के लिए हराम हो गई, किसी हीले से उसकी ज़ौजियत (पत्नीत्व) में नहीं आ सकती, उस पर फ़र्ज़ है कि उसे फौरन जुदा कर दे, मुतारका करे, मिसाल के तौर पर कह दे "मैंने तुझे छोड़ा है"। वह किसी दूसरे से निकाह नहीं कर सकती, इसलिए ज़्यादा तलाक़ की भी ज़रूरत नहीं। और अगर शौहर मज़कूरा मामले के होने को तस्लीम नहीं करता तो सिर्फ औरत के कहने से सुबूत नहीं हो सकता। अगर शौहर ने तलाक़ नहीं दी तो वह उसकी औरत है, और दी तो जैसी तलाक़ दी वैसा हुक्म। अगर तीन तलाक़ें दीं तो बे-हलाला उससे निकाह नहीं हो सकता। रहा महर, वह तमाम सूरतों में मुतलकन लाज़िम है। महर-ए-मुअख्खर में औरत को लेने का इख़्तियार मुतारका या तलाक़ या मौत के बाद होगा। वल्लाहु तआला आलम।

मसला २७२: मक़ाम अकलतरा ज़िला बिलासपुर, मुस्तौ़ला हामिद अली साहब। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद ने अपने हक़ीक़ी बेटे की बीवी से ज़िना (व्यभिचार) किया, अब क्या यह बीवी अपने असली शौहर जो कि ज़ानी का लड़का है, के पास रह सकती है? और अगर नहीं रह सकती तो दूसरे से निकाह कर सकती है? और शौहर-ए-अव्वल से महर लेने की मुस्तहिक है कि नहीं? बयान फरमाएं सवाब पाएं।

जवाब: यह कि ज़िना किया, झूठ बक देने से साबित नहीं हो सकता, इसके लिए चार गवाह चाहिए, इसके बग़ैर अगर ज़ैद का बाप इक़रार भी करे और ज़ैद यक़ीन न करे तो उसका इक़रार ज़ैद पर हुज्जत (प्रमाण) नहीं। हाँ अगर शहादत-ए-शरईया (शरिया प्रमाण) से साबित हो जाए या ज़ैद उसकी तस्दीक़ करे तो औरत ज़ैद पर हमेशा के लिए हराम हो गई मगर अभी निकाह से न निकली, दूसरे से निकाह नहीं कर सकती जब तक ज़ैद उसे न छोड़े। और इस सूरत में ज़ैद पर फ़र्ज़ होगा कि फौरन उसे छोड़ दे, उसके बाद औरत इद्दत करे, इद्दत के बाद ज़ैद के सिवा जिससे चाहे निकाह कर सकती है, ज़ैद पर उसका महर बहरहाल लाज़िम है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला २७३: कोलंबो सीलोन, मुस्तौ़ला अब्दुल क़ादिर साहब २० ज़ुल हिज्जा १३३८ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि रिश्तेदारों की किन-किन औरतों से निकाह कर सकते हैं और किन-किन से नाजायज़? मुफ़स्सल (विस्तार से) तहरीर फरमाएं। बयान फरमाएं सवाब पाएं।

जवाब: वह शख़्स जिनकी औलाद में है जैसे बाप, दादा, नाना, जो उसकी औलाद में हों जैसे बेटा, पोता, नवासा, उनकी बीवियों से निकाह हराम है और ससुर की बीवी से भी हराम है जब वह अपनी

ज़ौजा की हक़ीक़ी माँ हो, बाक़ी रिश्तेदारों की बीवियों से उनकी मौत या तलाक़ और इद्दत ख़त्म होने के बाद निकाह जायज़ है। वल्लाहु तआला आलम।

पेज ४६९ ऑफ ७३९

الجواب: شوہر اگر مانتا ہے کہ ایسا ہوا تو عورت اس پر ہمیشہ کو حرام ہوگئی، کسی حیلہ سے اس کی زوجیت میں نہیں آسکتی، اس پر فرض ہے کہ اسے فوراً جدا کردے متارکہ کرے، مثلاً کہہ دے میں نے تجھے چھوڑا ہے اس کے دوسرے سے نکاح نہیں کرسکتی اس لئے زیادہ طلاق کی بھی حاجت نہیں، اور اگر شوہر کو امر مذکور کا وقوع تسلیم نہیں تو صرف عورت کے کہنے سے ثبوت نہیں ہوسکتا، اگر شوہر نے طلاق نہ دی وہ اس کی عورت ہے اور دی تو جیسی طلاق دی ویسا حکم، اگر تین طلاقیں دیں تو بے حلالہ اس سے نکاح نہیں ہوسکتا۔ رہا مہر وہ تمام صورتوں میں مطلقاً لازم ہے مہر متآخر میں عورت کو لینے کا اختیار بعد متارکہ یا طلاق یا موت ہوگا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۷۲: از مقام اکلترہ ضلع بلاسپور مسئولہ حامد علی صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے حقیقی بیٹے کی بیوی سے زنا کیا، اب کیا یہ بیوی اپنے اصلی شوہر جو کہ زانی کا لڑکا ہے پاس رہ سکتی ہے؟ اور اگر نہیں رہ سکتی تو دوسرے سے نکاح کرسکتی ہے اور شوہر اول سے مہر لینے کی مستحق ہے کہ نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: یہ کہ زنا کیا، جھوٹ بک دینے سے ثابت نہیں ہوسکتا اس کے لئے چار شاہد چاہئیں، بغیر اس کے زید کا باپ اگر اقرار بھی کرے اور زید باور نہ کرے تو اس کا اقرار زید پر حجت نہیں۔ ہاں اگر شہادت شرعیہ سے ثابت ہو جائے یا زید اس کی تصدیق کرے تو عورت زید پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو گئی مگر ابھی نکاح سے نہ نکلی، دوسرے سے نکاح نہیں کر سکتی جب تک زید اسے نہ چھوڑے، اور اس صورت میں زید پر فرض ہو گا کہ فوراً اسے چھوڑ دے، اس کے بعد

عورت عدت کرے بعد عدت سوائے زید کے جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے، زید پر اس کا مہر بہر حال لازم ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۷۳: از کولمبوسیلون مسئولہ عبدالقادر صاحب ۲۰ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ رشتہ داروں کی کن کن عورتوں سے نکاح کر سکتے ہیں اور کن کن سے ناجائز؟ مفصل تحریر فرمائیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: وہ شخص جن کی اولاد میں ہے جیسے باپ، دادا، نانا، جو اس کی اولاد میں ہو جیسے بیٹا، پوتا، نواسا، ان کی بیویوں سے نکاح حرام ہے اور خسر کی بی بی سے بھی حرام ہے جبکہ وہ اپنی زوجہ کی حقیقی ماں ہو، باقی رشتہ داروں کی بیویوں سے ان کی موت یا طلاق وانقضائے عدت کے بعد نکاح جائز ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiya Volume 11

Issues 272 to 274: From Koh Rani Khet Kothi, Engineer Spill, sent by Ghulam Muhammad Sahib, 22 Zil-Hijjah 1338 AH.

(1) Is the marriage of a person of the Shia sect with a girl of the Sunni sect permissible or not? The boy and his father testify that they are of the Sunni sect and say, "If you consider us Shia, for your heart's satisfaction, make us Sunnis." Those who are their fellow countrymen say we are Shia, while in their village, Sunnis reside and are familiar with their family, saying they are of the Sunni sect. On this, the Muslims here say we have always seen them practicing the Shia religion. Some Muslims say we testify that this boy is not of the Shia religion, but we say nothing about his father.

(2) And two people said that the girl's father and the boy's mother have some relationship. Upon this, the girl's father brought the Quran and told him to pick it up (swear on it). He refused and left, and no proof was established.

(3) When the wedding procession arrived and the girl's brother went to the Maulana to ask if he would come to perform the marriage, he said, "I will not go, so who else will come?" He did not come at the time of the marriage and said that whoever performs their marriage, his wife will be divorced. Please clarify, and may you be rewarded.

The Answer:

(1) Among the Rafidis (Shia), there is 'Taqiyya' (dissimulation); they practice Taqiyya even without need. What reliability can there be in a time of need, and what way to clear confusion when Taqiyya is such an accursed thing that the one practicing it will say anything? He will speak pure Islam while his heart is filled with disbelief. Can the testimony of Rafidis that "he is a Sunni" be reliable? The testimony of a Rafidi is not credible at all; they have no faith (Lā īmāna lahum). The testimony of some Muslims that "he is not a Shia" and the testimony of other Muslims that "we have seen them practicing Shia rituals"—this latter testimony is affirmative (Ithbat), while the former is negative (Nafi), which is not accepted. Therefore, this marriage should never be performed. The Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "How can it be, when it has been said?"[1] (Allah knows best).

(2) An illegitimate relationship is not proven by such imaginary statements. And Allah knows best.

(3) The one who refused to perform the marriage because of the groom being a Rafidi did a very good thing, and that ruling...

---

1 Sahih Bukhari, Book of Knowledge, Chapter on Traveling for an Occurring Problem, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/19.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मसला 272 से 274: कोह रानी खेत कोठी, इंजीनियर स्पिल से, गुलाम मोहम्मद साहिब द्वारा प्रेषित, 22 ज़िल-हिज्जा 1338 हिजरी।

(1) क्या शिया मज़हब के लड़के का निकाह सुन्नी मज़हब की लड़की के साथ जायज़ है या नहीं? लड़का और उसका बाप गवाही देते हैं कि हम सुन्नी मज़हब के हैं और अगर तुम हमें शिया समझते हो तो अपने दिल के इत्मीनान के लिए हमें सुन्नी मज़हब कर लो। उनके हमवतन कहते हैं कि हम लोग शिया हैं, जबकि उनके गाँव में सुन्नी रहते हैं और उनके खानदान से वाकिफ़ हैं कि ये सुन्नी मज़हब के हैं। इस पर यहाँ के मुसलमान कहते हैं कि हमने उन्हें हमेशा शिया मज़हब का बर्ताव करते देखा है। कुछ मुसलमान कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि यह लड़का शिया मज़हब में नहीं है, पर उनके वालिद के बारे में हम कुछ नहीं कहते।

(2) और दो व्यक्तियों ने कहा कि लड़की का बाप और लड़के की माँ के बीच कुछ संबंध है। इस पर लड़की के बाप ने क़ुरआन शरीफ़ लाकर कहा कि इसे उठाओ (कसम खाओ)। उसने इनकार किया और चला गया, और कोई सबूत नहीं मिला।

(3) जब बारात आई और लड़की का भाई मौलाना साहब के पास गया कि निकाह पढ़ाने आएँगे या नहीं, तो उन्होंने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा, तो और कौन आएगा? वह निकाह के वक़्त नहीं आए और कहा कि जो कोई उनका निकाह पढ़ाएगा, उसकी बीवी को तलाक़ हो जाएगी। बयान फ़रमाएं अल्लाह आपको अजर दे।

अल-जवाब (उत्तर):

(1) राफ़िज़ियों (शियाओं) में 'तक़िया' है, वे बिना ज़रूरत के भी तक़िया करते हैं। ज़रूरत के समय का क्या भरोसा, और संदेह दूर करने का क्या रास्ता जब तक़िया वह लानती चीज़ है कि उसे करने वाला सब कुछ कह लेगा। वह शुद्ध इस्लाम बोलेगा जबकि दिल कुफ़्र से भरा होगा। क्या राफ़िज़ियों की गवाही कि "वह सुन्नी है" विश्वसनीय हो सकती है? राफ़िज़ी की गवाही बिल्कुल विश्वसनीय नहीं है, उनका कोई ईमान नहीं (ला ईमाना लहुम)। कुछ मुसलमानों की गवाही कि "वह शिया नहीं है" और अन्य मुसलमानों की गवाही कि "हमने उन्हें शिया रीति-रिवाज़ करते देखा है"—यह बाद वाली गवाही पुख्ता (इथबात) है, जबकि पहली गवाही नकार (नफ़ी) है जो मान्य नहीं है। इसलिए यह निकाह

हरगिज़ न किया जाए। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "कैसे हो सकता है जबकि यह बात कह दी गई है?"[1] (अल्लाह बेहतर जानता है)।

(2) ऐसे काल्पनिक बयानों से नाजायज़ ताल्लुक़ साबित नहीं होता। अल्लाह बेहतर जानता है।

(3) जिसने लड़के के राफ़िज़ी होने के कारण निकाह पढ़ाने से इनकार किया, उसने बहुत अच्छा किया और वह हुक्म...

---

1 सहीह बुखारी, किताबुल इल्म, बाबुर रिहला फ़िल मसअतल नाज़िला, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/19.

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

مسئلہ ۲۷۲ تا ۲۷۴: از کوہ رانی کھیت کوٹھی انجینئر اسپل مرسلہ غلام محمد صاحب ۲۲ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ

(۱) شیعہ مذہب کا نکاح سنی مذہب کی لڑکی کے ساتھ جائز ہے یا نہیں؟ لڑکا اور اس کا باپ شہادت دلاتے ہیں کہ ہم سنی مذہب ہیں اور اگر تم شیعہ سمجھتے ہو تو اپنے دل کے اطمینان کے واسطے ہمیں سنی مذہب کرلو، اور جوان کے ہم وطن ہیں وہ کہتے ہیں ہم لوگ شیعہ ہیں اور ان کے گاؤں میں سنی مذہب رہتے ہیں اور ان کے خاندان سے واقف ہیں کہ یہ سنی مذہب ہیں اس پر یہاں کے مسلمان کہتے ہیں کہ انھیں ہم نے ہمیشہ شیعہ مذہب کا برتاؤ کرتے دیکھا، اور بعض مسلمان کہتے ہیں کہ ہم اس کی شہادت دیتے ہیں کہ یہ لڑکے شیعہ مذہب میں نہیں ہیں اور ان کے والد کے بارے میں ہم کچھ نہیں کہتے۔

(۲) اور دو شخص نے یہ کہا کہ لڑکی کا باپ اور لڑکے کی ماں کچھ تعلق رکھتے ہیں اس پر لڑکی کے باپ نے قرآن شریف لا کر کہا کہ اس کو اٹھاؤ، وہ انکار کیا اور چلا گیا اور کوئی ثبوت نہ ہوا۔

(۳) جب برات گئی اور لڑکی کا بھائی مولانا صاحب کے پاس گیا کہ نکاح پڑھانے کو آئیں گے یا نہیں، تو انھوں نے کہا میں نہیں جاؤں گا تو کون آئے گا، نکاح کے وقت وہ نہیں آئے اور کہا کہ جو کوئی ان کا نکاح پڑھائے گا اس کی عورت کو طلاق ہوجائے گی۔ بینوا توجروا

الجواب:

(۱) رافضیوں میں تقیہ ہے، بے حاجت بھی تقیہ کرتے ہیں۔ حاجت کے وقت کا کیا اعتبار اور اشتباہ مٹانے کی کیا صورت کہ تقیہ وہ ملعون چیز ہے جس کا کرنے والا سب کچھ کہہ لے گا۔ خالص اسلام بولے اور دل میں کفر بھرا ہوگا۔ رافضیوں کی شہادت کہ یہ سنی ہے کیا معتبر ہوسکتی ہے، رافضی کی گواہی کچھ معتبر نہیں لایمان لھم (ان کا ایمان ہی نہیں۔ ت) بعض مسلمانوں کی گواہی کہ یہ شیعہ نہیں اور مسلمانوں کی شہادت کہ انھیں شیعی برتاؤ کرتے دیکھا، یہ شہادت اثبات ہے اور وہ شہادت نفی جو مقبول نہیں۔ لہٰذا یہ نکاح ہر گز نہ کیا جائے۔ قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کیف وقد قیل[1] (حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کیسے ہو سکتا ہے جبکہ یہ بات کہہ دی گئی ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم

(۲) ایسے خیالی بیانوں سے ناجائز تعلق ثابت نہیں ہوتا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۳) اس کے رافضی ہونے کے سبب جس نے نکاح پڑھانے سے انکار کیا بہت اچھا کیا اور وہ حکم

---

1 صحیح بخاری کتاب العلم باب الرحلہ فی المسألۃ النازلۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۹

What he has stated, though not absolute, is certain: when he considered the marriage of a Sunni woman with a Rafidi (Shia) to be permissible and lawful, his own wife went out of his marriage. And Allah the Almighty knows best.

Issue 777: From Rani Khet Sadar Bazaar, inquired by Mr. Muhammad Ibrahim Khan, 14 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A Khan from Tibet and his son claim to be from the Sunnat-wa-Jama'at and state their way according to the Holy Quran as Sunnat-wa-Jama'at. They have lived in Rani Khet for about 30-35 years. Now everyone calls them of the Rafidi religion. It is now to be inquired whether the marriage of a Sunni girl can take place with such a person? This person is poor, everyone has started calling him Rafidi out of enmity. All their practices regarding fasts, zakat, and prayer are like those of the Ahl-e-Sunnat-wa-Jama'at. The Maulana of the Rani Khet mosque, whose name is Abdul Rahman, did not perform the marriage ceremony, saying that a Rafidi's marriage cannot be with a Sunni. All Muslims have become one out of enmity. State the ruling and be rewarded.

The Answer: All Muslims becoming one out of groundless enmity is not rational, and the 'Taqiyyah' (dissimulation) of the Rafidis is known. Marriage is a great matter; caution is mandatory. It is stated in the Hadith: 'Kayfa wa qad qila' (How can it be when this has already been said? - Translator's note). He is the Almighty, and He knows best.

Issue 778: From Lucknow Bengal Bank Post Office Hazratganj, inquired by Mr. Abdul Rahim Sahib. What do the scholars of religion say in the following matter: Can the son of Zaid's in-law's relative uncle (maternal) marry Zaid's daughter, or not? State the ruling and be rewarded.

The Answer: It is permissible for a daughter to marry the son of one's own real maternal uncle. A maternal uncle through in-law relationship is very distant, provided there is no Sharia prohibition like fosterage etc. And Allah the Almighty knows best.

Issue 779: From Akyab City, Kyaukpyu Station, Kaunchi Bazaar village, sent by Maulvi Sikandar Ali Sahib Bengali, student of Madrasa Niazia Khairabad, District Sitapur, 14 Muharram-ul-Haram 1339 AH. What is your opinion, what is the command of Allah the Almighty in this [matter]? (Ma qaulukum ma hukmullahi Ta'ala fi hadhihi)

1 Sahih Bukhari, Book of Knowledge, Chapter on Descending Issues, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/19.

उसने जो बयान किया है, हालांकि वह पूर्ण नहीं है, लेकिन इतना निश्चित है कि जब उसने एक सुन्नी महिला का निकाह एक राफ़ज़ी (शिया) के साथ जायज़ और हलाल माना, तो उसकी अपनी पत्नी उसके निकाह से बाहर हो गई। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 777: रानी खेत सदर बाज़ार से, प्रेषक मुहम्मद इब्राहिम खान साहब, 14 मुहर्रम 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: तिब्बत का एक खान और उसका बेटा खुद को सुन्नत-व-जमाअत बताते हैं और पवित्र कुरान के अनुसार अपने तरीके को सुन्नत-व-जमाअत बताते हैं। वे लगभग 30-35 वर्षों से रानी खेत में रह रहे हैं। अब सब लोग उन्हें राफ़ज़ी धर्म का कहते हैं। अब यह पूछना है कि क्या ऐसी व्यक्ति से सुन्नी लड़की का निकाह हो सकता है या नहीं? यह व्यक्ति गरीब है, सब लोग दुश्मनी के कारण उसे राफ़ज़ी कहने लगे हैं। उनके रोज़े, ज़कात, नमाज़ के सभी तरीके अहल-ए-सुन्नत-व-जमाअत की तरह हैं। रानी खेत मस्जिद के मौलाना, जिनका नाम अब्दुल रहमान है, ने निकाह नहीं पढ़ाया कि एक राफ़ज़ी का निकाह सुन्नी से नहीं हो सकता। दुश्मनी के कारण सभी मुसलमान एक हो गए हैं। बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: बिना किसी कारण दुश्मनी के सभी मुसलमानों का एक हो जाना तर्कसंगत नहीं है और राफ़ज़ियों का 'तक़िया' (छल) ज्ञात है और निकाह एक महान कार्य है, सावधानी आवश्यक है। हदीस में फरमाया गया है: 'कयफ़ा व क़द क़ीला' (कैसे हो सकता है जबकि यह बात कह दी गई है? - अनुवादक)। वह अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 778: लखनऊ बंगाल बैंक डाकखाना हज़रतगंज से, प्रेषक अब्दुल रहीम साहब। विद्वान निम्नलिखित मसले में क्या कहते हैं: क्या ज़ैद की ससुराल के रिश्ते के मामा का लड़का और ज़ैद की लड़की का निकाह हो सकता है या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: अपने सगे मामा के बेटे से बेटी का निकाह जायज़ है। ससुराल के रिश्ते का मामा तो बहुत दूर का है, बशर्ते कि रज़ाअत (दूध का रिश्ता) आदि जैसी कोई शरई बाधा न हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 779: शहर अकयाब, थाना क्युकत्यू, मोज़ा काउंची बाज़ार से, प्रेषक मौलवी सिकंदर अली साहब बंगाली, छात्र मदरसा नियाज़िया खैराबाद, ज़िला सीतापुर, 14 मुहर्रम-उल-हराम 1339

हिजरी। आपका क्या विचार है कि इस मामले में अल्लाह तआला का क्या हुक्म है? (मा क़ौलुकुम मा हुक्मुल्लाही तआला फ़ी हाज़िही)

1 सहीह बुखारी, किताबुल इल्म, बाब फ़िल मसाएलिन नाज़िला, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/19।

पृष्ठ 471/739

جو اس نے بیان کیا اگرچہ مطلق نہیں مگر اتنا ضرور ہے کہ جب رافضی کے ساتھ سنیہ کا نکاح جائز وحلال جانا تو خود اس کی عورت نکاح سے نکل جائے گی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۷۷: از رانی کھیت صدر بازار مسئولہ محمد ابراہیم خاں صاحب ۱۴ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک خان تبت کا اور اس کا لڑکا اپنے آپ کو سنت جماعت بتاتے ہیں اور قرآن شریف کے رو سے اپنا طریقہ سنت و جماعت بتاتے ہیں اور قریب ۳۰، ۳۵ سال سے رانی کھیت میں رہتے ہیں، اب سب لوگ ان کو رافضی مذہب کا کہتے ہیں، اب دریافت یہ کرنا کہ سنی کی لڑکی کا نکاح ایسے شخص سے ہو سکتا ہے یا نہیں؟ یہ شخص غریب ہے سب لوگ عداوت سے رافضی کہنے لگے ہیں ان کے سب طریقے روزے، زکوٰۃ، نماز کے اہل سنت و جماعت کی طرح ہیں، رانی کھیت کی مسجد کے مولانا نے جن کا نام عبدالرحمن ہے نکاح نہیں پڑھایا کہ رافضی کا نکاح سنی سے نہیں ہو سکتا عداوت سے سب مسلمان ایک ہو گئے ہیں۔ بینوا توجروا

الجواب: بلاوجہ عداوت سے سب مسلمانوں کا ایک ہو جانا معقول نہیں اور رافضیوں کا تقیہ معلوم ہے اور نکاح امرِ عظیم ہے احتیاط لازم ہے، حدیث میں فرمایا: کیف وقد قیل (کیسے ہو سکتا ہے جبکہ یہ بات کہہ دی گئی ہے۔ ت) ھو تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۷۸: از لکھنؤ بنگال بنک ڈاکخانہ حضرت گنج مسئولہ عبدالرحیم صاحب مسئلہ ذیل میں کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید کی سسرال کے رشتہ کے ماموں کا لڑکا اور زید کی لڑکی سے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اپنے حقیقی ماموں کے بیٹے سے بیٹی کا نکاح جائز ہے۔ سسرال کے رشتہ کا ماموں تو بہت دور ہے جبکہ کوئی مانع شرعی نہ ہو مثل رضاعت وغیرہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷۹: از شہر اکیاب تھانہ کیوک تو موضع کاؤ نچی بازار مرسلہ مولوی سکندر علی صاحب بنگالی طالب علم مدرسہ نیازیہ خیرآباد ضلع سیتا پور ۱۴ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ ماقولکم ماحکم اللہ تعالیٰ فی ھذہ | تمھاری کیا رائے ہے کہ اللہ تعالیٰ کا کیا حکم ہے اس

1 صحیح بخاری کتاب العلم باب فی المسألۃ النازلۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۹/۱

Fatawa Rizvia Volume 11

Question: In the matter that a person named Qasim married a woman from among his relatives, who is the foster-granddaughter of Qasim's real brother. He believed that this was permissible in his religion/madhhab, and when he asked the scholars, they also declared it permissible. Afterwards, some Hanafi scholars issued a fatwa declaring this marriage invalid and forbade Muslims from interacting, eating, or drinking with those who performed the marriage until they ended the marriage and separated. (T)

Answer from Bengal: Based on the truth of the situation presented, the scholars of Shariah and the transmitters of the path of truth, especially the jurists of the Hanafi school and the scholars of the noble community, write that when a mujtahid (independent jurist) or muqallid (follower) of the established schools of thought issues a ruling or a judgment based on their opinion or an error, and enforces it as a legal verdict, and later it becomes known that this action or work is contrary to their own school of thought but is permissible in the school of another Imam of the Ahl al-Sunnah, then it is not permissible to nullify that action or work. Rather, it should be maintained as valid and enforced by following the school that considers it permissible. This does not necessitate leaving one's current school of thought or adopting another. Therefore, although the mentioned marriage of the aforementioned Qasim is contrary to the Hanafi school, it is permissible according to the school of the Zahiris, such as Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), who...

फ़तावा रिज़विया जिल्द 11

प्रश्न: मसला यह है कि क़ासिम नामक एक व्यक्ति ने अपने करीबियों में से एक ऐसी महिला से निकाह किया, जो क़ासिम के सगे भाई की रज़ाई (दूध शरीक) नवासी है। उसका विचार था कि उसके मज़हब में यह जायज़ है और जब उसने उलेमा से पूछा तो उन्होंने भी इसे जायज़ बताया। इसके बाद कुछ हनफ़ी उलेमा ने इस निकाह के नाजायज़ होने का फ़तवा दिया और मुसलमानों को निकाह करने वालों के साथ मेल-जोल और खान-पान से मना कर दिया, जब तक कि वे इस निकाह को खत्म करके अलग न हो जाएं। (त)

बंगाल का उत्तर: पूछी गई स्थिति की सच्चाई पर शरीयत के उलेमा और हक़ के रास्ते के रावी, विशेष रूप से हनफ़ी मज़हब के फ़कीह और उम्मत के उलेमा लिखते हैं कि जब प्रचलित मज़हबों के मुजतहिद या मुकल्लिद अपने विचार या गलती से किसी काम का हुक्म जारी करें और उस पर फ़ैसला बतौर कज़ा (न्यायिक निर्णय) लागू कर दें, और बाद में पता चले कि यह कार्य उनके अपने मज़हब के खिलाफ है लेकिन अहले सुन्नत के किसी अन्य इमाम के मसलक (विचारधारा) में जायज़ है, तो उस कार्य को रद्द करना जायज़ नहीं है। बल्कि, जायज़ ठहराने वाले दूसरे मसलक की तक़लीद (अनुसरण) में उसे जायज़ और लागू रखना चाहिए। इससे अपने प्रचलित मज़हब से निकलना या दूसरा मज़हब अपनाना अनिवार्य नहीं होगा। अत; क़ासिम का उक्त निकाह हालाँकि हनफ़ी मज़हब के खिलाफ है, लेकिन अहले ज़वाहिर के मसलक, जैसे इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैहि) के अनुसार, जो कि...

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

المسألہ شخصے قاسم زنے را کہ در قرابتش بنت بنت رضاعی مربرادر حقیقی قاسم باشد بحبالہ نکاحش آورد و ظن او چنان بود کہ موافق مذہب خود جائز ست، از علما ہم استفتآ نمودہ بود، ایشاں بصحت نکاحش قضا نمودند، پس از چندے علمائے احناف بعدم جواز نکاحش فتوی می دادند و جماعت مسلمین را باو مجالست واموا کلتش منع می کنند مادامیکہ تفریق نکاح نکند۔

مسئلہ میں، کہ قاسم نامی ایک شخص نے اپنے قریبوں میں سے ایک عورت جو کہ قاسم کی حقیقی بھائی کی رضاعی نواسی ہے، سے نکاح کیا اور اس کا خیال تھا کہ اپنے مذہب میں یہ جائز ہے اور اس نے علماء سے بھی پوچھا تو انھوں نے بھی اسے جائز کہا، اس کے بعد چند حنفی علماء نے اس نکاح کے ناجائز ہونے کا فتوی دیا اور مسلمانوں کو نکاح کرنے والوں کے ساتھ میل جول اور کھانے پینے سے منع کر دیا تاوقتیکہ وہ اس نکاح کو ختم کر کے علیحدگی اختیار نہ کرلیں۔ (ت)

جواب بنگالیاں

بر تقدیر صدق مسئولہ عنہا علمائے شریعت غرا و فضلائے طریقت بیضا بالخاصہ فقہائے مذہب حنیف و علمائے ملت منیف می نگارند کہ چوں علمائے مذہب مستمرہ شاں مجتہد باشد یا مقلد ظناً یا سہواً عملے کنند وحکمے بکارے صادر نمایند و قضا بر آں تنفیذ فرمایند، پس آں دانستند و وقوف یافتند کہ ہماں عمل و فعل زیشاں بظہور پیوستہ بطبق مذہب شاں نپر داختہ و بمشرب یکے از ائمہ و دیگرے کہ معدود و محدود بہ سنت جماعت ست در پیوستہ پس بار دیگر تنقیض و تردید آنہا کردن روا و جائز نباشد بل ہمیں مسلک تقلید نمودہ کہ ہم خالی از تلفیق دارد ہماں عمل و فعل را لا محالہ

مسئولہ صورت کے صدق پر علمائے شریعت اور طریق حق کے ناقلین خصوصاً فقہائے مذہب حنیف اور علمائے ملت لکھتے ہیں کہ جب مروجہ مذاہب کے مجتہد یا مقلدین میں سے کوئی اپنے ظن سے یا غلطی سے کسی کام کا حکم صادر کریں اور اس پر فیصلہ بطور قضاء نافذ کردیں، اور بعد میں معلوم ہو کہ یہ عمل یا کام ان کے مذہب کے خلاف ہے اور کسی دوسرے اہلسنت کے امام کے مسلک میں جائز ہے تو اس عمل اور کام کو کالعدم کرنا جائز نہیں بلکہ دوسرے جائز قرار دینے والے مسلک کی تقلید میں اس کو جائز اور نافذ رکھنا چاہئے، اس سے اپنے مروجہ مذہب سے خروج اور دوسرے مذہب کو اختیار کرنا لازم نہ آئے گا۔ پس قاسم مذکور کا مذکورہ نکاح اگرچہ حنفی مذہب کے خلاف ہے مگر اہل ظواہر کے مسلک مثلاً امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ جو کہ

Correct and valid, and also because of this, they do not exit their consistent school of thought due to speculative imitation (taqlid), nor are they attributed to another school. Thus, the marriage of Qasim in this manner, according to this statement, is undoubtedly and necessarily correct and effective. Even if, hypothetically and supposedly, it went against the Hanafi school, but it followed the path of the people of Zahir like the great Imam Shafi'i (may the pleasure of the Creator be upon him) and others, which is followed and included in the Sunnah of the congregation. Since the Hanafi scholars, based on the assumption of its permissibility in their school, had given the decree for the marriage of the mentioned Qasim's biological brother's foster daughter, while it was hidden and covered under the general prohibitions of the Hanafis, yet it remained uncovered and evident within the rules commanded for the permissions of the people of Zahir like Shafi'i and others. Therefore, it is by no means permissible for Hanafi scholars to invalidate or separate the marriage, as that would entail contempt and rejection of the Sunnah of the congregation and treating one of the Sunnahs with disdain before Allah, which causes misguidance. As Allama Ibn Abidin al-Shami al-Hanafi said in Radd al-Muhtar, quoting Allama Shurunbulali in 'Uqud al-Farid: 'Indeed, it is permissible for him to follow (another school) after the action, such as when he prayed thinking it was valid according to his school, then its invalidity in his school and its validity in another school became clear, so he may follow it, and he should investigate that prayer, according to what is mentioned in al-Bazzaziyya that it was narrated from Abu Yusuf that he prayed Jumu'ah after bathing with water from a bathhouse, then he was informed of a mouse in the well of the bathhouse, so he said: 'We take the saying of our brothers from the people of Medina: when water reaches two qullas, it does not carry impurity.'' A.H.

According to the Ahl-e-Sunnat wa Jama'at, the marriage is valid. Furthermore, when the Hanafi scholars mistakenly considered the aforementioned marriage permissible, in their estimation it became valid that Qasim's marriage to the foster granddaughter of his biological brother was declared correct. When the permissibility of this was found in the school of scholars like Imam Shafi'i, then it is not at all permissible for the Hanafi scholars to invalidate this marriage and cause separation, because it would lead to the contempt of the congregation and a Sunnah and school of thought, which is a cause of misguidance in the sight of Allah. As Allama Shami, quoting Allama Shurunbulali from 'Uqud al-Farid' in 'Radd al-Muhtar', said that it is permissible to follow another school even after the action. For instance, if one

performed the prayer considering it correct according to their own school, but later it was found that it was not correct in their school but became correct in another Imam's school, then it is permissible to declare the prayer correct by following the other Imam, provided that at the time of praying, he had performed investigation (taharri). As it is mentioned in 'Bazzaziyya' that it is narrated from Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) that he once bathed with bathhouse water for Jumu'ah, and was later told that there was a dead mouse in the bathhouse. So you said: 'We adopt the school of our brothers, the people of Medina, that when water is two qullas, it does not become impure.' They acted upon this. A.H. And also, they (cited) the statement from Durr al-Mukhtar.

---

1 Radd al-Muhtar, Section on the Ruling of Taqlid and Withdrawing from it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/51 Page 473 of 739

सही और दुरुस्त है, और इसके कारण वे अपने निरंतर पंथ (मज़हब) से केवल अनुमानित अनुकरण (तक़लीद) के कारण बाहर नहीं होते हैं, और न ही वे दूसरे पंथ से संबंधित माने जाते हैं। अतः इस कथन के अनुसार कासिम का विवाह इसी प्रकार निस्संदेह और अनिवार्य रूप से सही और प्रभावी हो गया है। भले ही, कल्पित और अनुमानित तौर पर यह हनफ़ी पंथ के विरुद्ध रहा हो, लेकिन यह इमाम शाफ़ई (उन पर ईश्वर की प्रसन्नता हो) जैसे 'अहल-ए-ज़वाहिद' के पंथ के अनुसार था, जिसका अनुसरण किया जाता है और जो सुन्नत और जमात में शामिल है। चूंकि हनफ़ी विद्वानों ने उनके पंथ में इसके जायज़ होने के अनुमान के आधार पर, उल्लेखित कासिम के सगे भाई की दूध-शरीक पोती के विवाह का आदेश दिया था, जबकि यह हनफ़ी पंथ के पूर्ण निषेधों के तहत छिपा और ढका हुआ था, फिर भी यह शाफ़ई आदि जैसे अहल-ए-ज़वाहिद के अनुमत नियमों के भीतर स्पष्ट और प्रकट रहा। इसलिए, हनफ़ी विद्वानों के लिए यह कतई जायज़ नहीं है कि वे इस निकाह को अमान्य करें और अलगाव पैदा करें, क्योंकि इससे सुन्नत और जमात का अनादर और तिरस्कार होगा और अल्लाह के नज़दीक एक सुन्नत को तुच्छ समझना गुमराह होने का कारण है। जैसा कि अल्लामा इब्न आबिदीन अल-शामी अल-हनफ़ी ने 'रद-उल-मुहतार' में अल्लामा शुरुनबुलाली से 'उक़ूद अल-फ़रीद' के हवाले से नक़ल करते हुए फ़रमाया: 'निश्चित रूप से कार्य के बाद भी दूसरे का अनुकरण करना जायज़ है, जैसे कि यदि किसी ने अपने पंथ के अनुसार उसे सही समझकर नमाज़ पढ़ी, फिर उसके पंथ में उसकी अमान्यता और दूसरे के पंथ में उसकी वैधता स्पष्ट हो गई, तो वह उसका अनुकरण कर सकता है, और उसे उस नमाज़ के बारे में शोध करना चाहिए, जैसा कि 'बज़्ज़ाज़िया' में उल्लेख है कि इमाम अबू यूसुफ से रिवायत है कि उन्होंने हमाम (स्नानघर) के पानी से ग़ुस्ल करके जुमे की नमाज़ पढ़ी, फिर उन्हें बताया गया कि हमाम के कुएं में चूहा (मरा हुआ) है, तो उन्होंने कहा: 'हम अपने मदीना वाले भाइयों के कथन को अपनाते हैं कि जब पानी दो कुल्ला (एक निश्चित मात्रा) तक पहुँच जाता है, तो वह अशुद्धता ग्रहण नहीं करता।' अ.ह.

अहले सुन्नत व जमात के नज़दीक निकाह सही हुआ, साथ ही जब हनफ़ी विद्वानों ने ग़लती से इस निकाह को जायज़ समझा, तो उनके अनुमान में यह जायज़ ठहरा कि कासिम का निकाह उसके सगे भाई की दूध-शरीक पोती से सही करार दिया गया। और जब उनकी नज़र में इमाम शाफ़ई जैसे अहल-ए-ज़वाहिद के पंथ पर इसका जायज़ होना मालूम हुआ, तो अब हनफ़ी विद्वानों को हरगिज़ यह अधिकार नहीं है कि वे इस निकाह को अमान्य (फ़ासिद) करें और अलगाव करें, क्योंकि इससे जमात

और एक सुन्नत और पंथ का अनादर आवश्यक होगा, जो अल्लाह के नज़दीक गुमराह होने का कारण है। जैसा कि अल्लामा शामी ने अल्लामा शुरुनबुलाली से 'रद-उल-मुहतार' में 'उक़ूद अल-फ़रीद' से नक़ल करते हुए फ़रमाया कि कार्य के बाद भी दूसरे का अनुकरण (तक़लीद) जायज़ है, जैसे कि अपनी मान्यताओं के अनुसार नमाज़ को सही समझकर अदा किया और बाद में पता चला कि वह अपने पंथ में सही नहीं हुई थी, लेकिन दूसरे इमाम के पंथ में सही हो गई, तो अब दूसरे इमाम की तक़लीद करते हुए नमाज़ को सही मानना जायज़ है, बशर्ते कि नमाज़ पढ़ते समय उसने तहक़ीक़ (खोज) की हो। जैसा कि 'बज़्ज़ाज़िया' में फ़रमाया कि इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाहि अलैहि) से रिवायत है कि उन्होंने एक बार हमाम के पानी से जुमे का ग़ुस्ल किया, फिर बाद में बताया गया कि हमाम में चूहा मरा हुआ है, तो आपने फ़रमाया कि हम अपने भाई मदीना वालों के पंथ को अपनाते हुए कि जब पानी 'दो कुल्ला' हो तो नापाक नहीं होता, इस पर अमल कर रहे हैं। अ.ह. और उन्होंने 'दुर-ए-मुख़्तार' के कथन का भी उल्लेख किया।

---

1 रद-उल-मुहतार, तक़लीद और उससे पलटने के हुक्म का बयान, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/51 पेज 473 का 739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

صحیح و درست دارند و نیز ازیں تقلید ظنی از مذہب مستمرہ خود خارج نہ شوند و منسوب بداں مذہب دیگر نگردند پس مناکحت قاسم بدیں منوال بہمیں مقال صادق ست کہ لاریب ولا محالہ صحیح و نافذ گردیدہ است اگرچہ بالفرض والتقدیر مخالف مذہب حنفی آمدہ لیکن بمسلک اہل ظواہر کمثل امام ہمام شافعی علیہ رضوان الباری و غیرہ کہ مسلوک و مشمول بسنت جماعت ست بپرداختہ در پیوستہ کہ علمائے احناف بظن جواز مذہب شان مظنون شدہ بنت رضاعی رامر برادر حقیقی قاسم مذکور بود حکم نکاح دادہ بودند بحالتی کہ در تحت حجاب ممنوعات کلیہ حنفیہ محجوب و مستور بودہ و در ضمن ضابطہ مامور بہا محللات اہل ظواہر کہ بھچوں شافعی و غیرہ ہستند مکشوف و مظہر ماندہ پس ہر گز علماء احناف را نمی رسد کہ تفریق و افساد در نکاح کنند کہ آں مستلزم تحقیر تنکیر سنت جماعت کرد و حقارت یکے را از سنت عند اللہ بموجب ضلالت دارد ، کما قال العلامۃ ابن عابدین الشامی الحنفی فی رد المحتار ناقلا عن العلامۃ الشرنبلالی فی عقد الفرید ، ان لہ التقلید بعد العمل کما اذا صلی ظانا صحتھا علی مذہبہ ثم تبین بطلانھا فی مذھبہ وصحتھا علی مذھب غیرہ فلہ تقلیدہ ویتحری بتلک الصلوۃ علی ما قال فی البزازیۃ انہ روی عن ابی یوسف انہ صلی الجمعۃ مغتسلا من الحمام ثم اخبر بفارۃ فی بئر الحمام ، فقال ناخذ بقول اخواننا من اھل المدینۃ اذا بلغ الماء قلتین لم یحمل خبثا اھ

اہلسنت و جماعت ہیں کے ہاں نکاح درست ہوا، نیز علمائے احناف نے جب غلطی سے اس نکاح مذکورہ کو جائز گمان کیا تو ان کے گمان میں جائز ٹھہرا کہ حقیقی بھائی کی رضاعی نواسی سے قاسم کا نکاح درست قرار دے کر دیا اور ان کی نظر میں امام شافعی جیسے اہل ظواہر کے مسلک پر اس کا جواز معلوم ہوا تو اب علمائے احناف کو ہرگز جائز نہیں کہ وہ اس نکاح کو فاسد کریں

اور تفریق کریں، کیونکہ جماعت کی اور ایک سنت اور مسلک کی تحقیر لازم آئے گی جو کہ عنداللہ گمراہی کا موجب ہے، جیسا کہ علامہ شامی نے علامہ شرنبلالی سے ردالمحتار میں عقدالفرید سے نقل کرتے ہوئے فرمایا کہ اس کو عمل کے بعد بھی دوسرے کی تقلید جائز ہے جیسا کہ اپنے مذہب کے مطابق نماز کو صحیح سمجھ کر ادا کیا اور بعد میں معلوم ہوا کہ اس کے مذہب میں صحیح نہیں ہوئی مگر دوسرے امام کے مذہب میں صحیح ہو گئی تو اب دوسرے امام کی تقلید کرتے ہوئے نماز کو صحیح قرار دینا جائز بشر طیکہ نماز پڑھتے وقت اسی نے تحری کی ہو جیسا کہ بزازیہ میں فرمایا کہ امام ابو یوسف رحمۃ اللہ تعالیٰ سے مروی ہے کہ انھوں نے ایک مرتبہ حمام کے پانی سے جمعہ کا غسل کیا پھر بعد میں بتایا گیا کہ حمام میں چوہا مرا ہوا ہے تو آپ نے فرمایا کہ ہم اپنے بھائی اہل مدینہ کے مسلک کو اپناتے ہوئے کہ جب پانی دو قلے ہو تو ناپاک نہیں ہوتا اس پر عمل پیرا ہیں اھ اور نیز انھوں نے درمختار کے قول

---

1 رد المحتار مطلب فی حکم التقلید والرجوع عنہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۵۱ Page 473 of 739

Fatawa Ridawiyya Volume Eleven

And also in it under the statement of Durr al-Mukhtar "As for the follower (Muqallid) etc." It was stated under "Imam al-Muqallid" that Al-Qunya quoted from Al-Muhit and others, and the researcher (Muhaqqiq) in Fath al-Qadir and his student Allama Qasim affirmed it with certainty, and it was claimed in Al-Bahr as an assertion that if a follower judge ruled according to another's school (Madhhab), or by a weak narration, or a weak opinion, it would be enforced. The strongest evidence for this is the passage quoted from Al-Bazzaziya's commentary on Al-Tahawi: when a judge is not a Mujtahid and rules based on a Fatwa, and it later becomes clear that it was contrary to his school, the decision remains enforced, and another judge cannot revoke it. However, he himself can revoke it, as narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). And the second Imam, Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), said that even the judge himself does not have the right to revoke it, because once the action is carried out, it is as if the judge has enforced it, and what is enforced cannot be revoked. Furthermore, the school of the literalists (Ahl al-Zahir) is included among the Ahl al-Sunnah, and their differences with the Hanafis regarding nursing (Radha'ah) are only secondary; they are like Imam Shafi'i in this regard. Thus, the commentator of Sahih Muslim, Imam Nawawi, mentioned in his commentary that only the literalists and Ibn Ulayyah disagree on this point, as they say that the prohibition due to nursing is not established between a man and a girl who suckled. This was also quoted by Al-Maziri.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the ruling of Taqleed and retracting from it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/52.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on the ruling of Taqleed and retracting from it, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/51.

और इसी में 'दुर्र अल-मुख्तार' के कथन 'रहा मुक़ल्लिद (अनुयायी) आदि' के तहत कहा गया है। 'इमाम अल-मुक़ल्लिद' के तहत फ़रमाया कि 'अल-कुन्या' ने 'अल-मुहीत' आदि से उद्धृत किया और 'फ़तह अल-क़दीर' में शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) और उनके छात्र अल्लामा क़ासिम ने इसे दृढ़ता से प्रमाणित किया है, और 'अल-बहर' में दावे के तौर पर कहा गया है कि यदि एक मुक़ल्लिद न्यायाधीश किसी दूसरे के मत (मज़हब), या किसी कमज़ोर रिवायत, या कमज़ोर राय के अनुसार फ़ैसला देता है, तो वह लागू हो जाएगा। इसके लिए सबसे मज़बूत दलील 'अल-बज़्ज़ाज़िया' में 'अल-तहावी' की व्याख्या से ली गई इबारत है कि जब न्यायाधीश मुजतहिद न हो और किसी के फ़तवे पर फ़ैसला कर दिया हो, और बाद में पता चले कि वह उसके अपने मत के विरुद्ध था, तो फ़ैसला लागू रहेगा और दूसरा न्यायाधीश इसे रद्द नहीं कर सकता। हालाँकि, वह स्वयं इसे रद्द कर सकता है, जैसा कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से वर्णित है। और दूसरे इमाम यानी अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) ने फ़रमाया कि स्वयं उस न्यायाधीश को भी रद्द करने का अधिकार नहीं है, क्योंकि कार्य संपन्न हो जाने पर ऐसा माना जाता है कि न्यायाधीश ने इसे लागू कर दिया है, और लागू की गई चीज़ को रद्द नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, 'अहले ज़ाहिर' का मत भी अहले सुन्नत में शामिल है और रज़ाअत (स्तनपान के माध्यम से रिश्ते की पवित्रता) के मामले में हनफ़ियों के साथ उनका मतभेद केवल शाखागत (उप-शास्त्रीय) है; वे इस संबंध में इमाम शाफ़ई की तरह हैं। इसी प्रकार मुस्लिम शरीफ़ के व्याख्याकार इमाम नववी ने अपनी व्याख्या में उल्लेख किया है कि इस मुद्दे पर केवल अहले ज़ाहिर और इब्न उलैया का मतभेद है, वे कहते हैं कि दूध पीने वाली लड़की और पुरुष के बीच रज़ाअत की हुरमत (विवाह का निषेध) साबित नहीं होती। और अल-माज़िरी ने भी इसे उद्धृत किया है।

---

1. रद अल-मुह्तार, तक़लीद और उससे पलटने के हुक्म का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/52।
2. रद अल-मुह्तार, तक़लीद और उससे पलटने के हुक्म का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/51।

وایضا فیہ تحت قول الدر المختار واما المقلد الخ "امام المقلد" کے تحت فرمایا کہ قنیہ نے محیط وغیرہ سے نقل کیا اور اس پر فتح القدیر میں محقق اور ان کے شاگرد علامہ قاسم نے جزم کیا ہے اور بحر میں دعوٰی کے طور پر کہا کہ قاضی مقلد نے اگر غیر کے مذہب یا ضعیف قول یا روایت پر فیصلہ دے دیا تو وہ نافذ ہوگا ، اور اس سلسلہ میں بہترین استدلال بزازیہ کی شرح طحاوی سے منقول عبارت ہے کہ جب قاضی مجتہد نہ ہو اور کسی کے فتوٰی پر فیصلہ کر دیا ہو تو بعد میں اگر معلوم ہوا کہ اس نے اپنے مذہب کے خلاف فیصلہ دیا ہے تو فیصلہ نافذ رہے گا، اور دوسرا قاضی اس کو رد نہیں کر سکتا، ہاں وہ خود کالعدم کر سکتا ہے ، امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے یوں منقول ہے، اور دوسرے امام یعنی ابویوسف رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ خود اس قاضی کو بھی کالعدم کرنے کا حق نہیں کیونکہ عمل نافذ ہو جانے پر گویا کہ قاضی نے نافذ کر دیا ہے اور نافذ شدہ کو کالعدم نہیں کہا جاسکتا ، اور اہل ظواہر کا مذہب بھی اہلسنت میں شامل ہے اور اس کا صرف فروعی اختلاف رضاعت کے بارے میں احناف سے ہے یہ بھی امام شافعی کی طرح ہیں۔ چنانچہ شارح مسلم شریف امام نووی نے اپنی شرح میں ذکر کیا ہے، کہ اس میں صرف اہل ظاہر اور ابن علیہ کا خلاف ہے کہ وہ کہتے ہیں دودھ پینے والی لڑکی اور مرد کے درمیان رضاعت کی حرمت ثابت نہیں ہوتی۔ اور اس کو مازری نے (نقل کیا)۔

۱- رد المحتار مطلب فی حکم التقلید والرجوع عنہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۵۲ ۲- رد المحتار مطلب فی حکم التقلید والرجوع عنہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۵۱

صفحہ 474 کا 739

Fatawa Rizvia, Volume 11

(Column 1 - Arabic Transcription/Translation) It is narrated from Ibn Umar and Aisha (may Allah be pleased with them), and they argued using the verse of Allah Almighty: "And your [foster] mothers who have suckled you and your [foster] sisters through nursing." And He did not mention the daughter or the paternal aunt as He mentioned them in lineage [1]. And Imam Abu Isa al-Tirmidhi narrates in Jami' al-Tirmidhi with a chain: Hasan bin Ali narrated to us, Ibn Numayr informed us from Hisham bin Urwah from his father from Aisha, she said: "My paternal uncle through nursing came and asked permission to enter, but I refused until I consulted the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Let him enter, for he is your uncle.' I said, 'It was only the woman who nursed me, and the man did not nurse me.' He said: 'He is your uncle, let him enter.'" This is a Hasan Sahih Hadith. Some scholars among the companions of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and others acted upon this. They disliked the "milk of the stallion" (laban al-fahl, referring to the nursing mother's husband). The basis for this is the Hadith of Aisha. Some scholars allowed the "milk of the stallion" and the first opinion is more correct [2]. Narrated by Tirmidhi.

(Column 2 - Urdu Transcription/Translation) It is narrated from Abdullah bin Umar and Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with them), and the literalist scholars (Ashab al-Zawahir) have stated in their argument that Allah Almighty mentioned your mothers who suckled you and your foster brothers, but did not mention the daughter and paternal aunt as He did in the context of lineage. And Imam Tirmidhi has stated in his Jami' Tirmidhi that the Hadith was narrated to us by Hasan bin Ali, from Ibn Numayr, from Hisham, from his father Urwah, from Hazrat Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with them) that she said: "My foster paternal uncle came and sought permission to come to me, so I refused until I consulted the Prophet (peace and blessings be upon him). He said, 'He can enter your presence because he is your uncle.' Then Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) submitted, 'A woman nursed me, a man did not.' So the Prophet (peace and blessings be upon him) said, 'He is your uncle, he can enter.' This Hadith is good (Hasan) and authentic (Sahih), and some of the noble companions and others have acted upon it. They considered the entry of the wet-nurse's husband, i.e., the foster father, to be disliked, but the primary evidence is the Hadith of Hazrat Aisha. Some scholars have permitted the foster father to enter, and the first opinion is correct; Tirmidhi has narrated it.

(Footnotes) 1. Sharh Sahih Muslim by al-Nawawi, Book of Nursing, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/466. 2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Nursing, Chapter on what has been narrated regarding "milk of the stallion", Amin Company Karachi, 1/71.

फतावा रज़विया, जिल्द 11

(कॉलम 1 - अरबी का अनुवाद) इब्न उमर और आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है, और उन्होंने अल्लाह तआला के इस फरमान से दलील दी: "और तुम्हारी वह माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध-शरीक (रज़ाई) बहनें।" और उन्होंने (अल्लाह ने) बेटी और फूपू का ज़िक्र नहीं किया जैसा कि नसब (वंश) के मामले में किया है [1]। और इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी अपनी जामे तिर्मिज़ी में रिवायत करते हैं: हमें हसन बिन अली ने हदीस बयान की, इब्न नुमैर ने हमें हिशाम बिन उर्वा से, उन्होंने अपने पिता से, उन्होंने आयशा से खबर दी, उन्होंने कहा: "मेरे रज़ाई चाचा आए और उन्होंने अंदर आने की इजाज़त माँगी, लेकिन मैंने तब तक इनकार किया जब तक कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सलाह नहीं ले ली। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'उन्हें आने दो, क्योंकि वह तुम्हारे चाचा हैं।' मैंने कहा, 'सिर्फ औरत ने मुझे दूध पिलाया था, मर्द ने नहीं।' उन्होंने फरमाया: 'वह तुम्हारे चाचा हैं, उन्हें आने दो।'" यह हदीस हसन सहीह है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कुछ सहाबा और अन्य विद्वानों ने इस पर अमल किया है। उन्होंने "लबन अल-फहल" (धाय के पति का दूध/रिश्ता) को नापसंद किया। इसका आधार आयशा की हदीस है। कुछ विद्वानों ने "लबन अल-फहल" की अनुमति दी है और पहला मत अधिक सही है [2]। तिर्मिज़ी द्वारा रिवायत।

(कॉलम 2 - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) अब्दुल्लाह बिन उमर और आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से नक़ल किया गया है, और असहाब-ए-ज़वाहर ने अपनी दलील में कहा है कि अल्लाह तआला ने दूध पिलाने वाली तुम्हारी माओं और तुम्हारे रज़ाई भाइयों का ज़िक्र किया है और बेटी और फूपू का ज़िक्र नहीं किया जिस तरह उन्हें नसब में बयान फरमाया है। और इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी जामे तिर्मिज़ी में बयान किया है कि हमें हदीस बयान की हसन बिन अली ने, उन्होंने इब्न नुमैर से, उन्होंने हिशाम से, उन्होंने अपने बाप उर्वा से, उन्होंने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कि उन्होंने फरमाया: मेरे रज़ाई चाचा आए और उन्होंने मेरे पास आने की इजाज़त चाही, तो मैंने इनकार किया यहाँ तक कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मशविरा किया। तो आप ने फरमाया: वह तुम्हारे पास दाखिल हो सकता है क्योंकि वह तुम्हारा चाचा है। तो हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अर्ज़ किया कि मुझे तो औरत ने दूध पिलाया है मर्द ने नहीं पिलाया। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: वह तुम्हारा चाचा है वह दाखिल हो सकता है। यह हदीस हसन और सहीह है और इस पर बाज़ सहाबा किराम और उनके अलावा का अमल है। उन्होंने दूध वाले शौहर

यानी रज़ाई बाप के दाखिल होने को मकरूह कहा है और असल सबूत हज़रत आयशा की हदीस है। और बाज़ अहल-ए-इल्म ने दूध वाले बाप (रज़ाई बाप) को दाखिल होने की इजाज़त दी है, और पहला क़ौल सहीह है, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

(पाद-टिप्पणियाँ) 1. शरह सहीह मुस्लिम लिन-नववी, किताबुल रज़ाअ, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/466 2. जामे तिर्मिज़ी, अबवाबुल रज़ाअ, बाब मा जाअ फी लबनल फहल, अमीन कंपनी कराची, 1/71

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

(کالم 1 - عربی) عن ابن عمر وعائشہ(رضی اللہ تعالٰی عنھما) واحتجوا بقولہ تعالٰی وامھتکم التی ارضعنکم واخواتکم من الرضاعۃ ولم یذکر البنت والعمۃ کما ذکرھما في النسب 1 وامام ابو عیسٰی ترمذی در جامع ترمذی سند می آرند حدثنا الحسن بن علی اخبرنا ابن نمیر عن ھشام بن عروۃ عن ابیہ عن عائشہ قالت جاء عمی من الرضاعۃ یستأذن علی فابیت ان اذن لہ حتی استأمر رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فلیلج علیك فأنہ عمك قالت انما ارضعتنی المرأۃ ولم یرضعنی الرجل قال فانہ عمك فلیلج علیك ھذا حدیث حسن صحیح والعمل علی ھذہ عند بعض اھل العلم من اصحاب النبي صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وغیرھم کرھوا لبن الفحل والاصل في ھذا حدیث عائشۃ وقد رخص بعض اھل العلم فی لبن الفحل والقول الاول اصح 2 رواہ الترمذی

(کالم 2 - اردو ترجمہ) عبداللہ بن عمر اور عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے نقل کیا ہے اور اصحاب ظواہر نے اپنی دلیل میں کہا کہ اللہ تعالٰی نے دودھ پلانے والی تمہاری ماؤں اور تمہاری رضاعی بھائیوں کو ذکر کیا ہے اور بیٹی اور پھوپھی کو ذکر نہیں کیا جس طرح ان کو نسب میں بیان فرمایا ہے اور امام ترمذی نے اپنی جامع ترمذی میں بیان کیا ہے کہ ہمیں حدیث بیان کی حسن بن علی انھوں نے ابن نمیر انھوں نے ہشام انھوں نے اپنے باپ عروہ انھوں نے حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے انھوں نے فرمایا میرا رضاعی چچا آیا اور اس نے میرے ہاں آنے کی اجازت چاہی تو میں نے انکار کیا حتٰی کہ میں نے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے مشورہ کیا تو آپ نے فرمایا وہ تیرے ہاں داخل ہو سکتا ہے کیونکہ وہ تیرا چچا ہے تو حضرت عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا نے عرض کیا کہ مجھے تو عورت نے دودھ پلایا ہے مرد نے نہیں پلایا۔ تو آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا وہ تیرا چچا ہے وہ داخل ہو سکتا ہے۔ یہ حدیث حسن اور

صحیح ہے اور اس پر عمل ہے بعض صحابہ کرام کا اور ان کے غیر نے دودھ والے خاوند یعنی رضاعی باپ کو داخل ہونا مکروہ کہا ہے اور اصل ثبوت حضرت عائشہ کی حدیث ہے ، اور بعض اہل علم نے دودھ والے باپ (رضاعی باپ) کو داخل ہونے کی اجازت دی ہے، ا ور پہلا قول صحیح ہے اس کو ترمذی نے روایت کیا ہے،

(حواشی) 1 شرح صحیح مسلم للنوی کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۶۶/۱ 2 جامع الترمذی ابواب الرضاع باب ماجاء فی لبن الفحل امین کمپنی کراچی ۷۱/۱

Al-Shami said: A parallel to this is what the scholar Biri quoted at the beginning of his commentary on 'Al-Ashbah' from the commentary on 'Al-Hidayah' by Ibn Shuhnah. The text is: 'When a Hadith is authentic and is contrary to the Madhhab, the Hadith is acted upon, and that becomes his Madhhab. A follower of the Hanafi school does not cease to be a Hanafi by acting upon it. For it has been authentically established from Abu Hanifa, the Great Imam, that he said: "When a Hadith is authentic, it is my Madhhab." Ibn Abdul-Barr narrated this from Abu Hanifa and other Imams... etc.' Qadi Khan and the author of Al-Hidayah have explicitly mentioned the Madhhab of the Literalists (Ahl al-Zahir) as stated in Fatawa Qadi Khan. The great Imam Al-Shafi'i said: 'Prohibition is not established on the father's side.' Jurists call this issue 'Laban al-Fahl' (Milk of the Sire). It says in Al-Hidayah: 'In one of the statements of Al-Shafi'i, Laban al-Fahl does not create prohibition because prohibition is due to the resemblance of being a part, and milk is a part of her (the woman), not him (the man).' Since it has been clarified and proven from the arguments in the books of Hanafi jurists that the marriage of a person named Qasim is permissible and correct according to Hanafi scholars, and by accepting this, one does not go outside the Hanafi school...

1. Radd al-Muhtar, Topic: It is authentic from the Imam that he said: "If a Hadith is authentic, it is my Madhhab", Ihya al-Turath, Beirut, 1/46.
2. Fatawa Qadi Khan, Chapter of Breastfeeding, Nawalkishor, Lucknow, 1/189.
3. Al-Hidayah, Chapter of Breastfeeding, Maktaba Arabiyya, Karachi, 2/331.

खण्ड ग्यारह - फतावा रज़विया

अल-शामी ने कहा: इसके समान वह है जिसे विद्वान बीरी ने 'अल-अश्बाह' पर अपनी टिप्पणी की शुरुआत में इब्न शुहना की 'हिदाया' की टिप्पणी से उद्धृत किया है। इसका पाठ यह है: 'जब कोई हदीस प्रामाणिक हो और वह मज़हब के विपरीत हो, तो हदीस पर अमल किया जाएगा, और वही उनका मज़हब बन जाएगा। एक हनफ़ी अनुयायी उस पर अमल करने से हनफ़ी होने से बाहर नहीं होता। क्योंकि इमाम-ए-आज़म अबू हनीफा से प्रमाणिक रूप से स्थापित है कि उन्होंने कहा: "जब हदीस सही हो, तो वही मेरा मज़हब है।" इब्न अब्दुल-बर ने इसे अबू हनीफा और अन्य इमामों से उद्धृत किया है... आदि।' काज़ी खान और हिदाया के लेखक ने अहले ज़ाहिर के मज़हब का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है जैसा कि फतावा काज़ी खान में कहा गया है। महान इमाम शाफ़ई ने कहा: 'पिता की ओर से हुरमत (प्रतिबंध) स्थापित नहीं होती।' न्यायविदों ने इस समस्या को 'लबन अल-फहल' (पति का दूध) का शीर्षक दिया है। हिदाया में कहा गया है: 'इमाम शाफ़ई के एक कथन में लबन अल-फहल हराम नहीं करता क्योंकि हुरमत अंश होने के संदेह के कारण होती है, और दूध स्त्री का अंश है, पुरुष का नहीं।' चूंकि हनफ़ी न्यायविदों की पुस्तकों के प्रमाणों से यह स्पष्ट और सिद्ध हो चुका है कि कासिम नाम के व्यक्ति का उक्त निकाह हनफ़ी विद्वानों के निकट जायज़ और सही है, और इसे सही मानने से हनफ़ी मज़हब से बाहर...

1. रद अल-मुह्तार, विषय: इमाम से सही साबित है कि उन्होंने कहा: "जब हदीस सही हो, तो वही मेरा मज़हब है", इहया अल-तुराथ, बेरूत, 1/46.
2. फतावा काज़ी खान, स्तनपान का अध्याय, नवलकिशोर, लखनऊ, 1/189.
3. अल-हिदाया, स्तनपान का अध्याय, मकतबा अरबिया, कराची, 2/331.

पृष्ठ 739 में से 476

جلد یاز دہم - فتاویٰ رضویہ

[عربی متن] وقال الشامي ونظير هذه ما نقله العلامة بيري في اول شرحه على الاشباه عن شرح الهدايه لابن شحنه ونصه اذا صح الحديث وكان على خلاف المذهب عمل بالحديث ويكون ذلك مذهبه ولا يخرج مقلده عن كونه حنفياً بالعمل به فقد صح عن ابي حنيفة امام الاعظم انه قال اذا صح الحديث فهو مذهبي وقد حكى ذلك ابن عبدالبر عن ابى حنيفة وغيره من الائمة 1 الخ وقاضي خان وصاحب ہدایہ ہماں مذہب اہل ظاہر نقل بالتصریح فرمودہ اند کما قال في فتاوی قاضي خاں وقال الامام الہمام الشافعي الحرمة لا تثبت في جانب الاب والفقهاء يسمون هذه المسألة لبن الفحل 2 وقال في الهداية وفى احد قول الشافعي لبن الفحل لا يحرم لان الحرمة لشبهة البعضية واللبن بعضها لابحضه 3 ہر گاہ از دلائل کتب فقہائے حنفیہ مبین و مبرہن گردید کہ تزویج قاسم نامی نزد علمائے حنفی روا و درست گردیدہ وازاں مذہب حنفی بیروں

[اردو ترجمہ و وضاحت] اور شامی نے کہا کہ اور اس کی نظیر وہ ہے جس کو علامہ بیري نے اشباہ پر اپنی شرح کے ابتدا میں ہدایہ کی شرح سے نقل کیا یہ شرح ابن شحنہ کی ہے جس کی عبارت یہ ہے کہ جب حدیث صحیح ہے جو کہ مذہب کے مخالف ہے تو عمل حدیث پر ہوگا، ___ اور یہی امام کا مذہب ہوگا اور اس حدیث پر عمل سے مقلد ، امام صاحب کی تقلید سے خارج نہ ہوگا کیونکہ امام ابو حنیفہ سے صحیح ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا : جب حدیث صحیح ہو تو وہ میرا مذہب ہے ، اس کو ابن عبدالبر نے امام ابو حنیفہ اور دیگر ائمہ سے نقل کیا ہے الخ ، قاضی خان اور صاحب ہدایہ نے اہل ظاہر کا مذہب صراحتہً یہی ذکر کیا ہے جیسا کہ فتاویٰ قاضی خاں میں کہا کہ امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ باپ کی جانب سے رضاعت کی حرمت ثابت نہیں کرتے، اور فقہاء کرام نے اس مسئلہ کو " لبن الفحل " (خاوند کا دودھ) کا عنوان دیا ہے ، اور ہدایہ میں کہا کہ امام

شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ کے ایک قول میں رضاعی باپ حرام نہیں ہوتا کیونکہ رضاعت میں حرمت جزئیت کی وجہ سے ہوتی ہے جبکہ دودھ عورت کا جز ہے مرد کا نہیں ، بہر حال حنفی فقہ کی کتب میں مذکور دلائل سے ثابت ہے کہ قاسم نامی شخص کا مذکورہ نکاح درست ہو جاتا ہے اور اس کو درست ماننے سے حنفی مذہب

1 رد المحتار مطلب صح عن الامام انه قال اذ صح الحديث فهو مذهبي احياء التراث بيروت ۴۶/۱ 2 فتاویٰ قاضی خاں باب الرضاع نولکشور لکھنو ۱۸۹/۱ 3 الھدایہ باب الرضاع مکتبہ عربیہ کراچی ۳۳۱/۲

Fatawa-e-Razavia, Volume 11

[Left Column - Persian Source] ...did not come; despite that, if the community of Muslims opens their tongues in taunting and cursing against him, then they will be held accountable before Allah and deserve punishment among people, as it is in the books of Fiqh (jurisprudence): "Whoever harms a Muslim by word, deed, or even by a wink of the eye, shall be disciplined (Ta'zir)." Thus, as long as they do not repent and return, they should be excluded from eating and drinking with the community of Muslims, as it has been narrated: "Beware only of the company of the wicked." And Allah Almighty knows best, and His knowledge is the most perfect. Our last call is: "Praise be to Allah, the Lord of the worlds, and peace and blessings be upon the Leader of the Messengers, and upon his family and all his companions, by Your mercy, O Most Merciful of the merciful."

[Right Column - Urdu Translation] ...it does not necessarily follow that he is outside [the fold]. Despite this, if Muslims use derogatory and cursing language against him, they will be criminals before Allah and will be deserving of punishment by law, as stated in the books of jurisprudence that if someone harms a Muslim by their word, deed, or gesture, they are liable for punishment. Therefore, as long as such people do not repent and turn back, it is prohibited to eat and drink with them, as it is narrated: "Avoid the company of the wicked." Only Allah Almighty knows best. The knowledge of Him (Glorified is His Majesty) is complete. Our final word is that: Praise be to Allah, Lord of the worlds, and peace and blessings be upon the Master of the Messengers and his family and all his companions, through Your mercy, O Most Merciful of the merciful. (T)

Written by the most humble and insignificant, Muhammad Azimuddin Kyokatwi Bihar Yarvi, son of Al-Huda Sheikh Akbar Ali (may he be preserved), founder of the mosque and manager of Madrasa Islamia, Mohalla Wai.

ANOTHER WRITING IN SUPPORT THEREOF

[Left Column - Persian Source] Yes, the schools of the four Imams are all based on truth, and truth revolves within them. Even if an absolute Mujtahid (independent jurist) or a pure follower (Muqallid) performs an action or deed and makes a judgment according to their school of thought, and it is later realized that it contradicts their own school but conforms to another school counted among the Sunnah and the Community (Ahl-e-Sunnat wa Jama'at), then having mistakenly adhered to their view, the Hanafi jurists do not permit invalidating or annulling it

again, so as not to cause the belittling and denigration of the schools of the Imams of the Sunnah and the Community.

[Right Column - Urdu Translation] Yes, all four schools of thought are true, and truth revolves within them. If an absolute Mujtahid or a pure follower performs an action or deed while making a decision according to their school, and it is later found that it is contrary to his school but conforms to another's school, and this other school is considered among the Ahl-e-Sunnat, then the Hanafi jurists do not consider it permissible to invalidate or annul this decision, so that the belittling and denigration of the honorable Imams of the Ahl-e-Sunnat wa Jama'at...

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Disciplinary Punishment, Mujtabai Delhi, 1/327.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी स्रोत] ...नहीं आया; इसके बावजूद अगर मुसलमानों का समुदाय उसके विरुद्ध अपनी जुबान से लानत-मलामत और अपशब्द कहे, तो वे अल्लाह के पास जवाबदेह होंगे और लोगों के बीच सज़ा के पात्र होंगे, जैसा कि फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) की किताबों में है: "जिसने किसी मुसलमान को वाणी, कर्म या आँखों के इशारे से कष्ट पहुँचाया, उसे दंडित (ताज़ीर) किया जाना चाहिए।" अतः, जब तक वे तौबा कर वापस नहीं लौटते, उन्हें मुसलमानों के समुदाय के साथ खाने-पीने से अलग रखा जाना चाहिए, जैसा कि वर्णित है: "केवल दुष्टों की संगति से बचो।" और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण है। हमारी अंतिम पुकार है: "तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहाँ का रब है, और शांति और कृपा हो संदेशवाहकों के सरदार पर, उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर, तेरी दया के माध्यम से, हे दयालुओ में सबसे दयालु।"

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] ...उससे बाहर होना ज़रूरी नहीं आता। इसके बावजूद अगर मुसलमान उस पर लानत-मलामत करेंगे, तो वे अल्लाह के पास गुनहगार होंगे और कानून में सज़ा के हकदार होंगे, जैसा कि फ़िक़्ह की किताबों में है कि यदि किसी ने मुसलमान को अपनी बात, काम या इशारे से तकलीफ दी तो वह सज़ा के योग्य है। इसलिए ऐसे लोग जब तक तौबा और रुजू न करें, तो उनके साथ मिल कर खाना-पीना मना है, जैसा कि उल्लेख है कि "शरीर (दुष्ट) की मजलिस से बचो।" केवल अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। उस (जल मजदहू) का ज्ञान पूर्ण है। हमारी आखिरी बात यह है कि: तमाम तारीफ अल्लाह के लिए जो सारे जहाँ का रब है, और सलात और सलाम हो सैयदुल मुरसलीन पर और उनकी आल और उनके तमाम असहाब पर, तेरी रहमत के सदक़े ऐ सबसे बड़े रहम करने वाले। (त)

लेखक - तुच्छ और दीन, मुहम्मद अज़ीमुद्दीन कियोकतवी बिहार यारवी, पुत्र अल-हुदा शेख अकबर अली (सलामत रहें), मस्जिद के संस्थापक और मदरसा इस्लामिया, मोहल्ला वई के प्रबंधक।

इसके समर्थन में एक अन्य लेख

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी स्रोत] हाँ, चारों इमामों के मज़हब (पंथ) पूर्णतः सत्य पर आधारित हैं, और सत्य उन्हीं में निहित है। यदि कोई मुजतहिद-ए-मुतलक़ (स्वतंत्र विधिवेत्ता) या केवल मुक़ल्लिद (अनुयायी) अपने मज़हब के अनुसार कोई कार्य या निर्णय करता है, और बाद में पता चलता है कि वह उनके अपने मज़हब के खिलाफ है लेकिन अहले सुन्नत व जमात में गिने जाने वाले किसी अन्य मज़हब के

अनुकूल है, तो अपनी गलत धारणा के कारण उसे मान लेने के बाद, हनफ़ी फ़ुक़्हा (विधिवेत्ता) उसे फिर से निरस्त या अमान्य करना जायज़ नहीं समझते, ताकि अहले सुन्नत व जमात के इमामों के मज़हबों की तौहीन और अनादर न हो।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] हाँ, चारों मज़हब हक़ हैं और हक़ उन्हीं में दायर है, अगर कोई मुजतहिद-ए-मुतलक़ या मुक़ल्लिद-ए-महज़ उनके मज़हब पर कोई अमल या फ़ैल करते हुए फैसला करे और बाद में मालूम हो जाए कि उसके मज़हब के मुख़ालिफ है और दूसरे के मज़हब के मुवाफ़िक़ है और यह दूसरा मज़हब अहले सुन्नत में शुमार हो, तो इस फैसले को फ़ुक़्हा-ए-हनफ़िया बातिल और फ़ासिद करना जायज़ नहीं करते ताकि अहले सुन्नत व जमात के अइम्मा-ए-किराम की तहक़ीर और तश्फ़ी...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब-अत-ताज़ीर, मुजतबाई दिल्ली, 1/327।

पृष्ठ 477/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

نہ آمدہ باوجود آں اگر جماعت مسلمین بروے زبان طعن و لعن بہ کشایند پس عند اللہ ماخوذ شوند عند الناس مستحق سزا کما ھو في کتب الفقه من اذی مسلما بقول او بفعل ولو بغمز العین عزر پس ایشاں مادامیکہ تائب و آئب نہ شوند از مواکلت و مشاربت جماعت مسلمین خارج کردہ شوند چنانچہ وارد شدہ کہ ایاک و مجالسة الشریر فقط واللہ تعالی اعلم وعلمہ احکم وآخر دعونا ان الحمد للہ رب العالمین والصلوة والسلام علی سید المرسلین وآلہ وصحبہ اجمعین برحمتك یا ارحم الراحمین۔

سے خارج ہونا لازم نہیں آتا۔ اس کے باوجود اگر مسلمان اس پر لعن طعن کریں گے تو عند اللہ مجرم ہوں گے اور قانون میں سزا کے مستحق ہوں گے جیسا کہ کتب فقہ میں ہے کہ اگر کسی نے مسلمان کو اپنے قول، فعل یا اشارہ سے اذیت دی تو وہ قابلِ سزا ہے، پس ایسے لوگ جب تک توبہ اور رجوع نہ کریں تو ان سے مل کر کھانا پینا منع ہے جیسا کہ وارد ہے کہ "شریر کی مجلس سے بچو" فقط واللہ تعالٰی اعلم۔ اس جل مجدہ کا علم کامل ہے۔ ہماری آخری بات یہ ہے کہ الحمد للہ رب العالمین، والصلوة والسلام علی سید المرسلین و آلہ وصحبہ اجمعین برحمتک یا ارحم الراحمین۔ (ت)

الراقم احقر الحقیر محمد عظیم الدین کیوکتوی بہار یاروی خلف الہدی شیخ اکبر علی سلمہ، بانی مسجد مہتمم مدرسہ اسلامیہ محلہ وی۔

تحریر دیگر تائید آں آرے مذاہب ائمہ اربعہ جملگی در حق ست و حق ہماں دائر ست اگر چہ مجتہد مطلق یا مقلد محض بہ مذہب شان عملے و فعلے قضا کند بعدہ دانستہ کہ مخالف مذہب شان و موافق مذہب دیگرے کہ معدود بسنت جماعت ست بخطائے ظن شاں ملصق گشتہ فقہائے احناف روا نمی دارند کہ بار دیگر آں را ابطال و افساد کنند تا موجب تحقیر و تشفیر بمذاہب ائمہ سنت جماعت

ہاں چاروں مذہب حق ہیں اور حق انہی میں دائر ہے، اگر کوئی مجتہد مطلق یا مقلد محض ان کے مذہب پر کوئی عمل یا فعل کرتے ہوئے فیصلہ کرے اور بعد میں معلوم ہو جائے کہ اس کے مذہب کے مخالف ہے اور دوسرے کے مذہب کے موافق ہے اور یہ دوسرا مذہب اہل سنت میں شمار ہو تو اس فیصلہ کو فقہائے احناف باطل و فاسد کرنا جائز نہیں کرتے تاکہ اہل سنت و جماعت کے ائمہ کرام کی تحقیر و تشفیع

---

1 در مختار باب التعزیر مجتبائی دہلی ۳۲۷/۱

[Left Column Text] It should not be necessary; that would be a great error and immense wrath in the sight of Allah Almighty, therefore know this. For this reason, they refused and denied. It has been narrated in histories with an authentic report that once in the noble gathering of the Leader of Saints, Ghaus al-Azam Shaikh Muhiyuddin Abdul Qadir Jilani (may Allah Almighty be pleased with him), someone mentioned that Imam Ahmad bin Hanbal does not have such a high rank in Ijtihad (independent legal reasoning), therefore his followers are few in number. Upon hearing this, the Leader of Saints (may Allah be pleased with him) showed signs of displeasure on his forehead and became majestic (holy anger), saying: "From this date, Abdul Qadir has adopted the following (Taqleed) of the school of Ahmad bin Hanbal (may Allah be pleased with him), whereas previously he followed the school of Imam Malik." Glory be to Allah! How great is His Majesty, and how magnificent is their status! And the Pride of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding the four Imams (mercy from Allah and vastness from Allah be upon them), and Imam Suyuti narrated from Umar bin Abdul Aziz: "The disagreement among the Imams of guidance is a mercy from Allah Almighty upon this Ummah; everyone follows what they deem correct, and all of them are upon guidance, and all seek Allah's pleasure." This is fully detailed in 'Kashf al-Khafa'. Thus, the marriage of Qasim is considered valid according to Hanafi jurists, even if, for the sake of argument, it occurred against his school of thought, and he did not exit from Hanafism either, as the respondent wrote. May Allah grant him reward and benefit for it. I have looked at this fatwa with deep consideration and searched through the pages of Hanafi jurisprudence books, and I found it correct.

[Right Column Text] It should not be necessary; and to call this decision wrong is a great sin in the sight of Allah. For this reason, the noble scholars avoid doing so. There is an authentic narration in history that in the noble gathering of the Leader of Saints, Ghaus al-Azam Shaikh Muhiyuddin Abdul Qadir Jilani (may Allah Almighty be pleased with him), a person mentioned that Imam Ahmad bin Hanbal (may Allah Almighty be pleased with him) does not have any significant position in Ijtihad; this is why the number of his followers is very small. Upon hearing this, the Leader of Saints immediately became majestic and declared: "I (Abdul Qadir) from today am becoming a follower of Imam Ahmad bin Hanbal," whereas he was previously a follower of Imam Malik (may Allah be pleased with him). Subhan Allah! His status is greatest and most magnificent. The Pride of the World (peace and blessings of Allah

Almighty be upon him) said regarding the four Imams (may Allah's mercy and vastness be upon them), which Imam Suyuti narrated from Umar bin Abdul Aziz: "The disagreement of the Imams of guidance is a mercy of Allah Almighty for this Ummah; everyone adopted what they perceived as correct, and all Imams are on guidance, and all are seekers of the pleasure of Allah Almighty." The complete account of this is in 'Kashf al-Khafa'. Therefore, the marriage of the aforementioned Qasim is correct according to Hanafi jurists, even if hypothetically it is against his school of thought, and it does not result in leaving Hanafism either, as the respondent has written. May Allah Almighty grant him its reward and benefit. I have seen this fatwa with a deep eye and scrutinized it in the books of jurisprudence; I found it correctly in accordance with the Quran and deserving of reward.

[बायां कॉलम] यह आवश्यक नहीं होना चाहिए; अल्लाह तआला के निकट यह एक बड़ी त्रुटि और भारी प्रकोप होगा, इसलिए जान लें। इसी कारण उन्होंने इनकार किया और मना किया। इतिहास में प्रामाणिक रिवायतों के साथ यह वर्णित है कि एक बार पीरान-ए-पीर गौस-ए-आजम शेख मुहियुद्दीन अब्दुल कादिर जिलानी (अल्लाह तआला उन पर प्रसन्न हो) की पाक महफ़िल में किसी ने जिक्र किया कि इमाम अहमद बिन हंबल का इज्तिहाद (स्वतंत्र कानूनी तर्क) में ऐसा कोई ऊँचा स्थान नहीं है, इसीलिए उनके अनुयायी कम संख्या में हैं। यह सुनते ही पीरान-ए-पीर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के माथे पर बल पड़ गए और वे जलाल (पवित्र क्रोध) में आ गए, और फरमाया: "आज की तारीख से अब्दुल कादिर ने अहमद बिन हंबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) की पैरवी (तक़लीद) अख्तियार कर ली है," जबकि इससे पहले वे इमाम मालिक के अनुयायी थे। सुभान अल्लाह! उनकी शान कितनी महान है, और उनका रुतबा कितना बड़ा है! और फख्र-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चार इमामों (उन पर अल्लाह की रहमत और विस्तार हो) की शान में फरमाया, और इमाम सुयूती ने उमर बिन अब्दुल अजीज से रिवायत की: "हिदायत के इमामों का मतभेद इस उम्मत के लिए अल्लाह तआला की रहमत है; हर कोई उसका पालन करता है जिसे वह सही समझता है, और वे सभी हिदायत पर हैं, और सभी अल्लाह की रज़ा चाहते हैं।" इसका पूरा विवरण 'कश्फ़ अल-खफ़ा' में है। अत; कासिम का निकाह हनफी फकीहों के अनुसार सही है, भले ही वह मान लिया जाए कि उसके पंथ के खिलाफ हुआ है, और वह हनफियत से भी बाहर नहीं निकलता, जैसा कि उत्तरदाता ने लिखा है। अल्लाह उसे इसका फल और लाभ प्रदान करे। मैंने इस फतवे को गहरी नज़र से देखा और हनफी फिकह की किताबों के पन्नों में इसकी छानबीन की, और इसे सही पाया।

[दायां कॉलम] यह आवश्यक नहीं होना चाहिए; और इस निर्णय को गलत कहना अल्लाह के निकट बड़ा पाप है। इसलिए, उलेमा-ए-किराम इससे बचते हैं। इतिहास में सही रिवायत मौजूद है कि हजरत पीरान-ए-पीर गौस-ए-आजम शेख मुहियुद्दीन अब्दुल कादिर जिलानी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की मजलिस में एक व्यक्ति ने उल्लेख किया कि इमाम अहमद बिन हंबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) का इज्तिहाद में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है; यही कारण है कि उनके अनुयायियों की संख्या बहुत कम है। हजरत पीरान-ए-पीर सुनते ही जलाल में आ गए और फरमाया कि मैं (अब्दुल कादिर) आज से इमाम अहमद बिन हंबल का मुक़ल्लिद हो रहा हूँ जबकि आप पहले इमाम मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मुक़ल्लिद थे। सुभान अल्लाह! उनकी शान आज़म और अकबर है। फख्र-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने

चार इमामों (अल्लाह तआला की रहमत और विस्तार हो उन पर) की शान में फरमाया जिसे इमाम सुयूती ने उमर बिन अब्दुल अजीज से रिवायत किया है कि हिदायत के इमामों का मतभेद अल्लाह तआला की रहमत है इस उम्मत के लिए; हर एक ने जिसे सही समझा वही उसने अपनाया, और तमाम इमाम हिदायत पर हैं, और तमाम अल्लाह तआला की रज़ा के तालिब हैं। इसका पूरा विवरण 'कश्फ़ अल-खफ़ा' में है। इसलिए उपर्युक्त कासिम का निकाह हनफी फकीहों के अनुसार दुरुस्त है, भले ही मान लिया जाए कि पंथ के खिलाफ है और हनफियत से भी बाहर नहीं होता जैसा कि मुजीब (उत्तरदाता) ने लिखा है। अल्लाह तआला इसका अज्र और नफा उसे अता फरमाए। मैंने इस फतवे को गहरी नज़र से देखा और फिकह की किताबों में इसकी छानबीन की तो मैंने इसे कुरान के मुताबिक सही और सवाब (पुण्य) के योग्य पाया।

पृष्ठ ४७८/७३९

[بایاں کالم] لازم نیاید آں خطائے عظیم و سخط جسیم باشد عنداللہ تعالیٰ لہٰذا اعلموا زاں ابا وانکار فرمودند و در تواریخ بروایت صحیح مروی شدہ کہ بارے در مجلس شریف حضرت پیرانِ پیر غوث الاعظم شیخ محی الدین عبدالقادر جیلانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ از کسے مذکور شدہ بود کہ امام احمد حنبل در اجتہاد پایہ چنداں ندارند لہٰذا در مذہب شان جماعت قلیل دارند بمجرد استماع آں حضرت پیرانِ پیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ چیں بر جبیں آوردہ و غضبناک شدہ فرمودند کہ ازیں تاریخ عبد القادر بمذہب احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ تقلید نمودہ پیش ازیں بمذہب امام مالک بودند سبحان اللہ ما اعظم شانہ وما اکبر شانھم وفخر عالم صلی اللہ علیہ وسلم درشان ائمہ اربعہ رحمۃ من اللہ ووسعۃ من اللہ فرمودند ونقل السیوطی عن عمر بن عبدالعزیز اختلاف ائمۃ الہدی رحمۃ من اللہ تعالی علی ھذہ الامۃ کل یتبع ماصح عندہ وکلھم علی ھدی وکل یرید اللہ وتمامہ فی کشف الخفاء، پس تزوج قاسم نزد فقہائے حنفی بہ صحیح آوردہ اگرچہ بالفرض مخالف مذہبی روئے دادہ واضحفیت نیز بیروں نیامدہ کما حررہ المجیب للہ درہ واجرہ ولقد نظرت ھذا الفتوی بامعان النظر وتصفحت ھذہ المسألۃ بصفحات الکتب الفقھیۃ الحنفیۃ فوجدت صحیحاً

[دایاں کالم] لازم نہ آئے، اور اس فیصلہ کو غلط کہنا عنداللہ بڑا گناہ ہے اس لیے علمائے کرام اس سے پرہیز کرتے ہیں، تاریخ میں صحیح روایت موجود ہے کہ حضرت پیر پیران غوث الاعظم شیخ محی الدین عبدالقادر جیلانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں ایک شخص نے ذکر کیا کہ امام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا اجتہاد میں کوئی اہم مقام نہیں ہے یہی وجہ ہے کہ ان کے مقلدین کی تعداد بہت کم ہے، حضرت پیر پیران سنتے ہی جلال میں آگئے اور فرمایا کہ میں (عبد القادر) آج سے امام احمد بن حنبل کا مقلد ہو رہا ہوں جبکہ آپ پہلے امام مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ

کے مقلد تھے ، سبحان اللہ! اس کی شان اعظم واکبر ہے ، فخر عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ائمہ اربعہ (اللہ تعالیٰ کی رحمت و وسعت ہو ان پر) کی شان میں فرمایا جس کو امام سیوطی نے نقل فرمایا کہ عمر بن عبدالعزیز سے روایت ہے کہ ہدایت کے اماموں کا اختلاف اللہ تعالیٰ کی رحمت ہے اس امت کے لیے، ہر ایک نے جس کو صحیح سمجھا وہی اس نے اپنایا، اور تمام ائمہ ہدایت پر ہیں، اور تمام اللہ تعالیٰ کی رضا کے طالب ہیں، اس کا تمام بیان کشف الخفاء میں ہے۔ لہٰذا قاسم مذکور کا نکاح حنفی فقہاء کے نزدیک درست ہے اگرچہ بالفرض مذہب کے مخالف ہے اور حنفیت سے بھی خارج نہیں ہوتا جیسا کہ مجیب نے تحریر کیا ہے اس کا اجر و نفع اللہ تعالیٰ اس کو عطا فرمائے، میں نے اس فتویٰ کو گہری نظر سے دیکھا اور فقہ کی کتب میں اس کی میں نے چھان بین کی تو میں نے اس کو صحیح مطابق قرآن اور موافق ثواب پایا ہے

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

In accordance with the Book and conforming to the truth. And Allah knows best the reality of the situation, and to Him is the return and final destination. Written by the humble servant, hoping for the mercy of his Creator, Abdul Razzaq Al-Kaikotwi, may he be forgiven. And Allah Almighty knows the truth best, and the return is to Him. This was written by Abdul Razzaq Al-Kaikotwi, who hopes for the mercy of Allah Almighty. (T)

The Answer: This is all extreme ignorance, far-reaching misguidance, and a slander against the glorious Shari'ah. Marriage to a brother's granddaughter is exactly like marriage to one's own daughter, whether by blood or fosterage. It is definitively forbidden (haram qat'i) by the consensus of the leaders of the religion, the text of the clear Quran, and the authentic Hadiths of the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him and his companions). Attributing its permissibility to Imam Shafi'i or any other leader of the Muslims is a pure error. Those Bengalis who issued a fatwa of its permissibility were not scholars; they were a thousand times worse than the ignorant. Those who implemented their cursed fatwa made what Allah has forbidden permissible. Similarly, those who confirmed it have confirmed the most forbidden of things. It is mentioned in the noble Hadith: "Whoever gives a fatwa without knowledge, the angels of the heavens and the earth curse him." Therefore, both those who gave this fatwa and those who implemented it are cursed. Repentance is obligatory for the ruling authorities and the muftis who implemented it. Otherwise, it is necessary for Muslims to boycott them, and it is forbidden to seek any fatwa from them in the future. The Prophet (peace and blessings be upon him) said: "People will take the ignorant as leaders, so when they are asked..."

---

1. Kanz al-Ummal, Ibn Asakir from Ali, Hadith 29018, Muassasah al-Risalah, Beirut, 10/193. Page 479 of 739

किताब (क़ुरान) के अनुसार और सत्य के अनुरूप। और अल्लाह ही वास्तविकता को सबसे अच्छी तरह जानता है, और उसी की ओर लौटना और ठिकाना है। इसे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार बंदे अब्दुल रज़्ज़ाक़ अल-कैकतवी (अल्लाह उन्हें माफ़ करे) ने लिखा है। और अल्लाह तआला ही हक़ीक़त को ज़्यादा बेहतर जानता है और उसी की तरफ़ रुजू (वापसी) है। इसे अल्लाह तआला की रहमत के उम्मीदवार अब्दुल रज़्ज़ाक़ कैकतवी (अल्लाह उन्हें माफ़ करे) ने लिखा है। (त)

जवाब: यह सब घोर अज्ञानता, भारी गुमराह और शरीअत पर इफ़्तरा (झूठ) है। भाई की नवांसी (नाती) से निकाह करना वैसा ही है जैसे अपनी बेटी से निकाह करना, चाहे वह रिश्ता ख़ून का हो या दूध का (रज़ाई)। क़ुरान, हदीस और उलेमा की सहमति (इज्मा) से यह पूरी तरह हराम है। इस निकाह को जायज़ बताना इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि या मुसलमानों के किसी अन्य इमाम की ओर करना सरासर ग़लत है। जिन बंगालियों ने इसके जायज़ होने का फ़तवा दिया, वे विद्वान नहीं थे बल्कि अज्ञानियों से हज़ार गुना बदतर थे। जिन्होंने इस लानती फ़तवे को लागू किया, उन्होंने अल्लाह के हराम किए हुए को हलाल कर दिया। इसी तरह जिन लोगों ने इसकी पुष्टि की, उन्होंने सबसे बड़े हराम की पुष्टि की। हदीस शरीफ़ में है कि जिसने बिना ज्ञान के फ़तवा दिया, उस पर ज़मीन और आसमान के फ़रिश्ते लानत भेजते हैं। इसलिए जिन्होंने यह फ़तवा दिया और जिन्होंने इसे लागू किया, दोनों लानती हैं। लागू करने वाले हाकिमों और मुफ़्तियों पर तौबा (प्रायश्चित) फ़र्ज़ है, वरना मुसलमानों को चाहिए कि वे उनका बहिष्कार करें और भविष्य में उनसे कोई फ़तवा न माँगें, यह हराम है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि लोग जाहिलों को अपना रहनुमा (मार्गदर्शक) बना लेंगे, तो जब उनसे सवाल किया जाएगा...

---

1. कंजुल उम्माल, इब्न असाकिर, हज़रत अली से रिवायत, हदीस 29018, मुअस्ससतुर रिसाला, बैरुत, 10/193। पृष्ठ 479/739

مطابقاً بالکتاب وموافقاً للصواب واللہ اعلم بحقیقۃ الحال والیہ المرجع والمآل - کتبہ الحقیر الراجی الی رحمۃ ربہ الخلاق عبدالرزاق الکیوکوتوی غفرلہ - اور اللہ تعالیٰ ہی حقیقت زیادہ جانتا ہے اور اس کی طرف رجوع ہے ، اس کو اللہ تعالیٰ کی رحمت کے امیدوار عبد الرزاق کیوکوتوی غفرلہ ، نے لکھا ہے ۔ (ت)

الجواب: یہ تمام شدید جہالت اور انتہائی گمراہی ہے اور شریعت پر افتراء ہے، بھائی کی نواسی سے نکاح ایسے ہے جیسا کہ اپنی بیٹی سے، نواسی نسبی ہو یا رضاعی، اور قرآن و حدیث اور اجماع سے یہ حرام قطعی ہے، اس کے جواز کی نسبت امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ یا کسی اور امام المسلمین کی طرف کرنا خطائے محض ہے اور جن بنگالیوں نے اس کے جواز کا فتوی دیا ہے وہ عالم نہیں بلکہ ہزار درجہ جاہلوں سے بھی بدتر ہیں، جنھوں نے یہ ملعون فتوی نافذ کیا انھوں نے اللہ تعالیٰ کے حرام کو حلال کیا اور اسی طرح وہ حضرات جنھوں نے اس کی تصدیق کی انھوں نے حرام ترین کی تصدیق کی، حدیث شریف میں ہے کہ جس نے علم کے بغیر فتوی دیا اس پر زمین و آسمان کے فرشتے لعنت کرتے ہیں لہٰذا جنھوں نے یہ فتوی دیا اور جنھوں نے اس کو نافذ کیا دونوں ملعون ہیں، نافذ کرنے والے حاکم اور مفتیوں پر توبہ فرض ہے ورنہ مسلمانوں کو چاہئے کہ وہ ان سے بائیکاٹ کریں اور آئندہ ان سے کوئی فتوی طلب کرنا حرام ہے، حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا ہے کہ لوگ جاہلوں کو رہنما بنائیں گے تو جب ان سے سوال

---

۱ کنز العمال ابن عساکر عن علی حدیث ۲۹۰۱۸ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۰/۱۹۳ Page 479 of 739

“...then they issued fatwas without knowledge, so they went astray and led others astray.” (1) These muftis do not fear God when saying that this is well-wishing. To make what Allah has forbidden permissible and to justify adultery between a father and daughter is no easy task; absolutely not. And whoever warned them about this grave misguidance deserves gratitude, not complaint. And Allah guides whom He wills to a straight path. (2) It is obligatory upon that adulterous man to immediately release the girl from his possession and separate from her. And it is mandatory for the married woman who was committed adultery with to immediately flee from the adultery of her (milk-) father according to her capacity and choose separation, otherwise, both of them and all those who implemented and legalized this marriage should await the severe punishment of Allah. We ask Allah for well-being and forgiveness, and there is no power or strength except with Allah, the Most High, the Most Great. One of the two eminent Shaykhs of the Shafi'i school, Imam Abu Zakariya Nawawi, whose legal text is like that of Imam Shafi'i (may Allah be pleased with them), states in the commentary of Sahih Muslim: “As for the man to whom that milk is attributed because he is the husband of the woman, or he had intercourse by right of ownership or by semblance, then our school of thought and the school of all scholars is the establishment of the prohibition of nursing between him and the nursing child...”

---

(1) Sahih Bukhari, Kitab al-Ilm, Chapter: How Knowledge is Taken Away, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/40 (2) Al-Quran al-Karim, 2/213 Page 480 of 739

फ़तावा रज़विया - खंड 11

“...फिर उन्होंने बिना ज्ञान के फतवे दिए, जिससे वे स्वयं गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया।” (1) इन मुफ़्तियों को यह कहते हुए खुदा का खौफ नहीं कि यह खैरख्वाही (भलाई) है। अल्लाह के हराम किए हुए को हलाल बनाना और बाप-बेटी के बीच ज़िना (अवैध संबंध) को जायज़ करना कोई आसान काम नहीं है; हरगिज़ नहीं। और जिस व्यक्ति ने उन्हें इस गंभीर गुमराह पर सचेत किया, वह शुक्रिया का हक़दार है न कि शिकायत का। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत देता है। (2) उस ज़िना करने वाले मर्द पर फ़र्ज़ है कि वह फौरन लड़की को अपने कब्ज़े से आज़ाद कर दे और अलग हो जाए। और उस विवाहित स्त्री जिस से ज़िना हुआ, उस पर लाज़िम है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपने (रज़ाई) बाप के ज़िना से फौरन बचे और जुदाई अख्तियार करे, वरना वे दोनों और इस निकाह को लागू करने वाले और इसे जायज़ बताने वाले सब अल्लाह तआला के सख्त अज़ाब का इंतज़ार करें। हम अल्लाह तआला से आफियत और माफी का सवाल करते हैं, 'वला हौला वला.कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम'। शाफई मसलक के दो प्रमुख शैखों में से एक प्रतिष्ठित इमाम अबू ज़करिया नववी, जिनका स्पष्ट कथन (नस्स) इमाम शाफई रहमतुल्लाही अलैहि के कथन के समान है, उन्होंने 'शरह मुस्लिम शरीफ' में फरमाया है: “रहा वह शख्स जिसकी ओर वह दूध मंसूब (संबद्ध) है क्योंकि वह उस औरत का पति है या दासी का मालिक है या शुबा-ए-वत्ई (संदेहात्मक सहवास) के कारण, तो उसके बारे में हमारा और तमाम उलेमा का मज़हब है कि उसके और दूध पीने वाले बच्चे के बीच हुरमत-ए-रज़ात (दूध के रिश्ते की मनाही) साबित है...”

---

(1) सहीह बुखारी, किताब अल-इल्म, अध्याय: इल्म कैसे छीना जाएगा, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/40 (2) अल-कुरान अल-करीम, 2/213 पेज 480/739

”کیا جائے گا تو بغیر علم فتویٰ دیں گے خود بھی گمراہ ہوں گے اور لوگوں کو بھی گمراہ کر دیں گے۔“ (1) ان مفتیوں کو یہ کہتے ہوئے خوفِ خدا نہیں کہ یہ خیر خواہی ہے، اللہ تعالیٰ کے حرام کردہ کو حلال بنانا اور باپ بیٹی سے زنا کو جائز کرنا کوئی آسان کام ہے، ہرگز نہیں، اور جس شخص نے ان کی اس گمراہی پر تنبیہ کی وہ شکریہ کا مستحق ہے نہ کہ شکایت کا، اور اللہ تعالیٰ جس کو چاہتا ہے سیدھے راستے کی ہدایت عطا فرماتا ہے، اس نکاح کرنے والے زانی پر فرض ہے کہ وہ فوراً لڑکی کو آزاد کر دے اور جدائی اختیار کرے، اور منکوحہ مزنیہ پر لازم ہے کہ اپنی توفیق کے مطابق رضاعی باپ کے زنا سے فوراً بچے اور جدائی اختیار کرے ورنہ یہ دونوں اور نکاح کو نافذ کرنے والے اور جائز کرنے والے سب اللہ تعالیٰ کے شدید عذاب کا انتظار کریں، ہم اللہ تعالیٰ سے عافیت اور معافی کا سوال کرتے ہیں ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ شافعی مسلک کے شیخین میں سے ایک برگزیدہ امام ابو زکریا نووی جن کی نص امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ کے منصوص کی طرح ہے، انھوں نے شرح مسلم شریف میں فرمایا ہے کہ: ”اما رجل المنسوب ذلک اللبن الیہ لکونہ زوج المرآۃ او وطئھا بملک او شبہۃ فمذھبنا و مذھب العلماء کافۃ ثبوت حرمۃ الرضاعۃ بینہ و بین الرضیع“ (ترجمہ: رہا وہ شخص جس کی طرف یہ دودھ منسوب ہے کیونکہ وہ عورت کا خاوند ہے یا لونڈی کا مالک یا شبہ وطی کی ہے تو اس کے متعلق ہمارا اور تمام علماء کا مذہب ہے کہ اس کے اور دودھ پینے والے بچے کے درمیان حرمتِ رضاعت ثابت ہے...)

---

(1) صحیح بخاری کتاب العلم باب کیف یقبض العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۰ (2) القرآن الکریم ۲/۲۱۳ صفحہ ۴۸۰ از ۷۳۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

[Arabic Quote]: And he becomes his father by fosterage (rada'ah), and the man's children become the foster child's brothers and sisters. And the man's brothers become the foster child's paternal uncles, and his sisters become paternal aunts. And the foster child's children are considered the man's children. No one has disagreed on this except the People of Appearance (Ahl az-Zahir) and Ibn Aliyya. [1]

[Left Column]: This is a clear statement from the Shafi'i leaders, showing that our school of thought and that of all scholars is prohibition. No one has opposed this except the Zahiri sect and Ibn Aliyya. It's surprising that the respondent quoted Imam Nawawi's aforementioned statement that "there is no disagreement on this... etc." from here, but hid the clear statement where he said our school of thought and the school of all scholars is prohibition. Furthermore, he wrongly counted Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him) among the Ahl az-Zahir, whereas the Zahiri sect is a group opposed to the Four Imams and all other mujtahids. Shah Abdul Aziz Sahib said that counting Dawud az-Zahiri and his followers among the Ahl as-Sunnah wa al-Jama'ah is the height of ignorance and foolishness. The Rafidites (Shiites), by taking the Zahiris as Sunnis, used their statements to object to the Ahl as-Sunnah. Shah Sahib replied to them that the Zahiri sect is never from the Ahl as-Sunnah; it is your ignorance and foolishness that you take them as Sunnis and taunt Sunnis. Imam Ibn Hajar Makki Shafi'i says in 'Kaff al-Ra'a'': "And know..."

[Right Column]: Fosterage (rada'ah) prohibition was established, and he will be the father of this child, and his other children will be the child's brothers and sisters. That person's own brothers and sisters will be paternal uncles and aunts for this child, and this child's children will be considered that person's children. No one besides Ahl az-Zahir and Ibn Aliyya disagrees with this. There is a clear statement from the Imam of the Shafi'is that we and all scholars agree on this text and this is our school of thought; no one besides the Zahiri sect and Ibn Aliyya has opposed it. It is surprising that the respondent quoted only the part of Imam Nawawi's text that says "did not oppose," and hid the preceding part which says "the school of thought of all our scholars is prohibition." Then, he wrongly counted Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) among the Ahl az-Zahir, whereas the Zahiri sect is opposed to all mujtahid Imams. Shah Abdul Aziz (may Allah have mercy on him) said that counting Dawud az-Zahiri and his followers among the Ahl as-Sunnah is extreme ignorance. The Rafidites called the Zahiri sect Ahl as-Sunnah and used their words to object to the Ahl as-Sunnah. Shah Sahib replied to the Rafidites that the Zahiri sect is

absolutely not Ahl as-Sunnah; calling them Ahl as-Sunnah is your extreme ignorance, due to which you object to Sunnis. Imam Ibn Hajar Makki Shafi'i says in his book 'Kaff al-Ra'a'':

To know...

[Footnote]: 1. Sharh Sahih Muslim by an-Nawawi, Book of Fosterage (Kitab al-Rada'), Qadimi Kutub Khana, Karachi, 4/366.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[अरबी उद्धरण]: और वह रिज़ाअत (दुग्धपान) की वजह से उसका पिता बन जाता है, और उस आदमी की संतान उस बच्चे के भाई-बहन बन जाते हैं। और उस आदमी के भाई उस बच्चे के लिए चाचा और उसकी बहनें बुआ बन जाते हैं। और बच्चे की संतान उस व्यक्ति की संतान मानी जाएगी। इसमें अहल-ए-ज़ाहिर और इब्न अलिया के अलावा किसी को कोई मतभेद नहीं है। [1]

[बायाँ कॉलम]: शाफई इमामों का यह स्पष्ट कथन देखें कि हमारा और सभी विद्वानों का मज़हब हराम (निषिद्ध) होना है और ज़ाहिरी संप्रदाय और इब्न अलिया के अलावा किसी ने इसका विरोध नहीं किया। आश्चर्य है कि उत्तर देने वाले ने इमाम नववी का यहाँ से उद्धृत केवल इतना कथन पेश किया कि "इसमें किसी ने विरोध नहीं किया... इत्यादि" और उस स्पष्ट बात को छुपा लिया जिसमें उन्होंने कहा था कि हमारा और सभी विद्वानों का मज़हब हराम होना है। और इमाम शाफई (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को गलत तरीके से अहल-ए-ज़ाहिर में गिन लिया, जबकि ज़ाहिरी संप्रदाय चारों इमामों और अन्य सभी मुजतहिद विद्वानों के विरुद्ध है। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब ने फरमाया है कि दाऊद ज़ाहिरी और उनके अनुयायियों को अहल-ए-सुन्नत वल जमाअत में गिनना घोर अज्ञानता और मूर्खता है। राफ़िज़ियों (शियाओं) ने ज़ाहिरी संप्रदाय को सुन्नी मानकर उनकी बातों के आधार पर अहल-ए-सुन्नत पर आपत्ति की है। शाह साहब ने उन्हें उत्तर दिया कि ज़ाहिरी संप्रदाय कभी भी अहल-ए-सुन्नत से नहीं है; यह तुम्हारी अज्ञानता और मूर्खता है कि तुम उन्हें सुन्नी मानकर सुन्नियों पर ताना मारते हो। इमाम इब्न हजर मक्की शाफई अपनी किताब 'कफ्फ अल-रआ' में फरमाते हैं: "और जानो..."

[दायाँ कॉलम]: हुरमत-ए-रिज़ाअ (दूध के रिश्ते की पाबंदी) साबित हो गई और यह इस बच्चे का बाप होगा और इसकी दूसरी औलाद इस बच्चे के भाई-बहन होंगे और इस शख्स के अपने भाई-बहन इस बच्चे के लिए चचा और फूफी होंगे और इस बच्चे की औलाद इस शख्स की औलाद करार पाएगी, इसमें अहल-ए-ज़ाहिर और इब्न-ए-अ़लिया के सिवा किसी को इख्तिलाफ़ नहीं। शाफई हज़रात के इमाम की साफ़ तसरीह (स्पष्टीकरण) है कि हम और तमाम उलेमा इस तहरीर पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं और हमारा यह मज़हब है इसमें फ़िर्क़ा-ए-ज़ाहिरिया और इब्न-ए-अ़लिया के सिवा किसी ने ख़िलाफ़ न किया, ताज्जुब है कि मुजीब (उत्तर देने वाले) ने इमाम नववी की सिर्फ़ इतनी इबारत कि "मुख़ालफ़त नहीं की" को नक़्ल किया और उससे पहली इबारत कि "हमारा तमाम उलेमा का मज़हब तहरीम (निषिद्ध होना) है" को छुपा लिया और फिर इमाम शाफई रहमतुल्लाह तआ़ला को ग़लत तौर पर अहल-ए-ज़वाहिर में शुमार कर दिया, हालाँकि ज़ाहिरिया फ़िर्क़ा तमाम अइम्मा

मुज्तहिदीन के ख़िलाफ़ है, शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि ने फ़रमाया है कि दाऊद ज़ाहिरी और उसके पैरोकार को अहले सुन्नत से शुमार करना इंतिहाई जहालत है, राफ़ज़ियों ने ज़ाहिरिया फ़िर्क़ा को अहले सुन्नत कह कर उनकी बातों की वजह से अहले सुन्नत पर एअ़तिराज़ किए हैं, शाह साहब ने जवाब में राफ़ज़ियों को फ़रमाया कि ज़ाहिरी फ़िर्क़ा हरगिज़ अहले सुन्नत नहीं है उनको अहले सुन्नत कहना तुम्हारी इंतिहाई जहालत है जिसकी वजह से तुम सुन्नियों पर एअ़तिराज़ करते हो, इमाम इब्न-ए-हजर मक्की शाफई अपनी किताब 'कफ़्फ़ुल रुआअ़' में फ़रमाते हैं:

जानना...

[पादलेख]: 1. शरह सहीह मुस्लिम लिन-नववी, किताबुल रज़ाअ, कदीमी कुतुब खाना कराची, 4/366

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

و یصیر ولد الہ و اولاد الرجل اخوۃ الرضیع و اخواتہ ویکون اخوۃ الرجل اعمام الرضیع و اخواتہ عماتہ، ویکون اولاد الرضیع اولاد الرجل ولم یخالف فی ھذہ الا اھل الظاھر و ابن علیۃ 1

[دائیں کالم]: حرمتِ رضاع ہوگئی اور یہ اس بچے کا باپ ہوگا اور اس کی دوسری اولاد اس بچے کے بہن بھائی ہوں گے اور اس شخص کے اپنے بھائی بہن اس بچے کے لئے چچا اور پھوپھی ہوں گے اور اس بچے کی اولاد اس شخص کی اولاد قرار پائے گی، اس میں اہل ظاہر و ابن علیہ کے بغیر کسی کو اختلاف نہیں۔ شافعی حضرات کے امام کی صاف تصریح ہے کہ ہم اور تمام علماء اس تحریر پر متفق ہیں اور ہمارا یہ مذہب ہے اس میں فرقہ ظاہریہ اور ابن علیہ کے بغیر کسی نے خلاف نہ کیا، تعجب ہے کہ مجیب نے امام نووی کی صرف اتنی عبارت کہ "مخالفت نہیں کی" کو نقل کیا اور اس سے پہلی عبارت کہ "ہمارا تمام علماء کا مذہب تحریم ہے" کو چھپالیا اور پھر امام شافعی رحمۃ اللہ تعالٰی کو غلط طور پر اہل ظواہر میں شمار کردیا، حالانکہ ظاہریہ فرقہ تمام ائمہ مجتہدین کے خلاف ہے، شاہ عبدالعزیز رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ نے فرمایا ہے کہ داؤد ظاہری اور اس کے پیروکار کو اہلسنت سے شمار کرنا انتہائی جہالت ہے، رافضیوں نے ظاہریہ فرقہ کو اہلسنت کہہ کر ان کی باتوں کی وجہ سے اہلسنت پر اعتراض کئے ہیں، شاہ صاحب نے جواب میں رافضیوں کو فرمایا کہ ظاہری فرقہ ہر گز اہلسنت نہیں ہے ان کو اہلسنت کہنا تمھاری انتہائی جہالت ہے جس کی وجہ سے تم سنیوں پر اعتراض کرتے ہو، امام ابن حجر مکی شافعی اپنی کتاب کف الرعاع میں فرماتے ہیں : جاننا

[بائیں کالم]: ایں تصریح صریح ایں امام شافعیہ بیں کہ مذہب ما و جملہ علماء تحریم ست و در خلاف نہ کرد نجز فرقہ ظاہریہ وابن علیہ طرفہ آنکہ مجیب عبارت مذکورہ نووی از پنجا نقل کرد

کہ لم یخالف فی ھذہ الخ و صد کلام کہ فرمودہ بودند کہ مذہب ما و مذہب جملہ علماء تحریم ست در پردہ اخفا داشت و امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ را غلطاً از اہل ظاہر شمرد حالانکہ ظاہریہ طائفہ ایست مخالف ائمہ اربعہ و سائر مجتہدین شاہ عبدالعزیز صاحب گفتہ اند داؤد ظاہری و متبعانش را از اہل سنت و جماعت شمردن درچہ مرتبہ از جہل و سفاہت ست رافضیاں کہ ظاہریہ را سنی گرفتہ باقوال ایشان بر اہلسنت اعتراض می کردند، شاہ صاحب جوابش دادند کہ فرقہ ظاہریہ ہر گز از اہلسنت نیست، ایں جہل و سفاہت شما ست کہ ایشاں را سنی گرفتہ بر سنیان طعن می کنید، امام ابن حجر مکی شافعی در کف الرعاع فرماید و اعلم

[حاشیہ]: 1 شرح صحیح مسلم للنووی کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی ۴/۳۶۶

Fatawa Rizvia Volume 11

[Arabic Text Section] The Imams have explicitly stated that the disagreement of the Zahiriyya (literalists) is of no consequence, and it is not permissible to follow any of them because they are devoid of reason, even to the extent of denying clear analogy (qiyas al-jali). Furthermore, he said that because they are pure literalists, their intellects are almost atrophied; whoever reaches the point of saying that if a person urinates in water it becomes impure, but if he urinates in a vessel and then pours it into water it does not become impure, how can any weight be given to him, or how can he even be counted among the rational, let alone the learned? Similarly, other prominent Shafi'i scholars have explicitly addressed the issue of 'laban al-fahl' (milk of the male) and have not allowed even a scent of disagreement in their school of thought. The great Imams of the four schools, their associates, and the jurists of major cities have spoken on this. Imam Ahmad al-Asqalani al-Shafi'i stated in 'Irshad al-Sari': "In it is evidence that the milk of the male creates prohibition (hurmat), just as prohibition is established from the side of the nursing woman, so too is it established from the side of the man who is the source of the milk, because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) established the status of the paternal uncle through fosterage..."

[Urdu Translation Section] Know that the noble Imams have clarified that the disagreement of the Zahiriyya sect is not reliable, and it is not permissible to follow any of them, as they are people devoid of intellect, to the extent that they even deny clear analogy. Moreover, they stated that these people are merely literalists, almost irrational, and they went so far as to say that if someone urinates directly into water, it becomes impure, but if they urinate into a vessel and then pour it into water, the water remains pure and not impure. So, where do such people stand? How can it be appropriate to count them among the rational, let alone among the scholars? Similarly, other Shafi'i scholars have also made clear statements about this, and they have not shown any disagreement in this matter. Leading Shafi'i imams have declared this issue as agreed upon and as the position of the four Imams, stating that this is the position of the associates of the Imams and the jurists of all regions. Accordingly, Imam Ahmad al-Asqalani al-Shafi'i stated in his book 'Irshad al-Sari': "In this lies the evidence that the man whose milk it is, creates a prohibition. Just as the prohibition is established from the nursing woman's side, it will similarly be established from this man's side, because the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) confirmed the paternal uncle through fosterage..."

1. Kaff al-Ra'a', Section 14, Chapter on describing whether his command is small or large, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 144.
2. Kaff al-Ra'a', Notice on the evidences of permissibility and its rebuttal, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, p. 128. Page 482 of 739

फ़तावा रिज़विया खंड 11

[अरबी पाठ अनुभाग] प्रमुख इमामों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ज़ाहिरिया (शाब्दिक अर्थ लेने वाले) के मतभेद का कोई महत्व नहीं है, और उनमें से किसी का अनुसरण (तक़लीद) करना जायज़ नहीं है क्योंकि वे बुद्धिहीन हैं, यहाँ तक कि वे स्पष्ट अनुमान (क़ियास-ए-जली) को भी नकारते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कहा कि क्योंकि वे शुद्ध शाब्दिक अर्थवादी हैं, उनकी बुद्धि लगभग लुप्त हो चुकी है; जो कोई यहाँ तक कह दे कि यदि कोई व्यक्ति पानी में पेशाब करे तो वह अपवित्र हो जाता है, लेकिन यदि वह किसी बर्तन में पेशाब करके फिर उसे पानी में डाल दे तो वह अपवित्र नहीं होगा, तो ऐसे व्यक्ति को क्या महत्व दिया जा सकता है, या विद्वानों की तो बात ही छोड़िए, उसे बुद्धिमानों में भी कैसे गिना जा सकता है? इसी तरह, अन्य प्रमुख शाफ़ई विद्वानों ने 'लबन अल-फ़हल' (पुरुष के दूध) के मुद्दे को स्पष्ट रूप से संबोधित किया है और अपने मत में मतभेद की ज़रा सी भी गुंजाइश नहीं दी है। चारों मज़हबों के महान इमामों, उनके साथियों और प्रमुख शहरों के न्यायविदों ने इस पर बात की है। इमाम अहमद अस्क़लानी शाफ़ई ने 'इरशाद अल-सारी' में कहा है: "इसमें यह प्रमाण है कि पुरुष का दूध निषेध (हुरमत) पैदा करता है, जिस तरह दूध पिलाने वाली महिला की ओर से निषेध सिद्ध होता है, उसी तरह उस पुरुष की ओर से भी सिद्ध होगा जो दूध का स्रोत है, क्योंकि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्तनपान के माध्यम से चाचा की स्थिति की पुष्टि की है..."

[उर्दू अनुवाद अनुभाग] जानें कि महान इमामों ने स्पष्ट किया है कि ज़ाहिरिया संप्रदाय के मतभेद का कोई महत्व नहीं है और न ही उनमें से किसी का अनुसरण करना जायज़ है, क्योंकि वे बुद्धिहीन लोग हैं, यहाँ तक कि वे स्पष्ट अनुमान का भी खंडन करते हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि ये लोग केवल बाहरी अर्थों को लेने वाले हैं, लगभग विवेकहीन हैं, और यहाँ तक कह गए कि यदि कोई व्यक्ति सीधे पानी में पेशाब करे तो वह अपवित्र हो जाता है, लेकिन यदि वह बर्तन में पेशाब करके उसे पानी में डाल दे तो वह पवित्र रहेगा, अपवित्र नहीं होगा। तो ऐसे लोगों की क्या बिसात? विद्वानों में गिनना तो दूर, उन्हें बुद्धिमानों में गिनना ही कैसे उचित हो सकता है? इसी तरह अन्य शाफ़ई विद्वानों ने भी इस बारे में स्पष्ट वर्णन किया है और इस मुद्दे पर कोई मतभेद व्यक्त नहीं किया है। प्रमुख शाफ़ई इमामों ने इस मुद्दे को सर्वसम्मत और चारों इमामों का मत घोषित किया है, और कहा है कि इमामों के साथियों और सभी क्षेत्रों के न्यायविदों का यही मत है। तदनुसार, इमाम अहमद अस्क़लानी शाफ़ई ने अपनी पुस्तक 'इरشاد अल-सारी' में कहा है: "इसमें यह प्रमाण है कि जिस पुरुष का दूध है, वह निषेध पैदा करता है। जैसे दूध पिलाने वाली महिला की ओर से निषेध सिद्ध होता है, वैसे ही

इस पुरुष की ओर से भी निषेध सिद्ध होगा क्योंकि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने रज़ाई (स्तनपान के माध्यम से) चाचा की पुष्टि की है..."

---

1. कफ़ अल-रआ', चौदहवां भाग, अध्याय यह बताने के बारे में कि उसकी आज्ञा छोटी है या बड़ी, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, पृष्ठ 144।
2. कफ़ अल-रआ', हलाल होने के प्रमाणों पर ध्यान और उसका खंडन, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, पृष्ठ 128। पृष्ठ 482 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

[عربی متن] ان الائمۃ صرحوا بان الظاھریۃ لایعتد بخلافھم، ولایجوذ تقلید احد منھم لانھم سلبوا العقول حتی انکرو القیاس الجلی 1-نیز فرمود لانھم اصحاب ظاھریۃ محضۃ تکاد عقولھم ان تکون مسخت،ومن وصل الی انہ یقول ان بال الشخص فی الماء تنجس او فی اناء ثم صبہ فی الماء یتنجس کیف یقام لہ وزن،ویعد من العقلاء فضلاء عن العلماء 2- ہمچناں دیگر اکابر شافعیہ تصریح بلبن فحل کردہ اند و در مذہب خود بوئے از خلاف نہ دادہ اند واجلہ اور امذہب ائمہ اربعہ واصحاب ایشاں و فقہائے امصار گفتہ اند امام احمد عسقلانی شافعی در ارشاد الساری فرمود فیہ دلیل علی ان لبن الفحل یحرم حتی تثبت الحرمۃ فی جھۃ صاحب اللبن کما تثبت فی جانب المرضعۃ فان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اثبت عمومۃ الرضاع والحقھا بالنسب وھذا مذہب الشافعی۔

[اردو ترجمہ] جانے کہ ائمہ کرام نے تصریح کی ہے کہ ظاہریہ فرقہ کے مخالف ہونے کا کوئی اعتبار نہیں اور نہ ہی ان میں سے کسی کی تقلید جائز ہے، کیونکہ وہ مسلوب العقل لوگ ہیں حتی کہ وہ قیاس جلی کا بھی انکار کرتے ہیں، نیز انھوں نے فرمایا کہ یہ لوگ محض ظاہری ہیں تقریباً بے عقل ہیں، اور یہاں تک کہہ گئے اگر کوئی شخص پانی میں پیشاب کرے تو پانی ناپاک ہے اور اگر کسی برتن میں پیشاب کرکے پانی میں ڈال دے تو پانی پاک ہے ناپاک نہ ہوگا۔ تو ایسے لوگ کس شمار میں ہیں، ان کو اہل عقل میں شمار کرنا کیسے مناسب ہے چہ جائیکہ ان کو علماء میں شمار کیا جائے۔ اسی طرح دیگر شوافع حضرات نے بھی اس کے بارے میں واضح تصریحات کی ہیں اور انھوں نے اس مسئلہ میں کہیں بھی اختلاف ظاہر نہیں کیا اور بڑے بڑے ائمہ شوافع نے اس مسئلہ کو متفقہ علیہ اور چاروں اماموں کا مسلک قرار دیا ہے اور کہا ہے کہ ائمہ کے اصحاب اور علاقوں کے تمام فقہاء کا یہی مسلک ہے چنانچہ امام احمد عسقلانی شافعی نے اپنی کتاب ارشاد

الساری میں فرمایا: اس میں یہ دلیل ہے کہ جس مرد کا دودھ ہے وہ حرمت پیدا کرتا ہے چنانچہ جس طرح دودھ والی عورت کی طرف سے حرمت ثابت اسی طرح اس مرد کی طرف سے بھی حرمت ثابت ہوگی کیونکہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے رضاعی چچا کا اثبات

---

1 كف الرعاع القسم الرابع عشر باب في بيان ان مآمره صغيرة او كبيرة دار الكتب العلميه بيروت ص ١٤٤ 2 كف الرعاع تنبيه ادلة التحليل والرد عليها دار الكتب العلميه بيروت ١٢٨ Page 482 of 739

Fatawa Razviyah, Volume 11

[Left Column - Arabic/Urdu Mix]: ...and Abu Hanifa and his two companions, Malik, and Ahmad, following the majority of the Sahaba, the Tabi'un, and the jurists of the various lands[1]. Imam Hafiz al-Qastalani al-Shafi'i states in Fath al-Bari: "The majority of the Sahaba, Tabi'un, and the jurists of the lands, such as Abu Hanifa and his two companions, Malik, al-Shafi'i, Ahmad, and their followers, are of the opinion that the milk of the male (husband of the nurse) establishes prohibition (of marriage)[2]." Imam Abu Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i states in the book al-Anwar: "The male through whom the milk originates is the child's father, and his children from the nursing woman or others are the child's brothers and sisters[3]." Allama Zayn al-Din al-Shafi'i, a student of Ibn Hajar al-Makki, states in Qurrat al-Ayn: "The nursing woman becomes the child's mother and the owner of the milk (the husband) becomes the father. The prohibition extends from the nursed infant to their ancestors, descendants, and branches, whether through lineage or nursing[4]." These are the definitive texts from the great Shafi'i scholars; and indeed, the master of the house knows best what is in it. The eminent Imam Qadi Iyad al-Maliki states in the commentary on Sahih Muslim: "None of the leading jurists and authorities on fatwa have spoken of dismissing the prohibition established by the 'milk-father'."

[Right Column - Urdu Translation/Explanation]: ...he said and established it just like lineage. This is the school of thought (madhhab) of Imam Shafi'i, Abu Hanifa, and his two companions, Imam Malik, and Imam Ahmad bin Hanbal, just as it is the school of thought of the Sahaba, Tabi'un, and the scholars of all regions. Imam Qastalani Shafi'i stated in Fath al-Bari that the view of all Sahaba, Tabi'un, and jurists—Abu Hanifa and his two companions, Malik, Shafi'i, Ahmad, and all their followers—is that the 'milk-father' (the husband of the nursing woman) is also prohibited for marriage. Imam Abu Yusuf Ardabili Shafi'i stated in the book al-Anwar that the man from whom a woman's milk originates is the father of the child who drinks that milk, and all his children, whether from that nursing woman or another woman, will all be siblings to that child. Allama Zayn al-Din Shafi'i, a student of Ibn Hajar Makki, states in Qurrat al-Ayn that the nursing woman will be the mother and the 'milk-father' will be the father. Then this prohibition expands from the child to the ancestors and descendants of the man and woman and their relatives through lineage and fosterage. All texts of the Shafi'i scholars on this issue are identical; and truly the owner of the house knows best what pertains to it. The exalted Imam Qadi Iyad Maliki, in the commentary of Sahih Muslim, states that none among the leading

jurists and authorities of fatwa have ever dismissed the prohibition regarding the 'milk-father'.

[Footnotes]: 1. Irshad al-Sari, Kitab al-Rida' (Book of Breastfeeding), Chapter: Labn al-Fahl, Dar al-Kutub al-Arabi, Beirut, 8/33. 2. Fath al-Bari, Kitab al-Nikah (Book of Marriage), Chapter: Labn al-Fahl, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 9/310-311. 3. Al-Anwar li-A'mal al-Abrar. 4. Qurrat al-Ayn with the commentary Fath al-Ayn, Arkan al-Nikah, Matba'a Amira al-Islam, Travancore, Kerala, p. 390.

फतवा-ए-रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

[बायाँ कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रण]: ...और अबू हनीफ़ा और उनके दो साथियों, मालिक और अहमद, सहाबा, ताबेईन और शहरों के फ़ुक़हा के बहुमत की तरह[1]। इमाम हाफ़िज़ अल-क़स्तलानी अल-शाफ़ई 'फ़तह अल-बारी' में फ़रमाते हैं: "सहाबा, ताबेईन और शहरों के फ़ुक़हा का बहुमत, जैसे कि अबू हनीफ़ा और उनके दो साथी, मालिक, अल-शाफ़ई, अहमद और उनके अनुयायियों का मत है कि 'लबन अल-फ़हल' (दूध वाले पुरुष का दूध) हराम (विवाह निषेध) करता है[2]।" इमाम अबू यूसुफ़ अल-अरदबीली अल-शाफ़ई 'किताब अल-अनवार' में फ़रमाते हैं: "वह पुरुष जिसकी वजह से दूध का स्रोत है, वह (दूध पीने वाले बच्चे का) पिता है, और उस दाई या अन्य स्त्रियों से उसकी संतान उस बच्चे के भाई-बहन होंगे[3]।" अल्लामा ज़ैन अल-दीन अल-शाफ़ई, जो इब्न हजर अल-मक्की के शिष्य हैं, 'क़ुर्रत अल-ऐन' में फ़रमाते हैं: "दूध पिलाने वाली माँ बन जाती है और दूध का मालिक (पति) पिता बन जाता है। यह निषेध (हुरमत) दूध पीने वाले बच्चे से उनके पूर्वजों, वंशजों और शाखाओं तक फैल जाता है, चाहे वह वंश से हो या स्तनपान से[4]।" यहाँ तक कि ये बड़े शाफ़ई विद्वानों के मूल पाठ हैं; और वास्तव में घर का मालिक बेहतर जानता है कि घर में क्या है। महान इमाम क़ाज़ी अयाज़ अल-मालिकी 'सहीह मुस्लिम' की व्याख्या में फ़रमाते हैं: "अइम्मा-ए-फ़ुक़हा और फ़तवा देने वालों में से किसी ने भी दूध वाले पुरुष की हुरमत को समाप्त करने की बात नहीं की है।"

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: ...फ़रमाया और नसब (वंशावली) की तरह क़रार दिया है और यही मज़हब इमाम शाफ़ई, अबू हनीफ़ा और उनके साहिबैन, इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हंबल का है जिस तरह कि सहाबा और ताबेईन और तमाम इलाक़ों के उलमा का यही मज़हब है। और इमाम क़स्तलानी शाफ़ई ने फ़तह अल-बारी में फ़रमाया कि तमाम सहाबा, ताबेईन और फ़ुक़हा अबू हनीफ़ा उनके साहिबैन, मालिक, शाफ़ई और अहमद और उनके तमाम पैरोकारों का मज़हब यह है कि दूध वाला मर्द भी हराम होता है। इमाम अबू यूसुफ़ अरदबीली शाफ़ई ने किताब अल-अनवार में फ़रमाया कि जिस मर्द से औरत को दूध उतरा वह दूध पीने वाले बच्चे का बाप है और उसकी तमाम औलाद ख़्वाह उस मरज़आ (दूध पिलाने वाली) से हो या किसी दूसरी औरत से वह सब इस बच्चे के बहन भाई होंगे। अल्लामा ज़ैनुद्दीन शाफ़ई, इब्न हजर मक्की के शागिर्द, क़ुर्रत अल-ऐन में फ़रमाते हैं कि दूध पिलाने वाली, माँ, और दूध वाला मर्द बाप होगा, और फिर यह हुरमत बढ़कर बच्चे से मर्द व औरत के उसूल व फ़ुरूअ और उनके नसीबी और रज़ाई मुतअल्लिक़ीन तक सरायत कर जाती है। तमाम नुसूस शाफ़ई हज़रात की इस मसले में यही हैं, जबकि घर वाला घर की बातों को

ज़्यादा जानता है। बरगुज़ीदा इमाम क़ाज़ी अयाज़ मालिकी सहीह मुस्लिम की शरह में फ़रमाते हैं कि अइम्मा-ए-फ़ुक़हा और असहाब-ए-फ़तवा में से किसी ने भी दूध वाले ख़ावंद की हुरमत को...

[फ़ुटनोट्स/पादलेख]: 1. इरशाद अल-सारी, किताब अल-रिज़ा, बाब लब्न अल-फ़हल, दार अल-कुतुब अल-अरबी, बेरुत, 8/33. 2. फ़तह अल-बारी, किताब अल-निकाह, बाब लब्न अल-फ़हल, दार अल-मआरिफ़ा, बेरुत, 9/310-311. 3. अल-अनवार ली-आमाल अल-अबरार। 4. क़ुर्रत अल-ऐन मा शरह फ़तह अल-ऐन, अरकान अल-निकाह, मतबआ आमिरा अल-इस्लाम, त्रावणकोर, केरल, पृ. 390.

पृष्ठ 483 (कुल 739 में से)

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

[بایاں کالم - عربی/اردو]: وابی حنیفہ وصاحبیہ ومالک واحمد کجمهور الصحابة والتابعین وفقهاء الامصار[1]، امام حافظ قسطلانی شافعی در فتح الباری فرماید ذهب الجمهور من الصحابة والتابعین وفقهاء الامصار کأبي حنیفہ وصاحبیہ ومالک والشافعی واحمد واتباعهم الی ان لبن الفحل یحرم[2]، امام ابو یوسف اردبیلی شافعی در کتاب الانوار فرماید والفحل الذی منہ اللبن ابوہ واولادہ من المرضعة وغیرها اخوتہ واخواتہ[3]، علامہ زین الدین شافعی تلمیذ ابن حجر مکی در قرة العین فرماید تصیر المرضعة امہ وذو اللبن اباہ و تسری الحرمة من الرضیع الی اصولهما وفروعهما وحواشیهما نسبا ورضاعا[4] تائیں جاہمہ نصوص کبرائے شافعیہ است وصاحب البیت ادری بما فی البیت وصاحب الدار ادری، امام اجل قاضی عیاض مالکی در شرح صحیح مسلم فرماید لم یقل احد من ائمة الفقهاء واهل الفتوی باسقاط حرمة لبن الفحل۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و وضاحت]: فرمایا اور نسب کی طرح قرار دیا ہے اور یہی مذہب امام شافعی، ابوحنیفہ اور ان کے صاحبین امام مالک اور امام احمد بن حنبل کا ہے جس طرح کہ صحابہ اور تابعین اور تمام علاقوں کے علماء کا یہی مذہب ہے، اور امام قسطلانی شافعی نے فتح الباری میں فرمایا کہ تمام صحابہ، تابعین اور فقہاء ابوحنیفہ ان کے صاحبین، مالک، شافعی اور احمد اور ان کے تمام متبعین کا مذہب یہ ہے کہ دودھ والا مرد بھی حرام ہوتا ہے، امام ابو یوسف اردبیلی شافعی نے کتاب الانوار میں فرمایا کہ جس مرد سے عورت کو دودھ اترا وہ دودھ پینے والے بچے کا باپ ہے اور اس کی تمام اولاد خواہ اس مرضعہ سے ہو یا کسی دوسری عورت سے وہ سب اس بچے کے بہن بھائی ہوں گے، علامہ زین الدین شافعی ابن حجر مکی کے شاگرد قرة العین میں فرماتے ہیں کہ دودھ پلانے والی، ماں، اور دودھ والا مرد باپ ہوگا، اور پھر یہ حرمت بڑھ کر

بچے سے مرد و عورت کے اصول و فروع اور ان کے نسبی اور رضاعی متعلقین تک سرایت کر جاتی ہے، تمام نصوص شافعی حضرات کی اس مسئلہ میں یہی ہیں، جبکہ گھر والا گھر کی باتوں کو زیادہ جانتا ہے، برگزیدہ امام قاضی عیاض مالکی صحیح مسلم کی شرح میں فرماتے ہیں کہ ائمہ فقہاء اور اصحاب فتوی میں سے کسی نے بھی دودھ والے خاوند کی حرمت کو...

[حواشی]: 1 ارشاد الساری کتاب الرضاع باب لبن الفحل دار الکتب العربی بیروت ۳۳/۸ 2 فتح الباری کتاب النکاح باب لبن الفحل دار المعرفة بیروت ۹/ ۳۱۰-۳۱۱ 3 الانوار لاعمال الابرار 4 قرة العین مع شرح فتح العین ارکان النکاح مطبعة عامرة الاسلام ترو زنگاڈی کیرلہ ص ۳۹۰

...except for Ibn 'Aliyyah and the people of Zahir (Zahiris), and it is famously reported from Dawud al-Zahiri that he also agrees with the four Imams. 1 The great Imam Badr al-Din Mahmud al-Ayni states in 'Umdat al-Qari: "The milk of the male (laban al-fahl) causes prohibition, and this is the view of Abu Hanifa, Malik, Shafi'i, Ahmad, and their companions. Qadi 'Iyad said: None of the Imams has spoken of the removal of this prohibition, etc." 2 (Summarized). These are the reports and explicit texts of the reliable and established great Imams. The attributions found in 'Khaniyah' and 'Hidayah' that go against this cannot be used as a counter-argument, as slips often occur in reporting the schools of others. One of the leading Shafi'is attributed to Imam al-A'zam (Abu Hanifa) that according to him, adultery with a Harbi woman in Dar al-Harb is permissible, and another attributed the lawfulness of the crow to Imam al-A'zam, while both these things are wrong. In the same 'Hidayah', the lawfulness of Mut'ah (temporary marriage) was attributed to Imam Malik, whereas Imam Malik would impose the punishment for adultery on such a person, as is the saying of Hazrat Abdullah bin al-Zubayr (may Allah be pleased with them both) when he said: "Try it yourself, for if you do it, I will stone you with your own stones." This is unlike the Hanafis and other Imams who consider Mut'ah forbidden but do not impose the legal punishment (hadd). In short, the permissibility of this marriage is false; it is never the school of Imam Shafi'i, nor the school of any of the followed Mujtahid Imams (may Allah be pleased with them all). Ibn 'Aliyyah was a man among the Muhadditheen (scholars of Hadith).

---

1 Sharh Sahih Muslim by Qadi 'Iyad al-Maliki. 2 'Umdat al-Qari, Chapter on Laban al-Fahl, Idarat al-Tiba'at al-Muniriyyah, Egypt, 2/97. 3 Sahih Muslim, Chapter on Nikah al-Mut'ah, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/452.

...सिवाय इब्न अलिय्याह और अहल-ए-ज़ाहिर (ज़ाहिरी) हज़रात के, और दाऊद ज़ाहिरी से मशहूर रिवायत है कि वे भी चारों इमामों के सहमत हैं। 1 महान इमाम बद्रुद्दीन महमूद ऐनी 'उम्दतुल क़ारी' में फ़रमाते हैं: "दूध वाले पुरुष (लबनुल फ़हल) के कारण हुरमत (निषेध) पैदा होती है, और यही इमाम अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ई, अहमद और उनके साथियों का मत है। क़ाज़ी अयाज़ ने फ़रमाया कि किसी इमाम ने इस हुरमत को हटाने की बात नहीं कही, इत्यादि।" 2 (संक्षिप्त)। ये प्रतिष्ठित और विश्वसनीय इमामों के उद्धरण और स्पष्ट पाठ हैं। 'ख़ानिया' और 'हिदाया' में इसके विरुद्ध जो कुछ उन इमामों की ओर मंसूब (attributed) है, वह इन स्पष्ट पाठों के सामने तर्क नहीं हो सकता, क्योंकि अक्सर दूसरों के मज़हब (विचारधारा) को नक़ल करने में चूक हो जाती है। शाफ़ई मसलक के बड़ों में से एक ने इमाम आज़म (अबू हनीफ़ा) की ओर मंसूब कर दिया कि उनके नज़दीक दारुल हर्ब में हर्बी औरत से ज़िना (व्यभिचार) जायज़ है, और दूसरे ने इमाम आज़म की ओर कौवे के हलाल होने का संबंध जोड़ दिया, जबकि ये दोनों बातें ग़लत हैं। और इसी 'हिदाया' में इमाम मालिक की ओर मुत'अ (अस्थायी विवाह) के हलाल होने का संबंध जोड़ दिया गया, हालाँकि इमाम मालिक ऐसे व्यक्ति पर ज़िना की सज़ा (हद) लगाते हैं, जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) का कथन है कि "तुम इसे आज़मा कर देखो, अगर तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हें तुम्हारे ही पत्थरों से रज़म (पत्थरों से मारना) करूँगा।" इसके विपरीत हनफ़ी और अन्य इमाम मुत'अ को हराम कहते हैं लेकिन 'हद' नहीं लगाते। संक्षेप में, इस निकाह का जायज़ होना बातिल (झूठा) है; यह न तो इमाम शाफ़ई का मज़हब है और न ही किसी भी मुजतहिद इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन) का। इब्न अलिय्याह मुहद्दिसीन में से एक व्यक्ति थे।

---

1 शरह सहीह मुस्लिम, क़ाज़ी अयाज़ मालकी द्वारा। 2 उम्दतुल क़ारी, बाब लबनुल फ़हल, इदारतुल तिबाअतुल मुनीरिय्या, मिस्र, 2/97। 3 सहीह मुस्लिम, बाब निकाहुल मुत'अ इत्यादि, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, 1/452।

पृष्ठ 484/739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

الاهل الظاهر و ابن علیۃ والمعروف عن داؤد موافقۃ الائمۃ الاربعۃ 1 امام جلیل بدر الدین محمود عینی در عمدۃ القاری فرمایند لبن الفحل یحرم وھو قول ابی حنیفۃ ومالک والشافعی واحمد واصحابھم وقال القاضی عیاض لم یقل احد من الائمۃ 2 الخ (ملخصاً) این ست نقول و نصوص ائمہ اجلہ ثقات اثبات و نسبت کہ در خانیہ و ہدایہ واقع شدہ معارض نش نتواں بود در نقل مذہب غیر بار ہا زلت روی نماید، یکے از اکابر شافعیہ تحلیل زنا بحربیہ در دارالحرب، ودیگرے اجلہ شافعیہ حلت غراب بحضرت امام اعظم نسبت کردو ہر دو باطل است در ہمیں ہدایہ حلت متعہ بامام مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ نسبت نمود حالانکہ بامام مالک روے حدز نا می زنند کما ھو قول عبد اللہ بن الزبیر رضی اللہ تعالیٰ عنھما اذ قال جرب علی نفسک لان فعلتھا لارجمنک باحجارک 3 بخلاف حنفیہ و دیگر ائمہ کہ حرام دانند و تا حد نرسانند با جملہ جواز ایں نکاح باطل است ہر گز نہ مذہب امام شافعی است نہ مذہب ہیچکس از ائمہ مجتہدین متبوعین رضی اللہ تعالیٰ عنھم اجمعین، ابن علیہ مر دے از محدثین است

ساقط نہیں کیا ماسوائے ابن علیہ اور اہل ظاہر حضرات کے، اور داؤد ظاہری سے نقل مشہور ہے کہ وہ بھی ائمہ اربعہ کے موافق ہے۔ بر گزیدہ امام بدر الدین عینی نے عمدۃ القاری میں فرمایا ہے کہ دودھ والے خاوند کی حرمت تمام ائمہ ابوحنیفہ، شافعی، مالک اور احمد اور ان کے اصحاب کا مذہب ہے اور قاضی عیاض نے فرمایا کہ کسی امام نے اس حرمت کے اسقاط کا قول نہیں کیا، یہ ہیں تمام ثقہ ائمہ کی نصوص جو ان سے منقول ہیں، اور وہ جو خانیہ اور ہدایہ میں اس کے خلاف ان ائمہ کی طرف منسوب ہے وہ ان نصوص کے معارض نہیں ہو سکتا کیونکہ بارہا دوسروں کے مذہب کو نقل کرنے میں اکثر لغزش ہو جاتی ہے، شافعی مسلک کے اکابرین میں سے ایک نے امام

ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالیٰ کی طرف منسوب کر دیا کہ ان کے نزدیک دارالحرب میں حربی عورت سے زنا جائز ہے اور دوسرے نے امام ابو حنیفہ کی طرف کوے کے حلال ہونے کی نسبت کر دی جبکہ یہ دونوں باتیں غلط ہیں، اور اسی ہدایہ میں امام مالک کی طرف متعہ کے حلال ہونے کی نسبت کر دی گئی حالانکہ امام مالک ایسے شخص پر حد زنا لگاتے ہیں جیسا کہ حضرت عبداللہ بن الزبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا قول ہے کہ یہ تجربہ کر کے دیکھ اگر تو کریگا تو میں تجھے تیرے ہی پتھروں سے رجم کروں گا۔ بخلاف حنفیہ اور دیگر ائمہ کہ وہ متعہ کو حرام کہتے ہیں مگر حد نہیں لگاتے

---

1 شرح صحیح مسلم للقاضی عیاض مالکی 2 عمدۃ القاری باب لبن الفحل ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ مصر ۲ / ۹۷ 3 صحیح مسلم باب نکاح المتعۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۵۲

Fatawa Rizvia Volume 11

[Left Column - Persian/Arabic Text] Counting them among the Mujtahid Imams is incorrect. Even if they were, they stand alone. The Zahiriyah themselves are innovators, and an innovator has no standing in matters of consensus (Ijma'). Their agreement is not taken into account, nor does their opposition cause any disruption. This is because they are not among the Imams in an absolute sense, as stated in Al-Tawdih and others. They are not from the 'Ummah of acceptance' but rather from the 'Ummah of invitation', as mentioned in Mirqat al-Mafatih and elsewhere. Regarding the Zahiriyah sect specifically, it has already been mentioned from Imam Ibn Hajar al-Makki that their opposition is not worthy of attention at all. Therefore, in this matter, there is no scope for a contrary ruling. Firstly, it goes against the well-known Sunnah, which is: "Verily, Allah has forbidden through foster-care (radha'ah) what He has forbidden through lineage (nasab)." This Hadith is reported and narrated in various wordings and numerous narrations in the legal records of Islam. From the beginning of Islam until now, it has been accepted among scholars. Imam Tirmidhi states in that same Jami': "And action is upon this according to the generality of the people of knowledge among the companions of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him."

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] The summary is that the marriage is void and it is not permissible in the school of thought (madhhab) of any Imam, whether Shafi'i or any other among the Mujtahidin, may Allah be pleased with them. Ibn 'Ulayyah is counted among the scholars of Hadith (Muhaddithin) but not among the Mujtahidin. Even if, hypothetically, he were, he stands apart from the other Imams. As for the Zahiriyah sect, it is an innovated sect, and in matters of consensus (Ijma'), an innovator is not considered. Their agreement or disagreement has no effect on consensus because they are not among the Imams, as stated in works like Al-Tawdih. They are not part of the 'Ummah of acceptance' but rather the 'Ummah of invitation', as mentioned in Mirqat al-Mafatih. Regarding the Zahiriyah sect itself, Imam Ibn Hajar al-Makki's statement has passed that their opposition is not worthy of attention. Therefore, there is no room for disagreement in this matter. Firstly, because going against it is contrary to the well-known Sunnah, which is: whatever Allah has forbidden based on lineage, He has also forbidden based on foster-care (breastfeeding). This Hadith exists in many narrations with different wordings and is recorded in Islamic legal books. It has been accepted among scholars from the beginning of Islam until today. Imam Tirmidhi stated in his Jami' that the general

companions and those after them acted upon this, and there is no disagreement regarding it.

---

1 Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Foster-care (Abwab al-Radha'), Amin Company, Kutub Khana Rashidiyah, Delhi, 1/136. Page 485 of 739

फ़तावा रिज़विया, खंड 11

[बायां कॉलम - फारसी/अरबी पाठ] मुजतहिद इमामों में उनकी गिनती करना गलत है। यदि वे होते भी, तो वे अकेले होते। ज़ाहिरिया स्वयं बिदअती (नवाचारी) हैं, और इज्मा (आम सहमति) के मामलों में बिदअती का कोई स्थान नहीं होता। उनकी सहमति पर ध्यान नहीं दिया जाता है, न ही उनका विरोध कोई बाधा उत्पन्न करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे पूर्ण अर्थों में इमामों में से नहीं हैं, जैसा कि 'अत-तौज़ीह' आदि में कहा गया है। वे 'उम्मते इजाबत' (स्वीकार करने वाली उम्मत) में से नहीं हैं, बल्कि वे 'उम्मते दावत' (आमंत्रित उम्मत) में से हैं, जैसा कि 'मिरकातुल मफ़ातीह' आदि में वर्णित है। विशेष रूप से ज़ाहिरिया संप्रदाय के बारे में, इमाम इब्न हजर मक्की से यह उल्लेख पहले ही आ चुका है कि उनका विरोध बिल्कुल भी ध्यान देने योग्य नहीं है। इसलिए, इस मामले में विपरीत नियम की कोई गुंजाइश नहीं है। पहली बात यह कि यह प्रसिद्ध सुन्नत के विरुद्ध है, जो यह है: "निश्चित रूप से अल्लाह ने रज़ाअत (दूध पीने का रिश्ता) के कारण भी वही हराम (वर्जित) किया है जो उसने नसब (वंश) के आधार पर हराम किया है।" यह हदीस इस्लाम के कानूनी अभिलेखों में विभिन्न शब्दों और कई वर्णनों के साथ रिपोर्ट और वर्णित है। इस्लाम की शुरुआत से लेकर अब तक विद्वानों के बीच इसे स्वीकार किया गया है। इमाम तिर्मिज़ी उसी जामी में कहते हैं: "और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा (साथियों) के बीच ज्ञान वाले लोगों की सामान्य राय इसी पर आधारित है।"

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] निष्कर्ष यह है कि निकाह (विवाह) शून्य है और किसी भी इमाम, चाहे वो शाफ़ई हों या मुजतहिदीन में से कोई और, उनके मज़हब (विचारधारा) में जायज़ नहीं है (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो)। इब्न 'उलय्या की गिनती मुहद्दिसीन में तो होती है लेकिन मुजतहिदीन में नहीं। और अगर मान भी लिया जाए कि वे हैं, तो वे दूसरे इमामों से अलग-थलग हैं। रहा ज़ाहिरिया संप्रदाय, तो वह एक बिदअती संप्रदाय है, जबकि इज्मा (आम सहमति) के मामले में बिदअती का कोई महत्व नहीं होता। उनकी सहमति या विरोध का इज्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वे इमामों में से नहीं हैं, जैसा कि 'तौज़ीह' आदि में है। वे 'उम्मते इजाबत' में से नहीं हैं बल्कि वे 'उम्मते दावत' में से हैं, जैसा कि 'मिरकातुल मफ़ातीह' आदि में है। और स्वयं ज़ाहिरिया संप्रदाय के बारे में इमाम इब्न हजर मक्की का यह कथन गुज़र चुका है कि उनका विरोध ध्यान देने योग्य नहीं है। इसलिए इस मसले में मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है। पहली बात यह कि इसका विरोध मशहूर सुन्नत के खिलाफ है जो कि यह है: जो वंश की बुनियाद पर हराम फरमाया है वह रज़ाअत (दूध पीने के रिश्ते) की बुनियाद पर भी अल्लाह तआला ने हराम फरमाया है। यह हदीस विभिन्न शब्दों के साथ

कई विवरणों में है और इस्लाम की कानूनी किताबों में वर्णित और संकलित है। और इस्लाम की शुरुआत से आज तक विद्वानों के बीच स्वीकार्य है। इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी 'जामी' में फरमाया कि इस पर सामान्य सहाबा और उनके बाद वालों का अमल है और इसमें किसी का कोई मतभेद नहीं है।

---

1 जामी' अत-तिर्मिज़ी, रज़ाअत के अध्याय (अबवाब अर-रज़ा'), अमीन कंपनी, कुतुब खाना रशीदिया, दिल्ली, 1/136। पृष्ठ 739 में से 485

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

[بایاں کالم - فارسی/عربی عبارت] عداد در مجتہدین ائمہ نیست واگر باشد متفرد است و ظاہر یہ خود مبتدعاً نند و مبتدع را در اجماع اعتبارے نیست و وفاقش ملحوظ نشود و بخلافش خلل نہ پذیرند، لانهم ليسوا من الائمة على الاطلاق كما فى التوضيح وغيره ليسوا من امة الاجابة وانما هم من امة الدعوة، كما في مرقاة المفاتيح و غيرها، و خود در خصوص ظاہریہ از امام ابن حجر مکی گزشت کہ مخالفت ایشاں اصلاً قابل التفات نیست، پس دریں مسئلہ حکم بخلاف راز نہار مساغ نیست اولاً خلاف سنت مشہورہ است کہ ان اللہ حرم من الرضاع ما حرم من النسب ۱۔ ایاں حدیث بالفاظ متنوعہ وروایات متظافرہ در دواوین اسلام مروی و منقول است و از صدر اسلام تا حال میاں علماء متلقی بالقبول ہمیں امام ترمذی در ہماں جامع فرماید والعمل على هذا عند عامة اهل العلم من اصحاب النبى صلى الله تعالى عليه وسلم

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] خلاصہ یہ کہ نکاح باطل ہے اور کسی بھی امام خواہ شافعی ہو یا کوئی اور مجتہدین میں سے کسی کے مذہب میں جائز نہیں ہے رضی اللہ تعالیٰ عنہم، ابن علیہ کا شمار محدثین میں تو ہوتا ہے مگر مجتہدین میں نہیں، اور اگر بالفرض ہو بھی تو وہ دوسرے ائمہ سے الگ تھلگ ہے، رہا ظاہریہ فرقہ تو وہ بدعتی فرقہ ہے جبکہ اجماع کے معاملہ میں بدعتی کا اعتبار نہیں ہوتا، اس کی موافقت اور مخالفت کا کوئی اثر اجماع پر نہیں پڑتا کیونکہ یہ ائمہ میں سے نہیں ہیں، جیسا کہ توضیح وغیرہ میں ہے، اور امت اجابہ میں سے نہیں بلکہ وہ امت دعوت میں سے ہیں جیسا کہ مرقاۃ المفاتیح وغیرہ میں ہے، اور خود ظاہریہ فرقہ کے بارے میں امام ابن حجر مکی کا قول گزرا کہ ان کی مخالفت قابل التفات نہیں ہے لہٰذا اس مسئلہ میں اختلاف کی کوئی گنجائش نہیں اولاً اس لیے کہ اس کا خلاف سنت مشہورہ کے خلاف ہے جو کہ یہ ہے جو نسب کی

بناء پر حرام فرمایا ہے وہ رضاعت کی بناء پر بھی اللہ تعالیٰ نے حرام فرمایا ہے، یہ حدیث مختلف الفاظ کے ساتھ کثیر روایات میں ہے اور اسلام کی قانونی کتب میں مروی و منقول ہے اور ابتداء اسلام سے آج تک علماء کے درمیان مقبول ہے، امام ترمذی نے اپنی جامع میں فرمایا کہ اس پر عام صحابہ اور بعد والوں کا عمل ہے اور اس میں کسی کا اختلاف نہیں ہے

---

۱ جامع الترمذی ابواب الرضاع امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/۱۳۶ صفحہ 485 از 739

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

...and others, we do not know of any difference among them regarding that. [Footnote 1] A ruling contrary to a well-known Sunnah cannot be executed. It is stated in Tanwir al-Absar: "When the ruling of one judge is presented to another judge, he shall execute it unless it contradicts the Book (Quran), a well-known Sunnah, or consensus (Ijma)." [Footnote 2] Secondly, it falls contrary to the consensus of those whose consensus is considered authoritative, as explained earlier. Imam Shahrani Shafi'i stated in Mizan al-Shari'ah al-Kubra: "The Imams have agreed that what is prohibited due to lineage is also prohibited due to breastfeeding (radha)." [Footnote 3] A ruling contrary to consensus is not valid. Reliable leading scholars who establish matters were not unaware of rare anecdotes; rather, they themselves mentioned them and then explicitly stated that in this matter, there is no disagreement from anyone except the Zahiris and Ibn 'Ulayyah. As passed from Imam Qadi 'Iyad al-Maliki, Imam Abu Zakariya al-Nawawi al-Shafi'i, and Imam Mahmud al-'Ayni al-Hanafi. So, attributing rare matters to them in Fath al-Mughith is surprising. Even if, hypothetically, a weak opinion were narrated here as interpreted in Fath al-Qadir, giving a fatwa based on a weak and outweighed opinion is itself ignorance and contrary to consensus, as stated by Allama Qasim.

[Footnote] 1: Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Book of Prayer, Chapter on Confinement, Mujtabai Delhi, 9/2-78. [Footnote] 2: Mizan al-Shari'ah al-Kubra, Book of Radh'a (Breastfeeding), Mustafa al-Babi Egypt, 2/138. [Footnote] 3: Mizan al-Shari'ah al-Kubra, Book of Radh'a (Breastfeeding), Mustafa al-Babi Egypt, 2/138.

Page 486 of 739

...और अन्य, हम उनके बीच इस विषय में कोई मतभेद नहीं जानते। [फुटनोट १] एक प्रसिद्ध सुन्नत के विरुद्ध दिया गया निर्णय प्रभावी नहीं हो सकता। तन्वीर अल-अबसार में है: "जब एक न्यायाधीश का निर्णय दूसरे न्यायाधीश के पास प्रस्तुत किया जाता है, तो वह उसे तब तक प्रभावी करेगा जब तक कि वह अल्लाह की किताब, एक प्रसिद्ध सुन्नत या आम सहमति (इज्मा) के विपरीत न हो।" [फुटनोट २] दूसरी बात यह कि यह उन लोगों की आम सहमति के भी विपरीत है जिनकी आम सहमति प्रामाणिक मानी जाती है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। इमाम शहरानी शाफ़ई ने मीज़ान अल-शरीअत अल-कुबरा में कहा है: "इमामों ने सहमति व्यक्त की है कि जो वंश (रिश्ते) के कारण वर्जित है, वह स्तनपान (रज़ा) के कारण भी वर्जित है।" [फुटनोट ३] आम सहमति के विरुद्ध निर्णय मान्य नहीं है। वे विश्वसनीय इमाम जो बातों को पुख्ता करते हैं, वे दुर्लभ वृत्तांतों से अनभिज्ञ नहीं थे, बल्कि उन्होंने स्वयं उनका उल्लेख किया और फिर स्पष्ट रूप से कहा कि इस मामले में ज़ाहिरी और इब्न उलैय्या के अलावा किसी का कोई मतभेद नहीं है। जैसा कि इमाम काज़ी अयाज़ मालिकी, इमाम अबू ज़करिया नववी शाफ़ई और इमाम महमूद ऐनी हनफ़ी से उल्लेखित हुआ। फतह अल-मुगीस में इन महानुभावों की ओर दुर्लभ बातों को श्रेय देना आश्चर्यजनक है। यदि मान भी लिया जाए कि यहाँ कोई कमजोर राय (कौले ज़ईफ़) वर्णित की गई है जैसा कि फतह अल-क़दीर में व्याख्या की गई है, तो भी कमजोर और कम वज़नी राय पर फतवा देना स्वयं अज्ञानता और आम सहमति के विरुद्ध है, जैसा कि अल्लामा कासिम ने कहा।

[फुटनोट] १: दुर्र-ए-मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, नमाज की किताब, कारावास का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 9/2-78। [फुटनोट] २: मीज़ान अल-शरीअत अल-कुबरा, स्तनपान की किताब, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 2/138। [फुटनोट] ३: मीज़ान अल-शरीअत अल-कुबरा, स्तनपान की किताब, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 2/138।

पृष्ठ ७३९ में से ४८६

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

وغیرھم لانعلم بینھم في ذلك اختلافا ۱ وحکم بخلاف سنت مشہورہ نافذ نہ شود، در تنویر الابصار است اذا رفع الیہ حکم قاض آخر نفذہ الاما خالف کتاباً اوسنة مشھورة واجماعاً ۲ ثانیا مخالف اجماع من یعتد باجماعھم افتادہ ست کما تقدم بیانہ، وامام شعرانی شافعی در میزان الشریعة الکبری فرمود اتفق الائمة علی انہ یحرم من الرضاع ما یحرم من النسب ۳ وحکم برخلاف اجماع نافذ نیست، ائمہ ثقات اثبات از حکایات شاذہ غافل نبودند بلکہ خود ذکر نمودہ اند باز تصریح فرمودہ کہ دریں مسئلہ جز ظاہریہ وابن علیہ کسے را خلاف نیست چنانکہ از امام قاضی عیاض مالکی وامام ابو زکریا نووی شافعی وامام محمود عینی حنفی گزشت فمن الغریب نسبة الغراب الیھم علی ماوقع في فتح المغیث واگر بالفرض اینجا قولے ضعیف محی بود کما اول بہ فی الفتح الفقھی، پس حکم و فتوے بر قول ضعیف و مرجوح خود جہل وخرق اجماع است کما فی تصحیح القدوری

اور سنت مشہورہ کے خلاف حکم نافذ نہیں ہوسکتا، اور تنویر الابصار میں ہے کہ جب ایک قاضی کے پاس دوسرے قاضی کا حکم پہنچے تو اس کو نافذ کرے بشرطیکہ کتاب اللہ، سنت رسول اللہ اور اجماع کے خلاف نہ ہو، ثانیا اس لیے کہ جن لوگوں کا اجماع معتبر ہے ان کے اجماع کے بھی خلاف ہے جیسا کہ پہلے بیان ہو چکا ہے، اور امام شعرانی نے میزان الشریعۃ الکبری میں فرمایا ہے کہ ائمہ کرام کا اس پر اتفاق ہے کہ جو رشتہ نسب کی وجہ سے حرام ہے وہ رضاع کی وجہ سے بھی حرام ہے اور اجماع کے خلاف حکم نافذ نہیں ہوسکتا، اور کسی مسئلہ کو ثابت قرار دینے والے ائمہ ثقات خود بھی شاذ حکایات سے غافل نہیں ہوتے بلکہ خود ان کو ذکر کر دیتے ہیں، نیز انہوں نے یہ تصریح بھی کی ہے کہ اس مسئلہ کا ظاہریہ اور ابن علیہ کے بغیر کسی نے خلاف نہیں کیا، جیسا کہ امام قاضی عیاض، ابوزکریا نووی شافعی اور امام محمود عینی حنفی سے گزرا

فتح المغیث میں ان حضرات کی طرف شاذ امور کو منسوب کرنا تعجب کی بات ہے، اگر بالفرض یہاں کوئی ضعیف قول نقل کیا گیا ہو جیسا کہ فتح القدیر میں تاویل کی گئی ہے تو بھی ضعیف قول اور مرجوح قول پر فتویٰ دینا خود جہالت اور اجماع کے خلاف ہے جیسا کہ علامہ قاسم

۱ در مختار شرح تنویر الابصار کتاب الصلوۃ باب فی الحبس مجتبائی دہلی ۹/۲_۷۸ ۲ میزان الشریعۃ الکبری کتاب الرضاع مصطفی البابی مصر ۱۳۸/۲ ۳ میزان الشریعۃ الکبری کتاب الرضاع مصطفی البابی مصر ۱۳۸/۲

In reality, the mentioned marriage is void and purely forbidden. It is obligatory for that person to immediately separate from his brother's daughter. The marriage of these [persons] is ignorance and its implementation is severe injustice, and Allah Almighty knows best. The humble Ahmad Raza Qadri (may he be forgiven).

In reality, the mentioned marriage is void and purely forbidden. It is mandatory for this person to immediately separate and distance himself from his brother's granddaughter. To enforce this marriage and call it permissible is ignorance and severe injustice, and Allah Almighty knows best. The humble Ahmad Raza Qadri (may he be forgiven).

वास्तव में, उक्त निकाह बातिल और पूरी तरह हराम है। उस व्यक्ति पर अनिवार्य है कि वह तुरंत अपनी भाई की बेटी से अलग हो जाए। इनका निकाह अज्ञानता है और उसे लागू करना घोर अन्याय है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। फकीर अहमद रज़ा कादरी (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।

वास्तव में, उक्त निकाह बातिल और पूर्णतः हराम है। उस व्यक्ति पर अनिवार्य है कि वह तुरंत अपने भाई की नवासी से जुदाई और अलगाव अख्तियार करे। इस निकाह को लागू करना और इसे जायज़ कहना अज्ञानता और घोर अन्याय है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। फकीर अहमद रज़ा कादरी (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami पृष्ठ 488 का 739

فی الواقع نکاح مذکور باطل وحرام محض است و برآں کس از دختر برادر خودش فوراً فوراً جدا شدن فرض است تزویج ایناں جہل و تنفیذ او ظلم شدید، واللہ تعالیٰ اعلم۔ فقیر احمد رضا قادری عفی عنہ

فی الواقع نکاح مذکور باطل اور محض حرام ہے اس شخص پر لازم ہے کہ فوراً فوراً اپنے بھائی کی نواسی سے جدائی اور علیحدگی اختیار کرے، اس نکاح کو نافذ کرنا اور جائز کہنا جہالت اور ظلم شدید، واللہ تعالیٰ اعلم۔ فقیر احمد رضا قادری عفی عنہ

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 488 of 739

Fatawa Ridawiyya Volume 11

Treatise Al-Jali al-Hasan fi Hurmat Walad Akhi al-Laban 1330 AH (An excellent and clear explanation of the prohibition of marriage between the offspring of the nursling and the offspring of the wet nurse)

Someone with little knowledge had written an erroneous fatwa regarding the permissibility of marriage between the offspring of a nursling (radhi') and a wet nurse (murdi'ah). That fatwa reached Aala Hazrat Imam Ahmad Raza Khan Barelvi through Mawlawi Ikram-ud-Din, the Imam and Khateeb of Masjid Wazir Khan. In response, he wrote the following titled 'Al-Jali al-Hasan fi Hurmat Walad Akhi al-Laban', supported by authentic correct texts and proven with Shariah arguments.

And it is this: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

[Arabic Text] Praise be to Allah Who created man and made for him kindred by blood and kindred by marriage. And He made fosterage like lineage, granting thereby another level of prohibited degrees (mahramiyat). And prayers and peace be upon him who guided us to the right path.

[Urdu Translation] All praises are for Allah Almighty Who created man, then bestowed upon him lineage and in-law relationships, and made fosterage like lineage, thereby granting another cause for prohibition (mahramiyat). Peace and blessings be upon that being who showed us the right way.

Page 489 of 739

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

रिसाला (लघु पुस्तक) अल-जली अल-हसन फ़ी हुरमत वलद अख़ी अल-लबन १३३० हिजरी (दूध पीने वाले की संतान और दूध पिलाने वाली की संतान के बीच निकाह की हुरमत का उम्दा और रौशन बयान)

किसी कम-इल्म ने दूध पीने वाले (रज़ी) और दूध पिलाने वाली (मुर्दिआ) की औलाद के दरमियान निकाह के जवाज़ (वैधता) के बारे में एक गलत फतवा लिख दिया था। वह फतवा मौलवी इकराम-उद्दीन साहब, इमाम और खतीब मस्जिद वज़ीर खान के ज़रिए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी तक पहुँचा, तो आपने इसके रद्द में 'अल-जली अल-हसन फ़ी हुरमत वलद अख़ी अल-लबन' नाम से निम्नलिखित तहरीर फरमाया, जो मुस्तनद नुसूस-ए-सहीहा और शरीअत की दलीलों से मबरहन (सिद्ध) है।

और वह यह है: अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

[अरबी पाठ] तमाम खूबियाँ अल्लाह के लिए हैं जिसने इंसान को पैदा किया और उसके लिए नसब (वंश) और ससुराल का रिश्ता बनाया। और रज़ाअत (दूध का रिश्ता) को नसब की तरह बनाया, तो इसके ज़रिए एक और महरमीयत (निकाह की मनाही) अता की। और दुरूद-ओ-सलाम हो उस पर जिसने हमें हिदायत दी।

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण] अल्लाह ताला के लिए सब तारीफें हैं जिसने इंसान को पैदा फरमाया, फिर उसे नसब और ससरुाली रिश्ते से नवाज़ा और रज़ाअत को नसब की तरह बनाया तो इसके सबब एक और महरमीयत अता की। सलवात और सलाम उस ज़ात पर जिसने हमें दुरुस्तगी (की राह दिखाई)।

७३९ का पृष्ठ ४८९

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

رسالہ الجلی الحسن فی حرمۃ ولد اخی اللبن ۱۳۳۰ھ (اولاد رضیع اور اولاد مرضعہ کے درمیان حرمت نکاح کا عمدہ اور روشن بیان)

کسی کم علم نے ایک غلط فتویٰ در باب جواز نکاح مابین اولاد رضیع ومرضعہ لکھ دیا تھا وہ فتویٰ بذریعہ مولوی اکرام الدین صاحب امام و خطیب مسجد وزیر خاں اعلحضرت امام احمد رضا خان بریلوی تک پہنچا تو آپ نے اس کے رد میں مندرجہ ذیل المسمی بہ الجلی الحسن فی حرمۃ ولد اخی اللبن مستند بصوص صحیحہ و مبرہن بہ براہین شرعیہ تحریر فرمایا،

وھو ھذا بسم اللہ الرحمن الرحیم

[عربی عبارت] الحمد للہ الذی خلق الانسان فجعلہ نسباً وصھرا وجعل الرضاع ك النسب فوھب بہ محرمیۃ اخری والصلوۃ والسلام علی من ھدا نا للصواب

[اردو ترجمہ] اللہ تعالیٰ کے لیے سب تعریفیں جس نے انسان کو پیدا فرمایا تو اس کو نسب اور سسرالی رشتہ سے نوازا اور رضاعت کو نسب کی مثل بنایا تو اس کے سبب ایک اور محرمیت عطا کی، صلوٰۃ و سلام اس ذات پر جس نے ہمیں درستگی (کی راہ دکھائی)۔

صفحہ 489 از 739

Fatawa Razvia Volume 11

(Arabic Text/Right Column Translation): ...provided guidance, and promised a great reward for it, thus giving a grand glad tiding. And whoever declared firmness in issuing fatwas as obligatory and boldness as forbidden, then He gave a stern warning upon boldness. May the mercy and peace of Allah be upon him, his family, his companions, and all those attributed to him in this world and the hereafter, Amen. (T)

(Arabic Text): ووعد عليه جزيل الثواب فأعظم البشرى واوجب التثبت في الافتاء وحرم الاجتراء فأوعد عليه وعيد انكرا صلى اللہ تعالٰی علیہ وسلم والہ وصحبہ والمنتمین الیہ الدنیا واخری ، آمین !

Issue 280: From Lahore, sent by Maulvi Ikram-ud-Din Sahib Bukhari, Imam and Khatib of the late Masjid Wazir Khan, 23rd Jumada al-Ula 1330 Hijri al-Muqaddas.

Respected, praiseworthy, the model for the righteous and example for the chosen, the adornment of the pious and the essence of the gnostics, the scholar of the age and the unique of the era, the scholar of the Ahl al-Sunnah, the Mujaddid of the present century, the teacher of the time and the leader of the world, the everlasting result of thought, the pearl of the crown of grace, and the fruit of the tree of conscience, the early fruit of the garden of knowledge. Peace be upon you and the mercy and blessings of Allah.

(Persian & Urdu body): After presenting gifts of foundation of greetings, beautiful as houris, whose pure face is independent of the formality of verbal attire, in the sight of that Solomon of the kingdom of knowledge, it is submitted with a sincere request to your high status that a fatwa was sent along with the letter, please write a few lines according to your blessed and exalted opinion and send them to this needy person. May God keep you safe. Peace. Written by the needy, Muhammad Ikram-ud-Din Bukhari, may the Creator forgive him. (T)

Question: What do the scholars of religion say in this matter that a man drank the milk of his real sister? Children were born to this man and his sister. This brother and sister want to marry their children to each other. Is the marriage of their children with each other valid according to Sharia or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer: The marriage of the aforementioned person's children with the children of his foster sister is permissible because the prohibition of suckling (Rida'at) is established specifically for the suckling (radi'). The mentioned prohibition is not

established for the ancestors and descendants of the suckling. Therefore, the woman whose milk was drunk, along with all her descendants, is forbidden [to the suckling]. The descendants of the suckling are by no means forbidden to the descendants of the foster mother.

फ़तावा रजविया ग्यारहवीं जिल्द

(दायाँ कॉलम): ...मार्गदर्शन किया, और इस पर भारी सवाब का वादा फ़रमाया तो बड़ी बशारत (ख़ुशख़बरी) दी। और जिसने फ़तवा देने में मज़बूती को वाजिब और जसारत (दुस्साहस) को हराम फ़रमाया तो जसारत पर सख्त वईद (चेतावनी) फ़रमाई। अल्लाह तआला की रहमत और सलाम हो आप पर और आप की आल व असहाब पर और उन सब पर जो आप की तरफ दुनिया व आख़िरत में मंसूब (संबद्ध) हों, आमीन। (त)

(बायाँ कॉलम अरबी इबारत): ووعد علیه جزیل الثواب فأعظم البشری واوجب التثبت في الافتاء وحرم الاجتراء فأوعد علیه وعید انکرا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم والہ وصحبہ والمنتمین الیہ الدنیا واخری ، آمین !

मसला 280: लाहौर से, प्रेषक मौलवी इकराम उद्दीन साहब बुखारी, इमाम व खतीब मस्जिद वज़ीर ख़ान मरहूम, 23 जमादी-उल-उला 1330 हिजरी अल-मुकद्दस।

जनाब मुस्ताब, मुहम्मदत मआब, नेक लोगों के आदर्श और चुनिंदा लोगों के उदाहरण, नेक लोगों के ज़ीनत और आरिफों के सार, युग के महान विद्वान और काल के अद्वितीय, अहले सुन्नत के आलिम, वर्तमान सदी के मुजद्दिद, ज़माने के उस्ताद और दुनिया के पेशवा, निरंतर विचार का परिणाम, फ़ैज़ के ताज के मोती और ज़मीर के पेड़ के फल, मारिफ़त के बाग़ के पहले फल। आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों।

सलाम के उपहारों को पेश करने के बाद, जो हूरों की तरह सुंदर हैं और जिनका चेहरा शब्दों के बनाव-श्रृंगार का मोहताज नहीं, मारिफ़त की सल्तनत के बादशाह की सेवा में मुख़लिसानह (निष्ठापूर्वक) इल्तिजा (प्रार्थना) है कि अपनी राय-ए-आली के मुताबिक़ चंद सतरें (पंक्तियाँ) लिखकर इस नियाज़मंद के नाम रवाना फ़रमा दें। अल्लाह तआला सलामत रखे, वस्सलाम, कतबह अल-मिस्कीन मुहम्मद इकराम उद्दीन बुखारी, अफ़ा अन्हुल बारी। (त)

सवाल: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अपनी हक़ीक़ी बहन का दूध पिया है, उस शख़्स और उसकी बहन से औलाद पैदा हुई, ये भाई-बहन अपनी औलाद का आपस में निकाह करना चाहते हैं, उनकी औलाद का निकाह शरअन आपस में दुरुस्त है या नहीं? बयान फ़रमाएं सवाब पायेंगे।

जवाब: ज़िक्र किए गए शख़्स की औलाद का निकाह उसकी रज़ाई बहन (जिसका दूध उसने पिया) की औलाद के साथ जाइज़ है क्योंकि रज़ाअत (दूध पीने) की हुरमत (मनाही) ख़ास तौर पर रज़ीअ (दूध पीने वाले) के लिए साबित होती है। रज़ीअ के उसूल (पूर्वजों) और फ़ुरऊ (वंशजों) के लिए उक्त हुरमत साबित नहीं होती। लिहाज़ा, दूध पिलाने वाली अपनी तमाम नस्लों के साथ (दूध पीने वाले पर) हराम है। रज़ीअ की नस्ल पर रज़ाई माँ की नस्ल हरगिज़ हराम नहीं है।

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

کی رہنمائی فرمائی، اور اس پر بھاری ثواب کا وعدہ فرمایا تو بشارت عظیم فرمائی اور جس نے فتوٰی دینے میں مضبوطی کو واجب اور جسارت کو حرام فرمایا تو جسارت پر سخت وعید فرمائی، اللہ تعالٰی کی رحمت اور سلام ہو آپ پر اور آپ کی آل و اصحاب پر اور ان سب پر جو آپ کی طرف دنیا و آخرت میں منسوب ہوں، آمین (ت)

ووعد علیه جزیل الثواب فأعظم البشری واوجب التثبت في الافتاء وحرم الاجتراء فأوعد علیه وعید انکرا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم والہ وصحبہ والمنتمین الیہ الدنیا واخری ، آمین !

مسئلہ ۲۸۰: از لاہور مرسلہ مولوی اکرام الدین صاحب بخاری و امام و خطیب مسجد وزیر خان مرحوم ۲۳ جمادی الاولی ۱۳۳۰ ہجری المقدس۔

جناب مستطاب، محمدت مآب، قدوۃ الابرار واسوۃ الاخیار، زین الصالحین وزبدۃ العارفین، علامۃ العصر وفرید الدہر، عالم اہل السنہ، مجدد مائۃ حاضرہ، استاذ زمان و مقتدائے جہان، لازوال نتیجہ خاطرہ، درۃ تاج الفیضان وثمرۃ شجرۃ ضمیرہ باکورۃ بستان العرفان السلام علیکم ورحمۃ اللہ و برکاتہ،

بعد اتحاف اساس تسلیمات حور ا صورت کہ رخسارہ صفا اماراتش از تکلف حلل عبارت مستغنی ست در نظر آن سلیمان ملک عرفان معروض دارم التجا مخلصانہ بخدمت والا مرتبت انیست کہ فتوٰی بہ ہمراہی مکتوب ارسال داشتہ شد موافق رائے مبارک عالی سطرے نوشتہ بنام نیاز مند ارسال نمایند، الہی سلامت باشند ثم السلام، کتبہ المسکین محمد اکرام الدین بخاری عفا عنہ الباری۔ (ت)

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی حقیقی بہن کا دودھ پیا ہے، اس شخص اور اس کی بہن سے اولاد پیدا ہوئی، یہ بھائی بہن اپنی اولاد کا آپس میں نکاح کرنا چاہتے ہیں، ان کی اولاد کا نکاح شرعاً آپس میں درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: شخص مذکور کی اولاد کا نکاح اس کی بہن مرضعہ کی اولاد کے ساتھ جائز ہے کیونکہ حرمتِ رضاعت خاص رضیع کے لیے ثابت ہوتی ہے، رضیع کے اصول و فروع کے لیے حرمت مذکورہ ثابت نہیں ہوتی، پس دودھ پینے والی بمعہ جمیع فروع کے حرام ہے، فروعِ رضیع پر فروعِ مرضعہ ہرگز حرام

Fatawa Razawiyyah Volume 11

...cannot be so. Accordingly, in Sharh al-Wiqayah etc., the prohibited relations due to breastfeeding are listed in this verse:

All relatives on the side of the nursing mother become prohibited; While on the side of the suckling child, only they, their spouse, and their descendants [become prohibited].

(From the side of the nursing mother, all relations will be prohibited, and from the suckling child's side, he/she, his/her spouse, and his/her descendants will be prohibited. - T)

Arabic Text	**Urdu Explanation**
The wet-nurse and her husband are prohibited for the suckling infant, and her people are prohibited for the suckling infant just as they are prohibited by lineage. And the descendants of the suckling infant are prohibited for the wet-nurse and her husband, as stated in Sharh al-Wiqayah p.	The wet-nurse herself, her husband, and her family become prohibited for the one who suckles, just as relatives by lineage are prohibited. And the descendants of the suckling person are prohibited for the wet-nurse and her husband. Furthermore, the suckling person himself and his spouse are prohibited for the wet-nurse and her husband. This is how it is in Sharh al-Wiqayah p. 63 (T).

From this passage, it is clear that the prohibition of suckling is established for the suckling infant. The marriage of the suckling infant's children with the wet-nurse's children is permissible. Therefore, the children of the mentioned person are lawful for his sister's children; their marriage to each other is correct.

The Answer:

Verily we belong to Allah and to Him shall we return. Verily we belong to Allah and to Him shall we return. Verily we belong to Allah and to Him shall we return. Absolute prohibitions have been declared lawful, incest with mahrams (prohibited relatives) has been declared lawful, the marriage of a niece to her paternal uncle has been declared lawful, the marriage of a nephew to his paternal aunt has been declared lawful, the contract of a niece with her maternal uncle has been declared lawful, and incest between a maternal aunt and her nephew has been declared lawful. In short, it is as if the marriage between mother and son has been declared lawful, and incest between father and son has been declared lawful. There is no god but Allah, and

there is no power nor strength except with Allah. Firstly, this calamity was raised in Moradabad by a scholar with Wahhabi leanings, and the leader of the non-conformists (Ghair-Muqallids), Nazir Husain, along with his followers, endorsed it. A refutation was sent from here, and that old cunning man recanted, writing another fatwa on its prohibition, offering an excuse worse than the sin for the first one:

(Original context)	(Simplified meaning)
Prior to this, regarding the fatwa of the Maulana, which they had written regarding its lawfulness based on their trust in a superficial view...	Before this, regarding the Maulana's fatwa which he had written about its lawfulness...

[1] Sharh al-Wiqayah, Kitab al-Rada', Mujtabai Delhi, 2/77.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...नहीं हो सकता। तदनुसार, शरह अल-विक़ायह आदि में दुग्धपान (रज़ाअत) के कारण निषिद्ध संबंधों को इस शेर में दर्ज किया गया है:

दूध पिलाने वाली की ओर से सभी संबंधी (रिश्तेदार) निषिद्ध हो जाते हैं; जबकि दूध पीने वाले की ओर से वह स्वयं, उसका जीवनसाथी और उसके वंशज [निषिद्ध होते हैं]।

(दूध पिलाने वाली की ओर से सभी रिश्ते हराम होंगे और दूध पीने वाले की ओर से वह और उसका पति या पत्नी, और उसके वंशज हराम होंगे। - त)

अरबी इबारत	**उर्दू व्याख्या**
दूध पिलाने वाली और उसका पति दूध पीने वाले पर हराम हैं, और उसका खानदान दूध पीने वाले पर हराम है जैसे कि वंश में हराम होते हैं। और दूध पीने वाले के वंशज दूध पिलाने वाली और उसके पति पर हराम हैं, जैसा कि शरह अल-विक़ायह पृ. में है।	दूध पिलाने वाली स्वयं, उसका पति और उसका खानदान दूध पीने वाले पर हराम होगा जैसे वंश (नसब) में हराम हैं। और दूध पीने वाले के वंशज दूध पिलाने वाली और उसके पति पर हराम हैं, और स्वयं दूध पीने वाला और उसका पति या पत्नी दूध पिलाने वाली और उसके पति पर हराम हैं। शरह अल-विक़ायह में ऐसा ही है पृ. 63 (त)।

इस इबारत से स्पष्ट हुआ कि दुग्धपान की मनाही (हुरमत-ए-रज़ाअत) दूध पीने वाले के लिए सिद्ध है, दूध पीने वाले की औलाद पर दूध पिलाने वाली की औलाद जायज़ है, अतः उक्त व्यक्ति की औलाद अपनी बहन की औलाद के लिए हलाल है, आपस में उनका निकाह सही है।

उत्तर (अल-जवाब):

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। जो स्पष्ट रूप से हराम था उसे हलाल कर दिया गया, महरमों (निकट संबंधियों) के साथ व्यभिचार को हलाल कर दिया गया, चाचा-भतीजी का निकाह हलाल कर दिया गया, बुआ-भतीजे का निकाह हलाल कर दिया गया, मामा-भानजी का निकाह हलाल कर दिया गया, खाला-भानजे का व्यभिचार हलाल कर दिया गया। सारांश यह है कि मानो माँ-बेटे का निकाह हलाल कर दिया गया, बाप-बेटे का व्यभिचार हलाल कर दिया गया। अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और न ही

अल्लाह की मदद के बिना कोई शक्ति या सामर्थ्य है। सबसे पहले यह मुसीबत मुरादाबाद में एक वहाबी विचार वाले मौलवी साहब ने उठाई और गैर-मक़ल्लिदों के सरदार नज़ीर हुसैन ने अपने अनुयायियों के साथ इस पर मुहर लगा दी। यहाँ से इसका खंडन भेजा गया, तो वह पुराना चालाक मुकर गया और इसकी हुरमत (मनाही) में दूसरा फतवा लिखा और पहले फतवे के लिए गुनाह से बदतर यह बहाना पेश किया कि:

(मूल पाठ)	**(सरल अर्थ)**
इससे पहले मौलवी साहब के फतवे पर जो उन्होंने इसके हलाल होने के बारे में सरसरी नज़र पर भरोसे के कारण लिखा था...	इससे पहले मौलवी साहब के फतवे पर जो कि इसके हलाल होने में उन्होंने लिखा था...

---

[1] शरह अल-विक़ायह, किताब अर-रज़ा, मुजतबाई दिल्ली, 2/77।

نہیں ہوسکتا، چنانچہ شرح وقایہ وغیرہ میں محرمات بالرضاع کو اس شعر میں درج کیا ہے:

از جانب شیر دہ ہمہ خویش شوند وز جانب شیر خوارہ زوجان و فروع

(دودھ پلانے والی کی جانب سے تمام رشتے حرام ہوں گے اور شیر خوار کی جانب سے وہ اور اس کا زوج یا زوجہ، اور اس کے فروع حرام ہوں گے ت)

عربی عبارت	اردو تشریح
تحرم المرضعة وزوجها على الرضيع ويحرم قومها على الرضيع كما فی النسب وتحرم فروع الرضيع على المرضعة وزوجها كذا فی شرح الوقاية ص۔	دودھ پلانے والی خود، اس کا خاوند اور اس کی قوم دودھ پلانے والے پر حرام ہوگی جیسے نسب میں حرام ہیں، اور دودھ پینے والے کے فروع دودھ پلانے والی اور اس کے خاوند پر حرام ہیں، اور خود دودھ پینے والا اور اس کا زوج یا زوجہ دودھ پلانے والی اور اس کے زوج پر حرام ہیں، شرح وقایہ میں ایسے ہی ہے ص ۶۳(ت)

اس عبارت سے واضح ہوا کہ حرمت رضاعت رضیع کے لیے ثابت ہے، رضیع کی اولاد پر مرضہ کی اولاد جائز ہے، بنابریں شخص مذکور کی اولاد اپنی ہمشیرہ کی اولاد پر حلال ہے، آپس میں ان کا نکاح درست ہے،

الجواب:

انا للہ وانا الیہ راجعون، انا للہ وانا الیہ راجعون، انا للہ وانا الیہ راجعون، حرام قطعی حلال کر دیا گیا، محارم سے زنا حلال کردیا گیا، چچا بھتیجی کا نکاح حلال کردیا گیا، پھوپھی بھتیجے کا نکاح حلال

کردیا گیا، ماموں بھانجی کا عقد حلال کردیا گیا، خالہ بھانجے کا زنا حلال کردیا گیا، خلاصہ یہ ہے کہ گویا ماں بیٹے کا نکاح حلال کردیا گیا، باپ بیٹے کا زنا حلال کردیا گیا، لا الہ الا اللہ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ۔ اول یہ قیامت مراد آباد میں ایک وہابی خیال مولوی عالم صاحب نے اٹھائی اور غیر مقلدوں کے پیشوا نذیر حسین مع ذریات نے اس پر مہر لگائی، یہاں سے اس کا رد ہو کر گیا، وہ پرانا سیانا رجوع کر گیا، اور دوسرا فتویٰ اس کی حرمت میں لکھا اور پہلے کا یہ عذر بدتر گناہ پیش کیا کہ:

(فارسی/اردو)	(اردو وضاحت)
قبل ازیں بر فتوائے مولوی عالم صاحب کہ در حلت آن نوشتہ بودند بر اعتماد ایشان بر نظر سرسری	اس سے پہلے مولوی صاحب کے فتویٰ پر جو کہ اس کے حلال ہونے میں انھوں نے لکھا تھا

---

۱ شرح وقایہ کتاب الرضاع مجتبائی دہلی ۲/ ۷۷

Volume Eleven Fatawa Ridawiyya

"My seal was affixed." Trusting them, my seal was casually affixed. (T)

The excuse of a casual glance in matters of lawful and forbidden, especially regarding the private parts (matters of marriage/intercourse), is a clear admission of one's own blatant dishonesty and an extreme daring and recklessness towards the fire of Hell. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "The most daring of you in giving fatwas is the most daring of you towards the Fire." [1] The one among you who is more daring in giving fatwas is more daring towards the fire. (T)

Well, this is inherent to a non-muqallid, but "relying on them" has brought a complete catastrophe upon their ijtihad. Subhan Allah! A claim to being a mujtahid and yet this reliance and trust on the lowliest of followers in matters of lawful and forbidden. And look at the "delight" of this "having been done" (passive voice) - what a bashful passive form, as if they didn't seal it themselves but someone else did. Allah shows His signs in this way and makes one taste the bitterness of opposing the Imams. We ask Allah for forgiveness and well-being. Its details were written at that time in the treatise 'Saif al-Mustafa 'ala Adyan al-Iftira'. Again, a severe calamity of making incestuous relations lawful arose from Calcutta. There is a certain Maulvi Lutfur Rahman Bardwani who addressed all the scholars of the world, had a long Arabic question printed and sent it here. By the grace of Allah, in response, an Arabic treatise 'Naqd al-Bayan li-Hurmat Ibnat Akhi al-Labban' was authored here, containing high-level jurisprudential discussions and textual proofs, and sent. By the praise of Allah, it calmed all the ferment and drew a picture of "Truth has come and falsehood has vanished; indeed falsehood is [by nature] ever bound to vanish." [2] Now, for the third time, this great calamity was about to rise from Lahore. It seems every sixteenth year this scourge boils up. First it rose in 1298 AH, then in 1314 AH, and now in 1330 AH. Such fatwas were fitting for Wahhabism, as their hearts are turned upside down, but this time the shock is harder because some of our Sunni scholars participated in it. To Allah we belong and to Him we shall return. Only a few months ago, this humble servant mentioned this horrific incident of Nazir Husain Dehlavi in his recent treatise 'Kasr as-Safihi al-Wahim fi Abdal Qirtas ad-Dirham' and it was printed and published. Friends either did not observe that necessary work out of negligence, or they forgot to such an extent, To Allah we belong and to Him we shall return. Since this humble servant, in "Naqd al-Bayan" by way of...

[1] Kanz al-Ummal, Hadith, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 10/184 [2] The Holy Quran, 17/81

"मेरी मुहर लगा दी गई।" उन पर भरोसा करते हुए सरसरी नज़र से मेरी मुहर लगा दी गई। (त)

हलाल और हराम के मामलों में, विशेष रूप से यौन अंगों (विवाह/संभोग) के मामले में 'सरसरी नज़र' का बहाना बनाना अपनी स्पष्ट बेईमानी और नर्क की आग पर अत्यधिक साहस और ढिठाई का खुला इकरार है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "तुममें से जो फतवा देने में जितना अधिक साहसी है, वह आग पर उतना ही अधिक साहसी है।" १ तुममें से जो फतवों पर अधिक साहस करता है, वह आग पर अधिक साहस करता है। (त)

खैर, यह तो गैर-मुक़ल्लिद के लिए आवश्यक ही है, लेकिन "उन पर भरोसे" ने उनके इज्तिहाद की जान पर पूरी कयामत ढहा दी। सुभान अल्लाह! मुज्तहिद होने का दावा और हलाल-व-हराम के मामले में एक मामूली मुक़ल्लिद पर यह भरोसा और निर्भरता। और इस "करदा शुद" (किया गया) का आनंद तो देखिए, क्या शर्मिंदा कर देने वाला कर्मवाच्य (passive voice) है, मानो उन्होंने खुद मुहर नहीं लगाई बल्कि किसी और ने लगा दी। अल्लाह इस तरह अपनी निशानियां दिखाता है और इमामों के विरोध का मज़ा चखाता है। हम अल्लाह से माफ़ी और सलामती मांगते हैं। इसका विवरण उसी समय 'सैफ अल-मुस्तफा अला अद्यान अल-इफ्तिरा' नामक रिसाले में लिखा गया था। दोबारा उसी महरमों से जिना को हलाल करने की अत्यंत गंभीर आफत कलकत्ता से उठी। कोई मौलवी लुत्फुर रहमान बरदवानी साहब हैं, उन्होंने दुनिया भर के विद्वानों को संबोधित करते हुए एक लंबा अरबी सवाल छपवाया और यहाँ भेजा। अल्लाह के फ़ज़्ल से, इसके जवाब में यहाँ से अरबी रिसाला 'नक्द अल-बयान लि-हुरमत इब्नत अखी अल-लब्बान' लिखा गया, जो उच्च स्तरीय फिकही चर्चाओं और प्रमाणों पर आधारित था और भेजा गया। जिसने अल्लाह की कृपा से सारा उबाल शांत कर दिया और "सत्य आ गया और असत्य मिट गया, बेशक असत्य तो मिटने वाला ही है" २ का नक्शा खींच दिया। अब तीसरी बार यह महान मुसीबत लाहौर से उठने वाली थी। ऐसा लगता है कि हर सोलहवें साल इस विपदा में उबाल आता है। पहले १२९८ हिजरी में उठा, फिर १३१४ हिजरी में, और अब १३३० हिजरी में। वहाबियत को ऐसे ही फतवे शोभा देते थे क्योंकि उनके दिल उल्टे कर दिए गए हैं, लेकिन इस बार सदमा अधिक गहरा है क्योंकि हमारे कुछ सुन्नी विद्वानों ने भी इसमें भाग लिया। हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं। अभी कुछ ही महीने हुए हैं कि इस फकीर ने नज़ीर हुसैन देहलवी की इस भयानक घटना का उल्लेख अपने नए रिसाले 'कसर अस-सफीही अल-

वाहिम फी अब्दाल किरतास अद-दिरहम' में किया था और वह छपकर प्रकाशित हो गया। मित्रों ने या तो उस ज़रूरी किताब को लापरवाही के कारण नहीं देखा, या वे इस कदर भूल गए। हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं। चूँकि इस फकीर ने "नक्द अल-बयान" में...

१ कंज़ अल-उम्माल, हदीस, मुअस्ससत अर-रिसाला, बेरुत, १०/१८४ २ अल-कुरान अल-करीम, १७/८१ पेज ४९२ ऑफ़ ७३९

مہر من کردہ شد، ان پر اعتماد کرتے ہوئے سرسری نظر سے میری مہر لگادی گئی۔ (ت)

حلال و حرام خصوصاً معاملہ فروج میں نظر سرسری کا عذر اپنی کیسی صریح بد دیانتی اور آتش جہنم پر سخت جرات و بےباکی کا کھلا اقرار ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اجرؤکم علی الفتیا اجرؤکم علی النار - ۱ تم میں سے جو فتووں پر زیادہ جرات کرتا ہے وہ آگ پر زیادہ جرات کرتا ہے۔ (ت)

خیر یہ تو غیر مقلد کے لازم بین ہے مگر "بر اعتماد ز ایشان" نے انکے اجتہاد کی جان پر پوری قیامت توڑ دی، اے سبحان اللہ! مجتہدی کا دعوٰی اور ایک ادنی سے ادنٰی مقلد پر حلال و حرام میں یہ تکیہ بھروسا، اور اس "کردہ شد" کے لطف کو تو دیکھئے، کیا شرمایا ہوا صیغہ مجہول ہے، گویا انھوں نے خود اس پر مہر نہ کی کوئی اور کرگیا، اللہ یوں اپنی نشانیاں دکھا دیتا ہے اور ائمہ کے مقابلہ کا مزہ چکھاتا ہے نسأل اللہ العفو والعافیہ (ہم اللہ تعالٰی سے معافی اور عافیت کا سوال کرتے ہیں،ت) اسکی تفصیل اسی زمانہ میں رسالہ سیف المصطفٰی علی ادیان الافترا میں لکھی گئی، دوبارہ اسی زنائے محارم کو حلال کرنے کی سخت اشد آفت کلکتہ سے اٹھی، کوئی صاحب مولوی لطف الرحمن بردوانی ہیں انھوں نے جہان بھر کے تمام علماء کو مخاطب کر کے ایک عربی طویل سوال چھپوایا اور یہاں بھیجا، بفضلہ تعالٰی اس کے جواب میں یہاں سے عربی رسالہ نقد البیان لحرمۃ ابنۃ اخی اللبان اعلٰی مباحث و دلائل فقہ و نصوص پر مشتمل تصنیف ہو کر بھیج دیا گیا، جس نے بحمد اللہ تعالٰی سارا اُبال بیٹھا کر جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۖ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۲ (حق آیا اور باطل زائل ہوا بیشک باطل زوال پذیر ہے۔ت) کا نقشہ کھینچ دیا، اب سہ بارہ یہ بلائے عظیم لاہور سے اٹھنے کو رہ گئی تھی، گویا ہر سولھویں سال اس و بال میں ابال آتا ہے، پہلے ۱۲۹۸ھ میں اٹھا

پھر ۱۳۱۴ھ میں، اب ۱۳۳۰ھ میں، وہابیت کو ایسے فتوے زیب دیتے تھے کہ ان کے قلوب اوندھے کر دئے جاتے ہیں، مگر اس بار صدمہ سخت تر ہے کہ ہمارے بعض سنی علماء نے اس میں شرکت کی، انا للہ وانا الیہ راجعون، ابھی چند ہی مہینے تو ہوئے کہ فقیر نے اس واقعہ ہائلہ نذیر حسین دہلوی کو اپنا رسالہ تازہ کا سر السفیہ الواھم فی ابدال قرطاس الدارھم میں ذکر کیا اور وہ چھپ کر شائع ہوگیا، احباب نے یا تو اُس ضروری تصنیف کو براہِ بے پرواہی ملاحظہ نہ فرمایا، یا اس قدر بھول گئے، انا للہ وانا الیہ راجعون۔ فقیر از انجا کہ "نقد البیان" میں بہ تقریب

۱ کنز العمال حدیث موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰ / ۱۸۴ ۲ القرآن الکریم ۱۷ / ۸۱ Page 492 of 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

By dispelling the delusions of Bardwan, the investigation of this issue has become clear; here he presents a few crumbs of Hindi texts so that the door to this deception can be closed in some way. After all, how many times will this fitna (mischief) arise!

Text 1: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic]: What is forbidden by lineage is also forbidden by breastfeeding. - Narrated by the Imams Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and Ibn Majah from the Mother of the Believers, Siddiqah (Aisha), and by Ahmad, Muslim, Nasai, and Ibn Majah from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them all).

[Urdu]: Whatever is forbidden by lineage is also forbidden by breastfeeding. (This was narrated by the esteemed Imams Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and Ibn Majah from Her Eminence the Mother of the Believers, Aisha Siddiqah, may Allah be pleased with her, and by Imam Ahmad, Muslim, Nasai, and Ibn Majah from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them. -T)

Are nephews and nieces forbidden by lineage or not? Certainly, they are, so they are also absolutely forbidden by breastfeeding, and there is no doubt that the foster children of one's biological mother are brothers and sisters, so the biological offspring of that offspring have the same relationship with oneself; understand it like this, for example, if Amr drank the milk of Zaid's mother, Hinda, then Amr and Zaid became foster brothers. If you say they did not, then Hinda the wet nurse's daughter, Layla, would also not be the sister of Amr the nursling, for if Hinda's son Zaid is not Amr's brother, then by what relation would Hinda's daughter Layla become Amr's sister, whereas she is Amr's sister by the text of the Quran.

Allah Almighty said: [Arabic]: ...and your [foster] mothers who suckled you and your foster sisters...

[Urdu]: Allah Almighty said: Your mothers who suckled you and your foster sisters. (T)

And by this analogy, other cases follow, and when all the offspring of the wet nurse become brothers and sisters of the nursling, then the offspring of the nursling are certainly the offspring of the wet nurse's own brothers and sisters, and the offspring of one's own brother and sister is certainly forbidden by consensus, so how could adultery between a paternal aunt and nephew, or paternal uncle and niece, or

maternal aunt and nephew, or maternal uncle and niece be permissible? And there is no power and no strength except in Allah, the Most High, the Most Great.

Text 2: In the Sahihayn from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them both) and in Sahih Muslim from the Commander of the Faithful Mawla Ali (may Allah Almighty ennoble his face), it is stated that they submitted to the radiant presence of the Master of the Universe (may peace and blessings of Allah be upon him): O Messenger of Allah! The daughter of your uncle Hamza (may Allah be pleased with him) is the most beautiful young woman among the Quraysh, if the Master wishes, then with her...

---

1 Sahih Muslim, Book of Suckling, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/467 2 Al-Quran al-Karim 4/23

फ़तावा रज़विया खंड 11

बर्धवान के भ्रमों को दूर करने से, इस मुद्दे की जांच स्पष्ट हो गई है, यहाँ वह हिंदी ग्रंथों के कुछ अंश प्रस्तुत करता है ताकि किसी तरह इस धोखे का रास्ता बंद हो सके आख़िरकार यह फ़ितना कितनी बार उठेगा!

पाठ 1: अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) फ़रमाते हैं:

[अरबी]: जो कुछ वंश से वर्जित है, वह स्तनपान से भी वर्जित है। - इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और इब्न माजाह द्वारा मोमिनों की माँ सिद्दीका (आयशा) से, और अहमद, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजाह द्वारा इब्न अब्बास (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) से वर्णित है।

[उर्दू]: जो कुछ वंश से हराम (वर्जित) है, वह दूध से भी हराम है। (इसे अइम्मा-ए-किराम, अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और इब्न माजाह ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से, और इमाम अहमद, मुस्लिम, नसाई और इब्न माजाह ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत किया है। -त)

क्या भांजा, भांजी, भतीजा, भतीजी वंश से हराम (वर्जित) हैं या नहीं? निश्चित रूप से हैं, तो स्तनपान से भी पूर्णतः हराम हैं, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अपनी सगी माँ की दूध-शरीक संतान भाई-बहन है, तो उस संतान की सगी संतान का अपने साथ वही रिश्ता होता है; इसे ऐसे समझें, उदाहरण के लिए, यदि ज़ैद की माँ हिंदा का दूध अम्र ने पिया, तो अम्र और ज़ैद दूध-शरीक भाई हो गए। यदि आप कहें कि नहीं हुए, तो दूध पिलाने वाली हिंदा की बेटी लैला भी दूध पीने वाले अम्र की बहन नहीं होगी, क्योंकि जब हिंदा का बेटा ज़ैद अम्र का भाई नहीं हुआ, तो हिंदा की बेटी लैला किस रिश्ते से अम्र की बहन हो जाएगी, जबकि वह कुरान के स्पष्ट पाठ के अनुसार अम्र की बहन है।

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा: [अरबी]: ...और तुम्हारी (दूध पिलाने वाली) माताएँ जिन्होंने तुम्हें स्तनपान कराया और तुम्हारी दूध-शरीक बहनें...

[उर्दू]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: तुम्हारी माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी रज़ाई (दूध-शरीक) बहनें। (त)

और इसी अनुमान (क़यास) से अन्य स्थितियाँ भी आती हैं, और जब धात्री की सभी संतानें दूध पीने वाले (रज़ी) के भाई-बहन हो गए, तो रज़ी की संतान धात्री के लिए निश्चित रूप से अपने भाई-बहनों

की संतान है, और अपने भाई-बहनों की संतान सर्वसम्मति (इज्मा) से वर्जित है, तो फिर बुआ-भतीजे या चाचा-भतीजी या मौसी-भांजे या मामा-भांजी का ज़िना (अवैध संबंध) कैसे हलाल (जायज़) हो सकता है, और अल्लाह, जो सर्वोच्च और महान है, के अलावा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

पाठ 2: सहीहैन में अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से और सहीह मुस्लिम में अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करमल्लाहु तआला वज्हहु) से है, उन्होंने हुज़ूर पुर नूर सय्यदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की बारगाह में अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! हुज़ूर के चाचा हमज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की साहबज़ादी क़ुरैश में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत जवान हैं, हुज़ूर चाहें तो उनसे...

---

1 सहीह मुस्लिम, किताबुल रज़ाअ, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/467 2 अल-कुरान अल-करीम 4/23

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

از ہاقِ اوہامِ بردوان، اس مسئلہ کی تحقیق بازغ کر چکا ہے، یہاں صرف چند نصوصِ ہندی کی چندی کر کے عرض کرے کہ کسی طرح اس دھوکے کا سدِ باب تو ہو، آخر یہ فتنہ کتنی بار اٹھے گا!

نص ۱: رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

یحرم من الرضاعة ما یحرم من النسب - رواہ الائمة احمد والبخاری ومسلم وابوداؤد وابن ماجه عن ام المؤمنین الصدیقة واحمد ومسلم والنسائی وابن ماجة عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہم۔

جو کچھ نسب سے حرام ہے وہ دودھ سے بھی حرام ہے، (اس کو ائمہ کرام، احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد اور ابن ماجہ نے حضرت ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے اور امام احمد، مسلم، نسائی اور ابن ماجہ نے ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا۔ت)

بھانجا، بھانجی، بھتیجا بھتیجی نسب سے حرام ہیں یا نہیں؟ ضرور ہیں، تو دودھ سے بھی قطعاً حرام ہیں، اور شک نہیں کہ اپنی نسبتی ماں کی رضاعی اولاد بہن بھائی ہے، تو اس اولاد کی نسبتی اولاد اپنے سے وہی رشتے رکھتی ہے، اسے یوں سمجھئے مثلاً زید کی ماں ہندہ کا دودھ عمرو نے پیا، تو عمرو اور زید رضاعی بھائی ہوئے، اگر کہئے نہ ہوئے تو ہندہ مرضہ کی بیٹی لیلٰی بھی عمرو رضیع کی بہن نہ ہوگی کہ جب ہندہ کا بیٹا زید عمرو کا بھائی نہ ہوا، تو ہندہ کی بیٹی لیلٰی کس رشتہ سے عمرو کی بہن ہو جائے گی حالانکہ وہ بہ نصِ قرآن عمرو کی بہن ہے۔

قال اللہ تعالٰی: وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُم مِّنَ الرَّضَاعَةِ -

اللہ تعالٰی نے فرمایا: تمہاری مائیں جنہوں نے تمہیں دودھ پلایا اور تمہاری رضاعی بہنیں۔ (ت)

وعلی ہذا القیاس باقی صورتیں، اور جب مرضہ کی سب اولاد رضیع کے بہن بھائی ہو گئے تو رضیع کی اولاد مرضہ کے لیے یقینا اپنے بہن بھائی کی اولاد ہے، اور اپنے بہن بھائی کی اولاد یقینا اجماعاً حرام ہے، تو پھوپھی بھتیجے یا چچا بھتیجی یا خالہ بھانجے یا ماموں بھانجی کا زنا کیونکر حلال ہو سکتا ہے، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

نص ۲: صحیحین میں عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما اور صحیح مسلم میں امیر المؤمنین مولا علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ سے ہے، انھوں نے حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے عرض کی: یا رسول اللہ! حضور کے چچا حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی صاحبزادی قریش میں سب سے زائد خوبصورت نوجوان ہیں حضور چاہیں تو ان سے

---

1 صحیح مسلم کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۶۷ 2 القرآن الکریم ۲۳/۴

Fatawa Razawiya Volume 11

Regarding marriage, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "She is not lawful for me; she is the daughter of my foster brother. And what is forbidden through blood relationship is also forbidden through fosterage." (1) She is not lawful for me as she is my foster brother's daughter, and whatever relationship is prohibited by lineage is also prohibited by milk (fosterage).

The words of another hadith are: "Do you not know that Hamza is my brother through fosterage, and Allah has forbidden through fosterage what He has forbidden through lineage?" (2) Do you not know that Hamza is my milk-sharing brother, and Allah has forbidden those relationships through milk which He has forbidden through lineage.

This is a clear indication that a foster brother's daughter is forbidden. When a brother has drunk his sister's milk, he becomes the foster brother of his sister's son; how then could his daughter be lawful for the sister's son! Text 3: Also, in Sahihayn (Bukhari & Muslim) from Zainab bint Abi Salama (may Allah be pleased with them both), the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said regarding Durra bint Abi Salama (may Allah be pleased with them both): "Even if she were not my stepdaughter, she would not be lawful for me, for Thuwaybah nursed me and her father." (3) Meaning, firstly, she is my stepdaughter as she is the daughter of Umm-ul-Momineen Umm Salama (may Allah be pleased with her). And even if she were not my stepdaughter, she would still not be lawful for me because her father, Abu Salama, was my foster brother. Thuwaybah nursed both me and him (peace and blessings of Allah be upon him and them).

This is also a clear text stating that a foster brother's daughter is forbidden. Text 4 & 5: In Mirqat Sharh Mishkat, under the commentary of the first hadith from Imam Baghawi's (may Allah's mercy be upon him) Sharh-us-Sunnah, it is stated: "In this hadith is evidence that the prohibition of fosterage is like the prohibition of lineage in marriages. So when a woman nurses an infant, it becomes forbidden for the nursed infant and his offspring from..." Meaning, this hadith provides evidence that the prohibition of milk and lineage is the same regarding marriages. So, when a woman nurses a child, then for that nursling and...

1. Sahih Muslim, Kitab al-Rada', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/467
2. Musnad Imam Ahmad, Kitab al-Rada', Dar al-Fikr, Beirut, 1/275

3. Sahih Muslim, Kitab al-Rada', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/468

फ़तावा रज़विया खंड 11

निकाह के संबंध में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "वह मेरे लिए हलाल नहीं है; वह मेरे रज़ाई (दूध शरीक) भाई की बेटी है। और जो कुछ खूनी रिश्तों (नसब) से हराम है, वह रज़ाअत (दूध के रिश्ते) से भी हराम है।" (1) वह मेरे लिए हलाल नहीं है क्योंकि वह मेरे रज़ाई भाई की बेटी है, और जो रिश्ता नसब से हराम है, वह दूध से भी हराम है।

दूसरी हदीस के शब्द इस प्रकार हैं: "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हमज़ा मेरे रज़ाई भाई हैं, और अल्लाह ने रज़ाअत से वही रिश्ते हराम किए हैं जो नसब से हराम किए हैं?" (2) तुम्हें मालूम नहीं कि हमज़ा मेरे दूध शरीक भाई हैं और अल्लाह ने जो रिश्ते नसब से हराम फरमाए हैं, वे दूध से भी हराम फरमाए हैं।

साफ़ इशारा है कि रज़ाई भाई की बेटी हराम है। जब भाई ने अपनी बहन का दूध पिया तो वह अपनी बहन के बेटे का रज़ाई भाई हो गया, तो उसकी बेटी बहन के बेटे के लिए कैसे हलाल हो सकती है! नस्स 3: साथ ही सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में ज़ैनब बिन्त अबी सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णित है, हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दुर्रा बिन्त अबी सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के बारे में फरमाया: "अगर वह मेरी रबीबा (सौतेली बेटी) न भी होती, तब भी वह मेरे लिए हलाल न होती, क्योंकि सुवैबा ने मुझे और उसके पिता को दूध पिलाया था।" (3) यानी अव्वल तो वह मेरी रबीबा है क्योंकि वह उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की बेटी है। और अगर वह रबीबा न भी होती, तब भी मेरे लिए हलाल न होती क्योंकि उसके पिता अबू सलमा मेरे रज़ाई भाई थे। मुझे और उन्हें सुवैबा ने दूध पिलाया है (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम)।

यह भी इसी तरह स्पष्ट प्रमाण (नस्स) है कि रज़ाई भाई की बेटी हराम है। नस्स 4 और 5: मिरक़ात शरह मिश्क़ात में इमाम बग़वी (रहमतुल्लाह अलैहि) की शरह-उस-सुन्ना से पहली हदीस की व्याख्या में है: "हदीस में इस बात का प्रमाण है कि निकाह के मामले में रज़ाअत की हुरमत (प्रतिबंध) नसब की हुरमत की तरह ही है। अतः जब कोई स्त्री किसी शिशु को दूध पिलाती है, तो उस शिशु और उसकी संतान के लिए..." यानी इस हदीस में दलील है कि निकाहों के बारे में दूध और नसब की हुरमत एक जैसी है, तो जब कोई औरत किसी बच्चे को दूध पिलाए तो उस रज़ई और...

1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-रज़ा, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/467
2. मुस्नद इमाम अहमद, किताब अल-रज़ा, दार अल-फ़िक्र, बेरुत, 1/275

3. सहीह मुस्लिम, किताब अल-रज़ा, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/468

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

نکاح فرمالیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: انھا لاتحل لی انھا ابنۃ اخی من الرضاعۃ ویحرم من الرضاعۃ مایحرم من الرحم -1 وہ میرے لیے حلال نہیں وہ میرے رضاعی بھائی کی بیٹی ہے، اور جو کچھ نسبی رشتہ سے حرام ہے وہ دودھ سے بھی حرام ہے،

دوسری حدیث کے لفظ یہ ہیں: اما علمت ان حمزۃ اخی من الرضاعۃ وان اللہ حرم من الرضاعۃ ماحرم من النسب -2 تمھیں معلوم نہیں کہ حمزہ میرے دودھ شریک بھائی ہیں اور اللہ نے جو رشتے نسب سے حرام فرمائے وہ دودھ سے بھی حرام فرمائے ہیں۔

صاف اشارہ ہے کہ رضاعی بھائی کی بیٹی حرام ہے جب بھائی نے اپنی بہن کا دودھ پیا تو وہ اپنی بہن کے بیٹے کا رضاعی بھائی ہو گیا تو اس کی بیٹی بہن کے بیٹے کے لیے کیونکر حلال ہو سکتی ہے! نص 3: نیز صحیحین میں زینب بنت ابی سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ہے، حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے درہ بنت ابی سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہما کے بارے میں فرمایا: لو لم تکن ربیبتی ماحلت لی ارضعتنی واباھا ثویبۃ -3 یعنی اول تو میری ربیبہ ہے کہ ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کی بیٹی ہے اور اگر ربیبہ نہ بھی ہوتی جب بھی میرے لیے حلال نہ ہوتی کہ اس کے باپ ابو سلمہ میرے رضاعی بھائی تھے مجھے اور ان کو ثویبہ نے دودھ پلایا ہے صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلیہم وسلم۔

یہ بھی اس طرح نص صریح ہے کہ رضاعی بھائی کی بیٹی حرام ہے۔ نص 4 و 5: مرقاۃ شرح مشکوٰۃ میں شرح السنۃ امام بغوی رحمۃ اللہ تعالٰی سے شرح حدیث اول میں ہے: فی الحدیث دلیل علی ان حرمۃ الرضاعۃ کحرمۃ النسب فی المناکح فاذا ارضعت المرأۃ رضیعا یحرم علی الرضیع و

اولادہ من یعنی اس حدیث میں دلیل ہے کہ نکاحوں کے بارے میں دودھ اور نسب کی حرمت ایک سی ہے، تو جب کوئی عورت کسی بچہ کو دودھ پلائے تو اس رضیع اور

1 صحیح مسلم کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی 1/ 467 2 مسند امام احمد کتاب الرضاع دارالفکر بیروت 1/ 275 3 صحیح مسلم کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی 1/ 468

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Box 1] Arabic: Aqārib al-murdi'ah kullu man yahrumu 'alā waladihā min al-nasab (1) Urdu Translation: All relatives of the wet nurse who are forbidden for her biological children will become forbidden for the descendants of the breastfed child (radi').

This is a general, explicit text stating that all descendants of the wet nurse are forbidden for all descendants of the breastfed child.

Text 6: It is stated in Tafsir Nishapuri regarding milk-nieces (brother's and sister's daughters): [Box 2] Arabic: Kadhālika banātu man arda'at ummaka (2) Urdu Translation: Meaning, in the same way, those whom your mother breastfed.

If it was a male, his daughters became your nieces (brother's daughters), and if it was a female, her daughters became your nieces (sister's daughters), and all these are included under 'daughter of brother' and 'daughter of sister' and are forbidden.

Text 7: It is stated in Mustakhlas Sharh Kanz: [Box 3] Arabic: Tahrumu zawjatu al-radi'i 'alā zawji al-murdi'ati wa-kadhā banātu banātihi 'alā zawji al-murdi'ati wa-abnā'ihi kadhā fuhima min Sharh al-Wiqāyah (3) Urdu Translation: Meaning, the wife of the breastfed child is forbidden for the wet nurse's husband. Similarly, the daughters and granddaughters of the breastfed child are forbidden for the wet nurse's husband and his sons. This is what is understood from Sharh al-Wiqayah.

Text 8: The Hadith of the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her), which is in the Sahihayn, Bukhari and Muslim: [Box 4] Arabic: Jā'a 'ammī min al-radā'ati fa-qāla Rasūlullāhi salla Allāhu ta'ālā 'alayhi wa-sallama innahu 'ammuka fa-lyalij 'alayka (4) Hadha mukhtasar. Urdu Translation: My foster uncle came. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'He is your uncle, so let him enter upon you.' (Briefly)

Shaikh Muhaqqiq gave this explanation of a foster uncle in Lum'at: [Box 5] Arabic: Bi-anna umma abīhā arda'at-hu aw ummuhu arda'at abāhā (5) Urdu Translation: Meaning, foster uncle refers to a situation where either the grandmother of the Mother of the Believers breastfed him, or his mother breastfed the father of the Mother of the Believers.

This second form is an explicit statement that the daughter of anyone whom one's own mother breastfed is one's niece and a mahram (unmarriageable kin).

Footnotes: 1. Mirqat Sharh Mishkat, Bab al-Muharramat, Maktabah Imdadiyya Multan, 23/6, 222 2. Gharaib al-Quran (Nishapuri) under 'Hurrimat alaykum ummahatukum', Mustafa al-Babi Egypt, 8/5 3. Mustakhlas al-Haqa'iq, Kitab al-Rad'a, Wali Printing Works Delhi, 99/2 4. Sahih Muslim, Kitab al-Rad'a, Qadimi Kutub Khana Karachi, 466/1 5. Lum'at al-Tanqih

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[बॉक्स 1] अरबी: अक़ारिब अल-मुर्दिआ कुल्लू मन यहरुमु अला वलदिहा मिन अन-नसब (1) उर्दू अनुवाद: रज़ी (स्तनपान करने वाला बच्चा) की औलाद पर धाय (नर्स) के वे सभी रिश्तेदार हराम हो जाएँगे जो धाय की अपनी नसबी औलाद पर हराम हैं।

यह एक आम और स्पष्ट पाठ है कि रज़ी की तमाम औलाद पर धाय की तमाम औलाद हराम है।

नस् 6: तफ़सीर निशापुरी में दूध की भतीजियों और भांजियों के बयान में है: [बॉक्स 2] अरबी: कज़ालिका बनातु मन अरदअत उम्मका (2) उर्दू अनुवाद: यानी उसी तरह जिसे तुम्हारी माँ ने दूध पिलाया।

अगर वह पुरुष था तो उसकी बेटियाँ तुम्हारी भतीजियाँ हो गईं, और अगर वह औरत थी तो उसकी बेटियाँ तुम्हारी भांजियाँ हो गईं, और ये सभी 'भाई की बेटी' और 'बहन की बेटी' में शामिल हैं और हराम हैं।

नस् 7: मुस्तख़लस शरह कंज़ में है: [बॉक्स 3] अरबी: तहुरुम ज़ौजतुर रज़ीइ अला ज़ौज़िल मुर्दिअति व कज़ा बनातु बनातिही अला ज़ौज़िल मुर्दिअति व अबनाइही कज़ा फ़ुहिमा मिन शरह अल-विक़ाया (3) उर्दू अनुवाद: यानी रज़ी की बीवी धाय के शौहर पर हराम है। इसी तरह रज़ी की बेटियाँ और पोतियाँ धाय के शौहर और उसके बेटों पर हराम हैं, शरह विक़ाया का मफ़ाद (अर्थ) यही है।

नस् 8: उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु अन्हा) की हदीस जो सहीहैन बुखारी व मुस्लिम में है: [बॉक्स 4] अरबी: जाआ अम्मी मिन अर-रज़ाअति फ़क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लमा इन्नहू अम्मुक फल-यलिज अलैका (4) हाज़ा मुख़्तसर। उर्दू अनुवाद: मेरे रज़ाई चाचा आए, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: दूध का चाचा भी चाचा है, उनसे परदे की ज़रूरत नहीं है। (संक्षेप में)

शेख़ मुहक़्क़िक़ ने लमआत में रज़ाई चाचा की यह व्याख्या फ़रमाई: [बॉक्स 5] अरबी: बि-अन्ना उम्मा अबीहा अरदअतहु औ उम्मुहु अरदअत अबाहा (5) उर्दू अनुवाद: यानी दूध के चाचा का अर्थ है कि या तो उम्मुल मोमिनीन की दादी ने उन्हें दूध पिलाया या उनकी माँ ने उम्मुल मोमिनीन के बाप को दूध पिलाया।

यह दूसरी सूरत स्पष्ट व्याख्या है कि अपनी माँ ने जिसे दूध पिलाया, उसकी बेटी अपनी भतीजी और महरम है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. मिरक़ात शरह मिश्क़ात, बाब अल-मुहर्रमात, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 23/6, 222 2. ग़राइबुल क़ुरआन (निशापुरी) 'हुर्रिमति अलैकुम उम्महातुकुम' के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 8/5 3. मुस्तख़लसुल हक़ाइक़, किताबुर रज़ा, वली प्रिंटिंग वर्क्स दिल्ली, 99/2 4. सहीह मुस्लिम, किताबुर रज़ा, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 466/1 5. लमआतत तनक़ीह

جلد یازدہم | فتاویٰ رضویہ

[Box 1] اقارب المرضعة کل من یحرم علی ولدھا من النسب 1 | رضیع کی اولاد پر مرضہ کے وہ سب رشتہ دار حرام ہو جائیں گے جو مرضہ کی نسبی اولاد پر حرام ہیں،

یہ عام نص صریح ہے کہ رضیع کی تمام اولاد پر مرضہ کی تمام اولاد حرام ہے،

نص ۶: تفسیر نیشاپوری میں دودھ کی بھتیجیوں بھانجیوں کے بیان میں ہے: [Box 2] کذلک بنات من ارضعت امک 2 | یعنی اسی طرح جس کو تیری ماں نے دودھ پلایا۔

وہ مرد تھا اس کی بیٹیاں تیری بھتیجیاں ہو گئیں، اور عورت تھی تو اس کی بیٹیاں تیری بھانجیوں ہو گئیں اور یہ سب بنت الاخ وبنت الاخت میں داخل اور حرام ہیں۔

نص ۷: مستخلص شرح کنز میں ہے: [Box 3] تحرم زوجة الرضیع علی زوج المرضعة وکذا بنات بناته علی زوج المرضعة وابنائه کذا فھم من شرح الوقایة 3 | یعنی رضیع کی بی بی مرضہ کے شوہر پر حرام ہے یونہی رضیع کی بیٹیاں نواسیاں مرضہ کے شوہر اور اس کے بیٹوں پر حرام ہیں ، شرح وقایہ کا مفاد یہی ہے۔

نص ۸: ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی حدیث کہ صحیحین بخاری و مسلم میں ہے: [Box 4] جاء عمی من الرضاعة فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم انه عمك فلیلج علیك 4 هذا مختصر۔ | میرے رضاعی چچا آئے ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دودھ کا چچا بھی چچا ہے ، ان سے پردہ کی حاجت نہیں۔ (مختصراً)

شیخ محقق نے لمعات میں رضاعی چچا کی یہ تفسیر فرمائی: [Box 5] بان ام ابیھا ارضعتہ او امہ ارضعت اباھا 5 | یعنی دودھ کے چچا یوں کہ یا تو ام المومنین کی دادی نے انھیں دودھ پلایا یا ان کی ماں نے ام المومنین کے باپ کو دودھ پلایا۔

یہ صورت دوم تصریح صریح ہے کہ اپنی ماں نے جسے دودھ پلایا اس کی بیٹی اپنی بھتیجی اور محرم ہے

1 مرقاۃ شرح مشکوٰۃ باب المحرمات مکتبہ امدادیہ ملتان ۲۳/۶، ۲۲۲ 2 غرائب القران (نیشاپوری) حرمت علیکم امہاتکم کے تحت مصطفیٰ البابی مصر ۸/۵ 3 مستخلص الحقائق کتاب الرضاع ولی پرنٹنگ ورکس دہلی ۹۹/۲ 4 صحیح مسلم کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۶۶/۱ 5 لمعات التنقیح

Fatawa Rizvia Volume Eleven

Text 9 & 10: The most eminent Imam Abu Zakariya Nawawi in Sharh Sahih Muslim and Imam Badr al-Din Ayni in Umda al-Qari Sharh Sahih Bukhari state regarding the husband of the wet nurse:

(And the wording is from Nawawi): Our doctrine and the doctrine of all scholars collectively is the establishment of the prohibition through fosterage between him and the breastfed infant. He (the infant) becomes his child, and the children of the breastfed infant become the children of the man. (Summarized)[1]	**In the words of Imam Nawawi, our position and the position of all scholars is that the prohibition of fosterage is established between the infant and the husband of the wet nurse. The infant becomes his child, and the offspring of the infant become the offspring of that man,**

That is, just as the offspring of a breastfed infant are, by definitive consensus, the grandchildren of the wet nurse, similarly, by the consensus of the four schools of jurisprudence and all leaders and jurists, they are also the grandchildren of the wet nurse's husband. And by the consensus of the blessed Ummah, a person's parents' grandchildren are definitively prohibited for them, as are their nephews and nieces.

Text 11, 12, 13, & 14: In Fath al-Qadir, al-Bahr al-Ra'iq, Tahtawi, Mirqat Sharh al-Mishkat, etc., it is stated:

Verily, he (Allah's blessings and peace be upon him) referred what is prohibited due to fosterage to what is prohibited due to lineage. What is prohibited due to lineage are those whom the address of prohibition pertains to. It has pertained to those who were expressed by the terms: mothers, daughters, your sisters, your paternal aunts, your maternal aunts, the brother's daughters, and the sister's daughters. So, whatever name of these terms is realized through fosterage, it is prohibited therein.[2]

That is, the Messenger of Allah (may Allah Almighty send blessings and peace upon him) referred the prohibitions due to milk (fosterage) to the prohibitions due to lineage, stating that what is prohibited by lineage is also prohibited by milk. And those prohibited by lineage are those with whom the Divine Address of prohibition is associated. And it is associated with those to whom the terms mother, daughter, sister, paternal aunt, maternal aunt, or brother's daughter or sister's daughter apply. Thus, in breastfeeding relationships, whoever these terms apply to are also prohibited.

It is clear that for someone whom one's own mother breastfed, the term sister or brother applies, and for that reason, they are forbidden. Consequently, for their children, the term son/daughter of a brother or sister applies; inevitably, they too are definitively forbidden.

Text 15: In Fatawa Bazzaziyya, it is stated:

The universal principle in fosterage is that every woman...	**That is, the universal rule in breastfeeding relationships is that...**

[1] Sharh Sahih Muslim with Sahih Muslim, Book of Fosterage, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/466 [2] al-Bahr al-Ra'iq, Book of Fosterage, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/22-23

फ़तावा रज़विया खंड 11

पाठ 9 और 10: महान इमाम अबू ज़कारिया नववी 'शराह सहीह मुस्लिम' में और इमाम बद्रुद्दीन ऐनी 'उम्दतुल क़ारी शराह सहीह बुखारी' में स्तनपान कराने वाली महिला (मुर्ज़िया) के पति के बारे में फरमाते हैं:

(और शब्द नववी के हैं): हमारा और सभी विद्वानों का सामूहिक मत है कि उसके(पति) और स्तनपान करने वाले शिशु के बीच दूध के रिश्ते (रज़ाअत) की हुरमत (प्रतिबंध) साबित हो जाती है। वह (शिशु) उसकी संतान हो जाता है और स्तनपान करने वाले की संतान उस पुरुष की संतान हो जाती है। (संक्षिप्त)[1]

इमाम नववी के शब्दों में, हमारा और समस्त विद्वानों का मत यह है कि स्तनपान करने वाले शिशु और मुर्ज़िया के पति के बीच रज़ाअत की हुरमत स्थापित हो जाती है। शिशु उसका बच्चा बन जाता है और उस बच्चे की संतान भी उस व्यक्ति की संतान मानी जाती है।

यानी जिस प्रकार स्तनपान करने वाले बच्चे की संतान स्पष्ट सर्वसम्मति (इज्मा-ए-क़तई) से मुर्ज़िया की पोता-पोती या नवासा-नवासी है, उसी प्रकार चारों मज़ाहिब और समस्त इमामों और न्यायविदों की सर्वसम्मति से वे मुर्ज़िया के पति के भी पोते-पोतियां और नवासे-नवासियां हैं। और उम्मत-ए-मर्हूमा की सर्वसम्मति से, अपने माता-पिता के पोते-पोतियां और नवासे-नवासियां अपने लिए निश्चित रूप से हराम (वर्जित) हैं, और अपने भतीजे-भतीजियां और भांजे-भांजियां भी।

पाठ 11, 12, 13, और 14: 'फ़तह-उल-क़दीर', 'बहर-उर-राईक', 'तातावी', 'मिरक़ात शराह मिश्कात' आदि में वर्णित है:

निश्चय ही उन्होंने (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) दूध के रिश्तों की वर्जनाओं को वंश के रिश्तों की वर्जनाओं पर आधारित किया है। वंश से जो वर्जित हैं वे वे हैं जिनसे वर्जना का ईश्वरीय संबोधन संबंधित है। और यह उनसे संबंधित है जिन्हें माताओं, पुत्रियों, तुम्हारी बहनों, तुम्हारी बुआओं, तुम्हारी मौसियों, भाई की पुत्रियों और बहन की पुत्रियों के शब्दों द्वारा व्यक्त किया गया है। अतः इन शब्दों का जो भी नाम दूध के रिश्ते से सिद्ध हो, उसमें भी वही वर्जना होगी।[2]

यानी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दूध के रिश्तों की हुरमतों को वंश की हुरमतों का हवाला दिया कि जो वंश से हराम है वह दूध से भी हराम है। और वंश से वे हराम हैं जिनसे वर्जना का ईश्वरीय संबोधन संबंधित हुआ। और यह उनसे संबंधित हुआ है जिन पर माँ, बेटी, बहन, बुआ, मौसी या भाई की बेटी या बहन की बेटी का शब्द लागू होता है। तो दूध के रिश्तों में जिन-जिन पर ये शब्द लागू हों, वे भी हराम हैं।

स्पष्ट है कि अपनी माँ ने जिसे दूध पिलाया हो, उस पर बहन या भाई का शब्द लागू होता है और इसलिए वह स्वयं पर हराम है, तो उसकी संतान पर अपने भाई या बहन के बेटे का शब्द लागू होता है; अतः वे भी निश्चित रूप से हराम हैं।

पाठ 15: 'फ़तावा बज़ाज़िया' में है:

रज़ाअत में सार्वभौमिक सिद्धांत यह है कि प्रत्येक स्त्री...

यानी दूध के रिश्तों में सार्वभौमिक नियम यह है कि...

[1] शराह सहीह मुस्लिम मा सहीह मुस्लिम, किताबुर रज़ाअ, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/466 [2] बहरुर राईक, किताबुर रज़ाअ, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/22-23

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

نص ۹ و ۱۰: امام اجل ابوز کریا نووی شرح صحیح مسلم اور امام بدر الدین عینی عمدۃ القاری شرح صحیح بخاری میں شوہر مرضعہ کی نسبت فرماتے ہیں:

واللفظ للنووی فمذھبنا ومذھب العلماء کافۃ ثبوت حرمۃ الرضاعۃ بینہ وبین الرضیع ویصیر ولداله ویکون اولادالرضیع اولاد الرجل 1-(ملخصاً)

امام نووی کے الفاظ میں ہمارا اور تمام علماء کا مذہب یہ ہے کہ رضیع اور شوہر مرضعہ میں حرمت رضاعت ثابت ہو جاتی ہے، رضیع اس کا بچہ ہو جاتا ہے اور رضیع کی اولاد اس شخص کی اولاد ہو جاتی ہے،

یعنی اولاد رضیع جس طرح مرضعہ کی پوتا پوتی نواسا نواسی باجماع قطعی ہے یونہی باجماع مذاہب اربعہ و جملہ ائمہ وفقہاوہ شوہر مرضعہ کے بھی پوتے پوتے نواسے ہیں، اور باجماع امت مرحومہ اپنے ماں باپ کے پوتا پوتی نواسا نواسی اپنے لیے حرام قطعی اور اپنے بھتیجا بھتیجی بھانجا بھانجی ہیں۔ نص ۱۱ و ۱۲ و ۱۳ و ۱۴: فتح القدیر، بحر الرائق، طحطاوی، مرقاۃ شرح مشکوٰۃ وغیرہا میں ہے:

انه صلی اللہ تعالی علیه وسلم احال مایحرم من الرضاع علی مایحرم من النسب ومایحرم من النسب مایتعلق خطاب تحریمه به و قدتعلق بما قد عبر عنه بلفظ الامهات والبنات واخواتکم وعماتکم وخالاتکم وبنات الاخ وبنات الاخت فما کان من مسمی هذه الالفاظ متحققاً من الرضاع حرم فیه 2۔

یعنی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے دودھ کی حرمتوں کو نسب کی حرمتوں پر حوالہ فرمایا کہ جو نسب سے حرام ہے دودھ سے بھی حرام ہے، اور نسب سے وہ حرام ہیں جن سے خطاب الہی تحریم کے ساتھ متعلق ہوا، اور وہ ان سے متعلق ہوا ہے، جن پر ماں اور بیٹی اور بہن اور پھوپھی اور خالہ یا بھائی کی بیٹی یا بہن کی بیٹی کا لفظ صادق آئے تو دودھ کے رشتوں میں جن جن پر یہ لفظ صادق آئیں وہ بھی حرام ہیں۔

ظاہر ہے کہ اپنی ماں نے جسے دودھ پلایا اس پر بہن یا بھائی کا لفظ صادق ہے اور اس لیے وہ اپنے اوپر حرام ہے تو اس کی اولاد پر اپنے بھائی یا بہن کے بیٹے کا لفظ صادق ہے لاجرم وہ بھی قطعاً حرام ہیں، نص ۱۵: فتاوی بزازیہ میں ہے:

الاصل الکلی فی الرضاع ان کل امرأة یعنی دودھ کے رشتوں میں قاعدہ کلیہ یہ ہے کہ اس

1 شرح صحیح مسلم مع صحیح مسلم کتاب الرضاع قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۶۶ 2 بحر الرائق کتاب الرضاع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۲۲-۲۳

Fatawa Razawiyya, Volume 11

“If you are related to her or she is related to you through fosterage (suckling), or both of you are related to a single person without an intermediary or one without an intermediary and the other through an intermediary, then she is forbidden [for marriage].[1]” There are four types of women prohibited due to fosterage: First, those who are related to you because of milk, meaning they are called your foster-daughter, granddaughter, or great-granddaughter; this is a foster-daughter. Second, those to whom you are related because of milk, i.e., you are considered her foster-son, grandson, or great-grandson; she is a foster-mother. Third, where you and she are both established as the son and daughter of one person; these are foster siblings. Fourth, where one of you is the son or daughter of a person, and the other is that person's grandson, granddaughter, great-grandson, or great-granddaughter; these become foster paternal aunt, maternal aunt, brother's daughter (niece), or sister's daughter (niece). And if you are the grandson or great-grandson and she is the daughter, then she is your foster paternal or maternal aunt. There is no doubt that in the question's scenario, the offspring of the sister who nursed are directly her son and daughter, and the offspring of the brother who drank the milk are the grandchildren of that nursing sister. So, this is the specific fourth case of prohibition.

Nas 16: In 'Bar Jandi' commentary of 'Nuqaya' it is stated:

"The daughter of the brother includes the biological daughter of the foster-brother.[2]" | A foster-brother's daughter is also included among nieces.

Nas 18: In 'Sharh-ul-Wiqaya' and 'Durar Sharh al-Ghurar' it is stated:

"The daughter of the sister includes the biological daughter of the foster-sister.[3]" | A foster-sister's daughter is also included among nieces.

Nas 19, 20, 21, 22, 23, 24, and 25: In the reliable texts of the school: 'Kanz al-Daqaiq', 'Wiqaya', 'Nuqaya', 'Islah', 'Ghurar', 'Multaqa', 'Tanwir', it is stated:

"The wording in Ghurar: It is forbidden to marry one's ancestors, descendants, sister, sister's daughter, and brother's daughter; and all through fosterage.[4]" (Summarized) | (In the words of Ghurar) Meaning marriage with one's ancestors and descendants and sister and sister's daughter and brother's daughter is prohibited for a man, and all these are also prohibited through foster-relationships.

---

[1] Fatawa Bazzaziyya on the margins of Fatawa Hindiyya, Vol 4 on Fosterage, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/115 [2] Sharh Nuqaya by Al-Birjandi, Book of Marriage, Munshi Nawal Kishore Press, Lucknow, 2/6 [3] Sharh Wiqaya, Book of Marriage, Mujtabai Press Delhi; / Durar Sharh al-Ghurar, Book of Marriage, Ahmad Kamil, Al-Ka’ina in Dar al-Sa'adat Beirut, 1/330 [4] Al-Durar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam, Book of Marriage, Ahmad Kamil, Al-Ka’ina in Dar al-Sa'adat Beirut, 1/329

फ़तावा रज़विया, खंड 11

“यदि आप उससे संबंधित हैं या वह आपसे रज़ाअत (दूध पीने) के माध्यम से संबंधित है, या आप दोनों एक ही व्यक्ति से बिना किसी मध्यस्थ के संबंधित हैं या एक बिना मध्यस्थ के और दूसरा मध्यस्थ के माध्यम से, तो वह हराम है।[1]” दूध के कारण चार प्रकार की महिलाएँ वर्जित हैं: पहली वे जो दूध के कारण आपकी ओर संबंधित हों, यानी उन्हें आपकी रज़ाई (दुग्ध-संबंधी) बेटी, पोती या नवासी कहा जाए; यह रज़ाई बेटी हुई। दूसरी वे जिनके प्रति आप दूध के कारण संबंधित हों, यानी आप उनके रज़ाई बेटे, पोते या नवासे ठहरें; यह रज़ाई माँ हुई। तीसरी वे कि आप और वह दोनों एक ही व्यक्ति के बेटा-बेटी करार पाएँ, ये रज़ाई भाई-बहन हुए। चौथी वे कि आप में से एक उस व्यक्ति का बेटा या बेटी ठहरे और दूसरा उस व्यक्ति का पोता-पोती या नवासा-नवासी हो; ये रज़ाई ख़ाला, फूफी, भतीजी या भांजी हुए। और यदि आप पोते या नवासे हैं और वह बेटी है, तो वह आपकी फूफी या ख़ाला हुई। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पूछे गए प्रश्न की स्थिति में, दूध पिलाने वाली बहन की संतान सीधे तौर पर उसके बेटा-बेटी हैं और दूध पीने वाले भाई की संतान उस रज़ाई बहन की पोता-पोती हैं, तो यह हुरमत (निषेध) की विशेष चौथी स्थिति है।

नस 16: बर जंदी शरह नुकाया में है:

"भाई की बेटी में रज़ाई भाई की सगी बेटी भी शामिल है।[2]" | रज़ाई भाई की बेटी भी भतीजी में शामिल है।

नस 18: शरह वक़ाया और दुरर शरह ग़ुरर में है:

"बहन की बेटी में रज़ाई बहन की सगी बेटी भी शामिल है।[3]" | रज़ाई बहन की बेटी भी भांजी में शामिल है।

नस 19, 20, 21, 22, 23, 24 और 25: मज़हब के विश्वसनीय ग्रंथों 'कंज अल-दक़ा'इक़', 'वक़ाया', 'नुकाया', 'इसलाह', 'ग़ुरर', 'मुल्तक़ा', 'तनवीर' में है:

"ग़ुरर के शब्द: आदमी पर अपने रज़ाई पूर्वजों, वंशजों, बहन, बहन की बेटी और भाई की बेटी से निकाह हराम है; ये सब रज़ाअत से हैं।[4]" (संक्षिप्त) | (ग़ुरर के शब्दों में) यानी आदमी पर उसके पूर्वजों और वंशजों और बहन और बहन की बेटी और भाई की बेटी से निकाह हराम है और यह सब दूध के रिश्ते से भी हराम हैं।

[1] फ़तावा बज़ाज़िया हाशिए पर फ़तावा हिंदिया, चौथा अध्याय रज़ात में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 3/115 [2] शरह नुकाया अल-बिरजंदी, निकाह की किताब, मुंशी नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 2/6 [3] शरह वक़ाया, निकाह की किताब, मुजतबाई प्रेस दिल्ली; / दुरर शरह ग़ुरर, निकाह की किताब, अहमद कामिल, अल-का'इना दार अल-सआदत बेरूत, 1/330 [4] अल-दुरर अल-हुक्काम शरह ग़ुरर अल-अहकाम, निकाह की किताब, अहमद कामिल, अल-का'इना दार अल-सआदत बेरूत, 1/329

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

انتسبت اليك او انتسبت اليها بالرضاع او انتسبتما الى شخص واحد بلا واسطة او احد كما بلا واسطة والاخر بواسطة فهي حرام[1]۔ سے چار قسم کی عورتیں حرام ہیں، اول وہ جو دودھ کے سبب تیری طرف منسوب ہو، یعنی تیری بیٹی پوتی نواسی کہلائے یہ رضاعی بیٹی ہوئی، دوسری وہ کہ دودھ کے سبب تو اس کی طرف منسوب ہو یعنی اس کا بیٹا پوتا نواسا ٹھہرے یہ رضاعی ماں ہوئی، تیسرے وہ کہ تو اور وہ دونوں ایک شخص کے بیٹا بیٹی قرار پائیں، یہ رضاعی بہن بھائی ہوئے، چوتھے وہ کہ تم میں ایک تو اس شخص کا بیٹا یا بیٹی ٹھہرے اور دوسرا اس شخص کا پوتا پوتی نواسا نواسی یہ رضاعی خالہ پھوپھی بھتیجی بھانجی ہوئے اور اگر تو پوتا نواسا ہے اور وہ بیٹی تو وہ تیری پھوپھی یا خالہ ہوئے، شک نہیں کہ صورت مسئولہ میں دودھ پلانے والی بہن کی اولاد بلا واسطہ اس کے بیٹا بیٹی ہے اور دودھ پینے والے بھائی کی اولاد اس مرضعہ بہن کی پوتا پوتی، تو یہ تحریم کی خاص چوتھی صورت ہے۔

نص ۱۶: بر جندی شرح نقایہ میں ہے:

بنت الاخ تشتمل البنت النسبية للاخ الرضاعي[2]۔ | رضاعی بھائی کی بیٹی بھی بھتیجی میں داخل ہے۔

نص ۱۸: شرح وقایہ و درر شرح غرر میں ہے:

بنت الاخت تشتمل البنت النسبية للاخت الرضاعية[3]۔ | رضاعی بہن کی بیٹی بھی بھانجی میں داخل ہے۔

نص ۱۹ و ۲۰ و ۲۱ و ۲۲ و ۲۳ و ۲۴ و ۲۵: متون معتمدہ مذہب کنز الدقائق، وقایہ، نقایہ، اصلاح، غرر، ملتقی، تنویر میں ہے:

واللفظ للغرر حرم تزوج اصله وفرعه واخته وبنتها وبنت اخيه والكل رضاعاً[4]۔ (ملخصاً) | (غرر کے الفاظ میں) یعنی آدمی پر اس کے اصول و فروع اور بہن اور بہن کی بیٹی اور بھائی کی بیٹی سے نکاح حرام ہے اور یہ سب دودھ کے رشتے سے بھی حرام ہیں۔

---

[1] فتاویٰ بزازیہ علی ہامش فتاویٰ ہندیہ الرابع فی الرضاع نورانی کتب خانہ پشاور ۳/۱۱۵ [2] شرح نقایہ للبرجندی کتاب النکاح مطبع منشی نولکشور لکھنو ۲/۶ [3] شرح وقایہ کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ، درر شرح غرر کتاب النکاح احمد کامل الکائنہ فی دار سعادت بیروت ۳۳۰/۱ [4] الدر الحکام شرح غرر الحکام کتاب النکاح احمد کامل الکائنہ فی دار سعادت بیروت ۳۲۹/۱

Fatawa Ridawiyya - Volume 11

Text 26: Similarly, in the text of "Al-Wafi", after stating "It is not permissible for a man to marry his mother, daughter, sister, sister's daughters, and brother's daughters", the commentary "Al-Kafi" states:

- (Arabic): Know that all the prohibited persons we mentioned from the beginning of the chapter until here are also prohibited through breastfeeding (Rada'at).
- (Urdu Translation): Meaning, mother, daughter, sister, niece (sister's daughter), and niece (brother's daughter) are forbidden. All these prohibitions we have mentioned from the beginning until here are also forbidden through the foster-relationship of milk.

Text 27: It is stated in "Tabyin al-Haqa'iq":

- (Arabic): All those previously mentioned are forbidden to him through breastfeeding, and they are his mother, his sister, and the daughters of his brothers, etc.
- (Urdu Translation): Meaning all the women mentioned are also forbidden through the milk relationship: foster mother, daughter, sister, and the daughters of foster sister and brother.

Text 28: It is stated in "Durr-ul-Mukhtar":

- (Arabic): Prohibited for the person marrying, whether male or female, are their ancestors and descendants, and the daughter of their brother and sister, and their daughters, all of them through breastfeeding.
- (Urdu Translation): Meaning for every man and woman, their parents, grandparents, children, grandchildren, nephews and nieces, and children of siblings are forbidden, whether these relationships are through lineage (blood) or breastfeeding.

Text 29: It is stated in "Al-Jawharat-un-Nayyirah":

- (Arabic): Similarly, the daughters of his brother and sister through breastfeeding are forbidden, as the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "What is forbidden through lineage is also forbidden through breastfeeding."

- (Urdu Translation): Meaning just like in lineage, the daughters of foster brothers and sisters are also forbidden because the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Whatever is forbidden through blood relation is also forbidden through milk relation.

In all these glorious texts, it has been clearly and unequivocally stated with consensus and without disagreement that the daughters of foster brothers and sisters, i.e., foster nieces, are absolutely forbidden just like those related by blood. There is no doubt that brotherhood is a relationship that prevents...

Footnotes: 1. Al-Kafi Sharh al-Wafi. 2. Tabyin al-Haqa'iq, chapter on prohibited relations, Al-Matba' al-Kubra al-Amiriyya, Egypt, 2/103. 3. Durr-ul-Mukhtar, chapter on prohibited relations, Mujtabai, Delhi, 1/187. 4. Al-Jawharat-un-Nayyirah, Book of Marriage, Maktabah Imdadiyya Multan, 2/28.

फ़तावा रज़विया - खंड 11

नस् (पाठ) 26: इसी प्रकार 'अल-वाफ़ी' के मूल पाठ में 'एक पुरुष के लिए अपनी माँ, बेटी, बहन, बहन की बेटियों और भाई की बेटियों से विवाह करना जायज़ नहीं है' कहने के बाद 'शरह काफ़ी' में फ़रमाया है:

- (अरबी): "जान लें कि अध्याय के आरम्भ से यहाँ तक हमने जिन वर्जित स्त्रियों का उल्लेख किया है, वे स्तनपान (रज़ाअत) के कारण भी वर्जित हैं।"
- (उर्दू अनुवाद): अर्थात् माँ, बेटी, बहन, भांजी और भतीजी हराम हैं। और ये जितनी भी वर्जित स्त्रियाँ हमने आरम्भ से यहाँ तक उल्लेख की हैं, वे सब दूध के रिश्ते से भी हराम हैं।

नस् 27: 'तबीन अल-हकाइक' में है:

- (अरबी): "ऊपर उल्लेखित सभी स्त्रियाँ स्तनपान के कारण उस पर हराम हैं, और वे उसकी माँ, उसकी बहन और उसके भाइयों की बेटियाँ आदि हैं।"
- (उर्दू अनुवाद): अर्थात् जितनी स्त्रियों का उल्लेख हुआ है, वे सब दूध के रिश्ते से भी हराम हैं; रज़ाई (दूध की) माँ और बेटी और बहन, और रज़ाई बहन और भाई की बेटियाँ।

नस् 28: 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

- (अरबी): "विवाह करने वाले पुरुष या महिला पर उसके पूर्वज और वंशज, और उसके भाई और बहन की बेटी, और उनकी बेटियाँ, सभी स्तनपान के कारण वर्जित हैं।"
- (उर्दू अनुवाद): अर्थात् प्रत्येक पुरुष और महिला पर उसके माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, बेटा-बेटी, पोता-पोती, नवासा-नवासी, भतीजा-भतीजी, भाई और बहन की सन्तानें हराम हैं, चाहे ये रिश्ते वंश (रक्त) से हों या दूध (स्तनपान) से।

नस् 29: 'जौहरा नय्यिरा' में है:

- (अरबी): "इसी प्रकार रज़ाअत (स्तनपान) के माध्यम से भाई और बहन की बेटियाँ भी हराम हैं, क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'जो वंश (रक्त संबंध) से हराम है, वह स्तनपान से भी हराम है'।"

- (उर्दू अनुवाद): अर्थात् रक्त संबंध की तरह रज़ाई भाई-बहन की बेटियाँ भी हराम हैं क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जो रक्त संबंध से हराम है, वह दूध के रिश्ते से भी हराम है।

इन सभी स्पष्ट ग्रंथों में सर्वसम्मति और बिना किसी मतभेद के साफ़ तौर पर यह स्पष्ट किया गया है कि रज़ाई भाई-बहन की बेटियाँ, भांजी और भतीजी, रक्त संबंध की तरह ही पूरी तरह से वर्जित (हराम) हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बंधुत्व का रिश्ता ऐसा है कि...

पादलेख (फुटनोट): 1. अल-काफ़ी शरह वाफ़ी। 2. तबीन अल-हकाइक, वर्जित स्त्रियों का अध्याय, अल-मतबा अल-कुबरा अल-अमीरिया मिस्र, 2/103। 3. दुर्रे मुख़्तार, वर्जित स्त्रियों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/187। 4. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, विवाह की पुस्तक, पुस्तकालय इमदादिया मुल्तान, 2/28।

جلد یازدہم - فتاویٰ رضویہ

نص ۲۶: یونہی متن وافی میں لایحل للرجل ان یتزوج بامہ وبنتہ واختہ وبنات اختہ وبنات اخیہ فرما کر شرح کافی میں فرمایا:

- اعلم ان من ذکرنا من المحرمات من اول الفصل الی ھنا تحرم من الرضاع ایضاً۔ | یعنی ماں اور بیٹی اور بہن اور بھانجی اور بھتیجی حرام ہیں اور یہ جتنی محرمات شروع سے یہاں تک ہم نے ذکر کیں سب دودھ کے رشتہ سے بھی حرام ہیں۔

نص ۲۷: تبیین الحقائق میں ہے:

- یحرم علیہ جمیع من تقدم ذکرہ من الرضاع وھی امہ واختہ وبنات اخوتہ الخ۔ | یعنی جتنی عورتیں مذکور ہوئیں سب دودھ کے رشتہ سے بھی حرام ہیں رضاعی ماں اور بیٹی اور بہن اور رضاعی بہن اور بھائی کی بیٹیاں۔

نص ۲۸: درمختار میں ہے:

- حرم علی المتزوج ذکرا او انثی اصلہ وفرعہ وبنت اخیہ واختہ وبنتھا والکل رضاعاً۔ | یعنی ہر مرد و عورت پر اس کے ماں باپ، دادا دادی، نانا نانی، بیٹا بیٹی، پوتا پوتی، نواسا نواسی، بھتیجا بھتیجی، بہن اور بھائی کے بیٹا بیٹی خواہ یہ رشتے نسب سے ہوں یا دودھ سے، حرام ہیں۔

نص ۲۹: جوہرہ نیرہ میں ہے:

- كذلك بنات اخيه وبنات اخته من الرضاعة لقول رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم يحرم من الرضاع مآ يحرم من النسب۔ | یعنی نسبی کی طرح رضاعی بھائی بہن کی بیٹیاں بھی حرام ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو نسب سے حرام ہے وہ دودھ سے بھی حرام ہے۔

ان تمام نصوص جلیلہ میں بالاتفاق بلاخلاف صاف صاف واشگاف تصریحیں فرمائیں کہ رضاعی بھائی بہن کی بیٹیاں، بھانجی، بھتیجی نسبی کی طرح حرام قطعی ہیں، اور شک نہیں کہ اخوت رشتہ منکرہ ہے کہ دونوں

حاشیہ: ۱ الکافی شرح وافی ۲ تبیین الحقائق فصل فی المحرمات مطبع الکبری الامریہ مصر ۱۰۳/۲ ۳ درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱۸۷/۱ ۴ الجوهرة النيرة كتاب النكاح مكتبه امداد یہ ملتان ۲۸/۲

Fatawa Razawiya Volume 11

...is established equally from [both] sides; just as the son of the wet-nurse becomes the brother of the suckling, it is necessary that similarly the suckling becomes the brother of the wet-nurse's son. It is impossible that Zaid is Amr's brother but Amr is not Zaid's brother. And when the suckling is certainly and by consensus the brother of the wet-nurse's children, which no sane person nor even an intelligent child would deny. And all the Imams and categorical texts of the school of thought provide clear explanations that the daughter of a foster brother is prohibited. So how could the children of the suckling be permissible for the children of the wet-nurse? This would certainly be against categorical texts and the consensus of the Ummah. In them, the daughter of each is such that the daughter of a foster brother is prohibited, and both the suckling and the wet-nurse's son are certainly foster brothers to each other. So the daughter of each of them is categorically prohibited to the other. Can any sane person even imagine that one brother's daughter is prohibited to the other, but the other brother's daughter is permissible for this brother? Is there any room for such an absurd and nonsensical distinction in Sharia, custom, intellect, or tradition? God forbid, not at all.

Text 30: It is stated in Sharh Wiqayah: 'Az jaanib-e-sheer deh hama khwaish shawand wa az jaanib-e-sheer khwara zaujan wa furoo' (1) (On the side of the milk-giver, all relatives will be prohibited; and on the side of the milk-drinker, he/she, his/her spouse, and their descendants will be prohibited. - T)

This verse is also mentioned in Niqayah and Sharh al-Kanz for Mulla Miskeen. Fazil Chalpi and Fazil Qara Baghi, the annotators of Sharh Wiqayah, and Allama Barjandi, the commentator of Niqayah, did not write even a single letter about it. Allama Qahistani wrote two lines in Persian which did not explain the core meaning beyond the literal words (Note 1). And Allama Sayyid Abul Saud Azhari in Fathullah al-Mubin wrote half a line of its Arabic translation, which is only half a translation of even one hemistich of the verse (Note 2). Above all...

Note 1: Where he said: i.e., the milk-giver and her husband with their children, fathers, mothers, and their sisters become relatives of the suckling; and the suckling and his wife or her husband with their children become relatives of the milk-giver and her husband. 12 (M) (2) It was said thus: meaning the woman who gave milk and her husband, their children, parents, brothers, and their sisters will be relatives of the

suckling, and the one who drank milk along with their spouse and children will be relatives of the milk-giver and her husband. 12 (T)

Note 2: Where he said: The meaning of the verse is that the wives of the suckling and his descendants are prohibited to his [foster] father. (3) 12 (M) It was said thus: The meaning of the verse is that the wives of the suckling and his children are prohibited to their foster father. 12 (T)

1. Sharh Wiqayah, Kitab al-Rada', Mujtabai Press, Delhi, 2/7
2. Jami' al-Rumuz by Al-Qahistani, Kitab al-Rada', Maktaba Islamiya, Gunbad Qamus, Iran, 1/501
3. Fath al-Mu'in, Section on Prohibitions, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/13

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...तरफ से यकसां कायम होता है, जिस तरह मुरज़िअह का बेटा रज़ीअ का भाई हुआ, वाजिब कि यूँ ही रज़ीअ पिसर-ए-मुरज़िअह का भाई हो यह मुहाल है कि ज़ैद तो अम्र का भाई हो और अम्र ज़ैद का भाई न हो, और जब रज़ीअ औलाद-ए-मुरज़िअह का यक़ीनन इज्माअन भाई है जिससे इनकार किसी ज़ी-अक्ल बल्कि फ़हीम बच्चे को भी मुतसव्वर नहीं। और जुमला आइम्मा व नुसूस-ए-मज़हब सरीह क़तई तसरीहें फ़रमा रहे हैं कि रज़ाई भाई की बेटी हराम है तो रज़ीअ की औलाद मुरज़िअह की औलाद के लिए क्योंकर हलाल हो सकती है, यह यक़ीनन नुसूस-ए-क़तइय्या व इज्मा-ए-उम्मत के ख़िलाफ़ हैं। तो उन में हर एक की बेटी है कि रज़ाई भाई की बेटी हराम है और रज़ीअ और पिसर-ए-मुरज़िअह दोनों यक़ीनन आपस में रज़ाई भाई हैं। तो उन में हर एक की बेटी दूसरे पर हराम-ए-क़तई है, क्या कोई आक़िल यह भी गुमान कर सकता है कि एक भाई की बेटी दूसरे पर हराम हो और इस दूसरे भाई की बेटी इस भाई के लिए हलाल हो, शरीअत, उर्फ, अक्ल, नक़्ल किसी में भी इस लघव व बेहूदा फ़र्क़ की गुंजाइश हो सकती है? हाशा हरगिज़ नहीं।

नस्र 30: शरह विक़ाया में फ़रमाया: 'अज़ जानिब-ए-शीर देह हमा ख़्वेश शवन्द व अज़ जानिब-ए-शीर ख़्वारह ज़ौजवान व फ़रुआ' (1) (दूध पिलाने वाली की जानिब से तमाम रिश्ते हराम होंगे और शीर ख़्वार की जानिब से वह और उसका ज़ौज या ज़ौजा और उसके फ़रुआ हराम होंगे। -त)

यह शेर निक़ाया व शरह अल-कन्ज़ लिल-मुल्ला मिस्कीन में भी मज़कूर है। फ़ाज़िल चल्पी व फ़ाज़िल क़र्रा बागी मुहश्शियान-ए-शरह विक़ाया व अल्लामा बरजंदी शारह-ए-निक़ाया ने तो इस पर एक हर्फ़ भी न लिखा और अल्लामा क़हस्तानी ने दो सतरें फ़ारसी में लिख दीं जिनसे ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ के सिवा मग़ज़-ए-मतलब की कुछ तौज़ीह न हुई (ह़ाशिया 1)। और अल्लामा सैय्यद अबुल सऊद अज़हरी ने फ़तह़ुल्लाह अल-मुबीन में आधी सतर इसके तर्जुमा अरबी की लिखी जो शेर के सिर्फ़ एक मिसरा का भी आधा ही तर्जुमा है (ह़ाशिया 2) सब से...

ह़ाशिया 1: हैसु क़ाल यानी 'शीर देहन्दा व शौहरश बा फ़रज़न्दान व पिदरान व मादरान व ख़्वाह़रान-ए-ईशां ख़्वेश-ए-ख़्वारह शवन्द व शीर ख़्वारह व ज़नश या शौहरश बा फ़रज़न्दान-ए-ख़्वेश शीर देहन्दा व शौहरश शवन्द' 12 (म) (2) यूँ कहा यानी दूध पिलाने वाली और उसका खाविन्द, उनकी औलाद, वालिदैन, भाई और उनकी बहनें शीर ख़्वार के रिश्तेदार होंगे और दूध पीने वाला उसकी बीवी या खाविन्द, औलाद समेत दूध पिलाने वाली और उसके खाविन्द के रिश्तेदार होंगे 12 (त)

ह़ाशिया 2: हैसु क़ाल 'मानी अल-बैत इन्ना ज़ौजआत अर-रज़ीअ व फ़रुआहू युहरमना अला अबीही' (3) 12 (म) यूँ कहा शेर का मानी यह है कि दूध पीने वाले की बीवियां और उसकी औलाद अपने रज़ाई बाप पर हराम हैं 12 (त)

1. शरह विक़ाया किताब अर-रज़ाअ मतबअ मुज्तबाई दिल्ली 2/7
2. जामे अर-रुमुज़ लिल-क़हस्तानी किताब अर-रज़ाअ मकतबा इस्लामिया गुम्बद क़ामूस ईरान 1/501
3. फ़तह अल-मुईन फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात एच एम सईद कंपनी कराची 2/13

طرف سے یکساں قائم ہوتا ہے، جس طرح مرضعہ کا بیٹا رضیع کا بھائی ہوا، واجب کہ یوں ہی رضیع پسر مرضعہ کا بھائی ہو یہ محال ہے کہ زید تو عمرو کا بھائی ہو اور عمرو زید کا بھائی نہ ہو، اور جب رضیع اولادِ مرضعہ کا یقیناً اجماعاً بھائی ہے جس سے انکار کسی ذی عقل بلکہ فہیم بچہ کو بھی متصور نہیں ۔ اور جملہ ائمہ و نصوص مذہب صریح قطعی تصریحیں فرمارہے ہیں کہ رضاعی بھائی کی بیٹی حرام ہے تو رضیع کی اولاد مرضعہ کی اولاد کے لیے کیونکر حلال ہو سکتی ہے، یہ یقیناً نصوص قطعیہ و اجماعِ امت کے خلاف ہیں۔ توان میں ہر ایک کی بیٹی ہے کہ رضاعی بھائی کی بیٹی حرام ہے اور رضیع اور پسرِ مرضعہ دونوں یقیناً آپس میں رضاعی بھائی ہیں۔ توان میں ہر ایک کی بیٹی دوسرے پر حرام قطعی ہے، کیا کوئی عاقل یہ بھی گمان کر سکتا ہے کہ ایک بھائی کی بیٹی دوسرے پر حرام ہو اور اس دوسرے بھائی کی بیٹی اس بھائی کے لیے حلال ہو ، شرع، عرف، عقل، نقل کسی میں بھی اس لغو و بیہودہ فرق کی گنجائش ہو سکتی ہے؟ حاشاہر گز نہیں۔

نص ۳۰: شرح وقایہ میں فرمایا: از جانب شیر دہ ہمہ خویش شوند وز جانب شیر خوارہ زوجان و فروع ۱ (دودھ پلانے والی کی جانب سے تمام رشتے حرام ہوں گے اور شیر خوار کی جانب سے وہ اور اس کا زوج یا زوجہ اور اس کے فروع حرام ہوں گے ۔ت)

یہ شعر نقایہ و شرح الکنز للملا مسکین میں بھی مذکور ہے۔ فاضل چلپی و فاضل قرہ باغی محشیان شرح وقایہ و علامہ بر جندی شارح نقایہ نے تو اس پر ایک حرف بھی نہ لکھا اور علامہ قہستانی نے دو سطریں فارسی میں لکھ دیں جن سے ظاہری الفاظ کے سوا مغز مطلب کی کچھ توضیح نہ

ہوئی عہ ۱ ۔ اور علامہ سید ابوالسعود ازہری نے فتح اللہ المبین میں آدھی سطر اس کے ترجمہ عربی کی لکھی جو شعر کے صرف ایک مصرع کا بھی آدھا ہی ترجمہ ہے عہ ۲ سب سے

عہ ۱ : حیث قال یعنی شیر دہندہ و شوہرش با فرزندان و پدران و مادران و خواہران ایشاں خویش خوارہ شوند و شیر خوارہ وزنش یا شوہرش با فرزندان خویش شیر دہندہ و شوہرش شوند ۱۲ (م) ۲ یوں کہا یعنی دودھ پلانے والی اور اس کا خاوند ، ان کی اولاد ، والدین ، بھائی اور ان کی بہنیں شیر خوار کے رشتہ دار ہوں گے اور دودھ پینے والا اس کی بیوی یا خاوند ، اولاد سمیت دودھ پلانے والی اور اس کے خاوند کے رشتہ دار ہوں گے ۱۲ (ت)

عہ ۲: حیث قال معنی البیت ان زوجات الرضیع و فروعہ یحرمن علی ابیہ ۳ ۱۲ (م) یوں کہا شعر کا معنی یہ ہے کہ دودھ پینے والے کی بیویاں اور اس کی اولاد اپنے رضاعی باپ پر حرام ہیں ۱۲ (ت)

۱ شرح وقایہ کتاب الرضاع مطبع مجتبائی دہلی ۲/۷ ۲ جامع الرموز للقہستانی کتاب الرضاع مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/۵۰۱ ۳ فتح المعین فصل فی المحرمات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۱۳

The late Lakhnawi scholar also contented himself with a mere translation in 'Umdat al-Ri'aya, adding only one extra word which was also incorrect.

Arabic Text

Since he said: The meaning of the first hemistich is that from the side of the nursing woman and likewise her husband, everyone becomes a relative of the nursed child, i.e., those who have a prohibited relationship (mahram) by lineage (nasab). Thus, the nursing woman, her husband, and their close relatives are included. The meaning of the second hemistich is that from the side of the nursed child, kinship is only established for the nursing woman and her husband from his offspring and one of his two spouses.[1] [End of quote]

Urdu Translation (from the book)

He said this: The meaning of the first hemistich is that from the side of the wet-nurse and her husband, all relations will be close to the nursed child, meaning those relations of theirs which are prohibited due to lineage. So, the wet-nurse, her husband, and the close relatives of both will be included. And the meaning of the second hemistich is that from the side of the nursed child, the relationship with the wet-nurse and her husband will be established for all his descendants and his spouse. [End of quote] (T)

It is obvious that this is just a translation; the only addition is that 'all' refers to blood mahrams. This is incorrect because all relatives of the parents who are prohibited for the children are prohibited whether they are through lineage, fosterage, or affinity, regardless of whether they themselves are mahrams of the parents or not. Wherever the meaning of 'mahram by lineage' exists, all are intended. For example, the foster parents' foster parents, sons, daughters, grandsons, granddaughters, grandsons, and granddaughters are prohibited for the foster son or daughter, even though they are foster mahrams of the foster parents, not lineage mahrams. Similarly, the step-parents of the foster parents are prohibited for the foster son or daughter because they are the wives of the foster maternal/paternal grandfathers and the husbands of the foster maternal/paternal grandmothers, even though they are foster mahrams by affinity (shari), not lineage. Likewise, the second wife of the foster father and the second husband of the foster mother are prohibited for the foster son or daughter as they are their step-parents, even though they are not mahrams of the foster parents but are 'halil' and 'halila' (spouse's spouse). Thus, both 'mahram' and 'nasabi' constraints are wrong. In fact, the word 'qarabah' (kinship) itself is not correct

because in the first hemistich, the word 'hama' (all) certainly includes the spouses of the wet-nurse, and spousehood is not part of kinship. In the Nishapuri exegesis, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation (from the book)
Your mother through fosterage is every female who nursed you or nursed the one who nursed you.[2]	Your foster mother means every woman who has nursed you or your foster mother. (T)

In Hindiya, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation (from the book)
The prohibitions due to affinity (musaharah) are four groups, the fourth...	There are four groups of prohibited ones due to marriage, the fourth

[1] Umdat al-Ri'ayah, Annotation of Sharh al-Wiqayah, Book of Fosterage, Mujtabai Delhi, 7/2 [2] Ghara'ib al-Qur'an (Nishapuri) under the verse 'Prohibited to you are your mothers...', Mustafa al-Babi Egypt, 8/5

स्वर्गीय लखनवी साहब ने भी 'उम्दतुत अल-रिआया' में केवल अनुवाद पर संतोष किया, केवल एक शब्द अतिरिक्त जोड़ा वह भी गलत था।

अरबी पाठ

चूँकि उन्होंने कहा: पहले मिसरे (अर्ध-पद्य) का अर्थ यह है कि दूध पिलाने वाली और उसके पति की ओर से सभी दूध पीने वाले (बच्चे) के करीबी रिश्तेदार हो जाएंगे, यानी वे जो वंश (नसब) के आधार पर निषिद्ध (महरम) रिश्तेदार होते हैं। अतः दूध पिलाने वाली, उसका पति और उन दोनों के करीबी रिश्तेदार इसमें शामिल होंगे। और दूसरे मिसरे का अर्थ यह है कि दूध पीने वाले की ओर से, दूध पिलाने वाली और उसके पति के लिए केवल उसकी संतानों और उसके जीवनसाथियों में से एक के लिए रिश्तेदारी सिद्ध होगी।[1] [समाप्त]

उर्दू अनुवाद (पुस्तक से)

उन्होंने इस प्रकार कहा: पहले मिसरे का अर्थ यह है कि दूध पिलाने वाली और उसके पति की ओर से सभी रिश्ते दूध पीने वाले के करीबी होंगे यानी उनके वे रिश्ते जो वंशानुगत रूप से हराम (निषिद्ध) होते हैं, तो इसमें दूध पिलाने वाली और उसका पति और इन दोनों के करीबी शामिल होंगे, और दूसरे मिसरे का अर्थ यह है कि दूध पीने वाले की ओर से दूध पिलाने वाली और उसके पति पर तमाम वंशज और उसके पति या पत्नी की रिश्तेदारी सिद्ध होगी, अंततः(त)

ज़ाहिर है यह केवल अनुवाद है, बस इतना अतिरिक्त है कि 'हमा' (सभी) से मुराद महरम-ए-नसब हैं, यह गलत है क्योंकि माता-पिता के जितने रिश्तेदार बच्चों पर हराम होते हैं, चाहे वे नसब से हों, रज़ाई (दूध का रिश्ता) हों या सहरी (विवाह से संबंधित), वे स्वयं माता-पिता के महरम हों या न हों। जहाँ-जहाँ नसब में महरम होने का अर्थ मौजूद हो, वे सब मुराद हैं, उदाहरण के लिए रज़ाई माता-पिता के रज़ाई माता-पिता, बेटा-बेटी, पोता-पोती, नवासा-नवासी रज़ाई बच्चे पर हराम हैं हालाँकि वे रज़ाई माता-पिता के रज़ाई महरम हैं न कि नसब के। इसी प्रकार रज़ाई माता-पिता के सौतेले माता-पिता रज़ाई बच्चे पर हराम हैं क्योंकि वे रज़ाई के रज़ाई नाना-दादा की पत्नियाँ हैं और रज़ाई नानी-दादी के पति हैं हालाँकि वे रज़ाई माता-पिता के सहरी महरम हैं न कि नसब के। इसी तरह रज़ाई पिता की दूसरी पत्नी और रज़ाई माँ का दूसरा पति रज़ाई बच्चे पर हराम हैं क्योंकि वे उनके सौतेले माता-पिता हैं हालाँकि वे रज़ाई माता-पिता के महरम ही नहीं बल्कि हलील और हलीला हैं, तो 'महरम' और 'नसबिया' दोनों शर्तें गलत हैं बल्कि वास्तव में 'क़राबत' (रिश्तेदारी) शब्द ही ठीक नहीं क्योंकि पहले

मिसरे में 'हमा' (सभी) शब्द मरज़अ (दूध पिलाने वाली) के पति-पत्नी को भी निश्चित रूप से शामिल करता है, और वैवाहिक संबंध रिश्तेदारी में शामिल नहीं है। निशापुरी तफ़्सीर में है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद (पुस्तक से)**
तुम्हारी रज़ाई (दूध पिलाने वाली) माँ वह प्रत्येक स्त्री है जिसने तुम्हें या जिसने तुम्हें दूध पिलाया उसे दूध पिलाया हो।[2]	तेरी रज़ाई माँ से मुराद यह है कि हर वह औरत जिसने तुझे या तेरी रज़ाई माँ को दूध पिलाया हो (त)

हंदिया में है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद (पुस्तक से)**
विवाह के कारण हराम (निषिद्ध) होने वालों के चार समूह हैं, चौथा...	निकाह की वजह से मुहर्रमात के चार समूह हैं, चौथा

---

[1] 'उम्दतुल रिआया' हाशया शरह अल-विकाया, किताबुल रज़ा, मुजतबाई दिल्ली, 7/2 [2] ग़रैबुल क़ुरआन (निशापुरी) आयत 'तुम पर तुम्हारी माँएँ हराम की गई हैं...' के अंतर्गत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 8/5

متاخر لکھنوی صاحب نے بھی عمدۃ الرعایہ میں نرے ترجمہ پر قناعت کی، فقط ایک حرف زائد کیا وہ بھی غلط۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
حیث قال مفاد المصرع الاول ان من جانب المرضعۃ وکذا زوجھا یکون الکل ذا قرابۃ من الرضیع ای الذین لھم قرابۃ محرمۃ من النسب فیدخل فیہ المرضعۃ وزوجھا واقرباؤھما ومفاد المصرع الثانی ان من جانب الرضیع انما یثبت القرابۃ للمرضعۃ وزوجھا من فروعہ واحد زوجیہ[1] انتھی۔	انھوں نے یوں کہا پہلے مصرع کا مفاد یہ ہے کہ دودھ پلانے والی اور اس کے خاوند کی جانب سے تمام رشتے دودھ پینے والے کے قریبی ہوں گے یعنی ان کے وہ رشتے جو نسبی طور پر حرام ہوتے ہیں، تو اس میں دودھ پلانے والی اور اس کا خاوند اور ان دونوں کے اقرباء داخل ہوں گے، اور دوسرے مصرع کا مفاد یہ ہے کہ دودھ پینے والے کی جانب سے دودھ پلانے والی اور اس کے زوج پر تمام فروع اور اس کے زوج یا زوجہ کی قرابت ثابت ہوگی، انتہی (ت)

ظاہر ہے یہ محض ترجمہ ہے، صرف اتنا زائد ہے کہ ہمہ سے مراد محارم نسبی ہیں، یہ غلط ہے کہ ماں باپ کے جتنے علاقہ والے اولاد پر حرام ہوتے ہیں نسبی ہوں خواہ رضاعی صہری، وہ خود ماں باپ کے محارم ہوں یا نہ ہوں۔ جہاں جہاں معنی محرم فی النسب موجود ہو سب مراد ہیں، مثلاً رضاعی ماں باپ کے رضاعی ماں باپ بیٹا بیٹی پوتا پوتی نواسا نواسی رضیع ورضیعہ پر حرام ہیں حالانکہ وہ رضاعی ماں باپ کے محارم رضاعی ہیں نہ کہ نسبی، یوں ہی رضاعی ماں باپ کے سوتیلے ماں باپ رضیع ورضیعہ پر حرام ہیں کہ وہ رضیع کے رضاعی نانا دادا کی بیبیاں

ہیں اور رضیعہ کے رضاعی نانی دادی کے شوہر حالانکہ وہ رضاعی ماں باپ کے محارم صہری ہیں نہ کہ نسبی، یونہی رضاعی باپ کے دوسری بی بی رضاعی ماں کا دوسرا شوہر رضیع ورضیعہ پر حرام ہیں کہ وہ ان کے سوتیلے ماں باپ ہیں حالانکہ وہ رضاعی ماں باپ کے محارم ہی نہیں بلکہ حلیل وحلیلہ ہیں، تو قرابت محرمہ اور نسبیہ دونوں قیدیں غلط ہیں بلکہ سرے سے لفظ قرابت ہی ٹھیک نہیں کہ مصرع اول میں لفظ ہمہ مرضع کے زوجین کو بھی یقیناً شامل، اور زوجیت داخل قرابت نہیں، تفسیر نیشاپوری میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
امك من الرضاع كل انثى ارضعتك تیری رضاعی ماں سے مراد یہ ہے کہ ہر وہ عورت جس نے	
او ارضعت من ارضعتك[2]. تجھے یا تیری رضاعی ماں کو دودھ پلایا ہو (ت)	

ہندیہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
المحرمات بالصهرية اربع فرق، الرابعة نکاح کی وجہ سے محرمات کے چار گروہ ہیں، چوتھا	

---

[1] عمدة الرعاية حاشیہ شرح الوقایہ کتاب الرضاع مجتبائی دہلی ۲/۷ [2] غرائب القرآن (نیشاپوری) تحت آیت حرمت علیکم امهاتکم الخ مصطفی البابی مصر ۵/۸

Fatawa Razawiyya Volume 11

Wives of fathers and grandfathers from the paternal and maternal sides, no matter how high they go. As stated in al-Hawi al-Qudsi.[1]

Mothers' and fathers' real wives, even if these fathers and grandfathers are from generations above. It is thus in al-Hawi al-Qudsi. (T)

Then he wrote:

All those who are prohibited by blood relation and affinity are also prohibited through fosterage (radha'ah). Thus it is in Muhit al-Sarakhsi.[2]

All those foster relations who are forbidden through blood relation and marriage are also forbidden. In Muhit al-Sarakhsi, it is stated thus. (T)

In Tabyin al-Haqa'iq, it is stated:

It is not permissible for him to marry his mother, his father's consort, or his wife's daughter, through foster relationships.[3]

It is not permissible for him to marry his mother, his father's wife (with whom he had relations), or his wife's daughter through these foster relationships. (T)

In short, the humble author has not seen anyone clarify this couplet. And the people of our time have subtle, rather severe, slips in understanding it; therefore, it is appropriate to provide an explanation to the extent of necessity.

I say: And with Allah is success (meaning: I say, and success is from Allah Almighty. T). The original cause for prohibition is 'part-hood' (juz'iyyah), which is manifest in lineage, and the Noble Sharia has considered the aversion (karahat) for humans in fosterage, which became well-known and famous in custom. In this regard, He said: "And your mothers who nursed you." The basis of marital relation (zawjiyyah) also returns to the aspect of part-hood, as established in al-Hidayah, al-Kafi, al-Tabyin, etc. (as researched in Hidayah, Kafi, Tabyin, etc. T). However, its actualization in marriage is extremely obscure, such that general intellects fail to reach it. Therefore, the author of the rule kept two relations in the couplet: one of marriage and the second of part-hood, whether it be by lineage or fosterage. Furthermore, there are two forms of the relation of part-hood between two individuals: first, that one of them is a part of the other; second, that both are parts of a third. In the first case, two categories arise: 'Roots' (Usul), of whom you are a part, i.e., father, grandfather, maternal grandfather, mother, grandmother, maternal grandmother, however high

they go, whether by lineage or fosterage; and 'Branches' (Furu'), who are parts of you, i.e., son, grandson, daughter's son, daughter, granddaughter, daughter's daughter, however low they go. And in the second case, there are three forms:

---

[1] Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Fi Bayan al-Muharramat, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/277 [2] Fatawa Hindiyya, Kitab al-Nikah, Fi Bayan al-Muharramat, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/277 [3] Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Radha', Matba' al-Kubra al-Amiriyya, Egypt, 3/183

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

पिताओं और दादाओं की पत्नियाँ, चाहे पिता की तरफ से हों या माता की तरफ से, चाहे वे कितनी ही ऊपर तक हों। जैसा कि 'अल-हावी अल-कुदसी' में है।[1]

माँ और बाप की तरफ से सगे बाप-दादाओं की पत्नियाँ, भले ही ये बाप-दादा पीढ़ियों ऊपर हों। हावी अल-कुदसी में इसी तरह है। (त)

फिर लिखा:

दूध के रिश्तों (रज़ाअत) के कारण हराम होने वाले वे सभी हैं जो रक्त संबंध और वैवाहिक संबंध से हराम होते हैं। 'मुहीत सरख़सी' में इसी तरह है।[2]

रज़ाई (दूध के) महरम वे सभी हैं जो रक्त संबंध और विवाह से हराम होते हैं। मुहीत सरख़सी में इसी तरह है। (त)

तबीनुल हक़ाइक़ में है:

उसके लिए यह जायज़ नहीं है कि वह अपनी माँ, अपने पिता की पत्नी, या अपनी पत्नी की बेटी से उन दूध के रिश्तों के माध्यम से निकाह करे।[3]

उसके लिए यह जायज़ नहीं है कि वह माँ, बाप की वती की हुई (पत्नी) और अपनी पत्नी की बेटी से इन रज़ाई रिश्तों के कारण निकाह करे। (त)

संक्षेप में, इस तुच्छ सेवक ने नहीं देखा कि किसी ने इस कविता को स्पष्ट किया हो। और ज़माने के लोगों को इसे समझने में सूक्ष्म बल्कि गंभीर गलतियाँ होती हैं, इसलिए ज़रूरत के अनुसार इसकी व्याख्या कर देना उचित है।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफीक से है (यानी मैं कहता हूँ और तौफीक अल्लाह तआला से है। त)। हराम होने का मूल कारण 'जुज़इय्यत' (अंग होना) है जो वंश (नसब) में स्पष्ट है और दूध पिलाने (रज़ाअत) में इंसान के लिए शरीअत-ए-करीम ने इसे मान्य माना है और यह रीति-रिवाजों में भी प्रसिद्ध हुआ है, जिसके आधार पर [अल्लाह ने] फरमाया: "और तुम्हारी वे माताएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया"। वैवाहिक संबंध का आधार भी 'जुज़इय्यत' की ओर ही लौटता है, जैसा कि 'हिदाया', 'काफी' और 'तबीन' आदि में सिद्ध किया गया है। (जैसा कि हिदाया, काफी और तबीन आदि में शोध है। त)। लेकिन विवाह में इसकी वास्तविकता अत्यंत सूक्ष्म है कि सामान्य समझ वहाँ तक पहुँचने में असमर्थ है, इसलिए नियम बनाने वाले ने कविता में दो संबंध रखे हैं, एक वैवाहिक और दूसरा

जुज़इय्यत, चाहे वह वंश से हो या दूध के रिश्ते से। फिर दो व्यक्तियों के बीच जुज़इय्यत के संबंध की दो स्थितियाँ हैं: पहली यह कि उनमें से एक दूसरे का हिस्सा हो, दूसरी यह कि दोनों किसी तीसरे का हिस्सा हों। पहली स्थिति में दो प्रकार उत्पन्न होते हैं: मूल (उसूल), जिनका आप हिस्सा हैं यानी पिता, दादा, नाना, माँ, दादी, नानी जहाँ तक ऊपर जाएँ चाहे वंश से हों या दूध के रिश्ते से; और शाखाएँ (फ़ुरूअ) जो आपके हिस्से हैं यानी बेटा, पोता, नवासा, बेटी, पोती, नवासी जहाँ तक नीचे जाएँ। और दूसरी स्थिति में तीन रूप हैं:

---

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, फ़ी बयानिल मुहर्रमात, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/277 [2] फ़तावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, फ़ी बयानिल मुहर्रमात, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/277 [3] तबीनुल हक़ाइक़, किताबुर रज़ा, मतबा अल-कुबरा अल-अमीरिया, मिस्र, 3/183

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

نساء الآباء والاجداد من جهة الاب والام وان علوا كذا فى الحاوى القدسى۔ [1]

ماں باپ کی طرف سے سگے باپ دادوں کی بیویاں اگرچہ یہ باپ دادے اوپر تک ہوں، حاوی القدسی میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

پھر لکھا:

المحرمات بالرضاع كل من تحرم بالقرابة و الصهريه كذا فى محيط للسرخسى۔ [2]

رضاعی محرمات وہ تمام جو قرابت اور نکاح سے حرام ہوتے ہیں۔ محیط سرخسی میں یوں ہی ہے۔ (ت)

تبیین الحقائق میں ہے:

لا يجوز له ان يتزوج بأمه ولا بموطوءة ابيه ولا ببنت امرأته كل ذلك من الرضاع۔ [3]

اس کو یہ جائز نہیں کہ وہ ماں، باپ کی وطی کردہ (بیوی) اور اپنی بیوی کی بیٹی ان رضاعی رشتوں سے نکاح کرے۔ (ت)

غرض فقیر نے نہ دیکھا کہ اس شعر کا ایضاح کسی نے کیا ہو۔ اور اہل زمانہ کو اس کی فہم میں دقیق بلکہ سخت لغزشیں ہوتی ہیں لہٰذا بقدر حاجت اس کی شرح کر دینی مناسب۔

فاقول: وبالله التوفيق (پس میں کہتا ہوں اور توفیق اللہ تعالی سے ہے۔ ت) اصل علت حرمت جزئیت ہے کہ نسب میں ظاہر اور رضاع میں کراہت انسان کے لیے شرع کریم نے معتبر فرمائی اور عرف میں بھی معروف و مشتہر ہوئی جس کے لحاظ سے "وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ" فرمایا، اور زوجیت کا مرجع بھی جانب جزئیت ہے کما حققه فی الهدایه والکافی والتبیین وغیرہا (جیساکہ ہدایہ، کافی اور تبیین وغیرہ میں تحقیق ہے۔ ت) مگر زوجیت میں اس کا تحقق نہایت غموض میں ہے کہ

مدارک عامہ اس تک وصول سے قاصر، لہٰذا صاحب ضابطہ نے شعر میں دو علاقے رکھے، ایک زوجیت دوسرا جزئیت، عام ازیں کہ یہ نسباً ہو یا رضاعاً، پھر دو شخصوں میں علاقہ جزئیت کی دو صورتیں ہیں: ایک یہ کہ ان میں ایک دوسرے کا جز ہو، دوسرے یہ کہ دونوں تیسرے کے جز ہوں، صورت اولیٰ میں دو قسمیں پیدا ہوئیں، اصول، جن کا تو جز ہے یعنی باپ، دادا، نانا، ماں، دادی، نانی جہاں تک بلند ہوں نسباً خواہ رضاعاً، اور فروع جو تیرے جز ہیں یعنی بیٹا، پوتا، نواسا، بیٹی، پوتی، نواسی جہاں تک نیچے جائیں، اور صورت ثانیہ میں تین صورتیں ہیں:

---

[1] فتاوی ہندیہ کتاب النکاح فی بیان المحرمات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۷۷ [2] فتاوی ہندیہ کتاب النکاح فی بیان المحرمات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۷۷ [3] تبیین الحقائق کتاب الرضاع مطبع الکبری الامیریہ مصر ۳ / ۱۸۳

Volume 11 Fatawa Razawiyya

(1) Both are near branches of a third party; these are real, consanguine (paternal half), or uterine (maternal half) brothers or sisters, or brother and sister; regardless of whether both are its biological branches or both are foster branches or one is biological and one is foster. (2) One of them is a near branch of the third party and the other is distant; with these generalizations, this forms the relationship of paternal and maternal unclehood/aunthood. The near branch is the paternal uncle, maternal uncle, maternal aunt, or paternal aunt of itself or its mother, father, grandfather, grandmother, or maternal grandfather/grandmother; and the distant branch, in relation to these connections, is the corresponding nephew or niece. (3) Both are distant branches of the third party, like a person's grandson and granddaughter. This third case is excluded from prohibition; even in pure lineage, it is permissible. Thus, there are four cases of prohibition: First: Origin (Asl), Second: Branch (Far'), no matter how near or far they are. In branches, the branches of branches and so on to infinity are all included. Similarly, in origins, the origins of origins and so on to the ultimate limit. Third: The branch of a near origin, even if it is distant, such as the granddaughter or grandson of a mother or father and their descendants and progeny. Fourth: The near branch of a distant origin, like a paternal aunt who is the daughter of a grandfather, or a maternal aunt who is the daughter of a maternal grandfather, or a grandfather's paternal aunt who is the daughter of the great-grandfather's father, or his maternal aunt who is the daughter of the grandfather's maternal grandfather, and so on (and analogy is based on this. T). With the fifth relationship being marriage, relating them to each of the breast-feeder and breast-fed makes ten. Then, the fundamental connection arises in the suckling (radz') and the wet nurse (murdzi'ah). The suckling becomes her branch and the wet nurse becomes its origin. And when she becomes the mother, the man whose milk it was necessarily becomes the father. Their near branches are like the near branches of its near origin, and distant branches are like the distant branches of its near origin, and their origins are its origins because the origin of an origin is an origin. Consequently, from the side of the breast-feeder, all relationships are established and necessitate prohibition. However, the origin of a branch is not necessarily its own origin or branch. Therefore, the origins of the breast-fed child have no connection to the breast-feeder. And when the origins themselves remain unrelated, then what relationship will the near or distant branches of the origins have in terms of being branches of those origins? Their relationship would have been through the origins.

They themselves are unrelated. Yes, the branch of a branch is certainly a branch, so from the side of the breast-fed child, only two relationships are established and cause prohibition: marriage and being a branch. Marriage and branchhood — now understand their details and the meaning of becoming kin (khwaish-shond) in each (from the side of the breast-feeder). First: Spouses, i.e., the husband of the wet nurse if the milk sucked by the female infant was not his but another husband's, or the wife of the male infant if he did not suck her milk but that of another wife, or a husband or wife of any near or distant ancestor of the male or female infant such that the nursing connection was not through them. All these are prohibited for the suckled male and female infants. Here, 'becoming kin' means they become the step-parents or step-grandparents of the suckled infants. Second: The origin, which is the wet nurse and the male infant themselves, i.e., the woman who breastfed and the man whose milk it was and their...

(१) दोनों तीसरे पक्ष की निकट शाखाएँ(संतान) हों, वे सगे (पूर्ण), वैमात्रेय (पितृपक्षीय), या गर्भाशयी (मातृपक्षीय) भाई या बहनें या भाई-बहन हों; चाहे वे दोनों उसकी वंशानुगत शाखाएँ हों या दोनों दुग्ध-सम्बन्धी (रज़ाई) या एक वंशानुगत और एक दुग्ध-सम्बन्धी। (२) उनमें से एक तीसरे पक्ष की निकट शाखा हो और दूसरी दूर की, इन सामान्यताओं के साथ यह चाचा-ताया और मामा-मौसी का रिश्ता हुआ। निकट शाखा स्वयं या अपनी माँ या बाप या दादा या दादी या नाना-नानी के चाचा, मामा, मौसी, बुआ हैं, और दूर की शाखा इन्हीं रिश्तों के आधार पर उनके सामने भतीजा, भांजा, भतीजी, भांजी है। (३) दोनों तीसरे पक्ष की दूर की शाखाएँ हों जैसे किसी व्यक्ति का पोता और नवासी (बेटी की बेटी), यह तीसरी स्थिति निषेध (तहरीम) से बाहर है; शुद्ध वंश में भी यह जायज़ (वैध) है। अतः निषेध की चार स्थितियाँ हैं: प्रथम: मूल (अस्ल), द्वितीय: शाखा (फ़रअ), ये दोनों कितने ही निकट या दूर हों। शाखाओं में शाखाओं की शाखाएँ और उससे आगे अनंत तक सब शामिल हैं। इसी तरह मूल में मूल के मूल और उससे ऊपर अंतिम सीमा तक। तृतीय: निकट मूल की शाखा चाहे वह दूर की हो, जैसे माँ या बाप की पोती, नवासी और उनकी संतान और संतान की संतान। चतुर्थ: दूर के मूल की निकट शाखा जैसे बुआ जो दादा की बेटी है या मौसी जो नाना की बेटी है, या दादा की बुआ जो परदादा के पिता की बेटी है या उसकी मौसी जो दादा के नाना की बेटी है, और इसी पर अनुमान (क़यास) करें (टी)। पाँचवाँ रिश्ता वैवाहिक (ज़ौजियत) है, इन्हें दूध पिलाने वाली और दूध पीने वाले प्रत्येक की ओर संबद्ध करने से दस हुए। फिर, मूल संबंध स्तनपान करने वाले (रज़अ) और स्तनपान कराने वाली (मुर्ज़िआ) में उत्पन्न होता है। स्तनपान करने वाला उसका अंश (शाखा) बन जाता है और स्तनपान कराने वाली उसकी मूल (माँ), और जब वह माँ बन गई, तो जिस पुरुष का वह दूध था वह निश्चित रूप से पिता बन गया। उनकी निकटवर्ती शाखाएं उसके निकट मूल की निकटवर्ती शाखाओं की तरह हैं, और दूर की शाखाएं उसके निकट मूल की दूर की शाखाएं हैं, और उनके मूल उसके मूल हैं क्योंकि मूल का मूल मूल ही होता है। परिणामत; दूध पिलाने वाले की ओर से सभी संबंध स्थापित और निषेध के कारण होते हैं। लेकिन शाखा का मूल न तो अपना मूल होना आवश्यक है और न ही शाखा। अतः, दूध पीने वाले के मूल का दूध पिलाने वाले से कोई संबंध नहीं हुआ। और जब मूल स्वयं असंबद्ध रहे, तो मूल की निकट या दूर की शाखाओं का इन मूलों की शाखाओं होने के नाते क्या संबंध होगा? उनका संबंध मूल के माध्यम से होता। वे स्वयं असंबद्ध हैं। हाँ, शाखा की शाखा निश्चित रूप से शाखा होती है, इसलिए दूध पीने वाले की ओर से केवल दो संबंध स्थापित और निषेध का

कारण होते हैं: वैवाहिक और शाखीय। वैवाहिक और शाखीय — अब उनका विवरण और प्रत्येक में 'रिश्तेदार बनने' (ख्वैश शुवंद) का अर्थ समझें (दूध पिलाने वाले की ओर से)। प्रथम: पति-पत्नी, अर्थात दूध पिलाने वाली का पति यदि वह दूध जो बच्ची ने पिया उसका नहीं बल्कि दूसरे पति का था, या दूध पीने वाले की पत्नी यदि उसने उसका दूध नहीं बल्कि दूसरी पत्नी का पिया था, या दूध पीने वाले और दूध पिलाने वाली के मूल में निकट या दूर का कोई ऐसा पति या पत्नी जिससे दूध का सिलसिला न चला हो। ये सभी दूध पीने वाले बालक और बालिका पर हराम हैं और यहाँ 'रिश्तेदार बनने' का अर्थ यह है कि वे दूध पीने वालों के सौतेले माँ-बाप या सौतेले दादा-दादी, नाना-नानी हो गए। द्वितीय: मूल, जो स्वयं स्तनपान कराने वाली और कराने वाला पुरुष हैं, यानी वह महिला जिसने दूध पिलाया और वह पुरुष जिसका यह दूध था और उनके..

पेज ५०२/७३९

(۱) دونوں ثالث کے جز قریب ہوں، یہ عینی یا علاتی یا اخیافی بھائی یا بہنیں یا بہن بھائی ہوئے، عام ازیں کہ دونوں اس کے جز نسبی ہوں یا دونوں رضاعی یا ایک نسبی ایک رضاعی۔ (۲) ان میں ایک تو ثالث کا جز قریب ہو اور دوسرا بعید، یہ انہی تعمیموں کے ساتھ عمومت اور خولت کا رشتہ ہوا، جزء قریب اپنے یا اپنے ماں یا باپ یا دادا یا دادی یا نانا نانی کے چا ماموں خالہ پھوپھی، اور جزء بعید انہی نسبتوں پر ان کے مقابل بھتیجا بھانجا بھتیجی بھانجی، (۳) دونوں ثالث کے جز بعید ہوں جیسے ایک شخص کا پوتا اور نواسی ، یہ تیسری صورت تحریم سے ساقط ہے خالص نسب میں بھی حلال ہے تو حرمت میں چار صورتیں ہیں: اول اصل، دوم فرع، یہ دونوں کتنے ہی نزدیک یا دور ہوں تو فروع میں فروع الفروع اور فروع الفروع لالیٰ نہایہ سب داخل ہیں۔ یونہی اصول میں اصول الاصول اور اصول اصول الاصول الی غایۃ المنتہی، سوم اصل قریب کی فرع اگرچہ بعید ہو جیسے ماں یا باپ کی پوتی نواسی اور ان کی اولاد و اولاد اولاد۔ چہارم اصل بعید کی فرع قریب جیسے پھوپھی کہ دادا کی بیٹی ہے یا خالہ کہ نانا کی بیٹی یا دادا کی پھوپھی کہ پر دادا کے باپ کی بیٹی ہے یا اس کی خالہ کہ دادا کے نانا کی بیٹی ہے وقس علیہ (اور قیاس اسی پر ہے۔ ت) جاریہ اور پانچواں علاقہ زوجیت انھیں شیر دہ اور شیر خوارہ ہر ایک کی طرف نسبت کرنے سے دس ہوئے، پھر اصل تعلق رضع اور مرضعہ میں پیدا ہوتا ہے، رضع اس کا جزء ہوتا ہے اور مرضعہ اس کی اصل، اور جب وہ ماں ہوئی تو جس مرد کا دودھ تھا وہ ضرور باپ ہو گیا، اور ان کے فروع قریبہ اس کے اصل قریب کے فروع قریب، اور فروع بعیدہ اس کے اصل قریب کے فرع بعید، اور ان کے اصول اس کے اصول کہ اصل کی اصل اصل ہے، لاجرم جانب شیر دہ سے سب علاقے متحقق و موجب تحریم ہوئے، مگر فرع کی اصل نہ اپنی اصل ہو نا لازم نہ فرع، تو شیر

خوارہ کے اصول کو شیر دہ سے کچھ تعلق نہ ہوا، اور جب خود اصول غیر متعلق رہے تو اصول کے فروع قریبہ یا بعیدہ اس حیثیت سے کہ ان اصول کے فروع میں کیا علاقہ رکھیں گے کہ ان کا علاقہ تو بواسطہ اصول ہوتا۔ وہ خود بے تعلق ہیں، ہاں فرع کی فرع ضرور فرع ہوتی ہے تو جانب شیر خوارہ سے صرف دو علاقے ثابت و باعث حرمت ہوئے۔ زوجیت و فرعیت ۔ اب ان کی تفصیل اور ہر ایک میں معنی خوییش شوند سمجھئے (از جانب شیر دہ) اول زوجین یعنی مرضعہ کا شوہر کہ یہ دودھ جو رضعیہ نے پیا اس کا نہ تھا دوسرے شوہر کا تھا، یا مرضع کی زوجہ کہ رضع نے اس کا دودھ نہ پیا بلکہ دوسری زوجہ کا، یا مرضع و مرضعہ کے اصول میں نزدیک و دور کسی کے زوج وزوجہ کہ سلسلہ شیر ان سے نہ ہوئے، یہ سب رضع و مرضعہ پر حرام ہیں اور یہاں خوییش شوند کے معنی یہ ہیں کہ وہ رضعین کے سوتیلے ماں باپ یا سوتیلے دادا دادی، نانا نانی ہو گئے۔ دوم اصل کہ خود مرضع و مرضعہ ہیں یعنی وہ عورت جس نے دودھ پلایا اور وہ مرد جس کا یہ دودھ تھا اور ان کے

Fatawa Razawiyya - Volume Eleven

Biological and foster ancestors, both paternal and maternal, to their furthest extent. Here, 'relatives' (khwaish) means that the foster mother and foster father become the parents of the fostered child, and their ancestors become their biological grandparents and great-grandparents.

Third: Descendants, who are the fostered children themselves, and all their biological and foster descendants, male and female, to the furthest extent. Here, this means they all become the sons, daughters, grandsons, granddaughters, and so on, of the foster mother and foster father.

Fourth: Descendants of close ancestors, i.e., biological and foster descendants and descendants of descendants of the foster parents to the end. Here, this means they all become siblings, nephews, and nieces of the fostered children. Then, if they are descendants of both foster mother and foster father, they are full siblings (aini); if only of the foster father, they are paternal siblings (allati); and if only of the foster mother, they are maternal siblings (akhyafi).

Fifth: Close descendants of distant ancestors, i.e., close biological or foster descendants of the ancestors and ancestors of the ancestors of the foster parents. Here, this means they all become the foster paternal uncles, maternal uncles, paternal aunts, and maternal aunts of the fostered child or the fostered child's ancestors.

(From the fostered child's side) First: Spouses, i.e., the wife of a fostered male and the husband of a fostered female, or the spouse of any biological or foster descendant of the fostered male or female. These all become prohibited for the foster parents. Here, this means they become the sons-in-law and daughters-in-law of the foster parents, near or distant.

Second: Descendants, i.e., all children and grandchildren of the fostered ones as far as they go, whether biological or foster. They all become descendants of the foster parents. However, the ancestors or close/distant descendants of the ancestors of the fostered children have no relationship with the foster parents. Praise be to Allah, these are the meanings of the verse. If we were to cite textual proofs (nusoos) for all these root principles and details we have mentioned, it would be lengthy, and there is no need. Firstly, by the grace of Allah Almighty, all these issues are evident to a servant of jurisprudence. Secondly, these texts circulate and prevail in the books of

the school of thought. Praise be to Allah in the beginning and the end, the issue has attained complete clarity by the grace of Allah Almighty. Now, although there is no need to address a contrary fatwa:

Firstly, it has become clear from this explanation that this verse was an explicit text regarding the prohibition in the questioned scenario, which was mistakenly considered a counter-argument. If only it had been considered what it means for the descendants of the fostered child to become 'relatives' of the foster parents from the fostered child's side. The descendants of the fostered child becoming 'relatives' of the fosterer has no meaning except that the children of the fostered child become the descendants of the fosterer. Then how can those descendants be lawful for the fosterer? In which Sharia is it lawful for one's parents' granddaughter or great-granddaughter to be lawful for oneself? Ask any child and see that a parents' granddaughter is one's niece (brother's daughter) and a parents' grandson's daughter is one's niece (sister's daughter), and the whole world knows that in Islamic Sharia, a niece (paternal or maternal) is absolutely forbidden. By ill-luck, it was assumed that the descendants of the fostered child were called relatives of the fosterer, not the children of the fosterer. And it was not realized that here, being 'relatives' of the fosterer absolutely and obviously necessitates being 'relatives' for the children of the fosterer. How can it be conceived that the offspring of a person's parents...

जैविक और दूध के रिश्ते (रज़ा'ई) के पूर्वज, पिता और माता की ओर से अंतिम छोर तक। यहाँ 'रिश्तेदार' (ख्वेश) का अर्थ यह है कि दूध पिलाने वाले (मुरज़े' और मुरज़ि'आ) दूध पीने वाले बच्चों (रज़ी'ईन) के माता-पिता बन गए, और उनके पूर्वज उनके सगे दादा-दादी, नाना-नानी बन गए।

तीसरा: वंशज, जो स्वयं दूध पीने वाले (रज़ी'ईन) हैं और उनके सभी जैविक और रज़ा'ई वंशज, पुत्र और पुत्री की ओर से अंतिम छोर तक। यहाँ इसका अर्थ यह है कि ये सब दूध पिलाने वालों के बेटा-बेटी, पोता-पोती और नवासा-नवासी बन गए।

चौथा: निकट पूर्वज के वंशज, यानी दूध पिलाने वालों के जैविक और रज़ा'ई वंशज और वंशजों के वंशज अंत तक। यहाँ इसका अर्थ यह है कि ये सब दूध पीने वालों के भाई-बहन, भतीजा-भतीजी, भांजा-भांजी बन गए। फिर यदि वे दूध पिलाने वाले दोनों (पति-पत्नी) के वंशज हैं तो वे सगे (ऐनी) भाई-बहन हैं; यदि केवल दूध पिलाने वाले पिता के हैं तो सौतेले पिता की ओर से (अलाती) और यदि केवल दूध पिलाने वाली माता के हैं तो सौतेले माता की ओर से (अखयाफ़ी) भाई-बहन हैं।

पाँचवाँ: दूर के पूर्वजों के निकट वंशज, यानी दूध पिलाने वालों के पूर्वजों और पूर्वजों के पूर्वजों के निकट जैविक या रज़ा'ई वंशज। यहाँ इसका अर्थ यह है कि ये सब दूध पीने वाले के या उसके पूर्वजों के रज़ा'ई चचा, मामू, फूफी, खाला बन गए।

(दूध पीने वाले की ओर से) पहला: जीवनसाथी, यानी दूध पीने वाले पुरुष की पत्नी और दूध पीने वाली स्त्री का पति, या दूध पीने वाले/वाली के किसी भी जैविक या रज़ा'ई वंशज का पति या पत्नी। ये सब दूध पिलाने वालों पर हराम (प्रतिबंधित) हो गए। यहाँ इसका अर्थ यह है कि वे दूध पिलाने वालों के दूर या पास के दामाद और बहू बन गए।

दूसरा: वंशज, यानी दूध पीने वालों की तमाम संतान और संतान की संतान जहाँ तक जाए, चाहे जैविक हो या रज़ा'ई, सब दूध पिलाने वालों की संतान बन गए। लेकिन दूध पीने वालों के पूर्वज या उनके पूर्वजों के निकट या दूर के वंशजों का दूध पिलाने वालों से कोई संबंध नहीं हुआ। अल्हम्दुलिल्लाह, इस काव्य (शेर) के ये अर्थ हैं। इन सभी आधारभूत और विस्तृत बातों पर जिन्हें हमने वर्णित किया है, यदि हम प्रमाण (नसूस) लाएँ तो विस्तार बहुत बढ़ जाएगा और इसकी आवश्यकता भी नहीं है। पहली बात तो यह कि अल्लाह के फज़ल से ये सब मसले फिकह के जानकार पर स्वयं स्पष्ट हैं। दूसरी बात यह कि ये प्रमाण धर्म की पुस्तकों में प्रचलित और व्यापक हैं। आदि और अंत में

अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है, अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मसला पूरी तरह स्पष्ट हो गया। अब हालाँकि विपरीत फतवे की ओर जाने की आवश्यकता नहीं रही:

सर्वप्रथम, इस व्याख्या से स्पष्ट हो गया कि यह शेर (काव्य पंक्ति) विचाराधीन स्थिति में स्पष्ट प्रमाण (नस-ए-सरेह) था, जिसे गलती से विपरीत प्रमाण मान लिया गया। काश इतना ही विचार कर लिया जाता कि दूध पीने वाले की ओर से वंशजों का दूध पिलाने वालों का 'ख्वेश' (रिश्तेदार) बन जाना क्या अर्थ दे रहा है। दूध पीने वाले के वंशजों का दूध पिलाने वाले का 'ख्वेश' बन जाने का इसके अलावा कोई अर्थ ही नहीं है कि दूध पीने वाले की संतान दूध पिलाने वाले की संतान बन गई। फिर वह संतान दूध पिलाने वाले के लिए कैसे जायज़ हो सकती है? कौन सी शरीअत में ऐसा है कि अपने माता-पिता की पोती या नवासी अपने लिए जायज़ हो? किसी भी बच्चे से पूछ कर देख लें कि माता-पिता की पोती अपनी भतीजी होती है और नवासी अपनी भांजी, और सारा संसार जानता है कि इस्लामी शरीअत में भतीजी और भांजी स्पष्ट रूप से हराम (प्रतिबंधित) हैं। दुर्भाग्य से यह मान लिया गया कि दूध पीने वाले के वंशजों को दूध पिलाने वाले का रिश्तेदार बताया गया है, न कि दूध पिलाने वाले की संतान। और यह नहीं समझा गया कि यहाँ दूध पिलाने वाले का 'ख्वेश' होना, दूध पिलाने वाले की संतान के लिए 'ख्वेश' होना निश्चित रूप से आवश्यक है। यह कैसे संभव है कि किसी व्यक्ति के माता-पिता की संतान...

جلد یازدھم فتاوی رضویہ

اصول نسبی و رضاعی پدری مادری منتہی تک اور یہاں خویش کے یہ معنی ہیں کہ مرضع و مرضعہ رضیعین کے ماں باپ ہو گئے ، اور ان کے اصول ان کے سگے دادا دادی نانا نانی۔

سوم فرع کہ خود رضیعین ہیں اور رضیعین کے جملہ فروع نسبی و رضاعی پسری و دختری انتہاتک ، اور یہاں یہ معنی کہ یہ سب مرضع و مرضعہ کے بیٹا بیٹی پوتا پوتی نواسا نواسی ہو گئے۔

چہارم اصل قریب کی فرع یعنی مرضعین کے نسبی ، رضاعی فروع و فروع الفروع آخرتک اور یہاں یہ معنی کہ یہ سب رضیعین کے بہن بھائی ، بھتیجا بھتیجی ، بھانجا بھانجی ہو گئے ، پھر وہ اگر مرضع و مرضعہ دونوں کی فرع الفروع ہیں تو عینی اور صرف مرضع کے فروع ہیں تو علاتی اور صرف مرضعہ کے تو اخیافی۔

پنجم اصل بعید کی فرع قریب یعنی مرضعین کے اصول واصول الاصول نسبی و رضاعی کے فروع قریب نسبی خواہ رضاعی ، اور یہاں یہ معنی کہ یہ سب رضیعین یار رضیعین کے اصول رضاعی چچا ماموں پھوپھی خالہ ہو گئے۔

(از جانب شیر خوارہ) اول زوجین یعنی رضیع کی زوجہ اور رضیعہ کا شوہر یارضیع و رضیعہ کے فروع نسبی رضاعی میں کسی کے زوج وزوجہ کہ یہ سب مرضعین پر حرام ہو گئے ، اور یہاں یہ معنی کہ وہ مرضعین کے دور یا نزدیک کے داماد اور بہو ہو گئے۔

دوم فرع کہ رضیعین کی تمام اولاد و اولاد اولاد جہاں تک جائے ، نسبی ہو یارضاعی ، سب مرضعین کی اولاد اولاد ہو گئے ، مگر رضیعین کے اصول یا فروع قریبہ و بعیدہ اصول کو

مرضعین سے کچھ علاقہ نہ ہوا۔ الحمدللہ شعر کے یہ معنی ہیں ، ان تمام تاصیلات و تفریحات پر کہ ہم نے ذکر کیں اگر نصوص لائیں موجب اطالت ہو اور حاجت نہیں کہ اول بحمداللہ تعالی یہ سب مسائل خادم فقہ پر خود ظاہر ، ثانیان پر نصوص کتب مذہب میں دائر و سائر والحمدللہ فی الاول والآخر مسئلہ نے بجد اللہ تعالی وضوحِ تام پایا۔ اب فتوائے خلاف کی طرف چلنے اگرچہ حاجت نہ رہی:

اولا اس تشریح سے کھل گیا کہ یہ شعر تحریم صورت مسئولہ میں نص صریح تھا جسے برعکس دلیل گمان کیا گیا، کاش اتنا ہی خیال کر لیا جاتا کہ جانبِ شیر خوارہ سے فروع کا خویش مرضعین ہو جانا کیا معنی دے رہا ہے فروعِ شیر خوارہ شیر دہ کے خویش ہو جانے میں کوئی معنی ہی نہیں سوا اس کے کہ شیر خوارہ کی اولاد شیر دہ کی اولاد اولاد ہو گئی ، پھر وہ اولاد شیر دہ پر کیونکر حلال ہو سکتی ہے ، کون سی شریعت میں ہے کہ اپنے ماں باپ کی پوتی نواسی اپنے لیے حلال ہو جس بچہ سے چاہے پوچھ دیکھئے کہ ماں باپ کی پوتی اپنی بھتیجی ہوتی ہے اور نواسی اپنی بھانجی اور تمام جہان جانتا ہے کہ شریعت اسلامیہ میں بھتیجی اور بھانجی حرام قطعی ہے۔ سوئے اتفاق سے یہ گمان ہوا کہ فروعِ شیر خوارہ کو شیر دہ کے خویش بتایا ہے نہ کہ اولادِ شیر دہ کے، اور نہ جانا کہ یہاں شیر دہ کے خویش ہونے کو اولادِ شیر دہ کے لیے خویش ہونا قطعاً لازم بین ہے ، یہ کیونکر متصور کہ آدمی کی ماں باپ کی اولاد

Fatawa-e-Rizvia Volume 11

...if one has none of their own, the attribution to the nursing woman is due to originality, that it is established for her first and then spreads to the others. The Absolute Researcher (Muhaqqiq-al-Al-itlaq) said in Fath al-Qadeer:

[Box Start] Arabic: Haqiqat-ul-haal inna haqiqat-al-ba'diyyata tuthbatu baina al-murdia'ti wa-rradie'i fatuthbatu hurmat-ul-abniyyati thumma antasharat lawazimu tahreem-il-walad -1

Urdu Translation: The reality is that a true part-whole relationship (partiality) is found between the nurse and the nursed, which, while establishing the prohibition of sonship, spreads to all the necessities of the child's prohibition. (T) [Box End]

Secondly, if only the Mufti had compared his own statement with the verse, it would have been revealed at first glance that both sides are on contradictory terms. The verse clearly states that the prohibition of fosterage towards the nursed child includes the spouses and the branches (descendants) of the nursed child, and you say it is specifically for the nursed child and not for the descendants of the nursed child; it is clearly a contradiction between negation and affirmation. What better example of this can there be than saying a mother is lawful for Zaid's son because Allah Almighty says: "Forbidden to you are your mothers." 2 (T - Mothers are forbidden for you).

Thirdly, in the further derivation, they say: "So the branches of the nursed child are not at all forbidden for the branches of the nursing woman." This complete derivation from your baseless principle was not completed, when according to you the prohibition of fosterage on the side of the nursed child is restricted only to the person of the nursed child, and like its ancestors (usool), it does not include the branches (descendants) either. Then derive it like this: that the branches of the nursed child are not forbidden for the nursing woman and the foster-father themselves, just as the ancestors of the nursed child are not forbidden for them. There, the niece became lawful; now the granddaughter has become lawful.

Fourthly, regarding the meaning derived from the text of Sharh al-Wiqayah—if only it were such that the text was merely unrelated to it, but it is not so; rather, the text certainly and definitely refutes it. The very thing for which the text was written to describe its specific prohibition, this invented meaning made that very thing lawful, as has become clearer than the sun by the grace of Allah Almighty. Finally, did you

not see what meaning the author of Mustakhlas established for the text of Sharh al-Wiqayah in the seventh text?

Fifthly, rather look at texts 17 and 21 to see what Imam Sharih Wiqayah himself said and what he explained his meaning to be. Praise be to Allah, making this clear issue even clearer was the aim of this humble one, so that every point is explained step by step. In the most perfect way.

1. Fath al-Qadeer, Book of Breastfeeding, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, 3/314
2. Al-Quran al-Kareem, 4/23

फ़तावा-ए-रिज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...अपनी कोई न हो, दूध पिलाने वाली की तरफ निस्बत असलीयत की वजह से है कि पहले उसी के लिए साबित हो फिर बाकियों की तरफ फैले। मुहक्किक-ए-अलल-इतलाक़ ने फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाया:

[बॉक्स प्रारंभ] अरबी: हक़ीक़त-ए-हाल इन हक़ीक़त-अल-बइज़िय्यता तुसबतु बैन-अल-मुरदियति वर-रदीइ फ़तसबतु हुरमत-उल-अबनिय्यति सुम्मंतशरत लवाज़िमु तहरीम-इल-वलद -१

उर्दू अनुवाद: हकीकत यह है कि दूध पिलाने और दूध पीने वालों के बीच वास्तविक आंशिक संबंध पाया जाता है जो पुत्रत्व के निषेध को स्थापित करता हुआ बच्चे के निषेध की सभी आवश्यकताओं में फैल जाता है। (त) [बॉक्स समाप्त]

दूसरा, काश मुफ्ती ने अपनी ही इबारत को शेर के साथ मिलाकर देखा होता तो पहली नज़र में ही स्पष्ट हो जाता कि दोनों पक्ष विरोधाभासी हैं। शेर तो साफ़ बता रहा है कि रज़ाअत (दूध का रिश्ता) की हुरमत रदीअ (दूध पीने वाले) की तरफ ज़ौकैन (पति-पत्नी) और रदीअ की शाखाओं (फ़ुरोअ) को शामिल करती है और आप कहते हैं कि यह केवल रदीअ के लिए है, रदीअ की शाखाओं के लिए नहीं; यह साफ तौर पर निषेध और पुष्टि का विरोध है। इसका इससे बेहतर उदाहरण और क्या हो सकता है कि ज़ैद के बेटे के लिए माँ हलाल है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'तुम पर तुम्हारी माँएं हराम कर दी गई हैं'। २ (त- तुम पर तुम्हारी माँएं हराम की गई हैं)

तीसरा, आगे शाखाओं के वर्णन (तफ़रीअ) में फ़रमाते हैं: "तो रदीअ की शाखाओं पर मुर्दिया (दूध पिलाने वाली) की शाखाएँ हरगिज़ हराम नहीं।" आपकी इस बेबुनियाद असल की यह पूरी तफ़रीअ न हुई, जब आपके नज़दीक रज़ाअत की हुरमत रदीअ की जानिब में सिर्फ रदीअ की ज़ात तक सीमित है, उसके उसूलों (पूर्वजों) की तरह शाखाओं को भी शामिल नहीं करती। तो तफ़रीअ इस तरह कीजिए कि रदीअ की शाखाएँ खुद मुर्दिया (दूध पिलाने वाली) और मुरदइअ (दूध पिलाने वाले) पर भी हराम नहीं हैं, जिस तरह रदीअ के उसूल उन पर हराम नहीं हैं। वहां तक तो भांजी और भतीजी हलाल हुई थीं, अब पोती और नातिन हलाल हो गईं।

चौथा, शरह-ए-विक़ाया की इबारत का जो अर्थ निकाला, काश वह इतना ही होता कि इबारत का उससे कोई संबंध न होता, मगर ऐसा बिल्कुल नहीं है बल्कि इबारत निश्चित रूप से उसका खंडन कर रही है। इबारत जिस चीज़ की विशेष हुरमत बयान करने के लिए लिखी गई थी, इस मनगढ़ंत अर्थ ने

उसी को हलाल कर दिया, जैसा कि अल्लाह के फ़ज़ल से सूरज से भी ज़्यादा साफ़ हो गया। अंत में क्या नहीं देखा कि सातवीं इबारत (नस्स) में 'मुस्तख़लिस' ने शरह-ए-विक़ाया की इबारत का क्या मतलब निकाला।

पांचवां, बल्कि सत्रहवीं और इक्कीसवीं इबारत में देखें कि खुद इमाम शारेह-ए-विक़ाया ने क्या फ़रमाया और अपना मतलब क्या बताया। अल्हम्दुलिल्लाह, इस रोशन मसअले को और भी रोशन करना जैसा कि इस फ़क़ीर का मक़सद था कि हर बात को हिज्जे करके पढ़ा दिया जाए। मुकम्मल तौर पर।

1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-रज़ा, मकतबा नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, ३/३१४
2. अल-क़ुरआन अल-करीम, ४/२३

पृष्ठ ५०४ / ७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

اپنی کوئی نہ ہو، شیر دہ کی طرف اضافت بوجہ اصالت ہے کہ اول اسی کے لیے ثابت ہو کہ باقیوں کی طرف سرایت کرتی ہے۔ محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں فرمایا:

[Box Start] حقیقة الحال ان حقیقة البعضیة تثبت بین المرضعة والرضیع فتثبت حرمة الابنیة ثم انتشرت لوازم تحریم الولد -۱ حقیقت حال یہ ہے کہ دودھ پلانے اور دودھ پینے والوں کے درمیان جزئیت حقیقیہ پائی جاتی ہے جو ابنیت کی حرمت کو ثابت کرتی ہوئی بچے کی تحریم کے تمام لوازمات میں پھیل جاتی ہے۔ (ت) [Box End]

ثانیا کاش مفتی نے اپنی ہی عبارت کو شعر سے ملا کر دیکھا ہوتا تو بہ نگاہ اولین کھل جاتا کہ دونوں طرفین نقیض پر ہیں۔ شعر تو صاف بتا رہا ہے کہ حرمت رضاعت رضیع کی طرف زوجین و فروع رضیع کو شامل ہوتی ہے اور آپ کہتے ہیں کہ خاص رضیع کے لیے ہوتی ہے رضیع کے فروع کے لیے نہیں ہوتی صاف صاف نفی و اثبات کا خلاف ہے اس کی نظیر اس سے بہتر کیا ہو سکتی ہے کہ زید کے بیٹے کے لیے ماں حلال ہے اس لیے کہ اللہ تعالٰی فرماتا ہے: حُرِّمَتْ عَلَیْکُمْ أُمَّھٰتُکُمْ ۲ (تم پر تمھاری مائیں حرام کی گئی ہیں۔ت)

ثالثا آگے تفریع میں فرماتے ہیں: "پس فروع رضیع پر فروع مرضعہ ہرگز حرام نہیں" آپ کی اس اصل بے اصل کی یہ پوری تفریع نہ ہوئی ، جب آپ کے نزدیک حرمت رضاعت جانب رضیع میں صرف رضیع کی ذات پر مقصور ہے، اس کے اصول کی طرح فروع کو بھی شامل نہیں ۔ تو تفریع یوں کیجئے کہ فروع رضیع خود مرضع و مرضعہ پر بھی حرام نہیں جس طرح اصول رضیع ان پر حرام نہیں۔ وہاں تک تو بھانجی بھتیجی حلال ہوئی تھی اب پوتی نواسی حلال ہو گئی۔

رابعا عبارت شرح وقایہ کا جو مفاد ٹھہرایا کاش اتنا ہی ہوتا کہ عبارت اس سے بے علاقہ محض ہوتی مگر زنہار ایسا نہیں بلکہ عبارت یقینا قطعاً اس کا رد کر رہی ہے عبارت جس شے کی خاص حرمت بیان کرنے کو لکھی گئی، اس اختراع مفاد نے وہی حلال کردی جیسا کہ بحمداللہ تعالیٰ آفتاب سے زیادہ روشن ہوگیا، آخر نہ دیکھا کہ نص ہفتم میں مستخلص نے عبارت شرح وقایہ کا کیا مطلب ٹھہرایا۔

خامسا بلکہ نص ۱۷ و ۲۱ میں دیکھئے کہ خود امام شارح وقایہ نے کیا فرمایا اور اپنا مطلب کیا بتایا۔ الحمدللہ اس روشن مسئلہ کا روشن تر کرنا جس طرح مقصودِ فقیر تھا کہ ہر بات ہجے کرکے پڑھا دی جائے۔ بروجہ اتم

۱ فتح القدیر کتاب الرضاع مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۳۱۴ ۲ القرآن الکریم ۴/ ۲۳

It has been achieved; it is a very strict, severe, and great obligation upon friends. The secret should remain secret, and public matters should remain public. (Secret for secrets and public for public - Trans). This is a matter of definitive prohibition (haram) from which overlooking was impossible. There is no shame in returning to the truth, but rather in persisting in falsehood. And God forbid, if a marriage took place based on this false and meaningless fatwa, it would be adultery, and specifically adultery with prohibited relatives (mahram). Its great burden will lie upon all those who gave the fatwa. And at every movement, every kiss, every touch, day and night, God knows how many times these major sins and crimes will continue to be recorded in their book of deeds. It is mentioned in the Hadith that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) said:

"Whoever is given a fatwa without knowledge, his sin is upon the one who gave the fatwa." (Reported by Abu Dawud, Al-Darimi, and Al-Hakim from Abu Hurayrah, may Allah be pleased with him). And Allah knows best, and the knowledge of His Exalted Majesty is more complete and firm. (Trans)

Written by: The sinful servant Ahmad Raza al-Barelwi, forgiven by the grace of Muhammad, the Chosen Prophet, the Unlettered, may peace and blessings of Allah be upon him.

The answer is correct and the answerer is successful. Mustafa Raza Khan Qadri, known as Abul Barakat Muhyiddin.

The answer is correct. Nawab Mirza Abdul Ghani Qadri Sunni Hanafi Barelwi.

The answer is correct and Allah knows best. Muhammad Abdul Rabb, known as Muhammad Raza Khan Qadri.

The answer is correct. Muhammad Amjad Ali A'zami.

^1 Sunan Abu Dawud, Kitab al-Ilm, Aftab-e-Alam Press Lahore 159/2; Al-Mustadrak, Kitab al-Ilm, Dar al-Fikr Beirut 126/1.

यह हासिल हो गया है; मित्रों पर यह बहुत ही सख्त और बड़ा कर्तव्य है। गुप्त बातों को गुप्त और सार्वजनिक बातों को सार्वजनिक रखा जाए। (गुप्त के लिए गुप्त और प्रकट के लिए प्रकट - अनुवाद)। यह स्पष्ट हराम (प्रतिबंधित) का मामला है जिससे आँख मूँदना असंभव था। सत्य की ओर लौटने में कोई शर्म नहीं है, बल्कि असत्य पर अड़े रहने में है। और ईश्वर न करे, अगर इस गलत और निरर्थक फतवे पर अमल करते हुए निकाह (विवाह) हो गया, तो यह ज़िना (व्यभिचार) होगा, और वह भी महरम (जिनसे विवाह वर्जित है) के साथ ज़िना। इसका भारी बोझ उन सभी फतवा देने वालों पर होगा। और हर हलचल, हर चुंबन, हर स्पर्श के समय दिन-रात, ईश्वर जाने कितनी बार ये बड़े पाप और अपराध उनके कर्म-पुस्तिका में दर्ज होते रहेंगे। हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं:

"जिसे बिना ज्ञान के फतवा दिया गया, उसका पाप उस पर है जिसने फतवा दिया।" (इसे अबू दाऊद, दारिमी और हाकिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)। और अल्लाह बेहतर जानता है, और उसके जलाल व अजमत वाला ज्ञान अधिक पूर्ण और सुदृढ़ है। (अनुवाद)

लिखा गया द्वारा: गुनहगार बंदा अहमद रज़ा बरेलवी, मुहम्मद मुस्तफा नबी-ए-उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सदके में माफ़ किया गया।

उत्तर सही है और उत्तर देने वाला सफल है। मुस्तफा रज़ा खान कादरी उर्फ अबुल बरकात मुहीउद्दीन।

उत्तर सही है। नवाब मिर्ज़ा अब्दुल ग़नी कादरी सुन्नी हनफी बरेलवी।

उत्तर सही है और अल्लाह बेहतर जानता है। मोहम्मद अब्दुल रब्ब उर्फ मोहम्मद रज़ा खान कादरी।

उत्तर सही है। मोहम्मद अमजद अली आज़मी।

^1 सुनन अबू दाऊद, किताबुल इल्म, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 159/2; अल-मुस्तदरक, किताबुल इल्म, दारुल फिक्र बेरुत 126/1।

حاصل ہو گیا، احباب پر تو یہ سخت شدید عظیم فرض ہے۔ السر بالسر والعلانیۃ بالعلانیۃ (پوشیدہ کی پوشیدہ اور علانیہ کی علانیہ۔ت) معاملہ حرام قطعی کا ہے جس سے اغماض ناممکن تھا، رجوع الی الحق میں عار نہیں بلکہ تمادی علی الباطل میں۔ اور معاذ اللہ اس باطل و مہمل فتوی پر عمل ہو کر اگر نکاح ہو گیا تو یہ زنا، اور زنا بھی کیسانائے محارم۔ اس کا عظیم وبال تمام فتوی دہندوں پر رہے گا۔ اور ہر حرکت ہر بوسہ ہر مس کے وقت روزانہ رات دن میں خدا جانے کتنے کتنے بار یہ کبائر و جرائم ان سب کے نامہ اعمال میں ثبت ہوتے رہیں گے۔ حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من افتی بغیر علم کان اثمہ علی من افتاہ ۱۸ -رواہ ابوداؤد والدارمی والحاکم عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ جسے بغیر علم کے فتوی دیا گیا تو اس کا گناہ فتوی والے پر ہے۔ اس کو ابوداؤد، دارمی اور حاکم نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا، اللہ تعالٰی زیادہ علم والا ہے اور اس جل مجدہ کا علم کامل و محکم ہے۔ (ت)

کتبـــہ العبد المذنب احمد رضا البریلوی عفی بمحمد المصطفی النبی الامٰی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

الجواب صحیح والمجیب نجیح۔ مصطفی رضا خاں قادری عرف ابوالبرکات محی الدین

الجواب صحیح۔ نواب مرزا عبد الغنی قادری سنی حنفی بریلوی

الجواب صحیح واللہ اعلم محمد عبدالرب عرف محمد رضا خاں قادری

الجواب صحیح۔ محمد امجد علی اعظمی

18 سنن ابو داؤد کتاب العلم آفتاب عالم پریس لاہور ۱۵۹/۲ ، المستدرک کتاب العلم دار الفکر بیروت ۱۲۶/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

I, the poor one, seeking forgiveness from Allah the All-Powerful, have reviewed the answer of the reviver of the current century, the possessor of overwhelming proof, the traveling scholar, the leader of Muslims, His Eminence, our Master, Benefactor, and Grace-bestower, Maulana Maulvi Muhammad Ahmad Raza Khan—may Allah benefit people with his insights until the Day of Judgment—with deep scrutiny, letter by letter, and found it absolutely correct. May Allah reward him with the best reward and provide for him in the most complete measure.

Faqeer Qadri Wasi Ahmad Hanafi

[Box Section] (Left Column - Arabic): The answer is correct and documented with authentic texts and reliable reports. May Allah reward him with the best reward in both worlds, the eminent writer, the noble scholar, a sign among the signs of Allah. (Right Column - Urdu): The answer is correct and strengthened by clear texts and authentic reports. May Allah Almighty grant a better reward in both worlds to the great scholar, the noble learned one, a sign among Allah's signs, who wrote the answer. (T)

Hakeem Mufti Saleem-ul-Allah, Secretary of Anjuman-e-Numaniya, Lahore.

[Box Section] (Left Column - Arabic): What has been researched by the pillar of eminent scholars, the cream of noble jurists, the model of great luminaries, the leader of magnificent noblemen, the severer of the jugular vein of base renegades, the manifestor of mystical words, the revealer of divine signs, the protector of the Sunnah and the people of the Sunnah, the eradicator of the vestiges of disbelief and innovation, the unique of the age, the incomparable of the era, the reviver of the time, our master, the skilled expert Maulana Maulvi Muhammad Ahmad Raza Khan, may Allah the Munificent keep him safe; it is pure truth and clear veracity. And the truth is most worthy of being followed. May Allah Almighty grant us and all Muslims success [in following it]. Blessings and peace be upon the Seal of the Prophets, his family, and his companions, the protectors of religion. (Right Column - Urdu): Excellence among high scholars, chosen among noble jurists, leader of great luminaries, imam of great experts, the one who severs the veins of the rebellious cursed ones, the one who manifests mystical words, the supporter of Sunnah and the people of Sunnah, the eraser of traces of disbelief and innovation, the matchless expert of his time, Maulana Maulvi Ahmad Raza Khan, may Allah the Munificent keep him safe. The research he conducted is pure truth and clear veracity, and only the

truth is worthy of being followed. May Allah Almighty grant us and all Muslims the guidance to follow it. Blessings and peace be upon the Seal of the Prophets and his family and the companions who support the religion. (T)

Written by the servant who is in need of his Greatest Lord, Muhammad Umar Muradabadi.

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. Thousands of thanks to Allah that He, by His grace, enlightened my eyes with the lights of this pure research. May Allah Almighty reward the respondent, whose research is truthful and correct in every letter. And whoever turns away from it is among the ignorant (whoever turns away from it is from among the ignorant ones).

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मुझ फ़कीर ने, जो अल्लाह सर्वशक्तिमान से क्षमा का प्रार्थी है, वर्तमान सदी के पुनरुद्धारकर्ता, प्रबल प्रमाणों के स्वामी, महान विद्वान, मुसलमानों के इमाम, आला हज़रत, हमारे मौलाना, स्वामी, उपकारी और अनुग्रह-दाता मौलवी मुहम्मद अहमद रज़ा खान—अल्लाह कयामत के दिन तक उनके ज्ञान से लोगों को लाभ पहुँचाए—के उत्तर को गहन सूक्ष्मता के साथ अक्षर-दर-अक्षर देखा और इसे पूर्णतः सही पाया। अल्लाह उन्हें सर्वोत्तम प्रतिफल दे और उन्हें पूर्ण माप में प्रदान करे। फ़कीर कादरी वसी अहमद हनफ़ी।

[बॉक्स अनुभाग] (बायां कॉलम): उत्तर सही है और प्रामाणिक ग्रंथों और विश्वसनीय रिपोर्टों के साथ प्रलेखित है। अल्लाह दोनों जहानों में बेहतरीन लेखक, महान विद्वान, अल्लाह के संकेतों में से एक संकेत को बेहतरीन बदला दे। (दायां कॉलम): जवाब सही और सही नुसूस और मुस्तनद रिवायतों से मज़बूत किया गया है, अल्लाह तआला दोनों जहान में जवाब लिखने वाले आलिम-ए-जलील, अल्लामा-ए-नबील, अल्लाह तआला की निशानियों में से एक निशानी को बेहतर बदला अता फरमाए। (त)

हकीम मुफ्ती सलीमुल्लाह, नाजिम अंजुमन-ए-नोमानिया, लाहौर।

[बॉक्स अनुभाग] (बायां कॉलम): प्रख्यात विद्वानों के स्तंभ, कुलीन न्यायविदों के सार, महान दिग्गजों के आदर्श, भव्य रईसों के नेता, नीच विद्रोहियों की गर्दन की रग काटने वाले, रहस्यमय शब्दों के प्रकटकर्ता, ईश्वरीय संकेतों के प्रकटकर्ता, सुन्नत और सुन्नत के लोगों के रक्षक, कुफ्र और नवाचार (बिदअत) के अवशेषों को मिटाने वाले, युग के अद्वितीय, समय के बेमिसाल, समय के मुजद्दिद, हमारे आका, कुशल विशेषज्ञ मौलाना मौलवी मुहम्मद अहमद रज़ा खान, अल्लाह उन पर दया करे, ने जो शोध किया है; वह शुद्ध सत्य और स्पष्ट सच्चाई है। और सत्य ही अनुसरण के योग्य है। अल्लाह तआला हमें और सभी मुसलमानों को [इसका पालन करने में] सफलता प्रदान करे। नबियों की मुहर (अंतिम नबी), उनके परिवार और उनके साथियों, धर्म के रक्षकों पर आशीर्वाद और शांति हो। (दायां कॉलम): बुलंद उलमा में उम्दा, फुकहा-ए-किराम में मुंतखब, बड़े फुज़ला के मुक्तदा, बड़े माहिरों का इमाम, सरकश मलऊनों की रग काटने वाले, इरफानी कलमात को ज़ाहिर करने वाले, सुन्नत और अहले सुन्नत की हिमायत करने वाले, कुफ्र व बिदअत के आसार को मिटाने वाले, अपने ज़माना के बे-मिसल माहिर मौलाना मौलवी अहमद रज़ा खान, अल्लाह तआला मन्नान उनको सलामत रखे, ने

जो तहक़ीक़ फ़रमाई वो ख़ालिस हक़, साफ़ सच, जबकि हक़ ही इत्तेबा के काबिल है, अल्लाह तआला हमें और तमाम मुसलमानों को इसकी तौफीक दे, सलात व सलाम हो ख़ातमुल मुर्सलीन और उनकी आल पर और दीन की हिमायत करने वाले सहाबा पर। (त)

इसे उस बंदे ने लिखा है जो अपने सबसे बड़े रब का मोहताज है, मुहम्मद उमर मुरादाबादी।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके नेक रसूल पर आशीर्वाद भेजते हैं। अल्लाह का हज़ारों-हज़ार शुक्र है कि उसने अपने फज़्ल से मेरी आँखों को इस पवित्र शोध के नूर से रोशन किया। अल्लाह तआला जज़ा अता फरमाए हज़रत मुजीब को जिनकी तहक़ीक़ का एक एक हर्फ़ सच और सही है। और जो कोई इससे मुँह फेरता है वह अज्ञानियों में से है।

पृष्ठ 739 का 506

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

فقیرا غفراللہ القدیر نے مجدد مائتہ حاضرہ، صاحب حجت قاہرہ ، علامہ رحلہ ، امام المسلمین اعلیحضرت مولانا وسید نا ومفید نا ومفیضنا مولوی محمد احمد رضاخان صاحب متع اللہ الناس بافاداتہ الی یوم الدین کے جواب کے بنظر غائر حرفاً بحرفاً دیکھا عین صواب پایا جزاہ اللہ خیر الجزاء وکالہ بالکیال الاوفی فقط فقیر قادری وصی احمد حنفی

[Box Section] الجواب صحیح وموثق بنصوص الصحیح وروایات المستند جزاہ اللہ خیر الجزا فی الدارین لراقم الفاضل الجلیل وعلامة النبیل آیة من آیات اللہ۔ جواب صحیح اور صحیح نصوص اور مستند روایات سے مضبوط کیا ہوا ہے، اللہ تعالی دونوں جہان میں جواب لکھنے والے عالم جلیل ، علامہ نبیل، اللہ تعالی کی نشانیوں میں سے نشانی کو بہتر جزا عطا فرمائے۔ (ت)

حکیم مفتی سلیم اللہ ناظم انجمن نعمانیہ ، لاہور

[Box Section] ماحققه عمدة العلماء الاعلام زبدة الفقهاء الكرام قدوة الفضلاء العظام امام النبلاء الفخام قاطع وريد المروة اللئام مظهر الكلمات العرفانية كاشف الآيات الربانية حامى السنة واهل السنة ماحى آثار الكفر والبدعة وحيد العصر فريد الدهر مجدد الزمان سيدنا العريف الماهر مولانا المولوى محمد احمد رضاخان سلمہ اللہ المنان فهو حق صراح وصدق قراح والحق احق بالاتباع وفقنا اللہ تعالی وسائر المسلمين والصلوة والسلام على ختم المرسلين واله وصحبہ حماة الدين۔ بلند علماء میں عمدہ، فقہاء کرام میں منتخب، بڑے فضلاء کے مقتداء ، بڑے ماہرین کا امام، سرکش ملعونوں کی رگ کاٹنے والے، عرفانی کلمات کو ظاہر کرنے والے، سنت اور اہلسنت کی حمایت کرنے والے، کفر وبدعت کے آثار کو مٹانے والے، اپنے زمانہ کے بے مثل ماہر مولانا مولوی احمد رضا خان، اللہ

تعالیٰ منان ان کو سلامت فرمائے ، نے جو تحقیق فرمائی وہ خالص حق، صاف سچ ، جبکہ حق ہی اتباع کے قابل ہے، اللہ تعالیٰ ہمیں اور تمام مسلمانوں کو اس کی توفیق دے، صلوۃ وسلام ہو خاتم المرسلین اور ان کی آل پر اور دین کی حمایت کرنے والے صحابہ پر۔(ت)

کتبہ العبد المفتقر الی ربہ الاکبر محمد عمر المراد آبادی۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم۔ اللہ تعالی کا ہزار ہزار شکر ہے کہ اس نے اپنے فضل سے میری آنکھوں کو اس پاکیزہ تحقیق کے انوار سے روشن کیا۔ اللہ تعالی جزا عطا فرمائے حضرت مجیب کو جن کی تحقیق کا ایک ایک حرف صدق وصواب ہے ومن اعرض فھو من الجاھلین (جس نے اس سے اعراض کیا وہ جاہلوں میں سے ہے)

...turning away from it is from among the ignorant. T) In fact, the personage of Hazrat Mujaddid (Sahib), may his blessings continue, is an embodiment of the glory of the mercy of God, and a collection of countless blessings. He opened the eyes of so many blind people and gave sight to thousands of blind individuals. May Allah Almighty keep such an illustrious scholar safe in providing this grace for a long time, Ameen, by the sanctity of the Messengers, may Allah's peace and blessings be upon them. Undoubtedly, in the clarification of this matter, treasures of research have been opened, and the mistake of the ignorant Mufti has been well exposed and explained. May Allah Almighty guide His servants to the straight path. Ameen! The servant holding fast to the strong rope of Allah, Muhammad Naeem-ud-Din, may Allah distinguish him by His grace, and the knowledge of the religion.

Question 281: From village Bihar, district Bareilly, requested by Mr. Abdul Rahman Khan, 3rd Jumada al-Ula 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: A boy heard that his father had committed adultery with his wife. Out of anger, he beat his wife, gave her divorce, and separated her from the house, i.e., turned her out. The girl filed a lawsuit for her dower (Mahr). A decree was passed for whatever her dower was. The boy's lawyer says that since he gave the divorce in anger, it did not take effect. The girl's lawyer says the divorce took effect. In this situation, who is truthful? Which lawyer's word should be accepted? That is, did the divorce happen or not? Explain and be rewarded.

The Answer: If it is true and established by Sharia evidence that his father committed adultery with his wife, then that woman became permanently forbidden (Haram) for her husband. It was obligatory upon him to separate from her immediately. The divorce given was this separation, and now he can never take her back. And if the mentioned [adultery] is not proven by Sharia evidence and the boy did not confirm it, then this divorce happened as a divorce, and the excuse of mere anger is not heard. And Allah Almighty knows best.

Question 282 to 283: From Ghazipur, Mohalla Barbarhna, at the house of Munshi Wajid Ali Sahib, requested by Mr. Muhammad Idris, 24th Jumada al-Ula 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: (1) Zaid, aged 16, has always been joking and having fun with Bibi, aged 25, who is his aunt (Mimani) by relation. At some time, he might have held Jamila's hand or foot, and once even kissed her out of lust while joking. After some time, Bakr, who is Zaid's father by relation, wants to

marry Sughra, who is Jamila's daughter. Zaid cannot reveal this matter due to shame and modesty. So, will the marriage take place in such an act or not? If not, is there any other way of permission through penance (kaffara)?

...मुख मोड़ना अज्ञानियों में से है। त) वास्तव में हज़रत मुजद्दिद (साहिब), उनकी बरकतें जारी रहें, उनकी महान हस्ती हज़रत हक़ (ईश्वर) की रहमत की एक शान है, और अनगिनत बरकतों का समूह है, जिन्होंने कितने ही अंधों की आँखें खोल दीं। और हज़ारों दृष्टिहीनों को दृष्टि प्रदान की, अल्लाह तआला ऐसे महान विद्वान को लंबे समय तक इस कृपा के साथ सुरक्षित रखे, आमीन, रसूलों की पवित्रता के वसीले से, अल्लाह तआला की उन पर कृपा और शांति हो। निस्संदेह, इस मामले के स्पष्टीकरण में शोध के खजाने खोल दिए गए हैं और नादान मुफ्ती की गलती को अच्छी तरह से उजागर करके समझा दिया गया है, अल्लाह तआला अपने बंदों को सीधे रास्ते पर चलाए। आमीन! अल्लाह की मज़बूत रस्सी को थामने वाला बंदा, मुहम्मद नईम-उद-दीन, अल्लाह उन्हें अपनी कृपा से विशिष्ट करे, और दीन का ज्ञान।

मसला २८१: ग्राम बिहार, ज़िला बरेली से, अब्दुल रहमान खान साहिब द्वारा पूछा गया, ३ जमादी-उल-उला १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक लड़के ने सुना कि मेरे पिता ने मेरी पत्नी के साथ व्यभिचार (ज़िना) किया है, इस पर उसे गुस्सा आया और अपनी पत्नी को मारा और तलाक देकर घर से अलग कर दिया यानी निकाल दिया। लड़की ने अपने महर (स्त्रीधन) का दावा कर दिया, महर जो भी था उसकी डिक्री हो गई। लड़के का वकील कहता है कि तलाक उसने गुस्से में दी इसलिए तलाक नहीं हुई, और लड़की का वकील कहता है कि तलाक हो गई, इस स्थिति में कौन सच्चा है? किस वकील की बात मानी जाए? यानी तलाक हुई कि नहीं हुई? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: अगर यह सच है और शरीयत के प्रमाण से सिद्ध है कि उसके पिता ने उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार किया तो वह औरत अपने पति पर हमेशा के लिए हराम (वर्जित) हो गई। उस पर अनिवार्य (फ़र्ज़) था कि उसे तुरंत अलग कर दे, जो तलाक दी यह अलग करना ही हुआ और अब वह उसे कभी वापस नहीं ले सकता। और अगर उक्त बात शरीयत के प्रमाण से सिद्ध न हो और न ही लड़के ने इसकी पुष्टि की हो, तो यह तलाक तलाक ही हुई और केवल गुस्से का बहाना स्वीकार्य नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २८२ से २८३: गाज़ीपुर, मोहल्ला बरबरहना, मुंशी वाजिद अली साहिब के मकान पर, मुहम्मद इदरीस साहिब द्वारा पूछा गया, २४ जमादी-उल-उला १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या

कहते हैं: (१) कि ज़ैद उम्र १६ साल, बीबी उम्र २५ साल से जो कि रिश्ते में ज़ैद की ममानी (मामी) होती है हमेशा मज़ाक और मनोरंजन करता रहा हो, किसी समय में जमीला का हाथ या पैर पकड़ लिया हो और एक बार चुंबन भी ले लिया हो वासना के कारण मज़ाक में। कुछ समय के बाद बक्र जो कि रिश्ते में ज़ैद का पिता है सुग़रा से जो कि जमीला की लड़की है निकाह (विवाह) करना चाहता है और ज़ैद शर्म और हया के कारण इस बात को प्रकट नहीं कर सकता है, तो ऐसी हरकत में निकाह होगा या नहीं? अगर न हो तो और कोई सूरत जायज़ होने की निकल सकती है कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) के रूप में?

पृष्ठ ५०७ का ७३९

روگردانی کی وہ جاہلوں میں سے ہے۔ ت) فی الواقع حضرت مجدد صاحب دامت برکاتہم کی ذات والاصفات حضرت حق کی ایک شانِ رحمت ہے، اور بے شمار برکات کا مجموعہ، کتنے اندھوں کی آنکھیں کھول دیں۔ اور ہزار ہا نابیناؤں کو بینا بنا دیا، اللہ تعالٰی ایسے فاضل جلیل کو مدت ہائے دراز تک بایں فیض رسانی سلامت رکھے، آمین بجرمت المرسلین صلواۃ اللہ تعالٰی علیہ وسلامہ، بیشک اس مسئلہ کے ایضاح میں تحقیق کے خزانے کھول دئے ہیں اور نادان مفتی کی غلطی کو خوب آشکار کر کے سمجھا دیا ہے، اللہ تعالٰی اپنے بندوں کو سیدھی راہ چلائے۔ آمین! العبد المعتصم بحبل اللہ المتین محمد نعیم الدین خصہ اللہ بمنہ دالعلم والدین

مسئلہ ۲۸۱: از موضع بہار ضلع بریلی مسئولہ عبدالرحمن خاں صاحب ۳ جمادی الاولی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لڑکے نے سنا کہ میرے والد نے میری بی بی کے ساتھ زنا کیا ہے اس پر اس کو غصہ آیا اور اپنی بی بی کو مارا اور طلاق دے کر مکان سے علیحدہ کر دیا یعنی نکال دی۔ لڑکی نے اپنی مہر کی نالش کر دی، مہر اس کا جو کچھ تھا اس کی ڈگری ہو گئی۔ لڑکے کا وکیل کہتا ہے کہ طلاق اس نے غصہ میں دی اس وجہ سے طلاق نہیں ہوئی، اور لڑکی کا وکیل کہتا ہے کہ طلاق ہو گئی، اس صورت میں کون سچا ہے؟ کون سے وکیل کی بات مانی جائے؟ یعنی طلاق ہوئی کہ نہیں ہوئی؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر یہ صحیح ہے اور ثبوت شرعی سے ثابت ہے کہ اس کے باپ نے اس کی بی بی سے زنا کیا جب تو وہ عورت اپنے شوہر پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو گئی۔ اس پر فرض تھا کہ اسے فوراً جدا کر دے، جو طلاق دی یہ جدا کرنا ہی ہوا اور اب وہ اسے کبھی واپس نہیں لے سکتا۔ اور اگر

مذکور ثبوت شرع سے ثابت نہ ہو نہ لڑکے نے اس کی تصدیق کی ہو تو یہ طلاق طلاق ہوئی اور مجرد غصہ کا عذر مسموع نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۲ تا ۲۸۳: از غازی پور محلہ بربرہنہ بر مکان منشی واجد علی صاحب مسئولہ محمد ادریس صاحب ۲۴ جمادی الاولی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں (۱) کہ زید عمر ۱۶ سال، بی بی عمر ۲۵ سال سے جو کہ رشتہ میں زید کی ممانی ہوتی ہے ہمیشہ مذاق و تفریح کرتا رہا ہو کسی وقت میں جمیلہ کا ہاتھ یا پیر پکڑ لیا ہو اور ایک مرتبہ بوسہ بھی لے لیا ہو ازروئے شہوت مذاق کے۔ کچھ عرصہ کے بعد بکر جو کہ رشتہ میں زید کا باپ ہے صغریٰ سے جو کہ جمیلہ کی لڑکی ہے نکاح کرنا چاہتا ہے اور زید ازروئے شرم و حیا کے اس بات کو ظاہر نہیں کر سکتا ہے تو ایسی حرکت میں نکاح ہو گا یا نہیں؟ اگر نہ ہو تو اور کوئی صورت جواز کی نکل سکتی ہے ازروئے کفارہ کے

صفحہ 507 کا 739

Fatawa Razawiya, Volume 11

...or not? (2) And if the marriage has already been performed, what could be the way forward in that situation? (3) And in our region, joking and having fun with a maternal aunt (Mami) or a sister-in-law (Bhawaj) is not considered a fault.

Answer: Such joking with a sister-in-law or maternal aunt is absolutely forbidden (haram). The person doing it and the woman are both transgressors (fasiq), and if their husbands, fathers, or brothers are pleased with it, they are cuckolds (dayyuth). Paradise is forbidden for a cuckold. And the marriage of a virgin (bikr) with a minor (sughra) is lawful. It is stated in Durr-ul-Mukhtar: "As for the daughter of one's father's wife and the daughter of one's son's wife, they are lawful." (Meaning, the daughter of one's father's wife i.e., stepmother, who is not from the father's seed, and the daughter of one's son's wife's daughter, who is not from the son's seed, are both lawful. T). And Allah Almighty knows best.

Case 285 to 286: From Deoranian village, District Bareilly, questioned by Mr. Inayat Hussain, 29 Rajab 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: (1) There is a son of one sister and a daughter of another sister; is their marriage permissible or not? (2) Is it permissible to marry one's real sister-in-law (sali) while also marrying one's son to the daughter of that same sister-in-law? And if it is permissible, whose marriage should take place first? Clarify and you shall be rewarded.

Answer: (1) Yes, it is permissible. And Allah Almighty knows best. (2) When the wife dies or he divorces her and the waiting period (iddat) passes, then marriage with the sister-in-law is permissible. And marrying one's son to the sister-in-law's daughter is absolutely permissible, whether he marries her first or himself. And Allah Almighty knows best.

Case 287: From Madrasa Rahmaniya, Rae Bareli, questioned by Mr. Muhammad Ibrahim, 28 Shaban 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say regarding this matter: A woman named Hinda is the second wife of Zaid, and Zaid's first wife has several sons. One of those sons repeatedly expressed love for Hinda and suggested that they run away together. Several times he made Hinda hold his erect organ through some cloth without a veil. He kissed her several times. And twice he prepared for adultery, even to the extent of opening her undergarment (izar) and trying his best to penetrate. But once someone called out and rebuked him,

and another time Hinda escaped with full effort. Due to these reasons, Hinda's veil of chastity...

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relations, Mujtabai Delhi, 1/187. Page 508 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

...या नहीं? (2) और अगर निकाह कर दिया हो उस वक्त में क्या सूरत हो सकती है? (3) और हमारी तरफ ममानी और भावज से मज़ाक और तफ़रीह करना कुछ ऐब में दाखिल नहीं?

अल जवाब: भावज या ममानी से ऐसा मज़ाक हराम-ए-क़तई है और करने वाला और वह औरत दोनों फ़ासिक़ हैं, और उनके शौहर बाप भाई अगर इस पर राजी हों दय्यूथ हैं। और दय्यूथ पर जन्नत हराम है, और सुगरा से बिक्र का निकाह हलाल है, दुर्रे मुख्तार में है: "अम्मा बिन्तु ज़ौजा अबीहि व इबनिही फ़हलालुन्" (और अपने बाप की ज़ौजा यानी सौतेली माँ की बेटी जो बाप के नुत्फ़े से नहीं और अपने बेटे की ज़ौजा की बेटी जो बेटे के नुत्फ़े से नहीं वह हलाल हैं। त) वल्लाहु तआला आलम।

मसला 285 ता 286: अज़ मौज़अ देवरनिया ज़िला बरेली मस्ऊला इनायत हुसैन साहब 29 रजब 1339 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि: (1) एक बहन का लड़का है और दूसरी बहन की दुख़्तर लड़की है यह निकाह जायज़ है या नहीं? (2) साली हक़ीक़ी से निकाह इस वक्त में जायज़ है कि अपने बेटे का निकाह भी साली की दुख़्तर से किया जाए और बरतक़दीर जायज़ भी है तो पहले किसका निकाह हो? बय्यिनू तूजरू।

अल जवाब: (1) हाँ जायज़ है। वल्लाहु तआला आलम। (2) जब औरत मर जाए या उसे तलाक दे और इद्दत गुज़र जाए तो साली से निकाह जायज़ है। और साली की बेटी से अपने बेटे का निकाह मुतलक़न जायज़ है, ख़्वाह पहले उसका निकाह करे या अपना। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 287: अज़ मदरसा रहमनिया राय बरेली मस्ऊला मोहम्मद इब्राहिम साहब 28 शाबान 1339 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरअ मतीन इस मसले में कि मुस्मात हिंदा ज़ैद की दूसरी ज़ौजा है और ज़ैद की ज़ौजा-ए-ऊला के कई लड़के हैं उन में से एक लड़के ने हिंदा से कई बार इज़हार-ए-ताअल्लुक़ किया और कहा कि हम तुम भाग चलें। और कई बार अपना आला-ए-मुंतशिर हिंदा के हाथ में बिला हिजाब किसी कपड़े के पकड़ा दिया। कई बार बोसा ले लिया। और दो मर्तबा आमादा-ए-ज़िना हो गया यहाँ तक कि इज़ार खोल दिया और पूरी कोशिश की कि दुख़ूल करे। मगर एक मर्तबा किसी ने आवाज़ देकर बुरा भला कहा, और एक मर्तबा हिंदा पूरी कोशिश करके भाग निकली, इन वजूह से हिंदा का पर्दा-ए-इस्मत...

[1] दुर्रे मुख्तार फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात मुजतबाई देहली 1/187 पेज 508 / 739

یا نہیں؟ (۲) اور اگر نکاح کر دیا ہو اس وقت میں کیا صورت ہو سکتی ہے؟ (۳) اور ہماری طرف ممانی اور بھاوج سے مذاق اور تفریح کرنا کچھ عیب میں داخل نہیں؟ الجواب: بھاوج یا ممانی سے ایسا مذاق حرام قطعی ہے اور کرنے والا اور وہ عورت دونوں فاسق، اور ان کے شوہر باپ بھائی اگر اس پر راضی ہوں دیوث ہیں۔ اور دیوث پر جنت حرام، اور صغری سے بکر کا نکاح حلال ہے، در مختار میں ہے: "اما بنت زوجۃ ابیہ وابنہ فحلال" (اور اپنے باپ کی زوجہ یعنی سوتیلی ماں کی بیٹی جو باپ کے نطفے سے نہیں اور اپنے بیٹے کی زوجہ کی بیٹی جو بیٹے کے نطفے سے نہیں وہ حلال ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۸۵ تا ۲۸۶: از موضع دیورنیا ضلع بریلی مسئولہ عنایت حسین صاحب ۲۹ رجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ: (۱) ایک بہن کا لڑکا ہے اور دوسری بہن کی دختر لڑکی ہے یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ (۲) سالی حقیقی سے نکاح اس وقت میں جائز ہے کہ اپنے بیٹے کا نکاح بھی سالی کی دختر سے کیا جائے اور برتقدیر جائز بھی ہے تو پہلے کس کا نکاح ہو؟ بینوا توجروا۔ الجواب: (۱) ہاں جائز ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) جب عورت مر جائے یا اسے طلاق دے اور عدت گزر جائے تو سالی سے نکاح جائز ہے۔ اور سالی کی بیٹی سے اپنے بیٹے کا نکاح مطلقاً جائز ہے، خواہ پہلے اس کا نکاح کرے یا اپنا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۸۷: از مدرسہ رحمانیہ رائے بریلی مسئولہ محمد ابراہیم صاحب ۲۸ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ زید کی دوسری زوجہ ہے اور زید کی زوجہ اولٰی کے چند لڑکے ہیں ان میں سے ایک لڑکے نے ہندہ سے کئی بار اظہارِ تعشق کیا اور کہا کہ ہم تم بھاگ چلیں۔ اور کئی بار اپنا آلہ منتشر ہندہ کے ہاتھ میں بلا حجاب کسی

کپڑے کے پکڑادیا۔ کئی بار بوسہ لے لیا۔ اور دو مرتبہ آمادہ زنا ہو گیا یہاں تک کہ ازار کھول دیا اور پوری کوشش کی کہ دخول کرے۔ مگر ایک مرتبہ کسی نے آواز دے کر برا بھلا کہا، اور ایک مرتبہ ہندہ پوری کوشش کر کے بھاگ نکلی، ان وجوہ سے ہندہ کا پردہ عصمت...

[1]درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۷ Page 508 of 739

...it did not happen, but in all these cases, Hindah was averse and never felt any lust, and every time Hindah informed her husband Zaid, but he persuaded her that it is a matter of the boy and there will be great dishonor, so do not disclose it. However, he rebuked the boy severely, stopped eating with him, and also beat him, but the boy did not cease his improper actions. Now, in such a case, has Hindah become prohibited (haram) for Zaid or not? And if she has become prohibited, can she marry another without a divorce from Zaid or not? And if she can marry, will she have to observe the waiting period (iddat) or not? State the ruling and be rewarded.

The Answer: Since the son of Zaid performed these foul acts with Zaid's wife, which were definitely with lust, Zaid's wife has become prohibited for Zaid forever, even if it is accepted that there was no lust from the side of Zaid's wife, as lust from one side during touching is sufficient. It is stated in Durr-ul-Mukhtar: "Lust from one of them is sufficient." (That is, it is enough for lust to be present in one of the two. – Translator). However, the marriage did not terminate; it is mandatory for Zaid to formally separate from the woman, i.e., let her go, for example, by saying "I have left you." After that, the woman should complete the waiting period (iddat), and then she can marry someone else. She can never marry Zaid or Zaid's son; she has taken the place of Zaid's daughter and was already in the place of Zaid's son's mother. Until Zaid formally separates and the iddat passes, marrying another person is prohibited. It is in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	**Urdu**
Due to the prohibition of affinity (hurmat al-musaharah), the marriage is not dissolved until...	The marriage does not end due to the prohibition of affinity until after separation...
marriage with another is not permissible until after separation and completion of the waiting period (iddat).[2] And Allah Almighty knows best.	and the waiting period has passed, marriage with another person is not permissible. (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 288: From the shrine of Hazrat Mujaddid Alf-e-Thani, Sirhind Sharif, asked by Abdul Qadir Sahib, teacher at the Dargah Sharif, 30 Ramadan Sharif 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the marriage contract that took place with the minor daughter of a person of the Mirzai faith valid according to Sharia or invalid? The said daughter knows nothing of her religion. Her father has

passed away; only her mother has married her to a person of the Hanafi faith. In such a case, what is the Sharia ruling? Should she be separated or kept until she reaches puberty? State the ruling and be rewarded.

---

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Delhi, 1/188 [2] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Delhi, 1/188

...नहीं हुआ, लेकिन इन सभी स्थितियों में हिन्दा घृणा करती थी और उसे कभी कामेच्छा (शहवत) नहीं हुई और हर बार हिन्दा ने अपने पति ज़ैद को सूचित किया लेकिन उसने समझाया कि यह लड़के का मामला है, बहुत बदनामी होगी, इसे प्रकट न करो। लेकिन उसने लड़के को बहुत बुरा-भला कहा और उसके साथ खाना छोड़ दिया और उसे मारा भी, लेकिन लड़का अपनी अनुचित हरकतों से बाज़ नहीं आया। अब ऐसी स्थिति में क्या हिन्दा ज़ैद पर हराम (वर्जित) हो गई है या नहीं? और अगर हराम हो गई है, तो क्या वह ज़ैद से तलाक के बिना दूसरा निकाह कर सकती है या नहीं? और अगर निकाह कर सकती है, तो क्या उसे इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में बैठना होगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: चूँकि ज़ैद के बेटे ने ज़ैद की पत्नी के साथ ये घृणित कार्य किए जो निश्चित रूप से कामेच्छा के साथ थे, इसलिए ज़ैद की पत्नी ज़ैद पर हमेशा के लिए हराम हो गई, भले ही यह मान लिया जाए कि ज़ैद की पत्नी की ओर से कामेच्छा नहीं थी, क्योंकि स्पर्श में एक पक्ष से कामेच्छा होना पर्याप्त है। दुर्रे मुख़्तार में है: "दोनों में से एक की कामेच्छा पर्याप्त है।" (अर्थात् दोनों में से किसी एक में कामेच्छा का होना पर्याप्त है। - अनु.) लेकिन निकाह समाप्त नहीं हुआ, ज़ैद पर अनिवार्य है कि वह औरत से मुतारकः(औपचारिक अलगाव) करे, यानी उसे छोड़ दे, उदाहरण के लिए कहे "मैंने तुझे छोड़ा", उसके बाद औरत इद्दत पूरी करे, उसके बाद वह दूसरे से निकाह कर सकती है। ज़ैद या ज़ैद के बेटे से कभी नहीं कर सकती, वह ज़ैद की बेटी के स्थान पर हो गई और ज़ैद के बेटे की माँ के स्थान पर तो थी ही। जब तक ज़ैद मुतारकः न करे और इद्दत न बीत जाए, दूसरे से निकाह हराम है। दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी	**उर्दू**
वैवाहिक निषेध (हुरमत-ए-मुसाहरह) के कारण निकाह तब तक समाप्त नहीं होता जब तक...	वैवाहिक निषेध से निकाह तब तक समाप्त नहीं होता जब तक मुतारकः के बाद...
अलगाव और इद्दत की समाप्ति के बाद ही दूसरे से निकाह जायज़ न हो।[2] और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।	इद्दत न बीत जाए, दूसरे व्यक्ति से निकाह जायज़ नहीं है। (त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 288: रौज़ा हज़रत मुजद्दिद अल्फ थानी, सरहिंद शरीफ़ से, अब्दुल कादिर साहब, मुदर्रिस दरगाह शरीफ़ द्वारा पूछा गया, 30 रमज़ान शरीफ़ 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: मिर्ज़ाई धर्म के व्यक्ति की नाबालिग पुत्री के साथ जो निकाह हुआ है, वह शरीयत के अनुसार वैध है या अवैध? उक्त पुत्री अपने धर्म के बारे में कुछ नहीं जानती। उसके पिता का निधन हो चुका है, केवल उसकी माता ने एक हनफ़ी मज़हब के व्यक्ति से उसका निकाह कर दिया है। ऐसी स्थिति में शरीयत का क्या आदेश है, उसे अलग कर दिया जाए या वयस्क होने तक रखा जाए? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

---

[1] दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मुजतबाई दिल्ली, 1/188 [2] दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मुजतबाई दिल्ली, 1/188

چاک نہیں ہوا، مگر ان سب صورتوں میں ہندہ متنفر تھی اور اس کو کبھی شہوت نہیں ہوئی اور ہر مرتبہ ہندہ نے اپنے شوہر زید کو خبر دی مگر اس نے سمجھا دیا کہ لڑکے کا معاملہ ہے بدنامی بہت ہوگی اس کا اظہار نہ کرو۔ مگر لڑکے کو بہت برا بھلا کہا اور ساتھ کھانا چھوڑ دیا اور مارا بھی، مگر لڑکا اپنی حرکات نائشتہ سے باز نہیں آیا۔ اب ایسی صورت میں ہندہ زید پر حرام ہو گئی یا نہیں؟ اور اگر حرام ہو گئی تو وہ اپنا نکاح دوسرا بلا طلاق زید کر سکتی ہے یا نہیں؟ اور اگر نکاح کر سکتی ہے تو عدت بیٹھنا ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب جبکہ پسرِ زید نے زنِ زید سے یہ افعال خبیثہ کئے کہ قطعاً بہ شہوت تھے تو زنِ زید زید پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو گئی اگرچہ زنِ زید کی طرف سے شہوت نہ ہونا تسلیم کر لیا جائے کہ مس میں ایک طرف سے شہوت کافی ہے، درمختار میں ہے: تکفی الشھوۃ من احدھما (دونوں میں سے ایک کا شہوت سے ہونا کافی ہے۔ت) مگر نکاح زائل نہ ہوا، زید پر لازم ہے کہ عورت سے متارکہ کرے یعنی اسے چھوڑ دے، مثلاً کہے میں نے تجھے چھوڑا، اس کے بعد عورت عدت کرے اس کے بعد دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے، زید یا پسرِ زید سے کبھی نہیں کر سکتی، زید کی بیٹی کی جگہ ہو گئی اور پسرِ زید کی ماں کی جگہ تھی ہی، جب تک زید متارکہ نہ کرے اور عدت نہ گزرے دوسرے سے نکاح حرام ہے۔ درمختار میں ہے:

| بحرمہ المصاھرۃ لایر تفع النکاح حتی لا یحل التزوج | حرمت مصاہرہ سے نکاح ختم نہیں ہوتا تاوقتیکہ بعد متارکہ | | بآخر الا بعد المتارکۃ و انقضاء العدۃ 2 واللہ تعالیٰ اعلم۔ | عدت نہ گزر جائے دوسرے شخص سے نکاح جائز نہیں۔ |

(ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۸: از روضہ حضرت مجدد الف ثانی سرہند شریف مسئولہ عبد القادر صاحب مدرس درگاہ شریف ۳۰ رمضان شریف ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مرزائی مذہب شخص کی دختر نابالغہ سے جو عقد نکاح ہو گیا ہے وہ شرعاً جائز ہے یا ناجائز؟ دختر مذکورہ اپنے مذہب کو کچھ نہیں جانتی ہے۔ والد اس کا انتقال کر چکا ہے صرف اس کی والدہ نے نکاح ایک حنفی مذہب سے کر دیا ہے، ایسی صورت میں شرعاً کیا حکم ہے اس کو علیحدہ کر دیا جائے یا تا وقت بلوغ رکھا جائے۔ بینوا توجروا

---

1 درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ 2 درمختار فصل فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱

The Answer: Mirzais are apostates, as clearly explained in Husam al-Haramayn. Whether an apostate is male or female, their marriage cannot be valid with any Muslim, original disbeliever, or apostate—essentially with any human or animal in the entire world. Any such union would be pure adultery. It is stated in Alamgiri:

"It is not permissible for an apostate man to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original disbelieving woman. Similarly, it is not permissible for an apostate woman to marry any man. This is also mentioned in Al-Mabsut."

Even if the girl is a minor, as long as she is not an infant of one or two years old without understanding, her conversion to Islam or apostasy after reaching the age of reason and discernment is valid. It is stated in Tanwir al-Absar:

"If a discerning child apostatizes, his apostasy is valid just as his conversion to Islam is valid."

If, while having understanding, she accepted Mirzaiism or knew enough to believe that Mirza was a prophet, Messiah, or Mahdi, then that much is sufficient for her to be an apostate. Experience shows that these apostates teach their blasphemous beliefs to their children from childhood, so the questioner's claim that she knows nothing about her religion is far-fetched. Furthermore, maintaining such close ties with these people often leads to turmoil and corruption of faith—God forbid. Therefore, safety lies in separating her immediately. And Allah Almighty knows best.

Problem 289: From the state of Faridkot, Kothi Malir Ganj, asked by Mr. Alimuddin Sahib Farrash, 8 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say about maintaining relations with Non-conformists (Ghayr Muqallidin) and whether it is permissible or forbidden to arrange marriages for one's son or daughter with them? And if it is forbidden, can a follower of the Hanafi school take his daughter back in any way? Please clarify and be rewarded.

The Answer: Socializing with Non-conformists is forbidden and intermarriage with them is impermissible, as we have explained in our treatise Izalat al-Aar.

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on Prohibitions due to Shirk, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282.
2. Durr-e-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Book of Jihad, Chapter on the Apostate, Mujtabai Delhi, 1/361.

उत्तर: मिर्ज़ाई मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं, जैसा कि हुसाम अल-हरमैन में स्पष्ट रूप से बताया गया है। मुर्तद चाहे पुरुष हो या महिला, उसका निकाह किसी मुसलमान, असली काफ़िर, या मुर्तद—अर्थात दुनिया के किसी भी इंसान या जानवर से नहीं हो सकता। जिससे होगा वह मात्र व्यभिचार होगा। आलमगीरी में है:

"एक मुर्तद पुरुष के लिए किसी मुर्तद महिला, मुस्लिम महिला या असली काफ़िर महिला से निकाह करना जायज़ नहीं है, और इसी तरह एक मुर्तद महिला का भी किसी पुरुष से निकाह जायज़ नहीं है, जैसा कि मबसुत में है।"

भले ही लड़की नाबालिग हो, अगर वह एक-दो साल की नासमझ बच्ची नहीं है, तो समझ और विवेक आने के बाद उसका इस्लाम स्वीकार करना या धर्म त्यागना सही है। तनवीर अल-अबसार में है:

"यदि कोई विवेकशील बच्चा धर्म त्यागता है, तो उसका धर्मत्याग उसी तरह मान्य है जैसे उसका इस्लाम स्वीकार करना मान्य है।"

समझ होने की अवस्था में यदि उसने मिर्ज़ाईयत स्वीकार की या इतना ही जाना कि मिर्ज़ा नबी, मसीह या मेहदी था, तो इतना उसके मुर्तद होने के लिए पर्याप्त है। अनुभव यह है कि ये मुर्तद लोग बचपन से ही अपनी औलाद को अपने कुफ़्र वाले अकीदे सिखाते हैं, इसलिए प्रश्नकर्ता का यह कहना कि वह अपने मज़हब के बारे में कुछ नहीं जानती, तर्क से परे है। फिर इन लोगों से ऐसी निकटता रखना अक्सर फ़ितना और धर्म के बिगाड़ का कारण बनता है—अल्लाह इससे बचाए। तो सलामती इसी में है कि उसे तुरंत अलग कर दिया जाए। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २८९: रियासत फरीदकोट, कोठी मलीर गंज से, मुस्तफ़सी (प्रश्नकर्ता) अलीमुद्दीन साहब फ़र्राश, ८ रमज़ान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि ग़ैर-मुक़ल्लिदों के साथ संबंध रखना और उनके साथ अपने लड़केलड़की का रिश्ता करना जायज़ है या हराम? और अगर हराम है, तो हनफी मज़हब वाला अपनी लड़की को किसी तरह वापस ले सकता है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: ग़ैर-मुक़ल्लिदों से मेल-जोल हराम है और उनसे निकाह करना नाजायज़ है, जैसा कि हमने अपने रिसाले 'इज़ालतुल आर' में बयान किया है।

1. फतावा हिंदिया, बाब फ़िल मुहर्रमात बिश-शिर्क, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/२८२।
2. दुर्रे मुख़्तार, शरह तनवीर अल-अबसार, किताब अल-जिहाद, बाब अल-मुर्तद, मुजतबाई दिल्ली, १/३६१।

पृष्ठ ५१०/७३९

الجواب: مرزائی مرتد ہیں کما ھو مبین فی حسام الحرمین (جیسا کہ حسام الحرمین میں واضح بیان کیا گیا ہے۔ ت) اور مرتد مرد ہو یا عورت اس کا نکاح کسی مسلمان یا کافر اصلی یا مرتد غرض انسان یا حیوان جہان بھر میں کسی سے نہیں ہو سکتا۔ جس سے ہو گا زنائے محض ہو گا۔

عالمگیری میں ہے:

لایجوز للمرتد ان یتزوج مرتدۃ ولا مسلمۃ ولا کافرۃ اصلیۃ وکذلك لا یجوز نکاح المرتدۃ مع احد کذا فی المبسوط 1۔ | مرتد کے لیے مرتدہ، مسلمہ یا اصلی کافرہ عورت سے نکاح جائز نہیں، اور اس طرح مرتدہ عورت کا بھی کسی مرد سے نکاح جائز نہیں، جیسا کہ مبسوط میں ہے۔ (ت)

عورت اگرچہ نابالغہ ہے سال دو سال کی نا عاقلہ بچی نہ ہو گی اور عقل و تمیز کے بعد اسلام و ارتداد صحیح ہیں۔ تنویر الابصار میں ہے:

اذا ارتد صبی عاقل صح کاسلامہ 2۔ | بچہ اگر مرتد ہو جائے تو اس کا ارتداد صحیح ہے جیسے اس کا اسلام لانا صحیح ہے۔ (ت)

سمجھ وال ہونے کی حالت میں اگر اس نے مرزائیت قبول کی یا اتنا ہی جانا کہ مرزا نبی یا مسیح یا مہدی تھا تو اسی قدر اس کے مرتدہ ہونے کو بس ہے، تجربہ ہے کہ یہ مرتد لوگ بچپن سے اپنی اولاد کو اپنے عقائد کفریہ سکھاتے ہیں تو سائل کا کہنا کہ اپنے مذہب کو کچھ نہیں جانتی ہے بعید از قیاس ہے۔ پھر ان لوگوں میں سے ایسی قرابت قریبہ رکھنا بارہا منجر بہ فتنہ و فساد مذہب ہوتا ہے۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ، تو سلامتی اسی میں ہے کہ اس کو فوراً جدا کر دیا جائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۹: از ریاست فرید کوٹ کوٹھی ملیر گنج مسئولہ علیم الدین صاحب فراش ۸ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ غیر مقلدوں کے ساتھ تعلقات رکھنا اور ان کے ساتھ رشتہ ناتا اپنے لڑکے لڑکی کا جائز ہے یا حرام؟ اور اگر حرام ہے تو حنفی المذہب اپنی لڑکی کو کسی طور سے واپس لے سکتا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: غیر مقلدوں سے میل جول حرام ہے اور ان سے مناکحت ناجائز کما بیناہ فی رسالتنا ازالۃ العار

1 فتاوی ہندیہ باب فی المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۲ 2 درمختار شرح تنویر الابصار کتاب الجہاد باب المرتد مجتبائی دہلی ۳۶۱/۱

...with the stone of honor against the dogs of Hell (as we have explained in our treatise 'Removal of Disgrace with the Stone of Honor against the Dogs of Hell'. Ed.). Wahhabism is apostasy, and an apostate man or woman cannot marry anyone in the entire world: not a non-believer, not an apostate, not a Muslim, not a human, not an animal. Whoever they marry, it will be pure adultery. It is in Alamgiriya: "It is not permissible for an apostate to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original non-believing woman; likewise, the marriage of an apostate woman with anyone is not permissible. This is how it is in al-Mabsut." [Footnote 1] An apostate is not allowed to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original non-believing woman. Similarly, an apostate woman is not allowed to marry any man. It is stated thus in al-Mabsut. (Ed.) If a person is secretly involved in this, he should take his daughter back with the same claim that the marriage never took place. And Allah Almighty knows best. Question 290: From Mandsaur, Malwa A.V.M. School, Gwalior State. Querist: Muhammad Abdul Hamid Sahib, Teacher. 10 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A widow became pregnant, and during the police investigation, the said woman stated that this pregnancy is specifically from my son-in-law. In such a situation, did the son-in-law's wife become haram (forbidden) for him or not? Explain and be rewarded. The Answer: Just by the statement of this woman, his wife cannot become haram for the son-in-law. Either there should be Shari'ah-compliant proof or the son-in-law should confess. Only then will a ruling of eternal prohibition be given on his wife; otherwise not. And Allah Almighty knows best. Question 291: From Basti Mohalla Dakhan Darwaza Dhaniya Tola. Querist: Baqar Idan Sahib, Ziledar Opium Department. 10 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's wife has been missing for two years. Neither has he divorced her nor is there any news of whether she is alive or dead. Zaid wants to marry his wife's real sister. Is this permissible or not? The Answer: Impermissible. Allah the Almighty said: "And that you join two sisters in marriage" [Quran 4:23] (To have two sisters in marriage at the same time is forbidden. Ed.)

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on Prohibitions, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/282
2. The Holy Quran, 4/23

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...नरक के कुत्तों के खिलाफ सम्मान के पत्थर के साथ (जैसा कि हमने अपने शोध प्रबंध 'नरक के कुत्तों के खिलाफ सम्मान के पत्थर के साथ कलंक को हटाना' में बताया है। सं.)। वहाबियत धर्मत्याग (इरतिदाद) है, और एक धर्मत्यागी पुरुष या महिला पूरी दुनिया में किसी से शादी नहीं कर सकते: न काफिर से, न धर्मत्यागी से, न मुसलमान से, न इंसान से, न जानवर से। वे जिससे भी शादी करेंगे, वह शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) होगा। आलमगीरिया में है: "एक धर्मत्यागी के लिए धर्मत्यागी महिला, मुस्लिम महिला या मूल गैर-विश्वासी (काफ़िरा) महिला से विवाह करना जायज़ नहीं है; इसी तरह, किसी के भी साथ धर्मत्यागी महिला का विवाह जायज़ नहीं है। अल-मबसूत में ऐसा ही है।" [पादलेख 1] एक धर्मत्यागी को धर्मत्यागी महिला, मुस्लिम महिला और मूल काफ़िरा महिला से निकाह जायज़ नहीं है। और इसी तरह एक धर्मत्यागी महिला को भी किसी पुरुष से निकाह जायज़ नहीं है। मबसूत में ऐसी ही है। (सं.) हफी (गुप्त रूप से) अगर कोई इसमें फंसा हुआ हो तो अपनी लड़की को इसी दावे के साथ वापस ले ले कि निकाह हुआ ही नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 290: मंदसौर मालवा ए.वी.एम. स्कूल, रियासत ग्वालियर से। मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता): मुहम्मद अब्दुल हमीद साहिब, मुदर्रिस (शिक्षक)। 10 रमज़ान 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक विधवा महिला गर्भवती हो गई और पुलिस जांच के दौरान उक्त महिला ने बयान दिया कि यह गर्भ विशेष रूप से मेरे दामाद से है। ऐसी स्थिति में, क्या दामाद की पत्नी (मंकूहा) उसके लिए हराम हो गई या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। जवाब: सिर्फ इस औरत के कहने से दामाद पर उसकी पत्नी हराम नहीं हो सकती। या तो शरई सबूत हो या दामाद इकरार (कबूल) करे। उस समय उसकी पत्नी पर हमेशा के लिए हराम होने का हुक्म दिया जाएगा वरना नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 291: बस्ती मोहल्ला दक्खन दरवाज़ा धनिया टोला से। मुस्तफ़्ती: बक़र ईदन साहिब, ज़िलेदार अफ़ीम विभाग। 10 रमज़ान 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद की पत्नी दो साल से लापता (मफ़रूर) है। न तो उसने उसे तलाक दिया है और न ही इस बात का कुछ पता है कि वह जीवित है या मर गई है। ज़ैद अपनी पत्नी की सगी बहन से निकाह करना चाहता है, तो क्या यह जायज़ है या नहीं? जवाब: नाजायज़। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ" २ (दो बहनों को निकाह में एक साथ रखना हराम है। सं.)

1. फ़तावा हिंदिया, बाब फ़िल मुहर्रमात, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर 1/282
2. अल-क़ुरान अल-करीम 23/4

بحجر الکرائم عن کلاب النار (جیسا کہ ہم نے اپنے رسالہ ازالۃ العار بحجر الکرائم عن کلاب النار میں بیان کیا ہے۔ت) وہابیت ارتداد ہے اور مرتد مرد ہو یا عورت اس کا نکاح تمام جہان میں کسی سے نہیں ہوسکتا، نہ کافر سے، نہ مرتد سے، نہ مسلمان سے، نہ انسان سے، نہ حیوان سے، جس سے ہوگا زنائے خالص ہوگا۔ عالمگیریہ میں ہے: لایجوز للمرتد ان یتزوج مرتدۃ ولا مسلمۃ ولا کافرۃ اصلیۃ وکذلك لا یجوز نکاح المرتدۃ مع احد کذا فی المبسوط ۱۔ مرتد کو مرتدہ، مسلمہ اور اصلی کافرہ عورت سے نکاح جائز نہیں۔ اور یوں ہی مرتدہ کو بھی کسی مرد سے نکاح جائز نہیں۔ مبسوط میں ایسی ہی ہے۔ (ت) حفی اگر اس میں مبتلا ہوا ہو تو اپنی لڑکی اسی دعوے سے واپس لے کہ نکاح ہوا ہی نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۹۰: از مند سورہ مالوہ اے، وی، ایم، سکول ریاست گوالیار مسئولہ محمد عبدالحمید صاحب مدرس ۱۰ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اندریں مسئلہ کہ ایک بیوہ عورت حاملہ ہو گئی اور بر وقت تحقیقات پولیس مسماۃ مذکورہ نے بیان کیا کہ یہ حمل خاص میرے داماد کا ہے۔ ایسی حالت میں منکوحہ داماد مسماۃ مذکورہ کی حرام ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب فقط اس عورت کے کہنے سے داماد پر اس کی منکوحہ حرام نہیں ہو سکتی۔ یا تو ثبوت شرعی ہو یا داماد اقرار کرے۔ اس وقت اس کی منکوحہ پر حرام ابدی ہونے کا حکم دیا جائے گا ورنہ نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۹۱: از بستی محلہ دکھن دروازہ دھنیا ٹولہ مسئولہ بقر عیدن صاحب ضلعدار محکمہ افیون ۱۰ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی زوجہ دو برس سے مفرور ہو گئی ہے اور نہ طلاق دی نہ اس کا کچھ پتا ہے کہ زندہ ہے یا مر گئی، زید اپنی بی بی کی حقیقی بہن سے چاہتا ہے کہ نکاح کروں تو یہ جائز

ہے یا نہیں؟ الجواب: ناجائز، قال تعالٰی: وَ اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ ۲ (دو بہنوں کو نکاح میں جمع کرنا حرام ہے۔ ت)

۱ فتاوٰی ہندیہ باب فی المحرمات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۸۲ ۲ القرآن الکریم ۲۳/۴

Fatawa Razawiya Volume 11

If Zaid wishes, he can divorce his wife and wait until the completion of her 'iddah (waiting period), after which he can marry her sister. The completion of 'iddah here will be based on predominant thought, for in jurisprudence it is annexed to certainty. (In Fiqh, this is joined with certainty. T) And Allah Almighty knows best.

Question 292 to 293: From Ahmed Nagar, Deccan, Ganj Bazaar, adjacent to Shahi Mosque, submitted by Muhammad Ibrahim Sahib, Khatib Hanafi Qadri, 20 Ramadan 1339 AH. (1) Zaid and Amr are real brothers. Amr wants to marry his grandson to Zaid's daughter. Is it permissible or not? (2) At the age of six months, Zaid drank Zainab's milk along with Hinda. Hinda was then four years old. Is it permissible for Zaid to marry Zainab's third daughter or not? Please explain and be rewarded.

Answer: (1) This marriage is permissible as she is not a real paternal aunt but a distant one by relation. Allah Almighty says: "And lawful to you are [all others] beyond these" [Quran 4:24]. That is, marrying a son to a niece is permissible, even though she is his sister by relation. And Allah Almighty knows best. (2) Zainab became Zaid's (foster) mother, and all of Zainab's previous and future children are Zaid's brothers and sisters. Zaid's marriage to any daughter of Zainab is not permissible. Allah Almighty says: "And your foster-sisters" [Quran 4:23]. And Allah Almighty knows best.

Question 294: From Molvi Abdullah Sahib Bihari, teacher at Madrasa Manzar-ul-Islam, Bareilly, 29 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the marriage of two real sisters with Zaid and his real son permissible or not? And what is the ruling in the noble Sharia for those among whom this is considered permissible? Please explain and be rewarded.

Answer: It is Islamically permissible for one sister to be married to the father and the other to the son; there is no harm in this as long as there is no other Sharia-based impediment. And Allah Almighty knows best.

Question 295: From Shahjahanpur, submitted by Khan Bahadur Fasihuddin Sahib, Deputy Collector, 25 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: whether a Muslim woman or man [can marry] a man or woman of another religion...

1 Quran Al-Karim 4/24 2 Quran Al-Karim 4/23

अगर ज़ैद चाहता है तो अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे और इद्दत की अवधि पूरी होने तक इंतज़ार करे, इसके बाद वह उसकी बहन से निकाह कर सकता है। यहाँ इद्दत की समाप्ति का अनुमान प्रबल संभावना (ज़न्ने ग़ालिब) से लिया जाएगा, क्योंकि न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) में इसे निश्चितता के साथ जोड़ा गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 292 से 293: अहमदनगर दक्कन, गंज बाज़ार, शाही मस्जिद के पास, प्रेषक मोहम्मद इब्राहीम साहिब, ख़तीब हनफ़ी क़ादरी, 20 रमज़ान 1339 हिजरी। (1) ज़ैद और अम्र सगे भाई हैं। अम्र अपने पोते का निकाह ज़ैद की बेटी से कराना चाहता है। क्या यह जायज़ है या नहीं? (2) ज़ैद ने छह महीने की उम्र में ज़ैनब का दूध हिंदा के साथ पिया था, और तब हिंदा की उम्र चार साल थी। क्या ज़ैद का ज़ैनब की तीसरी बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं? बयान करें और पुण्य कमाएं।

जवाब: (1) यह निकाह जायज़ है क्योंकि वह सगी फूफी नहीं बल्कि रिश्ते की फूफी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और उनके सिवा जो रहें वे तुम्हारे लिए हलाल हैं" (क़ुरआन 4:24)। यानी भतीजी से बेटे का निकाह जायज़ है, हालांकि रिश्ते में वह उसकी बहन है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) ज़ैनब ज़ैद की (रज़ाई) माँ हो गई और ज़ैनब की जितनी भी अगली-पिछली संतानें हैं, वे सब ज़ैद के भाई-बहन हैं। ज़ैनब की किसी भी बेटी से ज़ैद का निकाह जायज़ नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और तुम्हारी रज़ाई (दूध शरीक) बहनें" (क़ुरआन 4:23)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 294: मौलवी अब्दुल्ला साहिब बिहारी, शिक्षक मदरसा मंज़र-उल-इस्लाम, बरेली, 29 सफ़र 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि दो सगी बहनों का निकाह ज़ैद और उसके सगे बेटे के साथ जायज़ है या नहीं? और जिन लोगों में यह जायज़ है, उनके लिए शरीयत का क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

जवाब: शरीयत के अनुसार यह जायज़ है कि एक बहन का निकाह बाप से और दूसरी का बेटे से हो। इसमें कोई हर्ज नहीं है जब तक कि किसी और कारण से कोई शरई बाधा न हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 295: शाहजहाँपुर से, प्रेषक ख़ान बहादुर फ़सीहुद्दीन साहिब, डिप्टी कलेक्टर, 25 रमज़ान 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक मुसलमान औरत या मर्द किसी दूसरे मज़हब के मर्द या औरत...

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 4/24 2 अल-क़ुरआन अल-करीम 4/23

زید اگر چاہتا ہے تو زوجہ کو طلاق دے اور تا انقضائے عدت انتظار کرے اس کے بعد اس کی بہن سے نکاح کر سکتا ہے، انقضائے عدت یہاں ظن غالب سے لیا جائے گا فانہ ملتحق فی الفقہیات بالیقین (فقہ میں یہ یقین سے ملحق ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۹۲ تا ۲۹۳: از احمد نگر دکن گنج بازار متصل مسجد شاہی مسئولہ محمد ابراہیم صاحب خطیب حنفی قادری ۲۰ رمضان ۱۳۳۹ھ (۱) زید وعمرو حقیقی بھائی ہیں، عمرو اپنے پوتے کے ساتھ زید کی لڑکی کا نکاح کرانا چاہتا ہے جائز ہے یا نہیں؟ (۲) زید نے چھ ماہ کی عمر میں زینب کا دودھ ہندہ کے ساتھ پیا اور ہندہ کی عمر چار سال کی تھی، کیا زینب کی تیسری لڑکی سے زید کا نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: (۱) یہ نکاح جائز ہے کہ حقیقی پھو پھی نہیں رشتہ کی پھوپھی ہے۔ قال تعالٰی: وَ اُحِلَّ لَکُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِکُمْ (اور ان کے سوا جو رہیں وہ تمہیں حلال ہیں۔ ت) یعنی بھتیجی سے بیٹے کا نکاح جائز ہے حالانکہ وہ رشتہ میں اس کی بہن ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) زینب زید کی ماں ہوگئی اور زینب کی جتنی اگلی پچھلی اولاد ہے سب زید کی بہن بھائی، زینب کی کسی لڑکی سے زید کا نکاح جائز نہیں۔ قال تعالٰی: وَ اَخَوٰتُکُمْ مِّنَ الرَّضَاعَۃِ (اور تمہاری رضاعی بہنیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۹۴: مولوی عبداللہ صاحب بہاری مدرس مدرسہ منظرالاسلام، بریلی ۲۹ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ دو حقیقی بہنیں ان کا نکاح زید واس کے حقیقی لڑکے کے ساتھ جائز ہے یا نہیں؟ اور جن لوگوں میں ایسا جائز ہے ان کے واسطے شرع شریف میں کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب شرعا جائز ہے کہ ایک بہن کا نکاح باپ اور دوسری کا بیٹے سے ہو، اس میں کچھ حرج نہیں جبکہ کوئی مانع شرعی اور وجہ سے نہ ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۹۵: از شاہجہاں پور مسئولہ خان بہادر فصیح الدین صاحب ڈپٹی کلکٹر ۲۵ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسلمان عورت یا مرد کسی دوسرے مذہب کے مرد یا عورت

۱ القرآن الکریم ۲۴/۴ ۲ القرآن الکریم ۲۳/۴

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

...can he/she marry, for example, a Buddhist, Jain, Hindu, atheist, etc., or not? In a situation where the person of another religion, man or woman, does not accept Islam and remains firm on their religion, if it's not possible, what are the commandments of the Holy Quran in this regard? Please state those verses. Explain and you will be rewarded.

The Answer: A Muslim woman's marriage can never be valid with any disbeliever (Kafir) at all, whether they are from the People of the Book (Kitabi) or a polytheist (Mushrik). Remember that even those of their women who become Muslim are forbidden to be returned to them.

Allah Almighty says: "O you who have believed, when the believing women come to you as emigrants, examine them. Allah is most knowing as to their faith. And if you know them to be believers, then do not return them to the disbelievers; they are not lawful [wives] for them, nor are they lawful [husbands] for them."[1] Translation: O believers! When women who have accepted Islam come to you leaving the land of disbelievers, test them. Allah knows best about their faith. Then if their faith is proven to you by testing, do not return them to the disbelievers. Neither are Muslim women lawful for disbelievers, nor are disbelieving men lawful for Muslim women.

A Muslim man can marry a disbelieving woman who is from the People of the Book (Kitabiyya).

Allah Almighty says: "This day [all] good foods have been made lawful, and the food of those who were given the Scripture is lawful for you and your food is lawful for them. And [lawful in marriage are] chaste women from among the believers and chaste women from among those who were given the Scripture before you, when you have given them their due compensation..."[2] Translation: Today, pure things have been made lawful for you, and the slaughtered meat of the People of the Book is lawful for you and your slaughtered meat is lawful for them. And chaste Muslim women and chaste women from the People of the Book are made lawful for you when you give them their dower (Mahr).

However, it is forbidden (Haram) for a Muslim man to marry a non-Kitabiyya woman.

Allah Almighty says: "And do not marry polytheistic women until they believe. And a believing slave woman is better than a polytheist, even though she might please you."[3] Translation: Do not marry a polytheistic (non-Kitabiyya) woman until she

believes. And indeed, a Muslim slave woman is better than a non-Kitabiyya disbelieving woman, even if that disbelieving woman pleases you.

This ruling applies to original disbelievers; the marriage of an apostate (Murtad or Murtada) cannot take place with anyone in the whole world, neither with a Muslim, nor with a disbeliever, nor with an original one.

[1] Al-Quran Al-Karim 60/10 [2] Al-Quran Al-Karim 5/5 [3] Al-Quran Al-Karim 2/221

फतवा रज़विया ग्यारहवाँ खंड

...उदाहरण के लिए, एक बौद्ध, जैन, हिंदू, नास्तिक आदि के साथ निकाह कर सकता है या नहीं? ऐसी स्थिति में जहाँ दूसरे धर्म का पुरुष या महिला इस्लाम स्वीकार नहीं करती और अपने धर्म पर अडिग रहती है, यदि यह संभव नहीं है, तो इस संबंध में पवित्र कुरान के क्या आदेश हैं? कृपया उन आयतों को दर्ज करें। व्याख्या करें और प्रतिफल पायें।

उत्तर: एक मुस्लिम महिला का निकाह किसी भी काफिर (अविश्वासी) के साथ कतई नहीं हो सकता, चाहे वह 'किताबी' (ईसाई या यहूदी) हो या 'मुशरिक' (बहुदेववादी)। याद रखें कि उनकी जो महिलाएं मुसलमान हो चुकी हैं उन्हें वापस करना हराम (निषिद्ध) है।

अल्लाह तआला फरमाता है: "ऐ ईमान वालों! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत करके आएँ, तो उनका इम्तिहान लो। अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है। फिर अगर तुम्हें मालूम हो जाए कि वे मोमिन हैं, तो उन्हें काफ़िरों की तरफ वापस न करो। न वे उनके लिए हलाल हैं और न काफ़िर उनके लिए हलाल हैं।"[1] अनुवाद: ऐ ईमान वालों! जब तुम्हारे पास इस्लाम लाने वाली औरतें काफ़िरों का वतन छोड़कर आएँ, तो उनकी परीक्षा लो। अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है। फिर अगर तुम्हें परीक्षा से उनका ईमान साबित हो जाए, तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो। न मुसलमान औरतें काफ़िरों के लिए हलाल हैं और न काफ़िर मुसलमान औरतों के लिए हलाल हैं।

मुस्लिम पुरुष किसी 'किताबिया' (ईसाई या यहूदी) काफ़िर महिला से निकाह कर सकता है।

अल्लाह तआला फरमाता है: "आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल कर दी गई हैं। और अहले-किताब (किताब वाले लोग) का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और मोमिन औरतों में से पाक दामन औरतें और उन लोगों में से पाक दामन औरतें जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई थी, (तुम्हारे लिए हलाल हैं) जब तुम उन्हें उनका मेहर अदा कर दो।"[2] अनुवाद: आज के दिन स्वच्छ चीजें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं और अहले-किताब का ज़बीहा (वध किया हुआ मांस) तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा ज़बीहा उनके लिए हलाल है। और तुम्हारे लिए पाक दामन मुसलमान औरतें और पाक दामन किताबिया औरतें हलाल की गई हैं, जब तुम उन्हें उनके मेहर दे दो।

लेकिन गैर-किताबिया महिला से मुस्लिम पुरुष का निकाह हराम है।

अल्लाह तआला फरमाता है: "और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न ले आएँ। और यकीनन एक मोमिन लौंडी, मुशरिक औरत से बेहतर है, चाहे वह तुम्हें कितनी ही पसंद आए।"[3] अनुवाद: मुशरिका यानी गैर-किताबिया महिला से निकाह न करो जब तक कि वह ईमान न ले आए। और बेशक एक मुसलमान दासी, गैर-किताबिया काफ़िर महिला से अच्छी है, चाहे वह काफ़िर तुम्हें पसंद आए।

यह हुक्म मूल काफिरों के लिए है; एक धर्मत्यागी (मुरतद या मुरतदा) का निकाह पूरी दुनिया में किसी के साथ नहीं हो सकता, न मुसलमान से, न काफ़िर से, न ही किसी मूल काफ़िर से।

[1] अल-कुरान अल-करीम 60/10 [2] अल-कुरान अल-करीम 5/5 [3] अल-कुरान अल-करीम 2/221

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

سے مثلاً بدھ، جین، ہندو، دہریہ وغیرہ سے مناکحت کر سکتا ہے یا نہیں؟ ایسی صورت میں کہ وہ غیر مذہب والا مرد یا عورت اسلام قبول نہ کرے اور اپنے مذہب پر قائم رہے، اگر نہیں کر سکتا ہے تو اس بارہ میں احکام کلام مجید کیا ہیں؟ براہ مہربانی ان آیات کو درج فرمایا جائے۔ بینوا توجروا

الجواب: مسلمان عورت کا نکاح مطلقاً کسی کافر سے نہیں ہو سکتا۔ کتابی ہو یا مشرک یاد رہے یہاں تک کہ ان کی عورتیں جو مسلمان ہوں انھیں واپس دینا حرام ہے۔

قال تعالٰی: یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِیْمَانِهِنَّۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ لَا هُمْ یَحِلُّوْنَ لَهُنَّۚ 1۔ ترجمہ: اے ایمان والو! جب تمہارے پاس اسلام لانے والی عورتیں کافروں کا دیار چھوڑ کر آئیں تو ان کی آزمائش کرو، اللہ خوب جانتا ہے ان کے ایمان کو، پھر اگر تمہیں آزمائش سے ان کا ایمان ثابت ہو تو انہیں کافروں کو واپس نہ دو، نہ مسلمان عورتیں کافروں کے لیے حلال ہیں اور نہ کافر مسلمان عورتوں کے لیے حلال ہیں۔

مسلمان مرد کافرہ کتابیہ سے نکاح کر سکتا ہے۔

قال تعالٰی: اَلْیَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّیِّبٰتُؕ وَ طَعَامُ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْۖ وَ طَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْۖ وَ الْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَ الْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ 2۔ ترجمہ: آج کے دن ستھری چیزیں تمہارے لیے حلال کی گئیں اور کتابیوں کا ذبیحہ تمہارے لیے حلال ہے اور تمہارا

ذبیحہ ان کے لیے حلال ہے اور تمہارے لیے حلال کی گئیں پارسا مسلمان عورتیں اور عفت والی کتابیہ عورتیں جب تم انہیں ان کے مہر دو۔

لیکن غیر کتابیہ سے مسلمان مرد کو نکاح حرام ہے۔

قال تعالٰی: وَ لَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ 3۔ ترجمہ: مشرکہ یعنی غیر کتابیہ سے نکاح نہ کرو جب تک ایمان نہ لائیں اور بیشک ایک مسلمان باندی کافرہ غیر کتابیہ سے اچھی ہے اگرچہ وہ کافرہ تمہیں پسند آئے۔

یہ حکم کافرانِ اصلی کا ہے، مرتد و مرتدہ کا نکاح تمام عالم میں کسی سے نہیں ہو سکتا نہ مسلم سے، نہ کافر سے، نہ اصلی سے

1 القرآن الکریم 10/60 2 القرآن الکریم 5/5 3 القرآن الکریم 2/221

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Not an apostate. As it is stated in Fatawa Alamgiri: [In Arabic Box]: "It is not permissible for an apostate (murtad) to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original non-Muslim woman. Similarly, it is not permissible for an apostate woman to marry any man. Thus it is in Al-Mabsut. And Allah the Almighty knows best." [In Urdu translation Box]: "It is not permissible for an apostate man to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original disbelieving woman. Likewise, it is not permissible for an apostate woman to marry any man. It is so stated in Al-Mabsut. (T) And Allah Almighty knows best."

Problem 296: From Bengal, Madrasa Moeen-ul-Islam, Post Office Jangalabad, people of Mawza Kadka, District Jessore, asked by Abdul Samad Sahib on 28 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if a man commits adultery (zina) with his son's wife, i.e., his daughter-in-law, will the said woman remain lawful for her husband or not? And will the marriage between the two remain intact or has a divorce occurred? If a divorce has occurred, what kind? And what is the reason for the divorce? Explain and be rewarded.

The Answer: People often form false notions themselves or make accusations based on the word of only one or two people or just the woman. This carries no weight. Instead, there must be just legal testimony (shahadat-e-adila) or the husband must confirm it; only then will the ruling of prohibition (hurmat) be given. The woman will become prohibited for her husband forever because she has become the 'entered' (madkhula) of his father, and the father's 'entered' woman is eternally prohibited for the son. Allah Almighty says: "And do not marry those [women] whom your fathers married" (2) (T: Do not marry those whom your fathers have married). However, divorce did not occur, nor was she excluded from the marriage until the husband makes a formal separation (mutarka). For example, if he says to her, "I have left you" or "separated from you." When he says this and the waiting period (iddah) passes, only then will the woman be able to marry a third person. She is forever prohibited for both these individuals (the father and the son). It is obligatory upon the husband to separate from her because he can no longer keep her; thus, leaving her is mandatory. Allah Almighty says: "Then retain her in a fair manner or release her with kindness" (3) (T: Either keep her with sympathy or leave her in a good way). It is stated in Durr-ul-Mukhtar: "Through the prohibition of affinity (hurmat-e-musahara), the marriage is not terminated until..."

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on Prohibited Relations, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282
2. Al-Quran Al-Karim 2/22
3. Al-Quran Al-Karim 2/229 Page 514 of 739

मुर्तद से नहीं। जैसा कि फतावा आलमगिरी में है: [अरबी बॉक्स में]: "एक मुर्तद (धर्मत्यागी) के लिए किसी मुर्तदा, मुसलिमा या असली काफ़िरा औरत से निकाह करना जायज़ नहीं है, और इसी तरह मुर्तदा औरत को भी किसी मर्द से निकाह करना जायज़ नहीं है। अल-मबसूत में इसी प्रकार है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।" [उर्दू अनुवाद बॉक्स में]: "मुर्तद को किसी मुर्तदा, मुसलिमा या असली काफ़िरा औरत से निकाह जायज़ नहीं और इसी तरह मुर्तदा को भी किसी मर्द से निकाह जायज़ नहीं, मबसूत में इसी तरह है। (त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।"

मसला 296: बंगाल से, मदरसा मुईनुल इस्लाम, डाकखाना जंगल आबाद, मौज़ा कड़का, जिला जसोर के निवासियों की ओर से, अब्दुल समद साहब द्वारा पूछा गया सवाल, 28 रमज़ान 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि यदि किसी व्यक्ति ने अपने बेटे की बीवी यानी अपनी बहू से ज़िना (व्यभिचार) किया, तो क्या उक्त महिला अपने पति के लिए हलाल रहेगी या नहीं? और क्या उन दोनों के बीच निकाह बाक़ी रहेगा या तलाक़ हो गया? अगर तलाक़ हो गया तो किस प्रकार का? और तलाक़ होने का कारण क्या है? बयान फरमाएँ और पुण्य कमाएं।

अल-जवाब: लोग अपनी ओर से ग़लत धारणाएँ बना लेते हैं या केवल एक या दो व्यक्तियों के कहने पर या सिर्फ महिला के कहने पर आरोप लगाते हैं। इसका कोई महत्व नहीं है। इसके बजाय, जब तक शरिया के अनुसार न्यायपूर्ण गवाही (शहादते आदिना) न हो या पति स्वयं इसकी पुष्टि न करे, तब तक हुरमत (निषेध) का आदेश नहीं दिया जाएगा। महिला अपने पति के लिए हमेशा के लिए हराम हो जाएगी क्योंकि वह उसके पिता की मदखूला (जिससे संभोग किया गया हो) हो गई है, और पिता की मदखूला बेटे पर हमेशा के लिए हराम है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे पिताओं ने निकाह किया हो।" (2) (त: जिनसे तुम्हारे पिताओं ने निकाह किया है तुम उनसे निकाह न करो)। लेकिन तलाक़ नहीं हुआ, न ही वह निकाह से बाहर हुई जब तक कि पति मुतार्का (संबंध विच्छेद) न कर दे, उदाहरण के लिए उससे कहे "मैंने तुझे छोड़ दिया" या "अलग कर दिया"। जब वह यह कहेगा और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाएगी, तब महिला किसी तीसरे व्यक्ति से निकाह कर सकेगी। वह इन दोनों (पिता और पुत्र) के लिए हमेशा के लिए हराम है। पति पर फ़र्ज़ है कि वह उसे मुतार्का कर दे क्योंकि अब वह उसे रख नहीं सकता, इसलिए छोड़ना अनिवार्य है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "तो भलाई के साथ पास रखो या अच्छे तरीके से छोड़ दो।" (3) (त:

सहानुभूति से पास रखो या अच्छे तरीके से छोड़ दो)। दुर्रे मुख़्तार में है: "वैवाहिक संबंधों के कारण निषेध (हुरमत-ए-मुसाहरत) से निकाह तब तक समाप्त नहीं होता जब तक..."

---

1. फतावा हिन्दिया, बाब फ़िल महरमात, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/282
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/22
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/229 पृष्ठ 739 में से 514

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

سے نہ مرتد سے۔ فتاوٰی عالمگیریہ میں ہے: [عربی عبارت]: لا یجوز للمرتد ان یتزوج مرتدۃ ولا مسلمۃ ولا کافرۃ اصلیۃ وکذلك لا یجوز نکاح المرتدۃ مع احد، کذا فی المبسوط - واللہ تعالی اعلم۔ [اردو ترجمہ]: مرتد کو کسی مرتدہ، مسلمہ یا اصلی کافرہ عورت سے نکاح جائز نہیں اور یوں ہی مرتدہ کو بھی کسی مرد سے نکاح جائز نہیں، مبسوط میں یونہی ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۹۶: از بنگالہ مدرسہ معین الاسلام ڈاک خانہ جنگل آباد اہل موضع کا دکا کسی ضلع جسر مسئولہ عبدالصمد صاحب ۲۸ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کسی شخص نے اپنے بیٹے کی بی بی یعنی اپنی بہو سے زنا کیا اب وہ بی بی مذکورہ کو اپنے شوہر کے لیے حلال رہے گی یا نہیں؟ اور وہ دونوں کے درمیان نکاح باقی رہے گا یا طلاق ہو گئی؟ اگر طلاق ہو گئی تو کس قسم کی؟ اور علت طلاق ہونے کی کیا ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: لوگ اپنی طرف سے خیالات باطلہ باندھ لیتے یا فقط دو ایک شخصوں یا صرف عورت کے کہنے پر اتہام لگاتے ہیں اس کا کچھ اعتبار نہیں بلکہ شہادت عادلہ شرعیہ ہو یا شوہر تصدیق کرے اس وقت حرمت کا حکم دیا جائے گا۔ عورت ہمیشہ کے لیے اپنے شوہر پر حرام ہو جائے گی کہ اس کے باپ کی مدخولہ ہو گئی اور باپ کی مدخولہ بیٹے پر حرام ابدی ہے، قال تعالٰی: وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ (۲) (جن سے تمہارے باپ نکاح کرلیں تم ان سے نکاح نہ کرو۔ ت) مگر طلاق نہ ہوئی، نہ نکاح سے خارج ہوئی جب تک شوہر متارکہ نہ کرے، مثلاً اس سے کہے میں نے تجھے چھوڑ دیا یا جدا کیا، جب یہ کہے گا اور عدت گزر جائے گی اس وقت عورت کسی تیسرے شخص سے نکاح کر سکے گی، ان دونوں باپ بیٹوں پر تو ہمیشہ کے لیے حرام ہے، شوہر پر فرض ہے کہ اسے متارکہ کردے کہ اب اسے رکھ نہیں سکتا تو چھوڑنا لازم-قال تعالٰی: فَاِمْسَاكٌ

بِمَعْرُوْفٍ أَوْ تَسْرِيْحٌ بِإِحْسَانٍ (۳) (تو ہمدردی سے پاس رکھو یا اچھے طریقے سے چھوڑ دو۔ت) در مختار میں ہے: وبحرمة المصاہرة لا یرتفع النکاح حتی حرمت مصاہرہ سے نکاح ختم نہیں ہوتا حتی کہ

۱۔ فتاوٰی ہندیہ باب فی المحرمات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۲ ۲۔ القرآن الکریم ۲/ ۲۲ ۳۔ القرآن الکریم ۲/ ۲۲۹

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Arabic Box:] It is not lawful for her to marry another until separation and the completion of the waiting period (Iddah). And Allah knows best. [Urdu Box:] Until the separation and the completion of the waiting period, she will not be lawful for anyone else. And Allah Almighty knows best.

Issue 797: From Sawalwala, Post Office Sibidh, District Bijnor. Queried by Hakim Abdul Rahman, 5 Shawwal 1339 AH. What is your command—may Allah have mercy on you (T)? Zaid committed rape against his son Amr's wife or intended to commit adultery, which both of them confess to. In this situation, has this woman become divorced from Amr or not? And what kind of divorce occurred? Will there be a waiting period (Iddah) or not? Can this woman ever be lawful for Amr again in any way? Is there any difference between the occurrence of adultery, the intention of adultery, or the preliminaries of adultery? Explain and be rewarded. This same inquiry was previously sent to the presence of Maulana Aziz-ur-Rahman Sahib, Mufti of Deoband. Due to the passing of Maulana Mahmood-ul-Hassan Sahib (may Allah enlighten his grave), he gave this brief answer: "If Amr is not an acknowledger of this, then his wife has not become forbidden (Haram) for him." [End of quote]. Since this decision is to be settled through a community panchayat (council), it is necessary to see the answers to all the inquired matters. If there is a ruling, can a punishment of social boycott or "huqqa-pani band" (cutting off water and social ties) be given in the community? Or should a fine be collected from them to provide a feast for the poor and needy, and can that fine be spent on the mosque or any other good work?

The Answer: Merely having the intention of adultery does not lead to anything. However, for a wife to become permanently forbidden to the son, even the preliminaries (dawa'i) are sufficient. If Amr's heart is convinced of the truth of their claim, it is mandatory for him to consider the woman forbidden to him.

[Arabic/Urdu quote box:] "Because Taharri (judging after deliberation) is among Sharia proofs, and the word of a transgressor (fasiq) is considered reliable after confirmation through deliberation." (T)

Similarly, if Amr confirmed their statement, then the ruling is for the permanent prohibition of the woman because confession is a binding proof (because confession is a reason for making it binding upon oneself - T). And if he neither confirmed them nor was his heart convinced of their truth...

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relations, Mujtabai Delhi, 1/188. Page 515 of 739

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

[अरबी बॉक्स:] जब तक बिछोह (जुदाई) और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी न हो जाए, वह किसी दूसरे के लिए हलाल नहीं होगी। और अल्लाह ही बेहतर जानता है। [उर्दू बॉक्स:] जब तक जुदाई और इद्दत पूरी न हो जाए, वह किसी दूसरे के लिए हलाल नहीं होगी। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला ७९७: सवालवाला, डाकखाना सिबिढ, जिला बिजनौर से। मुस्तौलि (प्रश्कर्ता): हकीम अब्दुल रहमान, ५ शव्वाल १३३९ हिजरी। क्या फरमान है आपका - अल्लाह आप पर रहम करे(त)? ज़ैद ने अपने बेटे अम्र की पत्नी के साथ जबरन ज़िना (बलात्कार) किया या ज़िना की नीयत की, जिसका इकरार (स्वीकारोक्ति) दोनों करते हैं। इस सूरत में क्या यह औरत अम्र से तलाक़शुदा हो गई या नहीं? और कौन सी तलाक़ हुई? इद्दत भी होगी या नहीं? अम्र के लिए यह औरत फिर से किसी तरह हलाल हो सकती है या नहीं? ज़िना के होने, ज़िना की नीयत और ज़िना की भूमिकाओं (तैयारी) में कुछ फर्क होगा या नहीं? बयां कीजिए और सवाब पाइए। यही सवाल इससे पहले मौलाना अज़ीज़ुर रहमान साहब मुफ्ती-ए-देवबंद की सेवा में भेजा गया था, जिसके जवाब में मौलाना महमूदुल हसन साहब (नूरुल्लाह मरक़दहू) के इंतकाल की वजह से उन्होंने यह संक्षिप्त जवाब दिया था: "अगर अम्र इसका इकरार नहीं करता है, तो उसके हक में उसकी औरत हराम नहीं हुई।" चूँकि यह फैसला पंचायत के माध्यम से तय होना है, इसलिए ज़रूरी है कि पूछे गए सभी मामलों का जवाब देखा जाए। अगर हुक्म हो, तो क्या बिरादरी में उनसे अलगाव या हुक्का-पानी बंद करने की सज़ा दी जा सकती है या नहीं? या सिर्फ उनसे जुर्माना वसूल करके गरीबों और ज़रूरतमंदों को दावत दी जाए, और क्या वह जुर्माना मस्जिद या किसी और नेक काम में खर्च किया जा सकता है या नहीं?

जवाब: सिर्फ ज़िना की नीयत से कुछ नहीं होता, लेकिन बेटे के लिए उसकी पत्नी का हमेशा के लिए हराम होने के लिए सिर्फ उसकी भूमिकाएं(दवा'ई) भी काफी हैं। अगर अम्र के दिल में उनकी सच्चाई बैठ जाती है, तो उस पर लाज़िम (अनिवार्य) है कि वह उस औरत को अपने ऊपर हराम समझे।

[अरबी/उर्दू उद्धरण बॉक्स:] क्योंकि 'तहरी' (सोच-विचार के बाद फैसला) शरई दलीलों में से है और फासिक (पापी) का कहना 'तहरी' से पुष्टि के बाद विश्वसनीय माना जाता है। (त)

इसी तरह अगर अम्र ने उनकी पुष्टि की, तो औरत की हमेशा के लिए हुरमत (निषेध) का हुक्म है, क्योंकि 'इकरार हुज्जत-ए-मुलज़िमा है' (क्योंकि इकरार खुद पर लाज़िम करने के लिए एक दलील है - त)। और अगर न तो उसने उनकी पुष्टि की और न ही उसके दिल में उनकी सच्चाई...

1. दुर्रे मुख्तार, बाब फिल मुहर्रमात, मुज्तबाई दिल्ली, १/१८८। पृष्ठ ५१५/७३९

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

[Arabic Box:] لا یحل لھا التزوج بأخر الا بعد المتارکۃ وانقضاء العدۃ ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ [Urdu Box:] جب تک متارکہ اور عدت پوری نہ ہو جائے کسی دوسرے کے لیے حلال نہ ہو گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۹۷: از سوالوالہ ڈاک خانہ سبیڈھ ضلع بجنور مسئولہ حکیم عبدالرحمان ۵ شوال ۱۳۳۹ھ ما قولکم رحمکم اللہ (اللہ آپ پر رحم کرے آپ کا کیا فرمان ہے۔ت) کہ زید نے اپنے لڑکے عمرو کی زوجہ سے زنا بالجر کیا یا زنا کی نیت کی جس کا اقرار دونوں کرتے ہیں، اس صورت میں یہ عورت عمرو کی مطلقہ ہو گئی یا نہیں؟ اور کون سی طلاق واقع ہوئی؟ عدت بھی ہوگی یا نہیں؟ عمرو کے لیے یہ عورت کسی طرح پھر بھی حلال ہو سکتی ہے یا نہیں؟ وقوع زنا، نیت زنا، دواعی زنا، تینوں میں کچھ فرق ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا یہی استفتاء اس سے قبل مولانا عزیز الرحمن صاحب مفتی دیوبند کی خدمت میں ارسال کیا تھا جس کے جواب میں بوجہ انتقال مولانا محمود الحسن صاحب نور اللہ مرقدہ انھوں نے یہ مختصر جواب دیا تھا کہ : "اگر عمرو اس کا مقر نہیں ہے تو اس کے حق میں اس کی عورت حرام نہیں ہوئی" انتھی چونکہ یہ فیصلہ بروئے پنچایت برادری طے ہونے والا ہے اس لیے ضروری ہے کہ کل مسئول عنہا امور کا جواب دیکھنے پر اگر حکم ہو تو برادری میں ان سے انقطاع یا حقہ پانی بند کی سزائے مروج دے سکتے ہیں یا نہیں؟ یا محض ان سے جرمانہ وصول کرکے غربا و مساکین کی دعوت کرائی جائے اور وہ جرمانہ مسجد یا اور کسی نیک کام میں صرف کیا جاسکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: محض نیت زنا سے کچھ نہیں ہوتا اور بیٹے پر اس کی زوجہ حرام ابدی ہونے کے لیے صرف دواعی بھی کافی ہیں۔ اگر عمرو کے قلب پر ان کا صدق جمتا ہے تو لازم ہے کہ وہ عورت کو اپنے اوپر حرام سمجھے،

[Arabic/Urdu quote box:] فان التحری من دلائل الشرع وقول فاسق معتبرا ذا وقع التحری علی صدقہ۔ کیونکہ تحری (سوچ کے بعد فیصلہ) شرعی دلائل میں سے ہے اور فاسق کا قول تحری سے تصدیق کے بعد معتبر قرار پاتا ہے۔ (ت)

یونہی اگر عمرو نے ان کی تصدیق کی تو عورت کی حرمت ابدی کا حکم ہے لان الاقرار حجۃ ملزمۃ (کیونکہ اقرار اپنے اوپر لازم کرنے کے لیے دلیل ہے۔ت) اور اگر نہ اس نے ان کی تصدیق کی نہ اس کے قلب پر ان کا صدق

---

1 درمختار باب فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۱۸۸ Page 515 of 739

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

...is established, the woman does not become forbidden to him because 'an admission is an incomplete proof which does not extend beyond the admitter' (as confession is weak evidence, hence others are not affected by it. T). Then, in the cases where the woman will be considered forbidden to him, she will be forbidden forever; in no way can she become lawful for those fathers and sons. However, since divorce has not yet occurred, it will be obligatory upon 'Amr to leave her, and after his leaving, the 'iddat (waiting period) will be mandatory for the woman. After the 'iddat, she can marry a third person. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[By the prohibition of affinity (hurmat al-musaaharah), marriage is not dissolved until it is not permissible for her to marry another except after separation (mutarakah) and the expiry of the 'iddat. 1] [Prohibition of affinity does not terminate a marriage such that marriage with another person is not permissible without separation and the completion of the 'iddat thereafter. (T)]

If 'Amr keeps the woman in the state of prohibition, Muslims should avoid socializing with him, but taking a fine is forbidden, and spending it on a mosque is forbidden. Asking for fatwas from Deobandis is forbidden, acting upon their fatwas is forbidden, and calling them 'Maulana' or 'May Allah illuminate his resting place' is forbidden. All the noble scholars of the Two Holy Harams (Makkah and Madinah) agreed on their excommunication (takfir) due to their severe insolence regarding the status of Divinity and Prophethood, and it is stated in Husam al-Haramain: "Whoever doubts their punishment and disbelief, has indeed disbelieved." Meaning, one who is aware of their cursed statements and still doubts their disbelief and punishment is also a disbeliever. We seek refuge in Allah. And Allah Almighty knows best.

Problem 298 to 300: Asked by Maulana Maulvi Ahmad Mukhtar Sahib Meeruthi, dated 8 Sha'ban al-Mu'azzam 1338 AH. (1) What is your opinion, O noble scholars! (T) Are those who believe in Mirza Ghulam Ahmad Qadiani as a Mujaddid (Renovator), Mahdi, Promised Messiah, and a Prophet recipient of revelation and inspiration, Muslims or outside the fold of Islam and apostates? (2) In the second case (of being apostates), is their marriage with any Muslim woman, non-Muslim woman, or a woman of their own belief Sharia-wise valid or not? (3) In the second scenario, regarding the women whose marriage was conducted with such people, do those women have the right to marry any Muslim man without obtaining a divorce and without observing 'iddat? Explain, and may Allah Almighty reward you.

Answer: (1) Anyone who believes in anyone attaining prophethood after 'La ilaha illallah Muhammadur Rasulullah' (sallallahu ta'ala alaihi wa sallam)...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Relations, Mujtabai Delhi, 1/188 2 Husam al-Haramain, Maktaba Nabawiya, Gunj Bakhsh Road, Lahore, p. 13

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

...जम जाता है तो औरत उस पर हराम न हुई क्योंकि 'इक़रार हुज्जत-ए-क़ासिरा है जो मुक़िर से आगे नहीं बढ़ती' (चूंकि इक़रार कमज़ोर दलील है इसलिए मुक़िर का गैर उससे मुतास्सिर नहीं होता। त) फिर जिन सूरतों में औरत उस पर हराम मानी जाएगी वह हमेशा के लिए हराम होगी, किसी तरह उन बाप बेटों के लिए हलाल नहीं हो सकती मगर हनूज़ तलाक़ न हुई, अम्र पर फ़र्ज़ होगा कि उसे छोड़ दे और उसके छोड़ने के बाद औरत पर इद्दत लाज़िम होगी, बाद इद्दत किसी तीसरे से निकाह कर सकेगी, दुर्रे मुख्तार में है:

[हुरमत-ए-मुसाहरत से निकाह खत्म नहीं होता हत्ता कि दूसरे शख्स से निकाह, मुतारका (अलग होना) और उसके बाद इद्दत गुज़र जाने के बगैर जायज़ नहीं। 1] [हुरमत-ए-मुसाहरत निकाह को खत्म नहीं करती हत्ता कि दूसरे शख्स से निकाह, मुतारका और उसके बाद इद्दत गुज़र जाने के बगैर जायज़ नहीं। (त)]

अगर हुरमत की सूरत में अम्र औरत को रखे तो मुसलमान उससे मेल-जोल छोड़ दें मगर जुर्माना लेना हराम है और उसे मस्जिद में सर्फ़ करना हराम है, और देवबंदियों से फ़तवा पूछना हराम और उनके फ़तवे पर अमल करना हराम, और उन्हें मौलाना या 'नूरुल्लाह मरक़दहु' कहना हराम, तमाम उलमा-ए-किराम हरमैन शरीफ़ैन ने शाने उलूहियत व शाने रिसालत में उनकी सख्त गुस्ताखियों के सबब उनकी तक़फ़ीर (काफ़िर कहना) पर इत्तेफ़ाक़ किया और हुसामुल हरमैन में फ़रमाया: 'मन शक़्क़ा फ़ी अज़ाबिही व कुफ़रिही फ़क़द कफ़र' 2 यानी जो उनके अकवाले मलऊना पर मुत्तला होकर उनके कुफ्र व अज़ाब में शक करे वह भी काफ़िर। वल्-इयाज़ु बिल्लाह। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 298 ता 300: मरसूला मौलाना मौलवी अहमद मुख्तार साहब मेरठी मुवर्रखा 8 शाबानुल मुअज़्ज़म 1338 हि. (1) मा क़ौलुकुम ऐय्युहल उलमा-उल-किराम (ऐ उलमा-ए-किराम! आपका क्या इरशाद है। त) मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी को मुजद्दिद, महदी, मसीहे मौऊद और पैग़म्बर साहब-ए-वही व इलहाम मानने वाले मुसलमान हैं या ख़ारिज अज़ इस्लाम और मुर्तद। (2) बह शक्ल-ए-सानी उसका निकाह किसी मुस्लिमा या ग़ैर मुस्लिमा या उनकी हम अक़ीदा औरत से शरअन दुरुस्त है या नहीं? (3) बह सूरत-ए-सानिया जिस औरत का निकाह इन लोगों के साथ मुनअक़िद

किया गया है उन औरतों को इख्तियार हासिल है कि बग़ैर तलाक़ लिए और बिला इद्दत किसी मर्द-ए-मुस्लिम से निकाह कर लें। बय्यिनू आजुर्रकुमुल्लाहु तआला।

अल-जवाब: (1) 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के बाद किसी को नबुव्वत मिलने का जो क़ायल हो...

---

1 दुर्रे मुख्तार बाब फिल मुहर्रमात मुज्तबाई देहली 1/188 2 हुसामुल हरमैन मक्तबा नबविया, गंज बख्श रोड, लाहौर स. 13

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

جمتا ہے تو عورت اس پر حرام نہ ہوئی لان الاقرار حجۃ قاصرۃ لاتعد والمقر (کیونکہ اقرار کمزور دلیل ہے اس لیے مقر کا غیر اس سے متاثر نہیں ہوتا۔ ت) پھر جن صورتوں میں عورت اس پر حرام مانی جائے گی ہمیشہ کے لیے حرام ہوگی، کسی طرح ان باپ بیٹوں کے لیے حلال نہیں ہو سکتی مگر ہنوز طلاق نہ ہوئی، عمرو پر فرض ہوگا کہ اسے چھوڑ دے اور اس کے چھوڑنے کے بعد عورت پر عدت لازم ہوگی، بعد عدت کسی تیسرے سے نکاح کر سکے گی، در مختار میں ہے:

[وبحرمة المصاهرة لايرتفع النكاح حتى لايحل لها التزوج بآخر الا بعد المتاركة وانقضاء العدة 1-]

[حرمت مصاہرہ نکاح کو ختم نہیں کرتی حتٰی کہ دوسرے شخص سے نکاح، متارکہ اور اس کے بعد عدت گزر جانے کے بغیر جائز نہیں۔ (ت)]

اگر بصورت حرمت عمرو عورت کو رکھے تو مسلمان اس سے میل جول چھوڑ دیں مگر جرمانہ لینا حرام ہے اور اسے مسجد میں صرف کرنا حرام ہے اور دیوبندیوں سے فتوٰی پوچھنا حرام اور ان کے فتوٰی پر عمل کرنا حرام، اور انہیں مولنا یا نور اللہ مرقدہ کہنا حرام، تمام علماء کرام حرمین شریفین نے شان الوہیت و شان رسالت میں ان کی سخت گستاخیوں کے سبب ان کی تکفیر پر اتفاق کیا اور حسام الحرمین میں فرمایا: من شك في عذابه وكفره فقد كفر 2 یعنی جو ان کے اقوال ملعونہ پر مطلع ہو کر ان کے کفر و عذاب میں شک کرے وہ بھی کافر۔ والعیاذ باللہ۔ واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۲۹۸ تا ۳۰۰: مسئولہ مولانا مولوی احمد مختار صاحب میر ٹھی مورخہ ۸ شعبان المعظم ۱۳۳۸ھ (۱) ماقولکم ایھا العلماء الکرام (اے علماء کرام ! آپ کا کیا ارشاد ہے۔ت) مرزا غلام احمد قادیانی کو مجدد مہدی، مسیح موعود اور پیغمبر صاحب وحی والہام ماننے والے مسلمان ہیں یا

خارج از اسلام اور مرتد۔ (۲) بہ شکل ثانی اس کا نکاح کسی مسلمہ یا غیر مسلمہ یا ان کی ہم عقیدہ عورت سے شرعاً درست ہے یا نہیں؟ (۳) بہ صورت ثانیہ جس عورت کا نکاح ان لوگوں کے ساتھ منعقد کیا گیا ہے ان عورتات کو اختیار حاصل ہے کہ بغیر طلاق لیے اور بلا عدت کسی مرد مسلم سے نکاح کرلیں۔ بینوا آجرکم اللہ تعالیٰ

الجواب: (۱) لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد کسی کو نبوت ملنے کا جو قائل ہو

---

1 در مختار باب فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱/۱۸۸ 2 حسام الحرمین مکتبہ نبویہ، گنج بخش روڈ، لاہور ص ۱۳

Fatawa Rizvia, Volume 11

He is absolutely an apostate disbeliever even if he believes [it] for any saint or companion. Allah Almighty says:

[Table] Left column (Arabic): "But [he is] the Messenger of Allah and the seal of the prophets."[1] - And he [peace and blessings of Allah be upon him] said: "I am the seal of the prophets, there is no prophet after me."[2] Right column (Urdu): But [he is] the Messenger of Allah and the seal of the prophets. (T) The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: I am the last prophet and there is no prophet after me. (T)

But a Qadiani is such an apostate regarding whom all the noble scholars of the Two Holy Harams have unanimously written: "Whoever doubts his disbelief has indeed disbelieved."[3] (Whoever doubted his disbelief became a disbeliever. T). Forget about considering him, God forbid, the Promised Messiah or Mahdi or a Mujaddid or even a low-level Muslim; anyone who, after becoming aware of his cursed statements, has even a slight doubt about his being a disbeliever, is himself a disbeliever and an apostate. And Allah Almighty knows best.

(2) The marriage of a man or woman who does not consider a person with Qadiani beliefs to be a disbelieving apostate can never, in any way, take place with any Muslim, disbeliever, or apostate, whether of the same or opposing belief. In short, it cannot be with anyone in the whole world, human, animal, jinn, or devil; with whomever it occurs, it will be pure adultery. It is stated in Fatawa Alamgiriyyah:

[Table] Left column (Arabic): It is not permissible for an apostate to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original disbelieving woman. Likewise, the marriage of an apostate woman is not permissible with anyone. Thus in al-Mabsut.[4] Right column (Urdu): An apostate's marriage with any apostate, Muslim, or original disbelieving woman is not permissible. Similarly, an apostate woman's marriage with any man is not permissible, as stated in al-Mabsut. (T)

In the same work, concerning the disposals of an apostate, it says:

[Table] Left column (Arabic): Among them is what is void by consensus, such as marriage. So it is not permissible for him to marry a Muslim woman, an apostate woman, a Dhimmi woman, a Harbi woman, or a female slave.[5] And Allah Almighty knows best. Right column (Urdu): Some things are void by consensus, such as marriage. So, for him, marriage with any Muslim woman, apostate woman, original

disbelieving woman, Dhimmi woman, Harbi, or slave girl is void. (T) And Allah Almighty knows best.

---

[1] The Holy Quran 33/40 [2] Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Trials, Chapter on what has been narrated about the Hour not being established, etc., Amin Company Delhi, 2/45 [3] Husam al-Haramayn, Maktaba Nabawiya Lahore, p. 13 [4] Fatawa Hindiyya, Chapter on Prohibitions due to Shirk, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282 [5] Fatawa Hindiyya, Ninth Chapter on the Rulings of Apostates, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/455

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

वह तो मुतलकन काफ़िर मुर्तद है अगरचे किसी वली या सहाबी के लिए माने, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

[टेबल] बायाँ कॉलम (अरबी): "लेकिन अल्लाह तआला के रसूल और ख़ातमुन-नबीय्यीन हैं।"[1] - और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मैं ख़ातमुन-नबीय्यीन हूँ, मेरे बाद कोई नबी नहीं।"[2] दायाँ कॉलम (उर्दू): लेकिन अल्लाह तआला के रसूल और ख़ातमुन-नबीय्यीन हैं। (त) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं आख़िरी नबी हूँ और मेरे बाद कोई नबी नहीं। (त)

लेकिन कादियानी तो ऐसा मुर्तद है जिसके बारे में तमाम उलमा-ए-किराम हरमैन शरीफ़ैन ने बिल-इत्तेफ़ाक तहरीर फ़रमाया है कि "जिसने उसके कुफ़्र में शक किया वह काफ़िर हो गया।"[3] (जिसने उसके कुफ़्र में शक किया हो वह काफ़िर हो गया। त) उसे मआज़ अल्लाह मसीह मौऊद या महदी या मुजद्दिद या एक अदना दर्जे का मुसलमान जानना तो दूर की बात है, जो उसके मलऊन अकवाल (कथनों) पर मुत्तला होकर उसके काफ़िर होने में अदना शक करे वह खुद काफ़िर मुर्तद है, वल्लाहु तआला आलम।

(२) कादियानी अकीदे वाले कादियानी को काफ़िर मुर्तद न मानने वाले मर्द ख़्वाह औरत का निकाह असलन हरगिज़ ज़ेन्हार किसी मुस्लिम काफ़िर या मुर्तद उसके हम अकीदा या मुखालिफ़ुल-अकीदा गरज़ तमाम जहान में इंसान हैवान जिन्न शयातीन किसी से नहीं हो सकता, जिनसे होगा ज़ना-ए-खालिस होगा। फ़तावा आलमगीरिया में है:

[टेबल] बायाँ कॉलम (अरबी): मुर्तद के लिए जायज़ नहीं कि वह किसी मुर्तदा, मुस्लिमा या असली काफ़िरा औरत से निकाह करे, और इसी तरह मुर्तदा औरत का निकाह किसी के साथ जायज़ नहीं है। जैसा कि मबसूत में है।[4] दायाँ कॉलम (उर्दू): मुर्तद को किसी मुर्तदा, मुस्लिमा या असली काफ़िरा औरत से निकाह जायज़ नहीं, ऐसे ही मुर्तदा को किसी मर्द से निकाह जायज़ नहीं, जैसा कि मबसूत में है। (त)

इसी में दरबारे तसर्रफ़ात-ए-मुर्तद है:

[टेबल] बायाँ कॉलम (अरबी): उनमें से कुछ वह हैं जो बिल-इत्तेफ़ाक बातिल हैं जैसे निकाह, तो उसके लिए जायज़ नहीं कि वह मुस्लिमा, मुर्तदा, ज़िम्मी, हरबिया या लौंडी से निकाह करे।[5] वल्लाहु तआला आलम। दायाँ कॉलम (उर्दू): बाज़ वह चीज़ें जो बिल-इत्तेफ़ाक बातिल हैं जैसे निकाह, तो उसके लिए किसी मुस्लिमा मुर्तदा और असली काफ़िरा और ज़िम्मी औरत, हरबिया और लौंडी से निकाह बातिल है। (त) वल्लाहु तआला आलम।

---

[1] अल-क़ुरान अल-करीम ४०/३३ [2] जामे तिरमिज़ी, अबवाबुल फ़ितन, बाबू मा जाआ ला तकूमस साआ अलख़, अमीन कंपनी देहली ४५/२ [3] हुसामुल हरमैन, मकतबा नबविया लाहौर, पृ. १३ [4] फ़तावा हिन्दिया, बाबु फ़िल मुहर्रमात बिश-शिर्क़ नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर २८२/१ [5] फ़तावा हिन्दिया, अल-बाबुत ताऱेअ फ़ी अहकामिल मुर्तदीन, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर ४५५/४

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدھم

وہ تو مطلقاً کافر مرتد ہے اگرچہ کسی ولی یا صحابی کے لیے مانے، قال اللہ تعالٰی:

[ٹیبل] بایاں کالم (عربی): وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ١- وقال صلى الله تعالى عليه وسلم : انا خاتم النبيين لانبى بعدى ٢۔ دایاں کالم (اردو): لیکن اللہ تعالٰی کے رسول اور خاتم النبیین ہیں۔ (ت) حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: میں آخری نبی ہوں اور میرے بعد کوئی نبی نہیں (ت)

لیکن قادیانی تو ایسا مرتد ہے جس کی نسبت تمام علمائے کرام حرمین شریفین نے بالاتفاق تحریر فرمایا ہے کہ من شك في كفره فقد كفر ٣ (جس نے اس کے کفر میں شک کیا ہو کافر ہو گیا۔)
اسے معاذ اللہ مسیح موعود کیا مہدی یا مجدد یا ایک ادنٰی درجہ کا مسلمان جاننا درکنار جو اس کے اقوال ملعونہ پر مطلع ہو کر اس کے کافر ہونے میں ادنٰی شک کرے وہ خود کافر مرتد ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

(۲) قادیانی عقیدے والے قادیانی کو کافر مرتد نہ ماننے والے مرد خواہ عورت کا نکاح اصلاً ہر گز زنہار کسی مسلم کافر یا مرتد اس کے ہم عقیدہ یا مخالف العقیدہ غرض تمام جہان میں انسان حیوان جن شیاطین کسی سے نہیں ہو سکتا جن سے ہوگا زنائے خالص ہوگا۔ فتاوٰی عالمگیریہ میں ہے:

[ٹیبل] بایاں کالم (عربی): لا يجوز للمرتد ان يتزوج مرتدة ولا مسلمة ولا كافرة اصلية وكذلك لا يجوز نكاح المرتدة مع احد ، كذا في مبسوط ۴۔ دایاں کالم (اردو): مرتد کو کسی مرتدہ، مسلمہ یا اصلی کافرہ عورت سے نکاح جائز نہیں، ایسے ہی مرتدہ کو کسی مرد سے نکاح جائز نہیں، جیسا کہ مبسوط میں ہے۔ (ت)

اسی میں درباره تصرفات مرتد ہے:

[ٹیبل] بایاں کالم (عربی): منها ما هو باطل بالاتفاق نحو النكاح فلا يجوز له ان يتزوج امرأة مسلمة ولا مرتدة ولا ذمية ولا حربية ولا مملوكة ۵۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ دایاں کالم (اردو): بعض وہ چیزیں جو بالاتفاق باطل ہیں جیسے نکاح تو اس کے لیے کسی مسلمہ مرتدہ اور اصلی کافرہ اور ذمی عورت، حربیہ اور لونڈی سے نکاح باطل ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

۱ القرآن الکریم ۴۰/۳۳ ۲ جامع الترمذی ابواب الفتن باب ماجاء لا تقوم الساعة الخ امین کمپنی دہلی ۳ ۴۵/۲ حسام الحرمین مکتبہ نبویہ لاہور ص ۱۳ ۴ فتاوٰی ہندیہ باب فی المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۲/۱ ۵ فتاوٰی ہندیہ الباب التاسع فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۴۵۵/۲

Fatawa-e-Razwiya Volume XI

Any Muslim woman who, whether by mistake or out of ignorance, was married to someone [not permissible for her], it is an absolute obligation upon her to separate from him immediately to avoid adultery. There is no need for divorce; in fact, there is no place for divorce here. Divorce only occurs when there has been a valid marriage. Since there was no marriage in the first place, no 'iddah' [waiting period] is required either, as there is no 'iddah' for adultery. Without divorce and without 'iddah', she can marry any Muslim she wishes. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Boxed Text]: If a non-believer marries a Muslim woman and children are born, the lineage is not established through him, nor is 'iddah' mandatory, because it is a void marriage. (1) [Urdu Translation]: If a non-believer marries a Muslim woman and children are born from it, lineage will not be established through him, and 'iddah' will not be mandatory for the woman because this marriage is void. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Boxed Text]: Meaning, sexual intercourse in it is adultery, by which lineage is not established. (2) And Allah Almighty knows best. [Urdu Translation]: That is, sexual intercourse in it is adultery from which lineage is not established. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 301: From the town of Nehtaur, District Bijnor, Mian Sahib Sadat-e-Awwal Mohalla. Sent by Syed Muhammad Mukhtar Ahmad Sahib, 5 Sha'ban 1334 AH, Wednesday. To the respected, honored, honorable Maulana Sahib [may your shadow lengthen]. Peace be upon you, how is your health? What do the scholars of the religion and the jurists of the Shari'ah, the deputies of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), say: Zaid had two wives. The first wife passed away; from her, there is a grandson [daughter's son]. From the second wife, there is a daughter. Now, is the marriage between the grandson of the first wife and the daughter of the second wife permissible or not? Can a person marry his step-aunt, i.e., his mother's half-sister born from another mother? The reason for asking is that the father of the person marrying and both the father and mother of the woman being married are separate. Some people argue that the marriage of paternal or maternal cousins is permissible even though they share the same grandfather and grandmother. From which side is lineage counted? Please write the answer in a clear and easy-to-understand manner with an independent reference. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If that daughter of the second wife is indeed from Zaid's semen, she is undoubtedly absolutely forbidden [haram] for Zaid's grandson. However, if she is from another husband, then it is permissible. The general rule regarding lineage is that one's own descendants [branches] and one's own ancestors [roots], no matter how distant, are absolutely forbidden. And one's own ancestors...

(1) Durr al-Mukhtar, Chapter on Establishing Lineage, Mujtabai Delhi, 1/263 (2) Radd al-Muhtar, Chapter on Establishing Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/233

फतावा-ए-रज़विया, खंड 11

जिस मुसलमान औरत का गलती से या अज्ञानता के कारण किसी के साथ निकाह बांधा गया [जो उसके लिए जायज़ नहीं], उस पर यह फर्ज़-दर-फर्ज़ है कि वह तुरंत उससे अलग हो जाए ताकि ज़िना (व्यभिचार) से बचे। तलाक की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि तलाक का कोई स्थान ही नहीं है। तलाक तब होता है जब निकाह हुआ हो। चूंकि निकाह सिरे से हुआ ही नहीं, इसलिए न ही इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की ज़रूरत है क्योंकि ज़िना के लिए इद्दत नहीं होती। बिना तलाक और बिना इद्दत के वह जिस मुसलमान से चाहे निकाह कर सकती है। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स]: निकह काफिर मुस्लिमतह फवलदत मिन्हु ला यस्बुतुल नसबु मिन्हु वला तजीबुल इद्दतु लिअन्नहु निकाह बातिल 1. [उर्दू अनुवाद]: काफिर ने मुसलमान औरत से निकाह किया जिससे संतान हुई, तो उससे वंश (नसब) स्थापित नहीं होगा, औरत पर इद्दत अनिवार्य नहीं होगी क्योंकि यह निकाह बातिल (अमान्य) है। (त)

'रद्द-उल-मुह्तार' में है:

[अरबी बॉक्स]: अई फल-वतऊ फीही ज़िना ला यस्बुतु बिहिन नसबु 2. वल्लाहु तआला आलम। [उर्दू अनुवाद]: यानी इसमें यौन संबंध ज़िना है जिससे वंश स्थापित नहीं होता। (त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 301: कस्बा नहटौर, जिला बिजनौर, मोहल्ला मियां साहब सादात-ए-अव्वल से। प्रेषक सैयद मोहम्मद मुख्तार अहमद साहब, 5 शाबान 1334 हिजरी, बुधवार। माननीय मौलाना साहब [ज़िद-ए-ज़िल्लुकुम]। अस्सलाम अलैकुम, मिजाज शरीफ! दीन के विद्वान और शरीअत के मुफ्ती, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्रतिनिधि क्या फरमाते हैं: ज़ैद की दो पत्नियाँ थीं। पहली पत्नी का निधन हो गया, उससे उसका एक नाती (बेटी का बेटा) है। दूसरी पत्नी से एक बेटी है। अब, क्या पहली पत्नी के नाती का दूसरी पत्नी की बेटी से निकाह जायज़ है या नहीं? क्या कोई व्यक्ति अपनी सौतेली खाला (मौसी), यानी अपनी माँ की उस सौतेली बहन से जो दूसरी माँ से पैदा हुई हो, निकाह कर सकता है? कारण यह है कि निकाह करने वाले का पिता और जिस लड़की से निकाह हो रहा है उसके पिता और माँ दोनों अलग हैं। कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि चचेरे, तायेरे या ममेरे भाई-बहनों का निकाह जायज़ है जबकि उनके दादा-दादी एक ही होते हैं। वंशावली (जुज़इयत) किस तरफ से

गिनी जाती है? कृपया स्पष्ट और आसान उत्तर किसी स्वतंत्र संदर्भ के साथ लिखें। बयां करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: दूसरी पत्नी की वह लड़की अगर ज़ैद ही के अंश (नस्ल) से है, तो निःसंडेह वह ज़ैद के नाती पर पूरी तरह हराम (वर्जित) है। और अगर वह किसी दूसरे पति से है, तो जायज़ है। वंशावली के बारे में सामान्य नियम यह है कि अपनी शाखाएं(संतान) और अपनी जड़ें (पूर्वज) चाहे कितने भी दूर हों, बिल्कुल हराम हैं। और अपनी जड़ें...

(1) दुर्र-ए-मुख्तार, फसल फी सुबूत-उल-नसब, मुजतबाई दिल्ली, 1/263 (2) रद्द-उल-मुह्तार, फसल फी सुबूत-उल-नसब, दार एहीया-उत-तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/233

पृष्ठ 739 का 518

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

جس مسلمان عورت کا غلطی خواہ جہالت سے کسی کے ساتھ نکاح باندھا گیا اس پر فرض فرض فرض ہے کہ فوراً فوراً اس سے جدا ہو جائے کہ زنا سے بچے اور طلاق کی کچھ حاجت نہیں بلکہ طلاق کا کوئی محل ہی نہیں، طلاق تو جب ہو کہ نکاح ہوا ہو، نکاح ہی سرے سے نہ ہوا، نہ اصلاً عدت کی ضرورت کہ زنا کے لیے عدت نہیں، بلا طلاق بلا عدت جس مسلمان سے چاہے نکاح کر سکتی ہے، در مختار میں ہے:

نکح کافر مسلمۃ فولدت منہ لایثبت النسب منہ ولا تجب العدۃ لانہ نکاح باطل ۱۔ کافر نے مسلمان عورت سے نکاح کیا جس سے اولاد ہوئی تو اس سے نسب ثابت نہ ہوگا، عورت پر عدت واجب نہ ہوگی کیونکہ یہ نکاح باطل ہے۔ (ت)

ردالمختار میں ہے:

ای فالوطء فیہ زنا لایثبت بہ النسب ۲۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ یعنی اس میں وطی زنا ہے جس سے نسب ثابت نہیں ہوتا۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۰۱: از قصبہ نہٹور ضلع بجنور محلہ میاں صاحب سادات اول مرسلہ سید محمد مختار احمد صاحب ۵ شعبان ۱۳۳۴ھ روز چہار شنبہ مکرم معظم جناب قبلہ مولانا صاحب زاد ظلکم۔ السلام علیکم، مزاج شریف! کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع نائب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔ زید کی دو زوجہ، زوجہ اول کا انتقال ہو گیا، اس سے اس کے ایک نواسہ، زوجہ دوم کے ایک لڑکی، اب زوجہ دوم کی لڑکی سے زوجہ اول کے نواسہ کا نکاح درست ہے یا نہیں؟ گویا سوتیلی خالہ سے یعنی اپنی ماں کی سوتیلی بہن سے جو دوسری ماں سے پیدا ہو کوئی شخص اپنا

نکاح کر سکتا ہے؟ سبب یہ ہے کہ نکاح کا باپ اور منکوحہ کا باپ اور ماں دونوں علیحدہ ہیں کیونکہ بعض شخص کچھ ایسی حجت پیدا کرتے ہیں کہ چچا زاد یا تائی زاد یا خالہ زاد بہن بھائی حقیقی کا نکاح جائز ہے جبکہ نکاح اور منکوحہ کے ماں اور باپ کا ایک باپ اور ایک ماں ہیں، جزئیت کس طرف سے شمار ہوتی ہے، کسی ایسی عام فہم صورت میں جواب صاف اور کسی مستقل حوالہ کے ساتھ تحریر فرمائیں۔ بینوا توجروا

الجواب: زوجہ دوم کی وہ لڑکی اگر زید ہی کے نطفہ سے ہے بلاشبہ زید کے نواسے پر حرام قطعی ہے، اور اگر کسی دوسرے شوہر سے ہے تو جائز ہے، جزئیت کے بارے میں قاعدہ کلیہ یہ ہے کہ اپنی فرع اور اپنی اصل کتنی بعید ہو مطلقاً حرام ہے، اور اپنی اصل

۱ درمختار فصل فی ثبوت النسب مجتبائی دہلی ۱/۲۶۳ ۲ ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۳۳

Fatawa Rizvia Volume 11

A near branch, even if distant, is forbidden; and a distant branch of one's distant ancestor is lawful. One's branch like daughter, granddaughter, great-granddaughter no matter how far, and ancestors like mother, paternal grandmother, maternal grandmother no matter how high, and branches of near ancestors i.e. children of mother and father or children's children no matter how distant, and near branches of distant ancestors like the daughters of paternal grandfather, great-grandfather, maternal grandfather, paternal grandmother, great-grandmother, maternal grandmother, all these are forbidden. And distant branches of distant ancestors like the granddaughters of the aforementioned people who are not of the type of one's near ancestor are lawful. In the mentioned case, if the girl of the second wife is from Zaid's semen, then she becomes a near branch of his distant ancestor; Zaid is her maternal grandfather, he becomes her distant ancestor and this girl is his daughter, she becomes his near branch, hence she is forbidden. And if she is from another husband, then there is no relation with him, hence she is lawful. The daughters of paternal uncle, maternal aunt, maternal uncle, and paternal aunt are lawful because they are the distant branches of his distant ancestor, i.e., granddaughters of grandfather and maternal grandfather, who are not from his near ancestor. It is in 'Niqayah':

Forbidden to a man are his origins (ancestors), his branches (descendants), the branches of his near ancestors, and the direct female descendants (daughters) of his distant ancestors. And Allah knows best.

For a man, his origins and branches, and branches of near origins, and direct female descendants of distant origins are forbidden women. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 302: Asked by Hafiz Muhammad Ala-ud-Din, Imam of the Mosque, Balrampur, Post Office Anga Deera, District Manbhum. (1) Who are the women with whom marriage is forbidden? It should be in common language, especially understandable for me. (2) A woman who was married to Zaid's elder brother, after the elder brother's death, can Zaid marry that woman, i.e., his sister-in-law (Bhawaj)? There is a dispute about this; please write its summary, only.

The Answer: (1) The causes of prohibition are multiple: First: Lineage (Nasab), such as mother, daughter, sister, maternal aunt, paternal aunt, niece (brother's daughter), niece (sister's daughter). Second: Fosterage (Raza'at), these women through the

relationship of milk: the nursing mother, her daughter, her sister, and the daughter of the one who drank the milk, and the sisters, maternal aunts, and paternal aunts of the man and woman whose milk was drunk, and the children of one's foster brother and sister, or the foster children of one's own brother and sister, niece, nieces, and so on. Third: Affinity (Musaharat), such as the wives of one's origins, e.g., father, grandfather, maternal grandfather, or wives of one's branches, e.g., son, grandson, daughter's son, or their wives...

---

1 Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Kitab al-Nikah, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 52.

करीब की शाखा भले ही दूर हो, हराम है, और अपने दूर के मूल की दूर की शाखा हलाल है। अपनी शाखा जैसे बेटी, पोती, नातिन कितनी ही दूर हो और मूल माँ, दादी, नानी कितनी ही ऊँची हो और निकट मूल की शाखा यानी अपनी माँ और बाप की संतान या संतान की संतान कितनी ही दूर हो और दूर के मूल की निकट शाखा जैसे अपने दादा, परदादा, नाना, दादी, परदादी, नानी, परनानी की बेटियाँ ये सब हराम हैं, और दूर के मूल की दूर की शाखा जैसे इन्हीं ऊपर बताए गए व्यक्तियों की पोतियां, नातिनें जो अपने निकट मूल की श्रेणी की न हों, हलाल हैं। उपरोक्त स्थिति में जबकि दूसरी पत्नी की लड़की ज़ैद के वीर्य से हो तो वह उसके दूर के मूल की निकट शाखा हुई, ज़ैद उसका नाना है वह उसका दूर का मूल हुआ और यह लड़की उसकी बेटी, यह उसकी निकट शाखा हुई, इसलिए हराम हुई। और अगर दूसरे पति से है तो उससे कोई संबंध न हुआ इसलिए हलाल हुई। चाचा, खाला, मामू, फूफी की बेटियाँ इसलिए हलाल हैं कि वे उसके दूर के मूल की दूर की शाखा हैं यानी दादा नाना की पोतियां नातिनें जो अपने निकट मूल से नहीं हैं। 'निक़ाया' में है:

एक पुरुष के लिए उसके मूल (पूर्वज), उसकी शाखाएं(वंशज), उसके निकट के मूल की शाखाएं और उसके दूर के मूल की सगी पुत्रियां हराम हैं। और अल्लाह बेहतर जानता है।

पुरुष पर उसके मूल और शाखाएं और निकट मूल की शाखा और दूर मूल की सगी औरतें हराम हैं। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला ३०२: द्वारा हाफ़िज़ मुहम्मद अलाउद्दीन साहब, इमाम मस्जिद, स्थान बलरामपुर, डाकखाना अंगह डेरा, जिला मानभूम। (१) वे कौन सी औरतें हैं जिनसे निकाह हराम है? आम बोलचाल की भाषा में हो, विशेषकर मेरे समझने के योग्य। (२) जो औरत ज़ैद के बड़े भाई के निकाह में आ चुकी हो, बड़े भाई की मृत्यु के बाद क्या ज़ैद उस औरत यानी अपनी भावज (भाभी) से निकाह कर सकता है या नहीं? इस पर झगड़ा चल रहा है, इसका सारांश लिखकर स्पष्ट करें, फक़त (सिर्फ़)।

जवाब: (१) हुरमत (निषेध) के कारण अनेक हैं: पहला: नसब (रक्त संबंध) जैसे माँ, बेटी, बहन, खाला (मौसी), फूफी (बुआ/चाची), भतीजी, भांजी। दूसरा: रज़ाअत (दूध का रिश्ता), दूध के रिश्ते से ये औरतें: दूध पिलाने वाली माँ और उसकी बेटी, बहन और जिसने उसका दूध पिया वह बेटी, और जिन स्त्री-पुरुष का दूध पिया उनकी बहनें, खाला, फूफी और अपने रज़ाई भाई-बहन की संतान या अपने भाई-बहन की रज़ाई संतान, भतीजी, भतीजियाँ, वगैरह। तीसरा: मुसाहरत (ससुराल का रिश्ता) जैसे

अपने मूल मसलन बाप, दादा, नाना या अपनी शाखाएं मसलन बेटा, पोता, नातिन, उनकी पत्नियां या उनकी पत्नियां...

---

1 मुख्तसर अल-विक़ाया फी मसाइल अल-हिदाया, किताबुन निकाह, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पेज 52.

पृष्ठ 739 का 519

قریب کی فرع اگرچہ بعید ہو حرام ہے، اور اپنی اصل بعید کی فرع بعید حلال، اپنی فرع جیسے بیٹی پوتی نواسی کتنی ہی دور ہو اور اصل ماں دادی نانی کتنی ہی بلند ہو اور اصل قریب کی فرع یعنی اپنی ماں اور باپ کی اولاد یا اولاد کی اولاد کتنی ہی بعید ہو اور اصل بعید کی فرع قریب جیسے اپنے دادا، پردادا، نانا، دادی، پردادی، نانی، پرنانی کی بیٹیاں یہ سب حرام ہیں، اور اصل بعید کی فرع بعید جیسے انہی اشخاص مذکورہ آخر کی پوتیاں نواسیاں جو اپنی اصل قریب کی نوع نہ ہوں حلال ہیں۔ صورت مذکورہ میں جبکہ زوجہ دوم کی لڑکی زید کے نطفہ کی ہو تو وہ اس کے اصل بعید کی فرع بعید قریب ہوئی، زید اس کا نانا ہے وہ اس کی اصل بعید ہوا اور یہ لڑکی اس کی بیٹی، یہ اس کی فرع قریب ہوئی، لہٰذا حرام ہوئی۔ اور اگر دوسرے شوہر سے ہے تو اس سے کوئی تعلق نہ ہوا لہٰذا حلال ہوئی، چچا، خالہ، ماموں، پھوپھی کی بیٹیاں اس لیے حلال ہیں کہ وہ اس کی اصل بعید کی فرع بعید ہیں یعنی دادا نانا کی پوتیاں نواسیاں جو اپنی اصل قریب سے نہیں۔ نقایہ میں ہے:

حَرُمَ عَلَی الْمَرْءِ اَصْلُهٗ وَ فَرْعُهٗ وَ فَرْعُ اَصْلِهٖ الْقَرِیْبِ وَ صُلْبِیَّةُ اَصْلِهِ الْبَعِیْدِ۔ وَ هُوَ تَعَالٰی اَعْلَمُ۔

مرد پر اس کے اصول و فروع اور اصل قریب کی فرع اور اصل بعید کی صلبیہ عورتیں حرام ہیں۔ (ت) وہو تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۰۲: مسئولہ حافظ محمد علاؤ الدین صاحب پیش امام مسجد مقام بلرام پور ڈاک خانہ انگہ ڈیرہ ضلع مان بھوم (۱) جن عورتوں سے نکاح حرام ہے وہ کون کون ہیں؟ عام فہم ہو خصوصاً میرے سمجھنے کے قابل۔ (۲) جو عورت زید کے بڑے بھائی کے نکاح میں آچکی ہو، بعد مرنے بڑے بھائی کے اس عورت یعنی اپنی بھاوج سے زید عقد کر سکتا ہے یا نہیں؟ اس کا جھگڑا پڑا ہوا

ہے اس کا خلاصہ تحریر فرمائیں، فقط الجواب: (۱) حرمت کے اسباب متعدد ہیں: اول نسب جیسے ماں بیٹی، بہن، خالہ، پھوپھی، بھتیجی، بھانجی۔ دوم رضاعت، دودھ کے رشتہ سے یہ عورتیں، دودھ پلانے والی ماں اور اس کی بیٹی بہن اور جس نے اس کا دودھ پیا بیٹی اور جن مرد و عورت کا دودھ پیا ان کی بہنیں خالہ پھوپھی اور اپنے رضاعی بھائی بہن کی اولاد یا اپنے بھائی بہن کی رضاعی اولاد بھتیجی بھتیجیاں، وقس علیہ۔ سوم مصاہرت کہ اپنے اصول مثلاً باپ دادا نانا اپنی فروع مثلاً بیٹا پوتا نواسہ ان کی بیبیاں یا

---

1 مختصر الوقایة فی مسائل الہدایة کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۲

Fatawa Razawiyyah, Volume 11

...women whom they have touched with lust, likewise the mother, paternal grandmother, maternal grandmother of one's wife or a woman with whom intercourse has occurred. Fourth, Shirk: That is, a non-Kitabi (not from the People of the Book) disbelieving woman is forbidden (haram) for a Muslim. Fifth, Apostasy: If a woman who was Muslim leaves Islam, marriage with her is forbidden, even if she adopts the religion of the People of the Book. Sixth, the fifth one: That is, if four wives are already present in marriage, then the fifth is forbidden. Seventh, combining two mahrams: For example, if a woman is in marriage, then as long as she remains in marriage, marriage with her sister, paternal aunt, maternal aunt, niece (brother's daughter), or niece (sister's daughter) is forbidden. Eighth, when a free woman is in marriage, marrying a slave girl in her presence is not permissible. Ninth, a woman who has been given three divorces is forbidden until she undergoes halala. Tenth, a woman with whom 'Li'an' (mutual imprecation) has been performed; marriage cannot be performed with her until one declares oneself a liar. Eleventh, a woman who is in the marriage of another. Twelfth, a woman who is in the 'Iddah' (waiting period) of another. Particulars are numerous; details require separate discourse, these are a few summarized points. And Allah Almighty knows best. (2) Can do so after the waiting period has passed. And Allah Almighty knows best. Problem 304: From Dwarka Okha Kathiawar, sent by Naik Habib Khan, 3 Jumada al-Akhirah 1345 AH. Source of lightning of meanings, manifestation of rays of grace, may Allah continue His favor upon you. Peace be upon you, with folded hands, greetings. I wish for the well-being of both sides. A girl who, in her childhood, drank the milk of my sister once or twice while asleep, whose mother and my mother are the same, but fathers are different. Can that girl come into my marriage or not? And if that girl has already come into my marriage and the incident of breastfeeding was revealed later, what is the fatwa for it? Please inform quickly and bestow honor. The Answer: The girl who drank the milk of the questioner's sister, even if in her sleep, even if only once, even if only a single drop, even if that sister was a half-sister to the questioner (same mother, different father), that girl has become the questioner's niece (sister's daughter). Marriage with her is absolutely forbidden (haram qat'i). And if it happened unknowingly and now fosterage (rada'at) is proven by Shari'a evidence, it is obligatory for the questioner to separate from her immediately, as she is like his niece and real daughter. Then, if intercourse occurred...

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

...जिन औरतों को उन्होंने शहवत (वासना) के साथ छुआ हो, वैसे ही अपनी बीवी या उस औरत की माँ, दादी, नानी जिससे जिमा (संभोग) किया हो। चौथा, शिर्क़ यानी गैर-किताबी काफ़िर औरत मुसलमान पर हराम है। पाँचवाँ, इर्तिदाद: जो औरत मुसलमान होकर इस्लाम से निकल जाए, उससे निकाह हराम है चाहे वह अहले-किताब (किताब वालों) का ही धर्म क्यों न अपना ले। छठा, पाँचवीं: यानी निकाह में चार औरतें मौजूद हों तो पाँचवीं हराम है। सातवाँ, दो महरमों को जमा करना: मिसाल के तौर पर एक औरत निकाह में है, तो जब तक वह निकाह में रहे, उसकी बहन, फूफी, खाला, भतीजी, भांजी से निकाह हराम है। आठवाँ, जब कोई आज़ाद औरत निकाह में हो, उसके होते हुए कनीज़ (दासी) से निकाह जायज़ नहीं। नवाँ, जिस औरत को तीन तलाकें दे चुका, जब तक हलाला न हो उससे निकाह हराम है। दसवाँ, जिस औरत से लआन (शपथ पूर्वक आरोप-प्रत्यारोप) कर चुका, जब तक स्वयं को झूठा न ठहराए, उससे निकाह नहीं कर सकता। ग्यारहवाँ, वह औरत जो दूसरे के निकाह में है। बारहवाँ, वह औरत जो दूसरे की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में है। जुज़ियात (सूक्ष्म विवरण) बहुत ज़्यादा हैं, विस्तार के लिए अलग प्रसंग चाहिए, ये कुछ संक्षेप में बातें हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (२) इद्दत गुज़रने के बाद कर सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसाला ३०४: द्वारका ओखा काठियावाड़ से, मुरसला (प्रेषक) नायक हबीब खान, ३ जमादी-उल-आख़िर १३४५ हिजरी। मस्दर-ए-बवारिक-ए-मआनी, मज़हर-ए-शवारिक-ए-फ़ैज़-रसानी, अल्लाह आपकी इनायत कायम रखे, अस्सलामु अलैकुम, हाथ जोड़कर आदाब। दोनों तरफ़ की खैरियत का चाहने वाला हूँ। वह लड़की जिसने बचपन में मेरी उस बहन का दूध एक या दो बार नींद की हालत में पिया हो, जिसकी और मेरी माँ एक है और वालिद (पिता) जुदा। क्या वह लड़की मेरे निकाह में आ सकती है या नहीं? और अगर वह लड़की मेरे निकाह में आ चुकी हो और दूध पिलाने की बात बाद में पता चली हो, उसके लिए क्या फ़तवा है? कृपया जल्द सूचित करके उपकृत करें। अल-जवाब (उत्तर): जिस लड़की ने पूछने वाले की बहन का दूध पिया, चाहे उसकी नींद में ही, चाहे एक ही बार, चाहे एक ही कतरा, चाहे वह बहन पूछने वाले से सिर्फ माँ में शरीक हो और पिता जुदा हों, वह लड़की पूछने वाले की भांजी हो गई और उससे उसका निकाह कतई हराम है। और अगर अनजाने में हो गया और अब शरीयत के प्रमाण से रज़ाअत (दूध का रिश्ता) साबित हो गई, तो पूछने वाले पर फ़र्ज़ है कि फ़ौरन उसे अलग कर दे, क्योंकि वह उसकी भांजी और सगी बेटी की तरह है। फिर अगर संभोग हुआ हो...

جن عورتوں کو انھوں نے بشہوت ہاتھ لگایا ہو، یونہی اپنی بی بی یا مدخولہ کی ماں، دادی، نانی۔ چہارم شرک یعنی غیر کتابی کافرہ عورت مسلمان پر حرام ہے۔ پنجم ارتداد جو عورت مسلمان ہو کر اسلام سے نکل جائے اس سے نکاح حرام ہے اگرچہ وہ کتابیوں ہی کا دین اختیار کرے۔ ششم پانچویں۔ یعنی چار عورتیں نکاح میں موجود ہوں تو پانچویں حرام ہے۔ ہفتم دو محارم میں جمع کرنا، مثلاً ایک عورت نکاح میں ہے تو جب تک وہ نکاح میں رہے اس کی بہن پھوپھی خالہ بھتیجی بھانجی سے نکاح حرام ہے۔ ہشتم جب کوئی آزاد عورت نکاح میں ہو اس کے ہوتے ہوئے کنیز سے نکاح جائز نہیں۔ نہُم جس عورت کو تین طلاقیں دے چکا جب تک حلالہ نہ ہو اس سے نکاح حرام ہے۔ دہم جس عورت سے لعان کرچکا جب تک اپنے نفس کو تکذیب نہ کرے اس سے نکاح نہیں کر سکتا۔ یازدہم وہ عورت کہ دوسرے کے نکاح میں ہے۔ دوازدہم وہ عورت کہ دوسرے کے عدت میں ہے۔ جزئیات بہت کثیر ہیں تفصیل کو اجزاء درکار ہیں، یہ چند اجمالی باتیں ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) عدت گزرنے کے بعد کرسکتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۳۰۴: از دوار کا اوکھا کاٹھیاوار مرسلہ نائیک حبیب خان ۳ جمادی الآخرہ ۱۳۴۵ھ مصدر بوارق معانی، مظہر شوارق فیض رسانی، ادام اللہ عنایتکم، السلام علیکم، دست بستہ آداب۔ خیریت طرفین کا خواستگار ہوں، وہ لڑکی کہ جس نے بچپن میں میری اس ہمشیرہ کا دودھ ایک یاد و دفعہ نیند کی حالت میں پیا ہو کہ اس کی اور میری والدہ ایک ہے اور والد جدا۔ آیا وہ لڑکی میرے نکاح میں آسکتی ہے یا نہیں؟ اور اگر وہ لڑکی میرے نکاح میں آچکی ہو اور دودھ پلانے کی واردات پیچھے ظاہر ہوئی اس کے لیے کیا فتویٰ ہے؟ براہ نوازش جلد مطلع فرما کر فخر بخشیں۔ الجواب: جس لڑکی نے سائل کی بہن کا دودھ پیا اگرچہ اس کے سوتے میں۔ اگرچہ ایک ہی بار، اگرچہ ایک ہی قطرہ، اگرچہ وہ بہن سائل سے

صرف ماں میں شریک اور باپ میں جدا تھی، وہ لڑکی سائل کی بھانجی ہو گئی اور اس سے اس کا نکاح حرام قطعی ہے، اور اگر نادانستگی میں ہو گیا اور اب بہ ثبوت شرعی رضاعت ثابت ہوئی تو سائل پر فرض ہے کہ فوراً فوراً اسے جدا کردے کہ وہ اس کی بھانجی اور مثل حقیقی دختر کے ہے، پھر اگر جماع واقع ہوا،

Fatawa Razawiya - Volume 11

Then dower (Mehr) will be payable, whichever is less between the customary dower (Mehr-e-Mithl) and the stipulated dower (Mehr-e-Musamma). After being left by him, the woman shall observe an 'Iddah (waiting period) of three menstrual cycles, then she can marry whomsoever she wishes. And Allah Almighty knows best.

Problem 305: Questioned by Mian Qudratullah Sahib Chishti from Patan, district Gujarat, State of Baroda, 20 Rajab 1335 AH.

[Diagram showing a family tree: Vali, Hamid, Nasab, Ali, Khadija, Yaru, Ahmad, Karima, Kamal, Second woman, Vali's first wife]

Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: is marriage between the boy Kamal and the girl Karima permissible or not? Explain and be rewarded.

The Answer: It is clear from this family tree that Kamal and Vali are step-brothers to each other. They share the same father but have different mothers. And Karima is the granddaughter of Vali, meaning his (step-brother's) granddaughter, so she is prohibited (Haraam) for Kamal; marriage cannot take place. Allah Almighty said: "...and your brothers' daughters..."[1] (And the daughters of the brother - T). And Allah Almighty knows best.

Problem 306: From Marehra Sharif, sent by Muhammad Naeem Sahib, 16 Muharram-ul-Haram 1336 AH.

A person, during his childhood when his age was only ten or eleven years, committed adultery with a fourteen-year-old woman (who had just been married that same month) because of the woman's desire and instruction. However, the boy was a minor. Now that woman has a daughter. Is the marriage of the aforementioned boy, who had committed adultery with her mother during his childhood, with her daughter permissible and correct or not?

The Answer: If at that time the boy's age was less than 12 years, then prohibition (Hurmat) was not established. That boy can marry the daughter of that woman. It is mentioned in Durr-e-Mukhtar:

If an immature boy (Ghayr-e-Murahiq) has intercourse with his father's wife, prohibition is not established. Fath.[2]	If an immature boy had sexual intercourse with his father's wife, then the prohibition will not be established. Fath (T).

[1] Al-Quran Al-Kareem 4:23 [2] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Delhi 1/188

फ़तावा रज़विया - ग्यारहवीं जिल्द

तो मेहर देना होगा जो मेहर-ए-मिसल और मेहर-ए-मुसम्मा में से कम हो और औरत उसके छोड़ने के बाद तीन हैज़ इद्दत गुज़ारेगी, फिर जिससे चाहे निकाह करेगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३०५: मियाँ कुदरतुल्लाह साहब चिश्ती, मकाम पटन, जिला गुजरात रियासत बड़ौदा से सवाल, २० रजब १३३५ हिजरी।

[वंश वृक्ष आरेख: वली, हामिद, नसब, अली, खदीजा, यारू, अहमद, करीमा, कमाल, दूसरी औरत, वली की पहली मन्कूहा]

सवाल: उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि लड़का कमाल और लड़की करीमा, दोनों के दरमियान निकाह जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि अज्र पाएं।

अल-जवाब: इस शजरे से वाज़ेह है कि कमाल और वली दोनों आपस में सौतेले भाई हैं। बाप एक और माँ अलग। और करीमा वली की नवासी यानी (भाई की) पोती है, तो वह कमाल पर हराम है, निकाह नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और भाई की बेटियां"[1] (त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३०६: मारहरा शरीफ से, मोहम्मद नईम साहब की तरफ से, १६ मुहर्रम-उल-हराम १३३६ हिजरी।

एक शख्स ने अपने बचपन में, जब उसकी उम्र सिर्फ दस-ग्यारह साल थी, एक चौदह साला औरत से (जिसकी शादी उसी महीने में हुई थी) औरत के बहलाने-फुसलाने और सिखाने से ज़िना किया, लेकिन लड़का नाबालिग था। अब उस औरत की एक लड़की है। क्या उस लड़के का निकाह उस लड़की से जायज़ और दुरुस्त है जिसकी माँ के साथ उसने अपनी नाबालिग़ी की हालत में ज़िना किया था?

अल-जवाब: अगर उस वक्त लड़के की उम्र १२ साल से कम थी, तो हुरमत (निकाह की मुमानियत) साबित न हुई। वह लड़का उस औरत की लड़की से निकाह कर सकता है। दुर्रे मुख्तार में है:

अगर गैर-मुराहिग (नासमझ नाबालिग) ने अपने बाप की बीवी से जिमा (शारीरिक सम्बन्ध) किया तो हुरमत साबित न होगी। फ़तह।[2]	अगर नासमझ नाबालिग ने अपने बाप की बीवी से जिमा किया तो हुरमत साबित न होगी। फ़तह (त)।

[1] अल-कुरआन अल-करीम ४:२३ [2] दुर्रे मुख्तार, बाबू फ़िल मुहर्रमात, मुजतबाई दिल्ली १/१८८

فتاویٰ رضویہ - جلد یاز دہم

تو مہر دینا آئے گا جو مہر مثل و مہر مسمیٰ میں کم ہو اور عورت اس کے چھوڑنے کے بعد تین حیض عدت کرے گی، پھر جس سے چاہے نکاح کرے گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۰۵: مسئولہ میاں قدرت اللہ صاحب چشتی از مقام پٹن ضلع گجرات ریاست بڑودہ ۲۰ رجب ۱۳۳۵ھ

[شجرہ: ولی، حامد، نسب، علی، خدیجہ، یارو، احمد، کریمہ، کمال، دوسری عورت، ولی پہلی منکوحہ]

علمائے دین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ لڑکا کمال اور لڑکی کریمہ دونوں کے درمیان نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اس شجرہ سے واضح ہے کہ کمال اور ولی دونوں آپس میں سوتیلے بھائی ہیں۔ باپ ایک اور ماں جدا۔ اور کریمہ ولی کی نواسی یعنی بیٹی کی بیٹی ہے تو وہ کمال پر حرام ہے نکاح نہیں ہو سکتا، قال تعالیٰ: وَ بَنٰتُ الْاَخِ[1] (اور بھائی کی بیٹیاں۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۰۶: از مارہرہ شریف مرسلہ محمد نعیم صاحب ۱۶ محرم الحرام ۱۳۳۶ھ

ایک شخص نے اپنے لڑکپن میں جبکہ اس کی عمر صرف دس گیارہ سال تھی ایک چودہ سالہ عورت سے جس کی شادی اسی ماہ میں ہوئی تھی عورت کے رغبت کرنے اور سکھانے سے زنا کیا لیکن لڑکا نابالغ تھا اب اس عورت سے ایک لڑکی ہے، اس کا نکاح لڑکے مذکور سے جس نے اپنی نابالغی کی حالت میں اس کی ماں سے زنا کیا تھا جائز اور درست ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر اس وقت لڑکے کی عمر ۱۲ برس سے کم تھی تو حرمت ثابت نہ ہوئی، وہ لڑکا اس عورت کی لڑکی سے نکاح کر سکتا ہے، در مختار میں ہے:

لو جامع غیر مراھق زوجة ابیه لم اگر غیر مراھق نے اپنے باپ کی زوجہ سے جماع کیا تو حرمت تحرم فتح۔[2] ثابت نہ ہوگی۔ فتح (ت)

[1] القرآن الکریم ۴/۲۳ [2] درمختار باب فی المحرمات مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱

Volume 11 Fatawa Ridawiyya

It is stated in Radd al-Muhtar:

"It is necessary for both [male and female] to have reached the age of adolescence (murāhiq). The minimum age for a girl is nine years and for a boy is twelve years, because this is the minimum period in which puberty can occur, as jurists have clearly stated in the chapter on a boy's puberty. This is consistent with what has been mentioned previously, that the cause for the prohibition of affinity (hurmat al-musāharah) is intercourse that can result in a child, and the touching that can lead to such intercourse. It is evident that intercourse by someone younger than the age of adolescence cannot result in a child. (T) And Allah Almighty knows best."

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/282. Page 522 of 739

रद अल-मुह्तार में वर्णित है:

"पुरुष और स्त्री दोनों के लिए यह आवश्यक है कि वे कम से कम किशोरावस्था (मुराहिक़) की आयु में हों। लड़की के लिए किशोरावस्था की न्यूनतम आयु नौ वर्ष और लड़के के लिए बारह वर्ष है, क्योंकि यह वह न्यूनतम अवधि है जिसमें परिपक्वता (यौवन) आ सकती है, जैसा कि न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने लड़के की परिपक्वता के बारे में स्पष्ट रूप से बताया है। यह पूर्व विवरण के अनुरूप है कि विवाह-संबंधी निषेध (हुरमत-ए-मुसाहारह) का कारण वह सहवास है जिससे संतान उत्पन्न हो सके और वह स्पर्श जो ऐसे सहवास का कारण बन सके। और यह स्पष्ट है कि किशोरावस्था से कम आयु वाले के सहवास से संतान नहीं हो सकती। (त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।"

---

1. रद अल-मुह्तार, निषिद्ध वस्तुओं का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/282. पृष्ठ 522/739

ردا لمحتار میں ہے :

لا بد في كل منهما من سن المراهقة و اقله للاثنى تسع وللذكر اثنا عشر لان ذلك اقل مدة يمكن فيها البلوغ كما صرحوا به في باب بلوغ الغلام وهذا يوافق مآمران العلة هى الوطء الذي يكون سبباً للولد، والمس الذي يكون سبباً لهذا الوطء ولا يخفى ان غير المراهق منهما لا يتأتى منه الولد - والله تعالى اعلم-

مرد و عورت دونوں کے لیے ضروری ہے کہ دونوں کم از کم مراہق کی عمر میں ہوں، اور مراہق کی عمر لڑکی کے لیے کم از کم نو سال اور لڑکے کے لیے بارہ سال، کیونکہ یہ وہ کم از کم عمر ہے جس میں بلوغ ہوتا ہے جیسا کہ فقہاء نے لڑکے کے بلوغ کے متعلق تصریح فرمائی ہے اور یہ بیان گزشتہ اس بیان کے موافق ہے کہ حرمتِ مصاہرہ کی علت وہ وطی ہے جو بچے کا سبب بن سکے اور وہ مس جو اس وطی کا سبب بن سکے، اور یہ ظاہر ہے کہ مراہق سے کم عمر والے کی وطی بچے کا سبب نہیں ہوتی، (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1 ردالمحتار باب في المحرمات دارحياء التراث العربي بيروت ۲/۲۸۲ Page 522 of 739

Volume Eleven Fatawa Rizwia

Chapter One (Explanation of the Guardian)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

Issue 306: From Khandwa, District Nimar, 16 Jumada al-Ula 1305 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a minor girl, eight years of age, whose father passed away during her infancy. Her mother raised her and is her heir and supporter. She has an uncle who has been completely separated from her late father for approximately forty years, with no mutual relation or contact of any kind. This girl's marriage was performed at a place where the mother was not present, without the permission of the mother or the uncle. Is this marriage valid or not? Explain and be rewarded.

The Answer: It is clear from the phrasing of the question that this girl has no grandfather or adult brother. Therefore, in the stated case, her uncle is her guardian (wali), in whose presence even the mother has no authority. And the uncle's being separated and unrelated to the father does not nullify his Shari' guardianship. At most, it would be a severance of kinship (qata' al-rahm), which is a major sin, and sin does not nullify guardianship. It is stated in Tanwir al-Absar:

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

बाब अल-उला (वली का बयान)

अल्लाह के नाम से शुरू जो अत्यंत कृपाशील और दयालु है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं।

मसला ३०६: खंडवा, जिला निमाड़ से, १६ जमादि-उल-उला १३०५ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक नाबालिग लड़की जिसकी उम्र आठ वर्ष है, उसके पिता का देहांत उसके बचपन (दुधमुंही अवस्था) में ही हो गया था। उसकी परवरिश उसकी माँ ने की है और वही उसकी वारिस और कफ़ील (देखभाल करने वाली) है। उसका एक चाचा है जो लड़की के मरहूम पिता से लगभग चालीस वर्षों से बिल्कुल अलग है, उनका आपस में किसी प्रकार का कोई वास्ता या संबंध नहीं है। इस लड़की का निकाह माँ और चाचा की अनुमति के बिना किसी ऐसी जगह ले जाकर करा दिया गया जहाँ माँ मौजूद नहीं थी। तो क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

उत्तर: सवाल की इबारत से स्पष्ट है कि इस लड़की का दादा या कोई जवान भाई नहीं है। अतः पूछी गई स्थिति में उसका चाचा ही उसका वली (संरक्षक) है, जिसकी मौजूदगी में माँ को भी अधिकार नहीं है। और चाचा का पिता से अलग और बे-ताल्लुक होना उसकी विलायते-शरइया (कानूनी संरक्षण) को साक़ित (निरस्त) नहीं करता। अधिक से अधिक यह 'क़ते-रहम' (रिश्तेदारी तोड़ना) होगा जो कि एक अत्यंत बड़ा गुनाह है, और गुनाह विलायत (संरक्षण) को साक़ित नहीं करता। तनवीरुल अबसार में है:

पृष्ठ ५२३ का ७३९

جلد یازدھم فتاویٰ رضویہ

باب الولی (ولی کا بیان)

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

مسئلہ ۳۰۶: از کھنڈوا ضلع نماڑ ۱۶ جمادی الاولی ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لڑکی نابالغہ جس کی عمر آٹھ برس کی ہے، باپ اس کا اس کی شیر خوارگی میں انتقال کر گیا، پرورش اس کی ماں نے کی اور وہی اس کی وارث و کفیل ہے، ایک چچا اس کا ہے وہ لڑکی کے باپ مرحوم سے تخمیناً چالیس سال سے بالکل علیحدہ ہے، کسی نوع کا واسطہ و تعلق باہمی نہیں۔ اس لڑکی کا نکاح بے اجازت والدہ و عم کے ایسے مقام پر لے جا کر پڑھا دیا جہاں ماں موجود نہ تھی، پس یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: تقریر سوال سے واضح کہ اس لڑکی کا دادا یا کوئی جوان بھائی نہیں ۔ پس صورتِ مستفسرہ میں اس کا چچا ہی اس کا ولی ہے جس کے ہوتے ماں کو بھی اختیار نہیں۔ اور چچا کا باپ سے جدا و بے علاقہ ہونا اس کی ولایت شرعیہ کو ساقط نہیں کرتا غایت درجہ قطع رحم ہو گا اس کی نہایت گناہ اور گناہ مسقط ولایت نہیں۔ تنویر الابصار میں ہے:

Fatawa Ridawiyya (Volume 11)

Al-Wali fi an-Nikah al-Asabah bi nafsihi [1]. | In marriage, the guardian is the agnate relative in his own right. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated: Fa in lam yakun asabatan fa al-wilayatu lil umm [2]. | If there is no agnate relative, then the guardianship belongs to the mother. (T)

In Fatawa Khairiyyah, it is stated: Al-Umm la tamliku tazweeja ibnatiha ma'al 'amm [3]. | In the presence of the paternal uncle, the mother does not have guardianship over her daughter's marriage. (T)

In Fatawa Khaniyyah, it is stated: Al-fisqu la yamna'u al-wilayata [4]. | Sinfulness (fisq) does not prevent guardianship. (T)

Thus, the marriage that took place without the uncle's permission will remain suspended pending his approval. If he rejects it, it will be null and void. In Majma' al-Anhur, it is stated: Waqfa tazweeju fuduliyyin wa huwa man lam yakun waliyan wala aseelan wala wakeelan ala ijazati man lahu al-aqdu fa in ajaza yan'aqidu wala la [5]. | A person who is not a guardian, principal, or agent is considered 'fuduli' (unauthorized). A marriage performed by such a person is dependent on the permission of the legal guardian. If he permits, it's valid; otherwise, it will be invalid. (T)

And if he (the guardian) grants permission, it will be effective provided that the person with whom the marriage took place is a suitable match (Kufu) for that girl and there has been no gross deficiency (Ghabn-e-Fahish) in her dowry (Mahr). Otherwise, if he is not a suitable match or if there is such a deficiency in the dowry, the marriage is fundamentally invalid. It cannot become effective even with the permission of guardians like the uncle, because if such a marriage were performed by the uncle himself, it would still be void; how then could it gain validity through his subsequent approval? In Durr al-Mukhtar it is stated: In kana al-muzawwiju ghayra al-abi wa abeehi wa law lil ummi la yasihhu an-nikahu min ghayri kufuin aw bi ghabnin fahishin aslan [6] ah mulakkhasan. | If the person performing the marriage is not the father or the grandfather, even if it is the mother, then the marriage will not be valid in the case of a non-suitable match or gross deficiency in dowry. (T)

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Bab al-Wali, Mujtabai Delhi, 1/193 2. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Bab al-Wali, Mujtabai Delhi, 1/193 3. Fatawa Khairiyyah, Kitab an-Nikah, Bab al-Awliya, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/24 4.

Fatawa Qadi Khan, Fasl fil Awliya, Naval Kishore Lucknow, 1/163 5. Majma' al-Anhur, Fasl fi Tazweej al-Fuduli, Dar Ihya at-Turath al-Arabi Beirut, 1/343 6. Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Matba' Mujtabai Delhi, 1/192

फ़तावा रज़विया (ग्यारहवीं जिल्द)

अल-वली फ़ी अन-निकाह अल-असबः बि-नफ़्सिही [1]. | निकाह में वली असबा बिन-नफ़्सिही (स्वयं का रक्त संबंधी) होता है। (त)

दुर्रे मुख्तार में है: फ़ा इन लम यकुन असबतन फ़ल-विलायतु लिल-उम्म [2]. | अगर असबा मौजूद न हो तो फिर विलायत (संरक्षकत्व) माँ को होगी। (त)

फ़तावा खैरिया में है: अल-उम्मु ला तम्बिलकु तज़वीजा इब्नतिहा मअ़ल अ़म्म [3]. | वालिदा (माँ) की बेटी के चाचा की मौजूदगी में विलायत नहीं है। (त)

फ़तावा खानिया में है: अल-फ़िस्क़ु ला यम्नअुल विलायता [4]. | फिस्क़ (गुनाहगारी), विलायत के लिए रुकावट नहीं है। (त)

अतः वह निकाह जो चाचा की इजाजत के बिना हुआ, उसकी इजाजत पर निर्भर रहेगा। अगर वह रद्द कर दे तो बातिल (अमान्य) हो जाएगा। मजम'अल अनहर में है: वक़्फ़ा तज़वीजु फ़ुज़ूलिय्यिन वहुवा मन लम यकुन वलियन वला असीलन वला वकीलन अ़ला इजाज़ति मन लहू अल-अ़क़्दु फ़ा इन अजाज़ा यनअ़क़िदु वाला ला [5]. | जो व्यक्ति वली, असील और वकील न हो वह फ़ुज़ूली होता है, जिसका किया हुआ निकाह विलायत वाले की इजाजत पर निर्भर रहता है। अगर वह जायज कर दे तो जायज, वरना नाजायज होगा। (त)

और अगर वह इजाजत दे दे तो लागू हो जाएगा बशर्ते कि जिस व्यक्ति के साथ निकाह हुआ वह उस लड़की का कुफ़ू(समान पद वाला) हो और उसके मेहर में बहुत अधिक कमी (ग़बने फ़ाहिश) न की गई हो। वरना अगर कुफ़ू नहीं है या मेहर में ऐसी कमी है तो निकाह मूल रूप से सही नहीं है। न तो चाचा आदि जैसे इन औलिया (संरक्षकों) की इजाजत से वह लागू हो सकेगा, क्योंकि ऐसा निकाह अगर खुद चाचा के हाथों भी किया गया होता, तब भी बातिल होता, फिर उसके द्वारा जायज करने से वह कैसे मान्य हो सकता है। दुर्रे मुख्तार में है: इन काना अल-मुज़व्विु ग़ैरा अल-अबी व अबीही व लौ लिल उम्मि ला यसिह्हु अन-निकाहू मिन ग़ैरि कुफ़ुइन अव बि ग़बनिन् फ़ाहिशिन अस्लन [6] अह मुलक़्ख़सन। | निकाह करने वाला बाप या दादा न हो, चाहे माँ हो, तो गैर-कुफ़ू और मेहर की बहुत अधिक कमी की स्थिति में निकाह सही नहीं होगा। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल वली, मुज्तबाई दिल्ली, 1/193 2. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल वली, मुज्तबाई दिल्ली, 1/193 3. फ़तावा खैरिया, किताबुन निकाह, बाबुल औलिया, दारुल मारिफ़ा बेरुत, 1/24 4. फ़तावा क़ाज़ी खाँ, फ़स्ल फ़िल औलिया, नवल किशोर लखनऊ, 1/163 5. मजमअुल अनहर, फ़स्ल फ़ी तज़वीजुल फ़ुज़ूली, दार इहयाउत तुराथिल अरबी बेरुत, 1/343 6. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबअ् मुज्तबाई दिल्ली, 1/192

فتاوٰی رضویہ (جلد یازدہم)

الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ [1]۔ | نکاح میں ولی عصبہ بنفسہ ہوتا ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے : فان لم یکن عصبۃ فالولایۃ للام [2]۔ | اگر عصبہ موجود نہ ہو تو پھر ماں کو ولایت ہو گی۔ (ت)

فتاوٰی خیر یہ میں ہے : الام لا تملك تزویج ابنها مع العم [3]۔ | والدہ کی بیٹی کے چچا کی موجودگی میں ولایت نہیں۔ (ت)

فتاوٰی خانیہ میں ہے : الفسق لا یمنع الولایۃ [4]۔ | فسق، ولایت کے لیے مانع نہیں ہے۔ (ت)

پس وہ نکاح کہ بے اجازت چچا کے ہوا اس کی اجازت پر موقوف رہے گا۔ اگر رد کر دے باطل ہو جائے گا۔ مجمع الانہر میں ہے: وقف تزویج فضولی وھو من لم یکن ولیا ولا اصیلا ولا وکیلا علی اجازۃ من لہ العقد فان اجاز ینعقد والا لا[5]۔ | جو شخص ولی، اصیل اور وکیل نہ ہو وہ فضولی ہوتا ہے جس کا کیا ہوا نکاح ولایت والے کی اجازت پر موقوف رہتا ہے، اگر وہ جائز کر دے تو جائز، ورنہ ناجائز ہوگا۔ (ت)

اور اجازت دے تو نافذ ہو جائے گا بشرطیکہ جس شخص کے ساتھ نکاح ہوا وہ اس دختر کا کفو ہو اور اس کے مہر میں کمی فاحش نہ کی گئی ہو۔ ورنہ اگر کفو نہیں یا مہر میں ایسی کمی ہے تو نکاح اصلاً وجہ صحت نہیں رکھتا۔ نہ چچا وغیرہ ان اولیاء کی اجازت سے نافذ ہو سکے کہ ایسا نکاح اگر خود چچا کے ہاتھوں کا کیا ہوتا تاہم باطل ہوتا پھر اس کے جائز کئے نفاذ کیونکر پا سکتا ہے۔ در مختار میں ہے : ان کان المزوج غیر الاب وابیہ ولولام لا یصح النکاح من غیر کفو او بغبن

فاحش اصلا [6] اھ ملخصا | نکاح کرنے والا باپ یا دادا نہ ہو اگرچہ ماں ہو تو غیر کفو اور مہر کی فحش کمی کی صورت میں نکاح صحیح نہ ہوگا۔ (ت)

حواشی: 1. درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ 2. در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ 3. فتاوٰی خیریہ کتاب النکاح باب الاولیاء دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۲۴ 4. فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الاولیاء نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۶۳ 5. مجمع الانہر فصل فی تزویج الفضولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۳۴۳ 6. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

In Radd al-Muhtar it says: "Not at all, meaning neither binding nor dependent on consent after reaching puberty."[1] | It will not be at all, neither is it effective now nor will it be dependent on consent after reaching puberty. (T)

In Fath al-Qadir it says: "The uncle and his like, their marriage [of a ward] to someone who is not a Kufu (equal match) is not valid."[2] | Marriage by an uncle or similar relatives to someone who is not a Kufu (equal match) will not be valid. (T) And the meaning of Kufu is that there should be no such deficiency or defect in his tribe, religion, deeds, or profession compared to the girl's family which would cause disgrace to the girl's guardians; nor should he be so needy that if this girl is currently capable of intercourse, he cannot provide maintenance (nafaqah), or if a certain amount of mahr (dower), total or partial, is stipulated or customary to be paid immediately (mu'ajjal), he is currently unable to pay it. It says in Tanwir: "(Kafa'ah) is considered in terms of lineage (nasab), freedom (hurriyat), Islam, piety (diyanat), wealth (maal), and profession (hirfat)."[3] | In being a Kufu (equal match), lineage, freedom, Islam, piety, wealth, and profession are taken into account. (T)

In Multaqa al-Abhur it says: "Wealth is considered, so one who is unable to pay the immediate dower and maintenance is not a Kufu, etc."[4] | Wealth is taken into account, so a person who is unable to pay the immediate dower (mahr mu'ajjal) and maintenance (nafaqah) will not qualify as a Kufu. (T)

In Shami, citing Dhakhira and Fath al-Qadir, it says: "His statement 'if she is capable of intercourse' - so if she is a minor unable to endure it, then he is a Kufu even if he cannot provide maintenance because there is no maintenance for her."[5] - And Allah Almighty knows best, and the knowledge of His Majesty is most complete, and the judgment of the Glorified is most firm. | His statement that the wife should be capable of intercourse means that if she is so young that she is not capable of intercourse, then Kufu is established even if the husband is not capable of providing maintenance because maintenance is not obligatory on the husband for a child of such an age. Allah Almighty knows best, the knowledge of Allah Jalla Majduhu is perfect and most complete and His command is effective and firm. (T)

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305. [2] Fath al-Qadir, Section on Kafa'ah, Maktaba Nooriya Razawiyya, Sukkur, 3/196. [3] Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Section on Kafa'ah, Matba Mujtabai, Delhi,

1/194-95. [4] Multaqa al-Abhur, Kafa'ah in Marriage, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 1/246. [5] Radd al-Muhtar, Chapter on Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/321.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

रद्द अल-मुह्तार में है: "असली तौर पर यानी न तो अनिवार्य और न ही बालिग़ होने के बाद सहमति पर निर्भर।"[1] | बिल्कुल नहीं होगा, न अब लागू होगा और न बालिग़ होने के बाद सहमति पर निर्भर होगा। (त)

फ़तह अल-क़दीर में है: "चाचा और उनके जैसे लोगों द्वारा ग़ैर-कुफ़ू (बराबर का न होना) में निकाह करना सही नहीं है।"[2] | चाचा वगैरह का ग़ैर-कुफ़ू में निकाह कर देना सही नहीं होगा। (त) और कुफ़ू के यह मानी हैं कि उसकी क़ौम या मज़हब या आमाल या पेशे में लड़की के ख़ानदान के मुक़ाबले कोई ऐसी कमी या दोष न हो जिसके कारण लड़की के वलियों (अभिभावकों) को अपमान सहना पड़े, न ही वह इतना मोहताज हो कि अगर यह लड़की अभी संभोग के योग्य है तो उसे गुज़ारा (नफ़क़ा) न दे सके या मेहर की जो भी राशि कुल या आंशिक रूप से शर्त के अनुसार या रिवाज के मुताबिक़ नकद (मुअज्ज्ल) है, वह फ़िलहाल उसकी अदायगी पर क़ादिर नहीं। तन्वीर में है: "(कफ़ाअत यानी कुफ़ू होना) नसब (वंश), आज़ादी, इस्लाम, परहेज़गारी (दियानत), धन और पेशे के आधार पर माना जाता है।"[3] | कुफ़ू होने में नसब, आज़ादी, इस्लाम, दियानत, धन और पेशे का एतबार है। (त)

मुल्तक़ा अल-अब्हुर में है: "धन का एतबार किया जाता है, अतः जो व्यक्ति नकद मेहर और गुज़ारा देने में असमर्थ हो वह कुफ़ू नहीं होगा आदि।"[4] | धन का एतबार है, तो जो व्यक्ति मेहर-ए-मुअज्ज्ल और नफ़क़ा (गुज़ारा) की अदायगी से लाचार हो वह कुफ़ू नहीं बनेगा। (त)

शामी में ज़ख़ीरा और फ़तह अल-क़दीर के हवाले से है: "उसका कथन 'अगर वह संभोग के योग्य हो' - तो अगर ऐसी छोटी बच्ची हो जो इसकी सामर्थ्य न रखती हो तो वह कुफ़ू है भले ही वह नफ़क़ा पर क़ादिर न हो क्योंकि उस पर नफ़क़ा लाज़िम नहीं।"[5] - और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण है और उसका हुक्म सबसे मज़बूत है। | उसका यह कथन कि पत्नी संभोग के योग्य हो, तो अगर वह ऐसी कम उम्र की हो कि वह संभोग के योग्य नहीं तो कुफ़ू साबित होगा चाहे पति नफ़क़ा (गुज़ारे) पर क़ादिर न हो क्योंकि ऐसी उम्र के लिए पति पर नफ़क़ा लाज़िम नहीं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है, अल्लाह जल्ल मज्दुहू का इल्म कामिल व अकमल है और उसका हुक्म लागू और मज़बूत है। (त)

[1] रद्द अल-मुह्तार, बाब फ़िल वली, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/305. [2] फ़तह अल-क़दीर, फ़स्ल फ़िल कफ़ाअत, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/196. [3] दुर्रे-मुख़्तार शरह तन्वीर

अल-अबसार, फ़स्ल फ़िल कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/194-95. [4] मुल्तक़ा अल-अब्हुर, अल-कफ़ाअत फ़िन निकाह, मुअस्ससत अर-रिसाला, बेरूत, 1/246. [5] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअत, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/321.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

ردالمحتار میں ہے: اصلاً ای لا لازماً ولا موقوفاً علی الرضا بعد البلوغ[1]۔ | بالکل نہ ہوگا، نہ اب نافذ ہوگا اور نہ بعد بلوغ رضا پر موقوف ہوگا ۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: العم ونحوہ لایصح منھم التزویج بغیر الکفو[2] ۔ | چچا وغیرہ کا غیر کفو میں نکاح کر دینا صحیح نہ ہوگا۔ (ت) اور کفو کے یہ معنی کہ اس کی قوم یا مذہب یا اعمال یا پیشے میں بہ نسبت خاندانِ دختر کے کوئی ایسا قصور و عیب نہ ہو جس کے سبب اولیائے دختر کو عار لاحق ہو نہ ایسا محتاج ہو کہ اگر یہ دختر بالفعل قابلِ جماع ہے تو نفقہ نہیں دے سکتا یا کسی قدر مہر کل یا بعض از روئے شرط یا حسب رواج معجل ہے تو فی الحال اس کے ادا پر قادر نہیں۔

تنویر میں ہے: تعتبر (یعنی الکفاءۃ) نسباً وحریۃ واسلاماً ودیانۃ ومالاً وحرفۃ[3]۔ | کفو ہونے میں نسب، حریت، اسلام، دیانت، مال اور حرفت کا اعتبار ہے۔ (ت)

ملتقی الا بحر میں ہے: وتعتبر مالاً فالعاجز عن المہر المعجل والنفقۃ غیر کفو الخ[4]۔ | مال کا اعتبار ہے تو جو شخص مہر معجل اور نفقہ کی ادائیگی سے عاجز ہو تو کفو نہیں بنے گا۔ (ت)

شامی میں ذخیرہ و فتح القدیر میں ہے: قولہ لو تطیق الجماع۔ فلو صغیرۃ لا تطیقہ فھو کفو وان لم یقدر علی النفقۃ لانہ لا نفقۃ لھا[5] - واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم وحکمہ سبحانہ احکم۔ | اس کا قول کہ بیوی جماع کے قابل ہو، تو اگر ایسی کم عمر ہو کہ وہ جماع کے قابل نہیں تو کفو ثابت ہوگی اگرچہ خاوند نفقہ پر قادر نہ ہو کیونکہ ایسی عمر کے لیے خاوند پر نفقہ لازم نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم، اللہ جل مجدہ کا علم کامل و اکمل اور اس کا حکم نافذ مضبوط ہے۔ (ت)

[1] ردالمحتار باب فی الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ [2] فتح القدیر فصل فی الکفاءۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۶/۳ [3] درمختار شرح تنویر الابصار فصل فی الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۴/۱-۹۵ [4] ملتقی الابحر الکفاءۃ فی النکاح مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۴۶/۱ [5] ردالمحتار باب الکفاءۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۲۱/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Problem 307: 12 Jumada al-Akhira 1305 Hijri Qudsi What do the scholars of religion say in this matter: the father of a minor girl gave permission to his young son for her marriage with Zaid and went to his place of employment, which is seven or eight kos from there. Following that, the marriage took place. After the Rukhsati (sending away of the bride), the father returned, the Rukhsati of the fourth day happened in his presence, and years passed with visits. Now, after seven years, the father says, "I am not pleased with this marriage." In this situation, does the father or that minor girl, upon reaching puberty, have the right to annul the marriage or not? And was the marriage performed by the brother valid or not? Explain and be rewarded.

The Answer: When it is proven that the father of the minor girl gave permission to his young son for the marriage of the underage daughter with Zaid, and the marriage took place according to the permission, then now neither can the father of the minor annul it himself, nor does the minor girl have the right to annul it after reaching puberty. Rather, that marriage has become absolutely valid, executed, and binding.

Arabic Text: For giving permission is like appointing a proxy, and the act of the proxy is like the act of the principal. And whoever strives to nullify what was completed with his consent, his attempt is rejected back upon him. (T)

Explanation: Giving permission to a proxy means that his act will be considered the act of the principal. Therefore, the attempt of the person trying to nullify the action completed by the proxy will be rejected. (T)

It is stated in Tanwir: Marriage becomes binding even if there is excessive deception or it is without an equal, if the guardian is the father or grandfather... etc. And Allah, the Sublime and Almighty, knows best. (T)

Explanation: If the father or grandfather is the one performing the marriage, the marriage will be binding and executed despite the lack of social equality (kufu) or an obscenely low dowry (mahr). And Allah, the Sublime and Almighty, knows best. (T)

Problem 308: 3 Rajab al-Murajab 1305 Hijri What do the scholars of religion say in this matter: Bakr, the father of Laila, gave permission to his young son Khalid to marry her off to Amr, who is of equal social standing (kufu), and went from Bareilly to his job at Bisalpur, which is twenty kos from here. Khalid, the brother, and the mother of Laila did not approve of the marriage with Amr; they preferred a marriage with Zaid, as he is also like Amr, from the same family and community. Therefore, contrary

to Bakr's permission, Laila's mother and brother hurriedly married ten-year-old minor Laila to seven-year-old minor Zaid.

1 Durr al-Mukhtar sharh Tanwir al-Absar, Bab al-Wali, Mujtabai Press Delhi, 1/192

फतावा रज़विया, जिल्द 11

मसला 307: 12 जमादी-उल-आखिर 1305 हिजरी कुदसी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि एक नाबालिग लड़की (सगीरा) के बाप ने अपने जवान बेटे को ज़ैद के साथ उसके निकाह की इजाज़त दी और खुद अपनी नौकरी की जगह चला गया, जो वहाँ से सात-आठ कोस दूर है। उसके पीछे वह निकाह हो गया। रुख़सती के बाद बाप आया, चौथी की रुख़सती उसके सामने हुई और सालों आना-जाना रहा। अब सात साल बाद बाप कहता है कि मैं इस निकाह से राज़ी नहीं हूँ। इस सूरत में बाप या उस नाबालिग लड़की को बालिग होने पर निकाह फस्ख (रद्द) करने का हक पहुँचता है या नहीं? और वह निकाह जो भाई ने किया, सही हुआ या नहीं? बयान फरमाएं सवाब पायें।

अल-जवाब: जब यह साबित हो कि नाबालिग लड़की के बाप ने अपने जवान बेटे को अपनी नाबालिग बेटी का निकाह ज़ैद के साथ करने की इजाज़त दी और वह निकाह इजाज़त के मुताबिक हुआ, तो अब न तो नाबालिग का बाप उसे खुद रद्द कर सकता है और न ही वह लड़की बालिग होने के बाद इसे रद्द करने का अधिकार रखती है। बल्कि वह निकाह निश्चित रूप से सही, लागू और अनिवार्य (लाज़िम) हो गया है।

अरबी इबारत: क्योंकि अनुमति देना वकील बनाना (प्रतिनिधि नियुक्त करना) है, और वकील का कार्य मुवक्किल (नियुक्तकर्ता) के कार्य के समान होता है। और जो व्यक्ति अपनी ओर से पूरी की गई बात को तोड़ने की कोशिश करता है, उसकी कोशिश उसी पर लौटा दी जाती है (अस्वीकार्य है)। (त)

व्याख्या: वकील को इजाज़त देने का मतलब यह है कि उसके काम को मुवक्किल का काम माना जाएगा। इसलिए वकील द्वारा पूरी की गई कार्रवाई को रद्द करने वाले की कोशिश को खारिज कर दिया जाएगा। (त)

तन्वीर में है: निकाह लाज़िम हो जाता है, चाहे उसमें बहुत ज़्यादा धोखा (ग़ब्ने फ़ाहिश) हो या वह बराबरी (कुफ़ू) के बिना हो, अगर वली बाप या दादा हो... इत्यादि। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

व्याख्या: अगर निकाह करने वाला बाप या दादा हो, तो गैर-कुफ़ू(बराबरी न होना) और मेहर की बहुत ज़्यादा कमी के बावजूद निकाह लाज़िम और लागू होगा। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 308: 3 रजब-उल-मुरज्जब 1305 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि लैला के बाप बक्र ने अपने जवान बेटे खालिद को इजाज़त दी कि वह उसका निकाह अम्र के साथ कर दे जो बराबरी (कुफ़ू) का है, और खुद बरेली से अपनी नौकरी पर बीसलपुर चला गया जो यहाँ से बीस कोस है। भाई खालिद और लैला की माँ को अम्र से निकाह मंजूर नहीं था, उनकी मर्ज़ी ज़ैद के साथ निकाह की थी क्योंकि वह भी अम्र की तरह ही बिरादरी और आपस का ही है। इसलिए बक्र की इजाज़त के खिलाफ लैला की माँ और भाई ने जल्दी करके10 साल की नाबालिग लैला का निकाह 7 साल के नाबालिग ज़ैद से कर दिया।

1 दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/192 पेज 526 ऑफ 739

مسئلہ ۳۰۷: ۱۲ جمادی الاخرہ ۱۳۰۵ ہجری قدسی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ صغیرہ کا باپ اس کے نکاح کی زید کے ساتھ اپنے پسر جوان کو اجازت دے کر اپنی نوکری کے مقام پر کہ وہاں سے سات آٹھ کوس ہے چلا گیا، اس کے پیچھے وہ نکاح ہوا، رخصت کے بعد باپ آیا، چوتھی کی رخصت اس کے سامنے ہوئی اور برسوں آئی گئی، اب سات برس کے بعد باپ کہتا ہے میں اس نکاح سے راضی نہیں، اس صورت میں باپ یا اس صغیرہ کو بلوغ حق فسخ نکاح پہنچتا ہے یا نہیں؟ اور وہ نکاح کہ بھائی نے کیا صحیح ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جب کہ ثابت ہو کہ پدر صغیرہ نے اپنے پسر جوان کو دختر نابالغہ کے نکاح کی زید کے ساتھ اجازت دی اور وہ نکاح حسب اجازت واقع ہوا تو اب اسے نہ پدر صغیرہ خود فسخ کر سکے نہ صغیرہ بعد بلوغ اس کا اختیار فسخ رکھے، بلکہ وہ نکاح قطعاً صحیح و نافذ ولازم ہو گیا۔

فان الاذن توکیل وفعل الوکیل کفعال الموکل ومن سعی فی نقض ماتم من جھتہ فسعیہ مردود علیہ۔
وکیل کو اجازت کا مطلب یہ ہے کہ اس کے فعل کو مؤکل کا فعل قرار دیا جائے گا لہذا وکیل کی طرف سے تمام شدہ کارروائی کو کالعدم قرار دینے والے کی کوشش کو رد کر دیا جائے گا۔ (ت)

تنویر میں ہے: لزم النکاح ولو بغبن فاحش او بغیر کفوان کان الولي ابا وجدا ۱ الخ- واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔ اگر باپ یا دادا نکاح کرنے والا ہو تو غیر کفو اور مہر کی فُحش کمی کے باوجود نکاح لازم و نافذ ہوگا۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۰۸: ۳ رجب المرجب ۱۳۰۵ ہجری کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لیلٰی کا باپ بکر اس کا نکاح عمر و کفو کے ساتھ کر دینے کی اجازت اپنے جوان بیٹے خالد کو دے کر

بریلی سے اپنی نوکری پر بسل پور کہ یہاں سے بیس کوس ہے چلا گیا، خالد برادر وہندہ مادر لیلیٰ کو عمرو سے نکاح منظور نہ تھا ان کی مرضی زید کے ساتھ نکاح میں تھی کہ وہ بھی مثل عمر و آپس اور برادری ہی کا ہے لہذا برخلاف اجازت بکر مادر و برادر لیلیٰ نے جلدی کرکے لیلیٰ نابالغہ دہ سالہ کا نکاح زید نابالغ ہفت سالہ سے کر دیا۔

۱ درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ Page 526 of 739

Fatawa Razawiyya - Volume 11

Question: When Laila's father came and heard the news, he became very angry and called his daughter back from her in-laws and did not let her go back. Seven years passed, Laila became an adult (baligha), but Zaid was still a minor (na-baligh). As soon as Laila became an adult, she immediately rejected this marriage and wants to marry somewhere else. In this situation, is the first marriage annulled and does Laila have the right to a second marriage or not? Explain and be rewarded. (Explanation provided - Translator)

The Answer: A few days ago, this issue was inquired from the humble servant (faqir) by the opposing party of the questioner, i.e., Zaid's father. In that, the situation presented was completely contrary to this question. He had represented that Laila's father had given permission for her marriage to Zaid to Khalid (a young man) in his presence, and her departure (rukhsati) happened in front of him, and Laila visited for years. After these seven years, he now says he is not satisfied. On that, the humble servant wrote that if the mentioned content is proven, then indeed the marriage has become valid and binding, which no one can annul. Now Laila's father takes this stance, and along with him, some farmers of the community who call themselves close relatives of both parties, support Bakr's statement under oath. In short, the knowledge of the actual truth is with Allah Almighty. If these people are truthful and the situation is as stated in the question, that the marriage took place against the father's permission, then if he said any word of rejection of this marriage in his anger, the marriage was annulled at that very moment. And if he did not say any such word nor was he pleased with it, nor did he ever allow the rukhsati, and Laila rejected it upon becoming an adult, then the marriage is now annulled because when Laila's father had given Laila's brother permission to perform the marriage specifically with Amr, then as his representative (wakil), he only had that much authority. Now that he acted contrary to that and performed the marriage with Zaid, this marriage is considered 'nikah fuduli' (an unauthorized contract). It is stated in 'Durr al-Mukhtar':

(Arabic Quote)	**(Urdu Translation)**
They [jurists] have consensus that it is not valid as if he commanded him for a specific woman and he acted contrary.	There is a consensus among jurists that if someone was told to perform marriage with a specific woman and the agent

(Arabic Quote)	(Urdu Translation)
End summary, meaning the agent in marriage.	(wakil) did otherwise, it will not be valid. End summary (T)

It is in 'Radd al-Muhtar': In

(Arabic Quote)	(Urdu Translation)
In every place where the act of the agent is not executed, the contract is suspended upon the permission of the principal.	Wherever the agent's action is not executed, that action will be dependent on the principal's permission. (T)

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'at (compatibility), Mujtabai Delhi, 1/196
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Kafa'at, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/325

फतावा रज़विया - जिल्द 11

प्रश्न: जब लैला के पिता आए और समाचार सुनकर बहुत नाराज़ हुए, और अपनी बेटी को ससुराल से बुला लिया और फिर उसे जाने नहीं दिया। इस पर सात साल बीत गए, लैला बालिग़ (वयस्क) हो गई लेकिन ज़ैद अभी भी ना-बालिग़ (अल्पवयस्क) है। लैला ने बालिग़ होते ही तुरंत इस निकाह से इनकार कर दिया और दूसरी जगह निकाह करना चाहती है। इस स्थिति में क्या पहला निकाह रद्द हो गया और लैला को दूसरे निकाह का अधिकार मिला या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (स्पष्टीकरण दिया गया - अनुवादक)

उत्तर: अल-जवाब: कुछ दिन पहले यह मसला (मुद्दा) प्रश्नकर्ता के विरोधी पक्ष यानी ज़ैद के पिता ने फ़क़ीर (मुझ) से पूछा था और उसमें सवाल का रूप इस प्रश्न के बिल्कुल विपरीत था। उसने ज़ाहिर किया था कि लैला के पिता ने खालिद (एक युवक) की उपस्थिति में उसके(ज़ैद के) साथ निकाह की अनुमति दी थी और उसकी रुख़्सती (विदाई) उसके सामने हुई थी और लैला सालों आती-जाती रही। इन सात वर्षों के बाद अब वह कहता है कि मैं राजी नहीं हूँ। इस पर फ़क़ीर ने लिखा था कि यदि उक्त विषय सिद्ध हो जाता है तो निश्चित रूप से निकाह सही और अनिवार्य हो गया है, जिसे कोई रद्द नहीं कर सकता। अब लैला के पिता यह रुख अपनाते हैं और उनके साथ बिरादरी के कुछ किसान जो खुद को दोनों पक्षों का करीबी रिश्तेदार बताते हैं, शपथ पूर्वक बक्र के इस बयान का समर्थन करते हैं। संक्षेप में, वास्तविक सच्चाई का ज्ञान अल्लाह तआला को है। यदि ये लोग सच्चे हैं और स्थिति वैसी ही है जैसा कि प्रश्न में बताया गया है कि निकाह पिता की अनुमति के विरुद्ध हुआ, तो यदि उन्होंने अपनी नाराज़गी में इस निकाह को अस्वीकार करने का कोई शब्द कहा था तो निकाह उसी समय रद्द हो गया। और यदि उन्होंने ऐसा कोई शब्द नहीं कहा और न ही वे इससे संतुष्ट हुए, न ही उन्होंने कभी रुख़्सती की अनुमति दी, और लैला ने बालिग़ होकर इनकार कर दिया, तो अब निकाह रद्द हो गया। क्योंकि जब लैला के पिता ने लैला के भाई को विशेष रूप से अम्र के साथ निकाह करने की अनुमति दी थी, तो पिता के वकील के रूप में उसके पास केवल उतना ही अधिकार था। अब उसने उसके विपरीत कार्य किया और ज़ैद के साथ निकाह कर दिया, तो यह निकाह 'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' (अनाधिकृत अनुबंध) माना जाएगा। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

(अरबी उद्धरण)

फ़ुक़हा (न्यायविदों) का आम सहमति है कि यदि किसी ने विशिष्ट स्त्री से निकाह के लिए कहा और वकील ने उसके विपरीत किया, तो यह जायज़ नहीं होगा। संक्षेप। यानी निकाह का वकील।

(उर्दू अनुवाद)

फ़ुक़हा का इज्मा (आम सहमति) है कि अगर किसी विशिष्ट औरत से निकाह का कहा गया और वकील ने उसके खिलाफ किया तो यह जायज़ नहीं होगा। संक्षेप (त)

रद-उल-मुहतार में है: में

(अरबी उद्धरण)

हर उस स्थान पर जहाँ वकील का कार्य प्रभावी नहीं होता, वहाँ अनुबंध मुवक्किल (स्वामी) की अनुमति पर निर्भर होता है।

(उर्दू अनुवाद)

जहाँ वकील का काम प्रभावी (नाफ़िज़) नहीं होगा, वहाँ वह काम मुवक्किल की अनुमति पर निर्भर (मौक़ूफ़) होगा। (त)

1. दुर्र अल-मुख़्तार, बाब अल-कफ़ाअत, मुजतबाई दिल्ली, 1/196
2. रद अल-मुहतार, बाब अल-कफ़ाअत, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/325

فتاوی رضویہ - جلد یاز دہم

جب پدر لیلی آیا خبر سن کر سخت ناراض ہوا، اور دختر کو سسرال سے بلا لیا اور پھر نہ جانے دیا، اس پر سات برس کا زمانہ گزرا کہ لیلی بالغہ ہو گئی مگر زید ہنوز نابالغ ہے لیلی نے بالغہ ہوتے ہی فوراً اس نکاح سے انکار کر دیا اور دوسری جگہ اپنا نکاح کیا چاہتی ہے اس صورت میں نکاح اول فسخ ہوا اور لیلی کو نکاح ثانی کا اختیار ملا یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان کیجئے اور اجر پائیے۔ ت)

الجواب: چند روز ہوئے کہ یہ مسئلہ سائل کی طرف مقابل یعنی پدر زید نے فقیر سے دریافت کیا اور اس میں صورت سوال بالکل اس کے خلاف تھی، اس نے ظاہر کیا تھا کہ پدر لیلی اس کے نکاح کی اجازت خالد پسر جوان کو اسی زید کے ساتھ دے گیا تھا اور چوتھی کی رخصت اس کے سامنے ہوئی اور لیلی برسوں آئی گئی، ان سات برس کے بعد کہتا ہے میں راضی نہیں۔ اس پر فقیر نے لکھا تھا کہ مضمون مذکور ثابت ہو تو بیشک نکاح صحیح ولازم ہو گیا جسے کوئی فسخ نہیں کر سکتا، اب پدر لیلی یہ شکل اختیار کرتا ہے اور اس کے ساتھ چند کسان برادری جو اپنے آپ کو فریقین کا رشتہ دار قریب بتاتے ہیں بقسم اس بیان بکر کی تائید کرتے ہیں۔ غرض علم واقع حق وعلا کو ہے، اگر یہ لوگ سچے ہیں اور صورت سوال یونہی ہے جو یہ کہتے ہیں کہ نکاح برخلاف اجازت پدر ہوا تو اگر اس نے ناراضی میں اس نکاح کے رد کرنے کا کوئی لفظ کہا تو نکاح اسی وقت فسخ ہو گیا اور اگر کوئی ایسا لفظ نہ کہا اور نہ اس پر راضی ہوا نہ اس نے کبھی رخصت کی اور لیلی نے بالغہ ہو کر انکار کر دیا تو اب نکاح فسخ ہو گیا کہ برادر لیلی کو جب پدر لیلی نے خاص عمرو کے ساتھ نکاح کرنے کی اجازت دی تھی تو اسے بتوکیل پدر اس قدر کا

اختیار تھا کہ اب اس نے مخالفت کر کے زید سے نکاح کر دیا۔ یہ نکاح نکاح فضولی ٹھہرا، در مختار میں ہے :

| اجمعوا انه لم یجز کمالو امره بمعینة فخالف 1 اه ملخصاً یعنی الوکیل بالنکاح۔ | فقہاء کا اجماع ہے کہ اگر معینہ عورت سے نکاح کا کہا اور وکیل نے اس کے خلاف کیا تو یہ جائز نہ ہوگا اه ملخصاً (ت) |

ردالمحتار میں ہے: فی

| کل موضع لا ینفذ فعل الوکیل فالعقد موقوف علی اجازة الموکل 2۔ | جہاں پر وکیل کا عمل نافذ نہ ہوگا وہاں وہ عمل موکل کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ (ت) |

1 الدر المختار باب الکفاءة مجتبائی دہلی ۱/۱۹۶ 2 رد المحتار باب الکفاءة دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۵/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

An unauthorized (fuzuli) marriage does not become effective without permission. Therefore, if Laila's father rejected it, it was rejected at that time; and if he neither rejected it nor gave permission, and Laila, upon reaching puberty, annulled it, then it is annulled.

In Radd al-Muhtar, in the section on unauthorized persons (fuzuli), it is narrated from Jami' al-Fusalain that as long as one is a minor, their marriage remains suspended pending the permission of their guardian (wali). And if they reach puberty before the guardian's permission and then ratify the marriage themselves, it becomes valid; however, it does not become valid merely by reaching puberty without their ratification. (T)

Thus, Laila has the choice to marry whoever she wishes. And Allah Almighty knows best.

Know that the absence of a virgin (bikr) was not such a disconnection that the guardianship (wilayat) would transfer to the brother, making his contracting of her marriage valid and effective even if not binding, such that it would not be annulled merely by her annulment but would require a judge's decree, as stated in al-Hidayah, al-Durr, and other illustrious books according to the choice of most later scholars, and as definitively stated in al-Tanwir and others. In al-Tabyin, it is stated that the fatwa is upon this: that it is estimated at the distance of shortening prayers (qasr), i.e., the distance of travel. So on this opinion, the matter is clear. As for what most scholars have chosen, and as al-Sarkhasi, Muhammad ibn al-Fadl, and the authors of al-Dhakhirah, al-Mujtaba, and al-Bahr have said that this is the most correct (asahh), and the author of al-Hidayah...

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Buyu', Section on al-Fuzuli, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/135.
2. Durr al-Mukhtar, Section on al-Wali, Mujtabai, Delhi, 1/194.
3. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on al-Awliya and al-Akfa', Al-Matba'ah al-Kubra al-Amiriyyah, Egypt, 2/12.
4. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on al-Awliya, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/126.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

और फुज़ूली (अनधिकृत) निकाह बिना अनुमति के प्रभावी नहीं होता। अतः यदि लैला के पिता ने उसे अस्वीकार कर दिया तो वह उसी समय अस्वीकृत हो गया; और यदि उन्होंने न अस्वीकार किया न अनुमति दी और लैला ने बालिग होने पर उसे रद्द कर दिया, तो अब वह रद्द हो गया।

रद्दुल मुहतार में फुज़ूली के बयान में जामे उल-फुसुलैन से उद्धृत है कि जब तक कोई नाबालिग है, उसका निकाह उसके वली (अभिभावक) की अनुमति पर निर्भर रहेगा। और यदि वली की अनुमति से पूर्व वह बालिग हो गया और उसने स्वयं अपने निकाह को वैध घोषित कर दिया, तो वह वैध हो जाएगा; बिना उसके वैध किए केवल बालिग होने पर वह वैध नहीं होगा। (त)

अतः लैला को अधिकार है कि वह जिससे चाहे निकाह कर ले। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

स्पष्ट रहे कि यहाँ कुंवारी (बिक्र) की अनुपस्थिति ऐसी नहीं थी जिससे उसकी विलायत (अभिभावकत्व) समाप्त होकर लड़की के भाई को हस्तांतरित हो जाए ताकि उसका किया हुआ निकाह सही और प्रभावी होता भले ही अनिवार्य न होता। केवल लड़की के रद्द करने से वह रद्द न होता बल्कि काज़ी के फैसले की आवश्यकता होती, जैसा कि हिदाया, दुर्र आदि जैसी प्रतिष्ठित पुस्तकों में है, लेकिन जिसे अधिकांश परवर्ती विद्वानों ने चुना है और जिस पर तनवीर आदि में ज़ोर दिया गया है, और तबीईन में कहा गया है कि फ़तवा इसी पर है कि वह नमाज़ कसर (छोटा) करने की दूरी यानी यात्रा की दूरी पर हो। तो इस राय पर मामला स्पष्ट है, और वह जिसे अधिकांश विद्वानों ने चुना है और जिसके बारे में सरख़सी और मुहम्मद बिन फ़ज़्ल, ज़ख़ीरा, मुजतबा और बहर के लेखकों ने कहा है कि यह सबसे सही (असह) है और साहिबे हिदाया...

1. रद्दुल मुहतार, किताबुल बुयू, फुज़ूली का अध्याय, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत 4/135
2. दुर्रे मुख़्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली 1/194
3. तबीईनुल हकाइक, वली और कफ़ू का अध्याय, अल-मतबअतुल कुबरा अल-अमीरिया मिस्र 2/12
4. अल-बहरुर रैक, वली का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/126

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

اور نکاح فضولی بے اجازت نافذ نہیں ہوتا۔ پس اگر لیلیٰ کے باپ نے رد کیا تو جبھی رد ہو گیا اور اگر نہ رد کیا نہ اجازت دی اور لیلیٰ نے بالغہ ہو کر فسخ کر دیا تو اب فسخ ہو گیا۔

في رد المحتار في فصل الفضولي عن جامع الفصولين يتوقف على اجازة وليه مادام صبياً ولو بلغ قبل اجازة وليه فاجاز بنفسه جاز ولم يجز بنفس البلوغ بلا اجازة [1]۔ رد المحتار میں ہے فضولی کے بیان میں جامع الفصولین سے منقول ہے کہ جب تک نابالغ ہے اس کا نکاح اس کے ولی کی اجازت پر موقوف رہے گا۔ اور اگر ولی کی اجازت سے قبل وہ بالغ ہو گیا تو اس نے اپنے نکاح کو جائز قرار دیا تو جائز ہو جائے گا، اس کے جائز کئے بغیر محض بالغ ہونے پر جائز نہ ہوگا۔ (ت)

پس لیلیٰ کو اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرلے واللہ تعالٰی اعلم۔

واعلم ان غيبة بكر لم تكن منقطعة حتى تنتقل الولاية الى الاخ فيكون تزويجه اياها صحيحاً نافذا ولو غير لازم فلا ينفسخ بمجرد فسخها بل تحتاج فيه الى حكم القاضي كما في الهداية والدر [2] وغيرهما من الاسفار الغراء على ما اختاره واكثر المتأخرين وجزم به في التنوير وغيره، وقال في التبيين ان عليه الفتوى [3] وهو التقدير بمسافة القصر فالامر واضح واما على ما اختاره اكثر المشائخ وقال السرخسي ومحمد بن الفضل واصحاب الذخيرة والمجتبى والبحر انه الاصح [4] وصاحب ... واضح رہے کہ یہاں بکر کا غائب ہونا ایسا نہیں جس سے اس کی ولایت منقطع ہو کر لڑکی کے بھائی کو منتقل ہو جائے کہ اس کا کیا ہوا نکاح صحیح اور نافذ ہوتا اگرچہ لازم نہ ہوتا۔ محض لڑکی کے فسخ کرنے سے فسخ نہ ہوتا بلکہ قاضی کے فیصلہ کی ضرورت ہوتی، جیسا کہ ہدایہ، در وغیرہ ہما معتبر کتب میں ہے، لیکن جس کو اکثر متأخرین نے اختیار کیا ہے اور اس پر تنویر وغیرہ میں جزم کیا ہے، اور

تبیین میں کہا کہ اس پر فتویٰ ہے وہ یہ کہ نماز کو قصر کرنے کی مسافت یعنی مسافت سفر پر دور ہو، تو اس قول پر معاملہ واضح ہے، اور وہ جس کو اکثر مشائخ نے جس کے متعلق سرخسی اور محمد بن فضل، ذخیرہ، مجتبیٰ اور بحر کے مصنفین نے فرمایا کہ یہ اصح ہے اور صاحب ہدایہ ...

1. رد المحتار كتاب البيوع فصل في الفضولي دار احياء التراث العربي بيروت ۱۳۵/۴
2. در مختار فصل في الولى مجتبائى دہلى ۱۹۴/۱
3. تبيين الحقائق باب الاولياء والاكفاء المطبعة الكبرى الاميرية مصر ۲/۱۲
4. البحر الرائق باب في الاولياء ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱۲۶/۳

Fatawa Razawiya, Volume 11

[Table Header] Arabic Text Column | Urdu Translation Column

[Main Text Body] Al-Hidaya states that it is closer to jurisprudence (fiqh).[1] And Imam Qazi Khan in the commentary of Al-Jami' al-Saghir said it is good because of the consideration (nazar).[2] And Al-Zayla'i in Al-Tabyin said it is better.[3] And the investigator in Al-Fath said it is more similar to jurisprudence.[4] And upon this path proceeded Al-Ikhtiyar, Al-Niqaya, Al-Multaqa, and Al-Baqani, and Ibn al-Kamal narrated that the fatwa is based on it.[5] And in the commentary of Al-Multaqa, it is quoted from Al-Haqa'iq that it is the most correct of opinions and the fatwa is upon it.[6] And the words in Al-Nahr also point towards its selection. And in Al-Bahr, it is stated that issuing a fatwa based on it is better.[7] In summary, it is the more preferred of the two corrections. It is defined as a situation where if one were to wait for his presence or seek his opinion, a suitable match (kufu) who is present would be missed. Even if he is hidden in the same city, because the basis according to them is that the need to seek an opinion causes the loss of the present suitable match, which results in harm. Guardianship (wilaya) is for consideration (of benefit), so its cessation becomes necessary. Here, both matters are absent.

[Urdu Translation on Page] ...said that this is closer to jurisprudence (fiqh), and Imam Qazi Khan said in the commentary of Jami' al-Saghir that it is good due to kindness, and Zayla'i in Tabyin said it is good, and the researcher in Fath called it more similar to jurisprudence. And this is the stance taken in Ikhtiyar, Niqaya, Multaqa, and Baqlani. Ibn Kamal said the fatwa is on this. In the commentary of Multaqa, it is quoted from Haqa'iq that this is the most correct of opinions and the fatwa is on it. The words in Nahr also point towards its being the chosen view. In Bahr, it is said that the fatwa on this is better. In short, among the two corrections, this view is more prevalent: that if the guardian is at such a distance that contacting him, consulting, and obtaining permission would result in the existing suitable match (kufu) being lost. Then this is the standard for the end of guardianship and its transfer to another. Even if that guardian is hidden in the city, because the reason for the severance of the absent guardian's guardianship is declared to be the fear of losing the suitable match. In such a case, obtaining permission from him is... [cut off]

[Footnotes] [1] Al-Hidayah, Chapter on Guardians and Equals, Al-Maktaba al-Arabia, Karachi, 1/299 [2] Al-Bahr al-Ra'iq, via Commentary on Jami' al-Saghir, Chapter on Guardians, H.M. Saeed Company, Karachi [3] Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Guardians

and Equals, Al-Matba'ah al-Kubra, Egypt, 12/7 [4] Fath al-Qadir, Chapter on Guardians and Equals, Maktaba Nooria Razavia, Sukkur, 185/3 [5] Al-Durr al-Mukhtar, Section on the Guardian, Matba' Mujtabai, Delhi, 192/1 [6] Al-Durr al-Muntaqa, marginal notes on Majma' al-Anhur, Chapter on Guardians, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 339/1 [7] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Guardians, H.M. Saeed Company, Karachi, 126/3

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

[तालिका शीर्षक] अरबी पाठ स्तंभ | उर्दू अनुवाद स्तंभ

[मुख्य पाठ] अल-हिदाया में है कि यह फ़िक़्ह (विधिशास्त्र) के अधिक निकट है।[1] और इमाम क़ाज़ी खान ने 'जामे अस्-सगीर' की व्याख्या में कहा कि यह नज़र (विचार) के कारण अच्छा है।[2] और अल-ज़ैलई ने 'अत्-तबीन' में इसे बेहतर बताया।[3] और 'अल-फ़तह' में मुहक़्क़िक़ (अनुसंधानकर्ता) ने कहा कि यह फ़िक़्ह के अधिक समान है।[4] और अल-इख्तियार, अल-निक़ाया, अल-मुल्तक़ा और अल-बाक़ानी में भी इसी पर अमल किया गया है, और इब्न अल-कमाल ने उल्लेख किया है कि फ़तवा इसी पर है।[5] और 'अल-मुल्तक़ा' की व्याख्या में 'अल-हक़ाएक़' से उद्धृत है कि यह सभी कथनों में सबसे सही है और फ़तवा इसी पर है।[6] और 'अन-नहर' के शब्द भी इसके चयन की ओर संकेत करते हैं। और 'अल-बहर' में कहा गया है कि इस पर फ़तवा देना बेहतर है।[7] संक्षेप में, यह दो सुधारों में से अधिक प्राथमिकता वाला है। यह वह स्थिति है जहाँ यदि उसकी उपस्थिति या राय की प्रतीक्षा की जाए, तो उपस्थित योग्य वर (कुफ़ू) हाथ से निकल जाएगा। भले ही वह उसी शहर में छिपा हुआ हो, क्योंकि उनके अनुसार आधार यह है कि राय जानने की आवश्यकता वर्तमान योग्य वर के छूटने का कारण बनती है, जिसमें हानि है। विलायत (संरक्षण) हित के विचार के लिए है, इसलिए इसे समाप्त करना आवश्यक हो जाता है। यहाँ ये दोनों बातें अनुपस्थित हैं।

[पृष्ठ पर उर्दू अनुवाद] ...ने कहा कि यह अक़रब-उल-फ़िक़्ह है, और इमाम क़ाज़ी ख़ाँ ने जामे अस्-सग़ीर की व्याख्या में कहा कि शफ़क़त की वजह से अच्छा है और ज़ैलई ने तबीन में अच्छा, मुहक़्क़िक़ ने फ़तह में अश्बह बिल-फ़िक़्ह कहा और यही मौक़ूफ़ इख्तियार, नक़ाई, मुल्तक़ा और बाक़लानी का है और इब्न कमाल ने इस पर फ़तवा कहा है और मुल्तक़ा की शरह में हक़ाएक़ से मन्क़ूल कि अक़वाल में यह अस़ह और इस पर फ़तवा है और नहर का कलाम अभी इसके मुख़्तार होने की तरफ़ इशारा है, और बहर में कहा कि इस पर फ़तवा बेहतर है, ग़रज़ेकि दोनों तस़हीह़ों में यह क़ौल ज़्यादा राजिह है कि अगर वली इतनी मुसाफ़त पर है कि उससे राब्ता, मशवरा और इजाज़त हासिल करने में मौजूद रिश्ता जो कि कुफ़ू है, छूट जाएगा। तो यह विलायत के खत्म होने और दूसरे को मुन्तक़िल होने का मेयार है, अगरचे वह वली शहर में छुपा हुआ ही क्यों न हो क्योंकि ग़ाइब वली की विलायत के इन्क़िताअ का सबब कुफ़ू वाले रिश्ता के छूट जाने का ख़दशा क़रार दिया है तो ऐसी सूरत में उससे इजाज़त हासिल करने...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. अल-हिदाया, बाब फ़िल-औलिया वल-अक्फ़ा, अल-मक्तबा अल-अरबिया, कराची, 1/299 2. अल-बहर अर-राइक़, बहवाला शरह जामे अस्-सग़ीर, बाब फ़िल-औलिया, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 3. तबीन अल-हक़ाएक़, बाब फ़िल-औलिया वल-अक्फ़ा, अल-मतबा अल-कुबरा, मिस्र, 12/7 4. फ़तह अल-क़दीर, बाब फ़िल-औलिया वल-अक्फ़ा, मक्तबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 185/3 5. अद-दुर्र अल-मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल-वली, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 192/1 6. अद-दुर्र अल-मुंतक़ा, अला हाशिया मज्मअ अल-अन्हुर, बाब फ़िल-औलिया, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 339/1 7. अल-बहर अर-राइक़, बाब फ़िल-औलिया, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 126/3

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

الهداية انه اقرب الى الفقه 1 والامام قاضى خان فى | نے کہا کہ یہ اقرب الفقه ہے، اور امام قاضی خاں نے جامع شرح الجامع الصغير انه حسن لانه النظر 2 و | الصغیر کی شرح میں کہا کہ شفقت کی وجہ سے اچھا ہے اور الزيلعي في التبيين انه احسن 3 والمحقق في الفتح | زیلعی نے تبیین میں اچھا، محقق نے فتح میں اشبہ بالفقہ کہا انه الاشبه بالفقه 4 وعليه مشى في الاختيار والنقايه | اور یہی موقوف اختیار، نقائی، ملتقی اور باقلانی کا ہے اور ابن الملتقى والباقانى، ونقل ابن الكمال ان عليه الفتوى 5 | کمال نے اس پر فتوٰی کہا ہے اور ملتقی کی شرح میں حقائق وفي شرح الملتقى عن الحقائق انه اصح الاقاويل | سے منقول کہ اقوال میں یہ اصح اور اس پر فتوٰی ہے اور نہر کا وعليه الفتوى 6 ويشير كلام النهر الى اختياره وفي | کلام ابھی اس کے مختار ہونے کی طرف اشارہ ہے، اور بحر البحران الاحسن الافتاء به 7 وبالجملة كان ارجح | میں کہا کہ اس پر فتوٰی بہتر ہے، غرضیکہ دونوں تصحیحوں التصحيحين وهوكونه بحيث لو انتظر حضوره او | میں یہ قول زیادہ راجح ہے کہ اگر ولی اتنی مسافت پر ہے کہ استطلاع رأيه فات الكفو الذى حضر و ان كان مختفيا | اس سے رابطہ، مشورہ اور اجازت حاصل کرنے میں موجود في نفس البلد فلان المبنى عندهم الحاجة الى | رشتہ جو کہ کفو ہے، چھوٹ جائے گا۔ تو یہ ولایت کے ختم استطلاع مفوت للكفو الحاضر لما فيه ضرر والولاية | ہونے اور دوسرے کو منتقل ہونے کا معیار ہے، اگر چہ وہ ولی للنظر فواجب اسقاطها وههنا كلا الامرين منتفى | شہر میں چھپا ہوا ہی کیوں نہ ہو کیونکہ غائب ولی کی ولایت | کے انقطاع کا سبب کفو والے رشتہ کے چھوٹ جانے کا خدشہ | قرار دیا ہے تو ایسی صورت میں اس سے اجازت حاصل | کرنے

1 الهداية باب فی الاولیاء والاکفاء المکتبة العربیه کراچی ۲۹۹/۱ 2 البحر الرائق بحواله شرح جامع الصغیر باب في الاولیاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی / 3 تبیین الحقائق باب الاولیاء والاکفاء المطبعة الکبری مصر ۱۲/۷ 4 فتح القدیر باب الاولیاء والاکفاء مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۸۵/۳ 5 الدر المختار فصل في الولي مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ 6 الدر المنتقی علی حاشیه مجمع الانهر باب الاولیاء دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۳۹/۱ 7 البحر الرائق باب فی الاولیاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۶/۳

Fatawa Rizvia Volume 11

[Top Box] (Arabic): "The need for investigation to obtain information... for he had given permission for the marriage to 'Amr, and the loss of the equal match due to the presence of 'Amr. Rather, someone might say that there is no absence at all because of the existence of the power of attorney, and the presence of the agent is like the presence of the principal. Thus, thinking that it was a valid marriage proceeding from a guardianship was an invalid assumption. And Allah Almighty knows best." (Urdu): ...the purpose of guardianship is lost. Therefore, instead of searching within such a distance or city, his guardianship will be declared terminated. However, in the present case, both scenarios for terminating guardianship, according to the later scholars and masters, are not found so that permission could be obtained through them, because Bakr himself gave permission to marry Amr, nor was there any fear of losing the equal match because Amr was present there. Rather, it can be said that the case of an absent guardian is not found here because the guardian's agent, Khalid, is present, while the presence of the agent is like the presence of the principal himself. Therefore, in the asked case, the notion that the marriage conducted by Zaid originated from the guardian is a false notion (because Bakr had given permission for the marriage to Amr). Allah Almighty knows best. (T)

Problem 309: 19 Rabi' al-Akhir 1306 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: The heirs performed the marriage of Zaid, a minor, with Hindah, a minor. Is this marriage valid or not? And can Zaid or Hindah annul it after reaching puberty? Explain and you will be rewarded.

The Answer: The questioner states that Zaid's marriage was performed by his father. A marriage performed by a father is binding, meaning the children do not have the right to annul it.

[Table] (Arabic): In Durr al-Mukhtar: Marriage is binding even with gross inequality due to excessive dowry or without an equal match if the guardian is the father or grandfather and no poor choice is known from them. (Abridged) (Urdu): In Durr al-Mukhtar, it is stated: When a father or grandfather has performed a marriage under their guardianship, then even if there is a gross deficiency in the dowry or it is performed in a non-equal match, that marriage will be binding and effective, provided that the father and grandfather are not known for previously making wrong decisions. (Abridged). (T)

And Hindah's marriage was performed by her uncle because Hindah's father had died. In this situation, if Zaid is not an equal match for Hindah—meaning he is so low in terms of lineage, religion, or profession and other reliable factors that a marriage with him causes disgrace and infamy, or if the dowry settled for Hindah was significantly less than her proper dowry—then in these cases, the marriage was not valid at all until...

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Delhi, 1/192. Page 530 of 739

फ़तावा रज़विया, खंड 11

[ऊपरी बॉक्स] (अरबी): "जानकारी प्राप्त करने के लिए पूछताछ की आवश्यकता... क्योंकि उन्होंने अम्र से निकाह की अनुमति दे दी थी, और अम्र की उपस्थिति के कारण कुफू(बराबरी) की हानि हुई। बल्कि, कोई कह सकता है कि मुख्तारनामा (पावर ऑफ अटॉर्नी) की मौजूदगी के कारण अनुपस्थिति बिल्कुल नहीं है, और एजेंट की उपस्थिति मुवक्किल (प्रधान) की उपस्थिति की तरह है। इस प्रकार, यह सोचना कि यह विलायत से उत्पन्न होने वाला एक प्रभावी विवाह था, एक गलत धारणा थी। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।" (उर्दू): ...अभिभावकत्व का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। इसलिए, इतनी दूरी या शहर में तलाश करने के बजाय, उसकी विलायत (अभिभावकत्व) को समाप्त घोषित कर दिया जाएगा। जबकि वर्तमान मसले में, बाद के विद्वानों और बुजुर्गों के अनुसार विलायत समाप्त करने के दोनों परिदृश्य नहीं पाए जाते ताकि उनसे अनुमति प्राप्त की जा सके, क्योंकि बक्र ने स्वयं अम्र से निकाह करने की अनुमति दी थी और न ही बराबरी (कुफ़ू) खोने का कोई डर था क्योंकि अम्र वहाँ मौजूद था। बल्कि, यह कहा जा सकता है कि अभिभावक के अनुपस्थित होने की स्थिति यहाँ नहीं पाई जाती क्योंकि अभिभावक का एजेंट, यानी खालिद, मौजूद है, जबकि एजेंट की उपस्थिति स्वयं मुवक्किल की उपस्थिति की तरह है। अतः पूछे गए मामले में, यह विचार करना कि ज़ैद द्वारा किया गया निकाह अभिभावक की ओर से है, एक गलत विचार है (क्योंकि बक्र ने अम्र से निकाह की अनुमति दी थी)। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 309: 19 रबी-उल-आखिर 1306 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद नाबालिग का निकाह हिंदा नाबालिग के साथ उनके वारिसों ने किया, क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? और क्या ज़ैद या हिंदा बालिग होने के बाद इसे रद्द (फ़स्ख़) कर सकते हैं या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): प्रश्नकर्ता का कथन है कि ज़ैद का निकाह उसके पिता ने किया। पिता द्वारा किया गया निकाह अनिवार्य होता है, अर्थात बच्चों को इसे रद्द करने का अधिकार नहीं होता।

[तालिका] (अरबी): दुर-ए-मुख्तार में: निकाह अनिवार्य है भले ही अत्यधिक महर के कारण भारी नुकसान हो या बराबरी के बिना हो, यदि अभिभावक पिता या दादा हो और उनकी ओर से गलत चुनाव के बारे में जानकारी न हो। (संक्षिप्त) (उर्दू): दुर-ए-मुख्तार में है: जब पिता या दादा ने अपनी विलायत में निकाह किया हो, तो भले ही महर में अत्यधिक कमी हो या गैर-कुफू(बराबरी न होना) में

किया हो, तो वह निकाह अनिवार्य और प्रभावी होगा बशर्ते कि पिता और दादा का इससे पहले गलत निर्णय लेना मशहूर न हो। (संक्षिप्त)। (त)

और हिंदा का निकाह उसके चाचा ने किया क्योंकि हिंदा के पिता की मृत्यु हो चुकी थी। इस स्थिति में यदि ज़ैद हिंदा का कुफू(बराबर) नहीं है, यानी वह बिरादरी, धर्म या पेशे आदि जैसे विश्वसनीय मामलों में इतना कमतर है कि उसके साथ निकाह होना अपमान और बदनामी का कारण हो, या यह कि हिंदा का जितना महर-ए-मिस्ल (उचित दहेज) था उससे बहुत कम महर तय किया गया, तो इन स्थितियों में निकाह मूल रूप से सही नहीं हुआ जब तक...

---

1 अल-दुर-ए-मुख्तार, विलायत का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/192। पेज 530/739

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

[اوپری باکس] (عربی): الحاجه الی الاستطلاع لحصول الاطلاع فانه قد اذن في الترویج لعمر ووفات الکفو لوجود عمرو، بل لقائل ان یقول ان لاغیبة اصلا لوجود التوکیل ووجود الوکیل کوجود الموکل فظن انه تزویج نافذ صدر عن ولایة ظن باطل، واللہ تعالی اعلم۔ (اردو): میں ولایت کا مقصد فوت ہو جاتا ہے اس لئے اتنی مسافت یا شہر میں تلاش کی بجائے اس کی ولایت کو منقطع قرار دیا جائے گا، جبکہ موجودہ مسئلہ میں ولایت کو منقطع قرار دینے کی متاخرین اور مشائخ والی دونوں صورتیں نہیں پائی جاتیں کہ اس سے اجازت حاصل کی جائے کیونکہ بکر نے خود عمرو سے نکاح کر دینے کی اجازت دی نہ ہی کفو کے فوت ہونے کا خدشہ رہا کیونکہ عمرو وہاں موجود ہے، بلکہ یوں کہا جاسکتا ہے کہ ولی کے غیب ہونے والی صورت یہاں نہیں پائی جاتی کیونکہ ولی کا وکیل یعنی خالد موجود ہے جبکہ وکیل کا موجود ہونا خود موکل کی موجودگی کی طرح ہے، پس مسئولہ صورت میں یہ خیال کرنا کہ زید سے کیا ہوا نکاح ولی سے صادر شدہ ہے یہ خیال باطل ہے (کیونکہ بکر نے عمرو سے نکاح کی اجازت دی تھی) واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۳۰۹: ۱۹ ربیع الآخر ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نابالغ کا نکاح ہندہ نابالغہ کے ساتھ ان کے وارثوں نے کیا، یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ اور زید یا ہندہ بعد بلوغ اسے فسخ کر سکتے ہیں یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: سائل مظہر کہ زید کا نکاح اس کے باپ نے کیا، اور باپ کا کیا ہوا نکاح لازم ہوتا ہے یعنی اولاد کو اس کے فسخ کا اختیار نہیں ہوتا۔

[ٹیبل] (عربی): فی الدر المختار لزم النکاح ولو بغبن فاحش بزیادۃ مھرہ او بغیر کفو ان کان الولی اباً او جداً ولم یعرف منھما سوء الاختیار - (ملخصاً) (اردو): در مختار میں ہے جب باپ یا دادا نے اپنی ولایت میں نکاح کیا ہو تو اگرچہ فخش کمی مہر کی ہو یا غیر کفو میں کیا ہو تو وہ نکاح لازم و نافذ ہوگا بشرطیکہ باپ اور دادا کی اس سے پہلے غلط روی مشہور نہ ہو (ملخصاً)۔ (ت)

اور ہندہ کا نکاح اس کے چچا نے کیا کہ پدر ہندہ مر چکا تھا اس حالت میں اگر زید ہندہ کا کفو نہیں یعنی اس سے قوم یا دین یا پیشہ وغیرہا امور معتبرہ میں ایسا گھٹا ہوا ہے جس کے ساتھ نکاح ہونا باعثِ عار و بدنامی ہو یا یہ کہ ہندہ کا جس قدر مہر مثل تھا اس سے بہت کم مہر باندھا گیا تو ان صورتوں میں نکاح اصلاً صحیح نہ ہوا یہاں تک

---

1 الدرالمختار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ Page 530 of 739

...that even if Hindah (the girl) remains unauthorized after becoming an adult, it still won't be valid.

[Table Header: Arabic Text / Urdu Translation] In Al-Durr al-Mukhtar: If the marriage was conducted by someone other than the father or paternal grandfather, the marriage with a non-equal (non-kufu) or with a major deficiency in the dower (mahr) will not be valid at all. And what is stated in Sadr al-Shari'ah—that the marriage is valid and the father and grandfather have the right to annul it later—is merely a misconception. (Summary). (T)

And if this is not the case, rather Zaid is an equal (kufu) and there is no major deficiency in the customary dower (mahr al-mithl), then the marriage is valid, but Hindah has the option to reject the marriage immediately upon reaching adulthood and file a case before the Shari'ah judge to have it annulled.

[Table Header: Arabic Text / Urdu Translation] In Al-Durr al-Mukhtar: If the marriage is conducted with an equal and for a customary dower, it is valid, but the minor boy and girl have the 'option of annulment' (Khiyar al-Faskh) upon reaching adulthood, even if adulthood occurs after consummation or if knowledge of the marriage is gained after adulthood, due to the deficiency in compassion (shafqat) of those other than the father and grandfather. However, the decree of a judge is a condition for annulment. (Summary). (T)

But since Hindah is a virgin, if she learns of the marriage upon reaching adulthood, she must reject it immediately. If she already knew of it, she must reject it as soon as she becomes an adult. If there is even a slight delay, the marriage becomes binding, and she will no longer have the option to annul it.

[Table Header: Arabic Text / Urdu Translation] In Al-Durr al-Mukhtar: The silence of a virgin upon receiving information of the marriage nullifies her option of annulment, provided she is an adult and aware of the marriage's legal capacity. However, the option of annulment remains limited to the same session in which she gained knowledge. (Summary) And Allah Almighty knows best. (T)

Question 310: 19 Dhu al-Qi'dah 1306 AH from Cantonment What do the scholars of religion say in this matter, that Hindah, after becoming an adult and becoming a widow, marries someone such as...

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Delhi, 1/192
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Delhi, 1/192-193
3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Delhi, 1/193

...कि अगर हिन्दा बालिग़ होकर उसे नाज़ायज़ रखे तब भी जाइज़ न होगा।

[सारिणी: अरबी पाठ / उर्दू अनुवाद] दर्र-ए-मुख़्तार में है: अगर बाप या दादा के अलावा किसी और ने निकाह किया हो, तो ग़ैर-कुफ़ू (असमान) और महर में भारी कमी के साथ निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। और जो 'सद्रुश-शरिया' में कहा गया है कि वह निकाह सही है और बाप और दादा को बाद में फ़स्ख़ (निरस्त करने) का अधिकार है, यह महज़ एक वहम (गलतफहमी) है। (संक्षिप्त)। (त)

और अगर ऐसी बात नहीं है, बल्कि ज़ैद कुफ़ू (बराबर) है और महर-ए-मिसल में कोई बड़ी कमी नहीं हुई, तो निकाह सही हो गया, लेकिन हिन्दा को अधिकार है कि बालिग़ होते ही तुरंत उस निकाह को रद्द कर दे और शरीअत की अदालत में दावा करके उसे फ़स्ख़ करवा दे।

[सारिणी: अरबी पाठ / उर्दू अनुवाद] दर्र-ए-मुख़्तार में है: अगर कुफ़ू और महर-ए-मिसल में निकाह किया गया हो, तो वह सही है, लेकिन नाबालीग़ लड़के और लड़की को बालिग़ होने के बाद उसे फ़स्ख़ करने का अधिकार है, चाहे बालिग़ होना सुहागरात के बाद हो या बालिग़ होने के बाद निकाह की जानकारी मिली हो, इसकी वजह यह है कि बाप और दादा के अलावा दूसरों में शफ़क़त (दया/ममता) कम होती है। फिर भी, फ़स्ख़ के लिए काज़ी का फैसला शर्त है। (संक्षिप्त)। (त)

लेकिन चूँकि हिन्दा कुंवारी है, तो बालिग़ होते समय जैसे ही उसे निकाह की खबर मिले, वह फ़ौरन उसे रद्द कर दे, और अगर पहले से पता था, तो बालिग़ होते ही तुरंत निकाह को रद्द कर दे। अगर थोड़ी सी भी देरी हुई, तो निकाह पक्का हो जाएगा और उसे फ़स्ख़ करने का अधिकार नहीं रहेगा।

[सारिणी: अरबी पाठ / उर्दू अनुवाद] दर्र-ए-मुख़्तार में है: खबर मिलने पर कुंवारी की चुप्पी उसके फ़स्ख़ करने के अधिकार को ख़त्म कर देती है, बशर्ते उसे अपने निकाह के बारे में जानकारी हो और वह बालिग़ हो। हालाँकि, फ़स्ख़ का अधिकार उसी महफ़िल (मजलिस) तक सीमित रहेगा जिसमें उसे जानकारी मिली। (संक्षिप्त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 310: 19 ज़िल-क़ादा 1306 हिजरी, छावनी से दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा बालिग़ होने और बेवा (विधवा) हो जाने के बाद अपना निकाह किसी ऐसे व्यक्ति से...

---

1. दर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल वली, मुजतबाई दिल्ली, 1/192

2. दर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल वली, मुजतबाई दिल्ली, 1/192-193

3. दर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल वली, मुजतबाई दिल्ली, 1/193

पृष्ठ 531/739

کہ اگر ہندہ بالغہ ہو کر اسے نا جائز رکھے تب بھی جائز نہ ہوگا۔

[جدول: متنِ عربی / ترجمہ اردو] فی الدرالمختار ان کان المزوج غیر الاب و ابیہ ولولام لا یصح النکاح من غیر کفو او بغبن فاحش اصلا وما فی صدر الشریعۃ صح و لہما فسخہ وھم 1 (ملخصاً) | در مختار میں ہے اگر باپ یا دادا کے غیر نے نکاح کیا ہو تو غیر کفو اور فحش کمی مہر کے ساتھ بالکل صحیح نہ ہوگا۔ اور جو صدر الشریعہ میں کہا گیا کہ وہ نکاح صحیح ہے اور باپ اور دادا کو بعد میں فسخ کا اختیار ہے، یہ محض وہم ہے (ملخصاً)۔ (ت)

اور اگر یہ بات نہیں بلکہ زید کفو ہے اور مہر مثل میں کمی فاحش نہ ہوئی تو نکاح صحیح ہو گیا مگر ہندہ کو اختیار ہے کہ بعد بلوغ فوراً اس سے نکاح کو رد کر دے اور حاکم شرع کے حضور دعوٰی کر کے فسخ کرائے۔

[جدول: متنِ عربی / ترجمہ اردو] فی الدرالمختار و ان کان من الکفو و بمہر المثل صح ولصغیر و صغیرۃ خیار الفسخ و لو بعد الدخول بالبلوغ او العلم بالنکاح بعدہ لقصور الشفقۃ بشرط القضاء للفسخ 2(ملخصاً) | در مختار میں ہے اگر مہر مثل اور کفو میں نکاح کیا ہو تو صحیح ہے لیکن نا بالغ لڑکے اور لڑکی کو بالغ ہونے کے بعد اس کے فسخ کا اختیار ہے اگر چہ دخول کے بعد بلوغ ہوا ہو یا بلوغ کے بعد نکاح کا علم ہوا ہو، اس کی وجہ یہ ہے کہ باپ اور دادا کے غیر میں شفقہ کمزور ہوتی ہے تاہم فسخ کے لئے قاضی کا حکم شرط ہے۔ (ملخصاً)۔ (ت)

مگر از انجا کہ ہندہ بکر ہے تو بحالت بلوغ جس وقت نکاح پر مطلع ہو فوراً اور پہلے سے مطلع تھی تو بالغ ہوتے ہی معا نکاح کو رد کر دے، اگر ذرا بھی دیر کی تو نکاح لازم ہو جائے گا اور اسے فسخ کرانے کا اختیار نہ رہے گا۔

[جدول: متنِ عربی / ترجمہ اردو] فی الدرالمختار بطل خیار البکر بالسکوت لو مختارۃ عالمۃ باھل النکاح ولا یمتد الی آخر المجلس 3۔ (ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم۔ | در مختار میں ہے کہ اطلاع ملنے پر باکرہ کا سکوت اس کے فسخ کے اختیار کو باطل کر دیتا ہے بشرطیکہ اپنے نکاح کے بارے میں اس کو علم ہوا ہو اور وہ بالغہ ہو، تاہم فسخ کا اختیار اس مجلس تک محدود رہے گا جس میں اس کو علم ہوا ہو، (ملخصاً) واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۱۰: ۱۹ ذی قعدہ ۱۳۰۶ھ از چھاؤنی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ بالغہ بعد بیوہ ہو جانے کے اپنا نکاح ایسے شخص سے

---

1 در مختار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲ 2 در مختار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲-۱۹۳ 3 در مختار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳

جلد یاز دہم (Volume Eleven) فتاوی رضویہ (Fatawa Rizvia)

[Question concludes]: ...with whom her parents are not pleased. Now, if Hindah (the girl), bearing the parents' displeasure, gets married herself, then would this marriage be legally (Shari'ah) valid or invalid? State [the ruling] and be rewarded.

The Answer: If the person with whom Hindah wants to marry herself against her father's wishes is Hindah's 'Kufu' (equal/compatible match) – meaning there is no such deficiency or defect in his tribe, profession, or religion compared to Hindah that his marrying Hindah would be a cause of shame for her father – then undoubtedly the marriage will be valid and correct. Even though the parents' displeasure may harm Hindah [spiritually or socially], it will not hinder the validity of the marriage.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "An unmarried woman (here referring to a mature woman) has more right over herself than her guardian." Narrated by Imams Malik, Ahmad, Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, Nasai, Ibn Majah, and others, on the authority of Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them). The Prophet (peace and blessings be upon him) stated that a mature girl has more right than her guardian to make decisions regarding herself. This was narrated from Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them) by Imams Ahmad, Malik, Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, Nasai, Ibn Majah, and others. (T)

It is in Durr-e-Mukhtar: "The marriage of a free woman of legal capacity [to enter into contracts] is valid without the consent of a guardian, and it is given a fatwa [legal opinion] of absolute non-permissibility in case of a non-Kufu match." (Summarized) And Allah knows best. The marriage of a sane, mature, free woman is valid even without the guardian's consent. However, if married to a non-equal match (non-Kufu), the fatwa will be given for its complete invalidity. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 311: 5 Dhu al-Hijjah 1306 AH What do the scholars of religion say in this matter: Zaid and his wife passed away, leaving behind two daughters. There was no heir for the girls except one biological maternal uncle. The uncle married off one girl, who was approximately seven years old, to his son; this happened eight years ago. He married the other elder daughter elsewhere. Now, the elder daughter, having been incited by her husband, is misleading her younger sister to say that my marriage during childhood...

[1] Sahih Muslim, Kitab al-Nikah, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/455; Sunan Abi Dawood, Chapter on 'ath-Thayib', Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/286. [2] Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on 'al-Wali', Mujtabai Delhi, 1/191.

जिल्द 11 (Volume Eleven) फ़तावा रिज़विया (Fatawa Rizvia)

[प्रश्न का अंत]: ...जिससे उसके माता-पिता हिंदाह से इस बात पर राज़ी नहीं हैं। अब यदि हिंदाह माता-पिता की नाराज़गी सहते हुए अपना निकाह कर लेती है, तो क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार सही होगा या गलत? बयान फ़रमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि वह व्यक्ति जिससे हिंदाह अपने पिता की नाराज़गी के बावजूद खुद अपना निकाह करना चाहती है, हिंदाह का 'कुफ़ु' (समान/अनुकूल) है—अर्थात उसकी जाति, पेशे या धर्म आदि में हिंदाह की तुलना में ऐसी कोई कमी या दोष नहीं है जिसके कारण हिंदाह का उससे निकाह करना उसके पिता के लिए अपमान का कारण बने—तो निसंदेह निकाह सही और वैध हो जाएगा। यद्यपि माता-पिता की नाराज़गी हिंदाह को नुकसान पहुँचा सकती है, लेकिन यह निकाह की वैधता में बाधा नहीं बनेगी।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "एक अविवाहित महिला (यहाँ बालिग स्त्री के अर्थ में) का अपने वली (संरक्षक) की तुलना में अपने बारे में निर्णय लेने का अधिक अधिकार है।" इसे इमाम मालिक, अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसाई, इब्न माजा और अन्य लोगों ने हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बालिग लड़की अपने वली के मुकाबले में अपने बारे में फैसला करने की ज़्यादा हक़दार है। इसे इमाम अहमद, मालिक, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसाई, इब्न माजा वगैरह ने हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है। (त)

दुर्रे मुख्तार में है: "एक स्वतंत्र, समझदार महिला का निकाह उसके वली की सहमति के बिना वैध है, और कुफ़ु के अलावा (असमान) होने की स्थिति में इसके बिल्कुल नाजायज़ होने का फ़तवा दिया जाता है।" (संक्षिप्त) और अल्लाह बेहतर जानता है। समझदार बालिग स्वतंत्र महिला का अपना निकाह वली की रज़ामंदी के बिना भी जायज़ है, और अगर गैर-कुफ़ु में किया तो बिल्कुल नाजायज़ होने का फ़तवा दिया जाएगा, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 311: 5 ज़ुल-हिज्जा 1306 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद और उसकी पत्नी का निधन हो गया, उन्होंने दो बेटियाँ छोड़ीं, और लड़कियों का एक सगे मामा के अलावा कोई वारिस न था। मामा ने एक लड़की का निकाह, जिसकी उम्र लगभग सात साल थी, अपने बेटे के साथ कर दिया, जिसे अब आठ साल बीत चुके हैं। और दूसरी बड़ी लड़की का निकाह दूसरी जगह

कर दिया। अब बड़ी बेटी अपने पति के बहकावे में आकर अपनी छोटी बहन को बहका रही है कि तू कह दे कि मेरी नाबालिग़ी...

---

1 सहीह मुस्लिम, किताबुन निकाह, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/455; सुनन अबी दाऊद, फस्ल फ़िथ-थैयिब, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/286. 2 अद-दुर्रुल मुख्तार, बाबल वली, मुजतबाई दिल्ली 1/191.

چاہتی ہے جس سے اس کے ماں باپ ہندہ سے اس امر پر راضی نہیں اب اگر ہندہ ناراضی والدین گوارا کرکے اپنا نکاح کرلے تو آیا یہ نکاح شرعاً درست ہوگا یا نادرست؟ بینوا توجروا **الجواب:** اگر وہ شخص جس سے ہندہ بہ ناراضی پدر اپنا نکاح بطور خود کیا چاہتی ہے ہندہ کا کفو ہے یعنی اس کی قوم یا پیشہ یا مذہب وغیرہا میں بہ نسبت ہندہ کے کوئی ایسا قصور و عیب نہیں جس کی وجہ سے ہندہ کا اس کی مناکحت میں آنا پدر ہندہ کے لئے موجب عار ہو تو بلا شبہ نکاح صحیح و درست ہوجائے گا اور والدین کی ناراضی اگر چہ ہندہ کو نقصان کرے مگر جواز نکاح میں خلل نہ آئے گا۔ **قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الایم احق بنفسھا من ولیھا۱ رواہ الائمۃ مالک واحمد ومسلم وابوداؤد والترمذی والنسائی وابن ماجۃ وغیرہم عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھما۔** حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ارشاد فرمایا کہ بالغ لڑکی اپنے ولی کے مقابلہ میں اپنے بارے میں فیصلہ کی زیادہ حقدار ہے، اس کو امام احمد، مالک، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، ابن ماجہ وغیرہم نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔(ت)

درمختار میں ہے: نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلارضی ولی ویفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا۲ (ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم۔ عاقلہ بالغہ حرہ عورت کا اپنا نکاح ولی کی رضامندی کے بغیر بھی جائز ہے، اور غیر کفو میں کیا تو بالکل ناجائز ہونے کا فتوی دیا جائے گا، واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

مسئلہ ۳۱۱: ۵ ذی الحجہ ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اور زید کی اہلیہ نے انتقال کیا، دو بیٹیاں چھوڑیں، اور لڑکیوں کا کوئی وارث سوا ایک ماموں حقیقی کے کوئی نہ تھا، ماموں نے ایک لڑکی جس کی عمر تخمیناً سات برس کی تھی اس کا نکاح اپنے بیٹے کے ساتھ کر دیا جس کو اب عرصہ آٹھ برس کا ہوا، اور دوسری بڑی لڑکی کا نکاح دوسری جگہ کر

دیا، اب بڑی دختر باغوا اپنے شوہر کے اپنی چھوٹی ہمشیرہ کو بہکاتی ہے کہ تو کہہ دے کہ میری نابالغی

---

[1] صحیح مسلم کتاب النکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۵۵، سنن ابی داؤد فصل فی الثیب آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۸۶ [2] الدرالمختار باب الولی مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

Fatawa Ridawiyya Volume 11

"...the marriage has taken place, I am not satisfied, so I will marry you off to my brother-in-law." Consequently, the younger girl is now expressing words of dissatisfaction to her maternal uncles. In this situation, what is the ruling of the Shari'ah? Explain and be rewarded.

The Answer: The petitioner states that it has been a year since this younger girl reached puberty, and she has known about the marriage for several years. She only started expressing these words of dissatisfaction about two months ago. If this statement is true, then that marriage has become binding, and the woman has absolutely no right of objection left. Since she already knew about the marriage, the moment she reached puberty, if she had immediately expressed dissatisfaction, she would have had the right to object. This is to the extent that if, upon reaching puberty, she had spent even a single moment in another task or conversation, she would no longer have the option to object. In this case, she started objecting several months after reaching adulthood; this is fundamentally not acceptable. It is obligatory for the woman to desist from this ignorance, and it is obligatory for her sister not to entice away another's wife, otherwise nothing but sin will be achieved.

In *al-Durr al-Mukhtar*: "The option of a virgin (to annul a marriage) is nullified by silence if she is aware of the marriage, and it does not extend to the end of the gathering." 1 (Summarized). It is mentioned in *Durr al-Mukhtar* that a virgin girl's silence upon learning of her marriage ends this option of annulment, and the option will only be limited to that specific gathering in which she gained knowledge. After that, she will not have the option. (Summary)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "He is not of us who turns a woman against her husband." 2 - Reported by Abu Dawood, an-Nasa'i, Ibn Hibban, and al-Hakim with a sound chain of narrators from Abu Huraira; and similarly by Ahmad, al-Bazzar, and al-Hakim with a sound chain from Buraida; and by Abu Ya'la and at-Tabarani in *al-Awsat* with a sound chain from Ibn Abbas. Whoever spoils a woman's relationship with her husband is not from our group. (This was narrated with a sound chain of narrators from Hadhrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) by Abu Dawood, an-Nasa'i, Ibn Hibban, and al-Hakim; and similarly from Hadhrat Buraida (may Allah be pleased with him) by Ahmad, al-Bazzar, and al-Hakim with a sound chain; and by Abu Ya'la and at-Tabarani in their *Awsat* with a sound chain from Hadhrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with him)).

1 *Al-Durr al-Mukhtar*, Chapter on the Guardian, Mujtabai, Delhi, 1/193. 2 *Sunan Abi Dawood*, First Volume, Book of Divorce, Aftab Alam Press, Lahore, 1/296.

फ़तावा रिज़विया खंड ग्यारह

"...निकाह हुआ है, मैं राज़ी नहीं हूँ, तो मैं तुम्हारा निकाह अपने देवर से करा दूँगी।" चुनाँचे छोटी लड़की अब अपने मामा से नाराज़गी के शब्द बयान करती है, इस स्थिति में शरीयत का क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: प्रार्थी कहता है कि इस छोटी लड़की को बालिग हुए एक साल गुज़र गया और उसे निकाह की खबर कई वर्षों से है, और ये नाराज़गी के शब्द उसने कोई दो महीने से कहने शुरू किए हैं। अगर यह बयान सच है, तो वह निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो गया और औरत को विरोध का अधिकार बिलकुल नहीं रहा। चूँकि उसे पहले से निकाह की सूचना थी, तो जिस क्षण वह बालिग हुई, अगर उसी क्षण वह नाराज़गी ज़ाहिर कर देती तो उसे विरोध का अधिकार रहता। यहाँ तक कि अगर बालिग होने के बाद एक पल के लिए भी वह किसी दूसरे काम या दूसरी बात में लग जाती, तो अब विरोध का अधिकार नहीं रखती। यहाँ तो जवान होने के कई महीने बाद उसने विरोध शुरू किया है, यह मूल रूप से स्वीकार्य नहीं है। औरत पर फ़र्ज़ है कि इस अज्ञानता से बाज़ आए और उसकी बहन पर फ़र्ज़ है कि पराई पत्नी को न बहकाए, अन्यथा गुनाह के सिवा कुछ हासिल न होगा।

अल-दुर्रुल मुख्तार में है: "विवाह की जानकारी होने पर बालिग होने वाली कुंवारी लड़की की चुप्पी से उसका (निकाह रद्द करने का) अधिकार समाप्त हो जाता है और यह उस सभा के अंत तक भी नहीं रहता।" 1 (संक्षिप्त) दुर्रुल मुख्तार में है कि कुंवारी लड़की की अपने निकाह के ज्ञान पर चुप्पी इस रद्द करने के अधिकार को समाप्त कर देती है और अधिकार भी केवल उसी सभा तक सीमित होगा जिसमें उसे ज्ञान हुआ है, उसके बाद उसे अधिकार न होगा। (संक्षिप्त)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "वह हममें से नहीं है जो किसी औरत को उसके पति के खिलाफ भड़काए।" 2 - इसे अबू दाऊद, नसाई, इब्न हिब्बान और हाकिम ने सही सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत किया; और इसी तरह अहमद, बज़्ज़ार और हाकिम ने सही सनद के साथ हज़रत बरैदा से; और अबू या'ला और तबरानी ने 'अल-औसत' में सही सनद के साथ इब्न अब्बास से रिवायत किया। जो किसी औरत को उसके पति से बिगाड़ दे वह हमारे गिरोह से नहीं है। (इसे अबू दाऊद, नसाई, इब्न हिब्बान और हाकिम ने सही सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से और इसी तरह अहमद, बज़्ज़ार और हाकिम ने सही सनद के साथ हज़रत बरैदा

रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया और अबू या'ला और तबरानी ने अपनी 'औसत' में सही सनद के साथ हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से)।

1 अल-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई दिल्ली, 1/193 2 सुनन अबू दाऊद, प्रथम खंड, किताबुत तलाक़, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 1/296

पृष्ठ 533/739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

میں نکاح ہوا ہے میں راضی نہیں ہوں تو میں تیرا نکاح اپنے دیور سے کرا دوں گی، چنانچہ چھوٹی لڑکی اب اپنے ماموں سے کلمات ناراضی بیان کرتی ہے، اس صورت میں شرع شریف کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا الجواب: سائل اظہار کرتا ہے کہ اس چھوٹی لڑکی کو بالغہ ہوئے سال بھر گزرا اور اسے نکاح کی خبر کئی برس سے ہے اور یہ کلمات ناراضی اس نے کوئی دو مہینے سے کہنے شروع کئے ہیں، اگر یہ بیان واقعی ہے تو وہ نکاح لازم ہو گیا اور عورت کو حق اعتراض اصلا نہ رہا جبکہ اسے پہلے سے نکاح پر اطلاع تھی، تو جس آن میں بالغہ ہوئی فوراً اسی آن میں اگر ناراضی ظاہر کر دیتی تو اسے حق اعتراض رہتا یہاں تک کہ اگر بالغہ ہو کر ایک لمحہ کو بھی دوسرے کام یا دوسری بات میں مصروف رہی تو اب اعتراض کا اختیار نہیں رکھتی، یہاں تو جوان ہونے پر کئی مہینے بعد اس نے اعتراض شروع کیا ہے، یہ اصلاً قابل قبول نہیں۔ عورت پر فرض ہے کہ اس جہالت سے باز آئے اور اس کی بہن پر فرض ہے کہ پرائی زوجہ کو اغوانہ کرے ورنہ سوا گناہ کے کچھ حاصل نہ ہو گا۔

فی الدرالمختار بطل خیار البکر بالسکوت لوعالمة بالنکاح ولا یمتد الی آخر المجلس 1 اھ ملخصاً۔ در مختار میں ہے کہ باکرہ لڑکی کی اپنے نکاح کے علم پر خاموشی اس اختیار فسخ کو ختم کر دیتی ہے اور اختیار بھی صرف اس مجلس تک محدود ہوگا جس میں اسے علم ہوا ہے اس کے بعد اسے اختیار نہ ہوگا اھ ملخصاً۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لیس منا من خبب امرأة علی زوجہا 2 - رواہ ابو داؤد والنسائی و ابن حبان و الحاکم باسناد صحیح عن ابی ہریرة و نحوہ احمد و البزار و الحاکم بسند صحیح عن بریدة و ابو یعلی و الطبرانی فی الاوسط بسند صحیح عن ابن عباس والطبرانی فی الاوسط

جو کسی عورت کو اس کے شوہر سے بگاڑ دے وہ ہمارے گروہ سے نہیں۔ (اس کو ابو داؤد، نسائی، ابن حبان اور حاکم نے صحیح سند کے ساتھ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور ایسے ہی احمد، بزار اور حاکم نے صحیح سند کے ساتھ حضرت بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا اور ابو یعلی اور طبرانی نے اپنی اوسط میں صحیح سند کے ساتھ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ)

1 الدر المختار باب الولی مجتبائی دہلی 1 / 193 2 سنن ابو داؤد اول کتاب الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور 1 / 296

Fatawa Razawiya Volume Eleven

...and the minor, from Ibn Umar (may Allah be pleased with them all). And Allah, Glory be to Him and the Exalted, knows best. (Note: Tabrani also narrated this in 'Al-Awsat' and 'Al-Saghir' from Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both). - T)

Issue 312: 16 Rajab 1307 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid has an underage daughter, eleven years old, whose mother has passed away. Her father is employed in Gwalior. In the father's absence, the maternal grandfather (nana) took the girl to his home and, without consulting the father, wants to marry her off to a Rafidi (Shia). When the father found out, he came and forbade the grandfather, stating that he would never allow such a ceremony. He even served a notice to this effect. However, the grandfather does not desist from his intention and keeps the girl detained. The girl and her father are both Sunnis. In this situation, if the grandfather marries this minor girl to that Rafidi despite the father's prohibition, will it be valid or not? And does the grandfather have the right to keep the girl with him and prevent her from going to her father?

The Answer: While the father is present, the maternal grandfather is nothing (in terms of legal guardianship for marriage); he does not have the authority to perform the marriage without the father's permission. Even if the grandfather marries this minor to a Sunni without the father's permission and the father refuses to allow it, that marriage is void. Let alone a Rafidi, as nowadays they are generally apostates, and the marriage of a Sunni woman with them is fundamentally invalid. Furthermore, there is no doubt that a Rafidi is not a suitable match (Kufu) for a Sunni daughter of a Sunni man. Any marriage performed by someone other than the father or paternal grandfather to an unsuitable match (non-Kufu) will never be valid, especially if done despite the father's explicit prohibition. How could it possibly be valid? Therefore, this is surely pure oppression by the grandfather. If he does so, the marriage will never take effect but will be void. The girl should stay with her father from the age of nine. Even if the mother were alive, she could not keep the girl with her after the age of nine, let alone the maternal grandfather. This is all oppression and transgression... It is stated in Tanwir al-Absar:

[Box 1] The guardian in marriage is the 'Asabah' (agnatic relative) without a female intermediary, in the order of inheritance and exclusion. 1 [Box 2] The guardian for marriage is the 'Asabah bi-nafsihi,' meaning a male whose relationship does not

involve a female intermediary. These guardians follow the order of inheritance and the rules of exclusion of one another. (T)

---

1 Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Guardianship, Mujtabai Press Delhi, 1/193

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...और नाबालिग, इब्ने उमर (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) से रिवायत है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (नोट: तबरानी ने भी 'अल-औसत' और 'अल-सगीर' में हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से इसे रिवायत किया है। - त)

मसला ३१२: १६ रजब १३०७ हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद की एक नाबालिग बेटी है जिसकी उम्र ग्यारह साल है और उसकी माँ मर चुकी है। उसका पिता ग्वालियर में नौकरी करता है। पिता की अनुपस्थिति में, नाना लड़की को अपने घर ले गया और पिता से सलाह किए बिना उसका निकाह एक राफ़ज़ी (शिया) से करना चाहता है। जब पिता को पता चला, तो वह आया और नाना को मना किया कि मैं ऐसी शादी की अनुमति कभी नहीं दूंगा। उसने इस आशय का नोटिस भी दे दिया है। लेकिन नाना अपने इरादे से बाज़ नहीं आता और लड़की को रोके रखा है। लड़की और उसके पिता दोनों सुन्नी हैं। इस स्थिति में, अगर नाना पिता की मनाही के बावजूद उस नाबालिग लड़की का निकाह उस राफ़ज़ी से कर देता है, तो क्या वह सही होगा या नहीं? और क्या नाना को लड़की को अपने पास रखने और पिता के पास जाने से रोकने का अधिकार है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): पिता के होते हुए नाना की कोई हैसियत नहीं (निकाह के विलायत के मामले में), न ही वह पिता की अनुमति के बिना निकाह करने का अधिकार रखता है। यहाँ तक कि अगर नाना पिता की अनुमति के बिना उस नाबालिग का निकाह किसी सुन्नी से भी कर दे और पिता उसे अस्वीकार कर दे, तो वह निकाह बातिल (अमान्य) है। राफ़ज़ी की तो बात ही क्या, जो आजकल आम तौर पर धर्मत्यागी (मुरतद) हैं और उनसे सुन्नी महिला का निकाह मूल रूप से सही नहीं है। इसके अलावा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक राफ़ज़ी, सुन्नी की सुन्नी बेटी का 'कुफ़ू' (बराबर का मेल) नहीं हो सकता। पिता और दादा के अलावा कोई और अगर 'ग़ैर-कुफ़ू' (अनुपयुक्त मेल) से निकाह करेगा, तो वह हरगिज़ सही नहीं होगा, विशेष रूप से तब जब पिता ने स्पष्ट रूप से मना किया हो। यह निकाह भला कैसे सही हो सकता है? इसलिए, यह निश्चित रूप से नाना का सरासर ज़ुल्म है। अगर वह ऐसा करेगा, तो निकाह कभी प्रभावी नहीं होगा बल्कि बातिल होगा। लड़की नौ साल की उम्र से अपने पिता के पास ही रहेगी। अगर माँ भी ज़िंदा होती, तो वह भी नौ साल के बाद उसे अपने पास नहीं रख सकती थी, नाना की तो बात ही क्या। यह सब ज़ुल्म और ज़्यादती है... 'तन्वीर अल-अबसार' में है:

[कोश 1] "निकाह का वली (अभिभावक) वह 'असबा' (पितृवंशीय रिश्तेदार) है जिसके बीच कोई महिला मध्यस्थ न हो, उत्तराधिकार और रोक (हज्ब) के क्रम के अनुसार।" 1 [कोश 2] निकाह का वली 'असबा बि-नफ़्सिही' है, यानी वह पुरुष व्यक्ति जिसके संबंध में महिला का माध्यम न हो। ये वली उत्तराधिकार के क्रम और एक-दूसरे को रोकने के क्रम के अनुसार होंगे। (त)

---

1 दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/१९३

पृष्ठ ७३९ का ५३४

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

والصغیر عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین۔ واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔ ما نیز طبرانی نے اوسط اور صغیر میں اس کو حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے۔ ت)

مسئلہ ۳۱۲: ۱۶ رجب ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی ایک لڑکی نابالغہ کہ جس کی عمر گیارہ برس کی ہے اور اس کی ماں مر چکی ہے اور باپ اس کا گوالیا ر میں نوکر ہے، نانا اس لڑکی کا باپ کی غیبت میں لڑکی کو اپنے یہاں لے گیا اور بلا مشورہ باپ کے اس کا نکاح ایک رافضی سے کر دینا چاہتا ہے، جب باپ کو اطلاع ہوئی آیا اور نانا کو ممانعت کی کہ میں ایسی تقریب ہرگز روا نہیں رکھتا بلکہ اس مضمون کا اس نے نوٹس بھی دے دیا ہے مگر وہ اپنے ارادہ سے باز نہیں رہتا ہے لڑکی کو روک رکھا ہے اور لڑکی اور اس کا باپ سب سنی ہیں اس صورت میں اگر نانا اس نابالغہ کا نکاح باوجود ممانعت پدر کے اس رافضی سے کردے گا تو صحیح ہوگا یا نہیں؟ اور نانا کو لڑکی کے اپنے پاس بٹھا رکھنے اور باپ سے روکنے کا اختیار ہے یا نہیں؟

الجواب: باپ کے ہوتے نانا کوئی چیز نہیں، نہ بے اس کی اجازت کے وہ نکاح کردینے کا مختار، یہاں تک کہ اگر نانا بے اجازت پدر اس نابالغہ کا کسی سنی سے نکاح کردے گا اور باپ روانہ رکھے گا تو وہ نکاح باطل ہے نہ کہ رافضی کہ آج کل عموماً مرتدین ہیں اور ان سے سنیہ عورت کا نکاح اصلاً صحیح نہیں، علاوہ بریں اس قدر میں تو شک نہیں کہ رافضی سنیہ بنت سنی کا کفو نہیں ہوسکتا اور غیر کفو سے جو نکاح باپ دادا کے سوا دوسرا کردے گا ہر گز صحیح نہ ہوگا، نہ کہ باپ کی صریح ممانعت کی حالت میں یہ نکاح کیا جائے، یہ کیونکر وجہ صحت رکھے گا، پس

یقیناً یہ نانا کا محض ظلم ہے۔ اگر وہ ایسا کرے گا تو ہر گز نکاح نافذ نہ ہوگا بلکہ باطل ہوگا اور لڑکی نو برس کی عمر سے باپ ہی کے پاس رہے گی، اگر ماں ہوتی تو وہ بھی نو برس کے بعد اپنے پاس نہ رکھ سکتی نہ کہ نانا، یہ سب ظلم و تعدی ہے۔۔۔ تنویر الابصار میں ہے:

الولی فی النکاح العصبۃ بلا توسط انثی علی ترتیب الارث والحجب 1۔ نکاح کا ولی عصبہ بنفسہ یعنی وہ مرد شخص جس کی نسبت میں عورت کا واسطہ نہ ہو، یہ ولی وراثت کی ترتیب اور ایک دوسرے کے لیے مانع ہونے کی ترتیب سے ہوں گے۔ (ت)

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳

Volume Eleven Fatawa Rizvia

In Durr-e-Mukhtar, it is stated: 'If a distant guardian performs a marriage while a closer guardian is present, that marriage remains contingent upon the approval of the closer guardian.'

In the same source: 'If someone other than the father or grandfather, even if it is the mother, performs the marriage, it is not valid at all into a non-compatible (ghair-kufu) person.' (Summarized)

In the same source: 'A sinful (fasiq) person is not a suitable match (kufu) for a virtuous woman, nor is a sinful woman for the daughter of a virtuous man.' (Summarized)

In Radd al-Muhtar, it is stated: 'His statement "originally" means that the marriage is neither binding nor contingent such that it would become valid upon consent after reaching puberty.'

In Durr-e-Mukhtar, it is stated: 'The mother and the grandmother have the primary right to the girl's custody until she reaches the age of desire; some have estimated this at nine years, and this is the issued fatwa (mufti-bihi).'

Problem 313: 1st Sha'ban 1307 AH What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this issue: Hindah was an adult virgin. Her guardian performed her marriage with Zaid with his permission. Hindah knew that her marriage was to be with Zaid, but she did not give explicit verbal permission nor did she refuse. In this case, has Hindah's marriage with Zaid become valid?

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192
3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Compatibility, Mujtabai Press, Delhi, 1/195
4. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305
5. Radd al-Muhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/265

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

दुर्रे मुख्तार में है: 'अगर करीब वली की मौजूदगी में बईद वली ने निकाह कर दिया तो वह निकाह करीब की इजाज़त पर मौक़ूफ़ (निर्भर) होगा।'

उसी में है: 'अगर बाप और दादा के अलावा किसी ने निकाह किया, चाहे वह माँ ही क्यों न हो, तो गैर-कुफ़ू (असंगत) में निकाह बिलकुल जायज़ नहीं होगा।' (संक्षिप्त)

उसी में है: 'एक फासिक (पापी) पुरुष एक नेक (सालिहा) लड़की के लिए कुफ़ू (उपयुक्त जोड़ी) नहीं है, और न ही एक नेक पुरुष की बेटी के लिए एक फासिक लड़की।' (संक्षिप्त)

रद्दुल मुहतार में है: 'उसका कहना "अस्लन" (मूलतः) यानी वह निकाह न तो लाज़िम है और न ही मौक़ूफ़ कि बालिग होने के बाद रज़ामंदी पर सही हो जाए।'

दुर्रे मुख्तार में है: 'माँ और दादी/नानी लड़की की परवरिश की ज़्यादा हकदार हैं; यह हक लड़की के बालिग होने तक है, और कुछ ने नौ साल तक कहा है, यही मुफ़्ती-बिह (अमल में लाया जाने वाला फ़तवा) है।' (संक्षिप्त)

मसला 313: 1 शाबान 1307 हिजरी दीन के उलमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा बालिग़ा और कुंवारी थी। उसके वली (संरक्षक) ने उसकी इजाज़त से उसका निकाह ज़ैद के साथ कर दिया। हिन्दा को मालूम था कि उसका निकाह ज़ैद के साथ होगा, लेकिन उसने अपनी ज़बान से खास इजाज़त नहीं दी और न ही इनकार किया। क्या इस सूरत में हिन्दा का निकाह ज़ैद के साथ जायज़ हो गया?

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192
3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल कफ़ाअत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/195
4. रद्दुल मुहतार, बाब फिल वली, दारुल इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/305
5. रद्दुल मुहतार, बाबुल हज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/265

पृष्ठ 535 / 739

در مختار میں ہے: لزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ[1]۔ | اگر قریب ولی کی موجودگی میں بعید ولی نے نکاح کر دیا تو وہ نکاح قریب کی اجازت پر موقوف ہو گا۔ (ت)

اسی میں ہے: ان کان المزوج غیرھما ای الاب والجد ولو الام لا یصح من غیر کفو اصلا[2]۔ (ملخصاً) | اگر باپ اور دادا کے غیر نے خواہ والدہ ہی ہو نکاح کیا تو غیر کفو میں بالکل جائز نہ ہو گا (ملخصاً)۔ (ت)

اسی میں ہے: لیس فاسق کفواً للصالحۃ او فاسقۃ بنت صالح نھر[3] انتھی ملخصاً۔ | صالحہ لڑکی یا صالح مرد کی فاسقہ لڑکی کے لیے فاسق شخص کفو نہیں ہے۔ نہر اھ ملخصاً (ت)

ردالمحتار میں ہے: قولہ اصلاً ای لالازماً ولا موقوفاً علی الرضاع بعد البلوغ[4] | اس کا قول اصلاً یعنی وہ نکاح نہ لازم اور نہ موقوف ہوتا ہے کہ بلوغ کے بعد رضا پر صحیح ہو جائے ۔ (ت)

در مختار میں ہے: الام والجدۃ احق بھا حتی تشتھي وقدر بتسع و بہ یفتی[5] (ملخصاً) | والدہ اور دادی / نانی لڑکی کو پرورش میں لینے کی زیادہ حقدار ہیں یہ حق لڑکی کے بلوغ تک ہے اور بعض نے نو سال تک کہا یہی مفتی بہ ہے (ملخصاً)۔ (ت)

مسئلہ ۳۱۳: یکم شعبان ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اور مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ بالغہ باکرہ تھی اس کے ولی نے اپنی اجازت سے اس کا نکاح زید کے ساتھ کر دیا، ہندہ کو معلوم تھا کہ میرا نکاح زید کے ساتھ ہوگا لیکن اس نے خاص اجازت اپنی زبان سے نہیں دی اور نہ انکار کیا، اس صورت میں ہندہ کا نکاح زید کے ساتھ جائز ہو گیا

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ 2 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ 3 در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۵/۱ 4 رد المحتار باب فی الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ 5 رد المحتار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۵/۱

Fatawa Rizvia, Volume 11

...or not? If not, what will be the expiation (kaffarah) for the guardian (wali) and the person performing the marriage? Explain and be rewarded.

The Answer: The fundamental principle is that there is no compulsory guardianship (wilayat-e-jabriyah) over a mature (balighah) woman. It is sunnah to seek her permission before marriage. If a marriage is performed without her permission, it is considered a 'fadhuli' marriage, meaning it remains dependent on the woman's consent. If she approves, it becomes valid; if she rejects it, it is null and void. However, the silence of a virgin (bakirah) woman is also considered permission when her closest guardian (wali aqrab), his agent (wakil), or his messenger asks for her permission to marry, provided that the woman also knows the person for whom permission is being sought. Merely knowing that "my marriage will be performed with such-and-such person" and remaining silent without the guardian's formal request for permission is not considered consent. There is a vast difference between 'permission' and 'knowledge'. So much so that if a distant guardian (wali aba'd) seeks permission while a closer one is present, and the virgin remains silent, this silence will not be considered permission. Thus, where there is no formal request for permission at all, how can silence based on mere information be considered permission? It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar':

[Table content] Arabic text: A mature virgin cannot be forced into marriage because guardianship ends with maturity. If her guardian—and this is the sunnah—or his agent or messenger seeks her permission and she remains silent instead of rejecting it by choice, then it is considered permission (i.e., authorization), provided she knows the husband so that her desire for or against him can be manifested. This holds even if known within a general group, like "my neighbors" or "my paternal cousins" if they are countable; otherwise, no. If someone other than the closest guardian, such as a stranger or a distant guardian, seeks her permission, her silence is of no consequence (1). Abridged. In Radd al-Muhtar, quoting from al-Bahr and al-Muhit: If someone marries her without seeking her command, they have erred against the sunnah and it depends on...

Urdu text: A mature virgin cannot be forced into marriage because once she reaches maturity, no one has guardianship over her. So if her guardian seeks her permission —and this is sunnah—or the guardian's agent or messenger seeks permission and the girl remains silent despite having the choice, it will be considered acceptance of

representation (wakalat), provided she knows her future husband so that she can like or dislike him. Personal knowledge of the husband is not necessary; general knowledge, for example, that he is a neighbor or one of the paternal cousins she knows, is sufficient. If the husband is completely unknown, then this silence will not be considered as consent. If a distant guardian or a stranger seeks permission from the mature woman instead of the closest guardian, then at that time silence will not be considered as permission. Abridged. In Radd al-Muhtar from al-Bahr and its...

1: Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191-192. Page 536 of 739

फ़तावा रज़विया, खंड 11

...या नहीं? यदि नहीं, तो वली (अभिभावक) और निकाह पढ़ाने वाले पर क्या कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) होगा? स्पष्ट करें, पुण्य पाएँगे।

उत्तर: मूल सिद्धांत यह है कि एक बालिग (वयस्क) स्त्री पर किसी का अनिवार्य प्रभुत्व (विलायते जब्रिया) नहीं है। निकाह से पहले उसकी अनुमति लेना सुन्नत है। यदि बिना अनुमति के निकाह कर दिया जाए, तो वह 'फ़ज़ूली' निकाह है, जो स्त्री की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह स्वीकार कर ले तो निकाह वैध हो जाएगा और यदि अस्वीकार कर दे तो शून्य (बातिल) होगा। परंतु, एक कुँवारी (बाकिरा) स्त्री की चुप्पी भी अनुमति मानी जाती है जब उसका निकटतम वली (वली अक़रब), उसका वकील, या उसका भेजा हुआ व्यक्ति निकाह के लिए उसकी अनुमति माँगे, बशर्ते कि वह स्त्री उस व्यक्ति को जानती भी हो जिसके साथ निकाह की अनुमति माँगी गई है। वली द्वारा अनुमति माँगे बिना, केवल यह जाने पर कि "मेरा निकाह अमुक व्यक्ति के साथ किया जाएगा" चुप रहना अनुमति नहीं है, क्योंकि 'अनुमति' और 'जानकारी' में ज़मीन-आसमान का अंतर है। यहाँ तक कि यदि निकटतम वली की उपस्थिति में कोई दूर का वली अनुमति माँगे और युवती चुप रहे, तो भी यह चुप्पी अनुमति नहीं मानी जाएगी। अतः जहाँ मूल रूप से अनुमति माँगी ही न गई हो, वहाँ केवल जानकारी पर चुप्पी अनुमति कैसे हो सकती है? 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: एक वयस्क कुँवारी लड़की को निकाह के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता क्योंकि वयस्क होने पर उस पर विलायत (अभिभावकत्व) समाप्त हो जाता है। यदि वली—और यही सुन्नत है—या उसका वकील या उसका दूत उससे अनुमति माँगे और वह अपनी इच्छा से उसे अस्वीकार करने के बजाय चुप रहे, तो यह अनुमति (यानी वकालत) है, बशर्ते वह शौहर के बारे में जानती हो ताकि उसके प्रति अपनी पसंद या नापसंद ज़ाहिर कर सके। यह तब भी मान्य है जब वह किसी समूह के अंतर्गत हो, जैसे "मेरे पड़ोसी" या "मेरे चाचा के बेटे" यदि उनकी संख्या सीमित हो; अन्यथा नहीं। यदि निकटतम वली के अलावा कोई अन्य, जैसे अजनबी या दूर का वली उससे अनुमति माँगे, तो उसकी चुप्पी का कोई महत्व नहीं है। (संक्षिप्त)। रद्दुल मुह्तार में 'अल-बहर' के हवाले से 'अल-मुहीत' से उद्धृत है: यदि उसने उसकी आज्ञा माँगे बिना उसका निकाह कर दिया, तो उसने सुन्नत के विरुद्ध गलती की और यह निर्भर है...

उर्दू पाठ: बालिग बाकिरा (वयस्क कुँवारी) को निकाह पर मजबूर नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके बालिग हो जाने पर उस पर किसी की विलायत नहीं रही। तो अगर उसका वली उससे अनुमति माँगे—और यह सुन्नत है—या वली का वकील या उसका संदेशवाहक अनुमति माँगे और लड़की अपने अधिकार के बावजूद चुप रहे, तो इसे वकालत की मंज़ूरी माना जाएगा, बशर्ते कि उसे अपने होने वाले पति का ज्ञान हो ताकि वह पसंद या नापसंद कर सके। पति की व्यक्तिगत जानकारी आवश्यक नहीं है, सामान्य जानकारी भी पर्याप्त है, जैसे कि वह पड़ोसी है या चाचा के बेटों में से है जिन्हें वह जानती है। यदि पति के बारे में बिल्कुल भी जानकारी न हो सके तो फिर यह चुप्पी रज़ामंदी (सहमति) नहीं मानी जाएगी। यदि निकटतम वली के बजाय दूर के वली या किसी अजनबी ने बालिग स्त्री से अनुमति माँगी, तो उस समय चुप्पी को अनुमति नहीं माना जाएगा। (संक्षिप्त)। रद्दुल मुह्तार में अल-बहर और इसके..

1: दुर्रे मुख्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191-192. पृष्ठ 536 / 739

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

یا نہیں؟ اگر نہیں ہوا تو ولی اور نکاح پڑھانے والے پر کیا کفارہ ہو گا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اصل یہ ہے کہ زن بالغہ پر کسی کی ولایت جبریہ نہیں اور اس سے پیش از نکاح اذن لینا مسنون ہے اگر بے اذن لئے نکاح کیا جائے تو وہ نکاح فضولی ہے کہ اجازت زن پر موقوف رہے گا۔ اگر جائز رکھے جائز ہو جائے اور رد کر دے تو باطل،۔ مگر زن دوشیزہ کا سکوت بھی اذن ہوتا ہے جبکہ خود ولی اقرب یا اس کا وکیل یا فرستادہ نکاح کرنے کا اس سے اذن لے بشر طیکہ جس کے ساتھ نکاح کا اذن لیا گیا عورت اسے پہچانتی بھی ہو اور بغیر استیذان ولی کے مجرد اس جاننے پر کہ میرا نکاح فلاں کے ساتھ کیا جائے گا خاموش رہنا اذن نہیں کہ اذن و علم میں زمین و آسمان کا فرق ہے یہاں تک کہ اگر ولی اقرب کے ہوتے ولی ابعد اذن لے اور دوشیزہ سکوت کرے تاہم یہ سکوت اذن نہ ٹھہرے گا، تو جہاں اصلاً استیذان نہ ہو مجرد واقفیت پر خاموشی کیونکر اذن ہو سکتی ہے، در مختار میں ہے:

[جدول] عربی کالم: لاتجبر البالغة البكر على النكاح لانقطاع الولاية بالبلوغ فان استأذنها ولى الولى وهو السنة اووكيله اورسوله فسكتت عن رده مختارة فهواذن اى توكيل ان علمت بالزوج لتظهر الرغبة فيه اوعنه ولوفي ضمن العام كجيراني او بني عمي لويحصون والا لا فان استأذنها غير الاقرب كاجنبي او ولى بعيد فلا عبرة بسكوتها ١ اھ ملخصاً وفي ردالمحتار عن البحر عن المحيط ان زوجها بغير استئمار فقد اخطأ السنة وتوقف على اردو کالم: باکرہ بالغہ کو نکاح پر مجبور نہیں کیا جاسکتا کیونکہ اس کے بالغ ہو جانے پر اس پر کسی کی ولایت نہیں رہی، تو اگر اس سے اس کا ولی اجازت طلب کرے اور یہ سنت ہے، یا ولی کا وکیل یا اس کا قاصد اجازت طلب کرے اور لڑکی اپنے اختیار کے باوجود خاموش رہے تو یہ وکالت کی منظوری تصور ہوگی، بشر طیکہ اس کے ہونے والے خاوند

کا اس کو علم ہوتا کہ پسند یا ناپسند کر سکے، خاوند کا علم شخصی طور پر ضروری نہیں عمومی طور پر بھی مثلاً یہ کہ پڑوسی ہے یا چچازادوں میں سے ہے کافی ہے، جن کو وہ جانتی ہو، اگر خاوند کا علم بالکل نہ ہوسکے تو پھر یہ سکوت رضامندی نہ قرار پائیگا، اگر ولی اقرب کی بجائے ولی بعید یا اجنبی نے بالغہ سے اجازت طلب کی تو اس وقت سکوت کو اجازت نہ قرار دیا جائے گا اھ ملخصاً۔ ردالمحتار میں بحر اور اس

۱ در مختار باب فی الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۲-۱۹۱ Page 536 of 739

Fatawa Razawiya Volume 11

(Arabic): *Radāhā 1 ah wa fīhi (qawluhu lā yuḥṣūna) ‘ibāratul-fatḥ wa hum maḥṣūrūna ma’rūfūna lahā 2 ah*	**(Urdu): With reference to *Muhit*, it is stated that if the guardian performed the marriage without the adult girl's consultation and permission, it will depend on the girl's consent. And it is also mentioned therein that the statement of *Durr al-Mukhtar* "they are not counted/ limited" means in the text of *Al-Fath* that they are known and limited to the girl. (T)**

Thus, in the inquired situation, if the closest guardian took permission from the aforementioned wife, Hindah, and she remained silent, then this marriage became valid and effective itself, as for virgins, it is not necessary to give permission explicitly with the tongue.

(Arabic): The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: *And her permission is her silence.* 3	**(Urdu): The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said that the girl's silence is her permission. (T)**

Otherwise, it was a *Fuzuli* marriage (unauthorized marriage), which if rejected verbally or through action, becomes rejected, and if permission is given verbally or through action, it becomes valid. **Verbal rejection** is when, upon hearing the news of the marriage, she clearly says "I rejected it," or "It is not acceptable to me," or "I do not want to get married at all," or any other words like these. **Rejection by action** is, for example, waving her hand to show she is not pleased, or any such movement from which actual hatred and displeasure with this marriage is apparent. **Verbal permission** is saying "I am pleased," or "I like it," or "May God bless it," or "It's for the better," or words similar to these. **Permission by action** is, for example, going to the husband's house without compulsion or coercion, or letting him come to her in seclusion, or demanding dower (*Mahr*) or maintenance (*Nafqah*) from him, or any other action that is proof of consent. And **permission by silence** is when the guardian himself, or his messenger, or one trustworthy, pious person (i.e., whose justice and reliability are known) or two persons whose state is hidden (i.e., whose transgression is not known) inform the woman of the marriage having taken place, and she knows the husband, and someone other than the father or grandfather performed the marriage, and there was no gross underpayment in the dower, and the husband is also her equal (*Kufu*')—meaning there is nothing in his religion,

lineage, or profession etc., because of which marriage with him would be a disgrace to her guardians—in this case, if the woman remains silent after hearing the news, this silence will also be considered permission. In short, there are these five situations: two of rejection, by the occurrence of which the marriage will become void, and three of permission, by the occurrence of which it will take effect. And as long as none of these five situations occur, [it remains] as before.

1. *Durr al-Mukhtar*, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/99.
2. *Durr al-Mukhtar*, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/300.
3. *Al-Mu'jam al-Kabir* by At-Tabarani, Hadith 3/10107/372.

फ़तावा रज़विया खंड 11

(अरबी): रज़ाहा *1* आह व फ़ीहि *(क़ौलुहू ला युहसून)* इबारतुल फ़तह व हुम महसूरून मअरूफ़ून लहा *2* आह

(उर्दू): 'मुहीत' के हवाले से लिखा है कि यदि वली (अभिभावक) ने बालिग लड़की के परामर्श और अनुमति के बिना निकाह कर दिया, तो यह लड़की की सहमति पर निर्भर होगा। और इसमें यह भी है कि 'दुर्रे मुख़्तार' के कथन "ला यहसून" (वे गिने नहीं जाते) का मतलब 'फ़तह' की इबारत में यह है कि वे लड़की के यहाँ ज्ञात और सीमित हों। (त)

अतः पूछी गई स्थिति में यदि वली-ए-अक़रब (निकटतम अभिभावक) ने उल्लेखित पत्नी, हिंदह से अनुमति ली और वह चुप रही, तो यह निकाह स्वतः ही जायज़ और प्रभावी हो गया, क्योंकि कुँवारी लड़कियों के लिए ज़बान से स्पष्ट रूप से अनुमति देना अनिवार्य नहीं है।

(अरबी): अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: व इज़्नुहा सुमातुहा (और उसकी अनुमति उसकी खामोशी है)। 3

(उर्दू): अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लड़की की खामोशी ही उसकी अनुमति है। (त)

अन्यथा, यह निकाह 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत) हुआ कि यदि वह ज़ुबानी तौर पर या काम से इसे रद्द कर दे तो रद्द हो जाएगा और यदि ज़ुबानी तौर पर या काम से अनुमति दे दे तो जायज़ हो जाएगा। **शाब्दिक अस्वीकृति (रद्दे क़ौली)** यह है कि निकाह की ख़बर सुनकर वह साफ़ कह दे कि "मैंने रद्द कर दिया" या "मुझे मंज़ूर नहीं" या "मैं निकाह करना ही नहीं चाहती" या इनके समान कोई और शब्द। और **क्रियात्मक अस्वीकृति (रद्दे फ़ेअली)** यह है कि मिसाल के तौर पर हाथ हिला दे कि मैं राजी नहीं हूँ या और कोई ऐसी हरकत करे जिससे इस निकाह से वास्तविक नफ़रत और नाराज़गी ज़ाहिर हो। और **शाब्दिक अनुमति (इजाज़ते क़ौली)** यह है कि "मैं राज़ी हुई" या "मुझे पसंद है" या "ख़ुदा मुबारक करे" या "बेहतर हुआ" या इसी तरह के शब्द कहे। और **क्रियात्मक अनुमति (इजाज़ते फ़ेअली)** जैसे बिना किसी दबाव और ज़बरदस्ती के शौहर के यहाँ विदा होकर जाना या एकांत (खलवत) में उसे अपने पास आने देना या उससे मेहर या नफ़क़ा (खर्च) मांगना या कोई और ऐसा काम करना जो रज़ामंदी की दलील हो। और **मौन अनुमति (इजाज़ते सुकूती)** यह है कि स्वयं वली या उसका दूत या एक 'सिक़ा' (भरोसेमंद) परहेज़गार व्यक्ति (अर्थात जिसकी न्यायप्रियता और विश्वसनीयता ज्ञात हो) या दो 'मस्तूरुल हाल' व्यक्ति (अर्थात जिनका कोई पाप ज्ञात न हो) निकाह हो

जाने की ख़बर औरत को दें, और वह शौहर को पहचानती हो, और बाप या दादा के अलावा किसी और ने निकाह किया हो, मेहर में बहुत ज़्यादा कमी न की हो और शौहर उसका 'कुफ़ू' (बराबर का) भी हो—यानी उसके दीन, वंश या पेशे आदि में ऐसी कोई बात न हो जिसके कारण उससे निकाह उसके अभिभावकों के लिए अपमान का कारण हो—इस स्थिति में औरत ख़बर सुनकर खामोश रहे तो यह खामोशी भी अनुमति मानी जाएगी। संक्षेप में ये पाँच स्थितियाँ हैं: दो रद्द करने की जिनके होने से निकाह बातिल (अमान्य) हो जाएगा और तीन अनुमति की जिनके होने से प्रभावी होगा। और जब तक इन पाँच में से कोई स्थिति घटित न हो, यथावत रहेगी।

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब फ़िल वली, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/99।
2. दुर्रे मुख़्तार, बाब फ़िल वली, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/300।
3. अल-मुअजमुल कबीर लित-तबरानी, हदीस 3/10107/372।

पृष्ठ 537 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

رضاہا ۱ اہ وفیہ (قولہ لا یحصون) عبارۃ الفتح وھم محصورون معروفون لھا ۲ اہ

میں محیط کے حوالے سے کہ اگر ولی نے بالغہ کے مشورہ اور اجازت کے بغیر نکاح کر دیا تو لڑکی کی رضامندی پر موقوف ہوگا اھ اور اس میں یہ بھی ہے کہ درمختار کا قول "لا یحصون" کا مطلب فتح کی عبارت میں یہ ہے کہ لڑکی کے ہاں معروف و محدود ہوں اھ (ت)

پس صورت مستفسرہ میں اگر ولی اقرب نے بزوجہ مذکور ہندہ سے اذن لیا اور اس نے سکوت کیا تھا جب تو یہ نکاح خود ہی جائز و نافذ ہوا کہ کنواریوں کا زبان سے صراحتہً اذن دینا ضرور نہیں۔

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واذنھا صماتھا ۳۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا کہ لڑکی کی خاموشی اس کی اجازت ہے۔ (ت)

ورنہ نکاح فضولی ہوا کہ قولاً یا فعلاً رد کر دے تو رد ہو جائے اور قولاً یا فعلاً اجازت دے تو جائز ہو جائے، **ردّ قولی** یہ کہ خبر نکاح سن کر صاف کہے میں نے رد کیا یا مجھے منظور نہیں یا میں نکاح کرنا ہی نہیں چاہتی یا اور کوئی کلمہ ان کے مثل اور **ردّ فعلی** یہ کہ مثلاً ہاتھ ہلا دے کہ میں راضی نہیں یا اور کوئی حرکت ایسی کرے جس سے اس نکاح سے حقیقۃً نفرت و ناراضی ظاہر ہو اور **اجازتِ قولی** یہ کہ میں راضی ہوئی یا مجھے پسند ہے یا خدا مبارک کرے یا بہتر ہوا، یا اس کی مثل اور الفاظ، اور **اجازتِ فعلی** مثلاً بلا جبر و اکراہ شوھر کے یہاں رخصت ہو کر جانا یا خلوت میں اپنے پاس اسے آنے دینا یا اس سے مہر یا نفقہ طلب کرنا یا اور کوئی فعل کہ دلیل رضامندی ہو، اور **اجازتِ سکوتی** یہ کہ خود ولی یا اس کا رسول یا ایک ثقہ پرہیز گار یعنی جس کی عدالت و

وثاقت معلوم ہو یا دو مستور الحال یعنی جن کا کوئی فسق نہ معلوم ہو نکاح ہو جانے کی عورت کو خبر دیں اور وہ شوہر کو پہچانتی ہو اور غیر اب وجد نے نکاح کیا ہو مہر میں کمی فاحش نہ کی ہو اور شوہر اس کا کفو بھی ہو یعنی اس کے دین یا نسب یا پیشہ وغیرہ میں کوئی بات ایسی نہ ہو جس کے باعث اس سے نکاح اس کے اولیاء کے حق میں عار ہو اس صورت میں عورت خبر سن کر خاموش رہے تو یہ خاموشی بھی اجازت تصور کی جائے گی، غرض یہ پانچ صورتیں ہیں دو رد کی کہ ان کے وقوع سے نکاح باطل ہو جائے گا اور تین اجازت کی کہ ان کے وقوع سے نفاذ پائے گا، اور جب تک ان پانچ میں سے کوئی صورت واقع نہ ہو بدستور

۱ درمختار باب فی الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۹۹/۲ ۲ درمختار باب فی الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۰/۲ ۳ المعجم الکبیر للطبرانی حدیث ۳۷۲/۱۰۱۰۷/۳

It will remain suspended until one of these occurs: for instance, the woman has not yet received news of the marriage, or news was given by two non-relative transgressors (fasiqs) or one non-relative whose character is unknown and the woman remained silent, or the guardian (wali) himself or his messenger gave notice but the woman did not recognize the husband; or someone other than the father/ grandfather married her off to a non-equal (non-kufu) or for a dower significantly less than the customary dower (mahr-e-mithl). In all these cases, silence will neither be considered consent nor rejection; rather, the woman has the choice to either validate it or nullify it.

Master this piece of writing, for you will not find it with such refinement in any other discourse. All praise be to Allah, the Guide, the Almighty.

Preserve this discourse, for you will not find it with such expertise in any other explanation. All praises are for Allah Almighty, the Perfect Guide. (T)

In Durr-e-Mukhtar it is stated: | If news reaches her and she rejects it, then later says "I am pleased," it is not valid because it was annulled by the rejection. Therefore, they recommended renewal at the time of the wedding (zafaf), because usually, aversion is shown upon suddenly hearing of it. 1 Ah. [Tahtawi] said, i.e., it is possible that she was averse to the marriage when informed of it, thus the contract becomes void and consent does not attach to it thereafter. 2 Ah. I [Ahmad Raza Khan] say: When this is clear, it is a confirmed rejection, as is not hidden. In Durr [al-Mukhtar] also: her guardian married her off and his messenger or a reliable uncommissioned person informed her and she remained silent, then he is... | If news of the marriage reaches a girl and she rejects it, then later says "I am pleased," that marriage will not be valid because it has already become void upon rejection. For this reason, the jurists (Fuqaha) said that (when marriage is done without the girl's prior permission, which she later validates) it is better in such a case to renew the marriage at the time of the wedding. This is because generally, in such situations, upon suddenly hearing about the marriage, the girl expresses aversion. Ah, Tahtawi said that based on this possibility, if upon receiving news of the marriage, the girl rejected it out of aversion, the marriage will become void, which will not be valid by a subsequent expression of consent. Ah. I say: If this fact is proven, then definitively that marriage will be rejected, as is clear. | | :--- | :--- |

1. Durr-e-Mukhtar, Book of Guardianship, Mujtabai Press Delhi, 1/192.

2. Hashiya al-Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Book of Guardianship, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/29.

यह तब तक रुका रहेगा जब तक इनमें से कोई एक न हो जाए: उदाहरण के लिए, अभी तक औरत को निकाह की खबर ही नहीं हुई, या खबर दो गैर-रिश्तेदार गुहगारों (फ़ासिक़ों) या एक ऐसे गैर-रिश्तेदार ने दी जिसका हाल मालूम नहीं और औरत खामोश रही, या खुद वली (अभिभावक) या उसके भेजे हुए व्यक्ति ने सूचना दी, लेकिन औरत शौहर (पति) को नहीं पहचानती थी; या बाप-दादा के अलावा किसी और वली ने निकाह कर दिया और वह लड़का बराबर का नहीं था (कुफ़ू नहीं था) या महर, महर-ए-मिसल (पारंपरिक महर) से बहुत कम था। इन सभी सूरतों में खामोशी न तो इजाज़त मानी जाएगी और न ही इनकार, बल्कि औरत को अख्तियार (अधिकार) होगा कि चाहे तो जायज़ कर दे या बातिल (अमान्य)।

इस तहरीर को अच्छी तरह समझ लो क्योंकि तुम इसे इस तरह की खूबी के साथ किसी दूसरी तहरीर में नहीं पाओगे। तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो बेहतरीन हिदायत देने वाला और कुदरत वाला है।

इस तहरीर को महफ़ूज़ (सुरक्षित) कर लो कि इस महारत से किसी दूसरी तहरीर में नहीं पाओगे, तमाम हम्द अल्लाह तआला हादी-ए-अकमल (पूर्ण मार्गदर्शक) के लिए हैं। (त)

दुर्रे मुख्तार में है: | अगर उसे खबर पहुँची और उसने रद्द कर दिया, फिर कहा कि 'मैं राजी हूँ', तो यह जायज़ नहीं होगा क्योंकि रद्द करने से वह बातिल हो गया। इसीलिए उन्होंने ज़फ़ाफ़ (विदाई) के वक्त निकाह की तजदीद (नवीनीकरण) को मुस्तहसन (बेहतर) माना है, क्योंकि आम तौर पर अचानक सुनने पर नफरत ज़ाहिर की जाती है। 1 अह। [तहावी] ने कहा कि यानी यह एहतमाल (संभावना) है कि जब उसे निकाह की खबर दी गई तो उसने नफरत की, तो निकाह बातिल हो जाएगा और बाद में रजामंदी उस पर लागू नहीं होगी। 2 अह। मैंने (अहमद रज़ा खान ने) कहा: जब यह बात स्पष्ट हो गई तो यह पक्का रद्द करना हुआ जैसा कि ज़ाहिर है। और 'दुर्रे मुख्तार' में यह भी है कि वली ने उसका निकाह कर दिया और उसके कासिद (संदेशवाहक) या किसी मोतबर (विश्वसनीय) शख्स ने खबर दी और वह खामोश रही तो वह... | अगर लड़की को निकाह की खबर पहुँची तो उसने रद्द कर दिया फिर कहती है कि मैं राजी हूँ तो उससे वह निकाह जायज़ न होगा क्योंकि रद्द कर देने पर वह बातिल हो चुका है, इसी वजह से फुकाहा (विधिवेत्ताओं) ने फरमाया कि (जब लड़की से पहले इजाज़त लिये बगैर निकाह किया हो जिसको वह बाद में जायज़ करार दे) ऐसी सूरत में बेहतर है कि ज़फ़ाफ़ (विदाई) के वक्त निकाह की तजदीद (नवीनीकरण) कर ली जाए

क्योंकि आम तौर पर ऐसी सूरत में अचानक निकाह के मुतअल्लिक (बारे में) सुनकर लड़की नफरत का इज़हार कर देती है। अह, तहावी ने फरमाया कि इस एहतमाल की बिना पर कि निकाह बातिल की खबर पाकर लड़की ने बतौर-ए-नफरत रद्द कर दिया हो तो निकाह बातिल हो जाएगा जो बाद में इज़हार-ए-रजामंदी से जायज़ न होगा। अह। कुलतु (मैंने कहा): अगर यह बात साबित हो जाए तो फिर यकीनी तौर पर वह निकाह मरदूद (रद्द) होगा जैसा कि वाज़ेह (स्पष्ट) है। | | :--- | :--- |

1. दुर्रे मुख्तार बाबुल वली मतबा मुज्तबाई देहली 1/192
2. हाशिया तहावी अलद दुर्रुल मुख्तार बाबुल वली दारुल मारिफत बेरूत 2/29

पृष्ठ 538 का 739

موقوف رہے گا جب تک کہ ان میں سے ایک واقع ہو مثلاً ہنوز عورت کو نکاح کی خبر ہی نہ ہوئی یا خبر دواجنبی فاسقوں یا ایک اجنبی مستور الحال نے دی اور عورت خاموش رہی یا خود ولی خواہ اس کے فرستادہ نے اطلاع دی، مگر عورت شوہر کو نہ پہچانتی تھی مگر جس سے اب وجد کے سوا اور ولی نے نکاح کر دیا وہ کفو تھا یا مہر مثل سے کمی فاحش کی تھی، تو ان سب صورتوں میں یہ خاموشی نہ اجازت ہوگی نہ رد، بلکہ عورت کو اختیار ہے گا چاہے جائز کر دے خواہ باطل۔

اتقن هذا التحریر فانک لاتجده بهذا التحبیر فی غیر هذا التقریر والحمد لله الهادی القدیر۔

اس تقریر کو محفوظ کرلو کہ اس مہارت سے کسی دوسری تقریر میں نہ پاؤگے، تمام محامد اللہ تعالٰی ہادی اکمل کے لئے ہیں۔ (ت)

در مختار میں ہے: | لو بلغها فردت ثم قالت رضیت لم یجز لبطلانہ بالرد ولذا استحسنوا التجدید عند الزفاف لان الغالب اظهار النفرة عند فجأة السماع 1 اه قال ط ای فیحتمل انها نفرت من النکاح عند اعلامها بہ فیبطل العقد ولا یلحقہ الرضا 2 اه قلت فاذا تبین ذلک کان ردا محققا کما لا یخفی وفی الدر ایضاً زوجها ولیها واخبرها رسولہ او فضولی عدل فسکتت فهو | اگر لڑکی کو نکاح کی خبر پہنچی تو اسے رد کر دیا پھر کہتی ہے میں راضی ہوں تو اس سے وہ نکاح جائز نہ ہوگا کیونکہ رد کر دینے پر وہ باطل ہو چکا ہے، اسی وجہ سے فقہاء نے فرمایا کہ (جب لڑکی سے پہلے اجازت لئے بغیر نکاح کیا ہو جس کو وہ بعد میں جائز قرار دے) ایسی صورت میں بہتر ہے کہ زفاف کے وقت نکاح کی تجدید کرلی جائے کیونکہ عام طور پر ایسی صورت میں اچانک نکاح کے متعلق سن کر لڑکی نفرت کا اظہار کردیتی ہے اہ، طحطاوی نے فرمایا کہ اس احتمال کی بنا پر کہ نکاح باطل کی خبر پاکر لڑکی نے بطور نفرت رد کردیا ہو تو نکاح باطل ہوجائے گا جو بعد میں اظہار رضامندی

سے جائز نہ ہوگا اہ قلت: اگر یہ بات ثابت ہوجائے تو پھر یقینی طور پر وہ نکاح مردود ہوگا جیسا کہ واضح ہے۔ | | :--- | :--- |

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۲ 2 حاشیہ طحطاوی علی الدر المختار باب الولی دارالمعرفۃ بیروت ۲۹/۲

Fatawa Razawiya, Volume 11

[Arabic Text - Left Column] Permission, i.e., consent, if she was informed of the husband[1] (Summary). Al-Shami said: The condition for an unauthorized agent (Fuzuli) is reliability (Adalat) or number (count), so the report of one reliable person or two persons of unknown status is sufficient[2]... etc. It is stated in al-Durr: If someone other than the nearest guardian (Wali) asks her permission, then it must be verbal like a non-virgin, or what is in its meaning of an action that indicates consent, such as demanding her dower (Mahr) and her maintenance (Nafqah), and his entering upon her with her consent, and accepting congratulations and the like[3] (Summary). In Radd al-Muhtar from al-Bahr from al-Zahiriyyah: If he secluded with her with her consent, in my view this is permission. In al-Bazzaziyyah: The apparent view is that it is permission[4]. I say: The complete discussion on actions indicating consent is in our Fatawa. Then in al-Shamiyyah: In al-Bahr there is a disagreement...

[Urdu Text - Right Column] And in al-Durr it is also stated that if a guardian (Wali) performed the marriage of a girl, and she was informed of it by a messenger of the guardian or by a reliable stranger, and the girl remained silent, then this will be considered permission, provided she already knew about the husband. Shami said that in the report of an unauthorized agent (Fuzuli), reliability (Adalat) or number (two) is a condition, therefore one reliable person or two persons of unknown status are sufficient. In al-Durr it was stated that if someone other than the nearest guardian sought permission from an adult girl, it is necessary for the girl to respond verbally or practically so that her consent can be known; for example, by demanding the dower, or demanding maintenance, or accepting congratulations, or allowing the husband to come to her, etc., just as is necessary for a non-virgin (Thayyiba) or a woman like her (Summary). In Radd al-Muhtar, it is quoted from al-Zahiriyyah via al-Bahr that if the girl voluntarily had seclusion (Khalwat) with the husband, then in my view this is permission. And in al-Bazzaziyyah it is stated that the apparent view is that this is permission. I say: All those actions which indicate consent, we have mentioned in our Fatawa. Then in al-Shamiyyah it is stated that in al-Bahr it is mentioned that if the guardian [performed the marriage of] an adult [girl]...

[Footnotes] 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/299 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 4. Radd al-Muhtar, Chapter on Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/301

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[अरबी पाठ - बायाँ कॉलम] अनुमति, अर्थात सहमति, यदि उसे शौहर (पति) का ज्ञान हो गया[1] (संक्षेप)। अल-शामी ने कहा: फ़ुज़ूली (अनधिकृत एजेंट) के लिए शर्त 'अदालत' (विश्वसनीयता) या संख्या (गिनती) है, अतः एक विश्वसनीय व्यक्ति या दो अज्ञात स्थिति वाले व्यक्तियों की सूचना पर्याप्त है[2]... इत्यादि। दुर्र में कहा गया है: यदि निकटतम संरक्षक (वली) के अलावा कोई और उससे अनुमति मांगता है, तो यह सैयबा (गैर-कुंवारी) की तरह मौखिक होना चाहिए, या ऐसी क्रिया के अर्थ में होना चाहिए जो सहमति दर्शाती हो, जैसे कि उसका महर (दहेज) और नफ़का (भरण-पोषण) मांगना, और उसकी सहमति से उसका (पति का) प्रवेश करना, और बधाई स्वीकार करना और इसी तरह[3] (संक्षेप)। रद-उल-मुहतार में अल-बहर के माध्यम से अल-ज़हीरिया से: यदि वह उसकी सहमति से उसके साथ एकांतवास में रही, तो मेरे विचार में यह अनुमति है। अल-बज़ाज़िया में है: स्पष्ट विचार यह है कि यह अनुमति है[4]। मैं (लेखक) कहता हूँ: सहमति दर्शाने वाले कार्यों पर पूरी चर्चा हमारे फ़तावा में है। फिर शामिया में है: बहर में मतभेद है...

[उर्दू पाठ - दायाँ कॉलम] और दुर्र में यह भी है कि वली ने लड़की का निकाह किया जिसकी सूचना वली के कासिद (दूत) या किसी अजनबी आदिल (विश्वसनीय) व्यक्ति ने लड़की को दी, तो लड़की ने चुप्पी साध ली तो यह इजाजत होगी, बशर्ते कि उसे शौहर का ज्ञान हो चुका हो। शामी ने कहा कि फ़ुज़ूली की खबर में 'अदालत' या 'अदद' (संख्या - दो) होना शर्त है, इसलिए एक आदिल या दो 'मस्तूरुल हाल' (जिनकी स्थिति अज्ञात हो) व्यक्ति काफी हैं। दुर्र में फरमाया कि बालिगा लड़की से वली-ए-अक़रब (निकटतम संरक्षक) के अलावा किसी और ने इजाजत मांगी हो, तो जरूरी है कि लड़की कौली (मौखिक) या फ़ेअली (व्यावहारिक) तौर पर जवाब दे जिससे उसकी रज़ा (सहमति) मालूम हो सके मसलन महर तलब करे या नफ़का तलब करे या मुबारकबाद कुबूल करे या शौहर को अपने पास आने की इजाजत दे दे वगैरह, जैसा कि सैयबा या उस जैसी औरत के लिए जरूरी होता है (संक्षेप)। रद-उल-मुहतार में बहर के हवाले से ज़हीरिया से मनकूल (उद्धृत) है कि अगर लड़की ने रज़ामंदी से शौहर के साथ खलवत (एकांतवास) कर ली, तो मेरे नज़दीक यह इजाजत है। और बज़ाज़िया में है कि ज़ाहिर यही है कि यह इजाजत है। मैं (लेखक) कहता हूँ: उन तमाम अफ़आल (कार्यों) को जो रज़ामंदी पर दलालत (संकेत) करते हैं, हमने अपने फ़तावा में ज़िक्र किया है। फिर शामिया में है कि बहर में है कि अगर वली ने बालिगा...

[फुटनोट्स] 1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191 2. रद-उल-मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/299 3. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192 4. रद-उल-मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/301

فتاوی رضویہ، جلد یازدھم

[عربی متن - بایاں کالم] اذن ای اجازۃ ان علمت بالزوج ۸^1 اھ (ملخصًا) قال الشامی الشرط فی الفضولی العدالۃ او العدد فیکفی اخبار واحد عدل او مستورین ۸^2 الخ قال فی الدر فان استأذنھا غیر الاقرب فلا بد من القول کالثیب او ماھو فی معناہ من فعل یدل علی الرضا کطلب مھرھا ونفقتھا ودخولہ بھا برضاھا وقبول التھنئۃ ونحو ذلك ۸^3 اہ ملخصاً۔ وفی رد المحتار عن البحر عن الظھیریۃ لو خلا بھا برضاھا عندی ان ھذا اجازۃ اھ۔ وفی البزازیۃ الظاھر انہ اجازۃ ۸^4 اہ قلت وتمام الکلام علی الافعال التی تدل علی الرضا فی فتاونا ثم فی الشامیۃ فی البحر اختلف

[اردو متن - دایاں کالم] اور در میں یہ بھی ہے کہ ولی نے لڑکی کا نکاح کیا جس کی اطلاع ولی کے قاصد یا کسی اجنبی عادل شخص نے لڑکی کو دی تو لڑکی نے خاموشی اختیار کی تو یہ اجازت ہوگی بشرطیکہ اس کو خاوند کا علم ہو چکا ہو اھ شامی نے کہا کہ فضولی کی خبر میں عدالت یا عدد (دو ۲) ہونا شرط ہے اس لئے ایک عادل یا دو مستور الحال حضرات کافی ہیں۔ در میں فرمایا کہ بالغہ لڑکی سے ولی اقرب کے غیر نے اجازت طلب کی ہو تو ضروری ہے کہ لڑکی قولی یا فعلی طور پر جواب دے جس سے اس کی رضا معلوم ہو سکے، مثلاً مہر طلب کرے یا نفقہ طلب کرے یا مبارکباد قبول کرے یا خاوند کو اپنے پاس آنے کی اجازت دے دے وغیرہ، جیسا کہ ثیبہ یا اس جیسی عورت کے لئے ضروری ہوتا ہے اھ ملخصاً۔ رد المحتار میں بحر کے حوالے سے ظہیریہ سے منقول ہے اگر لڑکی نے رضامندی سے خاوند کے ساتھ خلوت کرلی تو میرے نزدیک یہ اجازت ہے اھ، اور بزازیہ میں ہے کہ ظاہر یہی ہے کہ یہ اجازت ہے، قلت: ان تمام افعال جو رضامندی پر دلالت کرتے ہیں، کو ہم نے اپنے فتاوی میں ذکر کیا ہے، پھر شامی میں ہے کہ بحر میں ہے اگر ولی نے بالغہ

[حواشی] 1. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱ 2. ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۹۹/۲ 3. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ 4. ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۱/۲

Volume Eleven - Fatawa Razawiyya

Regarding the case where an adult woman is married to someone who is not her equal (non-kufu): if she remains silent upon being asked for permission or upon finding out, would this silence be considered consent or not? There is a difference of opinion on this. *Al-Bahr* states that it will not be considered consent. Others have said that according to one report from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), if the guardian performing the marriage is the father or grandfather, silence will be considered consent; otherwise, it will not. This was derived in *Al-Khaniya* from the ruling regarding a minor girl married to a non-equal. It is stated in *An-Nahr* that *Ad-Diraya* affirmed the first view using the phrase "they said." (End of text from *Ash-Shami*).

I say: In *Al-Khaniya*, this was mentioned first, and they usually prioritize the most apparent and famous view. However, scholars have said that its mention first in *Al-Khaniya* was merely to get it out of the way; otherwise, they cited a strong argument for the second view, and citing an argument is a sign of reliance. *Al-Muhit*, *Al-Mabsut*, *Jami' Qazi Khan*, then *Al-Kafi Sharh al-Hidayah*, and then the margins of *At-Tabyin* attribute this to Imam Azam (Imam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him). The second view has been authenticated in *Al-Kifaya*, *Al-Kafi*, *Ad-Diraya*, and *Ad-Durar*, because in the school of the Imam (may Allah be pleased with him), there is a distinction between the actions of the father/grandfather and others. (T)

Performing a marriage by a guardian without seeking permission, although contrary to the Sunnah, is not a sin. Likewise, there is no blame on the one performing the marriage ceremony, as is not hidden. And Allah the Exalted knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most wise.

Problem 312: 7 Safar 1309 AH What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: a marriage of a minor girl whose age is near...

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/299.
Page 540 of 739

उस मामले में जहाँ एक वयस्क महिला का विवाह किसी ऐसे व्यक्ति से कर दिया जाता है जो उसके योग्य (गैर-कुफ़ू) नहीं है: यदि अनुमति मांगने पर या पता चलने पर लड़की चुप रहती है, तो क्या यह चुप्पी अनुमति मानी जाएगी या नहीं? इसमें मतभेद है। अल-बहर ने कहा कि यह रज़ामंदी (सहमति) नहीं होगी। कुछ ने कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के एक कथन के अनुसार, यदि निकाह करने वाला वली (अभिभावक) पिता या दादा है, तो चुप्पी को अनुमति माना जाएगा, अन्यथा नहीं। जैसा कि अल-ख़ानिया में इस मुद्दे को एक नाबालिग लड़की के गैर-कुफ़ू निकाह के मसले से निकाला गया है। अन-नहर में कहा गया है कि अद-दिराया ने "क़ालू" (उन्होंने कहा) शब्द का उपयोग करके पहले विचार की पुष्टि की है। (अश-शामी से उद्धरण समाप्त)।

मैं कहता हूँ: अल-ख़ानिया में इसे पहले उल्लेख किया गया है, और वे आमतौर पर सबसे स्पष्ट और प्रसिद्ध विचार को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन विद्वानों ने कहा है कि यहाँ अल-ख़ानिया द्वारा इसे पहले उल्लेख करना केवल इसे निपटाने के लिए है, अन्यथा उन्होंने दूसरे विचार के लिए एक मजबूत दलील दी है, और दलील देना भरोसे का प्रमाण है। अल-मुहित, अल-मबस्त, जामे क़ाज़ी ख़ान, फिर अल-काफ़ी शरह अल-हिदाया, फिर अत-तबीन के हाशिये में इसे इमाम आज़म (इमाम अबू हनीफ़ा, रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन बताया गया है। और अल-किफ़ाया, अल-काफ़ी, अद-दिराया, अद-दुरर में इस दूसरे विचार को सही ठहराया गया है, क्योंकि इमाम साहब (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मज़हब में पिता, दादा और दूसरों के कार्यों में अंतर है। (त)

वली द्वारा अनुमति के बिना निकाह कर देना, हालांकि सुन्नत के खिलाफ है, लेकिन गुनाह नहीं है। इसी तरह निकाह पढ़ाने वाले पर कोई दोष नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा बुलंद हो, सबसे पूर्ण और सबसे हिकमत वाला है।

मसला ३१२: ७ सफ़र १३०९ हिजरी दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं: एक नाबालिग लड़की का निकाह जिसकी उम्र करीब...

[1] रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/२९९। Page 540 of 739

فیما اذا زوجھا غیر کفو فبلغھا فسکتت فقال لا یکون رضا وقیل في قول ابی حنیفة یکون رضا ان کان المزوج ابا او جدا وان کان غیرہما فلا کما في الخانیة اخذا من مسئلة الصغیرة المزوجة من غیر کفو اہ قال في النھر وجزم فی الدرایة بالاول بلفظ قالوا اہ ما فی الشامی قلت وقدمہ في الخانیة وھولا یقدم الا الاظھر الاشعر لکن قالوا یؤتی بہ للتبری وقد علل فی الخانیة للقول الثانی بتعلیل جلیل والتعلیل دلیل التعویل ونص فی المحیط والمبسوط وجامع قاضی خاں ثم الکافی شرح الھدایة ثم الشلبی علی التبیین انہ قول الامام وقد صحح فی الکفایة والکافی و الدرایة والدر التفرقة بین الاب والجد وغیرھما بناء علی مذھب الامام رضی اللہ تعالی۔

عاقلہ کو غیر کفو میں نکاح کردیا تو اس وقت اجازت طلب کرنے پر یا معلوم ہونے پر لڑکی خاموش رہے تو کیا یہ اجازت ہوگی یا نہیں۔ اس میں اختلاف ہے، بحر نے کہا کہ رضا نہ ہوگی، بعض نے کہا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے ایک قول کے مطابق اگر نکاح کرنے والا ولی باپ یا دادا ہو تو سکوت اجازت قرار پائیگی ورنہ نہیں، جیسا کہ خانیہ میں اس مسئلہ کو نابالغہ کو غیر کفو میں نکاح کر دینے کے مسئلہ سے اخذ کیا ہے اھ نہر میں کہا کہ درایہ میں اس پر "قالوا" کے لفظ کہہ کر پہلے قول پر جزم کیا ہے، شامی کی عبارت ختم ہوئی۔ قلت: خانیہ میں اس کو مقدم ذکر کیا ہے اور وہ زیادہ ظاہر اور مشہور قول کو مقدم ذکر کرتے ہیں لیکن علماء نے فرمایا کہ یہاں خانیہ کا اس کو مقدم ذکر کرنا اس سے فراغت کے طور پر ہے ورنہ انھوں نے دوسرے قول کی مضبوط دلیل ذکر کی ہے جبکہ دلیل کو ذکر کرنا اعتماد کی دلیل ہے، محیط، مبسوط، جامع قاضی خاں پھر کافی شرح ہدایہ میں پھر تبیین کے حاشیہ میں اس کو امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کا قول بتایا ہے، اور کفایہ، کافی، درایہ، درر میں اس دوسرے قول کی تصحیح

کی گئی ہے کیونکہ امام صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مذہب میں باپ دادا اور غیر کے اقدام میں فرق ہے۔ (ت)

اور بے اذن لیے ولی کا نکاح کر دینا اگرچہ خلاف سنت ہے مگر گناہ نہیں، یوں ہی نکاح پڑھانے والے پر کوئی الزام نہیں کما لا یخفی (جیسا کہ مخفی نہیں ۔ت) واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۳۱۲: ۷ صفر ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ نکاح لڑکی نابالغ کا جس کی عمر قریب

[1] ردالمختار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۹۹/ Page 540 of 739

Fatawa Rizvia Volume 11

Question: A girl is three years old. Her marriage was conducted with a minor boy named Amr, who is nearly four years old. Is the guardianship (wilayat) of the girl's mother valid or not? Especially since relatives from the father's side like uncles etc. from four or five generations back are present. Now, after reaching puberty, the girl is also unhappy with this marriage.

The Answer: If the boy with whom this minor girl was married was not her equal (kufu), meaning he had such a deficiency in terms of tribe, conduct, religion, or other reputable matters compared to the girl that giving her in marriage to him would be a cause of shame and disgrace for her guardians, then that marriage is completely void (batil) from the start. Similarly, if there was a gross unfairness (ghabn-e-fahish) in her dower (mahr-e-misl), for example, if the proper dower was fifty thousand but only twenty-five thousand was settled in this marriage, then the marriage is also purely void. In both these cases, even if she gives consent herself after reaching puberty, and even if not just the mother but all those guardians together had conducted the marriage, it still cannot be valid because no one except the father and grandfather has the authority to conduct such a marriage for a minor. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Table] Arabic: In kan al-mujawwij ghayr al-ab wa abihi walau al-umm wal-qadi la yasihh al-nikah min ghayr kufu' au bi-ghabn fahish aslan (Mulakkhasan) Urdu: If someone other than the father or grandfather conducted a marriage with a non-equal or with a gross reduction in dower, then the marriage will be absolutely invalid, whether that person was the mother or a judge. (Summary)

In Radd al-Muhtar it is stated: [Table] Arabic: Fil Fath al-Qadir lau kaburat wa ajazat la yasihh liannahu lam yakun aqdan mauqufan idh la mujiza lahu. Urdu: It is stated in Fath al-Qadir that if that minor girl reaches puberty and even if she validates the aforementioned marriage to the non-equal, it will not be valid because that marriage was not contingent upon the permission of anyone who could give permission. (T)

And if the boy was not like that and there was no such deficiency in the mahr-e-misl, then it would have been correct, but since as long as any male relative from the paternal line exists, the mother does not have the guardianship of marriage; rather, whoever among them is prior in terms of inheritance is the guardian.

[Table] Arabic: Fil Durr al-Mukhtar al-wali fin-nikah al-'asabah bi-nafsihi 'ala tartib al-irth wal-hajb fa'in lam yakun 'asabah fal-wilayah lil-umm. Urdu: It is stated in Durr al-Mukhtar that the guardians for marriage are the agnates (asabat) according to the order of entitlement to inheritance and exclusion, and if there is no agnate by himself, then the guardianship will belong to the mother. (T)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Guardianship, Mujtabai Press, Delhi, 1/192
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Guardianship, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305
3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Guardianship, Mujtabai Press, Delhi, 1/193

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

प्रश्न: एक लड़की तीन साल की है। उसका निकाह एक नाबालिग लड़के अम्र के साथ हुआ है जिसकी उम्र लगभग चार साल है। क्या लड़की की माँ की विलायत (अभिभावकत्व) जायज़ है या नहीं? जबकि पिता के पक्ष के चार-पांच पीढ़ियों के लोग जैसे चाचा-ताया आदि मौजूद हैं। और अब बालिग होने के बाद वह लड़की इस निकाह से नाखुश भी है।

उत्तर: अगर वह लड़का जिससे इस नाबालिग लड़की का निकाह हुआ वह उसका कुफ़ू (समान) नहीं था, यानी क़ौम, रहन-सहन और मज़हब वगैरह जैसे प्रतिष्ठित मामलों में लड़की के मुकाबले उसमें ऐसी कमी थी कि उसे निकाह में देना लड़की के औलिया (अभिभावकों) के लिए शर्म और अपमान का कारण हो, तो वह निकाह शुरू से ही बातिल (अमान्य) है। इसी तरह अगर लड़की के महरे मिस्ल (उचित मेहर) में बहुत ज़्यादा कमी (ग़बने फ़ाहिश) कर दी गई, उदाहरण के लिए महरे मिस्ल पचास हज़ार था और इस निकाह में पच्चीस हज़ार तय हुआ, तो भी निकाह पूरी तरह बातिल हो गया। इन दोनों स्थितियों में बालिग होने के बाद अगर वह खुद इजाज़त दे दे और निकाह न सिर्फ माँ बल्कि उन सभी औलिया ने मिलकर किया हो, तब भी सही नहीं हो सकता क्योंकि नाबालिग का ऐसा निकाह करने का अधिकार बाप और दादा के सिवा किसी और को नहीं है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[तालिका] अरबी: इन कान अल-मुज़व्विज ग़ैर अल-अब व अबीही वलौ अल-उम्म वल-क़ाज़ी ला यसिह्ह अल-निकाह मिन ग़ैर कुफ़ुअ औ बि-ग़ब्न फ़ाहिश अस्लन (मुल्ख़सन) उर्दू: अगर बाप और दादा के अलावा किसी और ने ग़ैर-कुफ़ू या मेहर में भारी कमी के साथ निकाह किया तो निकाह बिल्कुल नाज़ायज़ होगा, चाहे वह माँ हो या क़ाज़ी। (संक्षिप्त)

'रद-उल-मुहतार' में है: [तालिका] अरबी: फ़िल फ़तह अल-क़दीर लौ कबुरत व अजाज़त ला यसिह्ह लिअन्नहू लम यकुन अक़्दन मौक़ूफ़न इज़ ला मुजीज़ा लहू। उर्दू: 'फ़तह अल-क़दीर' में है कि अगर वह नाबालिग लड़की बालिग हो जाए और उस ग़ैर के साथ किए गए निकाह को जायज़ भी कर दे, तो जायज़ न होगा क्योंकि वह निकाह किसी इजाज़त देने वाले की इजाज़त पर निर्भर नहीं था। (त)

और अगर न लड़का ऐसा था और न ही महरे मिस्ल में इस तरह की कमी थी तो निकाह सही हो जाता, लेकिन चूंकि जब तक पिता के पक्ष के पुरुष रिश्तेदारों (एक जद्दी मर्दों) में से कोई भी मौजूद हो, माँ को निकाह की विलायत (अभिभावकत्व) प्राप्त नहीं होती, बल्कि उनमें से जो विरासत के मामले में पहले आता है वही वली (अभिभावक) होता है।

[तालिका] अरबी: फ़िल दुर्र अल-मुख़्तार अल-वली फ़िन-निकाह अल-'असबा बि-नफ़्सिही अला तरतीब अल-इर्थ वल-हज्ब फ़इन लम यकुन असबा फ़ल-विलायहु लिल-उम्म। उर्दू: 'दुर्रे मुख़्तार' में है कि निकाह के वली विरासत की पात्रता और हजब के क्रम के अनुसार असबात (पितृवंशीय रिश्तेदार) हैं, और अगर असबा बि-नफ़्सिही न हो तो फिर माँ को विलायत होगी। (त)

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/192
2. रद-उल-मुहतार, बाबुल वली, दारुल इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत 2/305
3. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/193

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

تین سال کے ہے، ساتھ عمرو نابالغ کے جس کی عمر قریب چار سال کے ہے ولایت مادر لڑکی کے جائز ہے یا نہیں؟ درحالیکہ باپ کے چار پانچ پشت کے لوگ چچا تاؤ وغیرہ موجود ہوں، اور اب بعد بالغ ہونے کے وہ لڑکی اس نکاح سے ناراض بھی ہے۔

الجواب: اگر وہ لڑکی جس سے اس نابالغہ کا نکاح ہوا اس کا کفو نہ تھا یعنی قوم وروش ومذہب وغیرہ امور معتبرہ سے کسی بات میں بہ نسبت دختر ایسا نقص رکھتا تھا کہ اس دختر کا اس کے نکاح میں دیا جانا اولیاء دختر کے لئے باعث ننگ وعار ہو تو وہ نکاح سرے سے باطل واقع ہوا۔ یونہی اگر دختر کے مہر مثل میں کمی فاحش کردی گئی مثلاً مہر مثل پچاس ہزار تھا اس نکاح میں پچیس ہزار بندھا تو بھی نکاح باطل محض ہوا، ان دونوں صورتوں میں بعد بلوغ اگر خود اجازت دے اور نکاح نہ صرف ماں بلکہ ان سب اولیاء نے مل کر کیا ہو جب بھی صحیح نہیں ہو سکتا کہ نابالغہ کے ایسے نکاح کرنے کا باپ دادا کے سوا کسی کو اختیار نہیں۔ در مختار میں ہے:

[Table] Arabic: ان کان المزوج غیر الاب وابیہ ولو الام والقاضی لایصح النکاح من غیر کفو او بغبن فاحش اصلا (ملخصاً) Urdu: اگر غیر باپ اور دادا نے غیر کفو یا مہر میں فحش کمی کے ساتھ نکاح کیا تو بالکل نکاح ناجائز ہوگا خواہ وہ غیر والدہ ہو یا قاضی ہو۔ ملخصاً(ت)

ردا لمحتار میں ہے: [Table] Arabic: فی الفتح القدیر لو کبرت و اجازت لا یصح لانہ لم یکن عقدا موقوفا اذلا مجیز لہ Urdu: فتح القدیر میں ہے کہ اگر وہ نابالغہ لڑکی بالغ ہو اس غیر کے نکاح مذکورہ کو جائز بھی کردے تو جائز نہ ہوگا کیونکہ وہ نکاح کسی اجازت دینے والے کی اجازت پر موقوف نہ تھا۔ (ت)

اور اگر نہ لڑکا ایسا تھا نہ مہر مثل میں اس طرح کی کمی تو صحیح ہو گیا مگر از انجا کہ یک جدی مردوں میں سے جب تک کوئی موجود ہو ماں کو ولایت نکاح نہیں ہوتی بلکہ ان میں جو درباب وراثت مقدم ہو وہی ولی ہوتا ہے

[Table] Arabic: فی الدرالمختار الولی فی النکاح العصبة بنفسه علی ترتیب الارث والحجب فان لم یکن عصبة فالولایة للام ۔ Urdu: در مختار میں ہے نکاح کا ولی وراثت کے استحقاق وحجب کی ترتیب پر عصبات ہیں، اور اگر عصبہ بنفسہ نہ ہو تو پھر والدہ کو ولایت ہوگی۔ (ت)

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ 2 ردالمختار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ 3 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۳

Fatawa Razawiyyah, Volume 11

Therefore, if this marriage was performed by the mother alone without the permission of the guardian (Wali), it was an unauthorized (Fazooli) marriage and remained dependent on the guardian's permission. If, upon hearing the news, he rejected it—for example, by saying "I do not recognize this marriage as valid," "I reject it," "I am not pleased," or similar words—then it is annulled. Now, the daughter's consent or displeasure is of no consequence because the marriage no longer exists at all. However, if it initially took place with the guardian's permission, or if the guardian gave permission after the mother's marriage arrangement—for instance, by saying "It was good," "I liked it," "I approve," or similar words—then the marriage became effective.

[In Ad-Durr al-Mukhtar: If a distant guardian performs a marriage while a closer guardian exists, it is dependent on his permission. (1)] | [It is stated in Durr al-Mukhtar: If a distant guardian performs a marriage in the presence of a closer guardian, then this marriage will depend on the permission of the closer guardian. (T)]

Furthermore, since the person who performed the marriage was someone other than the father or grandfather, and the daughter is a virgin, she will be given this much choice: if she already knows about the marriage, she can say immediately upon reaching puberty—or if she learns about it after reaching puberty, immediately upon hearing the news—"I am not pleased with this marriage," "I have annulled it," "I dislike it," or anything else that signifies displeasure. So, if she expresses this displeasure immediately upon puberty or upon being informed, she will be allowed to file a claim before a judge (Qazi) to have it annulled. If she remains silent even for a moment without a valid excuse, or occupies herself with any other task or conversation, the marriage becomes binding. After that, any expression of displeasure will be of no use. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[And if it was with a suitable match and customary dower, it is valid, but both—meaning the minor boy and minor girl—have the option of annulment (Khiyar al-Faskh) upon reaching puberty or upon learning of the marriage thereafter, provided there is a judicial decree for annulment. The virgin's option is voided by silence if she is an adult and aware of the marriage, and it does not extend to the end of the gathering. (2) (Summarized)] | [If the marriage was performed with a suitable match and customary dower, it is correct, but the minor boy and girl will have the option to

annul upon puberty, or after puberty when they gain knowledge of the marriage. However, annulment will be by the order of a judge. If a mature virgin remains silent upon learning of her marriage, she will no longer have the option of annulment, and this option will not remain until the end of the session where she gained knowledge of the marriage. (Summarized). (T)]

And if that marriage did not initially take place with the guardian's permission, nor did the guardian give permission or reject it during the daughter's minority, but rather news of it...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardian (Wali), Matba Mujtabai Delhi, 1/194 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardian (Wali), Matba Mujtabai Delhi, 1/192-193

फतावा रज़विया, जिल्द 11

इसलिए, यदि यह निकाह वली (संरक्षक) की अनुमति के बिना केवल माँ ने किया था, तो निकाह फ़ुज़ूली (अनधिकृत) हुआ और वली की अनुमति पर निर्भर रहा। यदि उसने खबर सुनकर इसे खारिज कर दिया, उदाहरण के लिए कहा कि "मैं इस निकाह को जायज़ नहीं मानता" या "खारिज करता हूँ" या "मैं राजी नहीं हूँ" या इसी तरह के शब्द, तो वह रद्द हो गया। अब बेटी की सहमति या नाराजगी का भी कोई महत्व नहीं रहा क्योंकि निकाह सिरे से बाकी ही नहीं रहा। और अगर शुरुआत में वली की अनुमति से हुआ था, या माँ द्वारा निकाह कराने के बाद वली ने अनुमति दे दी थी, उदाहरण के लिए कहा "बेहतर हुआ" या "मैंने पसंद किया" या "मुझे मंज़ूर है" या इसी तरह के शब्द, तो निकाह प्रभावी हो गया।

[दुर्रे मुख्तार में है: यदि निकटतम वली की मौजूदगी में दूर के वली ने निकाह कर दिया, तो यह निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। (1)] | [दुर्रे मुख्तार में है: अगर दूर के वली ने निकटतम वली के होते हुए निकाह कर दिया तो यह निकाह वली-ए-अक़रब की इजाजत पर मौकूफ (निर्भर) होगा। (त)]

फिर भी, चूँकि निकाह करने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है और लड़की कुंवारी है, उसे इतना अधिकार दिया जाएगा कि यदि वह पहले से निकाह के बारे में जानती है, तो वह वयस्क होते ही, और यदि वयस्क होने के बाद पता चलता है, तो खबर सुनते ही तुरंत बिना देरी के कह सकती है कि "मैं इस निकाह से राजी नहीं हूँ" या "मैंने इसे मंसूख (रद्द) कर दिया है" या "मुझे नापसंद है" या इसी तरह की कोई भी बात जो नाराजगी का सबूत हो। इसलिए, यदि उसने वयस्क होने पर या सूचना मिलने पर तुरंत यह नाराजगी जाहिर की, तो उसे अनुमति दी जाएगी कि वह काजी के सामने दावा पेश करके इसे रद्द करवा ले। और अगर उसने बिना किसी वाजिब वजह के एक पल के लिए भी चुप्पी साधी या किसी दूसरे काम या बातचीत में मशगूल हो गई, तो अब वह निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो गया। इसके बाद नाराजगी जाहिर करना किसी काम का नहीं। दुर्रे मुख्तार में है:

[और भले ही वह समान स्तर (कुफ़ु) में और महर-ए-मिस्ल के साथ हुआ हो, वह सही है, लेकिन दोनों के लिए—यानी नाबालिग लड़के और लड़की के लिए—वयस्क होने पर या उसके बाद निकाह का पता चलने पर निरस्त करने का विकल्प (ख़ियारुल फ़स्ख) होगा, बशर्ते कि निरस्तीकरण का न्यायिक फैसला हो। बालिग कुंवारी का विकल्प चुप्पी साधने से खत्म हो जाता है यदि वह निकाह के बारे में

जानकर खामोश रही, और यह मजलिस के अंत तक नहीं खिंचता। (2) (संक्षिप्त)] | [अगर कुफु और महर-ए-मिस्ल के साथ निकाह किया तो सही है लेकिन नाबालिग लड़के और लड़की को बालिग होने पर या बालिग होने के बाद जब निकाह का पता चले तो फ़स्ख का अधिकार होगा, लेकिन फ़स्ख काजी के आदेश से होगा। अगर बालिग कुंवारी अपने निकाह का पता चलने पर खामोश रही तो उसे फ़स्ख का अधिकार नहीं रहेगा और निकाह की जानकारी मिलने वाली मजलिस के अंत तक यह अधिकार बाकी नहीं रहेगा (संक्षिप्त)। (त)]

और अगर वह निकाह न तो शुरुआत में वली की इजाजत से हुआ, न ही बेटी के नाबालिग रहने के दौरान वली ने इजाजत दी और न ही रद्द किया, बल्कि उसे खबर...

---

1 दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/194 2 दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/192-193

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

لہذا یہ نکاح اس ولی کی بے اجازت صرف ماں نے کر دیا تو نکاح فضولی ہوا اور اجازت ولی پر موقوف رہا، اگر اس نے خبر سن کر رد کر دیا مثلاً کہا کہ میں اس نکاح کو جائز نہیں رکھتا یا رد کرتا ہوں یا میں راضی نہیں یا اس کے مثل اور الفاظ ، تو رد ہو گیا، اب دختر کی رضامندی و ناراضی کا بھی اعتبار نہیں کہ سرے سے نکاح باقی ہی نہ رہا، اور اگر ابتداءً باجازت ولی واقع ہوا یا تزویج مادر کے بعد ولی نے اجازت دے دی تھی مثلاً کہا بہتر ہوا یا میں نے پسند کیا یا مجھے منظور یا ان کے مانند اور کلمات، تو نکاح نافذ ہو گیا۔

فی الدر المختار لو زوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ ۱۔ | درمختار میں ہے اگر بعید ولی نے اقرب ولی کے ہوتے ہوئے نکاح کر دیا تو یہ نکاح ولی اقرب کی اجازت پر موقوف ہو گا۔ (ت)

پھر بھی ازانجا کہ مزوج غیر اَب وجد اور دختر دوشیزہ ہے اسے اتنا اختیار دیا جائے گا کہ پہلے سے نکاح کی خبر رکھتی ہو تو اپنے بالغ ہوتے ہی اور بعد بلوغ اطلاع پائے تو خبر سنتے ہی فوراً بے وقفہ کہہ سکتی ہے کہ میں اس نکاح سے راضی نہیں یا میں نے اسے فسخ کر دیا یا مجھے ناپسند ہے یا اس کے مثل اور کوئی امر کہ دلیل ناراضی ہو۔ پس اگر بلوغ یا اطلاع پر فی الفور اس نے یہ ناراضی ظاہر کی تو اسے اجازت دی جائے گی کہ قاضی کے حضور دعویٰ کر کے فسخ کرالے، اور اگر ایک لمحہ بھی بے عذر سکوت کیا یا کسی دوسرے کام یا کلام میں مشغول ہوئی تو اب وہ نکاح لازم ہو گیا، اس کے بعد اظہار ناراضی کچھ بکارآمد نہیں۔ درمختار میں ہے:

وان کان من کفو وبمهر المثل صح ولکن لهما ای لصغیر وصغیرة خیار الفسخ بالبلوغ اوالعلم بالنکاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خیار البکر بالسکوت لو مختارة عالمة بالنکاح ولا یمتد الی آخر المجلس ۲ (ملخصاً) | اگر کفو اور مہر مثل کے ساتھ نکاح کیا تو صحیح ہے لیکن نابالغ لڑکے اور لڑکی کو بلوغ پر یا بلوغ کے بعد جب علم نکاح ہو فسخ کا اختیار ہو گا لیکن فسخ قاضی کے حکم سے ہو گا۔ اگر باکرہ بالغہ اپنے نکاح کا علم ہونے پر خاموش رہی تو اس کو فسخ کا اختیار نہ رہے گا اور نکاح کے علم والی مجلس کے آخر تک یہ اختیار باقی نہ رہے گا (ملخصاً)۔ (ت)

اور اگر وہ نکاح نہ ابتداءً اجازت ولی سے ہوا نہ زمانہ نابالغی دختر میں ولی نے اجازت دی نہ رد کیا بلکہ اسے خبر

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۴ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۲ - ۹۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

...or she remained completely silent after receiving the news until she reached adulthood, then it [the marriage] became dependent on the girl's own permission. So, if before this expression of displeasure, after reaching puberty, she said a word of permission or if her consent was proven through any of her actions or circumstances indicatively—for example, she went to her husband upon becoming an adult or engaged in any marital behavior with him, or someone called her 'so-and-so's bride' and she responded—then the marriage became binding. Now, mere displeasure is useless. And if until now, consent through word, deed, or circumstance had not been established when she expressed such displeasure that implied rejection of the marriage, then undoubtedly the marriage became void.

In Fath al-Qadir, it is stated that the validity of the marriage of a minor will depend on the permission of the guardian (wali). And if he reaches adulthood himself before being informed by the guardian and he himself validates his marriage, it will be valid and effective because it was pending permission, and it will not become effective merely by reaching puberty without permission. (T)

In Fath al-Qadir: (Arabic text) "في فتح القدير يتوقف على اجازة الولى في حالة الصغر فلو بلغ قبل ان يخبره الولى فاجازه بنفسه نفذ لانها كانت متوقفة ولا ينفذ بمجرد بلوغه۔"

The inquirer should understand all these scenarios and act upon the rule applicable to the actual situation. And Allah Almighty knows best.

Problem 315: From Raipur, Beypur area, Hindun post office, sent by Munshi Muhammad Farzand Hasan Sahib, 20 Dhu al-Qi'dah 1309 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: A prostitute from a Muslim community, whose age is approximately 28 or 29 years, repented from adultery and married a noble Muslim. Now her madam (naika) says, "I am the guardian (wali); the marriage is not valid without my permission." And Zaid says that the prostitute herself is an autonomous adult; there is no need for your permission. A guardian is for guidance towards good deeds, not for adultery. Even a guardian is not authorized to make a minor commit a bad deed. Such guardianship is Sharia-wise void. A madam can in no way be a guardian. The slave-girl she bought with illicit earnings for adultery cannot be a slave-girl according to Sharia. Rather, anyone who claims such guardianship according to Sharia is deserving of punishment. So, is Zaid's statement correct or the madam's? Explain and be rewarded.

Answer: Zaid's statement is correct, and the madam's mere claim is void and repulsive. In India, those God-fearing needy people who sell their children during famine etc.—Sharia-wise, this sale is not permissible in any situation; rather, it is void, purely futile, and meaningless. She is by no means a slave-girl...

---

[1] Fath al-Qadir, Chapter on Agency in Marriage, Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, 3/198.

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...या खबर मिलने के बाद पूरी तरह खामोश रही यहाँ तक कि लड़की बालिग हो गई, तो अब वह खुद लड़की की इजाज़त पर मुनहसिर (निर्भर) हो गया। पस, अगर लड़की ने इस नाखुशी के इज़हार से पहले बालिग होने के बाद इजाज़त का कोई शब्द कहा या इशारे से उसके किसी काम या हालत से रज़ामंदी साबित हुई थी, मसलन बालिग होने पर शौहर के पास गई या उससे कोई दाम्पत्य व्यवहार किया या किसी ने 'फलां की दुल्हन' कहकर पुकारा और उसने जवाब दिया, तो निकाह लाज़िम हो गया, अब सिर्फ नाखुशी बेकार है। और अगर अभी तक ज़बान, काम या हालत से रज़ा साबित नहीं हो पाई थी कि उसने ऐसी नाखुशी ज़ाहिर की जिससे निकाह का रद्द होना समझा गया, तो बेशक निकाह बातिल हो गया।

फत्हुल क़दीर में है: नाबालिग के निकाह का जाइज़ होना वली की इजाज़त पर मुवक्कूफ (निर्भर) होगा, और अगर वली की तरफ से सूचना मिलने से पहले वह खुद बालिग हो गया और उसने अपने निकाह को जाइज़ कर दिया तो वह जाइज़ और नाफ़िज़ हो जाएगा क्योंकि यह इजाज़त पर मुवक्कूफ था और इजाज़त के बिना केवल बालिग होने से नाफ़िज़ नहीं होगा। (त)

فتح القدیر: (अरबी मूल) "في فتح القدير يتوقف على اجازة الولى في حالة الصغر فلو بلغ قبل ان يخبره الولى فاجازه بنفسه نفذ لانها كانت متوقفة ولا ينفذ بمجرد بلوغه۔"

मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता) इन सभी सूरतों को समझकर जो सूरत-ए-वाक़िया (वास्तविक स्थिति) हो उसके हुक्म पर अमल करे, वल्लाहू तआला आलम।

मसला 315: रायपुर इलाक़ा बेपुर डाकखाना हिंडौन से, प्रेषक मुंशी मोहम्मद फ़र्ज़ंद हसन साहब, 20 ज़िल-क़ादा 1309 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक तवायफ़ जो मुसलमान कौम से है और जिसकी उम्र लगभग 28 या 29 साल होगी, उसने ज़िना से तौबा करके एक शरीफ़ मुसलमान से अपना निकाह कर लिया। अब उसकी नायिका कहती है कि मैं वली हूँ, मेरी इजाज़त के बिना निकाह जाइज़ नहीं। और ज़ैद कहता है कि तवायफ़ खुद मुख़्तार (स्वतंत्र) बालिग़ा है, तेरी इजाज़त की ज़रूरत नहीं। वली नेक काम की हिदायत के लिए होता है, ज़िना के लिए नहीं। नाबालिग को वली भी बुरा काम कराने का अधिकार नहीं रखता, ऐसी विलायत शरअन बातिल है। नायिका किसी भी तरह वली नहीं हो सकती। जिस लौंडी को उसने हराम की कमाई से हरामकारी के

लिए खरीदा, वह शरअन लौंडी नहीं हो सकती, बल्कि जो शरअन ऐसी विलायत का दावा करे वह सज़ा के क़ाबिल है। तो क्या ज़ैद का कहना सही है या नायिका का? बयान फ़रमाएं ताकि सवाब पाएं।

जवाब: ज़ैद का कहना सही है और नायिका का महज़ दावा बातिल और क़बीह है। हिन्दुस्तान में जो कुछ ख़ुदा-तरस मोहताज अपनी औलाद कहत (अकाल) वग़ैरह में बेच डालते हैं, शरई तौर पर यह बिक्री किसी भी हाल में जाइज़ नहीं है बल्कि बातिल और महज़ बेकार और बे-मानी है। वह हरगिज़ लौंडी...

---

[1] फत्हुल क़दीर, फ़स्ल फ़िल वकाला बिल निकाह, मकतबा नूरया रज़विया सुक्कुर, 198/3.

ہی نہ ہوئی یا بعد خبر سکوت محض کیا یہاں تک کہ دختر بالغہ ہوئی تو اب وہ خود اجازت دختر پر موقوف ہوا، پس اگر دختر نے اس اظہار ناراضی سے پہلے بعد بلوغ کوئی کلمہ اجازت کہا یا دلالۃً اس کے کسی فعل یا حال سے رضامندی ثابت ہوئی تھی، مثلاً بالغ ہونے پر شوہر کے پاس گئی یا اس سے کوئی برتاؤ زن و شوئی کا کیا یا کسی نے فلان کی دلہن کہہ کر پکارا اس نے جواب دیا تو نکاح لازم ہو گیا اب ناراضی محض بے سود ہے اور اگر ہنوز قول یا فعل یا حال سے رضا ثابت نہ ہونے پائی تھی کہ اس نے ایسی ناراضی ظاہر کی جس سے رد نکاح مفہوم ہوا تو بے شک نکاح باطل ہو گیا۔

فتح القدیر میں ہے نابالغ کے نکاح کا جواز ولی کی اجازت پر موقوف ہوگا، اور اگر ولی کی طرف سے اطلاع سے قبل خود بالغ ہوگیا اور اس نے اپنے نکاح کو جائز کردیا تو جائز اور نافذ ہو جائے گا کیونکہ یہ اجازت پر موقوف تھا اور اجازت کے بغیر محض بلوغ سے نافذ نہ ہوگا۔ (ت)

في فتح القدیر یتوقف علی اجازة الولی في حالة الصغر فلو بلغ قبل ان یخبره الولی فاجازه بنفسه نفذ لانها کانت متوقفة ولا ینفذ بمجرد بلوغه۔[1]

مستفتی ان سب صورتوں کو سمجھ کر جو صورت واقعہ ہو اس کے حکم پر عمل کرے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۱۵: از رائے پور علاقہ بے پور ڈاک خانہ ہنڈون مرسلہ منشی محمد فرزند حسن صاحب ۲۰ ذی قعدہ ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک طوائف قوم مسلمان نے جس کی عمر تخمیناً ۲۸ یا ۲۹ سال ہوگی زناکاری سے توبہ کرکے ایک شریف مسلمان سے اپنا

نکاح کرلیا، اب اس کی نائکہ کہتی ہے کہ میں ولی ہوں بے میری اجازت کے نکاح جائز نہیں، اور زید کہتا ہے کہ طوائف خود فعل مختار بالغہ ہے تیری اجازت کی حاجت نہیں، اور ولی واسطے ہدایت کار نیک کے ہوتا ہے زنا کے لیے ولی نہیں، نابالغ کو ولی بھی فعل بد کرانے کا مختار نہیں، ایسی ولایت شرعاً باطل ہے نائکہ کسی طرح ولی نہیں ہوسکتی، جو لونڈی اس نے حرام کی کمائی سے حرام کاری کے لیے خریدی وہ شرعاً لونڈی نہیں ہوسکتی بلکہ جو شرعاً ایسی ولایت کادعویٰ کرے وہ قابل سزا ہے۔ پس صحیح قول زید کا ہے یا نائکہ کا؟ بینوا توجروا

الجواب: قول زید کا صحیح ہے اور نائکہ کا محض دعویٰ باطل و فتیح۔ ہندوستان میں جو بعض خدا ترس محتاج اپنی اولاد قحط وغیرہ میں بیچ ڈالتے ہیں شرعاً یہ بیع کسی حالت میں جائز نہیں بلکہ باطل و محض مہمل و بے معنی ہے وہ ہر گز لونڈی

---

[1] فتح القدیر فصل فی الوکالۃ بالنکاح مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۸/۳

Fatawa Rizvia Volume 11

...cannot become a slave, nor can the buyer become their owner, nor does anyone have any right over them in any way because the sale of a free person (Hur) is purely void. It is mentioned in 'Al-Hidayah':

The sale of a carcass, blood, and a free person is void because these are not considered property (mal), so they cannot be the subject of a sale. (T)	*Bay' al-maytah wa al-dam wa al-hurr baatil li'annaha laysat amwaalan fala takunu mahullan lil-bay'*[1]

It is mentioned in 'Al-Hidayah':

A void (baatil) sale does not grant the right of ownership or disposal. (T)	*Al-baatil la yufidu milk al-tasarruf*[2]

And since the woman is an adult, she has authority over herself. The marriage (nikah) she entered into with a noble Muslim after repenting from adultery by divine guidance is absolutely valid and binding, and it cannot be revoked by anyone's opposition. It is stated in 'Fatawa Alamgiri':

The marriage of a free, sane, adult woman without a guardian (wali) is effective. (T)	*Nafadha nikah hurrah mukallafah bila wali*[3]

In the same [source] it is written:

Shaykh al-Islam Ata bin Hamza was asked about an adult virgin Shafi'i woman who married herself to a Hanafi man without her father's permission, and the father was not pleased and rejected it. Is this marriage valid? He replied: Yes, it is valid. (T)	*Su'ila Shaykh al-Islam 'Ata bin Hamzah 'an imra'ah Shafi'iyyah bikr baalighah zawwajat nafsaha min Hanafi bighayri idhni abiha wa al-abu la yarda wa raddahu hal yasihhu hadha al-nikah qala na'am*[4]

When such a ruling exists even regarding the father, what attention can be given to the claim of a woman? This is merely improper ignorance. And Allah Almighty knows best.

Problem 316: From Pilibhit, Malik Ahmad Khan neighborhood, sent by Hafiz Bashir Ahmad Khan Sahib, 15 Rajab 1310 AH. Respected Sir! It is submitted that a girl was married during her childhood under her father's guardianship; now that girl...

[1] Al-Hidayah, Chapter on Invalid Sales, Yusufi Press Lucknow, 3/53 [2] Al-Hidayah, Chapter on Invalid Sales, Yusufi Press Lucknow, 3/53 [3] Fatawa Hindiyyah, Fourth Chapter on Guardians (Al-Awliya), Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/287 [4] Fatawa Hindiyyah, Fourth Chapter on Guardians (Al-Awliya), Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/287

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...गुलाम नहीं हो सकती, न ही खरीदार उनका मालिक हो सकता है और न ही कोई किसी भी तरह से उन पर कोई अधिकार रखता है क्योंकि एक स्वतंत्र व्यक्ति (हुर) की बिक्री पूरी तरह से शून्य (बातिल) है। 'अल-हिदाया' में उल्लेख है:

मृत पशु (मुरदार), रक्त और स्वतंत्र व्यक्ति की खरीद-बिक्री शून्य है क्योंकि ये चीजें संपत्ति (माल) नहीं हैं, इसलिए ये बिक्री का विषय नहीं हो सकतीं। (त)	बय अल-मयता व अद-दम व अल-हुर्र बातिल लियन्नहा लयसत अमवालन फला तकूनु महल्लन लिल-बय[1]

'अल-हिदाया' में है:

शून्य (बातिल) बिक्री स्वामित्व या निपटान का अधिकार प्रदान नहीं करती है। (त)	अल-बातिल ला युफीदु मिल्क अत-तसर्रुफ़[2]

और चूंकि वह महिला वयस्क है, इसलिए उसे स्वयं पर अधिकार है। वह निकाह जो उसने दैवीय मार्गदर्शन से व्यभिचार से तौबा करने के बाद एक कुलीन मुस्लिम के साथ किया है, पूर्णतः मान्य और बाध्यकारी है, और इसे किसी के विरोध से रद्द नहीं किया जा सकता है। 'फ़तावा आलमगीरी' में कहा गया है:

एक स्वतंत्र, समझदार, वयस्क महिला का बिना अभिभावक (वली) के निकाह प्रभावी होता है। (त)	नफ़ज़ा निकाह हुर्रा मुकल्लफ़ा बिला वली[3]

उसी में लिखा है:

शेख अल-इस्लाम अता बिन हमजा से एक वयस्क कुंवारी शाफई महिला के बारे में पूछा गया जिसने अपने पिता की अनुमति के बिना एक हनफी पुरुष से निकाह कर लिया, और पिता प्रसन्न नहीं थे और उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया। क्या यह निकाह मान्य है? उन्होंने उत्तर दिया: हाँ, यह मान्य है। (त)	सुइला शेख अल-इस्लाम अता बिन हमज़ह अन इमराह शाफ़िय्यह बिक्र बालिग़ह ज़व्वजत नफ़सहा मिन हनफ़ी बिग़ैरि इज़्नि अबीहा व अल-अबू ला यर्ज़ा व रद-दहु हल यसिह-हु हाज़ा अन-निकाह क़ाला न'अम[4]

जब पिता के संबंध में भी ऐसा हुक्म है, तो निकाह करने वाली के दावे पर क्या ध्यान दिया जा सकता है? यह केवल अनुचित अज्ञानता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला 316: पीलीभीत, मोहल्ला मलिक अहमद खां से, प्रेषक हाफिज बशीर अहमद खां साहब, 15 रजब 1310 हिजरी। जनाब आली! गुजारिश यह है कि एक लड़की का निकाह बचपन में पिता के संरक्षण (विलायत) में हुआ था, अब वह लड़की...

---

[1] अल-हिदाया, बाब अल-बय अल-फ़ासिद, युसुफी प्रेस लखनऊ, 3/53 [2] अल-हिदाया, बाब अल-बय अल-फ़ासिद, युसुफी प्रेस लखनऊ, 3/53 [3] फ़तावा हिन्दिया, चौथा अध्याय अभिभावकों (अल-औलिया) पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/287 [4] फ़तावा हिन्दिया, चौथा अध्याय अभिभावकों (अल-औलिया) पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/287

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

غلام نہیں ہو سکتی، نہ خریدنے والا ان کا مالک ہو سکتا ہے نہ کسی وجہ سے استحقاق ان میں رکھتا ہے کہ حُر کی بیع محض باطل ہے۔ ہدایتہ میں ہے:

مردار، خون اور آزاد کی خرید و فروخت باطل ہے کیونکہ یہ چیزیں مال نہیں ہیں اس لئے یہ بیع کا محل نہیں۔ (ت) بیع المیتة والدم والحر باطل لانها لیست اموالا فلا تکون محلا للبیع[1]

ہدایہ میں ہے :

بیع باطل ملک تصرف کا فائدہ نہیں دیتی۔ (ت) الباطل لایفید ملك التصرف[2]

اور جبکہ وہ عورت بالغہ ہے تو اپنی جان کا آپ اختیار رکھتی ہے، نکاح کہ اس نے بہ ہدایت الٰہی زنا سے تائب ہو کر ایک شریف مسلمان سے کرلیا قطعاً صحیح و لازم ہے جو کسی کے روکے رد نہیں ہو سکتا، فتاوی عالمگیری میں ہے:

حرہ عاقلہ بالغہ کا ولی کے بغیر اپنا نکاح صحیح ہے۔ (ت) نفذ نکاح حرة مکلفة بلا ولی[3]

اسی میں ہے:

شیخ الاسلام عطاء بن حمزہ سے ایک باکرہ بالغہ شافعی عورت کے بارے میں سوال کیا گیا کہ اس نے اپنا نکاح بغیر ولی ایک حنفی مرد سے خود کیا، والد کی اجازت اور مرضی نہ تھی، اور والد نے اس کے نکاح کو رد کر دیا، تو یہ نکاح صحیح ہو گا؟ تو انہوں نے جواب فرمایا: ہاں صحیح ہے۔ (ت) سئل شیخ الاسلام عطاء بن حمزة عن امرأة شافعیة بکر بالغة زوجت نفسها من حنفی بغیر اذن ابیها والاب لایرضی ورده هل یصح هذا النکاح قال نعم[4]

جب خود باپ کی نسبت یہ حکم ہے تو نائکہ کا دعویٰ کیا قابل التفات ہو سکتا ہے، یہ محض جہل ناسزا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۱۶: از پیلی بھیت محلہ ملک احمد خاں مرسلہ حافظ بشیر احمد خاں صاحب ۱۵ رجب ۱۳۱۰ھ جناب عالی! گزارش یہ ہے کہ ایک لڑکی کا نکاح نابالغی میں باپ کی ولایت سے ہوا اب وہ لڑکی

---

[1] ہدایتہ باب البیع الفاسد مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/ ۵۳ [2] ہدایتہ باب البیع الفاسد مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/ ۵۳ [3] فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۷ [4] فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۷

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

A girl has reached puberty and she dislikes her father's act; is the marriage under the father's guardianship valid or invalid? Only.

The Answer: In the queried case, the correct answer is that if a father has married off his minor daughter to someone who possesses no such quality in terms of 'Kufu' (equality) – i.e., in religion, lineage, profession, wealth, etc. – such that the marriage would cause shame, nor is there a gross deficiency in the daughter's 'Mahr-e-Mithl' (customary dowry), then that marriage is absolutely valid, effective, and binding, even if she dislikes it. This remains true even if the father was previously known for exercising bad judgment, because since his good judgment is evident in this specific marriage, his previous bad judgment cannot hinder its validity. Likewise, if the father was not intoxicated at the time of marriage, nor had he previously become known for bad judgment by marrying off any of his minor wards to a non-equal (non-Kufu) or with a gross deficiency in customary dowry, then this marriage is also valid and binding, even if it were to a non-equal or with a gross deficiency in dowry. However, if both conditions coincide—meaning there is no compatibility ('Kafa'at') in the stated sense, or there is a gross deficiency in dowry, and at the time of marriage he was intoxicated or was already known for bad judgment—then in this case, the minor's marriage, even if under paternal guardianship, is not valid at all. In Durr-al-Mukhtar, after the aforementioned text, it says:

Arabic	Urdu Translation
And similarly, if he was intoxicated and married her off to a wicked person, or a villain, or a poor person, or one with a lowly profession, the manifestation of his bad judgment means that his presumed compassion is not counterposed. Bahr.[1]	Likewise, if a guardian, while intoxicated, marries her to a sinner, a wicked person, a pauper, or someone with a disgraceful occupation, because in this case, the guardian's misuse of his discretion has been proven, his compassion, which is only presumptive, cannot stand against this. Bahr (T)

It is in Radd al-Muhtar:

Arabic	Urdu Translation
I say, the reasoning implies that if an intoxicated person or one known for bad	I say that this passage requires detail: that if an intoxicated person or one

Arabic	Urdu Translation
judgment marries her off to an equal (Kufu) with a customary dowry (Mahr-e-Mithl), it is valid due to the absence of pure harm (until his words), and this [harm] is absent in the case of an intoxicated person or one with bad judgment if they acted contrary [to their usual habit] due to the manifestation of the absence of [good] judgment and bad choice [in other cases].	famous for poor judgment marries a girl into an equal status (Kufu) and with a customary dowry (Mahr-e-Mithl), then this marriage is valid because there is no harm to the girl. (Their discourse concludes here) that in the case of absence of harm, for that intoxicated or ill-judgmental person...

[1] Durr-al-Mukhtar, Bab al-Wali, Mujtabai Press Delhi, 1/192

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

बालिग़ हुई वह अपने बाप के फ़ेल को नापसंद करती है, बाप की विलायत से निकाह जायज़ है या ना-जायज़ है? फ़क़त।

अल-जवाब: सूरत-ए-मसूला में हक़ जवाब यह है कि बाप ने अपनी दुख़्तर-ए-नाबालिग़ा का निकाह जिस शख़्स से किया अगर वो कुफ़ू यानी दीन व नसब व पेशा व माल वग़ैरह में कोई अम्र ऐसा नहीं रखता कि उस से तज़वीज बाइस-ए-आर हो न दुख़्तर के महर-ए-मिसल में कमी-ए-फ़ाहिश की हो तो वह निकाह मुतलक़न सही नाफ़िज़ व लाज़िम है अगरचे नापसंद करे अगरचे बाप इस से पहले मारूफ़ ब-सू-ए-इख़्तियार हो कि इस निकाह में उस का हुस्न-ए-इख़्तियार ज़ाहिर तो पहले के सू-ए-इख़्तियार इस की सेहत में मुख़िल नहीं हो सकते यूँ ही अगर बाप वक़्त-ए-तज़वीज नशा में न था न उस से पेश्तर अपनी किसी क़ासिरा का निकाह ग़ैर कुफ़ू से अगरचे महर-ए-मिसल में कमी-ए-फ़ाहिश पर करके मारूफ़ ब-सू-ए-इख़्तियार हो चुका तो भी यह निकाह सही व लाज़िम अगरचे ग़ैर कुफ़ू से हुआ अगरचे महर-ए-मिसल में कमी-ए-फ़ाहिश की हो, हाँ अगर दोनों अम्र मुज्तमा हैं यानी इस निकाह में कफ़ाअत ब-माना मज़कूर नहीं या महर में कमी-ए-फ़ाहिश है और हंगाम-ए-तज़वीज नशा में या पहले से मारूफ़ ब-सू-ए-इख़्तियार था तो इस सूरत में नाबालिग़ा का निकाह अगरचे ब-विलायत-ए-पदरी है असलन सही नहीं। दर-ए-मुख़्तार में बा'द इबारत-ए-मज़कूरा है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
وكذا لو كان سكران فزوجها من فاسق او شرير او فقير او ذى حرفة دنية الظهور سوء اختياره فلاتعارضه شفقته المظنونة، بحر 1.	और ऐसे ही अगर वली ने नशे की हालत में फ़ासिक़ या शरीर या फ़क़ीर से या बाइस-ए-हतक काम वाले से निकाह कर दे क्यूंकि इस सूरत में इस वली का अपने इख़्तियार को ग़लत इस्तेमाल करना साबित हो चुका है इस के मुक़ाबले में इस की शफ़क़त जो कि ज़न्नी है मुआरिज़ नहीं बन सकती। बहर (त)

रद अल-मुहतार में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
قلت ويقتضى التعليل ان السكران او المعروف بسوء الاختيار لوزوجها من كفؤ بمهر المثل صح لعدم الضرر	मैं कहता हूँ कि यह इबारत तफ़सील को चाहती है कि अगर नशे वाला या ग़लत इख़्तियार की शोहरत वाला लड़की का निकाह कुफ़ू में और महर-ए-मिसल के साथ

अरबी	उर्दू अनुवाद
المحض (الى قوله) وهذا مفقود فى السكران وسيئ الاختيار اذا خالف لظهور عدم رايه وسوء اختياره	करे तो यह निकाह सही है क्यूंकि इस में लड़की के लिए कोई ज़रर नहीं है (इन का कलाम यहाँ तक हुआ) कि अदम-ए-ज़रर की सूरत में उस नशे वाले और ग़लत इख़्तियार वाले...

[1] दर-ए-मुख़्तार बाब अल-वली मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/192

بالغ ہوئی وہ اپنے باپ کے فعل کو ناپسند کرتی ہے، باپ کی ولایت سے نکاح جائز ہے یا نا جائز ہے؟ فقط

الجواب: صورت مسئولہ میں حق جواب یہ ہے کہ باپ نے اپنی دخترِ نابالغہ کا نکاح جس شخص سے کیا اگر وہ کفو یعنی دین و نسب و پیشہ و مال وغیرہ میں کوئی امر ایسا نہیں رکھتا کہ اس سے تزویج باعث عار ہو نہ دختر کے مہر مثل میں کمی فاحش کی ہو تو وہ نکاح مطلقاً صحیح نافذ و لازم ہے اگرچہ ناپسند کرے اگرچہ باپ اس سے پہلے معروف بسوئے اختیار ہو کہ اس نکاح میں اس کا حسنِ اختیار ظاہر تو پہلے کے سوء اختیار اس کی صحت میں مخل نہیں ہو سکتے یوں ہی اگر باپ وقتِ تزویج نشہ میں نہ تھا نہ اس سے پیشتر اپنی کسی قاصرہ کا نکاح غیر کفو سے اگرچہ مہر مثل میں کمی فاحش پر کرکے معروف بسوء اختیار ہوچکا تو بھی یہ نکاح صحیح ولازم اگرچہ غیر کفو سے ہوا اگرچہ مہر مثل میں کمی فاحش کی ہو، ہاں اگر دونوں امر مجتمع ہیں یعنی اس نکاح میں کفاءت بمعنی مذکور نہیں یا مہر میں کمی فاحش ہے اور ہنگامِ تزویج نشہ میں یا پہلے سے معروف بسوء اختیار تھا تو اس صورت میں نابالغہ کا نکاح اگرچہ بولایتِ پدری ہے اصلاً صحیح نہیں۔ درمختار میں بعدِ عبارتِ مذکورہ ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
وکذا لو کان سکران فزوجھا من فاسق او شریر او فقیر او ذی حرفة دنیة الظھور سوء اختیارہ	اور ایسے ہی اگر ولی نے نشہ کی حالت میں فاسق یا شریر یا فقیر سے یا باعثِ ہتک کام والے سے نکاح کر دے کیونکہ اس صورت میں اس ولی کا اپنے اختیار کو غلط استعمال کرنا ثابت

عربی متن	اردو ترجمہ
فلاتعارضه شفقته المظنونة، بحر 1-	ہوچکا ہے اس کے مقابلہ میں اس کی شفقت جو کہ ظنی ہے معارض نہیں بن سکتی۔ بحر (ت)

ردالمحتار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
قلت ويقتضى التعليل ان السكران او المعروف بسوء الاختيار لوزوجها من كفؤ بمهر المثل صح لعدم الضرر المحض (الى قوله) وهذا مفقود فى السكران وسيئ الاختيار اذا خالف لظهور عدم رايه وسوء اختياره	میں کہتا ہوں کہ یہ عبارت تفصیل کو چاہتی ہے کہ اگر نشے والا یا غلط اختیار کی شہرت والا لڑکی کا نکاح کفو میں اور مہر مثل کے ساتھ کرے تو یہ نکاح صحیح ہے کیونکہ اس میں لڑکی کے لیے کوئی ضرر نہیں ہے (ان کا کلام یہاں تک ہوا) کہ عدم ضرر کی صورت میں اس نشے والے اور غلط اختیار والے

[1] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی 1/192

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Arabic Quote] Ends here. - And Allah, Glorified and Exalted, knows best. Those who married into a non-compatible (ghair-kufu) family are not found [guilty/responsible] because the opinion of the intoxicated person was not evident, and the wrong choice of the other in this matter has already become clear. Ends. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 317: From Pilibhit similarly. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shariah say regarding this issue: Zaid married off his minor daughter, Hindah, to 'Amr through his guardianship while the conduct and habits of the said 'Amr were correct. When Hindah reached puberty herself at the time of her departure (to her husband's home), she found her husband 'Amr involved in religiously forbidden acts and avoiding religious commands. She considered her father Zaid's act as loathsome and deemed this marriage invalid. In the described situation, does Hindah's marriage contract with 'Amr remain intact or is it annulled? Explain and you will be rewarded.

The Answer: When at the time of marriage there were no such bad habits in 'Amr, but he adopted these things later, then the lack of compatibility (kifayat) arose after the marriage. Such lack of compatibility does not at all hinder the validity of the marriage, especially in a marriage performed by the father, as knowledge of the future is beyond human power. "Allah does not burden a soul beyond its capacity" (Quran 2:286). (Allah does not give anyone trouble more than their capacity. T) Therefore, on this basis, Hindah's objection to the marriage is not at all maintainable. It is stated in Durr-e-Mukhtar: [Arabic Quote: Compatibility is considered at the beginning of the contract, so its loss afterwards does not harm it.] Compatibility is considered at the start of the marriage, so a subsequent loss of compatibility is not detrimental. And Allah Almighty knows best. (T) Afterwards 3. And Allah Almighty knows best.

Problem 318: 23 Rajab 1310 AH If a father marries off his adult daughter to a compatible person, is her permission necessary or not? If not, is it recommended (mustahabb), sunnah, permissible (mubah), or is there no need for it?

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305.
2. Al-Quran, 2/286.

3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Compatibility, Mujtabai Press, Delhi, 1/195.

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

[अरबी उद्धरण] यहाँ समाप्त। - और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। जिन्होंने गैर-कुफ़ू (अयोग्य) में निकाह किया है, वे नहीं पाए जाते क्योंकि नशे में धुत्त व्यक्ति की राय स्पष्ट नहीं थी, और इस मामले में दूसरे का गलत चुनाव पहले ही स्पष्ट हो चुका है। समाप्त। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३१७: पीलीभीत से ही। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी हिंदा का निकाह अपनी विलायत (अभिभावकत्व) से अम्र से उस समय कर दिया जब अम्र के आचरण और तौर-तरीके सही थे। जब हिंदा खुद निकाह की विदाई के समय तक बालिग हो गई, तो उसने अपने पति अम्र को शरीयत के निषिद्ध कार्यों में शामिल और अनिवार्य कार्यों से बचते हुए पाया। उसने अपने पिता ज़ैद के इस कार्य को बुरा समझा और इस निकाह को नाजायज माना। तो पूछी गई स्थिति में क्या हिंदा का अम्र से निकाह बरकरार रहा या रद्द हो गया? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: जब निकाह के समय अम्र में इन बुरे व्यवहारों में से कोई बात नहीं थी, बल्कि ये बातें उसने बाद में अपनाईं, तो निकाह के बाद अयोग्यता (कफ़ायत की कमी) पैदा हुई। और ऐसी अयोग्यता निकाह की वैधता में बिल्कुल भी बाधक नहीं है, विशेष रूप से पिता द्वारा किए गए निकाह में क्योंकि भविष्य का ज्ञान बंदे की शक्ति से बाहर है। "अल्लाह किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालता" (कुरान २:२८६)। (अल्लाह तआला किसी को उसकी सामर्थ्य से अधिक कष्ट नहीं देता। त) इसलिए, इस आधार पर हिंदा का इस निकाह को जायज़ न मानना बिल्कुल भी सुनने योग्य नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है: [अरबी उद्धरण: निकाह के अनुबंध के समय कुफ़ू (बराबरी/योग्यता) का विचार किया जाता है, इसलिए बाद में इसका खत्म होना नुकसानदेह नहीं है।] निकाह की शुरुआत के समय कुफ़ू का विचार होता है, अतः बाद में कुफ़ू का खत्म होना नुकसानदेह नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) उसके बाद ३। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३१८: २३ रजब १३१० हिजरी क्या एक बालिग लड़की का निकाह उसका पिता खुद किसी कुफ़ू (योग्य व्यक्ति) से कर दे तो लड़की की अनुमति आवश्यक है या नहीं? यदि नहीं, तो क्या यह मुस्तहब (पसंदीदा) और सुन्नत है या मुबाह (जायज) है या इसकी कोई आवश्यकता नहीं है?

1. रद अल-मुहतार, विलायत का अध्याय, दार इहया अल-तुरात अल-अरबी, बेरुत, २/३०५।

2. कुरान, २/२८६।

3. दुर्रे मुख्तार, कुफायत का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १/१९५।

पृष्ठ ५४६ / ७३९

فتاوٰی رضویہ ، جلد یاز دہم

في ذلك انتهى ۱ - واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ جنہوں نے غیر کفو میں نکاح کیا ہے میں نہیں پائی جاتی کیونکہ نشے والے کی رائے ظاہر نہ ہوئی اور دوسرے کا غلط اختیار اس معاملہ میں ظاہر ہوچکا ہے انتہی۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۱۷: از پیلی بھیت ایضا کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر ہندہ نابالغہ کا نکاح عمرو سے اس حالت میں کہ اوضاع واطوار عمرو موصوف کے درست تھے اپنی ولایت سے کر دیا جب ہندہ مذکورہ رخصت کے زمانہ تک خود بلوغ کو پہنچی تو اس نے اپنے شوہر عمرو کو محرمات و ممنوعات شرعیہ کا مرتکب اور مامورات و مشروعات کا محترز پاکر اپنے باپ زید کے فعل کو قبیح سمجھا اس تزویج کو نا جائز رکھا، پس صورت مسئولہ میں ہندہ کا عمرو سے عقدِ نکاح منعقد رہا یا فسخ ہوا؟ بینوا توجروا

الجواب: جب ہنگامِ تزویج عمرو میں کوئی امر ان بداطواریوں سے نہ تھا بلکہ یہ باتیں اس نے بعد میں اختیار کیں تو عدمِ کفایت بعدِ نکاح حادث ہوئی اور ایسی عدمِ کفایت اصلاً مانعِ صحتِ نکاح نہیں خصوصاً تزویجِ پدر میں کہ آئندہ کا علم بندہ کی قدرت سے باہر ہے لا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۲ (اللہ تعالٰی کسی کو وسعت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتا۔ ت) پس اس بنا پر ہندہ کا اس نکاح کو جائز رکھنا اصلاً قابلِ سماعت نہیں۔ در مختار میں ہے: والکفاءۃ اعتبارھا عند ابتداء العقد فلایضر زوالھا ۳ ابتدائے نکاح کے وقت کفو کا اعتبار ہوتا ہے لہذا بعد میں کفو کا زوال مضر نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) بعدہ ۳۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۱۸: ۲۳ رجب ۱۳۱۰ھ بالغہ کا نکاح باپ خود کسی کفو سے کرے استیذانِ بالغہ ضرور ہے یا نہیں؟ نہیں تو مستحب و مسنون یا مباح یا کوئی حاجت نہیں؟

۱ رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ ۲ القرآن ۲۸۶/۲ ۳ درمختار باب الکفائۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۵/۱

Volume Eleven Fatawa Razawiya

The Answer: There is no guardianship over an adult woman; seeking her permission is necessary for the execution of the marriage. If a marriage is performed without her permission, it will not be effective but will remain pending her consent. If she permits it, it will become valid. If she rejects it, it will be annulled, as all jurists have explicitly stated. Beyond this, it is not mandatory in the sense that abstaining from it would be a sin. And Allah the Almighty knows best.

Problem 319: 15 Rabi' al-Akhir 1311 AH What do the scholars of the religion say about this issue: Hindah is a minor, her father is missing and there is no news of him, and Hindah has an adult brother who is fifteen years old. Her mother and her brother performed Hindah's marriage at the onset of her puberty. In this case, is this marriage valid or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the described case, since Hindah is a minor and her father is missing, and Hindah's adult brother performed her marriage, the marriage is valid provided that the person she was married to is her equal (Kufu). There should be nothing in his lineage, profession, or religion that would cause shame and disgrace to Hindah's guardians. Additionally, the dowry (Mahr) should not have been reduced to an extent that people would find unacceptable. If any of these conditions are met—i.e., if there is something in the person's lineage, religion, or profession that causes shame and disgrace, or if the dowry was severely reduced (for example, Hindah's 'Mahr Mithl' was ten thousand and the brother married her for five thousand)—then in these cases, the marriage would not be valid at all. These matters are explicitly stated in 'Ad-Durr al-Mukhtar' and other texts. And Allah the Almighty knows best.

Problem 320: 21 Rabi' al-Akhir 1311 AH What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say: The marriage of a minor daughter was performed by her mother with Zaid, despite the minor daughter's refusal and while her father was alive, without her father's permission. Is this marriage valid according to Sharia or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: The petitioner states that this marriage was performed by the mother and the adult brother in Bareilly, while the father is present in Kanpur and has not yet been informed of this marriage. The boy with whom the marriage took place is her equal. If this whole statement...

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

अल-जवाब (उत्तर): एक वयस्क महिला पर किसी का विलायत (संरक्षण) नहीं होता, निकाह के अमल में लाने के लिए उसकी अनुमति लेना ज़रूरी है। यदि उसकी अनुमति के बिना निकाह किया जाता है, तो वह प्रभावी नहीं होगा बल्कि वयस्क महिला की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह अनुमति देती है, तो यह जायज़ हो जाएगा। यदि वह इसे अस्वीकार करती है, तो यह रद्द हो जाएगा, जैसा कि सभी फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है। इसके अलावा यह अनिवार्य नहीं है कि इसे छोड़ने पर पाप हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३१९: १५ रबी-उल-आख़िर १३११ हिजरी दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: हिंदा एक नाबालिग है, उसका पिता लापता है और उसका कोई पता नहीं है, और हिंदा का एक वयस्क भाई है जिसकी उम्र पंद्रह वर्ष है। हिंदा की माँ और उसके भाई ने उसकी किशोरावस्था की शुरुआत में ही उसका निकाह कर दिया। इस स्थिति में यह निकाह हुआ या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): पूछी गई स्थिति में, चूँकि हिंदा नाबालिग है और उसका पिता लापता है, और हिंदा के जवान भाई ने उसका निकाह किया है, तो वह निकाह हो गया है, बशर्ते कि जिस व्यक्ति से निकाह किया गया है वह उसका कुफ़ु (बराबर का) हो। उसकी जाति, पेशे या धर्म आदि में ऐसी कोई बात न हो जिससे हिंदा के अभिभावकों को लज्जा और अपमान महसूस हो। और बशर्ते कि मेहर (दहेज) में ऐसी कमी न की गई हो जिसे लोग बर्दाश्त न कर सकें। और यदि इन बातों में से कोई एक बात हो गई, यानी उस व्यक्ति की जाति, धर्म या पेशे आदि में कोई ऐसी बात है जो लज्जा और अपमान का कारण बनती है, या मेहर में बहुत अधिक कमी की गई है (उदाहरण के लिए हिंदा का 'मेहर मिस्ल' दस हज़ार था और भाई ने पाँच हज़ार पर निकाह कर दिया), तो इन स्थितियों में वह निकाह मूल रूप से नहीं होगा। ये मसले 'दुर्रे मुख्तार' आदि में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३२०: २१ रबी-उल-आख़िर १३११ हिजरी दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती क्या कहते हैं: एक नाबालिग बेटी का निकाह, नाबालिग बेटी के इनकार और उसके पिता के जीवित होने के बावजूद, पिता की अनुमति के बिना उसकी माँ ने ज़ैद के साथ कर दिया। क्या शरीयत के अनुसार यह निकाह हुआ या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): सवाली का कहना है कि यह निकाह माँ और वयस्क भाई ने बरेली में किया है, जबकि पिता कानपुर में मौजूद है जिसे अभी तक इस निकाह की सूचना नहीं मिली है। और जिस लड़के से निकाह हुआ है वह उसका कुफ़ु है। यदि यह सारा बयान...

الجواب: بالغہ پر ولایت نہیں، استیذان نفاذِ نکاح کے لئے ضروری ہے، اگر بے استیذان نکاح کر دے گا نافذ نہ ہو گا بلکہ اجازتِ بالغہ پر موقوف رہے گا۔ اگر جائز کرے گی جائز ہو جائے گا۔ رد کرے گی رد ہو جائے گا، کما صرحوا بہ قاطبۃ (جیسا کہ تمام فقہاء نے اس کی تصریح کی ہے۔ت) باقی واجب نہیں کہ ترک پر گناہ ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۳۱۹: ۱۵ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نابالغہ کا باپ مفقود الخبر ہے اور اس کا کچھ پتا نہیں، اور ہندہ کا ایک بھائی بالغ ہے جس کی عمر پندرہ برس کی ہے اور سبزہ آغاز ہندہ کا نکاح اس کی ماں اور اس کے بھائی نے کر دیا، اس صورت میں یہ نکاح ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مسئولہ میں جبکہ ہندہ نابالغہ ہے اور اس کا باپ مفقود الخبر ہے اور ہندہ کے جوان بھائی نے اس کا نکاح کیا تو وہ نکاح ہو گیا بشرطیکہ جس شخص سے نکاح کیا ہو وہ اس کا کفو ہو اس کی قوم یا پیشہ یا مذہب وغیرہ میں کوئی بات ایسی نہ ہو کہ اس کے نکاح سے ہندہ کے اولیاء کو ننگ و عار آئے اور بشرطیکہ مہر میں ایسی کمی نہ کی گئی ہو جس کا تحمل لوگ نہ کرتے ہوں اور اگر ان باتوں میں سے ایک بات ہو گئی یعنی اس شخص کے قوم یا مذہب یا پیشہ وغیرہ میں کوئی امر موجب ننگ و عار ہو گا یا مہر میں ایسی سخت کمی کی گئی ہو مثلاً ہندہ کا مہر مثل دس ہزار تھا اور بھائی نے پانچ ہزار پر نکاح کر دیا تو ان صورتوں میں وہ نکاح اصلاً نہ ہوا، والمائل منصوص علیہا فی الدرالمختار وغیرہ (یہ مسائل درمختار وغیرہ میں منصوص ہیں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۳۲۰: ۲۱ ربیع الآخر ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین کہ نکاحِ دختر نابالغہ کا باوجود انکار دختر نابالغہ اور حیات ہوتے اس کے باپ کے، بے اجازت اس کے باپ کے، اس کی ماں نے زید کے ساتھ کر دیا، آیا شرعاً یہ نکاح ہوا یا نہیں؟ بینوا

توجروا الجواب: سائل مظہر کہ یہ نکاح مادر و برادر بالغ نے بریلی میں کیا اور اس کا باپ کان پور میں موجود ہے جسے ہنوز اس نکاح کی اطلاع نہ ہوئی، اور جس لڑکے سے نکاح ہوا وہ اس کا کفو ہے، اگر یہ سب بیان

Fatawa Razawiyya, Volume 11

In reality, it will be examined whether the marriage within 'Kufu' (equal status) could be arranged to such an extent that a letter could be written to the father and his permission sought, or whether he would not agree to it and would rather not perform the marriage at all after such a wait. If this latter scenario is assumed—the occurrence of which is very improbable, if not non-existent—that the matter would slip away while waiting for a reply, then the marriage is deemed effective, provided that there was no excessive reduction in the 'Mahr Mithl' (customary dower). If it were not so, and he would have waited for a reply—which is more likely—then this marriage is dependent upon the aforementioned permission. If he validates it, it will be valid; if he nullifies it, it will be nullified.

[Arabic Source Text] In 'Al-Durr al-Mukhtar': For the more distant guardian (Wali Ab'ad), officiating a marriage is permissible in the absence of the closer one (Wali Aqrab). This was chosen in 'Al-Multaqa' as long as the compatible suitor (Kufu) seeking marriage does not wait for his answer. Al-Baqani relied on this, and Ibn al-Kamal narrated that the Fatwa is based on it (summarized). In 'Radd al-Muhtar', it is stated in 'al-Dhakirah' that the most correct view is that if the closer guardian is at such a distance that if his presence or opinion were awaited, the compatible suitor who is present would be lost, then the absence is considered 'Munqati' (severing distance). This was indicated in 'The Book'. In 'Al-Bahr al-Mujtaba', citing from 'Al-Mabsut', it is the most correct view. In 'Al-Nihayah', most of the scholars chose it, and Ibn al-Fadl authenticated it. In 'Al-Hidayah', it is stated that it is closer to legal jurisprudence (Fiqh). In 'Al-Fath', it is stated that it most resembles jurisprudence. In the commentary of 'Al-Multaqa' from 'Al-Haqa'iq', it is the most correct of opinions and the Fatwa is upon it. This path was followed in 'Al-Ikhtiyar' and 'Al-Nuqayah', and the text of 'Al-Nahr' points to it.

[Urdu Translation on Page] In 'Al-Durr al-Mukhtar' it is stated: If the closer guardian (Wali Aqrab) is at such a distance that the person seeking the match in 'Kufu' would not wait for an answer from there, then the more distant guardian (Wali Ab'ad) is permitted to perform the marriage. Al-Baqani relied on this and Ibn al-Kamal noted that the verdict (Fatwa) is according to this (briefly). In 'Radd al-Muhtar' it is mentioned that it is said in 'Al-Dhakirah' that the most correct view is that if the closer guardian is at such a distance that the one seeking marriage would not wait for a reply or his opinion from there, then 'Ghaybat-e-Munqati'ah' (effective absence) is established. This is also hinted at in 'The Book'. In 'Al-Bahr', it is quoted from 'Al-

Mabsut' via 'Al-Mujtaba' that this is the most correct view. In 'Al-Nihayah' it is written that most scholars preferred this and Ibn al-Fadl declared it correct. In 'Al-Hidayah' it is stated that this is closer to legal reasoning (Fiqh). In 'Al-Fath' it is said to be close to the truth. In the commentary of 'Al-Multaqa' from 'Al-Haqa'iq' it is quoted that this is the most correct of all opinions and the Fatwa is based on it. It has been upheld in 'Al-Ikhtiyar' and 'Al-Nuqayah', and the words of 'Al-Nahr' also suggest this.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/194.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

वास्तव में तो यह देखा जाएगा कि क्या 'कुफ़ु' (बराबरी) में विवाह इस हद तक व्यवस्थित किया जा सकता था कि पिता को पत्र लिखा जाए और उसकी अनुमति मंगाई जाए, या वह इस पर सहमत नहीं होता बल्कि इतने इंतज़ार पर निकाह ही नहीं करता। यदि यह बाद वाली स्थिति मानी जाए—जिसके होने की संभावना बहुत ही क्षीण बल्कि नगण्य है—कि उत्तर की प्रतीक्षा में मामला हाथ से निकल जाता, तो निकाह प्रभावी हो गया, बशर्ते कि 'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) में अत्यधिक कमी न की गई हो। और यदि ऐसा नहीं था बल्कि वह उत्तर की प्रतीक्षा कर लेता—और अधिकतर ऐसा ही होता है—तो यह निकाह उपर्युक्त अनुमति पर निर्भर है। यदि वह इसे स्वीकार कर लेता है, तो यह वैध हो जाएगा; और यदि वह इसे रद्द कर देता है, तो यह रद्द हो जाएगा।

[अरबी स्रोत पाठ] 'दुर्रे मुख़्तार' में है: निकटतम वली (वली अक़रब) की अनुपस्थिति में दूर का वली (वली अब'अद) निकाह करा सकता है। 'मुल्तक़ा' में इसे तब चुना गया है जब तक कि कुफ़ु वाला रिश्ता मांगने वाला उसके उत्तर की प्रतीक्षा न करे। बाक़ानी ने इस पर भरोसा किया है और इब्न-ए-कमाल ने नक़ल किया है कि इसी पर फ़तवा है (संक्षेप में)। 'रद्दुल मुहतार' में है कि 'ज़ख़ीरा' में कहा गया है कि सही यही है कि यदि निकटतम वली ऐसी दूरी पर हो कि यदि उसकी उपस्थिति या उसकी राय प्राप्त करने की प्रतीक्षा की जाए, तो जो कुफ़ु वाला व्यक्ति उपस्थित है वह हाथ से निकल जाए, तो यह 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (विच्छेदक अनुपस्थिति) मानी जाएगी। 'किताब' में इसी की ओर इशारा है। 'बहरुल मुज्तबा' में 'मबसूत' के हवाले से उद्धृत है कि यही सबसे सही राय है। 'निहाया' में है कि अधिकांश उलेमा ने इसे पसंद किया है और इब्न-ए-फ़ज़्ल ने इसे सही क़रार दिया है। 'हिदाया' में है कि यह फ़िक़ह (न्यायशास्त्र) के अधिक निकट है। 'फ़त्ह' में है कि यह फ़िक़ह के सबसे अधिक समान है। 'मुल्तक़ा' की व्याख्या 'हक़ाएक़' में है कि यह सभी कथनों में सबसे सही है और इसी पर फ़तवा है। 'इख़्तियार' और 'नक़ाया' में इसी को क़ायम रखा गया है, और 'नहर' का कथन भी यही संकेत देता है।

[पृष्ठ पर उर्दू अनुवाद] 'दुर्रे मुख़्तार' में है: यदि निकटतम वली इतनी दूरी पर है कि कुफ़ु में रिश्ता मांगने वाला वहाँ से जवाब का इंतज़ार न करता, तो दूर के वली के लिए निकाह वैध है। बाक़ानी ने इस पर भरोसा किया और इब्न-ए-कमाल ने उल्लेख किया कि इसी पर फ़तवा है, संक्षेप में। 'रद्दुल मुहतार' में उल्लेख है कि 'ज़ख़ीरा' में कहा गया है कि सबसे सही विचार यह है कि यदि निकटतम वली इतनी दूरी पर है कि विवाह चाहने वाला वहाँ से उत्तर या उसकी राय की प्रतीक्षा नहीं करेगा, तो

'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (विच्छेदक अनुपस्थिति) स्थापित हो जाती है। 'किताब' में भी इसी का संकेत दिया गया है। 'बहर' में 'मुज्तबा' के माध्यम से 'मबसूत' से उद्धृत किया गया है कि यह सबसे सही विचार है। 'निहाया' में लिखा है कि अधिकांश विद्वानों ने इसे प्राथमिकता दी और इब्न-ए-फ़ज़्ल ने इसे सही घोषित किया। 'हिदाया' में कहा गया है कि यह कानूनी तर्क(फ़िक़ह) के करीब है। 'फ़त्ह' में इसे सच्चाई के करीब बताया गया है। 'मुल्तक़ा' की व्याख्या में 'हक़ाएक़' से उद्धृत किया गया है कि यह सभी विचारों में सबसे सही है और फ़तवा इसी पर आधारित है। इसे 'इख़्तियार' और 'नक़ाया' में बरकरार रखा गया है, और 'नहर' के शब्द भी यही संकेत देते हैं।

1 दुर्रे मुख़्तार, वली का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/194.

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

واقعی میں تو دیکھا جائے گا کہ نکاح کفو اس قدر انتظام پر راضی ہو سکتا تھا کہ باپ کو خط لکھا جائے اور اس کی اجازت منگائی جائے یا وہ اس پر راضی نہ ہوتا بلکہ اتنے انتظار پر نکاح ہی نہ کرتا اگر یہ پچھلی صورت فرض کی جائے جس کے وقوع کی امید بہت ہی ضعیف بلکہ کالعدم ہے کہ انتظار جواب میں یہ بات ہاتھ سے جاتی تھی تو نکاح نافذ ہو گیا بشرطیکہ مہر مثل میں کمی فاحش نہ کی گئی ہو اور اگر ایسا نہ تھا بلکہ انتظار جواب کر لیتا اور غالب ایسا ہی ہے تو یہ نکاح بشرط مذکور اجازت پر موقوف ہے اگر جائز رکھے گا جائز ہو جائے گا اور باطل کر دے گا تو باطل ہو جائے گا۔

في الدر المختار للولي الابعد التزويج بغيبة الاقرب واختار في الملتقى مالم ينتظر الكفو الخاطب جوابه واعتمده الباقانى و نقل ابن الكمال ان عليه الفتوى ا هـ مختصرا ، وفى رد المحتار قال في الذخيرة الاصح انه اذا كان في موضع لو انتظر حضوره او استطلاع رأيه فات الكفو الذى حضر فالغيبة منقطعة واليه اشار في الكتاب وفى البحر المجتبى عن المبسوط انه الاصح وفى النهاية اختاره اكثر المشائخ وصححه ابن الفضل وفى الهداية انه اقرب الى الفقه وفى الفتح انه الاشبه بالفقه وفى شرح الملتقى من الحقائق انه اصح الاقاويل و عليه الفتوى وعليه مشى فى الاختيار والنقاية ويشير كلام النهر

در مختار میں ہے اگر ولی اقرب اتنی مسافت پر ہے کہ رشتہ طلب کرنے والا ہم کفو وہاں سے جواب کا انتظار نہ کرتا تو ولی ابعد کو نکاح جائز ہے، اس پر باقانی نے اعتماد کیا اور ابن کمال نے نقل کیا ہے کہ اس پر فتوٰی ہے اھ مختصراً، اور ردالمحتار میں ہے ذخیرہ میں کہا اصح یہی ہے کہ اگر ولی اقرب اتنی مسافت پر ہو کہ رشتہ طلب کرنے والا ہم کفو وہاں سے جواب یا اس کی

رائے حاصل کرنے کا انتظار نہیں کرتا تو غیبت منقطعہ قرار پائی گئی اور کتاب میں اسی کی طرف اشارہ ہے، اور بحر میں مجتبیٰ کے حوالے سے مبسوط سے منقول ہے کہ یہ اصح ہے، اور نہایہ میں ہے کہ اکثر مشائخ نے اسے پسند کیا ہے اور ابن فضل نے اس کو صحیح قرار دیا ہے، اور ہدایہ میں ہے کہ یہ اقرب الی الفقہ ہے، اور فتح میں ہے کہ حق کے قریب ہے، اور ملتقٰی کی شرح میں حقائق سے منقول ہے کہ یہ تمام اقوال میں اصح ہے اور اس پر فتویٰ ہے، اور اختیار اور نقایہ میں اس کو قائم رکھا ہے، اور نہر کا کلام بھی

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ /۱۹۴

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Top Right Box - Arabic]: "...to its preference. It is stated in Al-Bahr that the best way is to issue fatwas according to what the majority of scholars rely upon. End of quote from Radd al-Muhtar. I say, especially in this era, as the steam engine (train) has made the journey of shortening prayers (Qasr) like a journey of one hour or even less. Therefore, it is obligatory to rely on what the majority of scholars have given fatwas on."

[Top Left Box - Urdu Translation]: This indicates it being chosen. It is in Al-Bahr that it is reassuring to issue fatwas on what the scholars rely upon. The text of Durr al-Mukhtar ends. I say, especially in the current era when the railway train has made the distance of Qasr (shortening prayer) a journey of one hour or even less, therefore, what the majority of scholars have given fatwas on is reliable. (T)

All this is in the case that there was no gross deficiency in the woman's customary dower (Mahr al-Mithl). For example, if the customary dower was one hundred rupees and in this marriage it was set at fifty, then the marriage did not take place at all.

[Second Row, Right Box - Arabic]: "In Durr al-Mukhtar: If the person performing the marriage is someone other than the father or grandfather, even if it be the mother, the marriage is not valid with gross deception (in dower). And Allah Almighty knows best."

[Second Row, Left Box - Urdu Translation]: It is in Durr al-Mukhtar that if the one performing the marriage is other than the father or grandfather, even if it is the mother, the marriage will not be valid with a gross deficiency in the dower. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 321: From Ujjain, residence of Mir Khadim Ali Sahib, Assistant, sent by Muhammad Yaqub Ali Khan Sahib, 15 Sha'ban 1311 AH.

[Original Query in Persian/Urdu]: What do the scholars of Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah say regarding this matter: A girl named Hindah has no legal heirs, nor is she the offspring of Zaid, but Zaid raised her with full effort from childhood until she reached ten years of age. Due to being known as Zaid's child because of his upbringing, in Zaid's absence, Zaid's wife betrothed Hindah and married her to Khairati Khan and fled. When Zaid returned and found out about her marriage, he did not agree. In this case, without permission...

[Urdu Translation of the Query]: What do the scholars of Ahl-e-Sunnat say regarding this matter: A girl named Hindah, who is not Zaid's child nor has any legal heir, but Zaid raised her from childhood to the age of ten. Due to this upbringing, Zaid appeared to be Hindah's guardian. In Zaid's absence, Zaid's wife married Hindah to Khairati Khan, and Khairati Khan fled after that. Now when Zaid came back, he...

[Footnotes]: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Guardianship, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/192

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[ऊपरी दायाँ बॉक्स - अरबी]: "...अपनी पसंद के अनुसार। अल-बहर में कहा गया है कि सबसे अच्छा तरीका उन फ़तवों को जारी करना है जिन पर अधिकांश विद्वान भरोसा करते हैं। रद अल-मुह्तार का उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ, विशेष रूप से इस युग में, क्योंकि भाप के इंजन (ट्रेन) ने नमाज़ को संक्षिप्त करने (क़स्र) की यात्रा को एक घंटे या उससे भी कम की यात्रा बना दिया है। इसलिए, अधिकांश विद्वानों ने जिस पर फ़तवा दिया है, उस पर भरोसा करना अनिवार्य है।"

[ऊपरी बायाँ बॉक्स - उर्दू अनुवाद]: यह इसके चुने जाने की ओर इशारा है। अल-बहर में है कि जिस पर विद्वानों का भरोसा हो, उस पर फ़तवा देना संतोषजनक है। दुर्रे मुख़्तार का पाठ समाप्त हुआ। मैं कहता हूँ, विशेष रूप से वर्तमान युग में जब रेलगाड़ी ने क़स्र (नमाज़ कम करने) की दूरी को एक घंटे या उससे भी कम की यात्रा बना दिया है, इसलिए अधिकांश विद्वानों ने जिस पर फ़तवा दिया है, वही विश्वसनीय है। (त)

यह सब उस स्थिति में है जब महिला के महर मिसल (प्रचलित मेहर) में अत्यधिक कमी न की गई हो। उदाहरण के लिए, यदि महर मिसल सौ रुपये था और इस निकाह में पचास का तय किया गया, तो निकाह सिरे से हुआ ही नहीं।

[दूसरी पंक्ति, दायाँ बॉक्स - अरबी]: "दुर्रे मुख़्तार में: यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है, भले ही वह माँ ही क्यों न हो, तो (मेहर में) भारी धोखे के साथ निकाह मान्य नहीं है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।"

[दूसरी पंक्ति, बायाँ बॉक्स - उर्दू अनुवाद]: दुर्रे मुख़्तार में है कि यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है, भले ही वह माँ ही क्यों न हो, मेहर में भारी कमी के साथ निकाह सही नहीं होगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसला 321: उज्जैन से, मीर खादिम अली साहब असिस्टेंट का निवास, प्रेषित मोहम्मद याकूब अली खान साहब, 15 शाबान 1311 हिजरी।

[मूल फारसी/उर्दू प्रश्न]: अहले सुन्नत व जमाअत के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: हिंदा नाम की एक लड़की जिसका कोई कानूनी उत्तराधिकारी नहीं है, और न ही वह ज़ैद की संतान है, लेकिन ज़ैद ने बचपन से दस साल की उम्र तक पूरी कोशिश के साथ उसका पालन-पोषण किया। ज़ैद के पालन-

पोषण के कारण वह हिंदा का वली (अभिभावक) प्रतीत होता था, तो ज़ैद की अनुपस्थिति में ज़ैद की पत्नी ने हिंदा का निकाह खैराती खान से कर दिया और वह भाग गया। जब ज़ैद आया और उसे निकाह का पता चला, तो वह सहमत नहीं हुआ। इस स्थिति में, बिना अनुमति के..

[उर्दू अनुवाद]: अहले सुन्नत के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि हिंदा नाम की लड़की जो ज़ैद की औलाद नहीं है और न ही उसका कोई शरई वारिस है, लेकिन ज़ैद ने उसका बचपन से दस साल की उम्र तक पालन-पोषण किया। इस परवरिश की वजह से ज़ैद हिंदा का वली मालूम होता है, तो ज़ैद की गैरमौजूदगी में ज़ैद की बीवी ने हिंदा का निकाह खैराती खां से कर दिया, और खैराती खां उसके बाद भाग गया। अब जब ज़ैद वापस आया तो उसने...

[पादलेख]: 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/315 2. दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/192

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدھم

[اوپر والا دایاں خانہ - عربی]: الی اختیارہ وفی البحر والاحسن الافتاء بما علیہ اکثر المشائخ اہ مافي ردالمحتار قلت لاسیما فی ھذا الزمان فان العجلة الدخانیة قد جعلت مسافة القصر کمسافة ساعة واحدة بل اقل فوجب التعویل علی ما افتی بہ اکثر المشائخ۔

[اوپر والا بایاں خانہ - اردو]: اس کے مختار ہونے کی طرف اشارہ ہے، اور بحر میں ہے کہ جس پر مشائخ کا اعتماد ہو اس پر فتوی باعث اطمینان ہے، در مختار کی عبارت ختم ہوئی، قلت خصوصاً موجودہ زمانہ میں کہ جب ریل گاڑی نے مسافتِ قصر کو ایک گھنٹہ کی مسافت بنا دیا ہے بلکہ اس سے بھی کم کر دیا ہے لہذا جس پر اکثر مشائخ نے فتوٰی دیا ہے وہی قابلِ اعتماد ہے۔ (ت)

یہ سب اس صورت میں کہ عورت کے مہر مثل میں کمی فاحش نہ ہوئی ہو مثلاً مہر مثل سو روپے کا تھا اس نکاح میں پچاس کا باندھا تو سرے سے نکاح ہی نہ ہوا۔

[دوسری سطر، دایاں خانہ - عربی]: فی الدرالمختار ان کان المزوج غیرالاب والجد ولولالام لا یصح النکاح بغبن فاحش 2۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

[دوسری سطر، بایاں خانہ - اردو]: در مختار میں ہے اگر نکاح کرنے والا باپ دادا کا غیر کفو ہو خواہ ماں ہی کیوں نہ ہو مہر میں فحش کمی کے ساتھ نکاح صحیح نہ ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۲۱: از اوجین مکان میر خادم علی صاحب اسٹنٹ مرسلہ محمد یعقوب علی خاں صاحب ۱۵ شعبان ۱۳۱۱ھ

[اصل سوال - فارسی/اردو]: چہ می فرمایند علمائے اہلِ سنت و جماعت دریں مسئلہ کہ مسماۃ ہندہ ورثہ شرعیہ ندارد و نہ از نطفہ زید مگر زید بسعی تام از ایام طفلی پرورش کردہ تابعر دہ سالہ در رسید و بہ سبب اطلاق پرورش زید ولی ہندہ ظاہر بعد زید منکوحہ زید نامزد ہندہ ہمراہ خیراتی خاں کردہ فرار شد وقتیکہ زید آمد بر نکاحش وقوف یافتہ راضی نہ گشت درین صورت بدون اجازت

[اردو ترجمہ]: کیا فرماتے ہیں علمائے اہلسنت و جماعت اس مسئلہ میں کہ ہندہ نامی لڑکی کی جو زید کی اولاد نہیں اور نہ ہی اس کا کوئی شرعی وارث ہے لیکن زید نے اس کی بچپن سے دس سال کی عمر تک پرورش کی۔ اس پرورش کی وجہ سے زید ہندہ کا ولی معلوم ہوتا ہے تو زید کی عدم موجودگی میں زید کی بیوی نے ہندہ کا نکاح خیراتی خاں سے کر دیا، اور خیراتی خاں اس کے بعد بھاگ گیا، اب جب زید واپس آیا تو اس نے ہندہ

[حواشی]: 1. ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۲ 2. در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱

Fatawa Razawiya, Volume 11

Is the marriage of Zaid to the young girl Hindah correct or not? Please explain with citations from books. May the peace and mercy of Allah be upon you all. [She] disliked the marriage and was not satisfied; in the mentioned case, is the marriage of the minor girl Hindah valid against Zaid's will or not? A reply should be given with references from books. May Allah have mercy on you. (T)

Answer: Firstly, it must be seen whether the person to whom Zaid's wife gave Hindah in marriage is compatible (Kufu) with Hindah or not. If not, for example, there is a deficiency in lineage, profession, character, or religion that is considered a disgrace according to custom, then in this case, this marriage is purely void (Batil) and cannot be validated by anyone's permission, not even by Hindah herself upon reaching maturity. This is because no one is permitted to marry off a minor girl to someone who is not compatible (Ghair Kufu), except for a father or grandfather who is not known for bad judgment, as all jurists (Fuqaha) have explicitly stated. In *Jami' al-Saghar*, it is stated: 'If a guardian other than the father or grandfather marries off a minor girl to a non-compatible person, the girl cannot validate this marriage herself even after reaching maturity.' And if that person was compatible with Hindah, then it must be seen whether there was any relative of Hindah, male or female, near or far, who possessed guardianship. If so, the marriage depends on their permission. If they authorize it, it becomes valid; if they reject it, it becomes void. Whether that guardian is Zaid or someone else, and if Hindah has no...

---

1. Jami' Ahkam al-Saghar, on the margin of Hashiyah Jami' al-Fusulayn in Matters of Nikah, Islami Kutub Khana, Karachi, 1/29.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

क्या जैद का निकाह छोटी लड़की हिंदा के साथ सही है या नहीं? किताबों के हवाले से स्पष्ट करें। आप सब पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो। [उसने] निकाह को नापसंद किया और राजी नहीं हुई; तो क्या उक्त स्थिति में नाबालिग लड़की हिंदा का निकाह जैद की मर्जी के खिलाफ सही हुआ या नहीं? किताबों के हवाले से जवाब दिया जाए। अल्लाह आप पर रहम फरमाए। (त)

उत्तर: सबसे पहले यह देखना होगा कि जिस व्यक्ति से जैद की पत्नी ने हिंदा का निकाह किया है, वह हिंदा का 'कफ़ू' (बराबर/सुसंगत) है या नहीं। यदि नहीं, उदाहरण के लिए वंश, पेशे, चरित्र या धर्म में ऐसी कोई कमी है जिसे लोक-मर्यादा में अपमानजनक समझा जाता है, तो इस स्थिति में यह निकाह पूरी तरह से शून्य (बातिल) है और किसी की अनुमति से, यहाँ तक कि खुद हिंदा के वयस्क होने पर भी इसे वैध नहीं किया जा सकता है। क्योंकि गैर-कफ़ू (असुसंगत) व्यक्ति के साथ नाबालिग लड़की का निकाह करने की अनुमति पिता या दादा के अलावा किसी को नहीं है, बशर्ते वे अपने फैसलों में बुराई के लिए प्रसिद्ध न हों, जैसा कि सभी फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है। जामे अस्सगीर में उल्लेख है: 'यदि पिता और दादा के अलावा किसी संरक्षक (वली) ने नाबालिग लड़की का निकाह गैर-कफ़ू में कर दिया हो, तो लड़की वयस्क होकर खुद भी उस निकाह को वैध नहीं कर सकती।' और यदि वह व्यक्ति हिंदा का हम-कफ़ू था, तो फिर यह देखना होगा कि हिंदा का कोई पुरुष या महिला रिश्तेदार, निकट या दूर का, जिसके पास संरक्षण (विलायत) का अधिकार हो, मौजूद है या नहीं। यदि है, तो निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। यदि वह उसे अनुमति दे दे तो निकाह वैध हो जाएगा, और यदि वह अस्वीकार कर दे तो वह निरस्त हो जाएगा। वह संरक्षक जैद हो या कोई और, और यदि हिंदा का कोई भी...

---

1. जामे अहकाम अस्सगीर, हाशियह जामे अल-फुसुलैन के हाशिये पर, निकाह के मसले, इस्लामी कुतुब खाना कराची, 1/29।

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدھم

زید نکاح ہندہ خورد سالہ درست ست یا نہ، بیان فرمایند بعبارت کتب، ورحمتہ اللہ علیکم اجمعین۔ کے نکاح کو ناپسند کیا اور راضی نہ ہوا، تو کیا مذکورہ صورت میں ہندہ نابالغہ کا نکاح زید کی مرضی کے خلاف درست ہوا یا نہیں؟ کتب کے حوالہ سے جواب دیا جائے۔ اللہ تعالٰی تم پر رحم فرمائے۔ (ت)

الجواب: اولاً دیدہ باید کہ شخصے کہ زن زید ہندہ را بجبالہ نکاحش داد با ہندہ کفایت دارد یانے، اگر ندارد مثلاً در نسب یا حرفہ یاموش یا مذہب قصورے دارد کہ ہندہ رادر نکاحش آمدن نزد اہل عرف موجب عار باشد آنگاہ ایں نکاح باطل محض افتد کہ باجازت ہیچ کس روئے نفاذ نہ بیند تا آنکہ ہندہ اگر خویشتن بعد رسیدن اجازت کند ہم روئے نیابد زیرا کہ تزویج با غیر کفو جز پدر یا پدرِ پدر کہ دریں کار بسوء اختیار معروف نباشد ہیچ کس را نمی رسد کما نصوا علیہ قاطبۃ و فی جامع الصغار ولی غیر الاب والجد زوج الصغیرۃ من غیر کفوء فادرکت الصبیۃ فاجازت لا یجوز[1]۔ و اگر کفاءت دارد آنگاہ دیدنی ست کہ ہندہ ہنگام نکاح ہیچ قریے قریب یا بعید مرد یامن از جانب پدر یا مادر اگر چہ در غایت بعد و دوری می داشت یا نے، اگر می داشت پس یہاں کس ولی نکاح اوست نکاح مذکور باجازت آں ولی موقوف ست خود ایں زید باشد یا دیگرے اگر اجازت دہد جائز شود اگر رد کند باطل

پہلے یہ دیکھنا ہوگا کہ زید کی بیوی نے جس شخص سے ہندہ کا نکاح کیا ہے وہ ہندہ کا ہم کفو ہے یا نہیں۔ اگر نہیں مثلاً نسب، کردار، حرفہ یا مذہب میں ایسی کمی والا ہے کہ عرف میں اس کو عار سمجھا جاتا ہے تو اس صورت میں یہ نکاح محض باطل ہے اور کسی کی اجازت حتی کہ ہندہ خود

بالغ ہونے پر اس کو جائز نہیں کر سکتی، کیونکہ غیر کفو میں نابالغہ کا نکاح کرنے کی ایسے باپ دادا جو سوء اختیار میں مشہور نہ ہوں، کے بغیر کسی کو اجازت نہیں ہے، جیسا کہ تمام فقہائے تصریح کی ہے جامع صغار میں ہے باپ دادا کے غیر کسی ولی نے نابالغہ کا نکاح غیر کفو میں کر دیا ہو تو لڑکی بالغ ہو کر خود بھی اس نکاح جائز نہیں کر سکتی، اور اگر وہ شخص ہندہ کا ہم کفو تھا پھر یہ دیکھنا ہوگا کہ ہندہ کا کوئی رشتہ دار مرد یا عورت قریب یا بعید جو کہ کسی کی ولایت رکھتا ہو موجود ہے تو نکاح اس کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ وہ جائز قرار دے تو جائز اگر رد کر دے تو رد ہو جائے گا۔ وہ ولی زید ہو یا کوئی اور ہو، اور اگر ہندہ کا کوئی بھی

---

1 جامع احکام الصغار علی ہامش حاشیہ جامع الفصولین فی مسائل النکاح اسلامی کتب خانہ کراچی ۲۹/۱

Fatawa Razawiya, Volume 11

[Right Column] There is no blood-related guardian among living people, neither Zaid nor anyone else. In such a situation, since there is no officially appointed Qadi (judge) or Sharia ruler in our country, if there is a scholar present in that city who is a Mufti, jurist, and the most prominent scholar of the region, then the marriage (Nikah) will be contingent upon his permission. If he validates it, it will be valid, and if he rejects it, it will be rejected. It is mentioned in 'Hadiqa-e-Nadiyya' quoting 'Fatawa Atabiyya' that when an era is devoid of a ruler or judge who can legally execute Sharia matters, then these matters shall be entrusted to the scholars (ulama), and it will be mandatory for the community (Ummah) to refer to them, and these scholars will become the guardians. If it is difficult for everyone to refer to a single scholar, then the people of each region shall refer to the scholar of their respective region. If there are many such scholars in a region, then the most learned among them should be followed. And if no such scholar exists there, then this marriage will not be contracted at all and will become null and void on its own because this would be a marriage by an unauthorized person (Fuzuli) which no one can validate. It is stated in 'Jami-us-Sighar' that if a place is not under the jurisdiction of a Qadi, then the marriage will not be contracted. And in 'Radd al-Muhtar', quoting from 'Al-Fath', it is mentioned that where there is no authorized ruler who can validate the marriage, the marriage will be void.

[Left Column] ...will be. And if at the time of marriage there were no living blood-related relatives for the woman, neither Zaid nor anyone else, then in our region which is not under the rule of any Sharia judge or Islamic ruler, the consideration is that if in that city a religious scholar who is a jurist and mufti and the most learned among the city's scholars is present, then the mentioned marriage is contingent on his permission. If he grants permission, it becomes effective, and if he rejects it, it becomes void. In 'al-Hadiqa al-Nadiyya' from 'al-Fatawa al-Atabiyya': When the time is devoid of a competent ruler, matters are entrusted to the scholars, and the community is required to refer to them, and they become the guardians. If gathering them all under one is difficult, each region becomes independent in following its scholars. If they are numerous, the most learned is followed.[1] And if there is no such scholar there either, then this marriage was not contracted at all and is purely void, because it is an unauthorized (fuzuli) contract issued with no one to authorize it. In 'Jami al-Sighar': If it is in a place that is not under the guardianship of a judge, it is not contracted.[2] And in 'Radd al-Muhtar' from 'al-Fath': That which has no authorizer, i.e.,

one who has power of authorization, is void, as when an unauthorized person marries off an orphan girl in the abode of war (Dar al-Harb) or when there isn't...

Footnotes: 1. Al-Hadiqa al-Nadiyya, the second type of the three types, Nuriya Razawiya Faisalabad, 1/351 2. Jami Ahkam al-Sighar on the margin of Jami al-Fusulayn in marriage matters, Islami Kutubkhana Karachi, 1/29

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड ११

[दायाँ कॉलम] जीवित लोगों में कोई भी रक्त-संबंधी संरक्षक (वली) नहीं है, न ज़ैद है और न ही कोई और। ऐसी स्थिति में, जबकि हमारे देश में कोई आधिकारिक तौर पर नियुक्त काज़ी या शरिया शासक नहीं है, यदि उस शहर में कोई ऐसा विद्वान (आलिम) मौजूद है जो मुफ्ती, फकीह और क्षेत्र का बड़ा विद्वान है, तो निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। यदि वह इसे अनुमति देता है तो यह मान्य होगा, और यदि वह अस्वीकार करता है तो यह रद्द हो जाएगा। 'हक़ीक़-ए-नदिया' में 'फ़तावा अताबिया' से उद्धृत है कि जब समय कानूनी रूप से शरिया मामलों को निष्पादित करने वाले शासक और काज़ी से खाली हो, तो ये मामले विद्वानों (उलेमा) को सौंप दिए जाएंगे और उम्मत के लिए उन विद्वानों की ओर रुख करना अनिवार्य होगा, और ये विद्वान संरक्षक बन जाएंगे। यदि सभी के लिए एक ही विद्वान की ओर रुख करना कठिन हो, तो प्रत्येक क्षेत्र के लोग अपने क्षेत्र के विद्वान की ओर रुख करेंगे। यदि किसी क्षेत्र में ऐसे विद्वानों की संख्या अधिक हो, तो उनमें से सबसे बड़े विद्वान का अनुसरण किया जाएगा। और यदि वहां कोई ऐसा विद्वान न हो, तो यह निकाह मूल रूप से संपन्न नहीं होगा और स्वतः ही शून्य हो जाएगा क्योंकि यह एक अनधिकृत व्यक्ति (फ़ुज़ूली) द्वारा किया गया ऐसा निकाह होगा जिसे कोई भी वैध बनाने वाला नहीं है। 'जामि-अस-सिग़ार' में है कि यदि ऐसी जगह हो जहां कोई आधिकारिक शरिया शासक न हो, तो निकाह संपन्न नहीं होगा। और 'रद अल-मुह्तार' में 'अल-फ़तह' से उद्धृत है कि जहाँ निकाह को वैध बनाने वाला कोई अधिकृत शासक न हो, वहाँ निकाह शून्य होगा।

[बायाँ कॉलम] ...होगा। और यदि निकाह के समय उस महिला का जीवित लोगों में से कोई रक्त-संबंधी रिश्तेदार नहीं था, न ज़ैद और न ही कोई और, तो हमारे क्षेत्र में जो किसी शरिया काज़ी या इस्लामी शासक के अधीन नहीं है, विचार यह है कि यदि उस शहर में कोई धार्मिक विद्वान जो फकीह और मुफ्ती हो और शहर के विद्वानों में सबसे ज्ञानी हो, मौजूद है, तो उक्त निकाह उसकी अनुमति पर निर्भर है। यदि वह अनुमति देता है, तो यह प्रभावी हो जाता है, और यदि वह इसे अस्वीकार करता है, तो यह शून्य हो जाता है। 'अल-हक़ीक़ अल-नदिया' में 'अल-फ़तावा अल-अताबिया' से: जब समय सक्षम शासक से खाली हो, तो मामले विद्वानों को सौंप दिए जाते हैं, और समुदाय के लिए उनकी ओर रुख करना आवश्यक होता है, और वे संरक्षक बन जाते हैं। यदि उन सभी को एक के अधीन इकट्ठा करना कठिन हो, तो प्रत्येक क्षेत्र अपने विद्वानों का अनुसरण करने में स्वतंत्र हो जाता है। यदि वे अनेक हों, तो सबसे अधिक ज्ञानी का अनुसरण किया जाता है।[1] और यदि वहाँ भी ऐसा कोई विद्वान

न हो, तो यह निकाह बिल्कुल भी संपन्न नहीं हुआ और पूरी तरह से शून्य है, क्योंकि यह एक अनधिकृत (फुज़ूली) अनुबंध है जिसे अधिकृत करने वाला कोई नहीं है। 'जामि अल-सिग़ार' में: यदि यह ऐसी जगह है जो काज़ी के संरक्षण में नहीं है, तो यह संपन्न नहीं होता है।[2] और 'रद अल-मुह्तार' में 'अल-फ़तह' से: जिसका कोई अधिकृत करने वाला नहीं है, अर्थात जिसके पास अधिकार देने की शक्ति नहीं है, वह शून्य है, जैसे कि जब कोई अनधिकृत व्यक्ति युद्ध क्षेत्र (दार अल-हर्ब) में किसी अनाथ लड़की का विवाह कर देता है या जब नहीं है...

पाद-टिप्पणियाँ: १. अल-हक़ीक़ अल-नदिया, तीन प्रकारों में से दूसरा प्रकार, नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, १/३५१ २. निकाह के मामलों में जामि अल-फ़ुसूलैन के हाशिये पर जामि अहकाम अल-सिग़ार, इस्लामी कुतुबखाना कराची, १/२९

[دائیں جانب] زندہ لوگوں میں سے نسبی ولی نہیں، نہ زید ہے نہ کوئی اور ہے، تو ایسی صورت میں جبکہ ہمارے ملک میں کوئی قاضی یا شرعی حاکم سرکاری طور پر مقرر نہیں ہے، اگر اس شہر میں کوئی ایسا عالم جو مفتی، فقیہ اور علاقہ کا بڑا عالم ہو موجود ہے تو نکاح اس کی اجازت پر موقوف ہوگا کہ وہ اگر جائز کردے تو جائز اور اگر رد کردے تو رد ہوجائے گا، حدیقہ ندیہ میں فتاوٰی عتابیہ سے منقول ہے کہ جب زمانہ شرعی طور پر امور کو سر انجام دینے والے حاکم و قاضی سے خالی ہو تو یہ امور علماء کے سپرد ہوں گے اور امت پر لازم ہوگا کہ وہ ان علماء کی طرف رجوع کریں اور یہ علماء والی بن جائیں گے، اور اگر ایک عالم کی طرف سب کو رجوع مشکل ہو تو ہر علاقہ کے لوگ اپنے علاقہ کے عالم کی طرف رجوع کریں گے اور کسی علاقہ میں ایسے علماء کی تعداد زیادہ ہو تو پھر ان میں سے بڑے عالم کی اتباع کریں گے ، اور اگر وہاں کوئی ایسا عالم نہ ہو تو پھر یہ نکاح اصلاً منعقد نہ ہوگا اور خود بخود باطل ہوجائے گا کیونکہ یہ فضولی کا ایسا نکاح ہوگا جسے کوئی بھی جائز کرنے والا نہ ہے، جامع الصغار میں ہے کہ اگر ایسی جگہ ہو کہ وہاں کوئی سرکاری شرعی حاکم نہ ہو تو نکاح منعقد نہ ہوگا اھ ، اور ردالمحتار میں فتح سے منقول ہے کہ جہاں کوئی ایسا حاکم مجاز نہ ہو جو نکاح جائز کرسکے تو نکاح باطل ہوگا۔

[بائیں جانب] گردد، واگر با ہندہ بیچ کس را از زندگاں وقت نکاح قرابت نسبی نبودند زید نہ غیر اور آ نگاہ در دیار ما کہ زیر ولایت ہیچ قاضی شرع و حاکم اسلام نیست نظر کردن ست اگر دراں شہر عالمی از علمائے دیں کہ فقیہ و صاحب فتوٰی واعلم علمائے بلد باشد موجود ست پس نکاح مذکور برا جازت او موقوف ست اگر اجازت دہد نافذ شود واگرد کند باطل گردد۔ في الحديقة الندية عن

الفتاوى العتابية اذا خلا الزمان من سلطان ذى كفاية فالامور مؤكلة الى العلماء ويلزم الامة الرجوع اليهم ويصيرون ولاة فاذا عسر جمعهم على واحد استقل كل قطر باتباع علمائه فان كثروا فالمتبع اعلمهم ١ واگر آنجا بهيچو عالمى نيز نباشد آنگاه ايں نكاح اصلا انعقاد نہ يافت خود باطل محض ست لكونه عقد فضولى صدر ولا مجيز فى جامع الصغار ان كان في موضع لا يكون تحت ولاية قاض فانه لا ينعقد ٢ اھ وفي رد المحتار عن الفتح مالا مجيز له اى ماليس له من يقدر على الاجازة يبطل كما اذا زوجه الفضولي مجيزة يتيمة فى دار الحرب اواذالم يكن

حواشى: ١ الحديقة الندية النوع الثانى من الانواع الثلاثة نوريہ رضويہ فيصل آباد ١/ ٣٥١ ٢ جامع احكام الصغار على حاشية جامع الفصولين فى مسائل النكاح اسلامى كتب خانہ كراچى ١/ ٢٩

[Top Box Left] (Arabic: Sultan wa la qadin li'adam man yaqdiru 'ala al-imda' halat al-'aqd fawaqa'a batilan) 1 Ah summary: Without kinship, mere upbringing does not establish the guardianship of marriage. In *Jami' al-Saghar*: "Whoever takes care of a minor boy or girl does not possess the right to marry them off." 2. Therefore, in this situation, Zaid's permission or lack thereof is nothing. And Allah Almighty knows best.

[Top Box Right] Just as an unauthorized person (Fuzuli) performed the marriage of a minor orphan girl in *Dar al-Harb* (abode of war), or in a place where there is no Sultan or Qazi; in such a case, the marriage would be void because there is no one there to authorize it. Ah summary. Zaid will not obtain guardianship merely due to upbringing. It is stated in *Jami' al-Saghar* that the caretaker of any boy or girl cannot become the guardian (Wali) for their marriage. Therefore, in the mentioned case, Zaid's permission or refusal holds no meaning. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 322: From Qazi Bari, District Hardoi, Post Office Shahabad, sent by Hazrat Syed Amir Haider Sahib, 26 Sha'ban 1311 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say regarding this: The late Syed Sajjad Hussain passed away leaving behind four daughters and one wife. After some time, one girl died; after that, the wife passed away, leaving behind three daughters, two betrothed and one minor. After two or three months, the eldest daughter also passed away. Now, according to the Noble Sharia, who has priority for the permission of the minor girl's marriage: the full sister or the maternal grandparents? Only.

The Answer: If any Muslim, sane, adult male from the paternal descendants of this minor's grandfather, great-grandfather, or their ancestors is alive, then the guardianship (Wilayat) of her marriage belongs to him. In his presence, the maternal grandfather, maternal grandmother, sister, or even the mother are of no consequence. And if there are multiple such men, then the one who is closer—meaning the one who connects to the lineage of this minor through fewer intermediaries compared to others—will obtain the guardianship. And those who are of equal degree will each be considered a guardian. For example, Hindah bint Zaid bin Khalid exists, and Saeed and Rashid are the sons of Hamid bin Hamid bin Khalid, and Baqir ibn Ja'far bin Ahmad bin Hamid, and Kabir, Saghir, and Munir are the sons of Tahir bin Mutahhir bin Hamid mentioned above; then the guardianship of Hindah's marriage is equal for both Saeed and Rashid. In their presence, Baqir, Kabir, and Munir have no right. Yes, if there is no male in the paternal line...

1 Rad al-Muhtar, Chapter on Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/327 2 Jami' Ahkam al-Saghar on the margin of Jami' al-Fusulayn regarding marriage issues, Islami Kutub Khana, Karachi, 1/321 Page 552 of 739

[ऊपरी बॉक्स बाएँ] (अरबी: सुल्तान व ला क़ादिन लि-अदम मन यक़दिरु 'अला अल-इम्दा हाल अल-अक़्द फ़-वक़-अ बातिलन) 1 सारांश: बिना रिश्तेदारी के सिर्फ़ पालन-पोषण से निकाह की विलायत (अभिभावकत्व) साबित नहीं होती। जामे' अस-सग़ार में है: "जो किसी छोटे बच्चे या बच्ची की देखभाल करता है, उसे उनका निकाह कराने का अधिकार नहीं है।" 2. अतः इस स्थिति में जैद की अनुमति या अनुपमति कोई चीज़ नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[ऊपरी बॉक्स दाएँ] जैसे कि किसी फ़ज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति) ने किसी नाबालिग यतीम लड़की का निकाह दारुल-हर्ब में कर दिया, या वहाँ जहाँ कोई सुल्तान या क़ाज़ी न हो, तो ऐसी स्थिति में निकाह बातिल (अमान्य) हो जाएगा क्योंकि वहाँ कोई वैध करने वाला नहीं है। सारांश। जैद को केवल पालन-पोषण की वजह से विलायत प्राप्त नहीं होगी। जामे' अस-सग़ार में है कि किसी बच्चे या बच्ची की देखभाल करने वाला उनके निकाह का वली नहीं बन सकता। इसलिए उक्त स्थिति में जैद की अनुमति और अनुपमति कोई अर्थ नहीं रखती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ३२२: क़ाज़ी बाड़ी, ज़िला हरदोई, डाकखाना शाहबाद से हज़रत सैयद अमीर हैदर साहब द्वारा प्रेषित, २६ शाबान १३११ हिजरी। दीन के उलेमा और मज़बूत शरीयत के मुफ़्ती इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि मरहूम सैयद सज्जाद हुसैन चार लड़कियों और एक पत्नी को छोड़कर इंतकाल कर गए। कुछ समय बाद एक लड़की की मृत्यु हो गई, उसके बाद पत्नी का इंतकाल हुआ, जिसने तीन लड़कियाँ छोड़ीं, दो मंगनीशुदा और एक नाबालिग। दो-तीन महीने बाद बड़ी बेटी का भी इंतकाल हो गया। अब शरीयत शरीफ़ के अनुसार नाबालिग लड़की के निकाह की अनुमति के लिए प्राथमिकता सगी बहन को है या नानी-नाना को? बस।

उत्तर: यदि इस नाबालिग के दादा, परदादा या उनके बाप-दादा की पुत्र संतान (पुरुष वंशजों) में कोई मुस्लिम, समझदार, वयस्क पुरुष जीवित है, तो उसके निकाह की विलायत उसी को है। उसके रहते नानी, नाना, बहन बल्कि माँ भी कोई चीज़ नहीं हैं। और यदि इस तरह के पुरुष कई हैं, तो उनमें से जो अधिक निकट होगा—अर्थात जो दूसरों की तुलना में कम माध्यमों से इस नाबालिग के वंश से जुड़ा होगा—वही विलायत पाएगा। और जो बराबर दर्जे के हैं, वे हर एक वली माने जाएंगे। उदाहरण के लिए, मान लें कि हिंदह बिन्त जैद बिन खालिद है, और सईद और रशीद हमीद बिन हामिद बिन खालिद के पुत्र हैं, और बाक़िर इब्न जाफ़र बिन अहमद बिन हामिद हैं, और कबीर, सग़ीर, मुनीर

ताहिर बिन मुतह्हिर बिन हामिद (उपरोक्त) के पुत्र हैं; तो हिंदह के निकाह की विलायत सईद और रशीद दोनों को समान रूप से है। उनके रहते बाक़िर, कबीर और मुनीर को कोई अधिकार नहीं है। हाँ, अगर पितृवंश (दधियाल) में कोई पुरुष नहीं...

1 रद्दुल मुह्तार, बाब अल-किफ़ाआह, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, २/३२७ 2 जामे' अहकाम अस-सग़ार अल-हाशिया जामे' अल-फ़ुसुलैन निकाह के मसाइल में, इस्लामी कुतुब ख़ाना, कराची, १/३२१ पृष्ठ ५५२/७३९

[اوپری باکس بایاں] سلطان ولا قاض لعدم من یقدر علی الامضاء حالة العقد فوقع باطلا 1 اه ملخصاً بے قرابت بمجرد پرورش ولایت نکاح ثابت نہ شود فی جامع الصغار من یتولی صغیرا اوصغیرة لایملك تزویجهما 2۔ پس دریں صورت اجازت و عدمِ اجازتِ زید چیزے نیست، واللہ تعالٰی اعلم۔

[اوپری باکس دایاں] جیسا کہ کسی فضولی نے نابالغہ یتیم لڑکی کا نکاح دارالحرب میں کردیا، یا وہاں کہ جہاں کوئی سلطان و قاضی نہ ہو تو ایسی صورت میں نکاح باطل ہوجائے گا کیونکہ وہاں کوئی جائز کرنے والا نہیں ہے اھ ملخصاً، زید کو محض پرورش کی وجہ سے ولایت حاصل نہ ہوگی، جامع الصغار میں ہے کہ کسی بچے یا بچی کی کفالت کرنے والا اس کے نکاح کا ولی نہیں بن سکتا لہٰذا مذکورہ صورت میں زید کی اجازت و عدمِ اجازت کوئی معنی نہیں رکھتی ، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۲۲: از قاضی باڑی ضلع ہر دوئی، ڈاکخانہ شاہ آباد مرسلہ حضرت سید امیر حیدر صاحب ۲۶ شعبان ۱۳۱۱ھ چہ می فرمایند علمائے دین و مفتیانِ شرع متین کہ سید سجاد حسین مرحوم نے چار لڑکیاں اور ایک زوجہ چھوڑ کر انتقال کیا بعد چند عرصہ کے ایک لڑکی فوت ہوگئی، بعد اس کے زوجہ نے انتقال کیا، تین لڑکیاں دو منصوبہ اور ایک نابالغہ چھوڑی، بعد دو سہ ماہ کے دختر کلاں نے بھی انتقال کیا، اب لڑکی نابالغہ کے نکاح کی اجازت بموجب شرع شریف کے فوقیت ہمشیرہ حقیقی کو ہے یا نانی نانا کو حاصل ہے فقط۔

الجواب: اس نابالغہ کے دادا پر دادا یا ان کے باپ دادا پر دادا کی اولاد پسری میں کوئی مسلمان عاقل بالغ مرد باقی ہے تو اس کے نکاح کی ولایت اسی کو ہے، اُس کے ہوتے نانا نانی بہن بلکہ

ماں بھی کوئی چیز نہیں اور اس طرح کے مرد متعدد ہیں، تو ان میں جو قریب تر ہوگا یعنی جو اس نابالغہ کے نسب میں بہ نسبت دوسروں کے کم واسطوں سے ملے گا وہی ولایت پائے گا، اور جو برابر درجے کے ہیں وہ ہر ایک ولی ٹھہرے گا، مثلاً ہندہ بنت زید بن خالد ہے اور سعید ورشید پسران حمید بن حامد بن خالد اور باقر ابن جعفر بن احمد بن حامد اور کبیر صغیر منیر پسران طاہر بن مطہر بن حامد مذکور ہیں تو ولایت نکاح ہندہ سعید ورشید دونوں کو یکساں ہے اور ان کے ہوتے باقر و کبیر و منیر کو استحقاق نہیں، ہاں اگر دودھیال میں کوئی مرد

1 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۲۷ 2 جامع احکام الصغار علی حاشیۃ جامع الفصولین فی مسائل النکاح اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۲۱ Page 552 of 739

Fatawa Razawiya, Volume 11

It is not so, even if there are no men at all, or if there are, they are insane or Rafidi, etc., having reached the limit of disbelief. In that case, the guardianship (wilayat) of marriage for the persons mentioned in the question belongs to the maternal grandmother; if she is not there, then to the maternal grandfather; if he is not there, then to the sister. In all of them, the condition of intellect and Islam is necessary. That is, if there is corruption in religion, it should not have reached the limit of disbelief; otherwise, an apostate (murtad) has no guardianship over anyone, even if he claims to be a Muslim.

[Table text] Arabic: In 'Al-Durr al-Mukhtar': The guardian in marriage is the agnate (Asabah) by himself, without the mediation of a female, according to the order of inheritance and exclusion, on the condition of freedom, legal accountability (Takleef), and Islam in the case of a Muslim woman and the child of a Muslim. If there is no agnate, then the guardianship belongs to the mother, then the father's mother, then the false grandfather, then the sister, etc. (Summarized). Urdu Translation: In 'Durr al-Mukhtar' it is mentioned: In marriage, the 'Asabah bi-nafsihi'—that is, the man in whose lineage no woman acts as an intermediary—becomes the guardian according to the order of inheritance and exclusion, provided they are free, legally accountable, and Muslim, when their guardianship is for a Muslim girl or boy. If there are no 'Asabah bi-nafsihi', then the guardianship belongs to the mother, then the paternal grandmother, then the maternal grandmother, then the sister, etc. (Summarized).

Arabic: In 'Radd al-Muhtar': It is explicitly stated in 'Al-Jawharah' that the grandmother takes precedence over the sister. Al-Shurunbulali quoted this from Al-Allamah Qasim's commentary on 'Al-Nuqayah', saying that the grandmother cannot be restricted to being a maternal one. In it, it's quoted from 'Al-Khayriyyah' that the paternal grandmother is more worthy than the maternal grandmother by unanimous opinion. So the result is that after the mother comes the paternal grandmother, then the maternal grandmother, then the false grandfather; reflect on this. It is said that what Al-Ramli was firm about in 'Al-Khayriyyah' is what was given fatwa on in 'Al-Hamidiyyah'. And Allah Almighty knows best. Urdu Translation: And in 'Radd al-Muhtar' it is stated that it is explicitly mentioned in 'Jawharah' that the grandmother is prioritized over the sister. Shurunbulali quoted this from Allamah Qasim's commentary on 'Nuqayah' and said that the grandmother cannot be restricted to being from the maternal side. In the same book, it is quoted from 'Fatawa Khayriyyah' that the paternal grandmother being preferred over the maternal

grandmother is a unanimous view. Thus, the conclusion is that after the mother comes the paternal grandmother, then the maternal grandmother, then the maternal grandfather; reflect on this. It is stated that what Ramli affirmed in 'Khayriyyah' is the basis for the fatwa in 'Hamidiyyah'. And Allah Almighty knows best. (T) [End Table]

Problem 323: From Calcutta Street 162, Dharmatala, sent by Hafiz Aziz-ur-Rehman Sahib, 4 Dhu al-Hijjah 1311 AH. What do the scholars of religion say in this matter: a minor girl's marriage was performed by her maternal uncle in the absence of her mother, uncle, brother, and grandfather, but in the presence of her mother. Now that she has reached puberty...

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/312.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

ऐसा नहीं है, चाहे यों कि सिरे से कोई पुरुष हो ही नहीं या जो है वे पागल या राफ़ज़ी आदि बद-मज़हब हों जो कुफ़्र की सीमा तक पहुँच चुके हों। तो उस समय प्रश्न में उल्लिखित व्यक्तियों के लिए निकाह की विलायत (संरक्षण) नानी को है; यदि वह न रहे तो नाना को, वह न रहे तो बहन को। और इन सब में भी बुद्धि और इस्लाम की शर्त अनिवार्य होगी, यानी यदि धर्म में बिगाड़ हो तो वह कुफ़्र की सीमा तक न पहुँचा हो, अन्यथा धर्मत्यागी (मुर्तद) की किसी पर विलायत नहीं है, भले ही वह इस्लाम का दावा रखता हो।

[तालिका लेख] अरबी: 'दुर्रुल मुख्तार' में है: निकाह में वली (संरक्षक) वह पुरुष (असबा-ए-बिनफ़्सिही) है जिसकी रिश्तेदारी में कोई महिला माध्यम न हो, विरासत और रोक (हज्ब) के क्रम के अनुसार, इस शर्त के साथ कि वह स्वतंत्र, कानूनी रूप से जवाबदेह (तकलीफ़) और मुस्लिम हो यदि विलायत किसी मुस्लिम महिला या मुस्लिम की संतान के लिए हो। यदि कोई 'असबा' न हो, तो विलायत माँ को है, फिर पिता की माँ को, फिर असत्य नाना को, फिर बहन को आदि। (संक्षिप्त)। उर्दू अनुवाद: 'दुर्रे मुख्तार' में है कि निकाह में असबा-ए-बिनफ़्सिही यानी वह मर्द जिसकी निस्बत में औरत वास्ता न बने, विरासत और हज्ब की तरतीब पर वली बनते हैं, बशर्ते कि ये आज़ाद, मुकल्लफ़ और मुसलमान हों जबकि उनकी विलायत मुसलमान लड़की या लड़के के लिए हो। और अगर असबात-ए-बिनफ़्सिही न हों फिर वालिदा को, फिर दादी को, फिर नानी को, फिर बहन को विलायत होगी आदि। (संक्षिप्त)।

अरबी: 'रद्दुल मुह्त्तार' में है: 'जौहरा' में दादी/नानी को बहन पर प्राथमिकता देने का स्पष्ट उल्लेख है। शुरुन्बुलाली ने इसे अल्लामा कासिम की 'शरुहुन्नुक़ाया' से उद्धृत करते हुए कहा कि दादी को सगी की शर्त से सीमित नहीं किया जा सकता। और इसी में 'अल-खैरियाह' से उद्धृत है कि पिता की माँ (दादी) माँ की माँ (नानी) से अधिक योग्य है, यह एकमत राय है। तो निष्कर्ष यह निकला कि माँ के बाद दादी और फिर नानी, फिर असत्य नाना; इस पर विचार करें। और कहा गया कि जिस पर रमली ने 'खैरियाह' में दृढ़ता दिखाई है, उसी पर 'हामिदियाह' में फ़तवा दिया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: और 'रद्दुल मुह्त्तार' में है कि 'जौहरा' में दादी को बहन पर मुक़द्दम (प्राथमिकता) करने की सराहत (स्पष्टता) की है। शुरुन्बुलाली ने इसको अल्लामा कासिम की 'शरुह नुक़ाया' से नक़ल (उद्धृत) करते हुए कहा कि दादी को सगी की क़ैद (शर्त) से मुक़य्यद (सीमित) नहीं कर सकते। और इसी में 'फ़तावा खैरियाह' से मनक़ूल है कि दादी का नानी से मुक़द्दम होना एक ही

कौल (मत) है। तो हासिल यह हुआ कि वालिदा के बाद दादी और फिर नानी, फिर नाना; ग़ौर करो। और कहा कि जिस पर रमली ने 'खैरियाह' में जज़्म (दृढ़ता) किया है, उसी पर 'हामिदियाह' में फ़तवा दिया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) [तालिका समाप्त]

मसला 323: कलकत्ता स्ट्रीट 162, धर्मतल्ला से हाफ़िज़ अज़ीज़ुर रहमान साहिब द्वारा भेजा गया, 4 ज़ुल-हिज्जा 1311 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक नाबालिग लड़की का निकाह उसके मामा ने, उसकी माँ, चाचा, भाई और दादा की अनुपस्थिति में, जबकि उसकी माँ मौजूद थी, करवा दिया था। अब वह बालिग हो गई है...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रुल मुख्तार, विलायत का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/193। 2. रद्दुल मुह्त्तार, विलायत का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/312।

ایسا نہیں خواہ یوں کہ سرے سے کوئی مرد رہی نہیں یا جو ہے وہ مجنون یار فض وغیرہ بد مذہب ہوں میں حد کفر تک پہنچا ہوا ہے، تو اس وقت اشخاص مذکورین سوال میں ولایت نکاح نانی کو ہے، وہ نہ رہے تو نانا کو، وہ نہ رہے تو بہن کو، اور ان سب میں بھی عقل و اسلام کی شرط ضرور ہوگی یعنی اگر مذہب میں فساد ہو تو حد کفر تک نہ پہنچا ہو ورنہ مرتد کو کسی پر ولایت نہیں اگرچہ دعویٰ اسلام رکھتا ہو۔

[ٹیبل کا متن] عربی: فی الدر المختار الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ بلا توسط انثی علی ترتیب الارث و الحجب بشرط حریۃ و تکلیف و اسلام فی حق مسلمۃ و ولد مسلم فان لم یکن عصبۃ فالولایۃ للام ثم لام الاب ثم للجد الفاسد ثم للاخت الخ اھ ملخصا۔ اردو ترجمہ: در مختار میں ہے نکاح میں عصبہ بنفسہ یعنی وہ مرد جس کی نسبت میں عورت واسطہ نہ بنے ، وراثت و حجب کی ترتیب پر ولی بنتے ہیں بشرطیکہ یہ حر ، مکلف اور مسلمان ہوں جبکہ ان کی ولایت مسلمان لڑکی یا لڑکے کے لئے ہو ، اور اگر عصبات بنفسہ نہ ہوں پھر والدہ کو، پھر دادی کو، پھر نانی کو، پھر اخت کو ولایت ہوگی الخ اھ ملخصا۔

عربی: وفی رد المحتار صرح فی الجوہرۃ بتقدیم الجدۃ علی الاخت، ونقل ذلک الشرنبلالی عن شرح النقایۃ للعلامۃ قاسم قال ولم یقید الجدۃ بکونہا لام اولاب اھ وفیہ عن الخیریۃ ان الجدۃ لاب اولی من الجدۃ لام قولا واحدا فیتحصل بعد الام ام الاب ثم ام الام ثم الجد الفاسد تامل اھ قال وما جزم بہ الرملی افتی بہ فی الحامدیۃ واللہ تعالٰی اعلم ۔ اردو ترجمہ: اور ردالمحتار میں ہے کہ جوہرہ میں جدہ کو بہن پر مقدم کرنے کی صراحت کی ہے ، شرنبلالی نے اس کو علامہ قاسم کی شرح نقایہ سے نقل کرتے ہوئے کہا کہ جدہ کو سگی کی قید سے مقید نہیں کر سکتے اھ، اور اسی میں فتاویٰ خیریہ

سے منقول ہے کہ دادی کا نانی سے مقدم ہونا ایک ہی قول ہے تو حاصل یہ ہوا کہ والدہ کے بعد دادی اور پھر نانی پھر نانا ، غور کرو اھ، اور کہا کہ جس پر رملی نے خیریہ میں جزم کیا ہے اسی پر حامدیہ میں فتوی دیا ہے ، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) [ٹیبل ختم]

مسئلہ ۳۲۳: از کلکتہ اسٹریٹ ۱۶۲ دھرم تلا مرسلہ حافظ عزیز الرحمن صاحب ۴ ذی الحجہ ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی نا بالغہ کا نکاح اس کے ماموں نے در صورت نہ ہونے والدہ اور چچا اور برادر اور دادا اس لڑکی کے بہ موجودگی والدہ کے کر دیا تھا اب اس نے بحالت بلوغ

حواشی: 1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۳۱۲

Fatawa Razviya Volume 11

If this marriage is not approved, will it remain valid or not? Provide a clear answer, and you shall be rewarded.

The Answer: If the woman's disapproval is based on the fact that the person her maternal uncle married her to is not her 'kufu' (equal), i.e., he is so inferior in respected matters such as tribe, religion, or profession that the marriage is a cause of shame and disgrace for her; or on the basis that the uncle has made a gross reduction in her 'Mehr-ul-Misl' (customary dowry), then that marriage itself is an absolute nullity which the Pure Shariah does not recognize as a marriage. The woman's approval or disapproval has no involvement. And if these two reasons do not exist, but she disapproves for some other reason, then in this case, if the woman was a virgin and she did not express her disapproval immediately without delay upon reaching puberty after hearing the news of the marriage or if she already knew about it, upon reaching puberty, then the marriage became binding. Now the woman has no choice at all. And if she expressed her disapproval immediately upon reaching puberty, or upon learning of the marriage after reaching puberty, then because the marriage was performed by someone other than the father and paternal grandfather, the woman has the right to 'Khiyar-e-Faskh' (option of annulment). However, this does not mean that she can annul it by herself and exit the bond of marriage; rather, she should file a claim in the Sharia court. The judge, after investigating the mentioned matters, shall annul the marriage. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(Arabic Text)

If the person conducting the marriage is someone other than the father and his father (grandfather), then marriage to a non-equal or with gross deficiency (in dowry) is not valid at all. If it is to an equal and with customary dowry, it is valid. For a minor boy and girl, there is the option of annulment (Khiyar-ul-Faskh), even if it is after consummation, upon reaching puberty or upon gaining knowledge of the marriage. A judicial

(Urdu Text Translation)

If the marriage of a minor girl was performed by someone other than the father and grandfather, and it was done with a non-equal or with a very low dowry, then the marriage will not take place at all. And if it was done with an equal or with customary dowry, then the marriage will be valid, and the minor girl and boy will have the right to annul the marriage, whether they reached puberty or gained knowledge of the marriage after consummation; they

(Arabic Text)

decree is a condition for all (of these). The option for a virgin is voided by silence if she is acting freely and is aware of the essence of the marriage. And it does not extend to the end of the gathering even if she is ignorant (of her right). Summary. And Allah - Glorified and Exalted is He - knows best, and His knowledge - exalted is His majesty - is more complete and perfect.

(Urdu Text Translation)

can annul it at that time. In all these cases of annulment, a court decree is a condition, and the silence of an adult virgin girl ends her option of annulment when she is aware of her marriage and her permission has been sought from her, even if she does not have knowledge about her right to choose, and this right will remain until the end of the gathering. Summary. And Allah Subhanahu wa Ta'ala is more knowledgeable and His knowledge is most complete and perfect. (T)

1. Dur-ul-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193-194.

यदि इस निकाह को मंज़ूर न किया गया तो क्या वह निकाह बाकी रहेगा या नहीं? स्पष्ट उत्तर दें और सवाब पाएं।

उत्तर: यदि स्त्री की नामंज़ूरी इस आधार पर है कि उसके मामा ने जिसके साथ उसका निकाह किया है वह उसका 'कुफ़ू (समान) नहीं है, अर्थात वह खानदान, धर्म या पेशे आदि जैसे महत्वपूर्ण मामलों में इतना निम्न है कि वह निकाह उसके लिए शर्म और बदनामी का कारण है; या इस आधार पर कि मामा ने उसके'महर-ए-मिस्ल' (पारंपरिक महर) में भारी कमी की है, तो वह निकाह स्वयं ही शून्य और निरर्थक है जिसे पाक शरीयत निकाह करार नहीं देती। इसमें स्त्री की मंज़ूरी या नामंज़ूरी का कोई दखल नहीं है। और यदि ये दोनों कारण नहीं हैं बल्कि वह किसी और कारण से नामंज़ूर करती है, तो इस स्थिति में यदि स्त्री कुंवारी थी और बालिग होने के बाद निकाह की खबर सुनते ही या यदि पहले से पता था तो बालिग होते ही तुरंत बिना रुके अपनी नामंज़ूरी ज़ाहिर नहीं की, तो निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो गया। अब स्त्री के पास कोई चारा नहीं है। और यदि उसने बालिग होते ही या बालिग होने के बाद निकाह का पता चलने पर तुरंत अपनी नामंज़ूरी ज़ाहिर कर दी, तो चूंकि निकाह पिता या दादा के अलावा किसी और का किया हुआ है, इसलिए स्त्री को 'खियार-ए-फ़स्ख' (निकाह रद्द करने का अधिकार) प्राप्त है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह खुद निकाह रद्द कर दे और वैवाहिक बंधन से बाहर हो जाए, बल्कि उसे शरीयत के काज़ी (न्यायाधीश) के यहाँ दावा करना होगा। काज़ी उल्लेखित मामलों की जाँच के बाद निकाह रद्द कर देगा। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

(अरबी पाठ)

यदि निकाह कराने वाला पिता और उसके पिता (दादा) के अलावा कोई और है, तो गैर-कुफ़ू में या भारी कमी के साथ निकाह बिल्कुल वैध नहीं है। और यदि कुफ़ू में और महर-ए-मिस्ल के साथ है तो निकाह सही है। नाबालिग लड़के और लड़की के लिए 'खियार-उल-फ़स्ख' (रद्द करने का अधिकार) है, चाहे सहवास के बाद बालिग होने पर या निकाह का ज्ञान होने पर हो। इन

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

यदि नाबालिग लड़की का निकाह पिता और दादा के अलावा किसी ने किया, तो गैर-कुफ़ू में या बहुत कम महर के साथ किया तो निकाह बिल्कुल नहीं होगा। और अगर कुफ़ू या महर-ए-मिस्ल के साथ किया तो निकाह सही होगा, और नाबालिग लड़की और लड़के को निकाह रद्द करने का अधिकार होगा चाहे सहवास के बाद बालिग होने पर या निकाह का पता चला हो; वे उस समय रद्द कर

(अरबी पाठ)

सभी के लिए अदालती फैसला (कज़ा) शर्त है। कुंवारी लड़की का अधिकार उसकी चुप्पी से समाप्त हो जाता है यदि वह स्वेच्छा से कार्य कर रही है और निकाह के बारे में जानती है। और यह अधिकार मजलिस (सभा) के अंत तक नहीं रहता भले ही वह (अपने अधिकार से) अनभिज्ञ हो। संक्षेप। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे अधिक जानने वाला है और उसका ज्ञान, जिसकी महिमा महान है, सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है।

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

सकते हैं। रद्द करने की इन सभी स्थितियों में काज़ी का फैसला शर्त है और बालिग कुंवारी लड़की की चुप्पी उसके रद्द करने के अधिकार को खत्म कर देती है जबकि वह अपने निकाह से वाकिफ हो और उससे उसकी अनुमति मांगी गई हो, भले ही उसे अपने अधिकार के बारे में ज्ञान न हो, और मजलिस के खत्म होने तक यह अधिकार बना रहेगा। संक्षेप। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे अधिक ज्ञान वाला है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और कामिल है। (त)

1. दुर्र-उल-मुख्तार, बाब-उल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/193-194.

पृष्ठ 554/739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

اس نکاح کو منظور نہ کیا تو وہ نکاح باقی رہے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر عورت کی نامنظوری اس بنا پر ہے کہ ماموں نے جس کے ساتھ اس کا نکاح کیا وہ اس کا کفو نہیں یعنی اس سے قوم یا دین یا پیشہ وغیرہ امور معتبرہ میں ایسا گھٹیا ہوا جس سے نکاح اس کے لیے باعث ننگ و عار ہے یا اس بنا پر کہ ماموں نے اس کے مہر مثل میں کمی فاحش کی ہے جب تو وہ نکاح خود ہی باطل محض ہوا جسے خود شرع مطہر نکاح نہیں ٹھہراتی ، عورت کو منظوری و نامنظوری کو کچھ دخل نہیں ، اور اگر یہ دونوں وجہیں نہیں بلکہ کسی اور سبب سے نامنظور کرتی ہے تو اس صورت میں اگر عورت نے کہ بکر تھی بعد بلوغ خبر نکاح سنتے ہی یا پہلے سے معلوم تھا تو بالغہ ہوتے ہی فوراً بلا توقف اختیاری نامنظوری ظاہر نہ کی تو نکاح لازم ہو گیا ، اب عورت کو اصلاً کوئی چارہ نہیں ، اور اگر فی الفور آن بلوغ میں یا بعد بلوغ نکاح معلوم ہوا تو آن استماع خبر میں معاً اپنی نامنظوری ظاہر کی تو از انجا کہ نکاح غیر اب وجد کا کیا ہوا ہے عورت کو اختیار فسخ حاصل ہے مگر اس کے یہ معنی نہیں کہ بطور خود فسخ کردے اور اس کے حبالہ زوجیت سے باہر ہو جائے بلکہ یہ کہ حاکم شرع کے یہاں دعوی رجوع کرے، حاکم بعد تحقیقات امور مذکورہ نکاح فسخ کردے، درمختار میں ہے :

(عربی عبارت)	(اردو ترجمہ)
ان کان المزوج غیر الاب و ابیہ لا یصح النکاح من غیر کفو و بغبن فاحش اصلاً و من کفو و بمہر المثل	اگر نابالغہ کا نکاح باپ اور دادا کے غیر نے کیا تو غیر کفو میں یا بہت کم مہر کے ساتھ کیا تو نکاح بالکل نہ ہوگا۔ اور اگر کفو یا مہر مثل سے کیا تو نکاح صحیح ہو گا، اور نابالغ

(عربی عبارت)

صح و لصغیر و صغیرۃ خیار الفسخ و لو بعد الدخول بالبلوغ او العلم بالنکاح بعدہ و شرط للکل القضاء و بطل خیار البکر بالسکوت لو مختارۃ عالمۃ باصل النکاح ولا یمتد الی آخر المجلس وان جھلت ۱ اہ ملتقطاً۔واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم و علمہ جل مجدہ اتم و احکم۔

(اردو ترجمہ)

لڑکی اور لڑکے کو نکاح کے فسخ کا اختیار ہو گا خواہ دخول کے بعد بلوغ یا نکاح کا علم ہوا ہو اس وقت فسخ کر سکتے ہیں، فسخ کی ان تمام صورتوں میں قضاء شرط ہے اور باکرہ بالغہ لڑکی کا سکوت اس کے خیار فسخ کو ختم کر دیتا ہے جبکہ وہ اپنے نکاح سے باخبر ہو اور اس سے اس کی اجازت طلب کی گئی ہو اگرچہ اس کو اپنے اختیار کے بارے میں علم نہ بھی ہو اور مجلس کے خاتمہ تک یہ اختیار باقی رہے گا، اہ، ملتقطا، واللہ سبحٰنہ وتعالٰی زیادہ علم والا ہے اور اس کا علم اتم واکمل ہے۔ (ت)

1. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی 1/193-194

Fatawa Razawiyya Volume 11

Issue 322: From Shahre Kuhna, 4th Rabi-ul-Awwal 1312 AH.

What do the scholars of religion and virtuous masters say regarding this matter: A person passed away leaving two daughters, one about a year old and the other about three years old, along with a wife, a mother, and three brothers. For seven years, these girls were raised under the care of their mother and paternal uncles. By divine decree, after seven years, the mother also passed away. Since the uncles were away for their own affairs and were not present here, maternal aunts came and through deceit and trickery took the girls, saying they would keep them until the uncles returned and then immediately send them back. After taking them away, in the absence of the paternal uncles, they married both girls to their own sons by their own choice. In this case, are these marriages valid or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: A girl of eight years is certainly a minor, as is the one of ten years, as long as menstruation does not occur or she does not reach the full age of fifteen years. The authority over a minor belongs to the 'asabat' (paternal male relatives); as long as 'asabat' exist, 'dhawi al-arham' (other relatives) are nothing. It is stated in Hidayah:

لغير العصبات من الاقارب ولاية التزويج عند ابى حنيفة رحمة الله تعالى معناه عند عدم العصبات 1	According to Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), the guardianship for the marriage of a minor is held by other relatives in the absence of paternal male relatives (asabat). (T)

A paternal uncle is an 'asaba' and a maternal aunt is from 'dhawat al-arham' (distant kindred). A maternal aunt is at the thirty-sixth degree after a real paternal uncle. If there is (1) no real paternal uncle, then (2) the step-paternal uncle has the guardianship of marriage, then (3) the son of the real paternal uncle, then (4) the son of the step-paternal uncle, then (5) the father's real paternal uncle, then (6) step, then (7) the son of the father's real paternal uncle, then (8) the son of the step one, then (9) the grandfather's real paternal uncle, then (10) step, then (11) the son of the grandfather's real paternal uncle, then (12) the son of the step one, then (13) a further distant real paternal uncle, (14) then step, (15) then his son, (16) then his [son], (17) then the manumitter (freer of slaves), (18) then his 'asaba'. All these are 'asabat'. (19) When none of these are present, then the mother is the guardian, (20) then the paternal grandmother, (21) then the maternal grandmother, (22) then the daughter, (23) then the son's daughter, (24) then the daughter's daughter, (25) then

the son's son's daughter or daughter's daughter, (26) then the daughter's daughter, (27) then the maternal grandfather, (28) then the full sister, (29) then the step-sister, (30) then children of the mother who do not share the father, (31) then children of the full sister, (32) then children of the step-sister, (33) then children of the maternal brother/sister, (34) then the paternal aunt, (35) then the maternal uncle, (36) and when none of these are present, then the maternal aunt. The details of all these levels are evident from Alamgiri, Durr-e-Mukhtar, etc., Fatawa Qazi Khan.

---

1 Hidayah, Chapter on Guardians and Equals, Al-Maktabat-ul-Arabia Karachi 2/298.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

मसला 322: शहर-ए-कुहना से, 4 रबी-उल-अव्वल 1312 हिजरी।

दीन के विद्वान और गुणी स्वामी इस विषय में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई जिसने लगभग एक वर्ष की एक बेटी और लगभग तीन वर्ष की दूसरी बेटी, एक पत्नी, एक माँ और तीन भाई छोड़े। सात वर्षों तक इन लड़कियों का पालन-पोषण उनकी माँ और चाचाओं की देखरेख में हुआ। ईश्वरीय विधान से, सात साल बाद माँ की भी मृत्यु हो गई। चूँकि चाचा अपने-अपने कामों में लगे थे और यहाँ उपस्थित नहीं थे, इसलिए मौसियां आईं और छल-कपट से लड़कियों को ले गईं, यह कहकर कि जब तक चाचा वापस नहीं आते ये लड़कियां हमारे पास रहेंगी और उनके आने पर तुरंत भेज दी जाएंगी। यहाँ से ले जाने के बाद, चाचाओं की अनुपस्थिति में उन्होंने अपनी मर्जी से दोनों लड़कियों का निकाह अपने बेटों के साथ कर दिया। इस स्थिति में, क्या ये निकाह हुए या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: आठ साल की लड़की निश्चित रूप से नाबालिग है, इसी तरह दस साल की भी, जब तक कि मासिक धर्म न आ जाए या वह पूरे पंद्रह साल की न हो जाए। नाबालिग पर अधिकार 'असबा' (पितृपक्ष के पुरुष रिश्तेदार) का है; जब तक 'असबा' मौजूद हैं, 'ज़वी अल-अर्हाम' (अन्य रिश्तेदार) कुछ भी नहीं हैं। हिदाया में है:

لغیر العصبات من الاقارب ولایة التزویج عند ابی حنیفة رحمة الله تعالی معناه عند عدم العصبات 1 नाबालिग के निकाह की विलायत (संरक्षण) असबात की अनुपस्थिति में अन्य रिश्तेदारों को इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार प्राप्त है। (त) चाचा 'असबा' है और मौसी 'ज़वात अल-अर्हाम' से है। सगे चाचा से मौसी छत्तीसगढ़वें (36वें) दर्जे पर है। यदि (1) सगा चाचा न हो, तो (2) सौतेले चाचा को निकाह की विलायत प्राप्त है, फिर (3) सगे चाचा के बेटे को, फिर (4) सौतेले चाचा के बेटे को, फिर (5) पिता के सगे चाचा को, फिर (6) सौतेले को, फिर (7) पिता के सगे चाचा के बेटे को, फिर (8) सौतेले के बेटे को, फिर (9) दादा के सगे चाचा को, फिर (10) सौतेले को, फिर (11) दादा के सगे चाचा के बेटे को, फिर (12) सौतेले के बेटे को, फिर (13) और दूर के सगे चाचा को, (14) फिर सौतेले को, (15) फिर उसके बेटे को, (16) फिर उसके[बेटे] को, (17) फिर आज़ाद करने वाले को, (18) फिर उसके असबा को। ये सब 'असबात' हैं। (19) जब इनमें से कोई न हो तो माँ वली (संरक्षक) है, (20) फिर दादी, (21) फिर नानी, (22)

फिर बेटी, (23) फिर पोती, (24) फिर नातिनी (नवासी), (25) फिर बेटे की पोती या नातिनी, (26) फिर बेटी की [संतान], (27) फिर नाना, (28) फिर सगी बहन, (29) फिर सौतेली बहन, (30) फिर माँ की औलाद जो पिता में शरीक नहीं, (31) फिर सगी बहन की औलाद, (32) फिर सौतेली की, (33) फिर माँ की तरफ़ के भाई-बहन की औलाद, (34) फिर फूफी, (35) फिर मामू, (36) और जब इन सब में कोई न हो तो मौसी। इन तमाम दर्जों का विवरण आलमगीरी, दुर्रे मुख्तार आदि से स्पष्ट है, फ़तावा क़ाज़ी ख़ान।

---

1 हिदाया, बाब फ़िल औलिया वल अकफ़ा, अल-मकतबतुल अरबीया कराची 2/298.

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۳۲۲: از شہر کہنہ ۴ ربیع الاول شریف ۱۳۱۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین وفضلائے کرام اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے انتقال کیا اور دولڑ کی ایک قریب ایک سال ، اور دوسری قریب تین سال ، اور بیوی اور والدہ تین بھائی چھوڑے ، ان لڑکیوں نے تامدت سات سال زیر سایہ اپنی والدہ اور چچاؤں کے پرورش پائی ، قضائے الہی بعد سات سال والدہ نے بھی انتقال کیا ، چونکہ چچا اپنے اپنے تعلقوں پر تھے یہاں موجود نہ تھے ، خالائیں آئیں اور حیلہ و فریب کر کے لڑکیوں کو لے گئیں کہ تا آنے چچاؤں کے یہ لڑکیاں ہمارے پاس ہیں جب چچا آئیں گے فوراً روانہ کر دیں گے ، یہاں سے لے جا کر دونوں لڑکیوں کے نکاح عدم موجودگی چچاؤں میں باختیار خود اپنے لڑکوں کے ساتھ کر لئے ، اس صورت میں یہ نکاح ہوئے یا نہیں؟ بینوا توجروا ۔

الجواب: آٹھ سال کی لڑکی ضرور نا بالغہ ہے ، یونہی دس سال کی بھی ، جب تک حیض نہ آئے یا پندرہ سال کامل کی عمر نہ ہو جائے ، اور نا بالغ کا اختیار عصبہ کو ہے ، عصبہ کے ہوتے ذوی الارحام کوئی چیز نہیں ۔ ہدایہ میں ہے :

لغیر العصبات من الاقارب ولایۃ التزویج عند ابی حنیفۃ رحمۃ اللہ تعالی معناہ عند عدم العصبات 1 نابالغہ کے نکاح کی ولایت عصبات کی غیر موجودگی میں دیگر اقارب کو امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالیٰ کے نزدیک حاصل ہے۔ (ت)

چچا عصبہ ہے اور خالہ ذوات الارحام سے ، خالہ سے سگے چچا سے چھتیسویں درجے میں ہے کہ 1 حقیقی چچا نہ ہو تو 2 سوتیلے چچا کو نکاح کی ولایت ہے ، پھر 3 حقیقی چچا کے بیٹے کو ،

پھر 4 سوتیلے چچا کے بیٹے کو ، پھر 5 باپ کا حقیقی چچا ، پھر 6 سوتیلا ، پھر 7 باپ کے حقیقی چچا کا بیٹا ، پھر 8 سوتیلا کا ، پھر 9 دادا کا حقیقی چچا ، پھر 10 سوتیلا پھر 11 دادا کے حقیقی چچا کا بیٹا ، پھر 12 سوتیلے کا ، پھر 13 اور دور کا سگا چچا 14 پھر سوتیلا ، 15 پھر اس کا بیٹا ، 16 پھر اس کا ، 17 پھر آزاد کرنے والا ، 18 پھر اس کا عصبہ ، یہ سب عصبات ہیں ، 19 جب ان میں کوئی نہ ہو تو ماں ولی ہے ، 20 پھر دادی ، 21 پھر نانی ، 22 پھر بیٹی ، 23 پھر پوتی ، 24 پھر نواسی ، 25 پھر پسر کی پوتی نواسی ، 26 پھر دختر کی ، 27 پھر نانا ، 28 پھر سگی بہن ، 29 پھر سوتیلی ، 30 پھر ماں کی اولاد جو باپ میں شریک نہیں ، 31 پھر سگی بہن کی اولاد ، 32 پھر سوتیلی کی ، 33 پھر اولاد مادر کی ، 34 پھر پھوپھی ، 35 پھر ماموں ، 36 اور جب ان سب میں کوئی نہ ہو تو خالہ ، ان تمام درجات کی تفصیل عالمگیری ودر مختار و غیر ہا سے ظاہر ، فتاوی قاضی خاں

---

1 ہدایہ باب فی الاولیاء والاکفاء المکتبۃ العربیہ کراچی ۲۹۸/۲

It is stated in:

[Arabic]: Walayat al-Nikah (guardianship for marriage) belongs to the agnates (Asbat), closest to the minor boy and girl: the father, then the grandfather, then the brother from both father and mother, then the brother from the father's side, then their sons in this order downwards, then the paternal uncle from both father and mother, etc. summarized. [Urdu]: The guardianship of marriage belongs to the agnate relatives (Asbat) and for a minor boy and girl, the closest agnates are the father, then the grandfather, then the full brother, then the brother from the father's side, then their sons in this order downwards, then the full paternal uncle, etc. summarized. (T)

It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic]: If there is no agnate, then the guardianship belongs to the mother (and after mentioning several degrees, he said) then the maternal aunts. [Urdu]: If there is no agnate relative, then the mother has guardianship, and after stating multiple degrees of guardianship, he said then maternal aunts will have guardianship. (T)

Thus, a marriage performed by a maternal aunt in the presence of a paternal uncle is dependent on the uncle's permission; if he validates it, it's valid, and if he rejects it, it becomes void. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic]: If a distant guardian performs a marriage while a closer guardian exists, it is dependent on his permission. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and definitive. [Urdu]: If a distant guardian performs a marriage while a closer guardian exists, it will be dependent on the closer guardian's permission. Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and definitive. (T)

Problem 325: From Soron, Etah district, Mohalla Malik Zadgan, sent by Mirza Hamid Hasan Sahib, 25 Rabi al-Akhir 1312 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A young adult girl's marriage was performed by her mother in the father's absence, gathering her relatives and kin, marrying her to her nephew (sister's son). The father also knows the boy and was agreeable to it, but he used to say 'do not do it until he gets a job'. In this situation, is the marriage valid according to Sharia or not? And does the mother have such authority over the children in the presence of the father or not?

Answer: For minor children, the mother has absolutely no such authority in the presence of the father. And for adult children, neither the mother nor the father has authority for anyone [to force them into marriage].

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Guardians, Naval Kishore Lucknow, 1/123
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/193
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/194

जिल्द ग्यारहवीं | फतावा रज़विया

इसमें लिखा है:

[अरबी]: निकाह की विलायत (संरक्षण) असबात (पिता पक्ष के संबंधी) के लिए है जो नाबालिग लड़के और लड़की के सबसे करीबी हों: पिता, फिर दादा, फिर सगा भाई, फिर पिता की ओर से भाई, फिर उन दोनों के बेटों को इसी क्रम में नीचे तक, फिर सगा चाचा, आदि (संक्षिप्त)। [उर्दू]: निकाह की विलायत असबात को है और नाबालिग लड़के और लड़की के लिए निकटतम असबात पिता, फिर दादा, सगा भाई, फिर पिता की ओर से भाई, फिर उन दोनों के पुत्रों को इसी क्रम से नीचे तक, फिर सगा चाचा, आदि (संक्षिप्त)। (त)

दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी]: यदि कोई असबा न हो तो विलायत माँ को है (और कई स्तरों का वर्णन करने के बाद उन्होंने कहा) फिर मौसियों को। [उर्दू]: यदि कोई असबा (पिता पक्ष का संबंधी) न हो तो माँ को विलायत प्राप्त है, और विलायत के कई स्तरों का वर्णन करने के बाद उन्होंने कहा कि फिर मौसियों को विलायत होगी। (त)

अत: चाचा की उपस्थिति में मौसी द्वारा किया गया निकाह चाचा की अनुमति पर निर्भर है; यदि वह अनुमति दे दे तो मान्य है और यदि अस्वीकार कर दे तो बातिल (शून्य) हो जाएगा। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी]: यदि किसी दूर के वली ने निकट के वली की उपस्थिति में निकाह कर दिया, तो यह उसकी अनुमति पर निर्भर है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और दृढ़ है। [उर्दू]: यदि निकट के वली की उपस्थिति में दूर के वली ने निकाह कर दिया तो वह निकट के वली की अनुमति पर निर्भर रहेगा। अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान पूर्ण और दृढ़ है। (त)

मसाला 325: सोरों, जिला एटा, मोहल्ला मलिक ज़ादगान से मिर्ज़ा हामिद हसन साहब द्वारा भेजा गया, 25 रबी-उल-आख़िर 1312 हिजरी।

विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: एक युवा बालिग लड़की का निकाह उसकी माँ ने पिता की अनुपस्थिति में अपने रिश्तेदारों और सगे-संबंधियों को इकट्ठा करके अपने भांजे के साथ कर दिया। पिता भी उस लड़के को जानता है और इस पर राजी भी था, लेकिन वह कहता था कि 'जब तक वह

नौकरी न पा ले तब तक मत करना'। इस स्थिति में, क्या निकाह शरीयत के अनुसार सही हुआ या नहीं? और क्या पिता की उपस्थिति में माँ को बच्चों पर ऐसा अधिकार है या नहीं?

उत्तर: नाबालिग बच्चों के लिए, पिता की उपस्थिति में माँ को ऐसा कोई अधिकार बिल्कुल नहीं है। और बालिग बच्चों पर माँ-बाप किसी के लिए [निकाह का जबरन अधिकार] नहीं है।

1. फतावा काज़ी खान, फ़स्ल फ़िल औलिया, नवल किशोर लखनऊ, 1/123
2. दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/193
3. दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/194

पृष्ठ 556/739

میں ہے:

ولایۃ النکاح الی العصبات اقرب الی الصغیر والصغیرۃ الاب ثم الجد ثم الاخ لاب وام ثم الاخ لاب ثم بنوھما علی ھذا الترتیب وان سفلوا ثم العم لاب وام اھ ملخصا۔ | نکاح کی ولایت عصبات کو ہے اور نابالغ لڑکے اور لڑکی کے قریب ترین عصبات والد پھر دادا، حقیقی بھائی، پھر باپ کی طرف سے بھائی، پھر ان دونوں کے لڑکوں کو اس ترتیب سے نیچے تک، پھر حقیقی چچا کو ، اھ ملخصا (ت)

در مختار میں ہے:

فان لم یکن عصبۃ فالولایۃ للام (وعدد درجات الی ان قال) ثم الخالات | اگر عصبہ نہ ہو تو ماں کو ولایت ہے، اور ولایت کے درجات متعددہ کو بیان کرنے کے بعد انہوں نے کہا پھر خالاؤں کو ولایت ہو گی۔ (ت)

پس چچا کے ہوتے جو نکاح خالہ کر دے چچا کی اجازت پر موقوف ہے، اگر جائز رکھے جائز اور اگر رد کر دے تو باطل ہو جائے درمختار میں ہے :

لو زوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔ | اگر قریبی ولی کے ہوتے ہوئے بعید ولی نے نکاح کر دیا تو قریب ولی کی اجازت پر موقوف رہے گا۔ اللہ تعالٰی اعلم ہے اور اس کا علم اتم اور محکم ہے۔ (ت)

مسئلہ ۳۲۵: از سوروں ضلع ایٹہ محلہ ملک زادگان مرسلہ مرزا حامد حسن صاحب ۲۵ ربیع الآخر ۱۳۱۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک نوجوان بالغ لڑکی کا نکاح اس کی ماں نے عدم موجودگی پدر میں اپنے عزیز واقارب کو جمع کر کے اپنے بھانجے کے ساتھ کر دیا، باپ بھی اس لڑکے کو جانتا ہے اور اس پر راضی بھی تھا مگر یہ کہتا تھا کہ جب تک یہ نوکر نہ ہو مت کرنا، اس صورت میں نکاح شرعا درست ہوا یا نہیں؟ اور ماں کو بہ موجودگی باپ کے اولاد پر ایسا اختیار ہے یا نہیں؟

الجواب: نابالغ اولاد باپ کے ہوتے ماں کے لئے ایسا اختیار اصلاً نہیں۔ اور بالغ اولاد پر ماں باپ کسی کے لئے

1 فتاوی قاضی خان فصل فی الاولیاء نولکشور لکھنئو ۱/۱۲۳ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۳ 3 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۴

Fatawa Rizvia, Volume 11

There is no forced guardianship. The radiant Presence, the Master of Messengers (may the peace and blessings of Allah be upon him), states:

“The matron has more right over herself than her guardian.” (Narrated by the Six except Bukhari, from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both.) A mature woman has more right over herself than her guardian; this was mentioned by the six Imams of Hadith except Imam Bukhari, on the authority of Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). (T)

In 'Dur al-Mukhtar' it is stated: “A mature virgin cannot be forced into marriage because the authority of compulsion ceases upon reaching maturity.” A mature virgin girl cannot be forced into marriage because once she reaches maturity, no one retains the authority of compulsion over her. (T)

In the mentioned case, since the girl is mature, her marriage cannot be validly performed without her own permission, neither by her mother nor by her father. Yes, a mature woman whose guardian is present cannot marry herself to a non-equal (non-kufu), nor can she authorize another to do so, unless the guardian, after being informed that the person is a non-equal, explicitly expresses his consent before the marriage. Otherwise, the marriage will be purely void, such that it cannot even be made valid by the subsequent consent of the guardian. In 'Dur al-Mukhtar' it is stated: “The marriage of a free, legally responsible woman is valid without the consent of a guardian. However, the ruling regarding a non-equal is that it is not permissible at all without the guardian's consent after he has become aware of it.” (Summary) The marriage of a free, sane, and mature woman is valid of her own will without the guardian's consent, and the fatwa is that in the case of a non-equal, the marriage is not permissible without the guardian's consent when the guardian has knowledge of the person being a non-equal. (Summary) (T)

In 'Radd al-Muhtar' it is stated: “This applies when she has a guardian who did not consent to it before the contract; therefore, subsequent consent is not beneficial. [From] Bahr.” This is in the case where the girl has a guardian and he does not agree

to it before the marriage; then after the marriage, the guardian's consent will not be beneficial. [From] Bahr. (T)

1. Sahih Muslim, Book of Marriage, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/455; Sunan Abu Dawood, Section on the Previously Married Woman, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/286.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Matba' Mujtabai Delhi, 1/191.
3. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Matba' Mujtabai Delhi, 1/191.
4. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/297.

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

अनिवार्य अभिभावकत्व (विलयत-ए-जबी) नहीं है। रसूलो के सरदार (उन पर अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो) फरमाते हैं:

“परिपक्व (वयस्क) महिला अपने अभिभावक (वली) की तुलना में अपने स्वयं के मामलों पर अधिक अधिकार रखती है।” (इमाम बुखारी के अलावा छह इमामों ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसे वर्णित किया है।) वयस्क महिला अपने अभिभावक (वली) की तुलना में अपने स्वयं के मामलों पर अधिक अधिकार रखती है; इसे इमाम बुखारी के अलावा छह इमामों ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के माध्यम से वर्णित किया है। (टी)

दुर्रे मुख़्तार में है: “एक वयस्क कुंवारी लड़की को निकाह के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके वयस्क होने पर उस पर ज़बरदस्ती का अधिकार (विलायत) समाप्त हो जाता है।” एक वयस्क कुंवारी लड़की को निकाह के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके वयस्क होने पर उस पर ज़बरदस्ती का अधिकार किसी के पास नहीं रहता। (टी)

उपरोक्त स्थिति में, जबकि लड़की वयस्क है, उसका निकाह उसकी अपनी अनुमति के बिना न तो माँ के करने से मान्य हो सकता है और न ही बाप के। हाँ, जिस वयस्क महिला का अभिभावक मौजूद हो, वह किसी 'गैर-कुफ़ू' (जो सामाजिक या आर्थिक रूप से बराबर न हो) से न तो खुद निकाह कर सकती है और न ही किसी दूसरे को अनुमति दे सकती है, जब तक कि वली उस व्यक्ति के'गैर-कुफ़ू' होने की जानकारी होने पर निकाह से पहले स्पष्ट रूप से अपनी सहमति व्यक्त न कर दे। अन्यथा निकाह पूरी तरह से शून्य (बातिल) होगा जिसे बाद में वली की सहमति से भी वैध नहीं किया जा सकता। दुर्रे मुख़्तार में है: “अभिभावक (वली) की सहमति के बिना एक स्वतंत्र, बुद्धिमान, वयस्क महिला का अपनी मर्जी से निकाह मान्य होता है, और 'गैर-कुफ़ू' के मामले में वली की मर्जी के बिना उसका निकाह जायज़ होने पर फतवा है, जबकि वली को उसके'गैर-कुफ़ू' होने का पता चल चुका हो।” (संक्षिप्त) वली की सहमति के बिना एक स्वतंत्र, बुद्धिमान, वयस्क महिला का अपनी मर्जी से निकाह मान्य होता है, और 'गैर-कुफ़ू' के मामले में वली की मर्जी के बिना उसके निकाह जायज़ होने पर फतवा है जबकि वली 'गैर-कुफ़ू' में होने का ज्ञान प्राप्त कर चुका हो। (संक्षिप्त) (टी)

रद्दुल मुह्तार में है: “यह उस स्थिति में है जब लड़की का कोई वली हो और वह निकाह से पहले उस पर राजी न हो, तो निकाह के बाद वली की सहमति उपयोगी नहीं होगी। (बहर)” यह उस स्थिति

में है जब लड़की का कोई वली हो और निकाह से पहले वह उस पर राजी न हो तो निकाह के बाद वली की रज़ा (सहमति) उपयोगी न होगी। (बहर) (टी)

1. सहीह मुस्लिम, किताबुन निकाह, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/455; सुनन अबू दाऊद, सिय्यिब के बारे में खंड, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/286।
2. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/191।
3. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/191।
4. रद्दुल मुह्तार, बाबुल वली, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी बेरुत, 2/297।

पृष्ठ 557 / 739

ولایت جبری نہیں ۔ حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الایم احق بنفسہا من ولیہا ۱ رواہ الستۃ الا البخاری عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ بالغہ عورت ولی کی بنسبت اپنے نفس کی زیادہ حقدار ہے، اس کو امام بخاری کے سوا ائمہ ستہ نے بروایت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما ذکر کیا۔ (ت)

در مختار میں ہے: لاتجبر البالغۃ البکر علی النکاح لانقطاع الولایۃ بالبلوغ ۲۔ بالغہ باکرہ لڑکی کو نکاح پر مجبور نہیں کیا جاسکتا کیونکہ اس کے بالغ ہو جانے پر اس پر جبر کی ولایت کسی کو حاصل نہ رہی، (ت)

صورتِ مذکورہ میں جبکہ لڑکی بالغہ ہے تو اس کا نکاح بے اس کے اپنے اذن کے نہ ماں کے کئے نافذ ہوسکے نہ باپ کے ہاں، جس عورت بالغہ کا ولی موجود ہو وہ غیر کفو سے اپنا نکاح نہ خود کرسکتی ہے نہ دوسرے کو اذن دے سکتی ہے جب تک ولی اس شخص کے غیر کفو ہونے پر مطلع ہو کر پیش از نکاح بالتقریح اپنی رضامندی ظاہر نہ کردے، ورنہ نکاح محض باطل ہوگا کہ پھر رضائے ولی سے بھی صحیح نہیں ہو سکتا۔ درمختار میں ہے : نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلارضی ولی ویفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا بلارضی ولی بعد معرفتہ ایاہ ۳ اھ ملخصاً۔ ولی کی رضا کے بغیر حرہ عاقلہ بالغہ کا اپنی مرضی سے نکاح نافذ ہوتا ہے اور غیر کفو میں ولی کی مرضی کے بغیر اس کا نکاح جائز ہونے پر فتوٰی ہے جبکہ ولی غیر کفو میں ہونے کا علم حاصل کرچکا ہو اھ ملخصاً (ت)

رد المحتار میں ہے: ہذا اذا کان لھا ولی لم یرض بہ قبل العقد فلایفید الرضی بعدہ بحر ۴ ۔ یہ اس صورت میں ہے جب لڑکی کا کوئی ولی ہو اور نکاح سے قبل وہ اس پر راضی نہ ہو تو نکاح کے بعد ولی کی رضا مفید نہ ہوگی، بحر۔ (ت)

۱ صحیح مسلم کتاب النکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۵۵، سنن ابوداؤد فصل فی الثیب آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۸۶ ۲ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ ۳ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ ۴ ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۹۷

Fatawa Razawiyyah, Volume 11

And compatibility (Kufu) is a person whose tribe, religion, conduct, profession, etc., do not have any such defect that would cause disgrace, shame, and ill-repute for the daughter's guardians according to local custom. He should also not be in such a state of poverty, destitution, unemployment, or lack of resources that he cannot provide the obligatory maintenance (nafaqah) for the woman, or cannot pay the amount of dowry (mahr) that has been fixed to be paid in advance according to Shariah or custom. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic]: Religiousness and wealth are considered for compatibility among Arabs and non-Arabs, such that he is able to pay the prompt dowry and one month's maintenance if he is not a professional; otherwise, if he earns daily, he should be able to provide her sufficiency if she can tolerate intercourse, and profession is also considered. [Summarized] [Urdu Translation]: In both Arabs and non-Arabs, religiousness and wealth will be considered for compatibility (Kufu), meaning he should be able to pay the prompt dowry (mahr al-mu'ajjal). If he is not in business, he should be able to pay for one month's expenses. Otherwise, if he is a businessman, he should have the capacity to provide daily maintenance for the wife's sufficiency if the woman is capable of intercourse; otherwise, the capacity for prompt dowry is sufficient, and equality in profession is also reliable. [Summarized (T)]

Therefore, if the aforementioned person was free from all these defects and the marriage took place with the daughter's permission, then it undoubtedly became valid, complete, and effective. The father's absence or dissatisfaction does not cause any disruption. Neither does his lack of a servant hinder anything as long as he possesses other wealth or can provide food and drink for himself and his wife through some craft, or if, according to the city's custom, his parents take sufficient care of their daughter-in-law and son, and he is also capable of paying whatever advance dowry is required. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic]: A boy is compatible through the wealth of his father and mother regarding the prompt dowry, but not maintenance, because the custom is that fathers bear the dowry for their sons, but not maintenance. Dhakhirah. [Summarized] [Urdu Translation]: A boy can be compatible regarding the dowry due to the father or mother being wealthy, because parents usually bear the dowry of their sons themselves. In the matter of maintenance, the parents' wealth is not useful because parents do not take responsibility for maintenance. Dhakhirah. [Summarized (T)]

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic]: Its implication is that if it were the custom to also bear the maintenance for a minor son, as in... [Urdu Translation]: It is derived from this that if it is customary to take the responsibility of maintenance for a minor son upon oneself, as is the case in our time, then also compatibility (is established).

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Matba' Mujtabai, Delhi, 1/195 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Matba' Mujtabai, Delhi, 1/195

फ़तावा रजविया, ग्यारहवीं जिल्द

और कुफ़ू (बराबरी) वह व्यक्ति है जिसकी जाति, धर्म, आचरण, पेशे आदि में कोई ऐसा दोष न हो जिसके कारण उसके साथ निकाह बेटी के वलियों (अभिभावकों) के लिए लोक-रीति के अनुसार अपमान, शर्म और बदनामी का कारण बने। न ही वह ऐसी मोहताजी, निर्धनता, बेरोज़गारी और संसाधनों की कमी की स्थिति में हो कि औरत का वाजिब खर्च (नफ़क़ा) न चल सके या जितना मेहर शरीयत या रीति के अनुसार पेशगी (पहले) देना तय हुआ है, वह न दे सके। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

[अरबी]: अरब और गैर-अरबों के बीच कुफ़ू के लिए धार्मिकता और धन पर विचार किया जाता है, जैसे कि वह मेहर-ए-मुअज्जल (त्वरित मेहर) और एक महीने का नफ़क़ा देने में सक्षम हो यदि वह पेशेवर नहीं है; अन्यथा, यदि वह दैनिक कमाता है, तो उसे उसकी पर्याप्तता प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए यदि वह संभोग सहन कर सकती है, और पेशे पर भी विचार किया जाता है। [संक्षिप्त] [उर्दू अनुवाद]: अरब और गैर-अरब दोनों में कुफ़ू के लिए धार्मिकता और धन का एतबार होगा, यानी वह मेहर-ए-मुअज्जल देने में सक्षम हो। यदि वह कारोबारी नहीं है, तो वह एक महीने का खर्च अदा करने में सक्षम हो। अन्यथा, यदि वह कारोबारी है, तो उसे पत्नी की दैनिक ज़रूरतों के लिए नफ़क़ा प्रदान करने की शक्ति होनी चाहिए यदि स्त्री संभोग सहन करने के योग्य हो; अन्यथा, मेहर-ए-मुअज्जल की क्षमता पर्याप्त है, और पेशे में समानता भी विश्वसनीय है। [संक्षिप्त (त)]

अतः यदि उल्लेखित व्यक्ति इन सभी दोषों से मुक्त था और निकाह बेटी की अनुमति से हुआ तो निस्संदेह वह सही, पूर्ण और प्रभावी हो गया। पिता की अनुपस्थिति या नाराज़गी इसमें कोई बाधा नहीं डालती। न ही उसका नौकर न होना बाधक हो सकता है जबकि उसके पास अन्य धन हो या वह किसी शिल्प (दस्तकारी) से अपने और अपनी पत्नी के खाने-पीने के योग्य हो सके या यदि शहर के रिवाज के अनुसार उसके माता-पिता बहू और बेटे की पर्याप्त देखभाल रखते हों, और यदि कुछ पेशगी मेहर देना हो तो वह उसे अदा करने में भी सक्षम हो। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

[अरबी]: एक लड़का अपने पिता और माता के धन के माध्यम से त्वरित मेहर के संबंध में कुफ़ू हो सकता है, लेकिन नफ़क़ा (खर्च) के मामले में नहीं, क्योंकि रिवाज यह है कि पिता अपने बेटों के लिए मेहर वहन करते हैं, नफ़क़ा नहीं। जखीरा। [संक्षिप्त] [उर्दू अनुवाद]: लड़का पिता या माता के धनी होने के कारण मेहर के मामले में कुफ़ू हो सकता है क्योंकि आमतौर पर माता-पिता स्वयं बेटों का

मेहर वहन करते हैं। नफ़क़ा के मामले में माता-पिता का धनी होना काम का नहीं है क्योंकि माता-पिता नफ़क़ा की जिम्मेदारी नहीं लेते। जखीरा। [संक्षिप्त (त)]

रद्द-उल-मुह्तार में है:

[अरबी]: इसका निहितार्थ यह है कि यदि नाबालिग बेटे के लिए नफ़क़ा वहन करना भी रिवाज होता, जैसा कि... [उर्दू अनुवाद]: इससे यह प्राप्त हुआ कि यदि नाबालिग बेटे की ओर से नफ़क़ा को अपने ज़िम्मे लेना रिवाज हो जैसा कि हमारे समय में है, तो भी कुफ़ू (स्थापित होगा)।

1 दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल कफ़ाअह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/195 2 दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल कफ़ाअह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/195

اور کفو وہ ہے جس کے قوم، مذہب، چلن، پیشے وغیرہ میں کوئی ایسا عیب نہ ہو جس کے سبب اس کے ساتھ نکاح اولیائے دختر کے لئے اہلِ عرف کے نزدیک موجب ننگ و عار و بدنامی ہو، نہ ایسی حالت محتاجی و ناداری بے حرفگی و بے سامانی میں ہو کہ عورت کا نفقہ واجبہ نہ چل سکے، یا جس قدر مہر شرعاً یا عرفاً پیشگی دینا ٹھہرا ہے نہ دے سکے۔ در مختار میں ہے:

تعتبر في العرب والعجم ديانة ومالا بان يقدر على المعجل ونفقة شهر لو غير محترف والافان كان يكتسب كل يوم كفايتها لو تطيق الجماع وحرفة اه ملخصا۔ | عرب و عجم میں کفو کے لئے دینداری اور مال کا اعتبار ہوگا کہ وہ مہر معجل دینے پر قادر ہو اور وہ کاروبار والا نہ ہو تو ایک ماہ کا خرچہ ادا کرنے پر قادر ہو، ورنہ اگر وہ کاروبار والا ہے تو روزانہ بیوی کو کفایت کے لئے نفقہ کی قدرت رکھتا ہو اگر عورت کو جماع کی برداشت ہو ورنہ مہر معجل کی قدرت کافی ہے اور برابری معتبر ہے پیشہ میں اھ ملخصاً (ت)

پس اگر شخص مذکور ان سب نقائص سے خالی تھا اور نکاح باذنِ دختر ہوا تو بلا شبہ صحیح و تام و نافذ ہو گیا۔ جس میں ناموجودی و ناراضی پدر کچھ خلل انداز نہیں۔ نہ اس کا نوکر نہ ہونا مخل ہو سکتا ہے جبکہ وہ اور مال رکھتا ہو یا کسی دستکاری سے اپنے اور زوجہ کے کھانے پینے کے قابل ہو سکتا ہے یا حسب عادت بلد اس کے ماں باپ بہو بیٹے کی کافی خبرگیری رکھیں اور کچھ مہر پیشگی دینا ہو تو اس کے ادا پر بھی قادر ہو، در مختار میں ہے:

الصبی کفو بغنی ابیه وامه بالنسبة الی المهر المعجل لا النفقة لان العادة ان الآباء یتحملون عن الابناء المهر لا النفقة ذخیرة اه ملخصا۔ | لڑکا باپ یا ماں کے غنی ہونے کی وجہ سے مہر کے بارے میں

کفو ہو سکتا ہے کیونکہ عادۃً والدین لڑکوں کے مہر کو خود برداشت کرتے ہیں، نفقہ کے معاملہ میں والدین کا غنا کارآمد نہیں کیونکہ والدین نفقہ کی کفالت نہیں لیتے، ذخیرہ، اھ ملخصاً۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

مقتضاہ انہ لو جرت العادۃ بتحمل النفقۃ ایضا عن الابن الصغیر کما في | اس سے حاصل ہوا کہ اگر نابالغ بیٹے کی طرف سے نفقہ کو اپنے ذمے لئے جانا عادت ہو جیسا ہمارے زمانہ میں ہے تو بھی کفو

1 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۵ 2 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۵

Fatawa Ridawiyya Volume 11

(Arabic Text)	(Urdu Translation/Explanation)
In our time, he would be an equal (kufu), rather in our time, he (the father) bears it (the maintenance) for his adult son who is under his care. It is apparent that he would be an equal by that, because the purpose is to obtain maintenance from the husband's side, through ownership, earning, or otherwise. This is supported by what is understood from the words of Al-Hidayah and others, that the discussion is about the husband in general, whether he is a minor or an adult, etc.	It will be possible in our time, as people are responsible for the maintenance even on behalf of their adult son living with them. So in this case, being an equal (kufu) is apparent because the objective is to obtain maintenance for the wife from the boy's side, whether the maintenance is obtained through ownership, earning, or any other method. This is supported by the words of Al-Hidayah, from which it is understood that they spoke about the husband in general, whether he is a minor or an adult, etc.

(T)

Yes, if there was an excessive reduction in the daughter's *Mahr al-Mithl* (customary dower), the father has the right to object, the result of which is that the full *Mahr al-Mithl* is obtained; and if he does not complete it, the Qadi (judge) shall annul the marriage, not that the marriage is necessarily voided. It is mentioned in *Durr al-Mukhtar*:

"If she marries for less than her mahr, the agnate guardian (wali 'asaba) has the right to object until her mahr al-mithl is completed, or the Qadi separates them to remove the disgrace."[2]

If an adult woman accepted a dower less than her *Mahr al-Mithl* in her marriage, the agnate guardian (wali 'asaba) has the right to object until the girl completes her full *Mahr al-Mithl*, or the Qadi annuls the marriage to end the guardian's disgrace. (T)

However, if among the aforementioned matters there is something due to which he (the groom) is not sharia-compliant as an equal (kufu), and the father, after becoming aware of it, did not express his consent, then certainly, this marriage is void from the start, such that it cannot be valid even with the father's consent now. In this case, it is obligatory for the man and woman to separate immediately and abandon this

marriage. Then, if they wish, they may marry anew after explicit permission from the father. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best.

Issue 326: 28 Shaban 1312 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A minor girl has no father, grandfather, brother, or nephew, but has a real paternal uncle. The uncle has a minor son. If this legal guardian (wali) marries his minor niece to his minor son by virtue of guardianship...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Kafa'ah (Equality), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/344 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'ah (Equality), Matba' Mujtabai, Delhi, 1/195

फतावा रज़विया जिल्द 11

(अरबी पाठ)

हमारे समय में वह योग्य (कुफ़ु होगा, बल्कि हमारे समय में वह (पिता) अपने उस वयस्क पुत्र की ओर से भरण-पोषण (नफ़क़ा) का भार उठाता है जो उसके संरक्षण में है। यह स्पष्ट है कि वह इसके कारण कुफ़ु होगा क्योंकि उद्देश्य पति की ओर से पत्नी के लिए भरण-पोषण प्राप्त करना है, चाहे वह स्वामित्व, कमाई या किसी अन्य तरीके से हो। इस बात का समर्थन हिदाया और अन्य के शब्दों से होता है कि चर्चा सामान्य रूप से पति के बारे में है, चाहे वह नाबालिग हो या वयस्क, आदि।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

यह हमारे समय में संभव होगा, क्योंकि लोग अपने साथ रहने वाले वयस्क बेटे की ओर से भी भरण-पोषण के जिम्मेदार होते हैं। तो इस स्थिति में कुफु होना स्पष्ट है क्योंकि उद्देश्य लड़के की ओर से पत्नी के लिए भरण-पोषण प्राप्त करना है, चाहे स्वामित्व, कमाई या किसी अन्य तरीके से नफ़क़ा प्राप्त हो। इस बात की पुष्टि हिदाया के कलाम से होती है जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने सामान्य रूप से पति की बात की है, चाहे वह नाबालिग हो या बालिग हो आदि।

(त)

हाँ, यदि पुत्री के'मेहर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) में अत्यधिक कमी की गई है, तो पिता को इस पर आपत्ति करने का अधिकार है जिसका परिणाम यह होगा कि पूरा मेहर-ए-मिस्ल प्राप्त कर लिया जाए; और यदि वह पूरा नहीं करता तो काज़ी (न्यायाधीश) निकाह निरस्त कर दे, न कि निकाह अनिवार्य रूप से रद्द हो जाए। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

"यदि उसने अपने मेहर से कम पर निकाह किया, तो वली असबा *(पितृपक्षीय संरक्षक)* को आपत्ति का अधिकार है जब तक कि उसका मेहर-ए-मिस्ल पूरा न हो जाए, या काज़ी शर्मिंदगी दूर करने के लिए उनके बीच अलगाव कर दे।"[2]

अगर बालिगा ने अपने निकाह में मेहर-ए-मिस्ल से कम मेहर मंजूर किया तो वली असबा को आपत्ति का हक है जब तक कि लड़की अपना मेहर-ए-मिस्ल पूरा कराए या फिर काज़ी वली की शर्मिंदगी (आर) को खत्म करने के लिए निकाह फस्ख (निरस्त) करे। (त)

बहरहाल, यदि उपरोक्त मामलों में से कोई ऐसी बात है जिसके कारण वह शरीयत के अनुसार कुफु नहीं ठहरता, और पिता ने उस पर सूचित होने के बाद अपनी सहमति व्यक्त नहीं की थी, तो निश्चित रूप से, यह निकाह शुरू से ही शून्य (बातिल) है, यहाँ तक कि अब पिता की सहमति से भी सही नहीं

हो सकता। इस स्थिति में फ़र्ज़ है कि पुरुष और महिला तुरंत अलग हो जाएँ और इस निकाह को छोड़ दें। फिर, यदि वे चाहें, तो पिता की स्पष्ट अनुमति के बाद नए सिरे से निकाह कर लें। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 326: 28 शाबान 1312 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक नाबालिग लड़की है जिसका पिता, दादा, भाई, भतीजा कोई नहीं है, वास्तविक चाचा हैं। चाचा का एक नाबालिग बेटा है। यदि यह जायज़ वली (संरक्षक) अपनी नाबालिग भतीजी का निकाह अपने नाबालिग बेटे से विलायत (संरक्षण) के आधार पर...

---

[1] रद-उल-मुहतार, बाब-अल-कफ़ा'ह, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/344 [2] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-अल-कफ़ा'ह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/195

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

| زماننا انه یکون کفوا بل في زماننا یتحملها عن ابنه الکبیر الذی فی حجره والظاهر انه یکون کفوا بذلك لان المقصود حصول النفقة من جهة الزوج بملك او کسب او غیره ویؤیده ان المتبادر من کلام الهدایة وغیرهما ان الکلام فی مطلق الزوج صغیرا کان او کبیرا الخ۔ | ہوسکے گا ہمارے زمانے میں تو لوگ اپنے اس رہنے والے بالغ بیٹے کی طرف سے بھی نفقہ کے ذمہ دار ہوتے ہیں۔ تو اس صورت میں کفو ہونا ظاہر ہے کیونکہ مقصد تو لڑکے کی طرف سے بیوی کے لئے نفقہ کا حصول ہے مالک ہونے یا کاسب یا کسی اور طریقہ سے نفقہ حاصل ہو، اور اس بات کی تائید ہدایہ کے کلام سے متبادر ہوتی ہے کہ انہوں نے مطلق خاوند کی بات کی ہے خواہ نابالغ ہو یا بالغ ہو الخ | (ت)

ہاں اگر دختر کے مہر مثل میں کمی فاحش کی گئی ہے تو باپ کو اس پر اعتراض پہنچتا ہے جس کا حاصل اس قدر کہ مہر مثل پورا کرا لیا جائے، اور پورا نہ کرے تو قاضی نکاح فسخ کردے، نہ یہ کہ خواہ مخواہ نکاح رد ہو جائے، در مختار میں ہے:

لو نکحت باقل من مهرها فلولی العصبة الاعتراض حتی یتم مهر مثلها اویفرق القاضی بینهما دفعاً للعار۔ 2

اگر بالغہ نے اپنے نکاح میں مہر مثل سے کم مہر منظور کیا تو ولی عصبہ کو اعتراض کا حق ہے تا وقتیکہ لڑکی اپنا مہر مثل پورا کرائے یا پھر قاضی ولی کی عار کو ختم کرنے کے لئے نکاح فسخ کرے۔ (ت)

البتہ اگر امور مذکورہ بالا سے کسی امر میں ایسا بھی ہے جس کے باعث وہ شرعاً کفو نہ ٹھہرے، اور باپ نے اس پر مطلع ہو کر اپنی رضامندی ظاہر نہ کر دی تھی تو بیشک، یہ نکاح سرے سے باطل ہوا کہ اب باپ کی رضامندی سے بھی صحیح نہیں ہو سکتا، اس تقدیر پر فرض ہے کہ مرد عورت فورا جدا ہو جائیں اور اس نکاح کو ترک کردیں، پھر اگر چاہیں تو بعد اجازت صریحہ پدر از سر نو نکاح کرلیں، واللہ سبحنہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۲۶: ۲۸ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی نا بالغہ اس کے باپ، دادا، بھائی، بھتیجا کوئی نہیں حقیقی چچا ہیں، چچا کا نا بالغ لڑکا ہے، اگر یہ ولی جائز اپنی بھتیجی نا بالغہ کا اپنے پسر نا بالغ سے بولایت

---

1 رد المحتار باب الکفاءۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۴۴ 2 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۵

Fatawa Rizwia Volume Eleven

Question: If [a guardian] performs a marriage in such a state that the girl is under the care of her maternal grandmother and is present with her, will this marriage be valid and permissible or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: It is valid and permissible provided that the boy is a peer (kufu) for that minor girl and no explicit reduction is made in her proper dower (mahr-e-misl). It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Text Box]: "If the marriage officiant is someone other than the father or his father (paternal grandfather), it is not valid at all if the groom is not a peer or if there is excessive deception (gross underpayment of dower). But if it is with a peer and with the equivalent dower, it is valid etc." (Summarized). [Urdu Translation Column]: Summarized. If the one performing the marriage is not the father or grandfather, then in the case of not being a peer or clear reduction from the proper dower, the marriage will not be valid at all. And if there is peerage and proper dower, then the marriage will be valid, etc. (Summarized). (T)

Since this person is the guardian (wali) of both the boy and the girl, it is sufficient to say in front of two witnesses, "I have given my so-and-so niece in marriage to my so-and-so son for this much dower." It is not necessary for the boy or the girl to be present.

[Arabic Text Box]: "Yes, it is necessary that he is not absent to the extent of ghaybat-e-munqatia (complete severance), for in that case, he would no longer remain a guardian, as they (scholars) have validated and as detailed in Radd al-Muhtar." [Urdu Translation Column]: Yes, it is necessary that he is not absent to the extent of fifty [units of distance] such that reaching there is difficult, because in such a situation he will not be considered a guardian, as the jurists have corrected it, the detail of which is given in Radd al-Muhtar. (T)

It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Text Box]: "A single person can represent both sides of the marriage through an offer (ijab) that stands in place of acceptance, such as if he were the guardian for both sides etc." (Summarized). And in Radd al-Muhtar, like "I have married my son to the daughter of my brother." And Allah Almighty knows best. [Urdu Translation Column]: If a single person, being the guardian from both sides in a marriage, makes an offer, it will also serve as acceptance. For example, when he himself is the

guardian from both sides (summarized). And in Radd al-Muhtar it is, for example, saying: "I have married my daughter to my nephew." And Allah Almighty knows best. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 2 Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315 3 Durr al-Mukhtar, Chapter on Equality (Kafa'ah), Mujtabai Press, Delhi, 1/196 4 Radd al-Muhtar, Chapter on Equality (Kafa'ah), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/326

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

प्रश्न: ऐसी स्थिति में निकाह कर दिया जाए कि लड़की नानी के पालन-पोषण में हो और उसके पास मौजूद हो, तो क्या यह निकाह सही और जायज़ होगा या नहीं? कृपया सविस्तार बताएँ और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यह सही और जायज़ है बशर्ते कि वह लड़का उस नाबालिग लड़की के लिए कुफ़ू (समान स्तर का) हो और नाबालिग के मेहर-ए-मिस्ल (उचित मेहर) में स्पष्ट रूप से कमी न की जाए। 'दुर्रे मुख्तार' में उल्लेख है:

[अरबी पाठ]: "यदि निकाह कराने वाला पिता और दादा के अलावा कोई और हो, तो कुफ़ू न होने या मेहर में बहुत अधिक कमी होने की स्थिति में निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। और यदि कुफ़ू और मेहर-ए-मिस्ल हो, तो निकाह सही होगा आदि।" (संक्षिप्त)। [उर्दू अनुवाद]: संक्षिप्त। यदि निकाह देने वाला पिता और दादा न हो, तो ग़ैर-कुफ़ू या मेहर-ए-मिस्ल से स्पष्ट कमी की सूरत में निकाह बिल्कुल सही न होगा। और कुफ़ू और मेहर-ए-मिस्ल हो तो निकाह सही होगा आदि। (त)

चूंकि यह व्यक्ति लड़के और लड़की दोनों का वली (अभिभावक) है, तो दो गवाहों के सामने उसका सिर्फ इतना कह देना कि "मैंने अपनी फ़लाँ भतीजी का निकाह अपने फ़लाँ बेटे के साथ इतने मेहर पर कर दिया" पर्याप्त है। लड़के या लड़की का मौजूद होना ज़रूरी नहीं है।

[अरबी पाठ]: "हाँ, यह आवश्यक है कि वह 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिया' (पूर्ण दूरी) की सीमा तक अनुपस्थित न हो, क्योंकि वैसी स्थिति में वह वली नहीं रहेगा, जैसा कि विद्वानों ने इसे सही माना है और 'रद-अल-मुह्तार' में इसका विवरण दिया गया है।" [उर्दू अनुवाद]: हाँ यह ज़रूर है कि वह पचास (कोस) की दूरी तक ग़ायब न हो कि वहाँ तक पहुँचना मुश्किल हो, क्योंकि ऐसी सूरत में वह वली नहीं माना जाएगा, जैसा कि फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने इसे सही करार दिया है जिसका विवरण 'रद-अल-मुह्तार' में दिया गया है। (त)

'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी पाठ]: "एक ही व्यक्ति निकाह के दोनों पक्षों का प्रतिनिधित्व कर सकता है, जहाँ उसका ईजाब (प्रस्ताव) ही क़ुबूल (स्वीकृति) के स्थान पर माना जाएगा, जैसे कि जब वह दोनों पक्षों का वली हो आदि।" (संक्षिप्त)। और 'रद-अल-मुह्तार' में है, जैसे: "मैंने अपने बेटे का निकाह अपने भाई की

बेटी से कर दिया।" और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। [उर्दू अनुवाद]: एक व्यक्ति निकाह में दोनों तरफ से वली होते हुए ईजाब (प्रस्ताव) कर दे तो वह क़ुबूल (स्वीकृति) के स्थान पर भी माना जाएगा, उदाहरण के तौर पर जब वह दोनों तरफ से स्वयं वली हो (संक्षिप्त)। और 'रद-अल-मुह्तार' में है, जैसे कोई कहे: "मैंने अपनी बेटी का निकाह अपने भतीजे से कर दिया।" और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/192 2 रद-अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/315 3 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-कफ़ाअह, मुतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/196 4 रद-अल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअह, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/326

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

سوال: خود ایسی حالت میں نکاح کردے کہ لڑکی زیر پرورش نانی کے ہو اس کے پاس موجود ہو تو یہ نکاح صحیح و جائز ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صحیح و جائز ہے جبکہ وہ لڑکا اس نابالغہ کا کفو ہو اور نابالغہ کے مہر مثل میں صریح کمی نہ کی جائے۔ درمختار میں ہے:

[عربی عبارت]: ان کان المزوج غیرہ اي غیر الاب وابیہ لا یصح من غیر کفو او بغبن فاحش اصلا وان کان من کفو وبمھر المثل صح الخ اھ (ملخصاً)۔ [اردو ترجمہ]: ملخصاً۔ اگر نکاح دینے والا باپ اور دادا نہ ہو تو غیر کفو یا مہر مثل سے صریح کمی کی صورت میں نکاح بالکل صحیح نہ ہوگا۔ اور کفو اور مہر مثل ہو تو نکاح صحیح ہوگا الخ اھ ملخصاً۔ (ت)

جبکہ یہ شخص لڑکے لڑکی دونوں کا ولی ہے تو دو گواہوں کے سامنے اس کا صرف اتنا کہہ دینا کہ "میں نے اپنی فلاں بھتیجی اپنے فلاں بیٹے کے نکاح میں اتنے مہر پر دی" کفایت کرتا ہے کچھ لڑکے یا لڑکی کا حاضر ہونا ضرور نہیں۔

[عربی عبارت]: نعم یجب ان لا یکون غائباً غیبۃ منقطعۃ فانہ لا یبقی ولیاً ح علی ما صححوہ کما نقحہ في رد المحتار۔ [اردو ترجمہ]: ہاں یہ ضرور ہے کہ وہ پچاس حد تک غائب نہ ہو کہ وہاں تک رسائی مشکل ہو کیونکہ ایسی صورت میں وہ ولی نہ قرار پائے گا، جیسا کہ فقہاء نے اس کی تصحیح کی ہے جس کی تنقیح رد المحتار میں کی ہے۔ (ت)

درمختار میں ہے:

[عربی عبارت]: یتولی طرفي النکاح واحد بایجاب یقوم مقام القبول کأن کان ولیاً من الجانبین اھ ملخصاً وفي رد المحتار کزوجت ابنی بنت اخی واللہ تعالیٰ اعلم۔ [اردو ترجمہ]: ایک شخص نکاح میں دونوں جانب سے ولی ہوتے ہوئے ایجاب کردے تو وہ قبول کے قائم مقام بھی ہوجائے گا مثلاً جب وہ دونوں جانب سے خود ولی ہو اھ ملخصاً، اور ردالمحتار میں ہے، مثلاً یوں کہے: "میں نے اپنی بیٹی کا اپنے بھتیجے سے نکاح کردیا" واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۱۵ 3 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۶ 4 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۲۶

Fatawa-e-Razvia Volume 11

Issue 327: Amr and Zaid were two real brothers. Zaid died leaving behind a minor girl. Amr took his sister-in-law (the widow of Zaid) and the minor girl to his house under some pretext. He then performed the marriage of this minor girl to a sick person with his own consent and without her mother's permission. Now Amr is demanding of his sister-in-law, "We have performed the marriage of the girl with our permission and haven't sent her yet, now send her away, otherwise there will be a court case." In this situation, the widow asks what the scholars of religion and the masters of the firm Shariah decree? Is this marriage valid or not? Please write the fatwa adorned with seal and signature.

Answer: The guardianship (wilayat) of a minor girl belongs to her paternal uncle (provided no adult brother or nephew is present). In the presence of the uncle, the mother has no authority, and the illness of the husband also does not cause any defect in the validity of the marriage. Therefore, if the person to whom Amr married his niece is her 'Kufu' (meaning in terms of tribe, religion, profession, etc., he is not so inferior compared to her that marriage with him would be a cause of shame for the minor's guardians) and there was no gross reduction (fuhsh kami) in the 'Mahr-e-Mithl' (customary dower), then the marriage undoubtedly became valid. The mother has no right to object in any way. However, if the girl, upon reaching adulthood, expresses her own dissatisfaction, she can file a complaint before a Sharia judge to have it annulled. And if that person is not a 'Kufu' or the uncle has made a gross reduction in the customary dower—for example, the customary dower was one hundred rupees and he fixed fifty rupees—then this marriage did not take place from the beginning.

[Boxed Text] (Left - Arabic): In Al-Durr al-Mukhtar, if the one performing the marriage is other than the father or his father (grandfather), and not the mother, the marriage is not valid with a non-Kufu or with an extreme loss (in dower) at all. And if it is with a Kufu and the customary dower, it is valid, and for the minor boy and minor girl there is the option of annulment upon puberty or upon gaining knowledge of the marriage thereafter. 1 - Briefly. And Allah the Almighty knows best. (Right - Urdu Translation): In Durr al-Mukhtar, it is stated: if the person giving in marriage is other than the father and grandfather, even if it is the mother, if it is a non-Kufu or the customary dower is clearly less, the marriage will not be correct at all. And if it is a Kufu and there is customary dower, it will be correct, and the minor boy or girl will have the option of annulment (Khiyar al-Bulugh) upon puberty, or if they learn about it after

puberty, they will have the option of annulment at that time too. Briefly. And Allah the Almighty knows best. (T)

Issue 328: What do the scholars of religion say in this case where the marriage of minor Zaid took place with the permission of Hindah, his paternal aunt, to Mahmoodah, an adult? At the time of marriage, Zaid's age was fourteen years and Mahmoodah's age was sixteen years. Zaid died four months after the marriage...

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardians, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 Page 561 of 739

फ़तावा रज़विया, खंड ११

मसाला ३२७: अम्र और ज़ैद दो सगे भाई थे। ज़ैद एक नाबालिग लड़की छोड़कर मर गया। अम्र अपनी भाभी (ज़ैद की विधवा) से नाबालिग लड़की को किसी बहाने से अपने घर ले गया। उसने उस नाबालिग लड़की का निकाह उसकी माँ की अनुमति के बिना अपनी अनुमति से एक बीमार व्यक्ति से कर दिया। अब अम्र अपनी भाभी से मांग कर रहा है कि हमने अपनी अनुमति से लड़की का निकाह कर दिया है और अभी तक रुख़सती नहीं की है, अब रुख़सती कर दो वरना अदालत होगी। इस स्थिति में विधवा पूछती है कि दीन के विद्वान और शरीयत के मौलवी क्या फतवा देते हैं कि यह निकाह सही है या नहीं? फतवा लिखकर मुहर और हस्ताक्षर से सुशोभित करें।

उत्तर: नाबालिग लड़की की विलायत (अभिभावकता) उसके चचा के पास है (बशर्ते कि कोई जवान भाई या भतीजा मौजूद न हो)। चचा की मौजूदगी में माँ को कोई अधिकार नहीं है और पति की बीमारी से भी निकाह की वैधता में कोई बाधा नहीं आती। इसलिए, यदि वह व्यक्ति जिससे अम्र ने अपनी भतीजी का निकाह किया है, उसका 'कुफ़ू' (बराबर का) है (यानी वंश, धर्म, पेशा आदि में वह इतना कम नहीं है कि उससे निकाह करना नाबालिग के अभिभावकों के लिए अपमान का कारण हो) और 'मेहर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) में कोई बड़ी कमी (फ़ाहिश कमी) नहीं की गई, तो निकाह निस्संदेह सही हो गया। माँ को इस पर किसी भी तरह का ऐतराज़ करने का अधिकार नहीं है। हाँ, अगर लड़की बड़ी होकर खुद अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करे, तो वह शरीयत के हाकिम के सामने शिकायत करके इसे रद्द (फ़स्ख) करवा सकती है। और अगर वह व्यक्ति कुफ़ू नहीं है या चचा ने मेहर-ए-मिस्ल में बहुत ज़्यादा कमी की है—उदाहरण के लिए, मेहर-ए-मिस्ल १०० रुपये था और उसने ५० रुपये तय किए—तो यह निकाह शुरू से ही हुआ ही नहीं।

[बॉक्स का टेक्स्ट] (बाएं- अरबी): 'अद-दुर्र अल-मुख़्तार' में है कि यदि निकाह कराने वाला पिता और दादा के अलावा कोई और हो, और माँ भी न हो, तो गैर-कुफ़ू या मेहर में अत्यधिक कमी के साथ निकाह कतई मान्य नहीं है। और यदि कुफ़ू और मेहर-ए-मिस्ल के साथ हो, तो मान्य है, और नाबालिग लड़के और लड़की के लिए बालिग होने पर या उसके बाद निकाह का पता चलने पर रद्द करने का अधिकार है। १ संक्षेप में। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (दाएं- उर्दू अनुवाद): 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है: अगर निकाह देने वाला बाप और दादा के अलावा कोई और हो, चाहे वह माँ ही क्यों न हो, और वह गैर-कुफ़ू हो या मेहर-ए-मिस्ल साफ़ तौर पर कम हो, तो निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। और अगर कुफ़ू और मेहर-ए-मिस्ल हो, तो सही होगा और नाबालिग लड़के या लड़की को

बालिग होने पर निकाह रद्द करने का अधिकार (खियार-उल-बुलूग) होगा, या अगर उन्हें बालिग होने के बाद पता चला हो, तो उस समय भी रद्द करने का अधिकार होगा। संक्षेप में। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसाला ३२८: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि नाबालिग ज़ैद का निकाह उसकी बुआ हिन्दा की अनुमति से बालिग महमूदा के साथ हुआ? निकाह के समय ज़ैद की उम्र १४ वर्ष और महमूदा की उम्र १६ वर्ष थी। ज़ैद निकाह के चार महीने बाद मर गया...

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबू-उल-वली, मुतबा-ए-मुज्तबाई दिल्ली १/१९२ पृष्ठ ७३९ में से ५६१

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

مسئلہ ۳۲۷: عمرو اور زید دو حقیقی بھائی ہیں ان میں زید ایک لڑکی نابالغ چھوڑ کر مر گیا، عمرو اپنی بھاوج بیوہ زوجہ زید سے لڑکی نابالغ کو حیلہ کر کے اپنے مکان پر لے گیا، اس لڑکی کا نکاح بلا اجازت اس کی والدہ کسی شخص بیمار کے ساتھ اپنی اجازت سے کر دیا، اب عمرو اپنی بھاوج سے متقاضی ہے کہ لڑکی کا نکاح ہم نے اپنی اجازت سے کر دیا اور رخصت نہیں کیا اب رخصت کردو ورنہ عدالت ہوگی، اس صورت میں بیوہ پوچھتی ہے کہ علمائے دین و مولویان شرع متین کیا فتوٰی دیتے ہیں کہ یہ نکاح درست ہے یا نہیں؟ فتوٰی لکھ کر مہر و دستخط سے مزین فرمائیں۔

الجواب نابالغہ کی ولایت اس کے چچا کو ہے (بشرطیکہ کوئی جوان بھائی، بھتیجا حاضر نہ ہو) چچا کے ہوتے ماں کو اختیار نہیں اور شوہر کی بیماری سے بھی درستی نکاح میں کوئی خلل نہیں آتا، پس اگر وہ شخص جس سے عمرو نے اپنی بھتیجی کا نکاح کر دیا اس کا کفو ہے (یعنی قوم، مذہب، پیشہ وغیرہ میں اس کی بہ نسبت ایسا کم نہیں کہ اس سے نکاح ہونا اس صغیرہ کے اولیاء کو باعث عار ہو) اور مہر مثل میں فاحش کمی بھی نہ کی تو نکاح بے شک صحیح ہو گیا۔ جس پر ماں کو کسی طرح اعتراض نہیں پہنچتا، ہاں لڑکی جوان ہو کر اگر خود ناراضی ظاہر کرے تو حاکم شرع کے حضور نالشی ہو کر فسخ کراسکتی ہے، اور اگر وہ شخص کفو نہیں یا چچا نے مہر مثل میں کمی فاحش کی ہے مثلاً مہر مثل سو روپے کا تھا اس نے پچاس روپے باندھے تو یہ نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں۔

[خانوں میں تحریر] (بائیں - عربی): فی الدرالمختار ان کان المزوج غیر الاب وابیہ ولا الام لا یصح النکاح من غیر کفو او بغبن فاحش اصلاً وان کان من کفو وبمہر المثل صح ولصغیر وصغیرۃ خیار

الفسخ بالبلوغ او العلم بالنکاح بعدہ 1 اھ مختصرا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (دائیں - اردو): در مختار میں ہے اگر نکاح دینے والا باپ اور دادا کا غیر ہو خواہ وہ ماں ہو غیر کفو یا مہر مثل صریح کم ہو تو نکاح بالکل صحیح نہ ہوگا اور کفو اور مہر مثل ہو تو صحیح ہوگا اور نابالغ لڑکے یا لڑکی کو بلوغ پر فسخ کا اختیار ہوگا یا اگر ان کو بلوغ کے بعد علم ہوا ہو تو اس وقت بھی فسخ کا اختیار ہوگا اھ مختصراً۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۲۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ زید نابالغ کا نکاح بہ اجازت ہندہ اس کی پھوپھی کے محمودہ بالغہ کے ساتھ ہوا، وقت نکاح عمر زید کی چودہ سال کی اور عمر محمودہ کی سولہ سال کی تھی، زید نکاح سے چار مہینے بعد فوت

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ Page 561 of 739

Volume Eleven

...occurred, is this marriage valid and is the dower (Mahr) of Mahmoodah payable or not? And if it is, to what extent? Both Zaid and Mahmoodah are of the Sunni school of thought. Please write the answer with reference to the book.

The Answer:

From the statement of the petitioner, it is known that Zaid has a young brother. In the mentioned case, it is first necessary to know that Shari'a puberty is not necessarily tied to age alone, such that a person would not be called an adult until they reach a certain number of years, even if all signs of youth are clear and manifest. No scholar in the world holds this view. Rather, in reality, for boys, the matter depends on ejaculation and nocturnal emission, and for girls on menstruation, etc. Therefore, scholars state that a boy can reach puberty at a minimum of twelve years and a girl at nine years. Yes, when these matters are not manifest, the decision is then made based on age.

Arabic Text	**Urdu/English Translation**
In *al-Durr al-Mukhtar*: "The puberty of a boy is through nocturnal emission, impregnation, and ejaculation, and the basis is ejaculation; for a girl, it is through nocturnal emission, menstruation, and pregnancy. If none of these are found in either of them, then it is until each of them completes fifteen years. This is the verdict given because of the short lifespans of people in our time. The minimum period for him is twelve years and for her nine years; this is the chosen view." *Summarized.*	In *al-Durr al-Mukhtar*, it is stated that a boy's puberty is established by nocturnal emission, ejaculation, and making his wife pregnant, while ejaculation is the primary evidence. A girl's puberty is established by nocturnal emission, menstruation, and pregnancy. If none of these signs are found in either, then their puberty will be considered at fifteen years of age. This is the fatwa given because the lifespans of people in our time are short. The minimum age for puberty for a boy is twelve years and for a girl is nine years; this is the chosen (mukhtar) view. (T)

Thus, it is possible that Zaid was fourteen years old and reached puberty at the time of marriage, in which case there is no dispute regarding the validity of the marriage and the obligation of the full dower. Similarly, if he was a minor and the marriage took place with the brother's permission, or if at that time ordinary permission was taken only from the paternal aunt and the brother either then or at any other time

explicitly or implicitly ratified and approved of the marriage, or if even that did not happen but Zaid reached puberty after some time and he himself ratified the marriage; in all these cases, the marriage is also effective and the full dower is mandatory.

Arabic Text	Urdu/English Translation
In *al-Durr al-Mukhtar*: "The guardian, as will be explained later, has the right to give a minor boy or girl in marriage compulsorily." [2]	In *al-Durr al-Mukhtar*, it says that the guardian (wali) has the authority, as will be explained later, to marry off a minor boy or girl of his own accord.

[1] *al-Durr al-Mukhtar*, Kitab al-Hijr, Mujtabai Press, Delhi, 2/199 [2] *al-Durr al-Mukhtar*, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192

जिल्द ग्यारह

...हो गया, क्या यह निकाह सही है और महमूदा का मेहर देय है या नहीं? और यदि है, तो कितना? ज़ैद और महमूदा दोनों सुन्नी मज़हब के हैं। पुस्तक के संदर्भ के साथ उत्तर लिखा जाए।

अल-जवाब (उत्तर):

प्रश्नकर्ता के बयान से पता चला है कि ज़ैद का एक जवान भाई मौजूद है। उक्त मामले में पहले यह जानना ज़रूरी है कि शरीअत के अनुसार यौवन (बुलूग़) का आधार अनिवार्य रूप से केवल आयु पर नहीं रखा गया है कि जब तक व्यक्ति इतने वर्ष का न हो जाए उसे वयस्क न कहा जाए, चाहे युवावस्था के सभी लक्षण स्पष्ट और प्रकट हों। दुनिया का कोई भी विद्वान ऐसा नहीं मानता। बल्कि वास्तव में लड़कों में इसका आधार स्खलन और स्वप्नदोष पर है और लड़कियों में मासिक धर्म आदि पर। इसलिए विद्वान स्पष्ट करते हैं कि लड़का कम से कम बारह वर्ष और लड़की नौ वर्ष में वयस्क हो सकती है। हाँ, जब ये बातें प्रकट न हों, तो उस समय आयु के आधार पर निर्णय किया जाता है।

अरबी पाठ	**अनुवाद**
दुर-ए-मुख़्तार में है: "लड़के का यौवन स्वप्नदोष, गर्भधारण कराने और स्खलन से है और मूल स्खलन है, और लड़की का स्वप्नदोष, मासिक धर्म और गर्भावस्था से है। यदि इनमें से कुछ भी न पाया जाए, तो पंद्रह वर्ष पूर्ण होने तक। इसी पर फ़तवा है क्योंकि हमारे समय के लोगों की आयु कम है। लड़के के लिए न्यूनतम अवधि बारह वर्ष और लड़की के लिए नौ वर्ष है, यही मुख़्तार (चुना हुआ) मत है।" संक्षिप्त।	दुर-ए-मुख़्तार में है कि लड़के का यौवन स्वप्नदोष, स्खलन और पत्नी को गर्भवती करने से सिद्ध होगा जबकि स्खलन मुख्य प्रमाण है, और लड़की का यौवन स्वप्नदोष, मासिक धर्म और गर्भावस्था से सिद्ध होगा। यदि इन लक्षणों में से कोई भी दोनों में न पाया जाए, तो फिर दोनों की आयु पंद्रह वर्ष होना उनका यौवन होगा। इसी पर फ़तवा दिया जाएगा क्योंकि हमारे समय के लोगों की उम्र कम होती है। लड़के के लिए यौवन की न्यूनतम सीमा बारह वर्ष और लड़की के लिए नौ वर्ष है; यही मुख़्तार मत है। (त)

अतः संभव है कि ज़ैद निकाह के समय चौदह वर्ष का हो और वयस्क हो चुका हो, ऐसी स्थिति में निकाह की वैधता और पूरे मेहर की अदायगी में कोई विवाद ही नहीं है। इसी तरह यदि वह नाबालिग था और निकाह भाई की अनुमति से हुआ या उस समय सामान्य अनुमति केवल बुआ से ली गई थी और भाई ने तभी या किसी और समय स्पष्ट रूप से या संकेतों से उस निकाह को जायज़ रखा और

पसंद किया, या यह भी नहीं हुआ लेकिन कुछ समय बाद ज़ैद वयस्क हो गया और उसने स्वयं निकाह को जायज़ रखा; इन सभी स्थितियों में निकाह भी प्रभावी है और पूरा मेहर भी अनिवार्य है।

अरबी पाठ	अनुवाद
दुर-ए-मुख़्तार में: "वली (अभिभावक) के लिए, जिसका वर्णन आगे आएगा, नाबालिग लड़के और लड़की का निकाह अनिवार्य रूप से कराना (जबरन) वैध है।" [2]	दुर-ए-मुख़्तार में है कि वली को अधिकार है जिसका वर्णन आगे आ रहा है कि नाबालिग लड़के और लड़की का निकाह अपनी मर्जी से कर दे।

[1] दुर-ए-मुख़्तार, किताब अल-हिज्र, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/199 [2] दुर-ए-मुख़्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192

جلد یاز دہم

ہو گیا، آیا یہ نکاح صحیح اور دین مہر محمودہ کا واجب الادا ہے یا نہیں؟ اور ہے تو کس قدر؟ اور زید محمودہ دونوں سنی المذہب ہیں۔ بحوالہ کتاب جواب تحریر فرمایا جائے۔

الجواب:

بیان سائل سے معلوم ہوا کہ زید کا ایک جوان بھائی موجود ہے پس صورت مذکورہ میں اولاً اس قدر معلوم ہو جانا ضروری ہے کہ شرعاً بلوغ کا دارو مدار خواہی نخواہی عمر ہی پر نہیں رکھا گیا جب تک آدمی اتنے سال کا نہ ہو بالغ نہ کہا جائے گا اگر چہ تمام آثار جوانی واضح و آشکار ہوں عالم میں کوئی عالم اس کا قائل نہیں بلکہ حقیقتاً لڑکوں میں مدار کار انزال و احتلام لڑکیوں میں حیض وغیرہ پر ہے ، اس لئے علماء تصریح فرماتے ہیں کہ لڑکا کم سے کم بارہ سال اور لڑکی نو برس میں بالغ ہو سکتی ہے، ہاں جب یہ امور ظاہر نہ ہوں تو اس وقت عمر پر فیصلہ کیا گیا۔

عربی متن	اردو ترجمہ
فی الدرالمختار بلوغ الغلام بالاحتلام و الاحبال والانزال والاصل ھو الانزال والجاریۃ بالاحتلام والحیض والحبل فان لم یوجد فیھما شیئ فحتی یتم لکل منھما خمس عشرۃ سنۃ بہ یفتی لقصر اعمار اھل زماننا وادنی مدتہ لہ اثنا عشرۃ سنۃ	در مختار میں ہے لڑکے کا بلوغ احتلام، انزال اور بیوی کو حاملہ کرنے سے ثابت ہو گا جبکہ انزال اصل ثبوت ہے، اور لڑکی کا بلوغ احتلام، حیض اور حمل سے ثابت ہو گا، اگر ان علامات میں سے کوئی چیز دونوں میں نہ پائی جائے تو پھر دونوں کی عمر پندرہ سال تک ہونا ان کا بلوغ ہو گا۔ اس پر فتویٰ دیا جائے گا کیونکہ ہمارے زمانہ والوں کی عمریں کم ہوتی ہیں، اور لڑکے کے لئے کم از کم حد

عربی متن	اردو ترجمہ
ولھا تسع سنین ھو المختار ۱ اھ ملخصا۔	بلوغ بارہ سال اور لڑکی کے لئے نو سال ہے، یہی مختار قول ہے، اھ، ملخصاً۔ (ت)

پس ممکن کہ زید چودہ سالہ وقت نکاح بالغ ہو جب تو صحت نکاح و وجوب تمام مہر میں کچھ نزاع ہی نہیں۔ اس طرح اگر نابالغ تھا اور نکاح باجازت برادر واقع ہوا یا اس وقت معمولی اجازت صرف پھوپھی سے لی گئی ہو اور بھائی نے جبھی یا کسی اور وقت صراحتہ خواہ دلالتہ اس نکاح کو جائز رکھا اور پسند کیا یا یہ بھی نہ ہوا مگر چند مدت بعد زید بالغ ہو گیا اور خود اس نے نکاح جائز رکھا، ان سب صورتوں میں نکاح بھی نافذ اور مہر بھی کامل واجب ہے۔

عربی متن	اردو ترجمہ
فی الدرالمختار للولی الآتی بیانہ انکاح الصغیر والصغیرۃ جبرا ۲ اھ	در مختار میں ہے کہ ولی کو اختیار ہے جس کا بیان آگے آرہا ہے کہ نابالغ لڑکے اور لڑکی کا نکاح اپنی مرضی سے کر دے اھ

۱ در مختار کتاب الحجر مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۹/۲ ۲ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Arabic Text	Urdu Translation
In *Tanwir al-Absar*: "In marriage, the *Wali* (guardian) is the *Asbah bi Nafsihi* (agnatic kinsman)." [1]	And in *Tanwir al-Absar*, it is stated that in marriage, the agnatic kinsman is the guardian. [1]
In *al-Durr al-Mukhtar*: "If a distant guardian marries someone off while a closer guardian is present, it remains suspended on the closer guardian's approval." [2]	And in *Durr al-Mukhtar*, it says that if a distant guardian performs a marriage in the presence of a closer guardian, it will remain suspended upon the closer guardian's permission. [1]
In *al-Khaniyyah*: "It becomes operative with the child's approval after reaching maturity." [3]	And in *Khaniyyah*, it states that the marriage will become operative upon the child's approval after attaining puberty.
In *al-Durr al-Mukhtar*: "The dower becomes firmly established upon intercourse, valid privacy between the spouses, or the death of either of them." [4]	And in *Durr al-Mukhtar*, it is stated that dower becomes mandatory upon intercourse, valid privacy, or the death of either the husband or wife. [1] (T)

Indeed, if none of these things occurred—meaning Zaid had not reached maturity, nor did the marriage take place by the guardian's proposal, nor did the guardian give permission at any time explicitly or implicitly, nor did Zaid himself become capable of giving permission until he died—then undoubtedly the marriage became void.

| Because a suspended marriage becomes void by death before approval, as is not hidden from anyone. | Because a suspended marriage becomes void by death before permission, as is clear to everyone. (T) |

And sitting silently in a marriage gathering alone cannot provide certainty of a guardian's permission and preference; rather, there should be some action from which consent is understood, for example, giving *Runaumai* (bride-viewing gift) to the bride, or receiving 'Salat' money from the groom, or exchanging congratulations.

| And besides that, which points to consent. And in *Radd al-Muhtar*, it was previously mentioned that if a mature female marries herself to someone not her equal, the guardian has the right to object unless they have consented explicitly or implicitly, like receiving the dower and such. They did not consider their silence as... | Besides

these, other matters can serve as proof of consent. And in *Radd al-Muhtar*, it has been mentioned previously that if a mature girl marries herself into a family that is not her equal, the guardian has the right to object unless they have expressed consent explicitly or implicitly, such as receiving the dower etc. action... expressing consent explicitly or implicitly, such as receiving the dower etc. action. |

[1] *Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi 1/193 [2] *al-Durr al-Mukhtar*, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi 1/194 [3] *Fatawa Qazi Khan*, Section on the Conditions of Marriage, Naval Kishore Lucknow 1/15 [4] *al-Durr al-Mukhtar*, Chapter on the Dower, Mujtabai Press Delhi 1/197

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
तनवीरुल अबसार में: "निकाह में असबः बिनफ़्सेही वली होता है।" [1]	और तनवीरुल अबसार में है कि निकाह में असबः बिनफ़्सेही वली होता है [1]
अद-दुर्रुल मुख्तार में: "वली-ए-अक़रब की मौजूदगी में वली-ए-अबअद का निकाह करना वली-ए-अक़रब की इजाज़त पर मौक़ूफ़ (निलंबित) है।" [2]	और दुर्रे मुख्तार में है कि अगर वली-ए-अक़रब की मौजूदगी में वली-ए-अबअद ने निकाह कर दिया तो अक़रब की इजाज़त पर मौक़ूफ़ होगा [1],
खानिया में: "बच्चे के बालिग होने के बाद उसकी इजाज़त से निकाह प्रभावी होगा।" [3]	और खानिया में है कि बच्चे के बालिग होकर इजाज़त देने से निकाह नाफ़िज़ (प्रभावी) हो जाएगा।
अद-दुर्रुल मुख्तार में: "वति (सहवास), खल्वत-ए-सहीहा या दोनों में से किसी एक की मौत से महर पुख्ता हो जाता है।" [4]	और दुर्रे मुख्तार में है कि वति, खल्वत-ए-सहीहा और पति-पत्नी में से किसी एक के फौत (मृत्यु) हो जाने से महर लाज़िम हो जाता है [1] (त)

हाँ, अगर इन उमूर (बातों) में से कुछ न वाक़े हुआ, यानी न ज़ैद बालिग था, न निकाह ब-तजवीज़ वली वाक़े हुआ, न वली ने किसी वक़्त सरीहन (स्पष्टतः) या दलालतन (संकेतत) इसकी इजाज़त दी, न ज़ैद खुद लायक़-ए-इजाज़त हुआ, यहाँ तक कि वह मर गया, तो बेशक निकाह बातिल (अमान्य) हो गया।

| क्योंकि मौक़ूफ़ निकाह इजाज़त से पहले मौत होने से बातिल हो जाता है जैसा कि किसी पर छुपा नहीं है। | क्योंकि मौक़ूफ़ निकाह, इजाज़त से पहले मौत से बातिल हो जाता है, जैसा कि सब पर वाज़ेह (स्पष्ट) है। (त) |

और जलसा-ए-निकाह में वली का महज़ खामोश बैठे रहना इजाज़त और पसंदीदगी पर यक़ीन नहीं दिला सकता बल्कि उसका कोई फ़ेल (कार्य) ऐसा होना चाहिए जिससे रजामंदी समझी जाए, मसलन दुल्हन को रुनुमाई देना या दूल्हे की सलामी के रुपये लेना या मुबारकबाद लेना देना।

| इसके अलावा जो रज़ा (सहमति) की दलील है। और रद्दुल मुहतार में पहले गुज़र चुका है कि अगर बालिग लड़की अपना निकाह खुद ग़ैर-कुफ़ू (असमान कुल) में कर ले तो वली को एतराज़ का

हक़ है जब तक वह सरीहन या दलालतन रज़ामंद न हो जाए जैसे महर वसूल करना वग़ैरा। उन्होंने उसकी खामोशी को... | इनके अलावा दीगर उमूर जो रज़ा की दलील हो सकते हैं, और रद्दुल मुहतार में है कि पहले गुज़र चुका है कि अगर बालिग लड़की ने अपना निकाह खुद ग़ैर-कुफ़ू में कर लिया और वली सराहतन या दलालतन रज़ामंदी ज़ाहिर न करे मसलन महर वसूल करना वग़ैरा अमल... रज़ामंदी ज़ाहिर न करे मसलन महर वसूल करना वग़ैरा अमल। |

[1] दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/193 [2] अद-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/194 [3] फ़तावा क़ाज़ी खाँ, फ़स्ल फ़ी शराइतिन निकाह, नवल किशोर लखनऊ 1/15 [4] अद-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल महर, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/197

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وفي تنویر الابصار الولی فی النکاح العصبة بنفسه ۱ھ	اور تنویر الابصار میں ہے کہ نکاح میں عصبہ بنفسہ ولی ہوتا ہے ۱ھ
وفي الدرالمختار لزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ ۲ ھ	اور درمختار میں ہے کہ اگر ولی اقرب کی موجودگی میں ولی ابعد نے نکاح کر دیا تو اقرب کی اجازت پر موقوف ہوگا ۱ھ،
وفی الخانیہ نفذ باجازة الصبی بعد بلوغ ۳ھ	اور خانیہ میں ہے کہ بچے کے بالغ ہو کر اجازت دینے سے نکاح نافذ ہوجائے گا۔
وفی الدرالمختار المهر یتاکد عند وطء او خلوة صحت من الزوج او موت احدهما ۴ھ	اور درمختار میں ہے کہ وطی، خلوت صحیحہ اور خاوند بیوی میں سے کسی ایک کے فوت ہو جانے سے مہر لازم ہو جاتا ہے ۱ھ (ت)

ہاں اگر ان امور میں سے کچھ نہ واقع ہوا یعنی نہ زید بالغ تھانہ نکاح بہ تجویز ولی واقع ہوا، نہ ولی نے کسی وقت صریحاً یا دلالتاً اس کی اجازت دی، نہ زید خود لائق اجازت ہوا، یہاں تک کہ مر گیا تو بے شک نکاح باطل ہو گیا۔

| لان الموقوف یبطل بالموت قبل الاجازة کما لا یخفی علی احد۔ | کیونکہ موقوف نکاح، اجازت سے قبل موت سے باطل ہو جاتا ہے، جیسا کہ سب پر واضح ہے۔ (ت) |

اور جلسہ نکاح میں ولی کا مجرد خاموش بیٹھارہنا اجازت و پسندی پر یقین نہیں دلا سکتا بلکہ اس کا کوئی فعل ایسا ہونا چاہئے جس سے رضامندی سمجھی جائے، مثلاً دلہن کو رونمائی دینا یا دولہا کی سلامی کے روپے لینا یا مبارک باد لینا دینا۔

| وغیر ذلك مما یدل علی الرضا وفی رد المحتار تقدم ان البالغة لوزوجت نفسها غیر کفو فلولی الاعتراض مالم یرض صریحاً او دلالة کقبض المهر ونحوه فلم یجعلوا سکوته | ان کے علاوہ دیگر امور جو رضا کی دلیل ہو سکتے ہیں، اور ردالمحتار میں ہے کہ پہلے گزر چکا ہے کہ اگر بالغہ لڑکی نے اپنا نکاح خود غیر کفو میں کر لیا اور ولی صراحۃً یا دلالۃً رضامندی ظاہر نہ کرے مثلاً مہر وصول کرنا وغیرہ عمل رضامندی ظاہر نہ کرے مثلاً مہر وصول کرنا وغیرہ عمل |

۱ درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ ۲ الدرالمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۴ ۳ فتاویٰ قاضی خاں فصل فی شرائط النکاح نولکشور لکھنو ۱/ ۱۵ ۴ الدرالمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۷

Fatawa Razawiya, Volume 11

[Arabic Box 1]: Authorization, and it is apparent that his silence here is likewise; thus his silence shall be an authorization for the marriage of the more distant [guardian], even if he were present in the assembly of the contract, as long as he does not express consent explicitly or implicitly. Reflect. [Urdu Box 1]: ...if he does not, then the guardian has the right to object to this marriage. So, the jurists have not deemed his silence as authorization. It is apparent that his silence at this point carries the same meaning: his silence will not be considered authorization for the marriage by a more distant guardian, even if the closer one is present in the marriage assembly, until he expresses consent explicitly or implicitly. Contemplate. (T)

And in this situation, the dower (Mahr) will also become obligatory.

[Arabic Box 2]: Because the marriage is void (batil), and what is void is non-existent, and the non-existent is of no benefit. [Urdu Box 2]: Because this marriage is void, and what is void is as if it never existed, and a non-existent thing is not beneficial. (T)

However, if in such a case it is proven that the minor Zaid, after this effective contract, had intercourse with Mahmoodah by force, and at that time Mahmoodah was truly in a state of compulsion and distress—not the state which initially arises commonly due to shyness and modesty leading to denial, but rather the state a chaste woman has with a strange man—then in that event, the equivalent dower (Mahr-e-Mithl) of Hindah should become binding upon Zaid.

[Arabic Box 3]: This is because, in a suspended (mawquf) marriage before authorization, intercourse is not permissible, nor even looking [at her]. As has been clearly stated in the rulings on seclusion (khulwah) in the chapter of dower in Radd al-Muhtar, citing from al-Nahr, which cites from al-Nihayah. It has become clear upon death that she was not his wife. There is no prescribed punishment (hadd) because of doubt and because the boy is a minor. However, 'aqr (compensation for intercourse) becomes obligatory unless she was consenting. In that case, it is not obligatory due to a lack of benefit; for if it were obligatory, the guardian would reclaim it from her, as she is legally responsible (mukallafah) and what occurred happened by her command as she was consenting, as stated in Radd al-Muhtar from al-Shurunbulali from al-Fath. And Allah knows best. [Urdu Box 3]: This is because intercourse is not lawful in a suspended marriage before authorization; rather, even looking at her is not lawful. This is as Radd al-Muhtar mentioned in the rulings of seclusion in the chapter of dower, quoting from 'Nahr' who quoted from 'Nihayah'. It became clear before death

due to lack of authorization that she was not his wife. If intercourse or seclusion occurs before authorization by the closer guardian, then while not lawful, the punishment (hadd) for adultery will not be applied because it is a case of doubt and the boy is also a minor. Nonetheless, 'aqr, i.e., compensatory dower, will become obligatory, provided this act did not occur at the girl's desire. Otherwise, 'aqr will not be obligatory because there is no benefit in it.

Footnotes: 1: Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian (Bab al-Wali), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315. 2: Radd al-Muhtar, Chapter of Dower (Bab al-Mahr), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/341.

फतावा रज़विया, खंड 11

[अरबी बॉक्स 1]: अनुमति, और यह स्पष्ट है कि उसका यहाँ मौन रहना भी वैसा ही है; अतः उसका मौन रहना अधिक दूर के[अभिभावक] के विवाह के लिए अनुमति होगी, भले ही वह अनुबंध की सभा में उपस्थित हो, जब तक कि वह स्पष्ट रूप से या परोक्ष रूप से सहमति व्यक्त न करे। विचार करें। [उर्दू बॉक्स 1]: ...यदि वह नहीं करता है, तो अभिभावक को इस विवाह पर आपत्ति करने का अधिकार है। इसलिए, न्यायविदों ने उसके मौन को अनुमति नहीं माना है। यह स्पष्ट है कि यहाँ इस अवसर पर उसके मौन का यही अर्थ है: अधिक दूर के अभिभावक द्वारा विवाह के लिए उसके मौन को अनुमति नहीं माना जाएगा, भले ही निकटतम अभिभावक विवाह सभा में मौजूद हो, जब तक कि वह स्पष्ट रूप से या इशारे से अपनी सहमति व्यक्त न कर दे। चिंतन करें। (त)

और इस स्थिति में मेहर (दहेज) भी अनिवार्य हो जाएगा।

[अरबी बॉक्स 2]: क्योंकि विवाह अमान्य (बातिल) है, और जो अमान्य है वह अस्तित्वहीन है, और अस्तित्वहीन चीज़ का कोई लाभ नहीं है। [उर्दू बॉक्स 2]: क्योंकि यह विवाह अमान्य है, और अमान्य चीज़ न होने के बराबर होती है, और जो चीज़ अस्तित्व में ही नहीं है उसका कोई लाभ नहीं। (त)

हालाँकि, यदि ऐसी स्थिति में यह सिद्ध हो जाए कि नाबालिग जैद ने इस प्रभावी अनुबंध के बाद महमूदा के साथ जबरदस्ती संबंध बनाए, और उस समय महमूदा वास्तव में विवशता और व्यग्रता की स्थिति में थी—वह स्थिति नहीं जो शुरू में शर्म और संकोच के कारण सामान्यतः इनकार का कारण बनती है, बल्कि वह स्थिति जो एक सती महिला की किसी पराये पुरुष के साथ होती है—तो इस स्थिति में जैद पर हिंदह का महरे-मिस्ल (समान मेहर) वाजिब होना चाहिए।

[अरबी बॉक्स 3]: यह इसलिए है क्योंकि अनुमति से पहले निलंबित (मौकूफ़) विवाह में सहवास हलाल नहीं है, यहाँ तक कि देखना भी नहीं। जैसा कि रद्दुल् मुहतार में मेहर के अध्याय में एकांतवास (खलवत) के नियमों में स्पष्ट किया गया है, जो 'नहर' से और 'नहर' ने 'निहाया' से उद्धृत किया है। मृत्यु से पहले यह स्पष्ट हो गया कि वह उसकी पत्नी नहीं थी। संदेह के कारण और लड़के के नाबालिग होने के कारण कोई निर्धारित दंड (हद्द) नहीं होगा। हालाँकि, 'अक़्र' (सहवास का मुआवज़ा) अनिवार्य हो जाता है, बशर्ते कि वह महिला की सहमति से न हुआ हो। उस स्थिति में, लाभ की कमी के कारण यह अनिवार्य नहीं है; क्योंकि यदि यह अनिवार्य होता, तो अभिभावक उससे इसे वापस ले लेता, क्योंकि वह कानूनी रूप से उत्तरदायी (मुकल्लिफ़ा) है और जो कुछ हुआ वह उसकी

आज्ञा से हुआ क्योंकि वह सहमत थी, जैसा कि रद्दुल् मुहतार में शरुन्बुलाली से और उन्होंने अल-फ़तह से उद्धृत किया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। [उर्दू बॉक्स 3]: यह इसलिए है क्योंकि अनुमति से पहले निलंबित विवाह में सहवास हलाल नहीं है, बल्कि उसे देखना भी हलाल नहीं है जैसा कि मेहर के अध्याय में एकांतवास के नियमों में रद्दुल् मुहतार ने 'नहर' से और उन्होंने 'निहाया' से उद्धृत किया है। अनुमति न मिलने के कारण मृत्यु से पहले ही यह स्पष्ट हो गया कि वह उसकी पत्नी नहीं थी। यदि निकटतम अभिभावक की अनुमति से पहले सहवास या एकांतवास हो जाता है, तो हलाल न होने के बावजूद व्यभिचार की सजा (हद्द) नहीं दी जाएगी क्योंकि यह संदेह का स्थान है और लड़का भी नाबालिग है। फिर भी 'अक़्र' यानी सहवास का मुआवज़ा वाजिब हो जाएगा, बशर्ते कि यह क्रिया लड़की की इच्छा से न हुई हो। अन्यथा 'अक़्र' वाजिब नहीं होगा क्योंकि इसमें कोई लाभ नहीं है।

फुटनोट्स: 1: रद्दुल् मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/315. 2: रद्दुल् मुहतार, बाब अल-महर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/341.

पृष्ठ 564/739

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

[عربی باکس 1]: اجازۃ والظاہر ان سکوتہ ہنا کذلک فلیکون سکوتہ اجازۃ لنکاح الابعد وان کان حاضرا فی مجلس العقد مالم یرض صریحا اودلالۃ تامل ۱۔ [اردو باکس 1]: نہ کرے، تو ولی کو اس نکاح پر اعتراض کا حق ہے تو فقہاء نے اس کے سکوت کو اجازت نہیں قرار دیا اور ظاہر یہی ہے کہ اس کا یہاں موقعہ پر سکوت کا یہی مطلب ہے تو اس کا سکوت ابعد ولی کے نکاح کی اجازت قرار نہیں پائے گا اگر چہ یہ اقرب مجلس نکاح میں موجود ہو جب تک صریحا یا دلالۃ رضامندی ظاہر نہ کر دے، غور کرو (ت)

اور اس صورت میں مہر بھی لازم آئے گا،

[عربی باکس 2]: لان النکاح باطل والباطل معدوم والمعدوم لا یفید۔ [اردو باکس 2]: کیونکہ یہ نکاح باطل ہے اور باطل کا لعدم ہوتا ہے اور معدوم چیز مفید نہیں۔ (ت)

البتہ اگر ایسی صورت میں یہ ثابت ہو کہ زید نابالغ نے بعد اس عقد نافذ کے محمودہ سے بالجبر قربت کی اور محمودہ اس وقت حقیقہ حالت جبر و اضطرار میں تھی نہ وہ حالت جو ابتداء بوجہ شرم و حجاب عموماً انکار کی باعث ہوتی ہے بلکہ وہ حالت جو زن عفیفہ کو مرد اجنبی کے ساتھ ہوتی ہے تو اس تقدیر پر ہندہ کا مہر مثل ذمہ زید لازم ہونا چاہئے۔

[عربی باکس 3]: وذلک لان الموقوف قبل الاجازۃ لا یحل الوطی بل ولا النظر ۲ کما صرح بہ فی احکام الخلوۃ من باب المہر من رد المحتار عن النہر عن النہایۃ وقد تبین بالموت انہا لم تکن زوجتہ ولا حد للشبہۃ وللصبی فیجب العقر الا ان تکون مطاوعۃ فلا یوجب لعدم الفائدۃ اذ لولزم لرجع بہ الولی علیہا لانہا مکلفۃ وقد وقع ما وقع بامرہا لکونہا طائعۃ کما فی رد المحتار عن الشرنبلالی عن الفتح واللہ

اعلم۔ [اردو باکس 3]: یہ اس لئے کہ اجازت سے قبل موقوف نکاح میں وطی حلال نہیں بلکہ اس کو دیکھنا بھی حلال نہیں جیسا کہ مہر کے باب میں خلوت کے احکام میں ردالمحتار نے نہر سے انھوں نے نہایہ سے نقل کیا ہے اور اجازت سے قبل موت سے ظاہر ہو گیا کہ یہ اس کی بیوی نہ تھی، اگر قبل از اجازت ولی اقرب وطی یا خلوت ہو جائے تو حلال نہ ہونے کے بعد زنا کی حد نہ ہوگی کیونکہ مقام شبہ ہے نیز لڑکا نابالغ ہے، تاہم عقر یعنی جوڑا خرچہ واجب ہو جائے گا بشرطیکہ لڑکی کی خواہش پر یہ عمل نہ ہوا ہو، ورنہ عقر واجب نہ ہوگا کیونکہ اس میں فائدہ نہیں ہے۔

حواشی: 1: ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۲ 2: ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۴۱/۲

Volume 11 Fatawa-e-Razvia

And Allah knows best. Because if it were declared obligatory, then the boy's guardian would object to the girl. For whatever event occurred was according to the girl's will and statement, because the girl is an adult upon whose desire this occurred, as cited in Radd al-Muhtar from Shurunbulali and he cited from Al-Fath. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 329: From Calcutta, Dharmatala Street No. 102, sent by Hafiz Aziz-ur-Rahman Sahab, 16 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A girl was married by her maternal uncle under his guardianship because her father and grandfather were deceased. Now, upon reaching puberty, the girl did not reject this marriage [initially], but at the exact state of puberty, she called four people and expressed, "I have now reached adulthood, and I reject the marriage arranged by my guardian and annul it; you all be witnesses to this." The news of this annulment reached the husband, and she also waives her dower (mahr). However, he does not clear the matter (divorce her). Nearly a year has passed. Regarding the issue of annulment (fasakh), it is mentioned in Durr-e-Mukhtar etc., that the news of annulment should be brought before a Qazi (Islamic judge). The Qazi should effect the separation. But in this British government, there are no Islamic courts; the authority of judgment lies with the High Court judges. In the High Court, lawyers and barristers demand a sum of one thousand for reporting. The said girl is in need of maintenance and is in her youth; there is a dominant fear of satanic influence (temptation). In such a situation, what should she do? Please explain. May you be rewarded.

The Answer: In reality, for this annulment, a judgment by a Qazi is a condition, as mentioned in Al-Durr al-Mukhtar (T), and the presence of the husband at the time of separation is also necessary.

[In Arabic]: In Radd al-Muhtar: If the husband is absent, they shall not be separated until he is present, because judging in absence is prohibited (Nahr). I say: Al-Ustrujani has explicitly stated this in his Jami'. 1 -

[In Urdu]: In Radd al-Muhtar, it is stated: Until the husband is present, the Qazi should not effect separation; otherwise, separation in his absence would be "Judgment in Absence" (Qada ala al-Ghaib). (Nahr). I say, Al-Ustrujani has made the same clarification in his Jami'. (T)

And the High Courts etc., English courts, are not Sharia courts. Neither are those officials and judges Sharia judges. Therefore, in such matters, referring to them, even if it were easy, is fundamentally not beneficial because the marriage will not be annulled by their decree of annulment, and the woman will remain the husband's wife as before. Rather, in such specific religious matters, it is necessary to refer to a Sunni scholar and jurist who is most knowledgeable in the science of Fiqh among all the city's inhabitants. And if even such a person is not available there, then the remedy is for the husband and wife...

1 Radd al-Muhtar, Book of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/307.

अल्लाह बेहतर जानता है। इसलिए कि यदि इसे अनिवार्य घोषित कर दिया जाए, तो लड़के का अभिभावक लड़की पर आपत्ति करेगा। क्योंकि जो कुछ भी घटित हुआ वह लड़की की इच्छा और कथन के अनुसार हुआ, क्योंकि लड़की वयस्क है जिसकी इच्छा पर यह सब हुआ है, जैसा कि रद अल-मुह्तार में शुरुनबुललाली से उद्धृत है और उन्होंने अल-फतह से उद्धृत किया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसाला 329: कलकत्ता, धर्मतल्ला स्ट्रीट नंबर 102 से, हाफ़िज़ अज़ीज़-उर-रहमान साहब द्वारा भेजा गया, 16 ज़ुल-क़ादा 1312 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक लड़की का निकाह उसके पिता और दादा के न होने के कारण उसके मामा ने अपनी अभिभावकता (विलायत) में कर दिया था। अब वयस्क होने पर लड़की ने उस निकाह को अस्वीकार नहीं किया [शुरुआत में], लेकिन वयस्कता की स्थिति में ही चार व्यक्तियों को बुलाकर व्यक्त किया कि "मैं अब वयस्क हो गई हूँ, मैं अपने अभिभावक द्वारा किए गए निकाह को अस्वीकार करके उसे रद्द (फ़स्ख़) करती हूँ; आप सब इस बात के गवाह रहें।" इस रद्द करने की खबर उसके निकाह वाले व्यक्ति (पति) को मिली, और वह अपना मेहर (दहेज) भी माफ कर देती है, फिर भी वह मामला साफ नहीं करता (तलाक नहीं देता)। लगभग एक साल बीत चुका है। रद्द करने के मसले के बारे में दुर्र-ए-मुख्तार आदि में है कि रद्द करने की सूचना काज़ी को दी जानी चाहिए। काज़ी अलगाव (तफ़रीक़) करवा दे। लेकिन इस ब्रिटिश हुकूमत में इस्लामी अदालतें (क़ज़ा) नहीं हैं, न्याय का अधिकार हाई कोर्ट के न्यायाधीशों के पास है। हाई कोर्ट में वकील और बैरिस्टर रिपोर्ट करने के लिए एक हजार की राशि मांगते हैं। उक्त लड़की भरण-पोषण की मोहताज है और युवावस्था में है; शैतानी प्रभाव (भटकाव) का डर बना रहता है। ऐसी स्थिति में वह क्या करे? स्पष्ट करें। बयान फरमाएं, आपको पुण्य मिले।

उत्तर: वास्तव में, इस रद्द करने (फ़स्ख़) के लिए काज़ी का फैसला एक शर्त है, जैसा कि अल-दुर्र अल-मुख्तार में है (त), और अलगाव के समय पति की उपस्थिति भी अनिवार्य है।

[अरबी में]: रद अल-मुह्तार में: यदि पति अनुपस्थित हो, तो उनके बीच अलगाव नहीं किया जाएगा जब तक कि वह उपस्थित न हो, क्योंकि अनुपस्थिति में न्याय करना निषिद्ध है (नहर)। मैं कहता हूँ: अल-उस्तुजनी ने अपनी जामी' में इसे स्पष्ट रूप से कहा है। 1 -

[उर्दू में]: रद अल-मुह्तार में है: जब तक पति उपस्थित न हो, काज़ी अलगाव न करे, अन्यथा उसकी अनुपस्थिति में अलगाव "क़ज़ा अला अल-ग़ैब" (अनुपस्थिति में निर्णय) होगा। (नहर)। मैं कहता हूँ कि उस्त्रुजनी ने अपनी जामी' में यही स्पष्टीकरण दिया है। (त)

और हाई कोर्ट आदि अंग्रेजी अदालतें शरिया अदालतें नहीं हैं। न ही वे अधिकारी और न्यायाधीश शरिया के काज़ी हैं। इसलिए, ऐसे मामलों में उनसे संपर्क करना, भले ही वह आसान हो, मूल रूप से फायदेमंद नहीं है क्योंकि उनके द्वारा रद्द किए जाने से यह निकाह रद्द नहीं होगा और महिला पहले की तरह पति की पत्नी बनी रहेगी। बल्कि, वहां जो सुन्नी विद्वान और फकीह पूरे शहर के निवासियों में न्यायशास्त्र (फ़िक्ह) के ज्ञान में सबसे आगे हों, इस प्रकार के विशेष धार्मिक कार्यों में उनकी ओर रुख करना आवश्यक है। और यदि वहां ऐसा भी न हो, तो उपाय यह है कि पति और पत्नी...

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/307. पृष्ठ 565 का 739

جلد یاز دہم فتاوی رضویہ

تعالیٰ اعلم۔ اس لئے کہ اگر واجب قرار دیا جائے تو لڑکے کا ولی لڑکی سے تعرض کرے گا۔ کیونکہ جو واقعہ ہوا ہے وہ لڑکی کی مرضی اور کہنے سے ہوا اس لئے کہ لڑکی بالغ ہے جس کی خواہش پر یہ کچھ ہوا ہے جیسا کہ ردالمحتار میں شربنلالی سے اور اس نے فتح سے نقل کیا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۲۹: از کلکتہ دھرم تلا اسٹریٹ نمبر ۱۰۲ مرسلہ حافظ عزیز الرحمان صاحب ۱۶ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کا نکاح بسبب نہ رہنے باپ دادا کے اس کے ماموں نے اپنی ولایت سے کر دیا تھا اب بحالت بلوغ لڑکی نے اس نکاح کو نامنظور نہ کیا اور بعین حالت بلوغ دو چار آدمیوں کو بلا کر اظہار کیا کہ میں اس وقت بالغ ہوئی اپنے ولی کے نکاح کو نامنظور کر کے فسخ کیا آپ لوگ اس امر کے شاہد رہیں۔ اور اس فسخ کی خبر اس کے نکاح کو ہوئی اور دین مہر بھی معاف کر دیتی ہے، تاہم صفائی نہیں کرتا، قریب سال کے گزر اور درباره مسئلہ فسخ در مختار وغیرہ میں ہے کہ فسخ کی خبر قاضی کو کرے۔ قاضی تفریق کر دے، اور اس سلطنت انگریزی میں قضایا نہیں حکم قضا یا حکام ہائی کورٹ کے متعلق ہے اور ہائیکورٹ میں خبر کے واسطے وکیل اور بیرسٹر مبلغ ایک ہزار طلب کرتے ہیں اور لڑکی مذکورہ نان و نفقہ کو محتاج اور عالم شباب رکھتی ہے، خوف شیطانی غالب رہے، پس ایسی صورت میں کیا کرے؟ بیان فرمائیے۔ بینوا توجروا

الجواب: فی الواقع اس فسخ کے لئے قضائے قاضی شرط ہے کما فی الدرالمختار (جیسا کہ در مختار میں ہے۔ ت) اور حاضری شوہر وقت تفریق بھی ضرور۔

فی ردالمحتار الزوج لو کان غائباً لم یفرق بینھما مالم یحضر للزوم القضاء علی الغائب نھر ، قلت وبہ صرح الاستروشنی فی جامعہ 1 - رد المحتار میں ہے جب تک خاوند حاضر نہ ہو قاضی تفریق نہ کرے، ورنہ اس کی غیر موجودگی میں تفریق، قضاء علی الغیب ہوگی، نہر ، میں کہتا ہوں استروشنی نے اپنی جامع میں یہی تصریح کی ہے۔ (ت)

اور ہائی کورٹ وغیرہ انگریزی کچہریاں دار القضاء شرعی نہیں۔ نہ وہ حکام و قضاۃ شرع، تو ایسے مسائل میں ان کی طرف رجوع اگر آسان بھی ہو تو اصلاً مفید نہیں کہ ان کے فسخ کئے یہ نکاح فسخ نہ ہوگا اور عورت بدستور زوجہ شوہر رہے گی بلکہ وہاں جو عالم فقیہ سنی تمام اہل شہر سے علم فقہ میں زائد ہو اس قسم کے خاص دینی کاموں میں اس کی طرف رجوع لازم ہے، اور اگر وہاں یہ بھی نہ ہو تو چارہ کار یہ ہے کہ زن و شوہر

1 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۷/۲ Page 565 of 739

Keep this matter before the Panchayat; after proof in the presence of the husband, let the Muslim arbitrators separate them, and the marriage will be annulled.

[Arabic Box Left]: For the ruling of an arbitrator is like that of a judge in all matters which are not a prescribed punishment (Hudud), retaliation (Qisas), or blood money (Diyyah) payable by the tribe (Aqilah), as they have stated as a text upon it. [Urdu Box Right]: The ruling, meaning the arbitrator, is like a judge in matters other than retaliation, prescribed punishments, and blood money upon the tribe, as the jurists have stated explicitly on this. (T)

And if the husband does not agree to the Panchayat, then the woman should go to a city in an Islamic state, such as the state of Rampur etc. here, and present her case before the Sharia judge (whose jurisdiction has not been limited by the Muslim ruler of the state to the residents of that city, nor has he been restricted to ruling according to the school of our master Imam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him). He can separate them according to Sharia rules. And if the husband also agrees to go there or his presence becomes mandatory upon the judge's summons, then the matter is easy. Now, the only condition for this judge will be that the ruler has not restricted his jurisdiction solely to the city's people, as is usually the case that they do not specialize.

[Arabic Box Left]: And that is because it is known that jurisdiction is specified by whatever the appointer specifies, as in Al-Ashbah, Al-Durr, and others. When it is not restricted to the residents of the city, it is not a condition for the litigants to be from the residents of the city, as in Radd al-Muhtar and others. And Allah Almighty knows best. [Urdu Box Right]: This is because the scope of a judge's jurisdiction is limited by the specifications of the one who appoints him, as mentioned in books like Ashbah, Durr al-Mukhtar, etc. And when the judge's scope is not limited to a specific area, it is not a condition for the parties to the lawsuit to be residents of that city, as stated in Radd al-Muhtar etc. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 330: What do the scholars of religion say regarding this matter: The marriage of Zaid and Hindah was performed through the guardianship of their fathers while both were minors. After some time, Zaid became blind while they were both still minors, and Hindah's father passed away. Now, Hindah's mother and paternal uncle do not want to send her away and say they will not give their daughter to Zaid. In this case, does the mother's refusal cause any defect in the marriage? And

do the mother and uncle have the authority for annulment or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the questioned case, the mentioned marriage remains as it was, and there is no defect in it due to the refusal of Hindah's mother, uncle, or anyone else.

1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Qada, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/257 Page 566 of 739

फ़तावा रिज़विया जिल्द ग्यारहवीं

इस मामले को पंचायत के सामने रखें; शौहर की मौजूदगी में सुबूत मिलने के बाद मुस्लिम पंच अलगाव करा दें, तो निकाह फ़स्ख़ (निरस्त) हो जाएगा।

[अरबी बॉक्स बायां]: क्योंकि पंच का फैसला उन सभी मामलों में काज़ी की तरह है जो हुदूद, किसास और आकिला पर दियत से संबंधित नहीं हैं, जैसा कि उन्होंने इस पर स्पष्ट किया है। [उर्दू बॉक्स दायां]: हुक्म यानी सालीस (पंच), किसास, हद और आकिला पर दियत के अलावा बाकी मामलों में काज़ी की तरह है, जैसा कि फ़ुक़्हा ने इस पर साफ़ तौर पर ज़िक्र किया है। (त)

और अगर शौहर पंचायत पर राज़ी न हो, तो औरत किसी इस्लामी रियासत के शहर में जाए, जैसे यहाँ रामपुर रियासत आदि, और वहाँ शरई काज़ी की अदालत में (जिसका अधिकार क्षेत्र उस रियासत के नवाब ने न तो शहर वालों तक सीमित किया हो और न ही हमारे सरदार इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़हब पर फ़ैसला करने के लिए प्रतिबंधित किया हो) अपनी फ़रियाद पेश करे। वह शरई क़ायदे के मुताबिक़ अलगाव करा सकता है। और अगर शौहर भी वहाँ जाने पर राज़ी हो जाए या काज़ी के बुलावे पर उसका जाना ज़रूरी हो, तो मामला आसान है। अब इस काज़ी के लिए शर्त सिर्फ़ इतनी होगी कि शासक ने उसका अधिकार क्षेत्र सिर्फ़ शहर वालों तक सीमित न किया हो, जैसा कि अक्सर देखा गया है कि वे इसे ख़ास (सीमित) नहीं करते।

[अरबी बॉक्स बायां]: और यह इसलिए है क्योंकि यह ज्ञात है कि न्याय का अधिकार उसे नियुक्त करने वाले की विशिष्टता से तय होता है, जैसा कि अश्बाह और अल-दुर्र आदि में है। और जब वह शहर वालों के लिए विशिष्ट न हो, तो मुक़दमेबाज़ों का शहर का निवासी होना शर्त नहीं है, जैसा कि रद-उल-मुहतार आदि में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। [उर्दू बॉक्स दायां]: यह इसलिए कि कज़ा (न्याय) का दायरा काज़ी को नियुक्त करने वाले की विशिष्टता से तय होता है जैसा कि अश्बाह, दुर्रे मुख़्तार आदि किताबों में ज़िक्र है। और जब काज़ी का दायरा किसी ख़ास इलाक़े के लिए मख़सूस (सीमित) न हो, तो मुक़दमे के फ़रीक़ैन (पक्षों) का शहर का निवासी होना शर्त नहीं है, जैसा कि रद-उल-मुहतार आदि में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 330: दीन के विद्वान इस मसले के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद और हिंदा का विवाह उनके पिताओं के संरक्षण में उनकी नाबालिगी के दौरान हुआ। कुछ समय बाद ज़ैद अंधा हो गया और वे दोनों अभी नाबालिग़ ही हैं, और हिंदा के पिता का देहांत हो गया। अब हिंदा की माँ और चचा उसे

विदा नहीं करना चाहते और कहते हैं कि हम अपनी बेटी ज़ैद को नहीं देंगे। इस सूरत में माँ के इनकार से इस निकाह में कोई ख़लल (बाधा) आया या नहीं? और क्या माँ और चचा को निकाह फ़स्ख़ करने का अधिकार प्राप्त है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब: पूछी गई स्थिति में उक्त निकाह अपनी जगह बरक़रार है और हिंदा की माँ, चचा या किसी के भी इनकार से इसमें कोई ख़लल नहीं पड़ता।

1. बहर-उर-राईक़, किताब-उल-क़ज़ा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/257 पृष्ठ 739 का 566

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

اس معاملہ کو پنچایت پر رکھیں، مسلمان پنچ بعد ثبوت بمواجہہ شوہر تفریق کر دے نکاح فسخ ہو جائے گا۔

[Arabic Box Left]: فان الحکم کالقاضی في کل مالیس بحد ولا قود ولادیة علی عاقلة کما نصوا علیه۔ [Urdu Box Right]: حکم یعنی ثالث، قصاص، حد اور عاقلہ پر دیت کے سوا باقی امور میں قاضی کی طرح ہے، جیسا کہ فقہاء نے اس پر نص کی ہے۔ (ت)

اور اگر شوہر پنچایت پر راضی نہ ہو تو عورت کسی اسلامی ریاست کے شہر میں جائے جس طرح یہاں ریاست رام پور وغیرہ اور وہاں قاضی شرع کے حضور (جس کی قضا کو نواب والی ملک مسلمان نے نہ اس شہر والوں سے خاص کردیا ہو نہ سیدنا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے مذہب پر حکم کے لئے مقید کیا ہو) استغاثہ کرے وہ بلحاظ قواعد شرعیہ تفریق کر سکتا ہے، اور اگر شوہر بھی وہاں جانے پر راضی ہو یا قاضی کی طلبی پر اسے جانا ضرور ہو جب تو امر آسان ہے، اب اس قاضی میں صرف اتنی شرط ہوگی کہ والی نے صرف اہل شہر کے ساتھ اسی کی قضاء کو خاص کردیا ہو جیسا کہ اکثر یہی ہے کہ تخصیص نہیں کرتے۔

[Arabic Box Left]: وذلك لما عرف ان القضاء یتخصص بکل ماخصص به المقلد کما في الاشباه والدر وغیرهما واذالم یخصص باهل البلد لم یشترط ان یکون المتدا عیان من اهل البلد کما في رد المحتار وغیره۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ [Urdu Box Right]: یہ اس لئے کہ قضاء کا دائرہ قاضی کو مقرر کرنے والے کی تخصیص سے خاص ہوتا ہے جیسا کہ اشباہ، درمختار وغیرہ کتب میں مذکور

ہے، اور جب قاضی کا دائرہ کسی خاص علاقہ سے مخصوص نہ ہو تو دعوٰی کے فریقین کا اہل بلد سے ہونا شرط نہیں ہے، جیسا کہ ردالمحتار وغیرہ میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۳۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید و ہندہ کے باہم شادی بولایت پدران عالم نابالغی زوجین میں ہوئی، بعد ایک عرصہ کے زید نابینا ہوگیا اور ہنوز وہ دونوں نابالغ ہیں اور پدر ہندہ نے وفات پائی اب مادر و عم ہندہ اسے رخصت کرنا نہیں چاہتے اور کہتے ہیں ہم اپنی بیٹی زید کو نہیں دیں گے اس صورت میں ماں کے انکار سے اس نکاح میں خلل آیا یا نہیں؟ اور ماں اور چچا کو فسخ کا اختیار حاصل ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مسئولہ میں نکاح مذکور بحالہ باقی ہے اور ام و عم ہندہ بلکہ کسی کے انکار سے اس میں خلل نہیں

1 بحر الرائق کتاب القضاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۲۵۷ Page 566 of 739

...not, they do not have the right of annulment, to the extent that even if Hind herself wants to annul the marriage after reaching puberty, it will not be annulled.

In Tanwir al-Absar, it is stated that if the guardian is the father or grandfather, marriage is binding even with a significantly lower dower, etc. And in Fatawa Qazi Khan, it is mentioned that the boy or girl will not have the option [to annul] upon reaching puberty. Ending. And Allah Almighty knows best. (T)

In Tanwir al-Absar: "Marriage is binding even with excessive loss if the guardian is the father or the grandfather, etc." In Fatawa Qazi Khan: "When the minor boy or girl reaches puberty and they were married by the father and grandfather, there is no option for them." Ending. And Allah Almighty knows best.

Problem 331: 20 Rabi' al-Akhir Sharif 1313 AH

What do the scholars of religion say regarding this matter: Hind's husband died leaving behind two daughters, one aged three and the other six. The six-year-old girl was taken away secretly by her paternal aunt to her house. When Hind found out, she was constantly thinking of ways to get her daughter back and had told her relatives that if they found an opportunity, they should bring her daughter back to her. By chance, the girl was buying meat at some shop when Hind's nephew happened to be passing by; he picked her up and brought her to Hind. Six or seven days after the girl returned to Hind, her aunt came and told Hind, "I have married her to my son, now send her back." Hind said, "I am the mother; why did you perform the marriage without my permission? I will not give this girl, and I have the right over her marriage." The girl stayed with her aunt for one year and had gone there at age six. It has been four or five years since she returned to her mother. According to this calculation, she is now eleven or twelve years old. In this situation, is that marriage invalid or does it stand? Hind wants to marry her elsewhere; can she do so according to Islamic Sharia or not? Explain and be rewarded.

The Answer:

If these girls had no elder brother, nephew, uncle, first cousin (paternal uncle's son), grandson, or in short, any sane, adult male descendant of the grandfather or great-grandfather, then the guardianship (Wilayah) of their marriage belonged to their mother. The aunt had no authority in the presence of the mother. The marriage

performed by the aunt without the mother's permission, which the mother rejected by saying, "Why did you do it? I will not give her," [is invalid].

---

1. Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Guardians, Munshi Nawal Kishore, Lucknow, 1/164

...नहीं, उन्हें रद्दीकरण (फ़स्ख़) का अधिकार नहीं है, यहाँ तक कि अगर हिन्दा स्वयं बालिग होने के बाद निकाह रद्द करना चाहे, तब भी वह रद्द नहीं होगा।

तनवीर अल-अबसार में है कि यदि वली (अभिभावक) पिता या दादा हो, तो बहुत कम मेहर के साथ भी निकाह लाज़िम (अनिवार्य) होता है, इत्यादि। और फ़तावा काज़ी ख़ाँ में है कि लड़के या लड़की को बालिग होने पर [रद्द करने का] विकल्प नहीं होगा। इति। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

फ़ी तनवीर अल-अबसार: "लज़म अन-निकाह व लौ बिग़ब्निन फ़ाहिशिन इन कानल वलिय्यु अबन औ जद्दन अल-ख़। फ़ी फ़तावा काज़ी ख़ाँ: इज़ा बलाग़स सग़ीरु औ-सग़ीरतु क़द ज़व्वजहुमल अबू वल जद्दु ला ख़ियारा लहुमा अंतही।" वल्लाहु तआला आलम।

मसला 331: 20 रबी अल-आख़िर शरीफ़ 1313 हिजरी

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: हिन्दा का शौहर मर गया और उसकी दो लड़कियाँ थीं, एक तीन साल की और एक छह साल की। छह साल की लड़की को उसकी फूफी चोरी-छिपे अपने घर ले गई। जब हिन्दा को पता चला, तो वह इसी फ़िक्र में रही कि जब मौका मिले अपनी लड़की को वापस ले आए, और अपने अज़ीज़ों (रिश्तेदारों) से भी कह रखा था कि जब मौका मिले तो मेरी लड़की को मेरे पास ले आना। इत्तेफ़ाक से वह लड़की किसी दुकान पर गोश्त ले रही थी और हिन्दा का भानजा उस तरफ़ से आ रहा था, उसने उसे गोद में उठा लिया और हिन्दा को दे दिया। जब वह लड़की हिन्दा के पास आ गई, तो छह-सात दिन बाद उसकी फूफी आई और हिन्दा से कहा, "मैंने उसका निकाह अपने लड़के के साथ कर दिया है, अब उसे भेज दो।" हिन्दा ने कहा, "मैं माँ थी, मेरी इजाज़त के बिना तुमने निकाह क्यों किया? मैं इस लड़की को नहीं दूँगी और इसके निकाह का मुझे अधिकार है।" वह लड़की एक साल अपनी फूफी के पास रही और छह साल की उम्र में वहाँ गई थी। उसे माँ के पास आए हुए चार-पाँच साल हो गए हैं, इस हिसाब से अब उसकी उम्र ग्यारह-बारह साल है। तो इस सूरत में वह निकाह फ़ासिद (अमान्य) रहा या कायम रहा? और हिन्दा उसका निकाह दूसरी जगह करना चाहती है, क्या वह शरीअत के मुताबिक़ ऐसा कर सकती है या नहीं? बयान करें और पुण्य कमाएँ।

जवाब:

अगर उन लड़कियों का कोई जवान भाई, भतीजा, चाचा, चचेरा भाई, पोता, संक्षेप में दादा या परदादा की औलाद में से कोई अकलमंद बालिग पुरुष नहीं था, तो उनके निकाह का विलायत (अभिभावकत्व) उनकी माँ को ही था। माँ के होते हुए फूफी को कोई अधिकार नहीं था। जो निकाह फूफी ने माँ की इजाज़त के बिना किया, जिसे माँ ने यह कहकर रद्द कर दिया कि "तुमने क्यों किया, मैं उसे नहीं दूँगी", [वह मान्य नहीं है] ।

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मुतबा-ए-मुज्तबाई दिल्ली, 1/192
2. फ़तावा काज़ी ख़ाँ, फ़स्ल फ़िल औलिया, मुंशी नवल किशोर लखनऊ, 1/164

آتا، نہ انہیں اختیار فسخ حاصل، یہاں تک کہ اگر خود ہندہ بعد بلوغ فسخِ نکاح چاہے تاہم منفسخ نہ ہوگا۔

تنویر الابصار میں ہے کہ ولی باپ یادادا ہو تو بہت کم مہر سے بھی نکاح لازم ہوتا ہے الخ۔ اور فتاوٰی قاضی خاں میں ہے کہ لڑکا یا لڑکی کو بالغ ہونے پر اختیار نہ ہوگا انتھی، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

في تنوير الابصار لزم النكاح ولو بغبن فاحش ان كان الولي ابا او جدا الخ فی فتاوٰی قاضی خاں اذا بلغ الصغير او الصغيرة قد زوجهما الاب والجد لاخيار لهما انتهى والله تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۳۱: ۲۰ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۳ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا شوہر مر گیا اور دو لڑکی ایک کی عمر تین برس کی اور ایک کی چھ برس کی، چھ برس کی عمر کی لڑکی کو اس کی پھوپھی چور سے لے گئی اپنے گھر کو، جب ہندہ کو معلوم ہوا تو وہ اس فکر میں رہی کہ جب موقع پاوے اپنی لڑکی کو لے آئے، اور اپنے عزیزوں سے بھی کہہ رکھا کہ جب موقع ملے تو میری لڑکی میرے پاس لے آؤ، حسبِ اتفاق وہ لڑکی ہندہ کی کسی دکان پر گوشت لے رہی تھی اور ہندہ کا بھانجا اس طرف سے آرہا تھا اسے گودی میں اٹھالیا اور ہندہ کو دے دیا، جب وہ لڑکی ہندہ کے پاس آگئی تو چھ سات روز بعد اس کی پھوپھی آئی اور ہندہ سے کہا میں نے اس کا نکاح اپنے لڑکے کے ساتھ کردیا ہے اب اس کو بھیج دو، ہندہ نے کہا میں ماں تھی میری بلاجازت تم نے کیوں نکاح کیا میں اس لڑکی کو نہیں دوں گی اور اس کے نکاح کا مجھے اختیار ہے، اور وہ لڑکی ایک برس اپنی پھوپھی کے رہی اور چھ برس کی عمر میں گئی تھی اور اس کو ماں کے پاس آئے ہوئے چار پانچ برس کا عرصہ

ہوا اس حساب سے اب گیارہ بارہ برس کی عمر ہے تو اس صورت میں وہ نکاح فاسد رہا یا قائم رہا؟ اور ہندہ اس کا اور جگہ نکاح کرنا چاہتی ہے، آیا بموجبِ شرع شریف کے کرسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب:

اگر ان لڑکیوں کا کوئی جوان بھائی، بھتیجا، چچا، چچا کا بیٹا، پوتا غرض دادا پردادا کی اولاد سے کوئی عاقل بالغ مرد نہ تھا تو ان کے نکاح کی ولایت ان کی ماں ہی کو تھی پھوپھی کو ماں کے ہوتے کچھ اختیار نہ تھا جو نکاح پھوپھی نے بے اجازتِ ماں کے کیا جبکہ ماں نے اسے رد کردیا کہ تم نے کیوں کیا میں اس کو نہ دوں گی

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ 2 فتاویٰ قاضی خاں فصل فی الاولیاء منشی نولکشور لکھنؤ ۱/۱۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

I have the authority for this; that marriage is nullified. Now I have the authority to marry the girl wherever it is suitable.

In Al-Durr al-Mukhtar: if there is no Asabah (agnatic relative), then the guardianship belongs to the mother.	**In Al-Durr al-Mukhtar, it is said that if there is no Asabah, then guardianship passes to the mother.**
[1]And Allah knows best the right way, and to Him is the return and resort.	It is so, and Allah knows best the right way, and to Him is the return and resort (T).

Problem 332: From the city of Azamgarh, sent by Inayatullah Khan Sahib, 14 Muharram al-Haram 1314 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding the marriage of a woman named Mahmooda with a person named Hamid, who is of equal status (Kufu), which took place in the following circumstances: Only Mahmooda's father did not agree to this marriage with Hamid, but Mahmooda's mother and also the entire family agreed in every way. Therefore, this marriage was conducted with public announcement at the initiative of Mahmooda's mother and other family elders during the absence of Mahmooda's father, while he was in his area at a distance of twelve to thirteen Kos (approx. 24-26 miles). Since Mahmooda was sane and an adult, one day before the marriage contract, a married girl of her age was sent to ascertain her inclination. Mahmooda told her, "I heartily agree to this marriage," and also said, "The beauty of it is that I will not be separated from you and all my relatives and will stay in the same place." The next day, on Friday, the contract was decided. A representative (Wakil) and two witnesses went to the room where Mahmooda was to obtain her consent. According to the custom of the land, after asking and answering, they returned to Hamid's garden for the conduct of the marriage, where the officiant, relatives, and also honorable and prominent people of the city were present. Upon returning, it was found that the representative and witnesses had only obtained consent from Mahmooda's mother. On this, it was the opinion of those present that since Mahmooda is sane and an adult, it is necessary to ask her. Therefore, the representative, witnesses, and some relatives went back into Mahmooda's house. It was found that Mahmooda was performing Salat al-Tasbih. The representative said that after Mahmooda finishes the prayer, she should be asked. After a short while, Mahmooda finished the prayer. One witness saw Mahmooda turning for the left salam and a relative saw her turning for both salams. At that place, Mahmooda's

mother and Hamid's sister were sitting near Mahmooda. After completing the prayer, the words of offer and acceptance (Ijab-o-Qabul) according to the rulings of Sharia were spoken to Mahmooda for the purpose of obtaining consent. Mahmooda's mother said, according to the custom of this land and in accordance with the tradition of the nobles of this region, "Yes, it is accepted," and Mahmooda remained silent. However, the representative said that Mahmooda herself is sane and an adult, she should repeat the words of offer and acceptance with her own tongue. At this, Mahmooda and other people said that in India, no girl of noble family...

---

[1] Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi 1/193

फतावा रज़विया जिल्द 11

इसके लिए मेरे पास अधिकार है; वह निकाह बातिल (अमान्य) हो गया। अब बंदे को अधिकार है कि जहाँ उचित समझे लड़की का निकाह कर दे।

दुर-ए-मुख्तार में है: यदि कोई असबा (पितृवंशीय संबंधी) न हो, तो विलायत (संरक्षण) माँ के पास होती है।

[1]और अल्लाह बेहतर जानता है कि सही क्या है, और उसी की ओर लौटना है।

दुर-ए-मुख्तार में है: यदि कोई असबा न हो, तो विलायत माँ को जाती है।

ऐसा ही है, और अल्लाह बेहतर जानता है कि सही क्या है, और उसी की ओर लौटना है (त)।

मसला 332: आजमगढ़ शहर से, इनायत उल्लाह खान साहब द्वारा प्रेषित, 14 मुहर्रम अल-हराम 1314 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं कि मुसम्मात महमूदा का निकाह हामिद नाम के एक व्यक्ति के साथ, जो उसके हम-कुफ़ू (बराबर का) है, निम्नलिखित परिस्थितियों में हुआ है: केवल महमूदा के पिता को हामिद के साथ यह निकाह करना मंजूर नहीं था, लेकिन महमूदा की माँ और पूरे परिवार को हर तरह से मंजूर था। इसलिए यह निकाह महमूदा की माँ और परिवार के अन्य बुजुर्गों की पहल पर, महमूदा के पिता की अनुपस्थिति में, जबकि वह अपने इलाके में बारह-तेरह कोस की दूरी पर थे, सार्वजनिक घोषणा के साथ आयोजित किया गया। चूंकि महमूदा समझदार और बालिग (वयस्क) थी, इसलिए निकाह के अनुबंध से एक दिन पहले उसकी उम्र की एक विवाहित लड़की को महमूदा की राय जानने के लिए भेजा गया। महमूदा ने उससे कहा कि "यह निकाह मुझे तहे दिल से मंजूर है", और यह भी कहा कि "इसमें यह खूबी है कि मैं तुमसे और अपने सभी रिश्तेदारों से अलग नहीं होऊंगी और एक ही जगह रहूँगी।" अगले दिन जुमे के दिन इसका अक़्द (अनुबंध) तय हुआ। एक वकील और दो गवाह उस कमरे में गए जहाँ महमूदा थी, ताकि उसकी रजामंदी मालूम की जा सके। उस देश के रिवाज के अनुसार सवाल-जवाब करने के बाद, निकाह पढ़ाने के लिए वे हामिद के बाग में वापस आए जहाँ निकाह पढ़ाने वाले, रिश्तेदार और शहर के प्रतिष्ठित और गणमान्य लोग मौजूद थे। वापस आने पर पता चला कि वकील और गवाहों ने केवल महमूदा की माँ से रजामंदी हासिल की थी। इस पर उपस्थित लोगों की राय हुई कि मुसम्मात महमूदा समझदार और बालिग है, उससे पूछना जरूरी है। इसलिए वकील और गवाह और महमूदा के कुछ रिश्तेदार फिर से घर में गए। पता चला कि मुसम्मात महमूदा

सलात-उत-तस्बीह की नमाज़ पढ़ रही है। वकील ने कहा कि जब महमूदा नमाज़ से फारिग हो जाए तब पूछा जाए। थोड़ी देर बाद महमूदा नमाज़ पढ़ चुकी, एक गवाह ने महमूदा को बायां सलाम फेरते देखा और एक अज़ीज़ ने दोनों सलाम फेरते देखा। उस जगह महमूदा के पास महमूदा की माँ और हामिद की बहन बैठी हुई थीं। नमाज़ से फारिग होने के बाद, रजामंदी हासिल करने के उद्देश्य से शरीयत के हुक्म के अनुसार ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के शब्द महमूदा से कहे गए। महमूदा की माँ ने उस देश के रिवाज के अनुसार और उस क्षेत्र के शरीफों (सज्जनों) की रस्म के मुताबिक कहा कि "हाँ मंजूर है" और महमूदा खामोश रही। लेकिन वकील ने कहा कि महमूदा खुद समझदार और बालिग है, उसे अपनी ज़बान से ईजाब-ओ-क़ुबूल के अल्फाज़ (शब्दों) को दोहराना चाहिए। इस बात पर महमूदा और अन्य लोगों ने कहा कि हिंदुस्तान में शरीफ घरानों की कोई लड़की...

---

[1] दुर-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/193

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

اس کا مجھے اختیار ہے وہ نکاح باطل ہو گیا۔ اب بندہ کو اختیار ہے جہاں مناسب دیکھے لڑکی کا نکاح کر دے۔

في الدرالمختار ان لم یکن عصبة فالولایة للام

در مختار میں ہے اگر کوئی عصبہ نہ ہو تو پھر ولایت ماں کو

[1]واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب الیہ المرجع والمآب (ت)

ہے، واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب والیہ المرجع والمآب

مسئلہ ۳۳۲: از شہر اعظم گڑھ مرسلہ عنایت اللہ خاں صاحب ۱۴ محرم الحرام ۱۳۱۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین کہ مسماۃ محمودہ کا نکاح حامد ایک شخص ہم کفو کے ساتھ مندرجہ ذیل صورت میں ہوا ہے صرف پدر محمودہ کو یہ نکاح حامد کے ساتھ کرنا منظور نہیں تھا مگر مادر محمودہ و نیز تمام خاندان کو بہر صورت منظور تھا اس لئے یہ نکاح بہ تحریک مادر محمودہ و دیگر بزرگان خاندان بغیبت پدر محمودہ کے جبکہ وہ اپنے علاقہ پر بہ فاصلہ بارہ تیرہ کوس کے تھا باعلان عام منعقد کیا گیا، چونکہ محمودہ عاقلہ بالغہ تھی اس لئے ایک روز قبل از انعقاد نکاح اس کی ہم عمر ایک کتخدا لڑکی واسطے استمزاج محمودہ کے بھیجی گئی، اس سے محمودہ نے کہا کہ یہ نکاح مجھ کو بدل منظور ہے، یہ بھی کہا کہ اس میں یہ خوبی ہے کہ میں تم اور نیز تمام اعزہ سے جدا نہ ہوں گی اور ایک ہی جگہ رہوں گی، دوسرے روز بروز جمعہ اس کا عقد قرار پایا، ایک وکیل اور دو گواہ جس کمرہ میں محمودہ تھی واسطے دریافت رضامندی کے گئے و حسب رواج اس ملک کے سوال جواب کر کے واسطے پڑھانے نکاح کے باغ حامد میں جہاں نکاح پڑھانے والا اعزہ اور نیز شہر کے معزز و ممتاز لوگ موجود تھے واپس آئے، واپس

آنے پر معلوم ہوا کہ وکیل و گواہان نے محض مادر محمودہ سے رضامندی حاصل کی ہے، اس پر حاضران کی یہ رائے ہوئی کہ مسماۃ محمودہ عاقلہ بالغہ ہے اس سے پوچھنا ضروری امر ہے لہذا پھر وکیل و گواہان گھر میں جائیں اور خاص محمودہ سے دریافت کریں، چنانچہ وکیل و گواہان و نیز چند اعزہ محمودہ کے گھر میں گئے، معلوم ہوا کہ مسماۃ محمودہ نماز صلوۃ التسبیح پڑھ رہی ہے، وکیل نے یہ کہا کہ محمودہ جب نماز سے فارغ ہو لے تو دریافت کیا جائے، تھوڑی دیر کے بعد محمودہ نماز پڑھ چکی، ایک گواہ نے محمودہ کو بایاں سلام اور ایک عزیز نے دونوں سلام پھیرتے دیکھا اور اس جگہ قریب محمودہ کے مادر محمودہ و بہن حامد بیٹھی ہوئی تھیں، بعد فراغت نماز حسب احکام شرعیہ ایجاب و قبول کے الفاظ محمودہ سے بغرض حصول رضامندی کہے گئے تو مادر محمودہ نے حسب رواج اس ملک کے و موافق رسم شرفائے اس دیار کے کہا کہ ہاں منظور ہے اور محمودہ ساکت رہی، مگر وکیل نے کہا کہ محمودہ خود عاقلہ بالغہ ہے اس کو اپنی زبان سے ایجاب و قبول کے الفاظ کا اعادہ کرنا چاہئے، اس بات پر محمودہ نے و نیز اور لوگوں نے کہا کہ ہندوستان میں شریفوں کی کوئی لڑکی

---

[1] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Has a virgin ever spoken until today that she would speak now? Generally, silence is a sign of consent. However, the representative (Wakil), in the presence of witnesses, named Mahmooda and asked the words of offer and acceptance: 'Is Mahmooda acceptable to you?' At that time, Mahmooda remained completely silent and bowed her head slightly. When asked again with insistence in this manner, she placed both hands over her mouth and bowed further. The third time the representative made the same speech, Mahmooda's state remained one of silence and quietness. After this, the representative and witnesses went to Hamid's garden, and according to Sharia principles and established custom, Mahmooda's marriage with Hamid took place before a large gathering. All relatives came to Mahmooda's house as per custom, and congratulations and greetings were exchanged, and the ceremonies of drinking sherbet were performed, upon which Mahmooda's mother, sister, and maternal grandmother expressed joy. This incident took place before the Friday prayer. At eight o'clock at night, Mahmooda's father returned home from the area and created a commotion. In the morning, he called all the relatives and said that this marriage was not valid. He claimed that Mahmooda's mother said Mahmooda did not approve of this marriage, and at the time of repeating the words of marriage to obtain consent, Mahmooda was praying, and when she was about to go into the prostration of forgetfulness (Sajda Sahw), Hamid grabbed her head. 'You people come and inquire at home.' The relatives came to the house. In their presence, Mahmooda's father asked her mother whether this contract was acceptable to Mahmooda or not, and whether she was in prayer or not. In response, Mahmooda's mother said, 'It is acceptable to me,' and regarding the prostration of forgetfulness, the mother said, 'I know nothing.' Although Mahmooda's father repeatedly asked the mother about the prostration of forgetfulness for a long time, she kept denying it. Although the father's statement was completely against the facts and clearly baseless. Until noon, Mahmooda's father kept insisting that because of being occupied in prayer, this marriage did not happen. When this baseless matter could not be proven in any way that Mahmooda was in prayer at the time of marriage, he gathered the relatives after noon and expressed a desire for separation, which meant divorce. Hamid and Hamid's relatives did not accept this separation, although Mahmooda's father insisted on it for a while. Mahmooda is educated; during this time, she wrote a signed note to her father saying, 'Your happiness is acceptable to me; I want nothing except prayer and fasting, but the word divorce should never

come in between.' Mahmooda repeated these same words to several of her peers. Through the preliminary inquiries before marriage, silence at the time of marriage, the written note after marriage, and the expression of thoughts to peers, Mahmooda's approval and consent regarding this marriage are well-proven, and until now, this marriage is acceptable to Mahmooda. Since this marriage took place in the absence of Mahmooda's father with the consent of Mahmooda, her mother, and all the families of both parties, is this marriage valid according to jurisprudence (Fiqh) in such a case or not? Explain with the Book, and you shall be rewarded.

क्या कोई कुंवारी आज तक कभी बोली है कि वह अब बोलेगी? आमतौर पर खामोशी रजामंदी की निशानी होती है। लेकिन वकील ने गवाहों के सामने महमूदा का नाम लेकर ईजाब और क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के शब्द पूछे कि 'क्या महमूदा तुम्हें मंजूर है?' उस समय महमूदा बिल्कुल खामोश रही और थोड़ा सिर झुका लिया। जब इसी तरह दोबारा जोर देकर पूछा गया, तो उसने अपने मुँह पर दोनों हाथ रख लिए और और अधिक झुक गई। तीसरी बार वकील ने वही बात दोहराई, महमूदा की स्थिति वही खामोशी और चुप्पी की रही। इसके बाद वकील और गवाह हामिद के बाग में आए और शरीयत के सिद्धांतों और प्रचलित रिवाज के अनुसार महमूदा का निकाह हामिद के साथ एक बड़ी सभा के सामने हो गया। महमूदा के घर पर रिवाज के अनुसार सभी रिश्तेदार आए और आपसी मुबारकबाद दी गई और शरबत पिलाने की रस्में पूरी की गईं, जिस पर महमूदा की माँ, बहन और नानी ने खुशी का इज़हार किया। यह घटना जुमे की नमाज़ से पहले की थी। रात आठ बजे महमूदा के पिता इलाके से घर आए और उन्होंने शोर-शराबा मचा दिया। सुबह सभी रिश्तेदारों को बुलाकर कहा कि यह निकाह सही नहीं हुआ है। उन्होंने दावा किया कि महमूदा की माँ कहती है कि महमूदा को यह निकाह मंजूर नहीं था और रजामंदी हासिल करने के लिए निकाह के शब्दों को दोहराते समय महमूदा नमाज़ में थी और जब वह सजदा सह्व (भूल का सजदा) में जाने लगी तो हामिद ने उसका सिर पकड़ लिया। 'आप लोग चलें और घर पर पूछ लें।' रिश्तेदार घर आए। उनके सामने महमूदा के पिता ने माँ से पूछा कि क्या महमूदा को यह निकाह मंजूर था या नहीं और वह नमाज़ में थी या नहीं। जवाब में महमूदा की माँ ने कहा, 'मुझे मंजूर है' और सजदा सह्व के बारे में माँ ने कहा, 'मैं कुछ नहीं जानती।' हालांकि महमूदा के पिता बार-बार माँ से देर तक सजदा सह्व के बारे में पूछते रहे, लेकिन वह इनकार करती रहीं। हालांकि पिता का बयान पूरी तरह से तथ्यों के खिलाफ और बिल्कुल निराधार था। दोपहर तक महमूदा के पिता इस बात पर अड़े रहे कि नमाज़ में व्यस्त होने के कारण यह निकाह नहीं हुआ। जब यह निराधार बात किसी तरह साबित नहीं हो सकी कि निकाह के समय महमूदा नमाज़ में थी, तो उसने दोपहर के बाद रिश्तेदारों को इकट्ठा किया और अलग होने की इच्छा व्यक्त की, जिसका मतलब तलाक था। हामिद और हामिद के रिश्तेदारों ने इस अलगाव को स्वीकार नहीं किया, हालांकि महमूदा के पिता कुछ समय तक इस पर अड़े रहे। महमूदा शिक्षित है; इस दौरान उसने अपने पिता को एक हस्ताक्षरित पत्र लिखा कि 'मुझे आपकी खुशी मंजूर है; मुझे नमाज़ और रोज़े के अलावा कुछ नहीं चाहिए, लेकिन तलाक शब्द कभी बीच में नहीं आना चाहिए।'

महमूदा ने यही शब्द अपनी कई हमउम्र सहेलियों से भी दोहराए। निकाह से पहले की पूछताछ, निकाह के समय की खामोशी, निकाह के बाद के पत्र और सहेलियों के सामने विचारों की अभिव्यक्ति से इस निकाह के बारे में महमूदा की मंजूरी और रजामंदी अच्छी तरह साबित है और अब तक महमूदा को यह निकाह मंजूर है। चूंकि यह निकाह महमूदा के पिता की अनुपस्थिति में महमूदा, उसकी माँ और दोनों पक्षों के सभी परिवारों की रजामंदी से हुआ है, तो ऐसी स्थिति में क्या यह निकाह फिक़्ह (इस्लामी कानून) के अनुसार जायज है या नहीं? किताब के साथ स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

पृष्ठ ७३९ में से ५६९

کنواری آج تک کبھی بولی ہے کہ یہ بولے گی بلکہ بالعموم سکوت علامت رضا مندی ہوتی ہے مگر بالینمہ وکیل نے بمقابلہ گواہان کے محمودہ کا نام لے کر کلمات ایجاب و قبول کو پوچھا کہ محمودہ تم کو منظور ہے؟۔ محمودہ اس وقت محض ساکت رہی اور کچھ سرنگوں ہو گئی، اس طور پر دوبارہ باصرار دریافت کیا گیا تو اپنے منہ پر دونوں ہاتھ رکھ کر اور زیادہ جھکی، تیسری دفعہ وکیل نے اسی طرح تقریر کی، محمودہ کی حالت وہی حالت سکوت و خاموش کی رہی، بعد اس کے وکیل گواہان باغ حامد میں آئے اور حسب اصول شرعیہ و دستور مروجہ نکاح محمودہ کا حامد کے ساتھ جماعت کثیرہ کے روبرو ہو گیا اور نکاح مکان محمودہ میں حسب دستور سب اعزہ آئے و باہم مبارک و سلامت ہوئی اور رسوم شربت نوشی کی عمل میں آئی جس پر مادر و بہن و نانی محمودہ نے شادمانی کا اظہار کیا اور یہ واقعہ قبل از نماز جمعہ کے تھا اور شب میں آٹھ بجے والد محمودہ کا علاقہ سے مکان پر آگیا اور اس نے ایک شور و غل برپا کیا صبح کو تمام اعزہ کو بلا کر یہ کہا کہ یہ نکاح درست نہیں ہوا، اور کہنے لگا کہ مادر محمودہ یہ کہتی ہے کہ محمودہ کو یہ نکاح منظور نہ تھا اور وقت اعادہ الفاظ نکاح بغرض حصول رضا مندی کے محمودہ نماز میں تھی اور جب وہ سجدہ سہو میں جانے لگی تو حامد نے اس کا سر پکڑ لیا، آپ لوگ چلیں اور گھر میں دریافت کرلیں، اعزہ گھر میں آئے، ان کے روبرو پدر محمودہ نے مادر محمودہ سے یہ پوچھا کہ آیا محمودہ کو یہ عقد منظور تھا یا نہیں۔ وہ نماز میں تھی یا نہیں۔ بجواب اس کے مادر محمودہ نے یہ کہا کہ مجھ کو منظور ہے اور سجدہ سہو کی بابت مادر محمودہ نے کہا کہ میں کچھ نہیں جانتی اگر چہ مکررسہ کرر والد محمودہ مادر محمودہ سے دیر تک سجدہ سہو کی نسبت پوچھتا رہا مگر وہ انکار کرتی رہی اگر چہ بیان والد محمودہ کا بالکل خلاف واقعہ کے تھا اور صریح بے اصل تھا،

دو پہر تک والد محمودہ اس امر پر غلو کرتا رہا کہ بوجہ مشغولی نماز کے یہ نکاح نہیں ہوا، جب یہ امر بے اصل کسی طرح سے ثابت نہ ہوا کہ وقت نکاح کے محمودہ نماز میں تھی تو اس نے بعد دو پہر کے اعزہ کو جمع کر کے یہ خواہش ظاہر کی کہ علیحدہ ہو جائے، جس علیحدگی کا مطلب یہ تھا کہ طلاق ہو جائے، حامد اور اعزہ حامد نے اس علیحدگی کو منظور نہیں کیا اگر چہ عرصہ تک والد محمودہ کا اس پر اصرار تھا، محمودہ خواندہ ہے اس عرصہ میں محمودہ نے ایک رقعہ دستخطی اپنے والد کو لکھا کہ مجھے آپ کی خوشی منظور ہے مجھے سوائے نماز وروزہ کے اور کوئی چیز نہیں چاہئے مگر لفظ طلاق کا ہر گز درمیان میں نہ آنے پائے، اور انہی الفاظ کا اعادہ محمودہ نے اپنی چند ہم عمروں سے بھی کیا، صورت استمزاج ماقبل نکاح و سکوت بوقت نکاح و تحریر رقعہ بعد نکاح وانظہار خیال از ہم عمران سے منظوری و رضا مندی محمودہ کی اس نکاح کی نسبت بخوبی ثابت ہے اور اس وقت تک یہ نکاح محمودہ کو منظور ہے، چونکہ یہ نکاح باپ محمودہ کی غیبت میں برضا مندی محمودہ و مادر محمودہ و نیز تمام خاندان فریقین ہوا ہے تو ایسی صورت میں یہ نکاح از روئے فقہ جائز ہوا یا نہیں؟ بینوا بالکتاب تو جروا بالثواب۔

Fatawa Ridawiyyah, Volume 11

The Answer: In the case inquired, if Hamid is a Sharia-compliant match (Kuff) for Mahmuda—meaning there is nothing in his lineage, religion, conduct, profession, etc., that would cause shame or disgrace to Mahmuda's guardians upon marriage—then there is absolutely no doubt about the validity of the aforementioned marriage. This holds true even if she was praying at the time permission was sought, or even if no permission was obtained from her at all. The claim by Mahmuda's father that the marriage did not occur is purely void and meaningless. A marriage performed without permission is, at most, an unauthorized (Fuduli) contract. An unauthorized contract is valid and established, and its enforcement depends on the approval of the person whose permission is required; it is not fundamentally void.

In Al-Durr al-Mukhtar: A 'Fuduli' is one who acts in the right of another without Sharia-mandated permission. Any act performed by them, whether for establishing ownership like sale or marriage, or for terminating it like divorce or manumission—if at the time of the act there is someone capable of authorizing it, the contract is established as suspended (mawquf).

In Durr al-Mukhtar, it states: A Fuduli is one who, without Sharia permission, acts on behalf of another. Any action of a Fuduli, whether to make someone an owner like in sale and marriage, or to terminate ownership like in divorce and manumission—if at the time of their action there is someone to validate it, then this action of the Fuduli will be suspended. (T)

Considering the facts mentioned in the question, Mahmuda's marriage occurred in this manner. The conversation she had with a peer a day before the marriage, where she expressed liking, was merely an opinion, not the appointment of anyone as a representative (wakil) for marriage. The silence Mahmuda maintained when permission was sought at the time of marriage was also insufficient for appointment as a representative, because the nearest guardian (wali aqrab), i.e., the father, was only a few miles away. When the person seeking permission is neither the nearest guardian himself, nor his representative, nor his messenger, then the silence of a virgin girl is also not credible; clear permission is required.

In Tanwir al-Absar, al-Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar: If someone other than the nearest guardian seeks permission from her, like a stranger (meaning one who has no guardianship, but the messenger of the guardian stands in his place, so her silence is considered consent upon his seeking permission as in al-Fath, and similarly for the representative as in al-Bahr from al-Qunya) or a distant guardian (like a brother in the presence of the father when the father is not away on a long journey, as in al-Khaniyah), then her silence will not be credible for permission. Rather, on this occasion, her speaking is necessary just like a previously married woman (thayyibah), or an action that stands in place of speaking is required.

In Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar, it states: If the one seeking permission for marriage from the girl is someone other than the nearest guardian, for example a stranger—meaning someone other than a guardian (though the guardian's messenger stands in his place, so her silence is consent upon his seeking permission as mentioned in Khania)—or a distant guardian, for example a brother in the presence of the father while the father is not on a long journey, then the girl's silence will not be credible for permission; rather, at this instance, her speaking is necessary like a thayyibah woman, or some action is necessary that serves as a substitute for speaking.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Fuduli, Mujtabai Delhi, 2/31.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 11

जवाब: सवाल की सूरत में अगर हामिद महमूदा का शरीई कुफ़ (बराबर का जोड़) है, यानी उसके नसब (वंश), मज़हब, तौर-तरीके और पेशे वगैरह में कोई ऐसी बात नहीं है जिससे उसका निकाह होना महमूदा के सरपरस्तों (औलिया) के लिए शर्म या अपमान का कारण बने, तो उक्त निकाह के सम्पन्न हो जाने में कोई संदेह नहीं है। चाहे अनुमति मांगते समय वह नमाज़ ही पढ़ रही हो, बल्कि चाहे उससे अनुमति बिलकुल न ली गई हो। महमूदा के पिता का यह दावा कि निकाह नहीं हुआ, सरासर गलत और अर्थहीन है। बिना अनुमति के किया गया निकाह अधिक से अधिक एक 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत) अनुबंध है। फुज़ूली अनुबंध सही और सम्पन्न होता है और इसका लागू होना अनुमति देने वाले की अनुमति पर निर्भर रहता है, न कि यह मूल रूप से अमान्य (बातिल) ठहरता है।

'अल-दुर्र अल-मुख़्तार' में है: फ़ुज़ूली वह होता है जो शरीई अनुमति के बिना किसी दूसरे के अधिकार में स्वयं हस्तक्षेप करे। फ़ुज़ूली का कोई भी कार्य चाहे वह मालिक बनाने के लिए हो जैसे कि बिक्री या निकाह, या स्वामित्व समाप्त करने के लिए हो जैसे कि तलाक़ या आज़ाद करना—अगर उस कार्य के समय कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इसे वैध करने का अधिकार रखता हो, तो फ़ुज़ूली का यह कार्य स्थगित (मौक़ूफ़) रहेगा।

दुर्रे मुख़्तार में है: फ़ुज़ूली वह होता है जो शरीई अनुमति के बिना, गैर के हक में खुद-ब-खुद हस्तक्षेप करे। फ़ुज़ूली का कोई भी हस्तक्षेप चाहे वह मालिक बनाने के लिए हो जैसा कि बिक्री और निकाह, या मिल्कियत को खत्म करने के लिए हो जैसा कि तलाक़ और आज़ाद करना, तो उसके हस्तक्षेप के समय अगर कोई उसको जायज़ करने वाला हो तो फ़ुज़ूली का यह हस्तक्षेप स्थगित होगा। (त)

सवाल में बताए गए तथ्यों को देखते हुए महमूदा का निकाह इसी तरह हुआ। निकाह से एक दिन पहले अपनी उम्र की एक लड़की से हुई बातचीत में महमूदा ने जो पसंद ज़ाहिर की थी, वह केवल एक राय थी, न कि किसी व्यक्ति को निकाह करने के लिए प्रतिनिधि (वकील) बनाना। निकाह के समय अनुमति मांगते समय महमूदा ने जो चुप्पी साधी, वह भी प्रतिनिधित्व के लिए अपर्याप्त थी क्योंकि निकटतम संरक्षक (वली अक़रब) यानी पिता केवल कुछ ही कोस की दूरी पर था। जब अनुमति मांगने वाला न तो स्वयं निकटतम संरक्षक हो, न उसका प्रतिनिधि और न ही उसका संदेशवाहक, तो कुंवारी लड़की की चुप्पी भी मान्य नहीं होती; इसके लिए स्पष्ट अनुमति आवश्यक है।

'तनवीरुल अबसार', 'दुर्रे मुख़्तार' और 'रदुल मुहतार' में है: यदि लड़की से निकाह की अनुमति मांगने वाला निकटतम संरक्षक के अलावा कोई और हो, जैसे कोई अजनबी (यानी वह जिसका संरक्षक का अधिकार न हो, लेकिन संरक्षक का संदेशवाहक उसके स्थान पर होता है, इसलिए उसके अनुमति मांगने पर लड़की की चुप्पी रज़ामंदी मानी जाएगी जैसा कि फ़तह में है, और इसी तरह प्रतिनिधि का मामला है जैसा कि अल-बह्र में अल-कुनिया के हवाले से है) या दूर का संरक्षक (जैसे पिता की उपस्थिति में भाई, जब तक कि पिता लंबी यात्रा पर न हो, जैसा कि खानिया में है), तो लड़की की अनुमति के लिए उसकी चुप्पी मान्य नहीं होगी। बल्कि इस मौके पर उसका बोलना एक विवाहित महिला (सईबा) की तरह ज़रूरी है, या कोई ऐसा कार्य करना ज़रूरी है जो बोलने के समान हो।

तनवीरुल अबसार, दुर्रे मुख़्तार, रदुल मुहतार में है: अगर लड़की से निकाह की अनुमति चाहने वाला, वली अक़रब (निकटतम संरक्षक) के अलावा कोई और हो जैसे अजनबी यानी गैर वली हो या वली अबअद (दूर का संरक्षक) हो जैसे पिता की मौजूदगी में भाई, जबकि पिता लंबे सफर पर न हो (जैसा कि खानिया में है) तो लड़की की अनुमति के लिए उसकी चुप्पी मोतबर (मान्य) न होगी बल्कि इस मौके पर उसका बोलना सईबा (विवाहित) औरत की तरह ज़रूरी है या कोई ऐसा काम ज़रूरी है जो बोलने के कायम मक़ाम (समान) हो।

1. दुर्रे मुख़्तार, फ़सल फ़िल-फ़ुज़ूली, मुजतबाई दिल्ली, 2/31.

الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر حامد محمودہ کا کفو شرعی ہے یعنی اس کے نسب و مذہب و روش و پیشہ وغیرہ میں کوئی بات ایسی نہیں کہ اس سے نکاح ہونا اولیائے محمودہ کے لئے باعث ننگ و عار ہو تو نکاح مذکورہ منعقد ہو جانے میں اصلاً شبہ نہیں اگرچہ وقت طلب اجازت نماز ہی پڑھتی ہو بلکہ اگرچہ اس سے اصلاً اجازت نہ لی گئی ہو، والد محمودہ کا ادعا کہ نکاح نہ ہوا محض باطل وبے معنی ہے عقد بے اجازت غایت یہ کہ عقد فضولی ہو، پھر عقد فضولی صحیح و منعقد ہوتا اور اجازت صاحب اجازت پر اس کا نفاذ موقوف رہتا ہے نہ کہ اصلاً باطل ٹھہرے۔

فی الدر المختار الفضولی من یتصرف فی حق غیرہ بغیر اذن شرعی کل تصرف صدر منہ تملیکا کان کبیع وتزویج او اسقاطا کطلاق وعتاق ولہ من یقدر علی اجازتہ حال وقوعہ انعقد موقوفاً-1

در مختار میں ہے فضولی وہ ہوتا ہے جو شرعی اجازت کے بغیر ،غیر کے حق میں خود بخود تصرف کرے ،فضولی کا کوئی تصرف خواہ مالک بنانے کے لئے ہو جیسا کہ بیع و نکاح یا ملکیت کو ساقط کرنے کے لئے ہو ،جیسا کہ طلاق و عتاق، تو اس کے تصرف کے وقت اگر کوئی اس کو جائز کرنے والا ہو تو فضولی کا یہ تصرف موقوف ہوگا۔ (ت)

نظر بر قائع مذکور سوال عقد محمودہ ایسا ہی واقع ہوا، نکاح سے ایک دن پہلے ہم عمر لڑکی سے جو گفتگو آئی اور محمودہ نے پسند ظاہر کی وہ صرف رائے تھی نہ کسی شخص کو نکاح کرنے کی توکیل وقت تزویج اذن لینے پر جو سکوت محمودہ نے کیا وہ بھی توکیل کے لئے ناکافی تھا کہ ولی اقرب یعنی پدر چند ہی کوس پر تھا اور اذن لینے والا جب نہ خود ولی اقرب نہ اس کا وکیل نہ اس کا رسول ، تو دوشیزہ کا سکوت بھی معتبر نہیں اذن صاف درکار ہے۔

فی تنویر الابصار والدرالمختار وردالمختار ان استأذنها غیر الاقرب کاجنبی (المراد به من لیس له ولایة لکن رسول الولی قائم مقامه فیکون سکوتها رضا عند استیذانه کما فی الفتح والوکیل کذلك کما فی البحر عن القنیة) او ولی بعید (کالاخ مع الاب اذا لم یکن الاب غائبا

تنویر الابصار ، در مختار ، ردالمختار میں ہے اگر لڑکی سے نکاح کی اجازت چاہنے والا، ولی اقرب کا غیر مثلاً اجنبی یعنی غیر ولی ہو یا ولی ابعد ہو مثلاً والد کی موجودگی میں بھائی، جبکہ والد لمبے سفر پر نہ ہو (جیسا کہ خانیہ میں ہے) تو لڑکی کی اجازت کے لئے اس کا سکوت معتبر نہ ہوگا بلکہ اس موقعہ پر اس کا بولنا ثیبہ عورت کی طرح ضروری ہے یا کوئی ایسا فعل ضروری ہے جو بولنے کے قائم مقام

1 در مختار فصل فی الفضولی مجتبائی دہلی ۳۱/۲

Volume 11 Fatawa Razawiyya

(Arabic Text): (In the case of) a long absence as mentioned in Al-Khaniyah, her silence is not considered; rather, verbal expression is necessary, similar to a mature widow or divorcee (Thayyibah), or an action that signifies consent. [1] (Urdu Translation): ...can signify consent, but if it is a messenger or representative (vakil) of the closest guardian (wali aqrab), then they represent the guardian. Therefore, the silence of the girl upon their request for permission will be considered consent. As stated in Al-Fath, and regarding the representative, it is quoted from Al-Qunyah in Al-Bahr. (T)

Moreover, the custom in most parts of India is that the proxy and permission are taken in the name of 'Zaid', while the person performing the marriage is 'Amr'. Thus, despite the explicit permission, the contract remains an unauthorized contract (aqd-e-fuzuli) because the one who was authorized did not perform it.

(Arabic Text): In Radd al-Muhtar from Ar-Rahmati from Al-Hamawi from the words of Muhammad in Al-Asl: "Indeed, the direct action of a representative's representative in the presence of the [original] representative in marriage is not like the direct action of the representative himself, unlike in sale." End of quote. And in the agency section of Ghamz al-Uyun from Al-Walwaljiyah: "This is the correct view." [2, 3] (Urdu Translation): Radd al-Muhtar has quoted from Rahmati, and he from Hamawi, the statement of Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) from Al-Mabsut: "The representative of a representative, in the matter of marriage in the presence of the original representative, does not hold the status of the original representative; however, the case of sale is contrary to this (end of quote). And in the chapter on Agency in Ghamz al-Uyun, it is from Al-Walwaljiyah that this is correct." (T)

In any case, this marriage was an unauthorized marriage (Nikah-e-Fuzuli) and was dependent on Mahmuda's consent. Now, the event after Mahmuda's marriage, although from the perspective of some scholarly investigations—judging the words of common people, especially women, is considered far-fetched and unacceptable according to the findings of jurisprudence—does not provide a definitive decision on rejection or acceptance. However, there is no doubt that the obvious and immediate understanding from it is that Mahmuda considered this marriage valid. Even if for the sake of her father's pleasure she accepts staying away from her husband and being content with a life of prayer and fasting, she is not at all willing to divorce. Since divorce is the annulment of marriage, she herself desires the precedence of the

marriage, not its disapproval, which is consent to the continuation of the marriage. This much is sufficient for the enforcement of a conditional marriage:

(Arabic Text): Based on what has passed from Ad-Durr al-Muhtar from his saying: "Or what is in its meaning from an action that signifies consent." [4] (Urdu Translation): Because of the statement in Durr al-Mukhtar: "and that action which is like words in signifying consent." (T)

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Annotation of Durr al-Muhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/301. 2. Radd al-Muhtar, Annotation of Durr al-Muhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/300. 3. Al-Ashbah wa al-Naza'ir with Ghamz al-Uyun, Book of Agency, Idarat al-Qur'an, Karachi, 11/2. 4. Durr al-Muhtar, Chapter of Al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.

खंड 11 फ़तावा रज़विया

(अरबी पाठ): (ख़ानिया में वर्णित अनुसार) लंबी अनुपस्थिति کے मामले में, उसका मौन मान्य नहीं है; बल्कि मौखिक अभिव्यक्ति आवश्यक है, जैसे कि एक वयस्क विधवा या तलाकशुदा (थैय्यबा) के मामले में, या ऐसा कोई कार्य जो सहमति को दर्शाता हो। [1] (उर्दू अनुवाद): ...सहमति पर संकेत दे सके लेकिन यदि निकटतम अभिभावक (वली अक़रब) का संदेशवाहक या प्रतिनिधि (वकील) हो, तो वे अभिभावक का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए उनकी अनुमति मांगने पर लड़की की खामोशी को सहमति माना जाएगा। जैसा कि 'फ़तह' में है, और प्रतिनिधि के बारे में 'बहर' में 'कुन्या' से उद्धृत है। (त)

इसके अलावा, भारत के अधिकांश क्षेत्रों में रिवाज यह है कि वकालत और अनुमति 'ज़ैद' के नाम पर ली जाती है, जबकि विवाह संपन्न कराने वाला 'अम्र' होता है। इस प्रकार, स्पष्ट अनुमति के बावजूद, अनुबंध एक 'अक़्द-ए-फुज़ूली' (अनधिकृत अनुबंध) बना रहता है क्योंकि जिसे अनुमति दी गई थी उसने इसे संपन्न नहीं किया।

(अरबी पाठ): रद अल-मुह्तार में रहमती से, उन्होंने हमवी से, उन्होंने अल-अस्ल में मुहम्मद के शब्दों से उद्धृत किया है: "वास्तव में, विवाह में मूल प्रतिनिधि की उपस्थिति में प्रतिनिधि के प्रतिनिधि द्वारा किया गया प्रत्यक्ष कार्य स्वयं मूल प्रतिनिधि के कार्य के समान नहीं है, बिक्री के विपरीत।" (उद्धरण समाप्त)। और अल-वलवालजीया से ग़मज़ अल-उयून के वकालत अनुभाग में: "यही सही विचार है।" [2, 3] (उर्दू अनुवाद): रद अल-मुह्तार ने रहमती से और उन्होंने हमवी के माध्यम से इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) का 'मबसूत' में वर्णित कथन उद्धृत किया है कि: "प्रतिनिधि का प्रतिनिधि, निकाह के मामले में मूल प्रतिनिधि की उपस्थिति में, प्रतिनिधि वाला दर्जा नहीं पाता, बिक्री का मामला इसके विपरीत है (इति), और ग़मज़ अल-उयून के वकालत अध्याय में वलवालजीया से है कि यही सही है।" (त)

बहरहाल, यह निकाह 'निकाह-ए-फुज़ूली' हुआ और महमूदा की अनुमति पर निर्भर रहा। अब निकाह के बाद महमूदा की घटना, हालांकि कुछ विद्वत्तापूर्ण शोधों के नज़रिए से—कि आम लोगों, विशेषकर महिलाओं की बातों को उन पर आधारित करना न्यायशास्त्र के निष्कर्षों के अनुसार दूर की कौड़ी और अस्वीकार्य है—अस्वीकृति या स्वीकृति का कोई अंतिम फैसला नहीं करती, फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि इससे स्पष्ट और तत्काल समझ यही आती है कि महमूदा ने इस निकाह को वैध

माना। भले ही अपने पिता की प्रसन्नता के लिए वह पति से अलग रहने और जीवन भर नमाज़-रोज़े पर संतुष्ट रहने को स्वीकार करती है, लेकिन वह तलाक़ पर कﺋई राज़ी नहीं है। चूंकि तलाक़ निकाह को समाप्त करने वाला है, वह स्वयं निकाह की प्रधानता चाहती है न कि उसकी नापसंदगी, जो निकाह के बने रहने की सहमति है। और इतना ही मौक़ूफ़ (ﺟबित) निकाह के लागू होने के लिए पर्याप्त है:

(अरबी पाठ): जैसा कि दुर्र अल-मुह्तार से उनके इस कथन से गुज़रा: "ﻳ वह जो इसके अर्थ में ऐसे कार्य से हो जो सहमति को दर्शाता हो।" [4] (उर्दू अनुवाद): दुर्र अल-मुह्तार में उनके इस कथन के कारण कि "और जो कार्य सहमति दर्शाने में शब्दों जैसा हो।" (त)

[पादलेख] 1. रद अल-मुह्तार, हाशिया दुर्र अल-मुह्तार शरह तनवीर अल-अबसार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराﺙ अल-अरबी, बेरूत, 2/301. 2. रद अल-मुह्तार, हाशिया दुर्र अल-मुह्तार शरह तनवीर अल-अबसार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराﺙ अल-अरबी, बेरूत, 2/300. 3. अल-अश्बाह व अल-नज़ा’इर साथ में ग़मज़ अल-उयून, किताब अल-वकाला, इदारात अल-क़ुरआन, कराची, 11/2. 4. दुर्र अल-मुह्तार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/192.

غیبة منقطعة کما في الخانیة) فلا عبرة لسکونها بل لا بد من القول کالثیب البالغة او ماهو في معناه من فعل یدل علی الرضا^1۔ رضا پر دلالت کر سکے، لیکن ولی اقرب کا قاصد یا وکیل ہو تو وہ ولی کے قائم مقام ہوتا ہے لہٰذا ان کے اجازت طلب کرنے پر لڑکی کی خاموشی کو رضا قرار دیا جائے گا۔ جیسا کہ فتح میں ہے، اور وکیل کے بارے بحر میں قنیہ سے منقول ہے۔ (ت)

معہذا رسم اکثر دیار ہندیہ یوں ہے کہ وکالت واذن زید کے نام لیتے ہیں اور پڑھانے والا عمرو ہوتا ہے یوں باوصف اذن صریح بھی عقد عقدِ فضولی رہتا ہے کہ جسے اذن تھا اس نے نہ پڑھایا،

في ردالمحتار عن الرحمتي عن الحموی عن کلام محمد في الاصل ان مباشرة وکیل الوکیل بحضرة الوکیل في النکاح لا تکون کمباشرة الوکیل بنفسه بخلافه في البیع^2 اه وفی وکالة غمز العیون عن الولوالجیة هو الصحیح^3۔ ردالمحتار نے رحمتی اور انھوں نے حموی کے واسطہ سے امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی کا مبسوط میں بیان کردہ کلام نقل کیا ہے کہ وکیل کا وکیل، نکاح کے معاملہ میں اصل وکیل کی موجودگی میں، وکیل والا حکم نہیں پاتا، بیع کا معاملہ اس کے خلاف ہے اھ، اور غمز العیون کے باب وکالت میں ولوالجیہ سے ہے کہ یہی صحیح ہے۔ (ت)

بہر حال یہ نکاح نکاحِ فضولی ہوا اور اجازتِ محمودہ پر موقوف رہا، اب بعد نکاح محمودہ کا واقعہ اگرچہ بنظرِ بعض تدقیقاتِ علمیہ کہ عوام خصوصاً عورتوں کی بات ان پر محمول ہونی مستبعد و نا مقبول مدارکِ فقہ ہے رد و اجازت کا قطعی فیصلہ نہ کرے تاہم شک نہیں کہ اس سے ظاہر و متبادر یہی ہے کہ محمودہ نے اس نکاح کو جائز رکھا اگرچہ رضائے پدر کے لئے شوہر سے علیحدہ اور عمر بھر نماز روزے پر قانع رہنا قبول کرتی ہے مگر طلاق پر ہر گز راضی نہیں اور

طلاق بانکہ مزیلِ نکاح ہے خود ہی سبقتِ نکاح چاہتی ہے نہ کہ اس کی ناپسندیدہ کہ بقائے نکاح کی رضامندی ہے اور اسی قدر نفاذِ نکاح موقوف کے لئے کافی ہے:

لما مر من الدرالمحتار من قوله او ما هو في معناه من فعل يدل على الرضا[4]۔ درمختار میں اس کے قول "اور جو فعل رضا پر دلالت کرنے میں کلام جیسا ہو" کی وجہ سے (ت)

[1] ردالمحتار حاشیہ درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۱/۲ [2] ردالمحتار حاشیہ درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۰/۲ [3] الاشباہ والنظائر معہ غمز العیون کتاب الوکالۃ ادارۃ القرآن کراچی ۱۱/۲ [4] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱

Fatawa Razviyya - Volume Eleven

Therefore, in the inquired case, provided the mentioned compatibility (kufw) is met, the marriage of the praised woman is valid, complete, effective, and binding, against which no one, including the father, has the right to object. And Allah, Glory be to Him and the Most High, knows best.

From Bhondpur, District Tarai, Nainital - 20 Safar 1312 AH

Issue 333: What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah, a minor girl, was married to Khalid, a minor boy. Hindah was nine years old at the time. Hindah had no guardian other than her mother (no father, brother, uncle, etc.). This marriage took place with the mother's consent, but permission was taken from Hindah despite her being a minor. Khalid's father performed the marriage on his behalf, but the acceptance was made by Khalid himself. After the marriage, Hindah did not wish to go to Khalid's house, so her maternal uncle stopped her. However, upon the warning of a local official (Peshkar), who is considered like a ruler in these villages, Hindah was sent to Khalid's house at the age of fifteen or less. She stayed there for four years. At the time of marriage, both Hindah and Khalid were discerning minors, neither fully mature adults nor undiscerning children. At fifteen, Hindah reached puberty. Now, she has expressed her displeasure again and wishes to marry elsewhere. In this situation, does she have this right or not? Hindah states that consummation has not occurred to this day, the reason being that people here are very weak and feeble due to the adverse climate. Please explain and may you be rewarded.

The Answer: The questioner states that Khalid is compatible with Hindah in lineage, religion, etc., from all aspects, and the dowry (mahr) was set higher than the local custom. Therefore, the marriage became valid. However, since the person who performed Hindah's marriage was not her father or grandfather, Hindah had the option of annulment (Khiyar-ul-Buloogh) immediately upon reaching maturity. If she had expressed her displeasure and sought annulment immediately upon seeing her first menstruation, the marriage would be annulled. But if she delayed even slightly, the marriage became binding and can never be annulled now.

In Durr al-Mukhtar: "If the person who solemnizes the marriage is other than the father or the grandfather, even if by the order (of the ruler), the marriage is not valid at all if there is no compatibility (kufw) or if there is excessive loss (ghabn fahish). If it is with a compatible person and for a customary dowry (mahr-e-mithl), it is valid, and

both have the option to annul it upon reaching maturity. The option for a virgin girl is voided by silence." (Summarized)

In Durr al-Mukhtar, it is stated: When the person performing the marriage is other than the father or grandfather, even if it is the mother, the marriage will not be valid at all if there is a lack of compatibility or an extremely low dowry. If there is compatibility and the dowry is standard, it will be valid, but both the boy and girl will have the option to annul it upon becoming adults, and the silence of a mature virgin girl will terminate this option of annulment. (Summarized)

It is essential to investigate this thoroughly, as it is very rare for a woman to demand annulment precisely at the moment of seeing menstruation, especially.

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardians, Mujtabai Press, Delhi, 1/193-194

फ़तावा रज़विया - जिल्द ग्यारहवीं

अतः, पूछताछ की गई स्थिति में, उल्लिखित अनुकूलता (कुफ़्व) की शर्त के साथ, प्रशंसित महिला का निकाह जायज़, पूर्ण, प्रभावी और अनिवार्य है, जिस पर पिता आदि किसी को भी आपत्ति करने का अधिकार नहीं है। और अल्लाह, वह पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है।

भोंदपुर, जिला तराई, नैनीताल से - २० सफ़र १३१२ हिजरी

मसला ३३३: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या फ़रमाते हैं: हिंदह नाम की एक नाबालिग लड़की का निकाह खालिद नाम के एक नाबालिग लड़के से हुआ। उस समय हिंदह नौ साल की थी। हिंदह का माँ के अलावा कोई और वली (संरक्षक) नहीं था (पिता, भाई, चाचा आदि कोई नहीं)। यह निकाह माँ की सहमति से हुआ, लेकिन नाबालिग होने के बावजूद हिंदह से अनुमति ली गई। खालिद का निकाह उसके पिता ने करवाया, लेकिन स्वीकृति स्वयं खालिद ने दी। निकाह के बाद हिंदह खालिद के घर नहीं जाना चाहती थी, इसलिए उसके मामा ने उसे रोक लिया। लेकिन एक स्थानीय अधिकारी (पेशकार) की चेतावनी पर, जिसे इन गाँवों में शासक के समान माना जाता है, हिंदह पंद्रह वर्ष या उससे कम उम्र में विदा होकर खालिद के घर चली गई और चार साल वहीं रही। निकाह के समय हिंदह और खालिद दोनों समझदार नाबालिग थे, न तो बालिग थे और न ही नासमझ बच्चे। पंद्रह साल की उम्र में हिंदह बालिग हुई। अब उसने फिर से अपनी नाराजगी जताई है और दूसरी जगह निकाह करना चाहती है। इस स्थिति में उसे यह अधिकार है या नहीं? हिंदह का बयान है कि आज तक संभोग नहीं हुआ है, और इसका कारण यह है कि यहाँ के लोग खराब जलवायु के कारण बहुत कमजोर और अशक्त होते हैं। कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: सवाल करने वाला कहता है कि खालिद हर लिहाज से हिंदह के लिए कुफ़्व (वंश, धर्म आदि में अनुकूल) है और मेहर यहाँ के रिवाज से ज्यादा रखा गया था। इसलिए निकाह सही हो गया। हाँ, इस वजह से कि हिंदह का निकाह कराने वाला उसका पिता या दादा नहीं था, हिंदह को बालिग होते ही तुरंत 'खियार-उल-बुलूग' (निकाह रद्द करने का अधिकार) था। यदि उसने मासिक धर्म शुरू होते ही तुरंत अपनी नाराजगी और निकाह रद्द करने की मांग जाहिर की होती, तो निकाह रद्द कर दिया जाता। और अगर जरा सी भी देरी कर दी, तो अब निकाह पक्का (लाजिम) हो गया है और इसे कभी रद्द नहीं किया जा सकता।

'दुर्रे मुख़्तार' में है: "यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और हो, भले ही वह शासक के आदेश से हो, तो कुफ़्व न होने या अत्यधिक नुकसान (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) की स्थिति में निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। और यदि कुफ़्व और मेहर-ए-मिस्ल (मानक मेहर) के साथ है, तो सही होगा, और दोनों को बालिग होने पर रद्द करने का अधिकार होगा। कुंवारी लड़की की चुप्पी इस अधिकार को समाप्त कर देती है।" (सारांश)

'दुर्रे मुख़्तार' में उल्लेख है: जब निकाह कराने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और हो, चाहे वह माँ ही क्यों न हो, तो बिना कुफ़्व और अत्यंत कम मेहर के साथ निकाह बिल्कुल नहीं होगा। और अगर कुफ़्व और मेहर-ए-मिस्ल है, तो सही होगा लेकिन लड़के और लड़की को बालिग होने पर रद्द करने का अधिकार होगा, और बालिग कुंवारी लड़की की चुप्पी इस अधिकार को खत्म कर देगी। (सारांश)

इसकी बहुत पूरी तरह जांच करना ज़रूरी है क्योंकि मासिक धर्म आते ही औरत का निकाह रद्द करने की मांग करना बहुत दुर्लभ है, विशेष रूप से।

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, १/१९३-१९४

पृष्ठ ७३९ में से ५७२

پس صورتِ مستفسرہ میں بشرطِ کفاءت مذکورہ نکاح محمودہ جائز و تام و نافذ و لازم ہے جس پر پدر و وغیرہ کسی کو حقِ اعتراض نہیں۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

۲۰ صفر ۱۳۱۲ھ از بھوند پور ضلع ترائیں نینی تال مسئلہ ۳۳۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نابالغہ کا نکاح خالد نابالغ سے ہوا، ہندہ اس وقت نو برس کی تھی، ہندہ کا باپ، بھائی، چچا وغیرہ کوئی ولی سوا ماں کے نہیں۔ یہ نکاح ماں کی رضامندی سے ہوا، مگر اذن ہندہ نابالغہ سے لیا اور خالد کے نکاح اس کے باپ نے کیا مگر قبول خود خالد سے کرایا گیا، بعد نکاح ہندہ نے خالد کے یہاں جانا نہ چاہا، اس بنا پر اس کے ماموں نے روک رکھا مگر پیشکار کی تنبیہ سے جو یہاں دیہات میں مثلِ حاکم سمجھا جاتا ہے، ہندہ پندرہ سال یا اس سے کم کی عمر میں رخصت ہو کر خالد کے یہاں گئی اور چار برس وہیں رہی، وقتِ نکاح ہندہ و خالد دونوں نابالغ سمجھ والے تھے نہ تو بالغ تھے نہ نا سمجھ بچے، ہندہ پندرہ برس کی عمر میں بالغ ہوئی، اب پھر اس نے اپنی ناراضی ظاہر کی اور دوسری جگہ اپنا نکاح کیا چاہتی ہے اس صورت میں یہ اختیار اسے ہے یا نہیں؟ ہندہ کا بیان ہے کہ آج تک ہمبستری نہ ہوئی اور وجہ اس کی یہ ہے کہ یہاں کے لوگ بوجہ نقصانِ آب و ہوا کے ضعیف و کمزور بہت ہوتے ہیں، بینوا توجروا الجواب: سائل مظہر کہ خالد ہندہ کا نسب و مذہب و غیرہ ہما میں ہر طرف کفو ہے اور مہر اس کے یہاں رواج سے زیادہ باندھا گیا لہذا نکاح صحیح ہو گیا، ہاں اس وجہ سے کہ ہندہ کا نکاح کرنے والا اس کا باپ دادا نہیں۔ ہندہ کو بالغ ہوتے ہی فوراً فوراً اختیارِ فسخ تھا، اگر اس نے حیض آتے ہی معاً ناراضی اور فسخ کی طلب گاری ظاہر کی تو نکاح فسخ کیا جائے گا۔ اور اگر ذرا بھی دیر کر دی تو اب نکاح لازم ہو گیا کہ ہرگز فسخ نہیں ہو سکتا۔

فی الدر المختار ان کان المزوج غیر الاب و ابیہ ولولامر لا یصح النکاح من غیر کفو او بغبن فاحش اصلا و ان من کفو وبمھر المثل صح ولھما خیار الفسخ بالبلوغ و بطل خیار البکر بالسکوت اھ ملتقطاً

در مختار میں ہے جب نکاح کر کے دینے والا باپ دادا کا غیر ہو تو اگرچہ وہ ماں ہی کیوں نہ ہو، غیر کفو اور انتہائی قلیل مہر سے اصلاً نکاح نہ ہوگا۔ اور اگر کفو اور مہر مثل ہے تو صحیح ہو گا لیکن لڑکے اور لڑکی کو بالغ ہونے پر فسخ کا اختیار ہوگا، اور باکرہ بالغہ کی خاموشی اس فسخ کے اختیار کو ختم کر دے گی اھ ملتقطاً (ت)

اسے بہت کامل تحقیق کرنی ضرور ہے کہ معا حیض آتے ہی عورت کا مطالبہ فسخ کرنا بہت نادر ہے خصوصاً

---

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۹۳-۱۹۴

Fatawa-e-Razvia Volume 11

...whereas she may be ignorant, and the statement of the question suggests the contrary. Any expression of dissatisfaction before attaining puberty carries no weight. If a woman deceives in this matter and remains silent for even a short while after attaining puberty or does something else, and now claims that immediately upon reaching puberty, without any delay, she first uttered those words and based on that obtains a decree for annulment and marries someone else, she will remain perpetually involved in the calamity of adultery. Furthermore, it should be known that after a period of time, her claim that she annulled the marriage immediately upon the onset of menstruation will never be accepted without reliable Sharia witnesses, as explained in Radd al-Muhtar. And Allah, the Exalted, knows best.

Issue 332: From Azamgarh, sent by Khwaja Inayatullah Khan Sahib - 9 Rabi-ul-Awwal Sharif 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, who was an equal (kufu) for Hindah, performed a marriage (nikah) with Hindah, an adult virgin, in the absence of her father who was only twelve kos away in his territory. This was done with the consent of the mother and grandmother and through the silence and weeping of Hindah, and it was presented as being through the proxy (wakalat) and witness of three close relatives. Zaid now claims that Hindah herself explicitly accepted the marriage in her own words. The proxy and witnesses of Zaid testify according to Zaid's statement. Hindah says, "I never, ever confessed with my tongue nor showed my approval in any way. Without my father's consent, this marriage was neither acceptable to me before nor is it now." The father of Hindah was neither pleased before nor is he pleased now. Therefore, what is the status of such a marriage and such a person in the eyes of Allah and His Messenger, and did it occur or not? The question is, should preference be given to Zaid, his witnesses, and the proxy, or what is the situation? Who is given preference against whom? The second question is: if the aforementioned marriage took place according to Hindah's statement, while she was silent and weeping, in the absence of her father, and in accordance with the stated dissatisfaction and distance, did it occur or not? Explain and you shall be rewarded.

Answer: It is clear from the statement of the question that this marriage was carried out in the absence of Hindah's father due to his dissatisfaction. In such a situation, a distance of 12 kos cannot be considered 'ghibat-e-munqatia' (severing absence) according to any opinion. It is evident that it does not reach the distance of travel (masafat-e-qasr). Here, the haste of the remote guardian (wali-e-aba'd) - even if the

mother were considered a remote guardian - is not because consulting the closer guardian (wali-e-aqrab) would take too long and a suitable match would be lost, but rather because the closer guardian's opinion is known to be contrary to their intent. Wanting to act against his wishes makes this situation absolutely ineligible for the authority of a remote guardian. "Otherwise, there will be trials on earth and great corruption." (T). If this were allowed, the wisdom with which the pure Sharia has arranged the order [of guardianship] would be rendered futile and void. Every remote guardian, however distant, and every unwise and unintelligent woman would have the authority whenever a kind father or a compassionate brother, being the close guardian, goes ten kos away or even just outside the house to a mosque or market, to perform a marriage against his opinion with whomever they wish. These are the objectives of Sharia...

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 11

...जबकि वह अज्ञान हो, और प्रश्न के विवरण से इसके विपरीत प्रतीत होता है। यौवन (ब्लूग़) से पहले असंतोष व्यक्त करने का कोई महत्व नहीं है। यदि कोई स्त्री इस मामले में छल करती है और यौवन प्राप्त करने के बाद थोड़े समय के लिए भी चुप रहती है या कुछ और करती है, और अब ज़ाहिर करती है कि मैंने तुरंत वयस्क होते ही बिना किसी देरी के सबसे पहले यही शब्द कहे थे और इसी आधार पर निकाह टूटने (फ़स्ख़) का आदेश लेकर किसी दूसरे से निकाह कर लेती है, तो वह हमेशा-हमेशा व्यभिचार (ज़िना) की विपत्ति में फंसी रहेगी। इसके अलावा यह भी ज्ञात रहे कि एक अवधि के बाद उसका यह दावा कि मैंने मासिक धर्म शुरू होते ही तुरंत निकाह रद्द कर दिया था, बिना विश्वसनीय शरीयत गवाहों के कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा, जैसा कि 'रद्दुल मुहतार' में स्पष्ट किया गया है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 332: आज़मगढ़ से, प्रेषक ख्वाजा इनायतुल्लाह खान साहब - 9 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1315 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद, जो हिंदा के लिए बराबरी (कुफ़ू) का पात्र था, ने हिंदा बालिग़ा बाकिरा (वयस्क कुंवारी) का निकाह उसके पिता की अनुपस्थिति में किया, जो केवल बारह कोस की दूरी पर अपने इलाके में थे। यह निकाह माँ और नानी की सहमति से और हिंदा की चुप्पी और रोने के साथ, तीन करीबी रिश्तेदारों की वकालत और गवाही के साथ होना बताया गया। ज़ैद अब कहता है कि हिंदा ने खुद अपनी ज़ुबान से स्पष्ट रूप से मेरे निकाह को स्वीकार किया था। ज़ैद के वकील और गवाह ज़ैद के बयान के अनुसार गवाही देते हैं। हिंदा कहती है कि मैंने कभी भी अपनी ज़ुबान से इकरार नहीं किया और न ही किसी तरह अपनी मंज़ूरी ज़ाहिर की थी। अपने पिता की सहमति के बिना मुझे यह निकाह न पहले मंज़ूर था और न अब है। हिंदा के पिता न पहले राज़ी थे और न अब राज़ी हैं। अत; अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक ऐसा निकाह और ऐसा व्यक्ति कैसा है और क्या यह निकाह हुआ या नहीं? और सवाल यह है कि ज़ैद, उसके गवाहों और वकील को प्राथमिकता दी जाएगी या स्थिति क्या है? किसके मुक़ाबले में किसे प्राथमिकता है? दूसरा सवाल यह है कि यदि उपरोक्त निकाह हिंदा के बयान के अनुसार, उसकी चुप्पी और रोने की स्थिति में, उसके पिता की अनुपस्थिति में और बताई गई असहमति और दूरी के अनुसार हुआ हो, तो क्या वह हुआ या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है कि यह निकाह हिंदा के पिता की अनुपस्थिति में उनके असंतोष के कारण किया गया। ऐसी स्थिति में 12 कोस की दूरी किसी भी मत के अनुसार 'ग़ैबत-ए-मुनक़तअ'

(वह दूरी जहाँ वली की सलाह ज़रूरी न रहे) नहीं हो सकती। यह स्पष्ट है कि यह यात्रा की दूरी (मुसाफ़त-ए-क़स्र) नहीं है। यहाँ दूर के संरक्षक (वली-ए-अबअद) की जल्दबाज़ी (भले ही माँ यहाँ वली-ए-अबअद हो भी) इस वजह से नहीं है कि निकटतम संरक्षक (वली-ए-अक़रब) से सलाह लेने में देरी होगी और इस बीच योग्य वर हाथ से निकल जाएगा, बल्कि इसलिए है कि वली-ए-अक़रब की राय उनके इरादे के खिलाफ मालूम है और उसके खिलाफ काम करना मंज़ूर है। तो यह स्थिति कदापि वली-ए-अबअद के अधिकार क्षेत्र में नहीं आती। "अन्यथा पृथ्वी पर फितना (विद्रोह) और बड़ा भ्रष्टाचार फैल जाएगा।" (त)। यदि ऐसा हो, तो पवित्र शरीयत ने जिस बुद्धिमत्ता से यह क्रम (संरक्षण का) रखा है, वह व्यर्थ और शून्य हो जाएगा। हर दूर से दूर के संरक्षक और हर नासमझ स्त्री को यह अधिकार मिल जाएगा कि जब भी मेहरबान पिता या स्नेही भाई जैसा वली-ए-क़रीब दस कोस दूर या यहाँ तक कि घर से बाहर मस्जिद या बाज़ार ही चला जाए, तो वे उसकी राय के खिलाफ जिससे चाहें निकाह कर दें। ये शरीयत के उद्देश्य...

جبکہ جاہلہ ہو، اور تقریر سوال سے ظاہر اس کا خلاف ہے اور پیش از بلوغ اظہارِ ناراضی کوئی چیز نہیں، عورت اگر اس میں فریب کرے گی اور بعدِ بلوغ ایک ذرا دیر بھی خاموش رہی یا کوئی اور بات کی تھی اور اب ظاہر کرے گی کہ میں نے فوراً فوراً بالغ ہوتے ہی بلا تاخیر سب میں پہلے یہی لفظ کہا تھا اور اس بنا پر فسخ کا حکم لے کر دوسرے سے نکاح کر لے گی تو ہمیشہ ہمیشہ زنا کاری کی بلا میں گرفتار رہے گی، اتنا اور بھی معلوم رہے کہ مدت کے بعد اس کا یہ دعوٰی کہ میں نے حیض کے آتے ہی فوراً نکاح فسخ کر دیا تھا بے گواہانِ عادل شرعی کے ہر گز قبول نہ ہوگا کما بینہ فی ردالمحتار (جیسا کہ اس کو ردالمحتار میں بیان کیا ہے۔ ت) واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۳۲: از اعظم گڑھ مرسلہ خواجہ عنایت اللہ خاں صاحب ۹ ربیع الاول شریف ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے جو اہل کفو ہندہ سے تھا ہندہ بالغہ باکرہ کا نکاح بغیبت اس کے باپ کے جو صرف بارہ کوس کے فاصلہ پر اپنے علاقے پر تھا برضا مندی مادر و نانی و بہ سکوت و گریہ ہندہ اپنے ساتھ بوکالت و شہادت تین اقربا خاص ہو نا ظاہر کیا، زید اب کہتا ہے کہ ہندہ نے خود اپنی زبان سے صراحت کے ساتھ میرے نکاح کو قبول کیا تھا۔ وکیل گواہانِ زید حسبِ بیانِ زید شہادت دیں، ہندہ کہتی ہے میں نے ہر گز ہرگز نہ زبان سے اقرار و نہ کسی طرح منظوری اپنی ظاہر کی تھی وبلا رضا مندی اپنے باپ کے مجھ کو یہ نکاح نہ پہلے منظور تھا نہ اب ہے، باپ ہندہ کا نہ پہلے راضی تھا نہ اب راضی ہے، پس ایسا نکاح و شخص عنداللہ والرسول کیسا اور ہوا یا نہیں؟ اور سوال یہ ہے کہ زید و گواہانِ زید و وکیل کو ترجیح ہے یا کیا صورت، کس کے مقابلہ میں کس کو ترجیح؟ دوسرا سوال یہ ہے کہ نکاح مذکورہ بالا حسب اظہارِ ہندہ اگر

بحالت سکوت و گریہ ہندہ بغیبت اس کے باپ کے حسب کیفیت نارضا مندی و فاصلہ مرقومہ اس کے ہوا ہو تو ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: تقریر سوال سے واضح ہے کہ یہ نکاح بغیبتِ پدر ہندہ بوجہ ناراضی پدر ہندہ عمل میں آیا ایسی حالت میں ۱۲ کوس کا فاصلہ کسی قول پر غیبتِ منقطعہ نہیں ہو سکتا، مسافتِ قصر نہ ہونا ظاہر، اور یہاں ولی ابعد کی تعجیل (بحالیکہ ماں یہاں ولی ابعد ہو بھی) اس وجہ سے نہیں کہ ولی اقرب سے مشورہ لینے میں دیر لگے گی اور اتنی دیر میں کفو حاضر ہاتھ سے نکل جائے گا بلکہ اس لئے کہ ولی اقرب کی رائے اپنے ارادہ کے خلاف معلوم ہے اور اس کے خلاف کام کرنا منظور تو ہر گز یہ صورت نا قابلِ ولایت ولی ابعد نہیں والاتکن فتنۃ فی الارض و فساد عریض (ورنہ زمین پر فتنہ اور وسیع فساد برپا ہو گا ۔ت) ایسا ہو تو شرعِ مطہر نے جس حکمت سے ترتیب رکھی ہے رائگاں باطل ہو جائے، ہر ولی ابعد سے ابعد ہر زن بے عقل و بے خرد کو اختیار حاصل ہو کہ پدر مہربان یا برادر شفیق ولی قریب کو دہ کوس بلکہ گھر سے باہر مسجد یا بازار ہی تک جائے اور وہ اس کے خلاف رائے جس سے چاہے نکاح کر دے، یہ مقاصدِ شرع

Fatawa Razawiya, Volume 11

...is many stages away. In short, according to the final opinion, there is a transfer of guardianship if the delay in waiting causes the loss of an equal match (Kufu), not just because of the knowledge of displeasure that waiting was intentionally avoided.

Arabic Text

In Radd al-Muhtar: There is a difference of opinion regarding the definition of 'distant absence'. The author, following Al-Kanz, stated it is the distance for shortening prayers (musafat al-qasr). Al-Hidayah attributed this to some later scholars, and Al-Zayla'i to most of them, saying 'and the fatwa is upon this' (ended). In Al-Dhakhirah, it says the most correct view is that if he is at a place where waiting for his arrival or seeking his opinion would lead to missing an equal match who has presented himself, then it is 'distant absence'. The book points towards this (ended). In Al-Nihayah, most of the scholars chose this, and in the commentary of Al-Multaqa from Al-Haqa'iq, it says 'the fatwa is upon it' (ended) briefly. In Al-Durr al-Mukhtar, the fruit of this disagreement is mentioned regarding someone who hides in the city: would that be considered 'distant absence'?

Urdu Translation

In Radd al-Muhtar, it is stated that regarding the limit of 'distant absence', there is a disagreement. The author, following Kanz, said it is the journey of 'qasr' distance. Al-Hidayah attributed this to some later scholars, and Al-Zayla'i attributed it to most later scholars and Al-Zayla'i said the fatwa is on this (ended). And in Al-Dhakhirah, it is said that the most correct view is that he is so far away that if waiting for his return or obtaining consultation from him causes the existing equal match to be lost, then this will be 'distant absence'. And there is an indication of this in the book (ended). In Al-Nihayah, it is stated that most of the scholars preferred this, and in the commentary of Munyah, it is quoted from Haqa'iq that the fatwa is on this (ended) briefly. And in Durr al-Mukhtar, the result of this disagreement is explained: what if a guardian is hidden within the city itself, would that be 'distant absence' or not? (T)

And a distant guardian, in the case where guardianship has not transferred, or a stranger who is not the representative or messenger of the nearest guardian, when he asks a virgin adult girl for permission for marriage, her silence is not considered valid. Instead, a clear expression of consent through word or action is necessary. In the state of silence, the marriage will be unauthorized (fuzuli) and will depend on the bride's subsequent permission. Similarly, if someone other than the nearest guardian

performs the marriage of a virgin adult without her permission and she is then informed, it will be enforced with explicit permission; silence is not sufficient.

Arabic Text	Urdu Translation
In Al-Durr al-Mukhtar: if the guardian or his representative or his messenger asked her permission, or her guardian married her off and his messenger informed her or...	In Durr al-Mukhtar, it is stated that if the guardian sought permission from the adult girl, or the guardian's messenger or representative sought permission, or the guardian performed her marriage and the messenger...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Guardianship, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Guardianship, Matba Mujtabai, Delhi, 1/194.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

...मंज़िलों दूर है। संक्षेप में, अंतिम मत के अनुसार, संरक्षकता का हस्तांतरण तब होता है जब प्रतीक्षा में होने वाली देरी के कारण एक समान रिश्ता (कुफ़्ू हाथ से निकल जाए, न कि इसलिए कि नाराज़गी के ज्ञान के कारण जानबूझकर प्रतीक्षा नहीं की गई।

अरबी पाठ

'रद्द अल-मुह्तार' में है: 'गैबत-ए-मुनकता' (दूरस्थ अनुपस्थिति) की सीमा के संबंध में मतभेद है। लेखक ने 'कन्ज़' का अनुसरण करते हुए कहा है कि यह 'क़स्र' (नमाज़ छोटी करने की दूरी) की दूरी है। 'हिदाया' ने इसे कुछ बाद के विद्वानों और 'ज़ैलई' ने अधिकांश बाद के विद्वानों की ओर संदर्भित किया है, और कहा है कि 'फतवा इसी पर है' (समाप्त)। 'ज़खीरा' में कहा गया है कि सबसे सही मत यह है कि वह ऐसे स्थान पर हो जहाँ उसके आने या उसकी राय लेने की प्रतीक्षा करने से मौजूद समान रिश्ता (कुफ़्ू हाथ से निकल जाए, तो यह 'गैबत-ए-मुनकता' है। पुस्तक में इसकी ओर संकेत है (समाप्त)। 'निहाया' में अधिकांश विद्वानों ने इसे चुना है, और 'मुन्या' की व्याख्या में 'हकाइक' से संक्षिप्त रूप में उद्धृत है कि 'फतवा इसी पर है' (समाप्त)। 'दुर्रे मुख़्तार' में इस मतभेद का फल उस व्यक्ति के बारे में बताया गया है जो शहर में ही छिपा हुआ हो: क्या वह 'गैबत-ए-मुनकता' मानी जाएगी?

उर्दू अनुवाद

'रद्द अल-मुह्तार' में है कि 'गैबत-ए-मुनकता' की सीमा के संबंध में मतभेद है। लेखक ने 'कन्ज़' का अनुसरण करते हुए कहा है कि यह 'क़स्र' की दूरी का सफर है। 'हिदाया' ने इसे कुछ बाद के विद्वानों और 'ज़ैलई' ने अधिकांश बाद के विद्वानों की ओर संदर्भित किया है, और ज़ैलई ने कहा है कि फतवा इसी पर है (समाप्त)। और 'ज़खीरा' में कहा गया है कि सबसे सही मत यह है कि वह इतनी दूर हो कि यदि उसकी वापसी की प्रतीक्षा करने या उससे परामर्श लेने से वर्तमान समान रिश्ता (कुफ़्ू हाथ से निकल जाए, तो यह 'गैबत-ए-मुनकता' होगी। और किताब में इसकी ओर संकेत है (समाप्त)। 'निहाया' में है कि अधिकांश विद्वानों ने इसे पसंद किया है, और 'मुन्या' की व्याख्या में 'हकाइक' से संक्षिप्त रूप में उद्धृत है कि फतवा इसी पर है (समाप्त)। और 'दुर्रे मुख़्तार' में इस मतभेद का फल बताया गया है कि यदि कोई संरक्षक शहर में ही कहीं छिपा हुआ हो, तो क्या वह 'गैबत-ए-मुनकता' मानी जाएगी या नहीं? (त)

और दूर का संरक्षक, संरक्षकता हस्तांतरण न होने की स्थिति में, या कोई अजनबी जो निकटतम संरक्षक का प्रतिनिधि या दूत न हो, जब एक बालिग कुंवारी लड़की से निकाह की अनुमति मांगे, तो

उसकी खामोशी मान्य नहीं है। बल्कि स्पष्ट रूप से बोलकर या काम के माध्यम से सहमति जताना आवश्यक है। खामोशी की स्थिति में निकाह 'फ़ुज़ूली' (अनाधिकृत) होगा और दुल्हन की अनुमति पर निर्भर रहेगा। इसी प्रकार, यदि निकटतम संरक्षक के अलावा किसी अन्य ने बालिग कुंवारी की अनुमति के बिना निकाह कर दिया और फिर उसे सूचना मिली, तो यह स्पष्ट अनुमति से ही प्रभावी होगा; खामोशी पर्याप्त नहीं है।

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
'दुर्रे मुख़्तार' में: यदि संरक्षक या उसके प्रतिनिधि या उसके दूत ने उससे अनुमति मांगी, या उसके संरक्षक ने उसका निकाह कर दिया और उसके दूत ने उसे सूचना दी या...	'दुर्रे मुख़्तार' में है कि यदि बालिग लड़की से संरक्षक ने अनुमति मांगी, या संरक्षक के दूत या प्रतिनिधि ने अनुमति मांगी, या संरक्षक ने उसका निकाह कर दिया और दूत ने...

1. रद्द अल-मुह्तार, संरक्षकता का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/315।
2. दुर्रे मुख़्तार, संरक्षकता का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/194।

पृष्ठ 574 का 739

سے منزلوں دور ہے بالجملہ قول آخر میں انتقال ولایت ہے کہ انتظار کی دیر باعث کفو ہو، نہ یہ کہ بوجہ علم ناراضی، قصداً انتظار نہ کیا جائے۔

عربی عبارت

في ردالمحتار اختلف في حد الغيبة واختار المصنف تبعاً للكنز انها مسافة القصر، ونسبه في الهداية لبعض المتأخرين والزيلعي لاكثر هم قال وعليه الفتوى اه وقال في الذخيرة الاصح انه اذاكان في موضع لوانتظر حضوره واستطلاع رايه فات الكفو الذى حضر فالغيبة منقطعة واليه اشار في الكتاب اه وفى النهاية واختاره اكثر المشائخ وفى شرح الملتقى عن الحقائق عليه الفتوى ١ اه مختصراً۔ فى الدر المختار وثمرة الخلاف فيمن اختفى فى المدينة هل تكون غيبة منقطعة ٢۔

اردو ترجمہ

ردالمحتار میں ہے کہ غیبتِ منقطعہ کی حد کے متعلق اختلاف ہے تو مصنف نے کنز کی اتباع میں فرمایا وہ مسافتِ قصر کا سفر ہے اور اس کو ہدایہ نے بعض متاخرین اور زیلعی نے اکثر متاخرین کی طرف منسوب کیا ہے اور زیلعی نے فرمایا اسی پر فتوی ہے اھ، اور ذخیرہ میں کہا ہے اصح یہ ہے کہ وہ اتنا دور ہو کہ اگر اس کی واپسی کا انتظار یا اس سے مشورہ حاصل کرنے سے موجودہ رشتہ کفو فوت ہو جائے تو یہ "غیبتِ منقطعہ" ہوگی اور کتاب میں اس کی طرف اشارہ ہے اھ، اور نہایہ میں ہے کہ اکثر مشائخ نے اس کو پسند کیا ہے، اور منیہ کی شرح میں حقائق سے منقول ہے کہ اس پر فتوی ہے اھ مختصراً اور درمختار میں اس اختلاف کا ثمرہ بیان کیا کہ شہر میں ہی کوئی ولی چھپا ہوا ہو تو کیا وہ غیبتِ منقطعہ ہوگی یا نہیں۔ (ت)

اور ولی البعد بحالت عدم انتقال ولایت یا کوئی اجنبی کہ ولی اقرب کا وکیل ورسول نہ ہو جب بکر بالغہ سے اذنِ نکاح مانگے تو اس کا سکوت معتبر نہیں بلکہ قولاً یا فعلاً صاف اظہارِ رضا ضرور ہے، بحال سکوت نکاح فضولی ہوگا، اور اجازتِ عروس پر موقوف رہے گا۔ اسی طرح اگر غیر ولی اقرب نے بلا اذنِ بکر بالغہ نکاح کر دیا پھر اسے خبر ہوئی تو اجازتِ صریحہ سے نافذ ہوگا، سکوت کافی نہیں۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
في الدرالمختار ان استأذنها الولی او وکیله اورسوله اوزوجها ولیها واخبرهارسوله او	درمختار میں ہے کہ اگر بالغہ سے ولی نے اجازت طلب کی یا ولی کے قاصد یا وکیل نے اجازت طلب کی یا ولی نے اس کا نکاح کردیا اور قاصد نے

1 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۲ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۴

Fatawa Razawiya Volume Eleven

(Arabic text): "If a non-appointed person (fuduli), a just individual, or a stranger informs an adult woman of her marriage and she remains silent without rejecting it, or she smiles sincerely, or she weeps without sound, it is considered her consent. However, if someone other than her closest guardian (wali), such as a stranger or a distant relative, asks for her permission, her silence is not valid. Instead, like a previously married woman, she must give explicit verbal or physical consent that clearly indicates her approval, such as demanding her dower (mahr) or maintenance (nafaqah), or allowing intimacy." (Condensed from Dur al-Mukhtar). And in Al-Hindiyya, it is quoted from Jami' al-Mudmarat: "If there is a closer guardian than the one who conducted the marriage, then her silence is not considered consent. She has the choice to either reject the marriage or accept it and make it valid." (T)

In the case under inquiry, Zaid first presented Hindah's consent for marriage through her silence and weeping, and later claimed her consent was given in explicit words. If both these statements refer to the same instance—for example, if he initially said that when permission was sought from Hindah, she remained silent and wept, and now says she gave explicit consent—then, although this is contrary to his previous statement and a clear contradiction,

(Arabic text): "Because he first admitted that he had no right of ownership over her, for there is no ownership where there is no execution [of the contract], nor is intimacy permissible in a suspended (mawquf) marriage." (Urdu): This is because he had already admitted to not having a right over the girl, and since there was no ownership, the marriage contract was not executed; thus, the marriage remained suspended, in which intimacy is not lawful. (T)

However, this contradiction might be based on hidden circumstances, as the husband is not present in the bride's gathering at the time of seeking permission. This act belongs specifically to the bride, of which the husband is only informed through reports. It is possible that someone initially wrongly reported only silence and weeping, and he based his statement on that; later, after investigation, it became clear that the consent was given in explicit words, rather, brides...

---

1. Dur al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191-192.
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Four on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/28.

(अरबी पाठ): "यदि किसी गैर-नियुक्त व्यक्ति (फ़ुज़ूली), एक न्यायप्रिय व्यक्ति, या एक अजनबी ने एक बालिग (वयस्क) महिला को उसके निकाह की सूचना दी और वह खामोश रही और निकाह को रद्द नहीं किया, या वह गंभीरता से मुस्कुराई, या बिना आवाज़ के रोई, तो इसे अनुमति माना जाएगा। लेकिन यदि सबसे करीबी संरक्षक (वली) के अलावा किसी और ने, जैसे किसी अजनबी या दूर के रिश्तेदार ने अनुमति मांगी हो, तो उसकी खामोशी मान्य नहीं होगी। इसके बजाय, एक पहले से विवाहित (सय्यिबा) महिला की तरह, उसे स्पष्ट मौखिक या व्यावहारिक सहमति देनी होगी जो उसकी अनुमति को स्पष्ट करे, जैसे कि मेहर या भरण-पोषण की मांग करना, या सहवास की अनुमति देना।" (दुर-ए-मुख्तार से संक्षेप में)। और हिन्दिया में जामिउल मुज़मरात से उद्धृत है: "यदि निकाह कराने वाले की तुलना में कोई और अधिक निकट का वली मौजूद हो, तो लड़की की खामोशी को रज़ामंदी नहीं माना जाएगा। उसके पास अधिकार होगा कि वह निकाह को रद्द कर दे या राजी होकर इसे जायज़ (वैध) करार दे।" (त)

पूछे गए मामले में, ज़ैद ने पहले हिन्दा के निकाह की अनुमति खामोशी और रोने के माध्यम से ज़ाहिर की और बाद में दावा किया कि उसने स्पष्ट शब्दों में अनुमति दी थी। यदि ये दोनों बयान एक ही समय के संदर्भ में हैं—उदाहरण के लिए, यदि उसने पहले कहा था कि जब हिन्दा से अनुमति मांगी गई तो वह खामोश रही और रोई, और अब कहता है कि उसने स्पष्ट अनुमति दी—तो यद्यपि यह उसके पिछले बयान के खिलाफ और स्पष्ट विरोधाभास है,

(अरबी पाठ): "क्योंकि उसने पहले उस पर अपने अधिकार की कमी को स्वीकार कर लिया था, क्योंकि जहाँ निकाह का क्रियान्वयन (नफ़ाज़) नहीं है वहाँ अधिकार नहीं है, और न ही स्थगित (मौक़ूफ़) निकाह में सहवास जायज़ है।" (उर्दू): क्योंकि वह पहले ही लड़की पर अपना हक न होने का इकरार कर चुका है, और जब मालिकाना हक नहीं रहा तो निकाह का नफ़ाज़ नहीं हुआ, बल्कि निकाह मुअल्लक (स्थगित) रहा जिसमें सोहबत हलाल नहीं होती। (त)

मगर यह विरोधाभास किसी छिपी हुई वजह से भी हो सकता है, क्योंकि अनुमति लेने के समय शौहर दुल्हन की मजलिस (सभा) में मौजूद नहीं होता। यह कार्य विशेष रूप से दुल्हन का है जिसकी सूचना शौहर को केवल दूसरों के बताने से मिलती है। मुमकिन है कि पहले किसी ने गलत तौर पर सिर्फ

खामोशी और रोने का ज़िक्र किया हो और उसने उसी के आधार पर बयान दिया हो; बाद में तहकीकात (जांच) से पता चला हो कि अनुमति स्पष्ट शब्दों में थी, बल्कि दुल्हनों...

---

1. दुर-ए-मुख्तार, बाबुल वली, मज्बुआ मुज्तबाई दिल्ली, १/१९१-१९२।
2. फ़तावा हिन्दिया, बाब अल-राबे फ़िल औलिया, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/२८।

पृष्ठ ७३९ में से ५७५

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

فضولی عدل فسکتت عن ردہ مختارۃ اوضحکت غیر مستھزیۃ اوتبسمت او بکت بلاصوت فھو اذن فان استأذنھا غیر الاقرب کاجنبی او ولی بعید فلا عبرۃ بسکوتھا بل لابدلھا من القول کالثیب البالغۃ اورمن فعل یدل علی الرضا کطلب مھرھا ونفقتھا وتمکینھا من الوطئ اھ مختصرا۔ یا اجنبی عادل شخص نے اس بالغہ کو نکاح کی اطلاع دی تو وہ خاموش رہی اور نکاح کو رد نہ کیا۔ یا سنجیدگی سے ہنس پڑی یا آواز کے بغیر رو پڑی تو اجازت قرار پائے گی۔ اور اگر کسی غیر اقرب مثلاً اجنبی یا ولی بعید کے اجازت طلب کرنے پر بالغہ نے خاموشی اختیار کی تو وہ رضا معتبر نہ ہوگی، بلکہ ثیبہ بالغہ کی طرح صریح قول یا فعل کرے جو اس کی اجازت واضح کر سکے، مثلاً اس موقعہ پر مہر دے اھ مختصراً،

وفی الھندیۃ عن جامع المضمرات ان کان لھا ولی اقرب من المزوج لا یکون السکوت منھا رضا ولھا الخیاران شاءت رضیت وان شاءت ردت 2۔ اور ہندیہ میں جامع المضمرات سے منقول ہے کہ اگر نکاح دینے والے کی نسبت کوئی اقرب دوسرا ہے تو یہ اس کا سکوت رضانہ قرار پائے گا اور اس کو اختیار ہوگا کہ نکاح کو رد کر دے یا راضی ہو کر جائز قرار دے۔(ت)

پس صورتِ مستفسرہ میں کہ زید نے اولاً اجازتِ نکاح بسکوت و گریہ ہندہ ظاہر کی اور بعد کو اجازت بلفظ صریح مدعی ہوا، اگر یہ دونوں بیان وقتِ واحد کی نسبت ہیں مثلاً پہلے کہتا تھا کہ ہندہ سے جب اذن لیا گیا تو اس نے سکوت و گریہ کیا اب کہتا ہے صریح اذن دیا تو اگرچہ پھر یہاں بیان سابق کے خلاف اور صاف صورتِ تناقض ہے،

لانه اقر اولا بعدم ثبوت الملك له علیها اذلا ملك حیث لا نفاذ ولا الاباحة في الموقوف۔ کیونکہ پہلے لڑکی پر اپنے حق نہ ہونے کا اقرار کر چکا ہے اور جب ملکیت نہ ہوئی تو نکاح کا نفاذ نہ ہوا، تو نکاح موقوف رہا جس میں وطی حلال نہیں ہوتی۔ (ت)

مگر یہ تناقض محمل خفا میں ہے کہ زوج وقتِ استیذان دلھن کی مجلس میں حاضر نہیں ہوتا اور یہ فعل خاص دلھن کا ہے جس پر زوج کو اطلاع بذریعہ حکایت ہی ہوتی ہے ممکن کہ پہلے کسی نے غلط طور پر صرف سکوت و گریہ بیان کیا اور اس نے اس کے اعتبار پر یہی ظاہر کیا بعدہ تحقیق ہوا کہ اذن بالفاظ صریحہ تھا بلکہ دلھنوں

---

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱۔ ۱۹۲ 2 فتاوی ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸

Asking for permission takes time. It is possible that when the first narrator was present there, only silence and weeping occurred. After they left, for example, she might have said "Yes". The husband received the first narration initially; later, upon second investigation, it was found to be different. Such a contradiction is religiously excusable. It is stated in Al-Ashbah:

Contradiction is not acceptable except in places where there is hiddenness/ ambiguity.[1]	Contradiction in a statement is not acceptable except in a place where there is ambiguity. (T)

It is stated in Ghamz al-Uyun:

In 'Al-Fawakeh al-Badriyah', contradictions have been forgiven in many issues where an excuse is apparent. For example, if a person says 'This is my foster daughter' and then admits to an error, he is believed, and he may marry her after that since he did not persist in his admission, and the excuse is that it is something hidden from him. So, it may appear after his admission that the narrator was mistaken.[2] [Abridged]	It is mentioned in 'Fawakeh Badriyah' that in many places where the excuse is clear, the jurists have overlooked the contradiction. One such place is when a person initially says, 'This girl is my foster daughter,' then admits an error regarding this matter, his admission of error will be accepted, and his marriage to this girl will be declared permissible because the matter of fosterage can be hidden from him. It might be that he admitted to fosterage based on the error of the first narrator, and after that, the truth of the matter became known to him, and he declared his admission as being based on an error. [Abridged] (T)

So, the summary of this situation is that the man claims the marriage is enforced and the woman denies it. And if these two statements pertain to two different times—meaning silence and weeping were expressed before the request for permission for marriage or at the time of hearing the news of marriage upon reaching puberty, and now the claimant asserts that afterwards the bride explicitly made the marriage permissible—then this is a case of disagreement between spouses regarding the rejection or permission of a suspended marriage. In any case, in the questioned situation, if there is no sufficient just testimony on the husband's side, then the woman's statement with an oath is credible. If she takes the oath, the marriage will be deemed void. And when the husband's claim is of permission in explicit words,

then in every situation, preference is given to the husband's proof (bayyinah). If he proves his claim with religiously just witnesses, the marriage will be established and enforced. Similarly, in the absence of witnesses, if the bride refuses to take an oath, the husband's claim will be established.

[1] Al-Ashbah wa an-Naza'ir, Kitab al-Qada, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/350 [2] Ghamz Uyun al-Basa'ir with Al-Ashbah wa an-Naza'ir, Kitab al-Qada, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/350

अनुमति मांगने में समय लगता है। यह संभव है कि जब पहला वर्णनकर्ता वहां मौजूद था, तब केवल चुप्पी और रोना ही हुआ हो। उनके जाने के बाद, उदाहरण के लिए, उसने "हाँ" कहा हो। पति को पहले पहली रिपोर्ट मिली, और बाद में दूसरी जांच हुई। ऐसा विरोधाभास धार्मिक रूप से क्षम्य है। 'अशबाह' में है:

التناقض غیر مقبول الا فیما کان محل الخفاء [1] (विरोधाभास स्वीकार्य नहीं है सिवाय उन स्थानों के जहाँ अस्पष्टता हो।)	बयान में विरोधाभास स्वीकार्य नहीं है मगर ऐसे स्थान में जहाँ खफा (अस्पष्टता) हो। (त)

'ग़मज़ अल-उयून' में है:

في الفواکه البدریة قد اغتفروا التناقض في کثیر من المسائل التي یظهر فیها عذر منها لو قال هذه رضیعتی ثم اعترف بالخطاء یصدق وله ان یتزوجها بعد ذلك اذ لم یثبت علی اقراره والعذر انه مما یخفی علیه فقد یظهر بعد اقراره علی خطاء الناقل [2] اه (مختصراً)	'फ़वाकिह बदरिया' में है कि बहुत से ऐसे स्थानों में जहाँ उज़्र (बहाना) स्पष्ट हो तो विरोधाभास को फकीहों ने नज़रअंदाज़ किया है। ऐसे स्थानों में से एक यह है कि एक व्यक्ति ने पहले कहा, 'यह लड़की मेरी रज़ाई (दूध-शरीक) बेटी है,' फिर इस बात के बारे में गलती का इकरार करता है तो उस गलती के इकरार को स्वीकार कर लिया जाएगा और इस लड़की से उसका निकाह जायज़ करार दिया जाएगा क्योंकि रज़ाअत (स्तनपान) का मामला उस पर छिपा हो सकता है कि पहले वर्णनकर्ता की गलती पर रज़ाअत का इकरार करने के बाद उसकी हकीकत मालूम हुई और अपने इकरार को गलती पर आधारित करार दिया। [संक्षेप] (त)

तो इस सूरत का निष्कर्ष यह निकला कि पुरुष निकाह के लागू होने का दावा करता है और औरत इनकार करती है। और यदि ये दो बयान अलग-अलग समय के संदर्भ में हैं - यानी निकाह की अनुमति मांगने से पहले या निकाह की खबर मिलने के समय चुप्पी और रोना व्यक्त किया गया था, और अब दावेदार का कहना है कि इसके बाद दुल्हन ने स्पष्ट शब्दों में निकाह को जायज़ कर दिया, तो यह 'निकाह-ए-मौकूफ़' (निलंबित निकाह) की अस्वीकृति या अनुमति के मामले में पति-पत्नी के बीच मतभेद की स्थिति है। बहरहाल, प्रश्नगत स्थिति में, यदि पति की ओर से पर्याप्त न्यायपूर्ण गवाही न हो, तो कसम के साथ महिला की बात विश्वसनीय मानी जाएगी। यदि वह कसम खा लेती है, तो

निकाह बातिल (अमान्य) माना जाएगा। और जब पति का दावा स्पष्ट शब्दों में अनुमति का हो, तो यहाँ हर हाल में पति के प्रमाण (बय्यिना) को प्राथमिकता दी जाएगी। यदि वह धार्मिक रूप से न्यायपूर्ण गवाहों के साथ अपना दावा साबित कर देता है, तो निकाह स्थापित और लागू माना जाएगा। इसी तरह, गवाहों की अनुपस्थिति में, यदि दुल्हन कसम खाने से इनकार करती है, तो पति का दावा साबित हो जाएगा।

[1] अल-अशबाह वा अन-नज़ैर, किताब अल-क़ज़ा, इदारातुल कुरान कराची, 1/350 [2] ग़मज़ उयून अल-बसायर मअ अल-अशबाह वा अन-नज़ैर, किताब अल-क़ज़ा, इदारातुल कुरान कराची, 1/350

سے استیذان میں دیر لگتی ہے، ممکن ہو جس وقت ناقل اول وہاں موجود تھا سکوت و گریہ ہی کیا ہو اس کے اٹھ جانے کے بعد مثلاً "ہوں" کہا زوج کو اول حکایت اولٰی ہی پہنچی تھی، بعد کو دوسری تحقیق ہوئی، ایسا تناقض شرعاً عفو ہے، اشباہ میں ہے:

التناقض غیر مقبول الا فیما کان محل الخفاء [1]

بیان میں تناقض مقبول نہیں ہے مگر ایسے مقام میں جہاں خفاء ہو۔ (ت)

غمز العیون میں ہے:

في الفواكه البدرية قد اغتفروا التناقض في كثير من المسائل التي يظهر فيها عذر منها لو قال هذه رضيعتی ثم اعترف بالخطاء يصدق وله ان يتزوجها بعد ذلك اذ لم يثبت على اقراره والعذر انه مما يخفى عليه فقد يظهر بعد اقراره على خطاء الناقل [2] اه مختصراً)

فواکہ بدریہ میں ہے کہ بہت سے ایسے مقامات میں جہاں عذر واضح ہو تو تناقض کو فقہاء نے نظر انداز کیا ہے ایسے مقامات میں سے ایک یہ ہے ایک شخص نے پہلے کہا یہ لڑکی رضاعی بیٹی ہے، پھر اس بات کے بارے میں خطاء کا اعتراف کرتا تو اس اعتراف خطاء کو تسلیم کر لیا جائے گا اور اس لڑکی سے اس کا نکاح جائز قرار دیا جائے گا کیونکہ رضاعت کا معاملہ اس پر مخفی ہوسکتا ہے کہ پہلے ناقل کی غلطی پر اقرار رضاعت کرنے کے بعد اس کی حقیقت معلوم ہوئی اور اپنے اقرار کو خطاء پر مبنی قرار دیا اھ مختصراً (ت)

تو اس صورت کا حاصل یہ قرار پایا کہ مرد نکاح نافذ کا دعوٰی کرتا ہے اور عورت انکار، اور اگر یہ بیان دو وقت مختلف کی نسبت ہیں یعنی سکوت و گریہ استیذان پیش از نکاح یا بلوغ خبر نکاح

کے وقت بیان کیا تھا، اور اب مدعی ہے کہ اس کے بعد دلہن نے بلفظ صریح نکاح جائز کر دیا تو یہ رد و اجازت نکاح موقوف میں اختلاف زوجین کی صورت ہے، بہر حال صورت مسئولہ میں اگر جانب شوہر شہادت عادلہ کافیہ نہ ہو تو قول عورت کا قسم کے ساتھ معتبر ہے، اگر قسم کھالے گی نکاح باطل ٹھہرے گا اور جبکہ دعویٰ شوہر اجازت بالفاظ صریحہ ہے تو یہاں ہر صورت میں بینہ شوہر کو ترجیح ہے، اگر گواہان عادل شرعی سے اپنا دعویٰ ثابت کردے گا نکاح ثابت و نافذ قرار پائے گا۔ یونہی بحالت عدم گواہان اگر دلہن قسم کھانے سے انکار کرے گی دعویٰ شوہر ثابت ہو جائیگا

[1] الاشباہ والنظائر کتاب القضاء ادارۃ القرآن کراچی ۱/۳۵۰ [2] غمز عیون البصائر مع الاشباہ والنظائر کتاب القضاء ادارۃ القرآن کراچی ۱/۳۵۰

Fatawa Razawiyya, Volume 11

This is all a matter of judicial ruling; as for the actual reality, it is in the knowledge of the Lord of Honor. Both parties involved and their associates know; whoever is lying will deserve severe painful punishment from Allah. We seek refuge in Allah Almighty.

In Al-Durr al-Mukhtar, it is stated: A husband said to an adult virgin: "When you were informed of the marriage, you remained silent." The girl replied, "I did not remain silent; rather, I rejected the marriage." Since neither of them has witnesses, and the girl has not yet given the husband access, then in this case, the girl's statement will be accepted upon oath. This is according to the mufta bihi (the issued fatwa) position. However, if the husband presents witnesses to the girl's silence and the girl has no witnesses, then the testimony regarding silence will be accepted because silence is an existential (observable) matter. If both parties present witnesses for their respective positions, then the girl's witnesses will be given preference. Yes, if the husband presents testimony of the girl's consent or permission instead of her silence, then the testimony from the husband's side will be preferred.

I say (the author): The scenario of the problem is that the marriage was performed by the wali aqrab (closest guardian). Thus, the husband's claim that "she remained silent" means "you gave permission." And the author's statement "presented witnesses for consent or permission" means the husband claims explicit permission, as explained in Radd al-Muhtar. Here, we [will mention] a portion of the text from Radd al-Muhtar...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.

फतावा रज़विया, जिल्द ११

यह सब अदालती हुक्म है; जहाँ तक वास्तविकता का सवाल है, वह इज़्ज़त वाले रब के इल्म में है। मामले से जुड़े दोनों पक्ष और उनके साथी जानते हैं; जो झूठा होगा, वह अल्लाह के पास दर्दनाक अज़ाब का हक़दार होगा। और हम अल्लाह तआला की पनाह माँगते हैं।

दुर-ए-मुख्तार में है: पति ने एक बालिग कुंवारी से कहा: "जब तुम्हें निकाह की खबर दी गई, तो तुम खामोश रहीं।" लड़की ने जवाब दिया, "मैं खामोश नहीं रही, बल्कि मैंने निकाह को रद्द कर दिया था।" चूँकि दोनों के पास गवाह नहीं हैं, और न ही लड़की ने अभी तक पति को मौक़ा दिया है (संभोग का), तो ऐसी स्थिति में लड़की की बात शपथ के साथ स्वीकार कर ली जाएगी। यह मुफ़्ता बिही (जिस पर फतवा दिया गया है) मत के अनुसार है। लेकिन अगर पति गवाहों के ज़रिए लड़की की खामोशी पेश करता है और लड़की के पास गवाह नहीं हैं, तो खामोशी पर गवाही स्वीकार कर ली जाएगी क्योंकि खामोशी एक दृश्य/मौजूद चीज़ है। यदि दोनों पक्षों ने अपने-अपने दावे पर गवाह पेश किए, तो लड़की के गवाहों को प्राथमिकता दी जाएगी। हाँ, अगर पति ने खामोशी के बजाय लड़की की रज़ा या अनुमति पर गवाही पेश की, तो पति की ओर से दी गई गवाही को प्राथमिकता दी जाएगी।

क़ुल्तु (मैं कहता हूँ): मामले की सूरत यह है कि निकाह वली अक़रब (निकटतम अभिभावक) ने कराया हो। तो पति का यह कहना कि "खामोश रही" का अर्थ है कि "तुमने अनुमति दी थी।" और लेखक का यह कहना कि "रज़ा या अनुमति पर गवाह पेश किए" का अर्थ यह है कि पति स्पष्ट अनुमति का दावा कर रहा है, जैसा कि रद्दुल मुहतार में बताया गया है। हम यहाँ रद्दुल मुहतार के कलाम का कुछ हिस्सा...

1. रद्दुल मुहतार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली १/१९२

पृष्ठ ७३९ में से ५७७

یہ سب حکم قضا ہے ، رہا واقع کا حال ، وہ رب العزت کے علم میں ہے اور دونوں اہل معاملہ اور ان کے شرکاء واقف جو جھوٹا ہوگا عند اللہ عذاب الیم شدید کا سزاوار ہوگا ۔ والعیاذ باللہ تعالٰی :

فی الدرالمختار قال الزوج للبکر البالغة بلغك النكاح فسكتت ، وقالت رددت النكاح ولابينة لهما على ذلك ولم يكن دخل بها طوعاً فی الاصح فالقول قولهما بيمينها على المفتی به و تقبل بينته على سكوتها لانه وجودی بضم الشفتين ولو برهنا فبينتها اولی الا ان يبرهن على رضاها او اجازتها ۱ ۔

در مختار میں ہے : خاوند نے باکرہ بالغہ کو کہا کہ تو نکاح کی اطلاع پر خاموش رہی ، لڑکی نے جواب میں کہا میں خاموش نہ رہی بلکہ میں نے نکاح رد کردیا تھا جبکہ دونوں کے پاس گواہ نہیں، اور نہ ہی لڑکی نے ابھی تک خاوند کو اطلاع کا موقع دیا، تو اس صورت میں لڑکی کی بات قسم کے ساتھ قبول کرلی جائے گی ، یہ مفتی بہ قول کے مطابق ہے، اور اگر خاوند نے گواہوں کے ذریعہ لڑکی کی خاموشی پیش کی اور لڑکی کے گواہ نہیں تو اس صورت میں سکوت پر گواہی قبول کرلی جائے گی کیونکہ سکوت وجودی امر ہے ، اور اگر دونوں نے اپنے اپنے موقف پر گواہ پیش کر دئیے تو لڑکی کے گواہوں کو ترجیح ہوگی، ہاں اگر خاوند نے سکوت پر گواہی کے بجائے لڑکی کی رضا یا اجازت پر گواہی پیش کی تو پھر خاوند کی طرف سے شہادت کو ترجیح ہوگی۔

قلت فرض المسألة فی تزويج الاقرب فقوله سكت بمعنی اجزت وقوله يبرهن على

قلت (میں کہتا ہوں کہ) مسئلہ کی صورت یہ ہے کہ نکاح ولی اقرب نے کرایا ہو ، تو خاوند کا کہنا کہ "خاموش رہی" کا مطلب یہ ہے کہ تونے اجازت دی تھی، اور مصنف کا قول کہ "رضا یا

در مختار میں ہے : خاوند نے باکرہ بالغہ کو کہا کہ تو نکاح کی اطلاع پر خاموش رہی ، لڑکی نے جواب میں کہا میں خاموش نہ رہی بلکہ میں نے نکاح رد کردیا تھا جبکہ دونوں کے پاس گواہ نہیں، اور نہ ہی لڑکی نے ابھی تک خاوند کو اطلاع کا موقع دیا، تو اس صورت میں لڑکی کی بات قسم کے ساتھ قبول کرلی جائے گی ، یہ مفتی بہ قول کے مطابق ہے، اور اگر خاوند نے گواہوں کے ذریعہ لڑکی کی خاموشی پیش کی اور لڑکی کے گواہ نہیں تو اس صورت میں سکوت پر گواہی قبول کرلی جائے گی کیونکہ سکوت وجودی امر ہے ، اور اگر دونوں نے اپنے اپنے موقف پر گواہ پیش کر دئیے تو لڑکی کے گواہوں کو ترجیح ہوگی، ہاں اگر خاوند نے سکوت پر گواہی کے بجائے لڑکی کی رضا یا اجازت پر گواہی پیش کی تو پھر خاوند کی طرف سے شہادت کو ترجیح ہوگی۔

فی الدرالمختار قال الزوج للبکر البالغة بلغك النكاح فسكتت ، وقالت رددت النكاح ولابينة لهما على ذلك ولم يكن دخل بها طوعاً فی الاصح فالقول قولهما بيمينها على المفتی به و تقبل بينته على سكوتها لانه وجودی بضم الشفتين ولو برهنا فبينتها اولی الا ان يبرهن على رضاها او اجازتها ۱ .

رضاها او اجازتها ای صریحاً كما بينه فی ردالمحتار ولنذكر طرفاً من كلامه لاتضاح المقام قال رحمه الله تعالی قوله فالقول قولها لانه يدعی لزوم

اجازت پر گواہ پیش کئے" تو اس کا مطلب یہ ہے کہ خاوند صریحاً اجازت کا مدعی ہو ، جیسا کہ رد المحتار میں بیان کیا ہے ، ہم یہاں رد المحتار کے کلام کا کچھ حصہ

۱ رد المحتار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲

Fatawa Razawiya, Volume 11

[Arabic Section]: ...the contract and the ownership of the vulva (conjugal rights), and the woman repels it, so she is the denier (munkira). -1- Then it was mentioned in 'Al-Bahr' that Al-Hakim al-Shaheed mentioned in 'Al-Kafi' that if one of them claims the marriage took place during their minority, then their statement is accepted and there is no marriage between them. -2- [End of Quote] I say: The reason given for this in 'Al-Dhakhirah' is that a marriage during minority before the guardian's permission is not a valid marriage. Before that, it mentioned that if the dispute is regarding validity or invalidity, then the statement of the one claiming validity is accepted based on apparent evidence. But if the dispute is regarding the very existence of the contract, then the statement of the one denying its existence is accepted. -3- Then it is apparent that our current case is of the type of dispute regarding the existence of the contract itself, because rejection has made the offer (ijab) void of acceptance (qabul). His statement, "Unless he brings proof," means his evidence will be preferred due to their equality in establishing proof.

[Urdu Section]: ...they mention this so that the position becomes clear. They said regarding the statement "the girl's word will be preferred" because the husband claims the necessity of marriage upon the girl and for himself the right of 'Milk al-Bud'u' (intercourse), while the girl denies it as a defense and she is the denier (munkira). Then it was stated in 'Al-Bahr' that Hakim al-Shaheed mentioned in 'Al-Kafi' that if the dispute is whether it happened in the boy's minority or not, then the one claiming marriage in minority, their word will be considered, and marriage will not be established. [End Quote] I say (I maintain that) the reason for this explained in 'Al-Dhakhirah' is that marriage before the guardian's permission in childhood is not correct in meaning. Before this, it is mentioned in 'Al-Dhakhirah' that if the dispute is between marriage being valid or invalid, then the word of the claimant of validity will be considered because apparently marriage is correct. And if the dispute is about the existence or non-existence of marriage, then the word of the one denying the existence of marriage will be considered. Then undoubtedly, it is clear that our discussion is about the origin of the existence of marriage, so the girl's denial and rejection of the offer will be without acceptance; therefore, the girl's word will be considered. Regarding the statement, "Unless the husband presents witnesses," it means his testimony will be preferred because the witnesses of both the husband and the girl are for affirmation.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/302. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/303. 3. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/303.

फतावा रज़विया, जिल्द 11

[अरबी अनुभाग]: ...अनुबंध और संभोग के अधिकार (मुल्क-ए-बज़अ) का मामला है, और महिला इसे अस्वीकार करती है, अतः वह इनकार करने वाली (मुन्किरा) है। -1- फिर 'अल-बहर' में ज़िक्र किया गया कि अल-हाकिम अल-शहीद ने 'अल-काफी' में उल्लेख किया है कि यदि उनमें से कोई एक दावा करे कि निकाह उसके बचपन में हुआ था, तो उसकी बात मानी जाएगी और उनके बीच कोई निकाह नहीं होगा। -2- [आह] मैं कहता हूँ: 'अल-ज़खीरा' में इसका कारण यह बताया गया है कि संरक्षक (वली) की अनुमति से पहले बचपन की स्थिति में किया गया निकाह एक मान्य निकाह नहीं है। इससे पहले यह ज़िक्र किया गया कि यदि विवाद निकाह के सही (सहा) या गलत (फसाद) होने के बारे में है, तो सही होने का दावा करने वाले की बात ज़ाहिरी सबूत के आधार पर मानी जाएगी। लेकिन यदि विवाद अनुबंध के अस्तित्व (अस्ल-ए-वजूद) के बारे में है, तो अस्तित्व से इनकार करने वाले की बात मानी जाएगी। -3- फिर ज़ाहिर है कि हमारा मामला अनुबंध के अस्तित्व के विवाद की श्रेणी में आता है क्योंकि अस्वीकृति ने प्रस्ताव (ईजाब) को बिना स्वीकृति (क़ुबूल) के छोड़ दिया है। उनका कथन "सिवाय इसके कि पति गवाह पेश करे" का अर्थ है कि तब उसके साक्ष्य को वरीयता दी जाएगी क्योंकि दोनों के गवाह साबित करने में समान हैं।

[उर्दू अनुभाग]: ...उल्लेख करते हैं ताकि मामला स्पष्ट हो सके, उन्होंने कहा उनके कथन कि "लड़की की बात को वरीयता दी जाएगी" क्योंकि पति लड़की पर निकाह की अनिवार्यता और अपने लिए 'मुल्क-ए-बज़अ' यानी संभोग के अधिकार का दावा करता है जबकि लड़की बचाव करते हुए इनकार करती है और वह इनकार करने वाली है। फिर 'बहर' में कहा गया कि हाकिम शहीद ने 'काफी' में ज़िक्र किया है कि यदि विवाद यह है कि लड़के की नाबलिग़ी में हुआ या नहीं, तो जिसने नाबलिग़ी में निकाह का दावा किया उसकी बात मान्य होगी, और निकाह साबित नहीं होगा। [आह] मैं कहता हूँ (मेरा मानना है कि) 'ज़खीरा' में इसका कारण यह बताया गया है कि बचपन में वली की अनुमति से पहले निकाह का अर्थ सही नहीं है। इससे पहले 'ज़खीरा' में उल्लेख है कि यदि विवाद निकाह के सही या अमान्य होने के बीच हो, तो वैधता के दावेदार की बात मानी जाएगी क्योंकि स्पष्ट रूप से निकाह सही होता है। और यदि विवाद निकाह होने या न होने के बारे में हो, तो निकाह के अस्तित्व से इनकार करने वाले की बात मान्य होगी। फिर निस्संदेह यह स्पष्ट है कि हमारी चर्चा निकाह के अस्तित्व की जड़ के बारे में है, इसलिए लड़की का इनकार और प्रस्ताव की अस्वीकृति बिना स्वीकृति के होगी; अतः लड़की की बात मानी जाएगी। उनके कथन "मगर यह कि पति गवाह पेश करे" का

अर्थ है कि उसकी गवाही को वरीयता दी जाएगी क्योंकि पति और लड़की दोनों के गवाह पुष्टि के लिए हैं।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/302. 2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/303. 3. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/303.

पृष्ठ 578 का 739

العقد وملك البضع والمرأة تدفعه فكانت منكرة -١- ثم ذكر فی البحر ذكر الحاكم الشهيد فی الكافی لو ادعی احدهما ان النكاح كان فی صغره فالقول قوله ولا نكاح بينهما ٢ اه قلت عللها في الذخيرة بقوله لان النكاح فی حالة الصغر قبل اجازة الولی ليس نكاحاً معتاً وذكر قبله ان الاختلاف لوفی الصحة والفساد فالقول لمدعی الصحه بشهادة الظاهر ولو فی اصل وجود العقد فالقول لمنكر الوجود -٣- ثم ان الظاهران مانحن فيه من قبيل الاختلاف فی اصل وجود العقد لان الرد صير الايجاب بلا قبول قوله الا ان يبرهن ای فتترجح بينته لاستوائهما في الاثبات

ذکر کرتے ہیں تاکہ مقام واضح ہو سکے، انھوں نے کہا قولہ کہ "لڑکی کی بات کو ترجیح ہوگی" کیونکہ خاوند لڑکی پر نکاح کے لزوم اور اپنے لئے ملک بضع یعنی جماع کے حق کا دعوٰی کرتا ہے جبکہ لڑکی دفاع کرتے ہوئے انکار کرتی ہے اور وہ منکر ہے، پھر بحر میں کہا کہ حاکم شہید نے کافی میں ذکر کیا ہے کہ اگر اختلاف یہ ہے کہ لڑکے کی نابالغی میں ہوا یا نہیں، تو جس نے نابالغی میں نکاح کا دعوٰی کیا اس کا قول معتبر ہوگا، اور نکاح ثابت نہ ہوگا اھـــ قلت (میں کہتا ہوں کہ) ذخیرہ میں اس کی علت یہ بیان کی ہے کہ بچپن میں ولی کی اجازت سے قبل نکاح معنی درست نہیں، اور اس سے قبل ذخیرہ میں ذکر ہے کہ اگر اختلاف نکاح صحیح یا فاسد ہونے میں ہو تو صحت کے مدعی کی بات معتبر ہوگی کیونکہ ظاہر یہی ہے کہ نکاح صحیح ہوتا ہے، اور اختلاف اگر نکاح کے ہونے نہ ہونے میں ہو تو وجودِ نکاح کے انکار والے کی بات معتبر ہوگی، پھر بلاشبہ ظاہر ہے ہماری بحث اصلِ نکاح کے وجود میں ہے تو لڑکی کا انکار اور رد ایجاب

بغیر قبول ہوگا لہٰذا لڑکی کی بات معتبر ہوگی قولہ "مگر یہ کہ خاوند گواہ پیش کرے" یعنی اس کی گواہی کو ترجیح ہوگی کیونکہ خاوند اور لڑکی دونوں کے گواہ اثبات میں

1. ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۲/۳
2. ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۳/۳
3. ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۳/۳

Fatawa Rizvia Volume Eleven

وزيادة بينة باثبات اللزوم كذا فى الشروح وعزاه فى النهاية للتمرتاشى وكذا هو فى غير كتاب من الفقه لكن فى الخلاصة عن ادب القاضى للخصاف ان بينتها اولى ففى هذه الصورة اختلاف المشائخ ولعل وجهه ان السكوت لما كان مبا تحق الاجازة به لم يلزم من الشهادة بالاجازة كونها بامر زائد على السكوت مالم يصرحوا بذلك كذا في الفتح وتبعه فى البحر واستفيد منه التوفيق بين القولين بحمل الاول على ما اذا صرح الشهود بانها قالت اجزت اورضيت وحمل الثانى على ما اذا اشهدوا بانها اجازت اورضيت باحتمال اجازتها بالسكوت فافهم اھ ملتقطا، وفي الهندية لو اقام الزوج البينة انها اجازت العقد حين اخبرت واقامت البينة انها ردت

(Evidence for both sides) are equal, but the testimony from the husband's side, along with proving the marriage, also establishes its binding nature (luzum), due to which it will be preferred. This is stated as such in the commentaries (shuruh) and attributed to Al-Timurtashi in 'Al-Nihayah'. It is the same in many books of jurisprudence (Fiqh), but in 'Al-Khulasah', it is narrated from Khassaf's 'Adab al-Qadi' that the testimony from the girl's side will be preferred. Thus, a difference of opinion among the senior scholars (masha'ikh) has emerged in this matter. It is possible that the reason for this is that the binding nature of the marriage might not be established solely by the girl's testimony through silence (sukut); therefore, the husband's testimony might not be more conclusive unless the witnesses explicitly mention the granting of permission. This is also stated in 'Al-Fath', and 'Al-Bahr' has followed it. The conclusion drawn from this is that the reconciliation between the two opinions is as follows: the first opinion, which prefers the husband's testimony, is to be applied to the case where the witnesses explicitly state that the girl said, "I give my permission" or "I am pleased." The second opinion, which prefers the girl's testimony, is to be applied to the case where the witnesses state in their testimony, "She gave permission" or "She was pleased," in which the witnesses have deemed her silence as consent. Reflect on this. [Summarized from source]. And in 'Al-Hindiyyah', it says: If the husband presents evidence that when the girl (received news of) the marriage...

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/303. Page 579 of 739

फ़तावा रिज़विया जिल्द ग्यारहवीं

وزيادة بينة باثبات اللزوم كذا فى الشروح وعزاه فى النهاية للتمرتاشى وكذا هو فى غير كتاب من الفقه لكن فى الخلاصة عن ادب القاضى للخصاف ان بينتها اولى ففى هذه الصورة اختلاف المشائخ ولعل وجهه ان السكوت لما كان مبا تحق الاجازة به لم يلزم من الشهادة بالاجازة كونها بامر زائد على السكوت مالم يصرحوا بذلك كذا في الفتح وتبعه فى البحر واستفيد منه التوفيق بين القولين بحمل الاول على ما اذا صرح الشهود بانها قالت اجزت اورضيت وحمل الثانى على ما اذا اشهدوا بانها اجازت اورضيت باحتمال اجازتها بالسكوت فافهم اھ ملتقطا، وفي الهندية لو اقام الزوج البينة انها اجازت العقد حين اخبرت واقامت البينة انها ردت

(दोनों पक्ष के साक्ष्य) समान हैं लेकिन पति की ओर से गवाही में निक़ाह के प्रमाण के साथ निक़ाह की अनिवार्यता (लुज़ूम) भी सिद्ध होती है जिसकी वजह से इसे प्राथमिकता दी जाएगी। व्याख्याओं (शरुह) में ऐसा ही वर्णन है, और इसे 'अल-निहाया' में तिमुरताशी की ओर संबंधित किया गया है। फ़िक़्ह की बहुत सी किताबों में ऐसा ही है लेकिन 'अल-खुलासा' में खस्साफ़ की 'अदब अल-क़ाज़ी' से उद्धृत है कि लड़की की ओर की गवाही को प्राथमिकता दी जाएगी। तो इस तरह इस मसले में आचार्यों (मशाइख़) का मतभेद सामने आया है। संभव है इसकी वजह यह हो कि चुप्पी (सुकूत) पर लड़की की गवाही से निक़ाह की अनिवार्यता सिद्ध न होती हो, अतः इस तरह पति की ओर से गवाही अधिक सिद्ध न कर सकती हो जब तक कि गवाह स्पष्ट रूप से अनुमति की बात न करें। ऐसा ही 'अल-फ़तह' में है और इसका अनुसरण 'अल-बहर' ने किया है। इससे निष्कर्ष यह निकला कि दोनों मतों में अनुकूलता इस प्रकार होगी कि पहले, यानी पति की गवाही की प्राथमिकता को उस स्थिति पर लागू करें जब गवाहों ने स्पष्ट किया हो कि लड़की ने कहा है "मैं अनुमति देती हूँ या राज़ी हूँ"। और दूसरे मत, यानी लड़की की गवाही की प्राथमिकता को उस स्थिति पर लागू करेंगे जब गवाहों ने गवाही में कहा हो कि "उसने अनुमति दी या वह राज़ी हुई थी", जिसमें गवाहों ने चुप्पी को रज़ा (सहमति) मान लिया हो। इस पर विचार करें। [स्रोत से संक्षेपित]। और 'अल-हिंदिया' में है कि यदि पति यह गवाही पेश करे कि लड़की को जब निक़ाह (की सूचना मिली)...

1. रद अल-मुह्तार, अध्याय: अभिभावक (बाबु-वली), दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 303/2 पृष्ठ 739 का 579

وزیادة بینة باثبات اللزوم کذا فی الشروح وعزاہ فی النھایة للتمرتاشی وکذا ھو فی غیر کتاب من الفقه لکن فی الخلاصة عن ادب القاضی للخصاف ان بینتھا اولی ففی ھذہ الصورة اختلاف المشائخ ولعل وجھه ان السکوت لما کان مبا تحق الاجازة به لم یلزم من الشھادة بالاجازة کونھا بامر زائد علی السکوت مالم یصرحوا بذلك کذا في الفتح وتبعه فی البحر واستفید منه التوفیق بین القولین بحمل الاول علی ما اذا صرح الشھود بانھا قالت اجزت اورضیت وحمل الثانی علی ما اذا اشھدوا بانھا اجازت اورضیت باحتمال اجازتھا بالسکوت فافھم اھ ملتقطا، وفي الھندیة لو اقام الزوج البینة انھا اجازت العقد حین اخبرت واقامت البینة انھا ردت مساوی ہیں لیکن خاوند کی طرف سے گواہی میں نکاح کے ثبوت کے ساتھ لزوم نکاح بھی ثابت ہوتی ہے جس کی وجہ سے اس کو ترجیح ہوگی، شروح میں ایسے ہی بیان ہے، اور اس کو نہایہ میں تمرتاشی کی طرف منسوب کیا ہے، بہت سی کتب فقہ میں ایسے ہی ہے لیکن خلاصہ میں خصاف کی ادب القاضی سے منقول ہے کہ لڑکی کی طرف کی گواہی کو ترجیح ہوگی، تو اس طرح اس مسئلہ میں مشائخ کا اختلاف سامنے آیا ہے، ہوسکتا ہے اس کی وجہ یہ ہو کہ سکوت پر لڑکی کی شہادت سے لزوم نکاح متحقق نہ ہوتا ہو لہٰذا یوں خاوند کی طرف سے شہادت زیادہ اثبات نہ کرسکتی ہو جب تک کہ گواہ صراحتہ اجازت کی بات نہ کریں، یوں ہی فتح میں ہے اور اس کی اتباع بحر نے کی ہے، اس سے حاصل یہ ہوا کہ دونوں قولوں میں موافقت یوں ہوگی کہ پہلے یعنی خاوند کی شہادت کی ترجیح کو اس صورت پر محمول کریں کہ جب گواہوں نے تصریح کی ہو کہ لڑکی نے کہا ہے "میں اجازت دیتی ہوں_ یا راضی ہوں" اور دوسرے قول یعنی لڑکی کی شہادت کی ترجیح کو اس صورت پر محمول کریں گے کہ گواہوں نے شہادت میں کہا ہو کہ "اس نے اجازت دی یا راضی ہوئی تھی" جس میں گواہوں کے سکوت کو

رضا قرار دیا ہو، اس میں غور کرو، اھ ملتقطا، اور ہندیہ میں ہے اگر خاوند یہ شہادت پیش کرے کہ لڑکی کو جب نکاح (کی اطلاع ملی تو) اس نے اجازت دی۔

1 ردالمختار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۳/۲ Page 579 of 739

Fatawa Razawiya Volume 11

[Arabic]: When she was informed, the proof was that of the husband, as stated in Al-Siraj al-Wahhaj. 1- [Urdu Translation]: When she received the news, she validated the marriage, while the girl presented evidence that when she received the news, she had rejected it; in this case, the husband's testimony will be considered valid. This is also mentioned in Siraj-ul-Wahhaj. (T)

As for the father's displeasure, it does not interfere with the validity and execution of the marriage as long as the woman is free, sane, an adult, and the husband is a suitable match (Kufu).

[Arabic]: In Al-Durr al-Mukhtar: The marriage of a free, legally responsible adult woman without the guardian's consent is valid, and the fatwa is for its invalidity if it is with a non-Kufu (not a suitable match). Summarized. And in it: An adult virgin shall not be forced into marriage because the authority of compulsion ceases upon reaching puberty. 2, 3 Summarized. [Urdu Translation]: It is in Durr-e-Mukhtar: The marriage of a free, sane, adult woman is correct without the consent of the guardian, and if this marriage was with a non-Kufu, then the fatwa would be for it being impermissible. Summarized. And it is also in it that an adult virgin will not be forced regarding marriage because due to reaching puberty, the guardian's authority over her ends. (T)

Yes, if a serious deficiency occurs in the 'Mahr-e-Mithl' (customary dowry), the father has the right to object until the 'Mahr-e-Mithl' is completed or the judge separates the husband and wife.

[Arabic]: In Al-Durr al-Mukhtar: If she marries for less than her dowry, the agnate guardian has the right to object until her customary dowry is completed or the judge separates them to prevent shame. 4 Allah knows best. [Urdu Translation]: It is in Durr-e-Mukhtar: If a sane adult woman married for a small dowry, the agnate guardian has the right to object until the dowry is named; either complete the 'Mahr-e-Mithl' or the judge separates the husband and wife so that the guardian's shame can be removed. And Allah knows best. (T)

Problem 335: From Mahadpur, Indore region, sent by Haji Yaqub Ali Khan Sahib, 23 Rabi al-Awwal Sharif 1315 AH. What do the scholars of the religion say in this matter: Hind's father had married off his daughter at the age of four; when she reached the

age of discernment, she does not like or accept that husband. In this case, is her marriage valid or...

1. Fatawa Hindiyyah, Book of Guardians, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/289
2. Al-Durr al-Mukhtar, Book of the Guardian, Matba' Mujtabai Delhi, 1/191
3. Al-Durr al-Mukhtar, Book of the Guardian, Matba' Mujtabai Delhi, 1/191
4. Al-Durr al-Mukhtar, Book of Kafa'ah (Suitability), Matba' Mujtabai Delhi, 1/195

[अरबी]: जब उसे सूचित किया गया, तो प्रमाण पति का था, जैसा कि अल-सिराज अल-वहज में है। 1- [उर्दू अनुवाद]: जब उसे खबर मिली तो उसने निकाह को जायज़ करार दिया, और लड़की यह गवाही पेश करे कि जब मुझे खबर मिली तो मैंने उसे खारिज कर दिया था; तो इस सूरत में शौहर की गवाही मोतबर होगी, जैसा कि सिराज-उल-वहाज में है। (त)

रही बाप की नाराज़गी, वह निकाह की सेहत और निफाज़ (कार्यान्वयन) में खलल अंदाज़ नहीं होती जबकि औरत आज़ाद, आकिला (बुद्धिमान), बालिगा हो और शौहर कुफू(बराबर का) हो।

[अरबी]: अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: आज़ाद, मुकल्लफ (ज़िम्मेदार) बालिगा का अपना निकाह वली की रज़ा के बिना सही है, और अगर यह निकाह गैर-कुफू से हुआ तो इसके नाजाएज़ होने का फ़तवा होगा। और इसी में है: बालिगा बाकिरा (कुंवारी) पर निकाह के लिए जबर नहीं किया जाएगा क्योंकि बुलूग (वयस्कता) की वजह से उस पर जबर की विलायत खत्म हो जाती है। [उर्दू अनुवाद]: दर्रे मुख्तार में है: आज़ाद, आकिला, बालिगा का अपना निकाह वली की रज़ा के बिना सही है, और अगर यह निकाह गैर-कुफू से हुआ तो नाजाएज़ होने का फ़तवा होगा, और इसी में है कि बाकिरा बालिगा पर निकाह के बारे में जबर नहीं किया जाएगा क्योंकि बुलूग की वजह से उस पर जबर की विलायत खत्म हो जाती है। (त)

हाँ, अगर महर-ए-मिस्ल (प्रचलित मेहर) में कमी-ए-फाश (बड़ी कमी) वाक़े हुई तो बाप को हक़-ए-एतराज़ हासिल है यहाँ तक कि महर-ए-मिस्ल पूरा कर दिया जाए या क़ाज़ी शौहर और बीवी में तफ़रीक़ (अलग) कर दे।

[अरबी]: अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: अगर उसने अपने महर से कम पर निकाह किया, तो असबा वली को एतराज़ का हक़ है जब तक कि उसका महर-ए-मिस्ल पूरा न हो जाए या क़ाज़ी उनके बीच आर (शर्म) को दूर करने के लिए जुदाई कर दे। [उर्दू अनुवाद]: दर्रे मुख्तार में है: अगर आकिला बालिगा ने कम महर पर निकाह किया तो वली असबा को महर नाम करने तक एतराज़ का हक़ है; महर-ए-मिस्ल पूरा करे या फिर क़ाज़ी खाविन्द और बीवी में तफ़रीक़ कर दे ताकि वली की आर खत्म हो सके। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला ३३५: महदपुर, इलाक़ा इंदौर से हाजी यकूब अली ख़ान साहब की जानिब से भेजा गया, २३ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३१५ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि हिंद के बाप ने

अपनी बेटी का निकाह चार साल की उम्र में कर दिया था, जब वह शऊर के दिनों को पहुंची तो वह उस शौहर को पसंद और कबूल नहीं करती, इस सूरत में क्या उसका निकाह जायज़ है या...

1. फ़तावा हिन्दिया, बाब-उल-औलिया, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/289
2. दर्रे मुख्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुजतबाई देहली, 1/191
3. दर्रे मुख्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुजतबाई देहली, 1/191
4. दर्रे मुख्तार, बाब-उल-कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई देहली, 1/195

पृष्ठ ७३९ में से ५८०

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

حین اخبرت کانت البینۃ بینۃ الزوج کذا فی السراج الوھاج ۱۔ کی خبر ملی تو اس نے نکاح کو جائز قرار دیا، اور لڑکی یہ شہادت پیش کرے جب مجھے خبر ملی تو رد کر دیا تھا تو اس صورت میں خاوند کی شہادت معتبر ہوگی، یونہی سراج وہاج میں ہے۔ (ت)

رہی باپ کی ناراضی، وہ صحت و نفاذ میں خلل انداز نہیں جبکہ عورت حرہ، عاقلہ، بالغہ اور شوہر کفو ہے،

فی الدر المختار نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلارضی ولی ویفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا ۲ اہ ملخصاً وفیہ لاتجبر البالغۃ البکر علی النکاح لانقطاع الولایۃ بالبلوغ ۳ اہ در مختار میں ہے: آزاد، عاقلہ، بالغہ کا اپنا نکاح ولی کی رضا کے بغیر صحیح ہے، اور یہ نکاح غیر کفو سے ہوا تو ناجائز ہونے کا فتوی ہوگا اہ ملخصاً، اور اسی میں ہے کہ باکرہ بالغہ پر نکاح کے بارے میں جبر نہیں کیا جائے گا کیونکہ بلوغ کی وجہ سے اس پر جبر کی ولایت ختم ہو جاتی ہے اہ (ت)

ہاں اگر مہر مثل میں کمی فاحش واقع ہوئی تو باپ کو حق اعتراض حاصل ہے یہاں تک کہ مہر مثل پورا کر دیا جائے یا قاضی زن و شوہر میں تفریق کردے،

فی الدر المختار لو نکحت باقل من مھرھا فللولی العصبۃ الاعتراض حتی یتم مھر مثلھا اویفرق القاضی بینھما دفعا للعار ۴ اہ واللہ تعالٰی اعلم۔ در مختار میں ہے: اگر عاقلہ بالغہ نے قلیل مہر پر نکاح کیا تو ولی عصبہ کو مہر نام کرنے تک اعتراض کا حق ہے مہر مثل تام کرے یا پھر قاضی خاوند بیوی میں تفریق کردے تاکہ ولی کی عار ختم ہوسکے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۳۵: از مہد پور علاقہ اندور مرسلہ حاجی یعقوب علی خاں صاحب ۲۳ ربیع الاول شریف ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پدر ہندہ نے نکاح اپنی دختر کا بعمر چہار سالہ کیا تھا، جب وہ ایام شعور پر فائز ہوئی تو اس شوہر کو پسند و قبول نہیں کرتی ،اس صورت میں نکاح اس کا جائز ہے یا

۱ فتاویٰ ہندیہ باب الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۹ ۲ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ ۳ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ ۴ در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۵

...cancelled? And after the separation of the couple, does the responsibility for her dowry (mahr) fall on the husband or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: The marriage contracted by a father for his minor child is generally binding, such that the minor does not have the right to object to it even after reaching puberty. This applies even if the marriage is outside of 'Kufu' (compatibility) or if there is gross deception (Ghabn-e-Fahish) in the dowry. For example, if he marries off a daughter into a low-caste family, to someone with a lowly profession, or to a sinful (fasiq) slave, or if her customary dowry (Mahr al-Mithl) is one thousand rupees but he contracts the marriage for five hundred or one hundred. Or if he marries off a son to a bondwoman or an immoral woman, it is binding and irrevocable. However, there are two exceptions: first, if the father was intoxicated while performing such a marriage contrary to paternal affection; second, if he had previously displayed such lack of affection in the marriage of any of his other children, then such a marriage would be illegitimate.

(Arabic Text)

In 'al-Durr al-Mukhtar', it is stated that the marriage is binding even with gross deception by a decrease in her dowry or an increase in his dowry, or if it is without compatibility (kufu), provided the guardian contracting it himself is the father or grandfather from whom bad choices are not known. If bad choices are known, the marriage is not valid by consensus. Similarly, if he was intoxicated and married her to a sinful person, an evil person, a poor person, or someone with a lowly profession, because the badness of his choice is evident, it is not countered by his presumed paternal affection (Bahr). Ah. And in

(Urdu Translation)

In 'Durr al-Mukhtar' it is said: If the guardian performing the marriage is the father or grandfather himself, then the marriage performed by him will become binding, whether the girl's dowry is extremely low or a very high dowry has been accepted for the boy, or the marriage is outside of 'kufu', provided that the father and grandfather are not previously known for misusing their authority. And if they are known for misusing their authority, then by consensus, the marriage in the aforementioned cases will not be valid. And similarly, if the father or grandfather, while intoxicated, married the girl to a sinful, malicious, or poor person or someone from a lowly profession, then this would be a misuse of authority. In this case, the presumed affection of the father or

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
'Radd al-Muhtar', if he marries his daughter to a sinful person, it is valid even if it is certain that he makes bad choices and is famous for it among people...	grandfather will not prevent this action from being declared wrong, and it will be called 'bad choice' (su-e-ikhtiyar). Bahr, Ah. And in 'Radd al-Muhtar' it is stated that marrying a daughter to a sinful person is valid even if...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian (Bab al-Wali), Mujtabai Press Delhi, 1/192.

फतावा रजविया - खंड 11

...निरस्त? और दंपति के अलग होने के बाद, उसके मेहर (दहेज) का दायित्व पति पर लागू होता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पिता जो अपने नाबालिग बच्चे का निकाह कर देता है, वह पूर्णतः अनिवार्य होता है, यहाँ तक कि नाबालिग को वयस्क होने के बाद भी इस पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं होता। भले ही निकाह 'कुफ़ु (समानता) से बाहर हो या मेहर में भारी धोखाधड़ी (ग़बन-ए-फ़ाहिश) हो। उदाहरण के लिए, यदि वह अपनी बेटी का निकाह किसी निम्न जाति के परिवार, किसी नीच पेशे वाले व्यक्ति, या किसी पापी (फासिक़) गुलाम से कर दे, या उसका 'मेहर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) एक हजार रुपये हो लेकिन वह पांच सौ या सौ पर निकाह कर दे। या वह बेटे का निकाह किसी दासी या अनैतिक स्त्री से कर दे, तो यह अनिवार्य और अपरिवर्तनीय है। लेकिन दो स्थितियों में: पहला यह कि पिता ने ऐसा निकाह पितृ प्रेम के विपरीत करते समय नशे में हो, दूसरा यह कि इससे पहले भी वह अपने किसी बच्चे के निकाह में ऐसी ही निर्दयता दिखा चुका हो, तो फिर यह निकाह नाजायज होगा।

(अरबी पाठ)

'अल-दुरुल मुख्तार' में उल्लेख है कि निकाह अनिवार्य है चाहे मेहर की कमी या मेहर की अधिकता में भारी धोखा हो, या बिना कुफु (समानता) के हो, यदि निकाह करने वाला अभिभावक स्वयं पिता या दादा हो जिनसे गलत चुनाव की जानकारी न हो। यदि गलत चुनाव की जानकारी हो, तो सर्वसम्मति से निकाह मान्य नहीं है। इसी तरह, यदि वह नशे में था और उसने उसका निकाह किसी पापी, दुष्ट, गरीब या नीच पेशे वाले से कर दिया, क्योंकि उसके गलत चुनाव की बात स्पष्ट है, तो उसके अनुमानित पितृ प्रेम (बहर) द्वारा इसका विरोध नहीं किया जाएगा। अह्। और

(उर्दू अनुवाद)

'दुर-ए-मुख्तार' में है: यदि निकाह करने वाला अभिभावक स्वयं पिता या दादा हो, तो उसके द्वारा किया गया निकाह अनिवार्य हो जाएगा, चाहे लड़की का मेहर बहुत कम हो या लड़के के लिए बहुत अधिक मेहर स्वीकार कर लिया गया हो, या निकाह 'कुफु के बाहर हो, इस शर्त के साथ कि पहले पिता और दादा अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल करने के लिए प्रसिद्ध न हों। और यदि वे गलत अधिकार के लिए प्रसिद्ध हैं, तो सर्वसम्मति से उल्लिखित स्थितियों में निकाह वैध नहीं होगा। और इसी तरह, अगर पिता या दादा ने नशे की हालत में लड़की का निकाह किसी पापी, दुष्ट या गरीब व्यक्ति या किसी नीच पेशे वाले से कर दिया, तो यह अधिकार का गलत

(अरबी पाठ)

'रद-उल-मुह्तार' में है कि यदि उसने अपनी बेटी का निकाह किसी पापी से कर दिया तो वह वैध है, भले ही यह निश्चित हो कि वह गलत चुनाव करता है और लोगों के बीच इसके लिए प्रसिद्ध है...

(उर्दू अनुवाद)

इस्तेमाल होगा। इस स्थिति में, पिता या दादा के अनुमानित स्नेह को इस कदम को गलत ठहराने में बाधा नहीं माना जाएगा और इसे 'गलत चुनाव' (सू-ए-इख़्तियार) कहा जाएगा। 'बहर', अह्। और 'रद-उल-मुह्तार' में है कि पापी से बेटी का निकाह करना सही है, भले ही...

[1] दुर-ए-मुख्तार, अभिभावक का अध्याय (बाब अल-वली), मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/192। पृष्ठ 739 का 581

فتاویٰ رضویہ - جلد یاز دہم

منسوخ؟ اور بعد جدائی زوجین مہر اس کا ذمہ شوہر پر عائد ہوتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: باپ جو اپنے نابالغ بچے کا نکاح کر دے وہ مطلقاً لازم ہوتا ہے کہ نابالغ کو بعد بلوغ بھی اس پر اعتراض کا حق نہیں ہوتا اگرچہ نکاح غیر کفو سے یا مہر میں غبن فاحش کر دے، مثلاً دختر کو کسی رذیل قوم یا کسی ذلیل پیشہ والے یا غلام فاسق کے نکاح میں دے یا اس کا مہر مثل ہزار روپے ہو پانسو یا سو پر نکاح کر دے یا پسر کا نکاح کسی کنیز یا فاسقہ فاجرہ سے کرے لازم و ناقابل فسخ ہے مگر دو صورتوں میں، ایک یہ کہ ایسا نکاح خلاف شفقت پدری کرتے وقت باپ نشے میں ہو، دوسرے یہ کہ اس سے پہلے بھی اپنے کسی بچے کے نکاح میں ایسی ہی بے شفقتی برت چکا ہو تو البتہ یہ نکاح نا جائز ہوگا،

(عربی عبارت) **(اردو ترجمہ)**

في الدر المختار لزم النكاح ولو بغبن فاحش بنقص مهرها وزيادة مهره او بغير كفوان كان الولى المزوج بنفسه ابا اوجدا لم يعرف منهما سوء الاختيار وان عرف لا يصح النكاح اتفاقاً وكذا لو كان سكران فزوجها من فاسق او شرير او فقير او ذي حرفة دنيئة لظهور سوء اختياره فلا تعارضه

در مختار میں ہے: اگر نکاح کرنے والا ولی خود باپ یا دادا ہو تو اس کا کیا ہوا نکاح لازم ہو جائے گا خواہ لڑکی کا مہر انتہائی قلیل ہو یا لڑکے پر مہر بہت زیادہ مان لیا ہو یا نکاح غیر کفو میں ہو بشرطیکہ پہلے باپ دادا اپنے اختیار کو غلط استعمال کرنے میں معروف نہ ہوں، اور اگر وہ غلط اختیار میں معروف ہوں تو پھر بالاتفاق مذکورہ صورتوں میں نکاح صحیح نہ ہوگا۔ اور اگر یو نہی باپ یا دادا نے نشے میں ہوتے ہوئے لڑکی کا نکاح فاسق یا شر پسند یا فقیر یا کسی

(عربی عبارت)

شفقته المظنونة بحر [1] اه وفي ردالمحتار زوج بنته من فاسق صح وان تحقق بذلك انه سيئ الاختيار واشتهر به عند الناس فلو

(اردو ترجمہ)

کمینے کسبی سے کر دیا تو یہ اختیار کا غلط استعمال ہوگا تو اس صورت میں باپ دادا کی مظنونہ شفقت اس اقدام کو غلط قرار دینے میں آڑے نہ آئے گی اور یہ سوء اختیار کہلائے گا، بحر، اھ، اور رد المحتار میں ہے کہ فاسق سے بیٹی کا نکاح کیا تو صحیح ہوگا اگرچہ

[1] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ Page 581 of 739

[Arabic Column Text] If he married another daughter to a transgressor (fasiq), the second marriage is not valid because he was already known for his poor choice prior to this, unlike the first contract (1) etc. In it is the statement: ‘So he married her to a transgressor, and similarly if he married her with an excessive deficiency (ghabn-e-fahish) in the dower (mahr), it is not permissible by consensus. And the sober one is permitted,’ reported in Bahr from Dhakhirah. Then it says: ‘And similarly the intoxicated person if he marries (someone) to an incompatible person (ghair-kufw) as in Al-Khaniyah, and from this, it is known that what is meant by ‘father’ is one who is not intoxicated and is not known for poor choice’ (2) ah. And in Al-Khaniyah: ‘If a man marries his son to a woman for more than her customary dower (mahr-e-mithl), or marries his minor daughter for less than her customary dower, or gives her to an incompatible person, or marries his minor son to a woman who is not compatible with him, it is permissible according to the opinion of Imam Abu Hanifah (may Allah be pleased with him). His two companions (may Allah Almighty have mercy on them) said: "It is not permissible if it is excessive." And they reached a consensus that it is not permissible from anyone other than the father and the grandfather, nor from the Judge’ (3) ah.

[Urdu Column Text] This is a case of poor choice due to which the father's misuse of authority becomes well-known among people. So, if he married a second daughter to some transgressor, then this second marriage would not be valid because before this, he had become famous for the misuse of authority (poor choice), whereas at the time of the first girl's marriage, he was not so known. Similarly, if he accepted an extremely low dower in the second daughter's marriage, this dower would not be valid; this is a matter of consensus. It is quoted from Dhakhirah in Bahr, after which it was said in Radd-ul-Muhtar: ‘Similarly, if a father in a state of intoxication performed a marriage into an incompatible family, the marriage will not be valid as stated in Khaniyah.’ From this, it is known that father refers to one who is not intoxicated and is not famous for poor choice, ah. And it is in Khaniyah: ‘If someone married off his boy to such a woman at more than the customary dower (mahr-e-mithl), or married off a minor daughter at an extremely low dower or to an incompatible person, or married off a minor son to a slave girl or an incompatible woman, then according to the statement of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) the marriage is valid, and according to the statement of his two companions (may Allah Almighty have mercy on them) the marriage is invalid. And there is a consensus on this point

that such a marriage performed by anyone other than the father and grandfather and the judge will not be valid,' ah, and in Al-Bahr-ur-Raiq.

[Footnotes] 1. Radd-ul-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya-ut-Turath-il-Arabi, Beirut, 5/304 2. Radd-ul-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya-ut-Turath-il-Arabi, Beirut, 5/305 3. Fatawa Qazi Khan, Section on Guardians, Munshi Naval Kishore, Lucknow, 1/164

[अरबी कॉलम का पाठ] यदि उसने दूसरी बेटी का निकाह किसी फ़ासिक (पापी/उल्लंघनकर्ता) से कराया, तो दूसरा निकाह वैध नहीं है क्योंकि वह इससे पहले अपने ख़राब चुनाव के लिए प्रसिद्ध हो चुका था, पहले अनुबंध के विपरीत (1) आदि। इसमें यह कथन है: 'अतः उसने उसका निकाह एक फ़ासिक से कराया, और इसी तरह यदि उसने मेहर में अत्यधिक कमी (ग़बन-ए-फ़ाहिश) के साथ उसका निकाह कराया, तो यह सर्वसम्मति से जायज़ नहीं है। और होश में रहने वाला अनुमति देता है,' बहर ने ज़ख़ीरा के हवाले से कहा। फिर कहा: 'और इसी तरह, यदि कोई नशे में धुत व्यक्ति किसी अयोग्य (ग़ैर-कुफ़्व) से निकाह कराता है जैसा कि खानिया में है, और इससे यह ज्ञात होता है कि 'पिता' से तात्पर्य वह है जो नशे में न हो और अधिकार के दुरुपयोग के लिए प्रसिद्ध न हो' (2) अह। और खानिया में है: 'यदि कोई व्यक्ति अपने बेटे का निकाह किसी ऐसी महिला से मेहर-ए-मिस्ल (प्रचलित मेहर) से अधिक पर कराता है, या अपनी नाबालिग बेटी का निकाह मेहर-ए-मिस्ल से कम पर कराता है, या उसे किसी अयोग्य व्यक्ति के साथ बिठाता है, या अपने नाबालिग बेटे का निकाह ऐसी महिला से कराता है जो उसके योग्य नहीं है, तो इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुसार यह जायज़ है। उनके दो साथियों (रहमतुल्लाहि अलैहिम) ने कहा: "यदि यह अत्यधिक हो तो जायज़ नहीं है।" और उन्होंने सर्वसम्मति जताई कि पिता और दादा के अलावा किसी और से, और न ही क़ाज़ी से यह जायज़ है' (3) अह।

[उर्दू कॉलम का पाठ] यह अधिकार का दुरुपयोग है जिसके कारण पिता का अधिकार का गलत इस्तेमाल लोगों के बीच प्रसिद्ध हो जाएगा। तो अगर उसने दूसरी बेटी का निकाह किसी फ़ासिक से किया, तो यह दूसरा निकाह सही नहीं होगा क्योंकि इससे पहले वह अधिकार के गलत इस्तेमाल (ख़राब चुनाव) में प्रसिद्ध हो चुका है, जबकि पहली लड़की के निकाह के समय ऐसा प्रसिद्ध नहीं था। इसी तरह अगर उसने दूसरी बेटी के निकाह में अत्यंत कम मेहर स्वीकार किया तो यह मेहर जायज़ नहीं होगा, यह सर्वसम्मति है। बहर में ज़ख़ीरा से उद्धृत है जिसके बाद रद-उल-मुह्तार में कहा गया है: 'इसी तरह अगर नशे की हालत में पिता ने ग़ैर-कुफ़्व से निकाह किया तो निकाह नहीं होगा जैसा कि खानिया में है।' इससे पता चला कि पिता से मुराद वह है जो नशे में न हो और ख़राब चुनाव (सू-ए-इख़्तियार) में मशहूर न हो। अह। और खानिया में है: 'अगर किसी ने अपने लड़के का निकाह किसी ऐसी औरत से मेहर-ए-मिस्ल से अधिक पर कर दिया या नाबालिग बेटी का निकाह अत्यंत कम मेहर या ग़ैर-कुफ़्व में कर दिया, या नाबालिग बेटे का निकाह लौंडी या ग़ैर-कुफ़्व वाली औरत से कर दिया,

तो इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कौल पर निकाह सही है, और उनके साहिबैन (रहमतुल्लाहि अलैहिमा) के कौल पर निकाह नाज़ायज़ है। और इस बात पर इजमा (सर्वसम्मति) है कि ग़ैर-बाप और दादा और क़ाज़ी का किया हुआ यह निकाह जायज़ न होगा।’ अह और बहर-उर-राइक़।

[पादलेख] 1. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 5/304 2. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 5/305 3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़िल औलिया, मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, 1/164

पृष्ठ 582/739

زوج بنتاً اخری من فاسق لم یصح الثانی لانه کان مشھورًا بسوء الاختیار قبله بخلاف العقد الاول ۱ الخ وفیه قوله فزوجها من فاسق وکذا لو زوجها بغبن فاحش فی المھر لا یجوز اجماعاً والصاحی یجوز بحر عن الذخیرة ثم قال وکذا السکران لو زوج من غیر الکفوء کما فی الخانیة وبه علم ان المراد بالاب من لیس بسکران ولا عرف بسوء الاختیار ۲ اھ وفی الخانیة اذا زوج الرجل ابنه امرأةً بأکثر من مھر مثلها اوزوج بنته الصغیرة بأقل من مھر مثلها او وضعها فی غیر کفوء او زوج ابنه الصغیرة او امرأةً لیست بکفوله جاز فی قول ابی حنیفة رضی اللہ تعالی عنه وقال صاحباہ رحمھما اللہ تعالی لا یجوز ان فحش واجمعوا علی انه لا یجوز ذلك من غیر الاب والجد ولا من القاضی ۳ اھ

یہ سوء اختیار ہے جس کی بنا پر باپ اختیار کے غلط استعمال میں لوگوں کے ہاں معروف ہو جائے گا تو اس نے اگر دوسری بیٹی کا نکاح کسی فاسق سے کیا تو یہ دوسرا نکاح صحیح نہ ہوگا کیونکہ قبل ازیں وہ اختیار کے غلط استعمال (سوء اختیار) میں مشہور ہو چکا ہے جبکہ پہلی لڑکی کے نکاح کے وقت ایسا معروف نہ تھا ، یوں ہی اگر اس نے دوسری بیٹی کے نکاح میں انتہائی قلیل مہر قبول کیا تو یہ مہر جائز نہ ہوگا یہ اجماع ہے، بحر میں ذخیرہ سے منقول کہ اس کے بعد ردالمحتار میں کہا یونہی اگر نشے کی حالت میں باپ نے غیر کفو سے کیا تو نکاح نہ ہوگا جیسا کہ خانیہ میں ہے، اس سے معلوم ہوا کہ باپ سے مراد وہ ہے جو نشہ میں نہ ہو اور سوء اختیار میں مشہور نہ ہو ، اھ، اور خانیہ میں ہے : اگر کسی نے اپنے لڑکے کا کسی ایسی عورت سے مہر مثل سے زائد پر کردیا یا نابالغ بیٹی کا نکاح انتہائی کم مہر یا غیر کفو میں کردیا، یا نابالغ بیٹے کا نکاح لونڈی یا غیر کفو والی عورت سے کردیا تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے قول پر نکاح صحیح

ہے، اور ان کے صاحبین رحمہما اللہ تعالیٰ کے قول پر نکاح ناجائز ہے ، اور اس بات پر اجماع ہے کہ غیر باپ اور دادا اور قاضی کا کیا ہوا یہ نکاح جائز نہ ہوگا اھ اور بحر الرائق

۱ ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۴/۵ ۲ ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ ۳ فتاوی قاضی خاں فصل فی الاولیاء منشی نولکشور لکھنو ۱/۱۶۴

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

[Box 1 - Arabic text and Urdu translation] In Al-Bahr al-Ra'iq and then Al-Khayriyyah, it is stated that the apparent view of the jurists is that if a father is known for making poor choices, his marriage contract for [the girl] with less than the 'mahr al-mithl' (customary dowry), or for [the boy] with more than the 'mahr al-mithl' with excessive discrepancy, is not valid. Similarly, his marrying them off to a non-compatible person (non-kufu') is not valid, whether the lack of compatibility is due to immorality (fisq) or for any other reason, etc. (T)

In reality, if these situations exist where the marriage is not shari'ah-compliant, then if consummation (intercourse) has not yet occurred, no dowry is fundamentally mandatory. Otherwise, 'mahr al-mithl' must be given.

[Box 2 - Arabic text and Urdu translation] For indeed, intercourse in Dar al-Islam is not free from either a legal penalty (hadd) or a compensatory payment ('uqr/dowry), as they (the jurists) have explicitly stated. And Allah the Almighty knows best. (T)

Case 336: From Amria, District Pilibhit, sent by Saeeduddin Khan Sahib, Chief of Amria, 27 Rabi' al-Awwal 1315 AH.

Question: Submitting to the scholars of religion that a minor girl's father died, and she had no grandfather or brother. Her real paternal uncle married her to a person without the consent of her widowed mother (his brother's wife). Now that the girl has reached puberty, she says, "My marriage is not with this person and I will not do it." I am presenting this request: in the eyes of God and the Prophet (PBUH), has the marriage been annulled or does it remain valid? If it is annulled, can her marriage be performed with someone else? Otherwise, whatever the command is, please clarify and be rewarded.

Answer: In reality, when a minor daughter has no father, grandfather, adult brother, or adult nephew, the paternal uncle is her closest guardian (wali aqrab). The consent or lack thereof from the mother will not be considered in the marriage performed by him. (Tanwir al-Absar)

[Footnote] 1. Bahr al-Ra'iq, chapter on compatibility (Al-Kafa'ah), H.M. Saeed Company Karachi, 3/135.

Page 583 of 739

फतावा रज़विया, जिल्द 11

[बॉक्स 1 - अरबी और उर्दू अनुवाद] अल-बह्र अल-रईक और फिर अल-खैरिया में है कि फुक़हा (इस्लामी न्यायविदों) का ज़ाहिरी कलाम यह है कि बाप जब बुरी पसंद (सो-ए-इख़्तियार) के लिए मशहूर हो जाए, तो लड़की का महरे मिस्ल से कम और लड़के का महरे मिस्ल से ज़्यादा पर निकाह करना, जबकि यह कमी या ज़्यादती बहुत ज़्यादा (ग़बने फ़ाहिश) हो, सही नहीं होगा। और न ही ग़ैर-कुफ़ू (अयोग्य) में दोनों का निकाह करना सही होगा, चाहे वह अयोग्यता फ़िस्क़ (अधर्म) की वजह से हो या किसी और वजह से, आदि। (त)

हकीक़त में अगर ये सूरतें हों जिनमें निकाह शरीयत के हिसाब से जायज़ नहीं है, तो अगर अभी तक हमबिस्तरी (सम्भोग) नहीं हुई है, तो महर बिल्कुल भी लाज़िम नहीं होगा, वरना महरे मिस्ल देना होगा।

[बॉक्स 2 - अरबी और उर्दू अनुवाद] क्योंकि दारुल इस्लाम में संभोग (वति) पर या तो हद (कानूनी सजा) या महर (खर्चे के तौर पर) ज़रूरी है, इसके बिना कोई सूरत नहीं है, जैसा कि फुक़हा का इस पर स्पष्ट आदेश है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मामला 336: अमरिया, जिला पीलीभीत से, सईद-उद-दीन खान साहब, रईस-ए-अमरिया द्वारा प्रेषित, 27 रबी-उल-अव्वल 1315 हिजरी।

सवाल: विद्वानों की सेवा में निवेदन है कि एक नाबालिग छोटी बच्ची जिसके पिता की मृत्यु हो गई थी, और उसका कोई दादा या भाई नहीं था, उसके सगे चाचा ने अपनी मृत भाई की पत्नी, यानी उस नाबालिग लड़की की माँ की सहमति के बिना लड़की का निकाह एक व्यक्ति से कर दिया। अब वह लड़की बालिग हो गई है तो वह कहती है कि "मेरा निकाह उस व्यक्ति के साथ नहीं है और न ही मैं करूँगी।" मैं यह पूछना चाहता हूँ कि अल्लाह और रसूल (स.अ.व.) के नज़दीक निकाह रद्द हो गया या वही निकाह बना रहा? अगर रद्द हो गया तो उसका निकाह दूसरे के साथ किया जाए, अन्यथा जो भी हुक्म हो, स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

जवाब: वास्तव में जब नाबालिग लड़की का न पिता हो, न दादा, न जवान भाई, न जवान भतीजा, तो चाचा ही उसका सबसे क़रीबी वली (अभिभावक) है। उसके द्वारा किए गए निकाह में माँ की सहमति या असहमति का कोई लिहाज़ नहीं होगा। (तन्वीर अल-अबसार)

[पाद-टिप्पणी] 1. बह्र अल-रईक, कुफ़ू (संगतता) के बारे में अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/135.

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

وفي البحر الرائق ثم الخيرية ظاهر كلامهم ان الاب اذا كان معروفا بسوء الاختيار لم يصح عقده باقل من مهر المثل ولابأكثر فی الصغير بغبن فاحش، ولامن غير الكفوء فيهما سواء كان عدم الكفاءة بسبب الفسق اولا الخ۔ پھر خیریہ میں ہے کہ فقہاء کرام کا ظاہر کلام یہ ہے کہ باپ جب سوء اختیار میں مشہور ہو جائے تو لڑکی کا مہر مثل سے کم اور لڑکے کا مہر مثل سے زیادہ جبکہ یہ کمی اور زیادتی انتہائی ہو ، اور غیر کفو میں لڑکی اور لڑکے کا کیا ہوا باپ کا نکاح صحیح نہ ہوگا خواہ غیر کفو فسق کی وجہ سے ہو یا کسی اور وجہ سے ہوالخ (ت)

واقع اگر یہ صورتیں ہوں جن میں نکاح شرعاً جائز نہیں تو اگر ہنوز ہمبستری یعنی جماع حقیقی کا وقوع نہ ہوا مہر اصلاً لازم نہیں ورنہ مہر مثل دینا ہوگا۔

فان الوطء في دار الاسلام لايخلو عن حد اوعقر كما نصوا عليه، واللہ تعالی اعلم۔ کیونکہ دار الاسلام میں وطی پر حد یا مہر بصورت خرچہ ضروری ہے ، اس کے بغیر کوئی صورت نہیں ہے ، جیسا کہ فقہاء کرام کی اس پر نص ہے، واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم -(ت)

مسئلہ ۳۳۶: از امریا ضلع پیلی بھیت مرسلہ سعید الدین خاں صاحب رئیس امریا ۲۷ ربیع الاول ۱۳۱۵ھ عرض بخدمت علمائے دین کہ ایک لڑکی نابالغ صغیر سن کہ والد اس کا فوت ہو گیا، اور دادا اور بھائی اس کا کوئی نہیں تھا، اور اس کے سگے چچا نے اپنے بھائی مرحوم کی زوجہ یعنی اس لڑکی نا بالغہ کی والدہ سے بغیر رضا مندی والدہ اس لڑکی کا نکاح ایک شخص سے کر دیا، اب وہ لڑکی بالغ ہوئی تو وہ کہتی ہے کہ میرا نکاح اس شخص کے ساتھ نہیں اور نہ کروں گی ، عرض پرداز ہوں کہ نزد خدا اور رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم نکاح فسخ ہو گیا یا وہی نکاح قائم

رہا؟ اگر فسخ ہو گیا تو اس کا نکاح دوسرے کے ساتھ کیا جائے ورنہ جیسا حکم ہو ، بینوا توجروا

الجواب: فی الواقع جبکہ دختر نا بالغہ کا نہ باپ ہو نہ دادا، نہ جوان بھائی نہ جوان بھتیجا، تو چچا ہی اس کا ولی اقرب ہے اس کے کئے ہوئے نکاح میں ماں کی رضامندی و نا رضامندی کا لحاظ نہ ہوگا، تنویر الابصار

---

1 بحرالرائق فصل فی الکفاءۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۳۵/۳

Fatawa Rizvia Volume 11

It is mentioned in:

[Box 1 - Arabic]: The guardian (Wali) in marriage is the 'Asaba bi-nafsihi' (agnatic relative) without the mediation of a female, following the order of inheritance and exclusion, provided they are free and legally competent. If there is no agnate, then the guardianship belongs to the mother, etc. (Summarized)

[Box 1 - Urdu Translation/Explanation]: In marriage, the guardian is the 'Asaba bi-nafsihi', meaning those agnates who are not related to the boy or girl through a woman. Their guardianship is based on the order of inheritance and exclusion, provided these agnates are free, adult, and sane. And if there is no agnate, then the mother will have the right of guardianship, etc. (Summarized). (T)

Yes, it will be seen whether the person the uncle married her to is not an 'equal' (Kufu) for the daughter, meaning he belongs to a lower community such that marriage with him is a cause of shame and disgrace, or he has a lowly profession, or is needy, or follows a bad religion, or has bad character. In short, for any reason, it is a situation where marriage with him brings reproach and humiliation to the daughter and her relatives. Or, if the dower (Mahr) fixed by the uncle has a gross deficiency compared to the customary dower (Mahr al-Mithl) of the daughter, such that even among the compromises people make, the deficiency doesn't reach that level—for example, if the customary dower was one thousand rupees and he fixed five hundred. In these cases, the marriage performed by the uncle is completely void (Batil). The daughter is telling the truth that her marriage did not take place. It is mentioned in Durr-e-Mukhtar:

[Box 2 - Arabic]: If the one performing the marriage is someone other than the father or grandfather, then it is not valid at all if it is with a non-equal or with gross misrepresentation (ghabn fahish).

[Box 2 - Urdu Translation/Explanation]: If the person giving away in marriage is other than the father or grandfather, the marriage will not be valid at all in case of extreme deficiency or excess in dower and in the case of a non-equal (non-Kufu). (T)

And if it is free from these two defects—meaning the person she was married to was an equal (Kufu) of the daughter at the time of marriage in the mentioned sense, and no such deficiency was made in the customary dower (Mahr al-Mithl)—then the marriage is valid. However, Hind (the girl) will be given the option that upon reaching

puberty, if she does not like this marriage, she can file a claim and have it annulled. It is mentioned in Tanweer:

[Box 3 - Arabic]: And if it was with an equal and for a customary dower, it is valid, and she has the option of annulment (Khiyar al-Faskh) upon puberty and upon gaining knowledge of the marriage thereafter.

[Box 3 - Urdu Translation/Explanation]: And a marriage performed with a customary dower and within the same social status (Kufu) will be valid, and the girl will have the right to annul it upon reaching puberty or upon being informed after puberty. (T)

---

[1] Durr-e-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193 [2] Durr-e-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 [3] Durr-e-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

इसमें है:

[बॉक्स 1 - अरबी]: निकाह में वली (संरक्षक) वह 'असबा बि-नफ़्सिही' (पितृपक्षीय रिश्तेदार) होता है जो किसी महिला की मध्यस्थता के बिना हो, विरासत और वंचन के क्रम के अनुसार, इस शर्त के साथ कि वे स्वतंत्र और कानूनी रूप से सक्षम हों। यदि कोई 'असबा' न हो, तो विलायत (संरक्षकता) माँ की होगी, इत्यादि। (संक्षेपित)

[बॉक्स 1 - उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण]: निकाह में वली वह 'असबा बि-नफ़्सिही' होता है यानी वे पुरुष रिश्तेदार जो लड़के या लड़की से किसी महिला के माध्यम से संबंधित न हों। उनकी विलायत विरासत और वंचन (हज्र) के क्रम पर आधारित होती है, बशर्ते कि ये लोग स्वतंत्र, वयस्क और बुद्धिमान हों। और अगर कोई 'असबा' न हो तो फिर माँ को विलायत हासिल होगी, इत्यादि। (संक्षेपित)। (त)

हाँ, यह देखा जाएगा कि चाचा ने जिससे निकाह किया, क्या वह उस लड़की का 'कुफ़ू' (सामाजिक समकक्ष) नहीं है, यानी वह कम कौम (नीची जाति) का है जिससे निकाह करना अपमान और शर्म का कारण है, या वह घटिया पेशा करने वाला है, या मोहताज है, या बद-मज़हब (गलत धर्म वाला) या बदचलन है। संक्षेप में, किसी भी कारण से वह ऐसी स्थिति है जिससे निकाह करने में लड़की और उसके रिश्तेदारों की बदनामी और ज़िल्लत है। या चाचा ने जो महर तय किया उसमें लड़की के 'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित महर) में बहुत बड़ी कमी कर दी है, इतनी कि लोग आपस में जो थोड़ी-बहुत कमी करते हैं वह उस स्तर तक नहीं पहुँचती—मिसाल के तौर पर, महर-ए-मिस्ल एक हज़ार रुपये हो और चाचा ने पाँच सौ तय कर दिया हो। तो इन स्थितियों में चाचा द्वारा किया गया निकाह बिल्कुल बातिल (अमान्य) होगा। लड़की सच कह रही है कि उसका निकाह नहीं हुआ। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[बॉक्स 2 - अरबी]: अगर निकाह करने वाला बाप या दादा के अलावा कोई और हो, तो गैर-कुफ़ू (जो बराबर का न हो) या महर में भारी कमी (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) के साथ निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा।

[बॉक्स 2 - उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण]: अगर निकाह देने वाला बाप या दादा का गैर (कोई और) हो, तो महर की अत्यधिक कमी-बेशी से और गैर-कुफ़ू में निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। (त)

और अगर इन दोनों कमियों से खाली है, यानी जिससे निकाह किया वह निकाह के समय लड़की का कुफ़ू (उल्लिखित अर्थ में) था और महर-ए-मिस्ल में भी वैसी कमी नहीं की गई, तो निकाह सही हो गया। लेकिन हिंद (लड़की) को अधिकार दिया जाएगा कि वह चाहे तो वयस्क (बालिग) होने पर इस निकाह को नापसंद करे और दावा करके इसे रद्द (फ़स्ख़) करवा ले। 'तन्वीर' में है:

[बॉक्स 3 - अरबी]: और अगर वह (निकाह) कुफ़ू में और महर-ए-मिस्ल के साथ हुआ है तो सही है, और उसे बालिग होने पर और उसके बाद निकाह की जानकारी मिलने पर इसे रद्द करने का अधिकार (खियार-उल-फ़स्ख़) होगा।

[बॉक्स 3 - उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण]: और महर-ए-मिस्ल और कुफ़ू में किया हुआ निकाह सही होगा और लड़की को बालिग होने पर या बालिग होने के बाद सूचना मिलने पर निकाह रद्द करने का अधिकार होगा। (त)

---

1 दुर्र-ए-मुख़्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाब-उल-वली, मत्वअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/193 2 दुर्र-ए-मुख़्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाब-उल-वली, मत्वअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/192 3 दुर्र-ए-मुख़्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाब-उल-वली, मत्वअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/193

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

میں ہے:

الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ بلاتوسط انثی علی ترتیب الارث والحجب بشرط حریۃ و تکلیف فان لم تکن عصبۃ فالولایۃ للام الخ ملخصاً۔ نکاح میں ولی وہ عصبہ بنفسہ ہوتا ہے یعنی وہ عصبہ جو لڑکے اور لڑکی کی طرف کسی عورت کے واسطہ میں منسوب نہ ہو، ان کی ولایت وراثت اور حجب کی ترتیب پر ہوتی ہے بشرطیکہ یہ عصبہ لوگ آزاد اور بالغ عاقل ہوں، اور اگر عصبہ نہ ہو تو پھر ماں کو ولایت حاصل ہو گی الخ ملخصاً۔ (ت)

ہاں یہ دیکھا جائے گا کہ جس سے چچا نے نکاح کردیا اگر اس دختر کا کفو نہیں یعنی اس سے کم قوم ہے جس کے ساتھ اس کے نکاح میں ننگ و عار ہے یا ذلیل پیشہ یا محتاج یا بد مذہب یا بد رویہ ہے، غرض کسی وجہ سے وہ صورت ہے کہ اس کے ساتھ نکاح میں دختر و اقربائے دختر کی مطعونی وذلت ہے یا مہر جو چچا نے باندھا اس میں دختر کے مہر مثل میں کمی فاحش کردی ہے کہ لوگ اپنے جو نرم گرم کر لیا کرتے ہیں ان میں یہاں تک کمی نہیں پہنچتی مثلاً ہزار روپیہ مہر مثل پانچ سو باندھ دیا ہو، تو ان صورتوں میں وہ چچا کا کیا ہوا نکاح محض باطل ہوا، دختر سچ کہتی ہے کہ میرا نکاح نہ ہوا، در مختار میں ہے:

ان کان المزوج غیر الاب و ابیہ لایصح من غیر کفو او بغبن فاحش اصلا۔ اگر نکاح دینے والا باپ، دادا کا غیر ہو تو مہر کی انتہائی کمی بیشی سے اور غیر کفو میں نکاح بالکل صحیح نہ ہوگا۔ (ت)

اور اگر ان دونوں خللوں میں سے خالی ہے یعنی جس سے نکاح کیا وہ وقت نکاح دختر کا کفو بمعنی مذکور تھا اور مہر مثل میں بھی ویسی کمی نہ کی گئی تو نکاح صحیح ہو گیا مگر ہندہ کو

اختیار دیا جائے گا کہ چاہے بالغہ ہونے پر اس نکاح کو پسند نہ کرے اور دعویٰ کرکے فسخ کرالے، تنویر میں ہے:

وان کان من کفو وبمھر المثل صح ولھا خیار الفسخ بالبلوغ والعلم بالنکاح بعدہ - اور مہر مثل اور کفو میں کیا ہوا نکاح صحیح ہو گا اور لڑکی کو بالغ ہونے یا بلوغ کے بعد اطلاع ملنے پر فسخ کا اختیار ہو گا۔ (ت)

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی 1/193 2 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی 1/192 3 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی 1/193

Volume Eleven Fatawa Razawiyyah

It is stated in it: bi-shart al-qada' lil-faskh (For this annulment, a judicial decree is necessary. - Transl.) But a virgin girl gets this option only to the extent that if she was already aware of the marriage, she must express her disapproval immediately upon reaching puberty, i.e., the moment signs of puberty like menstruation etc. appear or she completes fifteen years of age, without any delay. And if she receives news of the marriage after reaching puberty, she must express her disapproval immediately at that very moment. If she delayed for a moment, or said half a word unrelated to it, or remained silent for a while, or if she was sitting and stood up, or was standing and took a step, and then expressed disapproval, it will not be heard at all and the marriage will become binding. It is stated in Tanwir al-Absar:

Choice of a virgin [ends] with silence [if she is] aware of the marriage and it does not extend to the end of the sitting.	**The silence of an adult virgin girl ends her option when she has knowledge of the marriage. Her option does not remain until the end of the sitting; rather, it ends upon her becoming silent. (Transl.)**

Regarding this minor girl, it is necessary to see whether she expressed disapproval immediately upon becoming an adult. If she delayed even for a moment, then refusing the marriage now is prohibited (haram) and she is certainly his wife; otherwise, she has the right to claim her option. And Allah Almighty knows best. Problem 337: From Muradabad, Mohalla Bazar Diwan, adjacent to the house of Nawab Tafazzul Ali Khan, sent by Hakim Burhan al-Haq Sahib, 27 Rabi al-Awwal 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah married off her minor daughter; at that time her age was approximately seven or eight years. Prior to the marriage, the girl's father and paternal uncles (chachas and tayas) had passed away, but a brother or a real first cousin (paternal uncle's son) who was approximately 26-27 years old at that time is present. However, at the time of marriage, the mother of the girl performed the marriage by her own guardianship (wilayah). Is this legally permissible or not? Explain and be rewarded.

The Answer: For a minor girl who has no father, grandfather, adult brother, nephew, or paternal uncle, then an adult first cousin (paternal uncle's son) is the guardian (wali) for her marriage. In his presence, the mother does not have the authority to marry off her daughter. It is stated in Fatawa Qadi Khan:

[1] Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/193 [2] Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/193

खंड ग्यारहवाँ फ़तावा रज़विया

इसमें है: बिशर्तुल क़ज़ा लिल-फ़स्ख़ (इस विच्छेद के लिए न्यायिक निर्णय आवश्यक है। - अनु.) लेकिन एक कुंवारी लड़की को यह विकल्प केवल इस सीमा तक मिलता है कि यदि उसे विवाह की सूचना पहले से थी, तो वयस्क होते ही, यानी जैसे ही यौवन के लक्षण जैसे मासिक धर्म आदि प्रकट हों या वह पूरे पंद्रह वर्ष की हो जाए, बिना किसी देरी के इस विवाह के प्रति अपनी असहमति प्रकट कर दे। और यदि विवाह की सूचना वयस्क होने के बाद मिली, तो जिस समय सूचना मिली उसी समय तुरंत नापसंदगी जता दे। और यदि उसने ज़रा भी देर की या उससे अलग कोई आधी बात की या कुछ देर चुप रही या बैठी थी और खड़ी हो गई या खड़ी थी और एक कदम उठा लिया, उसके बाद असहमति व्यक्त की, तो इसे बिल्कुल नहीं सुना जाएगा और विवाह अनिवार्य (लाज़िम) हो जाएगा। 'तन्वीरुल अबसार' में है:

'ख़यारुल बिक्रि बिस-सुकूति आलिमतन बिन-निकाहि व ला यमददु इला आख़िरिल मजलिसी'	**वयस्क कुंवारी लड़की की चुप्पी उसके विकल्प (अधिकार) को समाप्त कर देती है, जबकि उसे विवाह का ज्ञान हो। चुप्पी के बाद विकल्प सभा (मजलिस) के अंत तक भी नहीं रहता, बल्कि चुप होने पर ही समाप्त हो जाता है। (अनु.)**

इस नाबालिग लड़की के बारे में यह देखना ज़रूरी है कि क्या उसने वयस्क होते ही तुरंत असहमति ज़ाहिर की थी। यदि उसने एक पल की भी देरी की थी, तो अब उसे निकाह से इनकार करना हराम है और वह निश्चित रूप से उसकी पत्नी है, अन्यथा वह दावे का अधिकार रखती है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मसाला ३३७: मुरादाबाद, मोहल्ला बाज़ार दीवान, नवाब तफ़ज़्ज़ुल अली ख़ान के घर के पास से, प्रेषक हकीम बुरहानुल हक़ साहब, २७ रबीउल अव्वल १३१५ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि हिन्दा ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह कर दिया, उस समय उसकी उम्र लगभग सात या आठ साल रही होगी। निकाह से पहले लड़की के पिता और चाचा और ताया का इंतकाल हो गया था, लेकिन एक भाई या सगा तायाज़ाद भाई जिसकी उम्र उस समय लगभग २६-२७ साल थी, मौजूद है। लेकिन निकाह के समय लड़की की माँ ने अपनी विलायत (संरक्षण) से उस लड़की का निकाह कर दिया। शरीअत के अनुसार यह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: जिस नाबालिग लड़की का पिता, दादा, जवान भाई, भतीजा या चाचा न हो, तो उसका जवान तायाज़ाद भाई ही उसके निकाह का वली (संरक्षक) है। उसकी उपस्थिति में माँ को अपनी बेटी का निकाह करने का अधिकार नहीं है। फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में है:

---

[1] दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाबुल वली, मत्तब-ए-मुज्तबाई दिल्ली १/१९३ [2] दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाबुल वली, मत्तब-ए-मुज्तबाई दिल्ली १/१९३

पृष्ठ ५८५ का ७३९

در میں ہے: بشرط القضاء للفسخ (اس فسخ کے لئے قضا ضروری ہے۔ت) لیکن کنواری لڑکی کو یہ اختیار اسی قدر ملتا ہے کہ اگر پہلے سے نکاح کی خبر ہے تو بالغہ ہوتے ہی یعنی جس وقت علامت بلوغ مثل حیض وغیرہ ظاہر ہو یا پندرہ برس کامل کی عمر ہو جائے فوراً بلا توقف اس نکاح سے اپنی ناراضی ظاہر کر دے، اور اگر نکاح کی خبر بالغہ ہونے کے بعد ملی تو جس وقت خبر ہوئی فوراً اسی وقت ناپسندی جتا دے، اور اگر ذرا دیر لگائی یا اس سے جدا کوئی آدھی بات کی یا کچھ چپ رہی یا بیٹھی تھی کھڑی ہوگئی یا کھڑی تھی ایک قدم اٹھا لیا اس کے بعد ناراضی کا اظہار کیا تو ہر گز نہ سنا جائے گا اور نکاح لازم ہو جائے گا۔ تنویر الابصار میں ہے:

خیار البکر بالسکوت عالمۃ بالنکاح ولا یمتد الی آخر المجلس۔ **بالغہ باکرہ لڑکی کی خاموشی اس کے اختیار کو ختم کر دیتی ہے جبکہ وہ نکاح کا علم رکھتی ہو تو خاموشی کے بعد مجلس کے اختتام تک بھی اختیار نہیں رہتا بلکہ خاموش ہو جانے پر ختم ہو جاتا ہے۔ (ت)**

اس نابالغہ کے بارے میں اس کا دیکھ لینا ضرور ہے کہ اس نے بالغہ ہوتے ہی فوراً ناراضی ظاہر کی ہے یا ایک لمحہ دیر بھی لگائی تھی تو اب اسے نکاح سے انکار حرام ہے وہ ضرور اس کی زوجہ ہے ورنہ اختیار دعوی رکھتی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۳۳۷: از مراد آباد محلہ بازار دیوان متصل مکان نواب تفضل علی خاں مرسلہ حکیم برہان الحق صاحب ۲۷ ربیع الاول ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نے اپنی دختر نابالغہ کا نکاح کر دیا اس وقت عمر اس کی تخمیناً سات یا آٹھ برس کی ہوگی اور پیشتر نکاح سے لڑکی کا باپ اور چچا اور تایا قضا کر گئے تھے مگر ایک بھائی یا تایا زاد حقیقی جس کی عمر تخمیناً ۲۷، ۲۶ برس اس وقت تھی اب

موجود ہے مگر بوقت نکاح والدہ دختر نے اپنی ولایت سے نکاح اس لڑکی کا کر دیا، شرعاً یہ جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جس نابالغہ کے باپ، دادا، جوان بھائی، بھتیجا، چچا نہ ہو تو جوان بھائی چچا زاد ہی اس کے نکاح کا ولی ہے، اس کے ہوتے ماں کو اپنی دختر کے نکاح کر دینے کا اختیار نہیں، فتاویٰ قاضی خاں میں ہے:

---

[1] در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۳ [2] در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

Arabic

The closest agnate relatives (Asaba) to a minor boy or girl are the father, then the grandfather, then the full brother, then the paternal brother, then their sons, then the paternal uncle (full), then the paternal uncle (paternal), then their sons. In the absence of agnate relatives, the mother has the right of guardianship (Wilayah). End of summary.

Urdu

The closest agnate relatives for a minor boy and girl are the father, then the grandfather, then the real (full) brother, then their sons, then the real paternal uncle, then his sons, then the uncle from the father's side only, then his sons, and in case of no agnates, the mother has guardianship. End of summary. (T)

Therefore, in the aforementioned case, the marriage performed by the mother will remain dependent on the permission of this brother. If he rejects it, it will be rejected; if he allows it, it will be allowed, provided that the marriage was not with someone 'non-compatible' (ghair kufu)—meaning someone so inferior to the girl in terms of lineage, profession, or religion that marriage with them would be a cause of shame and disgrace—and there should not be a gross deficiency in the customary dower (mahr-e-misl) of the girl. Otherwise, the marriage is void from the beginning; even the brother cannot authorize it. It is mentioned in 'Durr-e-Mukhtar':

Arabic

If the person performing the marriage is other than the father or grandfather, even if it is the mother, the marriage is not valid if it is with a non-compatible person (ghair kufu) or involves gross deception (ghabn fahish). 2. And Allah the Exalted knows best.

Urdu

If the one giving in marriage is not the father or grandfather, even if it is the mother, the marriage will not be valid in case of non-compatibility or extreme deficiency in dower. And Allah, Glory be to Him and the Exalted, knows best. (T)

1 Fatawa Qazi Khan, Chapter on Guardians, Naval Kishore Press Lucknow, 1/163 2 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Guardians, Mujtabai Press Delhi, 1/192

अरबी

एक नाबालिग लड़के या लड़की के सबसे करीबी असबा (रक्त संबंधी पुरुष) पिता हैं, फिर दादा, फिर सगा भाई, फिर पिता की ओर से भाई, फिर उनके बेटे, फिर सगा चाचा, फिर पिता की ओर से चाचा, फिर उनके बेटे। असबा की अनुपस्थिति में, माँ को संरक्षकता (विलायत) का अधिकार है। सारांश समाप्त।

उर्दू

नाबालिग लड़के और लड़की के लिए सबसे करीबी असबा पिता, फिर दादा, फिर सगा भाई, फिर उनके बेटे, फिर सगा चाचा, फिर उसके बेटे, फिर केवल पिता की ओर से चाचा, फिर उसके बेटे हैं, और असबा न होने की स्थिति में माँ को विलायत प्राप्त है। सारांश समाप्त। (त)

अतः, उपर्युक्त स्थिति में, माँ द्वारा किया गया निकाह उस भाई की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह इसे अस्वीकार कर देता है, तो यह रद्द हो जाएगा; यदि वह इसे अनुमति देता है, तो यह मान्य हो जाएगा, इस शर्त के साथ कि निकाह किसी 'गैर-कुफ़ू' (असंगत) व्यक्ति से न हुआ हो—अर्थात ऐसा व्यक्ति जो वंश, पेशे या धर्म आदि में लड़की से इतना कम हो कि उसके साथ निकाह होना अपमान और शर्म का कारण बने—और लड़की के'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) में भारी कमी नहीं होनी चाहिए। अन्यथा निकाह शुरू से ही शून्य है; भाई भी इसे मान्य नहीं कर सकता। 'दुर्रे मुख्तार' में उल्लेख है:

अरबी

यदि निकाह करने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है, चाहे वह माँ ही क्यों न हो, तो गैर-कुफ़ू (असंगत) या भारी धोखे (ग़ब्रे फ़ाहिश) की स्थिति में निकाह सही नहीं होगा। 2. और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

उर्दू

यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा न हो, भले ही वह माँ ही हो, तो गैर-कुफ़ू में और मेहर में अत्यधिक कमी होने पर निकाह सही नहीं होगा। और अल्लाह, वह पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है। (त)

1 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, वली के अध्याय में, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1/163 2 दुर्रे मुख्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/192

عربی	اردو
اقرب العصبات الی صغیر والصغیرۃ الاب ثم الجد ثم الاخ لاب وام ثم الاخ لاب ثم بنوھما ثم العم لاب وام ثم العم لاب ثم بنوھما وعند عدم العصبۃ الاقرب الام اھ مختصراً۔	نابالغ لڑکے اور لڑکی کے قریب ترین عصبہ باپ، پھر دادا، پھر حقیقی بھائی، پھر ان کے لڑکے، پھر حقیقی چچا، پھر اس کے لڑکے، پھر صرف باپ کی طرف چچا، پھر اس کے لڑکے، اور عصبات نہ ہونے کی صورت میں ماں کو ولایت ہے اھ مختصراً (ت)

پس صورتِ مذکورہ میں ماں کا کیا ہوا نکاح اس بھائی کی اجازت پر موقوف رہے گا اگر یہ رد کردے گا رد ہو جائے گا یا جائز کردے گا جائز ہوجائے گا بشرطیکہ وہ نکاح کسی غیر کفو یعنی ایسے شخص سے نہ ہوا ہو جو اس دختر سے قوم یا پیشے یا مذہب وغیرہ میں ایسا کم ہو کہ اس کے ساتھ نکاح ہونا باعث ننگ وعار ہو، نہ دختر کے مہر مثل میں کمی فاحش کی ہو، ورنہ نکاح سرے سے باطل ہے، بھائی بھی اسے جائز نہیں کرسکتا، درمختار میں ہے:

عربی	اردو
ان کان المزوج غیر الاب وابیہ ولو الام لا یصح النکاح من غیر کفو او غبن فاحش 2۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔	اگر نکاح دینے والا باپ دادا نہ ہو خواہ ماں بھی ہو تو غیر کفو میں اور انتہائی کمی کے مہر سے نکاح صحیح نہ ہوگا واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ (ت)

1 فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الاولیاء مطبع نولکشور لکھنو ۱/۱۶۳ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲

Volume Eleven Fatawa Ridawiyya

The Recommendation of Rejection Regarding Marriage by a Distant Guardian (1315 AH) (Ruling on a distant guardian performing a marriage in the absence of a closer guardian)

In the name of Allah, the Most Beneficent, the Most Merciful.

Case 338 to 342: From Pilibhit, Munir Khan locality, sent by Honorable Maulana Molvi Wasi Ahmad Sahib Muhaddith Surti, may Allah have mercy on him, 10 Rajab 1315 AH.

First Question: If a distant guardian (Wali-e-Ab'ad) performs a marriage during the absence of the closer guardian (Wali-e-Aqrab), can the closer guardian annul it if it's against their wish or not?

The Answer: Yes, provided the absence is not a 'severed absence' (Ghuybat-e-Munqati'ah).

In Ad-Durr al-Mukhtar: So if the distant guardian performs a marriage while the closer one is present, it depends on his permission. And Allah Almighty knows best.	**In Durr-e-Mukhtar:** If a distant guardian performed a marriage in the presence of a closer guardian without his permission, it will be dependent on the closer one's permission. And Allah Almighty knows best. (T)

[1] Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 2/41.

Page 587 of 739

ग्यारहवां खंड फ़तावा रज़विया

अधिक दूर के अभिभावक द्वारा विवाह के संबंध में अस्वीकृति की सिफारिश (१३१५ हिजरी) (निकटतम अभिभावक की अनुपस्थिति में अधिक दूर के अभिभावक द्वारा निकाह पढ़ाने का नियम)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

मसला ३३८ से ३४२: पीलीभीत, मोहल्ला मुनीर खान से प्रेषित हज़रत मौलाना मौलवी वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती रहमतुल्लाह अलैह द्वारा, १० रजब १३१५ हिजरी।

पहला सवाल: यदि निकटतम अभिभावक (वली-ए-अक़रब) की अनुपस्थिति में अधिक दूर का अभिभावक (वली-ए-अबअद) निकाह कर दे, तो क्या निकटतम अभिभावक अपनी मर्जी के खिलाफ होने की स्थिति में उसे रद्द (फ़स्ख) कर सकता है या नहीं?

जवाब: हाँ, जब तक कि अनुपस्थिति 'ग़ैबत-ए-मुनक़त'आ' (अत्यधिक लंबी अनुपस्थिति जिससे संपर्क कट जाए) न हो।

अद-दुर्र अल-मुख्तार में है: इसलिए यदि दूर के अभिभावक ने निकट अभिभावक की मौजूदगी में निकाह किया, तो यह उसकी अनुमति पर निर्भर होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

दुर्र-ए-मुख्तार में है: अगर दूर के अभिभावक ने निकट अभिभावक की मौजूदगी में उसकी इजाजत के बिना निकाह किया, तो वह निकटतम की इजाजत पर निर्भर (मवक़ूफ़) होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[1] दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, २/४१।

पृष्ठ ७३९ में से ५८७

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

تجویز الرد عن تزویج الابعد ۱۳۱۵ھ (ولی اقرب کی غیبت میں ولی ابعد کے نکاح پڑھانے کا حکم)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۳۳۸ تا ۳۴۲: از پیلی بھیت محلہ منیر خاں مرسلہ حضرت مولانا مولوی وصی احمد صاحب محدث سورتی رحمۃ اللہ علیہ ۱۰ رجب ۱۳۱۵ھ

سوال اول: ولی ابعد، ولی اقرب کی غیبت میں اگر نکاح کردے تو ولی اقرب در صورت خلاف مرضی اس کے فسخ کرسکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: ہاں جبکہ غیبت منقطعہ نہ ہو،

فی الدر المختار: فلو زوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ- واللہ تعالٰی اعلم۔

در مختار میں ہے: اگر بعید ولی نے قریب ولی کی موجودگی میں اس کی اجازت کے بغیر نکاح کیا تو قریب کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

[1] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۲/۴۱

Fatawa Rizvia Volume 11

Second Question: Among the explanations of 'Ghaybat' (absence)—whether it is defined as the distance of shortening prayers (Musaafat-e-Qasr), difficulty in seeking an opinion, or a place where a caravan visits only once a year—which explanation is the most reliable (Mu'tamad alayh)?

The Answer: The first opinion has also been issued as a fatwa, and the third is the choice of Imam Quduri. In the book *Al-Tajnees wal Mazeed*, a distance of one month's travel is stated as the choice of the majority of scholars and the most balanced of opinions, as mentioned in *Majma-ul-Anhar*[1] (as it is in *Majma-ul-Anhar*. T). Imam Saghdi chose the state of 'Mafqud-ul-Khbari' (missing information). In one narration from Imam Muhammad, the distance is mentioned as 20 or 25 stages (Manzil), as in *Jami-ur-Rumuz*[2] (as it is in *Jami-ur-Rumuz*. T). So, these are seven opinions, among which the strongest, most authentic, and most clearly stated words of fatwa are for the first and second opinions only. However, the most correct of corrections, the most preferred of preferences, and what is accepted and relied upon is this: when a suitable match (Kufu) is present and cannot wait for the nearest guardian's (Wali Aqrab) opinion, and keeping it pending would cause this opportunity to be lost, then the absence is considered 'Ghaybat-e-Munqati'a' (absolute absence). This is to the extent that if the nearest guardian is hiding within the city itself and their whereabouts are unknown or they are inaccessible, and waiting would result in losing the suitable match, it will be considered absolute absence. In such a case, the right of guardianship will transfer to the next distant guardian (Wali Ba'eed) who is next in line to this nearest one in the hierarchy of guardianship. If the nearest guardian is a thousand 'Kos' (a distance unit) away, but no suitable match is present or they are willing to wait, then this is not considered absolute absence; if the distant guardian performs the marriage, it will not be effective but will remain dependent on the nearest guardian's permission.

Arabic Text

In *Tanwir al-Absar*, it is permissible for the distant guardian to perform the marriage in the absence of the nearest one at a travel distance (Musaafat al-Qasr)[3]. In *Radd al-Muhtar*, it is attributed in *Al-Hidayah* to some later scholars, and

Urdu Translation

In *Tanwir al-Absar*, it is stated that if the nearest guardian is absent at a distance of travel, it is permissible for the distant guardian to perform the marriage. End quote. In *Radd al-Muhtar*, it says that in *Hidayah*, this is attributed to some later

Arabic Text	Urdu Translation
in *Al-Zayla'i* to most of them, and he said: "Upon it is the fatwa."[4] I say: Similarly, the fatwa is mentioned in *Al-Walwalajiyah*.	scholars, and in *Zayla'i*, it is attributed to the majority, and it says the fatwa is on this. End quote. I say (I state) similarly it is said in *Walwalajiyah* regarding this.

[1] *Majma al-Anhar Sharh Multaqal-Abhur*, Chapter of Guardians and Equals, Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 1/329. [2] *Jami-ur-Rumuz*, Chapter of Guardian and Equal, Maktabah Islamiyyah Gunbad Qamus, Iran, 1/469. [3] *Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Chapter of Guardian, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/194. [4] *Radd al-Muhtar*, Chapter of Guardian, Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315.

फ़तावा रिज़विया भाग 11

दूसरा सवाल: 'ग़ैबत' (अनुपस्थिति) की व्याख्याओं में से—चाहे वह क़स्र की दूरी (यात्रा की दूरी), राय लेने में कठिनाई, या उस स्थान के रूप में परिभाषित हो जहाँ कारवां साल में केवल एक बार जाता हो—कौन सी व्याख्या सबसे विश्वसनीय (मुअतमद अलैह) है?

जवाब: पहले मत पर भी फतवा दिया गया है, और तीसरा इमाम क़ुदूरी का चुनाव है। किताब 'अत-तजनीस वल मज़ीद' में एक महीने की यात्रा की दूरी को अधिकांश विद्वानों का चुनाव और सबसे संतुलित राय बताया गया है, जैसा कि 'मजमा-उल-अनहर'[1] में है (जैसा कि 'मजमा-उल-अनहर' में है। त)। इमाम सग़दी ने 'मफ़क़ूदुल-ख़बरी' (सूचना का अभाव) की स्थिति को चुना। इमाम मुहम्मद से एक रिवायत में 20 या 25 मंज़िल की दूरी आई है, जैसा कि 'जामे-उर-रुमूज़'[2] में है (जैसा कि 'जामे-उर-रुमूज़' में है। त)। तो, ये सात मत हैं जिनमें सबसे प्रबल, विश्वसनीय और स्पष्ट फतवे वाले शब्द केवल पहले और दूसरे मत के लिए हैं। हालाँकि, सबसे सही सुधार, सबसे पसंदीदा प्राथमिकता, और जिसे स्वीकार किया गया है और जिस पर भरोसा किया गया है वह यह है: जब तक उसकी राय लेने के लिए कोई उपयुक्त रिश्ता (कुफ़ू) इंतज़ार न कर सके और उसे लटकाए रखने में यह मौक़ा हाथ से निकल जाए, तो यह 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (पूर्ण अनुपस्थिति) है। यहाँ तक कि अगर सबसे नज़दीकी वली (अभिभावक) शहर ही में छिपा हो और उसका पता न हो या उस तक पहुँच न हो, और इंतज़ार करने से उपयुक्त रिश्ता छूट जाने का डर हो, तो इसे पूर्ण अनुपस्थिति माना जाएगा। ऐसी स्थिति में, अभिभावक के पदानुक्रम में अगले दूर के वली (वली बईद) को अभिभावक का अधिकार प्राप्त होगा जो इस नज़दीकी वली के ठीक बाद आता है। और अगर नज़दीकी वली हज़ार कोस दूर है और कोई उपयुक्त रिश्ता मौजूद नहीं है या वे इंतज़ार करने को राज़ी हैं, तो यह पूर्ण अनुपस्थिति नहीं है; यदि दूर का वली निकाह करा देता है, तो वह प्रभावी नहीं होगा बल्कि नज़दीकी वली की अनुमति पर निर्भर रहेगा।

अरबी पाठ

'तन्वीर अल-अबसार' में, नज़दीकी वली के यात्रा की दूरी (मुसाफ़त अल-क़स्र)[3] पर अनुपस्थित होने पर दूर के वली के लिए निकाह कराना जायज़ है। 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि 'हिदाया' में इसे कुछ

उर्दू अनुवाद

'तन्वीर अल-अबसार' में है कि वली अक़रब सफ़र की मुसाफ़त पर ग़ायब हो तो वली बईद को निकाह कर देना जाइज़ है अह्। 'रद अल-मुह्तार' में है कि 'हिदाया' में इसको बाज़

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
बाद के विद्वानों (मुताख़िरीन) की ओर और 'ज़ैलाई' में इसे अधिकांश की ओर श्रेय दिया गया है और कहा कि इसी पर फतवा है।[4] मैंने कहा: इसी तरह 'वलवलजिया' में इस पर फतवा कहा गया है।	मुताख़िरीन की तरफ़ मंसूब किया है और 'ज़ैलई' में इसको अक्सर की तरफ़ मंसूब किया और कहा कि इस पर फ़तवा है अह्। कुल्त (मैं कहता हूँ) यूँ ही 'वलवलजिया' में कहा इस पर।

[1] मजमा अल-अनहर शरह मुल्तक़ल-अबहुर, बाब अल-औलिया वल-अक्फ़ा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/329. [2] जामे-उर-रुमूज़, बाब अल-वली वल-कुफ़ू, मकताबह इस्लामिया गुम्बद क़ामूस, ईरान, 1/469. [3] दुर्र-ए-मुख़्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/194. [4] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/315.

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

سوال دوم غیبت کی تفاسیر میں سے کہ مدتِ قصر یاد شواریِ استطلاعِ رائے یا اس بلد میں قافلہ سال بھر میں ایک مرتبہ جاتا ہو، میں کون سی تفسیر معتمد علیہ ہے؟

الجواب: اول پر بھی فتوٰی دیا گیا اور ثالث اختیارِ امام قدوری ہے اور کتاب التجنیس والمزید میں یک ماہہ راہ کو اختیارِ اکثر مشائخ واعدل الاقاویل فرمایا کما فی مجمع الانھر[1] (جیسا کہ مجمع الانھر میں ہے۔ ت) اور امام سغدی نے مفقود الخبر ی اختیار فرمائی، امام محمد سے ایک روایت میں ۲۰ بیس ۲۰ ایک پچیس ۲۵ منزل کی آئی کما فی جامع الرموز[2] (جیسا کہ جامع الرموز میں ہے۔ ت) تو یہ سات قول ہیں جن میں اقوی واوثق ومندیل باکد الفاظ فتیا صرف اول ودوم ہیں مگر اصح التصحیحین و ارجح التر جیحین و ماخوذ و معتمد علیہ یہی ہے کہ جب اس کی رائے لینے تک کفو حاضر انتظار نہ کرے اور اس پر اٹھارکھنے میں یہ موقع ہاتھ سے جاتا ہے تو غیبت غیبت منقطعہ ہے یہاں تک کہ اگر ولی اقرب شہر ہی میں روپوش ہو اور پتا نا معلوم یا رسائی نہیں اور انتظار باعث فوتِ کفو ہو تو غیبت منقطعہ سمجھی جائے گی اور ولی بعید کو جو مراتب ولایت میں اس اقرب کے متصل ہے ولایت ہاتھ آئے گی اور اگر اقرب ہزار کوس دور ہے اور کفو حاضر نہیں یا انتظار پر راضی، تو یہ غیبت منقطعہ نہیں، ولی بعید نکاح کرے گا تو نافذ نہ ہو گا بلکہ اجازت اقرب پر موقوف رہے گا۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فی تنویر الابصار للولی الابعد التزویج	تنویر الابصار میں ہے ولی اقرب سفر کی مسافت پر غائب
بغیبة الاقرب مسافة القصر[3] اه في رد	ہو تو ولی ابعد کو نکاح کر دینا جائز ہے اھ ردالمحتار میں

عربی عبارت	اردو ترجمہ
المحتار نسبه في الهداية لبعض المتأخرين والزيلعى لاكثرهم قال وعليه الفتوى[4] اه قلت وكذا قال عليه الفتوى فى الولو الجية	ہے کہ ہدایہ میں اس کو بعض متاخرین کی طرف منسوب کیا ہے اور زیلعی میں اس کو اکثر کی طرف منسوب کیا اور کہا کہ اس پر فتوی ہے اھ قلت (میں کہتا ہوں) یوں ہی ولوالجیہ میں کہا اس پر

[1] مجمع الانهر شرح ملتقى الابحر باب الاولياء والاكفاء دار احياء التراث العربى بيروت ۳۲۹/۱ [2] جامع الرموز باب الولى والكفو مكتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۴۶۹/۱ [3] درمختار شرح تنوير الابصار باب الولى مطبع مجتبائى دہلى ۱۹۴/۱ [4] ردالمختار باب الولى دار احياء التراث العربي بيروت ۳۱۵/۲

Fatawa Ridawiyya Volume 11

As stated in Majma' al-Anhur, al-Quhistani said in Jami' al-Rumuz that this is the correct view and upon it is the fatwa. It is also mentioned in al-Durr. In al-Multaqa, it was chosen that the suitor who is an equal (kufu') should not wait for a response, and this was relied upon by al-Baqani. Ibn al-Kamal narrated that the fatwa is based on this. The practical consequence of the disagreement appears regarding someone who hides in the city: does this count as 'ghayba munqati'ah' (discontinuous absence)? Al-Shami said that in al-Dhakhira it is mentioned that the most correct view is that if someone is in a place where waiting for their presence and seeking their opinion would result in missing out on a present suitor who is an equal, then it is considered 'ghayba munqati'ah'. This is what was pointed out in the book. In al-Bahr, narrated from al-Mujtaba and al-Mabsut, it is the most correct view. In al-Nihaya, it states that most scholars (mashayikh) have chosen it, and Ibn al-Fadl authenticated it. In al-Hidayah, it is said to be closer to jurisprudence (fiqh). In al-Fath, it is stated to be more similar to jurisprudence and that there is no contradiction between the majority of later scholars (muta'akhkhirin) and the majority of earlier scholars (mashayikh), as 'mashayikh' here refers to the predecessors (mutaqaddimun). In Sharh al-Multaqa, narrated from al-Haqa'iq, it is said to be the most correct of opinions and the fatwa is based on it. This path was followed in al-Ikhtiyar and al-Niqayah, and the words of al-Nahr point towards it.

1 Jami' al-Rumuz, Chapter on the Guardian and Equality, Maktaba al-Islamiyya, Gunbad Qamus, Iran, 1/469. 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/194. Page 589 of 739

फतावा रिज़विया खंड 11

जैसा कि मजमा-उल-अनहुर में है, कुहिस्तानी ने जामि-उर-रुमूज़ में कहा है: यही सही है और इसी पर फतवा है, 'दुर' में है: और इसे मुल्तका में पसंद किया गया है कि रिश्ता माँगने वाला जो कुफू (बराबर का) हो, उसके जवाब का इंतज़ार न किया जाए, और बाक़ानी ने इसे भरोसेमंद माना है, और इब्न-ए-कमाल ने इस पर फतवा नकल किया है। असहमति का परिणाम उस व्यक्ति के बारे में ज़ाहिर होगा जो शहर में छिप गया हो, तो क्या इस स्थिति में 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (विच्छिन्न अनुपस्थिति) होगी। शामी ने कहा कि ज़खीरा में कहा गया है कि सही बात यह है कि अगर ऐसी स्थिति हो कि उपस्थित कुफ़ू उसके इंतज़ार और उसकी राय जानने तक, हाथ से निकल जाने या समाप्त हो जाने का डर हो, तो यह 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' होगी, और किताब में इसी स्थिति की ओर इशारा किया गया है। बहर में मुजतबा और मबसूत से नकल है कि यही सबसे सही है, और निहाया में है कि इसे अधिकांश मशायख (विद्वानों) ने अपनाया है और इब्न-अल-फ़ज़ल ने इसकी तस्दीक की है, और हिदाया में है कि यह फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के अधिक करीब है, और फ़तह में कहा गया कि यह फ़िक़्ह के अधिक समान है और यह कि अधिकांश उत्तरवर्ती विद्वानों (मुताखिरीन) और अधिकांश पूर्ववर्ती विद्वानों (मशायख) के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, यानी मशायख से तात्पर्य पूर्ववर्ती विद्वानों (मुतक़द्दिमीन) से है, और शरह मुल्तका में हक़ायिक़ से नकल है कि मतों में से यही सबसे सही है और इस पर फतवा है, और इख्तियार और निक़ाया में इसी पर रुझान है, और नहर के कलाम में इसके बारे में संकेत है।

1 जामि-उर-रुमूज़, बाबुल वली वल किफ़ाअत, मकतबा अल-इस्लामिया, गुंबद क़ामूस, ईरान, 1/469 2 दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/194 पृष्ठ 589 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

كما في مجمع الانهر قال القهستاني في جامع الرموز هو الصحيح وبه يفتى اهـ في الدر واختار في الملتقى مالم ينتظر الكفؤ الخاطب جوابه واعتمده الباقاني ونقل ابن الكمال ان عليه الفتوى وثمرة الخلاف في من اختفى في المدينة هل تكون غيبة منقطعة اهـ قال الشامي قال في الذخيرة الاصح انه اذا كان في موضع لو انتظر حضوره واستطلاع رأيه فات الكفؤ الذي حضر فالغيبة منقطعة واليه اشار في الكتاب اهـ وفي البحر عن المجتبى والمبسوط انه الاصح وفي النهاية واختاره اكثر المشايخ وصححه ابن الفضل وفي الهدايه انه اقرب الى الفقه وفى الفتح انه الاشبه بالفقه وانه لا تعارض بين اكثر المتاخرين واكثر المشايخ اى لان المراد من المشايخ المتقدمون وفي شرح الملتقى عن الحقائق انه اصح الاقاويل وعليه الفتوى اهـ وعليه مشى في الاختيار والنقاية ويشير كلام النهر

فتوٰی ہے جیسا کہ مجمع الانہر میں قہستانی نے جامع الرموز میں کہا: یہی صحیح ہے اور اسی پر فتوٰی ہے اھ، در میں ہے: اور اس کو ملتقٰی میں پسندیدہ قرار دیا ہے منگنی کرنے والا کفو کے جواب کا انتظار نہ کرے، اور باقانی نے اس کو معتمد قرار دیا، اور ابن کمال نے اس پر فتوٰی کو نقل کیا اور ثمرہ اختلاف اس شخص کے متعلق ظاہر ہوگا جو شہر میں چھپ گیا ہو، تو کیا اس صورت میں غیبت منقطعہ ہوگی اھ، شامی نے کہا کہ ذخیرہ میں کہا ہے کہ اصح یہ ہے کہ اگر ایسی صورت ہو کہ حاضر کفو، اس کی انتظار اور اس کی رائے معلوم کرنے تک، ضائع اور فوت ہو جانے کا خطرہ ہو تو یہ غیبت منقطعہ ہوگی، اور کتاب میں اسی صورت کی طرف اشارہ ہے اھ، بحر میں مجتبٰی اور مبسوط سے منقول ہے کہ یہی اصح ہے، اور نہایہ میں ہے کہ اس کو اکثر مشائخ نے اختیار کیا ہے اور ابن فضل نے اس کی تصحیح کی ہے، اور ہدایہ میں ہے کہ یہ اقرب فقہ ہے، اور فتح میں کہا کہ یہ فقہ کے اشبہ ہے اور یہ کہ اکثر متاخرین اور اکثر مشائخ میں کوئی

تعارض نہیں ہے، یعنی اکثر مشائخ سے مراد متقدمین ہیں، اور شرح ملتقٰی میں حقائق سے منقول ہے کہ اقوال میں سے یہی اصح ہے اور اس پر فتویٰ ہے اھ، اور اختیار اور نقایہ میں اسی پر رجحان ہے، اور نہر کی کلام میں اس کے

1 جامع الرموز باب الولی و الکفاءۃ مکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۴۶۹/۱ 2 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۴/۱ صفحہ 589 از 739

Fatawa-e-Razvia, Volume 11

...to his choice. In al-Bahr, it is stated: "And the best is to give a fatwa according to what the majority of the Mashaikh (scholars) are upon." [1] Here ends the discourse of Shami. I say (Qultu): Zayla'i, despite mentioning the fatwa on the first opinion, quoted the correction of the second opinion from Shams al-A'immah al-Sarakhsi and Muhammad ibn al-Fadl, then said: "And this is better." [2] In Jawahir al-Akhlati, it is said: "And upon it is the fatwa," [3] as it is in al-Hindiyyah. I recall that I wrote here in the margin of Radd al-Muhtar on the statement of al-Bahr "the best is to give a fatwa..." etc., the text of which is: I say, especially in this age when the steam carriage (train) has reduced the travel distance of Qasr (shortened prayer) to more than a two-hour distance, how can the matter be built upon it? Rather, it is necessary to rely on what the majority of the Mashaikh (may Allah Almighty have mercy on them) have given a fatwa on. [4] Here ends what I wrote. I say (Aqool): Another widespread view is that the second opinion is based on necessity and harm. There is no doubt that guardianship (wilayah) is established for compassion and the prevention of harm. Thus, from a jurisprudential perspective, the guardianship can transfer to the one who follows the nearest relative only when the nearest guardian is at such a place that if the matter were delayed for his opinion, it would cause harm to the minor... and its absence.

[Right Column Urdu Translation/Commentary]: It indicates preference, and in al-Bahr it was said that for whichever opinion most Mashaikh are upon, it is better to give a fatwa. Shami's discourse ended. I say: Zayla'i gave the fatwa on the first opinion; despite this, he quoted the correction of the second opinion from Shams al-A'immah al-Sarakhsi and Muhammad ibn al-Fadl, then said "this is better." And in Jawahir al-Akhlati, it is said that the fatwa is on this, just as it is in Hindiyyah. I remember my margin on Radd al-Muhtar here when they stated al-Bahr's saying that "fatwa is on this" etc. The text of the margin is: I say, especially in this time when the railway train has changed the travel distance into a distance of one or two hours, how can distance be made the foundation? Rather, it is necessary to rely on the fatwa of the majority of Mashaikh. My margin ended. I say: Another thing is that the second opinion is based on need and loss, and there is no doubt that the establishment of guardianship is based on compassion and prevention of harm. So, the jurisprudence will be that the one after the nearest relative can only have guardianship when the

nearest guardian is at such a location that if his opinion and permission were sought, the minor would suffer loss, and if loss...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/315.
2. Tabyin al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq, Chapter of Guardians and Equals, Maktaba Kubra Amiriyah, Bulaq, Egypt, 2/12.
3. Fatawa al-Hindiyyah, Chapter Four on Guardians, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/285.
4. Jadd al-Mumtar, Chapter of the Guardian, Quote 614, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, India, 2/383.

फतावा रज़विया, खंड 11

...उनकी पसंद के अनुसार। अल-बहर में कहा गया है: "और सबसे अच्छा यह है कि उस पर फतवा दिया जाए जिस पर अधिकांश मशाइख़ (विद्वान) सहमत हैं।" [1] यहाँ शामी का कथन समाप्त होता है। मैं कहता हूँ (क़ुल्तु): ज़ैलई ने, पहले मत पर फतवा होने का उल्लेख करने के बावजूद, शम्स अल-अइम्मा अस-सरख़सी और मुहम्मद इब्न अल-फ़ज़ल से दूसरे मत का सुधार उद्धृत किया, फिर कहा: "और यह बेहतर है।" [2] जवाहिर अल-अख़लाती में कहा गया है: "और इसी पर फतवा है," [3] जैसा कि अल-हिंदीया में है। मुझे याद है कि मैंने यहाँ रद्द अल-मुह्तार के हाशिए पर अल-बहर के कथन "सबसे अच्छा यह है कि फतवा दिया जाए..." आदि पर लिखा था, जिसका पाठ है: मैं कहता हूँ, विशेष रूप से इस युग में जब भाप की गाड़ी (रेलगाड़ी) ने क़स्र (नमाज़ कम करना) की यात्रा की दूरी को दो घंटे से अधिक की दूरी में कम कर दिया है, तो मामला उस पर कैसे आधारित किया जा सकता है? बल्कि, अधिकांश मशाइख़ (अल्लाह उन पर दया करे) द्वारा दिए गए फतवे पर भरोसा करना आवश्यक है। [4] यहाँ मेरा लेखन समाप्त होता है। मैं कहता हूँ (अक़ूल): एक और व्यापक दृष्टिकोण यह है कि दूसरा मत आवश्यकता और हानि पर आधारित है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभिभावकत्व (विलायत) करुणा और हानि की रोकथाम के लिए स्थापित है। इस प्रकार, न्यायशास्त्र के अनुसार, अभिभावकत्व निकटतम के बाद वाले को तभी मिल सकता है जब निकटतम अभिभावक ऐसे स्थान पर हो कि यदि उसकी राय के लिए मामले में देरी की जाए, तो नाबालिग को हानि होगी... और उसका अभाव।

[दायां कॉलम उर्दू अनुवाद/टिप्पणी]: पसंद होने का संकेत है, और बहर में कहा कि जिस पर अधिकांश मशाइख़ हों उस पर फतवा बेहतर है। शामी का कथन समाप्त हुआ। मैं कहता हूँ: ज़ैलई ने पहले कथन पर फतवा कहा, इसके बावजूद उन्होंने शम्स अल-अइम्मा सरख़सी और मुहम्मद बिन फ़ज़ल से दूसरे कथन का सुधार उद्धृत किया, फिर कहा "यह बेहतर है"। और जवाहिर अख़लाती में कहा कि फतवा इसी पर है जैसा कि हिंदीया में है। मुझे यहाँ रद्द अल-मुह्तार पर अपना हाशिया याद है जब उन्होंने बहर के कथन को बताया कि "इस पर फतवा है" आदि। हाशिए की इबारत यह है: मैं कहता हूँ कि विशेष रूप से इस ज़माने में जबकि रेलगाड़ी ने सफ़र की मुसाफ़त (दूरी) को एक दो घंटे की मुसाफ़त में तब्दील कर दिया है, तो मुसाफ़त को बुनियाद बनाना कैसे दुरुस्त होगा? बल्कि अधिकांश मशाइख़ के फतवे पर एतमाद (भरोसा) ज़रूरी है। मेरा हाशिया खत्म हुआ। मैं कहता हूँ: एक और चीज़ है वह यह कि दूसरे कथन की बुनियाद हाजत (ज़रूरत) और नुक़सान पर है और

इसमें शक नहीं कि विलायत का इसबात (स्थापना) शफ़क़त (दया) और दफ़-ए-ज़रर (हानि निवारण) पर मबनी (आधारित) है। तो फिक्ह (न्यायशास्त्र) यह होगी कि अक़रब (निकटतम) वली के बाद वाले को विलायत तब ही हो सकती है जब वली-ए-अक़रब ऐसे मकाम (स्थान) पर हो कि अगर उसकी राय और इजाज़त हासिल की जाए तो नाबालिगा को नुक़सान हो और अगर नुक़सान...

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/315।
2. तबीन अल-हक़ाएक शरह कंज़ अद-दक़ाएक, बाब अल-औलिया व अल-अकफ़ा, मकतबा कुबरा अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 2/12।
3. फतावा हिंदीया, अल-बाब अल-राबे फ़ी अल-औलिया, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/285।
4. जद अल-मुम्तार, बाब अल-वली, कौल 614, अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, भारत, 2/383।

पृष्ठ 590/739

الی اختیارہ وفی البحر والاحسن الافتاء بما علیہ اکثر المشائخ ۱ اہ کلام الشامی، قلت والزیلعی مع قولہ للاول علیہ الفتوی ذکر تصحیح الثانی عن شمس الائمۃ السرخسی ومحمد بن الفضل ثم قال وھذا احسن ۲ اہ وقال فی جواھر الاخلاطی وعلیہ الفتوی ۳ کما فی الھندیۃ، ورأیتنی کتبت ھھنا علی ھامش ردالمحتار علی قول البحر الاحسن الافتاء الخ مانصہ قلت لاسیما فی ھذا الزمان فان العجلۃ الدخانیۃ قدرت مسافۃ القصر الی اکثر من مسافۃ ساعتین فکیف یبنی الامر علیھا بل وجب التعویل علی مافتی بہ اکثر المشائخ رحمھم اللہ تعالی ٤ اہ ما کتبت۔ اقول: وشیوع آخر وھو ان القول الثانی بنی الامر علی الحاجۃ والتضرر ولاشك ان الولایۃ انما ھی للنظر ودفع الضرر فکان من الفقہ اثبات الولایۃ للذی یلی الاقرب عند کونہ بحیث لو وقت الامر علی رأیہ لتضررت بہ القاصرۃ وعدمہ

[دائیں کالم کی اردو عبارت]: مختار ہونے کا اشارہ ہے، اور بحر میں کہا کہ جس پر اکثر مشائخ ہوں اس پر فتوٰی بہتر ہے، شامی کا کلام ختم ہوا، قلت (میں کہتا ہوں) زیلعی نے پہلے قول پر فتوٰی کہا اس کے باوجود انھوں نے شمس الائمہ سرخسی اور محمد بن فضل کی دوسرے قول پر تصحیح نقل کی، پھر کہا یہ احسن ہے اھ، اور جواہر اخلاطی میں کہا کہ اس پر فتوٰی ہے جیسا کہ ہندیہ میں ہے، مجھے یہاں پر ردالمحتار پر اپنا حاشیہ یاد ہے جب انھوں نے بحر کے قول کہ "اس پر فتوٰی ہے" الخ کو بیان کیا حاشیہ کی عبارت یہ ہے: میں کہتا ہوں کہ خصوصاً اس زمانہ میں جبکہ ریل گاڑی نے سفر کی مسافت کو ایک دو گھنٹہ کی مسافت میں تبدیل کر دیا ہے تو مسافت کو بنیاد بنانا کیسے درست ہوگا، بلکہ اکثر مشائخ کے فتوٰی پر اعتماد ضروری ہے، میرا حاشیہ ختم ہوا، اقول ایک اور چیز ہے وہ یہ کہ دوسرے قول کی بنیاد حاجت اور نقصان پر ہے اور اس میں شک نہیں کہ ولایت کا اثبات شفقت اور دفعِ ضرر پر مبنی ہے، تو فقہ یہ ہوگی کہ اقرب ولی کے بعد والے کو

ولایت تب ہی ہو سکتی ہے جب ولیِ اقرب ایسے مقام پر ہو کہ اگر اس کی رائے اور اجازت حاصل کی جائے تو نابالغہ کو نقصان ہو اور اگر نقصان

۱ ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۱ ۲ تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق باب الاولیاء والاکفاء مکتبہ کبریٰ امیر یہ بولاق مصر ۱۲/۲ ۳ فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۵/۱ ٤ جد الممتار باب الولی قول ٦١٤ المجمع الاسلامی مبارکپور، بھارت ۳۸۳/۲

Fatawa Rizvia Volume 11

[Main Text Body - Arabic and Urdu] (Arabic Side): In the absence [of a reason for urgency], for example, if the girl is very young and there is no suitable match (kufu) being rushed, and there is no harm in waiting, then why should one act independently of the compassionate father and entrust the matter to a far-distant relative? It is possible that the distant relative might ignore her interests for his own benefit or to acquire worldly gains. Thus, it appears that in the first opinion, guardianship is taken away where it is needed (like someone hidden in a city) and established where there is no need for it, as in this case. I found that I had written on the statement of 'al-Durr' regarding 'the result of the difference' etc., as follows: I say, since the pivot for the proponents of the second opinion is the loss of a suitable match (kufu), just as the distance of shortening prayers (qasr) is not considered a condition for transfer [of guardianship], similarly it is not considered here. In the absence of loss and urgency, if a match exists and is not lost by waiting for the closer guardian or seeking his opinion, then according to the second opinion, marriage by a distant relative is not permissible, contrary to the first opinion. Thus, the result of the difference is not limited to what they stated. This is what appeared to me.

(Urdu Side): ...otherwise, the subsequent person will not have guardianship. For example, if there is a very young girl for whom there is no rush for a suitable match (kufu), and there is no harm in waiting for the nearest guardian (wali aqrab) for her marriage, then why should the guardianship of a compassionate nearest guardian father be terminated and entrusted to another distant non-compassionate relative? It is possible that the distant relative might ignore the girl's benefit for his personal gain and interest. So, it became clear that in the first statement, the mention of depriving the nearest one of guardianship would apply where there is need and necessity, such as if someone gets lost in a city and a need arises. Where there is no need, guardianship will remain established, as is the case mentioned. I remember my footnote on the statement of 'Durr' regarding 'the result of the difference' (Thamrat al-Khilaf), the wording of which is: I say: When for the proponents of the second statement the pivot is the loss of a suitable match (kufu), on this basis, just as travel distance (qasr) is not a condition for the transfer of guardianship, similarly this travel distance is also not under consideration for urgency despite the non-loss of a match. So despite the travel distance, if a suitable match is not lost in waiting for the nearest guardian and obtaining his opinion, then marriage by a distant guardian (wali aba'd) will not be correct. This is the gist of the second statement, while the first statement

is against it. So, the result of the difference did not remain confined to their statement. This is it.

Footnote: F: In 'Jadd al-Muhtar', the underlined phrase is as follows: It is not considered a complete cause for it; rather, if the distance is found, etc. - Nazir Ahmad

फतावा रजविया जिल्द 11

[मुख्य पाठ - अरबी और उर्दू] (अरबी पक्ष): [जल्दबाजी के कारण] की अनुपस्थिति में, उदाहरण के लिए, यदि लड़की बहुत छोटी है और किसी उपयुक्त मेल (कुफ़ु) की कोई जल्दी नहीं है, और प्रतीक्षा करने में कोई बुराई नहीं है, तो दयालु पिता की उपेक्षा करके मामले को किसी बहुत दूर के रिश्तेदार को क्यों सौंपा जाना चाहिए? यह संभव है कि दूर का रिश्तेदार अपने लाभ या सांसारिक लाभ के लिए उसके हितों की उपेक्षा करे। इस प्रकार, यह प्रतीत होता है कि पहली राय में, अभिभावकत्व (विलायत) वहाँ छीना जाता है जहाँ इसकी आवश्यकता होती है (जैसे शहर में छिपा हुआ कोई व्यक्ति) और वहां स्थापित किया जाता है जहाँ इसकी कोई आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि इस मामले में है। मैंने 'अल-दुर्र' के'मतभेद के परिणाम' आदि पर अपने नोट में लिखा था: मैं कहता हूँ, चूंकि दूसरी राय के समर्थकों के लिए आधार उपयुक्त मेल (कुफ़ु) का खोना है, जैसे कि कसर नमाज़ की दूरी विलायत के हस्तांतरण के लिए शर्त नहीं मानी जाती, वैसे ही यहाँ भी इसे नहीं माना जाता। हानि और तत्परता की अनुपस्थिति में, यदि मेल मौजूद है और उसकी प्रतीक्षा करने या उसकी राय लेने से नहीं खोता है, तो दूसरी राय के अनुसार, दूर के रिश्तेदार द्वारा विवाह अनुमेय नहीं है, जो कि पहली राय के विपरीत है। इस प्रकार, मतभेद का परिणाम केवल उनके द्वारा बताए गए तक सीमित नहीं है। यह मुझे प्रतीत हुआ।

(उर्दू पक्ष): ...अन्यथा, बाद वाले व्यक्ति के पास अभिभावकत्व नहीं होगा। उदाहरण के लिए, यदि कोई बहुत छोटी लड़की है जिसके लिए उपयुक्त मेल (कुफ़ु) की कोई जल्दी नहीं है, और उसके विवाह के लिए निकटतम अभिभावक (वली अक़रब) की प्रतीक्षा करने में कोई बुराई नहीं है, तो एक दयालु पिता के अभिभावकत्व को समाप्त करके दूसरे दूर के गैर-दयालु रिश्तेदार को क्यों सौंपा जाना चाहिए? यह संभव है कि दूर का रिश्तेदार अपने व्यक्तिगत लाभ और स्वार्थ के लिए लड़की के लाभ की अनदेखा कर दे। तो, यह स्पष्ट हो गया कि पहले कथन में, निकटतम को अभिभावकत्व से वंचित करने की बात वहाँ लागू होगी जहाँ आवश्यकता और मजबूरी होगी, जैसे कि यदि कोई शहर में खो जाए और आवश्यकता उत्पन्न हो जाए। जहाँ कोई आवश्यकता नहीं है, वहाँ अभिभावकत्व स्थापित रहेगा, जैसा कि उल्लिखित मामला है। मुझे 'दुर्र' के कथन 'मतभेद के परिणाम' (शमरात अल-खिलाफ) पर अपना फुटनोट याद है, जिसकी शब्दावली यह है: मैं कहता हूँ: जब दूसरे कथन के समर्थकों के लिए आधार उपयुक्त मेल (कुफ़ु) का खोना है, तो इस आधार पर, जैसे यात्रा की दूरी (कसर) अभिभावकत्व के हस्तांतरण के लिए शर्त नहीं है, वैसे ही यह यात्रा की दूरी मेल के न खोने के

बावजूद तत्परता के लिए विचारणीय नहीं है। इसलिए यात्रा की दूरी के बावजूद, यदि निकटतम की प्रतीक्षा करने और उसकी राय प्राप्त करने में उपयुक्त मेल नहीं खोता है, तो दूर के अभिभावक (वली अबा'द) द्वारा विवाह सही नहीं होगा। यह दूसरे कथन का सार है, जबकि पहला कथन इसके विरुद्ध है। तो, मतभेद का परिणाम उनके कथन तक सीमित नहीं रहा। यह रहा।

पाद-टिप्पणी (Footnote): फ़: 'जद अल-मुह्तार' में रेखांकित वाक्यांश इस प्रकार है: इसे इसके लिए पूर्ण कारण नहीं माना जाता है; बल्कि यदि दूरी पाई जाती है, आदि। - नज़ीर अहमद

عند عدمه كما اذا كانت صغيرة جداً ولا كفو يستعجل ولا حرج فى الانتظار ففيم يفتات على الاب الشفيق ويوكل الامر الى بعيد سحيق وربما لا يومن ان يترك النظر لها لمصلحة نفسه اولجلب حطام فظهران فى القول الاول سلب الولاية حيث يحتاج اليها كالمختفى فى البلد واثباتها حيث لا حاجة اليها كما فى هذه الصورة هذا . ورأيتنى كتبت على قول الدر وثمرة الخلاف الخ ما نصه، اقول وحيث المدار عند اهل القول الثانى على فوات الكفو فكما لم يعتبر مسافة القصر شرطاً للانتقال كذلك لا نظر اليها فـ عند عدم الفوات والاستعجال فلو وجدت ولم يفت الكفو بانتظاره او استطلاع رأيه لم يجز تزويج الا بعد على الثانى خلافاً للاول فالثمرة غير محصورة فيما قال هذا ما ظهر لى

نہ ہو تو پھر بعد والے کو ولایت نہ ہو گی، مثلاً ایک چھوٹی بچی ہو جس کے لئے کفو کی کوئی عجلت نہیں اور نہ ہی اس کے نکاح کے لئے ولی اقرب کے انتظار میں کوئی حرج ہے تو پھر کیونکر ولی اقرب شفیق باپ کی ولایت کو ختم کر کے دوسرے بعید غیر شفیق کو ولایت سونپی جائے جبکہ یہ ممکن ہے کہ وہ بعید اپنے ذاتی فائدہ اور اپنی مصلحت کی خاطر بچی کے فائدہ کو نظر انداز کر دے، تو ظاہر ہوا کہ پہلے قول میں اقرب کی ولایت کے سلب ہونے کی بات وہاں ہو گی جہاں حاجت اور ضرورت ہو گی جیسا کہ کوئی شہر میں گم ہو جائے اور حاجت پیدا ہو جائے، اور جہاں حاجت نہیں وہاں ولایت ثابت رہے گی، جیسا کہ مذکورہ صورت ہے، مجھے در کے قول "ثمرة الخلاف" پر اپنا حاشیہ یاد ہے جس کی عبارت یہ ہے اقول: (میں کہتا ہوں) جب دوسرے قول والوں کے ہاں مدار کفو کا فوت ہونا ہے اس بنیاد پر ولایت کے منتقل ہونے کے لئے جیسے مسافت سفر (قصر) شرط نہیں ہے ایسے ہی یہ مسافتِ سفر، کفو فوت نہ ہونے کے باوجود عجلت کے لئے بھی پیشِ نظر نہیں ہے، تو مسافتِ سفر ہونے کے باوجود اقرب کی انتظار اور اس کی رائے حاصل

کرنے میں کفو فوت نہ ہو تو ولی ابعد کا نکاح کرنا درست نہ ہو گا، یہ دوسرے قول کا ما حاصل ہے جبکہ پہلا قول اس کے خلاف ہے، تو ثمرہ اختلاف، ان کے بیان میں محصور نہ رہا، یہ ہے

فــ: جدالمحتار میں خط کشیدہ عبارت یوں ہے: لاتعتبر علة تامة له بل ان وجدت المسافة الخ۔ نذیر احمد

[Top Box - Left Column (Arabic)] Let it be scrutinized. It is as you see, a clear transcription as you have known. And because of what has passed from the expressions of 'al-Multaqa', 'al-Dhakhira', and others, for the implications of disagreement (mafhum al-mukhalafa) are considered in the expressions of scholars by consensus, as they have stipulated by agreement. Then I saw in 'Majma' al-Anhur': 'So if the suitor waits for him, the more distant one (al-ab'ad) does not perform the marriage.' This is exactly what I understood, and praise be to Allah, and Allah Subhaanahu wa Ta'ala knows best.

[Top Box - Right Column (Urdu)] What became clear to me requires investigation. This statement is evident as you have already learned from the excerpts of 'Multaqa', 'Dhakhira', etc., because by consensus, the divergent meaning (mafhum al-mukhalafa) is considered valid in the statements of the scholars, as there is a clear text (nass) from everyone on this. Afterwards, I saw in 'Majma' al-Anhur' that if the one seeking engagement waits, then the more distant guardian should not perform the marriage. This is my stance. Praise be to Allah, and Allah Subhaanahu wa Ta'ala knows best. (T)

[Middle Section - Question (Urdu)] Third Question: Jurists write that a "distant guardian" (wali al-ab'ad) can perform the marriage in the absence of the "closest guardian" (al-aqrab). What is meant here by "distant guardian"? Does it mean an agnate (asaba) or any heir? Even if they are from the 'Dhuwi al-Arham' (distant kindred)? If it means agnate, then the hadith of Aisha (may Allah be pleased with her) found in Imam Muhammad's Muwatta, in the chapter "A man placing his wife's matter in her hands", mentions that Aisha (may Allah be pleased with her) arranged the marriage of her niece, the daughter of Abdur Rahman bin Abi Bakr, with Abdullah bin Zubair, even though Abdur Rahman was in Syria. What is the answer to the fact that a paternal aunt is among the 'Dhuwi al-Arham'?

[Middle Section - Answer (Urdu)] The Answer: The superlative form 'ab'ad' (more distant) in this context does not strictly follow its literal grammatical rule, but rather refers to any guardian who is further away, yet not in an absolute sense. It refers specifically to the one who is next in line to the closest guardian. Meaning, among the remaining guardians, there is no one closer than him; all others are below him or equal. For example, if the father is absent and the grandfather, brothers, and paternal uncle are present, the guardianship (wilayat) belongs to the grandfather, not

to the brothers or the uncle. If there is no grandfather, then all brothers are equal, not the uncle.

[Bottom Box - Left Column (Arabic)] In 'Radd al-Muhtar', the meaning of 'al-ab'ad' is the one who follows the absent one in proximity, as expressed in Imam Hakim's 'Kafi'. Based on this, if the absent one is her father, and she has a grandfather and an uncle, then the guardianship...

[Bottom Box - Right Column (Urdu)] It is in 'Radd al-Muhtar' that by 'ab'ad' is meant the one at the second level after the closest guardian, as expressed in Imam Hakim's 'Kafi'. On this basis, if after the absent father, the girl's grandfather and paternal uncle are both present, the guardianship belongs to the grandfather.

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, India, 2/382. 2. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Section on Guardians, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/339. Page 592 of 739

[शीर्ष बॉक्स - बायाँ कॉलम (अरबी)] इसकी जांच की जानी चाहिए। यह वैसा ही है जैसा आप देख रहे हैं, जैसा कि आपने जाना है, यह एक स्पष्ट प्रतिलेखन है। और 'अल-मुल्तका', 'अद-दखीरा' और अन्य के उद्धरणों के कारण, विद्वानों के कथनों में मतभेद के निहितार्थ (मफहूम अल-मुखालफ़ा) को सर्वसम्मति से माना जाता है, जैसा कि उन्होंने सहमति से निर्धारित किया है। फिर मैंने 'मजमा अल-अनहुर' में देखा: 'तो अगर मंगनी करने वाला उसका इंतज़ार करता है, तो अधिक दूर का संरक्षक (अल-अबअद) निकाह नहीं करता।' यह वही है जो मैं समझा, और अल्लाह की स्तुति हो, और अल्लाह सुब्हानहू व ताला बेहतर जानता है।

[शीर्ष बॉक्स - दायाँ कॉलम (उर्दू)] मुझे जो स्पष्ट हुआ उसके लिए शोध की आवश्यकता है। यह विवरण स्पष्ट है जैसा कि आप 'मुल्तका', 'दखीरा' आदि के उद्धरणों से जान चुके हैं, क्योंकि विद्वानों के कथनों में सर्वसम्मति से विपरीत अर्थ (मफहूम अल-मुखालफ़ा) मान्य है, जैसा कि इस पर सभी का स्पष्ट पाठ (नस्स) मौजूद है। इसके बाद, मैंने 'मजमा अल-अनहुर' में देखा कि यदि सगाई चाहने वाला इंतज़ार करे, तो दूर का वली निकाह न कर दे। यही मेरा रुख है। वलिल्लाहिल हम्द, और अल्लाह सुब्हानहू व ताला बेहतर जानता है। (त)

[मध्य खंड - प्रश्न (उर्दू)] तीसरा प्रश्न: फ़ुक़हा (विधिवेत्ता) लिखते हैं कि 'वली अबअद' (दूर का संरक्षक), 'अक़रब' (निकटतम संरक्षक) की अनुपस्थिति में निकाह करा सकता है। यहाँ 'वली अबअद' से क्या तात्पर्य है? असबा (अग्नैट्स) या पूर्ण उत्तराधिकारी? चाहे वे 'ज़ुवी अल-अरहाम' (दूर के रिश्तेदार) में से हों? यदि इसका अर्थ असबा है, तो हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की हदीस, जो इमाम मुहम्मद की मुवत्ता में "एक आदमी द्वारा अपनी पत्नी का मामला उसके हाथ में सौंपने" के अध्याय में है, में उल्लेख है कि हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अपनी भतीजी (अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र की बेटी) का निकाह अब्दुल्लाह बिन जुबैर से कराया था, जबकि अब्दुर्रहमान शाम में थे। इसका क्या उत्तर है कि बुआ 'ज़ुवी अल-अरहाम' में से है?

[मध्य खंड - उत्तर (उर्दू)] उत्तर: 'अबअद' में अफ़अल-ए-तफ़्ज़ील (तुलनात्मक विशेषण) अपने मूल व्याकरणिक अर्थ पर नहीं है, बल्कि इससे हर वह वली मुराद है जो दूर हो, लेकिन पूर्ण रूप से नहीं, बल्कि वह जो उस निकटतम वली से सटा हुआ हो। यानी शेष सभी वलियों में कोई उससे निकट न हो, बाकी सब उससे नीचे हों या बराबर। उदाहरण के लिए, यदि पिता अनुपस्थित है और दादा, भाई

और चाचा मौजूद हैं, तो विलायत (संरक्षण) दादा के लिए है, भाइयों या चाचा के लिए नहीं। और यदि दादा न हों, तो सभी भाई समान हैं, न कि चाचा के लिए।

[नीचे का बॉक्स - बायाँ कॉलम (अरबी)] 'रद्द अल-मुह्तार' में, 'अल-अबअद' का अर्थ वह है जो निकटता में अनुपस्थित व्यक्ति के बाद आता है, जैसा कि इमाम हाकिम की 'काफ़ी' में व्यक्त किया गया है। इसके आधार पर, यदि अनुपस्थित व्यक्ति उसका पिता है, और उसका दादा और चाचा है, तो विलायत...

[नीचे का बॉक्स - दायाँ कॉलम (उर्दू)] 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि 'अबअद' से मुराद वली अक़रब के बाद दूसरे दर्जे वाला है, जैसा कि इमाम हाकिम की 'काफ़ी' में इसकी व्याख्या की गई है। इस आधार पर, यदि पिता की अनुपस्थिति के बाद लड़की का दादा और चाचा दोनों मौजूद हों, तो विलायत दादा को मिलेगी।

[फ़ुटनोट्स] 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-वली, अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, भारत, 2/382। 2. मजमा अल-अनहुर शरह मुल्तका अल-अब्हुर, वलियों का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/339। पेज 592 of 739

[اوپر کا خانہ - بایاں کالم (عربی)] فلیحرر ' اھو ھو کما تری ظاھر محرر لما علمت. ولما مر من عبارات الملتقی و الذخیرۃ وغیرھما فان مفاھیم الخلاف معتبرۃ في عبارات العلماء بالوفاق کما نصوا علیه بالاطباق ثم رأیت في مجمع الانھر فلوا نتظرہ الخاطب لم ینکح الابعد فھذا عین ما فھمت واللہ الحمد واللہ سبحانه وتعالی اعلم۔

[اوپر کا خانہ - دایاں کالم (اردو)] جو مجھے ظاہر ہوا تو تحقیق چاہئے اھ تو یہ بیان ظاہر ہے جیسا کہ آپ معلوم کرچکے ہیں، اور ملتقی ذخیرہ وغیرہما کی عبارات سے گزرا، کیونکہ بالاتفاق علماء کی عبارات میں مفہوم مخالف معتبر ہے، جیسا کہ اس پر سب کی نص موجود ہے، اس کے بعد میں نے ، مجمع الانہر میں دیکھا کہ اگر منگنی والا انتظار کرے تو ولی ابعد نکاح نہ کردے، یہی میرا مؤقف ہے، وللہ الحمد، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ (ت)

[درمیانی حصہ - سوال (اردو)] سوال سوم یہ جو فقہاء لکھتے ہیں کہ ولی ابعد غیبت میں اقرب کے ، نکاح کراسکتا ہے، یہاں ولی ابعد سے کیا مراد ہے عصبہ یا مطلق وارث؟ گو ذوی الارحام میں سے ہو، اگر مراد عصبہ ہے تو حدیث عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے جو موطائے امام محمد کے باب الرجل بجعل امر امرأتہ بیدہا میں مخرج ہے کہ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے اپنی بھتیجی عبدالرحمن بن ابی بکر کی بیٹی کا نکاح عبداللہ بن زبیر سے کرادیا باوجودیکہ عبدالرحمن شام میں تھے، کیا جواب ہے کہ عمہ ذوی الارحام سے ہے۔

[درمیانی حصہ - الجواب (اردو)] الجواب: ابعد میں افعل التفضیل اپنے باب پر نہیں بلکہ اس سے ہر ولی بعید مراد ہے مگر نہ مطلقا بلکہ وہی جو اس ولی اقرب کے متصل ہو یعنی باقی تمام اولیاء

میں کوئی اس سے اقرب نہ ہو سب اس سے نیچے ہوں یا برابر، مثلا باپ غائب اور جد، برادران و عم موجود ہوں تو ولایت جد کے لئے ہے، نہ برادران و عم کے واسطے، اور جد نہ ہو تو سب برادران ہمسر کو، نہ عم کو،

[نیچے کا خانہ - بایاں کالم (عربی)] في رد المحتار المراد بالابعد من يلى الغائب في القرب كما عبر به في كافي الحاكم وعليه فلو كان الغائب اباها ولها جد وعم فالولاية

[نیچے کا خانہ - دایاں کالم (اردو)] ردالمحتار میں ہے کہ ابعد سے مراد ولی اقرب کے بعد دوسرے مرتبے والا ہے جیسا کہ اس کی تعبیر امام حاکم کی کافی میں ہے، اس بنا پر اگر والد غائب کے بعد لڑکی کا دادا اور چچادونوں موجود ہوں تو ولایت دادا کو

[حواشی] 1 ردالمحتار باب الولی قول المجمع الاسلامی مبارکپور بھارت ۳۸۲/۲ 2 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر فصل فی الاولیاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۳۹/۱ صفحہ 592 of 739

Fatawa Rizvia, Volume 11

| For the grandfather, not for the uncle[1] | It will be for the grandfather, not for the paternal uncle. (T) |

And since 'Zawi-al-Arham' (distant relatives) and even 'Mawla al-Muwalat' (patron by contract) are included in the chain of guardians according to us, then the phrase "the one next to the absent one in proximity" (whoever is at the next level of proximity. T) also includes them. For example, if the father is the closest guardian and is absent, then those next to him in proximity are these 'Zawi-al-Arham'. And if 'Zawi-al-Arham' are the closest among the present guardians, then in their absence, it falls to 'Mawla al-Muwalat', as is the requirement of the sequence, and this is very evident. (T) In Durr al-Mukhtar, it is stated:

| Then to the son of the mother, then to distant relatives, then to the patron by contract, then to the ruler, etc.[2] | Then the right of guardianship belongs to the mother's son, then to distant relatives, then to the contract partner, then to the ruler, etc. (T) |

And in Radd al-Muhtar, it is stated with choice:

| And it does not transfer to the ruler because the ruler is the guardian of those who have no guardian, while she has guardians[3]. | Guardianship will not transfer to the ruler because the ruler becomes the guardian only when there is no other guardian, whereas her guardians are present. (T) |

When, according to us, 'Zawi-al-Arham' and 'Mawla al-Muwalat' also take precedence over the ruler, then by the command of "these are her guardians" (T), the ruling "it shall not transfer to the ruler" (T) is firm. However, only to the extent that 'Zawi-al-Arham' also sometimes gain guardianship in the state of absence of the closer ones, will the aforementioned doubt not be removed from the Hadith of Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her). It has been known above that absolutely every distant one does not become a guardian, but only the one who is the closest after that closest one. Between the father and the paternal aunt, there are many guardians including all Agnates (Asabat), all Sharers (As-hab al-Farood), and some distant relatives (Zawi-al-Arham). For Lady Hafsa bint Abdul Rahman bin Al-Siddiq (may Allah be pleased with them), it is very unlikely that none of them were present during her father's absence, to the point that guardianship was established for the paternal aunt (may Allah be pleased with her). Rather, the answer is that it is a

specific incident (waqi'ah 'ayn) and not a general rule (la 'umum laha) (this is a special occurrence, it doesn't have generality. T). Specific incidents are certainly subject to various possibilities; it is possible that Lady Hafsa...

[1] Radd al-Muhtar, Book of Guardianship, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315 [2] Durr al-Mukhtar, Book of Guardianship, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/193 [3] Radd al-Muhtar, Book of Guardianship, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

| दादा के लिए, चाचा के लिए नहीं[1] | दादा के पास होगी, चाचा के पास नहीं होगी। (त) |

और चूँकि 'ज़वी-अल-अरहाम' (दूर के रिश्तेदार) बल्कि 'मौला अल-मुवालात' (अनुबंध द्वारा संरक्षक) भी हमारे नज़दीक संरक्षकों की श्रृंखला में शामिल हैं, तो जो "निकटता में अनुपस्थित व्यक्ति के बाद आता है" (जो निकटता में अगले स्तर पर हो। त) उनमें ये भी शामिल हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि पिता जो सबसे नज़दीकी संरक्षक है, अनुपस्थित है, तो निकटता में उसके बाद यही 'ज़वी-अल-अरहाम' हैं। और यदि 'ज़वी-अल-अरहाम' मौजूद संरक्षकों में सबसे नज़दीकी हों, तो उनकी अनुपस्थिति में 'मौला अल-मुवालात' उत्तराधिकारी होता है, जैसा कि अनुक्रम की मांग है और यह बिल्कुल स्पष्ट है। (त) 'दुर्रे मुख्तार' में है:

| फिर माँ के बेटे को, फिर दूर के रिश्तेदारों को, फिर अनुबंध वाले को, फिर सुल्तान को अधिकार है आदि[2] | फिर माँ के बेटे को और फिर दूर के रिश्तेदारों को, फिर अनुबंध वाले को, फिर सुल्तान को विलायत (सरपरस्ती) का हक है आदि। (त) |

और 'रद्दुल मुहतार' में इख्तियार से है:

| और विलायत सुल्तान को हस्तांतरित नहीं होगी क्योंकि सुल्तान उसका संरक्षक होता है जिसका कोई संरक्षक न हो, जबकि इसके संरक्षक मौजूद हैं[3]। | सुल्तान को विलायत हस्तांतरित नहीं होगी क्योंकि सुल्तान उस समय संरक्षक बनता है जब कोई दूसरा संरक्षक न हो, जबकि इसके संरक्षक मौजूद हैं। (त) |

जब हमारे नज़दीक 'ज़वी-अल-अरहाम' और 'मौला अल-मुवालात' भी सुल्तान पर वरीयता रखते हैं, तो "ये उसके संरक्षक हैं" (त) के हुक्म के अनुसार यहाँ भी "सुल्तान को हस्तांतरित नहीं होगी" (त) का हुक्म मज़बूत है। मगर सिर्फ इतना कि 'ज़वी-अल-अरहाम' भी कभी नज़दीकी की अनुपस्थिति में विलायत पाते हैं, उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) की हदीस से उक्त संदेह दूर नहीं होगा। ऊपर मालूम हो चुका कि हर दूर का रिश्तेदार मुतलक़न संरक्षक नहीं हो जाता बल्कि वही जो उस नज़दीकी के बाद सबसे नज़दीक है। पिता और बुआ के बीच तमाम असबात (पितृपक्षीय रिश्तेदार), तमाम असहाबे फ़रूज़ (निश्चित हिस्सेदार) और कुछ 'ज़वी-अल-अरहाम' के रूप में बहुत से संरक्षक हैं। हज़रत हफ़सा बिन्ते अब्दुर्रहमान बिन अल-सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) के लिए उनके पिता की अनुपस्थिति में उनमें से किसी का भी मौजूद न होना, यहाँ तक कि विलायत

हज़रत बुआ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) के लिए साबित हो, बहुत दूर की बात (असंभव) लगती है। बल्कि जवाब यह है कि यह एक विशिष्ट घटना है, कोई सामान्य नियम नहीं (वाकिआ एन ला उमूम लहा) (यह एक विशेष घटना है इसमें सामान्यता नहीं है। त)। विशिष्ट घटनाएँ निश्चित रूप से संभावनाओं का स्थल होती हैं, मुमकिन है कि हज़रत हफ़सा...

[1] रद्दुल मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/315 [2] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/193 [3] रद्दुल मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/315

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

| للجد لا للعم[1] | ہوگی، چچا کو نہ ہوگی۔ (ت) |

اور جبکہ ذوی الارحام بلکہ مولی الموالاۃ بھی ہمارے نزدیک سلسلہ اولیاء میں داخل تو من یلی الغائب فی القرب (جو قرب میں بعد والے مرتبہ پر ہو۔ ت) انھیں بھی شامل، مثلا والد ولی اقرب غائب ہے تو اس کے من یلی فی القرب یہی ذوی الارحام ہیں، اور ذوی الارحام اقرب الاولیاء الموجودین ہوں تو ان کی غیبت میں من الموالاۃ من یلی ہے کما ھو قضیۃ الترتیب وھو ظاھر جدا (جیسا کہ ترتیب کا تقاضا ہے، یہ بالکل ظاہر ہے۔ ت) در مختار میں ہے:

| ثم لولد الام ثم لذوی الارحام ثم مولی الموالاۃ ثم للسلطان[2] الخ۔ | پھر والدہ کے بیٹے اور پھر ذوی الارحام کو پھر معاہدہ والے کو پھر سلطان کو حق ولایت ہے الخ (ت) |

اور رد المحتار میں اختیار سے ہے:

| ولا تنتقل الی السلطان لان السلطان ولی من لاولی لہ و ھذہ لھا اولیاء[3] ۔ | سلطان کو ولایت منتقل نہ ہوگی کیونکہ سلطان اس وقت ولی بنتا ہے جب دوسرا کوئی ولی نہ ہو جبکہ اس کے اولیاء موجود ہیں۔ (ت) |

جب ہمارے نزدیک ذوی الارحام و مولی الموالاۃ بھی سلطان پر مقدم تو بحکم ھذہ لھا اولیاء (یہ اس کے اولیاء ہیں۔ ت) یہاں بھی لاتنتقل الی السلطان (سلطان یعنی حکم کو منتقل نہ ہوگی۔ ت) کا حکم محکم مگر صرف اس قدر کہ ذوی الارحام بھی کبھی بحالت غیبت اقرب ولایت پاتے ہیں، حدیث ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے رفع شبہ مذکورہ نہ کرے گا۔ اوپر معلوم ہو چکا کہ مطلقاً ہر بعید ولی نہیں ہو جاتا بلکہ وہی جو اس اقرب کے بعد سب سے اقرب ہے، پدر وعمہ کے درمیان

تمام عصبات و تمام اصحاب فروض و بعض ذوی الارحام بکثرت اولیاء ہیں، حضرت حفصہ بنت عبدالرحمن بن الصدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے لئے بحالت غیبت پدر ان میں کسی کا اصلا موجود نہ ہونا یہاں تک کہ ولایت حضرت عمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے لیے ثابت ہو بہت مستبعد ہے، بلکہ جواب یہ ہے کہ واقعہ عین لا عموم لہا (یہ خاص واقعہ ہے اس میں عموم نہیں ہے۔ ت) وقائع عین ہر گز نہ احتمال کے محل ہوتے ہیں، ممکن کہ حضرت حفصہ

[1] رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۲ [2] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۳/۱ [3] رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۵/۲

Fatawa Razawiyya, Volume Eleven

At the time of marriage, if she is an adult, no one has the authority of forced guardianship (Wilayat-e-Mujbirah) over her. It is possible that the Mother of the Believers (Umm al-Mu'minin, may Allah be pleased with her) proposed and approved the marriage of Hadrat Munzir bin Zubair (may Allah be pleased with both of them) and ordered the nearest of the present guardians to perform the marriage with him. And if they performed the marriage according to the noble command, then the marriage occurred through the authority of the rightful guardian, but because it was by the command, opinion, and proposal of her Eminence, it was attributed to her. Such attributions are common and widespread, for example:

[Boxed Text] Arabic: Fataha al-Amiru al-hisna wa qata'a al-Sultanu al-lissa wa ghasala Aliyyun Fatimah Radi Allahu Ta'ala 'anhuma. Urdu translation: The commander conquered the fort, the Sultan cut the thief's hand, Ali gave the bath to Fatima (may Allah be pleased with both of them). (T)

When Munzir bin Zubair, seeing the displeasure of Hadrat Abdur Rahman, gave him the choice to separate them if he wished, Hadrat Abdur Rahman said to his noble sister, "Ma kuntu li-uradda amran qadaytihi" [1] - "It does not behoove me to reject what you have ordered." And if the meaning of "She married off Hafsah" is taken to be that the Mother of the Believers performed the marriage herself, then it is possible she mentioned it to the rightful guardian and took permission; in this case, she would be an agent (Wakeel). In any case, there is no room for doubt or confusion. These are the reasons that occur to this humble one. And Imam Malik (may Allah have mercy on him) counted this among the special privileges of the Mother of the Believers because of her proximity to the holy station of the radiant Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him), and thus her performing this marriage was valid. It is stated in Sharh al-Zurqani 'ala Muwatta Imam Malik:

[Boxed Text] Arabic: Qala Malikun fi al-Muwaziyyah innama kana dhalika limithli Aisha limakanina min Rasulillah Sallallahu Alayhi wa Sallam [2] etc. Wallahu Ta'ala A'lam. Urdu translation: Imam Malik stated in al-Muwaziyyah: This right was only for Hadrat Aisha (may Allah be pleased with her) because she had a special relationship with the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) etc. And Allah knows best. (T)

Question Four In this matter, if a distant guardian (Wali-e-Ab'ad) marries someone outside the community (baradari), what will be the ruling? Answer: The nearest guardian (Wali-e-Aqrab) who is absent is the father or the paternal grandfather (Sahih Jad); each one is either not known for poor judgment or is known for it, that from it...

[Footnotes] 1. Muwatta al-Imam Malik, Book of Divorce, 'That which does not clarify from possession', Mir Muhammad Library Karachi, p. 513 2. Sharh al-Zurqani on Muwatta al-Imam Malik, Book of Divorce, Al-Maktabah al-Tijariyah al-Kubra Egypt, 2/173

फतावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

निकाह के समय यदि वह बालिग़ (वयस्क) हो, तो उन पर विलायत-ए-मुजबिरा (अनिवार्य संरक्षकता) किसी को प्राप्त नहीं है। संभव है कि उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) ने हज़रत मुनज़िर बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) के निकाह के लिए प्रस्ताव और पसंद व्यक्त की हो और उपस्थित निकटतम संरक्षकों (अक़रबुल औलिया) को उनसे निकाह कर देने का हुक्म दिया हो। और यदि उन्होंने हुक्म के अनुसार निकाह कर दिया, तो निकाह हक़दार संरक्षक की विलायत से ही हुआ, लेकिन चूँकि यह हज़रत के हुक्म, राय और प्रस्ताव से हुआ था, इसलिए इसे हज़रत की ओर ही मंसूब (संबद्ध) किया गया। ऐसी निस्बतें (संबंध) प्रसिद्ध और प्रचलित हैं, जैसे:

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: फतह अल-अमीर अल-हिसना व क़तअ अस-सुल्तान अल-लिस-सा व ग़सल अलिय्युन फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। उर्दू अनुवाद: अमीर ने किला फतह किया, सुल्तान ने चोर का हाथ काटा, अली ने फातिमा को गुस्ल दिया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)। (त)

जब मुनज़िर बिन ज़ुबैर ने हज़रत अब्दुर्रहमान की नाराज़गी पाकर उन्हें यह अधिकार दिया कि वे चाहें तो अलग (तफ़रीक़) कर दें, तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने अपनी पवित्र बहन से अर्ज़ किया: "मा कुन्तु लि-उरद्दा इमरन क़ज़ैतिहि" [1] - "मुझे यह शोभा नहीं देता कि मैं उस बात को रद्द करूँ जिसका आपने हुक्म दिया है।" और यदि "इन्नहा ज़व्वजत हफ़्सह" का अर्थ यही लिया जाए कि उम्मुल मोमिनीन ने स्वयं निकाह कराया, तो संभव है कि उन्होंने हक़दार संरक्षक से चर्चा करके अनुमति ले ली हो; अब यह स्थिति तो वकील की हो जाएगी। बहरहाल, यहाँ संदेह या भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं है। ये वे कारण हैं जो इस फ़कीर (लेखक) के मन में आए। और इमाम मालिक (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) ने इसे उम्मुल मोमिनीन के विशेषाधिकारों में गिना है, क्योंकि उनका पवित्र हज़रत सैयद-ए-आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के साथ घनिष्ठ संबंध था, इसलिए उनका यह निकाह कराना जायज़ रहा। ज़रक़ानी अला मुवत्ता लिल इमाम मालिक में है:

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: क़ाल मालिकुन फ़िल मवाज़िया इन्नमा कान ज़ालिक लिमिस-लि आएशा लिमकानिहा मिन रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम [2] आदि। वल्लाहु तआला आलम। उर्दू अनुवाद: इमाम मालिक ने मवाज़िया में फ़रमाया: यह अधिकार केवल हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) को था क्योंकि उनका रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से विशेष संबंध था आदि। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

चौथा सवाल इस मसले में यदि दूर के संरक्षक (वली-ए-अबअद) ने बिरादरी के बाहर निकाह कर दिया, तो क्या हुक्म होगा? जवाब: निकटतम संरक्षक (वली-ए-अक़रब) जो अनुपस्थित है, वह पिता या दादा (जद-ए-सहीह) है; इनमें से प्रत्येक या तो अपने गलत चुनाव (सू-ए-इख़्तियार) के लिए बदनाम नहीं है या बदनाम है कि उससे...

[पादलेख] 1. मुवत्ता अल-इमाम मालिक, किताबुत तलाक़, 'मालम युबय्यिन मिनत तम्लीक', मीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना कराची, पृ. 513 2. शरह अल-ज़रक़ानी अला मुवत्ता अल-इमाम मालिक, किताबुत तलाक़, मकतबा तिजारिया कुबरा मिस्र, 2/173

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

وقتِ نکاح بالغہ ہوں تو ان پر ولایتِ مجبرہ کسی کو نہیں۔ ممکن کہ حضرت ام المؤمنین رضی اللہ تعالٰی عنہا نے حضرت منذر بن زبیر رضی اللہ تعالٰی عنہما کی تزویج کے لئے تجویز و پسند فرمایا اور اقرب الاولیاء الحاضرین کو ان سے نکاح کر دینے کا حکم کیا اور انھوں نے حسبِ حکم والا نکاح کردیا ہو تو نکاح ہوا تو ولیِ مستحق ہی کی ولایت سے، مگر حضرت کے حکم حضرت کی رائے حضرت کی تجویز سے ہونے کے باعث حضرت کی طرف منسوب ہوا ایسی نسبتیں شائع وذائع ہیں جیسے:

[باکس ٹیکسٹ] فتح الامیر الحصن وقطع السلطان اللص وغسل علی فاطمہ رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ امیر نے قلعہ فتح کیا، سلطان نے چور کا ہاتھ کاٹا، علی نے فاطمہ کو غسل دیا رضی اللہ تعالٰی عنہما (ت)

جب منذر بن زبیر نے حضرت عبدالرحمن کی ناراضی پاکر انھیں اختیار دیا کہ وہ چاہیں تو تفریق کردیں حضرت عبدالرحمن نے اس پر اپنی خواہرِ مطہرہ سے عرض کی ما کنت لارد امراً قضیتہ ۱ "مجھے نہیں پہنچتا کہ اس بات کو رد کروں جس کا آپ نے حکم فرمایا، اور اگر "انھا زوجت حفصہ" کے معنی یہی رکھے جائیں کہ ام المؤمنین نے بنفسِ نفیس تزویج فرمائی تو ممکن کہ ولیِ مستحق سے ذکر فرماکر اجازت لے لی ہو، اب یہ صورت تو وکیل کی ہو جائیگی بہر حال کوئی مقامِ شبہ واشکال نہیں۔ یہ وہ وجوہ ہیں کہ خاطرِ فقیر میں آئیں، اور امام مالک رحمۃ اللہ تعالٰی عنہ نے ام المؤمنین کے خصائص سے شمار فرما کر بوجہ اس قرب کے جو حضرت قدسی منزلت کو حضرت پرنور سیدِ عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے تھا، ان کی یہ تزویج جائز رہی، زرقانی علی موطا للامام مالک میں ہے:

[باکس ٹیکسٹ] قال مالك في الموازية انما كان ذلك لمثل عائشة لمكانها من رسول الله صلى الله تعالى علیہ وسلم ۲ الخ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ امام مالک نے مواز یہ میں فرمایا: یہ صرف حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو حق تھا کیونکہ ان کو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے خاص تعلق تھا الخ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

سوال چہارم اس مسئلہ میں اگر ولی ابعد نے غیر برادری میں نکاح کر دیا تو کیا حکم ہوگا؟ الجواب: ولی اقرب کہ غائب ہے پدرِ یا جد صحیح ہے ہر ایک غیر معروف بسوء اختیار یا معروف کہ اس سے

[حواشی] ۱ موطا الامام مالک کتاب الطلاق مالا یبین من التملیک میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۵۱۳ ۲ شرح الزرقانی علی موطا الامام مالک کتاب الطلاق مکتبہ تجاریہ کبریٰ مصر ۲/ ۱۷۳

Fatawa-e-Razvia Volume 11

Suppose someone has already married off one of their children to a non-equal (ghayr-kufu) or with excessive inequality in the dowry (ghabn-e-fahish), or something other than these two. And in the absence of the father, the distant guardian (wali ab'ad), like the grandfather, is known for poor judgment (soo-e-ikhtiyar) or not known, or someone else; these become nine scenarios. In every estimation, whether the absence is 'ghaybat-e-munqati'ah' (prolonged absence where no contact is possible) or not. That person is either a compatible match (kufu) within the community or not, meaning they have such a deficiency in lineage, religion, profession, behavior, or wealth that marriage with them would be a cause of shame and disgrace for their guardians. Marriage with 'ghabn-e-fahish' in 'mahr-e-mithl' (customary dowry) occurred, for example, the daughter's customary dowry was one thousand but five hundred was fixed, or the son's wife's was five hundred but one thousand was fixed, or otherwise. In total, these are 72 scenarios. The rule for their ruling, by the grace of Allah Almighty, is that if the absence was not 'ghaybat-e-munqati'ah' and the absent guardian's father or grandfather are not known for poor judgment, then this marriage is absolutely dependent on their permission, even if it is with a non-equal or with 'ghabn-e-fahish'. And if the mentioned absent one is known for poor judgment, then the marriage is absolutely void, even if the grandfather, who is not known for poor judgment, performed it during the father's absence.

Arabic Text

The reason for this is that as long as the absence is not 'ghaybat-e-munqati'ah', guardianship (wilayah) does not transfer to anyone else, as we have mentioned in the first issue. And the father and grandfather have the authority to marry off [their wards] to a non-equal or with 'ghabn-e-fahish' as long as they are not known for poor judgment. If they are known for it, then it's not allowed, as stated in Durr al-Mukhtar[1] and other books. It is mentioned in Durr al-Mukhtar and its text Tanwir al-Absar, in the chapter

Urdu Translation / Explanation

The reason for this is that as long as the absence is not 'ghaybat-e-munqati'ah', guardianship (wilayah) does not transfer to anyone else, as we have mentioned in the first issue. And the father and grandfather have the authority to marry off [their wards] to a non-equal or with 'ghabn-e-fahish' as long as they are not known for poor judgment. If they are known for it, then it's not allowed, as stated in Durr al-Mukhtar etc., while it is mentioned in Durr al-Mukhtar and its text Tanwir al-Absar in the discussion of

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
on 'fuduli' (unauthorized agent), that every action taken by him, such as marriage, if there is someone capable of authorizing it at the time of its occurrence, then it is suspended (mawquf). If there is no one to authorize it at the time of the contract, then it does not take place at all.[2] So when...	'fuduli' that all those actions which, upon being performed, depend on someone's permission, then in the presence of the one who gives permission, those actions will be declared suspended (mawquf), and if the one to permit such actions is not present, then those actions will not be concluded at all. So when...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Mujtabai Press Delhi 1/192 [2] Durr al-Mukhtar, Explanation of Tanwir al-Absar, Chapter on Unauthorized Agent, Mujtabai Press Delhi 2/31

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

पहले अपनी औलाद में से किसी बच्चे का निकाह ग़ैर-कुफ़ू (असमान) से या महर-ए-मिसल (प्रचलित मेहर) में ग़बन-ए-फ़ाहिश (अत्यधिक कमी/बढ़ोतरी) के साथ कर चुका हो या इन दोनों के अलावा, और जबकि पिता अनुपस्थित हो तो दूर का वली (अभिभावक) जैसे दादा, बुरे चुनाव (सू-ए-इख्तियार) के लिए प्रसिद्ध हो या प्रसिद्ध न हो या कोई और, ये नौ सूरतें हुईं। और हर अनुमान पर ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ (ऐसी अनुपस्थिति जिससे संपर्क न हो सके) है या नहीं। वह ग़ैर-बिरादरी वाला कुफ़ू है या नहीं, यानी वंश, धर्म, पेशा, व्यवहार या धन किसी भी बात में उसमें ऐसी कमी है कि उससे निकाह उसके वली के लिए लज्जा और अपमान का कारण है। महर-ए-मिसल में ग़बन-ए-फ़ाहिश के साथ निकाह हुआ, उदाहरण के लिए बेटी का महर-ए-मिसल एक हज़ार था, पांच सौ तय किया गया, या बेटे की पत्नी का पांच सौ था, एक हज़ार तय किया गया, या इसके अलावा। कुल मिलाकर ये ७२ सूरतें हुईं। उनके हुक्म का नियम, अल्लाह तआला की तौफीक से यह है कि अगर अनुपस्थिति ग़ैर-मुनक़तिआ थी और वली-ए-ग़ायब (अनुपस्थित अभिभावक) के पिता या दादा बुरे चुनाव के लिए प्रसिद्ध नहीं हैं, तो यह निकाह पूर्णतः उनकी अनुमति पर निर्भर (मौक़ूफ़) है, चाहे वह ग़ैर-कुफ़ू या ग़बन-ए-फ़ाहिश के साथ ही क्यों न हो। और अगर उक्त ग़ायब व्यक्ति बुरे चुनाव के लिए प्रसिद्ध है, तो निकाह पूर्णतः बातिल (अमान्य) है, चाहे पिता की अनुपस्थिति में उसे सही दादा ने ही किया हो जो बुरे चुनाव के लिए प्रसिद्ध न हो।

अरबी पाठ

इसमें कारण यह है कि जब तक ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ न हो, विलायत (अभिभावकत्व) किसी अन्य को प्राप्त नहीं होती जैसा कि हमने पहले मसले में उल्लेख किया है। और पिता और दादा को ग़ैर-कुफ़ू और ग़बन-ए-फ़ाहिश के साथ निकाह का अधिकार है जब तक वे बुरे चुनाव के लिए प्रसिद्ध न हों। यदि वे इसके लिए प्रसिद्ध हैं तो यह मान्य नहीं है, जैसा कि दुर्र-ए-मुख़्तार[1] और अन्य पुस्तकों में है। दुर्र-ए-मुख़्तार और उसके मूल पाठ तनवीरुल अबसार में फ़ुज़ूली (अनधिकृत एजेंट) के

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

इसमें कारण यह है कि जब तक ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ न हो, किसी और को विलायत (अभिभावकत्व) प्राप्त नहीं होती जैसा कि हमने पहले मसले में ज़िक्र किया है। और पिता और दादा को उस समय ग़ैर-कुफ़ू और अत्यधिक मेहर या बहुत कम मेहर के साथ निकाह की अनुमति है जब वे बुरे चुनाव के लिए प्रसिद्ध न हों। इसमें प्रसिद्ध होने की स्थिति में जायज़ नहीं है, जैसा कि दुर्र-ए-मुख़्तार आदि में है जबकि दुर्र-ए-मुख़्तार और उसके मूल पाठ तनवीरुल

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद / व्याख्या
अध्याय में कहा गया है कि उसके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य जैसे कि निकाह, यदि उसके घटित होने के समय कोई उसे अनुमति देने में सक्षम है, तो वह निलंबित (मौक़ूफ़) हो जाता है। यदि अनुबंध के समय उसे अनुमति देने वाला कोई नहीं है, तो वह संपन्न ही नहीं होता।² अतः जब वे इसके लिए प्रसिद्ध न हों...	अबसार में फ़ुज़ूली की चर्चा में वर्णित है कि वे तमाम कार्य जो किसी के द्वारा किए जाने पर उसकी अनुमति पर निर्भर हों, तो अनुमति देने वाले की उपस्थिति में वे कार्य मौक़ूफ़ (निलंबित) माने जाएंगे और अगर ऐसे कार्यों की अनुमति देने वाला मौजूद न हो, तो फिर वे कार्य संपन्न (मुनक़िद) ही नहीं होंगे। तो जब...

[1] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल वली, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली १/१९२ [2] दुर्र-ए-मुख़्तार, शरह तनवीरुल अबसार, फ़स्ल फ़िल फ़ुज़ूली, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली २/३१

पृष्ठ ५९५/७३९

پہلے اپنی اولاد سے کسی بچے کا نکاح غیر کفو سے یا مہر مثل میں غبن فاحش کے ساتھ کر چکا ہو یا ان دونوں کا غیر، اور جبکہ غائب پدر ہو تو ولی ابعد جد معروف بسوء اختیار یا غیر معروف یا کوئی اور، یہ نو صورتیں ہوئیں اور ہر تقدیر پر غیبت منقطعہ ہے یا غیر، وہ غیر برادری والا کفو ہے یا غیر یعنی نسب یا مذہب یا حرفت یا روش یا مال غرض کسی بات میں اس سے ایسی کمی رکھتا ہے کہ اس سے نکاح اس کے اولیاء کے لئے باعث ننگ وعار ہے، نکاح مہر مثل میں غبن فاحش کے ساتھ ہوا مثلاً دختر کا مہر مثل ہزار تھا پانسو باندھے یا زوجہ پسر کا پانسو تھا ہزار باندھے یا غیر، یہ جملہ بہتر ۷۲ صورتیں ہوئیں، ان کے حکم کا ضابطہ بتوفیق اللہ تعالیٰ یہ ہے کہ اگر غیبت غیر منقطعہ تھی اور ولی غائب پدر یا جد غیر معروفین بسوء اختیار ہیں تو یہ نکاح مطلقاً ان کی اجازت پر موقوف ہے اگرچہ غیر کفو غبن فاحش سے ہو، اور اگر غائب مذکور معروف بسوء اختیار تو نکاح مطلقاً باطل محض، اگرچہ غیبت پدر میں جد صحیح غیر معروف بسوء اختیار نے کیا ہو۔

عربی متن	**اردو ترجمہ**
والوجه في ذلك ان الغيبة اذالم يكن منقطعة لا تكون الولاية لغيره كما قدمنا في مسئلة الاولى والاب والجد لهما التزويج بغير الكفو وبالغبن الفاحش اذالم يعرفا بسوء الاختيار لا اذا عرفا به كما في الدرالمختار ۱ وغيره من الاسفار وقد	اس میں وجہ یہ ہے کہ جب تک غیبت منقطعہ نہ ہو تو غیر کو ولایت حاصل نہیں ہوتی جیسا کہ پہلے مسئلہ میں ہم نے ذکر کیا ہے، اور باپ اور دادا کو اس وقت غیر کفو اور گراں مہر یا انتہائی کم مہر کے ساتھ نکاح کی اجازت ہے جب وہ سوء اختیار میں معروف نہ ہوں، اس میں معروف ہونے کی صورت میں جائز نہیں، جیسا کہ

عربی متن	اردو ترجمہ
	درمختار وغیرہ میں ہے جبکہ درمختار اور اس کے متن
قال فيه وفي متنه تنوير الابصار في فصل	تنویر الابصار میں فضولی کی بحث میں مذکور ہے کہ
الفضولی کل تصرف صدر منه کتزویج	تمام وہ تصرفات جن کے صادر ہونے پر وہ کسی کی
وله مجیزای من یقدر علی اجازته حال	اجازت پر موقوف ہوں تو اجازت دینے والے کی
وقوعه انعقد موقوفا ومالا مجیز له حالة	موجودگی میں وہ تصرفات موقوف قرار پائیں گے اور
العقد لا ینعقد۲ اهـ فاذالم یعرفا به	اگر ایسے تصرفات کی اجازت دینے والا موجود نہ ہو تو
	پھر یہ تصرفات منعقد ہی نہ ہوں گے اھ، تو جب

۱ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ ۲ درمختار شرح تنویر الابصار فصل فی الفضولی مطبع مجتبائی دہلی ۳۱/۲

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

[Arabic Section]: So this is a contract that has taken place, and there is someone who possesses the right to execute it, so it remains suspended. But if it is customarily known [for bad choices], then it is not. Footnote (A): There is no suspension through a marriage performed by a grandfather not known [for bad choices] during the absence of a father known for them, even if the grandfather possesses the right when it is not known. This is because this [transfer of right] only occurs during the subsistence of his guardianship, which is during the father's absence in a non-severing absence; he has no authority at all, even if it is a compatible match, let alone others.

[Urdu Explanation]: If the father and grandfather are not known for bad choices, then this contract will be correct and remain suspended upon permission, because the one who can authorize this contract is himself present. And if they are known for bad choices, then it will neither be concluded nor suspended. So in this case, a grandfather not known for bad choices, if he performs the marriage during the non-severing absence of the father who is known for bad choices, then this marriage will not remain suspended. Although a grandfather not known for bad choices is himself authorized to perform the marriage, but here it is not allowed because the father is not absent in a severing absence; rather, he is absent in a non-severing absence. In such a situation, guardianship does not transfer to the grandfather even if the grandfather performs it in a compatible match, let alone in an incompatible one. (T)

And if the absent guardian is other than the father and grandfather, then marriage to a compatible match without gross deception is suspended upon the permission of the absent person due to the persistence of guardianship because of non-severance (due to guardianship remaining based on non-severance. T). And from an incompatible match or with gross deception, it is absolutely void due to the absence of an authorizer (absolutely void because there is no one to authorize it. T). This is even if, besides this guardian who is absent in a non-severing absence, the minor girl's or boy's father or grandfather, who is not known for bad choices, is alive but absent in a severing absence, as severing absence is like death.

[Arabic Section]: Based on what was authenticated in 'al-Badai', guardianship transfers from the closest relative to the one next to him in proximity, such that if the closest relative performed the marriage where he is, it would not be valid. To this

leans the discourse of 'al-Mabsut', 'al-Hidayah', and 'al-Fath', rather both of them have explicitly stated it.

[Urdu Translation]: Based on the correction mentioned in 'Badai' that guardianship transfers from the closest relative and is acquired by the next closest relative, to the extent that if the closest relative performed the marriage where he is, it would not be implemented. The discourse of 'Mabsut', 'Hidayah', and 'Fath' leans towards this, rather the latter two have explicitly clarified it.

[Footnote Arabic/Urdu]: Note (A): Meaning if they are known for bad choices, there is no authorizer, so there is no suspension but rather it becomes void. Then it was branched upon this saying "so there is no suspension by the marriage performed by a grandfather etc." 12 From him (M). [Footnote Urdu]: Meaning if they are known for bad choices, then this marriage will not be suspended but rather will be void. Then as a corollary to this it was said, "so there is no suspension by the marriage performed by a grandfather etc." 12 From him (T).

[अरबी खंड]: तो यह एक अनुबंध (निकाह) हुआ है और इसे निष्पादित करने वाला कोई मौजूद है, इसलिए यह मवक़ूफ़ (अनुमति पर टिका) रहेगा। और यदि प्रथागत रूप से [गलत चुनाव के लिए] ज्ञात हो, तो नहीं। पादलेख (अ): दादा द्वारा किए गए निकाह के कारण कोई रोक नहीं है जब पिता, जो गलत चुनाव के लिए जाना जाता है, अनुपस्थित हो, भले ही दादा इसके हकदार हों जब यह ज्ञात न हो। क्योंकि यह केवल तभी होता है जब उसका संरक्षण (विलायत) कायम हो, और वह पिता की ऐसी अनुपस्थिति में होता है जो पूर्ण विच्छेद वाली न हो (ग़ैबत-ए-ग़ैर मुन्क़तिआ); उसे बिल्कुल भी अधिकार नहीं है, भले ही वह एक अनुकूल (कुफ़ू) रिश्ता हो, दूसरों की तो बात ही छोड़िए।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: यदि पिता और दादा गलत चुनाव के लिए नहीं जाने जाते हैं, तो यह अनुबंध सही होकर अनुमति पर निर्भर रहेगा क्योंकि इस अनुबंध को जायज़ करने वाला स्वयं मौजूद है। और यदि वे गलत चुनाव के लिए जाने जाते हैं, तो निकाह न तो संपन्न होगा और न ही मवक़ूफ़ रहेगा। तो इस स्थिति में, गलत चुनाव के लिए न जाना जाने वाला दादा, यदि उस पिता की गैर-विच्छेदी अनुपस्थिति में निकाह कर देता है जो गलत चुनाव के लिए जाना जाता है, तो यह निकाह मवक़ूफ़ नहीं रहेगा। हालांकि गलत चुनाव के लिए न जाना जाने वाला दादा स्वयं निकाह करने का अधिकार रखता है, लेकिन यहाँ इसलिए नहीं कि पिता विच्छेदी अनुपस्थिति (ग़ैबत-ए-मुन्क़तिआ) में गायब नहीं है, बल्कि वह गैर-विच्छेदी अनुपस्थिति में गायब है। ऐसी स्थिति में, दादा को विलायत (अधिकार) हस्तांतरित नहीं होती है, भले ही दादा कुफ़ू में भी निकाह करे, फिर ग़ैर-कुफ़ू में करने का तो सवाल ही नहीं उठता। (त)

और यदि गायब वली (अभिभावक) पिता और दादा के अलावा कोई और है, तो कुफ़ू में बिना किसी बड़े धोखे (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) के किया गया निकाह गायब व्यक्ति की अनुमति पर मवक़ूफ़ रहेगा क्योंकि विच्छेद न होने के कारण उसकी विलायत बरकरार है (विच्छेद न होने के आधार पर विलायत बाकी रहने के कारण। त)। और ग़ैर-कुफ़ू या ग़ब्न-ए-फ़ाहिश के साथ किया गया निकाह अनुमति देने वाले के अभाव के कारण पूर्णतः बातिल (शून्य) है (अनुमति देने वाला न होने के कारण पूर्णतः बातिल है। त)। भले ही उस वली के अलावा, जो गैर-विच्छेदी अनुपस्थिति में गायब है, छोटी बच्ची या बच्चे का वह पिता या दादा, जो गलत चुनाव के लिए नहीं जाना जाता, विच्छेदी अनुपस्थिति में जीवित मौजूद हो, क्योंकि विच्छेदी अनुपस्थिति मृत्यु के समान है।

[अरबी खंड]: 'अल-बदाई' में प्रमाणित बात के आधार पर कि विलायत सबसे करीबी रिश्तेदार से उसके बाद वाले करीबी को हस्तांतरित हो जाती है, यहाँ तक कि यदि सबसे करीबी रिश्तेदार ने जहाँ वह है वहाँ निकाह कर दिया हो, तो वह मान्य नहीं होगा। इसी ओर 'अल-मब्सूत', 'हिदाया' और 'फ़तह' का कथन झुकता है, बल्कि अंतिम दोनों ने इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है।

[उर्दू अनुवाद]: 'बदाई' में वर्णित सुधार के आधार पर कि विलायत सबसे करीबी से हस्तांतरित होकर उसके बाद वाले करीबी को प्राप्त होगी, यहाँ तक कि यदि सबसे करीबी ने जहाँ वह है वहाँ निकाह कर दिया हो, तो वह लागू (नाफ़िज़) नहीं होगा। इसी ओर मब्सूत, हिदाया और फ़तह का कथन झुका हुआ है, बल्कि अंतिम दोनों ने इसकी स्पष्ट व्याख्या की है।

[पादलेख अरबी/उर्दू]: नोट (अ): यानी यदि वे गलत चुनाव के लिए प्रसिद्ध हैं, तो कोई अनुमति देने वाला नहीं है, इसलिए कोई निलंबन नहीं बल्कि यह बातिल हो जाता है। फिर इस पर यह शाखा निकली कि "दादा के निकाह से कोई रोक नहीं है आदि।" 12 उन्हीं से (म)। [पादलेख उर्दू]: यानी यदि वे गलत चुनाव के लिए प्रसिद्ध हैं, तो यह निकाह मवक़ूफ़ नहीं बल्कि बातिल होगा। फिर इस पर परिणाम के रूप में कहा गया, "दादा के निकाह से कोई रोक नहीं है आदि।" 12 उन्हीं से (त)।

पृष्ठ 596 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدھم

فھذا عقد وقع ولہ من یملك تنفیذہ فوقف وان عرفاً فلا فلا عنہ فلا توقف بتزویج جد لم یعرف بہ غیبة اب معروف بہ وان کان الجد یملکہ اذالم یعرف بہ فان ھذا انما ھو حین قیام ولایتہ وھو عند غیبة للاب غیبة غیر منقطعة لا یلی اصلا ولومن کفو فضلاً عن غیرہ۔

باپ دادا سوءِ اختیار سے معروف نہ ہوں تو یہ عقد درست ہو کر اجازت پر موقوف رہے گا کیونکہ اس عقد کو جائز کرنے والا خود موجود ہے ، اور اگر سوءِ اختیار میں معروف ہوں تو منعقد نہ ہوگا اور نہ موقوف ہوگا ، تو اس صورت میں سوءِ اختیار میں غیر معروف دادا اگر اس باپ کی غیبت غیر منقطعة میں جو سوءِ اختیار میں معروف ہو نکاح کردے تو یہ نکاح موقوف نہ رہے گا اگر چہ دادا غیر معروف بسوءِ اختیار خود نکاح کردینے کا مالک ہوتا ہے مگر یہاں اس لئے نہیں کہ باپ غیبت منقطعة میں غائب نہیں بلکہ وہ غیر منقطعة غیبت میں غائب ہے تو ایسی صورت میں دادا کو ولایت منتقل نہیں ہوتی اگرچہ دادا کفو میں بھی کرے چہ جائیکہ غیر کفو میں کرے۔ (ت)

اور اگر ولی غائب غیر اب وجد ہے تو کفو سے بے غبن فاحش اجازت غائب پر موقوف لقیام ولایتہ بعدم الانقطاع (عدم انقطاع کی بنا پر ولایت باقی رہنے کی وجہ سے ۔ ت) اور غیر کفو یا غبن فاحش سے مطلقاً باطل لعدم المجیز (جائز کرنے والانہ ہونے کی وجہ سے مطلقاً باطل ہے۔ ت)
اگرچہ اس ولی غائب بغیبت غیر منقطعہ کے سوا صغیرہ وصغیرہ کا باپ یا دادا غیر معروف بسوءِ اختیار غائب بغیبت منقطعہ زندہ موجود ہوں کہ غیبت منقطعہ مثل موت ہے۔

بناء علی ما صحح فی البدائع انھا تنقل الولایة عن الاقرب الی من یلیہ فی القرب حتی لوزوجھا حیث ھو لم یجز والیہ یمیل کلام المبسوط والھدایة والفتح بل ھما مصرحان

بدائع میں مذکورہ تصحیح کی بنا پر کہ ولایت اقرب سے منتقل ہو کر اس کے بعد والے قریبی کو حاصل ہوگی ، حتیٰ کہ اگر اقرب نے جہاں پر وہ ہے وہاں نکاح کر دیا ہو تو نافذ نہ ہوگا ، اسی کی طرف مبسوط ، ہدایہ اور فتح کا کلام مائل ہے ، بلکہ آخری دونوں نے اس کی تصریح کی

عہ : ای ان عرفا بسوء الاختیار فلا مجیز فلا توقف بل یبطل ثم فرع علیہ فقال فلا توقف بتزویج جد الخ ۱۲ منہ (م) یعنی اگر وہ معروف بسوءِ اختیار ہیں تو یہ نکاح موقوف نہیں بلکہ باطل ہوگا ، پھر اس پر تفریعاً کہا فلا توقف بتزویج جداً الخ ۱۲ منہ (ت)

Fatawa Razviya - Volume Eleven

[Table Header] [Left Column - Arabic Original] Regarding this, their texts will appear in the fifth answer, and Al-Zayla'i strengthened it both narratively and intellectually. Upon this, a branch (legal ruling) is established in 'Muheet al-Sarakhsi', and Al-Shami mentioned that this is what is found in most books. In 'Al-Hidaya' and 'Al-Bahr', it was said: "We delegate it to the more distant one just as when the closer one dies." However, according to what was clarified in 'Al-Khaniya', 'Al-Zahiriyya', 'Al-Tanwir', and 'Al-Durr', and upon which a branch was established by Al-Isbijabi in the 'Commentary of Mukhtasar al-Tahawi', and which was followed in 'Al-Bahr', it is that the authority (of the absent guardian) is not negated, but rather it is newly established for the one next to him. Thus, it is as if there are two equal guardians, like two brothers or two uncles; whichever of them contracts the marriage, it becomes effective. So, the apparent view in what we mentioned is suspension if the father or grandfather is not known for bad choice, because the marriage has occurred and they are the validators, so understand.

[Right Column - Urdu Translation] ...has been done, and some of their texts will appear in the answer to the fifth question. Al-Zayla'i declared it strong, both intellectually and narratively, and established a sub-ruling on it in 'Muheet Sarakhsi'. Al-Shami said that this is what is in most books, while in 'Hidaya' and 'Bahr' it is said that we will hand over this guardianship permanently to the person of the second rank, just as happens upon the death of the closer relative. However, what 'Khaniya', 'Zahiriyya', 'Tanwir', and 'Durr' declared as apparent, and Al-Isbijabi in the 'Commentary of Mukhtasar al-Tahawi' established a sub-ruling upon, and 'Bahr' adopted it, is that the guardianship of the absent closer relative will not end. However, guardianship will also be established for the person of the second rank in closeness. It is as if they are considered two equals, like two brothers or two uncles being equal, both obtain the authority of execution; whichever contracts it, it will be executed. So, the apparent is what we mentioned: if the father or grandfather are not known for bad choice, the marriage will remain suspended because these gentlemen are present to validate the marriage. Reflect. (T)

[Middle Text - Urdu] And if the absence was 'Munqati'ah' (long-term absence), then (the marriage) with a non-equal or with gross inequality is absolutely void. Except in the case where the absent one is the father and the marriage-maker is the 'Sahih' (paternal) grandfather, who is neither known for bad choice nor was intoxicated at the time of the marriage contract; in this scenario, this contract will not only be valid

and effective but also binding, which cannot be rejected in any way. And if the marriage is with an equal and without gross inequality, it is absolutely complete and effective. However, if the officiating guardian is the grandfather, it becomes binding as well; otherwise, it is non-binding, so that the minors (male or female), if they were aware of the marriage before puberty, then upon reaching puberty, otherwise when they get the news afterwards, they will have the option to object to it and have the marriage annulled by a Shariah judge.

[Bottom Box] (Arabic): And the matters are apparent and mentioned in the books of the Madhhab. (Urdu): These matters are clear and mentioned in the books of the Madhhab, while...

[Footnote] 1. Al-Hidaya, Chapter of Guardians and Equals, Maktaba Arabiya, Karachi, 2/299; Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Guardians and Equals, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/126.

फ़तावा रज़विया - ग्यारहवाँ खंड

[तालिका शीर्षक] [बायाँ स्तंभ - अरबी मूल] इसके संबंध में, उनके ग्रंथ पांचवें उत्तर में दिखाई देंगे, और अल-ज़ैलई ने इसे कथात्मक और बौद्धिक दोनों रूप से पुष्ट किया। इस पर, 'मुहीत अल-सरख़सी' में एक शाखा (कानूनी नियम) स्थापित की गई है, और अल-शामी ने उल्लेख किया कि अधिकांश पुस्तकों में यही पाया जाता है। 'अल-हिदाया' और 'अल-बहर' में कहा गया था: "हम इसे दूर के व्यक्ति को सौंपते हैं जैसे कि जब निकटतम की मृत्यु हो जाती है।" हालाँकि, 'अल-खानिया', 'अल-ज़ाहिरिया', 'अल-तनवीर' और 'अल-दुर्र' में जो स्पष्ट किया गया था, और जिस पर अल-इस्बिजाबी द्वारा 'मुख्तसर अल-तहावी की व्याख्या' में एक शाखा स्थापित की गई थी, और जिसका 'अल-बहर' में पालन किया गया था, वह यह है कि (अनुपस्थित संरक्षक का) अधिकार नकारा नहीं जाता है, बल्कि यह उसके बगल वाले के लिए नए सिरे से स्थापित किया जाता है। इस प्रकार, यह ऐसा है जैसे दो समान संरक्षक हों, जैसे दो भाई या दो चाचा; उनमें से जो कोई भी विवाह अनुबंध करता है, वह प्रभावी हो जाता है। अत; हमारे द्वारा उल्लेखित बातों में स्पष्ट दृष्टिकोण स्थगन का है यदि पिता या दादा खराब पसंद के लिए नहीं जाने जाते हैं, क्योंकि विवाह संपन्न हो चुका है और वे ही इसे मान्य करने वाले हैं, इसलिए समझें।

[दायाँ स्तंभ - उर्दू अनुवाद] ...किया गया है, और उनके कुछ ग्रंथ पांचवें प्रश्न के उत्तर में आएंगे। अल-ज़ैलई ने इसे बौद्धिक और कथात्मक रूप से मजबूत घोषित किया, और 'मुहीत सरख़सी' में इस पर एक उप-नियम स्थापित किया। अल-शामी ने कहा कि अधिकांश पुस्तकों में यही है, जबकि 'हिदाया' और 'बहर' में कहा गया है कि हम यह विलायत (संरक्षण) स्थायी रूप से दूसरे दर्जे के व्यक्ति को सौंप देंगे, जैसा कि निकट संबंधी की मृत्यु पर होता है। हालाँकि, जिसे 'खानिया', 'ज़ाहिरिया', 'तनवीर' और 'दुर्र' ने स्पष्ट घोषित किया, और अल-इस्बिजाबी ने 'मुख्तसर अल-तहावी की व्याख्या' में जिस पर उप-नियम स्थापित किया, और 'बहर' ने इसे अपनाया, वह यह है कि अनुपस्थित निकट संबंधी की विलायत समाप्त नहीं होगी। हालाँकि, निकटता में दूसरे दर्जे के व्यक्ति के लिए भी विलायत स्थापित हो जाएगी। ऐसा माना जाता है कि उन्हें दो समान माना जाता है, जैसे दो भाई या दो चाचा समान हों, दोनों को निष्पादन का अधिकार प्राप्त होता है; जो भी अनुबंध करेगा, वह लागू होगा। तो, स्पष्ट वही है जिसका हमने उल्लेख किया है: यदि पिता या दादा खराब पसंद के लिए नहीं जाने जाते हैं, तो विवाह स्थगित रहेगा क्योंकि ये सज्जन विवाह को मान्य करने के लिए मौजूद हैं। विचार करें। (त)

[मध्य पाठ - उर्दू] और यदि अनुपस्थिति 'मुन्क़तिआ' (दीर्घकालिक अनुपस्थिति) थी, तो (विवाह) गैर-समान या भारी असमानता के साथ पूर्णतः शून्य है। सिवाय उस स्थिति में जहाँ अनुपस्थित पिता हो और विवाह कराने वाला 'सहीह' (पैतृक) दादा हो, जो न तो खराब पसंद के लिए जाना जाता हो और न ही विवाह अनुबंध के समय नशे में हो; इस परिदृश्य में, यह अनुबंध न केवल वैध और प्रभावी होगा बल्कि बाध्यकारी भी होगा, जिसे किसी भी तरह से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। और यदि विवाह समान के साथ और बिना भारी असमानता के है, तो यह पूर्णतः पूर्ण और प्रभावी है। हालाँकि, यदि विवाह कराने वाला संरक्षक दादा है, तो यह बाध्यकारी भी हो जाता है; अन्यथा, यह गैर-बाध्यकारी है, ताकि नाबालिग (लड़का या लड़की), यदि उन्हें यौवन से पहले विवाह की जानकारी थी, तो यौवन प्राप्त करने पर, अन्यथा जब उन्हें बाद में समाचार मिले, तो उन्हें इस पर आपत्ति करने और शरीयत न्यायाधीश द्वारा विवाह को रद्द कराने का विकल्प मिलेगा।

[नीचे का बॉक्स] (अरबी): और मामले स्पष्ट हैं और मज़हब की किताबों में उल्लिखित हैं। (उर्दू): ये मामले स्पष्ट हैं और मज़हब की किताबों में उल्लिखित हैं, जबकि...

[पाद टिप्पणी] 1. अल-हिदाया, संरक्षकों और समानों का अध्याय, मकतबा अरबिया, कराची, 2/299; अल-बहर अल-राईक, संरक्षकों और समानों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराچی, 3/126।

पृष्ठ 597/739

فتاوی رضویہ - جلد یازدھم

[Left Column - Arabic] [Table Header] به وسيأتی نصوصهما فی جواب الخامس وقواه الزيلعی رواية ودراية وعليه فرع فی محيط السرخسی وذكر الشامي انه الذي في اكثر الكتب وقد قال في الهداية والبحر ففوضناه الى الابعد كما اذا مات الاقرب ۱اه اما على ما استظهر فی الخانية والظهيرية والتنوير والدر وعليه فرع الاسبيجابي فی شرح مختصر الطحاوي وعليه مشى فی البحر من انها لا تنفی ولايته وانما تحدثها لمن يليه فيكون كان هنا وليين مستويين كاخوين اوعمين فايهما عقد نفذ فالظاهر فيما ذكرنا التوقف اذالم يكن الاب اوالجد معروفا بسوء الاختيار لانه وقع وهو مجيز فافهم۔

[Right Column - Urdu] کی ہے اور ان کی بعض نصوص پانچویں سوال کے جواب میں آئیں گی اور اس کو زیلعی نے قوی قرار دیا، درایۃً و روایۃً اور اس پر محیط سرخسی میں تفریع قائم کی اور شامی نے کہا کہ یہی اکثر کتب میں ہے جبکہ ہدایہ اور بحر میں کہا کہ ہم یہ ولایت ہمیشہ کے لئے دوسرے مرتبہ والے کو سونپ دیں گے جیسا کہ اقرب کے فوت ہو جانے پر ہوتا ہے اھ، لیکن خانیہ، ظہیریہ، تنویر اور در نے جس کو ظاہر قرار دیا اور شرح مختصر الطحاوی میں اسپیجابی نے جس پر تفریع قائم کی ہے اور بحر نے اس کو اپنایا، وہ یہ ہے کہ اقرب غائب کی ولایت ختم نہ ہوگی، ہاں قربت میں دوسرے مرتبہ والے کے لئے بھی ولایت ثابت ہو جائے گی، گویا یوں دو مساوی قرار پائیں گے جیسے دو بھائی یا دو چچے برابر ہوں تو دونوں کو ولایت نفاذ حاصل ہوتی ہے، جو بھی عقد کرے گا نافذ ہوگا، تو ظاہر وہی ہے جو ہم نے ذکر کیا کہ باپ یا دادا سوء اختیار سے معروف نہ ہوں تو نکاح موقوف رہے گا کیونکہ یہ حضرات نکاح کو جائز کرنیوالے موجود ہیں۔ غور کرو۔ (ت)

[Middle Text - Urdu] اور اگر غیبت منقطعہ تھی تو غیر کفو یا غبن فاحش سے مطلقاً بالکل مگر اس صورت میں کہ غائب پدر ہو اور مزوج جد صحیح کہ نہ معروف بہ سوء اختیار ہو نہ اس تزویج کے وقت نشے میں کہ اس تقدیر پر یہ عقد نہ صرف صحیح و نافذ بلکہ لازم ہوگا جو کسی طرح رد نہیں ہو سکتا اور اگر نکاح کفو سے بے غبن فاحش ہے تو مطلقاً تام و نافذ مگر ولی مزوج اگر جد ہے تو لازم بھی ہو گیا ورنہ غیر لازم کہ قاصر و قاصرہ کو اگر پیش از بلوغ نکاح کی خبر ہے تو بلوغ ہوتے ہی ورنہ بعد جب خبر پائیں اختیار ملے گا کہ اس پر معترض ہو کر قاضی شرع سے نکاح فسخ کرالیں۔

[Bottom Box] والسائل ظاهرة وفی کتب المذهب (عربی) یہ مسائل واضح اور مذہب کی کتب میں مذکور ہیں جبکہ (اردو)

[Footnote] ۱ الهدایه باب الاولیاء والا کفاء مکتبہ عربیہ کراچی ۲/ ۲۹۹، بحر الرائق باب الاولیاء والاکفاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۱۲۶

Fatawa Razawiyya, Volume 11

Daira: It is stated in 'Al-Khayriyyah' that jurists have explicitly mentioned that if a person other than the father or grandfather performs the marriage of a minor boy or girl while either of the two is present but absent [from the location], and if guardianship is established for that person due to the permissible absence, then both [children] have the 'option of puberty' (khiyar al-bulugh) because he performed the marriage under guardianship. End quote.

Note (Tanbih): I have written here on the margin of 'Radd al-Muhtar' the following text: "And observe whether, if the father or grandfather returns and their guardianship is restored as mentioned, they would also have the right to object before the two minors reach puberty? This is a matter specific to them until they reach puberty. The apparent view is the first, because it is for the removal of hidden harm as in 'Al-Hidayah' or harm not yet realized as in 'Al-Fath'. Thus, it should be established for the one who has the right of oversight (نظر). Oversight is only for the removal of harm, so why should it be delayed despite the possibility of removal before it becomes established? Furthermore, if we say this [right] is attained for the father and grandfather and they do not object until the two minors reach puberty, would this [non-]objection be a nullifier of the children's option of puberty, just as if the parents had performed the marriage themselves? The apparent view is no, because when the marriage took place during their absence, it was executed and not suspended."

In 'Al-Khayriyyah', it is stated that jurists have clarified that in the absence of the father and grandfather, if a minor boy or girl is married off, then if the father and grandfather are absent in such a way that guardianship and permission can be granted to that non-relative, the boy and girl will have the option of puberty because the non-relative performed this marriage under their own guardianship. End quote.

Note (Tanbih): I have written here on the margin of 'Radd al-Muhtar', the text of which is as follows: It should be considered whether, if the father or grandfather returns, their guardianship will return to them as they [the jurists] have mentioned, by virtue of which they will have the right to object to the marriage performed for the boy and girl? Or will they not have the right to object now, and instead, the choice will remain with the boy or girl upon their own puberty, as common jurists have clarified? While the apparent case is the first one because, based on some hidden harm as mentioned in 'Al-Hidayah' or the probability of harm as mentioned in 'Al-Fath', the

guardian of compassion (the father/grandfather) is established with the right of guardianship. Since the guardianship of compassion is for the prevention of harm, why should it be delayed until the puberty of the children when the possibility of defending against it exists before the harm occurs? Furthermore, it is worth considering that when we accept that the father and grandfather have regained guardianship and they do not interfere with the marriage of the minor until the children reach puberty, then will the father and grandfather's lack of interference terminate the children's option of puberty, just as when the father or grandfather themselves have performed the marriage, the option of puberty for the adult becomes void?

[Footnote 1: Fatawa Khayriyyah, Chapter of Guardians (Bab al-Awliya), Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/25]

फतावा रजविया, भाग 11

दायरा: 'अल-खैरिया' में कहा गया है कि फुकहा (विधिवेत्ताओं) ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि यदि पिता या दादा के अलावा कोई अन्य व्यक्ति नाबालिग लड़के या लड़की का विवाह कर देता है, जबकि उनमें से कोई एक मौजूद हो लेकिन अनुपस्थित हो, और उस व्यक्ति के लिए अनुमति योग्य अनुपस्थिति के कारण विलायत (अभिभावकत्व) स्थापित हो जाती है, तो उन दोनों (बच्चों) के पास वयस्कता का विकल्प (खियार-ए-बुलूग) होगा क्योंकि उसने विलायत के तहत उनका विवाह किया था। उद्धरण समाप्त।

तन्बीह (चेतावनी/नोट): मैंने यहाँ 'रद्दुल मुहतार' के हाशिए पर निम्नलिखित पाठ लिखा है: "देखें कि क्या, यदि पिता या दादा वापस आते हैं और उनकी विलायत बहाल हो जाती है जैसा कि उल्लेख किया गया है, तो क्या उन्हें दो नाबालिगों के वयस्क होने से पहले आपत्ति करने का भी अधिकार होगा? यह उनके लिए विशिष्ट मामला है जब तक वे वयस्क नहीं हो जाते। स्पष्ट दृष्टिकोण पहला है, क्योंकि यह 'हिदाया' की तरह छिपे हुए नुकसान को दूर करने के लिए है या 'अल-फतह' की तरह नुकसान जो अभी तक महसूस नहीं किया गया है। इस प्रकार, यह उसके लिए स्थापित होना चाहिए जिसके पास देखभाल (नज़र) का अधिकार है। देखभाल केवल नुकसान को दूर करने के लिए है, तो इसे स्थापित होने से पहले हटाने की संभावना के बावजूद देरी क्यों की जानी चाहिए? इसके अलावा, यदि हम कहते हैं कि यह (अधिकार) पिता और दादा के लिए प्राप्त है और वे दो नाबालिगों के वयस्क होने तक आपत्ति नहीं करते हैं, तो क्या यह (गैर-)आपत्ति बच्चों के वयस्कता के विकल्प को रद्द करने वाली होगी, जैसे कि माता-पिता ने स्वयं उनका विवाह किया हो? स्पष्ट दृष्टिकोण यह है कि नहीं, क्योंकि जब उनकी अनुपस्थिति के दौरान विवाह हुआ, तो वह निष्पादित हो गया और स्थगित नहीं रहा।"

'खैरिया' में कहा गया है कि विधिवेत्ताओं ने स्पष्ट किया है कि पिता और दादा की अनुपस्थिति में यदि किसी नाबालिग लड़के या लड़की का विवाह कर दिया जाता है, तो यदि पिता और दादा इस तरह अनुपस्थित हैं कि विलायत और अनुमति उस गैर-रिश्तेदार को दी जा सकती है, तो लड़के और लड़की को वयस्कता का विकल्प (खियार-ए-बुलूग) प्राप्त होगा क्योंकि उस गैर-रिश्तेदार ने यह निकाह अपनी विलायत के तहत किया है। उद्धरण समाप्त।

तन्बीह: मैंने यहाँ 'रद्दुल मुहतार' के हाशिए पर लिखा है, जिसका पाठ इस प्रकार है: यह विचार करना होगा कि क्या पिता या दादा के वापस आने पर, जब उनकी विलायत उन्हें पुनः प्राप्त हो जाए जैसा कि उल्लेख किया गया है, तो क्या उन्हें लड़के या लड़की के वयस्क होने से पहले उनके किए गए निकाह पर आपत्ति करने का अधिकार होगा? या अब उन्हें आपत्ति का अधिकार नहीं होगा, बल्कि केवल लड़के या लड़की को ही अपने वयस्क होने पर विकल्प प्राप्त होगा, जैसा कि आम फुकहा ने स्पष्ट किया है? जबकि पहली सूरत (स्थिति) स्पष्ट लगती है क्योंकि किसी छिपे हुए नुकसान के आधार पर जैसा कि 'हिदाया' में है, या नुकसान की संभावना के आधार पर जैसा कि 'फतह' में है, शफकत (करुणा) रखने वाले अभिभावक को विलायत का अधिकार सिद्ध होता है। चूँकि विलायत शफकत नुकसान को दूर करने के लिए होती है, तो बच्चों के वयस्क होने की प्रतीक्षा क्यों की जाए, जबकि नुकसान होने से पहले ही उसके बचाव की संभावना मौजूद है। फिर विचारणीय बात यह है कि जब हम यह स्वीकार कर लें कि पिता और दादा को विलायत दोबारा मिल गई है और अब वे नाबालिग के निकाह पर कोई आपत्ति न करें जब तक कि वे बच्चे वयस्क न हो जाएं तो क्या पिता और दादा का आपत्ति न करना बच्चों के'खियार-ए-बुलूग' को समाप्त कर देगा, जैसा कि स्वयं पिता या दादा ने निकाह किया हो तो वयस्क का 'खियार-ए-बुलूग' अमान्य हो जाता है?

[फुटनोट 1: फतावा खैरिया, अभिभावकों का अध्याय (बाब अल-औलिया), दार अल-मआरिफा, बेरूत, 1/25]

पृष्ठ 598 का 739

دائرۃ: "الخیریہ" میں کہا گیا ہے کہ فقہاء نے صراحت کی ہے کہ باپ اور دادا کے علاوہ اگر کوئی اور کسی نابالغ لڑکے یا لڑکی کا نکاح کردے جبکہ ان دونوں میں سے کوئی موجود ہو مگر غائب [غیر حاضر] ہو، اور اس شخص کے لیے غیبتِ مجوزہ کی بنا پر ولایت ثابت ہو جائے تو ان دونوں [بچوں] کو خیارِ بلوغ حاصل ہوگا کیونکہ اس نے ولایت کے ساتھ نکاح کیا ہے۔ اھ

تنبیہ: میں نے یہاں ردالمحتار کے حاشیہ پر لکھا ہے جس کی عبارت یہ ہے: "اور دیکھو کہ کیا جب باپ یا دادا واپس آجائیں یہاں تک کہ ان کی ولایت لوٹ آئے جیسا کہ انہوں نے صراحت کی ہے، تو کیا انہیں صغیرین کے بلوغ سے پہلے اعتراض کا حق ہوگا؟ یہ معاملہ ان دونوں کے لیے خاص ہے یہاں تک کہ وہ بالغ ہوجائیں۔ اور ظاہر پہلا قول ہے کیونکہ یہ مخفی ضرر کو دور کرنے کے لیے ہے جیسا کہ ہدایہ میں ہے یا ایسے ضرر کے لیے ہے جو ابھی متحقق نہیں ہوا جیسا کہ فتح میں ہے۔ تو یہ اس شخص کے لیے ثابت ہونا چاہیے جسے حقِ نظر [دیکھ بھال] حاصل ہے۔ اور نظر تو محض ضرر کو دور کرنے کے لیے ہے، تو اسے دفعِ ضرر کے امکان کے باوجود ضرر کے پختہ ہونے تک کیوں موخر کیا جائے؟ پھر اگر ہم کہیں کہ یہ [حق] باپ اور دادا کو حاصل ہوگیا اور انہوں نے صغیرین کے بالغ ہونے تک کوئی اعتراض نہیں کیا، تو کیا یہ عدمِ اعتراض بچوں کے خیارِ بلوغ کو باطل کردینے والا ہوگا جیسے کہ خود والدین نے نکاح کیا ہو؟ ظاہر یہ ہے کہ نہیں، کیونکہ نکاح جب ان کی غیبت میں واقع ہوا تو وہ نافذ ہوگیا اور موقوف نہ رہا۔"

خیریہ میں کہا کہ فقہانے تصریح کی ہے کہ باپ اور دادا کی غیر موجودگی میں اگر کسی نابالغ لڑکے یا لڑکی کا نکاح کر دیا تو اگر باپ اور دادا ایسے غائب ہیں جس کی بنا پر اس غیر کو ولایت

اور اجازت ہو سکتی ہے تو لڑکے اور لڑکی کو خیار بلوغ حاصل ہو گا کیونکہ غیر نے یہ نکاح اپنی ولایت سے کیا ہے اھ

تنبیہ: میں نے یہاں ردالمحتار کے حاشیہ پر لکھا ہے جس کی عبارت یوں ہے کہ غور کرنا ہو گا کہ کیا باپ یا دادا واپس آگئے تو لڑکے یا لڑکی کے بالغ ہونے سے قبل ان کو دوبارہ ولایت لوٹ آئیگی جس کی وجہ سے لڑکے اور لڑکی کے کئے ہوئے نکاح پر ان کو اعتراض کا حق ہو گا یا اب ان کو اعتراض کا حق نہیں بلکہ لڑکے یا لڑکی کو ہی اپنے بلوغ پر اختیار رہے گا جیسا کہ عام فقہاء نے تصریح کی ہے جبکہ ظاہر پہلی صورت ہے کیونکہ کسی مخفی ضرر کی بناء پر جیسا کہ ہدایہ میں ہے یا احتمال ضرر کی بنا پر جیسا کہ فتح میں ہے صاحب شفقت کو اختیار ولایت ثابت ہے جبکہ ولایت شفقت دفع ضرر کے لئے ہوتی ہے، تو بچوں کے بلوغ کی انتظا ر تک کیوں مؤخر کی جائے جبکہ ضرر واقع ہو جانے سے قبل اس کے دفاع کا امکان موجود ہے، پھر قابل غور یہ ہے کہ جب ہم تسلیم کرلیں کہ باپ دادا کو ولایت دوبارہ مل گئی ہے اب وہ نابالغ کے نکاح پر تعرض نہ کریں حتیٰ کہ وہ بچے بالغ ہو جائیں تو کیا باپ دادا کا تعرض نہ کرنا بچوں کے خیار بلوغ کو ختم کر دے گا جیسا کہ خود باپ دادا نے نکاح کیا ہو تو بالغ کا خیار بلوغ باطل ہوتا ہے،

[حاشیہ 1: فتاویٰ خیریہ، باب الاولیاء، دار المعرفہ، بیروت، ۱/ ۲۵]

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Upper Box - Arabic Text]: ...their permission, so the initiation and execution were not attributed to them, and their turning away from their objection does not necessitate the nullification of the right of the two minors, just as when they do not contest an oppressor who disposes of their property. So let it be reflected upon and recorded as I have written. And Allah Almighty knows best.

[Upper Box - Urdu Text]: So, it is apparent that the option of puberty (Khiyar-ul-Bulugh) will not end due to the parents' non-interference, because at the time of marriage, since they were absent, it was not dependent on their permission. Therefore, the execution of the marriage was not attributed to them. Now, the right granted to the children will not be nullified due to non-interference or lack of objection, just as if an oppressor had disposed of the children's property and the father or grandfather had not interfered. This requires contemplation and clarification. And Allah Almighty knows best. (T)

Question Five: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid has gone on a journey of more than a hundred leagues (kos). At his home, his mother, his daughter named Zainab, and his cousin (paternal aunt's son) Khalid are present. Zaid wrote to his mother, "Do not marry off Zainab without my permission; I will come back from the journey and marry her to my brother's son." However, his mother, without inquiring from Zaid and without inquiring from Khalid (who was present at home), married off her minor granddaughter Zainab to a distant relative based on her own opinion. In this situation, can Zaid annul the marriage after returning from his journey or not? And Khalid, who was present at his home during the contract and the marriage took place against his opinion, can he also annul the marriage of the minor Zainab or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Khalid is nothing here. He has no authority because the son of a paternal aunt is now from 'Dhu al-Arham' (distant relatives/cognates). And the grandmother, by consensus, takes precedence over them.

[Lower Box - Arabic Text]: In Durr-ul-Mukhtar: The guardian (wali) in marriage is the agnate himself (asabat bi-nafsihi) according to the order of inheritance and exclusion. If there is no agnate, then the guardianship belongs to the mother, then the father's mother (grandmother)... until his statement, "then the distant relatives (Dhu al-Arham)."

[Lower Box - Urdu Text]: In Durr-ul-Mukhtar it is stated: In marriage, the guardian, according to the order of inheritance and exclusion, is the agnate himself. If there are no agnates, then the guardianship passes to the mother, then the paternal grandmother; their mention is made up to Dhu al-Arham. (T)

1. Jadd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, quoting Majma' al-Islami, Mubarakpur, 369/2.
2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Matba' Mujtabai, Delhi, 193/1.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[ऊपरी बॉक्स - अरबी पाठ]: ...उनकी अनुमति, इसलिए निकाह का होना और लागू होना उनकी ओर नहीं जोड़ा गया, और उनके विरोध न करने से उन दोनों नाबालिगों का अधिकार समाप्त नहीं होता, जैसे कि जब वे अपने माल में तसर्रुफ़ (उपयोग) करने वाले किसी ज़ालिम को न रोकें। तो इस पर विचार करना चाहिए और जो मैंने लिखा है उसे तहरीर करना चाहिए। और अल्लाह तआला सबसे ज़्यादा जानने वाला है।

[ऊपरी बॉक्स - उर्दू पाठ]: तो ज़ाहिर यही है कि माता-पिता के हस्तक्षेप न करने से खियार-ए-बुलूग (यौवन का विकल्प) खत्म नहीं होगा, क्योंकि निकाह के समय उनके अनुपस्थित होने के कारण यह उनकी अनुमति पर निर्भर नहीं था। तो निकाह का निष्पादन उनकी ओर श्रेय नहीं दिया गया। अब, हस्तक्षेप न करने या आपत्ति न करने के कारण बच्चों को प्राप्त अधिकार निरस्त नहीं होगा, जैसा कि यदि किसी अत्याचारी ने बच्चों की संपत्ति का उपयोग किया हो और पिता या दादा ने हस्तक्षेप न किया हो। इस पर विचार करने और स्पष्ट करने की आवश्यकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

सवाल पाँचवाँ: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद सौ कोस से अधिक की यात्रा पर गया है। उसके घर पर उसकी माँ, उसकी बेटी ज़ैनब और उसका फुफेरा भाई खालिद मौजूद हैं। ज़ैद ने अपनी माँ को लिखा, "ज़ैनब का निकाह मेरी अनुमति के बिना मत करना; मैं खुद यात्रा से लौटकर अपने भाई के बेटे के साथ उसका निकाह करूँगा।" लेकिन उसकी माँ ने ज़ैद से पूछे बिना और घर पर मौजूद खालिद से पूछे बिना, अपनी राय से अपनी नाबालिग पोती ज़ैनब का निकाह बहुत दूर के रिश्तेदारों में कर दिया। इस स्थिति में, क्या ज़ैद यात्रा से लौटने के बाद निकाह रद्द कर सकता है या नहीं? और खालिद, जो निकाह के समय घर पर मौजूद था और उसकी राय के खिलाफ निकाह हो गया, क्या वह भी नाबालिग ज़ैनब का निकाह रद्द करा सकता है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: खालिद तो यहाँ कुछ भी नहीं है। उसे कोई अधिकार नहीं है क्योंकि बुआ का बेटा अब 'ज़ुवी-उल-अरहाम' (दूर के रिश्तेदारों) में से है। और दादी सर्वसम्मति से उन पर प्राथमिकता रखती है।

[निचला बॉक्स - अरबी पाठ]: दुर्रे मुख्तार में है: निकाह में वली (अभिभावक) अस्बा-बि-नफ़्सिही (स्वयं पिता पक्ष का सगा रिश्तेदार) होता है विरासत और हज्ब (हिस्सा न मिलने) की तरतीब (क्रम) पर।

अगर अस्बा न हो तो विलायत माँ के लिए है फिर बाप की माँ (दादी) के लिए... उनके इस क़ौल (कथन) तक कि "फिर ज़ुविल अरहाम"।

[निचला बॉक्स - उर्दू पाठ]: दुर्रे मुख्तार में है: निकाह में वली, विरासत और हज्ब के क्रम पर अस्बात-बि-नफ्सिही (पुरुष रक्त संबंधी) होते हैं। यदि अस्बात न हों, तो विलायत माँ को, फिर दादी को होती है, उनका वर्णन ज़ुवी-उल-अरहाम तक हुआ। (त)

1. जद्दुल मुख्तार, बाबुल वली, अल-मजमा-उल-इस्लामी, मुबारकपुर, 369/2
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 193/1

पृष्ठ 599 / 739

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدھم

[اوپری باکس - عربی عبارت]: اجازتھما فلم ینسب الیھما ایقاعاً ولا نفاذًا و اعراضھما عن اعتراضھما لایوجب ابطال حق الصغیرین کما اذالم یزاحما ظالماً یتصرف فی مالھما فلیتأمل ولیحرر ھما کتبت واللہ تعالٰی اعلم۔

[اوپری باکس - اردو عبارت]: تو ظاہر یہی ہے کہ والدین کے عدم تعرض سے خیار بلوغ ختم نہ ہوگا کیونکہ نکاح کے وقت ان کے غائب ہونے کی بنا پر ان کی اجازت پر موقوف نہ تھا تو نکاح کا نفاذ ان کی طرف منسوب نہ رہا، تو اب عدم تعرض اور اعتراض نہ کرنے کی وجہ سے بچوں کو حاصل شدہ اختیار باطل نہ ہوگا، جیسا کہ ظالم نے بچوں کے مال میں تصرف کیا اور باپ دادا نے تعرض نہ کیا ہو، اس میں غور چاہئے اور واضح کرنا چاہئے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

سوال پنجم: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید سو کوس سے زائد سفر میں گیا ہے اس کے مکان پر اس کی والدہ اور اس کی دختر زینب نامی اور اس کا پھوپھی زاد بھائی خالد موجود ہیں، زید نے اپنی والدہ کو لکھا کہ زینب کا نکاح بغیر میری اجازت کے نہ کرنا میں خود سفر سے آکر اپنے برادر کے پسر کے ساتھ کروں گا، مگر اس کی والدہ نے بغیر دریافت کئے زید کے اور بغیر دریافت کئے خالد کے جو موجود تھا اپنی رائے سے اپنی پوتی زینب نابالغہ کا نکاح بہت دور کے عزیزوں میں کردیا اس صورت میں زید سفر سے آنے کے بعد فسخ نکاح کرسکتا ہے یا نہیں؟ اور خالد جو بحالت عقد اپنے مکان پر موجود تھا اور اس کی رائے کے خلاف نکاح ہو گیا تو آیا یہ بھی زینب نابالغہ کا نکاح فسخ کر اسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: خالد تو یہاں کوئی چیز نہیں۔ نہ اسے کچھ اختیار ہے کہ ابن عمہ اب ذوی الارحام سے ہے۔ اور دادی بالاتفاق ان پر مقدم۔

[نچلا باکس - عربی عبارت]: فی الدر المختار الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ علی ترتیب الارث والحجب فان لم یکن عصبۃ فالولایۃ للام ثم لام الاب الی قولہ ثم ذوی الارحام۔

[نچلا باکس - اردو عبارت]: در مختار میں ہے: نکاح میں ولی، وراثت وحجب کی ترتیب پر عصبات بنفسہم ہوتے ہیں، اگر عصبات نہ ہوں تو پھر ولایت ماں کو پھر دادی کو ہوتی ہے، ان کا بیان ذوالارحام تک ہوا۔ (ت)

1. جد المختار باب الولی قول المجمع الاسلامی مبارکپور ۳۶۹/۲
2. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۳/۱

صفحہ 599 / 739

However, the situation apparent from the question clearly testifies that this marriage did not occur for the reason prescribed by the Pure Sharia for a distant guardian (wali ab'ad) in the absence of the closer guardian (wali aqrab). Setting aside whether the grandmother is even a distant guardian here or not. (For a distant guardian is one who follows the closer one in the order of guardianship. In the absence of the father, the grandmother can be a distant guardian only if there are absolutely no sane adult males from the lineage of the grandfather or great-grandfather present, however distant their relation, like the grandfather, brother, nephew, paternal uncle, or uncle's son—whether full or half-brothers—nor is Zainab's mother present; because all these ranks of guardianship precede the grandmother, as previously mentioned and as we have researched regarding the precedence of the mother over the paternal grandmother in our annotations on Radd al-Muhtar). (As previously mentioned and as we have established in the annotations of Radd al-Muhtar, the mother has precedence over the grandmother. T). According to the reliable opinion, in the state of the closer guardian's absence, the distant guardian is granted authority to marry off a minor girl by their own choice only due to the necessity that a suitable match (kufu) is currently present and seeking, and they are not willing to wait for the closer guardian to return or for a response to be obtained. If such a wait occurs, the present suitable match might not agree to the marriage due to the delay, and the opportunity will be lost. The loss of a suitable match would harm the minor girl as such a match is not always available; who knows if one will be found again? Therefore, out of necessity, the Pure Sharia permits the present guardian who is next in line after the absent closer guardian to perform it. The reason is that securing a suitable match is extremely important and significant in the Pure Sharia, and losing a present suitable match is definitely a loss. In fact, the very legislation of guardianship for marriage over a minor, even if by the father, occurred for this wisdom; otherwise, what is the need for marriage in childhood? It is stated in Fath al-Qadir:

Marriage is intended for its purposes, which are normally achieved between equals. A suitable match (kufu) is not available at all times. Thus, the father's guardianship is established by text for the reason of securing a suitable match when one is found, due to the need for it, as a similar one might not be found again once it is lost after being obtained.	**Marriage is for certain purposes that are usually fulfilled by two equal individuals, and this equality and suitable match are not available all the time. Guardianship was established for the father by text so that he may succeed in securing a suitable match at the time of need, because a suitable match is not always attained after being lost once available. (T)**

It is in the Hadith that the Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) said:

O Ali, do not delay three things: prayer when [its time comes]...	**O Ali! Do not delay in three things: prayer when its [time arrives]...**

1. Fath al-Qadir, Chapter of Guardians, Maktabah al-Nuriyyah al-Ridawiyyah, Sukkur, 3/173.

मगर सवाल के बयान से जो सूरत ज़ाहिर होती है, वह साफ़ गवाही दे रही है कि यह निकाह उस वजह पर वाक़े नहीं हुआ जो शरीअत-ए-मुतह्हरा ने क़रीबी वली (वली अक़रब) की गैरमौजूदगी में दूर के वली (वली अबअद) के लिए रखी है। इससे हटकर कि यहाँ दादी 'वली अबअद' है भी या नहीं। (क्यूंकि 'अबअद' वह है जो विलायत के मर्तबे में अक़रब के बाद हो। पिता की ग़ैरमौजूदगी में दादी उस वक़्त वली अबअद हो सकती है जब दादा, भाई, भतीजा, चाचा, चाचा का बेटा (सगे या सौतेले), ग़रज़ दादा या परदादा की औलाद में से कोई भी अक़्लमंद बालिग मर्द कितने ही दूर के रिश्ते का मौजूद न हो, और न ही ज़ैनब की माँ मौजूद हो, क्यूंकि विलायत के इन तमाम मर्तबों में ये सब दादी पर मुक़द्दम (पहले) हैं जैसा कि पहले बयान हो चुका और हमने 'रद-उल-मुहतार' के हाशिया में तहक़ीक़ की है कि माँ को दादी पर तक़द्दुम (प्राथमिकता) हासिल है। -त)। मोतमिद मज़हब (विश्वसनीय मत) में, अक़रब वली की ग़ैरमौजूदगी में, वली अबअद को अपनी राय से नाबालिग का निकाह कर देने का अधिकार सिर्फ इस ज़रूरत की वजह से दिया जाता है कि फ़िलहाल नाबालिग के लिए कोई बराबर का (कुफ़ू) चाहने वाला हाज़िर व मौजूद है और वह इतनी मोहलत नहीं चाहता कि वली अक़रब वापस आए या उसका जवाब लिया जाए। अगर इतना इंतज़ार करते हैं तो इस देरी की वजह से मौजूद कुफ़ू निकाह पर राज़ी न होगा और मौक़ा हाथ से निकल जाएगा। कुफ़ू के हाथ से निकल जाने के कारण नाबालिग को नुक़सान पहुँचेगा, क्योंकि कुफ़ू हर वक़्त मयस्सर (उपलब्ध) नहीं होता, क्या पता फिर हाथ न लगे। लिहाज़ा ज़रूरत के तहत, उस वली अक़रब के बाद के दर्जे का जो वली हाज़िर है, शरीअत-ए-मुतह्हरा उसे इजाज़त देती है कि तुम कर दो। इसकी वजह यह है कि शरीअत-ए-मुतह्हरा में कुफ़ू की तलाश सख़्त अहम और ज़रूरी है और हाज़िर कुफ़ू को हाथ से खो देना यक़ीनन नुक़सान है। बल्कि सिरे से नाबालिग पर विलायत-ए-तज़वीज (निकाह की विलायत) की तशरीह (कानून) चाहे बाप ही के लिए हो, इसी हिकमत (बुद्धिमानी) के लिए वाक़े हुई है, वरना बचपन में निकाह की क्या ज़रूरत? 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

निकाह अपने मक़ासिद के लिए चाहा जाता है, जो आम तौर पर दो बराबर के लोगों के बीच ही पूरे होते हैं। कुफ़ू (बराबर का मैच) हर ज़माने में मयस्सर नहीं होता। चुनाँचे, बाप की विलायत नस (स्पष्ट आदेश) से इस वजह से साबित है ताकि वह ज़रूरत के वक़्त कुफ़ू को हासिल करने में कामयाब हो सके जब वह उसे मिल जाए, क्योंकि एक बार हाथ से निकल जाने के बाद दोबारा वैसा मैच मिलना मुमकिन नहीं होता।

निकाह कुछ मक़ासिद के लिए होता है जो आम तौर पर दो हम-रुतबा (बराबर) लोगों से पूरे होते हैं, और यह समानता और कुफ़ू हर वक़्त मयस्सर नहीं होती। बाप को विलायत नस से साबित हुई है ताकि वह ज़रूरत के वक़्त कुफ़ू को हासिल करने में कामयाब हो सके क्योंकि हर वक़्त कुफ़ू मयस्सर आने के बाद ज़ाया हो जाने पर हासिल नहीं होता। (त)

हदीस में है कि हुज़ूर सय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

ऐ अली! तीन चीज़ों में देरी न करना: नमाज़ जब उसका [वक़्त आ जाए]...

ऐ अली! तीन चीज़ों में देर न करना: नमाज़ जब उसका...

1. फ़तह अल-क़दीर, बाबुल औलिया, अल-मकतबतुल नूरियतु रज़विया, सुक्कुर, 3/173

مگر تقریر سوال سے جو صورت ظاہر ہو وہ صاف شہادت دے رہی ہے کہ یہ نکاح اس وجہ پر واقع نہ ہوا جو شرع مطہر نے غیبت ولی اقرب میں ولی ابعد کے لئے رکھی ہے قطع نظر اس سے یہاں دادی ولی ابعد ہے بھی یا نہیں۔ (کہ ابعد وہ جو اقرب کے بعد مرتبہ ولایت میں ہو غیبتِ پدر میں دادی اس وقت ولی ابعد ہوسکتی ہے کہ دادا، بھائی، بھتیجا، چچا، چچا کا بیٹا سگے سوتیلے، غرض دادا پر دادا کی اولاد کو کوئی مرد عاقل بالغ کتنے ہی دور کے رشتے کا اصلا موجود نہ ہوں، نہ زینب کی ماں حاضر ہو کہ یہ سب مراتبِ ولایت میں دادی پر مقدم کما تقدم وقد حققنا تقدم الام علی ام الاب فیما علقنا علی ردالمحتار) (جیسا کہ پہلے گزر چکا اور ہم نے ردالمحتار کے حاشیہ میں تحقیق کی ہے کہ ماں کو دادی پر تقدم حاصل ہے۔ ت) مذہب معتمد میں بحالتِ غیبتِ اقرب ولی ابعد کو بے اجازت اپنی رائے سے صغیرہ کا نکاح کردینے کا اختیار صرف اس ضرورت سے دیا جاتا ہے کہ سردست صغیرہ کے لئے کوئی کفو خواستگار حاضر و موجود ہے اور اسے اتنی مہلت منظور نہیں کہ ولی اقرب واپس آئے یا اس کا جواب لیا جائے۔ اگر اتنا انتظار کرتے ہیں تو اس دیر کے باعث کفو موجود نکاح پر راضی نہ ہوگا اور موقع ہاتھ سے نکل جائے گا فوات کفو کے سبب صغیرہ کو نقصان پہنچے گا کہ کفو ہر وقت میسر نہیں آتا، کیا معلوم پھر ہاتھ نہ لگے، لہذا بضرورت اس ولی اقرب کے بعد کے درجے کا جو ولی حاضر ہے شرع مطہر اسے اجازت دیتی ہے کہ تو کردے وجہ یہ کہ احتراز کفو شرع مطہر میں سخت اہم و مہتم بالشان ہے اور کفو حاضر کا ہاتھ سے کھو دینا ضرور نقصان، بلکہ سرے سے نابالغ پر ولایت تزویج کی تشریح اگرچہ باپ ہی کی ہوا اسی حکمت کے لئے واقع ہوئی ورنہ بچپن میں نکاح کی کیا ضرورت، فتح القدیر میں ہے:

النکاح یراد لمقاصدہ ولاتتوفر الابین المتکافئین عادۃ ولایتفق الکفؤ فی کل زمان فاثبات ولایۃ الاب بالنص بعلۃ احراز الکفؤ اذا ظفر بہ لحاجۃ الیہ اذ قد لا یظفر بمثلہ اذا فات بعد حصولہ۔

نکاح بعض مقاصد کے لئے ہوتا ہے جو عادۃً دو ہم مثل حضرات سے پورے ہوتے ہیں، اور یہ مماثلت اور کفو ہر وقت میسر نہیں ہوتی، اور باپ کو ولایت نص سے ثابت ہوئی ہے تاکہ وہ ضرورت کے وقت کفو کو حاصل کرنے میں کامیاب ہوسکے، کیونکہ ہر وقت کفو میسر آنے کے بعد ضائع ہوجانے پر حاصل نہیں ہوتی۔ (ت)

حدیث میں ہے حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

یا علی ثلاث لا تؤخرھا الصلوۃ اذا اے علی! تین چیزوں میں دیر نہ کرنا، نماز جب اس کا

1. فتح القدیر باب الاولیاء المکتبۃ النوریۃ الرضویۃ سکھر ۳/۱۷۳

(Arabic:) ...and the funeral when it is present, and the woman without a husband when she finds a suitable match.

[Urdu Translation:] ...when the time comes, and the funeral when it is present, and an unmarried woman when she finds a suitable match (kufu). (Tirmidhi and Al-Hakim narrated this from the Commander of the Faithful, Hazrat Ali, may Allah honor his face. - T)

1- رواہ الترمذی والحاکم عن امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ۔

In another Hadith, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Arabic:) When suitable matches come to you, marry them off and do not wait for accidents to happen to them.

[Urdu Translation:] When suitable matches come to you, marry off the girls and do not wait for accidents. (It is narrated in Musnad al-Firdous from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both. - T)

2- رواہ فی مسند الفردوس عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہما۔

Meaning, perhaps an accident might occur due to delay, as "In delay, there are calamities" (T). In several Hadiths, the Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Arabic:) If someone whose character and religion you are pleased with comes to you, then marry him off. If you do not do so, there will be tribulation on earth and great corruption.

[Urdu Translation:] When a person comes to you whose character and religion you approve of, then perform the marriage with him. If you do not do so, then tribulation and great corruption will break out on earth. (Narrated by Tirmidhi, Ibn Majah, and Al-Hakim from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him, and by Ibn Adi from Ibn Umar, and by Tirmidhi and Al-Bayhaqi in As-Sunan from Abu Hatim Al-Mazani, may Allah be pleased with him. - T)

3- رواہ الترمذی وابن ماجۃ والحاکم عن ابی ہریرۃ وابن عمر والترمذی والبیہقی فی

(Arabic:) If someone whose character and religion you are pleased with comes to you, then marry him off. If you do not do so, there will be tribulation on earth and great corruption.

[Urdu Translation:] When a person comes to you whose character and religion you approve of, then perform the marriage with him. If you do not do so, then tribulation and great corruption will break out on earth. (Narrated by Tirmidhi, Ibn Majah, and Al-Hakim from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him, and by Ibn Adi from Ibn Umar, and by Tirmidhi and Al-Bayhaqi in As-Sunan from Abu Hatim Al-Mazani, may Allah be pleased with him. - T)

السنن عن ابی حاتم المزنی
رضی الله تعالی عنهم۔

It is stated in Zakheera and Radd al-Muhtar:

(Arabic:) The most correct view is that if he is in a place where if his presence or seeking his opinion is awaited...

[Urdu Translation:] The most correct view is that if he is at such a place that if his return and obtaining his opinion are awaited, then the current...

---

1. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Prayer p. 24, Chapters of Funerals p. 71, Amin Company Kutub Khana Rashidiyah Delhi Vol. 1; Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Marriage, Chapter: Marry the Loving and Prolific, Dar al-Fikr Beirut 2/263-162.
2. Kanz al-Ummal with reference to Fir from Ibn Umar, Hadith, Muassasah al-Risalah Beirut 12/317.
3. Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Marriage, Chapter: What has been narrated regarding "someone whose religion you are pleased with...", Amin Company Kutub Khana Rashidiyah Delhi 1/128; Al-Mustadrak, Book of Marriage, Dar al-Fikr Beirut 2/165.

खंड ग्यारह, फतावा रज़विया

(अरबी पाठ) **[उर्दू अनुवाद:] ...वक्त आए, और जनाज़ा जब हाज़िर हो, और बे-शौहर औरत जब उसके लिए कुफ़ू (समान योग्य वर) मिल जाए। (इसे तिर्मिज़ी और हाकिम ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। - त)**

1- رواہ الترمذی والحاکم عن امیر المومنین علی کرم اللہ وجھہ۔

दूसरी हदीस में हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

(अरबी पाठ) **[उर्दू अनुवाद:] जब तुम्हारे पास कुफ़ू आएँ तो लड़कियाँ ब्याह दो और उनके लिए हादसों का इंतज़ार न करो (इसे मुसनद फिरदौस में इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया गया है। - त)**

2- رواہ فی مسند الفردوس عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہما۔

यानी देर में शायद कोई हादसा पेश आए कि "देरी में आफ़तें हैं" (ताखीर में कई आफ़तें हैं। - त)।

चंद हदीसों में हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

(अरबी पाठ)

[उर्दू अनुवाद:] जब तुम्हारे पास वह शख़्स आए जिसका चाल-चलन और दीन तुम्हें पसंद हो तो उससे निकाह कर दो, ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद बरपा होगा। (इसे तिर्मिज़ी, इब्न माजा और हाकिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से और इब्न अदी ने इब्न उमर, और तिर्मिज़ी और बैहक़ी ने सुनन में अबू हातिम अल-मुज़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। - त)

3- رواه الترمذى وابن ماجة والحاكم عن ابى هريرة وابن عمر والترمذى والبيهقى فى السنن عن المزنى رضى اللها حات الله تعالى عنهم.

ज़ख़ीरा व रद अल-मुहतार में है:

(अरबी पाठ)

[उर्दू अनुवाद:] सही यह है कि अगर ऐसे मकाम पर हो कि उसकी वापसी के इंतज़ार और उसकी राय हासिल करने से मौजूदा...

---

1. जामिअ अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अस-सलात पृ. 24, अबवाब अल-जनाइज़ पृ. 71, अमीन कंपनी कुतुब ख़ाना रशीदिया दिल्ली जि. 1; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब उन-निकाह, बाब: उन औरतों से निकाह करो जो मुहब्बत करने वाली और ज़्यादा बच्चे जनने वाली हों, दारुल फ़िक्र बैरूत 2/263-162।
2. कंज़ुल उम्माल बहवाला फ़िर अन इब्न उमर, हदीस, मुअस्ससतुर् रिसाला बैरूत 12/317।
3. जामिअ अल-तिर्मिज़ी, अबवाब उन-निकाह, बाब: जो रिवायत किया गया है उस शख़्स के बारे में जिसका दीन तुम्हें पसंद हो..., अमीन कंपनी कुतुब ख़ाना रशीदिया दिल्ली 1/128; अल-मुस्तदरक, किताब उन-निकाह, दारुल फ़िक्र बैरूत 2/165।

اَنت والجنازۃ اذا حضرت والایم اذا وجدت لھا کفواً **وقت آئے، اور جنازہ جب حاضر ہو، اور زنِ بے شوہر جب اس کے لئے کفو پائے**

1- رواہ الترمذی والحاکم عن امیر المومنین علی کرم اللہ وجھہ۔ (اس کو ترمذی اور حاکم نے امیر المومنین حضرت علی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ت)

دوسری حدیث میں ہے حضورِ اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اذا جاء کم الکفاء فانکحوھن ولاتربصوا بھن الحدثان **جب تمہارے پاس کفو آئیں تو لڑکیاں بیاہ دو اور ان کے لئے حادثوں کا انتظار نہ کرو**

2- رواہ فی مسند الفردوس عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ (اس کو مسند فردوس میں ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ہے۔ت)

یعنی دیر میں شاید کوئی حادثہ پیش آئے کہ فی التأخیر آفات (تاخیر میں کئی آفتیں ہیں۔ت) چند حدیثوں میں ہے حضورِ پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اذا اتاکم من ترضون خلقہ ودینہ فزوجوہ الا تفعلواتکن فتنۃ فی الارض وفساد عریض **جب تمہارے پاس وہ شخص آئے جس کا چال چلن اور دین تمہیں پسند ہو تو اس سے نکاح کردو، ایسا نہ کروگے تو زمین میں فتنہ اور بڑا فساد برپا ہوگا۔**

3- رواہ الترمذی وابن ماجۃ والحاکم عن ابی ہریرۃ وابن عمر والترمذی والبیہقی (اسے ترمذی، ابن ماجہ اور حاکم نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اور ابن عدی نے ابن عمر، اور ترمذی

اذا اتاکم من ترضون خلقہ ودینہ فزوجوہ الا تفعلواتکن فتنۃ فی الارض وفساد عریض	**جب تمھارے پاس وہ شخص آئے جس کا چال چلن اور دین تمھیں پسند ہو تو اس سے نکاح کردو، ایسا نہ کروگے تو زمین میں فتنہ اور بڑا فساد برپا ہوگا۔**
فی السنن عن ابی حاتم المزنی رضی اللہ تعالیٰ عنھم۔	اور بیہقی نے سنن میں ابوحاتم المزنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ت)

ذخیرہ و ردالمحتار میں ہے:

الاصح انہ اذا کان فی موضع لو انتظر حضورہ او استطلاع	**اصح یہ ہے کہ اگر ایسے مقام پر ہو کہ اس کی واپسی کے انتظار اور اس کی رائے حاصل کرنے سے موجودہ**

---

1. جامع الترمذی ابواب الصلوٰۃ ص ۲۴، ابواب الجنائز ص ۷۱، امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ج۱، المستدرک للحاکم کتاب النکاح باب تزوجوا الودود والولود دار الفکر بیروت ۲/ ۲۶۳- ۱۶۲
2. کنز العمال بحوالہ فر عن ابن عمر حدیث موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۲/ ۳۱۷
3. جامع الترمذی ابواب النکاح باب ما جاء من ترضون دینہ الخ امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/ ۱۲۸، المستدرک کتاب النکاح دار الفکر بیروت ۲/ ۱۶۵

Fatawa Razawiya Volume 11

| (Arabic): Ra’aa fawatal-kufwi alladhi hadara fal-ghaybatu munqati’atun wa ilayhi ashara fil-kitabi 1. | (Urdu): If the suitable match (kufw) who is present is lost, then in such a place, the absence of the nearest guardian (wali aqrab) will be considered 'severed' (munqati'a), and this is what is indicated in the book. (T) |

In Fath al-Qadir, it is stated:

| (Arabic): Idha baqayna wilayatal-aqrabi abtalna haqqa-ha wa faatat maslahatu-ha 2. | (Urdu): If we maintain the guardianship of the nearest guardian (despite their being absent), we nullify the girl's right and the benefit intended for her is lost. (T) |

In Al-Hidayah, it is stated:

| (Arabic): Haadha aqrabu ilal-fiqhi liannuhu la-nadhara fi ibqai wilayati-hi hayna-idhin 3. | (Urdu): This matter is closer to legal reasoning (fiqh) because in this situation, there is no compassion for the girl in maintaining the guardianship of the nearest guardian. (T) |

Thus, the attainment of guardianship for the remote guardian (wali ab'ad) is conditional on three things: First: This remote guardian, in the absence of the nearest guardian, gives the minor girl in marriage to one who is a suitable match (kufw),

| (Arabic): Fa-innahu in lam yakun kufwan fa-ayyu shayin yafutu bi-fawtihi wal-amru tamassul-haajata. | (Urdu): If he is not a suitable match, then what thing is there a danger of losing, and what need was felt for it. (T) |

Second: The suitable match should not wait for the response of the nearest guardian, otherwise the remote guardian will not have authority at all. In Jami' al-Rumuz and Majma' al-Anhur, it is stated:

| (Arabic): Law intadharahu al-khatibu lam yankuhil-ab'adu 4. | (Urdu): If the suitor seeking engagement waits for the nearest guardian, then the remote guardian should not perform the marriage. (T) |

In Minhat al-Khaliq, it is stated:

| (Arabic): In radiya al-khatibu an yantadhira ila istidhanil-waliyyil-aqrabi lam yasihha lil-ab'adil-aqdu 5. | (Urdu): If the suitor is willing to wait to obtain permission from the nearest guardian, then the marriage contract by the remote guardian will not be correct. (T) |

1 Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/315 2 Fath al-Qadir, Bab fil-Awliya, Maktaba Nooria Razawiya, Sukkur, 3/182 3 Al-Hidayah, Bab fil-Awliya wal-Akfa, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 2/299 4 Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Bab fil-Awliya wal-Akfa, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/339 5 Minhat al-Khaliq Hashiyah ala al-Bahr al-Ra’iq, Bab al-Awliya, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/126

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

| (अरबी): रआ फ़वातल-कुफ़्वि अल्लाज़ी हदरा फ़ल-ग़ायबतु मुनक़तियतुन वा इलैहि अशारा फ़िल-किताबी 1. | (उर्दू): कुफ़्व फ़ौत हो जाएगा तो ऐसे मक़ाम पर वली अक़रब की ग़ैबत मुनक़तिह होगी, और इसी की तरफ़ किताब में इशारा है। (त) |

फ़त्ह अल-क़दीर में है:

| (अरबी): इज़ा बक़ैना विलायतल-अक़रबि अबतलना हक़्क़ा-हा वा फ़ातत म सलहतु-हा 2. | (उर्दू): वली अक़रब की (बावजूद ग़ाइब होने के) विलायत को बाक़ी रखें तो लड़की का हक़ बातिल और उसकी भलाई फ़ौत हो जाएगी। (त) |

हिदाया में है:

| (अरबी): हाज़ा अक़रबु इलल-फ़िक़्हि लिअन्नुहू ला-नज़रा फ़ी इबक़ाइ विलायति-ही ह़ैना-इज़िन 3. | (उर्दू): यह बात फ़िक़्ह से अक़रब है क्योंकि यहाँ अक़रब की विलायत को बाक़ी रखने में बच्ची पर शफ़क़त नहीं है। (त) |

तो अबअद के लिए हुसूले विलायत तीन शर्त पर मश्रूत: अव्वल यह अबअद बग़ैबते अक़रब जिसके निकाह में दे सग़ीरा का कुफ़्व हो,

| (अरबी): फ़-इन्नहु इन लम यकुन कुफ़्वन फ़-अय्यु शयइन यफ़ूतु बि-फ़ौतिहि वल-अमरु तमस्सुल-हाजता। | (उर्दू): अगर वह कुफ़्व न हो तो फिर किस चीज़ के फ़ौत होने का ख़तरा और उसको किसकी हाजत महसूस हुई। (त) |

दोयम हो कुफ़्व वली अक़रब का जवाब आने तक न रुके वरना हरगिज़ अबअद को इख़्तियार न होगा, जामे अर-रुमूज़ व मजमा अल-अनहुर में है:

| (अरबी): लौ इंतज़राहु अल-ख़ातिबु लम यंकुहिल-अबअदु 4. | (उर्दू): अगर मंगनी तलब करने वाला वली अक़रब का इंतज़ार करता है तो फिर वली अबअद निकाह न करे। (त) |

मिन्हात अल-ख़ालिक़ में है:

| (अरबी): इन रज़िया अल-ख़ातिबु अन यंतज़िरा इला इस्तिज़ानिल-वलिय्यिल-अक़रबि लम यसिह्हा लिल-अबअदिल-अक़्दु 5. | (उर्दू): अगर मंगनी वाला वली अक़रब से इजाज़त हासिल करने पर राज़ी है तो अबअद का निकाह दुरुस्त न होगा। (त) |

1 रद अल-मुह्तार बाब अल-वली दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बैरुत 2/315 2 फ़त्ह अल-क़दीर बाब फ़िल-औलिया मकतबा नूरियह रज़विया सुक्कुर 3/182 3 अल-हिदाया बाब फ़िल-औलिया वल-अकफ़ा अल-मक्ताबह अल-अरबियह कराची 2/299 4 मजमा अल-अनहुर शरह मुल्तक़ा अल-अबहुर बाब फ़िल-औलिया वल-अकफ़ा दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बैरुत 1/339 5 मिन्हात अल-ख़ालिक़ हाशियह अला अल-बहर अर-राइक़ बाब अल-औलिया एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/126

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

| رأی فوات الکفؤ الذی حضر فالغیبۃ منقطعۃ والیہ اشار في الکتاب ۱۔ | کفو فوت ہوجائے گا تو ایسے مقام پر ولی اقرب کی غیبت منقطعہ ہو گی، اور اسی کی طرف کتاب میں اشارہ ہے۔ (ت) |

فتح القدیر میں ہے:

| اذ ابقینا ولایۃ الاقرب ابطلنا حقھا وفاتت مصلحتھا ۲۔ | ولی اقرب کی (باوجود غائب ہونے کے) ولایت کو باقی رکھیں تو لڑکی کا حق باطل اور اس کی بھلائی فوت ہو جائے گی۔ (ت) |

ہدایہ میں ہے:

| ھذا اقرب الی الفقہ لانہ لانظر فی ابقاء ولایتہ حینئذ ۳۔ | یہ بات فقہ سے اقرب ہے کیونکہ یہاں اقرب کی ولایت کو باقی رکھنے میں بچی پر شفقت نہیں ہے۔ (ت) |

تو ابعد کے لئے حصول ولایت تین شرط پر مشروط: اول یہ ابعد بغیبت اقرب جس کے نکاح میں دے صغیرہ کا کفو ہو،

| فانہ ان لم یکن کفوا فای شئ یفوت بفوتہ والامر تمس الحاجۃ۔ | اگر وہ کفو نہ ہو تو پھر کس چیز کے فوت ہونے کا خطرہ اور اس کو کس کی حاجت محسوس ہوئی۔ (ت) |

دوم ہو کفو ولی اقرب کا جواب آنے تک نہ رکے ورنہ ہر گز ابعد کو اختیار نہ ہو گا، جامع الرموز و مجمع الانہر میں ہے:

| لوانتظرہ الخاطب لم ینکح الابعد ۴۔ | اگر منگنی طلب کرنے والا ولی اقرب کا انتظار کرتا ہے تو پھر ولی ابعد نکاح نہ کرے۔ (ت) |

منحة الخالق میں ہے:

| ان رضی الخاطب ان ینتظر الی استیئذان الولی الاقرب لم یصح للابعد العقد ۵۔ | اگر منگنی والا ولی اقرب سے اجازت حاصل کرنے پر راضی ہے تو ابعد کا نکاح درست نہ ہوگا۔ (ت) |

۱ رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربي بیروت ۲/۳۱۵ ۲ فتح القدیر باب فی الاولیاء مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/۱۸۲ ۳ الہدایہ باب فی الاولیاء والاکفاء المکتبۃ العربیۃ کراچی ۲/۲۹۹ ۴ مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر باب فی الاولیاء والاکفاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۳۳۹ ۵ منحۃ الخالق حاشیۃ علی البحر الرائق باب الاولیاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۱۲۶

Fatawa-e-Razviya, Volume 11

Thirdly, except for this proceeding equal (kufu), no other equal marriage seeker is present who would agree to wait until the reply arrives.

Arabic	Urdu
Because in that case, the suitor who is equal is not actually lost to her; he is only lost if one of them passes away. There is no cancellation of her right in this, nor any loss of her interest, such that the guardianship should be taken away from a compassionate close guardian and given to a distant, far-off one. This is obvious and there is no concealment in it.	Because in this situation, the relationship with an equal for the girl will not be lost. Yes, if one of the two dies, but by that the girl's right was not nullified nor was her interest lost, on the basis of which the guardianship of the nearest guardian should be snatched away, who is extremely compassionate, and given to a distant non-compassionate one; this is a completely obvious matter. (T)

Here, firstly, Zaid's nephew, with whom the intention of marrying Zainab has already been clearly stated in his letter, is present as an explicit equal suitor. This second one with whom the marriage was performed, even if he was an equal and would have slipped out of hands in that much time, the second one was still present. So the necessity for which a distant guardian would get the authority did not occur. Therefore, Allama Khair al-Din al-Ramli states in the marginalia of Bahr al-Ra'iq regarding the issue of 'Adhl' (unjust prevention of marriage) by the nearest guardian:

Arabic	Urdu
The guardianship, due to prevention (adhl), is only transferred to the judge to prevent harm to her, and it is not found when there is an intention to marry her to another equal. (1)	The guardianship is transferred to the judge as a representative due to obstruction so that he can defend against harm to the girl, whereas giving in marriage to another equal instead of one equal is not harmful to the girl. (T)

Allama Shami writes in the marginalia of Bahr:

Arabic	Urdu
If another equal is present and the father refuses to marry her to the first and intends to marry her to the second, he is	If another equal is present and the father does not give in marriage to the first and wants to give to the second, it will not be

Arabic	Urdu
not considered an 'adhil' (one who unjustly prevents), because his fatherly compassion is proof that he chose what is more beneficial for her. (2)	called obstruction by the father because his fatherly compassion is proof that he prefers what is more beneficial for the girl. (T)

[1] Minhat al-Khaliq with reference to al-Ramli, Chapter on Equals (al-Akfa'), HM Saeed Company, Karachi, 12/73 [2] Minhat al-Khaliq, marginalia on al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Equals (al-Akfa'), HM Saeed Company, Karachi, 12/73

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 11

तीसरा, इस वर्तमान उपयुक्त वर (कुफ़ू) के अलावा और कोई उपयुक्त वर विवाह के लिए मौजूद नहीं है जो उत्तर आने तक प्रतीक्षा करने के लिए सहमत हो।

अरबी

क्योंकि उस स्थिति में, वह उपयुक्त वर वास्तव में उसके हाथ से नहीं निकलता; वह केवल तभी निकलता है यदि उनमें से किसी एक की मृत्यु हो जाए। इसमें उसके अधिकार का विलोपन नहीं है और न ही उसके हितों की हानि है, जिससे कि संरक्षकता (विलायत) एक दयालु निकट संरक्षक से छीनकर किसी दूर के निर्दयी व्यक्ति को दे दी जाए। यह स्पष्ट है और इसमें कोई छिपाव नहीं है।

उर्दू

क्योंकि इस स्थिति में लड़की के लिए उपयुक्त (कुफ़ू) रिश्ता खत्म नहीं होगा। हाँ, दोनों में से कोई एक मर जाए, लेकिन उससे लड़की का अधिकार समाप्त नहीं हुआ और न ही उसके हित का नुकसान हुआ, जिसके आधार पर निकटतम संरक्षक की संरक्षकता छीन ली जाए, जो कि अत्यंत दयालु है, और किसी दूर के निर्दयी को दे दी जाए; यह बिल्कुल स्पष्ट बात है। (त)

यहाँ पहले ज़ैद का भतीजा, जिसके साथ ज़ैनब के निकाह का इरादा वह अपने पत्र में लिख चुका है, प्रत्यक्ष रूप से उपयुक्त वर (कुफ़ू) के रूप में मौजूद है। यह दूसरा जिसके साथ निकाह किया गया, यदि वह भी उपयुक्त था और इतने समय में हाथ से निकल जाता, तो दूसरा तो मौजूद था। अतः वह आवश्यकता जिसके लिए दूर के संरक्षक को अधिकार मिलना चाहिए था, उत्पन्न नहीं हुई। इसलिए, अल्लामा खैर अल-दीन अल-रम्ली 'बह्र अल-राइक' के हाशिये (marginalia) में निकटतम संरक्षक द्वारा विवाह में बाधा डालने (अज़्ल) के मुद्दे पर कहते हैं:

अरबी

बाधा डालने के कारण संरक्षकता केवल न्यायाधीश (काज़ी) को हस्तांतरित की जाती है ताकि लड़की को होने वाले नुकसान को रोका जा सके, और यह स्थिति तब नहीं पाई जाती जब उसे दूसरे उपयुक्त वर से विवाह करने का इरादा हो। (1)

उर्दू

रुकावट के कारण काज़ी को प्रतिनिधि के रूप में संरक्षकता हस्तांतरित होती है ताकि वह लड़की को होने वाले नुकसान से बचा सके, जबकि एक उपयुक्त वर के बजाय दूसरे उपयुक्त वर से निकाह करना लड़की के लिए नुकसानदेह नहीं है। (त)

अल्लामा शामी हाशिय-ए-बह्र में लिखते हैं:

अरबी	उर्दू
यदि दूसरा उपयुक्त वर उपस्थित है और पिता पहले से निकाह करने से मना करता है और दूसरे से निकाह करना चाहता है, तो उसे 'आज़िल' (अन्यायपूर्ण तरीके से रोकने वाला) नहीं माना जाएगा, क्योंकि उसकी पितृ सुलभ ममता इस बात का प्रमाण है कि उसने उसके लिए जो अधिक लाभकारी है उसे चुना है। (2)	यदि दूसरा उपयुक्त वर मौजूद है और पिता पहले से निकाह नहीं करता और दूसरे को देना चाहता है, तो इसे पिता की ओर से रुकावट नहीं कहा जाएगा क्योंकि उसकी पिता वाली ममता इस बात की दलील है कि वह बच्ची के लिए जो अधिक उपयोगी है उसे पसंद करता है। (त)

[1] मिन्हातुल ख़ालिक़ बहवाला अल-रम्ली, फ़स्ल फ़िल अकफ़ा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 12/73

[2] मिन्हातुल ख़ालिक़ हाशिया अलल बह्रुर राइक़, फ़स्ल फ़िल अकफ़ा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 12/73

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

سوم اس جاری کرنے والے کفو کے سوا اور کوئی کفو خواستگارِ نکاح ایسا حاضر نہ ہو جو جواب آنے تک انتظار پر راضی ہو۔

عربی	اردو
فانه حینئذ لا یفوتها الکفو الخاطب بالفعل انما یفوت ان فات احد هما ولیس في ذلك ابطال حقها ولا تفویت مصلحتها حتی تسلب الولایه من قریب شفیق الی بعید سحیق وهذا ظاهر لا سترة علیه۔	کیونکہ اس صورت میں لڑکی کے لئے کفو والا رشتہ فوت نہ ہوگا۔ ہاں دونوں میں سے کوئی ایک فوت ہوا، مگر اس سے لڑکی کا حق باطل نہ ہوا نہ اس کی مصلحت فوت ہوئی جس کی بنا پر اقرب ولی کی ولایت سلب کی جائے جو کہ نہایت شفیق ہے اور بعید غیر شفیق کو دی جائے، یہ بالکل ظاہر بات ہے۔ (ت)

یہاں اولاً زید کا بھتیجا جس کے ساتھ تزویج زینب کا ارادہ وہ اپنے خط میں لکھ چکا ظاہرًا صریح کفو خواستگار موجود ہے یہ دوسرا جس کے ساتھ نکاح کیا گیا اگر کفو بھی تھا اور اتنی دیر میں ہاتھ سے نکل جاتا تو دوسرا تو موجود تھا تو وہ ضرورت جس کے لئے ولی ابعد کو اختیار ملنا متحقّق نہ ہوئی، ولہذا علامہ خیر الدین رملی حاشیہ بحر الرائق مسئلہ عضل ولی اقرب میں فرماتے ہیں:

عربی	اردو
الولایة بالعضل انما انتقلت للقاضی لدفع الاضرار بها ولا	رکاوٹ کی وجہ سے ولایت قاضی کو بطور نیابت منتقل ہوتی ہے تاکہ وہ لڑکی کے ضرر رسانی کا دفاع کرسکیں، جبکہ ایک

عربی	اردو
یوجد مع ارادۃ التزویج بکفو غیرہ۔ (1)	کفو کی بجائے دوسرے کفو کو نکاح دینا لڑکی کے لئے ضرر نہیں ہے۔ (ت)

علامہ شامی حاشیہ بحر میں لکھتے ہیں:

عربی	اردو
ان کان الکفو الآخر حاضرًا وامتنع الاب من تزویجھا من الاول واراد تزویجھا من الثانی لایکن عاضلا لان شفقتہ دلیل علی انہ اختار لھا الانفع (2)	اگر دوسرا کفو موجود ہے اور باپ پہلے کو نکاح نہ دے اور وہ دوسرے کو دینا چاہتا ہے تو اس کو باپ کی رکاوٹ نہ کہا جائے گا کیونکہ اس کی شفقت پدری اس بات کی دلیل ہے کہ وہ بچی کے لئے زیادہ مفید کو پسند کرتا ہے۔ (ت)

[1] منحۃ الخالق بحوالہ الرملی فصل فی الاکفاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲/۷۳ [2] منحۃ الخالق حاشیہ علی البحر الرائق فصل فی الاکفاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲/۷۳

Fatawa Razawiyyah, Volume 11

Secondly, when the aforementioned letter arrived and Zaid's intention became apparent, and after that, this marriage took place, it is clear that this haste was not because a suitable match (kufu) was present and could not wait for Zaid's reply. Rather, it was done intentionally against his opinion, acting behind his back so that he could not arrive and they could achieve their purpose. This is neither a necessity, nor in the best interest, nor does it have any alignment with the intended purpose of the Shariah. In fact, it is a clear contradiction of the objective of Shariah. The pure Shariah established the hierarchy of guardianship (wilayah) for this very reason: so that someone with complete intellect and abundant compassion for a minor can be entrusted with managing and arranging the affairs and comfort of these helpless ones, and not in the control of someone with less compassion or deficient intellect. If "omitting the wait" is defined as knowing the closest guardian's (wali aqrab) opinion is contrary and therefore not waiting to inquire because he would refuse, then such "absence" (ghaybat) can occur at any given moment. Finally, according to the reliable school of thought, for "interrupted absence" (ghaybat munqati'ah), being on a journey, let alone being outside the city, is not a condition, as stated in al-Khaniyyah, al-Bahr, al-Durar, etc. (t). When a compassionate father, seeking his minor daughter's best interest and fearing her harm, goes to the mosque for prayer, if a woman with deficient intellect or parents, according to their own desire, give the daughter to whichever suitable match (kufu) they want—even if the father knows that this relationship would be a misfortune for the minor—then the precedence given by pure Shariah to the father and the immense trust placed in his opinion and compassion (such that if he marries her off to a non-kufu while a kufu is available, no one in the world has the right to object, assuming he must have considered a greater benefit than compatibility) would all become useless and void.

In Radd al-Muhtar: Due to the abundance of his paternal compassion, he would not marry his daughter to a non-suitable match (non-kufu) or for an excessively low dowry (ghabn fahish), except for a benefit that outweighs this harm, such as his knowledge of good treatment of her, lack of harm, and the like.

It is in Radd al-Muhtar that based on paternal compassion, he will not marry his daughter to a non-kufu and for an extremely low dowry unless a greater benefit and interest is in view compared to this harm, for example, intending good social life for the girl and protection for the girl from suffering, etc. (t)

All [these principles] would become useless and suspended. "Indeed, this is far from jurisprudence" i.e., very far (t). On the contrary, in letting go of the reins like this, there is a strong possibility of severe mischief. For example, a senseless woman, due to kinship with some relative or out of greed, or having fallen for the malicious talk of a procuress, wants to marry the daughter to someone. The compassionate father is aware that this person is of bad religious standing or of low lineage and is not a suitable match (kufu) for some reason, and he forbids it. As soon as he leaves, this woman of deficient intellect [marries her off] in that bad place...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305

दूसरी बात यह कि जब उल्लेखित पत्र आया और ज़ैद का इरादा ज़ाहिर हो गया, और उसके बाद यह निकाह हुआ, तो ज़ाहिर है कि यह जल्दबाज़ी इसलिए नहीं थी कि कोई कुफ़ू (योग्य वर) मौजूद था और वह ज़ैद के जवाब का इंतज़ार नहीं कर सकता था। बल्कि जानबूझकर उसकी राय के ख़िलाफ़, उसकी पीठ पीछे यह कार्रवाई की गई ताकि वह न आ सके और उनका मक़सद पूरा हो जाए। यह न तो कोई ज़रूरत थी, न ही इसमें कोई भलाई (मसलहत) थी, और न ही शरीयत के उद्देश्य से इसका कोई मेल था। बल्कि यह शरीयत के उद्देश्य के बिल्कुल विपरीत है। पावन शरीयत ने विलायत (संरक्षण) के स्तरों का क्रम इसी दिन के लिए रखा था कि जिसकी बुद्धि पूर्ण हो और नाबालिग पर जिसकी ममता भरपूर हो, इन बेचारों के काम और आराम का इंतज़ाम उसके हाथ में दिया जाए, न कि किसी कम ममता वाले या कम बुद्धि वाले के अधिकार में। अगर इंतज़ार न करने का नाम यह रखा जाए कि क़रीबी वली (संरक्षक) की राय अपने ख़िलाफ़ मालूम है, इसलिए उससे पूछने का इंतज़ार नहीं किया जाता क्योंकि वह मना कर देगा, तो ऐसी 'ग़ैबत' (अनुपस्थिति) तो हर समय हो सकती है। अंततः विश्वसनीय मज़हब के अनुसार, 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (लंबी अनुपस्थिति) में सफ़र तो दूर, शहर से बाहर होना भी शर्त नहीं है, जैसा कि अल-ख़ानिया, अल-बहर, अद-दुरर आदि में है (त)। जब एक नाबालिग लड़की का मेहरबान पिता उसकी भलाई चाहता हो और उसके नुक़सान से डरता हो, और वह मस्जिद में नमाज़ के लिए जाए, तो घर में कोई कम अक्ल औरत या माता-पिता अपनी इच्छा के अनुसार जिस भी कुफ़ू को चाहें बेटी दे दें—भले ही पिता जानता हो कि इस रिश्ते में बच्ची की बदक़िस्मती है—तो पावन शरीयत में पिता को दी गई प्राथमिकता और उसकी राय और ममता पर इतना बड़ा भरोसा (कि अगर वह एक कुफ़ू के होते हुए ग़ैर-कुफ़ू से ब्याह दे, तो पूरी दुनिया में किसी को ऐतराज़ करने का हक़ नहीं है क्योंकि माना जाएगा कि उसने बराबरी से बढ़कर कोई भलाई सोची होगी) सब बेकार और निष्फल हो जाएगा।

रद अल-मुह्तार में है: अपनी पितृ ममता की प्रचुरता के कारण वह अपनी बेटी का निकाह किसी अयोग्य (ग़ैर-कुफ़ू) से या बहुत ही कम मेहर (ग़बन-ए-फ़ाहिश) पर नहीं करेगा, सिवाय उस स्थिति के जब इस नुक़सान की तुलना में कोई बड़ा लाभ और हित सामने हो, जैसे कि उसके साथ अच्छे व्यवहार और पीड़ा की कमी आदि का ज्ञान।[1]

रद अल-मुह्तार में है कि वह पितृ ममता के आधार पर अपनी बेटी का निकाह ग़ैर-कुफ़ू और अत्यंत कम मेहर से नहीं करेगा, सिवाय इसके कि जब इस नुक़सान के मुक़ाबले अधिक फ़ायदा और हित नज़र में हो, उदाहरण के लिए लड़की के लिए अच्छा सामाजिक जीवन और लड़की को कष्ट से सुरक्षा आदि मक़सद हो। (त)

सब बेकार और निरर्थक होकर रह जाएंगे। "बेशक यह फ़िक़्ह (धर्मशास्त्र) से बहुत दूर है" यानी बहुत दूर (त)। बल्कि इस तरह ढील देने में भारी फ़ित्नों (अशांति/बुराई) की प्रबल संभावना है। उदाहरण के लिए, एक कम समझ वाली औरत अपने किसी रिश्तेदार के प्रति लगाव के कारण या किसी लालच में, या किसी दलाल की बुरी बातों में आकर किसी व्यक्ति से बेटी का निकाह करना चाहती हो। ममतामयी पिता जानता हो कि यह व्यक्ति बुरे मज़हब का है या कम खानदान का है और किसी कारण से कुफ़ू नहीं है, और वह मना कर दे। उसके जाते ही यह कम बुद्धि वाली औरत उस बुरी जगह...

---

[1] रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 305/2

ثانیاً جب خط مذکور آنے اور ارادہ زید ظاہر ہو جانے کے بعد یہ نکاح واقع ہوا تو ظاہر کہ یہ جلدی اس لئے نہ تھی کہ کفو حاضر کو اتنی مہلت نہیں زید کا جواب آنے تک بیٹھا نہ رہے گا بلکہ قصداً اس کی رائے کے خلاف جان کر بالا بالا کارروائی کرلی گئی کہ وہ نہ آنے پائے اور اپنا مطلب ہو جائے یہ ہرگز نہ ضرورت نہ مصلحت نہ مراد شرع سے اسے مناسبت بلکہ مقصود شرع سے صاف مناقضت شرع مطہر نے مراتب ولایت کی ترتیب اسی دن کے لئے رکھی تھی کہ جس کی عقل کامل صغیر السن پر شفقت وافر ان بے چاروں کے کام آرام کا انتظام اہتمام اس کے ہاتھ میں دیا جائے نہ کسی کم شفقت یا ناقص العقل کے قبضے میں، اگر ترک انتظار اسی کا نام رکھا جائے کہ ولی اقرب کی رائے اپنے خلاف معلوم ہے لہذا اس سے دریافت کا انتظار نہیں کرتا کہ وہ پوچھنے سے منع کر دے گا تو ایسی غیبت تو ہر وقت نقد وقت ہو سکتی ہے، آخر مذہب معتمد پر غیبت منقطعہ میں سفر در کنار شہر سے باہر ہونا بھی شرط نہیں کمافی الخانیۃ والبحر والدرر وغیرھا (جیسا کہ خانیہ، بحر اور درر وغیرہ میں ہے۔ ت) صغیرہ کا مہربان باپ اس کی مصلحت کا خواہاں اس کی مضرت سے ترساں جب مسجد میں نماز کو جائے گھر میں کوئی عورت ناقصۃ العقل والدین اپنی خواہش کے مطابق جس کفو کو چاہے بیٹی دے دے اگر چہ باپ جانتا ہو کہ اس سے رشتہ میں صغیرہ کی شامت ہے تو شرع مطہر میں باپ کی تقدیم اور اس کی رائے و شفقت پر اس قدر اعتماد عظیم (کہ اگر وہ ایک بار کفو کے ہوتے غیر کفو سے بیاہ دے تو تمام جہان میں کسی کو اختیار اعتراض نہیں کہ اس نے کفاءت سے بڑھ کر کوئی مصلحت سوچ لی ہوگی۔

في ردالمحتار انه لوفور شفقته بالابوة ردالمحتار میں ہے کہ وہ پدری شفقت کی بنا پر اپنی بیٹی کا

لا یزوج بنته من غیر کفو او بغبن فاحش الا لمصلحة تزید علی هذا الضرر کعلمه بحسن العشرة معها وقلة الاذی ونحو ذلك[1]

نکاح غیر کفو اور انتہائی کم مہر سے نہیں کریگا مگر جبکہ اس ضرر کی نسبت سے زیادہ فائدہ اور مصلحت پیش نظر ہو مثلاً لڑکی کے لئے اچھی معاشرت اور لڑکی کو اذیت سے تحفظ وغیرہ مقصود ہو (ت)

سب بیکار و معطل ہو کر رہ گئے ان هذا البعید من الفقہ ای بعید (یہ فقہ سے بہت بعید ہے۔ت) بلکہ ایسی باگ چھوڑنے میں سخت فتنوں کا احتمال قوی ہے مثلاً زن بے خرد اپنے کسی عزیز کے ساتھ بوجہ قرابت خواہ کسی طمع سے یا دلالہ خباثت کی باتوں میں آکر کسی شخص سے دختر کا نکاح چاہتی ہو پدر شفیق ہو آگاہ ہو کہ یہ بد مذہب یا کم نسب ہے اور کسی وجہ سے کفو نہیں وہ منع کر دے اس کے جاتے ہی یہ ناقصة العقل اس بُری جگہ

---

[1] رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲

Fatawa Ridawiyyah Volume 11

...the girl is taken away and a claim is made that it was a suitable match (Kufw). In the wait, the opportunity might be lost, therefore I was granted guardianship (Wilayat). Now, would a dignified person, God forbid, take such matters to court? He might act out of honor or remain silent, thinking "the wrath of a poor man is against his own soul." What a great harm would befall the minor girl! If he makes a claim, proving the lack of suitability (Kafat) would be difficult, especially in cases where deviant sects, particularly the Rawafid, use 'Taqiyya' as a great shield. Opening the door to such permissions would lead to many calamities. We seek refuge in Allah, the Almighty, the All-Wise. (T)

Thirdly, in the reliable opinion of the school of thought, and even according to the opposing view, the reason for granting guardianship to the distant relative (Ab'ad) in the case of a 'Ghaybat-e-Munqati'ah' (prolonged absence) of the closer relative (Aqrab) is solely because guardianship is established so that the minor benefits from their judgment. When they are absent in such a way, the benefit from their judgment is non-existent. Therefore, it will be based on the judgment of the one who is next in line. It is stated in Al-Hidayah:

Arabic Text	Urdu Translation
Indeed, this guardianship is based on consideration (Nazariyah), and it is not sound consideration to delegate it to someone from whose opinion no benefit is derived. Thus, we delegate it to the one more distant. Prolonged absence is when he is in such a state that the opportunity for a suitable match (Kufw) would be lost while waiting for his opinion. [Al-Multaqat]	This guardianship of marriage is based on compassion. So, entrusting guardianship to someone from whose opinion no benefit can be gained would not be considered compassion. Therefore, we entrust this guardianship to the next guardian after him. And prolonged absence (Ghaybat-e-Munqati'ah) is when the closer relative (Aqrab) is in such a place that while obtaining his opinion, the suitable match might be lost. [Al-Multaqat] (T)

It is in Fath al-Qadir: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | It is not sound to delegate to one from whose opinion no benefit is derived, because delegating to the closer relative is not because he is closer, but because in closeness there is a greater presumption of wisdom, which is the compassion that motivates increased benefit for the ward. Thus, where there is no benefit from his opinion at all, it (guardianship)

is taken away and given to the one more distant. | Entrusting guardianship to someone from whose opinion no benefit is possible is not compassion. This is because a closer relative is not given guardianship just because he is closer, but because there is a greater aspect of compassion in being closer, which coincides with the benefits for the girl. So, where benefiting from his opinion is not possible, it will be transferred to the more distant one. (T) |

1 Al-Hidayah, Chapter on Guardians and Equals, Al-Maktabah al-Arabiyah, Karachi, 2/299. 2 Fath al-Qadir, Chapter on Guardians and Equals, Al-Maktabah al-Nuriyyah al-Ridawiyyah, Sukkur, 3/183.

फ़तावा रज़विया खंड 11

...लड़की को उठा ले जाए और दावा करे कि यह उपयुक्त वर (कुफ़ु) था, इंतज़ार में अवसर निकल जाता, इसलिए मुझे अभिभावकत्व (विलायत) मिल गया। अब कहीं ऐसा होगा कि कोई सम्मानित व्यक्ति, अल्लाह न करे, ऐसे मामलों को कचहरी तक ले जाए? वह ग़ैरत (सम्मान) की वजह से या "क़हर दरवेश बर जान-ए-दरवेश" (दरवेश का क्रोध उसकी अपनी जान पर) कहकर चुप रह जाए, तो उस नाबालिग लड़की को कितना बड़ा नुक़सान पहुँचेगा! अगर वह दावा करे, तो कुफ़ु (उपयुक्तता) के न होने का सबूत देना कठिन होगा, विशेषकर उन मामलों में जहाँ बहुत से कुपथगामी, ख़ासकर रवाह़िफ़ज़ (शिया), 'तक़िया' की बड़ी ढाल रखते हैं। ऐसी अनुमतियों में कैसी आपदाओं का द्वार खुल सकता है! अल्लाह अज़ीज़ो हकीम (सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी) की पनाह। (त)

तीसरा, विश्वसनीय पंथ (मज़हब) के अनुसार, बल्कि विपक्षी मत पर भी, करीबी अभिभावक (वली अक़रब) की निरंतर अनुपस्थिति (ग़ैबत-ए-मुन्क़तिआ) में दूर के अभिभावक (अबाअद) को अभिभावकत्व देने का उद्देश्य केवल यह है कि अभिभावकत्व इसलिए रखा गया है ताकि उसकी राय से नाबालिग को लाभ हो। और जब वह इस तरह अनुपस्थित है, तो उसकी राय से होने वाला लाभ शून्य है। इसलिए, उसे उस व्यक्ति की राय पर रखेंगे जो उसके बाद के पद पर है। हिदाया में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
वास्तव में यह अभिभावकत्व विवेक पर आधारित है, और यह विवेकपूर्ण नहीं है कि उसे सौंपा जाए जिसकी राय से कोई लाभ न हो। इसलिए हमने इसे दूर के रिश्तेदार को सौंप दिया। निरंतर अनुपस्थिति वह स्थिति है जिसमें उसकी राय प्राप्त करने की प्रतीक्षा में उपयुक्त वर (कुफ़ु) हाथ से निकल जाए। [मलतक़त]	यह विवाह का अभिभावकत्व करुणा पर आधारित है। तो जिसकी राय से लाभ न हो सके, उसे अभिभावकत्व सौंपना करुणा नहीं कहलाएगा। इसलिए हम यह अभिभावकत्व उसके बाद वाले अभिभावक को सौंपते हैं। और निरंतर अनुपस्थिति (ग़ैबत-ए-मुन्क़तिआ) यह है कि वह करीबी अभिभावक ऐसी जगह हो कि उसकी राय प्राप्त करने में उपयुक्त वर (कुफ़ु) का अवसर हाथ से निकल जाए। [मलतक़त] (त)

फ़तहुल क़दीर में है: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | जिसकी राय से लाभ न हो उसे सौंपने में कोई विवेक नहीं है, क्योंकि करीबी को सौंपना इसलिए नहीं है कि वह करीबी है, बल्कि

इसलिए है कि करीब होने में हिकमत (बुद्धिमत्ता) की अधिक संभावना है, और वह है वह करुणा जो वार्ड के लिए राय की अधिक अनुकूलता का कारण बनती है। अतः जहाँ उसकी राय से बिल्कुल लाभ न हो, उसे दूर के व्यक्ति की ओर स्थानांतरित कर दिया जाएगा। | जिसकी राय से लाभ संभव न हो, उसे अभिभावकत्व सौंपना करुणा नहीं है क्योंकि करीबी रिश्तेदार को अभिभावकत्व इसलिए नहीं दिया जाता कि वह करीबी है, बल्कि इसलिए कि करीबी होने में करुणा का पहलू अधिक होता है, जो लड़की के लाभ के अनुकूल है। तो जहाँ उसकी राय से लाभ संभव न हो, वहाँ इसे दूर के अभिभावक की ओर स्थानांतरित कर दिया जाएगा। (त) |

1 अल-हिदाया, बाब अल-औलिया वल-अकफ़ा, अल-मकतबाह अल-अरबिया, कराची, 2/299. 2 फ़तहुल क़दीर, बाब अल-औलिया, अल-मकतबाह अल-नूरिया अल-रिज़विया, सुक्कुर, 3/183.

لڑکی اٹھادے اور دعوی کرے کہ یہ کفو تھا انتظار میں فوت ہو جاتا لہذا مجھے ولایت ملی اب کہیں یہ ہو گا کہ ذی عزت آدمی معاذاللہ ایسے معاملات کچہری تک لے جاتے غیرت کرے اور قہر درویش برجان درویش کہہ کر خاموش رہے تو نابالغہ کو کیسا ضرر عظیم پہنچا اگر دعوی کرے تو عدم کفاءت کا ثبوت دینا دشوار ہو خصوصاً مثل مذہب میں کہ بہت بد مذہب خصوصاً روافض ایسی جگہ تقیہ کی بڑی ڈھال رکھتے ہیں تو ایسی اجازتوں میں کیسی آفتوں کا فتح باب ہے والعیاذ باللہ العزیز الحکیم (عزت و حکمت والے اللہ کی پناہ۔ت)۔

ثالثاً مذہب معتمدہ بلکہ قول مقابل پر بھی ولی اقرب کی غیبت منقطعہ میں ابعد کو ولایت دینے کا منشا صرف یہ کہ ولایت اس لئے رکھی ہے کہ اس کی رائے سے نابالغ کو نفع پہنچے اور جب وہ ایسا غائب ہے تو اس کی رائے سے نفع معدوم۔ لہذا جو اس کے بعد درجہ رکھتا ہے اس کی رائے پر رکھیں گے ، ہدایہ میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
ان ھذہ ولایۃ نظریۃ ولیس من النظر التفویض الی من لاینتفع برأیہ ففوضناہ الی الابعد والغیبۃ المنقطعۃ ان یکون بحال یفوت الکفؤ باستطلاع رأیہ ۱ھ ملتقطاً۔	یہ نکاح کی ولایت شفقت پر مبنی ہے تو جس کی رائے سے انتفاع نہ ہو سکے ایسے کو ولایت سونپنا شفقت نہ کہلائے گی، لہذا ہم یہ ولایت اس کے بعد والے ولی کو سونپتے ہیں ، اور غیبت منقطعہ یہ ہے کہ وہ اقرب ایسی جگہ ہو کہ اس کی رائے حاصل کرنے میں کفو فوت ہو جائے ۔ اھ ملتقطاً ۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے : | عربی متن | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | | لانظر فی التفویض الی من لاینتفع برأیه لان التفویض الی اقرب لیس لکونه اقرب بل لان فی الاقربیة زیادة مظنة للحکمة وھی الشفقة الباعثة علی زیادة اتفاق الرائی للمولیة فحیث لاینتفع برأیه اصلا سلبت الی الابعد ۲۔ | جس کی رائے سے انتفاع ممکن نہ ہو اس کو ولایت سونپنا شفقت نہیں ہے کیونکہ اقرب کو ولایت اس لئے نہیں کہ وہ اقرب ہے بلکہ اس لئے کہ اقرب ہونے میں زیادہ شفقت کا پہلو ہے جو کہ لڑکی کے لئے فوائد سے اتفاق ہے ، تو جہاں اس کی رائے سے انتفاع ممکن نہ ہو وہاں اسے ابعد کی طرف منتقل کیا جائے گا ۔ (ت) |

1 الھدایه باب الاولیاء والاکفاء المکتبه العربیه کراچی ۲/۲۹۹ 2 فتح القدیر باب الاولیاء المکتبة النوریہ الرضویہ سکھر ۳/۱۸۳

Fatawa Razawiyyah Volume 11

In Bahr al-Ra'iq, it is stated:

[Arabic Text Box] His saying: And for the more distant guardian to perform marriage during the absence of the nearer one by the distance of shortening prayers (masafat al-qasr), i.e., three days or more. This is because this guardianship is based on consideration, and it is not considered prudent to delegate to someone whose opinion cannot be utilized. Therefore, we have delegated it to the more distant one.

[Corresponding Urdu Translation Box] The author's statement that "the distant guardian has the authority to perform the marriage when the near guardian is at such a distance that qasr (shortening of prayer) becomes obligatory," i.e., three days or more distance. Since this guardianship is based on compassion, entrusting it to someone whose opinion is not accessible would not be compassionate. Therefore, we have assigned this authority to the distant guardian. (T)

Here, when the benefit of the opinion of the near guardian (Aqrab) is actually available—he has already written a letter expressing his view—then what is the basis for relying on the opinion of the distant guardian (Ab'ad)? The Ab'ad's opinion is sought only when the benefit from the Aqrab's opinion is non-existent, not to override or invalidate the benefit already obtained from the Aqrab's opinion. This would be entirely contrary to the intended purpose. Thus, considering the facts of the case, it is clearly evident that this is far removed from the situation where the Pure Shari'ah transfers guardianship from the Aqrab to the Ab'ad. Consequently, Zaid's absence is not 'Ghaybat-e-Munqati'ah' (absolute absence), and he remains the Aqrab. Besides him, any marriage performed by the grandmother or anyone else is 'Nikah-e-Fuzuli' (marriage performed without authority). Not only can Zaid's permission terminate it, but Zaid himself can terminate it by saying, "I have rejected this marriage," and it will be immediately rejected and void. It is stated in Al-Muhit, Al-Hindiyyah, Sharh al-Tanwir, etc.:

[Arabic Text Box] And the wording is from the latter: If the distant guardian performs the marriage while the near guardian is present, it remains contingent upon his permission.

[Corresponding Urdu Translation Box] The phrasing from the latter book is that if the distant guardian performed the marriage in the presence of the near guardian, it would be contingent upon the permission of the near guardian. (T)

All this discourse applies when the person Zainab was married to is a 'Kufu' (suitable match) for her. If he is not a Kufu, meaning he is inferior in lineage, religion, profession, character, or wealth such that his marriage to her brings disgrace to Zaid, then the ruling is clear without difficulty. According to the reliable school of thought, the primary condition for 'Ghaybat-e-Munqati'ah' is not met here. Therefore, such a marriage is definitely contingent on permission, even if the guardian is a thousand miles away. This applies as long as Zaid has not previously exercised his guardianship to marry her to a non-match. Otherwise, Zainab's marriage wouldn't even be contingent on his permission; it would be inherently void from the start, as it proceeded from an unauthorized person (fuzuli) and there is no one to validate it. (Because it originated from a fuzuli and lacks a validator. T)

1. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Guardians, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/126.
2. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Guardians, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/193.

फतावा रज़विया ग्यारहवीं जिल्द

बहर अल-राईक में है:

[अरबी पाठ का डब्बा] उनका कहना है: और निकटतम अभिभावक (अल-अकरब) की कसर की दूरी (यानी तीन दिन या उससे अधिक) की अनुपस्थिति में दूर के अभिभावक (अल-अबद) को निकाह करने का अधिकार है। क्योंकि यह अभिभावकता विचार और दया पर आधारित है, और ऐसे व्यक्ति को यह सौंपना दयालुता नहीं है जिसकी राय से लाभ नहीं उठाया जा सकता। इसलिए, हमने इसे और दूर वाले को सौंप दिया है।

[उर्दू अनुवाद का डब्बा] लेखक का कथन है कि "दूर के अभिभावक को निकाह करने का अधिकार है जबकि निकटतम अभिभावक इतनी दूरी पर हो जिससे कसर अनिवार्य हो जाए," यानी तीन दिन या उससे अधिक की दूरी। चूँकि यह अभिभावकता करुणा पर आधारित है, इसलिए ऐसे व्यक्ति को अभिभावकता सौंपना जिसकी राय से लाभ नहीं उठाया जा सकता, करुणा नहीं होगी। इसीलिए हमने यह अधिकार दूर के अभिभावक को सौंपा है। (त)

यहाँ, जहाँ निकटतम अभिभावक (अकरब) की राय से वास्तविक लाभ प्राप्त है—उसने पत्र लिखकर अपनी राय व्यक्त कर दी है—तो अब दूर वाले (अबद) की राय पर निर्भर रहने का क्या औचित्य है? उसकी राय तो इसलिए ली जाती है कि अकरब की राय अनुपलब्ध है, न कि अकरब की राय से प्राप्त लाभ को रद्द और निष्प्रभावी करने के लिए। यह पूरी तरह से विपरीत उद्देश्य है। तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि यह उस स्थिति से बहुत अलग है जिसमें शरीयत अकरब से अबद की ओर अभिभावकता हस्तांतरित करती है। निश्चित रूप से, ज़ैद की अनुपस्थिति 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (पूर्ण अनुपस्थिति) नहीं है और वही अकरब है। उसके अलावा, दादी या किसी और द्वारा कराया गया निकाह 'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' है। इसका मतलब यह नहीं कि ज़ैद केवल अनुमति पर रोक लगा सकता है; ज़ैद स्वयं अपनी ज़बान से कहकर रद्द कर सकता है कि "मैंने यह निकाह रद्द किया," तो वह तुरंत रद्द और बातिल (अमान्य) हो जाएगा। मुहीत, हिन्दिया और शरह तनवीर आदि में है:

[अरबी पाठ का डब्बा] और शब्द अंतिम (पुस्तक) के हैं: यदि दूर वाले ने निकटतम की मौजूदगी में निकाह कर दिया, तो यह उसकी (निकटतम की) अनुमति पर निर्भर होगा।

[उर्दू अनुवाद का डब्बा] अंतिम किताब की इबारत है कि अगर अबद (दूर वाले) ने अकरब (निकटतम) की मौजूदगी में निकाह करा दिया, तो वह अकरब की अनुमति पर निर्भर होगा। (त)

यह सारी चर्चा तब है जब जिससे ज़ैनब का निकाह हुआ वह ज़ैनब का 'कुफ़ू' (समान स्तर का) हो। और अगर कुफ़ू नहीं है, यानी वंश, धर्म, पेशा, आचरण या धन के मामले में इतना कमतर है कि उससे निकाह होना ज़ैद के लिए अपमान का कारण हो, तो हुक्म बिना किसी कठिनाई के स्पष्ट है। विश्वसनीय मत के अनुसार, यहाँ 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' की पहली ही शर्त पूरी नहीं हुई, तो ऐसा निकाह निश्चित रूप से अनुमति पर निर्भर है, चाहे अभिभावक हज़ारों कोस दूर हो। यह भी तब है जब ज़ैद ने इससे पहले अपनी अभिभावकता में उसका निकाह किसी ग़ैर-कुफ़ू से न किया हो, अन्यथा ज़ैनब का निकाह उसकी अनुमति पर भी निर्भर नहीं रहता, वह तो शुरू से ही बिल्कुल बातिल होता। 'हुव अल-सुदूर मिन फ़ुज़ूली व ला मुजीज़' (फ़ुज़ूली से होने और उसे वैध करने वाला न होने के कारण। त)

1. बहर अल-राईक, बाब अल-औलिया, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, ३/१२६।
2. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, बाब अल-औलिया, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/१९३।

पृष्ठ ६०६ / ७३९

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

بحر الرائق میں ہے:

قولہ وللا بعد التزویج بغیبۃ الاقرب مسافۃ القصر ای ثلثۃ ایام فصاعدالان ھذہ ولایۃ نظریۃ ولیس من النظر التفویض الی من لا ینتفع برأیہ ففوضناہ الی الابعد 1۔ ماتن کا قول کہ "ابعد کو نکاح کر دینے کی ولایت ہے جبکہ اقرب اتنی مسافت پر ہو جس سے قصر لازم ہو" یعنی تین دن یا زیادہ مسافت، کیونکہ یہ ولایت شفقت پر مبنی ہے، تو ایسے کو ولایت سونپنا جس کی رائے قابل انتفاع نہ ہو تو وہ شفقت نہ ہوگی، اس لئے ہم نے یہ ولایت ابعد کو سونپی ہے۔ (ت)

یہاں کہ ولی اقرب کی رائے سے انتفاع بالفعل حاصل وہ خط لکھ چکا اپنی رائے ظاہر کر چکا تو اب ابعد کی رائے پر رکھنے کا کیا منشا اس کی رائے تو اس لئے لی جاتی ہے کہ اقرب کی رائے سے انتفاع معدوم، نہ اس لئے کہ اس کی رائے سے جو نفع حاصل ہے اس کے رد و ابطال کے واسطے یہ سراسر عکس مقصود ہے تو بنظر بحالات واقعہ صاف ظاہر ہے کہ یہ اس صورت سے بہت ابعد ہے جس میں شرع مطہر اقرب سے ابعد کی طرف ولایت نقل فرمائے، لاجرم غیبت زید غیبت منقطعہ نہیں اور وہی اقرب ہے، اس کے سوا دادی وغیرہ کسی کا کیا نکاح نکاح فضولی ہے کہ زید کی اجازت پر موقوف تو فسخ کراسکتا کیا معنی، زید خود اپنے قول سے فسخ کر سکتا ہے زبان سے کہہ دے "میں نے یہ نکاح رد کیا" فوراً رد و باطل ہو جائے گا۔ محیط و ہندیہ و شرح تنویر وغیرہا میں ہے:

واللفظ للاخیر لوزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ 2۔ عبارت آخری کتاب کی ہے کہ اگر ابعد نے اقرب کی موجودگی میں نکاح دیا تو اقرب کی اجازت پر موقوف ہوگا (ت)

یہ سب کلام اس حالت میں ہے کہ جس سے زینب کا نکاح ہوا زینب کا کفو ہو اور اگر کفو نہیں یعنی نسب یا مذہب یا پیشے یا چال چلن یا مال غرض کسی بات میں ایسا کم ہے کہ اس سے اس کا نکاح ہونا زید کے لئے باعث عار ہو جب تو حکم بلا دقت ظاہر کہ مذہب معتمدہ پر یہاں سرے سے غیبت منقطعہ کی پہلی ہی شرط متحقق نہ ہوئی تو ایسا نکاح قطعاً اجازت پر موقوف ہے اگرچہ ہزار کوس پر ہو وہ بھی جبکہ زید اس سے پہلے اپنی ولایت سے کوئی نکاح غیر کفو سے نہ کر چکا ہو ورنہ نکاح زینب اس کی اجازت پر بھی موقوف نہ رہا، سرے سے خود ہی باطل محض ھو الصدور من فضولی ولا مجیز (فضولی سے صادر ہونے اور اس کو جائز کرنے والا نہ ہونے کی بنا پر۔ ت)

1 بحر الرائق باب الاولیاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۱۲۶ 2 درمختار شرح تنویر الابصار باب الاولیاء مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۳

Fatawa Razawiyya Volume 11

The apparent situation of the question is this. And if we assume that the haste of Zainab's grandmother, and the lack of waiting by the one with whom the marriage took place, was not based on this, but it was a real matter that only this 'Kufu' (equal match) was the suitor. The nephew, etc., were either not suitors at all, or if they were, they were not 'Kufu'. And this 'Kufu', due to some personal need, was in such a hurry. At the time Zaid wrote the letter, there was no 'Kufu' suitor. Now if he gets information that this opportunity has come and such a suitor is found, it's not surprising that he too would agree. But due to the lack of time, where is the time to send a letter or a person to find out? In waiting, the 'Kufu' would be lost, causing harm to Zainab. If in reality the situation was such, then indeed, upon Zaid's absence, the mentioned definition of 'Ghaybat-e-Munqati'a' (prolonged absence) would seem applicable. It would be said that the guardian who is present in the ranks of guardianship after him has gained guardianship. Now, first, it should be seen whether there was an excessive reduction in Zainab's 'Mehr-e-Mithl' (customary dower) in this marriage. For example, if her 'Mehr-e-Mithl' was fifty thousand and twenty-five thousand was fixed. If so, then this marriage is absolutely null and void, such that even if the father validates it, it will not be valid. However, if during the father's 'Ghaybat-e-Munqati'a', Zainab's paternal grandfather was the present 'Wali Sahih' (rightful guardian), who had not previously performed any marriage for anyone under his guardianship with such lack of affection, and this marriage was performed by the grandmother with his permission or he approved and enforced it after it occurred, and at the time of that prior or subsequent permission he was not intoxicated, then certainly it would be valid and even binding, such that it cannot be revoked in any way. However, it is not understood from the statement of the question that Zainab's grandfather was present. It is in Durr al-Mukhtar:

[Box Content] Arabic: The marriage becomes binding even with excessive loss by deficiency in her dower or by deficiency in equality (Kufu), if the marrying guardian is the father or grandfather from whom poor choice is not known by consensus, and similarly if he were intoxicated. End. And in Al-Khayriyya: Subsequent approval is like prior authorization.

Urdu: If the father or grandfather is the one giving in marriage, about whom poor choice is not known, then the marriage performed by him with a non-equal (non-Kufu) and an extremely low dower will also be binding. And if they are known for poor choice, then by consensus this marriage will not take place. Similarly, if they are

intoxicated, it will also not be correct. End. And in Al-Khayriyya, the rule for subsequent permission is the same as for prior authorization. (t)

And if this marriage is free even from this defect, i.e., there was no excessive reduction in 'Mehr-e-Mithl', then now it is necessary to see whether any of the guardians who exist between the father and the grandmother, whom we mentioned above, were present or not. If one was present, then the grandmother...

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardians, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.
2. Fatawa Al-Khayriyya, Chapter on Guardians and Equality (Kafa'at), Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/25.

फतावा रज़विया जिल्द 11

सवाल की ज़ाहिरी सूरत तो यह है और अगर फर्ज़ कीजिये कि ज़ैनब की दादी की यह जल्दी और जिससे निकाह हुआ उसकी बे-इन्तेज़ारी इस बिना पर न थी बल्कि वाकई ही अम्र था कि सिर्फ यही कुफ़ू (बराबरी का रिश्ता) ख़्वास्तगार है। भतीजा वग़ैरह या तो ख़्वास्तगार ही नहीं या हैं तो कुफ़ू नहीं, और यह कुफ़ू अपनी किसी ज़रूरत के बाइस इस दर्जा मुस्तअजिल (जल्दी में) है, ज़ैद ने जब ख़त लिखा उस वक़्त कोई कुफ़ू ख़्वास्तगार न था। अब अगर उसे इत्तिला हो कि यह मौका हाथ आया और ऐसा ख़्वास्तगार पाया गया, ताज्जुब नहीं कि वह भी रज़ामन्द हो, मगर मोहलत की कमी के बाइस ख़त या आदमी भेजकर दरयाफ्त करने का वक़्त कहाँ? इन्तज़ार में कुफ़ू फ़ौत हो जाएगा, ज़ैनब को नुक़सान पहुँचेगा। फ़िलवाके(वाकई) अगर हालत यह थी तो बेशक ज़ैद की ग़ैबत पर 'ग़ैबते मुन्क़तिआ' (लंबी अनुपस्थिति) की मज़कूरा तारीफ़ सादिक़ नज़र आएगी और कहा जाएगा कि अब जो वली हाज़िर दर्जात-ए-विलायत में उसके बाद है उसने विलायत पाई। अब अव्वल तो यह देखना चाहिए कि इस निकाह में ज़ैनब के महरे मिस्ल (प्रचलित मेहर) में कमी-ए-फ़ाहिश (बहुत बड़ी कमी) तो नहीं हुई, मसलन उसका महरे मिस्ल पचास हज़ार था और पच्चीस हज़ार बाँधा गया। अगर ऐसा है तो यह निकाह मुतलक़न बातिल (पूरी तरह अमान्य) महज़ हुआ कि अब बाप भी जायज़ करे तो जायज़ न होगा, मगर यह कि बाप की ग़ैबते मुन्क़तिआ में ज़ैनब का 'जद्दे सही' (दादा) वली-ए-हाज़िर हो जो उससे पहले कोई निकाह अपने किसी ज़ेरे-विलायत का ऐसी बे-शफ़क़ती का न कर चुका हो, और यह निकाह दादी ने उसकी इजाज़त से किया या होने के बाद उसने जायज़ रखा और नाफ़िज़ कर दिया, और उस इजाज़ते साबिका (पिछली) या लाहिका (बाद की) के वक़्त वह नशे में न था, तो अलबत्ता जायज़ बल्कि लाज़िम होगा कि फिर किसी तरह रद्द नहीं हो सकता, मगर तहरीरे सवाल से ज़ैनब का दादा मौजूद होना मफ़हूम (समझ) नहीं आता। दुर्रे मुख़्तार में है:

[बॉक्स सामग्री] अरबी: निकाह लाज़िम हो जाता है चाहे महर में बहुत कमी हो या कुफ़ू की कमी हो, बशर्ते कि निकाह कराने वाला वली बाप या दादा हो जिनके बारे में चुनाव की बुराई मुत्तफ़िक़ा तौर पर मालूम न हो, और इसी तरह अगर वह नशे में हो। खैरिया में है: बाद की इजाज़त पहली वकालत की तरह है।

उर्दू: अगर बाप या दादा निकाह देने वाला हो जिसके बारे में सू-ए-इख़्तियार (ग़लत चुनाव) मारूफ़ न हो तो उसका ग़ैर कुफ़ू और इन्तहाई कम महर से किया हुआ निकाह भी लाज़िम होगा, और अगर वह सू-ए-इख़्तियार से मारूफ़ हों तो बिल-इत्तेफ़ाक़ यह निकाह न होगा। यूँ ही अगर वह नशे में हों तो

भी सही न होगा (अत-तहावी) और खैरिया में है पहली वकालत की तरह ही बाद वाली इजाज़त का हुक्म है। (त)

और अगर यह निकाह इस ऐब से भी खाली है यानी महरे मिस्ल में कमी-ए-फ़ाहिश नहीं हुई तो अब देखना ज़रूरी है कि बाप और दादी के दरमियान जिस क़दर औलिया हैं जिनका ज़िक्र हम ऊपर कर आए हैं उनमें से कोई मौजूद था या नहीं, अगर था तो दादी ने...

1. दुर्रे मुख़्तार बाबुल वली, मतब-ए-मुजतबाई दिल्ली, 1/192
2. फतावा खैरिया बाबुल औलिया वल कफ़ा, दारुल मआरिफ़त बैरूत, 1/25

पेज 607/739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

ظاہر حال صورت سوال تو یہ ہے اور اگر فرض کیجئے کہ جدہ زینب کی یہ جلدی اور جس سے نکاح ہوا اس کی بے انتظاری اس بنا پر نہ تھی بلکہ واقعی ہی امر تھا کہ صرف یہی کفو خواستگار ہے بھتیجا وغیرہ یا تو خواستگار ہی نہیں یا ہیں تو کفو نہیں ، اور یہ کفو اپنی کسی ضرورت کے باعث اس درجہ مستعجل ہے، زید نے کہ خط لکھا اس وقت کوئی کفو خواستگار نہ تھا، اب اگر اسے اطلاع ہو کہ یہ موقع ہاتھ آیا اور ایسا خواستگار پایا عجب نہیں کہ وہ بھی رضامند ہو مگر بے مہلتی کے باعث خط یا آدمی بھیج کر دریافت کرنے کا وقت کہاں انتظار میں کفو فوت ہو گا زینب کو ضرر پہنچے گافی الواقع اگر حالت یہ تھی تو بیشک زید کی غیبت پر غیبت منقطعہ کی تعریف مذکور صادق نظر آئے گی اور کہا جائے گا کہ اب جو ولی حاضر درجات ولایت میں اس کے بعد ہے اس نے ولایت پائی، اب اول تو یہ دیکھنا چاہئے کہ اس نکاح میں زینب کے مہر مثل میں کمی فاحش نہ ہوئی مثلاً اس کا مہر مثل پچاس ہزار تھا پچیس ہزار بندھے، اگر ایسا ہے تو یہ نکاح مطلقاً باطل محض ہوا کہ اب باپ بھی جائز کرے تو جائز نہ ہوگا، مگر یہ کہ باپ کی غیبت منقطعہ میں زینب کا جد صحیح ولی حاضر ہو جو اس سے پہلے کوئی نکاح اپنے کسی زیر ولایت کا ایسی بے شفقی کا نہ کر چکا ہو، اور یہ نکاح دادی نے اس کی اجازت سے کیا یا بعد وقوع اس نے جائز رکھا اور نافذ کردیا، اور اس اجازت سابقہ یا لاحقہ کے وقت نشے میں نہ تھا البتہ جائز بلکہ لازم ہو گا کہ پھر کسی طرح رد نہیں ہوسکتا، مگر تقریر سوال سے زینب کا دادا موجود ہونا مفہوم نہیں۔ در مختار میں ہے:

[باکس میں موجود عبارت] عربی: لزم النکاح ولو بغبن فاحش بنقص مھرھا او بغبن کفو ان الولی المزوج ابا وجد الم یعرف منھما سوء الاختیار اتفاقا وکذا لو کان سکران اھ وفی الخیریۃ ومثل الوکالۃ السابقۃ الاجازۃ اللاحقۃ۔

اردو: اگر باپ یا دادا نکاح دینے والا ہو جس کے بارے میں سوء اختیار معروف نہ ہو تو اس کا غیر کفو اور انتہائی کم مہر سے کیا ہو نکاح بھی لازم ہو گا، اور اگر وہ سوء اختیار سے معروف ہوں تو بالاتفاق یہ نکاح نہ ہو گا۔ یوں ہی اگر وہ نشہ میں ہوں تو بھی صحیح نہ ہو گا اھ اور خیریہ میں ہے پہلی وکالت کی طرح ہی بعد والی اجازت کا حکم ہے۔ (ت)

اور اگر یہ نکاح اس عیب سے بھی خالی ہے یعنی مہر مثل میں کمی فاحش نہ ہوئی تو اب دیکھنا ضروری ہے کہ باپ اور جدہ کے درمیان جس قدر اولیاء ہیں جن کا ذکر ہم اوپر کر آئے ان میں سے کوئی موجود تھا یا نہیں، اگر تھا تو دادی نے

1. در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲
2. فتاوی خیریہ باب الاولیاء والکفاء دار المعرفۃ بیروت ۱/۲۵

Fatawa Rizwia, Volume 11

Whether permission was taken from him or not. If it was not taken, and after the occurrence of the marriage but before the father's return, he gave permission, then undoubtedly this marriage will be valid, complete, and executed as the father cannot reject it.

In "Fath al-Qadir," it is stated:	**In "Fath al-Qadir," it is stated that if the nearer guardian (Wali) appears after the more distant one has performed the marriage contract, he cannot reject the contract of the distant one, even if his guardianship returned upon his arrival. (T)**

Arabic text: فى الفتح القدير لو حضر الاقرب بعد عقد الابعد لا يرد عقده وان عادت ولايته بعوده - 1

But this guardian (Wali) who gave permission first or later, if he is not Zainab's grandfather, as it appears from the situation described in the question, then even if this marriage is executed by his permission, it is still not binding. Zainab will have the option (of puberty) after reaching maturity. If she was already aware of the marriage, then immediately upon reaching puberty, or if she learns after puberty, then as soon as she receives the news, she must immediately express her displeasure with this marriage. In this case, the judge will annul the marriage even if intercourse had occurred before Zainab reached puberty. However, since Zainab is a maiden, there will be no room for delay. If she knew beforehand, then upon reaching puberty, or else upon receiving the news, if she delays for even a moment without a valid necessity, the option will be forfeited and the marriage will become binding, even if she was unaware of this ruling and did not act immediately due to ignorance. It is stated in "Durr-ul-Mukhtar":

Arabic text: **ان كان المزوج غير الاب وابيه ولو الام من كفو وبمهر المثل صح ولكن لصغير وصغيرة خيار الفسخ ولو بعد الدخول بالبلوغ او العلم بالنكاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خيار البكر بالسكوت لومختارة عالمة باصل النكاح ولا يمتد الى آخر المجلس وان جهلت به اهـ ملتقطاً- 2**

If someone other than the father or grandfather performed the marriage, even if it was the mother, provided it was in an equal match (Kufw) and for a customary dowry (Mahr-ul-Mithl), then the marriage is valid. However, the boy and girl will have the "Option of Annulment" (Khiyar al-Faskh) after reaching maturity. For a girl, the option to annul exists even after consummation, upon reaching puberty or upon learning of the marriage after reaching puberty. A judicial decree is a condition for annulment. For a virgin, remaining silent at that moment voids her option, provided she knows about her marriage and is sane. This option remains until the end of the session of gaining knowledge, even if she is ignorant of this rule. (T - summarized)

And if the guardian who was senior to the grandmother rejected it before the father's arrival, then it became void; the father's [option to] annul...

---

1. Fath al-Qadir, Chapter of Guardians and Matches, Maktaba Nooriya Razawiya, Sukkur, 3/184.
2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192-193.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 11

उनसे अनुमति ली गई थी या नहीं। यदि नहीं ली गई थी, और विवाह होने के बाद लेकिन पिता की वापसी से पहले उन्होंने अनुमति दे दी, तो निस्संदेह यह विवाह सही, पूर्ण और लागू होगा क्योंकि पिता इसे रद्द नहीं कर सकते।

अरबी पाठ: فی الفتح القدیر لو حضر الاقرب بعد عقد الابعد لا یرد عقده وان عادت ولایته بعوده - 1	**"फ़तह अल-क़दीर" में है कि अगर दूर के अभिभावक द्वारा विवाह संपन्न कराए जाने के बाद निकट का अभिभावक आ जाए, तो वह दूर वाले के अनुबंध को रद्द नहीं कर सकेगा, भले ही उसके लौटने पर उसकी अभिभावकता (विलायत) वापस आ गई हो। (त)**

लेकिन यह अभिभावक (वली) जिसने पहले या बाद में अनुमति दी, यदि वह ज़ैनब का दादा नहीं है जैसा कि प्रश्न की स्थिति से स्पष्ट है, तो भले ही यह विवाह उसकी अनुमति से लागू हो गया हो, फिर भी यह अनिवार्य (लाज़िम) नहीं हुआ। ज़ैनब को परिपक्व (बालीग़) होने के बाद 'खियार' (विकल्प) मिलेगा। यदि उसे पहले से विवाह की जानकारी है, तो परिपक्व होते ही तुरंत, और यदि परिपक्व होने के बाद जानकारी मिले, तो जानकारी मिलते ही उसे तुरंत इस विवाह के प्रति अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करनी होगी। इस स्थिति में हाकिम (न्यायाधीश) इस विवाह को रद्द (फ़स्ख़) कर देगा, भले ही ज़ैनब के परिपक्व होने से पहले सहवास हो चुका हो। लेकिन चूंकि ज़ैनब कुंवारी है, इसलिए उसे देरी करने का विकल्प नहीं होगा। यदि पहले से जानकारी है तो परिपक्व होने पर, अन्यथा समाचार मिलने पर, बिना किसी अनिवार्य आवश्यकता के एक पल की भी देरी करेगी तो अधिकार समाप्त हो जाएगा और विवाह अनिवार्य हो जाएगा, भले ही वह इस मसले से अनजान हो और अनभिज्ञता के कारण उसने तुरंत कदम न उठाया हो। "दुर्रे मुख़्तार" में है:

अरबी पाठ: ان كان المزوج غير الاب وابيه ولو الام من كفو وبمهر المثل صح ولكن لصغير وصغيرة خيار الفسخ ولو بعد الدخول بالبلوغ او العلم بالنكاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خيار البكر بالسكوت لومختارة عالمة باصل النكاح ولا يمتد الى آخر المجلس وان جهلت به اهـ ملتقطاً- 2	**अगर पिता और दादा के अलावा किसी और ने विवाह कराया हो, भले ही वह माँ हो, बशर्ते कि वह बराबरी (कुफ़्व) में हो और महरे-मिस्ल (प्रचलित मेहर) पर किया गया हो, तो वह विवाह सही है। लेकिन छोटे लड़के और लड़की को परिपक्व होने के बाद विवाह रद्द करने का अधिकार (खियारुल-फ़स्ख़) होगा। लड़की को रद्द करने का अधिकार संभोग के बावजूद परिपक्व होने पर या परिपक्वता के बाद विवाह की जानकारी होने पर होगा। रद्द करने के लिए अदालती फैसला शर्त है। और कुंवारी लड़की का इस अवसर पर चुप रहना उसके अधिकार को समाप्त कर देगा, बशर्ते वह अपने विवाह के बारे में जानती हो और समझदार हो। उसका यह अधिकार जानकारी मिलने की बैठक (मजलिस) के अंत तक रहेगा, भले ही वह इस मसले से अनभिज्ञ हो। (त - संकलित)**

और यदि दादी से ऊपर वाले अभिभावक ने, जो वहां मौजूद था, पिता के आने से पहले उसे रद्द कर दिया तो वह निरस्त (बातिल) हो गया; पिता को रद्द (फ़स्ख़)...

---

1. फ़तह अल-क़दीर, बाबुल-औलिया वल-अकफ़ा, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/184।
2. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल-वली, मुतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/192-193।

اس سے اجازت لے لی تھی یا نہیں۔ اگر نہ لی تھی تو بعد وقوع نکاح قبل واپسیِ پدر اس نے اجازت دے دی تو بیشک یہ نکاح صحیح و تمام و نافذ ہوگا کہ باپ اسے رد نہیں کرسکتا۔

فی الفتح القدیر لو حضر الاقرب بعد عقد الابعد لا یرد عقدہ وان عادت ولایتہ بعودہ - 1

فتح القدیر میں ہے کہ اگر ابعد کے نکاح کردینے کے بعد اقرب آجائے تو ابعد کے نکاح کو رد نہ کرسکے گا اگرچہ اقرب کے واپس آنے پر اس کی ولایت لوٹ آئی ہے۔ (ت)

مگر یہ ولی جس نے اول یا بعد اجازت دی، اگر زینب کا دادا نہیں جیسا کہ صورتِ سوال سے یہی ظاہر ہے تو یہ نکاح اس کی اجازت سے نافذ سہی لازم اب بھی نہ ہوا زینب کو بعدِ بلوغ اختیار ملے گا اگر پہلے سے نکاح کی خبر ہے تو بالغہ ہوتے ہی فوراً اور نہ بلوغ کے بعد جس وقت خبر ملے اسی وقت معاً اس نکاح سے اپنی ناراضی ظاہر کردے کہ اس صورت میں حاکم اس نکاح کو فسخ کردے گا اگرچہ پیش از بلوغ زینب، ہمبستری بھی واقع ہوئی ہو مگر از انجا کہ زینب دوشیزہ ہے دیر لگانے کا اختیار نہ ہوگا اگر پہلے سے خبر ہے تو بالغہ ہونے پر ورنہ خبر پانے پر بلاعذر ضرورت ایک لمحہ کی دیر کرے گی تو اختیار ساقط اور نکاح لازم ہوجائے گا اگرچہ وہ اس مسئلہ سے ناواقف ہو اور انجانی کے سبب فوراً مبادرت نہ کی ہو، درمختار میں ہے :

ان کان المزوج غیر الاب وابیه ولو الام من کفو وبمهر المثل صح ولکن لصغیر وصغیرة خیار الفسخ ولو بعد الدخول بالبلوغ او العلم بالنکاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خیار البکر بالسکوت لومختارة عالمة باصل النکاح ولا یمتد الی آخر المجلس وان جهلت به اھ ملتقطاً۔ 2

اگر باپ دادا کے غیر نے نکاح دیا خواہ ماں ہو بشرطیکہ کفو میں اور مہرِ مثل سے کیا ہو تو وہ نکاح صحیح ہے لیکن لڑکی اور لڑکے کو بالغ ہونے کے بعد فسخ کا اختیار ہوگا فسخ کا اختیار لڑکی کو دخول کے باوجود بلوغ پر یا بلوغ کے بعد نکاح کے علم پر بھی ہوگا اور فسخ کے لئے قضا شرط ہے، اور باکرہ کا اس موقعہ پر خاموش رہنا اس کے اختیار کو باطل کردے گا بشرطیکہ وہ اپنے نکاح کا علم رکھتی ہو اور عاقلہ ہو، اس کا یہ اختیار مجلسِ علم کے آخر تک باقی رہے گا اگرچہ وہ اس مسئلہ سے جاہل ہو ،اھ ملتقطاً (ت)

اور اگر دادی سے بالا تر جو ولی موجود تھا باپ کے آنے سے پہلے اس نے رد کردیا تو باطل ہوگیا باپ کو فسخ

---

1 فتح القدیر باب الاولیاء والاکفاء المکتبۃ النوریہ الرضویہ سکھر ۳/ ۱۸۴ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۹۳-۱۹۲

What is the need for that? And if that guardian (wali) had neither given permission nor rejected it yet, and Zaid arrived, then the suspense of that wali's permission would transfer to Zaid himself. If he rejects it, it will become void at that very moment.

Arabic Text	**Urdu Translation**
In "Al-Durr al-Mukhtar" and "Tabyin al-Haqa'iq" by Imam al-Zayla'i, and the wording is his, and from him in "Al-Hindiyyah": The guardianship of the distant (ab'ad) one is annulled by the arrival of the closer (aqrab) one, but not what was contracted, because it occurred under complete guardianship.	In "Durr-e-Mukhtar" and "Tabyin-ul-Haqa'iq" by Imam Zayla'i, in the text of Zayla'i and quoted from Zayla'i in "Hindiyyah", it is stated that upon the return of the closer guardian (aqrab), the guardianship of the more distant one (ab'ad) will become void, but the marriage performed by the distant one will not be void because it was obtained under his complete guardianship. (T)

Exquisite Warning: I say, and success is from Allah: All this discourse by the humble servant (may Allah forgive him) is based on the apparent benefit of the words of the noble scholars towards which common minds might incline at first glance. And if the truth of research and exactness is required, the intent-seeking and firm-discerning eye will rule on that initial point which we first made as the apparent form of the question and then hypothetically descended from, meaning that this absence was not a "severed absence" (ghaibat-e-munqati'ah) and the father's guardianship remained as it was. And if this marriage occurred, then in every case and situation without exception, it is contingent upon the permission of the closer guardian (wali aqrab), and if he rejects it, it is immediately rejected. When, in the reliable school of thought, the basis of action was established that while waiting for the return and reply of the closer guardian, an equal match (kufu) might be lost and the opportunity might slip away—for who knows if an equal match will be found again—then this matter, in our times and cities regarding virgin girls, is not conceivable when the address of the closer guardian is known and mail service there is established at regular times. In former times, neither were the paths so easy nor were there such arrangements for mail. It took long periods to complete journeys. If a letter went, a person took it; then passing alone was difficult, caravans were not available all the time, and not everyone was capable of sending a messenger. On the other hand, in those blessed lands, the custom of marriage was such that the proposal (khutbah)

happened today and the marriage tomorrow. If there was a day's delay, it would happen at another place. Here, the custom is such that during the month of back-and-forth messages, if someone's marriage happened, people would be surprised, saying, "Lo! Immediate engagement and immediate wedding!" Then the speed of letters is such that a letter reaches Calcutta on the third day and Mumbai on the fourth. Who would be so hasty as to give a proposal today and want the marriage today, and if there is a week's wait, would not marry at all or get married elsewhere by morning or evening? Girls in India are not found easily; listen from the mouth of every old woman that, "Dear sir, girls are not like berries fallen in a storm. Nor like shoes..."

---

1 Fatawa Hindiyyah, Chapter Four on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/285; Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Guardians and Equals, Matba'ah Amiriyyah Kubra Egypt 2/127.

इसकी क्या ज़रूरत है? और अगर अभी तक उस वली ने न इजाज़त दी थी और न रद्द किया था कि ज़ैद आ गया, तो अब वह रुकाव उस वली से मुन्तकिल होकर खुद ज़ैद की इजाज़त पर रहेगा। अगर वह रद्द कर देगा तो उसी वक़्त बातिल हो जाएगा।

अरबी इबारत

'अल-दुर्रुल मुख़्तार' और 'तबीनुल हक़ाएक़' इमाम ज़ैली में है, और अलफ़ाज़ उनके हैं, और उनसे 'हिन्दिया' में नक़ल है: "निकटतम वली (अक़रब) के आने पर दूर के वली (अबअद) की विलायत (संरक्षण) बातिल हो जाती है, लेकिन वह नहीं जो अक़्द (निकाह) हो चुका, क्योंकि वह पूर्ण विलायत के तहत हुआ था।"

उर्दू तर्जुमा

'दुर्रे मुख़्तार' और 'तबीनुल हक़ाएक़' इमाम ज़ैली में है, ज़ैली की इबारत में, और 'हिन्दिया' में ज़ैली से मन्क़ूल है कि अक़रब (निकटतम) के वापस आने पर अबअद (दूर वाले) की विलायत बातिल हो जाएगी, और अबअद का किया हुआ निकाह बातिल न होगा क्योंकि यह उसकी कामिल (पूर्ण) विलायत में हासिल है। (त)

तनबीहे नफ़ीस (सटीक चेतावनी): मैं कहता हूँ, और तौफ़ीक़ अल्लाह से है: यह तमाम कलाम इस फ़क़ीर (अल्लाह उसे माफ़ करे) ने उलमा-ए-किराम के कलिमात के उस ज़ाहिरी मफ़ाद पर मबनी (आधारित) किया है कि पहली नज़र में आम ज़हन उस तरफ़ जाएँ। और अगर हक़ीक़त और बारीक तहक़ीक़ चाहिए, तो मक़सूद और यक़ीनी समझ के साथ उसी इब्तिदाई बात पर हुक्म होगा जिसे हमने पहले सवाल की ज़ाहिरी सूरत बनाकर दोबारा फ़र्ज़न उससे तनज़्ज़ुल (नीचे) किया था। यानी उस ग़ैबत (अनुपस्थिति) का 'ग़ैबते मुन्क़तिआ' (विच्छिन्न अनुपस्थिति) न होना और वालिद की विलायत का पहले की तरह बाक़ी रहना। और अगर यह निकाह मुनअक़िद (संपन्न) हुआ, तो मुतलक़न (पूर्ण रूप से) बिना किसी इस्तिसना (अपवाद) के हर हाल में वली-ए-अक़रब (निकटतम वली) की इजाज़त पर मौक़ूफ़ (निर्भर) रहेगा और उसके रद्द करने से फ़ौरन रद्द हो जाएगा। जब मोतमिद मज़हब में काम की बुनियाद इस पर ठहरी कि वली-ए-अक़रब के आने-जाने और जवाब के इंतज़ार में कुफ़ू (बराबर का रिश्ता) हाथ से निकल जाता हो—क्या मालूम फिर कुफ़ू मिले या नहीं—तो यह बात हमारे ज़माने और शहरों में कुंवारी लड़कियों के हक़ में मुतसव्वर (कल्पनीय) नहीं है, जबकि वली-ए-अक़रब का पता मालूम हो और वहाँ तक डाक का आना-जाना तय समय पर होता हो। पहले ज़माने में न रास्ते इतने आसान थे और न डाक के ऐसे इंतज़ाम। मुद्दतों में मंज़िलें तय होती थीं। ख़त जाता तो आदमी ले जाता, फिर अकेले गुज़रना मुश्किल था, न हर वक़्त क़ाफ़िले मिलते थे और न हर कोई

क़ासिद (संदेशवाहक) भेजने की ताक़त रखता था। दूसरी तरफ़ उन पाक शहरों में निकाह की यह रस्म थी कि आज ख़तबा (प्रस्ताव) हुआ, कल निकाह हो गया। अगर एक दिन की देर हुई तो दूसरी जगह हो गया। यहाँ यह रिवाज है कि महीने भर के संदेशों के आदान-प्रदान में किसी का निकाह हो गया तो लोग ताज्जुब करते हैं कि "हैं! झट मंगनी पट ब्याह?" फिर ख़तों का आना-जाना ऐसा कि तीसरे दिन कलकत्ता ख़त पहुँचे, चौथे दिन बम्बई। वह कौन सा जल्दबाज़ होगा जो आज पैग़ाम दे और आज ही निकाह चाहे, और अगर एक हफ़्ते का इंतज़ार हो तो निकाह ही न करे या सुबह-शाम दूसरी जगह निकाह हो जाए? हिन्दुस्तान की लड़कियाँ आसानी से नहीं मिलतीं। एक-एक बुढ़िया के मुँह से सुन लीजिए कि "मियां, लड़कियाँ आँधी की बेर (आँधी में गिरे हुए बेर) तो नहीं हैं। न जूतियाँ..."

---

1 फ़तावा हिन्दिया, बाबुल राबे' फ़िल औलिया, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/285; तबीनुल हक़ाएक़, बाबुल औलिया वल अक्फ़ा, मतबा अमीरिया कुबरा मिस्र, 2/127।

کی کیا حاجت، اور اگر ہنوز نہ اس ولی نے اجازت دی نہ رد کیا تھا کہ زید آگیا تو اب وہ توقف اس ولی سے منتقل ہو کر خود زید کی اجازت پر رہے گا اگر رد کردے گا اسی وقت باطل ہو جائے گا۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فِی الدّرالمختار وتبیین الحقائق للامام الزیلعی واللفظ لہ وعنہ فی الھندیۃ تبطل ولایۃ الابعد بمجی الا قرب لاما عقد لانہ حصل بولایۃ تامۃ۔	در مختار اور تبیین الحقائق امام زیلعی میں ہے زیلعی کی عبارت میں، اور ہندیہ میں زیلعی سے منقول کہ اقرب کے واپس آنے پر ابعد کی ولایت باطل ہوجائے گی، اور ابعد کا کیا ہوا نکاح باطل نہ ہوگا کیونکہ یہ اس کی کامل ولایت میں حاصل ہے۔ (ت)

تنبیہ نفیس: اقول: وباللہ التوفیق، یہ تمام کلام فقیر غفر اللہ تعالیٰ لہ نے کلمات علمائے کرام کے اس ظاہری مفاد پر مبتنی کیا کہ بادی النظر میں اذہانِ عامہ اس طرف جائیں اور اگر حق تحقیق وعین تدقیق چاہئے تو نگاہِ مقصود و شناسِ جزم و قطع کے ساتھ اسی ابتدائی بات پر حکم کرے گی جسے ہم نے اولا ظاہر صورت سوال بناکر دوبارہ فرضاً اس سے تنزل کیا تھا یعنی اس غیبت کا غیبتِ منقطعہ نہ ہونا اور ولایتِ پدر کا بدستور باقی رہنا اور اگر یہ نکاح منعقد واقع ہوا تو مطلقاً بلا استثناء ہر حال وبہر صورت میں اجازتِ ولی اقرب پر توقف پانا اور اس کے رد کئے سے فوراً رد ہوجانا، جب مذہبِ معتمد میں بناء کار اس پر ٹھہری کہ ولی اقرب کے ایاب وجواب کے انتظار میں کفو فوت ہوتا اور موقع ہاتھ سے نکلا جاتا ہو کیا معلوم پھر کفو ملے یا نہیں تو یہ بات ہمارے اعصار و امصار میں کنواری لڑکیوں کے حق میں جبکہ ولی اقرب کا پتا معلوم اور وہاں تک ڈاک کی آمد ورفت بے وقت مرسوم ہو متصور نہیں، ادھر تو ازمنہ سابقہ میں نہ راہیں ایسی آسان تھیں

نہ ڈاک کے ایسے انتظام، مدتوں میں منزلیں طے ہوتیں، خط جاتا تو آدمی لے جاتا، پھر تنہا کی گزر دشوار، نہ ہر وقت قافلے میسر نہ ہر شخص قاصد بھیجنے پر قادر، ادھر ان بلادِ طیبہ میں نکاح کی یہ رسم کہ آج خطبہ ہوا کل نکاح ہوگیا، وہ ایک روز کی دیر لگی تو دوسری جگہ موجود، یہاں یہ رواج کہ مہینے کی آمدورفت پیام سلام میں کسی کا نکاح ہوگیا تو لوگ تعجب کرتے ہیں کہ ہیں جھٹ منگنی پٹ بیاہ، پھر خطوط کی آمدورفت وہ کہ تیسرے دن کلکتہ خط پہنچے چوتھے دن بمبئی، وہ کون سا جلد باز ہوگا کہ آج پیام دے اور آج ہی نکاح چاہے ایک ہفتہ کا انتظار ہو تو نکاح ہی نہ کرے یا صبح وشام دوسری جگہ نکاح ہوجائے۔ ہندوستان کی لڑکیاں سہل نہیں ملتیں ایک ایک بڑھیا کے منہ سے سن لیجئے کہ میاں لڑکیاں آندھی کی بیر تو نہیں۔ نہ جوتیاں

---

1 فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۵، تبیین الحقائق باب الاولیاء والاکفاء مطبعہ امیریہ کبری مصر ۲/ ۱۲۷

Fatawa Rizvia, Volume 11

...relationships should not break, nor veils be torn. Does anyone say 'yes' instantly? Thus, looking at the objectives of the scholars is a witness of justice that 'interrupted absence' (Ghaybat-e-Munqata'ah) can only be said to exist when either the location of the nearest guardian (Wali-e-Aqrab) is unknown—after all, how long should one wait for someone traceless?—or in such a far-off foreign country where mail is unreliable, letters go and no reply comes, and sending a person incurs great expense. In such cases, the excuse for compatibility (Kufu) could be: how long can we sit and wait? And it is possible that if a word is not given, in the waiting period, such time passes that she gets settled elsewhere. Otherwise, in India, and even nowadays in Burma, concerning those whose presence and address are known, no seeker of compatibility will usually demand that they will not wait for eight or ten days at all, saying 'if it's to be done, do it today.' Even if someone were to hurry in giving a word, engagement (Mangni) is an excellent means through which reassurance is gained and the opinion of the nearest guardian is not lost. After engagement, long periods pass in arranging provisions on both sides; rather, according to local custom, they consider their fiancée somewhat as their honor and take offense at her marriage elsewhere, and wait for a year for her. After engagement, God knows how many times they could seek the opinion of the nearest guardian. What is the meaning of not waiting for the answer? This manufactured excuse will only be presented where one wishes to act over the head of the nearest guardian against their opinion for their own corrupt motives, which is entirely contrary to the intention of the pure Shari'ah. In its expansions, the door to those calamities opens which we just mentioned. Perhaps if such haste is found rarely and contrary to the custom of the land, rare matters cannot be the basis for legal (Fiqhi) rulings; rather, it is mandatory to give judgment based on common custom.

[Boxed Section]: As they have clarified in many issues, among them is the issue of women entering public baths, which is mentioned in Durr al-Mukhtar etc. Among these issues in Fath al-Qadir is the issue of residing in the two holy Harams. Among these issues is this issue of ours, based on what was customary for them and is contrary to what is customary for us, and there are many other such things that are not hidden from someone who has served their noble words. (T)

Rather, in fairness, even those scholars who adopted the travel distance (Masafat-e-Qasr) would never have given such a ruling if they had observed the railways, the post, and local customs. A resident of Bareilly goes to Moradabad, and his

guardianship over his children is revoked, even though two trips can be made in a day. In short, when the basis is set on the loss of compatibility due to waiting, then it is necessary to verify this basis.

फतावी रिज़विया, जिल्द 11

...रिश्ते न टूटें, न पर्दे फटें। क्या कोई झट से हाँ कह देता है? तो विद्वानों (उलेमा) के उद्देश्यों पर नज़र न्याय का गवाह है कि 'विच्छिन्न अनुपस्थिति' (ग़ैबत-ए-मुनकता) केवल तभी कही जा सकती है जब या तो निकटतम अभिभावक (वली-ए-अक़रब) का ठिकाना अज्ञात हो—आखिरकार बेनिशान का कोई कब तक इंतज़ार करे?—या किसी ऐसे दूर-दराज़ विदेशी देश में हो जहाँ डाक पर भरोसा न हो, पत्र जाएँ और पता न चले, और आदमी भेजने में बहुत खर्च हो। ऐसी स्थितियों में कुफू(योग्यता) के लिए यह बहाना हो सकता है कि कब तक बैठें? और संभव है कि यदि ज़बान (वचन) न दी जाए, तो इंतज़ार में वह समय बीत जाए कि दूसरी जगह उसका काम ठीक-ठाक हो जाए। अन्यथा, भारत में, और यहाँ तक कि आजकल बर्मा में भी, जो लोग मौजूद हैं और जिनका पता मालूम है, उनके संबंध में सामान्यतः कोई कुफू का इच्छुक यह मांग नहीं करेगा कि हम आठ-दस दिन का इंतज़ार हरगिज़ नहीं करेंगे, 'करना है तो आज कर दो'। और मान लीजिए कि कोई वचन देने में जल्दी भी करे, तो यहाँ कुफू की रोकथाम के लिए 'मंगनी' वह बेहतरीन ज़रिया है जिससे तसल्ली हो जाए और निकटतम अभिभावक की राय बेकार न जाए। मंगनी के बाद दोनों पक्षों में साजो-सामान की तैयारी में लंबा समय बीत जाता है; बल्कि यहाँ के रिवाज के अनुसार वे अपनी मंगेतर को भी एक तरह से अपनी मर्यादा (नामूस) समझते हैं और दूसरी जगह उसके निकाह को बुरा मानते हैं और उसके इंतज़ार में साल गुज़ार देते हैं। मंगनी के बाद खुदा जाने कितनी बार निकटतम अभिभावक की राय ले सकते हैं; उसके जवाब मिलने तक इंतज़ार न होने का क्या मतलब? यह बनावटी बहाना वहीं पेश किया जाएगा जहाँ अपने गलत उद्देश्यों के लिए निकटतम अभिभावक की राय के खिलाफ ऊपर-ऊपर से कार्रवाई करनी होगी, जो पवित्र शरीयत की मंशा के बिल्कुल विपरीत है। और इसके विस्तार में उन आपदाओं का दरवाज़ा खुलना है जिनका हमने अभी उल्लेख किया। शायद ही कभी देश की आदत के विपरीत ऐसी जल्दी पाई जाए, तो दुर्लभ मामले फिकही (कानूनी) आदेशों का आधार नहीं हो सकते; बल्कि प्रचलित आदत पर आदेश देना अनिवार्य है।

[कोष्टक अनुभाग]: जैसा कि उन्होंने कई मुद्दों में स्पष्ट किया है, उनमें से एक महिलाओं के सार्वजनिक स्नानागार (हम्माम) में प्रवेश का मुद्दा है जिसे 'दुर्रुल मुख्तार' आदि में वर्णित किया गया है। इन्हीं मुद्दों में से 'फ़तह अल-क़दीर' में हरमैन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना) में रहने का मुद्दा है। इन मुद्दों में से एक हमारा यह मुद्दा है जो उनके समय की आदत के अनुसार था और हमारी आदत के खिलाफ है।

इसके अलावा और भी बहुत कुछ है जो फकीहों के पवित्र शब्दों का अध्ययन करने वालों से छिपा नहीं है। (त)

बल्कि निष्पक्ष रूप से कहें तो वे विद्वान भी जिन्होंने 'मसाफत-ए-क़स्र' (यात्रा की दूरी) को आधार बनाया, यदि वे रेल, डाक और यहाँ के रीति-रिवाजों को देखते तो कभी ऐसा आदेश न देते। बरेली का निवासी मुरादाबाद गया और उसकी अपनी औलाद पर विलायत (अभिभावकत्व) समाप्त हो गई, जबकि दिन में दो चक्कर लगाए जा सकते हैं। संक्षेप में, जब आधार इंतज़ार के कारण कुफू के नुकसान पर टिका है, तो इस आधार की पुष्टि आवश्यक है।

पेज 610/739

ٹوٹیں، نہ چادریں پھٹیں، کیا کوئی پھٹ سے ہاں کہہ دیتا ہے، تو مقاصد علماء پر نظر شاہد عدل کہ یہاں غیبت منقطعہ وہی کہی جاسکتی ہے کہ یا تو ولی اقرب کا پتا نہ معلوم ہو آخر بے نشان کا کب تک کوئی انتظار کرے یا کسی ایسے دور دراز ملک غیر میں جہاں ڈاک پر اطمینان نہ ہو خطوط جائیں اور پتا نہ چلے، آدمی بھیجو تو صرف کثیر، دوا ایسی صورتوں میں کفو کا یہ عذر ہوسکتا ہے کہ کب تک بیٹھیں، اور ممکن کہ زبان نہ ہو تو انتظار میں وہ مدتیں گزریں کہ دوسری جگہ اس کی ٹھیک ٹھاک ہو جائے ورنہ ہندوستان بلکہ آج کل برہما میں بھی جو موجود اور پتا معلوم ہے اس کی نسبت عادۃً کوئی کفو یہ تقاضانہ کرے گا کہ ہم آٹھ دس روز کا انتظار ہرگز نہ کریں گے کرنا ہے تو آج کر دو، اور بالفرض کوئی زبان دینے میں جلدی بھی کرے تو یہاں کفو کی روک تھام کے لئے منگنی وہ عمدہ صیغہ ہے جس سے اس کا اطمینان ہو جائے اور رائے ولی اقرب فوت نہ ہونے پائے۔ منگنی کے بعد مدتوں دونوں طرف ساز و سامان کی درستی میں گزرتے ہیں بلکہ یہاں کے رواج سے اپنی منگیتر کو بھی من وجہ گویا اپنی ناموس جانتے اور دوسری جگہ اس کے نکاح سے برامانتے اور اس کے انتظار میں سال گزارتے ہیں منگنی کے بعد خدا جانے کتنی بار ولی اقرب کی رائے لے سکتے ہیں اس کے جواب ملنے تک انتظار نہ ہونا کیا معنی، یہ عذر مصنوع وہیں پیش ہوگا جہاں اپنی اغراض فاسدہ سے ولی اقرب کے خلاف رائے بالا بالا کاروائی کرنی ہوگی جو شرع مطہر کے بالکل نقیض مراد ہے اور اس کی توسیعوں میں انہیں آفات کا دروازہ کھلنا جو ابھی ہم ذکر کر آئے، شاید شاذ و نادر برخلاف عادت ملک اگر کہیں ایسی جلدی پائی جائے تو امور نادرہ بنائے احکام فقہیہ نہیں ہو سکتے بلکہ عادت شائعہ پر حکم دینا واجب،

| کما نصوا علیه في غیر مامسئلة منها مسألة دخول | جیسا کہ انھوں نے بہت سے مسائل میں تصریح کی ہے، ان | | النساء الحمام في الدرالمختار وغیرہ ومنها مسألة | میں سے ایک مسئلہ حمام میں عورتوں کے داخلہ کا ہے جس | | جوار الحرمین في فتح القدیر ومنها مسألتنا هذه | کو درمختار وغیرہ میں بیان کیا ہے، انہی مسائل میں سے فتح | | بناء علی ماکان معتادا عندهم علی خلاف ماهو العادة | القدیر میں حرمین شریفین میں رہائش کا مسئلہ ہے، ان | | عندنا فیه ایضا الی غیر ذلك ممالایخفی علی من | مسائل میں سے ایک ہمارا مسئلہ جو ان کی عادت کے مطابق | | خدم کلماتهم الطیبة۔ | تھا اور ہماری عادت کے خلاف ہے، اس کے علاوہ اور بھی | | | ہیں جو کہ فقہاء کے کلمات طیبات پر اطلاع رکھنے والا جانتا | | | ہے۔ (ت) |

بلکہ انصافاً وہ علماء بھی جنھوں نے مسافت قصر اختیار فرمائی، اگر ریل اور ڈاک اور یہاں کے عادات ملاحظہ فرماتے ہرگز حکم نہ دیتے ، بریلی کا ساکن مراد آباد تک گیا اور اس کی ولایت اپنی اولاد پر سے سلب ہوئی جس کے دن میں دو پھیرے ہو سکتے ہیں بالجملہ جب مدار کا انتظار کے سبب فوت کفو پر ٹھہرا تو اس مناط کو تحقق ضروری،

Fatawa Razawiya Volume 11

As long as this condition does not exist, it is never Ghaybat-e-Munqati'ah (prolonged absence). It is necessary to keep a close eye on this and stay safe from the deceptions of interested parties. 'Whoever does not know the people of his time is ignorant.' (Translation: One who is unaware of the customs of his era is ignorant). Yes, if an elderly widow wants to marry someone legally on her own accord without rituals, then haste is conceivable there. Firstly, it is not the habit of Indians, and even if it were, it is outside our discussion because the discourse here is about 'Qasirah' (a minor girl) and in the case of minors, that habit is certainly necessary. Therefore, this humble servant does not dare to apply the ruling of Ghaybat-e-Munqati'ah here except in the aforementioned forms. This, with the help of Allah Almighty, is refined jurisprudence and true research.

[Boxed Text:] Left Column: Success and guidance on the path are from Allah. Praise be to Allah, Lord of the worlds, and may Allah Almighty's peace and blessings be upon our master Muhammad, his family, and all his companions. Amen. And Allah, Glory be to Him and the Almighty, knows best. Right Column: With the help of Allah Almighty is success and guidance on the path. All praise is for Allah, Lord of the worlds, and may Allah Almighty's peace and blessings be upon our master Muhammad, his family, and all his companions. Amen. And Allah Almighty, Glory be to Him and the Almighty, knows best (T).

Problem 443: Calcutta, Dharmatala Street, Tipu Sultan. Sent by Hafiz Muhammad Azeem Sahib, 24 Shaban al-Muazzam 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid had a daughter aged three. Zaid betrothed her to Amr. Subsequently, Zaid passed away. When the girl turned thirteen, no signs of puberty appeared in her. Zaid's father (the girl's paternal grandfather) performed her marriage to Amr in the girl's absence. Four months later, the deceased Zaid's uncle performed her marriage to Bakr in the girl's presence, considering her to be an adult. However, no sign of puberty has appeared in the girl to date. In this situation, which marriage is valid according to Sharia? Explain and be rewarded.

The Answer: The closest and most prior guardian (wali) of a mature orphan girl is her biological grandfather, i.e., her father's father. In his presence, the father's uncle or anyone else has no authority. The marriage performed by her grandfather cannot be rejected by anyone's rejection, to the extent that even if she herself becomes an adult and rejects the marriage, it will never be rejected. Nor is the presence of the minor

girl required at the time of the guardian's marriage contract, because the grandfather has compulsory guardianship (wilayat-e-jabr) over the minor, and her being present or absent is all the same. So even if it is assumed that she reached puberty within those four months and her father's uncle married her to Bakr in her presence with her consent upon her reaching puberty, even then this marriage is purely void and invalid. That girl is the wife of Amr as long as death or divorce does not occur; she cannot marry another. Allah Almighty said: "And [also prohibited are] married women" (Allah Almighty said: And free, pure women - T). In Radd al-Muhtar it is stated:

फतावा रज़विया जिल्द ११

जब तक यह स्थिति न हो, यह कदापि ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ (लम्बी अनुपस्थिति) नहीं है। इस पर गहरी नज़र रखना और स्वार्थी लोगों के धोखे से बचना ज़रूरी है। 'जो अपने समय के लोगों को नहीं जानता, वह अज्ञानी है।' (त: जो अपने समय की प्रथाओं से अनभिज्ञ है, वह अज्ञानी है)। हाँ, यदि कोई वृद्ध विधवा अपनी मर्जी से बिना रीति-रिवाजों के किसी से कानूनी निकाह करना चाहती है, तो वहाँ जल्दबाजी संभव है। पहली बात तो यह है कि यह भारतीयों की आदत नहीं है, और यदि होती भी, तो यह हमारी चर्चा से बाहर है क्योंकि यहाँ बात 'क़ासिरा' (एक नाबालिग लड़की) की हो रही है और नाबालिगों के मामले में वही आदत निश्चित रूप से आवश्यक है। इसलिए, यह विनम्र सेवक उपरोक्त रूपों के अलावा यहाँ ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ के नियम को लागू करने का साहस नहीं करता है। यह अल्लाह सर्वशक्तिमान की सहायता से परिष्कृत न्यायशास्त्र और सच्ची शोध है।

[बॉक्स टेक्स्ट:] बायां कॉलम: सफलता और मार्ग पर मार्गदर्शन अल्लाह की ओर से है। सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान की शांति और आशीर्वाद हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर हो। आमीन। और अल्लाह, वह महिमामय और सर्वशक्तिमान है, सबसे अच्छा जानता है। दायां कॉलम: अल्लाह सर्वशक्तिमान की सहायता से सफलता और मार्ग का मार्गदर्शन है। अलहम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन व सल्लल्लाहु तआला अला सय्यिदिना मुहम्मदिं व आलिहि व सहबिहि अजमईन आमीन, वल्लाहु तआला सुबहा-नहू व तआला आलम (त)।

मसला ४४३: कलकत्ता, धर्मतला स्ट्रीट, टीपू सुल्तान। हाफिज मुहम्मद अज़ीम साहब द्वारा भेजा गया, २४ शाबान अल-मुअज़्ज़म १३१५ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद की एक बेटी थी जिसकी उम्र तीन साल थी। ज़ैद ने उसकी सगाई अम्र से कर दी। बाद में ज़ैद का इंतकाल हो गया। जब लड़की तेरह साल की हुई, तो उसमें यौवन (बुलूग़) का कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया। ज़ैद के पिता (लड़की के सगे दादा) ने लड़की की अनुपस्थिति में उसका निकाह अम्र से कर दिया। चार महीने बाद, मृतक ज़ैद के चाचा ने लड़की की मौजूदगी में उसका निकाह बक्र से कर दिया, यह सोचकर कि वह वयस्क हो गई है। लेकिन आज तक लड़की में यौवन का कोई लक्षण प्रकट नहीं हुआ है। इस स्थिति में शरिया के अनुसार कौन सा निकाह मान्य है? बयान करें ताकि आपको पुण्य मिले।

उत्तर: एक अनाथ वयस्क लड़की का सबसे निकटतम और पूर्व अभिभावक (वली) उसका सगा दादा है, यानी उसके पिता का पिता। उसकी मौजूदगी में पिता के चाचा या किसी और को कोई अधिकार नहीं है। उसके दादा द्वारा किया गया निकाह किसी के अस्वीकार करने से रद्द नहीं हो सकता, यहाँ तक कि अगर वह खुद वयस्क होकर निकाह को रद्द करे, तो भी वह कभी रद्द नहीं होगा। न ही वली के निकाह करते समय नाबालिग का उपस्थित होना आवश्यक है, क्योंकि नाबालिग पर दादा का अनिवार्य संरक्षण (विलायत-ए-जबर) है और उसका उपस्थित होना या न होना सब समान है। तो अगर यह मान भी लिया जाए कि वह उन चार महीनों में वयस्क हो गई और उसके पिता के चाचा ने उसकी उपस्थिति में उसकी सहमति से वयस्क होने पर उसका निकाह बक्र से कर दिया, तब भी यह निकाह पूरी तरह से अमान्य और बातिल है। वह लड़की अम्र की पत्नी है जब तक कि मृत्यु या तलाक न हो जाए; वह दूसरे से निकाह नहीं कर सकती। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया: "वल्-मुह्सनातु मिनन्-निसा" (अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया: और स्वतंत्र पवित्र स्त्रियाँ - त)। रद अल-मुह्तार में है:

पृष्ठ ७३९ में से ६११

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

جب تک یہ حالت نہ ہو غیبت منقطعہ ہر گز نہیں، اس پر نظر کا مل رکھنا اور اصحاب اغراض کے فریبوں سے بچنا لازم، ومن لم یعرف اھل زمانہ فھو جاھل (جو اپنے زمانہ کے عرف سے نا واقف ہو وہ جاہل ہے۔ ت) ہاں کوئی بیوہ سن رسیدہ باختیار خود کسی سے شرعی نکاح خالی از رسوم کر لینا چاہے تو وہاں جلدی متصور ، وہ اول تو ہندیوں کی عادت نہیں اور ہو بھی تو ہماری بحث سے خارج کہ یہاں کلام قاصرہ میں ہے اور قواصر کے باب میں ضرور وہی عادت، لہذا فقیر ان صُور مذکورہ بالا کے سوا یہاں غیبت منقطعہ کے حکم پر زنہار جسارت روا نہیں رکھتا ، یہ بعونہ تعالٰی فقہ انیق و حق تحقیق ہے،

[Boxed Text:] وباللہ التوفیق وھدایۃ الطریق والحمد للہ رب العلمین وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین آمین ، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ اللہ تعالٰی کی مدد سے توفیق اور راستہ کی رہنمائی ہے۔ الحمد للہ رب العالمین وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین آمین ، واللہ تعالٰی سبحانہ و تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۴۴۳ : کلکتہ دھرم تالہ اسٹریٹ ٹیپو سلطان مرسلہ حافظ محمد عظیم صاحب ۲۴ شعبان المعظم ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی ایک لڑکی بعمر سہ سال تھی زید نے اس کی منگنی عمرو سے کردی، بعدہ زید کا انتقال ہو گیا ، جب لڑکی تیرہ برس کی ہوئی کوئی علامتِ بلوغ کی اس سے ظاہر نہیں ۔ زید کے پدر خاص نے لڑکی کی عدم موجودگی میں اس کا نکاح عمرو سے کر دیا ، چار مہینے کے بعد زید متوفی کے چچا نے لڑکی کی موجودگی میں اس کا نکاح عقد بکر سے کر دیا بخیال اس کو بالغہ ٹھہرانے کے، مگر کوئی نشانی بلوغ کی آج تک لڑکی سے ظاہر نہیں ، اس صورت میں شرعا کون سا نکاح معتبر ہے؟ بینوا توجروا الجواب:

یتیمہ بالغہ کا سب سے زیادہ ولی اقرب واقدم اس کا حقیقی دادا یعنی اس کے باپ کا باپ ہے ، اس کے ہوتے باپ کے چچا خواہ کسی کو کچھ اختیار نہیں ہے، اس کے دادا کا کیا ہوا نکاح کسی کے رد کئے رد نہیں ہو سکتا یہاں تک کہ اگر وہ خود بالغہ ہو کر نکاح کو رد کرے ہر گز رد نہ ہوگا، نہ ولی کے نکاح کرتے وقت نابالغہ کا موجود ہونا درکار ہے کہ نابالغ پر ولایت جد جبری ہے اور اس کا حاضر ہونا نہ ہونا سب یکساں ، تو اگر مان بھی لیا جائے کہ وہ نابالغہ اس چار مہینے میں بالغہ ہو گئی اور باپ کے چچا نے اس کی موجودگی میں اس کی رضا سے اس کے بالغہ ہونے پر اس کا نکاح بکر سے کر دیا جب بھی یہ نکاح محض باطل و نامعتبر ہے، وہ لڑکی عمرو کی زوجہ ہے جب تک موت یا طلاق نہ ہو ، دوسرے سے اس کا نکاح نہیں ہو سکتا ، قال اللہ تعالیٰ

وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَاء (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اور آزاد پاکیزہ عورتیں ۔ ت) ردالمحتار میں ہے :

Fatawa Rizvia, Volume 11

[Box Text:] Arabic: Lazuma an-nikahu bila tawaqquf 'ala ijazati ahadin wa bila thubuti khiyarin fi tazwiji al-abi wal-jaddi ilkh. Urdu: Marriage performed by a father or grandfather becomes effective and binding immediately without depending on anyone's permission and without the establishment of the option of puberty (Khiyar al-bulugh). (T)

And Allah the Almighty knows best, and His knowledge is most complete and wise.

Problem 344: From Ujjain, Haveli Meer Sahib, sent by Mirza Mukhtar Ali Baig Sahib, lawyer, 19 Shawwal 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Allah Beli, a barber (Hajjam), married off his daughter Zaitun in 1306 AH to Ahmad, also of the barber caste and a relative of Allah Beli. At the time of marriage, Zaitun was four or five years old. Now in 1315 AH, when Zaitun is nearly 13 or 14 years old, Ahmad requested her departure (rukhsati) to live with him. Allah Beli refused. Ahmad filed a complaint in criminal court. Allah Beli excused himself saying his son-in-law is impotent and sings and plays with eunuchs. He stated if a doctor certifies him as a man, he would have no objection to the departure. Upon examination, the doctor stated Ahmad's sexual organs were in a healthy state. Before the final order of the criminal court, Allah Beli filed a civil suit for annulment of marriage on the grounds that Ahmad is impotent, has adopted shameful acts by following eunuchs, and is no longer his equal (kufu). Zaitun's marriage occurred while she was a minor, so it should be declared annulled. Ahmad completely denies these allegations. Witnesses from both sides have testified in their favor. Supposing the allegations of impotence etc. were accepted, in such a case, can the marriage be annulled upon the petition of Zaitun's father or Zaitun herself? Or is the marriage automatically annulled for the reasons stated by the father? Is the claim from the father's side valid given Zaitun's age is 13-14? Or will a lunar year's grace period be given from the date the couple are brought together, and will the wife be forced to go? And will intercourse between Ahmad and Zaitun be arranged or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the described situation, the claim of Zaitun's father is not at all admissible. Engaging in feminine acts, although it may diminish suitability (kufu), suitability is required at the time of the marriage contract. After marriage, no matter what shameful acts the husband adopts, the marriage cannot be annulled. It is

stated in 'Durr al-Mukhtar': [Arabic quote:] Al-Kafa'atu i'tibaruha 'inda ibtida'i al-'aqdi [Urdu translation:] Suitability (Kufu) is considered at the beginning of the contract.

[Footnote 1: Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/304]

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[बॉक्स का पाठ:] अरबी: लज़ुमा अन-निकाहु बिला तवक़्क़ुफ़ अला इजाज़ति अहदिन व बिला सुबूत-ए-खियार फ़ी तज़वीजिल अबि वल जद्दी इल्ख़। उर्दू: पिता या दादा द्वारा करवाया गया निकाह किसी की अनुमति पर निर्भर हुए बिना और बालिग होने पर विकल्प (ख़ियार-ए-बुलूग़) के अधिकार के बिना तुरंत प्रभावी और अनिवार्य हो जाता है। (त)

और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और निर्णायक है।

मसला 344: उज्जैन, हवेली मीर साहब से, प्रेषक मिर्ज़ा मुख़्तार अली बेग साहब वकील, 19 शव्वाल 1315 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: मुसम्मा अल्लाह बेली हज्जाम ने 1306 हिजरी में अपनी पुत्री ज़ैतून का निकाह मुसम्मा अहमद हज्जाम से किया, जो अल्लाह बेली की ही बिरादरी और रिश्तेदार है। निकाह के समय ज़ैतून की उम्र चार-पाँच साल थी। अब 1315 हिजरी में जब ज़ैतून लगभग 13 या 14 साल की है, अहमद ने रुख़्सती चाही, तो अल्लाह बेली ने इनकार कर दिया। अहमद ने फौजदारी अदालत में शिकायत की। अल्लाह बेली ने तर्क दिया कि उसका दामाद नामर्द है, हिजड़ों के साथ गाता-बजाता है; अगर डॉक्टर उसके पुरुष होने का प्रमाण पत्र दे दे तो रुख़्सती में कोई आपत्ति नहीं है। डॉक्टर ने जाँच के बाद बताया कि अहमद के जननांग स्वस्थ अवस्था में पाए गए। फौजदारी अदालत का अंतिम आदेश आने से पहले ही अल्लाह बेली ने दीवानी अदालत में निकाह रद्द करने का दावा इस आधार पर किया कि वह नामर्द है, हिजड़ों के कार्यों को अपनाकर उसने शर्मनाक स्थिति अख्तियार कर ली है और वह मेरी बराबरी (कुफ़ू) का नहीं रहा। ज़ैतून का निकाह नाबालिग़ी में हुआ है, इसलिए इसे रद्द घोषित किया जाए। अहमद इन आरोपों से पूरी तरह इनकार करता है। दोनों पक्षों की ओर से अपने-अपने पक्ष में गवाहियाँ पेश की गईं। यदि मान लिया जाए कि नामर्दगी आदि के आरोप सही भी हों, तो ऐसी स्थिति में क्या ज़ैतून के पिता या स्वयं ज़ैतून की याचिका पर निकाह रद्द हो सकता है या नहीं? या पिता द्वारा बताए गए कारणों से निकाह स्वतः ही रद्द हो जाता है? और पिता की ओर से यह दावा कि ज़ैतून की उम्र 13-14 वर्ष है, जायज़ है या नहीं? या पति-पत्नी के एक साथ रहने की तारीख से एक चंद्र वर्ष की मोहलत दी जाएगी और पत्नी को रुख़्सती के लिए मजबूर किया जाएगा या नहीं? और क्या अहमद और ज़ैतून के बीच संभोग कराया जाएगा या नहीं? बयान फरमाएं, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: पूछी गई स्थिति में, ज़ैतून के पिता का दावा कतई सुनने योग्य नहीं है। महिलाओं जैसे कार्य करना यद्यपि बराबरी (कफ़ाअत) को गिराने वाला है, परंतु बराबरी का विचार निकाह के समय किया जाता है। निकाह के बाद पति चाहे कितने ही शर्मनाक कार्य क्यों न अपना ले, निकाह रद्द नहीं हो सकता। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: [अरबी उद्धरण:] अल-कफ़ाअतु इतिबारुहा इंदा इब्तिदाइल अक़्द [उर्दू अनुवाद:] निकाह की शुरुआत (अनुबंध) के समय कुफ़ू का विचार किया जाता है।

[फ़ुटनोट 1: रद-अल-मुह्तार, बाब-अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/304] पृष्ठ 612 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

لزم النکاح بلا توقف علی اجازۃ احد و بلا ثبوت خیار فی تزویج الاب والجد الخ۔ باپ یا دادا کے دیئے نکاح کسی کی اجازت پر موقوف ہوئے بغیر اور ثبوت خیارِ بلوغ بغیر فوراً نافذ اور لازم ہو جاتے ہیں۔ (ت)

واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم و علمہ اتم و احکم۔ مسئلہ ۳۴۴: از اجین حویلی میر صاحب مرسلہ مرزا مختار علی بیگ صاحب وکیل ۱۹ شوال ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمّٰی اللہ بیلی حجام نے اپنی دختر زیتون کا نکاح ۱۳۰۶ھ میں مسمّٰی احمد قوم حجام سے کہ اللہ بیلی کا ہم قوم و رشتہ دار ہے کیا، وقت نکاح زیتون چار پانچ سال کی تھی، اب ۱۳۱۵ھ میں جبکہ زیتون قریب ۱۳ یا ۱۴ سال کی ہوئی، احمد نے رخصت چاہی اللہ بیلی نے انکار کیا، احمد نے فوجداری میں نالش کی، اللہ بیلی نے عذر کیا کہ داماد میرا نامرد ہے، ہیجڑوں میں گاتا بجاتا ہے اگر ڈاکٹر اس کا مرد ہونا تحریر کر دیں تو رخصت میں عذر نہیں، ڈاکٹر نے بعد معائنہ ظاہر کیا کہ احمد کے اعضائے تناسل کو حالت تندرستی میں پایا ہنوز فوجداری سے حکم اخیر نہ ہوا تھا کہ اللہ بیلی نے دیوانی میں دعوٰی فسخ نکاح ان وجوہ پر کیا کہ وہ نامرد ہے ہیجڑوں کے افعال قبول کر کے حالت شرمناک اختیار کرلی ہے میری برابری کا نہ رہا زیتون کا نکاح نابالغی میں ہوا ہے فسخ قرار دیا جائے، احمد کو ان الزاموں سے قطعی انکار ہے، جانبین سے شہادتیں اپنے اپنے موافق گزریں، اگر بالفرض الزامات نامردی وغیرہ تسلیم بھی کر لئے جائیں تو ایسی صورت میں حسب استغاثہ پدرِ زیتون یا زیتون کا نکاح فسخ ہوسکتا ہے یا نہیں یا خود بخود بوجوہات مظہرہ پدرِ زیتون نکاح فسخ ہے اور دعوٰی منجانب پدرِ زیتون بوجہ اس کے کہ عمر زیتون ۱۳، ۱۴ سال کی ہے جائز ہے یا نہیں یا ایک سال قمری کی مہلت تاریخ یکجا ہونے زن و شو سے دی جائے گی اور

زوجہ رخصت پر مجبور کی جائے گی یا نہیں اور ہمبستری احمد وزیتون کی کرائی جائے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں پدرِ زیتون کا دعویٰ اصلاً قابلِ سماعت نہیں، زنانوں کے افعال کرلینا اگرچہ مسقطِ کفاءت ہے مگر کفاءت وقتِ نکاح درکار ہے بعدِ نکاح شوہر کیسے ہی شرمناک افعال اختیار کرے نکاح فسخ نہیں ہوسکتا، در مختار میں ہے: الکفاءۃ اعتبارھا عند ابتداء العقد نکاح کے ابتدا میں کفو کا اعتبار ہوتا ہے اس کے

1 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۴/۲ Page 612 of 739

...she has no right to remain away; the days she stays apart will be counted towards the period. Even after a year, if he cannot perform, the woman should file a claim again. The judge should take evidence of the continued inability. If proven, the woman is given a choice: whether she prefers to stay with the husband or separate from the marriage. If the woman chooses separation immediately without delay, the judge orders the husband to divorce. If he refuses, the judge effects a separation. However, if the woman delays expressing her choice for separation even slightly, her claim becomes void and her right lapses. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Box Text] If she finds him impotent, a lunar year is granted. Ramadan and the days of menstruation are included in this period, but not the duration of her absence, or his or her illness. If he has intercourse even once during this time, it is fine; otherwise, separation is effected by the judge if he refuses to divorce upon her request. Her right is voided if there is evidence of her turning away, such as her leaving the assembly, or the judge's assistants forcing her to stay, or the judge rising before she chooses anything, despite the possibility of choosing while standing. (Summary)

[Urdu Box Text] If a wife finds her husband to be impotent, she shall be granted a respite of one lunar year according to the lunar calendar. The days of Ramadan and menstruation shall also be counted in it, but the days of the wife's absence and the illness of either the husband or the wife shall not be included in the count. If during this period, the husband has sexual intercourse even once, then it is well; otherwise, after a year, the wife will become separated (Ba'ina) upon dissolution. The Qazi (judge) will perform the dissolution when the husband refuses to grant a divorce upon the wife's demand. The demand for dissolution will become void if any such evidence is found from her which indicates turning away from the demand, such as if the wife gets up and leaves the assembly of demand, or the Qazi's staff forces her to remain standing, or she could have made a decision in the presence of the Qazi but despite that she was unable to make a decision and the Qazi stood up. (Summary)

Therefore, in the queried situation, Zaitoon's father will grant permission and Zaitoon will be compelled to have intercourse. After that, if impotence is found, follow the aforementioned method. And Allah the Almighty knows best.

Problem 325: 29 Shawwal 1315 AH What do the scholars of religion say in this matter that a woman is an adult and she does not have a father, grandfather, uncle, brother,

etc.; there is one maternal uncle who did not take permission for marriage from the woman, he performed the marriage with two witnesses outside, did this marriage take place or not? Second, a woman is an adult, her mother is present, neither the woman gave permission nor did her mother, rather the stepfather gave permission for the marriage, did this marriage take place or not? Explain and be rewarded.

---

[1] Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192

फ़तावा रज़विया - जिल्द ग्यारहवीं

...रहने का कोई हक़ नहीं, जितने दिन वह खुद उससे अलग रहेगी वे अवधि में गिने जाएँगे। एक साल बीतने पर भी यदि वह (पति) समर्थ न हो, तो स्त्री पुनः दावा करे और न्यायाधीश (हाकिम) फिर से असमर्थता का प्रमाण ले। यदि प्रमाणित हो जाए, तो स्त्री को विकल्प दिया जाए कि वह पति के पास रहना पसंद करती है या उसके विवाह से अलग होना। यदि स्त्री तुरंत बिना किसी विलंब के अलग होना चुन ले, तो न्यायाधीश पति को तलाक का आदेश दे। यदि वह (पति) न दे, तो न्यायाधीश अलगाव (तफ़रीक़) कर दे। और यदि स्त्री अलगाव की इच्छा व्यक्त करने में थोड़ा भी विलंब करे, तो दावा शून्य हो जाता है और अधिकार समाप्त हो जाता है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स पाठ] यदि वह उसे नामर्द पाती है, तो एक चंद्र वर्ष की मोहलत दी जाएगी। रमज़ान और माहवारी के दिन इसमें शामिल होंगे, लेकिन उसकी अनुपस्थिति, उसकी बीमारी या पति की बीमारी की अवधि शामिल नहीं होगी। यदि वह इस दौरान एक बार भी संभोग कर लेता है, तो ठीक है; अन्यथा न्यायाधीश द्वारा अलगाव कर दिया जाएगा यदि वह उसकी मांग पर तलाक देने से मना कर देता है। उसका अधिकार निरस्त हो जाएगा यदि उसकी ओर से विमुख होने का कोई प्रमाण मिले, जैसे कि उसका सभा से उठकर चले जाना, या न्यायाधीश के सहायकों द्वारा उसे रुकने के लिए मजबूर करना, या न्यायाधीश का उसके कुछ चुनने से पहले ही उठ जाना, जबकि खड़े रहते हुए भी चुनाव संभव था। (संक्षिप्त)

[उर्दू बॉक्स पाठ] यदि पत्नी अपने पति को नामर्द पाती है, तो एक चंद्र वर्ष की मोहलत दी जाएगी। रमज़ान और मासिक धर्म के दिन भी इसमें गिने जाएँगे, लेकिन पत्नी की अनुपस्थिति और पति या पत्नी की बीमारी के दिन गिनती में शामिल नहीं होंगे। इस अवधि के दौरान यदि पति ने एक बार भी संभोग कर लिया तो बेहतर है, अन्यथा साल के बाद न्यायाधीश के निर्णय पर पत्नी अलग (बाइना) हो जाएगी। न्यायाधीश निर्णय तब करेगा जब पति पत्नी की मांग पर तलाक देने से इनकार कर दे। अलगाव की मांग तब निरस्त हो जाएगी जब पत्नी की ओर से कोई ऐसा प्रमाण मिले जिससे मांग से विमुख होना समझा जाए, जैसे पत्नी मांग की सभा से उठकर चली जाए, या न्यायाधीश का स्टाफ उसे खड़े रहने पर मजबूर कर दे, या न्यायाधीश की उपस्थिति में वह निर्णय कर सकती थी, इसके बावजूद वह निर्णय न कर सकी और न्यायाधीश उठ गया। (संक्षिप्त)

अतः पूछी गई स्थिति में जैतून के पिता विदा कर देंगे और जैतून को सहवास के लिए बाध्य किया जाएगा। इसके बाद यदि नामर्द पाई जाए, तो उपरोक्त विधि अपनाएं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला ३२५: २९ शव्वाल १३१५ हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक स्त्री वयस्क है और उसका पिता, दादा, चाचा, भाई आदि नहीं हैं, एक मामा है जिसने स्त्री से निकाह की अनुमति नहीं ली, बाहर ही बाहर दो गवाहों के साथ निकाह कर दिया, यह निकाह हुआ या नहीं? दूसरी एक स्त्री वयस्क है, उसकी माँ मौजूद है, न स्त्री ने अनुमति दी और न ही उसकी माँ ने, बल्कि सौतेले पिता ने निकाह की अनुमति दी, क्या यह निकाह हुआ या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १९२/१

पृष्ठ ७३९ में से ६१४

رہنے کو کوئی حق نہیں، جتنے دنوں خود اس سے جدا رہے گی مدت میں مجراہ ہوں گے، سال گزرنے پر بھی اگر قدرت نہ پائے تو عورت پھر دعوی کرے اور حاکم پھر ثبوت قدرت نہ پانے کا لے اگر ثابت ہو جائے تو عورت کو اختیار دے کہ خواہ شوہر کے پاس رہنا پسند کرے یا اس کے نکاح سے جدا ہونا، اگر عورت فورا فورا بلا توقف جدا پسند کرلے تو حاکم شوہر کو طلاق کا حکم دے وہ نہ دے تو آپ تفریق کر دے، اور اگر عورت ذرا بھی اختیار جدائی کے اظہار میں تاخیر کرے تو دعوی باطل اور اختیار زائل، درمختار میں ہے:

[Arabic Box Text] وجدته عنینا اجل سنة قمریة ورمضان وایام حیضہا منہا لامدة غیبتہا ومرضه ومرضہا فان وطئ مرة فیہا والابانت بالتفریق من القاضی ان ابی طلاقہا بطلبہا وبطل حقہا لو وجد منہا دلیل اعراض بان قامت من مجلسہا او اقامہا اعوان القاضی او قام القاضی قبل ان تختار شیئا لامکانه مع القیام[1] اھ مختصرا۔

[Urdu Box Text] بیوی مرد کو نامرد پائے تو ایک سال بحساب قمری سے مہلت دی جائے گی، رمضان اور حیض کے دن بھی اس میں شمار ہوں گے، اور عورت کے غیر حاضر ہونے اور مرد یا بیوی کے مرض کے دن گنتی میں شامل نہ ہوں گے، اس مدت میں خاوند نے ایک دفعہ بھی وطی کرلی تو بہتر، ورنہ سال کے بعد تفریق پر بیوی بائنہ ہو جائیگی، تفریق قاضی کرے گا، جب خاوند بیوی کے مطالبہ پر طلاق دینے سے انکار کردے اور بیوی کا مطالبہ تفریق باطل ہوجائے گا جب اس سے کوئی بھی ایسی دلیل پائی جائے جس سے مطالبہ سے اعراض سمجھا جائے جیسا کہ بیوی مطالبے کی مجلس سے اٹھ کر چلی جائے، یا قاضی کا عملہ اس کو قائم رہنے پر مجبور کر

دے، یا قاضی کی موجودگی میں وہ فیصلہ کر سکتی تھی اس کے باوجود وہ فیصلہ نہ کر پائی تھی کہ قاضی اٹھ گیا اھ مختصراً (ت)

پس صورت مستفسرہ میں پدر زیتون رخصت کر دینے اور زیتون ہم بستری پر مجبور کی جائے گی، اس کے بعد اگر نامردی پائے تو طریقہ مذکورہ عمل میں لائے، واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۳۲۵: ۲۹ شوال ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت بالغ ہے اور اس کا باپ دادا چچا بھائی وغیرہ نہیں، ایک ماموں ہے اس نے عورت سے اذن نکاح کا نہ لیا، باہر سے باہر دو گواہ کر کے نکاح کردیا، یہ نکاح ہوا یا نہیں؟ دوسری ایک عورت بالغ ہے اس کی ماں موجود ہے، نہ عورت نے اذن دیا نہ اس کی ماں نے، بلکہ سوتیلے باپ نے نکاح کا اذن دیا، یہ نکاح ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

---

[1] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱

Volume Eleven, Fatawa Rizvia

The Answer: In both cases, while the women are adults and their marriages were conducted without obtaining their consent, those marriages remain suspended upon the permission of the women. If they heard the news and approved, the marriages became valid. If they rejected them, they became void. If they have remained silent until now, neither rejecting nor approving, they now have the choice: they may either validate them or declare them null. And Allah Almighty knows best.

Issue 366: From Kanpur, Madrasa Ahsan-ul-Madaris, sent by Muhammad Abdul Haleem Sahib, 13 Rajab 1316 AH.

Question: What do the investigative scholars and profound experts say on this issue? Despite the presence of a full brother of the betrothed woman, her paternal uncle requested her permission for marriage. Given that the woman is an adult virgin and remained silent at the time of permission, the uncle took her silence as consent and performed the marriage as a proxy. Valid seclusion (Khalwat Sahihah) has also taken place. In this case, will the marriage be void or what will be the situation? Please explain and be rewarded.

The Answer: The silence of a virgin is deemed as consent only when the one requesting permission is the nearest guardian (Wali al-Aqrab) himself, or his deputy (Wakil) or messenger, as stated in *Al-Durr al-Mukhtar* and other works. In the present case, the more distant guardian (Wali al-Ab’ad) sought permission in the presence of the nearest guardian. If he did not seek permission in the capacity of a deputy or messenger of the nearest guardian, then in such a case, the silence of the virgin is not considered valid consent. This marriage became an unauthorized (Fuzuli) marriage, which was dependent on the woman's permission. If the virgin, before seclusion, through word, action, or by remaining silent, had not manifested any statement or...

जवाब: दोनों स्थितियों में जबकि औरतें बालिग हैं और उनसे अनुमति लिए बिना निकाह कर दिए गए, तो वह निकाह उन औरतों की अनुमति पर निर्भर रहेंगे। यदि उन्होंने समाचार सुनकर उसे स्वीकार कर लिया, तो वे निकाह वैध हो गए; और यदि उन्होंने अस्वीकार कर दिया, तो वे रद्द हो गए। और यदि वे अब तक चुप रही हैं, न अस्वीकार किया न स्वीकार, तो अब उन्हें अधिकार है, चाहे तो उसे वैध कर दें या अवैध (बातिल)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३६६: कानपुर, मदरसा अहसन-उल-मदारिस से, प्रेषक मोहम्मद अब्दुल हलीम साहब, १३ रजब १३१६ हिजरी।

सवाल: विद्वान और विशेषज्ञ इस मसले में क्या कहते हैं कि मंगेतर के सगे भाई की उपस्थिति के बावजूद, उसके सगे चाचा ने निकाह की अनुमति मांगी, जबकि लड़की बालिग कुंवारी है और अनुमति के समय खामोश रही। चाचा ने उस खामोशी को अनुमति मानकर वकालत के तौर पर उसका निकाह कर दिया, और खल्वत-ए-सहीहा (वैध एकांतवास) भी हो चुका है। इस स्थिति में क्या निकाह बातिल हो जाएगा या क्या सूरत होगी? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: कुंवारी की खामोशी को अनुमति तभी माना जाता है जब अनुमति मांगने वाला स्वयं वली-ए-अक़रब (निकटतम अभिभावक) हो या उसका प्रतिनिधि (वकील) या दूत हो, जैसा कि दुर्रे मुख्तार आदि में उल्लेख है। यहाँ के मामले में, वली-ए-अबअद (दूर के अभिभावक) ने वली-ए-अक़रब की उपस्थिति में अनुमति मांगी है। यदि उसने वली-ए-अक़रब के प्रतिनिधि या दूत के रूप में अनुमति नहीं मांगी, तो उस स्थिति में कुंवारी की खामोशी सहमति के लिए मान्य नहीं है। यह निकाह निकाह-ए-फुज़ूली (अनधिकृत निकाह) माना जाएगा जो औरत की अनुमति पर निर्भर था। यदि कुंवारी ने एकांतवास से पहले शब्दों, कार्यों या खामोशी के माध्यम से किसी कथन या... [अगले पृष्ठ पर जारी]

الجواب: دونوں صورتوں میں جبکہ عورتیں بالغہ ہیں اور ان سے بغیر اذن لئے نکاح کردئے گئے تو وہ نکاح ان عورتوں کی اجازت پر موقوف رہے، اگر انہوں نے خبر سن کر جائز رکھے جائز ہو گئے اور اگر رد کردئے رد ہو گئے، اور اگر اب تک ساکت ہیں نہ رد کئے نہ جائز رکھے تو اب انہیں اختیار ہے چاہے جائز کردیں چاہے باطل۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۶۶: ازکان پور مدرسہ احسن المدارس مرسلہ محمد عبدالحلیم صاحب ۱۳ رجب ۱۳۱۶ھ

چہ می فرمایند علمائے محققین و فضلائے مدققین اندریں مسئلہ کہ با وجود برادر حقیقی مخطوبہ عم حقیقی مخطوبہ استیذان نکاح از مخطوبہ کرد و مخطوبہ بالغہ باکرہ است صامت ماندہ آں صموت را اذن دانستہ عم حقیقی بہ وکالۃ نکاح اور امنعقد کرد و با او خلوت صحیحہ ھم گردید دریں صورت نکاح باطل خواہد شد یا چہ؟ بینواتوجروا

کیا فرماتے ہیں علمائے محققین اور فضلائے مدققین اس مسئلہ میں کہ حقیقی بھائی موجود ہونے کے باوجود حقیقی چچا نے لڑکی سے نکاح کی اجازت طلب کی جبکہ لڑکی باکرہ بالغہ ہے اور اجازت کے وقت خاموش رہی، اس خاموشی کو چچا نے اجازت سمجھ کر بطور وکالت اس کا نکاح کر دیا خلوت صحیحہ بھی ہو چکی ہے تو یہ نکاح باطل ہو گیا یا کیا صورت ہو گی؟ بینوا توجروا۔ (ت)

الجواب:

سکوت بکر کہ بجائے اذن داشتہ اند دران صورت است کہ استیذان خود ولی اقرب یا وکیل یا رسول او کردہ باشد کما فی الدر وغیرہ اینجا کہ استیذان ولی ابعد قیام اقرب کردہ است اگر نہ بروجہ وکالت و رسالت از اقرب بود بسکوت زن اصلا کارے نکشود نکاح فضولی شدہ بر اجازتے دیگر قولایا فعلاً یا سکوتاً چنانچہ در فتاوائے خود وجہ آنہا روشن کردہ ایم از زن قولی یا فعلی مظہر رد نکاح بمیان نیامدہ بود و این خلوت برضائے او

باکرہ کی خاموشی وہاں اجازت قرار دی جاتی ہے جب اجازت طلب کرنے والا خود ولی اقرب ہو یا اس کا وکیل یا قاصد ہو، جیسا کہ در مختار وغیرہ میں ہے، یہاں کی صورت میں ولی ابعد نے اجازت ولی اقرب کی موجودگی میں طلب کی ہے تو اگر اس نے ولی اقرب کی وکالت یا قاصد ہونے کی حیثیت سے اجازت نہ طلب کی ہو تو اس صورت میں باکرہ کی خاموشی رضا کے لئے کارآمد نہیں ہے، یہ نکاح نکاح فضولی ہوا جو کہ عورت کی اجازت پر موقوف تھا، اگر باکرہ نے خلوت سے قبل قولاً یا فعلاً یا خاموش رہ کر کسی قول یا

Validation of a suspended (mauquf) marriage became apparent. In 'Dur al-Mukhtar': "If someone other than the closest guardian, like a distant relative, asks for her permission, her silence is not considered. Rather, a verbal statement or an action signifying consent, such as allowing intercourse, is necessary." (Summarized). And in 'Radd al-Muhtar', it is quoted from 'Zahiriyya': "If he met her in seclusion with her consent, would that be considered authorization? There is no recorded narration for this case, but in my view, this is authorization." Al-Bazzaziyya says: "It appears that this is authorization." And Allah knows best.

If the marriage was not rejected through action (as we have clarified the reasons for rejection in our Fatawa), then this seclusion, which occurred with the virgin girl's consent, will be deemed as permission, and the suspended marriage will become valid. In 'Dur al-Mukhtar', it is mentioned that if a distant guardian, and not the closest one, seeks permission from the girl, her silence will not count. Instead, a clear verbal statement from the girl or an action in its place that indicates consent is necessary, for example, she grants the husband permission for intercourse. And in 'Radd al-Muhtar', what is quoted from 'Bahr' (who quoted from 'Zahiriyya') is that if seclusion occurred with the girl's consent, would this be consent? There is no established narration for this issue, however, in my opinion, it is permission. It's also mentioned that in 'Bazzaziyya', it's stated that the apparent view is that this is permission. And Allah Almighty knows best. (T)

Case 747: From Azimabad, Patna, Lodi Katra, sent by Maulana Maulvi Qazi Abdul Wahid Sahib (may Allah have mercy on him), end of Rabi' al-Akhir 1317 AH. A person named 'Amr, at the time of his death, left behind a daughter named Hindah, a wife Zubaidah, a full brother Khalid, and a paternal half-brother Bakr. Hindah grew up being cared for by her mother and maternal grandmother. She is now an adult, over fourteen years of age. The certificate of guardianship for Hindah was granted by the government to Hindah's mother. Up until now, Hindah has lived and received her upbringing and education in the home of her mother and maternal grandmother since birth. Khalid, i.e., Hindah's full paternal uncle, through cunning and greed for gain, without the knowledge or consent of Hindah, her half-uncle, her mother, or her grandmother, appointed a person as a proxy (wakil) by his own authority in the house of a stranger and performed Hindah's marriage to his own son. No information was given to Hindah. When news of the marriage reached Hindah by rumor, she rejected

the marriage and became very distressed. Let the scholars honor us with an answer based on scriptural evidence. Only.

Answer: According to Sharia, for a woman to be considered an adult, a full age of fifteen years is necessary, or menstruation etc. before that...

1. Dur al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/301.

फ़तावा रज़विया ग्यारहवाँ खंड

निलंबित (मुअक़्क़ुफ़) निकाह के प्रभावी होने के बारे में: 'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में उल्लेख है: "यदि निकटतम अभिभावक के अलावा किसी अन्य (जैसे दूर के वली) ने उसकी अनुमति माँगी हो, तो उसकी खामोशी का कोई विचार नहीं होगा। बल्कि एक मौखिक कथन या उसका कोई कार्य जो सहमति दर्शाता हो, आवश्यक है, जैसे उसे संभोग (वती) की अनुमति देना।" (संक्षेप)। और 'रद्द अल-मुह्तार' में 'अज़-ज़हीरिया' से उद्धृत है: "यदि वह उसकी सहमति से एकांत (खलवत) में मिले, तो क्या यह अनुमति मानी जाएगी? इस मामले में कोई रिवायत (कथन) नहीं है, और मेरे विचार में यह अनुमति है।" 'बज़्ज़ाज़िया' में कहा गया है: "ज़ाहिर यही है कि यह अनुमति है।" और अल्लाह बेहतर जानता है।

यदि निकाह को कार्य द्वारा अस्वीकार नहीं किया गया है (जैसा कि हमने अपने फ़तवों में अस्वीकृति के कारणों को स्पष्ट किया है), तो यह एकांत जो कुंवारी लड़की की सहमति से हुई है, अनुमति मानी जाएगी और निलंबित निकाह लागू हो जाएगा। 'दुर्रे मुख्तार' में है कि यदि लड़की से निकटतम वली के बजाय दूर के वली ने अनुमति माँगी हो, तो लड़की की खामोशी का ऐतबार नहीं होगा। बल्कि लड़की की ओर से स्पष्ट कथन या उसके स्थान पर उसके किसी कार्य का होना आवश्यक है जो सहमति को दर्शाता हो, उदाहरण के तौर पर वह पति को संभोग की अनुमति दे दे। और 'रद्द अल-मुह्तार' में जो 'बह्र' से उद्धृत है (जिन्होंने 'ज़हीरिया' से उद्धृत किया) कि यदि लड़की की सहमति से खलवत हुई हो तो क्या यह सहमति होगी, तो इस मसले में कोई रिवायत नहीं है, जबकि मेरे नज़दीक यह अनुमति है, और फरमाया कि 'बज़्ज़ाज़िया' में है कि ज़ाहिर यही है कि यह अनुमति है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ७४७: अज़ीमाबाद, पटना, लोदी कटरा से मौलाना मौलवी काज़ी अब्दुल वहीद साहब (रहमतुल्लाह अलैह) द्वारा भेजा गया, रबी-उल-आख़िर १३१७ हिजरी के अंत में। अम्र नाम के एक व्यक्ति ने अपनी मृत्यु के समय एक लड़की जिसका नाम हिंदह है, एक पत्नी ज़ुबैदा, एक सगा भाई ख़ालिद और एक सौतेला भाई बक्र छोड़ा। हिंदह अपनी माँ और नानी की परवरिश में रही, अब वह बालिग़ (वयस्क) है, उसकी उम्र चौदह साल से अधिक है। हिंदह के अभिभावकत्व (गार्जियनशिप) का प्रमाणपत्र सरकार से हिंदह की माँ को मिला है। अब तक हिंदह जन्म से अपनी माँ और नानी के घर में रहकर पली-बढ़ी और शिक्षा प्राप्त की है। ख़ालिद यानी हिंदह के सगे चाचा ने चालाकी और अपने फायदे के लालच में हिंदह, उसके सौतेले चाचा, माँ और नानी की जानकारी और सहमति के बिना,

एक गैर शख्स के मकान में अपनी विलायत (अधिकार) से एक शख्स को वकील मुक़र्रर करके हिंदह का निकाह अपने बेटे से कर दिया है और हिंदह को कोई सूचना नहीं दी गई। जब हिंदह को अफवाहों के ज़रिए निकाह की खबर मिली, तो उसने निकाह को नामंजूर कर दिया और बहुत दुखी हुई। विद्वान किताबी दलीलों के साथ उत्तर देकर उपकृत करें। फ़क़त।

उत्तर: शरीयत के अनुसार औरत के बालिग़ होने के लिए पंद्रह साल की पूर्ण आयु आवश्यक है या इससे पहले मासिक धर्म (हैज़) आदि...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/१९२।
2. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल वली, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत २/३०१।

पृष्ठ ६१६ / ७३९

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

روئے نمود نکاح موقوف نفاذ یافت فی الدرالمختار ان استأذنها غیر الاقرب کولی بعید فلا عبرة لسکوتهآ بل لابد من القول او ماهو فی معناه من فعل یدل علی الرضاکتمکینها من الوطئ (ملخصاً)، و فی رد المحتار عن الظهیریة لو خلابها برضاها هل یکون اجازة لاروایة لهذه المسألة وعندی ان هذا اجازة اھ قال البزازیة الظاهر انه اجازة اھ واللہ تعالی اعلم۔

فعل کے ذریعے نکاح کو رد نہ کیا ہو (جیسا کہ رد کے وجوہ ہم نے اپنے فتاوٰی میں واضح کئے ہیں) تو یہ خلوت جو باکرہ کی رضا مندی سے ہوئی ہے اجازت قرار پائے گی اور موقوف نکاح نافذ ہو جائے گا، در مختار میں ہے کہ اگر لڑکی سے غیر اقرب مثلاً ولی ابعد نے اجازت طلب کی ہو تو لڑکی کے سکوت کا اعتبار نہ ہوگا بلکہ لڑکی کی طرف سے صراحتہ قول یا اس کے قائم مقام کسی اپنے فعل، جو رضا پر دلالت کرتا ہو، کا اظہار ضروری ہے مثلاً وہ خاوند کو وطی کی جازت دے دے۔ اور ردالمحتار میں جو بحر سے منقول انھوں نے ظہیریہ سے نقل کیا کہ اگر لڑکی کی رضامندی سے خلوت کی ہو تو کیا یہ رضا ہو گی، تو اس مسئلہ میں روایت نہیں ہے، جبکہ میرے نزدیک یہ اجازت ہے اھ، اور فرمایا کہ بزازیہ میں ہے کہ ظاہر یہی ہے کہ یہ اجازت ہے اھ، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۴۷: از عظیم آباد پٹنہ لودی کٹرہ مرسلہ جناب مولنا مولوی قاضی عبدالوحید صاحب رحمہ اللہ تعالٰی سلخ ربیع الآخر ۱۳۱۷ھ عمرو نامی ایک شخص نے بوقت انتقال اپنے، ایک لڑکی ہندہ نامی، ایک بی بی زبیدہ، ایک بھائی حقیقی خالد، ایک بھائی علاتی بکر چھوڑا، ہندہ ہمراہی اپنی مادر اور نانی کے پرورش پاتی رہی، اب وہ بالغ ہے سن اس کا زائد چودہ سال سے ہے، ہندہ کی ولایت کا سارٹیفیکیٹ گورنمنٹ سے ہندہ کی ماں کو ملا ہے، اس وقت تک ہندہ نے مادر و نانی کے

مکان میں ابتدائے پیدائش سے رہ کر پرورش و تعلیم پائی ہے، خالد نے یعنی چچا حقیقی ہندہ کے براہ چالاکی و بخیال نفع معاش بلاعلم و رضامندی ہندہ و چچا علاتی و مادر و نانی وغیرہ کے ایک شخص غیر کے مکان میں اپنے بیٹا سے بولایت اپنے ایک شخص کو وکیل مقرر کرکے ہندہ کا عقد کر دیا ہے اور کوئی خبر ہندہ کو نہیں دی گئی، جس وقت ہندہ کو افواہا خبر نکاح کی پہنچی اس وقت اس نے نکاح کو نا منظور کیا اور بہت بیزار ہوئی، علماء بدلائل کتاب جواب سے سرفراز فرمائیں، فقط الجواب: شرعاً عورت کے بالغہ ہونے کے لئے پندرہ سال کامل عمر ضرور ہے یا اس سے پہلے حیض وغیرہ

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ 2 رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۱/۲

Fatawa Radawiyya Volume 11

The presence of signs alone, without being over fourteen years of age, is not sufficient. Yes, from after nine years until before fifteen years, which is the age of possibility and probability of puberty for a woman, if a woman declares herself to have reached puberty, her statement will be accepted without the need for witnesses and without taking an oath, provided the state of her body and physical strength does not contradict this claim, and she also explains the reason for reaching puberty. For example, if she says, "I had menstruation" or "I had a wet dream in sleep, from which I realized my puberty." A mere claim without explaining the meaning of puberty is not acceptable. And if the appearance of the body and strength does not show signs of maturity and capability for puberty, her claim will not be heard at all until puberty is proven by Sharia evidence. These same rulings apply to a boy from after twelve years until before fifteen years.

In Durr-ul-Mukhtar: The puberty of a boy is through nocturnal emission (wet dream), impregnating, and ejaculation. The puberty of a girl is through nocturnal emission, menstruation, and pregnancy. If none of the mentioned signs are found, then it is until each of them completes fifteen years of age, and on this, the fatwa (legal ruling) is given. The minimum period for him (a boy) is twelve years and for her (a girl) is nine years; this is the chosen (view). If they reach this age and say, "We have reached puberty," they will be believed if the apparent state does not contradict them, which is that it is possible for someone of their age to experience nocturnal emission. Otherwise, their statement will not be accepted. It is in the commentary of Wahbaniyya and in Shurunbulaliyya that their statement will be accepted upon explaining with what sign they reached puberty, and no oath will be taken. (Briefly) And in Radd-ul-Muhtar, it is cited from Jami' al-Fasulayn, from Fatawa Nasafi, regarding Qadi Mahmud al-Samarqandi.

[1] Durr-ul-Mukhtar, Kitab al-Hajar, Chapter on Puberty, Mujtabai Press, Delhi, 2/199.

केवल संकेतों का होना, बिना चौदह वर्ष से अधिक आयु के पर्याप्त नहीं है। हाँ, नौ वर्ष के बाद से पंद्रह वर्ष से पहले तक, जो एक महिला के लिए यौवन की संभावना और आशंका की आयु है, यदि कोई महिला अपने बालिग होने की घोषणा करती है, तो बिना गवाही और बिना शपथ लिए उसकी बात मान ली जाएगी, बशर्ते कि उसके शरीर और शारीरिक शक्ति की स्थिति इस दावे को झुठलाती न हो, और वह बालिग होने का कारण भी स्पष्ट कर दे। उदाहरण के लिए, वह कहे, "मुझे मासिक धर्म आया" या "नींद में स्वप्नदोष हुआ जिससे मुझे अपने यौवन का पता चला।" बिना यौवन का अर्थ स्पष्ट किए केवल दावा स्वीकार्य नहीं है। और यदि शरीर और शक्ति की स्थिति परिपक्वता और यौवन की क्षमता नहीं दिखाती है, तो उसका दावा बिल्कुल नहीं सुना जाएगा जब तक कि शरिया साक्ष्य से यौवन सिद्ध न हो जाए। यही नियम बारह वर्ष के बाद से पंद्रह वर्ष से पहले तक एक लड़के के लिए भी हैं।

दुर्र-उल-मुख़्तार में है: लड़के का यौवन स्वप्नदोष, गर्भवती करने और वीर्यपात से होता है। लड़की का यौवन स्वप्नदोष, मासिक धर्म और गर्भावस्था से होता है। यदि दोनों के लिए उपर्युक्त संकेतों में से कोई भी नहीं पाया जाता है, तो यह तब तक है जब तक कि उनमें से प्रत्येक पंद्रह वर्ष की आयु पूरी न कर ले, और इसी पर फतवा दिया जाता है। उसके(लड़के) के लिए न्यूनतम अवधि बारह वर्ष और उसके(लड़की) के लिए नौ वर्ष है; यही चुना हुआ (विचार) है। यदि वे इस आयु तक पहुँच जाते हैं और कहते हैं, "हम बालिग हो गए हैं," तो उनकी बात मान ली जाएगी बशर्ते कि कोई प्रत्यक्ष बात उनकी बात को न झुठलाए, उदाहरण के लिए यह कि उनकी जैसी उम्र वालों को स्वप्नदोष हो सकता हो। अन्यथा उनकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी। शरह वहबानिया और शुरुनबुलालिया में है कि यौवन के लक्षण स्पष्ट करने पर उनकी बात मान ली जाएगी और शपथ नहीं ली जाएगी। (संक्षेप में) और रद-उल-मुहतार में जामे अल-फ़सुलैन के हवाले से फतावा नसफी से काज़ी महमूद समरकंदी के बारे में उद्धृत है।

[1] दुर्र-उल-मुख़्तार, किताब अल-हज्र, यौवन पर अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/199।

علامات کا ہونا بغیر اس کے صرف چودہ سال سے زیادہ عمر کا ہونا کافی نہیں۔ ہاں نو سال کے بعد سے پندرہ سال کے قبل تک جو عورت کے لئے امکان و احتمال بلوغ کی عمر ہے اگر عورت اپنا بالغہ ہونا ظاہر کرے تو بے حاجتِ شہادت بغیر قسم لئے اس کا قول مان لیا جائے گا جبکہ اس کے جسم و قوٰی کی حالت اس دعوٰی کی تکذیب نہ کرتی ہو، اور وہ بالغہ ہونے کی وجہ بھی بیان کر دے، یعنی مثلاً کہے مجھے حیض آیا، خواب میں احتلام ہوا اس سے میں نے اپنا بلوغ جانا۔ خالی دعوٰی بے بیان معنی بلوغ مقبول نہیں، اور اگر بدن و قوٰی کی حالت ظاہر و قابلیتِ بلوغ نہ بتاتی ہو تو اس کا دعوٰی اصلاً مسموع نہ ہوگا جب تک دلیلِ شرعی سے بلوغ ثابت نہ ہو، یہی احکام بارہ سال کے بعد سے پندرہ سال کے قبل تک پسر کے لئے ہیں۔

در مختار میں ہے کہ لڑکے کا بلوغ احتلام، حاملہ کردینا

فی الدرالمختار بلوغ الغلام بالاحتلام والاحبال والانزال والجارية بالاحتلام والحيض والحبل فان لم يوجد شيئ فحتى يتم لكل منهما خمس عشرة سنة به يفتى وادنى مدته له اثنتا عشرة سنة ولها تسع سنين هو المختار فان بلغا بلغا هذا السن فقالا بلغنا صدقا ان لم يكذبهما الظاهر وهوان يكون بحال يحتلم مثله والا لا يقبل قوله شرح وهبانية وفى الشرنبلالية يقبل مع تفسير كل بما ذا بلغ بلا يمين اه مختصرا، وفى رد المحتار عن جامع الفصولين عن الفتاوى النسفى عن القاضى محمود السمرقندى

اور انزال سے ہے، اور لڑکی کا بلوغ احتلام، حیض اور اس کا حاملہ ہونا ہے، اگر دونوں کے لئے مذکورہ علامات میں سے کوئی نہ پائی جائے تو بلوغ ہر ایک کی عمر کے پندرہ سال پورے ہونا ہے، اسی پر فتویٰ ہے، اور لڑکے کے بلوغ کے لئے کم از کم بارہ سال اور لڑکی کے لئے کم از کم نو سال کی عمر ہے، یہی مختار ہے، اگر یہ عمر پوری ہو جائے تو ان کا کہنا کہ ہم بالغ ہیں، تسلیم کیا جائے گا بشرطیکہ کوئی ظاہر امر ان کی بات کو نہ جھٹلائے، مثلاً یہ کہ ان جیسے عمر والوں کو احتلام ہو سکتا ہو، ورنہ ان کی بات قبول نہ کی جائے گی، شرح وہبانیہ و شرنبلالیہ میں ہے کہ ان کی بات بلوغ کی علامت کی وضاحت کرنے پر تسلیم کی جائے گی اور قسم نہ لی جائے گی اھ مختصراً، اور ردالمحتار میں جامع الفصولین کے حوالے سے فتاویٰ نسفی سے منقول قاضی محمود سمرقندی کے بارے

[1] درمختار کتاب الحجر فصل فی البلوغ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۹/۲

Fatawa Razawiyyah Volume Eleven

Arabic: A youth nearing puberty admitted to having reached maturity in a session. He was asked, "How did you reach maturity?" He said, "Through nocturnal emission (ihtilam)." He was asked, "What did you see upon waking up?" He said, "Water." He was asked, "What water? For water varies." He said, "Semen (mani)." He was asked, "What is semen?" He said, "The fluid of a man from which a child is formed." He was asked, "Regarding what did you have the emission? Was it a boy, a girl, or a she-donkey?" He said, "A boy." The judge said, "Thorough investigation is necessary, for sometimes an admission of puberty is coached falsely." Sheikh-ul-Islam said this is the rule regarding nocturnal emission, and such a statement is only accepted with explanation. Similarly, for a girl who admits to menstruating.

Urdu: It is narrated that a youth nearing puberty admitted in their session that he had reached maturity. The judge asked, "How did you become mature?" In response, he mentioned nocturnal emission. Thereupon the judge asked him, "What did you see after waking up from sleep?" In response, he said, "I saw wetness." Then he was asked, "Moisture is of many kinds; which one did you see?" He said, "I saw semen." Then he was asked, "What is semen?" In response, he said, "The fluid of a man from which a child is born." Then he was asked, "In what form did you experience the emission? Was it a girl, a boy, a donkey, etc.?" He replied that it was a boy. Qazi Mahmood Samarqandi said such complete questioning is necessary because sometimes people make a false confession on someone's tutoring. Sheikh-ul-Islam said this is the explanation regarding nocturnal emission; if a girl admits maturity through menstruation, she should also be made to provide such an explanation. (Translator)

Therefore, in the inquired case, if Hindah's maturity at the time of marriage is proven—whether through legal evidence or Hindah's detailed statement which her apparent condition does not belie—and not merely based on the fact that her age is over fourteen years, then indeed, neither an uncle nor a mother had compulsory guardianship (wilayah al-ijbar) over her. Her marriage cannot be valid without her permission. When she received the news and disapproved, it became rejected and void.

Arabic: In 'Ad-Durr al-Mukhtar': Guardianship is of two types: recommended guardianship (wilayah al-nadb) over a legally responsible female even if she is a virgin; and compulsory guardianship (wilayah al-ijbar) over a minor even if she is a

non-virgin (thayyibah). And in it: the news reached her, she rejected it, then said, "I am satisfied," it is not permitted due to it being voided by rejection.

Urdu: In 'Ad-Durr al-Mukhtar,' it is stated that guardianship is of two types: one purely in the manner of virtue/merit which applies to a mature female even if she is a virgin; and the second is compulsory guardianship which the guardian holds over a minor girl even if the minor is a non-virgin. In the same (book) it is stated that if a mature woman was informed of the marriage and she rejected the marriage, and later she said she was satisfied, then...

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hajr, Chapter on Puberty, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/97.
2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.
3. Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

अरबी: एक किशोर ने न्यायाधीश की सभा में अपने वयस्क होने की स्वीकारोक्ति की। न्यायाधीश ने पूछा, "तुम वयस्क कैसे हुए?" उसने कहा, "स्वप्नदोष के माध्यम से।" उसने पूछा, "जागने के बाद तुमने क्या देखा?" उसने कहा, "पानी।" उसने पूछा, "कैसा पानी? क्योंकि पानी कई प्रकार का होता है।" उसने कहा, "वीर्य।" उसने पूछा, "वीर्य क्या है?" उसने कहा, "पुरुष का वह तरल पदार्थ जिससे बच्चा पैदा होता है।" उसने पूछा, "स्वप्नदोष में तुमने किसे देखा? लड़का, लड़की या गधी?" उसने कहा, "लड़का।" न्यायाधीश ने कहा, "गहन पूछताछ आवश्यक है क्योंकि कभी-कभी लोग किसी के सिखाने पर झूठी स्वीकारोक्ति कर देते हैं।" शेख़-उल-इस्लाम ने कहा कि यह स्वप्नदोष के बारे में व्याख्या है। इसी तरह, यदि कोई लड़की मासिक धर्म के माध्यम से वयस्कता स्वीकार करती है, तो उससे भी इसी तरह विस्तृत व्याख्या ली जानी चाहिए।

उर्दू: उल्लेख है कि एक किशोर ने उनकी सभा में अपने वयस्क होने का इकरार किया, तो काज़ी ने पूछा, "तुम वयस्क कैसे हुए?" उसने जवाब में स्वप्नदोष का ज़िक्र किया, तो उस पर काज़ी ने पूछा कि "तुमने नींद से जागकर क्या देखा?" तो जवाब में उसने कहा कि "गीलापन देखा।" फिर सवाल किया कि "नमी तो कई तरह की होती है, तुमने कौन सी देखी है?" तो उसने कहा, "वीर्य देखा है।" फिर सवाल किया कि "वीर्य क्या होता है?" तो जवाब में कहा कि "मर्द का वह पानी जिससे बच्चा पैदा होता है।" फिर सवाल किया कि "तुझे स्वप्नदोष में क्या शक्ल नज़र आई जिस पर तुझे स्वप्नदोष हुआ, लड़की, लड़का, गधी आदि क्या था?" जवाब में कहा कि "लड़का था।" तो काज़ी महमूद समरकंदी ने कहा कि इस तरह पूरे सवाल करने ज़रूरी हैं क्योंकि कभी-कभी लोग किसी के सिखाने पर झूठा इकरार कर देते हैं। शेख़-उल-इस्लाम ने कहा कि यह स्वप्नदोष के बारे में व्याख्या है, अगर लड़की मासिक धर्म के ज़रिए वयस्कता का इकरार करे तो उससे भी ऐसी ही व्याख्या कराई जाए। (त)

अतः पूछताछ की गई स्थिति में, यदि निकाह के समय हिंदा का वयस्क होना सिद्ध हो जाता है—चाहे कानूनी गवाही के माध्यम से हो या हिंदा के विस्तृत बयान से, जिसे उसकी स्थिति झुठलाती न हो—और न केवल इस आधार पर कि उसकी आयु चौदह वर्ष से अधिक है, तो निश्चित रूप से उस पर न तो चाचा और न ही माँ की अनिवार्य अभिभावकता (विलायत-ए-जब्रिया) थी। उसका निकाह उसकी अनुमति के बिना प्रभावी नहीं हो सकता। जब उसे सूचना मिली और उसने इसे नामंजूर कर दिया, तो यह रद्द और शून्य हो गया।

अरबी: "अल-दुर अल-मुख्तार" में: विलायत (अभिभावकता) दो प्रकार की होती है: एक सक्षम महिला पर अनुशंसित विलायत, चाहे वह कुंवारी हो; और दूसरी एक नाबालिग पर अनिवार्य विलायत, चाहे वह गैर-कुंवारी (थैयबा) हो। इसमें यह भी है: यदि उसे समाचार मिला और उसने उसे अस्वीकार कर दिया, फिर बाद में कहा, "मैं सहमत हूँ," तो यह अनुमत नहीं है क्योंकि अस्वीकृति पर यह शून्य हो गया।

उर्दू: दुर्र अल-मुख्तार में है कि विलायत की दो किस्में (प्रकार) हैं: एक विशुद्ध रूप से श्रेष्ठता के रूप में जो वयस्क स्त्री पर होती है चाहे वह कुंवारी हो; और दूसरी विलायत-ए-जब्र (अनिवार्य विलायत) जो अभिभावक को नाबालिग लड़की पर प्राप्त होती है चाहे वह नाबालिग थैयबा हो। इसी में है कि यदि वयस्क स्त्री को निकाह की सूचना मिली और उसने निकाह को रद्द कर दिया, बाद में उसने कहा कि मैं राज़ी हूँ तो...

1. रद अल-मुहतार, किताब अल-हज्र, वयस्कता पर अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 5/97।
2. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191।
3. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192।

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

ان مراھقا اقر فی مجلسہ بلوغہ فقال بما ذا بلغت قال باحتلام قال فماذا رأیت بعد ما انتبھت قال الماء، قال ای ماء فان الماء مختلف قال المنی قال ما المنی قال ماء الرجل الذی یکون منہ الولد قال علی ماذا احتلمت علی ابن او بنت او اتان قال علی ابن فقال القاضی لابد من الاستقصاء فقد یلقن الاقرار بالبلوغ کذبا قال شیخ الاسلام ھذا من باب الاحتلام وانما یقبل قول مع التفسیر وکذا جاریۃ اقرت یحیض اھ

میں حکایت کی ایک قریب البلوغ نے ان کی مجلس میں اپنے بالغ ہونے کا اقرار کیا تو قاضی نے پوچھا تو کیونکر بالغ ہوا، اس نے جواب میں احتلام کا ذکر کیا تو اس پر قاضی نے پوچھا کہ تو نے نیند سے بیدار ہو کر کیا دیکھا تو جواب میں کہا کہ تری دیکھی، تو پھر سوال کیا کہ رطوبت تو کئی قسم کی ہوتی ہے تو نے کون سی دیکھی ہے ، تو اس نے کہا منی دیکھی ہے، پھر سوال کیا کہ منی کیا ہوتی ہے ، تو جواب میں کہا کہ مرد کا وہ پانی جس سے بچہ پیدا ہوتا ہے تو سوال کیا کہ تجھے احتلام میں کیا شکل نظر آئی جس پر تجھے احتلام ہوا ، لڑکی ، لڑکا ، گدھی وغیرہ کیا تھا، جواب میں کہا کہ لڑکا تھا، تو قاضی محمود سمر قندی نے کہا کہ یوں پورے سوال کرنے ضروری ہیں کیونکہ کبھی کسی کے سکھانے پر جھوٹا اقرار کردیتے ہیں ، شیخ الاسلام نے کہا یہ احتلام کے بارے میں تفسیر ہے ، اگر لڑکی حیض کے ذریعہ بلوغ کا اقرار کرے تو پھر بھی ایسے ہی اس سے تفسیر کرائی جائے اھ (ت)

پس صورت مستفسرہ میں اگر وقت نکاح ہندہ کا بلوغ ثابت ہو خواہ شہادت شرعیہ خواہ ہندہ کا بیان مفصل سے جسے ظاہر حال ہندہ تکذیب نہ کرتا ہو ، نہ صرف اتنی بات سے کہ اس کی عمر چودہ

سال سے زائد ہے ، بیشک اس پر چچا خواہ ماں کسی کی ولایت جبر یہ نہ تھی اس کا نکاح بے اس کی اجازت کے نافذ نہیں ہو سکتا، جب اس نے خبر پا کر نامنظور کیا رد و باطل ہو گیا۔

فی الدر المختار الولایه نوعان ولایة ندب علی المکلفة ولوبکرا وولایة اجبار علی الصغیرة ولوثیبا وفیه بلغها فردت ثم قالت رضیت لم یجز لبطلانه بالرد

در مختار میں ہے کہ ولایت کی دو قسمیں ہیں، ایک محض فضیلت کے طور پر جو کہ بالغہ پر ہوتی ہے اگرچہ باکرہ ہو ، اور دوسری ولایت اجبار جو کہ نابالغہ پر ولی کو حاصل ہوتی ہے اگرچہ نابالغہ ثیبہ ہو اسی میں ہے کہ اگر بالغہ کو نکاح کی اطلاع ملی تو اس نے نکاح کو رد کر دیا بعد میں اس نے کہا کہ میں راضی ہوں تو

1 رد المحتار کتاب الحجر فصل فی البلوغ دار احیاء التراث العربی بیروت ۹۷/۵ 2 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱ 3 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

The marriage will not be valid because she had already rejected it, which caused the marriage to become void. (T) And if Hinda was not an adult at that time, even if she reached puberty immediately after the marriage, undoubtedly her legal guardian (wali shar'i) was that same real paternal uncle. In his presence, the mother or a half-uncle (allati chacha) holds no authority, nor does any certificate carry weight in Shariah.

Arabic	Urdu
In Al-Durr al-Mukhtar: The guardian in marriage is the agnate ('asabah) in the order of inheritance and exclusion. If there are no agnates, then the guardianship belongs to the mother.	In Dur-ul-Mukhtar, it is mentioned that the guardian for marriage is the agnate according to the order of inheritance and exclusion. If there is no agnate, then the mother is the guardian. (T)

In this situation, the cousin (the uncle's son) to whom the uncle married this minor girl - if he has a defect in religion, conduct, or profession, etc., such that marrying Hinda to him would customarily be a source of disgrace, or if the uncle settled Hinda's dowry (Mahr) at a significantly lower rate than her customary dowry (Mahr-e-Mithl) - for example, if the customary dowry was one thousand rupees and he fixed it at five hundred - then in such cases, the marriage would be rejected and void from the outset. If it was free from such defects, then the marriage became valid and effective, and neither the displeasure of the mother or half-uncle nor Hinda's disapproval or aversion before puberty would harm its validity. However, upon reaching puberty, she will have the option to express her dissatisfaction with the marriage and have it annulled by a Shariah judge in the presence of the husband.

Arabic	Urdu
In Al-Durr al-Mukhtar: If the person giving in marriage is someone other than the father or paternal grandfather, the marriage is not valid at all if the groom is not an equal (kufu) or if the dowry is excessively low (ghabn fahish). If it is with an equal and for a customary dowry (mahr al-mithl), it is valid. For a minor boy or girl, there is an option to annul (khiyar	In Dur-ul-Mukhtar, it is stated that if the father or grandfather is not present, then a marriage arranged by another person to a non-equal match or with an extremely low dowry will not be valid at all. If the match is equal and the dowry is customary, then the marriage will be correct. The minor boy and girl will have the option to annul the marriage upon

Arabic

al-faskh) upon reaching puberty or upon gaining knowledge of the marriage thereafter, provided there is a judicial decree for annulment. (Summarized) And in Radd al-Muhtar, there is an indication that if the husband is absent, they shall not be separated until he is present, as it would involve passing judgment against an absent person (qada ala al-ghaib). - Nahr. And Allah Almighty knows best.

Urdu

reaching puberty or after puberty when they learn of the marriage, provided the annulment is done under the supervision of a Qazi (judge). Summarized. In Radd al-Muhtar, it is mentioned that there is an indication that if the husband is absent, the Qazi should not proceed with the annulment because it would necessitate 'judgment against the absent' (qadha ala al-ghaib). Nahr. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter: Al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/193
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter: Al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192-192
3. Radd al-Muhtar, Chapter: Al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/307

फ़तावा रज़विया जिल्द ११

निकाह जायज़ नहीं होगा क्योंकि उसने पहले ही अस्वीकार कर दिया था, जिससे निकाह बातिल (शून्य) हो गया। (त) और अगर उस समय हिन्दा बालिग़ा (वयस्क) नहीं थी, भले ही निकाह के तुरंत बाद वह बालिग़ा हो गई हो, तो निस्संदेह उसका शरीअत के अनुसार वली (अभिभावक) वही सगा चचा था। उसकी मौजूदगी में माँ या सौतेला चचा (अल्लाती चचा) की कोई हैसियत नहीं है, न ही किसी प्रमाणपत्र का शरीअत में कोई असर है।

अरबी

अल-दुरुल मुख्तार में है: निकाह में वली असबा (रक्त संबंधी पुरुष) होते हैं, विरासत और हजब (वंचन) के क्रम के अनुसार। यदि कोई असबा न हो, तो विलायत (अभिभावकत्व) माँ के लिए है।

उर्दू

दुर-उल-मुख्तार में है कि निकाह का वली वरासत और हजब की तरतीब पर असबा बनते हैं, अगर असबा न हो तो फिर माँ वली है। (त)

इस स्थिति में चचा का वह बेटा जिसके साथ चचा ने इस नाबालिग लड़की का निकाह कर दिया—यदि वह दीन (धर्म), व्यवहार या पेशे आदि के लिहाज़ से ऐसा दोष रखता हो जिसके कारण हिन्दा का उसके साथ निकाह होना प्रथागत रूप से शर्म का कारण हो, या चचा ने हिन्दा के महर-ए-मिस्ल (प्रथागत दहेज) में अत्यधिक कमी की हो, उदाहरण के लिए महर-ए-मिस्ल एक हज़ार रुपये था और पाँच सौ तय किया, तो इन स्थितियों में वह निकाह शुरू से ही अस्वीकार्य और बातिल होगा। और यदि वह इन दोषों से मुक्त था, तो निकाह निस्संदेह सही और प्रभावी हो गया, जिसे न माँ या सौतेले चचा की नाराज़गी से कोई नुकसान हुआ और न ही हिन्दा के वयस्क होने से पहले उसकी नामंज़ूरी या अरुचि से। हाँ, वयस्क होने के बाद उसे यह अधिकार मिलेगा कि वह निकाह से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करके शरई जज (हाकिम-ए-शरा) से शौहर की उपस्थिति में निकाह को रद्द (फ़स्ख़) करवा ले।

अरबी

अल-दुरुल मुख्तार में है: यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है, तो निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा यदि दूल्हा कुफ़ू (समान स्तर) का न हो या मेहर बहुत कम (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश)

उर्दू

दुर-उल-मुख्तार में है कि अगर बाप दादा न हों तो ग़ैर-कुफ़ू और अत्यधिक कम महर की सूरत में दूसरे द्वारा कराया गया निकाह बिल्कुल सही न होगा। और अगर कुफ़ू में और

अरबी

हो। और यदि कुफ़ू में और महर-ए-मिस्ल पर हो तो सही है। नाबालिग लड़के और लड़की को बालिग़ होने पर या उसके बाद निकाह का पता चलने पर रद्द करने का अधिकार (खियारुल फ़स्ख़) होगा, इस शर्त के साथ कि रद्द करने का फैसला जज (क़ाज़ी) द्वारा किया जाए। (संक्षिप्त) और रद्दुल मुहतार में संकेत है कि यदि पति अनुपस्थित हो, तो उनके बीच अलगाव नहीं कराया जाएगा जब तक वह उपस्थित न हो, क्योंकि यह अनुपस्थित व्यक्ति के विरुद्ध फैसला (क़ज़ा अलल ग़ैब) देने के समान होगा। - नह्र। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

उर्दू

महर-ए-मिस्ल से हो तो फिर निकाह सही होगा। और नाबालिग लड़केलड़की को वयस्क होने पर या वयस्कता के बाद जब निकाह की सूचना मिले, तो निकाह रद्द करने का अधिकार होगा, बशर्ते कि रद्द क़ाज़ी की निगरानी में हो। संक्षिप्त। रद्दुल मुहतार में है कि इसमें संकेत है कि अगर पति अनुपस्थित हो तो क़ाज़ी रद्द करने की कार्यवाही न करे क्योंकि इससे अनुपस्थित पर फैसला (क़ज़ा अलल ग़ैब) आवश्यक हो जाता है। नह्र, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

1. दुरुल मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई देहली १/१९३
2. दुरुल मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई देहली १/१९२-१९२
3. रद्दुल मुहतार, बाबुल वली, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बेरुत २/३०७

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

نکاح جائز نہ ہوگا کیونکہ پہلے رد کر چکی جس کی وجہ سے نکاح باطل ہو چکا ہے۔ (ت) اور اگر اس وقت ہندہ بالغہ نہ تھی اگر چہ بعد نکاح معاً بلوغ ہو گیا ہو تو بلا شبہ اس کا ولی شرعی وہی عم حقیقی تھا اس کے ہوتے ماں یا علاتی چچا کوئی چیز نہیں، نہ سرٹیفکیٹ شرعاً کچھ اثر رکھتا ہے۔

عربی **اردو**

في الدرالمختار الولی فی النکاح العصبة علی ترتیب الارث والحجب فان لم یکن عصبة فالولایة للام 1- در مختار میں ہے کہ نکاح کا ولی عصبہ وراثت اور حجب کی ترتیب پر بنتے ہیں، اگر عصبہ نہ ہو تو پھر ماں ولی ہے۔ (ت)

اس حالت میں یہ چچا کا بیٹا جس کے ساتھ چچا نے اس نابالغہ کا نکاح کر دیا، اگر مذہب یا اطوار یا پیشہ وغیرہ کی رو سے ایسا نقص رکھتا ہو جس کے سبب اس کے ساتھ ہندہ کا نکاح ہونا عرفاً موجبِ عار ہو یا چچا نے ہندہ کے مہر مثل میں کمی فاحش کی مثلاً مہر مثل ہزار روپے کا تھا پانسو باندھا تو ان صورتوں میں وہ نکاح سرے سے مردود و باطل محض ہوا، اور ان نقائص سے پاک تھا تو بیشک نکاح صحیح و نافذ ہو گیا جسے نہ ماں یا علاتی چچا کی ناراضی سے ضرر نہ قبل بلوغ ہندہ کی نامنظوری و بیزاری کا اثر، ہاں بعد بلوغ اسے اختیار ملے گا کہ نکاح سے ناراضی ظاہر کر کے حاکم شرع سے بحضورِ شوہر نکاح فسخ کرالے۔

عربی

في الدرالمختاران كان المزوج غير الاب و ابيه لا يصح النكاح من غير كفو او بغبن فاحش اصلا و ان كان من كفو و بمهر المثل صح و لصغير و صغيرة خيار الفسخ بالبلوغ او العلم بالنكاح بعده بشرط القضاء للفسخ 2 اھ مختصراً، وفي ردالمحتار فيه ايماء الى ان الزوج لو كان غائباً لم يفرق بينهما مالم يحضر للزوم القضاء على الغائب نهر 3- واللہ تعالیٰ اعلم۔

اردو

در مختار میں ہے کہ اگر باپ دادا نہ ہو تو غیر کفو اور انتہائی کم مہر کی صورت میں غیر کا دیا ہوا نکاح بالکل صحیح نہ ہوگا، اور اگر کفو میں اور مہر مثل سے ہو تو پھر نکاح صحیح ہو گا، اور لڑکے لڑکی نابالغہ کو بلوغ پر یا بلوغ کے بعد جب نکاح کا علم ہو فسخ کا اختیار ہوگا بشرطیکہ فسخ قاضی کی نگرانی میں ہو، اھ مختصراً۔ ردالمحتار میں ہے کہ اس میں اشارہ ہے کہ اگر خاوند غائب ہو تو قاضی فسخ کی کارروائی نہ کرے کیونکہ اس سے قضا علی الغیب لازم آتی ہے نہر، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ 2 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲-۹۲ 3 رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۰۷/۲

Volume 11 Fatawa Razawiyya

Problem 377: 26 Muharram-ul-Haram 1318 AH Zaid's marriage was decided with Amr's daughter, and the conditions were that the marriage and dower should be fixed according to the Prophetic Sharia. At the time of performing the marriage ceremony, some dispute occurred between Zaid and Amr regarding an excessive dower, due to which Zaid left the gathering and went home. In a state of anger and grief, Amr then told a Muezzin to perform his daughter's marriage with Bakr. Accordingly, Bakr was present in the gathering at that time. The Muezzin, who is neither a Qazi nor a Maulana, recited only three Kalimas and conducted the offer and acceptance (Ijab-o-Qubool). There was no representative (Wakil) or witness, nor was the amount of dower told to Bakr; it was only stated that the dower should be fixed like that of the girl's mother. Amr's daughter is an adult, fifteen years of age. Neither the girl's mother nor the girl herself had given permission for the marriage; only the girl's father had given permission in a state of grief and anger. In such a case, is the marriage valid or not?

The Answer: The questioner states that there were many people in that gathering, so those listeners were sufficient as witnesses; the marriage took place. However, since the woman is an adult, if the father had not obtained her permission to marry specifically Bakr or for marriage in general, then the marriage remained dependent on the woman's consent. If she approves it, it will become valid, and if she rejects it, it will be annulled. And Allah Almighty knows best.

Problem 379: From Kanpur, New Road, near Garja-Ghar (Church), near the house of Ihsanullah Wakeel, Dr. Allah Yar Khan, sent by Khudadad Khan Sahib, 11 Rabi-ul-Awwal 1318 AH.

Respected Maulana Sahib, may your excellence increase in both worlds, peace be upon you and the mercy and blessings of Allah. I am surprised why the condition of Nadwa has become so bad these days. I sent a request for a fatwa (Istifta) in the name of the Mufti there along with a stamp, but he gave no answer at all. If he could not provide an answer, he should have returned it rather than keeping it suppressed. Regrettably, a gathering has been established surely to bring disrepute to the names of scholars.

Bad nam kunandeh niku nami chand (One who defames a good reputation)

It was already my intention to send it to you, but by mistake, I sent it there. Well, now I am sending it to you exactly as it is, please favor me with an answer. A stamp for the reply is enclosed. With great respect.

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

मसाला 377: 26 मुहर्रम-उल-हराम 1318 हिजरी ज़ैद का निकाह अम्र की लड़की के साथ तय पाया था और शर्तें ये थीं कि शरीयत-ए-पैग़म्बरी के मुताबिक़ निकाह और महर तय किया जाए। निकाह पढ़ाने के समय महर की ज़्यादती पर ज़ैद और अम्र के बीच कुछ बहस हुई, जिस पर ज़ैद महफ़िल से उठकर घर चला गया। अम्र ने गुस्से और रंज की हालत में उस वक़्त एक मोअज़्ज़िन से कहा कि तुम मेरी लड़की का निकाह बक्र के साथ कर दो, चुनांचे बक्र उस वक़्त महफ़िल में मौजूद था। मोअज़्ज़िन साहब ने, जो कि काज़ी या मौलवी नहीं हैं, सिर्फ़ तीन कलमे पढ़ाए और ईजाब-ओ-क़ुबूल करा दिया। कोई वकील या गवाह नहीं था और न ही महर की रक़म बक्र को बताई गई, सिर्फ़ ये कह दिया गया कि लड़की की माँ के बराबर महर तय किया जाए। अम्र की लड़की बालिग़ है जिसकी उम्र पंद्रह साल है। लड़की की माँ ने और न ही लड़की ने खुद निकाह की इजाज़त दी थी, सिर्फ़ लड़की के वालिद (पिता) ने रंज और गुस्से की हालत में इजाज़त दी थी, तो ऐसी सूरत में निकाह जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): साहिल (सवाल करने वाला) बयान करता है कि उस महफ़िल में बहुत से लोग थे, तो वही सुनने वाले गवाह काफ़ी थे, निकाह हो गया। लेकिन चूंकि औरत बालिग़ है, तो अगर बाप ने उससे खास तौर पर बक्र के साथ निकाह करने की या आम निकाह की इजाज़त नहीं ली थी, तो निकाह औरत की मर्जी पर मुल्तवी (निर्भर) रहा। अगर वो उसे जायज़ कर देगी तो जायज़ हो जाएगा और रद कर देगी तो रद हो जाएगा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसाला 379: कानपुर नई सड़क, गिरजाघर के पास, एहसानुल्लाह वकील के मकान के पास, डॉक्टर अल्लाह यार ख़ान, प्रेषक ख़ुदादद ख़ान साहब, 11 रबी-उल-अव्वल 1318 हिजरी।

जनाब मौलाना साहब, दोनों जहानों में आपकी शान बढ़े, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। मुझे ताज्जुब है कि आज कल नदवा की ऐसी खराब हालत क्यों हो गई है। मैंने वहाँ के मुफ्ती साहब के नाम से डाक टिकट लगाकर एक इस्तिफ्ता (फ़तवे के लिए सवाल) भेजा था, लेकिन उन्होंने कतई कोई जवाब नहीं दिया। अगर उनसे इसका जवाब नहीं हो सकता था, तो उन्हें वापस कर देना चाहिए था न कि उसे दबा कर बैठ जाते। अफ़सोस, विद्वानों (उलेमा) का नाम बदनाम करने के लिए निश्चित ही जलसा (सभा) कायम किया गया है।

बद नाम कुनन्दा नेकू नामी चंद (नेक नामी को बदनाम करने वाला)

मेरा तो पहले ही से इरादा था कि आपके पास भेजूँ, मगर ग़लती हुई कि वहाँ भेज दिया। खैर, अब हूबहू आपकी सेवा में भेजता हूँ कि आप मेहरबानी फरमा कर जवाब से नवाज़ें। जवाब के लिए डाक टिकट हाज़िर है। अत्यधिक सम्मान के साथ।

पेज 620 ऑफ 739

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۳۷۷: ۲۶ محرم الحرام ۱۳۱۸ھ زید کا نکاح عمرو کی لڑکی کے ساتھ قرار پایا تھا اور شرائط یہ تھیں کہ شرع پیمبری میں نکاح و مہر باندھا جائے ہنگام نکاح پڑھانے کے کچھ حجت زیادتی مہر پر زید و عمرو کے مابین ہوئی جس پر زید مجلس سے اٹھ کر مکان کو چلا گیا، عمرو نے بحالت غصہ و رنج کے اس وقت ایک موذن سے کہا کہ تم میری لڑکی کا نکاح بکر کے ساتھ کر دو، چنانچہ بکر اس وقت مجلس میں موجود تھا، موذن صاحب نے جو کہ قاضی یا مولوی نہیں ہیں صرف تین کلمے پڑھائے اور ایجاب و قبول کرا دیا، کوئی وکیل و گواہ نہیں تھا اور نہ مہر کی تعداد بکر کو بتائی، صرف یہ کہہ دیا کہ مثل لڑکی کی ماں کے مہر باندھا جائے، عمرو کی لڑکی بالغ ہے جس کی عمر پندرہ سال ہے۔ لڑکی کی ماں نے اور نہ خود لڑکی نے اجازت نکاح کی دی تھی صرف لڑکی کے والد نے اجازت نکاح کی بحالت رنج و غصہ کے دی تھی، تو ایسی صورت میں نکاح جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: سائل مظہر کہ اس جلسہ میں بہت آدمی تھے تو وہی سننے والے گواہ کافی تھے نکاح ہو گیا مگر عورت جبکہ بالغہ ہے تو اگر باپ نے اس سے اجازت خاص بکر کے ساتھ نکاح کر دینے کی یا مطلق نکاح کی نہ لی تھی تو نکاح عورت کی اجازت پر موقوف رہا مگر وہ جائز کر دے گی جائز ہو جائے گا اور رد کر دے گی رد ہو جائے گا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۷۹: از کانپور نئی سڑک متصل گڑ جاگھر متصل مکان احسان اللہ وکیل ڈاکٹر اللہ یار خاں مرسلہ خداداد خاں صاحب ۱۱ ربیع الاول ۱۳۱۸ھ

جناب مولانا صاحب زیدت معالیکم فی الدارین، السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، مجھے تعجب ہے کہ آج کل ندوہ کی ایسی خراب حالت کیوں ہو گئی، میں نے وہاں کے مفتی صاحب کے نام سے ٹکٹ رکھ کر ایک استفتاء بھیجا مگر مطلقاً جواب نہیں دیا، ان سے اگر اس کا جواب نہیں ہو سکتا تھا تو واپس کر دینا چاہئے تھانہ کہ دبا بیٹھا، افسوس علماؤں کا نام بدنام کرنے کو جلسہ قائم کیا گیا ہے بے شک

بد نام کنندہ نکو نامی چند (نیک نامی کو بد نام کرنے والا)

میرا تو پہلے ہی سے ارادہ تھا کہ آپ کے پاس بھیجوں مگر غلطی ہوئی کہ وہاں بھیج دیا، خیر اب بعینہ آپ کی خدمت میں روانہ کرتا ہوں کہ آپ براہ نوازش جواب سے مشرف فرمائیے، جواب کے لئے ٹکٹ پیش خدمت ہے زیادہ حد ادب۔

Volume 11, Fatawa Rizvia

What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about the following issue: Is a girl's consanguine (paternal half) brother a valid guardian (Wali) for her marriage in the presence of her uterine (full) mother and maternal uncle? If he is a valid guardian, what is the ruling on the maternal uncle and mother performing the marriage of the adult girl into a non-equivalent (ghair-kufu) match in his absence without his information and consent? Additionally, the girl's mother has received the dower debt from her husband's estate. Explain and you shall be rewarded.

Answer: In the queried situation, the guardian (Wali) for this girl's marriage is her consanguine brother; the mother or maternal uncle have no right in his presence.

| In Arabic: In al-Durr al-Mukhtar: The guardian in marriage is the agnate ('asaba) himself. If there is no agnate, then the guardianship belongs to the mother (up to the saying)... then to the distant relatives (dhu'l-arham), paternal aunts then maternal uncles, etc. [Summarized]. | In Urdu: It is in al-Durr al-Mukhtar: The guardian of marriage is the agnate ('asaba) himself. If he is not there, then the guardianship belongs to the mother. They have mentioned distant relatives up to paternal aunts then maternal uncles, etc. [Summarized]. |

In the pure Shariah, a non-equivalent (ghair-kufu) match is one who has a deficiency in lineage, religion, profession, or conduct, such that the woman's marriage to him would be a cause of shame and disgrace for her guardians. Common people here call someone from another tribe "non-equivalent" even if he matches her in nobility. Some even extend it so much that even if he is superior to them, they don't see it in Shariah. Mughal and Pathan are equivalent matches; Sheikh, Quraishi, and noble Sayyids are equivalent matches. A wicked-religious person of one's own tribe is not an equivalent match. If the lack of equivalence mentioned was according to common usage, meaning the person was not from the same tribe as the daughter but had no such deficiency that would make him non-equivalent in Shariah, then this marriage is absolutely valid and concluded. There was no need for the brother's consent or information. Since the daughter is an adult, if it happened with her permission, it became effective; otherwise, it remained dependent on her permission. If she approves, it will be effective; if she rejects, it will be void. The brother or any other guardian has no concern with this because guardianship ends upon reaching puberty as they (jurists) have stipulated (because guardianship ends upon reaching

puberty as they have stipulated on this - T). And if the lack of equivalence was in the aforementioned Shariah sense, then this marriage, having been done without the consent of the agnate guardian ('asabah), did not take place at all. If it was with the daughter's permission, a woman's marriage into a non-equivalent match without the consent of the 'asabah is void. And if the mother or maternal uncle did it on their own without the daughter's permission, it would be an unauthorized (fuduli) contract which no one can enforce, because the power of enforcement belongs to the woman, and she herself on such a marriage...

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Mujtabai Press, Delhi, 1/193. Page 621 of 739

जिल्द ग्यारहवीं, फतावा रज़विया

दीन के विद्वान और शरीयत-ए-मतीन के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि एक लड़की का सौतेला (बाप शरीक) भाई उसकी सगी माँ और मामा के मुकाबले में वली (अभिभावक) हो सकता है या नहीं? और अगर वह वली है, तो उसकी अनुपस्थिति में, उसे सूचित किए बिना और उसकी सहमति के बिना, एक बालिग लड़की का निकाह किसी गैर-कुफ़ु(असमान) व्यक्ति से उसकी माँ और मामा द्वारा कर दिया जाना कैसा है? इसके अलावा, लड़की की माँ अपने पति की छोड़ी हुई जायदाद से अपना मेहर पा चुकी है। बयान करें, पुण्य मिलेगा।

जवाब: पूछे गए मामले में, इस लड़की के निकाह का वली उसका सौतेला भाई है; माँ या मामा उसके रहते कोई अधिकार नहीं रखते।

| अरबी में: 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: निकाह में वली असबा-ब-नफ्सिही (सगोत्र पुरुष रिश्तेदार) होता है। यदि कोई असबा न हो, तो विलायत (अभिभावकता) माँ की होती है (कथन के अंत तक)... फिर ज़ुल-अरहाम (अन्य रिश्तेदारों), फूफियों और फिर मामाओं की, आदि। [संक्षिप्त] | उर्दू में: दुर्र-ए-मुख्तार में है: निकाह का वली असबा-ब-नफ्सिही होता है, अगर वह न हो तो विलायत माँ को होती है, उन्होंने ज़ुल-अरहाम में फूफियों फिर मामाओं तक का उल्लेख किया है, आदि। [संक्षिप्त] |

पाक शरीयत में गैर-कुफु वह है जिसके वंश, धर्म, पेशे या चाल-चलन आदि में कोई ऐसी कमी हो जिसके कारण उस महिला का उससे निकाह करना उसके वलियों के लिए अपमान और शर्म का कारण हो। यहाँ आम लोग दूसरी कौम (बिरादरी) के व्यक्ति को गैर-कुफु कहते हैं, चाहे वह बड़प्पन में उनके बराबर ही क्यों न हो। यहाँ तक कि कुछ लोग तो इतना विस्तार देते हैं कि अगर वह उनसे बेहतर भी हो, तब भी शरीयत में वे इसे नहीं देखते। मुग़ल और पठान कुफु(समान) हैं; शेख, कुरैशी और सादात-ए-कराम कुफु हैं। अपनी ही बिरादरी का कोई बद-मज़हब (गलत अकीदे वाला) व्यक्ति कुफु नहीं है। यदि कुफु न होने का मतलब यहाँ केवल आम बोलचाल के अनुसार था, यानी वह व्यक्ति उस लड़की की बिरादरी का नहीं था लेकिन उसमें ऐसा कोई दोष नहीं था कि वह शरीयत की दृष्टि से गैर-कुफु हो, तो यह निकाह पूरी तरह से सही और संपन्न हो गया, इसमें भाई की सहमति या सूचना की आवश्यकता नहीं थी। लड़की बालिग है, अगर उसकी अनुमति से निकाह हुआ तो लागू (नाफ़िज़) हो गया, अन्यथा लड़की की अनुमति पर निर्भर रहा। यदि वह स्वीकार करेगी तो लागू होगा, अस्वीकार करेगी तो रद्द हो जाएगा। भाई या किसी अन्य वली का इससे कोई संबंध नहीं है क्योंकि

बालिग होने पर विलायत समाप्त हो जाती है जैसा कि फ़ुक़्हा ने स्पष्ट किया है (क्योंकि बालिग होने पर विलायत समाप्त हो जाती है जैसा कि उन्होंने इस पर स्पष्ट आदेश दिया है - त)। और यदि कुफ़ु न होना शरीयत के उपर्युक्त अर्थ में था, तो यह निकाह, जो वली-ए-असबा की सहमति के बिना हुआ, मूल रूप से हुआ ही नहीं। यदि लड़की की अनुमति से हुआ था, तो महिला का बिना वली-ए-असबा की सहमति के गैर-कुफ़ु में निकाह करना बातिल (अमान्य) है। और यदि माँ या मामा ने लड़की की अनुमति के बिना अपनी ओर से कर दिया, तो यह 'अक़्द-ए-फ़ुज़ूली' (अनधिकृत अनुबंध) होगा जिसे लागू करने वाला कोई नहीं, क्योंकि लागू करने का अधिकार स्वयं महिला को होता है, वह स्वयं ऐसे निकाह पर...

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/193. पृष्ठ 621 का 739

جلد یازدہم، فتاوٰی رضویہ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین ذیل کے مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کا علاتی بھائی اس کی عینی ماں اور ماموں کے مقابلہ میں ولی جائز ہے یا نہیں؟ وبر تقدیر ولی جائز ہونے کے اس کی عدم موجودگی میں بلا اطلاع و رضا لڑکی بالغہ کا غیر کفو کے ساتھ ماموں اور اس کی ماں کا عقد کر دینا کیسا ہے اور نیز لڑکی کی ماں اپنے شوہر کا متروکہ دین مہر میں پا چکی ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں اس لڑکی کا ولی نکاح اس کا علاتی بھائی ہے، ماں یا ماموں اس کے ہوتے کچھ استحقاق نہیں رکھتے۔

| فی الدرالمختار الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ فان لم یکن عصبۃ فالولایۃ للام (الی قولہ) ثم لذوی الارحام العمات ثم الاخوال الخ اھ۱ ملتقطا۔ | درمختار میں ہے: نکاح کا ولی عصبہ بنفسہ ہوتا ہے اگر وہ نہ ہو تو پھر ولایت ماں کو ہوتی ہے، انھوں نے ذوی الارحام پھوپھیاں پھر ماموں تک بیان کیا، الخ ملتقطا (ت) |

شرعِ مطہر میں غیر کفو وہ ہے جس کے نسب یا مذہب یا پیشے یا چال چلن وغیرہ میں کوئی ایسا نقص ہو جس کے باعث اس عورت کا اس سے نکاح ہونا اس کے اولیاء کے لئے باعثِ ننگ و عار ہو، اور یہاں عوام غیر قوم کو غیر کفو کہتے ہیں اگرچہ شرافت میں اپنا ہمسر ہو، بلکہ بعض تو یہاں تک توسیع کرتے ہیں کہ اگر اپنے سے برتر ہو شرع میں اس میں نظر نہیں، مغل پٹھان کفو ہیں، شیخ، قریشی وساداتِ کرام کفو ہیں، اپنا ہم قوم بد مذہب کفو نہیں، یہاں اگر عدمِ کفاءت یہی محاورہ عامیہ کے طور پر تھا یعنی وہ شخص اس دختر کا ہم قوم نہ تھا مگر اس طرح کا کوئی

نقص نہ رکھتا تھا کہ شرعاً غیر کفو ہو جب تو یہ نکاح مطلقاً صحیح و منعقد ہو گیا رضا و اطلاعِ برادر کی حاجت نہیں، دختر کہ بالغہ ہے اگر اس سے اذن لے کر ہوا تو نافذ ہو گیا ورنہ دختر ہی کی اجازت پر موقوف رہا، اگر جائز کرے گی نافذ ہو گا رد کر دے گی باطل ہو جائے گا۔ برادر و غیرہ کسی ولی سے کوئی تعلق نہیں لانقطاع الولایۃ بالبلوغ کما نصوا علیہ (کیونکہ بالغ ہونے پر ولایت منقطع ہو گئی جیسا کہ انھوں نے اس پر نص کی۔ت) اور اگر عدمِ کفاءت بہ معنی مذکورِ شرعی تھا تو یہ نکاح کہ بے رضائے ولی عصبہ ہوا اصلا نہ ہوا کہ اگر باجازتِ دختر تھا تو عورت جو نکاح غیر کفو سے بے رضا عصبہ کرے باطل ہے، اور اگر ماں یا ماموں نے بطورِ خود بے اذنِ دختر کیا تو یہ وہ عقدِ فضولی ہو گا جسے نافذ کرنے والا کوئی نہیں کہ اختیارِ تنفیذ عورت کو ہوتا ہے وہ خود ایسے نکاح پر---

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۳ صفحہ 621 از 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

(He is) not capable, and every unauthorized contract (aqd-e-fuzuli) which has no executant at the time of its occurrence is void. Even a residuary guardian (wali asbah) cannot make it valid by including his consent. Here, the consent of the guardian is necessary before the contract; after the contract, it is redundant and useless.

Arabic Original

In "Al-Durr al-Mukhtar," it is stated that fatwa is given regarding the impermissibility of marriage to a non-equal (ghair-kufu) and this is the preferred opinion for fatwa due to the corruption of the times. (1) In "Radd al-Muhtar," it is said: This is when she has a guardian who did not consent to it before the contract; thus, subsequent consent is of no avail. (2) Al-Bahr. In "Al-Durr," under the section on the unauthorized agent (fuzuli), it is stated: Every act originating from him, such as selling, marrying, and divorcing, and it has a sanctioner (mujiz)—meaning one who has the power to authorize it at the time of its occurrence—then it is concluded as suspended (mauquf). If there is no sanctioner for it at the time of the contract, it is not concluded at all. (3) - And Allah knows best.

Urdu Translation / Explanation

It is in "Durr al-Mukhtar" that the fatwa is for the impermissibility of marriage in a non-equal (ghair-kufu); due to the corruption of the times, this is the chosen (mukhtar) opinion. It is in "Radd al-Muhtar" that if the girl's guardian was not satisfied with this marriage before the marriage, then subsequent satisfaction is not beneficial, Al-Bahr. In the chapter on the unauthorized agent (fuzuli) in "Al-Durr," it is stated that every such act of an unauthorized agent for which there is someone present at the time of its issuance who has the power to make it permissible, then that act of the unauthorized agent will be valid to the extent of being suspended (mauquf), such as selling, giving in marriage, divorce etc. And if there is no one present at that time to make it permissible, then this act will certainly not be concluded. And Allah knows best.

Issue 350: From Sitarganj, 26 Rabi-ul-Akhir 1318 AH What do the scholars of religion say regarding this issue: A person died after engaging his daughter, leaving behind a wife and a daughter. One day, in the absence of the mother, some people forcibly put this adult daughter into a house. The mother filed a claim in court. The response from the other side is that a brother of the deceased, from a different father, performed the marriage without the permission of the daughter and her mother. So, in this situation, does the mother have the right of guardianship (wilayat)

for marriage or not, and which relatives have the right of guardianship in the presence of the mother? The one who has forcibly kept this girl in the house has drunk the milk of the girl's mother. Explain and you shall be rewarded.

Answer: No one has the power of compulsory guardianship (wilayat-e-jabriya) over an adult female. The guardian (wali) for marriage is every residuary (asbah), meaning the descendants of the grandfather or great-grandfather, near or far.

1 Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/191 2 Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297 3 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Buyu', Fasl fi al-Fuduli, Matba' Mujtabai, Delhi, 3/3

फतावा रज़विया जिल्द 11

वह सक्षम नहीं है, और हर वह अनुबंध (अक्द) जो किसी फुज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति) द्वारा किया गया हो और उसके होने के समय उसे निष्पादित करने वाला कोई न हो, वह बातिल (अमान्य) है। वली असबा (नज़दीकी रिश्तेदार संरक्षक) भी अपनी रज़ामंदी शामिल करके उसे सही नहीं कर सकता। यहाँ अक्द से पहले वली की रज़ामंदी लाज़िम है, अक्द के बाद की रज़ामंदी बेमानी और बेकार है।

अरबी मूल

"दुर्रे मुख़्तार" में है कि गैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह के जायज़ न होने का फ़तवा है, और ज़माना-ए-फ़साद (बुरे वक़्त) की वजह से यही मुख़्तार (पसंदीदा) है। (1) "रद्दुल मुहतार" में है कि यदि निकाह से पहले लड़की का वली इस निकाह पर राज़ी न था, तो बाद की रज़ा मुफीद (लाभकारी) नहीं है। (2) बहर। "दुर" में फुज़ूली के अध्याय में है कि फुज़ूली द्वारा किया गया हर ऐसा कार्य जैसे कि बिक्री, निकाह कराना, तलाक़ आदि, और उसके लिए कोई मुजीज़ (अनुमोदन करने वाला) हो—यानी वह व्यक्ति जो उसके होने के समय उसे अनुमति देने की शक्ति रखता हो—तो वह 'मौकूफ़' (निलंबित) के रूप में संपन्न माना जाएगा। और यदि अक्द के समय उसे जायज़ करने वाला कोई मौजूद न हो, तो वह अक्द बिल्कुल संपन्न नहीं होगा। (3) - वल्लाहु तआला आलम।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

"दुर्रे मुख़्तार" में है कि गैर-कुफ़ू में निकाह के जायज़ न होने का फ़तवा है, ज़माना-ए-फ़साद की वजह से यही मुख़्तार है। "रद्दुल मुहतार" में है कि अगर लड़की का वली निकाह से पहले इस निकाह पर राज़ी न था तो बाद की रज़ा मुफीद नहीं, बहर। "दुर" में फ़स्ले फ़ुज़ूली की फ़स्ल में है कि फ़ुज़ूली का हर ऐसा तसर्रुफ़ (कार्य) कि उसके सुदूर (होने) के वक़्त कोई उसको जायज़ करने पर क़ुदरत रखने वाला मौजूद हो तो फ़ुज़ूली का वह तसर्रुफ़ मौक़ूफ़ होने की हद तक जायज़ होगा, जैसा कि बैअ (बिक्री), निकाह देना, तलाक़ वग़ैरह, और अगर कोई उस वक़्त जायज़ करने वाला मौजूद न हो तो यह तसर्रुफ़ क़तअन मुनअक़िद (संपन्न) न होगा, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 350: सितारगंज से, 26 रबी-उल-आखिर 1318 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति अपनी बेटी की सगाई करने के बाद अपनी पत्नी और बेटी को छोड़कर मर गया। एक दिन माँ की अनुपस्थिति में कुछ लोगों ने उस बालिग़ (वयस्क) लड़की को ज़बरदस्ती एक घर में डाल दिया। माँ ने अदालत में दावा किया। दूसरी ओर से जवाब यह है कि मृतक का एक भाई, जो दूसरे पिता से था, ने बेटी और माँ की अनुमति के बिना निकाह कर दिया। अतः इस स्थिति में माँ

को निकाह का विलायत (संरक्षण का अधिकार) है या नहीं, और माँ की उपस्थिति में किन-किन रिश्तेदारों को विलायत की अनुमति है? जिसने ज़बरदस्ती उस लड़की को घर में रखा है, उसने लड़की की माँ का दूध पिया है। बयान करें, पुण्य पाएँ।

जवाब: बालिग़ा (वयस्क महिला) पर किसी को भी विलायत-ए-जब्रिया (अनिवार्य संरक्षण का अधिकार) नहीं है। निकाह का वली (संरक्षक) हर असबा (पितृवंशीय संबंधी) है, यानी नज़दीक या दूर के दादा, परदादा की औलाद में से।

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबअ मुजतबाई, दिल्ली, 1/191 2 रद्दुल मुहतार, बाबुल वली, दारुल इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/297 3 दुर्रे मुख़्तार, किताबुल बुयूअ, फ़स्ल फिल फ़ुज़ूली, मतबअ मुजतबाई, दिल्ली, 3/3

पृष्ठ 622 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

قادر نہیں، اور ہر عقد فضولی کہ وقت وقوع جس کا کوئی منفذ نہ ہو باطل ہے، ولی عصبہ بھی اپنی رضا شامل کرکے اسے صحیح نہیں کرسکتا یہاں رضائے ولی قبل عقد لازم ہے بعد عقد لغو وبیکار ہے،

عربی اصل

فی الدرالمختار یفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتوی لفساد الزمان 1- فی ردالمحتار ھذا اذاکان لھا ولی لم یرض بہ قبل العقد فلا یفید الرضی بعدہ 2 بحر، فی الدر من فصل الفضولی کل تصرف صدر منہ کبیع وتزویج وطلاق و لہ مجیزا ی من یقدر علی اجازتہ حال وقوعہ انعقد موقوفا ومالا مجیز لہ حالۃ العقد لا ینعقد اصلا 3- واللہ تعالیٰ اعلم۔

اردو ترجمہ / تشریح

در مختار میں ہے کہ غیر کفو میں نکاح کے جائز نہ ہونے کا فتوی ہے، زمانہ فساد کی وجہ سے یہی مختار ہے، ردالمحتار میں ہے کہ اگر لڑکی کا ولی نکاح سے قبل اس نکاح پر راضی نہ تھا تو بعد کی رضا مفید نہیں ، بحر۔ در میں فصل فضولی کی فصل میں ہے کہ فضولی کا ہر ایسا تصرف کہ اس کے صدور کے وقت کوئی اس کو جائز کرنے پر قدرت رکھنے والا موجود ہو تو فضولی کا وہ تصرف موقوف ہونے کی حد تک جائز ہوگا، جیسا کہ بیع، نکاح دینا، طلاق وغیرہ، اور اگر کوئی اس وقت جائز کرنے والا موجود نہ ہو تو یہ تصرف قطعاً منعقد نہ ہوگا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۵۰: از ستار گنج ۲۶ ربیع الآخر ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص اپنی دختر کی منگنی کرکے زوجہ اور دختر چھوڑ کر فوت ہوا، ایک دن والدہ کی

غیبت میں اس لڑکی بالغہ کو چند شخصوں نے زبردستی ایک گھر میں کردیا، والدہ نے کچہری میں دعوی کیا، ادھر کا جواب یہ ہے کہ متوفی کا ایک بھائی جو دوسرے باپ سے تھا اس نے بلا اجازت دختر و والدہ دختر کے نکاح کردیا، پس اس صورت میں ولایت نکاح ماں کو ہے یا نہیں اور کس کس رشتے دار کو ماں کے سامنے اجازت ولایت ہے، جس نے زبردستی اس لڑکی کو گھر میں رکھا ہے اس نے لڑکی کی والدہ کا دودھ پیا ہے، بینوا توجروا

الجواب: بالغہ پر ولایت جبریہ کسی کو نہیں، ولی نکاح ہر عصبہ ہے یعنی نزدیک یادور کے دادا پر دادا کے اولاد میں

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۹۷ 3 در مختار کتاب البیوع فصل فی الفضولی مطبع مجتبائی دہلی ۳/ ۳

Volume 11 Fatawa Razawiyyah

Any sane adult male relative, whether real or step, for example, a great-grandson's grandson in the lineage of the woman's great-grandfather's step-great-grandfather; as long as any such sane adult person exists, the mother has no guardianship (Wilayah) at all. After puberty, the mother has no connection to guardianship whatsoever, whether an agnate relative (Asabah) exists or not.

[Arabic Quote]: "Because after that, the right of the guardians is only to object if she marries someone not equal (ghair kufu) or at an excessively low dower (mahr-e-mithl). And the invalidation of marriage with a non-equal when the guardian did not consent to it explicitly before the contract while knowing the lack of equality, belongs only to the agnate relatives and no one else, as stated in Durr [al-Mukhtar] and other works." [Urdu Explanation]: Because after this, the guardians' right of objection is only in the case when the girl has married someone of unequal status (ghair-kufu) or on an extremely low dower, or if before the marriage the guardian came to know about the inequality and explicitly expressed his lack of consent, then he has the right to invalidate the marriage. Moreover, the right of objection is only available to agnate guardians (asabah), not to anyone else, as it is clarified in Durr etc. (T)

It is self-evident that marriage with a foster brother is not permissible, but the blame is only in the state when they are known to be foster siblings. Allah Almighty knows best.

Problem 351: From Kanpur, Mohalla Farash Khana, behind Abkari New Road, adjacent to Koorh Ghar, house of Hafiz Zubair Hasan Attar, sent by Saeed ul Hasan Sahib, 12 Jumada al-Akhirah 1318 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Mst. Hindah has a daughter, Mst. Raziyah, from her deceased husband. When Raziyah was eight years and two months old, Hindah married her off to Khalid during her childhood. However, due to being underage, Raziyah did not go to her husband but stayed with her mother as usual. More than four years have passed since the marriage, and Raziyah is now sensible and has reached puberty. Meanwhile, Khalid has taken another woman, from whom children have been born. Khalid's appearance, behavior, and conduct are completely disliked by Hindah and Raziyah. she does not want to have any relationship with Khalid, possesses an extreme level of hatred and rejection, and desires Khula (divorce initiated by the wife). According to the Shariah, what should Mst. Raziyah do so that her relationship with Khalid is severed? Will this

childhood marriage be considered an unauthorized (fudhuli) contract or not? How will the order for Khula be executed? And according to Shariah, what is the age limit for childhood/minority in India, specifically for the North-Western provinces? Clarify and you shall be rewarded.

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191-192
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191-192

जिल्द याज़दहम (ग्यारहवीं) फ़तावा रज़विया

जो पुरुष बुद्धिमान और वयस्क (बालिग) हो, वह चाहे सगा हो या सौतेला, उदाहरण के लिए स्त्री के परदादा के सौतेले परदादा के वंश में परपोते का पोता; जब तक उनमें से कोई भी बुद्धिमान वयस्क व्यक्ति मौजूद है, माँ को कतई विलायत (अभिभावकत्व) प्राप्त नहीं है। और बालिग होने के बाद तो माँ का विलायत से कोई संबंध ही नहीं रहता, चाहे असबा (पितृपक्षीय संबंधी) मौजूद हों या न हों।

[अरबी उद्धरण]: "क्योंकि उसके बाद, अभिभावकों का अधिकार केवल तभी आपत्ति करना है जब उसने किसी गैर-कुफ़ू(असमान) से या महर-ए-मिसल पर अत्यधिक कमी के साथ निकाह किया हो। और गैर-कुफ़ू के साथ निकाह को रद्द करना जब अभिभावक ने समानता की कमी को जानते हुए अक़्द (अनुबंध) से पहले स्पष्ट रूप से अपनी असहमति व्यक्त की हो, तो यह अधिकार केवल असबा को ही प्राप्त है, जैसा कि दुर्र आदि में कहा गया है।" [उर्दू स्पष्टीकरण]: क्योंकि इसके बाद अभिभावकों का आपत्ति करने का अधिकार केवल उसी स्थिति में है जब लड़की ने गैर-कुफ़ू और अत्यंत कम महर पर निकाह किया हो, या जब निकाह से पहले अभिभावक को गैर-कुफ़ू होने का पता चला और उसने स्पष्ट रूप से अपनी असहमति व्यक्त कर दी, तो उसे निकाह को अमान्य करने का अधिकार है। और आपत्ति का अधिकार भी केवल असबा अभिभावकों को ही प्राप्त है, किसी और को नहीं, जैसा कि दुर्र आदि में इस पर स्पष्टता है (त)।

दूध शरीक भाई (स्तनपान से भाई) से निकाह न हो पाना स्वयं स्पष्ट है, लेकिन दोष उस स्थिति में है जब उन्हें दूध शरीक होने का पता हो। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला ३५१: कानपुर से, मोहल्ला फ़राश खाना, आबकारी सड़क के पीछे, कोढ़ घर के पास, हाफिज़ जुबैर हसन अत्तार का घर, प्रेषक सईद उल हसन साहब, १२ जमादी-उल-आखिर १३१८ हिजरी।

विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: मुसम्मात हिंदा की एक बेटी मुसम्मात रज़िया है, जो उसके दिवंगत पति से है। जब रज़िया की आयु आठ वर्ष दो महीने थी, तो हिंदा ने रज़िया का निकाह उसके बचपन में खालिद के साथ कर दिया। लेकिन नाबालिग होने के कारण रज़िया अपने पति के पास नहीं गई और पहले की तरह अपनी माँ के साथ रही। अब निकाह हुए चार साल से अधिक समय बीत चुका है और रज़िया अब समझदार और बालिग हो गई है। इसी दौरान खालिद ने एक अन्य स्त्री रख ली, जिससे बच्चे भी पैदा हुए। खालिद का व्यवहार और चाल-चलन हिंदा और रज़िया को पूरी तरह से नापसंद है और वह खालिद के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहती, उसे अत्यधिक घृणा और इनकार

है और वह 'खुल' (तलाक़) चाहती है। शरीअत के हुक्म के अनुसार मुसम्मात रज़िया को क्या करना चाहिए जिससे उसका खालिद से संबंध टूट जाए और क्या यह बचपन का निकाह 'अक़्द-ए-फ़ुज़ूली' (अनधिकृत अनुबंध) माना जाएगा या नहीं? और खुल के हुक्म का पालन किस प्रकार किया जाएगा? और शरीअत के अनुसार भारत में, विशेष रूप से उत्तर-पश्चिमी प्रांतों के लिए नाबालिग रहने की आयु सीमा क्या है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

---

1. दुर्रे मुख्तार, बाबू-उल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/१९१-१९२
2. दुर्रे मुख्तार, बाबू-उल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/१९१-१९२

पृष्ठ ६२३ / ७३९

جلد یازدہم فتاوی رضویہ

جو مرد عاقل بالغ ہو رشتے میں سگا ہو یا سوتیلا مثلا عورت کے پردادا کے سوتیلے پردادا کی نسل میں پرپوتے کا پوتا، جب تک ان میں سے کوئی شخص عاقل بالغ موجود ہو ماں کو اصلاً ولایت نہیں، اور بعد بلوغ تو ماں کو ولایت سے کوئی تعلق ہی نہیں خواہ عصبہ موجود ہو یا نہ ہو۔

لان حق الاولیاء بعد ذٰلك انما ھو فی الاعتراض ان نکحت غیر کفو اوبغبن فاحش فی مھر المثل ۱ و ابطال النکاح بغیر الکفواذالم یرض الولی بہ قبل العقد صریحا مع العلم بعدم الکفائۃ وذلك انما ھو فی حق العصبۃ لاغیر ۲ کما نص علیہ فی الدر وغیرہ۔ کیونکہ اس کے بعد اولیاء کا حق اعتراض صرف اس صورت میں ہے جب لڑکی نے غیر کفو اور انتہائی کم مہر پر نکاح کیا ہو یا جب نکاح سے قبل ولی کو غیر کفو ہونے کا علم ہوا تو صراحتاً اس نے اپنی عدم رضا کا اظہار کردیا ہو تو اس کا نکاح باطل کرنے کا حق ہے، اور حق اعتراض بھی صرف اولیاء عصبہ کو حاصل ہے کسی دوسرے کو نہیں، جیسا کہ در وغیرہ میں اس پر تصریح ہے (ت)

دودھ شریک بھائی سے نکاح نہ ہوسکتا خود ظاہر ہے مگر الزام اس حالت میں ہے جب انھیں دودھ شریک ہونا معلوم ہو، واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۳۵۱: از کانپور محلہ فراش خانہ عقب آبکاری سڑک جدید متصل کوڑھ گھر مکان حافظ زبیر حسن عطار مرسلہ سعید الحسن صاحب ۱۲ جمادی الآخرہ ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ کے ایک بیٹی مسماۃ رضیہ شوہر متوفی سے ہے، جب رضیہ کی عمر آٹھ برس دو مہینے کی تھی ہندہ نے رضیہ کا عقد بزمانہ نابالغی ساتھ خالد کے کردیا لیکن بوجہ نابالغی رضیہ اپنے شوہر کے ساتھ نہیں رخصت ہوئی بدستور اپنی ماں کے ساتھ رہی، اب زمانہ عقد کو چار سال سے زیادہ عرصہ گزرا اور رضیہ بھی

اب ہوشیار و بالغ ہوئی، اس درمیان خالد نے ایک دوسری عورت کو رکھ لیا جس سے اطفال بھی پیدا ہوئے، خالد کی وضع اور اطوار و چال چلن ہندہ و رضیہ کو تمام تر ناگوار ہیں اور تعلق ہونا خالد سے نہیں چاہتی کمال درجہ نفرت وانکار رکھتی ہے اور خلع چاہتی ہے، بحکم شرع شریف مسماۃ رضیہ کو کیا کرنا چاہئے جس سے اس کو خالد سے قطع تعلق ہو جائے اور عقد فضولی یہ عقد نابالغی کا قرار پائے گا یا نہیں؟ اور تعمیل حکم خلع کا کس طریقہ سے کیا جائے گا اور مدت نابالغی ازروئے شرع شریف ہندوستان میں علی الخصوص ممالک مغرب شمال کے لئے کس سنہ وسال کی مقدار سے ہے؟ بینوا توجروا

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱-۱۹۲ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲-۱۹۱

Fatwa Razawiyya, Volume 11

The Answer: In the case presented, if Khalid is not a match (Kafu) for Razia, meaning he is lower in terms of religion, lineage, or profession such that her marriage to him would be a cause of shame and dishonor for her guardians, then this marriage did not take place at all. However, if the person performing this marriage is Razia's grandfather, who has not previously married off a minor under his guardianship to a non-match, and this marriage occurred with his permission or he authorized it while still in his state of guardianship after the marriage, then the marriage is valid and binding. Even Razia's displeasure after reaching maturity cannot cause any harm to it.

And if Khalid is a match for Razia in the mentioned sense, but there was a male 'Asaba' (agnatic) guardian for Razia, such as a sane adult brother, nephew, paternal uncle, or uncle's son—in short, any male descendant of the grandfather—and the mother performed the marriage without his permission, then there are three possibilities: If that guardian, upon learning of the marriage while still in his state of guardianship, rejected it, then in this case too, the marriage becomes void, and even Razia's later consent cannot validate it. And if he remained silent after hearing about it, neither rejecting nor validating it, then the marriage was an unauthorized (Fuzuli) marriage and dependent on the guardian's permission. Once Razia becomes an adult, that right of permission transfers to her. Now she has the choice: if she wishes to validate it, it will become valid; if she wishes to reject it, for example, by saying "I have rejected this marriage, I am not happy with it," or "I do not accept this marriage," it will be rejected. Just saying this much is enough; nothing more is needed. This choice remains with Razia forever until she validates the marriage, after which the right to reject no longer remains.

And if the aforementioned non-grandfather guardian heard of the marriage and validated it, or if the mother performed the marriage without the permission of the mentioned guardian from the start, or if there was no 'Asaba' guardian for Razia at all and the mother herself was the guardian who performed the marriage—in all these cases, the marriage became valid and binding. However, since the person performing the marriage was other than the father or grandfather and Razia is a virgin, she is given the right that immediately upon reaching maturity, she can choose to annul the marriage. If she allows some time to pass after maturity without expressing an intention to annul, the marriage becomes complete and binding, and her consent or lack thereof no longer matters.

In this last scenario, and also in the previous scenario where the marriage became binding because the grandfather performed it, if Razia wants separation, she has no means other than seeking 'Khula' (divorce initiated by the wife). She should ask the husband for a divorce in exchange for her dower or other property that the husband agrees upon. If he grants it, the relationship will end; otherwise, patience is required. It is stated in 'Fath al-Qadir':

[Box Content] Arabic: Al-sabiyu idha ba'a aw-ishtara aw tazawwaja yatawaqqafu 'ala ijazat-il-waliyyi fi halat-is-sighari falaw balagha qabla an yujizah-ul-waliyyu fa-ajaza binafsihi nafadha li-annaha kanat... Urdu Translation: When a child has engaged in buying and selling or marriage, these matters will depend on the guardian's permission. And if that guardian has not given permission before the child's maturity, then the boy can execute these matters after his maturity because...

फतावा रज़विया, खंड 11

अल-जवाब (उत्तर): प्रश्नगत मामले में, यदि खालिद रज़िया का 'कुफ़ू (समान) नहीं है, अर्थात वह धर्म, वंश या पेशे आदि में इतना नीचा है कि उसके साथ रज़िया का निकाह होना रज़िया के अभिभावकों के लिए अपमान और कलंक का कारण बने, तो यह निकाह हुआ ही नहीं। लेकिन, यदि यह निकाह करने वाला रज़िया का दादा है, जिसने पहले अपनी अभिभावकता में किसी नाबालिग का निकाह 'गैर-कुफ़ू से न किया हो, और यह निकाह उसकी अनुमति से हुआ या निकाह के बाद उसने अपनी अभिभावकता की स्थिति में इसे लागू कर दिया, तो निकाह वैध और अनिवार्य (लाज़िम) है। रज़िया के वयस्क होने के बाद उसकी नाराज़गी भी इसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती।

और यदि खालिद उक्त अर्थ में रज़िया का 'कुफ़ू है, लेकिन रज़िया के लिए कोई 'असबा' वली (पुरुष अभिभावक) मौजूद था, जैसे कि समझदार वयस्क भाई, भतीजा, चाचा या चाचा का बेटा—संक्षेप में दादा की संतानों में से कोई पुरुष—और माँ ने उसकी अनुमति के बिना निकाह कर दिया, तो तीन स्थितियाँ हैं: यदि उस वली ने निकाह की सूचना मिलने पर अपनी अभिभावकता की स्थिति में इसे अस्वीकार कर दिया था, तो उस स्थिति में भी वह निकाह शून्य हो गया। अब रज़िया की सहमति भी इसे लागू नहीं कर सकती। और यदि सुनकर अब तक चुप रहा, न अस्वीकार किया न वैध किया, तो वह निकाह 'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' था और वली की अनुमति पर निर्भर था। जब रज़िया वयस्क हुई, तो अनुमति देने का वह अधिकार स्वयं उसकी ओर स्थानांतरित हो गया। अब उसे अधिकार है चाहे तो वह इसे वैध कर दे तो यह वैध हो जाएगा, चाहे तो वह इसे अस्वीकार कर दे। उदाहरण के लिए, वह कह दे कि "मैंने इस निकाह को अस्वीकार कर दिया है, मैं इस निकाह से सहमत नहीं हूँ," या "मुझे यह निकाह मंज़ूर नहीं है।" सिर्फ इतना कहने से निकाह अस्वीकृत हो जाएगा, किसी और बात की आवश्यकता नहीं है। और यह अधिकार रज़िया के पास तब तक हमेशा रहेगा जब तक वह निकाह को वैध नहीं कर देती, जिसके बाद अस्वीकार करने का अधिकार नहीं रहता।

और यदि उक्त 'वली गैर-जद' (दादा के अलावा अन्य अभिभावक) ने सुनकर इसे वैध कर दिया, या शुरुआत में ही माँ ने उक्त वली की अनुमति के बिना निकाह कर दिया, या रज़िया के लिए कोई 'असबा' वली था ही नहीं, माँ ही स्वयं वली थी जिसने निकाह किया—इन सभी स्थितियों में वह निकाह वैध और लागू हो गया। लेकिन चूंकि निकाह करने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है और रज़िया कुंवारी है, उसे इतना अधिकार प्राप्त है कि वयस्क होते ही तुरंत इस निकाह को निरस्त (फ़स्ख़) करना चाहे तो निरस्त कर दिया जाएगा। यदि वयस्क होने के बाद कुछ समय बीत गया और

उसने निरस्त करने का इरादा ज़ाहिर नहीं किया, तो निकाह पूर्ण और अनिवार्य हो गया। अब उसकी सहमति या असहमति का कोई महत्व नहीं रहा।

इस अंतिम स्थिति में और पिछली स्थिति में भी जब दादा द्वारा निकाह करने से वह अनिवार्य हो चुका हो, यदि रज़िया अलगाव चाहती है, तो उसके पास 'खुला' (पत्नी द्वारा तलाक़ की मांग) चाहने के अलावा और कोई जरिया नहीं है। वह अपने मेहर या अन्य संपत्ति के बदले, जिस पर पति सहमत हो, पति से तलाक़ मांगे। यदि वह दे देगा तो संबंध समाप्त हो जाएगा, अन्यथा सब्र करना अनिवार्य है। 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

[बॉक्स सामग्री] अरबी: الصبي اذاباع اواشترى او تزوج يتوقف على اجازة الولي في حالة الصغر فلو بلغ قبل ان يجيزه الولي فأجاز بنفسه نفذ لانها كانت उर्दू अनुवाद: बच्चे ने जब खरीद-बिक्री या निकाह कर लिया तो ये मामले वली की अनुमति पर निर्भर होंगे, और अगर उस वली ने बच्चे के वयस्क होने से पहले अनुमति न दी हो, तो लड़का अपने वयस्क होने के बाद इन मामलों को लागू कर सकता है क्योंकि...

فتاویٰ رضویہ، جلد یازدہم

الجواب: صورت مسئولہ میں اگر خالد رضیہ کا کفو نہیں یعنی مذہب یا نسب یا پیشے وغیرہ میں ایسا کم ہے کہ اس کے ساتھ رضیہ کا عقد ہونا اولیائے رضیہ کے لئے موجب ننگ و عار ہو جب تو یہ نکاح سرے سے نہ ہوا، مگر یہ نکاح کرنے والا رضیہ کا دادا ہو جو اس سے پہلے اپنی ولایت سے کسی نابالغ کا نکاح غیر کفو سے نہ کر چکا ہو یہ نکاح اس کے اذن سے ہوا یا بعد نکاح اس نے اپنی ولایت کی حالت میں نافذ کر دیا جائز رہا تو نکاح صحیح و لازم ہے کہ بعد بلوغ رضیہ کی ناراضی بھی اسے کچھ ضرر نہیں پہنچا سکتی،

اور اگر خالد رضیہ کا کفو بمعنیٰ مذکور ہے مگر رضیہ کے لئے کوئی ولی عصبہ مثلاً عاقل بالغ بھائی یا بھتیجا یا چچا یا چچا کا بیٹا غرض دادا کی اولاد سے کوئی مرد موجود تھا اور ماں نے بغیر اس کے اذن کے نکاح کر دیا تو تین صورتیں ہیں اگر اس ولی نے نکاح کی اطلاع پا کر اپنی حالت ولایت میں رد کر دیا تھا تو اس صورت میں بھی وہ نکاح باطل ہو گیا کہ اب رضیہ کی رضا بھی اسے نافذ نہیں کر سکتی اور اگر سن کر اب تک ساکت رہا نہ رد کیا نہ جائز رکھا تو وہ نکاح نکاح فضولی اور اجازت ولی پر موقوف تھا، جب رضیہ بالغ ہوئی وہ اجازت خود اس کی طرف منتقل ہو آئی، اب اسے اختیار ہے چاہے جائز کر دے جائز ہو جائے گا چاہے رد کر دے، مثلاً کہہ دے میں نے اس نکاح کو رد کر دیا میں اس نکاح پر راضی نہیں، یا مجھے یہ نکاح نا منظور ہے، صرف اتنے کہنے سے رد ہو جائے گا زیادہ کسی امر کی حاجت نہیں، اور یہ اختیار رضیہ کو ہمیشہ رہے گا جب تک نکاح کو جائز نہ کر دے کہ اس کے بعد پھر اختیار رد نہیں رہتا

اور اگر نکاح مذکور ولی غیر جد نے سن کر جائز کر دیا یا ابتداءً نکاح ماں نے بے اذن ولی مذکور کیا یا رضیہ کے لئے کوئی ولی عصبہ تھا ہی نہیں خود ماں ولی تھی جس نے نکاح کر دیا ان سب صورتوں میں وہ نکاح صحیح و نافذ ہو گیا مگر از انجا کہ نکاح کنندہ غیر اب و جد اور رضیہ دوشیزہ ہے اسے اتنا اختیار ملا کہ معاً بالغ ہوتے ہی فوراً فوراً اس نکاح کو فسخ چاہے تو فسخ کر دیا جائے گا اگر بعد بلوغ ذرا دیر گزری اور اس نے فسخ کا ارادہ ظاہر نہ کیا تو نکاح تام و لازم ہو گیا کہ اب اس کی رضا و عدم رضا کچھ دخل نہ رہا،

اس صورتِ اخیرہ اور نیز اس صورتِ سابقہ میں جبکہ نکاح دادا کے کردینے سے لازم ہو چکا ہو، رضیہ اگر جدائی چاہے تو اس کے ہاتھ کوئی ذریعہ سوا خلع چاہنے کے نہیں بہ عوض مہر خواہ اور مال کے جس پر شوہر راضی ہو شوہر سے طلاق مانگے اگر وہ دے دے گا قطع تعلق ہو جائے گا ورنہ صبر لازم ہے، فتح القدیر میں ہے:

[باکس کی تحریر] عربی: الصبی اذاباع اواشتری او تزوج یتوقف علی اجازۃ الولي في حالة الصغر فلو بلغ قبل ان یجیزہ الولي فأجاز بنفسه نفذ لانها كانت اردو: بچے نے جب خرید و فروخت یا نکاح کر لیا تو یہ امور ولی کی اجازت پر موقوف ہوں گے، اور اگر اس ولی نے بچے کے بلوغ سے قبل اجازت نہ دی ہو تو لڑکا اپنے بلوغ کے بعد ان امور کو نافذ کر سکتا ہے کیونکہ

Fatawa Razvia - Volume 11

[Arabic quote]: They are suspended and are not executed merely by his reaching puberty (summarized). In Tanvir al-Absar, the option of a virgin is voided by silence while knowing of the marriage, and it does not extend beyond the assembly even if she was ignorant of it. The rest of the matters are well-known and mentioned in books.

[Urdu text]: They were suspended, therefore they would not be executed solely by the boy reaching puberty (summarized). And it is in Tanvir al-Absar that if a mature virgin remains silent after becoming aware of her marriage, her right to annulment is invalidated, and it will not remain until the end of the assembly in which she gained knowledge, even if she is ignorant of this rule. Other matters are famous and mentioned in books. (T)

The limit of childhood is up to the age of fifteen years. Before this duration, if signs of puberty like nocturnal emission (for boys) or menstruation (for girls) appear after the age of nine for a girl or twelve for a boy, the ruling of puberty will apply from that time. Otherwise, upon completing fifteen years of age, both the boy and the girl will be considered absolutely mature, even if no sign of puberty has appeared. This is the fatwa, as stated in Durr al-Mukhtar etc., due to the shortness of our time (and the fatwa is on this, as in Durr al-Mukhtar etc., because the lifespans in our time are short, T).

Problem 352: From Ahmedabad, Gujarat, Mohalla Chakla Kalupur, near Galiyara bridge, sent by Maulvi Hakim Abdul Rahim Sahib, 16 Rabi al-Awwal 1320 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person wrote from a journey to another person to arrange the engagement of his daughter, saying "engage my daughter with such-and-such boy." Both the boy and girl are minors. The person who was only given permission for engagement, acting as a guardian himself, performed the marriage after the engagement. When the father found out that the girl's marriage, for which only engagement authority was given, has been performed, he was pleased with it and did not refuse the marriage he conducted. Now, is this marriage valid according to Sharia or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Permission for engagement was not permission for marriage.

[Arabic quote]: For this is a contract and that is a promise, and a promise may be made so that the suitor waits and then considers.

[Urdu text]: Because marriage is a contract and engagement is just a promise, whereas a promise is sometimes made so that the one seeking engagement [waits]...

---

1. Fath al-Qadir, Section on Agency in Marriage, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 3/198
2. Durr al-Mukhtar, Commentary on Tanvir al-Absar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193
3. Durr al-Mukhtar, Book of Hajj, Section on Puberty, Mujtabai Press, Delhi, 2/199

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

[अरबी उद्धरण]: वे निलंबित हैं और केवल उसके वयस्क होने पर प्रभावी नहीं होते हैं (संक्षेप में)। और तनवीर अल-अब्सार में है: निकाह के बारे में जानने पर कुंवारी का विकल्प उसकी चुप्पी से अमान्य हो जाता है, और यह उस सभा से आगे नहीं बढ़ता है, भले ही वह इस नियम से अनभिज्ञ हो। बाकी मामले प्रसिद्ध हैं और किताबों में वर्णित हैं।

[उर्दू पाठ]: वे निलंबित थे इसलिए केवल लड़के के बालिग़ होने से प्रभावी नहीं होंगे (संक्षेप में)। और तनवीरुल अब्सार में है कि बालिग़ा कुंवारी अगर अपने निकाह का इल्म होने पर खामोश रहे तो उसका फ़स्ख़ (निकाह रद्द करने) का हक़ बातिल हो जाता है और जिस महफ़िल में इल्म हुआ उस महफ़िल के इख़्तेताम (समापन) तक बाक़ी न रहेगा अगरचे वह इस मसले में जाहिल (अनभिज्ञ) हो, बाक़ी मसाइल मशहूर और कुतुब में मज़कूर हैं। (त)

नाबालिग़ी की हद पन्द्रह साल की उम्र तक है, इस मुद्दत से पहले अगर बेटी को नौ बरस या बेटे को बारह बरस की उम्र के बाद बुलूग़ (वयस्कता) के लक्षण जैसे स्वप्नदोष या मासिक धर्म ज़ाहिर हो गए तो उस वक़्त से बुलूग़ का हुक्म लागू हो जाएगा वरना पन्द्रह बरस की उम्र पूरी होने पर लड़का और लड़की दोनों पूर्ण रूप से बालिग़ समझे जाएंगे चाहे बुलूग़ का कोई लक्षण ज़ाहिर न हो। इसी पर फ़तवा है जैसा कि दुर्रे मुख्तार वगैरह में है क्योंकि हमारे ज़माने की उम्रें कम हैं। (त)

मसला 352: अहमदाबाद गुजरात, मोहल्ला चकला कालूपुर, पुल गलियारा के पास से मौलवी हकीम अब्दुल रहीम साहब द्वारा प्रेषित, 16 रबीउल अव्वल 1320 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि एक शख्स ने अपनी लड़की की मंगनी करने के लिए सफर से दूसरे शख्स को लिखा कि मेरी लड़की की मंगनी फलां लड़के के साथ करना। लड़का और लड़की दोनों नाबालिग हैं। यहाँ उस शख्स ने जिसे सिर्फ मंगनी की इजाज़त दी गई थी, खुद वली (अभिभावक) बनकर मंगनी के बाद निकाह भी कर दिया। उसके पिता को खबर हुई कि लड़की का निकाह कर दिया गया है जिसके लिए सिर्फ मंगनी का अधिकार दिया था, तो वह शख्स इससे खुश हुआ और उसके द्वारा कराए गए निकाह पर इनकार नहीं किया। अब क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार संपन्न हुआ या नहीं? बयान फरमाएं और पुण्य (सवाब) पाएं।

उत्तर: मंगनी की इजाज़त निकाह की इजाज़त नहीं थी।

[अरबी उद्धरण]: क्योंकि यह (निकाह) एक अनुबंध है और वह (मंगनी) एक वादा है, और वादा कभी इसलिए किया जाता है ताकि मंगनी करने वाला इंतज़ार करे और फिर सोचे।

[उर्दू पाठ]: क्योंकि निकाह एक अनुबंध (अक़्द) है और मंगनी सिर्फ एक वादा है, जबकि वादा कभी इसलिए कर लिया जाता है ताकि मंगनी करने वाले का...

---

1. फतहुल कदीर, निकाह में वकालत का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/198
2. दुर्रे मुख्तार, तनवीरुल अब्सार की व्याख्या, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/193
3. दुर्रे मुख्तार, हज की किताब, बुलूग़ (वयस्कता) का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/199

متوقفة ولاتنفذ بمجرد بلوغه اھ مختصرا وفي تنویر الابصار بطل خیار البکر بالسکوت عالمة بالنکاح ولایمتد الی المجلس وان جھلت به وباقي المسائل مشھورة وفي الکتب مذکورة۔

موقوف تھے اس لئے صرف لڑکے کے بلوغ سے نافذ نہ ہوں گے اھ مختصرا۔ اور تنویر الابصار میں ہے باکرہ بالغہ اگر اپنے نکاح کا علم ہو جانے پر خاموش رہے تو اسکا حق فسخ باطل ہو جاتا ہے اور جس مجلس میں علم ہوا اس مجلس کے اختتام تک باقی نہ رہے گا اگرچہ وہ اس مسئلہ میں جاہل ہو، باقی مسائل مشہور اور کتب میں مذکور ہیں، (ت)

نابالغی کی حد پندرہ سال کی عمر تک ہے، اس مدت سے پہلے اگر دختر کو نو برس یا پسر کو بارہ برس کی عمر کے بعد آثار بلوغ مثل احتلام و حیض ظاہر ہو گئے تو اس وقت سے حکم بلوغ ہو جائے گا ورنہ پندرہ برس کی عمر پوری ہونے پر لڑکا لڑکی دونوں مطلقا بالغ سمجھے جائیں گے اگرچہ کوئی علامت بلوغ ظاہر نہ ہو بہ یفتی کما فی الدرالمختار وغیرہ لقصر زماننا (اور اس پر فتوی ہے جیسا کہ درمختار وغیرہ میں ہے کیونکہ ہمارے زمانے کی عمریں کم ہیں، ت)

مسئلہ ۳۵۲ : از احمد آباد گجرات محلہ چکلہ کالوپور متصل پل گلیارہ مرسلہ مولوی حکیم عبدالرحیم صاحب ۱۶ ربیع الاول ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی لڑکی کی منگنی کرنے کے لئے سفر سے دوسرے شخص پر لکھا کہ میری لڑکی کی منگنی فلاں لڑکے کے ہمراہ کرنا لڑکا لڑکی دونوں نابالغ ہیں یہاں اس شخص نے جس کو فقط منگنی کی اجازت دی گئی تھی خود ولی ہو کر بعد منگنی کے نکاح بھی کر دیا اس کے والد کو خبر

ہوئی کہ لڑکی کا نکاح جس کو منگنی کا اختیار دیا تھا کر دیا اس سے یہ شخص خوش ہوا اور اس کے پڑھائے ہوئے نکاح پر انکار نہ کیا، اب یہ نکاح عند الشرع منعقد ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: منگنی کی اجازت نکاح کی اجازت نہ تھی،

فان هذا عقد وذاك وعد وقد يفعل الوعد لينتظر لخاطب ثم ينظر

کیونکہ نکاح عقد ہے اور منگنی صرف وعدہ ہے جبکہ وعدہ کبھی اس لئے کر لیا جاتا تاکہ منگنی کرنے والے کا

---

1 فتح القدیر فصل فی الوکالۃ بالنکاح مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۸/۳ 2 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۳/۱ 3 درمختار کتاب الحج فصل فی البلوغ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۹/۲

Fatawa Razawiya, Volume 11

(Arabic) It will be examined and reflected upon, and a delay is made so that if it is appropriate, the engagement is accepted, otherwise it is rejected. Therefore, consent to a promise cannot be considered consent to the marriage contract; this matter is obvious.	**(Urdu) It should be examined and reflected upon, and a delay is made so that if it is appropriate, the engagement is accepted, otherwise it is rejected. Therefore, consent to a promise cannot be considered consent to the marriage contract; this matter is obvious. (T)**

So this marriage became an unauthorized (fuzuli) marriage and remained dependent on the guardian's (wali) permission. If, after hearing the news, the guardian manifested its execution through words or actions, it became effective. Simply being happy in the heart and not rejecting with the tongue is not enough because "silence and a silent person cannot be attributed a statement" (for this is silence, and no statement can be attributed to the one who is silent. T). It is stated in Durr al-Mukhtar:

(Arabic) The guardian who has an objection to the dower (Mahr) or similar things, his receiving it indicates consent implicitly, not his silence, as long as she has not given birth. (Summarized)	**(Urdu) The girl's guardian had an objection to the dower (Mahr), yet he received the dower and performed an act that can be considered indicative of consent; then there will be implied consent. Mere silence will not be considered consent until a child is born to the girl. (Summarized) (T)**

Thus, if the situation is only to this extent, then the marriage remains dependent on his permission; he may nullify it or make it effective. And Allah Almighty knows best.

Problem 353: 22 Rabi-ul-Awwal 1320 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah, a widow, contracted her marriage with a respectable person from her family. Upon this, Amr, Bakr, and Khalid expelled her, her mother, and her husband from the community and caused them harm. What is the ruling in this? State and be rewarded.

The Answer: If Hindah performed her second marriage after the passing of the waiting period (iddah), and the second husband is not of a bad religious school such that the marriage would be void or a sin, and if Hindah has a male agnate (asabah)

relative as her guardian, then the second husband will be her equal (kufu). Or if he is not an equal but the guardian knowingly gave explicit permission before the marriage, then in these cases, there is no blame on Hindah, her mother, and her husband. Khalid, Amr, and Bakr are oppressors and sinners for causing them harm merely because of the second marriage, and they are caught in the violation of human rights (Haq-ul-Abd). Repentance is obligatory for them. If they do not do so, then these people themselves are worthy of being expelled from the community. Those who support Khalid, Amr, and Bakr will also be deserving of punishment. Allah Almighty says...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191

(अरबी) इसका जायज़ा लिया जाए और गौर किया जाए और देरी की जाती है ताकि वह अनुकूल हो तो मंगनी स्वीकार की जाए अन्यथा इनकार किया जाए, अतः वादे पर रज़ामंदी को निकाह के अनुबंध पर रज़ामंदी नहीं माना जा सकता, यह मामला स्पष्ट है।

(उर्दू) जायज़ा लिया जाए और गौर किया जाए और ताख़ीर (देरी) की जाती है ताकि वह मुवाफ़िक़ (अनुकूल) हो तो मंगनी क़बूल की जाए वरना इंकार किया जाए लिहाज़ा वादे पर रज़ा को अक़्द-ए-निकाह पर रज़ामंदी नहीं करार दिया जा सकता, यह मामला ज़ाहिर है। (त)

तो यह निकाह निकाह-ए-फ़ुज़ूली (अनधिकृत विवाह) हुआ और वली (अभिभावक) की इजाज़त पर मौक़ूफ़ (निर्भर) रहा, ख़बर सुनने के बाद अगर वली ने कौलन (वचन) या फेलन (कार्य) से उसकी तनफ़ीज़ (कार्यान्वयन) ज़ाहिर की तो नाफ़िज़ (प्रभावी) हो गया। सिर्फ दिल में खुश होना और ज़बान से इनकार न करना काफी नहीं है क्योंकि "सुकूत (चुप्पी) और साकित (चुप रहने वाले) की तरफ किसी कौल (कथन) को मंसूब (संबद्ध) नहीं किया जा सकता" (क्योंकि यह सुकूत है और साकित की तरफ कोई कौल मंसूब नहीं हो सकता। त)। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

(अरबी) वली जिसे महर या वैसी चीज़ों पर आपत्ति हो, उसका उसे प्राप्त करना रज़ामंदी का दलालतन (संकेत से) सूचक है, न कि उसकी चुप्पी, जब तक कि वह जन्म न दे दे। (सारांश)

(उर्दू) लड़की के वली को महर पर एतराज़ (आपत्ति) था इसके बावजूद उसने महर वसूल किया और ऐसा काम किया जिसको रज़ा पर दाल (सूचक) क़रार दिया जा सकता है तो दलालतन रज़ा होगी महज़ सुकूत रज़ा न करार पाएगा जब तक लड़की के यहाँ बच्चा पैदा न हो जाए अह् मुख़्तसरन। (त)

पस अगर वाक़या इसी कदर है तो निकाह बदस्तूर उसकी इजाज़त पर मौक़ूफ़ है बातिल कर दे ख़्वाह नाफ़िज़, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 353: 22 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1320 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि हिंदा बेवा ने अपना अक़्द (निकाह) एक शरीफ़ अपने खानदानी से कर लिया, इस पर अम्र व बक्र व खालिद ने उसे और उसकी माँ और शौहर को बिरादरी से निकाल दिया और ईज़ा (कष्ट) दी, इसमें क्या हुक्म है? बयिनू तूजरू (बयान करें और पुण्य पाएँ)।

अल-जवाब: अगर हिंदा ने अक़्द-ए-सानी (दूसरा निकाह) इद्दत गुज़रने के बाद किया और शौहर-ए-दोम (दूसरा पति) बद-मज़हब नहीं जिससे निकाह बातिल या गुनाह हो और हिंदा अगर कोई असबा (पुरुष रक्त संबंधी) अपना वली रखती है तो शौहर-ए-दोम उसका कुफ़ू (बराबर) होगा या अगर कुफ़ू नहीं और वली ने दीदा व दानिस्ता (जानबूझकर) पेश अज़ निकाह (निकाह से पहले) सरीह (स्पष्ट) इजाज़त दे दी हो तो इन सूरतों में हिंदा और उसकी माँ और शौहर पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। खालिद व अम्र व बक्र सिर्फ ब-वजह निकाह-ए-सानी उन्हें ईज़ा देते हैं, वे ज़ालिम व गुनहगार और हक़-उल-अब्द (मानव अधिकार उल्लंघन) में गिरफ़्तार हैं, उन पर तौबा फ़र्ज़ है। अगर न करें तो खुद यही लोग बिरादरी से निकाल देने के काबिल हैं। जो लोग इन खालिद व अम्र व बक्र का साथ देंगे वे भी मुस्तहिक़-ए-अज़ाब (सज़ा के पात्र) होंगे, अल्लाह तआला फ़रमाता है...

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-अल-वली, मतबा-ए-मुजतबाई दिल्ली, 1/191

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

(عربی) ویتأتی فیه فإن وافق أجیب وإلا منع فلا یکون الرضا بالوعد رضا بالعقد وھذا ظاھر جدا۔

(اردو) جائزہ لیا جائے اور غور کیا جائے اور تاخیر کی جاتی ہے تاکہ وہ موافق ہو تو منگنی قبول کی جائے ورنہ انکار کیا جائے لہذا وعدہ پر رضا کو عقد نکاح پر رضا مندی نہیں قرار دیا جاسکتا، یہ معاملہ ظاہر ہے۔ (ت)

تو یہ نکاح نکاح فضولی ہوا اور اجازت ولی پر موقوف رہا، بعد سماع خبر اگر ولی نے قولاً یا فعلاً اس کی تنفیذ ظاہر کی نافذ ہو گیا صرف دل میں خوش ہونا اور زبان سے انکار کافی نہیں لانہ سکوت والساکت لا ینسب الیه قول (کیونکہ یہ سکوت ہے اور ساکت کی طرف کوئی قول منسوب نہیں ہوسکتا۔ ت) در مختار میں ہے:

(عربی) قبض ولی له الاعتراض المھر ونحوہ مما یدل علی الرضی دلالة لا سکوتہ مالم تلد ۱ھ مختصرا۔

(اردو) لڑکی کے ولی کو مہر پر اعتراض تھا اس کے باوجود اس نے مہر وصول کیا اور ایسا کام کیا جس کو رضا پر دال قرار دیا جاسکتا ہے تو دلالتہً رضا ہو گی محض سکوت رضا نہ قرار پائے گا جب تک لڑکی کے ہاں بچہ پیدا نہ ہو جائے اھ مختصرا۔ (ت)

پس اگر واقع اسی قدر ہے تو نکاح بدستور اس کی اجازت پر موقوف ہے باطل کر دے خواہ نافذ ، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۵۳: ۲۲ ربیع الاول شریف ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ بیوہ نے اپنا عقد ایک شریف اپنے خاندانی سے کرلیا اس پر عمر و بکر و خالد نے اسے اور اس کی ماں اور شوہر کو برادری سے نکال دیا اور ایذادی، اس میں کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر ہندہ نے عقد ثانی بعد عدت گزرنے کے کیا اور شوہر دوم بد مذہب نہیں جس سے نکاح باطل یا گناہ ہو اور ہندہ اگر کوئی عصبہ اپنا ولی رکھتی ہے تو شوہر دوم اس کا کفو ہو گا یا اگر کفو نہیں اور ولی نے دیدہ و دانستہ پیش از نکاح صریح اجازت دے دی ہو تو ان صورتوں میں ہندہ اور اس کی ماں اور شوہر پر کچھ الزام نہیں خالد و عمرو بکر صرف بوجہ نکاح ثانی انھیں ایذا دیتے ہیں ظالم و گنہگار اور حق العبد میں گرفتار ہیں ان پر توبہ فرض ہے، اگر نہ کریں تو خود یہی لوگ برادری سے نکال دینے کے قابل ہیں جو لوگ ان خالد و عمر و بکر کا ساتھ دیں گے وہ بھی مستحق عذاب ہوں گے ، اللہ تعالیٰ فرماتا ہے

---

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

'And do not cooperate in sin and aggression.' (Quran 5:2) / Do not help each other in sin and transgression.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: 'Whoever harms a Muslim has surely harmed me, and whoever harms me has surely harmed Allah.' / Whoever harms a Muslim unjustly has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah Almighty. And Allah Almighty knows best.

Problem 352: 27 Rabi al-Akhir 1310 AH What do the scholars of religion say in this matter that a girl is ten years old; between the mother, maternal grandmother, and paternal uncle, who has the right of her marriage (Nikah)? And the daughter also has a twelve-year-old brother. Please explain and be rewarded. The Answer: The paternal uncle has it if the brother is a minor, otherwise the brother has it. Puberty is possible at the age of twelve; if he claims puberty, it will be accepted, as stated in al-Durr al-Mukhtar (as in Durr al-Mukhtar. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 355: Questioned by Mr. Karamuddin, resident of Jalalpur Jattan, Sahowal neighborhood, District Gujrat, Punjab. What do the scholars of the firm religion and the luminaries of clear Islam say in this case: Khalid married off his minor daughter, whose age was approximately ten or eleven years, to Rahim Bakhsh, an adult. Now, due to some conflict, the aforementioned adult daughter wants the marriage to be annulled (faskh). Is it legally (according to Sharia) possible for the said contract to be annulled by the choice of the described daughter? Please explain and be rewarded. The Answer: When a father or grandfather marries off a minor, it becomes binding. Neither the girl after reaching puberty nor anyone else can annul it, except in only two or three situations, the details of which are not needed at this time. 'And he who does not know the people of his time is ignorant.' (He who is unaware of the customs of his time is ignorant. T). The questioner should provide detailed information about what that conflict is due to which the woman now wants annulment, and regarding that conflict...

1. Al-Quran Al-Karim 2/5
2. Kanz al-Ummal with reference to Tabrani from Anas, Hadith, Mu'assasatu al-Risalah Beirut 10/12, al-Targhib wa al-Tarhib regarding stepping over necks on Friday, Mustafa al-Babi Egypt 1/504

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

'और पाप और ज़्यादती में आपस में मदद न करो।' (कुरान 5:2) / गुनाह और ज़्यादती में बाहम मदद न करो।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: 'जिसने किसी मुसलमान को सताया उसने मुझे दुःख पहुँचाया और जिसने मुझे दुःख पहुँचाया उसने अल्लाह को दुःख पहुँचाया।' / जिसने किसी मुसलमान को नाहक़ सताया उसने मुझे ईज़ा (कष्ट) दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह तआला को ईज़ा दी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 352: 27 रबी-उल-आख़िर शरीफ़ 1310 हिजरी दीनी विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक लड़की दस बरस की है; माँ, नानी, चाचा में से किसे उसके निकाह का अधिकार है? और लड़की का एक बारह साला भाई भी है। बयान फ़रमाएं पुण्य मिलेगा। उत्तर: चाचा को है अगर भाई नाबालिग हो, वरना भाई को। बारह बरस की उम्र में बुलूग (वयस्कता) मुमकिन है; अगर वह बुलूग का दावा करे तो माना जाएगा, जैसा कि 'दुर-ए-मुख़्तार' में है। (जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार में है। त.) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 355: सवालकर्ता करम उद्दीन साहब, निवासी जलालपुर जट्टां, मोहल्ला साहोवाल, ज़िला गुजरात, मुल्क पंजाब। दीनी विद्वान और इस्लाम के ज्ञानी इस मामले में क्या फ़रमाते हैं: खालिद ने अपनी नाबालिग लड़की, जिसकी उम्र अंदाज़ा दस या ग्यारह बरस की थी, का निकाह रहीम बख़्श बालिग के साथ करा दिया। अब किसी फ़साद के कारण उक्त बालिग लड़की चाहती है कि निकाह फ़स्ख़ (निरस्त) हो जाए। क्या शरअन मुमकिन है कि उक्त अनुबंध उक्त लड़की की इच्छा से फ़स्ख़ हो जाए? बयान फ़रमाएं पुण्य मिलेगा। उत्तर: बाप या दादा जो नाबालिग का निकाह कर दें, वह लाज़िम (अनिवार्य) हो जाता है। बालिग होने के बाद न तो वह लड़की और न ही कोई और उसे फ़स्ख़ कर सकता है, सिवाय सिर्फ दो-तीन सूरतों के, जिसकी इस वक्त तफ़सील (विस्तार) की ज़रूरत नहीं। 'और जो अपने ज़माने के लोगों को नहीं जानता वह जाहिल है।' (जो अपने ज़माने के उरफ़ से नावाकिफ़ है वह जाहिल है। त.) सवालकर्ता को चाहिए कि मुफ़स्सल (विस्तृत) कैफियत से मुत्तला (अवगत) करें कि वह क्या फ़साद है जिसके कारण अब औरत फ़स्ख़ चाहती है और उस फ़साद पर...

1. अल-क़ुरान अल-करीम 2/5

2. कंज़ुल उम्माल बहवाला तबरानी अन अनस हदीस, मुअस्ससतु अल-रिसाला बैरूत 10/12, अल-तर्गीब वल-तर्हीब अन् तख़त्ती अल-रक़ाब यौम अल-जुमुआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/504

पृष्ठ 628 / 739

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ 1 / گناہ اور زیادتی میں باہم مدد نہ کرو۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: مَنْ أذى مسلماً فَقَدْ آذَانِي وَمَنْ آذَانِي فَقَدْ آذَى اللہ 2 / جس نے کسی مسلمان کو ناحق ستایا اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ تعالیٰ کو ایذا دی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۵۲ : ۲۷ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی دس برس کی ہے ، ماں نانی چچا میں سے کس کو اس کے نکاح کا اختیار ہے ؟ اور دختر کا ایک بھائی بھی دوازدہ سالہ ہے ۔ بینوا توجروا الجواب : چچا کو ہے اگر بھائی نابالغ ہو ورنہ بھائی کو، بارہ برس کی عمر میں بلوغ ممکن ہے اگر وہ دعویٰ بلوغ کرے مانا جائے گا کما فی الدرالمختار (جیسا کہ درمختار میں ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۵۵ : مسئولہ کرم الدین صاحب ساکن جلالپور جٹاں محلہ ساہو وال ضلع گجرات ملک پنجاب کیا فرماتے ہیں علمائے دین متین وفضلائے اسلام مبین اس صورت میں کہ خالد نے اپنی لڑکی نابالغہ جس کی عمر اندازی دس یا گیارہ برس کی تھی رحیم بخش بالغ کے ساتھ نکاح پڑھادیا اب بوجہ کوئی فساد کے دختر بالغہ مذکور چاہتی ہے کہ نکاح فسخ ہوجائے آیا شرعاً ممکن ہے کہ عقد مذکور باختیار دختر موصوفہ فسخ ہوجائے ۔ بینوا توجروا الجواب : باپ دادا جو نکاح نابالغہ کا کردیں وہ لازم ہوجاتا ہے۔ لڑکی بعد بلوغ کے خواہ کوئی اور اسے فسخ نہیں کرسکتا، مگر صرف دو تین صورتیں ہیں کہ جس کی اس وقت تفصیل کی حاجت نہیں ومن لم یعرف اھل زمانہ فھو جاہل

(جو اپنے زمانے کے عرف سے ناواقف ہے وہ جاہل ہے۔ت) مستفتی صاحب کو چاہئے کہ مفصل کیفیت سے مطلع کریں کہ وہ کیا فساد ہے جس کے سبب اب عورت فسخ چاہتی ہے اور اس فساد پر

1 القرآن الکریم ۲/۵ 2 کنز العمال بحوالہ طبرانی عن انس حدیث ، موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/۱۲ ، الترغیب والترھیب من تخطی الرقاب یوم الجمعہ مصطفی البابی مصر ۱/۵۰۴

Fatawa Rizvia - Volume 11

When was information received? And was the father aware of it at the time of marriage or not? Did that dispute arise after the marriage or was it already there? In short, if the whole situation is stated in full detail, then a response will be given. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic Box]: Marriage becomes binding even with [excessive] deception or to an unequal match if the guardian performing the marriage himself is the father or the grandfather, etc. And Allah knows best.

[Urdu Explanation Box]: Marriage will become binding when the person giving in marriage is the father or grandfather himself, even if it is for an extremely low dowry or to someone not of equal status, etc. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 356: Queried by Shah Mueen Ahmad Sahib from Post Office Nagri Station, Futuha, District Patna.

What do the scholars of religion say in this matter: Zainab has only one child, i.e., Hindah, an adult daughter. Hindah's father passed away. Zaid is Hindah's brother, Zainab is Hindah's mother, and Zaid, the paternal half-brother, fixed and finalized Hindah's engagement with Khalid bin Bakr, a resident of such-and-such place. Hindah became well aware of this because she lived in the same house and the conversation about the engagement took place in front of her. It was established for her that 'my engagement is at such-and-such place with such-and-such person,' although no one specifically told or asked her. After this, a note regarding the fixed date for the arrival of the wedding procession (Barat) came from Khalid bin Bakr; Hindah was informed of this as well. Consequently, on that day, she was groomed and performed all the customs prevalent there before marriage, such as sitting for Manjha (haldi ceremony), and did not show any kind of displeasure. Finally, on the fixed date, the wedding procession arrived and friends and relatives gathered inside and outside. Hindah was also aware of this. Even at that time, Hindah did not express any displeasure. Zaid and the half-brother appointed Amr as the proxy (Vakil) for marriage in front of several people. Amr went to where the wedding procession was staying and performed Hindah's marriage to Khalid bin Bakr with a dowry equal to her status (Mehr-e-Mithl) in front of everyone. However, Amr the proxy or Zaid the half-brother did not inform Hindah of this personally, but it was announced among the women that the marriage had taken place. It became public knowledge that the marriage was performed. After that, Hindah performed all the marriage customs

prevalent there very well and did not show any displeasure, until the departure (Rukhsati) took place and the time for intimacy arrived. Throughout all this aforementioned time, Hindah never expressed her displeasure, nor does she express any displeasure until now. So, is this marriage valid or does some kind of doubt or defect remain? This doubt arises only because Hindah was an adult virgin (Bikr-e-Baligha) and before the marriage, neither Zaid the half-brother nor anyone else explicitly sought her consent (istimzaj), nor was she explicitly informed after the marriage, even though she knew everything through external means and became aware, yet she did not express her consent until now.

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192. Page 629 of 739

कब सूचना मिली? और क्या पिता भी निकाह के समय इससे अवगत था या नहीं? क्या वह विवाद निकाह के बाद पैदा हुआ या पहले से था? संक्षेप में, यदि पूरी स्थिति विस्तार से बताई जाए, तो उत्तर दिया जाएगा। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी बॉक्स]: निकाह बाध्यकारी हो जाता है, भले ही अत्यधिक धोखे (ग़बन) के साथ हो या गैर-कुफ़ू (असमान कुल) में हो, यदि निकाह कराने वाला वली स्वयं पिता या दादा हो, आदि। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[उर्दू स्पष्टीकरण बॉक्स]: निकाह तब बाध्यकारी हो जाएगा जब निकाह कराने वाला स्वयं पिता या दादा हो, भले ही वह अत्यंत कम मेहर पर हो या गैर-कुफ़ू में हो, आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 356: प्रेषक शाह मुईन अहमद साहब, डाकघर नगरी स्टेशन, फुतूहा, जिला पटना।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैनब की केवल एक संतान है यानी हिंदा, जो बालिग बेटी है। हिंदा के पिता का निधन हो गया। ज़ैद हिंदा का भाई है, ज़ैनब हिंदा की माँ है, और सौतेले भाई ज़ैद ने हिंदा का रिश्ता फलां जगह के निवासी खालिद बिन बक्र से पक्का और तय कर दिया। हिंदा को इसकी पूरी खबर हो गई क्योंकि वह उसी घर में रहती थी और उसके सामने रिश्ते की बातचीत हुई और उस पर यह साबित हो गया कि 'मेरा रिश्ता फलां जगह फलां व्यक्ति से है', हालांकि किसी ने विशेष रूप से उससे न कहा और न पूछा। इसके बाद खालिद बिन बक्र की ओर से बारात आने की निश्चित तिथि का पत्र आया, इसकी सूचना भी हिंदा को मिली। तदनुसार उस दिन उसे संवारा भी गया और निकाह से पहले जो रीति-रिवाज वहां प्रचलित हैं, जैसे मांझा (हल्दी) आदि में बैठना, उन सब को उसने संपन्न किया और किसी तरह की नाराजगी जाहिर नहीं की। यहाँ तक कि निश्चित तिथि पर बारात आई और मित्र और रिश्तेदार अंदर-बाहर जमा हुए। इसकी सूचना भी हिंदा को हुई, उस समय भी हिंदा ने किसी तरह की नाराजगी जाहिर नहीं की। ज़ैद और सौतेले भाई ने कई व्यक्तियों के सामने अम्र को निकाह का वकील नियुक्त किया और अम्र ने जहाँ बारात ठहरी थी वहाँ जाकर सबके सामने खालिद बिन बक्र से हिंदा का निकाह मेहरे-मिस्ल (समान मेहर) पर करा दिया। लेकिन इसकी सूचना हिंदा को वकील अम्र या सौतेले भाई ज़ैद ने नहीं दी, बल्कि महिलाओं में कह दिया गया कि निकाह हो गया और यह बात प्रसिद्ध हो गई कि निकाह हो गया। इसके बाद शादी के जो-जो रीति-

रिवाज वहाँ प्रचलित हैं, उन सबको हिंदा ने बखूबी निभाया और किसी तरह की नाराजगी जाहिर नहीं की, यहाँ तक कि रुख़्सती भी हो गई और सुहागरात का समय भी आ गया। इन सभी उपर्युक्त समयों में हिंदा ने कभी अपनी नाराजगी जाहिर नहीं की और न ही इस समय तक किसी तरह की नाराजगी जाहिर करती है। तो क्या यह निकाह सही हुआ या किसी तरह का संदेह या दोष रह गया? यह संदेह केवल इस कारण उत्पन्न हुआ है कि हिंदा बालिग कुंवारी थी, उससे निकाह से पहले सौतेले भाई ज़ैद या किसी व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से उसकी सहमति (इस्तमज़ाज) नहीं ली और न ही निकाह के बाद उसे स्पष्ट रूप से खबर दी, हालांकि उसे बाहरी माध्यमों से सब बातें मालूम थीं और पता चलीं, और न ही उसने इस समय तक अपनी सहमति व्यक्त की है।

1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192. पृष्ठ 739 का 629

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

کب اطلاع ہوئی؟ اور باپ بھی وقت نکاح اس پر مطلع تھا یا نہیں؟ وہ فساد بعد نکاح حادث ہوا یا پہلے سے تھا؟ غرض سب حال، بتفصیلِ تمام بیان کیا جائے تو جواب دیا جائے، درمختار میں ہے:

[Arabic Box]: لزم النکاح ولو بغبن او بغیر کفو ان کان الولی المزوج بنفسه ابا او جدا الخ- واللہ تعالی اعلم-

[Urdu Explanation Box]: نکاح لازم ہو جائے گا جب نکاح دینے والا خود باپ یا دادا ہو اگرچہ انتہائی کم مہر سے یا غیر کفو میں ہو، الخ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۵۶: مسئولہ شاہ معین احمد صاحب از ڈاک خانہ نگری اسٹیشن فتوحہ ضلع پٹنہ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زینب کی کل ایک اولاد ہے یعنی ہندہ دختر بالغہ ہے ہندہ کے باپ نے قضا کیا، زید ہندہ کا بھائی ہے، زینب ہندہ کی ماں، اور زید برادرِ علاقی نے ہندہ کی نسبت خالد بن بکر ساکن فلاں جگہ سے مقرر و پختہ پڑ کیا، اس کی خبر ہندہ کو بخوبی ہوگئی اس طرح سے کہ ہندہ اسی مکان میں رہتی تھی اور اس کے سامنے نسبت کی گفتگو ہوئی اور اس پر ثابت ہوگیا کہ میری نسبت فلاں جگہ فلاں شخص سے ہے گو اس سے خاص کر کسی نے نہ کہا اور پوچھا نہیں اس کے بعد رقعہ تقرری تاریخ آمدِ برات کا خالد بن بکر کے یہاں سے آیا اس کی اطلاع بھی ہندہ کو ہوئی چنانچہ اس روز وہ سنواری بھی گئی اور جو مراسم کہ قبل نکاح اس طرف رائج ہیں مثلاً مانجہ وغیرہ میں بیٹھنا اس سب کو اس نے انجام دیا اور کسی طرح کی ناراضمندی نہیں ظاہر کیا یہاں تک کہ تاریخِ مقررہ پر برات آئی اور احباب واقربا اندر باہر جمع ہوئے، اس کی اطلاع بھی ہندہ کو ہوئی اس وقت بھی ہندہ نے کسی طرح ناراضمندی ظاہر نہیں کی، زید اور برادرِ

علاقی نے چند شخصوں کے سامنے عمرو کو وکیلِ بال نکاح مقرر کیا اور عمرو نے جہاں برات کا قیام تھا وہاں جاکر سب لوگوں کے سامنے خالد بن بکر سے ہندہ کا نکاح مہرِ مثل پر کرا دیا مگر اس کی اطلاع ہندہ کو عمرو وکیل نے یا زید برادرِ علاقی نے نہیں دی بلکہ عورتوں میں کہہ دیا گیا کہ نکاح ہو گیا___ اور یہ بات مشتہر ہو گئی کہ نکاح ہو گیا، اس کے بعد جو جو مراسم شادی اس طرف رائج ہیں ان سب کو ہندہ نے بخوبی ادا کیا اور کسی طرح کی ناراضمندی نہیں ظاہر کیا یہاں تک کہ رخصتی بھی ہوئی اور نوبتِ استراحت کی بھی آئی ان تمام متذکرہ بالا زمانہ میں کبھی ہندہ نے اپنی ناراضمندی ظاہر نہیں کی اور نہ اس وقت تک کسی طرح کی ناراضمندی ظاہر کرتی ہے تو یہ نکاح صحیح ہوا یا کسی طرح کا شبہ یا نقص رہ گیا، یہ شبہ صرف اس وجہ سے پیدا ہے کہ ہندہ بکرِ بالغہ تھی اس سے قبل نکاح زید برادرِ علاقی یا کسی شخص نے صراحۃً استمزاج نہیں لیا اور نہ بعدِ نکاح صراحۃً اس کو خبر دیا، گو اس کو خارجی طریقہ سے سب باتیں معلوم تھیں اور معلوم ہوئیں اور نہ اس وقت تک اپنی رضامندی ظاہر کرتی ہے

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ Page 629 of 739

Rather, she apparently seems happy. Please provide a ruling, and you will be rewarded.

The Answer: In this situation, this was an unauthorized (Fuduli) marriage. If, after hearing the news of the marriage, Hindah did not say or do anything to show her displeasure, but instead remained silent upon hearing news of the marriage from a reliable, just person, or if she did not hear it from a just person but the guardian sent word and she remained silent until she willingly cohabited with the husband, then the marriage became valid and complete.

[Boxed Text] Arabic: In al-Hindiyyah, it is stated: "If she allows the husband access to herself after the guardian has married her off, then it is consent." In al-Durr al-Mukhtar: "If her guardian married her off and his messenger or a just unauthorized person informed her and she remained silent, then it is permission." And Allah Almighty knows best. Urdu Translation: It is mentioned in al-Hindiyyah that when a mature woman allows her husband intercourse after the guardian has married her off, it constitutes her consent to the guardian's marriage. In al-Durr al-Mukhtar, it is stated that if the guardian conducted the marriage and the guardian's messenger or a just stranger informed the mature woman and she remained silent, it constitutes consent. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 357: From the resident of Ganj Gaya, sent by Maulvi Amiruddin Sahab, 4 Shaban 1327 AH.

What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this matter? A conflict arose between Zaid and his wife Hindah due to the instigation of wicked troublemakers. Zaid had a daughter from Hindah named Sa'idah, who was eleven years and eleven months old. Bakr wanted Sa'idah for his son Khalid, but Zaid did not approve. Then Bakr incited Hindah against Zaid, and Hindah caused such a disturbance that Zaid was forced by necessity, insistence, and fear of the district officials, thinking it would resolve all the conflict and strife, and it was also established that if this marriage takes place, all the trouble will be removed and a period of peace will follow. He agreed to this engagement, and Hindah married off her daughter to Khalid without permission. However, Khalid and Sa'idah have not met to this day, nor was any form of consent taken from Sa'idah, nor was she explained what was happening. After the marriage, Khalid went to London, and under the pretext of English education, he became involved in immorality,

debauchery, and idle pursuits there. It has been six years since Khalid has been in London; he neither studies nor returns, nor does he provide any kind of care or inquiry about Sa'idah. Zaid wrote to Bakr and Khalid—both father and son—that the wedding should be held and Khalid should come and take his wedded wife, but neither Khalid comes, nor is any kind of maintenance or expenses for Sa'idah provided by Khalid or his father Bakr, and rather from Zaid...

---

1 Fatawa Hindiyyah, The Fourth Chapter regarding Guardians, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/28. 2 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

बल्कि ज़ाहिरन ख़ुश मालूम होती है। हुक्म बयान फ़रमाएँ सवाब पाएँ।

अल-जवाब: इस सूरत में यह निकाह फुज़ूली (अनधिकृत) था। अगर निकाह की ख़बर सुनकर हिन्दह ने नाराज़गी का कोई क़ौल या फ़ेल (शब्द या कार्य) ज़ाहिर नहीं किया, बल्कि किसी आदिल सिक़ा (विश्वसनीय व्यक्ति) से निकाह की ख़बर सुनकर ख़ामोश ही रही या ख़बर किसी आदिल से न सुनी न वली ने उसे इत्तिला (सूचना) भेजी तो साकित (चुप) रही यहाँ तक कि शौहर से अपनी रज़ा (मर्जी) से हम-ख़्वाब (सहवास) हुई तो निकाह नाफ़िज़ और मुकम्मल हो गया।

[बॉक्स का इबारत] अरबी: हिन्दिया में है: "इज़ा मक्कनतुल ज़ौजा मिन नफ़्सिहा बादमा ज़व्वजहल वली फ़हुवा रिज़ा।" और दुर्रे मुख़्तार में है: "ज़व्वजहा वलिय्युहा व अख़बरहा रसूलुहु औ फुज़ूलिय्युन आदिलुन फ़सकतत फ़हुवा इज़्न।"-वल्लाह तआला आलम। उर्दू अनुवाद: हिन्दिया में है कि जब बालिग़ा ने शौहर को जिमाअ (सहवास) का मौक़ा दे दिया तो यह वली के निकाह पर उसकी रज़ामंदी होगी। दुर्रे मुख़्तार में है कि अगर वली ने निकाह दिया तो वली के क़ासिद (संदेशवाहक) ने या किसी आदिल अजनबी ने बालिग़ा को इत्तिला दी और वह उस पर ख़ामोश रही तो यह रज़ामंदी हो गई। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसअला ३५७: साहिबे गंज गया की जानिब से, मुर्सला (प्रेषक) मौलवी अमीरउद्दीन साहिब, ४ शाबान १३२७ हिजरी।

दीन के उलमा और शरीअते मतीन के मुफ़्तियान इस मसअले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद और उसकी ज़ौजा (पत्नी) हिन्दह में बदकार मुफ़सिदों (दुष्ट उपद्रवियों) के बहकावे से झगड़ा पैदा हुआ, और हिन्दह के बत्न (गर्भ) से ज़ैद की एक लड़की थी जिसका नाम सईदा था और उम्र ग्यारह बरस ग्यारह महीने की थी। बक्र ने अपने लड़के ख़ालिद के लिए सईदा का रिश्ता चाहा, ज़ैद को मंज़ूर न हुआ। तब बक्र ने हिन्दह ज़ौजा को भड़काया और हिन्दह ने इस क़दर फ़साद मचाया कि ज़ैद को मजबूरी हुई। मजबूरी और ताकीद और ज़िला के हाकिमों के ख़ौफ़ से इस ख़्याल से कि तमाम फ़साद और किस्सा ख़त्म हो जाएगा और यह भी साबित किया गया था कि अगर यह निकाह होगा तो सारा किस्सा दूर होगा और सुलह का ज़माना गुज़रेगा, उसने इस रिश्ते को मंज़ूर किया और हिन्दह ने अपनी लड़की का निकाह ख़ालिद से बिला इजाज़त (बिना अनुमति) कर दिया। लेकिन ख़ालिद और सईदा की आज तक मुलाक़ात नहीं हुई और न सईदा से किसी क़िस्म की रज़ामंदी ली गई, न सईदा को

समझाया गया कि क्या होता है। और निकाह के बाद ख़ालिद लन्दन चला गया और अंग्रेज़ी तालीम हासिल करने के बहाने वहाँ फ़िस्क़ व फ़ुजूर (पाप और अनाचार) और खेल-कूद में मुब्तला हो गया। छह साल हो गए कि ख़ालिद लन्दन में है, न पढ़ता है न आता है और न किसी क़िस्म की ख़बरगीरी या पूछताछ सईदा की करता है। ज़ैद ने बक्र और ख़ालिद को यानी बाप और बेटे दोनों को लिखा कि शादी कर ली जाए और ख़ालिद आए और अपनी मंकूहा (विवाहिता) को ले जाए, मगर न ख़ालिद आता है न किसी क़िस्म की कफ़ालत (भरण-पोषण) या सईदा के ख़र्चे की ज़िम्मेदारी ख़ालिद या बक्र उसके बाप की तरफ़ से होती है और बल्कि ज़ैद से...

---

१ फ़तावा हिन्दिया, अल-बाबुर राबेअ फ़िल औलिया, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, १/ २८ २ दुर्रे मुख़्तार, बाबल वली, मतबा मुजतबाई देहली १/ १९१

पृष्ठ ७३९ में से ६३०

بلکہ ظاہراً خوش معلوم ہوتی ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: اس صورت میں یہ نکاح فضولی تھا اگر خبر نکاح سن کر ہندہ نے کوئی قول یا فعل اظہار ناراضی کا نہ کیا بلکہ عادل ثقہ سے نکاح کی خبر سن کر خاموش ہی ہو رہی یا خبر کسی عادل سے نہ سنی نہ ولی نے اسے اطلاع کر بھیجی تو ساکت رہی یہاں تک کہ شوہر سے برضا ہم خواب ہوئی تو نکاح نافذ و تمام ہو گیا۔

[باکس کی عبارت] عربی: فی الھندیۃ اذا مکنت الزوج من نفسھا بعدما زوجھا الولی فھو رضا[1] و فی الدر المختار زوجھا ولیھا واخبرہا رسولہ اوفصولی عدل فسکتت فھو اذن[2]-واللہ تعالی اعلم۔ اردو: ہندیہ میں ہے کہ جب بالغہ نے خاوند کو جماع کا موقع دے دیا تو یہ ولی کے نکاح پر اس کی رضامندی ہوگی، درمختار میں ہے کہ اگر ولی نے نکاح دیا تو ولی کے قاصد نے یا کسی عادل اجنبی نے بالغہ کو اطلاع دی اور وہ اس پر خاموش رہی تو یہ رضامندی ہو گئی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۵۷: از صاحب گنج گیا مرسلہ مولوی امیر الدین صاحب ۴ شعبان ۱۳۲۷ھ

علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ زید اور اس کی زوجہ ہندہ میں جنگ با غوائے مفسدانِ بد کاران پیدا ہوا، اور ہندہ کے بطن سے ایک لڑکی زید کی جس کا نام سعیدہ تھا اور عمر گیارہ برس گیارہ مہینے کی تھی بکر نے اپنے لڑکے خالد کی منسوب سعیدہ سے چاہا زید کو منظور نہ ہوا تب بکر نے ہندہ زوجہ کو برہم کرایا اور ہندہ نے اس قدر فساد مچایا کہ زید کو مجبوری ہوئی بمجبوری و تاکید و بخوفِ حکام ضلع بخیال اس کے کہ رفعِ جملہ فساد وقصہ ہو جائے گا اور یہ ثابت بھی کیا گیا تھا کہ اگر یہ عقد ہوگا تو قصہ سب دفع ہوگا صلح سے

زمانہ گزرے گا اس منسوب کو منظور کیا اور سعیدہ نے اپنی لڑکی کا نکاح خالد سے بلا اذن کر دیا لیکن خالد و سعیدہ سے آج تک ملاقات نہ ہوئی اور نہ سعیدہ سے کسی قسم کی رضامندی لی گئی نہ سعیدہ کو سمجھایا گیا کہ کیا ہوتا ہے اور بعدِ نکاح کے خالد لندن چلا گیا اور بحیلہ تحصیل انگریزی وہاں فسق و فجور و لہو ولعب میں مبتلا ہوا چھ برس ہوا کہ خالد لندن میں ہے نہ پڑھتا ہے نہ آتا ہے اور نہ کسی قسم کی خبر گیری یا پرسش سعیدہ کی کرتا ہے زید نے بکر کو و خالد کو یعنی دونوں پدر و پسر کو لکھا کہ شادی کرلی جائے اور خالد آئے اور اپنی منکوحہ کو لے جائے، مگر نہ خالد آتا ہے نہ کسی قسم کی کفالت خرچہ کی سعیدہ کی خالد یا بکر اس کے باپ کی طرف سے ہوتی ہے اور بلکہ زید سے

---

[1] فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸ [2] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

Fatawa Razawiya Volume 11

A request is being made for the expenses of the stay in London. Under these circumstances, has the marriage been annulled or not? And is Saeeda authorized to break her marriage which was not done willingly by her father, but merely out of compulsion, fear of the authorities of the time, and the expectation of resolving the dispute? Moreover, the dispute was not resolved; instead, after much conflict, a 'khula' (divorce initiated by the wife) and separation occurred between Zaid and Hinda. Can Saeeda terminate such a marriage or not? And how long will Khalid be waited for? He neither comes nor provides any kind of maintenance or expenses for Saeeda. Saeeda remains at her father's house, separated from her mother as well. Zaid also believes that Khalid will never return, and even if he does, due to the change in lifestyle and association with people of other religions, Khalid will not fully fulfill the rights (of marriage). In such a situation, how will the Sharia compel Saeeda? Due to a futile and forced action by the father, that poor, unfortunate Saeeda remains in distress.

The Answer: Mutual quarrels and stories do not reach the level of duress (ikrah), nor does duress affect marriage. If a guardian (wali) marries off someone under compulsion and duress, the marriage will still be valid.

In 'al-Hindia': "From duress, their guardians married them off under compulsion, so the marriage is valid." - 1	**It is stated in 'Hindia' that if guardians perform the marriage of a minor girl under any form of compulsion, the marriage will be valid. (T)**

There is no need to seek permission from a minor girl, nor does a woman have the right to object after reaching maturity to a marriage performed by her father. However, this applies unless the husband was not an equal (kafu) at the time of marriage and the father had never before, through his guardianship, married off any girl to a non-equal. A non-equal is one whose marriage is conventionally considered a cause of shame and disgrace for the guardians of the woman, such as being lowly, vile, and infamous in lineage, profession, religion, or conduct. Since these conditions are not present here, the marriage has undoubtedly become effective, complete, and binding, and cannot be rejected by anyone's refusal. This is under the assumption that Saeeda was a minor at the time of marriage, as clearly indicated by her mentioned age, since reaching maturity at that age is rare in India. If she was not a minor—since a girl can reach maturity at the age of nine—then the marriage that the

father performed for her without her permission was a 'fuzuli' (unauthorized) marriage. Upon receiving the news, she had the option to reject it, but this rejection could only happen in the same session where the news was received. If she rejected it after the session changed, it would not be accepted. From the statement of the question, it does not appear that Saeeda rejected it at all; rather, it is proven that she remained silent. The silence of a virgin is also considered consent. Thus, the marriage became binding in this case as well, with no way to reject it, except in the case...

---

1. Fatawa Hindia, Book of Duress (Kitab al-Ikrah), Chapter Two on what is permissible for the coerced, Noorani Kutub Khana Peshawar, 6/55.

लंदन में ठहरने के खर्च की मांग की जा रही है। इन परिस्थितियों में क्या निकाह (विवाह) रद्द हो गया है या नहीं? और क्या सईदा को अधिकार है कि वह अपने पिता द्वारा कराए गए उस निकाह को तोड़ सके जो खुशी से नहीं बल्कि केवल मजबूरी, तत्कालीन अधिकारियों के डर और विवाद सुलझने की उम्मीद में किया गया था? इसके अलावा, विवाद सुलझा नहीं, बल्कि बहुत संघर्ष के बाद ज़ैद और हिंदा के बीच 'खुला' (विवाह विच्छेद) और अलगाव हो गया। क्या सईदा ऐसे निकाह को तोड़ सकती है या नहीं? और खालिद का कब तक इंतज़ार किया जाएगा? वह न तो आता है और न ही सईदा के खर्चों की किसी प्रकार की देखभाल करता है। सईदा अपने पिता के घर में अपनी माँ से भी अलग रह रही है। ज़ैद का यह भी मानना है कि खालिद कभी नहीं आएगा, और अगर आया भी तो जीवनशैली बदलने और अन्य धर्मों के लोगों की संगति के कारण खालिद से (विवाह के) अधिकारों का पूरी तरह निर्वहन नहीं हो पाएगा। ऐसी स्थिति में शरीयत सईदा को कैसे मजबूर करेगी? पिता के एक निरर्थक और मजबूरी वाले कार्य के कारण वह बेचारी अभागी सईदा परेशानी में मुब्तला है।

उत्तर: आपसी झगड़े और किस्से ज़बरदस्ती (इकराह) की सीमा तक नहीं पहुँचते, और न ही निकाह में ज़बरदस्ती का कोई असर होता है। यदि वली (अभिभावक) किसी के ज़ोर-ज़बरदस्ती से ही निकाह कर दे, तो निकाह हो जाएगा।

'अल-हिन्दिया' में है: "ज़बरदस्ती से, उनके अभिभावकों ने मज़बूरी में उनका निकाह कर दिया, तो निकाह जायज़ (वैध) है।" - १

हिन्दिया में लिखा है कि यदि अभिभावकों ने किसी ज़बरदस्ती के आधार पर नाबालिग लड़की का निकाह कर दिया, तो निकाह जायज़ होगा। (त)

न तो नाबालिग लड़की से अनुमति लेने की आवश्यकता है, और न ही पिता द्वारा कराए गए निकाह पर स्त्री को बालिग (वयस्क) होने के बाद आपत्ति करने का अधिकार है। लेकिन यह उस स्थिति में है जब निकाह के समय पति 'कुफ़ू' (समान स्तर का) न रहा हो और पिता ने इससे पहले कभी अपनी विलायत (अभिभावकत्व) से किसी लड़की का निकाह 'ग़ैर-कुफ़ू' (असमान) से न किया हो। 'ग़ैर-कुफ़ू' वह है जिससे निकाह करना परंपरा के अनुसार हिंदा के अभिभावकों के लिए अपमान और शर्म का कारण हो, जैसे कि वह वंश, पेशे, धर्म या चाल-चलन में नीच, ज़लील और बदनाम हो। यहाँ जब ये स्थितियाँ नहीं हैं, तो निकाह निस्संदेह प्रभावी, पूर्ण और अनिवार्य हो गया है जिसे किसी के अस्वीकार

करने से रद्द नहीं किया जा सकता। यह उस स्थिति में है जब सईदा निकाह के समय नाबालिग हो, जैसा कि स्पष्ट रूप से उसकी बताई गई उम्र से झलकता है कि भारत में उस उम्र में बालिग होना दुर्लभ है। यदि वह नाबालिग नहीं थी—क्योंकि लड़की नौ साल की उम्र में बालिग हो सकती है—तो वह निकाह जो पिता ने उसकी अनुमति के बिना किया था, 'फ़ुज़ूली' (अनधिकृत) निकाह था। खबर मिलने पर उसे अधिकार था कि वह उसे रद्द कर दे, लेकिन यह रद्दीकरण उसी बैठक (मजलिस) में हो सकता था जहाँ खबर मिली थी। यदि बैठक बदलकर रद्द करे तो वह स्वीकार्य नहीं होगा। और प्रश्न के विवरण से सईदा द्वारा रद्द किया जाना बिल्कुल ज़ाहिर नहीं होता, बल्कि यही साबित होता है कि वह चुप रही और कुंवारी की चुप्पी भी अनुमति (इज़न) है। तो निकाह इस तरह भी अनिवार्य हो गया जिसे रद्द करने का कोई रास्ता नहीं है, सिवाय उस स्थिति के..

---

१ फ़तावा हिन्दिया, किताबुल इकराह, अध्याय २, उन चीज़ों के बारे में जो मजबूर व्यक्ति के लिए जायज़ हैं, नूरानी कुतुब खाना पेशावर ६/५५

पृष्ठ 631/739

خرچہ لندن کے قیام کا طلب کیا جاتا ہے ان حالتوں سے فسخ ہو گیا یا نہیں؟ اور سعیدہ مجاز ہے کہ اپنے باپ کے نکاح کو جو بخوشی نہیں بلکہ محض بمجبوری و بخوفِ حکام وقت و توقعِ رفعِ خرخشہ کیا تھا اور رفع بھی نہ ہوا بلکہ بعد از بسیاری جنگ کے خلع وجدائی در میان زید و ہندہ کے ہو گئی تو ایسے نکاح کو سعیدہ توڑ سکتی ہے یا نہیں اور خالد کا کب تک انتظار کیا جائے گا، نہ وہ آتا ہے اور نہ کسی قسم کی خبر گیری اخراجات کی بھی سعیدہ کی کرتا ہے بدستور سعیدہ اپنے باپ کے گھر ماں سے بھی جدا پڑی ہے اور زید کو یہ بھی خیال ہے کہ خالد ہرگز نہیں آئے گا اور آئے گا تو بوجہِ طرزِ معاشرت بدل جانے وصحبت غیر مذاہب کے حقوق کی تعمیل پوری پوری خالد سے ادا نہ ہو گی ، ایسی حالت میں شریعتِ کیونکہ سعیدہ کو مجبور کرے گی اور باپ کے ایک لغو و مجبوری سے عمل کے باعث وہ غریب بد قسمت سعیدہ پریشانی میں مبتلا رہے گی،

الجواب: باہمی جھگڑے قصے نہ حد اکراہ تک پہنچتے ہیں نہ نکاح میں اکراہ کو دخل ہے اگر ولی کسی کے جبر واکراہ ہی سے نکاح کر دے نکاح ہو جائے گا

فی الہندیۃ من الاکراہ زوجھا اولیاؤھا مکرھین فالنکاح جائز - ۱

ہندیہ میں ہے کہ اگر اولیاء نے کسی جبر کی بنا پر نابالغہ کا نکاح دیا تو نکاح جائز ہوگا۔ (ت)

نہ نابالغہ سے اجازت لینے کی حاجت نہ باپ کے کئے ہوئے نکاح پر عورت کا بعدِ بلوغ حقِ اعتراض، مگر اس حالت میں کہ شوہر وقتِ نکاح کفو نہ تھا اور باپ اس سے پہلے بھی کبھی اپنی ولایت سے کسی لڑکی کا نکاح غیر کفو سے کر چکا ہو ، غیر کفو وہ جس سے نکاح ہونا عرفاً اولیائے ہندہ کے لئے وجہِ ننگ وعار ہو کہ وہ نسب یا پیشے یا مذہب یا چال چلن میں رذیل و ذلیل

وبد نام ہو ، یہاں جب یہ صورتیں نہیں نکاح بے شک نافذ و تام ولازم ہو گیا جو کسی کے رد کرنے رد نہیں ہو سکتا، یہ اس حالت میں ہے کہ سعیدہ وقتِ نکاح نابالغہ ہو جیسا کہ بظاہر اس کی عمر مذکور سے مترشح ہوتا ہے کہ ہندوستان میں اس عمر پر بلوغ نادر ہے اگر نابالغہ تھی کہ لڑکی نو برس کی عمر میں بالغہ ہو سکتی ہے تو وہ نکاح کہ باپ نے اس کے لئے بے اذن کیا نکاح فضولی تھا اسے خبر پہنچنے پر اختیار تھا کہ رد کردیتی مگر یہ رد اسی جلسہ خبر میں ہو سکتا تھا اگر جلسہ بدل کر رد کرے تو مقبول نہ ہوگا۔ اور تقریرِ سوال سے سعیدہ کا رد کرنا اصلاً ظاہر نہیں بلکہ یہی ثابت ہوتا ہے کہ وہ ساکت رہی اور بکر کا سکوت بھی اذن ہے تو نکاح یوں بھی لازم ہو گیا جس کے رد کی طرف سبیل نہیں مگر صورت

---

۱ فتاوٰی ہندیہ کتاب الاکراہ باب الثانی فیما یحل للمکرہ نورانی کتب خانہ پشاور ۶/۵۵

Fatawa Rizvia, Volume 11

In the mentioned case, there is clear harm to the woman, and Allah Almighty says:

"Retain them in kindness or release them in kindness." (Holy Quran 2:231) (Either keep women well or release them well.)

And He says: "And live with them in kindness." (Holy Quran 4:19) (Treat women well. T)

And He says: "Lodge them where you dwell according to your means and do not harm them to distress them." (Holy Quran 65:6) (Keep women where you live according to your capacity and do not harm them to bring hardship upon them.)

And He says: "So do not incline with all inclination and leave her like one hanging." (Holy Quran 4:129) (Do not lean entirely towards one side so as to leave the woman hanging in between.)

And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "There should be neither harming nor reciprocating harm in Islam." (In the religion of Islam, there is neither causing harm nor inflicting injury.)

Therefore, it is obligatory upon the judge to compel Khalid to either take Hindah home or divorce her. And if Khalid's faith has become corrupted due to the company there, such that he has started mocking the essentials of religion like the 'Necharis' (naturalists), then the marriage itself will be annulled. And Allah Almighty knows best.

Issue 358: Sent by Haji Ahmadullah Khan Sahib (deceased) from Pilibhit, 16 Jamadi-ul-Awwal 1325 AH.

What do the scholars of religion say in this case: A woman, Hindah, was 13 years old when her father died. Now, Hindah's mother gave permission for Hindah's marriage to her step-sister, who is approximately forty years old and had raised Hindah like her own child since childhood. In fact, Hindah herself had agreed. Hindah's sister sent word to the step-sister saying you have the authority to marry her wherever you wish. Hindah's elder sister and brother-in-law married her into a noble family within their social standing (kufu), even within their relatives. Now, after two years, some dispute occurred between the women over some matter, i.e., between Hindah's mother-in-law and Hindah's elder sister. On this, the woman Hindah's mother and sister are both saying now that Hindah's marriage [is invalid] because she had not reached puberty until that age...

1. The Holy Quran 2/231
2. The Holy Quran 4/19
3. The Holy Quran 65/6
4. The Holy Quran 4/129
5. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith, Maktaba al-Ma'arif, Riyadh 91/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

उपरोक्त स्थिति में स्त्री को स्पष्ट हानि है, और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है:

"फ़अम्सिकूहुन्ना बि-मरूफ़िन औ सर्रिहूहुन्ना बि-मरूफ़" (कुरान २:२३१) (स्त्रियों को या तो भली प्रकार से रखो या भली प्रकार से छोड़ दो।)

और फ़रमाता है: "व-आशिरूहुन्ना बिल-मरूफ़" (कुरान ४:१९) (स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो।)

और फ़रमाता है: "अस्किनूहुन्ना मिन हैसु सकंतुम मिन वुज्दिकुम व-ला तुज़ार्रूहुन्ना लितुज़य्यिकू अलैहिन्न" (कुरान ६५:६) (जहाँ आप रहो वहाँ औरतों को रखो अपनी सामर्थ्य के अनुसार और उन्हें नुकसान न पहुँचाओ कि उन पर तंगी लाओ।)

और फ़रमाता है: "फ़ला तमीलू कुल्लल मैलि फ़तज़रूहा कल मुअल्लक़ह" (कुरान ४:१२९) (पूरे एक तरफ न झुक जाओ कि औरत को यूँ छोड़ो जैसे अधर में लटकी।)

और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "ला दरारा व-ला दिरारा फ़िल इस्लाम" (दीन-ए-इस्लाम में न स्वयं को हानि पहुँचाना है और न दूसरों को।)

इसलिए हाकिम (न्यायाधीश) पर वाजिब है कि ख़ालिद पर दबाव डाले कि या तो हिन्दा को अपने साथ रखे या तलाक़ दे दे। और अगर वहाँ की सोहबत से ख़ालिद का दीन बिगड़ गया है कि वह 'नेचरियों' की तरह दीन की ज़रूरतों का मज़ाक़ उड़ाने लगा है, तो निकाह ख़ुद ही ख़त्म हो जाएगा। व-अल्लाहू ताला अअलम।

मसला ३५८: प्रेषक हाजी अहमद उल्लाह ख़ां साहब (मरहूम), पीलीभीत से, १६ जमादी-उल-अव्वल १३२५ हिजरी।

धर्म गुरुओं का इस मामले में क्या कहना है: एक महिला हिन्दा जिसकी उम्र १३ साल थी जब उसके पिता का देहांत हो गया। अब हिन्दा की माँ ने हिन्दा के निकाह की इजाज़त उसकी सौतेली बहन को दी, जिसकी उम्र लगभग चालीस साल होगी और उसने हिन्दा को बचपन से अपनी औलाद की तरह पाला था। बल्कि हिन्दा ने खुद ही इक़रार किया था। हिन्दा की बहन ने सौतेली बहन से कहला भेजा था कि आपको अधिकार है जहाँ चाहें उसका निकाह कर दें। हिन्दा की बड़ी बहन और बहनोई ने अपने बराबर के एक शरीफ़ ख़ानदान के लड़के के साथ, बल्कि रिश्तेदारी में निकाह कर दिया। अब

दो साल बाद औरतों में आपस में किसी बात पर झगड़ा हो गया यानी हिन्दा की सास और हिन्दा की बड़ी बहन में। इस पर मुसम्मात हिन्दा की माँ और बहन दोनों अब यह कहती हैं कि हिन्दा का निकाह इस वजह से कि उस उम्र तक वह बालिग़ नहीं हुई थी...

---

1. अल-कुरान अल-करीम २/२३१
2. अल-कुरान अल-करीम ४/१९
3. अल-कुरान अल-करीम ६५/६
4. अल-कुरान अल-करीम ४/१२९
5. अल-मुअजम अल-कबीर हदीस मकतबा अल-मारिफ रियाज़ ९१/२

पेज ६३२ / ७३९

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

مذکور میں عورت کا ضرر صریح ہے، اور اللہ عز وجل فرماتا ہے:

فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ عورتوں کو یا تو اچھی طرح رکھو یا اچھی طرح چھوڑ دو۔

اور فرماتا ہے: وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ (عورتوں سے اچھا برتاؤ کروت)

اور فرماتا ہے: أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ جہاں آپ رہو وہاں عورتوں کو رکھو اپنے مقدور کے قابل اور انھیں نقصان نہ پہنچاؤ کہ ان پر تنگی لاؤ۔

اور فرماتا ہے: فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ پورے ایک طرف نہ جھک جاؤ کہ عورت کو یوں چھوڑو جیسے ادھر میں لٹکتی۔

اور رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لاضرر ولا ضرار في الاسلام دین اسلام میں نہ ضرر ہے نہ مضرت پہنچانا۔

لہٰذا حاکم پر واجب ہے کہ خالد پر جبر کرے کہ یا تو ہندہ کو رخصت کرائے یا طلاق دے، اور اگر وہاں کی صحبت سے خالد کا دین فاسد ہوگیا کہ نیچریوں کی طرح ضروریات دین پر ہنسنے لگا تو آپ ہی نکاح جاتا رہے گا والعیاذ باللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۵۸: مرسلہ حاجی احمد اللہ خاں صاحب مرحوم از پیلی بھیت ۱۶ جمادی الاولٰی ۱۳۲۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ ایک عورت ہندہ جس کی عمر ۱۳ برس کی تھی باپ اس کا فوت ہو گیا اب ہندہ کے نکاح کی اجازت اس کی ماں نے ہندہ کی سوتیلی بہن جس کی

عمر تخمیناً قریب چالیس کے ہوگی اس بہن نے ہندہ کو بچپن سے مثل اولاد کے پالا تھا اجازت دی تھی بلکہ ہندہ نے خود ہی اقرار کیا تھا ہندہ کی بہن نے سوتیلی بہن سے یہ کہلا بھیجا تھا کہ تم کو اختیار ہے جہاں چاہو اس کا نکاح کردو ہندہ کی بڑی بہن اور بہنوئی نے اپنے کفو میں ایک شریف خاندان کے لڑکے کے ساتھ بلکہ رشتہ داری میں نکاح کر دیا اب بعد دو برس کے کچھ جھگڑا عورتوں میں باہم کسی بات پر ہوا یعنی ہندہ کی ساس اور ہندہ کی بڑی بہن میں، اس پر مسماۃ ہندہ کی ماں اور بہن دونوں اب یہ کہتی ہیں کہ ہندہ کا نکاح اس وجہ سے کہ اس عمر تک بالغ نہیں ہوئی تھی

---

١ القرآن الكريم ٢/ ٢٣١ ٢ القرآن الكريم ٤/ ١٩ ٣ القرآن الكريم ٦٥/ ٦ ٤ القرآن الكريم ٤/ ١٢٩ ٥ المعجم الكبير حديث مكتبة المعارف الرياض ٩١/ ٢

Fatawa Razawiyya Volume 11

At the time of Hindah's marriage, her uncle and brother were not present but they were aware. There had been a long-standing resentment between Hindah's mother and sister, and they were not on speaking-terms. Therefore, Hindah's sister sought permission from her mother. Twenty days before a month, reconciliation took place between them, and the mother took the girl to her house for a few days. When the marriage date approached, Hindah was sent back to her elder sister's house, who had raised her, for the marriage. Now, Hindah's mother willingly took Hindah to her house from the elder sister's house. Hindah's elder sister's husband, now Hindah's brother-in-law, was a witness to the marriage, and the brother-in-law's elder brother was the representative (Wakil) of the marriage. The person performing the marriage ceremony was blind. In such a situation, will Hindah's marriage be declared valid or void? Explain and be rewarded.

Answer: If Hindah was in fact a minor at the time of marriage and her elder brother had not given permission for her marriage, then the marriage performed by the elder sister with the mother's permission remained suspended upon the brother's permission. If the brother, upon hearing of the marriage, refused it, then the marriage became void. If he liked it and gave permission, it became effective. If he has said nothing yet and Hindah is still a minor, it remains suspended upon the brother's permission; if he validates it, it will be valid, and if he rejects it, it will be void. If the brother neither rejected nor permitted until Hindah reached puberty—meaning she completed fifteen years of age or started menstruating—then the marriage now depends on Hindah's own permission. If she validates it, it will be valid, and if she rejects it, it will be void. If the marriage was with the brother's permission, or if the brother gave permission after the marriage but before Hindah reached puberty, then the marriage became effective, but Hindah will have the 'option of puberty' (Khiyar-ul-Bulugh). This means that immediately upon reaching puberty, if she refused this marriage without a moment's delay, she can file a claim to have it annulled. And Allah Almighty knows best.

Issue 359 to 366: Sent by Hakim Muhammad Ali Hussain Khan Sahib Jagirdar, State of Gwalior, Sadr Lashkar Naya Bazar, 18 Dhu al-Qi'dah 1327 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding the following questions: (1) The girl's father summoned the respondent from Delhi to Bhopal for his daughter's marriage. After the arrival of the wedding procession (barat), he wrote and presented an application to the State Authority (Sarkar-e-Aaliyah) stating that he had called the

boy and requested the Authority to kindly supervise this noble cause under their administration. He set the marriage date for Monday, 4th Ramadan Mubarak 1327 AH.

फतावा रज़विया जिल्द 11

हिंदा के निकाह के समय उसके चाचा और भाई मौजूद नहीं थे लेकिन उन्हें जानकारी थी। हिंदा की माँ और बहन में लंबे समय से रंजिश थी और बोलचाल बंद थी। इस पर हिंदा की बहन ने उसकी माँ से अनुमति माँगी थी। एक महीने से बीस दिन पहले दोनों में सुलह हो गई और माँ लड़की को दो-चार दिन पहले अपने घर ले गई थी। जब निकाह की तारीख़ नज़दीक आई, तो हिंदा को फिर से उसकी बड़ी बहन के घर भेज दिया गया, जिसने उसे पाला था, ताकि निकाह हो सके। अब हिंदा की माँ अपनी मर्ज़ी से हिंदा को बड़ी बहन के घर से अपने घर ले गई। हिंदा की बड़ी बहन के पति, जो अब हिंदा के बहनोई हैं, निकाह में गवाह थे और बहनोई के बड़े भाई निकाह के वकील थे। निकाह पढ़ाने वाले व्यक्ति नेत्रहीन थे। ऐसी स्थिति में, क्या हिंदा का निकाह वैध माना जाएगा या अमान्य? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि हिंदा निकाह के समय वास्तव में नाबालिग थी और उसके युवा भाई ने उसके निकाह की अनुमति नहीं दी थी, तो जो निकाह बड़ी बहन ने माँ की अनुमति से किया था, वह भाई की अनुमति पर निर्भर रहा। यदि भाई ने निकाह की सूचना पाकर इनकार कर दिया, तो वह निकाह अमान्य (बातिल) हो गया। और यदि पसंद किया और अनुमति दे दी, तो वह प्रभावी (नाफ़िज़) हो गया। और यदि अभी तक कुछ नहीं कहा है और हिंदा अभी भी नाबालिग है, तो अब भी भाई की अनुमति पर निर्भर है; यदि वह मान्य कर देगा तो मान्य हो जाएगा, और यदि अस्वीकार कर देगा तो अमान्य हो जाएगा। और यदि हिंदा के बालिग होने तक भाई ने न तो अस्वीकार किया और न ही अनुमति दी, और अब हिंदा बालिग हो गई है—यानी उसकी उम्र पूरे पंद्रह साल हो गई है या उसे मासिक धर्म आने लगा है—तो अब वह निकाह खुद हिंदा की अनुमति पर निर्भर है। यदि वह मान्य कर देगी तो मान्य हो जाएगा और यदि अस्वीकार कर देगी तो अमान्य हो जाएगा। और यदि निकाह भाई की अनुमति से हुआ था, या निकाह के बाद भाई ने हिंदा के बालिग होने से पहले अनुमति दे दी थी, तो निकाह प्रभावी हो गया, लेकिन हिंदा को 'खयार-ए-बुलूग' (वयस्कता का विकल्प) प्राप्त होगा। यानी बालिग होते ही तुरंत-तुरंत अगर उसने इस निकाह से इनकार कर दिया और एक शब्द की देरी नहीं लगाई, तो वह दावा करके इसे रद्द करवा सकती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 359 से 366: प्रेषक हकीम मुहम्मद अली हुसैन खान साहब जागीरदार, रियासत ग्वालियर, सदर लश्कर नया बाज़ार, 18 ज़िल-क़ादा 1327 हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में क्या फरमाते हैं: (1) लड़की के पिता ने मज़हर (कथनकर्ता) को दिल्ली से

उसकी बेटी के निकाह के लिए भोपाल बुलाया और बारात पहुँचने के बाद सरकार-ए-आलिया (राज्य सत्ता) में एक आवेदन लिखकर पेश किया कि मैंने लड़के को बुलाया है, सरकार-ए-आलिया कृपा करके इस नेक काम को अपने प्रशासन के तहत संपन्न कराएं मैंने निकाह की तारीख 4 रमज़ान मुबारक 1327 हिजरी सोमवार निर्धारित की है।

पृष्ठ 739 का 633

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

وقتِ نکاح کے ہندہ کے چچا اور بھائی نہیں موجود تھے مگر ان کو علم تھا اور ہندہ کی ماں اور بہن میں ایک مدت سے رنج تھا آمد و رفت نہیں تھی جس پر ہندہ کی ہمشیرہ نے اس کی والدہ سے اجازت چاہی تھی قبل از مہینہ بیس روز آگے دونوں میں صلح ہوگئی اور والدہ کی لڑکی کو دو چار روز آگے اپنے مکان میں لے گئی تھی جب تاریخ نکاح قریب آئی تو پھر ہندہ کو اس کی بڑی بہن جس نے کہ اس کو پالا تھا اس کے مکان پر بھیج دیا واسطے نکاح کے ، اب ہندہ کی والدہ اپنے مکان پر ہندہ کو لے گئی بڑی بہن کے مکان سے بخوشی۔ ہندہ کی بڑی بہن کے خاوند اب ہندہ کے بہنوئی ہندہ کے نکاح میں گواہ تھے، اور بہنوئی کے بڑے بھائی وکیل نکاح کے تھے، نکاح خواں نابینا تھے، تو ایسی صورت میں نکاح ہندہ صحیح قرار پائے گا یا باطل؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر ہندہ وقت نکاح فی الواقع نابالغہ تھی اور اس کے نکاح کی اجازت اس کے جوان بھائی نے نہ دی تھی تو جو نکاح بڑی بہن نے ماں کی اجازت سے کیا بھائی کی اجازت پر موقوف رہا، اگر بھائی نے نکاح کی اطلاع پا کر انکار کر دیا تو وہ نکاح باطل ہوگیا اور اگر پسند کیا اجازت دی تو نافذ ہو گیا، اور اگر ہنوز کچھ نہ کہا اور ہندہ اب بھی نابالغہ ہے تو اب بھی بھائی کی اجازت پر موقوف ہے اگر جائز کر دے گا تو جائز ہو جائیگا رد کر دے گا تو باطل ہو جائے گا۔ اور اگر ہندہ کے بالغہ ہونے تک بھائی نے نہ رد کیا نہ اجازت دی اور اب ہندہ بالغ ہوگئی یعنی اس کی عمر پورے پندرہ سال کی ہو گئی یا اسے حیض آنے لگا تو اب وہ نکاح خود ہندہ کی اجازت پر موقوف ہے اگر جائز کر دے گی جائز ہو جائے گا اور اگر رد کر دے گی باطل ہو جائے گا، اور اگر نکاح بھائی کی اجازت سے ہوا تھا یا بعد نکاح بھائی نے قبل بلوغ ہندہ اجازت دے دی تو نکاح نافذ ہو گیا

مگر ہندہ کو خیارِ بلوغ ملے گا یعنی بالغہ ہوتے ہی فوراً فوراً اگر اس نکاح سے انکار کردیا ایک لفظ کی دیر نہ لگائی تو دعویٰ کر کے اس کو فسخ کرا سکتی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۳۵۹ تا ۳۶۶: مرسلہ حکیم محمد علی حسین خان صاحب جاگیر دار ریاست گوالیار صدر لشکر نیا بازار ۱۸ ذی القعدہ ۱۳۲۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین سوالات مندرجہ ذیل کی نسبت: (۱) لڑکی کے والد نے مظہر کو دہلی سے واسطے عقد لڑکی اپنی کے بہ مقام بھوپال طلب کیا اور بعد پہنچنے برات کے سرکار عالیہ میں ایک درخواست تحریر کر کے پیش کی کہ میں نے لڑکے کو بلایا ہے سرکار عالیہ خداوندی فرما کر اس کارِ خیر کو اپنے روبکاری سے اہتمام فرمائیں، میں نے تاریخ عقد ۴ رمضان المبارک ۱۳۲۷ھ یوم دوشنبہ مقرر کر دی ہے

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

(2) The high authority, after accepting this request, made all necessary arrangements, then issued the order, and summons were also sent to the young gentlemen (may their prosperity continue) and the Qazi (judge) etc. (3) The girl was at her maternal uncle's house. The boy's father went to the uncle's house on the day of the marriage contract to bring the girl. The uncle flatly refused to send the girl at the last moment. Out of shame, the poor honorable father consumed poison and took his own life. (4) Does the written permission of the father (the legal guardian) have any weight or effect after his death for this marriage contract or not? (5) Now the maternal uncle, due to personal animosity, refuses to contract the marriage with the petitioner, and the girl is in his custody. (6) The girl's age is eleven years and some months. (7) Among the heirs of the girl are one paternal uncle, one maternal uncle, one minor biological brother, and the mother who is divorced and married to another person. (8) The girl's paternal uncle is willing to marry the girl to the petitioner. Can the marriage take place solely with the permission of the said paternal uncle, in the absence of and without informing the girl, or is the girl's presence necessary at the time of the marriage contract? That's all.

The Answer In the described situation, as long as the girl is a minor (meaning she has not started menstruating or reached the full age of fifteen), her legal guardian for marriage is her paternal uncle. If her brother becomes an adult before she reaches puberty, the guardianship will transfer from the paternal uncle to the brother. In any case, the maternal uncle or the mother has no authority over her marriage. It is stated in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

Arabic

The guardian in marriage is the agnate ('asaba) in their own right, according to the order of inheritance and exclusion. If there is no agnate, the guardianship belongs to the mother, then the sister, then the mother's children, then the distant kindred (dhawi al-arham): paternal aunts, then maternal uncles.

(T)

Urdu

The guardian for marriage, according to the order of inheritance and exclusion, are the agnates in their own right. If they are not present, then guardianship will go to the mother, then the sister, then the brother from the mother's side, then among the distant kindred, the paternal aunt, then the maternal uncle.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/193. Page 634 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

(२) उच्च सत्ता ने इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं कीं, तब आदेश जारी किया गया और साहबज़ादों (ईश्वर उनकी समृद्धि बनाए रखे) और काज़ी साहब आदि को भी बुलावा भेज दिया गया। (३) लड़की अपने मामा के यहाँ थी, लड़के का पिता विवाह अनुबंध के दिन लड़की को लाने के उद्देश्य से मामा के घर गया। मामा ने ऐन वक्त पर लड़की को भेजने से साफ़ मना कर दिया। बेचारे शरीफ़ बाप ने इस अपमान के कारण ज़हर खाकर अपनी जान दे दी। (४) पिता (वैध संरक्षक) की लिखित अनुमति उसकी मृत्यु के बाद इस विवाह अनुबंध के लिए कोई महत्व या प्रभाव रखती है या नहीं? (५) अब मामा, व्यक्तिगत शत्रुता के कारण, प्रार्थी के साथ विवाह अनुबंध करने से इनकार कर रहा है और लड़की उसी के कब्ज़े में है। (६) लड़की की उम्र ग्यारह साल कुछ महीने है। (७) लड़की के वारिसों में एक सगा चाचा और एक सगा मामा, एक नाबालिग सगा भाई और माँ हैं जो तलाक़शुदा हैं और किसी अन्य व्यक्ति के निकाह में हैं। (८) लड़की के चाचा साहब इस लड़की का प्रार्थी से निकाह कराने के लिए तैयार हैं। क्या उक्त चाचा साहब की मात्र अनुमति से, लड़की की अनुपस्थिति में और उसे सूचित किए बिना निकाह हो सकता है, या निकाह के समय लड़की का मौजूद होना अनिवार्य है? बस।

उत्तर उक्त स्थिति में, जब तक लड़की नाबालिग है (यानी उसे मासिक धर्म शुरू नहीं हुआ है या पंद्रह वर्ष की पूर्ण आयु नहीं हुई है), तब तक उसके निकाह का संरक्षक उसका चाचा है। और यदि लड़की के बालिग होने से पहले उसका भाई बालिग हो जाए, तो संरक्षकता चाचा से भाई को हस्तांतरित हो जाएगी। किसी भी स्थिति में मामा या माँ को उसके निकाह का कोई अधिकार नहीं है। तनवीरुल अबसार और दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी

निकाह में वली (संरक्षक) स्वयं असबा (पित्रपक्षीय संबंधी) होते हैं, विरासत और रोक के क्रम के अनुसार। यदि कोई असबा न हो, तो विलायत माँ को मिलती है, फिर बहन को, फिर माँ की संतानों को, फिर ज़ुल अरहम को: बुआ, फिर मामा।

उर्दू

निकाह का वली, विरासत और रोक के क्रम के अनुसार असबात बे-नफ़सेही होते हैं, यदि ये न हों तो फिर विलायत माँ को प्राप्त होगी, फिर बहन को फिर माँ की ओर से भाई को फिर ज़ुल अरहम में बुआ को फिर मामा को प्राप्त होती है।

(त)

1 दुर्रे मुख्तार, बाबू वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली १/१९३ पेज 634 of 739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

(۲) سرکار عالیہ نے یہ درخواست منظور فرما کر جملہ انتظامات ضروری کیا تب حکم نافذ فرما دیا اور صاحبزادگان دام اقبالہ اور قاضی صاحب وغیرہ کو بلاوا بھی پہنچ گیا۔ (۳) لڑکی اپنے ماموں کے یہاں تھی، لڑکے کے والد عقد کے دن لڑکی کو لانے کی غرض سے ماموں کے مکان پر گئے، ماموں نے عین وقت پر بھیجنے لڑکی سے قطعی انکار کیا، بیچارے شریف باپ نے اس غیرت کی وجہ سے زہر کھا کر اپنی جان کو ہلاک کیا۔ (۴) باپ ولی جائز کی اجازت تحریری بعد فوتی اس کے یہ عقد کیا تب کچھ وقعت اور اثر رکھتی ہے یا نہیں؟ (۵) اب ماموں لڑکی کا بوجہ نفسانیت مظہر کے ساتھ عقد کرنے سے انکاری ہے اور اسی کے قبضہ میں لڑکی ہے۔ (۶) لڑکی کا سن گیارہ سال کچھ ماہ کا ہے۔ (۷) ورثاء میں لڑکی کے ایک چچا حقیقی اور ایک ماموں حقیقی، ایک بھائی حقیقی نابالغ اور والدہ و مطلقہ یہ شخص غیر کے نکاح میں ہیں۔ (۸) لڑکی کے چچا صاحب اس لڑکی کے مظہر سے عقد کرنے پر رضا مند ہیں ان کی یعنی چچا صاحب موصوف کی محض اجازت سے عدم موجودگی اور بغیر اطلاع لڑکی کے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں یا کہ لڑکی کا موجود ہونا وقت نکاح لازمی ہے؟ فقط

الجواب صورت مذکورہ میں جب تک لڑکی نا بالغ ہے (یعنی) اسے حیض شروع نہ ہوا یا پندرہ سال کامل کی عمر نہ ہوئی اس وقت تک اس کا ولی نکاح اس کا چچا ہے اور لڑکی کے بلوغ سے پہلے اس کا بھائی بالغ ہو جائے تو ولایت چچا سے بھائی کی طرف منتقل ہو جائے گی بہر حال ماموں یا ماں کو اس کے نکاح کا کچھ اختیار نہیں، تنویر الابصار و در مختار میں ہے:

عربی	اردو
الولی فی النکاح العصبة بنفسه علی ترتیب الارث والحجب فان لم یکن عصبة فالو لایة للام ثم للاخت ثم لولد الام ثم لذوی الارحام العمات ثم الاخوال۔	نکاح کا ولی، وراثت اور مانع ہونے کی ترتیب کے مطابق عصبات بنفسہ ہوتے ہیں، اگر یہ نہ ہوں تو پھر ولایت ماں کو حاصل ہو گی، پھر بہن کو پھر والدہ کی طرف سے بھائی پھر ذوی الارحام میں پھوپھی پھر ماموں کو حاصل ہوتی ہے۔

(ت)

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ Page 634 of 739

Fatawa Rizvia Volume 11

If the uncle during the girl's minority, or the brother after her reaching maturity, marries her to a person who is her 'Kufu' (equal), meaning not so low in religion, lineage, occupation, or character that marrying him would be a cause of shame and disgrace, and there is no excessive reduction in her 'Mahr-e-Misl' (customary dower) – for example, if the customary dower is one hundred thousand rupees and they fix it at fifty thousand – then, when free from these two harms, the marriage conducted by the uncle or brother will be effective. They do not need to obtain permission from the girl, nor inform her, nor is it necessary for the girl to be present at the time of the marriage. These are all unnecessary matters. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(Arabic) للولى انكاح الصغير والصغيرة جبراً ۔ 1	**The father and grandfather have the authority of compulsory marriage over the minor girl. (T)**

In the same book it is stated:

(Arabic) لوزوجها الاقرب حيث هو جاز النكاح 2 ۔	**Wherever the closest relative conducts the marriage, it will be valid. (T)**

Neither the mother nor the maternal uncle has any right to object to this marriage. However, if the girl is a virgin, and immediately upon reaching puberty she says, 'I am not satisfied with this marriage,' or if she was not informed of the marriage at first, then upon receiving information after puberty, she immediately expresses her dissatisfaction with the marriage, in that case she herself will have the option to approach the Shariah judge and get the marriage conducted by her uncle or brother annulled. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(Arabic) ان كان المزوج غير الاب و ابيه ان كان من كفو وبمهر المثل صح ولهما اى لصغير وصغيرة خيار الفسخ بالبلوغ اوالعلم بالنكاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خيار البكر بالسكوت لو عالمة بالنكاح ولا يمتد الى آخر المجلس 3 ۔	**If the person giving in marriage is not the father or grandfather, then in the case of Kufu and Mahr-e-Misl, the marriage is valid. However, the minor boy and minor girl will have the option of annulment (Khiyar al-Bulugh) upon reaching puberty or upon learning of the marriage thereafter, provided there is a judicial decree for annulment. The option for a virgin girl is invalidated by her silence upon gaining knowledge of the marriage, and this option does not remain until the end of the assembly. (T)**

Yes, if the uncle or brother marries her to someone who is not the daughter's 'Kufu' in the aforementioned sense, even if they are of the same community, or if they make an excessive reduction in the Mahr-e-Misl, then the marriage will not be valid at all. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(Arabic) ان كان المزوج غيرهما لا يصح النكاح	**If someone other than the father or grandfather married a minor girl to a non-Kufu, extremely...**

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of the Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter of the Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/194.
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter of the Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192-193.

फतावा रज़विया जिल्द 11

यदि लड़की के नाबालिग होने पर चाचा, या बालिग होने पर भाई, उसका निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दे जो उस लड़की का 'कुफ़ू' (समान) हो, अर्थात धर्म, वंश, पेशा या आचरण आदि में इतना कम न हो कि उसके साथ उस लड़की का निकाह शर्म और कलंक का कारण बने, और न ही उसके'महर-ए-मिस्ल' (प्रथागत मेहर) में अत्यधिक कमी करे - उदाहरण के लिए, यदि महर-ए-मिस्ल एक लाख रुपये हो और वे पचास हज़ार तय कर दें - तो, जब इन दोनों नुकसानों से मुक्त हो, तो चाचा या भाई द्वारा किया गया वह निकाह प्रभावी होगा। उन्हें लड़की से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है, न ही उसे सूचित करने की, और न ही निकाह के समय लड़की का वहाँ मौजूद होना आवश्यक है। ये सब अनावश्यक बातें हैं। दुर्रे मुख्तार में है:

(अरबी) للولى انكاح الصغير والصغيرة جبراً ۔ 1	**पिता और दादा को नाबालिग पर जबरन निकाह का अधिकार है। (त)**

उसी में है:

(अरबी) لوزوجها الاقرب حيث هو جاز النكاح 2 ۔	**सबसे करीबी रिश्तेदार जहाँ भी निकाह करे, वह जायज़ होगा। (त)**

माँ या मामा को इस निकाह पर बिलकुल भी आपत्ति करने का अधिकार नहीं है। हाँ, यदि लड़की कुँवारी है और बालिग होते ही तुरंत कह दे कि 'मैं इस निकाह से संतुष्ट नहीं हूँ,' या उसे शुरू में निकाह की सूचना नहीं थी, तो बालिग होने के बाद जिस समय उसे खबर मिले, वह तुरंत निकाह से अपनी असंतोष व्यक्त करे, तो उस स्थिति में उसे स्वयं अधिकार होगा कि शरीयत के हाकिम के सामने जाकर चाचा या भाई द्वारा किए गए निकाह को रद्द करवा ले। दुर्रे मुख्तार में है:

(अरबी) ان كان المزوج غير الاب و ابيه ان كان من كفو وبمهر المثل صح ولهما اى لصغير وصغيرة خيار الف بالبلوغ سخ اوالعلم بالنكاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خيار البكر بالسكوت لو عالمة بالنكاح ولا يمتد الى آخر المجلس 3 ۔	**यदि निकाह देने वाला पिता या दादा न हो तो कुफ़ू और महर-ए-मिस्ल की स्थिति में निकाह सही है, लेकिन नाबालिग और नाबालिग लड़की को बालिग होने पर या बालिग होने के बाद ज्ञान होने पर रद्द करने की शर्त पर रद्द करने का अधिकार (खियार-उल-बलूग) होगा, और कुँवारी लड़की का अधिकार उसे ज्ञान हो जाने पर चुप्पी के कारण बातिल (अमान्य) हो जाएगा, और सभा की समाप्ति तक यह अधिकार शेष नहीं रहेगा। (त)**

हाँ, चाचा या भाई जिससे निकाह कर दें यदि वह उपरोक्त अर्थ में लड़की का कुफ़ू न हो, चाहे वह बिरादरी का ही क्यों न हो, या यदि वे महर-ए-मिस्ल में अत्यधिक कमी करें, तो सिरे से निकाह होगा ही नहीं। दुर्रे मुख्तार में है:

(अरबी) ان كان المزوج غيرهما لا يصح النكاح	**यदि पिता-दादा के अलावा किसी और ने नाबालिग का निकाह गैर-कुफ़ू में किया, तो अत्यंत...**

1. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/192.
2. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/194.
3. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/192-193.

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

دختر کی نابالغی میں چچا یا بالغ ہو کر بھائی اگر اس کا نکاح ایسے شخص سے کر دے گا جو اس لڑکی کا کفو ہو یعنی مذہب یا نسب یا پیشہ یا چال چلن وغیرہ میں اتنا کم نہ ہو کہ اس کے ساتھ اس دختر کا نکاح باعث ننگ وعار ہو نہ دختر کے مہر مثل میں کمی فاحش کرے مثلا لاکھ روپیہ مہر مثل ہو یہ پچاس ہزار باندھ دیں، جب ان دونوں نقصانوں سے خالی ہو تو چچا یا بھائی کا وہ کیا ہوا نکاح نافذ ہو گا نہ لڑکی سے اذن لینے کی ان کو حاجت نہ اطلاع دینے کی نہ وقت نکاح لڑکی کے وہاں موجود ہونے کی، یہ سب بے ضرورت امور ہیں۔ در مختار میں ہے:

للولی انکاح الصغیر والصغیرۃ جبراً ۔ 1 باپ دادا کو نابالغہ پر جبری نکاح کی ولایت ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

لوزوجھا الاقرب حیث ھو جاز النکاح 2 ۔ اقرب جہاں بھی نکاح کرے جائز ہوگا۔ (ت)

ماں یا ماموں کو اس نکاح پر اصلاً اعتراض نہیں پہنچ سکتا، ہاں لڑکی کہ دوشیزہ ہے اگر بالغہ ہوتے ہی معاً کہہ دے گی کہ میں اس نکاح سے راضی نہیں، یا اول سے اسے اطلاع نکاح نہ تھی تو بعد بلوغ جس وقت خبر پائی فوراً نکاح سے اپنی ناراضی ظاہر کرے تو اس صورت میں البتہ خود اس کو اختیار ہو گا کہ حاکم شرع کے حضور رجوع کر کے چچا یا بھائی کا کیا ہوا نکاح فسخ کرالے، در مختار میں ہے:

ان کان المزوج غیر الاب و ابیه ان کان من کفو وبمهر المثل صح ولهما ای لصغیر وصغیرة خیار الفسخ بالبلوغ اوالعلم بالنکاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خیار البکر بالسکوت لو عالمة بالنکاح ولا یمتد الی آخر المجلس 3 .

اگر نکاح دینے والا باپ دادا نہ ہو تو کفو اور مہر مثل کی صورت میں نکاح صحیح ہے لیکن نابالغ اور نابالغہ کو بلوغ پر یا بلوغ کے بعد علم ہونے پر بشرطِ قضاء فسخ کا اختیار ہوگا، اور بالغہ باکرہ کا اختیار اس کو علم ہو جانے پر سکوت کی وجہ سے باطل ہو جائے گا، اور مجلس کے اختتام تک یہ اختیار باقی نہ رہے گا، (ت)

ہاں چچا یا بھائی جس سے نکاح کردیں اگر وہ بمعنی مذکور دختر کا کفو نہ ہوا اگرچہ ہم قوم ہو یا مہر مثل میں کمی فاحش کریں تو سرے سے نکاح ہو گا ہی نہیں۔ در مختار میں ہے:

ان کان المزوج غیرهما لا یصح النکاح

اگر غیرِ باپ دادا نے نابالغہ کا نکاح غیر کفو میں کیا انتہائی

1. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲
2. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۴
3. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۳-۱۹۲

Fatawa Ridawiyya Volume 11

...from a non-equal. Or with excessive deception at all. And Allah Almighty knows best. If given for less dower, it will not be permissible at all. And Allah Almighty knows best.

The wording of the father's written permission needs review; it remains to be seen what its effect is now, and there is little need for it as the legal guardian (Wali) is present. And Allah Almighty knows best.

Issue 367: Asked by Muhammad Saboor, son of the late Munshi Muhammad Zahoor, resident of Bareilly, Mohalla Pul Qazi, on 12 Safar 1329 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this matter: A widow married a widower who had two sons from his first wife. Now a daughter was born to this husband and wife. After that, the second husband passed away. Subsequently, the widow remarried. Now, the girl born to the second husband was a minor; her marriage was performed by the woman and her current third husband with a minor boy in the presence of his parents. Initially, in the agreement and engagement before the marriage, the advice and consent of both sons of the second husband were also sought. However, at the time of the marriage, these two boys were not present. Now, these two boys are dissatisfied with this marriage. Was this marriage conducted in a valid or invalid manner? And is it now sustainable or not? Explain and be rewarded.

The Answer: If the two sons of the second husband, i.e., the girl's father, who are from the first wife, are adults, they are the guardians (Wali) of this daughter. If both of them, or one of them, had given permission to the woman's third husband or the woman herself before the marriage to marry this daughter to that minor, and that minor boy was an equal (Kufu) for this daughter—meaning he was not so low in lineage etc. that marriage with him would cause shame and disgrace to the daughter's guardians—then this marriage has occurred as correct, valid, and binding. Now, the dissatisfaction of these boys without a valid Sharia reason is not credible.

For whoever strives to annul what was completed from his side, his striving is rejected back upon him.	**He who tries to break the deal he himself completed, his effort is rejected. (T)**

Yes, the daughter will have the option that if she does not like it, she can immediately refuse upon reaching puberty and have the marriage annulled "because they are

other than the father and grandfather" (T). And if the boys had not given them permission to perform the marriage, even if they had expressed their consent at the time of consultation, then this marriage—which the daughter's mother and her third husband performed without the guardians' permission—remained dependent on the guardians' permission. If these boys, upon hearing the news of the marriage, said any word of consent or performed any act...

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.

...ग़ैर-कफ़ू (असमान) से, या अत्यधिक धोखे के साथ। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। अगर कम मेहर पर दिया गया, तो यह बिल्कुल जायज़ नहीं होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

पिता की लिखित अनुमति के शब्दों की समीक्षा की आवश्यकता है; देखा जाएगा कि अब उसका क्या प्रभाव है, और इसकी विशेष आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि शरीयत के अनुसार वली (अभिभावक) मौजूद है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ३६७: प्रेषक मोहम्मद सबूर साहब पुत्र मुंशी मोहम्मद जहूर साहब मरहूम, निवासी बरेली, मोहल्ला पुल काज़ी, १२ सफ़र १३२९ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: एक विधवा औरत ने एक ऐसे विधुर व्यक्ति से निकाह किया जिसके पहली पत्नी से दो लड़के थे। अब उस पति-पत्नी से एक बेटी पैदा हुई। इसके बाद उस दूसरे पति का इंतकाल हो गया। तत्पश्चात, उस विधवा औरत ने फिर निकाह कर लिया। अब वह लड़की जो दूसरे पति से पैदा हुई थी, नाबालिग थी; उसका निकाह उस औरत और उसके वर्तमान तीसरे पति ने एक नाबालिग लड़के के साथ उसके माता-पिता की मौजूदगी में कर दिया। निकाह से पहले समझौते और मंगनी के समय दूसरे पति के दोनों लड़कों की सलाह और सहमति भी शामिल थी। लेकिन निकाह के समय ये दोनों लड़के मौजूद नहीं थे। अब ये दोनों लड़के इस निकाह से नाखुश हैं। क्या यह निकाह जायज़ तरीके से हुआ या नाजायज़ तरीके से? और क्या अब यह कायम रहने योग्य है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: दूसरे पति यानी लड़की के पिता के दोनों लड़के जो पहली पत्नी से हैं, अगर बालिग हैं तो वे इस लड़की के वली (अभिभावक) हैं। अगर उन दोनों या उनमें से किसी एक ने निकाह से पहले औरत के तीसरे पति या खुद उस औरत को उस लड़की का निकाह उस नाबालिग के साथ करने की अनुमति दी थी, और वह नाबालिग लड़का इस लड़की का कुफ़ू (बराबर का) था—यानी वंश आदि में इतना कम नहीं था जिसके कारण उससे निकाह करना लड़की के वलियों के लिए अपमान और शर्म का कारण बनता—तो यह निकाह सही, जायज़ और प्रभावी रूप से संपन्न हुआ है। अब बिना किसी सही शरीय कारण के इन लड़कों की नाराजगी मान्य नहीं है।

फ़ान मन सआ फ़ी नक़्ज़ मा तम्म मिन जेहतेहि फ़सअयहु मरद्दुदुन अलैह।	**जो अपने तमाम किये हुए मामला को तोड़ने की कोशिश करे तो उसकी यह कोशिश मरद्दूद (खारिज) है। (त)**

हाँ, लड़की को अधिकार होगा कि यदि उसे पसंद न हो, तो बालिग होते ही तुरंत मना कर दे और निकाह रद्द करवा दिया जाएगा, "क्योंकि वे पिता और दादा के अलावा अन्य हैं" (त)। और यदि लड़कों ने उन्हें निकाह करने की अनुमति नहीं दी थी, भले ही परामर्श के समय अपनी सहमति व्यक्त की हो, तो यह निकाह जो लड़की की माँ और उसके तीसरे पति ने वलियों की अनुमति के बिना किया, वलियों की अनुमति पर निर्भर रहा। यदि इन लड़कों ने निकाह की खबर सुनकर सहमति का कोई शब्द कहा या कोई ऐसा कार्य किया...

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-वली, मुतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१९२।

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

من غیر کفو۔ او بغبن فاحش اصلاً۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ کم مہر سے دیا تو بالکل جائز نہ ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ باپ کی اجازت تحریری کی عبارت محتاجِ نظر ہے، دیکھا جائے گا اور اب اس کا کیا اثر ہے اور اس کی چنداں حاجت بھی نہیں کہ ولی شرعی موجود ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۶۷: مسئولہ محمد صبور صاحب ولد منشی محمد ظہور صاحب مرحوم مغفور ساکن بریلی محلہ پل قاضی ۱۲ صفر ۱۳۲۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت بیوہ نے ایسے رنڈوے شخص کے ساتھ نکاح کیا کہ جس کے دولڑکے زوجہ اولٰی سے تھے اب زن و شو سے ایک دختر پیدا ہوئی بعدہ اس شوہر ثانی کا انتقال ہو گیا، ازاں بعد اس بیوہ عورت نے پھر اپنا نکاح کر لیا اب وہ لڑکی جو شوہر ثانی سے پیدا ہوئی تھی نابالغ تھی اس کا نکاح اس عورت اور حال کے تیسرے شوہر نے ایک نابالغ لڑکے کے ساتھ بموجودگی اس کے والدین کے کر دیا جس کے اندر ابتداء قرار داد و نسبت میں قبل از نکاح دوسرے شوہر کے دونوں لڑکوں کا بھی مشورہ رضامندی تھا لیکن وقتِ نکاح کے یہ دونوں لڑکے موجود نہ تھے اب یہ دونوں لڑکے اس نکاح سے ناراضمند ہیں۔ آیا یہ نکاح جائز طریقہ سے ہوا یا ناجائز طور پر؟ اور اب قابل رہنے کے ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: شوہر دوم یعنی پدرِ دختر کے دونوں لڑکے کہ زوجہ اولٰی سے ہیں اگر بالغ ہیں اس دختر کے ولی ہیں، اگر ان دونوں یا ان میں سے ایک نے پیش از نکاح عورت کے شوہر سوم یا خود عورت کو اس دختر کا نکاح اس نابالغ کے ساتھ کرنے کی اجازت دی تھی اور وہ نابالغ اس دختر کا کفو تھا یعنی نسب وغیرہ میں ایسا کم نہ تھا جس کے سبب اس سے نکاح اس دختر کے اولیاء کے

لئے باعثِ ننگ وعار ہو تو یہ نکاح صحیح و جائز و نافذ واقع ہوا اور بلا وجہ صحیح شرعی اب ان لڑکوں کی ناراضی معتبر نہیں۔

فان من سعی فی نقض ماتم من جھتہ فسعیہ مردود علیہ۔

جو اپنے تمام کئے ہوئے معاملہ کو توڑنے کی کوشش کرے تو اس کی یہ کوشش مردود ہے۔ (ت)

ہاں دختر کو اختیار ہوگا کہ اگر پسند نہ کرے تو بالغہ ہوتے ہی معاً انکار کردے نکاح فسخ کرا دیا جائے گا "لانہ غیر اب وجد" (کیونکہ یہ غیر باپ دادا ہیں۔ ت) اور اگر لڑکوں نے ان کو نکاح کرنے کی اجازت نہ دی تھی اگر چہ وقتِ مشورہ اپنی رضامندی ظاہر کی تھی تو یہ نکاح کہ دختر کی ماں اور اس کے شوہرِ سوم نے بے اجازتِ اولیاء کیا اجازتِ اولیاء پر موقوف رہا ان لڑکوں نے خبرِ نکاح سن کر اگر کوئی کلمہِ رضا کہہ دیا یا کوئی فعل

---

[1] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

...if it indicates consent, the marriage is enforced. Now, their dissatisfaction without a valid Sharia reason is not credible. Rather, the girl upon reaching maturity has the option to reject; then a claim for annulment will follow. If no word or action indicating consent was issued by them after the marriage, and they rejected it, the marriage is annulled. Now this girl is a complete stranger to him. If that boy is not a match (Kufu) for that woman, i.e., he has some deficiency due to which marriage with him would cause disgrace and reproach for the girl's guardians, then this marriage never took place at all, even if the boys had done it themselves and even if the girl consented to it after maturity.

[Boxed Text] Arabic: Because in cases of non-Kufu, a fatwa of total invalidity is given due to the corruption of the times. And Allah Almighty knows best. Urdu: Because due to the corruption of the times, a marriage arranged by someone other than the father or grandfather in a non-Kufu case and without an adequate dowry (Mahr al-Mithl) will not be valid at all. This is the fatwa. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 368: From Budaun, Brahmpur, sent by Azeemullah Khan Sahib, 22 Jumada al-Akhirah 1329 AH.

What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid, the father of the minor girl Hindah, was deceived by Bakr into believing that Khalid belongs to his community and is from a noble family. In this way, Zaid was persuaded to marry his minor daughter Hindah to the minor boy Khalid. Consequently, Zaid married his minor daughter to Khalid. After the marriage, Hindah lived at the house of Khalid's maternal cousin, who was said to be raising Khalid. Now, the minor Hindah has come to know that Khalid is not of her community or match (Kufu), but is an illegitimate child from a lowly community. Hindah did not accept Khalid as her husband, did not go to him, and upon reaching maturity, she annulled the marriage agreement that was drawn up. Can this annulment be valid according to the Sharia of Muhammad (peace be upon him) or not?

Answer: Yes, in the inquired situation, the marriage will be annulled. That is, Hindah has the option to sue, and after the lawsuit, it will be judicially annulled. It is stated in Qazi Khan, Fath al-Qadir, Bazzaziyya, Radd al-Muhtar, etc.:

[Boxed Text] Arabic: A man married his daughter to a man he thought was righteous and did not drink intoxicants, but then he turned out to be an addict. After reaching

maturity, she said, "I do not consent to the marriage if her father drinks intoxicants..." Urdu: A person married his daughter to such a person about whom the father had the impression that he was pious and did not drink wine, but later it was found that he was a habitual wine drinker. Upon reaching maturity, the daughter said regarding the marriage conducted by the father that "I am [not] satisfied..."

1. Durr-ul-Mukhtar, Bab-ul-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/191 Page 637 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

...यदि यह सहमति दर्शाता है, तो विवाह लागू हो जाता है। अब, बिना किसी वैध शरीयत कारण के उनकी असंतोष विश्वसनीय नहीं है। बल्कि, लड़की को परिपक्वता (ब्लूग) पर पहुँचने पर अस्वीकार करने का अधिकार है; तब रद्दीकरण (फ़स्ख़) के लिए दावा किया जाएगा। यदि विवाह के बाद उनकी ओर से सहमति दर्शाने वाला कोई शब्द या कार्य जारी नहीं हुआ और उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया, तो विवाह रद्द माना जाएगा। अब यह लड़की उसके लिए पूरी तरह अजनबी है। यदि वह लड़का उस महिला के लिए उपयुक्त (कुफ़ू) नहीं है, यानी उसमें कोई ऐसी कमी है जिसके कारण उसके साथ विवाह लड़की के अभिभावकों (औलिया) के लिए बदनामी और तिरस्कार का कारण बने, तो यह विवाह बिल्कुल हुआ ही नहीं, भले ही लड़कों ने स्वयं किया हो और भले ही लड़की परिपक्वता के बाद इस पर सहमत हो गई हो।

[बॉक्स में पाठ] अरबी: क्योंकि कुफ़ू न होने के मामलों में, समय के भ्रष्टाचार के कारण पूर्ण अमान्यता का फ़तवा दिया जाता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। उर्दू: क्योंकि समय के भ्रष्टाचार के कारण, पिता या दादा के अलावा किसी अन्य द्वारा कुफ़ू न होने की स्थिति में और पर्याप्त महर (महर-ए-मिसल) के बिना किया गया विवाह बिल्कुल भी वैध नहीं होगा। यही फ़तवा है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसला 368: बदायूँ, ब्रह्मपुर से, अज़ीमउल्लाह खान साहब द्वारा भेजा गया, 22 जमादी-उल-आखिर 1329 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: हिंदा (नाबालिग लड़की) के पिता ज़ैद को बक्र ने धोखे से यह विश्वास दिलाया कि खालिद उसकी बिरादरी का है और एक कुलीन परिवार से है। इस तरह, ज़ैद को अपनी नाबालिग बेटी हिंदा का विवाह नाबालिग खालिद से करने के लिए राजी किया गया। तदनुसार, ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह खालिद से कर दिया। निकाह के बाद, हिंदा खालिद की ममेरी बहन के घर रही, जिसके बारे में कहा गया था कि वह खालिद का पालन-पोषण कर रही है। अब, नाबालिग हिंदा को पता चला है कि खालिद उसकी बिरादरी या जोड़ (कुफ़ू) का नहीं है, बल्कि एक नीची बिरादरी का नाजायज बच्चा है। हिंदा ने खालिद को अपना पति स्वीकार नहीं किया, न ही उसके पास गई, और परिपक्वता (ब्लूग) होने पर उसने उस निकाह के समझौते को रद्द

कर दिया जो तैयार किया गया था। क्या यह रद्दीकरण शरीयत-ए-मोहम्मदी के अनुसार वैध हो सकता है या नहीं?

उत्तर: अल-जवाब: हाँ, पूछी गई स्थिति में निकाह रद्द कर दिया जाएगा। यानी हिंदा के पास दावा करने का अधिकार है, और दावे के बाद यह न्यायिक रूप से रद्द हो जाएगा। क़ाज़ी खान, फ़तह अल-क़दीर, बज़ज़िया, रद अल-मुहतार आदि में लिखा है:

[बॉक्स में पाठ] अरबी: एक व्यक्ति ने अपनी बेटी का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से किया जिसे उसने नेक समझा और सोचा कि वह नशा नहीं करता, लेकिन बाद में वह नशेड़ी निकला। परिपक्व होने पर उसने कहा, "मैं निकाह से सहमत नहीं हूँ अगर उसका पिता नशा करता है..." उर्दू: एक व्यक्ति ने अपनी बेटी का निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दिया जिसके बारे में पिता का यह विचार था कि वह नेक है और शराब नहीं पीता, लेकिन बाद में पता चला कि वह शराब का आदी है। परिपक्वता (ब्लूग) पर बेटी ने पिता द्वारा किए गए निकाह के बारे में कहा कि "मैं राज़ी [नहीं]..."

1. दर्र-उल-मुख़्तार, बाब-उल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191 पृष्ठ 637 का 739

کہ رضا پر دال ہو گیا تو نکاح نافذ ہو گیا، اور اب ان کی ناراضمندی بلا وجہ صحیح شرعی معتبر نہیں بلکہ وہی بحال بلوغ دختر کو اختیارِ انکار تو دعوٰی فسخ ہو گا اور اگر کوئی قول و فعل رضا کا بعد نکاح ان سے صادر نہیں ہوا تھا کہ انھوں نے اسے رد کر دیا تو نکاح رد ہو گیا اور اب یہ دختر اس سے محض اجنبیہ ہے اور اگر وہ لڑکا اس عورت کا کفو نہیں یعنی کوئی ایسی کمی رکھتا ہے جس سے اس کے ساتھ نکاح اولیائے دختر کے لئے باعثِ بدنامی و مطعونی ہو تو یہ نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں اگرچہ خود لڑکوں نے کیا ہو تا اگرچہ دختر بعد بلوغ اس پر راضی ہوتی۔

[چوکھٹے میں تحریر] عربی: لانه یفتي في غیر الکفو بعدم الصحة اصلا لفساد الزمان۔ واللہ تعالی اعلم۔ اردو: کیونکہ زمانہ کے فساد کی وجہ سے غیر باپ دادا کا دیا ہوا نکاح غیر کفو اور غیر مہر مثل میں بالکل صحیح نہ ہو گا، اسی پر فتوٰی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۶۸: از بدایوں برہم پور مرسلہ عظیم اللہ خاں صاحب ۲۲ جمادی الآخرہ ۱۳۲۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید پدر ہندہ نابالغہ کو بکر نے ازراہ فریب یہ یقین دلایا کہ خالد اس کا ہم قوم اور شریف خاندان ہے اور اس طرح زید کو اس امر کی ترغیب دی کہ وہ اپنی نابالغہ دختر ہندہ کا نکاح نابالغ سے کرے، چنانچہ خالد کے ساتھ زید نے اپنی دختر نابالغہ کا عقد کرا دیا، ہندہ بعد عقد خالد کے ماموں زاد ہمشیرہ کے گھر جس کے زیر پرورش خالد بیان کیا گیا تھا رہی صغیرہ ہندہ کو اب علم اس بات کا ہوا کہ خالد اس کا ہم قوم و کفو نہیں ہے بلکہ ولد الحرام و ذلیل قوم ہے تو ہندہ نے خالد کو اپنا شوہر نہیں جانا اور نہ اس کے پاس آئی گئی اور معاہدہ نکاح جو مرتب ہوا تھا بوقتِ بلوغ فسخ کر دیا، یہ انفساخ مطابق شرع محمدی ہو سکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: ہاں صورتِ مستفسرہ میں نکاح فسخ کیا جائے گا یعنی ہندہ کو اختیار دعویٰ اور بعد دعویٰ حکماً فسخ ہو گا قاضی خاں و فتح القدیر و بزازیہ و رد المحتار وغیرہ میں ہے:

[چوکھٹے میں تحریر] عربی: زوج بنته من رجل ظنه مصلحا لا یشرب مسکرا فاذا هو مدمن فقالت بعد الکبر لا ارضی بال نکاح ان لم یکن ابوہا یشرب المسکر اردو: کسی شخص نے اپنی بیٹی کا نکاح ایسے شخص سے کر دیا جس کے متعلق باپ کو گمان تھا کہ صالح ہے اور شراب نہیں پیتا تو بعد کو معلوم ہوا کہ وہ شراب کا عادی ہے بیٹی نے بلوغ پر باپ کے کئے ہوئے نکاح کے بارے میں کہا کہ میں راضی

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱ Page 637 of 739

[Table 1] (Arabic): Nor is it known by him, and the majority of her family are pious, then the marriage is void by consensus. (End quote) (Urdu Translation): If (the father) is not (known for it) and if the father is not a drunkard and the girl's family are predominantly righteous people, then by consensus this marriage is void. (End quote) (T)

It is in Radd al-Muhtar: [Table 2] (Arabic): Its meaning is that it will be invalidated as stated in al-Dhakhira, because the issue is predicated on the case where the daughter does not express consent after reaching maturity, as explicitly stated in al-Khaniya, al-Dhakhira, and others. And upon this is based what is in al-Quniya: he married off his minor daughter to a man he believed to be free-born, but it turned out he was a manumitted slave, so it is void by consensus. (End quote) It is understood from the phrase in al-Quniya regarding 'due to immorality' that there is no difference in the lack of suitability (kafa'ah) whether it is due to immorality or otherwise, such that if he married her to a poor person or a laborer and he was not a suitable match for her, it would not be valid. This was stated in al-Bahr. (Urdu Translation): Its meaning is that it can be declared void, as in al-Dhakhira, because the situation of the case is based on the assumption that the girl expressed lack of consent after becoming an adult, as specified in al-Dhakhira and al-Khaniya etc. And this issue of al-Quniya will also be interpreted in the same way, that someone married off his minor daughter to such a person about whom he thought he was originally free, but later it was discovered that he is someone's manumitted slave, so this marriage is void by consensus. And from the phrase of al-Quniya it is known that it makes no difference whether the lack of suitability is due to immorality or any other reason. Even if someone married a minor to a poor person or someone (of low status) and it was not a suitable match, the marriage would still not be valid. This was stated in al-Bahr. (T)

It is in Durr al-Mukhtar: [Table 3] (Arabic): Separation: if it is from her side, it is an annulment (faskh), and if it is from his side, it is a divorce (talaq), and a judicial decree is a condition for all cases except eight. (Urdu Translation): If the reason for separation is from the girl's side, it will be an annulment (faskh), and if it is from the husband's side, it is a divorce (talaq), and in every case, a judicial decree is a condition except for eight situations. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on al-Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/321; Fatawa Qadi Khan, Section on al-Kafa'ah, printed by Nawal Kishore Lucknow 1/162; Fath al-Qadir, Section on al-Kafa'ah, Maktabah Nuriyah Razvia Sukkur 3/195.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/305.
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on al-Wali, Matba' Mujtabai Delhi 1/193.

[तालिका 1] (अरबी): न ही उसे इसके लिए जाना जाता है, और उसके परिवार के अधिकांश लोग नेक हैं, तो निकाह सर्वसम्मति से शून्य (बातिल) है। (अंत) (उर्दू अनुवाद): यदि (पिता) इसके लिए नहीं (जाना जाता) और यदि पिता शराबी नहीं है और लड़की का परिवार मुख्य रूप से नेक लोगों का है, तो सर्वसम्मति से यह निकाह शून्य है। (अंत) (त)

रद्द अल-मुह्तार में है: [तालिका 2] (अरबी): इसका अर्थ यह है कि इसे शून्य किया जाएगा जैसा कि ज़ख़ीरा में है, क्योंकि मसला इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि लड़की ने वयस्क होने के बाद अपनी सहमति न दी हो, जैसा कि ख़ानिया और ज़ख़ीरा आदि में स्पष्ट किया गया है। और इसी पर.क़ुनिया के उस मसले को भी आधारित माना जाएगा जिसमें किसी ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दिया जिसे वह आज़ाद समझता था, पर वह बाद में गुलाम निकला, तो वह सर्वसम्मति से शून्य है। और.क़ुनिया की इबारत 'फ़िस्क़ (अधर्म) के कारण' से यह ज्ञात होता है कि उपयुक्तता (कफ़ाअत) की कमी चाहे अधर्म के कारण हो या किसी और वजह से, दोनों में कोई अंतर नहीं है, यहाँ तक कि अगर उसका निकाह किसी गरीब या मज़दूर से कर दिया गया और वह उसके योग्य नहीं था तो निकाह सही नहीं होगा। इसका उल्लेख अल-बह्र में है। (उर्दू अनुवाद): इसका अर्थ यह है कि इसे शून्य किया जा सकता है जैसा कि ज़ख़ीरा में है, क्योंकि मसले की स्थिति इस धारणा पर है कि लड़की ने बालिग होने के बाद असहमति व्यक्त की हो, जैसा कि ज़ख़ीरा और ख़ानिया आदि में साफ़ कहा गया है। और.क़ुनिया के इस मसले को भी इसी पर आधारित माना जाएगा कि किसी ने अपनी नाबालिग लड़की का निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दिया जिसके बारे में उसे गुमान था कि वह मूल रूप से आज़ाद है, बाद में मालूम हुआ कि वह किसी का आज़ाद किया हुआ (ग़ुलाम) है, तो यह निकाह सर्वसम्मति से शून्य है। और.क़ुनिया की इबारत से मालूम होता है कि ग़ैर-कफ़ू (अयोग्य मेल) फ़िस्क़ या किसी और वजह से हो, दोनों में फ़र्क़ नहीं। यहाँ तक कि किसी ने नाबालिग का निकाह फ़कीर या किसी ऐसे से कर दिया जो उसका कफ़ू न था, तो भी निकाह सही न होगा। इसका ज़िक्र बह्र में है। (त)

दुर्र अल-मुख़्तार में है: [तालिका 3] (अरबी): अलगाव: यदि वह स्त्री की ओर से हो तो वह निकाह-रद्दीकरण (फ़स्ख़) है, और यदि पुरुष की ओर से हो तो वह तलाक़ है, और सभी स्थितियों में अदालती फ़ैसला शर्त है सिवाय आठ स्थितियों के। (उर्दू अनुवाद): अगर अलगाव लड़की की ओर से हो तो वह

फ़स्ख़ होगा, और अगर पति की ओर से हो तो वह तलाक़ है और हर स्थिति में अदालती फ़ैसला शर्त है सिवाय आठ स्थितियों के। (त)

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअत, दार एहया अल-तुरास अल-अरबी बेरूत 2/321; फ़तावा काज़ी ख़ान, लखनऊ 1/162; फ़त्ह अल-क़दीर, सुक्कुर 3/195।
2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार एहया अल-तुरास अल-अरबी बेरूत 2/305।
3. दुर्र अल-मुख़्तार, बाब अल-वली, दिल्ली 1/193।

[جدول 1] ولا عرف به وغلبة اهل بیتها مصلحون فالنکاح باطل بالاتفاق اھ نہیں ہوں تو اگر باپ شرابی نہیں اور لڑکی کا خاندان غالب طور پر صالح لوگ ہیں تو بالا تفاق یہ نکاح باطل ہے اھ (ت)

ردالمحتار میں ہے: [جدول 2] معناه انه سیبطل کما في الذخیرة لان المسألة مفروضة فیما اذالم ترض البنت بعد ماکبرت کما صرح به في الخانیة والذخیرة وغیرهما وعلیه یحمل ما في القنیة زوج بنته الصغیرة من رجل ظنه حر الاصل وکان معتقاً فهو باطل بالاتفاق اھ وعلم من عبارة القنیة بسبب الفسق انه لافرق في عدم الکفاءة بسبب الفسق اوغیره حتی لوزوجها من فقیر اوذی حرفة ولم یکن کفؤا لها لم یصح افاده في البحر. اس کا معنی یہ ہے کہ وہ باطل کیا جاسکتا ہے جیسا کہ ذخیرہ میں ہے، کیونکہ مسئلہ کی صورت اس مفروضہ پر ہے کہ لڑکی نے بالغ ہونے کے بعد عدم رضا کا اظہار کیا ہو جیسا کہ ذخیرہ اور خانیہ وغیرہما میں اس کی تصریح کی ہے، اور قنیہ کے اس مسئلہ کو کسی نے اپنی نابالغہ لڑکی کا نکاح ایسے شخص سے کردیا جس کے بارے میں اسے گمان تھا کہ یہ اصلی آزاد ہے بعد میں معلوم ہوا کہ وہ کسی کا آزاد کردہ ہے تو یہ نکاح بالاتفاق باطل ہے بھی اسی پر محمول کیا جائے گا اھ اور قنیہ کی عبارت سے معلوم ہوتا ہے کہ غیر کفو فسق یا کسی اور وجہ سے ہو دونوں میں فرق نہیں۔ حتی کہ کسی نے نابالغہ کا نکاح فقیر یا کسی کسی سے کردیا اور یہ کفو نہ تھا، تو بھی نکاح صحیح نہ ہوگا۔ اس کا افادہ بحر میں ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: [جدول 3] الفرقة ان من قبلها ففسخ وان من قبله فطلاق وشرط للکل القضاء الاثمانیة . اگر لڑکی کی طرف سے تفریق کی وجہ ہے تو فسخ ہوگا، اور اگر خاوند کی طرف سے ہو تو وہ طلاق ہے اور ہر صورت میں قضا شرط ہے ماسوائے آٹھ صورتوں کے۔ (ت)

1 ردالمحتار باب الکفاءۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۲۱/۲، فتاوی قاضی خان فصل فی الکفاءۃ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱۶۲/۱، فتح القدیر فصل فی الکفاءۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۵/۳ 2 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ 3 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۳/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 11

In "Khaniyah" it is stated: Annulment due to lack of compatibility (Kafa'ah) can only take place in front of a Qazi (judge), because this is a matter of ijtihad (legal reasoning). End. (Translator's note: Allah knows best).

Problem 369: Submitted by Khan Bahadur Maulvi Muhammad Khalilullah Khan, Post Office Gola, District Kheri. Musammat Hindah passed away and left behind two daughters as maternal grandchildren. At the time of the deceased's passing, her daughters were being raised in every respect by their real maternal grandfather. The daughters have now reached the age of puberty. The girls' father is present in his homeland but provides no assistance for their upbringing. When the mother's father (maternal grandfather) arranges for their marriage, the father objects. He does not participate in the daughters' marriage because he wants to remain separate from the expenses. In such a situation, can the real maternal grandfather, acting as a guardian (wali), perform their nikah (marriage contract)? If the maternal grandfather performs the nikah of these daughters in the aforementioned circumstances, what is the appropriate course of action? Explain and be rewarded.

The Answer: When the girls have reached puberty, no one holds compulsory guardianship (wilayat-e-jabriyah) over them. Any marriage performed with their consent can be challenged by their guardian, i.e., their father, in only two scenarios: Firstly, if the person they are marrying is so inferior in terms of lineage, religion, conduct, or profession that marrying him would be a source of shame and disgrace for the girls' father. In this case, unless the father explicitly grants permission knowing the person is not compatible before the nikah, the marriage will not even occur; it will be utterly void. Secondly, if there is a gross deficiency in the daughters' dower (mahr). For instance, if her proper dower (mahr-e-mithl) is one thousand rupees but only five hundred is fixed. In this case, the father has the right to object until the husband pays the full amount. When it is free from these situations—meaning the person they are marrying is not so inferior in lineage, religion, etc., that the marriage would cause reproach and ill-repute for the girls' father, and there is no gross deficiency in the proper dower—then the nikah performed by the maternal grandfather with the girls' permission will be valid, complete, effective, and binding. The girls' father will have no right to object. It is stated in "Durr al-Mukhtar": A virgin

who has reached puberty cannot be forced into marriage, because compulsory guardianship ends upon reaching puberty. (T)

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Compatibility (Al-Kafa'ah), Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/122.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship (Al-Wali), Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

"खानीया" में है: कफ़ाअत (योग्यता) की कमी के कारण निकाह का निरसन केवल काज़ी के यहाँ ही हो सकता है, क्योंकि यह मामला इज्तिहादी (कानूनी तर्क का) है। समाप्त। (अनुवादक की टिप्पणी: अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 369: प्रेषक खान बहादुर मौलवी मोहम्मद खलीलउल्लाह खान, डाकखाना गोला, जिला खेरी। मुसम्मात हिंदा का इंतकाल हो गया और उन्होंने दो बेटियाँ (नाती) छोड़ीं। उनके इंतकाल के समय उन लड़कियों की हर तरह से परवरिश उनके सगे नाना ने की। अब वे लड़कियां बालिग (वयस्क) हो चुकी हैं। उन लड़कियों का पिता अपने वतन में मौजूद है लेकिन उनकी परवरिश में किसी तरह की मदद नहीं करता। जब नाना उनकी शादी का इंतज़ाम करते हैं, तो पिता मना करता है। वह शादी के खर्चों से बचने के लिए उनमें शामिल नहीं होता। ऐसी स्थिति में, क्या सगा नाना वली (अभिभावक) की हैसियत से उनका निकाह करा सकता है? अगर नाना ऐसी स्थिति में उन लड़कियों का निकाह करा दे, तो इस बारे में शरीयत का क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: जब लड़कियां बालिग हो गईं, तो उन पर किसी की विलायत-ए-जबरिया (अनिवार्य अभिभावकत्व) नहीं रही। उनकी सहमति से होने वाले निकाह पर उनके वली यानी पिता को केवल दो स्थितियों में आपत्ति करने का अधिकार होगा: पहली यह कि जिससे निकाह किया जाए, वह उस लड़की के कफ़ू (बराबर) न हो, यानी वंश, धर्म, आचरण या पेशे आदि में उससे इतना कम हो कि उससे निकाह करना लड़की के पिता के लिए अपमान और शर्म का कारण बने। इस स्थिति में, जब तक पिता निकाह से पहले उस व्यक्ति को गैर-कफ़ू जानते हुए स्पष्ट अनुमति न दे दे, निकाह होगा ही नहीं, बल्कि पूरी तरह से बातिल (अमान्य) होगा। दूसरी यह कि लड़कियों के महर में भारी कमी की जाए, उदाहरण के लिए उसका महर-ए-मिसल (उचित महर) एक हज़ार रुपये हो और पाँच सौ तय किया जाए। इस स्थिति में पिता को आपत्ति का अधिकार होगा जब तक कि शौहर महर पूरा न कर दे। जब ये स्थितियाँ न हों—अर्थात जिससे निकाह किया जाए वह वंश, धर्म आदि में लड़की से इतना कम न हो कि उससे निकाह लड़की के पिता के लिए निंदा और बदनामी का कारण बने, और महर-ए-मिसल में भी भारी कमी न की जाए—तो लड़कियों की अनुमति से नाना द्वारा किया गया ऐसा निकाह सही, पूर्ण, प्रभावी और अनिवार्य होगा, जिस पर लड़कियों के पिता को कोई आपत्ति करने का

अधिकार नहीं है। "दुर्रे मुख़्तार" में है: बालिग कुँवारी लड़की को निकाह के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, क्योंकि बालिग होने पर विलायत (अनिवार्य अभिभावकत्व) खत्म हो जाती है। (त)

1. फ़तावा क़ाज़ी खान, कफ़ाअत के अध्याय में, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/122
2. दुर्रे मुख़्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191

पृष्ठ 639 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

خانیہ میں ہے: لایکون الفسخ لعدم الکفآءۃ الاعند القاضی لانہ | کفؤ نہ ہونے کی بنا پر فسخ صرف قاضی کے ہاں ہی ہو سکتا ہے مجتہد فیہ ۱ھ | کیونکہ یہ مسئلہ اجتہادی ہے۔ اھ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۶۹: مسئولہ خان بہادر مولوی محمد خلیل اللہ خان ڈاک خانہ گولہ ضلع کھیری مسماۃ ہندہ نے انتقال کیا اور اولاد دختری سے دو لڑکیاں چھوڑیں وقتِ انتقال میں مسماۃ مذکورہ کی لڑکیوں نے اپنے حقیقی نانا کی پرورش ہر قسم کی اس وقت تک پائی، دختران کی عمر سن بلوغت کو پہنچی ہے، والد لڑکیوں کا اپنے وطن میں موجود ہے اور کسی قسم کی امداد پرورش دختران مذکور نہیں کرتا، والد والدہ دختران مذکور کا شادی کا انتظام کرتا ہے تو والد منع آتا ہے، والد شریک شادی دختران مذکور بوجہ اس کے کہ صرفہ شادی سے علیحدہ رہے، نہیں ہوتا ہے، تو ایسی حالت میں حقیقی نانا بحیثیت ولی کے نکاح کر سکتا ہے اگر نکاح دختران مذکور کا حقیقی نانا ایسی حالت مذکور میں کر دے تو کیا مناسب ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: لڑکیاں جبکہ بالغ ہو گئیں ان پر ولایت جبریہ کسی کی نہ رہی، ان کی رضا سے جو نکاح ان کا ہو صرف دو حالت میں ولی یعنی ان کے باپ کو ان پر اعتراض کا حق ہوگا، اول یہ کہ جس سے نکاح کیا جائے وہ اس دختر کا کفو یعنی نسب یا مذہب یا چال چلن یا پیشہ وغیرہ کسی بات میں اس سے اتنا کم ہو کہ اس سے نکاح ہونا پدر دختر کے لئے باعث ننگ وعار ہو، اس صورت میں توجب تک باپ پیش از نکاح اس شخص کو غیر کفو جان کر صراحۃً اجازت نہ دے نکاح ہوگا ہی نہیں محض باطل ہوگا۔ دوم یہ کہ دختروں کے مہر میں کمی فاحش کی جائے مثلاً اس کا مہر مثل ہزار روپے ہو اور پانسو باندھا جائے، اس صورت میں باپ کو اعتراض کا حق ہوگا یہاں تک کہ

شوہر مہر پورا کر دے اور جب ان صورتوں سے پاک ہو یعنی جس سے نکاح کیا جائے وہ نسب ومذہب وغیرہ میں دختر سے ایسا کم نہ ہو کہ اس سے نکاح ہونا پدر دختر کے لئے باعث مطعونی وبدنامی ہو، اور مہر مثل میں بھی کمی فاحش نہ کی جائے، تو لڑکیوں کی اجازت سے نانا کا ایسا کیا ہوا نکاح صحیح و تمام و نافذ ولازم ہوگا جس پر پدر دختران کو کوئی اعتراض نہیں پہنچتا، در مختار میں ہے: لا تجبر البالغة البکر علی النکاح لانقطاع الولایة | باکرہ بالغہ پر ولایت اجبار نہیں کیونکہ اس کے بالغ ہو جانے بالبلوغ ۱۲؎۔ | پر ولایت ختم ہو چکی ہے۔ (ت)

۱۲؎ فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الکفاءۃ نولکشور لکھنو ۱/ ۱۲۲ ۱۲؎ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

Volume 11 Fatawa Razawiya

In the same it is mentioned: "The marriage performed by a free, sane, adult woman herself will be valid even without the consent of the guardian (wali). If the guardian is an agnate relative ('asaba), he has the right to object in case of non-equivalence (ghair-kufu), and in the case of non-equivalence, a fatwa of invalidity of the marriage will be given." (Arabic: Nafadha nikahu hurratin mukallafatin bila ridan waliyyin wa lahu idha kana 'asabatan al-i'tiradu fi ghayr al-kuf'i wa yufta fi ghayr al-kuf'i bi'adami jawazihi aslan [1]) An independent, sane, adult woman's self-performed marriage will be valid even without the guardian's consent. If the guardian is an agnate relative, he has the right to object in the case of a non-equivalent match, and a fatwa of non-permissibility of marriage will be given in cases of non-equivalence. (T)

In the same it is mentioned: "If she marries for less than her proper dowry (mahr-e-misl), the agnate guardian has the right to object until the proper dowry is completed, and the judge (Qadi) can separate them to remove the disgrace (from the guardian)." (Arabic: Law nakuhat bi-aqalla min mahriha falil-waliyyi al-'asabati al-i'tiradu hatta yutimma mahra mithliha wa yufarriqu al-qadi baynahuma daf'an lil-'ar [2]) And Allah Almighty knows best. If a girl marries for a very low dowry, the agnate guardian has the right to object until the proper dowry is paid in full, and the judge can annul the marriage to remove the disgrace from the guardian. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 70: From Sandhan village, Achhnera post office, Agra district, sent by Mahboob Ahmad Sahib, 24 Rabi al-Akhar 1336 AH. Upon the death of the father of the minor girl Hinda, her legal heirs are present but they refuse to become her guardian (wali). Can Hinda's biological mother, who has now remarried, or her second husband, become her guardian or not? Answer: Becoming a guardian or not is not optional. Whoever the pure Sharia has designated as a guardian is the guardian; their refusal changes nothing. However, if the situation is such that an equivalent match (kufu) is available and the legal guardian refuses to marry her off without a valid Sharia reason, and there is a genuine fear of losing the equivalent match due to this refusal, then a more distant guardian (wali ab'ad), even if it's the mother (even if she has remarried), can perform the marriage of the minor based on the advice of a Sunni, sound-creed (Sahih-ul-Aqida) religious scholar of that place. And Allah Almighty knows best.

Problem 71: From Afzalgarh, Bijnor district, Qazi Sarai locality, sent by Raghibuddin Sahib, 24 Rabi al-Akhar 1336 AH. Zaid married Hinda, and a daughter was born. When the daughter was three years old, Zaid divorced Hinda. The daughter remained with Hinda. After the completion of her waiting period ('iddat), Hinda married Bakr. When the daughter was nearly nine years old, Hinda and Bakr married her off to a person who is completely from Islam...

[1] Durr-al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi 1/191 [2] Durr-al-Mukhtar, Chapter on Equivalence, Mujtabai Press Delhi 1/195

उसी में है: "एक स्वतंत्र, समझदार, वयस्क महिला द्वारा स्वयं किया गया विवाह अभिभावक (वली) की सहमति के बिना भी मान्य होगा। यदि अभिभावक रक्त संबंधी (असबा) है, तो उसे गैर-तुल्यता (गैर-कुफ़ू) के मामले में आपत्ति करने का अधिकार है, और गैर-तुल्यता के मामले में विवाह की अमान्यता का फ़तवा दिया जाएगा।" [१] आज़ाद, अक्लमंद, बालिग़ा महिला का खुद किया हुआ निकाह वली की रज़ा के बिना भी नाफ़िज़ (लागू) होगा। वली अगर असबा (रक्त संबंधी) हो तो उसे गैर-कुफ़ू की सूरत में ऐतराज़ का हक़ है और गैर-कुफ़ू में निकाह के अदम-जवाज़ (अमान्यता) का फ़तवा दिया जाएगा। (त)

उसी में है: "अगर उसने अपने महर-ए-मिस्ल (उचित महर) से कम पर निकाह किया, तो असबा वली को ऐतराज़ का हक़ है जब तक कि महर-ए-मिस्ल पूरा न कर दिया जाए, और काज़ी (न्यायाधीश) वली की बदनामी दूर करने के लिए उनके बीच जुदाई करा सकता है।" [२] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अगर लड़की ने बहुत कम महर पर अपना निकाह किया तो वली-ए-असबा को ऐतराज़ का हक़ है यहाँ तक कि महर-ए-मिस्ल पूरा करें, और काज़ी वली की बदनामी को खत्म करने के लिए निकाह को खत्म कर सकता है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ७०: ग्राम सांधन, डाकखाना अछनेरा, जिला आगरा से, महबूब अहमद साहब द्वारा प्रेषित, २४ रबी-उल-आख़िर १३३६ हिजरी। नाबालिग़ हिंदा के पिता की मृत्यु के बाद, हिंदा के शरई वारिस मौजूद हैं लेकिन वे वली बनने से इनकार करते हैं। हिंदा की सगी माँ, जिसने अब दूसरा निकाह कर लिया है, क्या वह या उसका दूसरा पति वली बन सकते हैं या नहीं? जवाब: वली बनना या न बनना इख्तियारी (वैकल्पिक) नहीं है। जिसे शरीअत-ए-मुतह्हरा ने वली बनाया वह वली है; उनके इनकार से कुछ नहीं होता। हाँ, अगर सूरत यह है कि कुफ़ू (समान वर) मौजूद है और वली बिना किसी शरई वजह के उसका निकाह करने से इनकार करता है और इस इनकार में कुफ़ू के हाथ से निकल जाने का सही अंदेशा है, तो जो वली-ए-अबअद (दूर का अभिभावक) है, चाहे वह माँ ही क्यों न हो (भले ही उसने निकाह कर लिया हो), वह वहां के सुन्नी सही-उल-अक़ीदा आलिम-ए-दीन की सलाह से नाबालिग़ का निकाह कर दे। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ७१: अफ़ज़लगढ़, जिला बिजनौर, मोहल्ला काज़ी सराय से, राग़िबुद्दीन साहब द्वारा प्रेषित, २४ रबी-उल-आख़िर १३३६ हिजरी। ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया, एक बेटी पैदा हुई। जब बेटी की उम्र

तीन साल हुई, ज़ैद ने हिंदा को तलाक़ दे दी। वह बेटी भी हिंदा के पास रही। इद्दत खत्म होने के बाद हिंदा ने अपना निकाह बक्र से किया। जब बेटी की उम्र करीब नौ साल हुई तब उसका निकाह हिंदा और बक्र ने एक ऐसे शख्स से कर दिया जो बिल्कुल इस्लाम से...

[१] दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१९१ [२] दुर्रे मुख़्तार, बाबुल कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१९५

पृष्ठ ६४० का ७३९

اسی میں ہے: نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلا رضی ولی ولہ اذا کان عصبۃ الاعتراض في غیر الکفو ویفتی في غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا۱۔ آزاد عاقلہ بالغہ کا اپنا کیا ہوا نکاح ولی کی رضا کے بغیر بھی نافذ ہوگا، ولی اگر عصبہ ہو تو اس کو غیر کفو کی صورت میں اعتراض کا حق ہے اور غیر کفو میں نکاح کے عدم جواز کا فتوٰی دیا جائے گا۔ (ت)

اسی میں ہے: لو نکحت باقل من مھرھا فللولی العصبۃ الاعتراض حتی یتم مھر مثلھا ویفرق القاضي بینھما دفعا للعار۲۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ اگر لڑکی نے انتہائی کم مہر پر اپنا نکاح کیا تو ولی عصبہ کو حق اعتراض ہے حتی کہ مہر مثل پورا کریں، اور قاضی ولی کی عار کو ختم کرنے کے لئے نکاح کو فسخ کر سکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم ۔ (ت)

مسئلہ ۷۰: از موضع ساندھن ڈاکخانہ اچھنیرہ ضلع آگرہ مرسلہ محبوب احمد صاحب ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ والد ہندہ نابالغہ کے فوت ہونے پر ہندہ کے شرعی وارث موجود ہیں مگر ولی بننے سے انکار کرتے ہیں ہندہ کی ماں حقیقی جس نے اب عقد ثانی کر لیا ہے وہ یا اس کا شوہر ثانی ولی بن سکتے ہیں یا نہیں؟ الجواب: ولی بننا نہ بننا اختیاری نہیں۔ جس کو شرع مطہر نے ولی کیا وہ ولی ہے اس کے انکار سے کچھ نہیں ہوتا، ہاں اگر صورت یہ ہے کہ کفو موجود ہے اور ولی بلاوجہ شرعی اس کے نکاح کرنے سے انکار کرتا ہے اور اس انکار میں کفو کے فوت ہونے کا اندیشہ صحیح ہے تو جو ولی ابعد ہے اگرچہ ماں ہوا گرچہ نکاح کر چکی ہو وہ وہاں کے عالم دین سنی صحیح العقیدہ کے صوابدید سے نابالغ کا نکاح کرے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۱: از افضل گڑھ ضلع بجنور محلہ قاضی سرائے مرسلہ راغب الدین صاحب ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ زید نے ہندہ سے نکاح کیا، ایک دختر پیدا ہوئی، جب عمر دختر کی تین سال کی ہوئی زید نے ہندہ کو طلاق دی، وہ دختر بھی ہندہ کے پاس رہی، بعد ختم ہونے عدت کے ہندہ نے اپنا نکاح بکر سے کیا، جب دختر کی عمر قریب نو سال کے ہوئی تب اس کا نکاح ہندہ نے اور بکر نے ایک سے کر دیا وہ شخص بالکل اسلام سے

۱ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱ ۲ درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۵/۱

Fatawa Ridawiyyah, Volume 11

...is not aware, nor does he ever observe the fast of Ramadan or perform prayer. Now the daughter's age is fifteen years; she adheres to fasting and prayer and knows the Holy Quran and a few books on religious issues. She does not want to live at his place, and the original guardian is alive; he did not grant permission for the marriage. Is this marriage valid according to Sharia or not?

The Answer: No answer can be given to such a vague question. Bakr and Hindah performed the marriage; at that time the girl's age was nine years. It should be known whether she had reached puberty or was a minor. A nine-year-old girl can also reach puberty. When did the news of this marriage reach Zaid, and what did he say at that time or after it? Those words should be written. Under whose authority did the departure (rukhsati) take place? Did she continue to visit her father's home from her husband's home or not? If the girl was a minor at that time, when did she reach puberty? How much time has passed since then? Then, since when has she not wanted to live at her husband's place? Is this dislike only in her heart or has she expressed it verbally as well? If she spoke, what words did she use and when? Does she have any children with her husband or not? A ruling can only be written after receiving detailed answers to all these points. And Allah Almighty knows best.

Issue 372: From Multan Cantonment, sent by Karim Bakhsh Sahib Khansaman, 24 Rabi al-Thani 1326 AH.

The marriage of the daughter of Husain Bakhsh Khansaman with Pir Bakhsh Khansaman from Koh Sapato, District Shimla, took place about eleven or twelve years ago. When the daughter's engagement was arranged with Pir Bakhsh Khansaman, at that time Pir Bakhsh Khansaman's first wife, who was married due to lack of children, arranged for a second marriage with the daughter of Husain Bakhsh. Pir Bakhsh agreed to live with the in-laws (Ghar Damadi), which is recorded in the mosque register of Koh Sapato, District Shimla. The Imam of the mosque who performed the marriage is also present. When the marriage ceremony etc. were completed, the next day Pir Bakhsh started a dispute, saying, "Send my wife with me." The girl's parents refused based on the council's decision, saying, "Stay with us for a while, and when your wife is willing to go with you, take her." That person insisted, "Send her with me now." That is, their dispute started from the beginning and lasted for several months. After some time, Pir Bakhsh's younger brother decided to send Pir Bakhsh's wife with him. After some time, when the girl became pregnant, she came to her mother. A girl

was born who is currently thirteen or fourteen years old. When the baby girl was two months old, Pir Bakhsh's wife went back to her husband. Due to discord, there was a dispute between those two women. After six months, Pir Bakhsh's wife came back to her parents. Then they reconciled, and Pir Bakhsh's wife went back with her husband. After a period of three months, she was sent back again. Later, a boy was born to Pir Bakhsh who is about eleven or twelve years old. Neither did that person...

फतावा रज़विया, ग्यारहवाँ खंड

...उसे जानकारी नहीं है, न वह रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखता है और न ही कभी नमाज़ अदा करता है। अब बेटी की उम्र पंद्रह वर्ष है, वह रोज़ा और नमाज़ की पाबंद है और कुरान मजीद तथा दो-चार मसाइल की किताबें जानती है। वह उसके यहाँ नहीं रहना चाहती, और असली वली (अभिभावक) जीवित है, उसने निकाह की अनुमति नहीं दी थी। क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार सही है या नहीं?

उत्तर: इतने अस्पष्ट सवाल का कोई जवाब नहीं दिया जा सकता। बक्र और हिंदा ने निकाह किया, उस समय लड़की की उम्र नौ साल थी। यह जानना ज़रूरी है कि वह बालिग़ थी या नाबालिग़, नौ साल की लड़की भी बालिग़ हो सकती है। इस निकाह की ख़बर ज़ैद को कब मिली, और उसने उस समय या उसके बाद क्या कहा, वे शब्द लिखे जाने चाहिए। रुख़सती (विदाई) किसके अधिकार से हुई? क्या शौहर के यहाँ से बाप के यहाँ आना-जाना रहा या नहीं? अगर लड़की उस समय नाबालिग़ थी, तो वह कब बालिग़ हुई, उसे कितना समय बीत गया? फिर वह जो शौहर के यहाँ नहीं रहना चाहती, यह कितने समय से है? और यह नापसंदगी सिर्फ दिल में है या ज़ुबान से भी कुछ कहा? अगर कहा, तो क्या शब्द कहे और कब कहे? क्या शौहर से उसकी कोई औलाद भी हुई या नहीं? इन सब बातों का विस्तार से उत्तर मिलने पर ही हुक्म (फैसला) लिखा जा सकता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 372: मुल्तान छावनी से प्रेषित करीम बख़्श साहब खानसामां, 24 रबी उल-आख़िर 1326 हिजरी।

हुसैन बख़्श खानसामां की बेटी की शादी पीर बख़्श खानसामां (कोह सपाटो, ज़िला शिमला) से लगभग ग्यारह-बारह साल पहले हुई थी। जब बेटी का रिश्ता पीर बख़्श खानसामां के साथ तय किया गया था, तो उस समय पीर बख़्श खानसामां की पहली पत्नी (जिससे बच्चे न होने के कारण दूसरी शादी का इंतज़ाम किया गया था) ने हुसैन बख़्श की बेटी के साथ शादी का प्रबंध किया। पीर बख़्श ने घर-जमाई बनकर रहने का इकरार किया था, जो कोह सपाटो ज़िला शिमला के मस्जिद रजिस्टर में मौजूद है। मस्जिद के पेश इमाम जिन्होंने निकाह पढ़ाया था, वे भी अभी मौजूद हैं। जब निकाह आदि से फ़ुर्सत हुई, तो अगले ही दिन पीर बख़्श ने झगड़ा शुरू कर दिया कि "मेरी बीवी को मेरे साथ भेज दो।" लड़की के माता-पिता ने पंचायत की राय से इनकार किया कि "कुछ समय हमारे साथ रहो, जब

तुम्हारी बीवी की रज़ामंदी तुम्हारे साथ जाने की हो जाए, तब ले जाना।" उस व्यक्ति ने ज़िद की कि "अभी मेरे साथ भेज दो।" यानी शुरू से ही उनके बीच कई महीनों तक झगड़ा रहा। कुछ समय बाद, पीर बख़्श के छोटे भाई ने फ़ैसला किया कि पीर बख़्श की पत्नी को उसके साथ भेज दिया जाए। कुछ समय बाद, जब लड़की गर्भवती हुई, तो वह अपनी माँ के पास आई। एक लड़की पैदा हुई जो इस समय तेरह-चौदह साल की है। जब वह बच्ची दो महीने की हुई, तो पीर बख़्श की पत्नी अपने शौहर के साथ चली गई। अनबन के कारण उन दोनों औरतों में झगड़ा रहा। छह महीने बाद पीर बख़्श की पत्नी फिर अपने माता-पिता के पास आ गई। फिर उनमें सुलह करा दी गई और पीर बख़्श की पत्नी अपने शौहर के साथ चली गई। तीन महीने के बाद उसे फिर वापस भेज दिया गया। पीर बख़्श के यहाँ फिर बाद में एक लड़का पैदा हुआ जो ग्यारह-बारह साल का है। न तो उस व्यक्ति ने...

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

واقف نہیں، نہ روزہ رمضان شریف نہ نماز کبھی ادا کرتا ہے، اب عمر دختر کی پندرہ سال ہے وہ پابند صوم وصلوۃ ہے اور کلام مجید اور دو چار کتاب مسائل کی جانتی ہے وہ اس کے یہاں رہنا نہیں چاہتی، اور ولی اصلی زندہ ہے اس نے اجازت نکاح نہیں دی، یہ نکاح عند الشرع درست ہے یا نہیں؟

الجواب: اتنے گول سوال کا کوئی جواب نہیں ہو سکتا، نکاح بکر وہندہ نے کیا، اس وقت لڑکی کی عمر نو برس کی تھی۔ معلوم ہونا چاہئے کہ بالغہ تھی یا نا بالغہ، نو برس کی لڑکی بھی بالغہ ہو سکتی ہے، اس نکاح کی خبر زید کو کب پہنچی، اور اس نے اس وقت یا اس کے بعد کیا کہا، وہ لفظ لکھے جائیں، رخصت کس کے اختیار سے ہوئی، شوہر کے یہاں سے باپ کے یہاں بھی آنا جانا رہا یا نہیں۔ لڑکی اگر اس وقت نا بالغہ تھی تو کب بالغہ ہوئی، اس کو کتنا زمانہ گزرا پھر وہ جو شوہر کے یہاں نہیں رہنا چاہتی یہ کتنے زمانہ سے ہے، اور یہ کراہت صرف قلب سے ہے یا زبان سے بھی کچھ کہا، کہا تو کیا لفظ کہے اور کب کہے، شوہر سے اس کے کوئی اولاد بھی ہوئی یا نہیں، ان سب باتوں کا مفصل جواب لکھنے پر حکم لکھا جا سکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۷۲: از چھاؤنی ملتان مرسلہ کریم بخش صاحب خانساماں ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۲۶ھ

حسین بخش خانساماں کی دختر کی شادی پیر بخش خانساماں از کوہ سپاٹو ضلع شملہ عرصہ گیارہ بارہ برس کا ہوا کہ جس وقت برخورداری کی نسبت پیر بخش خانساماں کے ساتھ بندوبست کیا گیا تھا تو اس وقت پیر بخش خانساماں کی پہلی زوجہ جو کہ شادی کی ہے سبب نہ اولاد ہونے کے دوسری شادی کا انتظام کیا دختر حسین بخش کے ساتھ، پیر بخش اقرار گھر دامادی کا کیا جو

رجسٹر مسجد کوہ سپاٹو ضلع شملہ میں موجود ہے، اور پیش امام مسجد کے جنہوں نے نکاح پڑھایا تھا وہ بھی اسی وقت موجود ہیں، جس وقت نکاح وغیرہ سے فارغ ہوئے تو دوسرے دن پیر بخش نے جھگڑا شروع کیا کہ میری زوجہ میرے ہمراہ بھیج دو، لڑکی کے والدین نے پنچ کی رو سے انکار کیا کہ چند عرصہ تم ہمارے ہمراہ رہو جب تمھاری بی بی کی رضا تمھارے ساتھ جانے کی ہو جائے لے جاؤ، اس شخص نے اصرار کیا کہ میرے ہمراہ ابھی بھیج دو، یعنی شروع سے جھگڑا یہاں کئی ایک ماہ ان کا جھگڑا رہا، چند عرصہ کے بعد جو کہ زوجہ پیر بخش کا چھوٹا بھائی تھا اس نے فیصلہ کیا کہ پیر بخش کی زوجہ کو پیر بخش کے ہمراہ کر دیا، بعد عرصہ کے لڑکی کے حمل سے ہوئی تو اپنی ماں کے پاس آئی، لڑکی پیدا ہوئی جو اس وقت تیرہ چودہ برس کی ہے، جس وقت لڑکی دو ماہ کی ہوئی تو زوجہ پیر بخش اپنے خاوند کے ساتھ چلی گئی، بہ سبب نااتفاقی ان دونوں عورتوں میں جھگڑا رہا، چھ ماہ کے بعد زوجہ پیر بخش پھر اپنے والدین کے پاس آگئی پھر ان کا اتفاق کر دیا گیا، پھر زوجہ پیر بخش اپنے خاوند کے ہمراہ چلی گئی، عرصہ تین ماہ بعد پھر واپس بھیج دی، پیر بخش کے پھر بعد کو لڑکا پیدا ہوا جو کہ عمر گیارہ بارہ برس کا ہے، نہ تو اس شخص

Fatawa-e-Razvia, Volume 11

...He neither provided food nor clothing, nor did he take his children. Four times the panchayat (council) decided that whatever money was spent on raising the children should be paid back and he should take his children. This person agreed before the elders but did not fulfill it or respond. He was counseled many times, but for eleven or twelve years, he showed no concern. Last year, the girl's maternal uncle arranged her engagement. Even then, he showed no concern. Instead, the girl's uncle went to him and said, "Either arrange the girl's marriage yourself or if you cannot, then waive your claim." He gave no answer. Now, the girl's maternal uncle wants to proceed with the marriage, but Pir Bakhsh (the father) sent a notice to his father-in-law saying, "Do not marry off the girl, otherwise I will file a lawsuit in court, and you will be held responsible." This uncle of the girl went to Multan, and after that, the notice was given. In these eleven or twelve years, he has not given a single penny for his children; witnesses are present. This case is sent to you to provide a fatwa (religious ruling) according to Shari'ah.

The Answer: If the girl is an adult (meaning she has started menstruating), then her own consent for marriage is sufficient, provided the marriage is not to a non-equal (Kufu). That is, it should not be someone whose religion, lineage, conduct, or profession is so low that the marriage becomes a source of disgrace for Pir Bakhsh. If the girl is a minor, her father's permission is necessary. If the mother, maternal uncle, or anyone else marries her off without his permission, it will depend on Pir Bakhsh's approval; if he approves, it will be valid; if he rejects, it will be void. Yes, if a suitable match (Kufu) is found and Pir Bakhsh delays the marriage excessively, causing concern for harm, and neither marries her himself nor lets others do so, then the next guardian for the minor girl after Pir Bakhsh—such as the grandfather, then full brother, then half-brother, then full nephew, then half-nephew, then full paternal uncle, then half-paternal uncle, then son of full paternal uncle, then son of half-paternal uncle, in short, any sane adult male among the grandfather's descendants who is the closest after the father—will have the authority to marry the girl to a suitable match (Kufu) as mentioned. At that time, the father will have no right to object. If there is no such male among the close or distant descendants of the grandfather or great-grandfather, then the mother will have the authority. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Box 1]: "If there are no agnates (Asabat), then the guardianship (wilayah) belongs to the mother."[1] | [Urdu translation]: If there are no agnates, the mother will have the guardianship. (T)

In the same source it says:

[Arabic Box 2]: "The more distant relative has the right to give in marriage due to the refusal (adhl) of the closer one." [Urdu translation]: The distant relative has the right to give in marriage upon the closer one's refusal.

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/193

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 11

...न उसने खाना-कपड़ा दिया और न ही अपने बच्चों को ले गया। चार बार पंचायत में फ़ैसला हुआ कि बच्चों की परवरिश में जो भी पैसा लगा है, उसे अदा करो और अपने बच्चों को ले जाओ, लेकिन इस व्यक्ति ने पंचों के सामने भी इक़रार किया पर उसे पूरा नहीं किया और न ही कोई जवाब दिया। उसे बहुत समझाया गया, लेकिन इन ग्यारह-बारह सालों में उसने कोई ध्यान नहीं दिया। पिछले साल लड़की के मामा ने सगाई भी कर दी, तब भी उसने कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि लड़की के मामा ने खुद जाकर उससे कहा कि या तो तुम लड़की की शादी करवाओ, अगर नहीं कर सकते तो अपना दावा छोड़ दो, उसने कोई जवाब नहीं दिया। अब लड़की के मामा चाहते हैं कि शादी कर दी जाए, तो पीर बख्श (पिता) ने अपने ससुर के नाम नोटिस दिया कि लड़की की शादी मत करना वरना हम कचहरी में दावा करेंगे और इसकी ज़िम्मेदारी आप पर होगी। लड़की का मामा मुल्तान गया था, उसके पीछे यह नोटिस दिया गया। इन ग्यारह-बारह सालों में उसने अपने बच्चों के लिए एक पैसा भी नहीं दिया, गवाह मौजूद हैं। यह फ़ैसला आपके पास भेजा जाता है कि आप शरीयत के अनुसार फ़तवा प्रदान करें।

जवाब: यदि लड़की बालिग है (अर्थात उसे मासिक धर्म शुरू हो गया है), तो निकाह के लिए खुद लड़की की अनुमति पर्याप्त है, बशर्ते निकाह किसी 'ग़ैर-कुफ़ू' (असमान) से न हो। यानी ऐसा न हो जो धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना निम्न हो कि उस लड़की का निकाह पीर बख्श के लिए अपमान का कारण बने। और यदि लड़की नाबालिग है, तो उसके पिता की अनुमति अनिवार्य है। उसकी अनुमति के बिना यदि माँ, मामा या कोई और निकाह कर देता है, तो वह पीर बख्श की अनुमति पर निर्भर रहेगा; यदि वह अनुमति दे दे तो निकाह मान्य होगा, और यदि वह अस्वीकार कर दे तो निकाह रद्द हो जाएगा। हाँ, यदि उपयुक्त वर (कुफ़ू) मिल रहा हो और पीर बख्श निकाह में अत्यधिक देरी करे जिससे नुकसान की आशंका हो, और न खुद निकाह करे न ही दूसरों को अनुमति दे, तो उस समय पीर बख्श के बाद नाबालिग लड़की का जो वली (अभिभावक) होगा, जैसे दादा, फिर सगा भाई, फिर सौतेला भाई, फिर सगा भतीजा, फिर सौतेला भतीजा, फिर सगा चाचा, फिर सौतेला चाचा, फिर सगे चाचा का बेटा, फिर सौतेले चाचा का बेटा, संक्षेप में दादा की संतान में कोई भी समझदार बालिग पुरुष जो पिता के बाद सबसे निकटतम हो, उसे अधिकार होगा कि लड़की का निकाह किसी उपयुक्त वर (कुफ़ू) से कर दे। उस समय पिता को आपत्ति का कोई अधिकार नहीं होगा। यदि दादा

या परदादा की संतान में निकट या दूर का कोई भी ऐसा पुरुष न हो, तो उस समय माँ को अधिकार प्राप्त होगा। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स 1]: "यदि कोई असाब (पितृवंशीय पुरुष संबंधी) न हो, तो विलायत (अभिभावकत्व) माँ को प्राप्त होगी।"[1] | [उर्दू अनुवाद]: अगर असाबात न हों तो विलायत माँ को प्राप्त होगी। (त)

उसी में है:

[अरबी बॉक्स 2]: "निकटतम संबंधी द्वारा निकाह से मना करने पर दूर के संबंधी को निकाह कराने का अधिकार सिद्ध होता है।" [उर्दू अनुवाद]: अक़रब (निकटतम) के निकाह न करने पर अबअद (दूर के संबंधी) को निकाह देने का हक़ है।

---

[1] दुर्रे मुख्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/193

فتاویٰ رضویہ، جلد یاز دہم

نے کھانا کپڑا دیا نہ اپنے بچوں کو لے گیا، چار دفعہ پنچایت میں فیصلہ ہوا کہ جو کچھ زر بچوں کی پرورش کرنے میں ہوا وہ ادا کر دو اور اپنے بال بچوں کو لے جاؤ، مگر یہ شخص پنچوں میں بھی اقرار کر گیا وہ پورانہ کیا نہ جواب دیا یعنی بہتیرا کچھ اس شخص کو سمجھایا گیا لیکن اس عرصہ گیارہ بارہ برس میں کوئی خیال نہ کیا، پچھلے سال اس لڑکی کے ماموں نے منگنی بھی کر دی اس وقت بھی کوئی خیال نہ کیا بلکہ خود جا کر لڑکی کے ماموں نے کہا کہ یا تو تم لڑکی کی شادی کرواؤ گر تم لڑکی کی شادی نہیں کر سکتے تو تم لادعویٰ ہو، کوئی جواب نہیں دیا، اب لڑکی کے ماموں نے چاہا کہ شادی کر دی جائے، تو پیر بخش نے اپنے خسر کے نام نوٹس دی کہ تم لڑکی کی شادی نہ کرنا ورنہ ہم کچہری میں دعویٰ کریں گے آپ کی زیر باری ہوگی اس لڑکی کا ماموں ملتان گیا پیچھے نوٹس دی، اس گیارہ بارہ برس کے اندر ایک پیسہ اپنے بال بچوں کو نہیں دیا گواہ موجود ہیں، یہ فیصلہ آپ کے پاس بھیجا جاتا ہے کہ آپ شریعت کی رو سے فتویٰ عنایت فرمائیں۔

الجواب: لڑکی بالغہ ہے یعنی اسے ماہواری عارضہ آتا ہے جب تو نکاح میں خود لڑکی کی اجازت کافی ہے، بشرطیکہ کسی غیر کفو سے نکاح نہ ہو، یعنی ایسے نہ ہو جو مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ میں اتنا کم ہو جس سے نکاح اس دختر کا پیر بخش کے لئے باعث ننگ و عار ہو، اور اگر لڑکی نابالغہ ہے تو ضرور اس کے باپ کی اجازت درکار ہے بے اس کی اجازت کے اگر ماں یا ماموں یا کوئی نکاح کر دے گا تو پیر بخش کی اجازت پر موقوف رہے گا، وہ جائز کردے گا جائز ہو جائے گا رد کردے گا باطل ہو جائے گا، ہاں اگر کفو کے ملتے ہوئے پیر بخش نکاح میں تاخیر کثیر کرے جس سے ضرر کا اندیشہ ہو نہ آپ نکاح کرے نہ دوسرے کو اجازت دے تو اس وقت

پیر بخش سے اتر کر نابالغہ کا جو ولی ہو گا مثلاً دادا پھر سگا بھائی پھر سوتیلا پھر سگا بھتیجا پھر سوتیلا پھر سگا چچا پھر سوتیلا پھر سگے چچا کا بیٹا پھر سوتیلے کا، غرض دادا کی اولاد میں کوئی مرد عاقل بالغ کہ باپ کے بعد اس سے قریب تر کوئی نہ ہو اسے اختیار ہوگا کہ لڑکی کا نکاح کسی کفو بمعنی مذکور سے کر دے اور اس وقت باپ کو اعتراض کا کوئی حق نہ ہو گا اگر دادا پر دادا دور و نزدیک کی اولاد قریب و بعید میں کوئی ایسا مرد نہ ہو اس وقت ماں کو اختیار ملے گا، در مختار میں ہے:

ان لم تکن عصبة فالولایة للام ۱۔ | اگر عصبات نہ ہوں تو ولایت ماں کو حاصل ہو گی۔ (ت)

اسی میں ہے:

یثبت للابعد التزویج بعضل الاقرب | اقرب کے نکاح نہ کرنے پر ابعد کو نکاح دینے کا

---

۱ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۳

Fatawa Razawiyya, Volume 11

“...due to his refusal to perform the marriage, by consensus.” *Khulasah*[1] - Authority is established by consensus. *Khulasah*. (T)

In *Radd al-Muhtar*, it is stated: “...due to his refusal to marry [her] to an equal (*kufu*) with a proper dowry (*mahr al-mithl*). However, if he refuses [to marry her] to a non-equal, or because the dowry is less than the proper dowry, then he is not considered an unjust preventer (*'adil*).”[2] - If the closest guardian (*aqrab*) refuses to perform the marriage with an equal and for a proper dowry, then the remote guardian (*ab'ad*) has the authority. Otherwise, if the closest guardian refuses marriage due to low dowry or non-equality, it is not correct to declare him a preventer. (T)

The harm referred to here is when an equal is available and marrying the minor girl to him is not against her interest for any reason, and he agrees to pay the full proper dowry, but the father refuses without cause and does not perform the marriage, nor is there any other equal available with whom he wishes to arrange the marriage. In this situation, among the guardians we have listed, the one who is closer should perform the marriage to the available equal for the proper dowry or more, based on the opinion of a pious Sunni scholar who is the most learned jurist (*faqih*) there.

“This is because they differed regarding who is meant by the 'remote' (*ab'ad*) one who becomes entitled to perform the marriage upon the 'refusal' (*'adl*) of the 'closer' (*aqrab*). It is stated in *Sharh al-Wahbaniyyah* that the meaning is the remote relative from among the agnatic guardians (*awliya al-nasab*), and this is stated decisively in *al-Bahr*. It was also transmitted in *al-Durr*, then it was corrected by what is in *al-Quhustani* from *al-Ghiyathi*: 'If the closer guardian does not perform the marriage, the judge (*Qadi*) performs the marriage when there is a risk of losing the equal match (*fawt al-kufu*)'[3] ends. The commentator said, meaning for fear of losing it.[4] Then he cited many reinforcing texts from the treatise of the scholar al-Shurunbulali, *Kashf al-Mu'dil fiman 'Azal*, that...” - This is because regarding the remote guardian who is permitted to perform the marriage upon the closest guardian's refusal, there is a difference of opinion among the jurists. In *Wahbaniyyah*, the tendency is that 'remote guardians' means agnatic guardians, and *al-Bahr* is certain about this. *Al-Durr* transmitted this and then, correcting it, quoted *Quhustani* via *Ghiyathi* saying that if the closest guardian doesn't marry [her off], then in case of risk of losing an equal match, the judge should perform the marriage. The commentator said if there's danger of losing an equal, the judge should perform the marriage. Then he

[referenced] many texts in the treatise of 'Allama Shurunbulali, *Kashf al-Mu'dil fiman 'Azal*...

---

[1] *Durr al-Mukhtar*, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/194 [2] *Radd al-Muhtar*, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/72 [3] *Durr al-Mukhtar*, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/194 [4] *Radd al-Muhtar*, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/72

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

“...निकाह कराने से उसके इनकार के कारण, आम सहमति (इज्मा) से।” खुलासा[1] - आम सहमति से अधिकार साबित है। खुलासा। (त)

'रद अल-मुह्तार' में है: “निकाह करने से उसके इनकार के कारण, एक समान (कुफ़ु के साथ महर-ए-मिस्ल (उचित महर) पर। लेकिन अगर वह गैर-कुफ़ु के साथ निकाह से इनकार करे, या इसलिए कि महर, महर-ए-मिस्ल से कम है, तो वह रोकने वाला ('आज़िल) नहीं है।”[2] - महर-ए-मिस्ल और कुफ़ु में अक़रब (निकटतम अभिभावक) द्वारा निकाह न करने पर अबअद (दूरस्थ अभिभावक) को अधिकार है। अन्यथा, यदि अक़रब कम महर या गैर-कुफ़ु में निकाह से इनकार करे, तो उसे ममानअत (रोकने वाला) करार देना सही नहीं है। (त)

यहाँ नुकसान से तात्पर्य यह है कि कुफ़ु उपलब्ध हो और उसके साथ उस नाबालिग लड़की का निकाह किसी कारणवश हित के विरुद्ध न हो, और वह पूरी महर-ए-मिस्ल देने को तैयार हो, लेकिन पिता बिना किसी कारण के न माने और निकाह न करे, और न ही कोई दूसरा कुफ़ु मौजूद हो जिससे वह निकाह करना चाहता हो। इस स्थिति में, और जिन वलियों (अभिभावकों) को हमने गिना है, उनमें से जो निकटतम हो, वह वहाँ के सबसे बड़े सुन्नी दीनदार आलिम और फ़क़ीह की राय से उस उपलब्ध कुफ़ु के साथ महर-ए-मिस्ल या उससे अधिक पर निकाह कर दे।

“ऐसा इसलिए है क्योंकि उनमें इस बारे में मतभेद है कि उस 'अबअद' (दूरस्थ) से क्या तात्पर्य है जिसे अक़रब के इनकार ('अदल) पर निकाह कराने का अधिकार मिलता है। 'शरह अल-वहबानिया' में यह राय दी गई है कि इससे तात्पर्य वंशानुगत अभिभावकों (औलिया-ए-नसब) में से दूर का अभिभावक है, और 'अल-बहर' में इसे निश्चित रूप से कहा गया है। 'अल-दुर्र' में इसे उद्धृत किया गया, फिर 'अल-कुहुस्तानी' में 'अल-ग़ियासी' के हवाले से इसमें सुधार करते हुए कहा गया: 'यदि अक़रब निकाह न करे, तो कुफ़ु के हाथ से निकल जाने (फ़ौत अल-कुफ़ु के डर की स्थिति में काजी निकाह कर दे'[3] समाप्त। व्याख्याकार ने कहा, यानी उसके हाथ से निकल जाने के डर से।[4] फिर उन्होंने अल्लामा शुरुनबुलाली के रिसाला 'कश्फ़ अल-मुअदिल फ़ीमन अज़ल' से कई पुख्ता और सुसंगत पाठ उद्धृत किए कि...” - यह इसलिए कि उस 'अबअद' के बारे में जिन्हें अक़रब के इनकार पर निकाह कराने का अधिकार है, फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) के बीच मतभेद है। वहबानिया में इस तरफ रुझान है कि 'अबअद' औलिया से मुराद नस्बी औलिया हैं, और बहर में इसी पर जोर दिया गया है। दुर्र में इसे

नक़ल किया गया और फिर उस पर सुधार करते हुए कुहुस्तानी में ग़ियासी के हवाले से कहा गया कि अगर अक़रब निकाह न करे, तो कुफ़ु के हाथ से निकल जाने की सूरत में काजी निकाह कर दे। व्याख्याकार ने कहा कि अगर कुफ़ु के हाथ से निकल जाने का खतरा हो तो काजी निकाह कर दे। फिर उन्होंने अल्लामा शुरुनबुलाली के रिसाला 'कश्फ़ अल-मुअदिल फ़ीमन अज़ल' में...

---

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/194 [2] रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बैरुत 3/72 [3] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/194 [4] रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बैरुत 3/72

فتاوی رضویہ جلد یزدہم

ای بامتناعه عن التزویج اجماعاً خلاصة[1]- بالاجماع اختیار ثابت ہے۔ خلاصہ۔(ت)

رد المحتار میں ہے: بامتناعه عن التزویج من کفو بمهر المثل اما لو امتنع عن غیر الکفو او لکون المهر اقل من مهر المثل فلیس بعاضل[2]- مہر مثل اور کفو میں اقرب کے نکاح نہ کرنے پر ابعد کو اختیار ہے ورنہ اگر اقرب کم مہر اور غیر کفو میں نکاح سے انکار کرے تو پھر اس کو ممانع قرار دینا درست نہیں ہے۔ (ت)

یہاں ضرر سے مراد یہ ہے کہ کفو ملتا ہو اور اس کے ساتھ اس نابالغہ کا نکاح کسی وجہ سے خلافِ مصلحت نہ ہو مہرِ مثل بھی پورا دینے کا کہتا ہو اور بلا وجہ باپ نہ مانے اور نکاح نہ کرے نہ کوئی دوسرا کفو موجود ہو جس سے وہ نکاح کرنا چاہتا ہو تو اس حالت میں اور جو اولیا ہم نے شمار کئے ان میں سے جو قریب تر ہو اس سنی دیندار عالم کی رائے سے جو وہاں سب سے زیادہ فقیہ ہو اس کفوِ موجود سے مہرِ مثل یا اس سے زائد پر نکاح کر دے۔

وذلك لانهم اختلفوا فی المراد بالابعد الذی یثبت لہ التزویج بعضل الاقرب فذهب فی شرح الوهبانیة ان المراد لا بعد من اولیاء النسب و به جزم فی البحر ونقله فی الدر ثم استدرک علیه بما فی القهستانی عن الغیاثی لو لم یزوج الاقرب زوج القاضی عند فوت الکفو[3] اه قال ش ای خوف فوته[4] ثم نقل عن رسالة العلامة الشرنبلالی کشف المعضل فیمن عزل نصوصاً وافرة متظافرة علی یہ اس لئے کہ اس ابعد کے بارے جن کو اقرب کے انکار پر نکاح دینے کا جواز ہے میں فقہاء کا اختلاف ہے، تو وہبانیہ میں اس طرف رجحان ہے کہ ابعد اولیاء سے مراد نسبی اولیاء ہیں اور بحر میں اسی پر جزم کیا ہے، اور در میں اس کو نقل کیا اور پھر اس پر استدراک کرتے ہوئے قہستانی میں غیاثی کے حوالے

سے کہا کہ اگر اقرب نکاح نہ کرے تو کفو کے فوت ہونے کی صورت میں قاضی نکاح کردے اھ شارح نے کہا کہ کفو کے فوت ہونے کا خطرہ ہو تو قاضی نکاح کردے، پھر انھوں نے علامہ شرنبلالی کے رسالہ کشف المعضل فیمن عزل

---

[1] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۴ [2] رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۷۲ [3] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۴ [4] رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۷۲

Fatawa Ridawiyyah, Volume 11

[Top Box Content] Arabic: Inna al-murada bil-bu'di al-qadi wa la qadiya hahuna faqad tadarakna bima dhakarna min jami' al-nazrayni wallahu al-musta'anu wallahu ta'ala a'lam. Urdu Translation: I have quoted many texts stating that by 'Al-Bu'd' (remoteness), the Qadi (judge) is meant, and there is no Qadi here. Therefore, to compensate for this lack, I have mentioned the aforementioned guardians (awliya) so that both interests may be combined. And help is sought from Allah Almighty alone, and Allah Almighty knows best. (T)

Problem 73: From village Pakeria, post office Banki, district Daltonganj, sent by Syed Minhaj-ul-Haq Sahib Ihrari on 8 Jamadi-ul-Awwal 1336 AH. Hinda's husband passed away, and the widow had an illicit relationship with 'Amr. Upon learning of this, Bakr, who is Hinda's uncle, locked her in the house after a beating and did not allow her to go out for several days. Then, by force, he married her off to his son Zaid, who already had a wife, without her consent. Hinda, fearing for her life, accepted the marriage. The marriage proxy (wakil), aware of the situation, sought permission for the marriage contract in the presence of ignorant witnesses who are the widow's cousins. Fearing for her life, Hinda accepted and gave permission. After two to four months, finding an opportunity, she went to 'Amr's place and is still present in his house. When Hinda was questioned in front of several witnesses, she stated under oath, "I never ever accepted this. I yielded because of the death threats given by Bakr and others. Afterwards, both of us, i.e., the couple, were locked in a room by people, thus valid seclusion (Khalwat Sahihah) also occurred based on the aforementioned rule." Therefore, in the queried situation, I hope for a correct answer. Can such a marriage be valid or not, since Hinda gave verbal consent while no one knows the state of her heart? In the above-mentioned situation, will a divorce also be necessary or not? According to Hinda's statement and desire, can she marry 'Amr without divorce or after divorce and completion of the waiting period ('iddah)? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If there was no real situation of coercion (Ikrah) and compulsion, but only a threat, and she did not truly fear for her life, then that permission became valid. And if there was real coercion at that time, but going to the husband happened without coercion, then even if it was not valid before, it became so now. In both these cases, the marriage became valid and marriage to someone else cannot occur without the husband's death or divorce and completion of the 'iddah. And if going [to the husband] was also under coercion, and as Hinda states, seclusion also happened

under coercion, then this issue is extremely difficult. Its specific details are not found anywhere in the books. Allama Khairuddin Ramli's view in the commentary of Bahr al-Ra'iq inclined towards the validity of the proxy (tawkil), while Allama Shami in the commentary of Manh al-Ghaffar leaned towards its non-permissibility. In 'Kitab al-Ikrah' (The Book of Coercion), Allama Shami inclined towards the former view and wrote at the end:

[Bottom Box Content] Arabic: Al-hasilu inna al-mahal-la muhtajun ila ziyadah Urdu Translation: The gist is that this point needs more writing and research.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

[ऊपरी बॉक्स की सामग्री] अरबी: इन्ना अल-मुरादा बिल-बुअदि अल-काज़ी व ला काज़िया हाहुना फकद तदारकना बिमा ज़करना मिन जमीइ अन-नज़रायनी वल्लाहु अल-मुस्तआनु वल्लाहु तआला आलम। उर्दू अनुवाद: मैंने बहुत से नुसूस (धर्मग्रंथों के अंश) उद्धृत किए हैं कि 'अल-बुअद' (दूरी) से तात्पर्य काज़ी है, और यहाँ कोई काज़ी नहीं है। इसलिए हमने इस कमी को पूरा करते हुए उपर्युक्त औलिया (अभिभावकों) का उल्लेख किया है ताकि दोनों हितों का समन्वय हो सके। और अल्लाह तआला से ही मदद माँगी जाती है, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 73: मौज़ा पकरिया, डाकखाना बांकी, जिला डाल्टनगंज से, सैयद मिन्हाजुल हक़ साहब अहरारी द्वारा प्रेषित, 8 जमादी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। हिंदा के पति का निधन हो गया और विधवा का अम्र के साथ अवैध संबंध हो गया। इसकी खबर मिलने पर बक्र ने, जो हिंदा का चाचा है, उसे मारपीट कर घर में बंद रखा और कुछ दिनों तक बाहर नहीं निकलने दिया। फिर ज़बरदस्ती उसने अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हिंदा का निकाह अपने बेटे ज़ैद से कर दिया, जिसकी पहले से एक पत्नी है। मौत के डर से हिंदा ने इसे स्वीकार कर लिया। निकाह के वकील ने, स्थिति को जानते हुए, अज्ञानी गवाहों के सामने जो विधवा के चचेरे भाई हैं, निकाह के अनुबंध के लिए अनुमति मांगी। जान के डर से हिंदा ने स्वीकार किया और अनुमति दे दी। दो-चार महीने बाद मौका पाकर वह अम्र के यहाँ चली गई और अब भी उसके घर में मौजूद है। जब हिंदा से कई गवाहों के सामने पूछा गया, तो उसने शपथ लेकर बयान दिया कि "मुझे यह कतई मंज़ूर नहीं था। बक्र आदि ने जो जान से मारने की धमकी दी थी, उसके कारण मैंने इकरार किया था। उसके बाद लोगों ने हम दोनों को यानी निकाह करने वालों को एक मकान में बंद कर दिया, इस प्रकार 'खलवत सहीहा' (वैध एकांत) भी उसी नियम के अनुसार हुआ जो ऊपर उल्लेख किया गया है।" अतः पूछी गई स्थिति में, मैं सही उत्तर का आशावान हूँ। क्या ऐसा निकाह जायज़ हो सकता है या नहीं, क्योंकि हिंदा ने ज़ुबानी इकरार किया जबकि उसके दिल की हालत कोई नहीं जानता? उपरोक्त स्थिति में, क्या तलाक की भी ज़रूरत होगी या नहीं? हिंदा के बयान और इच्छा के अनुसार, क्या वह बिना तलाक के अम्र से निकाह कर सकती है या तलाक और इद्दत के बाद? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: अगर वास्तव में ज़बरदस्ती (इराह) और मजबूरी की स्थिति नहीं थी, केवल धमकी थी, और उसे वास्तव में जान जाने का डर नहीं था, तब तो वह अनुमति सही हो गई। और अगर उस समय वास्तव में ज़बरदस्ती थी और पति के पास जाना बिना किसी ज़बरदस्ती के हुआ, तो अगर पहले वैध नहीं भी

था, तो अब हो गया। इन दोनों स्थितियों में निकाह हो गया और पति की मृत्यु या तलाक और इद्दत पूरी हुए बिना दूसरे से निकाह नहीं हो सकता। और अगर जाना भी ज़बरदस्ती के तहत था, और जैसा कि हिंदा का बयान है, एकांत भी ज़बरदस्ती हुआ, तो यह मसला बहुत ही पेचीदा है। किताबों में इसका विशिष्ट विवरण कहीं नहीं मिलता। अल्लामा खैरूद्दीन रमली का विचार 'बहरर रायक' के हाशिये में तवकील (वकील बनाने) की वैधता की ओर गया और 'मन्ह अल-ग़फ़्फ़ार' के हाशिये में अल्लामा शामी ने इसकी अवैधता की ओर झुकाव दिखाया। अल्लामा शामी ने 'किताब अल-इराह' में पहले विचार की ओर रुझान दिखाया और अंत में यह भी लिखा कि:

[निचला बॉक्स की सामग्री] अरबी: अल-हासिलु इन्ना अल-महल्ला मोहताजुन इला ज़ियादह उर्दू अनुवाद: हासिल (निष्कर्ष) यह कि यह स्थान और अधिक लेखन और शोध का मोहताज है।

[اوپری باکس کا مواد] عربی: ان المراد بالبعد القاضی ولا قاضی ھھنا فقد تدارکنا بما ذکرنا من جمیع النظرین واللہ المستعان واللہ تعالی اعلم۔ اردو ترجمہ: سے بہت سی نصوص نقل کیں کہ البعد سے مراد قاضی ہے اور یہاں قاضی نہیں ہے اس لئے ہم نے نقصان کا تدارک کرتے ہوئے مذکور اولیاء کو ذکر کیا ہے تاکہ دونوں مصلحتیں جمع ہو جائیں، اور اللہ تعالٰی سے ہی امداد طلب کی جاتی ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۳: از موضع پکریا ڈاک خانہ بانکی ضلع ڈالٹن گنج مرسلہ سید منہاج الحق صاحب احراری ۸ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ ہندہ کے شوہر نے قضاء کیا اور عمرو سے بیوہ کا ناجائز تعلق ہوا، بعد خبر پانے کے بکر نے جو ہندہ کا چچا ہے بساسر زنش گھر میں بند رکھا اور کچھ دنوں باہر نکلنے نہ دیا اور بزور اپنے لڑکے زید سے جس کی بی بی موجود ہے بے رضامندی جو بخوف ہلاکت ہندہ نے قبول کیا نکاح کر دیا، وکیل نکاح واقعہ معلومہ نے بمقابلہ شاہدین اجہل جو چچازاد بھائی بیوہ کے ہیں برضامندی اجازت عقد نکاح چاہی، بخوف جان ہندہ نے قبول کیا اور اذن دیا، بعد دو چار ماہ کے موقع وقت پا کر عمرو کے یہاں چلی آئی اور ہنوز اس کے مکان میں موجود ہے۔ ہندہ سے بمقابلہ چند گواہاں پوچھا گیا حلفاً بیان کیا کہ ہم کو ہرگز ہرگز منظور نہ تھا جبر سے بکر وغیرہ کے جو دھمکی ہلاکت دیا تھا اقبال کیا بعدہ ہم دونوں کو یعنی ناکحین کو لوگوں نے ایک مکان میں بند کردیا، چنانچہ خلوت صحیحہ بھی اسی قاعدہ مسطورہ صدر سے ہوا پس صورت مستفسرہ میں امید وار جواب باصواب کا ہوں، ایسا نکاح جائز ہو سکتا ہے یا نہیں کیونکہ ہندہ نے اقرار زبانی کیا دلی حالت کسی کو معلوم نہیں، صورت مذکورہ بالا میں طلاق کی بھی ضرورت ہوگی یا نہیں؟ حسب بیان وخواہش ہندہ بغیر طلاق عمرو سے نکاح یا بعد طلاق وعدت؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر واقعی اکراہ و مجبوری کی صورت نہ تھی صرف دھمکی تھی اور اسے بھی صحیح طور پر اندیشہ جان نہ تھا جب تو وہ اذن صحیح ہوگیا اور اگر اس وقت واقعی اکراہ تھا اور شوہر کے پاس جانا بلا اکراہ ہوا تو اگر پہلے نہ بھی تھی اب ہوگئی، ان دونوں صورتوں میں نکاح ہوگیا اور بغیر موت یا طلاق شوہر وانقضائے عدت دوسرے سے نکاح نہیں ہو سکتا، اور جانا بھی باکراہ تھا اور جیسا کہ ہندہ کا بیان ہے خلوت بھی باکراہ ہوئی، تو یہ مسئلہ شدید الاشکال ہے کتابوں میں اس کا جزئیہ کہیں نہیں، علامہ خیر الدین رملی کی نظر حاشیہ بحر الرائق میں صحت توکیل کی طرف گئی اور حاشیہ منح الغفار میں عدم جواز کی طرف علامہ شامی نے کتاب الاکراہ میں اول کی طرف میل فرمایا اور آخر میں بھی لکھا کہ:

[نچلے باکس کا مواد] عربی: الحاصل ان المحل محتاج الی زیادۃ اردو ترجمہ: حاصل یہ کہ یہ مقام زیادہ تحریر و تحقیق کا محتاج ہے

(Arabic) Writing this is the limit of our deficient understanding. And Allah Almighty knows best.

(Urdu) And this is as far as our deficient understanding reached, and Allah Almighty knows best.

(T)

The humble author (Faqeer) answered their arguments in the marginalia, and in the marginalia of 'The Book of Divorce', first listed the reasons for permissibility then refuted them and stated the preference for non-permissibility, and wrote at the end that:

(Arabic) In short, it is a place of doubt, and clarification beyond this is necessary. And Allah Almighty knows best.

(Urdu) In short, it is a place of doubt, so for its clarification, research beyond this is required, and Allah Almighty knows best. (T)

Even in such a severely doubtful state, caution dictates that one should not dare to enter a second marriage without divorce and completion of the waiting period (Iddah), and Allah Almighty knows best.

Problem 742: From Sasaram district Gaya, sent by Hakim Siraj-ud-Din Ahmad, 3 Jumada al-Akhira 1336 AH. In the marriage of a minor, when it comes to the 'Ijab' (proposal) by his guardian, the dower (Mahr) will be determined in his capacity as a guardian. So, if after reaching puberty, that minor is unhappy with the dower and continues the marriage, what will be the ruling? Explain and be rewarded.

Answer: The guardian who performed the marriage of the minor, in the absence of the father, is the grandfather; one who has not previously performed any marriage under his guardianship with such a huge difference in dower or with someone of non-equal status (ghair-kafu), nor was he intoxicated at the time of this marriage. In that case, the marriage is valid and the dower becomes binding, and the minor has no right to object at any time. And if the person performing the marriage is any guardian other than the father or grandfather, or if it is the father or grandfather but they were intoxicated at that time, or had previously performed a marriage under their guardianship with such a huge difference from the customary dower (Mahr Mithl), for example, it's a boy's marriage and the woman's customary dower was ten thousand and they fixed fifteen thousand, or it's a girl's marriage and the customary dower was ten thousand and they fixed five thousand, then in this case the marriage

will not take place at all; what is the need for annulment? And if the difference is not excessive, for example, eleven thousand for ten thousand in a boy's marriage or nine thousand for ten thousand in a girl's marriage, then the marriage is concluded. Then, if the guardian who performed the marriage is other than the father or grandfather, the minor male and female will get the 'Option of Puberty' (Khiyar-ul-Bulugh), which is generally granted in marriages performed by guardians other than the father/ grandfather, even if there was no increase or decrease in the customary dower. If the minor girl is a virgin, then immediately upon reaching puberty, or upon learning of the marriage after reaching puberty, if she expresses her dissatisfaction with this marriage immediately upon gaining knowledge, she can have it annulled by a judge through a lawsuit. And if the girl is a non-virgin or if it is a minor boy, they will have the absolute right of objection after reaching puberty until they [accept it] explicitly.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

(अरबी) यह लेखन ही हमारी अल्प समझ की सीमा है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू) और जहाँ हमारी अल्प समझ पहुँची वह यही है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(त)

फ़क़ीर ने इस पर टिप्पणियों (ता'लीक़ात) में उनकी बहसों का उत्तर दिया और ता'लीक़ात 'किताबुल तलाक़' में पहले जायज़ होने के कारणों को लिखकर उन्हें रद्द किया और नाजायज़ होने की प्राथमिकता बयान की और अंत में यही लिखा कि:

(अरबी) संक्षेप में यह संदेह का स्थान है और इससे ऊपर स्पष्टीकरण आवश्यक है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू) संक्षेप में यह कि यह संदेह का स्थान है, तो इसकी स्पष्टता के लिए इससे अधिक शोध की आवश्यकता है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

ऐसी गंभीर संदेहास्पद स्थिति में भी सावधानी यही है कि बिना तलाक़ और इद्दत बीतने के दूसरे निकाह का साहस न किया जाए, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 742: सासाराम ज़िला गया से, प्रेषक हकीम सिराजुद्दीन अहमद साहब, 3 जमादी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। नाबालिग के निकाह में उसके वली (संरक्षक) से ईजाब (प्रस्ताव) कराने की नौबत आएगी, तब मेहर (स्त्रीधन) का निर्धारण वली की हैसियत से होगा। तो बालिग होने के बाद अगर वह नाबालिग मेहर से नाखुश हो और निकाह करे तो क्या हुक्म होगा? बयान फ़रमाएं पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: वह वली जिसने नाबालिग का निकाह किया, पिता की अनुपस्थिति में दादा है; ऐसा जिसने इससे पहले अपनी विलायत (संरक्षण) में किसी निकाह में मेहर में इतना बड़ा अंतर न किया हो या ग़ैर-कफ़ू (असमान कुल) में न किया हो, और न ही इस निकाह के समय नशे में हो, तो निकाह सही और मेहर लाज़िम (अनिवार्य) हो गया, नाबालिग को किसी भी समय आपत्ति का कोई अधिकार नहीं है। और अगर निकाह करने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और वली है, या पिता या दादा हैं और उस समय नशे में थे, या इससे पहले भी अपनी विलायत से ऐसा कोई निकाह कर चुके थे और 'मेहर-ए-मिस्ल' (पारिवारिक मानक मेहर) से बहुत अधिक अंतर है, उदाहरण के लिए लड़के का निकाह है और महिला का मेहर-ए-मिस्ल दस हज़ार था और उन्होंने पंद्रह हज़ार बंधवाया, या लड़की

का निकाह है और मेहर-ए-मिस्ल दस हज़ार था और उन्होंने पाँच हज़ार बंधवाया, तो इस स्थिति में निकाह सिरे से होगा ही नहीं, निरस्तीकरण (फ़स्ख़) की क्या आवश्यकता है। और यदि अंतर बहुत ज़्यादा नहीं है, उदाहरण के लिए लड़के के निकाह में दस हज़ार का ग्यारह हज़ार या लड़की के निकाह में दस हज़ार का नौ हज़ार, तो निकाह हो गया। फिर यदि निकाह करने वाला वली पिता या दादा के अलावा कोई और है, तो नाबालिग बालक और बालिका को 'खियार-उल-बुलूग' (बालिग होने पर विकल्प) मिलेगा जो पिता/दादा के अलावा अन्य वलियों द्वारा कराए गए निकाह में सामान्यतः मिलता है, भले ही मेहर-ए-मिस्ल में कोई कमी या ज़्यादती न हुई हो। बालिका यदि कुंवारी (बिक्र) है, तो बालिग होते ही तुरंत, या उसके बाद निकाह की जानकारी मिलने पर, जानकारी मिलते ही तत्काल यदि वह इस निकाह से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करेगी, तो मुक़दमा करके काज़ी से इसे रद्द (फ़स्ख़) करा सकेगी। और यदि बालिका कुंवारी नहीं (सय्यिबा) है या बालक है, तो उन्हें बालिग होने के बाद पूर्ण रूप से आपत्ति का अधिकार रहेगा जब तक कि वे स्पष्ट रूप से [स्वीकार न कर लें]।

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

التحریر وھذا غایۃ ما وصل الیہ فھمنا القاصر۔ اور جہاں ہمارا قاصر فہم پہنچا وہ یہی ہے ، واللہ تعالٰی اعلم۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

(ت)

فقیر نے اس پر تعلیقات میں ان کی ابحاث سے جواب دے اور تعلیقات کتاب الطلاق میں اولا وجوہ جواز لکھ کر انہیں رد کیا اور عدم جواز کی ترجیح بیان کی اور آخر میں یہی لکھا کہ :

بالجملۃ محل اشتباہ ولابد من غرض یہ کہ محل اشتباہ ہے تو اس کی صفائی کے لئے اس تحریر فوق ذلك۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ سے زائد تحقیق کی ضرورت ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

ایسی شدید مشتبہ حالت میں بھی احتیاط یہی ہے کہ بلا طلاق ومرور عدت نکاح ثانی کی جرات نہ کی جائے ، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۴۲: از سہسرام ضلع گیا مرسلہ حکیم سراج الدین احمد صاحب ۳ جمادی الآخر ۱۳۳۶ھ نابالغ کے نکاح میں اس کے ولی سے ایجاب کے کرانے کی نوبت پہنچے گی تب تعین مہر بحیثیت ولی کے ہوگی پس بعد بلوغ اقبال سے وہ نا بالغ مہر کے ناراض ہو اور نکاح کرے تو کیا حکم ہوگا ، بینوا توجروا

الجواب: وہ ولی جس نے نابالغ کا نکاح کیا اس کا باپ نہ ہونے کی حالت میں دادا ہے ایسا جو اس سے پہلے کوئی نکاح اپنی ولایت سے مہر میں ایسے فرق کثیر پر یا غیر کفو سے نہ کر چکا ہو نہ اس نکاح کے وقت نشہ میں ہو جب تو نکاح صحیح اور مہر لازم ہو گیا ، نابالغ کو کسی وقت کوئی حق اعتراض نہیں ، اور اگر نکاح کرنے والا اب وجد کے سوا اور کوئی ولی ہے یا اب وجد ہیں

اور اس وقت نشہ میں تھے یا اس سے پہلے بھی کوئی نکاح اپنی ولایت سے ایسا کر چکے تھے اور مہر مثل سے فرق کثیر ہے مثلاً پسر کا نکاح ہے اور عورت کا مہر مثل دس ہزار تھا انھوں نے پندرہ ہزار بندھوایا یا دختر کا نکاح ہے اور مہر مثل دس ہزار تھا انھوں نے پانچ ہزار بندھوایا تو اس صورت میں نکاح سرے سے ہو گا ہی نہیں فسخ کی کیا حاجت ہے ، اور اگر فرق فاحش نہیں مثلاً پسر کے نکاح میں دس ہزار کا گیارہ ہزار یا دختر کے نکاح میں دس ہزار کا نو ہزار ، تو نکاح ہو گیا ، پھر اگر وہ ولی جس نے نکاح کیا غیر اب وجد ہے تو صغیر و صغیرہ کو خیار بلوغ ملے گا جو غیر اب وجد کے نکاح کرنے میں مطلقاً ملتا ہے اگرچہ مہر مثل میں کوئی کمی بیشی نہ ہوئی ہو ، صغیرہ اگر بکر ہے تو بالغہ ہوتے ہی فوراً یا اس کے بعد علم نکاح ہو تو علم پاتے ہی معاً اگر اس نکاح سے اپنی ناراضی ظاہر کرے گی تو دعویٰ کر کے قاضی سے فسخ کراسکے گی اور صغیرہ اگر ثیب ہے یا صغیر ہے تو انھیں بعد بلوغ مطلقاً اختیار اعتراض رہے گا جب تک صراحۃً

...should not express their consent or perform any act like kissing and embracing that indicates consent. In Durr-ul-Mukhtar, it is stated:

Arabic Text

The marriage becomes binding even if there is excessive deception (Ghabn-e-Fahish) by decreasing her dower (Mahr) or increasing his dower, or if it is outside the social equal (kufu), provided the guardian performing the marriage is the father or grandfather who is not known for poor judgment. If they are known for poor judgment, then a marriage performed by them with a low mahr or outside the kufu will not be valid by consensus. Similarly, if they are intoxicated, it will not be valid. If the guardian is someone else, the marriage without a kufu or with excessive deception will not be valid at all. If it was with a kufu and Mahr al-Mithl (fair dower), it is valid, and both have the option to annul (Khiyar al-Faskh) upon reaching puberty or upon learning of the marriage after it. The option for a virgin girl (bikr) is voided by remaining silent after learning of the marriage, and this does not extend to the end of the session. The option for a minor boy and a non-virgin girl (thayyiba) upon reaching puberty is not voided by silence without explicit consent or indicative consent like kissing and touching, nor by their leaving the session, because the time

Urdu Translation

If the marriage is arranged by the father or grandfather, it will become binding even with an extremely low or high mahr or in a non-kufu, provided these father or grandfather are not known for ill-choice. If they are known for it, then a marriage performed by them in low mahr and non-kufu will not be valid by consensus. Similarly, if they are intoxicated, it will not be valid. And if someone other than the father or grandfather gives in marriage, then in Ghabn-e-Fahish i.e. extremely low mahr and in non-kufu, the marriage will not be valid at all. If they did it in Mahr-e-Mithl and kufu, it would be valid, but the minor boy and girl will have the option to annul upon becoming adults or upon knowing about the marriage after puberty. And if the girl is a major virgin, then her option to annul the marriage performed by another will end with silence, provided she knows about her marriage, and after silence, this option will not remain until the end of the meeting. The option of a minor boy and a thayyiba (non-virgin) will not end merely by silence until they explicitly express consent after becoming adults, or if consent is not shown indicatively, for example, by kissing and embracing etc. And their option will not be voided even if they both leave the meeting where they have the option,

Arabic Text	Urdu Translation
for it is their entire life; it remains until consent is given. End summary.	because they both have the option for their whole life to express consent until they agree or reject. End summary (T).

In Fatawa Imam Qazi Khan, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
When a man marries his son to a woman for more than her Mahr-e-Mithl, or marries his minor daughter for less than her Mahr-e-Mithl, or places her in a non-kufu...	When a person gives his son in marriage with a mahr more than the Mahr-e-Mithl, or a minor girl in marriage with a mahr less than the Mahr-e-Mithl or in a non-kufu, or a minor son's marriage with a slave-girl or with a non-kufu...

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192-193. Page 646 of 739

...अपनी रज़ा (सहमति) ज़ाहिर न करें या कोई ऐसा काम न करें जैसे चूमना और गले लगना जो रज़ा की दलील हो, दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी पाठ

निकाह लाज़िम हो जाएगा भले ही मेहर की कमी या वृद्धि में ग़बने फ़ाहिश हो या ग़ैर-कुफ़ू में हो, यदि निकाह करने वाला वली पिता या दादा हो जो ग़लत चुनाव के लिए न जाना जाता हो। और यदि वे इसके लिए प्रसिद्ध हों तो कम मेहर और ग़ैर-कुफ़ू में उनके द्वारा किया गया निकाह सर्वसम्मति से सही नहीं होगा। इसी तरह यदि वे नशे में हों तो भी सही नहीं होगा। और यदि निकाह करने वाला इनके अलावा कोई और हो तो ग़ैर-कुफ़ू में या ग़बने फ़ाहिश में निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। और यदि उन्होंने महरे मिस्ल और कुफ़ू में किया हो तो सही होगा और दोनों को बालिग होने पर या उसके बाद निकाह का ज्ञान होने पर फ़स्ख़ का अधिकार होगा। बाकिरा (कुँवारी) लड़की का अधिकार निकाह के ज्ञान के बाद चुप रहने से समाप्त हो जाता है और यह सभा के अंत तक नहीं खिंचता। नाबालिग लड़के और सैयिबा का अधिकार बालिग होने पर बिना स्पष्ट सहमति या दलालतन सहमति (जैसे चूमना और छूना) के केवल चुप रहने से या सभा से उठ जाने से समाप्त

उर्दू अनुवाद

यदि निकाह करने वाला पिता या दादा हो तो अत्यंत कम या अधिक मेहर या गैर-कुफ़ू में निकाह लाज़िम हो जाएगा, बशर्ते कि ये पिता या दादा गलत फैसले लेने के लिए मशहूर न हों। और यदि वे इसमें मशहूर हों, तो कम मेहर और गैर-कुफ़ू में उनके द्वारा किया गया निकाह सर्वसम्मति से सही नहीं होगा। इसी तरह यदि वे नशे में हों तो भी सही नहीं होगा। और यदि पिता-दादा के अलावा कोई और निकाह करे, तो ग़बने फ़ाहिश यानी अत्यंत कम मेहर और गैर-कुफ़ू में निकाह बिल्कुल सही नहीं होगा। यदि उन्होंने महरे मिस्ल और कुफ़ू में निकाह किया हो, तो वह सही होगा, लेकिन नाबालिग लड़के और लड़की को बालिग होने पर या बालिग होने के बाद निकाह की जानकारी मिलने पर उसे रद्द करने (ख़ियारे फ़स्ख़) का अधिकार होगा। यदि लड़की बालिग कुँवारी हो, तो दूसरे द्वारा किए गए निकाह पर चुप्पी से उसका अधिकार समाप्त हो जाएगा, बशर्ते कि उसे अपने निकाह की जानकारी हो। चुप्पी के बाद सभा के अंत तक यह अधिकार नहीं रहेगा। नाबालिग लड़के और सैयिबा का अधिकार केवल चुप रहने से समाप्त नहीं होगा जब तक कि वे बालिग होने पर स्पष्ट रूप से सहमति व्यक्त न कर दें, या इशारों से, जैसे चूमने और गले लगाने आदि से सहमति ज़ाहिर न हो जाए। सभा से उठ जाने पर भी

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
नहीं होता, क्योंकि इसका समय पूरी उम्र है, अतः यह सहमति मिलने तक शेष रहता है। (संक्षिप्त)	उनका अधिकार समाप्त नहीं होगा, क्योंकि सहमति जताने के लिए उन्हें जीवन भर का अधिकार रहता है जब तक कि वे राज़ी न हो जाएं या उसे अस्वीकार न कर दें। (संक्षिप्त)

फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ाँ में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
जब कोई व्यक्ति अपने बेटे का निकाह महरे मिस्ल से अधिक मेहर पर, या अपनी नाबालिग बेटी का निकाह महरे मिस्ल से कम मेहर पर करे, या उसे गैर-कुफ़ू में दे...	जब कोई व्यक्ति अपने बेटे का निकाह महरे मिस्ल से अधिक मेहर पर, या नाबालिग लड़की का निकाह महरे मिस्ल से कम मेहर पर, या गैर-कुफ़ू में दे, या नाबालिग बेटे का निकाह दासी या गैर-कुफ़ू वाली से करे...

---

[1] दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/192-193. पृष्ठ 646 / 739

اپنی رضا ظاہر نہ کریں یا کوئی فعل ایسا نہ کریں مثلا بوسہ و کنار جو رضا پر دلیل ہو، در مختار میں ہے:

متن عربی	ترجمہ اردو
لزم النکاح ولو بغبن فاحش بنقص	اگر نکاح دینے والا باپ یا دادا ہو تو انتہائی کم یا زیادہ مہر یا
مھرھا و زیادۃ مھرہ او بغیر کفو	غیر کفو میں نکاح لازم ہو جائے گا بشرطیکہ یہ باپ یا دادا سوء
ان کان الولی المزوج اباً او جداً لم	اختیار میں معروف نہ ہوں، اور اگر وہ اس میں معروف ہوں تو
یعرف منھما سوء الاختیار و ان	کم مہر اور غیر کفو میں ان کا دیا ہوا نکاح بالا تفاق صحیح نہ
عرف لا یصح النکاح اتفاقاً وکذا	ہوگا، اور ایسے ہی اگر وہ نشہ میں ہوں تو صحیح نہ ہوگا، اور
لو کان سکران وان کان المزوج	باپ دادا کا غیر نکاح دے تو غبن فاحش یعنی انتہائی کم مہر اور
غیرھما لا یصح النکاح من غیر	غیر کفو میں نکاح بالکل صحیح نہ ہوگا، اور اگر انھوں نے مہر
کفو او بغبن فاحش اصلاً و ان	مثل اور کفو میں کیا ہو تو صحیح ہوگا لیکن نابالغ لڑکے اور
کان من کفو وبمھر المثل صح	لڑکی کو بالغ ہونے پر یا بلوغ کے بعد نکاح کے علم پر فسخ کا
ولھما خیار الفسخ بالبلوغ او العلم	اختیار ہوگا، اور اگر لڑکی باکرہ بالغہ ہو تو غیر کے کئے ہوئے
بالنکاح بعدہ وبطل خیار البکر	نکاح پر خاموشی سے اس کا خیار فسخ ختم ہو جائے گا
بالسکوت عالمۃ بالنکاح ولا یمتد	بشرطیکہ اس کو اپنے نکاح کا علم ہو اور خاموشی کے بعد
اخر المجلس وخیار الصغیر	مجلس کے اختتام تک یہ اختیار باقی نہ رہے گا، اور نابالغ لڑکے
والثیب اذا بلغا لا یبطل بالسکوت	اور ثیبہ کا اختیار محض خاموشی پر ختم نہ ہوگا جب تک بالغ

بلا صریح رضاً او دلالۃ کقبلۃ ہونے پر صراحتاً اظہار رضامندی نہ کردیں، یا دلالۃً مثلا بوس و

متن عربی	ترجمہ اردو
ولمس ولا بقیا مھا عن المجلس لان وقتہ العمر فیبقی حتی یوجد الرضا 1ھ ملتقطاً۔	کنار وغیرہ سے رضا ظاہر نہ ہو جائے اور ان دونوں کے، اختیار والی مجلس سے اٹھ جانے سے بھی ان کا اختیار باطل نہ ہوگا، کیونکہ اظہار رضا کے لئے ان دونوں کو عمر بھر اختیار باقی رہتا ہے جب تک کہ راضی نہ ہوجائیں یا رد نہ کردیں اھ ملتقطاً (ت)

فتاوٰی امام قاضی خاں میں ہے:

متن عربی	ترجمہ اردو
اذا زوج الرجل ابنہ بامرأۃ با کثر من مھر مثلھا او زوج ابنتہ الصغیرۃ باقل من مھر مثلھا او وضعھا فی غیر کفو	جب کوئی شخص اپنے بیٹے کا مہر مثل سے زائد مہر پر یا نا بالغہ لڑکی کا مہر مثل سے کم مہر پر یا غیر کفو میں نکاح دے یا نا بالغ بیٹے کا نکاح لونڈی سے یا غیر کفو والی

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳- ۱۹۲ Page 646 of 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

(Arabic): If a man marries off his minor son to a slave girl or a woman who is not suitable (not of equal status/kufu), it is permissible according to the opinion of Imam Abu Hanifah (may Allah have mercy on him). His two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad, may Allah have mercy on them) said it is not permissible if there is gross unfairness (in mahr or status). There is a consensus that it is not permissible if done by someone other than the father or grandfather, nor by a judge. (T) (Urdu): ... if done to a woman, then according to the opinion of Imam Abu Hanifah (may Allah have mercy on him), these marriages will be valid. According to the opinion of the two companions (sahibayn), it would be valid (unless there is gross unfairness). There is consensus that such a marriage performed by anyone other than the father or grandfather, even a judge, is invalid. (T)

In Alamgiriyyah it is stated: (Arabic): If a father marries his child to someone of unequal status (ghair kufu), such as marrying his son to a slave girl or his daughter to a slave, or marries them with gross unfairness (ghabn fahish), like marrying off a daughter and decreasing her dower (mahr) or marrying off a son and increasing the dower of his wife beyond what is standard, it is permissible according to Abu Hanifah (referring to Tabyeen). According to the two companions, excess or reduction is not permissible except within what people normally tolerate. Some said that the core of the marriage is valid, but the more correct view is that the marriage is void according to the two companions as per 'al-Kafi'. This disagreement exists when the father is not known for poor judgment; similarly, if he is intoxicated, it is void, as per 'al-Siraj al-Wahhaj', summary. And Allah knows best. (Urdu): If someone marries his son to a non-kufu (unequal match), for example, to a slave girl, or marries a minor daughter to a slave, or marries her off at an extremely low dower, or marries off a son and makes the wife's dower excessive, it is permissible according to the opinion of Imam Abu Hanifah (may Allah have mercy on him) (as per Tabyeen). According to the Sahibayn (may Allah have mercy on them), if the dower is increased or decreased beyond what is customary, it is not permissible. According to some, based on the opinion of the Sahibayn, the actual marriage remains valid (as per Kafi). This disagreement between Imam Abu Hanifah and the Sahibayn is in the case where the father is not known for poor judgment; however, if he is notorious for it, it is unanimously void. Similarly, if he is in a state of intoxication, it is also void (as per Siraj al-Wahhaj, summarized). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 375: From Mandiaho, District Jaunpur, Mohalla Qaziyana, sent by Hafiz Karim Bakhsh Sahib, 28 Jamadi al-Akhira 1326 AH. Zaid passed away. He has a real brother who has been living separately for a long time and had no connection of any kind with the deceased; he is alive. Zaid has a daughter who is now near puberty, and her marriage is scheduled within the community on the 10th of Rajab al-Murajjab...

Footnotes: 1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Guardians, Nawal Kishore, Lucknow, 1/164. 2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Five on Suitability (al-Kafa'ah), Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/294. Page 647 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

(अरबी): यदि कोई व्यक्ति अपने नाबालिग बेटे का निकाह किसी दासी या ऐसी महिला से कराता है जो उसके बराबर (कुफ़ू) नहीं है, तो इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार यह जायज़ है। उनके दो साथियों (साहिबैन - इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) ने कहा कि यदि इसमें भारी असमानता (महर या स्थिति में) हो तो यह जायज़ नहीं है। इस बात पर आम सहमति (इज्मा) है कि यदि यह पिता या दादा के अलावा किसी और ने कराया हो, यहाँ तक कि काज़ी ने भी, तो यह जायज़ नहीं है। (त) (उर्दू): ...यदि महिला से करा दे तो इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) के कौल (कथन) के अनुसार ये निकाह जायज़ होंगे। और साहिबैन के कौल पर भी जायज़ होगा (जब तक कि भारी घाटा न हो)। पिता और दादा के अलावा किसी और के द्वारा, यहाँ तक कि काज़ी के द्वारा कराए गए ये निकाह नाजायज़ होने पर इज्मा (आम सहमति) है। (त)

आलमगीरी में है: (अरबी): यदि पिता अपनी संतान का निकाह गैर-कुफ़ू (जो बराबरी का न हो) में करा दे, जैसे अपने बेटे का निकाह दासी से या बेटी का निकाह गुलाम से करा दे, या भारी घाटे (ग़ब्न फ़ाहिश) के साथ निकाह करा दे, जैसे बेटी का निकाह कम महर पर करा दे या बेटे का निकाह उसकी पत्नी के लिए सामान्य से अधिक महर तय करके करा दे, तो अबू हनीफ़ा के अनुसार यह जायज़ है (तबीन)। साहिबैन के अनुसार, इतनी कमी या ज़्यादती जायज़ नहीं है जिसे लोग सामान्यतः स्वीकार न करें। कुछ ने कहा कि निकाह का मूल (अस्ल) सही है, लेकिन 'अल-काफ़ी' के अनुसार साहिबैन के नज़दीक निकाह बातिल (अमान्य) है। यह मतभेद तब है जब पिता अपने खराब चयन (सू-ए-इख़्तियार) के लिए न जाना जाता हो। इसी प्रकार यदि वह नशे की हालत में हो तो भी निकाह बातिल है, जैसा कि 'अस्-सिराज अल-वहाज' में संक्षेप में दिया गया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (उर्दू): अगर अपने बेटे का निकाह गैर-कुफ़ू जैसे दासी से या नाबालिग बेटी का निकाह गुलाम से कर दिया, या उसका निकाह अत्यधिक कम महर पर कर दिया, या बेटे का निकाह करके उसकी बीवी का महर ज़रूरत से ज़्यादा कर दिया, तो इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) के कौल पर जायज़ होगा (तबीन)। और साहिबैन के कौल पर इतनी ज़्यादती या कमी पर निकाह किया जो प्रचलित रिवाजों के मुताबिक न हो तो यह जायज़ नहीं है। कुछ के नज़दीक साहिबैन के कौल पर अस्ल निकाह सही हो जाता है (काफ़ी)। इमाम साहब और साहिबैन का यह मतभेद उस स्थिति में है जब पिता का चुनाव गलत होने के लिए मशहूर न हो, लेकिन अगर वह इसमें मशहूर हो तो सर्वसम्मति से बातिल है। और

इसी तरह अगर वह नशे की हालत में हो तो भी बातिल है (सिराज अल-वहाज, संक्षिप्त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 375: मंदियाहू, ज़िला जौनपुर, मोहल्ला कज़ियाना से, प्रेषक हाफ़िज़ करीम बख़्श साहब, 28 जमादी-उल-आख़िरा 1326 हिजरी। ज़ैद का इंतकाल हो गया। उसका एक सगा भाई जो लंबे समय से अलग रहता है और मरहूम से किसी प्रकार का संबंध नहीं रखता था, जीवित है। ज़ैद की एक लड़की है जो अब बालिग होने के करीब है और उसकी शादी बिरादरी में 10 रजब-उल-मुरज्जब को...

फुटनोट्स: 1. फ़तावा काज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़िल औलिया, नवल किशोर, लखनऊ, 1/164। 2. फ़तावा हिंदिया, अल-बाबुल ख़ामिस फ़िल कफ़ाअत, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/294। पेज 647/739

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

او زوج ابنہ الصغیر امۃ او امرأۃ لیست بکفولہ جاز فی قول ابی حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ و قال صاحباہ رحمہما اللہ تعالیٰ لا یجوز ان فاحش واجمعوا علی انہ لا یجوز ذلک من غیر الاب والجد ولا من القاضی۔ (ت) عورت سے کر دے تو امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول کے مطابق یہ نکاح جائز ہونگے، اور صاحبین رحمہما اللہ تعالیٰ کے قول پر جائز ہوگا، جبکہ باپ دادا کے غیر حتی کہ قاضی کے دئے ہوئے یہ نکاح ناجائز ہونے پر اجماع ہے۔ (ت)

عالمگیری میں ہے: لو زوج ولدہ من غیر کفو بان زوج ابنہ امۃ او ابنتہ عبدا او زوج بغبن فاحش بان زوج البنت ونقص من مہرھا او زوج ابنہ وزاد علی مہر امراتہ جاز عند ابی حنیفہ تبیین وعندھما لا تجوز الزیادۃ والحط الابما یتغابن الناس فیہ قال بعضھم فاما اصل النکاح فصحیح والاصح ان النکاح باطل عندھما کافی والخلاف فیما اذا لم یعرف سوء الاختیار و کذا اذا کان سکران السراج الوھاج اھ ملخصاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ اگر اپنے بیٹے کا نکاح غیر کفو مثلا لونڈی سے یا نابالغہ بیٹی کا نکاح غلام سے کر دیا، یا اس کا نکاح انتہائی کم مہر پر کر دیا، یا بیٹے کا نکاح کرکے اس کی بیوی کا مہر زائد کردیا، تو امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول پر جائز ہوگا، تبیین، اور صاحبین رحمہما اللہ تعالیٰ کے قول پر اتنی زیادتی یا کمی پر نکاح کیا جو مروج کے مطابق نہ ہو تو یہ جائز نہیں ہے، بعض کے نزدیک صاحبین کے قول پر اصل نکاح صحیح ہوجاتا ہے، کافی، یہ امام صاحب اور صاحبین کا اختلاف اس صورت میں ہے جبکہ باپ سوء اختیار سے معروف نہ ہو اور اس میں مشہور ہو تو بالاجماع باطل ہے، اور یوں ہی اگر وہ نشہ میں ہو تو بھی باطل ہے، سراج الوہاج، اھ ملتقطاً، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۷۵: از منڈیا ہو ضلع جونپور محلہ قضیانہ مرسلہ حافظ کریم بخش صاحب ۲۸ جمادی الآخرہ ۱۳۲۶ھ زید نے قضا کی اس کا ایک حقیقی بھائی جو مدت دراز سے علیحدہ رہتا ہے اور مرحوم سے کسی قسم کا تعلق نہیں رکھتا تھا زندہ ہے، زید کی ایک لڑکی جواب قریب بلوغ ہے اور اس کی شادی برادری میں دس رجب المرجب کو

1 فتاویٰ قاضی خاں فصل فی الاولیاء نو کشور لکھنو ۱/۱۶۴ 2 فتاویٰ ہندیہ الباب الخامس فی الکفاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۹۴ Page 647 of 739

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

[A marriage] is about to happen; this girl has a stepmother who raised her and is also arranging her marriage. She sought help from Zaid's real brother regarding her marriage, but he refused in front of the entire community, saying, "I will neither participate in this wedding nor have any relation to it. Marry her wherever you wish, I have no concern." Therefore, there is great worry because her widowed stepmother has made all the wedding arrangements for tomorrow. God forbid, if he creates an obstacle at the last moment, it will cause severe loss, though it is not expected that he will do so because he declared his detachment before the entire community. However, as a precaution, it is necessary to have a certification from the scholars. Can the girl's guardian (wali) be her elder sister's husband? Her elder sister has passed away, and another sister is present with her husband. Also, the stepmother has four sons from her father's lineage, two of whom are 14 and 16 years old. There is a stepmother and the entire community. Among them, who can be her guardian? Provide an answer and be rewarded.

The Answer: In this situation, the guardian for the marriage of this minor girl can neither be her paternal uncle, nor her sister, nor her brother-in-law, nor the mother. Rather, the girl's stepbrother, who is sixteen years old, is the guardian for her marriage. And the other one, who is fourteen, if he is a pubert (baligh), he is also a guardian. It is stated in Durr-ul-Mukhtar etc.:

The guardian in marriage is the 'Asbah bi-nafsihi' (male agnate) according to the order of inheritance or exclusion.[1] | The guardian for marriage is the agnate himself, in the order of inheritance and prevention. (T)

Therefore, the girl's marriage should be in an equal match (Kufu) with a dower equal to or more than her peers (Mahr-ul-Mithl), and it must be with the permission of those stepbrothers. Even if the mother were her biological mother, the marriage performed by her would remain dependent on the brother's permission. If it is done with the brother's permission, or if after the marriage and before rejection he validates it, and if there hasn't been a gross reduction in Mahr-ul-Mithl, and the person she married is an equal match—meaning not so inferior in religion, lineage, behavior, or profession that marrying him would be a cause of shame and disrepute for the brothers—then that marriage will be valid. The uncle cannot interfere in any way. Yes, the girl will have the option (Khiyar-ul-Bulugh) that as soon as she reaches

puberty, if she immediately expresses her dissatisfaction with this marriage, she can have it annulled by filing a claim. And Allah Almighty knows best.

Case 77, 76, 3: From Bilgram, District Hardoi, Mohalla Maidan, sent by Syed Muhammad Taqi Sahib Qadri, 26 Safar 1337 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say on this matter: that Hindah's age was four or five years when her...

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193.

होने वाली है, इस लड़की की एक सौतेली माँ है जिसने उसका पालन-पोषण किया और शादी भी कर रही है, ज़ैद के सगे भाई से उसने उसकी शादी के बारे में मदद चाही तो उसने पूरी बिरादरी के सामने इनकार कर दिया कि मैं न इस शादी में शरीक हूँगा न मुझसे किसी किस्म का वास्ता है जहाँ चाहें शादी करें मुझसे कोई वास्ता नहीं, इसलिए सख़्त परेशानी है कि उसकी विधवा सौतेली माँ ने कल शादी का सारा इंतज़ाम कर लिया है खुदा न करे अगर वह ऐन वक्त पर बाधा डाले तो इसका भारी नुकसान होगा हालाँकि उम्मीद नहीं है कि वह ऐसा करेगा क्योंकि उसने पूरी बिरादरी के सामने अपनी बे-तअल्लुकी बयान की है मगर एहतियातन ज़रूरत है कि उलेमा की भी सनद मौजूद हो, लड़की का वली (संरक्षक) उसकी बड़ी बहन का पति हो सकता है? उसकी बड़ी बहन का इंतकाल हो चुका है और दूसरी बहन पति के साथ मौजूद है और सौतेली माँ के चार लड़के उसके बाप के वीर्य से मौजूद हैं जिनमें से दो की उम्र 14, 16 साल की है और एक सौतेली माँ है और पूरी बिरादरी है उनमें से उसका वली कौन हो सकता है? उत्तर दें और पुण्य कमाएं।

अल-जवाब (उत्तर): इस स्थिति में इस नाबालिग लड़की के निकाह का वली न उसका सगा चाचा हो सकता है न बहन न बहनोई न माँ बल्कि लड़की का सौतेला भाई जो सोलह साल का है उसके निकाह का वली है, और दूसरा जो चौदह साल का है अगर वह बालिग है तो वह भी है, दुर्रे मुख्तार वगैरह में है:

निकाह में वली असबा बे-नफ़सिही (पुरुष पितृपक्षीय सम्बन्धी) होता है विरासत और रोकथाम के क्रम के अनुसार।[1] | निकाह का वली असबा बे-नफ़सिही विरासत और रुकावट होने की तरतीब पर होते हैं। (त)

इसलिए लड़की का निकाह कुफ़ू (बराबरी) में महरे मिस्ल या उससे ज़्यादा पर इन सौतेले भाइयों की इजाज़त से होना चाहिए, अगर माँ सगी भी होती तो उसके द्वारा किया गया निकाह भी इस भाई की इजाज़त पर मुक़ूफ़ (निर्भर) रहता, और जबकि उसके भाई की इजाज़त से हो या निकाह के बाद अस्वीकार करने से पहले वह इसे जायज़ कर दे और निकाह में महरे मिस्ल से बहुत ज़्यादा कमी न की गई हो और जिससे निकाह हुआ वह कुफ़ू हो यानी मज़हब या नस्ब या चाल-चलन या पेशे में ऐसा कम न हो कि उससे निकाह उन भाइयों के लिए शर्मिंदगी और बदनामी का कारण हो तो वह निकाह सही हो जाएगा और चाचा इसमें किसी तरह की बाधा नहीं डाल सकता, हाँ लड़की को यह अधिकार

होगा कि बालिग होते ही अगर फ़ौरन इस निकाह से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करे तो दावा करके इसे रद्द करवा सकेगी, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 77, 76, 3: बिलग्राम, ज़िला हरदोई, मोहल्ला मैदान, प्रेषक सैयद मोहम्मद तक़ी साहब क़ादरी, 26 सफ़र 1337 हिजरी दीन के उलेमा और मज़बूत शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा की उम्र चार पाँच साल की थी जब उसके..

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-वली, मतबा मुजतबाई देहली 1/193

पृष्ठ 648 का 739

ہونے والی ہے، اس لڑکی کی ایک سوتیلی ماں ہے جس نے اس کی پرورش کی اور شادی بھی کرتی ہے، زید کے حقیقی بھائی سے اس نے اس کی شادی کے متعلق مدد چاہی کہ تمام اہل برادری کے سامنے اس نے انکار کیا کہ میں نہ اس شادی میں شریک ہوں گا نہ مجھ سے کسی قسم کا واسطہ ہے جہاں چاہیں شادی کریں مجھ سے کوئی واسطہ نہیں، اس لئے سخت پریشانی ہے کہ اس کی بیوہ سوتیلی ماں نے کل انتظام شادی کا کر لیا ہے خدا نخواستہ اگر وہ عین وقت مخل ہو تو اس کا سخت نقصان ہوگا گو امید نہیں ہے کہ وہ ایسا کرے کیونکہ اس نے سب اہل برادری کے سامنے اپنی بے تعلقی بیان کیا ہے مگر احتیاطاً ضرورت ہے کہ علماء کی بھی سند موجود ہو، لڑکی کا ولی اس کی بڑی بہن کا شوہر ہو سکتا ہے، اس کی بڑی بہن کا انتقال ہو چکا ہے اور دوسری بہن مع شوہر موجود ہے اور سوتیلی ماں کے چار لڑکے اس کے باپ کے نطفہ سے موجود ہیں جن میں سے دو کی عمر ۱۴، ۱۶ سال کی ہے اور ایک سوتیلی ماں ہے اور تمام اہل برادری ہیں ان میں اس کا ولی کون ہو سکتا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: اس صورت میں اس نابالغہ کے نکاح کا ولی نہ اس کا حقیقی چچا ہو سکتا ہے نہ بہن نہ بہنوئی نہ ماں بلکہ لڑکی کا سوتیلا بھائی کہ سولہ سال کا ہے اس کے نکاح کا ولی ہے، اور دوسرا کہ چودہ سال کا ہے اگر وہ بالغ ہے تو وہ بھی ہے، در مختار وغیرہ میں ہے:

الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ علی ترتیب الارث اوالحجب.[1] | نکاح کا ولی عصبہ بنفسہ وراثت اور مانع ہونے کی ترتیب پر ہوتے ہیں. (ت)

لہذا لڑکی کا نکاح کفو میں مہر مثل یا زائد پر جو ان سوتیلے بھائی کی اجازت سے ہونا چاہئے، اگر ماں حقیقی بھی ہوتی تو اس کا کیا ہوا نکاح بھی اس بھائی کی اجازت پر موقوف رہتا، اور جبکہ اس کا بھائی کی اجازت سے ہو یا بعد نکاح قبل رد یہ اسے جائز کر دے اور نکاح میں مہر مثل سے کمی فاحش نہ کی گئی ہو اور جس سے نکاح ہوا وہ کفو ہو یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشے میں ایسا کم نہ ہو کہ اس سے نکاح ان بھائیوں کے لئے وجہ عار و بدنامی ہو تو وہ نکاح صحیح ہو جائے گا اور چچا اس میں کسی طرح خلل انداز نہیں ہو سکتا، ہاں لڑکی کو اختیار ہو گا کہ بالغہ ہوتے ہی اگر فوراً اس نکاح سے اپنی ناراضی ظاہر کرے تو دعویٰ کر کے فسخ کر سکے گی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷، ۷۶، ۳: از بلگرام ضلع ہر دوئی محلہ میدان مرسلہ سید محمد تقی صاحب قادری ۲۶ صفر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کی عمر چار پانچ سال کی تھی کہ اس کے

[1] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳

Volume Eleven Fatawa Rizvia

The parents passed away, and Hinda was raised by her real maternal grandmother. When Hinda was eight years old, her maternal grandmother performed her marriage contract with another of her grandsons. Although Hinda had biological brothers, they were not present on that occasion when the grandmother performed the contract. Consequently, for five to six full years after the marriage, Hinda was provided with neither food nor clothing by her husband, nor by her parents-in-law. As before, Hinda remained with her grandmother, who provided her with food and clothing. When Hinda turned fourteen years and a few months old and had her first menstruation, she came with her grandmother to a house in her neighborhood. In the presence of two men and three women, she said, "I am not pleased with the person my grandmother married me to, and I cannot spend my life with him in any way." In such a situation, did Hinda's marriage remain or was it broken?

(1) Five months after this, Hinda's second marriage was performed with another person with her consent, she being an adult by then. In this case, will this marriage be considered valid or not? If Hinda's first husband wants to take his wife back through legal battle and dispute, keeping all these matters in mind, can he take Hinda or not?

THE ANSWER:

If the person Hinda was first married to was so inferior to her in religion, lineage, character, or profession that her marriage to him would be a cause of shame, disgrace, and notoriety for Hinda's brothers, then that marriage did not take place at all.

"The decree is given for the lack of validity in [a marriage with] a non-equivalent (ghayr-kufu) due to the corruption of the times."[1] - Durr-ul-Mukhtar etc. | The fatwa is that in a case of non-equivalence, the marriage will not take place at all due to the corruption of the age. - Durr-ul-Mukhtar etc. (T)

And if it was not so, then that marriage became valid and contracted "from an unauthorized agent and he has one to authorize it" (issued by a fuzuli and because there was someone present capable of authorizing it. T). If Hinda had expressed her dissatisfaction as soon as she reached puberty, she could have annulled this marriage. Now that she delayed and went to another place to utter those words, the

marriage has become binding. Without the death of the first husband or a divorce, she cannot be separated from him.

(2) The second marriage she performed is purely void; it is obligatory for her to separate from him immediately. As stated in Durr-ul-Mukhtar:

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Guardianship, Mujtabai Press Delhi, 1/191.

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

माता-पिता की मृत्यु हो गई और हिंदा का पालन-पोषण उसकी सगी नानी ने किया। जब हिंदा की उम्र आठ साल की हुई, तो उसकी सगी नानी ने हिंदा का निकाह अपने दूसरे नवासे के साथ कर दिया। हालाँकि हिंदा के सगे भाई थे, लेकिन उस मौके पर वे मौजूद नहीं थे जब उसकी नानी ने यह निकाह किया था। लिहाज़ा, शादी के बाद से पाँच-छह साल तक हिंदा को न तो उसके पति ने रोटी-कपड़ा दिया और न ही उसके सास-ससुर ने। हिंदा पहले की तरह अपनी नानी के पास रही और उन्होंने ही उसे रोटी-कपड़ा दिया। जब हिंदा चौदह साल और कुछ महीने की हुई और उसे पहली बार मासिक धर्म आया, तो वह अपनी नानी के साथ अपने मोहल्ले के एक घर में आई। वहाँ उसने दो पुरुषों और तीन महिलाओं के सामने कहा, "मेरी नानी ने मेरी शादी जिसके साथ की थी, मैं उससे सहमत नहीं हूँ और मैं उसके साथ अपनी उम्र किसी भी तरह नहीं गुज़ार सकती।" ऐसी स्थिति में क्या हिंदा का वह निकाह बरकरार रहा या टूट गया?

(1) इसके पाँच महीने बाद, हिंदा का दूसरा निकाह उसकी सहमति से दूसरे व्यक्ति के साथ कर दिया गया, जबकि वह अब वयस्क हो चुकी थी। इस स्थिति में, क्या यह निकाह जायज़ माना जाएगा या नहीं? अगर हिंदा का पहला पति कानूनी लड़ाई और विवाद के ज़रिए अपनी पत्नी को लेना चाहे, तो इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, क्या वह हिंदा को ले सकता है या नहीं?

उत्तर (अल-जवाब):

हिंदा का पहला निकाह जिससे हुआ, अगर वह धर्म, वंश, आचरण या पेशे में हिंदा से इतना कमतर था कि उसके साथ हिंदा का निकाह होना हिंदा के भाइयों के लिए अपमान, लज्जा और बदनामी का कारण हो, तो वह निकाह शुरू से हुआ ही नहीं।

"ज़माने के भ्रष्टाचार के कारण गैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह की अमान्यता का फ़तवा दिया जाता है।"[1] - दुर्र-ए-मुख्तार वगैरह। | फ़तवा यह है कि गैर-कुफ़ू में ज़माने के बिगाड़ के कारण असल में निकाह होगा ही नहीं। - दुर्र-ए-मुख्तार वगैरह (त)।

और अगर ऐसा नहीं था, तो वह निकाह सही और संपन्न हो गया 'मिन फ़ुज़ूली व लहु मुजीज़' (एक फ़ुज़ूली यानी अनधिकृत व्यक्ति के माध्यम से क्योंकि वहाँ उसे स्वीकार करने वाला मौजूद था। त)। अगर हिंदा वयस्क होते ही अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करती, तो वह इस निकाह को निरस्त करा सकती

थी। अब चूँकि उसने देर कर दी और दूसरी जगह जाकर वे शब्द कहे, इसलिए अब निकाह अनिवार्य (लाज़िम) हो गया है। पहले पति की मृत्यु या तलाक़ के बिना वह उससे अलग नहीं हो सकती।

(2) दूसरा निकाह जो किया गया, वह पूरी तरह से अमान्य (बातिल) है; उस पर फ़र्ज़ है कि वह तुरंत उससे अलग हो जाए। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-अल-वली, मत्वअ मुज्तबाई दिल्ली 1/191।

पेज 649/739

جلد یازدھم فتاوی رضویه

ماں باپ نے قضا کی اور ہندہ کو اس کی حقیقی نانی نے پرورش کیا جبکہ ہندہ کی عمر آٹھ سال کی ہوئی تو اس کی حقیقی نانی نے ہندہ کا عقد اپنے دوسرے نواسے کے ساتھ کر دیا، گو ہندہ کے بھائی حقیقی تھے مگر اس موقع پر موجود نہ تھے جبکہ اس کا عقد اس کی نانی نے کیا تھا، لہذا شادی ہونے کے بعد سے پانچ چھ برس کامل تک ہندہ کو نہ اس کے شوہر نے روٹی کپڑا دیا اور نہ اس کے ساس سسر نے، بدستور سابق ہندہ اپنی نانی کے پاس رہی اس نے اس کو روٹی کپڑا دیا جبکہ ہندہ کی عمر چودہ سال کچھ ماہ کی ہوئی اور اس کو پہلا ایام ہوا، اس وقت ہندہ مع اپنی نانی کے اپنے محلہ کے ایک گھر میں آئی اور اس نے دو مرد اور تین عورتوں کے روبرو کہا کہ میری شادی میری نانی نے جس کے ساتھ کی تھی اس سے میں رضامند نہیں ہوں اور میں اس کے ساتھ اپنی عمر کسی طرح بسر نہیں کر سکتی ایسی حالت میں وہ نکاح ہندہ کا رہا یا ٹوٹ گیا؟

(۱) اس کے پانچ ماہ بعد ہندہ کا دوسرا نکاح ہندہ کی رضامندی سے دوسرے شخص کے ساتھ کردیا گیا جبکہ وہ بالغ ہوچکی تھی اس صورت میں یہ نکاح جائز سمجھا جائے گا یا نہیں؟ اگر ہندہ کا پہلا شوہر عدالتی لڑائی فساد سے اپنی عورت کو لینا چاہے تو ان تمام امورات کو مد نظر رکھ کر ہندہ کو لے سکتا ہے یا نہیں؟

الجواب:

جس سے ہندہ کا پہلا نکاح ہوا اگر وہ ہندہ سے مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشے میں ایسا کم تھا کہ اس کے ساتھ ہندہ کا نکاح ہونا برادرانِ ہندہ کے لئے باعثِ ننگ و عار و بدنامی ہو تو وہ نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں۔

یفتی بعدم الصحة في غیر الکفو لفساد الزمان ۱ در مختار وغیرہ۔ | فتوی یہ ہے کہ غیر کفو میں زمانہ کے فساد کی بنا پر اصلاً نکاح نہ ہو گا در مختار وغیرہ (ت)

اور اگر ایسا نہ تھا وہ نکاح صحیح و منعقد ہو گیا من فضولی ولہ مجیز (فضولی سے صادر اور اس کو جائز کرنے والا موجود ہونے کی وجہ سے۔ ت) ہندہ اگر بالغ ہوتے ہی ناراضی ظاہر کرتی اس نکاح کو فسخ کراسکتی اب کہ دیر لگائی وہاں سے دوسری جگہ جاکر وہ الفاظ کہے اب نکاح لازم ہو گیا بے موت یا طلاق شوہر اول اس سے جدا نہیں ہوسکتی،

(۲) دوسرا نکاح جو کیا باطل محض ہے اس پر فرض ہے کہ فوراً اس سے جدا ہو جائے ، در مختار میں ہے :

۱ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Arabic Boxed Text]: The choice of a virgin (to annul a marriage) is invalidated by her silence if she is aware of the marriage, and it does not extend to the end of the meeting. And Allah knows best. — (T)

[Urdu translation/explanation]: When a mature virgin becomes aware (of her marriage), her option to annul it ends upon her silence, and after silence, it will not remain valid until the end of the meeting. And Allah Almighty knows best. — (T)

Problem 783: From Samwal village, Post Office Segter, Jammu State, Mirpur District, Punjab province, via Jhelum. Sent by Hafiz Muti-ullah Sahib, 18 Rabi-ul-Akhir 1337 AH. What do the scholars of religion say in this situation: For instance, after Zaid's death, his minor daughter's engagement (nata) was arranged by her mother at some place and the groom's family gave some jewelry and clothes to the mentioned girl. In their assumption, they considered the girl as their married wife. After two or three years passed, they went to the girl's mother so that the marriage could be performed. She said she had no time. They left. Again, they sent the person through whom the engagement was made and asked. Then the girl's mother refused. The groom's family said return the jewelry etc., we are ending the relationship. In short, they took their jewelry etc. back and left, relinquishing the claim of the relationship. Now the girl is an adult and her mother has died. The people from the groom's side are demanding again, saying we did not end the relationship and neither did we take the jewelry; the representative (wakil) must have taken it. If at the time of engagement, the minor's mother, uncle, or brother did it, does she have the option of annulment according to the Shariah rule 'wal-huma al-khiyar fi ghayr al-ab wal-jadd' (the option of choice belongs to both in a marriage contracted by someone other than the father or grandfather)? But at the time of puberty, she should give a statement before a Qazi and the Qazi should issue a decree of annulment. Since there is no Qazi in this territory, can the most learned scholars (A'lam Ulama) in this land annul it or not?

Answer: Mere engagement is nothing, and to consider her married is void when offer and acceptance (Ijab-o-Qabul) have not taken place. In this case, what is the need for annulment since there was no marriage at all to be annulled? Yes, if offer and acceptance took place, then certainly in the mentioned scenario, the minor has the 'Option of Puberty' (Khiyar-e-Faskh). If she refuses and objects immediately upon reaching puberty in that very same meeting, she can claim annulment. The most learned person of the town (A'lam waqifa ahl-e-balad) should annul it in the presence

of the husband and get it executed through a court. And if she remained silent in the meeting of puberty, she can no longer claim annulment; the marriage has become binding provided it was done with a 'Kufu' (equal match). That is, the husband should not be so inferior to the wife in religion, lineage, conduct, or profession that her marriage would conventionally be a cause of shame and disgrace for her guardians (Awliya), for in such a case, a marriage performed by someone other than the father or grandfather is purely void. When it never happened in the first place, what is the need for annulment?

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193. Page 650 of 739

फ़तावा रज़विया, खंड 11

[अरबी बॉक्स]: एक कुंवारी लड़की का (निकाह रद्द करने का) विकल्प उसकी खामोशी से समाप्त हो जाता है, यदि वह निकाह के बारे में जानते हुए भी खामोश रहे। यह विकल्प सभा के अंत तक नहीं रहता है। और अल्लाह बेहतर जानता है। — (T)

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: बाकरा बालगा (वयस्क कुंवारी) को जब (निकाह का) पता चल जाए, तो उसकी खामोशी पर निकाह रद्द करने का उसका अधिकार समाप्त हो जाता है, और खामोशी के बाद सभा के अंत तक यह अधिकार शेष नहीं रहेगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। — (T)

मसला 783: ग्राम समवाल, डाकखाना सेग्टर, जम्मू रियासत, ज़िला मीरपुर, पंजाब प्रांत, वाया झेलम। प्रेषक हाफ़िज़ मती-उल्लाह साहिब, 18 रबी-उल-आख़िर 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस स्थिति में क्या कहते हैं: मिसाल के तौर पर, ज़ैद की मृत्यु के बाद, ज़ैद की नाबालिग लड़की की सगाई (नाता) उसकी माँ ने कहीं कर दी और दूल्हे पक्ष ने उक्त लड़की को कुछ जेवर और कपड़े दिए। उन्होंने अपने गुमान में लड़की को अपनी विवाहिता मान लिया। दो-तीन साल बीतने के बाद, वे लड़की की माँ के पास गए ताकि निकाह मुकम्मल किया जा सके। उसने कहा कि मुझे फ़ुर्सत नहीं है। वे चले गए। फिर जिसके ज़रिए सगाई हुई थी, उसे भेजकर दोबारा पूछा गया। तब लड़की की माँ ने इनकार कर दिया। सगाई वालों ने कहा कि जेवर वगैरह वापस कर दो, हम यह रिश्ता खत्म करते हैं। संक्षेप में, वे अपने जेवर आदि लेकर वापस चले गए और रिश्ता खत्म करने का दावा किया। अब लड़की वयस्क है और उसकी माँ का निधन हो चुका है। दूल्हे पक्ष वाले अब फिर से मांग कर रहे हैं कि हमने रिश्ता नहीं तोड़ा और न ही जेवर वापस लिए, वकील ने लिए होंगे। क्या नाबालिग की माँ, चाचा या भाई द्वारा की गई सगाई के समय, शरीयत के हुक्म 'वल-हुमा अल-खियार फ़ी ग़ैर अल-अब वल-जद्द' (पिता और दादा के अलावा किसी और के द्वारा कराए गए निकाह में दोनों को विकल्प होता है) के अनुसार उसे निकाह रद्द करने का अधिकार है? लेकिन वयस्क होने पर काज़ी के सामने बयान देना होता है और काज़ी रद्दीकरण का हुक्म देता है। चूंकि इस क्षेत्र में कोई काज़ी नहीं है, तो क्या इस मुल्क के सबसे बड़े विद्वान (अअ़लम उलमा) निकाह रद्द कर सकते हैं या नहीं?

अल-जवाब: सिर्फ सगाई कोई चीज़ नहीं है और उन्हें विवाहिता मान लेना गलत है जब तक कि ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) न हुआ हो। इस स्थिति में रद्दीकरण (फ़स्ख़) की क्या ज़रूरत है जब निकाह ही नहीं हुआ था जिसे रद्द किया जाए? हाँ, अगर ईजाब-ओ-क़ुबूल हो गया था, तो

निश्चित रूप से वर्णित मामले में नाबालिग को 'खियार-ए-फ़स्ख़' (रद्दीकरण का विकल्प) प्राप्त है। यदि वह वयस्क होते ही तुरंत उसी सभा में इनकार और विरोध करती है, तो वह रद्दीकरण का दावा कर सकती है। शहर का सबसे बड़ा विद्वान पति की उपस्थिति में निकाह रद्द कर दे और इसे कचहरी (न्यायालय) के माध्यम से लागू करा ले। और अगर वह वयस्क होने की सभा में खामोश रही, तो अब वह रद्दीकरण का दावा नहीं कर सकती; निकाह अनिवार्य हो गया बशर्ते कि वह 'कुफ़ू' (समान स्तर) में हुआ हो। यानी पति धर्म, वंश, आचरण या पेशे में पत्नी से इतना कम न हो कि उसका निकाह अभिभावकों (औलिया) के लिए लोक-लाज और अपमान का कारण बने, क्योंकि ऐसी स्थिति में पिता या दादा के अलावा किसी और द्वारा कराया गया निकाह पूरी तरह से शून्य होता है। जब निकाह हुआ ही नहीं, तो उसे रद्द करने की क्या आवश्यकता है।

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/193. पृष्ठ 739 में से 650

بطل خیار البکر بالسکوت مختارۃ عالمۃ بالنکاح ولا یمتد الی اخر المجلس واللہ تعالٰی اعلم۔ باکرہ بالغہ کو جب علم ہو جائے تو خاموشی پر اس کا اختیار فسخ ختم ہو جاتا ہے اور خاموشی کے بعد مجلس کے اختتام تک باقی نہ رہے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۸۳: از موضع سموال ڈاکخانہ سیگتر ریاست جموں ضلع میر پور ملک پنجاب براستہ جہلم مرسلہ حافظ مطیع اللہ صاحب ۱۸ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں مثلاً زید کی لڑکی نابالغہ کا بعد وفات زید لڑکی کی والدہ نے کسی جگہ ناتا یعنی ساک کر دیا اور ان نے لڑکی مذکور کو کسی قدر زیور اور کپڑا دیا، اپنے زعم میں انہوں نے لڑکی اپنی منکوحہ سمجھ لی ،بعد گزرنے دو تین سال کے والدہ لڑکی کے پاس گئے تاکہ شادی کر دیوے، اس نے کہا مجھے فرصت نہیں، پھر چلے گئے ، دوبارہ جس کے ذریعہ سے منگنی کی تھی بھیج کر سوال کیا، پھر والدہ لڑکی نے انکار کردیا، منگنی والوں نے کہا زیور وغیرہ واپس کر دو ہم اس سے رہے، غرض وہ اپنے زیورات وغیرہ لے کر واپس چلے آئے اور دعوی ناتا چھوڑ دیا ، اب لڑکی بالغ ہے اور اس کی والدہ مر گئی ہے دوبارہ ناتے والے تقاضا کرتے ہیں کہ ہم نے ناتا نہیں چھوڑا اور نہ ہم نے زیور لیا وکیل نے لیا ہوگا، آیا بروقت منگنی نابالغہ کی والدہ یا چچا یا برادر نے کر دیا اس کو بموجب شریعت اختیار فسخ ہے بحکم ولھما الخیار فی غیر الاب والجد (نابالغ اور بالغہ کو غیر باپ دادا کے دئے ہوئے نکاح میں اختیار ہوتا ہے،ت) لیکن بوقت بلوغ قاضی کے نزدیک بیان دیوے اور قاضی حکم فسخ کرے، چونکہ اس ولایت میں کوئی قاضی نہیں تو کیا اس ملک میں اعلم علماء فسخ کر سکتے ہیں یا نہیں؟

الجواب: محض منگنی کوئی چیز نہیں اور ان کا منکوحہ سمجھ لینا باطل ہے جبکہ ایجاب و قبول نہ ہوا ہو، اس صورت میں فسخ کی کیا حاجت کہ نکاح ہی نہ تھا جسے فسخ کیا جائے، ہاں اگر ایجاب و قبول ہو گیا تو بے شک صورت مذکور میں نابالغہ کو خیار فسخ ہے، اگر بالغہ ہوتے ہی فوراً اسی مجلس میں انکار و اعتراض کرے تو دعویٰ فسخ کر سکتی ہے، اعلم واقعہ اہل بلد بحضور زوج فسخ کرے اور اس کی تنفیذ بذریعہ کچہری کرالے، اور اگر مجلس بلوغ میں سکوت کیا تو اب دعویٰ فسخ نہیں کر سکتی نکاح لازم ہو گیا جبکہ کفو سے ہوا ہو یعنی زوج زوجہ سے مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشے میں ایسا کم نہ ہو کہ اس سے اس کا نکاح اولیاء کے لئے عرفاً باعث ننگ و عار ہو کہ اس صورت میں غیر اب وجد کا کیا ہوا نکاح باطل محض ہوتا ہے، جب سرے سے ہوا ہی نہیں فسخ کی کیا حاجت،

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ Page 650 of 739

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

“All these matters are explicitly mentioned in the general books of the [Hanafi] school of thought, such as Durr al-Mukhtar, etc. And the matter of the scholar in *al-Hadiqa al-Nadiyya* is narrated from Imam al-Itabi. We have mentioned the details of all these in our fatwas. And Allah the Almighty knows best. (T)”

Issue 379: From the city of Bareilly, Beharipur locality, asked by Hamidullah Sahib, 1st Jumada al-Ula 1337 AH. What do the scholars of the religion say on this matter: A girl is 14 years old, and her father has sent a letter to his wife with the content that 'Do as you wish, you have the authority.' The mother wants to perform the marriage, and the father is not present there. In the absence of the father, can the marriage take place or not?

The Answer: If there is a third party [to testify] that the letter is his, then the mother has the authority if the girl is a minor. If she is an adult, her own consent is valid. And Allah the Almighty knows best.

Issue 380: From Koili, Special Post Office, District Muzaffarpur, sent by Abdul Aleem Shah Sahib, 15th Jumada al-Ula 1337 AH. What do the scholars of the religion say on this matter: Zaid had three marriages. From the first wife (deceased), he had two sons and one daughter. The second wife died childless. From the third wife (currently existing), he has two sons and one daughter. Zaid separated the children of the first wife during his lifetime. It is heard that Zaid had disinherited (aq) the children of the first wife, and Zaid lived with the third wife and her children. During his lifetime, Zaid had arranged the engagement (nisbat) of the daughter from the third wife to the son of Bakr; meaning the marriage engagement was fixed. Since the girl was ten years old, after fixing the said engagement, Zaid passed away. A year after Zaid's death, the lady who is the third wife performed the marriage of her daughter with the son of Bakr under her special guardianship (wilayat khass). In the meantime, there was a dispute regarding rights between the disinherited children of the first wife and the third wife. Sometime after the marriage and the resolution of the dispute, the children of the first wife won over the lady of the third wife to their side. Now it is being said by the side of the first wife's children that the marriage contract (aqd) is invalid because "I can be the heir of this girl, meaning I will be her guardian (wali)." In fact, they have brought the girl from her in-laws' house and kept her in their own home, and the girl is ready for a second marriage. Is this marriage contract, which the lady of the third wife performed under her own guardianship, valid or not?

फतावा रज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

“ये सभी मामले मज़हब की आम किताबों में स्पष्ट रूप से बताए गए हैं जैसे दुर्र-ए-मुख्तार वगैरह। और हदीक़ा नदिया में आलिम का मसला इमाम इताबी से नक़ल किया गया है, हमने इन सभी का विवरण अपने फतावा में ज़िक्र किया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)”

मसला ३७९: बरेली शहर के मुहल्ला बहारीपुर से, मुस्तौ़ला (पूछने वाले) हमीद उल्लाह साहब, १ जमादी अल-ऊला १३३७ हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि लड़की की उम्र १४ साल है और उसके वालिद ने अपनी बीवी के नाम खत भेजा है जिसका मज़मून ये है कि 'जैसे चाहो करो, तुम्हें इख़्तियार (अधिकार) है'। माँ निकाह करना चाहती है और वालिद वहाँ मौजूद नहीं है। वालिद की ग़ैर-मौजूदगी में निकाह हो सकता है या नहीं?

जवाब: अगर कोई तीसरा गवाह हो कि खत उन्हीं का है, तो माँ को अधिकार है अगर लड़की नाबालिग हो। और अगर बालिग़ हो तो उसकी खुद की इजाज़त मान्य होती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३८०: कोइली, खास डाकखाना, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर से, भेजने वाले अब्दुल अलीम शाह साहब, १५ जमादी अल-ऊला १३३७ हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद की तीन शादियाँ थीं। पहली बीवी (स्वर्गीय) से दो लड़के और एक लड़की थी। दूसरी बीवी बेऔलाद फौत हुई। तीसरी बीवी (मौजूदा) से दो लड़के और एक लड़की है। ज़ैद ने पहली बीवी की औलाद को अपनी ज़िंदगी में ही अलग कर दिया था। सुनने में आता है कि ज़ैद ने पहली बीवी की औलाद को आक़ (बेदखल) कर दिया था, और ज़ैद तीसरी बीवी और उसकी औलाद के साथ रहते थे। ज़ैद ने अपनी ज़िंदगी में तीसरी बीवी की लड़की की निसबत (सगाई) बक्र के लड़के से तय की थी। चूंकि लड़की की उम्र दस साल थी, सगाई तय होने के बाद ज़ैद का इंतकाल हो गया। ज़ैद के इंतकाल के एक साल बाद, तीसरी बीवी ने अपनी लड़की का निकाह बक्र के लड़के के साथ अपनी वलायत (संरक्षण) में कर दिया। इस बीच पहली बीवी की बेदखल औलाद और तीसरी बीवी के बीच हक़दारी का मामला चल रहा था। निकाह के कुछ समय बाद और मामला सुलझने पर पहली बीवी की औलाद ने तीसरी बीवी को अपने पक्ष में कर लिया। अब पहली बीवी की औलाद की तरफ़ से ये कहा जा रहा है कि यह निकाह नाजायज़ है क्योंकि "मैं इस लड़की का वारिस हो सकता हूँ, यानी मैं इसका वली (संरक्षक) हूँ"। बल्कि वे उस लड़की को उसके ससुराल से लाकर अपने घर रख चुके हैं और लड़की दूसरी

शादी के लिए तैयार है। क्या यह निकाह, जो तीसरी बीवी ने अपनी सरपरस्ती में किया है, जायज़ है या नहीं?

पृष्ठ ६५१ का ७३९

والسائل کلھا مصرحۃ بھا فی عامۃ زبر المذھب کالدرالمختار وغیرہ ومسألۃ العالم فی الحدیقۃ الندیۃ عن فتاوی الامام العتابی وقد فصلنا الکل فی فتاوٰینا واللہ تعالٰی اعلم۔ یہ تمام مسائل مذہب کی عام کتب میں تصریح شدہ ہیں جیسے درمختار وغیرہ۔ اور عالم فقیہ والامسئلہ حدیقہ ندیہ میں امام عتابی سے منقول ہے، ہم نے ان تمام کی تفصیل اپنے فتاوٰی میں ذکر کی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۷۹: از شہر بریلی محلہ بہاری پور مسئولہ حمید اللہ صاحب یکم جمادی الاولٰی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لڑکی کی عمر ۱۴ سال کی ہے اور اس کے والد نے خط اپنی بیوی کے نام اس مضمون کا بھیجا ہے کہ جس طرح چاہو کرو تمہیں اختیار ہے، ماں نکاح کرنا چاہتی ہے اور والد اس کے یہاں موجود نہیں ہیں عدم موجودگی میں والد کے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر ثالث ہو کہ خط اس کا ہے تو ماں کو اختیار ہے اگر لڑکی نابالغہ ہو اور بالغہ کی خود اپنی اجازت معتبر ہوتی ہے ، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۸۰: از کوئیلی ڈاک خانہ خاص ضلع مظفر پور مرسلہ عبد العلیم شاہ صاحب ۱۵ جمادی الاولٰی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کو تین شادی محل اولیٰ (مرحومہ) سے دو لڑکے ایک لڑکی اور محل ثانی لاولد مرحوم، محل سوم (قائم) سے دو لڑکے اور ایک لڑکی، زید نے محل اولیٰ کی اولاد کو اپنی حیات میں علیحدہ کردیا، جو کہ زید کو بدر میاں اولاد محل اولیٰ کے کوئی سروکار نہیں بلکہ سننے میں آتا ہے کہ زید نے محل اولیٰ والی اولاد کو عاق کیا تھا اور زید محل سوم کے ساتھ مع اولاد کے رہتے تھے، زید نے اپنی حیات میں

محل سوم کی لڑکی کی نسبت بکر کے لڑکے سے کی تھی یعنی نسبت شادی کی مقرر ہوئی تھی، چونکہ عمر لڑکی کی دس برس کی تھی بعد مقرر کرنے نسبت مذکور کے زید نے قضا کیا، بعد قضا کرنے زید کے ایک سال بعد مسماۃ محل سوم نے اپنی لڑکی کی شادی بولایت خاص بکر کے لڑکے کے ساتھ کردی، اس درمیان میں محل اولیٰ والی اولاد سے جو کہ عاق شدہ ہے اس سے معاملہ حقداری کا ساتھ محل سوم مسماۃ کے تھا، بعد شادی ہونے تھوڑے زمانہ کے اور اٹھ جانے معاملہ کے محل اولیٰ والی اولاد نے محل سوم والی مسماۃ کو اپنی رائے میں یعنی میل میں لے آئے، اب محل اولیٰ والی اولاد کی جانب سے یہ کہا جاتا ہے کہ عقد ناجائز ہوگا کیونکہ اس لڑکی کا وارث میں ہوسکتا ہوں یعنی اس کا ولی میں ہوں گا بلکہ اس لڑکی کو اپنی سسرال سے لاکر اپنے گھر میں رکھ لیا ہے اور دوسری شادی کرنے پر لڑکی آمادہ ہے آیا یہ عقد جو کہ مسماۃ محل سوم والی نے بولایت اپنے کیا ہے کیا جائز ہے یا نہیں؟

Volume 11 - Fatawa Rizwia

The Answer: In reality, even if the brother is a step-brother, as long as he is present, the mother does not have guardianship (wilayat). The marriage performed by the mother, which was not authorized by any adult brother, nor did any adult brother validate it after the marriage, can be annulled by an adult brother, and it will be annulled. To disown (Aaq) someone is not a legal concept in Sharia, nor does it strip away guardianship. It is stated in Durr-ul-Mukhtar: "If a distant guardian (wali) performs a marriage while a closer one exists, it is dependent on the permission of the closer one." If a distant guardian performs a marriage in the presence of a closer guardian, then this marriage will depend on the permission of the closer guardian. And Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 381: From Basuli, District Badaun, sent by Muhammad Ayub Hasan Sahib (may he be safe), son of Qazi Muhammad Yusuf Sahib, 21 Rajab 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Mst. Hajra Khatoon alias Banno, daughter of the late Rahat Hussain, whose age at present is fifteen years and six months. Her mother, in collusion with her brother Aulad Hussain and nephew Qutb-ul-Hasan (Qutb-ul-Hasan is married to Hajra's elder sister), while no male was present at the house, arranged her marriage with her sister's son Aziz-ul-Hasan, who is younger than the aforementioned Qutb-ul-Hasan. The marriage was solemnized through her biological brother Aulad Hussain as proxy and witnessed by the servant Hasan (who is a cousin of the mentioned Qutb-ul-Hasan and Aziz-ul-Hasan) and Ahmed Hussain (a close relative of Qutb-ul-Hasan). Statement of Hajra Khatoon, given in the presence of Mumtaz Hussain, Farhat Hussain, and Saulat Hussain with her hand on the Holy Quran: "Before the marriage took place, my sister, the wife of Qutb-ul-Hasan, mentioned several times that my marriage would be with Aziz-ul-Hasan, but I categorically refused. My refusal was well known to Qutb-ul-Hasan, Aziz-ul-Hasan, their mother, my mother, and my brother-in-law. Now, at the time of marriage, when permission was sought from me, I could not loudly refuse in that gathering out of modesty/shyness, but I shook my head in refusal and said 'un-hoon', which was a refusal. As soon as my voice came out, my sisters, maternal aunt, and mother made a lot of noise saying, 'It's done, it's done.' I was not willing to be married to Aziz-ul-Hasan before that incident, nor at that time, nor am I now. May the curse of Allah and His Messenger be upon me if I speak even one false word now." Witness statement of the servant Ahsan, which has been recorded: "On December 29, 1918, at 5 PM, Qutb-ul-Hasan took me to Qazi Tola for the purpose of Aziz-ul-

Hasan's marriage. Upon arriving there, I learned that you are a witness that Mst. Banno..."

---

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Al-Wali, Matba' Mujtabai Delhi 1/194 Page 652 of 739

जिल्द याज़दहुम - फ़तावा रज़विया

जवाब: वास्तव में भाई चाहे सौतेला ही क्यों न हो, उसके होते हुए माँ को विलायत (अभिभावकत्व) प्राप्त नहीं है। जो निकाह माँ ने किया और उसमें किसी वयस्क भाई की अनुमति नहीं थी, और न ही निकाह के बाद किसी वयस्क भाई ने उसे जायज़ (वैध) ठहराया, तो वयस्क भाई उसे फ़स्ख़ (निरस्त) कर सकता है और वह फ़स्ख़ हो जाएगा। 'आक़' (बेदखल) कर देना शरीयत में कोई चीज़ नहीं है, और न ही इससे विलायत समाप्त होती है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: "लौ ज़व्वज अल-अअ'बदु हाल क़ियाम अल-अक़रब तवक़्क़फ़ा 'अला इजाज़तिही" - यदि दूर का वली (अभिभावक) निकट के वली की मौजूदगी में निकाह कर दे, तो वह निकाह निकट के वली की अनुमति पर निर्भर होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ३८१: बसुली, ज़िला बदायूँ से मोहम्मद अय्यूब हसन साहब सलमह, पुत्र क़ाज़ी मोहम्मद यूसुफ़ साहब द्वारा भेजा गया, २१ रजब १३४७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या फ़रमाते हैं: मुसम्मात हाजरा ख़ातून उर्फ़ बन्नो, पुत्री स्वर्गीय राहत हुसैन, जिसकी आयु वर्तमान में पंद्रह वर्ष छह माह है। उसकी माँ ने अपने भाई औलाद हुसैन और भांजे क़ुत्बुल हसन (क़ुत्बुल हसन की शादी हाजरा की बड़ी बहन से हुई है) के साथ मिलकर, जबकि घर पर कोई पुरुष मौजूद नहीं था, अपनी बहन के बेटे अज़ीज़ुल हसन से, जो उक्त क़ुत्बुल हसन से छोटे हैं, उसका निकाह पढ़वा दिया। यह निकाह उसके सगे भाई औलाद हुसैन की वकालत में और बंदा हसन (जो क़ुत्बुल हसन और अज़ीज़ुल हसन के चचेरे भाई हैं) और अहमद हुसैन (जो क़ुत्बुल हसन के क़रीबी रिश्तेदार हैं) की गवाही में हुआ। हाजरा ख़ातून का बयान, जो मुमताज़ हुसैन, फ़रहत हुसैन और सौलत हुसैन की मौजूदगी में पवित्र क़ुरान पर हाथ रखकर दिया गया: "निकाह की घटना से पहले मेरी बहन (क़ुत्बुल हसन की पत्नी) ने कई बार ज़िक्र किया था कि मेरा निकाह अज़ीज़ुल हसन से होगा, लेकिन मैंने साफ़ तौर पर इनकार कर दिया था। मेरे इस इनकार की ख़बर क़ुत्बुल हसन, अज़ीज़ुल हसन, उनकी माँ, मेरी माँ और बहनोई को अच्छी तरह हो चुकी थी। अब निकाह के वक़्त जब मुझसे अनुमति माँगी गई, तो मैं लोक-लाज और शर्म के कारण उस सभा में ऊँची आवाज़ में इनकार नहीं कर सकी, लेकिन मैंने इनकार में सिर हिलाया और 'ऊंहूं' किया जो इनकार ही था। जैसे ही मेरी आवाज़ निकली, मेरी बहनों, मौसी और माँ ने शोर मचा दिया कि 'हो गया, हो गया'। मैं अज़ीज़ुल हसन के साथ निकाह के लिए न तो इस घटना से पहले राज़ी थी, न उस वक़्त और न ही अब राज़ी हूँ। मुझ पर अल्लाह और उसके रसूल की फटकार हो अगर मैं इस वक़्त एक शब्द भी ग़लत कह रही हूँ।" गवाह बंदा अहसन

का बयान, जो लिखवाया गया: "२९ दिसंबर १९१८ को शाम ५ बजे क़ुत्बुल हसन मुझे अज़ीज़ुल हसन के निकाह के लिए क़ाज़ी टोला ले गए। वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि तुम गवाह हो कि मुसम्मात बन्नो..."

---

[1] दुर्रे मुख़्तार बाब अल-वली मतबा मुजतबाई दिल्ली १/१९४ पेज ६५२ ऑफ़ ७३९

الجواب: فی الواقع بھائی اگرچہ سوتیلا ہو اس کے ہوتے ماں کو ولایت نہیں، جو نکاح ماں نے کیا اور کسی جوان بھائی کا اذن نہ تھا، نہ بعد نکاح کسی جوان بھائی نے جائز کیا اسے جو جوان بھائی فسخ کرے فسخ ہوجائے گا، اور عاق کردینا شرعاً کوئی چیز نہیں، نہ اس سے ولایت زائل ہو، درمختار میں ہے: لوزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ- اگر ولی ابعد ولی اقرب کی موجودگی میں نکاح کردے تو یہ واللہ تعالٰی اعلم- نکاح اقرب کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۸۱: از بسولی ضلع بدایوں مرسلہ محمد ایوب حسن صاحب سلمہ، ولد قاضی محمد یوسف صاحب ۲۱ رجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہاجرہ خاتون عرف بنو دختر راحت حسین مرحوم کا جس کی عمر اس وقت پندرہ برس چھ ماہ ہے اس کی ماں بساز اپنے بھائی اولاد حسین اور بھانجے قطب الحسن (قطب الحسن کو ہاجرہ کی بڑی بہن بیاہی ہے) جبکہ مکان پر کوئی شخص از ذکور موجود نہ تھا اپنی بہن کے لڑکے عزیز الحسن سے جو قطب الحسن مذکور سے چھوٹے ہیں بوکالت اپنے بھائی حقیقی اولاد حسین مذکور و بگوائی بندہ حسن جو قطب الحسن و عزیز الحسن مذکور کے عم زاد ہیں وبگوائی احمد حسین جو قطب الحسن کے قریبی رشتہ دار ہیں نکاح پڑھوا دیا، بیان ہاجرہ خاتون جو کہ بموجودگی ممتاز حسین و فرحت حسین وصولت حسین کلام پاک پر ہاتھ رکھ کر بیان کیا میرے سامنے قبل نکاح کے واقع کے چند مرتبہ میری بہن زوجہ قطب الحسن نے عزیز الحسن سے میرا نکاح کئے جانے کا تذکرہ کیا مگر میں نے قطعی انکار کیا اور میرے اس انکار کی خبر قطب الحسن و عزیز الحسن اور ان کی والدہ اور میری ماں اور بہنوئی کو کما حقہ ہوچکی تھی اب بوقت نکاح جب مجھ سے اذن طلب کیا گیا میں

بوجہ لحاظ شرم بآواز بلند اس مجمع میں انکار نہ کر سکی مگر انگاری سر ہلایا اور اؤں ہوں نہ جو انکار تھا کیا تھا میری آواز نکلتے ہی میری بہنوں اور خالہ وماں نے غل و شور مچا دیا کہ ہو گیا ہو گیا، میں عزیز الحسن کے ساتھ نکاح کئے جانے کہ نہ قبل اس واقعہ کے نہ اس وقت اور نہ اب رضامند ہوں مجھ پر خدا اور اس کے رسول کی پھٹکار ہو جو اس وقت ایک لفظ بھی غلط کہتی ہوں، بیان گواہ بندہ احسن جو تحریر کرالیا گیا ہے، بتاریخ ۲۹ دسمبر ۱۹۱۸ء بوقت ۵ بجے شام قطب الحسن مجھ کو قاضی ٹولہ بغرض نکاح عزیز الحسن کے لئے گئے وہاں پر جاکر مجھ کو معلوم ہوا کہ تم گواہ ہو کہ مسماۃ بنو

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۴/۱ Page 652 of 739

Fatawa Rizvia Volume 11

[Inquiry] I went to the daughter of Rahat Hussain, where I was made a witness. I went inside and asked her mother, who acknowledged and gave permission for the marriage. Then I sought permission from the girl; she was behind a veil, and her voice came from inside. Then the marriage was solemnized. Farhat Hussain was not present at the time of the marriage; signatures were by Ahmad Hussain. The lawyer named Qazi Aulad Hussain was ill and later became more ill and passed away; no written statement could be obtained. The Qazi who performed the marriage, not finding anyone at the house or on that occasion from the aforementioned family, was told by Qutub-ul-Hasan: "Will you not involve me in any case by having such a marriage performed when no man is present at the house?" To which Qutub-ul-Hasan replied that no man's presence is needed as the girl herself is an adult. The Qazi made the girl perform the proposal and acceptance. Due to various statements from the witnesses and the lawyer regarding the internal situation at that time, various doubts about the invalidity of the marriage arose, necessitating a fatwa. My humble request is that those people are now putting various pressures for her departure (rukhsati), and the girl absolutely refuses, even ready to give her life rather than being sent there. Please consider the above matter and honor us with the ruling of the noble Sharia.

The Answer: Allah is One, Omnipotent, Knower of the unseen and the witnessed. This matter concerns what is permissible and forbidden (halal and haram), and specifically regarding private matters whose sanctity is extremely grave. If, in reality, Hajra, being an adult, had given permission, even if under pressure or coercion, the marriage is valid, and she now has no right to deny it. If she does not comply and marries elsewhere, it will be adultery (zina), adultery, adultery. And if, in reality, she had refused and it was falsely claimed she gave permission, then it is forbidden, forbidden, strictly forbidden to consider her the wife of Aziz-ul-Hasan. In the first case, Hajra, and in the second, Aziz-ul-Hasan and others involved, will deserve the curse of Allah and severe punishment. As for the testimonies mentioned, they are completely insufficient to prove permission. Based on them, Hajra, who denies giving permission, cannot be forced. And Allah knows best.

Problem 382: From Pilibhit, Mohalla Sheikh Chand, near Sarai Pukhta, sent by Hafiz Walayat Ahmad Sahib, 8 Sha'ban 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: Hinda's marriage was performed five years ago under the guardianship of her paternal uncle (to his knowledge, she was a minor) in the

absence of Hinda and her mother, to Zaid (who was then a minor) under the guardianship of his paternal grandfather. Zaid has been an adult for two years now. Now he wants the rukhsati (departure). It is learned from Hinda's mother that Hinda was an adult at the time of marriage. Hinda's mother is not allowing the rukhsati and says the marriage is not valid, and the mother's statement has been confirmed to be correct.

फतावा रज़विया खंड 11

[पूछताछ] मैं राहत हुसैन की बेटी के यहाँ गया था जहाँ मुझे गवाह बनाया गया। मैंने अंदर जाकर उसकी माँ से पूछा, उसने स्वीकार किया और निकाह की अनुमति दी। फिर मैंने लड़की से अनुमति माँगी; वह पर्दे में थी, अंदर से उसकी आवाज़ आई। फिर निकाह पढ़ा दिया गया। निकाह के समय फरहत हुसैन मौजूद नहीं थे, अहमद हुसैन के हस्ताक्षर थे। काज़ी औलाद हुसैन नाम के वकील बीमार थे और बाद में अधिक बीमार होकर उनका निधन हो गया; कोई लिखित बयान प्राप्त नहीं हो सका। निकाह पढ़ाने वाले काज़ी ने, मकान पर या उस अवसर पर परिवार के किसी सदस्य को न पाकर, कुतबुल् हसन से कहा: "क्या आप मुझे किसी मामले में फँसा तो नहीं देंगे ऐसा निकाह पढ़ाकर जब घर पर कोई पुरुष मौजूद नहीं है?" जिस पर कुतबुल् हसन ने जवाब दिया कि किसी पुरुष की ज़रूरत नहीं है क्योंकि लड़की खुद बालिग (वयस्क) है। काज़ी ने लड़की से ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) करवाया। उस समय के आंतरिक हालात के बारे में गवाहों और वकील के विभिन्न बयानों के कारण निकाह के अवैध होने के तरह-तरह के संदेह पैदा हुए, जिसकी वजह से फतवे की ज़रूरत हुई। विनम्र निवेदन है कि अब वे लोग रुख्सती (विदा) के लिए तरह-तरह के दबाव डाल रहे हैं और लड़की बिल्कुल स्पष्ट रूप से मना करती है, यहाँ तक कि वह जान देने पर आमादा है लेकिन वहाँ रुख्सत होने से इनकार करती है। उपरोक्त मामले पर विचार करें और शरीयत के आदेश से हमें गौरवान्वित करें।

उत्तर: अल्लाह एक है, सर्वशक्तिमान है, परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है। यह मामला हलाल और हराम का है, और वह भी विशेष रूप से निजी अंगों (शर्मगाह) का जिसकी पवित्रता अत्यंत गंभीर है। यदि वास्तव में हाजरा ने बालिग होने के कारण अनुमति दे दी थी, चाहे दबाव से या ज़बरदस्ती ही क्यों न हो, तो निकाह सही हो गया और अब उसे इनकार करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि वह नहीं मानेगी और दूसरी जगह निकाह करेगी तो यह व्यभिचार (ज़िना) होगा, ज़िना, ज़िना। और अगर वास्तव में उसने इनकार किया था और इसे अनुमति बनाकर उड़ा दिया गया, तो यह हराम है, हराम है, सख्त हराम है कि उसे अज़ीज़ुल् हसन की पत्नी समझा जाए। पहली स्थिति में हाजरा, और दूसरी में अज़ीज़ुल् हसन वगैरह इसके ज़िम्मेदार अल्लाह की लानत और कड़े अज़ाब के पात्र होंगे। रही बात उन गवाहियों की जो ज़िक्र की गईं, तो वे अनुमति साबित करने के लिए पूरी तरह अपर्याप्त हैं। उनके आधार पर हाजरा, जो अनुमति से इनकार करती है, मजबूर नहीं की जा सकती। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 382: पीलीभीत, मोहल्ला शेख चाँद, सराय पुख्ता के पास से, प्रेषक हाफिज विलायत अहमद साहब, 8 शाबान 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं: हंदा का निकाह उसके सगे चाचा के संरक्षण में (जो उनकी जानकारी में नाबालिग थी) हंदा और उसकी माँ की अनुपस्थिति में, ज़ैद (जो तब नाबालिग था) के साथ उसके दादा के संरक्षण में पाँच साल पहले हुआ था। ज़ैद अब दो साल से बालिग है। अब वह रुख्सती चाहता है। हंदा की माँ से पता चला है कि निकाह के समय हंदा बालिग थी। हंदा की माँ रुख्सती नहीं कर रही है और कहती है कि निकाह सही नहीं है, और हंदा की माँ के बयान की पुष्टि कर ली गई है कि वह सही है।

دختر راحت حسین کے گیا تھا وہاں جاکر مجھ کو گواہ بنایا گیا میں نے اندر جاکر اس کی والدہ سے دریافت کیا اس نے اقرار کیا اور اجازت نکاح کی دی پھر میں نے لڑکی سے اذن طلب کیا وہ پردہ میں تھی اندر سے اس کی آواز آئی پھر نکاح پڑھوا دیا گیا فرحت حسین بوقت نکاح موجود نہ تھے، دستخط احمد حسین، وکیل صاحب مسمیٰ قاضی اولاد حسین علیل تھے اور اس کے بعد زیادہ علیل ہو گئے اور انتقال ہو گیا، کوئی بیان تحریری حاصل نہ ہوسکا، قاضی صاحب نے جنھوں نے کہ نکاح پڑھایا ہے مکان پر یا اس موقع پر قسم مذکور سے کسی کو نہ پا کر قطب الحسن سے کہا گیا کہ ایسا نکاح پڑھوا کر مجھ کو کسی مقدمہ میں ماخوذ تو نہ کراؤگے جو کوئی مرد مکان پر موجود نہیں ہے جس کا جواب قطب الحسن نے یہ دیا کہ کسی مرد کی کچھ ضرورت نہیں ہے لڑکی خود بالغ ہے قاضی صاحب نے لڑکی سے ایجاب قبول کرادیا، اندر کا کچھ حال اس وقت قاضی صاحب کو گواہان اور وکیل صاحب کے بیانات سے طرح طرح کے شکوک عدم جواز نکاح کے پیدا ہوئے جس کی وجہ سے ضرورت فتویٰ لینے کی ہوئی، معروضہ احقر، اب وہ لوگ طرح طرح کے دباؤ رخصت کے ڈالتے ہیں اور لڑکی بالکل قطعی انکار کرتی ہے حتی کہ جان دینے پر آمادہ مگر وہاں رخصت کئے جانے کو منکر ہے، معاملہ مذکور بالا کو غور فرما کر حکم شرع شریف سے سرفراز فرمائیں۔

الجواب: اللہ واحد قہار عالم الغیب والشہادہ ہے۔ یہ معاملہ حلال حرام اور وہ بھی خاص شرمگاہ کا ہے جس کی حرمت سخت اشد ہے، اگر واقع میں ہاجرہ بالغہ نے اذن دے دیا تھا اگرچہ دباؤ سے اگرچہ جبراً تو نکاح صحیح ہو گیا اور اب اسے انکار کا کچھ اختیار نہیں اگر نہ مانے گی اور دوسری جگہ نکاح کرے گی تو زنا ہو گا زنا زنا، اور اگر واقع میں اس نے انکار کیا تھا اور اسے

اذن بنا کر ہو گیا ہو گیا اڑایا تو حرام حرام سخت حرام ہے کہ اسے عزیز الحسن کی زوجہ سمجھا جائے پہلی صورت میں ہاجرہ اور دوسری میں عزیز الحسن وغیرہ اس کے ساعی مستحق لعنت الٰہی و عذاب شدید ہوں گے باقی جو شہادتیں مذکور ہوئیں ثبوت اذن کے لئے محض ناکافی ہیں ان کی بنا پر ہاجرہ کہ اذن سے منکر ہے مجبور نہیں کی جاسکتی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۸۲: از پیلی بھیت محلہ شیخ چاند متصل سرائے پختہ مرسلہ حافظ ولایت احمد صاحب ۸ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا نکاح چچا حقیقی کی ولایت سے جو اس کے علم میں نا بالغہ تھی بعدم موجودگی ہندہ ومادر ہندہ زید نا بالغ کے ساتھ بولایت دادا حقیقی زید عرصہ پانچ سال کا گزرا ہوا تھا، دو سال سے زید بالغ ہے اب رخصت کرانا چاہتا ہے تو مادر ہندہ سے معلوم ہوا کہ ہندہ وقت نکاح کے بالغہ تھی ماں ہندہ کی رخصت نہیں کرتی ہے اور کہتی ہے کہ نکاح صحیح نہیں اور مادر ہندہ کے بیان کی تصدیق کرلی گئی کہ صحیح ہے،

Volume 11 Fatawa Rizvia

The Answer: If this statement is true that Hindah was an adult and her permission was not taken, and her uncle, thinking her to be a minor, performed the marriage ceremony himself without her permission, then this marriage remained dependent on Hindah's consent. During this five-year period, if she had spoken any word of approval among her peers, it became valid; if she said it was rejected, it became rejected. If she hasn't said anything yet, then if she rejects it now, it will be rejected, and if she approves it, it will be valid. It should be well-remembered that the first instance is what counts in everything. After being informed of the marriage, if the first word spoken was rejection, it is rejected, and giving permission a thousand times after that is useless. And if the first word spoken was permission, it became valid, and rejecting it a million times after that is ineffective. Fear the One, All-Powerful Allah; this is a matter of halal and haram, marriage and adultery. Disclose what is reality. And Allah the Almighty knows best.

Issue 383 to 390: From the town of Auraiya, district Etawah, Madrasa Islamia, sent by Maulvi Abdul Hai Sahib, teacher, 9 Shaban 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Zaid's wife, along with their daughter Hindah, went to her father's house with Zaid's consent. Zaid's father-in-law, who is also an uncle, performed a marriage contract for the aforementioned Zaid's daughter, Hindah, with Bakr, a boy from his own family, without informing Zaid. Hindah is still a minor. Is that contract valid or not? Who can annul this contract and within what time frame? (2) If Hindah is an adult and lived at her husband's house and came to her father Zaid's house with him, and Bakr, i.e., Hindah's husband, stayed for a few days, after which he went for employment. In this case, is this contract correct or not while Hindah is an adult? (3) Zaid's place of residence is at a distance from his in-laws' place where Hindah's marriage with Bakr took place. When people who met Zaid asked him, "You were present here, so how did the contract happen there without permission while Hindah is considered a minor?", at that time, the aforementioned Zaid replied, "We had given permission that you should perform the contract and just inform us so that we can celebrate with Milad Sharif." In such a case, was the permission valid or not, and did the contract become valid or not? (4) There are some events from which Zaid's consent is evident, for example, Bakr, Hindah's husband, came alone to Zaid's house and stayed, and Zaid took him, i.e., the son-in-law, with him to most gatherings and markets. Upon inquiry, he also said that he is the son-in-law. After a few days, that son-in-law went to his job, which has been for a period of 4

or 5 years, the same as the duration of the contract. When he went for the job, initially there was correspondence as well, it has been heard. Now it is known from Zaid's own words that he is not...

उत्तर: यदि यह बयान वास्तविक है कि हंदा बालिग़ा (वयस्क) थी और उससे अनुमति नहीं ली गई थी और चाचा ने उसे नाबालिग़ समझकर बिना अनुमति के स्वयं उसका निकाह पढ़ा दिया, तो यह निकाह हंदा की अनुमति पर निर्भर रहा। इस पाँच वर्ष की अवधि में यदि उसने अपनी हमउम्र लड़कियों के बीच इसकी अनुमति का कोई शब्द कहा है, तो यह वैध हो गया; यदि अस्वीकार कहा, तो अस्वीकार हो गया। अब तक यदि कुछ नहीं कहा है, तो अब यदि वह अस्वीकार कर देगी तो वह रद्द हो जाएगा, और यदि वैध कर देगी तो वैध हो जाएगा। यह अच्छी तरह याद रहे कि हर चीज़ में पहली बार का ही विचार किया जाता है। निकाह की सूचना मिलने के बाद सबसे पहले यदि अस्वीकार शब्द कहा गया है, तो वह रद्द हो गया, इसके बाद हज़ार बार अनुमति देना व्यर्थ है। और यदि सबसे पहले अनुमति शब्द कहा गया है, तो वह वैध हो गया, इसके बाद लाख बार भी अस्वीकार कर दे तो वह निष्प्रभावी है। अल्लाह वाहिद क़हार से डरें, यह मामला हलाल और हराम, निकाह और व्यभिचार का है, जो बात वास्तविक हो उसे स्पष्ट कर दें। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 383 से 390: क़स्बा औरैया, ज़िला इटावा, मदरसा इस्लामिया से भेजा गया, मौलवी अब्दुल हई साहब, मुदर्रिस, 9 शाबान 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि: (1) ज़ैद की पत्नी अपनी बेटी हंदा के साथ ज़ैद की सहमति से अपने पिता के घर गई। ज़ैद का ससुर, जो चाचा भी है, उसने अपने परिवार के लड़के बक्र के साथ ज़ैद की उक्त लड़की हंदा का निकाह कर दिया, बिना ज़ैद को सूचित किए और हंदा अभी नाबालिग़ है। क्या वह निकाह वैध हुआ या नहीं? इस निकाह को कौन और कितने समय तक निरस्त कर सकता है? (2) यदि हंदा बालिग़ है और वह अपने पति के घर पर रही और अपने पिता ज़ैद के घर उसके साथ आई और बक्र यानी हंदा के पति का कुछ दिन ठहरना हुआ, उसके बाद वह नौकरी पर चला गया, इस स्थिति में यह निकाह सही हुआ या नहीं जबकि हंदा बालिग़ है? (3) ज़ैद के रहने के स्थान से ज़ैद की ससुराल की दूरी है जहाँ पर हंदा का बक्र के साथ निकाह हुआ था। जिस समय ज़ैद से मिलने वालों ने ज़ैद से यह सवाल किया कि "तुम यहाँ मौजूद रहे और वहाँ बिना अनुमति के निकाह कैसे हुआ जबकि हंदा को नाबालिग़ माना जाए?", उस समय उक्त ज़ैद ने यह जवाब दिया कि "हम अनुमति दे आए थे कि आप निकाह कर दें और हमें सिर्फ़ सूचित कर दें ताकि हम इस खुशी में मीलाद शरीफ़ करें।" ऐसी स्थिति में अनुमति सही हुई या नहीं और निकाह वैध हुआ या नहीं? (4) कुछ घटनाएँ ऐसी हैं जिनसे ज़ैद की सहमति का पता चलता है, उदाहरण के तौर पर ज़ैद के मकान पर हंदा का पति बक्र अकेला आया और ठहरा,

और ज़ैद उसे यानी दामाद को अक्सर महफिलों और बाज़ारों में अपने साथ ले गया। पूछने पर भी कहा कि यह दामाद है। इसके कुछ दिनों बाद वह दामाद अपनी नौकरी पर चला गया जिसे 4 या 5 साल का समय हो गया है, इतना ही समय निकाह को भी हुआ है। जिस समय वह नौकरी पर गया था, पहले तो पत्र-व्यवहार भी रहा, ऐसा सुना गया है। अब ज़ैद की ज़ुबानी मालूम हुआ कि वह नहीं...

الجواب: اگر یہ بیان واقعی ہے کہ ہندہ بالغہ تھی اور اس سے اذن نہ لیا گیا اور چچا نے نابالغہ سمجھ کر بے اذن لئے خود پڑھا دیا تو یہ نکاح اجازت ہندہ پر موقوف رہا، اس پانچ برس کے عرصہ میں اگر اس نے اگرچہ اپنی ہم عمر لڑکیوں میں کوئی کلمہ اس کی اجازت کا کہا ہے جائز ہو گیا، رد کہا رد ہو گیا، اب تک کچھ نہیں کہا ہے تو اب اگر رد کر دے گی رد ہو جائے گا، جائز کر دے گی جائز ہو جائے گا، یہ خوب یاد رہے کہ اعتبار سب میں پہلی بار کا ہے، نکاح کی اطلاع کے بعد سب میں اول اگر کلمہ رد کہا ہے رد ہو گیا، اس کے بعد ہزار بار اجازت دے بیکار ہے، اور سب میں اول اگر کلمہ اجازت کہا ہے جائز ہو گیا، اس کے بعد لاکھ بار رد کر دے بے اثر ہے، اللہ واحد قہار سے ڈرے، یہ معاملہ حلال و حرام و نکاح و زنا کا ہے، جو بات واقعی ہو ظاہر کر دے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۸۳ تا ۳۹۰: از قصبہ اور یا ضلع اٹا وہ مدرسہ اسلامیہ مرسلہ مولوی عبدالحئی صاحب مدرس ۹ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ: (۱) زید کی بیوی معہ بیٹی ہندہ کے اپنے والد کے گھر زید کی رضامندی سے گئی زید کا خسر جو چچا بھی ہوتا ہے اس نے اپنے خاندان کے لڑکے بکر کے ساتھ زید مذکور کی لڑکی ہندہ سے عقد کر دیا بلا اطلاع زید اور ہندہ ابھی نابالغ ہے، وہ عقد جائز ہوا یا نہیں، اس عقد کو کون اور کتنے عرصہ تک فسخ کر سکتا ہے؟ (۲) اگر ہندہ بالغ ہے اور وہ اپنے شوہر کے گھر پر رہی اور اس کے ہمراہ اپنے والد زید کے گھر آئی اور چندے قیام بکر یعنی ہندہ کے شوہر کا رہا، اس کے بعد وہ ملازمت پر چلا گیا، اس صورت میں یہ عقد درست ہوا یا نہیں جبکہ ہندہ بالغ ہے۔ (۳) زید کے جائے قیام سے زید کی سسرال فاصلہ پر ہے جہاں پر ہندہ کا عقد بکر کے ساتھ ہوا تھا، جس وقت زید کے ملنے والوں نے

زید سے یہ سوال کیا کہ تم یہاں پر موجود رہے اور وہاں پر عقد بلا اجازت جبکہ ہندہ نابالغ تسلیم کیا جاوے کیونکر ہوا، اس وقت زید مذکور نے یہ جواب دیا کہ ہم اجازت دے آئے تھے کہ آپ عقد کر دیں اور ہم کو صرف اطلاع دیں تاکہ ہم اس خوشی میں میلاد شریف کریں، ایسی صورت میں اجازت صحیح ہوئی یا نہیں اور عقد جائز ہوا یا نہیں۔ (٤) کچھ واقعات ایسے ہیں جس سے زید کی رضامندی کا پتا چلتا ہے مثلاً زید کے مکان پر تنہا آیا بکر شوہر ہندہ کا اور قیام کیا اور زید اس کو یعنی داماد کو اکثر مجالس و بازار میں ہمراہ لے گیا، دریافت کرنے پر بھی کہا کہ یہ داماد ہے، اس کے چند یوم کے بعد وہ داماد اپنی ملازمت پر چلا گیا جس کو عرصہ ٤ یا ٥ سال کا ہوا اسی قدر عرصہ عقد کو، جس وقت وہ ملازمت پر گیا تھا اول تو خط کتابت کی بھی رہی سنا گیا ہے، اب زید کی زبانی معلوم ہوا کہ وہ نہیں

Fatawa Rizvia Volume Eleven

...it is not known where he is, neither does a letter come, nor does he take any care of the expenses. Firstly, we, i.e., Zaid, did not approve of the marriage contract of our daughter Hindah with that boy Bakr. Well, even if it did happen, it was accepted under duress and force. We have been waiting for him, i.e., the son-in-law, for about 4 or 5 years. Given these facts, was this marriage valid or not, while Hindah was a minor? (5) Some speculate that Hindah was an adult at the time of the marriage. In view of the events mentioned above, which occurred with Zaid, the legal guardian (father) of Hindah, was that marriage valid or not? (6) Now, Zaid's intention has changed, and he now denies the content of point number 3, saying that I never said I gave permission. However, he cannot deny the content of point number 4 because those are eyewitness accounts. Having accepted the wording of point number 1, it was heard that a fatwa was requested but not shown to anyone as to what question was asked in it, simply on the grounds that they were not the legal guardians, while I am the legal guardian and have the authority. Now, the matter to be clarified is that Zaid remained silent for 5 years, and the events of point number 4 occurred with the son-in-law Bakr. In such a situation, could this marriage be annulled after 5 years or not, and has a second marriage taken place or not? If not, is this (relationship) forbidden, and will the children also be illegitimate? (7) Should we maintain social ties with Zaid or not? If we maintain social interaction, will we be sinners or not, since he acted against the Sharia? (8) Subsequent investigations revealed that Hindah's departure (to her husband's home) did not take place, nor did she go to her husband's house, nor did she accompany the said husband. However, the husband came to Zaid's house for Hindah and stayed there, and the mentioned Zaid told his acquaintances that this is my son-in-law and introduced him to everyone. Considering point number 3 separately from this matter, please answer all the remaining points, and also give a separate answer for point number 2, considering the other event.

The Answer: (1) Since Hindah is a minor, this marriage was dependent on Zaid's permission. If he validates it, it will be valid; if he rejects it, it will become void. If Zaid remains completely silent and does not perform any word or action that confirms the validation or rejection of this marriage until Hindah reaches adulthood, then the authority to reject or validate it will pass to Hindah herself. (2) It becomes valid if Bakr is a 'Kufu' (suitable match) for Hindah, i.e., he should not be so inferior in religion, lineage, character, or profession that Hindah's...

...मालूम कहाँ पर है, न ख़त आता है और न कुछ ख़र्च की ख़बर लेता है, अव्वल तो हमको यानी ज़ैद को इस लड़के बक्र के साथ अक़्द अपनी लड़की हिन्दह का मन्ज़ूर नहीं था, ख़ैर अगर हो भी गया था तो जब्रन क़ह्रन मन्ज़ूर किया, अब तक उसका रास्ता देखा यानी दामाद का, जिसको अर्सा 4 या 5 साल का हो गया, इन वाक़िआत से यह अक़्द सही हुआ या नहीं जबकि हिन्दह ना-बालीग़ थी? (5) बाज़ का यह क़यास है कि हिन्दह उस वक़्त बालीग़ थी जब अक़्द हुआ, और यह वाक़िआत जो ऊपर मज़कूर हैं ज़ैद यानी हिन्दह का जाइज़ वली बाप के साथ पेश आए वो अक़्द जाइज़ हुआ या नहीं? (6) अब ज़ैद की नीयत में ख़लल आया और वो अब नम्बर 3 के मज़्मून से इनकार करता है कि मैंने हरगिज़ नहीं कहा कि इजाज़त दे दी थी लेकिन नम्बर 4 के मज़्मून से नहीं इनकार कर सकता क्योंकि चश्मदीद वाक़िआत हैं, नम्बर 1 की इबारत को तस्लीम करके सुना गया है कि फ़तवा मँगाया मगर किसी को दिखलाया नहीं है, कि इसमें क्या सवाल किया है महज़ इस बिना पर कि वो जाइज़ वली नहीं थे मैं वली जाइज़ हूँ मुझको इख़्तियार है, अब दरयाफ़्त तलब यह अम्र है कि 5 साल तक तो ख़ामोश रहा ज़ैद, और नम्बर 4 के वाक़िआत इस दामाद बक्र के साथ पेश आए, क्या ऐसी हालत में यह अक़्द अब 5 साल के बाद फ़स्ख़ हो सकता था या नहीं और अक़्द-ए-सानी हुआ या नहीं? अगर नहीं हुआ तो क्या यह हराम है और औलाद भी हरामी होगी? (7) हम लोग ज़ैद के साथ रब्त ज़ब्त रखें या नहीं? अगर मेल जोल क़ायम रखें तो गुनाहगार होंगे या नहीं जबकि उसने शरा के ख़िलाफ़ किया? (8) बाद में तहक़ीक़ात से यह मालूम हुआ कि हिन्दह की रुख़्सत नहीं हुई और न वो अपने शौहर के घर गई और न उसके हमराह शौहर-ए-मज़कूर आया लेकिन शौहर-ए-हिन्दह का मकान पर ज़ैद के आया और क़याम किया और ज़ैद-ए-मज़कूर ने अपने मिलने वालों से कहा यह दामाद है और सब को दिखलाया, नम्बर 3 को इस मामला से अलाहिदा तसव्वुर करके बक़िया कुल नम्बरों का जवाब दीजिये और नम्बर 2 का जवाब भी अलाहिदा से दीजिये दूसरा वाक़िआ ख़्याल फ़रमा कर।

अल-जवाब: (1) जबकि हिन्दह ना-बालीग़ा है यह निकाह इजाज़त ज़ैद पर मौक़ूफ़ रहा, अगर जाइज़ कर देगा जाइज़ हो जाएगा रद्द कर देगा बातिल हो जाएगा, ज़ैद अगर सुकूत-ए-महज़ करे कोई क़ौल या फ़ेल ऐसा न करे जिससे इस निकाह का जाइज़ या रद्द करना साबित हो यहाँ तक कि हिन्दह बालीग़ा हो जाए तो उस वक़्त उसका रद्द या जाइज़ करना ख़ुद हिन्दह के इख़्तियार हो जाएगा। (2) दुरुस्त हो गया अगर बक्र हिन्दह का कुफ़ू हो यानी मज़हब या नसब या चाल चलन या पेशे में ऐसा कम न हो कि हिन्दह का...

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

معلوم کہاں پر ہے، نہ خط آتا ہے اور نہ کچھ خرچ کی خبر لیتا ہے، اول تو ہم کو یعنی زید کو اس لڑکے بکر کے ساتھ عقد اپنی لڑکی ہندہ کا منظور نہیں تھا، خیر اگر ہو بھی گیا تھا تو جبراً قہراً منظور کیا، اب تک اس کا راستہ دیکھا یعنی داماد کا، جس کو عرصہ ۴ یا ۵ سال کا ہوگیا، ان واقعات سے یہ عقد صحیح ہوا یا نہیں جبکہ ہندہ نابالغ تھی، (۵) بعض کا یہ قیاس ہے کہ ہندہ اس وقت بالغ تھی جب عقد ہوا، اور یہ واقعات جو اوپر مذکور ہیں زید یعنی ہندہ کا جائز ولی باپ کے ساتھ پیش آئے وہ عقد جائز ہوا یا نہیں؟ (۶) اب زید کی نیت میں خلل آیا اور وہ اب نمبر ۳ کے مضمون سے انکار کرتا ہے کہ میں نے ہرگز نہیں کہا کہ اجازت دے دی تھی لیکن نمبر ۴ کے مضمون سے نہیں انکار کرسکتا کیونکہ چشم دید واقعات ہیں، نمبر ۱ کی عبارت کو تسلیم کرکے سنا گیا ہے کہ فتوی منگایا مگر کسی کو دکھلایا نہیں ہے، کہ اس میں کیا سوال کیا ہے محض اس بناء پر کہ وہ جائز ولی نہیں تھے میں ولی جائز ہوں مجھ کو اختیار ہے، اب دریافت طلب یہ امر ہے کہ ۵ سال تک تو خاموش رہا زید، اور نمبر ۴ کے واقعات اس داماد بکر کے ساتھ پیش آئے، کیا ایسی حالت میں یہ عقد اب ۵ سال کے بعد فسخ ہو سکتا تھا یا نہیں اور عقد ثانی ہوا یا نہیں؟ اگر نہیں ہوا تو کیا یہ حرام ہے اور اولاد بھی حرامی ہوگی؟ (۷) ہم لوگ زید کے ساتھ ربط ضبط رکھیں یا نہیں؟ اگر میل جول قائم رکھیں تو گناہگار ہوں گے یا نہیں جبکہ اس نے شرع کے خلاف کیا؟ (۸) بعد میں تحقیقات سے یہ معلوم ہوا کہ ہندہ کی رخصت نہیں ہوئی اور نہ وہ اپنے شوہر کے گھر گئی اور نہ اس کے ہمراہ شوہر مذکور آیا لیکن شوہر ہندہ کا مکان پر زید کے آیا اور قیام کیا اور زید مذکور نے اپنے ملنے والوں سے کہا یہ داماد ہے اور سب کو دکھلایا، نمبر ۳ کو اس

معاملہ سے علیحدہ تصور کرکے بقیہ کل نمبروں کا جواب دیجئے اور نمبر ۲ کا جواب بھی علیحدہ سے دیجئے دوسرا واقعہ خیال فرما کر۔

الجواب: (۱) جبکہ ہندہ نابالغہ ہے یہ نکاح اجازت زید پر موقوف رہا، اگر جائز کردے گا جائز ہوجائے گا رد کردے گا باطل ہوجائے گا، زید اگر سکوت محض کرے کوئی قول یا فعل ایسا نہ کرے جس سے اس نکاح کا جائز یا رد کرنا ثابت ہو یہاں تک کہ ہندہ بالغہ ہوجائے تو اس وقت اس کا رد یا جائز کرنا خود ہندہ کے اختیار ہو جائے گا۔ (۲) درست ہو گیا اگر بکر ہندہ کا کفو ہو یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشے میں ایسا کم نہ ہو کہ ہندہ کا

...that marriage to him would be a cause of shame and disgrace for Zaid, the father of Hindah. (3) The permission is correct, the contract became valid. (4) Since Hindah was a minor and the father accepted it and called Bakr his son-in-law, the marriage became effective. (5) If Hindah was an adult and the marriage took place with her permission, or after the marriage she validated it verbally or through action, for example, she went for the 'rukhsati' (departure to the groom's house) happily without any rejection, then the marriage became effective, provided Bakr was a 'kufu' (suitable match) for Hindah. And if no word or action of permission has been issued from Hindah until now, it is not effective, even if some events occurred involving her father. (6) If Hindah was a minor and the content of point 4 is proven, then that marriage became complete and binding. Zaid had no authority to annul it. This second marriage is void; intimacy in it will be forbidden and offspring will be illegitimate. And if Hindah was an adult and had already made it effective through some word or action, the answer remains the same if Bakr is a 'kufu' for Hindah. If she hadn't made it effective and performed the second marriage after rejecting the first, then there is no harm, even if Bakr was her 'kufu'. And if Hindah made it effective but Bakr was not her 'kufu', the marriage was not valid even if Zaid later agreed, "Because for its validity, the explicit consent of the guardian before the marriage is a condition, while knowing that this marriage is outside the 'kufu', as clarified in Radd al-Muhtar." (Trans. note: because its validity requires the explicit consent of the guardian before the marriage while knowing that it is a non-kufu marriage, as explained in Radd al-Muhtar). In this case, if she left this invalid marriage and entered into a second marriage, there is no harm, and the second marriage will be valid if it fulfills the conditions, and the offspring will be legitimate. And Allah Ta'ala knows best. (7) From the above answers, it is known in which scenario Zaid is a sinner and in which he is not. If the scenario is proven in which he committed such a forbidden act, then there is no sin in cutting off ties with him; rather, it is appropriate. And if one does not cut off ties and does not consider the sin as a sin, nor considers him bad because of it, even then there is no harm. Yes, whoever thinks that because of my cutting off ties Zaid will have to repent, they must surely cut off ties. (8) In such occurrences, this is not the proper way of seeking a fatwa (ruling). A fatwa should be sought on fully investigated facts. In any case, every point has been answered. And Allah Ta'ala knows best.

Problem 391: From Sultanpur city, Pratap Ganj neighborhood, sent by Hafiz Abdul Ghani and Abdul Hamid Sahibs, 13 Ramadan al-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married his daughter Hindah to Bakr's son Khalid, within their 'kufu' and with a dower considering their 'kufu'. Zaid also sent Hindah for 'rukhsati' several times, and Bakr had also taken an agreement from Zaid that "if Hindah is an adult, only then will I marry her to my son Khalid, otherwise not." Therefore, Zaid agreed...

...कि उस से निकाह ज़ैद (हिन्दा के पिता) के लिए शर्म और अपमान का कारण हो। (३) अनुमति सही है, निकाह जायज़ हो गया। (४) चूंकि हिन्दा नाबालिग थी और पिता ने उसे स्वीकार कर लिया और बक्र को अपना दामाद कहा, इसलिए निकाह प्रभावी हो गया। (५) यदि हिन्दा बालिग थी और निकाह उसकी अनुमति से हुआ या निकाह के बाद उसने बोलकर या किसी कार्य से उसे जायज़ ठहरा दिया, उदाहरण के लिए बिना किसी विरोध के खुशी-खुशी विदा हो गई, तो निकाह प्रभावी हो गया, बशर्ते बक्र हिन्दा का 'कुफ़ू' (समान सामाजिक स्तर का) हो। और यदि हिन्दा की ओर से अब तक अनुमति का कोई शब्द या कार्य सामने नहीं आया है, तो वह प्रभावी नहीं हुआ, भले ही उसके पिता के साथ कुछ घटनाएं घटी हों। (६) यदि हिन्दा नाबालिग थी और नंबर ४ की बात साबित हो जाए, तो वह निकाह पूर्ण और अनिवार्य हो गया। ज़ैद को उसे रद्द करने का कोई अधिकार नहीं रहा। यह दूसरा निकाह बातिल (अमान्य) हुआ, इसमें शारीरिक संबंध हराम होंगे और संतान अवैध होगी। और यदि हिन्दा बालिग थी और वह किसी वचन या कार्य से उसे प्रभावी कर चुकी थी, तब भी वही उत्तर है यदि बक्र हिन्दा का कुफ़ू हो। और यदि उसने प्रभावी नहीं किया था और पहले निकाह को रद्द करके दूसरा निकाह किया तो कोई हर्ज नहीं, भले ही बक्र उसका कुफ़ू हो। और यदि हिन्दा ने प्रभावी किया लेकिन बक्र उसका कुफ़ू नहीं था, तो निकाह सही नहीं हुआ भले ही बाद में ज़ैद भी सहमत हो गया हो, "क्योंकि इसकी वैधता के लिए निकाह से पहले इस बात का ज्ञान होते हुए वली (अभिभावक) की स्पष्ट सहमति शर्त है कि यह निकाह गैर-कुफ़ू में होगा, जैसा कि रद अल-मुहतार में स्पष्ट किया गया है।" (अनुवाद: क्योंकि इसकी सत्यता के लिए निकाह से पूर्व इस बात का ज्ञान होते हुए स्पष्ट रूप से वली की सहमति शर्त है कि यह निकाह गैर-कुफ़ू में होगा जैसा कि रद अल-मुहतार में इसकी व्याख्या की गई है)। इस स्थिति में इस गलत निकाह को छोड़कर यदि दूसरा निकाह कर लिया तो कोई हर्ज नहीं, और दूसरा निकाह सही होगा यदि उसमें सभी शर्तें पूरी हों और संतान वैध होगी। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। (७) ऊपर के उत्तरों से पता चला कि ज़ैद किस स्थिति में गुनहगार है और किसमें नहीं। यदि वह स्थिति साबित हो जिसमें उसने ऐसे हराम काम का इर्तिकाब (अपराध) किया, तो उससे मेल-जोल छोड़ देने में कोई गुनाह नहीं बल्कि उचित है। और यदि मेल-जोल न छोड़ें और गुनाह को गुनाह न समझें और उसके कारण उसे बुरा न समझें, तब भी कोई हर्ज नहीं। हाँ, जो यह समझे कि मेरे मेल-जोल छोड़ने के कारण ज़ैद को तौबा करनी होगी, उसे ज़रूर मेल-जोल छोड़ना चाहिए। (८) घटना की स्थिति में इस्तिफ़्ता (फतवा पूछने) का यह तरीका

नहीं होता, बात पूरी तरह से जांची-परखी होने पर फतवा लेना चाहिए। बहरहाल हर नंबर का उत्तर दे दिया गया है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला ३९१: शहर सुल्तानपुर, मोहल्ला प्रताप गंज से, प्रेषक: हाफ़िज़ अब्दुल ग़नी और अब्दुल हमीद साहबान, १३ रमज़ानुल मुबारक १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि: ज़ैद ने अपनी लड़की हिन्दा का निकाह बक्र के बेटे खालिद के साथ अपने कुफ़ू में और अपने कुफ़ू के अनुसार मेहर पर कर दिया। ज़ैद ने कई बार हिन्दा को रुख़सत (विदा) भी किया और बक्र ने ज़ैद से यह इकरार (सहमति) भी लिया था कि "यदि हिन्दा बालिग है, तभी मैं उसका निकाह अपने लड़के खालिद से करूंगा अन्यथा नहीं।" अतः ज़ैद ने इकरार किया...

اس سے نکاح زید پدر ہندہ کے لئے باعث ننگ وعار ہو۔ (۳) اجازت صحیح ہے عقد جائز ہو گیا۔ (۴) جبکہ ہندہ نابالغہ تھی اور باپ نے اسے منظور کیا اور بکر کو اپنا داماد کہا نکاح نافذ ہو گیا۔ (۵) ہندہ اگر بالغہ تھی اور نکاح اس کے اذن سے ہوا یا بعد نکاح اس نے قولاً یا فعلاً جائز کر دیا مثلاً بغیر رد کے بخوشی رخصت ہو کر گئی تو نکاح نافذ ہو گیا، جبکہ بکر ہندہ کا کفو ہوا، اور اگر ہندہ سے کوئی قول و فعل اجازت کا اب تک صادر نہ ہوا تو نافذ نہ ہوا اگرچہ اس کے باپ سے کچھ واقعات پیش آئے ہوں۔ (۶) اگر ہندہ نابالغہ تھی اور نمبر ۴ کا مضمون ثابت ہو تو وہ نکاح تام و لازم ہو گیا، زید کو کوئی اختیار اس کے فسخ کا نہ رہا، یہ نکاح ثانی باطل ہوا، اس میں قربت حرام ہوگی اور اولاد ولد الحرام، اور اگر ہندہ بالغہ تھی اور وہ کسی قول یا فعل سے نافذ کر چکی تھی جب بھی وہی جواب بکر ہندہ کا کفو ہو اور اگر نافذ نہ کر چکی تھی اور رد کر کے نکاح ثانی کیا تو حرج نہیں اگرچہ بکر اس کا کفو ہو اور اگر ہندہ نے نافذ کیا لیکن بکر اس کا کفو نہ تھا تو نکاح صحیح نہ ہوا اگرچہ بعد کو زید بھی راضی ہو لان شرط صحتہ رضا الولی قبل النکاح صریحا مع العلم بانہ غیر کفو کما اوضحہ في رد المحتار (کیونکہ اس کی صحت کے لئے نکاح سے قبل اس بات کا علم ہوتے ہوئے صراحۃً ولی کی رضامندی شرط ہے کہ یہ نکاح غیر کفو میں ہوگا جیسا کہ رد المحتار میں اس کی وضاحت کی ہے۔ت) اس صورت میں اس غیر صحیح نکاح کو چھوڑ کر اگر نکاح ثانی کر لیا حرج نہ ہوا اور رہی نکاح ثانی صحیح ہوا اگر شرائط کا جامع ہوا اور اولاد ولد الحلال۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۷) اوپر کے جوابوں سے معلوم ہوا کہ زید کس صورت میں گنہگار ہے اور کس میں نہیں۔ اگر صورت وہ ثابت ہو جس میں اس نے ایسے حرام کا ارتکاب کیا تو اس سے میل جول ترک کرنے میں گناہ نہیں بلکہ مناسب ہے اور نہ ترک کریں اور گناہ کو گناہ نہ جانیں اور

اس کے سبب اسے برا سمجھیں جب بھی حرج نہیں، ہاں جو سمجھے کہ میرے ترک کے سبب زید کو توبہ کرنی ہوگی وہ ضرور ترک کرے۔ (۸) صورت واقعہ میں استفتاء کا یہ طریقہ نہیں ہوتا بات پوری تحقیق شدہ پر فتوی لینا چاہئے بہر حال جواب ہر نمبر کا ہو گیا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۹۱: از شہر سلطان پور محلہ پرتاب گنج مرسلہ حافظ عبدالغنی و عبدالحمید صاحبان ۱۳ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی لڑکی ہندہ کا نکاح بکر کے لڑکے خالد کے ساتھ اپنے کفو میں اور مہر میں بلحاظ اپنے کفو کے کردیا، اور زید نے کئی مرتبہ ہندہ کو رخصت بھی کیا اور بکر نے زید سے اقرار بھی لے لیا تھا کہ اگر ہندہ بالغہ ہے تب میں اس کا نکاح اپنے لڑکے خالد سے کردوں گا ورنہ نہیں۔ لہٰذا زید نے اقرار کیا

Fatawa Ridawiyya Volume Eleven

(Text continued from the previous page): ...that my marriage took place during my minority. Now I have reached the age of puberty and independence. I have the right to annul the marriage performed by my parents. Therefore, the matter to be inquired about is whether the aforementioned woman has the right of annulment or not, and whether this marriage performed by the father will be annulled by her act of annulment?

Al-Jawab (The Answer): Hinda has absolutely no right to annul the said marriage, nor can she raise any objection to it. If she was a minor, as stated in her statement, she cannot object after reaching puberty to a marriage performed by the father. It is stated in Durr al-Mukhtar: "Marriage is binding even with excessive loss or without an equal (kufw) if the guardian giving in marriage is the father or grandfather, provided they are not known for poor choice." - 1 (Urdu translation of the Arabic): If the ones giving in marriage are the father or grandfather and they are not known for poor choice, then the marriage of a minor girl even with an extremely low dowry and in a non-kufw (unequal status) becomes binding. And Allah Almighty knows best. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 392: From Pilibhit, sent by Wahidullah Sahib, 27 Dhu al-Qi'dah 1326 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid was in a state of severe illness. In this state, his real brother took permission from him to marry his young daughter to his own son and performed the marriage. Zaid passed away three days later. Now the girl's age is seven years and the boy's age is twenty-four years. So, has this marriage taken place or not? It is further submitted that the boy is not an equal (kufw) to the girl because he is from the lineage of a lowly woman. The girl's father has also passed away.

Al-Jawab (The Answer): Severity of illness does not prevent the validity of permission. "This amount is what the questioner mentioned, so respond to it and do not add what would be educational." (Urdu translation of the Arabic): We are responding based on what the questioner has mentioned, and we do not add more for educational purposes. (T) The mother being non-kufw does not make the children non-kufw, because lineage is from the father, not from the mother. Allah Almighty said: "And upon him to whom the child was born is their provision..." 2

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/192. 2 The Holy Quran 2/233.

फ़तावा रज़विया ग्यारहवीं जिल्द

(पिछले पृष्ठ से जारी): ...कि मेरा निकाह नाबालिग अवस्था में हुआ था, अब मैं बालिग और स्वावलंबी हो गई हूँ। मुझे माता-पिता द्वारा किए गए निकाह को रद्द (फ़स्ख़) करने का अधिकार है। अत; यह पूछना है कि क्या उक्त महिला को रद्द करने का अधिकार प्राप्त है या नहीं, और क्या उसके रद्द करने से यह निकाह, जो पिता ने किया था, रद्द हो जाएगा या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): हिंदा को उक्त निकाह रद्द करने का बिल्कुल अधिकार नहीं है, न ही वह इस पर कोई आपत्ति कर सकती है। जैसा कि उसका कहना है कि वह नाबालिग ही थी, तो पिता द्वारा किए गए निकाह पर नाबालिग बालिग होने के बाद आपत्ति नहीं कर सकती। दुर्रे मुख्तार में है: "निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो जाता है चाहे उसमें भारी नुकसान (ग़बने फ़ाहिश) हो या वह बराबरी (कुफ़्व) के बिना हो, यदि निकाह कराने वाला वली पिता या दादा हो और उनमें से कोई अपनी खराब पसंद (सू-ए-इख़्तियार) के लिए न जाना जाता हो।" - 1 (अरबी का उर्दू अनुवाद): यदि निकाह कराने वाले पिता-दादा हों और वे खराब पसंद के लिए न जाने जाते हों, तो नाबालिग लड़की का निकाह बहुत कम महर और गैर-कुफ़्व (असमान) में भी लाज़िम हो जाता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 392: पीलीभीत से प्रेषित, वाहिद उल्लाह साहब, 27 ज़ुल-क़ादा 1326 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद सख्त बीमारी की हालत में था। इस हालत में उसके सगे भाई ने उससे उसकी कम उम्र बेटी का निकाह अपने बेटे के साथ करने की अनुमति ले ली और निकाह कर दिया। ज़ैद का तीन दिन बाद निधन हो गया। अब लड़की की उम्र सात साल और लड़के की चौबीस साल है। तो क्या यह निकाह हो गया या नहीं? फिर से निवेदन है कि लड़का लड़की का कुफ़्व (बराबर) नहीं है क्योंकि वह एक नीच महिला की नस्ल से है। लड़की के पिता का भी निधन हो गया है।

अल-जवाब (उत्तर): बीमारी की गंभीरता अनुमति की वैधता में बाधक नहीं है। "यह मात्रा वही है जिसका प्रश्नकर्ता ने उल्लेख किया है, इसलिए उसका उत्तर दें और वह न जोड़ें जो शैक्षणिक होगा।" (अरबी का उर्दू अनुवाद): यह सइल (प्रश्नकर्ता) के बताए गए तथ्यों पर हम जवाब दे रहे हैं, और शिक्षण के तौर पर हम अधिक बात नहीं कर रहे हैं। (त) माँ का गैर-कुफ़्व होना औलाद को गैर-कुफ़्व

नहीं बना देता क्योंकि वंश (नसब) पिता से होता है, न कि माँ से। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और जिस का बच्चा है, उस पर उनका भोजन और वस्त्र है..." 2

1 दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/192। 2 अल-कुरान अल-करीम, 2/233।

पृष्ठ 739 का 657

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

کہ میر انکاح حالت نا بالغی میں ہوا تھا اب میں حد بلو غید اور خود مختاری کو پہنچ گئی ہوں مجھ کو والدین کے کئے ہوئے نکاح کے فسخ کا حق حاصل ہے لہٰذا دریافت طلب یہ امر ہے کہ مسماۃ مذکورہ کو حق فسخ حاصل ہے یا نہیں اور اس کے فسخ کرنے سے یہ نکاح جو باپ نے کیا ہے فسخ ہو گا یا نہیں؟

الجواب: ہندہ کو اصلا نکاح مذکور کے فسخ کا اختیار نہیں، نہ اس پر کچھ اعتراض کر سکتی ہے، اگر وہ نا بالغہ ہی تھی جیسا کہ اس کا بیان ہے، تو باپ کے کئے ہوئے نکاح پر نا بالغہ بعد بلوغ معترض نہیں ہو سکتی۔ در مختار میں ہے: لزم النکاح ولو بغبن فاحش او بغیر کفوان کان الولی المزوج اباً او جداً لم یعرف منھما سوء الاختیار -1 اگر نکاح دینے والے باپ دادا ہوں اور وہ سوءِ اختیار سے معروف نہ ہوں تو انتہائی کم مہر اور غیر کفو میں نا بالغہ کا نکاح لازم ہو جاتا ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۹۲: از پیلی بھیت مرسلہ واحد اللہ صاحب ۲۷ ذی قعدہ ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید شدتِ مرض میں تھا اس حالت میں اس کے حقیقی بھائی نے اس سے اس کی کم سن لڑکی کا نکاح اپنے لڑکے کے ساتھ کرنے کی اجازت لے لی اور نکاح کر دیا، زید تین روز کے بعد انتقال کر گیا، اب لڑکی کی عمر سات برس کی اور لڑکے کی چوبیس سال برس کی ہے تو یہ نکاح ہو گیا یا نہیں؟ مکرر عرض یہ ہے کہ لڑکا لڑکی کا کفو نہیں کہ وہ ذلیل عورت کی نسل سے ہے۔ لڑکی کے باپ کا بھی انتقال ہو گیا۔

الجواب: شدت مرض صحتِ اجازت کو مانع نہیں، ھذا القدر ماذکرہ السائل فتجیب علیہ ولا نزید مایکون تعلیمیا- یہ سائل کے ذکر کردہ پر ہم جواب دے رہے ہیں، اور تعلیم کے طور پر ہم زیادہ بات نہیں کرتے۔ (ت) ماں کا غیر کفو ہونا اولاد کو غیر کفو نہیں کر دیتا کہ نسب باپ سے ہے نہ کہ ماں سے قال اللہ تعالیٰ: وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَہٗ رِزْقُھُنَّ 2

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ 2 القرآن الکریم ۲۳۳/۲

Fatawa Rizvia Volume 11

(Allah says: 'And upon the father is their [the mothers'] provision and their clothing according to what is acceptable.' - T) And even if parity (Kaf’at) is not present, the father can marry off a girl to a non-equivalent once. Therefore, in the inquired case, the marriage has become valid and binding, and no one has the authority to annul it. And Allah Almighty knows best.

Masala 393: From Rampur State, Mohalla Zeena Inayat Khan, Madrasa Azizia, sent by Muhammad Safeer-ur-Rahman Bengali, 3 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say on this matter: A girl is an adult and is fourteen years old. Her father has fixed her marriage with a boy. She knows about her future husband not from her father's mention but through some other means, that my marriage has been fixed with this person who lives in another city. When the father went to the girl's house to perform the marriage contract, he neither took permission from the girl at that time nor said anything. Instead, he simply went there to the gathering and said, "I have given my daughter in marriage to you." Did this marriage take effect or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If the adult girl had not given prior permission, the marriage was suspended pending her consent. If she permits it, it will become valid, provided there is no Shariah impediment. If she rejects it, it will become void, even if there is no Shariah impediment. It is mentioned in Durr-e-Mukhtar:

Arabic: The adult virgin cannot be forced into marriage because the guardianship ends upon reaching puberty. And Allah Almighty knows best.

Urdu translation of the quote: An adult virgin girl cannot be compelled into marriage because now no one has any guardianship over her. And Allah Almighty knows best. (T)

Masala 394: 13 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say about this matter: Zaid's grandfather, the late Jamal-ud-Din Shah, was a dervish person; hence, he spent his life in one place in asceticism and isolation. Zaid's father, the late Farid-ud-Din, was a pious and learned person. Zaid himself, by the grace of Allah Almighty, is a God-fearing scholar and Sufi, a person who possesses means for the maintenance of his family for three or four years and owns a house. Zaid's wife, Hindah, is a woman observant of fasts and prayers, a reciter of the Holy Quran, and

engaged in litanies and daily practices. Zaid's daughter, Zainab, is also keen on fasts and prayers and towards litanies and daily practices...

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Guardianship, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

(अल्लाह तआला का फ़रमान है: और जिस का बच्चा है उस पर औरतों का खाना है। - त) और मान लीजिए कि अगर बराबरी (कुफ्व) न भी हो, तो बाप एक बार ग़ैर-कुफ्व से भी निकाह कर सकता है। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में वह निकाह सही और लाज़िम हो गया, जिसे रद्द करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 393: रियासत रामपुर, मोहल्ला ज़ीना इनायत ख़ान, मदरसा अज़ीज़िया से, प्रेषक मुहम्मद सफ़ीर-उर-रहमान बंगाली, 3 ज़िलक़ादा 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक लड़की बालिग है और उसकी उम्र चौदह साल है। उसके बाप ने जिस लड़के के साथ उसकी शादी तय की है, वह होने वाला पति बाप के बताने से नहीं बल्कि किसी और तरीके से लड़की को मालूम है कि मेरी शादी उस व्यक्ति के साथ तय हो गई है और वह दूसरे शहर में रहता है। जब बाप निक़ाह पढ़ाने के लिए लड़की के घर की ओर चला, तो उसने उस समय लड़की से न तो इजाज़त ली और न ही कुछ कहा, बल्कि सीधे वहां जाकर महफ़िल में कह दिया कि मैंने अपनी लड़की तुम्हारे निकाह में दे दी। क्या यह निकाह लागू हुआ या नहीं? बयान फ़रमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): अगर बालिग लड़की ने पहले इजाज़त नहीं दी थी, तो निकाह उसकी इजाज़त पर रुका रहेगा। अगर वह इजाज़त दे देगी तो जायज़ हो जाएगा, बशर्ते कि कोई शरई रुकावट न हो। अगर वह मना कर देगी तो बातिल (अमान्य) हो जाएगा, चाहे कोई शरई रुकावट न भी हो। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी: बालिग कुंवारी लड़की को निकाह पर मजबूर नहीं किया जा सकता क्योंकि बालिग होने पर विलायत (अभिभावकता) खत्म हो जाती है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

हिन्दी अनुवाद: बालिग कुंवारी लड़की को निकाह पर मजबूर नहीं किया जा सकता क्योंकि अब उस पर किसी की कोई विलायत (अभिभावकता) नहीं रही। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

मसला 394: 13 ज़िलक़ादा 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद के दादा मरहूम जमालुद्दीन शाह एक दरवेश व्यक्ति थे, चुनाँचे उन्होंने अपनी उम्र ज़ुहद-ओ-इबादत (संन्यास और वैराग्य) में एक जगह बसर कर दी। ज़ैद के पिता मरहूम फ़रीदुद्दीन एक परहेज़गार और आलिम (विद्वान) व्यक्ति थे। ज़ैद खुद भी अल्लाह के फ़ज़्ल से एक मुत्तक़ी (परहेज़गार), आलिम और

सूफ़ी है। वह तीन-चार साल के गुज़ारे (ख़र्च) का मालिक है और अपना मकान रखता है। ज़ैद की पत्नी हिंदा नमाज़-रोज़े की पाबंद है और कुरान पाक की तिलावत करने वाली तथा वज़ीफ़ों में लगी रहने वाली औरत है। ज़ैद की लड़की ज़ैनब भी नमाज़-रोज़े की शौकीन है और विरद-वज़ीफ़ों की ओर...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मज्बुआ मुजतबाई, दिल्ली 1/191

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

(اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے: اور جس کا بچہ ہے اس پر عورتوں کا کھانا ہے۔ ت) اور بالفرض کفاءت نہ بھی ہو تو باپ ایک بار غیر کفو سے بھی نکاح کر سکتا ہے لہذا صورت مستفسرہ میں وہ نکاح صحیح ولازم ہو گیا جس کے فسخ کا کسی کو بھی اختیار نہیں، واللہ تعالٰی اعلم،

مسئلہ ۳۹۳: از ریاست رامپور محلہ زینہ عنایت خاں مدرسہ عزیزیہ مرسلہ محمد سفیر الرحمان صاحب بنگالی ۳ ذیقعد ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ کہ ایک لڑکی بالغہ اور سن بھی چودہ برس کا ہے، اس کے باپ نے جس لڑکے کے ساتھ اس کی شادی مقرر کر دی ہے وہ ہونے والا شوہر نہ کہ باپ کے ذکر کرنے سے بلکہ اور کسی طریقہ سے لڑکی کو معلوم ہے کہ میری شادی اس شخص کے ساتھ مقرر کرادی ہے اور وہ دوسرے شہر میں رہتا ہے، جب باپ عقد پڑھانے کو لڑکی کے مکان کو چلا، نہ اس وقت لڑکی سے اجازت لی اور نہ کچھ کہا بلکہ ویسے ہی وہاں جاکر مجلس میں کہہ دیا میں نے اپنی لڑکی تمہارے نکاح میں دے دی، یہ نکاح نافذ ہوا یا نہ؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر بالغہ نے پہلے اجازت نہ دی تھی نکاح اس کی اجازت پر موقوف رہا، جائز کر دے گی جائز ہو جائیگا جبکہ کوئی مانع شرعی نہ ہو، رد کر دے گی باطل ہو جائے گا اگرچہ کوئی مانع شرعی نہ ہو، درمختار میں ہے: لا تجبر البالغة البكر على النكاح لانقطاع الولاية بالبلوغ ۱ واللہ تعالٰی اعلم۔ بالغہ باکرہ لڑکی کو نکاح پر مجبور نہیں کیا جا سکتا کیونکہ اب اس پر کسی کی کوئی ولایت نہ رہی، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۹۴: ۱۳ ذی قعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں دین اس مسئلہ میں کہ زید کا دادا جمال الدین شاہ مرحوم ایک درویش شخص تھا چنانچہ اس نے اپنی عمر زہد و عزلت میں ایک جگہ میں بسر کردی اور زید کا باپ فرید الدین مرحوم ایک متورع اور عالم شخص تھا اور زید خود بھی بحمدہ تعالٰی ایک متقی اور عالم اور صوفی اہل و عیال کے تین چار برس کے نفقے کا مالک شخص ہے اور مکان مملوک رکھتا ہے، اور زید کی بیوی ہندہ ایک پابند صوم وصلوٰۃ اور تالیہ قرآن پاک اور قاریہ اور اوراد و وظائف عورت ہے، اور زید کی لڑکی زینب بھی ایک صوم وصلوٰۃ کی شائق اور اوراد و وظائف کی جانب

۱ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

...is a very virtuous and straightforward girl, abstaining from prohibited acts like inclination towards falsehood etc. For this reason, despite many proposals coming for Zainab even seven or eight years after she reached puberty, Zaid was in search of some noble, learned, and pious person and did not accept those proposals as none of them were according to his wishes. Suddenly Amr arrived (about whom, four or five years ago, Khalid had presented him as being very pious, saying 'I have started a circle called Halqa-e-Habib in which Durood Sharif is recited in a special way and Amr is the head of that circle'). He deceived Zaid and Hindah by saying, 'I publish a newspaper which has a monthly profit of two hundred rupees, out of which I give fifty rupees monthly to my mother for her expenses.' However, upon investigation, it was found that in the place where he used to publish the newspaper, he was indebted for several hundred rupees and did not even have money for train fare; he had come to the city on another person's fare and did not give even a single penny monthly to his mother. Now, having gone back to his hometown from Zaid's city, he earns nothing at all and is in extreme poverty. He doesn't even have resources for a week, let alone a month. Furthermore, he gave the deception that 'I have a hereditary, solid-built mansion for my residence,' whereas he lives in a rented house, and even that rent is paid by his mother from her hard labor. Also, he deceived by saying 'I am a scholar and have obtained a certificate in Hadith from such-and-such scholar,' while this is completely false as he does not even have the capability of elementary books of Persian and Arabic. Moreover, giving the deception of his piety and godliness, he said 'I am the spiritual deputy (Khalifa) of such-and-such person among the Sufi masters of the time,' while he is not even regular in the five daily prayers; rather, he is accustomed to abominable acts like sodomy etc., and is a severe sinner (fasiq). Accordingly, on the night of the fifth day after the marriage contract, he was caught with a boy. Since he left the next morning, it has been nearly a year and a half; he neither sent a single penny for expenses nor repaid the 150 rupees he had borrowed on a one-week promise; he didn't return a single pie. He contracted marriage with Zaid's adult daughter, Zainab. After the marriage, since the facts became known, Zainab, Zaid, and Hindah have been severely repulsed by Amr. Zainab does not wish to go to him, and Zaid and Hindah do not at all agree to let her go. So it is evident that Amr is not at all a suitable match (kufu) for Zainab in terms of wealth and piety. And it is stated in Durr-ul-Mukhtar:

A fatwa shall be given for the absolute invalidity of marriage in a non-kufu (unequal match), and this is the preferred position for fatwa. (T)	**Yafta fi ghayr al-kuf' bi-adm jawazihi aslan wa huwa al-mukhtar lil-fatwa.**

1. Durr-ul-Mukhtar, Chapter of the Guardian (Bab-ul-Wali), Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

...एक बहुत नेक और सीधी लड़की है, जो झूठ आदि जैसे अवैध कार्यों से बचती है। इसी कारण ज़ैद, ज़ैनब के लिए कई जगहों से रिश्ते आने के बावजूद, उसके वयस्क होने के सात-आठ साल बाद तक भी किसी शरीफ़, विद्वान और परहेज़गार व्यक्ति की तलाश में था और उन रिश्तों को अपनी पसंद के अनुसार न होने के कारण स्वीकार नहीं किया था। अचानक अम्र (जिसके बारे में चार-पांच साल पहले खालिद ने उसे बहुत परहेज़गार बताया था, यह कहते हुए कि 'मैंने हल्क़ा-ए-हबीब नाम का एक समूह शुरू किया है जिसमें एक विशेष तरीके से दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है और अम्र उस समूह का प्रमुख है') आ गया। उसने ज़ैद और हिंदा को यह धोखा दिया कि 'मैं एक समाचार पत्र प्रकाशित करता हूँ जिसमें दो सौ रुपये मासिक लाभ है, जिसमें से मैं अपनी माँ को उनके खर्च के लिए पचास रुपये मासिक देता हूँ।' हालाँकि, जांच करने पर पता चला कि जिस स्थान पर वह समाचार पत्र प्रकाशित करता था, वहाँ वह कई सौ रुपये का कर्जदार था और उसके पास रेल के किराए तक के पैसे नहीं थे; वह दूसरे व्यक्ति के किराए से शहर आया था और अपनी माँ को महीने का एक पैसा भी नहीं देता था। और अब जो ज़ैद के शहर से अपने वतन जाकर रह रहा है, वह कुछ भी नहीं कमाता और अत्यंत गरीबी में है। एक महीने तो क्या, एक हफ्ते के गुज़ारे का भी साधन उसके पास नहीं है। इसके अलावा, उसने यह झांसा दिया कि 'मेरे रहने के लिए पुश्तैनी पक्की हवेली है,' जबकि वह किराए के मकान में रहता है, और वह किराया भी उसकी माँ अपनी मेहनत-मज़दूरी से अदा करती है। साथ ही, उसने यह धोखा दिया कि 'मैं आलिम हूँ और मैंने अमुक विद्वान से हदीस शरीफ़ की सनद प्राप्त की है,' जबकि यह पूरी तरह से गलत है क्योंकि वह फ़ारसी और अरबी की शुरुआती किताबों की भी योग्यता नहीं रखता। इसके अलावा, अपनी तक़वा और परहेज़गारी का झांसा देते हुए कहा कि 'मैं समय के सूफी संतों में से अमुक का खलीफ़ा हूँ,' जबकि वह पांच वक्त की नमाज़ का भी पाबंद नहीं है, बल्कि वह लौंडेबाज़ी जैसे घृणित कार्यों का आदी और घोर पापी (फ़ासिक़) है। चुनाँचे, निकाह के पाँचवें दिन की रात को वह एक लड़के के साथ पकड़ा गया। सुबह वह जो गया, उसे अब करीब डेढ़ साल होने को है; न उसने खर्च का एक पैसा भेजा और न ही एक हफ्ते के वादे पर लिए गए 150 रुपये कर्ज में से एक पाई लौटाई। उसने ज़ैद की बालिग बेटी ज़ैनब के साथ निकाह कर लिया। निकाह के बाद जब से ये तथ्य सामने आए हैं, ज़ैनब, ज़ैद और हिंदा अम्र से सख्त नफरत करते हैं। ज़ैनब का उसके यहाँ जाना और ज़ैद व हिंदा का उसे वहाँ जाने देना कतई मंज़ूर नहीं है। तो यह स्पष्ट

है कि अम्र धन और धार्मिकता के मामले में ज़ैनब का कुफ़ू (बराबर का मेल) हरगिज़ नहीं है। और दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

गैर-कुफ़ू (असमान मेल) में निकाह के बिल्कुल अवैध होने का फतवा दिया जाएगा और यही फतवे के लिए पसंदीदा राय है। (त)	**यफता फी गैरिल कुफु बिअदमी जवाज़िही अस्लन वहुवल मुख्तारु लिल फतवा।**

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191.

पेज 659 का 739

راغب اور کذب وغیرہ امور نامشروع سے محترز بہت نیک اور سیدھی لڑکی ہے، اسی وجہ سے زید باوجود زینب کی نسبتیں متعدد جگہ سے آنے کے زینب کے بلوغ کے بھی سات آٹھ بلکہ اور زیادہ سال بعد تک کسی شریف عالم متقی شخص کی تلاش میں تھا اور ان نسبتوں کو بوجہ ان میں سے کسی کے موافق مرضی نہ ہونے کے منظور نہیں کیا تھا کہ یکایک عمرو (کہ جس کی بابت چار پانچ سال پیشتر خالد نے اس کا بہت متقی ہونا ظاہر کیا تھا چنانچہ کہا تھا کہ میں نے ایک حلقہ مسمّٰی حلقہ حبیب جاری کر رکھا ہے جس میں ایک خاص طریقے سے درود شریف پڑھا جاتا ہے اس کا عمرو سر حلقہ ہے) آگیا اور اس نے زید و ہندہ کو یہ دھوکا دے کر کہ میں اخبار شائع کرتا ہوں اس میں دو سو روپیہ ماہوار نفع ہے اس میں سے پچاس روپیہ ماہوار اپنی والدہ کو ان کے خرچ کے لئے دیتا ہوں، حالانکہ تحقیق کرنے سے معلوم ہوا کہ جس مقام میں اخبار شائع کرتا تھا وہاں کئی سو روپیہ کا قرضدار تھا اور کرایہ ریل تک پاس نہ تھا دوسرے شخص کے کرایہ سے شہر تک آیا تھا اور اپنی والدہ کو ایک حبہ بھی ماہوار نہ دیتا تھا، اور اب جو زید کے شہر سے اپنے وطن میں جاکے رہا ہے کسی طرح کچھ نہیں کماتا کمال عسرت میں ہے ایک مہینہ تو کیسا ایک ہفتہ کی بھی قوت کامالک نہیں اور نیز یہ فریب دے کر کہ میرے رہنے کی موروثی پختہ حویلی ہے حالانکہ کرایہ کے مکان میں رہتا ہے، اور وہ کرایہ بھی اس کی والدہ اپنی محنت مزدوری سے ادا کرتی ہے اور نیز یہ فریب دے کر کہ میں عالم ہوں میں نے حدیث شریف کی سند فلاں عالم سے حاصل کی حالانکہ یہ بالکل غلط کہ فارسی عربی کی ابتدائی کتابوں کی بھی لیاقت نہیں رکھتا اور نیز اپنے تقوٰی و ورع کا فریب دے کر کہ میں مشائخ وقت میں سے فلاں کا خلیفہ طریقت ہوں حالانکہ نماز پنجگانہ کا بھی پابند نہیں بلکہ لونڈے بازی وغیرہ امور شنیعہ کا عادی

اور اشد فاسق ہے چنانچہ عقد کے پانچویں روز شب کے وقت ایک لونڈے سے پکڑا گیا پس اس کی صبح ہی کو جو گیا تو آج عرصہ قریب ڈیڑھ سال کے ہوتا ہے نہ ایک پیسہ خرچ بھیجا اور ایک ہفتہ کے وعدہ پر مارص ۱۵۰ روپیہ قرض لے گیا تھا نہ ایک پائی اس کا دیا، زید کی لڑکی زینب بالغہ کے ساتھ عقد کر لیا، پس عقد کے بعد جب سے حالات معلوم ہوئے، تب سے زینب اور زید اور ہندہ عمرو سے سخت متنفر ہیں اور زینب اس کے یہاں جانا اور زید و ہندہ اس کے یہاں جانے دینا ہر گز منظور نہیں کرتے تو یہ ظاہر ہے کہ عمرو مالا اور دیانۃً زینب کا کفو ہر گز نہیں، اور در مختار میں ہے:

غیر کفو میں نکاح کے اصلا عدم جواز کا فتوٰی دیا جائے گا یفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا یہی فتوٰی کے لئے مختار ہے۔ (ت) وھو المختار للفتوٰی۔

1. در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱

صفحہ 659 کا 739

Fatawa Razawiyya Volume 11

Now, the matter to be clarified is whether, in the aforementioned case, regardless of whether a valid seclusion (khalwat-e-sahiha) took place or not, can a decree of annulment of marriage (batlan-e-nikah) be given according to this passage from Durr al-Mukhtar? And if a decree of annulment cannot be given according to this passage, do Zainab and her guardians have the right of rescission (faskh) according to any other text? And if so, what is the procedure for rescission?

The Answer: The mentioned marriage is not 'rescission' in technical terms. Rescission applies to what was already contracted; this marriage never took place to begin with, it is sheer nullity. It is clear that Zainab is a sane adult; her marriage cannot be enforced without her consent because "guardianship ends upon reaching maturity" (Durr al-Mukhtar). If this marriage occurred without her permission and she rejected it upon learning of it, then even if it were a suitable match (kufu), it would still be rejected and void because it is an unauthorized marriage (Nikah-e-Fazuli). It is stated in Alamgiriyya:

[Arabic Text]: No one, whether father or ruler, has the right to marry off a sane adult woman, whether virgin or non-virgin, without her permission. If someone does so, the marriage is suspended upon her approval. If she approves, it is valid; if she rejects, it becomes void. It is mentioned similarly in Al-Siraj al-Wahaaj.

And if it happened with her permission, then it is Zainab's own act that she married someone who is not an equal (ghayr-kufu). It is stated in Fatawa Khayriyya:

[Arabic Text]: His marrying her off with her permission is like her marrying herself off. This is the case of one who marries an unsuitable match (ghayr kufu).

And if it was done without permission but she later gave consent and accepted it, then even now it is considered to be done by Zainab herself.

[Arabic Text]: For subsequent ratification is like prior authorization. (Khayriyya and other general books).

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardians, Mujtabai Press, Delhi, 1/191
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Four on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/287
3. Fatawa Khayriyya, Chapter on Guardians and Equals, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/25

4. Fatawa Khayriyya, Chapter on Guardians and Equals, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/25

फ़तावा रज़विया खंड 11

अब पूछने वाली बात यह है कि वर्णित स्थिति में, चाहे एकांत (खलवत-ए-सहीहा) हुआ हो या न हुआ हो, क्या 'दुर्र-ए-मुख़्तार' के इस उद्धरण के अनुसार निकाह के शून्य (बत्लान) होने का आदेश दिया जा सकता है? और यदि इस उद्धरण के अनुसार शून्यता का आदेश नहीं दिया जा सकता, तो क्या किसी अन्य पाठ के अनुसार ज़ैनब और उसके अभिभावकों को निकाह निरस्त (फ़स्ख़) करने का अधिकार है? और यदि है, तो निरस्त करने की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर: प्रश्नगत निकाह तकनीकी रूप से 'फ़स्ख़' (निरसन) नहीं है। फ़स्ख़ तो उसका होता है जो संपन्न हुआ हो; यह निकाह तो मूल रूप से हुआ ही नहीं, यह पूर्णतः शून्य (बातिल) है। यह स्पष्ट है कि ज़ैनब समझदार और वयस्क है; उसकी अनुमति के बिना उसके निकाह को लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि "वयस्कता प्राप्त करने पर अभिभावकत्व समाप्त हो जाता है"[1] (दुर्र-ए-मुख़्तार)। यदि यह निकाह उसकी अनुमति के बिना हुआ और उसने जानकारी मिलने पर इसे अस्वीकार कर दिया, तो भले ही वह बराबरी (कुफ़ू) का रिश्ता होता, तब भी वह अस्वीकृत और शून्य हो जाता क्योंकि यह 'निकाह-ए-फ़ज़ूली' (अनधिकृत विवाह) है। 'आलमगीरिया' में है:

[अरबी पाठ]: किसी वयस्क, विवेकशील स्त्री का निकाह, चाहे वह कुंवारी हो या विवाहित (सय्याबा), उसकी अनुमति के बिना पिता या शासक द्वारा करना जायज़ नहीं है। यदि किसी ने ऐसा किया, तो वह निकाह स्त्री की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह उसे स्वीकार कर ले तो जायज़ होगा और यदि अस्वीकार कर दे तो शून्य (बातिल) हो जाएगा। 'सिराज अल-वहाज' में भी इसी तरह है।

और यदि यह उसकी अनुमति से हुआ था, तो यह स्वयं ज़ैनब का कृत्य माना जाएगा कि उसने 'ग़ैर-कुफ़ू' (असमान) से निकाह किया। 'फ़तावा खैरिया' में है:

[अरबी पाठ]: उसकी अनुमति से उसका विवाह करना वैसा ही है जैसे उसने स्वयं अपना विवाह किया हो, यह मसला 'ग़ैर-कुफ़ू' में उसके निकाह करने का है।

और यदि बिना अनुमति के किया गया था और बाद में उसने अनुमति दे दी और उसे स्वीकार कर लिया, तो अब भी यह ज़ैनब का ही कृत्य माना जाएगा।

[अरबी पाठ]: क्योंकि बाद की अनुमति पहले दी गई अनुमति के समान ही है। (खैरिया और अन्य सामान्य पुस्तकें)।

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबू-ल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191
2. फ़तावा हिन्दिया, बाब 4 वलियों के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/287
3. फ़तावा खैरिया, बाबुल औलिया वल अक़्फ़ा, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 1/25
4. फ़तावा खैरिया, बाबुल औलिया वल अक़्फ़ा, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 1/25

पृष्ठ 660 का 739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

پس دریافت طلب یہ بات ہے کہ صورت مرقومہ میں عام اس سے کہ خلوت صحیحہ ہوئی یا نہ ہوئی ہو، در مختار کی اس عبارت کے بموجب بطلان نکاح کا حکم دیا جاسکتا ہے یا نہیں؟ اور اگر اس عبارت کے بموجب حکم بطلان نہیں دیا جاسکتا تو کسی اور عبارت کے مطابق زینب اور اس کے اولیاء کو حق فسخ ہے یا نہیں؟ اور اگر ہے تو فسخ کی کیا صورت ہے؟ الجواب: نکاح مذکورہ اصطلاحاً فسخ نہیں، فسخ تو وہ ہو جو منعقد ہوا ہو یہ نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں، باطل محض ہے، ظاہر ہے کہ زینب عاقلہ بالغہ ہے اس کا نکاح بے اس کے اذن کے نفاذ نہیں پاسکتا لانقطاع الولایۃ بالبلوغ[1] در مختار (بالغ ہو جانے کی وجہ سے اس پر ولایت منقطع ہو جانے پر، در مختار۔ ت) اگر یہ نکاح بے اس کی اجازت کے ہوا اور اس نے خبر پاکر رد کردیا تو اگر کفو ہوتا جب بھی رد و باطل ہو جاتا لانہ نکاح فضولی (کیونکہ یہ نکاح فضولی ہے۔ ت) عالمگیریہ میں ہے: لا یجوز نکاح احد علی بالغۃ صحیحۃ العقل من اب اوسلطان بغیر اذنھا بکر اکانت اوثیباً فان فعل ذلك فالنکاح موقوف علی اجازتھا فان اجازتہ جاز وان ردتہ بطل، کذا فی السراج الوھاج[2]- عاقلہ بالغہ باکرہ ہو یا ثیبہ اس کی مرضی کے خلاف کسی کا نکاح کرنا صحیح نہیں۔ یہ باپ ہو یا حاکم اور اگر کسی نے ایسا کیا تو یہ نکاح عاقلہ کی اجازت پر موقوف ہوگا اس کی مرضی ہے کہ جائز کرے تو جائز ہوگا اگر رد کردے تو باطل ہو جائے گا۔ سراج الوہاج میں یونہی ہے۔ (ت) اور اگر اس کے اذن سے ہوا تو خود زینب کا کیا ہوا ہے کہ غیر کفو سے کیا، فتاوی خیریہ میں ہے: تزویجہ لھا باذنھا کتزویجھا بنفسھا وھی مسئلۃ من نکحت غیر کفو[3]۔ بالغہ کی اجازت سے نکاح ایسا ہے جیسا کہ اس نے خود کیا ہو، یہ مسئلہ غیر کفو میں اس کے نکاح کرنے کا ہے۔ (ت) اور اگر بلا اذن کیا تھا اس نے بعد کو اجازت دی جائز رکھا تو اب بھی زینب ہی کا کیا ہوا ہے۔ فان الاجازۃ اللاحقۃ کالوکالۃ السابقۃ[4] خیریۃ

وغیرھا عامۃ الکتب۔ بعد کی اجازت ایسے ہی ہے جیسے پہلے اجازت دے رکھی ہو، خیریہ وغیرہ کتب۔ (ت)

[1] در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱ [2] فتاوی ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۸۷ [3] فتاوی خیریہ باب الاولیاء والاکفاء دارالمعرفہ بیروت ۱/۲۵ [4] فتاوی خیریہ باب الاولیاء والاکفاء دارالمعرفہ بیروت ۱/۲۵

Fatawa-e-Razawiyyah Volume 11

In any case, this is a marriage that a sane, adult woman contracted with a non-match (ghair-kufu), because a sinner (fasiq) is by no means a match for a righteous woman (salihah), daughter of a righteous man (salih). It is stated in Durr-e-Mukhtar:

A sinner is not a match for a righteous woman or a sinful daughter of a righteous man, whether he commits sin openly or not, according to the apparent view in Nahr -1.	A sinner is not a match for a righteous girl or such a sinful girl who is the daughter of a righteous man; whether that sinner commits sin openly or secretly, this is the ruling according to the manifest report (zahir-e-riwayah), Nahr. (T)

It is stated in general commentaries:

A sinner is not a match for the daughter of righteous people -2.	A sinner is not a match for the daughter of virtuous people. (T)

It is stated in the text of Majma':

A sinner is not a match for a righteous woman -3.	A sinner is not a match for a righteous woman. (T)

It is stated in the Fatawa of Imam Faqih-ul-Nafs:

Some scholars (may Allah Almighty have mercy on them) said: A sinner is not a match for the daughter of righteous people, whether his sinning is public or not, and this is the choice of Imam Sheikh Abu Bakr Muhammad ibn al-Fadl -4.	Some scholars (may Allah Almighty have mercy on them) said: whether a sinner commits sin openly or not, he is not a match for the daughter of righteous people, this is the preferred view of Imam Sheikh Imam Abu Bakr Muhammad bin Fadl. (T)

In the same source it is:

A sinner is not a match for the daughter of righteous people -5.	A sinner is not a match for the daughter of righteous people. (T)

Furthermore, such a person in extreme hardship who neither earns daily nor possesses food for one month cannot be a match, let alone provide maintenance (nafaqah), even if the woman is also poor; it is stated in Durr-e-Mukhtar:

In Arabs and non-Arabs, piety, i.e., God-consciousness, is considered.	What is considered in a match (kufu) among Arabs and non-Arabs is piety (dayanat).

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Kafa'ah, Mujtabai Press, Delhi, 1/195.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/320.
3. Radd al-Muhtar with reference to al-Majma', Chapter of Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/320.
4. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Kafa'ah, Munshi Naval Kishore, Lucknow, 1/161.
5. Radd al-Muhtar with reference to Khaniyah, Chapter of Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/320.

फतावा-ए-रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

बहरहाल यह वह निकाह है कि अक्लमंद, बालिग औरत ने गैर-कुफ़ू (जो बराबरी का न हो) से किया क्योंकि फासिक (पापी) हरगिज़ सालेहा (नेक औरत) बिन्ते सालेह (नेक मर्द की बेटी) का कुफ़ू नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है:

एक फासिक नेकी करने वाली औरत या नेकी करने वाले की पापी बेटी के लिए बराबरी का जोड़ा नहीं है, चाहे वह खुल्लम-खुल्ला पाप करता हो या नहीं, नह्र में ज़ाहिर रिवायत के अनुसार यही है। -1	फासिक, सालेहा (नेक) लड़की और ऐसी फासिका जो सालेह की बेटी हो, का कुफ़ू नहीं है; वह फासिक एलानिया (खुलेआम) फिस्क (पाप) करता हो या गुप्त रूप से, ज़ाहिर रिवायत पर यही हुक्म है, नह्र। (त)

आम शरहों (व्याख्याओं) में है:

फासिक नेक लोगों की बेटी का कुफ़ू नहीं होता है। -2	फासिक नेक लोगों की बेटी का कुफ़ू नहीं। (त)

मतन मज्म'अ में है:

फासिक सालेहा औरत का कुफ़ू नहीं होता। -3	फासिक सालेहा का कुफ़ू नहीं है। (त)

फ़तावा इमाम फ़कीह-उल-नफ़्स में है:

कुछ मशायख़ (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) ने कहा: फासिक नेक लोगों की बेटी का कुफ़ू नहीं होता, चाहे वह एलानिया हो या न हो, और यही इमाम शैख़ अबू बक्र मुहम्मद बिन फ़ज़्ल की पसंद है। -4	कुछ मशायख़ (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) ने फरमाया: फासिक एलानिया हो या गैर-एलानिया, वह सालेहीन की बेटी का कुफ़ू नहीं है, यही इमाम शैख़ इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन फ़ज़्ल का मुख़्तार (पसंदीदा मत) है। (त)

उसी में है:

फासिक नेक लोगों की बेटी का कुफ़ू नहीं होता। -5	फासिक सालेहीन की बेटी के लिए कुफ़ू नहीं है। (त)

इसके अलावा, ऐसा तंगदस्त इंसान जो न रोज़ाना कमाता हो और न ही एक महीने के लिए अपने गुज़ारे का मालिक हो, वह नफ़का (खर्च) देना तो दूर, कुफ़ू भी नहीं हो सकता, भले ही औरत भी फकीरा (गरीब) हो। दुर्रे मुख्तार में है:

अरब और अजम (गैर-अरब) में दियानत यानी तक़वा (परहेज़गारी) का एतबार किया जाता है।	कुफ़ू में जिस चीज़ का अरब और अजम में एतबार किया जाता है वह दियानत (ईमानदारी/धार्मिकता) है।

---

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल कफ़ाअत, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, 1/195
2. रद्दुल मुहतार, बाबुल कफ़ाअत, दार इह्याउत तुराथिल अरबी, बेरुत, 2/320
3. रद्दुल मुहतार बहवाला अल-मज्म'अ, बाबुल कफ़ाअत, दार इह्याउत तुराथिल अरबी, बेरुत, 2/320
4. फ़तावा काज़ी ख़ाँ, फ़स्ल फ़िल कफ़ाअत, मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, 1/161
5. रद्दुल मुहतार बहवाला ख़ानिया, बाबुल कफ़ाअत, दार इह्याउत तुराथिल अरबी, बेरुत, 2/320

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

بہر حال یہ وہ نکاح ہے کہ زن عاقلہ بالغہ نے غیر کفو سے کیا کہ فاسق ہرگز صالحہ بنت صالح کا کفو نہیں۔ در مختار میں ہے :

لیس فاسق کفو الصالحة او فاسقة بنت صالح معلناً کان اولا علی الظاھر نھر -1

فاسق صالحہ لڑکی ایسی فاسقہ جو صالح کی بیٹی ہو کا کفو نہیں ہے، وہ فاسق اعلانیہ فسق کرتا ہو یا مخفی طور پر ظاہر روایت پر یہی حکم ہے، نہر۔ (ت)

عامہ شروح میں ہے :

لا یکون الفاسق کفو البنت الصالحین -2 فاسق نیک لوگوں کی بیٹی کا کفو نہیں۔ (ت)

متن مجمع میں ہے :

لا یکون الفاسق کفو اللصالحة -3 فاسق صالحہ کا کفو نہیں ہے۔ (ت)

فتاوی امام فقیہ النفس میں ہے :

قال بعض المشائخ رحمھم اللہ تعالی الفاسق لا یکون کفوا لبنت الصالحین معلناً کان اولم یکن وھو اختیار الشیخ الامام ابي بکر محمد بن الفضل -4

بعض مشائخ رحمہم اللہ تعالٰی نے فرمایا : فاسق معلن ہو یا غیر معلن وہ صالحین کی بیٹی کا کفو نہیں ہے، یہی امام شیخ امام ابوبکر محمد بن فضل کا مختار ہے۔ (ت)

اسی میں ہے :

لا یکون الفاسق کفو البنت الصالحین -5 فاسق صالحین کی بیٹی کے لئے کفو نہیں ہے۔ (ت)

نیز ایسا معسر کہ نہ روزانہ کماتا ہو نہ ایک مہینے کے اپنے ہی قوت کا مالک ہو نفقہ درکنار کفو نہیں ہو سکتا اگرچہ عورت بھی فقیرہ ہو، در مختار میں ہے :

تعتبر في العرب والعجم ديانة ای تقوی	کفو میں جس چیز کا عرب و عجم میں اعتبار کیا جاتا ہے وہ دیانت

---

1. درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۵
2. رد المحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۲۰/۲
3. رد المحتار بحوالہ المجمع باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۲۰/۲
4. فتاوی قاضی خاں فصل فی الکفاءۃ منشی نولکشور لکھنؤ ۱/۱۶۱
5. رد المحتار بحوالہ خانیۃ باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۲۰/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic]: And wealth is not [considered] unless he is able to pay the prompt dowry and maintenance for a month if he is not a professional. (1) [Urdu]: Meaning piety, and wealth by which he is capable of giving the prompt dowry and one month's maintenance if he is not a craftsman. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic]: This includes if she is poor, the daughter of poor people, as explicitly stated in 'Al-Waqi'at', reasoning that the dowry and maintenance are upon him, so this attribute is considered in his case. (2) [Urdu]: This includes the daughter of a poor man, as explicitly stated in 'Al-Waqi'at', that the reason is that the dowry and maintenance are the responsibility of the husband, therefore his being wealthy will be considered. (T)

And for a mature woman to marry someone non-compatible (ghayr-kufu) is absolutely void while she has a guardian (wali), except in the case where the guardian has explicitly given permission before the marriage knowing him to be non-compatible; if even one of three conditions is missing, the marriage will not occur at all. It is stated in 'Durr al-Mukhtar':

[Arabic]: The fatwa is given regarding non-compatibility that it is not permissible at all. Thus, a woman divorced three times who marries a non-compatible person without the guardian's consent after he knows about him, is not permissible [to her former husband]. So, remember this. (3) [Urdu]: The fatwa will be given for the absolute impermissibility of marriage in non-compatibility. Therefore, if a thrice-divorced woman marries a non-compatible person against her guardian's will while the guardian knows about the non-compatibility, she will not become lawful for her first husband. Remember this. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic]: He is believed in denying consent after knowledge, and after both, and in aspects of consent with lack of knowledge. In these three cases, she is not lawful. She only becomes lawful in the fourth case, which is the guardian's consent to the non-compatible person while knowing he is so. (4) اھـ [Urdu]: If the guardian says, 'After knowing, I did not consent' or 'I did not know', or 'I had consented because of lack of knowledge', then in these three cases, the guardian's word will be verified and that thrice-divorced woman will not be lawful for her first husband. Yes, in the fourth

case, she will become lawful, which is when the guardian says that despite knowing about the non-compatibility, I am content. ـھـ ح ا (T)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'ah, Mujtabai Press Delhi, 1/195
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/231
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Wali, Mujtabai Press Delhi, 1/191
4. Radd al-Muhtar, Chapter on Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/297

फतावा रजविया, ग्यारहवाँ खंड

[अरबी]: और धन वह मान्य नहीं है जब तक कि वह त्वरित मेहर और एक महीने का खर्च देने में सक्षम न हो यदि वह पेशेवर न हो। (१) [उर्दू]: यानी तक़वा (परहेजगारी), और वह धन जिससे वह त्वरित मेहर और एक महीने का खर्च देने में सक्षम हो यदि वह कारीगर न हो। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी]: इसमें वह निर्धन लड़की भी शामिल है जो निर्धनों की बेटी हो, जैसा कि 'अल-वाक़िआत' में स्पष्ट किया गया है, तर्क यह है कि मेहर और खर्च उसी पर है, इसलिए यह विशेषता उसके हक में मानी जाएगी। (२) [उर्दू]: यह गरीब की बेटी को शामिल करता है, जैसा कि 'वाक़िआत' में स्पष्ट किया गया है कि कारण यह है कि मेहर और खर्च पति पर ही होता है, इसलिए उसका मालदार होना मान्य होगा। (त)

और एक वयस्क महिला का किसी गैर-कुफ़ु(अयोग्य) से निकाह करना पूरी तरह से शून्य है यदि उसका कोई वली (संरक्षक) हो, सिवाय उस स्थिति के जब वली ने निकाह से पहले उसे गैर-कुफ़ु जानकर स्पष्ट रूप से अनुमति दे दी हो; इन तीनों शर्तों में से एक भी कम होने पर निकाह बिल्कुल नहीं होगा। 'दुर्रे मुख़्तार' में लिखा है:

[अरबी]: गैर-कुफ़ु में निकाह की बिल्कुल अनुमति न होने का फतवा दिया जाएगा। इसलिए, यदि तीन तलाक वाली महिला ने अपने वली की मर्जी के खिलाफ गैर-कुफ़ु में निकाह किया, जबकि वली को गैर-कुफ़ु होने का पता था, तो वह पहले पति के लिए हलाल (वैध) नहीं होगी। इसे याद रखें। (३) [उर्दू]: गैर-कुफ़ु में निकाह की मूलतः अनुमति न होने का फतवा दिया जाएगा। इसलिए, यदि तीन तलाक वाली महिला ने अपने वली की मर्जी के खिलाफ गैर-कुफ़ु में निकाह किया जबकि वली को गैर-कुफ़ु का पता था, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। इसे सुरक्षित रखें (याद रखें)। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी]: जानकारी के बाद सहमति से इनकार करने पर, और दोनों के बाद, और जानकारी की कमी के साथ सहमति के पहलुओं में उसे सच माना जाएगा। इन तीन स्थितियों में वह हलाल नहीं होगी। वह केवल चौथी स्थिति में हलाल होगी, जो वली की गैर-कुफ़ु के लिए सहमति है जबकि उसे पता हो कि वह वैसा ही है। (४) अ. [उर्दू]: वली अगर कहे कि पता चलने पर मैं सहमत नहीं हुआ या मुझे पता

नहीं चला, या पता न होने की वजह से मैं सहमत हुआ था, तो इन तीनों स्थितियों में वली की पुष्टि की जाएगी और वह तीन तलाक वाली महिला पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। हाँ, चौथी स्थिति में हलाल हो जाएगी, वह यह कि वली कहे कि गैर-कुफ़ु का पता होने के बावजूद मैं सहमत हूँ। अ. ह. (त)

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल किफ़ाअह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/195
2. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल किफ़ाअह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/231
3. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/191
4. रद्द अल-मुह्तार, बाबुल वली, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/297

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

ومالابان یقدر علی المعجل ونفقة شهر لوغیر محترف ۱۔ | یعنی تقوی، اور مال جس سے مہر معجّل اور ایک ماہ کا نفقہ دینے پر قادر ہو اگر کار یگر نہ ہو۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

شمل مالوکانت فقیرة بنت فقراء کما صرح به في الواقعات معللا بأن المهر والنفقة علیه فیعتبر هذا الوصف في حقه ۲۔ | یہ فقیر کی بیٹی کو شامل ہے، جیسا کہ واقعات میں تصریح کی گئی ہے کہ وجہ یہ ہے کہ مہر اور نفقہ خاوند پر ہی ہوتا ہے لہذا اس کا مالدار ہونا معتبر ہوگا۔ (ت)

اور بالغہ کہ اپنا نکاح غیر کفو سے کرے باطل محض ہے جبکہ ولی رکھتی ہو مگر اس صورت میں کہ ولی نے پیش از نکاح اسے غیر کفو جان کر صراحتاً اجازت دے دی ہو، ان میں تین شرطوں سے ایک بھی کم ہوگی نکاح اصلانہ ہوگا، در مختار میں ہے:

یفتی في غیر الکفو بعدم جوازه اصلا فلا تحل مطلقة ثلثا نکحت غیر کفو بلارضی ولی بعد معرفة ایاه فلیحفظ ۳۔ | غیر کفو میں نکاح کے اصلا عدم جواز کا فتوی دیا جائے گا، لہذا تین طلاق والی نے اگر اپنے ولی کی مرضی کے خلاف غیر کفو میں نکاح کیا جبکہ ولی کو غیر کفو کا علم ہو تو وہ پہلے خاوند کے لئے حلال نہ ہوگی، اس کو محفوظ کرو۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

یصدق بنفی الرضا بعد المعرفة وبعدهما وبوجوه الرضا مع عدم المعرفة ففی هذه الصور الثلاث لاتحل وانما تحل في الرابعة وهی رضی الولی بغیر الکفو مع علمه بانه کذلك ۴ اھـ | ولی اگر کہے کہ معلوم ہونے پر میں راضی نہ ہوا یا مجھے معلوم نہ ہوا، یا معلوم نہ ہونے کی وجہ سے میں راضی

ہوا تھا تو ان تینوں صورتوں میں ولی کی تصدیق کی جائے گی اور وہ مطلقہ ثلاثہ پہلے خاوند کے لئے حلال نہ ہوگی، ہاں چوتھی صورت میں حلال ہو جائے گی وہ یہ کہ ولی کہے کہ غیر کفو کا علم ہونے کے باوجود میں راضی ہوں اھ ح۔ (ت)

۱ درمختار باب الکفاۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۵ ۲ ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۳۱ ۳ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ ۴ ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۷

Fatawa Razvia Volume 11

It is in the same [book]:

"At that time, for the validity of the contract, his explicit consent is necessary. Accordingly, if he remained silent before it and then consented after it, it is of no avail. So let it be reflected upon." I wrote on this that a firm decision was made in Al-Khayriya following Al-Bahr, and the reason is what we will mention, etc.

Therefore, for the validity of this marriage contract, it is necessary for the guardian (Wali) to explicitly express consent. On this basis, if he remained silent initially and later agreed, the consent after the marriage is not valid. It requires reflection. On this, I have written a footnote; in 'Khayriya', the firm stance is taken following 'Bahr', and the reason is the same which we shall mention etc. (T)

Here, the guardian's consent was not based on knowing [the groom] to be non-equal (non-Kufu), but rather thinking him to be an equal (Kufu). Therefore, it is not valid at all. The condition for the contract was not met, and the marriage was completely null. It is obligatory (farz) for Zainab to separate from him immediately, even if seclusion (khalwat) has occurred. It is forbidden (haram) for Zaid and Hindah to send her to Amr, as he is a complete stranger, rather worse than that. We ask Allah for forgiveness and safety. (We ask Allah for forgiveness and safety. T) And Allah Almighty knows best.

Problem 395: From Calcutta, Bhowanipore Post Office, Bhowanipore Russa Road No. 109, sent by Sheikh Haji Nadir Ali Sahib, Baqr Qasab, 15 Safar 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A girl's marriage took place when she was six months old, and the boy's age at that time was five years. Thus, they were married. Now the girl is fourteen years old, and neither the boy nor any of the boy's heirs have come to inquire about the girl in any way. By Allah's grace, the girl is well-versed in three types of knowledge, while the boy is completely illiterate and has no connection with knowledge. No one from the boy's side has inquired about the girl's well-being. For all these reasons, the girl now says, "We will divorce the first husband and perform a second marriage." Can the girl divorce the first husband and perform a second marriage or not? And will divorce be obligatory (wajib) upon him or not? May your presence (His Eminence) provide guidance on this issue so that if the girl performs a second marriage and the boy's side takes any legal

action or lawsuit, etc., we can present this decree. We will try our best, and whatever you say regarding expenses, your servant is ready to serve.

The Answer:

No fee is taken for a fatwa here, nor is it considered permissible for oneself. Giving divorce is for a woman...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of the Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297.
2. Jadd al-Muhtar, Annotation on Radd al-Muhtar, Chapter of the Wali, Annotation, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, 2/345.

फ़तावा रिज़विया जिल्द ग्यारहवीं

इसी में है:

"उस समय, अनुबंध (निक़ाह) की वैधता के लिए उनकी स्पष्ट सहमति आवश्यक है। तदनुसार, यदि वह पहले चुप रहा और बाद में सहमति दी, तो यह किसी काम का नहीं है। अतः इस पर विचार किया जाना चाहिए।" मैंने इस पर लिखा कि 'अल-खैरिया' में 'अल-बहर' के अनुसरण में दृढ़ निर्णय लिया गया है, और इसका कारण वही है जिसका हम उल्लेख करेंगे आदि।

इसलिए, इस निक़ाह अनुबंध की वैधता के लिए वली (अभिभावक) का स्पष्ट रूप से सहमति व्यक्त करना आवश्यक है। इसी आधार पर यदि वह पहले चुप रहा और बाद में सहमत हुआ, तो निक़ाह के बाद की सहमति मान्य नहीं है। इस पर गौर किया जाना चाहिए। इस पर मैंने एक हाशिए (टिप्पणी) लिखा है; 'खैरिया' में इस पर दृढ़ता 'बहर' के अनुसरण में की गई है और कारण वही है जिसका हम ज़िक्र करेंगे आदि। (त)

यहाँ वली की रज़ामंदी उसे ग़ैर-कुफ़ू (असमान) जानकर नहीं थी, बल्कि कुफ़ू (समान) समझकर थी, इसलिए यह बिल्कुल मान्य नहीं है। अनुबंध की शर्त पूरी नहीं हुई और निक़ाह पूरी तरह से शून्य रहा। ज़ैनब पर फ़र्ज़ है कि वह उससे तुरंत अलग हो जाए, चाहे खल्वत (एकांतवास) हो चुका हो। ज़ैद और हिंदा पर हराम है कि उसे अम्र के पास भेजें, क्योंकि वह निरा अजनबी है, बल्कि उससे भी बदतर है। हम अल्लाह से क्षमा और सुरक्षा की प्रार्थना करते हैं। (अल्लाह तआला से माफ़ी और आफ़ियत का सवाल है। त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 395: कलकत्ता, भवानीपुर डाकखाना, भवानीपुर रसा रोड नंबर 109 से, प्रेषक शेख हाजी नादिर अली साहब, बक्र क़साब, 15 सफ़र 1338 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि: एक लड़की की शादी तब हुई जब वह छह महीने की थी और उस समय लड़के की उम्र पांच साल थी। तब दोनों की शादी हो गई। अब लड़की की उम्र चौदह साल है और न तो लड़का और न ही लड़के के किसी वारिस ने अभी तक किसी तरह लड़की की खबर ली है। अल्लाह के फ़ज़ल से लड़की तीन प्रकार के इल्म (ज्ञान) से अच्छी तरह वाकिफ़ है और लड़का बिल्कुल जाहिल है, इल्म से कोई सरोकार नहीं है। न ही लड़के की तरफ़ से किसी ने लड़की का हाल-चाल पूछा है। इन सभी कारणों से अब लड़की कहती है कि "हम पहले शौहर को तलाक देकर दूसरा निकाह करेंगे।" क्या लड़की पहले शौहर को तलाक देकर दूसरा निकाह कर

सकती है या नहीं? और क्या उस पर तलाक वाजिब (अनिवार्य) होगा या नहीं? हुज़ूर इस मसले पर मार्गदर्शन प्रदान करें ताकि यदि लड़की दूसरा निकाह करे और लड़के की तरफ़ से कोई कानूनी कार्रवाई या मुक़दमा आदि हो, तो हमें इस मसले को पेश करना होगा। हम पूरी कोशिश करेंगे और खर्च आदि के लिए जो कुछ भी आप कहें, गुलाम सेवा के लिए हाज़िर है।

अल-जवाब (उत्तर):

यहाँ फ़तवे के लिए कोई खर्च नहीं लिया जाता और न ही इसे अपने लिए जायज़ समझा जाता है। तलाक देना औरत के..

---

1. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/297।
2. जद-उल-मुहतार, हाशिया रद-उल-मुहतार, बाब-उल-वली, हाशिया, अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, 2/345।

पृष्ठ 663/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

اسی میں ہے:

لابد حینئذ لصحہ العقد من رضاہ صریحاً وعلیہ فلو سکت قبلہ ثم رضی بعدہ لایفید فلیتأمل اہ وکتبت علیہ جزم بہ فی الخیریۃ تبعاً للبحر والوجہ فی ماسندکرہ الخ۔

اس لئے اس عقد کی صحت کے لئے ولی کا صراحۃً اظہار رضامندی کرنا ضروری ہے اور اسی بناپر اگر پہلے وہ خاموش رہا اور بعد میں راضی ہوا تو نکاح کے بعد کی رضا معتبر نہیں ہے، غور چاہئے اھ، اس پر میں نے حاشیہ لکھا، خیریہ میں اس پر جزم بحر کی اتباع میں کیا ہے اور وجہ وہی ہے جو ہم ذکر کریں گے الخ۔ (ت)

یہاں رضائے ولی غیر کفو جان کر نہ تھی بلکہ کفو سمجھ کر لہذا اصلا معتبر نہیں۔ شرط انعقاد نہ پائی گئی اور نکاح بالکل محض ہوا، زینب پر فرض ہے کہ اس سے فوراً جدا ہو جائے، اگرچہ خلوت ہو چکی ہو اور زید وہندہ پر حرام ہے کہ اسے عمرو کے یہاں بھیجیں کہ وہ نرا اجنبی بلکہ اس سے بدتر ہے نسأل اللہ العفو و العافیۃ (اللہ تعالٰی سے معافی اور عافیت کا سوال ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۹۵: از کلکتہ بھوانی پور ڈاکخانہ بھوانی پور رسہ روڈ نمبر ۱۰۹ مرسلہ شیخ حاجی نادر علی صاحب بقر قصاب ۱۵ صفر ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کی شادی چھ مہینے کی عمر میں ہوئی اور لڑکے کی عمر اس وقت پانچ برس کی تھی تب دونوں کی شادی ہو گئی اور اب لڑکی کی عمر اس وقت چودہ برس کی ہے اور لڑکا یا لڑکے کا کوئی وارث ابھی تک کسی طرح لڑکی کی خبر

نہیں لینے گئے اور لڑکی خدا کے فضل سے تین قسم کے علم سے بھی واقف اچھی طرح سے ہے اور لڑکا بالکل جاہل ہے کچھ علم سے تعلق نہیں، اور نہ لڑکے کی طرف سے کوئی شخص لڑکی کا پرسان حال ہوا انہی سب وجوہات سے اب لڑکی کہتی ہے کہ ہم اول شوہر کو طلاق دے کر نکاح ثانی کریں گے، لڑکی اول شوہر کو طلاق دے کر نکاح ثانی کر سکتی ہے یا نہیں؟ اور طلاق اس پر واجب ہو گی یا نہیں؟ اس مسئلے کو حضور ارشاد فرمائیں تاکہ لڑکی اگر نکاح ثانی کرے اور لڑکے کی طرف سے کوئی کارروائی مقدمہ وغیرہ کرے تو ہم کو اس مسئلہ کو پیش کرنا ہوگا خوب کوشش کر کے بلکہ جو فرمائیں خرچ وغیرہ کے لئے تو غلام خدمت کے لئے حاضر ہے۔

الجواب:

یہاں فتویٰ پر کوئی خرچ نہیں لیا جاتا نہ اس کو اپنے حق میں روا رکھا جاتا ہے، طلاق دینا عورت کے

۱۔ ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۹۷/۲ ۲۔ جدالمحتار حاشیہ ردالمحتار باب الولی حاشیہ، المجمع الاسلامی مبارکپور ۳۴۵/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

...she has no authority, neither can she divorce her husband, nor will a divorce given by her be effective. The Great Quran states: "in whose hand is the marriage tie" [2:237] (it means the husband holds the knot of marriage - Editorial Note). In the noble Hadith it is said: "Divorce belongs to the one who takes the calf" (this is a metaphor for intercourse, meaning only he who has the right of intercourse can give divorce - Editorial Note). Details need to be known: whether the girl's marriage was performed by her father, grandfather, or someone else when she was six months old; and if someone other than the father performed it, was there any closer guardian or not? If so, who was it? And what did he say upon hearing the news before or after the marriage? At what age (year, month, date, minute) did the girl experience her first menstruation? And when (year, month, day, date, minute) did she express dissatisfaction with this marriage? What is the caste of the girl and what is that of the boy? Is the boy better, equal, or how much inferior in terms of religion, lineage, behavior, or profession? All these matters should be told truthfully on faith, then whatever the case may be, an answer will be given. Only.

Problem 396: From Jawara, sent by Maulvi Ali Sahib, Imam of Masjid Chhippan, 27 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Hindah (a minor female)'s father, Zaid, was at a distance of about a thousand miles. Her mother and uncle, Bakr, with the written permission of Hindah's father, informed the Mufti of the city and performed the marriage with Khalid. Two and a half months after the marriage, Zaid returned home. Khalid then hosted a feast for his father-in-law, and Zaid expressed his consent to the marriage at the feast. For four and a half months, traditions like Eid gifts and other son-in-law/father-in-law rituals were maintained with Khalid. Now, due to mutual resentment, Khalid asked Zaid to send his wife (rukhsati). Zaid claims he did not write the letter, meaning he did not give permission to his brother for the marriage, and wants to annul the marriage. Can the marriage be annulled based on the denial of the letter, despite the aforementioned rituals being practiced for four and a half months after his return? Hindah was twelve years old at the time of marriage and is now twelve and a half years old.

The Answer: In the described situation, denying the letter will not be beneficial for him. By denying the letter, it only means the previous permission will not be proven, and at most, the marriage will be considered 'Nikah-e-Fuzuli' (marriage performed without proper authority), provided this is not taken as a case of 'Ghaybat-e-Munqati'ah' (prolonged absence) as we have detailed in our Fatawa (as we have

detailed in our Fatawa - Editorial Note). However, a Nikah-e-Fuzuli becomes effective and binding after subsequent approval, and subsequent approval is like prior authorization, as stated in Fatawa al-Khayriyya and others (as stated in Fatawa al-Khayriyya and others - Editorial Note). And Allah Almighty knows best.

---

1 Al-Quran 2/237 2 Sunan Ibn Majah, Book of Divorce, Chapter on Divorce of a Slave, H.M. Saeed Company Karachi 1/152

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

...उसे कोई अधिकार नहीं है, न तो वह पति को तलाक़ दे सकती है और न ही उसके द्वारा दी गई तलाक़ प्रभावी होगी। महान क़ुरआन में फ़रमाया गया: "जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है" [2:237] (अर्थात् पति के हाथ में निकाह की गिरह है - संपादन नोट)। हदीस शरीफ़ में है: "तलाक़ उसी का है जो पिंडली पकड़ता है" (यह संभोग के लिए एक संकेत है, यानी तलाक़ वही दे सकता है जिसे संभोग का अधिकार है - संपादन नोट)। इसकी विस्तृत जानकारी होनी चाहिए कि लड़की का निकाह छह महीने की उम्र में उसके पिता ने किया था या दादा ने या किसी और ने; और पिता के अलावा जिसने किया, क्या उससे निकटतर कोई संरक्षक (वली) था या नहीं? यदि था, तो कौन था? और उसने निकाह से पहले या बाद में खबर सुनकर क्या कहा? लड़की को पहला मासिक धर्म किस वर्ष, किस महीने, किस तारीख और किस मिनट पर आया? और उसने इस निकाह से अपनी नाज़ारागी का इज़हार किस वर्ष, किस महीने, किस दिन, तारीख और मिनट पर किया? लड़की की जाति क्या है और लड़के की क्या है? लड़का धर्म, वंश, आचरण या पेशे में बेहतर है, बराबर है या कितना कमतर है? ये सभी बातें ईमानदारी से सच-सच बताई जानी चाहिए, तो जो भी मामला होगा, उसका उत्तर दिया जाएगा। फ़क़त।

मसला 396: जावरा से, प्रेषक मौलवी अली साहब, इमाम मस्जिद छीपान, 27 सफ़र 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: हंदा (नाबालिग लड़की) के पिता ज़ैद लगभग एक हज़ार मील की दूरी पर थे। माता और चाचा बक्र ने हंदा के पिता की लिखित अनुमति प्राप्त कर और शहर के मुफ़्ती को सूचित कर स्वयं खालिद के साथ निकाह कर दिया। निकाह के ढाई महीने बाद ज़ैद अपने घर आया। तब खालिद ने अपने ससुर को दावत दी और ज़ैद ने दावत की महफ़िल में निकाह पर अपनी सहमति ज़ाहिर की। साढ़े चार महीने तक ईदी और दामाद-ससुर के अन्य रीति-रिवाज खालिद के साथ निभाए गए। अब आपसी अनबन के कारण खालिद ने ज़ैद से अपनी पत्नी की विदाई (रुख़सती) के लिए कहा। ज़ैद कहता है कि मैंने पत्र नहीं लिखा था, यानी निकाह करने की अनुमति अपने भाई को नहीं दी थी, और वह निकाह रद्द करना चाहता है। क्या पत्र के इनकार के आधार पर निकाह रद्द किया जा सकता है, जबकि वापसी के साढ़े चार महीने बाद तक उपर्युक्त रीति-रिवाज निभाए गए हों? निकाह के समय हंदा की आयु बारह वर्ष थी और अब साढ़े बारह वर्ष है।

अल-जवाब: वर्णित स्थिति में, पत्र से इनकार करना उसके लिए लाभदायक नहीं होगा। पत्र के इनकार से केवल इतना होगा कि पिछली अनुमति सिद्ध नहीं होगी, और अधिक से अधिक निकाह

'निकाह-ए-फ़ुज़ूली' (बिना अधिकार के किया गया निकाह) माना जाएगा, बशर्ते इसे 'ग़ैबत-ए-मुनक़तिआ' (लंबी अनुपस्थिति) का मामला न माना जाए (जैसा कि हमने अपने फ़तावा में विस्तार से बताया है - संपादन नोट)। लेकिन निकाह-ए-फ़ुज़ूली बाद की अनुमति से प्रभावी और अनिवार्य हो जाता है, और बाद की अनुमति पिछली वकालत की तरह ही है (जैसा कि फ़तावा अल-खैरिया आदि में उल्लेख है - संपादन नोट)। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

---

1 अल-क़ुरआन 2/237 2 सुनन इब्न माजा, किताबुत्तलाक़, बाब तलाक़ुल अब्द, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/152

اختیار نہیں ، نہ وہ شوہر کو طلاق دے سکتی ہے نہ اس کے دئے طلاق پڑسکتی ہے ، قرآن عظیم میں فرمایا : بِیَدِہٖ عُقْدَۃُ النِّکَاحِ (اسی (خاوند) کے ہاتھ میں نکاح کی گرہ ہے۔ت) حدیث شریف میں ہے : الطلاق لمن اخذ الساق (یہ جماع سے کنایہ ہے یعنی طلاق وہی دے سکتا ہے جو جماع کا مالک ہے۔ت) اس کی تفصیل معلوم ہونی چاہئے کہ لڑکی کا نکاح چھ مہینے کی عمر میں اس کے باپ نے کیا یا دادا نے یا اور کسی نے اور باپ کے سوا جس نے کیا اس سے قریب تر کوئی ولی تھا یا نہیں، تھا تو کون تھا، اور اس نے قبل نکاح یا بعد نکاح خبر سن کر کیا کہا، لڑکی کو پہلا عارضہ ماہواری کس سال کس مہینے کون تاریخ کے کس منٹ پر آیا، اور اس نکاح سے ناراضی کا اظہار اس نے کس سال کس مہینے کس دن تاریخ کے کس منٹ پر کیا لڑکی کی قوم کیا ہے اور لڑکے کی کیا، لڑکا مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشے میں بہتر یا برابر یا کتنا کمتر ہے ، یہ سب باتیں ایماناً سچی سچی بتائی جائیں، تو جو صورت واقعہ ہو اس کا جواب دیا جائے گا۔فقط

مسئلہ ۳۹۶: از جاو رہ مرسلہ مولوی صاحب علی صاحب امام مسجد چھیپان ۲۷ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نابالغہ کا والد زید قریباً ایک ہزار میل کی مسافت پر تھا، والدہ اور چچا بکر نے رضامند ہو کر ہندہ کے والد کی تحریری اجازت حاصل کر کے مفتی شہر کو بتا کر خود نکاح خالد کے ساتھ کردیا، نکاح کے ڈھائی مہینے بعد زید اپنے مکان پر آیا، چنانچہ خالد نے اپنے خسر کی دعوت دی اور زید نے جلسہ دعوت میں نکاح کی رضامندی ظاہر کی، ساڑھے چار ماہ تک رسومات عیدی و دیگر رسومات دامادی خسری خالد کے ساتھ رکھے، اب باہمی رنجش ہونے پر خالد نے زید سے اپنی زوجہ رخصت کرنے کو کہا، زید کہتا ہے میں نے خط نہیں لکھا تھا، یعنی نکاح کرنے کی اجازت اپنے بھائی کو نہیں دی تھی، اور نکاح فسخ کرنا

چاہتا ہے، تو کیا اس خط کے انکار سے باوجودیکہ بعد آجانے کے ساڑھے چار ماہ تک رسومات مذکورہ برتے گئے نکاح فسخ ہوسکتا ہے؟ ہندہ کی عمر وقت نکاح بارہ برس کی تھی اور اب ساڑھے بارہ برس ہے۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں انکار خط سے اسے کچھ مفید نہیں انکار خط سے اتنا ہوا کہ اجازت سابقہ ثابت نہ ہوگی اور غایت درجہ نکاح نکاحِ فضولی ٹھہرے گا اگر یہ صورت غیبت منقطعہ کی نہ لی جائے علیٰ ما فصلناہ فی فتاوٰینا (جس طرح ہم نے اس کی تفصیل اپنے فتاویٰ میں کی ہے۔ت) مگر نکاح فضولی بعد اجازت نافذ ولازم ہے اور اجازت لاحقہ مثلِ وکالت سابقہ کما فی الفتاوٰی الخیریۃ و غیرہا (جیساکہ فتاویٰ خیریہ وغیرہ میں ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 القرآن ۲/۲۳۷ 2 سنن ابن ماجہ کتاب الطلاق باب طلاق العبد ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵۲

Fatawa Rizvia, Volume 11

Problem 397: From Aligarh, Mohalla Biram Baig, Arabic Madrasa Aisha Khatoon, sent by Muhammad Siddiq Hussain Sahib, 28 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid performed the marriage of his niece while she was a minor. When she reached puberty, she refused this marriage and refused to go to her husband's house. Now, does this girl's marriage remain intact or not, and can her marriage be performed elsewhere or not? And will the dower (mahr) be mandatory? Please explain, may you be rewarded.

The Answer: This matter concerns the lawful and the prohibited, rather marriage and adultery. Fear Allah, and act upon the ruling based on the actual facts. Taking a fatwa based on a false statement will not benefit in the Hereafter, nor will it make adultery lawful. The ruling for a marriage performed by someone other than the father or grandfather into an equal (Kufu) is that the minor girl can refuse it immediately upon reaching puberty without any delay. If she delayed even a little, the marriage became binding, and she no longer has the right to refuse. Immediate refusal without any delay is very rare. Fearing the One and Wrathful Allah, and considering adultery as most evil and vile, look into it: if the girl refused this marriage at the very hour, minute, or second she saw her first menstruation, then certainly she can file a claim to annul it, provided it was into an equal (Kufu). And if the uncle married her to a non-equal, who at the time of marriage was so inferior in terms of religion, lineage, conduct, or profession that marriage with him would be a cause of shame and disgrace for her, then the marriage did not take place at all. What is the need for annulment? And Allah Almighty knows best.

Problem 398: 1st Rabi' al-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Saeeda Bibi's first marriage took place in village Gora with Bashir-ud-Din. A girl was born. When the girl was about one and a half years old, she was separated from paternal protection (her father died). Now the widow came to her father and brothers with her daughter. After four and a quarter years, her second marriage took place in village Kargahna with Abdus Samad. The second husband had a son from a previous wife who was six years old. By means of extreme harshness, severity, and a thousand threats and rebukes, permission was taken from the Bibi, and the marriage of his son was forcibly performed with the daughter who had come with the second wife, who was six years old. The girl had no paternal uncle or brother, only a paternal uncle and cousin, and two paternal aunts, a maternal grandfather, and maternal uncles were present, but they were not there nor

informed. When the girl reached the age of puberty and it manifested, she immediately cried out, meaning she didn't even let a minute pass, saying "I do not wish to go to my husband's place in any way and will never go." This happened at seven or eight o'clock in the morning, and respected individuals are witnesses.

The Answer: In the question, the phrase "she immediately cried out" is a result of hearing the Shariah ruling, and its further explanation that "meaning even a minute..."

फ़तावा रज़विया, जिल्द ११

मसला ३९७: अलीगढ़, मोहल्ला बीरम बेग, अरबी मदरसा आयशा खातून से, प्रेषक मुहम्मद सिद्दीक हुसैन साहब, २८ सफ़र १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी भतीजी का निकाह उसके नाबालिग होने की स्थिति में कर दिया। जब वह बालिग हुई, तो उस लड़की ने इस निकाह और शौहर के घर जाने से इंकार कर दिया। अब इस लड़की का निकाह बाक़ी है या नहीं और क्या दूसरी जगह उसका निकाह हो सकता है या नहीं? और क्या महर वाजिब होगा? बयान फ़रमाएं पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: यह मामला हलाल और हराम का है, बल्कि निकाह और ज़िना का है। अल्लाह से डरें, और जो वास्तविक बात हो उस पर अमल करें। ग़लत बयान पर फ़तवा लेना हश्र (क़यामत) में कोई लाभ नहीं देगा और न ही ज़िना को हलाल कर देगा। पिता या दादा के अलावा किसी अन्य द्वारा बराबर (कुफ़ू) में किए गए निकाह का हुक्म यह है कि नाबालिग लड़की बालिग होते ही तुरंत बिना किसी देरी के इंकार कर सकती है। यदि उसने थोड़ी सी भी देरी की तो निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो गया और अब उसे इंकार करने का कोई अधिकार नहीं है। यहाँ तुरंत, बिना किसी देरी के इंकार करना बहुत दुर्लभ है। एक और क़हार (प्रलयकारी) अल्लाह से डरकर और ज़िना को अत्यंत बुरा और घिनौना समझकर देखें, यदि बालिग लड़की ने जिस घंटे, मिनट, सेकंड में उसे पहला मासिक धर्म आया, तुरंत उसी समय उस निकाह से इंकार कर दिया, तो वह निश्चित रूप से दावा करके उसे रद्द करवा सकती है, बशर्ते कि वह बराबर (कुफ़ू) में हुआ हो। और यदि चाचा ने ग़ैर-कुफ़ू (जो बराबर न हो) से निकाह किया हो, जो निकाह के समय धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना कमतर था कि उससे निकाह उसके लिए शर्म और अपमान का कारण हो, तो निकाह सिरे से हुआ ही नहीं, फिर रद्द करने की क्या आवश्यकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ३९८: १ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि सईदा बीबी का पहला निकाह मौज़ा गोरा में बशीर-उद्दीन के साथ हुआ, एक लड़की पैदा हुई। जब लड़की लगभग डेढ़ साल की हुई तो पिता का साया उठ गया। अब विधवा अपनी लड़की को लेकर पिता और भाइयों के यहाँ आ गई। सवा चार साल बाद दूसरा निकाह मौज़ा करगहना में अब्दुल समद से हुआ। दूसरे शौहर का एक लड़का था जिसकी उम्र छह साल थी, जो पहली पत्नी से था। अत्यंत कठोरता और दबाव के साथ और हज़ारों धमकियों के साथ बीबी से अनुमति लेकर अपने लड़के का निकाह दूसरी पत्नी के साथ आई लड़की से, जिसकी उम्र छह साल थी, ज़बरदस्ती करा दिया गया।

लड़की का कोई सगा चाचा या भाई नहीं था, केवल चचेरे भाई और दो सगी फूफियां, और सगे नाना और मामा मौजूद थे पर वहाँ नहीं थे और न ही उन्हें कोई सूचना दी गई। जब लड़की बालिग हुई और इसका आभास हुआ, तो वह तुरंत चिल्ला उठी, यानी एक मिनट भी पूरा नहीं होने दिया कि "मुझे शौहर के यहाँ किसी भी तरह जाना स्वीकार नहीं है और मैं कभी नहीं जाऊंगी।" यह सुबह सात या आठ बजे की घटना है, सम्मानित व्यक्ति इसके गवाह हैं।

जवाब: सवाल में यह वाक्य कि "तुरंत चिल्ला उठी" शरीयत का हुक्म सुनने का परिणाम है और आगे इसकी व्याख्या कि "यानी मिनट भी..."

पृष्ठ ७३९ का ६६५

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۳۹۷: از علی گڑھ محلہ بیرم بیگ مدرسہ عربی عائشہ خاتون مرسلہ محمد صدیق حسین صاحب ۲۸ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بھتیجی کا نکاح اس کی نابالغی میں کر دیا۔ جس وقت وہ بالغ ہوئی اس وقت اس لڑکی نے اس نکاح اور شوہر کے مکان جانے سے انکار کیا ، اب اس لڑکی کا نکاح باقی ہے رہا یا نہیں اور دوسری جگہ اس کا نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ اور مہر لازم آوے گا؟ بینوا توجروا

الجواب: یہ معاملہ حلال و حرام بلکہ نکاح و زنا کا ہے، اللہ سے ڈریں، اور جو واقعی بات ہو اس کے حکم پر عمل کریں، غلط بیان پر فتوی لینا حشر میں نفع دے گا نہ زنا کو حلال کر دے گا، غیر اب وجد نے جو نکاح کفوم سے کیا ہو اس کا حکم یہ ہے کہ نا بالغہ بفور بلوغ معا بلا تاخیر انکار کر سکتی ہے اور ذرا بھی دیر لگائی تو نکاح لازم ہو گیا انکار کا اصلاً اختیار نہیں اور یہاں فوراً محض بلا تاخیر بہت نادر ہے، اللہ واحد قہار سے ڈر کر زنا کو نہایت بدتر خبیث سمجھ کر دیکھیں اگر بالغہ نے جس گھنٹے منٹ سیکنڈ میں اسے پہلا حیض آیا تو فوراً فوراً معاً معاً اسی وقت اس نکاح سے انکار کیا تو البتہ وہ دعوی کر کے اس کو فسخ کر سکتی ہے بشر طیکہ کفوم سے ہوا ہو، اور اگر چچانے غیر کفو سے کیا جو مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ میں وقت نکاح ایسا کم تھا کہ اس سے نکاح اس کے لئے باعث ننگ وعار ہو تو نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں فسخ کی کیا ضرورت ہے۔ واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۳۹۸: یکم ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ سعیدہ بی بی کا عقد اول موضع گورا میں بشیر الدین کے ساتھ ہوا، ایک لڑکی پیدا ہوئی، جب لڑکی قریب

ڈیڑھ سال کی ہوئی سایہ پدری سے جدا ہوا، اب بیوہ اپنی لڑکی کو لے کر باپ اور بھائیوں کے یہاں آرہی، سوا چار برس کے بعد نکاح ثانی موضع کر گہنا میں عبد الصمد سے ہوا، خاوند دیگر کا ایک لڑکا جس کی عمر چھ سال کی تھی بیوی سابق سے تھا بصد سختی و تشدد و بہزار زجر و توبیخ بی بی سے اذن لے کر اپنے لڑکے کا عقد بیوی ثانی کے ہمراہ جو لڑکی آئی تھی جس کی عمر چھ سال کی تھی جبریہ کرا دیا گیا، لڑکی کا نہ کوئی چچانہ بھائی صرف چچا اور چچازاد بھائی اور دو پھوپھیاں حقیقی اور نانا اور ماموں حقیقی ہیں اور وہاں موجود نہ تھے اور نہ اطلاع، جب لڑکی سن بلوغ کو پہنچی اور اس کا اظہار ہوا فوراً پکار اٹھی یعنی منٹ بھی پورا نہ ہونے دیا کہ مجھ کو شوہر کے یہاں کسی نوع جانا منظور نہیں اور ہر گز نہ جاؤں گی، دن کے سات یا آٹھ بجے کا واقعہ ہے معزز اشخاص شاہد ہیں۔

الجواب: سوال میں یہ فقرہ کہ فوراً پکار اٹھی حکم شرعی سننے کا نتیجہ ہے اور آگے اس کی تفسیر نے کہ یعنی منٹ بھی

Fatawa Ridawiya - Volume 11

...did not let it be completed and spoiled it again.

[Arabic Box]: For if even a whole minute or two seconds remained, it would be true to say it was not completed, but where is the immediacy? [Urdu explanation]: Because if one or two seconds were left in a minute, it could be said that the minute was not complete, but this is not immediate. (T)

This matter concerns the permissibility and prohibition of marriage and adultery. Obtaining a ruling by fabricating a story will not save one from adultery. Furthermore, even if all Shariah conditions are met, a marriage is not annulled just by the woman's word; rather, she has the right to file a claim. She should file a claim before an authorized judge, who will take evidence through a Shariah investigation with reliable witnesses. Once the proof is established, the judge will annul the marriage; it cannot happen otherwise. And Allah the Almighty knows best.

Problem 399: From Lahore City, Anarkali Bazaar, Madrasa Ta'lim-ul-Quran, via Maulvi Ahmaduddin Sahib, sent by Maulvi Qazi Ghulam Gilani Sahib, 5th Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH.

To the Honorable Master, Scholar of Ahl-e-Sunnat-o-Jama'at, Reviver of the present century, may his excellence increase. After humble respects and devotion, it is stated in Durr-e-Mukhtar, Chapter of the Guardian (Bab-ul-Wali):

[Arabic Box]: The guardian has the right to object in the case of a non-equivalent (ghayr-kufu) match as long as a child is not born, lest the child be lost (their lineage be affected). [Urdu explanation]: The guardian has the right of objection in a non-equivalent match as long as a child is not born (not after that), so that the child's lineage is not wasted. (T)

It is written in Tahtawi, Abul Makarim, Hashiyah Sharh-ul-Wiqayah, Binayah 'ala al-Hidayah, Hashiyah Shalbi 'ala al-Zayla'i, and Hindiyyah that according to Zahir-ur-Riwayah, even after birth, the guardian has the right to object for annulment. And according to the Mufta Biha (the preferred) narration of Imam Hasan (may Allah have mercy on him), the ruling of the nullity of the marriage remains from the beginning. From this, it is understood that childbirth does not waive the right of the guardians, and this is also the aim of this humble servant. Although it will cause trouble to your presence, your presence's trust and time are dedicated to this work. For the proof of separation and objection after birth, it is better to obtain as much authentication as

possible from your presence, provided that this servant's belief matches the belief of the high-ranking servants, otherwise it's fine. This servant has claimed the proof of separation even if a child is born (Urdu: and if a child is born - T), and the Maulvis on the other side are against it. Today is the 26th of this English month, and on the 8th of the coming month of December, it is scheduled before the judge in Lahore. This humble servant also has to go. Syeda Zadi.

1. Durr-e-Mukhtar, Bab-ul-Wali, Mujtabai Press Delhi, 1/191.

फ़तावा रिज़विया - जिल्द ग्यारहवीं

...पूरा न होने दिया कि उसे फिर बिगाड़ दिया।

[अरबी बॉक्स]: क्योंकि अगर एक मिनट में से एक या दो सेकंड शेष रहते तो कहा जा सकता था कि मिनट पूरा नहीं हुआ, लेकिन यह 'तुरंत' (फ़ौरी) नहीं है। उर्दू स्पष्टीकरण: क्योंकि अगर एक मिनट में से एक या दो सेकंड शेष रहते तो कहा जा सकता था कि मिनट पूरा नहीं हुआ, लेकिन यह तुरंत नहीं है। (त)

यह मामला हलाल और हराम निकाह और ज़िना का है। बात बनाकर कोई हुक्म (आदेश) ले लेना ज़िना से नहीं बचाएगा। फिर अगर तमाम शरई शर्तें पूरी भी हो जाएं तो औरत के कहने से निकाह रद्द (फ़स्ख़) नहीं हो जाता, बल्कि उसे दावे का अधिकार मिलता है। वह सक्षम अधिकारी (हाकिम) के यहाँ दावा करे, वह विश्वसनीय गवाहों से शरई जाँच-पड़ताल करके सबूत ले। जब सबूत हो जाए, तो हाकिम निकाह रद्द करे, वैसे नहीं हो सकता। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 399: लाहौर सिटी, अनारकली बाज़ार, मदरसा तालीम-उल-कुरआन, मारफत मौलवी अहमद उद्दीन साहब, प्रेषक जनाब मौलवी क़ाज़ी ग़ुलाम गिलानी साहब, 5 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी।

जनाब मुस्तताब हज़रत आलिम-ए-अहल-ए-सुन्नत-ओ-जमाअत मुजद्दिद-ए-माइत-ए-हाज़रा (ज़ैद फ़ज़्लुहुम) की सेवा में, नियाज़मंदी और अक़ीदत के साथ। दुर्रे मुख़्तार, बाब-उल-वली में है:

[अरबी बॉक्स]: वली (संरक्षक) को ग़ैर-कुफ़ू (असमान कुल) में निकाह पर आपत्ति करने का अधिकार है जब तक कि बच्चा पैदा न हो जाए, ताकि बच्चे का वंश (नसब) नष्ट न हो।

तहतावी, अबुल मकारिम, हाशिया शरह-उल-विकाया, बिनाया अलल हिदाया, हाशिया शल्बी अलज़-ज़ैलई और हिन्दिया में लिखा है कि 'ज़ाहिर-उर-रिवायत' के अनुसार जन्म के बाद भी वली को फ़स्ख़ (निरस्त करने) के लिए आपत्ति का अधिकार है। और इमाम हसन (रहमतुल्लाह अलैहि) की 'मुफ़्ता बिहा' रिवायत के अनुसार शुरू से ही निकाह के बातिल (अमान्य) होने का हुक्म बाक़ी है। इससे पता चलता है कि जन्म, वली के अधिकार को समाप्त नहीं करता, और यही इस सेवक (ख़ादिम-उल-अक़दाम) का उद्देश्य भी है। इस मामले में हुज़ूर को कष्ट तो होगा, लेकिन हुज़ूर का तवक्कुल और समय इसी काम के लिए समर्पित है। जन्म के बाद अलगाव (तफ़रीक़) और आपत्ति के सबूत के लिए

हुज़ूर से जहाँ तक पुष्टि (तौसीक़) हो सके बेहतर है, बशर्ते कि इस सेवक की आस्था उच्च श्रेणी के सेवकों की आस्था के अनुरूप हो, अन्यथा ठीक है। सेवक ने जन्म के बाद भी अलगाव के सबूत का दावा किया है 'व-इन वलदत' (और अगर बच्चा पैदा हो जाए - त) और दूसरी ओर के मौलवी लोग इसके विरोध में हैं। आज इस अंग्रेज़ी महीने की 26 तारीख है और आगामी दिसंबर महीने की 8 तारीख को लाहौर में जज के पास पेशी तय है, इस फ़क़ीर को भी जाना होगा। सैयदा ज़ादी।

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/191.

पृष्ठ 666 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

پورا نہ ہونے دیا کہ اسے پھر بگاڑ دیا۔

فانہ ان بقی تمام الدقیقۃ اوثانیتین صدق انھالم تتم ولکن این الفور۔ کیونکہ اگر منٹ میں سے ایک سیکنڈ یا دو سیکنڈ رہتے تو کہا جاسکتا ہے کہ منٹ پورا نہ ہو، لیکن یہ فوراً نہیں ہے۔ (ت)

یہ معاملہ حلال وحرام نکاح وزنا کا ہے، بات بنا کر کچھ حکم لے لینا زنا سے نہ بچالے گا، پھر اگر تمام شرائط شرعیہ متحقق ہو بھی لیں تو عورت کے کہے سے نکاح فسخ نہیں ہو جاتا بلکہ اس کو دعوی کا اختیار ملتا ہے حاکم مجاز کے یہاں دعوی کرے، وہ تحقیق شرعیہ کا گواہان عادل سے ثبوت لے، جب ثبوت ہو جائے تو حاکم نکاح فسخ کرے ویسے نہیں ہو سکتا، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۹۹: از لاہور سٹی بازار انار کلی مدرسہ تعلیم القرآن معرفت مولوی احمد الدین صاحب مرسلہ جناب مولوی قاضی غلام گیلانی صاحب ۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ

بجناب مستطاب حضرت عالم اہلسنت و جماعت مجدد مائتہ حاضرہ زید فضلم بعد نیاز مندی عقیدت مندانہ در مختار باب الولی میں ہے:

وللولی الاعتراض في غیر الکفو مالم یلد لئلا یضیع الولد ۱۔ ولی کو غیر کفو میں اعتراض کا حق ہے جب تک بچہ پیدا نہ ہو (اس کے بعد نہیں) تاکہ بچے کا نسب ضائع نہ ہو، (ت)

طحطاوی و ابوالکارم حاشیہ شرح وقایہ وبنایہ علی الہدایہ وحاشیہ شلبی علی الزیلعی و ہندیہ میں لکھا کہ بعد ولادت بھی بناء بر ظاہر الروایات ولی کو اعتراض ہے فسخ کے لئے، اور امام حسن رحمہ اللہ تعالٰی علیہ کی روایت مفتی بہا پر ابتداء ہی سے بطلان نکاح کا حکم باقی ہے، اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ولادت، حق اولیا کی مسقط نہیں اور یہی خادم الاقدام کا مقصود بھی ہے، اس بارہ

میں حضور کو تکلیف تو ہوگی مگر حضور کے توکل اوقات ہی اس کام کے لئے وقف ہیں، ثبوت تفریق و اعتراض بعد الولادۃ کے لئے حضور سے جہاں تک توثیق ہو سکے بہتر ہے بشر طیکہ خادم کا اعتقاد خدام عالی شان کے اعتقاد سے مطابق ہو ورنہ خیر، خادم نے ثبوت تفریق کا دعوی کیا ہے وان ولدت (اور اگر بچہ پیدا ہو جائے ۔ ت) اور دوسری جانب کے مولوی لوگ اس کے عدم پر ہیں، آج ۲۶ اس مہینے انگریزی اور آئندہ دسمبر مہینے کی ۸ لاہور میں حج کے پاس مقرر ہے فقیر کو بھی جانا ہوگا، سید زادی

۱ در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۱

Fatawa Razawiya Volume 11

The case is that a non-Sayyid, non-Qurayshi man has performed a marriage, and during the litigation, a child has also been born. On the other hand, some scholars say that declaring the marriage of Alawi women (descendants of Hazrat Ali) invalid, whether with or without the consent of the guardians, is the doctrine of the Shiites, and it is documented from the text of 'Al-Binayah':

In 'Al-Basit' it is stated: "The Shiites hold the view that the marriage of Alawi women to non-Alawis is prohibited even with mutual consent." Al-Surooji said: "Both these statements are false." (T)	**In 'Al-Basit' it is mentioned that despite consent, the marriage of Alawi (Sayyid) women with non-Sayyids is impermissible among the Shiites. Surooji said that both statements are false. (T)**

What are the two false statements referred to in "qawlan batilan" (two false statements)? This text requires explanation. May His Eminence, the Source of Grace, please send the answer to this petition to this address. If the answer arrives a day or two before the 8th, I will present this luminous writing at the assembly of scholars. It is strongly hoped that the scholars will also accept it; otherwise, the judge will accept the decision. In a situation where children were born while the case was ongoing and then died within a few days, does the right of objection still remain for the guardians or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and invoke blessings upon His Noble Messenger. To the honorable Maulana, the possessor of glory and honor and perfect grace, Maulana Qazi Ghulam Gilani Sahab, may Allah Almighty honor and exalt him. Peace be upon you, and the mercy of Allah and His blessings. From the 27th of Muharram until the 1st of Rabi-ul-Awwal, I suffered from bouts of fever, some of which were very severe. Now, by the blessing of your prayers, the fever has not returned for three days, but there is extreme weakness. In this state of fever, I had already prepared an answer to your previous noble question, and the treatise regarding slaughter (dhabiha) could not be completed, first due to going to Jabalpur and now because of these bouts of fever. I seek forgiveness and prayers. 'Al-Binayah' and 'Abu al-Makarim' are not with me. Shalabi on Al-Zaylai and Al-Hindiyya have quoted only from Sheikh al-Islam that the survival of the right of objection even after childbirth exists. No inclination towards

this is found in their own texts. The consensus of the elders and luminaries is upon this: "As long as she does not give birth" (until a child is born - T). It was in Zaylai:

Except when he (the guardian) remained silent until she gave birth, then it will be implied consent.	**But when the guardian remained silent until the girl gave birth to a child, then this would be consent by implication. (T)**

Upon this, Shalabi said:

1. Al-Binayah fi Sharh al-Hidayah, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Maktaba al-Imdadiyya, Makkah al-Mukarramah, 2/102.
2. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Matba'ah al-Kubra al-Amiriyya, Egypt, 2/128.

फ़तावा रज़विया खंड 11

मामला यह है कि एक गैर-सैय्यद, गैर-क़ुरैशी व्यक्ति ने निकाह कर लिया है और मुकदमेबाजी के दौरान उसका एक बच्चा भी पैदा हो गया है। दूसरी ओर, कुछ मौलवी कहते हैं कि अलवी महिलाओं (हज़रत अली के वंशज) के निकाह को अभिभावकों की सहमति या असहमति के साथ बातिल (अवैध) कहना शियाओं का मत है, और यह 'अल-बिनाया' के पाठ से प्रमाणित है:

'अल-बसीत' में है: "शियाओं का विचार है कि आपसी सहमति के बावजूद गैर-अलवियों के साथ अलवी महिलाओं का निकाह निषिद्ध है।" अल-सरूजी ने कहा: "ये दोनों कथन बातिल (झूठे) हैं।" (त)

'अल-बसीत' में है कि रज़ामंदी के बावजूद अलवियात (सैय्यदज़ादियों) का ग़ैर से निकाह शिया लोगों के यहाँ नाजायज़ है, सरूजी ने कहा कि दोनों कौल बातिल हैं। (त)

इन "कौलान बातिलान" (दो झूठे कथनों) से कौन से दो कथन मुराद हैं? इस इबारत (पाठ) की व्याख्या की आवश्यकता है। हुज़ूर फ़ैज़-उन-नूर इस अर्ज़ी का जवाब इस पते पर इर्शाद फ़रमाएं। यदि जवाब 8 तारीख से एक या दो दिन पहले पहुँच जाए, तो फकीर इस रौशन तहरीर को उलेमाओं की सभा में पेश कर देगा। पूरी उम्मीद है कि उलेमा भी मान लेंगे, वरना जज फैसला स्वीकार कर लेगा। ऐसी स्थिति में जब मुकदमा चलते-चलते बच्चे पैदा हो गए और कुछ दिनों में मर गए, तो क्या अब भी अभिभावकों को आपत्ति का अधिकार है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयालु और कृपाणुक है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं। सम्मानित मौलाना, गरिमा और सम्मान और पूर्ण अनुग्रह के स्वामी, मौलाना काजी गुलाम गिलानी साहब की सेवा में, अल्लाह तआला उन्हें सम्मानित और उच्च करे। आप पर शांति हो, और अल्लाह की दया और उसकी बरकतें हों। मुझे 27 मुहर्रम से 1 रबी-उल-अव्वल शरीफ तक बुखार के दौरे पड़े, जिनमें से कुछ बहुत गंभीर थे। अब तीन दिनों से आपकी दुआओं की बरकत से बुखार तो नहीं आया, लेकिन कमजोरी बहुत ज्यादा है। बुखार की इसी स्थिति में आपके पिछले श्रेष्ठ प्रश्न का उत्तर तैयार कर लिया था और ज़बीहा (वध) के संबंध में लेख, पहले जबलपुर जाने के कारण और अब बुखार के इन दौरों के कारण पूरा नहीं हो सका। क्षमा और प्रार्थना का प्रार्थी हूँ। 'अल-बिनाया' और 'अबू अल-मकारिम' मेरे पास नहीं हैं। अल-ज़ैलाई पर शलबी और 'हिन्दिया' में प्रसव के बाद भी आपत्ति के अधिकार के बचे रहने को केवल शेख-उल-इस्लाम से

उद्धृत किया गया है, और उनकी अपनी इबारत में इसके प्रति कोई झुकाव नहीं पाया जाता। बड़ों और दिग्गजों का मत इसी पर है कि: "जब तक बच्चा पैदा न हो जाए" (जब तक बच्चा पैदा न हो - त)। ज़ैलाई में था:

जब तक कि वह (अभिभावक) चुप न रहे यहाँ तक कि वह बच्चे को जन्म दे दे, तब यह मौन सहमति होगी।	**मगर जब वली (अभिभावक) खामोश रहा यहाँ तक कि लड़की ने बच्चे को जन्म दिया, तो यह दलालतन रज़ामंदी होगी। (त)**

इसी पर शलबी ने कहा:

1. अल-बिनाया फी शरह अल-हिदाया, कफाअत (योग्यता) पर अध्याय, मकतबा अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, 2/102।
2. तब्यीन अल-हक़ाइक, कफाअत (योग्यता) पर अध्याय, मतबा अल-कुबरा अल-अमीरिया, मिस्र, 2/128।

पृष्ठ 667/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

کہ ایک مرد غیر سید غیر قریشی نے نکاح کر لیا ہے اور مقدمہ بازی میں اس کا بچہ بھی ہو گیا ہے دوسری جانب کے مولوی کہتے ہیں کہ علویات کا نکاح مع تراضی اولیاء یا بلا تراضی باطل کہنا شیعہ کا مذہب ہے اور بنا یہ کی عبارت سے مستند ہے :

وفی البسیط ذھب الشیعۃ الی ان نکاح العلویات ممتنع علی غیر ھم مع التراضی قال السروجی وھما قولان باطلان - (ت)

بسیط میں ہے کہ رضامندی کے باوجود علویات (سید زادیوں) کا غیر سے نکاح شیعہ لوگوں کے ہاں ناجائز ہے سروجی نے کہا کہ دونوں قول باطل ہیں۔ (ت)

اس قولان باطلان سے کون سے دو قول مراد ہیں، یہ عبارت تفسیر طلب ہے، حضور فیض النور اس عریضہ کا جواب اس پتہ پر ارشاد فرمائیں، ۸ تاریخ سے اگر ایک دو روز اول جواب پہنچے تو فقیر اس تحریر منیر کا جلسہ علماء میں پیش کردے، امید تو پختہ ہے کہ علماء بھی مان لیں گے ورنہ حاکم فیصلہ تسلیم کرلے گا، ایسی حالت میں کہ مقدمہ ہوتے ہوتے اولاد پیدا ہو گئی اور چند روز میں مرگئی تو اب بھی حق اعتراض لاولیاء ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم، بملاحظہ مولانا المکرم ذی المجد والاکرام والفضل اتم مولانا قاضی غلام گیلانی صاحب اکرم اللہ تعالٰی و تکرم، السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، مجھے ۲۷ محرم سے یکم ربیع الاول شریف تک بخار کے دورے ہوئے جن میں بعض بہت شدید تھے، اب تین روز سے ببرکت دعاء جناب بخار تو نہیں آیا مگر ضعف بدرجہ غایت ہے، اسی حالت حمی میں پہلے سوال سامی کا جواب حاضر کر دیا تھا اور رسالہ درباره ذبیحہ پہلے جبل پور جانے اور اب اس بخار کے دوروں کے سبب مکمل نہ ہو سکا طالب عفو ودعا ہے بنا یہ اور

ابوالمکارم میرے پاس نہیں شلبی علی الز یلعی وہند یہ میں بعد ولادت بھی بقاء حق اعتراض صرف شیخ الاسلام سے نقل کی ہے اور اس کی طرف سے کوئی میل ان کی عبارت سے نہیں پایا جاتا اکابر و مشاہیر کا جزم اسی پر ہے کہ مالم تلد (جب تک بچہ پیدا نہ ہو ت) زیلعی میں تھا:

الا اذا سکت الی ان تلد فیکون رضا دلالۃ۔ **مگر جب ولی خاموش رہا حتی کہ لڑکی نے بچہ کو جنم دیا، تو یہ دلالتہ رضامندی ہوگی۔ (ت)**

اسی پر شلبی نے کہا:

1 البناية في شرح الهداية فصل في الكفاءة المكتبة الامدادية مكة المكرمة ۱۰۲/۲ 2 تبيين الحقائق فصل في الكفاءة مطبعة الكبرى الاميريه مصر ۱۲۸/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 11

It is narrated from Shaykh al-Islam that the right of separation remains even after childbirth. [Cited from Kamal] (T) - Kamal's text is as follows: The guardian's (Wali) silence is not considered consent unless it continues until a child is born to the girl. In that case, the guardian no longer has the right of separation. However, it is narrated from Shaykh al-Islam that he still has the right to separate even after birth. (T)

It is cited in Hindiya from the first Sharh Jami' al-Saghir of Qazi Khan: His right to annulment (Faskh) is not void even if a long time passes, until she gives birth. (T)

Then it is cited from Nihaya: Once she has given birth to a child from him, the guardians no longer have the right of annulment. (T)

The ruling mentioned there is the same. Further, as a rectification, the saying of Shaykh al-Islam is mentioned. In Tahtawi, no mention of this saying was found. A phrase from the commentator (Sharh) seemed ambiguous, suggesting that if the guardian is unaware of the marriage, he can object even after birth; this was criticized. In the text (Matn), it was: "He has the right to object as long as she has not given birth." (T) The commentator rephrased it as: "As long as he does not remain silent until she gives birth." (T) Upon this, the annotator (Muhashshi) said:

It is better to omit what is in the commentary because it is understood from it...

---

1. Hashiya Shalabi on Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Kafa'ah, Al-Matba'at al-Kubra al-Amiriyah, Egypt, 2/128.
2. Fath al-Qadir, Chapter on Kafa'ah, Maktabah Nuriyah Razawiyyah, Sukkur, 3/187.
3. Fatawa Hindiyyah with reference to Sharh Jami' al-Saghir of Qazi Khan, Chapter on Kafa'ah, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/93-292.
4. Fatawa Hindiyyah with reference to al-Nihayah, Chapter on Kafa'ah, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/293.
5. Durr-e-Mukhtar, Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on the Guardian (al-Wali), Matba' Mujtaba'i, Delhi, 1/191.
6. Durr-e-Mukhtar, Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on the Guardian (al-Wali), Matba' Mujtaba'i, Delhi, 1/191.

फतावा रज़विया, खंड 11

शेखुल इस्लाम से रिवायत है कि बच्चे के जन्म के बाद भी अलगाव (तफ़रीक़) का अधिकार है। [कमाल से उद्धृत] (त) - कमाल का पाठ इस प्रकार है: अभिभावक (वली) की चुप्पी सहमति नहीं मानी जाएगी जब तक कि लड़की के बच्चा होने तक चुप्पी जारी न रहे। उस स्थिति में, अभिभावक के पास अब अलगाव का अधिकार नहीं है। और शेखुल इस्लाम से रिवायत है कि जन्म के बाद भी उसे अलगाव का अधिकार है। (त)

हिंदिया में पहले काजी खान की 'शराह जामे अस-सगीर' से उद्धृत है: निरसन (फ़स्ख़) का उसका अधिकार ख़त्म नहीं होगा चाहे लंबा समय बीत जाए, जब तक कि वह बच्चे को जन्म न दे दे। (त)

फिर निहाया से उद्धृत है: जब उसने उससे बच्चे को जन्म दिया, तो अभिभावकों को निरसन का अधिकार नहीं है। (त)

वहां उल्लेखित नियम वही है। आगे, एक सुधार के रूप में, शेखुल इस्लाम के कथन का उल्लेख है। तहतावी में इस कथन का कोई उल्लेख नहीं मिला। टीकाकार (शारह) के एक वाक्यांश से अस्पष्टता थी कि यदि अभिभावक को विवाह की जानकारी न हो, तो वह जन्म के बाद भी आपत्ति कर सकता है; इसकी आलोचना की गई। मूल पाठ (मतन) में था: "जब तक उसने बच्चे को जन्म नहीं दिया है, उसे आपत्ति करने का अधिकार है।" (त) टीकाकार ने इसे इस प्रकार बनाया: "जब तक वह बच्चे के जन्म तक चुप नहीं रहता।" (त) इस पर हाशिये के लेखक (मुहश्शी) ने कहा:

टीका में जो है उसे हटा देना बेहतर है क्योंकि उससे यह समझ में आता है...

---

1. हाशिया शल्बी अला तब्यीन अल-हक़ाएक़, कफ़ाअत पर अध्याय, अल-मत्बअत अल-कुबरा अल-अमीरिया, मिस्र, 2/128।
2. फ़तह अल-क़दीर, कफ़ाअत पर अध्याय, मकतबा नूरियह रज़विया, सुक्कुर, 3/187।
3. फतावा हिंदिया, क़ाज़ी खान की शराह जामे अस-सगीर के हवाले से, कफ़ाअत पर अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/93-292।
4. फतावा हिंदिया, अल-निहाया के हवाले से, कफ़ाअत पर अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/293।

5. दुर्र-ए-मुख्तार, शराह तनवीर अल-अबसार, वली (अभिभावक) पर अध्याय, मत्बअ मुज्तबाई, दिल्ली, 1/191।
6. दुर्र-ए-मुख्तार, शराह तनवीर अल-अबसार, वली (अभिभावक) पर अध्याय, मत्बअ मुज्तबाई, दिल्ली, 1/191।

وعن شیخ الاسلام ان لہ التفریق بعد الولادۃ ایضا اھ | شیخ الاسلام سے منقول ہے کہ بچہ کی پیدائش کے بعد بھی تفریق کا حق ہے اھ کمال سے منقول ہے۔ (ت) کمال کی عبارت یہ ہے: لایکون سکوت الولی رضا الان سکت الی ان ولدت فلیس لہ ح التفریق وعن شیخ الاسلام ان لہ التفریق بعدالولادۃ ایضا 2- | ولی کا سکوت رضا نہیں ہوگا مگر جبکہ سکوت لڑکی کے ہاں بچہ کی پیدائش تک جاری رہا تو اب ولی کو اختیار تفریق نہیں اور شیخ الاسلام سے منقول ہے کہ اس کو ولادت کے بعد بھی تفریق کا اختیار ہے۔ (ت)

ہندیہ میں پہلے شرح جامع صغیر قاضی خاں سے نقل کیا: لا یبطل حقہ فی الفسخ وان طال الزمان حتی تلد 3- | اس کا حقِ فسخ باطل نہ ہوگا اگر چہ مدت تک وہ فسخ نہ کرے حتیٰ کہ لڑکی بچہ کو جنم دے۔ (ت)

پھر نہایہ سے نقل کیا: اذا ولدت منہ فلیس للاولیاء حق الفسخ 4- | جب لڑکی نے اپنے خاوند سے بچہ جنم دیا پھر اولیاء کو حق فسخ نہیں۔ (ت)

حکم اس میں بھی یہ ہی لکھا ہے آگے استدراگا قول شیخ الاسلام ذکر کیا اور طحطاوی میں تو اس قول کا ذکر تک نظر نہ آیا ایک عبارت شارح سے ابہام ہوتا تھا کہ اگر ولی کو خبر نکاح نہ ہو تو بعد ولادت بھی معترض ہو سکتا ہے اس پر اعتراض کردیا، متن میں تھا: لہ الاعتراض مالم تلد 5 (بچہ جننے تک اس کو اختیار ہے۔ ت) اسے شارح نے یوں بنایا: مالم یسکت حتی تلد 6 (بچے کے جنم تک خاموش نہ رہے۔ ت) اس پر محشی نے فرمایا:

الاولی حذف ما فی الشرح لانه یفهم منه | جو کچھ شرح میں ہے اس کو حذف کرنا بہتر ہے کیونکہ اس سے یہ

---

1 حاشیه شلبی علی تبیین الحقائق فصل فی الکفاءة مطبعة الکبری الامیریه مصر ۱۲۸/۲ 2 فتح القدیر فصل فی الکفاءة مکتبه نوریه رضویه سکهر ۳/ ۱۸۷ 3 فتاویٰ هندیه بحواله شرح جامع الصغیر قاضیخان باب الکفاءة نورانی کتب خانه پشاور ۱/ ۲۹۲-۹۳ 4 فتاویٰ هندیه بحواله النهایه باب الکفاءة نورانی کتب خانه پشاور ۱/ ۲۹۳ 5 در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ 6 در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

'Indeed, that is based on knowledge. If it were without knowledge, he would have the right to object even if she had given birth, although the reasoning (illa) denies that. Therefore, it is better to leave the author's statement in its literal sense; so ponder over it.' (T)

According to the Rawafid (Shia), no non-Alawi Qurayshi is a kufu (equal) for an Alawi woman. According to us, "Quraysh are equals of each other." I do not have the book 'Binayah' with me to know the second opinion. This situation that occurred here, that the guardian had already filed a claim for separation and after that the birth occurred, is full of disagreement regarding the waiver of the right to separation. Silence until birth was considered a waiver, which was not found here as the claim was filed before birth. Then what is the need for these complications when the fatwa-issued position is absolute invalidity and non-conclusion of the marriage? Peace be upon you.

Problem 400: From Shehsaram, Shahabad district, Shah Jumu'ah neighborhood, sent by Sheikh Abdul Wahid Sahib, 25 Rabi' al-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter: a person died leaving behind a wife Zainab and two minor daughters Hind and Kulthum, and one father Khalid. Who will be the guardian (wali) of these two minor daughters?

The Answer: The guardian for the property and marriage of all these daughters is their grandfather Khalid, provided their father did not entrust the care and supervision of his children or property to someone. Otherwise, that person would be the executor (wasi) and guardian of the daughters' property. However, the guardian for marriage in any case is Khalid. It is stated in Durr al-Mukhtar:

'His guardian is his father, then his executor (wasi) after his death, then his executor's executor, then their paternal grandfather, and so on upwards in sequence.' (T)

In the same book it is stated:

'The guardian in marriage is the agnate (asaba bi-nafsihi) according to the order of inheritance. An executor (wasi) does not have the authority to marry off an orphan at

all, even if the father made a will to him to that effect; this is the position of the school of law (madhhab).' And Allah Almighty knows best. (Summarized) (T)

1. Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/26 & 27.
2. Durr al-Mukhtar, Book of the Authorized (al-Ma'dhun), Mujtabai Press, Delhi, 2/203.
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Mujtabai Press, Delhi, 1/193-94.

'बेशक, यह ज्ञान पर आधारित है। यदि यह बिना ज्ञान के होता, तो उसे आपत्ति का अधिकार होता भले ही उसने बच्चे को जन्म दिया हो, हालाँकि इल्लत (कारण) इसका निषेध करती है। इसलिए, लेखक के कथन को उसके शाब्दिक अर्थ पर ही रहने देना बेहतर है; इस पर विचार करें।' (त)

रफ़ाज़ियों (शियाओं) के अनुसार, कोई भी गैर-अलवी कुरैशी किसी अलवी महिला का कुफ़ू (समान) नहीं है। हमारे अनुसार "कुरैशी एक-दूसरे के समान हैं"। मेरे पास 'बिनाया' पुस्तक नहीं है कि दूसरी राय जान सकूँ। यहाँ जो स्थिति उत्पन्न हुई कि वली (अभिभावक) विच्छेद (अलगाव) का दावा कर चुका था और उसके बाद जन्म हुआ, यह विच्छेद के अधिकार की समाप्ति के संबंध में मतभेदों से भरा है। जन्म तक मौन रहना [अधिकार त्याग] माना जाता था, जो यहाँ नहीं पाया गया क्योंकि जन्म से पहले ही दावा दायर किया जा चुका था। फिर इन पेचीदगियों की क्या आवश्यकता है जब फ़तवा पूर्णतः अमान्यता और निकाह के संपन्न न होने पर है, वस्सलाम।

मसला 400: शहसराम, जिला शाहबाद, मोहल्ला शाह जुम्मा से, शेख अब्दुल वाहिद साहब द्वारा प्रेषित, 25 रबीउल अव्वल शरीफ 1338 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई और उसने एक पत्नी ज़ैनब और दो नाबालिग बेटियों हिंद और कुलसुम, और एक पिता खालिद को छोड़ा। इन दोनों नाबालिग बेटियों का वली (अभिभावक) कौन होगा?

अल-जवाब: इन सभी बेटियों के धन और निकाह का वली उनका दादा खालिद है, बशर्ते उनके पिता ने अपनी संतान या संपत्ति की देखभाल और देखरेख किसी और को न सौंपी हो। अन्यथा, वह व्यक्ति वसीयतदार (वसी) और बेटियों की संपत्ति का वली होगा। लेकिन निकाह का वली हर हाल में खालिद ही होगा। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

'उसका वली उसका पिता है, फिर उसकी मृत्यु के बाद उसका वसी (वसीयतदार), फिर वसी का वसी, फिर उनका दादा, क्रमवार ऊपर तक।' (त)

इसी पुस्तक में है:

'निकाह का वली विरासत के क्रम के अनुसार अस्बा बि-नफ़्सिही (पुरुष उत्तराधिकारी) होता है। वसी को यतीम के निकाह का अधिकार बिल्कुल नहीं है, भले ही पिता ने उसे इसके लिए वसीयत की हो; मज़हब (पंथ का मत) यही है।' और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (संक्षिप्त) (त)

1. हाशिया अत-तहावी अल-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल वली, दारुल मारिफा, बेरूत, 2/26 और 27।
2. दुर्रे मुख्तार, किताबुल माज़ून, मुतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/203।
3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मुतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/193-94।

पृष्ठ 669/739

ان ذلك عن علم فلو كان عن غير علم يكون له اعتراض وان ولدت والعلة تنفى ذلك فالاولى ابقاء المصنف على ظاهرة فتأمل۔18 سمجھا جارہا ہے کہ علم کے باوجود ایسا ہے اگر علم کے بغیر ہو تو اسے اعتراض کا حق ہے اگر چہ اس نے بچے کو جنم دیا ہو، حالانکہ علت اس کی نفی کرتی ہے، لہٰذا بہتر ہے کہ مصنف کی عبارت کو ظاہر پر باقی رکھا جائے، غور کرو۔ (ت)

روافض کے نزدیک کوئی قرشی غیر علوی علویہ کا کفو نہیں اور ہمارے نزدیک "قریش بعضھم اکفاء بعض" میرے پاس بنایہ نہیں کہ دوسرا قول معلوم ہو، یہ صورت کہ یہاں واقع ہوئی کہ ولی دعوی تفریق کر چکا اس کے بعد ولادت ہوئی اختلاف سے پر کراں ہے مسقط حق تفریق، سکوت حتی تلد تھا، وہ نہ پایا گیا قبل ولادت دعوی دائر ہو چکا، پھر ان تکلفات کی ضرورت کیا ہے جبکہ مفتی بہ مطلقاً فساد و عدم انعقاد ہے، والسلام۔

مسئلہ ۴۰۰: از شہسرام ضلع شاہ آباد محلہ شاہ جمعہ مرسلہ شیخ عبد الواحد صاحب ۲۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص فوت ہوا اور ایک زوجہ زینب اور دو دختر نابالغہ ہندہ و کلثوم، ایک باپ خالد کو چھوڑا، تو ان دونوں دختران نابالغہ کا ولی کون شخص ہوگا؟

الجواب: ان دختران کے مال و نکاح سب کا ولی ان کا دادا خالد ہے اگر ان کا باپ کسی کو اپنی اولاد یا جائیداد کی غور پرداخت نگہداشت سپرد نہ کر گیا ہو ورنہ وہ وصی ولی مال دختران ہوگا، اور نکاح کا ولی بہرحال خالد، در مختار میں ہے:

ولیه ابوہ ثم وصیه بعد موته ثم وصی وصیه ثم بعدھم جدہ الصحیح وان علا۸2 الخ۔ اس کا ولی اس کا باپ ہے، پھر باپ نے جس کو اپنا وصی بنایا، پھر وصی کا وصی، پھر دادا ترتیب وار اوپر تک۔ (ت)

اسی میں ہے:

الولی فی النکاح العصبۃ بنفسہ علی ترتیب الارث ولیس للوصی ان یزوج الیتیم مطلقا وان اوصی الیه الاب بذلك علی المذھب۸3 (ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم۔ نکاح کا ولی عصبہ بنفسہ وراثت کی ترتیب پر، اور وصی کو مطلقاً یتیم کے نکاح کی ولایت نہیں ہے اگر چہ باپ نے اسے وصیت بھی کی ہو، مذہب یہی ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

1 حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار باب الولی دار المعرفۃ بیروت ۲/۲۶ و ۲۷ 2 درمختار کتاب المأذون مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۰۳ 3 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۹۴-۱۹۳

Fatawa Razawiya Volume 11

Problem 401 to 404: From Bareilly, Muhallah Phuta Darwaza, petitioner Fakhruddin Sahib, 30 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: (1) A man is a widower and has remarried. Afterwards, the son from his first marriage married the real sister of his stepmother, who is his step-aunt. Is this permissible or not? (2) That girl was given by her parents to another boy two years ago, according to custom in front of witnesses. However, the second marriage (Nikah-e-Sani) which occurs at the time of departure (Rukhsati) is still pending. (3) While the girl's parents are alive and the girl is a virgin, can she appoint a non-relative as a guardian (Wali) for her marriage without her parents' consent? (4) Can a Qazi, who fully knows that the girl's real parents are alive and present, appoint a non-relative as a guardian and perform the girl's marriage without inquiring from her parents and in their absence? If not, what is the ruling for such a Qazi?

Answer (Al-Jawab): (1) Marriage with a stepmother's sister is permissible, there is no harm in it. And Allah Almighty knows best. (2) There are never two marriages (Nikahs). The first one was an engagement; that is not marriage. Changing the wording later is of no use. "Given for two years" - was that ceremony for marriage or engagement? And what words were spoken by both parties? The whole situation should be stated clearly. (3) If the girl is an adult (Baligha), she has the right to her own marriage. If she is a minor (Na-baligha), she cannot appoint anyone as a guardian while the father is present. And Allah Almighty knows best. (4) The marriage of an adult girl can be performed with her permission even if the parents are unaware. Yes, it is certainly necessary that the person she is marrying is an equal (Kufu) for her. This means in terms of religion, lineage, character, and profession, he shouldn't be so low that marrying him becomes a cause of disgrace and shame for the girl's father, otherwise, the marriage won't be valid. And if she is a minor, then this marriage will depend on the father's permission. If the Qazi did not act with bad intention, there is no blame; otherwise, there is blame. And Allah Almighty knows best.

Problem 405 to 406: From the city, Muhallah Ganda Nala, petitioner Abdul Wadud Leader Sahib, 26 Jumada al-Ula 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: (1) If an adult girl, due to modesty and shyness, does not utter the words of proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul) from her tongue at the time of marriage, but only...

फतावा रज़विया जिल्द 11

मसला 401 से 404: बरेली, मोहल्ला फूटा दरवाज़ा से, मुस्तौलि (प्रश्कर्ता) फखरुद्दीन साहब, 30 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: (1) एक शख्स विदुर है उसने दूसरा निकाह किया, उसके बाद उस शख्स के पहले बेटे ने अपनी सौतेली माँ की सगी बहन से निकाह कर लिया जो उसकी सौतेली खाला है, यह जायज़ है या नहीं? (2) वह लड़की दो साल के अरसे से माँ-बाप ने दूसरे लड़के को दे रखी है, रिवाज़ के मुताबिक गवाहों के सामने माँ-बाप ने दी है मगर जो रुख़सती के वक्त निकाह-ए-सानी होता है वह बाकी है। (3) जबकि लड़की के माँ-बाप ज़िंदा हैं और लड़की कुंवारी है तो क्या वह माँ-बाप की रजामंदी के बिना किसी गैर शख्स को अपने निकाह में वली बना सकती है? (4) काज़ी जिसे पूरा इल्म हो कि उस लड़की के सगे माँ-बाप ज़िंदा हैं और मौजूद हैं तो क्या वह बिना उनसे पूछे उनकी बे-इल्मी में किसी गैर शख्स को वली मुक़र्रर करके लड़की का निकाह कर सकता है? अगर नहीं तो ऐसे काज़ी के लिए क्या हुक्म है?

जवाब (अल-जवाब): (1) सौतेली माँ की बहन से निकाह जायज़ है, कोई हर्ज नहीं, वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। (2) दो निकाह कहीं नहीं होते, पहली मंगनी होती है वह निकाह नहीं होता, बात पलट कर कहना कुछ काम का नहीं। दो साल से दी हुई है, वह जलसा निकाह करने के लिए था या मंगनी का? और दोनों तरफ से क्या अल्फ़ाज़ कहे गए थे? पूरी बात बयान की जाए। (3) लड़की अगर बालिग़ा है तो उसे खुद अपने निकाह का अधिकार है और अगर ना-बालिग़ा है तो वह बाप के होते हुए किसी को वली नहीं बना सकती, वल्लाहु तआला आलम। (4) बालिग़ा का निकाह उसकी इजाज़त से पढ़ाया जा सकता है, चाहे माँ-बाप को इल्म न हो। हाँ, हाँ यह ज़रूर है कि जिससे यह निकाह हो वह बालिग़ा का कुफ़ू (बराबर) हो, यानी मज़हब, नसब (वंश), चाल-चलन, पेशे किसी बात में ऐसा कम न हो कि उससे निकाह होना लड़की के बाप के लिए शर्म और बदनामी का कारण हो, वर्ना निकाह नहीं होगा। और अगर ना-बालिग़ा है तो यह निकाह बाप की इजाज़त पर टिका रहेगा। अगर काज़ी ने बदनीयती नहीं की तो इल्ज़ाम नहीं वर्ना इल्ज़ाम है, वल्लाहु तआला आलम।

मसला 405 से 406: शहर, मोहल्ला गंदा नाला से, मुस्तौलि अब्दुल वदूद लीडर साहब, 26 जमादी-उल-ऊला 1338 हिजरी।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: (1) बालिग़ लड़की अगर निकाह के वक्त शर्मो-हया की वजह से अपनी ज़बान से ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) के अल्फ़ाज़ अदा न करे सिर्फ़..

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۴۰۱ تا ۴۰۴ : از بریلی محلہ پھوٹا دروازہ مسئولہ فخر الدین صاحب ۳۰ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ : (۱) ایک شخص رنڈوا ہے اس نے نکاح ثانی کیا، بعدہ اس شخص کے پہلے بیٹے نے اپنی سوتیلی ماں کی حقیقی بہن سے نکاح کرلیا جو اس کی سوتیلی خالہ ہے یہ جائز ہے یا نہیں؟ (۲) وہ لڑکی عرصہ دو سال سے دوسرے لڑکے کو والدین نے دی ہوئی ہے موافق رواج کے روبرو گواہوں کے والدین نے دی ہے مگر جو رخصتی کے وقت نکاح ثانی ہوتا ہے وہ باقی ہے۔ (۳) جبکہ لڑکی کے والدین زندہ ہیں اور لڑکی کنواری ہے تو بغیر رضامندی والدین کے کیا وہ غیر شخص کو ولی بنا سکتی ہے اپنے نکاح میں؟ (۴) قاضی جس کو پورا علم ہو کہ اس لڑکی کے والدین حقیقی زندہ ہیں اور موجود ہیں تو وہ بلا دریافت اس کے والدین ان کی بے علمی میں غیر شخص کو ولی مقرر کرکے لڑکی کا نکاح کرسکتا ہے؟ اگر نہیں تو ایسے قاضی کے واسطے کیا حکم ہے؟ الجواب: (۱) سوتیلی ماں کی بہن سے نکاح جائز ہے، کچھ حرج نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) دو نکاح کہیں نہیں ہوتے، پہلی منگنی ہوتی ہے وہ نکاح نہیں ہوتا، بات زبان پھیر کر کہنا کچھ مفید نہیں۔ دو سال سے دی ہوئی ہے، وہ جلسہ نکاح کرنے کے لئے تھا یا منگنی کا؟ اور کیا لفظ طرفین نے کہے تھے؟ پوری بات بیان کی جائے۔ (۳) لڑکی اگر بالغہ ہے تو اسے خود اپنے نکاح کا اختیار ہے اور نا بالغہ ہے تو وہ باپ کے ہوتے کسی کو ولی نہیں بنا سکتی، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۴) بالغہ کا نکاح اس کی اجازت سے پڑھایا جا سکتا ہے، اگرچہ والدین کو علم نہ ہو، ہاں ہاں یہ ضرور ہے کہ جس سے یہ نکاح ہو وہ بالغہ کا کفو ہو یعنی مذہب، نسب، چال چلن، پیشے کسی بات میں ایسا کم نہ ہو کہ اس سے نکاح ہونا لڑکی کے باپ کے

لئے باعث ننگ وعار ہو ورنہ نکاح نہ ہوگا۔ اور اگر نابالغہ ہے تو یہ نکاح باپ کی اجازت پر موقوف رہے گا، قاضی نے بدنیتی نہ کی تو الزام نہیں ورنہ الزام ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۰۵ تا ۴۰۶: از شہر محلہ گندہ نالہ مسئولہ عبدالودود لیڈر صاحب ۲۶ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ: (۱) بالغ لڑکی اگر نکاح کے وقت بوجہ شرم و حجاب اپنی زبان سے ایجاب و قبول کے الفاظ ادا نہ کرے صرف

Fatawa Rizwia, Volume 11

...that her close female relatives present around her say yes, the girl accepts, and generally in most marriages, this situation occurs; girls do not speak themselves due to shyness and modesty. In such a case, is the marriage valid or not? And will her silent consent be considered equivalent to offer and acceptance or not? (2) The girl is an adult but an orphan; her mother married her off. The deceased father's brother, i.e., the uncle, was not present. Does their absence affect the validity of the marriage according to Sharia? Explain and be rewarded.

The Answer: (1) If the nearest guardian (Wali Aqrab), for example, the father, or if not him then the grandfather, or if not him then the brother, or if not him then the nephew, or if not him then the uncle, or if not him then the uncle's son, goes himself to get permission from the adult virgin or sends someone on his behalf to get permission, and she remains silent upon the request for permission, then this is her consent.

[Box Start] Left side: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "And her silence is her consent." [1] Right side: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "The silence of a virgin is her permission." (T) [Box End]

And if neither the nearest guardian went himself nor sent someone on his behalf to get permission, but another person went of their own accord to get permission without him sending them, then her silence will not be consent. Even if this person seeking permission is a close relative, as long as the nearest guardian is present. For example, in the presence of the father, if the grandfather or real brother goes to seek permission on their own, it is necessary that the woman herself says yes and gives permission with her tongue. It is an injustice by those sitting nearby that they say "yes" to deceive. In this case, the marriage will be "Fadhuli" (unauthorized). If it is with a suitable match (Kufu), it will depend on the daughter's permission. If after hearing the news she validates it then or later without showing aversion, it will be valid; if she rejects it, it will be rejected. If she has not rejected it until now through any word or deed, either explicitly or implicitly, then going away happily [to the husband's house] is consent. At that time, the marriage will become effective. And Allah Ta'ala knows best. (2) Even in the presence of the uncle, if the mother marries off an adult orphan girl after taking her permission, or if the girl gives permission verbally or through action after the marriage, then the marriage is correct, effective, and binding. Neither the uncle nor the brother has any grounds for objection,

provided the marriage was done within the same status (Kufu). That is, the person should not be so low in religion, lineage, behavior, or profession that marrying the daughter to him would be a cause of shame, disgrace, and bad reputation for her guardian. If it is so, then the marriage will not take place at all. And if the orphan is a minor...

---

1. Muwatta Imam Malik, Book of Marriage, Mir Muhammad Kutub Khana Press Karachi, p. 498.

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवीं जिल्द

...कि उसके पास मौजूद महिला रिश्तेदार कह दें कि हाँ लड़की को मंज़ूर है, और आम तौर पर अक्सर निकाहों में इसी तरह की सूरत होती है; लड़कियां शर्म व हया की वजह से खुद नहीं बोलती हैं। ऐसी सूरत में निकाह जायज़ हुआ या नहीं? और क्या उसके मौन को प्रस्ताव और स्वीकृति के बराबर समझा जाएगा या नहीं? (२) लड़की बालिग है मगर यतीम है, उसकी माँ ने उसका निकाह किया। मृतक पिता के भाई यानी चाचा मौजूद नहीं थे। क्या उनकी अनुपस्थिति निकाह की वैधता पर शरीयत के अनुसार कोई प्रभाव डालती है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: (१) यदि निकटतम संरक्षक (वली अक़रब), उदाहरण के लिए पिता, यदि वह नहीं तो दादा, यदि वह नहीं तो भाई, यदि वह नहीं तो भतीजा, यदि वह नहीं तो चाचा, यदि वह नहीं तो चाचा का बेटा, खुद बालिग कुंवारी लड़की से अनुमति लेने जाए या अपनी ओर से किसी को अनुमति लेने के लिए भेजे और वह अनुमति मांगने पर मौन रहे, तो यही उसकी अनुमति है।

[बॉक्स प्रारंभ] बायां हिस्सा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "और उसकी खामोशी ही उसकी अनुमति है।" [१] दायां हिस्सा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "कुंवारी की खामोशी ही उसकी अनुमति है।" (त) [बॉक्स समाप्त]

और यदि न तो निकटतम संरक्षक खुद गया और न ही अपनी ओर से किसी को अनुमति लेने भेजा, बल्कि कोई अन्य व्यक्ति बिना उसके भेजे अपनी मर्जी से अनुमति लेने गया, तो उसकी खामोशी अनुमति नहीं मानी जाएगी। चाहे अनुमति लेने वाला कितना ही करीबी रिश्तेदार क्यों न हो, जब तक कि निकटतम संरक्षक मौजूद हो। उदाहरण के लिए, पिता की मौजूदगी में यदि दादा या सगा भाई अपनी मर्जी से अनुमति लेने जाएं तो यह अनिवार्य होगा कि महिला स्वयं 'हाँ' कहे और अपनी ज़बान से अनुमति दे। पास बैठने वाली महिलाओं का यह ज़ुल्म होता है कि वे धोखा देने के लिए 'हाँ' कह देती हैं। ऐसी स्थिति में निकाह 'फ़ज़ूली' (अनधिकृत) होगा। यदि निकाह बराबर के दर्जे (कुफ़्फ़ु में हुआ है, तो यह बेटी की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि खबर सुनकर उस समय या बाद में बिना नफरत जताए वह इसे स्वीकार कर ले, तो निकाह जायज़ हो जाएगा; यदि वह इसे अस्वीकार कर दे, तो यह रद्द हो जाएगा। यदि उसने अब तक अपने किसी वचन या कर्म से स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से इसे रद्द नहीं किया है, तो खुशी से विदा होकर जाना ही अनुमति है। उस समय निकाह प्रभावी हो जाएगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (२) चाचा की मौजूदगी में भी यदि माँ एक बालिग यतीम

लड़की का निकाह उसकी अनुमति लेकर कर दे, या निकाह के बाद वह लड़की अपनी बात या कर्म से अनुमति दे दे, तो निकाह सही, प्रभावी और अनिवार्य है। चाचा या भाई को आपत्ति का कोई अधिकार नहीं है, बशर्ते निकाह 'कुफू (समान सामाजिक स्तर) में किया गया हो। यानी वह व्यक्ति धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना निम्न न हो कि उसके साथ बेटी का निकाह उसके संरक्षक के लिए शर्म, अपमान और बदनामी का कारण बने। यदि ऐसा है, तो निकाह होगा ही नहीं। और यदि यतीम नाबालिग है...

---

1. मुअत्ता इमाम मालिक, किताबुन निकाह, मतबअ मीर मोहम्मद कुतुब खाना कराची, पृष्ठ ४९८।

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

یہ ہو کہ اس کے عزیز و قریب مستورات جو اس کے گرد و پیش موجود ہیں وہ کہہ دیں کہ ہاں لڑکی کو منظور ہے اور بالعموم اکثر نکاحوں میں اسی طرح کی صورت واقع ہوا کرتی ہے لڑکیاں بوجہ شرم و حجاب خود نہیں بولتی ہیں ایسی صورت میں نکاح جائز ہوا یا نہیں اور اس کا اقرار سکوتی ایجاب و قبول کے قائم مقام سمجھا جائے گا یا نہیں؟ (۲) لڑکی بالغ ہے مگر یتیم ہے اس کی ماں نے اس کا نکاح کیا متوفی باپ کے بھائی یعنی چچائے موجود نہ تھے آیا ان کی عدم موجودگی نکاح کے جواز پر شرعاً کچھ موثر ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: (۱) اگر ولی اقرب مثلاً باپ وہ نہ ہو تو دادا، وہ نہ ہو تو بھائی، وہ نہ ہو تو بھتیجا، وہ نہ ہو تو چچا، وہ نہ ہو تو چچا کا بیٹا اگر خود جا کر بالغہ دوشیزہ سے اذن لے یا اپنی طرف سے کسی کو اذن لینے کے لئے اس کے پاس بھیجے اور وہ طلب اذن پر سکوت کرے تو یہی اذن ہے۔

[باکس شروع] بایاں حصہ: قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وصماتھا اذنھا ۱۔ داہنا حصہ: حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا : باکرہ کی خاموشی ہی اذن ہے۔ (ت) [باکس ختم]

اور اگر نہ ولی اقرب خود گیا نہ اپنی طرف سے کسی کو اذن لینے کے لئے بھیجا بلکہ اور شخص بے اس کے بھیجے بطور خود اس سے اذن لینے گیا تو اس کا سکوت اذن نہ ہوگا اگرچہ یہ اذن لینے والا کیسا ہی قریب رشتہ دار ہو جبکہ ولی اقرب نہ ہو مثلاً باپ کے ہوتے ہوئے دادا یا حقیقی بھائی اپنی طرف سے اذن لینے جائیں تو ضرور ہوگا کہ عورت خود ہاں کہے اپنی زبان سے اذن دے، پاس بیٹھنے والیوں کا یہ ظلم ہوتا ہے کہ وہ دھوکا دینے کو ہوں ہاں کردیتی ہیں، اس صورت میں نکاح فضولی ہوگا جبکہ کفو کے ساتھ ہو دختر کی اجازت پر موقوف رہے گا، اگر خبر سن کر

اس وقت یا بعد کو بے اظہار نفرت جائز کر دے جائز ہوجائے گا رد کردے رد ہوجائے گا، اگر اپنے کسی قول یا فعل سے صراحۃً دلالۃً اب تک رد نہ کیا ہو تو بخوشی رخصت ہو کر جانا اذن ہے اس وقت نکاح نافذ ہوجائے گا، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) چچا کے ہوتے ہوئے ماں اگر یتیمہ بالغہ کا نکاح یتیمہ سے اذن لے کر دے یا بعد نکاح وہ دختر اذن قولاً یا فعلاً دے دے تو نکاح صحیح و نافذ و لازم ہے، چچا تھا یا بھائی کسی کو گنجائش اعتراض نہیں جبکہ نکاح کفو میں سے کیا ہو یعنی وہ شخص مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشے میں ایسا کم نہیں جس کے ساتھ اس دختر کا نکاح اس کے ولی کے لئے باعث ننگ وعار و بدنامی ہو، اگر ایسا ہے تو نکاح ہوگا ہی نہیں اور اگر یتیمہ نا بالغہ ہے

---

۱ مؤطا امام مالک کتاب النکاح مطبع میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۴۹۸

Fatawa Rizvia Volume 11

...that the true orphan is such. So, if the mother married her to a non-equal (non-Kufu) in the aforementioned sense, the marriage did not even take place. If it was to an equal (Kufu), then it will depend on the permission of the nearest guardian (Wali), like the paternal uncle, etc. If he rejects it, it will be rejected; if he allows it, it will be allowed. And Allah knows best.

Problem 707: From the city, Gandah Nalah neighborhood, inquired by Abdul Wadood Leader Sahib, 28 Jumada al-Ula 1338 AH.

[Question Box] (Arabic): What do you say, may Allah have mercy on you and support you with His help, regarding an orphan who reached fifteen years of age, whose mother married her with her consent to one of the relatives, but the girl's guardians, like uncles and others, did not attend the marriage ceremony nor were they consulted in this matter? Her mother alone took charge of the marriage because she was the sole guardian for her daughter until now. Is the marriage valid or not?

(Urdu): O learned scholars, what is your guidance regarding this issue that a fifteen-year-old girl's marriage was arranged by her mother with her consent among relatives, while the girl's guardians, like paternal uncles, were not present in the marriage assembly nor were they consulted regarding this marriage. Only the mother took charge of the marriage affairs because she was the girl's sole guardian at the time. Is this marriage valid or not?

[Answer Box] (Arabic) The Answer: If she reached puberty before this through a sign like menstruation or completed fifteen full years before her permission for marriage, and the marriage was into a Kufu (equal)—one whose religion, lineage, character, and profession are not such that her guardians would be customarily disgraced by him—then the marriage is valid. If it occurred after her permission or she consented after it occurred before its rejection, it is finalized and binding. She nor any of her guardians have a right [to object]. As for marriage to a non-Kufu in the mentioned sense, it is void from the start even if she permitted it, consented, or conducted it herself. If it was into a Kufu but she had not reached puberty, it remains dependent on the guardian's permission; if he permits it, it is valid, and if he nullifies it, it is void.

(Urdu) The Answer: If the girl had reached puberty before the marriage, as evidenced by menstruation or any other sign of puberty, or if she had completed fifteen full years before the marriage, and she gave permission for the marriage, and the

marriage was also within Kufu (social/religious equal)—meaning that the boy's religion, lineage, character, and profession are not such that the girl's guardians would customarily object to them, i.e., they do not feel disgraced by it—then the marriage is valid. So, if the marriage took place after the woman's permission or she expressed consent after it occurred before it was rejected, then this marriage will be enforced and binding. Now she or her guardian no longer has the right to object to the marriage. If this marriage was to a non-Kufu in the aforementioned sense, then that marriage is completely void (Batil), even if she had given permission and expressed consent, or if she had conducted her own marriage. If the marriage was within the Kufu but she was not yet an adult, then it remained dependent on the guardian's permission; if the guardian makes it valid, it is valid; if he nullifies it, [it is null].

फतावा रिज़विया जिल्द 11

...कि वास्तविक अनाथ वही होती है। अतः यदि माँ ने उक्त अर्थ में गैर-कुफ़ू (असमान) से विवाह कर दिया, तो वह हुआ ही नहीं। और यदि कुफ़ू (समान) से किया, तो वह निकटतम संरक्षक (वली), जैसे चाचा आदि, की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वे इसे अस्वीकार कर दें, तो यह रद्द हो जाएगा; यदि वे इसे अनुमति दे दें, तो यह मान्य होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला ७०७: शहर मोहल्ला गंदा नाला से, अब्दुल वदूद लीडर साहब द्वारा पूछा गया, २८ जमादी उल-ऊला १३३८ हिजरी।

[सवाल बॉक्स] (अरबी): हे विद्वानों, अल्लाह आप पर कृपा करे, एक पंद्रह वर्षीय अनाथ लड़की के बारे में आप क्या कहते हैं जिसकी शादी उसकी माँ ने उसकी सहमति से रिश्तेदारों में से एक के साथ कर दी? लेकिन लड़की के संरक्षक जैसे चाचा और अन्य लोग निकाह की सभा में उपस्थित नहीं थे और न ही इस मामले में उनसे सलाह ली गई। उसकी माँ ने ही शादी की जिम्मेदारी संभाली क्योंकि अब तक वही अपनी बेटी की अकेली संरक्षक थी। क्या निकाह जायज़ है या नहीं?

(उर्दू): विद्वानों का इस मामले में क्या कहना है कि एक पन्द्रह वर्षीय लड़की का विवाह उसकी माता ने लड़की की सहमति से रिश्तेदारों में कर दिया, जबकि लड़की के संरक्षक जैसे चाचा आदि निकाह की सभा में उपस्थित नहीं थे और न ही इस विवाह के संबंध में उनसे परामर्श लिया गया। केवल माता ने ही विवाह की जिम्मेदारी संभाली क्योंकि उस समय माता ही लड़की की देखरेख कर रही थी। क्या यह विवाह वैध है या नहीं?

[जवाब बॉक्स] (अरबी) उत्तर: यदि वह इससे पहले मासिक धर्म जैसे लक्षण के माध्यम से यौवन तक पहुँच गई थी या निकाह की अनुमति देने से पहले पूरे पंद्रह वर्ष पूरे कर चुकी थी, और निकाह एक कुफ़ू (समान स्तर) में हुआ था—एक ऐसा व्यक्ति जिसका धर्म, वंश, चरित्र और पेशा ऐसा न हो कि उसके संरक्षकों को उससे अपमानित महसूस हो—तो निकाह वैध है। यदि यह उसकी अनुमति के बाद हुआ या उसने इसके होने के बाद और अस्वीकार किए जाने से पहले सहमति दे दी, तो यह निकाह अंतिम और अनिवार्य है। उसे या उसके किसी भी संरक्षक को निकाह पर आपत्ति का अधिकार नहीं है। जहाँ तक उक्त अर्थ में गैर-कुफ़ू से निकाह का सवाल है, वह शुरू से ही शून्य है, भले ही उसने अनुमति दी हो, सहमति दी हो या स्वयं निकाह किया हो। यदि निकाह कुफ़ू में हुआ

लेकिन वह यौवन तक नहीं पहुँची थी, तो यह संरक्षक की अनुमति पर निर्भर रहता है; यदि वह अनुमति देता है तो यह मान्य है, और यदि वह इसे रद्द करता है तो यह शून्य है।

(उर्दू) उत्तर: यदि लड़की निकाह से पहले बालिग (वयस्क) हो चुकी थी, जिस पर मासिक धर्म या यौवन का कोई अन्य लक्षण प्रकट हो चुका था, या वह निकाह से पहले पूरे पंद्रह वर्ष की हो चुकी थी, और उसने निकाह की अनुमति दी थी, और निकाह भी कुफ़ू (समान स्तर) में हुआ था—अर्थात लड़के के धर्म, वंश, चरित्र और उसके पेशे पर लड़की के संरक्षकों को पारंपरिक रूप से कोई आपत्ति न हो, यानी वे इससे अपमान महसूस न करते हों—तो निकाह वैध है। अतः यदि निकाह महिला की अनुमति के बाद हुआ हो या उसने इसके होने के बाद और अस्वीकार किए जाने से पहले अपनी सहमति व्यक्त कर दी हो, तो यह निकाह प्रभावी और अनिवार्य हो जाएगा। अब उसे या उसके संरक्षक को निकाह पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं रहा। यदि यह निकाह उक्त अर्थ में गैर-कुफ़ू (असमान) में हुआ, तो वह निकाह पूरी तरह से शून्य (बातिल) है, भले ही उसने अनुमति और सहमति व्यक्त कर दी हो या उसने स्वयं अपना निकाह किया हो। यदि निकाह कुफ़ू में हुआ लेकिन वह अभी बालिग नहीं थी, तो फिर यह संरक्षक की अनुमति पर निर्भर रहा; यदि संरक्षक इसे मान्य कर दे तो मान्य, और यदि रद्द कर दे [तो शून्य]।

पृष्ठ 672 का 739

فتاوی رضویہ جلد یازدھم

کہ حقیقۃ یتیمہ وہی ہوتی ہے تو اگر ماں نے غیر کفو بہ معنی مذکور سے نکاح کر دیا تو ہوا ہی نہیں اور کفو سے کیا تو چچا وغیرہ جو ولی اقرب ہوں اس کی اجازت پر موقوف رہے گا رد کردے گا رد ہو جائے گا جائز کر دے گا جائز، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۰۷: از شہر محلہ گندہ نالہ مسئولہ عبدالودود لیڈر صاحب ۲۸ جمادی الاولی ۱۳۳۸ھ

[سوال کا باکس] (عربی): ماقولکم رحمکم اللہ تعالی واید کم بنصرہ فی یتیمۃ بلغت من عمرھا خمسۃ عشر سنین زوجتھا امھا برضاھا باحد من الاقارب ولکن لم یحضروا مجلس النکاح اولیاء الیتیمۃ المذکورۃ کالأعمام وغیرھم وما استشیروا في ھذا الباب وتولت في امر النکاح امھا وحدھا لانھا کانت وحدھا کفیلۃ لبنتھا الی الآن ھل جاز النکاح ام لا۔

(اردو): علماء کرام آپ کا کیا ارشاد ہے اس مسئلہ کے بارے میں کہ ایک پندرہ سالہ لڑکی کا نکاح اس کی والدہ نے لڑکی کی رضامندی سے رشتہ داروں میں کر دیا جبکہ لڑکی کے اولیاء چچا وغیرہ مجلس نکاح میں حاضر نہ ہوئے اور نہ ہی اس نکاح سے متعلق ان سے مشورہ لیا گیا، صرف والدہ نے ہی نکاح کی تولیت کی کیونکہ لڑکی کی کفیل اس وقت والدہ ہی تھی، کیا یہ نکاح جائز ہوا یا نہ؟

[جواب کا باکس] (عربی) الجواب: ان بلغت قبل ھذ ابعلامۃ کحیض او تمت لھا قبل اذنھا بالنکاح خمس عشرۃ سنۃ کوامل وکان النکاح من کفولیس في دینہ ولا نسبہ ولاخلقہ ولا حرفتہ مایتعیر بہ اولیاؤھا عرفا جاز النکاح فان وقع بعد اذنھا او رضیت بہ بعد وقوعہ قبل ردہ تم ولزم ولیس لھا ولا لاحد من

كان من غير كفو بالمعنى المذكور فهو باطل رأسا وان اذنت و اجازت او بنفسها تولت وان كان من كفو و لم تبلغ بعد توقف على اجازة الولى ان اجاز جازوان ابطل

(اردو) الجواب: اگر لڑکی نکاح سے قبل بالغ ہو چکی تھی جس پر حیض یا کوئی اور علامت بلوغ ظاہر ہو چکی تھی، یا وہ نکاح سے قبل پورے پندرہ سال کی ہو چکی تھی تو اس نے نکاح کی اجازت دی اور نکاح بھی کفو میں ہوا کہ لڑکے کے دین، نسب، اخلاق اور اس کے کسب پر عرفاً لڑکی کے اولیاء کو اعتراض نہ ہو یعنی اس سے عار محسوس نہیں کرتے تو نکاح جائز ہے پس اگر نکاح عورت کے اذن کے بعد واقع ہو یا وہ رضامندی ظاہر کر چکی ہو تو یہ نکاح نافذ و لازم ہوگا اب اس کو یا اس کے ولی کو نکاح پر اعتراض کا حق نہیں رہا، اگر یہ نکاح غیر کفو میں معنی مذکور میں ہوا تو وہ نکاح بالکل باطل ہے اگرچہ اجازت اور رضامندی ظاہر کر چکی ہو یا اس نے خود اپنا نکاح کیا ہو اگر نکاح کفو میں ہوا لیکن ابھی بالغ نہ تھی تو پھر ولی کی اجازت پر موقوف رہا اگر ولی جائز کردے تو جائز اگر باطل کردے [تو باطل]۔

صفحہ 739 کا 672

Fatawa Rizvia, Volume 11

[Boxed Text] It will be void, even if the guardians remain silent until the matter reaches the girl herself upon reaching puberty. Then it is for her to proceed or reject, and the issues are apparent and circulated in the books. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 408: From Ajmer Sharif, Lakhan Kothri neighborhood, sent by Maulana Maulvi Mushtaq Ahmad Sahab, Head Teacher, Madrasa Muiniya Ajmer Mualla, 1st Rajab al-Murajab 1338 AH.

What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this matter: The mother and brothers of a mature girl sent a genealogist (Mirasi) for a marriage proposal, instructing him to arrange a match within a specific tribe and not elsewhere. The genealogist took some bribe money and arranged a match elsewhere. Later, the girl, her mother, and brothers found out, and they sent two men to tell the suitors that they would not proceed with the match. Later, the girl's brothers also went to forbid it. Eventually, they did not desist, and the genealogist fixed dates on his own and brought the wedding procession (baraat). Upon the arrival of the baraat, the girl, mother, and brothers completely refused the marriage. This continued for five or six days. Since there were some prominent figures with the baraat, they gathered all the local prominent people and demanded the marriage be facilitated by any means. They collectively trapped the girl's brothers in a fraudulent case. The poor, helpless brothers then agreed to fix the marriage. When they went to seek the girl's permission, she refused. Then a person forcibly silenced the girl and took her away in a carriage. At the time of departure, when her brothers asked her if they should give her clothes etc., she refused and said, "My marriage has not even happened, why are you giving them?" Since coming, she still persists in her refusal. Five years have passed. Is this marriage valid under Sharia or not?

Answer: Given the facts of the case, the girl is sane and mature, and she did not give her consent; rather, she clearly refused. Even at the time of forced departure, she explicitly stated that "My marriage hasn't happened," and she has persisted in her refusal since then. Therefore, the aforementioned marriage is void and utterly rejected, and it is a pure act of oppression by those who used force. Even if the brothers had consented happily or performed the marriage themselves without force, it would have become void immediately due to the mature girl's refusal. Moreover, their consent was also obtained through force. Similarly, even if the girl

herself had agreed after the initial refusal, it would not have been beneficial because a voided marriage cannot become valid through later consent, especially since she is still refusing. In short, considering this void marriage as valid is profound ignorance and severe oppression. It is stated in Alamgiri:

फतावी रिज़विया, जिल्द 11

[बॉक्स किया हुआ पाठ] तो यह बातिल (शून्य) हो जाएगा। और अगर लड़की के बालिग होने तक वली (अभिभावक) खामोश रहे यहाँ तक कि लड़की खुद बालिग हो गई, तो अब इजाज़त लड़की की तरफ से होगी, चाहे वह राजी हो जाए या निकाह को रद्द कर दे। ये मसाइल (मसले) ज़ाहिर हैं और किताबों में ज़िक्र किए गए हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 408: अजमेर शरीफ, मोहल्ला लाखन कोठरी से मौलाना मौलवी मुश्ताक अहमद साहब, सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक), मदरसा मुईनिया अजमेर मुअल्ला द्वारा भेजा गया, 1 रजब-उल-मुरज्जब 1338 हिजरी।

दीन के उलेमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: एक बालिग लड़की की माँ और भाइयों ने एक मिरासी (वंशावली लेखक) को निकाह के रिश्ते के लिए भेजा कि फलाँ कबीले में रिश्ता कराओ, उस कबीले के अलावा किसी दूसरी जगह न जाना। मिरासी ने कुछ रुपये रिश्वत लेकर दूसरी जगह रिश्ता तय कर दिया। बाद में लड़की, माँ और भाइयों को जब पता चला, तो उन्होंने दो आदमियों को भेजा कि कह दो हम रिश्ता नहीं करते। फिर लड़की के भाई भी मना करने के लिए गए। अंत में वे नहीं माने और मिरासी ने अपनी तरफ से कुछ दिन तय करके बारात बुलवा ली। बारात आने पर लड़की, माँ और भाई निकाह से सरासर इनकार करते रहे, यहाँ तक कि पाँच-छह दिन इसी तरह गुज़र गए। चूँकि बारात के साथ कुछ रईस (प्रमुख लोग) थे, उन्होंने आस-पास के सभी रईसों को इकट्ठा किया और कहा कि जिस तरह भी हो सके हमें निकाह दिला दो। सब रईसों ने मिलकर लड़की के भाइयों को एक फर्जी मुकदमे में फँसा दिया। वे बेचारे गरीब मजबूर होकर कहने लगे कि ठीक है निकाह तय कर दो। जब लड़की से इजाज़त लेने गए तो उसने इनकार कर दिया। फिर एक शख्स ने लड़की को जबरदस्ती खामोश कर दिया और उसे डोली (भली) में बिठाकर ले गए। विदाई के समय लड़की के भाइयों ने लड़की से पूछा कि तुम्हें कपड़े आदि दें, तो लड़की ने इनकार कर दिया और कहा कि मेरा निकाह ही नहीं हुआ है, तुम किस लिए देते हो। आने के बाद से वह अब तक इनकार पर कायम है, पाँच साल बीत चुके हैं। क्या यह निकाह शरीयत के अनुसार हुआ या नहीं?

जवाब: जबकि स्थिति यह है कि लड़की अक्ल वाली और बालिग है और उसने इजाज़त नहीं दी, बल्कि साफ इनकार कर दिया और जबरदस्ती विदाई के वक्त भी साफ़ तौर पर कहा कि मेरा

निकाह ही नहीं है, और जब से अब तक इनकार पर अड़ी हुई है, तो उक्त निकाह बातिल (शून्य) और पूरी तरह खारिज है, और उन जबरदस्ती करने वालों का यह सरासर ज़ुल्म है। अगर भाइयों ने जबरदस्ती नहीं बल्कि खुशी से इजाज़त दी होती या खुद निकाह कर दिया होता, तब भी बालिग लड़की के इनकार से वह तुरंत बातिल हो जाता, जबकि उनकी इजाज़त भी जबरदस्ती थी। इसी तरह, अगर निकाह के इनकार के बाद बालिग लड़की खुद भी राजी हो जाती, तो भी कोई फ़ायदा न होता क्योंकि जो निकाह बातिल हो चुका हो वह रजामंदी से सही नहीं हो सकता, और यहाँ तो वह अब तक इनकार पर अड़ी है। संक्षेप में, इस बातिल निकाह को निकाह समझना घोर अज्ञानता और भारी ज़ुल्म है। आलमगीरिया में है:

بطل وان سکت الاولیاء حتی بلغت ال الامر الیھا فلتمض اولترد و المسائل ظاھرۃ وفي الکتب دائرۃ.
واللہ تعالٰی اعلم۔ تو باطل ہو جائے گا، اور اگر لڑکی کے بلوغ تک ولی خاموش رہے حتی کہ لڑکی خود بالغ ہو گئی تو اب اجازت لڑکی کی طرف سے ہو گی چاہے راضی ہو جائے یا نکاح کو رد کر دے، یہ مسائل ظاہر ہیں اور کتب میں مذکور ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۰۸: از اجمیر شریف محلہ لاکھن کوٹھری مرسلہ مولانا مولوی مشتاق احمد صاحب صدر مدرس مدرسہ معینیہ اجمیر معلی یکم رجب المرجب ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک بالغہ لڑکی کی والدہ اور بھائیوں نے ایک میراثی کو رشتہ کے واسطے بھیجا کہ فلاں قبیلہ میں رشتہ کراؤ، اس قبیلہ کے علاوہ کسی دوسری جگہ نہ جانا، میراثی نے کچھ روپیہ رشوت کالے کر دوسری جگہ رشتہ کر دیا، بعد ازیں لڑکی اور والدہ اور بھائیوں کو اطلاع ہوئی انھوں نے دو آدمیوں کو بھیجا کہ رشتہ والوں سے کہہ دے کہ ہم نہیں رشتہ کرتے، اور پھر لڑکی کے بھائی بھی گئے منع کرنے کے واسطے، آخر کار وہ باز نہ آئے، اور میراثی نے چند ایام اپنی طرف سے مقرر کر کے برات منگوائی، برات آنے پر لڑکی اور والدہ بھائی نکاح سے سراسر انکار کرتے رہے، حتی کہ پانچ چھ ایام اسی طرح گزر گئے، چونکہ برات کے ساتھ چند رؤسا تھے، انھوں نے گرد و نواح کے سب رؤسا جمع کئے اور کہا کہ جس صورت سے ہو سکتا ہے ہمیں نکاح دلا دو، سب رؤسا نے جمع ہو کر لڑکی کے بھائیوں کو ایک مقدمہ جعلسازی میں پھانس دیا، وہ بیچارے غریب عاجز ہو کر کہنے لگے کہ اچھا نکاح ٹھہرا دو، جب لڑکی سے اذن لینے کے واسطے گئے تو انکار کر دیا، پھر ایک

شخص نے لڑکی کو جبراً خاموش کر دیا اور بھلی میں بٹھا کر لے گئے، بوقت وداع لڑکی کے بھائیوں نے لڑکی سے پوچھا تجھ کو کپڑا وغیرہ دیں، لڑکی نے انکار کیا اور کہا کہ میرا نکاح ہی نہیں ہے تم کس واسطے دیتے ہو، بعد آنے کے وہ اب تک انکار پر مصر ہے، عرصہ پانچ سال کا ہوا، یہ نکاح عندالشرع ہوا یا نہیں ؟

الجواب: جبکہ صورت واقعہ یہ ہے کہ لڑکی عاقلہ بالغہ ہے اور اس نے اذن نہ دیا جبکہ صاف انکار کر دیا اور بالجبر رخصت کے وقت بھی تصریحاً کہا کہ میرا نکاح ہی نہیں ہے، اور جب سے اب تک انکار پر مصر ہے تو نکاح مذکور باطل و مردود محض، اور ان جبر کرنے والوں کا ظلم خالص ہے، بھائیوں نے یہ بجبر نہ سہی بخوشی اجازت دی ہوتی یا خود نکاح کر دیا ہوتا بالغہ کے انکار سے وہ بھی فوراً باطل ہو جاتا نہ کہ ان کی اجازت بھی جبر سے، یونہی اگر بعد نکاح انکار کے بعد بالغہ خود بھی راضی ہو جاتی مفید نہ ہوتا کہ باطل شدہ نکاح رضا سے صحیح نہ ہو سکے گا نہ کہ وہ اب تک انکار پر مصر ہے، غرض اس باطل نکاح کو نکاح سمجھنا جہل بعید و ظلم شدید ہے، عالمگیریہ میں ہے:

No one, whether a father or a ruler, has authority over a sane adult girl (whether she is a virgin or previously married) to marry her off against her will. If someone does so, the marriage depends on her consent. If she consents, it becomes valid; if she rejects it, it becomes void. It is mentioned as such in Siraj al-Wahhaj. (T)

It is mentioned in Durr al-Mukhtar: "If news of the marriage reached her and she rejected it, then later said she was satisfied, it would not be valid because it became void by the prior rejection. And Allah knows best." When an adult girl received notice of the marriage and rejected it, but later said she was satisfied, it would not be valid because by previously rejecting it, the marriage had already become void. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 409: From Bombay Jail Road, Post No. 9, care of Khalifa Ahmadullah Sahib, sent by Jamil Muhammad Khan Sahib Dehlvi, 13 Ramadan 1338 AH. An adult Shia girl, of her own free will and without the permission of her parents, married a Sunni man of Afghan descent in the presence of four witnesses and a representative (Wakil) before a Qazi. The parents of the married girl, being Shia, want to annul this marriage and offer the excuse that since 'Khalwat Sahiha' (valid seclusion) has not occurred, they have the right to seek annulment. Secondly, they say that since the marriage is not with an equal (Kufu), they have the authority to annul. The representative appointed on behalf of the girl at the marriage ceremony admits that the marriage took place and he was the representative, but he did not hear the girl's offer and acceptance (Ijab-o-Qabul). Before the marriage, the girl declared before witnesses that she had adopted the Ahl-e-Sunnat-wa-Jama'at Hanafi school of thought. The witnesses of the marriage are present and state that the marriage occurred before them and the sound of offer and acceptance reached their ears, and before the marriage, the girl said she had become part of the Ahl-e-Sunnat-wa-Jama'at.

The Answer: No one has the right of compulsory guardianship (Wilayat Jabriya) over an adult girl, especially in this situation where she is a Sunni and the father is a Rafizi (Shia). The questioner did not state any reason for lack of compatibility (Kafat). If it is said solely on the basis of religious difference, then a Sunni is millions of degrees better than a Rafizi...

1 Fatawa Hindiya, Chapter Four on Guardians, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/287
2 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi 1/192

एक समझदार वयस्क लड़की (चाहे वह कुंवारी हो या विवाहित) पर पिता या शासक में से किसी को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका निकाह करने का अधिकार नहीं है। यदि कोई ऐसा करता है, तो निकाह लड़की की सहमति पर निर्भर होगा। यदि वह इसे स्वीकार करती है, तो यह वैध हो जाएगा, और यदि वह इसे अस्वीकार करती है, तो यह रद्द हो जाएगा। सिराज अल-वहाज में ऐसा ही उल्लेख है। (त)

दुर-ए-मुख्तार में है: "जब वयस्क लड़की को निकाह की सूचना मिली और उसने उसे अस्वीकार कर दिया, फिर बाद में कहा कि मैं राजी हूं, तो यह वैध नहीं होगा क्योंकि पूर्व में अस्वीकार करने से निकाह रद्द हो चुका है। और अल्लाह बेहतर जानता है।" जब वयस्क लड़की को निकाह की सूचना मिली तो उसने उसे रद्द कर दिया हो, फिर बाद में उसने कहा कि मैं राजी हूँ, तो यह जायज़ नहीं होगा क्योंकि इससे पहले रद्द करने से निकाह बातिल (अमान्य) हो चुका है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसाला 409: बॉम्बे जेल रोड, पोस्ट नंबर 9, मारफ़त खलीफ़ा अहमद उल्लाह साहब, प्रेषित जमील मुहम्मद खान साहब देहलवी, 13 रमज़ान 1338 हिजरी। एक वयस्क शिया लड़की ने अपनी मर्जी से और माता-पिता की अनुमति के बिना, एक सुन्नी अफगानी मूल के व्यक्ति से चार गवाहों और एक वकील की उपस्थिति में काजी के सामने निकाह कर लिया। लड़की के माता-पिता, शिया होने के कारण, इस निकाह को रद्द कराना चाहते हैं और यह बहाना बनाते हैं कि चूंकि 'खलवत सहीहा' (वैध एकांत) नहीं हुआ है, इसलिए हमें निकाह रद्द कराने का अधिकार है। दूसरा, वे कहते हैं कि चूंकि निकाह बराबर (कुफ़ू) में नहीं हुआ है, इसलिए हमें रद्द करने का अधिकार है। निकाह की मजलिस में लड़की की ओर से नियुक्त वकील स्वीकार करता है कि निकाह हुआ और वह वकील बना, लेकिन उसने लड़की के ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) की आवाज नहीं सुनी। निकाह से पहले लड़की ने गवाहों के सामने घोषणा की थी कि उसने अहले सुन्नत व जमात हनफी पंथ अपना लिया है। निकाह के गवाह मौजूद हैं और वे गवाही देते हैं कि हमारे सामने निकाह हुआ और ईजाब-ओ-क़ुबूल की आवाज हमारे कानों तक पहुंची, और निकाह से पहले लड़की ने कहा कि मैं अहले सुन्नत व जमात की हो चुकी हूं।

उत्तर: वयस्क लड़की पर किसी का अनिवार्य अभिभावकत्व (विलायत जबरिया) नहीं है, खासकर इस स्थिति में कि वह सुन्नी है और पिता राफ़िज़ी (शिया)। प्रश्नकर्ता ने समानता (कफ़ात) की कमी का कोई कारण नहीं लिखा है। यदि यह केवल धर्म के अंतर के आधार पर कहा गया है, तो एक सुन्नी राफ़िज़ी से लाखों दर्जे बेहतर है...

1 फ़तावा हिन्दिया, बाब अल-रबेअ फ़िल औलिया, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/287 2 दुर-ए-मुख्तार, बाब अल-वली, मुतबा मुजतबाई दिल्ली 1/192

पेज 674 / 739

لا یجوز احد علی بالغة صحیحة العقل من اب اوسلطان بغیر اذنہا بکر اکانت اوثیبا فان فعل ذلک فالنکاح موقوف علی اجازتہا فان اجازتہا جازوان ردتہ بطل کذا فی السراج الوھاج۔ عاقلہ بالغہ باکرہ ہو یا ثیبہ اس کی مرضی کے خلاف باپ یا حاکم کسی کو بھی اس کے نکاح کا اختیار نہیں، اگر کسی نے ایسا نکاح کیا یہ نکاح لڑکی کی اجازت پر موقوف ہوگا، اگر وہ جائز کردے تو جائز اور رد کردے تو رد ہوجائے گا۔ سراج الوہاج میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

درمختار میں ہے: بلغہا فردت ثم قالت رضیت لم یجز لبطلانہ بالرد واللہ تعالی اعلم۔ جب بالغہ کو نکاح کی اطلاع ملی تو اس نے رد کر دیا ہو پھر بعد میں اس نے کہا میں راضی ہوں تو جائز نہ ہوگا کیونکہ قبل ازیں رد کرنے سے نکاح باطل ہوچکا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۰۹: از بمبئی جیل روڈ پوسٹ نمبر ۹ معرفت خلیفہ احمد اللہ صاحب مرسلہ جمیل محمد خان صاحب دہلوی ۱۳ رمضان ۱۳۳۸ھ ایک بالغہ شیعہ لڑکی نے برضا و رغبت خود بلا اجازت والدین ایک سنی المذہب افغانی النسب سے چار گواہ اور ایک وکیل کی موجودگی میں قاضی کے سامنے بمعرفت قاضی نکاح کردیا۔ منکوحہ کے والدین بوجہ شیعہ ہونے کے اس کا یہ نکاح فسخ کرانا چاہتے ہیں اور عذر یہ پیش کرتے ہیں کہ چونکہ خلوت صحیحہ نہیں ہوئی اس لئے نکاح کے فسخ کرانے کا استحقاق ہمیں حاصل ہے، دوسرے یہ کہتے ہیں کہ چونکہ نکاح ہم کفو سے نہیں ہوا لہذا ہمیں فسخ کا اختیار ہے، وکیل جو مجلس نکاح میں لڑکی کی جانب سے مقرر ہوا تھا وہ اس بات کا اقرار کرتا ہے کہ نکاح ہوا میں وکیل بھی بنا مگر لڑکی کے ایجاب و قبول کی آواز نہیں سنی، قبل از نکاح لڑکی نے گواہان کے سامنے اقرار کیا ہے کہ میں اہلسنت و جماعت حنفی مذہب اختیار کر

چکی ہوں، نکاح کے گواہ موجود ہیں وہ مقر ہیں کہ ہمارے سامنے نکاح ہوا ایجاب و قبول کی آواز ہمارے کانوں تک آئی، اور قبل از نکاح لڑکی نے کہا کہ میں اہلسنت و جماعت ہوچکی ہوں۔

الجواب: بالغہ پر ولایت جبریہ کسی کی نہیں خصوصاً اس حالت میں کہ وہ سنیہ ہے اور باپ رافضی، عدم کفاءت کی وجہ کوئی سائل نے نہیں لکھی، اگر صرف بربنائے تخالف مذہب ایسا کہا جاتا ہے تو سنی لاکھوں درجے رافضی سے

1 فتاوٰی ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۸۷ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

They are superior, and Mughal and Pathan are social equals (Kufw) in terms of tribe. His father's objection is invalid, and he has no power of annulment. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Al-Ayimma ahaqqu bi nafsiha[1] (An unmarried, sane, adult woman has more right over herself. - T). Allah the Almighty says:

'And never will Allah grant to the disbelievers a way [to triumph] over the believers.'[2] - Allah the Almighty knows best. Allah Almighty will never give disbelievers guardianship over believers. Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 410: Koh Rani Khet, adjacent to Jamia Masjid, asked by Abdul Rahman Sahib Khansaman, 9 Muharram 1330 AH. What do the scholars of religion and supporters of the firm Sharia say about this: A person from the Ahl-e-Sunnat wal-Jamaat told the wife of a Rafidhi (Shia) to meet with him. The Rafidhi's wife said she would meet him only on the condition that he marries his daughter to her son. The mentioned person accepted this condition, and adultery continued for a long time and still exists. Now that Sunni girl has become an adult, and the mentioned person is ready to marry her to that Rafidhi. The girl's maternal grandfather is present and also forbids it, and the entire Ahl-e-Sunnat wal-Jamaat forbids it, saying this marriage is not permissible. However, the mentioned person says it is permissible. In this situation, can this girl go to her grandfather or not? Is this marriage permissible or forbidden by Sharia, and will there be sin in it or not?

The Answer: This marriage is absolutely Haraam (forbidden) and pure adultery. It is stated in Alamgiri[3]:

'It is not permissible for him (an apostate) to marry a Muslim woman, nor an apostate woman, nor a Dhimmi (non-Muslim citizen), whether free or enslaved.' An apostate is not allowed to marry any Muslim woman, apostate woman, Dhimmi woman, whether free or a bondwoman. (T)

Since the girl is an adult and her father, God forbid, wants to give her for adultery, it is mandatory for the grandfather and other guardians to remove the girl from his possession and control and immediately marry her off to a Sunni, correctly-believing peer (Kufw) with the girl's consent. And Allah Almighty knows best.

[1] Muwatta Imam Malik, Kitab-an-Nikah, Mir Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 498. [2] Al-Quran Al-Karim, 141/4. [3] Fatawa Hindiyyah, Al-Bab-at-Tasi' fi Ahkam al-Murtaddin, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/255. Page 675 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

वे श्रेष्ठ हैं, और मुग़ल और पठान कबीले के हिसाब से हम-कफ़ू (समान) हैं। उसके पिता की आपत्ति व्यर्थ है और उसे निकाह रद्द करने का कोई अधिकार नहीं है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: 'अल-अयिम अहक्कु बि-नफ़्सिहा'[1] (बिना निकाह वाली समझदार बालिग महिला को अपने ऊपर अधिक अधिकार है। - त)। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल फरमाता है:

'और अल्लाह काफ़िरों को मोमिनों पर हरगिज़ कोई रास्ता (प्रभुत्व) नहीं देगा।'[2] - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अल्लाह तआला काफ़िरों को मोमिनों पर कभी भी विलायत (अभिभावकत्व) नहीं देगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 410: कोह रानी खेत, जामा मस्जिद के पास, अब्दुल रहमान साहब खानसामां द्वारा पूछा गया, 9 मुहर्रम 1330 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के समर्थक इस बारे में क्या कहते हैं कि अहले सुन्नत व जमात के एक व्यक्ति ने एक राफ़िज़ी (शिया) की पत्नी से कहा कि तुम मुझसे मिलो, तो उस राफ़िज़ी की औरत ने कहा कि मैं इस शर्त पर मिलूँगी कि तुम अपनी बेटी की शादी मेरे बेटे से करोगे। उस व्यक्ति ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया और लंबे समय तक व्यभिचार होता रहा और अब भी जारी है। अब वह सुन्नी लड़की वयस्क हो गई है और वह व्यक्ति उसकी शादी उस राफ़िज़ी से करने को तैयार है। उस लड़की का नाना मौजूद है और वह भी मना करता है, और पूरी अहले सुन्नत व जमात मना करती है और कहती है कि यह निकाह जायज़ नहीं है। लेकिन वह व्यक्ति कहता है कि जायज़ है। अब इस स्थिति में क्या यह लड़की अपने नाना के पास जा सकती है या नहीं? और क्या यह निकाह जायज़ है या शरई तौर पर मना है, इसमें गुनाह होगा या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): यह निकाह क़तई तौर पर हराम और विशुद्ध व्यभिचार है। आलमगीरी[3] में है:

'उसके(मुर्तद/धर्मत्यागी के) लिए जायज़ नहीं कि वह किसी मुस्लिम महिला से निकाह करे, न किसी मुर्तदा (धर्मत्यागी महिला) से, न किसी ज़िम्मी (गैर-मुस्लिम नागरिक) से, चाहे वह स्वतंत्र हो या दासी।' मुर्तद के लिए किसी भी मुस्लिम महिला, मुर्तदा, ज़िम्मी, स्वतंत्र या दासी महिला से निकाह जायज़ नहीं है। (त)

चूंकि लड़की वयस्क है और उसका पिता, अल्लाह न करे, उसे व्यभिचार के लिए देना चाहता है, तो नाना और अन्य अभिभावकों (औलिया) पर अनिवार्य है कि वे लड़की को उसके कब्ज़े और नियंत्रण

से बाहर निकालें और तुरंत लड़की की सहमति से किसी सुन्नी सही-अक़ीदा कफ़ू (समान पद वाले) के साथ उसका निकाह कर दें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[1] मुवत्ता इमाम मालिक, किताबुन निकाह, मीर मुहम्मद कुतुब खाना, कराची, पृष्ठ 498। [2] अल-क़ुरान अल-करीम, 141/4। [3] फ़तावा हिन्दिया, अल-बाब-अत-तासी' फ़ी अहकाम अल-मुर्तद्दीन, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 2/255। पेज 675 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

اعلیٰ ہیں، اور مغل پٹھان باعتبار قوم ہم کفو ہیں، اس کے باپ کا اعتراض باطل ہے اور اسے کوئی اختیار فسخ نہیں، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الا یم احق بنفسہا 1 (بے نکاح عاقلہ بالغہ کو اپنے نفس پر زیادہ اختیار ہے۔ ت) اللہ عزوجل فرماتا ہے:

لَنْ یَّجْعَلَ اللہُ لِلْکٰفِرِیْنَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ سَبِیْلًا 2 - واللہ تعالیٰ اعلم۔ اللہ تعالیٰ کافروں کو مومنوں پر ہر گز ولایت نہیں دے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم ۔ (ت)

مسئلہ ۴۱۰: کوہ رانی کھیت متصل جامع مسجد مسئولہ عبدالرحمان صاحب خانساماں ۹ محرم ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین وحامیانِ شرع متین اس بارے میں کہ ایک شخص اہلسنت و جماعت نے ایک رافضی کی بیوی سے کہا کہ تو مجھ سے مل، تو اس رافضی کی عورت نے کہا کہ اس شرط پر ملوں گی اگر تو اپنی بیٹی کی شادی میرے بیٹے سے کرے، اس شخص مذکور نے اس شرط کو قبول کیا اور مدت دراز تک زناکاری رہی اور ابھی تک موجود ہے، اب وہ لڑکی اہلسنت کی جوان ہو گئی ہے اور شخص مذکور اس کی شادی اس رافضی سے کرنے کو تیار ہے، اور اس لڑکی سنیہ کا نانا موجود ہے وہ بھی منع کرتا ہے اور تمام اہلسنت و جماعت منع کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ نکاح جائز نہیں، مگر شخص مذکور کہتا ہے کہ جائز ہے، اب اس صورت میں یہ لڑکی اپنے نانا کو مل سکتی ہے یا نہیں؟ اور یہ نکاح جائز ہے یا ممنوع شرعاً اس میں گناہ ہو گا یا نہیں؟

الجواب: یہ نکاح حرام قطعی اور زنائے خالص ہے، عالمگیری 3 میں ہے:

لا یجوز لہ ان یتزوج امرأۃ مسلمۃ و لا مرتدۃ ولا ذمیۃ لا حرۃ ولا مملوکۃ ۔ مرتد کو کسی مسلمان عورت، مرتدہ، ذمیہ، آزاد یا لونڈی عورت سے نکاح جائز نہیں ہے۔ (ت)

جبکہ وہ لڑکی جوان ہے اور باپ اسے معاذ اللہ زنا کے لئے دینا چاہتا ہے تو نانا وغیرہ دیگر اولیاء پر لازم ہے کہ لڑکی کو اس کے قبضہ تصرف سے نکال کر فوراً لڑکی کی رضا سے کسی سنی صحیح العقیدہ کفو کے ساتھ اس کا نکاح کر دیں واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 مؤطا امام مالک کتاب النکاح میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۴۹۸ 2 القرآن الکریم ۱۴۱/۴ 3 فتاوٰی ہندیہ الباب التاسع فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۵۵ Page 675 of 739

Fatawa Rizvia Volume 11

Issue 411 to 412: From Post Office Balyadakhana, Register Amstola, Maulvi Hakim Abdul Shakoor Sahib, 28 Shawwal 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah, whose age was approximately ten years, after the death of her parents, became upset with her real paternal uncle Zaid and went to her real maternal uncle's house and started living there. After some time, her maternal uncle married Hindah before her puberty to a person named Bakr without the permission of her real paternal uncle, on the condition that "when you come and build a house in my town, only then will we send the girl with you (Rukhsati)." Now Bakr is not building a house in that town and wants to take the girl after Rukhsati, but the girl is not willing to go there. Did the maternal uncle's marriage of the girl while her real paternal uncle was present become valid according to Sharia or not? Secondly, when Bakr did not build a house in that town, will the marriage be annulled or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The marriage performed by the maternal uncle without the paternal uncle's permission was permissible and valid, but it was dependent on the paternal uncle's approval. If he had rejected it, it would have been rejected. However, it is evident from the wording of the question that he did not reject it; he was pleased with the marriage but not pleased with taking her to another place. Since this is the situation, the marriage has also become effective. The girl was given the 'option of puberty' (Khiyar-ul-Bulugh). It is apparent from the question that the girl, who has been an adult for several years, did not exercise this option. She is also not unhappy with the marriage itself, but rather with moving to another place. Therefore, in the mentioned case, the marriage has become binding, and no one has the right to object to it. The condition to build a house in that village is a void (fasid) condition. A marriage does not become void due to a void condition; rather, the condition itself becomes null and void. The husband has the right to take the woman to his home. Allah the Almighty says:

"Lodge them where you dwell, according to your means."[1] — (Provide housing for wives along with your own housing according to your capacity. (T))

Yes, if it becomes apparent that the husband wants to take the woman to another place specifically to cause her distress and does not want to keep her here, then permission to take her away will not be granted.

"And do not harm them in order to distress them."[2] — This is the gist of what the researchers have concluded, and it is upon you to refer to Radd al-Muhtar. And Allah the Almighty knows best. (Do not cause harm to wives to make things narrow for them; this is the true meaning of the scholars' discourse. Referring to Radd al-Muhtar is necessary for you. And Allah the Almighty knows best. (T))

[1] Al-Quran Al-Karim 65/6 [2] Al-Quran Al-Karim 65/6

फ़तावा रिज़विया जिल्द ग्यारहवीं

मसला 411 से 412: स्थान बलिया डाकखाना रजिस्टर अमस्तोला, मौलवी हकीम अब्दुल शकूर साहब, 28 शव्वाल 1339 हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि हिंदा जिसकी उम्र लगभग दस साल थी, अपने वालिदैन (माता-पिता) के इंतकाल के बाद अपने सगे चाचा ज़ैद से नाराज़ होकर अपने सगे मामा के घर चली गई और वहां रहने लगी। कुछ समय बाद उसके मामा ने हिंदा का निकाह उसके बालिग होने से पहले, सगे चाचा की अनुमति के बिना बक्र नाम के व्यक्ति से इस शर्त पर कर दिया कि "जब तुम मेरी बस्ती में आकर घर बनाओगे, तब हम लड़की को विदा करेंगे।" अब बक्र उस बस्ती में घर नहीं बना रहा है और लड़की की विदाई कराकर ले जाना चाहता है, लेकिन लड़की वहां जाने के लिए राज़ी नहीं है। क्या सगे चाचा के होते हुए उसके मामा द्वारा किया गया निकाह शरीयत के अनुसार सही है या नहीं? दूसरा, जब बक्र ने उस बस्ती में घर नहीं बनाया, तो क्या निकाह रद्द हो जाएगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: चाचा की अनुमति के बिना मामा ने जो निकाह किया वह जायज़ और सही हुआ, लेकिन चाचा की अनुमति पर निर्भर था। अगर वह इसे अस्वीकार कर देता तो यह रद्द हो जाता। लेकिन सवाल की इबारत (शब्दावली) से स्पष्ट है कि उसने इसे अस्वीकार नहीं किया; वह निकाह पर राज़ी था लेकिन दूसरी जगह ले जाने पर राज़ी नहीं था। जब स्थिति ऐसी है, तो वह निकाह प्रभावी (लागू) भी हो गया। लड़की को 'खियार-ए-बुलूग' (वयस्कता का विकल्प) मिला था। सवाल की इबारत से ज़ाहिर है कि लड़की ने, जिसे बालिग हुए कई साल बीत चुके हैं, इस विकल्प का उपयोग नहीं किया। वह भी निकाह के मूल से नाराज़ नहीं है, बल्कि दूसरी जगह जाने से है। अतः उक्त स्थिति में निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो गया और किसी को इस पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं रहा। उस गाँव में घर बनाने की शर्त 'फ़ासिद' (शून्य) है, और फ़ासिद शर्त से निकाह फ़ासिद नहीं होता, बल्कि वह शर्त खुद ही निरस्त हो जाती है। पति को अधिकार है कि वह औरत को अपने घर ले जाए, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"उन्हें वहीं रखो जहाँ तुम रहते हो, अपनी सामर्थ्य के अनुसार।"[1] — (पत्नियों को अपने निवास के साथ अपनी गुंजाइश के अनुसार निवास दो। (त))

हाँ, यदि यह स्पष्ट हो जाए कि पति औरत को निश्चित रूप से कष्ट देने के लिए दूसरी जगह ले जाना चाहता है और यहाँ रखना नहीं चाहता, तो ले जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

"और उन्हें तंग करने के लिए कष्ट न पहुँचाओ।"[2] — शोधकर्ताओं (मुहक़्क़िक़ीन) के कलाम का सार यही है और आपको 'रद्दुल मुहतार' की ओर रुजू (संदर्भ) करना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (पत्नियों को तंग करने के लिए नुक़सान न पहुँचाओ, शोधकर्ताओं के कलाम का असली अर्थ यही है। आप पर 'रद्दुल मुहतार' की ओर देखना आवश्यक है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त))

[1] अल-कुरान अल-करीम 65/6 [2] अल-कुरान अल-करीम 65/6

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۴۱۱ تا ۴۱۲: از مقام بلیا ڈاکہانہ رجسٹر امستولہ مولوی حکیم عبد الشکور صاحب ۲۸ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ جس کی عمر تخمیناً دس برس کی تھی بعد انتقال اپنے والدین کے اپنے حقیقی چچا زید سے خفا ہو کر اپنے حقیقی ماموں کے گھر چلی گئی اور وہاں رہنے لگی، کچھ عرصہ کے بعد اس کے ماموں نے ہندہ کا عقد قبل بلوغ مسمّٰی بکر سے بلا اجازت حقیقی چچا کے اس شرط پر کیا کہ تم جب میری بستی میں آ کر مکان بناؤ گے اس وقت ہم لڑکی رخصت کریں گے، اب بکر اس بستی میں مکان نہیں بناتا ہے اور لڑکی کی رخصت کرا کر لے جانا چاہتا ہے اور لڑکی وہاں جانے پر راضی نہیں، کیا حقیقی چچا کے موجود ہوتے ہوئے اس کے ماموں نے عقد کر دیا تو یہ عقد شرعاً درست ہوا یا نہیں؟ دوم جب بکر نے اس بستی میں مکان نہیں بنایا تو عقد فسخ ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: بے اجازت چچا کے ماموں نے جو نکاح کیا جائز و صحیح ہوا، مگر چچا کی اجازت پر موقوف تھا، اگر وہ رد کر دیتا رد ہو جاتا، مگر عبارت سوال سے ظاہر کہ اس نے رد نہ کیا نکاح پر راضی ہوا دوسری جگہ لے جانے پر راضی نہیں، جب صورت یہ ہے تو وہ نکاح نافذ بھی ہو گیا لڑکی کو خیارِ بلوغ ملا، عبارت سوال سے ظاہر ہے کہ لڑکی نے جسے بالغہ ہوئے کئی سال گزرے اس خیار کا استعمال نہ کیا، وہ بھی نفس نکاح سے ناراض نہیں بلکہ دوسری جگہ جانے سے۔ پس صورت مذکورہ میں نکاح لازم ہو گیا اور کسی کو اس پر اعتراض کا اختیار نہ رہا۔ اس گاؤں میں مکان بنانے کی شرط فاسد ہے، اور شرطِ فاسد سے نکاح فاسد نہیں ہوتا بلکہ خود وہ شرط ہی باطل ہو جاتی ہے، اسے اختیار ہے کہ عورت کو اپنے گھر لے جائے، قال اللہ تعالیٰ:

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ -١ (بیویوں کو اپنی سکونت کے ساتھ سکونت گنجائش کے مطابق دو۔ (ت))\n ہاں اگر ظاہر ہو کہ شوہر عورت کو ضرور ایذا دینے کے لئے دوسری جگہ لے جانا چاہتا ہے اور یہاں رکھنا نہیں چاہتا تو لے جانے کی اجازت نہ دیں گے۔

وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ -٢ ھذا حاصل ماحط علیہ کلام المحققین و علیک بردالمحتار- واللہ تعالیٰ اعلم۔ (بیویوں کو تنگ کرنے کے لئے ضرر مت دو، محققین کے کلام کا مصداق یہی ہے، آپ پر رد المحتار کی طرف رجوع ضروری ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت))

١ القرآن الکریم ٦/٦٥ ٢ القرآن الکریم ٦/٦٥

Fatawa Rizwia Volume 11

Mas'alah 413: From Gho, Gho Post Office Estate, District Dinajpur, Post Office Khas. Questioned by Haji Syed Noor-ul-Hasan Sahib Bihari, 16 Muharram 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this: A minor girl has two minor real brothers, a real mother, a real paternal uncle, and a real maternal uncle. After the death of the girl's father, the minor girl, both minor brothers, and the maternal uncle were under the guardianship of the maternal uncle and paternal uncle. The maternal uncle, paternal uncle, and the two minor real brothers are currently abroad with the uncle and maternal uncle. In the absence of the maternal uncle, paternal uncle, and brothers, some non-relatives and the boy's mother misled the girl's mother and, after gaining her consent, performed her marriage with the permission of a distant cousin. Both the maternal and paternal uncles are very angry about this marriage and have withdrawn their guardianship. The girl has always lived with her mother in her real paternal uncle's house. There has been no physical relationship with the husband; only the marriage contract (Nikah) has taken place, and ceremonies like the wedding procession (Baraat) are pending. Is this marriage valid or not? If it is invalid, is it permissible to marry her to someone else or remarriage with the first husband?

Al-Jawab (The Answer): If the person to whom she was married is not a suitable match (Kufu) for the girl—meaning he is so low in religion, lineage, character, or profession that marrying him would be a cause of shame and disgrace for the girl's guardians—then this marriage has not taken place at all. As long as the girl is a minor, no one can marry her to such a person. If the person she married is a suitable match (Kufu), i.e., not inferior in any respect, then this marriage remains dependent on the permission of the girl's real paternal uncle. If he validated it, even while being angry—for instance, if he said, "Well, the marriage has happened, but I am withdrawing from guardianship"—then the marriage has become effective. Neither the paternal nor the maternal uncle has the right to marry her elsewhere. However, the girl will have the right to object to it if she expresses her disapproval immediately upon reaching puberty. If the paternal uncle rejected it upon hearing the news, then it is void. The paternal uncle has the right to marry her to any suitable match he chooses, even to the same husband. In short, it depends on the exact words the paternal uncle spoke when he first heard the news. It is necessary to know those exact words, in all honesty, without any addition or subtraction. And Allah Almighty knows best.

Mas'alah 414: From Mauza Achura, Post Office Bijari, District Faridpur, Bengal. Questioned by Haji Abdul Ghani Sahib, 21 Muharram 1339 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding the following matter: Zaid's daughter, Hindah, who is an adult, has...

फतावा रिज़विया ग्यारहवाँ खंड

मसाला 413: स्थान घो, घो डाकखाना स्टेट, जिला दीनाजपुर, डाकखाना खास से। मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता): हाजी सैयद नूरुल हसन साहब बिहारी, 16 मुहर्रम 1339 हिजरी।

क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन कि एक नाबालिग लड़की जिसके दो नाबालिग सगे भाई हैं और एक सगी माँ और एक सगा चाचा और एक सगा मामू हैं। लड़की नाबालिग और दोनों भाइयों व चाचा सगे और मामू की किफालत (देखभाल) बाप के इंतकाल के बाद सगा मामू और सगा चाचा कर रहे हैं। मामू और सगा चाचा और दो नाबालिग सगे भाई परदेस में चाचा व मामू के साथ हैं। मामू, चाचा और भाई की गैर-मौजूदगी में गैर-रिश्तेदारों और लड़के की माँ ने बहका कर लड़की की माँ को राजी करके चचेरे चाचा की इजाजत से निकाह कर दिया। इस निकाह से मामू और चाचा दोनों सख्त नाराज हैं और किफालत करने से हाथ खींच लिया है। लड़की हमेशा से जब से अपनी माँ के साथ अपने सगे चाचा के घर में रहती है, शौहर के साथ कोई रिश्ता नहीं हुआ है, सिर्फ निकाह हुआ है, बारात आदि की रस्में बाकी हैं। क्या यह निकाह जायज़ हुआ या नहीं? अगर नाजायज़ हुआ तो दूसरे के साथ या पहले शौहर के साथ दोबारा जायज़ होगा या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): यह शख्स जिससे निकाह हुआ, अगर लड़की का 'कुफ़ू (बराबर का) नहीं है यानी मजहब या नसब या चाल-चलन या पेशे में इतना कम है कि उससे निकाह होना लड़की के वलियों (संरक्षकों) के लिए शर्म और अपमान का कारण है, तो यह निकाह शुरू से हुआ ही नहीं। जब तक लड़की नाबालिग है, कोई भी उसका निकाह ऐसे शख्स से नहीं कर सकता। और अगर जिससे निकाह हुआ वह कुफ़ू है, यानी किसी बात में वैसा कम नहीं है, तो यह निकाह लड़की के सगे चाचा की इजाजत पर निर्भर रहा। अगर उसने उसे जायज़ करार दे दिया, भले ही नाराजगी के साथ, जैसे कहे "खैर, निकाह तो हो गया मगर हम किफालत से हाथ खींचते हैं," तो निकाह लागू हो गया। चाचा या मामू किसी को अधिकार नहीं कि वह दूसरी जगह निकाह कर दें। हाँ, लड़की को इस पर एतराज (विरोध) का हक होगा अगर वह बालिग होते ही तुरंत अपनी नाराजगी जाहिर करे। और अगर चाचा ने खबर सुनकर निकाह रद्द कर दिया, तो वह रद्द हो गया। चाचा को अधिकार है कि वह जिस कुफ़ू से चाहे निकाह कर दे, चाहे उसी शौहर से। संक्षेप में, मामला उन शब्दों पर निर्भर है जो चाचा ने खबर सुनने पर पहली बार कहे। ईमानदारी से वे पूरे शब्द बिना किसी बदलाव के जानना जरूरी हैं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसाला 414: मौजा अचूरा, डाकखाना बिजारी, जिला फरीदपुर, बंगाल से। मुस्तफ़्ती: हाजी अब्दुल गनी साहब, 21 मुहर्रम 1339 हिजरी।

क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन निम्न मसले में कि जैद की बालिग लड़की हिन्दा ने...

فتاویٰ رضویہ جلد یازدہم

مسئلہ ۴۱۳: از مقام گھو، گھو ڈاک خانہ اسٹیٹ ضلع دینا چپور ڈاکخانہ خاص مسئولہ حاجی سید نورالحسن صاحب بہاری ۱۶ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ایک لڑکی نابالغہ جس کے دو نا بالغ بھائی حقیقی ہیں اور ایک حقیقی ماں اور ایک حقیقی چچا اور اور ایک حقیقی ماموں ہیں، لڑکی نابالغہ اور دونوں بھائی و چچا حقیقی و ماموں کی کفالت بعد فوت باپ و شوہر، بھائی شوہر کا بھائی ماموں کا یعنی ماموں حقیقی و چچا حقیقی کر رہا ہے، ماموں و چچا حقیقی اور دو بھائی نابالغ حقیقی پردیس میں چچا و ماموں کے ساتھ ہیں، ماموں و چچا و بھائی کی عدم موجودگی میں غیر اقربا اور لڑکے کی ماں نے بہکا کر لڑکی کی ماں کو راضی کرکے چچیرے چچا کی اجازت سے نکاح کردیا، اس نکاح سے ماموں اور چچا دونوں سخت ناراض ہیں اور کفالت کرنے سے دست بردار ہیں، لڑکی ہمیشہ سے جب سے اپنی ماں کے ساتھ اپنے حقیقی چچا کے مکان میں رہتی ہے شوہر مجازی سے کوئی تعلق نہیں ہوا صرف عقد ہوا ہے رسم بارات وغیرہ باقی ہے نکاح جائز ہوا یا نہیں؟ اگر نا جائز ہوا تو دوسرے کے ساتھ یا شوہر اول کے ساتھ دوبارہ جائز ہوگا یا نہیں؟

الجواب: یہ شخص جس سے نکاح ہوا اگر لڑکی کا کفو نہیں یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ میں ایسا کم ہے کہ اس سے نکاح ہونا اولیائے دختر کے لئے باعث ننگ وعار ہے تو یہ نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں۔ نہ جب تک لڑکی نابالغہ ہے کسی ایسے شخص سے کوئی اس کا نکاح کرسکتا ہے، اور اگر جس سے نکاح ہوا وہ کفو ہے یعنی کسی بات میں ویسا کم نہیں تو یہ نکاح لڑکی کے حقیقی چچا کی اجازت پر موقوف رہا، اگر اس نے جائز کردیا اگرچہ ناراضی کے ساتھ، مثلاً کہے "خیر نکاح تو ہو گیا مگر ہم کفالت سے دست بردار ہیں" تو نکاح نافذ ہوگیا، چچا یا ماموں کسی کو

اختیار نہیں کہ وہ دوسری جگہ نکاح کردے، ہاں لڑکی کو اس پر اعتراض کا حق ہوگا اگر بالغ ہوتے ہی فوراً فوراً اپنی ناراضی کا اظہار کرے، اور اگر چچا نے خبر سن کر رد کیا تو رد ہوگیا، چچا کو اختیار ہے جس کفو سے چاہے نکاح کردے اگرچہ اسی شوہر سے، غرض ان الفاظ پر مدار ہے جو چچا نے خبر سننے پر پہلی پہل کہے ایماناً وہ پورے الفاظ بے کم وبیش تبدیلی معلوم ہونا ضروری ہیں، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۱۴: از موضع اچورہ ڈاکخانہ بیجاری ضلع فرید پور ملک بنگال مسئولہ حاجی عبدالغنی صاحب ۲۱ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مسئلہ ذیل میں کہ زید کی لڑکی بالغہ ہندہ نے

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

Without Zaid's permission, (his daughter) Hinda married an equal (Kufu), Bakr. Upon hearing this, Zaid became very unhappy and, through trickery and excuses, brought Hinda from Bakr's house back to his own home. He then told Hinda that this marriage was not valid because "I am your father, and marriage without a father's permission is not correct." More than a year passed in this state. Then, Zaid married Hinda to Amr. Now, the matter to be inquired is whether the second marriage is valid or not? If not, what is the ruling in Sharia regarding the children born from Amr and regarding Zaid? Can Zaid be an Imam or not? And if the second marriage is valid, is Bakr liable to pay Mahr-al-Mithl (standard dowry) or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: If the person the woman married first was her Sharia equal (Kufu), meaning he was not so low in religion, lineage, conduct, or profession that marrying him would be a cause of shame and disgrace for the woman's father, then that first marriage became valid and this second marriage is void. Both the woman's father and this second husband are guilty of a major sin (Kabira). The child born belongs to the first husband. In this case, it is a sin to make Zaid an Imam until he repents. However, if the first person the woman married was not a Sharia equal in the aforementioned sense, then the first marriage was void and the second marriage is valid. The child belongs to this second husband. There is no blame on Zaid and Amr; praying behind them is not prohibited for this reason. If the first marriage resulted in intimacy, he must give Mahr-al-Mithl, i.e., the amount of dowry typical for such a woman, regardless of what amount was fixed. And Allah Almighty knows best.

Problem 215: From village Atariya, district Bareilly, requested by Qamaruddin Sahib, 1st Safar al-Muzaffar 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: A woman was a widow and an adult because she already had a son. For a second marriage, she chose a person who was of her own caste, young, knowledgeable, and well-off. However, the widow's father was not willing to marry her to that young man. Zaid, having received some incentive from a person the father approved of, brought charms (ta'wiz) and sweets and fed them to her so that her inclination would turn towards the young man her father liked. While feeding her the sweets, Zaid mentioned the name of the person she liked, saying, "I am feeding you sweets on behalf of the person you like." Afterward, he forcibly married the widow to the person she disliked and several men forcibly took her to that person's house. Is this marriage valid or not? Zaid has been made the president by the committee. Is it permissible to pray behind Zaid now? Because when the committee members made

Zaid the president, they did not know about this incident, and this forced marriage happened through Zaid's efforts. Clarify and be rewarded.

जिल्द ग्यारहवीं फतावा रज़विया

बिना ज़ैद की अनुमति के, (उसकी बेटी) हिंदा ने अपने कुफ़ू (बराबर के स्तर वाले) बक्र के साथ निकाह किया। ज़ैद यह सुनकर बहुत नाखुश हुआ और हीले-बहानों से हिंदा को बक्र के घर से अपने घर ले आया। फिर हिंदा से कहा कि यह निकाह जायज़ नहीं हुआ क्योंकि "मैं तुम्हारा बाप हूँ और बाप की अनुमति के बिना निकाह सही नहीं है।" इस हाल में एक साल से ज़्यादा गुज़र गया। फिर ज़ैद ने हिंदा का निकाह अम्र के साथ कर दिया। अब पूछने योग्य बात यह है कि दूसरा निकाह सही है या नहीं? अगर नहीं, तो अम्र से जो औलाद हुई उसका और ज़ैद का शरीयत में क्या हुक्म है? क्या ज़ैद इमाम हो सकता है या नहीं? और अगर दूसरा निकाह सही है, तो क्या बक्र पर महरे मिस्ल (मानक महर) लाज़िम है या नहीं? बयान करें, सवाब पायें।

जवाब: पहला निकाह औरत ने जिससे किया था, अगर वह कुफ़ू-ए-शरई था यानी मज़हब, नसब, चाल-चलन या पेशे में इतना कम न था कि उसके साथ औरत का निकाह होना औरत के बाप के लिए शर्म और अपमान का कारण हो, तो वह पहला निकाह हो गया और यह दूसरा निकाह बातिल (अमान्य) हुआ। औरत का बाप और यह दूसरा शौहर दोनों सख़्त कबीरा (गुनाह) के गुनहगार हैं, और जो बच्चा पैदा हुआ वह पहले शौहर का है। इस सूरत में ज़ैद को इमाम बनाना गुनाह है जब तक कि वह तौबा न करे। और अगर औरत ने जिससे पहला निकाह किया था वह उपरोक्त अर्थ में कुफ़ू-ए-शरई न था, तो वह पहला निकाह बातिल हुआ और दूसरा निकाह सही हुआ। बच्चा इस दूसरे शौहर का है। ज़ैद और अम्र पर कोई इल्जाम नहीं, उनके पीछे नमाज़ इस वजह से मना नहीं है। पहला निकाह जिससे हुआ था, अगर उसने सोहबत (शारीरिक संबंध) कर ली है, तो उसे महरे मिस्ल देना होगा, यानी ऐसी औरत का जितना महर होता है, जो महर तय हुआ था उसका लिहाज़ नहीं किया जाएगा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है)।

मसला २१५: ग्राम अतरिया, ज़िला बरेली से प्रेषित, कमर-उद-दीन साहब, १ सफर अल-मुज़फ्फर १३३९ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: एक औरत बेवा थी और बालिग थी क्योंकि उसका एक लड़का पैदा हो चुका था। उस बेवा ने दूसरे निकाह के लिए एक ऐसे व्यक्ति को चुना जो उसी की जाति का था, जवान था, पढ़ा-लिखा था और आर्थिक रूप से संपन्न था। लेकिन उस बेवा का बाप उस जवान से निकाह करने को राजी नहीं था। ज़ैद ने उस व्यक्ति की तरफ से (जिसके साथ बाप राजी था) कुछ लालच पाकर तावीज़ और मिठाई ले जाकर खिलाई ताकि उसका रुझान उस जवान की तरफ हो जाए जिसे उसका बाप पसंद करता था। मिठाई खिलाते समय ज़ैद ने उस

व्यक्ति का नाम लिया जिसे वह बेवा पसंद करती थी कि "मैं तुम्हें उस व्यक्ति की तरफ से मिठाई खिला रहा हूँ जिसे तुम पसंद करती हो"। इसके बाद, उसने उस बेवा का निकाह जबरदस्ती उस व्यक्ति से करा दिया जिसे वह नापसंद करती थी और कई आदमियों ने पकड़कर जबरदस्ती उसे उस व्यक्ति के घर पहुँचा दिया। क्या यह निकाह सही है या नहीं? और ज़ैद को अंजुमन (समिति) की ओर से सदर (अध्यक्ष) बनाया गया है, अब ज़ैद के पीछे नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं? क्योंकि अंजुमन वालों ने जब ज़ैद को सदर बनाया था तो उन्हें इस मामले का पता नहीं था और यह निकाह ज़ैद ही की कोशिशों से जबरदस्ती हुआ था। बयान करें, सवाब पायें।

पेज 678 का 739

بلا اجازت زید کے اپنے کفو بکر کے ساتھ نکاح کیا، زید سن کر نہایت ناخوش ہو کر بکر کے مکان سے حیلہ و بہانہ کر کے ہندہ کو اپنے مکان میں لے آیا، پھر ہندہ سے کہا کہ یہ نکاح جائز نہیں ہوا اس لئے کہ میں تیرا باپ ہوں بلا اجازت باپ کے نکاح صحیح نہیں۔ اس حال میں ایک سال سے زیادہ گزر گیا، پھر زید نے ہندہ کا نکاح عمرو کے ساتھ کیا، اب دریافت طلب امر یہ ہے کہ نکاح ثانی صحیح ہے یا نہیں؟ اگر نہیں تو جو اولاد عمرو سے ہوئی اس کا اور زید کے شرع شریف میں کیا حکم ہے زید امام ہو سکتا ہے یا نہیں؟ اور اگر نکاح ثانی صحیح ہے تو بکر پر مہر مثل لازم ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: پہلا نکاح عورت نے جس سے کیا تھا اگر وہ کفو شرعی تھا یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ میں ایسا کم نہ تھا کہ اس کے ساتھ عورت کا نکاح ہونا عورت کے باپ کے لئے باعث ننگ و عار ہو تو وہ پہلا نکاح ہو گیا اور یہ دوسرا نکاح باطل ہوا، عورت کا باپ اور یہ دوسرا شوہر دونوں سخت کبیرہ کے مرتکب ہیں، اور بچہ جو پیدا ہوا وہ پہلے شوہر کا ہے، اس صورت میں زید کو امام کرنا گناہ ہے جب تک توبہ کرے، اور اگر پہلا نکاح عورت نے جس سے کیا وہ بمعنی مذکور کفو شرعی نہ تھا تو وہ پہلا نکاح باطل ہوا اور دوسرا نکاح صحیح ہوا، بچہ اس دوسرے شوہر کا ہے، زید و عمرو پر کوئی الزام نہیں ان کے پیچھے نماز اس وجہ سے ممنوع نہیں، پہلا نکاح جس سے ہوا تھا اگر وہ قربت کر چکا ہے تو اسے مہر مثل دینا آئے گا یعنی ایسی عورت کا جتنا مہر ہو جو مہر بندھا تھا اس کا لحاظ نہ کیا جائے گا واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۱۵: از موضع اتریا ضلع بریلی مسئولہ قمر الدین صاحب یکم صفر المظفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت رانڈ تھی اور بالغہ تھی کیونکہ اس کے ایک لڑکا پیدا ہو چکا تھا اس رانڈ نے عقد ثانی کے واسطے ایک شخص کو جو اسی کی

ذات کا تھا اور جوان بھی تھا اور علم دار بھی تھا اور روٹی کپڑے سے خوش تھا تجویز کی مگر اس جوان کے واسطے اس رانڈ کا والد نکاح کرنے کو راضی نہ تھا، زید نے کچھ لالچ پا کر اس شخص کی طرف سے جس کے ساتھ رانڈ کا والد راضی ہے تعویذ اور مٹھائی لے جا کر کھلایا تاکہ اس کا خیال اس جوان کی طرف ہو جس سے اس کا والد راضی تھا، اور زید نے مٹھائی کھلاتے وقت اس شخص کا نام لیا کہ وہ رانڈ جس سے راضی تھی کہ تم کو میں اس شخص کی طرف سے مٹھائی کھلاتا ہوں جس سے کہ تم راضی ہو، اس کے بعد میں اس رانڈ کا نکاح اس شخص کے ساتھ زبردستی کرا دیا جس سے وہ رانڈ ناراض تھی اور زبردستی چند آدمی پکڑ کر اس شخص کے یہاں پہنچا آئے، یہ نکاح درست ہے یا نہیں؟ اور زید کو انجمن کی طرف سے صدر بنایا ہے اب زید کے پیچھے نماز پڑھنی جائز ہے یا نہیں؟ کیونکہ انجمن والوں نے زید کو صدر ممبر بنایا تو ان کو یہ قصہ معلوم نہیں تھا اور یہ نکاح زبردستی زید ہی کی کوشش سے ہوا تھا، بینوا توجروا

Volume 11 Fatawa Rizvia

The Answer: The questioner stated that while obtaining consent from the woman, she was told the marriage was with someone else, with whom she was not satisfied. However, people held her hands and feet and forced her to give consent. In the aforementioned situation, the marriage is valid because coercion (Ikrah) has no role in marriage and divorce; just as they occur by free will, they occur by force too. It is stated in the Hadith: "Three things, their seriousness is serious and their jest is serious: marriage, divorce, and manumission." Three things in which seriousness and joking are both considered serious: marriage, divorce, and manumission. (Reference) As for whether coercion is a ground for legal blame or not, it may not be. Rather, it could be for the woman's welfare. Women are deficient in intellect, and who is more compassionate towards children than a father, except for Allah and His Messenger? It appears that there was harm in her choice and goodness in her father's choice. In such a state of strong probability, this coercion cannot be called blameworthy, just like forcing medicine upon a patient. Therefore, there is no defect in the leadership (imamat) of Zaid for this reason. And Allah knows best. Issue 416: From Old City, Mohalla Sufi Tola, questioned by Tufail Ahmad Sahib, 11 Safar 1339 AH. What do the scholars of the religion and the jurists of the clear Sharia say about this matter: A girl's parents married her to a boy who had already abandoned a wife and two children and is the girl's maternal cousin. Without gathering the girl's close relatives (paternal uncle, aunt's husband, brother, etc.), she was taken to a neighborhood under deception, and a student from a guesthouse (Sarai Kham) performed the ceremony. The maternal uncle of both was appointed as the representative (Wakil). (The first witness is the maternal uncle of both, and the second witness is the boy's paternal cousin). When the uncle went to obtain consent, she did not respond. Despite insistence, she remained silent. Then the uncle slapped her, causing her to cry, and the uncle went out and had the marriage performed.

1. Jami' at-Tirmidhi, Book of Divorce, chapter regarding seriousness and jesting in divorce, H.M. Saeed Company, Kutubkhana Rashidiyah Delhi, 1/124; Sunan Abi Dawood, Book of Divorce, chapter on divorce in jesting, Aftab Alam Press Lahore, 1/298; Ad-Durr al-Manthur under the verse "And do not take the revelations of Allah in jest", Maktaba Ayatullah al-Uzma Qum Iran, 1/286. Note: The words in Durr al-Manthur are: "Three things, whoever says them playfully or non-playfully, they are binding upon him: divorce, manumission, and marriage." In Jami' at-Tirmidhi and Sunan Abi Dawood, 'ar-raj'ah' (revocation of

divorce) is mentioned instead of 'al-ataq' (manumission). A detailed discussion on both words is found in Nasb ar-Rayah; for study, see Volume 3, Book of Faith, pages 293 and 294. — Fida Muhammad.

उत्तर: प्रश्नकर्ता ने बताया कि स्त्री से अनुमति लेते समय उसे बताया गया था कि यह निकाह किसी और से हो रहा है जिससे वह सहमत नहीं थी, लेकिन किसी ने हाथ पकड़े, किसी ने पैर और उससे ज़बरदस्ती अनुमति दिलवाई गई। उल्लेखित स्थिति में निकाह सही हो गया क्योंकि निकाह और तलाक़ में ज़बरदस्ती (इकराह) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता; जिस प्रकार वे प्रसन्नता से हो जाते हैं, वैसे ही ज़बरदस्ती से भी हो जाते हैं। हदीस में कहा गया है: "तीन चीज़ें ऐसी हैं जिनमें गंभीरता भी गंभीर है और मज़ाक भी गंभीर माना जाता है: निकाह, तलाक़ और दासमुक्ति (अताक़)।" तीन चीज़ें जिनमें गंभीरता और मज़ाक दोनों को गंभीरता ही माना जाता है: निकाह, तलाक़ और दासमुक्ति। (त) रही बात यह कि मजबूर करना शरीयत के अनुसार दोष का कारण है या नहीं, तो संभव है कि न हो। बल्कि यह स्त्री की भलाई के लिए हो सकता है। स्त्रियाँ बुद्धि में कम होती हैं, और अल्लाह और उसके रसूल के सिवाय पिता से अधिक संतानों पर कौन दयालु है? ज़ाहिर है कि जहाँ वह चाहती थी उसमें बुराई थी और जहाँ पिता ने चाह उसमें भलाई थी। ऐसी प्रबल संभावना की स्थिति में इस ज़बरदस्ती को दोष नहीं ठहराया जा सकता, जैसे किसी मरीज़ को ज़बरदस्ती दवा पिलाना। अतः इस कारण से ज़ैद की इमामत में कोई दोष नहीं है। और अल्लाह बेहतर जानता है। मसला 416: शहर कोहना, मोहल्ला सूफ़ी टोला से, सुपुर्द-ए-सवाल तुफ़ैल अहमद साहब, 11 सफ़र 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि एक लड़की का निकाह उसके माता-पिता ने एक ऐसे लड़के के साथ कर दिया जो एक पत्नी और दो बच्चों को छोड़ चुका है और लड़की का मौसेरा भाई है। लड़की के करीबी रिश्तेदारों (ताया, फूफा, भाई आदि) को इकट्ठा किए बिना, धोखे से मोहल्ले में ले जाकर 'सराय खाम' के एक छात्र से इस तरह निकाह पढ़वाया कि मामा, जो दोनों (लड़के और लड़की) का है, उसे वकील बनाया (और पहला गवाह दोनों का खालू है और दूसरा गवाह लड़के का तायाज़ात भाई है)। जब मामा अनुमति लेने गया तो लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया। बार-बार कहने पर भी जवाब न देने पर मामा ने उसे एक तमाचा मारा जिसके कारण वह रोने लगी और मामा ने बाहर आकर निकाह पढ़वा दिया।

1. जामेअ तिर्मिज़ी, अबवाबुत तलाक़, बाब माजाअ फिल हज़्ल वल जद्द फित तलाक़, एच.एम. सईद कंपनी कुतुबख़ाना रशीदिया दिल्ली 1/124; सुनन अबी दाऊद, किताबुत तलाक़, बाबुत तलाक़ फिल हज़्ल, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर 1/298; अद-दुर्रुल मंसूर, आयत 'व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवा' के अंतर्गत, मकतबा आयतुल्लाहिल उज़मा क़ुम ईरान 1/286।

फ़: दुर्रे मंसूर के शब्द ये हैं: "तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें जो कोई मज़ाक में कहे या बिना मज़ाक के, वे उस पर लागू हो जाती हैं: तलाक़, दासमुक्ति और निकाह।" और जामेअ तिर्मिज़ी और सुनन अबी दाऊद में 'अल-अताक़' के बजाय 'अर-रजअत' (तलाक़ से वापसी) का ज़िक्र है। नसबुर राया में इन दोनों शब्दों के बारे में विस्तृत चर्चा है; अध्ययन के लिए जिल्द 3, किताबुल ईमान, पृष्ठ 293 और 294 देखें। — फ़िदा मोहम्मद।

पेज 679/739

الجواب: سائل نے بیان کیا کہ عورت کو اذن دیتے وقت بتایا گیا تھا کہ یہ نکاح دوسرے سے ہوتا ہے جس سے وہ راضی نہیں لیکن کسی نے ہاتھ پکڑے کسی نے پاؤں اور اس سے جبراً اذن دلوایا، صورت مذکورہ میں نکاح صحیح ہوگیا کہ نکاح وطلاق میں اکراہ کو دخل نہیں، جس طرح خوشی سے ہوجاتے ہیں یونہی جبر سے بھی، حدیث میں ارشاد ہوا: ثلاث جدھن جدو ھزلھن جدا لنکاح والطلاق والعتاق۔ تین چیزیں جن میں سنجیدگی اور مذاق سنجیدگی ہے نکاح، طلاق اور عتاق۔ (ت) باقی رہا کہ مجبور کرنا شرعا کوئی وجہ الزام رکھتا ہے یا نہیں۔ ممکن نہ رکھتا ہو بلکہ عورت کی خیر خواہی ہو عورتیں ناقصات العقل ہوتی ہیں، اور باپ سے زیادہ اولاد پر کون مہربان ہے سوا اللہ ورسول کے، ظاہر یہی ہے کہ جہاں وہ چاہتی تھی اس میں شر تھا اور جہاں باپ نے چاہا اس میں خیر ، تو ایسے احتمال قوی کی حالت میں اس جبر کو بوجہ الزام نہیں ٹھہرا سکتے جیسے مریض کو بالجبر دوا پلانا ، لہذا اس وجہ سے امامت زید میں کوئی خلل نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۴۱۶: از شہر کہنہ محلہ صوفی ٹولہ مسئولہ طفیل احمد صاحب ۱۱ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کا نکاح اس کے والدین نے ایک لڑکے کے ہمراہ جو کہ ایک بیوی معہ دو بچوں کے چھوڑ چکا ہے اور لڑکی کا خالہ زاد بھائی ہوتا ہے لڑکی کے اقربا (تایا، پھوپھا، بھائی وغیرہ) کو بغیر جمع کئے محلہ میں دھوکہ سے لے جا کر سرائے خام کے ایک طالب علم سے اس طرح پڑھوایا کہ ماموں جو کہ دونوں (لڑکے اور لڑکی) کا ہوتا ہے وکیل بنایا (اور گواہ اول دونوں کا خالو ہے اور گواہ دوم لڑکے کا تایا زاد بھائی ہوتا ہے) جب ماموں اذن لینے گیا تو اس نے جواب نہ دیا مگر اصرار کرنے پر بھی جواب نہ دیا تو ماموں نے

اس کے ایک طمانچہ مارا کہ جس کے سبب سے وہ رونے لگی اور ماموں نے باہر آ کر نکاح پڑھوا دیا،

1 جامع الترمذی ابواب الطلاق باب ماجاء فی الہزل والجد فی الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/ ۱۲۴، سنن ابی داؤد کتاب الطلاق باب الطلاق فی الہزل آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۹۸، الدرالمنثور زیر آیۃ ولاتتخذوا آیات اللہ ہزوا مکتبہ آیۃ اللہ العظمیٰ قم ایران ۱/ ۲۸۶ ف: درمنثور کے الفاظ یہ ہیں: ثلاث من قالھن لاعبا اوغیر لاعب فھن جائزات علیہ فھن جائزات علیہ الطلاق والعتاق والنکاح۔ اور جامع الترمذی اور سنن ابی داؤد میں العتاق کے بجائے الرجعۃ کا ذکر ہے، نصب الرایۃ میں ان دونوں لفظوں سے متعلق تفصیلی بحث کی ہے مطالعہ کے لئے جلد سوم کتاب ایمان صفحہ ۲۹۳ و ۲۹۴ ملاحظہ ہو۔ فدا محمد

Fatawa Razawiyya Volume 11

...the girl is not willing because she has seen the condition of the previous wife, so is this marriage valid or not? The Answer: The questioner stated that at the time of marriage, the girl's age was fifteen years and two months. If this statement and the described situation are factual, then that marriage was an 'unauthorized contract' (nikah fuzuli). The fact that the person seeking permission and the witnesses were relatives is of no consequence. Even the crying of a virgin is counted as permission, but not crying that results from being slapped; that can never be evidence of permission. Thus, the contract did not take place except as an unauthorized contract, which remained dependent on the girl's consent. If she expressed her displeasure before giving consent, the marriage was annulled, and the husband has no claim over her. And Allah the Almighty knows best.

Problem 417: From Hyderabad Deccan, town Narayanpeth G.I.P Railway, Krishna, asked by Sayyid Akram Ali alias Matloob Shah Sahib, Persian teacher, Madrasa Sultania, First Grade, 13 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say regarding this issue: Hindah, a sane, adult, free, legally responsible virgin woman, entered into a valid marriage contract with her equal (kufw) in the presence of two legal witnesses without the permission of her legal guardian (wali). Is this marriage valid according to the Hanafi school or not? If it is valid, can the guardian legally annul it and forcibly marry Hindah to a wealthy person without divorce (talaq) or khula? If he does so, on whom will the sin fall? To what extent is this act of his permissible? Can common custom/tradition prevail over Sharia law in any situation? And will the false oath of the legal guardian be credible against Hindah, or Hindah's word? Please explain and be rewarded.

The Answer: In Sharia, the meaning of 'kufw' (equal) is that the man should not be so inferior in religion, lineage, profession, or conduct that his marriage to this woman becomes a source of shame and disgrace for her guardians. If he is an equal in this sense, then the marriage of a legally responsible free woman with her own consent without the permission of a guardian is valid and binding. The guardian can never annul it. If they marry her elsewhere without a divorce, it will be absolutely void, and any intimacy in it will be pure adultery, the sin of which will fall on those responsible for the second marriage. It is stated in Alamgiriyyah: *Nafadha nikahu hurratin mukallafatin bila walī.* [1] (The marriage of a free, sane, adult woman without a guardian is valid. (T)) It is stated in Durr al-Mukhtar: *Nafadha nikahu hurratin*

mukallafatin bila ridā walī. [2] (The marriage of a free, sane, adult woman is valid even without the consent of the guardian.)

1 Fatawa Hindiyyah, Chapter Four on Guardians, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/287 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191

फ़तावा रज़विया खंड 11

...लड़की राजी नहीं है क्योंकि उसने पिछली बीवी का हाल देख लिया है, तो क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? उत्तर: सवाल करने वाले ने बताया कि निकाह के समय लड़की की उम्र पंद्रह साल और दो महीने थी। यदि यह बयान और सवाल की स्थिति वास्तविक है, तो वह निकाह फुज़ूली (अनधिकृत अनुबंध) हुआ। अनुमति लेने वाले और गवाहों का रिश्तेदार होना कोई मायने नहीं रखता। एक कुंवारी लड़की का रोना भी अनुमति में गिना जाता है, लेकिन वह रोना नहीं जो थप्पड़ मारने की वजह से हो; वह कभी भी अनुमति का प्रमाण नहीं हो सकता। अतः निकाह नहीं हुआ बल्कि यह एक अनधिकृत अनुबंध (अक़्द-ए-फुज़ूली) रहा, जो लड़की की अनुमति पर निर्भर था। यदि उसने अनुमति देने से पहले अपनी नाराजगी जाहिर कर दी, तो निकाह रद्द हो गया, और शौहर का उस पर कोई दावा नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 417: हैदराबाद दकन, कस्बा नारायणपेठ जी.आई.पी रेलवे, कृष्णा से, प्रेषक सैयद अकरम अली उर्फ मतलूब शाह साहब, फ़ारसी शिक्षक, मदरसा सुल्तानिया, प्रथम श्रेणी, 13 सफ़र 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि हिंदा, जो एक अक्लमंद, बालिग, स्वतंत्र और शरीयत के नियमों का पालन करने वाली कुंवारी महिला है, उसने अपने कानूनी अभिभावक (वली) की अनुमति के बिना, दो कानूनी गवाहों की उपस्थिति में अपने एक हम-कुफ़ू (बराबरी के व्यक्ति) से निकाह कर लिया। हनफ़ी मज़हब के अनुसार यह निकाह हुआ या नहीं? यदि हो गया, तो क्या वली के लिए जायज़ है कि वह इसे रद्द कर दे और बिना तलाक या खुला के हिंदा का निकाह जबरदस्ती किसी अमीर आदमी से कर दे? यदि वह ऐसा करता है, तो इसका गुनाह किस पर होगा? और उसका यह कार्य किस हद तक जायज़ है? क्या लोक-परंपरा या रिवाज किसी भी स्थिति में शरीयत के कानून पर हावी हो सकता है? और क्या हिंदा के मुकाबले वली की झूठी कसम मान्य होगी या हिंदा की बात? वर्णन करें और पुण्य पायें।

उत्तर: शरीयत में 'कुफ़ू' (बराबरी) का अर्थ यह है कि धर्म, वंश, पेशा या व्यवहार में वह आदमी इतना कम न हो कि उसके साथ इस महिला का निकाह महिला के अभिभावकों के लिए अपमान और शर्म का कारण बन जाए। यदि वह इस अर्थ में कुफ़ू है, तो एक स्वतंत्र और शरीयत की पाबंद महिला का अपनी मर्जी से बिना वली की इजाजत के निकाह जायज़ और अनिवार्य है। वली इसे कभी भी रद्द नहीं कर सकते। यदि वे तलाक के बिना उसका निकाह दूसरी जगह कर देंगे, तो वह पूरी तरह से शून्य (बातिल) होगा, और उसमें शारीरिक संबंध शुद्ध रूप से व्यभिचार (ज़िना) होगा, जिसका गुनाह

निकाह करवाने वालों पर होगा। आलमगीरिया में है: नफ़दा निकाहू हुर्रतिन मुकल्लफ़तिन बिला वली। [1] (स्वतंत्र, अक्लमंद, बालिग महिला का निकाह बिना वली के जायज़ है। (त)) दुर्रे मुख्तार में है: नफ़दा निकाहू हुर्रतिन मुकल्लफ़तिन बिला रिज़ा वली। [2] (वली की रज़ा के बिना भी स्वतंत्र अक्लमंद बालिग महिला का निकाह जायज़ है।)

1 फ़तावा हिंदिया, चौथा अध्याय अभिभावकों के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/287 2 दुर्रे मुख्तार, अध्याय वली, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/191

पेज 680 का 739

لڑکی کے رضا مند نہیں ہے کیونکہ وہ اگلی بیوی کا حال دیکھ چکی ہے، تو یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ الجواب: سائل نے بیان کیا کہ لڑکی کی عمر وقت نکاح دو مہینے اوپر پندرہ سال کی تھی، اگر یہ بیان اور صورت سوال واقعی ہے تو وہ نکاح فضولی ہوا، اجازت لینے والے اور گواہوں کا رشتہ دار ہونا تو کوئی محل نہیں، اور بکر کا رونا بھی اذن میں شامل کیا جاتا ہے مگر نہ وہ رونا کہ طمانچہ مارنے سے ہو، وہ ہر گز دلیلِ اجازت نہیں ہو سکتا، تو عقد نہ ہوا مگر عقدِ فضولی، اور لڑکی کی اجازت پر موقوف رہا، اگر اس نے اظہارِ اجازت سے پہلے اظہارِ ناراضی کیا نکاح رد ہو گیا، اور شوہر کو اس پر کوئی دعویٰ نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۱۷: از حیدر آباد دکن قصبہ نارائن پیٹھ جی آئی پی ریلوے کرشنا مسئولہ سید اکرم علی عرف مطلوب شاہ صاحب مدرس فارسی مدرسہ سلطانیہ درجہ اول ۱۳ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ عاقلہ بالغہ حرہ مکلفہ باکرہ نے بلا اجازتِ ولی جائز اپنا عقد دو گواہانِ شرعی کے روبرو اپنے ایک ہم کفو سے کر لیا، پس یہ نکاح از روئے مذہب حنفی ہوا یا نہیں؟ اگر ہوا تو کیا ولی جائز فسخ کر کے بلا طلاق و خلع ہندہ کا عقد کسی مالدار سے جبراً کرنا چاہتا ہے اگر کر دے تو اس کا وبال کس پر ہوگا؟ اور یہ فعل اس کا کس حد تک جائز ہے؟ کیا رواجِ عرفِ عام قانونِ شرعِ شریف پر کسی حالت میں مرجح ہو سکتا ہے اور ولی جائز کا جھوٹا حلف ہندہ کے مقابلہ میں معتبر ہوگا یا ہندہ کا قول؟ بینوا توجروا الجواب: شرعاً کفو کے معنی یہ ہیں کہ مذہب یا نسب یا پیشہ یا چال چلن کسی بات میں ایسا کم نہ ہو کہ اس کے ساتھ اس عورت کا نکاح اولیائے زن کے لئے باعثِ ننگ و عار ہو، اگر وہ اس معنی پر کفو ہے تو حرہ مکلفہ کا برضائے خود بے اجازتِ ولی اس سے نکاح نافذ و لازم ہے، ولی اسے ہر گز فسخ

نہیں کر سکتے، اگر بلا طلاق اس کا نکاح دوسری جگہ کر دیں گے باطل محض ہوگا، اور اس میں قربت زنائے خالص جس کا وبال مرتکبِ تزویج پر ہوگا۔ عالمگیر یہ میں ہے: نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلاولی۔ 1 (آزاد عاقلہ بالغہ کا نکاح بغیر ولی نافذ ہے۔ (ت)) درمختار میں ہے: نفذ نکاح حرۃ مکلفۃ بلا رضی ولی 2 (ولی کی رضا کے بغیر بھی حرہ عاقلہ بالغہ کا

1 فتاوٰی ہندیہ الباب الرابع فی الاولیاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۷ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

(the marriage is effective). If they are not 'Kufu' (equal/compatible) in the Shariah sense, even if they belong to the same tribe as is commonly referred to as 'Kufu' among the masses—for example, if they are so inferior in terms of religion, profession, or conduct that the marriage of the woman to him causes shame and disrepute for the woman's guardian—then the marriage of a legally responsible woman without her guardian's permission is completely void and rejected. It is stated in Durr al-Mukhtar: 'Wa yufta fi ghayr al-kuf'u bi-'adami jawazihi aslan.' (1) The fatwa (legal ruling) is that marriage in the absence of 'Kufu' (compatibility) is absolutely not permissible. (T) Custom, tradition, and law cannot take precedence over the pure Shariah. Allah Almighty said: 'Inil-hukmu illa lillah' (2) and Allah said: Allah Almighty said: Sovereignty belongs to none but Allah. 'Wa man lam yahkum bima anzala Allahu fa ula'ika hum al-fasiqoon' (3). And He said: Those who do not judge by what Allah has revealed are the transgressors (fasiq). (T) The questioner has not written what the disagreement is between the woman and her guardian, so a response could be given as to whose statement is more credible. In some instances one's statement is credible, and in others, the other's. And Allah Almighty knows best.

Issue 318: District Hooghly, Post Office Telinipara Bari Ajab Mian, asked by Sultan Ahmad Khan Sahib Mirzapuri, 4 Rabi' al-Awwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: A girl is twelve years of age. Her father promised to contract her marriage to an underage boy, saying, 'We will marry our girl to you.' Worldly customs were also performed; the boy took clothes, sweets, etc., along with ten to fifteen people from the brotherhood. In front of the brotherhood, the girl's father accepted everything and agreed that he would perform the marriage on a certain date. In the meantime, the girl's father fell ill, became very sick, and went home (to his native place). It has been six months since then. The girl and her mother stayed here and are still present. Ever since the girl's father went home, the boy has been continuously bearing the burden of expenses etc. Now the boy is pressuring the girl's mother to perform the marriage. The woman wrote several letters home but received no reply as to whether he is alive or dead. Initially, the girl's mother was not willing, but when the boy said, 'If you do not perform the marriage, return whatever money of mine has been spent during this period, otherwise we...'

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191 2 The Holy Quran, 6/57 3 The Holy Quran, 5/47 Page 681 of 739

(निकाह प्रभावी है)। और यदि वे शरीअत के अर्थ में "कुफ़ू" (समान/संगत) नहीं हैं, भले ही वे एक ही जाति के हों जैसा कि आम तौर पर लोगों के बीच "कुफ़ू" कहा जाता है - उदाहरण के लिए, यदि वे धर्म, पेशे या आचरण के मामले में इतने कम हों कि उस स्त्री का उससे निकाह करना स्त्री के संरक्षक (वली) के लिए अपमान और बदनामी का कारण बने, तो संरक्षक की अनुमति के बिना किसी जिम्मेदार (मक़ल्लफ़ा) स्त्री का उससे निकाह पूरी तरह से शून्य और अस्वीकार्य है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: 'व युफ़्ता फी ग़ैरिल कुफ़्इ बि-अदमि जवाज़िही अस्लन।' (१) फ़तवा यह है कि कुफ़ू (संगतता) के अभाव में निकाह बिल्कुल जायज़ नहीं है। (त) रिवाज़, प्रथा और कानून में से कोई भी चीज़ पाक शरीअत पर हावी नहीं हो सकती। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'इनिल-हुक्मु इल्ला लिल्लाह' (२) और अल्लाह ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हुक्म (संप्रभुता) केवल अल्लाह तआला का है। 'व मन लम यहकुम बिमा अंज़लल्लाहु फ़-उलाइका हुमुल फ़ासिक़ून' (३)। और फ़रमाया: जो अल्लाह तआला के उतारे हुए (कानून) के अनुसार फ़ैसला न करे, वे लोग फ़ासिक़ (अधर्मी) हैं। (त) सवावकर्ता (साहिल) ने यह नहीं लिखा कि स्त्री और उसके संरक्षक के बीच किस बात का विवाद है, ताकि उत्तर दिया जा सके कि उनमें से किसका कथन विश्वसनीय है। कहीं किसी का कथन विश्वसनीय होगा और कहीं किसी और का। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ३१८: जिला हुगली, डाकखाना तेलिनीपाड़ा बाड़ी अजब मियां, सायल सुल्तान अहमद खान साहब मिर्ज़ापुरी, ४ रबी-उल-अव्वल १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले के बारे में क्या फ़रमाते हैं: एक लड़की की उम्र बारह साल है। उसके पिता ने उसका निकाह एक नाबालिग लड़के से करने का वादा किया कि 'हम अपनी लड़की की शादी तुम्हारे साथ करेंगे।' दुनियावी रस्में भी पूरी की गईं; लड़का कपड़े, मिठाई आदि और बिरादरी के दस-पंद्रह लोगों को साथ लेकर गया। बिरादरी के सामने लड़की के पिता ने सारा सामान लिया और इक़रार किया कि फलां तारीख़ को निकाह कर दूंगा। इसी बीच लड़की का पिता बीमार हो गया और ज़्यादा बीमार होने पर वह अपने घर चला गया। इसे छह महीने का समय बीत गया है। लड़की और उसकी माँ यहीं रह गईं और अब भी वहीं मौजूद हैं। जब से लड़की का पिता घर गया है, वह लड़का ही लगातार ख़र्च आदि का बोझ उठा रहा है। अब वह लड़का लड़की की माँ पर बहुत ज़ोर दे रहा है कि मेरा निकाह कर दो। औरत ने कई बार घर पत्र भी लिखे, लेकिन कोई जवाब नहीं आया कि वह जीवित है या मर गया। लड़की की माँ पहले राजी

नहीं थी, लेकिन जब लड़के ने कहा कि अगर तुम निकाह नहीं करती हो, तो इतने अरसे में मेरा जो कुछ भी रुपया खर्च हुआ है वह लौटा दो, वरना हम...

---

१ दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, १/१९१ २ अल-क़ुरआनुल करीम, ६/५७ ३ अल-क़ुरआनुल करीम, ५/४७ पृष्ठ 681 / 739

نکاح نافذ ہے۔ت) اور اگر اس معنی شرعی پر کفو نہیں اگرچہ ہم قوم ہو جیسے عوام میں کفو کہتے ہیں مثلاً مذہب یا پیشہ یا چال چلن میں ایسا کم ہو کہ اس عورت کا اس سے نکاح ولی زن کے لئے باعثِ عار وبدنامی ہے تو زن مکلفہ کا بے اجازتِ ولی اس سے نکاح باطل ومردود محض ہے، درمختار میں ہے : ویفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلاً۔ (۱) غیر کفو میں اصلاً نکاح نہ ہونے کا فتوٰی ہے۔ (ت) رواج، عرف و قانون کوئی چیز شرع مطہر پر مرجح نہیں۔ قال اللہ تعالٰی: اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِؕ (۲) وقال اللہ: اللہ تعالٰی نے فرمایا: حکم صرف اللہ تعالٰی کا ہے۔ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ (۳)۔ اور فرمایا: جو اللہ تعالٰی کے نازل کردہ کے مطابق فیصلہ نہ دے وہ فاسق ہے۔ (ت) سائل نے کچھ نہیں لکھا کہ عورت اور اس کے ولی میں کس بات کا اختلاف ہے جس کا جواب دیا جائے کہ ان میں کس کا قول معتبر ہے کہیں اس کا قول معتبر ہوگا کہیں اس کا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۳۱۸: ضلع ہوگلی ڈاک خانہ تیلن پاڑہ باڑی عجب میاں مسئولہ سلطان احمد خاں صاحب مرزا پوری ۴ ربیع الاول ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی بعمر بارہ برس کی ہے، اس کا عقد کرنے کو اس کا باپ ایک مردِ نابالغ سے کرنے کو وعدہ کیا کہ ہم تمہارے ساتھ اپنی لڑکی کی شادی کریں گے، اور رسمِ دنیاوی بھی کردیا گیا کہ لڑکا لڑکی کے واسطے کپڑا اور مٹھائی وغیرہ اور دس پانچ برادری کے لوگوں کو ساتھ لے کر گیا، لڑکی کے باپ نے برادری کے روبرو سب سامان لیا اور اقرار کیا کہ فلاں تاریخ میں نکاح کر دوں گا کہ درمیان میں لڑکی کا باپ بیمار ہو گیا اور زیادہ علیل ہوگیا سو وہ مکان پر چلا گیا، جس کو عرصہ چھ ماہ کا ہو گیا، لڑکی اور اس کی ماں یہیں پر رہ گئیں اور اب بھی وہ موجود ہیں، جب سے لڑکی کا باپ مکان گیا وہ ہی لڑکا برابر خرچ وغیرہ کا بھی بار اٹھاتا ہے، اب وہ لڑکا لڑکی کی ماں سے

بہت زور کرتا ہے کہ میرا نکاح کردو۔ عورت نے کئی مرتبہ خط بھی مکان پر لکھا مگر کچھ جواب نہیں آیا کہ زندہ ہے یا مر گیا، لڑکی کی ماں پہلے راضی نہ تھی مگر جب لڑکے نے کہا کہ اگر تم نکاح نہیں کرتی ہو تو جو کچھ روپیہ میرا اتنے عرصہ میں خرچ ہوا اس کو دو ورنہ ہم

---

۱ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱ ۲ القرآن الکریم ۶/۵۷ ۳ القرآن الکریم ۵/۴۷

...will file a lawsuit. So now the girl's mother agrees to the girl's marriage and says that we are ready, get the marriage performed. And she said that my husband had said we would marry after returning from the house, which is why we were not ready. Now there is no trace of them. I say with joy that call the Qazi and perform the offer and acceptance (Ijab-o-Qabul), and the girl also knows her own good and bad, so she is also willing, and for about six months she has been living with the same man. The matters that were true have been written down and presented before the scholars of religion. Please state whatever the ruling of the pure Shariah may be. And the thumb impressions below are from those community members in whose presence the girl's father agreed and took clothes etc. This question was written and signatures were taken in front of those people. Therefore, in the absence of her father, please write whether the marriage can take place or not, or by what other rule and method it can happen. Explain and be rewarded.

The Answer: If the girl is a minor, a guardian (Wali) is required for her marriage. The guardian is her father. No one has the right to marry off the girl without the father's permission. His previous consent and promise are not sufficient for permission since he did not appoint anyone as an agent (Wakil). Now permission should be sought from him. If he cannot be traced, then the girl's elder brother is her guardian. If he is not there, then the nephew. If he is not there, then the uncle's son, and so on through the agnates (Asba). If there are no agnates left, then certainly the mother will have guardianship at that time and marriage can take place with her permission. And if the girl is an adult (Baligha), meaning she has reached puberty, then her own permission is sufficient. However, in any case, if someone other than the father marries her off, or if she marries of her own accord after becoming an adult, it is necessary that the person she marries must not be so inferior to the girl in terms of religion, lineage, conduct, or profession that marrying him would be a cause of shame and disgrace for the girl's guardians, otherwise the marriage will not take place at all. And Allah Almighty knows best.

Problem 419: From Pilibhit, Mohalla Ghaffar Khan, asked by Hakim Saeed-ur-Rehman Khan Sahib, 8 Jamadi-ul-Ula 1339 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the clear Shariah say regarding this matter: Rafiq Begum was married off by her uncle to his son during her childhood, while her father and grandfather were not alive. The aforementioned minor, upon

reaching adulthood, declared that she rejected and disliked the said marriage and annulled it. She also informed her husband, who is still a minor, and his father through a registered notice. The notice was returned with a written remark. Later, Rafiq Begum filed a lawsuit in the civil court and made the following request for redress: "Let it be declared that the marriage of the plaintiff which took place during her childhood and which the plaintiff has rejected after reaching Shariah adulthood, the plaintiff..."

फतावा रज़विया, जिल्द 11

...मुकदमा करेंगे, तो अब लड़की की माँ लड़की का निकाह करने पर राजी है और कहती है कि हम राजी हैं निकाह पढ़वा लो, और यह कहा कि मेरे पति कह गए थे कि हम घर से वापस आकर शादी करेंगे, इस वजह से हम राजी नहीं हुए थे। अब उनका कुछ पता नहीं है। मैं खुशी से कहती हूँ कि काज़ी को बुलाकर ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) करा लो, और लड़की भी अपने भले-बुरे को पहचानती है, इसलिए वह भी रज़ामंद है, और करीब छह महीने से उसी मर्द के साथ रह रही है। जो बातें सच्ची थीं, उन्हें लिखकर धर्म के विद्वानों के सामने पेश कर दिया गया है। पवित्र शरीयत का जो भी आदेश हो, उसे बयान फ़रमाएँ। और नीचे जो अँगूठे के निशान हैं, वे उन बिरादरियों के हैं जिनके सामने लड़की के पिता ने इकरार किया और कपड़ा आदि लिया। उन लोगों के सामने यह सवाल लिखा गया और हस्ताक्षर लिए गए। इसलिए, उसके पिता की अनुपस्थिति में निकाह होने या न होने के बारे में, या जिस किसी और नियम और तरीके से निकाह हो सकता हो, इस मसले को हुज़ूर तहरीर फ़रमाएँ। बयान करें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: अगर लड़की नाबालिग है तो उसके निकाह के लिए वली (अभिभावक) की ज़रूरत है। वली उसका बाप है। पिता की अनुमति के बिना किसी को लड़की का निकाह करने का अधिकार नहीं है। और पहले उसका राजी होना और वादा करना अनुमति के लिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि उसने किसी को वकील (एजेंट) नहीं बनाया। अब उससे अनुमति ली जाए। अगर उसका पता न चले तो लड़की का जवान भाई उसका वली है। अगर वह न हो तो भतीजा, वह न हो तो चाचा का बेटा, इस तरह जो असबा (पितृपक्षीय रिश्तेदार) हो। अगर असबात में कोई न रहा हो तो अलबत्ता उस वक्त माँ को विलायत (अभिभावकत्व) होगी और उसकी अनुमति से निकाह हो सकेगा। और अगर लड़की बालिग है, यानी उसे मासिक धर्म आ चुका है, तो खुद उसकी अपनी अनुमति काफी है। मगर बहरहाल बाप के सिवा जो दूसरा व्यक्ति उसका निकाह करे या बालिग होकर वह खुद करे, यह ज़रूरी होगा कि जिससे निकाह किया जाए वह उस लड़की से धर्म, वंश, चाल-चलन या पेशे में किसी भी बात में इतना कम न हो कि उससे निकाह होना लड़की के वलियों (अभिभावकों) के लिए अपमान और शर्म का कारण हो, वरना निकाह होगा ही नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 419: पीलीभीत, मोहल्ला गफ़्फ़ार ख़ान से, सायल हकीम सईद-उर-रहमान ख़ान साहब, 8 जमादी-उल-उला 1339 हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: रफ़ीक़ बेगम का निकाह उसके बचपन में, जबकि उसके पिता और दादा जीवित नहीं थे, उसके चाचा ने अपने बेटे के साथ कर दिया। उक्त नाबालिग ने बालिग होते ही घोषणा कर दी कि उसने उक्त निकाह को नापसंद और अस्वीकार करके रद्द कर दिया है और एक पंजीकृत नोटिस के माध्यम से अपने पति, जो अभी भी नाबालिग है, और उसके पिता को भी सूचित कर दिया। नोटिस लिखकर वापस आ गया। बाद में रफ़ीक़ बेगम ने दीवानी अदालत में मुकदमा दायर किया और न्याय के लिए निम्नलिखित प्रार्थना की: "यह घोषित किया जाए कि वादिनी का जो निकाह उसके बचपन में हुआ था और जिसे वादिनी ने शरीयत के अनुसार बालिग होने के बाद रद्द कर दिया है, वादिनी..."

نالش کریں گے، سو اب لڑکی کی ماں نکاح لڑکی کا کرنے پر راضی ہے اور کہتی ہے کہ ہم راضی ہیں نکاح پڑھوا لو، اور یہ کہا کہ شوہر میرا کہہ گیا تھا کہ ہم مکان سے واپس آکر شادی کریں گے اس وجہ سے ہم نہیں راضی ہوئے تھے، سو اب ان کا کچھ پتہ نہیں ہے، میں خوشی سے کہتی ہوں کہ قاضی کو بلا کر ایجاب و قبول کر کرالو، اور لڑکی بھی اپنے برے بھلے کو پہچانتی ہے، سو وہ بھی رضامند ہے، اور عرصہ چھ ماہ سے اسی مرد کے ہمراہ گویا رہتی ہے، جو باتیں حق حق تھیں ان کو لکھ کر علمائے دین کے حضور میں پیش کر دیا جو کچھ حکم شریعت مطہرہ کا ہو بیان فرمائیں، اور ذیل میں جو علامات انگوٹا ہے وہ ان برادریوں کا ہے جن کے سامنے لڑکی کے والد نے اقرار کیا اور کپڑا وغیرہ لیا، ان لوگوں کے سامنے یہ سوال لکھا گیا اور دستخط لیا گیا لہذا عدم موجودگی اس کے والد کے نکاح ہونے یا نہ ہونے سے یا جس طرح اور جس قاعدہ سے نکاح ہو اس مسئلہ کو حضور تحریر کریں، بینوا توجروا الجواب: لڑکی اگر نا بالغہ ہے تو اس کے نکاح کے لئے ولی کی ضرورت ہے۔ ولی اس کا باپ ہے، بے اجازتِ پدر کسی کو لڑکی کے نکاح کرنے کا اختیار نہیں، اور پہلے اس کا راضی ہونا اور وعدہ کرنا اجازت کے لئے کافی نہیں کہ اس نے کسی کو وکیل نہیں کیا، اب اس سے اجازت لی جائے۔ اگر اس کا پتہ نہ چلے تو لڑکی کا جوان بھائی اس کا ولی ہے وہ نہ ہو تو بھتیجا، وہ نہ ہو تو چچا کا بیٹا، اس طرح جو عصبہ ہو، اگر عصبات میں کوئی نہ رہا ہو تو البتہ اس وقت ماں کو ولایت ہو گی اور اس کی اجازت سے نکاح ہو سکے گا۔ اور اگر لڑکی بالغہ ہے یعنی اسے ماہواری عارضہ آچکا ہے تو خود اس کی اپنی اجازت کافی ہے۔ مگر بہرحال باپ کے سوا جو دوسرا شخص اس کا نکاح کرے یا بالغہ ہو کر خود کرے یہ ضرور ہوگا کہ جس سے نکاح کیا جائے وہ اس لڑکی سے مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ کسی

بات میں ایسا کم نہ ہو کہ اس سے نکاح ہونا لڑکی کے اولیاء کے لئے باعثِ ننگ وعار ہو ورنہ نکاح ہو گا ہی نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۴۱۹: از پیلی بھیت محلہ غفار خان مسئولہ حکیم سعید الرحمن خاں صاحب ۸ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ رفیق بیگم کا نکاح اس کی نابالغی میں جبکہ اس کا باپ دادا زندہ نہ تھے اس کے چچانے اپنے پسر کے ساتھ کر دیا، نا بالغہ مذکورہ نے بالغ ہوتے ہی اعلان کر دیا کہ اس نے نکاح مذکور کو نا منظور و ناپسند کر کے فسخ کر دیا اور بذریعہ نوٹس رجسٹری شدہ شوہر کو جو ہنوز نابالغ ہے اور اس کے والد کو بھی اطلاع دے دی، نوٹس یہ لکھ کر واپس آیا بعد ازاں رفیق بیگم نے دیوانی میں نالش کی اور حسبِ ذیل استدعائے داد رسی کی: "استقرار اس امر کا فرما دیا جائے کہ جو نکاح مدعیہ کا اس کی نابالغی میں ہوا تھا اور جس کو مدعیہ نے بعد بلوغِ شرعی کے مسترد کر دیا ہے مدعیہ

Volume Eleven / Fatawa Razviyya

...Due to the reasons stated in the petition, the said marriage is not binding because it is annulled and voided, and now the plaintiff is no longer the wife of the defendant." Before a decision could be reached on this lawsuit, Rafiq Begum passed away. In such a situation, will the said marriage be considered established and intact at the time of Rafiq Begum's death or annulled and rejected? And will the husband receive the inheritance of Rafiq Begum or not?

Answer: The marriage remained intact until Rafiq Begum's last breath; she died while being the wife of her husband. The husband will be the heir to half of her estate, and half of the dowry (Mahr) is waived; he will give the other half to the other heirs. A woman does not have the right through 'option of puberty' (Khiyar-ul-Bulugh) to annul her marriage herself, nor can it be annulled by her act of annulment. Rather, she only has the right to claim annulment. It will be annulled only after the claim and by the Sharia Judge's order. If she dies before the annulment, she dies in the state of marriage. It is stated in Rad-ul-Muhtar:

[Table Header] Arabic Text: (Arabic Text Quote) "So the judge annuls it, for these separations are not established except by judicial decree because it is a matter of ijtihad (legal reasoning), and each of the two litigants relies on evidence, so the marriage is not severed except by the action of the judge." - And Allah Almighty knows best. Urdu Translation: The author's statement that "the judge should annul it" means that separation will not be established without a judicial decree, because this issue is subject to legal reasoning (ijtihad) and each party relies on evidence in it. Therefore, the marriage will not be annulled without the judge's proceedings. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 420: District Sukkur, Sindh, Dherki Station, Post Office Khairpur Dherki, Special Dargah Mu'alla Qadriyyah Parchundi Sharif, from Abu al-Nasr Faqir Sardar Shah, 17 Jamadi al-Akhra 1339 AH.

[Table Body] Urdu/Persian Question: What is your opinion, may Allah Almighty have mercy on you, regarding a person who, during his father's lifetime and without his consent or participation, married off his minor sister in exchange (watta-satta)? Upon learning of it, the father refused. After some time, he agreed and took the exchange match into marriage for his own son, but then refused again. Did the marriage become void due to the first refusal or not? Urdu Explanation: Noble scholars, may Allah Almighty have mercy on you, what do you say in this matter that during the

father's life, without the father's consent and involvement, the brother married his minor sister on the condition of an exchange, and after some time the father agreed to this marriage and took a proposal for the boy in exchange and again...

1 Rad-ul-Muhtar, Book of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297

ग्यारहवाँ खंड / फतावा रज़विया

...उक्त याचिका में बताए गए कारणों से उक्त निकाह निरस्त और शून्य होने के कारण बाध्यकारी नहीं है और अब वादी प्रतिवादी की पत्नी नहीं है।" इस मुकदमे का फैसला होने से पहले ही रफ़ीक बेगम की मृत्यु हो गई। ऐसी स्थिति में, रफ़ीक बेगम की मृत्यु के समय उक्त निकाह को कायम और बरकरार माना जाएगा या निरस्त और अस्वीकृत? और क्या पति को रफ़ीक बेगम की विरासत मिलेगी या नहीं?

उत्तर: रफ़ीक बेगम की आखिरी सांस तक निकाह बरकरार था, वह अपने पति की पत्नी रहते हुए ही मरीं। पति उनकी आधी संपत्ति का वारिस होगा और आधा महर भी माफ हो गया, वह आधा महर अन्य वारिसों को देगा। 'ख़ियार-ए-बुलूग' (यौवन का विकल्प) से महिला को यह अधिकार नहीं होता कि वह अपना निकाह खुद निरस्त कर ले, न ही उसके निरस्त करने से निकाह निरस्त हो सकता है। बल्कि उसे केवल निरस्तीकरण का दावा करने का अधिकार मिलता है। दावा करने के बाद शरीयत के काज़ी द्वारा निरस्त करने पर ही निकाह निरस्त होगा। यदि वह निरस्तीकरण से पहले मर जाती है, तो वह निकाह की स्थिति में ही मरेगी। 'रद्दुल मुहतार' में है:

[सारणी शीर्षक] अरबी पाठ: (अरबी उद्धरण) "इसलिए काज़ी उसे निरस्त करे, क्योंकि ये अलगाव अदालती डिक्री के बिना स्थापित नहीं होते क्योंकि यह इज्तिहाद (कानूनी तर्क) का मामला है, और दोनों पक्षों में से प्रत्येक दलील का सहारा लेता है, इसलिए काज़ी की कार्रवाई के बिना निकाह समाप्त नहीं होगा।" - और अल्लाह ही बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: लेखक का कथन कि "काज़ी उसे निरस्त करे" तो अलगाव न्यायिक डिक्री के बिना साबित नहीं होगा, क्योंकि यह मुद्दा इज्तिहाद (कानूनी तर्क) पर आधारित है और प्रत्येक पक्ष इसमें दलील का सहारा लेता है, इसलिए काज़ी की कार्यवाही के बिना निकाह समाप्त नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 420: जिला सुक्कुर सिंध स्टेशन ढरकी डाकखाना खैरपुर ढरकी विशेष दरबार मुअल्ला कादरिया परचुंडी शरीफ की ओर से अबू अल-नस्र फकीर सरदार शाह 17 जमादी-उल-अखरा 1339 हिजरी।

[सारणी मुख्य भाग] उर्दू/फारसी प्रश्न: विद्वानों, अल्लाह तआला आप पर रहम करे, इस मामले में आप क्या कहते हैं कि पिता के जीवनकाल में पिता की सहमति और भागीदारी के बिना भाई ने अपनी नाबालिग बहन का निकाह बदले (वट्टा-सट्टा) की शर्त पर कर दिया। पिता ने पता चलने पर इनकार

कर दिया और कुछ समय बाद वह इस निकाह पर सहमत हो गया और बदले में लड़के के लिए रिश्ता ले लिया और फिर इनकार कर दिया, क्या पहले इनकार से निकाह बातिल (अमान्य) हो गया या नहीं? उर्दू स्पष्टीकरण: विद्वानों, अल्लाह तआला आप पर रहम करे, इस मामले में आप क्या कहते हैं कि पिता के जीवन में, पिता की सहमति और भागीदारी के बिना, भाई ने अपनी नाबालिग बहन का निकाह बदले की शर्त पर कर दिया, और कुछ समय बाद पिता इस निकाह पर सहमत हो गया और बदले में लड़के के लिए रिश्ता ले लिया और दोबारा...

1 रद्दुल मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/297 पृष्ठ 739 का 683

بوجہ مصرحہ عرضی نالش نکاح مذکور کی فسخ اور کالعدم ہو جانے کی وجہ سے پابند نہیں ہے اور اب مدعیہ زوجہ مدعا علیہ کی نہیں ہے۔" ہنوز اس نالش کا فیصلہ نہ ہونے پایا تھا کہ رفیق بیگم فوت ہو گئی، ایسی حالت میں نکاح مذکور وقت وفات رفیق بیگم کے قائم وبر قرار متصور ہوگا یا فسخ و مسترد، اور شوہر کوترکہ رفیق بیگم کا پہنچے گا یا نہیں؟

الجواب: رفیق بیگم کی اخیر سانس تک نکاح برقرار تھا، وہ اپنے شوہر کی زوجیت ہی میں مری، شوہر اس کے نصف ترکہ کا وارث ہوگا اور نصف مہر بھی ساقط ہو گیا، نصف مہر بحق دیگر ورثا دے گا، خیار بلوغ سے عورت کو یہ حق نہیں ہوتا کہ اپنا نکاح خود فسخ کرلے، نہ اس کے فسخ کئے فسخ ہو سکتا ہے، بلکہ اسے صرف دعویٰ فسخ کا اختیار ملتا ہے، بعد دعویٰ قاضی شرع کے فسخ کئے سے فسخ ہو گا، اگر قبل فسخ مر جائے تو زوجیت ہی میں مرے گی، ردالمحتار میں ہے:

[جدول کا عنوان] قولہ فیفسخہ القاضی فلایثبت ہذہ الفرق الا بالقضاء لانہ مجتہد فیہ وکل من الخصمین یثبت بدلیل فلا ینقطع النکاح الایفعل القاضی 1۔ واللہ تعالی اعلم۔ ماتن کا قول کہ "قاضی اس کو فسخ کرے" تو فرقت قضاء کے بغیر ثابت نہ ہوگی، کیونکہ یہ مسئلہ اجتہادی ہے اور ہر فریق اس میں دلیل کا سہارا لیتا ہے اس لئے نکاح قاضی کی کارروائی کے بغیر فسخ نہ ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۲۰: ضلع سکھر سندھ اسٹیشن ڈھر کی ڈاکخانہ خیر پور ڈھر کی خاص دربار معلیٰ قادریہ پر چونڈی شریف از طرف ابوالنصر فقیر سردار شاہ ۱۷جمادی الاخریٰ ۱۳۳۹ھ

[جدول کا متن] ما قولکم رحمکم اللہ تعالیٰ، شخصے بحین حیات پدر خود بلا رضامندی و شمولیت وے نکاح خواہر صغیرہ بمعاوضہ باز و بجائے کردہ پدرش بعد خبر یافتن انکار کرد وبعد چند مدت راضی شدہ باز معاوضہ را در نکاح پسر خود گرفت و باز انکار کرد، آیا از انکار اول نکاح باطل شد یا نہ؟ علماء کرام اللہ تعالیٰ تم پر رحم فرمائے، آپ کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ باپ کی زندگی میں باپ کی رضامندی اور شمولیت کے بغیر بھائی نے اپنی نابالغہ بہن کا نکاح بدلے کی شرط پر کر دیا، اور کچھ مدت بعد باپ اس نکاح پر راضی ہو گیا اور بدلہ میں لڑکے کے لئے رشتہ لے لیا اور دوبارہ

1 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۹۷/۲ Page 683 of 739

Fatawa Razawiyya - Volume 11

Question: Does merely accepting after a denial and renewing the proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul) yield any benefit or not? Did the marriage become void upon the first denial or not? Will marriage take place only with the proposal and acceptance after the denial? Explain and be rewarded. (T)

The Answer: The marriage of an adult girl performed by her brother without the father's permission was an unauthorized (fuzuli) marriage and was contingent upon the father's approval. As soon as the father heard the news and rejected it, the marriage immediately became void. A void marriage cannot be restored; the father's subsequent consent is of no use unless they perform a new proposal and acceptance in the presence of witnesses. It is stated in *Ad-Durr al-Mukhtar*: "If it reaches her and she rejects it, then says 'I agree', it is not permissible because it became void due to the rejection."[1] In *Radd al-Muhtar*, it says: "Because the effectiveness of the marriage was contingent upon permission, and it had become void by rejection."[2] In *Al-Bahr al-Ra'iq*, it says: "A condition for permission is the continued existence of the marriage contract."[3] And Allah Almighty knows best.

The marriage performed by the brother for the girl without the father's permission is an unauthorized (fuzuli) marriage and is dependent on the father's consent. Once the father rejected it upon hearing the news, the marriage became void immediately, and a voided marriage cannot become valid again. Subsequently, the father's consent is useless unless a new proposal and acceptance (Ijab-o-Qabul) is done in the presence of witnesses. It is mentioned in *Durr-e-Mukhtar* that if a girl rejects the marriage upon hearing of it and then says she is happy with it, it will not be valid. This is because it has already become void due to rejection. In *Radd-ul-Muhtar*, it is stated that the implementation of the marriage was dependent on permission, while it had become void by rejection. In *Bahr-ul-Ra'iq*, it says that for permission to be valid, the continued existence of the marriage contract is a prerequisite. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 421 to 422: From Bilaspur district, Imam of Akhtara Mosque. An old woman had a daughter. People of her community began to marry her off without consent. The said old woman was crying in another room as the marriage was happening inappropriately, and she didn't know what was happening to her daughter. The girl's age was five or six-seven years. This girl knew nothing about what was happening or what had occurred. To this mentioned girl...

[1] *Ad-Durr al-Mukhtar*, Bab al-Wali, Mujtabai Press, Delhi, 1/192. [2] *Radd al-Muhtar*, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/300. [3] *Al-Bahr al-Ra'iq*, Bab fi al-Awliya wa al-Akfa, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/114.

फतावा-ए-रज़विया - जिल्द 11

प्रश्न: इनकार के बाद केवल इक़बाल (स्वीकृति) और ईजाब व क़बूल का नवीनीकरण लाभप्रद है या नहीं? क्या पहले इनकार पर निकाह बातिल (अमान्य) हो गया या नहीं? इनकार के बाद क्या केवल ईजाब व क़बूल से निकाह हो जाएगा? वर्णन करें और प्रतिफल प्राप्त करें। (त)

उत्तर: एक बालिग लड़की का निकाह जो उसके भाई ने पिता की अनुमति के बिना किया, वह 'फ़ुज़ूली' निकाह था और पिता की अनुमति पर निर्भर था। जब पिता ने खबर सुनते ही इसे अस्वीकार कर दिया, तो निकाह तुरंत बातिल (अमान्य) हो गया। एक बातिल निकाह को बहाल नहीं किया जा सकता; पिता की बाद की सहमति तब तक काम नहीं आएगी जब तक कि वे गवाहों की उपस्थिति में नए सिरे से ईजाब व क़बूल न करें। अद-दुर्र अल-मुख्तार में लिखा है: "यदि उसे (लड़की को) खबर पहुँचे और वह उसे अस्वीकार कर दे, फिर कहे 'मैं राज़ी हूँ', तो यह मान्य नहीं होगा क्योंकि अस्वीकृति के कारण वह बातिल हो चुका है।"[1] रद्द अल-मुह्तार में है: "क्योंकि निकाह का प्रभावी होना अनुमति पर निर्भर था, जबकि वह अस्वीकृति के कारण बातिल हो चुका था।"[2] अल-बहर अर-राइक में है: "अनुमति के लिए निकाह के अनुबंध (अक़्द) का कायम रहना शर्त है।"[3] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

भाई ने पिता की आज्ञा के बिना जो लड़की का निकाह किया, वह फुज़ूली निकाह है और पिता की अनुमति पर टिका है। जब पिता ने खबर सुनते ही मना कर दिया तो निकाह तुरंत अमान्य हो गया और अमान्य हुई चीज़ फिर से सही नहीं हो सकती। इसके बाद पिता का राज़ी होना बेकार है, जब तक कि दोबारा गवाहों की मौजूदगी में नया ईजाब व क़बूल न करें, निकाह सही न होगा। दुर्रे मुख्तार में है कि अगर लड़की ने खबर मिलने पर निकाह रद्द कर दिया फिर कहा कि मैं राज़ी हूँ तो जायज़ न होगा। क्योंकि वह रद्द करने की वजह से पहले ही अमान्य हो चुका है। रद्दुल मुख्तार में है क्योंकि निकाह का लागू होना अनुमति पर निर्भर था जबकि रद्द करने से अमान्य हो चुका है। बह्रुल राइक में है अनुमति के लिए निकाह का अनुबंध बचा रहना शर्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसाला (मामला) 421 से 422: जिला बिलासपुर, इमाम मस्जिद अख्तरा से। एक बुढ़िया की लड़की थी। उसके बिरादरी वाले बिना रज़ामंदी के शादी करने लगे। उक्त बुढ़िया निकाह के वक्त अनुचित होने पर दूसरी कोठरी में रो रही थी और उसे खबर नहीं थी कि मेरी लड़की के साथ क्या हो

रहा है। लड़की की उम्र पांच या छह-सात साल थी। इस लड़की को कुछ मालूम नहीं था कि क्या हो रहा है या क्या हुआ। उस लड़की के लिए...

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/192। [2] रद्द अल-मुहतार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/300। [3] अल-बहर अर-राइक, बाब फिल औलिया व अल-अक्फ़ा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/114।

पृष्ठ 684/739

محض اقبال بعد انکار تجدید ایجاب و قبول فائدہ دارد یا نہ؟ پھر انکار کر دیا، کیا پہلے انکار پر نکاح باطل ہوا یا نہ؟ انکار کے بعد صرف ایجاب و قبول سے نکاح ہوگا یا نہیں؟ بیان کرو اجر پاؤ۔ (ت)

الجواب: نکاح بالغہ کہ برادرش بے اجازت پدر کرد نکاح فضولی بود بر اجازت پدر موقوف چوں پدر باستماع خبر انکار کرد فوراً باطل شد و باطل را عود نیست باز راضی شدن پدر بکار نیاید تاز سر نو ایجاب و قبول پیش شہود نہ کنند در در مختار است بلغہا فردت ثم قالت رضیت لم یجز لبطلانہ بالرد1 در ردالمحتار ست لان نفاذ التزویج کان موقوفا علی الاجازۃ وقد بطل بالرد2، در بحر الرائق ست الاجازۃ شرطھا قیام العقد3۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ بھائی نے باپ کی اجازت کے بغیر نا بالغہ کا جو نکاح کیا وہ فضولی کا نکاح ہے اور باپ کی اجازت پر موقوف ہے جب باپ نے خبر سنتے ہی انکار کردیا تو نکاح فوراً باطل ہوگیا اور باطل شدہ دوبارہ صحیح نہیں ہوسکتا ہے اس کے بعد باپ کا راضی ہونا بے فائدہ ہے جب تک دوبارہ گواہوں کی موجود گی میں نیا ایجاب و قبول نہ کریں صحیح نہ ہوگا۔ درمختار میں ہے کہ اگر لڑکی نے خبر ملنے پر نکاح رد کردیا پھر کہا کہ میں راضی ہوں تو جائز نہ ہوگا۔ کیونکہ وہ رد کی وجہ سے پہلے باطل ہوچکا ہے، ردالمحتار میں ہے کیونکہ نکاح کا نفاذ اجازت پر موقوف تھا جبکہ رد کرنے سے باطل ہوچکا ہے، بحر الرائق میں ہے اجازت کے لئے عقد نکاح کا باقی ہونا شرط ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۲۱ تا ۴۲۲: از ضلع بلاسپور امام مسجد اکھترا ایک بڑھیا کی لڑکی تھی اس کی برادری والے بلا رضا مندی شادی کرنے لگے۔ بڑھیا مذکور نکاح کے وقت نامناسب رہنے پر دوسری

کوٹھری پر روتی تھی اور یہ خبر نہیں کہ میری لڑکی کا کیا ہورہا ہے، لڑکی کی عمر پانچ یا چھ سات سال کی تھی، اس لڑکی کو یہ کچھ معلوم نہیں کہ کیا ہورہا ہے یا کیا ہوا، اس لڑکی مذکور کے

---

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۰۰ 3 بحر الرائق باب فی الاولیاء والاکفاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۱۱۴

Fatawa Rizvia, Volume 11

Except for the elderly mother, there was no heir even in the branch of her father and grandfather. Rather, those without heirs got her married in childhood. Can this marriage be valid or not? Apart from this, those who made an inappropriate marriage as a son-in-law without an actual marriage, the said elderly poor widow, a bangle seller, used to provide for the girl. Sometimes, this made-up son-in-law went two or three times, and the old woman fed him as hospitality in a brotherly manner. However, she kept her daughter away from any concern, conversation, or other actions with him. When the old woman used to stop him while leaving, the nominal made-up son-in-law would clearly say in open words, "Why are you stopping me? I will not stay, nor do I want anyone, nor will I remember." Thus, regarding point number 2, first, the marriage itself was not valid, and even if those representing the made-up son-in-law prove the marriage as a misunderstanding, when he says such clear words that "I will not stay nor do I want [her]," then also the marriage of the one who performed it becomes void. Now, if the old woman gets the girl's marriage performed in her adulthood, and children are born, then the children who are born will be Muslims. That's all.

Answer:

The second question is ambiguous. If an answer to so many points is written, then the answer would be: (1) Was there any male among the close or distant descendants of this girl's grandfather or great-grandfather at the time of this marriage or not? Without investigation, do not say there was none, as they might emerge after investigation. (2) If there was such a male, what words did he say upon hearing the news of the marriage? (3) If there was no such male, what words did the mother say when the marriage took place, and what words did she say afterwards, or did she say nothing? (4) When that person used to come, did the mother treat him like a son-in-law or like ordinary guests? (5) Does the girl have menstrual cycles now or not? What is her age now? If she has menstrual cycles, since when has she been having them? (6) What was the reason for the mother's displeasure with this marriage? (7) If the girl had menstrual cycles, did she say anything about this marriage immediately upon their onset, or after how long did she say something, or did she say nothing? And if menstrual cycles have not yet started and the girl has turned fifteen, then at the time she turned fifteen or after a while, what did the girl say about this marriage or did she say nothing? (8) It should also be known what is the caste of the person she was

married to and what is the girl's caste, and how is his conduct, what is his religion, and what profession does he follow. And Allah knows best.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

बूढ़ी माँ के अलावा उसके पिता और दादा की शाखा में भी कोई उत्तराधिकारी नहीं था, बल्कि बिना वारिस वालों ने बचपन में निकाह पढ़ा दिया, तो क्या यह निकाह सही हो सकता है या नहीं? इसके अलावा जिन लोगों ने अनुपयुक्त निकाह द्वारा बनावटी दामाद बनाया, बिना निकाह किए, तो उक्त बूढ़ी गरीब विधवा जो चूड़ियाँ बेचकर लड़की का गुजारा करती थी, कभी-कभी यह बनावटी दामाद दो-तीन बार गया तो बुढ़िया ने मेहमान नवाजी के तौर पर उसे भाईचारे के साथ खिलाया-पिलाया, लेकिन अपनी बच्ची को उससे बातचीत या अन्य गतिविधियों से दूर रखा। जाते समय जब बुढ़िया उसे रोकती थी, तो वह बनावटी दामाद स्पष्ट शब्दों में कहता था कि "मुझे क्यों रोकती हो, मैं नहीं रहूँगा और न ही किसी को चाहता हूँ और न ही याद रखूँगा।" अतः नंबर 2 के संबंध में, एक तो निकाह ही सही नहीं हुआ, और यदि बनावटी दामाद वाले निकाह को गलतफहमी साबित करें, तो जब वह ऐसे स्पष्ट शब्द कहे कि "न रहूँगा न चाहूँगा", तो निकाह करने वाले का निकाह समाप्त हो जाता है। अब अगर बुढ़िया लड़की का निकाह उसके वयस्क होने पर करवा दे, तो जो संतान होगी वह मुसलमान होगी। बस।

उत्तर:

दूसरा प्रश्न अस्पष्ट है, यदि इतनी बातों का उत्तर लिखा जाए तो उसका उत्तर यह होगा: (1) इस लड़की के दादा या परदादा की निकट या दूर की संतान में इस निकाह के समय कोई पुरुष था या नहीं? बिना जांच-पड़ताल के यह न कहा जाए कि कोई नहीं था, क्योंकि जांच के बाद वे सामने आ सकते हैं। (2) यदि ऐसा कोई पुरुष था, तो उसने निकाह की खबर सुनकर क्या शब्द कहे? (3) यदि ऐसा कोई पुरुष नहीं था, तो माँ ने निकाह होने पर क्या शब्द कहे और उसके बाद क्या शब्द कहे या कुछ नहीं कहा। (4) जब वह व्यक्ति आता था, तो माँ उसके साथ दामाद जैसा व्यवहार करती थी या आम मेहमानों जैसा? (5) क्या लड़की को अब मासिक धर्म आता है या नहीं? उसकी अभी आयु क्या है? यदि मासिक धर्म आता है, तो कब से आ रहा है? (6) माँ की इस निकाह से नाराजगी का क्या कारण था? (7) यदि लड़की को मासिक धर्म आया, तो उसके आते ही उसने इस निकाह के बारे में कुछ कहा या कितनी देर बाद कुछ कहा या कुछ नहीं कहा? और यदि मासिक धर्म अब तक नहीं आया और लड़की की आयु पंद्रह वर्ष हो गई है, तो जिस समय आयु पंद्रह वर्ष हुई थी, उस समय या उसके कुछ समय बाद लड़की ने इस निकाह के बारे में क्या कहा था या कुछ नहीं कहा। (8) यह भी ज्ञात होना चाहिए कि जिससे निकाह हुआ उसकी जाति क्या है और लड़की की जाति क्या है, और

उसका चाल-चलन कैसा है, उसका धर्म क्या है और वह क्या व्यवसाय करता है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

पृष्ठ 739 में से 685

وارث سوائے بڑھیا ماں کے کوئی اس کے باپ دادا کی شاخ میں بھی نہ تھے، بلکہ بلا وارث والوں نے نکاح طفلیت میں پڑھایا تو کیا یہ نکاح صحیح ہوسکتا ہے یا نہیں سوائے اس کے جولوگ نامناسب نکاح بنایا ہوا داماد نکاح بے کئے تو بڑھیا مذکور غریب بیوہ منہیاری بیچنے والی بچی کو کوئی گزر کرتی تھی بعض وقت یہ بنایا ہوا داماد دو تین بار گیا تو بڑھیا بطور مہمان نوازی کے کھلاتی پلاتی بطور برادرانہ، لیکن کچھ بڑھیا کی بچی سے سروکار بات چیت دیگر حرکات سے پاک رکھتی تھی، جاتے وقت بڑھیا جب روکتی تھی تو بنا ہوا داماد برائے نام کھلے الفاظ میں یہ صاف صاف کہتا تھا کہ مجھ کو کیوں روکتی ہے میں نہ رہوں گا اور نہ کسی کو چاہتا ہوں اور یاد نہ رکھوں گا، پس یہ نمبر ۲ کے متعلق ایک تو نکاح ہی درست نہیں ہوا اور جو بنائے ہوئے داماد والوں کی طرف سے نکاح بھی مغالطہ ثابت کریں، تو جب دو ایسا الفاظ کھلا ہوا سے کہے کہ نہ رکھوں گا نہ چاہتا ہوں، تو بھی نکاح والے کا نکاح ساقط ہو جاتا ہے تو اب لڑکی کا نکاح بڑھیا بالغی میں پڑھاوے تو اولاد بھی ہوتی تو جو اولاد مسلمان ہوں ۔فقط

الجواب:

دوسرا سوال مہمل ہے، اتنی باتوں کا جواب لکھا جائے تو اس کا جواب ہو: (۱) اس لڑکی کے دادا پر دادا نزدیک دور کی اولاد میں کوئی مرد اس نکاح کے وقت تھا یا نہیں۔ بے تحقیق کوئی نہ تھانہ کہہ دیا جائے کہ تحقیق کے بعد نکلتے ہیں۔ (۲) اگر ایسا کوئی مرد تھا تو اس نے نکاح کی خبر سن کر کیا لفظ کہے۔ (۳) اگر ایسا کوئی مرد نہ تھا تو ماں نے نکاح ہو جانے پر کیا لفظ کہے اور اس کے بعد کیا لفظ کہے یا کچھ نہ کہا۔ (۴) جب وہ شخص آتا تھا تو ماں اس کی خاطر داماد کی سی کرتی تھی یا عام مہمانوں کی سی۔ (۵) لڑکی کو اب ماہواری عارضہ آتا ہے یا نہیں۔ اس کی عمر

اب کیا ہے، عارضہ ماہواری آتا ہے تو کب سے آتا ہے۔ (۶) ماں کو اس نکاح سے وجہ ناراضی کیا تھی۔ (۷) لڑکی کو اگر عارضہ ماہواری آیا تو فوراً اس کے آتے وقت اس نکاح کے بارے میں کچھ کہا یا کتنی دیر بعد کچھ کہا یا کچھ نہ کہا اور اگر عارضہ ماہواری اب تک نہ آیا اور لڑکی کی عمر پندرہ برس کی ہوگئی تو جس وقت عمر پندرہ برس کی ہوئی تھی اس وقت یا اس کے دیر کے بعد لڑکی نے اس نکاح کے بارے میں کیا کہا تھا یا کچھ نہ کہا۔ (۸) یہ بھی معلوم ہونا چاہئے کہ جس سے نکاح ہوا اس کی قوم کیا ہے اور لڑکی کی کیا قوم ہے اور اس کا چال چلن کیسا ہے اور اس کا مذہب کیا ہے کیا پیشہ کرتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Volume 11 Fatawa Razawiya

Problem 422: From Lucknow, Chhatta Manzil Club, submitted by Abdul Rahim Khan Sahib Qadri Razavi, 6 Rajab 1339 AH, Thursday. What do the scholars of religion say regarding this: Zaid cannot go to perform his own marriage for some reason, so he made his spiritual brother his 'wali' (guardian/agent). Can the 'wali' perform the marriage and bring [the bride] or not? Explain and be rewarded. The Answer: He is not called a 'wali' but a 'wakil' (agent/proxy). He should appoint someone as his agent to perform the offer and acceptance on his behalf. The person performing the marriage should say to the agent, "I have given the eldest or youngest daughter of so-and-so son of so-and-so (or however she is identified) in marriage to your principal, so-and-so son of so-and-so, for this much dower." The agent should say, "I have accepted her for my aforementioned principal." Or if the agent himself represents the woman or her agent or guardian of a minor, he should say to the other's agent, "I have taken you, or so-and-so daughter of so-and-so who is your principal or under your guardianship, into marriage with my principal so-and-so son of so-and-so." If the woman or her agent or guardian says, "I have accepted," the marriage will be valid. And Allah Almighty knows best.

Problem 423: From Talsar, District Shahjahanpur, Mohalla Umarpur, submitted by Sheikh Salamatullah Sahib, cloth merchant, 20 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say: at what age is a girl's marriage permissible and at what age is it impermissible? That is, at what age does a boy reach the age of puberty according to Sharia law? At what age in years is marriage valid when there is no real person as an absolute agent for him? Explain and be rewarded. The Answer: When signs of puberty appear—nocturnal emission for boys and menstruation for girls—that is the age of puberty. If no signs appear, it will be declared upon reaching fifteen full years of age. If a girl has completed nine full years or a boy has completed twelve full years and they claim puberty, and their physical appearance does not contradict this claim, their word will be accepted. Until puberty is proven in any of these ways, they cannot perform their own marriage without the permission of a guardian. And Allah Almighty knows best.

Problem 424: From Lasrat, Pargana Parada, State of Tonk, Mohalla Sultanpura, submitted by Ibrahim Sahib, 28 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a man has lived separately from his wife for 14 years. The woman was three months pregnant, and a daughter was born from this pregnancy. The daughter was raised by her mother for fourteen years. The father provided no

support nor ever called for the daughter. In such a case, the young girl has become an adult at 14 years of age. The girl, with her own consent and her mother's permission, got married. The father was not present. The marriage was within the same community, i.e., not outside the tribe. Is this marriage valid or not? Explain and be rewarded.

ग्यारहवाँ खंड फ़तावा रज़विया

मसाला 422: लखनऊ छत्ता मंज़िल क्लब से, प्रेषक अब्दुल रहीम खान साहब कादरी रज़वी, 6 रजब 1339 हिजरी, गुरुवार। दीन के विद्वान क्या कहते हैं कि ज़ैद किसी कारणवश अपना निकाह पढ़वाने नहीं जा सकता, तो उसने अपने पीर भाई को अपना वली बना लिया। क्या वली निकाह पढ़ा कर ला सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। उत्तर: उसे वली नहीं बल्कि वकील (प्रतिनिधि) कहा जाता है। वह किसी को अपना वकील नियुक्त करे कि मेरी ओर से ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कर आओ। निकाह पढ़ाने वाला उससे कहे कि "मैंने फ़लाँ के बेटे फ़लाँ के बेटे फ़लाँ की सबसे बड़ी या सबसे छोटी बेटी (या जैसे भी पहचान तय हो) इतने मेहर (दहेज) पर तुम्हारे मुवक्किल (Principal) फ़लाँ के बेटे फ़लाँ के बेटे फ़लाँ के निकाह में दी।" वकील कहे कि "मैंने अपने उक्त मुवक्किल की ओर से उसके लिए स्वीकार की।" या यदि वकील स्वयं महिला का है या उसके वकील या नाबालिग लड़की का है, तो वह उसके वकील से कहे कि "मैंने तुम्हें या फ़लाँ की बेटी फ़लाँ को जो तुम्हारी मुवक्किला है या जिसके तुम वली हो, अपने मुवक्किल फ़लाँ के बेटे फ़लाँ के निकाह में लिया।" यदि महिला या उसका वकील या वली कहे "मैंने स्वीकार किया", तो निकाह हो जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 423: तलसर ज़िला शाहजहाँपुर मोहल्ला उमरपुर से, प्रेषक शेख सलामतुल्लाह साहब कपड़ा व्यापारी, 20 रमज़ान 1339 हिजरी। दीन के विद्वान क्या कहते हैं कि लड़की का निकाह कितनी उम्र में जायज़ है और कितनी उम्र में नाजायज़? यानी शरई हुक्म के अनुसार लड़का बालिग (वयस्क) किस उम्र में होता है? कितने वर्षों की आयु होने पर निकाह जायज़ होता है जब उसका कोई वास्तविक व्यक्ति मुतलक़ वकील (निरपेक्ष प्रतिनिधि) न हो? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। उत्तर: जब बालिग होने के लक्षण दिखाई दें—लड़के को स्वप्नदोष और लड़की को मासिक धर्म—उस समय बालिग होने की आयु होती है। और यदि लक्षण न हों, तो पंद्रह वर्ष की पूरी आयु होने पर हुक्म दिया जाएगा। यदि लड़की नौ वर्ष पूरे कर चुकी हो या लड़का बारह वर्ष पूरे कर चुका हो और वे बालिग होने का दावा करें और उनकी शारीरिक स्थिति इस दावे को झुठलाती न हो, तो उनकी बात मान ली जाएगी। जब तक इनमें से किसी भी तरीके से बालिग होना सिद्ध न हो जाए, वे अपने वली (अभिभावक) की अनुमति के बिना स्वयं निकाह नहीं कर सकते। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 424: लसरात परगना पड़ादा रियासत टोंक मोहल्ला सुल्तानपुरा से, प्रेषक इब्राहिम साहब, 28 रमज़ान 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति अपनी पत्नी से

14 साल से अलग रह रहा हो। महिला तीन महीने की गर्भवती थी, उसी गर्भ से लड़की पैदा हुई और लड़की ने चौदह साल तक अपनी माँ के पास परवरिश पाई। पिता ने किसी प्रकार की सहायता नहीं दी और न ही कभी लड़की को बुलाकर देखा। ऐसी स्थिति में युवा लड़की 14 साल की बालिग हो गई है। लड़की ने अपनी खुशी से और उसकी माँ ने अपनी अनुमति से लड़की का निकाह कर दिया। पिता मौजूद नहीं था, निकाह भी अपनी ही बिरादरी (क़बीले) में हुआ, यानी बाहरी क़बीले में नहीं हुआ। यह निकाह जायज़ रहा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

पृष्ठ 686/739

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۴۲۲: از لکھنؤ چھتہ منزل کلب مسئولہ عبدالرحیم خان صاحب قادری رضوی ۶ رجب ۱۳۳۹ھ پنجشنبہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید کسی وجہ سے اپنا نکاح پڑھانے نہیں جاسکتا تو اپنے پیر بھائی کو اپنا ولی بنالیا تو ولی نکاح پڑھا کر لاسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: اسے ولی نہیں وکیل کہتے ہیں کسی کو اپنا وکیل کردے کہ میری طرف سے ایجاب و قبول کر آؤ، نکاح پڑھانے والا اس سے کہے کہ فلاں بن فلاں بن فلاں کی سب سے بڑی یا سب سے چھوٹی لڑکی (یا جس طرح تعیین ہو) میں نے تیرے موکل فلاں بن فلاں بن فلاں کے نکاح میں اتنے مہر پر دی، وکیل کہے کہ میں نے اپنے موکل مذکور کی طرف سے اس کے لئے قبول کی، یا وکیل خود عورت یا اس کے وکیل یا نا بالغہ ہے تو اس کے وکیل سے کہے کہ میں نے تجھے یا فلانۃ بنت فلاں بن فلاں کو تیری موکلہ ہے یا جس کا تو ولی ہے اپنے موکل فلاں بن فلاں بن فلاں کے نکاح میں لیا عورت یا اس کا وکیل یا ولی کہے میں نے قبول کیا نکاح ہوجائے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۴۲۳: از تلسر ضلع شاہجہان پور محلہ عمر پور مسئولہ شیخ سلامت اللہ صاحب پارچہ فروش ۲۰ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ کتنی عمر میں لڑکی کا نکاح جائز اور کتنی عمر کا ہو تو نا جائز یعنی لڑکا سن بلوغ بحکم شرع کتنی عمر میں ہوتا ہے، کتنی عمر مدت سال کی ہو تو نکاح جائز ہوتا ہے جب کہ اس کا کوئی حقیقی شخص وکیل مطلق نہ ہو، بینوا توجروا الجواب: جب آثارِ بلوغ ظاہر ہوں لڑکے کو احتلام لڑکی کو حیض، اس وقت سن بلوغ ہوتا ہے، اور اگر آثار نہ ہوں تو پندرہ برس پوری عمر ہونے پر حکم دیا جائے گا، اگر لڑکی نو برس کامل یا لڑکا بارہ برس کامل کا ہوچکا ہے اور وہ دعویٰ بلوغ کریں اور ان کی ظاہری حالت اس دعوے کی تکذیب نہ کرتی ہو تو ان کا قول مان لیا جائے گا جب تک ان صورتوں میں سے کسی صورت پر بلوغ ثابت نہ

ہو وہ بغیر اذنِ ولی کے اپنا نکاح نہیں کرسکتے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۴۲۴: از لصرات پرگنہ پڑادہ ریاست علاقہ ٹونک محلہ سلطانپورہ مسئولہ ابراہیم صاحب ۲۸ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص اپنی بیوی سے ۱۴ سال سے علیحدہ رہتا ہو عورت حاملہ تین ماہ کی ہو اسی حمل سے لڑکی پیدا ہوئی اور لڑکی نے چودہ سال تک اپنی ماں کے پاس پرورش پائی باپ نے کسی قسم کی امداد نہیں دی نہ کبھی لڑکی کو بلوا کر دیکھا، ایسی صورت میں جوان لڑکی ۱۴ سال کی بالغ ہوگئی ہے لڑکی نے اپنی خوشی اور اس کی والدہ نے اپنی اجازت سے لڑکی کا نکاح کردیا باپ موجود نہ تھانکاح بھی ہم قوم سے ہوا یعنی غیر قبیلہ میں نہیں ہوا، یہ نکاح جائز رہا یا نہیں۔ بینوا توجروا

The Answer: Legally, the girl belongs to him, even if she has been separated from the woman for many years. Merely being fourteen years old is not sufficient for reaching puberty. If menstruation has not occurred, she is a minor; her permission for marriage holds no weight, and a marriage conducted by the mother remains contingent upon the father's permission. If he validates it, it becomes valid; if he rejects it, it becomes void. If the girl had actually reached puberty and menstruation had occurred, she is empowered to marry within her social status (Kafu). However, a marriage outside her social status (Ghair-Kafu) without the father's permission—unless he explicitly gave permission beforehand knowing it was outside their status—is void with the girl's permission alone. Being "outside status" (Ghair-Kafu) doesn't just mean a lower lineage; it also includes being so low in terms of religion, profession, or conduct that marrying such a person would bring disgrace to the girl. This is also considered being outside status, even if he belongs to that very same family. And Allah Almighty knows best.

Problem 425: From Samita Post Office Darapukhta, Tehsil Dera Ghazi Khan, submitted by Allah Bakhsh Sahib on 5 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid fell in love with a woman named Zainab. Despite having a family, being overcome by his love, he married off his four-year-old minor daughter to Zainab's brother, Amr, as Zainab's dower. After this, Zaid married Zainab and consummated the marriage. He then fell ill and passed away after a week. Now, that daughter, having reached puberty, says, "The marriage my father performed with an ineligible, non-observer of purdah out of infatuation is not acceptable to me." Is this marriage valid or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: The marriage of a minor girl performed by her father is binding. The girl has no right to annul it upon reaching puberty. The excuses mentioned in the question are futile and meaningless; they have no basis in Shariah. It is stated in Durr al-Mukhtar: "The marriage becomes binding even if there is gross deception (in dower) or it is with someone of unequal status (Ghair-Kafu), provided the one giving in marriage is the father or grandfather who is not known for bad choices. And Allah Almighty knows best." If the one performing the marriage is the father or grandfather, then even if this marriage is performed with someone of unequal status or at an extremely low dower, it will still become binding, provided that the father or grandfather is not known for making poor choices. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 426: From Mainpuri city, Dariba, house of Maulvi Hakim Muhammad Abbas, submitted by Nisar Ahmed Sahib on 7 Dhul-Hijjah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's wife passed away, leaving behind several sons. Zaid contracted his second marriage...

1 Durr al-Mukhtar, Bab al-Wali, Matba Mujtabai Delhi 1/192 Page 687 of 739

उत्तर: शरीयत के अनुसार, वह लड़की उसी की है चाहे वह कितने ही वर्षों से उस औरत से अलग क्यों न हो। केवल चौदह वर्ष की आयु होना बालिग (वयस्क) होने के लिए पर्याप्त नहीं है। यदि माहवारी (हैज़) नहीं आई है, तो वह नाबालिग है, और निकाह के लिए उसकी अनुमति का कोई महत्व नहीं है। माँ द्वारा किया गया निकाह पिता की अनुमति पर निर्भर रहेगा; यदि वह इसे स्वीकार कर लेता है तो यह मान्य होगा, और यदि वह इसे रद्द कर देता है तो यह शून्य (बातिल) हो जाएगा। यदि लड़की वास्तव में बालिग हो गई थी और उसे माहवारी आ चुकी थी, तो वह अपनी बराबरी (कफ़ू) में अपना निकाह करने की स्वायत्त है। बराबरी से बाहर (ग़ैर-कफ़ू) में पिता की अनुमति के बिना निकाह —बशर्ते उसने निकाह से पहले उसे बराबरी से बाहर जानते हुए स्पष्ट रूप से अनुमति न दी हो— लड़की की अपनी अनुमति से शून्य है। "ग़ैर-कफ़ू" (बराबरी से बाहर) होने का अर्थ केवल नीची जाति होना नहीं है, बल्कि धर्म, पेशा या आचरण में इतना नीचा होना कि उसके साथ निकाह करना लड़की के लिए बदनामी का कारण बने, यह भी ग़ैर-कफ़ू होना है, भले ही वह उसी विशेष खानदान का क्यों न हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ४२५: समिता डाकखाना दरापुख़्ता, तहसील डेरा गाज़ी खान से, प्रेषक अल्लाह बख्श साहब, ५ शव्वाल १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद को ज़ैनब नाम की एक औरत से प्यार हो गया। बाल-बच्चेदार होने के बावजूद अपने प्यार के वशीभूत होकर उसने अपनी चार साल की नाबालिग बेटी का निकाह ज़ैनब के भाई अम्र से ज़ैनब के मेहर के बदले में कर दिया। इसके बाद ज़ैद ने ज़ैनब से निकाह किया और सहवास किया। फिर वह बीमार हो गया और एक हफ्ते बाद उसकी मृत्यु हो गई। अब वह लड़की बालिग होकर कहती है कि "मेरे पिता ने मोह-वश जो मेरा निकाह एक अयोग्य और बेपर्दा व्यक्ति से कर दिया है, वह मुझे स्वीकार नहीं है।" क्या यह निकाह सही है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: नाबालिग लड़की का निकाह जो उसके पिता ने किया है, वह अनिवार्य (लाज़िम) है। लड़की को बालिग होने के बाद इसे रद्द करने का कोई अधिकार नहीं है और सवाल में बताए गए बहाने व्यर्थ और अर्थहीन हैं, शरीयत में उनका कोई आधार नहीं है। 'दुर्रे मुख्तार' में लिखा है: "निकाह अनिवार्य हो जाता है चाहे वह भारी धोखे (मेहर में) के साथ हो या गैर-कफ़ू (बराबरी से बाहर) में हो, बशर्ते निकाह करने वाला पिता या दादा हो जो गलत चुनाव के लिए प्रसिद्ध न हों। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।" यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा हो, तो भले ही यह निकाह ग़ैर-कफ़ू

में या बहुत ही कम मेहर पर किया गया हो, तब भी यह अनिवार्य हो जाएगा, बशर्ते पिता और दादा गलत चुनाव के लिए प्रसिद्ध न हों। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला ४२६: मैनपुरी शहर, दरीबा, मौलवी हकीम मोहम्मद अब्बास के मकान से, प्रेषक निसार अहमद साहब, ७ ज़ुल-हिज्जा १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद की पत्नी का कई लड़कों को छोड़कर निधन हो गया। ज़ैद ने अपना दूसरा निकाह...

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/192 पेज ६८७ / ७३९

الجواب: شرعاً وہ لڑکی اسی کی ہے اگرچہ کتنے ہی برسوں سے عورت سے علیحدہ ہو فقط چودہ برس کی عمر ہونا بلوغ کے لئے کافی نہیں۔ اگر حیض نہ آیا ہو نا بالغہ ہے، نکاح کے لئے اس کی اجازت کوئی چیز نہیں، اور ماں کا کیا ہوا نکاح باپ کی اجازت پر موقوف رہے گا، اگر جائز کر دے گا جائز ہو جائے گا رد کر دے گا باطل ہو جائے گا، اور اگر لڑکی واقعی بالغہ ہو گئی تھی حیض آچکا تھا تو وہ کفو میں اپنے نکاح کی مختار ہے غیر کفو میں بغیر اجازت باپ کے کہ اس نے پیش از نکاح غیر کفو جان کر صراحۃً اجازت دی ہو لڑکی کا نکاح اس کی اجازت سے باطل ہے، غیر کفو ہونے کے لئے یہی ضروری نہیں کہ کم قوم ہو بلکہ مذہب یا پیشہ یا چال چلن میں ایسا کم کہ اس کے ساتھ نکاح ہو نا لڑکی کے لئے باعث بدنامی ہو یہ بھی غیر کفو ہونا ہے اگرچہ خاص اسی خاندان کا ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۲۵: از سمیتہ ڈاکخانہ در اپختہ تحصیل ڈیرہ غازی خان مسئولہ اللہ بخش صاحب ۵ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید ایک عورت زینب پر عاشق ہوا باوجود اہل وعیال کے اس کے عشق میں مغلوب ہو کر اپنی دختر صغیرہ چار سالہ کا نکاح حق مہر زینب پر برادر زینب عمرو زوجہ سے کر دیا بعد اس کے زید نے زینب سے عقد کر کے سر میل کیا اور اس وقت بیمار ہوا، بعد ہفتہ کے فوت ہو گیا، اب وہ لڑکی بالغہ ہو کر کہتی ہے کہ میرے باپ نے مرض عشق میں جو میرا نکاح نااہل غیر پردہ دار سے کر دیا ہے مجھے منظور نہیں، آیا یہ نکاح صحیح ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صغیرہ کا نکاح کہ اس کے باپ نے کیا لازم ہے، صغیرہ کو بعد بلوغ اس کے فسخ کا کوئی حق نہیں اور عذرات کہ سوال میں لکھے مہمل وبے معنی ہیں شرع میں ان کی کوئی اصل نہیں۔ درمختار میں ہے: لزم النکاح ولو بغبن فاحش او من غیر کفو ان کان المزوج اباً اؤ جد الم یعرف منھما سوء الاختیار واللہ تعالیٰ اعلم۔ نکاح کر دینے والا باپ یا دادا ہو اگرچہ یہ نکاح غیر کفو یا انتہائی کم مہر پر کیا ہو تو بھی لازم ہو جائے گا بشرطیکہ باپ دادا سوء اختیار سے معروف نہ ہوں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۲۶: از شہر مین پوری دریبہ مکان مولوی حکیم محمد عباس مسئولہ نثار احمد صاحب ۷ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زوجہ زید نے چند لڑکے چھوڑ کر انتقال کیا، زید نے اپنا عقد ثانی

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲ صفحہ ۶۸۷ از ۷۳۹

Fatawa Razawiyya Volume 11

...married Hindah, from whom several boys and a girl were born. Then Zaid also passed away. Hindah took her children and went to her parents' home. Her stepsons continued to send her a monthly allowance for food and expenses according to their means. Later, Hindah also died. Her brother took custody of his niece and nephews and secretly married off his niece to Khalid without consulting or informing her consanguine (paternal half) brothers. When this news became public, the consanguine brothers also found out. They somehow managed to bring their stepsister back from Khalid's house. Now they wish to marry their stepsister to someone honorable, and the girl is also extremely displeased with her husband Khalid. At the time of marriage, her age was eight years; now she is not more than eleven years. What is the ruling in this situation? Please explain and be rewarded.

Answer: In the queried situation, since the minor daughter of Hindah has no adult full brother, those of her consanguine brothers who are adults are her legal guardians (wali) for marriage. The marriage performed by her maternal uncle, having hidden it from these brothers, is void (faskh). These brothers have the right, as per Sharia permission, to marry her to a Sharia-compatible match (Kufu) without a grossly inadequate dowry (Mahr-e-Mithl). If she is still a minor, they can do so. If she has reached puberty (i.e., menstruation has started), she herself has the right to marry a Sharia-compatible match. In any case, there is no need for a divorce because the marriage performed by the maternal uncle was voided from the beginning by the refusal of the brothers, and Khalid no longer has any relationship with this girl; so why talk about divorce! It is stated in Durr al-Mukhtar: "The marriage by a distant guardian in the presence of a closer one depends on the permission of the latter." 1. And Allah knows best. (T)

Problem 747: Sent by Syed Imdad Ali Sahib, Mukhtar Alam Sahwan, Thakur Darwaza, Mohalla Pirzadgan, 21 Rabi' al-Akhir 1335 AH. What do the scholars of the Sharia of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) say regarding this matter? A man's daughter has been under her maternal grandfather's care since the beginning. The father severed ties with her from the first day and has absolutely no information about her. He does not ask about her illnesses, pain, suffering, or happiness. In such a situation, would it be permissible if their maternal grandfather performs their marriage? The situation is that the girl whose marriage is intended is in her thirteenth year. If there is any way of permissibility, please state it because when the father is not a partner in any circumstance, what is the way for the girl's marriage?

And please state at what age a girl becomes adult (baligh) and what are its conditions and signs according to Jurisprudence? Please explain and be rewarded.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Mujtabai Press Delhi 1/192. Page 688 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया, जिससे कई लड़के और एक लड़की पैदा हुई। फिर ज़ैद का भी इंतकाल हो गया। हिंदा अपने बच्चों को लेकर अपने मायके चली गई। उसके सौतेले लड़के उसे अपनी हैसियत के मुताबिक़ मासिक ख़र्च भेजते रहे। फिर हिंदा की भी मौत हो गई। उसके भाई ने अपने भांजे-भांजियों पर क़ब्ज़ा कर लिया और अपनी भांजी का निकाह उसके पिता की ओर के सौतेले भाइयों (अल्लाती भाइयों) से छिपाकर गुप्त रूप से खालिद से कर दिया। जब यह बात सार्वजनिक हुई तो उन सौतेले भाइयों को भी पता चला। उन्होंने किसी तरह अपनी सौतेली बहन को खालिद के घर से वापस बुलवा लिया। अब वे चाहते हैं कि अपनी सौतेली बहन का निकाह किसी सम्मानित व्यक्ति से कर दें। वह लड़की भी अपने पति खालिद से बहुत नाखुश है। निकाह के समय उसकी उम्र आठ साल थी, अब वह ग्यारह साल से अधिक की नहीं है। इस स्थिति में क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, चूंकि हिंदा की नाबालिग बेटी का कोई सगा भाई बालिग नहीं है, इसलिए उसके अल्लाती भाइयों (पिता की ओर के सौतेले भाई) में जो बालिग हों, वे उसके निकाह के वली (अभिभावक) हैं। वह निकाह जो उसके मामा ने इन भाइयों से छिपाकर किया था, निरस्त (फ़स्ख़) हो गया। इन भाइयों को अधिकार है कि शरीअत की अनुमति के अनुसार किसी शरीई कुफ़ू (बराबरी का रिश्ता) में 'महरे मिस्ल' में भारी कमी किए बिना उसका निकाह कर दें, बशर्ते वह अभी भी नाबालिग हो। और अगर वह अब बालिग हो गई है, यानी मासिक धर्म शुरू हो गया है, तो उसे स्वयं किसी शरीई कुफ़ू से निकाह करने का अधिकार है। बहरहाल, तलाक की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि भाइयों के अस्वीकार करने से मामा द्वारा किया गया निकाह शुरू से ही निरस्त हो गया, और खालिद का उस लड़की से कोई संबंध नहीं रहा, फिर तलाक का क्या सवाल! दुर्रे मुख़्तार में है: "निकटतम वली की मौजूदगी में दूर के वली द्वारा किया गया निकाह, निकटतम वली की अनुमति पर निर्भर है।" 1. और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 747: प्रेषक: सैयद इमदाद अली साहब, मुख़्तार आलम सहवान, ठाकुर दरवाज़ा, मोहल्ला पीरज़ादगान, 21 रबी-उल-आख़िर 1335 हिजरी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति की बेटी शुरुआत से ही अपने नाना की परवरिश में है। पिता ने पहले दिन से ही उससे नाता तोड़ लिया है और बिल्कुल भी उसकी ख़बर नहीं

लेता। बीमारी, तकलीफ़, दुख, सुख आदि के बारे में नहीं पूछता। ऐसी स्थिति में यदि उन लड़कियों का नाना उनका निकाह कर दे तो क्या यह जायज़ होगा? स्थिति यह है कि वह लड़की जिसका निकाह करना चाहते हैं, अपने तेरहवें वर्ष में है। यदि जायज़ होने की कोई सूरत हो तो बयान फ़रमाएं क्योंकि जब पिता किसी भी हाल में शरीक नहीं है, तो लड़की के निकाह का क्या रास्ता निकाला जाए? और यह भी बयान फ़रमाएं कि लड़की किस उम्र में बालिग होती है और फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के अनुसार उसकी क्या शर्तें और निशानियां हैं? बयान करें और पुण्य कमाएं।

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/192. पेज 688 का 739

ہندہ سے کیا، ہندہ سے بھی چند لڑکے اور ایک لڑکی پیدا ہوئی، پھر زید نے بھی انتقال کیا، ہندہ اپنی اولاد کو لے کر اپنے میکے چلی گئی، اس کے سوتیلے لڑکے اس کو اپنے حسب مقدرت ماہانہ خرچ خوردونوش پہنچاتے رہے، پھر ہندہ بھی مرگئی، اور اس کا بھائی ان بھانجی بھانجوں پر قابض ہو گیا اور اپنی بھانجی کا عقد خالد سے بلا صلاح و مشورہ اس کے علاتی بھائیوں کے پوشیدہ طور پر کر دیا۔ جب یہ خبر عالم آشکار ہوئی تو بالا بالا اس کے علاتی بھائیوں کو بھی خبر پہنچی، تو کسی ترکیب سے اپنی سوتیلی بہن کو خالد کے مکان سے بلوالیا اور اب یہ چاہتے ہیں کہ اپنی سوتیلی بہن کا کسی معزز سے نکاح کر دیں اور وہ لڑکی بھی اپنے شوہر خالد سے نہایت بدظن ہے، بوقت عقد اس کی عمر آٹھ سال کی تھی اب گیارہ سال سے زائد نہیں، اس صورت میں کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں جبکہ دختر ہندہ نابالغہ کا کوئی حقیقی بھائی بالغ نہ ہو تو اس کے علاتی بھائیوں میں جو بالغ ہوں اس کے ولی نکاح ہیں، وہ نکاح کہ اس کے ماموں نے ان بھائیوں سے چھپا کر دیا فسخ ہو گیا، ان بھائیوں کو اختیار ہے کہ حسب اجازت شرع کسی کفو شرعی سے بغیر مہر مثل میں کمی فاحش کئے ہوئے اس کا نکاح کر دیں، اگر وہ اب بھی نابالغہ ہے، اور اگر اب بالغہ ہو گئی یعنی عارضہ ماہواری آنے لگا تو کسی کفو شرعی سے نکاح کر لینے کا اسے خود اختیار ہے، بہرحال طلاق کی کچھ حاجت نہیں کہ بھائیوں کے رد کرنے سے ماموں کا کیا ہوا نکاح سرے سے فسخ ہو گیا، اور خالد کو اس دختر سے کچھ تعلق نہ رہا پھر طلاق سے کیا علاقہ ! در مختار میں ہے : لزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ | اگر ولی ابعد نے اقرب کی

موجودگی کے باوجود نکاح دیا تو اقرب 1۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ | کی اجازت پر موقوف ہوگا واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۴۷: مرسلہ سید امداد علی صاحب مختار عالم ساہوان ٹھاکر دروازہ محلہ پیرزادگان ۲۱ ربیع الآخر ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے شریعت محمدیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اس مسئلہ میں ایک شخص کی لڑکی اپنے نانا کی زیر پرورش ابتداء سے ہے باپ نے روز اول سے اس سے تعلق قطع کر رکھا ہے اور مطلق کسی بات کی خبر نہیں لیتا ہے مرض دکھ درد رنج راحت وغیرہ کو نہیں پوچھتا، ایسی حالت میں ان لڑکیوں کا نانا عقد کر دے تو جائز ہو گا یا نہیں؟ حال یہ ہے کہ وہ لڑکی جس کا عقد کرنا چاہتا ہے تیرہویں سال میں ہے اگر کوئی صورت جواز ہو تو بیان فرمائیے کیونکہ جب باپ کسی حالت کا شریک نہیں تو لڑکی کے عقد کی کیا سبیل کی جائے اور یہ بیان فرمائیے کہ لڑکی کس سن پر بالغ ہوئی اور بروئے فقہ اس کی کیا کیا شرائط اور نشانیاں ہیں؟ بینوا توجروا

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲ Page 688 of 739

Volume 11 Fatawa Rizvia

The Answer As long as the father is alive, the maternal grandfather cannot have guardianship (wilayah). The father's lack of contact does not negate his fatherhood.

[Arabic Text]: And the case of 'Adhl' (unjust prevention of marriage) was not mentioned in the question, in which the guardianship belongs to the Judge (Qadi) and not the maternal grandfather, as Maulana Shurunbulali established in 'Kashf al-Mu'dil'. In the question, the case of estrangement was not mentioned, whereas in such a case, the guardianship belongs to the Judge, not the maternal grandfather, as Maulana Shurunbulali has researched in his book "Kashf al-Mu'dil". (T)

A girl becomes mature (reaches puberty) at a minimum age of nine complete years and a maximum of fifteen complete years. If signs of puberty appear in between, she is mature, otherwise not. There are three signs of puberty: menstruation, nocturnal emission, or pregnancy. Apart from these, growth of armpit or pubic hair or breast development is not considered. It is stated in 'Tanwir':

[Arabic Text]: The puberty of a girl is established by nocturnal emission, menstruation, and pregnancy. If these are not found, then it is established upon the completion of fifteen years. The minimum duration for her is nine years. (Summarized) A girl's puberty is established by nocturnal emission, menstruation, or pregnancy. If none of these signs are found, then upon reaching fifteen full years. Her minimum duration for puberty is nine years. (Summarized) (T)

It is stated in 'Radd al-Muhtar':

[Arabic Text]: No consideration is given to the growth of pubic hair or breast development. Al-Hamawi mentioned that a ruling is not based on them according to the Zahir al-Riwayah. Likewise, the deepening of the voice, as mentioned in the commentary of the poem by Abu al-Saud al-Hamili. Similarly, hair on the shins, armpits, and mustache. (Summarized) And Allah Almighty knows best. For a girl's puberty, growth of pubic hair and breast development are not considered. Al-Hamwi mentioned that a ruling cannot be based on them according to the Zahir al-Riwayah. Similarly, deepening of the voice is not reliable, as stated in the commentary on Abu al-Saud Hamili's poem. Likewise, hair on the shins, armpits, and mustache is also not reliable. (Summarized) And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 428: From Mubarakpur Post Office, Mohalla Rani Pura, District Azamgarh, sent by Nisar Ahmad Sahib, tailor. Zaid fell ill; in his state of illness, he entrusted his daughter to her maternal uncle. The girl's age was fifteen years.

1 Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Puberty, Mujtabai Press, Delhi, 2/199 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Puberty, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/97

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रिज़विया

अल-जवाब बाप के रहते हुए नाना को विलायत (संरक्षण) नहीं मिल सकती, बाप का संपर्क में न रहना उसकी पितृत्व (पिता होने) को खत्म नहीं करता।

[अरबी पाठ]: सवाल में 'अदल' (निकाह से रोकना) की स्थिति का उल्लेख नहीं किया गया है, जिसमें विलायत काज़ी को होती है न कि नाना को, जैसा कि मौलाना शुरुनबुलाली ने अपनी पुस्तक "कश्फ़ अल-मुदल" में शोध किया है। सवाल में ला-तअल्लुक़ी (असम्बद्धता) की स्थिति बयान नहीं की गई, जबकि ऐसी स्थिति में विलायत काज़ी को होती है, नाना को नहीं, जैसा कि मौलाना शुरुनबुलाली ने अपनी पुस्तक "कश्फ़ अल-मुदल" में इसकी तहक़ीक़ (शोध) की है। (त)

लड़की कम से कम नौ साल पूरे और अधिक से अधिक पंद्रह साल पूरे होने की आयु में बालिग़ (वयस्क) होती है। इस बीच यदि यौवन के लक्षण दिखाई दें तो वह बालिग़ है अन्यथा नहीं। यौवन के तीन लक्षण हैं: मासिक धर्म का आना या स्वप्नदोष होना या गर्भवती होना। बाकी बगल में या नाभि के नीचे बाल उगना या स्तनों का उभार मान्य नहीं है। 'तन्वीर' में है:

[अरबी पाठ]: लड़की का यौवन स्वप्नदोष, मासिक धर्म और गर्भावस्था से सिद्ध होता है। यदि ये न पाए जाएं तो पंद्रह साल पूरे होने पर। उसके लिए यौवन की न्यूनतम अवधि नौ वर्ष है। (संक्षिप्त) लड़की का यौवन स्वप्नदोष, मासिक धर्म या गर्भावस्था से सिद्ध होता है। यदि इनमें से कोई संकेत न मिले, तो पंद्रह साल पूरे होने पर। उसके लिए यौवन की न्यूनतम अवधि नौ वर्ष है। (संक्षिप्त) (त)

'रद्द अल-मुह्तार' में है:

[अरबी पाठ]: नाभि के नीचे बाल उगने और स्तनों के उभार का कोई विचार नहीं किया जाएगा। अल-हमावी ने उल्लेख किया है कि ज़ाहिर अल-रिवाया के अनुसार इन पर कोई निर्णय नहीं दिया जा सकता है। इसी प्रकार, आवाज़ का भारी होना भी विश्वसनीय नहीं है, जैसा कि अबू अल-सऊद हामिली के काव्य की व्याख्या में है। इसी तरह पिंडली, बगल और मूँछों के बाल। (संक्षिप्त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। लड़की के यौवन के लिए नाभि के नीचे बाल उगने और स्तनों के उभार का कोई विचार नहीं किया जाएगा। अल-हमावी ने उल्लेख किया है कि ज़ाहिर अल-रिवाया के अनुसार इन पर कोई निर्णय नहीं दिया जा सकता है। इसी प्रकार आवाज़ का भारी होना भी विश्वसनीय नहीं है, जैसा कि अबू अल-सऊद हामिली के काव्य की व्याख्या में है। इसी तरह पिंडली,

बगल और मूँछों के बालों का भी कोई विचार नहीं है। (संक्षिप्त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ४२८: मुबारकपुर डाकखाना खास मोहल्ला रानी पुरा जिला आज़मगढ़ प्रेषक निसार अहमद साहब दर्जी। ज़ैद बीमार हुआ, अपनी बीमारी की हालत में उसने अपनी लड़की को उसके मामा के सुपुर्द कर दिया, लड़की की उम्र पंद्रह वर्ष थी।

१ दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीर अल-अबसार, फ़सल फ़िल-बुलूग, मतबा मुजतबाई दिल्ली, २/१९९ २ रद्द अल-मुह्तार, फ़सल फ़िल-बुलूग, दार इहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, ५/९७

पेज ६८९/७३९

جلد یازدہم فتاوٰی رضویہ

الجواب باپ کے ہوتے ہوئے نانا کو ولایت نہیں ہوسکتی، باپ کا بے علاقہ رہنا اس کی ابوت کو زائل نہیں کرتا،

ولم یذکر فی السؤوال صورۃ العضل و فیھا الولایۃ للقاضی دون اب الام کما حققہ المولی الشرنبلالی فی کشف المعضل۔ سوال میں لا تعلقی کی صورت بیان نہیں کی جبکہ اس میں ولایت قاضی کو ہے نانا کو نہیں ہے جیسا کہ مولنا شرنبلالی نے اپنی کتاب "کشف المعضل" میں اس کی تحقیق کی ہے۔ (ت)

لڑکی کم سے کم نو برس کامل اور زیادہ سے زیادہ پندرہ سال کامل کی عمر میں بالغہ ہوتی ہے۔ اس بیچ میں آثارِ بلوغ پیدا ہوں تو بالغہ ہے ورنہ نہیں۔ آثارِ بلوغ تین ہیں: حیض آنا یا احتلام ہونا یا حمل رہ جانا، باقی بغل میں یا زیر ناف بال جمنا یا پستان کا ابھار معتبر نہیں، تنویر میں ہے:

بلوغ الجاریۃ بالا حتلام والحیض والحبل فان لم یوجد فحتی یتم خمس عشرۃ سنۃ و ادنیٰ مدتہ لھا تسع سنین 1 (ملخصاً) لڑکی کا بلوغ احتلام، حیض یا حمل سے ثابت ہوتا ہے اگر ان میں کوئی علامت نہ ہو تو جب عمر پورے پندرہ سال کو پہنچ جائے اور اس کے بلوغ کی کم از کم مدت نو سال ہے (ملخصاً) (ت)

ردالمحتار میں ہے:

لا اعتبار لنبات العانۃ ونھود الثدی فذکر الحموی انّہ لا یحکم بہ فی ظاہر الروایۃ و کذا ثقل الصوت کما فی شرح النظم الھاملی ابو السعود و کذا شعر الساق والابط والشارب 2 (ملخصاً) وھو تعالٰی اعلم۔ لڑکی کے بلوغ کے لئے زیر ناف بال اگنے اور پستان کے ابھار کا اعتبار نہیں ہے تو حموی نے

ذکر کیا کہ اس پر حکم نہیں کیا جاسکتا ظاہر روایت کے مطابق، اور یوں ہی آواز کا بھاری ہونا بھی معتبر نہیں، جیسا کہ ابو السعود ہاملی کے منظوم کی شرح میں ہے، اور یوں ہی پنڈلی، بغل، مونچھوں کے بالوں کا بھی اعتبار نہیں۔(ملخصاً) وھو تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۲۸: از مبارکپور ڈاکخانہ خاص محلہ رانی پورہ ضلع اعظم گڑھ مرسلہ نثار احمد صاحب درزی زید بیمار ہوا اپنی حالت بیماری میں اپنی لڑکی کو اس کے ماموں کے سپرد کیا، لڑکی کا سن پندرہ برس کا تھا

1 درمختار شرح تنویر الابصار فصل فی البلوغ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۹/۲ 2 ردالمحتار فصل فی البلوغ داراحیاء التراث العربی بیروت ۹۷/۵

Volume Eleven Fatawa Razawiyya

Then the girl's father passed away and the grandfather is also present, and the girl has been raised at her maternal uncle's house until now. After some days, the girl's grandfather performed her marriage somewhere, meaning in an equal match (Kufu). Neither her maternal uncle nor the girl knows about this marriage. After a few days, when the girl heard about it, she said, "I do not accept this marriage." A paternal uncle of the girl is also present; he was also not involved in the marriage, he does not know either, nor was it done with his opinion. Only the grandfather performed the marriage on his own. No one knows about this marriage, neither the maternal uncle nor the girl's paternal uncle. Is that marriage valid or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: The knowledge of the unseen belongs to Allah Almighty and then to His Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). If, in reality, at the time the grandfather performed her marriage, her age was a full fifteen years or more, or signs of puberty like menstruation etc. were apparent, then the marriage performed by the grandfather remained dependent on the woman's permission. If the woman, upon hearing the news, rejected it, it became void. And if at the time of marriage, the woman's age was not full fifteen years nor were signs of puberty apparent, and the grandfather performed the marriage, then it became binding and cannot be rejected now. If the woman marries another person while the husband is alive, it will be adultery. And Allah Almighty knows best.

Page 690 of 739

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

फिर लड़की के पिता की मृत्यु हो गई और दादा भी मौजूद हैं और लड़की अब तक अपने मामा के यहाँ पल रही है, कुछ दिनों बाद लड़की के दादा ने कहीं निकाह कर दिया यानी कुफू(समान पद) में, इस निकाह को न तो उसका मामा जानता है और न ही लड़की जानती है, कुछ दिनों बाद जब लड़की ने सुना तो कहा, "हमें निकाह मंजूर नहीं," और लड़की का एक चाचा भी मौजूद है वह भी निकाह में शामिल नहीं था वह भी नहीं जानता और न ही उसकी राय से निकाह हुआ, सिर्फ दादा ने अपनी मर्जी से निकाह किया था, इस निकाह को कोई नहीं जानता, न मामा न लड़की का चाचा, क्या वह निकाह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान अल्लाह अज्ज़वजल को है फिर उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, अगर वास्तव में जिस समय दादा ने उसका निकाह किया उसकी उम्र पूरी पंद्रह वर्ष की थी या उससे अधिक थी या यौवन के लक्षण जैसे मासिक धर्म आदि प्रकट थे, तो दादा ने जो निकाह किया वह औरत की अनुमति पर निर्भर रहा, अगर औरत ने खबर सुनकर अस्वीकार कर दिया तो वह रद्द हो गया और अगर निकाह के समय औरत की उम्र पूरी पंद्रह साल की नहीं थी और न ही यौवन के लक्षण प्रकट थे और दादा ने निकाह कर दिया तो वह अनिवार्य हो गया अब रद्द नहीं हो सकता, औरत अगर पति के जीवित रहते दूसरा निकाह करेगी तो वह ज़िना (व्यभिचार) होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 690/739

پھر لڑکی کا والد قضا کر گیا اور دادا بھی موجود ہے اور لڑکی کی اب تک اپنے ماموں کے یہاں پرورش پاتی ہے، بعد کچھ روز کے لڑکی کے دادا نے کہیں نکاح کردیا یعنی کفو میں، اس نکاح کو نہ تو اس کا ماموں جانتا ہے نہ لڑکی جانتی ہے، بعد کچھ روز کے لڑکی نے سنا تو کہا ہم کو نکاح منظور نہیں، اور لڑکی کا ایک چچا بھی موجود ہے وہ بھی نکاح میں شریک نہیں وہ بھی نہیں جانتا اور نہ اس کی رائے سے نکاح ہوا، صرف دادا نے اپنی خودی سے نکاح کیا تھا اس نکاح کو کوئی نہیں جانتا، نہ ماموں نہ لڑکی کا چچا، آیا وہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: غیب کا علم اللہ عزوجل پھر اس کے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ہے، اگر فی الواقع جس وقت دادا نے اس کا نکاح کیا اس کی عمر کامل پندرہ برس کی یا اس سے زائد تھی یا آثارِ بلوغ مثل حیض وغیرہ ظاہر تھے تو دادا نے جو نکاح کیا عورت کی اجازت پر موقوف رہا، اگر عورت نے خبر سن کر نامنظور کیا رد ہو گیا اور اگر وقت نکاح عورت کی عمر پوری پندرہ سال کی نہ تھی نہ آثارِ بلوغ ظاہر تھے اور دادا نے نکاح کر دیا تو لازم ہو گیا اب رد نہیں ہو سکتا، عورت اگر دوسرا نکاح بحیاتِ شوہر کرے گی زنا ہو گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

Chapter on Suitability (Kafa'ah) in Marriage (Explanation of suitability in the context of marriage)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 429: From Moradabad, Qanungoyan neighborhood, sent by Muhammad Nabi Khan Sahib, Chief of Awakil, Jamadi al-Ula 1305 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hinda is an adult noblewoman whose father has passed away and she has no brother; only her paternal uncle, Amr, is her real legal guardian (Wali). In the absence of Amr, Hinda's mother, with Hinda's permission but without informing Amr, married her to Zaid, who is of a lower caste and not an equal match (Ghair-Kufu), specifically a wealthy butcher. When Amr arrived and became aware of this, thinking that the marriage had already taken place, he accepted it for the sake of expediency and sent Hinda to live with him. Sexual intercourse also occurred with Hinda's consent. Now, Hinda has returned to her father's house and does not wish to go back to Zaid's house or give him access to herself until the prompt dower (Mahr al-Mu'ajjal) is paid. What is the Shariah ruling in this case? Will Hinda be considered disobedient (Nashizah) or not? And does she have the choice not to go to Zaid's place and protect herself? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the situation described, Hinda is not disobedient (Nashizah), nor does Zaid have any right over her. Under no circumstances should he be allowed to call Hinda to his house, nor should Hinda ever be permitted to go to his house as a wife. Rather, it is Shariah-obligatory (Wajib) for both to withdraw from this invalid (Fasid) marriage, which is mandatory to annul. If Zaid does not agree, it is incumbent upon Hinda that she, on her own accord...

Page 691 of 739

फतावा रज़विया जिल्द 11

निकाह में कुफ़ुअ (समानता) का अध्याय (निकाह के सिलसिले में कुफ़ुअ का बयान)

अल्लाह के नाम से शुरू, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

मसला 429: मुरादाबाद, मोहल्ला कानूनगोयान से, मोहम्मद नबी खान साहब, रईस अवाकिल द्वारा प्रेषित, जमादी उल-अव्वल 1305 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: हिंदा एक बालिग शरीफज़ादी है जिसके पिता का देहांत हो चुका है और उसका कोई भाई नहीं है, केवल उसका सगा चाचा अम्र उसका शरीई वली (कानूनी अभिभावक) है। अम्र की गैर-मौजूदगी में, हिंदा की माँ ने हिंदा की अनुमति से लेकिन अम्र को सूचित किए बिना उसका निकाह ज़ैद से कर दिया, जो कि कम कौम और गैर-कुफ़ु(अनुपयुक्त) है, यानी एक अमीर कसाई। जब अम्र आया और उसे पता चला, तो उसने यह सोचकर कि निकाह तो हो ही गया है, इसे मजबूरी में स्वीकार कर लिया और हिंदा को विदा कर दिया। हिंदा की सहमति से संभोग भी हुआ। अब हिंदा अपने पिता के घर वापस आ गई है और मेहर-ए-मुअज्जल (तत्काल देय मेहर) की अदायगी तक ज़ैद के घर जाने या उसे स्वयं पर अधिकार देने को तैयार नहीं है। इस स्थिति में शरीयत का क्या हुक्म है? क्या हिंदा को 'नाशिज़ा' (अवज्ञाकारी) कहा जाएगा या नहीं? और क्या उसे ज़ैद के पास न जाने और स्वयं को सुरक्षित रखने का अधिकार है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में न तो हिंदा नाशिज़ा है और न ही ज़ैद का उस पर कोई अधिकार है। उसे कतई यह अवसर नहीं दिया जाएगा कि वह हिंदा को अपने यहाँ बुलाए, न ही हिंदा को कभी इसकी अनुमति दी जाएगी कि वह पत्नी के रूप में उसके यहाँ जाए। बल्कि शरीयत के अनुसार दोनों पर अनिवार्य (वाजिब) है कि वे इस निकाह-ए-फासिद (अमान्य निकाह) से अलग हो जाएँ जो निरस्त किए जाने के योग्य है। और यदि ज़ैद न माने, तो हिंदा पर आवश्यक है कि वह स्वयं...

पेज 691 ऑफ 739

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

باب الکفائۃ فی النکاح (نکاح کے سلسلہ میں کفو کا بیان)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۴۲۹: از مراد آباد محلہ قانونگویاں مرسلہ محمد نبی خاں صاحب رئیس اواکل جمادی الاولٰی ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ بالغہ شریف زادی جس کے باپ نے انتقال کیا اور بھائی کوئی نہیں صرف عمرو اس کا حقیقی چچا ولی شرعی ہے، مادر ہندہ نے غیبت عمرو میں باذن ہندہ بے اطلاع عمرو اس کا نکاح زید کم قوم غیر کفو یعنی قصاب مالدار سے کردیا، جب عمرو آیا اور مطلع ہوا اس خیال سے کہ نکاح تو ہو ہی گیا مصلحۃً منظور کر لیا اور ہندہ کی رخصتی کردی، برضائے ہندہ وطی بھی واقع ہوئی ، اب ہندہ اپنے باپ کے یہاں چلی آئی اور تا ادائے مہر معجل زید کے یہاں جانا یا اسے اپنے نفس پر قدرت دینا نہیں چاہتی ، اس صورت میں شرعاً کیا حکم ہے اور ہندہ کو ناشزہ کہا جائے گا یا نہیں؟ اور اسے زید کے یہاں نہ جانے اور اپنے نفس کے بچانے کا اختیار ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں نہ ہندہ ناشزہ اور نہ زید کو اس پر دسترس، نہ زنہار اسے قدرت دیں گے کہ ہندہ کو اپنے یہاں بلائے، نہ ہرگز ہندہ کو اجازت دیں گے کہ بطور زوجیت اس کے یہاں جائے بلکہ شرعاً دونوں پر واجب ہے کہ اس نکاح فاسد و واجب الفسخ سے دست برداری کریں اور زید نہ مانے تو ہندہ پر لازم ہے کہ بطور خود

...annul it. By his act of annulment alone, it will be annulled. And if he does not do this, then it is obligatory upon the judge (Hakim) to separate them. For Hindah, the Mahr al-Mithl (fair dowry) will be due from Zaid, provided it does not exceed the Mahr al-Musamma (stipulated dowry). The reason for this is that this marriage was conducted by a non-guardian (non-Wali), i.e., the mother, while the uncle was present and had the guardianship. Since it was done without the consent of the guardian but with Hindah's permission, it is in reality an adult woman marrying herself. This is because by her permission, the guardianship was established, and the act of an agent is identical to the act of the principal.

In al-Khayriyyah, it was asked about an adult virgin whose brother from her mother married her off to a non-equivalent (ghayr kufu) with her permission. He answered: Her marriage with her permission is like her marrying herself. This is the issue of a woman marrying a non-equivalent without the consent of her guardians. End of summarized text.

It is in Fatawa Khayriyyah: A question was asked whether the marriage of an adult virgin was conducted by her maternal brother to a non-equivalent with her permission? In response, it was stated: Marriage with the said girl's permission is exactly as if she had married herself. So this is the issue of a girl marrying herself to a non-equivalent without the will of her guardians. End of summarized text. (T)

And the fatwa-worthy and chosen narration is that an adult woman having guardians who marries herself to a non-equivalent can only be valid if the legal guardian explicitly expresses his consent before the marriage, and he also knows that this person is not an equivalent. Otherwise, if he was unaware of the lack of equivalence, or if he knew but did not express clear liking and consent before the marriage, then the marriage is not valid at all. Even if the said guardian remained silent at the time of marriage, even if he did not object at all despite being informed, even if he clearly expressed consent after the occurrence of the marriage, even if he himself performed her departure (rukhsat), etc., all these things are useless and cannot rectify this marriage which was not legally valid.

For subsequent consent only benefits a suspended (mawquf) marriage, not a void (fasid) one.

Subsequent consent is beneficial for a suspended marriage, but not for a void marriage. (T)

It is in Durr al-Mukhtar:

A fatwa is given for the absolute impermissibility of marriage to a non-equivalent, and this is the chosen view for the fatwa due to the corruption of the times. Therefore, a woman divorced three times who marries a non-equivalent without the consent of the guardian after his knowledge of it will not be lawful for her first husband. Let this be preserved.[2]	**A fatwa will be given that marriage to a non-equivalent is fundamentally impermissible. For the fatwa, this is the chosen view due to the corruption of the age. Thus, if a thrice-divorced woman marries a non-equivalent, she will not become lawful for her first husband, provided her guardians are not consenting upon becoming aware of this non-equivalence. Keep this preserved. (T)**

[1] Fatawa Khayriyyah, Book of Guardians and Equivalents, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/25

[2] Durr al-Mukhtar, Book of the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191

...रद्द कर दे, सिर्फ उसी के रद्द करने से यह रद्द हो जाएगा। और यदि वह ऐसा न करे, तो हाकिम (न्यायाधीश) पर अनिवार्य है कि उनके बीच जुदाई कर दे। हन्दा के लिए 'महर-ए-मिसल' (उचित दहेज) ज़ैद पर वाजिब होगा, बशर्ते कि वह 'महर-ए-मुसम्मा' (तयशुदा दहेज) से अधिक न हो। इसका कारण यह है कि यह निकाह गैर-वली (अभिभावक के बिना), यानी माँ ने चाचा की उपस्थिति में किया था, जबकि चाचा के पास विलायत (अभिभावकत्व) थी। चूंकि यह वली की सहमति के बिना लेकिन हन्दा की अनुमति से किया गया था, तो वास्तव में यह एक बालिग (वयस्क) महिला का स्वयं निकाह करना हुआ। क्योंकि उसकी अनुमति से विलायत सिद्ध हुई और वकील (प्रतिनिधि) का कार्य वास्तव में मुवक्किल (मुख्य पक्ष) का कार्य ही है।

फ़तावा खैरिया में सवाल हुआ कि एक बालिग़ा बाकिरा (वयस्क कुंवारी) का निकाह उसकी माँ की ओर से उसके भाई ने उसकी अनुमति से ग़ैर-कुफ़ू (असमान दर्जे वाले) में किया? उसने उत्तर दिया: उसकी अनुमति से उसका विवाह करना वैसा ही है जैसे वह स्वयं विवाह करती है। यह एक ऐसी महिला का मुद्दा है जिसने अपने अभिभावकों की सहमति के बिना ग़ैर-कुफ़ू से विवाह किया। (संक्षेप में)

फ़तावा खैरिया में है, सवाल हुआ कि एक बालिग़ा बाकिरा का निकाह उसकी अनुमति से उसकी माँ की तरफ़ से भाई ने ग़ैर-कुफ़ू में किया? जवाब में फ़रमाया कि उक्त लड़की की अनुमति से निकाह वैसा ही है जैसे उसने स्वयं निकाह किया हो, तो यह मसला लड़की का स्वयं को ग़ैर-कुफ़ू में अपने औलिया (अभिभावकों) की मर्जी के बिना निकाह करने का हुआ। (संक्षेप में) (त)

और मुफ़्ती-बिही और मुख्तार (चुनी हुई) रिवायत यह है कि बालिग़ा ज़ात-उल-औलिया (अभिभावकों वाली वयस्क महिला) जो अपना निकाह ग़ैर-कुफ़ू से करे, वह उसी समय सही हो सकता है जब शरीयत के अनुसार वली निकाह से पहले स्पष्ट रूप से अपनी सहमति व्यक्त करे, और वह यह भी जानता हो कि यह व्यक्ति कुफ़ू (समान दर्जे का) नहीं है। अन्यथा यदि वह कफ़ात (बराबरी) के अभाव से अवगत नहीं था, या था लेकिन निकाह से पहले उसने स्पष्ट रूप से पसंदगी और सहमति व्यक्त नहीं की, तो निकाह कभी भी सही नहीं होगा, चाहे वह वली निकाह के समय मौन भी रहा हो, चाहे सूचना मिलने के बावजूद उसने बिल्कुल भी इंकार न किया हो, चाहे निकाह होने के बाद उसने साफ़-साफ़ सहमति व्यक्त भी कर दी हो, चाहे उसकी रुख़सती (विदाई) आदि उसने स्वयं ही की हो। ये सभी बातें व्यर्थ हैं और इस निकाह को, जो शरीयत के अनुसार सही नहीं हुआ, सुधार नहीं सकतीं।

क्योंकि बाद की सहमति केवल निलंबित (मौकूफ़) निकाह में लाभ पहुँचाती है, न कि फ़ासिद (अवैध) निकाह में।

बाद की सहमति मौकूफ़ निकाह के लिए तो लाभदायक है, लेकिन फ़ासिद निकाह के लिए लाभदायक नहीं है। (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

ग़ैर-कुफ़ू में निकाह के मूलतः जायज़ न होने का फ़तवा दिया जाता है और समय की खराबी के कारण फ़तवा के लिए यही पसंदीदा राय है। इसलिए, तीन तलाक़ प्राप्त महिला जो अभिभावक की सहमति के बिना ग़ैर-कुफ़ू से निकाह करती है, वह अपने पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। इसे सुरक्षित रखा जाए।[2]

ग़ैर-कुफ़ू में निकाह के मूलतः जायज़ न होने का फ़तवा दिया जाएगा। ज़माने के फ़साद (बिगाड़) के कारण फ़तवा के लिए यही मुख्तार (पसंदीदा) है। अतः यदि तीन तलाक़ प्राप्त महिला ग़ैर-कुफ़ू में निकाह करेगी, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी, बशर्ते कि उसके औलिया (अभिभावक) उस ग़ैर-कुफ़ू के बारे में जानने पर सहमत न हों। इसे सुरक्षित कर लें। (त)

[1] फ़तावा खैरिया, बाब-उल-औलिया वल-अकफ़ा, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 25/1 [2] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-उल-वली, मतबा मुजतबाई देहली, 191/1

فسخ کردے صرف اسی کے فسخ کرنے سے فسخ ہوجائے گا، اور یہ بھی نہ کرے تو حاکم پر واجب ہے کہ ان میں تفریق کردے اور ہندہ کے لئے مہر مثل اتنا کہ مہر مسمیٰ پر زیادہ نہ ہو، زید پر لازم آئے گا، وجہ اس کی یہ ہے کہ یہ نکاح غیر ولی یعنی ماں نے چچا کے ہوتے اسے ولایت نہیں بے رضائے ولی باذن ہندہ کیا تو در حقیقت یہ زن بالغہ کا بطور خود نکاح کرنا ہوا کہ بسبب اذن ولایت متحقق ہوئی اور فعل وکیل بعینہ فعل موکل ہے۔

في الخيرية سئل في بكر بالغة زوجها اخوها لامها من غير كفو باذنها اجاب تزويجها لها باذنها كتزويجها بنفسها وهي مسئلة من نكحت غير كفو بلارضا اوليائها اه ملخصا.

فتاویٰ خیریہ میں ہے، سوال ہوا کہ ایک بالغہ باکرہ کا نکاح اس کی اجازت سے اس کی والدہ کی طرف سے بھائی نے غیر کفو میں کیا؟ جواب میں فرمایا کہ مذکورہ لڑکی کی اجازت سے نکاح ایسے ہی ہے جیسے اس نے بذات خود نکاح کیا ہو تو یہ مسئلہ لڑکی کا خود کو غیر کفو میں اپنے اولیاء کی مرضی کے بغیر نکاح کرنیکا ہوا اھ ملخصا(ت)

اور روایت مفتی بہا مختار للفتویٰ یہ ہے کہ بالغہ ذات الاولیاء جو اپنا نکاح غیر کفو سے کرے وہ اس وقت صحیح ہوسکتا ہے کہ ولی شرعی پیش از نکاح صراحتاً اپنی رضامندی ظاہر کرے اور وہ جانتا بھی ہو کہ یہ شخص کفو نہیں ورنہ اگر عدم کفاءت پر مطلع نہ تھا یا تھا مگر پیش از نکاح اس نے تصریحات اظہار پسند ورضانہ کیا تو ہرگز نکاح صحیح نہیں اگرچہ ولی مذکور نکاح کے وقت ساکت بھی رہا ہو اگرچہ باوجود اطلاع اصلاً انکار نہ کیا ہو اگرچہ بعد وقوع نکاح صاف صاف

تصریح رضامندی بھی کردی ہواگرچہ اس کی رخصت وغیرہ خود ہی کی ہو، یہ سب باتیں بیکار ہیں اور اس نکاح کی کہ شرعاً صحیح نہ ہوا اصلاح نکاح نہیں کر سکتیں،

فان الرضی اللاحق انما ینفع في الموقوف دون الفاسد۔

بعد کی رضا موقوف نکاح کے لئے تو مفید ہے مگر فاسد نکاح کے لئے مفید نہیں۔ (ت)

در مختار میں ہے:

یفتی في غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتوی لفساد الزمان فلا تحل مطلقۃ ثلثاً نکحت غیر کفو بلارضي ولی بعد معرفتہ ایاہ فلیحفظ 2۔

غیر کفو میں نکاح اصلاً جائز نہ ہونے کا فتوٰی دیا جائے گا فسادِ زمانہ کی وجہ سے فتوٰی کے لئے یہی مختار ہے تو مطلقہ ثلاثہ اگر غیر کفو میں نکاح کرے گی تو وہ پہلے خاوند کے لئے حلال نہ ہوگی بشرطیکہ اس کے اولیاء اس غیر کفو پر مطلع ہونے پر رضامند نہ ہوں، اس کو محفوظ کرلو۔ (ت)

1 فتاوٰی خیریۃ باب الاولیاء والاکفاء دارالمعرفۃ بیروت ۱/۲۵ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱

Volume 11 Fatawa-e-Razawiyya

Similarly, it is mentioned in Fath al-Qadir, Fatawa Khayriyya, Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, etc.: In Radd al-Muhtar, it is narrated from Imam Hasan from Abu Hanifa: This is applicable when she has a guardian (wali) who was not satisfied before the marriage contract, so subsequent satisfaction will not be beneficial. (T)

In the same work: Silence on his part is not considered consent as we have mentioned. (2) At this instance, the silence of the guardian will not be established as consent, as we have mentioned. (T)

In Durr al-Mukhtar: Proper dower (Mahr al-Mithl) becomes obligatory in an irregular marriage (nikah fasid) upon intercourse in the vagina, and not by anything else like seclusion (khalwah) because intercourse there is prohibited, and it should not exceed the specified amount. Each of them has the right to annul it, even without the presence of the other, whether intercourse has taken place or not, according to the more correct opinion, to get away from sin. This does not contradict the necessity of its annulment; rather, it is obligatory for the judge (Qadi) to separate them. (3) (Summarized). And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best. In an irregular marriage, the proper dower becomes mandatory upon vaginal intercourse and will not be mandatory by any other act such as seclusion, etc., because here intercourse is prohibited. This proper dower shall not exceed the amount fixed. Both husband and wife have the right to annul the marriage even in each other's absence, whether intercourse occurred or not, so they can be free from sin. Therefore, the obligation of dower is not contrary to annulment; rather, in any case, it is obligatory for the judge to separate the two from this marriage. (Summarized). And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best. (T)

Problem 230: From Sahaswan, 18 Jamadi al-Ula 1305 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid came to Sahaswan from another city and presented himself as a Sunni and a Sayyid of his nation. Amr, who is a Sheikh Ansari, being deceived by Zaid's statement, married his daughter Laila (who was twelve or thirteen years old at the time of marriage) to him. That girl and her father are from the Ahl al-Sunnah wa'l-Jama'ah. Consummation (Rukhsat) had not yet taken place, nor had Laila...

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/297

2. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/297
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Dower, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/201

इसी प्रकार फ़तह अल-क़दीर, फ़तावा खैरिया, मजमा अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ा अल-अब्हुर आदि में है: रद अल-मुह्तार में इमाम हसन की इमाम अबू हनीफ़ा से यह रिवायत है: यह तब है जब उसका कोई वली (संरक्षक) हो और वह निकाह से पहले राज़ी न हुए हों, तो बाद की रज़ामंदी लाभदायक नहीं होगी। (त)

इसी में है: उसकी ओर से चुप्पी रज़ामंदी नहीं मानी जाएगी जैसा कि हमने उल्लेख किया है। (2) इस अवसर पर वली की खामोशी को रज़ामंदी नहीं माना जाएगा जैसा कि हमने उल्लेख किया है। (त)

दुर-ए-मुख्तार में है: निकाह-ए-फासिद (अनियमित विवाह) में योनि मैथुन होने पर महर-ए-मिसल (उचित महर) अनिवार्य हो जाता है, और किसी अन्य चीज़ जैसे खलवत (एकांतवास) से नहीं क्योंकि मैथुन वर्जित है, और यह तयशुदा राशि से अधिक नहीं होगा। उनमें से प्रत्येक को इसे रद्द करने का अधिकार है, भले ही दूसरे की उपस्थिति के बिना हो, चाहे संभोग हुआ हो या नहीं, अधिक सही राय के अनुसार, ताकि पाप से बचा जा सके। यह इसके अनिवार्य होने के विपरीत नहीं है; बल्कि न्यायाधीश (क़ाज़ी) पर अनिवार्य है कि वह उन दोनों के बीच जुदाई करा दे। (3) (संक्षेप में)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। निकाह-ए-फासिद में योनि मैथुन हो जाने पर महर-ए-मिसल अनिवार्य हो जाएगा और किसी अन्य क्रिया जैसे खलवत आदि से अनिवार्य नहीं होगा क्योंकि यहाँ मैथुन हराम है, और यह महर-ए-मिसल निर्धारित राशि से अधिक नहीं होगा, और पति-पत्नी दोनों को एक-दूसरे की उपस्थिति के बिना भी निकाह को रद्द करने का अधिकार होगा, चाहे मैथुन हुआ हो या न हुआ हो ताकि वे पाप से मुक्त हो सकें इसीलिए महर का अनिवार्य होना रद्दीकरण के विपरीत नहीं होगा बल्कि हर हाल में क़ाज़ी पर वाजिब है कि वह इस निकाह से दोनों को अलग करे। (संक्षेप में)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला २३०: सहसवान से, १८ जमादी अल-ऊला १३०५ हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि ज़ैद दूसरे शहर से सहसवान आया और खुद को सुन्नी और अपनी कौम का सैय्यद बताया। अम्र, जो कि शेख अंसारी है, ज़ैद के बयान से धोखा खाकर अपनी बेटी लैला, जिसकी उम्र निकाह के समय बारह-तेरह वर्ष थी, का निकाह उससे कर दिया। वह लड़की और उसका पिता अहले सुन्नत व जमाअत से हैं। अभी विदाई (रुख़सत) भी नहीं हुई थी और न ही लैला...

1. रद अल-मुह्तार, वली का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 1/297

2. रद अल-मुह्तार, वली का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 1/297

3. दुर-ए-मुख्तार, महर का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली 1/201

جلد یازدھم فتاوی رضویہ

اسی طرح فتح القدیر و فتاوی خیریہ و مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر وغیرہا میں ہے : وفی ردالمحتار ھذہ روایۃ الحسن عن ابی حنیفۃ وھذا اذا کان لھا ولی لم یرض بہ قبل العقد فلا یفید الرضی بعدہ - 1 اور ردالمحتار میں ہے یہ امام ابو حنیفہ سے امام حسن کی روایت ہے، یہ جب ہے کہ اس کے ولی ہوں اور وہ نکاح سے قبل راضی نہ ہو چکے ہوں تو بعد کی رضا مندی مفید نہیں ہوگی۔ (ت)

اسی میں ہے: السکوت منہ لا یکون رضی کما ذکرنا - 2 اس موقع پر ولی کی خاموشی، رضانہ قرار پائے گی جیسا کہ ہم نے ذکر کیا ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے : یجب مھر المثل فی نکاح فاسد بالوطء فی القبل لا بغیرہ کالخلوۃ لحرمۃ وطئھا و لم یزد علی المسمی ویثبت لکل واحد منھما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بھا اولا فی الاصح خروجا عن المعصیۃ فلاینا فی وجوبہ بل یجب علی القاضي التفریق بینھما 3 اھ ملخصاً واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ نکاح فاسد میں وطی فی القبل ہو جانے پر مہر مثل لازم ہو جائے گا اور کسی عمل مثلاً خلوت وغیرہ سے لازم نہ ہوگا کیونکہ یہاں وطی حرام ہے، اور یہ مہر مثل مقرر شدہ سے زائد نہ ہوگا، اور خاوند بیوی دونوں کو ایک دوسرے کی موجودگی کے بغیر بھی نکاح کو فسخ کر دینا حق حاصل ہوگا، خواہ وطی ہوئی ہو یا نہ ہوئی ہو تاکہ گناہ سے بری ہو سکیں، اسی لئے مہر کا وجوب فسخ کے منافی نہیں ہوگا بلکہ بہر صورت قاضی پر واجب ہے کہ وہ اس نکاح سے دونوں کی تفریق کرے، اھ ملخصاً ۔ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۳۰: از سہسوان ۱۸ جمادی الاولی ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے غیر شہر سے سہسوان میں آکر اپنے آپ کو سنی اور قوم کا سید ظاہر کیا، عمرو نے کہ شیخ انصاری ہے اپنی لڑکی لیلی جس کی عمر وقت نکاح بارہ تیرہ برس کی تھی بیان زید سے دھوکا کھا کر اسے بیاہ دی، وہ لڑکی اور اس کا باپ اہلسنت و جماعت ہیں، ہنوز رخصت بھی نہ ہوئی تھی نہ لیلی

1 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربي بیروت ۱ / ۲۹۷ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربي بیروت ۱ / ۲۹۷ 3 در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۱

Zaid's face was seen before he left, and since then there has been no news at all whether he is alive or dead; about two years have passed. Now that his condition has been inquired into, it turns out he has become a Rafidi (Shia extremist), and besides that, he is into wine-drinking and gambling. Since this condition became known, Laila, her father Amr, and her mother are all displeased. Laila, who is fifteen years old herself, wants to marry someone else who is Sunni by religion and good in deeds. In this situation, what does the noble Shariah decree regarding Laila's right? Please explain and be rewarded.

The Answer: O Allah, I ask You for forgiveness and safety. Among the Rafidis, whoever denies any of the necessities of religion, for instance, calls the Great Quran 'Bayaz-e-Usmani' (the scroll of Uthman) and thinks regarding even one word, letter, or dot that—God forbid—the noble Companions or the Ahl al-Sunnah or any person has reduced, increased, or changed it; or considers His Eminence the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor his noble countenance) or other pure Imams (may Allah be pleased with them all) superior to any of the previous Prophets (peace and blessings be upon them), either all or some of them, is certainly an infidel (kafir), and their ruling is like that of apostates (murtadeen). And protection is sought from Allah, the Glorified and Exalted. It is stated in Fatawa Alamgiri:

[Arabic Box]: "It is necessary to declare the Rafidis as infidels for their belief in the return of the dead to this world (until it said) and these people are outside the fold of Islam, and their rulings are the rulings of apostates. Thus it is in al-Zahiriyyah."

[Urdu Box Translation]: Regarding this statement of the Rafidis that "the dead return to the world," their takfir (declaring them infidels) is necessary. (Alamgiri has even stated that) this group is outside the fold of Islam and their rulings are like those of apostates; it is similarly stated in Zahiriyyah. (t)

Nowadays, the common Rafidis are of this kind. Their scholars and ignorant ones, small and big, openly admit these blasphemies in writing and speech, and they consider those who hold such beliefs as perfect believers and accept them as their leaders and mujtahids. So, even if some of them were supposedly not believers in these things themselves, they become infidels thus. It is stated in Shifa Sharif:

[Arabic Box]: "We declare him an infidel who professes a religion other than the religion of Muslims, or hesitates about them, or doubts, or validates their creed, even if he outwardly manifests Islam and believes in it..."

[Urdu Box Translation]: Whoever adopts a religion other than the religion of Islam, or remains in doubt or hesitation about them, or calls their religion correct, we will declare such people as infidels, even if these people [profess] Islam and...

---

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 9, On the Rulings of Apostates, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/264.
2. Ash-Shifa bi-Ta'rif Huquq al-Mustafa, Section explaining what statements are [blasphemy], Printing press of the Journalistic Company in the Ottoman lands, 2/174.

जैद का चेहरा तब देखा गया था जब वह चला गया था और तब से बिल्कुल कोई खबर नहीं है कि वह जीवित है या मर गया; इसे करीब दो साल बीत चुके हैं। अब जब उसकी स्थिति के बारे में पूछताछ की गई, तो पता चला कि वह राफिजी (शिया चरमपंथी) निकला, और इसके अलावा वह शराब पीने वाला और जुआ खेलने वाला भी है। जब से यह स्थिति पता चली है, लैला, उसके पिता अम्र और उसकी माँ सभी नाराज हैं। लैला, जो खुद पंद्रह साल की है, अपना निकाह किसी और व्यक्ति से करना चाहती है जो धर्म से सुन्नी हो और कर्मों में नेक हो। इस स्थिति में, शरीयत लैला के हक में क्या हुक्म देती है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: ऐ अल्लाह! तुझसे माफी और आफियत की दरख्वास्त है। राफिजियों में जो दीन की जरूरी चीजों (ज़रूरियात-ए-दीन) में से किसी का इनकार करे, मिसाल के तौर पर कुरान ए मजीद को 'बयाज-ए-उस्मानी' कहे और उसके एक शब्द, एक अक्षर या एक नुक्ते के बारे में यह गुमान करे कि —अल्लाह की पनाह—सहाबा किराम या सुन्नी समुदाय या किसी व्यक्ति ने उसे घटा दिया, बढ़ा दिया या बदल दिया; या हजरत अमीरुल मोमिनीन मौला अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) या अन्य पाक इमामों (अल्लाह उन सभी से राजी हो) में से किसी को पिछले पैगंबरों (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) में से सभी या कुछ से अफजल (श्रेष्ठ) बताए, वह यकीनन काफिर है और उसका हुक्म मुर्तदों (धर्मत्यागियों) जैसा है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला से पनाह मांगी जाती है। फतावा आलमगीरी में है:

[अरबी बॉक्स]: "राफ़िज़ी लोगों के इस कथन पर कि 'मुर्दे दुनिया में वापस आते हैं', उनका कुफ्र (काफिर होना) अनिवार्य है (यहाँ तक कि कहा गया) और ये लोग इस्लाम के दायरे से बाहर हैं और उनके नियम मुर्तदों के नियम हैं। ज़हीरिया में भी ऐसा ही है।"

[उर्दू बॉक्स अनुवाद]: राफिजियों के इस कथन पर कि "मुर्दे दुनिया में वापस आते हैं", उनकी तकफीर (काफिर घोषित करना) जरूरी है। (आलमगीरी ने यहाँ तक कहा कि) यह कौम मिल्लत-ए-इस्लामिया से बाहर है और उनके अहकाम मुर्तदीन जैसे हैं; ज़हीरिया में भी ऐसा ही है। (त)

आजकल आम राफिजी इसी तरह के हैं। उनके विद्वान और अज्ञानी, छोटे और बड़े, लिखित और मौखिक रूप से खुलेआम इन कुफ्र की बातों का एतराफ (स्वीकार) करते हैं और इन विश्वासों को रखने वालों को कामिल मोमिन (पूर्ण आस्तिक) मानते हैं और उन्हें अपना पेशवा और मुजतहिद

मानते हैं। तो अगर उनमें से कुछ मान लीजिए खुद इन बातों के मुअतकद (मानने वाले) नहीं थे, तो भी वे इस तरह काफिर हुए। शिफा शरीफ में है:

[अरबी बॉक्स]: "हम उसे काफिर घोषित करते हैं जो मुसलमानों के धर्म के अलावा किसी अन्य धर्म को अपनाता है, या उनके बारे में रुक जाता है, या संदेह करता है, या उनके पंथ को सही कहता है, भले ही वह उसके साथ इस्लाम प्रकट करे और उसका विश्वास रखे..."

[उर्दू बॉक्स अनुवाद]: जिसने मिल्लत-ए-इस्लामिया के अलावा किसी दीन को अपनाया, या उनके बारे में संदेह या ठहराव रखा, या उनके मजहब को सही कहा, तो ऐसे लोगों को हम काफिर घोषित करेंगे, भले ही ये लोग इस्लाम और...

---

1. फतावा हिन्दिया, अध्याय 9, मुर्तदों के अहकाम में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/264।
2. अल-शिफा बि-तारीफ हुकूक अल-मुस्तफा, अनुभाग जो बयानों के बारे में है [कुफ्र], मतबा शरीका सहाफिया उस्मानी देशों में, 2/174।

पृष्ठ 694/739

نے زید کی صورت دیکھی تھی کہ زید چلا گیا اور جب سے اصلا خبر نہیں کہ زندہ ہے یا مر گیا، اسے کوئی دو برس کا زمانہ ہوا، اب جو اس کا حال دریافت ہوا وہ رافضی نکلا اور شراب خوری و قمار بازی اس کے علاوہ ہے، جب سے یہ کیفیت معلوم ہوئی تو لیلیٰ اور اس کا باپ عمرو اور اس کی ماں سب ناراض ہیں اور لیلیٰ جس کی عمر خود پندرہ برس کی ہے اپنا نکاح اور شخص سے کیا چاہتی ہے جو مذہب کا سنی اور اعمال کا نیک ہو، اس صورت میں شرع شریف لیلیٰ کے حق میں کیا حکم دیتی ہے ؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اللھم العفو والعافیۃ (اے اللہ تجھ سے معافی اور عافیت کی درخواست ہے۔ ت) روافض میں جو ضروریات دین سے کسی امر کا منکر ہو مثلاً قرآن عظیم کو بیاضِ عثمانی کہے اس کے ایک لفظ ایک حرف ایک نقطے کی نسبت گمان کرے کہ معاذ اللہ صحابہ کرام یا باہم اہلسنت خواہ شخص نے گھٹا دیا، بڑھا دیا، بدل دیا، یا حضرت جناب امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم خواہ دیگر ائمہ اطہار رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین سے کسی کو انبیائے سابقین علیہم الصلوۃ والتسلیم کل یا بعض سے افضل بتائے، قطعاً کافر ہے اور اس کا حکم مثل مرتدین کے ہے والعیاذ باللہ سبحانہ و تعالی۔ فتاویٰ عالمگیری میں ہے:

یجب اکفار الروافض في قولھم برجعۃ الاموات الی الدنیا (الی ان قال) وھؤلاء القوم خارجون عن ملۃ الاسلام واحکامھم احکام المرتدین کذا في الظھیریۃ 1-

رافضیوں کے اس قول پر کہ "مردے دنیا پر واپس آتے ہیں" ان کی تکفیر ضروری ہے (عالمگیری نے یہاں تک کہا کہ) یہ قوم ملت اسلامیہ سے خارج ہے اور ان کے احکام مرتدین جیسے ہیں، ظہیریہ میں یو نہی ہے۔ (ت)

آج کل عامہ روافض اسی قسم کے ہیں ان کے عالم جاہل چھوٹے بڑے تحریراً تقریراً علی الاعلان ان کفریات کا اعتراف کرتے اور ان کے معتقد کو مومن کامل جانتے ہیں اور اپنا پیشوا و مجتہد مانتے ہیں تو اگر ان میں بعض بالفرض خود معتقد نہ تھے تو یوں کافر ہوئے، شفاء شریف میں ہے:

نكفر من دان بغير ملة المسلمين او وقف فيهم او شك او صحح مذهبهم وان اظهر مع ذلك الاسلام واعتقده 2 الخ واقره عليه العلامة الخفاجي في

جس نے ملت اسلامیہ کے علاوہ کسی دین کو اپنایا ان میں شک یا توقف رہا یا ان کے مذہب کو صحیح کہا تو ایسے لوگوں کی ہم تکفیر کریں گے اگر چہ یہ لوگ اسلام اور

---

1 فتاوٰی ہندیہ الباب التاسع فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۶۴ 2 الشفاء بتعریف حقوق المصطفی فصل في بيان ما هو المقالات مطبعة شركة صحافية في بلاد العثمانية ۲/ ۱۷۴

Nasim-ul-Riyadh. Express his belief etc. and Allama Khafaji has made it firm in Nasim-ul-Riyadh. (T)

Therefore, it is said that finding someone among the Rawafidh (Shias) of this age whom one can call a Muslim even in a weak sense is more difficult than finding red sulfur (Kibreet-e-Ahmar). This humble servant (may Allah forgive him) has explained this issue in detail in his Fatawa and has repeatedly issued fatwas on the invalidity of marriage with them. Great and famous scholars of the time agree with this humble servant's verdict. Yes, one who is not of that degree (of deviance) and does not deny any necessity of Islam, nor considers those who deny them as Muslims, even if through their malice they reach the level of the accursed Tabarrah (insulting companions) of the disgraced Shia, is a misguided sinner on a correct madhhab and mashrab, not an apostate infidel as investigated by my father and master, the foremost of researchers (May his secret be sanctified and firm) in his Fatawa (As my noble father, the foremost of researchers, has researched in his Fatawa. T). Thus, if the mentioned Zaid, with whom Layla's marriage took place, was a first-degree Rafidhi, then that marriage is certainly and definitely absolutely void, just like marriage with any Hindu, Christian, Jew, or Magian, rather even worse, as an apostate is the worst type of infidel. We seek refuge in Allah, the Most Pure and Exalted. In this case, Layla does not even need to wait for a moment; she can marry whomever she wishes without hesitation. And if his Rafidhi-ism did not exceed the second degree, then in the questioned case where the father conducted the marriage, and it is clear from the query's narrative that until Zaid's deception was revealed, Layla and her parents were all satisfied; so regardless of whether Layla was an adult at the time of marriage or not, the marriage was contracted in every way. However, since a Rafidhi man cannot be a 'Kufu' (suitable match) for a Sunni woman (daughter of a Sunni), and Zaid deceived and misled them by portraying himself as a Sunni, therefore, the pure Shariah will give the authority to have this marriage annulled. If Layla was a minor at the time of marriage, she has or will have the right of objection and denial upon reaching puberty. And for an adult woman, the moment Zaid's deception was revealed, she and her guardians all received the right to claim annulment. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Table Content] Arabic: In al-Nawazil, [regarding] a man marrying off his minor daughter to someone who denies drinking intoxicants, but he is an addict, and she says 'I am not pleased with the marriage' i.e., after she becomes an adult, if the

father did not know about his drinking and the majority of his family members were righteous, then the marriage is void because he only married her off on the assumption that he was a 'Kufu'. It is then mentioned that it will be annulled as in al-Dhakhira.

Urdu: In al-Nawazil, it is stated: If a man marries off his minor daughter to a person who denied drinking wine, whereas he was a habitual drinker, and upon reaching adulthood, the girl says "I am not satisfied with this marriage," then if the father was unaware of the wine-drinking and the majority of the father's family members are righteous people, this marriage will be declared void, because the father gave her in marriage considering him a suitable match (Kufu). Then, regarding this invalidity...

फतवा-ए-रज़विया जिल्द 11

नसीम-उर-रियाज़। उसके विश्वास का इज़हार करें इत्यादि और अल्लामा खफ़ाजी ने इसे नसीम-उर-रियाज़ में मज़बूत करार दिया। (त)

इसलिए कहा जाता है कि इस ज़माने के रवाफिज़ (शिया) में से किसी ऐसे व्यक्ति का मिलना जिसे कमज़ोर तौर पर भी मुसलमान कहा जा सके लाल गंधक (किबरीत-ए-अहमर) मिलने से भी ज़्यादा मुश्किल है। इस फ़क़ीर (अल्लाह उसे माफ़ करे) ने इस मसले को अपने फतावा में विस्तार से बयान किया है और बार-बार इन लोगों के साथ निकाह के बातिल (अमान्य) होने पर फतवा दिया है। इस ज़माने के बड़े और मशहूर विद्वान इस फतवे में फ़क़ीर से सहमत हैं। हाँ, जो उस दर्जे का न हो और इस्लाम की ज़रूरी चीज़ों में से किसी चीज़ का इनकार न करता हो, और न ही उनके इनकार करने वालों को मुसलमान मानता हो, भले ही वह अपनी खबासत (बुराई) से मलऊन तबरा (महान सहाबा का अपमान) करने वाले मग़ज़ूब (शापित) शिया तक पहुँच जाए, वह सही मज़हब और मसरब पर एक बिदअती और फाजिर (पापी) है, न कि मुर्तद (धर्मत्यागी) और काफिर, जैसा कि मेरे पिता और स्वामी, मुक़द्दाम-उल-मुहक़्क़िक़ीन (शोधकर्ताओं में अग्रणी) ने अपने फतावा में इसकी तहकीकात फ़रमाई है (जैसा कि मेरे पूज्य पिता, मुक़द्दाम-उल-मुहक़्क़िक़ीन ने अपने फतावा में शोध किया है। त)। अतः यदि उल्लेखित ज़ैद, जिसके साथ लैला का निकाह हुआ, पहले दर्जे का राफ़ज़ी (कट्टर शिया) था, तो वह निकाह निश्चित रूप से पूरी तरह बातिल है, जैसे किसी हिंदू, ईसाई, यहूदी या पारसी के साथ, बल्कि उनसे भी बदतर क्योंकि मुर्तद काफिरों की सबसे बुरी किस्म है। हम अल्लाह की पनाह माँगते हैं। इस स्थिति में लैला को एक पल भी इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है, वह बिना किसी झिझक के जिससे चाहे निकाह कर सकती है। और अगर उसका राफ़ज़ी होना दूसरे दर्जे से अधिक नहीं था, तो पूछे गए मामले में, चूँकि निकाह पिता ने किया था और सवाल के विवरण से स्पष्ट है कि जब तक ज़ैद का छल सामने नहीं आया था, लैला और उसके माता-पिता सभी संतुष्ट थे, तो चाहे निकाह के समय लैला बालिग थी या नहीं, निकाह हर तरह से संपन्न हो गया। लेकिन चूँकि एक राफ़ज़ी पुरुष, सुन्नी महिला (सुन्नी की बेटी) का कुफ़ू (बराबर का जोड़ा) नहीं हो सकता, और ज़ैद ने खुद को सुन्नी बताकर धोखा और झांसा दिया, इसलिए शरीयत इस निकाह को खत्म (रद्द) कराने का अधिकार देगी। यदि लैला निकाह के समय नाबालिग थी, तो बालिग होने के बाद उसे विरोध और इनकार का अधिकार मिला या मिलेगा। और बालिग महिला के लिए, जिस समय ज़ैद का छल खुला,

उसे और उसके अभिभावकों को निकाह रद्द करने का दावा करने का अधिकार मिल गया। रद अल-मुह्तार में है:

[तालिका सामग्री] अरबी: अल-नवाज़िल में, [एक व्यक्ति के बारे में जिसने] अपनी नाबालिग बेटी का निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दिया जो नशा करने से इनकार करता था, लेकिन वह उसका आदी था, और वह कहती है 'मैं निकाह से संतुष्ट नहीं हूँ' यानी बालिग होने के बाद, यदि पिता को उसके शराब पीने का पता नहीं था और उसके परिवार के अधिकांश लोग नेक थे, तो निकाह बातिल (अमान्य) है क्योंकि उसने उसे केवल इस धारणा पर निकाह में दिया था कि वह 'कुफ़ू' (योग्य वर) था। इसके बाद उल्लेख है कि यह रद्द हो जाएगा जैसा कि अल-ज़खिरा में है।

उर्दू: नवाज़िल में है: अगर किसी ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह ऐसे व्यक्ति से कर दिया जो शराब पीने से इनकार करता था, जबकि वह शराब का आदी था, तो लड़की ने बालिग होने पर कहा "मैं इस निकाह से राजी नहीं हूँ", यदि पिता को शराब पीने की बात पता नहीं थी और पिता का परिवार नेक लोगों का परिवार है, तो यह निकाह बातिल (शून्य) माना जाएगा, क्योंकि पिता ने उसे कुफ़ू (योग्य वर) समझते हुए निकाह किया था। फिर उस बातिल के बारे में...

पृष्ठ 695 का 739

نسیم الریاض۔ اس کے اعتقاد کا اظہار کریں الخ اور علامہ خفاجی نے اسے نسیم الریاض میں مضبوط قرار دیا۔ (ت)

اس لئے کہا جاتا ہے کہ روافض زمانہ میں کسی ایسے کا ملنا جسے ایک ضعیف طور پر بھی مسلمان کہہ سکیں کبریت احمر کے ملنے سے کچھ زیادہ ہی دشوار ہے، فقیر غفراللہ تعالٰی نے یہ مسئلہ اپنے فتاوٰی میں مشرحاً بیان کیا اور بار ہا ان لوگوں سے بطلان مناکحت پر فتوٰی دیا، اکابر مشاہیر علمائے عصر اس افتاء میں فقیر سے موافق ہیں، ہاں جو اس درجہ کا نہ ہو اور ضروریات اسلام سے کسی شے کا انکار نہ کرتا ہو نہ اس کے منکروں کو مسلمان جانتا ہو اگرچہ اپنی خباثت سے تبرائے ملعونہ شیعہ مغضوبہ تک پہنچے صحیح مذہب مشرب پر بدعتی فاجر ہے، نہ مرتد کافر کما حققہ ابی وسیدی مقدام المحققین قدس سرہ المکین فی فتاواہ (جیسا کہ میرے والد ماجد مقدام المحققین قدس سرہ نے اپنے فتاوٰی میں اس کی تحقیق فرمائی۔ ت) پس اگر زید مذکور جس کے ساتھ لیلٰی کا نکاح ہوا درجہ اول کا رافضی تھا جب تو وہ نکاح یقیناً جزماً باطل محض ہے جیسے کسی ہندو نصرانی یہودی مجوسی کے ساتھ بلکہ ان سے بھی بدتر مرتد اخبث اقسام کفار ہے، والعیاذ باللہ سبحنہ وتعالٰی، اس صورت میں لیلٰی کو ایک آن کا انتظار بھی ضرور نہیں بے دغدغہ جس سے چاہے نکاح کرلے، اور اگر اس کا رافضی درجہ دوم سے متجاوز نہ تھا تو صورت مسئولہ میں کہ نکاح باپ نے کیا اور تقریر سوال سے واضح کہ جب تک فریب زید نہ کھلا تھا لیلٰی و والدین لیلٰی سب راضی تھے پس عام ازیں کہ لیلٰی وقت نکاح بالغہ تھی یا نہیں ہر طرح نکاح منعقد ہو گیا مگر از انجا کہ رافضی مرد وزن سنیہ بنت سنی کا کفو نہیں ہو سکتا اور زید نے اپنے آپ کو سنی بتا کر فریب و مغالطہ دیا لہذا شرع مطہر اس نکاح کے فسخ کرانے کا اختیار دے گی، اگر لیلٰی ہنگام نکاح

صغیرہ تھی تو بعد بلوغ اسے اعتراض وانکار کا اختیار ہوا یا ہوگا، اور بالغہ تو جس وقت فریب زید کھلا اسے اور اس کے اولیاء سب کو اختیار دعویٰ فسخ ملا، ردالمحتار میں ہے :

[جدول کا متن] عربی: فی النوازل لزوج بنته الصغیرة ممن ینکرانه یشرب المسکر فاذا هو مدمن له وقالت لارضی بالنکاح ای بعد ما کبرت ان لم یکن یعرف الاب بشر به وکان غلبة اهل بیته صالحین فالنکاح باطل لانه انما زوجه علی ظن انه کفو اه ثم معناه انه سیبطل کما في الذخیرة اردو: نواز ل میں ہے اگر اپنی نابالغہ بیٹی کا نکاح ایسے شخص سے کردیا جو شراب نوشی کا انکار کرتا تھا حالانکہ وہ شراب کا عادی تھا، تو لڑکی نے بالغ ہونے پر کہا میں اس نکاح سے راضی نہیں اگر والد کو شراب نوشی کا علم نہ تھا اور والد کا غالب خاندان صالحین لوگ ہیں تو یہ نکاح باطل قرار پائے گا، کیونکہ والد نے کفو سمجھتے ہوئے نکاح دیا تھا اہ پھر اس باطل کا

Fatawa Razawiyya - Volume 11

[Arabic Text]: لان المسئلة مفروضة فيما اذا لم ترض البنت بعدما كبرت كما صرح به فى الخانية والذخيرة وغيرهما ولا فرق فى عدم الكفاءة بين كونه بسبب الفسق او غيره اه ملتقطاً۔ [Urdu Translation]: The meaning is that this marriage will be invalidated as mentioned in Al-Dhakhira, because the issue pertains to the case where a girl, upon reaching puberty, expresses her lack of consent, as clearly stated in Al-Khaniya. This has been explicitly explained in Al-Dhakhira and other works. In the lack of compatibility (kufa'ah), it makes no difference whether it is due to immorality (fusuq) or any other reason. — [Condensed from Al-Multaqat] (t)

It is stated in Durr al-Mukhtar: [Arabic Text]: لو زوجوها برضاها ولم يعلموا بعدم الكفاءة ثم علموا لا خيار لأحد الا اذا شرطوا الكفاءة او اخبرهم بها وقت العقد فزوجوها على ذلك ثم ظهر انه غير كفو لهم الخيار ولو لوالجية فليحفظ- [Urdu Translation]: When guardians marry off a girl with her consent to someone who is not a kufu due to ignorance, and it later becomes known that he is not a kufu, no one has the option to annul it. However, if at the time of marriage the guardians set a condition for him to be a kufu, or the husband declared himself to be a kufu at the time of contract and they married her based on that declaration, and later it was found that he is not a kufu, then they have the right to annul. — [Al-Walajiyyah, so remember it.] (t)

It is stated in Shami: [Arabic Text]: في البحر عن الظهيرية لو انتسب الزوج لها نسبا غير نسبه فان ظهر دونه وهو ليس بكفو فحق الفسخ ثابت للكل- [Urdu Translation]: It is quoted in Al-Bahr from Al-Zahiriyya that if a husband, at the time of marriage, changes his lineage and attributes himself to another in front of the girl, and it later turns out that his lineage is inferior and he is not a kufu, then the right to annulment is established for all. (t)

However, this right to annulment does not mean that the woman or the guardians can annul it themselves; this is absolutely not permissible. If they rely on this and enter into a second marriage, it will not be valid. Rather, its meaning is that they should bring the matter before a Sharia Judge (Qazi). When it is proven to him as clearly as the midday sun that Zaid was indeed a Rafidi and he had deceived these people...

---

1. Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/304
2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Kufa'ah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/193
3. Radd al-Muhtar, Bab al-Kufa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/317

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

[अरबी पाठ]: لان المسئلة مفروضة فيما اذا لم ترض البنت بعدما كبرت كما صرح به فى الخانية والذخيرة وغيرهما ولا فرق فى عدم الكفاءة بين كونه بسبب الفسق او غيره اه ملتقطاً۔ [उर्दू अनुवाद]: इसका मतलब यह है कि इस निकाह को बातिल (अमान्य) किया जाएगा जैसा कि ज़खीरा में है, क्योंकि मसले का ताल्लुक उस सूरत से है कि लड़की ने बालिग हो जाने पर अदम-ए-रज़ा (असहमति) का इज़हार किया हो जैसा कि ख़ानिया में है। ज़खीरा वग़ैरा में इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) की गई है। और अदम-ए-कफ़ाअत (अयोग्यता) में फर्क नहीं है, चाहे वह फ़ुसूक (अनैतिकता) की वजह से हो या किसी और वजह से। — [अल-मुल्तक़त से संक्षेपित] (त)

दुर्रे मुख्तार में है: [अरबी पाठ]: لو زوجوها برضاها ولم يعلموا بعدم الكفاءة ثم علموا لا خيار لأحد الا اذا شرطوا الكفاءة او اخبرهم بها وقت العقد فزوجوها على ذلك ثم ظهر انه غير كفو لهم الخيار ولو لوالجية فليحفظ- [उर्दू अनुवाद]: जब औलिया (अभिभावकों) ने लड़की का निकाह उसकी रज़ामंदी से ग़ैर-कुफ़ू (अयोग्य व्यक्ति) में ला-इल्मी (अज्ञानता) की बिना पर कर दिया और बाद में कुफ़ू न होना मालूम हुआ, तो अब किसी को निकाह रद्द (फ़स्ख़) करने का इख़्तियार नहीं है। मगर जब निकाह के वक्त औलिया ने कुफ़ू होने की शर्त पर निकाह किया हो या खाविंद ने निकाह के वक्त अपने कुफ़ू होने का इज़हार किया हो और उस पर उन्होंने निकाह कर दिया हो, फिर बाद में मालूम हो कि यह ग़ैर-कुफ़ू है, तो अब उनको फ़स्ख़ का इख़्तियार है। — [वालिजिया, तो इसे याद कर लो।] (त)

शामी में है: [अरबी पाठ]: في البحر عن الظهيرية لو انتسب الزوج لها نسبا غير نسبه فان ظهر دونه وهو ليس بكفو فحق الفسخ ثابت للكل- [उर्दू अनुवाद]: बहर में ज़हीरिया से मनकूल (उद्धृत) है कि अगर खाविंद ने निकाह के वक्त लड़की पर अपने नसब (वंश) को बदल कर किसी और की तरफ मंसूब किया, तो बाद में अगर उसका नसब घटिया, जो कि कुफ़ू नहीं है, मालूम हुआ तो अब सबको फ़स्ख़ का हक़ है। (त)

मगर इस इख़्तियार के यह मानी नहीं कि औरत या औलिया खुद ही फ़स्ख़ कर लें, क्योंकि यह तो हरगिज़ जायज़ नहीं है। अगर वे इस पर किफ़ायत करके निकाह-ए-सानी (दूसरा निकाह) कर लेंगे तो वह कभी नहीं होगा, बल्कि इसके मानी यह हैं कि वे काज़ी-ए-शरअ (धार्मिक न्यायाधीश) के पास रुजू

लाएँ। जब उसके नज़दीक आफ़ताब (सूरज) की तरह रोशन होकर साबित हो जाए कि वाकई ज़ैद राफ़िज़ी था और उसने इन लोगों को...

---

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/304
2. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/193
3. रद अल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/317

فتاوی رضویہ - جلد یازدہم

[عربی متن]: لان المسئلة مفروضة فیما اذا لم ترض البنت بعدما کبرت کما صرح به فی الخانیة والذخیرة وغیرهما ولا فرق فی عدم الکفاءة بین کونه بسبب الفسق او غیره اه ملتقطاً۔ [اردو ترجمہ]: مطلب یہ ہے کہ اس نکاح کو باطل کیا جائے گا جیسا کہ ذخیرہ میں ہے، کیونکہ مسئلے کا تعلق اس صورت سے ہے کہ لڑکی نے بالغ ہو جانے پر عدم رضا کا اظہار کیا ہو جیسا کہ خانیہ میں ہے، ذخیرہ وغیرہ ہما میں اس کی تصریح کی گئی ہے۔ اور عدم کفاءت میں فرق نہیں خواہ فسق کی وجہ سے ہو یا کسی اور وجہ سے ہو، اہ ملتقطا۔ (ت)

در مختار میں ہے: [عربی متن]: لو زوجوها برضاها ولم یعلموا بعدم الکفاءة ثم علموا لا خیار لأحد الا اذا شرطوا الکفاءة او اخبرهم بها وقت العقد فزوجوها علی ذلك ثم ظهر انه غیر کفو لهم الخیار ولو لوالجیة فلیحفظ۔ [اردو ترجمہ]: جب اولیاء نے لڑکی کا نکاح اس کی رضامندی سے غیر کفو میں لاعلمی کی بنا پر کر دیا اور بعد میں کفو نہ ہونا معلوم ہوا تو اب کسی کو فسخ کا اختیار نہیں۔ مگر جب نکاح کے وقت اولیاء نے کفو ہونے کی شرط پر نکاح دیا ہو یا خاوند نے نکاح کے وقت اپنے کفو ہونے کا اظہار کیا ہو تو اس کے اظہار پر انہوں نے نکاح کر دیا ہو پھر بعد میں معلوم ہوا ہو کہ یہ غیر کفو ہے تو اب ان کو فسخ کا اختیار ہے، ولوالجیہ، پس اسے یاد کرلو۔ (ت)

شامی میں ہے: [عربی متن]: في البحر عن الظهیریة لو انتسب الزوج لها نسبا غیر نسبه فان ظهر دونه وهو لیس بکفو فحق الفسخ ثابت للکل۔ [اردو ترجمہ]: بحر میں ظہیریہ سے منقول ہے کہ اگر خاوند نے نکاح کے وقت لڑکی پر اپنے نسب کو بدل کر کسی اور کی طرف منسوب کیا تو بعد میں اگر اس کا نسب گھٹیا جو کہ کفو نہیں ہے، معلوم ہوا تو اب سب کو فسخ کا حق ہے۔ (ت)

مگر اس اختیار کے یہ معنی نہیں کہ عورت یا اولیاء خود ہی فسخ کر لیں کہ یہ تو ہر گز جائز نہیں اور اس پر قناعت کر کے نکاح ثانی کر لیں گے تو زنہار نہ ہو گا بلکہ اس کے یہ معنی کہ قاضی شرع کے یہاں رجوع لائیں جب اس کے نزدیک آفتاب روشن کی طرح ثابت ہو جائے کہ واقعی زید رافضی تھا اور اس نے ان لوگوں کو

1۔ رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۴/۲ 2۔ درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۳/۱ 3۔ رد المحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۷/۲

Fatawa Razvia Volume 11

Deception was also practiced until then because his circumstances were not known. Now, Zaid's whereabouts are unknown (so that he may be summoned and the case heard in his presence), or if the address is known, he is in a place where there is no Qazi (to organize the case, hear witnesses, and send them there according to the conditions of 'Kitab al-Qadi ila al-Qadi' so that the Qazi there may summon him to the court and announce the judgment of annulment in the presence of both parties). If Zaid is summoned here, he does not come, and there is no way to compel him. In short, the mentioned Qazi should observe every kind of necessity and compulsion. At that time, appoint someone from Zaid's relatives or friends, and if they are not found, then some other unbiased and religious person as Zaid's deputy and representative, hear the case in his presence, and after complete proof, annul the marriage. And since, as clarified in the question, there has been no privacy (khalwat) between Zaid and Layla yet, there is no need for waiting or 'Iddat' at all. As soon as the Qazi's order is given, she can marry whomever she wishes immediately. It is stated in Fatawa Qadi Khan:

Arabic	Urdu
La yakun al-faskh li-adam al-kafa'ah illa 'inda al-qadi li-annahu mujtahad fih 1 etc.	Annulment due to lack of compatibility can only occur in the presence of a Qazi because it is a matter of ijtihad. etc (T)

It is in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	Urdu
Shartun lil-kull al-qadha la-thamaniyata 2 etc.	Judgment (Qadha) is a condition for every annulment except for eight cases. etc (T)

It is in Radd-ul-Muhtar:

Arabic	Urdu
Fihi ima'un ila anna al-zawja lau kana gha'iban lam yufarraq bainahuma ma lam yahdhur li-luzum al-qadha 'ala al-gha'ib Nahr 3.	This contains an indication that if the husband is absent, separation shall not be made until his presence so that judgment against an absent person (Qadha 'ala al-Gha'ib) is not necessitated. (Nahr) (T)

And it is also in it:

Arabic	Urdu
Qala fi Jami' al-Fusulayn: Al-zahir 'indi an yuta'ammala fil-waqa'i'i wa yuhtaja wa yulahadha al-harju wal-dharuratu fayufta.	It is said in Jami' al-Fusulayn: "What is apparent to me is that the case should be reflected upon, care should be taken, and hardships and necessities should be observed, and then a fatwa given so that..."

1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Kafa'ah, Naval Kishore, Lucknow, 1/162
2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/193
3. Radd-ul-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/307

फतावा रज़विया खंड 11

धोखा भी तब तक दिया गया जब तक कि उसकी परिस्थितियों की जानकारी नहीं थी। अब न तो ज़ैद का पता मालूम है (कि उसे बुलाकर उसकी उपस्थिति में मामला सुना जाए) और न ही पता मालूम होने पर वह ऐसी जगह पर है जहाँ कोई काज़ी नहीं है (कि मामला व्यवस्थित करके गवाहों को सुनकर 'किताब अल-काज़ी इला अल-काज़ी' की शर्तों के अनुसार वहाँ भेज दिया जाए ताकि वहाँ का काज़ी उसे दार-उल-क़ज़ा में बुलाकर दोनों पक्षों की उपस्थिति में निकाह रद्द करने का फ़ैसला सुना दे)। और यदि ज़ैद को यहाँ बुलाया जाता है, तो वह नहीं आता है, और उसे मजबूर करने का कोई तरीका नहीं है। संक्षेप में, उक्त काज़ी हर तरह की ज़रूरत और मजबूरी को देख ले। उस समय, ज़ैद के रिश्तेदारों या दोस्तों में से किसी को, और यदि वे न मिलें, तो किसी अन्य निष्पक्ष और धार्मिक व्यक्ति को ज़ैद का प्रतिनिधि और वकील नियुक्त करके उसकी उपस्थिति में मामला सुने और पूर्ण प्रमाण के बाद निकाह रद्द कर दे। और चूँकि प्रश्न के स्पष्टीकरण के अनुसार ज़ैद और लैला के बीच अभी तक एकांत (खलवत) नहीं हुई थी, इसलिए प्रतीक्षा या 'इद्दत' की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है। जैसे ही काज़ी का आदेश हो जाए, वह तुरंत जिससे चाहे निकाह कर सकती है। फतावा काज़ी खान में है:

अरबी	**उर्दू/हिंदी अनुवाद**
ला यकूनुल फ़स्खु लि-अदामिल कफ़ा'अति इल्ला इन्दल क़ाज़ी लि-अन्नहू मुज्तहदुन् फ़ीहि १ इल्ख़।	कुफ़ू (समानता) न होने के कारण निकाह का रद्दीकरण केवल काज़ी की उपस्थिति में ही हो सकता है क्योंकि यह एक इज्तिहादी (व्याख्यात्मक) मुद्दा है। इल्ख़ (त)

दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी	**उर्दू/हिंदी अनुवाद**
शर्तुल लिल्कुल्लि अल-क़ज़ाउ ला-थमानियत २ इल्ख़।	हर फ़स्ख़ (रद्दीकरण) के लिए क़ज़ा (निर्णय) शर्त है सिवाय आठ स्थितियों के। इल्ख़ (त)

रद्दुल मुहतार में है:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
फ़ीहि ईमाउन इला अन्नज़-ज़ौजा लौ काना ग़ाइबन लम् युफ़र्रक़ बैनहुमा मा लम् यह्दुर लि-लुज़ूमिल क़ज़ाई अलल ग़ाइबी नहर ३।	इसी में इशारा है कि अगर शौहर हाज़िर न हो तो उसकी हाज़िरी तक अलगाव नहीं किया जाएगा ताकि अनुपस्थित व्यक्ति के विरुद्ध निर्णय (क़ज़ा अलल ग़ायब) आवश्यक न हो जाए। नहर (त)

और इसी में है:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
क़ाला फ़ी जामेइल फ़ुसूलैन: अज़-ज़ाहिरु इन्दी अं युतअम्मला फ़िल-वक़ा'इ'इ व युहताजा व युलाहज़ल हर्जु वद-दरूरातु फ़-युफ़्ता।	जामेउल फ़ुसूलैन में कहा गया है: मेरे निकट ज़ाहिर यह है कि मामले पर गौर किया जाए और एहतियात बरती जाए और कठिनाई और ज़रूरतों का अंदाज़ा लगाया जाए ताकि...

1. फतावा काज़ी खान, फ़स्ल फ़िल कफ़ा'अत, नवल किशोर लखनऊ, १/ १६२
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/ १९३
3. रद्दुल मुहतार, बाबुल वली, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, २/ ३०७

دھوکا بھی دیا یہ اس وقت تک کہ اس کے احوال سے آگاہ نہ تھے۔ نہ اب زید کا پتا ہے (کہ اسے بلا کر اس کے حضور مقدمہ سنا جائے) یا پتا معلوم ہے تو وہ ایسی جگہ ہے جہاں قاضی نہیں (کہ مقدمہ ترتیب دے کر گواہ سن کر بلحاظ شرائط کتاب القاضی الی القاضی وہاں بھیج دیں کہ وہ قاضی اسے دارالقضا میں حاضر کرکے بمواجہہ فریقین حکم فسخ سنا دے) اور زید کو یہاں بلاتے ہیں تو آتا نہیں اور اس پر جبر کا کوئی طریقہ نہیں، غرض ہر طرح قاضی مذکور ضرورت و مجبوری ملاحظہ کرلے اس وقت زید کے عزیزوں یا دوستوں سے کسی کو اور وہ نہ ملیں تو اور کسی بے لگاؤ متدین آدمی کو زید کا نائب و وکیل قرار دے کر اس کے حضور مقدمہ سنے اور بعد ثبوت کامل نکاح فسخ کر دے اور از آنجا کہ حسب تصریح سوال ہنوز زید ولیلٰی میں خلوت نہ ہوئی تھی اصلا انتظار و عدت کی حاجت نہیں حکم قاضی ہوتے ہی فوراً جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے، فتاوٰی قاضی خان میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
لایکون الفسخ لعدم الکفاءۃ الاعند القاضی لانہ مجتھد فیہ ۱ الخ۔	کفونہ ہونے کی وجہ سے فسخ صرف قاضی کی موجودگی میں ہو سکتا ہے کیونکہ یہ اجتہادی مسئلہ ہے۔ الخ (ت)

درمختار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
شرط للکل القضاء لاثمانیۃ ۲ الخ۔	ہر فسخ کے لئے قضا شرط ہے ماسوائے آٹھ صورتوں کے الخ۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
فیه ایماء الی ان الزوج لو کان غائباً لم یفرق بینهما مالم یحضر للزوم القضاء علی الغائب نهر ۳ ۔	اسی میں اشارہ ہے کہ اگر خاوند حاضر نہ ہو تو اس کی حاضری تک تفریق نہ کی جائے گی تاکہ قضاء علی الغائب لازم نہ آئے۔ نہر (ت)

اور اسی میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
قال فی جامع الفصولین الظاهر عندی ان یتأمل فی الوقائع و یحتاج ویلاحظ الحرج والضرورات فیفتی	جامع الفصولین میں کہا ہے کہ میرے نزدیک ظاہر یہ ہے کہ واقعہ پر غور کیا جائے اور احتیاط کی جائے اور حرج اور ضروریات کا اندازہ کیا جائے تاکہ اس

۱ فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الکفاءۃ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۶۲ ۲ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳ ۳ ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۰۷

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic Text Column] Based on that, a fatwa of validity or invalidity should be given. For example, if a man divorces his wife in the presence of a just person and then disappears from the city, and his location is unknown, or it is known but it is impossible to bring him back or for her or her representative to travel to him due to distance or some other impediment. In such a case, if evidence is presented against the absent person and the judge becomes strongly convinced that it is the truth, without forgery or trickery, then he should rule against him or in his favor. Similarly, a Mufti should issue a fatwa of permissibility to remove hardship and necessity, even though it is an Ijtihadi (juridical) issue. The three Imams (Malik, Shafi'i, and Ahmad) have adopted this view, and there are two reports from our companions regarding it. It is appropriate that a representative be appointed for the absent person, known to look after his interests and not be negligent. This was affirmed in 'Noor al-Ayn'. I say: it is supported by what is in 'Al-Fath' in the chapter on the missing person (Bab al-Mafqud), that ruling against an absent person is not permissible unless the judge sees a benefit in ruling for or against him. If he then rules, it becomes effective because it is an Ijtihadi matter. End of summary.

[Urdu Text Column] In terms of validity and invalidity, a fatwa should be given. For example, if someone divorced his wife in the presence of a just person and left the city, and his location is unknown, or if known, it is difficult to bring him here or reach him there, and it is difficult for the wife or her representative to travel due to distance or any other reason. In such a case, testimony should be presented against the absent husband, and the judge should reach a strong conviction of its truth, knowing there is no trickery or fraud involved. Then he can give a decision in favor of or against the husband. Similarly, a Mufti should issue a fatwa for a decision regarding the absent person so that hardship and necessity can be removed, especially since this is an Ijtihadi issue and the three Imams—Imam Malik, Shafi'i, and Ahmad (may Allah have mercy on them)—believe in its permissibility. There are two opinions among our masters (Hanafi scholars) on this. It is appropriate that a representative be appointed on behalf of the absent person, of whom it is known that he will not be negligent while looking after the interests of the absent person. This has been established in 'Noor al-Ayn'. I say that this is supported by the specific detail in 'Al-Fath' under the Chapter of the Missing (Bab al-Mafqud), stating that ruling against an absent person is not permissible, but when a judge sees any benefit in giving a

decision for or against the absent person, he may do so, and it will be effective because this is an Ijtihadi issue. End of summary (T).

In Tanwir, it is mentioned: [Arabic]: The cause for the obligation of Iddah (waiting period) is an established marriage. [Urdu]: The cause for the obligation of Iddah is that marriage in which consummation...

---

1. Rad al-Muhtar, Kitab al-Qada, Matters in which a ruling can be given etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/339.

[अरबी पाठ स्तंभ] इसके आधार पर, वैधता या अवैधता का फ़तवा दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई न्यायप्रिय व्यक्ति की उपस्थिति में अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे और फिर शहर से गायब हो जाए, और उसका स्थान अज्ञात हो, या ज्ञात हो लेकिन उसे वापस लाना या पत्नी या उसके प्रतिनिधि के लिए दूरी या किसी अन्य बाधा के कारण उसके पास जाना असंभव हो। ऐसे मामले में, यदि अनुपस्थित व्यक्ति के विरुद्ध साक्ष्य प्रस्तुत किए जाते हैं और न्यायाधीश को दृढ़ विश्वास हो जाता है कि यह सत्य है, और इसमें कोई धोखाधड़ी या छल नहीं है, तो उसे उसके विरुद्ध या उसके पक्ष में निर्णय देना चाहिए। इसी प्रकार, एक मुफ़्ती को कठिनाई और आवश्यकता को दूर करने के लिए अनुमति का फ़तवा देना चाहिए, भले ही यह एक इज्तिहादी (न्यायिक प्रयास) मसला हो। तीनों इमामों (मालिक, शाफ़ई और अहमद) ने इस दृष्टिकोण को अपनाया है, और इसके संबंध में हमारे साथियों से दो विवरण हैं। यह उचित है कि अनुपस्थित व्यक्ति के लिए एक प्रतिनिधि नियुक्त किया जाए, जिसके बारे में ज्ञात हो कि वह उसके हितों का ध्यान रखेगा और लापरवाह नहीं होगा। इसकी पुष्टि 'नूरुल ऐन' में की गई थी। मैं कहता हूँ: 'अल-फ़तह' के लापता व्यक्ति के अध्याय (बाब अल-मफ़क़ूद) में जो कुछ भी है, वह इसका समर्थन करता है कि अनुपस्थित व्यक्ति के विरुद्ध निर्णय देना तब तक अनुमेय नहीं है जब तक कि न्यायाधीश उसके पक्ष या विपक्ष में निर्णय देने में कोई लाभ न देखे। यदि वह निर्णय देता है, तो वह प्रभावी हो जाता है क्योंकि यह एक इज्तिहादी मसला है। सारांश समाप्त।

[उर्दू पाठ स्तंभ] वैधता और अवैधता के संदर्भ में फ़तवा दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने एक न्यायप्रिय व्यक्ति की उपस्थिति में अपनी पत्नी को तलाक़ दिया और शहर छोड़ दिया, और उसका ठिकाना अज्ञात है, या यदि ज्ञात है, तो उसे यहाँ लाना या वहाँ तक पहुँचना कठिन है, और दूरी या किसी अन्य कारण से पत्नी या उसके प्रतिनिधि के लिए यात्रा करना कठिन है। ऐसी स्थिति में, अनुपस्थित पति के विरुद्ध गवाही दी जानी चाहिए, और न्यायाधीश को इसकी सत्यता का दृढ़ विश्वास होना चाहिए, यह जानते हुए कि इसमें कोई छल या धोखाधड़ी नहीं है। तब वह पति के पक्ष या विपक्ष में निर्णय दे सकता है। इसी प्रकार, एक मुफ़्ती को अनुपस्थित व्यक्ति के संबंध में निर्णय के लिए फ़तवा देना चाहिए ताकि कठिनाई और आवश्यकता को दूर किया जा सके, विशेष रूप से चूंकि यह एक इज्तिहादी मसला है और तीन इमाम—इमाम मालिक, शाफ़ई और अहमद (अल्लाह उन पर दया करे)—इसकी अनुमति में विश्वास रखते हैं। हमारे उलेमा (हनफ़ी विद्वानों) के बीच इस पर दो मत हैं। यह उचित है कि अनुपस्थित व्यक्ति की ओर से एक प्रतिनिधि नियुक्त किया

जाए, जिसके बारे में ज्ञात हो कि वह अनुपस्थित व्यक्ति के हितों का ध्यान रखते हुए लापरवाही नहीं करेगा। इसे 'नूरुल ऐन' में स्थापित किया गया है। मैं कहता हूँ कि 'अल-फ़तह' में लापता व्यक्ति के अध्याय (बाब अल-मफ़क़ूद) के तहत विशिष्ट विवरण द्वारा इसका समर्थन किया गया है, जिसमें कहा गया है कि अनुपस्थित व्यक्ति के विरुद्ध निर्णय देना अनुमेय नहीं है, लेकिन जब कोई न्यायाधीश अनुपस्थित व्यक्ति के पक्ष या विपक्ष में निर्णय देने में कोई लाभ देखता है, तो वह ऐसा कर सकता है, और यह प्रभावी होगा क्योंकि यह एक इज्तिहादी मसला है। सारांश समाप्त (त)।

तनवीर में उल्लेख है: [अरबी]: इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की अनिवार्यता का कारण पक्का निकाह है। [उर्दू]: इद्दत की अनिवार्यता का कारण वह निकाह है जिसमें विदाई (रुक़्सती)...

---

1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-क़ज़ा, वे मामले जिनमें निर्णय दिया जा सकता है इत्यादि, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/339।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

بحسبها جوازا اوفسادا مثلا لو طلق امرأته عند العدل فغاب عن البلد ولا یعرف مکانه او یعرف ولکن یعجز عن احضاره اوعن تسافر الیه هی اووکیلها لبعده اولمائع اخر ففی مثل هذا لوبرهن علی الغائب وغلب علی ظن القاضی انه حق لا تزویر ولا حیلة فیه فینبغی ان یحکم علیه وله وکذا للمفتی ان یفتی بجوازه دفعا للحرج والضرورات مع انه مجتهد فیه ذهب الیه الائمة الثلثة وفیه روایتان عن اصحابنا وینبغی ان ینصب عن الغائب وکیل یعرف انه یراعي جانب الغائب ولا یفرط فی حقه اه واقره فی نور العین قلت ویؤیده ما فی الفتح من باب المفقود لا یجوز القضاء علی الغائب الا اذا رأی القاضی مصلحة فی الحکم له وعلیه فحکم فأنه ینفذ لانه مجتهد فیه اه ملخصاً۔

لحاظ سے صحت و فساد کا فتوٰی دیا جائے، مثلاً اگر کسی نے عادل شخص کی موجودگی میں بیوی کو طلاق دی اور شہر سے چلا گیا اس کی جگہ معلوم نہ ہو یا علم ہو لیکن وہاں سے اس کو یہاں حاضر کرنا یا وہاں خود پہنچنا دشوار ہو اور خود بیوی یا اس کے وکیل کا دوری کی وجہ سے سفر کرنا مشکل ہو یا کوئی اور وجہ ہو تو ایسی صورت میں اس غائب خاوند کے خلاف شہادت گزرے اور قاضی کو اس کے حق ہونے کا ظن غالب ہو جائے اور معلوم ہو جائے کہ اس میں کوئی حیلہ اور فریب نہیں ہے تو وہ خاوند کے حق میں یا اس کے خلاف فیصلہ دے دے، یونہی مفتی کو چاہئے کہ اس غائب کے بارے میں فیصلے کا فتوٰی دے دے تاکہ حرج اور ضرورت ختم ہوسکے جبکہ یہ مسئلہ بھی اجتہادی ہے اور ائمہ ثلاثہ امام مالک، شافعی اور احمد رحمہم اللہ اس کے جواز کے قائل ہیں، اور ہمارے ائمہ کے اس میں دو قول ہیں، اور مناسب یہ ہے کہ غائب شخص کی طرف سے کوئی وکیل مقرر کردیا جائے جس کے متعلق معلوم ہو کہ یہ غائب کی رعایت کرتے ہوئے کوتاہی نہیں کرے گا اہ اس کو نور العین میں ثابت رکھا ہے، میں کہتا ہوں اور اس کی تائید

فتح میں باب المفقود کے اس جزئیہ سے ہوتی ہے کہ قضاء علی الغائب نا جائز ہے مگر جب قاضی غائب کے حق یا خلاف فیصلہ دینے میں کوئی مصلحت سمجھے تو فیصلہ دے دے تو نافذ ہوجائے گا کیونکہ یہ اجتہادی مسئلہ ہے اہ ملخصاً (ت)

تنویر میں ہے: العدۃ سبب وجوبہا النکاح المتأکد

عدت کے وجوب کا سبب وہ نکاح ہے جس میں رخصتی

---

1 رد المحتار کتاب القضاء مطلب المسائل التي یکون القضاء فیها الخ دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۳۹/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

...by submission and what follows its course - it has happened or any matter standing in its place. (T) And if there is no Qadi (judge) in the city of Laili, then we have already written its strategy in the issue of the missing person, and Allah knows best what is correct, and to Him, the Exalted and Sublime, is the return and refuge (Only Allah knows the truth, and towards His holy Essence is the refuge and return. - T)

Issue 431: 10 Rabi al-Awwal 1306 AH What do the scholars of religion say in this matter: A boy was born to a prostitute. When that boy reached the age of puberty, he accepted the religion of Islam. Now, is it permissible for a person who was already among the people of Islam to marry his minor daughter to him or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: It is permissible. Allah Almighty says: "And do not marry polytheistic men [to your women] until they believe." (Al-Quran 2/221). However, this marriage is with a non-kufu (unequal) for two reasons: First, the woman is a hereditary Muslim and this person is a new convert, and a new convert is not a kufu for a hereditary Muslim. In al-Durr al-Mukhtar: "One who is a Muslim by himself is not a kufu for one whose father is a Muslim." (T) Secondly, his mother was from the prostitutes, and it is the common custom of these lands that marrying off to such a person is definitely a cause of shame for the guardians of women, and this very thing is the basis for the lack of equality (kufu). In Fath al-Qadir: "The cause [for lack of equality] is the belittlement by the people of custom; therefore, the ruling revolves around this." (T) Therefore, it will be mandatory to observe all those conditions that exist in marrying a non-kufu. For example, when the daughter is a minor and the father wants to give her in marriage to that person with his own consent, it is necessary that before this, his own...

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on 'Iddah, Matba' Mujtabai Delhi, 1/255
2. Al-Quran al-Karim 2/221
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'ah, Matba' Mujtabai Delhi, 1/195
4. Fath al-Qadir, Chapter on Kafa'ah, Nuriyah Razawiyyah Sukkur, 3/193 Page 699 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

...स्वीकार करने और उसके समान मामले के साथ - हो चुका हो या उसके स्थान पर कोई और मामला हो। (त) और अगर लैली के शहर में कोई क़ाज़ी न हो तो उसकी तदबीर हम मसला-ए-मफ़क़ूद (लापता व्यक्ति का मामला) में लिख चुके हैं। अल्लाह ही बेहतर जानता है और उसी की पाक ज़ात की तरफ़ पनाह और लौटना है। (त)

मसला 431: 10 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1306 हिजरी दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक बाज़ारी औरत (वेश्या) के यहाँ लड़का पैदा हुआ। जब वह लड़का बालिग़ हुआ तो उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। अब जो व्यक्ति पहले से मुसलमान था, क्या उसके लिए अपनी नाबालिग़ लड़की का निकाह उस लड़के के साथ कर देना जायज़ है या नहीं? बयान फ़रमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: जायज़ है, अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और मुशरिकों से निकाह न करो जब तक कि वे मोमिन न हो जाएँ।" (अल-क़ुरआन 2/221)। मगर यह निकाह 'ग़ैर-कुफ़ू' (असमान) के साथ है, इसके दो कारण हैं: पहला यह कि औरत पुराने समय से मुसलमान है और यह व्यक्ति नौ-मुस्लिम है, और नौ-मुस्लिम पुराने मुसलमान का कुफ़ू नहीं होता। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: "जो स्वयं मुसलमान हुआ हो, वह ऐसी लड़की का कुफ़ू नहीं है जिसका बाप मुसलमान रहा हो।" (त) दूसरा यह कि उसकी माँ बाज़ारी औरतों में से थी, और इन इलाक़ों का आम चलन है कि ऐसे व्यक्ति से निकाह कर देना स्त्रियों के अभिभावकों के लिए निश्चित रूप से शर्म का कारण होता है, और यही कुफ़ू न होने का आधार है। 'फ़तह अल-क़दीर' में है: "इसका कारण लोगों का उसे कमतर समझना है; इसलिए हुक्म इसी पर आधारित होगा।" (त) इसलिए इसमें उन सभी शर्तों का पालन करना अनिवार्य होगा जो ग़ैर-कुफ़ू से निकाह करने में होती हैं। उदाहरण के लिए, जब बेटी नाबालिग़ हो और बाप अपनी मर्ज़ी से उसका निकाह उस व्यक्ति के साथ करना चाहता हो, तो ज़रूरी है कि इससे पहले वह अपनी...

1. दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाब अल-इद्दत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/255
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/221
3. दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/195
4. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-कफ़ाअत, नूरिया रज़विया सक्खर, 3/193 पेज 699/739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

بالتسلیم و ماجری مجراہ - ہو چکی ہو یا اس کے قائم مقام کوئی معاملہ ہو۔ (ت) اور اگر لیلی کے شہر میں کوئی قاضی نہ ہو تو اس کی تدبیر ہم مسئلہ مفقود میں لکھ چکے ہیں واللہ اعلم بالصواب والیہ سبحانہ وتعالی المرجع والمآب (اللہ تعالٰی ہی درستی کو جانتا ہے اور اس کی پاک ذات کی طرف ہی پناہ اور لوٹنا ہے۔ت)

مسئلہ ۴۳۱: ۱۰ ربیع الاول شریف ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک زن بازاری کے لڑکا پیدا ہوا جب وہ لڑکا سن بلوغ کو پہنچا تب اس نے دین اسلام قبول کیا اب جو شخص کہ پہلے سے اہل اسلام تھا اسے اپنی لڑکی صغیرہ کا نکاح اس کے ساتھ کردینا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: جائز ہے، قال اللہ عز جلالہ: لَا تَنْکِحُوا الْمُشْرِکِیْنَ حَتّٰی یُؤْمِنُوْا (الآیہ مشرکوں سے نکاح نہ کرو جب تک وہ مومن نہ ہو جائیں۔ت) مگر یہ نکاح غیر کفو کے ساتھ ہے دو وجہ سے : اولا عورت قدیمی مسلمان ہے اور یہ شخص نو مسلم ، اور نو مسلم مسلمان قدیم کا کفو نہیں، فی الدرالمختار مسلم بنفسہ غیر کفو لمن ابوھا (درمختار میں ہے : خود مسلمان ہونے والا ایسی لڑکی کا کفو نہیں ہے جس کا باپ مسلمان ہوا ہو۔ (ت)) مسلم ۳- ثانیاً اس کی ماں زنان بازاری سے تھی اور ان بلاد کا عرف عام ہے کہ ایسے شخص سے نکاح کردینا اولیائے زنان کے لئے قطعاً موجب عار ہوتا ہے اور یہی بنائے عدم کفاءت ہے۔ فی الفتح القدیر الموجب ہو استنقاص اھل العرف (فتح القدیر میں ہے: اس کا سبب اہل عرف کا ناقص سمجھنا ہے لہٰذا حکم کا مدار یہی بنے گا۔ (ت)) فیدورمعہ ۴- لہٰذا اس میں ان سب شرائط کا لحاظ واجب ہوگا جو غیر کفو سے نکاح کرنے میں ہیں مثلاً جبکہ

دختر نابالغہ ہے اور باپ برضائے خود اس شخص کے نکاح میں دینا چاہتا ہے تو لازم ہے کہ اس سے پہلے اپنی

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۵/۱ 2 القرآن الکریم ۲۲۱/۲ 3 درمختار باب الکفأۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۵/۱ 4 فتح القدیر باب الکفأۃ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۳/۳

Fatawa Rizvia, Volume 11

...if the marriage of a daughter has not been performed with an unequal (non-Kufu) person, otherwise it will be invalid.

In Al-Durr al-Mukhtar: "Marriage with a non-Kufu is only valid if the guardian (Wali) of the marriage is the father or grandfather, provided they are not known for poor choices. If they are known for such, the marriage will not be valid; there is a consensus on this issue." - Al-Durr al-Mukhtar summarized. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 432: From the Old City, 14 Muharram al-Haram 1310 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married his adult daughter Hindah, who is of sound mind, to Amr. At that time, there was a suspicion that Amr might be a Rafidi (a Shia sect). When asked about it, he clearly denied it and claimed to be a Sunni, and very convincingly demonstrated his Sunnism, to the point that the marriage took place with Hindah's ordinary permission and consent. Hindah moved to Amr's house. After some time, when the month of Muharram arrived and Zaid called Hindah to his home, Amr's Rafidism became apparent. He took off all of Hindah's jewelry, etc., and dressed her in a blue rag like the Rafidis and sent her away. Investigations confirmed that Amr is a Rafidi. Since then, Zaid has not allowed Hindah to return to him. Now, a fatwa is sought from the scholars of Ahl al-Sunnat: In this situation, is the marriage between Amr, the Rafidi, and Hindah, the Sunni woman, valid or not? Clarify and be rewarded.

Answer: Setting aside the fact that today's general Rafidis deny the necessities of religion and are absolutely outside the fold of Islam—with whom marriage cannot be valid in any way—even if, for the sake of argument, this person has not reached that limit, does not deny those necessities of religion, and considers their Mujtahids as Muslims, there is no doubt that a Rafidi cannot be a 'Kufu' (equal match) for a Sunni. In Durr al-Mukhtar, it is stated: "Equality (Kafa'ah) in Arabs and non-Arabs is considered in terms of religiosity, i.e., piety. Thus, a transgressor (Fasiq) is not a Kufu for a righteous (Salihah) girl, etc." Therefore, a Fasiq person will not be a Kufu for a pious girl, etc. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Guardianship, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Equality, Mujtabai Press, Delhi, 1/195

फतावा रिज़विया, जिल्द ग्यारहवीं

...यदि बेटी का निकाह गैर-कफ़ू(असमान) से न किया गया हो, अन्यथा यह नाजायज़ होगा।

अल-दुर्रुल मुख़्तार में है: "गैर-कफ़ू में निकाह तब सही होगा जब निकाह का वली (अभिभावक) पिता या दादा हो, बशर्ते कि वे गलत चुनाव के लिए प्रसिद्ध न हों। और यदि वे हों, तो फिर यह सही नहीं होगा; इस मुद्दे पर आम सहमति है।" - अल-दुर्रुल मुख़्तार सारांश। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 432: शहर-ए-कुहना से, 14 मुहर्रमुल हराम 1310 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं: ज़ैद ने अपनी समझदार बालिग़ बेटी हिंदा का निकाह अम्र के साथ किया। उस समय अम्र के बारे में संदेह था कि शायद वह राफिज़ी हो। जब उससे पूछा गया, तो उसने स्पष्ट रूप से इनकार किया और खुद को सुन्नी बताया, और बहुत सफाई के साथ अपने सुन्नी होने का आश्वासन दिलाया, यहाँ तक कि हिंदा की सामान्य अनुमति और सहमति से निकाह हो गया। हिंदा विदा होकर अम्र के यहाँ चली गई। कुछ समय बाद जब मुहर्रम का महीना आया और ज़ैद ने हिंदा को अपने यहाँ बुलाया, तब अम्र का राफिज़ी होना ज़ाहिर हुआ। उसने हिंदा के सभी जेवर आदि उतार दिए और उसे राफिज़ियों की तरह एक नीला चिथड़ा पहनाकर भेज दिया। जाँच से पुष्टि हुई कि अम्र राफिज़ी है। तब से ज़ैद ने हिंदा को उसके पास वापस नहीं जाने दिया। अब अहले सुन्नत के विद्वानों से फतवा माँगा गया है कि: इस स्थिति में अम्र राफिज़ी और हिंदा सुन्नी का निकाह सही है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करते हुए कि आज के आम राफिज़ी धर्म की आवश्यक बातों (ज़रूरियात-ए-दीन) के मुनकिर हैं और इस्लाम के दायरे से पूरी तरह बाहर हैं—जिनके साथ किसी का निकाह किसी भी तरह सही नहीं हो सकता—यदि तर्क के लिए मान भी लिया जाए कि यह व्यक्ति उस सीमा तक नहीं पहुँचा है, और धर्म की उन आवश्यक बातों का मुनकिर नहीं है और उनके मुजतहिदों को मुसलमान मानता है, फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक राफिज़ी एक सुन्नी के लिए 'कफ़ू (समान मेल) नहीं हो सकता। दुर्रुल मुख़्तार में कहा गया है: "अरब और गैर-अरबों में समानता (कफ़ाअत) धार्मिकता, यानी परहेज़गारी के संदर्भ में मानी जाती है। इस प्रकार, एक पापी (फ़ासिक़) एक नेक (सालिहा) लड़की के लिए कफ़ू नहीं है, इत्यादि।" इसलिए, एक फ़ासिक़ व्यक्ति एक नेक लड़की के लिए कफ़ू नहीं होगा, इत्यादि। (त)

1 दुर्रुल मुख़्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192 2 दुर्रुल मुख़्तार, बाब अल-कफ़ाअत, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/195

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

کسی بیٹی کا نکاح غیر کفو سے نہ کر چکا ہو ورنہ ناجائز ہوگا۔

فی الدرالمختار لزم النکاح بغیر کفو ان کان الولی | در مختار میں ہے کہ یہ نکاح غیر کفو میں تب صحیح ہوگا جب اباًاوجدا لم یعرف منھما سوء الاختیار وان عرف | نکاح کا ولی باپ یا دادا ہو بشر طیکہ وہ سوء اختیار میں مشہور لایصح النکاح اتفاقاً اھ ملخصاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ | نہ ہوں۔ اور اگر ہوں تو پھر صحیح نہیں ہوگا، اس مسئلہ میں سب کا اتفاق ہے اھ ملخصاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۳۲: از شہر کہنہ ۱۴ محرم الحرام ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر ہندہ عاقلہ بالغہ کا نکاح عمرو کے ساتھ کیا، عمرو کی نسبت اس وقت شبہ ہوا تھا کہ شاید رافضی ہو اس پر اس سے پوچھا گیا اس نے صاف انکار کیا اور اپنے آپ کو سنی بتایا اور بہت صفائی کے ساتھ اپنے سنی ہونے کا اطمینان دلایا یہاں تک کہ ہندہ کے معمولی اذن ورضا سے نکاح ہو گیا ہندہ رخصت ہو کر عمرو کے یہاں گئی کچھ عرصہ بعد جب ماہ محرم آیا اور زید نے ہندہ کو اپنے یہاں بلایا اس وقت عمرو کا رافضی ہونا ظاہر ہوا اس نے ہندہ کا زیور وغیرہ سب اتار کر ایک نیلا چتھڑا رافضیوں کا سا اڑھا کر ہندہ کو بھیج دیا اور تحقیق ہوا کہ عمرو رافضی ہے، جب سے زید نے ہندہ کو اس کے یہاں جانے نہ دیا، اب علماء اہل سنت سے فتوی طلب ہے کہ اس صورت میں عمرو رافضی اور ہندہ سنیہ کا نکاح صحیح ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: قطع نظر اس سے کہ آج کل عام رافضی ضروریات دین کے منکر اور دائرہ اسلام سے قطعاً خارج ہیں جن سے کسی کا نکاح اصلاً کسی طرح نہیں ہوسکتا بفرض باطل اگر یہ شخص اس حد کا نہ بھی ہو نہ ان کا منکر ان ضروریات دین اور ان کے مجتہدین کو مسلمان جانتا ہو تاہم اس

قدر میں شک نہیں کہ رافضی سنی کا کفو نہیں ہوسکتا، در مختار میں ہے: وتعتبر یعنی الکفاءۃ فی العرب والعجم دیانۃ ای | عرب وعجم میں کفاءت دینداری کی یعنی پر ہیز گاری کی معتبر تقوی فلیس فاسق کفو الصالحۃ الخ۔ | ہے لہذا فاسق شخص صالحہ لڑکی کا کفو نہ ہو گا الخ (ت)

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۲ 2 در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۵

Fatawa Rizvia, Volume 11

Allama Ibrahim Halabi states in 'Ghunyah':

Arabic	Urdu Translation
The innovator (Mubtadi') is a transgressor (Fasiq) in terms of belief, and this is worse than transgression in terms of action. This is because a practical transgressor admits his sin, fears [Allah], and seeks forgiveness, unlike an innovator. By 'innovator' is meant someone who holds a belief contrary to that held by the People of the Sunnah and the Community (Ahl al-Sunnah wa'l-Jama'ah).	An innovator is a transgressor from an ideological standpoint, and this is worse than practical transgression because a practical transgressor confesses his sin, hence he fears and seeks forgiveness, unlike the innovator. By 'innovator' is meant that person who forms a belief contrary to the belief of the Ahl al-Sunnah wa'l-Jama'ah. (T)

In the Tahtawi marginalia on Durr al-Mukhtar, under the commentary on the statement "She married him on the condition that he is free, Sunni, or capable of paying the dower and maintenance, but it appeared otherwise" (when the marriage official says, 'I performed the marriage thinking [him] to be free, Sunni, and capable of providing dower and maintenance, but later the opposite was revealed' - T), it is stated:

Arabic	Urdu Translation
Due to lack of compatibility (Kafa'ah) because of slavery in the first case, religion in the second, and wealth in the third.	In the first case (free), it was not compatible due to slavery; in the second, due to religion; and in the third, due to wealth. (T)

And since Hindah was sane and an adult, and the marriage took place with her permission, then in reality, it was Hindah herself performing her own marriage, as guardianship (Wilayah) over an adult ceases, and the act of an agent (wakil) is the act of the principal (muwakkil), especially in marriage where the agent is merely a messenger and spokesperson. It is clear from the statement of the question that Zaid, Hindah's guardian, was unaware at that time of Amr being a Rafidi. Amr deceived him through fraud, and he agreed to the marriage thinking him to be Sunni. The result of this situation is that the woman married someone who is not a compatible match (ghayr kufu), and the guardian was not informed before the marriage of his being incompatible and a Rafidi. In such a case, the apparent

narration (Zahir al-Riwayah) is that both the woman and her guardian have the right to have this marriage annulled. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic	Urdu Translation
She married him on the basis that he is a Sunni, but he turned out to be otherwise; she has the choice. So let this be remembered. Ends, summarized.	The woman married him because he was a Sunni, but found the opposite, so she has the right to annul. Keep this preserved. Ends, summarized. (T)

1. Ghunyat al-Mustamli, Section on Imamate, Sohail Academy Lahore, p. 512.
2. Durr al-Mukhtar, Book of Divorce, Chapter on the Impotent and others, Matba' Mujtabai Delhi, 1/255.
3. Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Impotent and others, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/213.
4. Durr al-Mukhtar, Book of Divorce, Chapter on the Impotent and others, Matba' Mujtabai Delhi, 1/255.

फतावा रज़विया, खंड 11

अल्लामा इब्राहिम हलबी 'ग़ुनिया' में फरमाते हैं:

अरबी

नवाचारी (मुबत्तदी) विश्वास के मामले में पापी (फ़ासिक़) है, और यह कर्म के मामले में पाप से अधिक बुरा है। क्योंकि कर्म में पापी व्यक्ति अपने पाप को स्वीकार करता है, इसलिए वह डरता है और क्षमा मांगता है, इसके विपरीत नवाचारी ऐसा नहीं करता। नवाचारी से तात्पर्य वह व्यक्ति है जो 'अहल अल-सुन्नत वल-जमाअत' के विश्वास के विपरीत विश्वास रखता है।

उर्दू अनुवाद

नवाचारी व्यक्ति वैचारिक रूप से पापी है और यह कर्म के पाप से अधिक बुरा है क्योंकि कर्म में पापी अपने पाप का स्वीकार करता है इसलिए वह डरता है और क्षमा मांगता है, नवाचारी के विपरीत। और नवाचारी से मुराद वह व्यक्ति है जो अहल-ए-सुन्नत व जमाअत के अक़ीदे के खिलाफ अक़ीदा बनाए। (त)

दुर्रे मुख्तार के तहतावी हाशिए में इस कथन के तहत "उसने उससे इस शर्त पर निकाह किया कि वह स्वतंत्र, सुन्नी, या महर और भरण-पोषण में सक्षम है, लेकिन इसके विपरीत पाया गया" (जब निकाह करने वाले ने कहा कि मैंने स्वतंत्र, सुन्नी और महर व नफ़क़ा देने पर सक्षम समझ कर निकाह किया है, तो बाद में इसके विपरीत प्रकट हुआ - त) कहा गया है:

अरबी

पहली स्थिति में गुलामी के कारण, दूसरी में धर्म के कारण और तीसरी में धन के कारण अनुकूलता (कफ़ा'अत) की कमी के कारण।

उर्दू अनुवाद

पहली सूरत (आज़ाद) में गुलामी की वजह से, दूसरी में दीन की वजह से, और तीसरी में माल की वजह से कफ़ू न हुई। (त)

और चूंकि हिंदा समझदार और बालिग थी और निकाह उसकी अनुमति से हुआ था, तो वास्तव में वह हिंदा का अपना निकाह करना ही था क्योंकि बालिग होने पर संरक्षण (विलायत) समाप्त हो जाता है और वकील का कार्य मुवक्किल का कार्य होता है, विशेष रूप से निकाह में जहाँ वकील केवल एक दूत और प्रवक्ता होता है। प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है कि ज़ैद, जो हिंदा का संरक्षक (वली) था, उसे उस समय तक अम्र के राफ़िज़ी होने का पता नहीं था। अम्र ने धोखे से उसे भ्रम में रखा और वह उसे सुन्नी समझकर निकाह के लिए सहमत हो गया। इस स्थिति का परिणाम यह निकला कि महिला ने एक ऐसे व्यक्ति से निकाह किया जो अनुकूल मैच (गैर-कफ़ू) नहीं है, और संरक्षक को निकाह से पहले

उसके गैर-कफ़ू और राफ़िज़ी होने की जानकारी नहीं थी। ऐसी स्थिति में ज़ाहिर अल-रिवायत तो यह है कि महिला और उसके संरक्षक दोनों को इस निकाह को रद्द कराने का अधिकार है। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
उसने उससे इस आधार पर निकाह किया कि वह सुन्नी है, लेकिन वह इसके विपरीत निकला; उसे विकल्प है। अतः इसे याद रखा जाए। समाप्त, संक्षिप्त।	औरत ने सुन्नी होने की वजह से निकाह किया और इसके खिलाफ पाया तो उसे फ़स्ख़ (रद्द करने) का इख्तियार है, इसे महफ़ूज़ कर लो। इन्तहा मुलख़्ख़सन (त)

---

1. ग़ुन्नतुल मुस्तमली, इमामत का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 512।
2. दुर्रे मुख्तार, निकाह की किताब, नपुंसक और अन्य का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/255।
3. हाशियत अत-तहतावी अल दुर्रुल मुख्तार, नपुंसक और अन्य का अध्याय, दारुल मारिफा बेरूत, 2/213।
4. दुर्रे मुख्तार, निकाह की किताब, नपुंसक और अन्य का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/255।

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

علامہ ابراہیم حلبی غنیہ میں فرماتے ہیں :

عربی متن	**اردو ترجمہ**
المبتدع فاسق من حیث الاعتقاد و هو اشد من الفسق من حیث العمل لان الفاسق من حیث العمل یعترف بأنه فاسق و یخاف و یستغفر بخلاف المبتدع و المراد بالمبتدع من یعتقد شیئا علی خلاف ما یعتقده اهل السنة و الجماعة۔	بدعتی شخص اعتقادی لحاظ سے فاسق ہے اور یہ عملِ فسق سے زیادہ برا ہے کیونکہ عملی فاسق اپنے گناہ کا اعتراف کرتا ہے اس لئے وہ ڈرتا ہے اور استغفار کرتا ہے بخلاف بدعتی کے، اور بدعتی سے مراد وہ شخص ہے جو اہلسنت وجماعت کے اعتقاد کے خلاف اعتقاد بنائے۔ (ت)

طحطاوی حاشیہ در مختار میں زیرِ قول شرح تزوجته علی انه حراوسنی او قادر علی المهر و النفقة فبان بخلافه (جب نکاح دینے والا کہے میں نے آزاد ، سنی اور مہر ونفقہ دینے پر قادر سمجھ کر نکاح کیا ہے تو بعد کو اس کے خلاف ظاہر ہوا ۔ت) فرمایا :

عربی متن	**اردو ترجمہ**
لفقد الكفاءة بالرق في الاول وفي الدين في الثاني وفی المال في الثالث۔	پہلی صورت (آزاد) میں غلامی کی وجہ سے ، دوسری میں دین کی وجہ سے ، اور تیسری میں مال کی وجہ سے کفو نہ ہوئی، (ت)

اور جبکہ ہندہ عاقلہ بالغہ تھی اور نکاح اس کے اذن سے واقع ہوا تو حقیقۃً وہ ہندہ کا خود اپنا نکاح کرنا تھا کہ بالغہ پر سے ولایت منقطع اور فعلِ وکیل فعلِ موکل ہے خصوصاً نکاح میں کہ یہاں تو

وکیل سفیر و معبر محض ہوتا ہے اور تقریر سوال سے ظاہر ہے کہ زید ولی ہندہ کو اس وقت تک عمرو کا رافضی ہونا معلوم نہ تھا عمرو نے براہِ فریب اسے مغالطہ دیا اور وہ اسے سنی سمجھ کر نکاح پر راضی ہوا تو حاصل اس صورت کا یہ ٹھہرا کہ عورت نے اپنا نکاح غیر کفو سے کیا اور ولی کو پیشِ از نکاح اس کے غیر کفو و رافضی ہونے پر اطلاع نہ تھی، ایسی صورت میں ظاہر الروایۃ تو یہ ہے کہ عورت اور اس کے ولی دونوں کو اس نکاح کے فسخ کرانے کا اختیار ہے ، درمختار میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
تزوجته علی انه سنی فبان بخلافه کان لها الخیار فلیحفظ انتہی ملخصاً۔	عورت نے سنی ہونے کی وجہ سے نکاح کیا اور اس کے خلاف پایا تو اسے فسخ کا اختیار ہے اسے محفوظ کرلو انتہی ملخصاً (ت)

---

1 غنیۃ المستملی فصل فی الامامۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱۲ 2 درمختار کتاب الطلاق باب العنین وغیرہ مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۵/۱ 3 حاشیہ الطحطاوی علی الدر المختار باب العنین وغیرہ دارالمعرفۃ بیروت ۲۱۳/۲ 4 درمختار کتاب الطلاق باب العنین وغیرہ مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۵/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

In it, it is stated:

[Arabic Text]: If the guardians made a condition of compatibility (Kufu) or were informed of it at the time of the contract, and they performed the marriage based on that, but then it became clear that he is not compatible, then they have the option [to annul]. (From Al-Walawalijiyyah, let it be preserved[1]). [Urdu Translation]: If the guardians performed a marriage on the condition of compatibility or were told at the time of marriage that the person is compatible, and they performed the marriage on that basis, then it appeared that he is not so, meaning he is incompatible, then the guardians have the right to annul. (From Walawalijiyya, keep this noted). (T)

But based on the correct and fatwa-giving narration, the marriage did not take place at all. In Fatawa Khairiyyah, it is stated:

[Arabic Text]: He was asked about a mature virgin whose brother married her to an incompatible person with her permission. He answered: His marrying her off with her permission is like her marrying herself. This is the case of one who marries an incompatible person without the consent of her guardians. Many have given a fatwa on its non-validity at all. This is the narration of Al-Hasan from Abu Hanifa. In Al-Mi'raj, attributed to Qadi Khan and others, it says: The chosen opinion for fatwa in our time is the narration of Al-Hasan[2]. Summarized. [Urdu Translation]: In response to a question about a mature virgin whose brother married her to an incompatible person where the girl had given permission, it was stated: marriage with the girl's permission is like her marrying herself. This issue is about a girl marrying someone incompatible without the consent of her guardians. Many jurists gave a fatwa that this marriage is fundamentally not valid. This is the narration of Imam Hasan from Imam Abu Hanifa. In Al-Mi'raj, attributing it to Qazi Khan etc., it is said that in our era, the chosen opinion for fatwa is what Imam Hasan narrated. Summarized. (T)

In Durr al-Mukhtar it is:

[Arabic Text]: The fatwa is given for its fundamental impermissibility in case of incompatibility, and that is the chosen opinion for fatwa due to the corruption of the times. So a thrice-divorced woman who marries an incompatible person without the consent of her guardian after his knowledge of him is not lawful [for the first husband]. So let it be preserved[3]. [Urdu Translation]: Fatwa will be given for its total invalidity in non-compatibility. This is the chosen opinion for fatwa due to the

corruption of the times. Therefore, if a thrice-divorced woman married someone incompatible without the guardian's consent, she will not become lawful for the first husband, provided the guardian knows about the second husband's incompatibility and was not pleased with this second marriage. Keep this noted. (T)

Footnotes: [1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Compatibility (Al-Kafa’ah), Mujtabai Press, Delhi, 1/194 [2] Fatawa Khairiyyah, Chapter of Guardians and Compatible matches (Al-Awliya wa al-Akfa’), Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/25 [3] Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian (Al-Wali), Mujtabai Press, Delhi, 1/191

फ़तावा रज़विया खंड 11

इसमें है:

[अरबी पाठ]: यदि अभिभावकों (वलियों) ने समानता (कुफ़्फ़ु की शर्त पर निकाह किया या निकाह के समय उन्हें इसकी सूचना दी गई और उन्होंने उसी आधार पर निकाह कर दिया, फिर पता चला कि वह वैसा नहीं है अर्थात् वह असंगत (गैर-कुफ़्फ़ु है, तो उन्हें निकाह रद्द करने का अधिकार है। (अल-वलवालजिया से, इसे याद कर लें[1])। उर्दू अनुवाद: यदि अभिभावकों ने समानता की शर्त पर निकाह किया या निकाह के समय उन्हें समानता की सूचना दी गई, तो उस आधार पर उन्होंने निकाह कर दिया। फिर पता चला कि वह वैसा नहीं है अर्थात् वह असंगत है, तो अभिभावकों को निकाह रद्द करने का अधिकार है। (वलवालजिया से, इसे याद कर लें)। (त)

लेकिन सही और फ़तवा देने योग्य रिवायत के अनुसार निकाह मूल रूप से हुआ ही नहीं। फ़तावा खैरिया में है:

[अरबी पाठ]: एक वयस्क कुंवारी लड़की के बारे में पूछा गया जिसका निकाह उसके भाई ने उसकी अनुमति से एक असंगत व्यक्ति से कर दिया। उत्तर मिला: उसकी अनुमति से किया गया निकाह वैसा ही है जैसे उसने स्वयं किया हो। यह मसला उस लड़की का है जिसने अभिभावकों की सहमति के बिना असंगत से निकाह किया। कई विद्वानों ने इसके मूल रूप से न होने का फ़तवा दिया है। यह इमाम अबू हनीफा से इमाम हसन की रिवायत है। मेराज में क़ाज़ी खान आदि के हवाले से कहा गया कि हमारे समय में फ़तवे के लिए इमाम हसन की रिवायत ही मान्य है[2]। संक्षेप में। उर्दू अनुवाद: एक वयस्क कुंवारी लड़की का उसके भाई ने असंगत में निकाह कर दिया जबकि लड़की ने अनुमति दी हो, से संबंधित प्रश्न के उत्तर में कहा गया कि लड़की की अनुमति से निकाह वैसे ही है जैसे लड़की ने स्वयं निकाह किया हो। यह मसला लड़की का स्वयं असंगत में अपने अभिभावकों की सहमति के बिना निकाह करने का है। बहुत से फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने इस निकाह के मूल रूप से संपन्न न होने का फ़तवा दिया है। और यह इमाम हसन की इमाम अबू हनीफा से रिवायत है। तो मेराज में इसे क़ाज़ी खान आदि की ओर उल्लेखित करते हुए कहा गया कि हमारे समय में फ़तवे के लिए यही मान्य (मुख़्तार) है जो इमाम हसन ने रिवायत की है। संक्षेप में। (त)

दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी पाठ]: असंगत (गैर-कुफ़्फ़ु में निकाह के मूलतः वैध न होने का फ़तवा दिया जाएगा और समय के बिगाड़ के कारण फ़तवे के लिए यही मान्य है। अतः तीन बार तलाकशुदा (मुतल्लका सलासा) महिला ने यदि अभिभावक की सहमति के बिना असंगत से निकाह कर लिया, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी, जबकि अभिभावक को दूसरे पति के असंगत होने का ज्ञान हो। अतः इसे याद कर लें[3]।

पाद-टिप्पणियाँ: [1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-कफ़ाअत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/194 [2] फ़तावा खैरिया, बाब अल-औलिया वल-अकफ़ा, दारुल-मारिफ़ा, बेरूत, 1/25 [3] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191

فتاوی رضویہ جلد یاز دہم

اسی میں ہے :

اذا شرطوا الکفاءۃ او اخبرھم بھا وقت العقد فزوجھا علی ذلك ثم ظھر انه غیر کفو کان لھم الخیار ولولوالجیة فلیحفظ [1]۔ | اگر کفو ہونے کی شرط پر ولیوں نے نکاح دیا یا نکاح کے وقت انہیں کفو کی خبر دی گئی تو اس بنا پر انہوں نے نکاح کردیا، پھر ظاہر ہوا کہ وہ ایسا نہیں یعنی غیر کفو ہے تو اولیاء کو فسخ کا اختیار ہے، ولولاجیہ، اسے محفوظ کرلو۔ (ت)

مگر روایت صحیحہ و مفتی بہا پر نکاح اصلانہ ہوا، فتاوی خیریہ میں ہے :

سئل في بکر بالغة زوجھا اخوھا من غیر کفو باذنھا اجاب تزویجه لھا باذنھا کتزوجھا بنفسھا وھی مسئلة من نکحت غیر کفو بلارضا اولیائھا افتی کثیر بعدم انعقادہ اصلا وھی روایة الحسن عن ابی حنیفة ففی المعراج معزیاً الی قاضی خاں وغیرہ والمختار للفتوی في زماننا روایة الحسن [2] اھ ملخصا ۔ | باکرہ بالغہ کا اس کے بھائی نے غیر کفو میں نکاح کر دیا جبکہ لڑکی نے اجازت دی ہو، سے متعلق سوال کے جواب میں فرمایا کہ لڑکی کی اجازت سے نکاح ایسے ہے جیسے لڑکی نے خود نکاح کیا ہو، یہ مسئلہ لڑکی کا خود غیر کفو میں اپنے اولیاء کی رضا کے بغیر نکاح کرنے کا ہے، بہت فقہاء نے اس نکاح کے اصلا منعقد نہ ہونے پر فتوی دیا ہے، اور یہ امام حسن کی امام ابوحنیفہ سے روایت ہے، تو معراج میں اس کو قاضی خاں وغیرہ کی طرف سے منسوب کر کے کہا کہ ہمارے زمانے میں فتوی کے لئے یہی مختار ہے جو امام حسن نے روایت کی ہے اھ ملخصا (ت)

در مختار میں ہے :

ویفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتوی لفساد الزمان فلا تحل مطلقۃ ثلاثا نکحت غیر کفو بلا رضی ولی بعد معرفتہ ایاہ فلیحفظ [3]۔ | غیر کفو میں اصلا جائز نہ ہونے کا فتوی دیا جائے گا، فساد زمانہ کی وجہ سے فتوی کے لئے یہی مختار ہے، لہٰذا مطلقہ ثلاثہ نے اگر ولی کی رضا کے بغیر غیر کفو میں نکاح کر لیا تو شوہر اول کے لئے حلال نہ ہوگی جبکہ ولی کو شوہر ثانی کے غیر کفو ہونے کا علم ہو اور وہ اس نکاح ثانی پر راضی نہ ہوا ہو، اس کو محفوظ کرلو۔ (ت)

1 در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۴ 2 فتاوی خیریہ باب الاولیاء والاکفاء دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۲۵ 3 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱

Fatawa Rizwia, Volume 11

In Radd al-Muhtar it is stated:

[Arabic]: "His statement 'without consent' is a negation applied to the restricted term, which is the consent of the guardian (Wali). The restriction is 'after his knowledge of it'. Thus, it holds true by the negation of consent after knowledge, after both, and with the presence of consent despite lack of knowledge. In these three scenarios, it is not permissible. It is only permissible in the fourth scenario, which is the consent of the guardian for a non-match (Ghayr Kufu) while knowing him to be such." (End of Al-Hashiya, H)

[Urdu Explanation]: The author's phrase "without consent" negates the restricted condition, which is the guardian's consent. The restriction is "while the guardian knows that the second husband is not a match." Therefore, its application will cover all these cases: there is no consent after knowing he is not a match; or both knowledge of non-match and consent are absent; or there is consent but no knowledge of being a non-match. In these three cases, it (the marriage) will not be valid. Only a fourth case will be valid: that there is consent despite knowing he is not a match. (End of quotation, T)

In the inquired case, the ruling is that the marriage of Amr and Hind was not contracted at all. He is not her husband, and she is not his wife. It is not permissible to send her to him or for her to go. He has no authority or claim over her. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Problem 233: From Deornia, submitted by Inayat Hussain Sahib, 8 Shawwal 1310 AH.

What do the scholars of religion say in this case: A person married his niece to his brother-in-law. The state of this person is that he is involved in all prohibited acts such as drinking alcohol, gambling, adultery, and stealing. He also suffers from diseases like gonorrhea and syphilis, etc. Besides that, he is not a match (Kufu) and neglects prayers. His mother-in-law and others are among the righteous, and they feel great embarrassment, humiliation, and shame from this association. Is this marriage valid or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: The questioner clarifies that this girl was a minor and an orphan at the time of marriage and had no brother. The person the uncle married her to had such a bad conduct and character even before the marriage. If this statement is factual, then the aforementioned marriage did not take place at all.

[Arabic]: In al-Durr al-Mukhtar: "If the person performing the marriage is other than those two (father/grandfather)" | [Urdu]: If the person performing the marriage is someone other than the father or grandfather, then to a non-match...

Footnote 1: Radd al-Muhtar, Chapter of the Wali, Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

रद्द-उल-मुहतार में है:

[अरबी]: "उसका कहना 'बिना सहमति के एक सीमित वस्तु का निषेध है, जो अभिभावक (वली) की सहमति है। और उसका प्रतिबंध यह है कि 'जब अभिभावक को पता हो कि दूसरा पति बराबरी का (कुफ़ू) नहीं है'। तो इसके अर्थ ये सभी मामले होंगे: बराबरी का न होने का ज्ञान होने के बाद सहमति न होना, या बराबरी का न होना और सहमति दोनों न होना, या सहमति होना लेकिन बराबरी का न होने का ज्ञान न होना। इन तीनों मामलों में यह वैध नहीं होगा। यह केवल चौथे मामले में वैध होगा, जो कि अभिभावक की बराबरी के न होने के बावजूद सहमति है, जबकि वह उसे वैसा ही जानता हो।" (अल-हाशिया का अंत, ह)

[उर्दू व्याख्या]: लेखक का कहना "बगैर रज़ा" यह मुक़य्यद (सीमित) की नफ़ी (निषेध) है और वह वली की रज़ा है और उसकी क़ैद (प्रतिबंध) "जबकि वली को शौहर-ए-सानी के ग़ैर-कुफ़ू (बराबरी का न होना) होने का इल्म हो" है। तो इसके मिस्दाक़ (अर्थ) ये तमाम सूरतें होंगी: ग़ैर-कुफ़ू होने के इल्म के बाद रज़ा न हो, या इल्म-ए-ग़ैर-कुफ़ू और रज़ा दोनों न हों, या रज़ा हो मगर ग़ैर-कुफ़ू का इल्म न हो। तो इन तीनों सूरतों में वह हलाल (वैध) न होगी। सिर्फ एक चौथी सूरत हलाल होगी कि ग़ैर-कुफ़ू होने के इल्म होने के बावजूद रज़ा हो। (अल-हाशिया का अंत, त)

पूछी गई स्थिति में निर्णय यह है कि अम्र और हिंद का निकाह बिल्कुल भी संपन्न नहीं हुआ। न वह उसका पति है और न वह उसकी पत्नी। उसे उसके पास भेजना या जाना जायज़ नहीं है। उसे उस पर किसी प्रकार का अधिकार या दावा नहीं है। और अल्लाह, जो महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 233: देवरनिया से, इनायत हुसैन साहब द्वारा प्रस्तुत, 8 शव्वाल 1310 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस स्थिति में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति ने अपनी भतीजी का निकाह अपने साले के साथ कर दिया। उस व्यक्ति की स्थिति यह है कि वह शराब पीना, जुआ खेलना, व्यभिचार और चोरी जैसे सभी वर्जित कार्यों में लिप्त है। उसे सूजाक और आतिशक जैसी बीमारियाँ भी हैं। इसके अलावा, वह बराबरी का (कुफ़ू) भी नहीं है और नमाज़ छोड़ने वाला है। उसकी सास और अन्य लोग नेक लोगों में से हैं और उन्हें इस संबंध से अत्यधिक अपमान, ज़िल्लत और शर्म महसूस होती है। क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: प्रश्नकर्ता स्पष्ट करता है कि यह लड़की निकाह के समय नाबालिग और अनाथ थी और उसका कोई भाई भी नहीं था। चाचा ने जिससे निकाह किया वह निकाह से पहले भी ऐसे ही बुरे व्यवहार और आचरण वाला था। यदि यह बयान सच है, तो उक्त निकाह बिल्कुल भी नहीं हुआ।

[अरबी]: दुर-ए-मुख़्तार में: "यदि विवाह करने वाला उन दोनों (पिता/दादा) के अलावा कोई और हो" | [उर्दू]: अगर निकाह कर देने वाला बाप-दादा का ग़ैर हो तो ग़ैर-कुफ़ू से...

पाद-टिप्पणी 1: रद्द-उल-मुहतार, वली का अध्याय, इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/297. पृष्ठ 703 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

ردالمحتار میں ہے:

قولہ بلارضی نفی منصب علی المقید الذی ھو رضی الولی والقید الذی ھو بعد معرفتہ ایاہ فیصدق بنفی الرضی بعد المعرفۃ وبعدھما وبوجود الرضی مع عدم المعرفۃ ففی ھذہ الصور الثلثۃ لاتحل وانما تحل فی الصورۃ الرابعۃ وھی رضی الولی بغیر الکفو مع علمہ بانہ کذلک اھ حـ

ماتن کا قول "بغیر رضا" یہ مقید کی نفی ہے اور وہ ولی کی رضا ہے اور اس کی قید "جبکہ ولی کو شوہر ثانی کے غیر کفو ہونے کا علم ہو" ہے تو اس کا مصداق یہ تمام صورتیں ہوں گی ، غیر کفو ہونے کے علم کے بعد رضا نہ ہو ، یا علم غیر کفو اور رضا دونوں نہ ہوں ، یا رضا ہو مگر غیر کفو کا علم نہ ہو ، تو ان تینوں صورتوں میں وہ حلال نہ ہوگی ، صرف ایک چوتھی صورت حلال ہوگی کہ غیر کفو ہونے کے علم ہونے کے باوجود رضا ہو ، اھ ح (ت)

پس صورت مستفسرہ میں حکم یہ ہے کہ عمر و وہندہ کا نکاح اصلا منعقد نہ ہوا، نہ وہ اس کا شوہر ہے نہ یہ اس کی زوجہ، نہ اسے اس کے یہاں بھیجنا یا جانا روا، نہ اس کو اس پر کسی قسم کا اختیار یا دعوٰی ، واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۳: از دیور نیا مسئولہ عنایت حسین صاحب ۸ شوال ۱۳۱۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ ایک شخص نے اپنی بھتیجی کا نکاح اپنے سالے کے ساتھ میں کر دیا اور اس کی کیفیت یہ ہے کہ وہ شخص جملہ منہیات میں مبتلا ہے جیسے شراب خوری اور جوا بازی اور زنا کاری اور چوری کرتا ہے تمام، اور عارضہ سوزاک اور آتشک وغیرہ کا موجود ہے، اور علاوہ اس کے غیر کفو بھی ہے، اور تارک الصلوۃ ہے، اور خوش

دامن وغیرہ اس کی صالحین میں سے ہیں اور ان کو اس تقریب سے نہایت خفت اور ذلت اور عار معلوم ہوتی ہے، آیا یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا تو جروا۔

الجواب: سائل مظہر کہ یہ لڑکی وقت نکاح نابالغہ و یتیمہ تھی اور اس کا کوئی بھائی بھی نہیں، چچا نے جس سے نکاح کیا وہ پیش از نکاح بھی ایسا ہی بد رویہ و بد اطوار تھا، اگر یہ بیان واقعی ہے تو نکاح مذکور اصلا نہ ہوا،

فی الدر المختار ان کان المزوج غیر هما | اگر نکاح کر دینے والا باپ دادا کا غیر ہو تو غیر کفو سے

---

1 ردالمحتار باب الولی احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۹۷ Page 703 of 739

Fatawa Ridawiyya Volume 11

[Box 1] Arabic: Anyone other than the father or grandfather, the marriage of a minor without an equal partner (Kufu) is not valid at all. What is mentioned in Sadr al-Shariah about it being valid with the father/grandfather having the right of annulment is merely an error. — (Summary) Urdu: The marriage will not be valid at all. And what is written in Sadr al-Shariah that the marriage is valid and the father and grandfather have the power to annul it, this is just a misunderstanding. (T)

In the same source: [Box 2] Arabic: Competence (Kafaa'at) is considered in both Arabs and non-Arabs in terms of religiosity, i.e., piety. Thus, an immoral person (fasiq) is not a suitable match for a righteous woman or the daughter of a righteous man, whether the immorality is public or private, according to the apparent narration of the school. — An-Nahr, finished. And Allah Almighty knows best. Urdu: In Arabs and non-Arabs, the reliability of religion, i.e., piety, is considered in compatibility. Piety refers to God-fearingness. Therefore, a sinner cannot be a match for a virtuous woman or the daughter of a virtuous man. Whether the sin is public or private, this is the manifest narration. — Nahr concludes. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 434: What do the scholars of religion say in this matter that a girl named Hindah, of Sayyid lineage, was married by her uncle at the age of eleven without informing her father during his absence to Zaid Pathan. Has this marriage become valid or not? Explain and be rewarded. The Answer A Pathan cannot be a match (Kufu) for a Sayyid's daughter. Therefore, this marriage which took place without the father's knowledge—regardless of whether Hindah was an adult at that time or a minor, and whether she consented to this marriage or was displeased—is absolutely and purely void. Even if her father were to validate it now, it cannot become correct. Intimacy between Zaid and Hindah is illicit. If Hindah is an adult now, she has the right; otherwise, her guardian has the right to marry her off to anyone they wish without needing a divorce (from Zaid). Zaid cannot interfere at all because, according to the preferred legal opinion, he is a complete stranger.

[Box 3] Arabic: In Radd al-Muhtar from Kafi of Imam Hakim al-Shaheed: Quraish are equals to one another, and Arabs are equals to one another, but they are not equals to Quraish. And one who has two or three ancestors among the mawali (non-Arab converts) in... Urdu: It is in Radd al-Muhtar that in Kafi by Imam Hakim al-Shaheed it is stated: Quraish are matches for each other, and Arabs are matches for each other,

but they are not matches for Quraish. In Islam, if someone has two fathers, i.e., father and grandfather, or three 3...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 2 Durr al-Mukhtar, Chapter of Compatibility, Mujtabai Press, Delhi, 1/195 Page 704 of 739

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

[बॉक्स 1] अरबी: पिता या दादा के अलावा किसी अन्य द्वारा, बिना कफ़ू (समान साथी) के नाबालिग का निकाह बिल्कुल मान्य नहीं है। सद्र अल-शरिया में जो उल्लेख है कि निकाह सही है और पिता/दादा के पास इसे रद्द करने का अधिकार है, वह केवल एक भ्रम है। — (संक्षेप) उर्दू: निकाह बिल्कुल नहीं होगा। और जो सद्र अल-शरिया में है कि निकाह सही है और बाप-दादा को इसके रद्द करने का अधिकार है, यह सिर्फ़ एक भ्रम है। (त)

इसी में है: [बॉक्स 2] अरबी: अरब और गैर-अरब दोनों में धार्मिकता यानी परहेज़गारी के मामले में कफ़ाअत (योग्यता) मानी जाती है। अतः एक पापी (फ़ासिक़) किसी नेक महिला या नेक व्यक्ति की बेटी के लिए कफ़ू नहीं हो सकता, चाहे पाप सार्वजनिक हो या निजी, यह स्पष्ट वर्णन के अनुसार है। — अन-नहर, समाप्त। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। उर्दू: अरब और गैर-अरब में कफ़ाअत दीनداری यानी परहेज़गारी की विश्वसनीय है, दीयानत से मुराद तक़वा है, लिहाज़ा कोई फ़ासिक़ किसी सालेहा (नेक औरत) या नेक आदमी की बेटी के लिए कफ़ू नहीं बन सकता, फ़िस्क़ ऐलानिया हो या ग़ैर ऐलानिया, यह ज़ाहिरुर-रिवायत है, — नहर इंतहा, वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला 434: दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा, जो एक सैय्यदज़ादी है, का निकाह उसके चाचा ने ग्यारह वर्ष की आयु में पिता को सूचित किए बिना उनकी अनुपस्थिति में ज़ैद पठान से कर दिया। क्या यह निकाह जायज़ हुआ या नहीं? बयान करें और पुण्य पाएँ। उत्तर पठान सैय्यदज़ादी का कफ़ू (समान जोड़ा) नहीं हो सकता। इसलिए, यह निकाह जो पिता की जानकारी के बिना हुआ—चाहे हिन्दा उस समय बालिग़ हो या नाबालिग़, चाहे वह इस निकाह पर राज़ी हो या नाराज़—पूरी तरह से बातिल (अमान्य) है। यहाँ तक कि अब अगर उसका पिता भी इसे जायज़ रखे, तो भी यह सही नहीं हो सकता। ज़ैद और हिन्दा का आपसी संबंध अवैध है। अगर हिन्दा अब बालिग़ है, तो उसे स्वयं अधिकार है; अन्यथा उसके वली (संरक्षक) को अधिकार है कि बिना तलाक़ लिए जिससे चाहे उसका निकाह कर दे। ज़ैद बिल्कुल भी बाधा नहीं डाल सकता क्योंकि मुफ़्ती-बेह (पसंदीदा राय) के अनुसार वह पूरी तरह से एक अजनबी है।

[बॉक्स 3] अरबी: रद्द अल-मुहतार में इमाम हाकिम अल-शहीद की 'काफ़ी' से उद्धृत है: क़ुरैश एक-दूसरे के कफ़ू हैं, और अरब एक-दूसरे के कफ़ू हैं लेकिन वे क़ुरैश के कफ़ू नहीं हैं। और जिसके मवाली (ग़ैर-अरब धर्मांतरित) में दो या तीन बाप यानी पिता और दादा हों... उर्दू: रद्द अल-मुहतार में है

कि इमाम हाकिम शहीद की 'काफ़ी' में है कि: क़ुरैश एक दूसरे के लिए कफ़ू हैं, और अरब एक दूसरे के लिए कफ़ू हैं मगर क़ुरैश के लिए कफ़ू नहीं, इस्लाम में अगर किसी के दो बाप यानी बाप-दादा, या तीन ३...

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मज्बताई प्रेस, दिल्ली, 1/192 2 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल कफ़ाअत, मज्बताई प्रेस, दिल्ली, 1/195 पृष्ठ 739 का 704

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

Arabic [Box 1]: ای غیر الاب وابیه لایصح النکاح من غیر الکفو اصلا و مافی صدر الشریعة صح ولهما فسخه وهم — (ملخصاً) Urdu: اصلا نکاح نہ ہوگا۔ اور جو صدر الشریعہ میں ہے کہ نکاح صحیح اور باپ دادا کو اس کے فسخ کا اختیار ہے یہ صرف وہم ہے۔ (ت)

اسی میں ہے: Arabic [Box 2]: وتعتبر فی العرب والعجم دیانة ای تقوی فلیس فاسق کفوا لصالحة او فاسقة بنت صالح معلنا کان اولاعلی الظاهر نهر—انتهی—واللہ تعالٰی اعلم۔ Urdu: عرب و عجم میں کفاءت دینداری یعنی پرہیزگاری کی معتبر ہے، دیانت سے مراد تقوی ہے، لہذا کوئی فاسق کسی صالحہ یا فاسقہ بنت صالح کے لئے کفو نہیں بن سکتا، فسق اعلانیہ ہو یا غیر اعلانیہ، یہ ظاہر الروایت ہے، نہر انتہی، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۳۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ سید زادی کا نکاح اس کے چچا نے گیارہ برس کی عمر میں بے اطلاع باپ کے ان کی غیبت میں زید پٹھان سے کر دیا، آیا یہ نکاح جائز ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب پٹھان سید زادی کا کفو نہیں ہو سکتا، تو یہ نکاح کہ بے اطلاع پدر تھا، عام از انکہ ہندہ اس وقت بالغہ ہو خواہ نابالغہ اس نکاح پر راضی تھی خواہ ناراض مطلقاً محض باطل واقع ہوا، یہاں تک کہ اب اگر اس کا باپ بھی جائز رکھے تو درست نہیں ہو سکتا، زید و ہندہ کو باہم قربت ناروا، اور ہندہ اب اگر بالغہ ہو تو اسے ورنہ اس کے ولی کو اختیار ہے کہ بے طلاق لئے جس سے چاہے نکاح کر دے، زید ہر گز مزاحم نہیں ہو سکتا کہ مذہب مفتی بہ پر وہ محض اجنبی ہے،

[Box 3] Arabic: فی ردالمحتار عن کافی الامام الحاکم الشهید، قریش بعضها اکفاء لبعض والعرب بعضهم اکفاء لبعض ولیسوا باکفاء لقریش ومن کان له من الموالی ابوان او ثلثة فی

Urdu: ردالمحتار میں ہے کہ امام حاکم شہید کی کافی میں ہے کہ قریش ایک دوسرے کے لئے کفو ہیں، اور عرب ایک دوسرے کے لئے کفو ہیں مگر قریش کے لئے کفو نہیں اسلام میں اگر کسی کے دو باپ یعنی باپ دادا، یا تین ۳

1 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۲ 2 درمختار باب الکفائۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۵

Fatawa-e-Razvia Volume Eleven

[Boxed Text] Arabic: الاسلام فبعضهم اكفاء لبعض وليسو ا باكفاء للعرب[1] اهوفي الدرالمختار يفتي في غير الكفوبعدم جوازه اصلا وهو المختار للفتوى لفساد الزمان فلا تحل مطلقة ثلث نكحت غير كفو بلا رضى ولى بعد معرفته اياه فليحفظ [2] اهوفى ردالمحتار عن البحر الرائق اذاكان لها ولى لم يرض به قبل العقد فلا يفيد الرضى بعده [3] اهواللہ تعالٰی اعلم۔

Urdu Translation of Boxed Section: If the father had been free, they will be equals (kufu) of each other but will not be equals of Arabs. And in Durr al-Mukhtar, it is stated that a marriage with a non-equal without the guardian's (wali's) consent is not valid at all, and the fatwa is based on this due to the corruption of times. Therefore, if a thrice-divorced woman marries a non-equal despite the guardian's lack of consent while the guardian knows the second husband is a non-equal, she will not become lawful for the first husband. Keep this in mind. And it is quoted in Radd al-Muhtar from Bahr that when a girl's guardian is not satisfied before the marriage, subsequent permission will not be effective. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 435: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid deceived Hindah, a Sayyid woman, by hiding his true lineage, his and his father's well-known names, and the fact that his mother was an illegitimate slave-girl. Through writing and speech, he presented himself as a Shaykh or Sayyid and as the owner of two and a half 'biswa' property. He married Hindah and designated this fictitious property as her dower (mahr). After valid seclusion (khalwat-e-sahiha), Hindah discovered that Zaid had neither that name, nor that lineage, nor that land; rather, he was born from an illegitimate slave-girl. Now Hindah is dissatisfied and wants an annulment (faskh) of the marriage. In the questioned scenario, can she annul the marriage herself or file a claim for its annulment? Inform us, and you shall be rewarded.

The Answer: In the questioned scenario, if Hindah is a minor and this marriage was not performed by her father or grandfather, or if they did but were negligent in this regard—meaning they had previously married off other daughters or granddaughters to non-equals, lowly people, or the needy—then this marriage was not valid in the first place. If there exists for Hindah anywhere, near or far, any male agnate guardian ('asba) who is sane, adult, free, and Muslim (for example, father, grandfather, brother, nephew, paternal uncle, or the paternal uncle of her father/grandfather, or any of their male progeny, whether full or half-blood, besides the

father/grandfather) and this marriage took place without his knowledge, or if he was informed...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Kafa'ah (Equality), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/319. [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Matba Mujtabai, Delhi, 1/191. [3] Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

[बॉक्स वाला हिस्सा] अरबी: اهوفي [1] الاسلام فبعضهم اكفاء لبعض وليسو ا باكفاء للعرب الدرالمختار يفتي في غير الكفوبعدم جوازه اصلا وهو المختار للفتوى لفساد الزمان فلا تحل مطلقة ثلث نكحت غير كفو بلا رضى ولى بعد معرفته اياہ فليحفظ [2] اهوفى ردالمحتار عن البحر الرائق اذاكان لها ولى لم يرض به قبل العقد فلا يفيد الرضى بعدہ [3] اهواللہ تعالٰی اعلم۔

बॉक्स वाले हिस्से का उर्दू अनुवाद: यदि पिता आज़ाद रहे हों, तो वे एक-दूसरे के कुफ़ू होंगे लेकिन अरबों के कुफ़ू नहीं होंगे। और दुर्रे मुख्तार में है कि वली (संरक्षक) की रज़ा के बिना ग़ैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह मूल रूप से सही नहीं होगा और ज़माने के बिगाड़ के आधार पर इसी पर फ़तवा है। अत; यदि तीन तलाक़ वाली महिला ने वली की असहमति के बावजूद ग़ैर-कुफ़ू में निकाह कर लिया, जबकि वली को दूसरे पति के ग़ैर-कुफ़ू होने का पता हो, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। इसे याद रखें। और रद्दुल मुहतार में 'बहर' से नक़ल है कि जब लड़की का वली निकाह से पहले राज़ी न हो, तो बाद की अनुमति कारगर नहीं होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ४३५: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने वलिया हिंदा को, जो एक सैय्यदज़ादी है, धोखा देकर अपनी क़ौम और अपना और अपने पिता का मशहूर नाम और अपनी माँ का ग़ैर-शरई दासी होना छिपाकर, लेखन और भाषण के ज़रिए खुद को शेख या सैय्यद और ढाई बिसवा ज़मीन का मालिक बताकर हिंदा से निकाह कर लिया और उस काल्पनिक ज़मीन को हिंदा का महर तय किया। ख़लवते सहीहा (एकांत मिलन) के बाद हिंदा को पता चला कि न ज़ैद का वह नाम है, न क़ौम, न ज़मीन, बल्कि वह एक ग़ैर-शरई दासी से पैदा हुआ है। अब हिंदा असंतुष्ट होकर निकाह तोड़ना (फ़स्ख़) चाहती है। क्या पूछी गई स्थिति में वह निकाह खुद रद्द कर सकती है या इसके रद्द करने का दावा कर सकती है? बयान करें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, यदि हिंदा नाबालिग है और यह निकाह पिता या दादा ने नहीं किया, या उन्होंने किया लेकिन इस बारे में उनकी ओर से लापरवाही बरती गई—यानी पहले भी किसी बेटी या पोती का निकाह ग़ैर-कुफ़ू, नीच जाति या ज़रूरतमंद से कर चुके हों—तो यह निकाह मूल रूप से सही नहीं हुआ। यदि हिंदा के लिए कहीं भी पास या दूर कोई पुरुष वली (अस्बा), समझदार, बालिग,

आज़ाद, मुसलमान जैसे पिता, दादा, भाई, भतीजा, सगा चाचा या पिता/दादा का चाचा या उनकी कोई पुरुष संतान (पिता/दादा के अलावा), चाहे वे सगे हों या सौतेले, मौजूद हैं और यह निकाह उसकी जानकारी के बिना हुआ या उसे पता था...

---

[1] रद्दुल मुहतार, बाबुल कफ़ाअत, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/319. [2] दुर्रे मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/191. [3] रद्दुल मुहतार, बाबुल वली, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/297. पेज 705 / 739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

[Boxed Text] الاسلام فبعضھم اکفاء لبعض ولیسو ا باکفاء للعرب[1] اھوفي الدرالمختار یفتي في غیر الکفوبعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتوی لفساد الزمان فلا تحل مطلقۃ ثلث نکحت غیر کفو بلا رضی ولی بعد معرفتہ ایاہ فلیحفظ [2] اھوفی ردالمحتار عن البحر الرائق اذاکان لھا ولی لم یرض بہ قبل العقد فلا یفید الرضی بعدہ [3] اھواللہ تعالٰی اعلم۔

باپ آزادی میں ہو گزرے ہوں وہ ایک دوسرے کے کفو ہوں گے لیکن عربوں کے کفو نہیں ہوں گے اھ، اور در مختار میں ہے کہ ولی کی رضا کے بغیر غیر کفو میں نکاح اصلا صحیح نہ ہوگا اور فسادِ زمانہ کی بنا پر اسی پر فتوی ہے، لہذا مطلقہ ثلاثہ نے اگر غیر کفو میں ولی کی عدم رضا کے باوجود نکاح کرلیا جبکہ ولی کو شوہر ثانی کے غیر کفو ہونے کا علم ہو تو وہ پہلے خاوند کے لئے حلال نہ ہوگی، اس کو محفوظ کرلو اھ، اور ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے کہ جب لڑکی کا ولی نکاح سے قبل راضی نہ ہو تو بعد کی اجازت کار آمد نہ ہوگی اھ، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۳۵: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ولیہ ہندہ کو کہ سید زادی ہے دھوکہ دے کر اپنی قوم اور اپنا اور اپنے باپ کا مشہور نام اور اپنی ماں کا کنیز غیر شرعی ہونا چھپا کر بذریعہ تحریر و تقریر اپنے آپ کو شیخ یا سید اور ڈھائی بسوہ حقیت کا مالک ظاہر کر کے ہندہ سے نکاح کر لیا اور اس ملک فرضی کو مہر ہندہ قرار دیا، بعد خلوتِ صحیحہ ہندہ کو معلوم ہوا کہ نہ زید کا وہ نام نہ قوم نہ زمین، بلکہ وہ کنیزک غیر شرعی سے پیدا ہوا ہے، اب ہندہ نارضامند ہو کر فسخِ نکاح چاہتی ہے، آیا صورت مستفسرہ میں نکاح کو خود فسخ یا اس کے فسخ کا دعوی کر سکتی ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر ہندہ نا بالغہ ہے اور یہ نکاح اب وجد نے نہ کیا یا انھیں نے کیا مگر اس بارہ میں اُن کی بے احتیاطی ہوئی تھی یعنی کبھی اور بھی کسی بیٹی پوتی کا غیر کفو دنی القوم یا محتاج سے نکاح کر چکے ہوں تو یہ نکاح اصلا صحیح نہ ہوا، اگر ہندہ کے لئے دور ونزدیک کہیں کوئی ولی مرد عصبہ عاقل بالغ حر مسلم مثلا باپ دادا بھائی بھتیجا اپنا چچا یا اپنے باپ دادا کا چچا یا ان میں کسی کی اولادِ ذکور عام ازاں اب وجد کے سوا یہ سب سگے ہوں یا سوتیلے موجود ہے اور یہ نکاح اس کے بے اطلاع ہوا یا مطلع تھا

---

[1] ردالمحتار باب الکفاءۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۱۹/۲ [2] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱ [3] ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۹۷/۲ Page 705 of 739

However, if he did not explicitly give permission for the marriage, even if he remained silent, even if he was present in the marriage assembly, or even if he explicitly expressed permission and consent, and even if he himself acted as the guardian (wali) of the marriage, but was unaware of Zaid's internal circumstances; then in all these cases, according to the reliable (mufta-bihi) opinion, that marriage is completely void and null, in fact, legally non-existent. Even if, after the marriage occurred and after becoming aware of Zaid's circumstances, the guardian of the girl explicitly says, "Even in such circumstances, I am satisfied with this marriage and I consider it permissible," it still amounts to nothing. What is legally void cannot become valid by anyone's consent. On this basis, there is no need for annulment (faskh), for when the marriage contract never truly took place, what is there to annul?

Arabic Text

In *al-Durr al-Mukhtar*, it is stated: A fatwa shall be given regarding the absolute impermissibility of marriage with a non-equal (ghair-kufu), and this is the chosen opinion due to the corruption of the times. Therefore, if a woman divorced three times marries a non-equal without the consent of her guardian despite his knowledge of it, she will not become lawful for her first husband. Let this be remembered. (End of quote). In *Radd al-Muhtar*, it says: It is not necessary for the guardian to explicitly express his non-consent; rather, his silence itself constitutes non-consent, as we have mentioned. Thus, for the validity of the contract, an explicit expression of consent is necessary. Based on this, if he remained silent beforehand and became satisfied after the marriage, it is of no use. Reflect on this. (End of quote). In it, it is also mentioned that in these cases

Urdu Translation / Explanation

In *al-Durr al-Mukhtar*, it is stated that regarding marriage with a non-equal (ghair-kufu), the fatwa is for its absolute impermissibility. This is the chosen opinion due to the corruption of the times. Therefore, if a woman divorced three times marries a non-equal without the consent of her guardian, after he has knowledge of it, she will not become lawful for her first husband. Let this be remembered. (End of quote). In *Radd al-Muhtar*, it says that it is not necessary for the guardian to explicitly express his non-consent; rather, his silence itself constitutes non-consent, as we have mentioned. Thus, for the validity of the contract, an explicit expression of consent is necessary. Based on this, if he remained silent beforehand and became satisfied after the marriage, it is of no use. Reflect on this. (End of quote). And in it, it is also mentioned that in these cases

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
there will be a lack of consent: if there is knowledge but no consent, or if there is no knowledge but there is consent, or if both knowledge of the non-equality and consent are absent. In these three cases, she will not be lawful for the first husband. She will only be lawful in the fourth case: that he has knowledge of the person being a non-equal and is satisfied with it. (End of quote).	there will be a lack of consent: if there is knowledge but no consent, or if there is no knowledge but there is consent, or if both knowledge of the non-equality and consent are absent. In these three cases, she will not be lawful for the first husband. She will only be lawful in one case: that he has knowledge of the person being a non-equal and is satisfied with it. (T)

1 *Al-Durr al-Mukhtar*, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191. 2 *Radd al-Muhtar*, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/297. 3 *Radd al-Muhtar*, Chapter on the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/297.

फ़तावा रज़विया खंड 11

मगर उसने स्पष्ट रूप से निकाह की अनुमति नहीं दी, भले ही वह चुप रहा हो, भले ही निकाह की मजलिस में मौजूद रहा हो, या स्पष्ट रूप से अनुमति और सहमति भी व्यक्त की हो, बल्कि खुद निकाह का संरक्षक (वली) भी बना हो, लेकिन वह ज़ैद की आंतरिक परिस्थितियों से अवगत नहीं था; तो इन सभी स्थितियों में, विश्वसनीय (मुफ़्ता-बिही) राय के अनुसार, वह निकाह पूरी तरह से शून्य और अमान्य है, वास्तव में शरीयत की दृष्टि में अस्तित्वहीन है। भले ही निकाह होने के बाद और ज़ैद की परिस्थितियों को जानने के बाद, लड़की का संरक्षक स्पष्ट रूप से कह दे कि "मैं ऐसी परिस्थितियों में भी इस निकाह से संतुष्ट हूँ और इसे जायज़ मानता हूँ," फिर भी इससे कुछ हासिल नहीं होगा। जो शरीयत की दृष्टि से शून्य है, वह किसी की सहमति से वैध नहीं हो सकता। इस आधार पर, विलोपन (फ़स्ख़) की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जब निकाह का अनुबंध हुआ ही नहीं, तो क्या रद्द किया जाए?

अरबी पाठ

'अल-दुर अल-मुख्तार' में है: गैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह के मूलतः अवैध होने पर फ़तवा दिया जाएगा, समय के भ्रष्टाचार के कारण यही चुनी हुई राय है। इसलिए, तीन तलाक वाली महिला ने यदि संरक्षक को ज्ञान होने के बावजूद उसकी सहमति के बिना गैर-कुफ़ू में निकाह कर लिया, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। इसे याद रखें। (उद्धरण समाप्त)। 'रद्द अल-मुह्तार' में है: संरक्षक के लिए अपनी असहमति को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना आवश्यक नहीं है, बल्कि उसका मौन ही असहमति है जैसा कि हमने उल्लेख किया है। इसलिए, निकाह की वैधता के लिए सहमति की स्पष्ट अभिव्यक्ति आवश्यक है। इसी आधार पर यदि वह पहले चुप रहा और निकाह के बाद सहमत हो गया, तो यह उपयोगी नहीं है।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

'अल-दुर अल-मुख्तार' में है कि गैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह के मूलतः अवैध होने पर फ़तवा दिया जाएगा, समय के भ्रष्टाचार के कारण यही चुनी हुई राय है। इसलिए, तीन तलाक वाली महिला ने यदि संरक्षक को ज्ञान होने के बावजूद उसकी सहमति के बिना गैर-कुफ़ू में निकाह कर लिया, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। इसे याद रखें। (उद्धरण समाप्त)। 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि संरक्षक के लिए अपनी असहमति को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना आवश्यक नहीं है, बल्कि उसका मौन ही असहमति है जैसा कि हमने उल्लेख किया है। इसलिए, निकाह की वैधता के लिए सहमति की स्पष्ट अभिव्यक्ति आवश्यक है। इसी आधार पर यदि वह पहले चुप रहा और निकाह के बाद

अरबी पाठ

इस पर विचार करें। (उद्धरण समाप्त)। और इसमें यह भी है कि इन स्थितियों में असहमति मानी जाएगी: ज्ञान हो पर सहमति न हो, या ज्ञान न हो पर सहमति हो, या गैर-कुफ़ू होने का ज्ञान और सहमति दोनों न हों। इन तीनों स्थितियों में वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। वह केवल चौथी स्थिति में हलाल होगी: वह यह कि उसे गैर-कुफ़ू होने का ज्ञान हो और वह उससे सहमत हो। (उद्धरण समाप्त)।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

सहमत हो गया, तो यह उपयोगी नहीं है। इस पर विचार करें। (उद्धरण समाप्त)। और इसमें यह भी है कि इन स्थितियों में असहमति मानी जाएगी: ज्ञान हो पर सहमति न हो, या ज्ञान न हो पर सहमति हो, या गैर-कुफ़ू होने का ज्ञान और सहमति दोनों न हों। इन तीनों स्थितियों में वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। और केवल एक स्थिति में हलाल होगी: वह यह कि उसे गैर-कुफ़ू होने का ज्ञान हो और वह उससे सहमत हो। (त)

1 अल-दुर अल-मुख्तार, संरक्षक का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/191। 2 रद्द अल-मुह्तार, संरक्षक का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/297। 3 रद्द अल-मुह्तार, संरक्षक का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/297।

مگر اس نے صراحتہً نکاح کی اجازت نہ دی اگر چہ سکوت کیا ہو، اگر چہ مجلسِ عقد میں موجود رہا ہو، یا صراحتہً اجازت ورضا مندی بھی ظاہر کی بلکہ خود متولیِ نکاح ہوا، مگر وہ ان حالات باطنہ زید پر وقوف نہ رکھتا تھا تو ان سب صورتوں میں مذہب مفتی بہ پر وہ نکاح محض باطل و کالعدم بلکہ شرعاً فی الحقیقت منعدم ہے اگر چہ بعد وقوع نکاح و علم بحالات زید ولی ہندہ صراحتہً کہہ دے کہ میں ایسی حالت پر بھی اس نکاح پر راضی اور اسے جائز رکھتا ہوں تاہم کچھ حاصل نہیں کہ جو شرعاً باطل ہے کسی کی رضامندی سے صحیح نہیں ہو سکتا، اس تقدیر پر فسخ کی خود کیا حاجت کہ جب عقد ہوا ہی نہیں تو فسخ کیا کیا جائے۔

عربی عبارت	**اردو ترجمہ و تشریح**
في الدر المختار يفتى فى غير الكفو بعدم جوازه اصلا وهو المختار لفتوى لفساد الزمان فلا تحل مطلقة ثلثاً نكحت غير كفو بلا رضى ولى بعد معرفته اياه فليحفظ اه في ردالمحتار لايلزم التصريح بعدم الرضى بل السكوت منه لايكون رضى كما ذكرنا فلا بد لصحة العقد من رضاه صريحاً وعليه فلو سكت قبله ثم رضى بعده لا يفيد فليتامل اه وفيه لا يصدق بنفى الرضى بعد	در مختار میں ہے کہ غیر کفو میں نکاح کے اصلا نا جائز ہونے پر فتوی دیا جائے گا، فسادِ زمان کی وجہ سے یہی مختار ہے لہذا مطلقہ ثلاثہ نے اگر ولی کو علم کے باوجود اس کی رضا کے بغیر غیر کفو میں نکاح کر دیا تو وہ پہلے خاوند کے لئے حلال نہ ہو گی۔ اس کو محفوظ کر لو اھ رد المحتار میں ہے کہ ولی کا اپنی عدمِ رضا کو صراحۃً بیان کرنا ضروری نہیں بلکہ اس کا سکوت ہی عدمِ رضا ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا ہے، لہذا صحتِ نکاح کے لئے صراحۃً رضامندی کا اظہار ضروری ہے، اسی بنا پر اگر پہلے خاموش رہا اور نکاح کے بعد راضی ہو گیا تو کار آمد

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
المعرفۃ وبعدمھا وبوجود الرضی مع عدم المعرفۃ ففی ھذہ الصور الثلثۃ لاتحل وانما تحل فی الصورۃ الرابعۃ وھی رضی الولی بغیر الکفو مع علمہ بانہ کذلک اھ	نہیں غور کرو، اھ اور اس میں یہ بھی ہے کہ ان صورتوں میں عدمِ رضا ہو گی، علم ہو رضا نہ ہو یا علم نہ ہو رضا ہو، یا غیر کفو کا علم اور رضا دونوں نہ ہوں، ان تینوں صورتوں میں وہ پہلے خاوند کے لئے حلال نہ ہو گی، اور صرف ایک صورت میں حلال ہو گی وہ یہ کہ اس کو غیر کفو ہونے کا علم ہو اور راضی ہو۔ (ت)

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۱ 2 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۷ 3 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۷

And if there is no such guardian for Hindah, or those who exist are all or some or in two different degrees of closeness, and the closest guardian has explicitly expressed his consent before the marriage despite being aware of Zaid's circumstances, then provided Hindah is an adult, there is no doubt about the validity of the marriage. And Allah the Almighty knows best.

Question 246: From Shehar Kohna, 4th Ramadan Mubarak 1313 AH. What do you say, may Allah have mercy on you, regarding this matter: is it permissible for a Pathan boy to marry a Syed girl? Explain and you shall be rewarded.

Answer: The questioner states that the girl is a young woman and her father is alive; both know that he is a Pathan and both are satisfied with this marriage contract. The father himself is involved in its arrangements. When this is the case, there is absolutely no doubt about the permissibility of this marriage, as explicitly mentioned in "Radd al-Muhtar" and other books. (As there is text on this in "Radd al-Muhtar" and other books. T) And Allah the Almighty knows best.

Question 247: From Ujjain, residence of Mir Khadim Ali Sahib Assistant, sent by Yaqoob Ali Khan Sahib, 12th Rabi-ul-Awwal Sharif 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah's marriage took place at the age of four years, and at that time the age of her husband Bakr was five years. When Bakr reached the age of discernment, he turned out to be impotent and dances with eunuchs. Due to impotence and these ugly actions, Hindah's father considers it a matter of shame and a blow to his status and refuses to send his daughter. Now the daughter's age is fourteen years, and she does not like or accept the husband. In this situation, what is the ruling regarding the validity or invalidity of the marriage, and after separation, does the responsibility for religion and dower fall upon the husband or not? Explain and you shall be rewarded.

Answer: Although dancing with eunuchs is certainly a cause for the loss of compatibility (Kafa'at), as a relationship with such a person is definitely a cause for shame and disgrace, the consideration of compatibility is at the beginning of the marriage. If he was compatible at that time and later the compatibility is lost, it will not be taken into account.

In Al-Durr al-Mukhtar: "Compatibility is considered at the beginning of the marriage contract, so its loss afterwards does not harm it. Thus, if he was compatible at the time (of marriage) and then became immoral, it is not annulled."

In Durr al-Mukhtar it says: Compatibility is considered at the beginning of the marriage, therefore if compatibility ends after the marriage, it is not harmful, just as if he was compatible due to being righteous at the time of marriage and later became a sinner, the marriage would not be annulled. (T)

[1] Durr al-Mukhtar, Book of Compatibility, Mujtabai Press, Delhi, 1/195.

और अगर हिंदा के लिए इस किस्म का कोई वली नहीं या जो हैं वह कुल या बाज़ या दो सूरत तफावत दर्जा सिर्फ वली अक़रब पेश अज़ निकाह बावजूद वक़ूफ़ ब-हालात ज़ैद सराहतन अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर कर चुका हो तो बशर्ते कि हिंदा बालिगा हो सेहत-ए-निकाह में कुछ शुबहा नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला २४६: अज़ शहर कुहना, ४ रमज़ान मुबारक १३१३ हि. मा क़ौलुकुम रहिमहुमुल्लाह तआला इस मसले में कि पठान के लड़के का सैय्यद की लड़की से निकाह जायज़ है या नहीं? बय्यानू तूजरू।

अल-जवाब: सायल मज़हर कि लड़की जवान है और उसका बाप ज़िंदा, दोनों को मालूम है कि यह पठान है और दोनों इस अक़्द पर राजी हैं, बाप खुद उसके सामान में है, जब सूरत यह है तो इस निकाह के जवाज़ में असलन शुबहा नहीं कमा नस अलैहि फ़ी रद्दुल मुहतार वग़ैरह मिनल असफ़ार (जैसा कि रद्दुल मुहतार वग़ैरह कुतुब में इस पर नस है। त) वल्लाहु तआला आलम।

मसला २४७: अज़ उज्जैन मकान मीर खादिम अली साहब असिस्टेंट मुर्सला याक़ूब अली ख़ां साहब, १२ रबी उल अव्वल शरीफ़ १३१५ हि. क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि निकाह हिंदा ब-उम्र चार साला हुआ था और उस वक़्त उम्र उसके ज़ौज बक्र की पांच साल थी। जब बक्र सिन्न-ए-तमीज़ को पहुँचा तो मर्दी से ख़ारिज है और बमराह-ए-हीजड़ा रक़्स करता है, तो नामर्दी और इन हरकात-ए-ज़श्त के बाइस वालिद हिंदा आर-ओ-कसर-ए-शान समझ कर दुख़्तर के भेजने में मुनकिर है और अब दुख़्तर की उम्र चौदह साल है, शौहर को पसंद-ओ-क़बूल नहीं करती, तो इस सूरत में दरबारा-ए-जवाज़-ओ-अदम-ए-जवाज़-ए-निकाह का क्या हुक्म है और बाद तफ़रीक़ दीन-ओ-महर उसका ज़िम्मा शौहर पर आयद होता है या नहीं? बय्यानू तूजरू।

अल-जवाब: अगरचे मुख़न्नथों के साथ रक़्स करना बेशक ज़वाल-ए-कफ़ात का बाइस है कि ऐसे शख़्स से रिश्ता ज़रूर मौजब-ए-नंग-ओ-आर है मगर कफ़ात का एतबार इब्तिदा-ए-निकाह के वक़्त है अगर उस वक़्त कुफ़ू हो फिर कफ़ात जाती रहे तो उसका लिहाज़ न होगा।

फ़ि अद्दुरुल मुहतार वल कफ़ाअतु एतबारुहा इन्द इब्तिदाउल अक़्दि फ़ला यज़ुरु ज़वालुहा बादहु फ़लौ काना वक़्तहु कुफ़ूअन सुम्म फ़जर लम युफ़सख़्।

दुर्रे मुख़्तार में है कि कुफ़ू का एतबार इब्तिदा-ए-निकाह के वक़्त है लिहाज़ा निकाह के बाद अगर कुफ़ू ख़त्म हो जाए तो मज़िर नहीं जैसा कि निकाह के वक़्त सालेह होने की वजह से कुफ़ू था और बाद में वह फ़ासिक़ बन गया तो निकाह फ़स्ख़ न होगा। (त)

[1] दुर्रे मुख़्तार बाबुल कफ़ाअत मतबा मुजतबाई देहली १/१९५।

पृष्ठ ७०७/७३९

اور اگر ہندہ کے لئے اس قسم کا کوئی ولی نہیں یا جو ہیں وہ کل یا بعض یا دو صورت تفاوت درجہ صرف ولی اقرب پیش از نکاح باوجود وقوف بحالات زید صراحۃً اپنی رضامندی ظاہر کر چکا ہو تو بشرطیکہ ہندہ بالغہ ہو صحت نکاح میں کچھ شبہ نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۶: از شہر کہنہ ۴ رمضان مبارک ۱۳۱۳ھ ما قولکم رحمہم اللہ تعالیٰ اس مسئلہ میں کہ پٹھان کے لڑکے کا سید کی لڑکی سے نکاح جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: سائل مظہر کہ لڑکی جوان ہے اور اس کا باپ زندہ، دونوں کو معلوم ہے کہ یہ پٹھان ہے اور دونوں اس عقد پر راضی ہیں، باپ خود اس کے سامان میں ہے، جب صورت یہ ہے تو اس نکاح کے جواز میں اصلاً شبہ نہیں کما نص علیہ فی رد المحتار وغیرہ من الاسفار (جیسا کہ رد المحتار وغیرہ کتب میں اس پر نص ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۷: از او جین مکان میر خادم علی صاحب اسٹنٹ مرسلہ یعقوب علی خاں صاحب ۱۲ ربیع الاول شریف ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نکاح ہندہ بعمر چار سالہ ہوا تھا اور اس وقت عمر اس کے زوج بکر کی پانچ سال تھی جب بکر سن تمیز کو پہنچا تو مردی سے خارج ہے اور اور بہمراہی ہیجڑا رقص کرتا ہے تو نامردی اور ان حرکات زشت کے باعث والد ہندہ عار و کسر شان سمجھ کر دختر کے بھیجنے میں منکر ہے اور اب دختر کی عمر چودہ سال ہے، شوہر کو پسند و قبول نہیں کرتی، تو اس صورت میں درباره جواز و عدم جواز نکاح کا کیا حکم ہے اور بعد تفریق دین و مہر اس کا ذمہ شوہر پر عائد ہوتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگرچہ مخنثوں کے ساتھ رقص کرنا بیشک زوال کفاءت کا باعث ہے کہ ایسے شخص سے رشتہ ضرور موجب ننگ و عار ہے مگر کفاءت کا اعتبار ابتدائے نکاح کے وقت ہے اگر اس وقت کفو ہو پھر کفاءت جاتی رہے تو اس کا لحاظ نہ ہوگا۔

فی الدرالمختار والکفاءۃ اعتبارھا عند ابتداء العقد فلا یضروز والھا بعدہ فلو کان وقتہ کفو ا ثم فجر لم یفسخ^1۔

در مختار میں ہے کہ کفو کا اعتبار ابتداء نکاح کے وقت ہے لہذا نکاح کے بعد اگر کفو ختم ہو جائے تو مضر نہیں جیسا کہ نکاح کے وقت صالح ہونے کی وجہ سے کفو تھا اور بعد میں وہ فاسق بن گیا تو نکاح فسخ نہ ہوگا۔ (ت)

1^ در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۵

Fatawa Razawiyya Volume 11

It is evident that if a vile character trait developed in the husband after marriage, then objection cannot be raised against the marriage itself initially. Rather, it will be seen whether at the time of marriage, Bakr was an equal (kufu) for Hindah or not, and whether there was a significant deficiency (ghabn-e-fahish) in Hindah's dower (mahr) compared to her proper dower (mahr al-mithl). And if the marriage of Hindah was performed by her grandfather in the state of the father's absence of guardianship, or by someone other than them like mother, brother, uncle, etc., and if one of them performed it while holding guardianship themselves, for example, the father etc. who were closer (aqrab) to her were not legally capable of guardianship, whether their guardianship had ceased or they performed it while guardianship was absent because another closer guardian was present. Then on this assumption, whether the closer guardian, upon hearing it, authorized it, or rejected it, or is still silent; in short, there are many scenarios. The Shari'i ruling for all of them is that when a minor's marriage is performed by someone other than the father or grandfather, if there was a significant deficiency in the mahr al-mithl or the husband at that time was not an equal (kufu), for instance due to belonging to a lower lineage, then that marriage is not valid at all. Even if a non-father/grandfather was the closer guardian at that time. And if at that time there was equality (kafa'at) and there was no significant deficiency in the dower, then in the state of absence of guardianship, the marriage remains dependent on the permission of the closer guardian. If they authorized it, it becomes effective; if they rejected it, it becomes void; if they remain silent, they still have the choice to reject or authorize it. And if they remain silent until the minor girl reaches puberty, then she will have the choice to reject or authorize this suspended marriage. And in the case of guardianship, the marriage would be concluded and effective, but the minor girl gets the 'option of puberty' (khiyār al-bulūgh), meaning she is given the choice that if she was already aware of the marriage, then at the time she reaches puberty—meaning signs of puberty like menstruation appear or she reaches the age of fifteen—and if she was not aware before, then after puberty, at the time she receives news of the marriage, she should say, "I am not pleased with this marriage." In this case, the ruler will annul the marriage absolutely, even if the husband is not impotent or a hermaphrodite. However, regarding this option, a virgin girl is commanded to express her displeasure immediately upon reaching puberty or upon receiving the news after puberty without delay. If she delays even slightly, this option will be lost, even if the

husband is impotent or a hermaphrodite. And a girl who is not a virgin (has been with a husband) gets a broad choice to express displeasure whenever she wants after reaching puberty or after receiving information when already an adult, and the marriage will be annulled, provided she does not express consent explicitly by tongue or through an act like receiving a kiss or demanding maintenance. And when the father or grandfather perform the marriage, the minor has no option of annulment at all from this path, even if there is no equality or there is a significant deficiency in mahr al-mithl, provided that the father or grandfather themselves conducted the marriage ceremony or appointed a representative after specifying the husband and the amount of mahr, or anyone they wished conducted it without permission but when the father or grandfather, as the closer guardian, became aware, they enforced it despite knowing the lack of equality and significant deficiency, for in these cases too, it will be considered as if the father or grandfather himself performed the marriage, and the minor will have no right of objection at all. Unless the father or grandfather was intoxicated at the time of this marriage, or appointment of proxy, or enforcement, or if prior to this, they had married their child to someone who was not an equal (ghair-kufu) or...

यह स्पष्ट है कि यदि विवाह के बाद पति में कोई घृणित चरित्र लक्षण उत्पन्न हुआ है, तो इस आधार पर विवाह के विरुद्ध आपत्ति नहीं की जा सकती। बल्कि यह देखा जाएगा कि क्या विवाह के समय बक्र, हिंदा के लिए समान (कफ़ु था या नहीं, और क्या हिंदा के महर (दहेज) में उसके महर-ए-मिस्ल (समान महर) की तुलना में अत्यधिक कमी (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) थी या नहीं। और यदि हिंदा का विवाह उसके दादा ने पिता की संरक्षकता (विलायत) की अनुपस्थिति में किया, या उनके अलावा किसी और ने जैसे माँ, भाई, चाचा आदि ने किया, और उनमें से किसी ने किया तो क्या संरक्षकता की स्थिति में स्वयं किया, उदाहरण के लिए पिता आदि जो उससे निकटतम (अक़रब) थे, शरीयत के अनुसार संरक्षकता के योग्य नहीं थे, चाहे उनकी संरक्षकता समाप्त हो गई थी या संरक्षकता की अनुपस्थिति में किया था क्योंकि दूसरा निकटतम संरक्षक मौजूद था। फिर इस आधार पर निकटतम संरक्षक ने सुनकर उसे अनुमति दे दी, या उसे अस्वीकार कर दिया, या अभी तक चुप है; संक्षेप में, कई स्थितियां हैं। उन सभी का शरीयत हुक्म यह है कि जब किसी नाबालिग (सगीरा) का विवाह पिता या दादा के अलावा किसी और ने किया हो, यदि महर-ए-मिस्ल में अत्यधिक कमी की गई हो या उस समय पति समान (कफ़ु नहीं था, उदाहरण के लिए निम्न जाति के होने के कारण, तो वह विवाह सिरे से सही ही नहीं होता। भले ही उस समय गैर (पिता/दादा के अलावा) ही निकटतम संरक्षक क्यों न हो। और यदि उस समय समानता (कफ़ाअत) थी और महर में भी अत्यधिक कमी नहीं थी, तो संरक्षकता की अनुपस्थिति की स्थिति में विवाह निकटतम संरक्षक की अनुमति पर निर्भर रहता है। यदि उसने अनुमति दे दी तो वह प्रभावी (नाफ़िज़) हो गया, यदि अस्वीकार कर दिया तो वह अमान्य (बातिल) हो गया; यदि वह चुप है तो उसे अभी भी अधिकार है कि वह उसे अस्वीकार कर दे या प्रभावी कर दे। और यदि वह तब तक चुप रहे जब तक कि नाबालिग लड़की यौवन (ब्लूग़) की आयु तक न पहुँच जाए, तो अब उसे अधिकार होगा कि वह इस निलंबित विवाह को अस्वीकार कर दे या प्रभावी कर दे। और संरक्षकता की स्थिति में विवाह संपन्न और प्रभावी होता, लेकिन नाबालिग लड़की को 'यौवन का विकल्प' (खियार-ए-ब्लूग़) मिलता है, अर्थात उसे अधिकार दिया जाता है कि यदि उसे विवाह के बारे में पहले से पता है, तो जिस समय वह वयस्क (बालीग़ा) हो जाए—अर्थात यौवन के लक्षण जैसे मासिक धर्म प्रकट हों या वह पंद्रह वर्ष की हो जाए—और यदि उसे पहले से पता नहीं है, तो यौवन के बाद जिस समय उसे विवाह की खबर मिले, वह कह दे कि "मैं इस विवाह से संतुष्ट नहीं हूँ।" इस स्थिति में शासक (हाकिम) विवाह को पूरी तरह से रद्द कर देगा, भले ही पति नपुंसक या उभयलिंगी न

हो। हालाँकि, इस विकल्प में कुंवारी लड़की को आदेश है कि वह वयस्क होते ही या यौवन के बाद खबर मिलते ही बिना किसी देरी के तुरंत अपनी नाराजगी जाहिर करे। यदि वह थोड़ी सी भी देर करेगी, तो यह विकल्प समाप्त हो जाएगा, भले ही पति नपुंसक या उभयलिंगी ही क्यों न हो। और जो लड़की पूर्व-विवाहित (शो هر रसीदा) हो, उसे व्यापक अधिकार मिलता है कि वह यौवन के बाद या वयस्क होने पर जानकारी मिलने के बाद जब चाहे अपनी नाराजगी व्यक्त करे, विवाह रद्द कर दिया जाएगा, जब तक कि वह स्पष्ट रूप से जुबान से या किसी कृत्य जैसे चुंबन लेने या भरण-पोषण (नान-ओ-नफ़क़ा) मांगने से अपनी सहमति व्यक्त न करे। और जब पिता या दादा विवाह करते हैं, तो नाबालिग को इस तरह से रद्द करने का कोई अधिकार नहीं होता, भले ही समानता न हो या महर-ए-मिस्ल में अत्यधिक कमी हो, बशर्ते कि विवाह स्वयं पिता या दादा ने पढ़ाया हो या पति और महर की राशि तय करके किसी को वकील बनाया हो, या जिसने चाहा बिना अनुमति के पढ़ा दिया लेकिन जब पिता या दादा जो निकटतम संरक्षक हैं, उन्हें खबर हुई तो समानता की कमी और अत्यधिक हानि (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) के ज्ञान के बावजूद उन्होंने उसे प्रभावी कर दिया, क्योंकि इन स्थितियों में भी वह विवाह पिता या दादा द्वारा स्वयं किया हुआ ही माना जाएगा और नाबालिग को आपत्ति करने का कोई अधिकार नहीं मिलेगा। सिवाय इसके कि पिता या दादा इस विवाह या वकालत या निष्पादन (तन्फ़िज़) के समय नशे में हों या इससे पहले भी अपने बच्चे का विवाह किसी गैर-समान (ग़ैर-कफ़ु) में किया हो या...

पेज 708/739

ظاہر ہے کہ خصلتِ شنیعہ بجز میں بعد نکاح پیدا ہوئی تو اس وجہ سے ابتداء اس کے نکاح پر اعتراض نہیں بلکہ یہ دیکھا جائے گا کہ آیا جس وقت نکاح ہوا اس وقت بھی بکر کفو ہندہ تھا یا نہیں اور مہر ہندہ میں اس کے مہر مثل سے کمی فاحش ہوئی یا نہیں اور نکاح ہندہ کے باپ یا اس کی عدم ولایت کی حالت میں دادا نے کیا یا ان کے غیر کے مثلاً ماں بھائی چچا وغیر ہم نے اور ان میں سے کسی نے کیا تو بحالتِ ولایت خود کیا مثلاً باپ وغیرہ جو اس سے اقرب تھے شرعاً قابلِ ولایت نہ تھے خواہ ان کی ولایت نہ رہی تھی یا بحال عدم ولایت کیا تھا کہ دوسرا ولی اقرب موجود تھا پھر اس تقدیر پر ولی اقرب نے سن کر جائز کر رکھا یا رد کر دیا ہنوز ساکت ہے، غرض صورتیں بہت ہیں اور ان سب کا حکم شرعی یہ کہ صغیرہ کا نکاح جب غیر اب وجد نے کیا ہو اگر مہر مثل میں کمی فاحش کی یا زوج اسی وقت مثلاً بوجہ کم قوم ہونے کے کفو نہ تھا تو وہ نکاح سرے سے صحیح ہی نہیں ہوتا۔ اگرچہ غیر ہی اسی وقت ولی اقرب ہو اور اگر اس وقت کفاءت تھی اور مہر میں بھی کمی فاحش نہ ہوئی تو بحال عدم ولایت نکاح اجازت ولی اقرب پر موقوف رہتا ہے، اگر اس نے جائز کر دیا نافذ ہو گیا رد کر دیا باطل ہو گیا، ساکت ہے تو ابھی اسے اختیار ہے کہ رد کر دے خواہ نافذ، اور اگر وہ ساکت ہی رہے یہاں تک کہ صغیرہ سن بلوغ کو پہنچی تو اب اسے اختیار ہوگا کہ اس نکاح موقوف کو رد کر دے یا نافذ کر دے، اور بحال ولایت نکاح منعقد و نافذ ہوتا مگر صغیرہ کو خیار بلوغ ملتا ہے یعنی اختیار دیا جاتا ہے کہ اگر نکاح کا حال اسے پہلے سے معلوم ہے تو جس وقت بالغہ ہو یعنی علامت بلوغ مثل حیض ظاہر ہو یا پندرہ برس کی عمر ہو جائے، اور اگر پہلے سے معلوم نہیں تو بعد بلوغ جس وقت نکاح کی خبر ہو کہہ دے کہ میں اس نکاح سے راضی نہیں۔ اس صورت میں حاکم مطلقاً نکاح فسخ کر دے گا اگرچہ شوہر نامرد و

مخنث نہ بھی ہو، مگر اس خیار میں کنواری لڑکی کو حکم ہے کہ بالغہ ہوتے ہی یا بعد بلوغ خبر پاتے ہی فوراً بلا توقف اپنی ناراضی ظاہر کرے، اگر ذرا دیر لگائے گی یہ خیار جاتا رہے گا اگرچہ شوہر نامرد و مخنث سہی، اور جو لڑکی شوہر رسیدہ ہو اسے اختیار و سیع ملتا ہے کہ بعد بلوغ یا بالغہ ہونے پر اطلاع کے بعد جب چاہے ناراضی ظاہر کرے نکاح فسخ کر دیا جائے گا جب تک کہ وہ صراحتہ زبان یا کسی فعل مثل بوسہ لینے یا نان ونفقہ مانگنے سے رضامندی ظاہر نہ کرے، اور جب باپ دادا نکاح کریں تو صغیرہ کو اس راہ سے اصلاً اختیار فسخ نہیں ہوتا اگرچہ کفاءت نہ ہو یا مہر مثل میں کمی فاحش ہو بشرطیکہ نکاح خود باپ دادا نے پڑھایا یا شوہر و مقدار مہر معین کر کے کسی کو وکیل کیا یا جس نے چاہا بلا اجازت پڑھا دیا مگر جب باپ یا دادا ولی اقرب کو خبر ہوئی تو باوصف علم عدم کفاءت و غبن فاحش اسے نافذ کر دیا کہ ان صورتوں میں بھی وہ نکاح باپ دادا کا بذات خود ہی کیا ہوا ٹھہرے گا اور صغیرہ کو اصلاً اختیار اعتراض نہ ملے گا مگر یہ کہ باپ دادا اس تزویج یا توکیلی یا تنفیذ کے وقت نشے میں ہوں یا اس سے پہلے بھی اپنے بچے کا نکاح غیر کفو یا

Fatawa Razawiyya, Volume 11

If they have performed the marriage with gross deception (Ghabn-e-Fahish) in the dower (Mahr), even then this marriage performed by them is not valid.

In 'Durr al-Mukhtar', it is stated that when the person giving in marriage is the father or grandfather, the marriage will be valid even in the case of a non-equal (non-kufu) match and extremely low dower, provided that the father or grandfather are not famous for bad judgement (su' al-ikhtiyar). If they are famous for it, then by consensus, the marriage will not be valid. The same ruling applies if they are in a state of intoxication. If the person giving in marriage is other than the father or grandfather, even if it is the mother, then in the case of a non-equal match or gross deception (meaning an extremely low dower), the marriage will not be valid. Yes, if this marriage is with a proper dower (Mahr al-Mithl) and in an equal match (Kufu), then it will be valid, but the minor boy or girl will have the option to annul it (khayar al-faskh) upon reaching puberty or upon learning about the marriage after puberty, provided that a Qadi (judge) decrees the annulment. In the aforementioned case, if the girl is sane and adult, and remains silent after hearing about the marriage to a non-equal, provided she knows about the marriage, her option will become void, and her option will not remain until the end of the gathering even if she does not know about her right of option. If it is a minor boy or a non-virgin (thayyibah) girl, the option will not end merely by silence upon reaching puberty unless there is explicit consent or an action that stands in its place, such as kissing or embracing. (Summarized from 'Multaqata'). In the same work, a discussion is quoted from 'An-Nahr' that if the father or grandfather appointed someone else as an agent (wakil) on the condition of the full dower, the marriage will be valid. This is an explanation. And in 'Radd al-Muhtar' it is stated that it will be so when they have stipulated the condition of Kufu.

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192-93.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192.

Page 709 of 739

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

महर में गबन-ए-फ़ाहिश (भारी धोखाधड़ी) के साथ निकाह कर चुके हों तो उनका किया हुआ यह निकाह भी सही नहीं होता।

'दुर्रुल मुख्तार' में है कि जब निकाह कराने वाला बाप या दादा हो, तो ग़ैर-कुफ़ू (असमान) और अत्यंत कम महर की स्थिति में भी निकाह हो जाएगा, बशर्ते कि वह बाप या दादा 'सू-ए-इख़्तियार' (बुरी पसंद) के लिए प्रसिद्ध न हों। यदि वे इसमें प्रसिद्ध हों, तो सर्वसम्मति से निकाह सही नहीं होगा। यही हुक्म तब भी है जब वे नशे की हालत में हों। यदि निकाह कराने वाले बाप-दादा के अलावा कोई और हों, चाहे माँ ही क्यों न हो, तो ग़ैर-कुफ़ू और गबन-ए-फ़ाहिश, यानी अत्यंत कम महर की स्थिति में निकाह सही नहीं होगा। हाँ, अगर यह निकाह 'महर-ए-मिस्ल' और कुफ़ू में हो, तो सही होगा, लेकिन नाबालिग़ लड़के और लड़की को बालिग होने पर या बालिग होने के बाद निकाह की सूचना मिलने पर निकाह रद्द करने का अधिकार (खियार-ए-फ़स्ख) होगा, बशर्ते कि काज़ी (न्यायाधीश) उसे रद्द करने का फ़ैसला करे। उक्त स्थिति में, यदि लड़की अक्लमंद और बालिग हो और ग़ैर-कुफ़ू में किए गए निकाह की बात सुनकर खामोश रहे, बशर्ते कि उसे निकाह की जानकारी हो, तो उसका अधिकार समाप्त हो जाएगा। उसका अधिकार मजलिस (सभा) के अंत तक नहीं रहेगा, भले ही वह अपने इस अधिकार के बारे में न जानती हो। यदि वह नाबालिग लड़का हो या सईबा (गैर-कुंवारी) लड़की हो, तो बालिग होने पर केवल खामोशी से अधिकार समाप्त नहीं होगा, जब तक कि वह स्पष्ट रूप से रज़ामंदी न दे या उसकी जगह कोई ऐसा कार्य न करे, जैसे चुंबन या आलिंगन। (मुल्तक़ता से सारांश)। इसी में 'अन्नह्र' से उद्धृत एक चर्चा है कि यदि बाप या दादा ने पूरे महर की शर्त पर किसी अन्य को वकील नियुक्त किया, तो निकाह सही होगा। यह स्पष्टीकरण है। और 'रद अल-मुह्तार' में है कि ऐसा ही होगा जब उन्होंने कुफ़ू की शर्त रखी हो।

1. दुर्रुल मुख्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192-93.
2. दुर्रुल मुख्तार, बाब अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192.

पृष्ठ 709/739

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

مہر میں غبنِ فاحش کے ساتھ کر چکے ہوں تو یہ نکاح ان کا کیا ہوا بھی صحیح نہیں ہوتا۔

في الدرالمختار لزم النكاح ولو بغبن فاحش او بغير كفران كان الولى المزوج بنفسہ ابا او جدا لم يعرف منهما سوء الاختيار و ان عرف لايصح النكاح اتفاقا و كذا لو كان سكران، وان كان المزوج غير الاب والجد ولوا الام لايصح النكاح من غير كفو او بغبن فاحش اصلا وان كان من كفو و بمهر المثل صح و ليكن لصغير وصغيرة خيار الفسخ بالبلوغ اوالعلم بالنكاح بعده بشرط القضاء للفسخ وبطل خيار البكر بالسكوت لو مختارة عالمة باصل النكاح ولا يمتد الى آخر المجلس وان جهلت بہ خيار الصغير والثيب اذا بلغا لا يبطل بالسكوت بلا صريح رضا او دلالة عليه كقبلة ولمس اه ملتقطا، وفيه عن النهر بحثا لو عين(ای الاب او الجد) لو كيله القدر(ای قدر المهر)صح اه موضحا، وفي ردالمحتار وكذا لوعين له

در مختار میں ہے کہ جب نکاح دینے والا باپ دادا ہو تو غیر کفو اور انتہائی کم مہر کی صورت میں بھی نکاح ہو جائیگا بشرطیکہ وہ باپ دادا سوءِ اختیار میں مشہور نہ ہوں، اور اگر وہ اس میں مشہور ہوں تو بالاتفاق نکاح صحیح نہ ہوگا، اور یہی حکم ہے جب وہ نشہ میں ہوں، اور اگر نکاح دینے والے باپ دادا کا غیر ہوں خواہ ماں ہو تب بھی غیر کفو اور غبنِ فاحش یعنی انتہائی کم مہر کی صورت میں نکاح صحیح نہ ہوگا۔ ہاں اگر مہر مثل اور کفو میں یہ نکاح ہو تو صحیح ہو گا لیکن صغیر اور صغیرہ کو بلوغ یا بلوغ کے بعد علم پر فسخ کا اختیار ہوگا بشرطیکہ قاضی فسخ کرے، مذکورہ صورت میں اگر لڑکی عاقلہ بالغہ ہو اور غیر کفو کا کیا ہوا نکاح سُن کر خاموش رہے بشرطیکہ نکاح کا علم رکھتی ہو تو اس کا اختیار باطل ہو جائے گا، اور اس کا اختیار مجلس کے آخر تک باقی نہ رہے گا اگر چہ وہ اپنے اختیار کا علم نہ رکھتی ہو، اور اگر نابالغ لڑکا ہو یا لڑکی

ثیبہ ہو تو بلوغ پر محض سکوت سے اختیار ختم نہ ہوگا جب تک صریح رضا یا اس کے قائم مقام کوئی عمل مثلاً بوس وکنار نہ کرے اہ ملتقطا، اسی میں نہر سے منقول ایک بحث ہے کہ اگر باپ دادا نے پورے مہر کی شرط پر غیر کو وکیل بنایا تو نکاح صحیح ہو گا اہ وضاحت ہے، اور ردالمحتار میں ہے کہ ایسے ہی ہو گا جب انھوں نے کفو کی شرط

1. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۹۳-۱۹۲
2. درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۲

Fatawa Razawiyya, Volume 11

[Main Text Box] ...appointing someone as a proxy for a man who is not a suitable match (non-kufw), as discussed by Al-Allamah Al-Maqdisi. And in the same source, a little after 'Al-Bahr', it is quoted from 'Al-Muhit' that a marriage contracted with the guardian's (wali) permission is equivalent to a marriage performed by the guardian himself. It is stated in 'At-Tanwir' and 'Ad-Durr': In the absence of the nearer guardian (wali al-aqrab), the farther guardian (wali al-ab'ad) has the authority to conduct the marriage. Thus, if the farther guardian performs the marriage while the nearer one is present, it remains suspended pending the nearer guardian's permission, provided the distance is that of 'masafat al-qasr' (the distance that shortens prayer). In 'Al-Multaqa', it was chosen that the condition is such that the suitor seeking marriage does not have to wait for an answer or permission. This is the ruling (fatwa). In 'Fath al-Qadir' it says: if a minor reaches maturity before the guardian gives permission, and then he himself gives permission, the marriage becomes effective because it was suspended (mawquf).

[Middle Paragraph] Thus, if the situation regarding Hind was such that the marriage was either invalid from the start, or it was valid but became void due to rejection by the nearer guardian, then it is clear that Bakr has no claim over Hind. Neither is she his wife, nor is he her husband. Since the 'rukhsati' (moving in) has not yet taken place, as is apparent from the question, no dower (mahr) is due at all. In fact, in such a situation, if the man is actually impotent, there is no way for the dower to become necessary, because in an invalid marriage, the dower only becomes mandatory through intercourse, and an impotent man is not capable of intercourse. And if the situation is such that the marriage is still suspended pending the permission of the person authorized to give it, and if no consent or permission from Hind's father was established before this marriage, then it stands rejected by this current refusal. However, if this refusal is of such a nature that he does not reject the marriage itself but simply does not want her to move in yet, then this guardian of Hind...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/306 3. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192 4. Fath al-Qadir, Section on Guardians, Nooriya Razawiyya, Sukkur, 3/198

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[मुख्य टेक्स्ट बॉक्स] ...किसी को ऐसे व्यक्ति का वकील बनाना जो उपयुक्त मेल (ग़ैर-कुफ़्व) नहीं है, जैसा कि अल्लामा अल-मक़दसी ने चर्चा की है। और उसी स्रोत में 'अल-बहर' के थोड़ा बाद 'अल-मुहीत' से उद्धृत है कि वली (अभिभावक) की अनुमति से किसी का निकाह कराना भी वली के स्वयं निकाह कराने के समान होगा। 'अत-तन्वीर' और 'अद-दुर' में है: निकटतम वली (वली अल-अक़रब) की अनुपस्थिति में दूर के वली (वली अल-अबअद) को निकाह कराने का अधिकार है। तो अगर निकटतम वली की मौजूदगी में दूर के वली ने निकाह करा दिया, तो यह निकटतम वली की अनुमति पर निर्भर (मौक़ूफ़) रहेगा, बशर्ते दूरी 'मुसाफ़त अल-क़स्र' (वह दूरी जिससे नमाज़ छोटी हो जाती है) जितनी हो। 'अल-मुल्तका' में चुना गया है कि शर्त यह है कि निकाह चाहने वाला जवाब और अनुमति का इंतज़ार न करता हो। इसी पर फ़तवा है। 'फ़तह अल-क़दीर' में है कि अगर कोई नाबालिग वली की अनुमति मिलने से पहले बालिग हो जाए, तो फिर उसे स्वयं अधिकार होगा, उसकी रज़ा पर निकाह प्रभावी हो जाएगा क्योंकि यह निकाह मौक़ूफ़ (निलंबित) था।

[मध्य पैराग्राफ] अत: यदि हिन्द के मामले में स्थिति ऐसी थी कि निकाह शुरू से ही सही नहीं हुआ, या सही होकर निकटतम वली द्वारा अस्वीकार किए जाने के कारण रद्द हो गया, तो स्पष्ट है कि बक्र का हिन्द पर कोई दावा नहीं बनता। न वह उसकी पत्नी है और न वह उसका पति। चूंकि अभी तक 'रुख़सती' नहीं हुई है, जैसा कि प्रश्न से स्पष्ट है, मेहर (स्त्रीधन) बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है। वास्तव में, ऐसी स्थिति में यदि पुरुष वास्तव में नपुंसक हो, तो मेहर अनिवार्य होने का कोई रास्ता ही नहीं है क्योंकि अमान्य निकाह में मेहर केवल संभोग से अनिवार्य होता है, और नपुंसक संभोग में सक्षम नहीं होता। और यदि स्थिति ऐसी है कि निकाह अभी भी अधिकृत व्यक्ति की अनुमति पर निर्भर है, तो यदि इस निकाह से पहले हिन्द के पिता की ओर से अनुमति और सहमति स्थापित नहीं हुई थी, तो अब इस इनकार से यह निकाह रद्द हो गया। और यदि यह इनकार इस प्रकार का है कि वह निकाह को तो रद्द नहीं करता लेकिन रुख़सती नहीं चाहता, तो अब यह हिन्द का वली...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/305 2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/306 3. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/192 4. फ़तह अल-क़दीर, फ़स्ल फ़िल औलिया, नूरया रज़विया, सुक्कुर, 3/198

رجلا غیر کفو کما بحثہ العلامہ المقدسی ۱ اھ وفیہ بعیدہ عن البحر عن المحیط ، ان الجواز ثبت باجازۃ الولی فالحق بنکاح باشرہ ۲ اھ وفی التنویر والدر (للولی الابعد الترویج بغیبۃ الاقرب) فلو زوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ مسافۃ القصر واختار فی الملتقی مالم ینتظر الکفو الخاطب جوابہ وعلیہ الفتوی ۳ اھ مختصرا ، وفی فتح القدیر لو بلغ قبل ان یجیزہ الولی فأجاز بنفسہ نفذ لانھا کانت متوقفۃ ۴ الخ۔ پر کسی کو وکیل بنا دیا ہو، جیسا کہ یہ بحث علامہ مقدسی نے کی ہے اھ، اور اسی میں اس کے تھوڑا سا بعد بحر سے منقول ہے اور انہوں نے محیط سے کہ ولی کی اجازت سے کسی کا نکاح دینا یہ بھی ولی کے اپنے دیئے ہوئے نکاح سے ملحق ہوگا اھ تنویر اور در میں ہے ولی اقرب کی غیر حاضری میں ولی ابعد کو نکاح کا اختیار ہے، تو اگر ولی اقرب کی موجودگی میں ولی ابعد نے نکاح دیا تو یہ ولی اقرب کی اجازت پر موقوف ہوگا، غیر حاضری یہ ہے کہ سفر کی مدت پر یا اتنے بعد پر ہو کہ منگنی والا واپسی اس کے جواب واجازت کا انتظار نہ کرتا ہو اور اسی پر فتویٰ ہے اھ مختصرا اور فتح القدیر میں ہے کہ اگر نا بالغ ولی کی اجازت دینے سے قبل بالغ ہو جائے تو پھر خود اس کو اختیار ہو گا تو اس کی رضا پر نکاح نافذ ہو جائے گا کیونکہ یہ نکاح موقوف تھا الخ (ت)

پس اگر ہندہ میں صورت واقعہ وہ تھی جس میں نکاح سرے سے صحیح ہی نہ ہوا یا صحیح ہو کر بسبب ردِّ ولی اقرب باطل ہو گیا، جب تو ظاہر ہے کہ بکر کو ہندہ پر کوئی دعویٰ نہیں پہنچتا، نہ وہ اس کی زوجہ نہ یہ اس کا شوہر، اور جب کہ ہنوز رخصت نہیں ہوئی جیسا کہ سوال سے ظاہر ہے مہر اصلاً لازم نہیں بلکہ ایسی حالت میں اگر فی الواقع مرد نامرد ہو تو اس صورت میں مہر لازم ہونے کی کوئی شکل نہیں کہ نکاح غیر صحیح ہو تو مہر جماع سے لازم ہوتا ہے اور نامرد قابل

جماع نہیں، اور اگر صورت وہ ہو جس میں نکاح ہنوز اجازت صاحبِ اجازت پر موقوف ہو تو اگر پدرِ ہندہ کی جانب سے قبل اس نکاح کے اجازت و رضا متحقق نہ ہوئی تھی تو اب اس انکار سے رد ہو گیا، اور اگر یہ انکار اس طور پر ہے کہ نکاح کو تو رد نہیں کرتا مگر رخصت کرنا نہیں چاہتا تو اب یہ ولی ہندہ

1 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲ 2 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۶/۲ 3 درمختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۲/۱ 4 فتح القدیر فصل فی الاولیاء نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۸/۳

Fatawa Rizwia, Volume 11

Or, upon reaching maturity, it's in the hands of the girl (Hinda). If she rejects [the marriage], it will be rescinded. Since no sexual intercourse occurred, no dower (mahr) is due, as will be explained later, because this is a form of annulment (faskh). (T) If it was a situation where Hinda had the option of puberty (Khiyar-ul-Bulugh) and she had already exercised it according to the stated conditions, or if the time has not yet come because Hinda is still a minor, then whenever that time comes and she uses it, she will achieve complete liberation without difficulty. Her mere expression of dissatisfaction will serve as the basis for a decree of annulment. The judge (Hakim) will annul the marriage solely on this basis, and even then, no dower will be owed at all, as the annulment of the marriage renders it as if it never existed.

[Arabic Text]: In Radd al-Muhtar: The dower, just as its entirety becomes mandatory by consummation, so it does by the death of one of them before consummation. As for without that, it is waived, even if the option [to annul] was from him, because separation by option is an annulment of the contract, and when the contract is annulled, it is treated as if it never existed, as mentioned in al-Nahr. [1] [Urdu Translation]: In Radd al-Muhtar, it is stated: Just as the full dower becomes mandatory upon consummation and intercourse, similarly, it becomes mandatory upon the death of one of the spouses before consummation. However, without these [consummation or death], it is waived. Even if the boy has the option, the dower is still waived upon annulment because annulment of marriage renders it null and void as it is in [the book] Al-Nahr. (T)

Yes, if it was a case where Hinda did not receive the option of puberty at all, or received it but, because she is a virgin who does not receive an extensive option and it was waived due to silence, then currently neither Hinda nor her father have any right to object or deny. The marriage is valid and complete. The emergence of those vile actions in Bakr is not a reason to invalidate or annul the marriage. Since Hinda has not yet been sent to her husband's home (rukhsati), a claim of Bakr's impotence (namardi) is not maintainable. In relation to a woman, an impotent man is one who is unable to penetrate that specific woman's vagina up to the glans (hashfa). This can vary over time; it is possible for a person to be unable to penetrate one woman's vagina but be able to do so with another, so he wouldn't be considered impotent in relation to the second woman.

[Arabic Text]: In Al-Hindiyyah, from Al-Nihayah: If a man can have intercourse with a non-virgin (thayyiba) but not with virgins (abkar), or with some women but not others, the reason for this is either illness, innate weakness, or old age. [Urdu Translation]: In Hindiyyah, from Nihayah, it is stated: If a man can have intercourse with a non-virgin woman but cannot with a virgin, or can with some types of women but cannot with others, the reason for this is illness, innate weakness, or old age.

---

[1] Radd al-Muhtar, Bab al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/307. Page 711 of 739

या बालिग होने की स्थिति में यह लड़की (हिंदा) के हाथ की बात है; अगर वह रद्द कर दे तो निकाह रद्द हो जाएगा और चूंकि सम्भोग नहीं हुआ है, इसलिए कोई महर देय नहीं होगा, जैसा कि आगे आएगा, क्योंकि यह निकाह के निरस्तीकरण (फ़स्ख़) का मामला है। (त) और अगर स्थिति ऐसी थी जिसमें हिंदा को 'ख़ियार-ए-बुलूग' (बालिग होने पर चुनाव का अधिकार) मिलता और वह इस अधिकार का उपयोग निर्धारित शर्तों के अनुसार कर चुकी होती, या अभी उसका समय नहीं आया क्योंकि हिंदा अभी नाबालिग है, तो जब भी समय आए और वह इसका उपयोग करे, तो हिंदा को बिना किसी कठिनाई के पूर्ण मुक्ति प्राप्त होगी। केवल उसका असंतोष व्यक्त करना ही फ़स्ख़ के आदेश का आधार बन जाएगा और हाकिम (न्यायाधीश) केवल इसी आधार पर निकाह रद्द कर देगा और अब भी महर बिल्कुल नहीं देना होगा क्योंकि निकाह के फ़स्ख़ होने से वह मानो शून्य (यानी नहीं हुआ) हो जाता है।

[अरबी पाठ]: रद-अल-मुह्तार में: जिस प्रकार पूरा महर संभोग से अनिवार्य हो जाता है, उसी प्रकार संभोग से पहले उनमें से किसी एक की मृत्यु से भी अनिवार्य हो जाता है। जहाँ तक इसके बिना की बात है, तो यह समाप्त हो जाता है, भले ही अधिकार (विकल्प) उसकी ओर से हो, क्योंकि विकल्प द्वारा अलगाव अनुबंध का निरस्तीकरण है, और जब अनुबंध निरस्त हो जाता है, तो उसे ऐसे माना जाता है जैसे वह कभी अस्तित्व में ही नहीं था, जैसा कि 'अन-नहर' में है। [1] [उर्दू अनुवाद]: रद-अल-मुह्तार में है: जिस प्रकार संभोग और सहवास से महर अनिवार्य हो जाता है, वैसे ही संभोग से पूर्व पति या पत्नी के देहांत से महर अनिवार्य हो जाता है और संभोग के बिना मृत्यु और मृत्यु के बिना वह समाप्त हो जाएगा। यदि लड़के के पास विकल्प हो, तब भी फ़स्ख़ करने से महर समाप्त हो जाएगा क्योंकि निकाह का फ़स्ख़ उसे शून्य कर देता है जैसा कि 'नहर' में है। (त)

हाँ, अगर मामला ऐसा था जिसमें हिंदा को सिरे से 'ख़ियार-ए-बुलूग' नहीं मिला, या मिला था, और चूंकि हिंदा कुंवारी है जिसे व्यापक अधिकार नहीं मिलता और चुप्पी के कारण वह समाप्त हो गया, तो अब हिंदा या उसके पिता को वास्तव में विरोध या इनकार का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है, निकाह सही और पूर्ण हो चुका है। और बक्र (पति) में उन घृणित कार्यों का पैदा हो जाना निकाह को अमान्य करने का कारण नहीं है। और चूँकि अभी हिंदा की रुख़सती नहीं हुई है, बक्र की नामर्दी का दावा सुनने योग्य नहीं है क्योंकि एक स्त्री के मामले में नामर्द वह होता है जो विशेष रूप से उस स्त्री की योनि के भीतर 'हश्फ़ा' (लिंग का अगला हिस्सा) तक प्रवेश कराने में सक्षम न हो। यह समय के साथ

अलग-अलग हो सकता है; संभव है कि कोई व्यक्ति एक स्त्री के साथ संभोग न कर सके लेकिन दूसरी पर सक्षम हो जाए, तो वह उस दूसरी के हक़ में नामर्द नहीं कहलाएगा।

[अरबी पाठ]: अल-हिन्दिया में 'निहाया' से उद्धृत है: यदि कोई पुरुष 'थय्यिबा' (वह स्त्री जिसका पहले विवाह हो चुका हो) स्त्री के साथ संभोग कर सकता है लेकिन कुंवारी स्त्रियों (अब्कार) के साथ नहीं, या कुछ स्त्रियों के साथ कर सकता है और कुछ के साथ नहीं, तो इसका कारण बीमारी या शारीरिक कमजोरी या बुढ़ापा है। [उर्दू अनुवाद]: हिन्दिया में 'निहाया' से है: अगर कोई पुरुष थय्यिबा औरत से सहवास कर सकता है लेकिन बाकिरा (कुंवारी) से नहीं कर सकता, या कुछ किस्म की औरतों से कर सकता है और कुछ से नहीं कर सकता, तो इसकी वजह बीमारी या पैदाइशी कमजोरी या बुढ़ापा है।

---

[1] रद-अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/307. पेज 711 का 739

یا بحال بلوغ خود ہندو کے ہاتھ کی بات ہے رد کردیں رد ہو جائے گا اور جب کہ جماع نہ ہوا مہر کچھ نہیں کما یأتي لکونہ فسخاً (جیسا کہ آئندہ آئیگا کیونکہ یہ فسخ کی صورت ہے۔ ت) اور اگر صورت وہ تھی جس میں ہندہ کو خیار بلوغ ملے اور وہ اس خیار کو حسب شرائط مذکورہ استعمال میں لاچکی، یا ہنوز اس کا وقت نہیں آیا کہ ہندہ ابھی نابالغہ ہے تو جب تک وقت آئے استعمال میں لائے تو بھی ہندہ کو نجات کامل بے دقت حاصل کہ فقط اس کا یہ اظہار ناراضی کرنا ہی حکم فسخ کا منشا ہو جائے گا اور حاکم مجرد اسی بناء پر نکاح فسخ کر دے گا اور اب بھی مہر اصلاً عائد نہ ہوگا کہ نکاح فسخ سے گویا کالعدم (یعنی بے ہوا) ہو جاتا ہے۔

فی ردالمحتار المھر کما یلزم جمیعہ بالدخول کذا بموت احدھما قبل الدخول اما بدون ذلك فیسقط ولو الخیار منہ لان الفرقۃ بالخیار فسخ للعقد والعقد اذا انفسخ یجعل کانہ لم یکن کما فی النھر۔ 1 ردالمحتار میں ہے : جس طرح دخول و جماع سے مہر لازم ہو جاتا ہے یونہی دخول سے قبل خاوند یا بیوی کے فوت ہو جانے سے مہر لازم ہو جاتا ہے اور دخول کے بغیر موت اور موت کے بغیر ساقط ہو جائے گا، اگرچہ لڑکے کو اختیار ہو تب بھی فسخ کرنے سے مہر ساقط ہو جائے گا کیونکہ فسخ نکاح کو کالعدم کر دیتا ہے جیسا کہ نہر میں ہے (ت)

ہاں اگر صورت وہ تھی جس میں ہندہ کو خیار بلوغ سرے سے نہ ملا، یا ملا تھا، اور ازانجا کہ ہندہ کنواری ہے جسے خیار وسیع نہیں ملتا بوجہ سکوت ساقط ہو گیا تو اب بالفعل ہندہ خواہ اس کے باپ کو اصلاً کوئی حق اعتراض وانکار حاصل نہیں، نکاح صحیح و تمام ہو چکا اور ان حرکات شنیعہ کا بکر میں پیدا ہو جانا مبطل یا وجہ ابطال نکاح نہیں، اور ابھی کہ ہندہ کی رخصت نہ ہوئی نامردی بکر کا دعوی قابل سماعت نہیں کہ عورت کے حق میں نامرد وہ ہوتا ہے جو خاص اس عورت کے

فرج داخل کے اندر ذکر حشفہ تک غائب کرنے پر قادر نہ ہو، اور یہ باختلاف زمان مختلف ہو سکتا ہے ممکن ہے کہ کوئی شخص ایک عورت کی فرج میں ادخال نہ کر سکے اور دوسری پر قادر ہو جائے تو اس دوسری کے حق میں نامرد نہ ہوگا۔

فی الھندیة عن النھایة ان کان یصل الی الثیب دون الابکار اوالی بعض النساء دون البعض وذلك لمرض اولضعف فی خلقه اولکبر سنه ہندیہ میں نہایہ سے ہے : اگر کوئی مرد ثیبہ عورت سے وطی کرسکتا ہے باکرہ سے نہیں کرسکتا، یا بعض قسم کی عورتوں سے کرسکتا ہے اور بعض سے نہیں کرسکتا اس کی وجہ مرض ہے یا پیدائشی کمزوری یا بڑھاپا ہے

---

1 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۷/۲ Page 711 of 739

Fatawa Rizvia Volume 11

[Arabic]: Or sorcery, then he is impotent regarding the one he cannot reach. [Urdu]: Or it is magic, then he will be declared impotent regarding such women with whom he cannot have sexual intercourse. (T)

Rather, even if we accept that Bakr is impotent regarding Hind, an objection cannot be raised on this basis, because impotence does not invalidate marriage. Instead, after a claim and proof of non-intercourse, the man is given a full year's grace period. The woman has no right at all to spend those days apart from him. For as many days as she stays away on her own, that many days will be added to the duration.

[Arabic]: In Al-Durr al-Mukhtar: [If] she found him impotent, a year is granted, and Ramadan and her menstruation days are included in it. Likewise, pilgrimage (Hajj) and his absence, but not the duration of her Hajj and her absence. [Urdu]: It is stated in Durr-e-Mukhtar that if a wife says about her husband that she found him impotent, the man will be given a one-year grace period, in which Ramadan and menstruation days will also be counted. Similarly, Hajj and the days of the husband's absence will also be counted, but the days of the woman's Hajj and absence will not be counted. (T)

When the wife is still not self-governing even after impotence is proven through Sharia proof until the one-year period passes and non-intercourse is still proven such that separation does not occur, then before the consummation, being self-governing on the basis of such thoughts is not correct at all. Instead, the remedy is to file a claim of impotence before the Sharia judge. After the proof of virginity, a one-year grace period should be obtained by his order. After the period has passed, upon proving the persistence of virginity to the Sharia judge, asking for immediate separation is sufficient, whether Bakr agrees or not. At that time, it will be a Ba'in divorce (irrevocable). If Bakr did not even have seclusion (Khalwat) with Hind, then half the dower is due, and if there was seclusion but no ability for penetration of the penis, then the full dower will be mandatory.

[Arabic]: In Al-Hindia: If she chooses separation, the Qadi (judge) shall command him to divorce her with one Ba'in divorce. If he refuses, he (the judge) shall separate them. Thus Imam Muhammad, may Allah have mercy on him, mentioned in Al-Asl, as it is in Al-Tabyin. And the separation... [Urdu]: It is stated in Hindia that (at the end of the period) if the woman demands separation, the judge will tell the husband to give her a Ba'in divorce. If the husband refuses, the judge himself shall effect the

separation. Imam Muhammad, may Allah Almighty have mercy on him, has stated similarly in Al-Mabsut, as it is in Al-Tabyin. And the separation...

---

1. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter 12 regarding the impotent, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/522.
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on the Impotent, Matba' Mujtabai Delhi, 1/254.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 11

[अरबी]: या जादू है, तो वह उन महिलाओं के मामले में नपुंसक घोषित किया जाएगा जिनसे वह संभोग नहीं कर सकता। [उर्दू]: या जादू है, तो वह ऐसी औरतों के हक में नामर्द करार दिया जाएगा जिनसे वती (संभोग) नहीं कर सकता। (त)

बल्कि अगर हम यह मान भी लें कि बक्र, हिन्द के मामले में भी नामर्द है, तो भी इस आधार पर छूट देने से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि नामर्दी निकाह को अमान्य नहीं करती। बल्कि संभोग न होने के दावे और प्रमाण के बाद पुरुष को पूरे एक साल की मोहलत दी जाती है और औरत को यह अधिकार कतई नहीं है कि वह उन दिनों को उससे अलग रहकर बिताए। जितने दिन वह खुद अलग रहेगी, उसकी अवधि में उतने ही दिन और बढ़ा दिए जाएंगे।

[अरबी]: अल-दुर्र अल-मुख्तार में: [यदि] उसने उसे नपुंसक पाया, तो एक साल की मोहलत दी जाती है, और रमज़ान और उसके मासिक धर्म के दिन इसमें शामिल हैं। इसी तरह, हज और उसकी अनुपस्थिति, लेकिन उसकी हज और उसकी अनुपस्थिति की अवधि नहीं। [उर्दू]: दुर्रे मुख्तार में है कि किसी बीवी ने खाविन्द (पति) के बारे में कहा कि मैंने उसे नामर्द पाया है, तो मर्द को एक साल की मोहलत दी जाएगी जिसमें रमज़ान और मासिक धर्म के दिन भी गिने जाएंगे। इसी तरह हज और मर्द की गैर-हाजिरी के दिन भी गिने जाएंगे लेकिन औरत के हज और गैर-हाजिरी के दिन नहीं गिने जाएंगे। (त)

जब पत्नी के हक में नामर्दी शरिया सबूत से साबित होने के बाद भी अभी वह खुद मुख्तार (स्वतंत्र) नहीं होती जब तक कि एक साल की अवधि बीतने पर भी संभोग न होना साबित न हो जाए कि अलगाव न हो जाए, तो विदा होने से पहले ऐसे विचारों के आधार पर खुद मुख्तारी हरगिज़ सही नहीं है। बल्कि इसका समाधान यही है कि शरीअत के जज (हाकिम-ए-शरा) के सामने नामर्दी का दावा किया जाए और कौमार्य (बकारत) साबित होने के बाद उनके आदेश से एक साल की मोहलत मिले। अवधि बीतने के बाद जज के सामने कौमार्य बरकरार रहने के साबित होने पर तुरंत अलगाव माँगने पर बक्र खुद माने या न माने, जज का अलगाव कर देना ही काफी है। उस समय तलाक-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक) हो जाएगा, और अगर बक्र ने हिन्द से खलवत (एकांतवास) ही नहीं की तो आधा मेहर और अगर खलवत की और लिंग प्रवेश की क्षमता नहीं पाई तो पूरा मेहर अनिवार्य होगा।

[अरबी]: अल-हिन्दिया में: यदि वह अलगाव चुनती है, तो काजी (न्यायाधीश) उसे आदेश देगा कि वह उसे एक तलाक-ए-बाइन दे। यदि वह मना करता है, तो वह (काजी) उनके बीच अलगाव कर देगा। इसी तरह इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अल-अस्ल में उल्लेख किया है, जैसा कि अल-तबीन में है। और अलगाव... [उर्दू]: हिन्दिया में है (कि अवधि खत्म होने पर) अगर औरत अलगाव का मुतालबा (माँग) करे तो काजी खाविन्द को कहेगा कि उसको बाइन तलाक दे दे, अगर खाविन्द इनकार करे तो काजी खुद अलगाव कर दे। इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि ने मब्सूत में इसी तरह फरमाया है जैसा कि तबीन में है। और अलगाव...

---

1. फतावा हिन्दिया, किताबुन निकाह, बाब 12, नामर्द के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/522।
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुल अनैन, मतब-ए-मुजतबाई दिल्ली, 1/254।

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

او سحر فھو عنین فی حق من لا یصل الیھا 1۔ یا جادو ہے ، تو وہ ایسی عورتوں کے حق میں نامرد قرار دیا جائیگا جن سے وطی نہیں کر سکتا۔ (ت)

بلکہ اگر تسلیم ہی کرلیں کہ بکر ہندہ کے حق میں بھی نامرد ہے تاہم اس بنا پر رخصت سے انکار نہیں ہوسکتا کہ نامردی مبطلِ نکاح نہیں ہوتی بلکہ بعد دعوٰی و ثبوت عدم مجامعت مرد کو سال بھر کامل کی مہلت دی جاتی ہے اور عورت ہر گز اختیار نہیں رکھتی کہ ان دنوں کو اس سے جدا رہ کر گزار دے جتنے دن خود جدا رہے گی مدت میں اتنے روز اور بڑھا دئے جائیں گے۔

فی الدرالمختار وجدتہ عنینا اجل سنۃ و رمضان و ایام حیضھا منھا وکذا حجۃ وغیبتہ لا مدۃ حجھا وغیبتھا 2۔ در مختار میں ہے کہ کسی بیوی نے خاوند کے متعلق کہا کہ میں نے اسے نامرد پایا ہے تو مرد کو ایک سال کی مہلت دی جائے گی جس میں رمضان اور ایام حیض بھی شمار ہوں گے یونہی حج، اور مرد کی غیر حاضری کے دن بھی شمار ہوں گے لیکن عورت کے حج اور غیر حاضری کے ایام شمار نہ ہوں گے۔ (ت)

جب زوجہ کے حق میں نامردی بثبوت شرعی ثابت ہونے کے بعد بھی ہنوز خود مختار نہیں ہوتی جب تک مدت ایک سال گزرنے پر بھی عدم جماع ثابت ہو کہ تفریق نہ ہو جائے تو پیش از رخصت ایسے خیالات کی بنا پر خود مختاری ہر گز صحیح نہیں بلکہ چارہ کار وہی حاکم شرع کے حضور دعوٰی نامردی اور بعد ثبوت بکارت اس کے حکم سے مہلت یکسالہ ملنی اور بعد مرور میعاد حاکم شرع کو بقائے بکارت ثابت ہونے پر فوراً تفریق مانگنے پر خود بکر یا وہ نہ مانے تو حاکم شرع کا

تفریق کر دینا کافی ہے اس وقت طلاق بائن ہو جائے گی، اور اگر بکر نے ہندہ سے خلوت ہی نہ کی تو نصف مہر اور خلوت کی اور ادخالِ ذکر پر قدرت نہ پائی تو کل مہر لازم آئے گا۔

فی الھندیۃ ان اختارت الفرقۃ امرہ القاضی ان یطلقھا طلقۃ بائنۃ فان ابی فرق بینھما ھکذا ذکر محمد رحمہ اللہ تعالیٰ فی الاصل کذا فی التبیین۔ والفرقۃ ہندیہ میں ہے (کہ مدت ختم ہونے پر) اگر عورت تفریق کا مطالبہ کرے تو قاضی خاوند کو کہے گا کہ اس کو بائنہ طلاق دے دے، اگر خاوند انکار کرے تو قاضی خود تفریق کردے، امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے مبسوط میں یونہی ذکر فرمایا جیسا کہ تبیین میں ہے۔ اور تفریق

---

1 فتاوی ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۲۲ 2 درمختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۴

Fatawa Razawiyya Volume 11

It will be a 'Talaq-e-Ba'in' (irrevocable divorce), as stated in 'Al-Kafi'. She will be given the full mahr (dower), and by consensus, iddah (waiting period) is mandatory if the husband has had privacy (khulwat) with her. Otherwise, there is no iddah, and half the mahr will be given if it was fixed. If not fixed, then a 'mut'ah' (provision of clothes etc.) will be given as in 'Al-Badai'. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 438: 22 Shawwal 1315 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, an outsider, lives in Amr's house. Amr, by misleading and deceiving the heirs of Hindah, claimed Zaid's lineage to be Sayyid and arranged the marriage. After some time, it was found that he is not a Sayyid but a weaver (Noorbaf). Now Hindah's heirs feel ashamed, and it is a great insult as the marriage of a Sayyid and a weaver is a matter of great disgrace. Therefore, is it impermissible for Hindah's heirs to annul the marriage in these times or not? After the situation became known, Zaid left that place. At the time of his wife's departure, he took an oath saying, 'I will not come to this village for as long as I live', and later sent a letter with the same message. Now, what is the ruling? Explain and be rewarded.

Answer: In the questioned scenario, there is no need for annulment because the marriage itself did not take place at all. The questioner states that Hindah is an adult, and according to the fatwa-based narration, for a woman with a guardian (wali), 'Kafa'at' (compatibility) is a condition for the validity of the marriage. Unless the nearest guardian knowingly expresses consent to the lack of compatibility before the contract, becoming satisfied after the contract is of no use.

Arabic Text

In 'Radd al-Muhtar', compatibility is considered for the binding nature of marriage according to the 'Zahir al-Riwayah', and for its validity according to the narration of Al-Hasan, which is the chosen view for the fatwa. In 'Al-Durr al-Mukhtar', a fatwa is given for the absolute impermissibility of marriage with a non-compatible person.

Urdu Translation

It is in 'Radd al-Muhtar' that the consideration of 'Kufu' (compatibility) is for making the marriage binding as per the apparent narration, and according to the narration of Imam Hasan (may Allah have mercy on him), it is for the validity of the marriage, and this is the chosen view for the fatwa. It is in 'Durr al-Mukhtar' that the fatwa is for the total impermissibility of marriage in non-compatibility.

1. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Chapter 12 regarding the impotent, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/524.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Compatibility, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/318.

फतावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

यह तलाक़-ए-बाइन होगी, जैसा कि 'अल-काफ़ी' में है। उसे पूरा महर दिया जाएगा, और सर्वसम्मति से उस पर इद्दत होगी बशर्ते कि पति ने उसके साथ खल्वत (एकांतवास) किया हो। अन्यथा इद्दत नहीं होगी, और महर भी आधा दिया जाएगा यदि वह निर्धारित था। यदि निर्धारित नहीं था, तो कपड़ों का जोड़ा आदि दिया जाएगा जैसा कि 'बदाई' में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 438: 22 शव्वाल 1315 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद, जो एक अजनबी है, अम्र के घर में रहता है। अम्र ने हिन्दा के वारिसों को बहकाकर और धोखा देकर ज़ैद का वंश 'सैयद' बताया और निकाह करा दिया। कुछ समय बाद पता चला कि वह सैयद नहीं बल्कि 'नूरबाफ़' (जुलाहा) है। अब हिन्दा के वारिस शर्मिंदा हैं और इसे बड़ा अपमान मानते हैं क्योंकि सैयद और नूरबाफ़ का निकाह बहुत बड़ा कलंक है। इसलिए, क्या वर्तमान समय में हिन्दा के वारिसों के लिए निकाह रद्द करना मना है या नहीं? स्थिति स्पष्ट होने के बाद ज़ैद वहां से चला गया। पत्नी की विदाई के समय उसने कसम खाकर कहा, 'मैं इस गाँव में जीवन भर नहीं आऊँगा', और फिर इसी आशय का एक पत्र भेजा। अब इसका क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: पूछी गई स्थिति में निकाह रद्द करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह निकाह सिरे से हुआ ही नहीं। प्रश्नकर्ता का कथन है कि हिन्दा बालिग है, और मुफ़्ती-बह (जिस पर फ़तवा है) रिवायत के अनुसार वली (संरक्षक) वाली महिला के लिए 'कफ़ाअत' (अनुकूलता) निकाह की वैधता की शर्त है। यदि निकटतम वली निकाह से पहले जानबूझकर गैर-कफ़ाअत पर अपनी सहमति व्यक्त न कर दे, तो निकाह के बाद राजी हो जाना भी कोई लाभ नहीं देता।

अरबी पाठ

'रद अल-मुह्तार' में है कि निकाह के अनिवार्य होने के लिए कफ़ाअत का विचार 'ज़ाहिर अल-रिवायत' के अनुसार है, और इसकी वैधता के लिए इमाम हसन की रिवायत के अनुसार है जो फ़तवा के लिए चुना गया है। 'अल-दुर्र अल-मुह्तार' में गैर-कुफ़ू में निकाह

उर्दू अनुवाद

'रद अल-मुह्तार' में है कि कुफ़ू का विचार निकाह को लाज़िम (अनिवार्य) करने के लिए है जैसा कि ज़ाहिर रिवायत है, और इमाम हसन (रहमतुल्लाह अलैहि) की रिवायत पर निकाह की सेहत (वैधता) के लिए है और यही फ़तवा के लिए मुख़्तार (चुना हुआ) है। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है कि गैर-कुफ़ू में निकाह के सिरे से नाजायज़ होने का फ़तवा है।

अरबी पाठ **उर्दू अनुवाद**

के पूर्णतः नाजायज़ होने का फ़तवा दिया गया है।

1. फतावा हिंदिया, निकाह की किताब, बारहवां अध्याय, नामर्द के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/524
2. रद अल-मुह्तार, कफ़ाअत का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत 318/2

पेज 713/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

تطلیقة بائنة کذافی الکافی ولھا المھر کاملا وعلیھا العدة بالاجماع ان کان الزوج قد خلابھا والا فلاعدة علیھا ولھا نصف المھر ان کان مسمی والمتعة ان لم یکن کذا فی البدائع واللہ تعالی اعلم۔ طلاق بائنہ ہوگی، جیسا کہ نہر میں ہے اور اسے پورا مہر دیا جائے گا، اور بالا جماع اس پر عدت ہوگی بشرطیکہ خاوند اس سے خلوت کرچکا ہو ورنہ عدت نہ ہوگی اور مہر بھی نصف دیا جائیگا جب مقرر ہو، اور اگر مقرر نہ ہو تو پھر جوڑا وغیرہ دیا جائے گا جیسا کہ بدائع میں ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۳۸: ۲۲ شوال ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید ایک شخص اجنبی عمرو کے مکان پر رہتا ہے، عمرو نے وارثانِ ہندہ کے بہکا کر اور دھوکا دے کر زید کا نسب سید بتایا اور نکاح کرا دیا، بعد کچھ مدت کے معلوم ہوا کہ وہ سید نہیں نور باف ہے، اب وارثان ہندہ کو شرم معلوم ہوتی ہے اور بہت اہانت ہے کہ سید اور نور باف کا نکاح بہت عار ہے، لہٰذا وارثانِ ہندہ کو فسخ کرنا فی زمانہ نا جائز ہے یا نہیں؟ زید بعد ظاہر ہونے حال کے وہاں سے چلا گیا وقت رخصت زوجہ سے قسم کھا کر کہا میں اس قریہ میں تاحیات نہ آؤں گا، پھر اس مضمون کا خط لکھ کر بھیجا اب اس کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں کچھ حاجت فسخ نہیں کہ وہ نکاح سرے سے خود ہی نہ ہوا، سائل مظہر کہ ہندہ بالغہ ہے اور روایت مفتی بہا پر ولی والی عورت کے لئے کفاعت شرطِ صحت نکاح ہے یا ولی اقرب پیش از عقد عدم کفاعت پر دانستہ اپنی رضا ظاہر کردے بعد عقد راضی ہو جانا بھی نفع نہیں دیتا۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
في ردالمحتار تعتبر الكفاءة للزوم النكاح على ظاهر الرواية ولصحته على رواية الحسن المختار للفتوى اھ وفی الدرالمختار يفتى فی غير الكفو بعدم جوازه اصلا	ردالمحتار میں ہے کہ کفو کا اعتبار نکاح لازم کرنے کے لئے ہے جیسا کہ ظاہر روایت ہے، اور امام حسن رحمۃ اللہ تعالیٰ کی روایت پر صحت نکاح کے لئے ہے اور یہی فتویٰ کے لئے مختار ہے اھ، در مختار میں ہے کہ غیر کفو میں نکاح کے اصلا ناجائز ہونے کا فتویٰ

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۲۴ 2 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۸/۲

Fatawa Ridawiyya Volume 11

[Arabic side] And it is the chosen opinion for Fatwa, so it is not lawful without the consent of the guardian after his knowledge of it, so let it be preserved (end of brief quote). In Radd al-Muhtar: This is when she has a guardian who did not agree to it before the contract, so consent after it is of no avail - Bahr.

Here, when he is not a peer (kufw) and the guardian was deceived, since neither of the two matters were established, the marriage remained purely void. After the reality of Zaid became apparent, that oath and writing are all futile, based on which no ruling of prohibition can be imposed for Hind.

As for the issue in Al-Hindiyya: if a man attributes a lineage to himself other than his true one, and it is found to be lower than that and he is not a peer, the right of annulment is established for everyone. And the issue in Al-Durr from Al-Walwaljiyya: if a woman marries a man not knowing his condition and he turns out to be a slave, she has no choice, rather the choice is for the guardians. If they married her with her consent but stipulated compatibility (kafa'at), or he informed them of it at the time of the contract and they married her based on that, and then it appeared he was not a peer, they have the choice (summarized). Its apparent meaning is that all of this is based on the apparent validity of the contract and the establishment of an objection. How can it not be so, while the issue is narrated in Al-Khaniya from Al-Asl? However, based on what is chosen for Fatwa, there is no validity at all, as is not hidden. And Allah Almighty knows best.

[Urdu side] This Fatwa will be given as it is the chosen one, so the wife will not be lawful without the guardian's consent, provided the guardian knows of the lack of compatibility (kufw). Keep this preserved. Briefly, in Radd al-Muhtar it says: This is the case when there is a guardian and he was not satisfied before the marriage; satisfaction after the marriage will not be effective, Bahr (T).

But the issue from Al-Hindiyya is that if a man changes his lineage and tells the woman, and then his lineage is found to be lower than what he stated, this is a matter of lineage compatibility, so the guardians have the right to annul. And the issue in 'Dur' is what is quoted from 'Walwaljiya' that if a girl unknowingly marries someone and later finds out he is a slave, she herself does not have the choice to annul, but her guardians do. If the guardians themselves performed the marriage with the girl's consent and they stipulated compatibility, or at the time of the contract the husband informed the guardians of being a peer, and based on this condition the

guardians performed the marriage, and later it appeared that the boy is not a peer, then the guardians will have the choice to annul. So it is apparent that this is based on the validity of the marriage and the establishment of an objection. And why wouldn't it be apparent when in 'Khaniya' this issue is quoted from 'Al-Mabsut'? But according to what has been chosen for Fatwa, the opinion regarding the validity of this marriage is not correct, as is not hidden. And Allah Almighty knows best. (T)

---

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/191 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/297 3 Fatawa Hindiyya, Chapter on Peers (Akfa'), Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/293 4 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Compatibility (Kafa'at), Mujtabai Press Delhi, 1/193

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

[अरबी पक्ष] यही फ़तवा के लिए चुनिंदा मत है, अतः वली (अभिभावक) की जानकारी के बाद उसकी रज़ामंदी के बिना पत्नी वैध नहीं होगी, अतः इसे सुरक्षित कर लें (संक्षेप में)। रद-उल-मुहतार में है: यह तब है जब उसका वली हो जिसने अनुबंध से पहले इसे स्वीकार न किया हो, अतः इसके बाद की रज़ामंदी प्रभावी नहीं होगी - बहर।

यहाँ जब वह कुफ़ू (समान) नहीं है और वली को धोखा दिया गया, चूँकि दोनों बातें प्रमाणित नहीं हुईं, निकाह पूरी तरह अमान्य रहा। ज़ैद का असली हाल ज़ाहिर होने के बाद, वह कसम और तहरीर सब व्यर्थ है, जिसके आधार पर हिन्द के लिए निषेध का हुक्म लागू नहीं हो सकता।

जहाँ तक अल-हिन्दिया के मसले की बात है: यदि कोई पुरुष अपनी वास्तविक वंश के अतिरिक्त कोई और वंश बताता है, और बाद में वह उससे निम्न पाया जाता है और वह कुफ़ू नहीं है, तो सभी के लिए निकाह निरस्त करने का अधिकार स्थापित हो जाता है। और अल-दुर्र में अल-वलवालजिया से संबंधित मसला: यदि कोई महिला किसी पुरुष से उसकी स्थिति जाने बिना विवाह करती है और वह गुलाम निकलता है, तो महिला के पास कोई विकल्प नहीं है, बल्कि विकल्प अभिभावकों के पास है। यदि उन्होंने उसकी सहमति से विवाह किया लेकिन कफ़ाअत (बराबरी) की शर्त रखी, या उसने अनुबंध के समय उन्हें इसके बारे में सूचित किया और उन्होंने उसके आधार पर विवाह किया, और बाद में पता चला कि वह कुफ़ू नहीं था, तो उनके पास विकल्प है (संक्षेप में)। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह सब अनुबंध की स्पष्ट वैधता और आपत्ति की स्थापना पर आधारित है। ऐसा क्यों न हो, जबकि यह मसला अल-खनिया में अल-अस्ल से उद्धृत है? हालाँकि, फ़तवा के लिए जो चुना गया है, उसके आधार पर इसकी कोई वैधता नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू पक्ष] यही फ़तवा के लिए चुनिंदा है, तो वली की रज़ामंदी के बिना बीवी हलाल नहीं होगी, बशर्ते कि वली को गैर-कुफ़ू का इल्म हो, इसे सुरक्षित कर लो (संक्षेप में)। रद-उल-मुहतार में है: यह तब है जब उसका वली हो और निकाह से पहले राज़ी न हुआ हो, और निकाह के बाद की रज़ा कारआमद (प्रभावी) न होगी, बहर (त)।

लेकिन हिन्दिया का मसला यह है कि अगर मर्द ने औरत को अपना नसब (वंश) बदल कर बताया और बाद में उसका नसब उसके बताए हुए नसब से कम दर्जे का ज़ाहिर हुआ, तो यह नसबी कुफ़ू है इसलिए औलिया को फ़स्ख़ (निरस्त करने) का अधिकार होगा। और 'दुर' का मसला यह है कि जो ब-

हवाला वलवालजिया है कि अगर लड़की ने खुद ना-इल्मी में किसी व्यक्ति से निकाह कर लिया और बाद में मालूम हुआ कि वह गुलाम है, तो लड़की को खुद अधिकार नहीं होगा बल्कि उसके औलिया को हक-ए-फ़स्ख़ होगा। और अगर औलिया ने खुद लड़की की रजामंदी से निकाह किया और औलिया ने कफ़ाअत शर्त कर ली या निकाह के वक्त दूल्हे ने औलिया को कुफ़ू होने की खबर दी, इस शर्त पर औलिया ने निकाह कर दिया, बाद में लड़के का गैर-कुफ़ू होना ज़ाहिर हुआ तो औलिया को फ़स्ख़ का अधिकार होगा। तो ज़ाहिर है कि यह सेहत-ए-निकाह (निकाह की वैधता) और सबूत-ए-एतराज़ पर आधारित है। और ज़ाहिर कैसे न हो जबकि खानिया में यह मसला मबसूद से मंकूल (उद्धृत) है, लेकिन जो चीज़ फ़तवा के लिए मुख्तार (चुनी हुई) करार दी गई है, उस पर यह निकाह का कॉल (कथन) सही नहीं है जैसा कि पोशीदा नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/191 2 रद-उल-मुहतार, बाबुल वली, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/297 3 फ़तावा हिन्दिया, बाबुल अक्फ़ा, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/293 4 दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/193

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

[عربی حصہ] وھو المختار للفتوی فلا تحل بلارضی ولی بعد معرفتہ ایاہ فلیحفظ ۱ اہ مختصرا۔ فی ردالمحتار ھذا اذا کان لھا ولی لم یرض بہ قبل العقد فلا یفید الرضی بعدہ بحر ۲ - یہاں جب کہ وہ کفو نہیں اور ولی کو دھوکا دیا گیا دونوں امر سے کچھ متحقق نہ ہوا اور نکاح باطل محض رہا، بعد ظہور حال زید کی وہ قسم و تحریر سب مہمل ہے جس پر ہندہ کے لئے حکم حرمت مرتب نہیں ہو سکتا۔ اما مسألۃ الھندیۃ انتسب الزوج لھا نسباً غیر نسبہ فأن ظھر دونہ وھو لیس بکفو فحق الفسخ ثابت لکل ۳ . ومسألۃ الدرعن الولوالجیۃ نکحت رجلا ولم تعلم حالہ فاذا ھو عبد لا خیار لھا بل للاولیاء ولو زوجوھا برضاً ھا وشرطوا الکفاءۃ او اخبروھم بھا وقت العقد فزوجوھا علی ذلک ثم ظھر انہ غیر کفو کان لھم الخیار ۴ (ملخصاً) فظاھرہ ان کل ذلك مبنی علی الظاھر وھو صحۃ العقد وثبوت الاعتراض کیف وقد نقل المسألۃ فی الخانیۃ عن الاصل اما علی المختارۃ للفتوی فلا صحۃ اصلا کما لا یخفی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

[اردو حصہ] دیا جائیگا یہی فتوی کے لئے مختار ہے، تو ولی کی رضا کے بغیر بیوی حلال نہ ہوگی بشرطیکہ ولی کو غیر کفو کا علم ہو ، اسے محفوظ کر لو اھ مختصراً، ردالمحتار میں ہے : یہ جب ہے کہ اس کا ولی ہو اور نکاح سے قبل راضی نہ ہوا ہو، اور نکاح کے بعد کی رضا کارآمد نہ ہوگی، بحر (ت) لیکن ہندیہ کا مسئلہ کہ اگر مرد نے عورت کو اپنا نسب تبدیل کر کے بتایا تو بعد میں اس کا نسب اس کے بیان کردہ نسب سے کم درجہ ظاہر ہوا تو یہ کفو نسبی ہے لہذا اولیاء کو فسخ کا اختیار ہوگا، اور در کا مسئلہ یہ ہے کہ جو بحوالہ ولوالجیہ ہے کہ اگر لڑکی نے خود کسی شخص سے لاعلمی میں نکاح کرلیا بعد میں معلوم ہوا کہ وہ غلام ہے تو لڑکی کو خود اختیار نہ ہوگا بلکہ اس کے اولیاء کو حق فسخ ہوگا اور اگر اولیاء نے خود نکاح کیا لڑکی کی رضامندی سے

اور اولیاء نے کفاءت شرط کرلی یا نکاح کے وقت زوج نے وقت نکاح اولیاء کو کفو ہونے کی خبر دی اس شرط پر اولیاء نے نکاح کر دیا، بعد میں لڑکے کا غیر کفو ہونا ظاہر ہوا تو اولیاء کو فسخ کا اختیار ہوگا، تو ظاہر ہے کہ یہ صحت نکاح اور ثبوت اعتراض پر مبنی ہے اور ظاہر کیسے نہ ہو جبکہ خانیہ میں یہ مسئلہ مبسوط سے منقول ہے لیکن جو چیز فتوی کے لئے مختار قرار دی گئی ہے ، اس پر یہ نکاح کا قول صحیح نہیں ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

---

۱ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱ ۲ ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۹۷/۲ ۳ فتاوی ھندیہ باب في الاکفاء نورانی کتب خانہ پشاور ۲۹۳/۱ ۴ درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۳/۱

Fatawa Razawiya, Volume 11

Problem 439: From Allahabad Chowk, sent by Molvi Abdul Ghafoor Sahib Saudagar, 23 Safar 1316 AH. What is your statement (may Allah the Exalted have mercy on you) regarding whether a non-Arab ('Ajami) scholar is a suitable match (kufu) for a Sayyid woman or not? Explain with textual evidence from books so you may be rewarded on the Day of Judgment.

What is your opinion (may Allah the Exalted have mercy on you) on this matter: is a non-Arab scholar a suitable match for a Sayyid woman or not? Please explain with reference to books so that you may receive your reward on the Day of Judgment.

The Answer: Yes, if he is religious and practicing, because the excellence of knowledge is above the excellence of lineage. Allah the Exalted says: "Allah will exalt in rank those who believe among you and those who have been given knowledge" (1). And He, the Exalted, said: "Say: Are those who know equal to those who do not know?" (2). In 'Wajeez al-Imam al-Kardari': A non-Arab scholar is a suitable match for an ignorant Arab, because the honor of knowledge is stronger and higher. Similarly, a poor scholar is a match for an ignorant rich person. Likewise, a scholar who is not a Qurayshi is a match for an ignorant Qurayshi or Alawi (Sayyid) (3). End quote. In 'al-Fath' and 'al-Nahr' and others, from 'Jami' al-Imam Qadi Khan': A non-Arab scholar is a match for an ignorant Arab woman and an Alawi woman because the honor of knowledge is above the honor of lineage (4). End quote. In 'al-Nahr' and 'al-Durr', it is firmly stated.

Yes, when a non-Arab scholar is religious and practicing, because the merit of knowledge is superior to the merit of lineage; Allah the Exalted said: Allah has given height to those among you who believe and those who were given knowledge, He gave them many ranks. And Allah the Exalted said: Are those with knowledge and those without knowledge equal? In Imam Kardari's Wajeez, it is stated that a non-Arab scholar will be a suitable match for an ignorant Arab because scientific honor is stronger and more exalted, and similarly if a scholar is poor he will be a match for an ignorant wealthy person, and similarly a non-Qurayshi scholar will be a match for an ignorant Alawi and an ignorant Qurayshi. End quote. In Fath and Nahr etc., it is narrated from Jami al-Imam Qazi Khan that a non-Arab scholar is a match for an

ignorant Arab and an ignorant Alawi because scientific honor prevails over lineage honor. End quote. In Nahr and Durr, it is stated that Bazzazi was certain about this.

1. Al-Quran Al-Karim 58/11
2. Al-Quran Al-Karim 39/9
3. Wajeez al-Imam al-Kardari on the margin of Fatawa Hindiyyah, Book Five, on Al-Kafa'ah, Nurani Kutub Khana Peshawar 3/116
4. Fath al-Qadir, Section on Al-Kafa'ah, Nuriya Razawiya Sukkur 3/190

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

मसला 439: इलाहाबाद चौक से, मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहब सौदागर द्वारा प्रेषित, 23 सफ़र 1316 हिजरी। अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए, इस मसले में आपका क्या कहना है कि क्या एक अजमी (ग़ैर-अरब) आलिम एक सय्यद ज़ादी (सय्यद महिला) के लिए कुफ़ू (विवाह के योग्य बराबर का मेल) है या नहीं? किताब के हवाले से बयान फ़रमाएँ ताकि आपको क़यामत के दिन इसका अज्र (पुण्य) मिले।

अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए, इस मसले में आपका क्या कहना है कि अजमी आलिम सय्यद ज़ादी का कुफ़ू है या नहीं? किताबों के हवाले से बयान फ़रमाएँ क़यामत के रोज़ सवाब पाएँ।

अल-जवाब: हाँ, यदि वह दीनदार और शरीअत का पाबंद हो, क्योंकि ज्ञान की श्रेष्ठता वंश की श्रेष्ठता से ऊपर है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अल्लाह उन लोगों के दरजों को बुलंद करेगा जो तुममें से ईमान लाए और जिन्हें ज्ञान दिया गया" (1)। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "कह दीजिए: क्या वे लोग जो जानते हैं और वे जो नहीं जानते, बराबर हो सकते हैं?" (2)। इमाम करदरी की 'वजीज़' में है: अजमी आलिम, जाहिल अरबी का कुफ़ू होगा क्योंकि ज्ञान का सम्मान अधिक शक्तिशाली और ऊंचा है। इसी तरह एक निर्धन आलिम, एक जाहिल धनवान का कुफ़ू होगा। इसी प्रकार वह आलिम जो कुरैशी नहीं है, जाहिल कुरैशी और अलवी (सय्यद) का कुफ़ू बनेगा (3)। समाप्त। 'फ़तह' और 'नहर' आदि में 'जामिअल इमाम क़ाज़ी खान' से नक़ल है कि अजमी आलिम, जाहिल अरब और जाहिल अलवी औरत का कुफ़ू है क्योंकि ज्ञान का सम्मान वंश के सम्मान से ऊपर है (4)। समाप्त। 'नहर' और 'दुर' में इस बात पर दृढ़ता व्यक्त की गई है।

हाँ, जब अजमी आलिम दीनदार और अमल करने वाला हो, क्योंकि इल्म (ज्ञान) की फ़ज़ीलत नसब (वंश) की फ़ज़ीलत से बेहतर है; अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने तुममें से ईमान वालों को और उन लोगों को जिन्हें इल्म दिया गया, उन्हें कई दरजे की बुलंदी अता फ़रमाई। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: क्या इल्म वाले और बे-इल्म बराबर हैं? इमाम करदरी की 'वजीज़' में है कि अजमी आलिम, जाहिल अरबी का कुफ़ू होगा क्योंकि इल्मी शराफ़त (सम्मान) ज़्यादा ताक़तवर और बुलंद है, और इसी तरह अगर आलिम फ़क़ीर (ग़रीब) हो तो वह जाहिल अमीर का कुफ़ू होगा, और इसी तरह ग़ैर-कुरैशी आलिम जाहिल अलवी और जाहिल कुरैशी का कुफ़ू बनेगा। 'फ़तह' और 'नहर' वग़ैरह में 'जामिअल इमाम क़ाज़ी खान' से मंक़ूल (नक़ल किया गया) है कि अजमी आलिम, जाहिल

अरब और जाहिल अलवी का कुफ़ू है क्योंकि इल्मी शराफ़त नसबी शराफ़त पर ग़ालिब (प्रभावी) है। 'नहर' और 'दुर' में है कि बज़ाज़ी ने इस पर दृढ़ता व्यक्त की है।

1. अल-क़ुरान अल-करीम 58/11
2. अल-क़ुरान अल-करीम 39/9
3. वजीज़ अल-इमाम अल-करदरी, फ़तावा हिंदीया के हाशिए पर, बाब पाँचवाँ, अल-कफ़ाअत (बराबरी) के विषय में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 3/116
4. फ़तह अल-क़दीर, फ़स्ल अल-कफ़ाअत, नूरिया रज़विया सुक्कुर 3/190

पृष्ठ 715 का 739

جلد یاز دہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۴۳۹: از الٰہ آباد چوک مرسلہ مولوی عبدالغفور صاحب سوداگر ۲۳ صفر ۱۳۱۶ھ ما قولکم رحمکم اللہ تعالیٰ فی ان العالم العجمی کفو للسیدۃ ام لا بینوا بسند الکتاب توجروا یوم الحساب۔ آپ (رحمکم اللہ تعالیٰ) کا اس مسئلہ میں کیا قول ہے کہ عجمی عالم سید زادی کا کفو ہے یا نہیں؟ کتاب کے حوالے سے بیان فرمائیں، قیامت کے روز اجر پائیں۔

الجواب: نعم اذاکان دینا متدینا لان فضل العلم فوق فضل النسب قال اللہ تعالیٰ یَرْفَعِ اللّٰہُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْکُمْ وَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ۱۔ و قال تعالٰی قُلْ ھَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ۲۔ فی وجیز الامام الکردری: العجمی العالم کفو للعربی الجاھل لان شرف العلم اقوی وارفع، و کذا العالم الفقیر لغنی الجاھل، وکذا العالم الذی لیس بقرشی کفو للجاھل القرشی والعلوی۳ اھ و فی الفتح والنھر و غیرھما عن جامع الامام قاضی خان العالم العجمی یکون کفو ا للجاھل العربی والعلویۃ لان شرف العلم فوق شرف النسب٤ اھ و فی النھر والدر جزم بہ۔

ہاں، جب عجمی عالم دیندار عامل ہو، کیونکہ علم کی فضیلت نسب کی فضیلت سے فائق ہے، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: میں سے ایمان والوں کو اللہ تعالیٰ نے بلندی دی اور ان لوگوں کو جو علم دئے گئے ان کو کئی درجات دئے گئے، ۱۔ اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا: کیا علم والے اور بے علم برابر ہیں، امام کردری کی وجیز میں ہے کہ عجمی عالم، جاہل عربی کا کفو ہوگا کیونکہ علمی شرافت اقویٰ وارفع ہے، اور یوں ہی عالم فقیر ہو تو وہ جاہل غنی کا کفو ہوگا اور یوں ہی غیر قرشی عالم جاہل علوی اور جاہل قرشی کا کفو بنے گا اھ فتح اور نہر وغیرہما میں جامع الامام قاضی خان سے منقول ہے کہ عجمی عالم، جاہل عربی اور جاہل علوی کا کفو ہے کیونکہ علمی شرافت نسبی پر غالب ہے، اھ۔ نہر اور در میں ہے کہ بزازی نے اس پر جزم کیا ہے اور

١ القرآن الكريم ٥٨/١١ ٢ القرآن الكريم ٣٩/٩ ٣ وجيز الامام الكردرى على هامش فتاوى هنديہ الباب الخامس فى الكفاءة نورانى كتب خانہ پشاور ٣/١١٦ ٤ فتح القدير فصل فى الكفاءة نوريہ رضويہ سكهر ٣/١٩٠

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

Al-Bazzazi and Al-Kamal and others have approved of it, and the reason for it is evident, etc. In Radd al-Muhtar, it is quoted from Khair al-Din al-Ramli, who cited Majma' al-Fatawa, which quoted Al-Muhit stating that a scholar is an equal match (kufu) for a woman of Alawi lineage, because the nobility of the rank (of knowledge) is stronger, etc. He said, and Al-Ramli also mentioned, that he (the author of Al-Muhit) was certain about this in Al-Muhit, Al-Bazzaziya, Al-Faydh, Jami' al-Fatawa, and Al-Durr, etc. Its complete research is contained therein. In Fatawa al-Khairiyya li-Naf' al-Bariyya, it is recorded that Ibn Abbas (may Allah be pleased with both) said: Scholars have seven hundred ranks above general believers, and between every two ranks is a journey of five hundred years. This is a matter of consensus. All scholarly books agree on the precedence of a scholar over a Qurayshi, while Allah Almighty, in His declaration "Are those who know and those who do not know equal?", did not distinguish between a Qurayshi and a non-Qurayshi. (Excerpt ends)

I say: We restrict the term 'scholar' to one who is knowledgeable in religion and is pious, because such a person is the true scholar. As for the misguided scholars, they are worse than the ignorant, for compound ignorance (al-jahl al-murakkab) is the most heinous and abject state, and its possessor is more contemptible and lowly in both worlds. Their small ones are like cattle, nay, even more astray, and their big ones are like dogs, nay, even more degraded. Narrated by Al-Daraqutni.

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Kafa'ah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/198 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/323 3. Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/323 4. Fatawa Khairiyya, Miscellaneous Issues, end of the book, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/234

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारहवाँ

अल-बज़्ज़ाज़ी और अल-कमाल वगैरह ने इसे पसंद फ़रमाया है और इसकी वजह ज़ाहिर है आदि। और रद-उल-मुह्तार में ख़ैर-उल-दीन अल-रम्ली से उन्होंने मज्मअ-उल-फ़तावा से नक़ल किया कि मुहीत में है कि आलिम, अलवी लड़की का कुफ़ू (बराबर) है क्योंकि ओहदे की शराफ़त अधिक मज़बूत है आदि। और फ़रमाया कि रम्ली ने मज़ीद ज़िक्र किया कि मुहीत, बज़्ज़ाज़िया, फ़ैज़, जामे-उल-फ़तावा और दुर्र ने इस पर जज़्म (निश्चय) किया है, और फ़तावा ख़ैरिया लि-नफ़-इल-ब्रिया में है कि हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया: उलेमा को आम मोमिनीन पर सात सौ दरजे बरतरी (श्रेष्ठता) हासिल है और हर दो दरजों के दरमियान पाँच सौ साल का सफ़र है और इस पर इज्माअ (सहमति) है। तमाम इल्मी कुतुब (किताबें), क़ुरैशी पर आलिम की श्रेष्ठता पर मुत्तफ़िक़ हैं, जबकि अल्लाह तआला ने अपने इरशाद "क्या आलिम और जाहिल बराबर हैं" में क़ुरैशी और ग़ैर-क़ुरैशी का कोई फ़र्क़ नहीं फ़रमाया। (संक्षिप्त में)

मैं कहता हूँ: हमने आलिम को दीन का आलिम और दीनदार आलिम होने की शर्त के साथ मुक़ैयद (सीमित) किया है क्योंकि हक़ीक़तन आलिम वही है, जबकि गुमराह उलेमा तो जाहिलों से भी बदतर हैं क्योंकि जाहिल-ए-मुरक्कब (वह जो न जानता हो कि वह नहीं जानता) अत्यंत बुरा और रुसवा है, और दोनों जहाँ में वह हक़ीर और ज़लील है। उनके छोटे चौपायों की तरह बल्कि उससे भी गए गुज़रे हैं, और उनके बड़े कुत्ते बल्कि ज़लील-तरीन हैं। दार-क़ुतनी ने इसे रिवायत किया है।

पाद टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-कफ़ाअह, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, 1/198 2. रद-उल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअह, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/323 3. रद-उल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअह, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/323 4. फ़तावा ख़ैरिया, मसाइल-ए-शत्ता, किताब के अंत में, दार अल-मआरिफ़ा, बेरुत, 2/234

पृष्ठ 716 का 739

(Arabic Column): البزازی وارتضاہ الکمال وغیرہ والوجہ فیہ ظاھر الخ وفي ردالمحتار عن الخیر الرملي عن مجمع الفتاوی عن المحیط العالم یکون کفو اللعلویة لان شرف الحسب اقوی الخ۔ قال وذکر ایضاً یعنی الرملي انہ جزم بہ في المحیط والبزازیة والفیض وجامع الفتاوی والدر الخ۔ وتمامہ تحقیقہ فیہ. وفي الفتاوی الخیریة لنفع البریة. قال ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما للعلماء درجات فوق المؤمنین بسبعمائة درجة مابین کل درجتین مسیرة خمسمائة عام وھذا مجمع علیہ وکتب العلم طافحة بتقدم العالم علی القرشي ولم یفرق سبحانہ وتعالی بین القرشي وغیرہ في قولہ تعالی ھل یستوي الذین یعلمون والذین لا یعلمون اہ ملتقطا۔ قلت وانما قید نابکونہ دیناً متدیناً لانہ ھو العالم حقیقة واما اصحاب الضلال فشر من الجھال فان الجھل المرکب اشنع واخنع وصاحبہ في الدارین احقر واوضع، صغارھم کالا نعام بل ھم اضل وکبارھم کالکلام لابل اذل. اخرج الدارقطنی

(Urdu Column): کمال وغیرہ نے اس کو پسند فرمایا ہے اور اس کی وجہ ظاہر ہے الخ۔ اور ردالمحتار میں خیر الدین رملی سے انھوں نے مجمع الفتاوی سے نقل کیا کہ محیط میں ہے کہ عالم، علوی لڑکی کا کفو ہے کیونکہ عہدہ کی شرافت اقوی ہے الخ، اور فرمایا کہ رملی نے مزید ذکر کیا کہ محیط، بزازیہ، فیض، جامع الفتاوی اور در نے اس پر جزم کیا ہے، اور اور فتاوی خیریہ لنفع البریہ میں ہے کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا: علماء کو عام مومنین پر سات سو درجات برتری ہے اور ہر دو درجوں میں پانچ سو سال کا سفر ہے اور اس پر اجماع ہے اور تمام علمی کتب، قرشی پر عالم کے تقدم میں متفق ہیں، جبکہ اللہ تعالیٰ نے اپنے ارشاد "کیا عالم اور جاہل برابر ہیں" میں قرشی اور غیر قرشی کی کوئی تفریق نہیں فرمائی اہ ملتقطا۔ قلت (میں کہتا ہوں) ہم عالم کو دین کا عالم اور دین دار عالم سے مقید کریں گے کیونکہ حقیقتاً عالم وہی ہے جبکہ

گمراہ علماء تو جاہلوں سے بدتر ہیں کیونکہ جاہل مرکب، انتہائی برا، رسوا، اور دونوں جہاں میں وہ حقیر اور ذلیل ہیں، ان کے چھوٹے چوپایوں کی طرح بلکہ اس سے بھی گئے گزرے، اور ان کے بڑے، کتے بلکہ ذلیل ترین ہیں، دار قطنی نے

حواشی: 1 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۸/۱ 2 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۳/۲ 3 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۳/۲ 4 فتاوی خیریہ مسائل شتی آخر کتاب دارالمعرفۃ بیروت ۲۳۴/۲

Qadi al-Husayn ibn Isma'il narrated to us from Muhammad ibn 'Abdullah al-Makhrami from Isma'il ibn Aban from Hafs ibn Ghiyath from al-A'mash from Abu Ghalib from Abu Umama (may Allah be pleased with him) who said: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The people of innovation are the dogs of the fire."[1] - Abu Hatim al-Khuza'i also narrated it from him in his hadith collection with the wording "The companions of innovation are the dogs of the fire."[2] And Abu Nu'aym narrated in *al-Hilyah* from Anas (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) that: "The people of innovation are the worst of creation and creatures." The scholars said: "Creation" refers to people and "creatures" refers to beasts.[3] - We ask Allah for safety, forgiveness, and well-being.

It has been extracted that Qadi Husayn ibn Isma'il related to us, from Muhammad ibn Abdullah al-Makhrami, from Isma'il ibn Aban, from Hafs ibn Ghiyath, who narrated a hadith from al-A'mash, from Abu Ghalib, from Abu Umama (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Innovators are the dogs of Hell." Abu Hatim al-Khuza'i narrated this from him in his hadith collection with the words, "The companions of innovation are the dogs of Hell." Abu Nu'aym narrated in *al-Hilyah* from Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The people of innovation are more evil than all creation." Scholars stated that in the hadith, 'creation' refers to humans and 'creatures' refers to quadrupeds. We ask Allah for well-being, safety, and forgiveness.

Then I say: It is also necessary to restrict [the ruling] to those who are not among those known for extreme meanness, such as weavers, tanners, cobblers, barbers, and their likes. For the matter depends on whether it is considered shameful in the custom (urf) of the cities, as stated by the great scholars. The Absolute Researcher (al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) said in *Fath al-Qadir*: "The cause is

Then I say: (I say again that) it is also necessary for that scholar to be restricted by the condition that he is not extremely despicable or known for lowly occupations, such as being a weaver, barber, cobbler, tanner, or the like, because the basis of the matter is that he should not be considered contemptible in the local custom, as specified by the prominent scholars. The Absolute

Qadi al-Husayn ibn Isma'il narrated to us from Muhammad ibn 'Abdullah al-Makhrami from Isma'il ibn Aban from Hafs ibn Ghiyath from al-A'mash from Abu Ghalib from Abu Umama (may Allah be pleased with him) who said: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The people of innovation are the dogs of the fire."[1] - Abu Hatim al-Khuza'i also narrated it from him in his hadith collection with the wording "The companions of innovation are the dogs of the fire."[2] And Abu Nu'aym narrated in *al-Hilyah* from Anas (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) that: "The people of innovation are the worst of creation and creatures." The scholars said: "Creation" refers to people and "creatures" refers to beasts.[3] - We ask Allah for safety, forgiveness, and well-being.

It has been extracted that Qadi Husayn ibn Isma'il related to us, from Muhammad ibn Abdullah al-Makhrami, from Isma'il ibn Aban, from Hafs ibn Ghiyath, who narrated a hadith from al-A'mash, from Abu Ghalib, from Abu Umama (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Innovators are the dogs of Hell." Abu Hatim al-Khuza'i narrated this from him in his hadith collection with the words, "The companions of innovation are the dogs of Hell." Abu Nu'aym narrated in *al-Hilyah* from Anas (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The people of innovation are more evil than all creation." Scholars stated that in the hadith, 'creation' refers to humans and 'creatures' refers to quadrupeds. We ask Allah for well-being, safety, and forgiveness.

that which the people of custom regard as deficient, therefore the ruling depends on it."

Researcher stated in *Fath al-Qadir* that the people of custom considering someone deficient is the reason, therefore the ruling's basis...

[1] Kanz al-Ummal, cited from Qut in Al-Afrad Hadith, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 1/223 [2] Kanz al-Ummal, cited from Abu Hatim Al-Khuza'i Hadith, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 1/218 [3] Hilyat al-Awliya, translation number Abu Saud al-Mawsili, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 8/291

काज़ी अल-हुसैन बिन इस्माइल ने हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-मखरामी से, उन्होंने इस्माइल बिन अबान से, उन्होंने हफ़्स बिन ग़ियाथ से, उन्होंने अल-आमश से, उन्होंने अबू ग़ालिब से, उन्होंने अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बिदअती लोग जहन्नम के कुत्ते हैं।"[1] - अबू हातिम अल-खुज़ाई ने भी उनसे अपनी हदीस की किताब में इन शब्दों के साथ रिवायत किया है कि "बिदअत के साथी जहन्नम के कुत्ते हैं।"[2] और अबू नुऐम ने 'अल-हिल्या' में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बिदअती लोग तमाम मख़्लूक़ और ख़लीक़ा में सबसे बुरे हैं।" उलमा ने फ़रमाया कि हदीस में 'ख़ल्क़' से मुराद इंसान हैं और 'ख़लीक़ा' से मुराद जानवर हैं।[3] - हम अल्लाह से सलामती, माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करते हैं।

फिर मैं कहता हूँ: इस हुक्म को उन लोगों तक सीमित करना भी ज़रूरी है जो अपनी नीचता के लिए मशहूर न हों, जैसे जुलाहा, चमड़ा रंगने वाला, मोची, नाई और उनके जैसे लोग, क्योंकि दारोमदार शहरों के उर्फ़(प्रथा) में शर्मिंदगी की मौजूदगी पर है जैसा कि बड़े उलमा ने साफ़ तौर

इसकी तख़रीज की गई है कि हमें काज़ी हुसैन बिन इस्माइल ने, उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला मख़रमी से, उन्होंने इस्माइल बिन अबान से, उन्होंने हफ़्स बिन ग़ियाथ से हदीस बयान की, उन्होंने आमश से, उन्होंने अबू ग़ालिब से, उन्होंने अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बिदअती लोग जहन्नम के कुत्ते हैं।" इसकी तख़रीज अबू हातिम ख़ुज़ाई ने उनसे अपनी जुज़-ए-हदीसी में इन अल्फाज़ के साथ की कि "बिदअत के साथी जहन्नम के कुत्ते हैं।" अबू नुऐम ने ह़िलिया में रिवायत किया अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया कि "अहले बिदअत तमाम मख़्लूक़ से शरीफ़ (बुरे) हैं।" उलमा ने फ़रमाया कि हदीस में 'ख़ल्क़' से मुराद लोग और 'ख़लीक़ा' से मुराद चौपाये हैं, अल्लाह तआला से हम आफ़ियत, सलामती और मआनी का सवाल करते हैं।

फिर मैं कहता हूँ: (मैं फिर कहता हूँ कि) उस आलिम के लिए यह शर्त होना भी ज़रूरी है कि वह इंतहाई हक़ीर और मशहूर कमतर न हो, जैसा कि जुलाहा, नाई, मोची, चमड़ा रँगने वाला और उनके जैसी मिसाल न हो क्योंकि दारोमदार इस बात पर है कि इलाक़े के उर्फ़ में वह हक़ीर

काज़ी अल-हुसैन बिन इस्माइल ने हमें मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-मखरामी से, उन्होंने इस्माइल बिन अबान से, उन्होंने हफ़्स बिन ग़ियाथ से, उन्होंने अल-आमश से, उन्होंने अबू ग़ालिब से, उन्होंने अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बिदअती लोग जहन्नम के कुत्ते हैं।"[1] - अबू हातिम अल-खुज़ाई ने भी उनसे अपनी हदीस की किताब में इन शब्दों के साथ रिवायत किया है कि "बिदअत के साथी जहन्नम के कुत्ते हैं।"[2] और अबू नुऐम ने 'अल-हिल्या' में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बिदअती लोग तमाम मख़्लूक़ और ख़लीक़ा में सबसे बुरे हैं।" उलमा ने फ़रमाया कि हदीस में 'ख़ल्क़' से मुराद इंसान हैं और 'ख़लीक़ा' से मुराद जानवर हैं।[3] - हम अल्लाह से सलामती, माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करते हैं।

पर फ़रमाया है। मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने 'फ़तह अल-क़दीर' में फ़रमाया है कि उर्फ़ के लोगों का किसी को कमतर समझना ही वजह है, लिहाज़ा हुक्म का दारोमदार...

इसकी तख़रीज की गई है कि हमें काज़ी हुसैन बिन इस्माइल ने, उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला मख़रमी से, उन्होंने इस्माइल बिन अबान से, उन्होंने हफ़्स बिन ग़ियाथ से हदीस बयान की, उन्होंने आमश से, उन्होंने अबू ग़ालिब से, उन्होंने अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बिदअती लोग जहन्नम के कुत्ते हैं।" इसकी तख़रीज अबू हातिम ख़ुज़ाई ने उनसे अपनी जुज़-ए-हदीसी में इन अल्फाज़ के साथ की कि "बिदअत के साथी जहन्नम के कुत्ते हैं।" अबू नुऐम ने ह़िलिया में रिवायत किया अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया कि "अहले बिदअत तमाम मख़्लूक़ से शरीफ़ (बुरे) हैं।" उलमा ने फ़रमाया कि हदीस में 'ख़ल्क़' से मुराद लोग और 'ख़लीक़ा' से मुराद चौपाये हैं, अल्लाह तआला से हम आफ़ियत, सलामती और मआनी का सवाल करते हैं।

शुमार न हो, जैसा कि अकाबिर उलमा ने तसरीह फ़रमाई है। मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाया कि अहले उर्फ़ का नाक़िस समझना सबब है लिहाज़ा हुक्म का दारोमदार...

[1] कन्ज़ अल-उम्माल, ह़वाला क़ुत फ़ी अल-अफ़राद हदीस, मुअस्सस अल-रिसाला, बेरुत, 1/223 [2] कन्ज़ अल-उम्माल, ह़वाला अबू हातिम अल-खुज़ाई हदीस, मुअस्सस अल-रिसाला, बेरुत, 1/218 [3] ह़िलियत अल-औलिया, तर्जुमा नंबर अबू सऊद अल-मूसली, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरुत, 8/291

تخریج کی ہے کہ ہمیں قاضی حسین بن اسمعیل ان کو

قال حدثنا القاضی الحسین بن اسمعیل نا محمد بن عبد اللہ المخرمی نا اسمعیل بن ابان ثنا حفص بن غیاث عن الاعمش عن ابی غالب عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اھل البدع کلاب اھل النار[1]-واخرجہ عنہ ابو حاتم الخزاعی فی جزئہ الحدیثی بلفظ اصحاب البدع کلاب اھل النار[2]، ولابی نعیم في الحلیۃ عن انس رضی اللہ تعالی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اھل البدع شر الخلق والخلیقہ،قال العلماء الخلق الناس والخلیقۃ البھائم[3]-نسأل اللہ السلامۃ والعفو والعافیۃ.

محمد بن عبداللہ مخرمی ان کو اسمعیل بن ابان ان کو حفص بن غیاث نے حدیث بیان کی انھوں نے اعمش نے ابو غالب انھوں نے ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بدعتی لوگ جہنم کے کتے ہیں۔ '' اس کی تخریج ابو حاتم خزاعی نے ان سے اپنی جزء حدیثی میں ان الفاظ کے ساتھ کی کہ ''اصحاب بدعت جہنم کے کتے ہیں۔'' ابو نعیم نے حلیہ میں روایت کیا انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا کہ ''اہل بدعت تمام مخلوق سے شریر ہیں۔'' علماء نے فرمایا کہ حدیث میں خلق سے مراد لوگ اور خلیقہ سے مراد چوپائے ہیں، اللہ تعالیٰ سے ہم عافیت، سلامتی اور معانی کا سوال کرتے ہیں۔

ثم اقول: یجب التقیید ایضا بماذا لم یکن من المتناھین في الدنائتۃ المعروفین بھا،کالحائك و الدباغ والخصاف والحلاق ونظرائھم، فان

ثم اقول: (میں پھر کہتا ہوں کہ) وہ عالم اس قید سے بھی مقید ہونا ضروری ہے کہ وہ انتہائی حقیر اور مشہور کمتر نہ ہو، جیسا کہ جولا ہا، نائی، موچی،

تخریج کی ہے کہ ہمیں قاضی حسین بن اسمعیل ان کو

قال حدثنا القاضی الحسین بن اسمعیل نا محمد بن عبد الله المخرمی نا اسمعیل بن ابان ثنا حفص بن غیاث عن الاعمش عن ابی غالب عن ابی امامة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم اهل البدع کلاب اهل النار[1]-واخرجه عنه ابو حاتم الخزاعی فی جزئه الحدیثی بلفظ اصحاب البدع کلاب اهل النار[2]، ولابی نعیم في الحلیة عن انس رضی الله تعالی عنه عن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم اهل البدع شر الخلق والخلیقه،قال العلماء الخلق الناس والخلیقة البهائم[3]-نسأل الله السلامة والعفو والعافیة.

محمد بن عبداللہ مخرمی ان کو اسمعیل بن ابان ان کو حفص بن غیاث نے حدیث بیان کی انھوں نے اعمش انھوں نے ابو غالب انھوں نے ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بدعتی لوگ جہنم کے کتے ہیں۔ '' اس کی تخریج ابو حاتم خزاعی نے ان سے اپنی جزء حدیثی میں ان الفاظ کے ساتھ کی کہ ''اصحاب بدعت جہنم کے کتے ہیں۔'' ابو نعیم نے حلیہ میں روایت کیا انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا کہ ''اہل بدعت تمام مخلوق سے شریر ہیں۔'' علماء نے فرمایا کہ حدیث میں خلق سے مراد لوگ اور خلیقہ سے مراد چوپائے ہیں، اللہ تعالیٰ سے ہم عافیت، سلامتی اور معانی کا سوال کرتے ہیں۔

المدار على وجود العار في عرف الامصار كما صرح به العلماء الكبار-قال المحق على الاطلاق في فتح القدير الموجب هو استنقاص اهل العرف

چمڑا رنگنے والا اور ان کی مثل نہ ہو کیونکہ دار و مدار اس بات پر ہے کہ علاقے کے عرف میں وہ حقیر شمار نہ ہو، جیسا کہ اکابر علماء نے تصریح فرمائی ہے۔ محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں فرمایا کہ

تخریج کی ہے کہ ہمیں قاضی حسین بن اسمعیل ان کو

قال حدثنا القاضی الحسین بن اسمعیل نا محمد بن عبداللہ مخرمی ان کو اسمعیل بن ابان ان کو محمد بن عبد اللہ المخرمی نا اسمعیل بن حفص بن غیاث نے حدیث بیان کی انھوں نے اعمش ابان ثنا حفص بن غیاث عن الاعمش عن انھوں نے ابو غالب انھوں نے ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ ابی غالب عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: بدعتی لوگ جہنم کے کتے ہیں۔ '' وسلم اھل البدع کلاب اھل النار[1]-واخرجہ اس کی تخریج ابو حاتم خزاعی نے ان سے اپنی جزء عنہ ابو حاتم الخزاعی فی جزئہ الحدیثی حدیثی میں ان الفاظ کے ساتھ کی کہ ''اصحاب بدعت بلفظ اصحاب البدع کلاب اھل النار[2]، ولابی جہنم کے کتے ہیں۔'' ابو نعیم نے حلیہ میں روایت کیا نعیم في الحلیۃ عن انس رضی اللہ تعالی انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم علیہ وسلم سے روایت کیا کہ ''اہل بدعت تمام مخلوق اھل البدع شر الخلق والخلیقہ،قال العلماء سے شریر ہیں۔'' علماء نے فرمایا کہ حدیث میں خلق الخلق الناس والخلیقۃ البھائم[3]-نسأل اللہ سے مراد لوگ اور خلیقہ سے مراد چوپائے ہیں، اللہ السلامۃ والعفو والعافیۃ۔ تعالیٰ سے ہم عافیت، سلامتی اور معانی کا سوال کرتے ہیں۔

اہل عرف کا ناقص سمجھنا سبب ہے لہذا حکم کا

دارومدار

[1] کنز العمال بحوالہ قط فی الافراد حدیث مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۲۳/۱ [2] کنز العمال بحوالہ ابو حاتم الخزاعی حدیث مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۱۸/۱ [3] حلیۃ الاولیاء ترجمہ نمبر ابو سعود الموصلی دار الکتاب العربی بیروت ۲۹۱/۸

[Arabic column text]: ...so it revolves with it. In Rad al-Muhtar, it is stated: You have learned that the reason is the disparagement by people of custom (Urf), so it revolves with that. Accordingly, whoever is a ruler or his subordinate, possessing wealth, chivalry, and dignity among the people, there is no doubt that a woman would not feel ashamed of him in custom as she would of a tanner, a weaver, or similar professions, even if the ruler or his subordinate consumes the people's wealth, because the basis here is on worldly deficiency and loftiness. [End of shortened quote]. There is no doubt that an Alawi girl in our lands does not feel ashamed to marry Afghans or Mughals who are adorned with the jewel of knowledge and virtue, for they themselves are counted among the noble and distinguished here. Thus, when the virtue of knowledge is added to that, it compensates for the deficiency of their lineage relative to the Alawi. This is unlike weavers, barbers, and the like, for the shame associated with them is not removed by their knowledge. Unless, perhaps, a long time passes, people forget it, and their influence appears in hearts and greatness in eyes such that shame no longer remains for the daughters of the prominent. Such cases are very few in these cities; rather, they are hardly found upon consideration. And whoever knows the basis knows that...

[Urdu column text]: ...it will be based on this etc. It is in Rad al-Muhtar: You have known that the reason is being considered lowly by the people of custom, so it will depend on this. Therefore, if someone is a prince, ruler, or his deputy, and is wealthy, serious, and commands awe among people, then there is no doubt a woman does not feel shame with such a person as she feels shame with a tanner or a weaver etc., even if the ruler and his deputy consume people's wealth through oppression. Because here the basis is worldly insignificance and loftiness. [End of shortened quote]. There is no doubt that an Alawi girl in our region does not feel shame with Afghans and Mughals who are adorned with the ornament of knowledge and are people of virtue who count themselves among the chosen people and nobles. So when these people are attributed to knowledge and virtue, then due to additional nobility, if they are lower in lineage compared to an Alawi, then due to knowledge and virtue, that deficiency is removed. On the contrary, the shame of a weaver, washerman, barber, cobbler, etc., is not removed because of knowledge. Yes, if these people have long since left these occupations and people have become accustomed to them in a dignified manner, and their dignity has been established in people's hearts and their value in general eyes such that now they are no longer a shame for

the daughters of great people, then it is a different matter. But such areas are very few that can be taken into account.

[Footnotes]: 1. Fath al-Qadir, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Nuriyyah Razawiyyah Sukkur, 3/193. 2. Rad al-Muhtar, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/322.

[अरबी कॉलम का अनुवाद]: ...तो यह उसी के साथ घूमता है। रद अल-मुह्तार में है: आप जान चुके हैं कि इसका कारण उर्फ(प्रथा) के लोगों द्वारा तुच्छ समझा जाना है, इसलिए यह इसी पर आधारित होगा। इस आधार पर, जो कोई शासक या उसका मातहत हो, और लोगों के बीच धन, शिष्टता और गरिमा वाला हो, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रथा में एक महिला उससे वैसी शर्म महसूस नहीं करती जैसी वह चर्मकार, जुलाहे या इसी तरह के लोगों से करती है, भले ही शासक या उसका मातहत लोगों का धन अन्याय से खाता हो, क्योंकि यहाँ आधार दुनियावी तुच्छता और श्रेष्ठता पर है। [संक्षिप्त उद्धरण समाप्त]। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे देशों में एक अलवी लड़की अफ़गानों और मुग़लों से शादी करने में शर्म महसूस नहीं करती जो ज्ञान और गुण के आभूषण से सुशोभित हैं, क्योंकि वे स्वयं यहाँ के कुलीन और विशिष्ट लोगों में गिने जाते हैं। अतः जब ज्ञान का गुण उसमें जुड़ जाता है, तो वह अलवी की तुलना में उनके वंश की कमी को पूरा कर देता है। इसके विपरीत जुलाहों, हज्जामों और उनके जैसों के मामले में, उनसे जुड़ी शर्म उनके ज्ञान के कारण समाप्त नहीं होती। सिवाय इसके कि एक लंबा समय बीत जाए, लोग उसे भूल जाएं और दिलों में उनका प्रभाव और आँखों में उनकी महानता इस तरह प्रकट हो जाए कि अब बड़े लोगों की बेटियों के लिए कोई शर्म बाकी न रहे। इन शहरों में ऐसे मामले बहुत कम हैं; बल्कि विचार करने पर वे शायद ही मिलते हैं। और जो कोई आधार जानता है वह जानता है कि...

[उर्दू कॉलम का अनुवाद]: ...इसी पर होगा आदि, रद अल-मुह्तार में है: आपने जान लिया कि कारण उर्फ के लोगों का तुच्छ समझना है तो इसी बात पर आधार होगा। इसलिए अगर कोई अमीर, हाकिम या उसका प्रतिनिधि और धनवान और गंभीर हो और लोगों में धाक वाला हो तो कोई संदेह नहीं कि ऐसी व्यक्ति से महिला शर्म महसूस नहीं करती जैसे वह चर्मकार और जुलाहे आदि से शर्म महसूस करती है, भले ही हाकिम और उसका प्रतिनिधि जुल्म के तौर पर लोगों का माल खाते हों। क्योंकि यहाँ आधार दुनियावी तुच्छता और श्रेष्ठता है। [संक्षिप्त उद्धरण समाप्त]। इसमें संदेह नहीं कि अलवी लड़की हमारे क्षेत्र में अफ़गानों और मुग़लों से, जो ज्ञान के आभूषण से सुसज्जित हैं और गुणी लोग हैं जो खुद को चुनिंदा लोगों और शरीफों में गिनते हैं, उनसे शर्म महसूस नहीं करती। तो जब ये लोग ज्ञान और गुण की ओर संदर्भित हों, तो अतिरिक्त शराफत के कारण, यदि वे वंश के रूप में अलवी से कम भी हों, तो ज्ञान और गुण के कारण वह कमी समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत जुलाहे, धोबी और नाई, मोची आदि की शर्म ज्ञान की वजह से खत्म नहीं होती। हाँ, जब ये लोग प्राचीन काल से यह

काम छोड़ चुके हों और लोग सम्मानजनक तरीके से उनसे परिचित हो चुके हों और लोगों के दिलों में उनका सम्मान और आम नज़रों में उनकी कद्र स्थापित हो चुकी हो कि अब वे बड़े लोगों की बेटियों के लिए शर्म की बात नहीं रहे, तो बात और है। लेकिन ऐसे क्षेत्र बहुत कम हैं जिन पर विचार किया जा सके।

[पादलेख]: 1. फ़तह अल-क़दीर, फ़सल फ़ि अल-कफ़ाअत, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 3/193। 2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/322।

[عربی کالم]: فیدور معه اه وفي ردالمحتار قد علمت ان الموجب هو استنقاص اهل العرف فیدور معه فعلی هذا من کان امیرا او تابعاله وکان ذا مال ومروءة وحشمة بین الناس لاشك ان المرأة لا تتعیر به فی العرف کتعیرها بدباغ وحائك ونحوهما وان کان الامیر او تابعه اکلا اموال الناس لان المدار هنا علی النقص والرفعة فی الدنیا ۲ اه مختصرا۔ ولا شك ان العلویة فی بلادنا لا تتعیر بالافاغنة والمغول المحلین بحلیة العلم والفضل فانهم فی انفسهم یعدون هنا من الشرفاء الانجاب فاذا انضاف الی ذلك فضل العلم جبر نقص نسبهم بالنسبة الی العلوی بخلاف الحاکة والحلاقین وامثالهم فان التعییر بهم لایزل بعلمهم اللهم الا اذا تقادم العهد وتناساه الناس وظهر له الوقع فی القلوب والعظم فی العیون بحیث لم یبق العار لبنات الکبار وذلك قلیل جدا فی هذه الامصار بل لا یکاد یوجد عند الاعتبار ومن عرف المدار عرف ان

[اردو کالم]: اس پر ہی ہو گا الخ ، ردالمحتار میں ہے : آپ نے معلوم کر لیا کہ سبب وہ اہل عرف کا حقیر جاننا ہے تو اسی بات پر مدار ہوگا اس لئے اگر کوئی امیر حاکم یا اس کا نائب اور مالدار اور سنجیدہ ہو اور لوگوں میں رعب والا ہو تو کوئی شک نہیں ایسے شخص سے عورت عار محسوس نہیں کرتی جیسا کہ وہ دباغ اور جولاہے وغیرہ سے عار محسوس کرتی ہے اگر چہ حاکم اور اس کا نائب ظلم کے طور پر لوگوں کے مال کھاتے ہوں۔ کیونکہ یہاں مدار دنیاوی حقارت و رفعت ہے اھ مختصرا، اس میں شک نہیں کہ علویہ لڑکی ہمارے علاقے میں افغان اور مغل جو کہ علم کے زیور سے آراستہ ہیں اور اہل فضل ہیں جو اپنے کو منتخب لوگوں اور شرفاء میں شمار کرتے ہیں ان سے عار محسوس نہیں کرتی، تو جب یہ لوگ علم و فضل کی طرف منسوب ہوں تو مزید شرافت کی بناء پر نسبی طور پر اگر علوی سے کم ہیں تو علم و فضل کی وجہ سے وہ کمی ختم ہو جاتی

ہے، اس کے برخلاف جولاہے، دھوبی اور نائی موچی وغیرہ کی عار علم کی وجہ سے ختم نہیں ہوتی، ہاں جب یہ لوگ قدیم سے یہ کام چھوڑ چکے ہوں اور لوگ معزز انداز میں ان سے مانوس ہو چکے ہوں اور لوگوں کے دلوں میں ان کا وقار اور عام نگاہوں میں ان کی وقعت قائم ہو چکی ہو کہ اب بڑے لوگوں کی لڑکیوں کے لئے عار نہیں رہے تو اور بات ہے، لیکن ایسے علاقے ہیں بہت کم ہیں جن کا اعتبار

[حواشی]: ۱ فتح القدیر فصل فی الکفاءۃ نوریہ رضویہ سکھر ۳ / ۱۹۳ ۲ ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۳۲۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic part]: "The ruling depends on it, so understand. And Allah, Glorified and Exalted, knows best." It cannot be done; however, the basis of contempt depends on custom. When the basis is this, then the ruling will be based on it. Understand, and Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Issue 440: Sent by Haji Musa Arabi, 3 Dhu al-Qi'dah 1323 AH What do the scholars of religion say regarding this: Is marriage between noble Syed ladies and non-Syeds from other communities like Sheikh, Mughal, Pathan, etc., permissible or not?

The Answer: A Syed man can marry a woman from any community. The marriage of a Syeda (Syed woman) can take place with any tribe of the Quraysh, whether they are Alawi, Abbasi, Jafari, Siddiqui, Faruqi, Uthmani, or Umayyad. As for non-Quraysh like Ansari, Mughal, or Pathan, a marriage can absolutely take place if the man is a prominent religious scholar among Muslims. Otherwise, if the Syeda is a minor and the guardian performing her marriage with that non-Qurayshi is not her father or paternal grandfather, the marriage will be void, even if done by an uncle or blood brother. If the father or grandfather has already married off one of their daughters in this way before, then even their subsequent such actions will not be valid. If she is an adult and has no guardian, she can marry that non-Qurayshi of her own free will. If she has a guardian—i.e., father, grandfather, great-grandfather, or any male descendant from them—and he explicitly permitted the marriage before it took place, knowing the person is non-Qurayshi, then it will also be permissible; otherwise, even if done by the adult woman herself, it will be completely void. The details of all these matters are found in Durr al-Mukhtar, Radd al-Muhtar, and other reliable books of the school of thought, and in several places in the Fatwas of this humble servant. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Issue 441: From a message sent by Syed Muhammad Shah Sahib, 9 Jumada al-Ula 1317 AH One person claims that a daughter of a Syed, i.e., the family of the Prophet, can be attained by anyone, meaning marriage is permissible with every Muslim. Another replied, "Even if a sweeper becomes a Muslim, is it permissible?" To which he answered, "There is no harm in it."

The Answer: The aforementioned person is a liar, a fabricator, and insolent/ disrespectful. The daughters of the noble Sadat (Syeds) are not even attained by any Mughal, Pathan, or non-Qurayshi Sheikh, like an Ansari, as long as they are not religious scholars. Although these communities are considered noble, the honor of

the Sadat is supreme and highest. Non-Quraysh cannot be the 'Kufu' (equals in status for marriage) of Quraysh. Then how, God forbid, can people from lower communities be equals of the Sadat? To the extent that even if an adult Syeda marries a Mughal, Pathan, or Ansari of her own free will...

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

[अरबी अंश]: "निर्णय उसी पर निर्भर करता है, इसलिए समझें। और अल्लाह, महिमामय और सर्वोच्च, सबसे बेहतर जानता है।" नहीं किया जा सकता, हालांकि अपमान का आधार रिवाज पर है। जब आधार यह है, तो हुक्म (आदेश) उसी पर होगा। समझो, और अल्लाह, महिमामय और सर्वोच्च, सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 440: प्रेषक हाजी मूसा अरबी, 3 ज़िलकादा 1323 हिजरी धर्म के विद्वान इस बारे में क्या फरमाते हैं कि सादात-ए-कराम (सैयद) महिलाओं का निकाह गैर-कौम गैर-सैयद जैसे शेख, मुग़ल, पठान आदि से जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): सैयद हर कौम की औरत से निकाह कर सकते हैं और सैयदानी (सैयद महिला) का निकाह कुरैश के हर कबीले से हो सकता है, चाहे वह अलवी हों या अब्बासी या जाफ़री या सिद्दीकी या फ़ारूक़ी या उस्मानी या उमवी। रहे गैर-कुरैश जैसे अंसारी या मुग़ल या पठान, उनमें जो मुसलमानों के सम्मानित धर्म गुरु (आलिम-ए-दीन) हों, उनसे पूरी तरह निकाह हो सकता है। वरना अगर सैयदानी नाबालिग है और उस गैर-कुरैशी के साथ उसका निकाह करने वाला वली (संरक्षक) पिता या दादा नहीं है, तो निकाह बातिल (अमान्य) होगा, चाहे चाचा या सगा भाई ही क्यों न करे। और अगर पिता या दादा ने अपनी किसी लड़की का निकाह पहले ऐसा कर चुके हैं, तो अब उनके द्वारा किया गया भी मान्य नहीं होगा। और अगर वह बालिग है और उसका कोई वली नहीं है, तो वह अपनी खुशी से उस गैर-कुरैशी से अपना निकाह कर सकती है। और अगर उसका कोई वली यानी पिता, दादा, परदादा या उनकी औलाद और नस्ल से कोई पुरुष मौजूद है और उसने निकाह से पहले उस व्यक्ति को गैर-कुरैशी जानकर स्पष्ट रूप से इस निकाह की इजाज़त दे दी हो, तब भी जायज़ होगा; अन्यथा बालिग महिला द्वारा किया गया भी पूर्णतः बातिल होगा। इन सभी मसलों का विवरण 'दुर्र-ए-मुख्तार' और 'रद्द-उल-मुहतार' आदि मज़हब की विश्वसनीय किताबों और इस फ़क़ीर (दासनुमा लेखक) के फ़तवों में कई स्थानों पर मौजूद है। और अल्लाह, महिमामय और सर्वोच्च, सबसे बेहतर जानता है।

मसला 441: सैयद मोहम्मद शाह साहब द्वारा प्रेषित संदेश से, 9 जमादी-उल-उला 1317 हिजरी एक व्यक्ति का कथन है कि सैयद यानी नबी की औलाद की बेटी हर किसी को मिल सकती है, यानी हर

मुसलमान से निकाह जायज़ है। दूसरे ने उत्तर दिया, "क्या अगर कोई झाड़ू देने वाला (सफाईकर्मी) मुसलमान हो जाए, तब भी जायज़ है?" तो उसने उत्तर दिया कि इसमें कोई हर्ज नहीं।

अल-जवाब (उत्तर): उक्त व्यक्ति झूठा, कज़्ज़ाब (महाझूठा) और बेअदब गुस्ताख है। सादात-ए-कराम की साहबज़ादियाँ किसी मुग़ल, पठान या गैर-कुरैशी शेख जैसे अंसारी को भी नहीं मिलतीं जब तक कि वे आलिम-ए-दीन न हों, हालांकि ये कौमें शरीफ मानी जाती हैं, लेकिन सादात का शर्फ़(सम्मान) सबसे महान और सर्वोच्च है। गैर-कुरैश कुरैश के'कुफ़ू' (बराबरी के) नहीं हो सकते, तो माज़अल्लाह (ईश्वर रक्षा करे) नीची कौम वाले सादात के कुफ़ू कैसे हो सकते हैं? यहाँ तक कि अगर बालिग सैयदानी खुद अपनी खुशी और मर्ज़ी से किसी मुग़ल, पठान या अंसारी से अपना निकाह...

पृष्ठ 719/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

الحکم علیہ یدار فافھم واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔ نہیں کیا جاسکتا، تاہم حقارت کا مدار عرف پر ہے ، جب مدار یہ ہے کہ تو حکم اس پر ہوگا، سمجھو واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۴۰: مرسلہ حاجی موسٰی عربی ۳ ذی قعدہ ۱۳۲۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارے میں کہ سادات کرام بیبیوں سے غیر قوم غیر سید مثل شیخ ، مغل ، پٹھان وغیرہ کا نکاح جائز ہے یا نہیں ؟

الجواب: سید ہر قوم کی عورت سے نکاح کر سکتے ہیں اور سیدانی کا نکاح قریش کے ہر قبیلہ سے ہو سکتا ہے خواہ علوی ہو یا عباسی یا جعفری یا صدیقی یا فاروقی یا عثمانی یا اموی ، رہے غیر قریش جیسے انصاری یا مغل یا پٹھان ان میں جو عالم دین معظم مسلمین ہو اس سے مطلقاً نکاح ہو سکتا ہے ورنہ اگر سیدانی نابالغہ ہے اور اس غیر قریشی کے ساتھ اس کا نکاح کرنے والا ولی باپ یا دادا نہیں تو نکاح باطل ہو گا اگرچہ چچا یا سگا بھائی کرے، اور اگر باپ دادا اپنی کسی لڑکی کا نکاح ایسے ہی پہلے کر چکے ہیں تو اب ان کے کئے بھی نہ ہو سکے گا اور اگر بالغہ ہے اور اس کا کوئی ولی نہیں تو وہ اپنی خوشی سے اس غیر قریشی سے اپنا نکاح کر سکتی ہے، اور اگر اس کا کوئی ولی یعنی باپ دادا پر دادا ان کی اولاد و نسل سے کوئی مرد موجود ہے اور اس نے پیش از نکاح اس شخص کو غیر قریشی جان کر صراحتاً اس نکاح کی اجازت دے دی جب بھی جائز ہوگا، ورنہ بالغہ کا کیا ہوا بھی باطل محض ہوگا۔ ان تمام مسائل کی تفصیل در مختار و ردالمحتار وغیرہما کتب معتمدہ مذہب اور فقیر کے فتاوٰی میں متعدد جگہ ہے ۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۴۱: از رسالہ مرسلہ سید محمد شاہ صاحب ۹ جمادی الاولیٰ ۱۳۱۷ھ ایک شخص کا فرمان ہے کہ سید یعنی آل نبی کی دختر ہر ایک کو پہنچ سکتی ہے یعنی ہر مسلمان سے عقد جائز ہے، دوسرے نے جواب دیا کہ اگر جاروب کش مسلمان ہو جائے تو بھی جائز ہے؟ تو اس کا جواب دیا کہ کچھ مضائقہ نہیں۔

الجواب: شخص مذکور جھوٹا کذاب اور بے ادب گستاخ ہے، سادات کرام کی صاحبزادیاں کسی مغل پٹھان یا غیر قریشی شیخ مثلاً انصاری کو بھی نہیں پہنچتیں جب تک وہ عالم دین نہ ہوں اگرچہ یہ قومیں شریف گنی جاتی ہیں مگر سادات کا شرف اعظم واعلیٰ ہے اور غیر قریش قریش کا کفو نہیں ہو سکتا تو ذلیل قوم والے معاذ اللہ کیونکر سادات کے کفو ہو سکتے ہیں یہاں تک کہ اگر بالغہ سیدانی خود اپنا نکاح اپنی خوشی ومرضی سے کسی مغل پٹھان یا انصاری

Fatawa Rizvia - Volume 11

If [an ignorant woman] marries a non-religious person, the marriage will not take place at all unless her guardian (Wali) is informed of the man's lineage before the marriage and explicitly expresses his consent. And if she is a minor and any guardian other than her father or grandfather, even a biological brother, uncle, or mother, marries her to such a person, that too will be void and rejected. And even a father or grandfather can only perform such a marriage once; if they marry another daughter to such a person again, what they have done will also be void.

[Boxed Text] Left (Arabic): All this is well-known in the books of jurisprudence (Fiqh) like Durr-al-Mukhtar and other texts. We have detailed our stance in our fatwas. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best. Right (Urdu): This is well-known in all books of Fiqh, such as Durr-al-Mukhtar, etc. We have detailed our statement in our fatwas. Allah, the Pure and Most High, knows best. (T)

Issue 424: From the Madrasa of Tehsil Nawab Ganj, District Bareilly, sent by the head teacher of the said Madrasa on 22 Sha'ban 1317 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah, out of ignorance, married her minor daughter to Khalid, who was not compatible (Kufu). After the wife reached puberty and became aware of the husband's incompatibility, there is discord between the couple. Hindah, too, after learning this, is extremely displeased and desires the separation of her daughter, but Khalid refuses to divorce her solely to cause harm. In this situation, can this marriage be annulled? Does the aforementioned wife have the right to remarry? Explain and be rewarded.

The Answer: The questioner, upon inquiry, stated that the woman is a Pathan and Khalid is of the Dhana caste. He deceived them by presenting himself as a Pathan and performed the marriage. At the time of marriage, the aforementioned married girl had no father or grandfather. Yes, an adult brother was present but for some reason, he did not participate in the marriage ceremony, nor did the mother take permission from him. Therefore, in the described situation, according to Shariah, this marriage never occurred; what is there to annul? The daughter of Hindah is free to marry whomever she wishes. It is stated in Durr-al-Mukhtar:

[Boxed Text] Left (Arabic): If the person performing the marriage is other than the father and his father, even the mother, the marriage to a non-compatible person is not valid at all. What is in Sadr al-Shariah, that it is valid and they have the right to

annul it, is an illusion. Right (Urdu): If the person performing the marriage is other than the father or grandfather, even if it is the mother, the marriage to a non-compatible person will not be valid at all. And what is in Sadr al-Shariah—that the marriage is valid and the father and grandfather have the right of annulment—is merely a misconception. (T)

In Rad al-Muhtar, under the commentator's statement: "Compatibility is considered for the binding nature of marriage." (Compatibility is taken into account for the binding nature of marriage. T)

1. Durr-al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192. Page 720 of 739

यदि [एक अज्ञानी महिला] किसी अधर्मी व्यक्ति से विवाह करती है, तो विवाह तब तक बिल्कुल नहीं होगा जब तक कि उसका वली (अभिभावक) विवाह से पहले पुरुष के वंश के बारे में जानकर स्पष्ट रूप से अपनी सहमति व्यक्त न कर दे। और यदि वह नाबालिग है और उसके पिता या दादा के अलावा कोई भी वली, चाहे वह सगा भाई, चाचा या माँ ही क्यों न हो, उसका विवाह ऐसे व्यक्ति से कर दे, तो वह भी अमान्य और रद्द होगा। और पिता या दादा भी ऐसा विवाह केवल एक बार ही कर सकते हैं; यदि वे दोबारा किसी अन्य पुत्री का विवाह ऐसे व्यक्ति से करेंगे, तो उनके द्वारा किया गया वह विवाह भी अमान्य होगा।

[बॉक्स टेक्स्ट] बाएँ(अरबी): यह सब फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की किताबों जैसे दुर्रे मुख्तार आदि में प्रसिद्ध है। हमने अपने फतवों में विस्तार से अपना मत व्यक्त किया है। और अल्लाह, वह पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है। दाएँ(उर्दू): यह सभी फ़िक़्ह की किताबों में प्रसिद्ध है, जैसे दुर्रे मुख्तार आदि। हमने अपने फतवों में विस्तार से अपना कथन स्पष्ट कर दिया है। अल्लाह, पवित्र और सर्वोच्च, सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 424: तहसील नवाबगंज, जिला बरेली के मदरसा से, उक्त मदरसा के प्रधान शिक्षक द्वारा भेजा गया, 22 शाबान 1317 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: हिंदा ने अनजाने में अपनी नाबालिग बेटी का निकाह खालिद के साथ कर दिया जो कुफ़ू (संगत/बराबर) नहीं था। पत्नी के बालिग होने और पति के गैर-कुफ़ू होने के ज्ञान के बाद, दंपति के बीच अनबन है। हिंदा भी यह जानने के बाद बेहद नाखुश है और अपनी बेटी का अलगाव चाहती है, लेकिन खालिद केवल कष्ट पहुँचाने के लिए उसे तलाक नहीं दे रहा है। इस स्थिति में, क्या यह निकाह निरस्त किया जा सकता है? क्या उक्त पत्नी को दूसरा निकाह करने का अधिकार है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछने वाले ने पूछताछ के बाद बताया कि महिला पठान है और खालिद धना जाति का है। उसने खुद को पठान बताकर धोखे से निकाह कर लिया। उक्त विवाहित लड़की के निकाह के समय उसका कोई पिता या दादा नहीं था। हाँ, एक जवान भाई मौजूद था, लेकिन किसी कारणवश वह निकाह की सभा में शामिल नहीं हुआ, और न ही माँ ने उससे अनुमति ली। अतः पूछी गई स्थिति में

शरीयत के अनुसार यह निकाह हुआ ही नहीं, तो निरस्त किसे किया जाए? हिंदा की बेटी को अधिकार है कि वह जिससे चाहे निकाह कर ले। दुर्रे मुख्तार में है:

[बॉक्स टेक्स्ट] बाएँ(अरबी): यदि निकाह कराने वाला पिता और उसके पिता के अलावा कोई और है, यहाँ तक कि माँ भी, तो गैर-कुफ़ू में निकाह बिल्कुल मान्य नहीं है। सद्रुश शरीआ में जो है कि यह मान्य है और उन्हें इसे निरस्त करने का अधिकार है, वह एक भ्रम है। दाएँ(उर्दू): यदि निकाह कराने वाला पिता या दादा के अलावा कोई और है, भले ही वह माँ ही क्यों न हो, तो गैर-कुफ़ू में निकाह मूल रूप से मान्य नहीं होगा। और जो सद्रुश शरीआ में है कि निकाह सही है और पिता और दादा को निरस्त करने का अधिकार है, यह केवल एक भ्रम है। (त)

रद अल-मुहतार में भाष्यकार के कथन के तहत: "निकाह की अनिवार्यता के लिए कुफ़ू का संज्ञान लिया जाता है।" (निकाह के बंधनकारी होने के लिए कुफ़ू (समानता) का विचार किया जाता है। त)

1. दुर्रे मुख्तार, बाबू वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192। पृष्ठ 720 / 739

شیخ غیر عالم دین سے کرے گی تو نکاح سرے سے ہو گا ہی نہیں جب تک اس کا ولی پیش از نکاح مرد کے نسب پر مطلع ہو کر صراحۃً اپنی رضامندی ظاہر نہ کردے، اور اگر نا بالغہ ہے اور اس کا نکاح باپ دادا کے سوا کوئی ولی اگرچہ حقیقی بھائی یا چچا یا ماں ایسے شخص سے کردے تو وہ بھی باطل و مردود ہوگا۔ اور باپ دادا بھی ایک ہی بار ایسا نکاح کر سکتے ہیں دوبارہ اگر کسی دختر کا نکاح ایسے شخص سے کریں گے تو ان کا کیا ہوا بھی باطل ہوگا۔

[باکس ٹیکسٹ] عربی: کل ذلک معروف فی کتب الفقہ کالدر المختار وغیرہ من الاسفار وقد فصلنا القول فیہ فی فتاؤنا واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔ اردو: یہ تمام کتب فقہ میں معروف ہے جیسے درمختار وغیرہ ہم نے تفصیل کے طور پر اپنا قول اپنے فتاوی میں بیان کردیا ہے، واللہ سبحنہ وتعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۴۲۴: از مدرسہ تحصیل نواب گنج ضلع بریلی مرسلہ مدرس اول مدرسہ مذکور ۲۲ شعبان ۱۳۱۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نے اپنی دختر نا بالغہ کا نکاح خالد کے ساتھ جو غیر کفو تھا لاعلمی میں کردیا بعد بلوغ زوجہ اور علم غیر کفو ہونے زوج کے زوجین میں نا اتفاقی ہے، اور ہندہ بھی بعد علم کے نہایت ناراض ہے اور دختر کی مفارقت چاہتی ہے مگر خالد محض ایذا رسانی کی وجہ سے اس کو طلاق نہیں دیتا، اس صورت میں یہ نکاح فسخ ہو سکتا ہے یا نہیں اور زوجہ مذکورہ کو نکاح ثانی کرنے کا اختیار ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: سائل نے بعد استفسار اظہار کیا کہ عورت پٹھان ہے اور خالد قوم کا دھنا اور اس نے اپنے آپ کو پٹھان ظاہر کر کے براہ فریب نکاح کرلیا منکوحہ مذکورہ کا وقت نکاح باپ دادا کوئی نہ تھا، ہاں جوان بھائی موجود تھا مگر کسی وجہ سے جلسہ نکاح میں شریک نہ ہوا نہ ماں نے اس سے اجازت لی، پس صورت مستفسرہ میں شرعاً یہ نکاح ہوا نہیں فسخ کسے کیا جائے، دختر ہندہ کو اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرلے، در مختار میں ہے:

[باکس ٹیکسٹ] عربی: ان کان المزوج غیر الاب وابیہ ولو الام لایصح النکاح من غیر کفو اصلا وما فی صدر الشریعۃ صح ولھما فسخہ وھم۔ اردو: اگر نکاح دینے والا باپ دادا کا غیر ہو اگرچہ وہ ماں ہو تو نکاح غیر کفو میں اصلاً نہ ہو گا اور جو صدر الشریعہ میں ہے کہ نکاح صحیح ہے اور باپ دادا کو فسخ کا اختیار ہے یہ محض وہم ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں زیر قول شارح تعتبر الکفاءۃ للزوم النکاح (کفو کا اعتبار لزوم نکاح کے لئے ہے۔ ت)

۱ درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۲ صفحہ ۷۲۰ از ۷۳۹

Fatawa Razvia Volume 11

He said: *Ay 'ala zahir al-riwayah wa lisihatihi 'ala riwayah al-Hasan al-mukhtarah lil-fatwa* - 1 | Meaning, based on the apparent narration and for the correctness of marriage according to the narration of Imam Hasan, this condition is necessary, and this is the chosen opinion for Fatwa. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated: *Law zawwaj al-ab'ad hal qiyam al-aqrab tawqafa 'ala ijazatihi* - 2 | If the closer guardian is present, the marriage performed by a more distant relative will be dependent on the permission of the closer guardian. (T)

In Radd al-Muhtar, from Bahr al-Ra'iq, it says: *Annahum qalu kullu 'aqdin la mujiza lahu hal sudurihi fahuwa batilun la yatawaqqafu* - 3 | They said: Every contract that has no one to validate it at the time of its issuance is void; it does not remain suspended. (T)

In Fath al-Qadir, it says: *Ma la mujiza lahu ay ma laysa lahu man yaqdiru 'ala al-ijazati yabtul* - 4 Wallahu Ta'ala a'lam. | And that for which there is no validator, meaning no one who has the authority to grant permission, is void. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 423 to 426: From Sambhal, 15 Ramadan-ul-Mubarak 1317 AH Zaid was previously a Thakur; now, leaving his parents and children, he has been honored with Islam. Zaid wishes to marry. Zaid's entire family is against him, and his wife does not accept becoming a Muslim. So, in such a situation, the following questions require resolution according to the Sharia. Zaid's age is now 22 years: (1) After being honored with Islam, who will Zaid be considered as? Will he be considered a Sheikh, since there are many types of Sheikhs? (2) With a girl from which community can Zaid's marriage take place? Currently, all communities refuse. According to the Sharia, which community does he have a right to?

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Kafa'at, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/318 2. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/194 3. Radd al-Muhtar, Chapter of the Guardian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/313 4. Fath al-Qadir, Chapter of the Guardian, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 3/199

फ़तावा रज़विया खंड ग्यारह

फरमाया: अय अला ज़ाहिर अल-रिवाया व लि सिह्तिही अला रिवाया अल-ह्सन अल-मुख़्ताराह लिल- फ़तवा - 1 | यानी ज़ाहिर रिवायत पर और इमाम हसन की रिवायत पर निकाह की सेहत के लिए यह शर्त है और यही फ़तवा के लिए मुख़्तार (चुना गया) है। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है: लव ज़व्वज अल-अबअद ह़ाल क़ियाम अल-अक़रब तवक़्क़फ़ अला इजाज़तिही - 2 | अगर अक़रब (निकटतम अभिभावक) मौजूद हो तो अबअद (दूर के रिश्तेदार) का कराया हुआ निकाह उस अक़रब की इजाज़त पर मौक़ूफ़ (निर्भर) होगा। (त)

रद्दुल मुह्तार में बह़रुल रैक़ से है: अन्नहुम क़ालू कुल्लु अक़दिन ला मुजीज़ा लहू ह़ाल सुदूरिही फ़हुवा बातिलुन ला यतवक़्क़फ़ु - 3 | उन्होंने कहा: हर वह अनुबंध (निकाह) जिसका उसे वैध करने वाला निकाह के समय कोई न हो, तो वह मौक़ूफ़ नहीं होगा बल्कि बातिल (अमान्य) होगा। (त)

फ़तहुल क़दीर में है: मा ला मुजीज़ा लहू अय मा लैसा लहू मन यक़दिरु अलल इजाज़ति यबतुल - 4 वल्लाहु तआला आलम। | और जिसका कोई जायज़ करने वाला न हो यानी इजाज़त का अधिकार न रखता हो तो वह बातिल है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ४२३ से ४२६: सम्भल से, १५ रमज़ान-उल-मुबारक १३१७ हिजरी ज़ैद पहले ठाकुर था, अब अपने माता-पिता और बच्चों को छोड़ कर इस्लाम से सम्मानित हो गया है, ज़ैद की इच्छा है कि निकाह करे, ज़ैद का पूरा खानदान उसके विपरीत है, बीवी को मुसलमान होना स्वीकार नहीं, अतः ऐसी स्थिति में निम्नलिखित प्रश्न शरीअत के अनुसार हल तलब हैं, ज़ैद की उम्र अब २२ साल है: (१) ज़ैद के इस्लाम से सम्मानित होने के बाद उसे क्या गिना जाएगा? क्या शेख़, क्योंकि शेख़ बहुत किस्म के होते हैं। (२) किस क़ौम की लड़की के साथ ज़ैद का निकाह हो सकता है? फिलहाल सब क़ौमें इनकार करती हैं, शरीअत के अनुसार किस क़ौम पर अधिकार है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद्दुल मुह्तार, बाब अल-कफ़ाअत, दार एह़याउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, ३१८/२ 2. दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-वली, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/१९४ 3. रद्दुल मुह्तार, बाब अल-वली, दार एह़याउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, ३१३/२ 4. फ़तहुल क़दीर, बाब अल-वली, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, १९९/३

पृष्ठ 721 का 739

فتاوٰی رضویہ جلد یاز دہم

فرمایا: ای علی ظاہر الروایۃ ولصحتہ علی روایۃ الحسن | یعنی ظاہر روایت پر اور امام حسن کی روایت پر صحت نکاح المختارۃ للفتوٰی -1 | کے لئے یہ شرط ہے اور یہی فتوٰی کے لئے مختار ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: لوزوج الابعد حال قیام الاقرب توقف علی اجازتہ -2 | اگر اقرب حاضر ہو تو ابعد کا دیا ہوا نکاح اس اقرب کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ (ت)

ردالمحتار میں بحرالرائق سے ہے: انھم قال کل عقد لا مجیز لہ حال صدورہ فھو باطل | جس نکاح کو جائز کرنے والا کوئی بھی نکاح کے وقت نہ ہو تو لا یتوقف -3 | وہ موقوف نہ ہو گا باطل ہو گا۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: ما لا مجیز لہ ای مالیس لہ من یقدر علی الاجازۃ | اور جس کا کوئی جائز کرنے والا نہ ہو یعنی اجازت کا اختیار نہ یبطل -4 واللہ تعالٰی اعلم۔ | رکھتا ہو تو وہ باطل ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۲۳ تا ۴۲۶: از سنبھل ۱۵ رمضان المبارک ۱۳۱۷ھ زید پہلے ٹھاکر تھا اب اپنے والدین واطفال کو چھوڑ کر مشرف باسلام ہو گیا، زید کی خواہش ہے کہ نکاح کرے، زید کا کل خاندان اس سے برعکس ہے، بی بی کو مسلمان ہونا قبول نہیں، پس ایسی حالت میں سوالات ذیل از روئے شرع شریف حل طلب ہیں، زید کی عمر اب ۲۲ سال ہے: (۱) زید مشرف باسلام ہونے کے بعد کون شمار کیا جائے گا اگرچہ شیخ کیونکہ شیخ بہت قسم کے ہیں۔ (۲) کس قوم کی لڑکی کے ساتھ زید کا نکاح ہو سکتا ہے فی الحال سب اقوام انکار کرتی ہیں، شرع شریف کی رو سے کس قوم پر استحقاق ہے۔

1 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۸/۲ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۴ 3 ردالمحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۳/۲ 4 فتح القدیر باب الولی مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۹۹/۳

Fatawa Razawiyya, Volume 11

(3) Now, will Zaid's offspring be considered of the mother's nation (tribe) or of the father's caste? (4) According to Sharia, does baseness or nobility depend on one's nation/caste or not? Please explain and be rewarded. The Answer: (1) Honor in both worlds is achieved by becoming a Muslim, but 'religion' is not the name of any particular nation. During the time of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), whichever nation or tribe people came from to embrace Islam, they continued to be attributed to that nation or tribe even after becoming Muslim. Among Indian nations, four nations are considered noble, among which Kshatriya, i.e., Thakur, is second; most of the rule in India belonged to this nation, hence they are called Rajputs. Thus, their respectability among Indian nations is clear, and our pure Sharia has commanded:

When a nobleman of any nation comes to you, honor him.

This was the command for just a visitor. How much more beloved to Allah the Almighty would be the honor and respect shown to a servant of God who has turned completely towards Divine guidance and joined us? He has become one of us. What greater honor is there than the honor of Islam? It has added not just four moons but a thousand moons to his respect. If even a cobbler (Chamar) becomes a Muslim, then in the religion of a Muslim, looking at him with contempt is prohibited, strictly prohibited. He has become our brother in faith. Allah the Almighty says: "The believers are but brothers" (Muslims are brothers to Muslims). And He says: "then they are your brothers in religion." Then, how can someone who embraces Islam from a respected nation be considered lowly? 'Sheikh' is not the name of any specific nation. In India, Muslims designated three nations as specifically noble and gave them titles of Syed or Mir, Khan, and Beg, as all these words mean 'leader' in Arabic, Persian, and Turkish. All other noble people, such as the glorious descendants of the Caliphs, Banu Abbas, and Ansar, were given one common title: 'Sheikh', which also means 'elder/venerable'. Apart from them, the nations that remained, which are considered lowly in worldly custom, when they saw that Mir, Khadim (Khan/Beg), and Beg are titles of specific nations and there is no room for them there, and that 'Sheikh' is a general term in which everyone else is included, they all started adopting this accommodating title for themselves.

1. Hilyat al-Awliya, Translation of Sa'id bin Iyas al-Jurayri, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut 2/205-206

2. Al-Quran al-Karim 10/29
3. Al-Quran al-Karim 5/33

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवाँ भाग

(३) अब ज़ैद की संतान माँ की जाति की मानी जाएगी या पिता की? (४) शरीयत के अनुसार, नीचता और श्रेष्ठता जाति पर निर्भर है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। उत्तर: (१) मुसलमान होने से दोनों जहाँ का सम्मान प्राप्त होता है, लेकिन 'धर्म' किसी जाति का नाम नहीं है। पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समय में जिस जाति या कबीले के लोग इस्लाम लाते थे, वे इस्लाम के बाद भी उसी जाति या कबीले से संबंधित माने जाते थे। भारतीय जातियों में चार जातियां कुलीन मानी जाती हैं, जिनमें क्षत्रिय यानी ठाकुर दूसरे नंबर पर है; भारत में अधिकांश शासन इसी जाति का रहा है, इसलिए उन्हें राजपूत कहा जाता है। अतः भारतीय जातियों में उनका सम्मानित होना स्पष्ट है, और हमारी पवित्र शरीयत ने आदेश दिया है कि:

जब तुम्हारे पास किसी जाति का सम्मानित व्यक्ति आए, तो उसका सत्कार करो।

सिर्फ आने पर तो यह आदेश था, और जो ईश्वर का भक्त पूरी तरह से दिव्य मार्गदर्शन की ओर लौटकर हमसे आ मिला, वह हमारा ही हो गया, उसका अल्लाह सुब्हानहू को कितना आदर-सत्कार पसंद होगा? इस्लाम के सम्मान के बराबर और क्या सम्मान है? इसने तो उसके सम्मान में चार चाँद नहीं, बल्कि हज़ार चाँद लगा दिए। अगर कोई चमार भी मुसलमान हो जाए, तो एक मुसलमान के धर्म में उसे नीचता की दृष्टि से देखना हराम और सख्त हराम है। वह हमारा धार्मिक भाई हो गया। अल्लाह तआला फरमाता है: "मोमिन तो भाई-भाई हैं" (मुसलमान, मुसलमान के भाई हैं)। और फरमाता है: "तो वे धर्म में तुम्हारे भाई हैं"। फिर जो किसी सम्मानित जाति का व्यक्ति इस्लाम लाए, उसे नीच कैसे समझा जा सकता है? 'शेख' किसी विशेष जाति का नाम नहीं है। भारत में मुसलमानों ने तीन जातियों को विशेष रूप से कुलीन घोषित किया और उन्हें सैयद या मीर, खान और बेग की उपाधियाँ दीं, क्योंकि इन सभी शब्दों का अर्थ अरबी, फारसी और तुर्की में 'सरदार' (नेता) होता है। बाकी सभी कुलीन लोगों, जैसे कि खलीफाओं के गौरवशाली वंशज, बनू अब्बास और अंसार को एक सामान्य उपाधि दी गई: 'शेख', जिसका अर्थ भी 'बुजुर्ग' (आदरणीय) है। इनके अलावा जो जातियाँ बच गईं, जिन्हें सांसारिक रीति-रिवाजों में नीच माना जाता है, जब उन्होंने देखा कि मीर, खादिम और बेग विशिष्ट जातियों की उपाधियाँ हैं और उनमें कोई स्थान नहीं है, और 'शेख' एक सामान्य शब्द है

जिसमें बाकी सभी शामिल हैं, तो इसी सर्वसमावेशी उपाधि को पाकर सभी जातियों ने खुद को इसी में शामिल कर लिया।

1. हिल्लियत अल-औलिया, अनुवाद सईद बिन इयास अल-जुरैरी, दार अल-किताब अल-अरबी, बेरूत २/२०५-२०६
2. अल-क़ुरान अल-करीम १०/२९
3. अल-क़ुरान अल-करीम ५/३३

पृष्ठ ७२२ का ७३९

(۳) اب زید کی اولاد ماں کی قوم پر مانی جائے گی یا باپ کی ذات پر؟ (۴) شرع شریف کی رو سے رذالت اور شرافت قوم پر منحصر ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: (۱) مسلمان ہونے سے دونوں جہان کی عزت حاصل ہوتی ہے مگر مذہب کسی قوم کا نام نہیں، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے زمانے میں جس قوم و قبیلہ کے لوگ اسلام لاتے بعد اسلام بھی اس قوم و قبیلہ کی طرف نسبت کئے جاتے ، ہندوانی قوموں میں چار قومیں شریف گنی جاتی ہیں ان میں چھتری یعنی ٹھاکر دوسرے نمبر پر ہے، ہندوستان میں اکثر سلطنت اسی قوم کی ہے ، ولہذا انھیں راجپوت کہتے ہیں تو ہندی قوموں میں ان کا معزز ہونا ظاہر ہے اور ہماری شریعت مطہرہ نے حکم دیا ہے کہ:

اذا اتاکم کریم قوم فاکرموہ۔ جب تمھارے پاس کسی قوم کا عزت دار آدمی آئے تو اس کی خاطر کرو۔

خالی آنے پر تو یہ حکم تھا اور جو بندہ خدا ہدایت الہی بالکل لوٹ کر ہم میں آملا ہم میں کا ہو گیا اس کا کس قدر اعزاز و اکرام اللہ سبحانہ کو پسند ہوگا، اسلام کی عزت کے برابر اور کیا عزت ہے، اس نے تو اسے اور بھی چار چاند نہیں، بلکہ ہزار چاند لگا دئیے، اگر کوئی چمار بھی مسلمان ہو تو مسلمان کے دین میں اسے حقارت کی نگاہ سے دیکھنا حرام اور سخت حرام ہے وہ ہمارا دینی بھائی ہو گیا، اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَۃٌ (مسلمان مسلمان بھائی ہیں۔ت) اور فرماتا ہے: فَاِخْوَانُکُمْ فِي الدِّیْنِ (تو وہ دین میں تمھارے بھائی ہیں۔ت) پھر جو کسی معزز قوم کا اسلام لائے اسے کیونکر حقیر سمجھا جائے، شیخ کسی خاص قوم کا نام نہیں، ہندوستان میں مسلمانوں نے تین قومیں خاص شریف قرار دیں اور انھیں سید یا میر اور خاں اور بیگ کے خطاب دئیے کہ ان سب لفظوں کے معنی عربی و فارسی و ترکی میں سردار ہیں، باقی تمام شرفاء مثل اولاد امجاد خلفائے کرام وبنی عباس وانصار کو ایک لقب عام دیا، شیخ کہ یہ بھی بمعنی بزرگ ہے، ان کے سوا جو قومیں

رہ گئیں کہ دنیاوی عرف میں رذیل سمجھی جاتی ہیں انھوں نے جب دیکھا کہ میر وخادم وبیگ تو خاص خاص اقوام کے لقب ہیں ان میں گنجائش نہیں اور شیخ ایک عام لفظ ہے جس میں باقی سب داخل، تو اسی کو سمائی والا خطاب پاکر سب قوموں نے اپنی بھرتی اسی میں

1. حلیۃ الاولیاء ترجمہ سعید بن ایاس الجریری دار الکتاب العربی بیروت ۲/ ۲۰۵-۲۰۶
2. القرآن الکریم ۱۰/ ۲۹
3. القرآن الکریم ۵/ ۳۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 11

...did. Whoever you ask, whether a cotton-carder or a weaver, will call himself a 'Sheikh'. However, in reality, the terminology 'Sheikh' is reserved only for noble nations like Siddiqi, Faruqi, Usmani, Alawi, Ja'fari, Abbasi, Ansari, and their likes. The school of thought of the teacher of our Great Imam (may Allah be pleased with him), may Allah's mercy be upon him, was that whoever accepts Islam at someone's hands, their offspring belong to him.

Arabic	Urdu Translation
In Radd al-Muhtar quoting al-Bada'i: According to 'Ata, he is the *mawla* (patron) of the one at whose hands he became Muslim. (1)	It is in Radd al-Muhtar from al-Bada'i that according to 'Ata, whoever accepted Islam at someone's hands, they are his *mawla*. (T)

And *wala* (patronage) is a relationship like the relationship of lineage. It is stated in a Hadith:

Arabic	Urdu Translation
Wala is a kinship like the kinship of lineage. (2) Reported by Al-Hakim and Al-Bayhaqi from Ibn Umar (may Allah be pleased with both of them).	*Wala* is a relationship just like lineage. (Al-Hakim and Al-Bayhaqi have reported this from Ibn Umar, may Allah be pleased with him). (T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Urdu Translation
The *mawla* (freed person/patronized) of a nation is one of them. (3) Reported by the two Sheikhs [Bukhari and Muslim] from Anas (may Allah be pleased with him).	The freed person of any nation is from among them. (The two Sheikhs have reported this from Anas, may Allah be pleased with him). (T)

Another Hadith also points towards this school of thought:

Arabic	Urdu Translation
Whosoever accepts Islam at the hands of a person, his *wala* belongs to him. (4) Reported by Al-Tabarani in *Al-Kabir* from Ibn Abbas, and by Al-Daraqutni and Al-Bayhaqi from Abu Umamah (may Allah	Whosoever accepts Islam at the hands of a person, his relationship of *wala* is established with him. (Reported by Al-Tabarani in *Al-Kabir* from Ibn Abbas, and by Al-Daraqutni and Al-Bayhaqi from Abu

Arabic	Urdu Translation
be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).	Umamah, may Allah be pleased with him, from the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him). (T)

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Wala, Fasl fi Wala al-Muwalah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 8/5. 2. Al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Fara'id, Dar al-Fikr, Beirut, 4/341. 3. Sahih Bukhari, Kitab al-Fara'id, Bab Mawali al-Qawm min Anfusihim, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/1000; Al-Sunan al-Kubra, Bab Man Za'ama anna Mawali al-Nabi (peace be upon him)... Dar Sadr Beirut, 2/151. 4. Al-Sunan al-Kubra, Kitab al-Wala, Dar Sadr Beirut, 10/298.

फतावा रिज़विया, जिल्द 11

...किया। धुनकर, जुलाहा जिससे पूछें अपने आप को शेख कहेगा मगर हकीकत में 'शेख' की इस्तलाह (परिभाषा) सिर्फ उन्हीं शरीफ कौमों यानी सिद्दीकी, फारूकी, उस्मानी, अलवी, जाफरी, अब्बासी, अंसारी और उनके जैसों के लिए है। हमारे इमाम-ए-आजम रज़ियल्लाहु अन्हु के उस्ताद इमाम रहमतुल्लाही अलैहि का मज़हब यह था कि जो शख्स जिसके हाथ पर मुसलमान हुआ उसकी औलाद उसके लिए है।

अरबी	उर्दू अनुवाद
रद-उल-मुहतार में बदाइअ से रिवायत है: अता के नज़दीक वह जिसके हाथ पर मुसलमान हुआ उसका वह मौला है। (1)	रद-उल-मुहतार में बदाइअ से है कि अता के यहाँ वह जिसके हाथ पर मुसलमान हुआ उसका वह मौला है। (त)

और 'वला' (संरक्षण/संरक्षकता) एक रिश्ता है जैसे नसब (वंश) का रिश्ता होता है। हदीस में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
'वला' नसब की तरह एक रिश्ता है। (2) इसे हाकिम और बैहकी ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है।	'वला' नसब की तरह एक रिश्ता है। (इसे हाकिम और बैहकी ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)। (त)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
किसी कौम का आज़ाद किया हुआ (मौला) उन्हीं में से है। (3) इसे शैखैन (बुखारी व मुस्लिम) ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।	किसी कौम का आज़ाद किया हुआ उन्हीं में से है। इसे शैखैन ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। (त)

इसी मज़हब की एक हदीस यह भी बताती है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
जिसके हाथ पर कोई शख्स इस्लाम लाये तो उसका 'वला' का रिश्ता उसी से तय होगा। (4) इसे तबरानी ने 'कबीर' में इब्ने अब्बास से और	जिसके हाथ पर कोई शख्स इस्लाम लाये तो उसका रिश्ता 'वला' उसी से करार पाए। (इसी को तबरानी ने 'कबीर' में इब्ने अब्बास से और

अरबी	उर्दू अनुवाद
दारकुतनी और बैहकी ने अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया।	दारकुतनी और बैहकी ने अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया)। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद-उल-मुहतार, किताब-उल-वला, फसल फी वला-इल-मुवालाह, दार इहया-उत-तुरास-उल-अरबी बेरूत, 8/5. 2. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब-उल-फराइज़, दार-उल-फिक्र बेरूत, 4/341. 3. सहीह बुखारी, किताब-उल-फराइज़, बाब मवालि-उल-कौम मिन अनफुसिहिम, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/1000; अस-सुनन-अल-कुबरा, बाब मन ज़अमा अन्ना मवालि-अन-नबी... दार सादिर बेरूत, 2/151. 4. अस-सुनन-अल-कुबरा, किताब-उल-वला, दार सादिर बेरूत, 10/298.

فتاوٰی رضویہ ، جلد یاز دہم

کردی، دھنا، جولا ہا جس سے پوچھئے اپنے آپ کو شیخ بتائے گا مگر حقیقۃً شیخ کی اصطلاح صرف انہی شریف قوموں یعنی صدیقی، فاروقی، عثمانی، علوی، جعفری، عباسی، انصاری وامثالہم کے لئے ہیں، ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے استاذ امام رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کا مذہب یہ تھا کہ جو شخص جس کے ہاتھ پر مسلمان ہو اس کی اولاد اس کے لئے ہے۔

عربی متن	اردو ترجمہ
فی ردالمحتار عن البدائع عند عطاء ھو مولی للذی اسلم علی یدہ - 1	ردالمحتار میں بدائع سے ہے کہ عطاء کے ہاں وہ جس کے ہاتھ پر مسلمان ہوا اس کا وہ مولٰی ہے۔ (ت)

اور ولاء ایک رشتہ ہے مثل رشتہ نسب کے حدیث میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
الولاء لحمۃ کلحمۃ النسب 2 اخرجہ الحاکم و البیھقی عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھما۔	ولاء نسب کی طرح ایک رشتہ ہے، (اس کو حاکم اور بیہقی نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ
مولی القوم انفسھم 3 رواہ الشیخان عن انس رضی اللہ تعالی عنہ۔	کسی قوم کا آزاد کردہ ان میں سے ہے، اس کو شیخین نے انس رضی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت کیا ہے۔ (ت)

اسی مذہب کا ایک حدیث بھی بتادیتی ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
من اسلم علی یدی رجل فله ولاؤه 4- اخرجه الطبرانی فی الکبیر عن ابن عباس والدارقطنی و البیهقی عن ابی امامة رضی الله تعالیٰ عنه عن النبی صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم۔	جس کے ہاتھ پر کوئی شخص اسلام لائے تو اس کا رشتہ ولاء اسی سے قرار پائے (اسی کو طبرانی نے کبیر میں ابن عباس سے اور دارقطنی اور بیہقی نے ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا۔ ت)

حواشی: 1. رد المحتار کتاب الولاء فصل فی ولاء الموالاۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۸/۵ 2. المستدرك للحاکم کتاب الفرائض دارالفکر بیروت ۳۴۱/۴ 3. صحیح بخاری کتاب الفرائض باب موالی القوم من انفسهم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۰۰۰/۲، السنن الکبری باب من زعم ان موالی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دار صادر بیروت ۱۵۱/۲ 4. السنن الکبری کتاب الولاء دار صادر بیروت ۲۹۸/۱۰

It is not surprising if the intent of this Hadith is also this, as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

| "Whoever from the people of Persia accepts Islam is a Quraishi." - Narrated by Ibn al-Najjar from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both). | "Those from the people of Persia who accepted Islam are Quraishi." (Ibn al-Najjar narrated this from Ibn Umar, may Allah be pleased with him. - T) |

Because the Quraish conquered Persia, and its people were honored with Islam at their hands. Based on this principle, the person who becomes a Muslim at the hands of someone would be considered eligible to be counted in that same nation by virtue of the relationship of wala' (clientage). And Allah Almighty knows best. (2) When Zaid himself becomes a Muslim, he has the right to be a kufw (equal in status) regarding marriage only for a woman who herself has converted to Islam. A man who himself converted is not an equal match (kufw) for a girl whose father became a Muslim and she was born while he was a Muslim.

| In Durr al-Mukhtar: "As for non-Arabs, freedom and Islam are considered for status equality (kufa'ah). Thus, one who is a Muslim himself is not an equal match for a woman whose father is a Muslim. And one whose father is a Muslim is not an equal match for a woman with two generations of Muslim ancestors (father and grandfather). In this matter, two generations of Muslim fathers are like multiple generations because lineage is considered complete with the grandfather." (Briefly - T) | In Durr al-Mukhtar, it is stated that among non-Arabs, being free and being a Muslim constitutes kufa'ah. Therefore, a person who himself became a Muslim is not an equal match for one whose father became a Muslim, and one whose father is a Muslim is not a match for one whose two ancestors (father and grandfather) have been Muslims. In this regard, two Muslim fathers are like several Muslim ancestors because lineage is completed with the grandfather. (Briefly - T) |

And besides this, there are five more scenarios for this marriage. First, that a sane adult woman who has no guardian (wali) marries him of her own free will. Second, the guardian of such a woman, knowing him to be a new convert, explicitly expresses his consent to marry her to him before the marriage. Third, the father of a minor girl or the grandfather of an orphan girl marries her to him, provided he hasn't previously exercised his guardianship to marry any minor girl to a person of lower

status or someone who is not a match in any way. Fourth, the ruler of Islam marries a girl of unknown lineage to him under his guardianship.

---

1 Kanz al-Ummal, with reference to Ibn al-Najjar from Ibn Umar Hadith, Mu'assasah al-Risalah Beirut 3/383. 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Kufa'ah, Mujtabai Press Delhi 1/198.

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस हदीस की मंशा भी यही हो, जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

| "मन अस्लमा मिन अहलिल फारिसि फ़हुवा क़ुरशी" - रवाह इब्नुल नज्जार अन इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)। | "फारस के लोगों में से जिसने इस्लाम स्वीकार किया, वह क़ुरैशी है।" (इसे इब्न नज्जार ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त) |

क्योंकि कुरैश ने फारस फतह किया, और वहां के लोग उनके हाथों इस्लाम से सम्मानित हुए। इस सिद्धांत के आधार पर, जो व्यक्ति जिसके हाथ पर मुसलमान होगा, वह विला (संबंध) के नाते उसी कौम में गिने जाने के योग्य होगा, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (2) जब ज़ैद खुद अपनी ज़ात से मुसलमान हुआ, तो उसे निकाह के मामले में केवल उसी औरत के लिए कुफ़्व (बराबरी का) होने का अधिकार है जो खुद मुसलमान हुई हो। जिस लड़की का बाप मुसलमान हुआ और वह लड़की उसके इस्लाम की हालत में पैदा हुई, खुद मुसलमान होने वाला उसका भी कुफ़्व नहीं है।

| अद-दुर्रुल मुख्तार में है: "अजमियों (गैर-अरबों) में आज़ादी और इस्लाम कुफ़्व (बराबरी) का मानक हैं। अतः जो खुद मुसलमान बना, वह उसके लिए कुफ़्व नहीं है जिसका बाप मुसलमान बना। और जिसका बाप मुसलमान हो, वह उसके लिए कुफ़्व नहीं है जिसके दो बाप (बाप और दादा) मुसलमान हो चुके हों। इस मामले में दो मुसलमान बाप कई मुसलमान पूर्वजों की तरह हैं क्योंकि दादा पर वंश पूरा हो जाता है।" (संक्षेप में - त) | दुर्र-ए-मुख्तार में है कि अजमियों में आज़ाद और मुसलमान होना कुफ़्व है। इसलिए, जो व्यक्ति स्वयं मुसलमान बना, वह उसके लिए कुफ़्व नहीं है जिसका पिता मुसलमान बना, और जिसका पिता मुसलमान हो, वह उसके लिए कुफ़्व नहीं है जिसके दो पूर्वज (पिता और दादा) मुसलमान हो चुके हों। इस मामले में दो मुसलमान पिता कई मुसलमान पूर्वजों के समान हैं क्योंकि वंश दादा पर पूर्ण हो जाता है। (संक्षेप में - त) |

और इसके अलावा इस निकाह की पांच और सूरतें हैं। एक यह कि समझदार औरत जिसका कोई वली (अभिभावक) न हो, अपनी मर्जी से उससे निकाह कर ले। दूसरा, ऐसी औरत का वली भी निकाह से पहले उसे नौ-मुस्लिम जानकर उसके साथ निकाह करने पर स्पष्ट रूप से अपनी सहमति व्यक्त कर दे। तीसरा, किसी नाबालिग लड़की का पिता या अनाथ लड़की का दादा उसका निकाह उसके

साथ कर दे, बशर्ते कि उसने पहले अपनी विलायत से किसी नाबालिग लड़की का निकाह किसी नीची कौम या किसी भी तरह के गैर-कुफ़्व में न किया हो। चौथा, इस्लाम का शासक अज्ञात वंश की लड़की का निकाह अपनी विलायत से उसके साथ कर दे।

---

1 कंजुल उम्माल, इब्न नज्जार के हवाले से इब्न उमर की हदीस, मुअस्ससतुर्-रिसाला बेरूत 3/383 2 दुर्रुल मुख्तार, बाबुल-कफ़ाअत, मुतब-ए-मुज्तबाई दिल्ली 1/198

عجب نہیں کہ اس حدیث کا منشا بھی یہی ہو کہ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: | من اسلم من اھل فارس فھو قرشی - رواہ ابن النجار عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | اہل فارس سے جو اسلام لائے وہ قرشی ہے (اسے ابن نجار نے ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت) | کہ قریش نے فارس فتح کیا اس کے لوگ ان کے ہاتھوں مشرف با اسلام ہوئے اس مذہب کی بنا پر جو شخص جس کے ہاتھ مسلمان ہوگا بطور رشتہ ولاء اسی قوم میں گنے جانے کے قابل ہوگا، واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) زید جبکہ خود اپنی ذات سے مسلمان ہوا تو اسے درباره نکاح کفو و ہمسر ہونے کا حق اسی عورت پر پہنچتا ہے جو خود مسلمان ہوئی ہو، جس لڑکی کا باپ مسلمان ہوا اور اس کے اسلام کی حالت میں یہ لڑکی پیدا ہوئی خود مسلمان ہونے والا اس کا بھی کفو نہیں۔

| فی الدرالمختار اما فی العجم فتعتبر حریۃ واسلاماً فمسلم بنفسہ غیر کفو لمن ابوھا مسلم و من ابوہ مسلم غیر کفو لذات ابوین و ابوان فیھما کالاباء لتمام النسب بالجد اھ مختصراً | در مختار میں ہے کہ عجمیوں میں آزاد، مسلمان ہونا کفو ہے۔ لہذا جو شخص خود مسلمان بنا وہ ایسے کے لئے کفو نہیں جس کا باپ مسلمان بنا، اور جس کا باپ مسلمان ہو وہ ایسے کا نہیں جس کے دو باپ یعنی باپ اور دادا مسلمان ہو چکے ہوں، اس معاملہ میں دو مسلمان باپ متعدد مسلمان آباء کی طرح ہیں کیونکہ نسب دادا پر مکمل ہو جاتا ہے اھ مختصراً (ت) |

اور اس کے سوا پانچ صورتیں اس نکاح کی اور ہیں۔ ایک یہ کہ عورت عاقلہ جس کا کوئی ولی نہ ہو برضائے خود اس سے نکاح کرے۔ دوم ایسی عورت کا ولی بھی پیش از نکاح اسے نو مسلم جان کر اس کے ساتھ نکاح کرنے پر صراحتًا اپنی رضا ظاہر کر دے۔ سوم نا بالغہ کا باپ یا یتیمہ کا دادا اس کے ساتھ نکاح کر دے جبکہ اس سے پہلے کسی نا بالغہ کا نکاح اپنی ولایت سے کم قوم یا کسی

طرح کے غیر کفو میں نہ کر چکا ہو۔ چہارم مجہول النسب لڑکی کو حاکم اسلام اپنی ولایت سے اس کے نکاح میں دے دے۔

---

1 کنز العمال بحوالہ ابن النجار عن ابن عمر حدیث، مؤسسة الرسالة بیروت ۳/ ۳۸۳ 2 درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۸

Fifthly, if this person acquires religious knowledge and his scholarly excellence becomes equal to the ancestral nobility or Islamic antiquity of others among Muslims, and the social stigma no longer remains, then at that time this person can be an equal (Kufu) for any nation and tribe.

(3) Children always belong to the father's nation/tribe. Allah Almighty says: "And upon him to whom the child is born is their provision."[1] (The maintenance of the woman is upon him whose child it is. - Translator)

(4) In the noble Shariah, nobility is not limited to one's nation/tribe. Allah Almighty says: "Indeed, the most noble of you in the sight of Allah is the most righteous of you."[2] Among you, the one with a higher rank in the sight of Allah is the one who has more Taqwa (piety). However, in the matter of marriage, it [social standing/tribe] is certainly considered; no guardian besides the father or grandfather has the authority to marry an underage girl to a non-equal (ghair-kufu), as her marriage in that case would be a cause of shame and disgrace according to custom. If they do so, the marriage will not be valid. A sane, adult woman is not permitted to marry a non-equal without the explicit consent of her guardians; if she does, the marriage will not be valid. These issues are well-known in all the books of the Madhhab (school of law). (Translator). And Allah Almighty knows best.

Problem 474: From Kopaganj Post Office, Kopaganj Mahalla Pura Chandan, District Azamgarh, residence of Maulvi Ilahi Bakhsh Sahib, sent by Hafiz Muhammad Abdul Karim Sahib, 17 Rabi al-Awwal 1318 AH.

What do the scholars of religion say in this matter: Zaid kept a woman as a mistress, meaning Hindah, who was the wedded wife of Khalid, and Khalid did not give her a divorce. During the time Zaid kept Hindah with him, several sons and daughters were born from her womb. Zaid wants to marry off the sons and daughters. People say they are illegitimate (born out of wedlock). Is there any warning mentioned in the noble Hadith regarding such boys and girls, or will the punishment/reward for this act be upon their parents? Explain and be rewarded.

The Answer:

The questioner Mazhar has also written the word 'Sawab' (reward) according to idiom, just as in some narrative people say "the punishment and reward is on the

narrator's neck," although its place is where there is a possibility of two things in that matter. In forbidden acts, the possibility of reward...

[1] Al-Quran al-Karim 2/233 [2] Al-Quran al-Karim 49/13

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

पाँचवाँ यह कि यदि यह व्यक्ति धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर ले, और मुसलमानों में इसकी शैक्षिक श्रेष्ठता दूसरों की वंशानुगत कुलीनता या इस्लामी प्राचीनता के बराबर हो जाए, और सामाजिक कलंक न रहे, तो उस समय यह व्यक्ति हर जाति और कबीले के लिए 'कुफ़ु (समान स्तर का) हो सकता है।

(3) संतान हमेशा पिता की जाति/कबीले से संबंधित होती है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और जिस का बच्चा है उस पर उन (माताओं) का भरण-पोषण अनिवार्य है।"[1] (जिसका बच्चा है उस पर औरत का खर्चा है। - अनुवादक)

(4) शरीयत-ए-मुतह्हरा में कुलीनता केवल जाति पर निर्भर नहीं है। अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है: "बेशक अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा परहेज़गार है।"[2] अल्लाह के नज़दीक ऊँचे मर्तबे वाला वह है जिसके पास अधिक तक़वा (परहेज़गारी) है। हाँ, निकाह के मामले में इसका (जाति/बिरादरी का) निश्चित रूप से विचार किया जाता है; पिता और दादा के अलावा किसी भी वली (अभिभावक) को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी नाबालिग लड़की का निकाह किसी 'ग़ैर-कुफ़ु' (असमान) से कर दे, क्योंकि लोक-रीति में ऐसी शादी अपमान और शर्मिंदगी का कारण होती है। यदि वह ऐसा करेगा, तो निकाह नहीं होगा। एक समझदार बालिग औरत को अपने अभिभावकों की स्पष्ट सहमति के बिना किसी 'ग़ैर-कुफ़ु' से निकाह करने की अनुमति नहीं है; यदि वह करेगी तो निकाह नहीं होगा। ये सभी मुद्दे मज़हब (न्यायशास्त्र) की सभी किताबों में प्रसिद्ध हैं। (अनुवादक)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 474: कोपागंज पोस्ट ऑफिस, कोपागंज मोहल्ला पुरा चंदन, जिला आज़मगढ़, मौलवी इलाही बख्श साहब के आवास से, हाफिज मोहम्मद अब्दुल करीम साहब द्वारा प्रेषित, 17 रबी-उल-अव्वल 1318 हिजरी।

दीन के विद्वान इस मामले में क्या फरमाते हैं: ज़ैद ने एक औरत को रखैल बनाकर रखा, यानी हिंदह को, जो ख़ालिद की ब्याहता थी और ख़ालिद ने उसे तलाक नहीं दिया था। जिस समय से ज़ैद ने हिंदह को अपने पास रखा, उसके पेट से कई लड़के और लड़कियां पैदा हुईं। ज़ैद इन लड़केलड़कियों की शादी करना चाहता है। लोग कहते हैं कि ये हरामी (नाजायज) हैं। तो क्या हदीस शरीफ में ऐसे लड़केलड़कियों के बारे में कोई चेतावनी दी गई है, या इस काम का अज़ाब (सज़ा) या सवाब (पुण्य) उनके माता-पिता पर होगा? बयान फ़रमाएँ और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर):

सवाल पूछने वाले मज़हर ने मुहावरे के अनुसार 'सवाब' शब्द भी लिख दिया है, जिस तरह किसी कहानी पर कहते हैं कि "अज़ाब और सवाब रावी (वर्णनकर्ता) की गर्दन पर", हालांकि इसका स्थान वहाँ होता है जहाँ उस मामले में दो बातों की संभावना हो। हराम (निषिद्ध) कार्यों में सवाब की संभावना...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 2/233 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 49/13

پنجم یہ شخص علم دین حاصل کرلے ، مسلمانوں میں اس کی علمی فضیلت اور وں کی نسبی شرافت یا اسلامی قدامت کے ہم پلہ ہوجائے ، عار عرفی باقی نہ رہے ، اس وقت یہ شخص ہر قوم و قبیلہ کا کفو ہو سکتا ہے۔

(۳) اولاد ہمیشہ باپ کی قوم پر ہوتی ہے۔ قال تعالٰی: وَعَلَی الْمَوْلُوْدِ لَہٗ رِزْقُھُنَّ ۱ (جس کا بچہ ہے عورت کا نفقہ اس پر ہے۔ ت)

(۴) شرع شریف میں شرافت قوم پر منحصر نہیں۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے : اِنَّ اَکْرَمَکُمْ عِنْدَ اللہِ اَتْقٰکُمْ ط ۲ تم میں زیادہ مرتبے والا اللہ کے نزدیک وہ ہے جو زیادہ تقوٰی رکھتا ہے۔ ہاں درباره نکاح اس کا ضرور اعتبار رکھا ہے ، باپ دادا کے سوا کسی ولی کو اختیار نہیں کہ نابالغہ لڑکی کا نکاح کسی غیر کفو سے کردے جس سے اس کی شادی عرف میں باعث ننگ و عار ہو اگر کردے گا نکاح نہ ہوگا ، عاقلہ بالغہ کو اجازت نہیں کہ بے رضامندی صریح اولیا اپنا نکاح کسی غیر کفو سے کرلے اگر کرلے گی نکاح نہ ہوگا والمسا ئل معروفة فی کتب المذھب جمیعا (یہ تمام مسائل مذہب کی کتابوں میں معروف ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۷۴ : از کوپانچ ڈاک خانہ کوپانچ محلہ پورہ چندن ضلع اعظم گڑھ مکان مولوی الہٰی بخش صاحب مرسلہ حافظ محمد عبد الکریم صاحب ۱۷ ربیع الاول ۱۳۱۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک عورت داشتہ رکھا ، یعنی ہندہ کو جو خالد کی منکوحہ تھی اور خالد نے طلاق نہیں دیا اور جس زمانہ سے زید نے ہندہ کو اپنے پاس رکھا اس کے بطن سے کئی ایک لڑکے لڑکی پیدا ہوئے ، زید لڑکے لڑکی کی شادی چاہتا ہے ،

لوگ کہتے ہیں حرامی ہیں ، پس حدیث شریف میں ایسے لڑکے لڑکیوں کے بارہ میں کوئی وعید وارد ہے یا اس فعل کا عذاب ثواب ان کے ماں باپ کو ہوگا ؟ بینوا توجروا

الجواب :

سائل مظہر نے محاورے کے مطابق لفظ ثواب بھی لکھ دیا جس طرح کسی حکایت پر کہتے ہیں عذاب و ثواب بر گردن راوی ، حالانکہ اس کا محل وہاں ہے کہ اس امر میں دو باتوں کا احتمال ہو حرام میں ثواب کی

١ القرآن الكريم ٢ / ٢٣٣ ٢ القرآن الكريم ٤٩ / ١٣

How is it permissible? This word is a severe error. Henceforth respect is mandatory. The punishment for adultery (Zina) is only upon the male and female adulterer; there is no burden of it upon the offspring of adultery. Allah Almighty said: "No bearer of burdens shall bear the burden of another."^1 (The burden of one is not on another. -T) It is in the Hadith:

Laysa 'ala waladi-zina min wizri abawayhi shay'un^2 - Narrated by al-Hakim from al-Siddiqah, may Allah be pleased with her.	**There is no burden of the parents upon the child of adultery. (Al-Hakim narrated this from Aisha, may Allah be pleased with her. -T)**

In a Sahih (authentic) Hadith, regarding the offspring of adultery, it is narrated that:

Waladu-zina sharru al-thalatha^3 - Narrated by Imam Muhammad, Abu Dawood, al-Hakim, and al-Bayhaqi in the Sunan from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him, with a good chain.	**The illegitimate child is worse than even his parents. (Imam Muhammad, Abu Dawood, Al-Hakim, and al-Bayhaqi narrated this in Sunan from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him, with a good chain. -T)**

Its meaning is that when he also adopts the same actions. In another Hadith, the clarification of this meaning is stated:

Waladu-zina sharru al-thalatha idha 'amila bi-'amali abawayhi^4 - Narrated by al-Tabarani in al-Kabir and al-Bayhaqi from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both, with a good chain.	**An illegitimate child is worse than his parents when he does the same work as them. (Al-Tabarani narrated this in Al-Kabir and al-Bayhaqi from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both, with a good chain. -T)**

Or it means that in habits and traits, he is usually worse than them unless knowledge and practice reform him, for a bad crop grows from a bad seed.

Shamshir-e-nek za aahan-e-bad chun kunad kase (How can anyone make a good sword from defective iron? -T)

---

1. Al-Quran al-Karim 164/6
2. Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Ahkam, Dar al-Fikr Beirut, 100/4

3. Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Itq and Kitab al-Ahkam, Dar al-Fikr Beirut, 215/2 and 100/4
4. Al-Sunan al-Kubra lil-Bayhaqi, Kitab al-Iman, Dar Sadir Beirut, 10/ 587 and 595

क्या गुंजाइश है, यह शब्द एक गंभीर त्रुटि है। भविष्य में सम्मान अनिवार्य है। व्यभिचार (ज़िना) की सज़ा केवल व्यभिचारी पुरुष और स्त्री पर है; व्यभिचार की संतान पर इसका कोई बोझ नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।"^1 (एक का बोझ दूसरे पर नहीं है। -टी) हदीस में है:

लिस अला वलदिज़-ज़िना मिन विज़रि अबवैहि शईअन्^2 - अल-हाकिम ने हज़रत आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से रिवायत किया है।	**व्यभिचार की संतान पर उसके माता-पिता का कुछ भी बोझ नहीं है। (इसे हाकिम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है। -टी)**

सहीह हदीस में व्यभिचार की संतान के बारे में इतना आया है कि:

वलदुज़-ज़िना शर्रुस-सलासा^3 - इमाम मुहम्मद, अबू दाऊद, हाकिम और बैहक़ी ने सुनन में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से हसन सनद के साथ रिवायत किया है।	**हराम का बच्चा अपने माँ-बाप से भी बदतर होता है। (इसे इमाम मुहम्मद, अबू दाऊद, हाकिम और बैहक़ी ने सुनन में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से हसन सनद के साथ रिवायत किया है। -टी)**

इसका मतलब यह है कि जब वह भी वही हरकतें इख्तियार करे। दूसरी हदीस में इस मतलब की स्पष्ट व्याख्या हुई है कि:

वलदुज़-ज़िना शर्रुस-सलासा इज़ा अमिला बिअमलि अबवैहि^4 - अल-तबरानी ने कबीर में और बैहक़ी ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से हसन सनद के साथ रिवायत किया है।	**हरामी अपने माँ-बाप से भी बदतर है जब वह उन्हीं की तरह वही काम करे। (इसे तबरानी ने कबीर में और बैहक़ी ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हसन सनद के साथ रिवायत किया है। -टी)**

या यह अर्थ कि यह आदतों और लक्षणों में अक्सर उनसे भी बदतर होता है जब तक कि ज्ञान और कर्म उसका सुधार न करें, क्योंकि खराब बीज से खराब ही फसल पैदा होती है।

शम्शीर-ए-नेक ज़ा हन-ए-बद चूँ कुनद कसे (घटिया लोहे से अच्छी तलवार कोई कैसे बनाए। -टी)

1. अल-क़ुरान अल-करीम 164/6
2. मुस्तदरक लिल-हाकिम किताबुल अहकाम दारुल फिक्र बैरुत 100/4
3. मुस्तदरक लिल-हाकिम किताबुल इल्क़ व किताबुल अहकाम दारुल फिक्र बैरुत 215/2 व 100/4
4. अल-सुनन अल-कुब्रा लिल-बैहक़ी किताबुल ईमान दार सादिर बैरुत 10/ 587 व 595

کیا گنجائش، یہ لفظ خطائے شدید ہے آئندہ احترام لازم ، زنا کا عذاب صرف زانی وزانیہ پر ہے اولاد زنا پر اس کا وبال نہیں - قال اللہ تعالٰی: لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰی۱۸ 1 (ایک کا بوجھ دوسرے پر نہیں۔ ت) حدیث میں ہے:

لیس علی ولد الزنا من وزر ابویہ شیئی۱۸ 2 ولد زنا پر اس کے والدین کا بوجھ کچھ نہیں ہے (اس - رواہ الحاکم عن الصدیقۃ رضی اللہ تعالٰی عنہا کو حاکم نے عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت عنہا۔ کیا ہے۔ ت)

حدیث صحیح میں اولاد زنا کی نسبت اس قدر وارد ہے کہ:

ولد الزنا شر الثلاثۃ۱۸ 3 - رواہ الامام حرام کا بچہ اپنے ماں باپ سے بھی بدتر ہوتا ہے (اس محمد وابوداؤد والحاکم والبیہقی فی کو امام محمد، ابوداؤد، حاکم اور بیہقی نے سنن میں السنن عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے سند حسن کے ساتھ بسند حسن۔ روایت کیا ہے۔ ت)

اس کا مطلب یہ ہے کہ جب یہ بھی وہی حرکات اختیار کرے، خود دوسری حدیث میں اس مطلب کی تصریح ارشاد ہوئی کہ:

ولد الزنا شر الثلاثۃ اذا عمل بعمل حرامی اپنے ماں باپ سے بھی بدتر ہے جبکہ ان کی ابویہ۱۸ 4 - رواہ الطبراني في الکبیر طرح وہی کام کرے، (اس کو طبرانی نے کبیر میں اور والبیھقي عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے سند عنھما بسند حسن۔ حسن روایت کیا ہے۔ ت)

یا یہ معنی کہ یہ عادتوں خصلتوں میں غالباً ان سے بھی بدتر ہوتا ہے جبکہ علم وعمل اس کی اصلاح نہ کریں کہ برے تخم سے بری ہی کھیتی پیدا ہوتی ہے۔

شمشیر نیک ز آہن بد چوں کند کسے (ناقص لوہے سے اچھی تلوار کوئی کیسے بنائے۔ ت)

---

1 القرآن الکریم ۱۶۴/۶ 2 مستدرک للحاکم کتاب الاحکام دار الفکر بیروت ۱۰۰/۴ 3 مستدرک للحاکم کتاب العتق و کتاب الاحکام دار الفکر بیروت ۲۱۵/۲ و ۱۰۰/۴ 4 السنن الکبری للبیھقی کتاب الایمان دار صادر بیروت ۱۰/ ۵۸۷ و ۵۹۵

Fatawa Razviya, Volume 11

And this is the meaning of this Hadith:

[Arabic: The child of adultery shall not enter Paradise - Narrated by Ibn Adi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) with a weak chain.] The offspring of adultery shall not enter Paradise. (Narrated by Ibn Adi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) with a weak chain of narration. - T)

That is, probably such actions will be performed by him that will prevent entry into Paradise along with the foremost ones. In short, this does not mean at all that he should bear the punishment for their (parents') sins or be deserving of the threat despite being innocent. However, in the matter of marriage, the pure Sharia has also considered 'Kafa'at' (suitability/equality). This applies to daughters, whether adult or minor, and to sons while they are minors.

[Arabic: As he recorded in Radd al-Muhtar, basing it on the foundations of Al-Bada'i, and we have researched it from Al-Bahr, Al-Khayriyya, Al-Khaniyya, Al-Tabyin, Al-Kafi, Al-Siraj al-Wahhaj, and Al-Hindiyya, as we mentioned in the footnotes of Radd al-Muhtar.] As stated in Radd al-Muhtar, based on Al-Bada'i, and we have researched it from the accounts of Al-Bahr, Al-Khayriyya, Al-Khaniyya, Al-Tabyin, Al-Kafi, Al-Siraj al-Wahhaj, and Al-Hindiyya, as we mentioned in the footnotes of Radd al-Muhtar. (T)

And there is no doubt that marrying a legitimate daughter to someone whose birth from adultery is well-known is, according to custom, a source of disgrace, shame, and public ridicule, and this is the meaning of lack of Kafa'at.

[Arabic: In Al-Shamiyya, from Al-Fath, that the cause is the contempt shown by the common people, so the ruling revolves around it.] In Fatawa of Allama Shami, it is quoted from Al-Fath that the contempt of common people is the cause, therefore the ruling will be based on it. (T)

So, in a state of disgrace, the marriage of any woman to a child of adultery cannot take place. If it is done, the marriage will essentially not be valid except in two cases: First, the marriage of a minor daughter is conducted by her father or, if he is not present, her grandfather, and he is not intoxicated at the time of marriage, nor has he previously married any of his daughters to someone who is not a Kufu (equal). Second, an adult woman marries by her own consent, and if she has a guardian, she explicitly expresses her consent before the marriage despite being informed that the

person is a child of adultery. These issues are explained in detail in Al-Durr, etc. (These issues are described in detail in Al-Durr, etc. - T)

---

1. Al-Kamil by Ibn Adi, biography of bin Abi Salih Dhakwan al-Samman al-Madini, Dar al-Fikr Beirut 1286/3
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Kafa'at, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 322/2

फ़तावा रज़विया, खंड 11

और इस हदीस का यही मतलब है कि:

[अरबी: व्यभिचार की संतान स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगी - इब्न अदी ने इसे अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक कमज़ोर सनद के साथ रिवायत किया है।] व्यभिचार की संतान स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगी। (इब्न अदी ने इसे अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से एक कमज़ोर सनद के साथ रिवायत किया है। - टी)

यानी शायद उससे ऐसे कार्य होंगे जो उसे अग्रगामियों के साथ स्वर्ग में प्रवेश करने से रोकेंगे। संक्षेप में, इसका अर्थ कतई यह नहीं है कि उनके(माता-पिता के) पापों की सज़ा उसे भुगतनी पड़े या वह निर्दोष होने के बावजूद धमकी का पात्र हो। लेकिन विवाह के मामले में, शरीअत-ए-मुतहहरा ने 'कफ़ाअत' (बराबरी) का भी ध्यान रखा है। यह बेटियों के लिए है, चाहे वे वयस्क हों या अवयस्क, और बेटों के लिए जब तक वे अवयस्क हों।

[अरबी: जैसा कि उन्होंने रद्दुल मुह्तार में बदाए' के आधार पर लिखा है, और हमने इसकी तहकीक अल-बह्र, अल-खैरिया, अल-खानिया, अत-तब्यीन, अल-काफ़ी, अस-सिराज अल-वहाज और अल-हिन्दिया से की है, जैसा कि हमने रद्दुल मुह्तार के हाशिये पर उल्लेख किया है।] जैसा कि रद्दुल मुह्तार में बदाए' के हवाले से बताया गया है, और हमने इसकी तहकीक अल-बह्र, अल-खैरिया, अल-खानिया, अत-तब्यीन, अल-काफ़ी, अस-सिराज अल-वहाज और अल-हिन्दिया के विवरणों से की है, जैसा कि हमने रद्दुल मुह्तार के हाशिये पर उल्लेख किया है। (टी)

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक हलाल बेटी का निकाह ऐसे व्यक्ति से करना जिसकी पैदाइश व्यभिचार से मशहूर हो, लोक-प्रथा में अपमान, शर्म और बदनामी का कारण होता है, और यही 'अदम-ए-कफ़ाअत' (बराबरी की कमी) का अर्थ है।

[अरबी: शामिया में अल-फ़तह से कि कारण लोक-प्रथा के लोगों की हिकारत है, इसलिए हुक्म इसी पर घूमेगा।] फ़तावा अल्लामा शामी में फ़तह से उद्धृत है कि लोक-प्रथा के लोगों का तुच्छ समझना कारण है, इसलिए हुक्म का आधार इसी पर होगा। (टी)

तो अपमान की स्थिति में किसी स्त्री का निकाह 'वलद अल-हराम' (व्यभिचार की संतान) के साथ नहीं हो सकता। यदि किया जाएगा तो निकाह मूल रूप से नहीं होगा, सिवाय दो स्थितियों के: पहली, एक अवयस्क बेटी का निकाह उसके पिता या उसके न होने पर दादा अपनी इच्छा से करें, और निकाह

के समय वह नशे में न हों, और न ही पहले अपनी औलाद में से किसी बेटी का निकाह 'ग़ैर-कुफ़ू' (जो बराबर न हो) से कर चुके हों। दूसरा यह कि वयस्क स्त्री अपनी मर्जी से निकाह करे, और यदि उसका कोई वली (संरक्षक) हो, तो वह निकाह से पहले इस जानकारी के बावजूद कि वह व्यक्ति 'वलद अल-हराम' है, स्पष्ट रूप से अपनी सहमति व्यक्त कर दे। ये मामले अल-दुर्र आदि में विस्तार से बताए गए हैं। (टी)

---

1. अल-कामिल इब्न अदी द्वारा, बिन अबी सालिह ज़कवान अल-सम्मान अल-मदीनी की जीवनी, दार अल-फ़िक्र बेरुत 1286/3
2. रद्दुल मुह्तार, कफ़ाअत का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत 322/2 पृष्ठ 727 का 739

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

اور یہی مطلب ہے اس حدیث کا کہ:

[عربی: فرخ الزنا لا یدخل الجنة - رواہ ابن عدي عن ابي ہریرة رضي اللہ تعالی عنه بسند ضعیف۔]

زنا کا چوزہ جنت میں نہ جائے گا۔ (اس کو ابن عدی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ضعیف سند کے ساتھ روایت کیا ہے۔ ت)

یعنی غالباً اس سے وہ افعال صادر ہوں گے جو سابقین کے ساتھ دخول جنت سے روکیں گے، بالجملہ یہ مطلب کسی طرح نہیں کہ ان کے گناہ کا عذاب اس پر ہو یا بے گناہ وعید کا مستحق ہو، مگر اس امر نکاح میں شرع مطہر نے کفاءت کا بھی لحاظ فرمایا ہے دختروں کے لئے مطلقاً بالغہ ہوں خواہ نابالغہ اور پسروں کے لئے جبکہ نابالغ ہوں۔

[عربی: کما حررہ في ردالمحتار مستنداً لمبانی البدائع و حققناہ فی البحرو الخیریة والخانیة والتبیین والکافی والسراج الوھاج والھندیة کما ذکرناہ فیما علقناہ علی ردالمحتار۔] اس کو ردالمحتار میں بدائع کے حوالے سے بیان کیا ہے، اور ہم نے اس کی تحقیق بحر، خیریہ، خانیہ، تبیین، کافی، سراج الوھاج اور ہندیہ کے بیانوں سے کی ہے، جیسے کہ ہم نے اس کو ردالمحتار کے حاشیہ پر ذکر کیا ہے۔ ت

اور شک نہیں کہ جس کا ولد الزنا ہونا مشہور ہو اس سے دختر حلال کا نکاح عرفا باعثِ ننگ وعار و انگشت نمائی ہوتا ہے اور یہی معنی عدم کفاءت کے ہیں۔

[عربی: فی الشامیة عن الفتح ان الموجب ھو استنقاص اھل العرف فیدور معه -] فتاوی علامہ شامی میں فتح سے منقول کہ اہل عرف کا حقیر جاننا سبب ہے لہذا حکم کا مدار اسی پر ہوگا (ت)

تو بحالت عار کسی عورت کا نکاح ولد الحرام کے ساتھ نہیں ہو سکتا اگر کیا جائے گا نکاح اصلا نہ ہو گا مگر دو صورتوں میں، ایک یہ کہ دختر نابالغہ کا نکاح باپ یا وہ نہ ہو تو دادا اپنی تزویج سے کرے اور وقت نکاح نشے میں نہ ہو نہ اس سے پہلے اپنی اولاد سے کسی دختر کا نکاح غیر کفو سے کر چکا ہو دوسرے یہ کہ زنِ بالغہ برضائے خود کرے اور اس کے لئے کوئی ولی ہو تو وہ پیش از نکاح باوصف اس اطلاع کے کہ وہ شخص ولد الحرام ہے تصریحاً اپنی رضا ظاہر کر دے والمسائل مفصلۃ فی الدر وغیرہ (در وغیرہ میں یہ مسائل تفصیل سے بیان کئے گئے ہیں۔ ت)

---

1. الکامل لابن عدی ترجمہ بن ابی صالح ذکوان السمان مدینی دار الفکر بیروت ۱۲۸۶/۳
2. رد المحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۲/۲ Page 727 of 739

Fatawa Razawiyyah Volume 11

Similarly, if giving a daughter born of an illicit relationship in marriage to a boy is considered a cause of disgrace and shame in the local custom, then the marriage of a minor boy to such a girl will not be valid at all, except in the case of a father or grandfather under the aforementioned conditions as detailed in the discourse (as clarified in the speech. T). And Allah Almighty knows best.

Issue 448: From Budaun, sent by Maulvi Abdul Rasool Muhib Ahmad Sahib, 2 Jumada al-Akhira 1321 AH. Zaid, who is a Siddiqi, noble, and pious, married his minor daughter to Khalid based on the claims of Khalid and Amr that Khalid is his equal (Kufu) and from a noble family. Now after the marriage, it is revealed that Khalid's family has a long history of illicit professional activities; most people in his family are involved in prostitution, and their offspring are of the same kind. However, Khalid has now legally married off his sisters based on societal pressure. Now, what should Zaid do in this situation, having married off minor Hindah believing Khalid's reports of being an equal? Is this marriage legally valid and binding or not? And does Zaid have the right to annulment at this time? Explain and be rewarded.

Answer: In the situation described, there is no doubt at all that Zaid has the right to annulment. It is stated in Al-Walwaljiyyah and Dur al-Mukhtar:

Arabic	**Urdu**
If they made suitability (Kafa'at) a condition or were informed of it at the time of the contract, and they married her based on that, and then it becomes apparent that he is not suitable, they have the right of choice. 1	When the guardians gave her in marriage on the condition of suitability, or the boy claimed to be suitable at the time of marriage, and later he appeared to be unsuitable, then the guardians have the right of annulment. (T)

The discussion is whether there is even a need for annulment or not. Many books specify that such a marriage is purely void (batil). And when it is void, it did not take place from the beginning; what is the need for annulment? It is stated in Fatawa Qazi Khan, Fatawa Bazzaziyyah, Nawazil of Imam Faqih Abu al-Layth, Fath al-Qadir Sharh al-Hidayah, and Radd al-Muhtar ala al-Durr al-Mukhtar, etc.:

Arabic	**Urdu**
The wording is from Al-Wajiz: A man married his minor daughter to a man	The words of Al-Wajiz are that a person married off his minor daughter thinking

Arabic	Urdu
thinking he was righteous and did not drink intoxicants, then he turned out to be an addict. After reaching maturity, she said, "I am not satisfied with this marriage." Indeed...	the man was pious and not a drinker, but later it was found he was a habitual drinker. Upon reaching maturity, the daughter said she was not pleased with the marriage. Then...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Suitability (Al-Kafa'at), Mujtabai Press, Delhi, 1/194.

इसी प्रकार, यदि किसी हराम (अवैध) संतान को किसी लड़के के निकाह में देना वहाँ की प्रथा में बदनामी और लज्जा का कारण हो, तो नाबालिग लड़के का निकाह ऐसी लड़की से बिल्कुल नहीं होगा, सिवाय पिता और दादा की उस स्थिति के जो उपर्युक्त शर्तों के अधीन है जैसा कि वर्णन में स्पष्ट किया गया है। (त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 448: बदायूँ से, मौलवी अब्दुल रसूल मुहिब अहमद साहब द्वारा प्रेषित, 2 जमादी अल-आखिर 1321 हिजरी। जैद, जो सिद्दीकी, कुलीन और धर्मपरायण है, ने खालिद और अम्र के कहने पर कि खालिद तुम्हारा कुफ़ू (समान स्तर का) है और कुलीन परिवार से है, अपनी नाबालिग बेटी का निकाह खालिद के साथ कर दिया। अब निकाह के बाद पता चला कि खालिद के यहाँ हमेशा से हरामकारी (अवैध कार्यों) का पेशा चला आ रहा है, उसके परिवार के अधिकांश लोग वेश्यावृत्ति के पेशे में हैं और उनकी औलादें भी वैसी ही हैं। मगर अब खालिद ने लोगों के कहने-सुनने पर अपनी बहनों का निकाह शरीअत के अनुसार कर दिया है। अब ऐसी स्थिति में जैद क्या करे कि उसने खालिद को उसकी सूचना पर अपना कुफ़ू समझकर नाबालिग हिन्दा का निकाह कर दिया था? क्या यह निकाह शरीअत के अनुसार वैध और अनिवार्य है या नहीं? और क्या जैद को इस समय फ़स्ख (निरस्तीकरण) का अधिकार प्राप्त है या नहीं? स्पष्ट करें ताकि आप पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में जैद को फ़स्ख (निकाह रद्द करने) का अधिकार प्राप्त होने में तो कोई संशय ही नहीं हो सकता। अल-वलवाल्जिया और दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी	**उर्दू/हिंदी अनुवाद**
जब वे कुफ़ू (योग्यता) की शर्त लगाएँ या अनुबंध के समय उन्हें इसके बारे में सूचित किया जाए, और उन्होंने इसी आधार पर उसका निकाह कर दिया, फिर स्पष्ट हुआ कि वह कुफ़ू नहीं है, तो उन्हें (विकल्प) प्राप्त है। 1	जब वलियों (संरक्षकों) ने कुफ़ू की शर्त पर निकाह किया या लड़के ने निकाह के समय खुद को कुफ़ू बताया, बाद में गैर-कुफ़ू (अयोग्य) होना प्रकट हो गया तो वलियों को फ़स्ख (रद्द करने) का अधिकार है। (त)

बात यह है कि फ़स्ख की आवश्यकता भी है या नहीं, बहुत सी पुस्तकों में स्पष्ट किया गया है कि ऐसा निकाह सरासर बातिल (अमान्य) है और जब बातिल है तो शुरू से हुआ ही नहीं, फिर फ़स्ख की क्या

आवश्यकता है। फ़तावा काज़ी खान और फ़तावा बज़ाज़िया और नवाज़िल इमाम फ़कीह अबुल लैथ और फ़तहुल क़दीर शरह हिदाया और रदुल मुहतार अला अल-दुर्रिल मुख्तार आदि में है:

अरबी	उर्दू/हिंदी अनुवाद
और शब्द अल-वजीज़ के हैं: एक व्यक्ति ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह एक ऐसे व्यक्ति से कर दिया जिसे उसने नेक समझा और समझा कि वह शराब नहीं पीता, लेकिन वह नशे का आदी निकला। बड़ी होने पर उसने कहा कि "मैं इस निकाह से संतुष्ट नहीं हूँ।" बेशक...	अल-वजीज़ के शब्द हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह इस गुमान से कर दिया कि यह नेक है और शराबी आदि नहीं है, तो बाद में मालूम हुआ कि वह शराब का आदी है और बेटी ने बालिग होने पर कहा कि मैं इस निकाह पर राज़ी नहीं हूँ। तो...

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-कफ़ाअत (योग्यता का अध्याय), मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/194।

पृष्ठ 728/739

یونہی اگر پسر کے نکاح میں دختر حرام کا دینا وہاں کے عرف میں باعث بدنامی وعار ہو تو نابالغ پسر کا نکاح بھی ایسی دختر سے اصلانہ ہوگا سوا اسی صورت پدر وجد بشرط مذکور علی ماتحرر فی ماتقرر (جیسا کہ تقریر میں واضح کیا گیا ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۴۸: از بدایوں مرسلہ مولوی عبدالرسول محب احمد صاحب ۲ جمادی الاخرہ ۱۳۲۱ھ زید نے کہ صدیقی شریف متقی ہے خالد اور عمرو کے کہنے سے کہ خالد تیر اکفو ہے اور شریف خاندان ہے اپنی دختر نا بالغہ کا نکاح خالد کے ساتھ کردیا اب بعد نکاح معلوم ہوا کہ خالد کے یہاں ہمیشہ سے پیشہ حرامکاری چلا آتا ہے اس کے خاندان کے اکثر لوگ پیشہ زناکاری کرتے ہیں اور اسی قسم کی ان کی اولادیں ہیں مگر اب خالد نے اپنی بہنوں کا نکاح لوگوں کے کہنے سننے سے شرعی طور پر کر دیا فقط اب زید ایسی حالت میں کیا کرے کہ اس نے خالد کو اس کے اخبار پر اپنا کفو سمجھ کر ہندہ نابالغہ کا نکاح کردیا تھا آیا یہ نکاح شرعا جائز ولازم ہے یا نہیں؟ اور زید کو اس وقت حق فسخ حاصل ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں زید کو حق فسخ حاصل ہونے میں تو اصلا کلام ہو ہی نہیں سکتا۔ ولوا الجیہ و در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
اذا شرطوا الکفاءۃ او اخبرھم بھا وقت العقد فزوجوھا علی ذلك ثم ظھر انه غیر کفو کان لھم الخیار۔ ۱	جب اولیاء نے کفو کی شرط پر نکاح دیا یا لڑکے نے وقت نکاح خود کو کفو ہونا بتایا، بعد میں غیر کفو ہونا ظاہر ہو گیا تو اولیاء کو فسخ کا اختیار ہے۔ (ت)

کلام اس میں ہے کہ فسخ کی حاجت بھی ہے یا نہیں، بہت کتب میں تصریح ہے کہ ایسا نکاح محض باطل ہے اور جب باطل ہے تو سرے سے ہوا ہی نہیں فسخ کی کیا ضرورت ہے۔ فتاویٰ قاضی خاں و فتاویٰ بزازیہ و نواز ل امام فقیہ ابواللیث و فتح القدیر شرح ہدایہ و ردالمحتار علی الدرالمختار وغیرہا میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
واللفظ للوجیز زوج بنته الصغیرة من رجل ظنه مصلحا لا یشرب مسکرا فاذا هو مد من فقالت بعد الکبر لا ارضی بالنکاح۔ ان	لفظ وجیز کے ہیں کہ ایک شخص کو نا بالغ بیٹی کا نکاح اس گمان سے کر دیا کہ یہ صالح ہے اور شرابی وغیرہ نہیں ہے تو بعد میں معلوم ہوا کہ شراب کا عادی ہے اور بیٹی نے بالغ ہونے پر کہا کہ میں اس نکاح پر راضی نہیں ہوں۔ تو

۱ در مختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۴

Fatawa Ridawiyya, Volume Eleven

[Arabic Section]: If the father does not drink intoxicants, nor is he known for it, and the majority of his household are righteous, then the marriage is invalid by consensus. It is stated in Al-Nawazil that the marriage is invalid because it was performed on the assumption that he was compatible (Kufu). (T) [Urdu Section]: If the father does not drink and is not a well-known drunkard, and his family is predominantly composed of righteous people, then this marriage is void by consensus. And in Al-Nawazil, it is said that this marriage is void because the father gave her in marriage assuming compatibility (Kufu). (T)

In Al-Qunyah: [Arabic Section]: He married off his minor daughter to a man he thought was freeborn by origin, but he turned out to be a manumitted slave; therefore, it is invalid by consensus. [Urdu Section]: A minor daughter was married to someone with the thought that he was originally a free man, whereas later it was found that he was a manumitted slave, then the marriage is void by consensus. (T)

However, in Al-Dhakhirah, this invalidity was interpreted as future invalidity, i.e., invalidity after annulment. It is in Radd al-Muhtar: [Arabic Section]: What was mentioned from Al-Nawazil that "the marriage is invalid" means it will become invalid, as in Al-Dhakhirah, because the case is predicated on when the girl does not consent after she grows up (reaches puberty), as explicitly stated in Al-Khaniyyah, Al-Dhakhirah, and others. What is in Al-Qunyah is also based on this, etc. [Urdu Section]: What was mentioned from Al-Nawazil that "the marriage is void" means that it can become void, as is in Al-Dhakhirah. This is because the assumed case is that the daughter, after reaching puberty, has shown non-consent to the marriage, as clarified in Al-Khaniyyah and Al-Dhakhirah etc. And whatever is mentioned in Al-Qunyah is also carried on this [meaning]. (T)

In Al-Alamgiriyyah: [Arabic Section]: A man married off his minor daughter to a man thinking he was righteous and did not drink wine, but the father found him to be a habitual drunkard. The daughter grew up and said... [Urdu Section]: A person married his minor daughter to a boy thinking that the boy was righteous and not a drunkard, etc. Later he found him to be a habitual drinker, and the daughter reached puberty and said that...

Footnotes: 1. Fatawa Bazzaziyyah on the margin of Fatawa Hindiyyah, Book 5 on Compatibility (Kufu), Nurani Kutub Khana, Peshawar, 4/116 2. Radd al-Muhtar citing Al-Nawazil, Chapter of Al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/304 3. Al-Qunyah

al-Munyah li Tatmim al-Ghunya, Chapter of Marriage of Minors, Matba' Mushtahara bil-Maha, India, p. 75 4. Radd al-Muhtar, Chapter of Al-Wali, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/305

फ़तावा रज़विया, ग्यारहवाँ खंड

[अरबी अनुभाग]: यदि पिता शराब नहीं पीता है, न ही वह इसके लिए जाना जाता है, और उसके परिवार के अधिकांश लोग नेक हैं, तो निकाह (विवाह) सर्वसम्मति से अमान्य (बातिल) है। 'नवाज़िल' में कहा गया है कि निकाह अमान्य है क्योंकि यह इस धारणा पर किया गया था कि वह समान दर्जे (कुफ़ू) का है। (त) [उर्दू अनुभाग]: यदि पिता शराब नहीं पीता है और न ही वह एक प्रसिद्ध शराबी है, और उसका परिवार मुख्य रूप से नेक लोगों का है, तो यह विवाह सर्वसम्मति से अमान्य है। और 'नवाज़िल' में कहा गया है कि यह विवाह अमान्य है क्योंकि पिता ने समानता (कुफ़ू) मानकर विवाह किया था। (त)

'क़ुन्या' में है: [अरबी अनुभाग]: उसने अपनी नाबालिग बेटी का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से किया जिसे वह मूल रूप से आज़ाद समझता था, लेकिन वह एक मुक्त किया हुआ गुलाम निकला; इसलिए, यह सर्वसम्मति से अमान्य है। [उर्दू अनुभाग]: एक नाबालिग बेटी का निकाह किसी के साथ इस विचार के साथ किया गया था कि वह मूल रूप से एक स्वतंत्र व्यक्ति था, जबकि बाद में पता चला कि वह एक मुक्त किया हुआ गुलाम था, तो निकाह सर्वसम्मति से अमान्य है। (त)

हालाँकि, 'ज़खीरा' में इस अमान्यता की व्याख्या भविष्य की अमान्यता, यानी विच्छेद (फ़स्ख़) के बाद की अमान्यता के रूप में की गई थी। 'रद अल-मुहतार' में है: [अरबी अनुभाग]: 'नवाज़िल' से जो उल्लेख किया गया था कि "निकाह अमान्य है" उसका अर्थ है कि यह अमान्य हो जाएगा, जैसा कि 'ज़खीरा' में है, क्योंकि यह मामला इस पर आधारित है जब लड़की बड़ी होने (वयस्क होने) के बाद सहमति नहीं देती है, जैसा कि 'ख़ानिया', 'ज़खीरा' और अन्य में स्पष्ट रूप से कहा गया है। 'क़ुन्या' में जो है वह भी इसी पर आधारित है, आदि। [उर्दू अनुभाग]: 'नवाज़िल' से जो उल्लेख हुआ कि "निकाह बातिल (अमान्य) है" उसका अर्थ यह है कि यह बातिल हो सकता है, जैसा कि 'ज़खीरा' में है। ऐसा इसलिए है क्योंकि माना गया मामला यह है कि बेटी ने बालिग होने के बाद निकाह पर असहमति जताई है, जैसा कि 'ख़ानिया' और 'ज़खीरा' आदि में स्पष्ट किया गया है। और 'क़ुन्या' में जो कुछ भी उल्लेख किया गया है वह भी इसी अर्थ पर आधारित है। (त)

'आलमगीरिया' में है: [अरबी अनुभाग]: एक व्यक्ति ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह एक ऐसे व्यक्ति से किया जिसे वह नेक समझता था और जो शराब नहीं पीता था, लेकिन पिता ने उसे आदतन शराबी पाया। बेटी बड़ी हुई और कहा... [उर्दू अनुभाग]: एक व्यक्ति ने अपनी नाबालिग बेटी का

निकाह एक लड़के से इस सोच के साथ किया कि लड़का नेक है और शराबी नहीं है, आदि। बाद में उसने उसे शराब का आदी पाया, और बेटी बालिग हो गई और उसने कहा कि...

पाद टिप्पणियाँ: 1. फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, खंड 5 कुफ़ू के बारे में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 4/116 2. रद अल-मुहतार, नवाज़िल के हवाले से, वली का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/304 3. अल-क़ुन्या अल-मुन्या ली तत्मीम अल-गुन्या, नाबालिगों के विवाह का अध्याय, मतबा मुश्ताहरा बिल-महा, भारत, पृ. 75 4. रद अल-मुहतार, वली का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/305

पृष्ठ 729 का 739

فتاوی رضویہ، جلد یازدہم

[عربی حصہ]: لم یکن ابوھا یشرب المسکر ولا عرف بہ وغلبۃ اھل بیتھا صالحون فالنکاح باطل بالاتفاق اھـ وقال في النوازل فالنکاح باطل لانہ انما زوج علی ظن انہ کفؤ اھـ (ت) [اردو حصہ]: اگر باپ شراب نہ کرتا ہو اور نہ ہی شرابی مشہور ہو اور اس کا خاندان غالب طور صالحین ہیں تو یہ نکاح بالاتفاق باطل ہے اھ، اور نوازل میں کہا کہ یہ نکاح باطل ہے کیونکہ والد نے کفو ہونے پر نکاح دیا ہے اھـ(ت)

قنیہ میں ہے: [عربی حصہ]: زوج بنتہ الصغیرۃ من رجل ظنہ حر الاصل وکان معتقاً فھو باطل بالاتفاق۔ [اردو حصہ]: نابالغ بیٹی کا نکاح کسی سے اس گمان پر کیا گیا کہ یہ اصلی آزاد ہے جبکہ بعد میں آزاد شدہ معلوم ہوا تو نکاح باطل ہے بالاتفاق۔(ت)

مگر ذخیرہ میں اس بطلان کو بطلان آئندہ یعنی بطلان بعد الفسخ کے ساتھ تفسیر فرمایا۔ ردالمحتار میں ہے: [عربی حصہ]: ما مر عن النوازل من ان النکاح باطل معناہ انہ سیبطل کما في الذخیرۃ لان المسألۃ مفروضۃ فیما اذ لم ترض البنت بعدما کبرت کما صرح بہ في الخانیۃ والذخیرۃ وغیرھما وعلیہ یحمل ما في القنیۃ الخ۔ [اردو حصہ]: نوازل سے جو گزرا کہ "نکاح باطل ہے" اس کا مطلب یہ ہے کہ باطل ہو سکتا ہے جیسا کہ ذخیرہ میں ہے یہ اس لئے کہ مسئلہ مفروضہ یہ ہے کہ بیٹی نے بالغ ہونے کے بعد نکاح پر عدم رضامندی کی ہو جیسا کہ خانیہ اور ذخیرہ وغیرہ میں تصریح کی ہے۔ اور قنیہ میں جو ذکر ہے وہ بھی اسی پر محمول ہے الخ۔(ت)

عالمگیریہ میں ہے: [عربی حصہ]: رجل زوج ابنتہ الصغیرۃ من رجل علی ظن انہ صالح لا یشرب الخمر فوجدہ الاب شریبا مدمنا وکبرت الابنۃ فقالت [اردو حصہ]: ایک شخص نے اپنی بیٹی نابالغہ کا

کسی لڑکے سے اس گمان پر کیا کہ لڑکا صالح ہے شرابی وغیرہ نہیں ہے تو بعد میں اسے شراب کا عادی پایا اور بیٹی بالغ ہو چکی ہو اور کہہ چکی ہو کہ

حواشی: 1 فتاوی بزازیہ علی ھامش فتاوی ہندیہ الخامس فی الکفاء نورانی کتب خانہ پشاور ۱۱۶/۴ 2 ردالمحتار بحوالہ النوازل باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۴/۲ 3 القنیة المنیة لتتمیم الغنیة باب فی نکاح الصغار والصغائر مطبعة مشتهرة بالمها هندیه ص ۷۵ 4 ردالمحتار باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۰۵/۲

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Arabic Box Left]: "I do not approve of the marriage if her father did not know of [the groom's] wine drinking, and the majority of his household are righteous people; thus the marriage is void, meaning it becomes void. This issue is by consensus, as mentioned in Al-Dhakhira. The disagreement between Abu Hanifa and his two companions (Allah have mercy on them) is only in the case where he married her to a man he knew was not an equal (kufu). According to Abu Hanifa (Allah have mercy on him), it is permissible because the father is perfectly compassionate and of sound judgment; therefore, the apparent conclusion is that he reflected deeply and found the non-equal better than an equal. Thus it is in Al-Muhit." [1]

[Urdu Box Right]: A person married off his minor daughter to a boy under the impression that the boy is pious and not a wine-drinker etc. Later, he was found to be a habitual drinker. The daughter has now reached puberty and has said she is not satisfied with this marriage. In this case, if the father's [lack of knowledge] of the drinking habit at the time of marriage was not known, and the majority of his family are righteous people, then the marriage will be void, i.e., it can be voided. This issue is unanimous as in 'Al-Dhakhira'. However, the difference of opinion between the Imam and Sahibayn is in the case when the father knew at the time of marriage that the boy was not an equal. According to Imam Abu Hanifa (Allah be pleased with him), this marriage is correct because the father is perfectly compassionate and completely rational. Therefore, he must have thought it through extremely well that this non-equal is better than those who are equals. It is similarly stated in Al-Muhit. (T)

And apparently according to the rules, in the case of the guardian being deceived by the husband, a ruling of absolute invalidity should be given. It is in Radd al-Muhtar:

[Arabic Box Middle Left]: "The apparent thing is to say the contract is not valid at all, as in the case of a profligate or intoxicated father, though what is explicitly stated is that she has the right to annul it after puberty, and this is a branch of its validity, so reflect." [2]

[Urdu Box Middle Right]: The apparent view is to say that the marriage is not fundamentally valid, just as if the father were insane or intoxicated. Furthermore, there is a clarification that in such a case, the daughter has the choice upon reaching puberty, while this matter can branch off from the marriage being valid. So reflect. (T)

I say: (T) The origin of the aforementioned branch is from the book 'Al-Asl' i.e., Al-Mabsut of Imam Muhammad (Allah have mercy on him), and it is from the books of 'Zahir al-Riwayah'. In 'Zahir al-Riwayah', for an adult woman to marry a non-equal without the guardian's consent is valid, but the guardian has the right to annul. The chosen narration for fatwa is the 'Hasan' narration that such a marriage does not take place at all. The reason given by scholars there due to the corruption of the times applies here too without difference. So, not interpreting the mentioned texts and declaring the marriage fundamentally void in case of deception apparently holds a strong reason, or at the very least, a right to annulment exists.

---

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 on Equality, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/291.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Equality, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/318.

फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

[अरबी बॉक्स बाएँ]: "मैं निकाह से राज़ी नहीं हूँ अगर उसके बाप को उसके शराब पीने का पता नहीं था और उसके घर वाले ज़्यादातर नेक लोग हों, तो निकाह बातिल (अमान्य) है, यानी बातिल हो जाता है। यह मसला इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति) से है जैसा कि 'अल-ज़खीरा' में है। इमाम अबू हनीफ़ा और उनके दो साथियों (अल्लाह उन पर रहम करे) के बीच मतभेद केवल उस स्थिति में है जब उसने उसका निकाह एक ऐसे व्यक्ति से किया जिसे वह जानता था कि वह बराबरी (कुफ़ू) का नहीं है। इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर रहम करे) के अनुसार यह जायज़ है क्योंकि पिता पूरी तरह दयालु और सही राय वाला होता है; इसलिए ज़ाहिर यह है कि उसने बहुत सोच-विचार किया होगा और इस गैर-कुफ़ू को कुफ़ू वालों से बेहतर पाया होगा। 'अल-मुहीत' में ऐसा ही है।" [1]

[उर्दू बॉक्स दाएँ]: एक व्यक्ति ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह किसी लड़के से इस गुमान पर किया कि लड़का नेक है और शराबी वगैरह नहीं है। बाद में उसे शराब का आदी पाया गया और बेटी बालिग हो चुकी हो और कह चुकी हो कि मैं इस निकाह पर राज़ी नहीं हूँ। इस सूरत में अगर निकाह के वक़्त बाप का शराबी होना मालूम न हो और उसका ज़्यादातर ख़ानदान नेक लोगों का हो, तो निकाह बातिल होगा, यानी बातिल हो सकता है। यह मसला मुत्तफ़क़ा (सर्वसम्मत) है जैसा कि 'ज़खीरा' में है। अलबत्ता इमाम और साहिबैन का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) उस सूरत में है जब निकाह के वक़्त बाप को लड़के का गैर-कुफ़ू होना मालूम हो, तो इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के नज़दीक यह निकाह सही है क्योंकि बाप कामिल शफ़ीक़ (पूर्ण दयालु) है और मुकम्मल साहब-ए-राय (पूर्ण विचारवान) है। लिहाज़ा उसने इन्तहाई सोच-विचार किया होगा कि यह गैर-कुफ़ू कुफ़ू वालों से बेहतर है। मुहीत में भी ऐसे ही है। (त)

और ज़ाहिर है कि नियमों के अनुसार, शौहर की तरफ़ से वली (अभिभावक) को धोखा दिए जाने की सूरत में मुतलक़न (पूर्णत:) बातिल होने का हुक्म हो। 'रद्दुल मुहतार' में है:

[अरबी बॉक्स मध्य बाएँ]: "ज़ाहिर है कि यह कहा जाए कि अक़्द (निकाहनामा) मूल रूप से सही नहीं है, जैसे कि बदचलन या नशे में धुत्त पिता की स्थिति में, जबकि स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि उसे बालिग होने पर इसे रद्द करने का अधिकार है, और यह इसकी वैधता की एक शाखा है, तो विचार करें।" [2]

[उर्दू बॉक्स मध्य दाएँ]: ज़ाहिर यही है कि असल में निकाह सही न होने की बात कही जाए जैसे कि बाप पागल या नशे वाला हो। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि ऐसी सूरत में बालिग होने पर बेटी को अधिकार है, जबकि यह बात निकाह के सही होने पर आधारित हो सकती है। अतः विचार करें। (त)

अक़ूल: (मैं कहता हूँ - त) उपर्युक्त मसले का मूल इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) की किताब 'अल-अस्ल' यानी 'मब्सूत' से है, और वह 'ज़ाहिर-उर-रिवाया' की किताबों में से है। 'ज़ाहिर-उर-रिवाया' में बालिग़ा लड़की का वली की सहमति के बिना गैर-कुफ़ू में निकाह कर लेना सही है, वली को इसे रद्द करने का अधिकार है। लेकिन फ़तवे के लिए चुनी गई 'हसन' रिवायत यह है कि वह निकाह होता ही नहीं है। ज़माने के बिगाड़ के कारण जो कारण उलेमा ने वहाँ बताया है, वह यहाँ भी बिना किसी अंतर के लागू होता है। तो ऊपर दी गई इबारतों की तावील (व्याख्या) न करना और धोखे की सूरत में निकाह को सिरे से बातिल ठहराना ज़ाहिर तौर पर मज़बूत दलील रखता है, कम से कम उसे रद्द करने का अधिकार तो है ही।

---

1. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 5 कुफ़ू के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/291।
2. रद्दुल मुहतार, अध्याय कुफ़ू, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी बेरुत 2/318।

पेज 730/739

فتاوٰی رضویہ جلد یازدہم

[عربی بکس بائیں]: لا ارضی بالنکاح ان لم یعرف ابوھا بشرب الخمر وغلبۃ اھل بیتہ الصالحون فالنکاح باطل ای یبطل وھذہ المسألۃ بالاتفاق کذا فی الذخیرۃ۔ وانما الخلاف بین ابی حنیفۃ وصاحبیہ رحمہم اللہ تعالٰی فیما اذا زوجھا من رجل عرفہ غیر کفو فعند ابی حنیفہ رحمہ اللہ تعالٰی یجوز لان الاب کامل الشفقۃ وافر الرأی فالظاہر انہ تأمل غایۃ التأمل ووجد غیر الکفو اصل من الکفو کذا فی المحیط۔1

[اردو بکس دائیں]: ایک شخص نے اپنی بیٹی نابالغہ کا کسی لڑکے سے اس گمان پر کیا کہ لڑکا صالح ہے شرابی وغیرہ نہیں ہے تو بعد میں اسے شراب کا عادی پایا اور بیٹی بالغ ہو چکی ہو اور کہہ چکی ہو کہ میں اس نکاح پر راضی نہیں ہوں۔ اس صورت میں اگر باپ کا نکاح کے وقت شرابی ہونا معروف نہ ہو اور اس کا غالب خاندان صالحین لوگ ہوں تو نکاح باطل ہوگا، یعنی باطل ہو سکتا ہے اور یہ مسئلہ متفقہ ہے جیسا کہ ذخیرہ میں ہے البتہ امام اور صاحبین کا اختلاف اس صورت میں ہے جب نکاح کے وقت باپ کو لڑکے کا غیر کفو ہونا معلوم ہو تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نزدیک یہ نکاح صحیح ہے کیونکہ باپ کامل شفیق ہے اور مکمل صاحب الرائے ہے لہٰذا اس نے انتہائی سوچ و بچار کیا ہوگا کہ یہ غیر کفو کفو والوں سے بہتر ہے، محیط میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

اور نظر بقواعد ظاہر یہی ہے کہ شوہر کی طرف سے ولی کو دھوکا دئے جانے کی صورت میں مطلقاً بطلان کا حکم ہو، ردالمحتار میں ہے:

[عربی بکس وسط بائیں]: الظاہر ان یقال لایصح العقد اصلا کما فی الاب الماجن والسکران مع ان المصرح بہ ان لھا ابطالہ بعد البلوغ وھو فرع صحتہ فلیتأمل۔2

[اردو بکس وسط دائیں]: ظاہر یہی ہے کہ اصلا نکاح صحیح نہ ہونے کا قول کیا جائے جیسا کہ باپ مجنون یا نشے والا ہو، نیز یہ بھی تصریح ہے کہ ایسی صورت میں بالغ ہونے پر بیٹی کو اختیار ہے جبکہ یہ بات نکاح کے صحیح ہونے پر متفرع ہو سکتی ہے پس غور کرو۔ (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں- ت) فرع مذکور کی اصل کتاب الاصل یعنی مبسوط امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے ہے اور وہ کتب ظاہر الروایۃ سے ہے اور ظاہر الروایۃ میں بالغہ کا غیر کفو سے بلا رضائے ولی نکاح کرلینا صحیح ہے ولی کو اختیار فسخ ہے اور مختار للفتویٰ روایت حسن ہے کہ وہ نکاح ہوتا ہی نہیں اور فساد زمانہ کے باعث جو وجہ علماء نے وہاں فرمائی یہاں بھی بلا تفاوت جاری ہے تو حکم عبارات مذکورہ میں تاویل نہ کرنا اور دھوکے کی صورت میں نکاح کو سرے سے باطل ٹھہرانا بظاہر وجہ وجیہ رکھتا ہے لا اقل اختیار فسخ ہونے میں۔

---

1 فتاویٰ ہندیۃ الباب الخامس فی الکفاءۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۹۱ 2 ردالمحتار باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۱۸

Fatawa Razawiyya Volume Eleven

There is no doubt. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

Regarding marriage into a non-peer (non-equal), a fatwa of its absolute impermissibility will be given; this is the chosen position for the fatwa due to the corruption of the times. (1) | Regarding marriage into a non-peer, a fatwa of absolute non-permissibility will be given; due to the corruption of the times, this is the preferred position for the fatwa. (T)

In Radd al-Muhtar, from Fath al-Qadir, it is stated:

Because not every guardian is skilled in filing a lawsuit and litigating, nor is every judge just. Even if the guardian is skilled and the judge is just, there is still an aversion to frequenting the doors of rulers and the hardship of litigation itself, which establishes harm. Therefore, preventing it is to avert that harm. Fath. (2) | Because not every father is an expert in filing cases and debating, nor is every judge just. Even if the father is an expert and the judge is also just, the aversion to wandering around the doors of rulers and the toil of litigation still exists, which proves potential harm. Thus, to avoid this harm, he should refrain. Fath. (T)

It is similarly stated in other books. And Allah Almighty knows best.

Problem 449: From Pakharyarai Pur, Muzaffarpur district, Mohalla Noor al-Haleem Shah Sharifabad, sent by Maulvi Sharif-ur-Rahman Sahib, deceased, 4 Shaban 1336 AH.

Zaid is illegitimate but is a devout Muslim. Can people marry their sons and daughters to his sons and daughters according to Sharia or not? Explain, and may you be rewarded.

The Answer: Kafa'at (compatibility) is considered in marriage, and Kafa'at depends on custom (urf). If establishing a relationship with them is customarily a source of shame and disgrace, then it should be avoided, especially regarding daughters. And Allah Almighty knows best.

Problem 450: Asked by Akhtar Hussain Khan from Bareilly, Mohalla Shahabad.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A person took an orphaned, minor Sayyid girl and raised her. During her minority, he married her to a Pathan. She had an adult brother who was not informed. Due to her being a minor,

the departure (rukhsati) did not take place. Now he (the husband) is missing (mafqud-ul-khabar), and the girl has reached puberty. In this situation, can she marry somewhere else?

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Guardians, Mujtabai Press, Delhi, 1/191 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Guardians, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/297

फतावा रज़विया ग्यारहवाँ खंड

इसमें कोई संदेह नहीं है। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

गैर-कुफ़ू(असमान कुल) में निकाह के संबंध में मूलतः अमान्यता (गैर-जवाज़) का फतवा दिया जाएगा और ज़माने की बुराई के कारण फतवे के लिए यही मान्य है। (1) | गैर-कुफ़ू में निकाह के संबंध में मूलतः अमान्यता का फतवा दिया जाएगा, ज़माने के बिगाड़ की वजह से फतवे के लिए यही अधिकार प्राप्त (मुख़्तार) है। (त)

'रद्द अल-मुह्तार' में 'फ़तह अल-क़दीर' से है:

क्योंकि हर अभिभावक मुकदमा दायर करने और बहस करने में कुशल नहीं होता और न ही हर काज़ी न्यायप्रिय होता है। और यदि अभिभावक कुशल हो और काज़ी न्यायप्रिय भी हो, तब भी हुक्काम के दरवाज़ों के चक्कर लगाने और मुकदमेबाज़ी की कठिनाई से घृणा तो मौजूद है जिससे नुकसान सिद्ध होता है। अतः इस नुकसान से बचने के लिए इससे रोकना चाहिए। फ़तह। (2) | क्योंकि हर बाप मुकदमा दायर करने और बहस करने का माहिर नहीं होता और न ही हर काज़ी आदिल (न्यायप्रिय) होता है और अगर बाप माहिर हो और काज़ी आदिल भी हो तब भी हुक्काम के दरवाज़ों के चक्कर लगाने और मुकदमेबाज़ी की मशक्कत से नफरत तो मौजूद है जिसकी वजह से ज़रर (नुकसान) साबित है तो इस ज़रर से बचने के लिए वह बाज़ (दूर) रहेगा। फ़तह। (त)

इसी तरह अन्य पुस्तकों में भी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ४४९: पखरियर राय पुर, मुज़फ्फरपुर ज़िला, मोहल्ला नूर अल-हलीम शाह शरीफ़ाबाद से, मुरसला मौलवी शरीफ़-उर-रहमान साहब मरहूम, ४ शाबान १३३६ हिजरी।

ज़ैद हरामज़ादा है लेकिन मुसलमान दीनदार है, शरीअत के अनुसार क्या लोग अपने बेटे-बेटियों का निकाह उसके बेटे-बेटियों से कर सकते हैं या नहीं? बयान फरमाएं, आपको अज्र (पुण्य) मिलेगा।

अल-जवाब: निकाह में कफ़ाअत (समानता) विश्वसनीय है और कफ़ाअत का आधार प्रथा (उर्फ़) पर है। यदि उनसे रिश्ता जोड़ना प्रथागत रूप से शर्म और अपमान का कारण हो तो इससे बचना चाहिए, विशेष रूप से बेटियों के मामले में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ४५०: मसूला अख्तर हुसैन खान, बरेली, मोहल्ला शाहबाद से।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति ने एक अनाथ नाबालिग सैय्यदज़ादी को गोद लेकर पाला और उसी नाबालिग़ी में उसका निकाह एक पठान से कर दिया और उसका एक बालिग भाई भी था जिसे सूचना नहीं दी गई। नाबालिग़ी के कारण रुख़सती नहीं हुई। अब वह (पति) लापता (मफ़क़ूद-उल-ख़बर) है और लड़की बालिग हो गई है, इस स्थिति में क्या वह अपना निकाह दूसरी जगह कर सकती है?

---

1 दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब अल-वली, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/१९१ 2 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-वली, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत २/२९४

فتاوی رضویہ جلد یازدہم

شک نہیں۔ در مختار میں ہے:

ویفتی في غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا وھو المختار للفتوی لفساد الزمان 1۔ | غیر کفو میں نکاح کے متعلق اصلا عدم جواز کا فتوی دیا جائے گا فسادِ زمان کی وجہ سے فتوی کے لئے یہی مختار ہے۔ (ت)

رد المحتار میں فتح القدیر سے ہے:

لانہ لیس کل ولي یحسن المرافعۃ والخصومۃ ولا کل قاضي یعدل ولو احسن الولي وعدل القاضي فقد یترک انفۃ للتردد علی ابواب الحکام واستثقالا لنفس الخصومات فیتقرر الضرر فکان منعہ دفعا لہ فتح 2۔ | کیونکہ ہر باپ مقدمہ دائر کرنے اور بحث کرنے کا ماہر نہیں ہوتا اور نہ ہر قاضی عادل ہوتا ہے اور اگر باپ ماہر ہو اور قاضی عادل بھی ہو تب بھی حکام کے دروازوں کے چکر لگانے اور مقدمہ بازی کی مشقت سے نفرت تو موجود ہے جس کی وجہ سے ضرر ثابت ہے تو اس ضرر سے بچنے کے لئے وہ باز رہے گا۔ فتح۔ (ت)

اسی طرح اور کتب میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۴۹: از پکھر یر ارائے پور ضلع مظفر پور محلہ نور الحلیم شاہ شریف آباد مرسلہ مولوی شریف الرحمن صاحب مرحوم ۴ شعبان ۱۳۳۶ھ

زید حرامی ہے مگر مسلمان دیندار ہے، شرعا اس کے لڑکا لڑکی سے نکاح والے اپنے لڑکا لڑکی کا عقد کر سکتے ہیں یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: نکاح میں کفاءت معتبر ہے اور کفاءت کامدار عرف پر ہے ان سے رشتہ عرفا باعث ننگ و عار ہو تو احتراز کیا جائے خصوصا دختر میں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۵۰: مسئولہ اختر حسین خان از بریلی محلہ شاہ آباد

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے ایک یتیم نابالغہ سید زادی لے کر پالی اور اسی نابالغی میں اس کا نکاح ایک پٹھان سے کردیا اور اس کا بالغ بھائی تھا اسے اطلاع بھی نہیں دی بوجہ نابالغی رخصت نہ ہوئی اب وہ مفقود الخبر ہے اور لڑکی بالغ ہوگئی، اس صورت میں وہ اپنا نکاح دوسری جگہ کرسکتی ہے

---

1 در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۱ 2 رد المحتار باب الولی دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۹۷

Volume 11 Fatawa Razawiyya

...or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If these statements are true, then that marriage did not take place at all; the girl has the authority to marry in any suitable place she chooses. And Allah Almighty knows best.

Problem 251: From the city of Bareilly, Ibrahimpur neighborhood, submitted by Muhammad, known as Kamalullah Shah Sahib, 11th Safar 1337 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, after divorcing his wedded wife, demanded his underage daughter from her. She refused to hand her over. At that time, Zaid was compelled to travel to a distant place and he warned that her marriage should not be against his wishes. However, the said woman, in Zaid's absence, performed the underage daughter's marriage against Zaid's wishes. That daughter's husband is like a common marketplace woman, a dancer; he does not observe fasting or prayers and is a wine-drinker. Now the daughter, by the grace of Allah, is an adult. She narrated her complaints against this husband to her father, Zaid, asking: was my marriage with this person valid or invalid? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: The questioner stated that three years have passed since the marriage. At that time, the girl's age was eleven years and she was a minor, while the man's age was twenty-five years and he had been a dancer by profession since then. For this reason, the father had forbidden marriage with him. The father went to Indore. In his absence, the woman performed the marriage, and the father was not informed. The girl reached puberty three months ago. Now, about a week ago, her father returned from Indore, and the girl complained to him; before this, she had not said anything either. If this is the case, the mentioned marriage has become void. Initially, when the marriage occurred, it was contingent upon the father's consent.

(Arabic): Because even if it was with a non-equal (ghayr kufu) and the person performing the marriage was other than the father or grandfather, it was an unauthorized contract (fuduli) that occurred, and it has a sanctioner, who is the father, because marrying someone non-equal...

(Urdu): ...because this marriage is into non-kufu (unequal status) and the person who performed the marriage is other than the father or grandfather. This became an unauthorized (fuduli) marriage, the validation of which rests with the girl's father because he alone has the authority for marriage into non-kufu. (T)

Since the woman became an adult during this period, the marriage then became contingent upon her own permission. As she remained silent for a period after reaching puberty, it was considered permission from her side. So now it is as if an adult woman married such a person by her own choice. Such a person is definitely non-kufu, and for an adult woman to marry such a person by her own choice is purely void...

जिल्द ग्यारहवीं फ़तावा रज़विया

...या नहीं? बयान फरमाएं सवाब पायेंगे।

अल-जवाब (उत्तर): अगर ये बयान हकीकत हैं, तो वह निकाह असल में हुआ ही नहीं। लड़की को इख्तियार है कि वह जहाँ चाहे अपनी पसंद की अच्छी जगह निकाह कर ले। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 251: शहर बरेली, मोहल्ला इब्राहिमपुर से, सायल: मुहम्मद उर्फ कमालुल्लाह शाह साहिब, 11 सफर 1337 हिजरी।

उलमा-ए-दीन इस बारे में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी तलाक़शुदा बीवी से अपनी नाबालिग बेटी की मांग की। उसने देने से इंकार कर दिया। उस वक्त ज़ैद को किसी दूर के सफर पर मजबूरी में जाना पड़ा, लेकिन उसने खबरदार कर दिया था कि बेटी का निकाह मेरी मर्ज़ी के खिलाफ न हो। इसके बावजूद, ज़ैद की गैर-मौजूदगी में उस औरत ने नाबालिग बेटी का निकाह ज़ैद की राय के खिलाफ कर दिया। वह दामाद बाज़ारी औरत की तरह नाचने वाला है, नमाज़-रोज़े का पाबंद नहीं है और शराब पीता है। अब बेटी अल्लाह के फज़ल से बालिग है। उसने अपने शौहर की शिकायतों का दफ्तर अपने बाप ज़ैद के सामने खोल दिया है और पूछा है कि क्या मेरा निकाह इस शख्स के साथ जायज़ हुआ या नाजायज़? बयान फरमाएं सवाब पायेंगे।

अल-जवाब (उत्तर): सायल ने बयान किया कि निकाह हुए तीन साल हो गए। उस वक्त लड़की की उम्र ग्यारह साल थी और वह नाबालिग थी, जबकि मर्द की उम्र पच्चीस साल थी और वह तभी से नाचने के पेशे में था। इसी वजह से बाप ने उसके साथ निकाह करने से मना किया था। बाप इंदौर चला गया, उसके पीछे औरत ने निकाह कर दिया और बाप को कोई खबर न हुई। लड़की तीन महीने पहले बालिग हो गई। अब करीब एक हफ्ता हुआ कि उसका बाप इंदौर से वापस आया, तब लड़की ने उससे शिकायत की; इससे पहले उसने भी कुछ नहीं कहा था। अगर वाकया यही है तो ज़िक्र किया गया निकाह बातिल (अमान्य) हो गया। शुरुआत में जब निकाह हुआ, तो वह बाप की रज़ामंदी पर मौकूफ (निर्भर) था।

(अरबी मूल): क्योंकि भले ही वह गैर-कफ़ू (असमान दर्जे का) था और निकाह कराने वाला बाप या दादा नहीं था, लेकिन यह एक अनधिकृत अनुबंध (फ़ुज़ूली) था जो हुआ, और इसका एक अनुमोदक है जो बाप है, क्योंकि गैर-कफ़ू में निकाह...

(उर्दू अनुवाद): ...क्योंकि यह निकाह गैर-कफ़ू में हुआ है और निकाह कराने वाला बाप और दादा के अलावा कोई और है, इसलिए यह फ़ुज़ूली निकाह हुआ जिसे जायज़ करने का अधिकार लड़की के बाप को है, क्योंकि उसे ही गैर-कफ़ू में निकाह का इख्तियार है। (त)

चूंकि इस दौरान औरत बालिग हो गई, तो वह निकाह अब खुद उसकी इजाज़त पर मौकूफ हो गया। बालिग होने के बाद उसने एक मुद्दत तक खामोशी इख्तियार की, जिसे उसकी तरफ से इजाज़त मान लिया गया। तो अब ये मामला ऐसा हुआ कि एक बालिग औरत ने अपनी मर्ज़ी से ऐसे शख्स से निकाह कर लिया जो यकीनन गैर-कफ़ू है, और बालिग औरत का अपनी मर्ज़ी से गैर-कफ़ू के साथ निकाह करना बिल्कुल बातिल (शून्य) है...

पृष्ठ 732 का 739

جلد یازدہم فتاویٰ رضویہ

یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر یہ بیانات واقعی ہیں تو وہ نکاح اصلاً نہ ہوا، لڑکی کو اختیار ہے جس اچھی جگہ چاہے اپنا نکاح کر لے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۱: از شہر بریلی محلہ براہیم پور مسئولہ محمد عرف کمال اللہ شاہ صاحب ۱۱ صفر ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس باب میں کہ زید نے اپنی زوجہ منکوحہ سے بعد دینے طلاق کے اپنی دختر نابالغہ کو طلب کیا اس نے دینے سے انکار کیا، اس وقت زید بارادہ سفر دور دراز کے مجبور ہوا اور متنبہ کردیا کہ خبردار اس کا نکاح خلاف رائے میری کے نہ ہو، چنانچہ مسماۃ مذکورہ نے عدم موجودگی زید کے اس دختر نابالغہ کا نکاح خلاف رائے زید کے کردیا، وہ شوہر دختر مثل عورت بازاری کے رقص کرنے والا ہے اور پابند صوم و صلوٰۃ نہیں شراب خور ہے، اب دختر بفضلہ تعالیٰ بالغہ ہے اس نے دفتر شکایات اس شوہر کا اپنے باپ زید سے بیان کیا کہ میرا نکاح اس شخص کے ساتھ جائز ہوا یا نا جائز؟ بینوا توجروا

الجواب: سائل نے بیان کیا کہ نکاح ہوئے تین برس ہوئے اور عورت کی عمر اس وقت گیارہ سال تھی اور نا بالغہ تھی اور مرد کی عمر پچیس سال تھی اور جبھی سے ناچنے کا پیشہ رکھتا تھا، اور اسی وجہ سے باپ نے اس کے ساتھ نکاح کرنے کو منع کردیا تھا، باپ اندور چلا گیا، اس کے پیچھے عورت نے نکاح کردیا اور باپ کو کوئی خبر نہ ہوئی، لڑکی تین مہینے سے بالغہ ہوگئی، اب کوئی ایک ہفتہ ہوا اس کا باپ اندور سے آیا تو اب لڑکی نے اس سے شکایت کی، اس سے پہلے

اس نے بھی کچھ نہ کہا، اگر صورت واقعہ یہ ہے تو نکاح مذکور باطل ہو گیا، ابتداء میں جب نکاح واقع ہوا ہے پدر پر موقوف تھا،

لانہ وان کان من غیر کفو والمزوج غیر اب وجد لکنہ عقد فضولی صدر، ولہ مجیز وھو الاب لان التزویج من غیر کفؤ۔

کیونکہ یہ نکاح غیر کفو میں ہے اور نکاح دینے والے باپ دادا کا غیر ہیں اور یہ فضولی کا نکاح ہوا جس کو جائز کرنے والا لڑکی کا باپ ہے کیونکہ اسی کو غیر کفو میں نکاح کا اختیار ہے۔ (ت)

جبکہ اس مدت میں عورت بالغہ ہوگئی تو اب وہ نکاح خود اس کی اجازت پر موقوف ہوگیا اور اس نے بعد بلوغ مدت سکوت کیا اس کی طرف سے اجازت ہوگئی، تو اب یہ ایسا ہوا کہ بالغہ نے اپنی رائے سے ایسے شخص کے ساتھ نکاح کرلیا اور ایسا شخص ضرور غیر کفو ہے اور اس کے ساتھ بالغہ کا اپنی رائے سے نکاح کرلینا باطل محض

Fatawa Razawiyya, Volume 11

It is mentioned in "Durr al-Mukhtar":

[Boxed Text: Verdict is given against the validity of marriage in the case of a non-equivalent (ghayr-kufu') due to the corruption of the times. (T)]

Therefore, this marriage has become absolutely void. And Allah Almighty knows best.

Issue 452 to 454: From Seerah, district Hoshangabad, Mahalla Manpura, submitted by Hafiz Shah Afzal Khan Sahib, 24 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding the following issues? Please honor and distinguish us with an answer along with traditional proofs: (1) There is a woman who is a descendant of the Prophet (Sayyida by lineage). A man who is not a Sayyid by lineage married her. People call him an infidel (kafir). Is the said person an infidel or not? If not, what is the command of Shariah for those who say so? (2) If an adult woman who is a Sayyida by lineage, whether she is a virgin, a widow, or a divorcee, marries someone who is not a Sayyid by lineage, will it be valid or not? (3) If a non-Sayyid man marries a Sayyida woman, and if that marriage is valid, will the children born from it be called Sayyid by lineage or not? State and be rewarded.

The Answer: (1) God forbid! What has he to do with infidelity? Those who call him an infidel should renew their Islam, as they call a Muslim an infidel without reason. The Commander of the Faithful, Maula Ali (May Allah honor his face), gave his daughter Lady Umme Kulthum, who was from the pure womb of Lady Batul Zahra (May Allah be pleased with her), in marriage to the Commander of the Faithful Umar Farooq-e-Azam (May Allah be pleased with him), and from them Hazrat Zaid bin Umar was born. And the Commander of the Faithful was not a Sayyid by lineage. (2) If a sane, adult Sayyida has a guardian (wali), and she marries within an equivalent (kufu'), it will be valid even if he is not a Sayyid, for example, a Siddiqi, Faruqi, Usmani, Alawi, or Abbasi Sheikh. And if she marries a non-equivalent (ghayr-kufu') without the explicit permission of the guardian, it will not be valid, such as with an Ansari Sheikh, or a Mughal, or a Pathan, unless he is a respected religious scholar. (3) When the father is not a Sayyid, the children cannot be Sayyids even if the mother is a Sayyid. And Allah Almighty knows best.

Issue 455: From the city, Mahalla Saudagaran, submitted by Maulvi Ehsan Ali Sahib, student of Madrasa Manzar al-Islam, 18 Safar 1339 AH. What do the scholars of

religion say in this matter that a girl has reached adulthood and currently no equivalent (kufu') is found with whom...

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[बॉक्स में पाठ: समय के भ्रष्टाचार के कारण ग़ैर-कुफ़ू (असमान) में निकाह की अमान्यता का फ़तवा दिया जाएगा। (त)]

अतः यह निकाह बिल्कुल शून्य (बातिल) हो गया। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 452 से 454: सीरा, जिला होशंगाबाद, मोहल्ला मानपुरा, मुस्तफ़ा हाफ़िज़ शाह अफ़ज़ल ख़ान साहब द्वारा प्रेषित, 24 मुहर्रम 1339 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती निम्नलिखित मसलों में क्या फ़रमाते हैं? कृपया नक़्ली (पारंपरिक) प्रमाणों के साथ उत्तर देकर अनुग्रहित करें: (1) एक महिला है जो नस्ली सय्यदा है, उससे किसी ऐसे व्यक्ति ने निकाह किया जो नस्ली सय्यद नहीं है। लोग उसे काफ़िर कहते हैं। तो क्या उक्त व्यक्ति काफ़िर हुआ या नहीं? यदि नहीं हुआ, तो ऐसा कहने वालों पर शरीयत का क्या हुक्म है? (2) बालिग़ (वयस्क) महिला जो नस्ली सय्यदा है, चाहे वह कुंवारी हो, विधवा हो या तलाक़शुदा, यदि किसी ऐसे व्यक्ति से निकाह करे जो नस्ली सय्यद नहीं है, तो क्या यह जायज़ होगा या नहीं? (3) ग़ैर-सय्यद पुरुष ने सय्यदा महिला से निकाह किया और यदि वह निकाह जायज़ हुआ तो उससे जो संतान पैदा होगी, वह नस्ली सय्यद कहलाएगी या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: (1) हाशा लिल्लाह! उसका कुफ़्र से क्या वास्ता? काफ़िर कहने वालों को अपने इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद) करना चाहिए क्योंकि वे बिना किसी कारण के एक मुसलमान को काफ़िर कहते हैं। अमीरुल मोमिनीन मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) ने अपनी साहिबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम, जो हज़रत बतुल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पवित्र गर्भ से थीं, अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के निकाह में दीं और उनसे हज़रत ज़ैद बिन उमर पैदा हुए। और अमीरुल मोमिनीन नस्ली तौर पर सादात (सय्यद) में से नहीं थे। (2) सय्यदा आक़िला बालिग़ा (समझदार वयस्क सय्यदा) यदि वली (अभिभावक) रखती है, तो वह जिस कुफ़ू (समान) से निकाह करेगी, वह हो जाएगा चाहे वह सय्यद न हो, जैसे शेख़ सिद्दीक़ी या फ़ारूक़ी या उस्मानी या अलवी या अब्बासी। और अगर वह वली की स्पष्ट अनुमति के बिना ग़ैर-कुफ़ू (असमान) से निकाह करेगी तो नहीं होगा, जैसे किसी शेख़ अंसारी या मुग़ल, पठान से, सिवाय इसके कि वह एक

सम्मानित धार्मिक विद्वान हो। (3) जब पिता सय्यद न हो तो संतान सय्यद नहीं हो सकती, भले ही माँ सय्यदानी हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 455: शहर के मोहल्ला सौदागरान से, मौलवी एहसान अली साहब, छात्र मदरसा मंज़र अल-इस्लाम द्वारा प्रेषित, 18 सफ़र 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि लड़की बालिग़ हो गई है और फिलहाल कोई कुफ़ू नहीं मिल रहा है जिससे...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मत्तबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/191.

पृष्ठ 733/739

فتاوٰی رضویہ، جلد یاز دہم

ہے، در مختار میں ہے:

[ویفتی بعدم الصحۃ فی غیر کفو لفساد الزمان۔ غیر کفو میں نکاح کے اصلا عدم جواز کا فتوی دیا جائیگا فسادِ زمان کی وجہ سے۔ (ت)]

لہذا یہ نکاح باطل محض ہو گیا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۵۲ تا ۴۵۴: از سیرہ ضلع ہو شنگ آباد محلہ مانپورہ مسئولہ حافظ شاہ افضل خاں صاحب ۲۴ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مسائل ذیل میں، براہ کرم جواب سے مع دلائل نقلی کے مشرف و ممتاز فرمائیں: (۱) ایک عورت ہے جو نسبی سیدہ ہے اس سے کسی شخص نے جو نسباً سید نہیں ہے نکاح کیا تو اس کو لوگ کافر کہتے ہیں تو کیا شخص مذکورہ کافر ہوا یا نہیں؟ اگر نہیں ہوا تو کہنے والوں پر شریعت کا کیا حکم ہے؟ (۲) عورت بالغہ جو نسباً سیدہ ہے باکرہ ہو یا ثیبہ یا مطلقہ کسی شخص سے جو نسباً سید نہیں ہے نکاح کرے تو جائز ہوگا یا نہیں؟ (۳) مرد غیر سید نے سیدہ عورت سے نکاح کیا اور اگر وہ نکاح جائز ہوا تو جو اولاد کہ اس سے پیدا ہوگی وہ نسباً سید کہلائے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) حاشا اللہ اسے کفر سے کیا علاقہ، کافر کہنے والوں کو تجدید اسلام چاہئے کہ بلا وجہ مسلمان کو کافر کہتے ہیں، امیر المومنین مولی علی کرم اللہ وجہہ الکریم نے اپنی صاحبزادی حضرت ام کلثوم کہ بطن پاک حضرت بتول زہرا رضی اللہ عنہا سے تھیں امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے نکاح میں دیں اور ان سے حضرت زید بن عمر پیدا ہوئے اور امیر المومنین نسباً سادات سے نہیں۔ (۲) سیدہ عاقلہ بالغہ اگر ولی رکھتی ہے تو جس کفو سے نکاح

کرے گی ہو جائے گا اگر چہ سید نہ ہو مثلاً شیخ صدیقی یا فاروقی یا عثمانی یا علوی یا عباسی، اور اگر غیر کفو سے بے اجازت صریحہ ولی نکاح کرے گی تو نہ ہو گا جیسے کسی شیخ انصاری یا مغل، پٹھان سے مگر جبکہ وہ معزز عالم دین ہو، (۳) جب باپ سید نہ ہو اولاد سید نہیں ہو سکتی اگر چہ ماں سیدانی ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۵۵: از شہر محلہ سوداگران مسئولہ مولوی احسان علی صاحب طالبعلم مدرسہ منظر الاسلام ۱۸ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لڑکی بالغہ ہو گئی اور فی الحال کوئی کفو نہیں ملتا کہ جس کے

---

1. در مختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱

Fatawa Razawiyya Volume 11

Question: Here marriages take place where unsuitable matches (Ghair Kufu) are found, meaning those of lower status or higher status than the girl's parents, but inherently they are not complete or good. For example, a boy's ancestors were good, but his mother was a prostitute, and this boy was born from her after marriage. In which family is it better to marry, or should one wait for a suitable match (Kufu)? Please clarify and be rewarded.

Answer: Being lower in financial status alone is not a barrier to suitability (Kafa'at). An unsuitable match (non-Kufu) is one whose marriage with that woman would cause disgrace and shame for her guardians. If the father is from a noble tribe and he married a prostitute after her repentance, then no blemish comes to the child's lineage. And Allah Almighty knows best.

Issue 456: From Jaora State, Lal Imli, asked by Mumtaz Ali Khan Sahib, Official of the Accounts Department, 2 Shawwal 1329 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hind was convinced and married to a husband named Mahmood, being told that he is noble on both sides and is your suitable match (Kufu). However, after the marriage, it was proven to Hind that the husband, Mahmood, is not a suitable match (Ghair Kufu). Now Hind and her relatives consider it a disgrace for a non-Kufu to enter their family, and Hind herself considers having such a non-Kufu as a husband a matter of family shame and disgrace. Furthermore, her biological father, Zaid, is also displeased with this non-Kufu relationship. So, in such a state, can the marriage be annulled or not? Or should the marriage be considered void altogether due to being non-Kufu? Hind is an adult (Baligha). Please clarify and be rewarded.

Answer: When Hind is an adult and the marriage occurred with a non-Kufu, and Zaid, Hind's father, did not grant permission for the marriage after knowing him to be non-Kufu before the marriage, then the marriage did not take place at all; what is the need for annulment? It is stated in Durr al-Mukhtar: "The fatwa regarding non-Kufu will be issued as its absolute invalidity without the guardian's consent after knowing him." (Summarized) A fatwa of absolute invalidity of marriage in non-Kufu will be given if the guardian has not expressed consent upon knowing the girl's non-Kufu status. But the meaning of non-Kufu according to Sharia is that someone is so low in religion, lineage, profession, or conduct that marriage with them is truly a cause of shame and disgrace for their guardians, and not based on some ignorant views. It is

a custom among some commoners that they consider only their own specific community as their Kufu. They call someone from another community non-Kufu even if they are not inferior to them in any way; this is not considered in Sharia. For example, a Siddiqui Sheikh might not consider a Farooqi Sheikh as his Kufu, or a Sayyid might not consider a Siddiqui, Farooqi, or Quraishi Sheikh as his Kufu, even though it is in the Hadith...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/191.

फ़तावा रज़विया खंड 11

प्रश्न: यहाँ निकाह के लिए गैर-कुफ़ू (अनुपयुक्त) मिलते हैं, यानी कम हैसियत वाले या लड़की के माता-पिता से अधिक हैसियत वाले मिलते हैं, लेकिन वे स्वभावतः पूर्ण रूप से अच्छे नहीं होते। उदाहरण के लिए, एक लड़के के पूर्वज अच्छे थे, लेकिन उसकी माँ एक वेश्या थी और निकाह के बाद वह लड़का उससे पैदा हुआ। ऐसी स्थिति में किसके यहाँ निकाह करना बेहतर है, या उपयुक्त मिलान (कुफ़ू) का इंतज़ार किया जाए? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: केवल आर्थिक स्थिति में कम होना उपयुक्तता (कफ़ात) में बाधक नहीं है। अनुपयुक्त (गैर-कुफ़ू) वह है जिसके साथ उस महिला का निकाह उसके अभिभावकों (औलिया) के लिए अपमान और शर्म का कारण बने। यदि पिता कुलीन वंश का है और उसने पश्चाताप के बाद वेश्या से विवाह किया, तो बच्चे के वंश पर कोई आँच नहीं आती। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 456: रियासत जावरा, लाल इमली से, मुमताज़ अली ख़ान साहब, लेखा विभाग के कर्मचारी द्वारा पूछा गया, 2 शव्वाल 1329 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: हिंदा को यह विश्वास दिलाकर निकाह कराया गया कि तुम्हारा पति महमूद दोनों तरफ से कुलीन (नजीब-उल-तरफ़ैन) है और तुम्हारा उपयुक्त मिलान (कुफ़ू) है। लेकिन निकाह के बाद हिंदा को यह साबित हुआ कि पति, यानी महमूद, अनुपयुक्त (गैर-कुफ़ू) है। अब हिंदा और उसके नाते-रिश्तेदार अपने खानदान में गैर-कुफ़ू के प्रवेश को अपमानजनक समझते हैं और हिंदा स्वयं ऐसे गैर-कुफ़ू को पति बनाना खानदान के लिए शर्म और कलंक मानती है। इसके अलावा, उसका असली पिता ज़ैद भी इस गैर-कुफ़ू संबंध से नाराज़ है। तो ऐसी स्थिति में क्या निकाह रद्द (फ़स्ख़) हो सकता है या नहीं? या अनुपयुक्त होने की स्थिति में निकाह को शुरू से ही अमान्य माना जाए? हिंदा वयस्क (बालिग़ा) है। स्पष्ट करें और पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर: चूँकि हिंदा वयस्क है और निकाह गैर-कुफ़ू से हुआ, और हिंदा के पिता ज़ैद ने निकाह से पहले उसे गैर-कुफ़ू जानकर निकाह की अनुमति नहीं दी थी, तो निकाह सिरे से हुआ ही नहीं; रद्द करने की क्या आवश्यकता है? 'दुर्रे मुख्तार' में है: "गैर-कुफ़ू में निकाह के पूर्णतः अमान्य होने का फ़तवा दिया जाएगा, यदि अभिभावक ने लड़की के गैर-कुफ़ू होने का पता चलने पर अपनी सहमति व्यक्त न की हो।" (संक्षिप्त) गैर-कुफ़ू में निकाह के पूर्णतः अमान्य होने का फ़तवा तब दिया जाएगा जब

अभिभावक ने लड़की के गैर-कुफ़ू स्थिति की जानकारी होने पर भी अपनी सहमति न दी हो। लेकिन शरीयत के अनुसार गैर-कुफ़ू का अर्थ यह है कि धर्म, वंश, पेशे या आचरण में कोई इतना निम्न हो कि उसके साथ निकाह वास्तव में उसके अभिभावकों के लिए अपमान और शर्म का कारण हो, न कि कुछ अज्ञानतापूर्ण विचारों पर आधारित हो। कुछ सामान्य लोगों में यह प्रथा है कि वे केवल अपने ही समुदाय के व्यक्ति को अपना कुफ़ू समझते हैं। वे दूसरे समुदाय के व्यक्ति को, भले ही वह उनसे किसी भी बात में कम न हो, गैर-कुफ़ू कहते हैं। शरीयत में इसका कोई महत्व नहीं है। उदाहरण के लिए, एक सिद्दीकी शेख, फारूकी शेख को अपना कुफ़ू न समझे, या एक सैयद किसी सिद्दीकी, फारूकी या कुरैशी शेख को अपना कुफ़ू न समझे, जबकि हदीस में है...

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-वली, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/191.

فتاویٰ رضویہ جلد یاز دہم

یہاں نکاح ہو غیر کفو ملتے ہیں یعنی کم حیثیت والے یا لڑکی کے والدین سے زائد حیثیت کے ملتے ہیں مگر ذاتا کامل اچھے نہیں، مثلاً لڑکے کے آباواجداد اچھے تھے لیکن ان کی جور و طوائف تھی بعد نکاح اس سے یہ لڑکا ہوا تو دونوں میں کس کے یہاں کرنا بہتر ہے یا کفو کا انتظار کرے؟ بینواتوجروا

الجواب: فقط مالی حیثیت میں کم ہونا مانع کفاءت نہیں کفو وہ نہیں ہے جس کے ساتھ اس عورت کا نکاح اس کے اولیاء کے لئے باعث ننگ وعار ہو، باپ اگر شریف القوم ہے اور طوائف سے بعد توبہ اس نے نکاح کیا تو اس سے بچہ کی نسب پر حرف نہیں آتا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۵۶: از ریاست جاورہ لال املی مسئولہ ممتاز علی خاں صاحب اہلکار محکمہ حساب ۲ شوال ۱۳۲۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کو یہ یقین دلا کر تمہارا نکاح شوہر محمود جو نجیب الطرفین اور تمہارا کفو ہے کرایا گیا لیکن ہندہ کو بعد نکاح ثابت ہوا کہ شوہر یعنی محمود غیر کفو ہے اب ہندہ اور اس کے عزیز واقارب اپنے کفو کا داخل ہونا عار سمجھتے ہیں اور ہندہ ایسے غیر کفو کو خود بھی شوہر بنانا عار و ننگ خاندان سمجھتی ہے نیز اس کا اصل باپ یعنی زید بھی اس تعلق غیر کفو سے ناراض ہے پس ایسی حالت میں نکاح فسخ ہو سکتا ہے یا نہیں؟ یا غیر کفو ہونے کی حالت میں نکاح فسخ ہی مانا جائے ہندہ بالغہ ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: جبکہ ہندہ بالغہ ہے اور نکاح غیر کفو سے ہوا اور زید پدرِ ہندہ نے قبل نکاح اسے غیر کفو جان کر اس سے نکاح کی اجازت نہ دی تو نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں فسخ کی کیا حاجت،

درمختار میں ہے: ویفتی فی غیر الکفو بعدم جوازہ اصلا بلارضی ولی بعد معرفتہ ایاہ (ملخصاً) غیر کفو میں نکاح کے اصلاً عدم جواز کا فتویٰ دیا جائے گا جبکہ ولی نے لڑکی کے غیر کفو معلوم ہو جانے پر رضا مندی ظاہر نہ کی ہو۔ مگر غیر کفو کے معنیٰ شرعاً یہ ہیں کہ مذہب یا نسب یا پیشہ یا چال چلن میں ایسا کم ہو کہ اسکے ساتھ اس کا نکاح اسکے اولیاء کیلئے واقعی باعث ننگ و عار ہو نہ کہ بعض جاہلانہ خیالات پر، بعض عوام میں دستور ہے کہ خاص اپنے ہم قوم کو اپنا کفو سمجھتے ہیں، دوسری قوم والے کو اگرچہ ان سے کسی بات میں کم نہ ہو غیر کفو کہتے ہیں اس کا شرعاً لحاظ نہیں جیسے شیخ صدیقی ہو شیخ فاروقی کو اپنا کفو نہ جانے یا سید ہو اور وہ شیخ صدیقی یا فاروقی یا قریشی کو اپنا کفو نہ سمجھے حالانکہ حدیث میں ہے۔

[1] درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱

Fatawa Razawiya, Volume 11

“Some Quraysh are matches (kufu) for others (1).” In Radd al-Muhtar, it is stated: If a Hashimi girl marries a non-Hashimi Qurayshi, her marriage contract shall not be rejected (2).

Issue 475: From Lucknow, Subzi Mandi, Gun-and-Button House, behind the house of late Ibrahim Sahib Eyeglass-maker, sent by Abdul Majeed Sahib, 28 Rajab 1335 AH.

Question: What do the learned scholars (may Allah have mercy on them) say about this matter: if the mother of a minor girl marries her off without the command or permission of her father to a person who is not an equal match (non-kufu), is it valid? Especially when the mother was also deceived, i.e., the person marrying the girl swore he was a very noble person, but upon inquiry, it was found he belongs to a very low caste. In such a situation, can the girl's mother, being angry, and the father also being angry, have this marriage annulled? Do both, i.e., the girl's parents, have the Sharia right to marry their girl to another person of noble lineage without getting a divorce, or will a divorce be necessary? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If the situation is as described, that the minor girl was married by her mother to such a person, whether intentionally or through deception, without the father's order or permission, then in this case, the marriage is even more so fundamentally invalid. Even if the marriage had been with an equal match (kufu), the father wouldn't have needed to have it annulled; simply rejecting it would have been enough. Here, it is even more so sufficient for him to just say, "I am not pleased with this," and the marriage will be void. The father will have the right to marry her elsewhere without a divorce.

Because it is a contract by an unauthorized person (fudhuli) which was issued while someone who could authorize it was present, therefore it depends on his permission, so it is rejected (fayurad).

1. Fath al-Qadir, citing Hakim, Section on Al-Kafa'ah, Maktaba Nooria Razaviya, Sukkur, 3/188; Radd al-Muhtar, citing Kafi by Hakim, Chapter on Al-Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/319.
2. Radd al-Muhtar, citing Kafi by Hakim, Chapter on Al-Kafa'ah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/318.

फतावा रज़विया, जिल्द 11

“कुछ क़ुरैश एक-दूसरे के लिए कुफ़ू (बराबर का मेल) हैं (1)।” रद्द-अल-मुह्तार में है: अगर एक हाशमी लड़की किसी गैर-हाशमी क़ुरैशी से निकाह कर लेती है, तो उस निकाह को रद्द नहीं किया जाएगा (2)।

मसला 475: लखनऊ से, सब्ज़ी मंडी, गन-व-बटन मकान, मरहूम इब्राहिम साहब ऐनक-साज़ के घर के पीछे से, अब्दुल मजीद साहब द्वारा भेजा गया, 28 रजब 1335 हिजरी।

प्रश्न: उलेमा-ए-किराम (रहमतुल्लाह अलैहिम) इस मसले में क्या फरमाते हैं कि यदि एक नाबालिग लड़की की माँ ने उसके पिता की आज्ञा या अनुमति के बिना किसी ऐसे व्यक्ति से उसका निकाह कर दिया जो उसका कुफ़ू (बराबर का मेल) नहीं है, तो क्या यह निकाह जायज़ है? विशेष रूप से जब माँ को भी धोखा दिया गया हो, यानी जो व्यक्ति लड़की से शादी कर रहा है उसने कसम खाकर खुद को बहुत शरीफ बताया था, लेकिन जांच के बाद पता चला कि वह व्यक्ति बहुत ही नीची जाति का है। ऐसी स्थिति में, क्या लड़की की माँ और पिता, दोनों के नाराज़ होने पर, इस निकाह को रद्द करा सकते हैं? क्या उन दोनों, यानी लड़की के माता-पिता को शरीयत के अनुसार यह अधिकार है कि वे अपनी लड़की का निकाह तलाक दिलाए बिना किसी दूसरे कुलीन व्यक्ति से कर दें, या तलाक दिलाने की आवश्यकता होगी? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: अगर स्थिति वैसी ही है जैसा कि बयान किया गया है कि नाबालिग लड़की का निकाह उसकी माँ ने विशेष रूप से ऐसे व्यक्ति से कर दिया, चाहे जानबूझकर या धोखे से, और पिता की अनुमति या आज्ञा नहीं थी, तो इस स्थिति में यह निकाह बुनियादी तौर पर पूरी तरह से अस्थिर है। यहाँ तक कि अगर निकाह कुफ़ू (बराबर के मेल) में हुआ होता, तब भी पिता को निकाह रद्द कराने की आवश्यकता नहीं थी, उसका केवल अस्वीकार कर देना ही पर्याप्त होता। तो यहाँ तो और भी अधिक पर्याप्त है कि वह केवल इतना कह दे कि "मैं इस पर राज़ी नहीं हूँ," और वह निकाह रद्द हो जाएगा, और पिता को यह अधिकार होगा कि वह तलाक के बिना दूसरी जगह निकाह कर दे।

क्योंकि यह एक अनधिकृत व्यक्ति (फुज़ूली) द्वारा किया गया अनुबंध है जो उस समय हुआ जब इसे अधिकृत करने वाला व्यक्ति मौजूद था, इसलिए यह उसकी अनुमति पर निर्भर करता है, अतः इसे रद्द कर दिया जाएगा।

1. फ़तह अल-क़दीर, हाकिम के हवाले से, अल-कफ़ाअह का अध्याय, मकतबा नूरया रज़विया, सुक्कुर, 3/188; रद्द अल-मुह्तार, हाकिम की काफ़ी के हवाले से, बाब अल-कफ़ाअत, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/319।
2. रद्द अल-मुह्तार, हाकिम की काफ़ी के हवाले से, बाब अल-कफ़ाअत, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/318।

पृष्ठ 739 का 735

فتاوٰی رضویہ، جلد یازدہم

قریش بعضھم اکفاء بعض (1) (بعض قریش بعض کے لئے کفو ہیں۔ ت) ردالمحتار میں ہے: فلو تزوجت ھاشمیۃ قرشیا غیر ھاشمی لم یرد عقدھا (2) اگر ہاشمی لڑکی نے غیر ہاشمی قریشی سے نکاح کرلیا تو اسے رد نہیں کیا جائے گا۔ (ت)

مسئلہ ۴۷۵: از لکھنئو محلہ سبزی منڈی مکان گن وبٹن عقب مکان ابراہیم صاحب عینک ساز مرحوم مرسلہ عبدالمجید صاحب ۲۸ رجب ۱۳۳۵ھ

کیا فرماتے ہیں حضرات علمائے کرام رحمہم اللہ علیہم اس مسئلہ میں کہ لڑکی نابالغہ کی شادی بغیر حکم یا بے اجازت اس کے والد کے کسی غیر کفو شخص کے ہمراہ اس لڑکی کی ماں کردے تو جائز ہے اور جبکہ اس کی ماں کو بھی دھوکا دیا گیا ہو یعنی جو شخص اس لڑکی کے ساتھ شادی کر رہا ہے وہ ایسے آپ کو حلفاً نہایت شریف شخص بتا رہا ہے لیکن دریافت کے بعد معلوم ہوا کہ یہ شخص نہایت نیچ ذات کا شخص ہے تو ایسی حالت میں اس لڑکی کی ماں ناراض ہو کر اور باپ بھی ناراض ہو کر اس لڑکی کا نکاح فسخ کراسکتا ہے یا نہیں؟ آیا ان دونوں یعنی لڑکے کے والدین کو شرعاً یہ حق حاصل ہے کہ اپنی لڑکی کو بغیر طلاق دلوائے ہوئے دوسرے شریف النسب شخص سے نکاح کراسکتے ہیں یا طلاق دلوانے کی ضرورت ہوگی؟ فقط، بینوا توجروا۔

الجواب: اگر صورتِ واقعہ یہ ہے کہ نابالغہ کی شادی اس کی ماں نے خصوصاً ایسے شخص سے کردی خواہ دانستہ یا دھوکے سے، اور والد کا اذن نہ اجازت، تو اس صورت میں بدرجہ اولٰی یہ نکاح سرے سے بے ثبات محض ہوا، باپ کو نکاح فسخ کرانے کی اس حالت میں بھی حاجت نہ تھی کہ نکاح کفو سے ہوا ہوتا، اس کا رد کردینا ہی کافی ہوتا، تو یہاں بدرجہ اولٰی اس کا صرف اتنا

کہہ دینا بس ہے کہ "میں اس پر راضی نہیں" وہ نکاح رد ہو جائے گا، اور والد کو اختیار ہوگا کہ بغیر طلاق دوسری جگہ نکاح کردے۔

لان عقد فضولی صدر ولہ مجیز فتوقف علی اجازتہ کیونکہ یہ فضولی کا عقد ہے جو اس حال میں صادر ہوا کہ اس وقت اس کو جائز کرنے والا موجود تھا تو فیرد (رد کیا جائے گا)

1. فتح القدیر بحوالہ حاکم فصل فی الکفاء مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۸۸/۳، ردالمحتار بحوالہ کافی للحاکم باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۹/۲
2. ردالمحتار بحوالہ کافی للحاکم باب الکفاءۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱۸/۲

Volume Eleven, Fatawa Rizvia

...will be cancelled. If it was dependent on his permission, it will be rejected upon his rejection. (T)

And if the father has already married off one of his daughters to someone not belonging to an equal status (non-kufu), then it cannot be valid even with his permission now; the marriage did not take place at all.

Because it is an unauthorized contract (aqd fuduli) issued while there was no one to authorize it at that time, as the father was known for poor choice (su-ul-ikhtiyar), hence it is void from the start as mentioned in Al-Durr and others. And Allah Almighty knows best. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 458: From Bareilly city, Mohalla Zakhira, sent by Mr. Abdul Halim, 30 Shawwal 1335 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: Zaid represented himself as a Pathan by caste and said to Bakr, "Marry your daughter to me." Bakr married his daughter to Zaid. After the marriage, Bakr found out that Zaid is not a Pathan by caste, but has cheated. He is actually from the 'Faqir Takiyadar' (graveyard caretaker) community, which would bring disgrace and infamy to my family. Bakr refused to send his daughter (rukhsati) and has not sent her after the marriage. Bakr belongs to the Sayyid community.

Answer: Was the daughter an adult (baligha) or a minor (na-baligha)? What was her age? Had her menstruation started or not? Was permission taken from the daughter at the time of marriage? Everything should be written in detail so that the question is worthy of an answer. Only.

Noble sir! At the time of marriage, the daughter's age was 13 years and 2 months. Her menstruation had started. Permission was sought from the girl, but she replied, "I don't know anything." At this, her aunt forcibly gave permission. The permission was from the girl's father; in fact, only the girl's father and brother were both witnesses to the marriage. Only.

Answer: In the queried situation, it is clear that Zaid cannot be an equal match (kufu) for Sayyids, let alone Mughals or Pathans. The girl was an adult, and upon being asked for permission, she said, "I don't know anything." It is clear that this is not explicit permission, but rather it indicates not interfering in the matter according to the literal meaning. Sometimes, depending on the context, it also means leaving it to

others' discretion, i.e., "I have no argument, do as you see fit." Based on the second interpretation, this marriage is established by the daughter's permission...

जिल्द ग्यारहवीं, फतावा रज़विया

...रद्द हो जाएगा। यदि यह उसकी अनुमति पर निर्भर था, तो उसके अस्वीकार करने पर इसे अस्वीकार कर दिया जाएगा। (त)

और यदि पिता पहले ही अपनी किसी बेटी का विवाह किसी ऐसे व्यक्ति से कर चुका हो जो समान स्तर (गैर-कुफ़्फ़ा) का न हो, तो अब उसकी अनुमति से भी यह वैध नहीं हो सकता; विवाह शुरू से हुआ ही नहीं।

क्योंकि यह एक अनाधिकृत अनुबंध (अक़्द फ़ुज़ूली) है जो उस समय जारी किया गया था जब उसे वैध करने वाला कोई नहीं था, क्योंकि पिता अपने गलत चुनाव (सू-ए-इख़्तियार) के लिए जाना जाता था, इसलिए यह शुरू से ही शून्य है जैसा कि अल-दुर्र आदि में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ४५८: बरेली शहर, मोहल्ला ज़ख़ीरा से, अब्दुल हलीम साहब द्वारा प्रेषित, ३० शव्वाल १३३५ हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने खुद को एक खानदानी पठान बताया और बक्र से कहा कि अपनी बेटी का निकाह मेरे साथ कर दो। बक्र ने अपनी बेटी का निकाह ज़ैद से कर दिया। निकाह के बाद बक्र को पता चला कि ज़ैद पठान नहीं है, उसने धोखा देकर निकाह किया है। वह वास्तव में 'फ़क़ीर तकियादार' (क़ब्रिस्तान की देखभाल करने वाला) समुदाय से है, जिससे मेरे परिवार का अपमान होगा और बदनामी होगी। बक्र ने अपनी बेटी को विदा (रुख़सती) करने से मना कर दिया और निकाह के बाद भी उसे नहीं भेजा। बक्र सय्यद समुदाय से है।

उत्तर: क्या बेटी बालिग़ (वयस्क) थी या नाबालिग़? उसकी उम्र क्या थी? क्या उसका मासिक धर्म शुरू हो गया था या नहीं? क्या निकाह के समय बेटी से अनुमति ली गई थी? सब कुछ विस्तार से लिखा जाए ताकि प्रश्न उत्तर के योग्य हो। फ़क़त।

आली जाह! निकाह के समय बेटी की उम्र १३ साल २ महीने थी। उसका मासिक धर्म आता था। लड़की से अनुमति मांगी गई थी लेकिन उसने जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं जानती।" इस पर उसकी चाची ने मजबूरी में अनुमति दे दी। अनुमति लड़की के पिता की थी, बल्कि लड़की का पिता और भाई दोनों ही निकाह के गवाह थे। फ़क़त।

उत्तर: प्रश्नाधीन स्थिति में, यह स्पष्ट है कि ज़ैद किसी भी तरह से सादात (सय्यदों) के लिए, यहाँ तक कि मुग़ल या पठान के लिए भी समान स्तर (कुफ़ू) नहीं हो सकता। लड़की बालिग़ थी और अनुमति मांगे जाने पर उसने कहा, "मैं कुछ नहीं जानती।" यह स्पष्ट है कि यह साफ़ तौर पर अनुमति नहीं है, बल्कि इससे शाब्दिक रूप से मामले में हस्तक्षेप न करना सिद्ध होता है। कभी-कभी संदर्भ के अनुसार इसका अर्थ दूसरों के विवेक पर छोड़ देना भी होता है, यानी "मुझे कोई बहस नहीं है, जैसा तुम चाहो करो।" दूसरी व्याख्या के आधार पर, यह निकाह बेटी की अनुमति से माना जाएगा...

पृष्ठ ७३६ का ७३९

بردد۔ اسی کی اجازت پر موقوف ہوا تو اس کے رد کرنے پر رد ہو جائے گا ۔(ت)

اور اگر والد اس سے پہلے اپنی کسی دختر کا نکاح غیر کفو سے کر چکا ہو تو اب اس کی اجازت سے بھی جائز نہیں ہو سکتا نکاح سرے سے ہوا ہی نہیں ۔

لانہ عقد فضولی صدر ولا مجیز لہ لکون الاب عرف بسوء الاختیار فبطل رأسا کما فی الدر وغیرہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ کیونکہ یہ ایسا نکاح فضولی صادر ہوا ہے کہ اس وقت اس کو جائز کرنے والا کوئی نہیں تھا کیونکہ باپ سوء اختیار سے معروف تھا لہذا یہ باطل ہوگا جیسا کہ دروغیرہ میں ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۵۸: از شہر بریلی محلہ ذخیرہ مرسلہ عبد الحلیم صاحب ۳۰ شوال ۱۳۳۵ھ صاحبان علمائے دین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں : زید نے اپنے آپ کو قوم کا پٹھان خاندانی ظاہر کیا اور بکر سے کہا کہ تم اپنی دختر کا نکاح میرے ساتھ کر دو، بکر نے اپنی دختر کا نکاح زید کے ساتھ کر دیا ، بعد نکاح ہو جانے کے بکر کو معلوم ہوا کہ زید قوم کا پٹھان نہیں ہے دھوکا دے کر نکاح کیا ، اور وہ قوم کا فقیر تکیہ دار قبرستان ہے کہ جس سے میرے خاندان میں حقارت ہو گی اور سبب بدنامی ہو گی ، بکر نے اپنی دختر کو رخصت کرنے سے انکار کیا اور بعد نکاح کے رخصت نہیں کی اور بکر قوم کا سید ہے۔

الجواب : دختر بالغہ تھی یا نابالغہ ؟ کیا عمر تھی ، عارضہ ماہواری آتا تھا یا نہیں ؟ وقت نکاح دختر سے اذن لیا تھا یا نہیں ؟ سب مفصل لکھا جائے کہ سوال لائق جواب ہو فقط

عالی جاہ ! وقت نکاح دختر کی عمر ۱۳ سال ۲ ماہ کی تھی ، عارضہ ماہواری آتا تھا ، اذن لڑکی سے لیا گیا تھا لیکن اس نے جواب دیا کہ میں کچھ نہیں جانتی ، اس پر مجبوراً اس کی چچی نے اجازت دی ، اجازت لڑکی کے باپ کی تھی بلکہ صرف لڑکی کا باپ اور بھائی بھی دونوں گواہ نکاح تھے فقط ۔

الجواب : صورت مستفسرہ میں ظاہر ہے کہ زید کسی طرح سادات تو سادات کسی مغل، پٹھان کا بھی کفو نہیں ہو سکتا، اور لڑکی بالغہ تھی اور اس نے اذن لینے پر لفظ یہ کہے کہ "میں کچھ نہیں جانتی" ظاہر ہے کہ یہ صاف اذن نہیں بلکہ اس سے معاملہ میں اپنا دخل نہ دینا بحسب منطوق مستفاد ہوتا ہے اور کبھی بحسب قرینہ دوسروں کے اختیار پر چھوڑنا بھی مفہوم ہوتا ہے یعنی مجھے بحث نہیں تم جیسا جانو کرو۔ بر تقدیر دوم یہ نکاح دختر کی اجازت سے قرار

Fatawa Razawiyya Volume 11

...will find, and an adult girl who has a guardian (Wali), if she marries someone who is not a 'Kufu' (equal in status/suitability) and the guardian, knowing beforehand that the person is not a Kufu, did not explicitly grant permission for the marriage, that marriage is absolutely void. As stated in 'Al-Bahr' and 'Ad-Durr', and clarified in 'Radd al-Muhtar' (T). Based on this, the marriage never occurred at all. According to the first scenario, it was a 'Fuzuli' marriage (contracted by an unauthorized person). It is certain that the daughter received news of the marriage as per custom. Now, two situations are possible: either she accepted this Fuzuli marriage upon hearing the news, even if just by smiling or remaining silent, or she did not accept it and expressed her displeasure. In the second scenario, it is clear that the marriage, which was contingent upon the daughter's permission, became rejected and void upon her expression of displeasure. In the first scenario, the marriage is considered to have been with the daughter's permission.

Because subsequent permission is like prior authorization. | لان الاجازة اللاحقۃ کالوکالۃ السابقۃ This has been explicitly stated in 'Al-Khayriyya' regarding such a specific case. (T) | وقد صرح به فی الخیریۃ فی مثل الجزئیۃ

And an adult girl who has a guardian, who marries someone who is not a Kufu without the explicit permission of the guardian after knowledge of the lack of 'Kafa'at' (suitability), it is void. Thus, it becomes void in this manner. In short, from whatever perspective the mentioned situation is viewed, this marriage is absolutely void. And Allah knows best.

Issue 459: Qasba Kust, post office Bindhyachal, District Mirzapur, sent by Muhammad Zakaria Sahib, 28 Dhu al-Qi'dah 1335 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding this issue: Maulvi Muhammad Yahya passed away leaving behind Shah Abdul Karim (father), his mother, his real brother Hafiz Muhammad Zakaria, his sister, his wife Musammat Ahmadi Bibi, and daughters Musammat Mahmuda Bibi (from first wife) and daughter Musammat Razia Bibi (from second wife, with Ahmadi Bibi). Shah Abdul Karim, acting as guardian, married off Musammat Mahmuda Bibi to the son of a maternal relative of the late Maulvi Muhammad Yahya. Before his death, the late Shah Abdul Karim called Musammat Ahmadi Bibi (wife of late Maulvi Muhammad Yahya) and Hafiz Muhammad Zakaria (his son) and made a will that he is authorizing the marriage of Musammat Razia Bibi, who was approximately one and a half years

old at the time, to his son Abdus Salam as a valid guardian. He warned that if they went against this, they would be held accountable in the hereafter. Now, this girl Musammat Razia Bibi, who is approximately thirteen or fourteen years old, is being married off by Musammat Ahmadi Bibi and her maternal grandfather Shah Abdul Aziz to a person who is a sub-inspector, neglects his prayers (Tarik al-Salah), shaves his beard, and takes bribes. Neither his family nor the families of late Maulvi Muhammad Yahya or Musammat Ahmadi Bibi have ever had any relationship or kinship, nor do they want any connection. Hafiz Muhammad Zakaria is an adult...

1. Fatawa al-Khayriyya, Book of Guardians and Equals, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 25/1.

...पाएगा और बालिग़ लड़की जिसका वली (संरक्षक) है, अगर वह अपना निकाह ग़ैर-कुफ़ू (असमान दर्जे वाले) से करे, जिसे निकाह से पहले ग़ैर-कुफ़ू जानकर वली ने स्पष्ट रूप से अनुमति न दी हो, तो वह निकाह पूरी तरह से बातिल (अमान्य) है। जैसा कि 'अल-बहर' और 'अद-दुर' में है, और 'रद्द अल-मुह्तार' में इसकी व्याख्या की गई है। (त) इस आधार पर, यह निकाह बिल्कुल हुआ ही नहीं। और पहली संभावना के अनुसार, यह एक 'फ़ुज़ूली' निकाह (बिना अधिकार के किया गया) था। यह निश्चित है कि बेटी को निकाह की सूचना प्रथा के अनुसार पहुँची होगी। अब दो स्थितियाँ हो सकती हैं: या तो उसने खबर सुनकर इस फ़ुज़ूली निकाह को स्वीकार कर लिया, चाहे वह मुस्कुराकर हो या चुप रहकर, या उसने इसे स्वीकार नहीं किया बल्कि अपनी नाराजगी जाहिर की। दूसरी स्थिति में, यह स्पष्ट है कि वह निकाह जो बेटी की अनुमति पर निर्भर था, उसकी नाराजगी जाहिर करने से रद्द और बातिल हो गया। पहली स्थिति में, यह निकाह बेटी की अनुमति से माना जाएगा।

क्योंकि बाद की अनुमति पहले के अधिकार पत्र के समान है। | لان الاجازۃ اللاحقۃ کالوکالۃ السابقۃ। 'अल-खैरिया' में इसी तरह के मामले में स्पष्ट रूप से ऐसा कहा गया है। (त) | وقد صرح بہ فی الخیریۃ فی مثل الجزئیۃ

और बालिग़ लड़की जिसका वली है, वली की स्पष्ट अनुमति के बिना, कफ़ाअत (योग्यता) की कमी का पता चलने के बाद जो निकाह ग़ैर-कुफ़ू से करे, वह बातिल है। तो इस तरह यह बातिल हो गया। संक्षेप में, उल्लेखित स्थिति को जिस भी नज़रिए से देखा जाए, यह निकाह पूरी तरह बातिल है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला ४५९: कस्बा कुस्त, डाकखाना विंध्याचल, जिला मिर्जापुर, प्रेषक मुहम्मद ज़करिया साहिब, २८ ज़िल-क़ादा १३३५ हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं: मौलवी मुहम्मद याह्या का देहांत हो गया, उनके पीछे शाह अब्दुल करीम (पिता), उनकी माता, उनके सगे भाई हाफ़िज़ मुहम्मद ज़करिया, उनकी बहन, उनकी पत्नी मुसम्मात अहमदी बीबी और बेटियाँ मुसम्मात महमूदा बीबी (पहली पत्नी से) और बेटी मुसम्मात रज़िया बीबी (दूसरी पत्नी से, अहमदी बीबी के पास) रह गए। शाह अब्दुल करीम ने अपने संरक्षण में मुसम्मात महमूदा बीबी का निकाह मरहूम मौलवी मुहम्मद याह्या के ननिहाल के एक रिश्तेदार के बेटे से कर दिया। मरने से पहले, मरहूम शाह अब्दुल करीम ने

मुसम्मात अहमदी बीबी (मरहूम मौलवी मुहम्मद याह्या की पत्नी) और अपने बेटे हाफ़िज़ मुहम्मद ज़करिया को बुलाकर वसीयत की कि मुसम्मात रज़िया बीबी, जिसकी उम्र उस समय लगभग डेढ़ साल थी, उसका निकाह तुम्हारे बेटे अब्दुस सलाम के साथ एक जायज़ वली के रूप में तय करता हूँ। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि तुम इसके विरुद्ध करोगे तो परलोक (आख़िरत) में जवाबदेही तुम्हारी होगी। अब यह लड़की मुसम्मात रज़िया बीबी, जिसकी उम्र लगभग तेरह-चौदह साल है, उसका निकाह मुसम्मात अहमदी बीबी और उसके नाना शाह अब्दुल अज़ीज़ एक ऐसे व्यक्ति के साथ कर रहे हैं जो सब-इंस्पेक्टर है, नमाज़ छोड़ता है, दाढ़ी मुंडवाता है और रिश्वत लेता है। न तो उसके परिवार का और न ही मरहूम मौलवी मुहम्मद याह्या या मुसम्मात अहमदी बीबी के परिवारों का कभी कोई रिश्ता या नाता रहा है, और न ही वे कोई संबंध रखना चाहते हैं। हाफ़िज़ मुहम्मद ज़करिया बालिग़ है...

पेज ७३७ का ७३९

1. फ़तावा अल-खैरिया, बाब अल-औलिया वल-अकफ़ा, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, २५/१।

پائے گا اور بالغہ کہ ولی رکھتی ہے اپنا جو نکاح غیر کفو سے کرے جسے پیش از نکاح غیر کفو جان کر ولی نے صراحۃً اجازتِ نکاح نہ دی ہو وہ نکاح باطل محض ہوتا ہے کما فی البحر والدر واوضحہ فی ردالمحتار (جیسا کہ بحر اور در میں ہے اور ردالمحتار میں اس کی توضیح کی گئی ہے۔ ت) اس تقدیر پر تو یہ نکاح اصلا ہوا ہی نہیں اور بر تقدیرِ اول نکاح فضولی تھا اور ضرور ہے کہ بعد نکاح دختر کو نکاح ہو جانے کی خبر عادۃً پہنچی اب دو حال سے خالی نہیں۔ یا تو اس نے خبر سن کر اس نکاح فضولی کو جائز کیا اگر چہ یو نہی کہ خبر سن کر مسکرائی یا خاموش رہی ، یا جائز نہ کیا بلکہ اپنی ناراضی کا اظہار کیا۔ بر تقدیر دوم ظاہر ہے کہ وہ نکاح کہ اجازتِ دختر پر موقوف تھا اس کے اظہار ناراضی سے مردود و باطل ہوگیا، بر تقدیر اول پھر یہ نکاح با اجازت دختر ٹھہرا۔

لان الاجازۃ اللاحقۃ کالوکالۃ السابقۃ | کیونکہ بعد کی اجازت ایسی ہے جیسے سابقہ وکالت ہو ، اس کی وقد صرح بہ فی الخیریۃ فی مثل الجزئیۃ | تصریح خیریہ میں اسی طرح کے جزئیہ میں کی ہے۔ (ت)

اور بالغہ ولی رکھتی ہے بے اجازت صریحہ ولی بعد علم بعدم کفاءت جو نکاح غیر کفو سے کرے باطل ہے تو اس طرح باطل ہو گیا، غرض صورتِ مذکورہ میں جس پہلو پر دیکھا جائے یہ نکاح باطل محض ہے۔ واللہ اعلم۔

مسئلہ ۴۵۹: قصبہ کسٹ ڈاکخانہ بندھیاچل ضلع مرزا پور مرسلہ محمد زکریا صاحب ۲۸ ذی القعدہ ۱۳۳۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اور مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ مولوی محمد یحییٰ نے انتقال کیا اور شاہ عبدالکریم والد اور اپنی والدہ اور برادر حقیقی حافظ محمد زکریا اور ہمشیرہ اور زوجہ مسماۃ احمدی بی بی اور دختر مسماۃ محمودہ بی بی زوجہ اولیٰ اور دختر مسماۃ راضیہ بی بی زوجہ ثانیہ با احمدی بی بی کو چھوڑا، شاہ عبدالکریم نے بولایت خود مسماۃ محمودہ بی بی کا عقد مولوی محمد یحییٰ مرحوم کے نانہالی رشتہ دار کے فرزند سے کردیا اور شاہ عبدالکریم کا انتقال ہو گیا قبل انتقال ہونے کے شاہ عبدالکریم مرحوم مسماۃ احمدی بی بی زوجہ مولوی محمد یحییٰ مرحوم و حافظ محمد زکریا اپنے فرزند کو بلا کر وصیت کیا کہ مسماۃ راضیہ بی بی جس کی عمر تخمیناً ڈیڑھ سال کی ہے اس کا عقد تمہارے بیٹے عبدالسلام کے ساتھ بولایت جائز اپنے کئے دیتا ہوں اگر تم اس کے خلاف کرو گے تو مواخذہ عقبی تمہارے ذمہ ہوگا۔ اب اس لڑکی مسماۃ راضیہ بی بی کا عقد جس کی عمر تخمینا تیرہ چودہ سال کی ہے مسماۃ احمدی بی بی اور اس کے نانا شاہ عبدالعزیز ایک ایسے شخص کے ساتھ جو سب انسپکٹر ی اور تارک الصلوۃ داڑھی منڈواتا ہے اور رشوت خوری اور اس کے خاندان سے اور مولوی محمد یحییٰ مرحوم کے خاندان سے اور مسماۃ احمدی بی بی کے خاندان سے کبھی کوئی رشتہ داری اور قرابت نہیں رہی اور نہ کچھ واسطہ کرنا چاہتے ہیں۔ حافظ محمد زکریا بالغ

۱ فتاویٰ خیریہ باب الاولیاء والاکفاء دار المعرفۃ بیروت ۲۵/۱

Fatawa Razvia Volume Eleven

...says that the Shari'ah right of guardianship (Wilayat) belongs to me, and the girl is a minor. Legally, maturity is set at eighteen years, and that Sub-Inspector is a non-Kufu (an unsuitable match), and his actions and behaviors are contrary to the Shari'ah of Muhammad. He has ties with 'Tabra'i Rafizis' and participates in their gatherings and assemblies. Therefore, marriage to him is impermissible. Can her mother, maternal grandfather, etc., perform her marriage without the permission of the guardian (Wali), i.e., the provider? Who is the Shari'ah-valid guardian? What is the Shari'ah definition of 'Kufu' and 'non-Kufu' in the Shari'ah of Muhammad? Is the marriage of a Muslim woman to a person who abandons prayers (Tark-us-Salat) and acts against the Prophetic Shari'ah permissible? Is acting upon the will permissible or impermissible? Explain and be rewarded.

The Answer:

It appears from the question that Shah Abdul Karim, before his demise, performed the marriage of his minor granddaughter Razia to the son of Hafiz Muhammad Zakariya, who was presumably also a minor at that time. Further in the question, nothing is mentioned about whether Muhammad Zakariya uttered words of acceptance (Qubul) in that assembly, and whether two men or one man and two women were present in the assembly who heard the offer (Ijab) and acceptance of Shah Abdul Karim and Hafiz Muhammad Zakariya and understood their conversation as a marriage contract ('Aqd-e-Nikah). If Hafiz Zakariya said in that very assembly for his son, "I have accepted," and two witnesses heard and understood it, then Razia's marriage took place at that very moment. Now, if that husband of hers is present, marriage with another is not possible at all. And if this was not the case—and it appears from the question that it was not—Muhammad Zakariya, by claiming guardianship, is preventing this marriage; he does not say that her marriage has already taken place with my son. So now there are two possibilities: if Razia's guardians and family members are righteous and followers of Shari'ah, and marriage to such a person who is an open sinner (Fasiq Mu'lan) is a cause of shame and disgrace for them, or if he lacks in lineage or something else, then he is not a 'Kufu' for Razia. In the pure Shari'ah, maturity (Bulugh) is based on the appearance of signs. A female can be mature at a minimum of nine years when she starts menstruating, and if signs do not appear, then when she completes fifteen years of age, she will become mature. If Razia's age is less than fifteen years, then if she menstruates, she is mature, otherwise, she is a minor. If she is a minor, then her marriage to the

aforementioned person, who is a non-Kufu, cannot take place at all. Even if Muhammad Zakariya, who is her guardian, performs it, it will be absolutely void, let alone Ahmadi or Shah Abdul Aziz who are not guardians at all. And if she is mature, then no one has compulsory guardianship (Wilayat-e-Jabra) over her; without her permission, it cannot happen even with a Kufu, and she herself cannot marry a non-Kufu when her guardian is not satisfied with the marriage. If she does, it will be absolutely void. In short, given that the person is a non-Kufu in the mentioned sense, in a state of being without consent...

फतवा रज़विया जिल्द ग्यारहवीं

...कहता है कि शरई तौर पर विलायत का हक़ मुझे हासिल है और लड़की नाबालिग है। कानूनी तौर पर बालिग होने की उम्र अठारह वर्ष रखी गई है और वह सब-इंस्पेक्टर 'गैर-कफ़ू' (अयोग्य मेल) है और उसके काम और हरकतें शरीयत-ए-मोहम्मदिया के खिलाफ हैं। उसका तबराई राफिज़ियों से रिश्ता है और वह उनकी महफ़िलों और मजलिसों में शरीक होता है। इसलिए उससे निकाह नाजायज़ है। क्या वली यानी मुरब्बी की इजाज़त के बिना उसकी माँ और नाना वगैरह उसका निकाह कर सकते हैं? शरई तौर पर जायज़ वली कौन है? शरीयत-ए-मोहम्मदिया में 'कफ़ू' और 'गैर-कफ़ू' की परिभाषा क्या है? क्या एक मुसलमान औरत का निकाह ऐसे शख्स से जायज़ है जो नमाज़ छोड़ता हो (तार्कउस-सलात) और शरीयत-ए-नबविया के खिलाफ काम करता हो? क्या वसीयत पर अमल करना जायज़ है या नाजायज़? बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब:

सवाल से ज़ाहिर होता है कि शाह अब्दुल करीम ने अपने इंतकाल से पहले अपनी नाबालिग पोती रज़िया का निकाह हाफिज़ मुहम्मद ज़करिया के बेटे से किया था, जो मुमकिन है उस वक़्त खुद भी नाबालिग हो। सवाल में आगे यह ज़िक्र नहीं है कि मुहम्मद ज़करिया ने उस मजलिस में निकाह क़बूल करने के अल्फाज़ कहे या नहीं, और उस वक़्त मजलिस में दो मर्द या एक मर्द और दो औरतें मौजूद थीं जिन्होंने शाह अब्दुल करीम और हाफिज़ मुहम्मद ज़करिया के ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) को सुना और उनकी बातचीत को निकाह का अनुबंध (अक्द-ए-निकाह) समझा। अगर हाफिज़ ज़करिया ने उसी मजलिस में अपने बेटे के लिए कहा कि "मैंने क़बूल किया" और दो गवाहों ने सुना और समझा, तो रज़िया का निकाह उसी वक़्त हो गया। अब अगर उसका वह शौहर मौजूद है, तो किसी और से निकाह मुमकिन ही नहीं। और अगर यह सूरत नहीं थी—और सवाल से ज़ाहिर यही है कि नहीं थी—मुहम्मद ज़करिया अपनी विलायत के दावे से इस निकाह को रोक रहा है; वह यह नहीं कहता कि उसका निकाह तो मेरे बेटे से हो चुका है। तो अब दो सूरतें हैं: अगर रज़िया के वली और घर वाले नेक और शरीयत का पालन करने वाले हों, और ऐसे शख्स के साथ जो खुले तौर पर गुनाहगार (फासिक मुअलान) है, रज़िया का निकाह उनके लिए शर्म और रुसवाई का कारण हो, या वह नसब (वंश) या किसी और बात में कमी रखता हो, तो वह रज़िया के लिए 'कफ़ू' नहीं है। शरीयत-ए-मुतह्हरा में बालिग होना लक्षणों के प्रकट होने पर आधारित है। एक औरत कम से कम नौ साल की उम्र में बालिग हो सकती है अगर उसे मासिक धर्म शुरू हो जाए, और अगर लक्षण प्रकट न हों,

तो पंद्रह साल पूरे होने पर वह बालिग हो जाएगी। अगर रज़िया की उम्र पंद्रह साल से कम है, तो अगर उसे मासिक धर्म होता है तो वह बालिग है, वर्ना नाबालिग। अगर वह नाबालिग है, तो उस शख्स से जो 'गैर-कफ़ू' है, उसका निकाह हो ही नहीं सकता। यहाँ तक कि अगर मुहम्मद ज़करिया, जो उसका वली है, वह भी करेगा तो निकाह बातिल (अमान्य) होगा, फिर अहमदी या शाह अब्दुल अज़ीज़ तो वली ही नहीं हैं। और अगर वह बालिग है, तो उस पर किसी को 'विलायत-ए-जब्रिया' (अनिवार्य अभिभावकत्व) नहीं है; उसकी इजाज़त के बिना कफ़ू से भी निकाह नहीं हो सकता, और वह खुद भी किसी गैर-कफ़ू से निकाह नहीं कर सकती जब तक कि उसका वली रज़ामंद न हो। अगर वह करेगी तो निकाह बातिल होगा। संक्षेप में, उस व्यक्ति के उक्त अर्थ में गैर-कफ़ू होने की स्थिति में, बिना रज़ामंदी...

کہتا ہے کہ حق ولایت شرعاً مجھ کو حاصل ہے اور لڑکی نابالغ ہے قانوناً اٹھارہ برس بلوغ کا رکھا گیا ہے اور وہ سب انسپکٹر غیر کفو ہے اور خلاف شریعت محمدیہ کے اس کے افعال و حرکات ہیں اور تبرائی رافضیوں سے اس کی رشتہ داری اور اس کی محفلوں اور مجلسوں میں وہ شریک ہوتا ہے اس لئے اس سے نکاح ناجائز اور بدون اجازت ولی یعنی مربی اس کا نکاح اس کی ماں اور نانا وغیرہ کر سکتے، آیا شرعاً ولی جائز کون ہے؟ آیا شرعاً کفو سے اور کفو اور غیر کفو کی تعریف شریعت محمدیہ میں کیا تعریف ہے؟ آیا ایک مسلمہ کا نکاح ایسے شخص سے جو تارک الصلوٰۃ ہو اور خلاف شریعت نبویہ کے کام کرتا ہو جائز ہے؟ آیا وصیت پر عمل جائز ہے یا ناجائز؟ بینوا توجروا

الجواب:

سوال سے ظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ شاہ عبدالکریم نے اپنے انتقال سے پہلے اپنی نابالغہ پوتی راضیہ کا نکاح حافظ محمد زکریا کے بیٹے سے کہ غالباً وہ بھی اس وقت نابالغ ہوگا کیا آگے سوال میں کچھ مذکور نہیں کہ محمد زکریا نے اس جلسہ میں الفاظ قبول کہے یا نہیں، اور اس وقت دو مرد یا ایک مرد دو عورتیں جلسہ میں حاضر اور شاہ عبدالکریم و حافظ محمد زکریا کے ایجاب و قبول کو سننے والے اور اس کی گفتگو کو عقد نکاح، سمجھنے والے موجود تھے یا نہیں، اگر حافظ زکریا نے اسی جلسہ میں اپنے بیٹے کے لئے کہا کہ میں نے قبول کیا اور دو گواہوں نے سنا اور سمجھا تو راضیہ کا اسی وقت نکاح ہو گیا اب اگر اس کا وہ شوہر موجود ہے تو دوسرے سے نکاح ہو سکتا ہی نہیں۔ اور اگر یہ صورت نہ تھی اور سوال سے ظاہر یہی ہے کہ نہ تھی محمد زکریا

اپنے ولایت کے دعویٰ سے اس نکاح سے مانع ہے یہ نہیں کہتا کہ اس کا نکاح تو میرے بیٹے سے ہو چکا۔ تو اب دو صورتیں ہیں اگر راضیہ کے اولیاء اور گھر والے صالحین و متبع شرع ہوں اور ایک ایسے شخص کے ساتھ کہ فاسق معلن ہے راضیہ کا نکاح ان کے لئے باعث ننگ و عار ہے یا وہ نسب وغیرہ کسی اور بات میں ایسی کمی رکھتا ہے تو راضیہ کے لئے وہ کفو نہیں، شریعت مطہرہ میں بلوغ ظہور آثار پر ہے۔ عورت کم از کم نو برس کی بالغہ ہو سکتی ہے جبکہ اسے عارضہ ماہواری آنا شروع ہو، اور اگر آثار ظاہر نہ ہوں تو جب پندرہ برس پورے کی عمر ہو جائے بالغہ ہو جائے گی، راضیہ کی عمر پندرہ برس سے کم ہے تو اگر اسے عارضہ ماہواری آتا ہے بالغہ ہے ورنہ نابالغہ اگر نابالغہ ہے جب تو شخص مذکور سے کہ غیر کفو ہے اس کا نکاح ہو سکتا ہی نہیں۔ محمد زکریا کہ اس کا ولی ہے اگر وہ بھی کرے گا باطل محض ہو گا نہ کہ احمدی یا شاہ عبدالعزیز کہ ولی ہی نہیں۔ اور اگر بالغہ ہے تو اس پر ولایت جبر یہ کسی کو نہیں، بے اس کی اجازت کے کفو سے بھی نہیں ہو سکتا اور غیر کفو سے وہ خود بھی نہیں کر سکتی جبکہ اس کا ولی اس سے نکاح پر راضی نہیں۔ اگر کرے گی تو باطل محض ہوگا، غرض اس شخص کے غیر کفو بمعنی مذکور ہونے کی حالت میں بنا راضی

Volume 11 Fatawa-e-Razawiya

This marriage with Muhammad Zakariya cannot take place in any way, whether Razia is an adult or a minor. And if he is not 'non-kufu' (unequal) in this sense, meaning that the family of Razia also performs similar actions, and there is no deficiency in lineage, religion, etc., such that this relationship would be a source of shame and disgrace for Razia's guardians, then in this case, if Razia has reached puberty (menstruation), she is the mistress of her own self. If her mother or maternal grandfather performs the marriage and she gives permission, it will be valid and effective, and Muhammad Zakariya will have no right to object. And if Razia does not agree, then it cannot be effective even if done by Muhammad Zakariya, let alone Ahmadi and Abdul Aziz. And if she has not reached puberty, then the authority belongs to Muhammad Zakariya. If Ahmadi and Abdul Aziz perform the marriage without Muhammad Zakariya's permission, it will remain pending on the permission of Muhammad Zakariya. If he rejects it, it will become void; if he permits it, it will become valid. And all these issues are well-known and mentioned in general books. (T) And Allah Almighty knows best.

Note: The last heading of this volume is "Chapter of Kafa'ah" (Equality in Marriage); the twelfth volume will begin with the "Chapter of Mahr" (Dowry).

Page 739 of 739 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami www.dawateislami.net

ग्यारहवीं जिल्द (Volume 11) फतावा-ए-रजविया

मुहम्मद जकरिया के साथ यह निकाह किसी भी तरह नहीं हो सकता, चाहे राज़िया बालिग हो या नाबालिग। और अगर वह इस मायने में 'ग़ैर-कुफ़ू' (असमान) नहीं है, यानी राज़िया के खानदान वाले भी इसी तरह के काम करते हैं और नस्ब (वंश) व मज़हब आदि में भी कोई ऐसी कमी नहीं है कि यह रिश्ता राज़िया के सरपरस्तों के लिए शर्म और बदनामी का कारण बने, तो इस स्थिति में यदि राज़िया को मासिक धर्म शुरू हो गया है, तो वह स्वयं अपने मामलों की मालिक है। यदि उसकी माँ या नाना निकाह कर देते हैं और वह अनुमति दे देती है, तो यह सही और प्रभावी होगा, और मुहम्मद जकरिया को विरोध करने का कोई अधिकार नहीं होगा। और अगर राज़िया राजी नहीं होगी, तो यह मुहम्मद जकरिया के करने से भी प्रभावी नहीं हो सकता, अहमदिया और अब्दुल अजीज की तो बात ही क्या। और अगर उसे मासिक धर्म नहीं आता है (वह अभी नाबालिग है), तो अब अधिकार मुहम्मद जकरिया के पास है। यदि अहमदिया और अब्दुल अजीज मुहम्मद जकरिया की अनुमति के बिना निकाह कर देते हैं, तो यह मुहम्मद जकरिया की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह इसे अस्वीकार कर देता है, तो यह शून्य हो जाएगा; यदि वह इसे अनुमति दे देता है, तो यह वैध हो जाएगा। और ये सभी मसले मशहूर हैं और आम किताबों में वर्णित हैं। (T) और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

नोट: इस जिल्द का आखिरी शीर्षक 'बाबुल किफ़ाअत' (बराबरी का अध्याय) है, बारहवीं जिल्द की शुरुआत 'बाबुल महर' (महर का अध्याय) से होगी।

पेज 739 / 739 आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी www.dawateislami.net

محمد زکریا یہ نکاح کسی طرح نہیں ہو سکتا خواہ راضیہ بالغہ ہو یا نابالغہ اور اگر وہ اس معنی پر غیر کفو نہیں یعنی راضیہ کے خاندان والے بھی اسی قسم کے افعال رکھتے ہیں اور نسب و مذہب وغیرہ میں بھی کوئی ایسی کمی نہیں کہ یہ رشتہ اولیائے راضیہ کے لئے باعث ننگ و عار ہو اس صورت میں اگر راضیہ کو عارضہ ماہواری آتا ہے تو وہ خود اپنے نفس کی مختار ہے اگر اس کے ماں یا نانا نکاح کر دیں گے اور وہ اجازت دے دے گی صحیح و نافذ ہوگا اور محمد زکریا کو کوئی اختیار اعتراض نہ ہوگا، اور اگر راضیہ راضی نہ ہوگی تو محمد زکریا کے کئے بھی نافذ نہیں ہو سکتا نہ کہ احمدی و عبدالعزیز کے، اور اگر اسے عارضہ ماہواری نہیں آتا تو اب اختیار محمد زکریا کو ہے، اگر احمدی و عبدالعزیز بے اجازت محمد زکریا نکاح کردیں گے اجازت محمد زکریا پر موقوف رہے گا، اگر وہ رد کردے گا باطل ہو جائے گا جائز کردے گا جائز ہو جائے گا، والمسائل کلھا مشھورۃ وفی عامۃ الاسفار مذکورۃ (یہ مسائل مشہور ہیں اور عام کتب میں مذکور ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

نوٹ : اس جلد کا آخری عنوان باب الکفائۃ ہے، بارہویں جلد کا آغاز باب المہر سے ہوگا۔